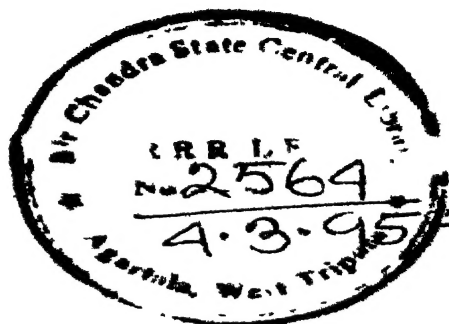
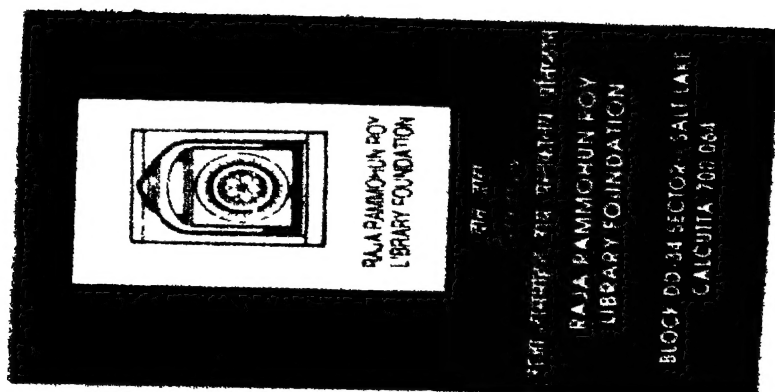


संस्कृत-हिन्दी कोश

संस्कृत - हिन्दी कोश



वामन शिवराम आप्टे



अमर
वाराणसी

पब्लिकेशन
(भारत)

भूमिका

[कोशकार का प्रथम प्राक्कथन]

यह संस्कृत-हिन्दी कोश जो मैं आज जनसाधारण के सम्मुख प्रस्तुत कर रहा हूँ, न केवल विद्यार्थी की चिर-अतीक्षित आवश्यकता को पूरा करता है, अपितु उसके लिए यह सुख भी है। जैसा कि इसके नाम से प्रकट है वह हाई स्कूल अथवा कॉलेज के विद्यार्थियों की सामान्य आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए तैयार किया गया है। इस उद्देश्य को ध्यान में रखकर मैंने वैदिक शब्दों को इसमें सम्मिलित करना आवश्यक नहीं समझा। फलतः मैं इस विषय में वेद के परम्परागत साहित्य तक ही सीमित रहा। परन्तु इसमें भी रामायण, महाभारत पुराण, स्मृति, दर्शनशास्त्र, गणित, आयुर्वेद, न्याय, वेदांग, नीमांशा, व्याकरण, अलंकार, काव्य, वनस्पति विज्ञान, ज्योतिष, खेती आदि अनेक विषयों का समावेश हो गया है। वर्तमान कोशों में से बहुत कम कोशकारों ने ज्ञान की विविध शाखाओं के तकनीकी शब्दों की व्याख्या प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। हाँ, वाचस्पत्य में इन प्रकार के शब्द पाये जाते हैं, परन्तु वह भी कुछ अंशों में दोषपूर्ण है। विशेष रूप से उस कोश से जो मुख्य विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए ही तैयार किया गया हो, ऐसी भाषा नहीं की जा सकती। वह कोश तो मुख्य रूप से गणकशा, काव्य, नाटक आदि के शब्दों तक ही सीमित है, वह बात बुरी है कि व्याकरण, न्याय, विधि, गणित आदि के अनेक शब्द भी इसमें सम्मिलित कर लिये गये हैं। वैदिक शब्दों का अभाव इस कोश की उपादेयता को किसी प्रकार कम नहीं करता, क्योंकि स्कूल या कॉलेज के अध्ययन काल में विद्यार्थी की जो सामान्य आवश्यकता है उसको वह कोश पूरी-पूरी-तक पूरी अवस्थाओं में कुछ अधिक ही पूरा करता है।

कोश के सीमित क्षेत्र के परम्परागत इसमें निहित शब्द योजना के विषय में वह बताना सर्वथा उपयुक्त है कि कोश के अन्तर्गत, शब्दों के विशिष्ट अर्थों पर प्रकाश डालने वाले उद्घरण, संदर्भ उन्हीं पुस्तकों से लिये गये हैं जिनमें विद्यार्थी प्रायः पढ़ते हैं। हो सकता है कुछ अवस्थाओं में वे उद्घरण आवश्यक प्रतीत न हों, फिर भी संस्कृत के विद्यार्थी की, विशेषतः आरम्भिक को, उपयुक्त पर्यायवाची या उदात्तार्थक शब्द सूझने में वे निश्चय ही उपयोगी प्रभावित होंगे।

दूसरी ध्यान देने योग्य इस कोश की विशेषता यह है कि अल्पतम आवश्यक तकनीकी शब्दों की, विशेषतः न्याय, अलंकार, और नाट्यशास्त्र के शब्दों की—व्याख्या इसमें यथा स्थान दी गई है। उदाहरण के लिए देखो—अप्रस्तुत प्रकृता, उनिषद्, साध्य, नीमांशा, स्वाध्याय, प्रवेक, रस, वासिक आदि। वहाँ तक अलंकारों का सम्बन्ध है, मैंने मुख्य रूप से काव्य प्रकाश वही आवश्यक किया है—यद्यपि कहीं-कहीं चन्द्रालोक, कुचलालोक और रत्नगंगाधर का भी उपयोग किया है। नाट्यशास्त्र के लिए साहित्य दर्पण को ही मुख्य समझा है। इसी प्रकार बहुवचन शब्दचय, वाग्भटा, लोकोक्ति अथवा विभिन्न अणिमंजुनाओं को भी यथा स्थान रखा है, उदाहरण के लिए देखो—गम्, सेतु, हस्त, मयूर, वा, छ आदि। आवश्यक शब्दों से सम्बद्ध पौराणिक उपाख्यान भी यथा स्थान दिये हैं उदाहरणतः देखो—इंद्र, कार्तिकेय प्रह्लाद आदि। व्युत्पत्ति प्रायः नहीं दी गई—हाँ अल्पतम विशिष्ट यथा अतिथि, पुन, जाया, हवीकेत आदि शब्दों में इसका उल्लेख किया गया है। तकनीकी शब्दों के अतिरिक्त अन्य आवश्यक शब्दों के विषय में दिया गया विवरण विद्यार्थियों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा—उदा० मज्ज, मानस, वेद, हृत्। कुछ आवश्यक लोकोक्तिवा 'न्याय' शब्द के अन्तर्गत भी गई हैं। अप्रस्तुत कोश को और भी अधिक उपादेय बनाने की दृष्टि से अन्त में तीन परिशिष्ट भी दिये गये हैं। पहला परिशिष्ट

छन्दों के विषय में है—इसमें गण, मात्रा, तथा परिमाणा आदि सभी आवश्यक सामग्री रख दी गई है। इसके तैयार करने में मुख्यतः सुत्तरलाकर और छन्दोमंजरी का ही आशय लिया है। परन्तु उन छन्दों को भी जो नाग, नारदि, वन्धी, अथवा नट्टि ने अतिरिक्त रूप से प्रयुक्त किया है, इसमें रख दिया गया है। दूसरे परिशिष्ट में कालिकावत, जगन्मूर्ति और बाण आदि संस्कृत के महाकवियों की कृति, तथा जन्म विवरण आदि दिया गया है। इस विषय में मैंने मैक्समूलर की 'इन्डिया' तथा बल्समदेव की सुभाषितावली की भूमिका से जो कुछ ग्रहण किया है उसके लिए वे धन्यवाद के पात्र हैं। तीसरा परिशिष्ट मौगोलिक शब्दों का संग्रह है, इसमें मैंने कनिंगहम के 'एन्शैंट ज्वावाकी' से तथा इंग्लिश संस्कृत डिक्शनरी में उपलब्ध श्री बोक्लू के निबन्ध से बड़ी सहायता प्राप्त की है तबर्न मैं हृदय से उनका आभार मानता हूँ।

कोश के सम्बन्ध का ज्ञान अग्रे दिये गये "कोश के देखने के लिए आवश्यक निर्बंध" से मली-नीति हो सकेगा। मैं केवल एक बात पर आपका ध्यान खींचना चाहता हूँ कि मैंने इस कोश में संबंध 'अनुस्वार' का प्रयोग किया है। व्याकरण की दृष्टि से चाहे यह प्रयोग सर्वथा सही न हो, तो भी छराई की दृष्टि से सुविधाजनक है। और मुझे विश्वास है कि कोश की उपयोगिता पर इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं पड़ता है।

समाप्त करने से पूर्व मैं उन सब विविध कृतियों का कृतज्ञ हूँ जिनने इसको तैयार करने में मुझे सहायता मिली। इसके लिए सबसे पहली रचना प्रोफेसर तारानाथ तर्कवाचस्पति की 'वाचस्पत्य' है। इस कोश में दी गई सामग्री का अधिकांश उड़ी से लिया गया है, यद्यपि कई स्थानों पर सशोधन भी करना पड़ा है। वर्तमान संस्कृत-इंग्लिश डिक्शनरियों में जो छन्द, अर्थ और उद्धरण उपलब्ध नहीं हैं वे इसी कोश से लिये गये हैं। दूसरा कोश "श्री संस्कृत-इंग्लिश-डिक्शनरी" प्रो० मोनियर विलियम्स का है जिनका मैं बहुत ऋणी हूँ। इस कोश का मैंने पर्याप्त उपयोग किया है। अतः मैं इस सहायता का आभारी हूँ। अन्त में मैं 'जर्मेन वर्टरमुश' के कर्ता डा० रॉय और बौधालिक को धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता। इनके कोश में अनेक उद्धरण और सर्वभूत हैं—परन्तु अधिकांश वैदिक साहित्य से लिये गये हैं! इनके विपरीत मैंने अधिकांश उद्धरण अपने उस संग्रह से लिये हैं जो जगन्मूर्ति, जगन्नाथ पंडित, राजसेखर, बाण, काव्य प्रकाश, विशुपालबब, किरासाबुनोय, नैचबचरित, शंकर-भाष्य और बेनीसंहार आदि की सहायता से तैयार किया गया है। इनके अतिरिक्त उन ग्रन्थकर्ताओं और सम्पादकों का भी मैं कृतज्ञ हूँ जिनकी सहायता यदा-कदा प्राप्त करता रहा हूँ।

अन्त में मुझे विश्वास है कि 'स्ट्रैट्स संस्कृत-हिन्दी कोश' केवल उन विद्याधियों के लिए ही उपयोगी सिद्ध नहीं होगी जिनके लिए यह तैयार की गई है—बालक सम्स्कृत के सभी पाठक इससे लाभ उठा सकेंगे। कोई भी कृति चाहे वह कितनी ही सावधानी से बयो न तैयार की गई हो—सर्वथा निर्दोष नहीं होती। मेरा यह कोश भी कोई अपवाद नहीं है। और विशेष रूप से उस अवस्था में जबकि इनने छापने की सीधता की गई हो। अतः मैं उन व्यक्तियों से, जो इस कोश को अपनाकर मेरा सम्मान करें, यह निवेदन करता हूँ कि वहाँ कहीं इसमें वे कोई अशुद्धि देखें, अथवा इसके सुधारने के लिए कोई उत्तम सुझाव देना चाहें, तो मैं दूसरे संस्करण में उनको समावेश करने में प्रसन्नता अनुभव करूँगा।

शब्दों देखने के लिए आवश्यक निर्देश

१. शब्दों को देवनागरी वर्णों में अक्षरादि क्रम में रक्खा गया है।
२. पुल्लिंग शब्दों का लङ् लकार एकवचन रूप लिखा गया है, उसी प्रकार नपुंसक लिंग शब्दों का भी प्रथमा किम्बिक्त का एकवचनान्त रूप लिखा है। जो शब्द किम्बिध लिङ्गा में प्रयुक्त होता है, उसके आगे स्त्री० या पु० एवं लङ् लिखकर दसाया गया है।
विशेषण शब्दों का प्रातिपदिक रूप रखकर उसके आगे वि० लिख दिया गया है।
३. जो शब्द क्रियाविशेषण के रूप में प्रयुक्त होते हैं तथा विशेषण या सज्ञा में व्युत्पन्न होते हैं उन्हें उस सज्ञा या विशेषण के अन्तर्गत कोष्ठक के अन्दर रक्खा गया है जैसे 'पर' के अन्तर्गत 'परेण' या 'परे' अथवा 'समीप' के अन्तर्गत 'समीपान्' या 'समीपे'।
४. (क) शब्दों के केवल भिन्न भिन्न अर्थों को पृथक् अर्थों की क्रमात् देकर दर्शाया गया है। सामान्य अर्थाभास को स्पष्ट करने के लिए एक से अधिक अर्थों रखे गये हैं।
(ख) लट् लृट् प्रमाणां के उदात्त में देवनागरी के अक्षरों का प्रयोग किया गया है।
५. जहाँ तक हो सका है शब्दों को पर्यायार्थक तथा सतत्त्व की दृष्टि में सम्बद्ध किया गया है।
६. प्रत्येक मूल शब्द की सहायक व्युत्पत्ति [] कोष्ठक में दी गई है जिसमें निःशब्द का अर्थार्थ ज्ञान हो सके। प्रत्यय और उपसर्गों की सामान्य जानकारी के लिए—सामान्य प्रत्यय-सूचि साथ सलग्न है।
७. (क) समान शब्दों का मूल शब्द के अन्तर्गत ही परोक्ष रूप (पर शब्द) के पञ्चावृत्त रक्खा गया है जैसे 'अग्नि' के अन्तर्गत—शेष, अतिशेष प्रकर बनाए हैं।
(ख) समान शब्दों में—मूल शब्दों के पञ्चावृत्त—को मिलाने में सहाय के विधानानुसार या परि-वर्तन होते हैं उन्हें पालन ही स्वयं ज्ञान का अन्तर्गत ज्ञान चाहिये—यथा पूर्व के साथ अपर का मिलाने में 'पुष्करिण' 'आम्' के आगे 'पति' का मिलाने में 'अधोर्गति' बनता है। कई स्थानों पर उन समान शब्दों को जो सतत्त्व में न सम्बन्धित हैं उनके पुरा व पुरा कोष्ठक में लिख दिया गया है।
(ग) जहाँ एक समान शब्द हो दूसरे समान शब्द के प्रथम शब्द के रूप में प्रयुक्त हुआ है वही उस पूर्वशब्द को शीर्ष देखा के साथ लगा कर दर्शाया गया है जैसे—द्वित्र (समस्त शब्द) में 'द्वित्र' या 'रात्र' जानना है ना द्वित्र—'द्वित्र'—'रात्र' और 'द्वित्र' द्वित्र—'द्वित्र' या 'द्वित्र'।
(घ) सभी अलङ् समासयुक्त (उदा० कुलोप, मन्त्राक्षर, द्विद्विपु आदि) शब्द पृथक् रूप से व्यवस्थित रखे गये हैं। मूल शब्दों के साथ उन्हें नहीं जोड़ा गया।
८. कृत् और तद्धित प्रयोगों से युक्त शब्दों को मूल शब्दों के साथ न रखकर पृथक् रूप से व्यवस्थित रक्खा गया है। फलतः 'कूटस्थ' 'भयकर' 'अन्तर्गत' 'प्राप्त्यन्त' और 'हिसबन्' आदि शब्द 'कूट' और 'भय' आदि मूल शब्दों के अन्तर्गत नहीं मिलेंगे।
९. स्त्रीलिंग शब्दों को प्रायः पृथक् रूप में लिखा गया है, परन्तु अनेक स्थानों पर पुल्लिंग रूप के साथ ही स्त्री-लिंग रूप दे दिया गया है।
१०. (क) धातुओं के आगे आ० (आत्मनेपदी), पर० (परस्मैपदी) तथा उभ० (उभयपदी), के साथ लज्जा-शोचक चिह्न भी लगा दिये गये हैं।
(ख) प्रत्येक धातु का पर, गन्, लकार () कोष्ठक के अन्दर धातु के आगे रूप के साथ दे दिया गया है।
(ग) धातु के लट् लकार का, प्रथम पुरुष का एक बचनान्त रूप ही लिखा गया है।

(घ) धातुओं के साथ उनके उपसर्गयुक्त रूप अकारादिक्रम से धातु के अन्तर्गत हो दिखलाये गये हैं ।

(ङ) पर वाच्य, विशेष अर्थ अथवा उपसर्ग के कारण धातुओं के परिवर्तित रूप () कोष्ठकों में दिखलाये गये हैं ।

- ११ धातुओं के तय अनीय, और य प्रत्यययुक्त कृदन्त रूप पाये नहीं दिये गये । भवन्त और ज्ञानजन्त विशेषण तथा ता, न्वा या य प्रत्यय के लगाने से बने भाववाचक सत्ता शब्दों को भी पुष्कल रूप से नहीं दिया गया । ऐसे शब्दों के ज्ञान के लिए विद्यार्थी को व्याकरण का आश्रय लेना अपेक्षित है । जहाँ ऐसे शब्दों की रूपरचना या प्रथा में कोई विशेषता है उन्हें यथास्थान रख दिया गया है ।
- १२ शब्दों से संबद्ध पौराणिक अन्त कथाओं का शब्दाद्यं के यथायं ज्ञान के लिए —() कोष्ठकों में संक्षिप्त रूप में रक्खा गया है ।
- १३ जो शब्द या संबद्ध पौराणिक उपाख्यान मूत्र कोश में स्थान न पा गये उन्हें परिशिष्ट के रूप में कोश के अन्त में जोड़ दिया गया है ।
- १४ संस्कृत साहित्य में प्रयुक्त छन्दों के ज्ञान के लिए, तथा अन्य भौगोलिक शब्द एवं साहित्यकारों की सामान्य जानकारी के लिए कोश के अन्त में परिशिष्ट जोड़ दिये गये हैं ।

विशेष व्यवस्थाय

छात्रों की आवश्यकता का विशेष ध्यान रखकर उन काफ़ी की और भी अधिक उपादेय बनाने के लिए प्रायः सभी मुख्य शब्दों के साथ उनकी मर्यादित व्युत्पत्ति दे दी गई है।

प्रश्ना की रचना में तथ्य और प्रश्नो का बड़ा महत्त्व है इनकी पूरी जानकारी तथा व्याकरण के पढ़ने से ही होगी। किन्तु भी इनका यही दिग्दर्शन अत्यन्त सहायक रहना।

उपसर्ग— उपसर्ग धातुर्वा र्वादन्यत्र लोदने । प्रहागहाग महार्गविहागर्वाहारावन ॥

उपसर्ग पातुभा के पूर लग कर उनके अधीन विभिन्नता ला देते हैं —

उपसर्ग	उदाहरण	उपसर्ग	उपसर्ग
उ	अपसर्ग	उ	उपसर्ग
अ	अपसर्ग	अ	अपसर्ग
इ	अपसर्ग	इ	अपसर्ग
ई	अपसर्ग	ई	अपसर्ग
उ	अपसर्ग	उ	अपसर्ग
ऊ	अपसर्ग	ऊ	अपसर्ग
ए	अपसर्ग	ए	अपसर्ग
ऐ	अपसर्ग	ऐ	अपसर्ग
ओ	अपसर्ग	ओ	अपसर्ग
औ	अपसर्ग	औ	अपसर्ग
अ	अपसर्ग	अ	अपसर्ग
इ	अपसर्ग	इ	अपसर्ग
ई	अपसर्ग	ई	अपसर्ग
उ	अपसर्ग	उ	अपसर्ग
ऊ	अपसर्ग	ऊ	अपसर्ग
ए	अपसर्ग	ए	अपसर्ग
ऐ	अपसर्ग	ऐ	अपसर्ग
ओ	अपसर्ग	ओ	अपसर्ग
औ	अपसर्ग	औ	अपसर्ग

प्रत्यय—पानुआ के पञ्चात् लगने वाले प्रत्यय हन प्रत्यय कहलाते हैं। शब्दा के पञ्चात् लगने वाले प्रत्यय आदिप कहे जाते हैं।

कुम्भ	उद्वह	क	कानक
अ	निःशेष	क (अ)	अ
अच्	छिदा	क (इ)	अधि
अच् अच्	पच मर	कच	बिबुर
अच	कर	कल (त न)	हन छिप
अचच्	कुम्भकार	कानन् (नबन्)	उकनबन्
अनीयर	कच	कितन (नि)	कुनि
आलच्	करणीय दर्शनीय	कत्वा (त्वा)	पठित्वा
इक	मृगवाल्	क (न)	मुच्य
इन्	पाणि	कच	पुनीयति
इन्च्	स्तनविन्	कच (च)	कृत्य
उ	राजिन्	क (क)	श्रीम
उच्	जिगमिषु	कचर (का)	उपह
	कच	कच	स्यक वाक्
		कच (अ)	स्तनचय
		कच (अ)	त्वात्, वाक्

घिनुष् (इन्)	योगिन्, त्यागिन्	ञ्	देव्
घुत्स् (उर)	भङ्गस्	एद्यमुष् (एद्यम्)	अन्वेष्ट्
ढ (अ)	दूग्ग,	क	राष्ट्रकम्, मुखर्णकम्
डु (उ)	पभ्	स्मन् (रन्)	कृत्स्नम्
ण (अ)	याह	सञ् (ईन्)	महाकुलीन
णिनि (इन्)	स्यापिन	होग् (ई)	मृगि
णमुल् (अम्)	स्मार स्मार	वणम्	अक्षर-वण,
प्यन् (य)	काय	छ (इय)	त्वदीय, मदीय,
प्यल् (यन्)	पाठक	छा (अ)	वीरगात्र
तृष्	कर्तृ,	छय (य)	पाञ्चजला
तुमुन् (तुम्)	कर्तृम्	त्पु (अन्)	सायन
नह्	प्रान	चक }	शक्ति
यन्	गेय, देय	चअ } (इक)	नैतिक
र	हित्	उन }	वीर्य
त्यप् (य)	आदाय	इत्यम् (अयम्)	वयम्
ह्यन् (अन्)	पठन करणम्	इत् (इत्)	काल
बनिप्	यन्वत्	इक (इ)	कोरन्, गच्छन्
वरच्	ईद्वय	व्य (य)	ः
वृज् }	निन्दक	नयन् }	पुत्र
वृन् }		नयन् }	प्रयत्न
श (अ)	क्रिया	नयन् }	मन्
शान् (अन्)	पचन्	नयन् }	मन्
शानच् (आन या मान)	पचान्, कमान्	नयन् }	मन्
ष्टन् (य)	शम्भम्, अशम्भम्	नयन् }	मन्
तद्धिन् यथा उभाहि प्रत्यय	उदाहरण	नयन् }	मन्
अञ् (अ)	ओञ्	नयन् }	मन्
अण् (अ)	दौर्	नयन् }	मन्
अमुन् (अम्)	मरम् तपम्	नयन् }	मन्
अस्मानि (अस्मान्)	अस्मान्	नयन् }	मन्
आलच्	वाचान्	नयन् }	मन्
आलच्	दयाल्	नयन् }	मन्
इञ्	दाशर्गाव,	नयन् }	मन्
इतच्	कुसुमन्	नयन् }	मन्
इमनिच् (इयन्)	गर्गिन्	नयन् }	मन्
इलच्	फेनिल	नयन् }	मन्
इष्टन्	गर्गिष्ट	नयन् }	मन्
इस्	उयोनिस्	नयन् }	मन्
ईकक् (ईक)	शक्तीक,	नयन् }	मन्
ईयमुन् (ईयम्)	लक्ष्मीयस्	नयन् }	मन्
ईरच्	गरीर	नयन् }	मन्
उरच्	हन्तुर	नयन् }	मन्
उकच्	हृत्क	नयन् }	मन्
ऊह	ककन्	नयन् }	मन्

संकेत सूचि

अ०	अव्यय	पर०	परस्मैपद
अक०	अकर्मक	अ्या०	अ्यामिति
अलु० स०	अलुक् समान	कर्म० बा०	कर्म वाच्य
अव्य० स०	अव्ययीभाव समान	कर्त्त० बा०	कर्त्तृ वाच्य
आ०	आस्थाने पद	ब० ब०	बहु वचन
उदा०	उदाहरण	म० अ०	मध्यमावस्था
उप० स०	उपपद समान	अ० पु०	अन्यपुरुष
उभ०	उभयपदी	म० पु०	मध्यम पुरुष
कर्म० स०	कर्मधारय समान	उ० पु०	उत्तम पुरुष
त० म०	तत्पुरुष समान	ब० स०	बहुव्रीहि समान
तु० त०	तृतीया तत्पुरुष समान	प्रबि०	प्रैक्याकार
द०	दम्बो	इच्छा०	इच्छावश मन्त्रन
इ०	इन्द्र समान	भु० क० ह०	भक्तिकर्मक
इि० क०	इिकर्मक		इदन्त (कन)
इि० स०	इिग समान	म० इ०	मनाद्य कृदन्त (वक्ष्यन्)
इि० त०	इितीया तत्पुरुष समान	बन्त० ह०	सामानकालिक कृदन्त
ध० त०	धट्ठी तत्पुरुष समान		भवन्त वा भवन्तन्
न० स०	नञ् समान	विप०	विपरीत्यर्थक
तुल०	तुलनाच्छक	क० ल०	कारणकारक
ना० बा०	नामधातु	कर्त्त०	कर्म वाचक
सप्र०	सप्रदान कारक	कर्म०	कर्मकारक
सम०	समस्त पद	त्रा०	आतिव्यत्यय
तु०	तुलना वश	वाणि०	वाचिक
प्र०	प्रत्ययाद्य	य०	यैरिक्
उप०	उपपद	अने० त०	नाम्न पठन्तर
र० अ०	रत्नमावस्था	मर्बा०	मर्बावन्
ए० ब०	एक वचन	ध०	यद्गुण
भा० वि०	माध्वगीमक (विद्वत्क)	त०	मर्बा
	विशेषण	त०	रद्व
वि०	विशेष्य	आ०	गच्छन्
वी० ग०	वीजगणन	आ०	अधकरण कारक
वि० वि०	विशेष्य विशेषण	उप०	उपभग
वर्त०	वर्तमानकाल	स्वा०	स्वादिगण
भूत०	भूत काल	अदा०	अदादिगण
मा० स०	मादि समान	भु०	भुहोत्यादिगण
म० ब०	मञ् बहुव्रीहि समान	स्वा०	स्वादिगण
म० त०	मञ् तत्पुरुष समान	दि०	दिवादिगण
पु०	पुस्तिय	तु०	तुलादिगण
नपु०	नपुंसक लिंग	क्या०	क्यादिगण
स्त्री०	स्त्री लिंग	ख०	खरादिगण
सक०	सकर्मक	म०	मधादिगण
पुनो०	पुनोदरादित्वात्	मना०	मनादिगण

संकेताकर—सूचि

अ० पु०	अग्नि पुराण	कौसि०	कौसिकसूत्र
अ० श०	अन्यापदेश शातक	कौपी०	कौपीतकी उपनिषद्
अ० स०	अगस्त्य महिना	ग० ल०	गंगा लहरी
अथर्व०	अथर्व वेद	बोचाल०	Uchhal's System of Revenue
अनर्थ०	अनवराध	घण्ट०	घण्ट कौशिक
अक्ष०	अक्षपूजाष्टक	गण०	गणरत्नमहोदधि — वर्षमान कृत
अमर०	अमरकोश	चन्द्रा०	चन्द्रालोक
अमरु०	अमरशातक	चाण०	चाणक्य शातक
अभि०	अभिधारक	चात०	चातकाष्टक
आनन्द०	आनन्द लहरी	चाल०	चाल चम्पू
आर्या०	आर्या सप्तशती	चौर०	चौरपञ्चांगिका
आर्य०	आर्यभट्टायनसूत्र	छ०	छन्दोगजरी
ईश०	ईशोपनिषद्	छा०	छान्दोग्योपनिषद्
उ० दू०	उद्भव कृत	आनकी०	आनकीहरण
उ० म०	उद्भव मदेश	अं०	अभिनी नृत्य
उच्चारि०	उच्चारि सूत्र	अं० न्या०	अभिनीय म्यायमाना विस्तर
उत्त०	उत्तर रामचरित	उद्यो०	अभिषेक
ऋक्०	ऋग्वेद	न० कौ०	नक्षत्र कौमुदी
एकार्थ०	एकार्थनाममाला	नारा०	नारायण वाचस्पत्यम्
ऐत० उ०	ऐतरेय उपनिषद्	नं० मा०	नैमिरीय आरण्यक
ऐत० शा०	ऐतरेय ब्राह्मण	तं० उ०	नैमिरीय उपनिषद्
कठ०	कठोपनिषद्	शिका०	शिकाड लेख
कथा०	कथामञ्जरी	तं० स०	तैत्तिरीय महिना
कनक०	कनकचारास्तव	न० बा०	नवचालिक
कर्पूर०	कर्पूर खजरी	दाय०	दायमान
कलि०	कलिबिहवन	दु० न०	दुपतिपञ्चनी
	गोलकठ दीप्तिन कृत	दूत०	दूतवाक्यम्
कवि०	कविरहस्य	दे० म०	देवी महात्म्य
का०	कादम्बरी	नवरत्न०	नवरत्नमाला
कात्या०	कात्यायन	ना० बा०	नारायण भाष्य
काम०	कामन्दकी नीति	नामा०	नामानन्द
काव्य०	काव्यप्रकाश	नाना०	नानार्थ मञ्जरी
काव्या०	काव्यावर्त	नाज०	नारायण षट्
काशि०	काशिकावृत्ति	नारा०	नारायणीय
कि०	किरातार्जुनीय	निघ०	निघण्टु
कीर्ति०	कीर्तिकौमुदी	नी०	नीतिसार
कुमा०	कुमार लख	नीति०	नीति प्रदीप
कुम्भ०	कुम्भकामन्द	नील०	नीलकण्ठ
कुम्भ०	कुम्भकर्णामुन	नं० ब०	नवय
केम०	केनोपनिषद्	पंच०	पंचसम्य
की० अ०	कीटिल्य वर्षणारम्भ		
कोल०	कोलकल्पपत्र		

[illegible]

स्वाय०	स्वायकावच्छेदक	सु० (सुष्प०)	सुष्पुत
सुत	सुतबोध	सुभा०	सुभाषित रत्नाकर
स्वेत० (स्वेता०)	स्वेतास्वतरोपनिषद्	सुभासव०	सुष्पु की वासवदत्ता
हर० क०	हरस्वती कच्छाभरण	सुभाषित०	सुभाषितरत्नभाषागार
सुधा०	सुधाकहरी	सु० सि०	सुखं लिङ्गान्त
स्वप्न०	स्वप्नवासवतम्	सी०	सौम्यं लहरी
सर्व०	सर्ववर्षेण सप्तह	हस०	हसपुत
सा० द०	साहित्य संपन्न	हनु०	हनुमन्नाटक
सा० का०	सांख्य कारिका	हर०	हरविजय
सा० प्र०	सांख्यप्रवचन भाष्य	हरि०	हरिजनपुराण
सि०	सिद्धान्त कीमुदी	हला०	हलायुध
सि० मु०	सिद्धान्त मुक्तावली	हृष०	हृषीकेशिन
सा० सु०	सांख्य सुत्र	हि०	हितोपदेश
सि० सं०	सिद्धान्तलेख संक्षेप	हेम०	हेमचन्द्र

संस्कृत-हिन्दी-कोश

अ

अ नागरी वर्णमाला का प्रथम अक्षर ।

अः [अन् + इ] १ बिष्णु पवित्र 'ओम्' को प्रकट करने वाली मंत्र (अ + उ + म्) ध्वनियाँ में से पहली ध्वनि —अक्षरों विष्णुसहित उकारम् महेश्वर । मकारम् स्मृतो ब्रह्मा प्रणवस्तु नयाम्यक ॥ २ शिव ब्रह्मा वायु वा वैश्वानर ।

(अथवा) १ नीतिन के इन (अ) अर्थों के इन (अ) या अतः (अ) तथा पुनर्ली के अ (अ) या (अ) के समान नकारात्मक अर्थ देने वाला उपसर्ग जो कि निषेधात्मक अर्थ नष्ट के स्थान पर सशक्ति, विशेषणों एवं अर्थों के (क्रियाओं के भी) पूर्व लगाने वाला है । यह 'अ' ही 'अच्छिन्' शब्द का छोड़कर शेष स्वरार्थ शब्दों में पूर्व 'अन्' बन जाता है ।

न के सामान्यतया छ अर्थ गिनाये गये हैं :-

(क) साधुष्य समानता या समानता 'असाध्य' आशय के समान (अनेक आदि गूने हुए) परन्तु बाधण न होकर अधिक बंध आदि । (ख) अभाव, अनुपस्थिति निषेध, अभाव, अविद्यमानता यथा 'अज्ञानम्' ज्ञान का न होना इसी प्रकार अकाश, अनग, अकरक, अघट आदि । (ग) विप्लवता अन्तर या भेद यथा 'अपट' कपड़ा नहीं, कपड़े में भिन्न या अन्य कोई वस्तु । (घ) अल्पता लघुता, म्युनता, अन्त्यायवानी अर्थात् के रूप में प्रयुक्त होता है—यथा 'अनुदरा' पतली कमर वाली (कड़ोदरी या अनुप-ध्यामा) । (च) अप्राप्त्यर्थ —बुर्गई, अयोग्यता तथा लघुकरण का अर्थ प्रकट करना यथा 'अकाल गत' या अनुपपन्न समय 'अकार्यम्' न करने योग्य, अनुचित, अयोग्य या बुरा काम । (छ) विरोध, विरोधी प्रतिक्रिया, वैपरीय यथा 'अभीति' नीति-विरोधता, अनैतिकता, 'अमित्र' जो शत्रु न हो, काला । उपसर्ग छ अर्थ निष्कारक अर्थों में एकत्र संक्षिप्त है नप्यादुष्यमभावश्च तदन्यत्र नदल्यता । अप्राप्त्यर्थ विरोधश्च नप्यादुः शब्द प्रकीर्णता ॥ दे० 'न' भी ।

बुद्धि शब्दों के साथ इसका अर्थ सामान्यतः 'नहीं' होता है यथा 'अवस्था' न अवस्था 'अपराध' न अपराध । इसी प्रकार 'असक्त' एक शत्रु नहीं ।

कभी-कभी 'अ' उपसर्ग के अर्थ को पभावित नहीं करता यथा 'अमृत्य', 'अमृत्य', यथास्थान ।

२ विषयार्थ छोटक अर्थवत्—यथा (क) 'अ वच-छम्' यहाँ यथा (आह, वच) (ख) 'अ पचति च वाम्' यहाँ वचन, निदा (चिक, छि) अर्थ की प्रकट करता है । दे० 'अकर्ण' 'अजीर्ण' भी । (ग) 'संबोधन' में भी प्रयुक्त होता है यथा 'अ वचन' (घ) इसका प्रयोग निषेधात्मक अर्थ के रूप में भी होता है । ३ भूतकाल के लक्षणे (नष्ट, लुप्त और लुप्त) की स्मरणता के समय धातु के पूर्व अन्त्य के रूप में आड़ा जाता है यथा अगच्छन्, अगमन्, अगमिष्यन् में ।

अच्छिन् (वि०) [नास्ति अन्त्य वच न० दे०] (यहाँ 'अ' का अन्त्य अर्थ माना गया) जो कबहार न हो, क्षयमुक्त (अच्छिन्) शब्द भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है ।

अञ् (सू० उप० अक्षयिन्ते) बाटना, बितरण करना, बाण में हिस्सा बाटना, 'अज्ञापयति' भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है । छि १ बाटना २ बाँटना देना ।

अञ् [अञ् + अञ्] १ हिस्सा, भाग, टुकड़ा; लघुप्रतीतिपति—मनु० १।४०० अञ् ८।१६—अञ्जो वसिष्ठानु-कृतता का० १५० अञ् २ संपत्ति में हिस्सा, भाग स्वतंत्र—मनु० ८।४०८, १।२०१; बाज० २।११५ ३ भिन्न की लक्ष्यता, कभी-कभी बिन्न के रूप में भी प्रयुक्त ४ अज्ञात या वेदाज्ञ की कोटि ५ कंचा (माध्यम्यतः 'अञ्' के अर्थ में, 'अञ्' का प्रयोग होता है दे०) । सम० अञ्जः अज्ञतवत्, हिस्से का हिस्सा; अञ्जि (कि० वि०) हिस्सेदार, अज्ञतवत् ।

अज्ञतवत्—पृथ्वी पर देवताओं के अञ्ज को लेकर अज्ञतवत् आगिक अज्ञतवत्, तार इव वर्तमान इम० १५३; महाभारत के आदिपर्व के १४-१७ तक अध्याय, भाग हर, हरिण (वि०) उमरा धिकारी, महद-प्राप्ति पिष्टदोषहरणों पूर्वाभावे पर पर. याज० २।१३५-१३६ लघुवत्—अज्ञो को एक समान हर में सारा स्वर मुख्य स्वर भव्यकर ।

अञ्जः [अञ् + अञ्, मित्रया अज्ञाता] १ हिस्सेदार, महाभारत, लघु, भाग, कञ् और दिव्य ।

अञ्जम् [अञ् + ल्युट्] बाटने की क्रिया ।

अंशु (पु०) [अंश् + शिच् + लृच्] विभाजक, बाँटने वाला ।

अंशु (वि०) [अंश् लाति ला + क] साक्षीदार, हिस्सा पाने का अधिकारी । 2 = अंशल दे०

अंशु (वि०) (अश् इति) 1 हिस्सेदार, सहदायभागी, —(पुनर्विभाजक) सर्वे बांश्च समानि पात्रं २।११४, 2 भागों वाला, साक्षीदार ।

अंशु [अंश् + कृ] 1 किरण, प्रकाराकिरण चन्द्र, चन्द्र-चरण किरणों वाला, सूर्य, सूर्याशुभिभिर्भारविन्दम् —कु० १।३२, चमक, चमक 2 बिन्दु या किनारा 3 एक छोटा या सूक्ष्म कण 4 वागे का छोर 5 पोशाक, सजावट, परिधान 6 गति । सम० —अश्चक्य ओम का पानी, आश्वत्थ रश्मिपुत्र या प्रभामण्डल चर —वसि०, मृत्, वायु, अर्जुन-स्वाधिव-हस्त सूर्य (किरणों को धारण करने वाला या उनका स्वामी) —चन्द्रम् एक प्रकार का रेखी कपड़ा, आला प्रकाश की माला, प्रभामण्डल, आश्विन् (पु०) सूर्य ।

अंशुक [अंश् + क-अश्च सूत्राणि विधाय यस्य] 1 कपड़ा, सामान्यतः पोशाक । मिताशुका-चिक्रम० 4 9-अश्वशुकाक्षेपविलम्बितानाम्-कु० १।१६, स० १।२२, 2 महीन या सूक्ष्म कपड़ा —मेघ० १३, प्राय रेखी कपड़ा या मलमल । 3 ऊपर ओढ़ा जाने वाला वस्त्र कढ़ावा, जघोवस्त्र भी, 4 पता 5 प्रकाश की मद ली ।

अंशुल (वि०) [अंश् + मजुप्] 1 प्रमायुक्त चमकदार, —अश्विनिश्चरिबिभुमान् भाग० १०.२१ 2 नाचदार ।

—**आशु** (पु०) 1 सूर्य —आलजिन्दीरिवाशुमान् रघु० १५।१०, 2 सगर का पौत्र, विकीर्ण का पिता और असमयस का पुत्र ।

अंशुलकला—केले का पीठा ।

अंशुल (वि०) [अंश् प्रमा प्रतिमा वा लाति-आ + क] चमकदार, प्रमायुक्त ल आलक्ष्य मुनि ।

अंश् (पु० पर० असद्यति-असापयति) दे० अश्च
अंश् [अंश् + अश्] 1 भाग, लब्ध दे० अश्च, 2 कषा, असफल कर्षे की हड़की । सम० कूटः दैत्य या सौक्ष्मा का डिल्ल अथवा कुम्भ, कर्षों के बीच का उभार, —अश्च 1 कषों की रक्षा के लिए कषच 2 अनुच, कलक रीढ़ का ऊपरी भाग —आर. कषे पर रक्षा गया भार या बूझा —आरिक्, —आरिन् (वि०) (असे) कषे पर बूझा या भार डोने वाला —वि० अश्च (वि०) कर्षों की ओर पुंश हूमा, —युज्यवसविचति पञ्चमाख्या, —भा० १।२४ ।

अंशुक (वि०) [अंश् + लृच्] बलवान्, हृष्टपुष्ट, सक्तिशाली अश्वत्थ कर्षों वाला, —पुंश युगध्यायतबाहुरसल रघु० ३।३४ ।

अंश् (प्रा० आ० अंश्ते, अंश्तु, अंश्त) जाना, समीप

जाना, प्रयाण करना, आरम्भ करना, प्रेर० 1 भोजना 2 चमकना 3 बोलना ।

अंश्ति ली (स्त्री०) [अंश् + अति-अहादेशश्च] 1 भेंट, उपहार 2 व्याकुलता, कष्ट, चिन्ता, दुःख, बीमारी (वेद०) ।

अंश् (नपु०) —(अह-हमी आदि) [अंश् + असुन् हुक् च] 1 पाप-सहमा मर्दानमहमा विद्वन्, अलम् कि० ५।१३ 2 व्याकुलता, कष्ट चिन्ता ।

अंश्ति ली (स्त्री०) [अंश्, कितन् महादिवात् इट्] उपहार दान ।

अंश्ति (अंश्, कित्-अंश्ति गच्छन्त्यनेन) 1 पैर 2 पैर की जड़ नु० बर्ध 3 धार की संख्या । सम० च अंश् (पै०) मे पीने वाला वृद्ध स्क्वन् पैर के तलवे का ऊपरी हिस्सा ।

अंश् (प्रा० पर० अश्ति चाकत) जाना गाप बी नरत्त टंडा मेव चलयता ।

अंश्च [न कम्-सुलभमान का अभाव पीछे] शिर्षण पाप । **अंश्च** (वि०) [न व] गत्रा च नेत् (अवपानशील शिर्षादि) ।

अंश्चिच्छ (वि०) [न कित्-न० न०] जो सबसे छोटा न हो (जैसे सबसे बड़ा मन्त्र) बड़ा श्रेष्ठ छ नौतम बुद्ध ।

अंश्चि [न न] जो दुमारी न हो जो सब दुमारी न रही हो ।

अंश्च (वि०) (न व) 1 सम्म अपाहित्र 2 कर या चुकी से मुक्त 3 अक्षिप निबन्धा अकर्मण्य ।

अंश्चरन् [कृ आवेत्यन् न] अक्षिप कार्य का अभाव अकरणात् मन्दकरण श्रेय नु० अंश्चि की कहावतें 'सम थिग इज बेटर दैन नथिंग' (Something is better than nothing.) बेटर लैट दैन नैवर, (Better late than never) न होने से कुछ होना अच्छा है, कभी न होने से देर में होना अच्छा है ।

अंश्चरि (पु०) [नञ् + कृ + अर्जि] असफलता, निराशा, अप्राप्ति अर्जिज्ञात कोसने या शाप देने में प्रयुक्त, नन्माकराज्येवास्तु सिद्धा० भगवान् करे उनकी भागा पूरी न हो, उमे असफलता मिले ।

अंश्चर् (वि०) [न व] 1 जिसके काम न हो, बहुरा 2 कर्णरहित चं सौप ।

अंश्चर्च (वि०) [नञ् + कृत् + लृट् न व] डिग्मा ।

अंश्चर्च (वि०) (न व) 1 निष्क्रिय, आलसी, निष्क्रमा 2 दुष्ट, पतिन 3 (प्रा०) अक्षमक चं (नपु०) 1 कार्य का अभाव 2 अनुचित कार्य, दोष, पाप । सम० **अंश्चि** (वि०) 1 जिसके पास काम न हो, आली, निष्क्रमा 2 अपराधी, —**अंश्च** (वि०) कर्म से मुक्त या अनुचित कार्य करनेवाला, —जोन कर्मफल भीमने से मुक्ति का अनुभव ।

अकर्मक (वि०) [नास्ति कर्म यस्य, व० कप्] बहु किया
अकर्मक कर्म न हो (स्त्री० - अकर्मिका) ।

अकल (वि०) [नास्ति कला अवयवो यस्य, न० व०] अखंड,
भाग्यरहित, परब्रह्म की उपाधि ।

अकल्मस (वि०) [न० व०] 1 नमछट रहित, शुद्ध 2 निर्धात्र
(स्त्री० - अकल्मसा) बौद्धी, ब्रह्मा का प्रकाश ।

अकल्प (वि०) [न० व०] 1 अनियमित, क्रम पर कोई
नियंत्रण न हो, 2 दुर्बल, अयोग्य 3 अनुत्तरीय ।

अकल्पात् (अव्य०) [न कल्पात् न० त०] अनात्मक,
एकाएक, सहसा आकस्मिक रूप से अकल्पादात्मना
सह विश्रामो न युक्त - हि० ११२ अकारण बिना
किसी कारण से व्यर्थ ही नाकल्माश् शास्त्रो-
माता विश्वोपाति तिलोत्तमात् पृ० २६५-२७५ त्वा
त्यनेदकस्मात्प्रातिगर्यवत्त रप० १६१५५ ३३ ।

अकल्पात् (वि०) [न० व०] 1 आकस्मिक अथ यादृश,
-सहसा पुनराकाशविपरीतदाशय उत्तर० ६११ मा०
५१३१, 2 जिसमें वना या शस्त्री न हो । सम०

-आल (वि०) सहसा उत्पन्न या उत्पत्ति - आश-
ब्दम् कोष वाङ्मयादि का अप्रामाणिक प्रदर्शन यान
आकस्मिक घटना वातञ्जाल (वि०) जन्म होने से
मर जाने वाला, शुल्भ अनात्मक गुण का दंड ।

अकाले (वि०) [प्रत्ययार्जन रूप से, एकाएक, सहसा,
-अर्थाकृतेन वरण सन इत्यकाळे त्वहीति घना कनिवि-
देव पदानि गत्वा - शा० २११२ ।

अकाल (वि०) [न० व०] 1 इच्छा, राग, या प्रेम से मुक्त
2 अनिच्छुक, अतिलालची, 3 प्रेम से अप्रभावित, प्रेम
की अधीनता से मुक्त, वा० १२३३ 4 अचेतन अनाश्रय ।

अकालतः (क्रि० वि०) [अकाल-तस्मिन्] अनिन्मापूर्वक,
वेमन से, बिना इरादे के, अनजानपन से इतरे
कृतवतस्तु पापान्तेत्यान्वकामत मनु० ११२४२ ।

अकाल (वि०) [न० व०] 1 शरीररहित, अगरी 2
राहु की एक उपाधि 3 परब्रह्म की उपाधि ।

अकाल (वि०) [न० व०] कारणरहित, निराधार स्वतः -
स्फूर्त, -जन्म कारण प्रयोजन या आधार का अभाव -
कारणकारणमेव दर्शन विद्यामन्त्रे रतये न दीयते कु०
५७ अकारजम्, अकारजात्, अकारणे - (कु० वि०)
बिना कारण के, सयोगवत्, व्यर्थ ।

अकार्य (वि०) [न० व०] अनुपयुक्त -यम् अनुचित या
बुरा काम, अपराधपूर्ण कार्य । सम० कारित्
बुरा काम करने वाला, जो बुरा काम करे, कर्तव्य
विपक्ष ।

अकाल (वि०) [न० व०] असामयिक प्राक्कालिक ल
गलत समय, अशुभ या कुसमय, (किसी बात के लिए)
अनुपयुक्त समय - अयाधको हि नारीनामकालजो
मनोवधः - रप० १२३३१ सम० अशुभम् - पुण्यम्

असमय पर मिलने वाला फल, - कल्पात् बिना अतु
के उपजा हुआ कुम्हका (आल०) व्यर्थ जन्म, - ज,
- उत्पन्न, - जाल (वि०) बिना अतु के उपजा हुआ,
प्राकालिक; - - अक्षयोद्य, - मेघोद्य, 1 असमय में
बादलों का उठना या इकट्ठा होना, 2 कुहारा, घुब,
बेला अतु के विपरीत या अनुपयुक्त समय, - लह
(वि०) 1 समय की हानि या देरी को सहन न करने
वाला, अधीर, 2 गड़ की आगि बुझने के साथ अधिक
समय तक न टिकने वाला ।

अकिञ्चन (वि०) [नास्ति किञ्चन यस्य न० व०] जिसके
पास कुछ भी न हो, बिल्कुल गरीब, नितांत निचैन -
अकिञ्चनः सन् प्रभव म सत्यदाम् - कु० ५१७१ ।

अकिञ्चिन्ना (वि०) [अकिञ्चित् - हा - क] कुछ न जानने
वाला, निपट अज्ञानी, मनु० २८८ ।

अकिञ्चित्कर (वि०) [उप० म०] 1 अर्थात्, परतत्त-
मदमकिञ्चित्कर च - वेणी० ३ । 2 भोला मोहा ।

अकुष्ठ (वि०) [न० व०] 1 जो ठंडा न हो, जिसकी
गर्त अबाध हो आश्विनप्रहाराकुष्ठपरदो - वेणी०
- २, 2 प्रबल काम करने योग्य 3 शिखर 4 अत्यधिक ।

अकुल (वि० वि०) कही से नहीं (इसका प्रयोग केवल
ममस्त्वयो में होता है) । सम० अल, जिस का
नाम भय (वि०) मुरझित जिसे कभी से भी भय
न हो मादुशानामपि अकुलोभय मन्वाचो वात -
उत्तर० यानि बोधयुक्त, - दर्शन व पदान्यामस्त्राबोधने
(पाठान्तर) अपराधमूलान् - उत्तर० ५१३५ ।

अकुप्यम् (वि०) [न० त०] 1 बिना झोट की धातु, सोना
चंदी, 2 कोई भी झोट की धातु ।

अकुशल (वि०) [न० त०] 1 अशुभ, दुर्भाग्यवस्त, 2 जो
बतुर या हांगियार न हो, - लम्ब अमगल, दुर्भाग्य ।

अकूपार [नञ् - कृ - अ - कृ] 1 समुद्र 2 सूर्य 3
कछुआ 4 कलुषों का राजा जिस पर पृथ्वी का भार
है 5 पन्थर या बट्टान ।

अकुल (वि०) [न० व०] कठिनाई से मुक्त, - अकुल
कठिनाई का अभाव सरलता, सुविधा ।

अकुल (वि०) [नञ् - कृ - स्त] 1 जो किया न गया
हो, 2 गलत या मिथ्य तरीके से किया गया 3 अचूरा,
जो तैयार न हो (जैसे रसोई), 4 अनिश्चित 5 जिसने
को : काम न किया हो 6 अपक्व, कच्चा; - - ता जो
बेटी होने पर भी बेटी न मानी जाकर पुत्रों के समकक्ष
समझी जाय - तं (नपु०) कार्य जो किया न गया हो,
काम का न किया जाना, जो काम कभी मुना न गया
हो । सम० - अवे (वि०) असफल, - अक्षय (वि०)
जिसे हथियार बनाने का अभ्यास न हो, अक्षयन्
(वि०) 1 अज्ञानी, मूर्ख, असनुमिद भस्तिष्क का 2
परब्रह्म या ब्रह्म के स्वरूप ने भिन्न, उग्रह (वि०)

अविवाहित, —कन्य (वि०) अनपराधी, —अ (वि०)

कृतज्ञ —की, —कुडि (वि०) अज्ञानी ।

अकृष्ण (वि०) [नम् + कृष् + क्त] जो जोटा न गया हो ।

अन —अन्ध, —रोहिण्य (वि०) बिना जुते सेत में

बढ़ने वाला या पकने वाला, बहुधा मत से बढ़ने वाला

—अकृष्टपञ्चा इव अत्यन्तपरः—वि० १११७, रघु० १४१७ ।

अनका (स्त्री०) [अन् + कन् + टाप्] माता, माँ ।

अन्ता (वि०) [अन् + क्त] लगा हुआ, अविच्छिन्न, (इसका

प्रयोग सामान्यतः समस्त पदों में होता है जैसे 'मृतान्तः')

—अन्ता रात ।

अनन्तम् [अन् + क्त] कश्च (वर्णम्) ।

अनन्त (वि०) [नास्ति अन्तो यस्य—न० व०] अन्त्यवस्थित

—अ [न क्रम—न० त०] क्रम या व्यवस्था का

अभाव, अक्षरही, अनियमितता 2 भीति का उत्पन्न ।

अनित्य (वि०) [नास्ति किञ्च यस्य—न० व०] किञ्च क्षुब्ध,

मुलत—आ [न० त०] किञ्चाक्षुब्धता, कर्तव्य की उपेक्षा ।

अनुर (वि०) [न० त०] जो निर्दय न हो —र एक

बाव जो कृष्ण का मित्र और चाचा था ।

अन्येष (वि०) [नास्ति कोचो यस्य—न० व०] कोच रहित

—अ [न० त०] कोच का अभाव या उत्पन्न वयन ।

अनिलम्ब (वि०) [नम् + क्लिप् + क्त] 1 न बका हुआ,

स्नेहा रहित, अनश्वक 2 जो विनम्र न हो, अविमल

अ० ५११९ ।

अन् [म्वा० स्वा० पर० अक० सेट्] (अक्षत—अक्षोति,

अक्षित) 1 पहुँचना, 2 म्यान् होना, पैटना 3 खित होना ।

अक्षः [अक्ष + अक्ष—अक्ष + अक्ष] 1 घुरी, घुरा 2 नाड़ी

के बीच में लगा लकड़ी का वह भाग जिसमें लोहे

या लकड़ी की छड़ छड़ फसाई हुई होती है जिस

पर पहिवा चलता है 3 नाड़ी, लकड़ा, पहिवा 4 तराजू

की दंडी 5 भीमिक अक्षोष 6 पीछर, पीछर का पासा

7 अक्ष 8 कर्ष नामक १५ मासे की एक तोल 9 बहेरे

(विभीषक) का पीवा 10 हाँप 11 मक्ख 12 आत्मा

13 शान 14 कानूनी कार्य विधि, नुकसान 15 अक्षोष,

—अक्ष 1 इन्द्रिय, इन्द्रिय-विषय 2 सामुद्रिक कवच 3

नीला घोड़ा । अक्ष०—अक्षकील (अक्षः) घुरे की कील

—अक्षकल पीछर का छप्पा, —अक्षकलः घुरारी

—अक्षः सन पिछोव में सामने की रेखा,

—अक्षक (वि०)—अक्ष (वि०) जुवा खेलने में

निपुण, —अक्षः नाँव की घुराही कोषिक (वि०)

—अ (वि०) पीछर खेलने में कुशल—अक्षः जुवा

खेलना, पीछर खेलना—अक्ष 1 अल्पज्ञान, अज्ञान, 2

बल 3 हीरा—अक्षः निपुण; —अक्ष—अक्ष जुवा खेलने

की कला या विद्या; —अक्षक—अक्ष 1 म्यायावीश

2 घुर का अक्षोषक; —अक्षिण घुरारी, अग्रवाह; —

अक्ष पीछर का खेल, जुवा; —अक्षः अग्रवाह, घुरारी,

—अक्षिणः नाड़ी में जुता हुआ बीच या साँव—अक्ष

1 म्यायावीश 2 कानूनी दस्तावेजों के रखने का स्थान

अक्षकः कानून का पठित, म्यायावीश, —अक्षः पाना

लेकना, —अक्षः गीतम अक्षि, म्यायवर्धन के प्रवर्धक

या उसके अनुवादी, —अक्षः—अक्षः अक्षरेखा,

अक्षोष । अक्षः गारीभर बोझ, —अक्षः—अक्ष

वशासनात्मा, हार इतोऽनन्तप्रणयी तथा कर

कु० ५१११—अक्षः जुए का व्यवसयी, पासो में

प्रधान, कनि नामक पासा; अक्षः जुवा-जाना, जुए

की मेज, हूबह जुए में पूर्ण दक्षता या निपुणता ।

अक्षयिक (वि०) [न० त०] स्थिर दृढ़ या अक्षय न

हो जो बोड़ी देर रहने वाला न हो, दृढ़तापूर्वक जमा

हुआ, (ताक लगाने या टकटकी के समान) ।

अक्षत (वि०) [नम् + क्षण् + क्त न० न०] (क)

जिसे बोट न लगी हो (अमन्य कथमक्षता रति

कु० ४१९) जो टूटा न हो, सम्पूर्ण, अविमल त

1 पिब 2 कूट फटक कर रूप में मुखाए गए आचल ।

ताः (बहु०) अनट्टा अनाज, सब प्रकार के

घाथिक उत्सवों पर काम जान वाले पिछोव, कूटे तथा

अन से धाये हुये आचल साजतपावहस्ता रघु०

२१२१ 3 जो सब त 1 आचल, किसी भी प्रकार का

अनाज 2 हिमका (पु०मी), ता कुमारी,

कन्या । अक्ष० अक्षि (स्त्री०) बहु कन्या जिसके

माथ सभोग न किया गया हो अक्ष० १११७ ।

अक्षय (वि०) [न० त०] अयोग्य अक्षयर्ष अक्षयिण्यु,

अक्षीर, रघु० १३१९ आ 1 अवैय, ईर्ष्या, 2 कोच

आवेश ।

अक्षय (वि०) [न० व०] जिसका नाश न हो, अनश्वर,

अक्षय, —अक्षयनाशाक्षिरिवायमक्षयम् रघु० ४११३।

अक्षयः सुतीका (स्त्री) वैशाखमास के शुक्लपक्ष की

तीर्थ ।

अक्षय (वि०) [न० त०] जो क्षय न हो सके, अविनाशी

—अक्षयः अक्षयमासमक्षय दक्षत्यारभ्यका हि न. त०

२१२३ ।

अक्षर (वि०) [न० न०] । अक्षिनाशी, अनश्वर —कु०

३१५०, अक्ष० १५१९ 2 स्थिर, दृढ़ 1—र

क्षि 2 विष्णु । —र। (क) वर्णमाला का एक

अक्षर अक्षराणामक्षरोऽस्ति अक्ष० १०१३३ अक्षर

आदि । (क) कोई एक व्यक्ति, —एकाक्षरे पर अक्ष०

अक्ष० २१८३ (ग) एक या अनेक वर्ण, अक्षरिण्यसे

नाथा—अक्षिषाक्षरविष्णुविष्णुवम्—अ० ३१२५ 2

दस्तावेज, लिखावट (बहुव), 3 अक्षिनाशी आत्मा,

अक्ष० 4 पानी 5 आकाश 6 परमानन्द, नील । अक्ष०—

—अक्षे अक्षों का अक्षे; —अक्षे (पुं) अक्षः—अक्षः (क)

मिथिक, लेखक, मकलमवीत । इसी प्रकार 'बीचक' 'बीची', 'बीचिक' पेछेवर लेखक । खुलत कं किसी बजार के कपट होने के कारण दूसरा ही अर्थ निकलना ।
 छवत् (नपुं०) बुलं बर्नो की संख्या से बड़ा छंद या वृत्त जलनी तुलिका सरकंवा या कलम ।
 - (वि०) स्वात् 1 लिखना, वर्षकम 2 वर्षमाका 3 वेद भूमिका तत्परी एषु० १८।४६ मुष्क विद्वान् विद्यार्थी । वजित (वि०) वसिजित बिना पड़ा मिला । विका (स्त्री) गुह्य वस्त्रों की विद्या ।
 संस्वान् वर्षविन्यास लिखना वर्षमाका ।

अक्षरक [स्वायं कन्] स्वर, अक्षर ।

अक्षरश (क्रि० वि०) [अक्षर + शस् (बीष्पायं)] एक एक अक्षर करके 2 शब्दश शब्द शब्द करके ।

अक्षवर्ती (स्त्री०) [अक्ष + मतुप् + कीप्] खेल वाले द्वारा खन जुग का न ।

अक्षति (स्त्री०) [न० व०] अमहिष्णुना स्पृष्टा ईष्या ।
 अक्षार (वि०) [न० व०] इतिम अक्षरहित । र प्राकृतिव स्वयं ।

अक्षि (नपुं०) अक्षनसे विषयान् अक्ष + चित् । (अक्षिणी अक्षणि अक्षणा अक्षन जाति) 1 अक्षि 2 दो की सम्पत्ति । सम० कच सपकी-एषु० १४, ६३ । कूट कटक मोल तारा अक्षि का इला अक्षि की पुस्तकी । गत (वि०) 1 दुष्यमान उपस्थित शि० १८।१ 2 अक्षि वं रडकन बाला अक्षि का काँटा, वृणित 'नोऽहमस्य हाम्बो ज्ञान वण० १२१ ।
 अक्षय्य—आयन् (न०) पलक वटस 1 आल की चित्सी 2 चित्सी से सबड अक्षि का रोग चिकित्सि, चिकित्सि निरछा नखर अक्षय्यकी आँखों से देखना ।

अक्षयुज (वि०) [न० त०] नटना हुआ अक्षय 2 अविजित सफल-अक्षय्योऽयुजय वैष्णो १।२, 3 जो कूटा पीठा न गया हो अमाधारण शि० १।३२ ।

अक्षय (वि०) [न० व०] नेता से रहित बिना जुता ।
 न। अराव वत 2 (आल०) बुरा विद्यार्थी कुपात्र ।
 सम० बाधू (वि०) आमजान से विरहित ।

अक्षोट [अक्ष + ओट] अक्षोट (मरा० डोगरी अक्षोट) ।
 अक्षोभ्य (वि०) [न० त०] स्थिर कीर-एषु० १।३४ ।
 अक्षीहिनी (स्त्री) [अक्षाणां रक्षाणां सर्वेषामिन्द्रियाणां वा ऊहिनी व० त०] [अक्ष + ऊह + गिणि + कीप्] पूरी बतुराणी सेना जिसमें २१८०० एष २१८३० हाथी, ६५६१० घोड तथा १०९१५० पदाति हों ।

अक्षंड (वि०) [न० व०] जो टूटा न हो सपूर्ण समस्त अक्षंड पुण्याना फलमिव—श० २।१०—इम् (क्रि० वि०) निगमर, अक्षिराम ।

अक्षय (वि०) [न० व०] जो टूटा न हो, टूट न सके, पूरा, संपूर्ण,—नं न टूटना, निराकरण न करना,—न समय ।

अक्षयि (वि०) [न० व०] [न० व०] 1 न टूटा हुआ, 2 विष्णुरहित बाधारहित । सम०—अक्षय (वि०) सदा आनंदमय, —अक्षु नष्ट समय वा अक्षु जिसमें सदा की वांछि पुण्यादि उत्पन्न हों, (वि०) फलवाही ।

अक्षय (वि०) [न० व०] 1 जो बीना वा छोटे कद का न हो जिसकी सारीगिक वृद्धि न कही हो 2 अनप्य, वडा,—अक्षय्ये गयेण विराजमान—वस० 3 ।

अक्षत (वि०) [न० त०] न बुरा हुआ न रफनावा हुआ त, न 1 प्राकृतिक मील 2 मंदिर के सामने का पाकर ।

अक्षित (वि०) [न० व०] अक्षितम् अक्षितम् अक्षितम्—न० व० 1 संपूर्ण समस्त पूरा इसका प्रयोग अक्षय के साथ पाया जाता है—एतद्दि मतोऽक्षितम् मयमवाऽक्षितम् मनि मनु० १।५९ 'अक्षय' (क्रि० वि०) पूर्ण रूप से 2 भूमि जो परत की न हो बूनी हुई हो

अक्षेष्टिक १५० [न० व०] अक्षि + चिकन् न० व० 1 बुझ-मान 2 सिकारी कुत्ता ।

अक्षयि [न० व०] अपकीर्ति अपयश । सम०—अक्षय (वि०) अक्षयिका लज्जाजनक ।

अक्ष (स्त्री०) पर० अक्ष० सेट् अक्षि अक्षीत् अक्षिष्यति, अक्षित) 1 मयिष लीन से जाना टेढ़े सेढ़े चलना 2 जाना (अक्षि अक्षीत्-आदि) ।

अक्ष (वि०) [न० व०] अक्षीति-अक्ष + व० व० 1 अक्षने में असमय अक्षय्य न 1 बुझ 2 पहाड़, पत्थर 3 मोप 4 सूर्य 5 पत्त की संख्या । सम०—अक्षय्य पर्वत की पुरी पारंठी—अक्षय्य (पुं०) 1 पहाड़ी 2 पक्षी (बुझवासी) 3 अक्षय नामक वस्तु जिसकी आठ टांग मानी जाती है 4 सिद्ध,—अक्ष (वि०) पहाड़ों में बूमने वाला अक्षय, —अक्ष विद्याजीति ।

अक्षय (वि०) [अक्षय्यकालात् अक्ष-न० त०] न जाने वाला । अक्ष (पुं०) बुझ ।

अक्षयि (स्त्री०) [न० त०] 1 आशय वा उपाय का अभाव आशयशून्यता 2 प्रवेश न होना (आ० और बाल०) ।

अक्षयि (स्त्री) अक्ष (वि०) [न० व०] निस्त्वहय, निस्त्वहय, निरभय—आलमेनामगतिमादाय—वस १, ईक्षय्यमक्षि-का गति आ० १।३४६ ।

अक्षय (वि०) [न० व०] नीरोन, स्वस्थ, रोबरहित ।—अक्षयि बवाई 2, स्वास्थ्य 3 विषहरण विज्ञान ।

अक्षय्यार (पुं०) [अक्षय करोति—अक्षय, वृ + अक्षय्यमागमय] वेड, चिकित्सक ।

अक्षय्य (वि०) [न० व०] अक्षय्य—अक्ष + अक्षय्य न० त० 1 दुर्गम, न जाने योग्य, पहुँच के बाहर (आ० और

आल०) योगिनामस्यमयः आदि 2. अकल्पनीय, अवोध्य—आः संप्रदाता मनसोऽप्यगम्याः—शि० ३।५९। 'गम्य' के अन्तर्गत भी देखिए। सम०—रूप (वि०) अकल्पनीय तथा अनतिक्रान्त रूप या स्वभाव वाला—रूपा पदवी प्रयित्नुना—कि० १।९।

अगम्या (स्त्री०) वह स्त्री जिसके पास मैयुन के लिए जाना उचित नहीं, एक नीची जाति 'गमन' केवल जातिभ्रंशकराणि वा इत्यादि। सम०—गमनं अनुचित मैयुन, व्यभिचार गामिन् (वि०) अनुचित मैयुन करने वाला, व्यभिचारी।

अगर्भ (न०) [न गिरति; गृः उ न० त०] अगर्भ—एक प्रकार का चदन।

अगर्भताः, अगर्भस्थः [विन्यास्यम् अगम् अस्ति, अस + क्तिच्—शक०] [अग विन्यासल स्यायति स्तम्भानि—स्ये + क, वा अग कुम् तत्र स्थान सहज इत्यगम्य] 1 'हृम्भ' एक प्रसिद्ध श्रुति का नाम 2. एक नक्षत्र का नाम।

अगम्यः—अगर्भता, दे० ऊपर।

अग्राह (वि०) [न० व०] अग्राह, बहुत गहरा, अतल-अगाध-सखिलात्ममुद्रान्—हि० १।५२; (आल०) गभीर, सखिक, बहुत गहरा—सम्ब० ५० ६२१, —अग्य ज्ञान दयासिद्धोरागस्थानाया गुणा—अमर०, अग्राह, अवोध्य; - अः—बं गहरा छंद या दगर, मम०—अलः गहरा गालाब, गहरी झील।

अगर्भ [अग न गच्छन्तम् श्रुच्छति प्राप्नोति-अगु—श्रु + अगु] अग; धूम्यानि वायुगर्भाणि—मनु० १।२६५, 'हाहिन्' बरफुक आवयो।

अगिः [न गीयते दुर्जन गृ वा० क—न० त०] स्वर्ग। सम०—ओक्स् (वि०) स्वर्ग में रहने वाला (जैसे देवता)।

अगुच (वि०) [न० व०] 1. निर्गुण (परमात्मा के सबब में), 2. त्रिमये अन्धे गुण न हो गुणहीन—अगुचो-अमशोक—मालि० ३, —अः शेष, अगुच।

अगुच (वि०) [न० त०] 1 जो भारी न हो, हल्का, 2. (छंद में) अगु 3 जिसका कोई छिद्रक न हो; - कः (नपु० भो) अगर्भ की सुगन्धिता चक्री और वेक।

अगुच (वि०) [न० व०] बिना घर-बार का चुककड़, धाम।

अगोचर (वि०) [नारिण गोचरो गम्य-न० व०] जो इन्द्रियों द्वारा प्रत्यक्ष न हो, अस्पष्ट, वाचामगोचरा हर्षावस्थापसुसत्—अग० १६९, - रं 1 अतीन्द्रिय, 2. अप्रत्यक्ष, अज्ञेय 3. अज्ञ।

अगोचरी (स्त्री०) [अग्नि + ऐच् + कीच्] 1 अग्नि की पत्नी, अग्निदेवी स्वाहा 2. त्रेतायुग।

अगिः [अग्नि अग्नि गच्छति—अगु + नि नलोपश्च] आग

1. कोष, चिता आदि, 2. आग का देवता 3. तीन प्रकार की यज्ञीय अग्नि—गार्हपत्य, आहुवनीय और इक्षिण 4. अठरागि, पाचनशक्ति 5. पिरा 6. सोना 7. तीन की संख्या; इन्हें समास में जब कि प्रथम पद में देवताओं के नाम या विशिष्ट शब्द हो तो 'अग्नि' के स्थान पर 'अग्ना' हो जाता है जैसे 'विष्णु, अमलती; 'अग्नि' के स्थान पर 'अग्नी' भी हो जाता है जैसे 'पञ्चगव्य, वरुणी, यामो। सम०—अ (आ) गार्—रः, —आलयः—गृह अग्नि का मन्दिर—रघु ५।२५। अग्ने आग बरसाने वाला अग्ने, रंकिट, इसी प्रकार अग्ने, आधानं अग्नि की प्रतिष्ठा करना, इसी प्रकार अग्निहोत्र; आयेय वह ब्राह्मण जो अग्नि की प्रतिष्ठा रखता है, दे० अग्निहोत्र, —उत्पातः अग्निमन्त्रो उतात, उल्का या धूमकेतु आदि, —उत्पातः अग्नि का पुत्र, अग्निपूजा का मूल या मंत्र—कणः, स्तोत्र, चिनगारो, कर्मन् (नपु०) 1. अग्नि क्रिया 2. अग्नि में आहुति, अग्नि की पूजा, इसी प्रकार अग्यः निवर्तितान्त्रकायं का० १६, —कारिका 1 पवित्र अग्नि की प्रतिष्ठा करने का साधन, 'अग्नीय' नामक शब्द, 2. अग्नि कायं, काष्ठ भद्र, —कुक्कुट अग्नि-शलाका, —कुंड अग्नि को स्थापित रखने के लिए पण्डित अग्नि पात्र, कुम्भार, —तत्रय—भुतः कार्तिक्य जो अग्नि में उत्पन्न हुए चढ़ जाते हैं, दे० कार्तिक्य, —केतुः पूजा; —कोकः—विष्णु दक्षिण-पूर्व कोना त्रिमया देवता अग्नि है, —किया अन्वेषित किया, ओम्देहीक मन्त्रकार 2 दात्र किया, —कीड़ा आगशबाजी, राशनी; —गर्भ (वि०) आध्म्यन में आग रहते हुए, भी तमोर्मि-व-ग० ६।३, (भं) सूर्यकान्त मणि जिसे सूर्य की किरणों के स्पर्श में आग उत्पन्न होना माना जाता है, तु०-ग० २।३ (—भो) 1 ज्योतिष 2 पृथ्वी, —विष्णु (पु०) अग्नि की प्रशंसा करने वाला—मंत्रि-सामयनान्त्रिमिचित्—रघु० ८।२५, —अयः—अयनं—अयसा अग्नि की प्रतिष्ठा रखना, अयसाधान; —अ (वि०) अग्नि में उत्पन्न होने वाला, —अः—जातः 1. कार्तिक्य 2. विष्णु, —अ—जातमाना, इसी प्रकार अयम्; —विद्वा आग की लपट अग्नि, का सात त्रिवेद्यो (कराली पृथ्वी प्रवेता कोहिता नीललाहिता)। सुवर्णो पद्मगंगा व विद्वाः सत्य विधा-यमा ॥ मे मे एक, —तत्रय (वि०) बड़ता आहु आग के समान चमकने या चलने वाला; —अय प्रेता (स्त्री०) तीन अग्नियों (अग्नि के अन्तर्गत देखिए); —अ (वि०) 1 पीष्टक, क्षुधावर्द्धक 2 दाहक; —बात (पु०) मनुष्य का दाहकमें करने वाला, —वीचन (वि०) क्षुधावर्द्धक, पीष्टक; —वीचि, —वृद्धि बड़ी हुई पाचन शक्ति, अच्छी भूख; —देवा

कृतिका नक्षत्र — धारण पवित्र अग्नि को रखने का पात्र या स्थान अग्निहोत्री का घर, — चारण अग्नि को सदा पतिष्ठित रखना, — चारण (विष्णु) वा अग्नि-पूजा, — परिच्छिन्न वज्र के सारे उपकरण—मनु० ६४३, — चरीखा (रथी०) अग्नि द्वारा परोखा, — परोक्ष उवाकायकी पहाड़ — पुराण व्यास प्रणीत १/ पुराणा में म एक — प्रविष्टा (रथी०) अग्नि की स्थापना विशेष कर विवाह संस्कार की, — प्रवेष्ट — प्रवेक्षण अग्नि में उतरना अपने पति की चिन्ता पर किसी विधवा का मनो होना — प्रस्तर फलीता बकमक पत्थर, — बाहु ध्वजा -- ३ १ कृतिका २ मोता — भु (ननु०) १ जल २ साना — ३ अग्नि से उत्पन्न वानरज, — यजि सूर्यकान्त मणि फलीता — ४ यज — यज्ज पण्य या रश्मि द्वारा आग पैदा होना — यज्ज पालनशक्ति का मद होना मूल न लगना — यज्ज १ दत्ता २ द्वाद्वागमात्र ३ यज्ञ में आग रखना या आग में चढ़ने वाला समस्त का विधान पद० १ — यज्ञी रथार्थ घर, — यज्ञ्य पवित्र गार्हपत्य या अग्निहोत्री की अग्नि को प्रतिष्ठित रखना रज्ज — रज्ज् (पु०) १ इन्द्राय नामक एक मिट्टी का टाटा २ अग्नि की शक्ति ३ लोह — रज्ज अग्नि का बहु संसार ४ मम शिखर क नीचे गिरता है — रज्ज (रथी०) स्वाहा, दत्त की पत्नी यज्ञ अग्नि की पत्नी — रज्ज्य (वि०) पौन्यक — बाहु १ पूजा २ चरी — चर्यो (वि०) अग्नि को शक्ति ३ साना शरण-शाला — शाल अग्नि का मन्दिर बहु स्थान पर जहाँ पवित्र अग्नि रखी जाय — शलाघाय स्थापना इम वि० ३ — शिख १ दोषक राकेट २ अग्निमय बाण ३ बाणमात्र ४ कुसुम या केसर का पौधा ५ केसर शिख १ केसर २ साना — श्लत — श्लथ — श्लोत्र आदि द० — श्लुत — श्लम आदि — सत्कार १ अग्नि की प्रशंसा २ चिन्ता पर श्रव की दाह किया—नास्य कार्योपान-संस्कार — मनु० ५।६० रथु० १२।५६, — सत्त — सहाय १ हवा २ बगली कुत्तर ३ पहाड़ साक्षिक (वि० या क्रि० वि०) अग्नि को साक्षी बनाना अग्नि के सामने — पक्षबाण* पालवि० ४।१२ - - स्तुम् (पु०) १४ दिन से अग्निक चलने वाले वज्र का एक भाग — स्तोत्र (प्याम) वसन्त में कई दिन तक चलने वाला यज्ञीय अनुष्ठान या दीर्घकालिक संस्कार जो उपनिषदीय या एक आध्यात्मिक अंग है — होत्र १ अग्नि में आहुति देना, २ होम की अग्नि को स्थापित रखना और उभय आहुति देना, — होत्रिन् (वि०) अग्निहोत्र करने वाला, या बहु ब्यापक जो अग्निहोत्र द्वारा होमाग्नि को सुरक्षित रखता है।

अग्निमसत् (अग्नि०) अग्नि की दशा एक, इसका प्रयोग
समस्तपत्र में 'कु' वातु (जलाना, अग्नि करना) के
साथ किया जाता है—'न चकार शरीरमग्निमसत्—
रघु० ८१३२, न जलाया जना ।

अथ (वि०) [अङ्ग १ रत्न मन्त्रोपनिषत्] १ प्रथम, सर्वोपरि, मुख्य, सर्वोत्तम प्रमुख 'महिषी मुख्य रानी', २ अत्यधिक - च १ (६) सर्वोपरि स्थल या उत्कृष्टतम विन्दु (वि०) - मूलम्, मध्यम (आल०) तीक्ष्णता प्रदर्शना नामिका - माक का अग्रभाग समझा एव विद्या विज्ञानोपभवन - का० ३४६ - विज्ञान के अग्र भाग पर थी (अ० छोटी लिखर समझ - कौशिकी) पर्यन्त आदि २ सामने ३ किसी भी प्रकार में सर्वोत्तम ४ लक्ष्य उदरघ ५ आरम्भ ६ आधिक्य, अनिरेक मरम्भ परी ४ अब यह प्रथम पैर के अग्र में प्रकट हुना परी ५ इसका अर्थ होता है - 'पूर्वभाग' सामने न'क आदि उदा० 'पाद करण। सम० - बही। जो। क। कम। मंत्रमय मनु० ३।१०३ - आत्मन प्रथम आत्मन बान-आत्मन - पृष्ठ० १।१० - अथ अग्रहन् - ग नेता आर्गदर्शक मन्त्र आगे चलन वाला - गन्ध (वि०) श्रेष्ठ प्रथम अनीने रक्ते जाने योग्य - अ पक्ष पौर या उत्पन्न हुआ, - अ अग्रजन्मा बड़ा भाई - अत्येव मन्त्रोपनिषत् अ० - रत्न० १६०३ २ आग्रज - आ बही रहन इसी प्रकार 'जान' 'जानक' 'जान'। अग्रजन् (पु०) १ पहले जन्मा हुआ बड़ा भाई २ आग्रज एव० १३ - विज्ञान विज्ञान की लोक - शान्ति (वि०) पतित आग्रज आ मृतक आग्रज में शान्ति - शान्ति - हृत् आगे जाने जाने वाला पुत्र - हृत् आग्रज - बही० १।२२, रत्न० ६१२० - जी० (जी०) प्रमुख नेता - आयुष्मन् मन्त्रोपनिषत् - नाभ - रत्न० ५१४ पाद पैर का अग्रभाग हिस्सा पैर का अग्रभाग पञ्जा - पूजा आदर या सम्मान का सर्वोच्च या प्रथम 'ब्रह्म' - वेद्य जीने में प्राक्प्रकृता - नाभ - १ प्रथम या सर्वोत्तम अग्र २ अग्र शेष अग्र ३ नाक सिरा - नाभिम् (वि०) (शेषभाग) को पहले प्राप्त करने का अधिकार प्रकट करने वाला - भू - अ भूमि (स्त्री०) महत्वाकांक्षी ४ मुख्य या उद्दिष्ट पदार्थ - नाभ हृदय का मांस हृदय - ०५ रानीतन्त्र - बही० ३ - नाभिम् (वि०) नेत्रत्व करना सेना के आगे चलना प्रमुख से रणविजय-यमघवासी स० ३।२६ अग्रिम् (पु०) मुख्य वीर, रूप योद्धा लक्षानी यम द्वारा मनुष्यों के कार्यों का सेवा - जोला रखने की बही - लक्षणी (स्त्री०) प्रयात काल, कर्मपुनानुपरि मुक्तिर राजस्यस्यस्य - अ० ४ (पाठ०) - अ० - नाभि - नेत्रत्व करने वाला - रत्न० ९१३३, ५१३३ - हृत् (पु०) (—) कर, — नाभि

बालिगन-ताबदगाह बितर सकस्यस्युपासी प्रसीद-माल०
८।२, २ दाई, नसं; —बासा: अकगणित में एक
प्रकार की प्रक्रिया जिसमें १-२ आदि सख्याओं के
अदल-बदल से एक विशिष्ट भूलगा सी बन जाती है,
—बाबू (वि०) १. गोद में बैठा हुआ या किया हुआ
जैसे कि एक बच्चा २ मुगम, निकटस्थ, मुनम (वि०
५।५२); —बुका (या -बास्यन्) अङ्क का वह
भाग जहाँ सब अङ्कों का विषय सूचित किया गया हो
अङ्कमुख कहलाता है, इसी में बीज और फल का संकेत
होता है—उदा० माल० १ में कामटकी और भव-
कीकिता उस अंश का संकेत करने हैं जिसका प्रतिपक्ष
भूतिरन्म और अन्य पाषा हो करना है। इसमें अयवन्त
का नाम भी संक्षेप में बताया जाता है।—बिछा
मक्या-विज्ञान, अकगणित।

अङ्कन (अङ्क + न) विच्छ, प्रतीक २ विज्ञा करने की
क्रिया ३ बिछा लगाने के माधन, मृदा रचना आदि।
अङ्कति: अङ्क + अति, कुत्रम् अङ्क हो वा-अङ्कति:
अङ्कनिर्वा: १. रवा, २ अति ३ बड़ा ४ वह बाटण
या अतिशय करना है।

अङ्कदुत: [अङ्क + उत् + तानो, कुजी।

अङ्ककुर: [अङ्क + कुरन्] १ अङ्कता, विमलय, कोपल
—अङ्ककुरेण नरणा धन - ध० १।१० समस्तपद के
का में प्रथम दशका 'नृकोला' या 'तीक्ष्ण' अर्थ होता
है—नरकवन्तःप्राङ्कुगान-म० २० नृकोली दाद,
(आन०) कलम सतान प्रवा -अनेन कामगति कुप-
दङ्कले -ध० ३।११, २ पानी ३ ३धिर ४ बाल ५
रगोला, मृजन।

अङ्ककुरित (वि०) [अङ्ककुर + इतच्] नवगन्तवित् उत्पन्न,
'न मनमिजनेन विक्रम० १।१० माग काम ने किम
लय पैदा कर दिये हैं।

अङ्ककुश: [अङ्क + कुश] (लोहे का) काँटा या हथके
की छड़ी, (आन०) नियन्त्रक, मणोपक, प्रगापक,
निदेशक, दबाव या गोक-निगडकुश कब कवि निय-
त्रण में मुक्त होते हैं या उन पर कोई बन्धन नहीं
होता। म० ११: पोलवना, -अनेन कामगति कुप-
पङ्क -ध० १।११९; —दुर्धर दुर्दमन, धारिन्
(पु०) हाथीमान।

अङ्ककुलित (वि०) [अङ्ककुश + इतच्] अङ्ककुश में हाका
गया।

अङ्ककुलिन् (वि०) [अङ्ककुश + गिनि] अङ्ककुश रखने वाला।
अङ्ककुर: अङ्कुरा-दे० 'अङ्ककुर'।

अङ्ककुर: = दे० अङ्ककुश।

अङ्ककोट-रु-रु: [अङ्क + ओट-रु-रु] पिरते का वृक्ष।

अङ्ककोलिका [अङ्क + उल + क + टाप् वा अङ्क-पालिका
का अपभ्रंश] बालिगन।

अङ्कस्य (वि०) [अङ्क + स्यन्] दागने योग्य, चिह्नित या
अंकित करने योग्य, —अङ्क: एक प्रकार का रोक या मृदा।

अङ्क (चु० पर० अक० सेट) [अङ्कयति-अङ्कित्] १ पेट के
बल सरकना २ चिपटना ३ रकना।

अङ्क (म्वा० पर० अक० सेट) [अङ्कति, आनङ्क, अङ्कितुम्,
अङ्कित्] जाना, चलना: (चु० पर०) १. चलना, चक्कर
काटना २ बिज्ज लगाना।

अङ्क (अक०) [अङ्क + अन्] गबोचक अध्यय, जिसका
अर्थ है 'अच्छा' 'अच्छा श्रीमान्' 'निम्नन्तेह' 'मच'
'हाँ' 'जैसा कि' 'अङ्क' में, —अङ्क कश्चित्कुठनी तान,
—का० २०१: 'किम्' जग कर 'मका' अर्थ होता है
'किन्ना केष' 'किन्ना अधिक'—वृत्तन कार्य भवनी-
धराणा किमङ्क वास्तव्यवना नरिण-पञ्च० १।३१।

काठकाणा ने इसके निम्नान्वित अर्थ बताये हैं—
'क्षेत्रे च पुनरर्थे च मङ्कयाम्यप्यस्य'। हरे महाघने
चैव हगङ्कशब्द प्रयुज्यते। 'मङ्कयन्-रचना-छात्र
'निर्दिष्ट' का है २३३ भी दस:। स-१ शरीर
२ अंग या शरीर का अवयव—अंगानुनिर्माण—
विधौ विधान—कुमा० १।३३, ३ (क) किमी मङ्क
बन्तु का प्रमाण या विभाग एक खण्ड या अंग, जैसे

मन्ताङ्क गणयन्—चतुरङ्क बालम् अन् (क) सपुरक या
महायक लण्ड, पुनर (ग) अवयव मातृभूत पटक
—नदङ्कमयय मचवन्त महाकुरो—पद्य० २।१६, (ब)
विशेषात्मक गण गौणभाग गौण, महायक या आश्रित
अंग। आ मच बन्तु का महायक है। इसका विप०
है प्रदान' या 'अङ्क'—अङ्क, गौणमन्त्र सबेङ्कानि
रग पुन—सा० ५१३ (च) महायक साधन
या दण्ड ४ (अङ्क) शब्द का मूल रूप ५ (क)

नाटको में पाका संप्रयोग के उपभोग (ख) गौण
लक्षणों में युक्त सम्पन्न शरीर ६ छ की मक्या के
लिए आत्मकारिक कथन ७ मन, —गा: (पु० ब० ब०)
एक देश का नाम, उस देश के वासी—यह प्रदेश
बंगाल के वर्तमान भागपुर के आस पास स्थित है।
मम०—अङ्क, अङ्कोभाष: शरीर के अंगों का
समूह, गौण अंगों का मुख्य अंग से संबध या पोष्य
अंग का पोषक अंग से संबध (गौणमुख्यभाव, उप-
कार्योपकारकभाववत्: अविश्रान्तवृथासाधन-यङ्काङ्कित्व
नु भकर—का० प० १० (अनुवाह्यानुवाहकत्वम्)

—अधोष:—अधोश: अंग का स्वामी, कर्ष (पु०
राव, पति ईश्वर, अधोउबर), —अङ्क:
गैज, —अङ्क, —आल (वि०) १ शरीर पर उपा
हुआ, या शरीर में जन्मा हुआ, शारीरिक २ सुन्दर,
अलंकृत; —(ब):—अङ्कु १ पुत्र २ शरीर के बाल
(नप० भी), ३ प्रेम, काम, प्रेमावेश ४ बराबरसोरी,
मस्ती ५ एक रोग; —(जा) पुत्री; —(ब)

बछड़े को जन्म दिया है -रं [कि० वि०] अचिरैण, अचिराय, अचिरान् और अचिरस्य भी इसी अर्थ के श्रोतक हैं। 1 बहुत देर नहीं हुई, अभी कुछ पहले 2 हाल ही में, अभी, 3 शीघ्र जल्दी, बहुत देर न करके। सम० - अक्षु, - आधा, - क्षुति, - प्रभा, - भास्, - रोषिष् (स्त्री०) वि० श्री - शुविलासबचला लक्ष्मी - कि० २।१९ भासा नेत्रमा वानुलिप्ते -श० ७।७।

अचैतन्य (वि०) [न० व०] 1 निर्जीव अचेत -चेतन नेपु-मेध० ५ 2 बोधरहित अज्ञानी।

अच्छ (वि०) [नञ् + छ + क] स्वच्छ निर्मल पारदर्शक विशुद्ध -युक्ताच्छदन्तच्छविदन्तुरेयम् -उन० ६।७७ मय० ५१ -कि रत्नमच्छा मति -भार्गव० १।१८ -च्छ 1 स्फटिक 2 भाल-मु० 'मल्ल भी। सम० - उन्न [अच्छाद] (वि०) स्वच्छ जल वाला -इकादम्बरी में बहिन हिरण्य पर्वत पर स्थित एक झील -अल्ल-रीछ।

अच्छ-च्छा (अव्य०) वै० की ओर। कम कारक के साथ की तरफ।

अच्छन्वत् (वि०) [न० व०] 1 उपनीत न होने के कारण या गूढ़ होने के कारण वेद को न पढ़न वाला 2 छदरहित रचना।

अच्छाकार [अच्छ + वच् + क्त] सोमयाग का श्रुतिवर्ज हो जाता का महायक होता है।

अच्छिद (वि०) [न० व०] छिदरहित अज्ञान निर्दोष दोषरहित -अपच्छिद अपच्छिद अच्छिद श्राद्धकर्मणि सर्व भवतु अच्छिद बाह्यप्राणा प्रसादन -इ [न० त०] निर्दोष काय या दशा दोष का अभाव 'इष्ट बिना रुके आदि न अल्प तक।

अच्छिन्न (वि०) [न० त०] 1 अटूट लगातार चलन वाला, अनवरत 2 जो कटा न हो अविभक्त अज्ञान अवश्य।

अच्छोदयन् [नञ् -छुट् + जिच् + म्युट्] आवेट शिकार।

अच्छुत (वि०) [न० त०] 1 अपने स्वरूप में न गिरा हुआ बुद्ध, स्थिर, निर्विकार, अच्छ 2 अनवरत स्थायी -तः विष्णु, सर्वशक्तिमान् प्रभु, गच्छाम्यच्छुतदश नेत्र-काव्य० ५ 'यहाँ अ' का भी अर्थ है -दुष्ट जो वासनाओं का शिकार न हो। सम० -अच्छ बलराम या इन्द्र -अगज, -आत्मज, -पुत्र कामदेव कृष्ण और हस्तिनी का पुत्र -आधास्त, -बास पीपल का वृक्ष।

अक्ष (व्या० पर० अक० सेट० -आर्षेयवतुल लकारा में विकल्प से 'वी' आदेश होता है) [अक्षति वाजीत् अक्षितुम्, अक्षित-वीत] 1 जाना 2 हांकना, नेतृत्व करना 3 फेंकना (उपसर्गों के साथ इस वातु का प्रयोग केवल वेद में ही पाया जाता है)।

अक्ष (वि०) [न० त० -न जायते नञ् -अन् + इ] अक्षमा, अनादि -अक्षस्य गृह्णो जन्म-रघु० १०।२४ -अ

1 अक्ष सर्वशक्तिमान् प्रभु का विशेषण विष्णु, शिव ब्रह्मा 2 आत्मा, जीव 3 यश बकरा 4 मेघराशि 5 अक्ष का एक प्रकार 6 चन्द्रमा कामदेव। सम० -अक्षी (स्त्री) कटीको काकमाषी घमासा -अक्षिं छाया पशु -अक्ष बहरे और घोड़े -एक बक्रे और मेंढे -गर वज्रगर नामक भारी माप जो बहते हैं बर्गियों को निगल जाता है - (री) एक पीछे का नाम -मल्ल द० नी० अजागज -ओव, ओविक गडरिया इमी प्रकार - ५ -पाल, -मार 1 कमंड 2 एकपदेश का नाम (वज्रपान अक्षमर) ओव 1 अक्षमेर नामक स्थान का नाम 2 युधिष्ठिर का उपाधि मोठा ओविका अक्षमर 3 ओव का नाम जिस मराठी में बोला कहते हैं भूमी मराठीसी पीछे का नाम।

अक्षकष -अ [अक्ष विष्णु क ब्रह्माण वानारि वा + क] शिव का अनुच।

अक्षका-अक्षिका [स्थाय कन -ताप्] शरीर बकरी बकरी का बच्चा।

अक्षकाव -अ [अक्ष विष्णु क ब्रह्माण वानारि वा + व] शिव का अनुच।

अक्षकष [अक्षका विष्णु कन वानारि वा + क] शिव का अनुच।

अक्षकाव [अक्षका विष्णु कन वानारि वा + व] शिव का अनुच।

अक्षकष [अक्षका विष्णु कन वानारि वा + क] शिव का अनुच।

अक्षकष [अक्षका विष्णु कन वानारि वा + व] शिव का अनुच।

अक्षकष [अक्षका विष्णु कन वानारि वा + क] शिव का अनुच।

अक्षकष [अक्षका विष्णु कन वानारि वा + व] शिव का अनुच।

अक्षकष [अक्षका विष्णु कन वानारि वा + क] शिव का अनुच।

अक्षकष [अक्षका विष्णु कन वानारि वा + व] शिव का अनुच।

अक्षकष [अक्षका विष्णु कन वानारि वा + क] शिव का अनुच।

अक्षकष [अक्षका विष्णु कन वानारि वा + व] शिव का अनुच।

अक्षकष [अक्षका विष्णु कन वानारि वा + क] शिव का अनुच।

अक्षकष [अक्षका विष्णु कन वानारि वा + व] शिव का अनुच।

कच्चीरः [अध्व+ईरच्] पूर्ण विकसित पुष्प, बलवान्
दृष्टपुष्पः ५।

कत् [भा० प०] अक० वेद [अतति, अत-अतति] 1.
जाना, चलना, घूमना, लगातार चलते रहना 2 प्राप्त-
करना (बहुधा वै०) 3 बाधना।

कतद (वि०) [न० ब०] तदरहित, लड़ी डाल वाला, -दः
चट्टान, डलवा चट्टान।

कतथा (अध्य०) [नञ्+तत्+था] ऐसा नहीं, उचित
(वि०) अधिकारी, अनभ्यस्त।

कतवर्हम् (अध्य०) [नञ्+तदहम् न० न०] अनुचित रूप
से, अनुधिकृत रूप से।

कतव्युक्तः (सा० शा०) 'अनुद्धाही' एक अलंकार का
नाम जिसमें कि प्रतिपाद्य पदार्थ-कारण के विद्यमान
रहते हुए भी दूसरे के गुण का वर्णन नहीं करना-
काव्य० १०।

कतग्र (वि०) [स्त्री०-ग्री] [न० ब०] 1. बिना ढोरो
का, या बिना मणीत के तार का 2 बिना लगाम का
3 बिचारणीय नियम की कोश में बाहर की वस्तु जो
अनिवार्य रूप से बंधन की कश में न हो-तुल्य-
प्रवृत्तमतत्तम् सिद्धा० 4 मूर्तरहित या अनुभव भिन्न
किया।

कतग्र-अतिव्रित-अनग्रित-अनग्रित- (वि०) [नाम्नि नन्दा
पद्य न० ब०, न तन्दिन तत् न० न० न०, भाषाज्ञान,
अस्मान्, मतर्क, आगच्छक, अतश्चिन्ता सा स्वयमेव नृश
कान्-कु० ५।१२, रघु० १।३१९।

कतपत्-अतपत् (वि०) [न० ब०] वार्षिक तपश्चर्चा की
अवहेलना करने वाला।

कतर्क (वि०) [न० ब०] तर्कहीन, युक्तिरहित-कः [न०
त०] 1. युक्ति या तर्क का अभाव, वृथा तर्क
2. तर्कहीन ब्रह्म करने वाला।

कतर्कित (वि०) [न० न०] न सोचा हुआ, अप्रत्या-
शित, -तः (क्रि० वि०) अप्रत्याशित रूप से। सम०
-आगत, उपपन्न (वि०) अप्रत्याशित रूप से होने
वाला, अकस्मात् होने वाला-उपपन्न दर्शनम्-
कु० ६।५४।

कतल (वि०) [न० ब०] तल रहित, -ल [न० न०]
पानाल, -लः शिव। सम०-स्वपुत्र, स्वर्ण (वि०) तल
रहित, बहुत गहरा अपाह।

कतम् (अध्य०) [इदम्+तसि] 1. इसकी कोशा,
इसके (बहुधा तुलनात्मक अर्थ वाला) किम् परमतो
नर्तयसि माम्-मत् ३, ६ 2. इस या उस कारण
से, फलतः, सो, इस लिए ('यत्' 'यस्मात्' और 'हि'
का सहसंबन्धी-अभिहित या अख्यात) रघु० २।४३,
३।५०; कु० २।५. 3. यही से, अब से या इन स्थान
से; (-वरम्-अर्थम्) इसके परचात्। सम०-अर्थ,-

निमित्त इस कारण, फलतः, इस कारण से-युष्म
(अध्य०) इस ही लिए-अर्थम् अब से लेकर, इसके
बाद; -वर (क) इसके आगे, और फिर, (अपा० के
साथ) इसके परचात् (ब) इसके परो, इससे आगे,
भाग्यायत्तमत परम्-शा० ५।१६।

कतसः [अत्+असच्] 1 हुआ, बापु 2 भाग्या 3 अतसो
के रेशो में बना हुआ कपड़ा (यह शब्द बहुधा नप०
होता है)।

कतसी [अत्+असिच् ङीप्] 1 मन 2 घटमन 3 अकसो।

कति (अध्य०) [अन्+इ] 1 विज्ञापण और क्रिया-
विशेषणों से पूर्व प्रयुक्त होने वाला उपसर्ग-बहुत,
अधिक अनिष्ट, अव्यक्त, अस्पष्ट, अस्पष्ट, अस्पष्ट, अस्पष्ट,
वक्तृ कत् 2, वार्तिकों के आदि इतनी, क्रिया
और कृदन्त रूप में पूर्व भी प्रयुक्त होता है-स्वभावा
हृत्परिचिन्त्ये भाद 2 (क्रियाया के साथ) अत्र
परो, अति-ह-पर जाना, इसी प्रकार कम, अत्र
और 'वत्' आदि लेख अथवा वत् अति उपमा समझा
जाता है। 3. कत् 1 वक्ता वक्तव्य के मध्य,
परो पार करने हुए ध्यान प्रमाण प्रमाण, उपपन्न,
उपपन्न प्रमाणों के रूप में प्रमाण प्रमाण के
साथ या बहुवचन प्रमाण प्रमाण रूप में, अथवा
तत्पुरुष समास में भाग्यमन्त्र उक्तता और प्रमाणों के
अर्थ को पकड़ करता है अतसो, 'माय' प्रमाण
गो भाषणों माय 'राजन्' बहिरा राजा, अथवा
द्वितीय पद के साथ जगत् इमका अर्थ-आनन्दान्
होता है-यन् इम अथवा में द्वितीय पद में दूसरी
विशेषण होती है अतिमाय मायमन्त्रकान् आत्मा
आनन्दान् आनन्द इमो प्रकार अतिमाय, २०
'केश' अति देवान् अथ-मिद्धा० ५ (बृहस्प
जन्ता य पूर्व) अतिरहित अतिधिक अनिष्ट, उदा०
आबरः-आर्थात् आदर आभा 'अतिरहित आशा
इमो प्रकार अथवा, 'तुल्य', 'आनन्दः' इत्यादि (य)
अप्राय, अनुचित, अप्रमाण (अपुन्यता) तथा क्षेत्र
(निन्दा) के अर्थ में यथा अतिनिन्दम निन्दा मर्कित
न युक्त-मिद्धा०।

अतिक्रम 1 अनिष्टित कर्मणी 2 निरर्थक भाषण।

अतिक्रमं [अति+क्रय+क्युट्] बहुत अधिक परिश्रम,
अत्यधिक मेहनत।

अतिक्रम (वि०) [अतिक्रमन् कृताम्-अ० स०] कोई को न
मानने वाला, सोचे की भांति वश में न आने वाला।

अतिक्रम (वि०) [अत्युक्त कायो पश्य-ब० म०]
भारी डील डोल वाला, विज्ञानकाय।

अतिक्रम (वि०) [अत्युक्त कृष्ण-पा० न०] अति
कठिन, -पुष्ट बहुत बड़ा कष्ट, १२ राशियों तक
कठिन तपस्या करने का बत, अनु० ११।२१३-४।

अतिरमसः [प्रा० सं०] बड़ी चाल, द्रुत गमन हठवर्दी ।
अतिराज्य (पु०) [प्रा० सं०] १ असाधारण या उन्मुख
राजा २ राजा से बढ़ नर कर ।

अतिरात्रि [प्रा० सं०] १ अत्यधिकतम मात्र का एक एष्टिक
भाग २ रात्रि का मध्य भाग ।

अतिरिक्त (वि०) [अति + रिक्त् + क्त] १ आगे बढ़ा हुआ
२ फाल्गु ३ अत्यधिक ४ अतिरिक्त, उत्तम ।

अति (तो) रैक [अति + रिक्त् + क्त] १ अत्यधिक अति
शयता, महता, गौरव २ ममविह्वला, अत्यधिक
आहत्य ३ अनार ।

अतिरक्त (पु०) [अति + रक्त् + क्त] १ घुटना, (स्त्री०—रक्त,
एक अत्यन्त मन्दरी स्त्री) ।

अतिरौ (सो) मर (वि०) [अति + रौ + क्त] मन + श ।
बहुत बाजी यात्रा, बहुत रास बाला—स १ पत्र
जगली बकरा २ बहा बन्दर ।

अतिरञ्जन [अति + रञ्ज् + क्त] १ अत्यधिक उपवास
रचना २ अतिरञ्जन ।

अतिरिचिन् [(वि०)] [अति + रचि + क्त] गलतिया या
भूलें करने वाला ।

अतिरिचय (वि०) [अतिरिचयित वय यस्य—ब० सं०] बहुत
बड़ा, बड़ अधिक आय का ।

अतिरिचयिन् (पु०) [प्रा० सं०] १ आ बनें और आश्रमो
की धर्मार्था से परे हो ।

अतिरिचयन [अति + रचि + क्त] काम्य अपराध सामान्य
अपराध दण्ड से मुक्त इस प्रकार के दण्ड अपराधो
का वर्णन मनु न किया है—मनु० ८।२९०

अतिरिचयिन् (वि०) पार करने वाला दूसरो से आगे निकलने
वाला आगे बढ़ने वाला अतिरञ्जन करने वाला
उत्पन्न करने वाला ।

अतिबाध [अति + बध् + क्त] अतिबलोर गाली और
अपमान युक्त बचन, अत्यन्त शिष्टकी अतिबाधा
मितिभेत मन० ६।१७७ ।

अतिबाधिन [अति + बध् + क्त] बहुत बोधनेवाला
बागी ।

अतिबाधन [अति + बध् + क्त] १ बिताना, बापन
२ बहुत अधिक परिचय करना या बहुत बोधा उठाना
३ प्रेषण, भेजना, छुटकारा पाना ।

अतिबिकट (वि०) [प्रा० सं०] अतिबल—रः घृष्ट हाथी ।

अतिबिबा [प्रा० सं०] अतीव नास्तिक विद्वान् अतिबिबा का
पौषा ।

अतिबिस्तारः [प्रा० सं०] बहुत अधिक फैलाव, व्यापकता ।

अतिबुद्धिः (स्त्री०) [अति + बुद् + क्त] आगे बढ़ जाना,
अतिरञ्जन, अतिरञ्जना ।

अतिबुद्धिः (स्त्री०) [अति + बुद् + क्त] अत्यधिक या भारी
बुद्धि, बहुत विचक ६ विपत्तियो में से एक, दे० इति ।

अतिबुद्धि (वि०) [अतिबुद्धि बली बर्बादी कर वा—प्रा०
सं०] अत्यधिक, फाल्गु, सीमारहित,—र (वि० वि०)
१ अत्यधिकता स, २ बिना बुद्धि के, बिना मोक्ष के ।

अतिबुद्धिः (स्त्री०) [अति वि + बुद् + क्त] १ किसी
निग्रम या मित्रान का अनुचित विस्तार २ प्रवृत्ति में
अनभिज्ञत वस्तु का मिला लेना, ३ लक्षण में लक्ष्य के
अतिरिक्त अन्य अनभिज्ञत वस्तु का भी आ जाना
(-पाय में) जिसके फलस्वरूप वह वस्तुएं भी सम्मि-
लित हो जायें या लक्षण के अनुसार नहीं जानी चाहिए,
लक्षण के तीन दोषों में से एक ।

अतिरात्रि [अति + रात्रि + क्त] १ अत्यधिक, प्रबुद्धता,
उत्कृष्टता दीर्घ रघु० ३।६२, तस्मिन् विधाना-
तिगये विधानु रघु० ६।११, २ अत्युत्तम (गुण पर
और परिमाण अति की दृष्टि से), सत्तास में प्राय
विशेषणा के साथ प्रयुक्त होने पर 'अधिकता के
साथ' अर्थ होता है आसीदतिशयप्रेक्ष्य रघु० १७।
५५, (वि०) अत्युत्तम, अत्यधिक बहुत बड़ा
बहुल । मम०—उत्ति (स्त्री०) १ बढ़ाकर या अति-
गत्यास्तिपूर्ण ढंग से बढ़े हुए बचन, अतिरञ्जना २
अलकार जिसके मा० ६० कर न ५ शेष तथा काम्य
प्रकाशकर ने ४ भेद माने हैं ।

अतिरञ्जन (वि०) [अति + रञ्ज् + क्त] आगे बढ़ने वाला
(समाप्त में) बड़ा, प्रमुख, बहुल—अ अत्यधिक, बहुलावत,
बहुलता ।

अतिरञ्जन् (वि०) [अति + रञ्ज् + क्त] आगे बढ़ जाने
या बढ़-बढ़ कर रहने की प्रवृत्ति वाला ।

अतिरिचयिन् (वि०) [अति + रचि + क्त] १ अत्युत्तम,
प्रमुख—इवमुत्तममतिरिचयिन् अत्युत्तम वाक्याद् अतिरिचयि-
कचित्—काम्य० १ विचक० ५।२१ २ अत्यधिक
बहुल ।

अतिरिचयन [अति + रचि + क्त] उत्कृष्टता, अत्युत्तम ।

अतिरिचयिन् (वि०) [अति + रचि + क्त] आगे बढ़ने वाला,
आगे बढ़ जाने वाला ४ अत्यधिक ।

अतिरिचय [अति + रचि + क्त] अत्यधिक मात्र, बहा
हुवा मात्र (जैसे कि समय का), कुछ अवशेष ।

अतिरिचयिन् [अत्युत्तममतिरिचयिन्—प्रा० सं०] सर्वोत्तम
स्त्री से अत्युत्तम ।

अतिरिचय (वि०) [अत्युत्तममतिरिचयिन्—प्रा० सं०] १ बक में
कुत्ते के बढ़ा हुआ (जैसे कि लूबर) २ कुत्ते के भी बड़ा
बोता, —कथा देवा ।

अतिरिचयिन् (स्त्री०) [अति + रचि + क्त] अत्यधिक उपर्य
या काश्चित्, भारी काश्चित् ।

अतिरिचयन [अति + रचि + क्त] उन्नत करना,
बोधा देना,—परतिरिचयन० सं० ५।२५, आकाशकी,
आकाशकी ।

अतिसारः [अति + सृ + क्त्वं] 1 जाने बढ़ने वाला 2 नेता
अतिशयः [अति + शृ + क्त्वं] 1 स्वीकार करना,
देना - रघु० १०।४२, 2 अनुमति देना (जो अच्छा हो)
3 (नौकरी से) पृथक् करना, कार्यभार से मुक्त करना।
अतिशयन [अति + शृ + क्त्वं] 1 देना, स्वीकार करना,
हीना-कु० ३।३२, 2 उधारता, शान्तिपला 3 बच
करना 4 विद्योप।

अतिशय (वि०) [प्रा० सं०] सर्वोत्तम या सर्वोच्छेद, ई-
परकृत्य-अतिशययि सहाय - मुच० ।

अति- (सौ) - सारः [अति - शृ + क्त्वं] पवित्र,
शरीरों के साथ वस्तुओं का जाना।

अति(सौ)सारिन् (पु०) [अत्यन्त सारमति बल] अतिसार नाम
का दोष जिसमें बारबार चीख जाना पड़ता है, (वि०)
-अति(सौ)सारिन् (वि०) [अतिसारो बस्यास्ति-इति,
कुच०] अतिसार दोष से पीडित, पवित्र दोष से दूषित।

अतिशय (प्रा० सं०) अत्यधिक अत्राग, 'हु पापसकी-
स० ५, बुराई की आसक्ति में प्रवृत्त होता है।

अतिशय (प्रा० सं०) अत्यधिक तथा स्वर्गों के लिए
पारिभाषिक शब्द।

अतीत (वि०) [अति + ई + क्त] 1 परे गया हुआ
पार गया हुआ 2 जाने बढ़ने वाला परे जाने वाला,
गत, बीता हुआ आदि, भूत, संस्मृतकाल या
संस्मृतकाल अत्राग।

अतीति (वि०) [प्रा० सं०] ज्ञानेन्द्रिया की वृद्धि के बाहर
-य आत्मा या पुरुष (मन्यु ब्रह्म) परमात्मा, -क 1
प्रधान वा प्रकृति (सं० सं०) 2 जन (देवता)।

अतीति (अर्थ०) [अति + ई + क्त] बृद्धि, अधिकता के साथ, बहुत
अधिक, विशुद्ध, बहुत ही, 'अतीति' बृद्ध आदि।

अतीति (वि०) [न० सं०] अनुपम, बेजोड़, अद्वितीय अनु
कनीय, -क 'नित्य का सार' नित्य।

अतीति (वि०) [न० सं०] अनुपम अत्राग।

अतीति (वि०) [न० सं०] जो ठहरा न हो। सम-कर
दुई दो प्रकार अनुपम- 'रति', 'बामन्' रति
-र'।

अतीति (वि०) [न० सं०] जोड़ा सा वास।

अतीति (वि०) [न० सं०] 1 जो अत्यन्त ही न हो,
बुराई 2 दुर्दैव, 'रती' 3 विपत्ति, हाथी पदार्थ
शोकात्मक, अतीति-वि० - [पु०] [न० सं०] पृथका-
यन, अत्राग, अतीति-वि०।

अतीति (वि०) [न० सं०] 1 अतीति 2 अतीति के
साथ।

अतीति (सौ) अतीति [अतीति मित्य, अतीति मित्य, अतीति मित्य]
मती कहल जाते।

अतीति (वि०) [अतीति अतीति अतीति - अतीति, अतीति]
1 हुआ 2 सुई।

अतीति [प्रा० सं०] पावन शक्ति की बहुत अधिकता।
अतीति-वि० [प्रा० सं०] अतीति-वि० यज्ञ का दूसरा
ऐच्छिक भाग।

अतीति (वि०) [प्रा० सं०] निरकुश, निरन्तर में
रहने के अर्थोत्थ, उच्छ्वसल जैसा हाथी।

अतीति (वि०) [अतीति अतीति सीमा-प्रा० सं०]
1 अतीति, अधिक, बहुत बड़ा, बहुत बलवान्,
'अतीति-वि०' इति प्रकार 'अतीति' 2 संपूर्ण
पूरा नितान्त 3 अनन्त, नित्य, चिरस्थायी, किं वा
तत्कालान्तविद्योपयोगोपे हतवीरिते - रघु० १५।६५
कस्यात्पन्त मुचमपनितम् - मेघ० १०९, -न (अर्थ०)

1 अतीति बहुत अधिक, 2 हरेता के लिए आजी
वन जीवनभर। सम-अतीति नितान्त या
पूर्व सत्ताहीनता, नितान्त वर्तमानत्व, यत्त (वि०)
सरा के लिए गया हुआ, जो फिर कभी न आयेगा
कथमप्यन्तता न यो दहे - रघु० १।५५ - नास्ति
(वि०) 1 बहुत अधिक चलने वाला बहुत तेज या
शीघ्र चलने वाला, 2 अतीति अधिक, - नास्ति
(पु०) जो विद्यापी की धार्मिक गंगागार अपन मुद्रक
पात्र रहता है - संयोग 1 अनित्य सामीप्य, अतीति
नैरन्तर्य, कालाध्वनारत्य-तमगे- 2 अतीति
सहस्रित्य।

अतीति (वि०) [अतीति - पु०] 1 बहुत अधिक या
बहुत तेज चलने वाला 2 बहुत निकट 3 जो समीप
न हो, दूर, -क अनित्य सामीप्य अतीति पक्षी का
अत्यन्त समीप होना।

अतीति (वि०) [अतीति - पु०] 1 बहुत अधिक चलन
वाला, बहुत तेज चलन वाला - अतीति परंपरीया
न्यायपरन्तीया-अतीति-वि० - गाँव।

अतीति [अतीति - पु०] 1 चला जाना, बीत जाना।
दाल 2 संधानि उपसहार, अतीति, अनुपमिर्ति,
अतीति 3 अनुप, नाम 4 अतीति, चोट, दुर्दैव -
अतीति-वि० च अतीति - प्रा० १।१७९ 5 हुआ 6 दोष,
अतीति, अतीति 7 अतीति, अतीति।

अतीति (वि०) [अतीति - पु०] 1 बहुत अधिक या
बहुत तेज चलन वाला - अतीति परंपरीया
न्यायपरन्तीया-अतीति-वि० - गाँव।

अतीति [अतीति - पु०] 1 चला जाना, बीत जाना।
दाल 2 संधानि उपसहार, अतीति, अनुपमिर्ति,
अतीति 3 अनुप, नाम 4 अतीति, चोट, दुर्दैव -
अतीति-वि० च अतीति - प्रा० १।१७९ 5 हुआ 6 दोष,
अतीति, अतीति 7 अतीति, अतीति।

अतीति (वि०) [अतीति - पु०] 1 बहुत अधिक या
बहुत तेज चलन वाला - अतीति परंपरीया
न्यायपरन्तीया-अतीति-वि० - गाँव।

अतीति [अतीति - पु०] 1 चला जाना, बीत जाना।
दाल 2 संधानि उपसहार, अतीति, अनुपमिर्ति,
अतीति 3 अनुप, नाम 4 अतीति, चोट, दुर्दैव -
अतीति-वि० च अतीति - प्रा० १।१७९ 5 हुआ 6 दोष,
अतीति, अतीति 7 अतीति, अतीति।

अतीति (वि०) [अतीति - पु०] 1 बहुत अधिक या
बहुत तेज चलन वाला - अतीति परंपरीया
न्यायपरन्तीया-अतीति-वि० - गाँव।

अतीति [अतीति - पु०] 1 चला जाना, बीत जाना।
दाल 2 संधानि उपसहार, अतीति, अनुपमिर्ति,
अतीति 3 अनुप, नाम 4 अतीति, चोट, दुर्दैव -
अतीति-वि० च अतीति - प्रा० १।१७९ 5 हुआ 6 दोष,
अतीति, अतीति 7 अतीति, अतीति।

अतीति (वि०) [अतीति - पु०] 1 बहुत अधिक या
बहुत तेज चलन वाला - अतीति परंपरीया
न्यायपरन्तीया-अतीति-वि० - गाँव।

अतीति [अतीति - पु०] 1 चला जाना, बीत जाना।
दाल 2 संधानि उपसहार, अतीति, अनुपमिर्ति,
अतीति 3 अनुप, नाम 4 अतीति, चोट, दुर्दैव -
अतीति-वि० च अतीति - प्रा० १।१७९ 5 हुआ 6 दोष,
अतीति, अतीति 7 अतीति, अतीति।

2501
4-3-95

अवस्थाभार [प्र० न०] 1. वृषा, कलंक, निम्बा, रसायाना-
कारमवेवेतेषु पा० ५१११३४, 2 वृषा डील डील,
विशाल शरीर ।

अत्याचार (वि०) [आचार यति क्रम्य] मानी हुई प्रजाओ और आचारा के विपरीत चलने वाला, उपेक्षक, -ए आचारागुनोदित कार्यों का न करना, धर्म के विपरीत आचरण।

अव्याहित्य (वि०) [प्रा० स०] सूर्य की ज्योति से अधिक
 धमकने वाला, —अव्याहित्य हुतबलबुद्धे सवृत्तं तद्वि
 लेख —वेद्य० ४३ ।

अस्यामन्दा [प्रा० स०] मेषुन के प्रति उदासीनता ।

अध्याय [प्रा० स०] १ अतिक्रमण, उत्सृजन २ नाशिक्य ।

अत्याकृष्ट (वि०) [प्रा० स०] बहुत बड़ा हुआ, —उ, —वि
(स्त्री०) बहुत ऊँची पर्वत, अम्युदय ।

अवस्थाएँ [प्रा० १ । १ जीवन का सबसे बड़ा आश्रम
--संन्यास २ इस आश्रम में स्थित संन्यासिन।

अन्वयाहित (आन् + आ + वा + क्त) । बड़ी विरति नय,
दुर्मय, अनय, दुर्बटना न किमप्यन्वयाहितम् - श. ०
१, प्रायः किमप्यन्वयाहितक के रूप में प्रयोग हाय
वर्ष, हाय रे २ उद्ध तथा साहित्यिक कार्य पांडुरूपन
किमप्यन्वयाहितमापेष्टित प्रवेत वेणी. ३।

अत्युक्तिः (स्त्री०) [अति + कृत् + क्तृन्] बड़ा बड़ा कर
कहना, अतिशयोक्ति, अतिक्रष्ट रवीन्द्र चित्रण—
अत्युक्ती यदि न प्रकुप्यसि युष्माकां न नो मन्वसे—
जम्बूट०, वे० अतिशयोक्ति जी ।

अनुपुष (वि०) [उपपानतिश्रुतः—आ० व०] परीक्षित,
विपुला ।

अथर्व [भा० स०] । महान् चित्तान् वा मनन मभीर तर्कना,
2. कलकलकल ।

अथ (अथ०) । इदम् + नञ्-प्रत्यये, अन्धाकारश्च । इत
स्थान पर, यहाँ - अपि सति हिताऽपि कुलपति—स०
१, २, इह विषय में, बात में, मामले में, इत सब
में । तुम्-०-अन्तरे (कि० वि०) इसी बीच में,—अन्त
(पु०-०-अन्ता) सम्मानसूचक मिश्रण में 'आव-
रणीय' 'सम्माननीय' 'आचरणीय' अर्थ को प्रकट
करता है तथा उस व्यक्ति की ओर संकेत करता है
जो कष्टों के पास उपस्थित या निकट विचरमान हो,
दूरदर्शी या दूरों के लिए तत्पर अथवा दाय है, 'अन्तरी-
०-आचरणीय भीमती, (पु०) तत्प्रधानसम्मानार्थ
अन्तर्भावपि, अथ अन्तर् प्रकृतिभाव-स०-१,
अन्तर्भावार्थ परित्यागप्रत्ययवती कदाचै-स०-१ ।

अप्रत्यय (वि०) [अप्रत्यय — अप्र + त्यप्] 1 इस स्थान का, वा यहाँ से सबब रखने वाला 2 यहाँ उत्पन्न, यहाँ पाया गया, वा इस स्थान का, स्थानीय ।

अथ (पि०) [न० व०] निर्लज्ज, अधिनीत, अशिष्ट ।

अभिः(स० अभि) [अभ् + अभि] एक प्रसिद्ध अभि जो वेद के कई सूक्तों के प्रथम है। सम० —अभि, आभिः, अभिः, —नेत्रप्रभूतः, प्रभयः, अभिः चन्द्रमा, सु०, —अभि नमन-समन्व ज्योतिष्येतिषि ही —अभि २।७५।

अथ (अर्थ०)। अर्थ + व प्रयोगः ॥ १ मनसकथक मन्त्र जो किसी रचना के कारण में प्रयुक्त होता है—बीर त्रिलोक अनुवाद 'हंता' 'जब'—मन्त्र, कारण, अधिकार, किया जाता है। परन्तु यदि सही रूप से देखा जाय तो 'जब' का अर्थ मन्त्र नहीं है, तो भी इस मन्त्र का उच्चारण या ध्वन्यमान 'यम' का सूक्ष्म समझा जाता है, क्योंकि यह मन्त्र ब्रह्मा के कण्ठ से निकला हुआ माना जाता है—बोकाराकाशतत्त्वध्वन्य द्वारा ही ब्रह्मण पुरा। कंठ मन्त्रा विनियोगी तेन मान्यमिहा—अर्थात्। बीर इसी लिए हम साकारमाध्य में देखते हैं—ब्रह्मन्तिप्रयुक्त अक्षराब्ध सुखा मनसकारणवति, अथ निर्वचनम् अथ योगानुशासनम् (बहुधा वत में 'वति' मन्त्र का प्रयोग जाना जाता है—इति प्रयोगोऽङ्ग समाप्ता—आदि) २ तब, उमके पश्चात्—अथ प्रजानामपि प्रयति वनाय वेनु मुनीष - एव० २।१, प्राय 'वति' वा 'वेनु' का सहस्रवर्णी ३ वति, कल्पना करते हुए, मन्त्रा तो, ऐसी स्थिति में, वरतु वति—अथ कौतुकमोदेवामि— का० १४४, अथ मन्त्रमन्त्रमेव जलो किमिति मुखा मन्त्रिण वक्ष मुच्यन्ते—वेनी० ४, ४ बीर, इसी से तो बीर भी, इसी भाँति—बीमोऽकार्यन -मन्० ३ प्रत्य कारण करते समय वा पुण्ड्रे तमव, बहुधा प्रत्यवाचक मन्त्र के साथ—अथ वा नमनवती किमाख्यात राजवं स्त्री - व० ४, ६ समष्टि, सम्पूर्णता अथ वा व्याख्यासाध—अन्०, अथ हम 'जब' की (प्रवरण सहित) पूरी व्याख्या करेंगे ७ सदेह, अनिश्चितता—सम्बो निर्लोभात्मिक—मन्० १ तम० अवि (अर्थ०) बीर भी, बीर फिर आदि (—'जब' अधिकृत स्वामो पर),—किन् (अर्थ०) बीर क्या, हाँ, ठीक ऐसा ही, धिक्कृत ऐसा ही, अवश्य ही, व (अर्थ०) बीर भी, इसी प्रकार,—वा (अर्थ०) १ वा २ अधिकतर, क्यों, कदाचित्, पिछली बात को समझ करते हुए—नमिष्याम्युपहास्यताम्—अथवा इतनाकारे बसेप्रियम् -एव० १११-४, अथवा मुतु वस्तु हिंसितुम् - ला० ४५, हीरे कि न बहुकथाहमवथा रामेन कि हुक्कम्—उत्त० ११०।

अर्थात् (पु०) {अथ + अ + कनिष्ठा} : अग्नि और ओषध का
उपासक पुरोहित 2 अथर्वा ऋषि की उपासना—वाङ्मन्य,
(व० व०), अथर्वा ऋषि की उपासना, अथर्ववेद के
मूल, (पु०—अथर्वा तथा नपु०—अथर्व), 'वेद
अथर्ववेद जो बीषा वेद माना जाता है, तथा जिसमें

बन्धु-भास के लिए अनेक अवसरप्रार्थनाएँ और अपनी कुराहा के लिए तथा विपत्ति, पाप, बुराई, एष दुर्भाग्य से बचाव के लिए असंख्य प्रार्थनाएँ पाई जाती हैं, इसमें अतिरिक्त दूसरों देवों की भाँति इसमें भी शक्ति एव औपचारिक सत्कारों में प्रयुक्त होने वाले अनेक सूक्त हैं जिनमें प्रार्थनाओं के साथ-साथ देवताओं का अभिनन्दन किया गया है। सम०

—निधिः—विष् (प०) अथर्ववेद के ज्ञान का भंडार, बचावा अथर्व-ज्ञान से संपन्न मुबला अथर्ववेदा इत किया रघु० ८।४, १।१९।

अथर्वनि [अथर्वन् + इत् न टिलोप] अथर्ववेद में निष्ठा। अथवा इसमें निर्दिष्ट सत्कारों के अनुष्ठान न कुशल साधना।

अथर्वनि [अथर्वन् + अन् पु०] दीर्घ] अथर्ववेद की अनुष्ठान पद्धति।

अथवा—दे० अथ के अन्तर्गत।

अथ (अ० पर० सक० अन्टि) [अति, अन्—अथ] 1 जाना, निगलना, 2 नष्ट करना 3 दे० अर्द्ध, प्र० छिलवाना, सन्त० चिच्छेदना—आने की इच्छा करना।

अथ, अथ (वि०) [अर्द्ध + अथिप् अथवा] (समास न बन्ध में) आने वाला, निगलना।

अथर्वन् (वि०) [न० ब०] दलहीन अथु वह साँप जिसके अङ्गुली दाल तोड़ दिये गये हैं।

अथर्विन् (वि०) [न० त०] 1 जो दाया न हो अर्थात् दाया 2 जिसमें पुरोहितों का रक्षण न हो बाय बिना रक्षणा का (जैसे पन्न) 3 सरल, सुवर्णमना मूर्ख 4 अनुपस्थित, अरक्ष या अग्र, गवार, 5 अतिकूल।

अथर्व्य (वि०) [न० त०] 1 दण्ड का अनधिकारी, 2 दण्ड से मुक्त या बरी।

अथु (वि०) [न० ब०] क्लेशहित, बिना दाँतो का।

अथु (वि०) [न० त०] 1 न दिया हुआ 2 अनुचित ठीक से दिया हुआ 3 जो विवाह में न दिया गया हो, —सा अविवाहित कन्या—तब दान को रद्द कर दिया गया हो। सम०—आशयिन् (वि०) जो न दी हुई वस्तुओं को उठ कर के बाँटा है—जैसे कि बोर—पूर्व वह कन्या जिसकी स्याई न हुई हो—अदरा पूर्वजाकल्पते—आश० ४।

अथु (वि०) [न० ब०] 1 दन्त रहित 2 वह शब्द जिसके अन्त में 'अथ' वा 'न' हो,—कः चोद।

अथु (वि०) [न० व०] 1 जो दाँतो से सवध न रहता हो 2 दाँतों के लिए अनुपयुक्त, दाँतों के लिए हानि-कारक।

अथु (वि०) [न० ब०] अथुव, अथुव, पुष्कल।

अथर्वन् [न० त०] 1 न दिसना, अवलोकन, अनुपस्थिति, दिखाई न देना 2 (आ०) अन्तर्धान, लोप, भुक्ति अथर्वन् लोप पा० १।१।१०।

अथु (सर्व०) [प० स्त्री०] अन्तरी, नपु० अथु वह (किसी ऐसे व्यक्ति या वस्तु की ओर लक्ष्य करना जो अनुपस्थित हो या बसता क समीप न हो) इदमन् सन्निभुष्ट समीपनरवनि चैनदो रूपम्। अथमन् विप्र कृष्ट तदिति परोक्षे विज्ञानीयम्। यह 'यथा' 'साधने' अर्थ को भी पकड़ करता है। यन् के सहस्रवर्षी तन् के अर्थ में भी प्राय प्रयुक्त होता है। परन्तु अब कभी यह सबब बचन सन्नाय के पुरातन बंध प्रयुक्त होता है। (प्राज्ञी ने अभी बार) तो इसका अर्थ होता है 'प्रतिष्ठ' मुख्यान 'पुत्रा, द० १२ बी।

अथानु (वि०) [न० व०] 1 न देने वाला कुपण 2 अर्थको का बिबाह न करने वाला।

अथारि (वि०) [न० ब०] दूसरे गण की धानुषों का समूह जो 'अर्द्ध' से आरम्भ होता है।

अथाय (वि०) [नास्ति दायो यस्य न० ब०] जो (संपत्ति में) हिसके का अधिकारी न हो।

अथायथ (वि०) [न० व०] 1 जो उत्तराधिकारी न बन सके 2 [न० ब०] जिसका कोई उत्तराधिकारी न हो।

अथायिक (वि०) [स्त्री०—अथायिकी] [न रायमर्हति नभः + दाय + ठक् न० ब०] 1 जिसका कोई उत्तराधिकारी न हो जिसके कोई उत्तराधिकारी न हो अथायिक बन रायमर्हति कारण 2 [न० त०] उत्तराधिकार से संबंध न रखने वाला।

अथिनि (स्त्री०) [दातुं क्षतुम् अयाया दा० क्तिन्] 1 पुरखी 2 अतिदिन देवता, आदि-यों की माना पुराणों में इसका वर्णन देवों की भाँती के रूप में किया गया है, 3 बाकी 4 गाय। सम०—अथ, —अथय देवता, विष्णु प्राणी।

अथुर् (वि०) [न० त०] 1 जो दुर्मेय न हो अर्थात् पहुँचना कठिन न हो 2 [न० ब०] वह स्थान जहाँ किले न हो—'विषय एक दुर्बलित बन्ध।

अथु (वि०) [न० त०] 1 जो दूर न हो, समीप (काल की दृष्टि की स्थिति से),—१ सामान्य, परोक्ष—बलान्तूर किल चन्द्रमौल—रघु० ६।१२ जिसनी अथुर् बन्त इति अथुर्गवदा निबद्धा—अथुर्गव-स-रक्ष-दे-रक्ष (मन्त्रदान या हवध के साथ), अधिक दूर नहीं, बहुत दूर नहीं।

अथु (वि०) [नास्ति दम् अस्ति यस्य न० ब०] दुष्ट-हीन, अथा।

अथु (वि०) [नपु०—अथु + क्त] अथुप, अनदेखा, 'अथु'—जो पहले न देखा गया हो, 2 अननुमत् 3 अनुपस्थित, अनुपस्थित, निदा सोचा हुआ, अज्ञात 4

अहारम्—[न० त०] जो दरवाजा न हो, मार्ग या रास्ता जो नियमित रूप से द्वार न हो, —अहारेण न चातीयायु शानं वा वेधम् वा पुरम्—मन्० ४।७३ ।

अद्वितीय (वि०) [न० ब०] 1 जिसके समान कोई दूसरा न हो, बेजोड़, २: यानी, —न केवल रूपे शिष्येऽद्वितीया मालिका—मालवि० २, 2 बिना साथी के, अकेला, —यम् ब्रह्मा ।

अद्वैत (वि०) [न० ब०] 1 द्वैत हीन, एकस्वरूप, एक-स्वभाव, समभाव, अपरिवर्तनशील, "तं मुक्तुं नयो—उत्त० १।३९, 2 बेजोड़, लासानी एकभाव, अनन्य—तम् 1 द्वैत का अभाव, तादात्म्य विशेषतया ब्रह्म का विषय या आत्मा के साथ, या प्रकृति का आत्मा के साथ, दे० 'अद्वय श्री 2 परममन्य या स्वयं ब्रह्म । सम०—आधिन्—अद्वयवादिन् दे० ऊपर, वेदान्त का अनुयायी ।

अजय (वि) [अज् + जम्, यस्य स्थाने बाधेस] निम्नतम अजयतम अत्यंत कमीना, बहुत बुरा, नीच या निकृष्ट (गुण, योग्यता और पदादिक की दृष्टि से) (विप० उत्तम), —जः निर्लज्ज लम्पट, —बापि स्नातुमितो यतामि न पुनस्तस्याचमस्यान्निकम्—काव्य० १, —आ निकम्मी गृहस्वामिनी । सम०—अजयम् वैर, —अजयं नाभि से नीचे का शरीर, —अजय, —अधिकः कर्जदार (विप० उत्तमर्ण), —मृत, —मृतकः कुली, साइस ।

अजर (वि०) [नञ् + ज् + अज्] 1 नीचे का, अजर, निचला 2 नीच, कमीना, अजय, गुणा में नीचे दर्जे का, बटिया, 3 निचतर, दलित, --रः नीचे का (कमी ऊपर का) ओष्ठ, ओष्ठमात्र, —यस्वविबाधरोष्ठी—मे० ८२, पिबति रतिमर्बस्वमजरम्—शं० १।२४, —रज् 1 शरीर का निम्नतर भाग 2 अधिमात्र, व्याख्यान (विप०—उत्तर) कमी २ उत्तर के लिए भी प्रयुक्त होता है । सम०—उत्तर(वि०) 1 उच्चतर और निम्न तर अजरा और बुरा, —रात्र समजमेवावयो "अपस्तिमे विष्पति—मालवि० १, 2 नीच या निम्नत्व के, 3 उलटे इन से, उलट-पलट 4 निकटतर और दूरतर, —ओष्ठः नीचे का ओष्ठ, —छटः शीका का निचला भाग, —कन्यम् चुम्बन, शब्द० अजरोष्ठ को पीना, —अजु, —अजुतम् ओष्ठों का अमृत, —स्वस्तिकम् अजोविन्दु ।

अजरस्वामिन्, —रत्तः, —स्तान्, रान्—तान्, —रेष (अव्य०) नीचे, तले, निचले प्रदेश में ।

अजरीङ्ग (तना० उभ०) [अजर + ङि + ङ] आगे बढ़ जाना, पटक देना, पराजित करना ।

अजरीन् (वि०) [अजर + जन्] 1 नीचे का 2 निचल, कल-कित, तिरस्कृत ।

अजरीन् (अव्य०) [अजर + ण्यन्] 1 पहले दिन 2 परसों (जो बीत गया) ।

अजर्ष—[न० न०] 1 कर्षमानी, दुष्टता, अन्याय, अजर्षण अन्धकारपूर्वक 2 अन्याय्य कर्म, अपराध या दुष्टकृत्य पाप । बर्ष और अजर्ष न्यायशास्त्र में उचित २४ गुणों में दो गुण हैं और यह आत्मा से संबंध रखता है ये दोनों कर्मों मुख्य और दुष्कर्म के बलिष्ठ कारण हैं यह इन इन्धियों से प्रत्यक्ष नहीं हैं, परन्तु इनका अनुमान पुनर्जन्म तथा गर्भों के द्वारा उगाया जाता है 3 प्रजा पति या सूर्य के एक अनुश्रुत का नाम—अर्ष साकार बर्षमानी—अज् विजोषणो म रंतिन ब्रह्मा की उपाधि । सम०—आरक्षन् आरिन् (वि०) दुष्ट पापी ।

अजवा (न० ब०) विषया स्त्री ।

अजय अज (अव्य०) [अजर + अज् अजरगच्छादयस्यान अजादेशा] 1 तले नीचे—पतन्त्यश्च धाम विमर्शिन म त—शि० १।२, निम्नप्रदेश में नास्तीय प्रदेशा म या नरक में (प्रकरण के अनुसार अज गच्छ का अर्थ कर्मकारक का होता है—अज् आदि अपादान के साथ—अजो बुभान् पतिन या अजमकरण के साथ अजो गृहे शोने), 2 सर्वकारक के साथ सबबन्धन अव्यय की भांति प्रयुक्त क नीचे के तले अर्थ का प्रकट करते हैं—तक्षणात्—शं० १।१५, (अज विह किं की आनी है वा अर्थ होता है)—नीच-नीचे, तले तले—अजोऽथो गयेय पदमुपगता स्मोकम्—भर्तृ० २० १०, (कर्मकारक के साथ) नीचे से नीचे ही नीचे—नवानाधोऽथोऽब्रूत गयोपगता—शि० १।४। सम०—अजयम् अजोवत्, —अजवा, विष्णु—अजन् दे० ऊपर, —अजयन्तम् मैयुन—अजः हाथ का निचला भाग (करन), —अजयन् आगे बढ़ जाना, उगा देना, अपमानित करना—अजयम् अजर अंदर सुरम सोदना गति (स्त्री०)—अजयन्—अजय 1 नीचे की ओर गिरना या जाना, उतरना 2 अज पतन, द्वार गङ्गा (पु०) ब्रह्म, —अजर पार, विहिङ्गा उपविह्वा (मराठी में 'पडभीम' कहते हैं)—विष्णु (स्त्री०) अजोविन्दु, दक्षिण की दिशा, —दक्षि (स्त्री०) नीचे की ओर देखना—अज—गति दे० ऊपर, अस्तरः बाल का बना आसन विष्णु करते होते अप्सिधो के बैठने के लिए, भावः 1 शरीर का निचला भाग 2 किसी चीज का निचला हिस्सा—अजयम्, —जोकः—पानाम लोक, निम्नतर प्रदेश, —अजय, अजय (वि०) नीचे को मुक्त किसे हुए, संज्ञ 1 पंसाज, साहुज 2 बरी सरक रेखा, —अजय् अजानवाय्, अका-रा, स्वस्तिकम् अजोविन्दु ।

अजस्तम (वि०) [स्त्री०—नी] [अजय् + दम्, पुट् च] निचला, निम्न स्थान पर स्थित ।

अवस्ताम् (क्रि० वि० या सं० बो० अर्थ०) नीचे, तले, अवर, के नीचे, के तले आदि (संबंधकारक के साथ) दे० अर्थः धर्मेण गमनमूर्ध्व गमनमवस्ताद्वयव्यवर्धेण—सां० का० ।

अवाधार्मकः—अपाधार्मकः ।

अधारणक (वि०) [स्थायै कन् न० व०] जो लाभदायक न हो—कर्ममतस्त्यागम्—पञ्च० ७ ।

अधि (अर्थ०) [आ + पा + कि पृषो० ऋस्वः] 1 (धातु के साथ उपसर्ग के रूप में) ऊपर ऊपर, —०४४, अति उगना या ऊपर उगना, अधिकता के साथ भी 2 (पुष्पक क्रि० वि० के रूप में) आगे बढ़ कर, ऊपर 3 (न० बो० अर्थ० के रूप में) (कर्म० के साथ) (क) ऊपर, आगे, पर, में (ख) संकेत करने हुए, के संबंध में, के विषय में (ग) (अधि० के साथ) आगे, ऊपर (किसी पद पर प्रभुता या स्वाभिप प्रकाश करने हुए) अधिभूति राम 4 (न० सं० के प्रथम पद के रूप में) (क) मुख्य, प्रमुख, प्रधान, —०४४ देवता प्रमुख देवता (ख) अतिरिक्त, फालतु, —०४४ अध्याख्य दत्त, अधिक, अधिशेष, अत्यधिक परिगणित ।

अधिक (वि०) [अधि + क] 1 बहुत, अतिरिक्त, बृहत्तर (समास में सख्यात्रा के साथ) धन, से अधिक—अष्टाधिक धनम्—१०००८—१०८ 2 (क) परिमाण में बढ़कर, अधिक सख्यावाला, यष्ट, अधिक, बहुल—समास में या करण कारक के साथ (ख) अतिमात्र, बड़ा हुआ, से भरा हुआ, पूर्ण, कुशल—गिभूरधिक-व्या—वेपी० ३१३०, बड़ा, अधिक आयु का—मव-नेयु रसाधिकेषु पूर्वम्—सं० ७१२०, 3 बहुत, अधिकतर, बलवत्तर—ऊन न सत्वेन्द्रधिको बबाधं—रघु० २११४, बलवत्तर अन्तु ने अपने से दुर्बल अन्तु का शिकार नहीं किया 4 प्रमुख, असाधारण, विशेष, विशिष्ट—इज्याध्ययनदानानि वैश्वस्य अत्रियस्य च, प्रतिग्रहाधिको विपे याजनाभ्यापने तथा । या० १११८, सं० ७, 5 अतिरिक्त, फालतु—अनं अतिरिक्त अग्नं वायुं नाद्वेष्टकाला कन्या नाधिकाली न रात्रिणीम्—मनु० ३१८, कम् 1 अधिशेष, अधिक बहुत—लाभोधिक फलम्—अमर०, 2 अतिरिक्तता, फालतु, होना 3 अतिशयोक्ति के समान अलंकार, (क्रि० वि०) 1 अधिकतर, अधिक मात्रा में रघु० ४११, समास में इयमधिकप्रतीक्षा—सं० ११२०, सुरभि—मेघ० २१, 2 अत्यन्त, बहुत अधिक । सम० अग्न (वि०) [स्त्री०—गी] अतिरिक्त अग्न रखने वाला, —बर्हि (वि०) बर्हि कर कहा हुआ, —अवधम्—अतिशय कथन, अतिशयोक्ति वक्तव्य या वचन (चाहे प्रशंसा के ही या निन्दा के), —अद्वि (वि०) प्रचुर पुष्कल—रघु० १११५, —तिथिः (स्त्री०), —विषम्,

—विषयः बड़ा हुआ चाँद दिवस,—वाक्चोक्ति, (स्त्री०) बड़ा चढ़ाकर कहना, अनिशयोगित अलंकार ।

अधिकारणम्—[अधि + कृ + ल्युट्] 1 प्रधान स्थान पर रखना, नियुक्ति 2 संबंध, उत्प्रेषण, संपर्क 3 (ध्या०) अनुकंपता, लिंग, वचन, कारक और पुरुष की समानता, अन्वय, कारक चिह्न का द्वार शब्दों से संबंध 4 आशय, विषय उपान्तर 5 अधिकृतान, स्थान, अधिकरण कारक का अर्थ आधारेधिकरणम्—या० १। ४८५, 6 प्रस्ताव, विषय, किसी विषय पर पूर्ण तक, (मीमांसकों के अनुसार पूर्ण अधिकरण के ५ अंग होते हैं—विषयो विधायकैव पुर्वगस्त्यन्यथातरम्, निर्ययश्चेति मिद्वान्तं शास्त्रं, तस्य स्मृतम् ।) 7 न्यायालय, कचहरी, न्यायाधिकरण, स्वायत्तायुक्त कचहरी नाधिकरण—मृच्छ० ११३, 8 दावा 9 प्रभुता । सम०—भोजकः न्यायाधीश, मद्यः कचहरी या न्याय-मवन,—सिद्धान्तः ऐसा उपपहार जिसका प्रभाव औरों पर भी पड़े ।

अधिकारणिकः [अधिकरण + क्तृन्] 1 न्यायाधीश, दण्डाधिकारी मृच्छ० १, 2 राजकीय अधिकारी ।

अधिकार्यम् (न०) [प्रा० सं०] 1 उच्चतर या बढ़िया कार्य 2 अप्रोक्षण,—(यु०) जिसके ऊपर अभीक्षण का कार्य भार हो । सम०—कर,—हुय एक प्रकार का मेवक, कर्मचारियों का अध्यक्ष ।

अधिकर्मिकः [अधिकर्मन्—ठ] किसी मही का अध्यक्ष जिसका कार्य व्यापारियों से कर उगाहने का हो ।

अधिकामः (वि०) [अधिक कामो यस्य] 1 उक्त अधि-कामो, आवेशपूर्ण, कागदर, —सः उक्त अधिमाला ।

अधिकारः [अधि + कृ + ल्युट्] 1 अभीक्षण, देखवाळ करना 2 कर्तव्य, कार्यभार, सत्ताधिकार का पद, प्रभुत्व—होपिनस्त्राद्विधिकारी दत्तः पञ्च० १, स्वाधिकारान् प्रमत्त, —मेघ० १, अधिकारे मम पुत्रको नियुक्त—मालवि० ५, 3 प्रभुसत्ता, सरकार या प्रशासन, न्यायक्षेत्र, शासन 4 हुक, प्राधिकार, दावा, स्वत्व (घन, संपत्ति आदि का), स्वाभित्व या कब्जे का अधिकार—अधिकार फलं स्वाम्यमधिकारी च तत्प्रभु—मा० द० ११५ 5 विशेषाधिकार (राजा के) 6 प्रकरण, अनुच्छेद या अनुभाग, वाक्चिह्न—मिता०, दे० 'अधिकरण' 7 (ध्या०) प्रधान या शास्त्रनायक निरर्थ । सम०—विधिः किसी विशेष कार्य को करने के लिए पात्रता का कथन,—स्व, —अवध (वि०) पद पर विराजमान ।

अधिकारिन्, अधिकारिणः (वि०) [अधिकार + निनि, अधिकार + क्तृन्] 1 अधिकार सम्पन्न, अधिकारमग्न 2 स्वत्व सम्पन्न, हुकदार, सर्वे स्वरधिकारिण 3 स्वामी,

मालिक 4 उपपुत्र (पुं० -री, -बाण्) 1 राज पुत्र, पदाधिकारी कार्यकर्ता, अधीशक्त, प्रधान, निर्देशक, शासक 2 सही दायेंदार, मालिक, स्वामी ।

अधिकृत (वि०) [अधि + कृ + क्त] अधिकार प्राप्त, नियुक्त आदि, —तः राजपुत्र, पदाधिकारी, किसी पद के कार्यभार को सभालने वाला ।

अधिकृति (स्त्री०) [अधि + कृ + क्तिन्] हक, प्राधिकार, स्वामित्व, दे० अधिकार ।

अधिकृत्य (अव्य०) [अधि + कृ + क्तवा] तत्पुं० उन्मेष करके, के विषय में, के संबंध में श्रीमन्नमामयिहृग गयीयान् —श० १, अश्वत्थामयिहृग ब्रह्मिन् —श० २ ।

अधिक्रमः { [अधि + क्रम + क्त] कृत् वा; ह्रस्वः ।
अधिक्रमणम् } बहुव्रीहिः ।

अधिकोपः { [अधि + उप + क्त] 1 गाली दाखारोपण अपमान, भवत्यपि क्षेप दानाशानम कि० ११२८ 2 पदच्युत करना ।

अधिगत (वि०) [अधि + गम् + क्त] 1 अतिव, प्राप्त आदि —भर्तृ० २११३, 2 अघोत आत रोषा हुआ किमिच्छेत् पुच्छमन्मिगानशमयण १४- स्त० ६१३० ।

अधिगमः { [अधि + गम् + क्त] कृत् वा; ह्रस्वः ।
अधिगमनम् } प्राण 2 गान्धारी भर्तृ० ११३० । 3 गान्धारीक लाभ लाभ मारने प्राप्त करना, निष्पाद प्रणि - भर्तृ० ११३० । 4 स्तुति 5 प्रेक्षण ।

अधिगृह्य (वि०) [अधि + गृह् + क्त] 1 धेय, गृह्णन् वस्तु बाला, योग्य, गुणी - वाक्यदा गण्य वरमप्यगुण नाधम लब्धवामा — भर्तृ० ६ 2 जिसकी सीढ़ी चक्कर बिड़की हो (अंगे घुसने) ।

अधिचरणम् - [अधि + चर् + क्त] 1 कभी के ऊपर चलना ।
अधिचलनम् [अधि + चल् + क्त] 1 चला ।

अधिजिह्वा — [ब० ग०] गण्य ह्रस्व जिह्विका 1 दात जिह्वा 2 जिह्वा की सूत्रन (लेग) ।

अधिष्ठा (वि०) [अधि + ष्ठा + क्त] 1 अधिष्ठान्ता आ गक, अधिष्ठान्ता आ क । घन्य की सीढ़ी को कम कर खोले हुए, या कम कर खिंची हुई डोरी वाला (जैसा कि घन्य) । सप- —घन्यन्, —कार्यक (वि०) घन्य का डोरी को नान हुए —आय चापिष्ठाकार्यके —श० ११६ ।

अधिष्ठिका [अधि + ष्ठ + क्त] 1 गिष्ठा (पदान् के ऊपर की समस्त भूमि) उक्तमपमप्य ग्यन्, तपस्यन्तमपिष्ठाकार्याम् — श० ३११३ अधिष्ठिकायामिह धातुमप्याम् —शु० २१२९ ।

अधिष्ठान [अध्यास्ते दन्त —प्रा० ग०] दात के ऊपर निकलने वाला दात ।

अधिदेवः, अधिदेवता [प्रा० ग० अधिष्ठाता—पी देव

देवता वा] इष्टदेव प्रधान देव, अभिरक्षक देवता, यथाचे पादुके पश्चात्कर्तुं राज्याधिदेवते —रघु० १२। १७, १६१९, भाषि० २१३

अधिदेवम्, अधिदेवतम् [अधिष्ठात् दीवं देवता वा] किसी वस्तु की अधिष्ठात्री देवता ।

अधिनाथः [प्रा० ग० परमेश्वर ।

अधिनाथः [अधि + नी + क्त] गण्य महक ।

अधिषः, अधिषतिः [अधि + ष + क्त] 1 क, हति वा] स्वामी, शासक, राजा, प्रभु, प्रधान —अथ प्रजातामधिष पभाते —रघु० २११ (अधिकार समाम में प्रयुक्त) ।

अधिपत्नी [प्रा० ग०] पत्नी —आधिषः स्वामिनी ।

अधिपु (पुं०) ह्य [प्रा० ग०] पृथगात्मा, परमेश्वर ।

अधिपञ्च (वि०) [अधिका पञ्च गण्य व० ग०] बहुव्रतानां नाम (स्त्री या पुंशब्द) ।

अधिभू [अधि + भू + क्त] 1 स्वामी, श्रेष्ठ, प्रमुख ।

अधिभूतम् [अधि + भू + क्त] प्रा० ग० — भूत प्राणिमात्र मयिहृग्य नाभिनम । परमेश्वर, परमात्मा या भाष- क्तो मय्यन् आधक प्रभाव ।

अधिमात्र (वि०) [अधिका मात्रा गण्य व० ग०] मात्रा न अधिक, बहुत प्रायश्चित्त प्राणिमात्र ।

अधिष्ण्यः [प्रा० ग०] श्रेष्ठ वा गान्धारीक मन्त्रायाम् ।

अधिष्ठः [प्रा० ग०] 1 पद न पद 2 देव वृक्ष का अति कर्ता ।

अधिष्ठ (वि०) [अध्यास्ते] 1 अधिष्ठान्ता वा] स्वामी, क- — 1 पुन, मारति 2 भूत का नाथ को अत्येव का राहा मय्य कण वा गान्धारीक मन्त्रायाम् ।

अधिराजः (पुं०) अधिराजः [अधि + राज + क्त] 1 राजा [देव वा] प्रथमतः शासक वा परमात्मक साक्षात् —अद्वैतायाम् अधिराजः शब्दज्ञ — शब्द० ६११६ राजा प्रधान, स्वामी । मन्त्रायाम् अधिराजः (क), दिवालयो नाम नृणां पिताम् — श्व० १११, इसी प्रकार घन्य नाम आदि ।

अधिराज्यम्, अधिराज्यम् [अधिराजः राज्य राज्यम् अधि 1 भागी हकदार वा मन्त्रायाम् का शासक, स्वर्वात्मना शासक भवति 2 साक्षात् देव का नाम ।

अधिष्ठ (वि०) [अधि + ष्ठ + क्त] 1 मन्त्रायाम्, नवरा हुआ 2 बन्ना हुआ ।

अधिष्ठ [अधि + ष्ठ + क्त] 1 गान्धारी 2 गान्धारी कोना, बहना ।

अधिरोहणम् [अधि + रोह + क्त] 1 बहना, गन्तार होता, किन्तु गान्धारी 2 जीड़ी, जीड़ी का बहा (जबकी आदि का) ।

अधिरोहिण (वि०) [अधि + रोह + क्त] 1 बहने वाला, सवार होने वाला, ऊपर बैठने वाला, की सीढ़ी होने की पीढ़ी या हवा ।

प्रतिलोकम् (अध्य०) [प्रा० स०] : विश्व से संबंध रखने
वाला 2 विश्व प।

अभिधानम् [अभि : वच् + ल्युट्] १ पदसमर्थन, पक्ष में बोलना, २ नाम, उपनाम, अभिधान ।

अभिधासः । अथ । वन् । थिन् । धन् । १ आदास, निवास
वास, नम्बापि च मगध निर्गमिवास का० १।३७.
वसति, वसना २ वरना देना ३ यशस्व ४ पुत्र देवता
का आवाहन पूजन आदि ५ पात्राक, पत्रावर्ण, लबादा
६ सुभाषित श्रीरत्नपूजित ७ वन्दन लभाना नृपधनुक्त
तथा पदकदा पदायि हा गहन जीवधामगन्धर्व
माल्य - पद्य ० १।३७ १।३८ नन्द.

अभिमाननम् । अर्थ - वसुधैव कुटुम्बकम् । अर्थ में बसना ।
मति की प्रार्थना अर्थात् भूल में स्वता की प्रण
प्रतिष्ठा करना ।

अभिषिष्टा (अभिषिष्टा - यतः) यत्न रवी विमर्शः गतं दृष्ट
पवि दूम्नरा विवाह कर जे. या० १७३, यत्न
१८०-८३।

अभिषेक (पूत) [अभि + वि + कृ - लृट्] एक स्त्री के रहने
हुए दूसरा विवाह करने वाला ।

अखिलेशः, अखिलेश्वरम्, प्रति । इत्थं, यथा स्मृतं वा । एक
स्वामी कं दहते प्रतीतिस्तत्र यथा भो विनायक इत्यनेन ।

संक्षिप्तम्. [प्रथम + १२ = अन्तः । अन्तरात् ?] अन्तर्गतः ।
[अन्तर्गतं शब्दकम्] समं कृतम् ।

अधिपणम्, अधिपणम्; अधि-१-विधः (पाठः) + लुट्। मन्त्र
करणा उक्तान्तर्गतं। श्री [अधिपणम् पञ्चमोऽत्र
प्राधान्ये लुट् + डीप्] सुहृत्, प्रगीता ।

ज्ञानिनी (१०) । ज्ञानिका शीघ्रं च, अतो कतिपया वाचा ।
 सर्वोपदेय, तथा चनायय, प्रभुसत्तासम्पन्न स्वामी—इय
 मन्त्रप्रभृतीनां विविधपञ्चानुदियोशां नवस्य भागिनः ।
 क० ५५३ ।

अधिष्ठातृम् (अधि + रथ् + ल्यट्) : निकट होना, पास में
 स्थित होना, पहुँच 2 पर, स्थान, आधार, आसन,
 उग्रह, वरह 3 निवास स्थान, आवास 4 अधिकार
 शक्ति नियंत्रणशक्ति, सरकार, शासक, चक्र
 (गाड़ी का चक्र) पहिया 7 दृष्टान्त, निदर्शन निमित्त
 आसीन ।

अभिष्टित (वि०) [अभि + स्थ + क्त] १ (कर्मकाय क
रान्ते) (क) स्थित, अवस्थान 'अभिष्टित' (रा)
निष्ठान्, प्रधानता कर्मन् । २ (कर्मकाय क रूपः)
(क) व्यस्त, अभिकृत (ख) भरा दृढः सक्त, अभि
भूत (घ) परिश्रित, मुखा प्राप्त, वपाश्रित (घ)
वीन, मुखाश्रित, आश्रित, प्रधानता कर्मकायः ।

अधीकार: दे० अधिकार, स्वागत स्थानाधिकारानवलय-
क०- २।१८।

अधीति (वि०) [अधीत + इति] खूब पढ़ा लिखा

निष्णात- अधीष्टी चतुर्धाभ्यासेषु - दश० १२०, (वैद्य व्याकरण आदि में) ।

अथोक्तिः (स्त्री) [अधि-+इ+क्तिन्] १ अध्ययन, अनु-
शीलन बोधावगमप्रकारणं.—नेष० १।३, २ स्मरण,
प्रत्यस्मरण ।

अधीन (वि०) [अधीनतम् दत्तम् प्रभुम् प्रा० सं०]
 आधीन मानहून, निर्भर (बहुधा समस्त पदों में)
 स्थाने प्राणा वामनाः दूषयिताः -- मालवि० ३१६,
 यत्रधीनं स्वन् दीप्तं मुखम् -- कु० ६१०, इक्ष्वाकुना
 दृष्टा यः स्वदशान् दि० मिदृशं खण० ११३०।

अक्षय्याय. (१०० रु.), (अक्षि + इ + अन्त्य) विद्यापी.

अधीन १। २। ३। ४। ५। ६। ७। ८। ९। १०। ११। १२। १३। १४। १५। १६। १७। १८। १९। २०। २१। २२। २३। २४। २५। २६। २७। २८। २९। ३०। ३१। ३२। ३३। ३४। ३५। ३६। ३७। ३८। ३९। ४०। ४१। ४२। ४३। ४४। ४५। ४६। ४७। ४८। ४९। ५०। ५१। ५२। ५३। ५४। ५५। ५६। ५७। ५८। ५९। ६०। ६१। ६२। ६३। ६४। ६५। ६६। ६७। ६८। ६९। ७०। ७१। ७२। ७३। ७४। ७५। ७६। ७७। ७८। ७९। ८०। ८१। ८२। ८३। ८४। ८५। ८६। ८७। ८८। ८९। ९०। ९१। ९२। ९३। ९४। ९५। ९६। ९७। ९८। ९९। १००।

अथोक्तम् । अथि . वम . धडा उपसंगम्य दीर्घत्वम् ।
 तत्र लडा फल अगम्य गमः अगम्य वृद्ध जाय लडाडा,
 तस्य अथवागम मो ।

अथोदाहरणम् । (१) स्वामी स्वामी स्वामी या भाविक
स्वामी स्वामी स्वामी स्वामी स्वामी स्वामी स्वामी स्वामी
स्वामी स्वामी स्वामी स्वामी स्वामी स्वामी स्वामी स्वामी ।

[illegible]

अधुना (अवधः) । इदानीं धुनादाय फ० ५०३१३० बब,
इस समय - प्रमदनाश्वना विहवना - कु० ११११ ।

अधुना (वि०) नि०, अधुना-तदुत्पत्तिः, वस्तु-
मान काल स तदर्थ ७८, शाला, वाणिज्यिक ।

अध्याय ५. [नं० १०] अन्तर्गत १०० भाग ।

अर्थात् : (सी०) [नञ् + घृ + क्त] १ दुःखता या अशय
का अभाव शिथिलता २ असय ३ दुःख ।

अथर्व (१०) [१० व०] १ अथर्व, दुर्धर्ष, अतर्भिगम्य
(१०० अर्भिगम्य) अथर्व्यावाभिगम्यश्च वाद। अने-
विवाग्ध- १०० १११, २ लोकोला, लमीला
३ घनो।

अधोक्ष, अधोक्षज, अधोऽक्षक - दे० "अधस" के नीचे ।

[illegible]

अध्यक्षारम्भ । प्रा० स० । २६२५५५ अक्षर 'आम्' ।

अध्वानि (अध्व०) विवाह उत्सकार की अग्नि के निकट या ऊपर, (नपु०-नि) विवाह के अवसर पर अग्नि को साक्षी करके स्त्री को दिया जाने वाला उपहार, धन—विवाहकाले यत्नशील्यो दीयते ह्यग्निर्साक्षी, तदध्व-निकृत्त सद्भिः स्त्रीधनं परिकीर्तितम् ।

अध्वधि (अध्व०) [अधि + अधि] ऊपर, ऊँचे (कर्म० के साथ) लोकम् सिद्धा० ।

अध्वधिकेयः [प्रा० स०] अत्यन्त अपसाध्य या दुर्बलधन, कुत्सित नाभिया ।

अध्वनीय (वि०) [प्रा० स०] नितान्त अधीन, विल्कुल बधीभूत, जैसे कि दास सेवक या० ३।२७८ ।

अध्वयः [अधि + इ + अध्] 1 ज्ञान अध्ययन स्मरण 2 दे० अध्याय ।

अध्वयनम् [अधि + इ + स्मृ] सीखना, जानना, पढ़ना (विशेषतया वेदो का), ब्राह्मण के षट्कर्मा में से एक । वेदाध्ययन केवल प्रथम तीन वर्णों के लिए विहित है, ब्राह्म के लिए नहीं मनु० १।८८-५१ ।

अध्वर्य (वि०) [अधिकमर्थ यस्य] जिसके पास अनिरिक्त आधा हो—शतसध्वर्यमायता महा० अर्थात् १५० 'योजनशतात्—पथ० २।१८ ।

अध्वर्यवसानम् [अधि + अध + सो + स्मृ] 1 प्रवल, दृढ़-निश्चय आदि, दे० अध्वर्यवसान 2 (सा० शा० में) प्रकृत और अप्रकृत दोनों वस्तुओं का इस ढंग से एक रूप करना जिससे कि एक वस्तु दूसरी में घिली हो जाय, निगोष्ठाध्यवसानं तु प्रकृतस्य परेण यत् काव्य० १०, इसी प्रकार की एकरूपता पर अतिशयोक्ति अलंकार और साध्वर्यवसाना लज्जा आश्रित है ।

अध्वर्यवसायः [अधि + अध + सो + घञ्] 1 प्रयास, प्रयत्न, परिश्रम 2 दृढ़निश्चय, सकल्प, मानस प्रयत्न या विचारों का बहुवचन, 3 वैद्य, उद्यम, लगातार कोशिश ।

अध्वर्यवसायिन् (वि०) [अधि + अध + सो + घिनि] प्रयत्नशील, दृढ़संकल्प वाला, वैद्यशाली, उत्साही ।

अध्वर्यवसानम् [अधि + अध् + स्मृ] अधिक ज्ञान, एक बार का ज्ञाना पथे बिना फिर आ ज्ञान ।

अध्वर्यवस्य (वि०) [आत्मन संबद्धम्] आत्मा या व्यक्ति से संबंध रखने वाला,—स्वम् (अध्व०) आत्मा से संबद्ध—स्वम् परबद्ध (व्यक्ति के रूप में प्रकट) या आत्मा और परमात्मा का संबंध ; सम०—ज्ञानम्, विद्या आत्मा या परमात्मा संबंधी ज्ञान वर्णार्थ बद्ध एव आत्म-विषयक जानकारी (उपनिषदों द्वारा बताये गये सिद्धांत)—रस्ति (वि०), जो परमात्मचिन्तन में मुक्त का अनुभव करे ।

अध्वर्यवस्य (वि०) [स्त्री०—की] अध्यात्म से सम्बन्ध रखने वाला ।

अध्वर्यवस्यः [अधि + इ + अध् + घञ्] पढ़ाने वाला, गुरु,

शिक्षक-विशेषतया बच्चों का, व्याकरण^०, ग्राह्य^०; भूतक अर्थात् अध्यापक । विष्णुस्मृति के अनुसार अध्यापक दो प्रकार के हैं—एक तो 'आचार्य' जो कि बालक को यज्ञोपवीत पहनाकर वेद-पाठ में दीक्षित करते हैं, दूसरे 'उपाध्याय' जो अपनी जीविका कमाने के लिए अध्यापन कार्य करते हैं, दे० मनु० २।१४०-४१ ।

अध्यापनम् [अधि + इ + अध् + ल्युट्] पढ़ाना सिखाना, व्याख्यान देना ब्राह्मण के षट्कर्मा में से एक आरम्भिक स्मृतिकारों के अनुसार अध्यापन तीन प्रकार का है 1 धर्मार्थ किया जाने वाला 2 मन्त्रगुरु प्राप्त करने के लिए 3 जो गई सेवा के बदले ।

अध्यापयितुं (पु०) [अधि + इ + अध् + लुक्] अध्यापक शिक्षक ।

अध्याप्य [अधि + इ + घञ्] 1 पढ़ाना, अध्यापन, विशेषतः वेदों का 2 पाठ या पढ़ने के लिए उचित समय 3 पाठ व्याख्यान 4 अध्व, किसी रचना के भाग निष्कर्षित कुछ ऐसे भाग हैं जो सम्पूर्ण लेखकों ने 'अध्व' या 'भाग' को प्रकट करने के लिए प्रयत्न किया है तभी वर्ग परिच्छेदोद्घाताध्यायाक्रमसह उच्छ्वास परिवर्तन-वच पटल काष्ठमाननम्, स्वान प्रकारण चैव पर्वोत्सा साहित्यकानि च स्मृत्वाही तु पुराणाही शायस परि कीर्तितौ ।

अध्यायिन् (वि०) [अध्याय + णिनि] अध्ययन करने वाला, अध्ययनशील ।

अध्यायक (वि०) [अधि + आ + कृ + क्त] 1 मवार, बढ़ा हुआ 2 ऊपर उठा हुआ, उन्नत 3 ऊँचा, अष्ट नीचा, निम्नतर ।

अध्यारोपः [अधि + आ + कृ + अध् + घञ्] 1 उठना, उन्नत होना आदि 2 (वे० द० में) भ्रमबल एक वस्तु को अन्यवस्तु समझना, भ्रम के कारण एक वस्तु के गुण दूसरी वस्तु में जोड़ना, भ्रमबल रस्ती को माप समझना असर्पभरज्जी सर्पारोपवत्, अजगद्वे ब्रह्मणि अजगदुपारोपवत्, वस्तुनि अवस्थाभारोप्यारोप वे० सा० 3 प्राप्तिपूर्ण ज्ञान ।

अध्यारोपचक्षुः [अधि + आ + कृ + अध् + घञ्] 1 उठना आदि 2 (बीज) बोना ।

अध्यावायः [अधि + आ + अध् + घञ्] 1 बीजादिक बसेरना या बोना 2 बहु बीत जिसमें बीजादिक को दिया गया हो ।

अध्यावाह्निकम् [अध्यावाहन (पितृगृहात्पतिगृहमनन्) सम्बन्धे ठ्] छ प्रकार के स्त्रीधर्मों (बहु सत्यता जो एक स्त्री अपने पिता के घर से पति के घर को बिदा होते समय प्राप्त करती है) में से एक—यत्पुनर्नवमे नारी नीयमाना तु पितृकात् (गृहात्) अध्यावाह्निकं नाम स्त्रीधनं परिकीर्तितम् ।

लेख, प्रेमपू० ० लेखनियोगोपयोग (बनति) कु० ११७,

० शब्द, ० अशब्द आदि—शिव जी के नाम ।

अनजन्म (वि०) [न० व०] बिना अजन, वर्णक या काजल

के—नेत्रे पूर मनःपत्रे—सा० ८०, रघु० १ अकाश

वातावरण २ परब्रह्म विष्णु या नारायण (पु० मी) ।

अनकूह (पु०) [अन शकट वर्तते नि०] [अनद्वान्

० हवाही, ० ह्रस्वधाम् आदि०] १ बैल, साठ २ वृष-

राशि, - ही (अनद्ववाही) गाय ।

अनति (अन्य०) [न० त०] बहुत अधिक नहीं, 'अनात

से आरम्भ होने वाले समय पदों का विशेषण अति

से आरम्भ होने वाले शब्दा की चार्ति किया जा

सकता है ।

अनतिविलंबिता विलम्ब का अभाव, व्याख्यानवाता का

एक गूण धाराप्रवाहा, ३५ बाणुओं में से एक ।

अनखतन वि० [स्त्री०—नी] [न० त०] आज या बाल

दिन से सबब न रखने वाला, पार्श्वनि का एक पारि-

नायिक शब्द जो लज्ज और लुट सञ्चार के अर्थ को

प्रकट करता है, --नः जो बाल दिन न हो, अतीताया

गन्ने पश्चात्तरे अत्यामिन्या राज्ञे पूर्वार्धेन सहितो

दिवसोऽनखतन—निद्रा०, तद्रूप्य काल ।

अनधिक (वि०) [न० त०] १ जो अधिक न हो, २ अहीम

पूर्ण ।

अनधीनः [न० त०] अपनी इच्छा से कार्य करने वाला

स्वाधीन बर्द्ध, कोटतल ।

अनध्यक्ष (वि०) [न० त०] १ अप्रत्यक्ष, अनुपस्थ २ शासक

हीन ।

अनध्यक्षः [न० त०] न पड़ना, पड़ार्थ में विराम, बहु

अनध्यक्षम् समय जब कि इस प्रकार का विराम होता

है या होना चाहिए, एक अवकाश का दिन ('दिनस)

अथ निष्ठान्तप्यन—उत्तर० ४ किसी पूज्य अतिथि

के सम्मान में दिया गया अवकाश ।

अनधम् [अन्+स्युट्] सात केना, जीना ।

अनधुमावृत्त (वि०) जो नमस्ते के अयोध हो ।

अनन्त (वि०) [नास्ति अन्तो यस्य न० व०] अनन्तरहित,

अपरिमित, निस्सीम, अक्षय,--'रत्नप्रबन्धस्य यस्य—

कु० ११३,—सः १ विष्णु की सख्या लेखनाम, कृष्ण,

बलराम, शिव, नागों का पति बाह्यिक २ बावक ३

कहानी, ४ वीरह शब्द—'ते, युक्त देखनी डोरा जो

अनंत चतुर्दशी के दिन दक्षिण हुआ पर बाँधा जाता

है,—सा १ पुन्वी (अनतहीन) २ एक की संख्या ३

पार्वती ४ गारिका, अनंतपुत्र, पूर्वा आदि वीरे;

—रघु० १ आकाश, वातावरण २ अहीमता ३ मोक्ष ४

परब्रह्म । तत्त्व—दुर्लभा वैशाख, माघपक्ष और

मार्गशीर्ष मास की शुक्लपक्ष की टीथ—द्विषः शिव,

हनु, - कैः १ लेखनाम २ नारायण जो लेखनाम के ऊपर

माता है, पार (वि०) असीम विरताभूत निस्सीम

० र किल शब्दशास्त्रम्—पञ्च० १ क्व (वि०)

वर्गाजन रूपवाला विष्णु, विजय पृथिविर् ४

शब्द भग० ११२० ।

अनन्तर (वि०) [नास्ति अन्तर यस्य—न० व०] १ अनन्तर

गति, सीमाग्रीहस २ जिसके बीच देश काज का

कोई अनन्तर न हो सटा हुआ, लगा हुआ ३ ससक्त,

पत्रोस का, बिल्कुल मिला हुआ, निकटवर्ती (अपदान

के साथ) ब्रह्मावर्तानन्तर मन० २११९ ४ अनु

वर्ती सन्निहित होना (ममामसे) ५ अपने से एक

नीच के वर्ण का, रघु० १ सप्तकाता, सप्तिकटता २

ब्रह्म, परमात्मा रघु० (अन्य०) गुरन्त ब'द, पचपात्र

२ (सबपञ्चकता की दृष्टि से) बाद में (अपदान

के साथ) प्राणपन्थापमानान्तरम् रघु० ३१७

गोदानवधेरन्तरम् १३२ ३६२ ३९१ रघु०—अ

या—आ १ साक्षय या वैश्य माता में, अपने से टाक

ऊपर के वर्ण के पिता के द्वारा उत्पन्न मन्थान अनु०

१०४४ 'तरपरिया' माई बहन, (-आ) छाया या बड़ी

बहन अनुच्छदानान्तर शीवकाह रघु० ७१३२ इमी

प्रकार जान ।

अनन्तरीय (वि०) [अन्तर १४] वषाक्रम में ठीक बाद का ।

अनन्य (वि०) [न० त०] १ अर्पित, समर्पण, बही, अहि

तीय २ एकमात्र, अनुपम, जिसका साथ और दूसरा न

हो ३ अविषम, एकाग्र अन्य की ओर न जाने वाला,

—अनन्याधिपन्तयन्तो या वे जना पर्युपासते मय०

११२२, समास में अनन्य शब्द का, अनुवाद किया जा

सकता है 'दूसरे के द्वारा नहीं' और किसी ओर अन्य

या निर्देशित नहीं 'एकाग्रवी' । सय० - वतिः (स्त्री०)

एकमात्र सहारे वाला अनन्यगति के अने विगतपानके

बालके उद्धार, -चित्त, धित, -वेतम्, -मन्त्र,

-मास, -हृदय (वि०) एकाग्रचित्त, जिसका मन

और कहीं न हो; -अः, -अनन्य (पु०) कामदेव,

प्रेम का देवता—मा मुमुक्षुस्तल भवनमन्यजम्भा - मा०

११३२, दुर्गः बहु पुरुष जिसके ओर कोई स्त्री न हो,

(—की) कुमारी, विनम्राही स्त्री—रघु० ११७,

—माय (वि०) किसी वीर व्यक्ति की ओर लगाव न

रखने वाला; —अनन्यमाय केतिवायुहि—कु० ११६३;

—विषय (वि०) किसी और से संबंध न रखने वाला,

—वृत्ति (वि०) १ वैश्व ही स्वभाव का २ जिसकी

दूसरी जीविका न हो ३ एकविध मनोवृत्ति वाला;

—साक्षात्, -साधारण (वि०) दूसरे के न जिसने

बाधा, असाधारण, ऐकान्तिक रूप से क्या हुआ, वेक-

माय, -अनन्यकारी ध्यानात्मे साक्षरत्वका; पुनरुपाः—

विष्णु० ११८ 'राजधाम'—रघु० ११८;—अनुक

(वि०) [स्त्री०—ही] लेखक, अनुपम ।

अल्पत्यनस्याक्षरम् सं० ११३६ विकसितवदनाम्
 अल्पत्वमेति — भाषि० ११०० २१३८ ।
 अल्पकाश (वि०) [न० ब०] १ अनाहत, ३ अपयोग्य २
 जिसके लिए * ई मुद्रायस या मौकान हो ता
 [न० त०] स्थान या कार्यक्षेत्र का अभाव ।
 अल्पबल (वि०) [न० ब०] जो रोकना या मके मुकुमार
 कायमनबल स्मर (अभिहित) मा० ११३९ ।
 अल्पचिह्न (वि०) [न० त०] १ सीमाकन रहित, अपुष
 कृत २ सीमारहित अधिक ३ अनिर्दिष्ट, अविविक्त
 अविकृत ४ अवाधित ।
 अल्पवज्र (वि०) [न० त०] निर्दोष बलकरहित, अनिघ
 रणु० ७३०० । मम० अग रूप (वि०) निर्दोष
 या नितान्त मुन्दर अगो वाला (—गो) रूपरता
 स्त्री ।
 अल्पवधान (वि०) [न० ब०] निरपेक्ष ध्यान न देने वाला,
 —नम् [न० त०] प्रमाद, अभावधानता ना-
 लापरवाही ।
 अल्पविधि (वि०) [न० ब०] बसीमित अगमित ।
 अल्पवय (वि०) [न० त०] जो नीच या नुष्ठ न हो बडा
 श्रेष्ठ, सुधर्मनिवमा ममाय रणु० १६१३ १११६ ।
 अल्पवस्त्र (वि०) [न० त०] अविगम निरतर 'चनुग्या
 स्मलनकूपूर्वम् मा० २१६ तम् (कि० वि०) बिना
 बन्धे, लगाना ।
 अल्पवराह्य (वि०) [अवस्मिन् अर्थ मत्र इत्यर्थे नञ् ।
 अवराह्य + यन् न० त०] मुख्य मशौलम मयभक्त ।
 अल्पवलय — बन् (वि०) [न० त०] अल्पबहेन निर्गमिन
 — ब, —बन् स्वतन्त्रता ।
 अल्पवलोचनम् [न० त०] गर्म के तीसरे माग किया नान
 वाला एक मन्त्रकार ।
 अल्पवस्त्र (वि०) [न० ब०] १ व्यस्त २ निरवकाश ३
 [न० त०] । अववाह का अभाव कुसमय गता
 आभारमयिकता के याये यत्र यत्र धूमनवनमरचमन
 एवाधिमाम मा० ११३० ।
 अल्पवस्त्र (वि०) [न० ब०] मलरहित स्वच्छ माफ ।
 अल्पवस्त्र (वि०) [न० त०] अस्थिर, स्था [न० त०] १
 अस्थिरता २ अनिश्चित अवस्था ३ चरित्रभ्रष्टता
 कम्पटता ३ (द्वि० त० मे) किसी अन्तिम निर्णय पर न
 पहुँचना, कार्य-कारण की ऐसी परंपरा जिसका अन्त
 न हो तर्क का एक दोष — एवमप्यनवस्था स्यादा मूल
 अनिकारिणी काव्य० ० एव च 'प्रसंगा-मा० ।
 अल्पवस्त्राव (वि०) [न० ब०] अस्थायी, अस्थिर, चंचल,
 —नः वायु तम् [न० त०] १ अस्थिरता, २ आचा-
 रभ्रष्टता, कम्पटता ।
 अल्पवस्त्रिण (वि०) [न० त०] १ अस्थिर, अस्थिरचित्त २
 परिवर्तित ३ कलहारा ।

अल्पवेलाक (वि०) [न० त०] अभावधान बेपरवाह,
 उदासीन ।
 अल्पवेला-धा २० अल्पेक्ष-धा ।
 अल्पवेलाक्षम् [नञ्] । अर् + ईक्ष + म्युट् लापरवाही अन-
 वधानता ।
 अल्पवानम् [नञ्] । अश् + ल्युट् उपवास आमरण
 उपवास ।
 अल्पवधर (वि०) [स्त्री०—री] [न० त०] ब्रविनाशी ।
 अल्प (२०) । अन् प्रमुत् १ गानी २ भोजन भान ३
 जन्म ४ प्रजो ५ नाईधर
 अल्पययक (११) [न० ब०] श्रेय रजिज हृम्यगिजि
 या [न० त०] श्रेय का अभाव २ श्रेय की र
 [स्त्री०] वा पीठभक्त पीठमान का ईना नमूना ।
 अल्पहत (न० त०) न० १०, बराहिन दुर्गिन ।
 अलकाकाल [न० त० नि०] १ कुमम २ दुग्मि ३ मम
 वन भननका ४ नद का अतिमिन का । मम०
 —मन् जो अतिमिन दुर्गिन मे मम म आन भाषी
 बचाने के रजिज रजिज दुर्गिन का मम वन जाना है ।
 अलकाकुल (११०) १० त० १ शान् प्रहृष्टरथ स्वस्थ
 २ अन्त
 अलगाव (वि०) १० त० १ न बराहदुष्टा न रजिज
 दुष्टा ताहदुष्टा भन का रजिजमनामम- (१०
 ११०३ २ अगाव जो न भनन का ३ मविच्यन् आन
 वा ४ २० नाई मम० का ४ अगाव — तय भविच्य
 काल, भविच्य मम अलगाव भविच्य की मम
 देवता आग के भा रजिज रजिज प्रवाह आन
 वा ना नाई क क या विपरीत — आनका बर ५ न
 विमका भाविच्य लाव अम आन्म । दुष्टा ही अ
 अन्ता विधातु (२०) आन वा ३ अतिम का ४ ३
 हो म भननका ४ ३ वा ना भविच्य के विषय म
 मा ४ आन दुर्गिन (११० १३०) म्या ११० ४० म
 डम नाम ३ म म ४ १ ।
 अलागम् [न० त०] १ आना २ अगाव ।
 अलागम् (वि०) [न० ब०] रजिजराय भविच्य — आ
 वागाय ४ मम ४ प्रहृष्टमनामि — मा० ११११ ।
 अलाचार [न० त०] अनाचर आचरण, दुर्गवर्ण दुर्गिन ।
 अलातप (वि०) [न० ब०] धुग या गर्मी मे युक्त
 ताप रहित उष्ण ।
 अलातुर (वि०) [न० त०] १ अम मूक उदासीन २ न
 यका दुष्टा अकाल — भविच्यमनातुर — रणु० १११
 ३ अल्ला स्वस्थ ।
 अलातम् (वि०) [न० ब०] १ आत्मा या मन से रहित
 २ अनारिच ३ जिसने अपने ऊपर नियंत्रण नहीं रखा
 है, — (पु०) जो आत्मिक न हो, आत्मा से भिन्न
 अर्थात् नरवर शरीर । मम० — आ, — वैविज् (वि०)

अपने आपको न जानने वाला, सर्व जड़—मा नावद-
नामने—ग० ६—संख्य (वि०) धर्म ।
अनात्मनीय (वि०) [नञ् । आप्तन । अ] जो अपने ही
स्वार्थ के लिए कार्य करने का अभ्यस्त न हो नि-
स्वार्थ, स्वार्थ रहित ।
अनात्मत्व (वि०) [आप्तना अवयवेन नास्ति इत्यर्थ—
नञ् । आप्तन् । मनुष्य न० १०] अवयवा इन्द्रिय
परायण ।
अनाथ (वि०) [न० व०] अशहाय निर्धन गरीब मातृ
पितृहीन बिना माता-पिता का भोजन, विपदा रक्षा
सामर्थ्य प्रसक्ता कोई व्यक्ति न हो—नाथकर्म रक्षा
लाभकर्ममनाया विरह्यम उत १० ११३ । गम०
—सहा अनाथालय ।
अनाथर (वि०) [न० व०] उदासीन उपश्रान्त
१. [न० त०] अश्वरक्षा विरहा अश्वरक्षा परमा
दानादरे—गम० २१ २१ ।
अनाथि (वि०) [न० व०] अश्वरक्षा विरहा अश्वरक्षा
काल में बड़ा आना हुआ अश्वरक्षा विरहा—गम०
२१६ । गम० अश्वरक्षा अश्वरक्षा (वि०) अश्वरक्षा
अन रहित नियम । — १) शिव निधन (वि०)
विमका अश्वरक्षा और समान न हो शिवरक्षा—अश्वरक्षा
(वि०) विमका अश्वरक्षा और अन रहित न हो
नियम ।
अनाथीन (वि०) [न० १०] निर्दोष—यदाश्वरक्षा
नमनाडीनरमोनिम शि०—१०० ।
अनाथ (वि०) [न० त०] १ २० अश्वरक्षा, २ अश्वरक्षा
व्यापक अश्वरक्षा ।
अनाथत्व (वि०) [न० १०] दूसरे पक्षों के बीच में आ जाने
के कारण समान के विभिन्न पक्षों का व्यवस्थापन २
नियत क्रम में न जाना ।
अनाथ (वि०) [न० त०] १ अश्वरक्षा २ अश्वरक्षा अश्वरक्षा
शिव अश्वरक्षा ।
अनाथ (वि०) [वि०] न० व० स्वार्थ रहित बिना नाम हा
अनात्मन् [अपरिचित (प०)] प्रथम २ कनिष्ठिका
तथा प्रथम का बीच का अश्वरक्षा २० नीचे पता
मिका—(न० १०) अनाथीन ।
अनाथ (वि०) [नास्ति आप्त गंगा गम्य न० व०] स्व-
व्य, ननुस्व,—आ, धर्म आश्रय अश्वरक्षा होता
महाश्वरक्षा काश्वरक्षाप्रमाण गम्यका का० १०२
उसके स्वरूप के विषय में प्रमाण की यह विषय
(कथनों के मत में शिव) ।
अनाथ, अनाथिका [नास्ति नाम अनाथान्वय परमा —
स्वार्थ कन्] कानी तथा शिवरक्षा अश्वरक्षा के बीच की
अश्वरक्षा—इसका वह नाम इस लिए पड़ा कि दूसरी अश्वरक्षा
शिवरक्षा की भाँति इसका कोई नाम नहीं, पुनः कबोना

गणनाप्रसंगे कनिष्ठिकाविच्छिन्नकालिदासा, अनाथि
ननुस्वकबेरभावादानामिका शिवरक्षा मनुष्य । मनुष्य ।
अनाथ (वि०) [न० त०] जो दूसरे के वशीभूत न हो,
'तो रोषका का० ६५ जो शिव के वशीभूत न हो, स्व-
व्य गणावस्थानामिका यदनाथान्वयिता—हि०
२०२ स्वव्य जीविका ।
अनाथ (वि०) [न० त०] जो कष्टप्रद या कठिन न हो,
आप्तन—समाप्येकस्मिन् 'मे कर्मणि स्वया सत्रायन
अवयव्यम १०० स १ मगलना कनिष्ठा का
अनाथ 'मन आमतोम बिना किसी कनिष्ठा का
अनाथ (वि०) [न० त०] १ अश्वरक्षा, निर्धन अश्वरक्षा
२ निर्धन मम (अश्वरक्षा) अनाथ निर्धन मम
अनाथ नन परमा ममता कि० ११५, ६० ।
अनाथ (वि०) [न० त०] आश्रय न हुना विकार मनु
परायणा आश्रय ० प्रतीकात्म्य—गम० ३ ।
अनाथ (वि०) [न० त०] कुटिल बेईमान—गम० १
कुटिलता परमा २ गम० ।
अनाथ (वि०) [न० त०] अनाथिक—मा वह
कथा या अश्वरक्षा रक्षकता न हुई हो ।
अनाथ (वि०) [न० त०] अश्वरक्षा शिव अश्वरक्षा
य १ जो अश्वरक्षा न हो २ वह देश जहाँ अश्वरक्षा न हो,
३ गुरु ४ अश्वरक्षा ५ कमीना ।
अनाथकर्म [अनाथ होने प्रथम अनाथ+क] अगर की
नहीं ।
अनाथ (वि०) [न० त०] १ जो श्रुतियों से सम्बन्ध न
रखता हो अश्वरक्षा मगदो अश्वरक्षा अनाथ—
गम० १ ११५ । अश्वरक्षा के सिद्धां २ जो श्रुति-
रक्षक न हो ।
अनाथ (वि०) [न० व०] अश्वरक्षा अश्वरक्षा शिव का
अश्वरक्षा का अश्वरक्षा शिवरक्षा—श्री शिव की जीवा ।
अनाथ (वि०) [न० त०] रक्षकता शिव ।
अनाथ (वि०) [न० त०] फिर न होने वाला, फिर
न होने वाला ।
अनाथ (वि०) [न० त०] न बिना हुआ प्रथम शिव
न किया गया हो ।
अनाथ (वि०) [न० त०] १ फिर न श्रुतिना २ फिर
अश्वरक्षा न होना, मोक्ष ।
अनाथ (वि०) [न० त०] सूखा पड़ना, 'शिव' का
एक शब्द ।
अनाथ (वि०) [न० त०] जो जीवन के चार साधनों
में से किसी को न मानता हो, न किसी से सम्बन्ध रखता
हो । अनाथमी न लिखेण अश्वरक्षाकर्मि शिव—गम० ।
अनाथ (वि०) [नञ्+आ+शु+अश्व] जो किसी की
न सुने, डोह, किसी की बात पर कान न दे—शिवरक्षा-
मनाथ २५ १९५९ ।

अमाश्वत् (वि०) [नञ् + अश् + वत्सु नि०] जिसने भोजन न किया हो, उपवास रखने वाला ।

अमाश्वत् [न० त०] उदासीनता, तटस्थता, आस्था का अभाव—अनास्था बाह्यवस्तुषु—कु० ६।६३, पिडेव-नास्था लल भौतिकेषु—रघु० २।५७, स्त्री पुमानित्य-नास्त्वैवा वृत्तं हि महितं सताम्—कु० ६।१२, २ अर्था या विश्वास का अभाव, अनादर ।

अमाहृत (वि०) [न० त०] १ आभातरहित, २ कोरा या नया ।

अमाहार (वि०) [न० ब०] बिना भोजन के रहने वाला, उपवास करने वाला—र [न० त०] भोजन न करना, उपवास रखना ।

अमाहृतिः (स्त्री०) [न० त०] १ होम का न होना, कोई होम जो होम कहलाने के भी योग्य न हो २ एक अनु-चित आहुति ।

अनक्षत (वि०) [न० त०] न बुझाया हुआ, अनिमज्जित । सम०—उपअक्षिप्त् बिना बुझाया बचना, उपक्षिप्त् (वि०) अनिमज्जित अस्मागत के रूप में बैठा हुआ ।

अनिकेत (वि०) [न० ब०] गृहहीन, आचारागद, जिसका कोई नियत वासस्थान न हो (जैसे सन्यासी) ।

अनिनीर्घ (वि०) [न० त०] १ न निगला हुआ २ (सा० शा० में) जो गुप्त या छिपा हुआ न हो, प्रस्तुत, व्यक्त ।

अनिच्छ-कृच्छ } (वि०) [नास्ति इच्छा यस्य न० ब०,
अनिच्छ-कृच्छ } नञ् + इच्छुक, नञ् + इच्छ् + शतृ न०
अनिच्छन् } त०] न चाहता हुआ, इच्छारहित, बिना इच्छा के ।

अनिश्व (वि०) [न० त०] १ जो निश्व न हो, सदा रहने वाला न हो, जलजंतु, अक्षारवत, नक्षर २ अणुस्वायी आकस्मिक, जो निश्चित अनिवार्य न हो, विशेष, ३ अक्षारारण, अनियमित, ४ अक्षिर, चंचल, ५ अनि-श्चित, अतिवृत्त—विश्वस्य इतिवत्त्वात्—यच० ३। २२, —त्वम् (वि० वि०) कदाचित्, अकस्मात् । सम०—अन्यत्, —किंवा आकस्मिक कार्य जैसा कि किसी विशेष निमित्त से किया जाने वाला यत्, ऐच्छिक या सामयिक अनुष्ठान,—वत्तः,—वत्तकः,—वत्तिमः, आसा पिता के द्वारा अस्वायी रूप से किसी को दिया गया पुत्र,—भावः जलजंतुता, जलजंतु स्मृति—वत्ततः बहु समास जो अत्येक स्थिति में अनिवार्य न हो (जिसका भाव जलज-जलम विच्छिन्न पदों द्वारा भी स्थान रूप से प्रकट किया जाय) ।

अनिश्व (वि०) [न० ब०] निराहारित, आगने वाला, (आक०) आनन्द ।

अनिश्वन् [न० त०] १ तर्क २ जो अनिश्व का विषय न हो, यत् ।

अनिभूत (वि०) [न० त०] १ सार्वजनिक, प्रकाशित, जो छिपा न हो, २ घुष्ट, साहसी ३ अक्षिर, अवृद्ध । दे० 'निभूत' भी ।

अनिभक्तः [अन् । इमन्—अनिम = जीवन तेन कायते प्रका-शते कै न क] १ भंडक २ कोयला ३ मधुमक्खी ।

अनिमित्त (वि०) [न० ब०] निष्कारण, निराधार, आक-स्मिक, —आलस्यदन मकुलाननिमित्तहारी—अ० ७।१७,

तम् १ पर्याप्त कारण का अभाव २ अपसक्त, दुरा-शक्त—ममार्निमित्तानि हि खेदयति—मृच्छ० १०,

(किं नि०) तः अकारण, बिना हेतु के । सम०—निराक्षिपा अपसक्तों का निराकरण ।

अनिमि (मे) व (वि०) [न० ब०] टकटकी लगाये एक स्थान पर बसा रहने वाला, बिना आश्रय के शरीर स्तम्भस्थानमिमेववृत्तिभिः—रघु० ३।४३, —व १ देवता २ मछली ३ विष्णु । सम०—बुद्धिः—लोचन (वि०) टकटकी लगा कर या स्थिर दृष्टि से देखने वाला ।

अनियत (वि०) [न० त०] १ अनियमित २ अनिश्चित, गदिष्ठ, अनियमित (रूप भी) *बेलम् आहारोऽन्यते—अ० २, ३ कारणरहित, आकस्मिक ४ नक्षर ।

सम०—अंकः अनिश्चित अंक (गणित में) —आश्वन् (वि०) जिसका मन अपने बड़ा में न हो, —वृत्तका दुर्बलगीली स्त्री, व्यभिचाराग्नी, वृत्ति (वि०) १ बड़ा काम करने वाला, (अश्व) जिसका प्रयोग निश्चित न हो, जिसकी आय नियत न हो ।

अनियंत्रण (वि०) [न० ब०] असयत, अनियमित, स्वतंत्र 'अनुयोगो नाम तपस्वित्रय—अ० १ ।

अनियमः [न० त०] १ नियम का अभाव, नियंत्रण; अधिनियम या निश्चित क्रम का अभाव, निदेश या व्य-वस्थित नियम का अभाव—यच० १५ सर्वत्र सप्तमं विचतुर्थयो, वष्टे पादे गुरुश्रेयं शेषेष्वनियमो मतः । छ० म० २ अनिश्चितता, निश्चयाभाव, सदेह ३ अनुचित आचरण ।

अनिच्छत (वि०) [न० त०] १ स्पष्ट रूप से न कहा हुआ २ स्पष्ट रूप से व्याख्या न किया हुआ, जिसकी परि-भाषा स्पष्ट न हो गई हो, अस्पष्ट निर्बचन सहित ।

अनिच्छद (वि०) [न० त०] बिना रोकटोक वाला, स्व-तंत्र, अनियमित, स्वच्छद, उच्छ्रंखल, उद्गम,—अ० १ गुप्तवर २ प्रबुद्ध के एक पुत्र का नाम । सम०—यच० १ ऐसा मार्ग जहाँ कोई रोक न हो, २ आकाश, अन्त-रिक्ष,—वाचिनी अनिच्छद की-पत्नी उवा ।

अनिर्बन्धः [न० त०] अनिश्चितता, निर्णय का अभाव ।

अनिर्बन्ध (वि०) [न० त०] निर्गतादि वशाद्वाहि यस्य] अन्धे अनिर्बन्धाह] के जन्म या मरण के कलस्वप्न अतीत के वर-दिन जिसके न होते हैं ।

अनिर्बन्धः [न० त०] निश्चित निश्चय या निदेश का अभाव ।

(छोटे बड़े की दृष्टि से) 11 की भाँति, के अनुकरण में—सर्व मान्य से विचारविरोध या त्व तु व्यथा मान्य—विशेष ४१२५, इसी प्रकार अनुगर्भ=बाह में नर-जना, गर्भने की नकल करना, 12 अनुकम्प—तथैव कोऽनुकम्पया राजा प्रकृतिरान्यथा—रघु० ४।१२, (अनुवर्तोऽयम्) ।

अनुक- (वि०) [अनु + कम्] 1 लालची, लोलप 2 कामुक, भिलासी ।

अनुकम्पन् [अनु + कम् + ल्युट्] 1 बाह का कथन 2 संवध, प्रवचन, बतलाव ।

अनुकम्पीयस् (वि०) [अनु + कम्प (युवन्) + ईयन् कर्नादेशः] छोटे से बाह का, सबसे छोटा ।

अनुकम्प (वि०) [अनु + कम् + ल्युट्] दयालु, कृपा करने वाला ।

अनुकम्पन् [अनु + कम् + ल्युट्] कृपा, तरल, दयालुता, सहानुभूति ।

अनुकम्प (स्त्री) [अनु + कम् + ल्युट् + टाप्] कृपा, दया ।

अनुकम्प (वि०) [अनुकम् + क्त्] दयालु, सहानुभूति का भाव, —किं तन्न येनास्मि ममानुकम्पा—रघु० १४।७४; कु० ३।७४; हूरकारा, दूतवासी दूत ।

अनुकरयन्—कृतिः (स्त्री०) [अनुकृ + ल्युट्, क्तिन् + ता] 1 नकल करना, प्रतिलिपि, अनुकृपता, समानता, समानकरण=एक अलंकार ।

अनुकर्मः—कर्मणम् [अनु + कृ + ल्युट् + वा] 1 विचार, आकर्म, 2 (आ०) पूर्व नियम में बाने बाने नियम का प्रयोग 3 नाडी का तला या घुरे का झट्टा 4 कर्तव्य का विरुद्ध से पालन, अनुकर्मन् भी ।

अनुकर्मन् [अनु + कर्म + ल्युट्] मृद का बीज अनुदेव जो आचरण्यता होने पर उस समय प्रयुक्त किया जाता है जब कि मृद निवेश का प्रयोग सम्व नहीं—ग्रन् प्रथम कल्पस्य योजनकल्पेन वर्तते—मनु० ११।३०, ३१।४० ।

अनुकामीन (वि०) [अनुकाम + ल] अपनी इच्छा के अनुसार काम करने वाला, —अनुकामीनां त्यज—मर्दटि० ।

अनुकारः=दे० अनुकरणम् ।

अनुकार्य (वि०) समर्थोचित, सामर्थ्यक ।

अनुकूलानम् [अनु + कूल + ल्युट्] कथन, प्रकाशन ।

अनुकूल (वि०) [अनु + कूल + ल्युट्] 1 मनोवर्धक, मित्रदत्त, जैसे कि बापु, भाय्य बाहिर 2 मित्रता पूर्वक कृपापूर्व 3 अनुकूल, —कः मिष्टावान तथा कृपाशु पनि, (एकरुतिः—ता० ४० वा, एकमिलत एकस्वामेव नापि-कृपाशु, वासपतः) नादक का एक गैर-कम्प अनुग्रह, कृपा—नादीनामनुकूलानामाचरति वेत्—काव्य० १ ।

अनुकूलति (ना० वा०) अनुकूल वा सुभाषित होना, प्रकट होना ।

अनुकूल्य (वि०) [प्रा० स०] दयुर्हित, 'दोषिदार' जैसा कि आता ।

अनुकूल्य [अनु + कूल + ल्युट्] 1 उत्तरार्थकार, कर्म, ताता, कर्मस्वापन, कर्मबद्धता, उचितकर्म—अचकने वस्तुमनुकूलता—रघु० ६।७०, स्वभुवन सर्वमनु-कूल्ये—१४।६०, 2 विषय सुधी, विषयताभिका ।

अनुकूल्यन् [अनु + कूल + ल्युट्] 1 कर्म पूर्वक बाने बढ़ना, 2 अनुगमन—जी, —विका(स्त्री०) विषय सुधी विषय-तालिका ३। किसी प्रत्य के कर्मबद्ध विषयों का दिव्य-ज्ञान कराय ।

अनुकूल्य दे० अनुकरणम् ।

अनुकूलः [अनु + कूल + ल्युट्] दया, कृपा, दयालुता (अर्थ० के साथ) भगवन्नामदेव न ते मध्यम-कोश—छ० ३, मेष० ११५ ।

अनुकूल्य (अर्थ०) प्रतिलिपि, समानता, बारबार ।

अनुकूल्य (पु०—सा) [प्रा० म०] डारपास या सारवि का टहलुवा ।

अनुकूल्य [प्रा० स०] उड़ीमा के कुछ मन्दिरों में पुजारीया को रो जाने वाली धुनि ।

अनुकूलतिः (स्त्री०) [अनु + कूल + क्तिन्] 1 पता लगाना 2 विवरण देना, प्रकट करना ।

अनुक (वि०) [अनु + कम् + ल्युट्] (सम्प०) पीछे चलने वाला, मिलान करने वाला, नः—अनुवर, जात्रा-कारी सेवक, नाशी तद्व्यननामानुव रघु० २।५८ १।१२ ।

अनुगतिः (स्त्री०) [अनु + गम् + क्तिन्] पीछे चलना — गतानुगतिः लोक पीछे चलन वाला, अनुकरण करने वाला दे० 'गत' के अनन्तगत ।

अनुगमन्, —अवन् [अनु + गम् + ल्युट् + वा] 1 अनुसरण 2 अनुसरण, अपने स्वर्गीय पति की बिना पर विधवा स्त्री का मती होना 3 नकल करना, समीपतर जाना 4 ममकृपता, अनुकृपता ।

अनुगमिन् (वि०) [अनु + गम् + ल्युट्] बहाडा हुआ, —सत्य बहाडा ।

अनुगमोक्तः [अनु + गम् + ल्युट्] गोपाल, ग्वाला ।

अनुगमिन् (पु०) [अनु + गम् + ल्युट् + क्तिन्] अनु-यायी, सहचर ।

अनुगुण (वि०) [अनु + गुण + ल्युट्] समान गुण रखने वाला, उठी स्वभाव का, अनुकूल या उचित, उपयुक्त, अनु-कूल, समानधीक; —(बीजा) उत्कृष्टिद्वय दूतवा-मुखाया धमखा—मुक्त० ३।३ मन् की सुकुर, अयमल, अनोक्तम् (ता० वा० के अनुसार बहो 'वा से अविप्राय 'अविप्राय बीजा' के हैं) —अन् (वि० वि०) 1 अनुकूल, इच्छाओं के समक 2 मित्रमित्रपूर्वक या समकृपता के साथ (सम्प० में) 3 स्वाभावः ।

अनुबन्धः—इयम् [अनु + बन्ध + क्तृ, ल्युट् वा] 1 प्रसाद, कृपा, उपकार, आभार—निबन्धानुबन्धकर्ता—पञ्च० १ पादापेक्षानुबन्धपृष्ठम् रघु० २।३५, 2 स्वीकृति 3 सेवा के पट्टभाग की रक्षा करने वाला दल ।

अनुपासक [प्रा० म०] कीर, निवाला ।

अनुचरः [अनु + चर + ट] 1 सहचर अनुयायी नौकर सेवक सेनानुचरेश घेनो—रघु० २।४ २६।५५—रा—री (स्त्री) दाली सेविका ।

अनुचारक [अनु + चर + क्तृ] अनुचर सेवक रिक्ता दासा सेविका ।

अनुक्ति (वि०) [न० त०] 1 गलत अनुपयुक्त 2 निराश्रय प्रामाण्य ।

अनुक्तिता, चिन्तनम् [अनु + चिन्त + क्तृ, ल्युट् वा] 1 याद करना याचना मनन करना 2 प्रत्यामरण फिर से ध्याना २ अनुचरता मान चिन्ता ।

अनुच्छाद [अनु छिन् + णिच् + घञ्] साही या घोष का वह छोर जो कंध के ऊपर होकर छाती पर लटकता रहता है ।

अनुच्छिन्ना, (स्त्री०)—छिन्न [अनु + छिन् + क्तृ, ल्युट् वा] कट कर अलग न होना नाश न होना अनवरता ।

अनुच्छात (वि०) [अनु + च्छा + क्तृ, ल्युट् वा] बाध में उत्पन्न, पीछे जन्मा हुआ छाया भाई असौ नुसार अनुच्छातमान रघु० १।७८, —ज—जात छोटा भाई—जा, जाता छोटी बहन ।

अनुच्छात (पु०) [ब० स०] छोटा भाई जननाश तथा नृपत्याग कि० २।१७ ।

अनुच्छिन्ना (वि०) [अनुच्छिन् + णिन्] आश्रित पराग मोची—(पु०—बी) पगबल्लूरी, सेवक अनुचर अवच नीश प्रबोद्धनीति—कि० १।४, १० ।

अनुज्ञा आज्ञा [अनु + ज्ञा + क्तृ, ल्युट् वा] 1 अनुमति सहमति स्वीकृति 2 आज्ञा की अनुमति या छूटो 3 कहना 4 आज्ञा आदेश ।

अनुज्ञापक [अनु + ज्ञा + णिच् + क्तृ] आज्ञा देने वाला हुषम देनेवाला ।

अनुज्ञापकम्—अज्ञि (स्त्री०) [अनु + ज्ञा + णिच् + ल्युट् क्तृ वा] 1 अग्रिकृत बनाना 2 आज्ञा या आदेश जारी करना ।

अनुज्ञेयम् (अव्य०) उपेक्ष्यता की दृष्टि के अनुसार ।

अनुत्तरः [अनु + उत्तर + क्तृ] 1 प्यास मापचारमपशात विचार माननानुत्तरमपदेन—शि० १०।२ (प्यास और मृग) 2 कामना इच्छा 3 जल पीने का पात्र 4 मद्य ।

अनुत्तर [अनु + उत्तर + क्तृ] पशुचाराप, सत्ताप—जलानुत्तरापेक्ष सा विक्रम० ४।१ सत्ताप से पीड़ित ।

अनुत्तरम् अनुत्तर 3 और 4 ।

अनुत्तरम् (अव्य० स०) दाना दाना करके बर्बाद कण कण करके, अत्यन्त सूक्ष्मता से ।

अनुत्त (वि०) [न० त०] जो अधिक उत्सुक न हो, जो पदचानापकरी या अदयकत न हो ।

अनुत्तर (वि०) [न० त०] 1 जिससे अच्छा कोई और न हो, जिससे बढ़िया कोई और न हो, सबसे अच्छा सबसे बढ़िया प्रमुख रूप में सर्वोपरि—सर्वदृष्ट्यनु विद्येय दृष्ट्यनुत्तराग्रम हि० प्र० ४—काञ्चन गान्ध्याम—मन० २।२४८, 2 (व्या० में) जो उत्तम पुरुष म प्रयुक्त न किया जाय ।

अनुत्तर (वि०) [न० त०] 1 प्रधान मुख्य 2 बढ़िया, सर्वोत्तम 3 बिना उत्तर 4 मूक उत्तर देने में असमर्थ—अनुत्तरज्ञा च अव्यनुत्तरात्—नै० 4 निषिद्ध, स्थिर 5 निधन, छटिया छोटा कमीना 6 दक्षिणी, रघु उत्तर का अन्धकार (दालमन्त्र या आनाकानी का उत्तर अनुत्तर समझा जाता है) —रा दक्षिण दिशा ।

अनुत्तर (वि०) [न० व०] स्थिर, अनुद्वेजित, अविचल्य अपादिवाधाय अनुत्तरागम्—कु० ३।४८ ।

अनुत्तरानम् [न० त०] प्रधान या सर्वोत्तम का अन्धकार ।

अनुत्तर (वि०) [न० त०] पणिनि या नैनिष्ठका के मुद्रों से अधिकृत अविचल, निश्चित 'पञ्चमहासा-सिद्धि' सम्निबधना—सि० २।१२२ ।

अनुत्तर [न० त०] बमड या बहकार का अन्धकार कालमया—अग० १।६३ प्राप्तिनता ।

अनुत्तर (वि०) [अनुत्तर + णिन्] जो बमड के कारण फला हुआ न हो अथवा 'नी अन्ध'—स० ४ । १३ ।

अनुत्तर (वि०) [न० व०] पत्नी कमर वाला, पतला, हृद्य, क्षीण (दे० 'अ')

अनुत्तरानम् [अनु + उत्तर + ल्युट्] निरीक्षण ।

अनुत्तर (वि०) [न० त०] नृस्वर, जो उच्चातस्वर की भाँति उच्च स्वर से उच्चारित न होता हो, स्वरघात होन से नृस्वर ।

अनुत्तर (वि०) अनु [न० त०] 1 जो उदार (दानशील) न हो, कृम अनुत्तर अग्रद 2 जो अपनी पत्नी के अनुत्तर चलने वाला हो या वह जिसकी पत्नी पति के अनुत्तर चलने वाला हो यस्मिन् प्रसीदति पुन न अनुत्तरादौ नृदारवच-काव्य० ४, ('बहाता' के अर्थ में भी प्रयुक्त होता है) 3 उपयुक्त और योग्य पत्नी वाला ।

अनुत्तर विस्मय (अव्य० म०) पलायन, दिन ब-दिन ।

अनुत्तर [अनु + उत्तर + क्तृ] 1 पीछे लकट करना, निग्रह या निदेश जो पीछे किसी पूर्व निग्रह की ओर संकेत करे अन्धकारमनुत्तर समानाम्—वा० १।३।१०, 2 निदेश, आदेश ।

अनुष्ठान (वि०) [न० त०] जो अष्टांगरी या वर्तमान न हो—ता. सत्पुत्रा समद्विधि—अ० ५।१२।

अनुष्ठान (वि०) [न० त०] १ जो साहसी न हो, विनीत, क्षीण २ जो उन्मत्त या बहुत ऊँचा न हो।

अनुष्ठान (वि०) [अनु+इ+तत्] १ अनुष्ठान, पीछा किया गया (कई बार कर्तुं में प्रयुक्त) २ मेका हुआ या जोड़ा हुआ (जैसे कि ध्वनि)—तन्म सवीत में काल की माप=मासा द्रुत।

अनुष्ठानः [न० त०] विवाह न होना, बहुपथं पालन।

अनुष्ठानम् [अनु+धा+त्सुट्] १ पीछे जाना या भागना, पीछा करना, अनुसरण करना—तुल्य कवित्तये—अ० २; २ किसी पदार्थ का अत्यंत पीछा करना, अनुसन्धान, अवेषणा ३ किसी स्त्री को पाने का असफल प्रयत्न करना ४ तपस्वी, पवित्रीकरण।

अनुष्ठानम् [अनु+धा+त्सुट्] १ विचार, मनन, धार्मिक चिन्तन २ सोचविचार, वाद,—आ न शीतिविक्रपात् त्वदनुष्ठानसंभवा—कु० १।२१, ३ हितचिन्तन, स्निग्धचिन्तन।

अनुष्ठानः [अनु+धी+ञ्] १ नवानन, प्रार्थना प्रकृषिषत् स कर्मधामन्य प्रतिपुष्टति—अ० ४, २ साक्षी-मता, सिद्धता, शास्त्रानुसृत आचरण, ३ भ्रमनिवेदन, निष्ठा, प्रार्थना, 'आवर्धनम्—विनीत संशोधन ४ अनुसन्धान, प्रशिक्षण, आचरण के अधिनियम।

अनुष्ठानः [अनु+नप्+बन्] शब्द, कोलाहल, गूज, प्रतिध्वनि।

अनुष्ठानक (वि०) [अनु+नी+ञ्] तुलीत, विनम्र, विनीत।

अनुष्ठानिक (वि०) [अनु+नय+ठ्] येहीपूर्व,—का नाटक की मुख्य पात्र नायिका की अनुपरी जैसे कि सखी, बानी या दासी आदि,—नयी प्रवृत्तिवादी प्रेक्षा वाचैयिका तथा। अस्याप्य विल्लकारिण्यो विज्ञेया इत्यनुनायिका।

अनुष्ठानिक (वि०) [अनु+नासा+ठ] १ नासिक्य, नासिका से उद्घटित,—अन्म नूननुनाता। अ०—आदिः अनुनासिक वर्ण (अ ङ ञ न् न्) के कारण होने वाला सवृत्त ध्वनन।

अनुष्ठानिकः [अनु+निर्+दिप्+बन्] पूर्ववर्ती अनुक्रम के अनुसार वर्णन,—नृपसामुपदिष्टाना क्रियाभामय कर्मणाम्। क्रमको योजनानिर्देशो यथासत्यं तदुच्यते। सा० ६०।

अनुष्ठानिकः=दु० अनुमयः

अनुष्ठानिकः [न० त०] उपवाद या क्षति का अभाव,—अक्षित किना किसी क्षति के प्रादुर्भाव किया।

अनुष्ठानम्—अन्तः [अनु+नप्+त्सुट्, बन्, वा] १ ऊपर चढ़ना, एक के बाद दूसरे का चिरना २ पीछा

करना, अनुसरण ३ भाष ४ वैरागिक—अन्म (अब्ध०) [पत्+अनुत्] अधिक अनुसरण, अनुसरण;—अन्ता-नुपात कुतुभात्मनुष्ठान—अद्वि० २।११; (अन्तात्म-पात्य एक कृता से दूसरी कृता पर आकर, वा सताओ को झुका कर)।

अनुष्ठान (वि०) [प्रा० त०] यार्न का अनुसरण करने वाला,—अन्म (वि० वि०) तदक के साथ साथ।

अनुष्ठान (वि०) [प्रा० त०] निरन्तर कदम कदम अनुसरण करता हुआ,—अन्म सम्मिश्रित गायन, गीत का ठेक, (अब्ध०) १ कदम के साथ-साथ, पैरों के निकट; २ कदम कदम करके, प्रति पद, ३ अन्तः ४ एकद्वितीय पर, विस्तृत पीछे, तुल्य वाद-अन्तःना पुरो अन्तः, 'अह-मध्यनुष्ठानमागत एव—अ० १ (प्राय सब के साथ, वा समाप्त में इसी अर्थ में), (ती) आशिषामनुष्ठान सव-त्सुत्त पाणिना—रन्म १।१३१,—अन्तः प्रतियुक्त-तावम्यानुष्ठानासिध—१।४४।

अनुष्ठानिकी [प्रा० त०] यार्न, तदक।

अनुष्ठानिक (वि०) [अनुष्ठान+निवि] अनुसरण करनेवाला होने वाला अर्थात् अन्तःक, वा पृच्छक-अनुष्ठानिक्येष्टा यथायनुपरी सिद्धा०।

अनुष्ठानिकी [अनुष्ठान+क+टाप्] जूता, बूट, ठेकी एड़ियों का जूता, वा कण्ठक।

अनुष्ठानः [न० व०] उपचाहित, ऐसा अन्तर जिसके पूर्व कोई दूसरा अन्तर न हो।

अनुष्ठानि (वि०) [न० व०] छल रहित, कपट रहित—रहस्य साधनानुपधि विबुद्ध विजयते—उत्त० २।२।

अनुष्ठानताः [न० त०] १ वर्णन न करना, बयान न देना २ अनिश्चितता, सम्भेद, प्रमाणाभाव।

अनुष्ठानतिः (स्त्री०) [न० व०] १ असफलता, अक्षिप्त,—अन्तःपात सवसवसतात्प्राप्तनुपति—आवा० ८२, तात्पर्य—जुष्ट या किसी लब्ध वर्ण को प्राप्य करने में असफलता, २ अन्तःप्राप्तता, अन्तःप्राप्तिक न होना ३ अन्तःप्राप्त, तर्कानुसार कारण का अभाव।

अनुष्ठान (वि०) [न० व०] अनुसनीय, बेजोड़, सर्वोत्तम, अत्यंत अच्छे—आ दक्षिण पश्चिम प्रदेश की द्वितीय (कुतुब की सखी)।

अनुष्ठानिक (वि०) [अन्+उप+धा+तत्, अनुष्ठान अनुष्ठाने] +व बेजोड़, अनुसनीय।

अनुष्ठानिकः (स्त्री०) [न० त०] पहचान न होना, प्रत्यक्ष न होना, बीबासको की दृष्टि में ज्ञान का एक साधन, परन्तु नैवाकिको की दृष्टि में नहीं।

अनुष्ठानकः [अन्+उप+कम्+निप्+बन्] बोध का अभाव, अत्यन्त होना।

अनुष्ठानिकी [न० त०] अपने वर्ण के अनुसार वर्णोपरीत आचरण न करने वाला।

अनुपलब्धः [न० त०] रोग को उभाड़ने या भटकाने वाली परिस्थिति ।

अनुपलब्धिम [न० त०] न्यायशास्त्र में हेतुभास का एक भेद जिसके अन्तर्गत पक्षसंबन्धी सभी ज्ञान बातें आ जाती हैं, और दुष्टान्त द्वारा, चाहे वह विधेयात्मक हो या निधेयात्मक, कार्यकारण-सिद्धान्त के सामान्य नियम का समर्थन नहीं हो पाता - यथा सर्वं नित्य प्रमेयत्वान् ।

अनुपलब्धिः [न० त०] 1 उपसर्ग की शक्ति से विरहित शब्द [निपात आदि] 2 (न० ब०) क्रियमें कोई उपसर्ग न हो ।

अनुपलब्धानम् [अनु + लब् + ल्यट्] अभ्रात, निकट न होना ।
अनुपलब्धत् [नञ् + उप + ल्वा + क्त] जो उपस्थित नहीं उपस्थित ।

अनुपलब्धितिः (स्त्री०) [अनु + ल्वा + क्त + क्तिन्] 1 गैर-ह्राद्वरी 2 याद करने की अवधारणा ।

अनुपलब्ध (वि०) [न० त०] 1 जिसे छोट नहीं लगी 2 अप्रयुक्त, कोर, नया (कपड़ा) ।

अनुपलब्ध (वि०) [न० ब०] जो गण्य रूप से दिखलाई न दे या पहचाना न जा सके ।

अनुपातः - त्० प्रदाननम् ।

अनुपातकम् [अनु + पत् + क्तिन्] प्रचल्य यातक जैसे चारी, हथिया, व्यभिचार आदि, विष्णुस्मृति में ऐसे ३५ तथा मनुस्मृति में १० पातक गिनाये गये हैं ।

अनुपातम् [अनु + पा + ल्यट्] दवा के साथ या पीने पी जाने वाली द्रव्य, औषधि लेने की मात्रा ।

अनुपालनम् [अनु + पाल् + ल्यट्] प्ररक्षण, मुखान, ब्राह्म-पालन ।

अनुपुष्क [प्रा० स०] अनुपायो ।

अनुपुष्क (वि०) [प्रा० स०] 1 नियमित, उपयुक्त मात्र रखने वाला, कमबद्ध वृत्तानुपुष्क च न चान्तिदीर्घ कु० १३५ 'केस' जिसके बाज यथाक्रम है, 'गात्र' जिसके अंग सुगठित हैं, इसी प्रकार 'दंष्ट्र', 'नाभि', 'पाणि' 2 कमबद्ध मिर्चमिर्चवार 1 सम० ज्ञ (वि०) नियमित परम्परा में उत्पन्न, कक्षा नियमित रूप में बन्धे देने वाली गाय ।

अनुपुष्क (वि०) [वि०] नियमित रूप में कमागत रीति अनुपुष्क में ।

अनुपेत (वि०) [न० त०] 1 विरहित २ यज्ञोपवीत धारण न किये हुए ।

अनुप्राप्तम् [अनु + प्र + ज्ञा + ल्यट्] पदचिह्न का अनु-सरण, टीह लगाना ।

अनुप्राप्तम्, प्रयाप्तम् [अज्य० म०] कमागत गीर्णपूर्वक -- गेह 'तम्-दम आले, गेहम् अनुप्राप्तम्-दम् मिठा० ।

अनुप्राप्तः [प्रा० म०] निर्दिष्ट उपयोग, आवृत्ति ।

अनुप्राप्तः [अनु + प्र + लिप् + ल्यट्] 1 दासका - रघु० ३।२२, १०।५१; 2 अनुकरण - अपने को दूसरे की हल्का के अनुकूल होना ।

अनुप्राप्तः [प्रा० स०] बाद में किया जाने वाला प्रश्न । (अध्यापक के पूर्व कथन से संबद्ध) ।

अनुप्राप्तः (स्त्री०) [अनु + प्र + मन् + क्तिन्] 1 प्रवाद सब 2 गब्दी का अत्यधिक तर्क मूलतः सम्बन्ध ।

अनुप्राप्तम् [अनु + प्र + लट् + क्तिन् + ल्यट्] वाराचन, मराचन ।

अनुप्राप्तिः (स्त्री०) [अनु + प्र + भा + क्तिन्] प्राप्ति करना, पहुँचना ।

अनुप्राप्तः [अनु + प्त् + अच्] अनुपायी, सेवक - सानुप्राप्त प्रभुर्गण कण्ठावाराणाम् रघु० १३।७५ ।

अनुप्राप्त [अनु + प्र + क्त् + क्त] एक समय अर्थात् अक्षरों या वर्णों की पुनरावृत्ति - वर्णसाध्यप्रवृत्त - काव्य०, परिभाषा और उदाहरणों के लिए दे० भा० द० ६३३-३८, और काव्य० ९वीं उल्कास ।

अनुप्राप्त (वि०) [अनु + क्त् + क्त] 1 वैधा हुआ, जकड़ा हुआ, 2 यथा क्रम अनुसरण करने वाला, फल स्वरूप देने वाला 3 मरुट 4 अनवरत चिपका हुआ, लगातार ।

अनुप्राप्तः [अनु + क्त् + क्त] 1 बचन, कसना, सबध, आसक्ति, बचान (सव्य० बाल) 2 बजाव परम्परा, सातव्य श्रेणी, भूखला - बाण्य कुछ स्थिरता बि-तानुबधम् - शा० ४।१४, रै००, मास००; सानुबधा कच न ह्यु मयदो मे निरागद रघु० १।१४, ३ अनु-क्रम, फल (शुभ या अशुभ) 4 ह्रादा, योजना, प्रयोजन, कारण अनुबध परिज्ञा देश-काली च तत्त्वतः । सारा-पराधी बालोच्य दण्ड २० धेयु पातयेत् - अनु० ८।१२६; 5 सबध जोड़ने वाला, गीण 6 आरम्भिक तर्क (वेदान्त के आरम्भिक तर्क) 7 (व्या०) एक सकेनक अक्षर जो कि इस शब्द के स्वर या विभक्ति में कुछ विशेष-वना का छोटक हो जिसके साथ वह जुड़ा हो - जैसे कि 'पाल' में ल् 8 बाधा, हकाबट 9 आरम्भ, उपक्रम 10 मार्ग, अनुगमन ।

अनुबधम् [अनु + क्त् + ल्यट्] सबध, परम्परा, सिल-बिला आदि ।

अनुबधित (वि०) [अनुबध + क्तिन्] [प्रायः सप्तत पद के अन्त में] । सव्य०, मसक, सयक २ क्रम, परि-गायो पञ्चबन्ध दुःख दुःखानवधि-विक्रम०, ४ एक दुःख के बाद दूसरा दुःख या दुःख का भरो अकेला नहीं (ता० ३ फलना फलना हुआ, सम्पन्न, अबाध - ऊर्ध्व गत यस्य न चानुबधि - रघु० ६।१७, अबाध या सर्व व्यापक ।

अनुबध (वि०) [अनु + क्त् + क्त] 1 प्रदान, मुख, 2 मारे जाने के लिए (जैसे बैल) ।

अनुबन्धम् [प्रा० सं०] पीछे स्थित सैन्यदल, मुख्य सेना की रक्षा के लिए पीछे आती हुई सहायक सेना ।

अनुबोधः [अनु + बुध् + णिच् + बच्] 1 बाद का विचार, प्रत्यास्मरण, 2 कम पढ़ी हुई सूच्य की पुनर्जीवित करना ।

अनुबोधनम् [अनु + बुध् + ल्यट्] प्रत्यास्मरण, पुनः स्मरण ।

अनुभवः [अनु + भू + अप्] 1 साक्षात् पत्यक्ष ज्ञान, व्यक्तिगत निरीक्षण और प्रयोग से प्राप्त ज्ञान मन के संस्कार जो स्मृतिजन्य न हो ज्ञान का एक भेद, दे० तर्क० ३४, (नैययिक ज्ञान प्राप्ति के प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द नामक चार माधन मानते हैं, वेदान्ती और मीमांसक इनमें अवधारित और अनुपलब्धि नामक दो साधन और जोड़ देते हैं) 2 तनुर्वा — अनुभव ब्रह्ममा सखि लम्पसि ने० ४।१०५; 3 समस्त 4 फल, परिणाम । सम०—निष्ठ (वि०) अनुभव द्वारा ज्ञात ।

अनुभावः [अनु + भू + णिच् + घञ्] 1 भविष्य, व्यक्ति की भविष्य या गौरव राजसी चमक दमक, वैभवशक्ति, बल, अधिकार, - (परिमेषपुर भारी) । अनुभाव, बिभोवात् सेनापरिवृतावि-रघु० १।३७, -संभावनीयानुभावा अस्याकृति, -श० ७; ७ (सा० शा० में) दृष्टि, सकेत आदि उपयुक्त लक्षणों द्वारा भावना का प्रकट करना, भाव मनोगत मातात् स्वगत व्यञ्जयति येतेऽनुभावा इति श्रुता, यथा भ्रमग कोपस्य व्यञ्जक—दे० सा० ८० १६७; 3 दुष्ट सकल्प निष्वास ।

अनुभावक (वि०) [अनु + भू + णिच् + क्तृ] अनुभव कराने वाला, श्रोतक ।

अनुभावनम् [अनु + भू + णिच् + ल्यट्] सकेत और इंगितों द्वारा भावनाओं का श्रोतक ।

अनुबाधनम् [अनु + भाध् + ल्यट्] 1 कही हुई बात को धरन के लिए फिर से कहना, 2 कही हुई बात को पुनरावृत्ति ।

अनुवृत्तिः (स्त्री०) = नु० अनुभव ।

अनुवर्गः—[अनु + वृज् + घञ्] 1 अवर्ग की हुई सेवा के बदले मिलने वाली माफ़ी क्षमा ।

अनुध्यात् (पु०) [प्रा० सं०] छोटा भाई ।

अनुधत्त (वि०) [अनु + धृ + क्तृ] 1 सम्मन, अनुज्ञान, इजाजत दिया हुआ, स्वीकृत, गमना—श० ८।१, जाने के लिए अनुज्ञान 2 बाह्य हुआ, प्रिय—तः प्रेमी—अप्य स्वीकृति, अनुमोदन, अनुज्ञति ।

अनुवृत्तिः (स्त्री०) [अनु + धृ + क्तृ] 1 अनुज्ञा, स्वीकृति, अनुमोदन 2 अनुद्वेषी युक्त पश्चिमा । मय०—यत्र स्वीकृति सूचक पत्र या लेख ।

अनुधनम् [अनु + धृ + ल्यट्] 1 स्वीकृति, रजामयी 2 स्वतंत्रता ।

अनुसंज्ञनम् [अनु + मन् + णिच् + ल्यट्] संको द्वारा आवाहन या प्रतिष्ठा ।

अनुसरणम् [अनु + मृ + ल्यट्] पीछे सरना—लम्बरजे बानुसरण करिष्यामीति मे निश्चय—हि० ३, विषया का सती होना ।

अनुमा [मा + अच्] अनुमिति, दिये हुए कारणों से अनुमान, दे० अनुमिति ।

अनुमानम् [अनु + मा + ल्यट्] 1 अनुमिति के माधन द्वारा किसी निगय पर पहुँचना दिये हुए कारणों से अनुमान लगाना, अनुमान उपमहार त्याग साध्य के अनुसार ज्ञान प्राप्ति के चार माधन में साधक 2 अटकल, अन्दाजा 3 भावना 4 (सा० शा०) एक अलकार क्रिये प्रमाण निश्चित करने का भाव अतोसे हंग से प्रकट किया जाता है—सा० ८० ७११—यत्र पतय-बलाना दृष्टिनिगिता गन्ति तत्र शरा, तद्वत्परो-विश्वरा वाक्प्राप्ता पुर रमणे मय्ये ॥ दे० काव्य० १०॥ सम०—उक्तिः (स्त्री०) तर्कना, तर्क लगाना अनुमान ।

अनुमापक (वि०) [स्त्री० —पिका] अनुमान कराने वाला, जो अनुमान करने का आधार बन गये ।

अनुभावा [प्रा० सं०] अपाधी महीना, -अम् (अभ्य०) प्रतिभास ।

अनुमितिः (स्त्री०) [अनु + मा + क्तिन्] दिये हुए कारणों से किसी निगय पर पहुँचना, वह ज्ञान जो निगमन द्वारा या स्वयमन तर्क द्वारा प्राप्त हो ।

अनुमेय (वि०) [अनु + मा + यन्] अनुमान के योग्य, अनुमान किया जाने वाला—तत्त्वानुमेया प्रारम्भा—रघु० १।२० ।

अनुमोदनम् [अनु + मुद + ल्यट्] सहमति, सम्मन, स्वीकृति, सम्मति ।

अनुशास्त्रः [अनु + गृ + घञ्] यज्ञीय अनुष्ठान का एक अंग, गण या पुरक यज्ञानुष्ठान, प्राय 'अनुवाज' उचित जाता है अनुशास्त्र भी ।

अनुयात् (पु०) [अनु + या + क्तृ] अनुयायी ।

अनुयात्रम्—त्रा [अनु + यात् + अण्] निगयों टापू परिजन, अनुचरवर्ग, सेवा करना, अनुसरण ।

अनुयात्रिक [अनुयात्रा + ठन्] अनुचर, सेवक, श० १।२२ ।

अनुयात्रम् [अनु + या + ल्यट्] अनुसरण ।

अनुयायिन् (वि०) [अनु + या + णिन्] अनुयायी, सेवक, अनुचर, - (पु०) पीछे चलने वाला (श० आल०) ।

—रामानुजानुयायिन—पहावलजी या मेवक, —स्येयि जीतोऽनुयायिदये—रघु० २।४, १११ ।

अनुयोजक (पु०) [अनु + यज् + क्तृ] परीक्षक, विद्वान्, अध्यापक ।

अनुवीचः [अनु + वृत् + चञ्] 1 प्रश्न, पृच्छा, परीक्षा
2 निरा, शिङ्को 3 वाचना 4 प्रवास 5 वाचिक चिन्तन
टीका-टिप्पण । सम्०—कृत् (पु०) 1 प्रश्नकर्ता 2
अध्यापक, अध्यापन सुह ।

अनुवीचकम् [अनु + वृत् + चञ्] प्रश्न, पृच्छा ।

अनुवीचकः [अनु + वृत् + चञ्] सेवक ।

अनुरक्त (वि०) [अनु + रज् + क्त] 1 लाल किया हुआ,
रंगीन 2 प्रसन्न, सन्तुष्ट, निष्ठावान् ।

अनुरक्तिः (स्त्री०) [अनु + रज् + क्त] प्रेम, भासक्ति,
अनुराग, स्नेह ।

अनुरक्त (वि०) [अनु + रज् + क्त] प्रसन्न करने
वाला, सन्तुष्ट करने वाला ।

अनुरक्तम् [अनु + रज् + क्त] संराधान, सन्तुष्ट करना,
सुख देना प्रसन्न करना, सन्तुष्ट रकना ।

अनुरक्तम् [अनु + रज् + क्त] 1 अनुकूल लगना, नुपूर
या बुचक्यों की भावना से उत्पन्न मनबलन प्रति-
बन्धि, 2 'अनुरक्त' नामक धर्म शक्ति, तु०, वाच्य-
विक कथन से व्यञ्जित होने वाला अर्थ व्यर्थ-क-
मध्यवादेवानुरक्तयो यो धर्म्य—मा० द० ४ ।

अनुरक्तिः (स्त्री०) [अनु + रज् + क्त] प्रेम, भासक्ति ।

अनुरक्त्या [प्रा० स०] पगडंडी, उपनारी ।

अनुरक्तः—चित्तम् [प्रा० स०] नृज, प्रतिध्वनि ।

अनुरक्त (वि०) [प्रा० स०] नृज, एकान्तप्रिय, निजी,
—से (वि० वि०) एकांत में ।

अनुरागः [अनु + रज् + चञ्] 1 लासिका 2 शक्ति,
भासक्ति, निष्ठा, (विप० अपरागः) प्रेम, स्नेह (अवि०
के साथ या समास में) कंठकितेन प्रथयति ध्वमनुराग
कपोलेन—वा० ३११५, रघु० ३११०, 'इति सकेत
या प्रेम को प्रकट करने वाला एक बाह्यचकेत ।

अनुरागिन् (वि०) [अनुराग + चिनि, यत्पुं वा] भासक,
अनुरागवत् } प्रेम से उत्तेजित ।

अनुरागम् [वि०] [अन्व० स०] रात में, हर रात,
प्रति राति ।

अनुरागा [प्रा० स०] २७ नक्षत्रों में से सतरहवाँ नक्षत्र,
यह चार नक्षत्रों का समूह है ।

अनुकम्प (वि०) [प्रा० स०] 1 सव्य, भिल्ला-मुल्ला,
तदनुकम्प, योग्य, अनुकम्प वरज—स० १, 2 उपयुक्त
या योग्य, अनुकूल, (संब० के साथ वा समास
में)—अथ पितुरनुकम्पस्त्वं गृहीर्लोकार्तैः—विष्म०
५१२१ ।

अनुकम्प-वत् (वि० वि०) अनुकम्पना वा अनिवर्ति-
—वत्, वत्तः } पूर्वक ।

अनुरोचः—अनम् [अनु + वृत् + चञ्, क्तु वा] 1 चित्त,
आराधना, इच्छापूर्ति करना 2 समकम्पता, आशापाजन,
किहाव, विशार—अनुरोचात्—का० १९०, १८०,

१९२; 3 आनन्दपूर्वक आर्चना, वाचना, विवेचन 4
नियम का वाकन ।

अनुरोचिन्—अच (वि०) [अनुरोच + चिनि, अनिवृत् +
चञ्] चिन्तनी ।

अनुरोचः [अनु + वृत् + चञ्] भावृति, पुनरुक्ति ।

अनुरोचतः—स्वः [अनु + वृत् + चञ्, क्तु वा] मोर ।

अनुरोचः—लेखनम् [अनु + लिप् + चञ्, क्तु वा] 1 अवि-
बेक, लेखन 2 सुवर्णित लेख, उद्यम—अनुरोचकृत-
वृत्तान्तेनानि—का० ३२४ ।

अनुरोच (वि०) [प्रा० स०] 1 'आर्चो' से—ऊपर से नीचे
की ओर जाने द, वा—निर्वाचित, स्वाभाविक क्रमा-
नुसार (विप० प्रतिश्लोम), (अत) अनुकूल—'कृष्टं
अर्थ प्रतिश्लोमं कथंति—सिद्धा०, निर्वाचित (दत्त) में
हल बताया हुआ; 2 विधित (जैसे कि शक्ति)

(वि० वि०) स्वाभाविक वा निर्वाचित क्रम में—आ-
(ब० ब०) विधित जातिवां । तन्—अर्थ (वि०)
पक्ष में होलने वाला,—अनुरोचकृतोवाचिन् प्रवाचः
कृतिनां भिर—वि० २१२५, अ-अनुरोच (वि०)
ठीक क्रम में उत्पन्न, उत्पन्नार्थ के पिता तथा दीपवर्ष
की माता से उत्पन्न सन्तान, विधित जाति का ।

अनुरोच (वि०) [न० उ०] 1 अधिक नहीं, न कम न
अधिक 2 स्पष्ट वा साफ नहीं ।

अनुरोचः [प्रा० स०] वसतालिका ।

अनुरोच (वि०) [प्रा० स०] आर्च्य देहा, कुछ देहा वा
तिरछा ।

अनुरोचकम् [अनु + वृत् + क्तु] भावृति, उत्तर वाट,
अध्यापन ।

अनुरोचतः [प्रा० स०] वृत्

अनुरोचकम् [अनु + वृत् + क्तु] 1 अनुकम्प (आत्मा
नी), अनुकम्पिता आशाकारिता, अनुकम्पता 2 प्रसन्न
करना, अनुकूल करना 3 स्वीकृति 4 कृष्ण, परिचाय
5 पूर्ववृत्त से पूर्वकरण ।

अनुरोचिन् (वि०) [अनु + वृत् + चिनि] 1 अनुवाची,
आशाकारी 2 अनुकम्प (कर्म) के साथ वा समास में ।
अनुरोच (वि०) [प्रा० स०] दूसरे की इच्छा के अनुरूप,
आशाकारी—अः अनुरोचता, आशाकारिता ।

अनुरोचः [अनु + वृत् + चञ्] 1 भावृति करना 2 वेद
के उपमाय, अनुभाष, अध्याप ।

अनुरोचकम् [अनु + वृत् + चिन् + क्तु] 1 उत्तर वाट
कराना, अध्यापन, शिक्षण 2 स्व वाट करना, दे०
'वृत्' अनु के साथ ।

अनुरोचतः [प्रा० स०] वृत्ति विधा चित्त मोर की हवा हो ।

अनुरोचः [अनु + वृत् + चञ्] 1 आनन्द रूप से
भावृति 2 आनन्द, उदाहरण, वा सर्ववर्ष की वृष्टि से
भावृति 3 आनन्दपूर्ण भावृति वा पूर्ववर्षित वाट का

इलोक, विशेष रूप से शास्त्रण ग्रन्थों का वह भाग जिसमें पूर्वोक्त विवेक या विधि की व्याख्या, चित्रण या उसके टीका-टिप्पण निहित हैं और जो स्वयं कोई विधि या विवेक नहीं हैं 4 समर्पण 5 विवरण, अर्कबाहू ।

अनुवाचक, वाचिन् (वि०) [अनु + वच् + क्त्वा - णिनि वा] 1 व्याख्यापरक 2 समरूप, समस्वर ।

अनुवाक (वि०) [अनु + वच् + णिच् + क्त] 1 व्याख्येय, उदाहरणसापेक्ष 2 (व्या०) वाक्य में किसी उक्ति का कर्ता, 'विधेय' का विपरीतात्मेक जो कि कर्ता के विषय में कुछ विधि या विधेय करता है । वाक्य में पहले से ज्ञात अनुवाक या कर्ता की पुनर्कृति विधेय के साथ सबब जतलाने के लिए की जाती है अतः उसे वाक्य में पहले रक्खा जाता है अनुवाक-मनुकस्य विधेयमधीरेयत् ।

अनुवाचक्य (अध्य०), समय समय पर, बार बार, फिर दोबारा ।

अनुवाकः—सन्धम् [अनु + वास् + कच्, स्युट् वा] 1 सामान्यतः रूप आदि सुगणित इत्थो से सुवासित करना 2 कपड़ों के किनारे बुकेकर सुगणित बनाना 3 (नवी) पिचकारी, तेक का एनिमा करना, या स्निग्ध बनाना ।

अनुवाकित (वि०) [अनु + वास् + क्त] धुपित, धुनी दिया हुआ, सुगणित किया हुआ ।

अनुवाकितः (वि०) [अनु + वच् + क्तित्] निष्कर्ष, प्राप्ति ।

अनुवाकित (वि०) [अनु + व्यच् + क्त] 1 छिड़ा हुआ सूराल किमा हुआ, कीटानुविद्धरत्नादिसाधारण्येन काव्यता—सा० ४० 2 उपर फैला हुआ, अन्तर्ब्रटिन, पूर्ण, व्याप्त, भिन्नित, मिलाकट वाला, अन्तर्भिन्नित—सरसिबमनुविद्ध लैबकेभापि रम्यम्—श० ११२०, 3 सवृक्ष, सबद्ध 4 स्थापित, जडा हुआ, चिदि—रत्ना नुविद्धार्चवमकलाया दिश सपत्नी भव दक्षिणस्या—रघु० ६१६३ ।

अनुवाकितम् [अनु + वि + वा + क्त] 1 आज्ञाकारिता 2 आदेशादि के अनुरूप कार्य करना ।

अनुवाकितम् (वि०) [अनु + वि + वा + णिनि] आज्ञाकारी, विनीत ।

अनुवाकितः [अनु + वि + नच् + कच्] बाद में नष्ट होना ।

अनुवाकितः [अनु + वि + म् + कच् + कच्] फलस्वरूप भाषा का होना ।

अनुवाकित (वि०) [अनु + वच् + क्त] 1 आज्ञाकारी, अनुगामी 2 अवाच, निन्तर ।

अनुवाकित (स्त्री०) [अनु + वच् + क्तित्] 1 स्त्रीकृति 2 आज्ञाकारिता, अनुकृता, अनुगमिता, नैरन्तर्य 3 अनुकृष्ट वा उपकृत कार्य करना, आज्ञापालन, मोन बहुरि, समुष्ट करना, प्रसन्न करना-कातां वानुद-

मपि सिद्धित वस्तेन—उत्त० ३, भा० ९, ४ (व्या०) जायायी नियम में पिछले नियम की पुनर्कृति या पूर्ति, पिछले नियम का जायायी नियम पर निरन्तर प्रभाव 5 पुनर्कृति वर्णानामनुवृत्तिरनुवाक ।

अनुवाचकः तु० अनुवाचक ।

अनुवाचक्य [अध्य०] [प्रा० म०] कभी-कभी, बार-बार, इति स्म पुच्छरयनेलमाकृत रघु० ३१५ ।

अनुवाकः सन्धम् [अनु + वच् + कच्, स्युट् वा] 1 अनुगमन, बाद में दाखिल होना, 2 बड़े भाई के विवाह से पहले छोटे भाई का विवाह ।

अनुवाकितम् [अनु + वि + अच् + कच्, स्युट्] गौण लक्षण या चिह्न ।

अनुवाकितः [अनु + वि + अव + कच् + कच्] (न्या० में) प्रत्यक्ष का बोध या चेनना (वेदा० में) मनोभाव या निर्णय का प्रत्यक्षीकरण ।

अनुवाकः केषः [अनु + व्यच् + कच्, स्युट् वा] 1 छोट पट्टेपाना, छबना, सूराल करना १ ति कीटानु-वेसादयो रत्नस्य रत्नस्य व्याहृत्युपयोगा सा० ४० १, २ सफे, मेक मुलामोद मदिरया कृतानुवाच मुद्रमन्—शि० २१२० ३ मिथ्य ४ बाधा होना ।

अनुवाकितम्—व्याहारः [अनुवा० ह + कच्, स्युट् वा] 1 पुनर्कृति, बार-बार कथन २ अभिशाप कोसना ।

अनुवाकितम्—अव्या [अनु + वच् + कच्, स्युट् वा] अनुसरण, अनुगमन विशेषतया बिबा होना हुआ अभ्यागत ।

अनुवाकित (वि०) [प्रा० म०] भक्त, निष्ठावान्, सलान (कथं या सब० के साथ) ।

अनुवाकित (वि०) [अनु + गत + क्त] लौ के साथ या लौ में मील लिया हुआ ।

अनुवाकः [अनु + वी + अच्] 1 पश्चात्ताप, मनुस्ताप, भेद रण, नन्वनुसयस्थानमेतत्—सा० ८,—इतो गतस्यानु-गथो मा यदिनि विरुद्ध ४, शि० २११४, २ अति वेर या कोष शिष्टानामनुश्रम पर गत—शि० १९१ २,—यस्मिन्ममुक्तानुश्रम मरैव जागति नृजयी—सा० ६११, ३ घृणा ४ गहरा सबन्ध, जैसा कि क्रमागत, (हिन्दी पदार्थ में) गहन आसक्ति ५ (वेदा० में) दुर्कर्म का परिणाम या फल जो कि उनके साथ मयक रहता है और पुनर्जन्म में अस्वाची भक्ति का उपयोग कराके फिर जीव को शरीरों में प्रविष्ट करता है, ६ अथ के मामलों में लेख जिसे पारिभाषिक रूप में 'उत्सादन' कहते हैं दे० कीलानुश्रम ।

अनुवाकित (वि०) [अनु + वी + गानच्] शेर प्रकट करना हुआ, या नायिका का एक भेद, वह नायिका अपने प्रेमी के वियोग का श्लाघा करके उदास और सिन्न रहती है ।

अनुवाकित (वि०) [अनुवाच + णिनि] 1 अनुरक्त, भक्त,

बड़ा 2 परचासाप करने वाला, पछताने वाला 3 हलचिक नुका करने वाला 4 मानों किसी फल के कारण सबड़ ।

अनुसरः [अनु + सृ + अच्] मूल प्रेत, राजस ।

अनुज्ञात्मक-भासित् [(वि०)] अनु + शास् + क्तृन् [निनि क्तत्, भासित्] तुच् वा] निदेशक, शिक्षक, शासन करने वाला, दह देने वाला कवि पुराणमनुशासितारम् अग० १९ शासन कर्ता, एष चोरानुशामी राजेन मयादुत्पति - विक्रम० ६ ।

अनुज्ञासनम् [अनु + शास् + क्तृन्] आदेश, प्रास्ताविक, शिक्षण नियमों विधियों का बनाना भक्त्यधिशेष इवान् शासनम् कि० ११२८, आदेश या शिक्षा के शब्द - लम्बनोरनुशासनम् मनु० ११३९ माध्वनिय शब्दाओ के लम्बन संबंधी नियमों का निर्धारण तथा व्याख्या - शब्दानुशासनम् मित्रा० ।

अनुशिक्षित् [अनु + शिक्ष + क्तृन्] शिक्षाशील सीखने वाला । अनुशिक्षित (स्त्री०) [अनु + शास् + क्तृन्] शिक्षण, अध्यापन आदेश, आज्ञा ।

अनुशीलनम् [अनु + शील + क्तृन्] अभिप्रेत तथा ध्यान प्रभाव सतत प्रवृत्त या अभ्यास, सतत या बारंबार अभ्यास या अध्ययन ।

अनुचोक्त - लोचनम् [अनु + चृच् + घञ् ल्यट् वा] रज परचासाप, लेट, इसी अर्थ में अनुचु (सो) क्षितम् । अनुचय [अनु + चृ + यच्] वैदिक परंपरा ।

अनुचक्र (वि०) [अनु + चृ + क्तृन्] 1 सबड़ 2 सलन या ससकन ।

अनुचयः [अनु + चृ + घञ्] 1 गहन लगाव सबड़, म थोम, साहचर्य, 2 मेल 3 शब्दों का पारस्परिक सबड़ 4 आवश्यक परिणाम 5 दया तरस करना ।

अनुचयिक (वि०) [अनुचय - 3] अनिवार्य फलस्वरूप सहकारी ।

अनुचयिन् (वि०) अनु + चृ + क्तृन्] 1 सबड़, अनुचयन, सलन 2 अनिवार्य परिणाम के रूप में जाने वाला 3 व्यावहारिक, सामान्य, छा जाने वाला विद्युत्तानुचयि चययति जन -- कि० ६१३५ ।

अनुचयनीय (वि०) [अनु + चृ + क्तृन्] (सब्ड़ की भाँति) पूर्ववाक्य से बाह्य ।

अनुचयः -- लोचनम् [अनु + चृ + क्तृन्] 2 वा] दोबारा पानी देना, फिर से जल छिड़कना ।

अनुचयिनी (स्त्री०) [अनु + चृ + क्तृन्] प्रणमा, सिफारिश (कमानुसार) ।

अनुचयः (स्त्री०) [अनु + चृ + क्तृन्] 1 प्रवृत्ता में अनुचयन, बाधी 2 सरसवती 3 बलीस अक्षरों का एक छंद चिह्न में बाठ २ अक्षरों के चार २ पाद होते हैं ।

अनुच्छात्, - छासिन् (वि०) [अनु + स्था + क्तृन्, निनि वा] कार्य करने वाला, अनुच्छान करने वाला ।

अनुच्छानम् [अनु + स्था + क्तृन्] 1 कार्य करना, चर्चकृत्य करना, कार्य में परिणत करना, कार्यनिष्पादन, आज्ञा-पालन, उपरधृत तपोऽनुच्छानम्-अ० ६, धार्मिक तप-इच्छाओं का प्रयोग 2 आरम्भ, उत्तरदायित्व, कार्य में व्यस्तता 3 आचरणपदानि कार्यपदवि, 4 धार्मिक सम्काग या कृत्यों का प्रयोग ।

अनुच्छापनम् [अनु + स्था + क्तृन्] कार्य कराना । अनुच्छ (वि०) [न० त०] 1 जो मर्म न हो, ठंडा 2 बीत-गम भुग्न, मिथिल - लम्ब सीतस्पर्श, - लम्ब कुमुद, नील कमल ।

अनुच्छद [अनु + स्था + क्तृन्] पिच्छा पहिया । अनुसंचायम् [अनु + सृ + क्तृन्] 1 पृच्छा, संवेक्षण, गहन निरीक्षण या परीक्षण जब 2 उत्प्रेष 3 योजना, क्रमबद्ध करना तत्पर होना 4 उपयुक्त मयास ।

अनुसंहित (वि०) [अनु + सृ + क्तृन्] पृच्छा किया गया जब पड़ताल किया गया मन्त्र (कि० वि०) सहिता पाठ में, सहिता पाठ के अनुसार ।

अनुसमय [प्रा० स०] निर्णयन और उचित सयाज जैसे कि जन्म का ।

अनुसंचायनम् [अनु + सृ + क्तृन्] नियमितरूप से किसी कार्य की समाप्ति ।

अनुसंचद [(वि०)] अनु + सृ + क्तृन् + क्तृन्] संचय । अनुसर [अनु + सृ + क्तृन्] अनुगामी, माधी अनुसर ।

अनुसरय [अनु + सृ + क्तृन्] 1 अनुचयन, पीछा करना पीछे जाना 2 समनस्पता ।

अनुसर्प [अनु + सर्प + क्तृन्] संपत्तद्व अनु, सरीसृप । अनुसंचयनम् (अव्य०) [प्रा० स०] 1 यज्ञ के परचात् 2 प्रत्येक यज्ञ में 3 प्रतिक्षण ।

अनुसाम्य (वि०) [प्रा० स०] मनावा हुआ, विश्व सद्गुण, आकूल ।

अनुसाम्यम् (अव्य०) [प्रा० स०] प्रणि मावकाल ।

अनुसंचयनम् [अनु + सृ + क्तृन्] संकेत करना, इशारा करना ।

अनुसार [अनु + सृ + क्तृन्] 1 पीछे जाना, अनुचयन (आल० भो) पीछा करना शब्दानुसारेण अव-लोक्य अ० ३ जिघर से आबाद वा सही भी उस ओर देखते हुए 2 समनस्पता, के अनुसार, प्रयोग के अनुरूप, 3 प्रचा, रिवाज रस्य 4 माना हुआ अधिकार ।

अनुसारक, सारिन् (वि०) [अनु + सृ + क्तृन्] 1 अनुगामी, पीछा करने वाला पीछे जाने वाला, सेवा करने वाला शब्दानुसारिक विमर्शिनम्-अ० १६, कृपानुसारि च वनम्-पंच० १२०८; 2 के

अनुकूल या समरूप, बाद में जाने वाला—यथाशास्त्र*
मनु० ७।३१, ३ तथास्य करना, दूढ़ना, खोजना और
करना।

अनुसारणा [अनु+सृ+सिच्+यच्+टाप्] पीछे जाना
पीछा करना—तस्मात्तलायमानानां कुर्मानात्यनुसार
पाम् महा०।

अनुसूचक (वि०) [अनु+सू+च्+भूल्] सकेत करने वाला
इशारा करने वाला।

अनुसूति (स्त्री०) [अनु+सृ+क्तिन्] पीछे जाना अ
गमन, अनुरूप होना अनुसार होना।

अनुसन्धम् [प्रा० सं०] सना का निष्कला भाग अनुसंधक
सेना।

अनुसूचम् (अव्य०) [अव्य० सं०] क्रमग प्रविष्ट होकर
क्रमानुसार बन्दर जाकर गेह गृहमनुस्कन्दम्—सिद्धा०।

अनुस्तरणम् [अनु+स्तृ+त्युट्] चारों ओर बसेरना या
फैलाना, —जो गाय विशेषतया वह गाय जिसका
बलिदान अत्येष्टि सस्कार के समय किया जाय।

अनुस्मरणम् [अनु+स्मृ+त्युट्] १ फिर से ध्यान में लाना
स्मरण करना २ बारबार स्मरण करना।

अनुस्मृति (स्त्री०) [अनु+स्मृ+क्तिन्] १ वह स्मृति या
स्मरण जो प्रिय हो २ अन्य विषयों को छोड़कर केवल
एक ही बात का चिन्तन करना।

अनुसूत (वि०) [अनु+सिच्+क्त—ऊट्] १ नियमित
रुखा निर्वाह रूप से मिला कर बुना हुआ २ सिला
हुआ, बचा हुआ, ३ सुषक्त और सुसुसलित।

अनुस्वानः [अनु+स्वन्+बञ्] १ अनुस्व शब्द करना
२ बाद में शब्द करना मूत्र, दे० 'अनुस्वन'।

अनुस्वारः [अनु+स्व+बञ्] नासिक्य ध्वनि जो पंक्ति के
ऊपर एक बिन्दु लगा कर प्रकट की जाती है और जो
सदैव पूर्ववर्ती स्वर से संबद्ध होती है।

अनुस्वरणम्, हार [अनु+हृ+त्यन् बञ्] नकल,
मिलाना—मूलना समानता।

अनुक्, कम् [अनु+उच्+क कुत्वप् नि०] १ हुल, बज
२ मनोवृत्ति, स्वभाव बरिच वश की विशेषता।

अनुधान (वि०) या न [अनु+बन्+कान नि०] १
अध्ययनशील विद्वान् विशेषतया वेद वेदांगों में ऐसा
पारंगत विद्वान् जो उन्हें सुना सके और पढ़ा सके
इदमध्वरुचाना—कु० ६।१५, २ सुशील।

अनुष्ट (वि०) [न० त०] १ न ले जाया गया, २ अवि
हाहित, डा अविवाहित स्त्री। सम० ज्ञान (वि०)
कञ्चाल—अनन्य (°डा°) कुमारी कन्या से सम्भाग,
—ज्ञाता (पु०) (°डा°) १ अविवाहित स्त्री का भाई
२ राजा की उपपत्नी का भाई।

अनुपपन्नम् [उपकस्य अभाष. न० सं०] जल का अभाव,
सूखा पड़ना।

अनुपेक्षः [अनु+उत्+विष्+बञ्] 'तापेक्ष कम्' एक
अलंकार का नाम जिसमें कि यथा कम पूर्ववर्ती कर्मोंका
उल्लेख होता है, —यथासम्बन्धपूर्वक उद्दिष्टानां कथन
यत् सा० दे० ७३२।

अनुप (वि०) [न० त०] १ जो बटिया न हो, कम न हो,
अभाव वाला न हो वृन्दावन वैष्णवान् रघु०
६।५० गुणैरनुना रघु० ६।३७, २ पूर्ण, समस्त
सकल बड़ा महान् सि० ४।११।

अनुप (वि०) [अनुगता आप यस्मिन्—अनु+अप्+
अव ऊदानेति इति ऊ] जलीय, जलमय अथवा
दलदल वाला प्रदेश व, वम १ जलमय स्थान वा
देश २ एक देश का नाम (वा दे० ४०) रघु०
६।३७ ३ दलदल कीचड़ ४ गौरी कातालाव ५ नदी
का किनारा पर्वत का पहलू ६ भैरव ७ मेढक ८ एक
प्रकार का तीतर ९ हाथी। सम० अथ भाद्र अदार*,
प्राय (वि०) दलदल वाला, कीचड़ से भरा हुआ।

अनुपात्र, अनुराधा अनुपात्र अनुराधा।

अनुप (वि०) [न० ब०] जिसके अघा न हो व कुर्य का
साराथ अघण (जिसका जघारहित होना का वर्णन
पाया जाता है) उषा दे० अरण। सम०—सारथि
सूयं (अनरु जिसका साराथि है) नान् तिरश्चीन
यन्मसारथि सि० १।२।

अनुजित (वि०) [न ऊजित न० त०] १ अजकत,
हुंवल शक्तिहीन २ स्पर्हित।

अनुचर (वि०) [न ऊचर—न० त०] १ देहीला बजर बैसी
(भूमि) दे० उलम और अनुसम २ निम्नमे देह न हो।

अनुच—च (वि०) [न० ब०] १ बिना अच्चा का २ जो
अच्येद का ज्ञाता न हो या अच्येद का अध्येत न हो
यज्ञापीत न होने के कारण जिसे वेदाध्ययन का अधिकार
न हो—अनुचो माणवक मय०।

अनुच (वि०) [न० त०] जो सगल न हो कुटिल
(आल) अयाय दुष्ट, बेईमान।

अनुच (वि०) [न० ब०] जो कर्त्तार न हो—एतामनुचां
करोमि—श० १, प्राणैर्देवशरीरेष्वनुच (गुध)
रघु० १२।५४ प्रत्येक द्विज को तीन कणों से उच्छेद
होना पड़ता है अतिष्ठन्न देवश्चेष्ट और पितृश्च।
जो व्यक्ति वेदाध्ययन करके यज्ञ न देवताओं का आवा
हन करता है और फिर गृहस्थाश्रम में रह कर पुत्र प्राप्य
करता है वही अनुच कहलाता है दे० रघु० ८।२०।

अनुचिन् (वि०) [न० सं०] अनुच।

अनुत् (वि०) [न० त०] १ जो सत्य न हो, मिथ्या
(शब्द) प्रिय च नामत कृतात्—अनु० ४।१३८
—तन् प्रसरयता मूढ बोलना बोझा, शालसायी २
कृषि (विप० 'सत्य') मनु० ४।५, १ सम०—अनन्य
—आनन्यम्—आनन्यम् मूढ कहना, मिथ्या कथन,

अंत (वि०) [अन् + तन्] 1 निकट 2 अन्तिम 3 सुन्दर, मनोहर, मेध० २३, शि० ४५० (इसका सामान्य अर्थ—'सीमा' या 'गोरे' हैं, यद्यपि 'शब्दांश' का उद्धारण देते हुए मल्लिनाथ इसका अर्थ 'रम्य' करते हैं) 4 नीचतम, निम्नपतम 5 सबसे छोटा, —स (कुछ अर्थों में तप०) 1 (वि०) छोटा, मर्यादा, (देश काल की दृष्टि से) सीमा, चरम सीमा, अन्तिम बिन्दु या पराकाष्ठा—स सागराना पृथिवी प्रशस्ति हि० ४५०,—दिशते श्रुयते मामि० ११२, 2 छोटा, मोहर, किनारा परिमर, सामान्य रूप से स्थान या भूमि यत्र रम्यो वनात्, उ० २१२५,—आदिकतात् स्निग्धा जनोज्ज्वला—श० ४, रघु० २५८, 3 नुनी हुई किनारी का पल्ला बरब, पट, 4 सामोप्य सन्निकटना, पड़ीस, विद्यमानता गया प्रपातात्किञ्चक्षण (गङ्गा-रघु० २१३६, पुसो यमात् वज्रत—प० २१११५, 5 समाप्ति, उपसहार अवसान, —सेकाने—रघु० १५११, दिनाति निहितम्—रघु० ४११, 6 मृत्यु, नाश जीवन का अन्त, —राका भवेत्स्वप्निप्रती त्वदेन—रघु० २१४८, अद्य कांत कृतानो वा दुःखस्यान्त कर्तव्यति—उद्भट 7 (आ० में) शब्द का अन्तिम अक्षर 8 समाप्त में अन्तिम शब्द 9 (प्रश्न का) निश्चय, निर्णय या अन्तिम निश्चय—उपयोरपि दृष्टोऽन्तस्त्वयोस्तत्त्वदक्षिभि भग० २११६; 10 अन्तिम अंश, अवशेष—यथा निनात वेदात् 11 प्रकृति, दश, प्रकार, जाति 12 नृति, नरव गुदान । सम०—अवसायिन् (पु०) बाडाल—अवसायिन् (पु०) 1 नाई 2 बाडाल, नीच जाति का, —कर, —करव, —कारिन् (वि०) घातक, भारक, संहारक, —कर्म (नपु०) मृत्यु, —काल, —बेला मृत्यु का समय, —कर्म (पु०) मृत्यु, —व (वि०) किनारे तक जाने वाला, पूरी तरह से आनकार या परिचित, (समाप्त में) —गति, —गामिन् (वि०) नाश होने वाला, —गमन् 1 समाप्त करना, पूरा करना 2 मृत्यु, —वीचक्य छा० छा० में एक अलंकार, —पाल 1 सीमा की रक्षा करने वाला, 2 हारपाल—कीन (वि०) गुप्त, छिपा हुआ, —लोकः शब्द के अन्तिम अक्षर को निकाल देना, —वासिन् ('ते') (वि०) सीमान्त प्रदेश के निकट रहने वाला, निकट ही रहने वाला, (—पु०) विद्यार्थी (को शिक्षा ग्रहण करने के निमित्त सबैष मूष के निकट रहता है), बांगाल (को नाव के किनारे रहता है) —काला=मृत० 'कालः—कथा 1 बुद्धिवाक्य 2 अन्तिम कथा, बुद्धवाक्य 3 कविस्तान या कथायाम् नृति, —सतिष्ठा अन्तर्दृष्टि संस्कार, —सत् (पु०) विद्यार्थी, तनुवाक्ये पुनर्विवाक्यः—वि० ११३४ ।

अन्तक (वि०) [अन्तयति—अन्तं करोति—अन्] मारने वाला, नाश करने वाला, घातक—रघु० ११२१,

क 1 मृत्यु 2 साकार मृत्यु, संहारक, घन, मृत्यु का देवता, श्रुतिप्रमाणान्वित नान्तकोप्य प्रम् प्रहर्तुम् रघु० २१६२ ।

अन्तर (अव्य०) [अन्त + तन्ति] 1 किनारे से 2 आन्तरिक, अन्त में, अन्तर्गतता, निवात 3 अन्तः, कुल 4 भीतर, अन्तर 5 अन्तः रोगि में ('अन्' के सभी अर्थ 'अन्त' में समा जाते हैं)

अन्ते (अव्य०) ['अन्त' का अर्थ०, कि० वि० में प्रयोग] 1 अन्त में आन्तरिक 2 भीतर 3 (को) उपस्थिति में, निकट, पास ही । सम०—अन्त 1 पट्टी, साडी, 2 छात्र शि० ३१५५, वेणी० ३१६ आसिन् तु० अन्तर्वासिन् ।

अन्तर (अव्य०) [अम् + अन्तुङागमदच्] 1 [क्रियावा के साथ उपसर्ग को भाति प्रयुक्त होता है तथा सबब बोधक अव्यय समझा जाता है] (क) बीच में, के मध्य में, के अन्तर 'हन्, धा, 'गम् 'म, इ, 'ली आदि (स) के लोके 2 (कि० वि० प्रयोग) (क) के मध्य, के बीच, के दरम्यान, के अन्तर, मध्य में या अन्तर, भीतर (वि० बाहु) अदृश्यमान रघु० २१२२, अन्तर्गच्छ भगवत् विष्णु० १११, आन्तरिक रूप से, मन में (स) ग्रहण करके या पकड़कर अर्हत्वा गत (हन् पांगुल) 3 (वियुक्त होने योग्य सम्बन्ध-बोधक के रूप में) (क) में, के मध्य, बीच में, के अन्तर (अधि० के साथ) निवसन्तर्दोर्गण कथो वद्वि—प० ११३१, अप्पत्तरम्पतमम्—रघु० ११२३ (स) के मध्य (कर्म० के साथ) देव०—हिरण्ययोर्हं कुसोरतरवहित आस—शत० (य) में, के अन्तर, भीतर, बीच में (सब० के साथ) प्रतिबल अन्तर्गत-रीचयामा—वेणी० ११५, अन्तः कर्णिकं कर्णिकम्—रत्न० २१३, लघुपुस्तितया अन्तः सत् बाह्यतमव मृष्य मंडलम्—कि० २१५३, 4 समस्त शब्दों में यदि प्रथम पद के रूप में प्रयुक्त किया जाय तो बहुधा विभक्ति अर्थ होते हैं—आन्तरिक रूप से, के अन्तर, भीतर, भीतर रह कर, भरा हुआ, अन्तर की ओर, आन्तरिक, गुप्त, तत्पुत्र तथा बहुव्रीहि समास के क्रियाविशेष-गतात्मक रूप बनाने वाला (गोट—अन्तः पदों में 'अन्तर' का २ अर्थ के प्रथम द्वितीय अर्थ तथा वृ, वृ, वृ से पूर्व विसर्ग का रूप बारम्बार कर केतु है जैसे अन्त करव, अन्त स्व भादि) । सम०—अन्तिः आन्तरिक ज्ञान, वह अग्नि जो पाचन शक्ति को उत्प्रेक्षित करे, —अन्त (वि०) 1 अन्तर की ओर, आन्तरिक, अन्तर्गत (अन्तः के साथ), अन्तर्गत पूर्ववत्—प्रतिबल० 2 शब्द के मूलरूप वा अर्थ के आवश्यक भाग से संबद्ध, वा अर्थ के आवश्यक भाग से संबद्ध, वा छका उल्लेख करने वाला, 3 भिन्न, भिन्नता—(—वृ) 1 अन्तर्गत अर्थ,

हृदय, अथ 2 बनिष्ठ भिन्न, या विषयन् व्यक्तित्व, आकाशः तेजोबहु नख या ब्रह्म जो मनुष्य के हृदय में रहता है (उपनिषदों में प्रायः यह शब्द पाया जाता है) —आकृतम् गूण और छिपा हुआ प्रयोजन आत्मन् (१०-स्त्री) 1 अन्तर्गत प्राण या आत्मा, मन या आभा, आन्तरिक भावना, हृदय, जीवसत्ता तत्वात्म्य मनु० १०।१२, भग० ६।६३, 2 (दश० में) अन्तर्गत सर्वांगि प्राण या आत्मा (मानव के भीतर रहने वाला) अन्तरात्मानि देहिनाम् कु० ६। २१, आत्मा (वि०) अपने आप में घटने, अपने आत्मा या हृदय में ही मूल दृढ़ने वाला, यात्रा मुक्तानगरात्मनवातस्थानोऽत्र स भग० ५।७६, दुष्टिभ्यम् आन्तरिक अंग या ज्ञानेन्द्रिय, —कण्ठम् हृदय, अथवा, अन्तर और भावना का स्थान विचार शक्ति, मन, चेतना—प्रमाण० प्रबुधय श० १।२२ —कुटिल (वि०) अन्तर से कपटी (भाष०) (क) सीप, —कोष अन्तर का कोण, कोष गुण कोष, अन्तर्कनी गुम्मा मनु (वि०) व्यर्थ, अनावश्यक, निष्फल—किमनेतानमोऽना सर्व० गम् मत दे० 'अन्तर्गम' के नीचे गर्भ (वि०) पेट वाली, गर्भवती, गिरम् गिरि (अव्य०) पहाड़ों में —गुह (वि०) अन्तर से छिपा हुआ, 'विह हृदय में अन्तर छिपा हुआ गुहम् गेहम्' —अवन्ध चर का भीतरी भाग, घन —अवन्ध चर के अन्तर की खुली जगह चर (वि०) शरीर में व्याप्त, —अवन्ध पेट, —अवन्धम् अलन या सूजन, —ताप (वि०) अन्तर्वाह से युक्त (—क) अन्तर्कनी ज्वर या गर्मी, —श० १।१२, —अवन्धम् —बाहः 1 अन्तर्कनी अलन 2 सूजन —अवन्धः परिधि के बीच का प्रदेश, —ह्यारम् चर के अन्तर बिम्बी या गुप्त दरवाजा, —वि —हित यदि दे० शब्द के नीचे —वहः, —वहम् दो व्यक्तियों के बीच में कपड़े का परा —वहम् (अव्य०) पद (विभक्तियुक्त शब्द) के भीतर, —वर्तमानम् सबसे नीचे पहुँचा जाने वाला कपड़ा, —वात, —वात 1 (अव्य०) बीच में अन्तर रहना 2 यन्त्रमय के मध्य में अन्तर्गत हुआ स्तम्भ (संस्कार विधियों में प्रयुक्त), —वास्तित, —वास्तित् (वि०) 1 बीच में समाविष्ट 2 सम्मिलित या समाविष्ट, अन्तर्गत होने वाला, —वृत्तम् 1 महल का अन्तर्कनी भाग जो महिलाओं के उपयोग के लिए नियत किया गया हो, स्त्रियों के रहने का कमरा, रनवास, कम्पात पुरे कश्चित् प्रविवर्ति—पंच० १; 2 रनवास में रहने वाली स्त्रिया, रात्री या रात्रिवा, स्त्रियों का समुदाय—'विरहपर्वस्युक्तस्य राजर्षे' श० १, 'अप्यक्षः', 'रक्षकः', 'मार्त' अन्त पुर का अन्तर्-अक या सरलक, 'चरः—कच्छुकी, 'अन्त' महल की

स्त्रिया रनवास की महिलाएँ, 'प्रचार' अन्त-पुर की गल्पे, कदाचिदप्रत्यक्षावधानपुत्रेभ्य कथयेत्—श० ४ 'सहायः अन्त-पुर से सबब रखने वाला, —वृत्तिकः कच्छुकी = 'चर', —प्रकृति (स्त्री०) 1 मनुष्य का शरीर या उसका आन्तरिक स्वभाव 2 राजा का महा-लय या मन्त्रिमहल 3 हृदय या आत्मा, —प्रकोपनम् आन्तरिक विरोध अमाना—प्रतिष्ठातम्—भीतरी आवाज अलप (वि०) 1 जिसने आम्बुओं को रोका हुआ हो —अन्तर्वाह्यविचारमनुचरी राजगर्भस्य दृष्टी—मेघ० ३, 2 जिस आम्बु अन्तर ही अन्तर निकल रहे हो भावः, भावना दे० 'अन्तर्' के अन्तर्गत, —भूमि (स्त्री०) भूमि का भीतरी भाग —भेषः वैभ-नस्य आन्तरिक विरोध जीव (वि०) भूमि के नीचे रहने वाला—अवन्ध (वि०) उदाम व्याकुल, —अवन्ध (वि०) गर्भ में ही मर जाने वाला, —आवः बापी और वसा को रोकना, —अवन्ध (वि०) 1 मिहित, गुण अन्तर छिपा हुआ, 'नस्य हुसाने उत्तर० ३।२ 2 अन्तर्निहित, —वहः—'पुत्रम्, तु० 'वर्तिका', 'वर्तिका' अन्त-पुर का अन्तर्-अक, —अवन्ध गर्भवती स्त्री, अन्तर्-अवन्ध, वातम् (नपु) अन्तर्-अवन्ध, —वाति (वि०) बड़ा विद्वान्, वैभः आन्तरिक वैभेनी या भिन्न आन्तरिक ज्वर —वैभः भी गंगा और यमुना के बीच का भूभाग —वैभम् (न०) घर के अन्तर का कमरा, भीतरी कोठा, —वैभिकः कच्छुकी, —वैभिकम् मनुष्य का आन्तरिक या आन्तरिक भाग शरीर का भीतरी भाग, —वैभिक विषय पहाड़ से निकलने वाली नदी, —वैभ (वि०) अन्तर्-अवन्ध, —वैभिक गर्भवती स्त्री, —वैभिकः आन्तरिक बीबा, शोक, खेद, —वैभिक (वि०) दिसका पानी भूमि के अन्तर बहुत हो, —वैभिकवास्त वैभिकी सरस्वतीम्—रघु० १।९, —वैभ (वि०) अन्तर से मरा हुआ, या शक्तिशाली, वलवान् भारी और बलिक—'र वन मुनिपुत्रि नामिह शक्यति-त्वाम्—मेघ० २० (—रः) आन्तरिक कोष या अन्तर, आन्तरिक निधि या तत्त्व, —वैभम् (अव्य०) हेनाओं के बीच में, —वैभ (अव्य०) अन्तर्-अवन्ध, वैभिक के स्वर और व्यञ्जनों के बीच में स्थित हैं, और वागिन्द्रिय के जरा से संपर्क से बोले जाते हैं, —वैभः मस्त हावी, —वैभः गुप्त या दबाई हुई हँसी, —वैभम् हृदय का भीतरी भाग ।

अन्त (वि०) [अन्तरासिद्धवाति-रा-क] 1 अन्तर होने वाला, भीतर का, (वि०) बाह्य 2 निकट, समीप 3. सबब, बनिष्ठ, विष-अवन्धवास्तरी मध-आरत 4. समान ('अन्तरतम, भी) (अव्य०) और अन्तों के विषय में) —स्थानेऽन्तरतम—पा० १।१।५०. 5. के विषय, अन्त (अव्य० के साथ) 6. बाहर का, बाह्यस्थित, बाहर रहने वाला

(इस अर्थ में इसके कम विकल्प से कर्ता० व० व०, अर्था० नीचे अर्थ० एक व० में 'सर्व' की भांति होते हैं) इसलिये—अन्तरायां पुरि, अन्तरायां नमर्, —रन् १ (क) नीतर का, अन्तर—कीलके मुकुटाक्षरेणु—रत्न० १।२६, (घ.) छिन्न, सुराक्ष २. बाह्या, द्वय, मन—सर्वत्र पुष्पाक्षरिणी नक्षत्रस्य—विष्णु० ३, ३. परमात्म, ४. अन्तराक्ष, मध्यवर्ती काल या देश—अस्य मुकुटाक्षर—विष्णु ४।२६, वृहस्पुष्पाक्षरम्—रघु० ३।५४, 'अन्तर' का बहुधा अनुवाद किया जाता है—मध्य में, बीच में—न मुक्ताक्षरं रक्षितं स्तमान्तरं श० १।१७, ५. स्थान, जगह, देश—मुक्ताक्षरान्तरमप्यक्षरम् कु० १।४०, पीछे सब लोकस्य आन्तरं दानुर्गहसि—रा० लोक मत करो, अन्तरम्—अन्तरम्—मुष्ण० रास्ता छोड़ो, ६. पक्ष, अन्तर जाना, प्रवेश, कदम रखना—जेनेलरं वेतुति मोषदेह—रघु० १।६६ अन्ताराष्ट्रां शास्त्रेषुपि मेहे—१।१७, ७. अवधि (काल की), निर्दिष्ट अवधि,—मासान्तरं देवम्—अमर०, इति ती विहङ्गान्तराणी—रघु० ८।५६, ८. अवसर, समय, समय वाचस्पतिनक्षत्रे निवेदिष्युमन्तराश्वेयी भवामि—श०, ७, ९. गेह (दो वस्तुओं के बीच) (सब० के साथ वा स्थान में)—तत्र मय च समुद्र-पञ्चकोरिवाक्षरम्—मातृवि० १, यन्तर सर्व-छेदराजकोर्यन्तरं वाचस्पतिनक्षत्रे—रा०, द्रुम सानुमना किमन्तरम्—रघु० ८।१०, १० (गमित) विज्ञप्ता, लेख, ११. (क०) लेख, अन्य द्रुमरा, परिचित, बरका हुआ (रीति, प्रकार, ढंग आदि) (ध्यान रखिये इस अर्थ में 'अन्तर' कहिये समस्तपद का उत्तर पद रहता है तथा इसका किम्य बड़ी बना रहता है—अर्थात् नपु० आहें पूर्वपद का कुछ भी किम्य हो—कथान्तरम् (कथाकथा), रात्रान्तर (अन्यो रात्रा), वृहान्तरम् (अन्य वृहत्), इसका अनुवाद बहुधा 'अन्य काल' से किया जाता है) —इदमवस्थान्तरागोपिता—श० ३, परिचित बड़ा, (घ) विविध, विभिन्न (ब० व० में प्रयुक्त)—लोको नियन्त्र इवात्मवस्थान्तरं—श० ४।२, १२. विवेचता, (विशिष्ट) प्रकार, विवेच, वा किम्—हीहान्तरं—वि०, बीनो रात्र्यन्तरं—तद् १३, दुर्गता, बालीय स्थल, असफलता, दोष, त्रयोप स्थल,—प्रहरेण्यरे रिपु—सम्ब०, युवज कलु नायुगन्तरं—कि २।५२, १४. अवानत, प्रत्यावृत्ति, प्रतिपुत्ति, १५. सर्व श्रेष्ठता, नृवान्तरं भवति क्षिप्रमायु—मातृवि० १।५ (यह अर्थ ११ सम्प्रधानमैत्र से भी जाना जा सकता है), १६ मय (परिधान) १७ प्रयोजन, वासय (गमि) —रघु० १६।२ १८. प्रतिनिधि, स्वाभाविक, १९. होन होना। तय० अक्षरा वर्गवर्गी स्त्री, —अ (वि०) अन्तर का रहस्य जानने

वाका, प्राज्ञ, दूरदर्शी,—आन्तराक्षा विधो जातु भिवैराता न भूयते—कि० १।१२४,—विष्ठा (अन्तरा विष्ठा) परिधि का मध्यवर्ती प्रवेश या दिशा,—नु (नु) क्वः आन्तरिक मानव आत्मा (मानव के अन्तर विवास करने वाला देवता जो कि उसके सब कार्यों की देखता है)—प्रमथः मिथित जाति में अन्य लेने वाला,—स्य—स्वाक्षिम्, —स्थित (वि०) १ आध्यात्मिक, आंतरिक, अन्तर्हित २. अन्त स्थित, अन्तर्गती।

अन्तरत्त (अध्य०) [अन्तर + तत्सिङ्] १ नीतर, आंतरिक रूप में, मध्य, २. के अन्तर (सब० के साथ)।

अन्तरत्तम (वि०) [अन्तर + तमप्] अन्तर्गत निकट, आंतरिक, निकटतम, भविष्यत्तम सद्गुणतम—अ उसी श्रेणी का अन्तर।

अन्तरथः राक्षः [अन्तर + अय् + अय्] अन्तराथ बाधा, रुकावट,—स वेत् त्वमन्तरादो भवसि ध्युनो विधि रघु० ३।५५, १४।६५, अस्य मे बाधयचर्चतिन कुप्य मारस्य अन्तरादो तपस्विनो सवृत्तो—श० (पाठ०) अन्तरवसि [ना० वा० पर०] १ बीच में इक्ष्मा, द्रवना, स्थगिन करना भवन् तावदन्तर्ग्याधि—उत्तर० ६, २. विरोध करना, ३ दूर हटना पीछे से चकेलना।

अन्तराक्ष—अन्तरय

अन्तरा (अध्य०) [अन्तरेति—ङ्] १. वा १ (कि० वि० के रूप में) (क) नीतर, अन्तर नीतर की ओर (क) मध्य म, बीच में, त्रिसङ्कुरिकान्तरा पिष्ट स० २, रघु० १५।२० (ग) मार्ग म बीच में विलंबता च यातरा बहुधीर० अ२८ (घ) गडीस में, निकट ही समग्र (ङ) इसी बाध में (च) मध्य समय पर यहाँ बड़ी, कभी कभी कुछ समय तक अब अभी—अन्तरा पितृसक्तमन्तरा मानुषबद्धमन्तरा शुक्रनासमय कुर्वन्नालाप—का० ११८ २ (कर्म के साथ स० अध्य० की याति) (क) अन्तराक्षा या च कथयन्—अज्ञा० (क) के बिना, विधाय न च प्रयोजनमन्तरा वाचक्य स्वार्थेति चेष्टते—मुद्रा० ३। नम० अक्षं छाडी—मन्त्रदेह—अक्षराक्षम्—आत्मा या जीवात्मा जो अन्य नीर मरण की अवस्थामो के बीच में रहता है विष्णु दे०—अन्तरिक्ष वेदि—स्त्री (स्त्री) १. स्तनभक्षित बरां, दहलीज, द्यूनी २. एक प्रकार की दीवार—रघु० १२।१३, —स्युगम् (अध्य०) सींगों के बीच में।

अन्तराक्षः—अन्तरय दू०

अन्तराक्षम् } [अन्तरं अध्ययनहीनाम् आराति मुहुराति
अन्तराक्षम् } अन्तर + आ + क्ष + क रस्य लक्षम्] १. मध्यवर्ती प्रवेश, स्थान सब काल, सबका—दक्षि-
नस्या पूर्वस्याच दिक्षोरन्तराक्षं दक्षिणपूर्व—शिक्षा०, अन्तराक्षे बीच में, के मध्य, के बीच, अवकाश के समय, वाक्यान्तः परिपठनीयवृत्तान्तराक्षे—उत्तर० १।३१,

2. भीतर, अन्दर, भीतरी या मध्यभाग 3. मिश्रित जाति या मनुष्य ।

अन्तर् (नि) कम् [अन्त स्वर्गपुंयव्यामैष्य ईष्यत्—इति अन्तर् + ईष क् चञ्, पुषो० ङ्ङ्स्व वा] आकाश और पृथ्वा के बीच का मध्यवर्ती प्रदेश वायु वातावरण आशय । सम० उदरम् वातावरण का मध्य न, - चर पक्षी अन्तर् आस लोक मध्यवर्ती प्रदेश जो कि एक स्वतन्त्र लोक समझा जाता है ।

अन्तरित (वि०) [अन्त + र् + क्त] 1 बीच में गया हुआ, अन्तर्वर्ती 2 अन्दर गया हुआ गुप्त ठका हुआ पृथक् किया हुआ बहुवचन पादान्तरित एवं विस्वस्तामेनां पक्ष्याणि श० १, अन्ता के पीछे छिपा हुआ—सारसेन स्वदेहात्मनो राजा हि० ३ पद के पीछे छिपा हुआ 3 अन्तराज्य कृष्ण प्रतीकार्थिन—अष्टिकात्म्यन्तरिताम् युगतावकां (क) अवकट, बाधित, रोक गया । इन्द्राच्छान्तरितानि मायानि मुद्रा० ४।१५ नोपालम्प देवान्तरितपौष पक्ष० १.१३ (ख) पुष्पकम् बहुवचन कट्वृष्टि, मुहूर्तान्तरितमायवा दुर्मेनायमाना पाद० ८ मेघैरन्तरित प्रिये नव मुष्पच्छायानकारी शलो मा० ६० (ग) डबा हुआ निरहित 4 ओझल नष्ट विद्युत् सहृत् अन्तरान् ताम्बम् शबर सेनापती का० ३३ 5 अन्तर्गत मूला हुआ ।

अन्तरीय [अन्तर्मध्ये गता अयां यस्य अ० न० जात ईष्यम्] मृग का टुकड़ा जो समुद्र के भीतर जल गया हो मृनासिका द्वीप ।

अन्तरीयम् [अन्तर य] अन्तर्वस्त्र ।

अन्तरेण [अन्त्य०] [अन्तर + ण् क्त] 1 [स्व० के साथ स० अन्त्य० के रूप में] (क) मित्रा के बिना किया अन्तरायमन्तरेण आर्ष दण्डमिच्छामि—मुद्रा० २ न राजपरायमन्तरेण प्रहास्वकान्मृत्युवचरति उत्तर० १११३ (ख) के विषय में, संकेत करते हुए के संबंध में—अथ मन्त्रमन्तरेण कीदृशोऽस्या वृष्टिराग श० २ तदस्या देवी बहुमतीमन्तरेण महदुपालम्भन गतोऽस्मि—श० ५ (ग) के बीच में तथा मा चान्तरेण कम्पच्छत्—मुद्रा० २ (कि० वि०) (क) के बीच में के मध्य (ख) हृदय में ।

अन्तर्गत (वि०) [अन्त + गत] 1 बीच में अन्तर्गत [वि०] में मध्य में गया हुआ (चर गच्छ को भाति) बीच में आया हुआ 2 अन्त स्थित अन्त सम्मिलित विद्यमान, संघट्ट 3 गुप्त, आन्तरिक अन्दर की ओर रहस्य, गुह्य,--अन्तर्गतमापास्त मे रजसोपि परं तव—कु० १।६०, भीमविहरनर्गत्वाणकठ—रघु० १४।५३ नैवकमविकारीश्च लघ्वयेऽन्तगत मन—पञ्च० १।४४ 4 सम्मिलित हो गया हुआ मूला हुआ ५ नष्ट हुआ

हुआ, ओझल, 6. बहुवृत्त । सम०—उज्जवा गुन उपमा, -अन्तः = अतर्धनस् तु० ।

अन्तर्धी [अन्तर् + धा + अङ्] आच्छादन, गोपन, अन्तर्धा-मुपययुक्तलावलीषु—वि० ८।१२ ।

अन्तर्धानि [अन्तर् + धा + ल्युट] बहुवचन होना, ओझलपना, दृष्टि से छूक जाना—अन्तर्धनसिका रात्रिका रात्रि-वीर्यम्—काव्य० १०, "नम् वा इ—बहुवचन होना ओझल होना ।

अन्तर्धि (स्त्री०) [अन्तर् + धा + क्ति] ओझल होना गोपन ।

अन्तर्धक (वि०) [अन्तर् + कर्त्तृति—भू + कर्त्] अन्दर की ओर, आन्तरिक ।

अन्तर्धित [अन्तर् + भू + क्त] 1 अन्तर्भूत या अन्तर्धित होना अन्तर्गत होना,—तेषां पुष्पाणामोज्ज्वलार्धित—काव्य० ८ 2 अन्तर्हित जाव ।

अन्तर्धितम् [अन्तर् + भू + क्त + ल्युट] 1 सम्मिलित करना 2 अन्तर्धितमान वा चिन्ता ।

अन्तर्ध (वि०) [अन्तर् + पृत्] आन्तरिक बीच में ।

अन्तर्हित (वि०) [अन्तर् + ह + क्त] 1 बीच में रक्ता हुआ पृथक्कृत दृष्टिबद्ध गुन, छिपा हुआ—अन्तर्हिता वस्तुना वनराज्या—श० ४, 2 ओझल हुआ, नष्ट, बहुवचन—अन्तर्हित भूमिनि—स० ४।२, 1 सम०—अन्तर्ध (पु०) शिब ।

अन्ति [अन्त्य०] [अन्त + इ] पास में (सब० के साथ) (स्त्री०—ति) बड़ी बहूत (नटको में) ।

अन्तिक [अन्त + इ स्वाध ३ न टाप] 1 बड़ी बहूत 2 चून्हा बगीठी, 3 एक लीन का नाम (तात्पर्याय वा १ तमाव्य जीवति) ।

अन्तिक (वि०) अन्त माधीप्यम्यानीति—अन्त + उन्] 1 निकट समीप (सब० या अपा० के साथ) 2 पटुवचने शब्दा 3 टिकाऊ तक—कम्प निकटता, सामीप्य, पड़ोस उपस्थिति—न स्वर्गति वनातिपत्तम्—हि० १।४६ अन्त्य—रघु० २।२४ कर्म—चर—श० १।२४ (कि० वि०) [उच्च और अपा० के साथ अथवा समान के अन्त में] निकट पड़ोस में,—अन्तिकं वायम् वायस्य वा तिडा० सामीप्य या सन्निधि में, अन्तिकेन—निकट (सब० के साथ) अन्तिकम्—निकट, पास में से (अपा० या सब०) "कादागत, अन्तिके निकट—इत्ययन्तास्तवान्तिके निपेतु नम्—१।२२ । सम० लक्ष्यः पास की वस्तु का सहारा देने वाला कपातार सहारा (जैसा कि दूक के द्वारा लड़ा को दिया जाता है) ।

अन्तिक (वि०) [अन्त + क्तिवच्] 1 सुरत का जानेवाला, 2 आखीर, अन्त का, चरम—अन्तर्गतमृगमूर्ध्नि चरमा-धी न चान्तिम्—हि० १, 1 सम०—अन्तः आखीर

- **वासन्त** अन्न और जल, श्रावः भाजन मात्र पाकर सेवा कृत बाला दास या नाकर देवता आहार की सामग्रियों को अधिरात्र देना दोष निषिद्ध भाजन के खाते में उपर पाप पुष्प, भाजन में अर्द्ध भूख का अभ्रात, पूर्णा दुर्गा देवी का एक रूप (अष्टाव सप्तश्री की देवी) प्रास प्राशनम् १६ सम्कारों में एक सम्कार अर्द्ध नवरात्र बालक को पहला बार विधिवत भाजन देने का क्रिया सभा दिन को जाना है यह सम्कार १ स / महीने के मध्य (प्रायः छठ मस में मनु० १३८) किया जाता है

कृष्ण आत्मन (१०) अक्षर का प्रतिनिधित्व
 करने का। ब्रह्म भुम् (१०) भाजन का वाग
 शिव की उपाधि मय (१०) १० नाक मलय
 १ विष्णु २ गङ्गा ३ श्री भाजन क ४ म सावर्ण
 ५ स अक्षर ६ सन ७ जान ८ अक्षर क भाग
 गुदे ९ बाग १० वरम आच्छादनम् तु०
 व्यवहार क नपान मयों प्रयग ११ दीध अथान दूमरा
 क माथ भिन्कर लाना ग न गाना शिव ब्रह्म
 जी-उष्ट मस्कार देवताओं क नियत अक्षर का
 समर्पण

अप्रमथ (प्र, प्र०—यौ) 'अप्र प्रप्र' अत्र हाग
या अत्र म बना पद'य काश क भीतर मर
मृच्छाशा ना अत्र पदो भाषांतर है तथा ना
आया का भाषा वर्य या पारघान है जो कि मर
स्थान तथा निरुद्ध रूप प्रमथ हाग म अत्र
भाषा भाषांतर का म क प्रम अत्र क वर
माना जाता है प्रम अत्र का वरभाव ।

अथ (वि०) । नय० अन्यतः । १ दूसरा भित्र ० ।
सामान्यतः दूसरा और म एक अन्य क्षणतः मवर्ती ।
विचित्रमतः मत० ती० ४० २ अभावात् दूसरा
से भित्र ३। अथवा और (अयो० के साथ बदल
सामान्य से अतीत म पद) तत्पश्चात् जीवितवर्ती मतः ।
मित्र सख्य-वृत्त्या का० ३९ उच्यते दुःख-उत्पत्त्य-
कालेष्वप्येतत् किञ्चन यत् १२/४९ ३ प्रतीत्या
असाधारण विदेश अती० अतीतमयो प्रत्यय
प्रवृत्ति भाषि० १।६० मया पद ऐक्यता सा-
दृ० ४ तुल्य कोटि ५ अतीत-वृत्त्या प्रतीत्य अन्यतः
हमके प्रतीत्य-वृत्त्या हमके साथ या ती० पर १४६
ना मयुक्तं अन्यतः । एक अग्र्य १४ दूसरा मध०
७८ ६० एक के तात्परी अग्र्य-अग्र्य और ती०
अन्यमग्रे अतीतवृत्तये-मृदा० ५ अतीतवृत्त्या मय-
मन्यवृत्त्या अतीत-वृत्त्या ६ १५ अग्र्य-अग्र्य
आदि पदना दूसरा तीसरा चौथा प्रती० मय०

—असाधारण (वि०) श्री दुयरा के गति साधन्य न
हो, विशेष उद्योग (वि०) दुयरा न उद्योग (—यं)

दो में से (पुरुष या पदार्थ) एक, दोनों में से कोई ना एक (सं० के साथ), सत परीक्षान्वतरङ्गजन्ते - भास्वि० ११२ अन्वतरस्यान् (°रा का अर्थ० ए० व०) किसी तरह, दोनों तरह, इच्छानुस्य०।

अन्वतरातः (कि० वि०) [अन्वतर + तसिल्] दो में से एक और।

अन्वतराद्यः (अन्व०) [अन्वतरस्मिन्तर्हन् अन्वतर + एद्यु नि०] दो में से किसी एक दिन, एक दिन दूसरे दिन।

अन्वतः (अन्व०) [अन्व + तसिल्] १ दूसरे से २ एक ओर, अन्वतः अन्वतः, एकतः - अन्वतः एक ओर दूसरी ओर, तपनमण्डलोपितमेकत मनतनैश-तयोद्युतमन्वत कि० ५१२, ३ किसी दूसरे कारण या प्रयोजन से।

अन्वय (अन्व०) [अन्व + प्रल्] (प्रायः = अन्वस्मिन् सहाया विशेषण के बल से) १. और जगह, दूसरे स्थान पर २. किसी दूसरे अवसर पर ३ सिवाय, के बिना ४ अन्वया, दूसरी अवस्था में।

अन्वया (अन्व०) [अन्व + प्रल्] १ बरना दूसरी रीति से मिन तरीके से यद्यपि न तद्वत्प्रति भाषि चे-न तदपथा - हि० ? अन्वया-अन्वया एक प्रकार से दूसरे उग से, अन्वयाद्य दूसरी तरह करना, परिवर्तन करना बदलना, बिगाड़ना मिथ्या करना - स्वया करारिदपि मम वचन नायथाकृतम् पृ० ४, २ नही तो, बरना, इसके विपरीत व्यक्त नास्ति कथमन्वया वास्तव्यि ता न पश्येत् - उत्तर० ३, ३. इसके विपरीत ४. मिथ्यापन से, झूठपने से - किमन्वया मट्टिनी मया विज्ञापितपूर्वा - विक्रम० २ ५ गलती से, भूल से, भूरे उग से जैसा कि अन्वया सिद्ध १० नीचे। मम० - अनुवर्षातः (स्त्री०) १० अर्थापित, कारः परिवर्तन बदल बदल, (- कारव) [कि० वि०] भिन्न तरीके से मिन उग से - पा० ३११२३ क्वाणितः (स्त्री०) साक्षि की गलत अवधारणा, सामान्य रूप से (पूर्वोक्त शास्त्र में) मिथ्या अवधारणा, - भाषा बदलबदल परिवर्तन, मिथ्यता, - भाषिन् (वि०) मिन रूप से या मिथ्या बोलने वाला, (विधि में) अपलापी साक्षी - वृत्ति (वि०) १ परिवर्तित २ बदला हुआ ३ भाषा विष्ट, सबल संवेगो से विजृम्ब, - पेश० ३, - सिद्ध (वि०) जो मिथ्या उग से प्रदर्शित या प्रमाणित किया गया हो, (न्याय में) उस कारण को कहते हैं जो सत्य न हो, तथा जो केवल मात्र आकस्मिक एव दूरगामी परिस्थितियों का उत्पन्न करे, - सिद्धम्, - सिद्धि (स्त्री०) मिथ्या प्रदर्शन, अनावश्यक कारण, आकस्मिक या केवल मात्र सहवर्ती परिस्थिति - भाषा०

व० १५, - स्तोत्रम् - अन्वयोपित, उक्तान्, अन्वय०

अन्वया (अन्व०) [अन्व + दा] १. किसी दूसरे सबब, दूसरे

अवसर पर, किसी दूसरे मामले में अन्वया भूषण पुला अथा सञ्जेष योषिताम् सि० २१४४, ननु० १११७३, २. एक बार एक समय पर, एक अवसर पर, ३. किसी समय।

अन्वयीव (वि०) [अन्वया - छ] १ किसी दूसरे से सबब रखने वाला २. हमने में रहने वाला।

अन्वहि (अन्व०) [अन्व + हिल्] किसी दूसरे समय (अन्वया)।

अन्वायुम् - - वा स (वि०) [अन्व इव पश्यति अन्वयुम्] वस विवन कञ् वा आसकम् च] परिचयित अमा धारण अनोषा।

अन्वाय (वि०) [न० व०] न्यायहित अनुपपन्न, य १ कोई न्याय गृहित या अवैचक्य - द० न्याय, अन्वायेन अन्वाय के साथ, अनुचित उग से २ न्याय का अभाव औचित्य का अभाव ३ अनिर्णयता।

अन्वायिन् (वि०) [अन्वाय + णिन्] न्यायहित अनुचित।

अन्वाय्य (वि०) [न० व०] १ न्याय गृहित अवैच २ अनुचित अवशोषणीय ३ अप्रामाणिक।

अन्वयुन (वि०) [न० व०] दोषगर्हित पृथ्वीन पूर्ण समस्त सकल अधिक न पृथिव्युत्पन्न न प्राकृतकाल से अधिक। समय जग (वि०) निर्दोष अगा बाला।

अन्वेद्यु (अन्व०) [अन्व + ण्यु] १ दूसरे दिन जगले दिन अन्वेद्युसारमानुषरस्य भाव विज्ञासमाना ननु० २१२६ २ एक दिन एक बार।

अन्वोम्य (वि०) [अन्व कर्मव्यगिहारे द्वित्वम्, पूर्वपदे मुच] एक दूसरे को परस्पर (सर्वनाम की प्राप्ति) प्राय समस्त पदों में, केवल पारस्परिक जगहा इसी प्रकार बल, म्यम् (अन्व०) आपस में। मम०

अभावः पारस्परिक मरता का न होना, अभाव के दो प्रकारों में से एक, ('भेद का सामान्यक) - आच्छाद (वि०) आपस में एक दूसरे पर निर्भर (- छ) आपस में या बदल की निर्भरता कार्यकारण का (न्याय में) इतरेतर सबब, - उक्तिः (स्त्री०) वास्तविक - ज्ञेयः पारस्परिक द्वेष या शत्रुता, - विभाग साक्षीद्वारे द्वारा रिक्त का पारस्परिक विभाजन (बिना किसी और पक्ष के सम्मिलित हुए), वृत्ति (स्त्री०) किसी वस्तु का एक दूसरे पर पारस्परिक प्रभाव, व्यक्तिकार, - ज्ञेय इतरेतर किया या प्रभाव, कार्य कारण का पारस्परिक सबब।

अन्वय (वि०) [अनुगत अज्ञम् इन्द्रियम् ग० स०] १ पृथक् २ तुल्य भाव में माने वाला, अन्व (अन्व०) १ बाद में, पश्चात् २ तुरंत बाद में, नामने, सीधे - वा० ३१२१।

अन्वय (अन्व०) [अनु + अन्व + णिप् न्यु० ग० व०] १ बाद में, २ पीछे से ३. दीर्घाभाव में अव्यवृत्त, अनुपपन्न

रूप में, अन्वयप्रकार, -आवृत्त- आत्मे मिश्रतापूर्वक
अन्वयप्रकार होता है (कर्म० के साथ) पदवाच्यताम्
अन्वयप्रकार मध्यमलोकात् रूप० २।१६।

अन्वयः (वि०) [अनु + अन्वृ + विष् + पीछे जाने वाला
पीछा करने वाला, अन्वृषि पीछे की ओर, पीछे में।

अन्वयः [अनु + इ + अन्वृ] १ पीछे जाना, अनुगमन, अनु-
गामी परिजन, सेवकवर्ग का स्वयंकायिकी योः
निरन्वयवने वने भट्टि० ५।६६ २ मात्रचयं, येलजोल
सबब ३ वाक्य में शब्दों का स्वाभाविक क्रम या
सबब, व्याकरण, विषयक क्रम या सबब, नात्यपर्याया
वृत्तिमातृ पदार्थान्वयबोधने मा० ६० शब्दों का
मुक्तिवृत्त सबब ४ तात्पर्य अभिप्राय प्रयोजन ५
आदि कुल वज रूपात्मन्वय बख्से रू० १।
१।२६ ६ "यत्र पति बाद में जाने वालो मन्तान
ताम्य श्रुत अन्वय या० १।११० ७ कार्यकारण का
नर्कमगत सबब नर्कमगत नेरन्त्यं जग्याद्यस्य यता-
न्वयार्थान्वय भाग० ८ (न्या० में) [देतुमाध्यय
व्याप्तिरन्वय] भारतीय अनुमितिवाद में माध्य और
हेतु की सन्त तथा अपरिचित सत्त्वता का वर्णन।
सम० आगत (वि०) आनुवृत्तिक, ज बहाबली
प्रणेतार रूप० ६।८ अन्वितिकेक. (को या 'कर्म) १
प्रभावक और निष्पन्नक प्रतिज्ञा, सप्रति और
वेपरोय अर्थात् मित्रता २ नियम और अपवाद,
व्याप्ति (स्त्री०) स्वीकारात्मक प्रतिज्ञा या सहमति
अधिकारमूचक सामान्यपद।

अन्वयः (वि०) [अनुगत अवयव प्रा० स०] शब्द की
व्युत्पत्ति का ठारा हो जिसका अर्थ आसानी से जाना
जा सके भाव के अनुकूल साधक तथैव मोक्षमन्त्रवर्षो
राज्ञा वक्रतिरन्वयात् -रूप० ४।१२, अन्वयार्थ तैत्तिरीय
कि० १।१६४। सम० अन्वयम् अन्वय के अर्थ
को शब्दज स्वीकार करना (विप० ४८) सज्ञा
१ उपयुक्त नाम एक परिभाषिक नाम हो अपना
अर्थ स्वयं प्रकट करना है २ यथाय नाम जिसका
अर्थ स्पष्ट है।

अन्वयवर्तकम् [अनु + अन् + कृ + क्त] क्रमपूर्वक चारों
ओर चलना।

अन्वयवर्तकम् [अनु + अन् + कृ + क्त] १ शिथिल करना
२ इच्छानुसार व्यवहार करने देना कामचागनुज्ञा, ३
स्वेच्छाचरित।

अन्वयवर्तकम् [अनु + अन् + कृ + क्त] (वि०) समुक्त सबब
बधा हुआ।

अन्वयवर्तकम् [अनु + अन् + कृ + क्त] जाति, कुल, वंश।

अन्वयवर्तकम् [अनु + अन् + कृ + क्त] लिहाज
विचार।

अन्वयवर्तकम् [अनुगता अष्टकाम् प्रा० स०] भारतीय वंश

की पुत्रिजा के पदवाच्य जाने वाले वंश, माघ और
काल्पनिक के कुलपक्ष की नवमी।

अन्वयवर्तकम् [अन्वयवर्तक + क्त] अन्वयवर्तक के दिन होने
वाला आठ या ऐसा ही कोई दूसरा अनुष्ठान।

अन्वयवर्तकम् [अन्व०] [प्रा० म०] उत्तर पश्चिम दिशा
की ओर।

अन्वयवर्तकम् [अन्व०] [अनु + अन्वृ प्रा० स०] दिन-ब-दिन,
प्रति दिन।

अन्वयवर्तकम् [अनु + आ + क्त] बाद में उत्पन्न करना,
या गिनना, पूर्वोक्त का उत्पन्न करने हुए व्याख्या करना।

अन्वयवर्तकम् [अनु + आ + क्त] १ प्रधान कार्य का
कथन करके गौण कार्य की उक्ति मुख्य पदार्थ के साथ
गौण पदार्थ का जड़ना च निपात का एक अर्थ—
श्री मिशामट मा चानय -यहा पर मिश्रक के प्रधान
कार्य— (मिश्राय बाहर जाने) के साथ एक गौणकार्य
(माघ का के जाना) भी जोड़ दिया गया है २ इस
प्रकार का स्वयं एक पदार्थ।

अन्वयवर्तकम् [अन्व०] [अनु + आ + क्त] (उपजे' की जाति
इसका प्रयोग 'क' के साथ होता है) पूर्वक की सहायता
का ना (यह विकल्प से उपसर्ग समझा जाता है)
'कृत्वा, या 'कृत्वा'।

अन्वयवर्तकम् [अनु + आ + क्त] १ बाद में
या के अनुसार, कहा हुआ, पुन काम पर लगाया हुआ
२ चटिया, गौण महत्त्व का।

अन्वयवर्तकम् [अनु + आ + क्त] एक कथन के पदवाच्य
दूसरा कथन पूर्वोक्त की पुनर्गति।

अन्वयवर्तकम् [अनु + आ + क्त] अगिनहोय की अग्नि
में समिधाएँ रखना।

अन्वयवर्तकम् [अनु + आ + क्त] (व्यवहारविधि में) १
जमानत किसी तोरे व्यक्ति के पास बरोहर या प्रति-
भूति जमा करना जिससे कि समय पर वह वपार्थ
स्वामी को लौटा जा सके २ दूसरी बरोहर ३ अवसरत
चिन्ता बंद, पचचापाप।

अन्वयवर्तकम् [अनु + आ + क्त] स्वार्थ कन् च
एक प्रकार का स्त्री-धन जो विवाह के पश्चात् पितृ-
कुल या पतिकुल की ओर से या उसके अपने संबंधियों
की ओर से उपहार स्वरूप दिया जाय - विवाहात्परातो
यच्छ लब्ध अंतर्कुलस्त्रियया, अन्वयवर्तक तु तद्वत्
लब्ध पितृ (वत्) कुलात्तया।

अन्वयवर्तकम् [अनु + आ + क्त] स्वार्थ कन् च
स्वार्थ, संपर्क, विशेषतया व्यवसाय (अथ का
अनुष्ठान) को पुनीत सत्कार के लुफ्त का अधिकारी
मानने के लिए स्वयं करना।

अन्वयवर्तकम् [अनु + आ + क्त] स्त्री का अपने पति
के साथ के साथ पिता पर बैठना।

अन्वात्मन् [अनु + आत् + स्युट्] 1. सेवा, परिचर्या, पूजा
2. दूसरे के पोछे आसनग्रहण करना 3. ओद, शोक ।

अन्वाहृत् (—यन्), —यन् [अनु + आ + हृ + व्यत्
स्वायं कन्] पितरो के सम्मान में अमावस्या के दिन
किया जाने वाला मासिक आह ।

अन्वाहिक (वि०) [स्त्री०]—को दैनिक, प्रतिदिन का ।

अन्वाहित=नु० अन्वाधेय ।

अन्वित (वि०) [अनु + इ + क्त] 1 अनुगत, अनुष्ठित, सहित
युक्त 2 अधिकार प्राप्त, रखने वाला, जाहूत, प्रमा-
नित (करण के साथ या ममास में) 3 सयुक्त, जोड़ा
हुआ, कमायत 4 व्याकरण की दृष्टि से सयुक्त ।
सम० —अर्थ (वि०) प्रकरण में ही जिसके अर्थ आसानी
से ममास में आ सकें, —अर्थवातः अन्वितालवातः
मोमको का एक सिद्धांत जिसके अनुसार वाक्य में
शब्दों का अर्थ सामान्य या स्वतंत्र रूप से नहीं होता,
बल्कि किसी विशेष वाक्य में एक दूसरे से संबद्ध होकर
शब्द का जो अर्थ निकलता है, वही होता है । दे०
काव्य० २, अन्वितालवातः भी यही सिद्धान्त है ।

अन्वीकषणम्—का [अनु + ईक्ष् + स्युट्, अच् वा] 1 जोख,
दुडना, गवेषणा 2 प्रतिबिम्ब ।

अन्वीत=नु० अन्वित ।

अन्वीकषन् (अध्य०) [प्रा० म०] एक शब्द के पश्चात् दूसरी
शब्द ।

अन्वेष्टः—अचम्—का [अनु + ईक्ष् + चञ्, स्युट् वा, स्त्रियां
टाच्] दुडना, जोखना, देखभाल करना —अप तत्त्वा-
न्वेष्टान्मयुकरं हुता—म० ११२६, रघुनन्दनदशाणा
द्विषा रघु० १२।११ ।

अन्वेष्टक, अन्वेष्टिन्, अन्वेष्टु (वि०) [अनु + ईक्ष् + क्तुस्,

मिनि, तुच् वा] दुडने वाला, जोखने वाला, पूछ ताछ
करने वाला ।

अप् (स्त्री०) [आप् + क्तिच् + क्तृत्वञ्च] (परिनिष्ठित
भावा में केवल व० व० में ही रूप होते हैं) यथा
आप्, अप्, अङ्गि अङ्गप् २ अपाम्, अप्पु, परन्तु
वेद में एक वचन और द्विवचन भी होते हैं । पानी, बानि
वैद्य स्युसेदवम्—मनु० २।६०, पानी बहुधा सृष्टि
के पाँच तत्त्वों में सब से पहला तत्त्व ममसा जाता है
यथा—अप् एव ममसादी तानु भीषयवायुजन् मनु०
१।८, स० १।१ परन्तु मनु० १।३८ में बताया गया
है—कि मन, आकाश, वायु और ज्योति अथवा अग्नि
के पश्चात् तैजस् या व्याप्ति से जलो की उत्पत्ति हुई ।
तज०—अप् अलक्षर, असीय अनु, —वर्तिः 1 जल
की स्थानी वहन 2 समुद्र, दूसरे समस्त पर्वों को शब्दों
के अन्तर्गत देखो ।

अप (अध्य०) १. (वायु के साथ जुड़कर इसका निम्नांकित अर्थ
होता है)—(क) से दूर, अपवाति अपनयति (क)

हात,—अपकरोति दूरी तरह से या गलत ढंग से
करता है (ग) विरोध, निषेध, प्रत्याख्यान —अपकर्षति
अपचिनोति (ब) बर्जित —अपचह, अपसु (प्रे०)।
2. त० और व० स० का प्रथम पद होने पर इसके
उपयुक्त सभी अर्थ होते हैं—अपघामन्, अपचक्षः—एक
बुरा या अष्ट शब्द,—भी निदर, अपराधः अमनुष्ट
(विप० अनुराग), अधिकारा स्थानों पर अप को
निम्न प्रकार से अनुदित कर सकते हैं 'बुग' बटिया
'अष्ट' 'अशुभ' अयोग्य' आदि 3. पृथक्करणिय अध्यय
(अपा० के साथ) के रूप में—(क) से दूर—यत्न
प्रत्यक्षलोके लक्ष्या वसतिर्भवेत् अष्टि० ८।७
(ख) के बिना, के बाहर अपहरे समार मिद्धा०
(ग) के अपवाद के साथ, सिवाय अप विगतंभ्या
वृष्टौ देव सिद्धा०, के बाहर, को छोड़कर इन
वाक्यों में 'अप' के साथ कि० बि० (अध्ययीभाव
ममास) भी बनते हैं—'बिष्णु' समार—बिना विष्णु
के, विगतंभ्या देव अर्थात् विगतं की छोड़कर अप
निषेध और प्रत्याख्यान की भी जतलाना है—'काम,
शक्य ।

अपकरणम् [अप + कृ + स्युट्] 1 अनुविन रीति से कार्य
करना 2 अनुपयुक्त काम करना, चोट पहुँचाना,
दुर्लभकार करना, कष्ट पहुँचाना ।

अपकृन् (वि०) [अप + कृ + तुच्] हानिकारक कष्ट-
दायक, (पु०—तां) सन् ।

अपकर्मन् [प्रा० म०] 1 अण से निस्तार 2 अकारिणोच,
दत्तग्यानपदम् च मनु० ८।४, 2 अर्न्विन,
अनुपयुक्त कार्य दुष्कर्म, दुष्कृत्य 3. दुष्टता हिंसा,
उपद्रव ।

अपकर्ष [अप + कृ + चञ्] 1 (क) नीचे की ओर
खींचना, कम करना घटाना, हानि, नाश—तेजोपकर्ष
वेणी० १, हास (ख) अनादर अपमान (सभी ज्यों
में वि०) उत्कर्ष 2 बाद में जाने वाले शब्दों का पूर्व-
विचार (व्या० काव्य और मीमांसा आदि में) ।

अपकर्षक (वि०) [अप + कृ + क्तृत्वं] कम करने वाला
घटाने वाला, से निकालने वाला दायान्त्य (काव्य-
म्य) अपकर्षका सा० दे० १. ।

अपकर्षणम् [अप + कृ + स्युट्] 1 दूर करना, लीचकर
दूर करना या नीचे ले जाना, बर्जित करना, निकास
देना 2 कम करना, घटाना 3. दूसरे का स्थान ले
लेना ।

अपकार [अप + कृ + चञ्] 1 हानि, चोट, आघात,
कष्ट (विप० उपकार) उपकर्षाग्नि मर्षिन् मिषेणा-
पकारिणा, उपकारापकारी हिं लक्ष्य लक्षणमेतौ—
जि० २।१७, अपकारीऽपुपकारीव सद्यत् 2 दूसरे
का बुरा चिन्तन, दूसरे को चोट पहुँचाना 3. दुष्टता,

हिवा, उत्पीडन 4. गिरा हुआ, नीच कर्म । मम०
अर्थिन् (वि०) हँसो, दुःखमा, बिर् (स्त्री०-नीः)
शब्दः मालिन्या, भर्त्सना दायक तथा अपमानजनक
शब्दः ।

अपकारक, कारिन् (वि०) [अप + कृ + क्तृन्] शक्ति
पटुवाने वाला, अतिप्रकारी, कष्टप्रद, अहितकारी
पञ० ११९५, शि० २३३७-कः, २। दूर करने वाला ।
अपकृति - तु० अपकार, इसी प्रकार अपाक्या आधान,
चाट, अनिष्ट, दुःख, कृष्णपरिचाष ।

अपकृष्ट (वि०) [अप + कृ + क्तृन्] 1 खींच कर बाहर
किया गया, दूर हटाया गया 2. नीच, कमीना अप्रम
(विप० उत्कृष्ट) न कश्चिद्वर्णानामप्यप्यपकृष्टाऽपि
भवते श० ५११०, छः कौदा ।

अपकौशली समाचार, सूचना
अपचिन् (स्त्री०) [नञ् + चि + क्तृन्] 1 कल्पान,
विनिर्वाहना का प्रभाव 2. अपच, प्रवर्ण ।
अपचक्षः [अप + कृ + क्तृन्] 1 दूर चले जाना, पलायन
पीट दिखाना, 2. (ममय का) बीतना - (वि०)
1 कमर्गहित 2. अनिर्दिष्ट गलत कर्म वाला ।

अपचक्षन् शब्दः [अप + कृ + क्तृन्, कृ + वा] गोट
मुहना, हटना, उड़ान, भागना ।
अपकौशः [अप + कृ + क्तृन्] माली, भर्त्सना ।

अपक्ष (वि०) [न० व०] 1. पक्ष से या उड़ान की शक्ति
से रहित, 2. किसी पक्ष या दल से संबंध न रखने वाला
3. बिनके बिना समर्थक न हो 4. निष्पक्ष, पक्षरहित ।
मम० पातः निष्पक्षता, वासिन् वि० पक्षपात रहित ।

अपक्षयः [अप + क्षि + क्तृन्] छोड़ना, हटाना, नाश ।
अपक्षेयः - अपक्षय [अप + क्षि + क्तृन्, ल्युट् वा] 1 दूर
करना या नोच फेंकना 2. फेंक देना, नीचे रखना,
वैशेषिक दर्शन में निर्दिष्ट पाच कर्मों में से एक कर्म,
वे० कर्मन् ।

अपक्षयः [अपक्षि (वैष) कर्मणि गृह त्याज्य] जिसने वय-
स्कता प्राप्त कर ली है, दे० अपोषय ।

अपक्षयः - अपक्षय [अप + क्ष + क्तृन्, ल्युट् वा] 1 दूर
जाना, हट जाना, विधोष, सजाय या सपनाया - हि०
४१५५, 2 गिरना, हटना, बीजक होना - पुराणपत्रा
पमसादस्ताः - रघु० ३७, 3. लुप्त, मरण ।

अपक्षयः (स्त्री०) [अप + क्ष + क्तृन्] बुद्धि ।
अपक्षयः [अप + क्ष + क्तृन्] 1 विदा, भर्त्सना 2. निन्दक,
भर्त्सक ।

अपक्षयित (वि०) [अप + क्ष + क्तृन्] (बादल की भाँति)
मूर्च्छनायुक्त ।

अपक्षयः [अप + क्ष + क्तृन्] 1 लुप्तता, कमी, हानि, छीजन,
पिताहट (बाल० जी) - कक्षापत्र - दश० १६०, 2.
नाश, क्षयकला, दोष ।

अपक्षयित [अप + क्ष + क्तृन्] दोष, दुष्कृत्य, दुष्कर्म
आहारिन् प्रमदो ममापक्षयिते विद्वत्ततो वीरुषाम् -
श० ५११९ ।

अपचारः [अप + चर + क्तृन्] 1 प्रत्यान, धृत् - सिद्धो-
पच कानकापचार निर्मिष - दश० ७०, 2 कमी,
अभाव 3 दाघ अपराध, दुष्कर्म, दुष्टाचरण, दुर्म
-रात्र्यजामू से कश्चिदपचार प्रवर्तते - रघु० १५१४
4 हानिकर या कष्टप्रद आवरण, छति 5 दोष
या कमी - तापचाऽप्यमन् कश्चिद्विषया - शि० १४३२,
6 अस्वास्थ्यकर या अपथ्य - हृतापचारोऽपि परित्या-
जिष्युर्नाशिक्य, अमाप्य कुतश्च काप प्राप्ते कामे गदो
यया । शि० २११६, (यही अ' भी आवात या अति
का अर्थ रखता है) ।

अपचारिन् (वि०) [अप + चर + क्तृन्] कष्ट पहुँचाने
वाला, दुष्कर्म करने वाला, दुष्ट, दुरा ।

अपचिन् (स्त्री०) [अप + चि + क्तृन्] 1 हानि, छीजन
नाश 2 व्यय 3 प्रायश्चित्त, ममृति, पाप का प्राय-
श्चित्त 4 सम्मानन पूजन, आदर प्रदर्शन पूजा - विदि-
नापचिन्महोद्भवा शि० १५१९ (इसका अर्थ 'हानि'
और 'नाश' भी है) ।

अपचक्षन् (वि०) [अप + क्ष + क्तृन्] बिना छाने के, छतरी
के बिना ।

अपक्षाय (वि०) [अप + क्ष + क्तृन्] 1 छाया रहित 2 कर्म-
रहित, वृक्षला - यः त्रिमूर्ती छाया न होती हो,
अर्थात् परमात्मा तु० न० १४२१, विश्व ब्रह्मा
कियदस्य देवाश्छाया नलम्यामिन् तथापि नैषाम्,
इतीरयन्ति तथा निर्देहि मा (छाया) नैषचेन विद-
शेषु तेषु ।

अपक्षयः - अपक्षय [अप + क्षि + क्तृन्, ल्युट् वा] 1
काट कर दूर कर देना, 2. हानि 3 बाधा ।

अपक्षयः [अप + क्षि + क्तृन्] हार, पराजय ।
अपक्षयः [अप + क्ष + क्तृन्] कुपुत्र, जो मुर्छों की दृष्टि
से माता पिता से हीन हो - मातृवृत्त्युत्थो जलस्त्वनु-
जात पितु समः, अतिजातोऽप्येकस्मादपराधोऽपि
ममाधम - सुभा० :

अपक्षयः [अप + क्ष + क्तृन्] मुकाम, लुप्त रचना ।
अपक्षयिष्ठय [न० व०] जिसका पक्षीकरण न हुआ हो,
पंचमहाभूतों का लुप्त रूप ।

अपक्षी [अप + क्ष + क्तृन्] 1 कपड़े का पर्दा
या दीवार विशेष रूप से 'कनात' को ठम्कू को बारों
और से ढेर लेती है 2 पर्दा । तम० - अप-
(अपक्षयः) पर्दे के एक ओर बाधन, 'अपक्षय' (=
अपक्षय) अपक्षी से पर्दे को एक ओर करके, (यह
शब्द बहुधा रम्य के निदर्शार्थ प्रयुक्त होता है तथा
मय, उत्साही या चरवाह के कारण हलकाहट के

साथ पात्र के प्रवेश को प्रकट करता है वैसे कि बिना किसी भूमिका (तत् प्रविशति आदि) के, पात्र कक्षमात् पूर्व को उठा कर प्रविष्ट होता है।

अपवृत्ति (वि०) [न० त०] 1 अनिपुण अवस्था यद्वद्विद्धि बौद्ध, 2 जो बोधने में अनुर न हो 3 रोगी।

अपठ (वि०) [न० त० नञ् + पठ् + अप्] पढ़ने में असमर्थ, न पढ़ने वाला, दुष्पाठक तु०, 'अपठ्'।

अपठित (वि०) [न० त०] 1 जो विद्वान् या बुद्धिमान् न हो, मूर्ख, अनादी-विभूषण मोनमपठिताताम नृ० नी० ७, 2 जिसमें कुशलता, रुचि तथा गंगा की सराहना करने का अभाव हो।

अपठ्य (वि०) [न० त०] जो बिको के लिए न हो - जीविकायै चापये-पा० ५।३।१९।

अपठ्यन् [अप + तृप् + ल्युट्] 1 उपवास रखना (गङ्गा वस्त्रा में) 2 तृप्ति का अभाव।

अपठ्यान् [अप + तृप् + ल्युट्] एक प्रकार का रोग जिसमें अकस्मात् मर्का जाती है, दोरे पड़ते हैं तथा पेशियों में सिकुड़न होती है।

अपठित-**सिक्त** (वि०) [न० व०] जिसका स्वास्ती न हो जिसका पति न हो, अविवाहित।

अपठनीक (वि०) [न० व०] जिसकी पत्नी न हो।

अपठनीकम् [प्रा० स०-अप्रकृष्ट तीर्थम्] दूरा तीर्थस्थान।

अपठनीक [न० त०] पितरोज्जन-नञ् + तृप् + ल्युट्] 1

सन्तान, वस्त्र, प्रजा, मर्तति (मनुष्यों को और पशुओं की), बैठा या बेटी, एक ही कुल में उत्पन्न पुत्र (पुत्र तथा प्रपौत्र आदि-अपठ्य पौत्रप्रभृति गोचर पा० ६। २।६२-अपठ्यैव नीवारभागव्याचिर्त्तयैव रघु० १।५०, 2 अपठ्यवाचक प्रत्यय। सम० काम (वि०)

सन्तान का इच्छुक-वच्य योनि प्रत्यय अपठ्य वाच्य प्रत्यय, विच्छिन्न (वि०) सन्तान का बिच्छेता बह पितृ जो धन के लालच में अपनी कन्या को प्राची जायता के हाथ बेच देता है अशु 1 कंकडा 2 साथ।

अपठ्य (वि०) [व० म०] निर्लज्ज बहया या

—वच्य सखा, हया।

अपठ्यिन् (वि०) [अप + तृप् + इण्] जर्मोना, लजीला।

अपठ्यस्त (वि०) [अप + तृप् + क्त] इरा हुआ अपठित

तरवापत्रस्त-तरगा में किञ्चिन् मीन।

अपठ्य (वि०) [न० व०] मार्गगत बिना मङ्क के

—कम् (अपठ्याः) [न० त०] 3 माग न हो माग का अभाव कुमार्य (शाब्द०) (प्रा०) नैनव

अविमथिता या म्बलन, दुष्ण या कुमार्य प्राच्ये

पदमार्गसि हि भूतवन्मात्रं रज्ज्विनीलिता रघु० १।७५, 1 सम०-गात्रिन् (वि०) कुमार्य पर धन

वाला, विधर्मगामी।

अपठ्य (वि०) [न० त०] 1 अयोग्य अनुचित, असयन

वृत्ति अकार्यकामपथ्य पथ्यवसितम् रा०

2 (आयु० में) अस्वास्थ्यकर रोगजनक (वैसा कि

भाजन पथ्यापथ्य) सन्तापवति कमपथ्यभुज न रोगा

हि० ३।११७, 3 दूरा दुर्मार्गपूर्ण। सम०

कारिन् (वि०) कष्टप्रद।

अपठ [न० व०] बिना पैर का चक्क [न० त०]

1 आवास या स्थान का अभाव, 2 सदोपस्थान या

अनुपयुक्त आवास 3 ऐसा शब्द जिसके साथ अभी

विभक्ति निङ्ग न जुड़ा हो 4 अन्तरित। सम० अस्तर

(वि०) मलिन समस्त मयीपथ्य (रम्) सामीप्य

सत्कृता।

अपठ्यिन् (अपठ्य०) [अपठ्य० म०] बाद और।

अपठ्य (वि०) [व० म०] आमतयम स तीन।

अपठ्य (वि०) [व० म०] दस की मर्याद न दूर।

अपठ्यान् वाचकम् [अप + तृप् + ल्युट्] 1

पवित्रावस्था मान्य जीवनवदा 2 उत्तम वायु सवीत्य

वायु (कदाचित् अवदानम क स्थान पर) 3 प्रती

भारित पूर्ण रूप में दिखा गया कथ्य निष्पन्न काम।

अपठ्यान् [न० त०] 1 कृष्ट नहीं सत्ता का अभाव 2 वाक्य

में प्रयुक्त शब्दों का अर्थ न होना-अपठ्यान् वि वाक्याय

समूल्यसि काव्य० 2।

अपठ्यिन् (अपठ्य०) [अपठ्य० स०] मार्गगत प्रदेश में

परिधि के दाना प्रदेशों का बीच।

अपठ्यता [प्रा० म०] पितापुत्र भन प्रन।

अपठ्य [अप + तृप्] 1 वस्तुव्य उपस्थ नाम

का उल्लेख करने हुए सकल करना नैव न्याया

यददानुगदश दश० ६० हेतुवदन्त प्रतिज्ञावा

पुनरुचन नियमनम् पा० शा० 2 वपाना छत्र

कारण अत्र कनापदशन पुनराश्रम मन्त्राध

शा० २ रक्षापदशान्मनिशामनो पथ० १। 3

वाग्णी का वचन एक प्रयुक्त वचना भारतीय न्याय

वाद के पक्ष अग्रा म में दूसरा 21 (वैज० के

अनुसार) 4 निशाना चिह्न 5 स्थान शिवा 6

अस्वीकृत 7 परिशिष्ट यश 8 छत्र।

अपठ्यन् [प्रा० म०] दूरा हय दूरे वन्त।

अपठ्यान् [प्रा० म०] वगैर कः अस्वीकृत द्वार के

आश्रित का कोई दूसरा प्रवर्ण द्वार।

अपठ्य (वि०) [व० म०] अग्रिम पक्ष न 21 अमरविश्व।

अपठ्यान् [प्रा० म०] 32 विचार आश्रित विनन मन

ही मन कामना।

अपठ्यत [प्रा० म०] अग्रिम पक्ष विराजत लाक्षण।

मम० ज्ञा विमिश्रित पतिन तथा निवृत्त आश्रित

म उपान्त म० १०।६१ ६१, 1

अपठ्यन् (वि०) [अपठ्य० व०] 1 अग्रिम पक्ष

बहिर्गत, वृत्ति 2. अपूर्ण रूप से या बुरी तरह पीसा हुआ, 3. व्यक्त, स्तः द्रुष्ट पात्री जिसमें दूरे धके की समझ न हो।

अपवः [अप + नी + अच्] 1. ले जाना, हटाना, निराकरण करना 2. दुर्नीति या दुराचरण 3. क्षति, अपकार नष्ट संपत्तापवयनस्वरणानुशयबहुला शि० २।१४।

अपवयनम् [अप + नी + ल्युट्] 1. ले जाना हटाना नाति श्रमापनयनाय शि० ५।६, 2. वारोप्य देना, इलाज करना 3. कृण परिणाम कर्तव्य का निर्वाह।

अपवस (वि०) [ब० म०] बिना नाक का -अनिर्वाक्ष्ये मृत्तय अकागपनस मुखम् -अर्थः ५।३१।

अपवृत्तिः (स्त्री०) [अप + नृट् क्तिन् वच्] -वृत् अपवृत्ति-वृत्तम् वा हटाना ले जाना नष्ट करना प्रार्थनान, रूप का) परिणामन पापानामपनूनये मनु० ११।१५।

अपवाठ [पा० म०] अशुद्ध पठन, बुरी तरह पढ़ना, पढ़ने में अक्षति द्वादशापपाठा अभ्य आ०।

अपवाय (वि०) [ब० म०] सामान्य पात्रों के उपयोग में बाधित नीची जाति का।

अपवाहित [पञ्चभाजनाद वीर्यकृत अपवायः इत्यच्] किसी बड़ पाप या अपराध के कारण ज्ञात में अति कृप हाकर जो अपने सबबियों के साथ सामान्य पात्रों में स्नान-पान के योग्य नहीं है।

अपवायम् [अप + वा + ल्यट्] अपर दूरा पयः।

अपवृत्त (वि०) [ब० म०] जिसके निरुद्ध या कर्तव्य की बाधना सुधील न हो -सौ बेइश कन्हे।

अपवृत्ता [अपगत प्रजानो यस्या ब० म०] वर स्त्री जिसका गर्भपात हो गया हो।

अपवृत्तानम् [अप + वृ + ल्यट्] घस गिरवना।

अपवय मो (वि०) निरुद्ध निर्मेय निरुद्ध ग्य० ३।५१।

अपवर्णी [अप + वृ + ल्यट्] हीनो अन्तिम नक्षत्रवृत्त

अपवाचनम् [अप + वाच + ल्यट्] नटना प्रार्थना।

अपभ्रञ्ज [अप + भञ्ज + घञ्] 1. नीचे गिरना पतन अत्यक्षिर्भवेति महतामपराधमनिरा १० ४ 2. अष्ट शब्द अपभ्रञ्ज (अ) १. अष्ट शब्द बाह्य २. व्याकरण के नियमों के विपरीत हो और बाह्य हो ऐसे अर्थ में प्रयुक्त हुआ हो ३. सम्भूत न हो ३ अपभ्रं भाषा (वाक्यम्) वर्गीकृत अर्थ के द्वारा प्रयुक्त प्राकृत बोली का निम्नतम रूप (प्राच्यम्) सम्भूत से अलग कोई भी भाषा वाच्योद्दिष्ट वाक्योपभ्रञ्ज इति स्मृता शास्त्रस्य मन्त्रादि-व्याख्याभ्रञ्जोदितम् काव्यादिशः १।

अपव (श्यो० में) [अपकृत मायने मा क बा०] कुनु

बहुधा में मुई का उलट से ठीक पूर्व या पश्चिम की ओर बृषाक्ष क्षान्तिवयः।

अपवर्षः [अप + वृ + घञ्] जो बृहारा जाता है, घल, गर्वा।

अपवर्जः [अप + वृञ् + घञ्] कृता चरना।

अपवर्णः [अप + वर्ण + घञ्] अनादर, सम्मान का न होना लाक्षण लक्ष्यने वृद्धवर्जानाममान व पुष्कलम् पञ्च० १।६३।

अपवर्ष [अप + वृ + घञ्] छोटा गमना, वयल का मार्ग बरा गमना।

अपवर्जनम् [अप + वर्ज + ल्यट्] 1. धाकर भाग करना भाजना साफ करना 2. दूरागमन बनवाना नाशन करना।

अपवृत्त (वि०) [ब० म०] 1. औष मुट वाला 2. विरूप, वृक्ष।

अपवृत्तन (वि०) [ब० म०] जिसके मित्र न हो, 'कलेवर अमर०'।

अपवृत्त्य [पा० म०] 1. आकस्मिक या अनापयिक घटन दुर्घटना के कारण मृत्यु 2. कोई भारी अथवा रोम विमर्ष के कारण (विमर्ष के अंगों की अज्ञान न रही हो) अज्ञान के विपरीत स्वयं हो जाना है।

अपवृत्ति (वि०) [अप + वृ + क्त] 1. जो समझ में न आ सके अस्पष्ट जैसे कि कोई वाक्य या वक्तुता 2. जो मट्ट न हो जिसे कोई पमन्द न करे विहित मयाक्ष सदनीदमपयोगीयमप्युताजैनम् यम्प -अ० १५।४६।

अपवृत्त (न० अ [पा० म०] बदनामी कलक अप कीति-अपयोगी यथा १ कि मय्याना-अनं० नी० ११।

अपवायम् [अप + वा + ल्यट्] दूर जाना वापिस मुड़ना भागना।

अपर (वि०) [न० ब०] (कुछ अर्थों में सर्वनाम की भाँति प्रयुक्त होता है) 1. अर्थात्-द्वितीय बौद्ध तु० अनुत्तम अनुत्तर 2 [न० व०] (क) दूसरा उत्तम (वि० व) १म की भाँति प्रयुक्त। (ख) और अनिर्वाक्य (न) दूसरा और (घ) मित्र अन्तर मनु० १।५ (६) नृत्त मय्यम् ३ 'कसो और से सबब रखने वाला जो अपना निजी न हो' (विप० स्व) ४ पिच्छता, बाद का दूसरा बाद म (कात्त और इस की दृष्टि में) (विप० पूर्व), अन्तिम सम्प्रसार काल निक० जब वन्दोत्पत्त्य ममाल के प्रथम पद के रूप में प्रयुक्त होता है तब पिच्छता भाव उत्तराक्ष अर्थ होता है, - वक्ष मास का उत्तराक्ष हेतु मासों का उत्तराक्ष काक शरीर का पिच्छता भाव, आदि, 'वर्षा', 'सहस्र वर्षा' तथा पञ्चमक का उत्तराक्ष, 5 आगामी, अगला 6 पश्चिमो शि० १।१, कु० १।१ 7 अष्टिया

अमपराधमस्य यदि पर्याप्त विक० ६।३९,

यथापराध-द्वानाम् रघु० १।६।

अपरिचित् (वि०) [अप + गच्छ + जिति] कष्टकर, दोषी।

अपरिग्रह [न० ब०] जिसमें काम न कोई सामान हो, न लीकर बाकर, जो सब प्रकार से हीन हो निराशीर परिग्रह है १ अस्वार्थता इकारो २ दौड़ना, गरीबी।

अपरिचय (वि०) [न० ब०, गरीब दरिद्र।

अपरिचित् (वि०) [न० त०] १ जिसका अन्तर न पहचाना गया हो २ मोया रहित।

अपरिचय [न० त०] चिरकालीय इत्युच्यते।

अपरिचिता [न० त०] अविवाहित कन्या।

अपरिचिन्तनम् [न० त०] तर्कीयता अमन्यता।

अपरीक्षित (वि०) [न० त०] बिना परीक्षा किया हुआ बिना जांचा हुआ अप्रमाणित २ अविवाहित मूलता पुत्र, विवाहहीन (पुत्र या बन्धु) काच नाम पञ्चम तन्त्रम् पत्र ५, अन्धता विचारणीय न हो ३ जो स्पष्ट रूप से स्थापित या सिद्ध न हुआ हो।

अपश्य (वि०) [न० त०] काय-गुण अग्रहणपर्याप्त मोहिता ध्रु० १।१।

अपश्य (वि०) [स्त्री० या पौ०] [न० ग०] कुरु, विषय, देवता शनैः काला यम् [प्रा० सं०] विष्णुता।

अपरोक्ष (अव्य०) [अप + एक्ष्] अगल दिन।

अपरोक्ष (वि०) [न० त०] १. दृश्य २. प्रत्यक्ष ३ जो दूर न हो अन्त (वि० त्रि०) को उत्पत्ति में (सब० के साथ) अपरोक्षात् प्रत्यक्ष रूप से दृश्यतापूर्वक।

अपरोक्ष [अप + एक्ष् + घञ] बर्तन निषेध।

अपर्व (वि०) [न० ब०] बिना पता का—जहाँ पावनी या दुर्गादेवी, कालिदास हम नाम का कारण बतलाते हुए कहते हैं स्वयं ब्रह्मण्डभरणवर्तिता परा हि काष्ठान् तपसस्तथा पून तदयगाक्षीमर्माति प्रियवदा बदन्य पर्णान् च ना पुराविदः कु० ५।११।

अपर्याप्त (वि०) [न० त०] १ जो यथेष्ट या काफी न हो अपूर्ण जो पर्याप्त न हो २ असीमित ३ अपौरुष अमयं अपर्याप्त तदमाक दत्त भाष्यार्थप्रक्षन्तम् अग० १।३०।

अपर्याप्त (स्त्री०) [नञ् + परि + प्राप् + क्तिन्] यथेष्टता का अभाव।

अपर्याप्त (वि०) [न० ब०] कमार्हित, कम या प्रणाली का अभाव।

अपर्युक्त (वि०) [नञ् + परि + वृत् + क्त] जो रात का रक्ता हुआ न हो ताजा नूतन।

अपर्वण (वि०) [न० ब०] जिसमें जोड़ न लगा हो, (नपु०) [न० त०] १ जोड़ या संयोग बिन्दु का अभाव

२. जो पर्व का दिन न हो—अर्थात् अनुपयुक्त समय या क्षण।

अपल (वि०) [न० ब०] बिना मास का,—सम् कील या कुडी।

अपलपनम्-अवकाश [अप + लप् + ल्युट्, वञ्च् + वा] १ छिपाना गोपन २ छिपाव या जानकारों से मुक्त जाना, टालमटोल,—न हि प्रत्यक्षमिदम्यापलाप कर्तुं शक्यते—आरो० ३. मन्थता, विचार व भावना का छिपाना घटाकर बनाना। सप्त०—अच्छ (विधि में) उस व्यक्ति पर किया जाने वाला गुमानों को कि दोष मिट्ट हाने पर भी अपने दोष को स्वीकार नहीं करना।

अपलापित् (वि०) [अप + लप् + जिति] मुकुरने वाला, दोष को स्वीकार न करने वाला, छिपाने वाला।

अपलापित् [अप + लप् + ल्युट्] स्त्रिया टाप्] अवधिक 'याम या इच्छा या सामान्य वृत्ता (कई बार इसी अर्थ में अपलापित्वा शब्द भी प्रयुक्त होता है, परन्तु उस बहुत मंजूर जाता है)।

अपलापित्-लापक (वि०) [अप + लप् + जिति, उक्त, वा] १ 'यामा २ 'याम या इच्छा से रहित—प्रलापित्वा भविष्यन्ति कदा ज्ञेयेऽपलापुका महाभा०।

अपवर्ण (वि०) [न० ब०] बिना वायु या हवा के, हवा से मुरझित सम् [प्रा० म०] नगर के निकट लगाया हुआ बाग बाटिका या उपवन।

अपवर्णः-का [अप + वृ + वृत् स्त्रिया टाप्] १ भीतर का कमरा जयनागर २ बागान, मोषा—ननश्चैकस्मादपवर्णकान् प्रा०।

अपवर्णम् [अप + वृ + ल्युट्] १. आच्छादन, पर्दा २. पोशाक, वस्त्र।

अपवर्ण [अप + वृ + वञ्च्] १ पूर्ण, समाप्त, किसी कार्य की पूर्णता या निष्पत्ति—अपवर्ण तृतीया—या० २।३।६ किंवापवर्णवृत्तुजीविसाक्षता—कि० १।१४, अपवर्ण तृतीयेति भ्रष्ट पाणिनेरपि—नै० १।७।६८ कि० १।६।६२ २ अपवर्ण विहित नियम—अभिध्याया पकर्मसाम्यवर्ण—सुश्रु० ३ मोक्ष, परमगति—अपवर्ण-महादमाधेयवृत्तमशास्त्रि चर्मयोगी—रघु० ८।१६, ४. उपहार दान ५ न्याग ६ छोड़ना (जैसे बाण का)।

अपवर्णम् [अप + वृ + ल्युट्] १. न्याग (प्रतिज्ञा) पाप्मन (क्षमादि) परिशेष, २. उपहार या दान ३ परमगति।

अपवर्ण [अप + वृ + वञ्च्] १. निकाल लेना, दूर करना २ (गण०) सामान्यविभाजक जो दोनों साम्य गतिमो में व्यवहृत होता है।

अपवर्तनम् [अप + वृ + ल्युट्] १ दूर करना, स्थान स्थानान्तरण २. निकाल लेना वञ्चित करना, न

त्यासोऽपि विचिन्त्यतश्च न च सावापकर्मन्—यन्०
१७७१।

अपवाहः [अप + वृ + वञ्] 1. निन्दा, भर्त्सना, कलक
—लोकापवादो बलवान्मतो मे—यन्० १४४०, बालोप
कोकनिर, देव्यावधि किं वैदेहाय सापवादो यतो जन
—उत्तर० ११९, 2. सामान्य नियम को बाधित करने
वाला विशेष नियम (वि० उत्तर) — अपवादैरिवो-
त्तर्गः कृतव्यावृत्तयः परैः—कु० २१२७, रघु० १५१७,
3. बाधक, बाधक—उत्तोपवायेन पताकिनीपनेषवाल
मिह्रावली गृह्यधर्म—कि० १४१२७, 4. निराकरण,
(वेदांत०) मिथ्यारोग्य या मिथ्याविश्वास का निरा-
करण,—रघुविर्वातस्य संपत्त्यं रघुमानस्यवत्, वस्तुभूत-
ब्रह्मणो विवर्तस्य प्रपञ्चादे वस्तुभूतरूपतोऽपदेश
अपवाद—सारा० 5. अरोसा 6. प्रेम, वनिष्ठता।

अपवाहकः (वि०) [अप + वृ + वञ्च, चिनि वा] 1
अपवाहिक कलक लगाने वाला, निन्दक, बदनाम करने
वाला—मुवापवादिना माहव्येन स०२, 2. विरोध
करने वाला, एक ओर रखने वाला, निकाल देने
वाला।

अपवाहकम् [अप + वृ + वञ्च + ल्युट्] 1. अपवाहन,
छिपान, 2. बोझाल होना।

अपवारिणः (यु० क० कृ०) [अप + वृ + वञ्च + क्त]
ठका हुआ, छिपा हुआ, —तन्, अपवारिण्यम् छिपा
हुआ वा गुप्त डग, —तन्, अपवारिण्येन, अपवार्य
(अर्थ०) (भाटकों में बहुधा प्रयुक्त) 'पृथक्' एक
ओर अर्थ प्रकट करने वाला अर्थ (वि० प्रकाशम्)
बहु इस ढंग से बोलने को कहते हैं कि केवल बही
तुने बिले कहा गया है—नद्रवेदपचारित रहस्य तु
वदन्त्यस्य परावृत्त्यं प्रकाशयते, विपताकरेणान्यमपवाया-
मरां कथाम्—सा० व० ६।

अपवाहः—कुम् [अप + वृ + वञ्च + ल्युट् वा] 1
दूर से जाना, हटाना 2. बटाना, एक राति में से
दूसरी राति को निकालना।

अपविणः (वि०) [व० स०] निर्वाच, बाधारहित—रघु०
२१२८

अपविष्टः (यु० क० कृ०) [अप + व्यृ + क्त] 1. दूर
सेना हुआ, त्यक्त, अव्योक्त, उल्लिखित, दूरीकृत, मुक्त,
विरहित 2. नीच, कमीना—ड०, पुत्रः माना या
पिता या दोनों से त्यागा हुआ पुत्र जिसे किसी अपवि-
ष्टि व्यष्टि ने गोप के लिये हो, हिन्दुओं में १२
प्रकार के पुत्रों में से एक—यन्० ११७१, बाज०
२१३२।

अपविष्टः [प्रा० स०] अज्ञान, बाध्यात्मिक अज्ञान, माया
वा अज्ञ (अविद्या),—तत्त्वस्य सविस्तिरिवापविष्टा
कि० १९१२२।

अपवीचः (वि०) [व० स०] बिलके पास बीचा न हो, वा
कराव बीचा हो—वा [प्रा० स०] कराव बीचा।

अपवृत्तिः (स्त्री०) [अप + वृत् + क्तिन्] पूर्वस्था,
निपत्यन्ता, प्रति।

अपवृत्तिः (स्त्री०) [अप + वृ + क्तिन्] घुसाव, छिन्न,
रघ।

अपवृत्तिः (स्त्री०) [अप + वृत् + क्तिन्] अन्त, समाप्ति।
अपवृत्तिः [प्रा० स०] गलत जगह या बुरे ढंग से (बोली
आदि में) छेद करना।

अपवृत्त्य [प्रा० स०] अत्यधिक लचक, अपवृत्त्य।

अपवृत्तुनम् [प्रा० स०] अलग, दूरा लगन।

अपवृत्तः (वि०) [व० स०] निर्धन, निरधक, —कृष्
(कि० वि०) निदग्ता के साथ।

अपवृत्तः = तु० अपवृत्त।

अपवृत्त्यः [प्रा० स०] 1. अशुद्ध शब्द (व्या० की दृष्टि
में), अशुद्ध शब्द (रूप और अर्थ की दृष्टि में), —
एव शक्तिवैकल्यप्रमादालम्भादिभि, अन्यथाप्यारिता
शब्दा अपवृत्त्या इतीरिता। अपवृत्त्यशब्द माधे -
मुभा० 2. साम्य शब्द 3. व्या० की दृष्टि से अशुद्ध
माधा 4. सिद्ध की वाला शब्द गाली, दुर्बल, निदा।

अपवृत्तः (वि०) [अपवृत्ति शिर शीर्षे वा यस्य -
अपवृत्ति-भञ्ज] व० स०] शिर रहित, बे शिर का।

अपवृत्तः (वि०) [व० स०] शोकरहित, (पु) आत्मा।

अपवृत्तः (वि०) [व० स०] शोकरहित, अः अशोकरहित।

अपवृत्तिः (वि०) [व० स०] जिसके पीछे कोई न हो,
अंतिम (अधिकतर 'अपवृत्ति' शब्द के अर्थ में ही प्रयुक्त
होना है) तु० उत्तम और अनुत्तम, उत्तर और अनु-
त्तर, अयमपवृत्तिमयो रामस्य शिरसि पादपङ्कज-
स्पर्श उत्तर० १ प्रयोदश महाराजो मयानेनापवृत्ति-
मेन प्रचयेन - वेणी० ६, 2. अनन्तिम, प्रथम, सर्वप्रथम
3. वरम, -अपवृत्तिमामिमां कष्टमापाद प्राप्ताकथम्
रमा०।

अपवृत्तः [अप + वृ + वञ्च] गद्दी, तकिया।

अपवृत्तिः (वि०) [व० स०] सौन्दर्य से वञ्चित—सा०
११५५।

अपवृत्तः दे० अज्ञान।

अपवृत्तः [अप + स्वा + क] हाथी के अकुश की तोक।

अपवृत्तः (वि०) [अप + स्वा + कृ] 1. विरुद्ध, विपरीत, 2.
अननुकूल, प्रतिरुद्ध 3. बायीं, —अधु (कि० वि०) 1
विरुद्ध, 2. असंगतार्थक, 3. निर्विपरीत के साथ मनी-
मानि, शीक नग्न से।

अपवृत्तः (वि०) [अप + स्वा + कृ + क्त, कुल्य वा]
विरुद्ध, विपरीत।

अपवृत्तः [अप + वृ + वञ्च] 1. जाति से बहिष्कृत, नीच
पुरुष, प्रायः समास के अन्त में प्रयुक्त होकर अर्थ होता

है—हुट्ट, पाजी, बमिसप्त, कापालिक मा० ५, २ रे
अर्ध्यापसदा - बेनी० ३, २. छ प्रकार की अनुनास
सन्तानि—अर्धात् पहले तीन वर्णों के अनुष्वा द्वारा अपने
से नीचे वर्णों की स्त्री व उतान्न सन्तानि विप्रत्य विष्
वर्णान् गुप्तवर्णयो. हुवा, विसर्ग्य वर्ण वैकस्मिन्
षटोपसदा स्मृता । मनु० १०।१० ।

अपसरः [अप + सृ + अच्] १ प्रस्थान, पलायन २ उचित
कारण ।

अपसरणम् [अप + सृ + ल्युट्] जाना, वापस मुड़ना,
पलायन ।

अपसरणम् [अप + सृ + ल्युट्] १ त्याग, उत्सर्ग २ उप-
हार या दान ३ मोक्ष ।

अपसर्षः—अर्ध [अप + सृ + ल्युट् स्वार्ये वृत् च] गुप्तबन्ध,
आम्रम, भेदिया मोपमर्ष अंगार यथाकाल स्वपन्नापि
रघु० १।१५, १०।३१ ।

अपसर्षणम् [अप + सृ + ल्युट्] पीछे हटना, लौटना
जासूनी करना ।

अपसर्ष्य, सध्वक् [ब० स०] १ जो बायां न हां दायां
—अपसर्ष्येन हस्तेन मनु० ३।५१०, २ [३४६, ३४७]
रौत ध्वक् (अध्व०) दाहिं ओर दाहिने कंधे +
ऊपर से जनेऊ को शरीर के बायें भाग पर लटकाना
(वि० सध्वक्) जब कि वह बायें कंधे के ऊपर से
लटकना है) ध्वक् दाहिनी ओर रखते हुए किसी की
परिष्कार करना, जनेऊ को दायें कंधे से लटकाना ।

अपसर्ष्यवत् (वि०) [अपसर्ष्य + भवत्] दाहिने कंधे पर से
यज्ञोपवीत पहनने वाला ।

अपसारः [अप + सृ + चञ्] १ बाहर जाना, लौटना २
निर्गमस्थान निकाल ।

अपसारणम् वा [अप + सृ + ल्युट्, सिचया टाप्] हटाकर दूर
करना, हाकना, बाहर निकालना—किमर्थमपसारणा
क्रियते—मुद्रा०, स्थान देना ।

अपसिद्धास्तः [अ० स०] गलत वा प्रत्ययुक्त निर्णय ।

अपसृतिः (स्त्री०) [अप + सृ + क्तिन्] दूर बसे जाना ।

अपस्करः [अप + कृ + अच् मुद्रागम] १ पहिने को छोड़कर
गाड़ी का कोई भाग (—रक् वी) २ बिछा, मल ३
योनि ४. मुद्रा ।

अपस्नानम् [अप + स्ना + ल्युट्] १ किसी सबकी भी मृत्यु
के उपरांत किया जाने वाला स्नान २ मृतक स्नान,
स्नान किये हुए पानी में स्नान करना ।

अपस्वप्न (वि०) [ब० स०] जिसके पास मेघिब न हों,
—सम्प्रविष्टेन नो भाति राजनीतिरपस्वप्ना—सि०
२।११२ ।

अपस्वप्नी (वि०) [ब० स०] अज्ञानी ।

अपस्वप्नः—स्वप्तिः (स्त्री०) [अपस् + चञ्, क्तिन् वा]
१ स्वप्न काल का अभाव २ मिरसी रोग, मूर्छा रोग ।

अपस्वप्नः (वि०) [अप + स्प् + चिन्] मिरसी रोग से
बल ।

अपस्वृति (वि०) [ब० स०] विस्मयशील ।

अपह (वि०) [अप + हा + ट] (समास के अन्त में) दूर
हटाना, दूर करना, नष्ट करना, क्षयि यदि जीवित-
पहा रघु० ८।४६ ।

अपहृतिः (स्त्री०) [अप + हृ + क्तिन्] दूर करना, नष्ट
करना ।

अपहृणम् [अप + हृ + ल्युट्] दूर हटाना, निवारण करना ।

अपहृणम् [अप + हृ + ल्युट्] १ दूर ले जाना, उठा के
जाना दूर करना २ चुराना ।

अपहृतिम् प्राप्त [अप + हृ + क्त, चञ्, वा] अकारण
हँसी, मुसता पूर्ण हँसी, ऐसी हँसी जिससे आँखों में
आसू बा जायें (नोबानामपहृतिम्) ।

अपहृतिस्त (वि०) [अपहृत् + इत्] दूर फँका हुआ, रहो
किया हुआ, परित्यक्त ।

अपहृति (स्त्री०) [अप + हृ + क्तिन्] १ त्याग, छोड़ देना
२ एक बाना, बोलाना हँसा ३ अपवाद, निकाल देना ।

अपहृत् [अप + हृ + चञ्] १ उठा ले जाना दूर ले
जाना चुरा लेना, नष्ट कर देना—निद्रापहार, बिच
२ छिपाना, मानस न पहनने देना—कथमात्मापहार
करोम—स० १, अपने आप को, अपने नाम को
और अपने चरित्र को मैं किस प्रकार छिपाऊँ ?

अपहृत् [अप + हृ + अच्] १ छिपाव मोहन, अपनी
भावना ज्ञान आदि का छिपाना २ मचाई से मुँकर
बाना दुराव—वेज पा० १।३।४४ ३ प्रेक्ष, स्नेह ।

अपहृति (स्त्री०) [अप + हृ + क्तिन्] १ सत्य को
छिपाना, मुँकरना २ एक अलंकार जिसमें प्रस्तुत वस्तु
के वास्तविक चरित्र को छिपा कर कोई और काम्य-
निक या अमत्य स्थापना की जाय—नेद नभोमन्त्रम-
म्वराणि, नैतारत्तरा नवकेनमकला । काव्य०, १०
वाँ समुक्तास तथा वे० सा० ४० ६/३।४४ पृष्ठ ।

अपहृत् [अप + हृ + चञ्] चटाना, कमी करना ।

अपाक (अध्व०) ३० अपाक् ।

अपाकः [न० त०] १ अपाक, अजीर्णता २ अपरिपक्वता ।
अपाकणम् [अप + आ + कृ + ल्युट्] १ दूर कर देना,
हटाना २ अस्वीकृति, निराकरण ३ अभावनी, कार-
बार का तसेट लेना ।

अपाकणम् (न०-अ) [अप + आ + कृ + क्तिन्] चुकता
कर देना, कारबार उठा देना ।

अपाकृतिः (स्त्री०) [अप + आ + कृ + क्तिन्] १ अस्वीकृति,
दूर करना, २ जोष से उत्पन्न लोभ, सब भावि—वि०
१।२७ ।

अपास (वि०) [अपसत् अन्धविश्रुति] १ विश्वास, प्रत्यक्ष
२ [ब० स०] मेघनि, अभाव आँखों काका ।

अपाङ्गना, } (वि०) [न० न०] जो समान पक्षि में न हो,
अपाङ्गनसेव } विशेषतः बह्व्यक्ति जो बरादरी में अपने
अपाङ्गनस्य } बन्धु-बाधवों के साथ एक पक्षि में बैठने का
अधिकारी न हो, जाति बाह्यकृत ।

अपाङ्गन — एक [अपाङ्गन तिपक् चलति नेत्र यत्र अपः
अङ्ग पञ्च कन् च] 1 आँख की बाहरी कार या आवृत्त
की कोण चलापाङ्गना दृष्टि-ग० १।२४ २ सम्प्रदाय
सूचक माघे का तिथि 3 कामदेव प्रेम का देवता ।
सम० वशंतम्, — दृष्टि (स्त्री०) बिलोकितम्
बीलकम् नैरुच्छी चितवन कनवियो से देखना पञ्चक
क्षपकता वेश आवृत्त की ओर नेत्र (वि०)
सुन्दर कनवियो में युक्त बाँवों वाला (यह प्रायः
स्त्रिया का विशेषण है) यदि पुनर्यपाङ्गनत्रा परि-
वृत्तापमुक्षी मयाष्ट दृष्टा विक्रम० १।१७ ।

अपाङ्ग [अपाङ्गनि—अञ्च + विप] 1 पीछे की ओर
अपाङ्ग] जाने वाला या पीछे स्थित 2 अमुक्त अस्पर्श
3 पश्चिमी 4 दक्षिणी क (अव्य०) 1 पीछे पीछे
की ओर 2 पश्चिम की ओर या दक्षिण की ओर ।
अपाङ्गी [अप + अञ्च + क्विन् स्त्रिया ङीप्] दक्षिण या
पश्चिम दिशा हस्तरा उत्तर दिशा ।

अपाङ्गी (वि०) [अपाङ्गी + ल] 1 पीछे की ओर स्थित
पीछे की ओर मुड़ा हुआ 2 अदृश्य अप्रत्यक्ष शब्द
७।६।४ 3 दक्षिणी 4 पश्चिमी 5 विरोधी ।

अपाङ्ग्य (वि०) अपानी + पन्] पश्चिमी और दक्षिणी ।
अपाङ्गनीय (वि०) [न० त०] 1 जो पाणिनि के नियमों
के अनुकूल न हो 2 जिसने पाणिनि व्याकरण को
बली भाँति नहीं पढ़ा हो पल्लवशास्त्री बहानू मरकृत
का अस्पृजान रचने वाला ।

अपाङ्ग्य [न० त०] 1 निकम्मा बदन 2 (आल०)
अयोग्य या अनधिकारी दुरत्य दान लेने का शि
अपाङ्ग्य 3 कुपात्र जो उपहार दान आदि का अधिकारी
न हो । सम० कृष्णा अपाङ्गीकरणम्
अनुचित तथा निर्दोष कर्म करना अपाङ्गना दे०
मनु० १।१७० — बाधित अपाङ्ग्य [स्त्री] जो देने
वाला, — भूत् (वि०) अपाङ्ग्य और निकम्मे व्यक्तियों
का वरणपात्र बनने वाला शायणापात्रभूत्कृति
राजा—पञ्च० १ ।

अपाङ्गनम् [अप + आ + दा + लृट्] 1 ले जाना दूर
करना, अस्पृश 2 (व्या० म) अपा० का अर्थ
ध्रुवमपायेंद्र्यादानम् पा० १।६।२४ ।

अपाङ्गनम् (पु०) [अपङ्गन् अपाङ्ग प्रा० म०] कुमार्ग
बुरा मार्ग ।

अपाङ्गः [अप + अन् + अच्, अपानयति मूत्रादिकम् अप
+ आ + नी + ङ वा] स्वाम बाह्य निकालना स्वाम
लेने की क्रिया, अंगरी में रहने वा 3 पीच पचना म म

एक जो कि नोबे की ओर जाता है तथा गुदा के मार्ग
में बाहर निकलता है म नम् गुदा । सम०
हारम् गुदा यच्च बायु प्राणबायु जिम
अपान कहते हैं ।

अपाङ्ग (वि०) [ब० म०] मिथ्यात्व से रहित, सत्य ।
अपाङ्ग-पितृ (वि०) [ब० म०] पिता वा] मिथ्याप पात्र
पुण्यात्मा ।

अपाङ्ग (अप + अन् का सब० ब० व०) [समास में प्रथम पद के
रूप में प्रयुक्त] — अवाप्तिस (न०) बिजली नपात
अग्नि और मावित्रा की उपाधि — नाच — वृत्ति 1
समुद्र 2 उरण निर्धि 1 ममद 2 विष्णु — पात्र
(नपु०) भावन पित्तम अग्नि यानि समुद्र ।
अपाङ्गा [अप + मज्ज, घञ क श्वापो] बिजडा एक
वृत्ति ।

अपाङ्गानम [अप + मज्ज + प्युट] मपाई वरत । गुह्य
करा (योग शास्त्र) का दूर करना ।

अपाङ्ग [अप + दृ + अच्] 1 ब० जाना बिदाई 2
विद्याग—पुत्रसपत्न्यशास्त्रम पा० १।३।२४ यत्र जान
प्रियापात्र कहते इसको चित्रम् मरि० १।७९ 3
आज्ञा होना लोग अभाव 4 नाच नाच मग
वराणास्यभित्तवला 7४ 1४ 5 अतिरिक्त
दर्भाय क्रांति भय (वि०) नाच नाच मरि०
पात्र हि० ६।६९ 6 नाच नाच ।

अपाङ्ग (वि०) [न० त०] 1 जिसका पात्र 1 2
अमीम मोगाई 3 जो समाप्त न हो, अन्त्य
4 रहने का बाहर ५ इस पात्र बनना कठिन हो
जिम पर विजय पाई जा भके रम् नदी का
दूसरा छत्र ।

अपाङ्ग (वि०) [अप + अर्ध + क्त] 1 दूरत्व, दूरवर्ती 2
निकरत्व ।

अपाङ्ग } (वि०) [अपगत अर्थ यस्यान् ब० म०]
अपाङ्ग } 1 व्यर्थ अलामक, निकम्मा 2 निरर्थक
अर्थहीन बन्ध अर्थहीन या अगतत बात या तर्क
।सा० मा० की दृष्टि से रचना सबधी दोष ३० काव्य
३।२२ समुद्रार्थान्य पत्तदार्थान्यीष्यते ।

अपाङ्गनम् [अप + आ + दृ + लृट् क्तिन् वा]
अपाङ्गनि (स्त्री०) 1 उद्घाटन 2 डकना, लपटना
चरना 3 छिपाना गोपन करना ।

अपाङ्गनम् [अप + आ + दृ + लृट् क्तिन्]
अपाङ्गनि (स्त्री०) वा 1 उद्घाटन पीछे हटना अपक
रण 2 घुमना ।

अपाङ्ग्य (वि०) [ब० म०] आश्रयहीन निरवलम्ब,
असहाय, — य गरम् सहारा जिसका सहारा किया
जाय 2 बहादा शायिना 3 सिंहाना ।

अपाङ्ग्य [अप + आ + मज्ज + ङञ] तरकम् ।

अपातनम् [अप + अत् + ल्युट्] 1 फेंक देना, रद्दी कर देना 2 छोड़ देना 3. बच करना ।

अपासरम् [अप + आ + ल्युट्] विराई नोटना, दूर हटना—दे० 'अपासर' ।

अपात्तु (वि०) [अ० ल०] निर्बीज, मृत ।

अपि (अव्य०) [कई बार भागुरि के मतानुसार 'अ' का लोप—अपि भानुरिग्लोपयवाप्योक्तासंगो गिषा, पिषानम् आदि] 1 (सन्ना और धातुओं के साथ प्रयुक्त होकर) निकट या ऊपर रखना, की ओर लक्ष्य करना, नक पहुँचाना, सामीप्य सम्मिलनता आदि 2 (पुनर्कृति० वि० या मय० अव्य० के रूप में) और, भी, एवम्, पुनश्च, इसके अलावा इसके अतिरिक्त—अस्मि तेन, रोहोष्येतेषु श० १ अपना और स तो, अपनी बारी जाने पर—विष्णुसर्गगापि राज-पुत्रा पाठिता पच० १, अपि अपि अपि च भी और भी—अपि स्मृति अपि सिच सिद्धा० नवापि न चैव, न चापि, नापि वा, न चापि न—न, 3 'भी' 'अति' 'बहुत' शब्दों के अर्थ पर बल देने क लिप् भी बहुधा इसका प्रयोग होता है, अर्थापि आज भी, इदानीमपि—अब भी, पृथपि—अगर्भ, चाहे, तथापि तो भी कई बार केवल तथापि शब्द के प्रयोग से ही 'तथापि' का अर्थाहार कर लिया जाता है—उदा० कि० १।२८, 4 अगर्भे (भी, चाहे) —नरसिंजमनविद्ध अकलेनापि रम्यम् श० १।२०, चाहे ऊपर से डका हुआ, इयमाधकमनोशा बलकेनापि तन्वी श० चाहे बलकल वस्त्र में 5. (वाक्य के आरम्भ में प्रयुक्त होकर 'प्रथम सूचक') अपि सन्निहितोऽयं कुलपति—श० १, अपि क्रियाबलुलम् सन्निहितम्... अपि स्वस्तक्या तपसि प्रवर्तते—कु० ५।१३, १४, ३५, 6. आका, प्रत्याशा (प्राय विचित्रिक के साथ) कृत रावत्पुत्र कर्म, अपिजीवेत्त बाह्यप्राप्तम्—उत्तर० २ मुने बाह्य है कि बाह्य बालक की उठेगा। चित्ते इस अर्थ में 'अपि' बहुधा 'नाम' के साथ जुड़ कर निष्पाकित भाव प्रकट करता है (क) संभावना 'शक्यता' (ख) शायद, सम्भवत (ग) 'क्या ही अच्छा हो यदि', 'येरो नातीरक अच्छा या बाधा है कि—अपि नाम कुलपते-रियमसकर्मज्ञेय-तत्रावा स्यात्, श० १, श० ७, तदपि नाम मनागततोर्णोसि रतिरमनबाधमोचरम् श० १, शायद, सम्भवत—अपि नामाह पुरुरवा चवेयम् विष्णु०—क्या ही अच्छा होता यदि मैं पुरुरवा होता 7. (प्रथमाधिक शब्दों के साथ जुड़ कर 'अतिविषयता' के अर्थ को बतलाता है) कोई, कुछ, कुछ—कोई, किन्तु—कुछ, कुचापि—कहीं; इस शब्द को 'अज्ञात' 'अवर्णनीय' 'अनभिज्ञेय' अर्थ में भी प्रयुक्त किया जाता है—अपिचयति यवाभिलाषा कोपि हेतु—

उत्तर० ६।१२, 8 (सक्या वाचक शब्दों के पश्चात् प्रयुक्त होने पर 'कात्स्न्य' और 'समस्तता' का अर्थ होता है) चतुर्धर्मिषु वर्णानाम्—चारों वर्णों का, 9 (यह शब्द कभी 'सवेह' 'अतिविषयता' और 'अज्ञा' की प्रकट करता है)—अपि बीरो अवेत्—मम० शायद वही कोर है 10 (विचित्रिक के साथ 'संभावना' अर्थ होता है)—अपि स्तुयाद्विष्णुम्, 11 वृत्ता, निन्दा—अपि ज्ञाया त्यजति भानु गणिकामाश्रमे गृहीतमेतत्—सिद्धा०, लम्बा की बात है, चिकार है—विष्णुसर्गदेव-दानमपि सिन्धेनल्लङ्घम्, 12 लोट लकार के साथ प्रयुक्त होकर 'बकता की उदासीनता' प्रकट करता है और दूसरे को यथास्थि कार्य करने देना है—अपि स्मृति सिद्धा० (आप चाहें तो) स्मृति करें,—अपि स्मृतिषु मेधास्मास्त्यभ्युक्त नरासन—अपि० ८।८२ 13 कभी विमर्षादि शोकक अव्यय के रूप में भी प्रयुक्त होता है 14 'इत्यपि' 'फलन' (अत एव) के अर्थ में कभी ही प्रयुक्त होता है 15 सब० के साथ प्रयुक्त होकर 'अध्याहार' के भाव को प्रकट करता है—उदा० सपिषोऽपि स्यात्—यहाँ (विन्दुरपि) जरा या एक बूंद जैसा कोई शब्द अध्याहृत किया जाता है, तत्रवत् 'एक बूंद की अनियेन है ।

अपिगोत्रे (वि०) [अपि + गु + क्त] 1 स्तुति किया गया, यमस्वी 2 कथित, वर्णित ।

अपिच्छिक (वि०) [न० ल०] 1 जो गदला न हो, दम्बक अपकिल 2 गहरा ।

अपिच्छु (वि०) [न० ल०] 1 जिसका पिता जीवित न हो 2 अपेक्षक ।

अपिष्य (वि०) [न० ल०] अपेक्षक ।

अपिचलम्, पिचलम् [अपि + च + ल्युट्, भागुरि के लट में विकल्प से 'अ' लोप] 1 झकना, झिपाना 2 चादर डकन, बाच्छावन (बाछ० भी) ।

अपिचिः (स्त्री०) [अपि + च + चि] झिपाव ।

अपिचल (वि०) [अ० ल०—अपि सलुट् इत भोजन निवर्णे वा वस्त्र] धार्मिक कृत्य का सहायी, रत्न हाथ सबड ।

अपिहित, पिहित [अपि + च + क्त—भागुरिमेत नकार लोप] 1 बर, बर किया हुआ, डका हुआ, झिपाया हुआ (बाछ० भी) बाष्पापिहित—अनुज्ञों से डका हुआ 2 जो झिपा न हो, डकन, स्पष्ट.—अर्जों निरास-पिहित पिहितान् कश्चिन् सत्यं वक्तव्यं नरहृदयमन्-गाव सुभा० ।

अपीक्षः (स्त्री०) [अपि + इ + क्त] 1 प्रवेक्ष, उपायन 2 विषयन, नाक, 3 प्रत्य—अपीटी उडत् प्रसंवाद्यसम्बन्धम्—वहू० ।

अपीक्षकः [अपीमाय, अपीमायव तीवरे कल्पते कर्त्तव्यं च—राष्ट्र०] नाक की कुम्भता, कुम्भन ।

अनुसूया (स्त्री०) [नास्ति पुमान् यस्या -न० व०] बिना पति की स्त्री—नापुस्कातीति ये मतिः - अट्टि० ५।७०।

अनुकः [न० त०] जो पुत्र न हो, (वि०)—अनुक(वि०) (स्त्री०—निका) जिसके कोई पुत्र या उत्तराधिकारी न हो।

अनुमिका (स्त्री०) [न० व० कप्, टाप् इत्य च] पुत्रहीन पिता की ऐसी कन्या जिसके कोई पुत्र न हो, जो पुत्र-मात्र की स्थिति में पिता द्वारा पुत्रोत्पत्ति के लिए नियत न की गई हो, पु० 'अकृता'।

अनुपद् (अव्य०) [न० त०] फिर नहीं, एक ही बार, सदा के लिए। सम०—अन्यथ (वि०) न लौटने वाला, मृत,—आत्मानम् फिर न जेना, बापिस न जेना। अनुपसिः (स्त्री०) फिर न लौटना, परम गति, प्राण्य (वि०) जो फिर प्राप्त न हो सके, -अथ 1 जो फिर उत्पन्न न हो (रोमादिक भी), 2 मोक्ष या परमपति।

अनुपद (वि०) [न० त०] 1. जिसका बोधन ठीक तरह से न हुआ हो, दुबला पतला, जो स्पृश न हो 2 (स्वर) को हुंसा या भीषण न हो, मृदु, मन्द 3 (सा०शा०) को (अर्थ का) बोधक या सहायक न हो अन्वय अर्थोक्तों में से एक उदा० शा० ८० ५७५—दिलोक्य जित्ते व्योम्नि विभु मूच इव धिये—यहाँ आकाश का विशेषण 'वितर' शब्द बोध की शक्ति में कोई सहा-यता नहीं करता इसलिये अन्वय है।

अनुपः [न पुत्रो विधीयते—पु०+प, न० त० तारा०] भाल-पुत्रा, सर्कारिक डाल कर बनाया गया रोटी के मोटा पसार्, इसे 'पुस' कहते हैं।

अनुप्रीव, अनुप्य (वि०) [अनुपाय हितम्—उ, यत् च] अपूर सन्धी, -प्यम्—आटा, भोजन।

अनुरात्री (स्त्री०) [न० त०] सेमल का पेड़।

अनुर्य (वि०) [न० न०] जो पुरा वा गरा न हो, अचुरी अक्षय्य—अपूर्वमेवेन सत कृत्याम् - रघु० १।८८, अनुर्य एवं पंचरात्रे दोहरत्य—भासवि० १।

अनुर्य (वि०) [न० व०] 1 जैसा पहले न हुआ हो, जो पहले विद्यमान न था, विस्मृत गया,—अपूर्वनिर्ध मादकम्—न० १।२, 2. अनोचा, अज्ञाचार्य, अनुभूत;—अनुर्यं पुनरते वीह्यः काश्मिराः सतनन्दने, दुरतो दह्नीर्वायं हृदि कल्पस्तु नीलजः—भृंगार० १७, विरहज, अनुभव, अनुभूतपूर्व—अपूर्वकर्मभावात्मनि मुन्ये विनृत्य नाम्—उ० २० १।४६, अग्रतिथि मूर्धकता करने वाली 3. अज्ञात 4. अज्ञान,—अनुर्य 1. किसी कार्य का दुरकती तक नैका कि ताकाओं के अन्वयकन स्वर्न-प्राप्ति 2. दृष्ट और अविष्ट की जाती कुछ कुछ के अविश्व कारण है;—वी० परमहन् । सम०—अति (स्त्री०) जिसे कभी तक पति प्राप्त नहीं हुआ, पुनारी कथा,—अति० मया आधिकारिक निषेध वा अज्ञा ।

अनुपचक्ष (अव्य०) [न० त०] अलग से नहीं, साथ-साथ, समष्टि रूप से।

अपेक्षकम् } [अप०+ईल०+ल्युट्, अप०+ईल०+अ] 1 अपेक्षा } प्रपाता, भागा, बाह, 2 आवश्यकता,

अकृत कारण प्रायः समान में स्पृक्षिगावस्वया बह्विरेभापेक्ष इव स्थित—न० ७।१५, जलने की प्रतीक्षा में 3 विचार उत्प्रेक्ष, मित्राज—कर्म के साथ अवि० में, प्रायः समान में, करण० या कभी-कभी अवि० में, (अपेक्षया, अपेक्षया) समान में बहुधा प्रयुक्त का अर्थ 'का उत्प्रेक्ष करते हुए' 'मित्राज करके' 'के निमित्त' नियमापेक्षया रघु० १।४९, प्रथममुक्तता-पेक्षया—मेघ० १७ अत्र व्याप्य गुणीभूत तदपेक्षया बाध्यस्वैव चमत्कारिकत्वात्—काव्य० १, इसकी तुलना में 4 मेलजोल, सबब 5 हेतुमान, ध्यान, साधनानी देसापेक्षास्तथा यद्य याता दायामुनीयकम्—अट्टि० ७।४९, 6 सम्मान, समादर 7 (व्या० में) -आकाशा ।

अपेक्षणीय, } (वि०) [अप०+ईल०+अनीयर्, तज्यत्, अपेक्षितव्य, } व्यट् वा अपेक्षा करने के योग्य जिसकी अपेक्ष } आवश्यकता या भाता हो जिसकी प्रपाता या विचार किया जा सके वाञ्छनीय ।

अपेक्षित (न० व० क० ह०) [अप०+ईल०+क] जिसकी समाप्त की गई हो, जिसकी भासा की गई हो जिसकी आवश्यकता हो, जिसका विचार किया गया हो, -तम् बाह, इच्छा, मित्राज, उत्प्रेक्ष ।

अपेत (न० क० ह०) [अप०+ईल०+क] 1. गया हुआ जोसल हुआ, अपेतयुद्धाभिनिवेशनीय्या—अि० ३।१ 2 विमुक्त या विचलित, विरुद्ध (अपा० के साथ) अर्थादपेक्षितम् अर्थम्—सिद्धा०, 3 प्रकृत, वाचित (अपा० के साथ वा समान में) मुक्तादपेत—सिद्धा०, उदवहृदवयवा तामववावपेत रघु० ७।१०, विदीर्ष ।

अपेक्षि (भोद० न० पु० ए० व०) (अनुर्यत्वात्किं भेदी ते संबद्ध समानों के प्रथम पद के रूप में प्रयुक्त) 'करा, 'छितीया, 'व्यागता भावि वहाँ इस अर्थ का अर्थ होता है 'के किया' 'निकास कर' 'समिपित न करके' उदा० 'वागिदा—इस प्रकार का समारोह वहाँ व्यापारियों की समिपित में किया जाय,—इसी प्रकार 'छितीया भावि ।

अपेक्षकः [अपि (वैचकर्मिण) वयं त्याज्यः—तारा०] 1. अधिक अर्थों वाला, या कम अर्थों वाला 2. जो जोसल करत के कम जानु का न हो, ननु० २।१४८ 3. विष्णु 4. अतिनीव 5. हृदीर्षार ।

अपेक्ष (वि०) [अप०+ईल०+क] दूर हुआ गया (अपा० के साथ); अन्वयकपेक्षः—अन्वयकपेक्षः अपेक्षः; दे० अनुपचक्ष 'वह' ।

अप्रतिवीर्य (वि०) [न० व०] अतुलशक्तिशाली ।

अप्रतिपक्षता (वि०) [न० व०] जिसका प्रतिद्वन्द्वी शासक न हो, जहाँ एक ही व्यक्ति का राज्य हो—रघु० ८।२७ ।

अप्रतिष्ठा (वि०) [न० व०] 1. अस्थिर, अदृढ़, अस्थायी 2. अलासकर, व्यर्थ 3. बदनाम ।

अप्रतिष्ठातृत्वं [न० त०] अस्थिरता, दृढ़ता का अभाव (आल० भी) —तर्काप्रतिष्ठातादयन्त्यथानुमेयम्—शारी० ।

अतिहत (वि०) [न० त०] 1. निर्बाध, बाधा रहित, अप्रतिरोध्य —अरुणद्वारे गति पंच० १, कुम्भता-गप्रतिहतप्रसरमायस्य कोषग्रोति वेणी० १, शक्ति-रदोष दक्षिणमध्य 2 प्रसृष्ट, प्रवृत्त, अप्रभावित, —सा बुद्धिप्रतिहता—अर्जु० २।४० पंच० ४।२६, —तो प्रकार—चित्त, मनस् 3. जा निराश न हो। सम० ३ मेघ (वि०) स्वस्थ जोशो वाला ।

अप्रतीत (वि०) [न० त०] 1. अप्रमत्त, अग्रहूत 2. (मा० शा० में) जो स्पष्ट रूप में न समझा जा सके, एक प्रकार का शब्ददोष (उस शब्द को 'अप्रतीत' कहते हैं जो किसी विशिष्ट स्थान पर ही प्रयुक्त होता है, सामान्य प्रयोग का शब्द न हो) । ३० काण्व० ७ । प्रस्ता [न० त०] कुमारी कन्या, त्रिमका दान न किया गया हो ।

अप्रयत्न (वि०) [न० व०] 1. अदृश्य, अगोचर 2. अज्ञान अनुपस्थित ।

अप्रत्यक्ष (वि०) [न० व०] 1. आरम्भविधान रहित, अवि-रवासी—(अधि० के साथ) बलवदधि गतिशानामात्य-न्वप्रत्यय वेतः—पा० १।२ 2. अन्विष्ट 3 (आ० में) प्रत्यय रहित,—बः 1 आसोका, अविज्ञान, विज्ञान का अभाव—क्षेत्रमप्रत्ययानाम्—पंच० १।१९ 2 समझ में न आने वाला 3. जो प्रत्यय न हो—अर्थवदधानुर-प्रत्ययः प्रानिपदिकम्—पा० १।२।२५ ।

अप्रवृत्तिम् (अध्य०) [न० त०] बाएँ में दाहिनी ओर ।
अप्रधान (वि०) [न० त०] अधीन, गौण, छटिया 1. तावदप्रधानो—हि० २।—नम् (ता० त्वम्) । 2. अधीनता, अधीनस्थिति, छटियापन 2. गौण या अल्प कार्य 'अप्रधान' शब्द प्रायः नपु० में प्रयुक्त होता है चाहे वह लैङ्गिक प्रयुक्त हो या सदाचर में) ।

अप्रवृत्त (वि०) [न० त०] जो जीता न जा सके, अजेय—अर्थात् श्रीमद्भक्त्यलक्षुर् हत पार्थनाह्वेत्प्रवृत्त्यम्—पद्म०, माकवि० ५।१७ ।

अप्रवृत्त (वि०) [न० त०] 1. शक्तिहीन, असक्त 2. अ-नर्प, अयोग्य, अक्षमः (संब० या अधि० के साथ) ।

अप्रवृत्त (वि०) [न० त०] जो प्रमादी न हो, अवरदार, सावधान, सावक ।

अप्रवृत्त (वि०) [न० व०] आमोद-प्रमोद से विरत, उदात्त, अप्रमत्त ।

अप्रमा [न० त०] भ्रातृ ज्ञान (विप० प्रमा) ।

अप्रमाण (वि०) [न० व०] 1. असीमित, अपरिमित 2. अनधिकृत 3. अप्रामाणिक, अविश्वस्य—सा० ५।२५ कर्त्त० [न० त०] जो किसी कार्य में प्रमाण रूप से प्रस्तुत न किया जा सके; अर्थात् वह कार्य जो अप-रिहार्य न समझा जाय 2 असम्बद्धता ।

अप्रमाद (वि०) [न० व०] स्ववृत्तार, जागरूक, ब. [न० त०] स्ववृत्तारी अवधान, जागरूकता ।

अप्रमेय (वि०) [न० त०] 1. अपरिमित, असीमित, सीमारहित, 2. विमता असीमांति निश्चय न किया जा सके, न समझा जा सके, अतः अविश्वस्य-प्रमेयम् कार्यन्तर्वांशेषु मनु० १।३ —यम् वक्षः ।

अप्रयत्न (वि०) [न० त०] 1. अवि-न जाना, प्रगति न करना, (किसी सोचने के लिए ही प्रयुक्त होता है)—अप्रयत्नमे शत भुवा—मिथ्या० (भगवान् क०, तुम प्रगति न करोगे) दे० अजीवीर्य, 2. अग्र-प्रगति न कर सकना ।

अप्रयुक्त (वि०) [न० त०] 1. जा इमेमाल न दिया गया हो, जो काम में न लाया गया हो, अग्र-प्रगति, 2. गत-प्रगति में लागू न किया गया शब्द 3. विरक्त, असामान्य (मा० शा० में) (शब्द के रूप में किसी विशेष अर्थ या विषय में प्रयुक्त चाहे वह काज-बारा में सम्मत हो क्यों न हो, तथा मन्त्र देवतोऽथ पिशाचो गन्तोऽथवा काय० ७, यही 'देवन' शब्द "अप्रयुक्त" द्वारा सम्मत होने पर भी कवियों के द्वारा प्रयोग में प्रयुक्त नहीं किया जाना—अतः यह 'अप्रयुक्त' है) ।

अप्रवृत्तिः (स्त्री०) [न० त०] 1. कार्य में न लगना, प्रगति न करना, किसी बात का न होना 2. आलस्य, क्रियाशून्यता, उत्तेजन या प्रेरणाहिन का अभाव ।

अप्रसक्तः [न० त०] 1. वास्तविक का अभाव 2. संबंध का अभाव 3. अनुपयुक्त समय या अवसर, —अप्रसक्ता-भिधाने च श्रोतुः श्रद्धा न आवये ।

अप्रसिद्ध (वि०) [न० त०] 1. अज्ञात, तुच्छ, —कु० ३।१९, 2. असाधारण, असाधारण ।

अप्रस्ताविक (वि०) [स्त्री० की०] [न० त०] विषय से संबंध न रखने वाला, असंगत (=अप्रस्ताविक दे०) ।

अप्रस्तुत (वि०) [न० त०] 1. जो समय या विषय के उप-युक्त न हो, जो प्रस्तावित न हो, असंगत 2. बेहदा, भूलगावृत्त 3. आकस्मिक, अचानक । सम० —प्रस्ता-एक अस्कार जिसमें विषय से धिक् अर्थात् अप्रस्तुत का संबंध करने से प्रस्तुत अर्थात् विषय का संबंध हो

जाता है—अप्रस्तुतप्रशंसा सा या शैव प्रस्तुताश्रया—
काव्य० १०, इसके ५ शेष हैं—कार्य निमित्ते
सामान्य विशेष प्रस्तुते सति, तदन्यस्य वचस्तुल्ये
तुल्यस्येति च पञ्चषा—अर्थात् जबकि प्रस्तुत विषय
पर (क) कार्य के रूप में दृष्टिपात किया जाय
जिसकी सूचना कारण वन्ताकर दी जाती है, (ख)
जब कार्य को बतलाकर कारण पर दृष्टिपात किया
जाय। (ग) जब कोई विशेष निदर्शन देकर सामान्य
बात पर दृष्टि डाली जाय (घ) जब किसी सामान्य
बात का कथन करके विशेष निदर्शन पर दृष्टिपात
किया जाय, अथवा (ङ) जब कि समान बात का कथन
करके समान बात पर दृष्टिपात किया जाय। उदा०
के लिए का० १० और सा० २० ७०६।

अग्रहत (वि०) [न० त०] १. जिसे बाट न लगे हो २।
परत की भूमि, अनशुती २. नया य कोश कपडा।

अग्रकारणिक (वि०) [स्त्री-को] [न० त०] १. जो
प्रकरण से संबंध न रखता हो, अग्रकारणिकगद्याभि-
धानन प्राकरणिकगद्याशेषात्प्रस्तुत प्रशंसा—काव्य० १०।

अग्रानुत (वि०) [न० त०] १. जो गवाह न हो २. जो
मौलिक न हो ३. जो मायागन न हो, अमायागन
४. विरोध।

अग्रार्य (वि०) [न० त०] गौण, अग्रान, घटिया।

अग्रान्त (वि०) [न० त०] १. जो प्राप्त न किया गया
हो, अग्रान्तवास्तु या राशि शैव सवांश ईति
भाषा० २. जो न पहुँचा हो या जो न आया हो, ३.
नियमत अनधिकृत, अननुगामी ४. न आया हुआ,
न पहुँचा हुआ। मय०—अग्रसर, —काल (वि०)
बुरे समय का, अनायासिक, जो बहुत ब अनुकूल न
हो, —काल बचन ब्रह्मस्वनिर्गुण बुधन्, लभते बुद्ध-
ब्रह्मनमपमानं च पुष्कलम् पव० ११६३, —बीबन
(वि०) अवयस्क, नवजालिग, व्यवहार, —बयस्
(वि०) (विद्य से) अल्पवयस्क, सांख्यिक कायो में
अपने उत्तरदायित्व के भरोसे भाग लेने के लिए जिस
की आयु न हो, अवयस्क (१६ वर्ष से कम आयु का)
—अग्रान्तव्यवहारोऽप्री यावत् पांडुरावाधिक—दल०।

अग्रान्ति (स्त्री०) [न० त०] १. न क्षिप्ता, तदप्रान्ति-
बहुधा क्षिप्योनायेकपातका काव्य० ४, २ जो
किसी नियम से मिट या स्थापित न हुआ हो;
—विधिराज-तमप्राप्ती नियम पाधिके मति—मीमा०
३. किसी बात का न होना, किसी घटना का घटित
न होना।

अग्रान्ति (वि०) [स्त्री०—की] [न० त०] १. जो
प्राथमिक न हो, अर्थात्पुनः, इदं अग्रतमप्रामा-
निकम्— २. अधिकवयसीय, जिस पर भरोसा न किया
जा सके।

अग्रिष (वि०) [न० त०] १. नापसंद, अनभिमत, अरुचि-
कर, —अग्रिषस्य च पश्यस्य वक्ता श्रीता च कुलं—
रामा०, मनु० ४१३८, २. निष्ठुर, अमित्र, —बः कनु,
दुष्मन्, यन् शत्रुतापूर्णं या अनिष्टकर कर्म, —पाणि-
प्राहस्य माध्वोऽप्री नाचरेतिचिदग्रिषम्— मनु० ५।
१५६, १ मय०—कर, —कारिन्—कारक, (वि०)
अनिष्टकर, अरुचिकर—इदं (य), —वादिन्
(वि०) निष्ठुर और कठोर गन्ध बोलने वाला,
—वन्त्यार्थध्वनिप्रयुक्ता—या० ११७३, माता यस्य गृहे
नास्ति भार्या वाग्निः रादिनी—वाण० ४४।

अग्रोतिः (स्त्री०) [न० त०] १. नापसंदगी, अरुचि २.
शत्रुता।

अग्रोद् (वि०) [न० त०] १. जो ढीठ न हो २. शीघ्र,
नम्र, अमाहसी ३. जो वयस्क न हो, —इ १. अरि-
वाहित कन्या २. वह कन्या जिसका विवाह तो हो
गया हो, परन्तु अभी तक वयस्क न हुई हो।

अग्रुत (वि०) [न० त०] वह स्वर जो आवाज की दृष्टि
से लबा न किया गया हो।

अग्रसर् (स्त्री०) (रा, रा) [अद्भुत सगति उदग-
च्छातिन—अर् + सृ + प्रसृ] [न० रामा०] अयु
निर्मथनादेव रसात्तरसादृशिय, उत्येतुमनुब्रूयष्ट
तमसादृशरसोऽभवत् । आकाश में रहने वाली
दवागनाम जो गणवों की पत्नियाँ समझी जाती हैं,
उन्हें प्रनकोटा बड़ी रुचिकर है, वह अपना रूप बदल
सकती है तथा दिव्य प्रभाव से युक्त है, वह प्रायः
इन्द्र की नर्तकियाँ हैं जो 'स्ववेष्या' कहलाती हैं।
वाण ने इस प्रकार की रावों के १४ कुलों का वर्णन
किया है—दे० का० १३६, यह मन्त्र बहुधा बहुवचन
में (स्त्रिया बहुवचनमात्र) प्रयुक्त होता है, परन्तु
एक वचन में प्रयोग तथा 'अग्रसरा' रूप कई शार
देखने में आता है—नियमविभक्तकारिणी मेनका नाम
अग्रसरा प्रेषिता—म० १, एकाग्रसरा, वादि०—रघु०
७।५३, १ मय०—तीर्थम् अग्रसराओं के नहाने के
लिए पवित्र तालाब, यह सच बात किसी स्वामन्त्र
नाम है—दे० सा० ६, —वतिः अग्रसराओं का स्वामी
इन्द्र की उपाधि।

अग्रस (वि०) [न० त०] १. निष्फल, फलरहित, बंजर
(म० और आल०) २. अक्षय, ३. अकार्य वादि
अनुवृत्ता, निरर्थक, व्यर्थ, —यथा पटोऽफलः स्त्रीषु
यथा गोपयि चारुणा, यथा ब्रह्मोऽफलं दानं तथा विप्रो
जुषोऽफलः। मनु० २।१८। पुण्यस्य मे हीन, वर्धया
किया हुआ—अफलाद्गृह्णन्मेन कोधात्मा च निराकृता
—रामा०। मय०—आकर्षित, प्रेरित (वि०) जो
पारिधर्मिक पाने की इच्छा नहीं रखता, स्वाभरहित,
—अफलाकांक्षिभिर्गन्धः कथ्यते बहुवादिभिः—महा०।

अज्ञेय (वि०) [न० व०] बिना ज्ञान का, ज्ञान रहित
—कम् अज्ञेय ।

अजड-डक (वि०) [न० त०] १ स्वच्छन्द, न बंधा हुआ, बेरोक २ अर्थहीन, बेमतलब, बेहूदा, बिरोधी उदा० बाबजीबमह मोनी बहादुरी व से पिता माता तु मम बन्धासीदपुत्रवच पितामह । (बिरोधी) जरदुगब कबलपादुकाय्या द्वारि स्थितो मायानि मज्ज कामि—अमर० रायमुकुट । सम० मुक्त (वि०) दुर्बल, गाली से युक्त, बदबवान ।

अजन्म-बालक (वि०) [न० व०] मित्रहीन एकाकी ।
अजल (वि०) [न० व०] १ दुर्बल बलहीन, २ अ-क्षित, —का स्त्री (अपेक्षाकृत बलहीन होने के कारण), —नून हि ते कविबरा विपरीतबोधा ये नित्य बाहुरचना इति कामिनीनाम्, यात्रिविनीलतरतारक पुष्टिपाटी अक्राद्योर्ध्व बिजितास्त्रबला कच ना वत् ११११, जल स्त्री अजन्म निर्बलता बल की कमी, वे० बलाबलम् स्त्री ।

अजस्य (वि०) [न० व०] १ अनियन्त्रित, बाधार्हत २ पीड़ा से मुक्त व [न० त०] १ बाधाहीनता २ निराकरण का अभाव ।

अजस्य (वि०) [न० त०] १ जो बालक न हो, उवान २ छोटा नहीं, पूर्ण (बैसा कि चन्द्रमा) ।

अजह्नु (वि०) [न० त०] १ जो बाहरी न हो भीतरी २ (बाल०) परिचित, जानकार ।

अजिह्वः [आप इत्यत्र मय्य —व० त०] बबकालि (जो समुद्री पानी पर पकती है) —अजिह्वन् अजिह्वसी विवर्जित रघु० १३।४ ।

अजुड (वि०) [न० त०] मूर्ख, नास्तमस —अपकारमात्रम-बुडागाम् शां० सू० ।

अजुडि (स्त्री०) [न० त०] १ समझ की कमी, २ अज्ञान, मूर्खता । सम० — मूर्ख, — मूर्खक (वि०) अनभिज्ञत (—वै, वैकम्) (वि० वि०) अनजान पने में, अज्ञात रूप से ।

अजुन्-बुज (वि०) [न० त०] मूर्ख, मूड, (पु०) उड़ (स्त्री०—अजुन्) अज्ञान बुद्धि का अभाव ।

अजीव (वि०) [न० व०] अनजान मूर्ख, मूड व [न० त०] १ अज्ञान, अजलता, समझ का अभाव —वीरवृत्तास्त्राव्ये—०१० ३१२ निरमृदुबोधमबोध विवक्षया कच भूपतीर्ण चरित कच जलव कि० ११६ २ न जानना, जानकारी न होना । सम० गल्ब (वि०) जो समझ में न आ सके, अकल्पनीय ।

अज्ज (वि०) [अज्ज आगते—अप्+अज्+ङ] अज में पैदा हुआ या जल से उत्पन्न, —अज्ज १ कमल —एक करम की मन्था (१०००००००००) सम० —अजिह्वा कम्पा का छला —अज, —अज, नू,

—जीमि बह्मा के विशेषण —अजिह्व कम्पा का मित्र सुर्व, बाह्यन शिव की उपाधि ।

अज्जा [मिथ्या टाप्] भीषी ।

अजिह्वी [अज्ज+इनि मिथ्या ईप्] १ कम्पा का समूह २ कम्पा में पूर्ण स्थान ३ कम्पा का पीछा । सम० वति मूर्ख ।

अज्ज [अपो ददानि दा+क] १ बादल २ वर्ष (इस अर्थ में तपु० भी) ३ एक गबर का नाम । सम० अर्धम् आधा वष बाह्यन शिव शतम् शताब्दी सार एक प्रकार का कपूर ।

अजिष् [आप योयन्त अत्र भप वा+ङि] १ समूह अज्जायाय (आज्+आ) दुष् कार्य ज्ञान आदि किसी चीज का भंडार या समूह २ नाल झील ३ (गण० में) सान की मन्था कई बार बार की मन्था । सम० अजिष् बाहवायि कक, क्षेत्र समूहसाय ज १ चन्द्रमा २ शाल (जा) १ वाहणी (समूह से उत्पन्न) २ अश्वमादेवी द्वीपा पक्षी जमरी कृष्ण की राजधानी डा/का जव-नीतक चन्द्रमा बहुकी योनी की माप जवन विष्णु आर गन ।

अज्जहर्ष (वि०) [न० व०] जो बह्माचारो न हो अर्ध, यक्षम् [न० त०] अज्जहर्ष कापुकरा २ मैथुन ।

अज्जहृष्य (वि०) [न० त० न ५५ अज्जहृ-यत्] १ जो अज्जहृष के लिए उत्पन्न व हा अज्जहृष्यम वर्ण स्यात् अज्जहृष्य अज्जहृषो हितम् तुला० २ अज्जहृषो के लिए सज्जन् अज्जहृषोचित कार्य या जो अज्जहृष के लिये योग्य न हो । अज्जहृष में प्राय यह शब्द दुहाई देने के अर्थ में प्रयुक्त होता है अर्थात् राजाको सहायता करो एक अत्यन्त जीवन और अज्जहृष कर्म हो गया है —अज्जहृष योगनन्धस्य अज्जहृषकचित्त पुरा अज्जहृषमनुकात्मजीवो योग-मिन्ने विज —बृह० क० ।

अज्जहृन् (वि०) [न० व०] अज्जहृषो से विमुक्त या बर्हात —अज्जहृषमनुकात्मजीव —मनु० १ ३२५ ।

अजिह्वि (स्त्री०) [न० त०] १ अजिह्व या अजिह्वि का अभाव २ अजिह्वका अजिह्वता ।

अजिह्व (वि०) [न० त०] १ जो खाने योग्य न हो, २ खाने के लिये निषिद्ध —अजिह्व खाने का निषिद्ध रखने ।

अजय (वि०) [न० व०] अज्ञाना बहिरिगमन ।
अजड (वि०) [न० त०] अजुन्, कृमिज दुर्ग इन् १ दुर्गम गा प दुष्टता २ शोक ।

अजय (वि०) [न० व०] निर्जय युगलित भयमुक्त, —अजयमेवायम् अजु० ३१३५, —अज १ अज का अभाव मय से दूर रहना २ मुग्धा, बधाव, अज या

हर मे रखा,—मया तस्याय वलम्—वच० १, 1
सम०—कृत् (वि०) 1 जो भयानक न हो, मुद्, 2
मुरखा देने वाला,—विहित 1 मुरखा या विश्वमनी-
यता का दिहोरा, 2 पुद्मेरी, व,—वायिन्,—प्रव
(वि) मुरखा का वचन देने वाला, इतिहास, वाच्य,
प्रधानम् मय मे मुक्ति का वचन या मुरखा की गारती
—सर्वप्रधानत्वप्रयदान (प्रधानम्) पच० ११२९०,
वच्य मुरखा का विश्वास दिलाने वाला निश्चित
पत्र, नु० आधुनिक 'मुरखा भानरण'—वाच्यना रक्षा इ
लिए प्रार्थना, वचनम् वाच (रत्री) मुरखा का
वचन या मय मे मुक्ति कर देने की प्रार्थना।

अभयकर कृत (वि०) [न० १०] 1 जा भयानक न हो
2 मुरखा करने वाला।

अवध [न० न०] 1 अविद्यमानता मत एव भयानको
महा० 2 कृत्कारा १११ प्राप्नुमम, मयिवाच्यता
वा—वि० १२१०, १२१३ 3 ममानि या प्रत्य
अवयव सर्वभूतानामवयवम् न रक्षामा रागा०।

अव्यय (१०) [न० न०] 1 वा न हाना हा 2 अनु
पयुक्त अव्यय 3 दुर्भागपूर्ण अवयव। उपनमवचो-
त्यव्ययथा कि० १०५१।

अव्यय (वि०) [न० व०] 1 त्रिमका मयति मे काइ
हिम्मा न हो 2 अविवेक।

अवाक्य [न० न०] 1 न हाता अस्मिन्व गता प्रावाः
मावम्—मुच्छ० १ (अन्वार्थि हा गया) 2 अनुपस्थित,
कमी, अवकलता,—सर्वोपाम्यभाव नु ब्राह्मणा रिच-
मानन मन० १११८८, अधिकतर मयाम म
—सर्वोपाम हरद्वय १८९ सब कुछ विफल हो जान
पर 3 सवनाश, मृत्यु, विनाश मयानुत्थना, नाभाव
उपलब्ध शारी० 4. (दृष्टन० म) लाण, असना,
अविद्यमानता या निषेध, कष्टाद के मतानसार मातवा
पदाव या वगं, (इसके दो अर्थ हैं सप्तर्षिभाव और
अप्योप्यभाव, पहन के फिर तीन उपभेद हैं प्रागभाव
प्रत्यक्षभाव, और अत्यन्तभाव)।

अवाक्य [न० न०] 1 सत्यविवेचन या निर्वचन का अभाव 2
धार्मिक ध्यान का अभाव।

अवाक्य (वि०) [न० न०] न कहा हुआ। सम०
पुष्क बहु शब्द जा कमी १० या शब्दों में प्रयुक्त
न हाता हो अर्थात् निर्वचनीय।

अवि (अव्य०) [न० + भा + वि] [धातु और प्रत्यय में
पूर्व उच्चारण होने वाला उपसर्ग] अवि (क) की
ओर, 'की दिशा में', अविगत की ओर जाना,
अविना, 'गमनम्, गानम् आदि (क) 'के लिए' 'क
विच्छ' 'लप्', 'क आदि (ग) 'पर' 'ऊपर' 'लिप्'
पर छिड़कना आदि (घ) 'ऊपर में' 'ऊपर' 'पर' 'म'
हावी हो जाना, 'नम्' (घ) 'अधिकता में' 'बहुत'।

अवि 2 (विशेषण तथा स्वतन्त्र तथा सर्वों के पूर्व
लगने वाला उपसर्ग) —अवि (क) तीक्ष्णता की
प्राधान्य, 'अवि'—प्रधान कर्मव्य, 'आक्ष'—अव्यत लक्ष
अवि (विच्छुक्त तथा (क) 'की ओर' 'की दिशा में',
अव्ययीभाव समास बनाना 'वैद्यम्', 'मन्त्रम्' इति
आदि 3 (कर्म) के साथ मद् अवि (क) के रूप में
(क) 'की ओर' की दिशा में 'के विरुद्ध' (कर्म के
साथ या इसी अर्थ में ममाम क साथ) अविधि या
अविधिभि शलभा पनन वृक्षमभिधानते विद्यत—
मिष्टा० (च) 'निकट पक्ष' सामन 'उपस्थिति में'
(ग) पर ऊपर मन्त्र न नृग क विषय में साधु
दृष्टता मानर्माम मिष्टा० (घ) पृथक् पृथक् एक-
एक करके (विभाग द्वारा) वृक्ष वृक्षमभिधानते
मिष्टा०।

अवि (ओ) क (वि०) [अवि + क्तु + कामी, लपट,
विनासा, —आदिप्रकारमानिक दुर्गतिवत काचन स्वय-
मवर्तमानमा—घ १२४ अविमिच कृपावती त्व एवं
मय्यपि वार्जिक भट्ट० १००।

अविर्काता [अवि + क्त + अक्ष + टाप्] कामता, इच्छा,
गान्ता।

अविर्कातु (वि०) [अवि + क्त + गिनि] नालसा
रखने वाला कामता करने वाला।

अविर्काता (वि०) [अविर्क + कामा यत्त—अवि +
कम् + अच् + व० म०] स्नेही, प्रेमी, इच्छुक, कामना-
युक्त कामुक (कर्म० में या समास में) यावे त्वावधि-
कामाहम् महा०, व 'प्रा० म०' 1 स्नेह, प्रेम
2 + ता इच्छा।

अविच्छ [अवि + क्त + पण इच्छा] 1 आरम्भ,
प्रगल्भ व्यक्तमय, नष्टाभिधनाशोभ्य प्रत्यक्षवो न
विद्यता भग० ५४, 2 निश्चित आक्रमण या बाधा,
अभिधान प्रमला 3 आगच्छन, नवार होना।

अविच्छन्व-कालि (स्वा०) [अवि + क्त + ल्युट, क्लिप्
वा] उतापमन आक्रमण करना दे० अ० अविच्छन्व।

अविच्छोद [अवि + क्त + पण] 1 पुकारना, चित्ताना
2 प्रपणन कहना निदा करना।

अविच्छोदक [अवि + क्त + धृ + पुकारने वाला, वाली
दने वाला कल्मस मय वाता।

अविच्छोद [अवि + क्त + अक्ष + टाप्] 1 चमक-दमक, जोबा
कारि, कल्पविक्रमा तरागमर उज्ज्वला मुद्रवेचो
१५० ११६५, मूर्धापाव न नृग कर्मज अप्यति स्वावधि-
म्या मच०, ८० क० ११६३ ७१८, 2 कलना,
घोषणा करना, 3 पुकारना, नवाधिन करना 4 नाव,
अभिधान 5 उपर, पर्वोय 6 पसिद्धि, वध, कुष्मादि,
माहात्म्य।

अविच्छान्द [अवि + क्त + ल्युट] क्वादि, कव।

अभिगम-अभगम् [अभिगम् + अण्, ल्युट् वा] १. (क) उपागमन, पास जाना या आना, दर्शनाय गमन, पहुँचना, तबालूतो नाभिगमेन तृप्तम् रघु० ५।११, १७।७२, अष्टाभिगमनात्पूर्वं तेनाप्यनभिगमन्दिता १२।३५, २ सभोग (स्त्री) या पुरुष के साथ परदाराभिगमनम् - का० १७७, प्रसह्य दास्यभिगमे या० २।२११।

अभिगम्य (स० कृ०) [अभिगम् + य] १ उपागम्य, दर्शनीय अन्विष्य, कु० ६।५६, २ प्राप्य, आमन्त्र्य, - भोग-कान्तर्नृपगुणं - अध्वर्याभिगम्यश्च-रघु० १।१६, १।

अभिगमनम् - [अभिगम् + ल्युट्, क्त वा] अगली नया अभिगमितम् भोषण दहाइ, चाँकार ।

अभिगमिन् (वि०) [अभि + गम् + गिन्] निकट जाने वाला, सभोग करने वाला ।

अभिगमिन् (स्त्री०) [अभि + गुप् + क्तिन्] सरक्षण, बचाव ।

अभिगम्य (पु०) [अभि + गुप् + नृच्] बचाने वाला सरक्षक ।

अभिगहः [अभि + गह् + अच्] १ छोन लेना, छानना, छटना २ चावा, हमला ३ ललकार ४ शिकायत ५ अधिकार, प्रभाव ।

अभिगह्यम् [अभि + गह् + ल्युट्] छटना, छोन लेना ।

अभिगर्वणम् [अभि + गर् + ल्युट्] १ गहना सगहना, २ बुरी भावना में अधिकार करना ।

अभिवातः [अभि + हन् + घञ्] १-आघात करना, मारना चोट पहुँचाना, प्रहार, टटाभिवातादिव लानपाङ्क - कु० ७।४९, २ विघ्नन, पुणं ताडा, मयूलोन्मथन - दुःखवाभिवाताज्जिज्ञासा नदभिवातकं हेतो-सा० का० १, तम् कठोर उच्चारण (सन्धि निषमा की उपेक्षा के कारण) ।

अभिवातक (वि०) [स्त्री० तिङ्] (मारकर) पीछे हटाने वाला, दूर कर देने वाला ।

अभिवातिन् (पु०) [अभि + हन् + गिन्] गम् ।

अभिवात [अभि + घृ + णिच् + घञ्] १ वी २ यत्र मे वी की आहुति, -पथोत्पन्नदाज्याभिवात्पथोस्तनूनपात - महावी० ३ ।

अभिवातणम् [अभि + घृ + णिच् + ल्युट्] वी छिड़कना ।

अभिवातम् [अभि + घ्रा + ल्युट्] सिर मूषना (स्नेह-सूचक चिह्न) ।

अभिचार [अभि + चर् + अच्] अनुचर, सेवक ।

अभिचारणम् [अभि + चर् + ल्युट्] १ साठना-कुकना, जादू टोना, बुरे कार्यों के लिए मंत्र पढ़ कर जादू करना, दमनाक २ मारना ।

अभिचारः [अभि + चर् + घञ्] १ (मन्त्रों द्वारा) जादू कुकना, मन्त्रमुष करना, जादू के मनो का बुरे कार्यों के लिए प्रयोग करना, जादू, करना २ हत्या

करना । सव०- -चर जादू के मनो द्वारा किया गया जादू- - चर जादू का मुर, जादू करने के लिए मन्त्र-पूना, सि० ७।५८, -चर, होम जादू टोने के लिए किया जाने वाला यज्ञ, होम ।

अभिचारक (वि०) (स्थियाम् - रिक्ती, - रिक्ती) [अभि + चर् + क्त] + चर् + क्त, निमि वा] अभिचार करने वाला, जादू टोना करने वाला, - कः, -री ऐश्व-जातिक, जादूचर ।

अभिजन [अभि + जन् + घञ्, अर्द्ध] १ (क) कुटुम्ब, वंश, अन्वय (स) जन्म उत्पत्ति, कुल २ उत्तम कुल म जन्म, उत्तम कुटुम्ब में उत्पत्ति स्तुत्य तत्त्वहास्य पराभिजनता यच्च गुण मा० २।१३, शील शील-नटात्पनत्वभिजन मदहाता अहिना भर्तु० २, ३९, ३ जन्मभूमि, मातृभूमि, बापदादाओं की जन्मभूमि (विप० निवास) यत्र पूर्वजानां मोक्षभजन सिद्धा० ४ स्थानि, प्रतिष्ठा ५ चर का मुखिया या कुलमुख्य (श्रेष्ठव्यक्ति) ६ अनुचर, परिजन ।

अभिजनवत् (वि०) [अभिजन + वत्] उत्तम कुल का, उत्तम वंश में उत्पन्न - वनाभर्तु श्लाघ्य स्थिता गृहिणी पदे सा० ४।११ ।

अभिजय [अभि + जि + अच्] जीत, पूर्ण विजय ।

अभिजात (भु० क० कृ०) [अभि + जन् + क्त] १ (क) उत्पन्न, जन्म० १५।३।५ (स) सर्वथा विकसित (ग) योग्य २ जन्मा हुआ पैदा हुआ ३ कुलीन, उत्कृष्ट कुल में उत्पन्न, उत्कृष्ट वंश में जन्म लेने वाला, -अभिजातना-भिजातेन चर जीयंता कुल रघु० १७।४, सिद्ध, नम्र अभिजात स्वत्वस्य वचनम् - विक्रम० १ ४ योग्य, उचित उपयुक्त ५ मन्त्र अधिकार, प्रवृत्तिना-यामभिजातवाचि कु० १।४५, ६ मनोहर, सुन्दर ७ विद्वान्, बुद्धिमान विवेकशील, -मकीर्ण नाभिजातेन नाप्रबुद्धेयं सम्कृतम् (वदेत) ।

अभिजाति (स्त्री०) [अभि + जन् + क्तिन्] उत्तम कुल में जन्म ।

अभिजिघ्रणम् [अभि + घ्रा + ल्युट्, जिघ्रावेष्ट] नाक से सिर का स्पर्श करना (स्नेहसूचक चिह्न) ।

अभिजित् (पु०) [अभि + जि + णिच्] १ विजय २ एक नक्षत्र का नाम ।

अभिज्ञ (वि०) [अभि + ज्ञा + क्त] १. जानने वाला, जान-कार, अनुभवशील, कुशल (सव० वा अभि० के साथ अथवा सभाम में) -यदा क्रौञ्चालमन्त्रसुन्दरमे लपाय-भिज्ञो जन उत्तर० ५।३४, अभिज्ञाच्छेष्टापातां क्रियन्ते नन्दनृपा - कु० २।४१, शेष० १६, रघु० ७।५४, अनभिज्ञो धवाण्डोऽप्यवस्य - १, २ कुशल, वश, चतुर, -का १ कृपाय २ वाय, स्तुति चिह्न ।

अभिधानम् [अभि + धा + ल्युट्] 1 पहचान, अवधिज्ञान-
होना हि दल नेन महामना रामा ० २ मरण, प्रत्या-
स्मरण 3 (क) पहचान का चिह्न (पुण्य या वस्तु),
—यत् योगस्यैवमि माकमभिज्ञानं च धर्म्याभि-
—मां १, भट्टि ० १११८ १२४ दमा प्रकार गानु-
त्तल 4 अदम्यत ये राता निह्नु। मय ० आन-
रणम् पहचान का भाषण, अगुटी सं ४।

अभित (अभ्य०) [अभि + ततिन्] (किं वि० क रूप
में अथवा कर्म० के साथ मन्त्र० अर्थ० के रूप में प्रयुक्त)
1 निकट, की ओर, मन्त्र ओर से, अभितान् पृषा-
युक्तमेहेन परिभार किं १११८ 2 (क) निहट
मिता हुआ समीप में 1 ता गानावादावय मुमयम-
भित अभितम् रामा ० ३) क मानने, की उग
स्थिति में 1 अभितमभिना गुरुमनुजान् किं
२५१९, 3 म ११११ 4 आग मानने किं ६११,
५ १४ 4 दोनो ओर बुद्धाविवेकपत्रमभिनाम्
कीदृश पृष्ठन उत्तर ० ४१०० भट्टि ० १११३ 5
पहने और पोछे 6 मन्त्र ओर से आग ओर से
(कर्म० या मन्त्र० के साथ) परिभार पयःपरा
राज्ञानमभित अभि म अभि ० ११० 7 पूण रूप में
पूरी तरह से सब 8 धीन हो।

अभिताप [अभि + धा + ल्युट्] 1 अपन गर्वों-वाप छोड़ने को
हो या मन को भारना 2 अपन अतिक्रान्त या पोछ-
—ति ० १११ किं ११४ बडाशत्रुनर्म मनवाभिनाप
विक्रम ० ३।

अभिताप (वि०) [प्रा० म०] बहुत लाज, लालच
रघु ० १५४५।

अभिरक्षणम् (अभ्य०) [अभ्र० सं०] दक्षिण की ओर
(—तु० प्रक्षेपणम्)।

अभिरक्ष इवणम् [अभि + ल्युट् वा] आक्रमण
हमला।

अभिज्ञा [अभि + ज्ञा + ल्युट्] 1 चोट पानना वस्तु
रचना जान करना 2 गाली निहट।

अभिक्षेपणम् [अभि + क्षे + ल्युट्] 1 भूत पेटादि से
आविष्ट होना 2 अवाचार।

अभिधा [अभि + धा + ल्युट्] 1 नाम, मन्त्र (प्राय
मयास में) कुमुम वसन्तावधि मां ० २
2 शब्द, ध्वनि 3 शाब्दिक शक्ति या शब्दार्थ, सके-
तन, शब्द की तीन शक्तियों में से एक, वाचार्थ,
भिधया बोध्य मां ० ६० २ (अभिधा शब्द के
संकेतित अर्थ को बताना) 3 स मुक्तोपेयनत्र मुक्तो
यो व्यापाराभ्याभिधोभ्यते काव्य ० ४। सम०
—ध्यातिन् (वि०) अभि नाम का नट करने वाला
—भूत (वि०) शब्द के संकेतित या मुख्य पर
आधारित।

अभिधानम् [अभि + धा + ल्युट्] 1 कहना, बोलना, नाम
रखना, संकेत करना, —गुतावनामर्थाभिधानम्
निध० 2 प्रकथन, बचन २० पा० २१३२ मित्रा० 3
नाम, मन्त्र, पद, —अभिधानं तु पदवाचकमाहम-
श्रीवम्—का० ३२, तथाभिधानम् व्यक्त नतान
किं १। शृणाभिधानान् २४, (समस्तपद क अर्थ
में) पुकारा गया, नाम लिया गया—शृणाभिधानान्
बपनात् रघु० ३१२०, 4 भाषण, व्याख्यान 5 कोश,
—जाली, लुगन (अतिम दो अर्थों में पु० में भी)
• सम०—कोश, —वाला शब्दकोश।

अभिधावक (स्त्री०) [यिका, यिनी] (वि०) [अभि + धा
अभिधाविन्] + ल्युट्, जिन वा]

1 नाम रखने वाला वाचक—कपू कृत्याभिधाविनी
अधर०,—संकेत करती है, अब बतलाता है, भाष-
रचना है, 2 कहने वाला, बोलने वाला, बतलाने-
वाला लक्ष्मीप्रियभिधाविनि प्रियतम—अमर० २३,
तथाभिधावी पुण्य पृष्ठमासाद उच्यते—त्रिका०।

अभिधावन् [अभि + धा + ल्युट्] आक्रमण, पोछा करना।

अभिधेय (म० क०) [अभि + धा + ल्युट्] 1 नाम दिखे
जान वाला स्थानीय शब्द 2 नाम के साथ (तर्क०
में) अभिधया पदार्थ—यत् 1 भाषकता, जहाँ,
भाव नगण किं ११४ 2 धारावा 3 विषय,
हर्षान्तरय सप्रयत्नम—काव्य० १, इति प्रयो-
जनाभिरक्षणमा मय ० 4 प्रकाश (—अभिधा)
अभिधाविना 1 प्रतीतिनिर्देशोभ्यते काव्य० २।

अभिध्या अभि + ध्या + ल्युट् 1 दूसरे की सपना
की या ललचाना, 2 कामना चाह सामान्य
इच्छा—अभि ध्यापेसात् बला० 3 ध्यान करने की
उत्तर।

अभिरघावम् [अभि + रघ + ल्युट्] 1 चाहना, प्रबल इच्छा
करना ललचाना करना करना 2 धनन करना,
प्रतिपत्ता।

अभिरण [अभि + नन्द + ल्युट्] 1 प्रहर्ष, प्रफुल्लता
प्रमत्ता 2 पण्य सरपणा अभिनन्दन बड़ाई देना,
3 धामना इच्छा 4 प्रोत्साहन कार्य में प्रेरणा।

अभिरुचनम् [अभि + रुच + ल्युट्] 1 प्रहर्षण अभिवादन,
स्वागत करना 2 प्रशंसा करना, अनुमान करना
3 कामना इच्छा।

अभिरुचनीय (म० क०) [अभि + रुच + प्रतीय, व्युत्
अभिरुच्य] वा प्रहृष्ट होना, प्रशंसित होना सराहा
जा—कामधनदभिरुचनीयम् १, रघु० ५३३१।

अभिरुच (वि०) [प्रा० सं०] मुका हुआ, चिनी, —स्तना-
भिरामरुचकामिन्नम् रघु० १३३२।

अभिरुचः [अभि + नी + ल्युट्] 1 नाटक खेलना, अब
विशेष, नाटकीय प्रदर्शन (कितनी मनोवाह वा भाविक की

दृष्टि, संकेत या मुद्रादि से प्रकट करने वाला) —नृत्ता-
भिनयविशेष्यतम्—कु० ५।७९, अभिनयान् परिचेतु-
मिवोचता—रघु० १।३३, नर्तकीरभिनयवर्तिनिकुनी,
१५।१४ 2. नाटकीय प्रवर्तनी, स्वांग, मंच पर प्रदर्शन
करना,—कलियाभिनयं तमस्य भर्ता मरुता इष्टमना
सलोकपात्—वैश्व० २।१८, ता० ६० अभिनय का
निरूपण इस प्रकार करता है—भवेदभिनयोऽवस्थानु-
कार स चतुर्विधः, आङ्गिको बाह्यकश्चैवमाहायं सारि-
कस्तथा। १७४। अभिनय—किसी वस्तु का अनुकरण
करना है, यह चार प्रकार का है—(१) आङ्गिक—
शारीरिक चेष्टाओं द्वारा व्यक्त होने वाला (२)
बाह्यिक—सब्जों द्वारा प्रकट होने वाला (३) आहाय-
क—मुद्रा, बलकार, सजावट आदि से व्यक्त होने
वाला (४) सारिक—स्वैर, रोमांच आदि के द्वारा
आन्तरिक भावनाओं को प्रकट करने वाला।

अभिनय (वि०) [प्र० सं०] 1 बिल्कुल नया या ताजा
(सर्वाथा) पदपद्धतिद्वयतेऽभिनवा—श० ३।८, ५।१,
या बच्चा का० ५, नवोद्ग 2 बहुत छोटा, अनुभवहीन।
सम०—वीथय—बयस्क, नौ जवान, बहुत छोटा।

अभिनयनम् [अभि + नह्, ह्यट्] अभि पर बोधने की
पट्टी, वधा।

अभिनयिष्यत् (वि०) [अभि + नि + पुन् + क्त] काम में
लगा हुआ, व्यस्त।

अभिनयिष्यत् (वि०) [अभि + निर + मच् + क्त] 1 सूर्यास्त
होने के कारण छुटा हुआ कार्य या छोटा हुआ कार्य 2
सूर्यास्त के समय सोया हुआ।

अभिनयौषधम् [अभि + निर + या + ह्यट्] 1 प्रयाण 2
अन्वेषण किसी जगह के सामने अभिग्रहण।

अभिनयिष्यत् [मू० क० कृ०] [अभि + नि + विञ् + क्त] 1
मुखा हुआ, लीन, जूटा हुआ 2 दुटना पूर्वक बसा हुआ
सावधान लगा हुआ 3 मध्यम अधिकार युक्त,—नृ-
भिरभिनयिष्यत् (गम) लाकपालानुभावे रघु०
२।७५, 4 दुर्दृष्टिवाचक इतमकल्प 5 (वदय०)
हठी, दुराग्रही।

अभिनयिष्यत् [अभिर्नयिष्यत् + तल + टाप्] दृढकल्पता,
दुर्निश्चय, निराशङ्कामात्रादग्मोर्भिनयिष्यत्
ता० ६०—अर्थात् निदा, वदनाया या अपमान की
परवाह न कर १ गुण अपने उद्देश्य पर दृढ़ता से जाने
बढ़ते जाता।

अभिनयिष्यत् (स्त्री०) [अभि + नि + वृत् + क्त] निष्प-
न्ना, पुति।

अभिनयिष्यत् [अभि + नि + विज + पठ्] 1 कथन, आचक्षिप
एकनिष्ठता दृढ विनयाग (अभि० के साथ या मन्त्रा
में), कृतमहिम्न भावाभिनयेश विक्रम० १, अहो
निर्गन्धकम्पारिष्वभिनयेश का० १२०, बलीया-

म्वलमेऽभिनयेश श० ३, अवयभूते वन्मुग्धाभिनयेश
—मिता० २ 2 उक्कट अभिमाय, दुर्ग प्रमोदा 3
दृढकल्प, दृढ़ निश्चय, धैर्य, अन्तरात्मकाया निना
नम्भाभिनयिष्यामीशम् रघु० १५।४३ अनुरूप
शतोपिगा कु० ५।७, 4 (योगदर्शन में) एक प्रकार का
अज्ञान जो मृत्यु के भय का कारण हो सात्त्विक
विषय-वामनाओं तथा शारीरिक आमादप्रमाद से व्यस्त
रहना साथ ही यह भय भी लगा रह कि मृत्यु के द्वारा
इन सब से बचाया हो जाना है।

अभिनयिष्यत् [अभि + नि + विज + क्त] 1
आमका, समकन 2 बसा रहने वाला अनयिष्यत्, 3
दृढ़ निश्चयों इतमकल्प।

अभिनयिष्यत् [अभि + नि + क्त] बाहर निक-
लना।

अभिनयिष्यत् [अभि + नि + स्तन् + धञ् + तस्य परस्मै]
बर्णमाला का अक्षर।

अभिनयिष्यत् [अभि + नि + पुन् + ह्यट्] दृढ़ पठना,
निकल पठना।

अभिनयिष्यत् (स्त्री०) [अभि + नि + पठ + क्त] 1
पुति मर्यादा निष्पन्नता पूर्णता।

अभिनयिष्यत् [अभि + नि + ह्य + क्त] मुकरना, छिपाना।

अभिनयिष्यत् (मू० क० कृ०) [अभि + नी + क्त] 1 निकट
लाया गया, पहुंचाया गया 2 किया गया, नाटक के
रूप में खेला गया 3 सुमज्जित, अलङ्कृत, अव्यक्त श्रेष्ठ
4 उपयुक्त, उचित, योग्य, अभिनेतातर वाक्प्रवृत्त्य-
वाच युक्तिस्तर—महा० 5 सहजशील, दयालु, सव-
चिरा 6 कूट 7 कृपाळु, मित्र मत्ता।

अभिनयिष्यत् (स्त्री०) [अभि + नी + क्त] 1 इति,
भावपूर्ण अथ विज्ञाप, 2 कृपाळुता, मित्रता, सहिष्णुता,
—साध्वर्ष्यमभिनयिष्यत् कृ० १३।३९।

अभिनयिष्यत् (पु०) नाटक का पात्र,—श्री नाटक की पात्री।

अभिनयिष्यत् (स० कृ०) [अभि + नी + क्त, तस्यत् वा]
अभिनय } नाटक के रूप में खेले जाने योग्य,—दुर्लभ

न्यामिनय तदोपरोपासु कृष्णम्—ता० ६० २७३, तस्य
(प्रबन्धस्य) एकदश अभिनयार्थं कृत—उत्तर० ४,
इतका एक अंश रंग मंच के उपयुक्त बना दिया गया।

अभिनय (वि०) [न० त०] 1. न टूटा हुआ, अनकटा 2
अचिह्न 3 अपरिचित 4 जो अलग न हो, बही,
एकजग (अप० के साथ), अग्रिमोपिष्यमभिनयि-
वदरान् प्रबोध०।

अभिनयिष्यत् [अभि + नि + ह्यट्] 1 उपायमन 2 दृढ़
पठना, आक्रमण करना, ईर्ष्या करना 3 कूट करना,
रक्षणी।

अभिनयिष्यत् (स्त्री०) [अभि + धृ + क्त] 1 उपायमन,
निकट जाना 2 पुति।

अभिषक्त (भू० क० कृ०) [अभि + पृ + क्त] 1 समीप गया हुआ या आया हुआ, उपगल, की ओर दौड़ा हुआ या गया हुआ 2 भागा हुआ, भगोड़ा शरणार्थी 3 परामर्श पराजित पीड़ित निष्कारण किया हुआ परन्तु हुआ, -कालाभिषक्ता मोदन्ति सिकतामनवा यथा रामा०, रोष, कथम्, व्याघ्र० आदि 4 भाग्यहीन मकटघरन 5 स्वीकृत 6 दोषी ।

अभिषरित्युत (वि०) [अभि + परि + क्त + क्त] हुआ हुआ भग हुआ, बाढ़ग्रस्त उल्लाहा हुआ, शोक काप आदि से ।

अभिपूज्यम् [अभि + पू + क्त] भरना, काक् से नाना ।

अभिपूज्यं (अभ्य०) [अभ्य० सं०] कर्म ।

अभिष्वयनम् [अभि + प्र + नी + क्त] वेदमन्त्रों के द्वारा सम्भार करना ।

अभिष्वयन् [अभि + प्र + नी + क्त] प्रेम, कृपादृष्टि अनुरोध ।

अभिष्वयनी (भू० क० कृ०) [अभि + प्र + नी + क्त] 1 सम्मान दिया हुआ ब्रह्मात्मन् लोकस्थानय म राजा यथाध्वर बह्मिभप्रणीत भर्त० ११४ 2 लाया हुआ ।

अभिष्वयनम् [अभि + प्र + क्त] फैलाना विस्तार करना ऊपर से डालना ।

अभिष्वयनम् (अभ्य०) [अभ्य० सं०] दाहिनी ओर ।

अभिष्वयनम् [अभि + प्र + क्त] 1 जागे बढ़ना 2 प्रगमन आचरण 3 बहना बाहर आना जैसे पमोने का निरालना ।

अभिप्रायः = ३० प्राप्ति ।

अभिप्रायः [अभि + प्र + इ + क्त] 1 लक्ष्य, प्रयोजन उद्देश्य आशय कामना उच्छ्वास, -अभिप्रायान् निधयन्ति तनेऽ वरत तन्मय पञ्च ११५८ माभिप्रायाणि ब्रह्मिन्—पञ्च २ गम्भीर शब्द, भाव नवेरभिप्राय 2 अर्थ भाव तात्पर्य या मन्त्र अथवा किसी परिच्छेद का उपलक्षित भाव तेषामयमभिप्राय इस प्रकार का उनका आशय है तात्पर्य (परिच्छेद का) 3 सम्मति विवदास, 4 सबष उल्लेख ।

अभिप्रेत (भू० क० कृ०) [अभि + प्र + इ + क्त] 1 अर्थपूर्ण, उद्दिष्ट, आशय, आकलित -अत्रायमभिप्रेत निवेदयामिप्रेतम् पञ्च १, 2. इष्ट, अभिलषित, -यथाभिप्रेतमनुष्ठीयताम् हि० १३ सम्मत, स्वीकृत 4 प्रिय, अधिकार ।

अभिप्रेतकम् [अभि + प्र + क्त] छिड़कना छिड़काव ।

अभिप्रेत [अभि + क्त, अप] 1 कष्ट, बाधा 2 बाध, उत्तरा कर बहना ।

अभिप्रेत (भू० क० कृ०) [अभि + क्त + क्त] परामर्श, व्याकुल (शा० तथा आल०) ।

अभिप्रेतः (स्त्री०) [प्रा० सं०] बुद्धीनिष्ठ या ज्ञानेन्द्रिय (विष० कर्मोद्देश्य), आश्रय, ज्ञान, नाक और त्वचा ।

अभिप्रेत [अभि + प्र + क्त] 1 हार, परामर्श दमन, गार्होद्वाहा इव सूर्यकालान्मन्त्रयनेऽभिप्रेतवाद्यपि ३०२१९ (अब दूसरी शक्ति के द्वारा बाधमान बबल्ल या परामर्श हो) -अभिप्रेत कुत एव मरत्य - रघु० ११४ 2 परामर्श होना, -अभिप्रेतविविधाय - का० ३४६ आकान्त या प्रभावित होना, (अभिप्रेत म) मूर्च्छित होना 3 निष्कारण अपमान निरभिप्रेतसारा परकथा अन्त० २१६४, 4 निरावर, पानभग -अभिप्रेतविविधाय - कु० ५१४९

5 प्रबलता, -अभिप्रेत विस्तार, -अभिप्रेतविविधाय प्रदुर्गन्धि कुलम्बर भग० ११४१, कि० २१३७ ।

अभिप्रेतकम् [अभि + प्र + क्त] हावी होना, पराजित करना जीतना परामर्श होना ।

अभिप्रेतकम् [अभि + प्र + क्त] विजयी कराना, पराजित करने वाला बनना ।

अभिप्रेतकम् -भाष (भु) क (वि०) [अभि + प्र + क्त] उक्त वा 1 पराजित करने वाला, हारने वाला, जानने वाला 2 दूसरों से जाले बढ़ने वाला, पराधीन हो जाने वाला -मन्त्रेणाभिप्रेतवादिना रघु० ११४ कि० ११६१ ।

अभिप्रेतकम् [अभि + प्र + क्त] सम्बोधित करते हुए बोलना भाषण देना ।

अभिप्रेत (स्त्री०) [अभि + प्र + क्त] 1 प्रधानता, प्रभुत्व 2 जीतना, हारना, परामर्श -अभिप्रेतविविधाय - कु० २१३०, 3 अनार अपमान

अभिप्रेत (भू० क० कृ०) [अभि + प्र + क्त] इष्ट, अभीष्ट प्रिय प्यार अधिकार, बाध्यकारी -नास्ति जावितादन्यथाऽनन्तरमिह जगति सर्ववन्तुना - ३६, ५८, अभिप्रेतफलजो वाह पुष्कोर बाहु - अष्टि० ११०७, 2 सम्मत, स्वीकृत, माना हुआ - न किल भवता स्वान् देव्या बुधेऽभिप्रेत मन् - उत्तर० ३३३२, प्रायश्चित्तमाहान्याभिप्रेतानामपि कपिलकनमुद्रपुत्रीनां शरी०, सम्मानित, आदर, तत्त्व कामना, इच्छा -तः प्रियव्यक्ति, प्रेमी ।

अभिप्रेत (वि०) [प्रा० सं०] 1 तुला हुआ, इच्छुक, आदर उन्मिष्ट भवनाभिप्रेतः सम्बोधित करने कर्तु-मुपय माननाम् पि० १६१२ (वहाँ अभिप्रेत 'निवेदक' अर्थ को प्रकट करता है) ।

अभिप्रेत [अभि + प्र + क्त] 1 तुला हुआ, इच्छुक, आदर उन्मिष्ट भवनाभिप्रेतः सम्बोधित करने कर्तु-मुपय माननाम् पि० १६१२ (वहाँ अभिप्रेत 'निवेदक' अर्थ को प्रकट करता है) ।

अभिप्रेत [अभि + प्र + क्त] 1 तुला हुआ, इच्छुक, आदर उन्मिष्ट भवनाभिप्रेतः सम्बोधित करने कर्तु-मुपय माननाम् पि० १६१२ (वहाँ अभिप्रेत 'निवेदक' अर्थ को प्रकट करता है) ।

अभिप्रेत [अभि + प्र + क्त] 1 तुला हुआ, इच्छुक, आदर उन्मिष्ट भवनाभिप्रेतः सम्बोधित करने कर्तु-मुपय माननाम् पि० १६१२ (वहाँ अभिप्रेत 'निवेदक' अर्थ को प्रकट करता है) ।

अभिप्रेत [अभि + प्र + क्त] 1 तुला हुआ, इच्छुक, आदर उन्मिष्ट भवनाभिप्रेतः सम्बोधित करने कर्तु-मुपय माननाम् पि० १६१२ (वहाँ अभिप्रेत 'निवेदक' अर्थ को प्रकट करता है) ।

अभिप्रेत [अभि + प्र + क्त] 1 तुला हुआ, इच्छुक, आदर उन्मिष्ट भवनाभिप्रेतः सम्बोधित करने कर्तु-मुपय माननाम् पि० १६१२ (वहाँ अभिप्रेत 'निवेदक' अर्थ को प्रकट करता है) ।

अभिप्रेत [अभि + प्र + क्त] 1 तुला हुआ, इच्छुक, आदर उन्मिष्ट भवनाभिप्रेतः सम्बोधित करने कर्तु-मुपय माननाम् पि० १६१२ (वहाँ अभिप्रेत 'निवेदक' अर्थ को प्रकट करता है) ।

अभिप्रेत [अभि + प्र + क्त] 1 तुला हुआ, इच्छुक, आदर उन्मिष्ट भवनाभिप्रेतः सम्बोधित करने कर्तु-मुपय माननाम् पि० १६१२ (वहाँ अभिप्रेत 'निवेदक' अर्थ को प्रकट करता है) ।

अभिप्रेत [अभि + प्र + क्त] 1 तुला हुआ, इच्छुक, आदर उन्मिष्ट भवनाभिप्रेतः सम्बोधित करने कर्तु-मुपय माननाम् पि० १६१२ (वहाँ अभिप्रेत 'निवेदक' अर्थ को प्रकट करता है) ।

अभिप्रेत [अभि + प्र + क्त] 1 तुला हुआ, इच्छुक, आदर उन्मिष्ट भवनाभिप्रेतः सम्बोधित करने कर्तु-मुपय माननाम् पि० १६१२ (वहाँ अभिप्रेत 'निवेदक' अर्थ को प्रकट करता है) ।

अभिप्रेत [अभि + प्र + क्त] 1 तुला हुआ, इच्छुक, आदर उन्मिष्ट भवनाभिप्रेतः सम्बोधित करने कर्तु-मुपय माननाम् पि० १६१२ (वहाँ अभिप्रेत 'निवेदक' अर्थ को प्रकट करता है) ।

अभिप्रेत [अभि + प्र + क्त] 1 तुला हुआ, इच्छुक, आदर उन्मिष्ट भवनाभिप्रेतः सम्बोधित करने कर्तु-मुपय माननाम् पि० १६१२ (वहाँ अभिप्रेत 'निवेदक' अर्थ को प्रकट करता है) ।

अभिप्रेत [अभि + प्र + क्त] 1 तुला हुआ, इच्छुक, आदर उन्मिष्ट भवनाभिप्रेतः सम्बोधित करने कर्तु-मुपय माननाम् पि० १६१२ (वहाँ अभिप्रेत 'निवेदक' अर्थ को प्रकट करता है) ।

अभिप्रेत [अभि + प्र + क्त] 1 तुला हुआ, इच्छुक, आदर उन्मिष्ट भवनाभिप्रेतः सम्बोधित करने कर्तु-मुपय माननाम् पि० १६१२ (वहाँ अभिप्रेत 'निवेदक' अर्थ को प्रकट करता है) ।

अभिप्रेत [अभि + प्र + क्त] 1 तुला हुआ, इच्छुक, आदर उन्मिष्ट भवनाभिप्रेतः सम्बोधित करने कर्तु-मुपय माननाम् पि० १६१२ (वहाँ अभिप्रेत 'निवेदक' अर्थ को प्रकट करता है) ।

अभियोगिन् (वि०) [अभि + यज् + भिभि] मनोयोग पूर्वक
लगा हुआ, मुला हुआ, 2 आक्रमणकारी, हमलावर
3 दोषारोपण करने वाला (पु०) वारी मुर्द ।

अभिरक्षन् (वि०) [अभि + रक्ष् + ल्यप्, अक्ष् वा] सब ओर
अभिरक्षा } से बचाव, पूरा र बचाव, -प्रशान्तवाध
[दशनाभिरक्षया वि० १११८ ।

अभिरति (स्त्री०) [अभि + रति + क्तिन्] आनन्द, हर्ष
सन्तोष, आसक्ति, लगन, —न मृगयाभिरतिर्न दुरादग्म्
(नमपाहम्) रघु० ११३ कि० ६१६४ ।

अभिराम (वि०) [अभि० + रम + घञ्] 1 आनन्दकर,
हर्षपूर्ण मधुर अधिक मनाभिगमा (केका) रघु०
११३०, ११३० 2 सुन्दर, सुगन्धना, मनाह्वर मनोरम
—स्वादग्न्धानागतयमुनामृदमवाभिगमा—मेघ० ५३
राम ७०, निगमज वपुषा ११५ बहिन—रघु०
१०६७ मय (१००) सुन्दर रीति म घोवा-
भ्राभिगम—श० ११३ ।

अभिरक्षि (स्त्री०) [अभि + रक्ष् + णि] 1 इच्छा जोक
गलतरी रम, हर्ष आनन्द यत्नसि भावित्व
भर्त् ० २१६३ परमार्थभिरक्षिभिपन्नो विवाह का०
२५३ 2 यज्ञ की इच्छा महत्वाकांक्षा ।

अभिरक्षित [अभि + रक्ष् + क्त] प्रभा, [श० १०६४ ।
अभिरक्षम् [अभि + रक्ष् + क्त] पवित्र विमलार्थ, कोनाहल ।

अभिरक्ष (वि०) [अभि + रक्ष् + णि] 1 अनुकूल समनु-
कूल उपयुक्त—अभिरक्षस्यायमो बन्धनम्—श०
१ पाठ० 2 सुख हर्षपूर्ण—उत्कृष्टायाभिप्राय वराय
सदुपाय च (कन्या दद्यात्) मनु० ११८ 3 प्रिय
प्यारा इष्ट, कृपापात्र 4 विद्वान् बुद्धिमान समस्तदा
अभिरक्षप्रियाष्टा परिषादयम्—श० १—य 1
बन्धुमा, 2 मित्र 3 विष्णु 4 आम्नेव । सम—यति
हवि के अनुकूल सुरर पति प्राप्त करना, नाम का
एक महार जो परलोक म अन्तः पति पाने की इच्छा
म किया जाता है—मनु० १ ।

अभिरक्षयन् [अभि + रक्ष् + ल्यप्] कद कर पार करना
लज्जा लगाना ।

अभिरक्षयन् [अभि + रक्ष् + ल्यप्] इच्छा करना चाहना ।
अभिरक्षित (पु० क० क०) [अभि + रक्ष् + क्त] इच्छित
वांछा, आ इच्छित—नमृ दन्ता, कामना, मकल्य ।

अभिरक्ष [अभि + रक्ष् + णि] 1 कथन, श्रवण भाषण
2 वापस लाने विनोद विवरण, 3 किसी पारिक
कर्तव्य या किसी इष्टय की प्रतिज्ञा की उद्घोषणा ।

अभिरक्ष [अभि + रक्ष् + णि] काटना, कटार, लवन ।

अभिरक्ष [कई बार 'क्ष' [अभि + रक्ष् + णि] इच्छा
कामना, उत्कठा, अनुग्रह, प्रियतम से मिलने की
उत्कठा, प्रेम (शब्द अभि० के साथ) अतोअभिरक्षे
प्रथम उवाचिषे मनी बवच—रघु० ३१४, न ललु सवमेव

अनुकूलतायां मयाभिप्राय—श० २, पंच० ५१६७ ।
अभिरक्षक, —लाक्षि (सि)म् } (वि०) [अभि + रक्ष् + क्त]
लाभक } धन, धान, उत्कृष्ट वा

कामना या इच्छा करने वाला, (कर्म० अभि० के
साथ या समाम में) चाहने वाला, लाकायित, लाकरी,
—यदायमस्याभिप्राय म मन—श० ११२, बवचम-
भवान नृनमरातिप्यभिरक्षक—कि० १११८, वि०
१५१९ ।

अभिरक्षित (वि०) [अभि + रक्ष् + क्त] मित्रा हुआ,
मुदा हुआ—सम, अभिरक्षयन्, 1 मित्रता, लोभता
2 लक्ष् ।

अभिरक्षित (वि०) [अभि + रक्ष् + क्त] 1 बिपटा हुआ,
मरा हुआ आसक्त, —रघु० ३१८ 2 अभिरक्षित किसे
हृदय दबते हुए—मघ० ३६ ।

अभिरक्षित (वि०) [अभि + रक्ष् + क्त इत्यं त] 1 अनुकूल,
वापस 2 कोडा युक्त अस्त्र ।

अभिरक्षता (श० स०) एक प्रकार की लकड़ी ।

अभिरक्षयन् [अभि + रक्ष् + ल्यप्] 1 मनोबध 2 नमस्कार ।

अभिरक्षयन् [अभि + रक्ष् + ल्यप्] सादर नमस्कार, बहो
यज्ञा और भक्ति के साथ दूसरा के परम स्वर्ण करना,
नाच दे० अभिरक्षयन् ।

अभिरक्षयन् [अभि + रक्ष् + ल्यप्] बारिस होना, बरकना,
पानी पटना ।

अभिरक्षक—वाचनम् [अभि + रक्ष् + णि, ल्यप् वा] उक्त-
मान नमस्कार, छोटा के द्वारा बड़ो को प्रणाम, शिष्य
के द्वारा गुरु को प्रणय इनमें तीन बातें निहित हैं—
(१) प्रणाम—प्रणमन से उठना (२) पदोत्त-
मपद—पैर पकड़ना या छूना (३) अभिरक्षक—
प्रणाम शब्द मूह से कहना—जिसमें अभिरक्षक अस्ति
की उपाधि तथा अभिरक्षक का नाम—वर्ण्य है ।

अभिरक्षक (वि०) [स्त्री—विका] 1 नमस्कार करने
वाला, 2 नम, सम्मान पूर्ण, विनोद ।

अभिरक्षि [अभि + वि + ष + क्ति] 1 पूरा सम्मिलन वा
संश्लेष, आ का एक अर्थ—आक मयादाभिषिक्तो
—पा० १११३ आरभिक मीमा ('अन्तिम लीला'
का विधायी) इसका अनुवाद 'मे' 'के साथ' 'मिलते
हुए' अन्ता से किया जाता है उदा०—आवाकम्—
आवाकम् हरिभक्त, 2 पूर्ण प्रसार ।

अभिरक्षित (वि०) [अभि + वि + ष + क्त] सुविस्वात,
सुप्रसिद्ध ।

अभिरक्षित (स्त्री०) [अभि + रक्ष् + क्त] बढ़ना, विकास,
याग, लफलाता, सम्यक्ता ।

अभिरक्षयन् (पु० क० क०) [अभि० + वि + रक्ष् + क्त]
1 प्रकट किया हुआ, प्रकाशित, उद्घोषित 2 विविक्त,
स्पष्ट, बाफ ।

अभिष्ठापितः (स्त्री०) [अभि + वि + अच् + क्तिन्] (कारण का कार्य रूप में) प्रकट होना, वैशिष्ट्य, विज्ञाया, प्रदर्शन, —सर्वांगसौष्ट्याभिष्वक्तये—मालावि० १, द्रुतसम्प्रेषणीया भाषाभिष्वक्तिरप्यते—सा० ६० ६।
अभिष्ठापयन् [अभि + वि + अच् + क्तिन्] प्रकट करना, प्रकाशन करना।

अभिष्ठापकः, —**अभिष्ठा** (वि०) [अभि + वि० + आप् + भ्युन्, गिन् वा] सम्मिलित करने वाला, समझन वाला, प्रसार करने वाला।

अभिष्ठापितः (स्त्री०) [अभि + वि + आप् + क्तिन्] मम्मि लित करना, मवाय मवक फेरार।

अभिष्ठापयन्, —**अभिष्ठा** [अभि + वि + आप् + भ्युन्, गिन् वा] 1 बोलना, उच्चारण करना, कसना 2 प्रात्रल तथा सायंक गव्य, सजा, नाम।

अभिष्ठापकः, —**अभिष्ठा** (वि०) [अभि + आप् + भ्युन्, गिन् वा] दोवारोपक, कलक लगाने वाला, अपमान करने वाला।

अभिष्ठापयन् [अभि + आप् + क्तिन्] दोवारोपण, दोप लगाना (बाड़े सत्य हो या मिथ्या) मिथ्या —याज्ञ० २८९ काली, अपमान, निरादर, —पञ्चाशद् भाष्यो दण्ड्य अनियस्याभिषंसने—मनु० ८१२८८।

अभिष्ठापकः [अभि + गच्छ् + प्र + टाप्] मदेह भागका, धन, चित्ता।

अभिष्ठापयन्, —**आप** [अभि + आप् + क्तिन्, गिन् वा] 1 आप, किसी का दूरा मनना 2 गंभीर आरोप, दोषारोपण—याज्ञ० २१९९, अभिज्ञापः पानकाभियोग—मि० 3. लोछन, मिथ्या आरोप। सम०—अवरः आप क उच्चारण से उत्पन्न होने वाला दुस्वारा।

अभिष्ठापितः (वि०) [अभि + गच्छ् + क्त] उद्घागित, प्रकाशित, कथित, नाम लिया हुआ।

अभिष्ठापयन् (नृ० क० कृ०) [अभि + आप् + क्त] 1 कलकित, अभिषेक, अपमानित—मनु० ८१२१६, ३७३ याज्ञ० ११२६१, 2 चोट पहुँचाया हुआ, क्षतिग्रस्त, अक्रान्त ('अभिषक्त' से बना मयशा गय),—देवि० केनाभिग स्वासि केन वामि विमानिता—रामा० 3 अभिज्ञाप 4. दुष्ट, पानी।

अभिष्ठापकः (वि०) [अभिष्ठा + क्त] मिथ्या दोवारोपित बदनाम।

अभिष्ठापितः (स्त्री०) [अभि + आप् + क्तिन्] 1 अभिषेक, 2. दुर्भाग्य, अनिष्ट, ३ फट 3 निदा, लाछन बदनामी, अपमान 4. पूछना, मांगना।

अभिष्ठापयन् [अभि + आप् + क्तिन् + क्त] आप देना, फोछना।

अभिष्ठापितः (वि०) [अभि + आप् + क्त] शीतल, ठंडा जैसा कि कायु।

अभिष्ठापयन् [अभि + आप् + क्तिन्] अत्यंत शोक वा पीडा, कष्ट।

अभिष्ठापयन् [अभि + आप् + क्तिन्] आदिके अवसर पर बैठे हुए हाड़ाणी द्वारा वेदमन्त्रों का पाठ।

अभिष्ठापयन्—**अभिष्ठा** [अभि + आप् + क्त] 1 पूरा लपक वा मेल, आसक्ति, सयोग 2 हार, वैराग्य, पराजय,—जानाभिषेका नृपति—रघु० २१३०, 3 अमानक आशा हुआ आधान, शोक, दुःख, सकट वा दुर्भाग्य सतीः भिषङ्गान्तरिप्रविद्धा—रघु० १४१५४, ७३, 4 अह विजयिज्ञान—रघु० ८१७५ 4 मृत प्रेतादिक से आविष्ट होना,—अभिधानाभिषङ्गाभ्यामभिषाराभिषापा—माय० 5 गणप 6 आलिनन, सभाग 7 अभिषाप, कांसना, दुर्बन्धन कहना 8 मिथ्या दावारोपण, बदनामी या लाछन 9 चुना, अनारार।

अभिष्ठापयन्—**अभिष्ठा** 1 अभिषाग।

अभिष्ठाप [अभि + आप् + क्त] 1 अभिषेक निषादना, 2 गराव लाचना 3 धार्मिक कृत्या या मन्त्रांगों में पूर्ण किया जाने वाला स्नान या, आचमन 4 स्नान या आचमन 5 यज्ञ बन् कात्री।

अभिष्ठापयन् [अभि + आप् + क्त] स्नान।

अभिष्ठापितः (नृ० क० कृ०) [अभि + आप् + क्त] 1 छिद्रका हुआ, आट किया हुआ सज्ज पुनर्बद्धगम्यमृताभिषिक्ताम् चो० १९, 2 छिद्रका अभिषेक हो चुका हो, प्रतिष्ठापित, पदार्थ।

अभिष्ठापकः [अभि + आप् + क्त] 1 छिद्रकना, पानी के छीटे देना 2 राज्यतिलक करना, राजा या मृति आदि का जन्मचिह्न द्वारा प्रतिष्ठापन 3 (विशेषतः) राजाओं का महामनारोहण, प्रतिष्ठापन, पदाराहण, राज्यतिलक मस्कार अर्थाभिषेक नृपवशकैना—रघु० १४१७, 4 प्रतिष्ठापन के अवसर पर काय बाने वाला पवित्र जल, रघु० १७११६, 5 स्नान आचमन पवित्र या चर्मस्नान, अभिषेकोत्तीर्णय कायप्राय धा० ४, अर्थाभिषेकाय नरोपनानाम्—रघु० १३१५१६ उम देवता पर जल छिद्रकना जिसकी पूजा की जा रही है। सम० अहः राजतिलक का दिवस, शास्त्राभ्याभिषेक का महत्त्व।

अभिष्ठापयन् [अभि + आप् + क्त] 1 जल छिद्रकना 2 राजतिलक, राज्यप्रतिष्ठापन।

अभिष्ठापयन् [संनया मत्र शत्रा अभिष्ठापयन्—इति—अभि + मेना + क्तिन् + क्त] शत्रु पर चढ़ाई करने के लिए कूच करना, शत्रु का मुकाबला करना।

अभिष्ठापयितः (ना० धा०) [मेना के साथ] कूच करवा, आक्रमण करना, मेना द्वारा शत्रु का मुकाबला करना,—क सिधुगवामाभिषेकविशु समर्थ—केवी० २१२५, मि० ६१६४।

अभिषङ्गः [अभि + स्तु + षण्] प्रशंसा, स्तुति ।

अभिषङ्ग (स्व) वः [अभि + स्तु + षण्] 1 आच, बहुच
उपकना 2 आच आना 3 अतिवृद्धि, अतिरेक,
आविषय, अतिरिक्त ज्ञान, —स्वर्गाभिषङ्गस्वयन कृते-
बोधिनिवेशितम् (बोधविप्रसङ्गम्) कु० १३३, अति-
रिक्त ज्ञानसत्त्वा को दूर करके, अर्थात् उत्पन्नमान
द्वारा—तु०—रघु० १५।२९।

अभिषङ्गः [अभि + स्वङ् + षण्] 1 नपक 2, अत्यधिक
आसक्ति, प्रेम, स्नेह, —विद्यास्वमिष्यन् —रस० १५५,
अहो अभिषङ्ग —भा० १।

अभिषङ्ग्य [अभि + तम् + षि + षण्] धारण, आश्रय ।

अभिषङ्गस्तवः [अभि + तम् + स्तु + षण्] सहती प्रशंसा ।

अभिषङ्गाय [अभि + तम् + तप् + षण्] युद्ध, लड़ाई,
लक्ष्य —अन्य स्वादिमिष्यन्तः —ह्ला० ।

अभिषङ्गैः [अभि + तम् + विह् + षण्] 1 विनिमय, 2
जननेन्द्रिय ।

अभिषङ्गः—कः [अभि + तम् + षा + क, स्वार्थे कन् व]
1. बोधा देने वाला दण्डक, 2 निन्दक, लाञ्छन
लगा देने वाला ।

अभिषङ्गा [अभि + तम् + षा + षण् + टाप्] 1 आचन,
उद्बोधना लब्ध, कथन, प्रतिज्ञा, —तेन सत्त्वाभिषङ्गमेव
निरुपममुतिष्ठता—रामा०, बचन का पालन करने
वाला, 2 बोधा ।

अभिषङ्गानम् [अभि + तम् + षा + स्तुट्] 1 आचन, शब्द
कोट्य उद्बोधना, प्रतिज्ञा, वा हि सत्त्वाभिषङ्गाना—
रामा०, 2 उगता, बोधा देना—पराभिषङ्गानपर
पक्ष्यस्य विवेष्टितम्—रघु० १७।७३ 3 उद्बोध
द्वारा, उद्बोधन—अस्याभिषङ्गानाम्यथाहितमप्यक-
र्तुं च—मिता० 4 सम्बि करना ।

अभिषङ्गावः = अभिषङ्गि ।

अभिषङ्गिकः [अभि + तम् + षा + कि] 1 आचन, उद्बोध
उद्बोधना, प्रतिज्ञा 2 द्वारा, लक्ष्य प्रबोधन, उद्बोध
3 मिहिसार्थ, अभिप्रेत अर्थ, जैसा कि—अयमभिषङ्गि
(आकस्मात्क वृत्तिर्धर्मो बहुधा प्रयुज्यते) 4 सम्बन्धित,
विशेष 5 विशेष अनुबन्ध, अनुबन्ध की शर्तें, प्रति-
बंध, करार ।

अभिषङ्गवाक्यः [अभि + तम् + षण् + व + षण्] एकता ।

अभिषङ्गवर्तिः (स्त्री०) [अभि + तम् + पृ + क्तिन्] पूर्ण
रूप से प्रभावित हुआ, अपने मत को बल देना,
परिचर्तन, बलक जाना ।

अभिषङ्गवराः [अभि + तम् + वरा + व + षण्] अभिषङ्ग
काल ।

अभिषङ्गान्तः [अभि + तम् + पत् + षण्] 1 इकट्ठे मिलना,
समावय, संगम 2 युद्ध, लड़ाई, लक्ष्य, 3 अभि-
षङ्गाय ।

अभिषङ्गान्तः [अभि + तम् + षण् + षण्] सर्वत्र, रिक्ता,
संयोजन, लपक, मैदान—अनु० ५।६३ ।

अभिषङ्गुष (वि०) [आ० व०] समस्त होने वाला, सामने
अडा हुआ, सम्मान की दृष्टि से देखने वाला ।

अभिषङ्गः [अभि + त् + षण्] 1 अनुवाची, अनुचर 2 साथी ।

अभिषङ्गम् [अभि + त् + स्तुट्] 1 उपासनन, मुकाबला
करने के लिए जाना, 2 सम्मिलन, संकेतस्थान, नायक
या नायिका द्वारा मिलने का स्थान नियत करना—
स्वभिषङ्गमसेन बल्ल्मी पतति पदानि कियन्ति
बल्ल्मी—वी० ६ ।

अभिषङ्गः [अभि + त् + षण्] कृष्टि, रचना ।

अभिषङ्गनम् [अभि + त् + स्तुट्] 1 उपहार, दान 2
हत्या ।

अभिषङ्गम् [अभि + त् + स्तुट्] उपासनन, मुकाबला
करने के लिए तनु के निकट जाना ।

अभिषङ्ग (आ) स्वः—स्वम् [अभि + त् + षण् + षण्, स्तुट्
वा] मुलह, नमस्तीता, डाहक, नल्ल्मी ।

अभिषङ्गम् (अव्य०) [अव्य० स०] दुर्पास्त के सम्य, लघ्वा-
तमय—मिनोदवाहरेमितादमुष्कै—हि० १।१६ ।

अभिषङ्गः [अभि + त् + षण्] प्रिय से मिलने के लिए
जाना, (मिलन स्थान) नियत करना वा स्थिरकरना,
—रतिमुत्तारे गमनविहारे मदनमनोहरकेश्वरीत० ५,
२ बहु स्थान अहो नायक नायिका निवृत्त समय पर
मिलते हैं, संकेतस्थान,—स्वभिषङ्गमैति न कथमभिषङ्गम्-
नीत० १, 3 हृदय आक्रमण, —स्वोद्भिषङ्गः नुरस्य
न—रामा० सनः—स्वस्वम् मिलने के लिए उप-
युक्त स्थान, है० पवित्रारिका के बीच ।

अभिषङ्गिका [अभि + त् + षण् + टाप्] बहु स्त्री जो अपने
प्रिय से मिलने जाती है, वा उसके द्वारा नियत संकेत
का पालन करती है कु० १।४३, रघु० १६।१२,
—कान्ताभिषी तु वा यानि मङ्गेत साभिषङ्गिका—अमर०
सा० ४० निष्क्रान्ति ८ स्थान नायक नायिकाओं के
मिलने के लिए निर्धारित करता है (१) केत (२)
बाण (३) भग्न पंक्ति (४) हृत्ती का चर (५)
जपल (६) तीर्थ स्थान (७) समानाभिषि (८)
मरीचट, क्षेत्र बाटी गगनदेशालयो हृत्तीपुद्गलम्,
मालयं च स्वकाशं च महादीपं तटी तथा ।

अभिषङ्गि (वि०) [अभि + त् + षण्] मिलने, दर्शन
करने, आक्रमण करने, जाने वाला, जल्दी से बाहर
जाने वाला—युद्धाभिषङ्गिण—उत्तर० ५,—वी०
—वे० ऊपर अभिषङ्गिका ।

अभिषङ्गः [अभि + त् + षण्] आसक्ति, अनुराग
प्रेम इच्छा, व सर्वत्राभिषङ्ग—अमर० २।५७ ।

अभिषङ्गुरित (वि०) [अभि + स्तुट् + क्] पूर्ण रूप से
जैसा हुआ, पूर्ण विचरित (जैसे कि कूल) ।

अभिहित (वि०) [अभि + हन् + क्त] प्रहृत (बाळ) से
भी पीटा गया, बाहुत, घायल किया गया—बारा-
धिरास इवाभिहित सरोज - मासवि० ५, बमब० २,
2. जिस पर प्रहार किया गया है, अभिभूत, पराभूत,
डोक, काम, दुःख 3. बाधाय 4. (गण०)
नृषित ।

अभिहितः (स्त्री०) [अभि + हन् + क्त] 1 प्रहार करना
पीटना, घोट पहुँचाना 2 (गण०) मृगन, मणा ।

अभिहितम् [अभि + ह् + क्त] 1 निहट लाना बाहर
लाना—रघु० ११।६३ 2 मृत्ना ।

अभिह्वः [अभि + ह्वे + क्त] 1 आवाहन, आमन्त्रण 2
पूज्य रूप से यजाना 3 यज्ञ, बलिदान ।

अभिहार [अभि + ह + क्त] 1 ले जाना, लूट लेना
चुरा लेना 2 हमला आक्रमण 3 शस्त्रास्त्र से मुग
जित करना, गन्ध घहन करना ।

अभिहासः [अभि + हस् + क्त] 1 रिक्तगी मजाक, हँसा ।

अभिहित (भू० क० कृ०) [अभि + धा + क्त] 1 कहा
गया, बोझा गया, धापित किया गया 2 सबोधित
किया गया, पुकारा गया । मय०—अन्वयबाध,
—आदि (१०) नैयायिकों का एक विशेष प्रकार
का सिद्धान्त (या उस सिद्धान्त के अनुयायी) । इस
सिद्धान्त के अनुसार नैयायिकों का मान है कि जो
स्वतन्त्र रूप से अपना अर्थ रखता है, जो बातें सार
में प्रयुक्त होत पर एक सूक्ष्म विचार को अभिव्यक्त
करते हैं, दूसरे शब्दों से कह सकते हैं कि यह वाक्य न
शब्दों का तर्कमयन संबंध ही है जो वाक्य के अन्त
अर्थ को प्रकट करना है न कि शब्दों का केवल अपना
भाव । अतः वे तात्पर्यार्थ में विश्वास रखते हैं जो
कि वाक्यार्थ से भिन्न है—काव्य. २ ।

अभिहितः [ग्रा० म०] भी की आहुति देना ।

अभी (वि०) [न० व०] निर्मय, निरर, रघु० १।६३, १।१।८।

अभीक (वि०) [अभि + कृन् दोष] 1 प्रबल इच्छा रखन
वाला, बाहुर 2 कामुक विषयासक्त, विलासी—मद-
स्विनः सरसवोपमानभीकान्—वि० ५।६४, 3
निर्मय, निरर ।

अभीषय (वि०) [अभि + षय् + क्त, दोष] 1 दुष्टराश्या हुआ,
बार २ होने वाला 2 सतत, निरन्तर 3 अवाधिक,
—अभ्यु (अभ्य०) 1 बारबार, पुन पुन 2 लगा-
वार 3 अत्यंत, दुष्ट अभि० ।

अभीषयः = न० अभिषय ।

अभीषित (वि०) [अभि + षय् + क्त] बाधा हुआ
अभीष्ट—अभ्यु कामना, इच्छा ।

अभीषितम् (वि०) [अभि + षय् + क्त + क्त] 1 निरर, उवा
अभीषु } इच्छा, प्राप्त करने की इच्छा वाला ।

अभीष्ट [अभिषु की कृत् इच्छा या, अभि + ई + अच्]

1 अहीर, गोपाल, गहगिया 2 गाला, (दे० आबीर) ।
सम० कल्पी गालों का गाँव ।

अभीषायाः [अभि + षय् + क्त] कोमला दे० अभिषाय ।
अभीषुः - नृ० [अभि + षय् + क्त] अत इत्यम्—अभि
+ षय् + क्त वा 1 बाबहोर, लगाम—लेन हि मुख्य
नाममोक्ष—स० १, 2 प्रकाशिकरण—प्रयुक्ततापि-
भ्यस्तभैरभीषुषि शि० १।२२ मन् अयुष्मन्,
अयुत्तम 3 इच्छा 4 आसक्ति ।

अभीषुः न० अभिषय ।

अभीष्टः [अभि + षय् + क्त] 1 चाहा
हुआ इच्छा 2 प्रिय दृष्टाव्य, प्रियतम इष्ट प्रिय
तम इष्टा मृत्प्रभाभिनी प्रीतिहा लक्ष 1 अभीष्ट
पदार्थ 2 अनिष्ट 3 आश्रय अयस्य इष्ट दक्षिण
यात्रा चगनह भि० १०।६६ ।

अभ्युत्त (वि०) [न० न०] 1 जा सका हुआ या टडा मडा
न हा मोटा 2 अत्यंत गाम्भीर्य

अभ्युत्त (वि०) [न० न०] बाहुरीय नडा ।

अभ्युत्थिता [न० न०] जा उठी या उठना नडा उठना
उठा ।

अभ्युत्त [न० न०] बाधना या पैदा न हुआ हा ।

अभ्युत्त (वि०) [न० न०] मत्तगोन आ उठान हा अभि
समाय इवाभिव्यक्ति मिथ्या । मय० आह्वय
अभ्युत्त इवाभिव्यक्ति मिथ्या । मय० आह्वय
तद्वत्त वा पदार्थ विद्यमान न हो उभयता होना या
बनना या बहजना अभ्युत्तगोन अभि अह्वय काण
सपदाय न होत कृष्णकाराणि मि० १० परा
धोयुत्तकम् मय० रघु० २।३ पूव (वि०)
जा पहले न हुआ हो जिसमें भाग कोई न बढ़ा हो—
अभ्युत्त वा राश्या चितार्थागोम, बामब० १ वेषा०
३।२ प्रादुर्भाव जा पहले न हुआ हो उभय प्रकट
होना, अभ्युत्त (वि०) मय०गोन, जिसका कोई पद
न हो ।

अभ्युत्त (स्त्री०) [न० न०] 1 मत्ता हानता, अभिषय-
नता 2 निषेधनता ।

अभ्युत्त (स्त्री०) [न० न०] 1 अभि का न होना, अभि
की छाया अत का पदार्थ, 2 अनुपपन्न स्थान
या पदार्थ, अनुचित स्थान, अनुपपन्न स्थान
न० ७, म मन् मनीरवाभायमभिषयवैलक्षण्य-
मस्कार न० ५० आशाशी से बहुत अधिक आगे
बढ़ा था शि० १।६२ ।

अभ्युत्त, अभ्युत्त (वि०) [न० न०] 1 जिसका भावा न
दिया गया हा 2 जिसका सम्बन्ध प्राप्त न हो ।

अभ्युत्त (वि०) [न० व०] 1 अभिषय 2 समकल्प, कही
कः [न० न०] 1 अभिषय का अभिषय, समकल्पता या
समानता का होना, नद्वयकर्मभेदो य उभयानामभे-

अभ्यवर्णनम् [अभि + अव + कृष् + ल्युट्] निकालना,
सींचकर बाहर करना ।

अभ्यवकाशः [अभि + अव + काश् + घञ्] स्त्री जगह ।

अभ्यवकवः—कवम् [अभि + अव + क्त्वं + घञ्, ल्युट्
वा] 1 हट कर शत्रु का मुकाबला करना शत्रु पर
चढ़ाई करना 2 शत्रु को निराश करने के लिए प्रहार
करना 3 आघात ।

अभ्यवहारम् [अभि + अव + हृ + ल्युट्] 1 नीचे फेंक
देना 2 भोजन ग्रहण करना, गले के नीचे उतारना
(कष्टादधोनायनम् मित्ता०) ।

अभ्यवहारः [अभि + अव + हृ + घञ्] 1 भोजन ग्रहण
करना, आहार लेना खाना पीना आदि 2 आहार
—अभ्यवहारोऽभ्यवहारार्थवाची—काशी० सवादापेक्षी
—मालवि० ४ ।

अभ्यवहार्य (वि०) [अभि + अव + हृ + ण्यत्] जाने के
योग्य, भोग्य,—वैष् आहार, सर्वभौदग्न्यभ्यव-
हार्यमेव विषय—बिक्रम० ३ ।

अभ्यसनम् [अभि + अस् + ल्युट्] 1 बार-बार करना
बार-बार किया गया अभ्यास 2 निरन्तर अध्ययन
अनुशीलन (ताम्) विद्याभ्यसनेनेव प्रसादयिनुमहमि-
रचु० १८८ ।

अभ्यसक (वि०) [स्त्री—यिका] [अभि + अस् + कृत्]
ईर्ष्या, डाहभरा, निन्दक कुलक लगाने वाला
—मात्रात्मपरदेहेयु प्रहियनोऽभ्यसक—भग० १६१८ ।

अभ्यसूया [अभि + अनु + यक् + अ + टाप्] डाह, ईर्ष्या,
द्वेष, क्रोध,—शकाभ्यसूयाविनिवृत्तये य—रचु० १७४
क्येषु वेदेषु च साम्यसूया—उ० १९४ ।

अभ्यस्त (पु० क० कृ०) [अभि + अस् + क्त] 1 बार
बार बौधुराया गया, बार-बार अभ्यास किया गया
—नयनयोरभ्यस्तमायीलनम्—अथर्व० १२, प्रयोग में
लाया गया, आदल डाली हुई—अवधमन्तरवचर्पा—
उत्तर० ५, 2 लीला हुआ पड़ा हुआ—लौघवेऽभ्यस्त-
विद्याना—रचु० १८ अर्जु० ३८९ 3 (गण०) गुणा
किया गया 4 (ध्या० में) दित्व किया गया ।

अभ्यस्तकः [अभि + आ + कृष् + घञ्] हाथ में छानी डोक
कर ललकाना (जैसे पहलवान कुली के लिए) ।

अभ्यस्तकालितम् [अभि + आ + काल् + क्त] 1 मिथ्या
आरोप, निराधार गिनायन 2 झूठा ।

अभ्यस्त्यागम् [अभि + आ + ध्या + ल्युट्] मिथ्या आरोप,
झूठन निन्दा बदनमो ।

अभ्यस्तत (पु० क० कृ०) [अभि + आ + गम् + क्त] 1
निकट आया हुआ, पहुँचा हुआ 2 अतिथि के रूप में
आया हुआ,—सर्वेभ्यामागतो गृहं हि० ११००—न
अतिथि, दर्शक ।

अभ्यस्तनः [अभि + आ + गम् + घञ्] 1 निकट आना या

जाना, पहुँच, दर्शनार्थ गमन—तपोचनाभ्यासमस्तथा
मुद—शि० ११२३, कि वा मदभ्यागमकारण ते—रचु०
१६८, महावी० २१२२, 2 मासीप्य, पडोस, 3 मुका-
बला, हमला 4 युद्ध, सशाम 5 शत्रुता, विरोध ।

अभ्यागमनम् [अभि + आ + गम् + ल्युट्] उपागमन, पहुँच,
दर्शनार्थ गमन, हेतु तदभ्यागमने परीक्ष्य कि० ३१४ ।

अभ्यागारिक [अभि + आगार + क्त] परिवार के गालन
में यत्नशील ।

अभ्याघातः [अभि + आ + हृ + घञ्] हमला आक्रमण ।

अभ्याघानम् [अभि + आ + हा + ल्युट्] आक्रम प्रारम्भ,
भूतपान करना ।

अभ्याधानम् [अभि + आ + धा + ल्युट्] रखना, डालना
(जैसा कि ईषन) ।

अभ्याप्त (वि०) [अभि + प्रा + अप् + क्त] बीमार रहण,
रागी ।

अभ्यापान [अभि + आ + पान् + घञ्] सकट दुर्भाग्य ।

अभ्याधत्—मर्दनम् [अभि + आ + मृद् + घञ्, ल्युट् वा]
युद्ध सशाम सत्तर्ष, आक्रमण ।

अभ्यानेह—रोहणम् [अभि + आ + हृ + घञ्, ल्युट् वा]
बढ़ना सवार होना उपर तक जाना ।

अभ्यावृत्ति (स्त्री०) [अ. आ + वृत् + क्तिन्] दोह-
राना बार-बार होना १० अन्त्यावृत्ति यी ।

अभ्याश (वि०) [अभि + प्रश् + घञ्] निकट समीप
—स 1 पहुँचना व्याप्त होना 2 मनोरथ पडोस आस
पास का (दे० 'अभ्यास'),—आपसाम्याशो समुर्बिष्ट
—पञ्च० २, सहसाम्यागता श्रीमभ्याशपरिवर्तिनीम्-
महा०, दश० १२ 3 परिणाम काल 4 अभ्युदय
प्रत्याशास अत शीघ्रता के अर्थ में प्रायः प्रयुक्त ।

अभ्यास [अभि + आ + अस् + घञ्] आवृत्ति—व्या-
क्यता व्याकरण। इति पठाभ्यासोऽभ्यासपरिस्मयि
द्योतयति—शारी० नाभ्यासकमयीअने-पञ्च ११५१
2 बार-बार किसी कार्य को करना, लगातार किसी
कार्य में लगे रहना,—अभिरतश्चमाभ्यासान्—का० ३०,
अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते—भग० १३५,
४४ अनवरत अभ्यास के द्वारा, (पवित्र और अधिकृत
हृदा) १०१२ 'निगृहीतेन मनसा—रचु० १०१२३
इवी प्रकार शर, 'अभ्य' आदि 3 आदत, प्रथा बलन
अभ्युत्थानागर्भम-भू० ५१६५, या० ३१५, 4
गन्धाश्च विषयक अनजान, कबायद सैनिक कबायद
5 पाठ करना अध्ययन कक्षा काश्चर शिक्षाभ्यास
काव्य० १६ आगाम क६, मासीप्य, पडोस (अभ्याश
केलान) नृपार्णग्यासांने (गे) प्रची परम्परात्मको
—कु० ६० ('अभ्यासे-लो' लोको का गदा अर्थ यथु
को संबोधित करना है जो कि उसके निकट है—अथान्
अपने आपकी पूर्ण रूप से उसके सामने प्रकट करके ।

यहाँ 'गायत्री' की 'उपमा' पूर्णतः सुरक्षित है—अर्थात् स्वयं रूप रहते हुए अपनी मूर्ती का सजीवित करने के बहाने अपने प्रियतम से बात करना। अर्थात् नवा म्यासे सीता पुष्पव्रता कथं उत्तर ० ७।१७ आदिके सीपी हुई, अर्थात् (आ) बागल—मिट्टी ० (अ) सभास के रूप में ७ (आ) में द्वित्व होना ८ द्वित्व हुए मूलशब्द का प्रथम अक्षर, द्वित्व सक्षर ९ (गण में) गुणा १० सम्मिलित मान, गीत को एक। नमः—गत (वि०) उपागत निकट गया हुआ—योग अनवरत रहने क्षित से उत्पन्न मानाया—अर्थात् योगेन ततो मायिच्छात् जनय—आग १—सोप द्वित्व बिधे हुए अक्षर का रत्न देना अर्थात् द्वित्व अक्षर से उत्पन्न अन्तराल।

अभ्यासाक्षरम् [अभि + आ + सृ + लिख + ल्यट] १ गुण का सामान्य करना या उस पर हमला करना

अभ्याह्वयम् [अभि + आ + ह्व + ल्यट] १ प्रहार करना और पहुँचाना हत्या करना २ एक प्रकार का वेष डालना।

अभ्याहारः [अभि + आ + ह + ल्यट] १ 'अह' लाना २ खाना ३ लाना।

अभ्याखनम् [अभि + उख + ल्यट] १ (अ) छिड़काव करना—प्राप्त अभ्याखन पराजयम् (समाप्त) रघु-१६।१७ २ अभिषेक द्वारा भ्रमण करना।

अभ्युचित [वि०] [प्र० म०] प्रकाशित गया है अर्थात् अभ्युच्यम् [अभि + उ + चि + ल्यट] १ बौद्ध आगम २ सम्प्रदाय।

अभ्युत्थोद्यमम् [अभि + उत् + कृ + ल्यट] ऊँचे स्तर पर चालना।

अभ्युद्यमानम् [अभि + उद्य + ल्यट] १ (अ) अथ ७ मन्त्र में। सकाराद्य 'अना' क्रिया के सम्प्रदान में लङ् १ २ खाना होना ५ अक्षर १ रत्न का होना ३ उठना (शा० शास्त्र०) उग्रवि मन्त्रायाम् अग्रोद्य (अ) नवाभ्युद्यमानर्थात् नन्द मन्त्राया प्रजा—रघु० ६। यथा यथा हि प्रमेयस्य शान्तिर्न भवति भवति अर्थात् नन्द वरमस्य भवतिमान् सुखाद्यस्य भवति ६। ३।

अभ्युत्थतन्त्रम् [अभि + उत् + पृ + ल्यट] क्रिया पर उद्यत करना, अकस्मात् संप्रदान होना करना अर्थात् अभ्युत्थतानो मुपेक्ष—रघु० ७।२३।

अभ्युत्थम् [अभि + उत् + ह + ल्यट] १ मूल बन्दायिका निकलना, मूलोद्य २ उन्मत्त अवस्था लोभ म ऊँचा उठना सजलता—स्वर्गानि न स्वाधिनमभ्युदया—रघु० १ अथो हि लोकाभ्युदयाय तावुशास—रघु० ३। १४ ३ लम्ब उद्यम का अवसर ४ उद्यम आरम्भ।

अभ्युत्थारम्भम् [अभि + उत् + आ + ह + ल्यट] विपरीत।

आन के द्वारा उदाहरण या निर्देशन देना।

अभ्युत्थित [१० ४० ६०] [अभि + उत् + ह + ल्यट] १ निकला हुआ २ उद्यम मूलोद्य के अवसर पर माया हुआ। अभ्युत्थगण गणम् [अभि + उत् + गण + ल्यट] अभ्युत्थानि (स्त्री०) [किन्तु वा] १ किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति या अभिषेक के सम्मानार्थ उठकर चलना २ निकलना होना उद्यम होना।

अभ्युत्थन [१० ४० ६०] [अभि + उत् + यम् + ल्यट] १ उठा हुआ ऊपर उठाया हुआ ऐसा कि आधुनिक, उत्पन्न २ उत्पन्न नैयार प्रत्यक्षी ३ अनुव्रत मन्त्र ० अर्थात् ४ अथवा यमन म] ३ आन गया हुआ 'नवा' हुआ मान। अर्थात् देन वाला निकट आने का अर्थ अभ्युत्थन पर अवसरम् रघु० ८१। ४ अर्थात् देना हुआ या लाया हुआ।

अभ्युत्थन [वि०] अभि उद्यत नम क] १ उठा हुआ उद्यत देना हुआ २ उद्यम का उभरा हुआ अर्थ देना हुआ १० १० १०।

अभ्युत्थन [स्त्री०] अभि उत् नम—किन्तु बड़ी उद्यत नम नमि।

अभ्युत्थन [वि०] अभि उत् नम क] १ उठा हुआ उद्यत देना हुआ २ उद्यम का उभरा हुआ अर्थ देना हुआ १० १० १०।

अभ्युत्थन [स्त्री०] अभि उत् नम—किन्तु बड़ी उद्यत नम नमि।

अभ्युत्थन [स्त्री०] अभि उत् नम—किन्तु बड़ी उद्यत नम नमि।

अभ्युत्थन [स्त्री०] अभि उत् नम—किन्तु बड़ी उद्यत नम नमि।

अभ्युत्थन [स्त्री०] अभि उत् नम—किन्तु बड़ी उद्यत नम नमि।

अभ्युत्थन [स्त्री०] अभि उत् नम—किन्तु बड़ी उद्यत नम नमि।

अभ्युत्थन [स्त्री०] अभि उत् नम—किन्तु बड़ी उद्यत नम नमि।

अमनाक् (अम्व०) [न० त०] घोडा नहीं, बहुत, अत्यधिक ।

अमनुष्य (वि०) [न० ब०] 1 अमानुषिक, जो मनुष्य के तन हो 2 जहाँ मनुष्य का जाना जाना बहुत कम हो, -अव्य. [न० त०] 1 जो मनुष्य न हो 2 राक्षस ।

अमरक-त्रक (वि०) [न० ब० कृ०] 1 वैदिक मन्त्रों में रचित, बहु संस्कार जिसमें वेदमन्त्रों के पाठ की आवश्यकता न हो 2 जिसे वेद के पढ़ने का अधिकार न हो जैसे छात्र या स्त्री 3 जो वेदपाठ में अभिज्ञ हो, अक्षतानममन्त्राणाम्—मनु० १०।११४, 4 रोग की बहु चिकित्सा जिसमें आयुष्मन् की क्रिया न की जाती हो—अनया कथमन्यथावर्जिता न हि शीवन्ति जना मनामन्त्राणि—आमि० १।१११ ।

अमरक (वि०) [न० त०] 1 जो मृत या मृत न हो, फुल्लित, अक्षय्य 2 तज प्रबल, पक्कड़ (वत्) आदि 3 अमर्य, अति, अधिक बहुत तोड़ अमर्य मयहृत्त—उत्तर० ५।५ अमर्यमल्लिन्द्रे भावत-माधुरीमन्थिर आमि० ४।१ ।

अमरक (वि०) [न० ब०] बिना अक्षर के, स्वार्थ या साक्षात्क आशक्ति से मुख्य सम्यग्रहित,—आश्विन ममकवैव बृहमूलनिवेतन—मनु० १।२६ ।

अमरकान्त-अम्व [न० त०] उदासीनता, स्वार्थराहित्य ।

अमर (वि०) [न० न० मू० पञ्चाक्षर] जो कभी मरु, जो प्राण न हो न मरने वाला, अविनाशी—अज्ञा-मायमात्रो पिद्यामर्षे च सायवेत् हि०, पञ्च० 3 मनु० २।१४८, १।१ देव, देवता 2 पारा 3 मोना 4 मेलीम की मर्यादा (वर्षाक मिनती में हलने ही देवता है) 5 अमरसिंह 6 हृदिहयो वा डेर—रा 1. इन्द्र का आवासस्थान (न० अमरावती) 2 माल 3 योगि 4 महत्तम, ही 1 देवपत्नी देवकन्या 2 इन्द्र की राजधानी । तम० अङ्गना, एमी दिव्य अमरा, देवकन्या—मुवाण रत्नाणि ह्रामाङ्गना -वि० १।५१, अग्निः देवपर्वत अर्थात् मुखे पहाड़ -अभिष, -इन्द्र, -ईश, -ईश्वर, -वसिष्ठ, -भरु, -रक्षः देवताओं का स्वामी, इन्द्र की उपाधि, कई बार विष्णु और शिव की उपाधि—आचार्यः, -वृक्षः, -वृक्षः देवताओं के मुख, बृहस्पति की उपाधि, -आचम, -रुद्रिणी, -अरिष्ट (स्त्री) स्वर्गीय नदी, गंगा की उपाधि, -तटिनीरोचमि वयम्—मनु० १।१२३, -आलयः देवताओं का आवासस्थान, स्वर्ग, -अक्षय्य विजयवर्तकेकी के उत पाव का भाव जो तर्जवा नदी के उद्भव स्थान के निकट है -कीकः, -कीकः अमरसिंह द्वारा रचित संस्कृत भाषा का एक सुप्रसिद्ध कोश -लक्षः, -लक्षः 1. दिव्य वृक्ष, इन्द्र के स्वर्ग का एक वृक्ष, -अमरसि-

कुसुमसीरमसेवनसुपुष्पकलामस्य—आमि० १।२८ 2—देव दाह 3 कल्पवृक्ष, -हिमः देवल बाह्य जो मरिच या मूत्र सबकी कार्य करना हो, मन्थिर का अपीक्षक—पुरुष, देवताओं का आवा-सस्थान, दिव्य स्वर्ग, -वृक्षः, -वृक्षः कल्पवृक्ष—प्रक्य, -प्रक्य (वि०) देवताओं जैसा, -रत्नस्फटिक, -लोकः देवताओं की दुनिया, स्वर्ग, ता स्वर्गीय मुख, -तेषु सम्भवतस्ताना गच्छयमानोका-नाम्—मनु० १।५, -विह अमरकोश के रचयिता का नाम, बहु जैन धर्मग्रन्थों में, कहा जाता है कि विक्रमादित्य महाराज के अन्तर्गत में एक रत्न थे ।

अमरता-अम्व [अमर + तन्, तल बा] देवत्व ।

अमरतावती [अमर + मनुष्य दीर्घ] देवताओं का आवासस्थान, इन्द्र का घर—अमरनेन्दुनपातताताता निमीलिता-लोक भिवाङ्गनामी । मनु० ।

अमर्य (वि०) [न० त०] जो परमार्थ में न हो, दिव्य अविनाशी "मावेष्टेय रघु० ७।५३, मुखम—अमर, 'ना अविनदरता, स्पे देवता, । मम०—आचम देवताओं गंगा की उपाधि—विक्रमा० १।११४ ।

अमर्य (न०) [न० त०] शरीर का वह अंग जो मर-त्यक्त न हो । मम०—वैदिक मर्यम्बल को न हीयन वाला मुटु, कोमल ।

अमर्य (वि०) [न० ब०] 1 उचित सीमाओं को पार करने वाला, सीमा को उल्लंघन करने वाला, अनादर करने वाला, अनुचित—मर्यादायाममर्यादा स्थितित-दन्ति सर्वदा—पञ्च० १।५२, तादृश स्वयमर्षि कई कल्पकीर्ति—रामा० 2 सीमाहीन, असीम—हा [न० त०] उचित सीमा का उल्लंघन करना, आचरणहीनता, अप्रतिष्ठा, उचित सम्मान की अवहेलना ।

अमर्य (वि०) [न० ब०] अमरुणशील, -कः [न० त०] 1 अमरुणशील, अमरुणशीलता, वैदिकयुग, -अमर्य-युगो ननस्य अमृता न जातार्थन न विधिवावर—कि० १।३३, ईश्वर, ईश्वर्युक्त कोष,—किं वनस्तत्ता-प्रतापोन्मर्षेऽप्यमर्य—उत्तर० ५, हा० हा० १३ व्यभिचारी आवा में से एक—अमर्य १० हा० १०; रत्न० निम्नपरिभाषा बताता है—परवृत्ताक्षानादि-नामापराधमयो मीमांसकानाम् विचारकभूतविषय-वृत्तिविशेष 2 कोष, आवेष्ट, कोष,—पुत्रवधाय-वृत्तिविशेष गांधीविद्या—देवी० २, आकर्ष कृत्, कुपित, आकर्ष कोषपूर्वक 3 तीव्रता, प्रचण्डता । तम०—अ (वि०) कोष या अक्षय्यशीलता से उपपन्न, -लक्षः कोषपूर्व ही, शिखरी उदात्ता ।

अमर्य, -वैद्य, } (वि०) [न० ब०, न० त०] वैदिक, अमर्य, -वैद्य } अक्षय्यशील, अक्षय कर देने वाला—पञ्च०

१।३२९, २. कृष्ण, कृषित, प्रपञ्च स्वभाव का—हृदि
 कसो मोक्षमिदं प्रपञ्च—२५०. ३।५३—अभिन्वय-
 कावर्तिता: पाण्डुपुत्री:—वेणी० ४, ३. प्रपञ्च, दुः-
 संकल्प ।

ज्वलन (वि०) [न० व०] १. भस्करहित, मलयुक्त, पवित्र, निष्कलंक, विषय,—अमलाः सुदूरः—पृ० २१७१, विष्णु, निष्कपट २. श्वेत उज्ज्वल,—कन्याविक्रमामर-
 वन्धनम्—कु० ७१२३, रघु० ६१८०,—सा १. लक्ष्मी
 देवी २. माल ३. आँवले का बुल, सन् १. पवित्रा २.
 भस्वर ३. परब्रह्म। सम०—वर्तमान् [पु०—त्री]
 ज्वली हुँस,—रत्नम्,—वर्षिः स्फटिक पत्थर ।

मन्त्रालिन (वि०) [न० त०] स्वच्छ, वेदाय, पवित्र,
(नैतिक रूप से भी) —कुलमन्त्रालिन मन्त्रेबाय जनी न
च जीवितम् —मा० २१२, १

अवस्था: [अव + अस् + च्] 1 रोग 2 मूर्च्छता 3 मूर्ख 4 समय ।

जन्मा (वि०) [न० त०] अवशिष्ट—(अर्थ०) १. से, निकट, पास २. के साथ, से मिलकर, जैसा कि जन्माय जन्मास्थ (स्त्री) नूतन चन्द्रमा का दिन, नव और चन्द्र के संयोग का दिन, —जन्माया तु सद्य सोम ओषधी प्रतिपद्यते—अगम २ चन्द्रमा की सोमरही (शुक्र, पु०)—आत्मा । सम०—अन्तः नूतन चन्द्रमा क दिन की समाप्ति, —यद्वा (नपु०) जन्मा का पवित्र कार, नूतन चन्द्रमा का दिवस ।

समय (वि०) [न० व०] 1. बिना मास का रास रहित,
2 बुझा पतला, बर्हि-न-सम् [न० व०] जो
मास न हो, मास को स्मृ कर और कोई वस्तु।
सम्—औद्यिक (वि०) [स्त्री० वीं] मासयुक्त वने
हए बाबलो से सवय न रखने वाला।

अभावः [अभा + लृट्] राजा का सावर या अनुयायी
३.११. अभाव्यपुत्रं सवर्णाभिरुचय १०.१२८।

अनाथ (वि०) [१० व०] १ लोपागच्छे, अर्थात्
अपूर्णा, अक्षय्यस्त ३ जो अर्थात्तक न हो, - अ
पक्षः, ।

अथवा [२०] अथवा, अथवा, अथवा ।

ब्रह्मसूत्रम् [अ० ३०] पीठा ।

अ.प्र.वि. (वि०) [नं० ५६ । विनय, विनीत ।

अभिलेख (वि०) [स्त्री० - वी] [१०१०] अभिलेखी
अभिलेख से संबंधित व अभिलेखी, अभिलेखी अभिलेख,
अभिलेखी, — अभिलेखी अभिलेखी अभिलेखी — १०१०
१३३।

अथानुसूच (वि०) [पृ० ११] कथं प्रयोजित, कथं लिखित आदि :
अथानुसूच (वि०) की = अथानुसूच २१ अथानुसूच २१ ।

कलकत्ता (वि०) [२० व०] १. मधुसूतः, पारसी, गद्यशास्त्र, वि. भाग ३. २. श्री गंगा, ३. श्री गंगा, ४. श्री गंगा.

शून्यता, ईमानदारी, निष्कपटता 2. (वेदा० में) ब्रह्म का अभाव, परमात्मा का ज्ञान - व्युत्पत्ति ।

अभाषिक,—भाषिन् (वि०) [न० त०] मोक्षारक्षिन्,
निष्कल, ईमानदार ।

अमावास्या, -वास्या { अमा + वस् + पत्, ध्यन् वा; अमा
अमावसी, -वासी { वस् + क्प्, क्त्वा } मूलन
(अमावसी, -वासी) चन्द्रमा का दिन यह समय जब कि
सूर्य और चन्द्रमा दोनों समुपस्त रहते हैं, अत्यन्त आन्ध
राय के कुछ पल का पन्द्रहवाँ दिन - सूर्यास्तचन्द्रो
प पर सन्निकर्ष साप्ताहिक - गोपल ० ।

अमित (वि०) [न० न०] १ जो माया न गया हो, असीम, सीमार्हान, विशाल—मित ददानि हि पित्र मित भ्राता मित सुतः अमितस्य हि दातार पतार का न पूजयेत्—रामा० २ उपेक्षित, अनादृत्य ३ अज्ञान ४ अतस्कृत । सम०—अजर (वि०) यथात्मक, आत्म (वि०) अविकासित्वम्, असीम प्रभाव्युक्त, ओष्ण (वि०) असीम तेजोयुक्त, अर्धल शक्तिराम्य, सर्वोत्तमोत्तमान् तेजस्—दुर्गति (वि०) असीम तेज या दानियुक्त -जिह्वः १ असीम बल शाली, २ विष्णु ।

अमिश्र. [अम् + श्र] ओ मिश्र न हो, सम्मिश्रित। बैरी,
पट्टिहारी, शिपली, आदि। अमिश्र मिश्र न सहजप्रकृत्या,
वर्ण--वि० २।३९, तस्य मिश्राव्यमिश्रान्ते--२०९
प्रकृत्यामिश्रा हि सत्तामयवत् वि० १५।२९। सख०
--बाह्य, बाह्यम्, ज्व, -हृत् सखयो को मारने
वाला, - क्ति। [वि०] ग्रान्ते शत्रुओं को जीतने वाला,
अमिश्रविजिन्नाश्रवादायग्य न यत्त-वि० १।२३।

अभिष्या (त्रि० वि०) [न० १०] ओ अभिष्या न हो,
मध्यम तावत्तुल्ये प्रियगन्धोपध्या - गृध्र० १४।६।

अभिज्ञान (नि०) [लम् + ज्ञानि] कीर्मा, योगी ।
 बर्हिषत्तम [बृ + षत्] । सासात्तम शुभ्र है उदाहर दिक्तास
 की सामग्री 2 इमाजिवादी, निरञ्जना, निष्कपटता
 3 मांस ।

मभीजा । जम् + क्न् ईडागम] 1 कष्ट, बीमारी, रोग 2 दुःख, शोक —कम् कष्ट, दुःख, पीडा, शोक ।

हायक (नि० वि०) [अवत-देवक उवमये-गा००।
 को० गविन दा पदाथ, फला २, एता-दोसा (जब अविन
 को गम न थातो० अत न किया जाय), भत मेष्टक-
 वन दवदो० गी अविन-व-का० ७३८९, ८७, उदय-
 वन केगा० गी अविन-व-का०, वि० ७३८९ अविन-
 व-का०, अविन-८८१।

अनुकूल (१०) । न० १० । ३. जिससे, वृद्ध लीने न गये
हैं, जो पात्र में स्वतंत्र लीने २ सम्भवता के समक से
जिसे अनुकूल न मिलता हो, जिसे प्रोत्तर लीने न हुआ
है, - समक १८ इन्डिया (बाक था सम्भवता बाक)
जो लीने प्रकृत जाता है, केका लीने जाता है। सम०

—हस्त (वि०) मितव्ययी, कज्ज (कचयना के लिए) ।
अस्पृश्ययी, परिमितव्ययी, —सदा प्रवृत्तया माध्य व्यये
चामुकहस्ताया —मनु० ५।१।१० ।

अमुक्तिः (स्त्री०) [न० त०] 1 स्वान्धशून्यता 2
स्वतंत्रता या मोक्ष का भाव ।

अमुन (अभ्य०) [अदस् + नन् + उन्व मत्व] 1 बहा स
बहा 2 उस स्थान से ऊपर स अर्थात् परलोक म या
स्वर्ग स 3 इस पर ऐसा होन पर अब स आग ।

अमुन (अभ्य०) [अदस् + नन् + उन्व मत्व] (विप० इह) 1
बहा, उस स्थान पर, बहा पर अमुनामन चरना
दस० १२७ 2 बहा (जो कुछ पहन हा बका है
या कहा गया है) उस अवस्था न 3 बहा ऊपर ७
लाव म, आगमो जन्व मे—यावज्जीव च तन्मुपचन
मृच मुच वसेत् 4 बहा अनेनेवायका सब नगरऽमुच
भजिता कथा० ।

अमुन (अभ्य०) [अदस् + नन् + उन्व मत्व] इस प्रकार
इस रीति य ।

अमुच्य (अदस सब०) एते का (बहुल मयाम म) । मम०
कुल [प्रलुक् स०] (वि०) गमे कुल मे नरय
रचने वाला (कम्) प्रमिद घराता —मुच, मुचो
ऐसे प्रमिद कुल का पुत्र या पुत्री २० अमुच्ययण
अमुच्य, अ, अ (वि०) [स्त्री० स्त्री की] अदम
+ दृक् + विभन्, कच्, कस वा स्ति या डीप्] गमा
इस प्रकार का इस रूप या इन का ।

अमूर्त (वि०) [न० त०] आकारहीन, अशरीर शरीर
रहित (विप० —मूर्त-मूर्तत्वम् अवच्छिन्नपरिमाणव
स्त्वम् सूक्ता०) —तै शिब । सम० गुण (वैशे० म)
बर्मे, अथमे जैसे मुक्तो को अमूर्त या अशरीर समझा
जाता है ।

अमूर्ति (वि०) [न० व०] आकार हीन स्वरूपत्व ति
विष्णु, —ति (स्त्री०) [न० त०] रूप या आकार का
न होना ।

अमूल—रूप (वि०) [न० व०] 1 निर्मल (ग०)
(आल०) बिना किसी आधार के निराधार आधार
रहित 2 बिना किसी प्रमाण के जो मूल मे न ह
—आमूल लिख्यते किञ्चित्—मल्लि० 3 बिना किसी
भौतिक कारण के जैसा कि साम्प्र का प्रमाण ।

अमूल्य (वि०) [न० व०] अनमोल बहुमूल्य ।

अमुनात्मन् [साधुमे न० त०] एक मुमुक्षुता बास की बह
(बास या उत्तरी) जिस के परदे या टट्टिया बनने है ।

अमुत (वि०) [न० त०] 1 जो मग न रो 2 अमर 1
अविनाशी अनश्वर —अ 1 देव, अमर देवता 2 देव
के वैद्य धन्वन्तरि, —सा 1 मादक शराब 2 नाना
प्रकार के पीयो के नाम —तन् 1 (क) अमरता
(क) परममुक्ति, मोक्ष —मनु० १०।१०४, स श्रिये

चामुताव च—अमर०, 2 देवो का चामुहिक करीर
3 अमरता की सुनिवा, स्वर्गलोक 4 सुवा, पीवृष,
अमृत (विप० विष) जो समुद्र मथन के फल स्वरूप
प्राप्त समझा जाता है—देवामुत्तरमृतमम्पुनिर्धिमन्वे
—कि० ५।३०, विषादप्यमृत पाद्यम्—मनु० २।२३९
विषमप्यमृत कश्चिदुत्तममृत वा विषपीडितेभ्यः—
रघु० ८।६६ (प्राय वाक् बचनम् वाणी आदि शब्दों
के साथ प्रयुक्त होता है) कुमारजन्मामृतसंभितालरम्—
रघु० ३।१५ 5 सोमरम 6 विष नाशक औषध 7
यज्ञशय मनु० ३।२८८ 8 अयाचितभिक्षा (दान)
बिना माग दान मित्रता— मय स्थाप्यचित मैक्ष्यममृत
मार्गदायिनस—मनु० ६।९ 9 बल—अमृतास्मा
अमृत—उत्तर० ६।५ १० भाजन के पूव या अन्त
म आनमन करन द्वाग बाहुणा के द्वारा पडे जानबाल
मय (अमृतोपस्तरणमर्मन स्वाहा अमृताभिधानमस्ति
स्वाहा), 10 औषधि 11 वा अमृ नाम दम्पत्यो मय
त्रिहृणु मृत्ति—शि० २।१०३ 12 दूध 13 आहार
14 उबल हुआ दालन मान 15 मिष्ट पदार्थ कोई
भी मधुर वस्तु 16 सावा 17 पारा 18 विष 19 परब्रह्म ।
नम०—अमृ, —कर, —दोषिनि क्षति, —रविच चन्द्रमा
व विषावज अमृतदोषान्तर्य विदमर्मे—नै० ३।१०४
—अमृत—अशान, —आशिन (पु०) वह जिसका मोहन
अमृत है देवता अमर—आहार पदार्थ जिसने एक
बार अमृत भुराया व—उन्वन्ना—मकयी (अमृ),
—उत्तम एक प्रकार का मुर्मा,—मुचम् वह वर्तन
जिसमे अमृत रक्खा हो, आरम्भ नीतादर,—वर्ष
(रि०) अमृत या जल० रा हुआ अमृतमय (—के)
1 आया 2 परमात्मा नराणिषी ज्योत्स्ना, चादनी
—इव (वि०) चन्द्रकिरण जो अमृत छिडकनी है
(—व) अमृत प्रवाह—बारा 1 एक छन्द का नाम
2 अमृत का प्रवाह—व, 1 अमृत पान करने वाला
देव या देवता 2 विष्णु 3 शराब पीन वाला—धुवधम्
नयनामर—छवासावचरमम् मयपनवाज्जहाने—शि०
३।२० (गहा ज का अमृत पीनवाला भी अर्थ है)
कला अग्रा का गुच्छा अग्रा की बेल दाल,
दशा—अमृ 1 देव दशा 2 घोडा चन्द्रमा,—मुच
(पु०) अमर देव देवता जो यज्ञोप का स्वाद लेता
है—भू (वि०) अमरमय मे मरु —वचनम् अमृत
प्राप्त करने के लिए समुद्र का मथन—रस 1 अमृत,
पीवृष—काव्यामरमरमरमर—१० विविधकाव्या
रसान पिबाम—अनु० ३।१० 2 परब्रह्म—सत्ता,
—लुक्ति का अमर इन बाली वन—वाक् अमृत जैसे
मधुर वचन बोलन वाला—सार (वि०) अमृतमय
(—रु) की सू—क्षति 1 चन्द्रमा (अमृत चुबाने वाला)
2 देवताओं की माना—सोबर अमृत का भाई, उर्वर

बन्धन" शब्दक घोडा.—बन्धन अमृत का प्रवाह.—अमृत
(वि०) अमृत बहाने वाला—कृ० १।४५।

अमृतकम् [अमृत+कम्] अमृत अमरतन्त्र प्रदायक रस।
अमृतता—स्वप्न [अमृत+तल्, त्वल् वा] अमरतन्त्र, अमरता।
अमृतोत्थम् [अमृत+उत्] विष्णु (क्षीर सागर में सोने
वाला)।

अमृता (अव्य०) [न० त०] झूठपने से नहीं सचमुच।
अमृच्छ (वि०) [न० न०] न भयला हुआ न रगड़ा
हुआ। सम० मृज (वि०) अलग्ग पवित्रता
वाला।

अमोहक (वि०) [न० व० रूप व] जिसमें चर्बी न हो
दुबला-पतला।

अमोक्ष (वि०) [न० व०] नुद्धिहीन मुक्त जड़।

अमेध्य (वि०) [न० न०] 1 जो यज्ञ के योग्य या
अनुमत न हो 2 यज्ञ के अयोग्य नामेध्य प्रक्षिपदन्तो
मनु० ४।५३ ५६ ५।१ १३२ 3 अपवित्र मल
युक्त, मैला गदा अम्बच्छ भग० १७।१०, भर्तृ०
३।१०६ ध्वम् 1 विष्ट लोद समुत्सृजेद्भ्रामागे
वत्सर्वमेध्यमनापदि मनु० १।२८२, १।२२६ 2
अपशकुन अशुभशकुन—अमेध्य दृष्ट्या सुवेमुपतिष्ठन्
—काया०। सम० कुम्पासिन (वि०) मुदा
जाने वाला—युक्त, —स्मित (वि०) मलयक्त
मैला, पलिन गदा।

अमेध (वि०) [न० त०] 1 अपरिमय सोमार्गहन
अमेयो वितलाकरत्वम् रघु० १०।१८ 2 अग्रय।
सम० आत्मन अपरिमय आत्मा को धारण करने
वाला, महात्मा, महापना (पु०) विष्णु।

अमोघ (वि०) [न० त०] 1 अचूक ठीक निशाने पर लगन
वाला—अनुष्यमोघ समक्षत बाणम् कृ० १०६
रघु० ३।५३ ११।९७ कामिलस्येदमादे मेष०
७३, 2 निर्भान्त अचूक (शब्द, वरदान आदि)
—अमावा प्रतिगुह्यतावध्यानुपदमादि—रघु० १।१०
3 अव्यर्थ सफल उपजाऊ—यदमाधमपामनार्थ
वीजमय त्वया—कृ० १।१ इसी प्रकार अग्रय
शक्ति वीर्य काष्ठ आदि, ध 1 चलक 2
विष्णु। सम०—वृष्ट दृढ देने में अर्थ शिव
—वृष्टि (वि०) निर्भान्त मन वाला अनक
नजर वाला बल (वि०) अट्ट शक्ति सम्पन्न
—वाक् (स्त्री०) वाणी का व्यर्थ न त्राय शणो जा
अवश्य पूरी हो (वि०) जिसके शब्द कभी व्यर्थ न
हो—वृष्टि (वि०) जा कभी निराशा न हो
—विक्रम अट्ट शक्तिशाली शिव।

अम्ब (स्वा० वर०) 1 जाना 2 (आ०) शब्द करना।

अम्बः [अम्ब+घञ् अम्ब वा] पिता, बम् 1 आम्ब,
2 अम्ब, —अ (अव्य०) स्वीकृत बोधक हो बहुत

अम्बः अव्यय।

अम्बकम् [अम्ब+कम्] 1 आम्ब ('अम्बक' में) 2 पिता।
अम्बरम् [अम्ब शब्द में गति बने इति—अम्ब+रा+
क] 1 आकाश वायुमण्डल, अन्तरिक्ष—सायतनव्य-
दम्बरे रघु० १२।४१, 2 कपड़ा, वस्त्र, परिधान
पोशाक—विष्णुमास्यावरवरम् भग० ११।११ रघु०
३।९ दिगम्बर, सागराभरा मही—समुद्र की परिधि से
युक्त पृथ्वी 3 केसर 4 अम्बरक 5 एक प्रकार का
सुगन्धित द्रव्य। सम० अम्ब 1 वस्त्र की किनारी
2 अतिवृत्त ओम्ब (पु०) स्वर्ग में रहने वाला,
देवता (भस्मरज) विलम्बिते मौलिमिरबरीकताम्
कृ० ५।७७ बम् कपास,—अम्बि धूम, केम्बिन्
(वि०) मयनध्वी रघु० १३।२६।

अम्बरीकम् [अम्ब+अम्बि नि० दीर्घ०] (कुछ अर्थों में
अम्बरार्थ भी) 1 भाद, कबाड़ा 2 लद, हुल 3
पूढ सद्यम् 4 नरक का एक भेद 5 छोटा जामबर,
बछड़ा 6 सूय 7 विष्णु 8 शिव।

अम्बच्छ [अम्ब+स्था+क] 1 बाह्यण पिता तथा वैश्वमसा
में उत्पन्न सन्तान—बाह्यणाद्वैश्वकस्यामाम्बच्छो नाम
जायते—मनु० १०।८ याज्ञ० १।११ 2 महावत 3
(ब० व०) एक देश तथा उसका निवासियों का नाम
छा कुछ घोषों का नाम—(क) गजका युष्किा
(ग) पाठा (ग) चुष्किा (घ) ब्रह्मा
छा छी अम्बच्छ जाति की स्त्री।

अम्बा [अम्ब+घञ्+टाप] (वैदिक संबोधन—अम्बे,
बाद की संस्कृत में अम्ब) 1 माता (स्वहू अम्बा
आदर पूर्ण संबोधन में भी इसका प्रयोग होता है)
भद्र महिष्ठा भद्र माता—किमम्बानि प्रेषित अम्बाना
काय श्रितय ज्ञ० ७ कृताञ्जलिरनय यदम्ब सत्यात्
रघु० १।११६ 2 दगा भवानी 3 पादु की माता,
काशिराज की कन्या [यह और इसकी दो बहनें भीम्ब
६ द ग सन्तानहान विचित्रवीर्य न लिए अपहृत की
गई थी। क्योंकि अम्बा की सगाई पहले ही शास्त्र
के रज्जा में हो चुकी थी अत इसे उन्की के पास
भद्र दिया गया। परन्तु दूसरे के घर में रही होने
के कारण शास्त्र के राजा ने उस सहन नहीं किया
अत वह कापस आई और उस आश्रम से प्राचीन
की वि वद अब उसे स्वीकार कर परन्तु उन्कीने अपना
राज-सम्बन्ध बना भग करना दुर्बिन नहीं समझा फलत
वह बगल में जाकर भीष्म से प्रतिशोध लेने की
तपस्वता करने लगी। शिव उस पर प्रसन्न हुए और
उन्कीने उससे दूसरे जन्म में, अभीष्ट प्रतिशोध दिलाने
की प्रतिज्ञा की। बाद में वह दूध के घर शिशुचिकनी
के रूप में पैदा हुई और शिवजी कहलाने लगी, और
अत में वही भीष्म की मृत्यु का कारण बनी।]

—वि, -निवि, -राशि जल का भंडार, समुद्र—सम्-
याम्भोधिमध्येति यद्वा नद्या नगापगा-शि० २।१८०
यादवाभ्योनिधीनन्वे वेलेन भवति असा ५० इन्दी
प्रकार अम्भस निधि जिह्वाभिराक्षिप्य २शम्भगा
निधि-शि० १।१८० बल्लभ मगा वृक्ष (नृप०-ह)
—कृष्ण कमल हेमम्भोन्मसराजान् मद्रापी यन्
साप्रतय-कु० २। १।१०, सांम यक्षी सांम
मोनी सू पुत्र अक्षय ।

अम्भोजिनी आभन द्वि द्वे । वसन्तक शेषा इति
का समूह वसन्तकानि यम अ १८०
कमनी का समूह ३ इ-५५५ १०० १०० १००
मे ही ।

अम्भय (वि०) [स्त्री०] यो । अप मय अक्षय
जल में बना हुआ ।

अम्भ नृ० आभ ।

अम्भ (वि०) [अ० व० अ०] १ यद्वा तीक्ष्ण वसन्त
लक्षणा युष्मन्तेऽणकदा वदन्ति आहार । अ
१३०, अक्ष लक्षण मेलनपत्र २५५ १ म
म एक २ मिरवा ३ नमिया साग इसी १ म
का वृक्ष ५ उद्गम । मम० अम्भ (वि०) मद्र
किया हुआ उद्गमर १०० इकार केवल चका
तरे का वृक्ष निवि (वि०) लट्ठा का बाल मोरम
कट्टी बाध, अक्षी-निबक, नीव का वृक्ष पित्तम
एक योग जिसमें आहार आहारय म पहुँच कर अम्भ
हो जाता है लट्ठा पित्त क्लम इसकी का वृक्ष
(—लक्ष) इसकी रस (वि०) लट्ठा स्वाद उष्ण
(—ल०) लट्ठा म त्रिजाती अश—वृक्ष इसकी का वृक्ष
—सार नीव का रोषा हरिद्रा अश्वत्थ-रिक्त पोषा ।

अम्भक [अम्भ + क० (अन्गार्थे)] उक्त्व वृक्ष ।

अम्भालम् (वि०) [न० न०] १ म मूलाया न हो (पुष्पादिक)
२ स्वच्छ मास अशुद्ध । वेदरा । निम्न बिना
बादलो का उदायोऽथवादाय कजोऽथवाऽन्यथा
— न बाणपुष्पवृक्ष दृष्टांतरा ।

अम्भानि (वि०) [न० व०] सज्जन न मूलायें वाला नि
(स्त्री०) [न० न०] १ शक्ति २ राजगी हरिवाल ।

अम्भानिम् (वि०) [न० न०] स्वच्छ मास, —नी बाणपुष्प
वृक्षों का समूह ।

अम्भि (स्त्री) का [अम्भ + क० टाप् वा] १ मद्र का कट्टा स्वाद लट्ठा
इकार २ इसकी का वृक्ष ।

अम्भिकम् (पु०) [अम्भ + इमनिच्] लट्ठा मद्रापन ।

अम्भ (स्त्री० आ०) [कृ० वार मी, प०] विशेषत उद तपस्य
के साथ [अथो अयाचके, अयितुम, अयित्] गता ।
अम्भ अन्त प्रवेश करना, हस्तक्षेप करना अर्थक
उपसृतास्तरयति—मृच्छ० २, अम्भु १ निकलना

(जैसा कि बन्दगा, मूरज) २ फलना-फलना समूह
गता उक् १ निकलना उगना (जैसा कि लूमे) —उदयानि
दि गताङ्क कामिनीगच्छपाण्डु मृच्छ० १।५७, २
प्रकाशना दिव्यार्थ देना मुहूर्ता यज्ञिय राज्यव्या-
नयार्थ पाजना—महा० ३ पृ० ना उदय होना, जन्म
देना उगना होना—भद्रादयदस्यवधमिषे नै०
३।५, यमनधम रदयो गत० गता (रा कोला
हा जन्म ग०) आगता वर्णम गता भाग जाना ।

अम्भ १ अ० १ कामा अम्भ विना (अधिबन्ध
रामा न अगमय) २ पूर्वजन्म के प्रकृति कृत्य
३ अम्भ अम्भ अम्भ किम्भत गन्धार्णवगन्धार्णव
अम्भ ६।६ १ अम्भिते व० रसा । मम० अम्भित
अम्भित वि० सौभाग्यगता अम्भित किम्भत व० रसा
६।६ मद्र अम्भित गत०-वि० ५२० ।

अम्भय अम्भय का होना शायमा

अम्भय (वि०) [न० व०] १ जन्म करने वाला अ १ न०
न० एक का न गता व० अम्भ ।

अम्भयि (वि०) [न० व०] १ अ० अम्भय का अम्भय न हो
(जैसा कि अम्भय) २ अ० अम्भय का अम्भय न हो
३ अ० अम्भय का अम्भय न हो (जैसा कि अम्भय) ३ अ० अम्भय

अम्भय (वि०) [न० व०] बिना की यम किये होनेवाला
आगता-रूप० ६।६ अम्भ (१० न०) अम्भ
म लता का अम्भ अम्भय अम्भय अम्भय अम्भय
म लता का अम्भय अम्भय अम्भय अम्भय अम्भय

अम्भय (वि०) [न० व०] जिस प्रकार होना चाहिगा वैसे
न होना अनुपयुक्त रूप से अनुचित होना, गलत
नतीक में । मम० अम्भ (वि०) १ जा नितान्त भाव
के परक से हो अग्रहीत, भवार्थित २ अम्भय
अम्भय मिथ्या श० ३५ अम्भय गलत—अम्भयवा
द्विधा यथार्थोऽथवाऽन्यथा अम्भय ५० अम्भय अम्भय
या अम्भय ज्ञान गलत भाव इच्छ (वि०) १ जो
इच्छापूर्वक न हो नापसंद २ अम्भय नाकाफी

अम्भय (वि०) अम्भय अनुपयुक्त—लक्ष (वि०) १ जो
जैसा होना चाहिगा वैसा न हो अम्भय अनुपयुक्त
अम्भय इदमप्यथाय स्वायित्तवर्धितम स्त्री० ७,
८ अम्भय अम्भय, लाभार्थित (अम्भ) (अम्भय) १
अम्भयता के साथ, अम्भयकता के साथ, २ अम्भय
अम्भय अम्भय, अम्भयता अम्भय मम० ३।५०
लक्ष्यम् अनुपयुक्तता, अम्भयता अम्भयता अम्भयता
आगतातीव गतना का होना पुर पूर्व (वि०) १
पहले कभी न हुआ हो अम्भयता अम्भयता अम्भयता
गलत तरीके से काय कलत वाला आत्मकारिन्
(वि०) आत्मनानुक्त काय न करने वाला आत्मिक,
—अम्भयताम्भयता च न विभाग गिता अम्भ—नारद० ।

अवधारण (अवध०) यस्मिन् से, अनुचिन्तनीय से ।

अवधारणम् [अव + धृत्] १ जाना, हिजना, चलना, बैसा कि रामायणम् में २ राह, पथ, मार्ग, भ्रमक - अवधारण-विज्ञादयनान् रघु० १६।४४, ३ स्थान, जगह, घर, ४ प्रवेशद्वार, व्यूह में प्रवेश करने का मार्ग - अवधेयु च सर्वेषु यथाभागमवधारिता - भग० १।११ ५ मार्ग, मार्ग की विषयन् रेखा से उत्तर या दक्षिण की ओर मार्ग ६ (अत एव) इस मार्ग का अवधि-काल छ मास, एक अवधिबद्ध से दूसरे अवधिबद्ध तक जाने का समय - ६० उत्तरायण, दक्षिणायन ७ विषय और अयनमवधि विन्दु - दक्षिणम् अवधम्-निर्दिष्टम् का अयन, उत्तरम् अवधम्-योग्य अयन ८ चरित्रमयक्ति मान्य पन्था शिक्षाप्रदानाय - रघु० १।१० ९ काल-दोने ह. ० ६ मध्य की अवधि (दोनों अवधियों का अधिकाल) शुद्ध वरुणरेखा ।

अवधित (वि०) [न० त०] अविश्रित, श्रितको रोका न जा सके, व्यवस्थाभारी, मनमानी करने वाला ।

अवधित (वि०) [न० त०] १ अनियमित, २ जिस पर प्रतिबन्ध न लगा हो ३ जिसकी काट-छांट न की गई हो, अवधित (वैभा कि नास्ति आदि) - मेघ० १२ ।

अवधित (वि०) [न० व०] यशोहीन, बदनाम, अकीर्तिकर ('अवधारण') भी इसी अर्थ में. (नपु० - ताः) बदनामो अवधिति, कुख्याति, अवमान, निन्दा - अवधो महदाप्नोति - मनु० ८।१२८, विमयसो ननु वीरमन परम् - उत्तर० ३।२७ स्वभावलोकेत्ययज प्रमुष्टम् - रघु० ६।६१ । मय० - कर (वि०) (स्त्री० - री) बदनाम, कलकी ।

अवधोऽस्य (वि०) [न० त०] बदनाम कलकी ।

अवधु (नपु०) [इ + अमुन्] १ लोहा, अमिताभमयीऽपि मार्दव भजने कैवल्या शरीरिषु रघु० ८।४३ २ हस्पात, ३ सोना, ४ धातु, ५ अगर नामक लकड़ी । (पु०) अति । मय० अवधम् - अवधम् हथोडा, मूलम् - लोहः १. लोहे का बाण २. बड़िया लोहा ३. लोहे का बड़ा परिमाण. - कात्तः (अवस्थात्) १ बुद्धक बुद्धक पत्थर, वास्तोयंत्यवमाकण्डुमयस्कालेन लोह-वा. कु० १।५९ ता चक्रे परमाणवदयस्कालेन दण्डयसम् रघु० १७।६३, उत्तर० ४।२१, २ मूलवान् पत्थर 'अतिः बुद्धक पत्थर - अयस्कालमिति गन्तावे लोहवातु-मल कर्ममाकण्डवली-मा० १. -कारः लुहार, लोहे का काम करने वाला. - कीटम् लोहे का जग या मुर्दा - कुंजः लोहे का बनेन, इजिन का बायम्पर आदि, इसी प्रकार वायम् - धनः लोहे का हथौड़ा अयोधनेनाप इक्षानितम् रघु० १४।३३, धूर्जम् लोहे का वृक्ष - वाक्कम् लोहे की जाली - वेडः लोहे की नुपुगर - वाक्कः लोहधातु - उत्तर० ४।२१, प्रतिभा लोहे की मूर्ति,

- कलम् लोहे का धन, इसी प्रकार 'रक्त', 'रक्तः - लोहे की मोक लगा हुआ बाण - वेत्तवत्यम् कुम्भ-मयोमूलम् रघु० ५।५५. - कुंजः १ लोहे की बर्तनी २. लोहे की कील, नोकदार लोहे की छड़ - रघु० १२।९५, - कुलम् १ लोहे का भासा २. इक्षक साधन, लक्ष्मि-रघा-सिद्धा०, (पु० जाय कृत्स्न काव्य० १०, अव-धुतेन अविच्छिन्नोऽप्यः कृत्स्निक) - हृषव (वि०) लोह-हृषव, कठोर, निष्ठुर, - सुहृषवो हृषव प्रतिपत्त-ताम् रघु० १।९ ।

अवधुः (अवीधुः) (नपु०) [स्त्री० - वी] [अवधु + मयट्] लोहे पर और किसी धातु का बना हुआ ।

अवधित (वि०) [न० त०] न बाँधा हुआ, अवधित (मिसा, आहार आदि) अवधित स्वाध वाधितम् - मनु० ४।५ - नम् अवधित मिसा । मय० - अवधित, - अव-धित बिना निमज्जन या श्रावणा के पड़ा हुआ, - अवधितोऽपि ध्यातव्यम् केवलम् - कु० ५।२२, - धृतिः बिना मायो या अवधित मिसा पर धीरिष्ठ रहना ।

अवधुः (वि०) [न० त०] १ (व्यक्ति) जिसके लिए यज्ञ नहीं करना चाहिए, या जो यज्ञ करने का अधिकारी न हो (शुद्धाधिक), २ (अत एव) वाति-वह्निष्मन्, पवित्र ३. यज्ञ करने का कर्मधिकारी । मय० - वाक्कम् - संवाक्कम् उस व्यक्ति के लिए यज्ञ करना जिसके लिए किसी को यज्ञ नहीं करना चाहिए - मनु० ३।९५, ११।१० ।

अवधत (वि०) [न० त०] न रखा हुआ । मय० - वाक्क (वि०) जो बन्धो न हो, ताबा, जो उपयोग में आने के कारण जीधे लोह न हुआ हो, - यं च वीक्ष्यम् - रघु० १२३, ताबा, खिला हुआ ।

अवधार्थिक (वि०) [स्त्री० - वी] [न० त०] १. जो सत्य न हो, न्याय विरुद्ध, अनुचित २. अवास्तविक, असंगत, बेतुका ।

अवधार्थम् [न० त०] १ अयोग्यता, असुद्धता २. बेतुका-पन, असंगतता ।

अवधम् [न० त०] १ न जाना न हिजना - बुजना, ठहरना, टिकना २ स्वभाव ।

अधि (अध्य०) [इ + धति] १ विचारियों के प्रति वज्र हथौधन, प्रोह, ग अरे आदि सामान्य संबोधन बोधक अन्वय, - अधि विवेकविभ्रतमविहितम् - भाषावि० १. अधि जो महावपुष - स० ७, अधि विबुधवधानां स्वमपि च दुःख न जानाति - कुच्छ० ५।२२.६० यावि० १।५, ११.४४ । २. श्रावणा वा अनु-रोध बोधक अन्वय अधि संप्रति देहि धर्मेणम् - कु० ५।२१, प्रोत्साहन तथा अनुनय के अर्थ में वी - अधि अवस्थितमयूर बदनं तस्थि यदि मलाकुलम् - यावि० २।१५०, ३. सामान्य सामुह्य-पुष्पा बोध अन्वयत

—अधि जीवितनाथ जीवति—कु० ४।३,—अधीदेव
परिहास—५।६२ ।

अनुक्त (वि०) [न० त०] १ जो जुता न हो, या जिस
पर जीन न कसा गया हो, २ जो मिला हुआ न हो,
सबड़ या सयुक्त न हो ३ जो भक्त या शर्मित न हो,
व्याम रहित, उपेक्षापूर्ण ४ अभ्यासशून्य, अनभ्यस्त,
जो नियुक्त न हुआ हो, 'बुद्धि' बार ५ अयोग्य,
अनुचित, अनुपयुक्त अयुक्तोप्य निर्दोष— पा० ४।२।
१४, महा० ६. जुठ, गलत । सम०—कृत् अनुचित
या गलत काम करने वाला,— पदार्थः शब्द का बहु
अर्थ जो दिया न गया हो, जैसे कि 'अपि' शब्द, अप
(वि०) असंगत, अनुपयुक्त,—अयुक्तकथ किमत पर
बर—कु० ५।५९ ।

अनुत्त-गत (वि०) [न० त०] १ पुष्प, अकेला २ ऊँच-
साबड़, विषम । सम०—अचिन्त (पु०) जाग—नेत्र—
मथन— शरः दे० अनुत्त के अन्तर्गत,—सक्ति, मान
बोडो बाला, सुर्वे ।

अनुक्तम् (अब्ध०) [न० त०] १ सब एक नाथ नहीं,
कपस, यथाक्रम, । सम०—सहस्रम्—क्रमपूर्वक सम-
स्या,—नाथः अनुक्रम, आनुकम्पितः ।

अनुक्त (वि०) [न० त०] १ अकेला, न्यारा २ निराला,
विषम, (संख्या), । सम०—छब्द,—यत्र, सत्पण्य
नामक दोषां,—मथन,—नेत्र,—शोचन, विषम, (३)
अक्षों वाला, शिव—कु० ३।५।१९९,— बाह्य,— शरः
विषम (५) बाणो वाला, कामदेव,— बाह्य,—सक्तिः
मात बोडो बाला सुर्वे ।

अनुक्त (वि०) [न० त०] निराला, विषम (विप० गृह
==मम) । सम०—इक्षु,—बाण,— शरः पांच बाणो
बाला, कामदेव, छब्दः= सत्पण्य वदुरयुच्छद-
मुच्छमुगत्वय—शि० ६।५०, पलाश= सत्पण्यलाश,
—पाच, यथकम् पहले और तीसरे पाद में भिन्न
अर्थों वाले एक से अक्षर रखने वाला अनुप्रास का एक
भेद,—नेत्र,—शोचन, अक्ष, सक्ति शिव ।

अनुत्त (वि०) [न० त०] न मिला हुआ, पृथक्कृत,
असंबद्ध,—तम् दम हज़ार, दस सहस्र की मक्या ।
सम०—अध्यात्मक अक्षा अध्यात्म,— सिद्ध (वि०)
(वैद्य० में) अपृथक्करणीय, अतर्जित,— सिद्धि
(स्त्री०) ऐसा प्रमाण जिससे निश्चय हो कि
कुछ बन्तुए तथा मात्ताए अपृथक्करणीय, तथा
अतर्जित हैं ।

अने (अध्याय) [इ+एच्] १ संबोधनात्मक अध्याय या
संबोधन का शब्द प्रकार (=अधि)—अने पौरीनाथ
किमुपहृर संतो निजयन— भर्तृ० ६।१२३ २ विस्मयादि
बोलाव अन्वय—(क) बोह, अने आदि अन्वो में
सन्निहित आशय तथा विस्मय की भावना,—अने

मातलि—श० ९ (क) उदासी, क्षिप्ता—अने देव-
पादपद्मोपजीविनाऽऽस्थेयम् मुद्रा० २, शोक (ध)
कोष (च) सलवनी, क्षीम (ङ) प्रत्यास्मरण (च)
भय (छ) बकावट ।

अयोग्यः [न० त०] १ अलगाव, विद्वान्, अन्तराल २
अयोग्यता, अनौचित्य, असंगति ३ अनुचित सब ४
विधुर, अनुपस्थित प्रेमी या पति ५ हकीका (अयोध
तथा अयोधन) ६ अक्षि ।

अयोग्यः (स्त्री० वा, स्त्री) [अय इव कठिना गौरीभी
यस्य ब० सं० नि० अच्] बूढ़ पिता और बिर
माता की सम्मान दे० आयोग्य ।

अयोग्य (वि०) [न० त०] १ आ योग्य न हो, अनु
पयुक्त निरर्थक ।

असोध्य (वि०) [न० त०] जिस पर आक्रमण न
किया जा सके, जिसका मुकाबला न किया जा सके,
अद्यापि महाबाही अयोध्या प्रतिभाति न
रामा०, ध्या सरयु नदी के तट पर स्थित वर्तमान
अयोध्या नगरी रघुवंश में उत्पन्न मूर्धबशी राजाओं
की राजधानी ।

असोभि (वि०) [न० त०] १ अजन्मा निम्न, अगच्छानिग्या-
निम्नम् कु० २।९२ २ आ बाह्य से उत्पन्न न हो,
अधर्म अथवा अवैध रूप से उत्पन्न नि (स्त्री०)
[न० त०] आ योग्य न हो—नि ब्रह्मा, शिव,
सम०, अ, अन्वय (वि०) जो जगत् से न जन्म
हो, सामान्य जन्मपट्टाति के अनुसार जिसने जन्म न
लिया हो तन्मात्र अयोग्यत्वम् गृह० ४८, कन्या
गल्मयानिजन्म भवनामास्ये—महावी० १।३०, 'ईश'
ईश्वर, शिव, (—आ)—संबन्ध जनक की पुत्री सीता
जो कि लंके के बूढ़ से उत्पन्न हुई थी ।

अयोग्यपक्षम् [न० त०] समकालीनता का अभाव ।

अयोगिक (वि०) [स्त्री० स्त्री] [न० त०] व्याकरण के
नियमानुसार जो शब्द व्युत्पन्न न हो ।

अरः [अ+अच्] पहिले के अरे या पहिले का अर्थव्यास
(रे भी)— अरे मधार्थने नाम भाभी बारा प्रति-
ष्ठिता—पच० १।८१, । सम० अतर (ब० ब०)
अरी का अन्तगाल—विक्रम० १।४, —बहु,— बहुक
१ रहट जिसके द्वारा कुएं से पानी निकास जाता है
"बड़ी रहट में प्रयुक्त किया जाने वाला डाल,— कूप-
मासाद्य 'टीयायण संप्रतिनातीत—पच० ४, २ गहरा
कुवा ।

अरजन्, अरज, अरजस्क (वि०) [न० ब०] १ बूल १।
गद से रहित, साफ स्वच्छ (बाल० भी) २, रज या
बाधना से मुक्त ३ जिसे वांछित धर्म न होता हो,
(स्त्री०—आः) बहु कन्या मिले अभी रजोवर्धन आरंभ
नहीं हुआ ।

अरज्यम् (वि०) [न० ब०] जिसमें रस्सिया न लगी हो, [रस्सिया न विरहित, (नपु०) कारागार ।

अरणिः (पु०, स्त्री०) [स्त्री० स्त्री] जमी की लकड़ी का टुकड़ा, जिसके चबूत से यज्ञ के अवसर पर अग्नि जलाई जाती है, आग उत्पन्न करने वाली लकड़ी पु०, पृ० १।२१६, स्त्री (वि० ब०) पशुगति प्रवृत्ति करने के लिए लकड़ी की दो समिपार्ण नि 1 सूर्य, २ आग 3 कलीता, चक्रमक पथर ।

अरज्यम् (कई बार पु० स्त्री) [अर्यते गम्यते षोड वर्गम् अ-रज्यम्] जगल, बन उद्वाह प्रियानाश कृन्कन [कल अगदरज्य द्वि भवति उत्तर १० ६/३०] याना यम्य मुहे नास्ति भाषा प्राप्रियवादिनो अरज्य नन गन्यव्य पवार्य तथा गृहम् चाण० १४ जगली, जगल में उत्पन्न (यदि समस्त पद का प्रथम रूप है)। 'ओज्यम् जगली बीड, इसी प्रकार वाजरि, मूकम् । सप० अरज्यम् बन की दल रेश करने वाला राजिव अरज्यम्, यानम् जगल में चले जाना बानप्रस्थ लेना—ओज्यम्, सत् (वि०) 1 अरज्यवामा जगल में रहने वाला वैकल्य मम ताबदीदुर्भाग्य स्नेहादरज्यीकस—ग० ४।५, 2 विशेषतः बहु जिनम अपना परिवार छोड़ दिया हो और बानप्रस्थी हो गया हो, जगल में रहने वाला,—कहली जगला कला, यज्ञ जगली हाथी (ओ पालनू न ह)।—चक्रक जगली चिड़िया—चक्रिका (सा०) जगल में चन्द्रमा का प्रकाश (आल०) निरबक भूभाग या आभूषण गेमा बनव-मिपार जिसे कोई दबने मगहने वाला न हो इसी लिए मल्लिमाष स्त्रीणा प्रियाणोकरणा नि वय कु० ७।२२, पर टिप्पणी करते हुए कहते हैं अरज्यया अरज्यचन्द्रिका स्यादिति भाव, हर [अरज्य भा०, ओज्य (वि०) जगली अ (वि०) वय, धम जगली अवस्था या प्रथा जगली स्वभाव नवरपय धर्माद्विषय धाम्यममें निवासित पृ० १

मुचति राज् (इ) राज् इत्येव का स्वामी मिह या व्याघ्र का विशेषण इसी प्रकार अरज्यान् पति, — वंजित, 'बन में बिहान् (आल०) मुख पुष्प ओ बन में ही (जहाँ कोई मुनने-टोकने वाला नहीं होता) अपना प्राणिय प्रवृत्ति करता, भव (वि०) जगल में उत्पन्न जगली लक्षिका इत्येव यानम् जगल में चले जाना रजक अरज्यमाप वंजितम् (अर्ये) जगल में गेना अरज्यरोदन (आल०) ऐसा राना जिसे कोई मुनने वाला न हो निष्कम कर्म अरज्ये मया रदितम् श० २, ऐक्य भद्रादि हीनस्य अरज्यरदितोपमम् पृ० १।३९३ तदलपम् नारज्यमपि अमर० ७६, वाक्यः जगली कीबा पहाड़ी कीबा,—वाक्यः—समाचयः जगल में चले जाना,

जगल में वाबास,—वाक्विम् (वि०) जगल में रहने वाला (पु०) अरज्यवासी, बानप्रस्थी,—विस्तिपितम्, विस्तिप (अर्थ) = 'वसितम्—वस्य (पु०) जगली कुता भेडिया, लम्बा जगल की कचहरी ।

अरज्यकम् [अरज्य + कन्] जगल, बन । अरज्यानि—स्त्री (स्त्री०) [अरज्य + आनुक् स्त्री ष] एक बड़ा जगल या बीहड़ पथभूमि, विस्तृत उद्वाह ।

अरत (वि०) [न० न०] 1 मन्द, विरक्त, अनासक्त 2 असतुष्ट तृप्तिरहित पाराङ्मुष,—तम् अनेचुन । मम० त्रप (वि०) मेधुन करने में न लजाने वाला ' व, कुप (गलियों में बिना किसी प्रकार की नज्जा के मेधन करने वाला) ।

अरति (वि०) [न० ब०] 1 असतुष्ट 2 मुत्त, निडाक, ति (स्त्री०) [न० न०] 1 बामदेव-प्रमोद का प्रभाव । प्रम की प्रबल उत्कण्ठा से पैदा होने वाला), स्वापीष्टवस्त्वभावेन बनसी या जलस्थिति अरति मा मा० २० 2 पीडा कष्ट 3. चिन्ता, लेव, बेचैनी, क्षाम मघते भूगमरीन हि माद्विषाग—कि० ५।५१, 4 अमनान मतापामाव, 5 निडारूपता, मुस्ती 6. गव दीप्तिक रोग ।

अरतिम् (पु० स्त्री०) [अ-रति = रति, न नास्ति यश्च] 1 कुहनी कई बार मुक्का, 2 एक हाथ की माप, कुहनी से कानो उगली के छोर तक की माप, लंबाई मापने का पैमाना अरतिन्तु निकर्गण्डेन मुष्टिना—अर्य०, मन्थ्यागुलिकूर्परयोर्मध्ये प्राधान्यिक कर, बद्धमुष्टिकरो रतिररतिं सम्मर्शक । हला०, कि० १८।३, 4.

अरतिनक [अरति + क] कुहनी ।

अरज् [अरज्य०] [अ-रज्य] 1 तेजी से, निकट, पास ही, उपस्थित 2 तत्परता के साथ ।

अरज्य, अरज्यमाव (वि०) [न० न०] 1 जो सुखकर न हो असलोपजनक अरज्यार 2 अरिबाम अनवत । अरज्यम् अ-जान । कबाड का दिला—अरज्यमररतिन दार्यावृत्त महाव० ६।२७ (—र-री, स्त्री)—अरज्य-रतिविपाटिताररुटा यास्याम्यह पञ्चरान् भाषि० १।५२ 2 इकन ग्यान, र आरी ।

अररे [अर्य०] [अ-रा-र] (र) बड़े उगावलेपन (र) तथा वृणा और अवका की प्रकट करने वाला मरचन शायक प्रथम अररे महाराज प्रति कुन शत्रिया मण० ।

अरिज्यम् [अरान् पञ्चज्ञानोऽपचानि चिन्ते—अर-रि-ज्यन्] 1 कमल (कामदेव के पीच शानो में से एक—दे० पञ्चबाण के मोक्ष)—अर्यमरविष्णुसुरति—ग० ३।६ यह सूर्य-कमल है—पु० सूर्याभिनिमित्तमिवादि-विन्दम् कु० १।३२, स्थल, चरम्, मुल० वादि 2 काल या नील कमल,—रः 1 बारह पत्ती, 2.

तांवा । सभ०—अल (वि०) कमल जैसी आखो
वाला, भिन्नु को उपधि, - बलप्रभम् तावा, -नाभि.
—अः विष्णु, -हृदयो मदीये देवश्चकास्तु भगवानर
विन्दनाम - भाभि० ४८, -सम् (पु०) बह्मा ।

अरविन्दिनी [अरविन्द + इति + डीप्] १ कमल का पीछा
—प्रपीतमधुका भू० सुदिनेवारविन्दिनी भट्टि०
५१०, २ कमल फूलों का समूह ३ वह स्थान जहाँ
कमल बहुतायत से होते हैं ।

अरल (वि०) [न० ब०] १ रमहीन, नीरस, फीका
२ मद, बुद्धिहीन ३ निर्बल, बर्हीन अप्रिय ।

अरलिक (वि०) [न० त०] १ कृपा, रसहीन, फीका
बिना स्वाद का, २ भावना या भाव से विरहित मन्द
काकादि का रस होने में अमममं इति का के भय का
न जानने वाला अरलिकेण कविस्त्वभिन्दन शार्गम
मा लिख, या लिख, मा लिख-उद्धट० ।

अरलम्, अरलम् (वि०) [न० ब०, न० त०] शून्य
वासना रहित, - तमहमरागमकृष्ण कृष्णहैपायन वन्द-
वेणी० ११४ ।

अरलम् (वि०) [न० ब०] बिना राजा का, जहाँ राजा
न हो - नाराजके वनरदे राम० मनु० ३१३ अरल-
के जीबलोके दुर्बला बलवतरं, पीडयते न त्रि वितेषु
प्रभुत्व कस्यचिन्ना । महा०, शीघ्र राज्यमराज
कम्—वाण० ५७ ।

अरलम् (पु०) [न० त०] जो राजा न हो । सभ०
—अधीन (वि०) राजा के काम के अनुपयुक्त, - स्वा-
पित्त (वि०) जो किसी राजा द्वारा प्रतिष्ठित न किया
गया हो, अवैध, गैरकानूनी ।

अरलम् [न० त०] १ शत्रु, दुश्मन, - देश सोऽप्यगति-
शीलितजलेयमिन्नु हृदा प्रेरिता वेणी० ३३१
२ छ. की सख्या । सभ० भय. शत्रुओं का नाश ।

अरल (वि०) [अ-विच् अन् आलानि, ला-क] मुड़ा
हुआ, टेढ़ा, -पादाबलाङ्गुली मालवि० २३, लः
१. बक मुड़ा २. मनवाला हैथी, -का पुच्छली बेश्या,
कारागार । सभ०—कैसी बुचाले बालों वाली स्त्री
—मिथ्या निराक्रामदरालकेषा—रघु० ६८९, लक्ष्मन्
(वि०) मुड़ी हुई गलकों वाला—कु० ५४९ ।

अरि [अ + इति] १ शत्रु, दुश्मन, विजिताग्निरु मर
रघु० १५९, ६१, ४८ २ मनुष्य जाति का शत्रु
(मनुष्य के मन को व्याकुल करने वाले ६ शत्रु बताये
गये हैं—काम क्रोधस्तथा लोभो मदमोहो च मत्सर,
—कृतास्त्रिषुर्धर्मजयेन - वि० ११९ ३ छ की सख्या
४. बाड़ी का भाग ५. पहिया । सभ०—कर्ण (वि०)
शत्रुओं की पीड़ित या पराभूत करने वाला, -कुलम्
१ शत्रुओं का समूह, २ शत्रु, -अः शत्रुओं का नाश
करने वाला, -चित्तम्, -चित्ता शत्रुओं के नाम के

लिए बनाई हुयी बीजनाएँ, विदेश विधान का प्रस्तावन,
मन्थन (वि०) शत्रु को प्रमत्त करने वाला, शत्रु को
विजय दिलाने वाला, अरु बड़ा दक्षिणशाली शत्रु—रघु०
१४३१, लक्ष्मन्, हनु, -हितक. शत्रुओं का नाश करने
वाला रघु० ११८८ ।

अरिश्चभाष्, अरिश्चयो (वि०) [न० त०] जो पैतृक
संपत्ति में हिस्सा पाने का अधिकारी न हो (जैसे
कि कोई नपुंसकता आदि अवगुणों के कारण अनधिकृत
कर दिया गया हो) ।

अरिश्चम् [अ + इति] १ हाड लोलरिश्चैवचरैरिश्चभिन्
ति० १०३१ २ पतवार लगन ।

अरिश्चम् (वि०) [अरि + दम् + लृच् प्रभागम्] शत्रुओं का
दमन करने वाला शत्रु विजयो शत्रु का ज्ञान ज्ञान ।

अरिश्चम् [न० त०] लगातार बर्बा होता, ब एक प्रकार
का गदारोह ।

अरिष्ट (वि०) [न० त०] अशुभ पुरुष, अविनाशी निरापय
ष्टः १ बगला, २ जगला कोबा ३ शत्रु ४ माना
प्रकार ५ पीछों के नाम (क) रीठे का वृक्ष (ख)
नीम का वृक्ष ५ लक्ष्मन्, ष्टः १ दुर्भाग्य आनन्द,
बदकिस्मती २ दुर्भाग्यमिश्रित अनिष्टसूचक घटना
अपजकुन ३ प्रतिकूल अक्षय-विशेषतः मृत्युसूचक
गणिगो मरण यस्मादवैध भावि लभ्यते, तत्संक्षेप-
मरिष्ट स्याद्विष्टमप्यन्विषोती ४ सीमाय, लक्ष्मी
किस्मत मुख ५ मोरो ६ छाछ ७ बादक शराव—
शि० १८३३ । सभ०—बृहन् वृत्तिकामुह, -साति
(वि०) सीमायशानी या सुखी बनाने वाला, सुख,
—ति. (स्त्री०) मुरझा, सीमाय का उशरारि
कार, अनवरत मुख, तदव्यवस्था निष्पन्नाशियों
काममरिष्टनातिमासासमहं महावी० १ अचन
जिब विष्णु, शय्या प्रसूता का पलग अरिष्टशय्या
परितो विसारिणा - रघु० ३१५, लक्ष्मन्, - हनु
(पु०) अरिष्टनाशक, विष्णु की उपधि ।

अरिचि (स्त्री०) [न० त०] १ अनिष्ठा, किसी वस्तु
का अच्छा न लगना, -स्व सा भागानामुपर्येक्षि—का०
१४६ २ भूल न लगना स्वादु न लगना, उक्त
जाना मन्त्रिपातक्षयवामकासाहिककाक्षिप्रभुत्—सुख०
३ सनोचजनक व्याख्या का अरिचि ।

अरिचिर, अरिच्य (वि०) [न० त०] बला न लगने वाला
अरिचिर इकनाष्ट वेदा करने वाला ।

अरिच्य (वि०) [न० त०] रागशूल स्वस्थ, नीरोग ।

अरिच्य (वि०) [न० त०] स्वस्थ, नीरोग ।

अरिच्य (वि०) (स्त्री—का, -भी) [अ + उन्] १ अरिचरक
या कुछ २ साल, मूरा, पिँडू, काल, गुलाबी (साध्य
लातिका के विपरीत प्रभातकालीन सुख का रंग)
—यवनायवचनामि दुर्बलम्—कु० ४ । १२, २ विरिच्य,

व्याकुल 3 युक्त-नः 1 लाल रंग, उषा का रंग या प्रातः
कालीन संध्यालोक, 2 सूर्य का सारथि मनु उषा

—आविष्कारण पुर सर एकात्मक — यं ५।१ ७।
विवाहारी वरुणाया कल्पने—कुं ५।६६, रघु०
५।७१, 3 सूर्य-राशेण बालारुणकोमलेन कुं ३।३०
संयुज्यते सरसिर्वरुणासुभिर्न रघु० ५।६५ —यच् 1

लाल रंग, 2 साना 3 केसर । मम० अथज
गवक्ष, अनुव, —अथरज अरुण का छोटा भाई गरुड
—अविष् (पु०) सूर्य अस्मत् 1 अरुण का पुत्र
अटायु, 2 शनि सारथि मनु वृज सुचोद, यम जीव
अविष्नीकुमार (आ) यमुना 7 पत्नी ईशण 1 वि०
लाल आभा वाला उषा 1 दन निकलता उषा

कालो वरुणा प्रातरुणादय ० अथ २ अथज न २
कमलज लाल कमल ज्योतिस् पु० 1 शि० प्रिय
लाल पुत्र या कमला का पारा मय —या 1 पुत्र
पत्नी 2 सारा स्तोत्रन वि० लाल प्रातः काला, —न ।
कनुर सारथि जिसका सारथि अरुण है मय ।

विषम, अक्षणीकृत (वि०) अरुण — विषम ३।० धा०
कन, अरुण + वि० + कृ + व ईदम् । लाल रंग का हुआ
कालरा में गया हुआ विषम रंग का रूप हुआ
मत्तारुणागच्छिताञ्च कन्दवान्— कुं ३।११

लुब्ध (वि०) अरुणि धर्मीय तुदति इति अर्थ— 1
लुब्ध मुग्ध च । ममत्वादा का छदन वरुण म २ म व-ने
बाका, पाडाजनक लोका, ममवना-अनुद मरुत
मनिर्वाणस्य दन्तिन रघु० १।७१ ५० १५५
2 लोका, उध कटुत्वभाव ।

वन्तरी [न वन्तरी प्रतिरावर्तयिता 1 ५२ ५
रत्नी प्रवामितमरुतया म्वाहा ३१० म्
रघु० १।५६ 2 प्रमान कालान नरा ३।१८३
पत्नी मन्तविमद्वत् क एव नरा मृगाय 1 अनयार
वकिष्ठ मन्तविद्या य एव है तथा अरुणको उरुकी
पत्नी । अरुणवती कश्य प्रजापति का 1 रघु० से
उत्पन्न ० पुत्रिया में से एक था वह योना ५ मयून
का सर्वोष्ठ नमून है मयून न के कारण
विवाह सम्कारों में वह द्वारा उषा आगृह्य किया
जाता है । स्त्री होते हुए भी उसको स्त्री सम्मान
दिवा गया है जो मन्तविद्या का पु० वि० ६।१०
अपने पति की भाँति वह भी मनुष्य के जाने निजी
विषयों को निर्दोषिका और निर्विषिका रहने में
सारापन सेवा का निरूपण बहूत के रूप में होती है
कहते हैं कि जिसका वरुण वरुण निकट हो
कहीं अथवा तारा जिसकाई मने वना है०
१।७६ । मम०—अरुणि, माक—कत काव्यत मय
विषम का एक द्वारा—वर्षावर्षाव १० भाव के
नीचे ।

अव्य-व्य (वि०) [न० त०] अकृत, शान्त ।

अव्य (वि०) [न० त०] 1 अकृत 2 चमकोला, उरुबल ।

अव्य (वि०) [अ + म] धायल, चाट लाया हुआ
(पु-व) 1 आक का पेशा मवार 2 लाल
अदर नयु० 1 ममव्यत पाव वण (पु० मी) ।
मम० कर (वि०) सतबिधन करने वाला, धायल
करने वाला ।

अव्य (वि०) [न० व०] 1 कर रहित, आकार शून्य
2 कृष्ण विरूप 3 विषम असम—यच् 1 एक दूरी या
मह आकृति 4 साक्षा का प्रधान तथा वेदान्तियों
का ब्रह्म । मम० हृषं वि०, जो मीन्य से
आकृत या मयून न दिया जा सके अकारण
मदनाय निषेधात् कुं ५।१३ ।

प्रकपक वि० न० व० 1 अकारण आकृति या कपक
का आकारात्मक न हो आकृत ।

अरे अरु० क-० 1 एक मवाधन मरु अरुण—(३)
अरुण का पुत्र न के ० अरुण ३।० अरुण
अरुण न रा अरुण मयून राया पुत्र प्रिया
मवने सत० याजवल्क्य न अरुण पत्नी मैत्री
से सहा । (अ) काव्यावसा ३ मरुताव प्रणि कुल
मोपया उतरा ० ६ (५) इति अरुण करने के लिए ।

अरुणस (वि०) [न० व०] 1 अरुण विषमक 2 निमल
रश्मि

अरे के अरु० [अ + अ इति अरुण] विषम
उरु० अरुण ३।० अरुण पूर्वक कृष्ण
अरे के पुत्रिया मया कृष्ण-मनापमव—वेमो०
० अरुण ३।० अरुण मरुता का सर्वोष्ठ
अरुण ३।० अरुण कृष्ण—अरुण मरुता का सर्वोष्ठ
अरुण ३।० ।

अरुण ३।० ३।० ५ ३।० मयून वरुण
अरुण ३।० ३।० ५ ३।० मयून वरुण
अरुण ३।० ३।० मयून वरुण मयून वरुण
मयून ३।० ३।० मयून वरुण मयून वरुण
मयून ३।० ३।० मयून वरुण मयून वरुण

अरुणमि, अरुण (३।०) [न० व०] नोरोह स्वत्य ।
नोरोह (३।०) ३।० लिका [न० त०] 1 वो
वनकण ३।० ३।० मयून वरुण मयून वरुण
का वरुण मयून अरुणकर मयून ।
५।३० ३।० 1 मयून वरुण ३।० मयून वरुण ।

अरुण, अरुण + अरुण, कुवम 1 प्रकाशकित्त विषयी की
अरुण ३।० मयून, अरुणकृतारुणकृतारुण ३।० एकोकी --
अरुण ३।० अरुण ३।० अरुण ३।० अरुण ३।० अरुण ३।०
अरुण ३।० अरुण ३।० अरुण ३।० अरुण ३।० अरुण ३।०
अरुण ३।० अरुण ३।० अरुण ३।० अरुण ३।० अरुण ३।०

सदापुण्यकरोऽपि सन्-पंच० १।५१. 8. इन्द्र, 9. बाह्यार 10 बाह्य की सख्या। सप्त० अक्षन् (पुं०)
 -अक्षः सूर्यकान्तमणिः, आक्षः मदार, आक्ष, कम्पुल-
 -क्षः सूर्य और कक्षमा का सयोग (दक्ष, वा अमावस्या),
 -काक्षा सूर्यपानी, -अक्षन्ः एक प्रकार का रक्त-
 -कन्दन, -अः कर्ण की उपाधि, यम, मुग्धीव (जी)
 स्वयं के वैद्य अश्विनीकुमार, तनयः 'सूर्य पुत्र' कर्ण
 का विशेषण, यम और शनि दे० अरुणात्मज (- वा)
 यमुना और ताप्ती नदियाँ, -स्विन् (स्त्री०) दूर्य
 की ज्योति, बिम्ब, -बास्त्रः विवाह, -सम्बन्धः,
 -पुत्रः, -सुतः, -सुनुः शनि, कर्ण और यम के नाम,
 -अक्षः, -आम्बः कमल (सूर्य कमल) -अक्षलम्
 सूर्यमण्डल, -विवाहः मदार से विवाह (सोपरा विवाह
 करने वाले पुष्प के लिए पहले मदार में विवाह करने
 का विधान किया गया है, नाकि तीसरी पत्नी चौथी
 हो जाय); -चतुर्थादिविवाहोर्नृतीयेऽर्चं समुद्धेतु
 कावचप० ।

अर्चकः-कम् [अर्च + कल्प् लृङ्कन्वादि' कृत् -
 अर्चका-सी] तारा०] अग्री, किल्ली या मूमन
 (यह दरवाजे की बन्द दरवाजे रोकने के
 लिए लकड़ी के बने यन्त्र हैं) अग्री सिन्धु, आगल,
 -गुराग्रीकादीष्वुजो बुधोज -रघु०, १८।४. १६।६
 अनादितारंगल -मुञ्च० २, समग्रजन्तु द्रुतपानितारंगला
 निमीलितालीन विद्याभगवतो-गि० १, आल०
 के यह लक्ष बाधा, रोक या अवरोध के अर्थ में बहुधा
 प्रयुक्त होता है -ईदृश तदवज्ञानादिति सागल-
 बोधनः-रघु० १।७९, बाधित-बाधनीलाक्ष इव
 प्रवृत्ता-५।४५, कठं केवदमवलेख निदिता ओदम्य
 नियन्त्रित-काव्य० ८, ३० 'अनाल' भी, 2 तनय
 वा साल ।

अर्चिका [अर्चला + कन् + टाप् इत्यम्] छोटी अगल,
 छोटी चटखनी ।

अर्च (अ० व०) [अर्चति, अर्चित] पूजायाम् अर्चना,
 मन्त्र रक्षना, मन्त्र जपना, -परीक्षका यत्न न सन्ति
 दैवे मार्गसि ररक्षति समुद्रजानि -सुभाषि० ।

अर्चः [अर्च + कल्प्] 1. मूल्य, कीमत -कुर्पूरर्चं यथा-
 कम्प-मनु० ८।१९८ पाठ० २।२५१, कुर्यात् स्यु
 कुपरीक्षका हि नमसो वीर्यचतः पाणिना-का० २।१५,
 वास्तविक मूल्य से घटी हुई, अर्चमूल्य, इसी प्रकार अर्च
 मूल्य, लक्ष्य मूल्यवान् 2. पूजा की सामग्री, देवताओं
 के अर्चनाय आदिश्यों का साधन आहुति या उपहार,
 -कुर्पूरर्चः कल्पितार्चय तस्मै-मेव० ४ (इस
 आहुति का सामान विन्यासित है -आय. जीः
 कुर्पूरर्चं च इति अर्थः तत्तन्मुक्तम् । यमः मि. आर्चकस्यैव
 अर्चार्चार्चः प्रकीर्तितः । दे० 'अर्च' नीचे । यम०

-अर्ह (वि०) सामान्य उपहार के योग्य, -अर्चकस्य
 मूल्य की दर, उचित मूल्य, मूल्यों में घटत बढ़त,
 सङ्कल्पनाम्, -संस्थापनम् मूल्यांकन, वस्तुओं का
 मूल्यनिर्धारण करना, कुर्पूरर्चं यथा (विन्यासम्) प्रत्यक्ष
 धर्मसंस्थापन नृप -मनु० ८।४०२ ।

अर्चोऽर्चः (पुं०) शिव ।

अर्च्य (वि०) [अर्च + कल्प् अर्च्यमर्हति] 1. मूल्यवान्, अर्च्य-
 अर्च्योऽर्च्यं २० श० के नी० 2 सम्माननीय -तान्त्रि-
 न्धर्ममन्त्राद्वा द्वातात्त्र्यस्यदी गिरि कु० ६।५०, शि०
 १।१६, अर्च्यं किमी देवता या सम्मान्य अर्चित को
 सादर आहुति या उपहार, अर्च्यमर्ह्यं विष्णु० ५,
 ददतु तत्र पुण्यरथं फलैश्च मधुरं च १।१०
 ३।१६, अर्च्यमर्ह्यमिति वादिन तमम् रघु० ११.९९
 कु० १.५८ ५।५० ।

अर्च (अ० व०) [अर्चति, अर्चित] 1. पूजा
 करना, प्रार्थना करना, मन्त्रारंभ करना रघु०
 १।२, २० २-१ ४।८६, १२।८९, मनु० १।२३
 आर्चिद् द्विजः शिवायामर्चयित्वा अर्चु० १।१५,
 १।१६, १।१५ (ख) सम्मान करना अर्चति अर्चक
 करना, मजाना-उपार्ण० १।९, 2 स्तुति करना,
 (व०), (पुं० व०) या वे० २ सम्मान करना, अर्च
 हुत करना, पूजा करना स्वर्गो कथामर्चितमर्चयित्वा
 -कु० १।५९, अर्चि तमर्चि -पूजा करना, अर्च-
 कृत करना, सम्मान करना, -आर्चिभिरर्च्यं यथाः
 सिन्धु० अर्चि० १।२६, अर्च० १८।६६ ३- 1. स्तुति
 करना, स्तुतिगान करना 2 सम्मान करना पूजा
 करना, प्रार्थनार्थम् जगदम्बनीयम्-अर्चि० २।२० ।
 अर्चक (वि०) [अर्च + कल्प्] पूजा करने वाला, आरा-
 धना करने वाला -कः पूजक गृध्रवेदार्चक-
 मनु० १।१२२५ ।

अर्च्य (वि०) [अर्च + कल्प्] पूजा करने वाला, स्तुति
 करने वाला -नम्, -ना पूजा, अर्चने में बहो का
 और देवी का आदर व सम्मान ।

अर्चनीय, अर्च्य (म० क०) [अर्च + अर्चनीय, अर्च्य वा]
 पूजा या आराधना करने के योग्य, सम्माननीय, आदर-
 नीय -रघु० २।१०, अर्चि० १।७० ।

अर्च [अर्च + कल्प् -टाप्] 1. पूजा, आराधना 2. वह
 प्रनिमा या स्तुति जिसकी पूजा की जाय -और्वेष्टित्वा-
 पिभिरर्चं प्रकृत्यना-वह० १ ।

अर्चिः (स्त्री०) [अर्च + कल्प्] किरण, (आल की)
 उजला वा (आल-कालीन वा कांक्ष) अर्चिः, आर्चि-
 यमनिर्वाचप्रदीपारिर्वाचि -रघु० १२।१, नैमिषा-
 चिन्तयन् इव छिन्नामृष्टिस्तथा -विष्णु० १ ।

अर्चिध्वज (वि०) [अर्चि + ध्वज] जपटवाला, जपज-
 वमकार-विष्णु० ३।२, (पुं०) 1. अर्चि, 2. ध्वज ।

अविष् (५०) (-विः) [अर्जु + इति] १. प्रकाशकरण, लो.,—प्रवर्धनाभिर्हिरासये—रघु० १।१४, २. प्रकाश, चमक, —प्रसमादभिराम—कु० २।२०, रत्न० ४।१६, (स्त्री० श्री), (पु०) १. प्रकाशकरण २. अग्नि ।

अर्जु (स्त्री० पर०) [अर्जित, अजित] १. उपार्जन करना, उपलब्ध करना, प्राप्त करना, कमाता- प्रायः प्रेर०, इस अर्थ में—पितृद्वयविरोधेन यदयत्नस्त्वयमजितम्—या० २।११८, २. ब्रह्मण करना- आनर्जुनपुत्रोऽस्मायि मट्टि० १४।७४, (पु० पर०—या प्रेर०) उपार्जन करना, अधिकार में करना, प्राप्त करना—स्वयमजित, स्वर्जित, अपने आप कमाया हुआ । उच—प्राप्त करना या उपार्जन करना ।

अर्जक (वि०) [स्त्री०] वि० [अर्ज + क्त] उपार्जन करने वाला, अधिकार में करने वाला, प्राप्त करने वाला ।

अर्जुन (वि०) [अर्जु + क्त] प्राप्त करना अधिग्रहण करना । अर्जुनामर्जनं दुःखम् पञ्च० १।१८३, अर्जुनित-व्यागारोऽर्जनम्—दाय० ।

अर्जुन (वि०) [स्त्री०] या. लो. [अर्जु + उन्त, लिङ्क. च] १. शरीर, बमलीला, उज्ज्वल, दिन वैसा रशीन,—पितामहोऽजीवमर्जुनच्छविम् शि० १.५ २. लघुहा, -व. १. अन्तरंग २ मोर ३ गुणकारी छाल वाला अर्जुन नामक वृक्ष ४ इन्द्र द्वारा कुन्ती से उत्पन्न मृगीय पादव (सीलिए इसे 'ऐनि' भी करते हैं) [अपने कार्यों में पवित्र और विशुद्ध होने के कारण—बहु अर्जुन कहलाया । शीतपाय से उसने शस्त्रास्त्र की कक्षा भी. अर्जुन शीत का प्रिय शिष्य था । अपने मन्त्र-कौशल के द्वारा ही उसने स्वयं से शीतही की जीता । अनिच्छापूर्वक किसी नियम का उल्लंघन हो जाने के कारण उसने अत्यन्त निराश्रित ब्रह्म किया तथा इसी बीच परशुराम से शस्त्रविज्ञान का अध्ययन किया । उसने नागराजकुमारी उन्मयी से विवाह किया—जिससे द्रावन् नामक पुत्र पैदा हुआ । उसके पश्चात् उसने 'मृगपुर' के महा राज की कन्या विशागदा से विवाह किया—इसने बभ्रुवर्धन का जन्म हुआ । इसी निराश्रित-काल में वह शरणा गया और वहाँ कृष्ण के परामर्शानुसार मुन्ना से विवाह करने में सफलता प्राप्त की । मुन्ना से अश्विमानु का जन्म हुआ । उसके पश्चात् उसने वासुदेव-वन को जलाने में अग्नि की सहायता की जिससे कि उसने 'वासीव' वृक्ष लपट किया । यह उसके लोभ से जाता चर्मराज ने जूने में राज्य की दिया और वाँचों वाँचों विप्रांसित कर दिए गए तो वह वेताओं का आरंभ करने के लिए द्विपान्त पर्वत पर गया जिससे कि कीरों के साथ होने वाले युद्ध में

उपयोग करने के लिए उनसे दिव्य शस्त्रास्त्र प्राप्त कर सके । वहाँ उसने किशोरवेषधारी शिव से युद्ध किया, परन्तु जब उसे अपने विपत्ती के वास्तविक चरित्र का ज्ञान हुआ तो उसने उनकी पूजा की, शिव ने भी प्रसन्न होकर अर्जुन को वासुदेवत्व दिये । इन्द्र, वरुण, यम और कुबेर ने भी अपने-अपने वस्त्र उसे उपहारस्वरूप दिए । अपने निर्वासनकाल के तेरहवें वर्ष में पांडव राजा विराट् की नौकरी करने लगे । अर्जुन काकुषी के रूप में नृसिंघान का शिकार बना । कौरवों के साथ महायुद्ध में अर्जुन ने अश्वमुन शीर्य का परिचय दिया : उसने कृष्ण की सहायता प्राप्त की, उस अपना मार्ग बनाया । जिस समय युद्ध के पहलू को रित अर्जुन ने अपने बभ्रुवाचकों के विशुद्ध धनुष रहने में सकोच किया—उस समय श्रीकृष्ण ने शत्रु को भगवद्-गीता का उपदेश दिया । उस महाभारत के युद्ध में अर्जुन ने कौरव सेना के जयद्वय भाँप्य तथा कई आदि अनेक कुशल शोभाओं की मौत के घाट उतारा । जिस समय दुर्योधन हस्तिनापुर के राजसिंहासन पर आसीन हुआ—तो उसने अश्वमेध यज्ञ करने का संकल्प किया—कलत अर्जुन को पराजयता में एक बोझ छोड़ा गया । अर्जुन ने अनेक राजाओं से युद्ध किया तथा अनेक नगर और देशों में धोरे का अनुसरण किया । मृगपुर पहुँचने पर उसे अपने ही पुत्र बभ्रुवर्धन से युद्ध करना पड़ा । पश्चात् अर्जुन, जब इस प्रकार बभ्रुवर्धन से युद्ध हुआ युद्ध में मारा गया तो अपनी पत्नी उन्मयी द्वारा दिये गए आहु-रुच से वह पुनर्जीवित किया गया । उसने इस प्रकार सारे भारतवर्ष में भ्रमण किया । जब लाला प्रकार की भेट, गणहार तथा अपहृत सगर्भियों के साथ वह हस्तिनापुर गमन आया—तो उस समय अश्वमेध यज्ञ किया गया । उसके पश्चात् कृष्ण ने उसे शरणा में बुलाया—और जब पारस्परिक युद्ध-युद्ध में पाद्यों का अंत हो गया तो अर्जुन ने बभ्रुवर्धन और कृष्ण की कन्येयि-किया की । इसके बाद कौशली राजा ने अश्विमानु के एक मात्र पुत्र पत्नीविष को हस्तिनापुर की राजपट्टी पर बिठा दिया तथा राजा स्वर्ग की यात्रा को भक्त दिये । तीनों राज्यों में अर्जुन सबसे अधिक पराक्रमी, उदार, दीन, दूरदर्शी तथा विशास का मनुष्य था—अपने लक्ष भाइयों में वही प्रमुख व्यक्ति था । ५. कर्त्तवीर्य—जिसे परशुराम ने मौत के घाट उतारा था—२०. कर्त्तवीर्य, ६. अपनी मत्ता का एक साथ पुत्र, —श्री १. सुती, कुन्ती २. श्री ३. एक मही जिसे 'कल्योम' कहती है,—कथ कास । तब—उपनाः तपस्वय का पुत्र, —अर्जुन (वि०)

घन के ऊपर आश्रित,—निश्चयः निर्धारण, निर्णय,
—वर्तिः १ 'घन का स्थायी', राजा,—किञ्चिद्दुस्वार्थपति
बनाये—रघु० १५९, २४६, ९३३, ९८१, पञ्च०
१७४, २. कुबेर की उपाधि,—वर,—सुख (वि०)
१ घन प्राण करने पर जुटा हुआ, लालची २. कज्जल,
—कृतिः (स्त्री०) नाटक के महान् उद्देश्य का प्रमुख
साधन वा अवसर, (इन साधनों की संख्या पाँच है,—
वीर्य विम्बुः पताका च प्रकरी कार्यमेव च, अर्थप्रकृतय
पञ्च द्वात्वा योग्या यथाविधि—मा० द० ३१७).
—प्रयोगः व्याख्योरी,—बोधः शब्दों का यथाक्रम रचना,
रचना, पाठ, श्लोक, चरण—श० ७५५ ललितार्थबंधम्
विक्रम० २११४,—बुद्धि (वि०) स्वार्थी,—बोधः
वास्तविक ज्ञास्य का संकेत,—वेदः अर्थों में मोद—अर्थ-
मेवेन शब्दमेव,—आश्रयः,—आ मर्यादा, घन-शीलन,
—मुक्ति (वि०) सार्वक,—ज्ञातः घन की प्राप्ति,—लौक-
लालच,—भावः १. किसी उद्देश्य की बोधना, २ निष्प-
यात्मक बोधना, बोधनार्थवश्यक प्रकचन, व्याख्यापरक
टिप्पणी, किसी आशय की उक्ति या कथन, वाक्य
(इसमें उचित अनुष्ठान के करने में उत्तम फलों का
वर्णन करते हुए किसी विधि की अनुशाला की जाती
है, साथ ही अपने वस के समर्थन में ऐतिहासिक निद-
र्शन देकर यह बतलाया जाता है कि इसका उचित
अनुष्ठान करने से अनिष्ट फल मिलता है) ३
प्रशंसा, स्तुति;—अर्थवाद एष, दोष तु मे कथितव्य-
उत्तर० १,—विकल्पः १ सचाई से इधर-उधर होना,
तथ्यों का तोड़-मरोड़ २ अपलाप, 'वैकल्यम् भी.
—बुद्धिः (स्त्री०) घन-संचय,—व्ययः घन का खर्च
करना,—ज्ञ (वि०) रुपये-पैसे की बातों का ज्ञान-
कार—आत्मन् १ घन-विज्ञान (सार्वजनिक अर्थशास्त्र)
२. राजनीति-विज्ञान, राजनीतिविषयक शास्त्र, राजनय
—द० १२०, इह जलु अर्थशास्त्रकाराग्निविद्या सिद्धि-
मुचरथंति—मुद्रा० ३. व्यवहारिक राजनीतिज्ञ,
३. व्यावहारिक जीवन का शास्त्र,—सौख्य रूप्ये-यमे
के मानके में ईमानदारी या ल्परापन—सर्वेया त्व
लोचानामर्थसौख्य पर स्मृत्—मनु० ५१०६
—सौख्यम् १. घन का संयोज २. कोष,—सख्यः वाक्य
का शब्द से अर्थ का संबन्ध,—सारः बहुत घन—पञ्च०
२४४२,—सिद्धिः (स्त्री०) अपीष्ट सिद्धि, मफलता ।

अर्थः (अव्य०) [अर्थ+तसि] १. अर्थ या किसी
विशेष उद्देश्य का उत्प्रेक्ष करते हुए,—वर्णार्थतो गौर-
वम्—मा० १७, अर्थ की गहराई, २. वस्तुतः, वास्तव
में, सचमुच,—न नामतः केवलमर्थतोऽपि—वि० ३५६,
३. घन के लिए, लाभ या प्राप्ति के लिए—ऐष्वर्थाव-
नैकनीचरमर्ष लोकोर्षतः लेवते—मुद्रा० ११४. ४.
के कारण ।

अर्थना [अर्थ+युच्+टाप्] प्रार्थना, अनुरोध, मागिश.
याचिका—नै० ५१११२ ।

अर्थवत् (वि०) [अर्थ+मत्तुप्] १ घनवान् २. सार्वक,
अभिप्रायः या अर्थ से परिपूर्ण,—अर्थवान् जल मे राज-
शब्दः—श० ५, ३ अर्थ रखने वाला—अर्थवत्तातुर-
प्रत्ययः प्रातिपदिकम्—पा० १२१४५ ४. किसी प्रयो-
जन को सिद्ध करने वाला, सफल, उपयोगी ।

अर्थवत्ता [अर्थ+मत्तुप्+तल्+टाप्] घन-शीलत, सम्पत्ति ।

अर्थत् (अव्य०) [अर्थ का अगा० का रूप] १ सच बात
नो यह है कि, निस्सन्देह, वस्तुतः—भूषिकेण इच्छो
भक्षित इत्यनेन तत्सहचरितमपूपमक्षणमर्थाशयित
भवति—मा० द० १०, २ परिस्थिति के अनुसार,
नव्यानुसार ३ कहने का भाव यह है कि, नामों के
अनुसार ।

अर्थिकः [अर्थयते इयर्थी । कन्] १ चिन्ताने वाला, चौकी
दार, २ विशेषतः माट त्रिमका कान्ध्य दिन के
विभिन्न विधित समयों की (जैसा कि ज्ञाने का, सोने
का, या भोजन करने का) बोधना करना है ।

अर्थित (पुं० क० कृ०) [अर्थ+क्त] प्राप्तित, याचित,
इच्छित तत्त्वात्, इच्छा, मागिश ।

अर्थिता-स्वम् [अर्थित+तल् टाप्, रत्न वा] १. मागना,
प्रार्थना करना, २. चाह, इच्छा ।

अर्थित् (वि०) [अर्थ+इति] १ प्राप्त करने की चेष्टा
करने वाला अभिलाषी, इच्छुक—करण० के साथ
अथवा समान में—कोयवद्व्यायाम्—मुद्रा० ५, को
वचने समर्थी स्यात्—महा०, अर्थार्थी—पञ्च० १४१९,
२ अनुरोध करने वाला, या किसी से कुछ मांगनेवाला
(सब के साथ)—अर्थी बर्धविमंजु—कथा० ३. अनुरोध
रखने वाला, (पुं०) १ याचक प्रार्थयिता, मित्रक,
दीन याचक, निवेदक, विवाहार्थी—यथाकामाभिलाषिता
—रघु० ११६, २१६४, ५३३१, ९१०७, कोऽर्थी गतो
गौरवम्—पञ्च० ११४६, कम्पारत्नमयीनिजम्ब नव-
नामास्ते वय चाधिना—महावी० ११३०, २. (विधि
में) वादी अभियोजका, प्राविशोचक,—स सर्वस्वसख
गरुडमिप्रययिना स्वयं, वरुषी सगयच्छेजान् व्यवहो-
गानन्दिता—रघु० १७३३९, ३ लेवक अनुचर । स०
भावः याचना, मागना, प्रार्थना—मा० ९३०,
—साम् (कि० वि०) विवाहियों के अधिकार में करके
विषय्ये सेहनं यद्विवासात्कृतं—नै० १११६ ।

अर्थीय (वि०) [अर्थ+छ] १. पूर्वाभिप्रेत, अभिप्रेत, कष्ट
उठाना माध्य में बड़ा या—शीरीर यातनाधीन—मनु०
१२११६, २. सर्वरखने वाला—कर्म वैद्य सर्वधी-
यन्—१७३७१ ।

अर्थ्य (वि०) [अर्थ+व्यत्] १. जिससे सर्वप्रथम याचना
की जाय, २. बोध्य, उचित ३. उपयुक्त, वाचाय से

द्विपर उच्चर न होने वाला, सार्धक - स्तुत्य स्तुतिभिर-
ध्यातिरूपतस्ये सरस्वती - रघु० ४।६, कु० २।३, ४.
घनी, दीर्घतमद ५ समसदाश, बुद्धिमान्, - ध्वेयं येष्ट।
अर्द्ध (स्वा० पर०) [अर्द्धत, अर्द्धिन] १ दुःख देना, व्यथित
करना, प्रहार करना, चोट पहुँचाना, मारना - रक्ष.
सहस्राणि चतुर्दशार्दीन् - भट्टि० १२।५६ दे० नीचे
प्रे०, २ माँगना, प्राप्त करना, निवेदन करना
- निर्मोक्तान्बुधार्थं शरद्वधन नार्द्धिन चातकोऽपि - रघु०
५।१७, (प्रे० या तु० पर०) १ (क) मताना,
पीड़ित करना, दुःखाना - कामार्द्धिन, कोप, भय,
आदि (ख) प्रहार करना, चोट पहुँचाना, घायत
करना, वध करना येनादिभूत ईश्वरपुत्र पिनाकी -
भट्टि० २।५६ अर्द्ध अर्द्धिक मताना, आक्रमण करना,
टूट पड़ना - अर्द्धादीन् ताम्निन पुत्रम् - भट्टि० १५।११५.
अर्ध दुःखाना, मताना, पीड़ित करना।

अर्धन (वि०) [अर्धे + ण्] दुःखाने वाला मतानेवाला,
न्यष पीडा, कष्ट, चिन्ता उन्नेतना, क्षोभ, भय,
मा १ जाना, हिलना २ पड़ना, माँगना ३ वध
करना, चोट पहुँचाना, पीडा देना।

अर्धं (वि०) [ऋध् + णिच् + अच्] आधा, आधा भाग
बताने वाला, - धेम्, धेः १ आधा, आधा भाग
- त्वन्तनाश समुत्पन्ने अर्धे त्वर्जान् पण्डित, गतमर्धं
दिवसस्य विक्रम० २, यदर्थं विच्छिन्ने - शो० १।९,
आधा-आधा बैठा हुआ (अर्धे शब्द का लक्षण मन्त्र
मन्त्रा विनोपण शब्दा के साथ जोड़ा जा सकता है)
मन्त्रा के साथ समास म प्रथमपद के रूप में इसका
अर्थ है 'आधा' काय अर्धकायस्य, विशेषण के
साथ इसका अर्थ क्रियाविशेषणान्तर है, यथा
आधा काला, क्रमपूर्वक सक्रियाओं के साथ 'समस्या का
आधा' अर्थ होता है, तृतीयम् दो और आधा
तीसरा अर्थात् अर्द्धाई। सम० अर्ध (नपु०)
अर्धगर्दित, अर्ध का श्रवणना मन्त्र० ८।६२.

अर्द्धन् आधा गतर - अर्द्ध, आधा भाग, आधा
हिम्सा, अर्धिन् (वि०) आधे का हिस्सेदार,
- अर्धः, - अर्धम् १ आधे का आधा, चौथाई - चरोर-
धर्धभागस्य ताम्रयोजयताम् - रघु० १०।५६, २
आधा और आधा, - अर्धवैवकः आवासीसी, आधे
सिर की पीडा, - अर्धशेक (वि०) जिसके पास केवल
आधा ही शेष रहे, - आसनम् १ आधा आसन
- अर्धामन गोत्रभिदोऽर्धचन्द्रो - रघु० ६।३३, ममहि
दिवीकला ममभ्रमशान्तोपवेजितम् - शो० ७ (आग-
नुक अतिथि को अपने ही आपन पर अर्धामन देना
अथार्थिक मन्मान का चिह्न समझा जाता था) २
सम्मानपूर्वक अभिवादन करना ३ निन्दा में मुक्ति
दण्डः १ आधा चाँद, दूध का चाँद, २ अगुली के

नाखून की अर्धवर्तुलाकार छाप, बालेन्दु के आकार की
नख-छाप - नै० ६।२५, ३. बालचन्द्र के आकार के
समान सिर वाला बाण (== अर्धचन्द्र नी०), - औल
शिब, - मेघ० ५६, - उल्ल (वि०) आधा कहा
हुआ, - रामभद्र इति वर्षाको महाराज - उत्तर० १,
उल्लिः (स्त्री०) भगनबाणी, अन्तर्बाधित बाणी,
- उदय १ अर्धचन्द्रमा का निकलना २ आशिक
उदय, आसनम् समाधि में बैठने का एक प्रकार का
आसन, - ऊर्ध्वम् स्थिर के पहनने का अन्तर्वस्त्र,
नेटिकाट, कुल (वि०) आधा किया हुआ, अपूर्ण,
आरम्भ, ही एक प्रकार का माप, आधी खारी
- गंगा कावेरी नदी इसी प्रकार 'जायन्ती', - मुच्छ
२४ लड्डियों का हार, - गोल गोलाई, - बह
(वि०) बालेन्दु के आकार वाला, (- न्) १
आधा चन्द्रमा, बालेन्दु - माधचन्द्र विभक्ति य - कु०
६।७५, २ मोर की पूँछ पर अर्धवर्तुलाकार चिह्न,
३ बालचन्द्र के आकार के सिर वाला बाण - अर्ध-
चन्द्रमुखर्वाण्डिचिह्न कदलीमुखम् - रघु० १२।९६,
४ बालचन्द्र के आकार की नख-छाप ५ अर्धवर्तु के
रूप में मुका हुआ हाथ, जो कि किसी वस्तु को पक-
ड़ने के लिए मोड़ा गया हो इसका - गर्दनिया देकर
बाहर निकालना - दीर्घामेतरामधचन्द्र - पञ्च० १,
- चन्द्राकार, - चन्द्राकृति (वि०) आधे चन्द्रमा
के आकार वाला, - बोलक अर्धिया, - अर्धम्
विहसः १ आधा दिन, २ का मध्यभाग, २ १२
घण्टे का दिन, - नारायः बालचन्द्र के आकार का
लौहे की तोक वाला बाण, - नारीकः, - नारीकः
शिव का एक रूप (अर्धा पुरुष तथा आधो स्त्री),
- नारम् आधी किस्ती, - निशा मध्यरात्रि, आधी रात
- पञ्चाशत् (स्त्री०) पन्चीस, - पणः आधे पण की
माप, पणम् आधा मागं (- षे) मागं के मध्य में,
प्रहर आधा पहरा, डेढ़ घण्टे का समय, - भागः
आधा, आधा भाग या हिस्सा, - तदर्थभागन लभन्
काङ्क्षितम् - कु० ५।५०, रघु० ७।६५, भाषिक
(वि०) आधे भाग का साक्षीदार, - भाष् (वि०)
१ आधे भाग का हिस्सेदार, आधे भाग का अधि-
कारी, २ साक्षी, साक्षीदार, - भाष्करः दिन का
मध्यभाग, दोपहर, भाषकः - भाषकः १२ लड्डियों
का हार, (भाषक २४ लड्डियों का होता है),
- भाष्त्रा १ आधो भाष्त्रा, २, व्यजन वर्ण, - भाष्
(अव्य०) मार्ग के बीच में - विक्रम० १।३, - भासः
आधा महीना, एक पक्ष, - भाषिक (वि०) १. प्रत्येक
पक्ष में होने वाला २ एक पक्ष तक रहने वाला,
मुष्टिः (स्त्री०) आधा भिचा हुआ हाथ, - बाणः
आधा पहर, - रथः किसी दूसरे के साथ रथ पर बैठ

कर युद्ध करने वाला योद्धा (जो कि स्वयं 'रथी' के समान कुशल नहीं होता) —रणे रणेभिमानो च विभुल-
श्चापि दृश्यते, श्ली कर्णः प्रमादी च तेन मेघवर्षो मत
महा०, —रात्र आधीरात—अधार्थरात्रे स्तिमितप्रदीपे
—रघु० १६४, —विलसि, —विलसन्ती च ख
तथा पृ फ् से पूर्व विसर्गध्वनि, —बौलबध् तिरछी
चितवन, कनखी, —बुद्ध (वि०) अवेद उन्न का,
—वैरागसिक्क कणाद का अनुयायी (अर्थविनाश का
तात्त्विक) — वैराग्य आधा या अपूर्णवध - कु० ४३१,
—व्यासः वृत्त में केन्द्र से परिधि तक की दूरी,
—सप्तम् पञ्चम, —शेष (वि०) जिसके पास केवल
आधा ही शेष रहा है, —श्लोक आधायश्लोक या
श्लोक के दो चरण, —सौरिण (पु०) 1 बटाईदार
अपने परिश्रम के बदले आधी फसल लेने वाला किसान
— याज्ञ० ११६६, 2 —दे० अधिक, हार ६४
लडियों का हार, —हृस्व लघु स्वर का आधा ।

अर्धक (वि०) [अर्ध + कन्] आधा, दे० 'अर्ध' ।

अर्धक (वि०) (स्त्री०—की) [अर्धमर्हति—अर्ध + क्तृ]
1 आधी नाप रखने वाला 2 आधे भाग का अर्ध
कारी, — काः वर्णसंकर, वैयक्यासमुत्पत्त्यो ब्राह्मणेन
तु संस्कृत, अधिक स तु विज्ञेयो भोज्यो विप्रैर्न
समय —पराशर० ।

अर्धम् (वि०) [अर्ध + इति] आधे भाग का माझीदार ।

अर्धमम् [अर्ध + णिच् + ह्यट् पुकागम] 1 रखना, स्थिर
करना, जमना, पादपानुग्रहपूतपृष्ठम् —रघु०
२३५, 2 बीच में डालना, रखना, 3 देना, भेंट
करना, त्यागना, —स्वदेहापंगनिष्कयेण —रघु० २१५५,
पुष्पापंगेषु प्रकृतिप्रगल्भा —१३१९, तत्कृष्टव मरपं-
जम् —मग० ९१७७, 4 बापम करना, देना लौटा
देना ब्यास अमर० 5 छेदना, गोदना —सीलनतुष्टा-
पंजीर्णान् नखैः सर्वा व्यदारयत् —रामा० ।

अर्धितः [अर्ध + णिच् + इमुन् पुकागम] हृदय, हृदय का
भाँस ।

अर्ध (स्त्री० पर०) [अर्धनि, आनर्धं, अर्धनुम्] 1
की ओर जाना, 2 वध करना, चोट करना ।

अर्ध (र्द्ध) कः—वम् [अर्धं (र्द्धं) + विच्—उद्—इ+
ङ्] 1 मूजन, (नाम प्रकार की) गसोली 2 टस
करोड़ की सख्या 3 भारत के पश्चिम में स्थित आर्ध
पहाड़, 4 सीप, 5 बादल 6 मांस पिंड 7 साप जैसा
राजस विसे इन्द्र ने मारा था ।

अर्धक (वि०) [अर्ध + कन्] 1 छोटा, मुकम, थोड़ा 2
मुसला, पतला 3 मुख 4 बच्चा, छीना, —कः 1
बालक, बच्चा—मृतस्य यायादयमन्तमर्धकः—रघु०
३१२१, २५; ७१६७, 2 किसी जानवर का बच्चा
3 अर्ध बड़ ।

अर्ध (वि०) [अर्ध + यत्] 1 श्रेष्ठ, बढ़िया 2 बाहर-
णीय, —यैः 1 स्वाधी, प्रभु 2 तीसरे वर्ण का व्यक्ति,
वैश्य, —यैः वैश्य की स्त्री । सम०—अर्धः सप्ताम्य
वैश्य ।

अर्धमन् (पु०) [अर्धं श्रेष्ठं मिमीते—मा + कनिन् नि०]
1 सूर्य 2 पितरों के प्रधान—पितृनामयमा वास्मि
—मग० १०१२९, 3 महार का पीषा ।

अर्धानौ [अर्ध + ङीप्, आनुक्] वैश्य जाति की स्त्री ।

अर्धन् (पु०) [अर्ध + वानिप्] 1 थोड़ा, —वल्कीकृतप्रवह-
मवता ब्रजा —शि० १२३१, 2 चन्द्रमा के दस चोखे
में से एक 3 इन्द्र 4 गोकर्णपरिमाण —स्त्री 1 थोड़ी
2 कुतनी, दूती ।

अर्धाक्ष (वि०) [अर्धरे काले देशे वा अर्धवति अर्धः]
कितन पृथी० अर्धाक्ष [1 इस ओर आते हुए
(विप० परञ्च्) 2 की ओर मुड़ा हुआ, किसी में
मिलने के लिए आता हुआ 3 इस ओर होने वाला 4
नीचे या पीछे होने वाला 5 बाद में होने वाला, बाद का
—क (अव्य०) 1 इस ओर, इसकी तरफ 2 किसी
एक स्थान में 3 पहले (समय या स्थान की दृष्टि से)
—यत्पुष्टेरर्धाक्षं सिलत्तय ब्रह्मण्डममृत का० १२५
अर्धाक्षं मवत्सरास्त्वामी हूते परतो नृप —याज्ञ०
२१७३, ११३, १२५६, 4 नीचे की ओर, पीछे,
नीचे (विप० ऊर्ध्व) 5 बाद में, पश्चात् 6 (अर्ध
के साथ) के अन्दर, निकट—एते बार्बागुरुषनमृषि
छिन्दवर्धाक्षकुरायाम्—ग० १११५ । सम०—कालः
बाद में आने वाला समय, —कालिक (वि०) बासन्त-
काल में मवेश रखने वाला, आधुनिक, ता आधुनिकता,
उत्तरकालीनता, —कृष्ण नदी का निकटस्थ तट ।

अर्धाक्षीय (वि०) [अर्धाक्ष + य] 1 आधुनिक, हाल का
2 उलटा विरोधी, —वम् (अव्य०) 6 (अर्धाक्ष के
साथ) 1 इस ओर 2 के बाद का —यपूर्व पृथिव्या
अर्धाक्षीयमन्तरिक्षान्—शत० ।

अर्धाक्ष (नपु०) [अर्ध + अमुन् व्याधी शुद् च] बवासीर ।
सम०—अर्ध (वि०) बवासीर को नष्ट करने वाला
(—अः) मृण, मिलावा (क्योंकि कहते हैं कि यह
बवासीर नाशक है) ।

अर्धस (वि०) [अर्धम् + अर्धः] बवासीर से पीड़ित ।

अर्ध (स्त्री० पर०) [अर्धति, अर्धितुम्, आनर्धं, अर्धित]
(आधे प्रयोग—आ०, रावको नाहते पूजाम्—रामा०)
1 अधिकारी होना, बोध्य होना (कर्म० तथा अनु-
मत्ता के साथ) —किमिदं नायुष्मानमरेष्वरणमर्धति
—स० ७, 2 अधिकार देना, अधिकारी बनना—अनु
मर्धं पित्र्यं रिक्त्वमर्धति—अ० ९, ५ स्वातन्त्र्य-
मर्धति—अनु० २३३ 3 बोध्य होना, पात्र बनना
—अर्धना मयि अर्धाक्षः कर्तुमर्धति—नी० ५१११३, ४४०

१३७, ४. समान होना, योग्य होना—न ते माषाण्यु-
पचारमर्हन्ति- शं० ३।१८, सर्व ते उपयज्ञस्य कला
नार्हन्ति षोडशीम् मनु० २८६, ५ योग्य होना,
अनुवाद 'सकता'—न मे वचनमन्यथा भविष्यमर्हति
शं० ४६ पूजा करना, सम्मान करना नीब प्रेर० दं०
७ (मध्यम पुरुष के साथ—कभी-कभी अन्यपुरुष के
साथ भी तुमुभक्त का प्रयोग होता है), अर्हं धातु
मुदु आदेश, शिष्ट प्रायेना तथा परामशं के लिए
करना, अनुग्रह करना प्रसन्न होना द्विप्राप्यहा-
न्यर्हसि साक्षुमर्हन्- रघु० ५।२५, कृपा प्रतीक्षा
कीजिए नार्हसि मे प्रणय बिहन्तुम् २।५८,
[प्रेर० या चू० पर०] सम्मान करना, पूजा करना
—राजाजिहत् मधुपर्कपाणि भट्टि० १।१७, मनु०
३।११९।

अर्ह (वि०) [अर्ह + अच्] १ आदरणीय आदर योग्य
पात्र अधिकारी अर्होभोजयन् विभो वक्ष्यमर्हति माष-
कम् मनु० ८।३९२, २ योग्य दाबदार, अधिकारी
(कर्म०, तुमुभक्त, तथा समास म) नैवाहं रैनुक्
रिक्च पतितात्पादित हि स—मनु० ९।१४४, मस्कार
महस्त्व न च लप्यम—रामा०, नस्माग्राहार्हा वय हन्तु
धानराष्ट्रान् स्वबान्धवान् भृग० १।३७ इसी प्रकार
मर्हं वष० द०० आर्वि ३ मुहावना, उचित, उपयुक्त
—केवल यानमर्हं स्यात् पच० ३, (सब० के साथ
को)—स भूषोऽहं महोभुजाम् पच० १।८७-९२,
४ उचित मूल्य का, कीमत का, दे० नीब, हूँ १
इन्द्र २ बिष्णु ३ मृत्यु (जैसा कि 'महाहं मे')—महाहं
शय्यापारिवर्तनस्युते कु० ५।१२ (महानहो यस्या
मल्लिनाथ) —हार् पूजा, आराधना।

अर्हण्य-भा [अर्ह + भावे ल्युट्] पूजा, आराधना, सम्मान,
आदर तथा सम्मान के साथ व्यवहार करना अर्हणा-
मर्हते चक्रमुनया नयचक्रुषे रघु० १।५५ जि०
१।५।२२।

अर्हन् (वि०) [अर्ह + शतृ] योग्य अधिकारी, पूरणीय -
(पु०) १ बृद्ध षोडशम की पुरोहिताई में उच्चतम
पद ३ जैनियों के पूज्य देवता, तीर्थंकर सर्वज्ञा जिन-
रागादिदोषस्त्रीलोक्यपूजित, यथास्थितार्थवादी ५ देवोऽ
हन् परमेश्वर।

अर्हण (वि०) [अर्ह + स वा०] योग्य, अधिकारी, —तः
१. बृद्ध २ षोडशभिः।

अर्हणी (स्त्री०) पूजा के योग्य होने का गुण, सम्मान,
पूजा, —आर्हाहीतीर्थनीमुख्य —भिट्टा०।

अर्हो (सं० कृ०) [अर्ह + क्तृत्] १. योग्य, आदरणीय, २.
प्रशंसा के योग्य।

अर्ह (भा० उभ०) [अकृति-ते, अकृत्युम्, अकृति] १.

सजाना, २ योग्य या सजय होना ३ रोकना, दूर
रखना, दे० अलम्।

अलम् [अल् + अच्] १ बिम्ब का टुकड़ा उसकी पूछ
में होता है २ पाली हरनाल।

अलक. [अल् + कृतृ] १ धृगङ्ग बाल, जुगुप्ते, बाल
लभार्तिका चन्दनघुस्रालका कु० ५।५५ अलक बाल
कुन्दानुविद्धम मेघ० ६७। उह शब्द नपु० भी है
जैसा कि मल्लिनाथ के उदा० स्वभाववक्राभ्यलकानि
ताम्य स प्रकट होता है। २ मन्त्र के पूषर ३
शरीर पर माला हुआ केश का १ आट से दस वर्ष
तक की आयु की कन्या २ यक्षा के स्वामी कुबेर
की राजधानी बिम्ब नि यस्या कलितालकाया
महाहा वैश्वणस्या लक्ष्यो भासि० २।१०, गन्तव्या
त वसतिरलका नाम यक्षवराणाम् मेघ० ७। सप०
अधिप, ईश्वर, पति अलका का स्वामी,
कुबेर आयोजितदमालकेश्वरी रघु० १९।१९,
अन्य धृगङ्ग का किनारा, या नट —नन्दा १ गगा,
गगा य गिरने वाली नदी २ आट से दस वर्ष के बाल
की आयु की लड़की, प्रभा कुबेर की राजधानी
मर्हति पृथरा की पत्नियां जि० ६।२।

अलकत-अलक [न रक्तोऽस्मात्, यस्य लत्वम्—स्वाच्चं कृ
नाम०] कुछ बुझा मे निकलने वाली गल, लाल
रंग की लाल महावर (प्राचीन काल में स्त्रियों द्वारा
शरीर के कुछ अंग इसके द्वारा रंगे जाने से विशेषरूप
से पैरों के तल और ओष्ठ) (दन्तवामना) बिरो-
जितालकनकापाटलेन क० ५।३४, मालवि० ३।५,
अम्भककु पदवी रामन रघु० ७।७, स्त्रिया
हृताथं पुण्य निरर्थं निष्पोग्लकनकवस्यजन्ति मूच्छ०
४।। सम० रस महावर लासारे अलकतर-
सम्भक्तभावकनरसवर्जितो, अर्थात् चरणी तस्या पय-
कोशसमप्रभो रामा० —राम महावर का लाल रंग।

अलक्ष (वि०) [न० व०] १ चित्तरहित २ परिचायक
चित्त्व से होन, परिभाषारहित, ३ जिसमें कोई अच्छा
चित्त्व न हो अशुभ अगन्तुन—केशववहा अतुरल-
क्षणाहम् रघु० १।४९ क्षम १ बुरा या अशुभ
चित्त्व २ जो परिभाषा न हो, बुरी परिभाषा।

अलक्षित (वि०) [न० त०] अदृष्ट अनवलोकित—अल-
क्षिताभ्युपेतनो नृपेण रघु० २।२७।

अलक्ष्मी (स्त्री०) [न० त०] दुर्भाग्य, बुरी किस्मत, निर्धनता।

अलक्ष्य (वि०) [न० त०] १ अदृश्य, अज्ञात, अनव-
ल—न २ चित्तरहित, ३ जिस पर कोई विलिप्त
चित्त्व न हो ४ देखने में नगण्य ५ जिसमें कोई बहाना
न हो, छल-कपट से रहित ६ अर्थों की दृष्टि से
गौण। सम०—वसि (वि०) अदृश्य रूप से
बुझने वाला, —अज्ञता अज्ञात जन्म, अक्षयक बन्ध

—वपुर्विकृपाक्षमलक्ष्यजन्मता—कु० ५।७०, —विम

(वि०) जो वेश बदले हुए हो, जिसका नाम पता छिपा हो बाष् (वि०) किसी अदृश्य वस्तु को संबोधित करने के बोलन वाला कु० ५।५७।

अलक्षणे [लगति स्पृशति इति लम् + क्विप्, लम् अर्द्धयति इति अर्द्ध + अच् स्पृशन् सन्, अर्द्धो न भवति] पानी का साँप।

अलघु (वि०) [स्त्री० घृष्णी] [न० त०] १ जो हल्का न हो भारी बड़ा २ जो छोटा न हो लम्बा (छोट सास्त्र में) ३ समीन गभीर ४ गहन प्रचण्ड बड़ा बड़ा। सम० उपलब्ध जट्टान—प्रतिज्ञ (वि०) गभीर प्रतिज्ञा करने वाला।

अलङ्कारणम् [अलम् कृ० ल्युट्] १ सजावट सजाना २ आभूषण (शा० तथा आल०) सजाना नगदण्डय गुणकार पुरुषात्तमलङ्कारण भुव भवे० १।०२।

अलङ्कारिण्य (वि०) [अलम् + कृ० इण्] १ आभूषणा का शौकीन २ सजाने वाला सजाने की क्रिया में कुशल।

अलङ्कार [अलम् + कृ० घञ्] १ सजावट, सजाना या अलङ्कृत करने की क्रिया २ आभूषण (आल० स भी) —अलङ्कार स्वयंस्व विक्रम० १ ३ अलङ्कार जिसके शब्द अर्थ तथा शब्दार्थ के अनुसार तीन भेद हैं ४ काव्य के गुण दोष बताते वाला शास्त्र। सम० शास्त्रम् काव्य कला तथा साहित्य शास्त्र मुखर्षम् आभूषण पहने के लिए सोना।

अलङ्कारक [अलम् + कृ० घञ् स्थायें क] आभूषण सजावट मनु० ७।२० [अलम् + कृ० घञ्] सजाने वाला।

अलङ्कृति (स्त्री०) [अलम् + कृ० क्तिन्] १ सजावट २ आभूषण कर्णालङ्कृति—अमर० १३ ३ साहित्यिक आभूषण अलङ्कार—नदोषो शब्दाद्यौ सगुणान्न लङ्कृती पुन क्वापि काव्य० १, या विद्वान्मन्यते काव्य शब्दार्थान्नलङ्कृती, अतो न मन्यते कम्पादनुराग मनल कृती चन्द्र० मालङ्कृति अलङ्कारमलवर्ण राजि माणि० ३।५, (यहाँ अर्द्धतीय तथा तृतीय अर्थ प्रकट करता है)

अलङ्कृतिया [अलम् + कृ० घा + ण्य] अलङ्कृत करना आभूषित करना, सजाना। (आल० भी)।

अलङ्कृत्योधि (वि०) [न० त०] जो लाघान न जा सके पार न किया जा सके, जहाँ पहुँचना न जा सके, पहुँच के बाहर।

अलक्ष [अल + लृत् + ड] एक प्रकार का पक्षी।

अलङ्कारः—चुरः [अल सामर्थ्यं गुणानि - लृत् + अच् पृथो० उत्तरा०] मिट्टी का बर्तन, मर्तबान, बरहा।

अलम् (अव्य०) [अल् + अम् शा०] १ (क) पर्याप्त,

वयेष्ट, काफी (सम्प० या तुमुन्नत के साथ)—नस्याल मेण भूषितस्य तुरये म्पु० २।१० अन्वेषा पा। राशाय कुपाम त्वामलक्ष्यम्—भट्टि० १।१८ (म) समकक्ष तुल्य (मम्प० के साथ) देख्यमा हरिरन्तम् मिद्धा० अल मन्ला मन्नाय महाभ्रा० २ वाय्य सक्षम (तुमुन्नत के साथ) अत्र भोक्तुम् सिद्धा०

बरेण शमित शोकात्त दम्पति रत्नम् कु० २।५६ (अधि० के साथ भी) ज्योतिषमपि लोकान्मलमोक्षम निवारण रामा० ३ बम बन्ध हो चुका कोई आकाशमन नहीं काई ताम ही (निर्वाणायक बल रचना) करणाय कृपाया के साथ अलम् यथा गुणैक्य माशक्ति० १।० यत्नानामिदं बन्धनम् दारानपाहरणं शिव २।६ अत्र भोक्तुम् तत्र भक्षणम् म्पु० २।५६ कु० १।८ अर्धमात्रं भुक्त्वम् शो० इति मन्त्राय तत्र ३।४। गुण रूप म्पु० १२४ म्—पहल्यत्र गभीरमित तारि पारा सहस्रे म्पु० ४० बमोर्ध्वस्तमत्र स्थितिग प्रोणयात्तम २।५० (४) बहुत अत्यधिक

बहुत हो अधिक, नदान अलम् १०२ यो मन्त्रं यत् निर्दिष्टं प्रति भमर० ३।० सम० कर्षोन् (वि०) रूप करने में सक्षम दश कुशल कु० ६० इ के शोच अर्थिक (वि०) शोचिका के लिए वयेष्ट चम (वि०) यवार्थ धन धन वाला धनवान्—निरा दिग्धनतर्क प्रतिम ग्यादधन मनु० ८।१६०

—धम अधिक पक्षी धूम्रपत्र पत्र का अवहार—पुष्पकोश (वि०) १ जो मनस्य के श्रेष्ठ हूँ मनस्य के लिए पर्याप्त हो बल (वि०) पर्याप्त बल शाली यशस्व शक्तिशाला बुद्धि पर्याप्त समक्ष भूष्ण (वि०) वाय्य सक्षम विनायकमन्त्रमन्त्रादि शायं नाम मनु शि० १।०।

अलम्पट (वि०) [न० त०] जो उपर या श्रेष्ठी न हो गूढ़ चरित्र वाला ट अल पुर।

अलम्पुष [अल पुराणि हीन गुण क पशो० परम् ४] १ बलम छोटा २ खुले हुए हथ की हथेली।

अलम्प (वि०) [न० ब०] १ गहरीन आवाज २ नाश न होने वाला, ध्वनिशुद्ध य [न० त०] १ अनन्तरवर्ता स्थायित्व २ अलम् उपनि।

अलम्प [अलम् अवर्तने अध्येते वा अर्क् + अच्, अच् + घञ् वा शक० परकृपम्] १. पागल कुना या मदोन्मत्त ध्वस्त २ मकेद मदार।

अलम्पे (अव्य०) [अल् + रा० के रम्य ल] बहुधा नाटको म प्रपुल्ल होने वाला वैशाखी बोली का शब्द जिसका कोई अपना तात्पर्य नहीं।

अलम्पालम् [न० त०] कुल में पानी देने के लिए जड़ में बना हुआ स्थान है० 'अलम्पाल'।

अलम्ब (वि०) [न० त० लस + क्लिब्यन्] न बमकन वाता ।

अलम्ब (वि०) [न लम्बिन् आप्रियने लस + अल]

अप्रिय स्फूर्तिहीन सुस्त आत्मी २ यथा हुआ

शान्त कठिन मागध्रमादलम्बगणरे दाहिक माल

वि० ५ प्रमथ १० १० विक्रम ५० गगन-

मलमल मा० ११७३ ३ मनु काम ४ शास्त्र

मन्द (यति म) आषाढ रादमगमना मेघ ० ५

मम ० ईक्षणा वह श्रो क्रिमकी मममरी दृष्टि हो ।

अलम्बक (वि०) [अलम्ब कन् । अकमण्य सुस्त क

अफारा पर शा एक ग ।

अलम्ब लम्ब [१० १०] अलम्ब अधःश्रवण एक हा

निर्वाणाला १५५५५ १० ५ ।

अलम्ब बू (स्त्रा) [न लम्बने न लम्बे ३

जित लम्बाय बृद्धि ना १०] १५ अलम्ब बू

लम्ब १५५५ ५ बग शास्त्र ५५ ५ ५

हस्तका फल जो पानी पर बैरा है । १५ ५ ५ ५

अलम्बि मन्त्र लम्बावति शास्त्र लम्बा ५ ५

बो० १ मनु० ६ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५

बसा हुआ नगा पात्रम् ५५५५ का शा बल

अलम्बरम् [अलम्बर लम्ब + अलम्बर लम्ब ५ ५ ५]

अलम्ब [अलम्बर ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५]

कायल ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५

सकुल मन्त्रिका का शा से अलम्बर ५ ५ ५ ५

सकुल मन्त्रिका का शा से अलम्बर ५ ५ ५ ५

सकुल मन्त्रिका का शा से अलम्बर ५ ५ ५ ५

सकुल मन्त्रिका का शा से अलम्बर ५ ५ ५ ५

सकुल मन्त्रिका का शा से अलम्बर ५ ५ ५ ५

सकुल मन्त्रिका का शा से अलम्बर ५ ५ ५ ५

सकुल मन्त्रिका का शा से अलम्बर ५ ५ ५ ५

सकुल मन्त्रिका का शा से अलम्बर ५ ५ ५ ५

सकुल मन्त्रिका का शा से अलम्बर ५ ५ ५ ५

सकुल मन्त्रिका का शा से अलम्बर ५ ५ ५ ५

सकुल मन्त्रिका का शा से अलम्बर ५ ५ ५ ५

सकुल मन्त्रिका का शा से अलम्बर ५ ५ ५ ५

सकुल मन्त्रिका का शा से अलम्बर ५ ५ ५ ५

सकुल मन्त्रिका का शा से अलम्बर ५ ५ ५ ५

सकुल मन्त्रिका का शा से अलम्बर ५ ५ ५ ५

सकुल मन्त्रिका का शा से अलम्बर ५ ५ ५ ५

सकुल मन्त्रिका का शा से अलम्बर ५ ५ ५ ५

सकुल मन्त्रिका का शा से अलम्बर ५ ५ ५ ५

सकुल मन्त्रिका का शा से अलम्बर ५ ५ ५ ५

सकुल मन्त्रिका का शा से अलम्बर ५ ५ ५ ५

सकुल मन्त्रिका का शा से अलम्बर ५ ५ ५ ५

सकुल मन्त्रिका का शा से अलम्बर ५ ५ ५ ५

अलम्बक [न० त०] १ कोयल २ भीरा ३ कुता ।

अलम्बक द० अलम्बक ।

अलम्बक बक ५० अलम्बक

अलीक (वि०) [अलम्बक ५० अलम्बक २

५५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५

५५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५

५५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५

अलीक ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५

अलीक ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५

अलीक ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५

अलीक ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५

अलीक ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५

अलीक ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५

अलीक ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५

अलीक ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५

अलीक ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५

अलीक ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५

अलीक ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५

अलीक ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५

अलीक ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५

अलीक ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५

अलीक ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५

अलीक ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५

अलीक ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५

अलीक ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५

अलीक ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५

अलीक ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५

अलीक ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५

अलीक ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५

अलीक ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५

अलीक ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५

अलीक ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५

अलीक ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५

अलीक ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५

अलीक ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५

अलीक ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५

अलीक ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५

अलीक ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५

अलीक ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५

अलीक ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५

अलीक ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५

अलीक ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५

अलीक ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५

अलीक ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५ ५

अवचनीय (वि०) [न० त०] 1. जो कहने के या उच्चारण करने के योग्य न हो, अश्लील या अशान्त (भाषा) — वादेवचनीयपु तदव द्विगुण भवन्-मनु० ८।२६९.

2. जो निन्दा या लाछन के योग्य न हो निन्दा में मुक्त लाकैवचनीया भवति - मुल्ल० २. ता कहने में अनौचित्य, निन्दा में मुक्ति संध्या अवहर्तव्य कृता वाचनीयता उत्तर० १।५।

अवच (वा) य [अव + चि + अच्, घटा वा] चयन करना (कल कल आदि वा) नव प्रविशत कुमुदाचयम अभिनय-यो सम्बन्धी शब्द ६. अविच्यकुमुदाचयनाये-शाल शि० ३।३१।

अवचारणम् [अव + च + णच्, कर्मो काम पर नियन्त्रण करना, प्रयास, प्रयत्न की प्रवृत्ति]

अवचूड-ल [अवनता हुआ अव यरव वा हा ३] रथ इ अच ५. दशा वाहा ध्वजा के शिरोभाग में बंधा हुआ (चीरा जैसा) अवामल इवमव, गिल्ल-वचुरमन्दावचयाम अम शि० २।६३, इदमव-वाचयामवचुरवामरकला-क० २६।

अवचूर्णनम् [अव + चूर् + णच्] 1. चुरा करना पोमना चूर्ण बनाता 2. चुरा करकाना विशेषकर कोई सूखी दवा घाव पर चुरकाना।

अवचूल-क० अवचूड।

अवचूर्णक-कम् [अवनता हुआ यरव, इय लवम् सत्राय कन्] मौखिका का उठाने के लिए चुरा या चबूर।

अवच्छ (घटा) व [अव + छद् + क] आवरण, ढकन — कारवनावच्छदान् (खरान्) रामा०।

अवच्छिन्न (भू० क० क०) [अव + छिद् + क] 1. काट हुआ 2. अलगवाया हुआ, बटा हुआ, पृथक् किया हुआ 3. (नरकशास्त्र में) अपने विहित विधिगत गुणों द्वारा दूसरों सब वस्तुओं से पृथक् की गई वस्तु 4. सीमित, बिकृत, निश्चित, दिक्कात्तनविच्छिन्न-भर्त० २।१, 5. किसी विशेषण में पृथक् विहित विधिकत तथा उपलब्धत।

अवच्छुरित (वि०) [अव + छुर + क] मिश्रित तम् अट्टहास।

अवच्छेदक [अव + छिद् + कच्] 1. अव, अश 2. सीमा मर्यादा 3. विच्छेद 4. अव, विवेचन, (विशेषणों द्वारा) विशिष्टीकरण 5. दृढ़ निश्चय, निर्णय, फैसला — शब्दार्थम्यावच्छेदे विशेषपरमहितवः—वाङ्० ९, 6. पदार्थ का वह गुण जो उसे जीरो से अलग कर दे, लक्षणदर्शी गुण 7. सीमा अधिमा, परिभाषा करना।

अवच्छेदक (वि०) [अव + छिद् + कच्] 1. विशिष्टक 2. निर्धारक, निर्णायक 3. सीमा अधिमे वाला के विवेचक, विशिष्टीकारक 5. विशेष लक्षण—कः 1 जो विवेचन करे 2. विशेष, लक्षण, गुण।

अवजबः [अव + जि + अच्] पराजय, हारों पर विजय, येनेदलोकावजयाय पुन --रघु० ६।६२।

अवजितः (स्त्री०) [अव + जि + क्तिन्] विजय, पराजय।

अवज्ञा [अव + ज्ञा + क] अनादर, निरस्कार, अवमति, अवहेलना (कर्म०, करण०, अधि० या सब० के साथ) आत्मन्यवज्ञा शिथिलीकार—रघु० २।४१, वैनाय केविदिह न प्रयत्ययवज्ञाम्—मा० १।६। ख० —उपहान निरस्कारपीडित मोक्षा दिवाया गया—बुद्धम् नावा टिलाय जाने की वेदना—मा जीवन् यः परा-वज्ञात् स्वदायापि जीर्वात शि० २।६५।

अवज्ञातम् [अव + ज्ञा + णच्] अनादर, निरस्कार।

अवट [अव + अट्] 1. बिबर, गुला 2. गन् —अवटे चापि मरग प्रीतिम रक्कर, अवटे मे निबीयते—रामा०

3. कुरा 4. शरीर का कोई दबा हुआ या नीचा भाग, नाबालग, अवटवैवमतानि स्थानान्यत्र शरीरके—गज० ३।८ 5. हाजीयर। सम० —अवटके मे पुनः दशा कटुवा (आल०) अनुभवकृत्य, पिछले संसार को कुछ न देना दो।

अवटि-टी (स्त्री०) [अव + अटि पक्षे झीव] 1. बिबर 2. कुरी।

अवटीट (वि०) नासिकाया नन अवटीटम्, अव + टीटम् नासिकाया मज्जाम् नासिकाप्यवटीट, पुच्छोऽप्यव-टीट् जिमकी नाक चपटी है चपटी नाक शाला।

अवट् [अव + टोक् + ट्] 1. बिल 2. कुआ 3. गरदन का पृष्ठभाग, 4. शरीर का दबा हुआ भाग—रु (स्त्री०) गरदन का उठा हुआ भाग,—ट् (पुं०) बिबर दगर

अवडोमम् [अव + डी भ्त] पक्षी की उड़ान, नीचे की ओर उड़ना।

अवतल-लम् [अव + तल् + लच्] 1. हार 2. कर्माभूषण, अगुठी के आकार का भाभूषण, कान का बहना (आल० भा०) —मना नमेववतलवाक्यता—कु० १।५५, स्वबाहुन-ओभकावतलता—आ० ३८, रघु० १।३।४, 3. छिरी-भूषण, मुकुट (आल०) भाभूषण का काम देने वाली कोई भी वस्तु—सामरसावतला असलनिवेशा—वात० २।३, पुष्टीकावतलापि परिखापि—रामा० —पुष्पावतल सलिलम्—सुभु०।

अवतलकः [अव + तल् + कच्] कर्माभूषण, भाभूषण।

अवतलसयति (ना० वा० पर०) कर्माभूषण के रूप में प्रयुक्त करता, कानों की बांधनी नाना—अवतलसयति दयमाना प्रमदा छिरीकुसुमानि—श० १।४।

अवतलति (स्त्री०) [अव + तल् + क्तिन्] फैलाव, घुसाव।

अवतलप (भू० क० क०) [अव + तल् + क्त] करज किया हुआ, पककाया हुआ—अवतलो नकुमलितम्—वायोवी नवके का वर्ष पृथि पर बड़ा होना, (कनक के

इस से इस प्रकार मनुष्य की अस्थिरता के विषय में कहा जाता है) अवतपते नृदलम्बित त एतन् सिद्धम् ।

अवतपस्यन् [प्र० स०] मृदुपुट, प्रत्याघकार क्षीणेऽवत-
पस तम अमर० अघकार-अवतममभिधाय भास्व
ताम्युद्गतेन शि० ११५७ (यही मल्ल० कहता
है) यद्यपि क्षीणेऽवतमम तम इतरत्र नपायां इ
विरोधाद्विरोधनादरेण सामान्यमेव पाह्यम् ।

अवतारः [अव + तु + अप्] उतार नै० ३५३ शि०
११४३

अवतारणम् [अव + तु + ल्युट्] १ स्नान करने के लिए
पानी में नीचे उतारना उतार नीचे जाना २ अवनार
दे० 'अवनार ३ पग करना ४ स्नान करने का
पवित्र स्थान ५ एक साधा से दूसरी भाषा में अनवाद
करना ६ परिचय ' उद्धृत किया हुआ, उद्धरण ।

अवतारिका [अवतारणी + कन् ह्रस्व रूप] १ पक्ष क
आरम्भ में किया गया मंगलाचरण जो कि कहते हैं
संबोधित किये गये देवताओं को स्वयं से नीचे उतर
लाता है, २ प्रस्तावना, भूमिका ।

अवतारिणी [अवतारिणि वन्पाजिना अवतु + कर्ण ल्युट्]
भूमिका ।

अवतारिणम् [अव + तु + ल्युट्] शान्ति देने वाला
उपचार ।

अवतारणम् [अव + तद् + णिच् ल्युट्] १ दुःख-दना
दीवना, —नैसर्गिकी सुरभिण कुमुदस्य मिद्धा मीन-
स्थितिनं चरणीरवताडनानि—उतार० ११४४ २
मारना ।

अवतारणः [अव + तन् + घञ्] १ फैलाव २ पतन का
तनाव ३ आवरण, चढ़ावा ।

अवतारः [अव + तु + घञ्] १ उतार, उदय आरम्भ
—वसन्तावतारसमये—श० १, २ का, प्रकट होना
—मत्स्यादिभिरवतारैरवतारवताऽवतारचमुद्यम—शक०
३ वेवता का भूमि पर पदार्पण अवतार लना—काश्यप
संज्ञति नव पुष्पावतार उलार० ५५३: घमापं
काभाभेक्षाभाभवतार इवाङ्गवान्—शृ० १०८४, ४
मिथु का अवतार—मिथुनेन दशावतारग्रहमभिना
महाशकटै—मर्त्य० ११५५, [विष्णु क दस अवतार न न
जिसे शक के बताये गये हैं — वेदान्तद्वय जगन्नि
वहते भूवीलमुद्रिभते, ईत्यं वारयते जलि छलयते क्षत्र
क्षयं भुवते । पीलस्य जयत ह्यल कलयत काश्यपाव
रम्भे, म्नेष्ठाभूर्भवते वशाकृतिरुते कृष्णाय तुभ्य
कृते ॥ मत्स्य कूर्मा वराहवच नरसिंहा वामन,
दशमी रामवच कृष्णवच बुद्ध कल्की ये ते दश ॥ वीत०)
३. क्या वहीन, विकास, वन्म— नवावतार कयन्ति-
वीतकम्—रघु० ११४६, ५१२४, ६ तीर्थ स्थान

७ (अज्ञात से) उतरने का स्थान ८ अनुवाद ९
जोड़ना ताजान १० प्रस्तावना भूमिका ।

अवतारक [वि०] (स्थी० रिक्ता) [अव + तु + णिच् +
कञ्] १ किसी को जन्म देने वाला २ अवतार
लेने वाला ।

अवतारणम् [अव + तु + णिच् ल्युट्] १ उतारना २
अनवाद ३ किसी भूत पक्ष का आवेश ४ पूजा
आराधना ५ भूमिका या प्रस्तावना ।

अवतारिणी [अव + तु + कञ्] १ नीचे आया
हुआ उतारा हुआ २ स्नान ३ पार गया हुआ पार
किया हुआ ४ पार गतावस्थागति कागगावगम
मा० ३३

अवतारिका अर्थात् नक्षत्र मत्स्या पा० ७० १ श्री पा
गार जिसका किसी दुष्टपक्षा के कारण गम मिर
गया है ।

अवतारिणी [अव + दा + इत्] श्री विभाजन करना
है या पक्ष पक्ष करना है पक्ष पक्ष भागों में
बँटना इत्यादि ।

अवतारः [अव + रज + घञ्] १ मत्स्या वर्ण का भोजन जिसके
स्थान में पापम का उद्धारक ।

अवतार्य अव + दह + घञ् १ रम्य २ रीम
श्रुत ।

अवतारणम् [अव + तद् + णिच् ल्युट्] १ मन्द्य अवतार
कानि द्वा० ११३ २ रक्षक पवित्र निमल
परिग्रह—मन्त्रविद्यावदानवना श० १६ ३ उद्धार
इव रजानक—रजावदार कृष्ण श० ३३ कुरा
वर्णन कल्पमाला—मिट्टि ११३४ ४ गणो मदन्या
अवतारिणि १ मीन न कल्पवदन कम का ५०
५ पाप न उद्वेग वाला पा ।

अवतारणम् अव + दा + ल्युट् । १ पवित्र पक्ष मान्यता
प्रति वीत २ मयान का ३ लीय मयान पा
कानि ४ काय मयक्रम शब्दों का प्रयत्न मय
मयामाना मय नदीय कृ० ३४४ श्रावदक्षमव
दानतापिना—रघु० ११४५ ४ वय वस्तु ५ काट
कर टुकड़ों में करना ।

अवतारणम् अव + तु + णिच् + ल्युट् । १ फाड़ना
बाटना छाटना काट कर टुकड़े करना २ कुदाय
लप ।

अवतारः [अव + दह + घञ्] १ रम्य ।

अवतारिणी [अव + दा + कञ्] १ बाँटा
हुआ टूटा हुआ २ पक्षपाता हुआ वर्णन ३ हट
बहारा हुआ ।

अवतार्य [अव + दह + घञ्] १ दुःख २ दुष्ट ।

अवतार [वि०] [न० न०] व्याप्य निश, प्रकसा क
अयाग न चापि काव्य नक्षत्रमवतार्य मालवि०

—बार (वि०) पृथ्वी पर धूमने वाला, आवारागर्भ
 धूमकण्ड - ध्र पहाड तलम पृथ्वील - मडलम
 धूमडन, —रह, रुट वृक्ष ।

अध्यापक [अव - निज] तृतीया १ प्रशालन माजन न
कुयदिगुप्तप्रभण पादयाञ्चवन जनम मन ० २०००
२ घर्त के गि पानी पैर घोना ३ आद्रम रिडदान
की वेदी पर विद्युत् हा कुय पर जठ उडिकना।

[illegible]

अथान्य (११०) १०० त०/जी १११२० ११ १३५

अवपतनम् । अथ तत्र न्यस्य ३१ व ४ व प्रत्या ।

अन्वयः (३०) । अवज्ञा पात्रा १२३ ५० म०, बुद्धि
तत्त्व प्रकाश १२३ क ५० म० १२३ म० ।

अथवात श्रवणं पतयति । ततोऽपि श्रवणं
 वृत्तान्तं भवति । १३१ पतयति । १३२ पतयति ।
 वृत्तान्तं भवति । १३३ पतयति । १३४ पतयति ।
 वृत्तान्तं भवति । १३५ पतयति । १३६ पतयति ।
 वृत्तान्तं भवति । १३७ पतयति । १३८ पतयति ।
 वृत्तान्तं भवति । १३९ पतयति । १४० पतयति ।
 वृत्तान्तं भवति । १४१ पतयति । १४२ पतयति ।
 वृत्तान्तं भवति । १४३ पतयति । १४४ पतयति ।
 वृत्तान्तं भवति । १४५ पतयति । १४६ पतयति ।
 वृत्तान्तं भवति । १४७ पतयति । १४८ पतयति ।
 वृत्तान्तं भवति । १४९ पतयति । १५० पतयति ।

अवस्थातनम् (अव पत्त + पित्त स्था) विगता २, रुग्णा
नीचे फेकना ।

अकपरात्रित (दि०) अवसात्र (ना० १००) १५ वन।
आतिवक्षिण गेमा अक्षि वतका विगारी के लाग
अपने पात्र मे मोहन कगने १ दिग अन्वमति न
होते हो।

उत्तर :- (अ) पीडा निव गडा । 1 नीव दवाना
दवान 2 एक प्रकार की औषधि जिसके सफने से
छींके आती है, नश्य ।

अक्षरीद्वयम् [अव + पीड् + जिच् + त्युट्] १ इवाने की
क्रिया २ नम्य, ना क्षमि, आधात ।

अबोधो [अब + बोध + घञ्] १ जागना, जागृत होना
(रिण० स्वप्न) यो तु स्यात्वाबोधो ऽथ भूताणां
प्रत्ययान्तो कु० २१८ भग० १११७, २ ज्ञान, प्रत्यक्षी-
करण स्वभर्तृनामग्रहणाद्भव सान्धे रजस्यात्मपराव-
स्थां रघ० ७४१ ५१६४, प्रतिकूलेषु तैश्चत्सवा-
नाद्यः प्राय इत्यने सां० ६०, ३ विवेचन, निर्णय
४ प्राप्ति समुच्चय ।

अवबोधक (वि०) [अव + बुध् + क्त्वा] सवेतक दशानि
 वाला क. 1 सूर्य 2 भाट 3 अध्यापक ।

अवबोधनम् । अव + बुध् + ल्यट् । ज्ञान, प्रत्यक्षीकरण ।

अवभृज् [अव + भृज् + घञ्] नीचा दिखाना, जीतना
३१ न ।

अवभास ॥ अर भाग ॥ घण्टा ॥ १ जमक दमक कान्ति,
२ न ॥ २ ज न पयसाकि ॥ ३ प्रकट होना प्रकाशन,
४ न ॥ ४ गणा ॥ ५ ग्याद ॥ ६ हृद क्षर ॥ ५ मिथ्याज्ञान ।

जयभारतक (वि०) [प्रथम भाग : अन्त] प्रकाशक, कलकत्ता
परगना ।

अब भुज (वि०) {अव + भुज + क्त} सिकुड़ा हुआ, मुका
हुआ तथा किया हुआ।

प्रबंधक । प्रबन्धन कर्तव्य । मुख्य यज्ञ की समाप्ति पर शक्ति के लिए किया जाने वाला स्नान - मुख स्नान । कुशाभ्यां मध्यमाध्यावाह्नि स्मृ० १८८, पा० १११६ । ११६१ । २ वायुन के लिए ऋग्वेद ३ अतिरिक्त यज्ञ हो चुकत मुख्य यज्ञ की विधियों की शक्ति के लिए किया जाता है । सामान्य यज्ञानुष्ठान स्नातृत्वपूर्वक तत्सर्वपि शि० १६।१० । छमः स्नानम् यज्ञानुष्ठान की समाप्ति पर किया जाने वाला स्नान ।

अथवा भाषायां उदाहरणं देयम् ।

अदभूत (वि०) [ना नामिकाया खव + भृञ्] लपटी
नाक वाला ।

अथ (वि०, अथ अमर) १ पापपूर्ण २ बलित, कमीदा
३ स्वात् नान घटिया (विष० परम) अनलकान-
लकानवमा पुराम् रघ० १।१४, वे० 'अमरवम' ४.

अगला चनिष्ट 5 पिछड़ा, सबसे छोटा ।
 भवमत । भ० क० कृः) 'अव + मन् + क्त' धुषित, कुत्सित ।

मम० अङ्ककृतः अङ्ककृता न मानने बाष्प हावी,
मदमत्त भवकृतामायमताङ्ककृतसह - भि० १२।१६।

मद्यवति (म्दी०) [मद्य + मन् + क्तिन्] १ मद्यहोतार,
ब्रह्मादर २ अर्हति, नापमदनी ।

अवगर्ह [अव + गृह् + क्त] १ कुचकना, २ बर्हाद करना,
अभ्याचार करना ।

अवयवार्थः । [अव + यश् + क्त] स्पर्श, संपर्कः ।

अवस्था: [अव + भू + घञ्] । 1. विचारविमर्श, प्रालोचना, 2. नाटक की पाँच मुख्य मण्डियों में से एक यत्र मुख्यकलोपाय उद्भिन्ना गमनों, धिक, गायत्री मान्- रायचर सोऽवमयं इति स्मृत । मा० द० २६६, 'विमयं' भी इसी का कहते हैं, 3 आक्रमण करना ।

अवमर्षणम् [अव । मर्ष । ल्यट्] । श्रमहनशीलता, अमर्षित-
 ल्पता २ मिटा देना, मिटा रालता स्मर्तिपथ मे
 निवागन ।

अक्षरान्तः [अव + भन् + घञ्] अनादय निग्नकार अव-
हेतुना ।

अक्षमानन्तम्-ना । भवः । मन् । णिन् । -यट् यच् वा । अना
दर, निरम्कार ।

सबमानिम्बु [अवः मनुः शिवः शक्तिः] विष्णुकाय कर्म
वाल्मीकि, देवा जन्मे वाया आपान्त कर्मे वाया
ध्रुवाम्बुमन्युश्वरोत्तमानिम्बुम् अ० ६, अति
आग्नेयगतावमानिम्बुम् अ० ३।

अवधमर्धन (वि०) श्रवणनां मां ज्ञाय मित्र प्रकाशे ह्य
सम- शय, वि०, मित्र कां तोन लट्वा ११ देव
हुआ, जैसे कि भनुर (वि० देव) उल्लसना न देवा
अवधमर्धना प्रनय्या ।

अथमोचनम् । श्रव + मन्, च्युट् । श्रवणं कर्तुं मन्
कर्तृना, कृत्विजः कर्तुं ।

अथयः [प्रकाशना] (गंगा का) नमः मया
व्यवहृतानां तमः मया १९५३ अमर १० ६२
साभ्यः हर्मिनिहर्षिः ज्ञातः नमः नमः नमः नमः
2 भागः भाग 3 तर्ममयः एकिनः या अनुगतः का
वृत्तः का अगः (२४ वीस है) प्रजातिः हर्मिनिहर्षिः
गुणः और गुणः 4 भागः 5 भागः गुणः या
उपादानः (नैवेद्यी गुणः का) । मयः अथ
शब्दः के मयः या अगः का अगः ।

अवयवकाः { अ + क्त } { अ + क्त + क्त } अ + अ + क्त
अलग २ टुकड़े टुकड़े करने ।

अथ यन्त्रिन् (वि०) । अथ यन्त्रिन् । अथ यन्त्रिन् । अथ यन्त्रिन् ।
भागो मे वनं दुःखा, (प०-यो) । १ २ अनुमान-
वाक्य या कोई नर्कमगत मयि ।

अथ (वि०) । न वर इति अथ न० १० व० अ०
 वा० । १ (क) आय मे सोऽऽ मग्नेनावर
 मामावर - मि० १० (ग) बाद का, पन्नाचो, मि० १०
 (ममय और स्थान की दृष्टि से) - यदवर कोणाग्नेया
 यदवरमासहायिण्या मि० २ अनुवर्तो उत्पत्तयो
 ३ नीचे, ओषेष्टाकृत्त नीचा, ऋतिया कम १ नीच,
 महत्तवीन सबसे बुरा, निम्नतम (११०) उनम।
 लक्ष्यइरायमवर म्मन्तम - काष्ठा० १. १०० तानर कम
 बुद्धिगोपादुनज्जम अग० २०५५ धारतान नम
 बुद्धिगोपादुनज्जम अग० २०५५ धारतान नम
 बुद्धिगोपादुनज्जम अग० २०५५ धारतान नम

(वि०) प्रथम) सामान्यमेया प्रश्नमात्रत्वम्—कु०
 ३।४६, ६ न्यूनान्तिवृत्त, (प्रायः समाप्त के उत्तरपद के
 रूप में अंका के साथ) —अन्तर) साक्षिप्रमाणम्—मनु०
 ८।६०, श्वशुरा पितृपुत्र भ्रया—१२।११२, याज्ञ०
 २।२० ७ पञ्चिमो, रश्मि हारपी को छिन्नी बाध
 (रात्री)। समः १ घंटे में दोहा भाग,
 न्यूनान्तिवृत्त २ उत्तरार्ध ३ अक्षर का पिछला भाग,
 अक्षर (वि०) नोटाइन सबसे घटिया—न हि प्रह-
 ष्टान् प्रायस्तु प्रायःपरावर्तन गमा० उक्त
 (वि०) अन्त में कहा हुआ, छ (वि०) अपेक्षाकृत
 छोटा, उन्नीयान् (जो) छोटा भाई विदमंरात्र-
 वरत्रा म० ६।१८, ४४, १२।३०, वर्ण (वि०)
 नीच प्राप्ति ग (जो) १ नृष्ट २ अस्त्रिय या चौथा
 वर्ण, वर्णदः वर्णत्रय—व्रत मूयं,—जैलः पञ्चि-
 मो पक्षः। अक्षरों में घंटे मूयं उक्त हुआ समझा
 जाना है।

अवततः । अथवा । अथवा नमिन् । पीछे बाद में,
पिछला, पश्चात् ।

अत्रगतिः । अत्रगतिः । अत्रगतिः । अत्रगतिः । अत्रगतिः ।
स्वता २ विष्णुः विश्वाम आगमः ।

अन्तिम 150 (अवकाश 11) प्रदानत, स्लोट मिला
आ 2 घंटे।

अवकाश (वि०) । यद् यद् कृतं । १ दृष्टा दृष्टा, पटा
२ भः २ यत् ।

भद्राक्षर (गवा.) । अक्षर-एक । किन्तु । १ एकाक्षर ।
अक्षर-एक । अक्षर ३ पाठ्य ।

अवकषः वि. १. १० मः । कुलः विकलागः ।

अश्लेषक । अश्लेषक । अश्लेषक । अश्लेषक । अश्लेषक ।

[illegible]

अवरोधक (वि०) । अ. मधु. पञ्चुल । बाघा बाघने
वाला २ भेरा हावने बाघा. कः पहरदार, कम्
राक जाड ।

अत्रोद्यमम् । अथ { स्प् - न्युट् । 1 किम्बाबदी, नाकेबदी
2 बाभा 3 स्काकर, अडबन 4 राजा का अत-
पुत्र गजात्रोद्यमवधुग्वनाग्यन्त नि० ५११८ ।

अवर्णोपसर्ग (वि०) [अवर्णोप + ठन्] १. बाघाजनक,
अड्डनन डालने वाला २. घेरा डालने वाला । कः

अंतपुर का पहरेदार, का आपुर को पहरेदार
स्त्री यमुनारूपविहीनोत्तराधिक। शि० १५००।

अबरोधिन (वि०) । अबरोध + धिन् । १ कबाड़ डालने
वाला, बाधा डालने वाला, २ घेरा डालने वाला।

अबरोधणम् । अब + रुध् + णिच् + लृट् + क्त। १
उन्मूलन २ नीचे उतारना ३ छेदना वा निचो
करना घटाना।

अबरोहः । अब + रुह् + णात् । १ उतार २ नीचे नीचे
तक बूझ के ऊपर लिपटने का प्रयत्न ३ उन्मूलन ४
लटकनी हुई शाखा । जैसे बल का । अबरोहणम्
कोई वस्तुसाध तन्मन् प्रमाण ५ निचोड़ना
स्वरो का ऊपर में नीचे आना।

अबरोहणम् । अब + रुह् + णिच् + लृट् + क्त। १ उन्मूलन नीचे आना
२ लटकना।

अबरी (वि०) । अब + री + क्त। १ रसवान २ बुरा नीचा
जैः । ३ कबाड़वा आकृति का बुरा सा
न कर्पूरवर्णमयी रसवान २ रसवान किन्तु
न ताकतपूर्णवर्णमयी । ३ कटि दुर्बल न
कहा।

अबकल (वि०) । अब + कल + क्त। 'अबकल' में
लिया जाता है । अब + कल + क्त।

अबकलन (वि०) । अब + कल् + णिच् + लृट् + क्त।
हुआ, लटा हुआ, नष्ट किया।

अबकलनम् । अब + कल् + णिच् + लृट् + क्त। १ नीचे लटकना
२ महारे लटकना महारा (आज भी) कलहाल
लगा मेव ३०, कुनसि अबकलन मेव ३०
१६३ ३ अन्ध, आँध, आँधरा (आज भी) अन्ध
—माबलस्वगमना—रस १२५०, हुआ क महारे लटक
वाली, —सन्निहितलुप्तनिकलनात्मान १००, दैव
नेत्र दन्तहस्तावलम्ब १०० १०० १ अब बैसाही
या छद्मी तो महारे के लिए स्वकी जानी है।

अबकलनम् । अब + कल् + णिच् + लृट् + क्त। १ नीचे लटकना, नष्ट
अबकलनम् । अब + कल् + णिच् + लृट् + क्त। १ नीचे लटकना, नष्ट
शि० १६३, प्रथमलुप्तनिकलनात्मान १०० १००
मम पुच्छे कावचमया कवाचित् शि० १६३
२ महारा, महार।

अबलिप्त (भू० क० कृ०) । अब + लिप् + क्त। १ घमरी
उद्धत, अभिमान २ लिया हुआ, मना हुआ।

अबलीह (भू० क० कृ०) । अब + लिह् + क्त। १ नीचा
हुआ, चबाया हुआ दुर्बलवादी शि० १६३,
२ बाटा हुआ, नष्ट करके रखा हुआ स्वकी
(आज भी) नवयोनावकाशरागा दण्ड १००
जवानी में व्याप्त, अथवा लावनीयुक्तिवत्तय-
रन्तरीयमिमाणे वेशो ३५, जारो पाग में चिगा
हुआ ३. निचला हुआ, लट किया हुआ।

अबलीला । अब + लीला + क्त। १ खीड़ा, खेला,
प्रमाद २ निरुत्कार।

अबलुब्धनम् । अब + लुब्ध् + णिच् + लृट् + क्त। १ काटना, फाड़ना
पुसाइना, रीपा २ उन्मूलन।

अबलुब्धनम् । अब + लुब्ध् + णिच् + लृट् + क्त। १ भूमि का लोटना वा
लटकना २ लटकना।

अबलेषः । अब + लेष् + णात् । १ लाहनी, पारसनी,
छीलना २ पारना ३ काटें कट।

अबलेषा । अब + लेष् + णात् + क्त। १ लाहना २ पारना
३ काटें कट।

अबलेषः । अब + लेष् + णात् + क्त। १ लाहना, पारसनी,
छीलना २ पारना ३ काटें कट।

अबलेषा । अब + लेष् + णात् + क्त। १ लाहना २ पारना
३ काटें कट।

अबलेषः । अब + लेष् + णात् + क्त। १ लाहना, पारसनी,
छीलना २ पारना ३ काटें कट।

अबलेषा । अब + लेष् + णात् + क्त। १ लाहना २ पारना
३ काटें कट।

अबलेषः । अब + लेष् + णात् + क्त। १ लाहना, पारसनी,
छीलना २ पारना ३ काटें कट।

अबलेषा । अब + लेष् + णात् + क्त। १ लाहना २ पारना
३ काटें कट।

अबलेषः । अब + लेष् + णात् + क्त। १ लाहना, पारसनी,
छीलना २ पारना ३ काटें कट।

अबलेषा । अब + लेष् + णात् + क्त। १ लाहना २ पारना
३ काटें कट।

अबलेषः । अब + लेष् + णात् + क्त। १ लाहना, पारसनी,
छीलना २ पारना ३ काटें कट।

अबलेषा । अब + लेष् + णात् + क्त। १ लाहना २ पारना
३ काटें कट।

अबलेषः । अब + लेष् + णात् + क्त। १ लाहना, पारसनी,
छीलना २ पारना ३ काटें कट।

अबलेषा । अब + लेष् + णात् + क्त। १ लाहना २ पारना
३ काटें कट।

अबलेषः । अब + लेष् + णात् + क्त। १ लाहना, पारसनी,
छीलना २ पारना ३ काटें कट।

अबलेषा । अब + लेष् + णात् + क्त। १ लाहना २ पारना
३ काटें कट।

अबलेषः । अब + लेष् + णात् + क्त। १ लाहना, पारसनी,
छीलना २ पारना ३ काटें कट।

अबलेषा । अब + लेष् + णात् + क्त। १ लाहना २ पारना
३ काटें कट।

अबलेषः । अब + लेष् + णात् + क्त। १ लाहना, पारसनी,
छीलना २ पारना ३ काटें कट।

अबलेषा । अब + लेष् + णात् + क्त। १ लाहना २ पारना
३ काटें कट।

अवहारिकः [श्रा० स०] को जाना, बाटा ।

अवहारः [अव + हृ + ण] 1 चोर, 2 सार्क नाम की मछली 3 अस्वादी पृष्ठविराज, सवि, 4 बुलावा, आमचण 5 चर्मत्याग 6 सुपुद्गी, बापस लेना ।

अवहारकः [अव + हृ + क्तृ] सार्क मछली ।

अवहार्य (न० क०) [अव + हृ + ण्यत्] 1 ले जाने के योग्य, हटाने के योग्य 2 दह के योग्य सत्रा दिये जाने के योग्य, 3 पुन प्राप्त करने योग्य फिर माल लेने के योग्य ।

अवहारिका [अव + हृ + ण्यत् टाप् इत्थ] दीवार ।

अवहारस [अव + हृ + ण्यत्] 1 मुष्कराना मुष्कान 2 शिलगी, मन्त्राक, उपहाम-पञ्चवहामार्चमस कृता 3 अंग १ ।

अव (व) शिष्टा-स्थल [न वति शिष्टान् दान् रथ - क पृथोः] 1 पाखंड, 2 आन्तरिक भाषाणन ३ व्यभिचारिभ्राता मे से एक अयोग्यवत्प्रजादेऽपिपात्रात् गुणितवति-या सा० द० १५० के अनुसार बीडा दिना निमित्तन हर्षाचनूमावाता गोपनाय जनिता भाव विरोधाऽहित्यम-उदा० कु० ६१/४ ब्राहि० २८० ।

अवहेल - का [अव + हेल + क शिष्टा टाप्] अनादर तिरस्कार अवहेलना अवहेला कुट्टज मचकरे या या भासि० ११६ ।

अवहेलनम् ना [अव + हेल + ल्यट्, क्तिवां टाप्] अत्रा ।

अवाक (अव्य०) [अव + अक् + क्तिन्] 1 नीचे की ओर 2 दक्षिणी, दक्षिण की ओर । सम० - ब्राम्ण अनादर भव (वि०) दक्षिणी मुख (वि०) (स्त्री की) 1 नीचे की ओर देखने वाला अवाक-मुखस्यापि पुण्यवृत्ति २५० २१६०, १५१७८, 2 सिर के बल शिरस् (वि०) नीचे की सिर लटकाये हुए म मूढो नरक याति कालमूत्रमवाकशिरा मनु० ३१२६९ ८१४६ ।

अवाक (वि०) [अवनता-यथार्थि इन्द्रियाणि गम्य व० स०] अभिभावक, मरलक ।

अवाक (वि०) [अवनतमग्रमय्य व० स०] नीचे का सिर किये हुए, नीचे की मुँके हुए ।

अवाक् (वि०) [न० व०] बाणारहित, मूक (नपु०) बह्म ।

अवाक् (वि०) [अव + अक् + क्तिन्] 1. नीचे की अवाक् } ओर झुका हुआ मुड़ा हुआ-कुर्वन्तयातिभरोष नगानवाय गि० ६१७९ 2 नीचे की ओर स्थित, अपेक्षाकृत नीचा 3 सिर के बल 4 दक्षिणी (पु० नपु०) बाय, की 1 दक्षिणदिशा, 2 निम्नप्रदेश ।

अवाचीन (वि०) [अवाक् + त] 1 नीचे की ओर, सिर के बल 2 दक्षिणी 3 उत्तरा हुआ ।

अवाच्य (वि०) [न० व०] 1 जिसे संबोधित करना उचित न हो -अवाच्यो दोषिणो नाम्ना वयोयानपि यो भवेत् मनु० २१२८, 2 बाले जाने के अवयोग्य, निरुपष्ट दुष्ट अवाच्य वदतो जिह्वा कच न पतिता तव रामा० ब्रम० २१३६ 3 अस्पष्ट उक्ति, सब्बों द्वारा अकथनीय । सम० बेशः बोलने के अवय्य स्थान याति ।

अवाचित (वि०) [अव + अच्य + क्त] झुका हुआ, नीचा ।

अवान [अव + अन् + अच्] साम लेना स्थान बदर को बार ल जाना ।

अवातर (वि०) [श्रा० स०] 1 बीच में स्थित या लडा हुआ - दे० ममाम 2 अनुगत मर्ममन्त्रित 3 त्रयीन, गण 4 घण्टित सबब से रहित असबद्ध अर्थात्कृत । सम० बिस्व दिशा मध्यवर्ती दिशा (जैसा कि आनेवाला गेजना नैच्छती और बायवो) बेश द स्थानी का मध्यवर्ती स्थान अन्त प्रवेश ।

अवाप्ति (स्त्री) [अव + आप् + क्तिन्] प्राप्त करना, ग्रहण करना तप कितेद तदवतिमानाम् कु० ५१६४ ।

अवाप्य (न० क०) [अव + आप् + ण्यत्] प्राप्त करने के योग्य ।

अवार रष् [न वार्यते वनेन वृ + कर्मणि घञ्] 1 नदी का निकटस्थ किनारा 2 हम ओर । सम० पार समूह, शरीर (वि०) 1 समूह में सर्वथ रखने वाला 2 समूह को पार करने वाला ।

अवारोष् [अवार + ष] नदी का पार करने वाला ।

अवावटः प्रभव पनि को छोड़कर उसी वाति के किसी दूसरे पुरुष से उत्पन्न हुआ किसी स्त्री का पुत्र - द्विती येन तु व. पिता सवर्णाया प्रजायते, अवावट इति स्थात शुद्धचर्म स जातिव ॥

अवावत् (पु०) [अव + वृत् + क्तिन्] चोर, चुराकर ले जाने वाला ।

अवावत् (वि०) [न० व०] वस्त्र न पहने हुए, नगा (पु०) वृद्ध ।

अवास्तव्य (वि०) [स्त्री - की] 1. अवास्तविक 2 निराकार विवेक कृत् ।

अविः [अव् + इन्] 1 मेघ [इहा वर्ष यं स्त्री० भी] २ - कार्यकलासीन् - मनु० १११३८. ३१६ 2 सूर्य 3 पहाड 4 बापु, हवा 5 ऊनी कंबल 6 फाल 7 दीवार बाडा 8 जूहा, जि (स्त्री०) 1 मेड 2 रज्जवला स्त्री । सम० ककः मेघ, - क्योरेणः एक प्रकार का उपहार (जा मेडा के रूप में दिया जाता है) कुम्भम् हुत्तम् बरीतम्, लोहम् मेड का दूध, पट मेड की लाल, ऊनी कपडा, - पाक गडरिया स्थलम् मेडो का स्थान, एक नगर का

माध—अविस्थानं वृक्षस्थल माकली वारणावतम् ।
—यथाभा० ।

अविष्ठा [अवि + कृ] मेडा का भेद, कम् हीरा ।

अविका [अवि + कृ + टाप्] भेद, मेरी ।

अविकल्प (वि०) [न० व०] जो सेली न मारता हो
अविमान न करता हो ।

अविकल्पन (वि०) [न० व०] जो शक्ती न बधारे जो
अविमान न करे विद्यासोविकल्पना भवन्ति
मुद्रा० ३ ।

अविकल्प (वि०) [न० त०] १ असा, समस्त पूरा
सम्पूर्ण, सारा—सालोन्द्रियाप्यविकल्पान् भर्तुं २, १००
० क कल्पम् मेघ० २४।३० शरच्चन्द्रमधुर म०
२।११, पूर्ण, पूर्णगोलाकार २ न्यायमत मुखाभाष्य
कुसुमत, शाल—कलमविकल्पलाल गायकैर्बोधहो
वि० ११।१० ।

अविकल्प (वि०) [न० व०] अपरिवर्तनीय—स्व १ सदैव
का अभाव २ इच्छा या विकल्प का अभाव ३ विधि
या नियम—स्वम् (अव्य०) निम्सन्देह, निम्सकीन ।

अविकार (वि०) [न० व०] निविकार २ अविकृति
अपरिवर्तनीयकता ।

अविकृतिः (स्त्री०) [न० त०] १ परिवर्तन का अभाव २
(वाक्य ६० में) अथेतन सिद्धान्त जिसे प्रकृति कहते
हैं और जो इस विषय का भौतिक कारण है मूल
अविकृतिविकृति—सा० का० ।

अविकल्प (वि०) [न० व०] अविहीन, दुबल,—य
कावरीता ।

अविकल्पः (वि०) [न० व०] अपरिवर्तनीयक निविकार,
—कम् वृद्ध ।

अविकल्प (वि०) [न० त०] वक्षत पूर्ण समस्त विष्णु
प्रतिदेव तत्त्वस्मिन्नेवाह्वयविक्षतम् रम्युति ।

अविष्ठा (वि०) [न० त०] शरीररहित परब्रह्म का विषय
कल्प, —हृः (व्या० में) नियतमात्र जिसके विषय
शब्दों के पूर्वक-पूर्वक अर्थ की अभिव्यक्ति न हो सके ।

अविष्ठात (वि०) [न० व०] वाचाहित बिना शब्द वर
के, शक्ति (वि०) अपने मार्ग में निवाँच ।

अविष्ठा (वि०) [न० व०] निर्वाण, —अव्य वाचा या रुपा
वद से मुक्ति, कल्पन (बहु वाक्य नपुंसक लिंग है
अव्यति 'विष्ठा' पु० है) —आवयाम्यव्यतिष्ठितभस्तुते
रघु० ११।११ अविष्ठाव्यवृत्ते से स्वेया पितेव वृत्ति पुत्रि
वायु—१।११ ।

अविकल्प (वि०) [न० व०] विचाररूप, विवेकरहित
[व० त०] अविकल्प, वाचकही ।

अविकल्पित (वि०) [न० त०] बिना विचारा हुआ, या
शक्ती-शक्ति विचाराने नवा हो । सम० निर्णय-
पक्षपात, पक्षपातपूर्ण सम्मति ।

अविचारित (वि०) [न० त०] १ उचित अनुचित का
विचार न करने वाला, विवेकहीन २ आधुकारी ।

अविज्ञान (वि०) [न० त०] अनजान (पु० ता)
परमेश्वर ।

अविज्ञानम् (न० त०) पञ्चिमी की सीधी उद्धान ।

अविष्ठा (वि०) [न० त०] १ जो सदा न हो, मध्या
—नदशिनधमवादाय-ममय पियति—शि० ११।३३, अवि-
तथा वितथा मौस मा निर ६।११, २ पूरा किया
आ सकल अम १० त० ननाई अविनयमाह
त्रिवदा श० ३ प्रियवदा शीर (महो) कहती है,
—अव्य (अव्य०) जो मध्या न हो सदापूर्वक अनु०
१।१०० ।

अविकल्प अम १० पाठा

अविष्ठा (वि०) [न० त०] जो रूप न हो निवर्त्य,
ममरसय रम सामोय रम अव्य निर १
नहा निवर्त्य—नोवर्त्येण ओवर्त्येण, दूरन—दूर ।

अविष्ठा (वि०) [न० त०] अविज्ञान मूल्य ज्ञान का अभाव २
अध्यात्मिक अम ३३ अम माया । यह शब्द वेदान्त
में बहुधा प्रयुक्त होता है इसी माया के द्वारा आत्मा
विषय का (जिसका अन्तः काष्ठ अविज्ञान नहीं)
ब्रह्म में अन्तर्गत ११ ईसा है यज्ञका ह मय है ।

अविष्ठावय (वि०) [अव्यया मयट] जो अज्ञान या अम
के द्वारा उत्पन्न हो ।

अविष्ठा [न० त०] जो विषय न हो विवाहित स्त्री
जिसका पति जीवित हो अनामय प्रियमवच्छेद विद्धि
मामयुषाहम मध० ११ ।

अविष्ठा (अव्य०) विस्मयीदृष्टांतक अथवा जो भय के
अवसर पर मरणात्यर्थ वृत्तन के । शत्रु सहायता
सहायता बाला आना है

अविष्ठा (वि०) [न० त०] १ मरणात्यर्थ वृत्तन जो मरने
विषय पर अविष्ठावयनास मुद्रा० ६।१ ।

अविष्ठा (वि०) [न० व०] अविज्ञान दोषहीन अविष्ठा—अ
[न० त०] १ अविज्ञान शान्तिहीनता का अभाव २ दुष्प्र
वहार उद्धरण अविष्ठा या उद्धृत्यवहार अथवा
अविष्ठाजन्य मूर्खता अपविष्ठाक तामु श० १।२१,
अमदना अविष्ठा का अतीविय ३ अविष्ठाचार,
अनन्तर ४ अविष्ठा जर्म टीरा ५ अविष्ठा अविष्ठा,
अविष्ठा अविष्ठावयनास विष्ठा श० ।

अविष्ठावय [न० त०] १ विषय का अभाव २ अनहित या
अनिवार्य परिणाम प्रयुक्त न होने योग्य सबध ३ सबध
अविष्ठावयनास सम्बन्धमात्र न तु नान्तरीयकत्वम्—
काव्य० २ ।

अविष्ठा (वि०) [न० त०] १ विनयपूर्ण दुखील २
घृष्ट, उद्धृत ।

करना, अभीक्षण, निरीक्षण, यथाप्रमावेक्षणजायक
रघु० १४।८५ ३ ध्यान देखरेख, पर्यवेक्षण ४
खयाल करना, ध्यान रखना दे० अनवेक्षण ।
अवेक्षणोच (स० ह०) [अव + ईक्ष् + अनीयर] देखने के
योग्य आदर करने के योग्य ध्यान रखने के योग्य
विचार किये जाने के योग्य तपस्विस्वाम्यामवेक्ष
णीया रघु० १४।५३ ।
अवेक्षा [अव + ईक्ष् + अङ् + टाप्] १ देखना दृष्टि डालना
२ ध्यान देखरेख अथवा ।
अवेक्ष (वि०) [न० त०] १ न जानन योग्य गुण २
प्राप्त करने के योग्य, या बख्श ।
अवेक्ष (वि०) [न० व०] १ असीम सीमारहित । २ मोम
२ असामयिक व [न० त०] जानकारी का छिपाव,
सा प्रतिकूल समय ।
अवेक्ष (वि०) [स्त्रियाम धी] [न० त०] १ अनिय
मित जो नियम या कानून के अनुसार न हो अवैष
परम्य कुबन राजा दण्डन सुधरति २ जो शास्त्रविरहित
न हो ।
अवेक्ष्यम् [न० त०] एकता ।
अवेक्षणम् [अव + उख + क्त्वं] झुक हुए हाथ में छिड़ाव
करना उन्माननेव हनेन प्राचन पार्श्वीनिम
न्वञ्चनाभ्युक्षण प्रोक्त तिरस्काराक्षेप स्मृतम् ॥
अवेक्ष [अव + उन्द + घञ् + नि० न लोप] छिड़काव
करना गीला करना ।
अव्यक्त (वि०) [न० त०] १ अस्पष्ट, अप्रकट, अदृश्यमान
अनुत्तरित २ अस्पष्ट भाषण श० ७।१३ २
अदृश्य, अप्रत्यक्ष ३ अनिश्चित अव्यक्त्यामचित्या-
मम् भग० २।२५ ८।२० ४ प्राक्कमित अरविन
५ (बोझ० म), अज्ञान वत् १ विष्णु २ शिव ३
कामदेव ४ मन प्रज्ञा ५ मन वत्तम (वेदा १०
में) १ ब्रह्म २ आध्यात्मिक अज्ञान (सा० २० म)
सर्व कारण प्रजननात्मक नियम का गलतत्व । त्रयम
भौतिक समाज ४ सारे नन्द विवर्धित हुए हैं बड़
रिवाज्यक्तमुद्राहर्नि रघु० १।६८ महत १२म
व्यक्तमप्यक्तानुत्तरित पर ४०० ३ आमा वत्तम
(अव्य०) अत्रत्यक्षरूप म अस्पष्ट रूप से । मम०
अनुकरणम् अनुत्तरित तथा निरपक्ष स्वनिपा क
नकल करना आदि (वि०) त्रिमया आग्नेय अगाध
हो किया दोषगणित का एक हिस्सा पर (वि०)
अनुत्तरित शब्द कूलशब्द सामाजिक अस्तित्व
रूपी वृक्ष (सा० में) राख (वि०) हलका लाल
गुनाबी (क) ठप्पा का रंग अव्यक्त रागस्तवक
अमर०, - राखि (बीचवर्णित में) बजात बक या
परिवाप - अव्यक्त, - अव्यक्तः शिव - कर्त्तव्य, - सार्थ
(वि०) थिकके सार्थ बजाव और बजेष्ट हैं, - वाक्

(वि०) अस्पष्ट रूप से बोलने वाला, - अव्यक्त
अज्ञात परिमाणों की समीकरण राखि ।
अव्यक्त (वि०) [न० त०] १ अधुव्य, अनाकुल स्थिर
शान्त २ किसी काम में न लगा हुआ ।
अव्यक्त (वि०) [न० त०] जो अतर्कित या दोषवृत्त न
हो सुनिश्चित उभे पूरा ।
अव्यक्तव्य (वि०) [न० व०] १ चित्तवृत्ति लक्षणरहित
(जैसे कि लिंगभेदक) ना क-या २ अस्पष्ट - न बिना
सीग का पशु (सीग भाने की आयु होने पर भी) ।
अव्यक्त (वि०) [न० व०] शोभा में मुक्त व सीप ।
अव्यक्त [न० अव्यक्त + टिप्पण] १ मय २ समुद्र, की १
परावी २ आधीरान रात ।
अव्यक्ति (भी) चार । १० त० । विद्योग का अभाव
प्रयोगस्थायीबीकारो भवेदामरणात्तन्व मनु०
१।१०२ २ एकनिष्ठता वपादारी
अव्यक्तिभाषा (वि०) [न० त०] १ अविश्वी अग्रति
कुल, अनुकुल श० १।१६ २ अपवादरहित यदुच्यते
पावति पापवृत्त्या न रूपमिदं व्यक्तिभाषा नव्व श०
१।१९ ३ अविश्वीपावति नव्व हर्ति यदुच्यते नदव्यक्ति
चारिबच श० १ ३ मदनगो मदाचारी ब्रह्मचारी
(सनी) ४ स्थिर स्थायी अज्ञान ।
अव्यक्त (वि०) [न० व०, १ (क)] अपरिचलनशील
अविनष्टर अव्यक्ति वे. 'वर्णाश्रम नियम एवमत्र
मध्यम भग० २।२१ त्रिनाश्रमव्यवस्थां न कश्चि
कर्तुंमर्हति १३ (ख) नित्य शास्त्रत अव्यक्त
प्रादुर्भाव्यम भग० १५।१ अकीर्ति कश्चिद्व्यति ते
प्रव्याम् २।३३ २ जो बच न किया गया हो जो
व्यक्त नच न किया गया हो ३ वित्तव्ययी ४ शास्त्रत
फल दन वाला य १ विष्णु २ शिव वत्त ८
बड़ा २ (व्या० में) बर शब्द त्रिमके रूप में बचन
लिंग आदि ४ कारण कोई विकार नहीं हुआ मद्ग
त्रिय लिङ्गव सर्वमि च विवर्धित । वचनम् अ
मवत् पर अर्थ नद्वयम । मम० आत्मन (वि०)
अविनष्टर या नित्य । व्या) आमा रा ब्रह्म वत्त
अव्ययी वा मूरी ।
अव्ययीभाव [न० व०] अव्ययपदान अव्ययी विव
म घञ् । १ सङ्कतभाषा न चार मय समामा
म से एक 'व्यावृत्तिव्यय समामा (अव्यय मे बना हुआ
अमान अव्यय अव्ययी किया विवर्धन तथा यज्ञा न मय
में बना हुआ) अविहरी मनुष्यम आदि २ व्यय का
अभाव (द्विष्टता के कारण) - ईदो द्विगुणि चार मद्गह
नित्यमव्ययीभाव तत्पुरुष कर्मकार्य यनाह न्या बहु
हीहि । उक्त० (जो मन्वत् क ममामा को आमा
के सामने रख देता है) ३ अव्ययवराता ।
अव्ययीक (वि०) [न० त०] १ जो झूठा न हो, लक्ष्य

गिराना, —बुध (वि०) बामुजो से भरा हुआ, 'आकुल
बामुजों से भरा हुआ तथा व्याकुल' रघु० २।१
—बुध (वि०) बामुजों से युक्त, अधानक बामु गिराने
वाला, —लोचन, — नेत्र (वि०) बामुजो मे भरी हुई
बाँसो वाला, जिसको बाँसो बामुजो मे भरी हुई हा ।
अमृत (वि०) [न० त०] १ न तुना हुआ जो गुनाई न
हे २. मूल, अक्षिजित ।

अधीर (वि०) [न० त०] अर्धविक, जो वेदो के ढाग
अनुमोदित न हो ।

अक्षय (वि०) [न० त०] १ अपेक्षाकृत जो उत्कृष्ट न
हो, घटिया (नपुं लु) दूरई, दुख ।

अस्लील (वि०) [न श्रिय लालि ला - क] १. भद्रा
कुरंग २ शान्त्य मन्दा, अक्षय अस्लीलप्रापान कल-
कलान् दश० ४९, 'पतिवाद-वाच० १।३३ ३ अ-
बाधित, लम्ब १ देहानी या गवाक भाषा गालो २
(सा० शा० में) रचना का एक दीर्घ क्रिममें ऐसे शब्द
प्रयुक्त किये जायें जिनके शब्दों के मन में शर्म जगुप्सा
और अथवा की भावना पैदा हो-उदा० साधन मूमर
हस्य, मुग्धा कुदमलिनाननेन दक्षनी वाय स्थिता तत्र
सा तथा -मुदुपवनविभिन्नो मन्त्रियाया विनाशान् -मे
साधन, बाधु और विनाश गन्ध अवलील है और क्रमश
शर्म, बुद्धि और अथवा की भावना पैदा करते हैं
'साधन' शब्द तो निग (युक्त की अनेकदिव्य) वायु
शब्द अथवा (गुदा मे निकलने वाली दुर्गंधयुक्त वायु)
तथा 'विलस' मूल्य को प्रकट करना है ।

अस्लील [न विलस्यति यत्रोपलनेन शिमुना, विलसु - घञ्
तारा०] १ नदी नक्षत्र जिसमें पौष नारे होन है २
अस्लील, चिद्योत । सम० अ, —अस्ली, अ केनुपठ
अर्थात् उत्तर का शिरोबिन्दु ।

अस्लील [अस्लील] १ घोडा २ सात की सभा का प्रकट
करने वाला प्रतीक ३ (घोडे जैसा बल रखने वाले)
मनुष्यों की होड, काष्ठमयकुपुटो पिण्याचार्यच
निर्देश हाथमांशुलेन्द्रचरित्रम् इत्यो मत । इन्दी
(वि० ४०) घोडा और घोड़ी । सम० —अस्लील हट्ट
—अधिक (वि०) जो अस्वागोत्रियों में प्रचल हो
जिसके पास घोडे अधिक हों, अथवा अस्वागोत्रियों
का सेवापति, —अस्लील अस्वागोत्रियों की सेवा, —अस्ली
जैसा, —अस्लील अस्वाधिकित्वा-विज्ञान —आरोह
(वि०) घोडे पर चढ़ा हुआ (— हः) १ घडमवार,
अस्वागोत्र २ घुडसवारी, —अस्लील (वि०) घोडे की
गति घोड़ी जाती वाला, —अस्लील, —अस्लील १ एक
घुड २ घोडे का कान, कुडी घुडका, कुसल,
—अस्लील (वि०) घोडों को सभाने में धनुर, अस्लील
अस्लील, —अस्लील घोडे का घुड, —अस्लील घुडका, अस्लील
अस्लील, —अस्लील घोडे की बराबाह, —अस्लील घोडे

को घुमाने का स्थान, —अस्लील, —अस्लील शालिहोत्री,
पशुओ का डाक्टर, —अस्लील घोडे की अधिकित्वा,
पशुचिकित्साविज्ञान, —अस्लील नगरच (जिसका शरीर
घोडे का तथा गदन मनुष्य की होनी है) दूतः घुड-
सवार दूत —वायः घोडा को बगाने वाला, घोडा का
समूह निवर्तक घोडा का साइम, घोडा को बाधने
वाला - प साइम पालक पालक, रख-घोडा
का साइम —अस्लील आ विजली, अस्लील
अस्लील घोडे के बीच रहने वाली स्वाभाविक शक्त

अस्लील (वि०) क्रिमका मूल घोडे जैसा है (— अ.)
घोडे के मूँह माना गया किल्लर दक्षिण (— की)
किल्लर शब्द नि-दर्शन मन्दा मन्त्रिमन्त्रिमन्त्र कु० १।११

अस्लील पशु जिसमें घोडे की क्रिम बढाई जाती
है पशुचिकित्सा कनुरार सर्वपापानामन मनु०
१।१२२ मेधिक मेथीय (वि०) अस्लील क
उपयुक्त या अस्लील से मध्य रखने वाला (— अ य)
अस्लील के उपरान्त घोडा घुड १।१। जिसमें
घोडे अनेक हा (जैसे कि पशुचिकित्सा) (स्वी० १
एक अस्लील अस्लील नक्षत्र २ मेथीय ३ अस्लील
नक्षत्र रख अस्लील घोडा या घोडा का रखवाला
माइम —अस्लील घोडागोत्री (— वा) गधवारन पर्वत
के निकट बहने वाली एक नदी रामम राम-
बडिया घोडा या घोडा का स्वामी अस्लील नक्षत्र
अस्लील, लाला एक प्रकार का सीर अस्लील अस्लील
दे० किल्लर और गधर्व अस्लील माइम घोडा की
जोड़ी बह अस्लील घोडा बार बारक अस्लील घोडा
माइम बह बारक घुडमवार विष् (वि०)
१. घोडा को मध्य में कुशल २ घोडा का दमाल
(पु०) १ पेशेवर घडमवार २ नक्षत्र का विशेषण
घुड बीजावद सारथीय अस्लील घोडा का (अस्लील
रसक, शाला अस्लील घोडा अस्लील घोडे
सास्त्रम् शालिहोत्र पशुचिकित्सा विज्ञान की पाठ्य
पुस्तक, भूगोलिका घोडे और गोदध की स्वाभाविक
गठना-सास्त्र सास्त्र (पु०) घडमवार अस्लील
अस्लील रघु० ३।४३ -सास्त्रमय कोषवादी
सारथिपना पाल और रघु का पदध मृगानामन-
सारथ्यम मनु० १०।४३ स्थान (वि०) अस्लील
में उत्पन्न (नम) घुडमाल नवेली बारक
घुडघोर घोडा को बगाने वाला, घुडघर १. घोडे की
हस्ता २ अस्लील घोडा ।

अस्लील (वि०) [अस्लील - कन्] घोडे जैसा कः १ घोडा
घोडा, २ घोडे का टट्ट ३. सामान्य घोडा ।

अस्लीलिकी [अस्लील क मूल तत्त्वदुशाकारोत्तरमय इति
उप तारा०] अस्लील नक्षत्र ।

अस्लीलः (स्वी०—री) [अस्लील - अस्लील] अस्लील ।

अव्यक्तः [न स्वविचार शास्त्रमनोवृक्षादिवत् निष्कृति स्यात्-कृप्यो तारा०] पीपल का पत्र, उष्णमूलक-वाकशाक एषाश्चक्य मनातन कट० भृ० १५।१।
अव्यक्तवायु (पु०) [अव्यक्तं स्थानं बलमय, पु०] गु० महा० अश्वत्थेवारय यत्स्थानं नदत प्रदिशा-गतम्, अव्यक्तवामैव बालोऽयं तन्मात्रात्मा भविष्यति । द्रोण और कृप्यो का पुत्र, कुरुराज दुर्पाधन की ओर स लड़ने वाला बाह्यण योद्धा व मनापति (यह अव्यक्त पुरषो, प्रचण्डकाय, युवक यादव था, इसका बड़ा तन कण के साथ वायुद म प्रकट हुआ, जब कि द्रोणाचार्य के पक्षान्तर कण का मनापतित्व दिया गया है०) केपी० नृतीय अंक, यह सात चित्रादियों म से एक है।]

अव्यक्तपत्र, लक्षिक (वि०) [न एवा भव इति इवम् टयुन ११५, १००] [स्वगतन + टन च न०] १ जो आगामी कल का न हो, आज का २ जो आगामी कल का प्रबंध नहीं रखता है मनु० ४३, १।
अव्यक्त (वि०) [अव्यक्तं] जो छात्रों से लोका जाय ।
अव्यक्त (पु०) [अव्यक्तं] १ अव्यक्तपत्र, छात्रों का मधान वाला नौ (दि० व०, दवनाका के हा बेंस जो कि मूय के द्वारा घोड़ों के रूप म एक अव्यक्त स जुड़के पैदा हुए थे ।

अव्यक्तो [अव्यक्त + इति + होर] १ २३ नक्षत्रा मे सबसे पहला नक्षत्र (जिसमे तीन तार होते हैं), २ एक अव्यक्त जो बाद म अश्विनीकुमारा का माता मानो जाने लगी, मूयें पत्नी जो कि बाइल के रूप म छिपी हुई थी। सम० कुमारो, पुत्री सुतो मूयेंका पत्नी अश्विनी क यमत्र पुत्र ।

अव्योष (वि०) [अव्योषः] पाश मे सबसे गहनेवाला घोड़ा का धिय, घन पाश का समूह, अद्वारही सेना जि० १८५ ।

अव्योषीय (वि०) [अव्योषीयः] पदार्थों पर न० ब०, तन ५०] जो १० अंशों मे न दला जा सके, जो केवल दो व्योषियों के द्वारा विनिश्चय या निर्णीत किया जाय, जय १२५ ।

अव्योष [अत्रादयो मूयना निर्णयामो आप हो ता अर्थम यत्र मामे ज्ञप्ति वा ह्यव्योषः] अत्राद का महाना प्रिय 'अत्राद' लिखा हुआ है।]

अव्यक्त वि० [अव्यक्तं क०] अत्र भागो वामा, अत्र तत्र वामा, क जा पाणिनि निर्मित अत्रो अध्यायो का जानकारी है, या उनका अध्ययन करता है, का पूर्णिका के पत्र त सप्तमी से आरम्भ करके जाने वाले तीन (मत्स्यी, अष्टमी और नवमी) दिन २ उन तीन महीनों की अवधिमा, जबकि पितरो का त्यंज होता है, ३. उपर्युक्त दिनों मे किया जाने वाला आह-

अनुष्ठान, - कम् १. आठ अवयवों की बनी कोई मयूची वस्तु २ पाणिनिमूचो के आठ अध्याय ३. अष्टवद का एक लट् अष्टवद ८ अष्टक वा दस मयूचो म विभक्त है। ४ आठ वस्तुओं का समूह यथा बानाष्टकम, ताराष्टकम्, गणाष्टकम् आदि ५. आठ की संख्या। सम० अत्र, वम् एक प्रकार का फलक या कपडा जिस पर आठ आने बने होते हैं और जो पोसा खेलन के काम आता है ।

अष्टन् (म० वि०) [अष्ट + कनिन्, लृट् च] (कृत्०, कर्म० अष्ट्वा ष्टी) अष्ट, कुछ सत्राओं तथा मन्वा-वाक्य शब्दों मे मिलकर इसका रूप समाप्त से 'अष्ट्वा' रह जाना है, उदा० अष्टादशन, अष्टाविंशति, अष्टा-पद आदि। सम० अत्र वि० जिसके आठ लड़ या अवयव हों। गम् १. शरीर के आठ अंग जिनसे अति नम्र अभिवादन किया जाता है, 'वसत', - अष्टाक्ष नाष्टाङ्गनमस्कार शस्त्र के आठ अंगों से किया जाने वाला नम्र अभिवादन जानुभ्या च तथा पद्भ्या पाणिभ्यामग्रेषु धिया, शिरसा वक्षसा मूढ्वा त्रयाधो-ऽष्टाङ्ग ईरित ॥ २ यामाभ्याम अर्धतः मन की एका-ग्रता के आठ भाग ३ पूजा की मामची, 'अष्टव्यं आठ वस्तुओं का उपहार' वृष आठ जीवियों से बनी एक प्रकार की ऊपर उठारने वाली वृष, 'वैष्णव्यं आठ प्रकार का मधोग-रस, प्रणय की प्रवृत्ति' में आठ अवस्थाएँ स्मरण कीर्तन केनि प्रेषण मुद्रावाचकम्, मन्त्रोपध्वनमाद्यव क्रियानियन्त्रितेव च ।, अष्टाक्षी पाणिनि मुनि का बनाया व्याकरणवच जिसमें आठ अध्याय हैं - अक्षय अष्टकोण, -अक्षय अष्टकोषीय -अष्ट (पु) (वि०) आठ दिन तक होने वाला, कर्म (वि०) आठ कानों वाला, (ध्वं) बह्ना का उपाधि, कर्मन् (पु०), वलिकः राजा जिसने अपने आठ कर्तव्य पूरे करने हैं (आठ कर्तव्य आदाने च 'इमं च तथा प्रीतिप्रेषयो पश्यते चार्धवचने व्यसहारस्य वेदेषु, दशमुद्धयो सदा रक्षस्तेनाष्टगणिको नृप । कृत्स्नम् (अव्य०) आठ बार, - कोष आठ कोष वाला, अष्टपहल, नवम् आठ गीबों का लईहा, - गुण (वि०) आठ गूहा वाला -दाप्योऽष्टमूकमायवम् मन्० ८४००, (कम्) वह आठ गुण जो ब्राह्मण मे अवश्य पाये जाने चाहिए- दया तर्कभूतेषु, क्षाति, अनुसूया, शोचम् अनायास, यत्नम् अकार्पण्यम्, अस्तुता चेति शो०। आक्षय (वि०) इन आठ गुणों से युक्त वह (व्य) क्षत्वारिण्यम् (वि०) अङ्ग-नालीन, तस्य (वि०) आठ तहों वाला, -विष्णु, (व्या) (वि०) अष्टवीर्य, -विष्णु जीवित, -वस्तु १. आठपदियों वाला वस्तु, २ अष्टकोण, -वस्तु (प्या) नीचे दे०, -विष्णु (स्त्री०) आठ

दिग्बिन्दु पूर्वाग्नेयी दक्षिणा च नैऋती पश्चिमा तथा वायवी चोत्तराक्षानी दिशा अष्टाविधा स्मृता ।
 करिष्ये आठ निर्गव दूआ पर स्थित आठ हविर्नि ।
 वाला आठा दिशा का अर्थ दिशापात्र ३ ।
 बज्रि पितृर्गति । यम । नैऋता वरुणा मरुत (वा ।
 कुबेर ईश पर पूर्वाक्षीना ईशान कमल अमर
 पिता आठ । ११११ का रक्षा करण ३ अ
 गथा गरावन ग राका यमन कमल अमर
 दत्त माधमीम भक्तोद्देश्य दिग्वा अमर

धातु आठ धातुआ का नाम ११ गण ३ ।
 नाम च त्रु पदमन च काम जीह रनरवैर ३ ।
 पटो पक्षीनिता । पर ३ (पट या पटा)
 वि० १ आठ पेटा गला २ कथ म र्गिता ग म
 नाम का जन्तु, ३ 'मल'कन ४ र काम पवन । ३
 बस १ मान' शक्ति अन्तराष्ट्रकृन्ताये ३
 ३१० शि० ३१० २ गमा बलम कला गिरा ३

या एक फलक 'रुद्र' पञ्चम मान का
 —मङ्गल एक पडा विमका म' पञ्च अयन ३
 तथा सुप मपद ३ (लम्ब) आठ सौम्य गण ३
 बस्तुआ का सवर्ष कुछ र मनानमात्र वयस ३—मग्न ३
 पूर्वा नाम कलशा लज्जन तथा वैजयन्ता तथा म'
 बाप इच्छ्येष्टाङ्गलम । दूसरा के मशानम ३ ।
 स्निग्धमङ्गलान्धटो ब्राह्मणा दीर्घमशन ३ रण म ३
 रादित्य बापा गात्रा तथाप्यम । आत्म एक रुद्रव
 नायक माप—आविष्क (वि०) आठ महीना म गन ३
 होने वाला भूति अष्टका, शिव का विषाघण अ
 कथ है —पाव तन्व (पृथवा, जन्म अग्नि वा मी
 आकाश) मूय च द्रमा तथा मज कर्म बाला पु
 हित पु० श० १११ या मर्त्य अष्टगद वर्ति
 विविहृत वा हविष्य च हाशो यदु का ३ तथा
 भूतिविषयगुणा या स्थिता व्याप ३ इवम । यम
 सर्वभूतप्रहृतिर्गति गण प्राणिन प्राणवन्त प्रत्यशा ३
 प्रपञ्चस्तनभिरक्तु वस्तुभिर्गच्छाभिराज ॥ या मन्त्र ३
 के संक्षेप से कह गय निम्नांकित ऋभानुसार नाम
 जल बह्निस्तथा यष्टा सुषाणद्रवमयी तथा आकाश
 वायुरवनी सूर्नवाऽष्टौ विनाकिन । धर आठ भग
 बाळा, विष, रत्नजु सधर्पि रूप से वरुण विद्य गय
 बाठ रत्न —रत्ना नाटकोय प्रयक्त आठ रत्न

भुगारहास्वकवजरोद्गभोरभयानका बोधस्तादभनमजो
 वैष्णव्यो नाट्ये रत्ना स्मृता । काव० ४ । एनम
 नवा रत्न 'बाण' की बाध दिया जाता है । विद
 स्वाविष्कयोऽस्मि ज्ञान्ताऽपि नवमा रत्न-व०) आधय
 (वि०) बाठ रत्नों से सम्बन्ध या बाठ रत्नों को पद
 कित करने वाला—विष्क० २१८, —विधि (वि०)
 जल वह बाळा, या बाठ प्रकार का, विधित

(स्त्री०) । ३११ । अठाईम धवण धवण दह्या
 (आठ रान या चर मग रवण बाणा) ।

अष्टमय (वि०) अष्टम १११ । आठ स्वत या अ
 अगा आला यम मय मिनाक्ष आठ बाणा ।

अष्टधा (स्त्री०) । अष्टम १११ । ३ अष्ट नक्षत्र ३
 भात बार ३ अष्ट भाग या अष्टभागा म विरा
 पञ्चशिराष्टधा ३ । अष्टम १११ । अष्टम १११

अष्टमय (वि०) अष्टम १११ । अष्टम १११ । अष्टम १११
 अष्टम १११ । अष्टम १११ । अष्टम १११ । अष्टम १११
 अष्टम १११ । अष्टम १११ । अष्टम १११ । अष्टम १११
 अष्टम १११ । अष्टम १११ । अष्टम १११ । अष्टम १११

अष्टमय (वि०) अष्टम १११ । अष्टम १११ । अष्टम १११
 अष्टम १११ । अष्टम १११ । अष्टम १११ । अष्टम १११

अष्टाविष्का । अष्टम १११ । अष्टम १११ । अष्टम १११
 अष्टम १११ । अष्टम १११ । अष्टम १११ । अष्टम १११

अष्टावशान (वि०) अष्टम १११ । अष्टम १११ । अष्टम १११
 अष्टम १११ । अष्टम १११ । अष्टम १११ । अष्टम १११

उपपुराणम (वि०) अष्टम १११ । अष्टम १११ । अष्टम १११
 अष्टम १११ । अष्टम १११ । अष्टम १११ । अष्टम १११
 अष्टम १११ । अष्टम १११ । अष्टम १११ । अष्टम १११
 अष्टम १११ । अष्टम १११ । अष्टम १११ । अष्टम १११

अष्टमय (वि०) अष्टम १११ । अष्टम १११ । अष्टम १११
 अष्टम १११ । अष्टम १११ । अष्टम १११ । अष्टम १११
 अष्टम १११ । अष्टम १११ । अष्टम १११ । अष्टम १११
 अष्टम १११ । अष्टम १११ । अष्टम १११ । अष्टम १११

अष्टमय (वि०) अष्टम १११ । अष्टम १११ । अष्टम १११
 अष्टम १११ । अष्टम १११ । अष्टम १११ । अष्टम १११

अष्टाविष्का (वि०) अष्टम १११ । अष्टम १११ । अष्टम १११
 अष्टम १११ । अष्टम १११ । अष्टम १११ । अष्टम १११

अष्टमय (वि०) अष्टम १११ । अष्टम १११ । अष्टम १११
 अष्टम १११ । अष्टम १११ । अष्टम १११ । अष्टम १११

अष्टमय (वि०) अष्टम १११ । अष्टम १११ । अष्टम १११
 अष्टम १११ । अष्टम १११ । अष्टम १११ । अष्टम १११

—मृष्टि० ११२२, २३६, ३ निकालना, निष्कासन ।
 निष्काशित करना—गुहाभिरस्ता न तेन वैदेहमुता
 वनत्वा—रघु० १५८४, ४ बाहर फेंकना, (तीर)
 छोड़ना ५ अस्वीकार करना (सम्पत्ति आदि का)
 निराकरण करना ६ ग्रहण लगना छिप जाना
 पृच्छन्ति मे गिर पड़ना मृष्टि० ११३ परा
 छोड़ना, त्यागना, त्याग देना छोड़ देना परास्त
 वपुषी वृषाचिवसति कि० ५१२३ २ निकाल देना
 ३ अस्वीकार करना निराकरण करना प्रत्याभ्यास
 करना—इति यदुक्त तदपि परास्तम् मा० २० १
 परि—१ चारों ओर फेंकना सब ओर फैलाना
 प्रसार करना २ फैला देना बेगना माघोत्तरम्
 क्व स्थितस्य कु० १४४ ३ मोड़ लेना पश्चात्
 शिलोचनेन—कु० ३१६८ ४ (अग्नि) गिराना नीचे
 फेंकना—रघु० १०७६ मनु० १११८३ ५ उलट देना
 पलट देना, ६ बाहर फेंकना रघु० १३१२ १४०
 परिधि—, फैलाना बिछाना पर्व० १ अस्वीकार
 करना निकाल देना २ निषेध करना आक्षेप करना,
 अ—, फेंकना, फेंक देना, उछाल देना वि० उछालना
 बहोरमा, अलग-अलग फेंकना, फाड़ देना नष्ट करना
 —मृष्टि० ८११६, ११३१, २ लक्षों में विभक्त
 करना, पृथक् करना, क्रम से रखना स्वयं वेदान
 व्यवस्थ—पर्व० ४५५०, विव्यास वेदान् परमात्म
 तस्माद् व्यास इति स्मृतः—महा० रघु० १०८०
 ३ अलग-अलग लेना, एक-एक करके लेना तदस्ति
 कि अस्तस्य विमोचने—कु० ५७३ ४ उलट
 देना, पलट देना ५ निकाल देना, हटा देना विधि
 —, १ रखना, धरा करना, रख देना विन्यस्यन्ती
 मुचि नयनया देहलीवत्पुर्वं मेघ० ८८, मृष्टि०
 ११३, २ बना देना, किसी की ओर निर्देश करना
 —रात्रे विन्यस्तमानवा—गमा०, ३ सौपना, द
 देना, सुपुर् कर देना, किसी के विषये कर देना,—सुत-
 विन्यस्तपत्नीकः—शाङ्ग० ३४५, ४ क्रम में रखना,
 संवारना, बिचरि—, १ उलट देना, पलट देना, औषा
 कर देना, २ बचकना, परिवर्तन करना—उत्तर० १,
 ३ अन्वस्त होना, मुक्त बचकना,—प्रतीकारो व्याधे
 कुचयिषि विपर्वत्यति वन—मनु० ३१२२, ४ परि-
 वर्तित होना (अक०), लघु— मिलना, एकत्र करना,
 निकालना, मोड़ देना—मनु० ३१८५, ७५७, २ समाप्त
 होना, समाप्तकरना ३ सामुदायिक रूप से ग्रहण
 करना—समस्तैरथवा पृथक्—मनु० ७११९८, लघुका
 रूप से वा अलग अलग, संधि—, १ रखना, सामने
 फैलाना, धरा करना, २ एक ओर रखना, छोड़ना,
 त्यागना, छोड़ देना—सम्यस्तसत्त्वं रघु० २५९,
 क्षिप्रस्ताम्रमं गावम्—वेध० ९३, कु० ७१७, ३ दे

देना, सौपना सुपुर् करना, हथाने करना—मनु०
 ३३०, ४ (अक० के रूप में प्रयुक्त) सत्तर को
 त्यागना सामारिक बचन तथा सब प्रकार की आक्ष-
 क्षियों को त्याग कर बिरक्त हो जाना सदुद्य अक्ष-
 मङ्गुर उदक्षिण घन्यन्तु मयस्यति मनु० ३१३२, १
 अस् (स्वा० उभ०) [अस्ति ते अस्ति] १ जाना
 २ लेना ग्रहण करना पकड़ना ३ चमकना (इस अर्थ
 का दर्शन के लिए प्रायः निर्माकित उदाहरण दिये
 जाते हैं तन्मध्य प्रमत्तम भवनाम् रघु० ११।
 ४ नेश्च लोहं त्रिभुवनं त्रिषु १४२३ लाव
 ण त्रिषु द्वाभ्यां यो कु० ११० वासन न
 यतो शिथिलं (वनवा) अथ ११ माना है चाहे
 गृह दुष्कर ही है उपरान्त उदाहरण में आम वा
 वभवत् समानाद्यर्थ माने तन्मध्य उपयय
 है चाहे इस पाठ्यार्थ की अर्थ स्थिरता
 कालमध्यम अर्थ्य मत या अर्थ की अर्थ्य
 व्याकरणार्थ उपायार्थ प्रयोग २० मं १० कु०
 १२० पर।

असंयत (वि०) [न० व०] १ मयनर्हित अनियत
 २ बचनहीन त्रैम अमन १३ मोल धी में।

असयम [न० व०] मयम हीनत निवन्धन का अभाव
 विशेषण जानेन्द्रिया के ऊपर।

असम्यक्कृत (वि०) [न० व०] अवधान रहित, अवकाश
 रहित (समय और काल का)।

असहाय (वि०) [न० व०] मदह से मुक्त, निःशयवान्
 यम (अव्य०) निःसन्देह असाध्यरूप में, निःशय
 ही असहाय शत्रुपरिग्रहमा श० ११२८।

असम्बन्ध (वि०) [न० व०] जो मूल में बाहर हो जो
 मुताबिक न है असम्बन्धे मुनन के क्षेत्र में बाहर मय०
 २१०३।

असमुष्ट (वि०) [न० व०] १ अमिथित, अयुक्त २
 जो सबके साथ मिल कर न रहता हो, संपात का
 बँटवारा होने के पदवात जो फिर न मिला हो
 (उत्तराधिकारी के रूप में)।

असंस्कृत (वि०) [न० व०] १ तत्कारहीन अपरिष्कृत,
 अपरिमात्रित २ जो संवारा न गया हो, सजाया न
 गया हो ३ जिसका कोई शोचनीयत्व या परिष्कारा-
 त्मक संस्कार न हुआ हो,—त. व्याकरणविद्वद्,
 अपराध।

असंस्तुत (वि०) [न० व०] १ अज्ञात, अनजाना, अपरि-
 क्षित अनस्तुत इस परित्यक्तो बांधवो जन—का०
 १७३, कि० ३१२, २ असाधारण, विशिष्ट ३ साधनरूप
 रहित—यावत् पश्चादसंस्तुत वेत्त—श० ११४।

असंस्तवान् [न० व०] १ संस्तुत का अभाव २ अज्ज-
 वस्था, गवद्व ३ कमी, दरिद्रता।

अवस्थित (वि०) [न० त०] 1 अव्यवस्थित, कमरगृह 2 अवसृष्टोत् ।

अवस्थिति (स्त्री०) [न० त०] 1 अव्यवस्था, गडबड ।

अवस्थित (वि०) [न० त०] 1 न जुडा हुआ, अव्यक्त विभक्त हुआ 2 त परप या आत्मा (मा० ६० मे) ।

अवस्थित (अध्य०) [न० त०] एक बार नहीं, बार-बार, बहुतों अवस्थित करने तरस्विना पृ० ११०५, मध० १२ १३, १ मय० समाधि बार-बार चिन्तन मनन शब्दवाच्य बार-बार ज० म ।

अवस्थित (वि०) [न० त०] 1 अनात्मक बेलगाय उदा मीन पराङ्ग मयः-वञ्चन पृ० ११०१ 2 न रोमा हुआ शा० १ 3 भासायिक भावना आ १५ सत्ता के प्रति अनात्मक स्वयं (अध्य०) 1 अनात्मिक है । तर- ११०१ ११ ।

अवस्थित (वि०) [न० त०] अपाङ्ग ।

अवस्थित [न० त०] दात्र विभाषा ।

अवस्थित (वि०) [न० त०] जगत्- ११०१ ११ ।

अवस्थित (वि०) [न० त०] ११०१ ११ ।

अवस्थित (वि०) [न० त०] ११०१ ११ ।

अवस्थित (वि०) [न० त०] ११०१ ११ ।

अवस्थित (वि०) [न० त०] ११०१ ११ ।

अवस्थित (वि०) [न० त०] ११०१ ११ ।

अवस्थित (वि०) [न० त०] ११०१ ११ ।

अवस्थित (वि०) [न० त०] ११०१ ११ ।

अवस्थित (वि०) [न० त०] ११०१ ११ ।

अवस्थित (वि०) [न० त०] ११०१ ११ ।

अवस्थित (वि०) [न० त०] ११०१ ११ ।

अवस्थित (वि०) [न० त०] ११०१ ११ ।

अवस्थित (वि०) [न० त०] ११०१ ११ ।

अवस्थित (वि०) [न० त०] ११०१ ११ ।

अवस्थित (वि०) [न० त०] ११०१ ११ ।

अवस्थित (वि०) [न० त०] ११०१ ११ ।

अवस्थित (वि०) [न० त०] ११०१ ११ ।

सदस्यधर्मविरुद्ध ११०१, ४ दुष्ट, पापी, निष्ठ जैसे विचार 5 अव्यक्त 6 मल, अनुचित, मिथ्या, असत्य इति यदुक्त तदन्तः (शब्द विभाषा- १५६ रचनाओं में प्रयुक्त) (पृ० ५) दुष्ट, (न० ५) 1 अवस्थित अवस्था 2 मूढ, मिथ्यात्व श्री दुष्टार्थात् स्त्री अवस्थी भवति मल्लङ्गा-पृ० ११०१ ११ । मय० अध्य० (पृ०) वह बाह्य को पञ्चदशयुक्त रचनाओं का पटना है, जो अपनी वैशाल्या का उपेक्षा करके दूसरा शास्त्र का अध्ययन करता है शास्त्रार्थ कहलाना है स्वशास्त्रा य परित्यज्य अन्य कुम्भे भ्रम शास्त्रार्थ स विज्ञेयो बलवत् विद्यायु च --आत्म 1 धर्मविषय धात्व वा मित्र 2 अनुचित साधना मे (धन को) प्राप्ति 3 वरा मयन आचार (वि०) दुराचारी, दुरा आचरण करने वाला दुष्ट (१) अविष्ट-आचारण, कर्मन किया 1 बुरा काम 2 बुरा व्यवहार, कल्पना 1 मूल्य कार्य 2 मिथ्या प्रपञ्च-व (वा) दुः 1 ११०१ ११ 2 बुरी राय पञ्चात् 3 रचना वैसी दुष्ट- केष्टितम सति आधान प्राविष्टमन्त्रे- ११०१ ११ ६ दुष्ट (वि०) बुरी दुष्टि वाला पक्ष 1 बुरा मार्ग 2 अविष्ट-आचारण वा मित्रात्, -नारा- हून मनोमत्त्यवस्थायां समाना शनम्-मा० ११०१ ११ परिग्रह बुर मार्ग को ग्रहण करना, -अति- ११०१ ११ बुरी वस्तुओं का उद्धार 2 (तिल आदि) अनुयुक्त उपहार ग्रहण करना या अनुचित व्यक्तिगत से देने आश 1 अवस्थित आश 2 बुरी राय वा दुष्टान 3 अहितकर वभाव, -दुष्टि व्यवहार (वि०) अविष्टकर आचरण करने वाला, दुष्ट ति (स्त्री०) 1 नीच या अपमानजनक वेषा 2 दुष्टता शास्त्र 1 मल मित्र 2 धर्मविषय मित्रात् सत्यः बुरी मार्ग हेतुः दुरा वा आभासी कारण, हे० हेत्वाभास ।

अवस्थित दुष्टता ।

अवस्था [न० त०] 1 अवस्थित, 2 जो सचाई न हो 3 दुष्टता, बुराई ।

अवस्था (वि०) [न० त०] 1 अविष्टहीन, सत्तारहित 2 जिसके पास कोई पक्ष न हो, स्वयं [न० त०] 1 अवस्थित, 2 अवास्तविकता, अवस्था ।

अवस्था (वि०) [न० त०] 1. मूढ, मिथ्या 2. कल्पनिक, ३. स्तविक त्व मूढा, -त्व मिथ्यात्व, मूढ बोधना, मूढ । स्व०-अविष्ट (वि०) मूढ बोधने वाला, - ११०१ ११ अपनी प्रविष्टा पर दुष्ट न रहने वाला, मूढा, कनीया, बोधेवाच, ११०१ ११ वं करिता-१० ।

अवस्था (वि०) [स्त्री०- ११०१ ११] 1. अवस्था, २. अवस्था, अनुपपन्न, अवस्था, ३. अवस्था ।

अवस्था (वि०) [स्त्री०- ११०१ ११] 1. अवस्था, २. अवस्था, अनुपपन्न, अवस्था, ३. अवस्था ।

अवस्था (वि०) [स्त्री०- ११०१ ११] 1. अवस्था, २. अवस्था, अनुपपन्न, अवस्था, ३. अवस्था ।

अवस्था (वि०) [स्त्री०- ११०१ ११] 1. अवस्था, २. अवस्था, अनुपपन्न, अवस्था, ३. अवस्था ।

स्वीकृति के बिना उसकी जीज उठा ले जाने वाला
चोर ।

असमर्थात् (वि०) [न० त०] १ जिसमें, असमर्थात् २
असंयोजित भाषणवादी ।

असमोहः [न० त०] १ भय या अभय २ अचलता,
स्थिर भावचिन्तना ३ बाह्यविक्रान्त मन दृष्टि
अनर्पण ।

असम्यक् (वि०) [स्त्री० सीधी] [न० त०] १ बुरा
अनुचित, अधुन २ अपूर्ण, अचरा ।

असम्यक् [स्त्री० कलङ्क] १. लोहा २ अथ छोड़ने समार
पड़ा जाने वाला पक्ष ३ अविद्या ।

असमर्थ (वि०) [न० त०] जिसमें शक्ति या शक्ति का
अथि नाम कृत्वा प्रत्ययसंज्ञाप्रयोग भवा स्थान
न० १ ।

असह (वि०) [न० त०] १ जो भय या भय प्रत्या
असह २ असहिष्णु (या) सहन के अभाव में
काम में) — या अस्वभाविक भावना प्रत्यय-मुद्रा ० ६ (१२)

असहन (वि०) [न० त०] असहिष्णु असहन २
ईर्ष्या, न. गन्ध, लक्ष्म [न० त०] असहिष्णुता
असीमा, परमप्राप्तिकृत्य अमृत्यु ।

असहनीय असहित्य (वि०) [न० त०] १ सहन
असह्य } भाव, दुःख असह्य असह्य
दोह भगवन्मन्त्रमन्त्रोक्त मे १०० १०० १००
कु० ११०

असहाय (वि०) [न० त०] १ जिसमें अकार्य लक्षणी
२ बिना समीचीनता के प्रत्यय ३ ३० ३०
ता, लक्ष्म असहाय लक्षणी

असाहाय (अप०) [न० त०] १ जो भीता का प्रत्यय
न हो अद्वय का प्रत्यय लक्षणी

असाक्षि (वि०) [स्त्री० की] [न० त०] १ जिसका
कोई दवाह न हो, बिना साक्षि के जिसका का
भाषी न हो असाक्षि लक्ष्मि मित्रा विवदमान्यो
— मनु ८१००१ ।

असाक्षिन् (वि०) [न० त०] १ जो वाच्यदीर्घ सहाय न
हो २ जिसका साक्ष्य कान्ति दृष्टि से साक्ष्य न हो
३ जो किसी कान्ति दस्तावेज को प्रमाणित करने का
अधिकारी न हो ।

असाक्षिन् (वि०) [न० त०] १ जो सम्पत्ति न किया
असाक्ष्य } का लक्ष्म, वाच्य न किया जा सके २ जो
प्रमाणित होने के योग्य न हो ३. जिसकी शिक्षा
न हो लक्ष्म (रोष या रोषी) — असाक्ष्य दुष्टे कोष
हाथी काले रदी बहा — सि० २८४ ।

असाक्ष्य (वि०) [न० त०] १ जो सामान्य न हो,
असाक्ष्य, विवेक, विधिष्ट, २. (लक्ष्म में) जो
लक्ष्म या विवेक किसी में भी हेतु के रूप में विवेकन

न हो यन्मनुष्यमात्रं व्याप्तं न स्वसाधारणो मन
३ जिसमें विवेक कोई और दावेदार न हो च. लक्ष्म-
साक्ष्य में हेतुभाष्य, असाक्षिन् के तीन प्रेदी में से
एक ।

असाक्ष्य (वि०) [न० त०] १ जो अज्ञान या बुरा
असाक्ष्य, असाक्ष्य असाक्ष्य लक्ष्मसाक्ष्य साक्ष्य का
वि० ११० २ दुष्ट ३ दुर्वचन, असाक्ष्य क साक्ष्य

असाक्ष्य (वि०) [स्त्री० की] [न० त०] बिना
असाक्ष्य का जो हेतु के असाक्ष्य न हो कि०
११०० ।

असाक्ष्य (वि०) [न० त०] १ जो साधारण न हो,
विशेष लक्ष्म ११० ०, २ असाक्ष्य लक्ष्म विवेक
या विवेक साक्ष्य ।

असाक्ष्य (वि०) [न० त०] १ असाक्ष्य असाक्ष्य
असाक्ष्य लक्ष्म, असाक्ष्य असाक्ष्य असाक्ष्य
दुष्ट, असाक्ष्य असाक्ष्य असाक्ष्य असाक्ष्य
असाक्ष्य असाक्ष्य असाक्ष्य असाक्ष्य असाक्ष्य
असाक्ष्य असाक्ष्य असाक्ष्य असाक्ष्य असाक्ष्य
असाक्ष्य असाक्ष्य असाक्ष्य असाक्ष्य असाक्ष्य

असाक्ष्य (वि०) [न० त०] १ नाम असाक्ष्य २ (क)
असाक्ष्य असाक्ष्य (क) असाक्ष्य असाक्ष्य
— असाक्ष्य असाक्ष्य असाक्ष्य असाक्ष्य असाक्ष्य

असाक्ष्य (वि०) [न० त०] १ असाक्ष्य असाक्ष्य
असाक्ष्य असाक्ष्य असाक्ष्य असाक्ष्य असाक्ष्य
असाक्ष्य असाक्ष्य असाक्ष्य असाक्ष्य असाक्ष्य

असाक्ष्य (वि०) [न० त०] १ असाक्ष्य असाक्ष्य
असाक्ष्य असाक्ष्य असाक्ष्य असाक्ष्य असाक्ष्य

असाक्ष्य (वि०) [न० त०] १ असाक्ष्य असाक्ष्य
असाक्ष्य असाक्ष्य असाक्ष्य असाक्ष्य असाक्ष्य

असाक्ष्य (वि०) [न० त०] १ असाक्ष्य असाक्ष्य
असाक्ष्य असाक्ष्य असाक्ष्य असाक्ष्य असाक्ष्य

असाक्ष्य (वि०) [न० त०] १ असाक्ष्य असाक्ष्य
असाक्ष्य असाक्ष्य असाक्ष्य असाक्ष्य असाक्ष्य

असाक्ष्य (वि०) [न० त०] १ असाक्ष्य असाक्ष्य
असाक्ष्य असाक्ष्य असाक्ष्य असाक्ष्य असाक्ष्य

असाक्ष्य (वि०) [न० त०] १ असाक्ष्य असाक्ष्य
असाक्ष्य असाक्ष्य असाक्ष्य असाक्ष्य असाक्ष्य

मुण्डले, असिचारावत नाम बभूनि मुनिपुत्रका ।
अववा- युवा युवत्या सार्धं परमेश्वरभृत्यवदाचरेन
अन्तर्निवृत्तसंग स्यादसिचारावत हि तत यादर
2 (अत आल०) कोई भी अत्यन्त कठिन काय
—सता कनोददिष्ट शिवमसिचारावतमिदम् भन् ०
२।२८, ६४ —वाच वाचक शरत्कार मिकलीगर
या शस्त्र परिष्कारक —धनुं, —धनुका वाक—विष्मक०
४।६९ —पत्र (वि०) जिसके पत्र तन्त्रार की आकृति
के हैं तब ० १६।४८ (अ) 1 गन्ता ईस 2
एक प्रकार का वृक्ष जो कि निचले समार में उगता
है (त्रय) 1 तम्बार का फल 2 म्यान बन एक
प्रकार का नरक जहाँ वृक्षा क पत्ते ऐसे तीक्ष्ण होते
हैं जैसे कि तलवार पक्षक गता ईस पुच्छ
—पुच्छक मीस शिशुनार सकुची मछली पुष्पिका
—पुष्पी छरी, मेघ विटगरि हृत्पत्र तलवार या
छुरियो से लबना —हेति ब्रह्मचारी पुरुष तलवार
रखने वाला ।

असिकम् । अमि । कन् । ठोड़ी ओर निचले ओठ के बीच
का भाग ।

असिकनी [मिला केसादी बाघा उरनी तक्षुआ अवडा
— असित — नकारस्थ कनादेश ङी च] 1 अन्न पुर
की युवती परिचारिका 2 पजाब देश की एक नदी ।

असिफिका [सत्रायां कन् ह्रस्व] युवती सविका ।

असित (वि०) [न० त०] जो सफेद न हो काला नीला
बहरे रंग का—अमिता मोहरजनी— ज्ञा० ३।६ याज्ञ०
३।१६६ °लोचना नयना आदि —न 1 बहग नीला
रंग 2 चान्द्रायाम का कृष्ण पक्ष 3 अनिरुह 4 काग
सपि —ता 1 नील का पीछा 2 अन्न पुर की दाम्नी
(जिसके बाल अधिक प्रायः काग्न सफेद न हुए
हों) ३० 'असिकनी' 3 यमना नदी । सम० —अञ्जल
—अञ्जल नील कमल अक्षित (१०) अग्नि
—अञ्जल (पु) उपल गहग नीला पञ्चर केसा
काले बालो वाली स्त्री केज्ञान (वि०) काजी जप्फा
वाला गिरि, अग नील गिरि पीछ (वि०)
काली पर्वत वाला—अ अग्नि—अयन (वि०) काली
आँखो वाला मेघ० १।२२ यल कृष्ण पक्ष कलम
मीठा नागियल बृज काना हरण ।

असिद्ध (वि०) [न० त०] 1 जो पग या सफल न हो 2
अपूर्ण अर्थात् 3 अप्रमाणित 4 अनपका कच्चा 5
जो अनुमेय न हो—अ हे-श्रामम के पाँच प्रत्य भागा
में से एक यह तीन प्रकार का है 1) आश्वयसिद्ध
—जहाँ गृण के आश्वय की मना मित्र न हो (2)
स्वर्णसिद्ध जहाँ निदिष्ट स्वर्ण पत्र न पाया
जाय तथा (3) व्याप्यसिद्ध जहाँ महर्षिता की
उक्त स्थिरता धार्मिक न हो ।

असिद्धि (स्त्री) [न० त०] 1 अपुण निरपलता विफ-
लता 2 परिपक्वता की कमी 3 रिगपति का अभाव
(योग० में) 4 (य० में) वह उपसहार जो प्रतिज्ञा
में सम्मोहित न हो ।

असिर [अस् + क्रिञ्च] 1 दाहणी क्रिण 2 नीर
मिटानिनी ।

असु [अस् + उन्] 1 इवाम प्राण आध्यात्मिक जीवन
2 मृतात्माओं का जीवन 3 (ब० ब०) शरीर में
रहने वाले पाँच प्राण असुभि स्थान्नु पचाविचषी
यत कि० २।१९ (न० सु) शाक दुल ।
सम० चारण्य का जीवन प्राण जीवन अभिनय
भन 1 जीवन का नाग बोधोनि मलिनमय
भङ्गाप्यमुहुरम भन् ० २।२८ 2 जीवन का अय
या आशका जून (१०) जीवन कल प्राणी
सम (वि०) प्राण १ समान व्याग (अ)
पति प्रेमो ।

असुमत (वि०) [असु + मनुष] 1 जीवित प्राणी (पु०)
1 जीवन प्राणी ४।९ 2 जवन ।

असुख (वि०) [न० ब०] 1 अप्रमन्न दुखी 2 जिसका
प्राप्त काला ज्ञानान हो वांछित सम [न० न०]
दुख पीडा । सम० आबह (वि०) दुख में
पडिडा आबिद्ध (वि०) अन्त पीडाहर उदय
(वि०) अप्रमन्नता पैदा करने वाला मनु० १।१९०
जीविका निषण्ण जीवन ।

असुखित (वि०) [न० त०] अप्रमन्न दुखी ।

असुन (वि०) [न० ब०] निम्नतर पुत्रहीन ।

असुर [अस् + न सुर् + न० त० वा] 1 दैत्य राक्षस
रामायण में तमो का कारण बनलया गया है
मुगारिन्द्राद्वारा मुग इत्यादिभिभूता अप्रति
पट्टात्मा दैत्याश्वासामरमन्दा । 2 दस्ताओं का
सन् ३ दातन 3 मर प्रा 4 मूय 5 हाथी 6
राहु 7 बादर—रा 1 गति 2 राक्षसपरक सकेन
3 धरा की दातवी असुर का पत्नी । सम०
—अधिप राज् राज् 1 असुर का स्वामी 2 बलि
को उपाधि महाद का पीर आकाय मुष 1 असुरो
क गर द्वात्रार्य 2 गुह्यह आहूत तावे और टीन
की मिथित पत्र अयण क्षिति (वि०) राक्षसो
का नाग रत्न राग द्विप (पु०) राक्षसो का शत्रु
अयोनि देवता बाबा राक्षसो बाहु रिपु सुवर्ण
रागयो का हन्ता, विष्णु हन्त (पु०) 1 राक्षसो का
नाग करत लला अग्नि इन्द्र आदि 2 विष्णु ।

असुरमा [न० ब० न गुह्य रमा यक्ष्या] एक प्रकार का
पीडा नरक का एक भेद ।

असुर्य (वि०) [अग + रिता गवा० यत्] राक्षसी,
आसुरी ।

या कहानी के बार में या तो केवल "अनुपूरक" वर्ण में प्रयुक्त होता है, अथवा 'अतः बहु है कि' वर्ण को प्रकट करता है—अस्ति सिंह प्रतिपत्ति स्म - पृ० ४ । तम०—काय वर्ण या अवस्था (जैन मतानुसार) —आसि (अव्य०) समिध, आसिक रूप से तस्य ।

अस्तिवचनम् [अस्ति + च] सत्ता, विद्यमानता ।

अस्त्येवम् [न० त०] खोरी न करना ।

अस्त्येवम् [न० त०] सिद्धि, कलक ।

अस्मन् [अस् + ण्] 1 एक कर बलाया जाने वाला हथियार,—प्रयुक्तमप्यस्त्रमितो वृथा स्यात् पृ० २।३४, प्रत्याहृतास्त्रो गिरिशप्रभावात्— २।४१, ३।५८, अस्त्रिज्जास्त्य पितुरेव—२।५० ३।३१, आयुधविज्ञान 2 तीर, तलवार 3 वस्तु । तम० अ (आ) वारम् अस्त्रचाला, तोपखाना, आयुधानार—आवस्तः वण आर,—कंसकः तीर,—कारः—कारक,—कारिन् हथियार बनाने वाला,—चिकित्सकः बीरकाष्ठ या सत्य किया करने वाला, बरहि—चिकित्सा बीरकाष्ठ या सत्य किया, बरहि,—बीकः—बीकिन् (पृ०)—बारिन् (पृ०) सैनिक, बीडा,—विचारकम् हथियार के बार को रोकना,—अंशः अस्त्रचालन या प्रत्याहरण के समय पड़ा जाने वाला अंश,—आवीः—आवीकः सिकरीगर, बुद्धिम् हथियारों के लक्ष्य,—आवकम् अस्त्रचालन या चालन में कुशलता,—विन् (वि०) आयुध विज्ञान में रक्ष,—विद्या,—आस्त्रम्,—वेदः अस्त्रचालन विज्ञान या कला, आयुधविज्ञान,—वृष्टिः (स्त्री०) आर्यों की बीडार,—विद्या सैनिक अस्त्राद्य, अस्त्र चालन व प्रत्याहरण की शिक्षा ।

अस्तिवचनम् (वि०) [अस् + ण्] अस्त्र से युद्ध करने वाला, अनुप्रासी ।

आसी [न० त०] 1 जो स्त्री न हो 2 (व्या० में) दुस्तिक और अनुसक्त लिम् ।

अस्त्राव (वि०) [न० व०] बहुत पहरा,—नम् [न० त०] 1 वृष्टा स्थान, 2 अनुचित स्थान, पदार्थ या अवसर ।

अस्त्राव (अव्य०) बिना आगु के, उपयुक्त स्थान से बाहर, बिना अवसर के, वकता वगैरे पर, अवीध वस्तु पर—अस्थाने महानवीधः—किवते—मुद्रा० १ ।

अस्त्राव (वि०) [न० त०] 1. पर, अंगम, अस्त्रि 2. (विधि में) किसी एक वस्तु जैसे कि तपति, वृत्, एक आदि (=अंगम) ।

अस्त्री (अव्य०) [अस्त्रे—अस् + स्त्रि] 1. हथौड़ी (कई प्रकार की के अंत में वक कर 'अस्त्र' रह जाता है)—२० अस्त्र, पुष्पतम् 2. एक की विरोध का मुकाम—न कारिणीति न कुलम्—अन् ० ४।८८ ।

तम०—अस्त्र,—अस्त्र (पृ०)—अस्त्र,—अस्त्र,—अस्त्र,—अस्त्र,—अस्त्र 1. अस्त्र, 2. वच,—अस्त्र,—अस्त्र (पृ०) विन्,—अस्त्र हथौड़ी

का डांघा, कंकाल,—अस्त्रेवः वृत्त की हथियों को गया या किसी अन्य पक्षि जल व प्रवाहित करना, —अस्त्रेवः—अस्त्र हथियों को जाने वाला, कुता —अस्त्रेवः हथौड़ी का टूट जाना, आका 1 हथियों का हार 2 हथियों की पक्षि, आस्त्रि (पृ०) विन्,—अस्त्र (वि०) अस्त्री मात्र अस्त्रेवः 1 अस्त्राव के पश्चात् उसकी हथियों और अस्त्रावसेव को एकत्र करना, 2 हथियों का डेर—अस्त्रि, जोड, जोडवन्ती,—अस्त्रेवः वृत्त की अस्त्रियों को गया या किसी अन्य पक्षि जल में प्रवाहित करना, अस्त्रेवः हथियों की स्तम्भ के रूप में बारण करने वाला, अस्त्री ।

अस्त्रि (स्त्री०) [न० त०] 1 वृद्धता या जराव का अभाव (आम० जी) 2 अर्थात् या शिष्ट व्यवहार का अभाव ।

अस्त्रि (वि०) [न० न०] जो स्थिर या दृढ़ न हो, आशीडोल, चंचल ।

अस्त्रिज्जास्त्य [न० त०] तपक का न होना, (किसी चीज के) स्पर्श को टालना प्रकालमात्रि पक्षुस्त्र द्वारा—अस्त्रिज्जास्त्य वरम्—तु०—अस्त्रिज्जास्त्य अस्त्रिज्जास्त्य ।

अस्त्रिज्जास्त्य (वि०) [न० त०] 1 जो स्पष्ट न हो, स्पष्ट रूप से दिखाई न देता हो 2 वृद्धता, जो साक समझ में न आये, अस्त्रिज्जास्त्य—अस्त्रिज्जास्त्य विद्याविज्ञानि—आसी ।

अस्त्रिज्जास्त्य (वि०) [न० त०] 1 जो खूने के योग्य न हो 2. अनुपक्षि, अपावन ।

अस्त्रिज्जास्त्य (वि०) [न० त०] वृद्ध, अस्त्रिज्जास्त्य, अस्त्रिज्जास्त्य भाषण । तम०—अस्त्रिज्जास्त्य वृद्धता या वृद्ध परिभाषा—आस्त्रि (वि०) वृद्धता कर बोझने वाला, अस्त्रिज्जास्त्य ।

अस्त्रिज्जास्त्य (अव्य०) [अस्त्रिज्जास्त्य] सर्वनामविधयक आसि पक्षि जिससे कि उत्तमपुष्पतम्बी पुष्पचालक सर्वनाम के अनेक रूप बनते हैं, बहु अपा० का व० व० का रूप भी है,—पृ० प्रत्यापत्ता, जीवार्त्ता । तम०—विन्, अस्त्रिज्जास्त्य (वि०) हमारे अस्त्राव या हथि जैसा ।

अस्त्रिज्जास्त्य (वि०) [अस्त्रिज्जास्त्य] हमारा, हम सब का,—अस्त्रिज्जास्त्य न हि तस्मैवाम्—पृ० २।१०५, वम० १२।१५ ।

अस्त्रिज्जास्त्य (वि०) [न० त०] 1 जो स्तुति के अतिर न हो, स्वरभासी 2. सर्व, आर्य—अस्त्रिज्जास्त्य के विपरीत 3. अस्त्रिज्जास्त्य से अस्त्रिज्जास्त्य व रक्षने वाला ।

अस्त्रिज्जास्त्य (अव्य०) [अस्त्रिज्जास्त्य] 'अस्त्रिज्जास्त्य'—होना अनु का सर्वनाम काल, उत्तम पुष्प, एक वकन) है—अस्त्रिज्जास्त्य,—आस्त्रिज्जास्त्य अस्त्रिज्जास्त्य आस्त्रि—वि० ३।६, अस्त्रिज्जास्त्य अस्त्रिज्जास्त्य अस्त्रिज्जास्त्य अस्त्रिज्जास्त्य अस्त्रिज्जास्त्य ।

अभिज्ञा [अभि + ज्ञा + टाप्] अङ्कार ।

अभ्युत्तिः (स्त्री०) [न० त०] अभ्युत्ति का अवस्था, भूलना ।

अभ्युत्तिः [अभ्युत्ति + न] १ विनाश का २ सिद्धि के बाद, —अभ्युत्ति १ अर्थ २ अर्थ । सम० कठः बाण - अभ्युत्ति, —अभ्युत्ति पीने वाता गलन, या अर्थ का अर्थ अर्थ अर्थ अर्थ ।

अभ्युत्ति (वि०) [न० त०] १ अभिज्ञान, निर्णय २ आ अभिज्ञान ।

अभ्युत्ति (वि०) [न० त०] १ अभिज्ञान अर्थोपपत्ति ।

अभ्युत्ति (वि०) [न० त०] निर्धारित अर्थोपपत्ति ।

अभ्युत्ति (वि०) [न० त०] १ अभिज्ञान, निर्णय २ आ अभिज्ञान ।

अभ्युत्ति (वि०) [न० त०] १ अभिज्ञान, निर्णय २ आ अभिज्ञान ।

अभ्युत्ति (वि०) [न० त०] १ अभिज्ञान, निर्णय २ आ अभिज्ञान ।

अभ्युत्ति (वि०) [न० त०] १ अभिज्ञान, निर्णय २ आ अभिज्ञान ।

अभ्युत्ति (वि०) [न० त०] १ अभिज्ञान, निर्णय २ आ अभिज्ञान ।

अभ्युत्ति (वि०) [न० त०] १ अभिज्ञान, निर्णय २ आ अभिज्ञान ।

अभ्युत्ति (वि०) [न० त०] १ अभिज्ञान, निर्णय २ आ अभिज्ञान ।

अभ्युत्ति (वि०) [न० त०] १ अभिज्ञान, निर्णय २ आ अभिज्ञान ।

अभ्युत्ति (वि०) [न० त०] १ अभिज्ञान, निर्णय २ आ अभिज्ञान ।

अभ्युत्ति (वि०) [न० त०] १ अभिज्ञान, निर्णय २ आ अभिज्ञान ।

अभ्युत्ति (वि०) [न० त०] १ अभिज्ञान, निर्णय २ आ अभिज्ञान ।

अभ्युत्ति (वि०) [न० त०] १ अभिज्ञान, निर्णय २ आ अभिज्ञान ।

अभ्युत्ति (वि०) [न० त०] १ अभिज्ञान, निर्णय २ आ अभिज्ञान ।

अभ्युत्ति (वि०) [न० त०] १ अभिज्ञान, निर्णय २ आ अभिज्ञान ।

अभ्युत्ति (वि०) [न० त०] १ अभिज्ञान, निर्णय २ आ अभिज्ञान ।

अभ्युत्ति (वि०) [न० त०] १ अभिज्ञान, निर्णय २ आ अभिज्ञान ।

अभ्युत्ति (वि०) [न० त०] १ अभिज्ञान, निर्णय २ आ अभिज्ञान ।

अभ्युत्ति (वि०) [न० त०] १ अभिज्ञान, निर्णय २ आ अभिज्ञान ।

अभ्युत्ति (वि०) [न० त०] १ अभिज्ञान, निर्णय २ आ अभिज्ञान ।

के आदि में यह अर्थ - या अर्थ - वन जाता है क्या

अर्थ - या अर्थ - वन जाता है क्या

(अर्थ) दिन का आना, अर्थ - वन जाता है क्या

मृत्यु मृत्यु, मृत्यु, १ मृत्यु के दिनों का दिन-

मिला २ मृत्यु का दिन (अर्थ) प्रतिदिन, हर

रोज दिन प्रति दिन निम्न दिन-रात - प्रति: मृत्यु

आदि मृत्यु मृत्यु: मृत्यु मृत्यु दिन का आरम्भ,

प्रधान उपकार विनाशका मृत्यु मृत्यु मृत्यु मृत्यु

मृत्यु - मृत्यु १। ६६, ६७, अर्थ: वन मायकाल।

अर्थ (मृत्यु) [अर्थ मृत्यु का कर्तृ कारक ए० त०]

मृत्यु: मृत्यु - अर्थ का अर्थ का लिए हो १ प्रतिदिन

अर्थिका १ हो १ प्रतिदिन अर्थिका अर्थिका

१ रात अर्थिका अर्थिका अर्थिका अर्थिका

अर्थिका अर्थिका अर्थिका अर्थिका अर्थिका

अर्थिका अर्थिका अर्थिका अर्थिका अर्थिका

अर्थिका अर्थिका अर्थिका अर्थिका अर्थिका

अर्थिका अर्थिका अर्थिका अर्थिका अर्थिका

अर्थिका अर्थिका अर्थिका अर्थिका अर्थिका

अर्थिका अर्थिका अर्थिका अर्थिका अर्थिका

अर्थिका अर्थिका अर्थिका अर्थिका अर्थिका

अर्थिका अर्थिका अर्थिका अर्थिका अर्थिका

अर्थिका अर्थिका अर्थिका अर्थिका अर्थिका

अर्थिका अर्थिका अर्थिका अर्थिका अर्थिका

अर्थिका अर्थिका अर्थिका अर्थिका अर्थिका

वीर्य को अपने प्रातःकालीन निवृत्त करने के लिए अना दिया। इन्हें ने अन्तर प्रविष्ट होकर वीर्य का स्थान ग्रहण किया। जब वीर्य को ग्रहण करने पक्षधर होने का ज्ञान हुआ तो उसने उसे आश्रय से निर्वासित कर दिया और जाप दिया कि वह पक्षधर बन जाय तथा तब तक अक्षय अवस्था में पड़ी रहे जब तक कि हस्तर के पुत्र राम का वरज-स्यो न हो, जो कि अक्षय को फिर पूर्ण प्रदान करेगा। उसके पश्चात् राम ने उस दीन-दशा से उसका उद्धार किया—और तब उसका अपने पति से पुनर्मिलन हुआ। अक्षय प्रातःस्मरणीय उन पाँच मन्त्री तथा विष्णु चरित्र महिलाओं में एक है जिनका प्रातःकाल नाम लेना अक्षयकर है—अक्षय, दीपदी, मीला, तारा मदीरी तथा, पंचकन्याः स्मरेन्मित्र महापातक नाशिनी। तमः—चारः इन्द्र,—मन्त्रः शतानन्द मुनि, अक्षय का पुत्र।

अक्षु (अक्ष०) [अक्ष भ्रान्ति इति—हा+क पु०] विषयविरिणीक निपत्त निष्पत्ति अर्थों में प्रयुक्त होता है—(क) शोक, श्रेय—अक्षु कष्टप्रवृत्तिना चिन्ते—मनु० ०१२, ३११, अक्षु ज्ञानराशिनिपत्त—भृश० २ (क) आश्रय, विषय—अक्षु भ्रान्ति निस्सी-मन्त्रचरित्रविभूतयः—मनु० २१३५, ३६, (ग) दया, तरल—अभि० ४१३९ (घ) बुलाना (ङ) बकावट।

अक्षि [आक्षिप्त—आ+क्ष+इप् स च वित् प्राङो ह्रस्वस्य] १. साप, अजगर—अक्षु, सवित्र सर्व निर्विषाः इन्द्राः स्मृता—कथा० १५८४, २ सुबै ३. राहुबह ४. बुधसुर, ५. बोलेबाज, बरमाज ६. बारल। तमः—कांतः बाधु, हवा, क्षीय, साप की केंचुली—अक्षकम् कुकुरवृत्ता,—क्षि (पुं०) १ कृष्ण (कालिदास नाम की मारने वाला) २ इड—क्षिपिः साप पकड़ने वाला, सपेरा, बाजीगर,—क्षिच,—इष्ट,—कार,—रिपु,—क्षिपि (पुं०) १ नक्ष २. नेवला ३. बोर ४. इन्द्र ५ कृष्ण—कि० ४१२०, कि० ११३१—अक्षुक्षु साप और नेवले,—अक्षुक्षि साप और नेवले के मध्य स्वाभाविक वैर—क्षिपिः साप की केंचुली,—क्षिपिः १ सापों का स्वाधी, दातुकि २. कोई बड़ा साप, अजगर साप—अक्षकः साप के आकार की बनी किस्ती,—क्षेवः,—क्षिपि अक्षीय,—अक्षु किस्ती जिसे हाथ साप का भय, बोले की सज्जा, अपने—क्षिपि की ओर में भय,—अक्षु (पुं०) १. नक्ष २. बोर ३. नेवला—अक्षु (पुं०) शिप।

अक्षि [न० त०] १. अनिष्टकारिता का अभाव, किसी प्राणी की न मारना, मन बचने कर्म से किसी को पीड़ा न देना—अक्षि परमोपमः—मग० १०५, मनु० १०६९, ५१४४, ६१४५, ६. गुरजा।

अक्षि (वि०) [न० त०] अनिष्टकर, निर्दोष, अक्षिप्त—मनु० ४१२४६।

अक्षि एक अथा साप।

अक्षि (वि०) [न० त०] १. जो रक्ता न गया हो, बरान गया हो, जमाया न गया हो २. अक्षय, अनुचित मनु० ३२०, ३. क्षिप्त, अनिष्टकर ४. अनुपकारक ५. अपकारी, बिरोधी,—त मनु०—अक्षिपिनि-लांछितस्तत्रैवनिष्ठ केतुभि रण० ४१२८, २११७, १११८,--तत्त्व हानि, क्षति।

अक्षि (वि०) [न० त०] जो ठंडा न हो, गर्म। तमः—अक्षु,--क्षर,--तेजस,--क्षति,--क्षि,--क्षि,--क्षि।

अक्षि (वि०) [न० त०] १. अक्षय, पूर्ण, सत्य २. जो छोटा न हो, बड़ा—अक्षिपिनिपत्तः क्षाति—रण० १८१४, ३. जो क्षिप्त न हो, अक्षिप्त प्राप्त—मनु० २११८३ ४. क्षिप्तक्षिप्त न हो, क्षिप्तक्षिप्त न हो,--क्षि कई दिनों तक होने वाला यज्ञ, (मन्त्री) तमः—क्षिपि (पुं०) बहाही देने में असमर्थ, अक्षय नवाह।

अक्षि [आक्षी+पु०] साधु, बहीर।

अक्षु (वि०) [न० त०] जो यज्ञ न किया गया हो, जो (आहुति के रूप में) हवन में प्रस्तुत न किया गया हो—मनु० १२१८,--क्षः धर्मविषयक चिन्तन, मनन, प्रार्थना और वेदाध्ययन (पात्र ब्रह्मर्षि और कर्त्तव्यों में से एक) --मनु० ३१७३, ७४।

अक्षे (अक्ष०) [अक्ष+ए] (क) क्षिपि, प्रत्येक (अ) श्रेय तथा (ग) विषयों को प्रकट करने वाला निपात।

अक्षु (वि०) [न० व०] निष्कारण, स्वयं स्फूर्त अक्षु पक्षपातो व—उत्तर० ५११७।

अक्षे (हं) अक्ष (वि०) [न० व० क०] निराधार, निष्कारण, निष्प्रयोजन भग० १८१२०।

अक्षे (अक्ष०) [हा+क्ष+त०] निष्पत्ति अर्थों का प्रकट करने वाला अक्षय—(क) आश्रय या विषय

—बहुधा अक्षिपर अक्षि नामी स्वना पदार्थ ज० २१२, अक्षे भूधरामासी दर्शनम ज० १, अक्षे बकुल-वाल्मीका—मालि० १, अक्षे कामही वीर्यमहा मन्त्र-महो क्षिपि—रामा० (अक्षे उसका रूप आश्रय व्रतक है—आदि) (ग) पीडाजनक आश्रय—अक्षे ते विगत वेतनत्वम्—का० १४६, २ शोक या श्रेय—अक्षे दुष्ट्यन्त-स्य सहायमाख्या पित्रहाज—म० ६, विधिर्हा बल-क्षान्ति मे क्षिपि—मनु० २११, ३. प्रक्षेप (शाब्दिक, बहुत क्षुब्ध) —अक्षे वेक्षित, पक्षि क्षीयन्—मि० ४० ४. क्षिपि (वि०) ५. बुलाना, संबोधित करना ६. ईर्ष्या, डाह ७. उपयोग, तुष्टि ८. बकावट ९. कई बार केवल अनुपूरक के रूप में—अक्षे नु क्षय (घोः), क्षाम-न्य रूप से आश्रय को शेषक हो—अक्षे नु क्षय ईर्ष्या-मयता अक्षोपमि—अ० ५, अक्षे नु क्षय शेषक

की रक्षा करने वाला, बचानम् °आधिनम्--दे०
- बचनम् (नपु०) 1 अन्तरिक्ष 2 बाधुमङ्गल, बाधु,
बाधी प्राकाश से आई हुई आकाश, अन्तरीक्षी
बाजी, सलिलम् वर्षा, ओष--स्फटिकः ओला ।
आकिञ्चनम्, आकिञ्चनम् [अकिञ्चनम् + अण्, व्यञ् वा]
गरीबी, धन वा अभाव ।

आकीर्ण (भू० क० कृ०) [आ + कृ + क्त] 1 बिखरा
हुआ, फैला हुआ भरा हुआ व्योम, सकल जगत्-
स्वयं भरा हुआ, परिपूर्ण, भरपूर--आकीर्णं मन्ये
हृन्बहूपरीणं गृह्णामि श० ५।१० आकीर्णमुपिपत्नी-
नामद्वयार्थोपनिषत् २७० १।५० ।

आकुञ्चनम् [आ + कुञ्च + क्त] 1 झुकाता मिठाईना,
सक्रोशन 2 पीच कर्मों में से एक--मिकुञ्चन 3 एकत्र
करना, डेर लगाना 4 टेढ़ा होना ।

आकुल (वि०) [आ + कुल + क्त] 1 भारपूर भरा हुआ
- प्रबलभूमिआकुल (समुद्रम्) अतः २।४, बाधा
कुला बाध नल० ४।१८ आलापहृन्नुहन्कुलन
प्राये--अमर ८१, 2 प्रबलित, प्रभावपूर्ण पीड़ित
आहन हयं, शोक विस्मय, स्नेह प्रादि 3 अमन,
कील 4 चबगया हुआ, शिथिल, उड्डित--अजिबैद्य
प्रतिपत्तुमामीक्यायैद्वयाकुल शि० २।१ विस्मय
किञ्चनैवविमुह अनिष्टाहित आकुल, अत्यन्त दुःख
5 बिखरे बाल बाला, अव्यवस्थित 6 असमन,
बिरोधी, लक्ष आवाद अग्रह ।

आकुलित (वि०) [आ + कुल + क्त] 1 दूखी, उड्डित,
विस्मय--आगीचलध्वनिक आकुलितेव मिथु-कु० ५।८५,
2 फेला हुआ 3 मग्नित, भूमिल, बुधदृष्ट श० ४,
4 अभिभूत, पीड़ित--शोक, पिपासा प्रादि ।

आकूलित (वि०) [आ + कूल + क्त] दुःख वधुचित--मदन
संराज्यवेदनाकूलितविभागेन का० १५५, ८१ ।

आकृतम् [आ + कृ + क्त] 1 अर्ध, इरादा प्रयोजन--इती-
रितकृतनीलवर्जितम्--कि० १४।२४ 2 भावना,
हृदय की स्थिति, सेवेय, बृहस्पतिहृदयन रसय-
न्याकृत्यो वेपथु उत्तर० ५।३६, आकाकृत-अमर
४ मा० १।११, आकृतम् भावनापूर्वक, नाभिभाव
(प्रायः नाटकों में रसमय के निदेश के रूप में) 3
अवधार्य या जिज्ञासा 4 चार, चक्रा ।

आकृति (स्त्री०) [आ + कृ + क्त] 1 रूप, प्रतिमा,
तत्त्व--मोक्षार्थस्वाकृतिरव्यकृतिरिति--शि० ३।४, 2
सरीर, काया--किमिव हि मयुराणां अङ्गनं माकृतीनाम्
--शि० १।२०, विहृताकृति--मनु० ११।५१ हृत्
हकार चोरः 3 दर्शन, सुन्दर रूप, अङ्गक,--यः सारक-
तिः सुतपुत्रं विहृतातिः पुनश्च--मुञ्च० १।११, अका-
कृतिरस्य पुनः वसति--मुद्रावर्ति० 4. वस्तुना, लक्षण
5 कबीला, वासि । अण०--अकाः व्याकरण के किसी

विशेष विषय से तबच रखने वाले अणों की सूची--को
केवल नमनों की सूची है (बहुधा नमनाठ में अंकन)
यथा अर्धादिगण, स्वरादिगण, चादिगण आदि,--छाया
बोधातकी भाव की लता ।

आकृष्टि (स्त्री०) [आ + कृष्ट + क्त] 1. आकर्षण 2.
विचार, गृहस्थाकर्षण (मग्नित व्योमिच),--आकृष्टि-
राकिलश्च यद्री गया यन्मरय गुरु स्वाभिमुख स्वयंकथा,
आकृष्ट्ये तत्पत्नीय भावि समे सयन्नात् क्व पतन्मिथ
ये । गोलाच० १. 3. चन्द्र का खींचना या झुकाना,
'ज्या'--अमर० ।

आकेकर (वि०) [आके अन्तिक कीर्णते इति आ + कृ + क्त
+ टाप्--आकेकरा दृष्टि सा अन्ति बन्ध इति
--आकेकरा + अण्] अवयुता, अर्धनिर्मित (बन्धो)
निर्मोहिताकेकराकाकृष्टा कि० ८।५३, मु० ३।२१,
दृष्टिगकेकरा किञ्चिन्मुद्रागले प्रवारिता, बोकितार्थ-
पुटालोके नागध्यातर्जनीनरा ।

आकीर्णः (वीर शब्द) मकर राजा ।

आकम्ब [अ + कम्ब + क्त] 1 राजा, चित्काना 2 पुका-
रना आह्वान करना, 3 हल्ल, चित्काना 4 मित्र,
रसक 5 आई 6. रोने का स्थान 7. अहं राधा को
अपने मित्र राजा को हूतने की बुझाना करने से रोके
वह राजा जिसकी राजधानी मिलती हुई किसी दुष्टरी
राजधानी के पास है।--मनु० ७।२०७ ।

आकण्डनम् [आ + कण्ड + क्त] 1 बिलाप, कलन 2 ऊँचे
स्वर से पुकारना ।

आकम्बित (वि०) [आकम्ब वाकति इति आकम्ब + क्त]
वह व्यक्ति जो किसी दुष्टिवा के रोने को बुनकर शीघ्र
कर उसके पास जाता है ।

आकम्बित (भू० क० कृ०) आ + कम्ब + क्त] 1 दहाकने
वाला, का फूट २ कर रोने वाला, 2 आहूत, बुलाया
हुआ,--सम् चित्काना, दहाकना ।

आकम्ब --कम्बनम् [आ + कम्ब + क्त] 1 निचर
+ जाना, उपागमन 2. दूट पड़ना, आकम्ब करना,
+ हमला 3. पकड़ना, झकना, कम्बे में करना, 4 पार
करना, प्राप्त करना 5. विस्तार करना, कम्बकर
लगाना, बड़ बड़ कर होना 6. कम्ब से अधिक होना
लाभना ।

आकाश (भू० क० कृ०) [आ + कम् + क्त] 1. पकड़ा
हुआ, अधिकार में किया हुआ, पराजित, पराभूत
--आकाशविमानवायम्--रघु० १।१३०, तप चू-
बना, भरपूर अधिकृत, दया हुआ--बुधमे तेन आकाशं
यज्जलाकानं महत्--रघु० १०।२९, अकिञ्चिन्ना-
काशम्--मनु० १।१४, इती अकार मनं वयं,
अकृष्ट प्रादि, 2. कला हुआ (मनों की लता) 3. कला
हुवा, बहल कला हुआ, जाने का हुआ--रघु०

१०।३८ मालवि० ३।५ ४ प्राप्त किया हुआ
वर्षिकार म किया हुआ ।

आकान्ति (स्थी०) [आ० कम् + क्तिन्] १ उपर रहना
अधहाय भ करना पड़सित करना - आकान्ति-
समाधिनामस्थोष्- कु० २।११ २ पराभूत करना
दवाना लादना ३ आगेहन जाने बढ़ जाना ४
शक्ति शीघ्र, ऐक्य ।

आकाशक. [आ + कम् + क्त्वा] आकाशयकर्ता, हस्ताक्षर ।
 आकीर्तः-उच्य [आ + कीर्त + क्त्वा] १ श्रेय, कीर्ति आयोद
 २ प्रमद्वन कीर्तयान आकीर्तयवन्तास्तेन कल्पिता
 स्तेषु वेदमनु-कु० २।४३, कम्प्याकीर्तयानासाह तत्र
 विमिश्रयिषु - दृष्ट० १२ ।

प्राकृत (५० क० इ०) [भा + कृ + क्त] १. हाट-वपट
 किया हुआ निश्चित, निरस्तकृत, कर्माकृत—जि० १०।
 २३ २ ध्वनि, शोकापूर्व ३ क्रमिन्, —कृत् १
 जोर-ही पुकार २ चोर लब्ध या वपन, धातुमन्त्रो-
 यून भाषन—मार्कण्डेयिकात्पूर्वम् प्राकृते क्रोड-
 भव—कात्या०।

माफोन्-मन् [मा + कृन् + घञ्, ह्युद् वा] १ पुका-
रना वा मोर में बिल्कामा, उज्ज्वलर से रोना वा
शोक २ निन्ना कलक भस्मना करना इत्यन्त कलक

—याङ० २।३०२३ अङ्गिशाप, कोसना ४. दण्ड लेना ।
 आकषेदः [आ + क्शिप् + घञ्] बाङ्गता, वीक्षापन,
 छिद्रकाय ।

आत्मसूक्तः। (वि०) (स्त्री० क्री) [असूतेन निर्वृतम्
इति—ठक्] जूए में प्रभावित या समाप्त किया हुआ।

आशयस्य [आ + क्षप् + ल्यट्] : उपवास रक्षण, उपवास
या वन इग आत्मशक्ति मयम् ।

काशपाटिक [अक्षपट + ठक] 1 सूतकीड़ा का निर्मायक,
सुतगढ़ का अधीक्षक 2 व्यायाधीन ।

आत्मपाद (वि०) (स्त्री०) ही। अक्षपाद + अग। अक्षपाद
या गोत्रम वा निगम्य द. गणनाम्न का अनुयायी,
नैर्द्यायिक नृपत्य

आभार [श्री. सुरेश चंद] वरुण लाल
[श्री. वि. व. (क)] द्वारा किया गया

आशाङ्कम-णा । अ ५२ । न ५३ । अ ५४, ५५ ।
ग ५६ । अ ५७ । अ ५८ ।

आचार्य / ए० क० क०, 'य' श्रेणी में प्रवेश ।
कक्षा 2 में प्रवेश ।

आशिक [३०] १९३० ॥ अथवा श्रीमान् ॥
जिम वा भय २५ ॥ १ पासा में अथा मन्त्र
बाधा २ त्रा म जाय ३ त्रा १ त्रा स मन्त्र मन्त्र
बाधा - आशिक क्रम मन् ॥ २५ ॥ त्रा
में किया अथा मन्त्र ॥ १ ॥ त्रा म
मन् २ त्रा मन्त्र ॥

आलिप्तिका [आ : क्षिप् + दाप् क, इन्त्यम्] रंगमण
पर आते हुए किमी पास के द्वारा गान विशेष
विक्रम ० ४ ।

भाष्योक्त (वि०) [आ. शीर्ष + क्त निः] 1 जिसने कुछ
मद्यपान किया हुआ है 2 यस्त, नक्षे मे चर ।

आशेष: [जा शिप + चञ्] 1 दूर फेंकना उछालना, लीचकर दूर करना डीन लेना - अणुकाशेषनिश्चिन्ना-
नाम् - कु० ११४ पोछे हटना 2 अस्थान, निश्चयना,
कलक लगाना, अपजन्म कहना, बचजानुपै निन्दा
- प्रचदतया उत्तर० ५१२९, बिद्वत्साधोपचरन्मि-
निसिन्म कि० १४०५ 3 मन की उछाट मन
का लिखाव - विषयाशेषपर्यस्तबुद्धे - चर० ३१७०,
२३, ४ प्रयत्न करना, लगाना भरना (जैसे कि
पन) - शोरोचनाशेषपानान्नदीर - कु० ३११७, ३
सकेत करना (किसी दूसरे शब्दार्थ का) मान लेना,
लगाव लेना स्वीकृत्य पराशेष - काव्य० - ६ अनु-
मान 7 बरोहर 8 आपत्ति या संदेह 9 (सा० शां०
में) एक ब्यपकार जिसमें विवक्षित वस्तु का एक
विशेष अर्थ जन गाने से लिए प्रकटन द्वारा दिया जाय
वा निश्चित कर दिया जाय - काव्य० १०, सा० १०
३५४ और रम्यकाल का आशेषप्रकरण ।

वाक्येभ्यः [वा + लिप् + व्युक्] 1 फेकेबाला, 2 उषाट करने वाला, कलाक लगाने वाला दोधारोपन करने वाला 3 सिधारी ।

अथोपपन्नम् [अङ्ग-प्रतिप-स्यट्] फकना, उडालना ।

आफोः-अः [आ- अल् + ओट् (उ) + अण्] असरोः
की लकड़ी । दे० असरोः ।

आलोचनम् [आलोचनम्] आलोचनम् ।

आसः, आसनः [आ + सन् + ड, य वा] फावडा,
स्पर्ष ।

आणखण्डल । आणखण्डलीय भेदणीय पर्वतान आ । आणख -
हल व ह्य न तम ल' १०। इन्त मालखण्डल काम
मिद बाभाप क० ३१२ लभः३ काण्काणादि-
वण्डलविआम ए० ६१३ मध० १५।

आवर्तिका । आ । वन दृश्य । 1 साक्षात्कारावर्तिका
2 वन । 3 साक्षात्कारावर्तिका 4 साक्षात्कारावर्तिका 5 साक्षात्कारावर्तिका

आम्र 1 मयन ५१ 1 सविता 2 सविता ५५५
सविता 1

आज्ञान- ज्ञान । आ- स्वन । कर्त्तुं प्राकृतिक-प्राप्त्यर्थं
इत्याशयः ।

आसान (आ + लृ + घञ्) १. आरा और ये खोदना
२. आसान ३. आसान, आसान ४.

अणु- [आ + स्वन + कृ + शब्ध] : १. अधिक ज्ञाना लक्षण
अणु वाछित शास्त्रवा गणयतेगणु भुवार्त्त कणो
-पथ ० ११५९. २. बोर ३. गजर ४. कम्बवा

1997, 1998, 1999, 2000, 2001, 2002, 2003, 2004, 2005, 2006, 2007, 2008, 2009, 2010, 2011, 2012, 2013, 2014, 2015, 2016, 2017, 2018, 2019, 2020, 2021, 2022, 2023, 2024, 2025, 2026, 2027, 2028, 2029, 2030, 2031, 2032, 2033, 2034, 2035, 2036, 2037, 2038, 2039, 2040, 2041, 2042, 2043, 2044, 2045, 2046, 2047, 2048, 2049, 2050, 2051, 2052, 2053, 2054, 2055, 2056, 2057, 2058, 2059, 2060, 2061, 2062, 2063, 2064, 2065, 2066, 2067, 2068, 2069, 2070, 2071, 2072, 2073, 2074, 2075, 2076, 2077, 2078, 2079, 2080, 2081, 2082, 2083, 2084, 2085, 2086, 2087, 2088, 2089, 2090, 2091, 2092, 2093, 2094, 2095, 2096, 2097, 2098, 2099, 2100, 2101, 2102, 2103, 2104, 2105, 2106, 2107, 2108, 2109, 2110, 2111, 2112, 2113, 2114, 2115, 2116, 2117, 2118, 2119, 2120, 2121, 2122, 2123, 2124, 2125, 2126, 2127, 2128, 2129, 2130, 2131, 2132, 2133, 2134, 2135, 2136, 2137, 2138, 2139, 2140, 2141, 2142, 2143, 2144, 2145, 2146, 2147, 2148, 2149, 2150, 2151, 2152, 2153, 2154, 2155, 2156, 2157, 2158, 2159, 2160, 2161, 2162, 2163, 2164, 2165, 2166, 2167, 2168, 2169, 2170, 2171, 2172, 2173, 2174, 2175, 2176, 2177, 2178, 2179, 2180, 2181, 2182, 2183, 2184, 2185, 2186, 2187, 2188, 2189, 2190, 2191, 2192, 2193, 2194, 2195, 2196, 2197, 2198, 2199, 2200, 2201, 2202, 2203, 2204, 2205, 2206, 2207, 2208, 2209, 2210, 2211, 2212, 2213, 2214, 2215, 2216, 2217, 2218, 2219, 2220, 2221, 2222, 2223, 2224, 2225, 2226, 2227, 2228, 2229, 2230, 2231, 2232, 2233, 2234, 2235, 2236, 2237, 2238, 2239, 2240, 2241, 2242, 2243, 2244, 2245, 2246, 2247, 2248, 2249, 2250, 2251, 2252, 2253, 2254, 2255, 2256, 2257, 2258, 2259, 2260, 2261, 2262, 2263, 2264, 2265, 2266, 2267, 2268, 2269, 2270, 2271, 2272, 2273, 2274, 2275, 2276, 2277, 2278, 2279, 2280, 2281, 2282, 2283, 2284, 2285, 2286, 2287, 2288, 2289, 2290, 2291, 2292, 2293, 2294, 2295, 2296, 2297, 2298, 2299, 2300, 2301, 2302, 2303, 2304, 2305, 2306, 2307, 2308, 2309, 2310, 2311, 2312, 2313, 2314, 2315, 2316, 2317, 2318, 2319, 2320, 2321, 2322, 2323, 2324, 2325, 2326, 2327, 2328, 2329, 2330, 2331, 2332, 2333, 2334, 2335, 2336, 2337, 2338, 2339, 2340, 2341, 2342, 2343, 2344, 2345, 2346, 2347, 2348, 2349, 2350, 2351, 2352, 2353, 2354, 2355, 2356, 2357, 2358, 2359, 2360, 2361, 2362, 2363, 2364, 2365, 2366, 2367, 2368, 2369, 2370, 2371, 2372, 2373, 2374, 2375, 2376, 2377, 2378, 2379, 2380, 2381, 2382, 2383, 2384, 2385, 2386, 2387, 2388, 2389, 2390, 2391, 2392, 2393, 2394, 2395, 2396, 2397, 2398, 2399, 2400, 2401, 2402, 2403, 2404, 2405, 2406, 2407, 2408, 2409, 2410, 2411, 2412, 2413, 2414, 2415, 2416, 2417, 2418, 2419, 2420, 2421, 2422, 2423, 2424, 2425, 2426, 2427, 2428, 2429, 2430, 2431, 2432, 2433, 2434, 2435, 2436, 2437, 2438, 2439, 2440, 2441, 2442, 2443, 2444, 2445, 2446, 2447, 2448, 2449, 2450, 2451, 2452, 2453, 2454, 2455, 2456, 2457, 2458, 2459, 2460, 2461, 2462, 2463, 2464, 2465, 2466, 2467, 2468, 2469, 2470, 2471, 2472, 2473, 2474, 2475, 2476, 2477, 2478, 2479, 2480, 2481, 2482, 2483, 2484, 2485, 2486, 2487, 2488, 2489, 2490, 2491, 2492, 2493, 2494, 2495, 2496, 2497, 2498, 2499, 2500, 2501, 2502, 2503, 2504, 2505, 2506, 2507, 2508, 2509, 2510, 2511, 2512, 2513, 2514, 2515, 2516, 2517, 2518, 2519, 2520, 2521, 2522, 2523, 2524, 2525, 2526, 2527, 2528, 2529, 2530, 2531, 2532, 2533, 2534, 2535, 2536, 2537, 2538, 2539, 2540, 2541, 2542, 2543, 2544, 2545, 2546, 2547, 2548, 2549, 2550, 2551, 2552, 2553, 2554, 2555, 2556, 2557, 2558, 2559, 2560, 2561, 2562, 2563, 2564, 2565, 2566, 2567, 2568, 2569, 2570, 2571, 2572, 2573, 2574, 2575, 2576, 2577, 2578, 2579, 2580, 2581, 2582, 2583, 2584, 2585, 2586, 2587, 2588, 2589, 2590, 2591, 2592, 2593, 2594, 2595, 2596, 2597, 2598, 2599, 2600, 2601, 2602, 2603, 2604, 2605, 2606, 2607, 2608, 2609, 2610, 2611, 2612, 2613, 2614, 2615, 2616, 2617, 2618, 2619, 2620, 2621, 2622, 2623, 2624, 2625, 2626, 2627, 2628, 2629, 2630, 2631, 2632, 2633, 2634, 2635, 2636, 2637, 2638, 2639, 2640, 2641, 2642, 2643, 2644, 2645, 2646, 2647, 2648, 2649, 2650, 2651, 2652, 2653, 2654, 2655, 2656, 2657, 2658, 2659, 2660, 2661, 2662, 2663, 2664, 2665, 2666, 2667, 2668, 2669, 2670, 2671, 2672, 2673, 2674, 2675, 2676, 2677, 2678, 26

5. कंबुज विषये सति नैवारिज न ददार्जि वदार्जि न
तथाहुरासम् । सम० उल्कार, व-माक वमा उल्क
(वि०) वृहा मे उ-पान्त्त (न-वन्) वृहा का निज-पान्ता
वृहा का मयह, म- वयः रयः बाह्व, गमय
जितका बाह्व वृहा है, - वान्त्त वाट नै वज्जिज का
पुष्प, (शा०) वृहा का पञ्चन और मागने शान्ता
वृहदा, -वावावः पुष्पक पन्थर भुम् अत्र
विमला ।

आसेदः । आनिट्यन्ते आस्यन्ते प्राणिनाः । आ . मित्र +
 धञ् साराः । निराय कृत्वा पं० अ कृत्वा । मय्-
 --सौर्वकम् । चिकना कृत्वा २ स्थान मका ।

आलोचक (वि०) [आलोचक कम्] प्रकाशक कम् काला
—क: प्रकाशक, कम् प्रकाशक।

आलोचक: [आर्सेटे कुशल ठक्] 1 शिकागो 2 शिकागो
कुत्ता ।

अजरोट [साक. लनित्रमिद उटानि पर्जानि अस्य व.
व. अजरोट का वक्ष ।

अथवा [आत्मवर्तिन्याः] अथवा-४ अह] १ नाम,
 अविधान- कि वा शक्तुल्लेखस्य मातृशब्दा ग०
 ७१७ ३३, पञ्चाशुभाख्या मुम्बयी ग्राम्य कु० १०६,
 तदाख्या अविप्रक्षेपे ग्नु० १५५०१, बहुधा मया
 के अन्तर्गते जह प्रयुक्त होता है तो इसका अर्थ होता
 है 'नामके वा' नाम वाला अथ किमाद्यस्य शब्दों
 या शब्दोंकी ओ० १ शब्दार्थस्य काव्यमर्थ ।

भाषाण (भ० क० इ०) [भा + क्त्वा + क्त] १ कृत्वा
 हुआ बनाया हुआ, पोषणा किया हुआ २ गिना
 हुआ. पाठ किया हुआ बजलाया हुआ ४ नामाद या
 किमापद, - लम्ब किया, वाक्पदान्यायान्तम् न०
 वाक्पदान् विगिष्टस्य विषयेष्वेव बोधने सम्यक् ज्ञानं
 यन्त्रस्य लब्धौ भाषणमप्यनेन ॥

आवृत्ति: (स्त्री०) [आ + कृत् + क्तिन् + १ कृत् +
समाच्चार, प्रकाशन २ यश ३ नाम ।

अध्यात्म [अ + ध्या + क्त] १. बोधना, ध्याना
कला, अलम्बन, गन्तव्य २. किसी पुण्यी कर्तव्य
की ओर निर्देश करना * गत पूर्वनामिका भा०
६० (उदा० देव गतः) ३. निर्माणित ब्रह्मदेवस्य
ब्रह्मा पूरिता वेदाः ४. ५. कथं कर्तव्य
विशेषका ये बालात्मिका या योगिक गन्तव्य
अथवा पुनरुत्पन्न स्वप्न इत्याख्यासिद्ध आशयः
-- ना० २, भू० ३१२३ ४ अत्र प्रस्ताव्याया
पा० १०१०५६ भेदक इति ।

आख्यानकम् [आख्यान + कन्] कथा, छोटी वीरानिक
कहानी, कथानक. —आख्यानकाव्याधिकेतिहासपुरा-
णाकर्षणेन —का० ७ ।

आकृष्ट (चि०) [आ+कृष्ट+अङ्] कृष्टी आकृष्ट,

मृचनाने के काला, कः 1 दून, हकागा आख्याय-
नग अमृचनाने अर्थात् 2 नः 1, 2 अमृचन
अर्थात् 1.

आध्यायिका । आध्यायक + टाप् इ-श्च । गद्य रचना का नाम । मुख्यतः कहानी, आध्यायिका कथा-रचना कहेंगे। यह कहानीय अथवा मन्यव की ना च वृत्त वृत्त वर्णन कहेंगे । कथाशाना व्यवच्छेद आध्यायक इति च पुनः । आध्यायक कथावृत्तशाना छन्दसा येन केनचित् । अ-नायदेनेनाभावामने भाष्यमसूचनम् ॥ ० ॥ ५६८ (मार्ष्ट्या नायक के लेखक मध्यस्थता) को । यह दो (कथा) और आध्यायिका) भागों में बाँटे हैं । वह भाग के हयंवरिन को आध्यायिका तथा कादम्बरी को 'कथा' के नाम से पुकारते हैं । टण्डा इस प्रकार के वेद को स्वीकार नहीं करना - आख्या० ११२८- नक्तकाध्यायिकिर्लेखकः जाति सजादध्यायिका ॥

अथवाणि (वि०) [या० कदा + णिनि] जो व्यक्ति
कद्रता है, सुखदा या सहायता देता है -- रश्म्याख्यादीय
मन्त्रनि अथकर्त्तृन्तिकर -- ल० १:२६।

आश्वमेध (म० कृ०) [आ + श्व + घञ्] कहने या मया-
या देने के योग्य, श्वर्वा शब्दों में कहने के योग्य,
प्रतिष्ठा गृह्येण वेद० १०३ ।

आवर्ति (स्त्री०) [आव-भृ-क्त्विज्] १ पट्टवर्णा-
 आभरण-लोकस्थायी मतावर्तिम् ग्रामा०, इति
 निश्चिन प्रियतमावर्तम् शि० १। ६३ २ आवर्तदण-
 ३ वापसी ४ उदमय ।

अभ्यन्त (वि०) । १. मध्य - भूत । २. जाने वाला, पहुँचनेवाला ३. मरका हुआ ४. बाहर से आने वाला, बाह्य (काष्ण आदि) ५. वैयर्थिक जनवर्गिक, वाक्यमिक भूत, स्वाभाविक भजनवी वर्तनी । मध्य । अ (वि०) , आन्तरिक रूप से या अकस्मान् उत्पन्न होने वाला ।

[illegible]

आगाध [आ. गम्. वृत्त] १ अना पञ्चम दशन
 दना - अनाया पूर्वमन्त्रा प्रमनम्यायम कुन उतर
 ५१० अन्वनाद् अन्वय मन्त्रः अन्वयहरागम्
 राग्यामे प्रतीयन्ते - भग० ८। १८, रघु० १५। ८०
 वृत्तः ३। ४८. २ अन्वयमन्त्र एवमेवा वदया

आगम—ब्रह्म० १, वा० ६, चिदागमनिमित्तम्
रिक्म० ५ ३ जन्म, मूल, उगमि आगमा-
पाविमोर्निर्वाणान्मिनिशब्द भाग्य ५१४,
४ सकलन, सचर (धनका) अर्थ, धन आदि ५
प्रवाह, जलमार्ग, घारा (पानी की) रक्त फेन
६. बीजक या रसायक ६० अनागम ७ ज्ञान

शिष्यप्रदेयागमा अर्थ० २, १२ प्रज्ञा मयभागन
आगम मनुशास्त्र २५० १, १५ ८ आर राक्षस
९ किमो यन्तु वा वैध अधिपत्य आगम १५ बल
नैव भक्ति स्तोकापि यत्र ना याज० ५१-५ १०
सपत्नि की वृत्ति ११ पररागाय मित्रा या अगम
धार्मिक लेख, धर्मग्रन्थ, शास्त्र—अनुमानेन न ज्ञान
क्षत कि० २१ २८ गतिज्ज्ञ आगम ३० १२
शास्त्रादिग्रन्थ वेदाध्ययन १३ विज्ञान, दर्शन ब्रह्म
ध्यायवैभिन्या फलान मित्रिहेतव २५० १०१-५,
१४ वा धर्मग्रन्थ न्यायनिर्णान्सास्त्रान्मिनिशब्द
ममे कि० १२, २२ १५ चार प्रकार के प्रमाणों में
से अन्तिम अति नैयायिक शब्द या आप्तशास्त्र कहते
हैं ('वेद' ही ऐसे प्रमाण समझे जाते हैं) १६ उपमर्ग
या प्रत्यय १७ (शब्द माधन में) वण की वृद्धि या
जन्म क्षेप १८ वृद्धि इशाम १९ मित्राज्ञ का ज्ञान
(विप० प्रयोग) । सम०—चित (वि०) प्रथोच
पठित, परीक्षित, ब्रह्म (वि०) ज्ञान में बड़ा हुआ
बहुत बिहान् पुरुष—प्रतीप इत्यादिप्रत्यय १५०
६१, ४१, बेदिन् (वि०) १ वेदों के जाने वाले
२ धारत्रिणिगाय, सायक (वि०) रसायकनायकी,
प्रमाणक से सम्बन्धित ।

आगमनम् [आ + गम् + ल्यट्] १ आना, उगमन,
पहुँचना—रघु० १२, २४, २. लोटना ३ अधिपत्य
४. वेदवेच्छा के लिए किसी स्त्री के पास पहुँचना ।

आगमिन्, आगामिन् (वि०) [आगम् + गिन् वा ह्रस्व]
१. आने वाला, भावी २ आगम्य पहुँचने वाला ।

आगम् (नपु०) [इ + अगुन्, आगदेस] १ दौप, आ-
राध, उल्लापन—महिष्य सप्तमागमि सुतोम्न इति
वन्दया—मि० २, १०८ ही रिपु मय मनी समागमो
—रघु० ११, ७४, कुतागा—पुत्र० ३, ११ २
पाप । सम०—कृत् (वि०) अधिराध करने वाला,
अपराधी, जुन करने वाला—अज्ययमागम्कनम्युर्गाङ्ग
—रघु० २-३२ ।

आगस्ती [अगस्यस्य इवन्, अच्—अलोप] दक्षिण दिशा ।
आगस्त्य (वि०) [अगस्यस्येवन्, यञ्—यलोप] दक्षिणी ।

आगाय (वि०) [अगाय एव स्वाय अच्] बहुत गहरा,
अगह, (आल० भी) ।

आगमिक (वि०) (स्त्री०—की) [आगम + ठक्] १.
अधिकारकाय के सम्बन्ध रखने वाला—महिराया-

मिका जेया बुद्धिस्तकालदसिनी—हृय० २ आगम्य,
आने वाला ।

आगाम्यक (वि०) [आ + गम् + उक्ञ्] १ आने वाला,
२ पहुँचने वाला ३ भावी ।

आगारम् [आगम्यच्छति—च् + अच्] घर आवास ।
सम० बाह्य घर को आग लगा देना बाहिम्
(वि०) घर के व्यक्ति, गृहदाहक (वय आदि),
धूम हिम; घर से निकलने वाला वृत्ती ।

आगुर (स्त्री०) [आ + गृ + णिप्] स्त्रीकृति, सहस्रमि,
प्रिया ।

आगु (गृ) रणम्, आ + गुर + ल्यट् । गन्त मुद्राव ।

आगुः (स्त्री०) सहस्राय प्रिया ।

आगिक (वि०) (स्त्री०—की) [अग्नेरिह बा० ठक्]
अग्नि में मद्य रखने वाला, यज्ञाग्नि में सज्ज ।

आग्नीध्रम्, अग्निमन्थे अग्नेन तप गन्धम रघु आवात्र
त्रय नाग०, यज्ञाग्नि जलाने का स्थान हृषभकुड,
अ गज्ञाग्नि जलाने वाला पुरोहित ।

आग्नेय (वि०) (स्त्री०—वी) १ आग में मद्य रखने
वाला प्रचद २ अग्नि की अग्नि, यः १ स्कद या
अग्नि की उपयोग २ दक्षिण-पूर्वी (आग्नेय कोण)
दिशा, —यम १ कृति का नक्षत्र २ मानः ३ रश्मि
४ वी ५ आग्नेयार्ध ।

आगमोक्तिक [अगभाजन नियम दीयेन अग्ने—ठक्] भोज
म सवप्रथम या सबसे आगे आसन ग्रहण करने का
अधिकार। शास्त्र ।

आगमः [अग्ने अयन दास्यतेयेन कर्मणा पुरो० हृषव दीर्घ
व्ययप] अग्निष्टाम वाग में सोम को प्रथम आहुति,
—यञ् वती ऋतु के जन्म में नये अन्न तथा कलाविक
में युक्त हवि ।

आग्रहः [आ + ग्रह् अच्] १ पकड़ना, दखन करना २
आक्रमण ३ दुष्ट संहार, दुष्टभक्ति, दुष्टना—चलेयि
काव्य पदार्थपाग्रह नै०, कु० ५१ पर शक्ति०,
४ कृपा, संक्षण ।

आग्रहायण. [अग्रहायण—अच्] मार्गशोच का महीना,
जी १ मार्गशोच मास की पूर्णिमा २ मृगशिरस्
मास का नक्षत्र—पुत्र ।

आग्रहायण (वि०) क [आग्रहायणी वीर्णमास्यस्मिन् जाने
—ठक्] मार्गशोच का महीना ।

आग्रहायिक (वि०) (स्त्री०—की) अग्रहार (बाग्यों की
दान में दो जाने वाली भूमि) प्राप्त करने का अधिकारी
बाग्य ।

आग्रहना [आ + ग्रह + णिप् + युच् + टाप्] १. हिम्मा-
बुलना, कोपना, किसी से राहना—रघु० ११, ७४
नमस्तत—मि० ११० २. वर्षक, पक्ष ।

आग्रही, अग्रह [आ + ग्रह + यञ्, ह्रस्व वा०] अग्रही

करना, रचड़, किसी से रचड़ना—गडम्बलाचपगलम्ब
 दोषकचपुमस्कंभ निम्नायिनोऽयम् जि० १२।६६।
आचलः [आ + हल् + चल् + निपात] हड़, सीमा।
आचलः [आ + हल् + चल्] 1 प्रहार करना मारना 2
 थोट, प्रहार, बाध—सीमाचातप्रतिहृततस्कम्बलम्बे
 करना स० १।३३, अचम्बलति तडाधानम्—कु०
 २।५०, 3 बदकिस्ती, विपत्ति 4 कटाई-जाना
 —आचल नोयभासम्ब हि० ४।६३।
आचारः [आ + च + चल्] 1 छिड़काव 2 विशेषकर यज्ञ
 की अग्नि में ची डालना 3 ची।
आचल्यन् [आ + चल् + च्त्वि] 1 मोटना 2 उछालना,
 घुमाना, चक्कर मारना, तेरना।
आचोक्तः [आ + च + च्त्वि] क्लृप्ता आचारत।
आचोचयन्—आ [आ + चल् + च्त्वि] त्रिधा टाप् उद्योषणा
 विहोरा, -एवमाचोषणया क्लृप्याम् पञ० ५।०
आचालयन् [आ + घ्रा + च्त्वि] 1 लूना 2 लगेव लूना।
आचलरन् [अङ्गाराया समूह अण्] अगारी का समूह।
आचिक्र (वि०) (स्त्री०—की) 1 शारीरिक, कायिक 2
 हाव-भाव से युक्त, शारीरिक चेष्टाओं से व्यक्त
 —अचिक्रीभिनय, दे० 'भिनय'—कः तलसी या
 डोलकिया।
आचिरन् [अगिरन् + अण्] गृहस्पति, अगिरा की संज्ञा
 (पुं०)।
आचल्यन् (पुं०) [आ + चल् + उति वा०] विज्ञान पुस्तक।
आचलः [आ + च + चल्] कुल्ला करना, आचलन करना
 (हथेली पर जल लेकर पीना)।
आचल्यन् [आ + चल् + च्त्वि] कुल्ला करना, बायिक
 अनुष्ठानों से पूर्व तथा भोजन के पूर्व और पश्चात्
 हथेली में जल लेकर घूट-घूट करके पीना—रक्षादा-
 यनन तत - शास्त्र० १।२४२।
आचलनकम् [स्वार्थ आचारे वा कन्] पीकदान।
आचलः [आ + चि + अण्] 1 इकट्ठा करना, बीजना 2
 समूह।
आचारयन् [आ + चर् + च्त्वि] 1 अभ्यास करना, अनु-
 करण करना, अनुष्ठान-बर्ष, चलन आदि 2 आच-
 यन, व्यवहार,—अचीतिदोषाचरमन्त्राचर्य—ने० १।४,
 उताहुरण(वि० उपवेश) 3 प्रथा, श्रियाटी 4 संस्था।
आचल्य (वि०) [आ + चल् + क्त] 1 जिसने कुल्ला करके
 गृह घूट कर लिया है, या जिसने आचलन कर लिया
 है 2 आचलन के बोध।
आचलः [आ + चल् + चल्] 1 आचलन करना, कुल्ला
 करके गृह घाट करना 2 पानी या वर्ष पानी के झर।
आचलः [आ + चर् + चल्] 1 आचरण, व्यवहार,
 कर्म करने की रीति, आचलन 2 प्रथा, रीति,
 व्यवसाय उचितकर्म व आचारः सारम्भकमानः

मन० २।१८, 2 लोकाचार, प्रथा सबकी मान्य
 (वि० व्यवहार) समान में प्रथम पद के रूप में कई
 प्रयुक्त होना वर्ष होता है—'अचालवर्षी', 'पूर्ववर्ष'
 व्यवहार या प्रचलन के अनुसार—दे० 'चल', 'आच'
 4 रूप, उपचार—आचार इत्यवर्तमान यथा
 गृहीता—स० ५।३, गृहाची० ३।२६ रिवाजी वा कृद्
 उपचार—आचार प्रतिपद्यन् स० ४। सन०—वीरः
 भार्गवी उनाग्ने का दोष,—अचल्यन् लान के द्वारा
 पूर्वो ग्रहण करने का संस्कार—विशेष जो कि यज्ञानुष्ठान
 के समय किया जाता है,—रघु० ७।२७, कु० ७।८२,
 ब्रूत (वि०) गृहाचारी—रघु० २।१३,—केः
 आचरण सबकी नियमों का बनार,—अचल,—वसिष्ठ
 (वि०) स्वर्ण अष्ट, जिसका आचार—अवहार विशद
 गया हो, या जो आचरण से पतित हो गया हो,—आच
 (पुं० व० व०) धान की बीजों को कि सम्मान
 प्रदत्त करने के लिए किसी राधा या प्रतिष्ठित
 महानुभाव पर डेरी जाती है—रघु० २।१०,—देवी
 पुष्पधूमि आचरित।

आचारिक (वि०) [आचार + कृद्] प्रचलन या नियम के
 अनुकूल, अधिकृत।

आचार्यः [आ + चर् + च्त्वि] 1 सामान्यतः अध्यापक वा
 गुरु 2 आध्यात्मिक गुरु (जो उपनयन कराना है तथा
 वेद की शिक्षा देता है)—उपनीव तु व शिष्य वेद-
 अध्यापयेद्दिब, तत्कल्प सरद्वयं च समाचार्यं प्रचक्षते।
 —मनु० २।१४०, दे० अध्यापक शब्द भी 3 विशिष्ट
 सिद्धान्त का प्रवर्तक 4 (जब व्यक्ति वाचक सत्ताओं
 से पूर्व लयता है) विज्ञान, पंडित (अथर्वी के 'आचर'
 शब्द का कुछ समानार्थक),—हाँ गुरु (स्त्री),
 आध्यात्मिक गुरुआजी। मम० उपाधयन् बायिक गुरु
 को सेवा करना, शिष्य (वि०) प्रतिष्ठित, सम्मान-
 मनीय।

आचार्यकम् [आ + चर् + कृद्] 1 शिक्षण, अध्यापन,
 (पाठ्यादि का) पढ़ाना—सङ्ग्राहीना पुनश्चके किना-
 पाचार्यकं छरे—रघु० १२।७८—आचार्यकं विप्रि
 मायमचाचारिणीत्—वा० १।२९, 2 आध्यात्मिक
 गुरु की कुशलता।

आचार्यानी [आचार्य + कृद्] आचार्य वा वर्ष
 वर्ष की सली, सम्पन्नमनुराज व पुत्रैश्चुत्तरे, अचल
 वेत्ताचार्याचार्यानी च सार्वनीय गृहाची० ३।९।

आचिका (पुं० व० क० क०) [आ + चि + क्त] 1 पूर्ण, भर
 हुआ, उका हुआ—अचाचिती विप्रविचलनी यवी
 —कि० १।१९, आचिकचका की—आदि 2 सेवा
 हुआ, गुचा हुआ, गुना हुआ—अचाचिका अचरुचि-
 त्तवा—रघु० ७।१० कु० ७।११, 3 एकपिड, बिक्रिड,
 डेर फिसा हुआ,—कः 1 पानी पर डोह 2 /वर्०

भी) इस भार या गाड़ी भर की तीन (८०,०००) ताकत ।

आचूचयम् [आ + चू + ल्यट्] १ चूना चुसना २ चुम कर बाहर निकाल देना (आधु० म) मिगो लगाना ।

आच्छादः [आ + छद् + णिच् + घञ्] कपडा पहनना या बरत ।

आच्छादनम् [आ + छद् + णिच् + ल्यट्] १ कपडा पहनना २ कपडा, ध्यान ३ कपडा, बरत भूषणाच्छादनार्थं पाठो १८८, ४ छादन ।

आच्छुरित (वि०) [आ + छृ + क्त] १ बिभ्रत मिलाया हुआ २ खरबा हुआ खुजलाया हुआ लम्प ३ नखा का आपस में एक दूसरे से गूँथ कर एक प्रकार का मजद पैदा करना, नखबाध २ टटोका मारकर हलना, अट्टहास ।

आच्छुरितकम् [आच्छुरित क्त] १ तावत वा खरा २ अट्टहास ।

आच्छेदः वनम् [आ + छिद् + घञ् + ल्यट् वा] १ काट देना, अपच्छेदन २ जरा सा काटना ।

आच्छेदयम् [आ + छिद् + ल्यट् + घञ्] १ काट देना ।

आच्छेदयम् [आ + छिद् + ल्यट् + घञ्] १ काट देना ।

आच्छेदयम् [आ + छिद् + ल्यट् + घञ्] १ काट देना ।

आच्छेदयम् [आ + छिद् + ल्यट् + घञ्] १ काट देना ।

आच्छेदयम् [आ + छिद् + ल्यट् + घञ्] १ काट देना ।

आच्छेदयम् [आ + छिद् + ल्यट् + घञ्] १ काट देना ।

आच्छेदयम् [आ + छिद् + ल्यट् + घञ्] १ काट देना ।

आच्छेदयम् [आ + छिद् + ल्यट् + घञ्] १ काट देना ।

आच्छेदयम् [आ + छिद् + ल्यट् + घञ्] १ काट देना ।

आच्छेदयम् [आ + छिद् + ल्यट् + घञ्] १ काट देना ।

आच्छेदयम् [आ + छिद् + ल्यट् + घञ्] १ काट देना ।

आच्छेदयम् [आ + छिद् + ल्यट् + घञ्] १ काट देना ।

आच्छेदयम् [आ + छिद् + ल्यट् + घञ्] १ काट देना ।

आच्छेदयम् [आ + छिद् + ल्यट् + घञ्] १ काट देना ।

आजीविका [आ + जीव् + अ + क्तम् + टाप्, अत इत्वम्] या जीवन निर्वाह का साधन धन ।

आजीव - आजीव (स्था०) [आ + जीव् + क्तिप्, आ + जीव् + क्तिप्] १ जगार, बिना पारिश्रामिक प्राप्त किये काम करना २ जगार में काम करने वाला ३ नरक वास ।

आजीवित (स्था०) [आ + जीव् + णिच् + क्तिप्, पुकायम इत्वम्] आदेश हुकुम आजा ।

आजा । आ + जा + अद् + टाप्] १ आदेश हुकुम तर्बित सप्राप्तिक भनराजाय कृ० ३१०० २ अनुज्ञा अनुमति ।

मम० अनुप - अनुमानन, अनुमायित्, अनुमतिन अनुमानित, सप्राप्तिक, बह (वि०) आजाकारी

आजानवर्ती कर कारित (वि०) आजा मानने वाला आदेश का पालन करने वाला, आजाकारी, (४) गहर करणम्, पालनम् आजा मानना

अद् + क पालन करना वचम् हुक्मनामा निश्चय अद् + प्रतिपात भग आजा मानना, आजा क

विद् + रूप नन्ता, नानामङ्ग सङ्गते नृप नृपत यद्वाऽता मादनीमा मदी० ३१०० ।

आज्ञापनम् [आ + ज्ञा + णिच् + ल्यट् + घञ्] १ आदेश देना २ ज्ञापन ३ आज्ञाना ।

आज्ञाय [आ + ज्ञा + णिच् + ल्यट् + घञ्] १ पिपन्नावा हुआ या मनोऽपममवागम श० १ (यद् बहुधा

प्राप्ति मम० आजा है गीर्वाणामाज्य आदेश प्रदीपन पर भाव । मम० पात्रम् स्थायी स्थित कृपा वा वस्तु का वस्तु भुज (पु०) १

आज्ञा का विधान २ देना ।

आज्ञाय [आ + ज्ञा + णिच् + ल्यट् + घञ्] १ पिपन्नावा हुआ या मनोऽपममवागम श० १ (यद् बहुधा

प्राप्ति मम० आजा है गीर्वाणामाज्य आदेश प्रदीपन पर भाव । मम० पात्रम् स्थायी स्थित कृपा वा वस्तु का वस्तु भुज (पु०) १

आज्ञा का विधान २ देना ।

आज्ञाय [आ + ज्ञा + णिच् + ल्यट् + घञ्] १ पिपन्नावा हुआ या मनोऽपममवागम श० १ (यद् बहुधा

प्राप्ति मम० आजा है गीर्वाणामाज्य आदेश प्रदीपन पर भाव । मम० पात्रम् स्थायी स्थित कृपा वा वस्तु का वस्तु भुज (पु०) १

आज्ञा का विधान २ देना ।

आज्ञाय [आ + ज्ञा + णिच् + ल्यट् + घञ्] १ पिपन्नावा हुआ या मनोऽपममवागम श० १ (यद् बहुधा

प्राप्ति मम० आजा है गीर्वाणामाज्य आदेश प्रदीपन पर भाव । मम० पात्रम् स्थायी स्थित कृपा वा वस्तु का वस्तु भुज (पु०) १

आज्ञा का विधान २ देना ।

आज्ञाय [आ + ज्ञा + णिच् + ल्यट् + घञ्] १ पिपन्नावा हुआ या मनोऽपममवागम श० १ (यद् बहुधा

प्राप्ति मम० आजा है गीर्वाणामाज्य आदेश प्रदीपन पर भाव । मम० पात्रम् स्थायी स्थित कृपा वा वस्तु का वस्तु भुज (पु०) १

आज्ञा का विधान २ देना ।

आदीकम् [आदीक् + क्त्वं] बछड़े की उछाल-कूद ।

आदीकरः [आदी + कृ + क्त्वं] सड़क ।

आदीकः [आ + कृ + क्त्वं + पुषो०] टारम् १ घमड़, स्वाभिमान, हुकूमती, लाठीचार्ज—घमड़ के साथ, राज-कीय या शाही इन से (रमय के निर्देश के रूप में प्रायः प्रयुक्त) २ सूजन पैलाव, बिस्तर, कुम्हना —सो—कटाटोपो भयदुर —सि० २:३४ ।

आदम्बरः [आ + डम्ब + अरन्] १ घमड़ इकट्ठी २ दिखावा, सपना, बाहरी छाप डट—विश्वनाथसंग कपाडम्बरम्—का० ५, निर्णय आभने नेत्र विपुलाहम्बरः प्रियता—भाषि० १:११५, ३ आक्रमण के भयानक रूप विगुल का बजना ४ आरम्भ ५ प्रबलता गेय अवग ६ हर्ष प्रमत्तता ७ बादलों की गरज शक्तियों की बिजली ८ दृढ़मेरी ९ यज्ञ का कोलाहल ग शोर-गुल ।

आदम्बरिण (वि०) [आदम्बर + णि] हेकड़, घमड़ी ।

आदक - कम् [आ + दीक् + क्त्वं, पुषो०] अनाज की माप, बीपाई होल अष्टमृष्टिर्भवत् कुवि कुचयेऽष्टौ तु पुष्कलम्, पुष्कलादि य चत्वारि आदक परि कीर्तित ।

आदध (वि०) [आ + धृ + क्त्वं, पुषो०—नारा०] १ धनो, धनवान् आदधेऽभिजनवानस्मि कोऽभ्योऽस्ति सवृक्षा मया—अण० १:११५, पृष्ठ ५१८, २ (क) सम्पन्न, समृद्ध, सम्पन्नतायुक्त, (करण०) या समाप्त के अन्तिम पद के रूप में—सत्य पृष्ठ ३१९, विष्णुज सम्पन्न—वसासपल्लावध्यादुपाय इष्ट० १८ (ब) मिश्रित, मिश्रित, मन्वाद्यय, अत्र उत्तममन्वाद्याया मष्टा० ३ प्रचुर, पर्याप्त । सम्पन्न चर (वि०) [स्त्री०] री] आ कभी ऐश्वर्यवाली रहा हो ।

आदधकुरण (वि०) [स्त्री०] जो समृद्ध करना, धन समृद्ध करने का साधन, धन ।

आदधस्त्रिण्य, आदधक (वि०) [आदध + त्रिण्यन्, उक्त्वं वा] धन संपन्न या प्रतिष्ठित होने वाला ।

आदक (वि०) [अणक + अण] नीच, ओछा, अधम कम् विशेष आसन में होकर मीथत करना, रनिबध—आणक सुरत नाम इष्टत्यो पादर्वसस्यथो ।

आदक (वि०) [स्त्री०] जो [अणु + अण] अत्यन्त छोटा, बम् अत्यंत छोटापन या सूक्ष्मता ।

आदि (पु० स्त्री०) [अणु + इण] १ गाड़ी के बुरे की कील, अलकील २ बूटने के ऊपर का भाग ३ हृद, सीमा ४ तलवार की धार ।

आदि (वि०) [अधे भव अण] अंध से पैदा होने वाला (जैसे कि पक्षी) । इः हिम्यगर्भं या ब्रह्मा की उपाधि—अणु १ अंधों का डेर, वस्तु-प्राप्तियों का समूह, पक्षि-सारथ २ अंधकोष, कोता ।

आदि (वि०) [आदिमस्ति अस्ति—ईरक्] १ बहुत अंध रहने वाला, २ बयस्क, पूर्णवयस्क (जैसे कि माद) । आदि (वि०) [आ + तन् + क्त्वं, कुम्भम्] १ रोग जरीर की बीमारी दीपनीशामयवस्तु ब्राह्मण नामधेयि वा, दृष्टवा पथि निगनकु क्त्वा वा ब्रह्मज्ञा कुवि—याज्ञ० ३:२५५ २ पीडा, आधि, ध्वबा, वेदना विभिन्न मिनीयमान कु—शा० ३, आतकुस्मृतिरकटांगम-गुर्वी उत्तर० १:४९, विक्रम० ३:३ इर, अणका पुष्पपयर्कोविष्ये निगनकु निरानय रच० १:६३, भाति, नाम ४ डोल या तबले की आवाज ।

आदि (वि०) [आ + तन् + क्त्वं] १ जमाना, माफ करना, २ जमा हुआ धूस ३ एक प्रकार की छाछ ४ प्रमत्त करना मन्त्र करना ५ भय, सकट ६ गति, वेग ।

आदि (वि०) [आ + तन् + क्त्वं] १ फैलाया हुआ, बिस्तारित २ नाना हुआ (जैसे कि धनुष की डरी) ।

आदितायिन् (वि०) या—मन्त्रा [आदितेन विस्तीर्णने लक्ष्मि-दिना अदिने गोलमस्य—सारा०] १ किसी का धन करने क लिए प्रयत्नशील साहसी—गुह वा बालबुद्धी २ ब्राह्मण वा बहुभूत आदितायिन्मायान्त हन्यादेवा-विचारयन् । मनु० ८:३५० १, अण० १:३६, २, अध्याय पाप करने वाला जैसे कि चोर, अपहरणकर्ता, हत्याका, आग लगाने वाला ब्रह्मापतकी आदि—अग्निहो-रन्ध्रस्य अस्त्राग्नयो वनापय ज्वरदारहृरक्षतान् ५६ विद्याशाततायिन्—शुक्० ।

आदि (वि०) [आ + तन् + क्त्वं] १ गर्मी (सूर्य अग्नि आदिकी) रूप, —आतपायोक्तिः रात्र्य—मष्टा०, रूप में डाला हुआ, प्रचंड—अणु० १:११२ प्रकाश । सम्पन्न—अध्यायः सूर्य की गर्मी (रूप) का गुजरना, या बीत जाना, सूर्यास्त आतपायस्यमक्षिपनीशाराम्—गु० १:५२—अध्यायः छाया, उषकम् गरीबिका, अणु—अणक छाता तमातपकालान्तमनातपय—रच० २:१३, ४७, पृष्ठ ४५ राज्य स्वहन्तधनदण्डमनातपयम्—अण० ५:६, लङ्कानम् गर्मी या धूर में रहना, सूक्ष्म जाना—आतपलङ्कान्दलवद्यस्यशरीरा अकुम्हका—सं० ३, बारम्बु छाता छतरी—नृपनिकुड हत्या यूने सितातपवारम्बु—रच० ३:३० १:१५, —अणक (वि०) धूप में सुझाया हुआ ।

आतपनः [आ + तप् + मिच् + क्त्वं] मित्र ।

आत (वि०) [आ + तप् + क्त्वं] १ आतपन करने का भाग २ आतपन की उतराई, आतपन, आत ।

आतपेयम् [आ + तप् + क्त्वं] १ समोष्ण २ प्रसन्न करना समुष्ण करना, ३ दोषार या कष्ट पर सकेरी करना (उत्सव आदि के अवसर पर) ।

आतपि (वि०) [आ + तप् (ताप्) + पिनि] एक पंखी पक्षी ।

आतिथेय (वि०) [स्त्री०—बी] [अतिथिन् सत्त्वं—इत्थं]
अतिथेय इव इत्थं वा १ अतिथियों की सेवा करने
वाला, अतिथियों के उपयुक्त प्रत्युत्तराभारिचमा-
तिथेय रघु० ५।२ २।२५ तयानिधेयी बहुमान-
पूर्ववा कु० ५।३२, २ अतिथि के उचिन या उपयुक्त
—आतिथेयसत्कार स० १,—अन् अतिथि-सत्कार
—आतिथेयमनिवारितातिथि—वि० १।३८ सज्जा-
निधेया वय—भा० २।५०—बी सत्कार मेहमान नवाहो
—भाषि० १।८५।

आतिथ्य (वि०) [अतिथि + ध्यञ्] सत्कारयोग अतिथि
के लिए उपयुक्त ध्यः अतिथि इयम् सत्कारपूर्वक
स्वागत, अतिथि-सत्कार नवानिध्याक्रियाशान्तरय
ओभपरिचयम् रघु० १।५८।

आतिथेयिक (वि०) [स्त्री०—बी] [अतिथेय + ठक्]
(ध्या० में) अतिथेय से सम्बद्ध—पु०।

आतिरे (ई) कम् [अतिरेक + घञ्] पथो उभयपद वृद्धि
काकतुपन, अधिकता, बहुलायत।

आतिरेकम् [अतिरेक + घञ्] अधिकता, बहुलायत इहम्
परिचय।

आतुः [अत् + उत्] लट्ठों का बना बैठा, चलाई (बटो को
बाँध कर बनाई गई लीका)।

आतुर (वि०) [इत्थर्वं वा + अत् + उत्] १ चोटिल
बाक २ (रोग से) इत्थ, प्रभावित, पीड़ित राव-
गावरजा त्व रावव यवनागुरा—रघु० १२।३२
काम, नव आदि ३ इत्थ (मन या शरीर से)
बाकाघेयास्तु विधेया बाकवृद्धकृपापुत्रा मनु० ४।१८३,
४ उत्पुक्त, उत्तविका ५ दुर्बल, कमजोर ६ रोगी।
नव०—आत्ता हृन्पतात्।

आतोष्य, कम् [आ + तुष्ट + घ्यत्, स्वावे क् व] एव
प्रकार का वक्ष्यप आतोषविध्यामादिका विषय
—वेनी० १ अत्रमातोषकिरोनिधेयिताम्—रघु० ८।
१४, १५।८८, उत्तर० ७।

आत्त (पु० क० ड०) [आ + वा + क्त] १ किया हुआ,
प्राप्त किया हुआ, माला हुआ, स्वीकार किया हुआ—
दृष्टमात्तरवि—रघु० ११।५७, बाकवि० ५।१, २
स्वीकार किया हुआ, उत्तरदायित्व किया हुआ ३
काष्ठम् ४ बीया हुआ, मिश्रारित—नामालसारा
रघुरचयेक—रघु० ५।२१ स्त्री प्रकार आत्तवर्त
११।७६, के बाबा मया। नव०—कम् (वि०) १
विशेषा सर्वत्र मिश्रक विहा मया हो, आक्रान्त, परा-
जित—देमात्तनवी भाषक—भा० १ २ बुझा हुआ
(कैसे कि दून)—आत्तपचम्बपुत्र सपुत्रि—वि०
१४।८४ (बटो को) न० १ में बतावे सर्व बी
एकता है,—वर्ष (वि०) कचवाहित, विरक्त, कच-
वृत्त,—कच (वि०) एवकीव कच की कचव कचो

बाबा—अनलक (वि०) जिसका मन (इष्ट आदि के
कारण) स्थानान्तरित हो गया हो।

आत्मक (वि०) [आत्मन् + क्त] (समय व अन्त म) से
बना हुआ मे रचा हुआ स्वभाव का लक्षण का वक्ष
पीव तथा बाका मक्ष —मदिध स्वभाव का इसी
प्रकार हुआ, वक्ष।

आत्मकीय आत्मीय (वि०) [आत्मक (न्, छ) अपने से
सम्बन्ध रखने वाला अपना मक्ष का—आत्मीय
पवर्तित स० २ स्वामिनमात्मीय कर्त्तव्यादि १२०
२, जोन लग प्रमादमात्मीयमिवाभ्यस्त रघु०
७।६८ कु० २।२१ अन्त्य सम्बन्ध बा—वक्ष।

आत्मन् (पु०) [अत् + मनिन्] १ आत्मा जीव किमामना
माने किर्तिन्धी भवन—१२० १ आत्माने निधन शिद्धि
शरीर—वक्ष नु क० ३।३ २ स्व आत्म इम
अथ म प्राप यह शब्द नोना गुरुवा म तथा पुनिलग व
एक वचन में प्रयुक्त होता है बाते उस सजा मक्ष वा
मिग, वचन कुछ हो हो जिसका यह उम्मेद करना है
आत्ममदशनन आत्मन पुनमक्ष स० १ गुण
दङ्गुगामान मर्व स्वप्नेय वामने ७० १।१६०
देवी प्राणप्रसवमारमान गङ्गादेया विमुञ्चति

उत्तर० ७।२ गोपायति वृद्धिपिय आ मानमामना
वक्ष०, ३ परमात्मा वक्ष सम्बद्धा लक्षमात्मा-
त्मन आकाश समत उप०, उत्तर० १।१ ४ मा
प्रकृति दे० आत्मक ऊपर ५ वचन विशेषता ८
वैमर्गिक प्रकृति या स्वभाव ७ व्यक्ति या मक्षन
शरीर स्थित सर्वोन्नतनोबी कम्बवा मेरुविद्यामना
रघु० १।१४ म० १२।१२ ८ मन वृद्धि महा-
त्मन महामन् आदि ९ समक्ष नु० आत्मसम्पन्न
आत्मवत् आदि १० विचारजक्षित विचार और नक्ष
वक्षि ११ सप्रायता, जीवित, साहस १२ क्व प्रविष्टा
१३ पुत्र आत्मा है पुत्रमात्मा १४ देवमात्मा, प्राण
१५ नुर्व १६ अग्नि १७ वायु—'से बना वा से वृक्ष
अर्ध की प्रकट करने के लिए 'आत्मन्' मक्ष मदास के
अन्त में प्रयुक्त होता है—दे० आत्मक। स०
—अत्मीय (वि०) अपने ऊपर आश्रित, स्वाश्रित,
मिवाश्रित—(नः) १ पुत्र २ आत्मा, पत्नी का भाई ३
मक्षरता वा विद्वक्क (मादध हाद्विध में),—अनुत्प-
न्म व्यक्तिगत सेवा,—अक्षरारः अपने भाव को
छिपाया—कच वा आत्माह्वार करोमि—व० १,
—अक्षरारः कचवेदी, कपटी,—आरत्त्व (वि०) १ आत्मा
आप्त करने के लिए प्रयासवीक (कैसे कि कोई बीवी),
आत्मकान का अन्वेषक—आत्मारामा विद्विद्वत्तवी
मिदिकाने वामावी—वेनी० १।२१, २ अपने वक्ष में
अन्त,—अत्मीय (पु०) मक्षी (देवा वक्षता वक्षता
है कि मक्षी करने मक्षी की वा मक्षी मक्षि के

—संज्ञकः—समुच्चयः 1 पुत्र चकार नाम्ना रघु
भारतममममम रघु० ३१२१ ११५७, १७। 2 प्रम
का देवता, कामदेव 3 बह्मा की उपाधि, शिव, विष्णु
(--का) 1 पुत्री 2 समस्त, -संपन्न (वि०) 1 स्वस्थ
चित्त, 2 बुद्धिमान्, प्रतिभाशाली, -हन्त = धानिन
—हन्तव्य, -हत्या आत्मघात, -हित (वि०) अपने
लिए हितकर, (-त्व) अपना निजी मला या कल्याण ।
आत्मना (अव्य०) ['आत्मन्' का कर्ण० ए० व०] आत्म-
बाकी कर्तृकारक के रूप में प्रयुक्त किया जाता है --
अथ आत्मनिता स्वमात्मना—रघु० ८।५१, तुम स्वयम्,
यह प्रायः क्रमिक संख्यासूचक शब्दों के साथ प्रोडा
जाता है—उदा०—०द्वितीयः आप सहित दूसरा अध्याय
बहु तथा स्वयम् ।

आत्मनीय (वि०) [आत्मन् + लृ] 1 अपने से सब कुछ रखने
वाला, अपना निजी, -कस्यैव आत्मनीय मालिक०
४, 2 अपने लिए हितकर—आत्मनीयमपतिष्ठते—कि०
१३।६९, -नः 1 पुत्र 2 पत्नी का माई 3 विद्वत्क
(नाटकों में) ।

आत्मनेपदम् [आत्मने आत्मात्-फलबोधनाय पदम्—अन्तुक्
स०] 1 आत्मवाची क्रियापद, दो प्रकार के क्रियापदों
(परस्मैपद तथा आत्मनेपद) में से एक जिनमें कि सकृत्
भाषा की वातु-रूपावली पार्श्व जाती है, 2 आत्मनेपद
के प्रत्यय ।

आत्मन्मरि (वि०) [आत्मान विभक्ति इति—आत्मन् + नृ
+ मरि, मृन् च] स्वार्थी, लालची, (जो केवल अपनी
ही उदारपूर्ति करता है)—आत्मन्मरिस्त्व पिशितैर्न-
राणाम्—मटि० २।३३, हि० ३।२२ ।

आत्मन्मत् (वि०) [आत्मन् + मत्—मय्य च] 1 स्वस्थ
चित्त, 2 आन्त, दूरदर्शी, बुद्धिमान्—किमिवावसाद
करमात्मन्मत्—कि० ६।१९ ।

आत्मन्मत्ता [आत्मन् + तत् + टाप्] स्वस्थचितता, स्थिति-
यत्न, बुद्धिमत्ता—प्रकृतिष्वात्मजमात्मन्मत्ता—रघु०
८।१०, ८४ ।

आत्मन्मात् (अव्य०) [आत्मन् + मात्] अपने अधिकार
में, अपना निजी, (प्रायः 'ह' और 'मृ' के साथ)—दुरितै-
रपि कर्तुमारयसात्—रघु० ८।२ ।

आत्मन्मत् (वि०) (स्त्री०—की) [अत्यन्त + क्त] 1
छोटा, अनवरत, अनन्त, स्थायी, नित्यस्थायी स
आत्मानिकी अधिकारिता—गु० ४, विष्णुगुणहृत्कम्या-
स्थितिकमेवसे—२।१५, भग० ६।२१, 2 अत्यधिक,
अचुर, सर्वोच्च 3 सर्वोच्च, पूर्ण—आत्मानिकी स्वत-
न्त्रिपतिः—मिता० ।

आत्मन्मत् (वि०) [स्त्री०—की] [अत्यय + क्त] 1
माधकारी, सर्वमाधकार 2 पोषाकर, अमगलकर, अशुभ-
सूचक 3 अन्धावयक, अपरिह्राय, आपाती ।

आत्रेय (वि०) (स्त्री०—की) [अत्रि + क्त] अत्रि से संबंध
रखने वाला, या अत्रि की सन्तान, -यः अत्रि का
वंशज की 1 अत्रि की पुत्री 2 अत्रि की पत्नी
3 रजस्वला स्त्री ।

आत्रेयिका [आत्रेयी + कन् + टाप् ह्रस्व] रजस्वला स्त्री ।

आचर्षण (वि०) (स्त्री०—की) [अचर्षन् + अण्] अचर्ष-
वेद या अचर्षा ऋषि से संबंध रखने वाला कः 1
अचर्षवेद का अध्यापक या शाता ग्राहण 2 यज्ञ का
पुरोहित जिससे सब यज्ञ कर्म पठति का विधान
अचर्षवेद में निहित है 3 स्वयं अचर्षवेद 4 गृह-
पुरोहित ।

आचर्षणिक [अचर्षन्, क्त] अचर्षवेद का अध्यापक ग्राहण ।
आचर्षाः [आ + ण् + घञ्] 1 एक एक मार्गने से वेदा
हुआ धाव, 2 एक, दान ।

आचरः [आ + दृ + अण्] 1 आदर पूज्यभाव सम्मान,
-निर्माणमेव हि तदादरलात्नीयम् मा० १।४९, त
जातहार्देन न विहितादर कि० १।३३, कु० ६।२०
2 अवधान सावधानी, सम्मान्य व्यवहार कु० १।११,
3 उत्सुकता, इच्छा स्नेह—मृदाय्यदाराधमादर कु०
१।१३, गणिकञ्चनकारितायामादर का० १०२, 4
प्रयत्न वेष्टा—गृह्यत्रयनाकाश्रीरपीरादरनिमित्तं कु०
६।४१, 5 उपक्रम आरम्भ 6 प्रेम, आसक्ति ।

आचरणम् [आ + दृ + ल्यट्] सत्कार, इज्जन सम्मान ।

आचरणी [आ + दृ + घञ्] 1 आईना में दर्शने का
शीला, दर्शन आत्मानमालोक्य च शास्त्रभाष्यमादर्शयित्वे
क्तिमतायताक्षी कु० ६।२२, 2 मूल पाठ्यार्थ
जिसमें प्रतिगणित तैयार की जाय, (आच०) नमूना
प्रतिकृति, प्रकार, आदर्श शिक्षितानाम् मूच्छ०
१।४८, आदर्श सर्वशास्त्राणाम् का० ५, इसी
प्रकार—गुणानाम् आदि 3 कार्य की एक प्रति
लिपि 4 टीका, भाष्य ।

आचर्षकः [आचर्ष + कन्] दर्शन, आईना ।

आचर्षणम् [आ + दृ + ल्यट्] 1 दिग्दर्शना, प्रदर्शन
2 दर्शन ।

आचर्षणम् [आ + दृ + ल्यट्] 1 जलन 2 चोट पहुँचाना,
हत्या करना 3 गरी-सोटी सुनाना, बुरा करना
4 हमसान ।

आचर्षणम् [आ + दा + ल्यट्] 1 सेना, स्वीकार करना,
पकड़ना—कुदाकुदुरादानपरिहृताङ्गुलि—कु० ५।११,
आदान हि विमर्शयि सतां वारिमुच्यमिव—रघु०
४।८९, 2 उपार्जन, प्रापण 3 (रोग का) लक्षण ।

आचर्षिन् (वि०) [आ + दा + णिनि] ग्रहण करने वाला,
प्राप्त करने वाला ।

आचि (वि०) [आ + दा + क्ति] 1 प्रथम, प्राथमिक,
आदिम—निदानं स्वाधिकारणम्—अचर०, 2 मुख्य,

आदिनि [आ + नि + नि] 1 आदेश देने वाला, हुक्म देने वाला 2 उत्तेजक, मजकाने वाला—रघु० १८—(पु०) 1 सेनापति, आज्ञाया 2 ज्योतिषी ।

आद्य (वि०) [आद्यी मय—यत्] 1 प्रथम आदि कालीन 2 मुस्लिम, प्रमुख अंगुजा बासीन्महीसितामाद्य प्रगवधकृत्यानिव—रघु० १।११ 3 (ममास के अन्तमें) आरम्भ करने, बरीरा २ दे० आदि छा 1 दुर्गा की उपाधि 2 मास का पहला दिन छत् 1 आरम्भ 2 अनाद्य आहार । मम०—कवि आदिकवि ब्रह्मा या वात्सीकि की उपाधि दे० आदिकवि । बीजम् बिम्ब का मूल्य या भौतिक कारण या साक्ष्य मतानुसार प्रधान या अङ्गनियम कहलाना है ।

आद्युत (वि०) [आ + द्यु + क्त ऊर्ध्व नाथ व अद्] ज्ञाना से व्युत्पन्न पत्नी—हा० १ है । बहुभारी बाउत्तप पेट मुकसड वि० ११५ ।

आज्ञेता [आ + ज्ञु + क्त] प्रकाश घटक
आज्ञेताम [आ + ज्ञा + क्त] 1 चरित्र विज्ञेता एक
आज्ञेता सर्वत्र ज्ञानधर्माधिक्य कात्या० योगाद्य
मन्त्रिकीन योगादतरतिप्रथम मनु० १।१६ २
बिक्री के सामान का धर्मना के भाष मूल्य बढ़ाना ।

आद्यवर्ष [अधमण + व्यञ्ज] कर्जदारो ।
आद्यविक्रि (वि०) [अधम + क्त] अन्वयो ब्रह्मान् ।
आद्यवर्ग [आ + द्यु + क्त] 1 धणा 2 बन्धु बोट
पर्वणाग ।

आद्यवर्ष [आ + द्यु + क्त] 1 दण या अपराध का
निर्णय दण्डादेश 2 निराकरण 3 बोट पर्वणाग
सताना ।

आद्यविक्रि (यू० क० क०) [आ + द्यु + क्त] 1 बोट
पर्वणाग हुआ 2 तर्क द्वारा निराकृत 3 दण्डादिष्ट
सिद्ध-दोष ।

आद्यवर्ष [आ + द्यु + क्त] 1 रक्ता ऊपर रख देना
2 केना मान केना प्राप्ति करना बापित केना 3
वर्ज्यामि की स्थापित करना (अन्वयाधान) । पुनर्द्वार
विद्या कुर्यात् पुनराधानमेव व—मनु० १।१६ ४
करना कार्य में परिष्कृत करना निष्पन्न करवा ५.
कीच में रक्तना, रक्त देना—दुर्गा विद्योपादानहेतु
विद्यो वस्तुधर्म—सा० द० २ प्रजाना विनयाधाना
इलकाकुर्यादधि रघु० १।२४ ६ बीजारापण, उत्पा-
दन—कीतुकाधानहेतु—मेघ० ३, गर्भाधानकणपरि-
परात्—९, ७ विशेष, बरोहर—मात्र० २।२३८,
२४७ ।

आद्यविक्रि [आधान + क्त] सहवान के पश्चात् गर्भाधान
के निमित्त किया जाने वाला संस्कार ।

आचारः [आ + च + क्त] 1 आचय, स्तंभ, टेक 2
(वत) सौभाग्य रखने की शक्ति, सहायता, संरक्षण ।

मदय—स्वमेव चातकाचार मनु० २।५०, ३ आज्ञान
आशय—सिष्ठनवाध इवाचार—पञ्च० १।६७, पराचाराणां
मृताणां कुक्षिराचाराणां गत कु० ६।६७ कु० ३।४८
श० १।१४ ४ आलाल आचारमयप्रमूष प्रत्यक्ष
रघु० ५।६, ५ पुलिया बाँध पुवता, नटबन्ध
६ नहर ७ अधिकरण कारक का भाव स्थान—आधा-
रोधिकरणम् ।

आधि [आ + धा + क्त] 1 मानसिक पीडा वेदना चिन्ता
(विष० व्याधि शारीरिक पीडा)—न वेदनामापद सान्नि-
नाथया व्याधयस्तथा मन्त्र०, मनोगनमाधिहेतुम्
श० ३।११ रघु० १।२ १।५५ भृगु० ३।१०५
भार्गव० ६।११ २ विपत्ति अभिज्ञान सन्नाप आन्वयेव
गर्हिनापद यवयो वामा दुःखगणय म० ४।१७
मन्त्रादी० ५।८ ३ निक्षेप बरोहर विपत्ति रक्षण
याज्ञ० २।२२ मन्त्र० १।५३ ४ स्थान आवास
५ अवरोधान ठिकारा ६ परिहार के प्रमाणयोग के
लिय किनात्र । सम० वि० पीडाघन भोग
बरोहर की नाश का उपाय । (जैसे भोड माय आदि
का) स्तेन स्वामो से मय बिना बरोहर की राशि
को लब्ध करने का व्यापक ।

आधिकारिक [अधिकरण + क्त] आराधना मूक० ९ ।
आधिकारिक (वि०) (स्त्री० की) 1 मन्त्रोक्त सर्वश्रेष्ठ
२ अधिकारी ।

आधिकार्य [अधिक + व्यञ्ज] अधिकता बहुतायत
प्राप्त्यै ।

आधिदेविक (वि०) (स्त्री० की) [अधिदेव + क्त]
1 अधिदेव या ईश्वर्यो के अधिष्ठान देव से सम्बन्ध
रखन वाला (जैसा कि एक मन्त्र) मनु० १।८३ २
देवकन माय में लिखी हुई (पीडा आदि) सुपुत्र
के अनुसार पीडा तीन प्रकार की है आध्यात्मिक
आधिभौतिक और आधिदैविक ।

आधिपत्यम् [अधिपति + क्त] 1 सर्वोपरिता शासन प्रभु
मत्ता राज्य मुगलाधीन आधिपत्य (अवाप्य) भग०
२।८ २ राजा का कार्य या पादो पुत्र प्रकुल्यमाधि
पत्ये महा० ।

आधिपत्यिक (वि०) (स्त्री० की) [अधिपति + क्त]
1 प्राणियो पशुपक्षियों में उत्पन्न (पीडा आदि)
२ प्राणियों में सम्बन्ध रखन वाला ३ प्राग्निमक
भौतिक ।

आधिराज्यम् [अधिराज + व्यञ्ज] अधिराज का पद या
अधिकार, प्रभुत्व, सर्वोपरि प्रभुत्व बनी मूल
कुमारवाधिराज्यमन्त्राय स रघु० १।७३ ।

आधिपत्यिकम् [अधिदेवनाथ हित ठक, तब कासे दत्त
—ठक, वा] सम्पत्ति, उपहार आदि को दूसरा विवाह
करने पर पहली पत्नी को सखीपार्थ दिया जाने,

—यच्च द्वितीयविवाहादिना पूर्वस्मिन् परिश्रमाधिकं जन-
वत् तदाधिबेदकम् विष्णु०, नृ० याज्ञ० २।१४३,
१४८।

आधुनिक (वि०) (स्त्री० की) [अधुना + क्त] नया
आजकल का, अब का, हाल का।

आधोऽर्णः [आ + धीर् + ल्यट्] धातु गतिनायुषे। मन्त्रवत्
पीलवान्, आधोऽर्णानां गजमश्रयान् - रघु० ७.४६,
५।४८ १८।३९।

आध्यात्मम् [आ + ध्या + ल्यट्] १ पूर्व भावना पुनरावृ-
(आल०) वृद्धि २ शरीर वश्यायता ३ शरीरता ४ पर
का फूलता शरीर का फूलना - महाभारत।

आध्यात्मिक (वि०) (स्त्री० की) [आध्यात्म + क्त] १
परमात्मा से सम्बन्धित २ परमात्मा का ३ परमात्मा
सम्बन्धी, पवित्र ४ मनुष्य सम्बन्धी ५ मनुष्य का ६
मनुष्य सम्बन्धित (शरीर, देह आदि) ७ आध्यात्म-
दैविक।

आध्यात्मम् [आ + ध्या + ल्यट्] १ परमात्मा २ परमात्मा
सम्बन्धी ३ मनुष्य।

आध्यापक [आ + ध्या + क्त] शिक्षक, अध्यापक, गुरु।

आध्यात्मिक (वि०) (स्त्री० की) [आध्यात्म + क्त] १
आध्यात्म द्वारा उत्पन्न २ आध्यात्म का ३ आध्यात्म
के गुण व प्रभाव का दूसरी वस्तु पर प्रभाव डालना।

आधुनिक (वि०) (स्त्री० की) [अधुना + क्त] १ हाल
पर वर्तमान २ आधुनिकता ३ आधुनिकता का ४ आधुनिक
वै - महा०।

आध्वर्य (वि०) (स्त्री० की) [आध्व + क्त] अध्वर्य
या यजुर्वेद में सम्बन्ध रखने वाला। १ अध्वर्य
किया जाने वाला कार्य २ विधायक अध्वर्य का
पुरोहित का कार्य।

आध्वर्य [आ + ध्व + क्त] १ अध्वर्य
की रचना २ अध्वर्य लेना, फल मारना।

आनक [आनक्ति क्त्वाऽपि करोति अण् + क्त] १
तारा०] १ बड़ा सैनिक दाल - नगर-भण्डारिक
गोमुखा, सहस्रबाणधन्वल भय० १।४२, २ गरवने
वाला बादल। समः बुद्धि कृष्ण इति वायु
देव की उपाधि (भि० भी (स्त्री०)। बड़ा दाल
नगाडा।

आनक्ति (स्त्री०) [आ + नक् + क्त] १. सुकन नम-
स्कार करना, झुकाना (भाल० भी) - गुणवर्धन
मिवानति प्रवेदे - कि० १३।१५ २ नमस्कार या
अभिवादन ३ श्रद्धाजाल, स्फुर, श्रद्धा।

आनक (वि०) [आ + नक् + क्त] १ बाधा हुआ, मड़ा
हुआ २ बड़कोष्ठ, अवकाश (जैसा कि उद्ध०)
—डः १ शोल २ बरुआ का पहनना, बनाव-सिपार।

आनक [आ + नक् + ल्यट्] १ बूढ़, बेहारा - रघु० ३।३,
नृपत्य कान पिबत मुनान - १७, २. किसी धन्य
या पुस्तक के बड़े २ लच्छ (उदा० रमयाधर के हा-
आनक)।

आनक्यम् [आनन्तर + क्त] १. अव्यवहित उत्तरा-
धिकार २ व्यवधान रहित आनन्तर।

आनक्यम् [आनन्तर + क्त] १. असमापकता अनन्तता
(काच स्थान और मरणा की दृष्टि से) - आनन्त्याद्
व्यधिकारश्च - काच० २, २ असीमता ३ अनवरता
निरन्तरता ४ अकालिक, अती, आती मुख - यन्म नित्य
हन्म नृपममकाभ्युदये अशङ्कमान कन्याणि सोम-
वानन्त्यामनुते - महा०।

आनक्य [आ + नन् + क्त] १ प्रसन्नता हर्ष लक्ष्मी
सम - आनन्द वशात् प्रदत्त - अनेन कदम्ब २
हर्षक प्रसन्नता - आनन्द भी हर्ष अर्थ है ३ मित्र।
आन - काननम् खनम् कारी - पर दुःखित के
अन्य पूर्ण - वि० - आनन्द म आनन्द - - - - -
परमात्म - प्रसन्न कीर्ति।

आनक्य (वि०) [आ + नन् + क्त] प्रसन्न, हर्षोत्फुल्ल,
बु - प्रसन्नता हर्ष मुख।

आनक्य [वि०] [आ + नन् + ल्यट्] सुखकर, प्रसन्न
करना वरदा - नम् १. लक्ष्य करना, प्रसन्न करना २
प्रसन्न करने ३ मित्र या अनिष्टियों के साथ, मिलने
पर अथवा विदा होने समय सम्बोधित व्यवहार,
सौजन्य भावना।

आनक्यम् [वि०] [आनन् + क्त] १ आनन्द से परि-
पूर्ण स्वभाव हर्ष मित्र, - - - - - परमात्मा, लोक, अन-
न्तम् आनन्द या शरीर का परिधान।

आनक्य [आ + नन् + क्त] १ हर्ष, प्रसन्नता २. विज्ञान।
आनन्ति (वि०) [आ + नन् + क्त] १. प्रसन्न, सुख
२ सुखकर।

आनन्त [आ + नन् + क्त] १. रम्यत्व, नाट्यशाला
नाचघर २ युद्ध लड़ाई ३ देश का नाम ('सौराष्ट्र'
भी इसी देश का नाम है)।

आनक्यम् [अनर्थक्य भाव - क्त] १. अनुपयुक्तता,
निरर्थकता अनुपयुक्त्यभिनिवेत् - कात्या० ब्राह्म-
यस्य कियार्थत्वादानवश्यकत्वार्थानाम् - नृ० ता० २
अयोग्यता।

आनाय [आ + नी + क्त] आना।

आनायिन् (पु०) [आनाय + इति] मछुआ, बीवर
— आनायिभिरासामपकुष्ठनकाम् - रघु० १६।५५,
७५।

आनाय (वि०) [आ + नी + क्त, आनाय] निकट
लाने के योग्य, - - - - - गार्हपत्यानि के ही हुई गन्तुक
अग्नि (दक्षिणाग्नि) भी कहलाती है।

आनाहः [आ + नह् + घञ्] 1 बन्धन 2 मलाबरोध कब्ध 3 लम्बाई (विरोधत काष्ठ की)

आनिल (वि०) (स्त्री० ली) [अनिल + अण्] बानु मे उत्पन्न ल, आनिल हनुमान्, भीम ।

आनील (वि०) [प्रा० म०] हल्का काला या नीला, - ल. काला घेडा ।

आनुकूलिक (वि०) (स्त्री० ली) [अनुकूल + ठक्] हित-कर, अनुकूल ।

आनुकूल्यम् [अनुकूल - घ्यञ्] 1 हितकरिता उपपन्नता - यत्रानुकूल्यं दम्पत्योऽश्ववर्गस्तत्र वर्धते गात्रं १ । ७२ 2 कृपा अनुग्रह ।

आनुगत्यम् [अनुगत - घ्यञ्] ज्ञान-ग्रहण परित्यज् ।

आनुगम्यम् [अनुगुण - घ्यञ्] हितकारिणा उपपन्नता अनुकूलता ।

आनुपायिक (वि०) (स्त्री० ली) [अनुपाम - घ्यञ्] देहानो धामाण गेवार ।

आनुनासिक्यम् [अनुनासिक + घ्यञ्] अनुनासिकता ।

आनुसरिक (वि०) (स्त्री० ली) [अनुसद + ठक्] अनुसरण करन वाला, पीछा करने वाला पदचिह्न या मीक के सहारे पीछा करने वाला अध्ययन करने वाला ।

आनुपूर्वम् - अर्थ-ही [अनुपूर्वस्य भावः स्यञ् नभो वा दीपि य-लोटि] 1 क्रम परम्परा मिलमिला धनु० २४१ 2 (विष में) बनी का नियमित क्रम पशान्पूर्व्या विप्रस्य आत्रम्य चतुरोऽवरान् - मनु० ३।२३ ।

आनुपूर्व, अवे - अ (अव्य०) एक के बाद दूसरा ठीक क्रमानुसार ।

आनुमानिक (वि०) (स्त्री० - ली) [अनुमान + ठक्] 1 उपमहार मे सम्बन्ध रखने वाला 2 अनुमान प्राप्त - कम् साक्ष्यो का प्रमाण - आनुमानिकमप्येकेवर्वावति वेध - ब्रह्म० ।

आनुयात्रिक [अनुयात्रा + ठक्] अनुयायी, सेवक अनुचर ।

आनुयस्तिः [आ + अनु + रञ्ज् + क्तिन्] राग स्नेह अनुराग ।

आनुलोमिक (वि०) (स्त्री० ली) [अनुलोम + ठक्] 1 नियमित, क्रमबद्ध 2 अनुकूल ।

आनुलोम्यम् [अनुलोम + घ्यञ्] 1 वैयक्तिक या मोधा क्रम, उपयुक्त व्यवस्था आनुलोम्येन मनुना प्रया होयान् एव ते मन्० १०।५ १३ 2 नियमित मिलमिला या परंपरा 3 अनुकूलता ।

आनुवेद्यः [अनुवेध + घ्यञ्] बहु पड़ोसी जिसका घर अपने घर में एक छोड़कर हो - प्रातिवेद्यानुवेद्यो ब कस्यापे विमति हिने - मनु० ८।३९२ (इम पर कुल्लूक कहता है - निरन्तर गृहवासी प्रातिवेद्य - सदनगरगृहवास्यानुवेद्यः) यह शब्द 'अनुवेद्य' किन्ना भी पाया जाता है ।

आनुवर्जिक (वि०) (स्त्री० ली) [अनुवर्ज + ठक् स्त्रियां डीप्] 1 निवृद्ध महबनी 2 स्वर्गिन 3 अनिवार्य, आवश्यक 4 अप्रधान, गौण अमृश ग्रहाम्नु यशविच-वीधन ननु लक्ष्मी फलमानुवर्जिकम् कि० ११९ अन्वयस्यानुवर्जिकत्वेऽन्वाच्य सिद्धा० दे० अन्वाच्य 5. मलन शीर्षान् 6 आपेक्षिक, आनु-पातिक 7 (घ्यञ्) अव्याज्य ।

आनुप (वि०) (स्त्री० ली) [अनुपदेशे भव अण्] 1 जलाप दलदलीय आर्द्र 2 दलदल-भूमि में उत्पन्न प दलदली भूमि में पुमने वाला पशु (अन पेम) ।

आनुष्यम् [अनुण घ्यञ्] क्षुपापराध दायित्व निभान् उक्तगन् २ अनुपरा ।

आनुसप्तम्य (वि०) [अनुसप्त + अण्] घ्यञ् का मद् कर्त्तृ दयात् सप्तम्य 1 मृदुता 2 दृग् मद् १०१ / १११ 3 कृपा दया अस्मत् ।

आनुपुन्यं घ्यम् [अनुपुन्य अण् घ्यञ् का] अद्यापन आद्यम् ।

आनु (वि०) (स्त्री० ली) ५२२ अण् 'अन्यो डीप्] अनिय अन्न का तम् (अव्य०) पूर्णत्व से अनन्तक ।

आन्तर (वि०) [आन्तर + अण्] 1 आन्तरिक गुण छिपा हुआ उत्तर० ६।१२ मा० १।२४, 2 अन्तस्सम, अन्तर्बर्ती, रम् अन्तस्सम स्वभाव ।

आन्तरिक (वि०) (स्त्री० ली) [अन्तरिक + अण् - स्त्रियां डीप्] 1. वायव्य स्वर्गीय, दिव्य 2 बापु में उत्पन्न, - अन्तर्बर्ती पृथ्वी और आकाश के बीच का क्षेत्र ।

आन्तर्वर्जिक (वि०) (स्त्री० ली) [अन्तर्वाग + ठक्] लक्षित (जैसे धोती में, तेना में) ।

आन्तर्लौकिक (वि०) (स्त्री० ली) [अन्तर्लोक + ठक्] धर में रहने वाला या धर में उत्पन्न ।

आन्तस्ता [अनिता + अण् + टाप्] बड़ी बहन ।

आम्बोल (वि०) (स्त्री० ली) [होलयात् होलित] 1 मूलना, इधर से उधर या उधर से इधर स्पन्दन 2 हिलना, काकपाना ।

आम्बोल [आ + बल् + बञ्] 1 मूलना, झुला 2 हिलना झुलना ।

आम्बोलन्य [आम्बोल + घ्यञ्] 1 झुलना 2 हिलना-झुलना, स्पन्दन, कपित होना; - किन्तासावरिन्धनुस्वरुद्धो शक् चामराम्बोलनात् - उद्भूट० 3 कापना ।

आम्बल [अम्ब + अण्] धौध ।

आम्बलिक [अम्बन् + ठक्] रसोद्घा ।

आम्बल्य [अम्ब + घ्यञ्] अवापन ।

वीक्षित, कष्टयस्त, कठिनाई में कैसा हुआ—आपन्नमय-
सनेषु वीक्षिता सलु वीरवा—सं० २।१६, मेघ० ५३।
सम०—सत्त्वा गर्भवती, गर्भगुर्वी, गर्भवती स्त्री—सम-
मापन्नसत्त्वास्ता देवरापाण्डुरत्विक—रघु० १९।५९।
आवर्त्तक (वि०) [अवर्त्तित परिवर्त्तनं निवृत्तम्—कम्]
विनियम द्वारा प्राप्त—कम् विनियम द्वारा प्राप्त वस्तु
या सम्पत्ति।

आपराधिक (वि०) (स्त्री०) की) [अपराह्ण+ठञ्]
तीसरे पहर होने वाला।

आपव् (नपु०) [आप्+अमुन्] 1 जल आपोविमर्शिन
कृत्वा 2 पाप।

आपातः [आ+पद्+घञ्] 1 टूट पड़ना, गिर पड़ना,
हमला करना, आ धमकना, उतरना—आपातमया
स्वधि—कु० २।४५ गहवापातविक्षिप्तमेघवादास्त्र-
बन्धन—रघु० १२।७६ 2 उतरमा गिरना, नीचे
डालना 3 (क) वर्तमान आज या काल—आपातगम्या
विषया पर्यन्तपरिभाषित कि० ११।१२, आपातमुरसे
भोये निमलना कि न कुर्वते—सां० १० भाषि० १।
११५, मा० ५ (ख) प्रथम दर्शन है० 'आपातत
4 कटित होना, प्रकट होना।

आपाततः (अव्य०) [आपात+तसिन्] पहुँची निगाह में,
हमला करने ही, नुरत।

आपातः [आ+पद्+घञ्] 1 अवान्ति, प्राप्ति 2 पारि-
तोषिक, पारिव्ययिक।

आपातवन् [आ+पद्+घिच्+स्युट्] पहुँचाना, प्रका-
शित करना, सुकाव होना—इष्यस्य सत्त्वान्तरा-
पादने—सिद्धा०।

आपातवन्—नक्तम् [आ+पा+स्युट्] 1 मद्यो की मइली,
पानगोष्ठी मूच्छ० ८, आपाने पानकलित हैवेनामि-
प्रणोदित—महा० २ मञ्जुसाला, मदिगलय—नाम्नु
लीला दनैस्तत्र रचितपापनमूय—रघु० ४।६२, कु०
१।४२, आपानकमृतस्य का० ३२।

आपातिः [आ+पा+घिच्=आपा, तदर्धमलति अन्
+पट्] नृ।

आपीडः [आ+पीड्+घञ्, अच् वा] 1 पीडा देना
घोट पहुँचाना 2 निचोड़ना, मीचना 3 कष्टहार,
माला—आपीडकपालमङ्कलगलम्बन्दाकिनीवारय—
मा० १।२, 4 (अन) मुकुटमणि तस्मिन्कुलापीडनिजे
विपीडम्—रघु० १८।७९ मा० १।६, ७।

आपीन (यु० क० क०) [आ+पी+क्त] बलवान्, मोटा,
सबल,—कुआँ,—आपीनोऽयम्—सिद्धा०,—अय् ऐन, बन
का अग्रभाग—आपीनमारोहद्वयप्रयत्नात्—रघु० २।१८।

आपूषिक (वि०) (स्त्री०) की) [अपूष+ठञ्] 1
अच्छे पूरे बनाने वाला 2 जिसे पूरे अधिक पनव हो,
—कः पूरे बनाने वाला, हलवाई,—कम् पूरों क डेर।

आपूष्यः [अपूषाय साच् वा० य, अपूष+अच् वा] बाटा।
आपूरः [आ+पू+घञ्] 1 प्रवाह, बारा, परिमाण
—स्वेवापुरो युवतिसरिता व्याप गच्छस्वकामि—शि०
७।७४, 2 भरना, पूरा करना।

आपूरकच् [आ+पू+स्युट्] भरना भर कर पूरा करदेना,
गते कृतम् पच० १।

आपूषवन् [आ+पूष+घञ्] वातु की एक प्रकार (सम-
वत 'टीन')।

आपूष्ठा [आ+पूष्+अच्] 1 समाकाप 2 बिहा
करना, 3 विश्वास।

आवोक्षातः [आपमा जलेन अवाप्तम् इति—अच्+
आनच्] ओजन से पूर्ण और पक्का हुआ अवयव करने के
यत्र (कमल अमृतापस्तगणमसि स्वाहा और
अमृतापधानमसि स्वाहा) यात्र० १।३१ १०६,—अय्
भोजन के लिए स्थान बनाना तथा भोजन को डक
देना।

आप्त (यु० क० क०) [आप्+क्त] 1 हासिल किया,
प्राप्त किया, उपलब्ध किया—काम आषा आदि
2 पहुँचा हुआ आ पकड़ा हुआ 3 विश्वास योग्य,
विश्वसनीय, प्रामाणिक (सन्तुष्टार आदि), 4 विश्व-
स्त, गोपनीय निष्ठावान् (पुत्रव—रघु० ३।१२, ५।३९,
5 वनिष्ट भूपरिचिन् 6 नक्तमन समसहायी से
युक्त—अ 1 विश्वामयोग्य विश्वसनीय योग्य व्यक्ति,
विश्वस्त पुत्रव या साधन,—आप्त यथाव्ययकता तर्क
सं० 2 सन्धी मित्र, निरुहाल्लवमृगप्राप्ता अवाच्य
धनदानुज रघु० १२।१२ कथमाप्तवर्गोऽय अवस्था
मालि० ५ पक्ष 1 लक्षि 2 आवातलाम्य।

सम० काव (वि०) 1 जिसने अपनी इच्छा पूर्ण
कर ली 2 जिसने सासारिक इच्छाओं और आसक्तिनयो
का त्याग कर दिया है (—अ) परमात्मा—गर्ग
गर्भवती स्त्री अक्षय्य विमो विश्वास योग्य या विश्व-
स्त व्यक्ति के शब्द रघु० ११।४२, १५।४८,—आय्
विश्वाम के योग्य, जिसके शब्द प्रामाणिक और विश्व-
सनीय होते हैं—परागतिमन्धानमधीयते वैविधेति ते सन्तु
किलाप्तवाच ज० ५।२५ (—स्त्री०) 1 किसी
मित्र या विश्वसनीय पुत्र की सलाह 2 वेद, धृति,
प्रामाणिक बचन (यह शब्द स्मृति इतिहास और
पुराणों पर भी लागू होता है जो कि प्रामाणिक समझे
जाते हैं)—आप्तवागनुमानाभ्यां साध्यं त्वां प्रति का
कथा—रघु० १०।२८, अस्तिः (स्त्री०) 1 वेद 2
स्मृतियाँ आदि।

आप्तिः (स्त्री०) [आप्+घिच्] 1 हासिल करना, प्राप्त
करना, लाभ, अधिग्रहण 2 आ पहुँचना, (पूर्वदत्ता में)
ग्रन्त होना 3 योग्यता, अविद्वृत्ति, अधिगम्य 4 सम्पत्ति,
पूरा करना।

आन्व (वि०) [अणम् इदम्—अण्, ततः स्वार्षे व्यञ्ज] 1. अलम्ब 2. [आप्+अण्] प्राण करने के योग्य, प्राण्य ।

आन्वाम (भू० क० कृ०) [आ+आण्+क्त] 1. मोटा, बलवान्, हृष्टपुष्ट, ताकतवर 2. प्रमत्त, मनुष्ट, ---नम् 1. प्रेम 2. बुद्धि, बढ़ना ।

आन्वायनम् ना [आ+आण्+त्युट्, युच् वा] 1. पूरा भरना, मोटा करना, 2. लोच, मुग्धि—देव्याप्यायना प्रवति—एच० १, 3. आगे बढ़ना, यथोन्नि करना 4. मोटापा 5. बल-वर्धक औषधि ।

आन्वयणम् [आ+प्रच्युट्+त्युट्] 1. बिदा करना, बिदा प्रीति 2. स्थापन करना, संस्कार करना ।

आन्वयिनी (वि०) [आन्वयः आन्वयिनी—स्व] पैरा तन पहुँचनेवाला (तत्र प्रादि) ।

आन्वयः, आन्वयम् [आ+ण्, अण्, त्युट् वा] 1. स्नान करना, पानी में डुबा देना 2. चारों ओर पानी का छिड़काव करना । मम० अस्ति या आप्स्तवस्ति (पु०) वीरति गृह्यम् (हिमने इष्टार्थे अवस्था पार करके गार्हस्थ्य अवस्था में पदार्पण किया है) तु० 'स्नातक' । आन्वयः [आ+ण्+चञ्] 1. स्नान 2. छिड़काव 3. बाह, जल-प्लावन ।

आणुकम् [ईयत्कार इव फेनोन्-पुणो०] अफीम ।

आण्ड (भू० क० कृ०) [आ+अण्+क] 1. बाँधा हुआ, बँधा हुआ 2. अमाया हुआ—रचु० १।४० 3. निमित्त, बना हुआ—आबद्धमठला तापमपरिद—का० ४१, मण्डलाकार बँटी हुई, 4. प्राप्त 5. बाँधित,—इम् (इ) नी 1. बाँधना, जोड़ना 2. जुका 3. आभूषण 4. स्नेह ।

आण्व, आण्वम् [आ+अण्+चञ्, त्युट् वा] 1. बन्ध, बन्धान (आल०)—प्रेमावन्धविबधित रत्न० २।१८, अमर ३८, 2. जुवे की रस्सी 3. आभूषण, सजावट 4. स्नेह ।

आण्वी [आ+अण्+चञ्] 1. फाड़ डालना, लींचकर बाहर निकालना 2. मारडालना ।

आण्वः [आ+आण्+चञ्] 1. कष्ट, जोर, नकलीक मताना, हानि—न प्राणावाधमाधरेण—मनु० ४।५४, ५१, वा 1. पीड़ा, दुख 2. मानसिक वेदना, आधि ।

आण्वः=दे० आण्व ।

आण्वयणम् [आ+अण्+त्युट्] 1. ज्ञान, समझदारी 2. शिक्षण, मुचन ।

आण्व (वि०) (स्त्री०—ञी) [अण्+अण्] बावल संबंधी या बावल से उत्पन्न ।

आण्विक (वि०) (स्त्री०—की) [अण्व+ठञ्, लिच्वां ङीप्] बाणिक, साजाना—आण्विक कर—मनु० ७।१२९, ३१ ।

आण्वरम् [आ+अण्+त्युट्] 1. आभूषण, सजावट (आल०)—किमिष्याम्यामरत्नानि यौवने वृत् त्वया

बाणिकमोनि बाणिकम्—कु० ५।४४, प्रवर्तारर्च पराक्रम—कि० २।३२ 2. पालन पोषण करना ।

आण्व [आ+आण्व] 1. प्रकाश, चमक, कान्ति,—वीणावां शलभा यथा—एच० ४, 2. बर्ण, आभास, रूप प्रशान्तिमिव गुणायम्—मनु० १२।०३ 3. साधक, मिलना—जुलना—इन्ही दो अर्थों को प्रकट करने के लिए यह शब्द प्रायः समास के जन्म में प्रयुक्त होता है—यम-हृताभम्—एच० १।०८, मरुत्तवाम्—रचु० २।० 4. प्रतिबिम्बित प्रणिमा, छाया, प्रतिबिम्ब ।

आण्वकः [आ+अण्व+क] कलावन, लोकोक्ति ।

आण्वः [आ+आण्व+चञ्] 1. सम्बोधन 2. प्रस्तावना, मुक्ति ।

आण्वणम् [आ+आण्व+त्युट्] 1. सम्बोधन करना, सम्बोधन 2. मालाप—सम्बन्धमात्राण्वण्वैराग्य—रचु० २।५८ ।

आण्वः [आ+आण्व+अण्व] 1. चमक प्रकाश, कान्ति 2. प्रतिबिम्ब तन्मात्रान् धिया न्ययेदात्रामान् बट ह्युरेत्—वेदाङ्ग, 3. (क) मिलना—जुलना, लवानना (प्रायः समास के जन्म में)—तमश्च हस्तिराजाम्—रामा० (ख) आकृति छायापुरुष तन्मात्रामात्राम् मा० ०, मनकीपन की भाति दिखाई देता है, 4. अवान्ति या आभासी रूप (जैसा कि 'हेत्वाभास' में) 5. हेत्वाभास, नर्क का रूप दे० 'हेत्वाभास' 6. आणव्य, प्रयोजन ।

आण्व (स्व) र (वि०) 1. जानदार, उज्ज्वल,—र १४ उपदेवनाञ्जी का सहायक वाचक नाम ।

आण्वारिक (वि०) (स्त्री०—की) [अभिचार+ठक्] 1. जादू मन्त्री 2. अभिशापात्मक, अभिशापपूर्ण,—कम् अभिचार इन्द्रबाल, जादू ।

आण्विक (वि०) (स्त्री०—नी) [अभिजन+अण्व, लिच्वां ङीप्] जन्म से संबंध रखने वाला, कुलसूचक (नाम आदि) जो पार्वतीत्यभिजनेन नाम्ना—कु० १।२९, —यम् कुलीनता, उच्च कुल में जन्म ।

आण्विकत्वम् [अभिजात+अण्व] 1. जन्म की स्पष्टता—रत्न० ३।१८ 2. कुलीनता 3. पारिवर् 4. सौहार्द ।

आण्वि [अभिधा+अण्व] 1. ध्वनि, शब्द 2. नाम, वर्णन—दे० 'अभिधा' ।

आण्विक (वि०) (स्त्री०—की) [अभिधा+ठक्] 1. किसी शब्द-कोश में हो,—कः कोषकार ।

आण्विकत्वम् [अभिधा+अण्व] किसी के समूह होना—यस्य याति-साधना करने वा मिलने के लिए बाता है 2. के सामने होना, आगने साधने—गीताभि-मुख पुन—रत्न० १।२, 3. अनुकूलता ।

आण्विकत्वम्, आण्विकत्वम् [अभिधा+अण्व, अण्व, वा] सौहार्द, साधक ।

आभिलेखनिक (वि०) (स्त्री० की) [अभिलेखन
ठञ्ज] राजतिलक से संबन्ध रखन वाला अभिलेख
निक यत्ने रामायणमयकल्पितम् रामाय. महावा. १ ।

आभिव्यक्ति (१०) (प्रा० की) | अभिव्यक्ति १०।
उपहार के रूप में दे। कम भट उपहार।

आभीक्ष्ण्यम् । अभिप्रेक्ष्य भावः स्यात् । अत्र १ ।
आर्वात् ३५५ भावः स्यात् । पा० ३ । १८१ ।

आभीर । अ समन्तात् भिय रारि रा क रारा । स्वाग
— अ नो । शानत्य गहनमानस ए दन मन दू र र

गणेश उद्घट 2 (ब० ब०) पर दा था। गव
निवसो मे 1 गव 3 का पत्र 2 भ्रम रहन की

स्त्रा । मम पतिल पत्नी स्था० । पत्निका
स्त्राल का भ्राता य न । दाता इ न । ।

आशीर्वाद (२०)। आभिय आर्ति दर्शान म ।
भयानक भोषण लस डोट म शक्ति । ग

साधुज (वि.) 'आ भुज वन, कृत्रिम म रा
मका हुआ।

माधो (जा दुह-पञ्च १ वरा १११ वि
बिनाग (दापोंरगा) रिम. २५५ - १६

१ गगनभोग नभो विभवा २ दशा श्री

परिमाण गणनाभावात अथवा त्रिभुज
3 प्रश्न ३ सहायक विचार ३ (त्रिभुज)

के रूप में प्रयुक्त है । यह भी संभव है कि यह शब्द
याभिगन्तु नन्नादि गान्त

आन्तर (१५०) (स्वातंत्र्य) २० १ ३
भीतर ४० १५ २५

भाष्यव्याहारिक (वि०) (प्रश्न १) अथवा
ठक, राजस्थान के राजा महाराजाधिराज

आभ्यासिक (वि०) (वि०) को प्रमाण 4 1
अभ्यासजनित 2 अभ्यासजनित 4 3

निम्नलिखित पदों में से एक शब्द सही (अथवा) स
 साम्यद्वयिक (वि०) (अथ० को) । अथवा

१ मङ्गलाग्रक सम्पन्नक शरीरार्थिक अग्रक
द्वयम् सञ्चल २ उत्तर गे हा ग म र

कम प्रादुर्भाव वितरी की न्यूनता का अवसर।

आम (अन्ध०) [अस गिव २० हस्ताभर ११
विषय] निम्नांकित भावनाओं का प्रकट करने का

विष्णुयादि शोनक अध्याय (क) अगस्त्य २५, ३ १
—आह हा आ कृम मालवि० १ (म)

अथास्मिन्—आ आत्मा ज० ३ आ० अथ पत्ता
कमा (ग) निश्चयेन निश्चय ही' अवश्य ही आ

अत्रापि अत्र प्रतिबुद्धाप्रम (प) उतर ।
 आत्मा (वि०) [आत्म्यते ईषत् पश्यते -आ + अम् + कर्मणि]

पञ्च त रा० । १ कञ्जा अनपक्व अपक्व (विप०
पक्व) अमातस्य मन० ४। २ २ इरा अपाणि

१। ३ आर म र पश्या दुआ (वनन आदि) ३
अन. रा स १ राम बीमारो २ अज्ञाण कछ

3. इसा 1 अलग विद्यालय बना ज। सम० भाषा
अलग भ। 1 हा (12 म) धन उदार का ऊपर

भारत सरकार
राज्य (नगर) स्वच्छता विभाग

१ , २ स्वतः एक प्रकार का प्रमाण है ५०-स्वतः
अ ३ ४ ५ ६ प्रमाणों में पि चार शि० ४ ५ ६

(खच) इ ए मरुतः वना पात्रम् विना
न गीतं न चरितं विदुः प्रत्येकं भिन्नमाम् । अथ

[illegible]

सूचक संख्या : १०८
पृष्ठ संख्या : ५

पुनः प्रमाणित

[illegible][illegible]

५, ५५१ २२ १ ११११ ११
१ १ १ १ १ १ १ १

[illegible]

१३८ ३३१५ रविश्याम ५५२ ४ ४४ ४४४
०५५१ ०१ ४४४४ ४४

[illegible]

१३ राजाजी की ५४ वर्ष की आयु में
मृत्यु हो गई। २० वर्ष की आयु में

न्यायिक नित्य । प्रामाण्य किन नि० बीमार मन्त्र
नित्य नित्य प्रविष्टाश रोग से ग्रस्त ।

प्रश्नात तत्क (वि०) (श्री० की) । प्रा० म०
आमराय भ-वा मध्य २० म० । म. म. परीत वजन

उ ग अ त व न प्र म य र ण क णा न्न व्क्ष ण
भङ्ग ग । इ १।१ अ धी - रा ग व्य भी च , री भवे

मह. भा. म. प. १११] १ सुप्रसन्न ममलना निष्पत्ति

उना २ विषय ४। बराह ।
मश । आ मश । य- । १ स्पर्श कर्मा, रगहना २

संज्ञाह गगमण ।
नमः, वज्रम् [आ । मय् । वज्रम्, ह्युद् वा] कोष

कोप, असहनशीलता व० अमर्ष ।

मनु० ८।४१९, आयाधिक व्यय करोति—अपनी काम-
रही से अधिक खर्च करता है 4 नफा, लाभ 5
बन्त पुर का रक्षक। सम०—ज्योती (हि० ब०) आय
और व्यय।

आयमूलिक (वि०) (स्त्री० कौ०) [अयमन् + क]।
सक्रिय परिश्रमी, अधिक क → ह्रास की
सिद्धि के लिए सब १, २ सहाय लेता है
(नीलकण्ठपान या निवृत्तस आय मूलिका जन) तु०
काव्य० १० अयमन्त अविच्छति इति अय
१ लिक।

आयन (भू० क० क०) [आ + यन् + क्त] 1 लम्बा
—सतमध्य (योजनम्) आयता महा० 2 विकीर्ण
अतिविस्तृत 3 बड़ा विस्तृत गम्भीर 4 चाना ५ अ
आहूत 5 सयत नियोजित 6 आयतकार (रक्षा
मणित में)। सम०—अक्ष (वि०) (स्त्री०—स्त्री)
—ईक्षण, —नेत्र, लोचन (वि०) बड़ी आला
बाला, अपाण (वि०) लम्बी कर की बोला बाला
—आयति (स्त्री०) दीर्घ निरन्तरता बड़ा दर बाद
जाने वाला अधिक्य शि० १६० छडा कल का
पीछा (पेछ) लेख (वि०) दीर्घवक्ताकार क० १।
४७—स्तु (पु०) चारण भट।

आयतनम् [आयतनेज्ज आयतन ल्युट] 1 स्थान अ वाय
वर, विश्रामस्थल (आल० भी) शलायना मुद्रा०
७, अल्लाह मन्त्र-निकायनन त्रयम् कु० ३।४
उत्तमे चन्द्रिन ८ गया रघु० ३।३६ मन्त्रोक्तयान्
मेकैकमप्येधायामातनम् क० १०३ (अ०) अश्रय
वर 2 यज्ञ अग्नि का स्थान वद। 3 पवित्र स्थान
पृथ्व्यामि जैसा कि देवायनन महायतनम् आदि
म 4 मकान बनान का स्थान।

आयति (स्त्री०) [आ + य + ति] 1 लम्बाई विस्तार
2 आधी समय अधिक्यत अग क० ६६ भयसो
तव यदायतायति शि० १३।४ रत्नपरापदुपनया
यति—कि० २।१६ 3 अथा फर या परिणाम
—आयति सर्वकार्याणा मदात्वं च विचार्यता मनु०
७।१७८, कि० १।१७ ४६. 4 महिमा प्रताप 5
ह्रास फैलाना स्वीकार करना प्रगत करना 6 कम
—यथाभिन्न ध्रुव लम्बाई इसमयायनक्षमम—मन०
७।२०८ (कमअमम् कुल्लुक) 7 नियन्त्रण (मन
का) निग्रह।

आयत (भू० क० क०) [आ + यन् + क्त] 1 अधीन
आश्रित, सहारा लिए हुए (अधि० क माध या समाप्त
में) —हैवायत कुले जन्म मदायन तु पीढावम—वणी०
३।३३, माय्यायतमन परम्—शं० ६।१६ 2 वषय
विनीत।

आयतिः (स्त्री०) [आ + यन् + क्त] 1 आश्रय, अधीनता

2 स्नेह 3 सान्ध्य, रात्रि 4 हृद, सीमा 5 युक्ति,
उपाय 6 महिमा प्रताप 7 आचरण की स्थिरता।
आयचान्ध्र्यम् [अयचान्ध्र + व्यञ्ज] भयोन्माता अनुपयुक्तता
अनीचय शि० २।५६।

आयमम आ यम ल्युट 1 लम्बाई विस्तार 2
नियन्त्रण निग्रह 3 (धनुष की भांति) तानना।
आयत्सक [आयश्रिब लीयते अश ली + क (वा०) सहाय
कन्] भय का अभाव प्रबल लालसा।

आयस (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [आयसा विकार अन्] लोह
निर्माता गृहा धातुनिर्माता आगस दहमेव वा मनु०
८. १४ सखि मा ज्ञय तवायसं रसज्ञा जामि०
४।५९ स्त्री कवच वस्त्राय सन् 1 लोहा मूढ बुद्ध
दिश मान वैज्ञानिकतासम ४ ५।१० स वक्षय
१ रसायनज्ञान डायन १।५० १ १६३ 2 लोह
निर्माण वस्त्र ३ हथियार।

आयस्य (भू० क० क०) [आ + यम क्त] 1 पर्यवृत्त
दुखी 2 बर लाय दुःख 3 कुटुम्ब ग्राह 4 लोभण।
आयानम् [आ + यन् ल्युट] 1 आन हँसना 2 वैवाहिक
प्रारम्भिक स्वभाव

आयाम [आ + यम ल्युट] 1 लम्बाई निर्वायामशोभी
मध्य ५७ 2 प्रसार विस्तार कि० ७।६ 3
फैलाना विस्तार करना 4 निग्रह नियन्त्रण लोकधाम
प्राणायाम आयाम नर० ६।० ५ प्राणायाम पर
तप मनु० १।११।

आयामवत् (वि०) [आ + यम ल्युट] विस्तारित लम्बा
विक्रम० १।६ शि० ११।२५।

आयास [आ + यस् + क्त] 1 प्रयत्न प्रयास कष्ट
कष्टनाई श्रम—बहुलायास भग० १८।२४, तु०
अनायाम 2 शकाव शकन स्तम्भमानि दुःखनि
देहत्राणि भयानि च शोकहर्षो तथापाम मध्वहान्
प्रवर्तते। महा०।

आयासिन (वि०) [आ + यम + क्त] 1 परिश्रान्त
थका हुआ 2 प्रयास करने वाला प्रबल उपयोग करने
वाला मनस्तु तद्भावदयनायामि शं० २।१५।१।
आयुक्त्वा (भू० क० क०) [आ + युज् + क्त] 1 नियुक्ता
कायधाय युक्त (मन्त्र या अधि०) अहि० ८।११५,
2 मयुक्त प्राप्त—कत मन्त्री अधिकार या कार्यधनर।

आयुध यम [आ + युध् + क्त] हथियार डाल शस्त्र
(यत् नीन प्रकार के हैं) (क) प्रहरण—आयुधिक
(ख) हस्तमयुक्त आकारिक (ग) यन्त्रयुक्त बाणा
दिक, न म स्वेदयन्त विमोहययुधम् रघु० ३।६१।
सम० अ(आ)शरस शस्त्रागार हथियार गोधाम
—अहमयायुधभाग प्रविश्यायुधसत्रायी अध्यामि—वणी०
१ मनु० १।२८० औचित्य (वि०) शस्त्रालय से
जीवन निर्वाह करने वाला (यु०) योद्धा, सिपाही।

आयुषिक (वि०) [आयुष + ठञ्] छत्वारो से सम्बन्ध रखने वाला कः सिपाही, सैनिक ।

आयुषीय (वि०) [आयुष + इति छ वा] हिच-धारी को धारण करने वाला, (यु०—वी)—वीथ योडा ।

आयुष्मत् (वि०) [आयुस् + मत्] 1 जीवित जीता हुआ 2 दीर्घायु (पाठकों में प्रायः बृद्ध पुरुष सम्बन्धी श्रुत व्यक्तियों को इसी नाम से सम्बोधित करते हैं उदा० एक सावित्री राजा को आयुष्मन् कह कर सम्बोधित करता है) 3 राजा को भी अभिवादन करने के लिए इसी प्रकार सम्बोधित किया जाता है न० मनु० ४।१२५, —आयुष्मन् भव मोर्त्यो वास्यो विशा एभिवाचने) ।

आयुष्य (वि०) [आयुस् + यत्] लम्बा अथवा बरत वाला जीवन, २ जीवनसंघाटक इव यशस्वमायुष्यमिदं नि शेषस्य परम् मनु० १।१०६ ३।१०६ —अयम् जीवन प्रवर्धयति ।

आयुष्य (मपु०) [आ + इ + ण] 1 जीवन जीवन वर्धक दीर्घमायु रघु० १।६५, उत्तरेणापि दूरस्थ आयुर्धर्मणि रक्षति हि० २।१६ एतावत् पूर्वं पुरुष एत० 2 जीवन शायक शक्ति 3 आहार [वाक्य रचना में आयुस् का अन्तिम व् बदलकर अघोष व्यञ्जनो से पूर्व व तथा घोष व्यञ्जनो से पूर्व र बन जाता है] । सम० अर (वि०) (स्त्री०—वी) दीर्घ जीवन करने वाला काम (वि०) दीर्घायु या स्व स्व की कामना करने वाला इच्छम् 1 औषधि 2 वी बुद्धि (स्त्री०) लम्बा जीवन शायक शक्ति स्वास्थ्य या औषधि विज्ञान केवल्य केवल्य —वेदिन् (वि०) औषध में सम्बन्ध रखने वाला (—यु०) वैद्य डाक्टर शब्द जीवन का शप भाग शेषतया—यच० १।२ जीवन का क्षाम या अवमान स्तोत्र (आयुष्टोम) दीर्घायु पाने के लिये किया जाने वाला यज्ञ ।

आयुः (अव्य०) [प्र० म०] स्तनहोषक सम्प्रदायान्तरक अव्यय ।

आयुः [आ + युज् + घञ्] 1 नियुक्त 2 किया कार्य सम्पादन 3 वृत्तीयहार 4 समुद्रतट या नदी किनारा । आयुः [अयोग्य + अण] शत्रु हाग वैश्य स्त्री में उत्पन्न पुत्र (इसका व्यवसाय बर्हिगिरी है) 3० मनु० १०।४८) वी इस जाति की स्त्री ।

आयुः [आ + युज् + म्] 1 सम्मिलित होना २ पकड़ना ग्रहण करना 3 प्रयास प्रयत्न ।

आयुः [आ + युज् + म्] 1 लड़ाई मशाम —आयुः कृष्णगति सहाय रघु० १।६२ आयुध नाभरतौ त्वयि वीर वाते ५।७१, 2 युद्धभूमि ।

आर०—रम् [आ + र् + घञ्] 1 पीतल 2 अर्धोचित कोड़ा 3 कोण विनारा ४ 1 मगल वृद्ध 2 सनि-वृद्ध —रा 1 मोची की रापी, 2 चाकू अतः-लका । सम० कूट, हम् पीतल, उत्तर० ५।१६ ।

आरक्ष (वि०) [आ + रक्ष् + ण] परिरीक्षण, —आ 1 प्ररक्षण परिरीक्षण, रक्षक (पहरेदार, सन्तरी)—आरक्षे मध्यमे स्थितान् रागां, सा० ०।५, मनु० ३।२०६ 2 हाथी की कुमसधि, 3 सन ।

आरक्ष (सि० क० वि०) 'आ रक्ष् ष्वल् आरक्ष + र् + ष' 1 पहरेदार सन्तरी 2 देहानी या पुलिस का दम्भाधिकारी (मैत्रिप्ले) ।

आरट् [आ + र् + ण] नट नाटक का पात्र ।

आरति [आ + र् + अति] भंडार जलावन ।

आरथ्य (वि०) स्त्री० आरथ्यो [आरथ्य + अण्, 'स्त्र' तात् औप वा] जगला जगल में उत्पन्न ।

आरथ्यक (वि०) [आरथ्य + क्त] वन सबकी वन में उत्पन्न जगल जगल में उत्पन्न —आ जगल में रहने वाला जगल बनवास —आ बहमागमकय ददत्या-रथ्यका हि० म० २।१३ कम् आरथ्यक वृक्ष [यह बाह्यजगल से सबड बाभिक तथा दार्शनिक रचनाओं का एक समुदाय है आ य तो जगल में रहे गये हैं या वही उनका अध्ययन किया गया है] । अर्थमध्यमान्तर आरथ्यकम्—वृद्धा० आरथ्य-अध्ययनादिव आरथ्यकमुदाहृतम् ।

आरति (स्त्री०) [आ + र् + क्तिन्] 1 विराम, रोक 2 प्रतिया । ३ वन दीप-दान, या कपूर दीपक बुझाना, आरती उतारना ।

आरमालम् [आ + र् + अण् नल + घञ्] आरों नाली गंधो यम्य ब० स०] मोह जावल का पसाव ।

आरम्भ (स्त्री०) [आ + रम्भ् क्तिन्] आरम्भ, शुरु । आरभट् [आरम्भ + अट्] उपक्रमशील या साहसा पुस्तक, ४ टो दिनेरी विवास टो 1 नाट्यकला की शाखा ३० सा० २० ४०० तथा अगे 2 साहित्य की एक शैली 3 विश्व नृत्यशैली ।

आरम्भ [आ + रम्भ् + घञ्] 1 आरम्भ, शुरु 'उपाय पारम्भिक योजना' मृत्वात्मे हर पशुपतेराई-रम्भाजनेच्छाम् मेघ० १९ 2 प्रस्तावना 3 कार्य, व्यवसाय कृत्य काम आगम सपुशास्त्र —रघु० १।१५ ७।८१ अग० १।१६, ४ खरा वेव ५ प्रवास, प्रयास—अग० १।१२, ६ दश्व कर्म चिन्तापितारम्भ इवावतरेव रघु० २।३१ 7 मार डालना हुत्वा करना ।

आरम्भकम् [आ + रम्भ + क्त] 1 कार्य में करना, पकड़ना 2 पकड़ने का स्थान दस्ता, बीटा ।

आर (रा) व [आ + र + अप, वच् वा] 1 आवाज
2 किलाना गुराना ।

आरस्थम् [अर + स्थञ्] नोयता स्वादहीनता ।

आरा = दे० आर के नीचे ।

आरात् [अव्य०] [आ + रा + ४०] भाति नारा० आर
का अपा० ए० व०] 1 फिकट के पत्र (आ० के
साथ या स्वतन्त्र) - लभ्यमाणदभिर्वाप्तमान् गृध् ० २।
१० ५।३ 2 से दूर वप० के साथ इन दोनों
अर्थों में, पि० ३।३१ दूर दूय्य 3 पामने पर
दूरी से उत्तर० २।२६ ।

आराति [आ + रा + क्तिच्, शच्] ।

आरातीय (वि०) [आरात् + उट्] 1 स्वित्र आनन्द 2 दूर वा ।

आरातिकम् [आरातिवि०] 1 रात के
समय भगवान् के मूर्ति के समान आना - नारना
- मवधु का ज्ञप्ति च मन्त्रद्वारा आराति के अर्थ में
कुर्यात् 2 आराती उताग्न के दण्डक आराती नीला
आर पात्रमाग्निकम् अथवा नै० अथवा आरा
कटाक्ष सकर ।

आराधनम् [आ + राध् + न्युट्] 1 प्रसन्नता सन्धि
सेवा (स्वातिर) - यथामागमनाय - उत्तर० १ यदि वा
आनकीयसि आराधनाय लक्षणा वृज्वा नास्ति मे
व्यथा १।१२ 2 सेवा पूजन उपमना अर्चना
(देवता की) आराधनमाय्य मन्त्रमन्त्रमा हु०
१।५८ अग० ३।२२ 3 प्रसन्न करने का उपाय इद
तु ते अस्तिनक्ष सतामागधन वगु कु० ६।३३ 4
सम्मान करना आदर करना उत्तर० ० १० 5
पकाना 6 पूषि दायिब निभाना निर्यासि सर मवा
मी (देवता की) पूजा उपामना अर्चना ।

आराधयितु (वि०) [आ + राध + णिच् + लृच्] उपायक
विनक्ष मेवक पूत्रक ।

आराधय [आ + राध + घञ्] 1 लुधा प्रसन्नता इन्द्रिया
राध - भग० ३।१६ आमागमा वेणा० १।२१ एका
राध - याज्ञ० ३।१८ 2 सेवा उपाय प्रियाग्भा हि
वैदध्यासीत् उत्तर० ० आराधाधिनिविक्रविकल
- भाषि० १।३१

आराधिका [आराध + ठक्] मात्री ।

आराधिका [आराध + ठक्] रमोदया ।

आरा [ऋ + उच्] 1 सूअर 2 कंकड़ा ।

आरक (वि०) [ऋ + ऊ + णित्] भूरे ग का ।

आरक (भू० क० ह०) [आ + रह् + लृ] सवार बड़ा
हुआ, ऊपर बैठा हुआ आरक वृक्षो भवता सिद्धा०

आरक कर्तव्य में प्रयुक्त - आरकवर्दीन् - गृ० १।७७ ।

आरक (स्त्री०) [आ + रह् + क्तिच्] बड़ा ऊपर उठना,
उत्थान (आरं० व घा०) - आरकविभक्ति महुता-
मवधुप्रसन्निका - घ० ४, ५।१ ।

आरेक [आ + रिच् + घञ्] 1 रिक्त करना, 2 मनुष्य
करना ।

आरेक्षित [आ + रिच् + णिच् क्त] भीषी हुई या निकाबी
हुई (आँख की मोह) ।

आरोयम् [आरो + व्यञ्] भस्त्रा स्वास्थ्य ।

आरोय [आ + रो + णिच् + घञ्] पुत्रागम । 1 एक वस्तु
के गुणों का दूसरी वस्तु में आरोपित करना वस्तु
- आरोपणम् आरोपणं व० मृ ३ म०
- आरोपणं आरोपणं अमर० 2 मान देना (जैसा
कि सारा लक्षणा म) 3 अन्वारापण 4 ब्रह्मा
शरना दायारपण करना इ० ५ म लगाना ।

आरोपणम् [आ + रो + णिच् + घञ्] 1 ३ ।
रवण या अमना रमना आ० आरोपणम् - अमना
गृध् ३।२० क० ० ८ [आ०] मन्त्रावन भम
देना जोधर गणमन न० 2 रोप लक्षण
3 धनु रवण म चर ।

आरोह [आ + रो + णिच् + घञ्] 1 उन्नत या नक्षत्र में ।
कि अद्वारा नया उन्नत 2 चरित्र ऊपर
जना नक्षत्र करना 3 उन्नत या उन्नत अर्थ
ऊँचा ४ दृष्टि धम 5 उन्नत 6 उन्नत
छाता नक्षत्र या राधान व गण उन्नत ७
होनिबन्धुर्ग वस्त्रावर्धन ८ उन्नत ८
एक प्रकार का माता याता ।

आरोहक [आ + रो + णिच् + घञ्] 1 उन्नत या नक्षत्र में ।
करना ।

आरोहणम् [आ + रो + णिच् + घञ्] 1 उन्नत या नक्षत्र में
या उन्नत याता की क्रिया आरोहणम् नक्षत्रोन्नत
कामरूप आरोहणम् प्रयत्नम् ३० ० ० 2 [आरो
का] मशर करना 3 आरो मशर ।

आरु [अक + दा + यम] आरु का इव यम की
उपाधि दानि दह कण मृष व वैभवान् मन ।

आरु (वि०) (स्त्री० - ली०) [अरु + णिच् + घञ्] आरु का
द्वारा व्यक्तित्व मशर ३ आरो मशर ।

आरु [आ + अ + अ + घञ्] 1 आरो प्रकार की पीली
मधुमक्खी ।

आरु [आ + अ + यत्] जगता सहृद ।

आरु (वि०) (स्त्री० - ली०) [अरु + अस्वस्य ण] मस्त, पूजा
करने वाला पुष्पादि ।

आरु (वि०) (स्त्री० - ली०) [आ + उच्] आरु के सबकी
या आरु के की व्याख्या करने वाला, - कम् सावधेद का
विशेषण ।

आरु [आ + अ + णिच् + घञ्] 1 सरलता 2 स्पष्टवादिता, अ-
तर्क, अज्ञान ईमानदारी, निष्कपता, उदारदृष्टि
होना आरुता भास्तिरादेव - अरु० १।३, क्षेत्रमा-
वस्य का० ४५ 3 आरु की विनक्षता ।

आलस्य (वि०) [अलसस्य भाव ध्यञ्] मुल्य डीला
हाना काहिल, स्वप्न सुस्ती, निश्चिन्ता, स्फुटि का
अभाव शक्तस्य वा-अनुत्पाह कर्मस्वास्त्यमुच्यते
मुमुन, आलस्य (स्फुटि का अभाव) ३३ व्यक्ति-
वाग्भाषो में से एक है उदा० न तथा भूषयत्यङ्ग
न तथा आचने मलीम् अङ्गमन सुदुरासीना बाला
गर्भभरालमा - मा० २० १८३ ।

आलस्य [अलस + अण्] बलही हुई लकड़ी ।

आलस्य [आ + ली + ल्यट्] १ वह स्तम्भ जिससे हाथी
बाँधे जाय बाँधे जाने वाला लकड़ा रस्सा भी जिससे
हाथी बाँधे जाता है अस्त्युदामबालानयनिर्वाणस्य
दन्तिन रघु० ११३१ ४१९९ ८१ आलस्ये गुह्यन
हूमी मूच्छ० ११५०, २ ह्यनवी रेष ३ अवीर
रस्सा ४ रोगना लक्षण ।

आलस्यिक (वि०) (स्त्री० स्त्री) [आलस्य + क्तञ्] उस
पुत्री का नाम देने वाला वस्तु जिसके मन्त्रों हाथी
बाँधा जाता है आनादिक स्थानात्मिक द्विवचन - रघु०
१४२८ ।

आलाप [आ + लप् + घञ्] १ बातचीत भाषण मया
नाम अये दक्षिणेन वृक्षशालाकामालाप इव श्रुयते
श० १ २ कथन उल्लेख

आलापनम् [आ + लप् + णिच् + ल्यट्, बोलीना शानवीर
करना ।

आलापनम् [आ + लप् + णिच् + ल्यट्, बोलीना शानवीर
करना ।

आलापनम् [आ + लप् + णिच् + ल्यट्, बोलीना शानवीर
करना ।

आलम् [आ + लप् + णिच् + ल्यट्, बोलीना शानवीर
करना ।

आलम् [आ + लप् + णिच् + ल्यट्, बोलीना शानवीर
करना ।

आलम् [आ + लप् + णिच् + ल्यट्, बोलीना शानवीर
करना ।

आलम् [आ + लप् + णिच् + ल्यट्, बोलीना शानवीर
करना ।

आलम् [आ + लप् + णिच् + ल्यट्, बोलीना शानवीर
करना ।

आलम् [आ + लप् + णिच् + ल्यट्, बोलीना शानवीर
करना ।

आलम् [आ + लप् + णिच् + ल्यट्, बोलीना शानवीर
करना ।

आलम् [आ + लप् + णिच् + ल्यट्, बोलीना शानवीर
करना ।

आलम् [आ + लप् + णिच् + ल्यट्, बोलीना शानवीर
करना ।

मर पर दीवारों पर सफेदी करना, कर्म लीपना बादि,
तु० 'आलीपनम्' ।

आलीपनम् [आ + लिप् + ण्] बन्दूक से निशाना कमाने
समय राहिले घुटने को बाने बढ़ा कर और बाँधे पैर
को मोड़ कर बैठना, - अतिशयालीपनिकेवकीतिना
रघु० ३१५०, दे० कु० ३१७० पर लक्ष्मी० ।

आलु [आ + लु + इ] १ उल्लू २ आलुनूत, काला
आलुनूत, लु (स्त्री०) बड़ा, - लु (नपु०) बड़ो
को बाँध कर बनाया गया बेशा, चम्मई (दो बड़ों को
बाँध कर बनाई गई लीका) ।

आलुनूतनम् [आ + लु + ल्यट्] साड़ना, टुकड़े-टुकड़े
करना ।

आलुनूतनम् [आ + लु + ल्यट्] १ लिखना २ पिचक
करना ३ बुराबाना, - ली कृत्वा, कलम ।

आलुनूतनम् [आ + लिप् + ल्यट्] १ लिखकारी, पिच-इति
सर्गमणो वालीबलस्वालेख्यदेवता - सि० २१६७, रघु०
३१५० २ लिखना । लम० - केला बाहरी कपरेला,
पिचक शेष (वि०) पिच को मोड़ कर लिखना
और कुछ गेज न रहा हो अर्थात् मूल मरा हुआ
आलुनूतनम् लिप् - रघु० १४१५ ।

आलुनूतनम् [आ + लिप् + ल्यट्, ल्यट् वा] १ ठेक वा
उबटन अर्थात् का मन्त्रना लीपना, पोतना २ लेप ।

आलोक-अनम् [आ + लोक् + अन्, ल्यट् वा] १ दर्शन
करना देखना २ दृष्टि पहलू दर्शन - बराकोके
प्रथमम् श० ११९, कु० ७१२२, ४९, बुद्ध-विभव०
११५४ ३ दृष्टि-बराक आलोके ने निमग्न पुरा का
बलिब्याकुला वा - मेघ० १५, रघु० ७१५ कु० २१५५,
४ प्रकाश प्रभा, कान्ति विरालोक् लोक् - वा०
५१३० ५१३७, ५ नाट, विद्योत्तर नाट द्वारा उच्चरित
मृत्ति-शब्द (जैसे 'अव, आलोच्य') - बराबुदीरिहालोक्
रघु० १७१२७, २१९, का० १४ ।

आलोचक (वि०) [आ + लोच् + ण्यच्] आलोचना करने
वाला देखने वाला, - कम् दर्शन-सहित, दृष्टि का
कारण ।

आलोचनम्-ना [आ + लोच् + ल्यट्, ल्यट् वा] १ दर्शन
करना देखना, सर्वज्ञ, सदीक्षा २ विचार करना,
विचार विपरीत ।

आलोचनम्-ना [आ + लोच् + ल्यट्, ल्यट् वा] १ दर्शन
करना देखना, सर्वज्ञ, सदीक्षा २ विचार करना,
विचार विपरीत ।

आलोचनम् [आ + लोच् + ल्यट्, ल्यट् वा] १ दर्शन
करना देखना, सर्वज्ञ, सदीक्षा २ विचार करना,
विचार विपरीत ।

आलोचनम् [आ + लोच् + ल्यट्, ल्यट् वा] १ दर्शन
करना देखना, सर्वज्ञ, सदीक्षा २ विचार करना,
विचार विपरीत ।

आलोचनम् [आ + लोच् + ल्यट्, ल्यट् वा] १ दर्शन
करना देखना, सर्वज्ञ, सदीक्षा २ विचार करना,
विचार विपरीत ।

आलोचनम् [आ + लोच् + ल्यट्, ल्यट् वा] १ दर्शन
करना देखना, सर्वज्ञ, सदीक्षा २ विचार करना,
विचार विपरीत ।

मकली का निवासी, पतित ब्राह्मण की तत्प्राप्त—दे०
मनु० १०।२१।

मायकर्म [मा + कृ + क्तृ] १ बीना, फेंकना, बखेरना
२ बीच बीना ३ ह्वागत करना ४. बर्तन, बर्तमान,
पात्र ।

मायकर्म [मा + कृ + क्तृ] इककन, पर्व ।

मायकर्म [मा + कृ + क्तृ] १ इकना, छिपाना, बुनना,
—सुखे तपस्वाचरणाय इत्ये कल्पेन लोकेष्व कथं तमिना
—रघु० ५।१३, १०।५५, ११।१५, २ बघ करना,
घेरना ३ इकना ४ बाधा ५ बाधा, अहाता, बहार-
होवारी—रघु० ११।७, कि० ५।२५, ६ कपडा बनाना
७ डाक । सम०—कर्मि मायकर्म ब्रह्मण (विलसे
वास्तविकता पर पर्व वरा रहता है) ।

मायकर्म [मा + कृ + क्तृ] १ चारों ओर घुमना, चक्कर
काटना २ बकायत, भेद—सुखे तपस्वतमनेनानि
—रघु० ५।५२, दक्षिणाकर्णार्थे—मेघ० १८, मायकर्म
ब्रह्मणाम्—यच० १।१११, ३ पर्यालोचन, (समये)
घूमना ४ बाकों के पदों, बकाय ५ बनीकस्ती (बड़ी
बहुत पुत्र दकटों रहते हो) ६ एक प्रकार का रत्न ।

मायकर्म [मायकर्म + क्तृ] १ मूल बारन का एक प्रकार
—वात बंधे घुमवधिते पुष्करावनेकालाम्—मेघ०
६, कु० २।५० २ बकायत ३ कर्मि, घुमाव ४
घुमराते वात ।

मायकर्म [मा + कृ + क्तृ] १ चारों ओर घुमना,
चक्कर काटना २ घुमाकार गति, घूर्णन ३ (घातुओं
का) घिसावना, घमना ४ जादूगि करना, —म
विष्णु,—भी घुमाती ।

मायकर्म—भी (स्त्री०) [मा + कृ + क्तृ पके डीप] १
देखा, पतित, वरात—आरावलीम्—विष्णु० १।४, इसी
प्रकार मलकं वरं, हारं रत्नं मायि २ झिलझिला,
अविच्छिन्न कमीर ।

मायकर्म (वि०) [मा + कृ + क्तृ] बरा ता पुरा हुआ ।

मायकर्म (वि०) (स्त्री०—भी) [मयस्य + क्तृ]
अविचार्य, अकरी—एतद्भाष्यकस्तन्मो—भाषा० २२,
—कर्म १. अकृत, अविचार्यता, कर्मव्य २ अविचार्य
कर्म ।

मायकर्मि: (स्त्री०) [मा० म०] रावि (विधान करने का
लय), मायीरता ।

मायकर्म [मा + कृ + क्तृ] १ आवास, आवास—स्थान,
घर, निवास—मित्रतन्मायस्ये पुरावृद्धि—रघु० ८।१४
२. विधान करने का स्थान, विद्याभवन ३ आवा-
स, संस्थापन ।

मायकर्म (वि०) [मायकर्म + क्तृ] गृही, घर में विद्यमान,
—कर्म (अभिज्ञान की) धारण कर्मि मे घर में
रखी जाती है, यज्ञ में प्रयुक्त होने वाली पचाग्नियो

में से एक, दे० 'पचाग्नि,'—कर्म—कर्म आवासात्,
संस्थापनम्,—कर्म घर ।

मायकर्म (वि०) [मा + कृ + क्तृ] १ समाप्त,
पूर्व किया गया २ निर्णीत, निर्धारित, निश्चित,—सम्प
पका हुआ बनाय (अलिहान से लाया हुआ) ।

मायकर्म (वि०) [मा + कृ + क्तृ] (समाप्त का अन्तिम
पद) उत्पन्न करने वाला, राहु बिलाने वाला, देशवाक
करने वाला, लाने वाला,—कलेषावहा मन्त्रलक्षणान्द्रम्
रघु० १४।५, इसी प्रकार दुष्, मय ।

मायकर्म [मा + कृ + क्तृ] १ बीज बोना २ बखेरना,
फेंकना ३ आकवास ४ बर्तन, बनाय रखने का गटका
५ एक प्रकार का पेय ६ ककन ७ अजड लावड़ मृगि ।

मायकर्म [मायकर्म + क्तृ] ककन ।

मायकर्म [मा + कृ + क्तृ] ककन ।

मायकर्म [मा + कृ + क्तृ] १ बीज बोना २ बखेरना,
फेंकना ३ आकवास ४ बर्तन, बनाय रखने का गटका
५ एक प्रकार का पेय ६ ककन ७ अजड लावड़ मृगि ।

मायकर्म [मा + कृ + क्तृ] १ घर, निवास २ घर-
स्थान, प्रकाश आवासमृगमूलबहिर्भागि रघु०
२।१७ ।

मायकर्म [मा + कृ + क्तृ] १ बुझाना,
निमग्न पुरारना २ देवता का (यज्ञ में उपस्थित
होने के लिए) आवाहन करना (वि०—विष्णुव्यं)
३ अग्नि में आहुति डालना याज्ञ० १।२५१ ।

मायकर्म (वि०) (स्त्री०—भी) [कर्म + क्तृ] १. नेह से
सम्बन्ध रखने वाला मायिक क्षीरम् मनु० ५।८
२।४१ २ ऊनी,—कर्म ऊनी कपडा ।

मायकर्म (वि०) [मा + कृ + क्तृ] बुझी, कष्टवस्त ।

मायकर्म (मू० क० क०) [मा + कृ + क्तृ] १ बिना
हुवा, छया हुआ २ मुड़ा हुआ, टेढ़ा ३ बलपूर्वक फेंका
हुवा, गति बिना हुआ ।

मायकर्मि: [मायि + क्तृ + क्तृ] १ अविध्यवित, उप-
स्थिति, प्रकट होने २ अवतार ।

मायकर्म (वि०) [मायकर्मि + क्तृ] स्तुति—विष्णु + क
ताग०] १. पकल, पैला, नदला बहुविध कर्मव्येव
निकेषावित पय मायि० २।८, तस्याविधानम्:
परिमुद्धितो—रघु० १३।१५ २ अविध्य, बुधित
(माय० भी),—स्वरीयचरितैर्मायिनी—कु० ५।५७,
३ काले रंग का, हलके काले रंग का ४. बुधला,
निष्पन्न—मायिनी युगलेशम्—रघु० ८।४२ ।

मायकर्मि (ना० मा० पर०) अजडा जगला, कर्मक
जगला ।

मायकर्मकर्म, मायिकार: [मायि + कृ + क्तृ + क्तृ]
वा [अविध्यवित, बर्तन देना, प्रकट करना—अनुवा
पुष्पे दायाविध्यवितम्—अमर० ।

मायकर्म (मू० क० क०) [मा + कृ + क्तृ] १. अविध्य २.
(मृत प्रेतादिक से) वस्त ३. संपन्न, बरा हुआ, बड़ीहुत,

(विस्मयादि छोटक अर्थ) के रूप में प्रयुक्त) आश्चर्य
(कितना अचम्भा है, कितनी अजीब बात है) — आश्चर्य
परिशीलितोऽभिरमते वष्पातकस्तुष्ण्या-वात० २।४।

आचको (इच्छो) तन्म् [आ + च् (इच्छु) + क्त] 1
किञ्चन, छिड़काव 2 पलकों के की चुपड़ना।

आचम (वि०) (स्त्री०-इमी) [अचम् + अच्] पाँच का
बना हुआ, पचरीला।

आचमन (वि०) (स्त्री०-नी) [अचमनो विकार अच्]
पचरीला, पाचर का बना हुआ 1 पाचर की बनी
काई वस्तु 2 सूर्य का सारथि अचन।

आचिक्क (वि०) (स्त्री०-की) [अचम् + टक्] 1 पाचर
का बना हुआ 2 पाचर होने वाला।

आचमान (भू० क० कृ०) [आ + च् + क्त] 1 उमा नृणां
सञ्चित कि० १० ० 2 कुछ सूत्रों परमाचार्य-
नन्दमान् २५० ३१-६ कृ० ३१९ धर्मे क महा-
मुक्त्यां ह्ये (जैने बाल) २५० १३१२०।

आचमनम् [आ + च् + णिच् + क्त] पकाना उचालना।
आचम् [-यमेव स्मारक] आम्।

आचम — चम् [आ + चम् + क्त] 1 पर्वजात्रा, कुटिया

कुटी, झोपड़ी, भग्यामिया का आवास या कला 2

अवस्था मन्थामियों का धर्मस्थ, बाह्यण के धार्मिक

जीवन की चार अवस्थाएँ (इन्द्राचर्य गाईरथ्य वान

प्रस्थ तथा सस्यात), क्षत्रिय की वैश्य भी पहले तीन

आचमों में पक्षापेक्ष कर सकते हैं, तु० ग० ३१-०

विक्रम० ५, कुछ लोगों के विचारानुसार वह चौथे

आचम में भी प्रविष्ट हो सकते हैं (तु०-न किञ्चाप्रम

मन्थवर्थाश्च-२५० ८११४) 3 महाविद्यालय विद्यालय

4 जगल, झोपड़ी (जहाँ मन्थाली लोग तपस्या करने

हैं)। मम० मुद्घ धर्मस्थ के प्रधान प्रविष्ट

आचार्य, धर्मः 1 जीवन के प्रत्येक आश्रम के विनिर्दि

कर्तव्य 2 वानप्रस्थी के वर्तव्य य इह माध्यमम

निपुणकते- ग० १ - पचम, मन्थलम् स्थानम

मन्थामाश्रम (आम-वाम की प्रथि ममने) पाचम

शान्तिमिदाश्रमपदम ग० ११९ अष्ट (वि०)

धर्मस्थ के दक्षिण, स्वधर्मस्थान वासिन आलय,

- चम् (पु०) मन्थाली, वानप्रस्थ।

आध्विज आध्विन् (वि०) [आध्व + इति वा]

धार्मिक जीवन के चार बाल या पदों में द्विमी ११ स

सबसे रहने वाला।

आध्वजः [आ + धि + अच्] 1 विधामन्थल, सदन, अधिष्ठान

- सौहृदादयवमाध्यामिमां उत्तर० ११६५, ५११,

2 त्रिक के ऊपर कोई वस्तु अधिष्ठान स्त्री है 3 वस्त्र

करने वाला भावन तथाप्य दुष्प्रमहृष्य तेजस

२५० ३१५८ 4 (क) दण्डमान, दण्डवत् भर्ता

१ आध्व्य स्त्रीणांम वेना० नदहमाध्वान्मन्नेव

स्वानकारां करोमि—मुद्रा० २, (क) आचार, घर

5 सहारा लेने वाला (प्रायः मन्थल में) 6 निर्भर

करना (प्रायः समाप्त में) 7 पालक, प्रतिपोषक

विनाशय न लिप्यन्ति पवित्रता वनिता कला उद्भूत

8 पुत्री, स्त्री २५० ११६० 9 तरकल—आममा-

श्रयमुक्तात् समुद्गन् २५० १११२९ 10 अधिकार,

समादन प्रमाण, अधिकार पत्र 11 लेखजाल, लेख

साहचर्य 12 दुबरे का समर्थ लेने वाला, छ पुणों में

म एकः सम० अलिङ्गः, द्विः (स्त्री०) हेत्वाभास

का एक प्रकार, अलिङ्ग के तीन उपयोगों में से एक,

आभा - भुञ्ज (वि०) मर्क में जाने वाली वस्तुओं

का उपयोग करने वाला (- क्तः- क्) जानि,

दुर्लभ कियेने पूर्ण श्रीमान्मन्थिद्वये, कि नाग

सालममं कुछने नाशवाशयन् - उद्भूत - अविच

विनाशय (अपने विनाश के अनुकूल अपना किन रखने

वाला पद)।

आध्वयचम् [आ + धि + च् + क्त] 1 दुबरे के तरकल में

रखना गरण लेना 2 स्वीकार करना, छोटना 3

शरण दागमन्थल,

आध्विन् (वि०) [आध्व + इति] 1 सहारा लेने वाला,

निर्भर करने वाला 2 सबड़ विषयक विक्रम०

११२०।

आध्व (वि०) [आ + धु + अच्] आजाकारी, आजापालक

भियजामनाश्रय २५० १११६९, नै० ३१८४,

ब 1 नदी, दरिया 2 प्रसिद्धा, बाधा 3 दोष,

अविचमन २० 'आलव' में।

आधि (स्त्री०) [धा० म०] ० बार की बार।

आधित (पु० क० कृ०) [आ + धि + क्त] (कर्म० के

माध कर्त्तव्य में प्रयुक्त) 1 सहारा लेने हुए-कृष्णा-

श्रिन् कृष्णमाधित। सदा० 2 रहने वाला, बास

करने वाला किसी स्थान पर स्थिर रहने वाला 3

वाम में जाने वाला सेव' में रहने वाला 4 अनुसरण

रहने वाला चस्याम करने वाला, पालन करने वाला

कु० ६५ अट्टि० ३१२२, 5 निर्भर करने वाला

6 (कर्मशास्त्र के रूप में प्रयुक्त) सहारा लिया हुआ,

वमा हुआ त पराधीन सेवक, अनुचर, अमदा-

श्रितानाम् हि० १, प्रभुणा प्रायश्चल गौरवमाधितेष्

कु० १११।

आधुन (पु० क० कृ०) [आ + धु + क्त] 1 सुना हुआ,

2 उद्भूत सहमन स्वीकृत, तम् पुकार जो दूसरा

सुन सके।

आधुति (स्त्री०) [आ + धु + क्त] 1 सुनना 2

स्वीकार करना।

आस्तेजः [आ + स्तिज् + क्त] 1 आस्तिन, परिग्रह,

कोला-कोली आस्तेजालीमुपवृत्तनकारकवलासिणी

—शिव २।१३. अमर, १५।७२, ९४, कण्ठाश्लेष-
प्रणमिनि जने—वेद्य० ३।१०९, २. संपर्क, घनिष्ठ
संबंध/संबंध—आ ९वीं कक्षः ।

आत्म (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [अत्म + अच्] घोड़े से
सम्बन्ध रखने वाला, घोड़े के पास से आने वाला
—रत्नम् घोड़ों का कन्धः ।

आत्मस्थ (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [अत्मस्थ + अच्]
पीपल के दण्ड से लक्ष्य रखने वाला या पीपल से बना
हुआ, —रत्नम् पापल का दण्ड, लक्ष्यः ।

आविष्टा (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [अविष्टा + अच्]
आविष्टा प्राप्त करने—अविष्टा, अविष्टा
प्राप्त—अनु० १।१०, अविष्टा की प्रविष्टा का
विन ।

अवस्थासंज्ञिकाः [अवस्थासंज्ञा ठक्] मलासरी, अव-
स्थितिज्ञा, साहस [बाह्य की देखभाल करने वाला] :
अवस्थासंज्ञा [आ + अवस्था + अच्] १ पास सेना, मुक्त
स्थास सेना, केतना लाभ २ तत्सत्ता, अवस्थासंज्ञा ३ रक्षा
और सुरक्षा की गारंटी ४ रोकथाम ५ किसी प्रकार
का पाठ या अनुपात ।

आवृत्तात्मक [आ + वृत्त + अच्] प्रत्यक्ष,
पिलासा, समझी लीन द्वितीय दृष्ट्यावृत्तात्मक
—आ० ७ ।

आवृत्तकः [अवृत्त + ठक्] पुनरावृत्त ।

आवृत्तकः [अवृत्त + विन नञ् अच्] प्राप्त का नाम [प्रत्यक्ष
चन्द्रमा आवृत्तनी नक्षत्र के निकट होता है] ।

आवृत्तकेयी (वि० व०) [आवृत्तकी + ठक्] १ जो आवृत्तनी
कुमार (देवता) के देव २ नकुल और सहदेव के
नाम, पीपल पाठों में से अन्तिम हो ।

आवृत्त (वि०) (स्त्री०—स्त्री) घोड़े द्वारा म्यात (घाना
आदि) नोचने—विद्या० ।

आवाहः [आवाही प्रविष्टा अस्मिन्मासे अण्] १ हिन्दू
का एक महीना [जून और जुलाई में आने वाला],
—आवाहृत्य प्रथमद्विमासे—वेद्य० २. शते विष्णु
सदाबाह्ये कार्तिके प्रतिबोधयते—वि० पु० २ ठाक की
लकड़ी का दण्ड जिसे सन्नासी धारण करते हैं—अवा-
हिनावाहृत्तर प्रथमद्विमासे—कु० १।३०, —आ २०वीं
या २१वीं नक्षत्र—पूर्वाषाढा तथा उत्तराषाढा, जो
आवाहृत्य मास की प्रविष्टा ।

आवृत्तः [अवृत्त + ठक्] आठवा भाग ।

आवृत्तः [आवृत्त + ठक्] निम्नलिखित वर्षों को प्रकट करने
वाला विस्मयादिचोक्त अव्यय—(क) प्रत्यास्मरण
—आः उपनयन, यवायु भूयस्वपम्—विष्णु० २ (ल)
शोध—आः कर्मकाण्ड राक्षसप्राप्तः—उत्तर० १—आ
वापे स्थित स्थित—आ० ८ (ग) पीड़ा—आः क्षीतम्
—आवृत्त १० (घ) अपाकरण (सरोज विरोध)

—आः क एष मयि स्थिते—मुद्रा० १—आः वृषा-
मगलपाठक वर्षा० १ (ड) शोक, लोद विद्यामा-
तरमा प्रदर्श्य नृपशुन भिक्षामहे निरुत्थाप—उद्भूत ।

आवृत्त (अदा०—अदा०) (आन्ते, आन्ते) १. ईदना, ईदना,
आराम करना, —एतदासनमास्वताम्—विष्णु० ५
—आवृत्तावितिचोक्त सन्नासीतामिच्छु गुरो—अनु०

२।१९३ २. रहना पास करना तावद्वर्षावृत्त देव-
कोके—मुद्रा०, वृषावृत्त रोषते तथावृत्तावृत्त का०
२५ वृत्तावृत्त—विद्या० ३ वृषावृत्त बैठे रहना,
वृत्तावृत्त अवधार न करना वृत्तावृत्त बैठे रहना—आनीम

वृत्तावृत्तवृत्त वृत्त—वि० २।१७, ४ वृत्ता, वृत्तवृत्त
या वृत्तवृत्तवृत्त वृत्ता, ५ स्थित होना, रक्षा वृत्ता
अवृत्तवृत्त वृत्ता वृत्तावृत्तवृत्त—वि० २।२६ ६.

मानना ठिके रहना, किसी अवस्था में ठहरना या
निरकर रहना (प्रवृत्त या निवृत्त वृत्ता का प्रवृत्त
मानन ७ वृत्त वृत्ता वृत्तावृत्त वृत्त वृत्ता वृत्ता वृत्ता
साथ वृत्त वृत्ता का प्रयोग होता है वृत्तावृत्तवृत्त वृत्तावृत्त

वृत्त ८, वृत्तावृत्त वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता
वृत्त वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता
वृत्त वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता

वृत्त वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता
वृत्त वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता
वृत्त वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता

वृत्त वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता
वृत्त वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता
वृत्त वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता

वृत्त वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता
वृत्त वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता
वृत्त वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता

वृत्त वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता
वृत्त वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता
वृत्त वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता

वृत्त वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता
वृत्त वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता
वृत्त वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता

वृत्त वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता
वृत्त वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता
वृत्त वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता

वृत्त वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता
वृत्त वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता
वृत्त वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता

वृत्त वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता
वृत्त वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता
वृत्त वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता

वृत्त वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता
वृत्त वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता
वृत्त वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता वृत्ता

देवी) १. मनुष्यों के संकल्प करने वाला २. भूत-
प्रेतों के संकल्प करने वाला,—आधुरी नावा, आधुरी
रानी: आदि ३. नास्तीय, राजकी—आधुर बावनामित
कम् ॥१५॥ (आधुर-आधुर के भूतों विवरण के
विषु दे० कम् ॥१५॥ ७-२४)—४. १. राजस, २
कास प्रकार के विषाहों में से एक विषाह कि वर, वध
की उत्तरे पिता वा वैधवायों के वहीर होता है
(दे० उद्गाह)—आधुरी इतिवाचालम्—आह० ॥१५॥,
मनु० ३।३१,—४. १. अस्वपिहितवा, जराही २
राजकी—संज्ञनामधुरीकि—वेपी० ॥१३॥

आधुरीति (वि०) [आ + धृ + क्त] १. नाका पहले हुए
या नाका के रूप में, २. अर्धवित्त ।

आलेकः [आ + लिप् + घञ्] पीका करना, पीचना,
ऊपर से उड़ेलना ।

आलेकम् [आ + लिप् + लृट्] ऊपर से उड़ेलना, पीका
करना, पिचकना ।

आलेकः [आ + लिप् + घञ्] गिरलगाटी, गिरासन,
कानूनी प्रविधय बहु बार प्रकार का है,—स्थानानेय
कासकृतः प्रवाहम् कर्षयत्तवा—भारव ।

आलेक—कम् [आ + क्] १. सोलाह अम्मास, किसी
चिन्ता का सतत अनुष्ठान, बारंबार होना, आधुनिक
—भा० ८।३।१०२, आलेकनं पीन पुन्यम्—सिद्धा० ।

आलकः—कम् [आ + लम् + घञ्, लृट् वा] १
आलक्य, हृषका, कहीरनाथ, परमिता अलकमय
—वेपी० २, २. बड़ना, सघाटी करना, रोचना, ३
मरोना, दुर्घटना ४. बोड़े की तरफत चाल ५. अडाई,
बुद्ध ।

आलकीकम्—लकम् [आ + लम् + क्त, स्वार्थे क् वा]
बोड़े की चाल, बोड़े की तरफत चाल ।

आलकीकम् (वि०) [आ + लम् + क्तिनि] बड़ बैठने वाला,
बुद्ध पहले वाला—रघु० १७।५२ ।

आलारः [आ + लृ + क्] १. चारर, बोड़ने का बदन
२. हरी, विहारा, चडाई—भा० २।२० ३. विस्तरण,
वैद्यन (वत्पादि) ।

आलारकम् [आ + लृ + लृट्] १. विस्तरण, विद्यावन
२. विहारा, लह, कुतूहल पूर्वों की क्यारी—हु० ४।
१५, अलारकालारकम् रघु०—रघु० १।१५३ ३. नवरा,
रकूई, विहार के कपड़े ४. हरी ५. हाथी की जीम-
पोंक, काल-काल, रवीन लुह ।

आलारकः [आ + लृ + घञ्] वैद्यना, विद्याना, बसेरना ।
कम्—कलिक कम् का नाम, दे० परिच्छिद ।

आलीक (वि०) (ली०—ली) [अलि + क्] १. जो
हीनर और परलोक में विद्याध रलता है २. अपनी
कर्म-परंपरा में विद्याध रलने वाला ३. विद्यालया,
कल, कलक—आलिफः कर्मवाचक—भा० १।२९८ ।

आलिफता,—लम्, आलिफकम् [आलिफ + लृट् लृप्
घञ् वा] १. ईश्वर और परलोक में विद्याध २
पवित्रता, अलि, बड़ा—भा० १।८।४२ आलिफक
अर्थवानता परमायैध्यामार्थेषु लकर० ।

आलिफः एक प्राचीन मुनि, जराकास का पुत्र (जराकास
के बीच में रहने से ही बननेवाये ने ललक नाम को छोड़
दिया था, जिसके कारण कि ललक रचा गया था) ।

आल्पा [आ + स्वा + अञ्] १. अल्पा, देसनाम, आदर,
विचार, ध्यान रलना (अवि० के साथ) मल्लम्भा-
ल्लापराक्षम्—रघु० १०।४३ मल्लम्भास्वा न ते भेत्
मनु० ३।३० दे० अनाम्ना भी २ स्वीकृति बाद
३ बुनी, लहारा, टेक ४. कथा भरोना ५ प्रयत्न ६
बना, अलम्बा ७ तथा ।

आल्पाकम् [आ + स्वा + लृट्] १ रलान अयह २ नीब,
बाजार ३ तथा ४ देसनाम बड़ा, दे० आल्पा ५
समागृह ६ विद्यामल्लान,—नी सभा-अञ्चन । सम०
—मृहम्, निकेतनम्, बंढः मभाभवन ।

आलिप्त (पु० क० कृ०) (कर्त्ताध्य के रूप में प्रयुक्त)
रहने वाला, बनने वाला, आश्रय लेने वाला, काम में
लगने वाला, अम्पान करने वाला अपने आपकी
डाकने वाला ।

आल्पाकम् [आ + पद + लृट् वा] १. स्थान, अनह, आसन,
ठौर—मल्लम्भा श्रीपुत्राजलितम् रघु० ३।३५,
स्थानास्यद मृतपलेविशेक—हु० ३।४३, ५।१०, ४८,
६९, २ (आल०) आवास, स्थान, आसब—कर्म
कावन्तास्यदम्—भावि० १।२, ३ अंभी, हर्षा, केन्द्र
स्थान ४ मयोवा, प्रामाजिकता पद ५ व्यवसाय, काम
६ बुनी, आश्रय ।

आल्पाकम् [आ + लम् + लृट्] बड़कना, कौपना ।

आल्पाक [आ + ल०] होव, प्रतिष्ठिता ।

आल्पाकः [आ + लम् + लिप् + मच्] १. आरना,
रमना, लन २ कलाना ३ कलकलाना ३ विशेष रूप
से हाथी के कानों की कलकलाना ।

आल्पाकलम् [आ + लम् + लिप् + लृट्] १ रलकना, दवा
कर रलकना, (शानी आदि का), हिलना कलकलाना
—अनवरतचनुअलिफलनकलुर्गम् ल० २।४, आला
अलास्फालनस्यरावाम्—रघु० १९।१२, १९।५५, ९।
७३, अमर ५४, देराकल कल्लेन हल्लेन हु० ३।२२
२. बयह, हलकड़ी ।

आल्पाकः [आ + लृट् + मच्] १. आक वा अवार कल पीवा
२. ताल ठोकना,—आ अयमल्लिका का पीवा, बल्लुकी
बसेली ।

आल्पाकलम् [आ + लृट् + लृट्] १. कलकना २ कौपना
३. कल आरना, कुमाना ४. लिकलना, कल करना
५. ताल ठोकना ।

आत्माक (वि०) (स्त्री० की), आत्माकीन (वि०)
[अत्मन् + अन्, अज्, अत्माक आदेश] हमारा हम
सब का -आत्माकदन्तिस्त्राशिव्यान् सि० २।६३,
१।५०।

आत्मान् [अस्मत्ते प्राप्तोऽन अत् + धन्] 1 भूँ, जवहा
आत्माकुहरे विवृतास्य 2 बहारा आत्मकमन्त्र 3
मूल का वह भाग जिसमें कर्माश्चरण में काम लिया
जाता है 4 भूँ, बिना जगत्स्यम् अक्षुण्णम् आदि।
सम० आत्मा आर भुज्जि, पत्रम् कम्प -लाहृत्
1 कुना 2 भूँ आर लोमन् (तप०) शब्दो।

आत्मन् [आ + धन्] 1 भूँ, जवहा
आत्माकुहरे विवृतास्य 2 बहारा आत्मकमन्त्र 3
मूल का वह भाग जिसमें कर्माश्चरण में काम लिया
जाता है 4 भूँ, बिना जगत्स्यम् अक्षुण्णम् आदि।
सम० आत्मा आर भुज्जि, पत्रम् कम्प -लाहृत्
1 कुना 2 भूँ आर लोमन् (तप०) शब्दो।

आत्मा [आ + धन्] 1 भूँ, जवहा
आत्माकुहरे विवृतास्य 2 बहारा आत्मकमन्त्र 3
मूल का वह भाग जिसमें कर्माश्चरण में काम लिया
जाता है 4 भूँ, बिना जगत्स्यम् अक्षुण्णम् आदि।
सम० आत्मा आर भुज्जि, पत्रम् कम्प -लाहृत्
1 कुना 2 भूँ आर लोमन् (तप०) शब्दो।

आत्मा [आ + धन्] 1 भूँ, जवहा
आत्माकुहरे विवृतास्य 2 बहारा आत्मकमन्त्र 3
मूल का वह भाग जिसमें कर्माश्चरण में काम लिया
जाता है 4 भूँ, बिना जगत्स्यम् अक्षुण्णम् आदि।
सम० आत्मा आर भुज्जि, पत्रम् कम्प -लाहृत्
1 कुना 2 भूँ आर लोमन् (तप०) शब्दो।

आत्मा [आ + धन्] 1 भूँ, जवहा
आत्माकुहरे विवृतास्य 2 बहारा आत्मकमन्त्र 3
मूल का वह भाग जिसमें कर्माश्चरण में काम लिया
जाता है 4 भूँ, बिना जगत्स्यम् अक्षुण्णम् आदि।
सम० आत्मा आर भुज्जि, पत्रम् कम्प -लाहृत्
1 कुना 2 भूँ आर लोमन् (तप०) शब्दो।

आत्मा [आ + धन्] 1 भूँ, जवहा
आत्माकुहरे विवृतास्य 2 बहारा आत्मकमन्त्र 3
मूल का वह भाग जिसमें कर्माश्चरण में काम लिया
जाता है 4 भूँ, बिना जगत्स्यम् अक्षुण्णम् आदि।
सम० आत्मा आर भुज्जि, पत्रम् कम्प -लाहृत्
1 कुना 2 भूँ आर लोमन् (तप०) शब्दो।

आत्मा [आ + धन्] 1 भूँ, जवहा
आत्माकुहरे विवृतास्य 2 बहारा आत्मकमन्त्र 3
मूल का वह भाग जिसमें कर्माश्चरण में काम लिया
जाता है 4 भूँ, बिना जगत्स्यम् अक्षुण्णम् आदि।
सम० आत्मा आर भुज्जि, पत्रम् कम्प -लाहृत्
1 कुना 2 भूँ आर लोमन् (तप०) शब्दो।

आत्मा [आ + धन्] 1 भूँ, जवहा
आत्माकुहरे विवृतास्य 2 बहारा आत्मकमन्त्र 3
मूल का वह भाग जिसमें कर्माश्चरण में काम लिया
जाता है 4 भूँ, बिना जगत्स्यम् अक्षुण्णम् आदि।
सम० आत्मा आर भुज्जि, पत्रम् कम्प -लाहृत्
1 कुना 2 भूँ आर लोमन् (तप०) शब्दो।

आत्मा [आ + धन्] 1 भूँ, जवहा
आत्माकुहरे विवृतास्य 2 बहारा आत्मकमन्त्र 3
मूल का वह भाग जिसमें कर्माश्चरण में काम लिया
जाता है 4 भूँ, बिना जगत्स्यम् अक्षुण्णम् आदि।
सम० आत्मा आर भुज्जि, पत्रम् कम्प -लाहृत्
1 कुना 2 भूँ आर लोमन् (तप०) शब्दो।

कहा हुआ, -तः शोल, तन् 1 नई पोछाक, नवा
बस्त्र 2 भावहीन या निरर्थक भावक, अस्माकना की
वृद्धिस्त उदा० एष बध्मासुतो याति-मुना०। सम०
लक्षण (वि०) = बाह्यलक्षण।

आहृति (स्त्री०) [आ + हृ + क्तिन्] 1 हृत्पा करना 2
प्रहार बोट मारना, पीटना 2 यष्टि, छड़ी।

आहृत् (वि०) [आ + हृ + अच्] [समास के अन्त में] लाने
वाना ले आने वाला, ग्रहण करने वाला, पकड़ने
वाला सपि-कुमारहाट्टे रघु० १।४०, २।१
ग्रहण करना पकड़ना 2 पूरा करना सम्पन्न करना
3 पूरा करना।

आहृत् [आ + हृ + क्तिन्] 1 लाना (निकट) लाना
सोमदाहृत्पाय प्रकृता बध्म-ज. १.२ पकड़ना
ग्रहण करना ३ हटाना निकालना ४ सम्पन्न करना,
(पञ्चाश्व) पूरा करना 5 विनाश के समय दुर्लभ
को उपहार के रूप में दिया जाने वाला वस्त्र हह्व,
मन्वानाहृत्पायणीकृतशब्दो रघु० ३।३२।

आहृत् [आ + हृ + अच्] 1 मुझ सम्पन्न, लड़ाई-एष
विनाशहृत्पायितन रघु० ३।५० हुआ स्वयम्भवाहृत्
रघु० १।११ 2 लालकार चुनौती आहृत्, आहृत्
लहन को हृत्पा 3 यज्ञ तब नामवदली बहाहृत्
शि० १।४।४।

आहृत् [आ + हृ + क्तिन्] 1 लाना, ले आना, या निकट
लाना 2 भोजन करना 3 भोजन - कृत्स्नकरोत्
पच० १ भोजन किया। सम० आहृत् भोजन का
पचना, -बिरह, भोजन की कमी, भूलो मरना, -लक्षणः
बारी का रस लसीका।

आहृत् [आ + हृ + क्तिन्] 1 लाना, ले आना, या निकट
लाना 2 भोजन करना 3 भोजन - कृत्स्नकरोत्
पच० १ भोजन किया। सम० आहृत् भोजन का
पचना, -बिरह, भोजन की कमी, भूलो मरना, -लक्षणः
बारी का रस लसीका।

आहृत् [आ + हृ + क्तिन्] 1 लाना, ले आना, या निकट
लाना 2 भोजन करना 3 भोजन - कृत्स्नकरोत्
पच० १ भोजन किया। सम० आहृत् भोजन का
पचना, -बिरह, भोजन की कमी, भूलो मरना, -लक्षणः
बारी का रस लसीका।

आहृत् [आ + हृ + क्तिन्] 1 लाना, ले आना, या निकट
लाना 2 भोजन करना 3 भोजन - कृत्स्नकरोत्
पच० १ भोजन किया। सम० आहृत् भोजन का
पचना, -बिरह, भोजन की कमी, भूलो मरना, -लक्षणः
बारी का रस लसीका।

आहृत् [आ + हृ + क्तिन्] 1 लाना, ले आना, या निकट
लाना 2 भोजन करना 3 भोजन - कृत्स्नकरोत्
पच० १ भोजन किया। सम० आहृत् भोजन का
पचना, -बिरह, भोजन की कमी, भूलो मरना, -लक्षणः
बारी का रस लसीका।

आहोस्विनिकः [आहि + ऽव्] निवाह पिता और बड़ेही माता से उत्पन्न वर्णसंकर-आहोस्विनिको निवाहेन बड़ेह्यामेव आये-यन्० १०।१७।

आहित (यू० क० छ०) [आ + ता + क्त्] 1 स्थापित, जडा गया, बसा किया गया (बरोहर के रूप में रक्खा गया) 2 अनुमत, सक्त 3 सम्पन्न, किया गया। सम०-अभिः आहूय जो यज्ञ की पावन अग्नि को अभिमर्षित करता है, अंक (वि०) चिह्नित, चिनी-दार, अलस (वि०) परिचायक चिह्न वाला, -ककुत्स इत्याहिनससोऽनु-रन्० १।७१ (मन्त्रि० के अनुसार-अन्धे मूर्खों के कारण प्रख्यात)।

आहितुषिकः [आहितुषेन वीज्यति ऽक्] आधीनर सपेरा ऐनवाभिक या आधुनर-अहं सत्वाहितुषिको जीर्ण-विधौ नाम-भूटा० २।

आहुति (स्त्री०) [आ + हु + क्तिन्] 1 किसी देवता को आहुति देना, पुष्पकृत्यो के उपलक्ष्य में किये जाने वाले यज्ञों में हवनसामग्री हवन क्रम में डालना-होतृप्राप्तिसाधनम् रन्० १।८०, 2 किसी देवता को उद्दिष्ट करके दी गई आहुति (हवनसामग्री)।

आहुतिः (स्त्री०) [आ + हु + क्तिन्] बुनीली अलकार, आह्वान।

आहुति (वि०) [अहि + ऽक्] साँपो से लड़क रहने वाला-यन्० १।१११।

आहू (अव्य०) निम्नांकित मायनाओं को व्यक्त करने वाला विभक्त्यदि शोतक अव्ययः (क) सन्तुह या निवृत्त, शय किम् का सहस्रवर्षी-कि ईजानम इतं निवृत्तिव्ययम्. ... आहू निवृत्त्यानि यम इति आह्वानानि-अ० १।२७, दार्याणी ब्रह्माहो परस्त्रीस्पर्धामुम अ० ५।२५ (अ) प्रथमाव्यक्तता-सम० पुष्पिका 1 अत्यधिक बहुमव्यता या समृद्ध-आहोपुष्पिका सर्पिः स्थान्तमात्रमात्मनि-अनन्०, आहोपुष्पिक पथ्य मय स्रष्टवकान्तिभि-अष्टि० ५।२७ 2 सैनिक आत्महत्या, खेजी बचारा 3 अपने पराक्रम की डींग मारना-निज-मुचबलाहोपुष्पिकाम्-आनि० १।८४, स्थित (अव्य०) 'बड़ेह' 'संभावना' 'संभाव्यता' आदि मायनाओं को प्रकट करने वाला अव्यय ('किम्' का सहस्रवर्षी)

-आहोस्विनसो मनापचरितैविष्टमितो वीरवान्-अ० ५।१९, कि हिज पथति आहोस्विन् गच्छति-तिट्टा० १।

आहूय [अहो समूह अह्] दिनों का समूह, बहुत दिन। **आहूयिक** (वि०) (स्त्री०-की) [अहूय मय, अहूय निवृत्त माध्य ऽञ्] 1 दैनिक प्रति दिन का, प्रति दिन किया गया, दिन भर किया गया आभिक संस्कार या कर्तव्य जो प्रति दिन नियत समय पर किया जाने वाला है, प्रतिदिन किया जाने वाला कार्य जैसे कि भोजन करना रत्नन करना आदि कुलान्तिक सबल विक्रम० ४, 2 दैनिक भोजन 3 दैनिक कार्य या व्यवसाय।

आहूय [आ + हू + क्त्] भुजी, एवं लाहूय बचनम् रन्० ४।

आहूयक [आ + हू + क्त्] प्रसन्न करना, लुप्त करना।

आहू (वि०) [आ + हु + क्त्] 1 जो पुकारता है बुलाता है बुलाने वाला आहू [आ + हु + क्त्] 2 शत्रुः 1 बुलाना पुकारना 2 यम, अभिधान (यम मयाम के अन्त में) अमुनाहू सताहू, आदि।

आहूय [आ + हू + क्त्] 1 नाम अभिधान (समान का अभिनय एवं) काव्य रामायणाहूयम् यमा-2 एक कानूनी अभियोग जो मर्त्य की लड़ाई जैसे पक्षों के होने वाले झगड़ों से पैदा हो (कानून के १८ नामों में से एक)-पञ्चपूर्वक पक्षि-मेवादिवाधन आहूय यन्० ८।७ पर राक्षसत्व की व्याख्या।

आहूयक [आ + हू + क्त्] नाम अभिधान, आहूयक [आ + हू + क्त्] 1 अलकार आहूयक 2 बुलावा, निमंत्रण, आमन्त्रित करना, बुलाह्वान

प्रकृति-यन्० ३।६३ 3 कानूनी आमत्रण (कचहरी या सरकार ने किसी व्यावहारिकरण के सम्मुख नय स्थित होने के लिये बुलावा) 4 देवता का संबोधन यन्० १।१२५, 5 बुनीली 6 नाम अभिधान।

आहूय [आ + हू + क्त्] 1 बुलावा 2 नाम। **आहूयक** [आ + हू + क्त्] 1 हूत, संवेष्टाहूक आहूयकान् भूषितैरयोध्याम् अष्टि० २।६४।

४ [अ + हु + क्त्] कावरीव (अव्य०) (क) कोष (ख) मुबार (ग) करना (घ) सिक्की तथा (ङ) बारपर्व

की याचना को प्रकट करने वाला विस्मयविधोपक अव्यय।

उठ कर बमबानी करना—सपर्वया प्रत्युपविषय पार्वती
—इ० ५।३१, चि—, १ चले जाना, बिदा होना
—उत्सवादि स्थिति च सप्रति वीतचित्तं इ० ५।१२,
इती प्रकाश वीतभय, वीतक्रोध २ परिचित होना
—सदुष चिन्तु लिंगेयु यन् व्यति तदव्ययम्—सिद्धा० ३
सर्प करना—दे० व्यय, विचरि—, बदलना (बुराई
के लिये) दे० विपरीत, व्यति—, १. बाहर जाना
पश्चिच्छित्त होना, अतिक्रमण करना—रत्नामात्र
मपि क्षुब्धाया मनोबलत्वेन परम्, न व्यतीयु प्रजा
स्तस्य निवृत्तुर्नमिषुनय । रघु० १।१३, २ (ममय
का) गुजरना, व्यतीत होना सत्यव्यतीयुस्त्रिगुणा
तस्य विनाशि—रघु० २।२५, व्यतीते काल-आदि ३
परे चले जाना, पीछ छोड़ना रघु० ६।६३, व्यप
१ बिदा होना विच्छित्त होना, मुक्त होना व्यानम
इत्तर—याज्ञ० १।२६७ स्मृयाचारव्यपेन मार्गण
—२।५, २ चले जाना, जुदा होना, अलग-अलग होना
—समेप च व्यपेयाताम् हि० ४।६ मनु० ९।१४२
१।१७, तम्—, इकट्ठे जाना, इकट्ठे मिलना, समनु
साध चलना, अनुसरण करना, समथ १ एकत्र
होना, इकट्ठे जाना समवेता युयुत्सव भग० १।१
२ समथ होना, समुक्त होना दे० समवाय, सत्ता
इकट्ठे जाना या मिलना—समेप च व्यपेयाताम् हि०
४।६९, समनु, एकत्र होना सचित होना—प्रय सम-
क्षित सर्वा गुणाना गण रत्न० १।६, समुष, उप
लब्ध करना, प्राप्त करना, संगति—, निणय करना,
निश्चित करना, निर्धारित करना, अनुमान लगाना
—कि तत्कथं वेत्युपलब्धसत्रा विकल्पयन्तोऽपि न सप्र-
तीयु—चट्टि० १।११० ।

इक्षुः (ब० व०) गन्ना, ईश, ऊल ।

इक्षुः [इक्षुतेजो माधुर्यात्—इप् + क्तु] गन्ना, ईश ।
सम०—काण्डः— इक्षु गन्ने की दो धानियाँ काग
और युद्धतुल्य—कुद्वकः गन्ने इकट्ठे करने वाला
—या एक नदी का नाम,—वाकः गुड, गीरा, राब,
—वक्षिण गुड और शक्कर से बना भोज्य पदार्थ,
—मली, बालिनी,—वाक्कथी एक नदी का नाम,
—वेष्टुः मधुमेह—वक्षुम् गन्ना पेलने का कोलू,
—रक्षः १. गन्ने का रस २ गुड, राब या शक्कर,
—वक्षुम् गन्ने का सेत, गन्ने का जगम, वाटिका,
—वाडी, गन्नों का उद्यान, विकारः शक्कर, गुड
या राब,—सारः गुड या राब ।

इक्षुकाः [इक्षार्थं क्तु] गन्ना, ईश, दे० इक्षु ।

इक्षुकीका [इक्षु + क्तिवां टाप्] गन्नों की कवारी ।

इक्षुः [इक्षु + क्ति—इति टा + क्तु] गन्ना, ईश ।

इक्षुका [इक्षु इक्षुम् आकरोति इति—इक्षु + आ क्तु
+ क्तु] अयोध्या में राज्य करने वाले सूर्यवंशी राजाओं

का पुत्रं पुत्र, यह वैदव्यत मनु का पुत्र या और
सूर्यवंशी राजाओं में सबसे प्रथम पुत्र का । इक्षुका
वशोभित प्रजानाम् उत्तर० १।४४ २ इक्षुका की
सन्तान गलितवयमामिषकाणांमिद हि कुलवतम्
—रघु० ३।३० ।

इक्षु, इक्षु (म्बा० प०) (एम्बि इक्षुति) जाना
हिलना इलना (प्राय प के साथ) हिलना-इलना,
कापना मा० ६ ।

इक्षु (म्बा० उ०) (इक्षुति त, इक्षुति) १ हिलना,
कापना क्षुब्ध होना तथा दोषों निवारण के लिये
—भग० २।११ १४।२ २ आरा विनना-इलना

इक्षु (बि०) [इक्षु + क्तु] १ हिलना इलना वाय २ आश्चर्य
जनक विषयक, ग १ इक्षु ग म मक २
इक्षुत द्वारा मनाभाव का मक ३ इक्षु ।

इक्षुत्तम् [इक्षु + क्तु] १ हिलना इलना, कापना २
जान दे० टा

इक्षुत्तम् [इक्षु + क्तु] १ धडकना, हिलना २ आन्तरिक
विचार द्वारा प्रपादन आकांक्षादि—का०
७ प० १४४ अगदमद्वारिणी गङ्गा १।१। कु०
५।२०, रघु० १।०१ [इ० १।६९] इक्षुत्तम्
अर्थात्तर १ न १० ४ इक्षुत्तम् द्वारा क
विभिन्न अंगों का संग्रह आन्तरिक द्वारा का
आभास दे देता है अर्थात्तर आन्तरिक धारणा का
प्रकट करने में समर्थ है आकांक्षा की गत्या
गृह्यतेज्जगता भन मनु० १।०६ । मय कोर्षिब,
[(बि०)] बाहरी अंगवैष्टाका के द्वारा आन्तरिक
मनोभावों को आकांक्षा करने में कुशल, सर्वज्ञ का
जानन वाला ।

इक्षुत्तम्—[इक्षु + क्तु] इक्षुत्तम् द्वारा इक्षुत्तम्
का [इक्षुत्तम् का वक्षुत्तम् का वक्षुत्तम्
—इक्षुत्तम् द्वारा साध्य उत्तर० १।१६ इक्षु
इक्षुत्तम् का फल ।

इक्षुत्तम् [इप् + क्तु + टाप्] १ कामना, अभिलाषा र्वि
इक्षुत्तम् र्वि के अनुसार २ (गणन में) प्रश्न या
समस्या ३ (ध्या० में) सप्रश्न का क्तु । मय० ४।१५
अभिलाषा का पूरा होना, निवृत्तिः (स्त्री०) कामनाओं
की पूर्ति, सामारिक इक्षुत्तम् के प्रति उत्तमीनता
—कक्षुत्तम् किसी प्रश्न या समस्या का समाधान
—रक्षुत्तम् अभिलाषा लक्ष्य मय० ८१, क्तुः कुर्षे
—कक्षुत्तम् (स्त्री०) किसी की कामनाओं का पूरा
होना ।

इक्षुत्तम् [इक्षु + क्तु] १ अध्यापक २ दवा के अध्यापक
वृद्धिर्था की उत्पत्ति ।

इक्षुत्तम् [इक्षु + टाप्] १ वज्र जगत्प्रकाश नदोपमिष्यया
—रघु० ३।४८ १।६८, १।५०, २ उपहार, दान ३

प्रतिमा ४ मूर्तिनी, द्वितिका, गाय । सम० - लोका सदा
यज करने वाला ।

इष्टरः [इषा कामेन चरति - इष्ट + चरिष् + इष्ट + चरु
+ अच्] ईश या ब्रह्मा या स्वच्छन्दता पूर्वक धूमन
के लिए छोड़ दिया जाय ।

इडा-का [इ + अच्, लयम् इत्यम्] १ पृथ्वी २ माधव
३ आहार ४ गाय ५ एक इषी का नाम, मनु की
पुत्री ६ बुध की पत्नी तथा पुष्करवा की माता ।

इदिका [इडा + क इत्यम्] पृथ्वी ।

इतर (सा० वि०) (स्त्री०) इतर नपु० रत्न] इना
कामेन तर - इति १ + अच् १ अन्य, दूसरा, दो में
से प्रवर्जित इतरा दहने एकमेनाम् रत्न० १००
अने० पा० २ सोच या धूम (इ० व०) ३ दूसरा मे
मिन्न (क० के माध) इतरनायकानि यद्वच्छया
वितर तानि सहे चतुर्गणन उद्धृत, इतरा राखणद्व
राखवानुचरो धार - मूर्ति० ८।१०५ ४ विराघो या
तो अकला खनन रूप मे प्रयुक्त इतरा है अथवा बिने
वण के माध, या समास के अन्त में प्रयुक्तानांति
च राभा०, विजयायेनगाय वा महा० इसी प्रकार
दक्षिण (दाय्या) बाय (दाय्या) आदि ५ नीच
अथम, तबारा सामान्य - इतर इव परिभूय ज्ञान सम्प-
येन अवीकृत - का० - १५६ । सम० - इतर (सा० वि०)
पारस्परिक, स्व-स्व, अन्योन्य आशयः - पारस्परिक
निर्भरता, अन्योन्य संबंध धीमः १. पारस्परिक संबंध
या मेल, मि० १०१४, २ द्वन्द्व समास का एक प्रकार
(वि० लबाहुर इत्यम्) वही कि प्रत्येक अंग पृथक्
रूप से देखा जाता है ।

इतरत्, इतरत्र (अव्य०) [इतर + तसिच्, यच् वा]
अन्यथा, उत्तरे भिन्न, अन्यत्र दे० अन्यत, अन्यत्र ।

इतरका (अव्य०) [इतर + काल्] १ अन्य रीति से, और
इस से २ प्रतिकूल रीति से ३ दूसरो ओर ।

इतरेषुः (अव्य०) [इतर + एषुम्] अन्य दिन, दूसरे
दिन ।

इत्तम् (अव्य०) [इष्टम् + तसिच्] १ अत, वही से
इष्टर से, २ इस व्यक्ति से, मूल से - इत स दीय
प्राप्तधीनेन एकाहृति क्षयम् कु० २।२५ ३ इस
विषय में, मेरी ओर, यहाँ - इता निषीदति बिम्ब
मृषि - कु० ३।२, प्रयुक्तमध्यमविधो वृथा स्थान्
- रत्न० २।२४, इत इतो देव - इष्टर इत ओर महा
राज (नाटकों में) ४ इत लोक से, ५ इत समय
से, इतः - इतः - एक ओर - दूसरी ओर वा एक
स्थान में - दूसरे स्थान पर, वही - वही ।

इति (अव्य०) [इ + क्तित्] १ यह अवश्य प्राय किसी
के द्वारा बोले गये, या बोले समझे गये शब्दों को वैसा
का वैसा ही रख देने के लिए प्रयुक्त किया जाता है

जिसको कि इस अंग्रेजी में अवतरणांश चिन्हों द्वारा
प्रकट करते हैं, इस प्रकार कही गई बात हो सकती है
(क) एक अकेला शब्द जो शब्द के स्वरूप को दर्शाने
के लिए प्रयुक्त किया गया हो (अव्ययत्वच्योतक) - राम
रामेति रामेति कुञ्ज मधुराक्षर - रामा०, अतएव
नविष्याह - मत्त०, (क) या कोई प्रातिपदिक जो
कि अपने अर्थों को संकेतित करने के लिए कर्त्तृकारक
में प्रयुक्त होता है (प्रातिपदिकांशोतक) - वय-
मित्त्वामि-वयचारित दुरा - कमादम् नारद इत्य-
र्थाय म मि० १।३, अवेयि चैनामतवेति - रत्न०
१।१०, दिवी इति गर्जदु - रत्न० १।१०, (ग)
या दुरा वाक्य जब कि इति शब्द वाक्य के केवल
अंग में ही प्रयुक्त किया जाता है (वाक्यांशोतक)

आर्याय त्रियदम्बा में रक्षति मोक्षिषाक इति
मि० १।३३ २ इस नामान्य अर्थ के अतिरिक्त
इति के निम्नातिन अर्थ हैं (क) कर्त्ता, यन
कारण यह कि अति शब्दों से व्यक्तीकरण - कैदे-
शिकाज्जमति पृच्छामि उत्तर० १ पुराणमन्त्रे न
माधु नवम् मालवि० १।२ प्राय किम के एव
(क) अंगप्रशय या प्रयोजन रत्न० १।३७ (ग)
उपसहार शोतक (वि० अथ) इति प्रथमोऽङ्ग
- यज्ञ प्रथम अङ्ग का उपसहार होता है

(ब) अत, इस प्रकार इस रीति से - इत्युक्तवन्
परिणम्य दोष्याय - कि० १।१८० (ड) इस स्वभाव
या विवरण वाला - गौरव पुष्पा हस्तीनिजानि (च)
जैसा कि नीचे हैं, १३ जिन्हें परिभाषामानुसार तामा-
मिषानो हरितियुक्त - रत्न० १।३१ (छ) वही
तक, वही हैमित्यतः के विषय में (चरिता और
संबंध प्रकट करते हुए) - रिपेति स पूज्य, अध्यापक
इति निम्ब, शोधार्थित मुक्तरम्, निपुर्तामि चिन्तनीय
प्रवेत् - शा० ३ (ज) निवर्त्तन (प्राय 'आदि' के
माध) इत्युरित्युरिष भीमानिवादी तवत्सम्य - चन्दा०
गौ मुक्तरवत्सो हित् इत्यादी - काव्य० २, (झ) यानी
हुई सम्प्रति या उद्धरण - इति परिनि इत्यापिषि
इत्यमर विश्व अदि (झ) स्पष्टीकरण । सम०
- अर्थः भावांश, सार, अव्यय (अव्य०) इस प्रयो-
जन के लिए, अतः - कथा अश्वहीन वा निरर्थक बात,
- कर्त्तव्य, - कर्त्तव्य (वि०) निवर्त्तन उचित या वाच-
स्पक (अव्य०, यच्) कर्त्तव्य, दामित्व, 'ला', - कार्यता,
- कृपता कोई भी उचित ३. आवश्यक कार्य - कृतव्य-
तत्त्वः कि कर्त्तव्य किमूढ, अत्यन्त में पड़ा हुआ,
व्याकुल, हतबुद्धि, - माध (वि०) इतने विस्तार वाला, वा
ऐसे मूल का - नृत्तम् १ घटना, बात २ कथा, कहानी ।

इतिह (अव्य०) [इति एव ह कित - इ० स०] ठीक इस
प्रकार, विस्तृत वरपरा के अनुकूल ।

इतिहास [इति + ह + भास (अत् काल, किम् प्रकार, काल, ५०, ६० व०)] १. इतिहास (चरित्रा से प्राप्त व्यवस्था) (अन्त) — वर्तमानकालीनकालाभ्युदयसमन्वितम्, पूर्ववर्त कालावस्थितिहास प्रचलते । २. वीर-वाधा (जैसा कि महाभारत) ३. ऐतिहासिक साक्ष्य, चरित्रा (विलकी पीरानिक एक इमान् नागति है) । सम०—विजयनम्—उपासनाव्युत्त वा वर्णनात्मक रचना ।

इत्यम् (अन्त०) [इत् + यम्] इस लिए, अतः, इस रीति से—इत्यं एते किमपि ज्ञानव्यवस्थाम्—कु० ४।४५, इत्यं एते—इय परिस्थितियों के कारण । सम०—कारम् (अन्त०) इस प्रकार,—कृत (वि०) १ इस प्रकार परिस्थितियों में कृता हुआ, ऐसी कृता में इत्य—कु० १।०६ कर्मव्यवस्था—आत्मवि० ५ का० १४५, २ इत्या, वधातम्, काही (जैसे कि कदाही),—विज (वि०) १ इय प्रकार का २ इस प्रकार के कृती से युक्त ।

अय (वि०) [इत् + अय्, तुम्] विलके पाम जाया जाय, वही पहुँचना उपयुक्त हो—इत्यः सिध्यंग गृह-कम्—एता १. बाता, नाग २. डोली, पायकी ।

अवर (वि०) (स्त्री०—री) [इत् + अवरम्, तुम्] १ जाने बाका, बाका करने वाला, बाकी २ भूत, कठोर ३ नीच, कम ४. प्रति, निम्न ५ निर्धन, अः विजडा, —री १. व्यवहारिणी, पुनटा २. भावसारिका ।

इत् (वा० वि०) [इत् + अय्, स्त्री०—इत्, यत्, इत् + अयम्] [इत् + अयम्] १. यह—वो यहाँ है (कला के विच्छेद की वस्तु की ओर लक्ष्य करते हुए—इयमस्तु विच्छेद कम्) इत् तत्... इति यदुच्यते—वा० ५, यह है कला की लक्ष्यता २ उपस्थित, वर्तमान (‘यहाँ’ की भावना की प्रकट करने के लिए कर्त्तृकारक के रूप उद्घुष्ट किये जाते हैं—इयमस्ति—यह रही है, वही प्रकार—इयं स्तः, अवयवभ्यामि—यह मैं जाता है) ३. यह कला दुर्लभ ही शब्द में जाने वाली वस्तु की ओर लक्ष्य करता है जब कि ‘एतत्’ सत्य पूर्ववर्ती वस्तु की ओर अनुकल्पसत्य शब्द मारा इतिरूपेण—यत् ० १।१४० (अवयव—वय-वाय—कुम्) कुम्बोविदम्—४. किसी वस्तु की अधिक स्पष्टता या लक्ष्यवत् बनाने या कई बार लक्ष्यविषय प्रकट करने के लिए बहु लक्ष्य यत्, तत्, एतत्, अतत्, किम् अथवा किसी पुनः वाचक सर्वनाम के साथ जुड़ कर प्रयुक्त होता है—कोशमा-वर्तमानकम्—वा० १।१५, हेयम्, कोशम्—यह वहाँ, —उच्यते—वा० ५, यत् वही तो मैं हूँ ।

इत्तानीम् (अन्त०) [इत् + तानीम्, इत् + तम्] अय, इस समय, इस विषय में, अभी, अब की—वर्तते प्रतिष्ठ-

स्वीदानीम् वा० ४, कार्ययुक्त इत्तानीमिति—उत्तर० ३, इत्तानीमेव—अभी, इत्तानीमिति—अब की, इस विषय में की ।

इत्तानीमत्त (वि०) (स्त्री०—नी) वर्तमान, लज्जित, वर्तमान कालिक ।

इत्त (य० क० इ०) [इत् + तत्] उल्ला हुआ, प्रकाशित —इत्त १ वृत्त, समी २ रीति, चमक ३ आश्चर्य ।

इत्तः अयम् [इत्तयैऽभिरनेन इत्त + अयम्] इत्त, विशेषकर यह जो यत्तानि में काम आता है—रम् ० १४।७०, १ सम०—विजः अयम्—अवयवः कुम् १।४० कुटार (चम्) ।

इत्ता [इत्तम् अयम्—इत्ता] प्रत्यक्ष प्रकाशित ।

इत्त (वि०) [इत् + तत्] १ योग्य, शक्ति शाली सम्मान २ साहसी—म १ स्वाधी ० पूर्व—वि० २।१५ ३ राजा न न मन्त्रोन्मत्तनपराक्रमम् रम् ० ५ ।

इत्तित्तिः [इत्त + तित्ति] वही मय-मल्ली रमा किन्तिमिरेपु निगन्तम्—आमि० २।१८३ ।

इत्तिरा [इत्त + किरम्] लक्ष्मी, विष्णु की पत्नी । मज०—आत्मन् इत्तिरा का आवाज, नील कमल अम्बुः विष्णु का विशेषण (—रम्) नील-कमल ।

इत्तीरिणी [इत्तीर + इति + इति] नील-कमल का समूह ।

इत्तीराः [इत्ता वारा वर्यम् अय ० म०] नील कमल ।

इत्तुः [उन्नति स्नेहयति चन्द्रिका भूभम—उत्त १ आदेरिज्] १ चन्द्रमा दिक्षीय इति राजेन्द्रम्—कीरिणाविच—रम् ० १।१२, २ (गणित में) गज की लम्बा ३ कपूर । मज० कम्पत्तु मकर कमल,

कला चन्द्रमा की कला या अल (यह कलाग गिनती में १६ है, पीरानिक कलाओं के आधार पर इनमें से प्रत्येक कला कमरा १६ देवताओं के द्वारा निगनी जाती है)—कलिका १ केतकी का पीसा २ चन्द्रमा की एक कला, काल, चन्द्रकालमणि (—ता) रात, —अवः १ चन्द्रमा का प्रतिदिन घटना २ नृत्य-चन्द्र विभक्त, प्रतिपदा, अः—पुत्रः पुत्रवह (—जा) रेवा वा नर्मदा नदी,—अवः मयूह,—अवः चन्द्रमा की कला, अवयव,—वा कुम्बिणी,—यत्,—लेखः,—जीविः मन्त्र पर चन्द्र की धारण करने वाला देवता, विज, —अभिः चन्द्रकालमणि,—अवयव चन्द्रमा का परिवेष, चन्द्र मण्डल,—रम्—मोती,—के (२) का चन्द्रमा की कला,—लोहकम्,—लीहम् चरि, —कला कम्प का नाम दे० परिभाषा,—वातरः मोषवार ।

इत्तुल्ली [इत्तु + मत्तु + ली] १ पुनिया २. ‘अय’ की कनी, ‘मोष’ की वहन ।

इन्द्रः [इन्द्र + र पुं० अल्पम्] बृहा, मृता ।

इक्षः [इन्द्र + र्त्, इच्छतीति इन्द्रः, इति ऐषवर्षे० प्रसिद्धः]

1. देवी का स्वामी 2. बर्षा का देवता, दृष्टि 3. स्वामी या शासक (वस्तुध्यायिक का), प्रथम, प्रथम (पराधी के किसी वर्ग में), सदैव समान के अन्तिम पर के रूप में, नरेश-वस्तुध्याय का स्वामी अर्थात् राजा इसी प्रकार मृतेन्द्र-शर, -मृतेन्द्र, योगेन्द्र, कर्णेन्द्र, -ह्रा इन्द्र की पत्नी, इन्द्राणी (अन्तरिक्ष का देवता इन्द्र भारतीय आर्यों का दृष्टि-देवता है, वेदों में प्रथम स्थानी के देवताओं में इनका वर्णन मिलता है, परन्तु पुराणों की दृष्टि से यह द्वितीय स्थानी के देवता माने जाते हैं। यह कश्यप और अश्विनी के एक पुत्र है। ब्रह्मा विष्णु और महेश के त्रिक से यह त्रिमूर्ति है, परन्तु यह और दूसरे देवताओं में प्रमुख है और सामान्यतः इन्द्र मृतेन्द्र या देवेन्द्र आदि नामों से पुकारा जाता है। त्रैमात्रिक देवों में वर्णित है उसी प्रकार पुराणों में भी यह अन्तरिक्ष तथा पूर्व दिशा के अधिकृत देवता माने जाते हैं, इनका लोक स्वर्ग कहलाता है। यह वज्रधारण करते हैं, बिजली को भेजते हैं और बर्षा करते हैं, यह अमरुत के साथ प्रायः युद्ध में लगे रहते हैं और उनकी मध्यस्थि करते रहते हैं, परन्तु कई बार उनमें पराजय भी हो जाती है। पुराणों में वर्णित इन्द्र काय-कला और आभार के लिए प्रख्यात है, इसका सर्वप्रथम बड़ा उदाहरण उनके द्वारा गोतम की पत्नी अहल्या का मनीषाहरण है जिसके कारण इन्द्र अहल्या-जग्न कहलाता है। गोतम अश्विनी के साथ से इन्द्र के शरीर पर स्त्री-योनित जैसे हजार बिजुल बन जाते हैं इसीलिए उसे सयानि कहते हैं, परन्तु बाद में यह बिजुल 'अग्नि' के रूप में बदल जाते हैं इस लिए वह सप्तसन्नेत्र, महत्स-यानि या सप्तस्राल कहलाने लगते हैं। रामायण में वर्णन आता है कि रावण के पुत्र मेघनाद ने इन्द्र को पराजय कर दिया तथा वह उसे उठा कर लका में ले गया, इसी माहात्म्य के कारण से उपलब्ध मेघनाद की इन्द्र-जित् की उपाधि मिली। ब्रह्मा तथा दूसरे देवताओं के बीच में पड़ने पर कहीं इन्द्र का झुटका हुआ। इन्द्र के विषय में बहुधा वर्णन मिलता है कि वह सदैव राजाओं को १०० वर्ष पूरा करने में रोकता रहता है, क्योंकि यह विश्वास किया जाता है कि जो कोई १०० वर्ष पूरा कर लेगा, वही इन्द्र का पद प्राप्त कर लेगा, यही कारण है कि वह सगर और रघु के बलीय कोशों को उठा कर ले गया, दे० रघु० तृतीय सर्ग। वह सदैव और सप्तस्राल करने वाले अश्विनी-पुत्रों से मध्यस्थ रहता है और अक्सरायें मंत्र कर उनके मार्ग में बिजुल डालने का प्रयत्न करता है (दे० अल्प-रत्न)। कहा जाता है कि उसने पर्वत के पक्ष काट

डाले जब कि वह कष्ट देने लगे थे। उसी समय उसने बल तथा वृद्ध की हत्या कर दी। इनकी पत्नी पुनोमा राजस की पुत्री है इनके पुत्र का नाम अयन्य है। यह अयन्य के पिता भी कहे जाते हैं। सम० - अयन्यः, -अयन्यः विष्णु और नारायण की उपाधि, -अयिः एक राजस -आयुधम् इन्द्र का सम्बन्ध, इन्द्रधनुस् रघु० अ०, कीलः-1 'मदर' पर्वत का नाम 2 चट्टान (लम्) इन्द्र की ध्वजा, -कुम्भरः इन्द्र का हाथी, एरावत -कुटः एक पर्वत का नाम -कीलः (बः), -बकः 1 श्वेत, मोक्ष 2 प्लेटफार्मे या सन्तान बना चवत्तरा 3 लोको या ब्रैकेट जो दीवार के साथ लगा हो, -गिरिः भद्रपर्वत -गुहः, -आशायिः इन्द्र का अध्यायक, अर्थात् ब्रह्मर्षि, -शोषः, -शोषकः एक प्रकार का कीटा जो मृतेन्द्र या साल रस का होता है, -चापम्, धनुस् (नपु०) 1 इन्द्रधनुस् 2 इन्द्र की कमान -आत्मः 1 एक शस्त्र जिसे अयन्य ने प्रयत्न किया था, युद्ध का दीवलेख 2 जादूगरी बाजीगरी -स्वनेन्द्रजल्पमदुश्च वन्दु जीवलीक, -शा० गाने, आलोक (वि०) छत्रपुर्ण, अवलम्ब-विक, प्रमात्यक (-क) बाजीगर, बाहुरर, -जित् (पु०) इन्द्र का जीतने वाला रावण का पुत्र जो लक्ष्मण के द्वारा मारा गया [रावण के पुत्र मेघनाद का दूसरा नाम 'इन्द्रजित्' है। जब रावण ने स्वर्ग में जाकर इन्द्र से युद्ध किया तो मेघनाद उसके साथ था - वह वहीं ब्रह्मर्षि के साथ लड़ा। शिव' से अवृण्य होने की शक्ति प्राप्त कर लेने के कारण मेघनाद ने आती इस बाहु की शक्ति का उपयोग किया, फलतः इन्द्र को बाध कर वह उसे लका में उठा लाया। ब्रह्मा तथा अन्य देवता उसे मुक्त कराने के लिए आये और उन्होंने मेघनाद को 'इन्द्रजित्' की उपाधि दी, परन्तु मेघनाद इन्द्र को मुक्त करने के लिए राजी न हुआ जब तक कि उसे 'अमरना' का बदला न दिया जाय। ब्रह्मा ने उसकी इस अनृत्ति माँग को मानने से इकार कर दिया, परन्तु मेघनाद अपनी माँग का निरन्तर आग्रह करता रहा और अन्त में अपना अभीष्ट प्राप्त कर लिया। रामायण से लक्ष्मण द्वारा मेघनाद का मिर काटे जाने का वर्णन है जब कि वह यज्ञ कर रहा था] 'हेतु, -विजयिन् (पु०) कश्यप, -सूक्तम्, -सूक्तम् कई का गद्दा, -बायः देव दाह का वृक्ष, -वीकः नीलकास्यमणि, -वीकः पत्रा -पत्नी इन्द्र की पत्नी अनी, -पुरोहितः ब्रह्मर्षि -प्रसन्न यमना के किनारे स्थित एक नगर जहाँ पांडव रहते थे (यही नगर आज कल वर्तमान दिल्ली है) - इन्द्रधनुस्संस्तोत्राकारि मा मन्तु वेदय -शि० २।६३, -अग्रथम् इन्द्र का सत्त, बज्र, -मेघकम्

संज्ञा.—**इन्द्र** 1. इन्द्र के सम्मान में किया जाने वाला उत्सव, 2. वरसात, — **लोका**: इन्द्र का संसार, स्वर्गलोक, — **ब्रह्मा**, — ब्रह्मा को छोड़ें के नाम दे० परिशिष्ट, — **अनु**: 1 इन्द्र का अनु या इन्द्र की मारने वाला (जब कि स्वराचात अग्नि स्वर पर है), ब्रह्मा की उपाधि, — **रघु**: ७।३५, 2 इन्द्र बिलका अनु है, अनु का विशेषण (जब कि स्वराचात प्रथम स्वर पर है) [बहु बटना सतपथ शास्त्र के एक उपाख्यान की ओर संकेत करती है, यहाँ बतलाया गया है कि अनु के पिता न अपनु पुत्र को इन्द्र के मारने वाला बनाने का विचार किया और उसे "इन्द्रजबुधंघत्स्" बोलने को कहा, परन्तु भूल से उसने प्रथम स्वर पर बलाचात किया और इन्द्र के द्वारा मारा गया - गु० शिक्षा-५२-मन्त्रो हीन स्वस्वो वर्णतो वा मिथ्याप्रयुक्तो न तथर्थाग्रह, स बाधव्यो यजमान हिनस्ति यजुर्इणम् स्वरोत्परापात् ।] **अन्नम**: एक प्रकार का कीड़ा, बीरबूटी, **भुत**, — **सुनु**, (क) जयन्त का नाम (ख) बर्बुत का नाम (ग) बानरराज बालि का नाम — **सेनापति**: इन्द्र की सेनाओं का नेता, कानिक्य की उपाधि ।

इन्द्रकम् [इन्द्रस्य राज्ञः क सुख यज-नारा०] नमा-प्रयत्न बड़ा करना ।

इन्द्राणी [इन्द्रस्य पत्नी आनुक + ङीप्] इन्द्र की पत्नी, शची ।

इन्द्रिक् [इन्द्र + च + इय] 1 बल, शक्ति (बहु गुण जो इन्द्र में विद्यमान था) 2 शरीर के वह अवयव जिनके द्वारा ज्ञान प्राप्त किया जाता है, ऐसे अवयव (इन्द्रियाँ) दो प्रकार के हैं (क) ज्ञानेन्द्रियाँ या बुद्धीन्द्रियाँ - श्रोत्र त्वक्चक्षुषी जिह्वा नासिका चंद्र पंचमी (कुछ के अनुसार 'मन' भी) (ख) कर्मेन्द्रियाँ - पायूपस्थ हस्तपाद शक चंद्र दक्षमी मूत्रा मनु० २।१९, 3 शारीरिक या पुनर्पोषित शक्ति, ज्ञानशक्ति 4 वीर्य 5 पाच की शक्त्या के लिए प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति । **सम**:- अगोचर (वि०) को दिखाई न दे सकें, — **अर्थ**: 1 इन्द्रियों के विषय (बहु विषय ये हैं - रूप शब्दो गन्धस्पर्शस्वादि विषया जमी-अमर०), **मन**: ३।३४, **रघु**: १४।२५, — **जाय-तन्मय** इन्द्रियों का जायात अर्थात् शरीर, — **गोचर** (वि०) जो इन्द्रियों द्वारा देखा या जाना जा सके (—रः) ज्ञान का विषय, **प्राक्**, **काल**: इन्द्रियों का समूह, सम्पत्ति रूप से रहण की गई पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ — **वैश्वामित्रिधराजो** विद्यामयि कर्षति — **मनु**: २।२१५, **विश्वामित्र** यजुरीन्द्रियवर्ध — **वि०**: १०।३, — **आत्मन्** केतना, प्रत्यक्ष करने की शक्ति, निष्पत्ति: ज्ञानेन्द्रियों का नियन्त्रण, **अन्ध**: अज्ञेयता, — **विश्रुति-पति**: (स्त्री०) इन्द्रियों का उन्मार्गनाशन, — **सत्सिद्धि**:

ज्ञानेन्द्रिय का संपर्क (चाहे वह बाह्य विषयों से हो या मन से) — **अन्ध**: अज्ञेयता, अज्ञेयता, अज्ञेयता ।

इन्धु (इ० वा०) (इन्धे वा इन्धे, इन्ध) प्रज्वलित करना, बलाना, धाग बलाना, (कर्मवा०—इन्धते) बलाना जाना, प्रदीप्त होना कपटें उठाना, लम्—, प्रज्वलित करना ।

इन्धु: [इन्धु + चञ्] इन्धन, (लकड़ी कोयला आदि) ।

इन्धनम् [इन्धु + क्तृ] 1 प्रज्वलित करना, बलाना 2 इन्धन (लकड़ी आदि) ।

इध: [इ + भन्, क्तिच्] हाथी, — **वी** इधिनी । **सम**:- **अग्नि**: सिंह, — **आत्मन्**: गणेश गु० 'गवानन्' — **मिथी** लिका चतुराई, बुद्धिमत्ता, सतर्कता, — **आत्मन्**: महाभय, — **वी**हा अल्पवयस्का इधिनी, **वी**हा: अल्पवयस्क हाथी, हाथी का बच्चा, **वृद्धि** (स्त्री०) इधिनी ।

इध्व (वि०) [इध गजमर्हति यत्] बलाघ्न, धनघात — **अन्ध**: 1 राजा 2 महाभय, — **अन्ध** इधिनी ।

इध्वक (वि०) [स्वाच् कन्] बलाघ्न, धनघात ।

इध्वत् (वि०) [इध् + क्तृ] इतना अधिक, इतना बड़ा, इतने विस्तार का — **इध्वत्वायुः** **वध**: १३, **इध्वत्** वर्षाणि तथा सहोष्मत् **रघु**: १३।१७, **इतने वर्ष** — **इध्व** तीतिरितीयमी — **वि**: २।३०, **इतनी** ।

इध्वत्, **इध्वन्** [इध् + तल् + टाप्, तल् वा] 1

(क) इतना, निश्चित मात्र वा परिमाण - **इध्वन्** कर्मणि यतया वा — **रघु**: १३।५, **य** ... यत् परि-
च्छेनुमियतयायाम्—१।७७ (ख) सीमित शक्त्या, सीमा — **न** गुणानामियतया **रघु**: १०।३२, 2 सीमा, मानक ।

इध्वन् [इध् + क्तृ] 1 धरस्वक 2 रिहाणी या कुनई भूमि, बजर भूमि, गु० 'हरिण' ।

इध्वन् [इयया जलेन माधनि वर्धते इति इरा मन् - **मन्** ज्ञत्स् मन्] 1 बिजली की कीब, बिजली के गिरने से पैदा हुई आग, 2 बाधवानक ।

इरा [इ + रन्, इ काम राति - रा + क वा तारा०]

1 पृथ्वी 2 वस्तुता 3 वाणी की देवता सरस्वती 4 जल 5 आहार 6 मधिरा । **सम**:- **ई**क: वधन विष्णु, गणेश, — **अन्ध** जोला, इसी प्रकार 'इरावरन्' ।

इरावत् (पु०) [इरा + क्तृ] समूह ।

हरिणम् [इ + रन्, क्तिच्] कुनई भूमि, रिहाणी जमीन ।

इर्षा - **कु** (वि०) [उर्व + आच्, पु०] माधक, हितक — **रः** (पु० स्त्री०) ककड़ी ।

इत् (पु० पर०) (इलति, इलित) का (पु० उन्न०) 1 जाना, चलना-फिरना 2 तोना 3 कैला, जेबना, ठाकना ।

इत्ता [इत् + क + टाप्] 1 पृथ्वी 2 पाय 3 वस्तुता — **दे**: 'इत्ता' । **सम**:- **मौक्त**:— **कन्** पु०, बरती भूमंडल, — **वर**: पहाड़ ।

हलिका [हल + कन् डवम्] पथी, धरती ।

इवका ला (ब० व०) [इन् + कल्, इन् + क्विप् + कल् वा] युगधारा मल्ल के ऊपर स्थित पौत्र तारे ।

इव (अव्य०) [इ + कन् व०] 1 की तरह, जैसा कि (उपमा दर्शाते हुए) वागार्थादि संपत्ती - १५० १।१ 2 माना, (उपमेला का दर्शाते हुए) पद्मा मीच गिराकिलम ग० १।६ लिख्योव तमो ज्ञानि बर्षन्वाञ्जन नमः मृच्छ० १।२४ 3 कुछ, दाहा या कदाचित् कदा इवमथ गण० 4 (प्रदत्त वाचक शब्दों से जुड़े हुए) सभवः बलादये ता मिसमन्दह - बिना सीना दया किमिव हि न बुद्ध रभु फले उत्तर० १।३० ६ इव किम प्रकार का किम भाग का गन्तमिब-केवल हण भर कं किणु, बिन् दिव-जग मा बोधा सा, इमो नकार ईवदिव नाव रतिव आः ।

इसीका इसीका ।

इव (१) (इ + कन् व०) [इच्छादि हट्ट] 1 कामना करना, चाहना प्रत्यय इच्छा हाना इच्छार्थ मव रिमपश्यते इ० २ 2 छात्र 3 प्रत्यय इच्छा का प्रयत्न करना मरणा करना, बुझना 4 अनकुल होना 5 ६ करना स्वीकृति देना (भा० व०) 1 चाहना श्रम 2 मियरिया जाना इच्छादेन-मियरि यन्तु । १२०० अनु बुझना कागिरा करना प्रयत्न करना अर्थ जा करना चाहना, परन्तु बुझना प्राप्त प्राप्त करना स्वीकार करना देवस्य गामन पक्षीय ग० ६ (ख) (दि० पर०) (इच्छादि हट्ट) 1 जाना चलना फिरना 2 फैलाना 3 हाथ फेरना अनु बुझना, बुझने के लिए जाना न रत्नमन्त्रप्यति मृच्छते हितत कु० १।४५ अ (प्राय पर०) 1 ६ देना हाथ देना, फेंक देना भाट्ट० १।१३७ 2 अजग प्रवण करना - किमर्थमेष प्रेषिता भव ग० ५ (ग) (स्वा० उभ०) (प्राय) जाना चलना फिरना अनु- अनु सरण करना ।

इव [इव + अव] 1 बलवाली शक्ति सम्पन्न 2 आश्विन मास पञ्चमिपञ्चमिभिषेसागमत्त शिव० ६।४९ ।

इवि (वी) का [इव गत्यादी क्त्वं अत इवम्] 1 सरकड़ा, नरकुल, अरवण रभु० १।२३ 2 बाण ।

इविः [इव + किरम्] अग्नि ।

इव् [इव + उ] 1 बाण 2 पौत्र की सख्या । सम० - अवयव अव्ययीक बाण की लोक, अवयव, -अवयव घनम्, ग्नु० १।३७ आत 1 घनम् 2 घनम्, बोद्धा, भग० १।६, १७, कार, - इव् (गु०) बाण बनान

वाला - घर क्त्वं घनम्, - एव, विसेवः तीर जाने का स्थान बाण का परास, - प्रबोधः बाण छोड़ना, तीर चलाता ।

इवुषिः [इव् + वा + कि] तरकस ।

इव् (गु० क० कु०) [इव + क्त] 1 कामना किया गया, चाहा गया, जो से चाहा हुआ, अभिलषित 2 प्रिय तमद दिया गया अनुकुल व्याग 3 पुत्र, आदर्शीय 4 प्रतिच्छन्न, सम्मानित 5 उत्कृष्ट, यज्ञों से पूजा गया - इवः प्रेमी, पति, - इवम् 1 बाह, इच्छा 2 मस्कार 3 यज्ञ (अव्य०) स्वच्छापूर्वक । सम० अव्यं अभाष्ट पदार्थ वापसि (स्त्री०) चाही हुई बात का हाना, वादी का वक्तव्य जो प्रतिवादी के भो अनुकुल हो - इष्टापत्नी शेकालमाह - अव्य०, मन्त्र (वि०) मुगध युक्त (- कः) मुगधिन पदार्थ (- वम्) रत्न, देव, देवता अनुकुल देव अभिप्रायक देव ।

इष्टका [इष्ट + कन्] ईर-मृच्छ० ३ । सम० मुगध ईटा का घर, - इष्ट (वि०), ईटा से बना (इष्टकानि भी), - स्थात घर की नीव रखना - एव ईटा से बना मार्ग ।

इष्टापूर्तम्, ममाहार इ० स० पूर्वपदार्थ] यथादिक् पुण्य कापी का अनुष्ठान, कर्त्तुं कोदना तथा दूसरे धर्मकापी का मन्त्रादन - इष्टापूर्तविषे सपलममन्तम् महावी० ३।१ ।

इष्टि (स्त्री०) [इव् - कित्] 1 कामना, प्रार्थना, इच्छा 2 इच्छुक होना या कोशिश करना 3 अभीष्ट पदार्थ 4 अभीष्ट नियम या आवश्यकता की पूर्ति (माध्यकार द्वारा कायायन के कर्त्तव्य अवस्था पतञ्जलि के माध्य में कुछ अतिरिक्त अ० ११ - इष्टया माध्यकारस्य) गु० उपमन्यायम् 5 अ० १ शीघ्रता 6 आभक्षण, आदेश 1 यज्ञ । सम० एव कर्त्तुम् इसी प्रकार 'मुष् - यन्तु यज्ञ में बलि दिया जाने वाला जानवर ।

इष्टिका [इष्ट + तिक्त् + टाप्] ईर आदि, दे० 'इष्टका' ।

इष्ट्यः [इव् + मक्] 1 कामदेव 2 वगन्तु चतुः ।

इष्ट्यः [इव् + क्त्वं] वगन्तु चतुः ।

इव् (अव्य०) [इ काम स्यति सो + क्विप् नि० कोलोप] कोष, पीडा और लोक की भावना को अभिप्रेरक करने वाला विषयवादि शोकक अव्यय ।

इव [इवम् + ह इसादेश] 1 यहाँ (काल, स्थान या विका की ओर मकैत करने हुए), इन स्थान पर, इस वक्ता में 2 इस लोक में (विप० वरच या अनुव) । सम० - अनुव (अव्य०) इस लोक में और परलोक में यहाँ और वहाँ, - लोकः इव् सतार वा जीवन, - एव (वि०) यहाँ विद्यमान ।

इहत्थ (वि०) [इह + त्थ] यहाँ रहने वाला, इस स्थान का, इस लोक का ।

ईष (वि०) [ईष् + क] 1 अपनाये वाला, स्वामी, मालिक, दे० नीचे 2 सन्निधाशी 3 सर्वोपरि—आः 1 मालिक, स्वामी (सर्व० के साथ या समास में), कर्षादिबीजा मनसो बन्धु कु० ३।३४ इसी प्रकार बाणेश और सुरेश आदि 2 पति 3 ग्यारह ४ शिव, —सा 1 दुर्गा 2 ऐश्वर्यमालिनी स्त्री, बनाइय महिला । सम० कोष उत्तर पूर्वी दिशा पुरी, —नगरी बनारस वाराणसी सब कुबेर का विशेषण ।

ईशान [ईश् ताच्छील्ये जानश्] 1 शामक स्वामी मालिक 2 शिव—कु० ७।५६ 3 सूर्य (शिव के रूप में) 4 विष्णु भी दुर्गा ।

ईशिता-व्यम् [ईशितो भाव ईशित + तल् + टाप् वत् वा] सर्वोपरिता महत्त्व शिव की आठ सिद्धियों में एक, दे० 'अजिमत या सिद्धि ।

ईश्वर (वि०) (स्त्री० रा -रो) 1 शक्तिस्मयन् योग्य मन्त्र (मुमुन क माध) कु० ४।११ 2 बनाइय होलनमद—रा 1 मालिक स्वामी ईश्वर साका जैन सेवने मन्त्र १।१४ 2 राजा राजकुमार शासक 3 बनाइय या बड़ा आदमी या प्रबलशक्ती बन्धु—हि० १।१५ तु० उल्टे बाम जेनी को 4 पति—कि० १।३९ ५ परमेश्वर 6 शिव विक्रम० १।१ 7 कामदेव रा, री दुर्गा । सम० निषध परमात्मा के अस्तित्व को न मानना नास्तिकता—बुद्ध (वि०) पुण्यात्मा अर्थात् भगवान् (नपु०) मन्दिर—सबन् राजकीय दरबार या मन्त्रा ।

ईश् (स्त्री० उभ०) (ईषित ईषित) 1 उड़ जगा 2 बैलना, नजर बालना 3 दना 4 मार डालना ।

ईष् [ईष् + क] आश्विन मास तु० ईष ।

ईषत (अध्य०) [ईष् + अति] 1 जगा, कुछ सोमा तक

बौद्ध सा—ईषत् बुद्धितामि—स० १।३ । सम०—उष्ण (वि०) पुनपुना कर (वि०) 1 बोझ करने वाला बनावास पूरा हो जाने वाला, —जलम् उचला पानी, —काष्ण् (वि०) हल्का पीला, कुछ सफेद, —पुष्ण् अन्ध और क्षणित व्यक्ति, —रष्ण् (वि०) पीला काल, हल्का काल—सप्त, —प्रसंज (वि०) बोझ से में सुलभ, —हस्त, बोझी हसी, मुस्कराहट ।

ईषा [ईष् + क + टाप्] 1 गाड़ी की फट 2 हलस ।

ईषिका [ईषा + कन्, इत्वम्] 1 हाथी की जीब की पतली 2 रगसाज की कँची 3 हथियार तीर, बाण ।

ईषिर [ईष् + किरिष्] अग्नि आग ।

ईषोका [ईष् + कृत् इत्वम् दीघञ्] 1 रगसाज की कँची 2 ईट 3 इषोका ।

ईष्य, व्य् इम इव ।

ईह (स्त्री० आ०) (ईहने ईहि) 1 कामना करना चाहना मोचना (कम० या मुन क साथ) भग० ७६।१० भट्टि० १।११ 2 पान कर का ३ न रचना 3 लक्ष्य जान ४ न करना ५ वाग वचना काशित करना, माधव्यं द्युतिदुना रचिगद् राश स्वचारात्ने भर्तु० २।६ रात्रि० २।१५ तम् 1 कामना करना इच्छा करना 2 करना का प्रयत्न करना काशित करना प्रियार्थ वाञ्छा-समुत्ति समी ४५१ कि० १।१२ ।

ईह, ईह अ [1 कामना इच्छा 2 प्रयत्न प्रयास, चर्चा मनः ०९ । सम० सुख 1 भविष्य 2 नाश वा न लट जिसमें व अक्षर दो है परिभाषा के लिए दे० सा० द० १११ बुद्ध नहिवा ।

ईहित (पु० क० क०) [ईह + त] बाढ़ा हुआ लोभ हुआ प्रयत्न किया हुआ तम् 1 कामना इच्छा 2 प्रयत्न प्रयास 3 अध्यवसाय, कार्य क्रय कि० १।२५ ।

उ [अत् + ड] शिव रा नाम, ओम् के तीन अक्षरों (अ + उ + म्) में से दूसरा दे० अ (अध्य०) 1 पूरक के रूप में काम में आने वाला अक्षर—उ उमेता—सिद्धा० 2 निम्न वर्णों का प्रकट करने वाला चिह्न वाचिद्योतक अव्यय, (क) पुकार—उ मेत माता तपसो निषिद्धा पश्चादुदाक्या सुमुखी जगाम कु० १।२६ (क) ओष (व) अनुकम्पा (व) आवेश (ङ) स्वीकृति (च) प्रयत्न वाचकता या केवल (छ) पूरार्थक, श्रेष्ठ साहित्य

भ मुख्य रूप में अव्य (अथा) न (नो) और क्रिय (क्रिप्) के साथ प्रयुक्त होता है दे० शब्दों को ।

उक्त (अ० क० क०) [उक्त् + क्त] 1 कहा हुआ, बोला हुआ 2 निषेध, बताया हुआ (विप० अनुमित या सभाषित) 3 बोला हुआ, संबोधित असावुक्तों में महाय एव—कु० ३।२६ 4 वर्णन किया गया बयान किया हुआ, कृतम् भाषण शब्दसमुच्चय, वाक्य । सम०—अनुक्त कहा और बिना कहा आ

उपसंहार-संक्षिप्त वर्णन, माराग, इतिथी, निर्वाहः
वही बान का निर्वाह करना, बुझ ऐसा शब्द (स्त्री०
या लृ०) जा पु० भी हो, और जिसका पु० में भिन्न
वर्ण लिङ्ग को भावना से ही प्रकट होता है प्रत्युक्त
भाषण और उत्तर व्याख्यान ।

उत्तिः (स्त्री०) [वृत् + क्तिन्] १ भाषण अभिव्यक्ति,
वक्तव्य उत्तिरर्थात्तरन्यास स्यात्सामान्यविशेषया
चन्द्रा० ५।१२०, मनु० ८।१०४ २ वाक्य ३ अति
व्यक्त करने का शक्ति शब्द की अभिव्यञ्जनाशक्ति
- जैसा कि एक्योक्तः पुष्पवती दिवाकरनिशा
करी श्रमर० ।

उत्तम् [वृत् - यक्] १ कथन वाक्य स्तम्भ २ स्तुति
प्रशंसा ३ सामवेद ।

उत्त (स्वा० उभ०) । उत्ति उत्ति १ छिड़कना नीला
करना तर २ तर व माना भीषण मार्गितमन्त्रदा
भट्टि० १।१० ३।५ जि० ५।२० रघु० १।१।
२० कु० १।५ २ निवारना विकान करना
अभि पवित्र तथा अभिमर्षित जल छिड़कना
गिरमि शब्द-प्रमाणाय २८ ६ पारि इष्य
उत्तर छिड़कना, प्र पवित्र जल के छोटे टकर
अभिमर्षित करना प्राणान्तये तथा श्राद्धे प्रक्षाल
द्विक्रमाय याज्ञ० १।१७० मनु० ५।७ सत्र
जल के छोटा से अभिमर्षित करना याज्ञ० १।६ ।

उत्तलम् [उभ० मय०] १ छिड़कना २ छोटे टकर अभि
मर्षित करना-विमलमन्त्रालक्षणान् प्रभाषान् रघु०
५।२१ ।

उत्तम् (पु०) [उभ० क्तिन्] बेल या मीठे क०
डा०० (कुप समामा में उत्तन का उत्त रत्न आता है
महाक्ष बढ़ास आदि) । मम० तर छोटा बेल
मु० कन्सर ।

उत्त, उत्तम् (स्वा० पर०) (आत्मनि, उत्तान् आत्ति
उत्तिन) जाना हिलना हलना ।

उत्ता [उत्त + क० टार] पत्तीला डगवा ।

उत्तव (वि०) [उत्ताया मरकृतम यत्] १ पनानी में
उठाला हुआ-शुल्बमुख्य च हामवान् भट्टि०
५।१ ।

उत्त (वि०) [उत्त + क्तिन्] १ भीषण कर
द्विष, जगता (दृष्टि आदि में) दंगन २ ध्वज
डगवाना भयानक भयान महानिपातप्रथम-रघु०
३।५०, मनु० ६।७५, १-१७५ ३ शक्तिनाको मर
बुन दातुन नाउ उत्ताता बलाम् पा० ३ अयन
गर्भे उत्तगात्राम मय० ११० अने० पा० ४ ताक्ष
प्रथम, गम ५ अंता मा ७ १ गिर वा २
बनमकर जानि क्षत्रिय रिता और साइ माना की
मताम ३ केरल देस (वतमान मलाबार) ४ रोड

रस । सम०-गव (वि०) नीलन गव वाला
(वृ०) १ चम्पक बल २ लहसुन -चारिणी,
- चडा दुर्गा देवी-जाति (वि०) नीच वश में
उत्पन्न जात्रज -हर्षनक्षत्र (वि०) बोर दर्शन वाला
भयानक दृष्टि वाला, -कम्पम् (वि०) मजबूत वस्तु को
धारण करने वाला (पु०) शिव, इन्द्र -लेखरा शिव
की बाँटी गया, -लेख मधुरा का राजा और कस का
पिता (कम ने अपन पिता को गद्दी से उतार कर
कारागार में डाला था परन्तु कुपन ने कम की मार
कर उसके पिता को कारागार से मुक्त कर सिंहासना
सीन किया) ।

उत्तपश्य (वि०) [उत्त + पश्य + क्तिन्, मुदागम] भीषण
दृष्टि वाला डरावना, विकराल ।

उत् (द्वि० पर०) [उत्त्यति उत्तिन या उत्त - अक्षिकान्
म भू० क० कृ० के रूप में प्रयुक्त] १ मजबूत करना
एकत्र करना २ शीकीन होना प्रसन्नता अनुभव करना
३ उत्तिन या वाग्य होना अभ्यस्त होना ।

उत्तिन (भू० क० कृ०) [उत् + क्तिन्] १ वाग्य ठीक
सही उपयुक्त-उत्तिनस्तदुपालम्भ - उत्तर० ३, प्राय
मुमुन के साथ उत्तिन न ते मज्जलकाले रोदिनुम
पा० ६ २ प्रचलित प्रचारण-उत्तिनत्तु करणवेध
पा० ३ अभ्यस्त प्रचलित (समाप्त में)-नीवार
भार्यपारिवर्ति रघु० १।२० २।२५ ३५४, ६०
१।१९ वि० १ ३ ६ ४ प्रशस्तभाव ।

उत्तव (वि०) [उत् + क्तिन्] १ (सभी बानों में) ऊँचा
रखा भूतियारण-रघु० कु० ७।६३ उत्तन,
- १० (परिवार आदि) । ऊँचा ऊँची आबाद वाला-
उत्तवा शिक्षण-वि० १ ३ नीच दाहण, बोर ।
सम तब नाट्यन का पद-सात्व ऊँचा मगोत
नय आदि-नीच (वि०) १ ऊँचा नीचा २ विविध
समाटा, टिका, ऊँचे मस्तक वाली स्त्रा, लखव
(वि०) ऊँचा पद धरण करने वाला (नक्षत्रादिक)
रघु० ३।१३ दे० दन २२ मत्ति० ।

उत्तवर्क (प्रथ०) [उत्तरेम + अक्] १ ऊँचा ऊँचाई
पर उत्तग (अन्त० भी) -अनन्दयट्टेरमिसायमुचर्क
पा० १।१६ १६।६६ २ ऊँचे स्वर बल ।

उत्तवधुस् (वि०) [वृत् + म०] १ ऊपर की ओर किए
हुए ऊपर की ओर दृष्टि हुए २ जिसकी ओर निकाल
दो गई हो अर्थात् ।

उत्तवध (वि०) [प्रा० म०] १ भीषण, भयानक उत्त
- दुर्गता ३ ऊँचा आबाद वाला ४ ओची, चिह्न
चिह्न ।

उत्तवत्त (उत्तुष्ट चहो वत्त - अत्या० स०) रात का
अन्तिम पहर ।

उत्तवत्त [उत् + वत् + अक्] १ लघु, राशि, समुदाय

उज्ज्वलम् [उज्ज् + त्यट्] सेत में बड़े जनाब के दावों को एकत्र करना ।

उज्ज्व [उ + टक्] १ पना २ बाह । सम० ज् जम्
(उट्टेयो जायते) जोपडी, कुटिया, आधम
(पणशाखा) उज्ज्वारविच्छेद नीवारबलि बिलोक-
यत सं० ४।२०, रघु० १।५०, ५२।

उज्जु (स्त्री०) उज्जु (नपु०) [उज् + कु बा०] १ उज्ज, तारा इन्दुकाशान्तरितोद्गुल्या - रघु० १६।६५ २ जल (केवल नपु० में) । सम० ज्ज्वल राशि चक - ए पम् कण्ठो का बना बेडा - नितीर्धरसर मंगहादुहपेनास्मि सागरम रघु० १।२, वनोद्भव परलोकनदी तरिष्ये - मृच्छ० ८।२३ (घ) चद्रमा मृच्छ० ४।२४ - वसि राक्ष चन्द्रमा जितमुह पतिमा - रत्ना० १।५ रसाग्निकमुहपेनैव रश्मय - कु० ५।२२ चक आकाश अनगिस् ।

उज्ज्वर [उ सम्भु नृषांति उ, व् लघु मुम उज्ज्वर उज्जर - प्रा० सं० दस्य इत्यम] १ गलर का दक्ष (जोडुवर), २ घर की देहली या इयोडी ३ हिजड़ा ४ एक प्रकार का काष्ठ (- रज् भी) रम् १ गलर का फल २ ताबा ।

उज्ज्व - उज्ज्व ।

उज्ज्वलम् [उद + वी + ल्यट्] उपर उडना उडान लेना गतो विषयोद्भवने निराजनाम ने १।१-५।

उज्ज्वार (वि०) [प्रा० म०] १ रज्ज्वर धट्ट २ प्रबल, प्रयावत उज्ज्वारव्यस्तविस्तारिदो मण्डपयो सितस्मावगम मा० २।२३।

उज्ज्वी (भु० क० क०) [उज् वी + क्त] उडा हुआ उपर उडना हुआ मज् १ उपर उडना उडान लेना २ पक्षिया की एक विशेष गान ।

उज्ज्वीकण [उज्ज म इव आचरति यज्ज उज्जीय + ल्यट्] उडान ।

उज्ज्वीक [उज् + वी + क्विप्] उज्ज्वी तस्य ईग [शिव । उज्जु [उज् + टक्] देश का नाम वर्तमान उडीमा दे० ओडु । उज्ज्वरक [?] आर का लहड़ गोला रानी तबोडोरक खज - पात्र० १।१२८ ।

उज्जु (अव्य०) [उ + क्विप्] (क) सन्देह (ब) प्रपन्न बाधकता (ग) लोचविचार और (घ) तीव्रता ।

उज्जु (अव्य०) [उ + क्त] १ विन्यासित भावनाओं को अभिव्यक्त करने वाला अव्यय - (क) सन्देह अनिश्चितता अनुमान (ग), - सत्किमयमातपदोष स्यादुत यथा मे मयसि वर्तते - ज० ३ स्वाभ्युपयुक्त पुरुष गण० (ब) विकल्प प्राय 'कि का सहवर्ती (ग), - किमिद गुरुभिरुपदिष्टमुत बर्षसास्त्रेषु यज्जिमन मोक्षप्राप्ति-यकिरियम् - का० १५५, कु० ६।२३, 'उज्जु' के स्थान में 'आहो' या 'आहोस्मिन्' भी प्रयुक्त होता है, कई

बार तो 'आहो' 'आहोस्मिन्' या 'स्मिन्' को 'उज्जु' से जोड़ दिया जाता है (ग) साहचर्य सयोन (और भी) सन्देह द्वारा समुच्चयार्थकता का बाध कराने वाला - उज्जु बलवानुभावक (घ) प्रपन्नबाधकता - उज्जु दण्ड पतिष्यति २ अस्ति, हमके विपरीत, दूसरी ओर, बल्कि - सामबादा सकापस्य नस्य प्रयुत दीपका सि० २।५५ ३ किम् कितना अधिक कितना कम दे० किम् उज्जु उज्जु गया - गकमेव वर पुमान्मृत राज्यमृताश्रम गण० ।

उज्ज्व (?) अगिरा व पुत्र यथा बृहस्पति का बडा भाई । अनुज, अनुजन्म्य (पु०) बहस्पति देव ताओ का मुख तस्यमृतप्यानुजवज्जमादाव गदावज्जम - सि० २।६९ ।

उज्जु (वि०) [उज्-ज्वाचें क्त] १ इच्छुव, लालायित उत्कठित (समास में) - अस्मितासमागमोत्कठित क० ९।१० मानमात्का - अथे० ११ कई बार तुमुन के साथ - सि० ४।१८ २ विद्वान्, दुखी शोकाविष्ट ३ ऊचना उज्ज्वल्युक्त (वि०) [व० सं०] बिना अगिया पवन या बिना कवच धारण किये हुए ।

उज्जुट (वि०) [उज् वट्] १ बडा प्रशस्त उत्तर० ४।२९ २ दक्षिणाली ताकनवर भोजन ३ अत्यधिक ग्राहक अत्युक्त पापपुण्यीरद्वेव फलमस्तुति सि० १।२८ ४ अग्रपूर समुद्र ५ मांदासेवी मदमत्त उन्मत्त मद्यभट्ट ६ श्रेष्ठ उन्मत्त ७ विषम ८ १ हाथों के घमनक में बहनवाला मद २ मदयकन हाथी ।

उज्जुष्ठ (वि०) [उज्जु वट्] १ गर्दन उपर की उठाए हुए (प्र०) तन्वर तैयार, करन के किए रसुक (ममात म) आश्रयना कष्ट मा० १।५।११ ८ (अव) विन्यास उन्मत्त - ठ ठा मभोग करन की एक गति ।

उज्जुष्ठा [उज् + कष्ट + प्र । टाप्] १ विन्यासिता बर्चनी - पारस्य-पक्ष सकुन्तलेति हृदय मण्डपमृत्कण्ठया श० ४।२ २ प्रिय वस्तु या प्रियतम पाने की लालसा - अष्टिराधिक सारकउन्मत्तशरीर अमर २४ ३ खेद, शोक किसी प्रिय वस्तु या व्यक्ति का लुप्त हो जाना याताकण्ठा मा० १।१५, म० ८३ ।

उज्जुष्ठित (भु० व० क०) [उज् + कष्ट + क्त] १ विन्यासित व्यक्तित्व जाननाला शोकाव्यस्त २ किसी प्रिय वस्तु या व्यक्ति के लिए लाक्षाधिक, ला अपने अनुपस्थित प्रेमी या पति से मिलने की प्रबल लालसा रखने वाली नायिका आठ नायिकाओं में से एक सा० व० १२१ में दी गई वीरप्राथा आगन्तु कृत चित्तोपेक्ष वैवाश्रायाति यतिव्य, तदनायमनुवाता विरहोत्कण्ठिता तु सा ।

उत्कण्ठ (वि०) [उत्प्रत कण्ठोऽग्र्य ब० म०] गर्दन
ऊपर उठाये हुए, उद्गीर्ण उत्कण्ठर दाहकमित्युवाच-
मि० ४।१८।

उत्कण्ठ (वि०) [ब० स०] कापना हुआ, -व, यन्म्
कापना कपकपी, आभ किमधिकतमोत्कण्ठ दिश
मयुदीक्षते अमर ४८, मालादि० ३३।

उत्कार [उद् + कृ + क्त] १ डेर समुच्चय २ अम्बर
बढ़ा ३ मलबा मुच्छ० ३।

उत्कर्ष [ब० स०] एक प्रकार का बाध उपकरण बाजा।
उत्कर्षणम् [उद् + कृ + क्त] १ काट देना, फाड़ देना
२ उखाड़ देना मुलाच्छदन।

उत्कर्षः [उद् + कृ + क्त] १ ऊपर २ नीचता
२ उन्नति प्राप्ति उदय समाधि निनीष कुलमुख
गम मनु० ४।२४४१।-३ ३ बुद्धि बहुतायत
आधिक्यता-यवानामपि भवानामत्कर्षं पश्युर्गुणा -रघ०
४, ११ ४ उत्कृष्टता सर्वोपरि गुण यश उत्कर्षं
स व धर्म्मिना यदियं स सिध्यन्ति मरुते जले- ग०
४, ५ अहमन्यता जेभी ६ प्रसन्नता।

उत्कर्षणम् [उद् + कृ + क्त] १ ऊपर खींचना ऊपर
लेना ऊपर करना।

उत्कल [उद् + कल् + क्त] १ एक देश का नाम वर्तमान
उडीसा या उस देश के निवासी (ब० व०) जनप्राय
प्रान्देश उत्कल परिकीर्तित-द० आठ उत्कला-
दक्षित पश्च रघु० ४।३८ २ बहुलिया बिर्हामार
३ कुली।

उत्कल्य (वि०) [ब० स०] पृष्ठ फैलाये हुए और सीधी
उठाये हुए रघु० १६।१४।

उत्कलिका [उद् + कल् + क्त] १ चिन्ताचरणा बेचैनी
जाना नोकलिका -अमर ३८ २ लालसा करना,
खेद प्रकाश करना किसी वस्तु या व्यक्ति का लपट
हो जाना ३ काम क्रोडा, हला ४ कन्नी ५ तिरंग
क्षुभितमुत्कलिकानुराग मन तरंगा द्वाला लब्ध
मा० ३।१० (यही म्ब उत्कलिका का अर्थ 'चिन्ता
चरणा' है) मि० ३।३०। सम०-प्रायश्च गहरचना
का एक प्रकार जिसमें समाम बहुत दो तथा
कठोर वर्षा हो भवदुर्लभिकापय समामाह्य द्वा
जाम्- छ०।

उत्कल्यणम् [उद् + कल् + क्त] १ फाड़ना ऊपर का
खींचना २ खींचना, (हल आदि) खींच कर ले जाना
- सख सीरोत्कल्यणसुरभि ज्ञेयमाहव्य मालम् मेघ०
१७, ३ रगडना -भावि० १।३३।

उत्कारः [उद् + कृ + क्त] १ अनाज फटकना २ अनाज
की डरी लगाना ३ अनाज बोने वाला।

उत्कालः, उत्कल, उत्कलिका [उत् + कल् + क्त, स्मृत्,
भृत् वा] लक्षारणा, बले की ताक करना।

उत्काल (वि०) [उद् + कृ + क्त] हुआ में उड़ता हुआ, ऊपर
का बिखरना हुआ, धारण करना हुआ-कु० ५।२६,
५।९ रघु० १।३८।

उत्कीर्तनम् [उद् + कृ + क्त] १ प्रशंसा करना, कीर्तिवान
करना २ घोषणा करना।

उत्कुटम् [उत्प्रत कुटो पश्च ब० स०] ऊपर को मुह करके
लेटना या माना चित लेटना।

उत्कुणः [उद् + कुण + क्त] १ लम्पल २ वै।

उत्कुल (वि०) [उत्काल कुलान् अग्रा० स०] पतित,
कुल का अपमानित करने वाला-यदि यथा बदति
क्षितिपन्था, स्वामी कि पितृकुलया त्वया--
श० ५।३३।

उत्कृष्ट [प्रा० स०] (कायल की) कृक।

उत्कृष्ट [अग्र कृत्प्रय ब० स०] छाना छनरी।

उत्कृष्टम् [उद् + कृ + क्त] कटना ऊपर को उछलना।

उत्कूल (वि०) [उत्काल कुलान् अग्रा० स०] किनारे
में बाहर निकल कर बहना वाला।

उत्कूलित (वि०) [उद् + कूल + क्त] किनारे तक पहुँ-
चने वाला मि० ५।३०।

उत्कृष्ट [पृ० क० कु०] [उद् + कृ + क्त] १ उम्माड़ा
हुआ उठाया हुआ उन्नत २ अच्छे प्रमुख उत्तम,
सर्वोच्च मनु० ५।१६३ ४।२८१ बल -पश्च०
३।३६ बलवान् ३ जोता हुआ, हल चलामा हुआ।

उत्कोच [उत्कुच + क्त] रिचक - उत्कोचमिव दृढी
-का० २३० याज्ञ० १।३३८।

उत्कोच [उत्कोच् + क्त] १ घूम रिचक २ (वि०)
[उद् + कुच् + क्त] 'रिचक' बल लेने वाला
मनु० १।२५८।

उत्कण्ठ [उद् + कन् + क्त] १ ऊपर जाना बाहर
निकलना, प्रस्थान २ कमोन्नति ३ बिचलन, क्षति
कमज उल्लघन।

उत्कण्ठम् [उद् + कन् + क्त] १ ऊपर जाना बाहर
निकलना प्रस्थान २ बढ़ाई ३ पीछे छाड़ देना अपने
बड़ जाना ४ (शरीर में से) आग्रा का पलायन
अर्थ मृत्यु-मनु० ५।६३।

उत्कान्तिः (स्त्री०) [उद् + कम् + क्त] १ बाहर निक-
लना, ऊपर जाना कृच करना २ आगे बढ़ जाना
३ उल्लघन अलिकमज।

उत्काच [उद् + कम् + क्त] १ ऊपर या बाहर जाना
स्थान करना २ आगे बढ़ जाना ३ उल्लघन
अलिकमज।

उत्कोशः [उद् + कुश् + क्त] १ हल्का गुल्फा गुलपपाडा
२ घोषणा ३ कुहरी।

उत्कोश [उद् + कुश् + क्त] बाढ़ या तर होना।

उत्कोशः [उद् + कुश् + क्त] १ उत्तेजना, अगान्ति

उत्तरेय (अन्व०) [उत्तर + एतच्] (सब०, कर्म०) के साथ बचवा समान के अन्त में) उत्तर की ओर, के उत्तर दिशा की ओर तथावार बनपनिगृहानुसारेणा-स्वदीयम्—वेध० ७७ अ०० पा० मा० १।३५।

उत्तरेयुः (अन्व०) [उत्तर + एतच्] अगले दिन, आगामी दिन, कल ।

उत्तरार्धम् [उद् + तर्ज् + स्युट्] अबरदम्न शिखरी ।

उत्तार (वि०) [उदगतस्तानी विस्तारो यस्यान् ब० स०] 1 पसारा हुआ फैलाया हुआ विस्तार किया हुआ प्रसृत किया हुआ—उत्तर० ३।२३ 2 (क) चित लेटा हुआ—मा० ३ उत्तानोन्मूलनमृकपात्रितादर सनिभे—काव्य० ७ (क) सीधा बड़ा 3 मूला 4 स्पष्ट, निष्कपट, बरा स्वभावोत्तानहृदय श० ५ स्पष्टवक्ता 5 नवीन 6 छिछला । मम० पाव एक राजा ध्रुव का पिता जो ध्रुव (उत्तानागद का पुत्र), ध्रुव तारा शब्द (वि०) पीछ के बल सोता हुआ, चित लेटा हुआ करा उत्तानसाय पुत्रक जन विष्पति मे हृदयाह्लादय बा० ६० (य बा। छोटा बच्चा दूध पीता या दुधमहा बच्चा शिशु ।

उत्तार [उद् + तर्ज् + घञ्] 1 भारी गर्मी जलन 2 कष्ट, पीडा 3 उन्मेषना आग ।

उत्तारः [उद् + तर्ज् + घञ्] 1 परिवहन, बहन 2 घाट उतरना 3 तट पर लगना तट पर उतरना 4 मुक्ति पाना 5 बचन करना ।

उत्तारक [उद् + तर्ज् + घञ्] 1 उद्धारक बचान वाला 2 शिब ।

उत्तारकम् [उद् + तर्ज् + घञ्] उतारना उद्धार करना, बचाना, ब विष्णु ।

उत्तार (वि०) [अस्या० स०] 1 बड़ा मजबूत 2 प्रबल धोर—वि० १।२।३ 3 दुर्धर्ष, भयानक, भाषण उत्ता कास्त हमे गभीरपयस पुण्या सान्निह्यम् उत्तर० २।३०, शि० २०।६५ मा० ५।११ ४ दुर्कर कठिन 5 उन्नत, उन्मूग ऊँचा—शि० ३।१—ल लक्ष्म ।

उत्तुङ्ग (वि०) [प्रा० म०] उत्थ ऊना लडा करप्रच धामुत्तुङ्ग प्रभुशक्ति प्रधीयमीम् शि० २।८९ हंम पीछानि २।५।

उत्तुङ्ग [उद्गत तुषोजयाम् ब० स०] मुसी से पृथक किया हुआ या मुना हुआ (आवा) अत्र ।

उत्तेजक (वि०) [उद् + तिज् + णि + घञ्] 1 भडकाने वाला, उकसाने वाला, उद्योपक क्षुब्ध, काम आदि ।

उत्तेजनम्, -ना [उद् + तिज् + घञ्] 1 जोश दिलाता, मडकाना, उकसाना—ममर्ष प्लाकी—बुद्धा ४, महावीर २, 2 डकलना, हाँकना 3 बजना, प्रेषित करना 4 तेज करना, धार लगाना, (अस्त्रादिक) बडकाना 5 बढ़ावा देना, प्रोत्साहन देना ।

उत्तोत्त (वि०) [ब० स०] उठो हुई या लड़ी मेहराबो आदि से सजा हुआ उत्तारम् राजपथ प्रपेदे कु० ७। ६३, रघु० १५।१०।

उत्तोत्तम् [उद् + तुज् + णि + घञ्] ऊपर उठाना, उभारना ।

उत्तार्य [उद् + त्यञ् घञ्] 1 निवारित दना छोड़ देना 2 फेंकना उछालना 3 मासायिक वासनाओं से मन्याम ।

उत्तरात् [उद् + तस + घञ्] भयन्त भय आनक ।

उत्थ (वि०) [उद् + स्था + क] (कवल समान क प्रन मे प्रयुक्त) 1 से पैदा या उत्पन्न उदय होने वाला क्रम सेने वाला दशमका देन ममोत्तन ५० १। ६।१५ रघु० १५।१५ 2 ऊपर उठना हुआ, ऊपर आना हुआ ।

उत्थानम् [उद् + स्था + घञ्] 1 उदय होने या उतर उठने की क्रिया उतरा—मनेरत्त घानम मने ५।० 2 (नक्षत्रादिक का उदय होने या उ० ५। ३ उदगम उर्ध्वनि 4 मन्थन 5 प्रयत्न आगम वेत्ता मदस्तेदङ्गजादः लघुभ्रमण यनयाय बा० श० ५।५ यत्नान् मय मष्ट मन० ५।५५ ६ (नक्षत्र लिष्ट) प्रयत्न ममर्षान अभिरक्षण 6 योग्य 7 हल प्रमजना 8 यद, लडाई 9 जेग 10 अंगन यमउत्त 11 अर्वा सामा हद 12 जगन एकवर्ती 1३ उठनी कारिक-मदी एकादश विष्णुआदि ।

उत्थापनम् [उद् + स्था + णि + घञ्] 1 उठाना बड़ा करना जगाना 2 उभारना उखाड़ना 3 उत्पन्न करना भडकाना 4 जगाना प्रबुद्ध करना (आत्म० भी) ५ बचन करना ।

उत्थित (भू० क० क०) [उद् + स्था क्त] 1 उदित या (अपन आमन से) उठा हुआ बचा निराश्रय धितमुधित मर रघु १६१ ५।१० १६१ कु० ७६१ 2 उग्राग गया ऊपर गया हुआ शि० ११ ३ जाग उगम उगमन उदितवन रघु० २।५१, ५२ वरु जैया २ आग 4 बडला हुआ बर्धनजेल (बल म) प्रगीर करना हुआ 5 मोमा बड 6 विमन प्रमन—श० ६।६ मय० अर्धुनि फेलाई हुई इयडा ।

उत्थिति (रत्ना०) [उद् + स्था + क्तिन्] उन्नति ऊपर उठना ।

उत्थानम् [वि०] [व० म०] उत्थनी पलवा बाका ३२५ शमनानेयनयागमदुर्वात्म श० ६।१५ विक्रम०० ।

उत्थत् [उद् + पठ् + अच्] पक्षी ।

उत्थानम् [उद् + पठ् + स्युट्] 1 ऊपर उठना उछलना 2 ऊपर उठना या आना चढ़ना ।

उत्थत्तक (वि०) [उत्थोत्तिता पलाका यध ब० स०] बड़ा

3. अनुमान, अटकल 4. तुलना करना।

उत्प्रेक्षा [उद् + प्र + ईक्ष + अ] 1. अङ्कल, अनुमान
2. उपेक्षा, उदासीनता 3 (अल० सा० में) एक बलकार
जिसमें उपमान और उपदेय को कई बाधों में ममान
समझने की कल्पना की जाती है, ओ उत समानता के
आधार पर उनके एकल्य की समीक्षा की और स्पष्ट
रूप से या किसी तात्पर्यार्थ के द्वारा मकेत किया जाता
है—उदा० शिष्यजीव तमो ज्ञानि वर्णतो जाड्यजन नम
—मुद्रा० १३३४ स्थित पृथिव्या इव मानदण्ड
—कु० ११, रु० सा० ६० ६६-९२, और उत्प्रेक्षा
के प्रत्यय लु० ।

उत्पन्नः [उद् + प्लृ + अप्] उत्पन्न-कृ, उत्पन्न, -ना विन्ती।
उत्पन्नान् [उद् + प्लृ + ल्यट्] कृदन्ता, उत्पन्नना अप्य मे
छलीय लगाना।

डाकलक्ष् [प्रा० स०] उत्तम कल ।

उत्कालः [उद् + कल् + घञ्] । कृद्, छलाग्न इत्यर्थात्
 --मृच्छ० ६, २. कदने की स्थिति ।

उत्प्लव (मू. कं. कं.) [उद्. कुल. क.] 1 लुप्ता
हुआ, (कुल की भाँति) विधा हुआ 2 लब्ध लुप्ता
हुआ, वसति, विस्तारित (शब्.) 3 मृता हुआ
बगीर में फूटा हुआ 4 पीठ के बल सोया हुआ. तु.
उत्पान, -- लब्ध योगि, भग.

उत्सः [उनति जलेन, उद् + स किञ्च नञोप]
 1. भरना, फौदारा 2. जल का स्थान ।

उत्तरः [उद् + सञ्च + घञ्] 1. गोरं - पक्ष्मण्डलम्
 -- उत्तर० १, विक्रम० ५१० न केवलम्पुत्राद्विषय
 न्यनोरकोपि मे पूर्ण - उत्तर० ६, पद्य० ८३
 2. बालिमन, सयकं, सयोग-मा० ८१६, ३ भीतर गडोम
 -- दरीगृहोत्तमनिषयनभस कु० ११०, शब्दार्थम्
 -- पद्य० १३४ अनङ्ग, पार्श्व, बाल-पुत्रो बालिमनम्
 -- रघु० ५७४, १४७६ 5. तित्तकं ऊपर का भाग या
 कृष्ण 6. ऊपरी भाग, शिखर 7. पहाड़ की भाग या
 कृष्ण तपोवत्कृमिवाकरोह-रघु० ६३३ 8. घर की छत

अलसकृत (वि०) [उत्सङ्ग + इत्थ] 1. संयुक्त सम्मि-
कृत, संपर्क में लाया हुआ—शि० ३।७९, 2. मोद
में लिया हुआ ।

उत्तरङ्गनाम् [उत् + गङ् + लृट्, ऊपर को फेंकना, ऊपर उठाना।

उल्लङ्घ (यू० क० ६०) [उद्+सद्+क्त] १. सङ्घा
 हुआ २. मष्ट, बर्बाद, उखाड़ा हुआ, उखाड़ा हुआ
 —उत्पन्नशब्द—का० ११४, बर्बाद —प्रकारध्वज इत्यादि—
 लक्ष्यविग्रह—का० ५४, भग० ११४ 'निद्रा'—का०
 ७३१ ३. क्षयित, क्षाप्त का भाग ४. व्यवहार में
 न आने वाला, विलुप्त (पुनर्काव्यिक) ।

उत्तर: [उच् + मृज् + घञ्] 1. एक ओर रख देना, छोड़ देना, निलजाल देना, स्थगन - कु० ७/४५, 2. उछेलना, गिरा देना, निकालना -- नागोत्तराङ्गनरवर्गः मेघ० ११/२७ 3. उगहार, दान प्रदान मनु० ११/१८ 4. व्यन करना 5. होका खाना, खका छोड़ देना त्रैसा कि व्यासार्थं मे 6. आहुति, तर्पण 7. बिच्छ, भल आदि - पुराण, मलमुखा 8. पूजा (अथ-यन या त्रातादिक की - मु० उन्मुखा तै अथा य सामान्य निधम य। विवि (विषय) अपघात एक विशेष निधम । अपघादीत्याः सवर्गं कृत्स्नानां पदं कु० २/१७ आचार इवोक्ता व्यावर्तितुमी-द्वार - रघु० ११/७ 10) गता ।

[illegible]

उत्तरार्धः - संपन्नम् : ३२ : सुखं सुखा, सुखं वा : ३३
को जाता यः सखता ३४ सुखा, सुखा : ३५

उत्तपिन् वि०। [उ० + नृ + क् + क्तिन्]। ऊपर की ओर की
 गलतले जगह, उठने वाला। १. उ० १५. १५, २. उ० १५
 १५, ३. उ० १५. १५।

[illegible]

उत्पादः [उद् + भृ + शिप् + क्त] नाश भृ
 क्षय, बर्हिषी, तानि - धानमृगादकारि मृगाणाम्
 -- का० ३२।

उत्सादनम् । उ३+सद्+णिञ् । ह्यट् । १. ताग करना, उषस ईना उत्सादनार्थं लोकानां - महा०, भा० । अ१९, २ स्मयित करना, बाधा इत्यादि ३ दरीज पर मुगलित पदाद्यं मलना - मनु० २।१०९, २११, ४ बाध करना ५ अपर जाना, सकृन्, उदना ६ जनन होना, उदना ७ ऊपर को बली-आदि जानना ।

उत्पादकः [उद + मु + निष् + क्तृन्] । आरक्षी २ पश्ये-
दा ३ कुम्भी, इषादीवान ।

उत्तराखण्ड [उ + म + णिच् + ल्युट्] 1. हटाना, हटाना, मार्ग में से हटा देना 2. अनिधि का स्थापन करना ।

उपवन्तु (वृ०) [उपव + मनु, उदन् भावित, मत्स्य वः]
समुद्र, उपवन्तुनाम् - बालरा० ११८, रघु० ४१५२,
१८, १०१६, कु० ७१७३ ।

उवकः [उव् + इ + क्व] 1. निकलना, उगना (बाल०
मी) - यदोदय इवोदय रघु० १०३३६ २१७३ ऊपर
वाला 2. भाविभाव, उत्पादन - यनादय प्राक् - ख०
७३०, कणोदय - रघु० ११५, फल का निकलना या
निकलन होना - कु० ३११८ 3 सुष्टि (विप० प्रकथ)
कु० २१८ 4 पूर्वति (उववाचक - जिसके पीछे से सूर्य
का उदय होना माना जाता है) - उदयमुदयवाचकगो-
विधि - विष्णु० ११६ 5 प्रवृत्ति, समृद्धि, उदय
(विप०) अलम्, - तेजोदयस्य युगपदप्रवृत्तयोऽप्याम्नाम्
- भा० ६११, रघु० ८१८४, ११७३ 6 उदयन,
उत्कर्ष, उवव, बुद्धि - उदयमस्तमय च रघुवृहान् -
रघु० ११८९, 7 फल, परिणाम 8 निष्पन्नता, पूर्णता
- उपविस्तोदयम् - रघु० ३११, शररभ्रमस्तोदय
१११५, 9 लाभ नफा 10 आय, राजस्व 11 व्याज
12 प्रकाश, चमक । सम० - अक्कः - अतिः,
- विरिः, - पक्षतः, - शूलः पूर्व विद्या में होने वाला
उदवाचक, जहाँ से सूर्य और चमका का उदय होना
माना जाता है - उदयगिरिवामाजीवाकमन्दारपुष्पम्
- उद्भूत, जितोदवाग्रेरमितायमुष्पकी - शि० १११६,
उत उदयगिरिरेवैक एव - भा० २११०, - अक्कः उदवा-
चक का पठार जिसके पीछे से सूर्य का उदय होना
माना जाता है ।

उवकन्तु [उव् + इ + क्तृ] 1 उवना, चढ़ना, ऊपर जाना
2 परिणाम, - भा० 1. अथत्य ध्वनि 2 अथत्य का
राजा - प्राप्यावन्तीनुदयनकभाकोविदशायुद्धान् - मेघ०
३०, (उदयन प्रसिद्ध चन्द्रवर्षी राजा था, वह अस्तराज
के नाम से विख्यात है । उदयन कीधाम्नी में राज्य
करता था । उवविणी की राजकुमारी राजसदस्यता
में उसे स्वयं में देखा, तथा देखते ही वह उव पर
मोहित हो गई । चण्ड महारि ने उदयन को धोले
से पकड़ लिया और कारागार में डाक दिया, परन्तु
बाद में मन्त्री के द्वारा मुक्त किये जाने पर वह
राजसदस्यता को उसके पिता तथा अपने प्रतिद्वन्द्वी से
निकास कर ले गया । एतावकी नामक नाटिका का
नाटक भी उदयन है । इसके बीचन की घटनाओं
के आधार पर और कई रचनाएँ हो चुकी हैं)
दे 'अत' की ।

उवन्तु [उव् + क्त + क्व] 1 उव, उगना, ऊपर जाना
- भा० २१११०, मु० इसोवरी, उवन्तरि भावि 2
जिनी वस्तु का नीतरी भाग, नहर, गडान् पंच०
२११५, रघु० ५१००, एवं कारवाय समस्तोदरवन्त-
मन्त्रम् - भा० ६११९, १११०, अथ ८८, 3. समीप

रोग के कारण पेट का फूल जाना - एतत् होवरं वने
- ऐत० 4. बच करवा । उव० - आन्त्रालः पेट का
फूलना, - आन्त्रः पेषिक, अतिहार, - आर्त्तः नागिन,
- अन्त्रिकाः केचुना, पीठाकुमि, - अन्त्रम् 1. वक्षस्त्राण
या अंगिया, कक्ष वा शिरःपृष्ठपर जो केवल छाती पर
पड़ना बाय 2. पेट को कसने वाली पट्टी, - पिशाचः
(वि०) पेट, आक, (बहुबोधी जिसकी मूक राजसी
बैठी होती है), (- व) मोचनमट्ट, - वृण् (अन्त्र०)
उव तक पूरा पेट न भर बाय - उदरपूरं भुक्ते
- शिष्टा०, पेट भर कर जाना है, - मोचनम्, - भरन्
पेट भरना, पालन पोषण करना, - शव (वि०) पेट के
बल मेट कर सोने वाला (- व) भुज, - सर्ववः
पेट, बहुबोधी, स्वादकोमुष, जिसने लिए पेट ही सब
कृष्ट है ।

उवरविः [उव् + इ + वि] 1. समृद्ध 2. गुण ।

उवरन्तरि (वि०) [उवर + म + इन्] मयागम 1 केवल
अपना पेट भरने वाला स्वामी 2 पेट बहुबोधी,
उवरन्त, उवरिक - न (वि०) [उवर - मनुष्य मस्य
व, उवर + उन्, इल्लु वा] बड़ी मोह वाला मूक-
काय, मोटा ।

उवरिन् (वि०) [उवर + इन्] बड़ी मोह वाला मोटा
मूककाय, - जी बर्गवती स्त्री ।

उवर्कः [उव् + कर्क (अर्क) + क्तृ] - उव् - क्व - उव
- क्तृ 1 (क) अल, उपमहार - मुक्तोदय
- भा० १२८ (क) कम वरिणाम, किसी अन्त्र का
भावी फल - किन्तु कस्याकोदकं भविष्यति उत्तर०
४. प्रयत्न लक्ष्मीदकं एव - भा० ८ अनु० ४१७६
११११० 2. अविष्कृतकाल, उपराल ।

उवर्कन्तु (वि०) [उवर्क + क्तृ] अन्त्राज्य व० म०] चमकने
वाला, ऊपर की ओर आला विकीर्ण करने वाला
व्योतिर्भय, उवर्कन्तु - स्फुरन्तुवि सहसा तृतीयोदय
हृत्तान् - किल निष्पद्यत - कु० २१७१, ७१७९, रघु०
७१७४, १५१५, - [वृ०] 1 अग्नि - अग्निज्वादिष
कके सेते हेतुविवास्तम् - शि० २१४२ २०१५५
2. कामदेव 3. शिव ।

उवर्कस्तम् [उव् + क्व + मो + क्त] वर, आवास ।

उवर्क (वि०) [उवर्क + क्तृ] यत्न व० म०] कृत् - क्तृ
क, रोने वाला, जिसके अन्तरि अक्षु बह रहे हों,
रोने वाला - रघु० १२१४, अथ ११ ।

उवर्कन्तु [उव् + क्त + क्तृ] 1 फेंकना, उठाना नीचा
करना 2. बाहर निकाल देना ।

उवर्क (वि०) [उव् + क्त + क्तृ] 1 उवर्क उवर्क
- अन्त्राज्य - भा० १२, बेनी० १, 2 अट्ट प्रसिद्ध
3 उवर्क, बदाम 4. अतिष्ठ, विष्णुना, महान् - नान्तो-
वास्तविकता - भावि० ११७९, 5. अविष्ट, अविष्टतम्

6. उष्ण स्वरापाठ दे० गी०,—क 1 उष्ण
स्वर में उष्णरित—उष्णरिता—पा० ११२१९,
उत्पत्तिस्वस्थानेनाने निम्नोक्त्या—विद्या०,
कमुपात के नीचे भी दे०,—निम्नोक्त्याकेपदे य
उपातः स्वरापि—वि० २१५५, 2 उष्णर, वान
3 एक प्रकार का वाद्य—उष्णरथ, बड़ा डोल,—सम्
(कम्० वा०) एक मन्त्रार—वा० २० ७५२, गु०
उष्ण० २०, उपात वस्तुतः उष्णरुपां नीपकसम्पत् ।
उपात्त [उद्+उत्+उत्] 1 ऊपर को लाने का 2
उठाने का, उपात्त, 3. कथं प्रमाणों में से एक को कथ
के आधारों होकर फिर में प्रविष्ट होता है—अन्य
कर है—आप्त, अपात, उपात और अपात;—स्वप्न-
कवचरं वचं नामनेवककोत्तम, उठेवदति मर्यापि
उपातो नाम भास्व । 4 नापि ।
उपायुष (वि०) [उ+उ+उ] कितने उपाय उपाय किया है
उपाय उपाय उपाय—मनुष्यवृत्तिनिर्देशकविज्ञा-
न्यायुक्ती, वेदी० ११२२; उपायुषानापउत्ताम्युपा-
नोक्त रायवः—रघु० १२१४४ ।
उपाय (वि०) [उद्+उ+उ+उ+उ] 1 हाकीक, मुक्त
हृदय, शरीर 2 (क) मर, वेष्ट—हृदयेति विनेषुवा-
नये—रघु० ८११ ५१२२, वच० ७१८ (क)
उपाय, विद्यात, पूज्य, कीर्ति—११८८, 3
ईशानशार, निष्कपट, वरा 4 बन्धा, बधिरा, उपाय
—उपायः कल्पः—व० ५५ वागी 6 बड़ा, विस्तृत
विद्यात, वाक्पात—रघु० ११७७, उपायलेपय-
वृत्ता—९, 6. मूलवाम् वचन वचने हुए 7 सुप्तर,
मोहुर, प्यात—रघु० ७१४, नि० ५१२२,—रघु
(वच०) जोर दे—वि० ४१३३, तब०—आत्मन्,
—कैला—करीत, वचन—तत्त्व (वि०) विद्यात-
हृदय, महान्मा—उपायवात्तां मु वस्तुवै वृत्त्यकम्
—वि० १, - वी (वि०) उपात प्रतिवादीक, वचन
वृत्तिवाम्—रघु० ११३०,—वर्णन (वि०) जो देखने में
सुन्दर है, बड़ी मोर्ची वाक्—रघु० ५१३९ ।
उपाय [उद्+उ+उ+उ] 1. मुक्तहृत्ता, 2 वृद्धि
(अतिवृद्धि की)—वचनम्—पा० ११७ ।
उपाय (वि०) [उद्+उ+उ+उ] उपाय, वीक्षण,
उपाय,—कः, 1. निम्नोक्त्या, वीक्षण 2 उपाय,
उपायवित ।
उपायिन् (वि०) [उद्+उ+उ+उ] 1. निम्नोक्त्या,
2. उपायवित ।
उपायिन् (वि०) [उद्+उ+उ+उ] 1. उपाय, वेक्षण,
निम्नोक्त्या—उपायवृत्तिवाम् वचन वचने हुए—रघु०
२१३९, (नीतिक उपाय की रचना में कोई वाच न
केन्द्र हुए) दे० उपाय 2 (विधि में) अतिवृत्ति ने
कल्पित व्यति 3 निम्नोक्त्या (वैना कि राया वा

राय) ,—कः 1 अवागवी 2 उपाय—वच० ९५९
3 वाक्पात परिचय ।
उपायिन्तः [उद्+उ+उ+उ] 1 अवागवी 2 उपा-
पात 3 वेधिया, मुत्तापर 4 तपस्वी विद्यात वृत्त
मङ्ग हो गया है ।
उपायवाम् [उद्+उ+उ+उ+उ] 1 वर्णन, प्रकाशन,
कहना 2 वर्णन करना, पाठ करना समाकाप कारक
करना—अवाग्विरसनव्यमुवाहरणवस्तुपु—रघु० ११५५
3 प्रकाशनात्मक गीत या कविता, एक प्रकार का
स्तुतिवाम् जो 'वदति' जैसे शब्द से आरम्भ हो तथा
अनुप्रास से युक्त हो चरणोन्मत्तवर्षीय जयोवाहृण
धुम्बा—विष्णु० १ अवाग्विरसन वाक्कोर्गपवावाम
किन्नरान् रघु० ४१७८ विष्णु० २१३५, वेधन
केनापि ताभेन मङ्गपद्यममन्त्रितम्, उपायवचनं मां
व्याधिरासविधिधितम्, तद्वाहरण नाम विषकथयता
समुत्तम—प्रभापरद । 4 निदर्शन, विद्यात, उपाय
—ममुकातममन्त्रित परावृत्तिवाम् मांमन प्रकाशिता-व
तनलसन्तोवाहरण रवि । नि० ५, ३३५ (५५०
में) अनुमानप्रतिष्ठा के वाच वगा में से दीर्घा
6 (वच० वा०) 'वृद्धात्' जो कुछ अन्तकारवाक्पात
द्वारा अन्तकार माना जाता है—यद्वा अन्तारव्यात
से निम्नता वृद्धता है उपा० अतिवृत्तिवाम् पवावी
वेधोवैकेन निम्नता वदति निम्नतरावयमराजो मन्त्रे
मोक्षेन अनुत्त इव । रघु०, (दोनों अन्तकारों में वेध
स्पष्ट करने के लिए उपाहरण के गी० दे० २८०) ।
उपायवः [उद्+उ+उ+उ+उ] 1 विद्यात या उपाय
2 किसी भाषण का आरम्भ ।
उपाय (व० क० क०) [उद्+उ+उ] 1 उपाय हुआ
बड़ा हुआ—उपायवृत्तिवाम्—पा० १ वागि० २१८५
2 उपाय, लंबा, उपाय 3 बड़ा हुआ, आवृत्ति 4
उपाय, वैदा हुआ, 5 कथित उपायिन् (उद्+उ
वक्तव्य) । वच०—उपाय (वि०) —आत्मन् में
पूर्व-निहित ।
उपायवाम् [उद्+उ+उ+उ] 1 ऊपर की ओर देखना
2 देखना, वृत्तिवात करना ।
उपायी [उद्+उ+उ+उ+उ] उत्तर विद्या,
—तेनोवीवी विद्यावृत्ति—वेध० ५७ ।
उपायीव (वि०) [उपायी+व] 1. उत्तर विद्या की ओर
मुड़ा हुआ 2 उत्तर विद्या से संबंध रखने वाला ।
उपायीव (वि०) [उपायी+व] उत्तर विद्या में होने वा
रहने वाला,—व्या० 1. तरस्वती वृत्ति के पक्षिमोत्तर
में स्थित एक देश 2 (व० व०) इस देश के निवासी
—रघु० ४१६९,—व्या० एक प्रकार की वृत्तिवाम् ।
उपाय [उपायवा वच०—उद्+उ+उ (वि०) व० व०]
मुक्त शरीर, वचनवाम् वाक् ।

उदीरयन् [उद् + ईर + क्त्वा] 1 डोलना, उल्लारय,
—अभिर्भवना उद्वात प्रभवो यास्तौ भ्यादीनि उदी-
रयन्—कु० २।१२, 2 डोलना, कहना 3 केंटना
(संस्थापिक का) चलाना ।

उदीर्य (यू० क० क०) [उद् + ईर + क्त] 1 बड़ा हुआ,
उठा हुआ, उत्थित 2 फूला हुआ, उन्नत 3 बरिष्ठ,
गहन ।

उदुम्बर दे० उदुम्बर ।

उदुक्कल = उदुक्कल ।

उदुहा [उद् + वह् + क्त—टाप्] विवाहित स्त्री ।

उदेव्य (वि०) [उद् + एव् + क्त] हिमाने वाला,
कपाने वाला, मयकर उदेव्याम् मृत्पानाम् उपधीप
भट्ट० १।१५ ।

उद्वन्ति (स्त्री०) [उद् + वन् + क्तित] 1 ऊँचा जाना
उठना चढ़ना 2 अभिर्भाव इव जगत्स्थान 3 बचन
करना ।

उद्वन्ति (वि०) [उद्वन्ता गण्यस्य व० म० क० व०]
1 सुगन्धयुक्त, सुसुन्दर—विष्णुभणोदगन्धिषु कुडमलेषु
रघु० १६ ४१ 2 नाश गन्ध वाला ।

उद्वन्तः [उद् + वन् + क्त] 1 ऊपर आना, (घाते
आदि का), उगना चढ़ना आत्मबुद्ध्याद्यमन सं०
१।१५ 2 (बालों का) सीधे लड़े होना रामायण
प्रायश्चित्तब्राह्मण कु० ३३३ मासवि० ४।१ बमर
३९, 3 बाहर जाना, विदा 4 जन्म, उत्थान रचना
—पारिवात्योद्भव मा० १ आचिर्वाच—कलेन
महकारय बुद्ध्याद्यम् इव प्रजा—रघु० १० कल्पय-
कुमुदोद्गम कवम्भ उत्तर० ३।२० अमन ८।१ 5
उभार, उन्नयन 6 (किली पीठ का) अनुत्थन—हर्गत-
मुनीश्वरकण्डुया मूर्तिवि० कि० १।३८ 7 वगन
करना, उगलना ।

उद्वन्तम् [उद् + वन् + क्त्वा] उगना, दिखाई देना ।

उद्वन्तनीय (सं० क०) [उद् + वन् + क्तीया] ऊपर
जाये या चढ़ने के योग्य, यन् वृत्ते कपडा वा कोड़ा
(कल्पयादुत्तमनीयं वद्विष्टरोचं कर्वावन्) —यौनाद्यम
नीयवर्तनीय—मा० ४२, कुटीरपत्युद्भवनीयवर्तनी—
कु० ७।११ (यहाँ क्लिप्त० 'क' का अनुस्वार 'चितवन्' से
करके ही और क्लिप्ते हैं कि 'युक्तावन्' तु नास्तिवाचि-
भावम् दे० कर्त्ति) ।

उद्वन्तः (वि०) [उद् + वाह् + क्त] गहरा, गहन, अत्य-
धिक, अत्यन्त—उद्वाहयवाक्या मा० ५।७, १।९,
—इय् वाचिक, —(अव०) वाचिक, अत्यन्त ।

उद्वन्तः (यू०) [उद् + व् + क्त] वज्र के मुक्त धार
स्त्रीयों में से एक जो कामदेव के वज्रा का गान
करता है ।

उद्वन्तः [उद् + व् + क्त] 1. (क) शिखरतल, वृक्ष, उद्वन्तः

वसन करावा, कहू डालना, उत्तरीय—कर्तुरीयम्—
महाभा० मयोद्वन्तः सुगन्धिषु—रघु० ४।५७, मनु० २।३८
मेघ० १३, १९, कि० १२।९, (क) आरय, प्रवाह वि०
में मगो हुई बात का बाहर निकालना—रघु० १।९
महावी० ६।३३ 2 बार बार कहना वचन ४
२।३३, 3 वृक्ष, लार 4 बकाय, कठगर्जन ।

उद्वन्ति (वि०) [उद् + व् + क्तित] 1 ऊपर जान
बाला, उगने वाला 2 वचन करने वाला बाहर भेजने
वाला रघु० १।१७ ।

उद्वन्ति (यू०) [उद् + व् + क्त] 1 वचन करावा 2 वृक्ष
या लार गिराना 3 बकाय 4 उद्वन्ति ।

उद्वन्ति (स्त्री०) [उद् + व् + क्तित] 1 ऊँचे स्वर से
गान करना 2 सामवेद क मन्त्रा का गान 3 आर्वा
ज्व का एक पद व० पौरुषिष्ट ।

उद्वन्ति [उद् + व् + क्त] 1 सामवेद के मन्त्रों का वाद्य
'उद्वन्ता का पद । 2 सामवेद का उत्तरार्ध—मृग्या
उद्वन्तिवाद्या वसन्ति उत्तर० ३।३ 3 वज्र जो
पश्चात्तमा का तीन जखरो का नाम है ।

उद्वन्ति (वि०) [उद् + व् + क्त] 1 वचन किया हुआ
2 उगला हुआ बाहर उठेला हुआ ।

उद्वन्ति (वि०) [उद् + व् + क्त] ऊँचा किया हुआ
ऊपर उठाया हुआ—वेणी० १।१२ ।

उद्वन्ति [उद् + वन् + क्त] अनुत्थन अन्वय ।

उद्वन्ति (वि०) [व० सं०, वचनयुक्त (वाच० मी०)]

उद्वन्ति हन्ति [उद् + वह् + भक्त्वा] 1 लेना
उठाना 2 ऐसा कार्य जो धार्मिक अनुष्ठान अथवा
अन्य कृत्यों के सम्बन्ध हो लकटा है 3 भङ्ग ।

उद्वन्ति [उद् + व् + क्त] 1 उठाना या लेना, 2
बाह्य का उत्तर देना, प्रतिवाद ।

उद्वन्ति [उद् + वह् + क्त] 1 उठाना या लेना, 2
बाह्य का उत्तर देना ।

उद्वन्ति (यू० क० क०) [उद् + वह् + क्त] 1 ऊपर उठाना हुआ या लिया हुआ 2 हटाना हुआ
3 अष्ट, उत्तर 4 स्थान मुक्त किया गया 5 बह,
वह 6 प्रत्यक्ष, पात्र किया गया ।

उद्वन्ति, उद्वन्ति (वि०) [उद्वन्ति वाच्य—व०
सं० उत्तरा वीचा प्रा० सं० उद्वन्ति + क्त]
वचन ऊपर उठाये हुए—उद्वन्तिवर्द्ध—भास्वि०
१।२१, काल १३ ।

उद्वा [उद् + व् + क्त] 1 अष्टादा, प्रमुखा (समस्त से
जात हैं) बाह्योद्वा—एक वेदक बाह्य—उद्वा-
वचन निवर्तितुं व तु निवर्तितुं—विदा०,
सु० महाभारतमहाभारत प्रकाशमुद्वावचन, प्रकाश-
वाचकमुद्वा—अमर० 2 प्रवृत्त 3 वचन 4
वाचि 5 नपुमा ६ वरीरविक्रम वाचिक वाद्य ।

उत्कलः [उद् + हृ + कल्] कलही का तल्ला जिस पर
कलही कलही रख कर चढ़ा है, कालही - लीहोवन-
वनकल्ला कलिहायना स्थियम् - मट्टि० ७।१२।

उत्कल्लम् [उद् + कल् + ल्] कल् वा] लाल,
है ठहराना - मेव० ११।

उत्कर्षणम् [उद् + कृ + ल्] १ रगना, षोडना - वस्तो-
दुर्धनकोडोडैरिपि क्वा - पुटे न वात किम - नृक०
२।११, २ लोटा।

उत्कलः [उद् + कल् + कल्] बीकीदार वा बीकी
(जिसमें सैन्य सरलक दल ठहरे)।

उत्कलकः [उद् + कल् + कल् + कल्] १ कुंजी २ कुंते
की रस्सी और डोक, कुंते की चर्ची (- कल् धी)।

उत्कलन (वि०) (ली० - ली०) [उद् + कल् + कल् +
ल्] कोलना, लाला कोलना बर्न धो न करोति
निषिद्धमिति स्वर्णकोलनाटनम् - हि० १।१५३, - कल्
१ प्रकट करना - बेनी० १ २ उमल करना ऊपर
उठाना ३ कुंजी ४ कुंते पर की रस्सी व डोक, पानी
निकासने की चर्ची।

उत्कलः [उद् + हृ + कल्] १ बारन, उपकम - उद्-
वात प्रणवो वासात् - कु० १।१० वाकुमारकोव्वात
व्याजिनीयो वनुर्यव - रघु० ४।१० २ लकेत, उल्लेख
३ प्रहार करना, बायल करना ४ प्रहार बयल,
बायात ५ हथकोजा, झकजोरना, (गाड़ी बादि का)
बचका - हि० १।२२, रघु० २।७२, बेनी० १।२८, ६
उठाना, उमल हुना ७ मुदुनर ८ कलम ९ पुस्तक
बाय, बयाय, बनुबाय, परिच्छेद।

उत्कलः [उद् + कृ + कल्] १ ऊँची बायाय में कहना
किडोरा पीटना २ सर्वजन प्रिय बात, सामान्य विचार।

उत्क [उद् + कृ + कल्] १ लटपल २ जू ३ मच्छर।

उत्क (वि०) [कल् + क०] १ जिसका भना, डंठल वा
व्यव उठा हुआ हो - उद्गणपथ गृहणीकिकामात् - रघु०
१।१४९, बचकातपत्रा मा० ९ २ मजदूर, बलायक।

कल् - बालः १ बल देने वाला २ एक प्रकार की
मछली ३ एक प्रकार का लोप।

उत्कल (वि०) [क० + क०] १ जिसके दाँत खड़े, या
बाहुर निकले हुए हों २ लोधा, लधा ३ बयायक
मजदूर।

उत्कल [उद् + कृ + ल्] १ बंल, बँद - उठाने किम-
माने तु कल्लावा लव रज्जुकि - कल् २ बालम्
बनामा, बल में करना ३ बल्लाबाय, कटि ४ बुद्धा,
बनीडी, ५ बल्लाबल।

उत्कल (वि०) [उद् + कृ + ल्] १ कर्षणी २ विनीत।

उत्कल (वि०) [क० + क०] १ निर्बल, क्षीयमान, निरनुभा,
मुक्त - हि० १।१० २ (क) ललक, ललकत - हि०
१।१४८ (क) बीकल, लल ने लूर - लीहोवन -

दिलाले - रघु० १।७८ - हि० १।११३. बल्लाव
४ स्नेहाकारी ५ क्षतिबहुल, निष्कल, बला, क्षयिक
- मेव० २५, रत्ना० २।४, - कः १ बल २ बल्ल,
- बल (बल्य०) प्रचलता के साथ, बीकलतापूर्वक,
बलपूर्वक - बल्लोहान व्यक्तियत - उत्तर० १।११।

उत्कलम् [उद् + कल् + कल् + कल्] एक प्रकार
का गहव, लडोये का कल।

उत्कल (वि०) [उद् + क० + ल्] क्वा हुना, बढ।

उत्कल (म० क० क०) [उद् + कल् + ल्] १ क्वा
हुना, निषिद्ध, विशेष रूप से क्वा मया २ इच्छित
३ चाहा हुना ४ समझाया मया, सिखाया मया।

उत्कीपः [उद् + कीप् + कल्] १ प्रवर्तित करने वाला,
जलान वाला २ प्रज्वालक।

उत्कीपक (वि०) [उद् + कीप् + कल् + ल्] १ उल्लेख
२ प्रकाशक, प्रज्वालक।

उत्कीपनम् [उद् + कीप् + कल् + ल्] १ जलाने वाला,
उल्लेखना देने वाला २ (म० मा०) जो रस की
उल्लेखित करे, दे० बालवन ३ प्रकाश करना, जलाना
४ लीप की मसम करना।

उत्कीप (वि०) [उद् + कीप् + ल्] चक्कता हुना, बल्लुना
हुना - म० - कल् गुल्ल।

उत्कृत् [उद् + कृ + ल्] बयडी, क्षतिघानी।

उत्कः [उद् + कृ + कल्] १ लकेत करने वाला, निषेध
करने वाला २ बर्नन, निषिद्ध बर्नन ३ निषेधन,
व्याख्यान बुद्ध्यात् ४ निषेधन, पुच्छा, बयलेबल,
कोय ५ लक्षित कलक वा बर्नन - एव दुर्लभत
प्रोक्तो विमूर्तेविल्लो मया कल् - रघु० १।४०, ६ बल-
कार्य ७ बल्लव ८ बल्लिष्य ९ बल्लवन ९ बल्लन,
प्रदेश बल्ल - अही बलातकुभयोऽयमुद्देश - क० १,
मात्रवि० २।

उत्कलः [उद् + कृ + ल्] १ निवर्धन, बुद्ध्यात्
२ (गणित में) प्रल, लयवा।

उत्कल (म० क०) [उद् + कृ + ल्] १ उदाहरण देकर
स्पष्ट करने वा समझाये जाने के योग्य २ क्षिप्रत,
लक्ष - कल् १ कल्वाय, लोत्ताहक २ किडी उल्लि
(किप्या का कर्ता, (विप० विषेय) दे० 'बनुबाय' की।

उत्कलः [उद् + कृ + कल्] १ प्रकाश, प्रका (वा० और
बाल०) - निर्वर्धन कृतोद्बोधनम् - महा०, कुलीपुत्रोत्त-
करी तव रामा० बल्लकृत करते हुए २ किडी पुस्तक
के प्रमाण, बल्लाव, बनुबाय का परिच्छेद।

उत्कलः [उद् + कृ + कल्] मायवा, पीछे हुना।

उत्कल (म० क० क०) [उद् + कृ + ल्] १ लोधा किमा
हुना, उमल, ऊपर उठाना हुनी - काकल्लुकुडत पुण्य
- मट्टि० १।७ बालोडोडैरिपि रलोधि - क० १।८,
उडारि हुनी, रघु० १।५० हाँका हुना - हि० ८।५९

२. बसिपव, बसपव, बसपिक ३. बसिबानी, बिरबक, ब्यबं पूका हुआ—मकमबोड्डः—रपु० १२११
४. कठोर ५. उत्तमित, मकुकावा हुआ, बयंक 'मबोयव-
रामा—कि० ११६८, ६९, मबोड्डा बसपिक विभेयः
पु० ३१११ ६ मानदार, राखली—बीरोड्डा मकबोड्ड
मकुबोड्डोय—उत्तर० ११६९, मकवव, कमित, तः
राव-मक। अम०—मकव,—मकव (वि०) रगनी,
मकुकारी, वमवी ।

प्रत्ययः (स्त्री०) [उत् + हृन् + शिङ्] १. उन्नयन २. चमत्कार, समिमान, -वि० ३।२८, ३. अवलोकनमा, दृष्टता ४. प्रह्वर ।

उद्भवः [उद् + भू + क्त] १ आशय निकालना,
बचाना २ चोर लालच देना, धुपाना ।

उद्धारम् [उत् + ह् + म्प्र] १ निकासना, बाहर करना, (कत्पादिक) उतारना २ निषोदना, मिट्टमारण, उखाड़ लेना, छड़कें नम्० १२५२, कज्जलेच्छर-
 नम्—विता०, ३ उद्धार करना, बुराई करना, नश्य
 करना—वीनोदरभोषितम्—रम्० २०५, ४ नम्बुओं
 विपन्नानामाशु उद्धारकम्—हि० ११३, ५ उन्मूलन,
 ज्वल, पक्काई ५ उठावा, ऊपर करना ६ बचन
 करना ७ मोक्ष ८ शूलपरिहोष ।

उत्कर्ष-उच्चारक (चि०) [उद् + (हृ) ष + कृष, कृष्ण वा] ।
उपर उठाने वाला २. साक्षीधार, सपत्ति का हिस्सेदार ।

कर्म (वि०) [उ + कृ + क्त] कृ, कृत, -कः १ कृत कृतकृत २ किसी कार्य को सम्पन्न करने के लिए उत्तरदायित्व लेने का वाक्य ३ उत्सव (वार्षिक पर्व)।

उद्धारणम् [उद् + हृ + ल्युट्] 1. प्राण छूटना 2. रामाय
होना, पुनर्क ।

अर्थ: [उ + ह + कर्त्तृ] 1. यज्ञाग्नि 2 उत्सव, पर्व 3 इस नाम का वाचक को हृज्ज का वाचक लक्षण मित का (जब अक्षर द्वारा हृज्ज मधुरा के साथे गये, तो गोकुल वासिन्धो ने उडब ने मधुरा जाने-बीर कहा ने हृज्ज का वाचक किया साथे की शार्थना की। वाचको के अवश्य-सादी विनाश को देख कर उडब हृज्ज के पास गये बीर पूछा कि जब क्या करें, हृज्ज ने मत्र उडब को बतलाया कि यह बहरिकाचन आकर तपस्या करे तथा स्वर्गलाभ करे। 'उडबयून' बीर 'उडबसदेव' की रचना का विषय 'उडब' है।

उत्पन्न (वि०) [व० स०] हाथ आगे पसारें हुए या
उठाये हुए ।

उदाहरण [उद् + वा + ल्युट्] 1. पुन्हा, बारीकी, यत्नपूर्वक
2. उलट देना, बचन कराना ।

उद्गम्य (वि०) [उद्+ग्रा+ज वा०] उगमा हुआ, बमन
 किया हुआ,—आ हाथी जिसके अस्तक से बच चुका
 बन्द हो गया हो ।

छाटा [उद्+हृ+अन्] 1. धीकर बाहर निकालना 2. धुलना, धोना, धोना, धोना, धोना 3. उठाना, उठाना 4. (विधि में) के सम्पत्ति में से पृथक् किया गया वह भाग जिस भाग केवल जोड़ने पुन ही उठा सकें, छोटे भागों में विभाजित करने के भाग के अतिरिक्त वह अंश : कागजान वगैरह को ही मिले -मनु. १।११२, बुद्ध की मृत का उठा भाग जिसका त्यागी राखा हो -मनु. ७।१७, 6 भाग, 7 सम्पत्ति का हिस्सा प्राप्त हो जाना 8 धोना ।

अकारणम् [अ + ह्र(पु) + णिच् + ल्युट्] १ उठना है करना २ बचाना, बच से निकाल लेना, छुटका भक्ति ।

उद्धर (वि०) [उद् + धृ + क] १. अनियमित, विरह,
मुक्त २ बुद्ध, निरक्षर ३ भारी, वरपूर — जि० ५/१
४ मोटा, फूला हुआ, खुल ५ बोझ, लज्जा — धामि
(४०)

उद्भूत (बु० क० क०) [उद् + बृ + क्त] १. हिमालय पुत्र
मित्रा पुत्रा, उद्योग पुत्रा. ऊपर कीका पुत्रा— माक
अरोद्भूतोऽपि बुद्धिबल—बुद्धि २ उद्भूत, ऊँचा ।

उद्भवः [उद् + भू + क्तृच्, 'पुनर्भव'] । अपर को
उदना २ हिजाना ।

उद्गमन् [उद् + गम् + लृट्] उगी होता, बुझाया ।
उद्गमन् [उद् + गम् + लिप् + लृट्] उगा करा

पीसना; बूझ या बुरा बुरकना—अस्वीकार
—कलक. १०।

उडबडब [उड् + डू + लृट्] रोंगटे कडे होना, पुलक
होनाकित होना ।

उदात्त (यु० क० उ०) [उ० + हु (यु०) + क्त] १. उठाया हुआ, निकासा हुआ, निर्बाध कर निकासा हुआ २. उठाया हुआ, उन्मत्त, डूबा किंवा हुआ ३. उठाया हुआ, उपस्थित—उत्पत्ति:—एष० २१० ।

उद्गति (स्त्री०) [उद् + हृ (पृ) + क्तिप्] १. जीव क बाहर निकलना, निष्काटना २. निष्काट, पृथक् हुना संज्ञक ३. मुक्त करना, बचाना ४. विनिवृत्त. दाय मुक्ति विलाना, पश्चिन्न करना, मोक्ष—कर्मकी टीपणी त्वरितम्बु बरकोट्टितिविणी—व्या० २४१

उद्गम्यमानम् [उद् + गम्य + क्त] बंसीठी, बूलहा, स्टोव ।
उद्गमः [उद्गम्यमानकामिति कालिङ्ग०—उद् + गम्य + क्त]

वि. उपनिषत्सूत्रम् । एक वरिया का नाम सोवदाय
होइइविमयो—रघु. ११८ ।

1. बौधना, लठकना 2. स्वयं काँती कहा जाता ।

उद्भवकः [उद् + भव् + क्त] वर्णतत्कर वाचि की वी
का काव करती है—दुः—उत्पन्ना—जायीये

विश्रावो वातास्तापोपवीचिन, तस्वीव नृपकन्धसा
वातः दूषिक उच्यते । दूषिकस्य नृपावो नु वाता
उद्भवन्वा स्मृता, निर्जलेयैर्दुर्गन्धैश्च अत्युत्पाद्य
मयस्यते ।

उद्भव (वि०) [व० स०] तवत्, वस्यते ।

उद्भवन् (वि०) [व० स०] बहुपरिपूर्ण, बहुपरिष्ठावित
कि० ३।५९ ।

उद्भव्य (वि०) [व० स०] भूवाय ऊपर उठाये हुए,
भूवायो को फैलाये हुए- प्रायुलम्बे फैले लोभापुद्वा-
हुरिच वामन रघु० १।३ ।

उद्बुद्ध (भू० क० कृ०) [उद् + बुद् + क्त] १ वागा
हुवा, जगावा हुवा, उत्पन्नित २ विज्ञा हुवा, फैला
हुवा, पूर्ण विकसित- सा० १।४० ३ बाध दिलाया
गया ४ प्रत्यास्मृत ।

उद्बोधः—बन्धु [उद् + बुद् + जिप् + घञ् + ल्युट् वा]
१ जगाना, ध्यान दिलाया २ प्रत्यास्मरण करना,
उठाना ननु कथं रामाचिरयापुद्बोधकारणं सीता-
विधिं सामाधिकाना रघुपुद्बोध- सा० व० ३ इसी
प्रकार—रघु० ।

उद्बोधक (वि०) [उद् + बुद् + जिप् + ल्युट्] १ ध्यान
दिलाने वाला, २ उत्तेजना देने वाला,—कः पूर्व ।

उद्बुद्ध (वि०) [उद् + मद् + क्त] १ श्रेष्ठ, प्रबुद्ध परे
परे तत्ति नटा रणोद्बुद्धा—मै० १।१३२ २ उत्कृष्ट
महामुद्राव,—कः १ अनाद्य कटकने के भिन्न छात्र
२ कहुवा ।

उद्बुजः [उद् + बु + क्त] १ उत्पत्ति, रचना, जन्य, प्रसव
(वा० तथा बाल०) इति हेतुस्तदुद्बुजे—काण्व० १
वाङ्म० ३।८०, बहुधा ममास के अन्त में "हे उत्पन्न"
अर्थ को प्रकट करता है—ऊकम्पूवा—विम्व० १।३
मथिराकरोद्बुज—रघु० ३।१८२ अतः, उद्बुजस्तान
३ विष्णु ।

उद्बुजः [उद् + बु + क्त] १ उत्पत्ति, मलाति २,
आधार्य ।

उद्बुजन् [उद् + बु + जिप् + ल्युट्] १ फिलन, कम्पना
२ उत्पत्ति, उत्पन्न, कृष्टि ३. अनवधान, उपेक्षा,
अवहेतना ।

उद्बुजन्ति (वि०) [उद् + बु + जिप् + ल्युट्] ऊपर
उठाने वाला, उत्कृष्ट बनाने वाला ।

उद्बुजः [उद् + बु + क्त] वस्य, जगा ।

उद्बुजिन्, उद्बुजुर (वि०) [उद्बुज् + इति, घुरप् वा]
देवीप्यान, चमकीला, उज्ज्वल,—विम्व० १।३०
विम्व० १।३० नृप० ८।३८, वस्य ८१ ।

उद्बुज (वि०) [उद् + बिद् + क्त] उभे वाला, बंधुर
पूटने वाला—(दु०) १ पीछे का बंधुर—बन्धुपुत्रोद्बु-
जवीरुधि—अवर० २ पीछा ३. जगना, जगारा ।

बन्धु—अ (वि०) (उद्बुज्) फूटने वाला, (पीछे
की भाँति) उभने वाला—(अव०) पीछा,— विज्ञा
वस्यति विज्ञान ।

उद्बुज (वि०) [उद्बुज् + क्त] फूटने वाला, उभने वाला ।
उद्बुज (भू० क० कृ०) [उद् + बु + क्त] १ बाध,
उत्पन्न, प्रसूत २ (वा० तथा बाल०) उत्पन्न ३ पीछर
को आनेविशो द्वारा बाधा या लगे (नृपादि) ।

उद्बुजिः (स्त्री०) [उद् + बु + क्त] १ प्रजनन, उत्पा-
दन २ उत्पन्न, उत्कर्षण, समृद्धि—वर सन्धुरार्थं ह्येव
त्यन्तुलोद्बुजये विधि—कु० १।८२ ।

उद्बुजः बन्धु [उद् + बिद् + क्त, ल्युट् वा] १ फूट
पड़ना, डेचना, बिगड़ देना, आदिमिद, प्रकट होना,
उभाना—उमास्मनोद्बुजममृद्बुज—कु० ७।२४, व वीरवी-
रुद्बुजममृदकान्त—रघु० ५।३८ शि० १८।३९ ३. निर्धार,
पीछारा ४ रोमाच जैसा कि 'पुलकोद्बुजः' में ।

उद्बुजः [उद् + भु + क्त] १ अत्युन्नत कण्ठर देना,
(तलवार बाँध का) बुझाना २ बुझना, ३ खेद ।

उद्बुजन् [उद् + भु + क्त] १ इवर-उवर—दिलमा-
नुजना बुझना २ उभाना, उठना ।

उद्बुज (भू० क० कृ०) [उद् + बु + क्त] १ उठाना
हुवा ठेका किया हुवा—अति, पाणि आदि २
संभाल कर रखने वाला परिश्रमी, बुझत ३ तुला
हुवा मना हुवा (बन्धुवाद) कि० १।२१ ४ बाधावा,
तैयार, तत्पर, उत्पन्न, तुला हुवा, जगा हुवा, व्यस्त
(मग्न), अवि० तथा नृपजन्य के साथ वा बहुधा
उदात्त में)—उद्बुजं स्वेव कर्मसु—रघु० १०।११, इत्यु
त्यजन्नुद्बुजता—प्रग० १।४५ बन्धु०, वन्धु० आदि० ।

उद्बुज [उद् + भु + क्त] १ उठाना, उत्पन्न २ सतत
प्रयत्न, चेष्टा, परिश्रम, दीर्घ—निष्पन्न रीतिं उपसे
हृतोचमात् कु० ५।३—अज्ञाक येना न निष्पन्नमुद्यमात्
— ५ बुद्ध सत्य—उद्यमे हि निष्पन्ति कायाणि न
मनोरथे—वच० २।१३१ ३ तैयारी, तत्परता । तम०
—बुद् (वि०) पीछर परियज करने वाला—मत्तु०
२।७४ ।

उद्बुजन् [उद् + भु + क्त] उठाना, उत्पन्न ।

उद्बुजि (वि०) [उद् + बु + जिप्] परिश्रमी, सतत
प्रयत्नशील ।

उद्बुजन् [उद् + वा + ल्युट्] १. जनन करना, उद्बुजना
२. बाध, बलीया प्रयोजन,—वास्तोवाग्निकहुरि-
रचयिष्ठाकीतहृत्वा—मेघ० ७, २१, ३३ ३. अवि-
प्राय, अयोग्य । बन्धु—अज्ञा—अज्ञा—अज्ञा-
वादी, बाध का रक्षकाला, ४

उद्बुजन् [उद् + वा + ल्युट् + क्त] बाध, बलीया ।

उद्बुजन् [उद् + वा + जिप् + ल्युट्, पुकायः] सताधिक
का पारय, समाधि ।

जोड़ि (वि०) [उभया वेदिवच ब० स०] वहाँ जातल या गयी ऊँची हो—विमान नवमुहोवि—रघु० १७।९।
जोड़क [उद् + जे + क्] हिलना, कापना, क्षयविक कपकपी।

जोड़ (वि०) [उभयान्तो वेलाच्—अस्यां स०] १. अपने जोड़ के बाहर उभय कर बहने वाला (नदी बाँधि)
—रघु० १०।३०, का० ३३३ २. उचित सीमा का उल्लंघन।

जोड़िका (बु० क० क०) [उद् + वेल् + क्त] तिलावा हुआ, उभयान्त हुआ, —तन्व हिलाया, लज्जोडना।

जोड़क (वि०) [ग० स०] १. टीला किया हुआ—कया-चिद्वृष्टनबालग्रास्यः—रघु० ७।६, कु० ७।५५, २. बन्धमुक्त, बन्धनरहित, —बन्ध १ बंधा शालना २. बाधा, बाध ३ पीठ या कुल्हो में पीठा।

जोड़ (प०) [उद् + बह + लृच्] पति।
जोड़ (न०) [उन् + प्रमु] ऐन, जोड़ी दे० ऊँचम्।

जम् (क्या० पर०) (उत्पत्ति, उत्त उन्न) बाढ़ करना, तर करना, स्नान करना —या पृथिवी पयसोन्मत्ति।

जम्बन् [उन् + ल्युट] तर करना बाढ़ करना।

जम्बन्, जम्बुर, जम्बु, जम्बु [उन् + उर - उर वा] मूला, बूढ़ा।

जम्ब (बु० क० क०) [उद् + नम् + क्त] १ उठाया हुआ, उन्नत किया हुआ, ऊपर उठाया हुआ (बाळ० भी)—पतु० ३।२४, जि० ९।७९, नतोन्नतयूमिमाने—क० ४।१६ २ ऊँचा (बाळ० भी) कम्पा, उत्पन्न बड़ा, प्रमल—रघु० १।१६ विक्रम० ५।७२, कि० ५। १५, १४।२३, ३ मासल, बरा-पूरा (स्त्री का बलत्वाल बाँधि), —तः अवतर, —सम् १ उन्नयन २ उन्माद, ऊँचाई। सम०—जागत (वि०) उन्नत और दमिन, विषम—बन्धुर नृपताननम्—अमर०, चरम (वि०) दुर्बलता—शिरस् (वि०) बहुमध्य, बड़ा चमकौ।

उन्नति (स्त्री०) [उद् + नम् + क्त] १ उन्नयन, ऊँचाई (बाळ० भी) नीचे दे० 'उन्नतिकम्' २. उत्कर्ष, प्रगति, वृद्धय, वृद्धि—स्तोकनोन्नतिमायाति स्तोकेनायाय घोषितम्—पद्य० १।१५०, शि० १६।२२, वासि० १। ४०—ब्रह्मजनस्य सपक्षे कस्य नोन्नतिकारक हि० ३ ३ उठाना। सम०—ईक्षः नवड, (उन्नति का स्त्री)।

उन्नतिकम् (वि०) [उन्नति + मन्थ] उन्नत, उन्नतता हुआ कुला हुआ (वैसे कि स्त्री का वलत्वाल) मा पोता-प्रतिमन्थवोद्यम बने—अमर ३०, शि० ९।७२।

उन्नयन् [उद् + नम् + ल्युट] १ ऊपर उठाना ऊँचा करना २ ऊँचाई।

उन्नय (वि०) [उद् + नम् + लृच्] बड़ा, बीधा, उत्पन्न,

ऊँचा (बाळ० भी) —उन्नयताप्रपटनक्षयवच्छिन्न तत्—सि० ५।३१।

उन्नयः, उन्नयः [उद् + नी + लृच्, यञ् वा] १ उठाना, ऊँचा करना २ ऊँचाई उन्नयन ३. सावधन, समता ४ बटफल।

उन्नयन् [उद् + नी + ल्युट] १ उठाना, ऊँचा करना, ऊपर उठाना २ पानी लीचना ३ पयलीचन, विचार-चिन्तन ४ बटफल।

उन्नय (वि०) [उन्नत नासिका यम्ब ब० स०] ऊँची नाक वाला—उन्नत द्यौरी यकन् मट्टि० ४।१८।

उन्नयः [उद् + नम् + यञ्] चिल्लाहट, बहाव, वृद्धन, बहुप्रहारा।

उन्नय (वि०) [उन्नता नासिकम्—ब० स०] चित्की नासि उन्नरी हुई हो, लुंछिक, तोड़ वाला।

उन्नय [उद् + नम् + यञ्] १ उन्नत, स्फीति २ बाँधना, बन्धनमुक्त करना, —हृत् बाधनो के मोड़ से बनी काँजी।

उन्नय (वि०) [उन्नता निद्रा बन्ध—ब० स०] १ निद्रा रहित जाना हुआ—नामुद्रिहामचमिसयना वीचवताम्-नयय मेघ० ८८ विगमवत्तन्निद्र एव कथा—ब० ६।६, मूत्रा० ४ २ प्रसूत, पूर्णविकसित मुकुलित (कमल बाँधि)—उन्नयपुष्पाविलसद्ब्रह्मपात्रा वि० ४। १९, ८।२८।

उन्नय [उद् + नी + लृच्] उठान बाधा—(प०) यज्ञ के १६ अधिवर्जों में से एक।

उन्नयन् [उद् + यम् + ल्युट] बाहर निकलना, वस्ती से बाहर निकलना।

उन्नय (बु० क० क०) [उद् + यम् + क्त] १ यज्ञप नक्षों में चुर २ विक्षिप्त, उन्नत, पागल हाथबोझती—विक्रम० ० यन् ९।७९, ३ कुला हुआ, उन्नयन, बहुगो यन् १।१६१, सि० ६।३१ ४ मूल वा प्रत से आविष्ट—याज्ञ० २।३२, यन् ३।१६१, (बाण-पितृस्तेय मयिपानप्रहममवेनोमध्—मिता०), लः चतुरा। सम०—कीर्तिः, वेत्तः शिव—मन्थ एक देख का नाम (यहाँ सपा मीथल कम्बोल करती हुई बहती है) —बर्धन, कम्ब (वि०) दमने में सयस, —अवस्थित (वि०) पागल की बहक (—सम्) पागल के लब्ध।

उन्नयन् [उद् + यम् + ल्युट] जाड़ना, ऊँच देना २ बंध करना अस्यान्वसुतोम्यमार्त्—रघु० ७।५२।

उन्नय (वि०) [उन्नता गवा वस्त्र—ब० स०] १ गधों में चुर लागती, रघु० २।९, १६।५४ २ पावल, काँधोपरीन, उठाऊ—सि० १०।५, १६।६९ ३ नगा करने वाला मारक—मयूकगङ्गनेवा मुकुलवचमिन्नता मिथुनाध्वमुन्नये सि० १।२०, —बः १. विक्षिप्त २ गवा।

(ज) केटा, प्रयत्न—उपस्था नेध्य (झ) उपक्रम, आरम्भ—उपक्रमते, उपक्रमः (ञ) अव्ययन—उपा-
ध्यायः (ट) आहार, पूजा—उपस्थानम्, उपचरति
पितरं पुत्र 2 जिस समय वह उपसर्ग क्रियाओं से
संबद्ध होकर सज्ञा शब्दों से पूर्व लगता है तो उस
समय—सामीप्य समता, स्थान, संख्या, काल और
अवस्था आदि की संज्ञित, तथा अव्ययता की भावना
आदि अर्थों को प्रकट करता है। उपकर्मिष्ठिका
—कर्मिष्ठिका के पास वाली अगुली, उपपुराणम्
—अनुषंगी पुराण, उपबृष्टः—सहायक अध्यापक, उपा-
ध्यायः—उपप्रधान, अव्ययीभाव समासों में भी इन्हीं
अर्थों में इसका उपयोग होता है। —उपगङ्गम्—गंगाया
तमीरे, उपकलम्, 'वनम्' आदि 3 सख्यावाचक शब्दों
के साथ लग कर सख्याबहुव्रीहि बन जाता है और
'अपम' 'शायः' 'तकरीबन' अर्थ को प्रकट करता
है, —उपनिषाः—सगमग तीस 4 पूर्व रहता हुआ भी
वह (क) कर्म के साथ हीनता को प्रकट करता है
—उपहरि सुरा—सिद्धा० देवता हरि के निकट है
(ख) अर्थों के साथ यह 1 'अधिकता' और 'उत्क-
ष्टता' को —उपनिष्के कार्यापगम्, उपपराधं हर्तुणा
2. तथा योग या जोड़ को प्रकट करता है।

उपकण्ठः—कण्ठम् [उगन्त कण्ठम्—अन्त्या० म०]
1. सामीप्य, सामिन्ध, पड़ोस— आप तामीवनध्यामयु-
कण्ठ महोदधे—रघु० ४।३६, १३।६८ कु० ७।५१
भा० १।२ 2 शाय या उसकी सीमा के पास
का स्थान—(अव्य०) 1. मईनके ऊपर, गले के निकट
2. के निकट, नजदीक।

उपकथा [प्रा० म०] छोटी कहानी, किस्सा।

उपकर्मिष्ठिका कन्ठो अगुली के पास वाली अगुली।

उपकारणम् [उप + कृ + ल्युट्] 1. सेवा करना, अनुग्रह
करना, सहायता करना 2. सामग्र्य, साधन औरार,
उपाय—उपकरणीवाचमायाति—उत्तर० ३।३, परोप-
कारोपकरणं शरीरम्—का० २०७, याज्ञ० २।२७६,
मनु० १।२७० 3. जीविका का साधन, जीवन को
सहारा देने वाली कोई बात 4. राजपिण्ड।

उपकर्तव्यम् [उप + कर्त् + ल्युट्] सुचना।

उपकर्तविका [उपकर्त् (अव्य०) + कन् + टाप् ह्रस्व]
अकृताड, अनमृति।

उपकर्म (वि०) [उप + कृ + लृप्] उपकार करने वाला,
अनुग्रहकर्ता, उपबोधि, मित्रवत्—हीनाम्यनुपकर्मणि
प्रयुजानि विकुर्वते—रघु० १७।५८—उपकर्मी रसा-
दीपनाम्—भा० ४० १२४, सि० २।३७ 3.

उपकलनम्—भा [उप + कृ + लिप् + ल्युट्, लृप् वा]
1. तैयारी 2. क्रयोलकल्पित (वर्धों का) लूना करना,
कलना।

उपकारः [उप + कृ + लृप्] 1. सेवा, सहायता, मदद,
अनुग्रह, आभार (विप० 'अपकार') उपकारापकारी
हि लक्ष्य मत्तानमेनयो—सि० २।३७, धाम्नेत्यप्यपका-
रेण मोपकारेण दुर्जन—कु० २।६० ३।७३, याज्ञ०
१।२८४ 2 तैयारी 3 आभूषण, सजावट, ही
1 राजकीय तबू 2 महल 3 सराय, धर्मशाला।

उपकार्य (वि०) [उप + कृ + ल्युट्] सहायता करने के
उपयुक्त और राजभवन, महल रम्या रघुप्रतिमिधि
म नभोपकार्यां वास्तान्पराभिष बसा मरुतोऽभ्युभास
रघु० ५।६३, गाह्री अन्ता—५।४१, ११।१३,
१३।७९, १५।५५, ७३।

उपकुम्भः,—शिक्रा [उप + कुम्भ + क्ति कन् टाप् च] छोटी
कुम्भायणी।

उपकुम्भ (वि०) [अन्त्या० म०] 1 निकटस्थ, नमकन
2 अकेला निम्ना, एकाग्र।

उपकुम्भाय [उप + कृ + लान्त्] बाधन दण्डकारी जो
गृहस्थ बनना चाहता है।

उपकुम्भवा [उ + कुम्भ + यन् + टाप्] नहर, खाई।

उपकुम्भ—वे (अव्य०) [अन्त्या० म०] कुटों के निकट,
कलासयः कुतों के पास बना कुम्भवा जिसमें राय और
पानी होते हैं।

उपकुम्भितः (स्त्री०) उपकिया [उप + कृ + क्तिन् वा
वा] अनुग्रह, आभार।

उपक्रमः [उप + क्रम् + कण्] 1 आरम्भ, शुरू गामोपक-
ममाचक्ष्यो रक्षार्थिभ्य नवम् रघु० १२।४० राय के
द्वारा आरम्भ किया गया 2 आगमन, साहस्य बल
पूर्वक आगे बढ़ना मा० ७, इसी प्रकार पोषित
मुकुमारोपकमा—त० ३ उराग्रमित्यपूर्ण अव्यय
कार्य, जोषित का काम 4 योजना, उपाय, नजदीक,
मुक्ति, उपचार—मार्गादिमिषकर्म—मनु० ७।१०७,
१५९, रघु० १८।१५, याज्ञ० १।३४५, सि० २०।७६,
5 परिचर्या, चिकित्सा 6 ईमानदारी की ओर दे०
'उपवा'।

उपक्रमणम् [उप + क्रम् + ल्युट्] 1 उपागमन 2 उत्तर-
दायित्वपूर्ण व्यवसाय 3 आरम्भ 4 चिकित्सा,
उपचार।

उपक्रमिका [उपक्रमण + क्रीप्, कन्, टाप् ह्रस्व] भूमिका,
प्रस्तावना।

उपक्रीडा [अन्त्या० ल०] खेल का मैदान, खेलने का
स्थान।

उपक्रीडा—क्रीडम् [उप + क्री + लृप्, ल्युट्] निम्ना,
मिहरी, अपकर्म—आर्षीक्रीडामनीमरीर्षी—रघु०
२।५३।

उपक्रीडम् (पुं०) [उप + क्री + लृप्] (घोर के रेंकता
हुआ) गवा।

उपवन् (वन्) वन् [उप + वन् + वप् वन् वा] वीणा की सकार ।

उपवन्तः [उप + वन् + वप्] १ रह करना, ह्याम, हानि २ व्यय ।

उपवेषः [उप + वेष + वप्] १ फेंकना उछालना २ उल्लेख, वृत्ति मकेल, मुद्राव -- कार्योपक्षेपमादी समुच्चय रचयन् मुद्रा० ५३ - दारण अल्पक्षेप पापस्य - वशी० ५ ३ वमकी विशेष दोषारोपण ।

उपवेषयन् [उप + वेष + वप्] १ नीचे फेंकना, हाल देना २ दोषारोपण शोषी ठहराना ।

उपव (वि०) [उप + व + व] (वैयस्य समासालय में) १ निकट जाने वाला, पीछे चलने वाला सम्मिलित हान वाला २ प्राप्त करने वाला मनु० १.१६, सि० १६१६ ।

उपवन् [प्रा० म०] अप्रधान श्रेणी ।

उपवत् (पु० व ह्) [उप + व + व] १ गय हुआ निकट पहुँचा हुआ २ वटित ३ प्राप्त ४ अनुमन ५ अनिश्चान मद्रूपन ।

उपवति. (स्त्री०) [उप + व + व] १ उपगमन निकट जाना २ जान आनेवाली ३ स्त्रीकृति ४ उप लब्धि, अवधि ।

उपवन्त-वन् [उप + वन् + वप् वन् वा] १ जाना आकृष्ट होना निकट जाना मोचने व लघुपगमज एव नीय बहुवचन मेघ० १५ गुह्याग जाना आवाहन-तायोपगमात्कर्मणि मृ० ६.६० १.५० २ जान आनेवाली ३ उपलब्धि अवधि विद्याभ्यासमाद भिन्नमनय म० ११४ ४ सभाग (स्त्री-पुरुष का) ५ समाह मण्डली न पुनरुचयानामुपमस्य हि० १.१३६ ६ लेखना भ्रमनया अनुपम करना ७ स्त्रीकृति ८ करार प्रतिज्ञा ।

उपविरि-वन् (अव्य०) [अव्य० म० टक् (मनकस्य मनेन)] पहाड़ के निकट वि उत्तर दिशा में पहाड़ के समीप स्थित देश ।

उपवु (अव्य०) गी के समीप गुं वाला ।

उपवुक् [प्रा० म०] लघुपक्ष अग्रपाक ।

उपवुद्ध [पु० क० क०] [उप + वृद्ध + वप्] गुण आलसित, शब्द आलसित उपगुहानि मरेपयनि च कु० ४.१७, सि० १.०८८, कठउल्लेखोपगुहम् - धर्मा० ३.१२ मेघ० ९० ।

उपवृहन् [उप + वृद्ध + वप्] १ गुण रचना, छिपाना २ आलसित ३ आचरण, अवधान ।

उपवृत्तः [उप + वृद्ध + वप्] १ कर एकद २ हार यन्त्रावा-मुद्रा० ४.१२ ३ कौटी ४ सम्मिलित होना, जोड़ना ५ अनुवृद्ध, मोल्हावृद्ध ६ लघु वृद्ध (राष्ट्र, केतु कारि) ।

उपवृहन् [उप + वृद्ध + वप्] १ एकदना (नीचे से) लघुवृत्त रचना, (वैयस्य 'प्रायोपवृहन्' में) २ एकद, निरुपकारी ३ लहारा देना, लड़ा देना ४. केवलमय - दोषोपवृहन्वाच्य तात्पर्यावृत्त मनु० - राजा० ।

उपवृहः [उप + वृद्ध + वप्] १ उपवृह देना २ उपवृह ।

उपवृष्ट [उप + वृद्ध + वप्] १ बँट वा उपवृह २ विशेष रूप से बहु भेंट को किसी राधा वा वृत्तिस्थ व्यक्ति का दी जाय लक्षणा ।

उपवृत्तः [उप + वृद्ध + वप्] १ प्रहार, चोट, अभिरोपण मनु० २.१७९, याज्ञ० २.१२५ २ विनाश, अवधि ३ स्पष्ट, मपक ४ सप्रहार, उत्पीडन ५ रोग ६ पाप ।

उपवृत्तयन् [उप + वृद्ध + वप्] विद्योदा पीटना, प्रकीर्णित करना, विज्ञापन देना ।

उपवृत्त [उप + वृद्ध + वप्] १ अनवरत लहारा-वेधादिरोपण-लोचनयौ मनु० १.४१ २ लहर, लहारा, लहारा ।

उपवृत्तः [प्रा० म०] एक प्रकार का नाम हूँ ।

उपवृत्तः [मनु०] [प्रा० म०] वृत्तनाल, वचना ।

उपवृत्तः [उप + वृद्ध + वप्] १ इकट्ठा होना, जोड़, बँट-वृद्धि २ वृद्धि बड़ कार्यवच-वत् का० १.०५, स्वस्त्ययुगलमे सि० २.५० १.३२ ३ परिमाण, डेर ४ वृद्धि, उपवृत्त मद्रूपव ।

उपवृत्तः [उप + वृद्ध + वप्] १ इन्द्राव विजिज्ञा २ निकट जाना ।

उपवृत्तयन् [उप + वृद्ध + वप्] निकट या समीप जाना ।

उपवृत्तः [उप + वृद्ध + वप्] एक प्रकार की अवधि ।

उपवृत्तः [उप + वृद्ध + वप्] १ देश लघुपक्ष मन्मान पुत्र, लहारा अभिनिर्तोषागम- मनु० ५.१०

२ विच्छेदा मन्मान लोचन नक्ष अववृत्त (लोचन का बाह्य प्रवर्तन, परिच्छेद - हि० १.१३३

विशिष्टमन्मानय मासवि० ३.३ 'पक्ष न वेष्टि - कु० ४.१९ केवल मन्मान मुषक उक्ति बाटुकारिता-

पुल्ल अभिनन्दन ३ अभिवादन प्रयागुक्त मन्कार, यद्विचि- लोपचामुहनि - म० ३.१८, 'वचनवा

-मासवि० ४ 'अवधि मनु० ३.११, मन्कार करते समय दोनों हाथ जोड़ना ४ लोचन वा अभि-

वादन की रीति का एक रूप - रामयड हत्यं वी प्रत्युपचार लोचने नातपरिवर्तन - उत्तर० १ क्या

मुष्मन्लोपचारे- ५ बाह्य प्रवर्तन वा रूप, लहारा, - बाटुवेष्टि विच्छेद लोपचारे - विच्छेद० ४

६ विच्छेदा उपचार हत्यं वी विच्छेदा का प्रवृत्त, विच्छेद - वत् १.५ ७ अन्धता अनुपमान, लक्ष्य, अवच-वत्तवत् - मनु० १.१११ १.१३२, कावेय-

चारे- वत् ८१, वेद-वत् ८१ के लक्ष्य में ८ लक्ष्यविधि विधि करने वा लक्ष्य अवधि करने के

साधन - इकीबीधिनबोधधारण (राजसागमं) १५०
 ७४, ५४१, १ अत (पूजा, उत्सव या सजावट आदि
 की) कोई भी आवश्यक वस्तु सम्यगलोपधारणाम्
 - १५० १०७३, कु० ७१८८, १५० १११, पूजा की
 वस्तुओं या उपचारों की सख्या मिश्र-मिश्र (५ १०
 १६, १८ या १४) बताई गई है 10 व्यवहार
 की, आचरण - वैषम्य-माहोपचार - ११११६
 11 काम में आना उपयोग 12 धर्मनिष्ठान मन्त्रा
 - प्रमुख पाणिग्रहणोपचारों - कु० ७१८६ महर्षिः
 ११२४ 13 (क) आलंकारिक या आलंघनिक प्रयोग
 नीच प्रयोग (वि०) मुख्य या प्राथमिक भाव
 - अन्तर्गत प्रयोग प्रयोगधारणसंज्ञात् - शारी० न भास्य
 कृतवत्त्व लक्षणार्थित इति मुख्यः उपचार एव
 सत्य एवम् काव्य० १० (ल) समता के आधार
 पर बना काल्पनिक अभिमान - उपलब्धता चय मुद्रा
 उपचारोपाधितत्वात् - काव्य० २ 14 स्थित 15
 बहाना - वि० १०१२ 16 प्राबंता, याचना 17 विमर्श
 के स्थान में वृत्ति या वृत्त होना

उपचयिः (स्त्री०) [उप + चि + क्तिन्] इकट्ठा करना
 सचय करना बचन वृत्ति ।

उपचयनम् [उप + चल् + ल्युट्] गम्य करना चलान

उपचयः [उप + छद् + ल्युट्] छुपाना छिपाना

उपचयनम् [उप + छद् + ल्युट्] छुपाना छिपाना
 एक या अनेक या कुलमाना समझा बुझा कर किसी
 कार्य के लिए उपकारना - उपचयनद्वारेण स्वयं कार्ययुक्त
 प्रयत्नधत्ते - दल० १० 2 आसन्न होना ।

उपचयः [उप + च् + ल्युट्] 1 जाह वृत्ति 2 परिष्कार
 3 उमना, उपचयम्भान ।

उपचयनम् - वि० [उप + च् + ल्युट्] 1 जाह
 बानावृत्ति ।

उपचयः [उप + च् + ल्युट्] 1 उपचय बान म कम
 कुलमाना या मन्त्राचार बना उपचय मुद्रा २
 2 गुरु के मित्रों के साथ गुण बानावृत्ति 3 क वर
 बाहर विशेष कर लिए उपकारना उपचय उपचयन
 तानाकोपचयनम्भवि वि० १०० उपचयनम्भवि वि०
 उपचयनम्भवि वि० १०० उपचयनम्भवि वि०
 उपचयनम्भवि वि० १०० उपचयनम्भवि वि०
 उपचयनम्भवि वि० १०० उपचयनम्भवि वि०

उपचयिक, - वि० (वि०) [उप + च् + ल्युट्] वि०
 वा 1 किसी दूसरे के सहाय करने वाला या जीविका
 करने वाला (कर्म० के साथ या सामान्य) - ज्ञान
 माहोपचयिकान् - १५० १२११६ ११० नाना
 पञ्चोपचयिकान् ११२५३ उपचयिकान् मूल्य
 २, - (५०) पराधिन, अनुचर जीविकाधन्युपचय
 वा उपचयिकान् - ११२५३

उपचयिकम्, - जीविका [उप + च् + ल्युट्] कृत्वा वा]

1 जीविका 2 जीवन-निर्वाह का साधन, मुआरा
 या जिन निम्नितार्थोपचयनम् यात्रा ३ १२२१
 3 जीविका का साधन सपनि आदि किञ्चिदुपचय
 जीवनम् मन्० ११०७३ ।

उपचयिक (वि०) [उप + च् + ल्युट्] 1 जीविका प्रधान
 करने वाला यात्रा २ २०२३ 2 सरलक मन्त्रा
 देने वाला 3 (आ०) स्थित के लिए सामर्थ्य
 देने वाला जिससे कि भव्य सामर्थ्य प्राप्त करे
 मन्त्रा वाच्यकानामुपचयिकान् अभिप्रायि मन्त्रा
 ४ 1 सरलक 2 स्थित या प्रामाणिक एव (जिससे
 कि मन्त्र सामर्थ्य प्राप्त करे) 3 मन्त्रोपचयिकाना
 मान्याना व्याख्याएषु उपचयिकानामुपचय मा० ६० ४ ।

उपचयिक बन्धन [उप + च् + ल्युट्] 1 मन्त्र
 2 मन्त्राचार 3 मन्त्राचार 4 मन्त्राचार

उपचय [उप + च् + ल्युट्] 1 मन्त्राचार में अपने आप
 उपचय हुन जान 2 मन्त्राचार 3 मन्त्राचार में मन्त्रा
 नपु ४ मन्त्राचार 5 मन्त्राचार 6 मन्त्राचार 7 मन्त्राचार
 मन्त्राचार 8 मन्त्राचार 9 मन्त्राचार 10 मन्त्राचार
 2 मन्त्राचार 3 मन्त्राचार 4 मन्त्राचार 5 मन्त्राचार
 मन्त्राचार 6 मन्त्राचार 7 मन्त्राचार 8 मन्त्राचार
 मन्त्राचार 9 मन्त्राचार 10 मन्त्राचार

उपचयिकम् [उप + च् + ल्युट्] मन्त्राचार में मन्त्राचार
 उपचय मन्त्राचार

उपचय [उप + च् + ल्युट्] 1 मन्त्राचार 2 मन्त्राचार
 मन्त्राचार 3 मन्त्राचार 4 मन्त्राचार 5 मन्त्राचार
 मन्त्राचार 6 मन्त्राचार 7 मन्त्राचार 8 मन्त्राचार
 मन्त्राचार 9 मन्त्राचार 10 मन्त्राचार

उपचयनम् [उप + च् + ल्युट्] 1 मन्त्राचार 2 मन्त्राचार
 मन्त्राचार 3 मन्त्राचार 4 मन्त्राचार 5 मन्त्राचार
 मन्त्राचार 6 मन्त्राचार 7 मन्त्राचार 8 मन्त्राचार
 मन्त्राचार 9 मन्त्राचार 10 मन्त्राचार

उपचयिन (वि०) [उप + च् + ल्युट्] 1 मन्त्राचार 2 मन्त्राचार
 मन्त्राचार 3 मन्त्राचार 4 मन्त्राचार 5 मन्त्राचार
 मन्त्राचार 6 मन्त्राचार 7 मन्त्राचार 8 मन्त्राचार
 मन्त्राचार 9 मन्त्राचार 10 मन्त्राचार

उपचयिकम् अर्थात् 1 मन्त्राचार 2 मन्त्राचार 3 मन्त्राचार
 मन्त्राचार 4 मन्त्राचार 5 मन्त्राचार 6 मन्त्राचार
 मन्त्राचार 7 मन्त्राचार 8 मन्त्राचार 9 मन्त्राचार
 मन्त्राचार 10 मन्त्राचार

उपचयिक [उप + च् + ल्युट्] 1 मन्त्राचार 2 मन्त्राचार
 मन्त्राचार 3 मन्त्राचार 4 मन्त्राचार 5 मन्त्राचार
 मन्त्राचार 6 मन्त्राचार 7 मन्त्राचार 8 मन्त्राचार
 मन्त्राचार 9 मन्त्राचार 10 मन्त्राचार

उपचय [उप + च् + ल्युट्] 1 मन्त्राचार 2 मन्त्राचार
 मन्त्राचार 3 मन्त्राचार 4 मन्त्राचार 5 मन्त्राचार
 मन्त्राचार 6 मन्त्राचार 7 मन्त्राचार 8 मन्त्राचार
 मन्त्राचार 9 मन्त्राचार 10 मन्त्राचार

उपचयिक [उप + च् + ल्युट्] 1 मन्त्राचार 2 मन्त्राचार
 मन्त्राचार 3 मन्त्राचार 4 मन्त्राचार 5 मन्त्राचार
 मन्त्राचार 6 मन्त्राचार 7 मन्त्राचार 8 मन्त्राचार
 मन्त्राचार 9 मन्त्राचार 10 मन्त्राचार

उपलक्षणम् [प्रा० सं०] गीत नक्षत्र पुत्र, अग्रवाल ताप
(ऐसे तारे गिनती में ७१९ बतकिये जाते हैं) ।

उपलक्षणम् [प्रा० सं०] नगरपाल ।

उपलक्ष (पु० क० ड०) [उप + लक्ष् + क्त] जाया हुआ,
पहुँचा हुआ, प्राप्त, या टपका हुआ आदि ।

उपलक्षिः (स्त्री०) [उप + लक्ष् + क्तित्] १ पास जाना
२ झुकना, नति, नमस्कार ।

उपलक्षः [उप + लो + अच्] १ निकट जाना, के जाना
२ उपलक्षि, अवस्थिति, आज्ञा लेना ३ काम पर लगाना
४ उपनयन संस्कार अनेक फलाना वेदाध्ययन की
दीक्षा देना गृह्योक्तकर्मणा येन समीप मोचने गुरो
बाला वेदाय उद्यागान् वाक्स्वापनय विदुः । ५ नर्क-
दारुण म भारतीय अनुमान प्रक्रिया के पाँच अंगों में से
चौथा—प्रस्तुत विशिष्ट एक का प्रयोग—व्याप्तिविशेष
हेनो पक्षधर्मता प्रतिपादक बचनमुपनय नर्कः ।

उपलक्षणम् [उप + लो + ल्युट] १ निकट के जाना
२ उपहार भेंट ३ अनेक-नमस्कार आज्ञाप्रदानकृत्यु-
लक्षणोपनयनो द्विव मनु० १०८, १०९ ।

उपलक्षिका [प्रा० सं०] बन्धुप्राप्त का एक भेद
यह मातृव्य-अपत्यक बन्धों के योग से होता है, उदा०
पु० काव्य० ० में विदे गये उग्रहरण की—अपत्याग्य
पत्न्यार कुल द्वार द्वार एक कि बन्धन, अलक्ष्यमानि
मुक्तानिगति वदति दिक्षानि राजा ।

उपलक्षः—नाक्षत्रम्=६० उपनय ।

उपलक्षकः [उप + लो + क्तृ] १ नाट्य-साहित्य या
किसी अन्य रचना में बहुत पात्र या नायक का प्रधान
सहायक हो उदा० रामायण में लक्ष्मण वाल्मीकिचर
में भकरन्द अदि २ उपनि प्रेमी ।

उपलक्षिका [प्रा० सं०] नाट्य-साहित्य या किसी अन्य
रचना में बहुत पात्र या नायिका की प्रधान सखी या
सहोदरी हो देने वालासाहाय्य म मदयन्त्रिका ।

उपलक्षः [उप + लक्ष् + क्त] १ गठरी २ किसी वाद्य
पर लगाई जाने वाला मण्डप ३ बीजा की झुटी
जिसका बराइन से मिश्रण के तार कसे जाते हैं ।

उपलक्षणम् [उप + लक्ष् + क्त] १ उपलक्ष आदि
का भेद २ व्याख्य करना, लेख करना ।

उपलक्षितः [उप + लि + क्तृ + क्त] १ बराहुर या
न्याय के रूप में रचना २ कुली बराहुर, कोई बन्धु
विसर्ग कथ परिभाषा आदि बना कर उस दूसरे की
समाल दिया जाता है याज्ञ० २१२ 'एव पर मिता०
बहनी है उपनिषदों नाम कथनकाग्रहणंन रत्नधार्य
रग्य ह्यन्ते विहित इत्यच्' ।

उपलक्षणम् [उप + लि + क्तृ + क्त] १ निकट रचना
२ गया करना, किसी की सेवा-सेवा म रचना
३ बराहुर ।

उपलक्षिः [उप + लि + क्त + क्त] १ बराहुर, अग्रवाल
२ (विधि में) गृहस्व भवान्त—याज्ञ० २१२५,
मनु० ८११५, १४९, पु० मेधातिथि यत्प्रवसितक्य
साधकवस्वादिना पिहित निक्षिप्यते—पु० याज्ञ० २१९५,
और मिता० में उक्तित तारद ।

उपलक्षितः [उप + लि + क्त + क्त] १ निकट पहुँचना,
निकट जाना २ आकस्मिक तथा अप्रत्याशात आकस्मिक
या बटना ।

उपलक्षणम् [(प०)] [उप + लि + क्त + क्त] अचा-
नक आ टपकने वाला रग्योपलक्षितोपलक्षी
शब्दः ।

उपलक्षणम् [उप + लि + क्त + क्त] १ किसी वाद्य
को संपादित कर क रग्य २ बरत निरतः ।

उपलक्षणम् [उप + लि + क्त + क्त] १ बरत
अथ बरतान् प्रतिरूपन रक्षणम् ।

उपलक्षितः (वि०) [उप + लि + क्त + क्त] १ कान्ति,
रक्षा तथा स्थापित किया गया बनाव रक्षा १
६३७ रग्यो १५१-९१ ।

उपलक्षः (स्त्री०) [उप + लि + क्त + क्त] १ काव्य
बन्धों के साथ बन्धन कुछ गृहस्थवादी रचना जिसका
मुख्य उद्देश्य वेद के गृह बन्ध का निरूपण करना है
—नामि० २१०, मा० ११७ (निष्ठाकिण व्युत्पन्नबो
उल्लेख नाम की व्याख्या करण के लिए दो गई है)

(क) उपनीय तत्परमाणु ब्रह्मापातद्वय यत्
निहन्त्यविद्या तज्ज व तस्मादुपनिषद्भवेत् । या (ख)
निहन्त्यानर्बन्ध स्वार्थिषः प्रत्यक्षतया यम न्यन्थास्त
मयेवमता बोधनिषद्भवेत् । या (ग) प्रकीर्णहेतुवि
मर्षान्-मूलोच्छेदकत्वन यतोवमादपिडा तस्मादु
पनिषद्भवेत् । सूक्तकाण्वायर् में १० उपनिषदों
का उल्लेख है परन्तु इस भख्या में ६३ और ब्रि
हृई है २ (क) एक गृह या गृहस्थधर पिडा (ख)
रहस्याधी ज्ञान या शिक्षा महावी० ११२ ३ पर
माया के लक्ष्य में मय ज्ञान ४ पवित्र एवं धार्मिक
ज्ञान ५ मोक्षोपमा, एकान्तता ६ समीपव्य बचन ।

उपलक्षः [उप + लि + क्त + क्त] १ गली, मुख्यमार्ग,
राजमार्ग ।

उपलक्षणम् [उप + लि + क्त + क्त] १ बाहर
जाना, निकलना २ एक धार्मिक अनुष्ठान या संस्कार
जिसमें बन्धों को सर्वप्रथम बाहुर ध्वनी तथा में निकाला
जाता है (यह संस्कार प्रायः और पात्र की आयु होने
पर बताया जाता है) पु० मनु० २३३ ३ मुख्य
या राजमार्ग ।

उपलक्षः [(प०)] नायके का स्थान, मुख्यपात्रः ।

उपलक्षः (वि०) [उप + लो + क्तृ] जो निकट करता है,
या निकट जाता है, के जान वाला—पु० ११९०,

उपकाय [शा० सं०] शोकाय की वीथ बाधा ।

उपकृत् (स्त्री०) [उप + कृ + क्तृ] उपकाय, उपकायः यज्ञो में प्रयुक्त होने वाला शोक व्यास ।

उपकीकः [उप + कृ + क्तृ] १ (क) रक्षावाहन जाना, चलना - न जाना काम कामानामुपकीकेन सम्पत्ति - मनु० २।१४, वाय० २।१०१, काय - भव० १।१११ (क) उपयोग, प्रयोग शा० ४।४ २ रति-सुख, स्वीतृहास - रघु० १।४।२ ३ कलोपचय ४ मानस, सत्पत्ति ।

उपकायक [उप + कृ + क्तृ] १ सर्वोचित करना आभयन बुलावा २ उपकाय, उपकायन ।

उपकायनी [उप + कृ + क्तृ + क्रीप्] अग्नि को उद्दीप्त करने वाली लकड़ी ।

उपसर्गः [उप + कृ + क्तृ] वर्षण, रसद दबाव, बोज के नीचे कुचल जाना - अग्न्याहु तावदुपसर्गमश्रासु भुङ्क्ते सोल विप्रोदय मन मुमनोऽप्यासु शा० ६० (यर्ग 'उपसर्ग' का अर्थ है उद्गल व्यवहार या वभागजन्य रतिमुक्त) २ नाश, नाशना, बध करना ३ निवृत्तनः दुर्बलन करना, अपमानित करना ४ सूखी अलग करना ५ आरोप का निराकरण ।

उपसा [उप + सा + क्तृ + क्तृ] १ समरूपता समता चाम्ब - स्फुटोपसं भूमिभिरेन सम्पन्ना - मि० १।४ १।०६९, २ (बल० शा०) एक दूसरे से भिन्न दो पदार्थों की तुलना, तुलना, तुलना - गणार्थसंग्रहमा भेदे - काय० १०, साधुस्य सूत्र साक्षात्कारकारक-मुपसाङ्कति - रस०, या-उपसा एक साधुस्यलक्ष्यो-पलक्षित इति, हृदीक कुल्ल ने कीति स्वर्गकामदगाहने । चरमा० ५।३ उपसा कालिदामस्य - मुद्रां ३ तुलना का मापदण्ड - उपमान यथा बला निबान्त्योनेनते मोरना म्पूना भव० १।१९ ६० 'इत्य नी०, बहुधा समानता में 'की मालि' 'मिलने-जुलने' दूबध न सूक्ष्म - रघु० १।४३, इसी प्रकार अवरोपय अनुपम आदि ४ समानता (विश्व, प्रति जाति की) । भव० इत्यन्तु तुलना के लिए प्रयुक्त किये जाने वाला पदार्थ - महापद्माव्ययसम्बन्ध - मु० १।४९ ।

उपसक्त (स्त्री०) [शा० सं०] १ दूसरी भाषा, द्वच पिलाने वाली धातु २ निकट संबंधिनी स्त्री - मातुष्यमा मातु-कातो विमुच्यन्ती विमुच्यमा, वक्ष्य पूर्ववत्पत्नी च मातुष्यमा पकीतिता अरु० ।

उपसायक [उप + सा + क्तृ] १ तुलना, समरूपता जाना-सद्वृत्तसमानवाद्या - कु० १।३९ २ तुलना का माप-दण्ड जिससे किसी की तुलना की जाय (वि० उपसर्ग) उपसा के बार संबंधित ध्वनो में से एक उपमान-पुष्टिमामिनाम् कु० ४।५, उपमानव्यापि मने प्रयुक्त मान वप्रमत्या - विरु० २।३, मि० २०।६९

३ (व्या० धर्मान में) साधुस्य, समानता की सम्पत्ता, चार प्रकार के प्रमाणों में से एक जो यथार्थ ज्ञान तक पहुँचाने में सहायक होता है इसको परिभाषा - प्रतिज्ञासाधर्म्यात् साधुसाधनम्, या, उपमिति-क-नमुपमान तच्च साधुस्यज्ञानात्मकम् तर्क० ।

उपसिति (स्त्री०) [उप + सा + क्तृ] १ समरूपता, तुलना, समानता - पल्लवोपसितसाम्यस्यम् शा० ६० नदाननसाधर्मिनी श्रुति - शा० १।२४ २ (व्या० ६० में) साधुस्य साधन साधन से प्राप्त ज्ञान, उपमान के द्वारा निर्गमित ज्ञानसार - व्यन्-क्षप्रयत्नमितिस्वर्गोपमितिस्वर्ग - भाषा० १२ ३ एक अनन्तार उपमा ।

उपस्येय (सं० क०) [उप + सा + क्तृ] समानता या तुलना करने के योग्य तुल्य । कश्च० क मास द' ममान भ' भूयिष्ठमासादा'मवका'य' तुलन (च ६.६ १।१४ ३ कु० ३।२ यच्च तुलना वरा का विषय तुलना (वि० उपसर्ग) उपमानमायेव योक्तव्येव वस्तुतः - ब-दो ५।३ ९। भव० उपसा एक अनन्तार जिसमें उपस्येय जी उपमान के तुलना इस दृष्टि से की जाती है कि उनसे समान कोई भी वस्तु हो नही - विषयान् उपस्येयमानवा - काय० १० ।

उपसक्त (पुं०) [उप + कृ + क्तृ] प्रति अणुसंज्ञा-भव समरूपता कु० १।१५ रघु० ३।१ मि० १०।४५ ।

उपसक्तम् । शा० सं०] बाधक का एक छोटा उपकरण ।

उपसर्ग [उप + कृ + क्तृ] १ विनाश - विनाश करना कम्पा अज्ञानी उपमा अनन्तार नारीपना शा० ६० । प्रसक्तम् ।

उपसर्गक [उप + कृ + क्तृ] १ विनाश करना २ शत्रुवद लगाना ३ अग्नि का स्थापित करना ।

उपसक्त (पुं०) [उप + कृ + क्तृ] यज्ञ के भोक्ता अध्वर्यों में से उपसर्ग वा पाद ४ ने वाला प्रति प्रस्तावा नामक श्रुतिक ।

उपसायक (वि०) [उप + सा + क्तृ] मापने वाला, प्राची, विवाहाधी, धनुक ।

उपसायकम् [उप + सा + क्तृ] निवेदन करना, मांगना, प्रार्थना करने के लिए किसी के निकट जाना ।

उपसायित (पुं० क० क०) [उप + सा + क्तृ] जिससे मांगा गया है, या प्रार्थना की गई हो, - तच्च १ निवेदन या प्रार्थना २ मनीना, जयकी अभीष्टसिद्धि हो जाने पर देवता को प्रमन करने के लिए प्रतिज्ञात भेट (बाहेर बर काई पशु हा या मनुष्य) निवेदी प्रियसे मुच्य प्रदास्याम्मुपसायितम् पञ्च० १।१६ अथ यथा अवकाशा करामाया प्राप्नुयसायित स्वीरतस्यपुहर्तव्यम्

2 संबंधबोधक वाक्य के रूप में इसका कार्य है: — (क) अधिक, पर (सब के साथ, कर्म के साथ विरल प्रयोग), शि० ११।३ (ख) सिर से पैर तक (ग) के पीछे (सब के साथ)।

इषरीतकः [उपरि + इ + क्त + कन्] रतिक्रिया का जासन
विशेष (‘बिपरीतक’ भी कहलाता है) — उरावेकपक्ष
कुम्भा द्वितीय स्कन्धस्थित्यन्, नारी कामयते कामी बन्ध
स्यादुपरीतकः । शब्द० ।

म्यकम् । उपगत रूपक दुरयथाव्य साव्येन-प्र० म० ।
उट्टिया प्रकार का नाटक, इसके निम्नांकित १८ भेद
दनाये गए हैं - नाटिका नोटक गोष्ठी सट्टक नाट्य-
लोकक, प्रभातोत्थाय काव्यानि प्रेक्षक रासक तथा,
तत्सक भोगीदण्ड तिस्यक व विलासिका, दुर्मनिरा
प्रकरणी हल्लोगो भणिकेन च । सा० द० २७६ ।

पञ्च [उप-सृष्ट् बाण्] १ अक्षबाधा दृष्टावट गक
-रूप ० ६/६६ जि ० २०/१६ २ बाधा कर-
नावननिवायिनापुत्रशेष मा भून् शां १, अनुपद
स्वैय तोरशेष विक्रम ० ३ ३ बाष्पादित करता
ग डालना, अवकट करना ४ सरभा, अनुपद ।

१। (वि०) [उप + रण् + क्त] १ अद्वयार्थक
आह करने वाला, बेरा हाथने वाला, कम, मीनर
का कमरा, निजी कमरा।

उपरोक्तम् [उप + लप् + ल्युट्] अवभाधा रकावट आदि
दे० उपराव ।

उपलब्धः [उप + ला + क] १ पत्थर, पाषाण - उपलब्धकाम-
मेतदन्नेक गोमयानाम् - मंडा० ३।१५ - कान्ते कच
वदितवान्पलेन नेन भूगारः ३, मेघ० १९, श०
१।१४ २ मलयवान् पत्थर, रत्न, मणि ।

उपलब्धः [उपल + क्त्] पठ्यते, ला 1, रेत, बा-५।
2 परिष्कृत शकंरा ।

उपलक्षणम् [उप : लक्ष्णं व्युत्पत्तिः] १ देवता, दृष्टि हावना
अकिन करना वेतोपलक्षणाणाम् पा० ६ २ चित्त
विशिष्ट या भेदक रूप-विक्रमः ६।३३ ३ पद, पदार्थ
४ किसी ऐसी बात का ध्वनि होना जो वस्तुतः वही
न हुई हो, किसी अनिश्चित वस्तु की ओर या भ्रम
किसी समरूप पदार्थ की ओर मकेन जबकि केवल ए
का ही उल्लेख किया गया हो समस्त वस्तु के नि
उमके किसी एक माय का कथन, पूरी ज्ञान को प्रक
करने के लिए व्यक्त की ओर मकेन भादि (ध्वनिनि
पादकस्ते सति स्वेनग्रन्थिपादक-वम्) मयनप्रपण
साधारणव्याप्यलक्षणम् पा० ११।४।८० मिया० ११

उपलब्धिः (स्त्री०) [उप + लभ् + क्तिन्] १ प्राप्तिः
 अवाप्ति, अमिषहणं तथा हि मे व्यासकान्तोपलब्धिः
 दृ० ५५६, ८१३ २ पर्यवेक्षणं पर्याख्यानं
 ज्ञानं वाचा उपलब्धे -१० ग्या० म० २१२

3 समझ, मति 4 षट्कल, अन्यान 5 सलक्ष्यता, आविर्भाव (भीमासक्तों ने 'उपलब्ध' को प्रमाण का एक भेद माना है) दे० अनुपलब्धि ।

उपलम्भः [उप + लभ् + क्तञ्, नृन्] १. अभिग्रहण—अस्मा-
दङ्गुलीयोपलम्भस्तस्मिन् उपलब्धः - मां ७ २. प्रत्यक्ष-
ज्ञान, अभिज्ञान, स्मृति से विद्य सन्बोध (अर्थान् अनुभव)
—प्राक्तनोपलम्भ मां ५ ज्ञाती मुत्तगणसुखोपलम्भान्
—र० १४२३ निश्चय करण, जानमा—अधिग्र-
हणोपलम्भाय मां ११

उपसालनम् । उप + लृ + -णिच् । स्युट् । लाङ् प्यार
करता ।

उपलब्धिका । उग्र - लाल - श्वेत इवम् । प्यास ।

उपनिषद् (प्रा० म०) अष्टादश, देवी पञ्चा जो ज्ञानिष्ठ
सूत्रा इ० ।

उपनिषत्ता । उ । लभ + मन् । भृ । टाप् । प्राप्त करन
की इच्छा ।

उपलेख: [१५ : १५ : ५५] १. केस वाला २. सांझी
काना, सफेदी पाना ३. अरबधा बह होता
(जानेन्द्रियों का) सुन्न होता ।

उपलक्षणम् । ३७ + लिप्ताः न्यस्यः । १ मात्स्या ओ पातना
२ म न्यस्य, न्यस्यः ।

उत्तरवर्धन । १० म० । बाग बगीचा, लगाना हुआ जमिन
 गन्धक्यायामनवत् । कोरें मी रीनरी मेव०
 २ म० १९३३, १९३९ तथा उद्यान की बाल ।

उपवर्णं । उप . वर्णं . धञ् । मृदभ या व्द्यारेकार वर्णम् ।

उपवर्णनम् । उप - वर्ण + क्यट् । सूक्ष्म वर्णनं व्योमे आर
निक्षणं अनिश्चयवर्णनं यथा दानम् सुभूतं पाञ्च०
१।१०।

उपश्रुतं नमः । उतः कृतः नमः । 1 अथवागमः ।
2 वृत्ता या परमना 3 गम्य 4 कौशिक दम्भम् ।

उपवसथ । नमः । वस । अथ । नमः ।

उपवस्त्वमः । उवाच (स्वामिन्) । २५ । उपवासा, वन ।

उपवास : उपवस : घन । 1. घन माणनासम्बद्ध वसे
 यात्रा ११७५, ३१९० घन १११९
 2. गन्तव्य का प्रदीप करना ।

उपवाहनम् [उप + वह्, + णिच् + स्यट्] ले जाना, निकट
लाना ।

उपवाहः-या [उप + वह् + क्त, सिप्रिया गप्] । राजा
 की मरारी का हाथी या हथिनी सम्मग्नोपवाह
 गजवारा मडा २२ राजकीय मरारी ।

उपविद्या । पा० म० । सांसारिक ज्ञान, अविद्या ज्ञान ।

उपनिषद्-धर्म । प्रा० म० । १. कृषिम् २. निम्न ।
जनक, मन्त्राचार्य, नरसीजी श्रीवास्तव, अकालीन स्थायीजी ।
पंथ कवि, शिक्षा, अतएव कर्तव्यम् । तस्य शोचनीया
ममता ।

उपवीचयति (ना० वा० पर०) (किसी देवता के आगे) बीणा वा सारंगी बजाना—उपवीचयितुं यवी रवेवदया-
वृत्तिरपेन नारद रघु० ८।३३, नै० ६।६५, कि०
१०।३८।

उपवीचय [उप + वे + क्त] १ अनेक मस्कार, उपनयन
मस्कार २ अनेक वा यज्ञाधिकार जिसको हिनू जानि
के प्रथम तीन वर्ष धारण करते हैं—पिप्पलसमुपवीच-
कञ्ज मान्क च वनू कश्चिन् दधन रघु० ११।६६, कु०
६।६ शि० १।७ मनु० २।४४ ६४, ६।३६।

उपवृहन्म [उप + बृ + क्त] बृद्ध मन्त्रवा।

उपवेष्ट [पा० म०] घटिया ज्ञान उदा से निचल दृष्टि का
प्रयोगमूह। उपवेष्ट गिनता म उर है और प्रयेक वद
के साथ एक वद मकर मकर के गता, ज्ञान के साथ
म वेष्ट (मुमुक्षु आदि विद्वानों के मनानुसार ज्ञानवेष्ट
अथवेष्ट को प्रवेष्ट है। प्रवेष्ट के साथ प्रवेष्ट या
मनिक विज्ञा सामवेष्ट के साथ गतावेष्ट या मनोत और
अथवेष्ट के साथ गतावेष्ट मन्त्र ११ या धर्मिकी।

उपवेशन इत्यम [उप + वे + क्त] १ बैठना
आसन इमाना हैमा कि प्रायणवेष्टन २ मयन
होना ३ मलान्तम।

उपवेशय [उप + वे + क्त] दिन के तीन भाग
अर्थात् प्रातः काल मध्याह्नकाल और सायंकाल
—विमर्षा।

उपस्थापयाम् [प्रा० स०] बाग में जाड़ी हुई व्याख्या या
टीका।

उपस्थाप [पा० म०] एक सारा निकारी बीना।

उपस्थाप [उप + स्था + क्त] १ स्थान होना उपस्थानि
सादरना कुनात्या उपस्थान—बीणो ३ मन्वेद मह
एव धाम्ययाम ना सामवेष्टावेष्ट म्फुम जमर ५
निर्वाण रोक, पर्यायमाप्ति २ विद्या छट्टा १३ गम
३ पालि स्वैयं, वीय ४ ज्ञानान्द्रया का निगमन।

उपस्थापय [उप + स्था + क्त] १ स्थान करना
आनि स्थाना रूप करना २ मन्त्रकरण ३ वृक्षाना,
विग्रम।

उपस्थाप [उप + स्था + क्त] १ पाम गटना २ गीद, बाल
का स्थान शि० १८०।

उपस्थाप [अप्पा० म०] धाम या गंग के बाहर का
कुडा स्थान, मगधाय उपस्थान अथवायन्वे गिपु-
मामस्थान रघु० १६।३७, १५।५०, शि० ५।८।

उपस्थाप [प्रा० स०] गीण साक्षा, प्रस्थान प्राप्ता।

उपस्थापि (स्वी०) [प्रा० स०] १ विग्रम, प्रमन, प्रस-
मन -रघु० ८।३१, अमर ६५ २ आस्थापन,
अभिषमन।

उपस्थाप [उप + स्था + क्त] बारी-बारी से मोला, दूसरे
पहरेपारों के साथ दस्त को सोने की बारी।

उपस्थापय [अप्पा० म०] घर के निकट का स्थान, घर
के आगे का स्थान, -कम्प (अप्य०) घर के निकट।

उपस्थापय [प्रा० स०] लघु विज्ञान या वृक्ष।

उपस्थाना-अथम् [उप + स्थ + क्त] अधिवन,
बीजना, प्रविज्ञान।

उपस्थिप [प्रा० स०] शिष्य का शिष्य शिष्योपशिष्य-
होना। यमानमवति तन्मन्त्रमभिषयाम—उद्भवत्।

उपस्थोमय-बीजा [उप + स्तु + क्त] बीजा,
अलङ्कृत करना।

उपस्थोमय [उप + स्तु + क्त] मूलना,
मृगना।

उपस्थिति (स्वी०) [उप + स्थ + क्त] १ मृगना कान
देना २ प्रथम-प्रथम ३ गत के मुदाई देने वाली
मृगमयी निदादेवी का अधिपत्यक देवदत्त एक
निर्गुण धर्मिकविष्णुमाधुकर वक्ष धवन तद्विदुषीग
देवप्रथनमृगधुनिम। हागा० परी प्रनाग्नी बाप्पा
मनमममृगधुनि निर्गमाम का० ६५ ४ प्रविज्ञा
स्वीकृति।

उपस्थेय, अथम् [उप + स्थ + क्त] स्तुत बा।
१ पाम पात रचना, सपक्ष २ आभिषमन।

उपस्थोययति (ना० वा० पर०) कविता से स्तुति करना,
प्रशंसा करना।

उपस्थय [उप + स्थ + क्त] १ दमन करना,
रोकना बाधना २ सृष्टि का अंत प्रत्यय।

उपस्थय [उप + स्थ + क्त] गीण लवह,
सुधार।

उपस्थेय [उप + स्थ + क्त] एक साथ उगना,
उपर उगना, अग्र जाना (उत्थम प्ररना)।

उपस्थेय [उप + स्थ + क्त] कारर, खिदा।

उपस्थेयाम् [उप + स्थ + क्त] अन्त पट, अन्तर
वर्षायागमस्थानयो पा० १।१।३६।

उपस्थेयय [उप + स्थ + क्त] १ हटा लेना,
बापिन लेना २ रोक रचना ३ बाहर निकालना
४ आक्रमण करना हागा करना।

उपस्थेय [उप + स्थ + क्त] १ एक स्थान पर
कर देना, लिकाइ देना २ बापिन लेना, रोक रचना
३ लवह, सपक्ष ४ उठारना, लवेटना, समाप्ति
५ (किसी भाषण की) इति की ६ सारसवह, लविष्य
विग्रम ७ लजेय, लहृति ८ प्रथम ९ विनाय, मृग
१० आक्रमण करना, हलका करना।

उपस्थेयय [उप + स्थ + क्त] १ लहा-
विष्ट करने वाला २ एकलिक, अपवर्जी।

उपस्थेय [उप + स्थ + क्त] सार, सारास,
लविष्य विग्रम।

उपस्थेयाम् [उप + स्थ + क्त] १ जोहना

२. बाव में बोझ हुआ, दृष्टि, अतिरिक्त निर्बलान (बहु कम प्रायः कात्यायन के नाटकों के लिए प्रयुक्त होता है, जिसका बावण पवित्रि के दृष्टों में रही कूट प्रयुक्तों को सुधारना है, अतः वे परिचित का काम करते हैं) उदा०—मुकुटाविराटप्रभावाचार्यनामपुत्रस्वामिन् ३. दृष्टि ३. (आ० में) कम और अर्थ की दृष्टि से प्रत्यावेष्ट ।

उपसङ्गः, -हणम् [उप + सम् + कृ, + णप्, ल्यप् वा]

1. प्रसन्न रसना, सहारा देना, निषाह करना 2. साधना
जिम्मावन (चरण स्थल करते हुए) स्फुरति रसना-
त्यागि: पादोपमप्रवृत्तयश्च—ब्रह्मादीन् २।३० 3. स्वी-
करण, हराय केना 4. विनम्र स्वीयन, जमिवायन
5. एकबीकरण, विनामा 6. प्रवृत्त करना, (पत्नी के
बन्धुकरा करना रूप में)—पादोपमप्रवृत्त—वाङ् १।१५
7. (बाहरी) परिधिष्ठ, कोई ऐसी वस्तु जो वा तो
उपयोगी हो, कथना स्यात्पठ के काम जाये, उपकरण ।

उपसर्गः (स्वी०) [उ + लृ + क्तिन्] 1. लक्ष्य, प्रेक्ष्य
2. सेवा, पूजा, परिषदा 3. घोट, दान ।

उपसर्गः [उप + कृ + क] 1. निकट जाता 2. घेँट, शान ।

उपलब्धम् [उप + लुप् + ल्यट्] 1 निष्कट ज्ञाना, समीप
वर्तमाना 2 वृक्ष के बरतों में बैठना, सिध्द करना
—समीपस्थान वने होखस्येधल्लवकर्मणि—महा०
3. वास-वर्तनी 4 सेवा ।

उपसर्गानः [उप + सम् + तन् + कम्] 1. सम्प्रतिष्ठित
कथोप 2. कथति ।

उपसंवासात् [उप + सम् + वा + ल्युट्] बोधना, विलासा ।

उपसर्गवाक्यः [उप + लब् + मि + कर्त् + वच्,] डाल देना,
छोड़ देना, त्याग देना ।

उपसवाचानम् [उप + तम् + वा + वा + ल्युट्] एकम्
करना, डेर जगाना—उपसवाचानं राखीकरणम्
—विद्या० ।

उपसर्गः (स्त्री०) [उप + नृ + पद् + क्तिन्]
 १. समीप जाना, पहुँचना २. किसी अवस्था में प्रविष्ट होना ।

उपलक्षण (मू. क. ६.) [उप + लङ् + पठ् + प्रत्यय] १.
उपलक्षण २. पठ्वा ह्या, ३. उपलक्ष्य, लक्षित ४ पत्र
में लक्षित दिया गया (पठ्), लक्षित दिया गया—मन्.
५।८१.—मन्त्र उपलक्षण !

उपसर्गस्य-वा [उप + सम् + भास् + वञ्, अ वा]
 १. वसतिनाथ—कि० १।१ २. वीरभूषणं जगन्नाथ—उप-
 सर्गनाथ उपसर्गस्य-वा १।१।४७ टिप्पणाः ।

उत्तर: [उप + सू + अर्] 1. (संज्ञ का वाच की ओर)
निमित्तम 2. वाच का प्रथम गर्भ-व्यापारः-विद्या०।

अमरकम् [उप + नृ + कृत्] 1. (किसी की ओर) जाना
2. जिसकी तरफ लक्ष्य की जाय ।

उपसर्गः [उप + लृ + चञ्] १. बीनारी, रीज, रीज के उत्पन्न कृता आदि विकार—जीवों समुच्चयोरत्सर्गः प्रभृता—सूक्ष्म २. मृत्तीकृत, कष्ट, संकट, कायाकृत, हार्मि—रत्न० ११० ३ वायुचक्रम्, अमिष्टकर श्राद्ध-स्तिक चटणा ४ बह्वृ ५ मृत्यु का कल्याण वा विघ्न ६ वायु के पूर्व लगने वाला उपसर्ग—विश्वनाथचारवो श्रेया प्रायश्चित्तपुस्तकका, शीतकरणात् किमाजीवो लोका-दवचना इमे । विपत्ती में उपसर्ग २० हैं—तथाहि घृ, वरा, जप, लज्, अनु, जय, निम्, वा निद्र, दुग्, वा पुर्, वि, वा (ऊ) नि, जवि, जवि, प्रति, मु, उप, जनि, प्रति, परि, उप, वा २२ यदि निम्-निर् और दुग्-दुर् को एकत्र २ सम्बन्ध समझा जाय । इन उपसर्गों की विवेचना के सम्बन्ध में हो सिद्धान्त हैं । एक सिद्धान्त के अनुसार तो वायुओं के अनेक अर्थ होते हैं (अनेकार्थी हि वातव), जब उपसर्ग २० वायुओं के पूर्व बोधे जाते हैं तो वह केवल वायुओं में पहले से विद्यमान - परन्तु गुण वश हुए—अर्थ को प्रकाशित कर देते हैं, वह स्वयं अर्थ की अविश्वस्यता नष्टी करते क्योंकि वह हैं ही अर्थहीन । दूसरे सिद्धान्त के अनुसार उपसर्ग वायुवा २०-व अर्थ प्रकट करते हैं, वह वायुओं के अर्थों में सुधार करते हैं, बढ़ाते हैं, और कई उनके अर्थों को विलुप्त करवा देते हैं—तु० सिद्धा०—उपसर्गोन् वायवर्णो वनादन्वय नीयते, प्रहाराद्वाह-सहाराद्विकारपरिहारात् । और तु० वायवर्णो वाक्ये कश्चिद्विचित्रावनुवर्तते, तस्यै विविधपञ्चम्य उपसर्ग-वर्तिमिव वा ।

कलशार्चनम् (उप + कृ + क्त्वरु) 1. उन्नमना 2. मूर्ध्निधत्, संकट (ब्रह्म आदि), अष्टाङ्गमुन 3. छेदना 4. ब्रह्म कर्मना 5. अतीतमय अर्पित वा कर्तु, प्रतिनिधि 6. (आ० में) वह सत्य विलका अपना मूल स्वार्थ स्वकर्म अस्तित्व के कारण वा रचना में प्रयुक्त होने के कारण मूल स्रोत क्या हो बीर जब कि वह दूसरे सत्य के वर्ग का ही निर्वाण करे (विप० ब्रह्मण) ।

उपसर्गः [उप + सुप् + क्त] मधीय जाना, कर्त्तव्य ।

उपसर्ग [अ + वृ + म्यु] निकट आता, पठ्यमा,
अक्षर होना ।

उपसर्ग [उप + कृ + क्त + टाप्] वर्षाणी हुई या झड़ुक्की
बाद जो ताँड़ के उपसर्ग हैं।

कल्पवृक्षः [भा० त०] एक राक्षसः, मिथुन का कुम्भ तथा बुध का भाई ।

उपसर्गकम् [उपसर्ग + कम्] उपसर्गकण्ड या करिष्येत् :

उपपत्ति (पृ. ४०. ४.) [उप + उ + क्त] १. विद्याया
द्वया, संयुक्त, सम्मेलन २. भूत-मैत्राण्डित्य, वा भूत-मैत्र-
हस्त—उपपत्त्या इव भूतमैत्राण्डित्यमकम्—पृ. १०७
३ कष्टप्राप्त, कष्टिकृत, कष्टिप्राप्त—रीतिवत्प्राप्तमर्थ-

वति मयूज् रन् ० ८१४ ४. बह्वन्-वत्स ५ उपमन्-
मुला (यान्) कृषद्बहुल्यमृष्टयो कम्-गा० १।४।
१८. -वः बह्वन् वे वस्तुं वृष्टं वा चन्द्रवा, -वत्स
मैवन्, शमोन् ।

उपलोक-उपलोक [उप + लिप् + वज्, ल्युट् वा] १ उप-
लना, छिन्नकना मीचना २ मीचना रत्न, मी कबली
वा कटोरी विलसे उठेना भाव ।

उपलोकम्, मेवा [उप + मे + ल्युट्, अ + टाप् वा] १
पूजा करना मन्थान करना बाराचना २ उपमना
-राज् मयू ० ११४ ३ लिप्-होना विषय
४ काम मेना, (स्त्री का) उपमान करना पन्थार
-मयू ० ४१४४ ।

उपलोक [उप + ल + वज्, ल्युट्] १ वा किसी दूसरी वस्तु
का पूरा करने के काम प्राय मवटक, अवयव
२ (अन) (वस्ति) विषे जाति) ममाना जो मोहन को
स्थापित बनाय ३ साधन उपलब्ध, उपान, उपकरण
-लि ० १८७२ ४ चर-मृष्टयो क काम की वस्तु
(मेमे लाह) पात्र ० १८३, २ १९३ मयू ० ११४
१२१६, ५१५० ५ आभूषण ६ निन्दा, बदनामी ।

उपलोकम् [उ + ल + वज्, ल्युट्] १ वच करना अन-
विज्ञान करना २ मन्थ ३ परिचयन, मुद्यार
४ अद्याहार, ५ बदनामी निन्दा ।

उपलोक [उप + ल + वज्, ल्युट्] १ अतिरिक्तक, परि-
शिष्ट २ अद्याहार (भूय पद की पूर्ति) -साका
अननुस्कार विषयगतिनिराकुनम् -कि ० ११३८
३ मुन्दर बनाना, सजाव, शोभायजन करना उपलमे
बाई सोपम्कारमाह रन् ० ११४७ पर मल्लि ०
४ आभूषण ५ प्रहार ६ मन्थ ।

उपलोक (भू ० क ० क ०) [उप + ल + वज्, ल्युट्] १ तैवार
किया हुआ २ मन्थन ३ मन्थना गया, अन्कृत किया
गया ४ अद्याहार ५ मुद्यारा गया ।

उपलुप्ति (स्त्री ०) [उप + ल + क्तिन् ल्युट्] परिशिष्ट ।

उपलुप्त-अम्व [उप + लम् + वज्, ल्युट् वा] १ टेक,
सहारा २ प्रोत्साहन, उकसाना, सहायता ३ आचार,
नीति, प्रयोजन ।

उपलुप्तम् [उप + ल् + ल्युट्] १ कैलाना, विधाना,
बहोना २ चार, ३ विस्तार ४ कोई दिखाई हुई
(चाहर जाति) -अम्वोपलुप्तममलि स्वाहा ।

उपलुप्ति (स्त्री ०) [प्रा ० ल ०] रत्न ।

उपलुप्ति [उप + ल् + क्तिन्] १ दोष २ (हारीर का) मन्थ
भाष, वेदु, -स्वः -स्वम् १ (स्त्री या पुंस की) बनने-
लिप्त, विरोधत योनि स्नान मोनोपचायेत्या स्वा-
प्यामोपलुप्तमिह्या -वाज ० १११४ (पुंस का लिप्त)
ल्युप्तोपलुप्तमलीप् -मत् ० ११२ (स्त्री की योनि),
हृत्ती नादुपलुप्तमव-वाज ० ११२ (वहू बहु कल्प योनि)

अर्थों में प्रयुक्त है) २ मुद्रा ३ कुम्हा । वज्-लिप्-
हिनिरवचन, वयम वाज ० १११४, -वज्-लिप्-
पीप का वज् (क्योकि इनके पद स्त्री-योनि के
आकार के समान होते हैं) ।

उपलुप्तम् [उप + ल् + ल्युट्] १ उपस्थिति, सामीप्य
२ पहुँचना जाना, प्रकट होना, दर्शन देना ३ (क)
पूजा करना, आर्चना, बाराचना, उपमना -मुनोपलुप्त-
नामप्रतिनिधत् पुकरवत् आमुतेय -वि ० १, ल्युप्तो-
पलुप्त कुर् -वि ० ४, वाज ० ११२०, (अ) अमिषा
दन मम्कार ४ आवाह ५ वैधान्य, पुष्पमन्थ, बाल्य
६ स्मरण, प्रत्यामरण, स्मृति - वाज ० ३, १६० ।

उपलुप्तम् [उप + ल् + लिप् + ल्युट्] १ विकट रचना
मेवा होना २ स्मृति को खाना ३ परिचर्चा, मेवा ।

उपलुप्तम् [उप + ल् + वज्, ल्युट्] लेखक ।

उपलुप्ति (स्त्री ०) [उप + ल् + क्तिन्] १ पस जाना
२ सामीप्य विद्यमानता ३ अवस्थिति, प्राप्ति ४ सम्पन्न
करना, कार्यनिष्ठ करना ५ स्मरण प्रत्यामरण
६ मेवा, परिचर्चा ।

उपलुप्ति [उप + लिप् + वज्, ल्युट्] मीमा होना ।

उपलुप्ति-मन्थ [उप + ल्युट् + वज्, ल्युट् वा] १ स्मृति
करना सम्पन्न २ स्नान करना मन्थन, होना
३ कुम्हा करना, आचरण करना, आर्जन करना (असो
पर जल के छीटे देना -एक बार्मिक कृष्ण) ।

उपलुप्ति (स्त्री ०) [प्रा ० ल ०] लघु वर्मलाभ या विधि
पन्न (यह लक्ष्य में १८ है) ।

उपलुप्तम् [उप + ल् + ल्युट्] १ रव का दार्मिक साध
होना २ बहाव ।

उपलुप्तम् [प्रा ० ल ०, अज्, लाह (को भूमि लघुता
पूँजी में प्राप्त हो) ।

उपलुप्ति [उप + लिप् + वज्, ल्युट्] दीक्षापन, पत्नीता ।

उपलुप्त (भू ० क ० क ०) [उप + ल् + क्तिन्] १ अन-
विशत, जिम पर आचार किया गया हो, क्षीण, दीक्षित,
बोत मया हुआ कु ० ५१७ २ अजिमत, जाहड,
आहुत, पराजून दारिद्र्य, मोह, हर्ष, काय,
शोक आदि ३ सर्वथा विनष्ट -कर्मनामि देवो-
पहना ववम् मुहान २, देवोपहृतस्व बुद्धिरथा पूर्व
विषयस्थिति-मुहान १८ ४ निवृत्ति, अस्तंता किया गया,
उपेक्षित ५ दुषित, कर्तृपित, अपवित्रीकृत -आरोरे
मैले बुधार्थिदेवार्थ यदुपहन तदप्यन्तोपहृतम् -विष्णु ।
सम -आलम्ब बुध्यमाना, उद्दिष्टमाना, -बुद्ध्य (वि ०)
बोधिधारा हुआ, अथा किञ्च यवः -कि ० १२१८,
-की (वि ०) मृद ।

उपलुप्त (वि ०) [उपलुप्त + क्तिन्] कृतार्थ, अमाना ।

उपलुप्ति (स्त्री ०) [उप + ल् + क्तिन्] १ प्रहार २ वच,
हृत्ता ।

उपहार [प्रा० ०] आँखों का चीबियाना ।

उपहारम् [उप + ह + ल्युट्] 1 निकट लाना, आकर लाना 2 ग्रहण करना, पकड़ना 3 देवता आदि को भेंट प्रस्तुत करना 4 बलिपत्र देना 5 भोजन परोसना या बाँटना ।

उपहृति (भू० क० कृ०) [उप + हृ + क्त] मजाक उड़ाया गया, अर्त्तना किया गया, — तत्त्वं व्यर्थपूर्ण बट्टहास, हुसो उड़ाना ।

उपहृतिस्त [उपहृति + क्त + टाप्, ह्यम्] पान-पान, — उपहृतिस्तकायास्तम्भक कपूरसहितमुष्ण्य दवा० ११६ ।

उपहारः [उप + ह + क्त] 1 आहुति 2 भेंट, उपहार - रघु० १।८४ 3 बलि-पत्र, यज्ञ, देवता का नमस्कार — रघु० १६।३९ 4 सम्मान-मूकक भेंट, अपने बहों को उपहार देना 5 सम्मान 6 जाति के मुख्य स्वरूप बलि पुरक उपहार - हि० ४।११० 7 अम्भ्या-गलों में परोसा गया भोजन ।

उपहारिम् (वि०) [उपहार + निम्] देने वाला उपहार प्रस्तुत करने वाला, लाने वाला ।

उपहारकः [?] कुलक देश का नाम ।

उपहास [उप + हा + क्त] 1 मजाक उड़ाना हुसो-दिल्ली २५० २ व्यर्थपूर्ण बट्टहास 3 हुसी मजाक, जेसबूद, तम० — अल्पवयस्य पाचम उपहास की सामग्री, मोह, उपहास्य ।

उपहासक (वि०) [उप + हा + क्त] हुसी-मजाक उड़ाने वाला, क. विद्वक, दिल्ली ब्राह्म ।

उपहास्य (वि०, स० कृ०) [उप + हा + क्त] मजाकिया — ता गम् या या — हुसी मजाक की वस्तु बनना, ठिठोकिरा — यमिष्याम्युपहास्यताम् रघु० १।३ ।

उपहृति (वि०) [उप + हृ + क्त] रक्सा गया, दे० उप-पूर्वक था ।

उपहृतिः (स्त्री०) [उप + हृ + क्त] मुकाबा, बाह्मन, निमेषण, — सि० १।३० ।

उपहारः [उप + हृ + क्त] एकान्त या अकेला स्थान, निजी बगह — उपहारो पुनरित्यशिशय वननिषय - दश० ५८२ सामीप्य ।

उपहास्य [उप + हा + क्त] 1 मुकाबा, निमेषण करना 2 प्रार्थना यंत्रों के साथ आवाहन करना ।

उपहार (अव्य०) [उपयत्ता दशवी यत्] 1. मन्त्र स्वर से, कानाफूली 2. धूप के से, मुष्णक से — परिकेतुमुष्ण-वाग्मात् — रघु० ८।१८ — कृ० मन्त्र स्वर से की गई प्रार्थना, यंत्रों का यज्ञ करना भू०, यन्त्र० २।८५ ।

उपहारकम् [उप + हा + क्त + ल्युट्] 1. बारंब करने के लिए निमेषण, निकट लाना 2. तैयारी, आरम्भ, उप-कर्म 3. आरंभिक अनुष्ठान करने के कर्त्तव्य कर्म-पाठ

का उपकर्म भू० उपकर्मन्, — वेदोपाकरमाव्य कर्म करार्ये आचमनी यत् ।

उपकर्मन् (नपु०) [उप + आ + क्त + मन्] 1 तैयारी, आरम्भ, उपकर्म 2 वर्षारम्भ के पञ्चात् वेदपाठ के उपकर्म से पूर्ण किया जाने वाला अनुष्ठान (भू० आचमनी) ब्राह्म० १।१२२, यन्त्र० ४।११९ ।

उपहृति (भू० क० कृ०) [उप + हृ + क्त] 1 निकट लाया हुआ 2 यज्ञ में बलि दिया गया 3 आरम्भ उपकर्म ।

उपहृति (अव्य०) [अव्य० स०] आँखों के सामने, अपने समक्ष ।

उपहृतिवन्-नकम् [उप + आ + क्त + ल्युट् पक्षे कन् च] छोटी कबा, मन्प या आख्यायिका उपहृतिवन्तिना तावद् भारत प्रोच्यते ह्ये मन्ता० ।

उपहार [उप + आ + गम् + प्र] 1 निकट प्राना पहुँचना 2 घटित होना 3 घटित करार 4 स्वीकृति ।

उपहार [प्रा० स०] 1 बाँटी या किरार क निकट का भ्रम 2 गोल भ्रम ।

उपहारकम् [उप + आ + क्त + ल्युट्] दीक्षण होकर वेदोपादन करना ।

उपहार [प्रा० स०] 1 उपभाग, उपभोग 2 कोई छोटा भग या अवयव 3 पाराशर्य का पुरक 4 बट्टिया प्रकार का आंतरिक कार्य 5 विज्ञान का चीन पाष वेदांगों के परिशिष्ट स्वरूप लिखा गया कृष्ण मन्त्र (वे चार हैं पुराजन्मावलीमासावर्तसारुपाणि) ।

उपहार [उप + आ + क्त + ल्युट्] 1 (वाच्य में सव्य का) स्थान 2 कार्यविधि ।

उपहार (अव्य०) (केवल कृ० जानु के साथ प्रयोग) महारा देना उपहारकृत् या कृत्वा महारा देकर — पा० १।३।३३ लिङा० ।

उपहारकम् [उप + अव्य० + ल्युट्] यजमान जीपना (मोह्य जाति से) जीपना (सखेरी, मुना आदि) — यन्त्र० ५।१०५, १२२।१२४, मठारे (मुचाचोकायिन्स लवार्त्तानां लेपनम् — मेधातिथि) ।

उपहारकः [उप + हृ + क्त] उपहृति करना, (प्रचलित दवा से) विषम ।

उपहारकम् [उप + आ + क्त + ल्युट्] 1 केना, प्राप्त करना, अभिग्रहण करना, अवाप्त करना — विषम शास्त्रान् मुद्रान् इत्योपाशावाचरेत् — यन्त्र० ८।४१७. विष्वा० — का० ७५ 2 उपलेख, वर्णन 3. कवचिका, मिकाना 4. सामाजिक पक्षियों से अपनी आर्यैयों व मन की हटावा 5. कर्म, प्रयोजन, वास्तविक या तात्कालिक कारण — वादवीपायनी धा० — उत्तर० १, कर्त्त० ५० 6. आचमनी चिकने कोई वस्तु लाने, बौद्धिक कारण — निमित्तकर्म लाने लानुपारान् व

नाम् (विनयति) पञ० ११६९ उपलानामेत्यु पितु
स्म मृचते नै० ११३४, मनु० ३ १०७ भव० १३७
याज्ञ० ३१५५ २ अन्त्य तुला हुआ, जुटा हुआ
सगीत मृच्छ० ६ मनु० ३१९९ ३ पूजा भादर
पारायना, शाराय्य ६ ५ वार्षिक यवन ६ यशस्विन ।
अपला [उप + आत् + ल + टाप्] १ सेवा, हाजरी
२ पूजा आराधना ३ वार्षिक यवन ।

अपलमयन् [प्रा० म०] मृग छिपना ।
अपलित (स्त्री०) [उप + अल - क्तित] १ सेवा सेवा
में उपस्थित रहना (विशेषतः देवता की) २ पूजा
आराधना ।

अपलम्ब [प्रा० सं०] गोल या झंडा हथियार ।
अपलहार [प्रा० सं०] हल्का जलपान (फल मिष्टान्न
आदि) ।

अपहित (पुं० क० कृ०) [उप + धा + क्त]
१ पक्षी गया, बसा किया गया पत्रना गया आदि
२ सबद्ध सम्मिश्रित स आश में जय या आश में
होने वाला विनाश ।

अपेक्षन् = अपेक्षा ।

अपेक्षा [उप + ईक्ष् + क्त + टाप्] १ नजर-अवज्ञा करना
लापरवाही बरतना अवज्ञा करना २ उदासोन्मा
बुद्धा, नकरन- कुहामुपेक्षा हजमीवितेप्रतिम्ब पृ०
१०६५ ३ छाटना छुटकारा देना ४ अवहेलना
दाय पेश, नक्कारी (युद्ध में विरहित ७ उपायो में
से एक) ।

अपेक्ष (पुं० क० कृ०) [उप + क्त] १ समाप आया
हुआ पहुँचा हुआ २ उपस्थित ३ एक सहित
(कर्म) के साथ या समाप में) पुनर्मेव गुणायेन
बद्धनितमाप्नुहि—अ० १११० ।

अपेक्ष [उपगत इन्द्रम् अनुज्ञायान्] विष्णु या कृष्ण (इन्द्र
के छोटे भाई के रूप में अपने पक्ष में जनार (बाधन)
के अवसर पर) दे० इन्द्र अपेक्ष ब्रह्मादिप शास्त्रा
नि गीत० ५ यदुपद्रवस्त्वमनीन्द्र तव म - जि०
११७० ।

अपेक्ष (सं० कृ०) [उप + इ + यत्] १ पहुँचने के योग्य
२ प्राप्त कर लेने के योग्य ३ किसी वी साधन में
प्रभावित होने के योग्य ।

अपेक्ष (पुं० क० कृ०) [उप + वह + क्त] १ भक्ति
एकन किया हुआ जमा किया हुआ २ निकट भाया
हुआ, निकटस्थ ३ युद्ध में लिए पक्षिबद्ध ४ आरम्भ
५ विवाहित ।

अपीनय (वि०) [अप्या० म०] अन्तिम में पूर्व का
- नम् (अक्षरम्) अन्तिम अक्षर में पूर्व का अक्षर ।

अपीनयतः [उप + उप + ईन् + क्त] १ आरम्भ
२ प्रस्तावना, सूचिका, ३ उद्धारण, अनुपयुक्त तक या

दृष्टान्त ४ मुयोप माध्यम, साधन तत्त्वविच्छेदक-
मुपोबुधानेन माध्यात्मिकमुपेयात मा० १५ विष्ने-
वण, किसी वस्तु के तत्त्वों का विश्लेषण करना ।

अपीनयक (वि०) [उप + ईन् + क्त] पुष्ट
करना वाला ।

अपीनयकम् [उप + ईन् + क्त + ल्युट्] पुष्ट करना
समर्थन करना ।

अपीनयन् अपावितम् [उप + वस + ल्युट् क्त वा]
उपवास/अवकाशन ।

अपित (स्त्री०) [हा + क्तित] बाँध होना ।

अपि (पुं० पर०) (अपि उक्ति) १ मीचना
दरना २ मीचा करना ।

अपि अपि पूरा कथा० पर०) (उपनि वा उपनि
अर्थात् उपनि) १ समीपन करना २ सज्जित करना

३ भरन ब्रह्मकुम्भमुद्घातय सर्पा नरप्या समान
४ धाम्ने - धर्मि० ११३४ ५ आच्छादित करना, ऊपर
'ब्रह्म'ना सर्वमस्तु काकुलबसोऽपितीत्यै शिबीपुत्री
मैट्टः १५११

अपि मव १३० केवल 'वृषच' में प्रयुक्त, [उप + मक्]
दानी उभो नै न विद्वाना भव० ११९, कु०
५४३ मनु० ११४ गी० १०१ ।

अपि (मव० वि०) (स्त्री० वी०) उप + मवट्
(अपि अपि की दृष्टि में यज्ञ सत्य द्विवचन है
परन्तु इसका प्रयोग एक वचन और बहुवचन में ही
होना है कुछ वैयकरणों के मतानुसार द्विवचन में वी०
दानी (एक या वचना) अथवा अथरितोक्त वचन में

म० ३ उभयमानसि वसुधाधिपा पृ० ११९
उभयी मिथिपुमावभापु १०३ १०३८ अमर
६० कु० १७८ मनु० २५५ वा० ११३४ १३४ ।

सम० वर (वि०) अन् स्थल या आकाश में बिखरना
करना वाला, जल स्थल चारा बिछा दो प्रकार की
विद्याएँ परा और अपरा अर्थात् ज्ञानम विद्या और
मौलिक ज्ञान विद्या (वि०) दानी प्रकार का,
वेतन (वि०) दानी स्थानों के वेतन वसुध करने
वाला दा स्वाधिया का सेवाक, विद्यावाचाली, व्यंजक
(वि०) (स्त्री और पुंस्व) दोन में बिछा रखने वाला
सबब उपपारान् मुविद्या ।

उपयत (अव्य०) 'उपय - सविल' १ दोनों ओर से
दोनों ओर (कर्म के साथ) - उपयत कृष्ण गोपा
मिदा० याज्ञ० १५६, मनु० ११३५ २ दोनों
दशात्रा में ३ दोनों गीतिष्ठों में मनु० ११७०, सव०
वन, हव्य (वि०) दोनों ओर (नीचे और ऊपर)
दोनों की पक्षि वाला मनु० ११३३, वृक्ष (वि०)
१ दोनों ओर फैलने वाला २ दुग्धा (मकाना वि०)
(की) व्याती हुई भाष्य - याज्ञ० ११२०५-७ ।

उभय (अभ्य०) [उभय + भू] 1. दोनों स्थानों पर, 2. दोनों ओर 3. दोनों अवस्थाओं में—अभ्य० ३।१२५, १९७।

उभयवा (अभ्य०) [उभय + वा] 1. दोनों ओरों से - उभयवादि पठन-विषय ३ 2. दोनों दशाओं में : उभय (ये) व (अभ्य०) [उभय + वृन् एवम् वा] 1. दोनों दिन 2. आगामी दोनों दिन।

उभ् (अभ्य०) [उभ् वृन्] (क) ओष (ख) प्रथमपक्ष-कता (ग) प्रतिष्ठा वा स्वीकृति और (घ) दीनत्व वा सात्त्विकता को प्रकट करने वाला विस्मयार्थ टोना कथन।

उभा [ओ शिवस्य वा लक्ष्मणस्य, उ शिव मानि य त्व रतिवत्त मा + क वा ताण०] 1. शिवान् और मेना की पुत्री, शिव की पत्नी, कामनाय नाम की पुत्री २५ पक्ष० क० ११ है उ मेनि (ओष, उभ जत्र तास्या न करे) माता नामो निविदा पञ्चदश्याया मुमुक्षो जगाम—अभ्य० १।१०६, उभावनाहो अभ्य० ३।१०३ 2. प्रकाश, आभा 3. यस कर्माणि 4. सान्नि प्रज-मता 5. गन् ६. प्रवृत्ति 7. नन, गम० मुक् अवक शिवालय पर्यन्त (उभा का गिता होने के नाते) वति, शिव बहुशब्दस्य/लभ्यत्वस्य चितुराक्षस्य/पद्मिनीरान कि० ५।१६४, इगो प्रकार ईश, 'लभ्य' 'साम्य' आदि, लुक्: कामिकेय धा मनेज।

उभ (बु) इ: [उभ् + वृ + अथ पुणे०, तस्मा, इह की वीथि की ऊपर वाली सड़क]।

उर [उर + क] भेद।

उरत (स्त्री० ली०) [उरता मण्डप, उरत् + मन् + वृ, मन्तायः] 1. मर्ष, सार २. गृहीरोरमलता—रघु० १।२८, १२।५, ११ ३. नाग या पुराणों में वर्णित मानव युद्ध वाला स्थिति सपि-दे (कम्बईमान्पोर-राक्षसान्-अभ्य० १।१८, मनु० ३।१९६ 3. लोभा, वा एक नगर का नाम—बु० १।५९१। ताण० प्रति: अलन, अणु 3 गहव (लोपो यः) 2 मोर, हृष्टः, राक्षः वायुक्रिया सेवनान्, प्रतिस्तर (वि०) विवाह—मृदङ्गा के स्थान में लीप करने वाला, अथवा: शिव (साँपों के सुपुत्र)।—सारधर्मक, ननु एक प्रकार की चन्दन की लकड़ी,—स्वल्पान् नवों का आवासस्थान अर्थात् गाला

उरह्—अणु [उरत् + मन् + वृ, लोपः, मुमागमव्यः] ली०।

उरकः (स्त्री० ली०) [उर + वृ, उर, एररव] 1. मेला, मेह—गृहीरोरमलता: च मुमुक्षुनाम मण्डप—महा० 2. एक गणस्य विभे इन्ने न मार दिया वा,—ली मेरी।

उरक्य [उरक + क्य] 1. मेला, मेह 2. बाण।

उरकः [उर उरक्य भवति इति उर + क्य + वृ पुषा० उलोपः] मेह, मेह।

उररी (अभ्य०) [उर + वरीक वा०] 1. वायुमति वा स्वीकृति बोधक अभ्यय (इस वर्ष में बहु शब्द ह, नू और मन् वायुधों के साथ प्रयुक्त होता है— तथा गणितमक वा उपलब्ध समझा जाता है, इसी लिए 'उर-रीकृता' न बनकर 'उररीकृता' बनता है, इस शब्द के काल्पनिक है—उरी, उररी, उरी और उररी) 2. विस्तार (उररीकृ [तना० उर०] लक्ष्यति देना, मन् मति देना, स्वीकार करना—चिर न को कायुरीककार भाषि० २।१३, वि० १०।१४)

उरत् (मपु० उरः) [उर + वृमन्, उर एररव] छाती, वक्षस्थल व्योरोरको वृक्षस्थल—रघु० १।१३, बु० ६।५१, उरति ह छाती से लपटा। तम०—छातु छाती की कोट,—उरु—छातु छाती का रोव, ऐक्य की शिल्पी की बुजब, प्युरी,—छातु बोली, ब्रिजवा, —वाच्य कथक, नीलाकन—वि० १५।८०,—क, —बु, उरति, उरति, उरती की छाती, तम, रेखाते वरिष्ठमायुरोक्तुकी—वि० ८।५३, २५, '१' भुजक छाती का आभूषण,—ब्रिजवा रोतिवों का हार जो छाती के ऊपर गटक रहा हो,—वक्षस्थल छाती, वक्षस्थल।

उरति (वि०) [उरत् + इत्यच्] विकल वक्षस्थल वाला।

उरत्स्य (वि०) [उरत् + वृ] 1. बीरक कलाप 2. एक हो वर्ष के विवाहित स्त्रियों का पुत्र वा पुत्री 3. उत्तम, —त्यः पुत्र।

उरक्य (वि०) [उरत् + मपु, वक्ष वः] विकल वक्षस्थल वाला, बीड़ा छाती वाला।

उरी स्वीकृतिबोधक अभ्यय—दे० उररी (उरीकृ मन्मति देना, मनुता देना, स्वीकृति देना—वक्षोरीकृत् त्वमा वृटि० ८।११, रघु० १५।७० 2. अनुसरण करना, आश्रय देना, अति रोचपूरीकरीय मोक्ष—भाषि० १।६४।

उर (वि०) (स्त्री०—इ—ली) तु० (वरीकृ, उ० व० वरिष्ठ) 1. विस्तृत, प्रवृत्त 2. मङ्गल, वृद्धा—रघु० ६।७५ 3. अतिमय, मयिक, प्रचुर 4. मेह, वृक्षस्थल बीजनी तम०,—लीति (वि०) प्रवृत्त, वृक्षस्थल—रघु० १५।७५,—कः वाक्पावता के रूप में विष्णुभक्तान्,—वक्ष (वि०) उत्तम व्यक्तियों द्वारा वित्तका स्तुतिमान किया गया हो—अभ्य० ११,—वक्षी मंत्री लक्ष्म, विष्णु (वि०) पराकषी, वक्षकी, —वक्ष (वि०) ऊँची आवाज वाला, वायुव्य कय-हारी,—हृन् वृक्षस्थल द्वार।

उररी—उररी

उककः = उलकः ।

ऊर्जनामः [ऊर्जं सून नाभी गर्भेऽप्य—ब० स०] मकड़ी,
स० ऊर्जनाम ।

उर्जा [ऊर्ज + उ ह्रस्व] १. ऊन, नमदा या ऊनी कपडा
२. भीरों के बीच केशावन - दे० ऊर्जा ।

कर्मणः [उह + कट् + कण्] १. बलहा २. बर्ष ।

उर्ध्वरा [उव शस्याधिकमुत्पत्ति— $\text{वृ} + \text{वृष्}$] १ उपजाठ
वृषि-मि० १५।६६ २ वृषि।

उपेक्षी [उक्तं महतोऽपि जन्तुने वशीकरोति उच-। अथ
+ क नीरा० बीष- तारा०] इन्द्रलोक की एक
प्रसिद्ध अन्तरा जो पुराणा की पत्नी बनी, (उपेक्षी
का आवेष्ट में बहुत उत्प्रेक्ष मिलता है, उसकी ओर
दृष्टि डालते ही मित्र और वरुण का वीर्य स्खलित हो
गया—विशेष अत्यन्त और वसिष्ठ का प्रभु हुआ
[ये अत्यन्त] मित्र और वरुण द्वारा शाप दिये जाने
पर वह इस लोक में आई और पुराण की पत्नी बनी
जिसको कि उसने स्वयं से उतारते हुए देखा था तथा
जिसका उसके मन पर अनुकूल प्रभाव पड़ा। वह
बहुत समय तक पुराण के साथ रही, परन्तु शाप की
समाप्ति पर फिर स्वर्गलोक चली गई। पुराण
को उसके विवाह से अत्यन्त पुत्र हुआ, परन्तु वह
एक बार फिर उसे प्राप्त करने में नकल हो गया।
उपेक्षी से 'आयुस्' नाम का पुत्र पैदा हुआ - और फिर
वह तदा के लिए पुराण की छोड़ कर चली गई।
विष्णुवीर्यशीष में दिया गया वृत्त कई भातों में विभक्त है,
पुराणों में उसको नारायण मुनि की श्रद्धा से उत्पन्न
कताया गया है।) मन्०—रत्न- वरुण- सहायः
पुराणः।

उर्बाच: [उ + च + उन्] एक प्रकार की ककड़ी, दे० 'उर्बाच'।

कवी [ऊर्ध्व + कृ, नलोपः, ह्रस्व, ङीष्] । 'विष्मन्' प्रत्येक भूमि - स्तोकमुष्वायि प्रयाणि - श० ११३, इगोप गोपकनगरामिबोलीम् रघु० २१३, ११४, ३०, ३५ २१६६ २ पृथ्वी, वरती ३ मुक्ती जगद्, वेदान । सम० - ईशः, ईश्वरः, बभू, वसिः रात्रा, -वक्र - पहाड २ सोनवारः - भूत (पु०) । रात्रा २ पहाड - कः बभू भि० ४१३ ।

उत्तरः [बम् + कपत्, मप्रसारण] १ अत्ता, शब्द २ कायत्
 गृह—मोक्षभिणीप्रियन्बोद्ध, आनन्दादिमध्यापककृष्णि-
 नावल्लो भवति—भा० ११, शि० ४८।

उत्पन्नः [वल् + क्त प्रत्ययान्त] । उत्पन्नं मोक्षकोष-

मनोकोणे यदि विद्या मय्यस्य किं भूयानम् - भर्त० २।१३
 त्यजति भूयान्मूकः प्रीतिपाशककवाक - शि० ११।६४
 २. इत्यु ।

उत्प्लवम् [ऊर्ध्वं त्वम् उत्प्लवम्, पृथो० ला+क] बौधली
(जिसमें धान कटे जाते हैं) अवहलजायोल्लसम्
-महा०, मनु० २।८८, ५।१३७।

उत्सवस्य [उत्सवः + कन्] स्वरस्य ।
उत्सवस्य (वि०) । उत्सवः + कन्] स्वरस्य ये पीसा

वस्तुतः [उन् + क्तच्] अजगर, शिकार को दबोच कर मारने वाला विषहीन सर्प ।

उत्पत्ती [?] नाम कम्पा (वह कौरव्य नाम की पुत्री थी, एक दिन जब वह गंगा में स्नान कर रही थी उत्पत्ती दृष्टि अर्जुन पर पड़ी । वह उसके रूप पर मुग्ध हो

गई फलतः उसने अर्जुन को अपने धर पाशाम लोक में निवासाने का प्रबन्ध किया। वही पशुपति पर उसने अर्जुन से अपने आश्रमको पत्नीरूप में स्वीकार

कर्म की प्रशंसा की त्रिपु भजन न बह सत्कर्म के साथ स्मोकार किया। इगवान् नाम का एक पुत्र उत्पत्ती से पैदा हुआ। जब बभ्रुवाहन के शीत से

उत्पत्ति [उ + पृ + कृ : टाप् प्रत्यय] । आकाश में रहने

यात्रा १११५ २ प्रत्यक्ष हस्त प्रकटी, प्रमाण ३ प्रमाण,
माला मेघ ५२। मय ५२। प्रमाण (१५) प्रमाण

राक्षस या प्रेत (अमिया बैनाल) मनु० १५:११
मा० ५:१३।

२ मयाज ।
उत्थाय - यत् । उद्य - द (य) न कस्य च प्रथम । । अण
२ याति ३ गर्भाजय ।

1 गाढा जमा हुआ रसगुल प्रभु (रसगुल प्रभु)
2 अधिक अभिप्राय नीचे (गो. १०.०६ कु. १०.०६)

उत्सुकः । स्व - मक गन्ध १३ ; ब्रह्म (उज्ज्वली मशाल) ।

उत्पत्ति १ उद् + अक्ष् + ना + १ (उत्पत्ति अक्षाना,
 वाचना २ अक्षिभण, पठित्ना ।
 उत्पत्ति (वि०) { उद् + अक्ष् + ना + १ } १ उत्पत्ति, उत्पत्ति,

उत्सवमन्त्र [उद्. मन्. स्पुट] 1 आनन्द, त्व
2 रोमाञ्च ।

उत्पन्न, आभायुक्त २ आर्गन्ध, प्रसन्न ।
उत्पन्न (वि०) [उत् + भा + क्त] १. रोग से मुक्त,

उत्थिता (वि०) [उत् + उत् + क्त] १ वसा हुआ २ बसा हुआ ।
उत्थीर = दे० उत्थीर ।

उत्थुः [उत् + धृ + क्त] १ ऊँट, — बबोपुत्रासीकृतवाङ्मिता-
वम् — रघु० ५।१२, मनु० ३।१६२, ४।१२०, ११।
२०२ २ मीठा ३ ककुपान् मीठ — श्री ऊँटनो ।

उत्थुमा [उत् + क्त + टाप्, इत्थम्] १ ऊँटनो २ ऊँ की
कक्ष की चिट्ठी की कनी बहिरा रखने की सुराही
— छि० १२।२९ ।

उत्थ्व (वि०) [उत् + लृक्] १ तप्त गर्म — 'मंशु', 'कर
वादि २ तीक्ष्ण, स्थिर, कुर्तीका — बादरे मालिखितोऽप्यो
नमस्त्वानिव दक्षिण — रघु० ४।१, (यहाँ 'उत्थ्व' का
अर्थ 'गर्म' भी है) ३ रिक्त, लीला, बरपरा ४ कनुर,
एकीक ५ कोषी अन्तः, अन्तः १ नाप, यहाँ २ बाध
शत्रु ३ मृग। तप्त० - मंशु, कर - कु, मल्लिखित,
— रत्निक, कक्षिः वने किरणों वाला, कुर्वे - रघु० ५।६
८।३०, कु० ३।२५ मल्लिखित, — अन्तः, उत्थ्व
गर्मी का निष्कट जाला, तीक्ष्ण शत्रु, उत्थ्वक वम या
तप्त पानी, — कालः, — कः गर्म शत्रु - बाध्वा । १ जम्बू
२ यन्त्र भाप, बाधन्तः - क्व छाता छतरो, दध
मन्त्रोक्तमिच्छाकारणम्, — कु० ५।१२ ।

उत्थ्वक (वि०) [उत्थ्व + क्त] १ तप्त कुर्तीका, मक्षि २
ज्वरघटा, वीक्षित ३ गर्मी पहुँचाने वाला गर्म करने
वाला, — कः १ ज्वर २ निहाय तीक्ष्ण शत्रु ।

उत्थ्वानु (वि०) [उत्थ्व + आनु] गर्मी न सह सकन योग्य
इत्थ, क्तपत्, — उत्थ्वानुः मित्रिरे भुविषति तराम्ना
सवासे जिह्वी विषम० २।२३ ।

उत्थ्विका [उत्थ्व + क्त + वि०] उत्थ्व बादरे टाप + इत्थम् मीठ ।

उत्थ्विकम् (पु०) [उत्थ्व + इत्थ्विक] गर्मी ।

उत्थ्वीक, क्व [उत्थ्वीकते द्वित्वित् इत् + क तारा०]
१ जो सिर के चारो ओर बौंधी जाय २ जल कमी,
माफा, मित्राकृष्ण मकुट बलाकापाशगुल्मीकम्
मनु० ५।१९ ३ प्रभातः विज्ञ ।

उत्थ्वीकम् (वि०) [उत्थ्वीक + इत्थ्व] अग्नेयज्य पशुने हुए या
राजमुकुट चारनिका हुए का २०० (पु०) सिक् ।

उत्थ्व, उत्थ्वक [उत् + लृक् क्त वत्] १ गर्मी २ तीक्ष्ण
शत्रु ३ काय ४ सगरमा उत्थ्वकता उत्थ्वक ।
तप्त० अन्तः (वि०) कुट्ट अन्त (पु०) मृग
श्वेद बलगा भाप मन्त्रान् ।

उत्थ्वम् (पु०) [अत् + मन्त्र] १ ताप गर्मी अर्थोत्थान
मनु० ५।१० मनु० १००१ १२३ कु० ५।६६
३।१२ २ बाध भाप कु० ५।२३ ३ बाध शत्रु
४ सगरमा उत्थ्वकता ५ (आ० म) शत्रु म
बोर ह अन्तर द० अन्तः ।

उत्थ्व [वत् + लृक् मन्त्र] १ 'प्रभातः' का 'किरण', 'मन्त्र'
मन्त्रोक्त मन्त्रोक्तमिच्छाकारणम् मन्त्रोक्त
मालिखित १।१२ रघु ५।१२ कि० ५।१२ २ मीठ
३ देवता का १ प्रभातः का १ मन्त्र २ प्रभात
३ नाप ।

उत्थ्व [वत् + लृक् मन्त्र] १ प्रभातः का 'किरण', 'मन्त्र'
मन्त्रोक्त मन्त्रोक्तमिच्छाकारणम् मन्त्रोक्त
मालिखित १।१२ रघु ५।१२ कि० ५।१२ २ मीठ
३ देवता का १ प्रभातः का १ मन्त्र २ प्रभात
३ नाप ।

उत्थ्व, उत्थ्वक [अव्यय०] बलान वा प्रकारान् क मित प्रथक्
विद्या बन्त वाला विषयगत टापक अन्तः ।

उत्थ्व [वत् + लृक् मन्त्र] मन्त्र ।

ऊ

ऊ [अवतीति - क्त + क्तिन् ऊट्] १ दिव, २ पत्रमा
— (अव्यय०) १ आरम्भ-मूक अव्यय २ (क)
कुठाया (क) कक्का (म) तथा मरणा को प्रकट
करने वाला विस्मयवि शोकक अव्यय ।

ऊट (वि०) [वृत् + क्त वत्] १ दीवा गया २ बाधा गया
(बोला जाये) २ लिया गया ३ विवाहित — ह
विवाहित पुत्र, — का विवाहिता नवकी । म० कक्क
(वि०) कक्कचारी, — मर्त्य (वि०) विमने विवाह कर
जिया है, — कक्कः नववधक ।

ऊटिः (स्त्री०) [वृत् + क्तिन्] विवाह ।

ऊटिः (स्त्री०) [वृत् + क्तिन्] १ कुला, मीना २ मरणा
३ उपवास ४ वीर, लेख ।

ऊक्क (नपु०) [ऊट् + क्त] ऊक्क आदेश] तप्त भीड़ी
(यद्गुहिर मन्त्रा म बदल कर 'ऊक्क' हुआ जाता है) ।

ऊक्कम्, ऊक्कच [ऊक्क (न) + क्त] वृत् (स्त्री०) न
मन्त्र ऊक्कचिकृष्टा मन्त्रावधानम् रघु० ५।१६ ।

ऊन (वि०) ऊन अव १ अभावज्ञान, कथरा कम
किञ्चिदूनमनसो ज्ञानमयत यवो रघु० १०।१ वपुन
आपान २ (मन्त्रा) भाषा या ज्ञान म) अवधान
कम ऊनविषय निवन्त आत्र ३।१ को कर्त्तव्य
कम भाष का ३ अवधान दुर्बल बहिरा — ऊन न
मन्त्रावधानो कवाधे रघु० २।१६ ४ बटा कर
(मन्त्राभा के नाथ इमी अर्थ में) एकीक = एक बटा
कर, — विमलः एक बटाकर वीर = १९ ।

सम०—वाङ्मय (वि०) तरंग मालाओं से विभूषित
—(पृ०) समुद्र ।

अविका [अभि + कन् + टाप्] 1. लहर 2. मगूठी (महर की गति बमकीकी) 3. खेव, कोई वस्तु के लिए खोक 4. प्रकृती का निमनिनामा 5. वरुव में पड़ी शिकन वा बगुनट ।

अग्नि (वि०) [अग् + न] विस्तृत, बड़ा, — ई: बहवान्त ।
 अग्निरा [उर सस्यादिकमृच्छति — अ + नृ + टाच्] उपजात
 भूमि ।

कलुषिन् [रे० कलुषिन्] मिश्रक, धूस ।

उत्पन्नः = वे० उत्पन्नः ।

ऊष् (ध्वा० पर०) (ऊष्ति) उष्ण होना, गरम होना, बीमार होना ।

अः [अ + क] 1. रिहायी बरती 2. बाल्य 3. बरार, तरेह 4. कार्यक्षम 5. मलय पर्वत 6. प्रभाव. वी फटना, कुछ कोनों के समानुसार (—अ) भी ।

कट्यकम् [अण् + कन्] श्रमात्, यो कट्या ।

अथवा-ना [कब् + ल्युट्, स्त्रिया टाप् च] । काली मिश्र,
2. अदमक ।

अक्षर (वि०) [अ + रा + क] तमक या रेहकणों से
 युक्त, - र, - रण वज्र ग्राम जो गिहाल हो वि०
 १४४६।

अथर्ववेद (वि०) उपर ।

उत्पत्तिः [ऊष् + मक्] १ नाप २ शीघ्रं ज्ञानम् ।

कर्मणः, कर्म (वि०) [कर्म + न] [उत्थेन + दा] गम्य,
भाष्य निकायने शला।

अथवा (यु०) [उप + मतिम्] १ तार, वर्षा २ कीट-
जंतु, निदाह ३ भय, बाध, उच्छ्वास ४ सगरमी,
जोत, प्रचण्डता ५ (ध्या० में) ग, व, म और ह् की
ध्वनिर्था। सम० अवयवः प्रथम अक्षर का आगमन,

क. 1 जन्म 2. पितरों की (ब. व. में) एक
धेनी ।

प्र. (प्या० उ००) (उहित मे, उहित) 1. टिकना, जकित करना, ब्रबेक्षण करना 2 अटल बनाना, अंधार करना, अनुमान लगाना अनुकूलबन्धुहित पृथितो जन पञ्च १।४३ 3 समझना, लोभाना, पृथिवाना, आशा करना ऊहाउचको ग्रयं न च-वृद्धि- १४।३२ 4 तर्क करना, विचार करना- (ग्रैर०) तर्क वा चिन्तन करवाना, अनुमान वा अटल बनवाना

—कि० १९१९, अथ १ हटाया, इत करना— स
हि विधानमण्डल— भा० ३१२ २ मूल्य अनुकरण
करना, अथवा— तोयना हटाना अथि, अनुकरण
करना हटाया करना २ हटाना उपर्युक्त माना,
निधि, मध्यम करना, प्रकाशित करना ३ (विद्युत्)
परितम्, इधर-उधर स्थितकता, प्रवि— १ वि० ११
करना, बाधा डालना, हटाना अथवा मूल्यमाना
(३० प्रारम्भ) प्रलम्बि शब्द के विरुद्ध गौतम कोषार्थ
लगाना, हि, युद्ध के अथवा ११ गना की अथवा
करना, सुस्था वक्ता के अथवा ११ गना की अथवा
— अथ० ३१११, लम्, एकत्र करना, एकट्ट होना।

कहः [कू. + चञ्] 1 अटकल, अडाम 2 परीक्षण, निर्धारण 3 समझ-बूझ 4. चर्चना युक्ति देना 5 अध्याहार (न्यायपर की पूर्ति) करना। भग० ज्योतिः पूरी चर्चा, अनुकूल व प्रतिकूल स्थितियां पर पूर्ण माह-विचार, -- भाषि० २।७६ वी० 'अपोह'।

शु (अव्य०) (क) इलाना (ख) परिहास और (ग)
निन्दा या अपशब्दप्रत्येक चिरमयादिवाचक अव्यय ।

॥ (भा० पर०) (बृहन्ति बृह-वेर०) सर्वयति,
 बृहन्ति० अतिरिचति । १ आना हिलना-हलना-बभ्र-
 इत्यादावन्तिबृहन्ति-...ति० ४।६४ २ उडाना,
 उडयन्ति उडाना ।

1. ज्ञाना 2. हितभा-इच्छा, इगमय होना 3. प्राप्त

iii (स्था० व०) (श्रवणाति, श्रवण) 1. श्रोत पशुधाना,
जायन करना 2 आक्रमण करना - श्रे० -- (अश्रवति,
अश्रिण) 1 शृङ्गना, हाथमा, स्थिर करना वा ब्रह्मना
- रघु० ८।८७ 2. रक्षना, स्थापित करना, स्थिर
करना, निर्देन देना वा (अश्रि जाति का) डेरना
3. रक्षना, सम्मिश्रण करना, देना, ईडा देना, जमा

देना 4 लीपना, दे देना, मुहुँ कर देना, हुवाके कर देना इति सूतस्याधरणास्यपर्ययि स० ११४, ११५।
हृक्ष (वि०) [हृष + क्त पृ० वनाप] धात्वन्, क्त-
 विभक्त आहृत।

हृक्षन् [हृक्ष + क्त] 1 वन वीक्षण 2 विशेषकर
 मर्यापि हस्तगत मर्यापी या सामान (मुष्ण हो जाने
 पर छोड़ा हुआ) व० रिक्रय 3 माना। वन०
 —हृक्षन् प्राप्त करना या उत्तराधिकार में (सर्पनि)
 पाना, —हृक्ष उत्तराधिकारी या सर्पनि का प्राप्तकर्ता
 भान् 1 सर्पनि का बँटवारा विभाजन 2 अक्ष
 दाप भागिन् हृक्ष, हृक्षिन् (पु०) 1 उत्तरा
 धिकारी 2 मह उत्तराधिकारी,

हृक्ष [हृ + क्त] 1 रोछ वन् १५१७ 2
 पर्वत का नाम क०, वन 1 तारा नाक्षत्र
 नक्षत्र स० १०५ 2 शिमाका चिह्न
 राशि का (पृ० ५० व०) कृत्तिका महान के नाम
 पर जो बाद में सम्पूर्ण कृत्तिका वन् १५१५
 का प्रारम्भ हो रहा था मन्दा भान्। मम०
 —हृक्ष गारामहल नाथ ईसा नारा का स्वामी
 कर्मदा मनि विष्णु राज राज 3 बन्धन
 2 शो का स्वामी उबान हरीश्वर रीछो श्री
 भूतों का स्वामी व० ११३।

हृक्ष [हृष + क्त] 1 हृषिन् 2 कटा।
हृक्षन् [हृष + क्त] मनु मन् ३ [मन्दा के निकट स्थित
 एक गढ़ाद वर्गकामस्तवाम्बन् वन् ११४
 हृक्षन् तिरिदाठमम्बाम्बे नमः पिबन् मम०।
हृष (पु० ५०) (क० १) 1 प्रस्ता करना स्मृति
 मान करना 2 उबना पर्वी शान्ता 3 बमकना।

हृष (क०) [हृष + क्त] 1 मुक्त 2 हृषेय का
 मन् हृषा (वि०) मन्मू और सान् 3 हृषेय का
 (व० व०) 4 दीर्घि [एक के लिए, ५ प्रस्ता
 6 पुत्रा मम० विधानम् हृषेय के मन् व पात्र
 वक् हुट मन्का का चतुष्टय —वेद चारा वेदों
 में सबसे पुराना वेद त्रिष्टुप् का अर्थात् पवित्र और
 प्रशस्त शब्द —संहिता हृषेय ४ सुक्तों का क्रमबद्ध
 प्रवृत्त।

हृषी [हृष + क्त] वृषी, वन् कडाही।
हृष (पु० ५०) (हृषेय) 1 कडा वा सक्त
 होना 2 जाना 3 क्षयता का न रहना।

हृषन् [हृष + क्त + टाप्] धात्वन् हृषन्।
हृष [घ्रा० व०] (अवोते, क्षति) 1 जाना 2
 प्राप्त करना हासिल करना 3 खदे होना या बिखर
 होना 4 स्पर्श का हुट-मुट होना।

1) (घ्रा० पर०) अव्यय करना, उपार्जन करना
 पु० 'वर्ष'।

हृषी —वे० 'हृषी'।

हृष [हृष + क्त] (अवोते) मन्मू, वन् + उ] (ली०
 —वृ-वृषी) (म० व०—हृषीवन्, उ० व०—हृषिन्)
 1 वीषा (मान० मी)—उपा स पयन् हृषीवन् वन्मू
 —हु० ५१३ 2 वरा, ईमानदार, स्पष्टवादी—पृ०
 १४१३ 3 अनुकूल, अच्छा। वन०—व 1 व्यवहार
 में ईमानदार 2 तार, रोहित्वा इन् का वीषा
 कात वन्मू।

हृषी [हृष + क्त] 1 वीषीवादी वरक व० 2 तारों
 की विशेष गति।

हृष [हृ + क्त] 1 कर्ज (नीलों प्रकार का हृष,
 व० वन्मू) अथ हृष (पितृमन्) पितरों की दिया
 जाने वाला अन्तिम हृष अर्चान्—मुद्यापदन् 2
 कर्मव्याप्त दायित्व 3 (बोजन० में) नकारात्मक
 चिह्न या निर्मास पटा चिह्न (वि० वन) 4
 किला वृ० 5 पानी 6 भूमि। मम० अन्तिम मगल
 वर अथममन्, अथवीवन्, —अथकारमन्, धात्वन्,
 मुक्ति, मोक्ष, ओक्मन् हृषपरिवोच करना
 हृष वृत्तना, आचलन् कर्ज वन्मू करना उधार
 दिया हुआ अथ वापिस लेना हृषन् (हृषार्णन्)
 एक कर्ज के लिए दूसरा कर्ज एक हृष वृत्तने के
 लिए दूसरा हृष ले लेना वृ० 1 कर्ज उधार
 लेना 2 उधार लेने वाला वन्मू हासिन् (वि०)
 जो हृष दे देता है —वृ० वृ० वृ० वृ० वृ० वृ०
 हृष परिवोच करक उसे निदा वृ० —हृषवोचनं
 हास्यात्मकपुन्यत हृषदात —मिता० —अकुल,
 —वर्षान् प्रतिभूति अमानत —मुक्त (वि०) हृष
 से मुक्त मुक्ति वृ० वृ० हृषात्मकवन्मू निवृत्त
 हृष-वन्मू ममन्मू विसर्ज हृष की स्वीकृति
 दर्ज हो विधि में।

हृषिक [हृष + क्त] कर्जदार वृ० ०५१ १३।

हृषिन् (वि०) [हृष + क्त] कर्जदार हृषवन्मू
 वृषीवृत्ति (वि० वी वान्)।

हृष (वि०) [हृ + क्त] 1 उचित नहीं 2 ईमानदार,
 सत्ता—मम० १०१४ 3 पूर्ण प्रतिष्ठाप्रप्त
 त्व (अथ०) वृ० वृ० वृ० वृ० वृ० वृ० वृ०
 (लौकिक साहित्य में इनका प्रयोग प्राय नहीं मिलता)
 1 विश्व और निरिच्छ विक्रय विधि (वार्तिक)
 2 पात्र प्रथा 3 शिष्य शिष्य दिव्य सवाई 4 वन
 ५ सवाई अधिकार 6 दोनों में उच्छ्रमिति द्वारा
 अधिकार (वि० वृ० वृ०), वृ० वृ० वृ० वृ० वृ०
 १४। वन०—वन्मू (वि०) वन्मू का वृषि
 स्वभाव वाला—(पु०) वन्मू।

हृषी [हृष + क्त + टाप्] निष्ठा, वार्त्तना।

हृष [हृ + क्त] 1 वीक्षण वर का एक भाग, हृष

हरिण। सम०—अंक,—केतव,—केतुः त्रिकुण्ड—मूक पया
सरोवर के निकट स्थित एक पर्वत जहाँ कुछ दिनों तक
राम बालराम सुग्रीव के साथ रहे थे। काव्यमयानु
सम्पन्ना पुराणालुपितद्वय - भूकृत् ११२ मृगि का
नाम (यह विधापडक का पुत्र था इसके पिता १
जगल में ही इनका पालन-पोषण किया जब एक दिन
वयस्क न हुआ तब तक दुःखर किरी दुःखर ११२ का
नती देवा। जब अनाद्विष्ट न पालन ११२ ११२
न हो गया तो उसके बाद ११२ ११२ ११२ ११२
परामर्शानुसार अनाद्विष्ट का अंक ११२ ११२

कुलाया और अपनी पुत्री क्षाम्ता (यह बलक पुत्री
की इतने क्षाम्ताधिक पिता राजा दहसक से) का
विवाह इतने कर दिया। अष्टाष्टम ने इस काम
में दमन्य होकर उसके राज्य में पर्यन्त ११२
कराई। यही वह क्षमि का जिसने राजा दहसक
के लिए पुनर्प्रेष्ट बल का वनप्रदान किया—जिसने
रक्तव्यपुत्र राम और उसके तीन भाइयों का जन्म
हुआ।

अष्टाष्टम ११२ ११२ ११२ ११२ ११२ ११२ ११२ ११२
दहसक ११२ ११२ ११२ ११२ ११२ ११२ ११२ ११२

एक प्रमाण (क) नमः ११२ ११२ ११२ ११२ ११२ ११२ ११२ ११२
(क) नमः ११२ ११२ ११२ ११२ ११२ ११२ ११२ ११२

एक प्रमाण (क) नमः ११२ ११२ ११२ ११२ ११२ ११२ ११२ ११२
(क) नमः ११२ ११२ ११२ ११२ ११२ ११२ ११२ ११२

ए (पुत्र) ११२ ११२ ११२ ११२ ११२ ११२ ११२ ११२
(क) ११२ ११२ ११२ ११२ ११२ ११२ ११२ ११२
यहाँ गया ११२ ११२ ११२ ११२ ११२ ११२ ११२ ११२
एक (महो) ११२ ११२ ११२ ११२ ११२ ११२ ११२ ११२
केवल मात्र २ जिसके ११२ ११२ ११२ ११२ ११२ ११२ ११२ ११२
विस्तृत बड़ी समझा ११२ ११२ ११२ ११२ ११२ ११२ ११२ ११२
महात्मनाम ११२ ११२ ११२ ११२ ११२ ११२ ११२ ११२
५ ज्ञानी प्रकार का अंक ११२ ११२ ११२ ११२ ११२ ११२ ११२ ११२
मध्य महीनर ११२ ११२ ११२ ११२ ११२ ११२ ११२ ११२
मृत् ११२ ११२ ११२ ११२ ११२ ११२ ११२ ११२
में से एक मध्य ११२ ११२ ११२ ११२ ११२ ११२ ११२ ११२
एकवचनक विधान ११२ ११२ ११२ ११२ ११२ ११२ ११२ ११२
अतिरिक्त—सं० ५ १० एक दूसरा इतने अर्थ
को प्रकट करने के लिए बहुवचनान प्रयोग अन्य अर्थ
एकके लक्ष्यस्थी मात्र ही। सम० अंक (वि०) १
एक बुरी बाला २ एक अजीब बाला (क) १
लीला २ विद्व,—अक्षर (वि०) एक अक्षर बाला
(—रम्) १ एक अक्षर बाला २ पावन अक्षर अर्थ
मध्य (वि०) १, केवल एक पदार्थ या विन्दु या
विचार २ एक ही और ध्यान में मात्र एकवचन
मुला हुआ,—रम् ११२ ११२, अनुमेकावधानीय—मृत् ११२
११२

११२ ११२ ११२ ११२ ११२ ११२ ११२ ११२
एकवचन—अंक १ ११२ ११२ २ भगवन्त या कुव
य अनुविष्टम् अत्यन्त—सम्पन्न की केवल एक ही
११२ मध्य मध्य का उद्देश्य करके किया गया है
आ ११२ ११२ अक्षर २ एक और पदार्थ में ३
११२ केवल एक ही पदार्थ या विस्तृत की ओर निर्दिष्ट है
४ अत्यन्त बहु—मृत् ११२ ११२ विरिक्त अर्थ
सतत—अत्यन्तकालमुक्त मृत् ११२ ११२ ११२ ११२
११२ एकवचन आद्य निर्दिष्ट विधान—मध्य
अर्थ का वैकल्पिक कालकाय महीनर—वि० ११२ ११२
—मृत्, लेन,—सतत,—ले) (अर्थ) १ केवल
मध्य अक्षर मध्य विधान २ अत्यन्त विस्तृत
सर्व—अत्यन्तकालकाय विस्तृत—मृत् ११२ ११२
दुर्लभकालकाय वा—मध्य ११२ ११२—अक्षर (वि०)
११२ विधान केवल एक ही अक्षर रहे, एक के
बाद एक को छोड़ कर—सं० ११२ ११२—अक्षर (वि०)
अक्षर विधान—अक्षर (वि०) १ यहाँ में केवल
एक ही का सके, जैसे कि पदार्थ या विधान २
विधान ध्यानमय हुआ हुआ है—एकवचन—(मृत्)
१ एकवचन एक वा विधान एक ही २ विधान का
स्थान, अक्षर—अक्षर ३, अक्षर ४, केवलकाय

उत्पन्न—वा स्नेहयुक्त एकामनीयता—वाचि० २।१५,
—अर्थः १ बड़ी वस्तु, बड़ी पदार्थ या बड़ी मात्रा
२. बड़ी मात्रा,—अन्तु (हं) १. एक दिन का समय
२. एक दिन तक चलने वाला वस्तु,—आत्मनः (वि०)
एककाल से विनिश्चिन्तित (विचिन्तन की प्रवृत्ति को
बताने वाला)—एकतपसं वसतः प्रवृत्तम्—रघु० २।
४७ शि० १२।३३ विक्रम० ३।११, —आवेष्टः दो या
दो से अधिक अक्षरों का एक स्वनामपद (या तो एक
स्वर का जोड़ करके या दोनों को मिला कर प्राप्त
किया गया) जैसे कि 'एकायन' में आ, —आवर्तिः
स्त्री (स्त्री०) मोतियों की या अन्य मनकों की एक
जड़, एकावली कण्टकविभूषण—विक्रमा० १।३०,
तत्ताद्विष्टे एकावली लम्बा—विक्रम० १।, (अल०
भा० में) ऐसी उक्तिनो की पक्षि जिसमें कर्ण का
विषय और विषय का कर्ता के रूप में निरूपित
संक्रमण पाया जाय—स्वाप्नोत्प्राद्वान्ते वापि यथापूर्वं
परस्परम्, विशेषणतया यत्र वस्तु सैकावली द्विधा
—काव्य० १० —उत्तर (संस्कृत) जो एक ही
मूल पूर्वज से बल के तर्पण द्वारा सबद्ध हो।
—उत्तर, —रा सगा (आई या बहन) उद्दिष्टम्
आद्यद्वय जो केवल एक ही मूल व्यंजन का (दूसरे
पूर्वजों को सम्मिलित न करके) उद्देश्य करके किया
गया हो, उच्च (वि०) एक कम एक प्रकार
एक (वि०) एक एक करके व्यंष्टिक्रम से एक
अकेला—रघु० १।१४३, (कम्) —एककला
(अर्थ०) एकर करके, व्यक्तिगत पुष्प-पुष्पक
—कोशः एक अलग भार, —कर (वि०) (स्त्री०)
—री १ एक ही कार्य करने वाला २ (रा)
एक ही हाथ वाली ३ एक किन्तु वाली कार्य
(वि०) मिलकर काम करने वाला सहयोगी सहकारी
(—रजः) एक मात्र कार्य, बड़ी कार्य, —कालः १ एक
समय २ उनी समय, —कालिक, —कालीन (वि०)
१. केवल एक बार होने वाला २ समयसरक, सम-
सामयिक, —कुलः कुबेर, बलभद्र, शेखनाम, —गुप्त,
—गुप्त (वि०) एक ही गुप्त वाला (—कः कः)
गुप्तवादी—कः (वि०) १ एक ही पहिये वाला
२. एक ही रास्ता द्वारा वासित, (—कः) सूर्य का रथ,
—कवचिन्तु (स्त्री०) शकतालीन, —चर (वि०)
१. अकेला चलने या रहने वाला—कि १।३।३ २ एक
ही अनुसर रखने वाला ३ अवहाय रहने वाला
—कारिन् (वि०) अकेला, (—भी) पतिव्रता स्त्री,
—विश (वि०) केवल एक ही बात को बोधने वाला
(—सम्) १ एक ही वस्तु पर चित की स्थिरता
२. सैकस्य—एकचिन्तितुम् हि० १—एक मत में,
—कैवल्, —कम् (वि०) एक मत, दो "चित्,

—कम् (पु०) १ राधा २ बुध, दो० नी०, "काति
—काल एक ही माता-पिता से उत्पन्न, —कातिः बुध
(वि०) द्विकल्पात्) काष्ठान् अथिवा वैधवस्ययो वर्णा
द्विजातयः कर्तुम् एककालित्सु बुधो नास्ति तु पचम
—कम् १०।४, ८।२७०, —कालीय (वि०) एक ही
प्रकार का या एक ही परिवार का, —क्योसित् (पु०)
सिद्ध, —ताम (वि०) केवल एक पदार्थ पर स्थिर या
केन्द्रित नितान्त ध्यानधन—ब्रह्मकालानमनसो द्वि
बसिष्ठमिथा—महावी० ३।११—तामः सगति गीतो
का पदार्थ समजय नृप बाध यत्र (पु०) तीर्थैकिकम्)
तौषिन् (वि०) १ उमो पावन जल में स्नान
कराने वाला २ एक ही धर्मसंघ से संबध रखने वाला—
यात्र० २।१३७, (पु०) सहपाठी गुरुभाई विस्त
(स्त्री०) इकतीस—बन्धु बन्त एक दल वाला
संज्ञा वा विशेषण बहिन (पु०) भग्यापिया या
भग्याकी व एक समुदाय (जा हम कहना है)
इनके चार सभ हैं कुटीयको बहदका हमसबैव
तुमीयक वसुं परहमसभ जो उ पछास उमय ।
हमस उमय, इच्छि १।३० एक भाँच वाला
— १) १ सौदा २ सिर ३ दर्शनक—देख परब्रह्म
देख १ एक स्थान पर स्थित २ (ममय वा) एक
मात्र या " एक पाठार्थ—उमैरुदण उमर ८४
इमर्गर्गरेण इय यमस्युदण विम० ४१३
"मम अग वर दावा किया जाता है वर रमो व्यक्तित्व
के द्वारा दिया जाना चाहिए जो उसके एक अंग का
प्रत्यक्षता प्रमाणित हो जाय (हम) जान को कर्म-कर्म
एकदेशविभक्तिन्याय कहने हैं) जमन, अधिन
१ एक ही प्रकार क गुणा वा रत्न वाला या एक
ही प्रकार की सर्पित का रखने वाला २ एक ही धर्म
का मानने वाला बुध, बुराबुध—बुरीय (वि०)
१ जो एक ही प्रकार कर सक २ या एक ही प्रकार
से जुन सक (जैसे कि विद्या कोश के लिए कार्य पशु)
पा० ४।१।७९, बह नाटक में प्रधान पात्र
बुधवार जो नाट्यपाठ करता है, नवतिः (स्त्री०)
इत्यानावे, —पक्षः एक पक्ष या दल "आधय विकलव-
त्पात्—रघु० १।१३४, —कली १ पतिव्रता स्त्री
(पूर्वज तनी साध्वी) २ सपत्नी, सोत
—सर्वभागेकपत्नीनावेका केपुत्रिको भवेत्—रघु०
१।८८३, —वरी पनबड़ी, —वी (अर्थ०) अकल्पित,
एकदम, अवागमक—निहन्तर्गमिकपदेय उदास स्वार्थ-
निव—मि० २।१५, रघु० ८।४८, वाकः १. एक वा
अकेला पैर २ एक वा बड़ी चरण ३ विष्णु, सिद्ध,
—विना, विनासः कुबेर, —विध (वि०) अन्वेषित
पिंड-दान के द्वारा संपन्न, भावी एक पतिव्रता और
सती स्त्री, (—कः) केवल एक पत्नी रखने वाला,

--**बाध** (वि०) सञ्जा भक्त, ईमानदार, बलिष्ठ, बहिष्का मोनियों की एक लड़ी, **बोधि** (वि०) 1 सहोदर 2 एक ही कुल या जाति के—मनु० १।१४८ रत्न 1 उद्देश्य या भावना की एकता 2 केवल मात्र रम या आनन्द राज्—राज् (पु०) मिरकुल या स्नेहछायागी राजा, राज् एक पूरी रात तक रहने वाला एवं शिर्कावन् (पु०) सह उलगयिकागो, - **क्य** (वि०) 1 एक सा समान 2 समकक्ष, **स्निग्ध** 1 एक ही लिंग रखने वाला शब्द 2 कुक्षे बचनम् एक मक्या को प्रवृत्त करने वाला शब्द, **वर्ण** एक जाति बहिष्का एक बार की दण्डिया आख्याता अर्थ की सर्गात् एकान्य विभिन्न उक्तियो का मायवस्थ, **वारम्** जाने (अव्य०) 1 केवल एक बार 2 मुख्य अवस्थान 3. एक ही समय, **विद्यति** (स्त्री०) इत्काय विनोद्यन् (वि०) एक श्रम्य बाधा दे० पत्रोत्तर विद्यति (पु०) प्रतिद्वन्द्वी, **वीर** प्रमय वा 2. शत्रु या महावीर० ५।१४८ **वेदि**, **वी** (स्त्री०) बाला का एक भाग बाटा (वि०) स्त्री पति विद्याय क शिक्षा स्वका पाठन करता है) मण्डाभागा वीर्यविपणनकवेली करेण प्रथ० 1. श० 3।-१ **वज्र** (वि०) अत्यन्त दृढ़ बाला (वि०) कया पदु अथवा लव या मूय फटे हुए न हो जैसे बाधा गरा आदि, **जगोर** (वि०) रक्तमण्ड एक पुनः वः अन्वय० पत्रोत्तरा गात्र की मन्तान अवस्था पर पत्रोत्तर वादवाय साक्ष एक ही साम्य या विचार का साधन, **शृङ्ग** (वि०) केवल एक सीप पाण (प) 1 अथवा गदा 2 विष्णु शेष एतौत्र इन्द्र समान १० पत्र भेद विमये वज्र एक ही पर अर्थात् गदा १० उदा० दिनगी माना और मिना (मारागरी) इसी प्रकार वज्रगो आगर, आदि भुज (वि०) पत्र ही बार मुता हुवा **वज्र** (वि०) पत्र गीर मुनी दृढ़ वान का ध्यान में रखने वाला भुति (वि०) पत्रवर्णा सत्यति (स्त्री०) दृढ़ता, सत्य (वि०) निराल ध्यायमन—साक्षिक (वि०) पत्र व्यक्ति द्वारा देना हुवा - **हृष्यन्** (वि०) पत्र ५२ की आयु का मा० ५।८, उत्तर० ३।०८, (मो) पत्र वप की छठिया।

एकक (वि०) [एक + कन्] 1 इकट्ठा, अकेला, एकाकी, जिना किसी महारक क—उत्तर० ५।५ 2 वही, समकक्ष।

एकतय (वि०) (नप०—तत्पन्, स्त्री० तया) [एक + तय + कन्] 1 वस्तु में से एक 2 एक (अनिश्चयवाचक रूप में प्रयुक्त)।

एकतर (नप० तरम्) [एक + तरम्] 1 दो में से एक, कोई ना 2 दूसरा, जिन ३ वस्तुओं में से एक।

एकतः (अव्य०) [एक + तसिन्] 1 एक ओर से, एक ओर 2 एक एक करके, एक एक, एकतः-अन्वयः एक ओर, दूसरी ओर—रघु० ५।८५, कि० ५।२।

एकव (अव्य०) [एक + वल्] 1 एक स्थान पर 2 इकट्ठे, सब इकट्ठे मिल कर।

एकवार (अव्य०) [एक + वार] 1 एक बार, एक वक्ता, एक समय 2 उही समय, सबैसा एक बार, साथ ही साथ—हि० ५।१३।

एकवा (अव्य०) [एक + वा] 1 एक प्रकार से 2 अकेले 3 मुख्य उही समय 4 मिलकर, साथ साथ।

एकल (वि०) [एक + ला + क] अकेला एकाकी—उत्तर० ४।

एकलः (अव्य०) [एक + लम्] एक एक करके, अकेले।

एकाकिन् (वि०) [एक + आकिन्] अकेला, केवल एक।

एकावशन् (स० वि०) [एकन् अविना वश इति, ग्यारह।

एकावश (वि०) (स्त्री स्त्री) ग्यारहवाँ, छी चान्द्रमास के प्रत्येक पक्ष का ग्यारहवाँ दिन, विष्णु सबही पुनीत-दिनम। मय० द्वारम् शरीर के व्यावृत्ति छिद्र दे० ल चह्म (वि० व०) ११ दृढ़—दे० दृढ़।

एकीभाष [एक + भिष - भू - चञ्] 1 बहुति साहचर्य 2 सामान्य स्वभाव या गुण।

एकीय (वि०) [एक + छ] एक का या एक से-क-तरफदार सहकारी।

एम् (भ्या० वा०) (म० का- मकर०)—एवते, एवित्) 1 आपना 2 हिलना-डुकना 3 चमकना (पर०), अप, दूर होक देना उक्—उठना, ऊपर की होना।

एकक (वि०) [एम् + कन्] कापटा हुआ, हिलता हुआ।

एकनम् [एम् + कन्] कापना, हिलना।

एद (भ्या० वा०) एउते, एउित्) छेदना, रोकना, विरोध करना।

एड (वि०) [एम् + अच्, हलधोरभेद] बहुरा,—क एक प्रकार की मंड। मय० कूक (वि०) 1 बहुरा बीर मूला—मु० अनेकमूक 2 दुष्ट, कुटिल।

एडकः [एड + कन्] 1 मंडा, 2 अंगली बकरा,—का, मेडी।

एयः, एकयः [एति द्रुत गच्छति इति—ए + य, एय + क्] एक प्रकार का काला वाराणिसा हरिण, जिम्मा-विश्लोक में अनेक प्रकार के हरिणों का उल्लेख है—अनुषो माघवी श्रेय एक कृष्णवृक्ष स्मृत, हस्तीर-मुष श्रोतः शंकर शोल उच्छते। मय०—अकिन् मगधमः,—लितकः,—कृष्णमा, इसी प्रकार 'चक', 'लाङ्कन' आदि,—दुष् (वि०) हरिण वही लीकों वाला,—(पु०) मकर राक्ष।

एयी [एय + डीप्] काली हरिणी।

एत (वि०) (स्त्री०—एता, एती) रगविरंता, चमकीला
—तः हरित या वारासिखा ।

एतद् (सर्व० वि०) (पुं०—एत, स्त्री०—एता, तपु०—एताद्) [इ + अति, तुल्] १ यह, यही, सामने (बकता के निकटतम वस्तु का उल्लेख करना—समी पतरवति वीरवो कथम्), इस अर्थ में 'एतद्' शब्द कई बार पुस्तकालयक सर्वनाम पर बल देने के लिए प्रयुक्त होता है, — एषोऽत्र कार्यवशादायोध्यकस्तदानीन्तनयः सवृत्त उत्तरः १ २ यह प्रायः अपने पूर्ववर्ती शब्द की ओर संकेत करता है विशेषकर जबकि यह इदम् या किसी और सर्वनाम के साथ प्रयुक्त किया जाय — एष वै प्रथम कथ्य — मनु० ३।१४५ इति यदुक्तं नवेतिष्यत्यम् ३ यह सबबबोधक वाक्यत्व में भी प्रायः प्रयुक्त होता है और उस अवस्था में—सबबबोधक वाद में जाता है मनु० १।२५७ (अध्य०) इस रीति से, इस प्रकार, जन, ध्यान दो, एतद् शब्द उन समासों में प्रथम पद के रूप में प्रयुक्त होता है जो प्रायः नियदध्याख्यात या स्वतः स्पष्ट हो उता।
—अन्वयार्थ इसके तुरन्त बाद बात इस प्रकार समझाते हुए । सम० द्वितीय (वि०) जो किसी कार्य को दोबारा करे, —प्रथम (वि०) जो किसी को पहली बार करे ।

एतदीय (वि०) [एतद् + इय] इसका के की ।

एतन् [आ + इ + तन] स्वास, समि छोड़ना ।

एतद्हि (अध्य०) [इदम् + हिन् एत आदेशः] अब इस समय, वर्तमान समय में ।

एतावत्, —बुझ, —बुझ, (वि०) (स्त्री०—जो, जो) १ ऐसा, इस प्रकार का—सर्वोप मैतावत्ता भत् ०- ५।२ इस प्रकार का ।

एतावत् (वि०) [एतद् + वत्] इतना अधिक इतना बड़ा, इतने अधिक, इतना विस्तृत, इतनी दूर इस बुझ का या ऐसे प्रकार का एतावदुक्तवा विरल मृग ओ—रघु० २।५१, कु० ६।८९ एतावन्ते विभक्तो भवन्त मेवितुम् धाकवि० २, (अध्य०) इतनी दूर इतना अधिक, इतने अर्थ में, इस प्रकार ।

एव (आ० आ०—एवते, एविन) १ तगना, बढ़ना—पथ० २।१६८ २ फलना-फुलना, सुख में जीवन बिताना हावरीत सुखमेवते—पथ० १।१८, मेर० उपवाना, बड़-वाना, अधिकवादन करना, सम्मान करना—कु० ६।९० ।

एवः [इव् + वज्, नि०] इवन, स्फुल्लिङ्गावस्थया वज्र-रोषावेक इव स्थित—ज० ७।१५, नि० २।९९ ।

एवम् [एव् + भव्] १ यन्मुख्य २ अति ।

एवम् (वि०) [इव् + आस] इवन—यैवर्थासि समिद्धोऽभिर्मन्मातृकुतोऽपि—मन० ४।३७ अनकायानु-चयनवते—रघु० ८।७१ ।

एवा [एव् + व + दाव्] फलना-फुलना, हर्ष ।

एवित (भू० क० क०) [एव् + क्त] १ विकसित बड़ा हुआ २ पाला पीता—मृगसायं समवेधिनो जन—श० २।१८ ।

एवम् (वि०) [इ + अनुन नृशाम] १ पाप अपराध बोध वि० १४।३५ २ कुचष्टा जूम् ३ शिखता ४ निन्दा कलक ।

एवस्वत्, एवस्विन् (वि०) । एवम् + भवत् व आदेश विनि वा । दुष्ट रापी ।

एवम् [आ + ईर प्रवृत्त] अर्द्ध की पीछा, बहुत बाढ़ पानी वाला एक भाग वृक्ष अथवा ली०—निम्न पादप देश एवम्वापि दमायने ।

एवम् [इव् + भव् + वत्] यदं दे० १७४ ।

एवम्वात् (वि०) एवम्वात्कम्, एवम् वत् उम् हृस्व कृत् न] १ कथ वृक्ष की मृगप्रवृत्त शब्द २ एक खेदार वा दानदार मृग (अर्द्ध) या मृगप्रवृत्त क रूप में प्रयुक्त होता है ।

एवम्वात् [इवम्वात् + अण्] दुष्ट २ एवम्वात् ।

एवा [इव् + अ + वा] १ एतावत् की पीछा एतावता अन्वयेन एवम् १।१५ ६।१५ २ इतावती । इतावती के बोधः । सम० एतावतावत्ता प्राप्त का एक पीछा ।

एविका [आ + ईर एवम्वात्] इतावती ।

एव (अध्य०) [इ वत्] इसी शब्द द्वारा कह गये विचार पर बल देने के लिए बहुधा इस अव्यय का प्रयोग होता है १ जोक विचित्र सही तीर पर

एवमेव विचित्र एता ही टीक इसी प्रकार का २ वही सही मथकन अथवा मृग विरहित पृष्ठ स एव मनु० ५।४० ३ केवल एकमात्र मात्र (वर्ति

रक्षण की मन्त्रना रखे हुए) मा लयमेवाभिहितना भवेन कु० ३।५३ कथमात्र मचाई मचाई के आतिथिन और कुछ नहीं ४ पहले ही ५ कठिनाई से उमा सण मृष्टी (मृक्यनया-कुदन्तो के साथ) उर विधेय क-यागो नाम्नि कीर्तिर गव वत् रघु० १। ८७ ६ की भाँति, जैसे कि (समानता प्रकट करते हुए) धीमे गव मन्त्रु—गण० (नव इव) और ७ सामान्यतः किसी उक्ति पर बल देने के लिए अधिक-अधिक तेज—उत्तर० ४, यह बात निगिधन कथ से हाँकी, निम्नार्थक अर्थ की इव शब्द द्वारा प्रकट होते हैं ८ अपयस ९ न्यूनता १० आजा ११ निधनय तथा १२ केवल पूर्ण के लिए ।

एवम् (अध्य०) [इ + वत् (वा०)] १ अतः, इतना, इस रीति में—अन्वयेवम्—पथ० १, यह इस प्रकार है—एवम्वादिनि देवर्षी—कु० ६।८४, वृत्ता एवम्—मेघ० १०१ (जो कुछ बार में जाता है)—एवम्वात्—एता

ही हो, -स्वस्ति, मन्त्रेणम्, यदि ऐसा है 2 विष्णुस
ऐसा हो (स्वीकृति रखते हुए) अब बदाय्य भगवान्
—हु० २।३१। सम०—अवस्थ (वि०) इस प्रकार
स्थित, या ऐसी परिस्थितियों में किता हुआ, —आवि
—प्राप्त (वि०) ऐसा और इस प्रकार का, —कारण
(अव०) इस दीर्घ से, —गुण (वि०) ऐसे गुणों वाला
स० १।१२, —प्रकार प्राप्त (वि०) इस प्रकार
का उत्तर० ४।०. १० ३।६ भूत (वि०) इस
प्रकार की गुणों का ऐसा इस उग का रूप (वि०)
(वि०) इन प्रकार का एमे रूप का, —विषय (वि०)
इस प्रकार का, ऐसा।

एष (म्वा० उभ०—एषति—ये, एषित) 1. जाना,
पहुँचना 2 बीघटा से जाना, बीघ कर जाना, हरि—
ईदना।

एषण [एष + ण्युट] मोहो का ठीर,—अण् 1 ईदना 2
कामना करना, —आ कामना, इच्छा।

एषणिका [इष् + ण्युट + कन्, टाप्, इषण्] गुनार का
कीटा तोलने की मराबू।

एषा [इष् + अ + टाप्] इच्छा, कामना।

एषिष् (वि०) [इष् + णिनि] इच्छा करते हुए, कामना
करते हुए (समास के अन्त में), —यौवन विषयविशाम्
रच० १।८।

ऐ

ऐ (ए०) आ इ + विष [निव, (अव्य०) क]
बुझान (प्र०) मरण करने या (ग) ग्रामभग को प्रकर
करने वाला, विहसर्वादि शोकक चिह्न

ऐक्यम् (अव्य०) दूधन।

ऐक्यम् [एक + यम्] (यग्यार्थे), समय य बनना
की ऐकानिकता।

ऐक्यवत् [एकपत्ति + व्यञ्ज, परम प्रभुता सर्वोपरि
शक्ति।

ऐक्यविक (वि०) (स्त्री० की) [एकपद + टञ्, एक
पद में सब वस्तु रखने वाला।

ऐक्यवत् [एक पद + व्यञ्ज] 1 शब्दों की एकता
2 एक शब्द बनना।

ऐक्यवत् [एकपद + व्यञ्ज] एकमतता गद्यार्थ १०
१८।३६।

ऐक्यगारिक [एकगार + उच्, चर] ऐक्यगारिक मतवर्तने
कारणिकण दण० ६३ शि० १९।१११ 2 एक घर
का मालिक।

ऐक्यवत् [एकपद + व्यञ्ज] एक ही पदार्थ पर प्रुट
जाना एकाग्रता।

ऐक्यः [एक्य + अण्] सरार श्रक दस का एक
सिपाही गज० ५।२०९।

ऐक्यवत् [एकपद + व्यञ्ज] 1 एकता आत्मा की
एकता 2 समरूपता, मयता 3 परमात्मा के साथ
एकता या तादात्म्य।

ऐक्यविकारवत् [एक्यविकार + व्यञ्ज] 1 सब को
एकता 2 एकही विषय में व्याप्ति, (सर्क० में)—सह
विस्तृति साम्येन हेतोरैक्यविकारवत् व्याप्तिव्यवृत्ते
—भावा० १९।

ऐक्यविक (वि०) (स्त्री० की) 1 पूर्व, समय, पूरा
2 विषयस, निश्चित 3 अनन्य।

ऐक्यविक [एकान्य + उच्] बहु विषय जो वेद का
सम्भर पाठ करने में एक अङ्गुलि करे।

ऐक्यव्यय [एकार्थ + व्यञ्ज] 1 उद्देश्य या प्रयोजन की
प्रयत्नता 2 अर्थों की संगति।

ऐक्यविक (वि०) (स्त्री०—की) [एक्य + उच्] 1
आत्मिक 2 एक दिन का उसी दिन का, वैयिक।

ऐक्यवत् [एक + व्यञ्ज] 1 एकपता, एकता 2 एकमतता,
3 समरूपता समता 4 विशेष कर मानव आत्मा
की समरूपता या विषय की परमात्मा से एककता।
ऐक्य (स्त्री०—की) [इष् + अण्] गले से बना या उत्पन्न,
अण् 1 बोनी 2 गन्धक सराव।

ऐक्यवत् (वि०) [इष् + अण्] गले से बना पदार्थ।

ऐक्य (वि०) [इष् + उच्] 1 गले के लिए उपयुक्त
2 गले वाला 3 गले से जाने वाला।

ऐक्यविकार (वि०) [इष् + उच्] गले का बोला
होने वाला।

ऐक्यविक (वि०) [इष् + अण्] इष्वाकु से सब वस्तु रखने
वाला—क, कृ 1 इष्वाकु की सन्तान,—सत्यवैष्वाकः
सम्भसि उत्तर० ५ २ इष्वाकु वृक्ष के कोषों द्वारा
शासित देश।

ऐक्यवत् (वि०) (स्त्री०—की) [इष्वाकु + अण्] इष्वाकु
वृक्ष से उत्पन्न वन इष्वाकु वृक्ष का वन।

ऐक्यविक (वि०) (स्त्री०—की) 1. इच्छा पर निर्भर,
इच्छापरक 2 मनमाना।

ऐक्य (वि०) (स्त्री० की) वेद का,—क वेद की एक
वाति।

ऐक्य (क) विष् (क) [इष्वाकु + अण्] पड़े उल्लोह-
भेद। कुपेर।

ऐक्य (वि०) (स्त्री०—की) बारहविधा हरिण की (त्यक्त,
ऊन वाति) वन० १।२५९।

देवैक (वि०) (स्त्री०—की) [एकी+ठक्] काली हरिणी वा लक्ष्मी की देवी पदार्थ से उत्पन्न,—कः काला हरिण,
—कम् ऐतिव्यं, ऐतिह्यिका का एक प्रकार ।

देवकान्तम् [देवकान्तम्+अन्] इस प्रकार के पुत्र वा विधिवत्ता की दृष्टि की अवस्था ।

देवदेवि [देवदेव+इति] देवदेव शास्त्र का सम्बन्ध ।

देविहासिक (वि०) (स्त्री०—की) [देविहास+ठक्] 1. परम्परा प्राप्त 2. इतिहास संबंधी,—कः 1. इतिहासकार 2. बहु व्यक्ति जो गौरविक उपकारों की मानता है वा उनका व्यवहार करता है ।

देविहान् [देविह+अन्] परम्परा प्राप्त विद्या, उपस्था-
नात्मक वर्णन,—देविहान्मानं च ब्रह्मकर्मणि वाच-
यन्—राजा०, विवेकविहान् (गौरविक 'देविह' की प्रत्यय, अनुमान आदि के साथ प्रमाण का एक मेर मानते हैं—वे० 'अनुमान') ।

देवर्षिन् [देवर्ष+अन्] वाचन, ज्ञेय, संवत् (हा०
हर्षर होने की अवस्था वर्षात्, वर्ष, मास्य वा ज्ञेय
रक्षता)—इत्वं लैख्यवर्षन्—वा० २।७ ।

देवसम् [एवम्+अन्] साथ ।

देव्य (वि०) (स्त्री०—की) [देव्यु+अन्] चंद्रमा संबंधी,—कः चांद्रमास ।

देव्य (वि०) (स्त्री०—की) [देव्यु+अन्] इस संबंधी वा इस के लिए ऐतिह्य,—एव० २।५०,—कः
अनुन कीर वाली,—की 1. अथर्व का अन्त जिसमें इस की संबंधित किया गया है—इत्यादिका काचिदेवी
काम्याता—वे० व्या० 2. पूर्व विद्या (इस विद्या का
विशेषावृत्तता इस है) वि० १।१८ 3. मूर्ध्वता
संबंध 4. हर्ष की उत्पत्ति 5. छोटी इलाक़ी ।

देव्यविक्रम (वि०) (स्त्री०—की) [देव्यविक्रम+ठक्] 1. बीजे में बालने वाला, 2. बाहु-टोना विषयक 3
मासकी, प्राप्ति जनक 2 बाहु-टोने का वाचकार,
—कः बायोपर—वि० १५।२५ ।

देव्यविक्रम (वि०) (स्त्री०—की) [देव्यविक्रम+ठक्]
देवरीय के वीर्य, अन्त ।

देव्यविक्रम [देव्यविक्रम+अन्] हाथियों की एक जाति ।
देव्यः [देव्यविक्रमन्—अन्+इन्] 1. अकल, अर्धन,
कुलपदार्थ वाणि 2. कोषा—देव्य किल नवीतस्या
विश्वरूप लानी विद्यः—एव० १२।२२ ।

देव्यविक्रम (वि०) [देव्यविक्रमन्—अन्+इन्] 1. इन्द्रियों
के ज्ञेय करने वाला, विषयी 2. विद्यामान, ज्ञानेन्द्रियों के
लिए अथवा इन्द्रियकोष—अन् ज्ञानेन्द्रियों का विषय ।

देव्य (वि०) (स्त्री०—की) [देव्य+अन्] जिसमें
इसका विद्यमान हो,—कः पूर्व ।

देव्यविक्रम [देव्यु+अन्] परिमाण, संख्या ।

देव्यविक्रम [देव्यविक्रम तावि अन्ति सम्भावते—इरा+अन्
+अन् देव्यविक्रम—तत् अन्] इस का हाथी ।

देव्यविक्रम [देव्यविक्रम तन्ना देव्यविक्रम
अन्] 1. इस का हाथी 2. अथर्व हाथी 3. पश्चात्
निवासी मानवाति का एक मुनिवा 4. पूर्व विद्या का
विषय 5. एक प्रकार का इन्द्रियविक्रम,—की 1. इस की
हथिनी 2. जिसकी 3. पञ्चा में बहने वाली नदी, राष्टी
(इरावती) ।

देव्यविक्रम [देव्यविक्रम अन् अन्—इरा+अन्] भविरा (जो
अथर्व पदार्थ से तैयार की जाय) ।

देव्य [इलाया अन्त्यम्—अन्] 1. पुकरवा (इला और बुध
का पुत्र) 2. मयलवह ।

देव्यविक्रम [देव्यविक्रम+अन्] एक सुगन्ध द्रव्य ।

देव्यविक्रम [देव्यविक्रम+अन्] 1. कुदेर वि० ११।१८
2. मयलवह ।

देव्यविक्रम [देव्य+अन्] 1. एक प्रकार का मयल द्रव्य 2. मयल
वह ।

देव्य (वि०) (स्त्री०—की) [देव्य+अन्] 1. शिव से
सम्बन्ध रखने वाला—एव० २।७५ 2. सर्वोपरि,
राजकीय ।

देव्यविक्रम [देव्यविक्रम+अन्] शिव से सम्बन्ध रखने
वाला,—की 1. उत्तरपूर्वी दिशा 2. दुर्वादि ।

देव्यविक्रम (वि०) (स्त्री०—की) [देव्यविक्रम+अन्] 1. सामदार
2. शक्तिवाली, ताकतवर 3. शिव से सम्बन्ध रखने
वाला—एव० ११।७५ 4. सर्वोपरि, राजकीय
5. दिव्य,—की दुर्वादि ।

देव्यविक्रम [देव्यविक्रम+अन्] 1. सर्वोपरिता, प्रभुता—एकैकवर्ष
विश्वतोऽपि—आकाश १।२ 2. ताकत, शक्ति, आधिपत्य
3. उपनिवेश 4. विषय धन, बह्व्यन 5. सर्वशक्तिमत्ता
तथा सर्वव्यापकता की दिव्य शक्तियाँ ।

देव्यविक्रम (अर्थ०) [अस्मिन् अन्त्ये इति नि० साधु] इस
वर्ष में, बाहु वर्ष में ।

देव्यविक्रम,—अन्त्य (वि०) [देव्यविक्रम+अन्त्य, अन्त्य वा
बाहु वर्ष से सम्बन्ध रखने वाला ।

देव्यविक्रम (वि०) (स्त्री०—की) [देव्यविक्रम+अन्त्य] यमसम्बन्धी,
सत्कार विषयक । सम०—देव्यविक्रम (वि०) इत्यादौ (यस
अथवा अन्य वाचिक हृत्) से सम्बन्ध रखने वाला ।

देव्यविक्रम (वि०) (स्त्री०—की) [देव्यविक्रम+अन्त्य] इस
सत्कार से सम्बन्ध रखने वाला, वा इस लोक में बसित
होने वाला, देविक, दुनियावी (विप० पारलौकिक) ।

देव्यविक्रम (वि०) (स्त्री०—की) 3. इस लोक वा स्थान से
सम्बन्ध रखने वाला, सांसारिक, दुनियावी, लौकिक
2. स्थानीय,—अन् अथवा (इस संसार का) ।

ओ

ओ (पुं० औ) [उ + विच्] ब्रह्मा (अव्य०) 1 सम्बोध-
नात्मक (ओ) अव्यय 2 (क) बुझाया (ल) रम्य
करना और (ग) कथना ओषक विभक्त्यादि छानक
चिह्न ।

ओक् [उच् + क नि० अत्य क] 1 घर 2 घरण, आश्रय
3. एसी 4 सुख ।

ओकनः (णि) [ओ + कन् + अच्, इन् वा] लटमल इसी
प्रकार 'ओकोपनी' ।

ओक्त् (तपु०) [उच् + अमुन्] 1. घर, आवास—जैसा
कि श्वौक्त् या स्वर्गोक्त् (देवता) में 2 आश्रय
गण ।

ओक् (ध्व० पर०) प्राक्तन, आंखिन 1 मुख जाना 2
पाय होना पयोन् होना 3 सजाना, मुजर्गिन करना
4 अरधीकृत करना, 5 रोक लगाना ।

ओक् [उच् + कच्, पूर्वो०] 1 अलप्लावन, नदी, धारा
पुनरावेन हि पुन्यते नदी कु० १४४ 2 अल की
बाव 3 राशि, परिमाण समुदाय 4 समष्ट 5 मानव्य
6 परम्परा, परम्पराग्राम उपदेश 7 एक प्रमुख मृत्यु ।

ओकर [ओम् + कार] दे० 'ओम्' के नीचे ।

ओक् (ध्वा० चु०) उभ० ओजति, ओजयति—ने, ओजि०,
समभ जा योग्य होता ।

ओक् (वि०) [ओच् + अच्] विषम, असम अम् =
ओजम् ।

ओक्त् (तपु०) [उज् + अमुन् वयोप, वृणश्च] 1
शारीरिक सामर्थ्य, बल, शक्ति 2 बौद्ध, जननात्मक
शक्ति 3 आभा, प्रकाश (आल० शा० में, 4 शीर्षी का
विस्मृत रूप, मयाम की बहुलता (दृष्टो के अनुसार
वही गद्य की प्रारम्भ है) ओज समानपुत्रस्त्वमेतद्,
महम्म ओजिनम्—काव्या० १८०, रसगणधर में इसके
पाँच भेद बनलाये गये हैं 5 पानी 6 धातु की चमक ।

ओजस्ति, ओजस्व (वि०) [ओजस् + ल, यत् वा] मज-
बूत, शक्तिशाली ।

ओजस्वत्, ओजस्विन् [ओजस् + मत्पु, विभि वा] मजबूत
वीरवान्, तेजस्वी, शक्तिशाली ।

ओक् (पु० व० व०) एक देश का तथा उसके निवासियों
का नाम, (आधुनिक उड़ीसा)—मनु० १०१४,
—हुज् जवाधुसुय ।

ओक् (वि०) [आ + वे + ल] बुझा हुआ, जाने से एक
छिरे से दूसरे तक सिला हुआ । सम०—ओल (वि०)
1. लम्बाई और चौड़ाई के एक बार-बार सिला हुआ
2. सब दिशाओं में फैला हुआ ।

ओक् [अच् + पुन्, ऊद्, गुच्] विचार (स्त्री० औ)
विभी—बैरा कि 'पूको (औ) दु' में ।

ओक्नः—अम् [उज् + पुच्] 1. ओक्न, घाट,—उप-
दृष्टोदन और वृत् 2 इच्छा बना कर वृत् में एक
हुआ अन् ।

ओम् (अव्य०) [अच् + मन्, ऊद्, गुच्] 1. पावन अन्
'ओम्' वेद-वाट के आरम्भ और समाप्ति पर किया
गया पावन उच्चारण, या मन्त्र के आरम्भ में बोला
जाने वाला 2 अव्यय के रूप में बहु (क) औपचारिक
पुष्टीकरण तथा सम्माननीय स्वीकृति (एवमस्तु
तथास्तु) (ख) स्वीकृति, मंजीकरण (ही, बहुत
अच्छा)—ओमित्यव्ययानामात्—मा० ६, ओमित्यव्यय
वयोपशास्त्रिण इति सि० ११७५, द्वितीयावधेदोमिनि
बुम्—मा० ४० १ (ग) आदेश (घ) मौलिकता (ङ)
हूँ करना या रोक जमाना की वाक्या को प्रकट करने
वाला अव्यय 3. ब्रह्म । सम०—कारः 1. पवित्र
ध्वनि 'ओम्' 2. पवित्र उत्पार 'ओम्' ।

ओरम्भः (?) गहरी लीच—मा० ७ ।

ओक् (वि०) [आ + उज् + क पूर्वो०] जाई, पीसा ।

ओक् (ध्वा० व० व०) ओक्वति, ओक्वति
ओलति ऊपर की ओर फेंकना, ऊपर उछालना ।

ओल् (वि०) [ओल् + पूर्वो०] जाई, पीसा,—स्तः प्रतिवृ-
'अस्तः प्रतिवृ या वागिन के रूप में बाधा हुआ
(यह शब्द एक ही बार विशालाक्षमित्रिका में
आया है) ।

ओक् [उच् + अच्] ऊकन, नवाह ।

ओक् [उच् + स्क्] तिलता, लोचता, तीखा रस ।

ओक्विः,—औ (स्त्री०) [अच् + वा + कि, सिक्वा औच्]
जड़ीबूटी, वनस्पति 2. ओक्वि का पीचा, ओक्वि
3 फसली पीचा या जड़ी बूटी ओक्वि एक कर हुआ
जाती है । सम०—ईलाः—अर्चः,—अक्कः कम्पना

(वनस्पतियों का अधिवेष्टता तथा पीचक)—अ (वि०)
वनस्पति से उत्पन्न,—अरः,—अतिः 1. ओक्वि-पिच्छा

2 वैद्य 3 चन्द्रमा,—अत्यः हिमालय की राखानी
—ताम्रवातोपधिप्रस्य स्थितये हिमवतपुरम्—जु० ९।

३३, ३४ ।

ओक् [उच् + अच्] होठ (ऊपर का या नीचे का) । सम०
—अक्की-रन्, ऊपर और ओक् के होठ,—अ (वि०)
ओक्स्थानीय,—अक्कः होठकी बड़,—अक्कः—अक्
कितलव बीरा, ओक्क ओक्क—कुक् होठों को ओक्क
र बना हुआ बड़ा ।

ओक्स् (वि०) [ओक् + अच्] 1. होठों पर चूने लगा
2 ओक्—स्थानीय (अभि वादि) ।

ओक् (वि०) [हृच् उज्—म० व०] ओक् करव,
कुम्पना ।

औ [आ + अद् + चिक्, ऊठ] (क) आमयण (ख) सरोवन (ग) विरोध तथा (घ) आपातकाल अथवा सकलप्राप्तिकाल अथवा

औचित्यम् [उच् + ठक् + ध्यञ्] उच्य का गठ सामर्थ्य ।

औच्यम्, उच्य + अच् । पाठ करने की विधान (उच्य अय से सबब रहने वाली) रीति ।

औच्यम्, —औच्यम् । उच्यता समूह इत्यर्थे उच्यन् + अण टिलोप बुज् वा । बैलो का मुख —अि० ११६५ ।

औच्यम् [उच् + ध्यञ्] बुद्धता, प्रीति, भयकरता करता आदि ।

औचः [औच + अच्] बाढ़, जलफावण ।

औचित्यम्, औचित्यी [उचिन् + ध्यञ्, चिन्तां औच् यन्ता एच] १ उपयुक्तता, योग्यता उचित्यता २ सम्यक् या योग्यता, वाक्य में शब्द के अर्थों अर्थ का निर्धारण करने के लिए कल्पित परिस्थितियों में से एक —सामर्थ्यौचित्यी देश कालो व्यक्ति स्वराद्य —सा० ६० २ ।

औच्य-वचः [उच्ये अवन + अच्] इष्ट का बोधा ।

औच्यिक (वि०) (स्त्री—की) [औच्य + ठक्] ऊँची, बलवान् । —कः मायक धुरीर ।

औच्य (वि०) [औच्य + ध्यञ्] बल और स्फूर्ति का संचार, —स्वम् सायम्, जीवनशक्ति, ऊर्जा, स्फूर्ति ।

औच्यकम् [उच्यक + ध्यञ्] उच्यकता, कायिक ।

औच्यिक (वि०) (स्त्री—की) [उच्य + ठक्] किलती में बैठ कर धार करने वाला —कः किलती या लउठे का वाली ।

औच्यक [औच्यक + अच्] = दे० औच्यक ।

औच्य [औच + अच्] औच्य (वर्तमान उकीता) देश का मिवाली का राज्य ।

औच्यकम् [उच्यक + ध्यञ्] १ इच्छा, वाक्य २, चिन्ता ।

औच्यिक [उच्ये + ध्यञ्] भेद्यता उच्यता ।

औच्यिक [उत्तर + इच्] १४ अनुज में से तीसरा ।

औच्य (वि०) (स्त्री—री, —रा) उत्तरी । तद्वत् —औच्य उत्तर दिशा की ओर जाने वाला ।

औच्यकः (उत्तरा + ठक्) अच्यकम् और उत्तरा का पुत्र परीक्षित ।

औच्यकम्, —औच्यः [उत्तराया + अच्, इच् वा] १. भूय २ उत्तर दिशा में वर्तमान तारा ।

औच्यिक (वि०) (स्त्री—की) [उत्तर + ठक्] १. अन्तर्गता, सहज २. एक ही समय पर उत्पन्न ।

औच्यक (वि०) [उत्तरा + अच्] अच्यकम् का विशेषक ।

औच्यक (वि०) (स्त्री—की) [उत्तरा + ठक्] अमगलकारी, अलौकिक सकटमय रघु० ४४, ५१, —कम् अच्यकम् या अमगल ।

औच्यक (वि०) (स्त्री—की) उत्तरा + ठक्] कूले पर रखी हुआ या कूले पर धारण किया हुआ ।

औच्यक (वि०) (स्त्री—की) [उत्तरा + ठक्] १ सामान्य स्थिति जैसे 'क' व्हाक्य का नियम' का अन्तर्गत कर म हो व्याख्यान के प्रयोग हो २ सामान्य (वचन विशेष) प्रत्यक्षवाच्य सहज ३ अत्युत्पन्न योगिक ।

औच्यकम् [उच्यक + ध्यञ्] १ चिन्ता बर्तनी २ प्रकट इच्छा अनुकम्ता उन्माद औच्यकमाच्यवसायार्थ प्रत्यक्ष ३ औच्यक्येन कृतशरीर सहभूता व्याख्यान माना इच्छा रम्य० ११०

औच्य (वि०) (स्त्री—की) [उच्य + अच्] अजीय पीला जय से सबब रहने वाला ।

औच्यक (वि०) (स्त्री—की) [उच्यक + अच्] इच्छा पत्र में रक्ता हुआ ।

औच्यिक (वि०) अच्यकम्, उत्तरा, रम्योद्वा ।

औच्यक (वि०) (स्त्री—की) [उच्य + ठक्] बहुप्राची ५ वा ६ वर्षावर्षाकरायाम्यवर्षावर्षे विषय 'वर्षकम्' ३ मासिक० ४ ।

औच्य (वि०) [उच्य + अच्] १ गर्भस्थित २ गर्भात्मक प्रसूत ।

औच्यकम् [उच्यक + अच्] आधा पानी मिलाकर तैयार किया हुआ मद्य ।

औच्यक [उच्य + ध्यञ्] १ उद्योग, कुशीलता, बहुता २ बहुपन्न, अच्यक ३ अर्धवाचीर्ष (अर्धवर्षा) - अ औच्यकार्थविशेषात्मिका विनिश्चयकविशेषि वाचककथने—कि० १११, दे० कि० १११४० पर नमिन् और 'उद्योग' के की० उद्योग ।

औच्यकम्, औच्यकम् [उच्यक + ध्यञ्, उच्य + ध्यञ्] १ उच्यक, निष्कृता —प्राचीनविशेषा पानुच्यकालीयेन वसिष्ठम्—रघु० १०१२५, इच्यकाली-च्यकाल्यं यदि भजसि आनीरवि गता० ४ २ एकान्तिकता, अकेलापन ३ पूर्ण विराग (नासारिक विषयों में), वैराग्य ।

औच्यक (वि०) (स्त्री—री) [उच्यक + अच्] गूलर के वृक्ष में बना या उससे प्राप्त, —ए ऐसा प्रदेश जहाँ गूलर के वृक्ष बहुतायत में हैं, —री गूलर की छाया, रघु १ गूलर की लकड़ी २ गूलर का फल ३ छाया ।

उक्त] 1. वित्तका परिशिष्ट में वर्णन किया गया हो
2. परिशिष्ट ।

वीरविक्रम (वि०) (स्त्री०—की) [उपसर्ग+ठञ्] ।

1 विपत्ति का समाप्त करने योग्य 2 वमज्जल लूचक ।

वीरविक्रम (वि०) [उत्पन्न+ठक्] व्यभिचार द्वारा अपनी
वीरिका बचाने वाला ।

वीरविक्रम [उत्पन्न+ठञ्] सहवास स्त्रीसंयोग ।

वीरवृद्धि (वि०) (स्त्री०—की) [उपहार+ठक्] उप
हार वा बाहुल्य के काम जाने वाला—कम् उपहार वा
बाहुल्य ।

वीरविक्रम (वि०) (स्त्री०—की) [उपाधि+ठञ्] ।

1. विशेष परिस्थितियों में होने वाला 2 उपाधि या
विशेष वृत्तों से सम्बन्ध रखने वाला फलित कार्य ।

वीरविक्रम (वि०) (स्त्री०—की) [उपाध्याय+ठञ्]
अध्यापक से प्राप्त वा जाने वाला ।

वीरविक्रम (वि०) (स्त्री०—की) [उपासन+ठञ्] गृहाणि
से सम्बन्ध रखने वाला,—न गार्होस्थ्य पुत्रा के लिए
अनुष्ठान, वृद्धाणि ।

वीर्य (वच०) वृद्धों के लिए पावनपान (क्योंकि आयु
का उपचारण वृद्धों के लिए बजित है) ।

वीर्य (वि०) (स्त्री०—की) [उत्पन्न+ठञ्] भेद से
सम्बन्ध रखने वाला, या भेद से उत्पन्न भेद 1 भेद
या बकरे का मांस 2 ऊनी वस्त्र माटा ऊनी कपड़न
(^१ व ची) ।

वीर्यकम् [उत्पन्नानां समूह—ठञ्] यंत्रों का समूह ।

वीर्यकम् [उत्पन्न+ठञ्] नवविद्या ।

वीर्य (वि०) (स्त्री०—की) [उत्पन्न निर्मित—ठञ्] कोल
से उत्पन्न, विवाहिता पत्नी से उत्पन्न, वैध—^१ वृ० १६।
८८,—कम्—की वैध पुत्र या पुत्री—यात्र० २।१०८ ।

वीर्य=वीर्य ।

वीर्य, वीर्य, वीर्य (वि०) (स्त्री०—की) [उत्पन्न+ठञ्]
[उत्पन्न+ठञ्] ऊनी, ऊन से बना हुआ ।

वीर्यविक्रम (वि०) (स्त्री०—की) [उत्पन्नकाल+ठञ्]
पिच्छे लवण से लवण वा दाह वा ।

वीर्यविक्रम [उत्पन्न+ठञ्] विलम्बित उत्कार, प्रेकर्म ।

वीर्य (वि०) वीर्य (वि०) (स्त्री०—की) [उत्पन्न+ठञ्]
वायु—ठञ्] मृत व्यष्टि से लवण, विलम्बित किया
प्रेकर्म, विलम्बित उत्कार,—कम् विलम्बित उत्कार,
प्रेकर्म ।

वीर्य (वि०) (स्त्री०—की) [उत्पन्न+ठञ्] 1 वरणी से
सम्बन्ध रखने वाला 2 बंधा से उत्पन्न,—वीर्य एक
उत्पन्न वृद्धि का लक्षणम् वृद्धों में उत्पन्न हुआ वा ।
वृद्धावस्था में वीर्य विलम्बित है कि वृद्धों के वस्त्रों का
दाह करने की वृद्धि से वीर्यविक्रम के वृद्धों ने वर्धित
काली—वीर्य वीर्य के दाह उत्पन्न किया । उत्पन्न वीर्य

की एक स्त्री ने अपने गर्भ की रक्षा के लिए उसे अपनी
अधा में छिपा लिया—इसीलिए अधा में त्रय हुन के
कारण वह जीव कहलाया । उसको दमक का कर्तव्य
के पुत्र पत्र हो गये उसका कोष में रखा गया न
समस्त ममर को भ्रम कर देना चाहता । परन्तु अपने
पितरों भाग्य की इच्छा से उसने अपनी कोषाग्नि
को समुद्र में फेंक दिया तब वह बाँध के रूप में लुप्त
पड़ा रहा—^१ वृ० वृद्धाणि । बाद में श्रीव अथा ग
के राजा समर का लक्ष्य हुआ । 2 वृद्धाणि रक्षि
अवलम्बित इच्छावादी वा 3:2 इन्हीं प्रकार अन्य ।

वीर्यकम् [उत्पन्नानां समूह अथ उत्पन्नानां का समूह ।

वीर्यकम् [उत्पन्नानाम् अथ उत्पन्नानां उत्पन्नानां
कालात् यत् १० मर १० उत्पन्नानाम् ।

वीर्यकम् [उत्पन्न+ठञ्] उत्पन्न वृद्धाणि वा वृद्धाणि ।

वीर्य, वीर्यवत् १० ची वीर्य वीर्य वीर्य
गुणवत् से सम्बन्ध रखने वाला उत्पन्न से उत्पन्न वा
उत्पन्न से पड़ा हुआ सम उत्पन्न का उत्पन्न
निराधिकार उत्पन्न उत्पन्न वा उत्पन्न वा उत्पन्न वा ।

वीर्यवत् [उत्पन्नानाम् अथ उत्पन्नानां उत्पन्नानां
गुणवत् से सम्बन्ध रखने वाला उत्पन्न से उत्पन्न वा
उत्पन्न से पड़ा हुआ सम उत्पन्न का उत्पन्न

वीर्यवत् [उत्पन्न+ठञ्] 1 उत्पन्न वा उत्पन्न वा उत्पन्न
2 उत्पन्न वीर्यवत् उत्पन्न वा उत्पन्न वा उत्पन्न
3 उत्पन्न वीर्यवत् उत्पन्न वा उत्पन्न वा उत्पन्न
की वृद्ध 6 वत्ता ।

वीर्यवत् [उत्पन्न+ठञ्] 1 उत्पन्न वीर्यवत् 2 उत्पन्न
वत्ता ।

वीर्यवत् [उत्पन्न+ठञ्] 1 उत्पन्न वीर्यवत् 2 उत्पन्न
वत्ता ।

वीर्य वीर्य (स्त्री०) १० म० १ १६ वृद्ध वीर्यवत्
—१० वीर्य 2 उत्पन्न वत्ता उत्पन्न वत्ता उत्पन्न वत्ता
पण्यवत्तावत्ता प्रभाव उत्पन्न वत्ता 3 उत्पन्न वत्ता
वत्ता वत्ता वत्ता वत्ता वत्ता वत्ता वत्ता वत्ता वत्ता
२४, (वृद्धावस्था में वत्ता) १० वृ० ११०
4 वत्ता वत्ता वत्ता वत्ता वत्ता वत्ता वत्ता वत्ता
वत्ता वत्ता वत्ता वत्ता वत्ता वत्ता वत्ता वत्ता वत्ता

वीर्यवत् [उत्पन्न+ठञ्] उत्पन्न वत्ता वत्ता वत्ता वत्ता
वत्ता वत्ता वत्ता वत्ता वत्ता वत्ता वत्ता वत्ता वत्ता

वीर्यवत् [उत्पन्न+ठञ्] उत्पन्न वत्ता वत्ता वत्ता वत्ता
वत्ता वत्ता वत्ता वत्ता वत्ता वत्ता वत्ता वत्ता वत्ता

वीर्य (वि०) (स्त्री०—की) [उत्पन्न+ठञ्] उत्पन्न वा
प्रभाव से सम्बन्ध रखने वाला—वत्ता वत्ता वत्ता वत्ता
वत्ता ।

वीर्यवत्, वीर्य (वि०) (स्त्री०—की) [उत्पन्न+ठञ्]
उत्पन्न वा उत्पन्न वा वत्ता वत्ता वत्ता वत्ता वत्ता वत्ता
वत्ता वत्ता वत्ता वत्ता वत्ता वत्ता वत्ता वत्ता वत्ता

ऊ, ए, इ, उ, व, म्, कीर व्, —स्वप्न (हारा) होओं हारा
उष्मरित, —स्वरः बोधस्वामीय स्वर ।
बोध्यव् [उष्म + अष्] मयी, ताप ।
बोध्यव्, बोध्यव् [उष्म + ध्यञ्, उष्म + ध्यञ्] मयी
- रघ० १७।३३ ।

अन्य धेँ उमानें उन बालको को मधुरा लिखा माने के लिए लकुर को नेजा । फिर कम और कृष्ण में शोर मलमल बुझा जिममें कृष्ण के हाथों कम मारा गया; मम-—अरि,—अराति,—अति, कृष्ण, द्विष्,—हुन् (पु०) कम का मारन वाला लक्ष्मण—स्वयं सत्कारिणा कर्माणि हुन-—वेणी । निवेदिबान् कमकृष्ण न बिष्टे नि० १।१६—अस्मि (नपु०) काता,—कारः (स्त्री० री०) १ एक वर्त्मनकाराति, कतेरा,—कतकारणकारि बाह्यलाभबभूवन्—सख० २ जस्ता वा सफेद पीतल के बर्तन बनाने वाला, काते की दुहाई का काम करने वाला ।

कलसक [कम + कल्] कासा, कलीम या कल ।
कम् [कम् + क्त]—कमने, कलित । 1 कामना करना
[अभिमान करना] अस्विकार हो जाना दे० कम् ।
कम्बुजल, क जल कम्बु— बाचने क - कम् + कम्बु
पुत्रो० नृप हस्तचक्र] कातक, पपीहा ।
ककुद् (स्त्री०) [क मुक् कौति लुचयति - क + कु - चिप्, लुचयति, लुचयति] 1 चोटी, जिसका 2 मुख, प्रचार दे० नी० ककुद् 3 भारतीय बैल का लोह के कच्चे के ऊपर का कुब्ज या उभार 4 नीम 5 राजबिहारी (छत्र, चामर आदि) (पारसि नीम ११४) ६७० के अनुसार 'ककुद्' के स्थान में ककुडिनी समाप्त में ककुद् आदेश होता है उदा० चिककुद् ।
मय०--कम्बुः इत्याकुब्ज नै उत्पन्न सुवर्णही राधा शासन का पुत्र पुराण्य—इत्याकुब्ज ककुद् नृपाणां ककुत्तव्य इत्याहुतस्यमयोऽमृत— रम् ६१०१ (नीरामिक कथा के अनुसार राजाओं के माथे देवों के बुद्ध में जब देवों को बुद्धकी भाषी पड़ी तो वह इन के नेतृत्व में पुराण्य के पास गये और उनके बुद्ध में शरण देने के निवेद प्रार्थना की । पुराण्य ने इस सब पर स्वीकार किया कि इन उभे कल्पों के देर उलट कर चले । ककुत्तव्य ने बैल का जल पारण किया और पुराण्य उनके कंधे पर बैठा—एक प्रकार पुराण्य ने

कण्ड (कण) किरा, कणकारी (कण्ड + कर् + कन्, हलन्, कर्क० परक्यन्, परक्यामाये 'कण्डाटिका' जोषि ह्रस्व 'कण्डाटी') बोती का छोर जो छरीर पर चारों ओर स्पेटने के बाद इकट्ठा करके लीप की भाँति पीछे टाँग दिया जाता है।

कण्डू, कण्डू (स्त्री०) [कण् + क्, छ भाषेय, विकल्पेन ह्रस्वश्च] कुमती, जाज।

कण्डूर (वि०) [कण्डू + र ह्रस्वश्च] 1 लाल वाला, कुमती की बीमारी वाला 2 कामुक लम्पट।

कण्डूलम् [कुत्सिन जलमस्याप्रभवति को कदादेश दीपक की कालिमा जा बीषय क क्य में आँधी में आँधी जाती है काजल गया यथा येय जगला दीप्यत तथा तथा दीपशिखेव कण्डूलमलिनमेव कम केवलमनुमति—का० १०५, अत्रापि ता विभुतक० ४५ मोलनेनाम चो० १५, कालिका अमर २ मुदी (जा अमन की भाँति प्रयुक्त किया जाता है) 3 स्याही, घसी। सम० दृष्टव दीपक नीय —रोचक, —कम् रोचक, (लकड़ी का बना दीपक का स्टीण्ड)।

कण्डू (स्त्री० वा०) 1 बाचना 2 चमकना।

कण्डाटि [कण् + चट् + णिच् + कन्] 1 सूर्य 2 मटार का पोवा।

कण्डुकः [कण्डू + उक्तन्] 1 बलार, कुबच 2 सोप को लबा, केंचुली - पद्य० ११६६ 3 पाणक, कमर कपड़ा - धर्म प्रवर्जित ध० ५ 4 अगम्या बीणा —अन्त कण्डुककण्डुकस्य विज्ञानि ग्रामादय बाभन —रत्न० २१३, पद्य० २६४ 5 चानो वगैरा —नवविधिवेदप्रवर्जितकण्डुका - शि० ५१११ १०१० अमर ८१ (उक्ति--निन्दति कण्डुककार प्राय धुष्कालीनो नारी—नु० 'नाच न जान भागन टंडा')।

कण्डुककः [कण्डुक + कालच्] लीप।

कण्डुकिता (वि०) [कण्डुक + इतच्] 1 बरुन व सुन निकल, कचच बारल किये हुए 2 पोशाक पहने हुए —कथा० —धर्म० ३१३०।

कण्डुकिन् (वि०) [कण्डुक + इति] कचच या त्रिगुहस्तार से सुशोभित, —(पु०) 1 अन्त. पुर का लेखक, जलानी डबोड़ी का हारपाल (नागको में आबरयक पात्र —अन्त पुरचरी बुद्धो विज्ञो गुणगमायित, सर्वकार्य-वैकुण्ठः कण्डुकीत्यभिधीयते) 2 लम्पट, ध्वनिधारी 3. छीप 4. हारपाल 5. जी।

कण्डुकिता, कण्डुकी कण्डू + उलच् + ङाप् + इत् ह्रस्व [बोकी—तं बाणसि विद्वै कण्डुकिता धर्म धनो-हारिणी कर्त्तव्य—अमर २७।

कण्डा [कण् + कण् + ठ] 1 बाल 2 बड़ा, जम्

1 कमल 2 जम्बूत, मुवा। सम०—कः बड़ा, —वाचः विष्णु।

कण्डवः, की कण्ड केस एवं कायति—कण्ड + क + क एक प्रकार का पत्नी।

कण्डवः [कण् + कण् + कण्] 1 कामदेव 2 एक प्रकार का पत्नी (कीयल)।

कण्डवरः, कण्डवारः [कण् + नृ + क्, कण् वा] 1 सूर्य 2 हाथी 3 पेट 4 बड़ा की उपाधि।

कण्डवः [कण्डू + कण्डू] एक प्रकार का पत्नी।

कण्ड (स्त्री० पर०) कटोत, कटित, 1 बाना 2 डकना।

प्र 1 प्रकट होना 2 चमकना (प्र०—कटवति)।

प्रकट करना प्रदोषन करना, दिखलाना स्पष्ट करना

श्रीउक्तय परमाण प्रकटवत्याभागीयम तम

मा० ५११ मुहूर्तप्रकटव्य सुखपदा प्रथमके-

रमायणुक्ताम ३०२० ५१५ रत्न० ४१६

कट [क + कण् १ चट्टाई मन० ५११० १०२०

१ कट्टा और कट्टा कण्ड व ३५४ का पद ४

हाथी का गड्ढा कण्डप्रमाणन ५२ हर्षादि

रत्न० ५१३ ३१३ ५१३ ५ एक प्रकार का

धाम ६ शव ७ गड्ढाइन आधी ८ पावे का विनाय

प्रकार व कटका शि० १०१ रत्न० कटव शि०

पाणिना एति मध्यः १११ १११ १११ १११ १११

कट में। १० का ११ प्रथ १२ १३ १४ १५ १६

कटोत्तरात्। मय० अक्ष १११ १११ १११ १११

विज्ञाप नाद विज्ञाप इव मे हृदय कण्ड मा

१११ १११ १११ १११ १११ १११ १११ १११

पितर का रत्न व विज्ञाप २ मट्टा हाथी व

मन्त्रक व बहन बाना तरल पराव, कार १ मय

वार्ता (विष्णु सामार्थिक अवस्था व)। (शहावा रेटव

नवकोयल कटकार इति मय उधाना) २ बटाई

बुनन पाला कोल पाकदान, हाथक। मोटर २

कोवा ३ घोष का बनेम घोषः गोपाकपुरी—पुनन,

वा एक प्रकार क प्रमाण अमध्यकुलपाशो व

प्रथिव कटपुनन मन० १२७१, उगाळा कटपुनना-

प्रमृतय सागरावि कुर्वते - मा० ५१११, १ पुनन

अन० पा०) २३ जी, --वृः १ शिव २ पुन वा,

पिशाच ३ कीटा, घोषः, पण् निगव, अक्षः

१ हावा से दाने एकत्र करना (शिल्पाञ्जन) २ शक-

कट, मात्स्यो संगव।

कडक—कण् कट् + कण्] १ कडा बावडहेमकटका

रहमि म्पागि - चो० ११ २ मेकला कडकी ३

रत्नी ४ मुक्ता की एक कड़ी ५ बटाई ६ चारी

नमक ७ पतंत पावर्ष प्रकुम्भवृक्ष कटवीरिब त्वे

कु० ७५२, रत्न० १६३१ ८ अविशका धि०

५६५५ सेना, विवि-मुहा० ५१० १० राखानी

11. घर या बावास 12. वृत्त, पहिया ।

कटकिन् (पु०) [कट + किन्] पहार ।

कटकुट्टः [कट + कट + क्त्वा बा०, मुम्] 1. आग

2 सोना 3 गणेश याज्ञ० ११८८५ ।

कटकुम् [कट + कुम्] घर की छत या छप्पर ।

कटकुः [कट + कु + हुन् + इ] 1 कड़ाई 2 कसुबे की

कडी साल 3 कुत्ता 4 पहाड़ी मिट्टी का टीला

5 टूटे बर्तन का रंग मि० ५१३५, मै० २०१३० ।

कटिः [टो (रु०)] कट + इन्, कटि + क्त्वा बा० 1

कमर 2 निम्ब (साहित्य शास्त्री इस वा० को 'प्राग्' मयमन है इसका उदाहरण मा० १० ५७१ पृष्ठ पर

हीटमने इत्यमने) 3 हाथों का मङ्गलम् । मम०

तटम् कृत्वा कटीतटनिवेष्टितम् मृच्छ० ११७३,

मम० 1 बाता 2 ममला, करमनी प्राग्, निम्ब

मालिका इत्ये को नगरी या कपडनी शहरक

महावन, पालवान शब्दका कृत्वा भूकला पुष्पक

प्रती वरपना, मुञ्च्य करपना या ममला ।

कटिका [कटि + कन् + टाप्] कट्टा कमर ।

कटोर रम [कट + ईरन्] 1 गुला बाखर 2 कुत्ती

का रंग रम् कृत्वा ।

कटोरकम् [कटोर + कन्] निम्ब, बरत ।

कट्ट (वि०) कृत्वा टुटा टूटी) कट्ट + उ + इति ।

कट्टा बरतार (रम का एक भेद माना जाता है रम

छ है कट्ट, ममन, मम्पर, निम्ब, कपड और ममन)

—मम० १३१९ 2 मधुपुत्र, शरण मधु बाता मृ०

५१३३ 3 दुर्लभयुत बट्टवामा 4 कट्ट कट्ट ममन

रमक (मम०) याज्ञ० ३१३८ (म) कर्माधिकर अति

—ममनकट्ट नृपालमैकबाक्व दिवम् मृ० ६१५

5, ईध्यान् 6 गरम, प्रबद्ध, टु, नाखाने निम्बक

कट्टावन, (६ रसा में से एक) टु, नृ० ११ 1 अनु

चित कार्य 2 लांकापवाद, दुर्लभ निम्ब । मम०

कट्टः कट्टक, हाथ, मकड़ा कवाय टोरट्टो,

कवि (नृ०) मोठ, इसी प्रकार भग, ममन

मोट या बरतक—निम्बका: जनाय जो जल की बाढ़

में न लाया हो, कौन् एक मुमनित इत्य रम

मैडक ।

कट्टक (वि०) [कट्ट + कन्] 1 तीक्ष्ण, चरपरा 2 बरत,

गरम 3 कवि, कर्माधिकर, —कट्टा टीकापन, कट्टक

(६ रसों में से एक) रम० कट्ट ।

कट्टका [कट्ट + का] कविष्ट व्यवहार, ममनपना ।

कट्टम् [कट + कट्ट] पानी मिला हुआ कट्टा ।

कट्टोरम् [कट + कौन् + रमकोरक] मिट्टी का कट्टोरा ।

कट्टोक [कट + कौन्] 1 चरपरा स्वाद 2 तीक्ष्ण स्वादि

का पुष्प, वैसा कि कालाज ।

कट्ट (मम० ११०) कट्टाई के कट्टा—रम० कट्ट ।

कट्ट [कट्ट + कट्ट] एक मुनि का नाम, वैद्यमान का विष्णु
पञ्चदे की कठ शाका का प्रवर्तक, —कट्ट मुनि
के अनुयायी । मम०—कट्टः पञ्चदे की कठ शाका में
निष्ठाग हाहाय, —कौन्कः पञ्चदे की कठ शाका में
पारयन हाहाय ।

कट्टमरी [कट + मृद + कट्ट] विष्णु ।

कट्टर (वि०) [कट + कट्ट] कट्टा सक्त ।

कट्टिका [कट्ट + कट्ट बा०] लडिया ।

कट्टिन (वि०) कट्ट + इत्यन् 1 कट्टा, सक्त कट्टिन

विषयमैकवेणी सारयन्तोम्—मै० ९२, मम० ७२

इसी प्रकार स्तनी 2 कट्टोर-हृदय, कूर, निंद्य न

विदये कट्टिताः कल म्रिय कु० ४१५ पृष्ठ० ११६५

मम० १, इसी प्रकार हृदय 3 कट्टोर, कट्टय 4

तीक्ष्ण, प्रबद्ध, उष्ण (पीडा आदि)—नितालकट्टिनी कट्ट

मम न मै० मानसीम् विष्णु० २१११ 5 पंडा

इने वाला, —न मृ० मृ० नर 1 साफ की हुई लकड़

न बनी मिट्टी 2 लाना बरतने के लिए मिट्टी की हड्डी

। इने रम में नृ० भी ।

कट्टिमिक कट्टिनी [कट्टिन + कट्ट कन्—टाप्, इत्यन्]

1 म्रियता 2 कट्टा जगली ।

कट्टोर (वि०) [कट्ट + कौन्] 1 कट्टा, ठोस कट्टोरवि-

पक्षि—मम० ५१३६ 2 कूर, कट्टोर-हृदय, निंद्य —कवि

कट्टोर पण कित ते प्रियम्—उत्तर० ३१३३, इसी प्रकार

हृदय चित 3 तीक्ष्ण, मुमने वाला मकुषा—मा०

११०८ 4 पूर्वी विकसित पूर्वी, पूरा उगा हुआ—कट्टोर-

पनी शास्त्री विष्णु० उत्तर० ३११५९ इसी

प्रकार कट्टोरनाराचिपन्—कनकवि मि० ११२०

5 [अल०] पणिकर, परिष्कृत—कलाकामापासोचन-

कट्टा मरिचि—मा० ७१ ।

कट्ट = दे० कर ।

कट्ट (वि०) [कट्ट + कट्ट] 1 मृदा 2 कर्षी 3 व्यवसाय,

मृत्त ।

कट्टम् [कट्ट + कट्ट (मृ वा) + कट्ट, मुम्] मलक ।

कट्टम [कट्टोर (वि०)] कट्टक (कट्ट + कट्ट) विष्णुके ठिका

विनाया बाय,—कट्टा बाय जाने पाया पट्ट (बाय, कट्ट

आदि) मृ० ५१९ ।

कट्टकम् [कट्टकते सिन्धवे कलाविकम् कट्ट + कट्ट, कट्ट

कट्टोरक कट्टा] एक प्रकार का बर्तन ।

कट्टिमिका [कट्टिमिका] विज्ञान, शास्त्र ।

कट्ट (म, न्वः) कट्ट + कट्टम् इत्य कट्टिम, (कट्ट बायी

का) ।

कट्टार (वि०) [कट्ट + कट्ट कट्टाके] 1, कट्टे रंग का

2, कट्टी, कट्टिमाली, कट्ट,—र 1, कट्टा रंग 2, कट्टक ।

कट्टिकुः [कट्टा तीक्ष्ण कट्टन वस्त्र, पृ० ० इत्य कट्ट] कट्ट-

वाट, कट्ट ।

- नीलकः नीलः, -नीलकः बड़ा नील या नीला, -बालकः 1 हाथी की छोटा के चारों ओर बची हुई रस्सी 2 राकने वाला, -बूबा छोटा हार -बिदुषा कण्ठभूषा-त्वमेतु-विक्रमाक० १८१०२, बलिः 1 गले में पहनने का माला 2 प्रिय बन्धु, -सस्ता 1 पट्टा 2 बोरे की रोकने वाला, बलिम् (वि०) गले में होने वाला अर्थात् बिदा होने वाला घास -रघु० १२०४, शोषः (शा०) 1 गले का सूख जाना, सूखः 21 जाना 2 (आय०) निरपल प्रतिवाद, लज्जनम् गले के सहारे लटकना, लुप्य एक प्रहार का आगमन -यत्कुर्वन्ने वक्षसि बसन्प्रयस्यन्नाभिमान निर्विघ्नोपगुणः परिग्रहायै जनैर्द्विजस्यारण्यकण्ठाय प्रवर्तन मन कण्ठ, मूत्रमपदिश्य बोधित - रघु० ११०२ (ननार्भिमान) की कटलाता है), लू (वि०) 1 गले में होने वाला 2 कठस्थानीय ।

कण्ठः (अव्य०) [कण्ठ + लसिन्] 1 गले से 2 लफट कर में, लफटकर में ।

कण्ठाक्ष [कण्ठ + आलम्] 1 किछी 2 पाकड़ा, कुटाली 3 पट्ट 4 डेर सा बर्तन जिसमें दूध बिलास आय । कण्ठिका [कण्ठ + उन् (गाय, हावय) एक लटक हाव या बाधा ।

कण्ठी (स्त्री०) [कण्ठ + षीष्] 1 गलेन, गला 2 हार पट्टी 3 बोरे की गलेन के चारों ओर बची रस्सी । मन्० रघुः 1 सिंह 2 नरबाता हाथी-कटो (को महा-हठेन लपनन् रघु० ७ 3 कवुर 4 गण्ड बोधना या उल्लेख (इति कण्ठीरवेणोक्तम्) ।

कण्ठीकः 'कण्ठ + ईक्ष' ३ डेर ।

कण्ठीकाक्ष [कण्ठे काक्षी विषयान्नो नीमिमा वस्य आय० स०] शिव ।

कण्ठाय (वि०) [कण्ठ + यन्] 1 गले में सब-स रखने वाला गले के उपयुक्त, या गले में होने वाला 2 कठस्थानीय । मन्० कण्ठः कठस्थानीय बड़ा नामन व. वा. कु. ल. द. व. इ. और ह. स्वरः कण्ठस्थानीय स्वर (व और वा) ।

कण्ठ् (आ० उभ०) 1 प्रसन्न होना, लज्जुका होना 2 प ४३ होना 3 कटकर मुली बनन करना, (बुरा० उभ० -कण्ठवति-से, कण्ठित) 1 (अलाय), पाहना दान कलन करना 2 रक्षा करना, बचाना ।

कण्ठयन् [कण्ठ + लृट्] 1 कटकना, दारो से मुली बनन करना -अधोन्तायै तत्सर्वं (अध्वयनम्) मुखायां कण्ठनं पथा 2 मुली, -नी 1. बोधनी 2 मुलक ।

कण्ठरा [कण्ठ + कर्त्तृन्] गण ।

कण्ठिक [कण्ठ + लृट् + टाप्] छोटा कण्ठाय, छोटे से छोटा कण्ठाय (देखा कि कण्ठ कण्ठेन में) ।

कण्ठु (पुं० स्त्री०), कण्ठु (स्त्री०) [कण्ठ + कृ, कण्ठ + कृ]

यत् + क्तिप्, यलोपः यलोपः] 1 खरना 2 खजाना -कपोलकण्ठ कागिबिनेतुम्-कु० ११०, प्रा० ६१३ ।

कण्ठुनि (स्त्री०) [कण्ठ + यत् + क्तिन्] 1 खरना 2 खजानी, खजाना ।

कण्ठुवति से (ता० वा०, उभ०) (पुं० क० क० -कण्ठु वित्) 1 खरचना, लदे 2 समलता -कण्ठुवमानेन कट कटावत् रघु० २१३७, मूलीयकण्ठयन इच्छामार कु० २१३६, मूले कण्ठयनम् बामनयन कण्ठय-माना मूलीय-क० ६१३६, मनु० ६१४० ।

कण्ठयनम् [कण्ठ + यत् + लृट्] खरचना मयचना कण्ठ यनेर्दमनिवारयत् - रघु० २१४, -नो मयन्ने के लिए दूज ।

कण्ठयनकः [कण्ठयन + कन्] खजानी पैदा करने वाला मृदुपुत्री करने वाला -पथ० १७१ ।

कण्ठुया [कण्ठ + यत् + क + टाप्] 1 खरना 2 खजाना कण्ठुन (वि०) [कण्ठ + लृप्] जिसे खजानी का प्रकार हो, वो खजानी अनुचर करता हो या खजानाहट पैदा करने वाला -कण्ठुनियन्वन्विष्ककालात्पन मयनिमि उतर० २११ ।

कण्ठोकः [कण्ठ + ओक्] 1 (बेल का बीस की बनी) टोकरी जिसमें अनाब रखा जाय 2 हानी, भ्रष्टाचार-हट 3 डेर, -की बाधान की बीचा ।

कण्ठोकः [कण्ठ + ओक्] बाधा, एक तरह का फुल्ला ।

कण्ठः [कण्ठ + कण्ठ्] एक चोखे का नाथ, अनुलोमा का वर्णित 'काण्ठ शास्त्र' का प्रबन्धक । मन्० दुहितु -कुला अनुन्तका, कण्ठ की पुत्री ।

कण्ठ, कनक [क वन बृह तनोति-रन् + क + टाप्] निर्वर्ती का पीचा (इसका कल गले वाली को लम्बे कर देने वाला बलकावा बाधा है) रीटा पत्र कनक-बृहत्स वक्षःपुत्रसादनम्, न नामदृष्टादेव मय कारि प्रसीदति । मनु० ६१६७, लक्ष्-लक्षम् इम यत्र हा पत्र, रीटा, दे० 'बहुदमार्त' धी ।

कण्ठ (सर्व० वि०) (नपुं० धन) [किञ् + टाप्] कीन वा कीन सा -अपि कान्ते कतयेन दिग्भावे कल न कायम इति विचल० १, बय कनय पुनर्वातुमधि-कृत्य वाग्माधि -स० १, कतये से मूलस्तय समुदाहर-नवावलिवा-भा० १, (कभी कभी 'कित्' के स्थान में ब्रह्मन्त कलावेक के रूप में प्रकृत होता है) ।

कण्ठ (सर्व० वि०) (नपुं०-रन्) [किञ् + इतरप्] कीन, को में से कीन सा, -वैतद्विदः कतग्नौ गरीयो क्वा कनेव वपि वा नो वसेत्-मन्० २१६ ।

कण्ठयन् [कण्ठ कण्ठय उक्त्य कृतावाव जमति वर्गान्गोति कण्ठ + यन्] कण्ठ, पुं० कण्ठय ।

कण्ठि (सर्व० वि०) [किञ् + क्ति] (कण्ठे व० व० में कण्ठय-कति, कतिविः) 1 कितने-कारणय कति

सूचक- अर्थ- १०८८१८ २ कुछ (यह 'कति' के साथ चिह्न, याना वा अति जोड़ दिया जाता है, तो सन्ध की प्रत्ययवाचकता नष्ट हो जाती है और वह अनिवार्यवाचक बन जाता है) अर्थ होता है कुछ कई, जोड़े से-तन्वो स्थिता कतिविधैव पद्यानि गत्या-अ० २।१२, कल्पयि वासराणि-अमर २५ तस्मिन्नाहो कतिविधवला विप्रवृत्त स कामी नीत्वा भासान् प्रेष० २।

कतिचित् (अर्थ०) [कति + कित्सुच] कितनी बार ।

कतिधा (अर्थ०) [कति + धा] १ कई बार २ कितन स्थानों पर, या कितने भागों में ।

कतिपय (वि०) [कति + अय, पुंस्] कुछ कई कई एक-कतिपयकुमुदोगम कणव अमर० ३।१० प्रेष० २३ - कतिपयविवसापनमे कुछ दिनों के बीत जाने पर वर्ष कतिपयैरेव इतिवत् स्वर्णरेव - अमर २।७२ ।

कतिविध (वि०) [व० स०] कितने प्रकार का ।

कतिशः (अर्थ०) [कति + शच्] एक बार में विना ।

कच् (अर्थ० वा०)-कल्पने कल्पित १ लम्बी बघारना इतरा कर चलना इत्यादि अर्थों में क भोट्ट० १६।६, कर्त्तव्यकर्मणा सर्व कल्पेणा महा० २ प्रशसा करना, प्रसिद्ध करना ३ माली देना इवंचन करना चि- १। सेवी मारना का लुप्तनन प्राथम्यमाना विकल्पते- विक्रम० २ दाम घटाना, मुच्य कर्त्ता उल्लेखित करना-सदा यवान् फाल्गुनस्य गृन्मर्यान् विकल्पते- महा० ।

कचकच्, -वा [कच् + कच् + कच्] हीन मारना सेवी बघारना ।

कचकचरच् [कच + कच् + कच्] कथा ।

कच् (पुं० उ०)-कचयति कचिन् १ कदना मकाचार देना, (शाय लम्ब० के साथ) -गर्माद्यन्वयदर्शनेन कच वैशिल्याय कचवाकचुश्च अमर० १।१३ २ बाणाय करना, उल्लेख करना अमर० २।३६ अमर० १।१५ ३ बाणोत्पाप करना, बाते करना वाचचोद करना-कचयिष्या सुप्रत्येय सह रामा० ४ भोजन करना निषेध करना, विवशना-विक्रम० १।३ बाकागमदश केन्द्रियेभ्यस्तस्य कचकचि-अ० ७ ५ वजन करना वजन करना-कच कचते गी० अमर० अर्थ ६० ७ ७८ कचकचनेन बाधाना मोतिस्वर्णरिह कचते हि० १।१, ६. वृद्धता देना, वृद्धि करना, विप्रवृत्त करना-पुच्छ० २ ।

कचक (वि०) [कच् + कच] कष्टानी कष्टने बाधा, वजन करने वाला -कः १ मुच्य शस्त्रेदेता २ वरकच् ३ कष्टानी सुधाने बाधा ।

कचकच् [कच् + कच्] कष्टानो कष्टना, वजन करना, कचकच कष्टना ।

कचक (अर्थ०) [कच प्रकाराद्यर्थे कच कचयत्यर्थे] १ कौम कच प्रकार १कम रीति में कष्टों में कच प्रकाराद्यर्थे लक्ष्य विषयाम हि० १ सानुबन्धा कच म द्य लक्ष्यो मे निगद्यत अमर० ३।६ ३।४४ कचकचकचानि निवेदयामि कच वा मागहार करामि अमर० १। २।४१ बोलने वाले का अपन कचन क प्रीतिवत् म सन्देश है २ यह बहुधा आशय पक्ष करना है- (अर्थ०) कच सामेवोदिसिणि अमर० ६ ३ गच्छ प्राय इव, नाम नृ, वा सिद्ध क साथ जोड़ दिया जाता है जब कि इसका अर्थ होता है क्या सम्भन क्या सम्भावना है मुच्य अतनाद्या न। यहाँ प्रश्न का सामान्यीकरण कर दिया जाता है) कच वा गम्भीर अमर० ३ कच नामैतन् अमर० ५ ४ अब यह बिंदु बन या अति के साथ जोड़ दिया जाता है तो इसका अर्थ हो जाता है हर प्रकार में कति नष्ट नहीं होता [कचानि किम प्रसीद बडा बोधार्थ म ला बड प्रशंसा स १२], अथ वा कचयति । प्रेष० ३ कचयत्युच्यते न लुब्धक अमर० ३।१० न लोकादल वचन कुनि हला कचयन मनु० ६।११ १।१६ बघाविदाश ननस्य वचन ३। ७, इव कचयति अति प्रेष० १ विगत कचयत्यमर ३ ११ मय ० ० अमर० ३ ३। १।१३ कचकच प्रशंसा, इतिहास वचन वाला कारण अर्थ । किम गति मे कौम कचकारप्रधानाया कीर्तिप्रतिभासिणि अमर० १।१० कचकार मञ्जरी मञ्जरी ० नै० १।३।१५ पञ्चाशत् (वि०) १कम मात्र नाम का अर्थ (वि०) किम हयभार का किम प्रकार का प्राय लोककारा ३। प्रयुक्त) कच (वि०) किम शस्त्र मृज का ।

कचन्ता [कचम नञ् कया कचता कया राशि]

कचा [कच + अच्] १ कचा ११ ती २ कचिन्ता या माग्यव कष्टानी कचान्कचने वालान नीतिना दिन कचयते हि० १।१ ३ कचान्ता मदर्थ उल्लेख-कचाणि न्यून पापानाम उन्मेषेयमन अमर० १।६० ४ कचान्ता वाचोत्पाप, दक्षता ५ मद्यमयी रचना का एक मद जो आख्यायिका से मिल है (प्रत्ययकल्पना लोकादल प्रशंसा कचा चिद्, रचयताया वा स्यात् मा यन्वाख्यायिका बूधे) 'आख्यायिका' के नीचे भी दखें । का कचा या प्रति पुच्छ कचा (कचा कहना) क्या कहने की आवश्यकता है कहना नहीं 'कुछ नहीं कहना' और कितना अधिक 'और कितना कच' बाध अर्थों का प्रकट करने हैं का कचा लक्ष्यस्थाने उदाहृत्यैरेव इतर लोकादल वचन म हि विवशान पोषि अमर० ३।१ कचिन्तयतेवापि लोकादल वचने कौम कचा लोकादल-अमर० ८।४६, वाचयामिमुच्यमानाया लक्ष्य स्वां प्रति का कचा-१०।२८, सेवी २।२५, ।

मम०—अधुरासः वार्तालाप करने में आसम्ब्र प्राप्त करना, —असम्ब्रम् १. वार्तालाप के मध्य में स्वतन्त्र-व्यक्ति कथास्तरम् यथा ५५७ २. दूसरी कहानी, आरम्भः कहानी का आरम्भ, —उद्वः कहानी की शुरुआत, —उद्वः १ प्रस्तावना के पाँच खंडों में से दूसरा प्रकार जब कि बुपके से सुनने के बाद उचम पात्र सुचचार के शब्दों या भाव को दाहरता हुआ रमयच पर जाता है—दे० सा० ४० २९०, उदा० रत्न०, वेणी० या मुद्रा० २ किसी कहानी का आरम्भ आकु-मारकचोत्पात शालिगोप्यो जगुर्वस रघु० ५१२०,

उपाख्यानम् वर्णन करना, बयान करना, — अलम् १ कथा के बहाने ४ अलम् १. नाना बयाने हुए, नायकः - बुध् (कहानी का) नायक, वीर्यम् कथा या कहानी का परिचयात्मक भाग, —अवन्त, कहानी, बनावटी कहानी, कपालकल्पित कहानी, —असङ्ग १ वार्तालाप, बातचीत या बातचीत के दौरान में नाता कथा प्रस्तावस्थित हि० १, मित्र कथाप्रसङ्गेन विवाद किञ्च वक्तु - कथा० ४२, १८१, मै० १३५, २ । अर्थात् किञ्च कथाप्रसङ्गेन प्रस्तावतात्—कि० ११२० (यहाँ प्रसंग प्रथम अर्थ का भी प्रकट करता है), प्राथ, अमिता, नायक कहानी का परिचया-त्मक भाग, बोधः बातचीत के मध्य, विपर्ययः कहानी का मार्ग बदलना, —अव, अवबोध (वि०) जिसका केवल 'बुद्धि' हो बाकी रह गया है अर्थात् 'मृत' (कथास्थिता गत मृत, मृतक) (५) कहानी का बचा हुआ भाग ।

कथानकम् [कथ् + आनक बा०] छोटी कहानी उदा० वेतालपञ्चविंशति ।

कथित (भू० क० क०) [कथ् + क्त] १ कहा हुआ कथित, बयान किया हुआ २ अधिहित, वाच्य । मम० -अव पुनर्वक्ति, दाहरता, (पुनर्वक्ति वाक्य में एक प्रकार का रचना विपर्यय शब्द है जब कि एक शब्द का बिना किसी विशिष्ट अभिप्राय के दावारा प्रयोग किया जाता है) काव्य० ७, सा० ४० ५७५, एत० ।

कथ् (विभा० आ०—कथते) हतबुद्धि आ जाना, चबरा जाना, मन में घुसी होना ११ (प्र०) आ० कदने म्मा० पर० भी) १ चित्तलाना, रोना, आसु बहाना २ झोक करना ३ बुकाना ४ चारना, प्रहार करना—दे० कथ् ।

कथ् (अव०) [कथ् + क्तिप्] (समान में 'कु के स्थान में अक्षर हाने वाला अव्यय) दूरार्थ, अल्पता ह्रास निरर्थकता, तथा बोध आदि का प्रकट करने वाला अव्य० । उदा०—अवसरम् १ दूर अवसर २ दुरो निष्कारि, —अभिः बोधी आन, अव्यम् दुरा मार्ग, —अव्यम् दुरा भोजन, अव्यम् दुरा वस्त्रा, —अव्यम्:

दुरी जावन, दुरी प्रवा, —अर्थ (वि०) निरर्थक, अर्थ-हीन, अव्ययम्, —आ कथ् देना, दुरी करना, लताना, —अर्थकति (ना० वा०, पर०) १ बुधा करना, निर-स्कार करना २ कथ् देना, लताना—अर्थ० ३१२००, मै० ८१७५, —अभिः (वि०) १ बुधित उपेक्षित, निर-स्कृत—अर्थकतिस्थायि हि बंधनमें लक्ष्यते वेद्यगुण प्रमाद्यम्—अर्थ० २११०६ २ लताना गया, पीड़ित किया गया—आ कथयिताऽप्येवर्षा बार बीरसदाद-विधकारिणि—उत्तर० ५ ३ मुच्छ, नीच ४ दुरा, दुष्ट, अर्थः कथूस—मनु० ५१२१०, २०४, पात्र० ११२११ वाचः लोप्यता सुमवन, —अवः दुरा बोधा—आकार (वि०) विकृतकृप, कुकृप, आचार (वि०) दुराचारी, दुष्ट दुष्टचरि (१) दुराचरण, —उचुः दुरा उट—उच्य (वि०) गुनगुन बोधा गरम (—अव्यम्) गुनगुनापन रच दुरा रच या वाही—बुधि कथयचन्द्राम् अर्थ० ध्वजशालिनम् अर्थ० ५११०३, अर्थ (वि०) १ दुर्बल कहने वाला, अवधार्य या अस्पष्ट वक्ता—येन जान प्रियापाये कथं हसकोकिलम् अर्थ० ५१३५, वार्तिदा वरमकटदा नृप सि० १४११ २ दुष्ट, वृथायोग्य ।

कथम् [कद मेघ इव वायुनि प्रकांगते कद + क + क] शोभिमाना, चदाप्रा ।

कथनम् [कथ् + क्त] १ विनाश, हन्ना, लबाही २ पृष्ट ३ पाप ।

कथम्, कथम्बकः [कथ् + अ + क्] १ एक प्रकार का वक्ष (बादलों की गरज के साथ इसकी कलियों का मिलन, प्रसिद्ध है) —कतिपयकुसुमोद्यम कदम्ब—उत्तर० ३१२०, मा० ३१७, उत्तर० ३१४१ मेघ० २५ रघु० १०१९९ २ एक प्रकार का वात ३ हन्दी, कथ १ समुदाय - छायावदकदम्बक मृगकुल रोम-न्यमभ्यस्यतु—सा० २१६ २ कथ वृक्ष का फूल—पृथ्वदम्बकदम्बकराजितम्—कि० ५१० लम०—अभिः (कदम्ब गुणों की सुगन्ध में पुनः) सुगन्धित वायु, ते चोर्माल ग्यान्दीमुखरि प्रोढा कदम्बानिका—काव्य० १ २ वस्त्र, कोरकम्बः न्याय के नी० दे०, —आयु सुगन्धित पवन अनिल ।

कथर क जल शरयति नाशयति—क + द + अर्थ १ आग २ अकुल, रन् जमा हुआ धुल ।

कथम्, कथम्बकः [कथ् + कलम् कन् + क्] केले का पेड़, —अलम्ब मृगवृक्ष कथम्बक काव्यो अर्थ० ९५—भी १ केले का वृक्ष—कि वासि बालकरोनो विकम्पमाना—मुच्छ० ११२०, वास्यम्बक सरसकलीसम्भारीरचक-त्वम्—मेघ० ९६, ७७, कु० ११३६ रघु० १०१९६, पात्र० ३१८ २ एक प्रकार का मृग ३ हाथी के द्वारा बहान की जा रही ध्वजा ४ ध्वजा वा लडा ।

कदा (कदा०) [किन् + दा] कब किस समय कदा गमि
कदा—एक गच्छामि कदा कदाप्यसि आदि अर्थ
कोछने पर यह शब्द 'कभी-कभी' किसी समय समय
मिकास कर' अर्थ 'एकट करता है, न कदापि कभी
नहीं, यदि 'अब जग जोड़ दिया जाय तो इसका अर्थ
हो जाता है किसी समय एक दिन एक बार एक
दफा—आत्मन् ब्रह्मको विहाय बिभेति कदाचन मन०
२।५४ १४४ ३।२५ १०१ यदि चित्त जागे जे
दिया जाय तो इसका अर्थ हो जाता है एक बार
एक दफा किसी समय अब कदाचित एक बार
—रघु० २।३३ १।१-१ नसी कीहेत्कदाचिन मन०
४।७४, ९५ १९० कदाचित कदाचित अब अब
कभी-कभी कदाचित कानन जगते कदाचित कमल पर
रेमे का० ५८ अम० ।

कदा (वि०) (स्त्री०) कदा कदा [क + द + क + द] कदा
—हुं, —हुं (स्त्री०) कदापि की व सी तथा नागा क
माता । तम० बुध, सुत माप ।

कनकम् [कन् + कन्] सोना—कनकबलय सन्ध छन्द मग
प्रतिपाद्ये श० ३।१२ मेघ० ० ३० ९० क
१ शक का वृक्ष २ धनुर का वृक्ष ३ पट्टनी आवनम ।
तम० अगवध सोन का कड़ा अचल, अहि,
—मिरि, होल मूषक पहाड के विषाख, अघुना
कुभी के स्पर्शसे किल कनकाचलेन मार्धम—मा० २।१
—आलुका सोने का कड़ा या फूलदान—आलुय बरूर
का पीचा, —हनुः सोने की कुम्हारडी—बन्धु, बन्धक
(सोने के बड़े बाला) राक्षस बन्धु सोने का बन्
काद का आभूषण—जीवेन मंगलच परिहृत्य कायात
कर्म कृत कनकपत्रमालापन्था श्री० १० वराह
सुगहरी रव—रत्न १ हवताल २ पिच्छा हुआ सोना
—बुध् सोने का हार, —कान्धा कनकसुमेध कल्पसर्प
विनाशित—रघ० १।२०७, —स्वामी स्वर्धनुनि साने
की काग ।

कनकस्य (वि०) [कनक + स्यद्] सोने का बना हुआ
सुनहरी ।

कनकस्यु [?] एक गीर्धस्थान (हरिहार) का नाम तथा उसके
नाथ-स्त्री पहाडियां, (तीर्थ कनकम नाम मन्त्राचार्येऽपि
पावनम्)—तस्माद्वनच्छेदकनकसल शैलराजावतीर्षी
बहुो कस्याम्—मेघ० ५० ।

कनक (वि०) [कन् + कृ] एक जाति का पु० 'काच' ।
कनकति (मा० वा० पर०) कन करना, बटाना, छोटा
करना, मूक करना—किलि न कनकति च—मटि०
१८।२५ ।

कनीष्ठ (वि०) [कनितसेन द्वा अल्पो वा—कनादेश
—कन् + इष्टन्] १ सबसे छोटा, कम से कम २ बालू
में सबसे छोटा ।

कनीष्ठिका [कनिष्ठ + कन + टाप] सबसे छोटी अगुली
कनीष्ठिकाचिच्छितकानिदासा मुष्मा० ।

कनीष्ठा कनीनी [कनीन + कन + टाप, इयम्—कन +
इन + टाप] १ छोटी अगुली कनी २ जीव की
पुत्रनी ।

कनीयस (वि०) (स्त्री०) सी। [अयमनयोः १३१४४ यदा
अल्पो वा कनादेश कन + ईयम्न स्थिता ढीप] १ सी
म से छोटा अनेकाङ्कत कम २ आय द छोटा कनी
गार भाना कनीयसी भगता आदि ।

कनरा [कन + रान् टप्] १ बन्धा २ हथिनी (३०
बर्षर) ।

कन्तु कन नु १ काभदेव २ हृदयावका और भानना
वा—धान ३ अनाज की बन्तो ।

कन्धा [कन् + धा] १ कान्ध २ कान्ध ३ कान्ध ४ कान्ध
५ कान्ध ६ कान्ध ७ कान्ध ८ कान्ध ९ कान्ध १० कान्ध
११ कान्ध १२ कान्ध १३ कान्ध १४ कान्ध १५ कान्ध
१६ कान्ध १७ कान्ध १८ कान्ध १९ कान्ध २० कान्ध
२१ कान्ध २२ कान्ध २३ कान्ध २४ कान्ध २५ कान्ध
२६ कान्ध २७ कान्ध २८ कान्ध २९ कान्ध ३० कान्ध
३१ कान्ध ३२ कान्ध ३३ कान्ध ३४ कान्ध ३५ कान्ध
३६ कान्ध ३७ कान्ध ३८ कान्ध ३९ कान्ध ४० कान्ध
४१ कान्ध ४२ कान्ध ४३ कान्ध ४४ कान्ध ४५ कान्ध
४६ कान्ध ४७ कान्ध ४८ कान्ध ४९ कान्ध ५० कान्ध
५१ कान्ध ५२ कान्ध ५३ कान्ध ५४ कान्ध ५५ कान्ध
५६ कान्ध ५७ कान्ध ५८ कान्ध ५९ कान्ध ६० कान्ध
६१ कान्ध ६२ कान्ध ६३ कान्ध ६४ कान्ध ६५ कान्ध
६६ कान्ध ६७ कान्ध ६८ कान्ध ६९ कान्ध ७० कान्ध
७१ कान्ध ७२ कान्ध ७३ कान्ध ७४ कान्ध ७५ कान्ध
७६ कान्ध ७७ कान्ध ७८ कान्ध ७९ कान्ध ८० कान्ध
८१ कान्ध ८२ कान्ध ८३ कान्ध ८४ कान्ध ८५ कान्ध
८६ कान्ध ८७ कान्ध ८८ कान्ध ८९ कान्ध ९० कान्ध
९१ कान्ध ९२ कान्ध ९३ कान्ध ९४ कान्ध ९५ कान्ध
९६ कान्ध ९७ कान्ध ९८ कान्ध ९९ कान्ध १०० कान्ध

कन्दर्प [कन् + दन्] १ कन्दर्प २ कन्दर्प ३ कन्दर्प ४ कन्दर्प ५ कन्दर्प ६ कन्दर्प ७ कन्दर्प ८ कन्दर्प ९ कन्दर्प १० कन्दर्प ११ कन्दर्प १२ कन्दर्प १३ कन्दर्प १४ कन्दर्प १५ कन्दर्प १६ कन्दर्प १७ कन्दर्प १८ कन्दर्प १९ कन्दर्प २० कन्दर्प २१ कन्दर्प २२ कन्दर्प २३ कन्दर्प २४ कन्दर्प २५ कन्दर्प २६ कन्दर्प २७ कन्दर्प २८ कन्दर्प २९ कन्दर्प ३० कन्दर्प ३१ कन्दर्प ३२ कन्दर्प ३३ कन्दर्प ३४ कन्दर्प ३५ कन्दर्प ३६ कन्दर्प ३७ कन्दर्प ३८ कन्दर्प ३९ कन्दर्प ४० कन्दर्प ४१ कन्दर्प ४२ कन्दर्प ४३ कन्दर्प ४४ कन्दर्प ४५ कन्दर्प ४६ कन्दर्प ४७ कन्दर्प ४८ कन्दर्प ४९ कन्दर्प ५० कन्दर्प ५१ कन्दर्प ५२ कन्दर्प ५३ कन्दर्प ५४ कन्दर्प ५५ कन्दर्प ५६ कन्दर्प ५७ कन्दर्प ५८ कन्दर्प ५९ कन्दर्प ६० कन्दर्प ६१ कन्दर्प ६२ कन्दर्प ६३ कन्दर्प ६४ कन्दर्प ६५ कन्दर्प ६६ कन्दर्प ६७ कन्दर्प ६८ कन्दर्प ६९ कन्दर्प ७० कन्दर्प ७१ कन्दर्प ७२ कन्दर्प ७३ कन्दर्प ७४ कन्दर्प ७५ कन्दर्प ७६ कन्दर्प ७७ कन्दर्प ७८ कन्दर्प ७९ कन्दर्प ८० कन्दर्प ८१ कन्दर्प ८२ कन्दर्प ८३ कन्दर्प ८४ कन्दर्प ८५ कन्दर्प ८६ कन्दर्प ८७ कन्दर्प ८८ कन्दर्प ८९ कन्दर्प ९० कन्दर्प ९१ कन्दर्प ९२ कन्दर्प ९३ कन्दर्प ९४ कन्दर्प ९५ कन्दर्प ९६ कन्दर्प ९७ कन्दर्प ९८ कन्दर्प ९९ कन्दर्प १०० कन्दर्प

कन्दर्प, रत्न कम् [कन् + कृ] १ कन्दर्प २ कन्दर्प ३ कन्दर्प ४ कन्दर्प ५ कन्दर्प ६ कन्दर्प ७ कन्दर्प ८ कन्दर्प ९ कन्दर्प १० कन्दर्प ११ कन्दर्प १२ कन्दर्प १३ कन्दर्प १४ कन्दर्प १५ कन्दर्प १६ कन्दर्प १७ कन्दर्प १८ कन्दर्प १९ कन्दर्प २० कन्दर्प २१ कन्दर्प २२ कन्दर्प २३ कन्दर्प २४ कन्दर्प २५ कन्दर्प २६ कन्दर्प २७ कन्दर्प २८ कन्दर्प २९ कन्दर्प ३० कन्दर्प ३१ कन्दर्प ३२ कन्दर्प ३३ कन्दर्प ३४ कन्दर्प ३५ कन्दर्प ३६ कन्दर्प ३७ कन्दर्प ३८ कन्दर्प ३९ कन्दर्प ४० कन्दर्प ४१ कन्दर्प ४२ कन्दर्प ४३ कन्दर्प ४४ कन्दर्प ४५ कन्दर्प ४६ कन्दर्प ४७ कन्दर्प ४८ कन्दर्प ४९ कन्दर्प ५० कन्दर्प ५१ कन्दर्प ५२ कन्दर्प ५३ कन्दर्प ५४ कन्दर्प ५५ कन्दर्प ५६ कन्दर्प ५७ कन्दर्प ५८ कन्दर्प ५९ कन्दर्प ६० कन्दर्प ६१ कन्दर्प ६२ कन्दर्प ६३ कन्दर्प ६४ कन्दर्प ६५ कन्दर्प ६६ कन्दर्प ६७ कन्दर्प ६८ कन्दर्प ६९ कन्दर्प ७० कन्दर्प ७१ कन्दर्प ७२ कन्दर्प ७३ कन्दर्प ७४ कन्दर्प ७५ कन्दर्प ७६ कन्दर्प ७७ कन्दर्प ७८ कन्दर्प ७९ कन्दर्प ८० कन्दर्प ८१ कन्दर्प ८२ कन्दर्प ८३ कन्दर्प ८४ कन्दर्प ८५ कन्दर्प ८६ कन्दर्प ८७ कन्दर्प ८८ कन्दर्प ८९ कन्दर्प ९० कन्दर्प ९१ कन्दर्प ९२ कन्दर्प ९३ कन्दर्प ९४ कन्दर्प ९५ कन्दर्प ९६ कन्दर्प ९७ कन्दर्प ९८ कन्दर्प ९९ कन्दर्प १०० कन्दर्प

कन्दर्प [कन् + दन्] १ कन्दर्प २ कन्दर्प ३ कन्दर्प ४ कन्दर्प ५ कन्दर्प ६ कन्दर्प ७ कन्दर्प ८ कन्दर्प ९ कन्दर्प १० कन्दर्प ११ कन्दर्प १२ कन्दर्प १३ कन्दर्प १४ कन्दर्प १५ कन्दर्प १६ कन्दर्प १७ कन्दर्प १८ कन्दर्प १९ कन्दर्प २० कन्दर्प २१ कन्दर्प २२ कन्दर्प २३ कन्दर्प २४ कन्दर्प २५ कन्दर्प २६ कन्दर्प २७ कन्दर्प २८ कन्दर्प २९ कन्दर्प ३० कन्दर्प ३१ कन्दर्प ३२ कन्दर्प ३३ कन्दर्प ३४ कन्दर्प ३५ कन्दर्प ३६ कन्दर्प ३७ कन्दर्प ३८ कन्दर्प ३९ कन्दर्प ४० कन्दर्प ४१ कन्दर्प ४२ कन्दर्प ४३ कन्दर्प ४४ कन्दर्प ४५ कन्दर्प ४६ कन्दर्प ४७ कन्दर्प ४८ कन्दर्प ४९ कन्दर्प ५० कन्दर्प ५१ कन्दर्प ५२ कन्दर्प ५३ कन्दर्प ५४ कन्दर्प ५५ कन्दर्प ५६ कन्दर्प ५७ कन्दर्प ५८ कन्दर्प ५९ कन्दर्प ६० कन्दर्प ६१ कन्दर्प ६२ कन्दर्प ६३ कन्दर्प ६४ कन्दर्प ६५ कन्दर्प ६६ कन्दर्प ६७ कन्दर्प ६८ कन्दर्प ६९ कन्दर्प ७० कन्दर्प ७१ कन्दर्प ७२ कन्दर्प ७३ कन्दर्प ७४ कन्दर्प ७५ कन्दर्प ७६ कन्दर्प ७७ कन्दर्प ७८ कन्दर्प ७९ कन्दर्प ८० कन्दर्प ८१ कन्दर्प ८२ कन्दर्प ८३ कन्दर्प ८४ कन्दर्प ८५ कन्दर्प ८६ कन्दर्प ८७ कन्दर्प ८८ कन्दर्प ८९ कन्दर्प ९० कन्दर्प ९१ कन्दर्प ९२ कन्दर्प ९३ कन्दर्प ९४ कन्दर्प ९५ कन्दर्प ९६ कन्दर्प ९७ कन्दर्प ९८ कन्दर्प ९९ कन्दर्प १०० कन्दर्प

कन्दर्प, कन् [कन् + कृ] १ कन्दर्प २ कन्दर्प ३ कन्दर्प ४ कन्दर्प ५ कन्दर्प ६ कन्दर्प ७ कन्दर्प ८ कन्दर्प ९ कन्दर्प १० कन्दर्प ११ कन्दर्प १२ कन्दर्प १३ कन्दर्प १४ कन्दर्प १५ कन्दर्प १६ कन्दर्प १७ कन्दर्प १८ कन्दर्प १९ कन्दर्प २० कन्दर्प २१ कन्दर्प २२ कन्दर्प २३ कन्दर्प २४ कन्दर्प २५ कन्दर्प २६ कन्दर्प २७ कन्दर्प २८ कन्दर्प २९ कन्दर्प ३० कन्दर्प ३१ कन्दर्प ३२ कन्दर्प ३३ कन्दर्प ३४ कन्दर्प ३५ कन्दर्प ३६ कन्दर्प ३७ कन्दर्प ३८ कन्दर्प ३९ कन्दर्प ४० कन्दर्प ४१ कन्दर्प ४२ कन्दर्प ४३ कन्दर्प ४४ कन्दर्प ४५ कन्दर्प ४६ कन्दर्प ४७ कन्दर्प ४८ कन्दर्प ४९ कन्दर्प ५० कन्दर्प ५१ कन्दर्प ५२ कन्दर्प ५३ कन्दर्प ५४ कन्दर्प ५५ कन्दर्प ५६ कन्दर्प ५७ कन्दर्प ५८ कन्दर्प ५९ कन्दर्प ६० कन्दर्प ६१ कन्दर्प ६२ कन्दर्प ६३ कन्दर्प ६४ कन्दर्प ६५ कन्दर्प ६६ कन्दर्प ६७ कन्दर्प ६८ कन्दर्प ६९ कन्दर्प ७० कन्दर्प ७१ कन्दर्प ७२ कन्दर्प ७३ कन्दर्प ७४ कन्दर्प ७५ कन्दर्प ७६ कन्दर्प ७७ कन्दर्प ७८ कन्दर्प ७९ कन्दर्प ८० कन्दर्प ८१ कन्दर्प ८२ कन्दर्प ८३ कन्दर्प ८४ कन्दर्प ८५ कन्दर्प ८६ कन्दर्प ८७ कन्दर्प ८८ कन्दर्प ८९ कन्दर्प ९० कन्दर्प ९१ कन्दर्प ९२ कन्दर्प ९३ कन्दर्प ९४ कन्दर्प ९५ कन्दर्प ९६ कन्दर्प ९७ कन्दर्प ९८ कन्दर्प ९९ कन्दर्प १०० कन्दर्प

कन्दर्प [कन्दर्प + कृ] १. केले का पेड़—कारणराशिनि-
रिपु कुम्भीरकन्दर्प ललितकन्दर्प, कोपलकन्दर्पे स्वर-
रति का कोछने तथा । विष्णु० ४।५, मेघ० २१,
रघु० २।५ २ एक प्रकार का वृक्ष ३ कंठा ४ कनक-
कृष्ण वा कनक का पीच । तम०—कुम्भीर कुम्भीरपुत्र ।

कम्बु: (पुं० स्त्री०) [स्कन्ध + उ मलापय] पनीली, तदूर।
कम्बुक, कम्बु [कम् + दा + क्त] कन खेलेन के लिए गेद
-गातिनाप्रिय कणधारित्वयत्वेव बन्दुक -अर्थ० ३।८५
कु० १।२९, ५।११, १९, रघु० १६।१३। मम० स्त्रीला
गद का खेल।

कम्बोट (दृष्ट) कम्बु + ओतन्] १ खन बमल २ नाल
कमल, (नीलागल का प्राचीन रूप) माह्यकुलाय-
माननेत्रकन्दोदयगल मा० ७।

कम्बुधरः क शिरो जल वा धारयति कम्बु + धृ + अच्] १
गर्दन २ जलधर बादल, रा-गर्दन-कम्बरा समपहाय
क धरा प्राय मयति जहाम कम्बधिन यात्र० १।
७० अमर १६ दे० उत्कम्भ भी।

कम्बि [क शिरो जल वा धारयति कम्ब + धृ + क्त] ममूह,
(स्त्री०) गर्दन

कम्बु [कम्बु + क्त] १ पाय २ मूछा बेहाशी का दीग।

कम्बुका [कम्बु + कन लम्बता] १ लङ्की सबद्वैकानम
कम्बुकारिण रघु० १।१०८, १।१५३ २ अविवाहित
लङ्का कुमारी कुंजारी या (अपरिणीता) तन्मो
गृहे गृहे पुत्रवा कुलकम्बुका मनुवृहन्ति मा० ७
यात्र० १।१५३ ३ दशतवीर्य कन्या (अष्टवर्षा भवे-
त्तरी नववर्षा च गौरीणा दशम कन्या प्रोक्ता अत
ऊर्ध्वे रजस्वला गच्छ) ४ (ब्रह्म० या० में) जनक
प्रकार की नायिकाया में स एक कुमारी कन्या (जो
किसी काश्चर्कन में मृत्यु प्राप्त समुद्रो जातो है) ५ अन्य
स्त्री के ना० ५ कन्या राशि। सम०-छल कम्बुका
पैशाच कन्याकाशनात यात्र० १।६१-अत कुमारी
-वसुधैव कुलजन्मकाशन मा० ७। जान
कुमारी कन्या का पुत्र-यात्र० २।१७९ (काव्येन)।

कम्बुतः [कम्बु + मा + क्त] सबस छोटा बहन।
उमेली, ली सब स छोटा बहन।

कम्बु [कम्बु + क्त] १ अवशान्त लङ्की या पुत्री
रघु० १।१११-१।१०, ७।३३ मनु० १।०।८ २ दश-
वर्षीय कन्या ३ अष्टवर्षीय कुमारी मनु० ८।१७
३।३३ ४ (सामान्य) स्त्री ५ छठी राशि अर्थात्
कन्या राशि ६ दुर्गा ७ बही इनायची। मम०
-कम्बु पुत्रम् रनभाम मृश्रान्तमि कन्याय परे
कश्चित्प्रवर्जति पञ्च० १ मृश्रांश० २।५०, माट
(वि०) पृथ्वी लङ्काका का पीछा करने वाला (-दृ)
१ घर का भीतरी कमरा २ जा तथी कन्याओं के
पीछे फिरता रहता है, कुम्भः एक देश का नाम
(जम्ब) भारत के उत्तर में एक प्राचीन नगर जो
कि गंगा की मगधक नदी के किनारे स्थित है, वर्तमान
कन्नौर, तत्काल कन्या राशि में गया हुआ नक्षत्र,
- छहवम् विवाह में कन्या को स्वीकार करना, -बालक
कन्या का विवाह करना, -बालक कीर्वाय भ्रम करना,

दोष कन्या में दोष का होना, बदनामी (जैसे कि
किसी रोग का कारण), बालक रहित पति ५३ १।
पति दामोद जमान पुत्र कुमारी कन्या का पुत्र
(कानीन बहुलाता है) पुत्र्य जनन-ज्ञाना जर्ग
(पुं०) १ जमाना २ कानिक्य रत्नम् अयन्त
सुंदरी कन्या कन्यायनमयानिजम् भवतामान्ने
महावी० १।३० राशि क० १।१ देखिय
(पुं०) दामोद (जमाना) यात्र० १।१०-सुत्कम्
कन्या के मृत्यु के रूप में कन्या के पति को बिना
पया धन कन्या का क्रयमय, स्वधर निमी कुमारी
कन्या के द्वारा अपना पति चुनना, एकव्य कीर्वाय-
भ्रम के विचार से किसी लङ्की कन्या का पुत्रमाना
मनु० ३।३३।

कम्बुका [कम्बु + कन् + टाप्, इत्थम् वा] १.
तथी लङ्की २ कुमारी (अपरिणीता लङ्की)।

कम्बुकाय (वि०) [कम्बु + मवद्] कम्बुओं काकार, कम्बु-
स्वकप रघु० ६।११, १६।८९, -कम्बु कम्बुपूर (कम्बु
अविकस लङ्की) ही हों।

कम्बु - इम् [के मुनि पट इव बाष्पक] बाकमापी,
बोका/देही, बाकाकी, प्रवचना-कपटप्रवचनं शेषक-
प्रवचनानाम्-पञ्च० १।१९१, कपटानुसारकुलना
मुच्छ० १।५। सम०-ताम्बः पाण्डवी सन्ध्याली,
बनावटी साधु, धनु (वि०) बोका देने में बनुर,
छलपूर्ण छलयन् प्रजासम्बन्धनेन कपटपटलजानक
शि० १५।१२, प्रवचः छल से बरी हुई बात
- वि० १, -लेखम्-अपि दस्तावेज - बालक बोके
की बात, - केस (वि०) बावटी मेंस वाला, नकाब-
पोश (- जः) कपटवेसा।

कपटिकः [कपट + ठन्] बहामा, छलिया।

कपट, कपटिक [कपट + क्त] बहामा, बलोप, पद, कत्त तथा
जलस्य परा पुराणेन दापयति लुप्यति क + पट् + टप्
क, कपट + क्त वा] १ कौडी २ जरा (विच्छेद
सिब का जटाजूट) गंगा० २२।

कपटिका [कपटिक + टाप्, इत्थम्] कौडी (जो सिक्के के
रूप में प्रयुक्त होती है) -मिश्राध्वनिदां बाहि
यस्य न त्पु कपटि (दे) का -पञ्च० २।१८।

कपटिन् (पुं०) [कपट + इति] शिव की उपाधि।

कपटः, इम् [कं बान पाटयति लङ्कति लङ्] - तारा०,
क + पट् + क्तिप् + क्त] १ कितार का पञ्चक दाहिना
कपाटमुष्ठा परिचङ्कण - रघु० १।३४, स्वर्ग-
द्वार-पाटपाटनपटुर्बभौप्रि नोपाजित -अलं० ३।११
२ दरवाजा-शि० ११।९०। सम०-उद्बलकम्
बरवाला लोका, - जः शेष लगाने वाला, पौर,
- लज्जः किशोरों के दिनों का जोड़।

कपातः - कप् [क शिरो धर्म वा वाक्यति-क + क्त]

कम्प (वि०) [कम् + क्त्वा] कम्पायमान, हिलने वाला,
—कः सिद्धि रश्नु (नवम्बर, दिसम्बर)—कम्
1 हिलना, कपकपी 2 छटछटाता उच्चारण ।

कम्पा [कम्पायमानेन कर्तव्य —कम्पा + ई + क]
वायु ।

कम्पित = कम्पित ।

कम्प (वि०) [कम् + र्] हिलने वाला, कम्पायमान
चलायमान, हलचल वेदा करने वाला विधाय
कम्पानि मुद्रानि क प्रति मै० ११२४८ कम्पा शाखा
— सिद्धा० ।

कम्प (म्भा० पर०) —कम्पति, कम्पित) जाना, चलना—
चिरना ।

कम्पार (वि०) [कम् + ऋन्] रमिरिया २ चित्र
विचित्र रंग ।

कम्पक [कम् + कम्, कृपायम्] 1 (ऊनी) कम्पक—कम्पल-
कम्प न बाधते कीर्तम् मुद्रा० कम्पलायनेन तेन हि०
१ 2 साक्षा, माय बैल के नखे में नीचे लटकने वाली
खाल 3 एक प्रकार का मूत्र 4 ऊपर से पहनने का
ऊनी कप 5 दीवार, कम्प बन् । सम० —बाहुकम्प
बहुकी (पारो ओर छोटे कपड़े से ढकी हुई बाड़ी
चित्तमें बैल जुते हों) ।

कम्पक [कम्पल + ई + कम् + इत्य टप्] 1 एक
छोटा कम्प 2 एक प्रकार की मृत्ती ।

कम्पकिल [कम्पक + इति] कम्पल से ढका हुआ
—(५०) बैल, बलीयारें । सम० बाहुकम्प बहुकी
(मोटे कम्पल से ढकी बाड़ी चित्तमें बैल जुते हों)
बैलगाड़ी ।

कम्पी (मै०) (स्त्री०) [कम् + क्त्वा वा० स्त्री] कटछी,
कम्पच ।

कम्पु (वि०) (स्त्री०) बुधा बु० चितकवरा गगिरिया
—कृ०, -बु० (५० न्य०) संक्षेप नीपी परम्य
कम्पु कियवै कर्कालि विवि चिलोकी वयवादीय
मै० २२१२२, —बु० 1 हाथी 2 नरन 3 चित्रविचित्र
रंग 4 जिरा, मरीर की नम 5 कडा 6 नमीनूपा
हड्डी । सम० कंठी संक्षेप मैती नरन वाली स्त्री,
—बीधा 1 उमनूमा नरन (बकरीन लाल की प्राणि
तीन रेखाओं में युक्त—यह चित्र नीलाग्नयुक्त
समझा जाता है) 2 स्त्री जिनकी गर्दन सख जैसी
हो ।

कम्पोज [कम्प + जोज] 1 सख 2 एक प्रकार का हाथी 3
(ब० ब०) एक देश तथा उसके निवासी—कम्पोजा नमो
सौव नम्य कीर्तयनीयवरा—न्य० ४१९९ कम्पे० पा० ।

कम्प (वि०) [कम् + र्] मनोहर, सुन्दर ।

कम्प (वि०) (स्त्री०) —रा, री) [श्राव सवाल के जन
में] [कण्ठि, कीर्तते कनेन इति, कृ (कृ) + कम्]

जो करता है या करता है हुक्, मुक्, धक्, २:
1 हाथ कर व्याधुल्लभा पिबसि रसिमव्यवधरम्
ब० १२२२ 2 प्रकाश-करण रसिमाला यम्
उत्तं पूषा व्यवसित इवालीभितकर विक्रम० ६१३४,
प्रतिपुलाभुपवते हि विषी विकलत्वमैर्वा बहुलाय
नना अवलम्बनाय दिनमर्तुरभून् पणिप्यत करमहल
नपि लि० ९१६ (यही शब्द प्रवच अर्थ म भो
प्रवृत्त हुआ है) 3 हाथों की मूक—मक सीपारणा
करेन सिद्धि उत्तर० ३११६ भत्त० ३१२० 4
समान शक्त, पैर युवा कराकान्तमहोमुह्यवर्कर
नयाय सपान तजता रवि लि० १११० (यही कर
का बन्ध-किरण भी है) (यही) अपगन्तमहोपाल
आजने रववे कर्म न्यु० ६१५, भन्तु ७१२२
5 बीला 6 २४ अंगु की माप 7 हस्त माय नखज ।

सम० कम्प 1 हाथ का अगला भाग 2 हाथी के
सँघ की नोक बाधल हाथ न की गई चार—बायोटे
अर्थात्, —आलम्प हाथ से सहारा देना बहायक बनना
आलम्प 1 छाती 2 मण्ड, कटक, कम् नाकुन
—कम्प, —बहुकम्प, कम्प कम्पल जैसा हाथ मुन्दर
हाथ—कटकमालिनीचैरभ्युनीवाराम्पे—उत्तर० ३१२५,
कम्पक, कम्प हाथ की अर्धाणि (पानी लेने के
लिए) किलम्प, —कम् 1 कपाल जैसा हाथ
कील हाथ करकिर गतामैमुध्या नयमानय
उत्तर० ३१२९ न्यु० ६१३० 2 अंगुल, कोख
हथेली का सत हस्ताजलि देवयम्प ब० ४२
यह बहुकम्प 1 समान या शून्य जैसा 2 निवाह में
हाथ पकड़ना 3 विवाह बहु 1 पति 2 शून्य लज
बाला क नाकुन तीक्ष्णकरजकुलान्—वेणी० ६११
इसी प्रकार बयव ८५, (कम्) एक प्रकार का सुगन्धन
द्रव्य आलम्प प्रकाश की चारा तल हथेली
अनवेष्टाकरणसे स० ६१४, करन-नमनस्यि नवर्षानि
वस्य मुर्कितव्याना नातिन—ब० ४१२४ आलम्पकम्
(जा०) हथेली पर रक्खा हुआ बालका (बाल०)
अलम्पकीकरण की सुममता तथा स्पष्टता जैसा कि
हथेली पर रक्ख कल के विषय में स्वाभाविक है न्यु०
करतामालककलवदविल जयहालीकयताम्—पा० ६३
'कम्प (वि०) हथेली पर रक्खा हुआ तल, मात
कम्प 1 तालियाँ बजाना स बहुल दलकरनाल
मुक्कै लि० १५१२९ 2 एक प्रकार का वाद्य यन्त्र
सम्भव शीत तालिका, हाथी 1 तालियाँ बजाना
—उष्णाटनीय करतामिकामां हामाविदानी भवतीभूरेष
मै० ३१७ 2 तालियाँ बजाने का समय बिताना
तोषा एक नदी का नाम, —ब (वि०) 1 समान
या शून्य देनेवाला 2 सहामक करदीकृताजिभनूपा
वेदिनीय—वेनी० ९११८, —बयम्प बाह्य, —बयिक स्थान

पान्—अन्० १२।७६, (यहाँ इस लब्ध की अनेक व्याख्याएँ की गई हैं, परन्तु मेधातिथि इसका अर्थ 'कोष' ही मानते हैं) ।

करहाट [कर + हट + क्त्विच् + अण] १ एक देश का नाम (समबन सतारा जिले का वर्तमान कर्हाट), करहाट परे पुर्वी विजयनगरकाराणम् विक्रमांक० ८१२ २ कमल का झील या रेशेदार बड़ ।

कराल (वि०) [कर + आ + ल + क] १ भयानक भीषण, डरावना, भयकर—उत्तर० ५।५, ६।१, मा० २ भग० ११।२३ ७५ ७७ रघु० १२।९८ महावी० ३।४८ २ अर्थात् लेना हुआ, पूर्णतया सोलना हुआ—उत्तर० ५।६ ३ बड़ा विस्तृत ऊँचा, उन्मत्त ४ असम, जिसमें सटका या हबकोला जंग नोकदार—बर्ही० १।६ मा० १।३८ ला दुर्गा का प्रबल अन्धकारनम् न करालोपहागण्य फलमन्वादिभा ज्येष्ठ मा० ४।३३, १ भग० बंधु डरावने दाँतों वाला, बड़का दुर्ग की उपाधि ।

करालिक [कराला कर्मवृत्ताभावात् आलि श्रेणी यत्त व० म० कप्] १ वृत्त २ तलवार ।

करिका [कर + कृ + क्त्विच् + कन्, टाप् ह्रस्व] नगर नकाशात से हुआ चित्र ।

करिषी (स्त्री०) [कर + इति + क्त्विच्] हथिनी रूप में यो मतिविपर्यय करिषी एकुमिवायमीदृति कि० २।६, भाषि० १।२ ।

करिन् (पु०) [कर + इति] १ हाथी २ (गण०) आठ की लक्षा । भग० इन्द्र, ईश्वर, बर बड़ा हाथी, विशालकाय हाथी—सदादान पञ्चमीय जल एव करिन्वर पञ्च० २।७० दुर्गेष्टना करिन्वेन मन्त्रावबुद्ध्या मोक्षि० २, -कुम्भ हाथी के मन्त्रक का अन्वय भाषि० २।१७७ वसिष्ठ हाथी की चिन्ता, (बुद्धि करिन्विन्म—अमर०) वंश हाथी दाँत, -क महाकर, वीर, जाय, जायक हाथी का लक्षा वंश लम्ब जिससे हाथी बाधा जाय—भाषाः सिंह, मत्त गणेश का विशेषण, बर ईश्वर, ईश्वरपत्नी (पु०) लडा जा हाथी के द्वारा ल बाधा जा रहा हो, लब्धः हाथिया का समूह ।

करोर [क + ईरन्] १ बाँस का अक्षुर २ अक्षुर आदि स्थिरे वस्तुकोशमौली शि० ४।१४ ३ कटोदार वृक्ष जो भस्कर हैं रेंदा होता है तथा जिसे छट् बाते हैं—यत्त नैव बड़ा करीबियटे रोषो वसन्तस्य किम्—अर्जु० २।६३, सु०—किं पुन किं फलैस्तस्य वरी रत्नं दुरात्मनः, वेन बुद्धि समासाध न ह्यन पश्यस्यह ।—कुशा०, ४. पापी का बड़ा ।

करिक—अन् [कृ + ईरन्] कुशा मोवर । भग०—अग्निः कुशे मोवर वा कर्षी की लक्ष् ।

करीबकुषा [करीब + कृ + क्त्विच्, मृच्] प्रबल बायु या ज्वी ।

करीबिणी [करीब + इति + क्त्विच्] लपटि की लविष्टा की देवी ।

करुण (वि०) [करुणि मन आनुकम्पाय कृ० उन्नत् —ताग०] कोमल भाविक दयनीय करुणाशोक शोचनीय—करुणावति उत्तर० १ शि० १।६७ विफलकर्मयोग्यार्थत् उत्तर० १।७८—अ १ दया अनुकम्पा, दयालुता २ करुण रस भाव रज (आत्मा या नी रमा म मे एव) पुष्पाकप्रवीकाशा रामस्य करुणा रस—उत्तर० ३।१ १३ विजयनगर करुणावर्धन प्रिया प्राप्ता रघु० ८।३० १ भग०—अस्त्री मालिका का पौषा—विजयनगर, अन्० १।१ म) विपुलतावस्था में प्रेम भावना ।

करुणा [करुण + गृप्] अनुकम्पा दया दयालुता परा सती प्रवति करुणावृत्तिगर्भिताभा गेय० १ इमीप्रकार'सकृप सद्य तथा प्रकरुण निर्देय । भग०—आश्र (वि०) कोमल-हृदय दया से प्रसन्न हुआ सर्वदेवताओं मित्रि दया का भण्डार पर, सद्य (वि०) अत्यन्त दुःख, विषम (वि०) निर्देय कर करुणाविषयमेव भूतना रघु० ८।१७ । करोट [करे + कट् + अच्, अन्तक म०] अन्तरी का तावुन ।

करुण [कृ + एच् अथवा के प्रत्यये गणेश नारा०, १ हाथी—करुणगाराहयते निर्वाहभय शि० १।५ १।६८ २ करुणकार वृक्ष पु (स्त्री०) १ हाथी की दूरी रसायनकरुणानि मन्त्राय गणेशप्रसन्न करुण कु० ३।१७ रघु० १६।१६ २ गालकाय की माना । भग०—पु, कुल हस्तिविज्ञान का प्रवर्तक गालकाय ।

करोटम्, करोटि (स्त्री०) [क + कट् + अच् इति व] १ कोपदी महावी० ५।१९ २ करोटा या पाय ।

कर्क [कृ + क] १ कैंकड़ा २ कर्क राशि, चतुर्वर्गाभि ३ आय ४ जलकुम्भ ५ दाँत ६ मरुद पहाड ।

कर्केट, टक [कर्क + अन् स्वार्थ कृत् व] १ कैंकड़ा २ कर्क राशि चतुर्वर्गाभि ३ वृत्त रेखा ।

कर्कोटि, कर्कोटी (स्त्री०) [कर् + कट् + इति शक० पर क्यम्, डीय] एक प्रकार की ककड़ी ।

कर्कन्धु, कृ [कर्क कर्मक रक्षाणि धा० क १ उग्रव वा नेड कर्कन्धुपत्तिकावधपत्तिकावध पञ्चमीयं—उत्तर० ४।१ कर्कन्धुनामुषिर्गुह्य २ अत्यन्तप्रसङ्गा—अ० ४, अन्० पा० २ इति वृक्ष का फल—आश्र० १।२५० ।

कर्कर (वि०) [कर्क + रा + क] १ कडोर, ठोस २ बुद्ध, ३ हाथी ४ बर्षण ३ हृद्दी, (कोपदी का) भग्न दुःख, लड,—आ० ५।१६ ४ पीता वा चमड़े की

पेटी । तप०—अन्तः द्विकली पूंछ बाका (बचन)
पक्षी.—अन्तः अन्तः पक्षी, —अन्तः अन्तः अन्तः, गु०,
अन्तःकप ।

कर्कशः [कर्क + शस् + कर्क + शस् + कर्क + शस्]
गिराई दृष्टि, कर्कशी, कटाक्ष ।

कर्कशः [कर्क + शस् + कर्क + शस्] वृषगाके बाल, पूर्णकुलाल ।
कर्करी [कर्क + री] ऐसा बलपात्र जिसकी लकी में
चलनी की गति छिद्र हो ।

कर्कश (वि०) [कर्क + शस्] १. कठोर, कटा (वि०) कोमल
या मुहु) कुरक्षिपास्तकालनकर्कशाक्षुली रघु० ३।५५,
ऐरावताम्बालनकर्कशेन हस्तेन पस्पलं नवकुलाल
कु० ३।२२, १।३६, वि० १५।१० २ निष्ठुर, कुर,
निर्दय (तप्य, बाधन बाधि) ३ प्रचक्ष, प्रचक्ष अत्य-
धिक तप्य कर्कशाविहारसमय रघु० १।६८
४ नि० १० दुराचारी, दुष्चरित्र, स्वामिमिक्षिते हीन
(जैसा कि कोई स्त्री) ६ समक्ष में न जाने योग्य,
दुर्बोध—नर्क वा नृककर्कशे नम नम लीलावते भारती
—प्र० ४, —अः तलवार ।

कर्कशिका, कर्कशी [कर्क + कन् + टाप्, इत्यच्, डीप् वा]
जङ्गली शेर, लड़खेरे ।

कर्कः [कर्क + इन्] कर्क राशि, चतुर्थ राशि ।

कर्कशः, -कः [कर्क + शस्, स्थाय कन्] कर्क प्रधान लीपों
में से एक (जब राजा मल को कर्क के बुधभाव से
माना प्रकार की यातनाएँ सहन करनी पड़ी तो उस
समय कर्कश ने, जिसे मल में एक बार आने से बचाया
था, ऐसा विकृत कर दिया कि विपत्काल में भी उसे
कोई पहुँचान न सके) ।

कर्कुरः [कर्क + ऊर, पुषो + व बादेश] एक प्रकार का
मुनिकृत वृक्ष, रघु १ मोना २. हस्ताल ।

कर्क (चुरा० उच्च० कर्कयति—ते, कर्कित) १. छेद करना
दुराग्र करना २. मुनना (शब्द 'आ' उपसर्ग के साथ)
आ—लगा, मुनना, ध्यान से मुनना—सर्वे लवि-
स्मयमाकर्कयति श० १ आकर्कयन्मुक्तुर्हन्नाशान्
—महि० १।१७ ।

कर्कः [कथ्यते आकर्क्यते अनेन—कर्क + क्] १ कान
—बड़ो बलपुत्रकृत्य विपरीतवचनम्, कर्क लगति
आकर्क्य प्रायैरस्यो विमुच्यते । पञ्च० १।३००, ३०५,
कर्क वा ध्यान से मुनना, कर्कबालम् कान तक माना,
शात होना—रघु० १।९, कर्क कृ कान में डालना,
—कीर० १०, कर्क कथयति कान में कहता है २०
बटुकर्क, चतुष्कर्क २ गणाल का कडा ३ नाच की पत
वाड़ा ४ चिन्मय के समकोण के सामने की देना ५
महाभारत में वर्णित कौच पक्ष का एक बहाराही
(जब कुन्ती अपने पिता के घर रहती थी, उस समय
सूर्य देव के संयोग से कुन्ती की अविवाहितावस्था में

कर्क का जन्म हुआ । (२० कुन्ती) बालक उत्पन्न होने
पर कुन्ती ने अपने बन्धु-बालकों की निन्दा तथा लोक-
लम्बा के कारण उसे नहीं में छेद दिया । वृत्राष्ट
के मारिष कथिरच ने उसे नहीं से निकाल कर अपनी
पत्नी राधा को दे दिया । उसने उसे पाकपोस कर
बड़ा किया, इसी लिए कर्क की वृत्राष्ट वा राधेश कहते
हैं । बड़ा होने पर दुर्बोधन ने कर्क की बड़ देव का
राधा बना दिया । अपनी दानवीकता के कारण वह
दानवीर कर्क कहलाया । एक बार इन (जो अपने
पुत्र अर्जुन पर अनुग्रह करने के लिए आतुर रहता था)
ने बाह्य का वेष्ट वारण किया और कर्क को साँधा
देकर उसके शिष्य कथच व कुंजल हथिया लिये, बहने
में उसे एक क्षति वा बरछी दे दी । बूढ़ की कला
में अपने हाथ को दब बनाने की इच्छा से कर्क बाह्य
बन कर परशुराम के पास गया, वहाँ उसने परशुराम
से अस्त्र-कला की शिक्षा प्राप्त की । परन्तु वह जब
बहुन दिन तक शिक्षा न रहा । एक बार जब परशुराम
अपना सिर कर्क की बंधा बर रख कर लौ रहे व, तो
एक कीड़ा (कई लीनों के बलान्धार इन ने कर्क को
बिच्छन्न करने की दृष्टि से 'कीड़े' का रूप धारण किया
था) कर्क की बंधा को जाने लगा, उसने जवा में
गहरा काँच कर दिया, परन्तु उस पीड़ा से भी कर्क
दस से बल न हुआ । इस अनुपम सहन क्षति से
परशुराम को कर्क की अमलित का पता लग गया,
फलतः उसने कर्क को हाथ दे दिया कि आवश्यकता
के समय—उसकी शिक्षा—काम यहाँ बाँधेगी । एक
दूसरे अवसर—उसे एक बाह्य ने (जिसकी गोएँ
अनजाने में पीड़ा करते हुए कर्क द्वारा मारी गई थी)
हाथ दे दिया कि संकट का पकने पर उसके रच का
पहिया पृथ्वी या लेगी । इस प्रकार की कठिनाइयों
के होते हुए भी कर्क ने नीच और दोष के पक्ष के
पश्चात् कीरक सेना के सेनापति के रूप में कीरव-
पाण्डवों के बूढ़ में अपना बूढ़ कीरक बल दिखाया ।
तीन दिन तक वह पाण्डवों के हाथने रजकोर में डटा
रहा । परन्तु अन्तिम दिन जब कि उसके रच का
पहिया पृथ्वी में चैन गया था, वह अर्जुन के द्वारा मारा
गया । कर्क, दुर्बोधन का अत्यन्त क्षिप्त मित्र था,
पाण्डवों का नाश करने के लिए कुन्ति से मिल कर
भी बौधायनी वा बहवन्धु दुर्बोधन ने किये, उन सब में
कर्क उसके साथ था । तप०—अन्तः बाहरी कान
का बचन-बार्क, —अन्तः भुविष्ठर, —अन्तः (वि०)
कान के निष्ठुर—स्वनिधु बृद्ध कर्कशिकचर— श०
१।२४, —अन्तः—बृ (स्त्री०) कान का माधुचन,
कान की लकी, —अन्तः, कान देना, ध्यान से मुनना,
—आकर्क्य हानी के कानों की कर्कशदृष्टि, —अन्तः

कान का आभूषण या (कड़ियों के बतानुसार) केवल आभूषण, (मर्मट कहता है कि यहाँ 'कान' का अर्थ 'कान में स्थिति' है - तु० उमका एत० टिप्पण कर्णो बतनादिपदे कर्णादिष्वनिमित्तं सप्रधानाद्यधोधाच स्थित्येतत्सम्बन्धम् । काव्य० ७), उचकचिका अफ बाहू (शा० 'एक कान से दूसरे कान तक') खेड (बाव० में) कान में लगातार बूझ होना मोखर (वि०) जो काना का मुनाई पड़ पाहू कणपर

अप (वि०) (कर्णपर से) रहस्य की बात से जाने वाला पिछुन मुलाबार अप, अप मुगो निन्दा करना चम्लो करना कलक लवाना, आहू कान को बड़ अपि कणजाहूबिनिर्वातानन मा० ५१८, - बिन् (पू०) कर्णविजना, अचुन, तूताय पाउड

तत्क हाथी के काना को फड़फड़ाहट या उसम उन्नत आवाज बिन्ताति कुजरवचनाले - रघु० ७३१९, १३११, वि० १३३७, बाग मल्लाह बाल

—अकर्णभाग जलथी बिन्वतहू नीरिय हि० ३१ बरिनवरीकर्णधारकणं बेथी० ४, —धारिणी हृय

—अपः अवधपरस, बरध्वरा एक कान से दूसरे कान अनुचुति—इति कर्णपरम्पराया मृतम् रघु० १

—शक्ति (स्त्री०) कान की मी बास मुन्दर कान —बुरः १ (कूर्णों का बना) कान का आभूषण कान की बाली—इद व करतल किमिति कर्णपुरतामाग

पितम्—का० ६० २ अशोकवृक्ष वृक्ष १ बान की बाली २ कदम्ब वृक्ष ३ अशोक वृक्ष ४ नील वृक्ष

—आलस कान की पाली भूषणम्, भूषा कान का पहना, —भूषण कान की जड़ रघु० १२१२, पोटो दुर्गा का एक रूप, —संज्ञः बीमा से बना ऊँचा भवान

—बाल्य (वि०) बिना काना का, (त) माँग, —विधरम् कान का श्रवण मार्ग बिन् (स्त्री०) बूध

काज का रील,—वेध. (बालियाँ पहनने के लिए) काना का बीचना—वेधः, वेधयम् कान की बाली

—कण्ठली (स्त्री०) कान का बाहरी भाग (श्रवण मार्ग पर के जाने वाला) नै० ३८—धूल,—लम्

मार्ग में बीडा,—अध (वि०) जो मुनाई से उँचा (रघु०)

—कर्णध्वनिने मनु० ६१०२,—आध—मधध कानों का बहना, कान से मवाद निकलना—बु (स्त्री०)

कर्ण की माटा, कुन्ती, —हीन (वि०) कणरहित

(—कः) हाँप ।

कर्णकर्ण (वि०) [कर्ण कर्ण गृहीत्वा प्रवृत्त कथनम्

—अभिप्राये इत्, पूर्वस्य दीर्घश्च] काना कान एक कान से दूसरे कान ।

कर्णकः [कर्ण + कर् + कृ] बालत शायोडीय के दक्षिण में एक प्रदेस—(काव्य) कर्णटिप्पणोर्ध्वमिति विदुषा कष्टमुपा

त्यमेतु—विश्वको० ८११०२,—टी (स्त्री०) उपायक

देश की स्त्री—कर्णाटी विदुषाणा नाम्बवर विड शा० ११२९ ।

कर्णिक (वि०) [कर्ण + इकन्] १ काना वाला २ पनवार धारी क कंबट का १ काना की बाली २ गठि, गाल गिस्ती ३ कमल का फल, कबलगट्टा ४ एक छाँटी कुँची या कलम ५ मध्यमा शृंगला ६ फल का इटल ७ शायी क मड़ की नाब ८ खडिया ।

कर्णिकार [कर्ण + कृ + अण] १ कनियार का बुझ निर्भ धारार कर्णिकारमकुना-वायोवन बटपद विक्रम० २१२३ अचु० ६१६ २० २ कमल का फल कबलगट्टा रज कनियार का कुल अमलनाम का फूल (यद्यपि यह फूल बड़ सुन्दर रंग का होता है परन्तु सुगंध न होने के कारण इसे कोई पसन्द नहीं करता) तु० पू० ३१२८ बलप्रकाश मान कर्णिकार दुर्गति निवृत्तनय गम चन प्रायण सामप्रपक्षिणी गुणाना पराङ्मुखो विषयसुख प्रवृत्ति ।

कन (वि०) कण + इति] १ काना वाला २ लम्ब काना वाला ३ फल लग बुझा (बैस तोर) (पू०) १ गधा २ मल्लाह ३ गठि से सम्पन्न बाण ।

कर्ण (स्त्री०) [कर्ण + ङाप्] १ पृथ्वार या विशेष प्रकार का बाण २ चौरे कजा व विज्ञान क रिता मुनदेव की माता । मय० २४ बन्द होनी स्त्रियों की सवाँरी पालका कर्णरथगथा रघुशायलीम रघु० १४१

१३ मुन चौयकला विज्ञान के श्रमदर्शन मुन देव कर्णामुनकचक मनीरिड विपुनाचल शा० १०

कर्णामुनप्रतिष्ठ व गंध मर्मादह नय दम० ।

कर्तव्यम् [कृ + वृत्] १ बाटना बनरना यात्र० ११ २०४ २८६ २ कई काना (लक्ष्मी बनन माधनम्) ।

कर्तनी (स्त्री०) [बनन + टी + कंठी ।

कर्तरिका, कर्तनी (स्त्री०) १ कंठी २ जाक ३ लडग छाँटी तलवार ।

कतव्य (म० ३०) [क + क्त] १ जो कुछ उचित हो

या होना चाहिये शीलवश न कतव्या कतव्या सहदा श्रय हि० ३१११ मया प्राप्तमिदं वचनं कतव्यम्

पृथ० १ २ जो वाचना या कतरना चाहिए नष्ट करने योग्य पृथ वम्बा वा छाँटा वा पिता वा यदि

वा गुरु [गुरुशान्ति वनेन कतव्या भूमिधिकात्रता

—महा० व्यास, कतव्यता, जो होता चाहिए, धम, आचार—कर्तव्य धान पदार्थवि क—कु० ६१२१, २६६२, यात्र० १३३० ।

कर्त (वि०) [कृ + कृ] १ करने वाला, कर्ता, निर्माता, सम्पादक—आकारणस्य कर्ता—इच्छिता, कृतस्य कर्ता

कई करने वाला, हितकर्ता—कला करने वाला, सुवर्णकर्ता—सुनार २ (आ० में) अधिकर्ता (करन

कारण का कार्य) 3. परकृष्ट 4. कृष्ण का विशेषण
विष्णु का शिव

कर्त्तृ (कर्म०) [कर्म + कर्त्तृ] 1. भाव 2. ईश्वरी।

कर्त्तृ, कर्त्तव्यः [कर्म + कर्त्तृ, कर्म + कर्त्तृ + कर्त्तृ, परकृष्टम्]
कीचद।

कर्त्तव्यः [कर्म + कर्त्तृ] 1. कीचद, इत्यर्थ, पक्ष—बाह्यी नूपुर
सम्पत्कर्मवरी प्रकाशवरी स्थिता मूक्त० ५।३५.
पञ्चरात्रमालाकर्माम्—रघु० ४।२४ 2. कृष्टा, मल
3 (बाल०) पाप, कर्म मूल। तम०—आटकः
मलपाप, मलपापे जाति।

कर्त्तव्य, इत् [कृ + विष् = कर्त्तृ त्व पठ्य कर्म० त०।
1 बुराया, शीर्ष-शीर्ष या बेगनी लगा कपड़ा 2 कपड़े
का टुकड़ा, कपड़ी 3 बटियाला या माज रंग का
कपड़ा।

कर्त्तव्य, न (वि०) [कर्त्तृ + कर्त्तृ, इति वा] शीर्ष शीर्ष
कपड़ों (विषयों) से ढका हुआ।

कर्त्तव्यः [कृ + कर्त्तृ] एक प्रकार का हथियार चापक-
कणकर्मप्रमाणद्विगुण आदि—दण० ३५।

कर्त्तव्यः [कृ + कर्त्तृ] 1 कड़ाह, कड़ाही 2 बर्तन
3 मीकरा, टूटे बर्तन का टुकड़ा—वैमा कि बट कर्त्तव्य में
जीवन देन कविता पमर्क परेन तस्मै बह्ययमुदक
बटकर्त्तव्य—बट० २२ 4 लोकी 5 एक प्रकार का
हथियार।

कर्त्तव्यः—कर्म, की [कृ + वात, शिवया की] कपाल का
वृक्ष।

कर्त्तव्यः—रघु [कृ + कर्त्तृ] कर्त्तृ। तम०—बट 1 कर्त्तृ
का जेत 2 कर्त्तृ का टुकड़ा, तैलम् कर्त्तृ का तम।

कर्त्तव्यः [कृ + विष् = कर्त्तृ, कर्म + कर्त्तृ, तस्य कर्मयोग
फल प्रतिविम्बो यत्र ब० त०] दर्पण।

कर्त्तृ (वि०) [कर्म (कर्म०) + कर्त्तृ] रक्षाकारा चित्तीकार
—वाङ् १।१६६।

कर्त्तृ (वि०) [कर्म (कर्म०) + कर्त्तृ] 1 रक्षितार, चित-
कृता—अष्टाध्यायिकर्त्तृनिर्गुणकर्त्तृ—सि० १।७।५६
2 कर्त्तृ के रक्ष का, रक्षितार, बुरा—पञ्चमैत-
कर्मकर्त्तृम् कु० ४।२७, ४: चित्रविचित्र रक्ष
2. पाप 3. बुरा, निराश 4 कर्त्तृ का पीछा,—रघु
1. लोना, 2. जल।

कर्त्तृ (वि०) [कर्त्तृ + कर्त्तृ] रक्षितार—उत्तर० ६।४।

कर्त्तृ (वि०) [कर्म + कर्त्तृ] 1 कर्मकर्त्तृ, कर्त्तृ
2 परिचर 3 केवल धार्मिक अनुष्ठानों में लगन,
—कः ब्रह्म विशेषक।

कर्त्तृ (वि०) [कर्म + कर्त्तृ] कुशल, कर्त्तृ,—आ बजहूरी,
—आ बजहूरी।

कर्त्तृ (कर्म०) [कृ + कर्म] 1 कर्म, कार्य, कर्म 2 कार्य-
लगन, लगन 3. व्यवसाय, पक्ष, कर्म—संज्ञा

विशेषार्थानां कर्म—आत्मि० ४ 4. धार्मिक कर्म (बहु
पात्र, शिव हो, वैयक्तिक हो या साम्य हो) 5. विशिष्ट
कर्म, वैयक्तिक कर्म 6. धार्मिक कर्मों का अनुष्ठान
(कर्मकाण्ड) जो ब्रह्मज्ञान या कर्मणा प्रवच वम का
विरोधी है (विष्णु भाष्य)—रघु० ८।२० 7 फल,
परिणाम 8. वैयक्तिक या सक्रिय सम्पत्ति (बर्तरी के
आशय के रूप में) 9. भाव्य, पूर्वजन्म के कर्म हुए
कर्मों का फल—तम० २।४९ 10 (आ०) कर्म का
उद्देश्य—कर्त्तृविशेषतया कर्म—पा० १।४।७९
11 (वै०) १० में गति या कर्म को सात इन्धनों में एक
भावा जाता है (परिभाषा इस प्रकार है—एकद्वय-
ममज मयोविविधमोष्यनपेक्षकारण कर्म—वै० पू०,
कर्म पाँच प्रकार का है—उत्प्रेषण ततोऽप्यपेक्षमाकुञ्चन
तथा, प्रसारण च मयन कर्माध्यतानि पञ्च च—भाषा०
६। तम० अज्ञान (वि०) कार्य करने में अमर्ष,
—अज्ञान कार्य का जल, यथैव कर्म का भाव (जैसा
कि वही वक्ष का प्रभाव),—अधिकार कर्मकर्त्तृ को
सम्पन्न करने का अधिकार,—अनुकूल (वि०) 1 किसी
विशेष कार्य या पद के अनुसार 2 पूर्व जन्म में किये
हुए कर्मों के अनुसार,—अप्यः 1. किसी कार्य या व्यव-
साय की समाप्ति 2. कार्य, व्यवसाय, कार्य सम्पादन
3. कोष्ठधार, भाव्यावार—तम० ७।६२, (कर्माल
इत्युक्त्याविषयहस्त्याम—कुम्भम्) 4. बुरी हुई नीति,
अन्तरम् 1. कार्य में विज्ञता या विरोध 2. उपमा,
प्राग्विकार 3. किसी धार्मिक कर्म का स्वयन,—अनिष्ट
(वि०) अनिष्ट (— ५) तैलम्, काविक,—आजीवः
किसी ऐसे में (जैसे शिल्पकार का) अपनी
जीविका चलाने वाला,—अज्ञान (वि०) कार्य के
विषयों से एकल, सक्रिय तम० १।२२, २३; (पू०)
आत्म—इतिवत् काम करने वाली इन्द्रियों को माने-
निर्गुणों में मित्र है (वे यह है—वाक्पाणिपादाक्ष-
स्त्वानि तम० १।१९१ 'इन्द्रिय' शब्द के नी० भी
दे०, उद्योग साहसिक या उद्योग कार्य, उन्मास-
वता, सक्रिय, अनुकूल (वि०) अस्त, लगन, सक्रिय,
लोलाह,—कः 1 भारे का बलपूर् (बहु तैलम् जो
दात न हो) —कर्मकरा स्वयन्वाद्य पक्ष १, वि०
१।४।१९ 2. बम,—कर्म (पू०) (आ० में) कर्म को
साध ही साध कर्म की है—रघु० पञ्चमे मोक्षन,
तत्तरी परिभाषा बहु है—किमर्थं पुनश्च स्वयमेव
प्रतिष्ठाति, मुक्ति स्वैर्भूत कर्म कर्मकर्त्तृ तिष्ठतु।
—कर्म,—कर्म तैव का बहु विचार को कर्म कर्मों,
सम्पत्तों तथा उनके उचित अनुष्ठान में लगन कर्म
से लगन रखता है, कारः 1 जो किसी व्यवसाय
को करता है, कारीगर, शिल्पकार (जो भारे पर काम
करने वाला न हो) 2 कोई भी बलपूर् (बाहे भारे

का हो या बिना मांगे का) 3. लुहार,—हरिपतिजि कलावेण आत्मानमवकोच, न हि अज्ञो विद्यानाति कर्मकार स्वकारणम् । उद्धृत 4 लोह,—कारिण (पु०) मज्झिम कारीवर,—कारुणिक—कम् एक मज्झिम वन्य, —लोहकः गोपी,—कम् (वि०) कोई कार्य या कर्मज सम्पादन करने के योग्य,—आत्मकर्मसंग देह जागो बर्ग इवाभित—रघु० १।१३,—लोहम् धार्मिक कृत्यों की भूमि अर्थात् भारतवर्ष, तु० कर्मभूमि,—लुहार (वि०) कार्य करते समय पकड़ा हुआ (वैसे कि बार),—लुहारः कार्य को छोट बैठना या त्वमित कर देना, वं (वि०) लुहारः 1 काम करने में योग्य, मीच या निष्कृत कर्म करने वाला व्यक्ति, दक्षिण उनके प्रकारों का उत्प्रेक्ष्य करता है—अन्यत्र पिबुनवच कृत्यो दीर्घोद्यक, चत्वार कर्मपाशाला जन्तवश्चापि पञ्चम्य । 2 जो अत्याचार पूर्ण कार्य करता है—उत्तर० १।४६ 3. राहु,—लोहना 1 यज्ञानुष्ठान में प्रेरित करने वाला प्रयोग्य 2 धार्मिक कृत्य की विधि,—कः धार्मिक अनुष्ठानों से परिचित,—लुहारः सांसारिक कर्तव्य और वर्मानुष्ठान को छोड़ देना,—कुल (वि०) कार्य करने में प्रष्ट, कुष्ट, दुष्टाचारी अनादरणीय,—लोहः 1 पाप, दुर्व्यसन—मनु० १।११, १५ 2 वृत्ति, दोष, (कार्य करने में) बुरी भूल—मनु० १।१०४ 3 मानवी कृत्यों के दुष्परिणाम 4 मित्र आचरण, आरम्भ बलात्, तत्पुत्र का एक वेद (इसमें प्राय विशेष्य व विशेष्य का नयान होता है), तत्पुत्र कर्मचार वेनाह स्या बहुर्वोहि—उद्धृत, लुहारः 1 वर्मानुष्ठानों से उपपन्न फल का नाश 2 निराशा,—आत्मन् (व्या० में) कुदलक सजा, लाला काही और बिहार क मध्य बहने वाली एक नदी, लिङ्ग (वि०) वर्मानुष्ठान के सम्पादन में सफल,—लुहारः 1 कार्य की विधा या साध 2 वर्मानुष्ठान का (कर्म) मार्ग (विप० ज्ञान मार्ग),—लुहारः कार्य की परिपक्वता, पूर्वजन्म में किये गये वधों का फल,—प्रत्यक्षीय कुछ उपसर्ग तथा जन्म्य जो किमार्थों के साथ संबद्ध न होकर केवल भ्रमों का कारण करते हैं उदा० 'मा मुक्तो समार' में 'मा' कर्मव्यवधानीय है, इसी प्रकार 'अरमन् प्रावर्धत्' में 'अन्', तु० उपसर्ग, मति या निपात, लुहारः वर्मानुष्ठानों के फलों का परिणाम, फलम् पूर्व जन्म में किये हुए कर्मों का फल वा पारितोषिक (हु०, लुह), कम्, कम्बलम् कम्ब-नरम का कम्बन, वर्मानुष्ठानों के फल वाले धूम हों वा अणु (इनके कारण जाता सांसारिक क्लेश-आकामाओं में लिप्त रहता है), वृ०,—लुहि (स्त्री०) 1 वर्मानुष्ठान की भूमि अर्थात् भारतवर्ष 2 लुहि हुई भूमि,—लोहना लुहणागधिक अनुष्ठानों का विचारधर्म या नीतिशास्त्र,—कुलम् पुत्र

नायक पवित्र प्राप्त,—कुलम् बीजा (वर्तमान) वृत्त, अर्थात् कलियुग,—लोह 1 सांसारिक तथा धार्मिक अनुष्ठानों का सम्पादन 2 लुहि केष्टा, उद्योग,—लुहारः माय को पूर्ण रूप में किये गये कार्यों का अनिवार्य परिणाम है,—विपक्षः=कर्मपाद,—लुहारः कारणात्,—लोहम्—लुहार (वि०) कर्मवीर, उद्योगी, परिश्रमी,—लुह सांसारिक कर्तव्य तथा उनके फलों में आसक्ति ।—लुहारः मयी,—लोहार्थिक,—लोहार्थिन् (पु०) 1 वर्मानुष्ठान प्रथम प्रायेक सांसारिक, कार्य से विरक्ति पाती है 2 वह सत्याशी जो कर्म फल का ध्यान न करते हुए वर्मानुष्ठानों का सम्पादन करता है—लोहार्थिन् (पु०) 1 लोहो देना गयाह, प्रत्यक्षदर्शी साक्षी तु० ७।८३ 2 जो मनुष्य के लुभायुष कर्मों को प्रत्यक्ष देखता रहता है (इस प्रकार के जो देवता हैं जो मनुष्य के समस्त कार्यों को प्रत्यक्ष देखते हैं तथाहि—मृत्यु साधो यम कासी महाभूतानि पच च, एते लुभायुषस्येह कर्मणो नव साक्षिनः । सिद्धिः (स्त्री०) असीष्ट कार्य की सिद्धि, सफलता तु० ३।५७, लुहारम् सार्वजनिक कार्यालय, काम करने का स्थान ।

कर्मविन् [कर्मन् + इनि] सत्वाशी, धार्मिक विन् ।

कर्मारः [कर्मन् + ऋ + अन्] लुहार यात्र० १।१११, मनु० ६।२१५ ।

कर्मिन् (वि०) [कर्मन् + इनि] 1 कार्य करने वाला, क्रियाशील, कार्यरत 2 किसी कार्य या व्यवसाय में व्याप्त 3 जो फल की इच्छा से वर्मानुष्ठान करता है कर्मिन्प्रवर्धिका योनी तस्माद्योनी भवार्जिन भग० ४।४६ (पु०) कारीवर शिल्पकार यात्र० २।२६५ ।

कर्मिण्ड (वि०) [कर्मिन् + इण्डन्] इन्द्रो लुह [व्यापार-कुशल चतुर, परिश्रमी ।

कर्मदः [कर्म + अण्] बाजार, मही वा किसी जिले (जिसमें २०० से ४०० तक गाँव हों) का मुख्य नगर ।

कर्म [कृ + अण्] चम्, वा [1 रेखा लीचना, चर्चीटना, लीचना—यात्र० २।२१७ 2 आकषेण 3 हल मोतना 4 हल रेखा, कार्य 5 आरोध,—कर्म,—चर्ची वा सोने का १६ मासे का वस्त्र । सम० आचम्य कार्याचम ।

कर्मक (वि०) [कृ + अण्] लीचने वाला,—कः किसान, कतिहर यात्र० २।२५५ ।

कर्मचम् [कृ + अण्] 1 रेखा लीचना, चर्चीटना, लीचना, लुकाता, (चतु० का) मज्झिमपतिपाद्य कर्मपात्त रघु० १।१५६ ७।१२ 2 आकषेण 3 हल मोतना, सोती करना 4 अति पर्वधाना, कष्ट देना, पीड़ित करना—मनु० ७।११२ ।

शिनिम्नम् - विक्रम० ५११३, पञ्च० २१८० ऋतु० १११६
१११६ ४ रवी की मेखला या करवनी (श्राव, क. की
और 'रशना आदि के साथ) अर्जु० ११८० १३, ऋतु०
३१२०, मृगश्र० ११२३ ५ आर्द्रपूज ६ हाथी के गले
का रस्सा ७ तरकस ८ बाण ९ चन्द्रमा १० चन्द्रमा-
पूरजा, बुद्धिमान् ११ एक ही छत्र में लिखी गई
कविता, - वी चास का गट्टर ।

कलापकम् [कलाप - कन्] एक ही विषय पर लिखे गये
चार श्लोकों का समूह (जो व्याकरण की दृष्टि से
एक ही वाक्य हो) (अनुविम्बु कलापकम्) उदाहरण
के लिए दे० १।क० ३।११, ४२, ४३ ४४ २ बहु रूप
त्रिकोण परिघोष उस समय 'कलाप' जब भी
जानी वृक्ष के ४ क १ एक जन्मा या गट्टर
२ आँखों की लड़ी ३ हाथी की गर्दन के चारों चार
लिपटने वाला रस्सा ४ मेखला या कविनी
(कलाप) सि० ११४५ ५ (सप्रदाययोग)
मस्तक पर निकलविशेष ।

कलाविन् (प०) [कला + इति] १ मोर - कलाविन्नापि
कलापिकदम्भकम् सि० ६११४, पञ्च० २१८० रघु०
६१२ २ कोयल ३ अन्ध का बूझ (फलक) ।

कलाविनी [कलाविन् + वीप्] १ रात २ चोर ।

कलावः [कला + अव + क्] गट्टर सि० १३१२१ ।

कलाधिकः [कल् + आधिकार्यन् विभेगेन रीति - कल
+ आ + वि + क् + क] पूर्वा ।

कलाहः [कल् + आहन्ति कल - आ + हुन् + व + क्]
एक प्रकार का बाजा ।

कलिः [कल् + इति] १ लगडा, लड़ाई-युद्धाई, अलहमति
असमंजस सि० ३१५५, कलिकामजित् रघु० ११३३,
अमर १९ २ लडाव, युद्ध ३ दृष्टि का चौथा घग
कलियुग (इस युग की आय ४३२००० मानव वर्ष है
तथा ईसापूर्व ३१०२ वर्ष की १३ फरवरी का इसका
आरम्भ हुआ था) अर्जु० ११८४, ११३०१ - कलियुगीन
इमानि आदि० ४ मनुज कलियुग (इसने नाम को
वातना की की) ५ कल्वी वर्ग को निहण्टनम अर्थात्
६ विनीतक वा बड़े-बड़े का बूझ ७ पासे का पतलू जिस
पर एक का अंक अंकित है ८ नायक ९ बाण
- (स्त्री०) बिना मित्रा फल । सव० काट,
- कावकः - विद्याः नायक का विशेषण, - हुकः,
- हुकः विनीतक वा बड़े-बड़े का बूझ, - हुकम् कलिकाम
कीहुकम् अर्जु० ११८५ ।

कलिका, कलि (स्त्री०) [कलि + कन् + टाप्] १ अल-
लिखा फल कली, - ब्रह्मा विरतिर्नसापि कलिका
ब्रह्मणि न भूय रज अ० ६१६, किमात्रकलिकाभङ्ग-
मारमले - अ० ६, ऋतु० ६११३, रघु० ११३१ २ अल-
रेखा ।

कलिकुलः (ब० ब०) [कलि + कल् + व] एक देश और
उसके निवासियों का नाम, - उत्कलादेशकल्प कलिकुल-
विष्णुवा ययी रघु० ६।८८ (तभी में कल्वी विनीतक
इस प्रकार बताई गई है - अनवावसकानारण्य कलिका-
नीरान्तम धिये, कलिकुलेश यत्रोक्तो बावसवैरपञ्च ।

कलिम्बः [क + लम्ब - कल् + नि० साधु०] कड़ाई, परदा ।
कलित (वि०) [कल् + क्त] बाधा हुआ, पकड़ा हुआ,
क्रिया हुआ दे० कल् ।

कलिन्धः [कलि + धा - लप्, भृच्] १ बहु पर्वत चिछटे
यमुना नदी निकलती है २ सुयं । सव० - कल्मा,
बा, - सवसा, - बलिनी यमुना नदी की उपाधिवा
- कलिन्धकल्मा बधूरा मत्स्यि - रघु० ११४८, कलिन्ध-
बाभीर - नाभि० २११०, गीत० ५, - विरिः कलिन्ध
नाम का पक्षी, - बा, - सवसा, - बलिनी यमुना नदी
की उपाधिवा - नाभि० ४१३, ४ ।

कलिल (वि०) [कल् + इलच्] १ डका हुआ, बग हुआ
२ मिला, घुसा-मिला - नत एवाकल्पकलि कल्पक -
महावी० १ ३ प्रभावित, बल्ले कि, - कल्पककलि
सि० १११९८ ४ कलेज, कलेज, - कल् १ बड़ा डेर,
अल्पकल्पित राशि - विलसि हृदय कलेजकलि - अर्जु०
१११४ २ मज्जक, अल्पकल्मा - बला ठे मोज्जकान्त
बुद्धिबलितिरिभ्यसि - अम० २१५२ ।

कल्म (वि०) [कल् + उपच्] अलिप्त, कला, कीचड़ से
भरा हुआ, मैला - बला रोचःपलकम्पना बुद्धीय
प्रभावम् - विक्रम० ११८ कि० ८१३२, कट० १३ २
मालावपट, वेपुला, बर्गला हुआ - कल्म लम्पितवा-
न्यवृत्तिकम् - अ० ११६ ३ बुझा, बटा हुआ
११४ ४ कूट, अलस, उत्तेजित - बावसवोचकम्पना
वयितेव रात्री - रघु० ५१५४ (बलिन्ध 'कल्म' का
अर्थ 'मज्जक' और 'कलाव' मानता है) ५ बुद्ध, बर्ग
बूटा ६ कृत्, निम्ननीच रघु० १११७३ ७ जम्बकर
पुल, कल्पकारक्य ८ पिठला, बाकरी, - बा, बैला,
- कल् १ मज्जकी, मैल, कीचड़ - विलसकल्मवमम
- अर्जु० ११२२ २ पाप ३ कोयल । सव० - वीलिन्ध
हरापी, बर्गवकर - अर्जु० १०१५७, ५८ ।

कलेवरः, - रज् [कले बूढ़े वर केचम् - कल्म न०]
हरीर, - दावसवसविर्ध कलेवरबुद्धम् - अर्जु० ११८८
हि० ११४७, अम० ८१५, नाभि० ११०३, ११०१ ।

कल्म - कल्म [कल् + क] १ विपत्तिवा नाद जो तेल
भरि के नीचे बज जाता है, कीट २ एक प्रकार की
लेई वा वेष्ट - बाण० ११२७७ ३ (कल्) गदगी,
दीन ४ कीट, विद्या ५ नीचता, कपट, दम सि०
१११९८ ६ पाप ७ बुद्धा पिता पूर्ण - बां कीचकमेव
हुमाङ्गरीनाम् - अ० ७१६ । अम० - कल्म अनार का
बीजा ।

2 बाजे और सकेद का मिश्रण 3 पिशाच, मृत, —भी यन्त्रा मन्त्रे । सम०—कम्पः शिव की उपाधि ।
कम्प (वि०) [कम् + घृ] 1 स्वप्न, नीरोध, तनुवस्त —सर्व कम्पे वयसि वसते लक्ष्मणवर्त्तुदुष्टी—विश्व०
 १ वाङ्० ११२८, बाबदेव भवेत्कल्प तावच्छब्दे ममा-
 चरेत्—महा० 2 तत्पर सुचिन्तित—कथयन् कथा-
 मेता कथा स्म जयते तव महा० 3 चतुर
 4 शक्तिर मङ्गलमय (बैसा कि प्रवचन) 5 बहुरा
 और गुणा 6 शिक्षाप्रद, स्वयं 1 प्रमान पी फटना
 2 आन बाणा कम् 3 सादक सराय 4 बचाई, जगल
 कावना 5 शुभ समाचार । सम० जाङ्ग—जग्गि
 (स्त्री०) जग्ग—योजन कमेवा—वाङ्, वालक
 कम्पार साराव जीवन बाका कसे सवरे का भाजन
 कमेवा (कम्) (जन) कोई भी हल्की चीज नुच्छ
 या मङ्गलहीन, मायूमी—मनु कल्पवर्त्तमन्त्र मृच्छ०
 ५ जुद्ध वरुं स्त्रीकल्पवर्त्तस्य कारणेन ४, लहदानी
 मरुत्कल्पवर्त्तस्य कारणादिदमकार्य करोति १ ।
कम्पा [कल्पान् प्रावयति कल् + चिच् + क् + टप्] 1
 आवक संग्रह 2 बचाई । सम०—वाल्म, —वाल्म
 साराव जीवने बाका कम्पार ।
कम्पाय (वि०) (स्त्री०) या. —भी) [कम्पे प्रात अभ्यने
 शास्त्रेण वच् घञा] 1 आनन्ददायक, सुखकर
 लीलायवाली भाग्यवान् स्वयं कल्याणि वस्तुस्
 लीया रघु० ६१२९ मय० १०९२ सुन्दर शक्तिर,
 मनाहर 3 अष्ट गौरवयुक्ता 4 सुख, खबरकर मंगल
 प्रद भद्र कल्याणानां अर्चामि बहुता भाजन विश्वमूर्ते
 या० ११२, कम् 1 अष्टा माय आनन्द मलाई
 समृद्धि कल्याण कुचता जनस्व ममवाचमार्वायुद्धा-
 मणि हि० ११२८५ ठाक कल्याणपरम्पराणा
 भोक्तारमूर्त्तस्वल्मात्प्रदेहम् रघु० २१५० १७११
 मनु० ३१५ इसी प्रकार अभिनिवेशी—का० १०४
 2 गुण 3 उत्सव 4 सोना 5 स्वर्ग । संग०—कुम्
 (वि०) 1 मुज्जर लाभदायक हितकर मन्त्र० ६।
 ४० 2 मंगलप्रद भाग्यशाली 3 गुणी, —कर्मन् (वि०)
 गुणसम्पन्न—बचनम् मित्रवत् भाषण शुभ कामना ।
कम्पायक (वि०) (स्त्री०—किता) [कम्पाय + क् + घृ] शुभ,
 समृद्धिशाली आनन्ददायक ।
कम्पायिन् (वि०) (स्त्री०—भी) [कल्याण + इनि] 1
 प्रसन्न समृद्धिशाली 2 लीलायवाली, भाग्यवान्
 आनन्ददायक 3 मंगलप्रद शुभ ।
कम्पायी [कल्याण + डीप्] माय रघु० १८८१ ।
कम्प (वि०) [कल् + अच्] बहुरा ।
कम्पोज [कम्प + अच्] 1 बहा लहर ऊँच आयु
 कल्याणलोकम् प्राप्ते ३१८० कम्पोजमाकाकुलम्
 मर्त्ये ० ११५९ २ शम् ३ प्रसन्नता ।

कम्पोजिनी [कम्पोज + इनि + डीप्] नदी—स्वर्गलोकजनी-
 किनि न्व वाय तिरवायुना नम भवमाकाकुलीहासन
 —मय० ५०, इसी प्रकार—विपुलपुष्पिता कम्पोजि-
 निम्ब ।
कम्प (धा०) मा०—कम्पते, कथित 1 स्तुति करना 2
 बर्त्तन करना, (कथित) रचना करना 3 चित्रण
 करना चित्र बनाना ।
कम्प [कम् + क् + कम्] मुट्टीवर, —कम् कुकुरमुता
 विद्वानि कवकाचि च वाङ्० ११०१, मनु० ५।
 ५ १११४ ।
कम्प, कम् [क + अच्] 1 लताह, जिह्व बहुरा, नमं
 रमाकम्प गायीर इहस्वपूर्ण बहुरा (हुं हुं) को कि
 रमाकम्प की गति प्रत्यक्ष समझे जान है 3 बीजा
 ताशा । सम० चक्र, मोक्षपत्र का पेठ, पाकर का
 वृक्ष सर (वि०) 1 कदचकारी 2 बच बालन
 करने वाय्य बायु का कम्पहर कुमार—या० ३१२।
 १० पर सिद्धा० तु० बर्द्धर—रघु० ८।९४ ।
कम्प [कु + कट् + डीप्] दरवाजे का पन्ना वा पल्ल ।
कम् (व) र (वि०) (स्त्री०—रा, —री) [कु + कट्] 1
 लम्बा कम्पोजित हि० ५।११२ बटित कथित
 यथा हुआ 3 विचित्रविचित्र रगधिया रङ्ग, —रङ्ग
 1 मयक 2 बटाव, कम्पता—रः कोटी बुद्ध ।
कम् (व) री [कम्प + डीप्] कोटी, बुद्धा—द्विती बिलोल
 कम्परीकमानम्—जम् ० ३१४, हि० ९।१८ अवध
 ५।९ । सम०—बटः मातः मूषी हुई कोटी—बटव
 अपने कांक्षीयक जवा ६४०रीमर्म् नीत० १२ ।
कम्प, कम् [केन जलेन वसते चलति—इत् + अच्
 तारा०] 1 मुट्टीवर—आम्नादवर्द्धि कवर्त्तसुत्तानाम्
 —रघु० २।५ ९।५९ कम्पच्छेदेष्टु सम्पादिता—उत्तर०
 ३।१६ ।
कम्पित (वि०) [कम्प + इत्] 1 जाया हुआ निगला
 हुआ (मुट्टीवर) 2 चबाया हुआ 3 (जन) लिप्य
 हुआ एकदा हुआ—बैसा कि मृत्युना बर्त्तन ।
कम्प [कल् लब्धम् अटति, कु + अच् अट + अच्] २०
 'कपाट ।
कम्पि (वि०) [कु + इ] 1 सर्वत्र मय० ८।९ मनु० ३।१३
 2 प्रसिद्धाशाली, चतुर बुद्धिमान 3 विचारवा
 ३।५।५ ३।५९ २।१५१ २ काय्यकार—नद कुटि
 रामचरित आश कविरसि—उत्तर० २ मन् कविराज
 शर्मा—रघु० ११३ इद कविम् पूर्वम्बो नमावाक
 प्रमाणम् उत्तर० ३११ हि० २।८६ ३ मनु० ३
 आचार्य शुभ की उपाधि 4 बाल्यकी आधिक्य 5 ब्रह्
 6 सुख (स्त्री०) लगाम का दहना—दे० क०

का । तमः—स्वेच्छा आदिकवि वासीकि को उपाधि,
—भुक्: सुकभाय की उपाधि,—राजः 1 महाकवि
—(वीरवं कवि राजराजिमुकुटालकारहीरमुतम् यह
वाक्य नैषधचरित में प्रत्येक सत्य के अन्तिम श्लोक में
पाया जाता है) 2 कवि का नाम, 'राजबपाख्यवीर'
नामक काव्य का रचयिता—राधायणः वासीकि की
उपाधि ।

कविकः—का [कवि+कन्, स्त्रिया टाप् ष] लगाम का
बहाना ।

कविता [कवि+तल+टाप्] काव्य—सुकविता मछलि
उप्यन किम् मन्० २१२१ ।

कवि (वी) वम् [कवि+छ] लगाम का बहाना ।

कवोज्ज्वल (वि०) [कुल्लिनम् ईवन् उप्यम् कम् म०, को
कावेदस] कुछ बोटा गर्म, गुनगुना- रपु० ११९७,
८४ ।

कवन् [कृपते हीयते सितम् यन् वभ्रादिकम् कु+य-
(वि०) हम्पम्] घृत पितरों के लिए अन्न की आहुति,
—एव च एवम कल्प प्रदाने ह्यम्कथयो- मन्०

१११४७, १७, १२८,—पितरों का कम्पूह । तमः

—वह्, (पु०),—वह्,—वह्—वह्—अग्नि ।

कवः [कव्+अव्] कोश (प्रय वृद्धवैतान्त),—आ वायु
—इदानीं सुकुमारोत्पन्नं नि छलं कर्षता, कवा, तव
बापे पतिष्यति सहस्राक्षं मनोरथै । मृच्छ० १११५
(वही कवा लक्ष स्त्रीलिङ्ग और पुल्लिङ्ग दोनों में हो
सकता है) 2 कोड़े लगाता 3 मोरी, रस्सी ।

कविन् (पु० का मपु०) [कवति कुञ्ज कस्यते वा, मृज्या-
वितात् निपातान् नाप्] 1. बटाई 2. तकिना 3
विस्तरा,—हुः 1. भोजन 2. वस्त्र 3. भोजन-वस्त्र
(विषयकोश के अनुसार) ।

कवी (के) व (पु०, मपु०) [के देहे शीर्यते, कं बलं वा
मुवाति, क+व्+उ, एरुह्येत, कव्+एल् वा]
1. रीढ़ की हड्डी 2. एक प्रकार का घात ।

कवक (वि०) [कव्+कल्, मुट्] मैला, गन्ना, ककीतिकर,
कवकी-मलमलकारकवका किकवकी स्वाधैदिकिकुल
विह नामकम्—उत्तर० १४२,—कव् नाम की
किन्ना, उवासी, कवकाद—कवकाद बहुवाक्यात्
—वह्, कुतस्ता कवकादवि विचये समुपस्थिताम्
—मप० २१२ 2. पाव 3. मुर्छा ।

कवकीर (व० व) [कव्+ईन्, मुट्] एक देश का नाम,
कवकीर कवकीर (उत्प कवकी में इसकी स्थिति इस
प्रकार बताई गई है—आराधनकारण मुकुटावित्तां-
कः, साधकस्वीरैः स्वात् पंचाशतपञ्चाशतः)
मन०—कः,—कम्,—कम्पु (पु० मपु०) केसर,
वाक्यम—कवकीरकम् कटुवापि वितामरम्—आदि०
११९१ ।

कव्य (वि०) [कवामहेति—कवा+य] कोड़े या चाबुक
लगाये जाने के योग्य—इयम् मादक शराव ।

कव्यप [कव्य+पा+क] 1 कछुवा 2 एक ऋषि, अर्द्धि और
वर्ति के पति, अस देवता और राजस दोनों के पिता ।
(ब्रह्मा का पुत्र मरीचि वा मरीचि का पुत्र कश्यप हुआ
सृष्टि के कार्य में कश्यप ने बड़ा योग दिया । महाभाग्य
तथा दूसरे ब्रह्मा के अनुसार उसका विवाह अर्द्धि तथा
दक्ष की अन्य १३ पुत्रियों के साथ हुआ । अर्द्धि ने
उसके द्वारा १५ आदिता का सम दूधा अपनी
दूसरी १२ पत्नियों ने उसके अन्न और विविध प्रकार
की मन्तान हुई मीन रोगन वाले मनु, पक्षी, गधास,
बन्धकीर्षक तथा मनुष्य तथा पौरवा । इस प्रकार
बहु देव, कदुर मनुष्य, पक्ष, पक्षी और सरीसृप
आदिका का वस्तु सभी जीवधारी प्राणिमान का
पिता था । इसी लिए उसे बहुधा प्रजापति कहा
जाता है) ।

कव् (म्या० उभ० कवति ते, कवति) 1 मसलना,
कुरचना, कसना समूलकाव कवति—मिद्रा०, मृष्टि०
३१४९ 2 परीक्षा करना, जाँच करना, कसौटी पर
कसना (सोना आदि),—उद्देह कवविवास्तकच-
पाचापनिने नमस्तस्ते—ई० २१९९ 3 चोट मारना,
नष्ट करना 4 बुझाना ।

कव्य (वि०) [कव्+अव्] 1 रतने वाला, कसने वाला,
—कः रतय कसना 2 कसौटी—उद्देह कवविवास्त-
कचपाचापनिने नमस्तस्ते—ई० २१९९, मृच्छ०
१११७ ।

कव्यप [कव्+मृट्] रतना, चिह्नित करना, कुरचना
कव्यकविपण्डितकव्योक्तमेव कवतिवि-
उत्तर० २१९, कवकम्पविरस्तवहाहिनि—कि० ५१४७
2 कसौटी पर कव कर होने को परकना ।

कवा=कवा ।

कवा=कवा ।

कवा (वि०) [कवति कव्यम्—कव्+अव्] 1 कसौटी
—क० २ 2 मुपस्थित—स्पृष्टिकमनामोदवीर्यकवाः
—नेच० ११, उत्तर० २१२१ बहुवी० ५१४१

3. काल, बहुरा काल—पुनरुत्पत्त्याकवाकवः—हु०
११२ 4. (अवः) नपुंसक वाक्—म० ७

5. बुरा, 6. नपुंसक, वीर्य—क०,—कव् 2 कसौटी
स्वाव वा रत (१ रतों में है एक) दे० कट् 2. काल

रव 3. एक नाम कौचि, बार बाह वा १६ नाम
पानी में घिसकर बनाया हुआ (सब को घिसकर

उबालना जब तक कि पीछाई न रहे बाव) । कवा
—मनु १११५५ 4. लेट करना, पीटना—हु० ७

१७, पुनरुत्पत्त्या 5 उदरन कवा कर शरीर की सुवासि
करना—मनु० ११४ 6. बौध, राज, वृक्ष का निःश्वस

7. वीर, वस्त्रच्छा 8. कवता, कविता 9. कौचरिक

विषयो में बालसि, - १ आवेश, लेश २ कलि-
युग ।

कवाचित (वि०) कवाय + इतच् १ हुम्के रय वाला,
काल रग का, रवीन - बमुनेव कवाचितस्त्री - कु०
४१३८, सि० ७११२ वस्त ।

कवि (वि०) [कवति हितस्ति कप् + इ] हानिकारक,
अनिष्टकर, पीडाकर ।

कवे (के) कवा [कप् (स) + एरच्, उत्थम्, कन् - टाप्]
रीठ की हुईरी मेवस्थ ।

कव्य (वि०) [कप् + कन्] १ दुरा, अनिष्टकर, गौरी,
बल्लभ - रायहस्तमनुष्य कव्यात् कटतर गता रप्०
१५१३, अर्थात् अधिक दूरी अवस्था हो गई (दुई
लापस्त हो गई) २ पीडायय मनापकारी - माहाद्व-
कव्यतर गता रप्० १५१५ कव्योऽय कल्
भूयथाय - रत्न० १, चिन्ताओं से भरा हुआ - मनु०
७५०, मा० ३१२९ कव्यो वनि पराधीना कव्यो
कामो निराश्रय निर्बल्यो व्यथामयश्च सर्वकव्यो वरिष्ठता ।
बाल० २९३ कठिन शत्रोश्च कव्योऽधिकार - विक्रम०
३११ ४ बुधंसे (सन्धु की प्रति) मनु० ७१८६
२१० ५ अनिष्टकर, पीडाकर, हानिकार ६ गणित
शब्द १ दुष्कर्त, कठिनाई, सफट, व्यथा, यन्त्रणा
पीडा - कव्य सम्बन्धपयता - स० १ विचार्य कव्य-
मधवा - पथ० ११९६ २ पाप दुष्टता ३ कठिनाई,
प्रयास, कष्टोच किमी न किसी प्रकार, शब्द (अर्थ०)
हय - हा पिक् कव्य, हा कव्य बरामिमतुष्य
पुनर्वैद्ययते पथ० ४७८, सम० आगत
(वि०) कठिनाई से जाया हुआ पहुँचा हुआ, कर
(वि०) पीडा कर, दुःखदायी - लक्ष् (वि०) बोर
लगाया करने वाला स० ७, साध्व कठिनाई से
पूरा किए जाने के पथ स्वल्प दुरा स्थान,
अधिकार या कठिन जगह ।

काव्य (स्त्री०) [कप् + कान्] १ गद्य शीघ्र २ पीडा,
कव्य ।

कम् १ (म्हा० पर० कर्माणि कसिन्) शिला बुझना
जाना, पहुँचाना, निम्न (पेर०) १ निकालना, बाहर
कीचना २ मोड़ना, बाहर होकर देना निवासित करना
निष्कामन करना निष्कामयद्विधोपेतम् विवदाम
यादपरदिगमिका सि० १११० देनाहू बीबलीका-
प्रिष्कालयिच्ये मुहा० ६ प्र, कोलना, प्रसार कर
बाना - बन्धुबन्धुव्यवसायिन् (कुसुम) - वट० १९
विष्, बुझना, प्रयत्न होना (आल० भो) विकसित हि
पिण्मन्त्रोदये पुण्डरीकम् - मा० १२८ सि० १५७, ८२
कु ७५५ निष्कृति विकसन् मनु० २१७८ (ब्र०)
कोलना, प्रसार करवाना - वट० विकसयति कूरवचक-
वाल्म मनु० २१७३, सि० १५१२, अथक ८४ ।

ii (अवा० वा० - कस्ते, कस्ते) १. जाना २. नष्ट
करना ।

कस्तुरी (सु०) रिक्ता, कस्तुरी [कसति गन्धोऽस्या - कस्
+ ऊर् + डीच्, तुप्, कन् + टाप् हयच्] मूत्र,
कस्तुरी - कस्तुरिकातिलकनासि विषाय तायम् - बालि०
२१४, ११२१, बीर० ७ । सम० - बुध कस्तुरीमुग
- (बहु हरिच जिसकी नाभि से कस्तुरी नामका
सुगन्धित द्रव्य निकलता है) ।

कस्तूरम् [के बने क्वाते - क + क्वाप् + अच् पूर्वो० दस्य
र] स्वेत कम्ब कस्तूरपपुमुमानि मुह्यिषुम्बन्
- वटु० ३१२५ ।

कस्तु [के कस्ते क्वाति मन्वायेन स्वर्धते वा - क + क्ते +
क] एक प्रकार का सारव ।

कासीयम् [कमाय पापपाशाय हितम् - कस् + छ + यच्]
बल्लम् ।

कास्व (वि०) [कमाय पापपाशाय हितं कसीय तस्य विकार
यच् छलोप] कस्ते वा बस्त का बना हुआ
मनु० ४५५, स्वयं १ कासा या बस्ता - मनु०
५११४, वाङ्म० ११९० २ कस्ते का बना बहिर्वात
रक्त, - स्वयं जल पीने का बर्तन (पीतल का)
प्लाका सि० ११८१ । सम० - कार (स्त्री०) - री
कसेरा, छेड़ा ताल छीस, कानाल - बाल्यम्
पीतल का बर्तन - बाल्य तादृशम्, लब्धे का छेड़ी ।

काक [ई + कन्] १ कौवा - काकोऽग्नि जोरति विराप
दलि च मुक्कते रक्त० १२४ २ (जान०) बुद्धि
अग्नि नीच और से ३ बह ३ लगह आदमी ४
केवल मिर का मित्रा - तान करम् (जैसा कि
कोने करते हैं) की कौवा - कम् कौवो का समूह ।
सम० अहिगोष्कन्याय दे न्याय के नीचे - अहि-
उत्सु, - उबर मीप बावहारो यन विनोदय
- बहिराज उत्सुकिता, उत्सुकिम्, रीठ भोर
उत्सु की वैमनिक सन्धन (रीठ वकीय यन्त्रण
के तोलने तन का नयन है) विष्वा मुहा १० मन्त्र
का पीडा (स्त्री०) छव, - छवि सत्रमपको २ यन्त्रके
- व० म० काकपक्ष जल कोषण लामोय
(वि०) जो बात अकरमान् अपत्यालिन का स २
इष्टता अह न्, कम् जो गदेतम् कम्पनीय नय
मा० १, काकनीयकम्पान दृष्टव्य निधमव
हि० प्र० ३५ कवी कपो क्रिडां बहोजन व रूप म
प्रकम् होकर समान से अर्थ के प्रवट करना है
लम्बिकाकनीयतेय प्राक् न विष्वा ३ बेनी
२१४, स्वयं दे० न्याय के नीचे सम्पत्ति
(वि०) बुद्धि, मिष्ट, - बला (शा०) कौन र दीन
(आल०) बलमय बाह जिसका अस्तिव न हो
'कौवकम्' अक्षय बालो की नीचे करना । लार्ड और

अनाधकार कायों के संबंध में कहा जाता है)।—अधः
बाधनाम,—विद्या हस्की गीत या लपकी को बाधानी
से दूट बाध,—अधः—अधः (विशेष कर अधिबो
के) बाधकी और लपकी की कल्पितियों के लगे
बाल या अधः—काकपञ्चमरमेव बाधित—रघु०
१११, ११, ४८, ११८, उत्तर० १,—अधः हस्तलि-
खित पुस्तक या लेखों में चिह्न (A) जो बहु प्रकट
करता है कि यहाँ कुछ छूट गया है,—अधः अधः की
एक विशेष रीति,—अधः,—अधः कोयल,—अधः
(वि०) छिछला—काकपञ्चम नवी—विद्या०,—अधः
उत्तर,—अधः अलकुलुट—अधः अधः का बहु पीमा
मिसकी बाल में धान न हो यथा काकपञ्चम प्रोक्ता
यकारभ्यन्तवास्तित्वा, नामधेया न सिद्धी हि वनहीना-
स्तथा नरा । पद्य० २१८९,—उत्तर पाठवा सर्वे यथा
काकपञ्चम इव—महा० (काकपञ्चम—निष्कल्पपञ्चमम्)

अधः बोधे की कर्कश भावि (काँच काँच) जिससे
परिचित है अनुसार भावी सुभाषण का ज्ञान होता
है—मि० १७६,—अधः ऐसी स्त्री जिसके एक पुत्र
होने के पश्चात् फिर कोई सन्तान न हो,—स्वर्ग
कर्कश ध्वनि (जैसे कि बोधे की काँच काँच) ।

काकप (क) क (वि०) १. डरफोक, कायर २ नया ३ नवीन,
रहित,—अधः ४ औरत का सुमान, पत्नीमन २ (स्त्री०
—की) २. उत्तर ३ बाधनाली, बोधा, धर्षण्ये ।
काक (का) कः [का इत्येव कलो मस्य व० स०] पहाड़ी
कोना,—अधः कठमणि ।

काकपि,—की (स्त्री०) [कम् + हन् = कपि, कु ईषत् कपि,
कोः कापेत्, लिटि औष् च] १ मय मयूर स्वर
—अनुबन्धमुखकाकपीसहितम्—उत्तर० १, अणु०
१८ २ एक प्रकार का मय स्वर का बाधा जिसके
द्वारा और यह पता लगाते हैं कि लोग सोचें हैं या
नहीं—अनिम्बुकाकपीसवचक प्रभूपनेकोपकरण-
युक्त वच० ४९ ३ कीपी ४ मृचपी का पीपा ।
सम०—रकः कोयल ।

काकपि, काकपिका [कम् + पिनि + औप् = काकपि +
कम् + टाप्, ह्रस्व] १ लिके के रूप में प्रयुक्त होने
वाली कीपी २ एक लिपिका जो २० कीपी या बीहई
पत्र के बराबर होता है ३ बीहई माने के बराबर
वजन ४ माप का एक अंस ५ तराजू की डंडी ६ हस्त
(एक प्राचीन माप जिसकी लम्बाई एक हाथ के
बराबर होती है) ।

काकपि (स्त्री०) [कम् + पिनि + औप्] १. पत्र का
बीहई २ माप का बीहई ३ कीपी—हि० ११२१ ।

काक (स्त्री०) [कम् + उप्] १ पय, शोक, कोष आदि
लेश्यों के कारण स्वर में परिवर्तन—अनिकठध्वनि-
वीरि काकुरित्यविधीयते—सा० व०, बलीकाकाकुर

अनुकलता—का० २२२ (अध) २. निवेद्यतक
तत्त्व जो इस धन से प्रयुक्त किया जाय कि विपद
(स्वीकारात्मक) वर्ष को प्रकट करे (इस प्रकार के
अवतरो पर स्वर की विधिति से ही बनीष्ट वर्ष प्रकट
किया जाता है) ३ वृक्षदाना, वृक्षदाना ४ विद्या ।
काकुरित्यः [काकुरित्य + अण्] काकुरित्यवती, वृक्षवती राजाओं
की उपाधि, काकुरित्यमानोकथना नृपाधाम्—रघु०
११२ १२१०, ४६, ६० 'काकुरित्य' ।

काकुरित्य [काकुरित्येव ददाति—काकुर + दा + क] तात्त्वः ।

काकोलः [कम् + लिप् + ओल] १ पहाड़ी कोना—पाठ०
११७४ २ सौर ३ सुभर ४ कुम्हार ५ नरक का
एक भाग मात्र० ११२२३ ।

काक [कुरितित्त्वं अथ यत्—की कापेत्] निरली चित-
वन, कमलियों से देखना,—अण् रवौरी चकना, अग्रत-
जता की वृष्टि, इन्द्रपुत्र निगह—काशेनाभावरौजान
वृष्टि० ५१८ ।

काकः (पु०) कोना, पु० काक' ।

काकज् [प्या० वर० (महाकाव्यो में वा० भी) - काकजिनि
काकजित] १ कामना करना चाहना, मात्सायिन
होना—अन्धकाकाजिनि नवीरिभ्यन्मयुक्तस्तिमलापस्यमयवी
—वा० ७१२, न गोपति न काकजति अथ० १२७
न काकजे विषय कुल्य—११३२ रघु० १२५८, मयु०
२१२४ २ प्रयाणा करना, प्रतीक्षा करना, अति-
मात्सायिन होना, कामना करना, आ—१ चाहना,
मात्सायिन करना, कामना करना,—अव्याध्वस्त रिपुना-
वकाका—रघु० ७१४७, ५१८, मयु० २१३२ मेघ०
११, मात्र० ११५१ २ अपेक्षा करना आशयकता
होना,—अन्धका—वात में रहना, सेवा में उपस्थित रहना
वि—कामना करना, चाहना मात्सायिन करना, सत्ता—
कामना करना, चाहना ।

काकजा [काकज् + ज + टाप्] १ कामना, इच्छा २ कथि,
अनिवाया जेता कि 'प्रवत्काका' में ।

काकजिन् (वि०) (स्त्री०—की) [काकज् + जिनि] कामना
करने वाला, इच्छुक, इच्छा, जक' आदि—अथ०
११५२ ।

काक [कम् + वच्] १ बोधा, स्फटिक—आकरे पञ्चरा-
माया जन्म काचमने कुछ हि० व० ४४, काच-
मृत्वेन विकीर्णो हुत चिन्तामणिर्मया—का० १११०
२ कला, कटकना हुआ (बकमारी का) लकड़ा, मृत् से
बनी हुई रस्सी जो बोध की सहाय के ३ बोध का
एक रोम, आक की बोधी का रोम जिससे दृष्टि
बृहती हो जाय । सम०—बोधी बोधे की भारी या
जग,—बोधमय बोधे का पात्र,—अधिः स्फटिक,
विकीर,—अन्धक,—अन्धक,—अन्धक काका मयक वा
बोधा ।

काचनम्, काचनकम् [कच् + निच् + स्तुट्, कच् च] बोरी
या कीना जिससे काचनर्क का बरबल या हुस्नलजिन
पत्र बाँधे जाते हैं गु० कचेन ।

काचनकिम् (पु०) [काचनक + इनि] हुस्नलजिन ग्रन्थ
लेख ।

काचुकः [कच् + ऊकच् + वा०] १ मुर्गी २ चकवा :

काचलम् [रिच् कुञ्चित श्लम् का कावश] १ पाठा
पानी २ स्थायहीन पानी ।

काञ्चन (वि०) (स्त्री०) मी० [काञ्च् + स्तुट् रिचया
कीप्] सुनहरी, सोने का बना हुआ तन्मध्य च स्फ
टिकफलका काञ्चनी बाभरविट मेघ० ३९ काञ्चन
बल्लभम् स० ६० मनु० ५११२ चम् १ मन्त्र
- (शाद्यम्) अमर्यादनि काञ्चनम् मनु० १२३१
२ प्रभा दीप्ति ३ सम्पत्ति घनमीलन ४ कमल मनु०
वा १ चतुर का टीका २ अरुण व पोषा । सम-
अङ्गी सुनहरी रङ्गकपटी स्त्री मणि ५ १-
काञ्चर सोने की काय निरि का नामक पहाड़
मू (स्त्री०) १ सुवर्ण (स्त्री०) धूमि २ स्थली
रज मणि मन्त्र के आधार पर ही स्त्री म हुई
मुलह । गु० पि० ४, ११३ ।

काञ्चनमार. (स०) [काञ्चन + मार] अण् कचनार
का पेड़

काञ्चि, की (स्त्री०) [काञ्च् + इन् काचि डच्] स्त्री
की (छाते २ चूचक) युक्त) मेखला या कचनी
एतावना लम्बानुमेषाभि काञ्चनीगुणस्थानमन्दि-
ताया कु० १३१ ३१५ मेघ० २८ पि० १३०
रघु० ६४३ २ अजिन भाग्न का एक प्राचीन नगर
जो हितुमा का एक पावन नगर ममज्ञा जाता है
(साम नगरो के नामों के लिए हैं अर्चन्) । सम०
पुरी, नगरी १ कांची (नगर) २ शब्व कृष्ण
नितम्ब ।

काञ्चिकम्, काञ्चिका [कुत्तिका अञ्जिका प्रवासा यस्य-कु
+ अञ्ज + क्तुल् + टाप् ह्यस्य को कादेश] लटाम मे
युक्त एक प्रकार का पेय, काँची ।

काचुकम् [कटुकस्य भाव अण] लटाम अल्लना ।

काठ [कठ बडा] बट्टान पत्थर ।

काठिनम्, ग्यम् [कठिन - अण ध्यञ्च हा०] १ कठोरता
कठापन - काठिन्यमुत्तरानम् स० ३११२ २ पिष्ट-
रता निर्दयता कठना ।

काच (वि०) [कच् + चञ्] १ एक प्रसिद्ध नाम्ना अठ्ठा
काच मिष्टानं, काचन चमुषा कि वा पि० प्र०
१२, मनु० ३१५५ २ छिद्रवाणा कटा हुआ (जैसे कि
काँची) शाल्य हाणबगटकोपि न मगं तत्प्रेक्षुना
मूच माय् भर्तु० ३१४, फूरी काँची ।

काचेली, - र [काचा + डच् इच् वा] काँची स्त्री का पुत्र ।

काचेली [काच + इन् + कच् + डीप्] १ नमरी या व्यभि-
चारिणी स्त्री १ बहिर्वाहिना स्त्री । सम० - मातु
(पु०) अविवाहिता माता का पुत्र हराजी (निरस्कार)
सूचक शब्द जो कबल सम्बोधन में प्रयुक्त होता है।
काचेलीमान् अस्ति किञ्चिन्मिच्छु यदुपलभ्यमि
- मृच्छ० १ ।

काच, डच् [कच् + ड दीर्घ] १ अनुमान, बल्ल चर
२ पीछे का एक गीठ में बुझी गीठ एक का भाग, पारी
३ इठल तना बाबा लीलात्मानमुषालकाचकबल-
च्छेदेष्ण उतर० ३१६ अमर १५ मनु० ११४६
४ इत्य का ५ जैसे कि किसी पुस्तक का
अध्याय जैसे राधापण के सात काच ५ एक पुष्पक
विभाग या विषय उदा० ज्ञान कर्म बादि ६ बूझ,
मृदु मन्द ७ हाण ८ लम्बी हड्डी मूत्राजी या
पेरी की हड्डी ९ बेल मरबन्ध १० लकड़ी लठी
११ पानी १२ अक्षर योका १३ निजी जगह
१४ अन्त कर बुरा गणपय । कबल मरण के अन्त
म) मम० कार बाबा का निर्मला-लोचर ५ का
हाण-बह, -बटक काना परदा मि० ५६०, पा
ली की मार बाण का पराज - वृद्ध १ लक्ष्मीका
मैत्रि २ वैष्णवी स्त्री का पति ३ दलक पुत्र बीरस मे
मित्र कोई अन्य पुत्र ४ निरस्कार सूचक शब्द । अक्षर
कुल इति मम ५ अपने व्यवसाय की कलक लगाने
वाला कमीना नमनहरम् मद्रुवी० ३ में ललामन् ने
श्रामदस्य को काचपृष्ठ नाम से सम्बोधित किया है
(स्वकृत पृष्ठ का कृत्वा रो बै परकुल हजेत्, तेन वुरच
ननमाली काचपृष्ठ इति स्मृत) अथ किसी अण
या हड्डी का टूटना भावा चाखाल की बोला
- लक्ष्मि इत्य जोड़ जैसे कि पीछे की कलम
लगाना) - स्वच्छ मरुजीवी छोटा मैत्रिक ।

काचलम् (पु०) [काच + मनुष्य मय्य च] वन्यवर्गी ।

काचलीर [काच ईरन चनचारी (काँच बलसरी पर रह
शब्द काचपृष्ठ शब्द की तरह निरस्कार सूचक शब्द
के रूप में प्रयुक्त होता है गु० मद्रुवी० ३)

काच्योन् [काण्डो न - अण] नरकुल की बनी टोचनी दे०
कण्डोली ।

कात् (अव्य०) [कुत्तितम अवनि अनेन कु - अण + क्वाप
के कादेश] निरस्कार सूचक उद्गाता हाय क के
माथ कात्क अपमर्जिण काना निरस्कार करान
यमयैश्वर्यमनेन गुन सवसि कृत्कल भाग०

कात्, वि० [डिपन नरीन स्वकार्यमिच्छि मच्छति गु०
अथ को कादेश ताग०] १ कायर डरपोक हरी
न्याह बर्बरता च कानरान मय० ४४२ अमर
३ ३०, ७५ रघु० ११०४ मेघ० ७७ २ हारी,
शोकान्ति, अवधीत किम्व कातरासि स० ४

3 विष्णुज, चिस्मिल, उड्डिम—मत्तुं ११५० 4 वय के कारण कपने वाला (जैसे बाल का कटना) रू० २१५२, बमर ७९।

काव्यम् [कातर + व्यञ्] कायरा, कायय केबला नीति होय स्वापदवेष्टितम्—रू० १७५७।

काव्यायन [कात्य गोत्रापत्यम् कत + यञ् + कक] 1 एक प्रसिद्ध वैद्यकरण जिसने पाणिनि के सूत्र पर अनुसूक्त वार्तिक लिखे हैं 2 एक ऋषि जिसने श्रौतसूत्र व गृह्यसूत्र की रचना की है याज्ञ० ११४।

काव्यायनी [कात्यायन + औष] 1 एक प्रीक्षा या लघुद्विषया (जिसने लाल वस्त्र पहने हुए ही) 2 पार्वती। सम० बुध, —कुल काविकेय।

काव्यजिह्वक (वि०) (स्त्री) ली) [कवचिन् + ठक] किसी न किसी प्रकार (कठिनाइयों के साथ) सम्पन्न।

काविक [कवा + ठक्] कहानी सुनाने वाला कहानी-लेखक कहानीकार।

काव्यम् [कदम्ब + कण्] 1 कदम्ब, —रू० १३१५५ ऋतु० ४१९ 2 बाण जि० १८१२३ इस मन्त्रा 4 कदम्ब वृक्ष, —बन कदम्ब वृक्ष का फूल —रू० १३१७३।

काव्यम् [कादम्ब + ला + क लस्य र] कादम्ब के फूलों से लीची हुई मगध निषेध मधु माचवा सम्पन्न कादम्बर्य— जि० ४१६ टी 1 कदम्ब वृक्ष के फूलों से लीची हुई उगब 2 मगध—कादम्बरीमासिक प्रथम सोहृदयिष्यने—स० ९ या कादम्बरौमदविष्णुजितलाच नस्य युक्त हि काङ्गलभूत पतन पृथिव्याम् उद्भूत 3 मगधसे हाथी की समष्टियों से बहने वाला मर 4 मरुतनी की उगधि विद्याद्वी 5 मगध कोयल

काव्यिनी (स्त्री०) [कादम्ब + इनि + डीप] बादलों की रश्मि मदीयमतिभुविनी भवन् कापि काव्यिनी रू० मर्मि० ४१९।

काव्यजिह्वक (वि०) (स्त्री० ली) [कदायन् + ठका] सापेक्षिक आकस्मिक।

काव्येय [करो अत्यम् कद् + ठक] एक प्रकार का संग।

काव्यम् [कन + निच + ल्युट] 1 उद्भूत बाण रू० १७२७, १३१८ मध० १० ४० काव्यम्पान उद्भूतल की सुमि 2 वर मवान। सम० अग्नि जंगली बाण दावानल ओकल (१०) 1 उगलबानी 2 बन्दर।

काव्यिजिह्वक [कविजिह्वक + कण्] शब्द की मध्य भाग (कवि) जगती।

काव्यिजिह्वक, दो [कविजिह्वक + कण्प्रायें २४ इनक व] सबसे छोटी लड़की को भन्ना।

काव्यम् [कन्याया जान —कन्या + कण् कानीन प्रादेश] अविदाहिता स्त्री का पुत्र कानीन कन्यकाश्रिता

मातामहसुतो मत याज्ञ० २१२२, मनु० १११७२ में ही गई परिभाषा भी देखिए 2 आस 3 कर्ण।

काव्य (वि०) [कन् (म्) + कत] 1 दृष्ट, विष, बलीष्ट, अभिमतकाल क्तु बाधुष मासवि० १, ४

2 मुलकर, शक्तिकर—मौसमालीनृपगुणी रू० १११६

3 मनोहर सुन्दर—सर्व काव्यमायीय पद्यनि—स०

२, स 1 प्रमो 2 रति—काव्योदय सुहृदपुपल

सङ्गमात्किञ्चन—मेष० १०० जि० १०१३, २२

3 प्रमपात्र 4 चन्द्रमा 5 बसन्त ऋतु 6 एक प्रकार

काव्या 7 रत्न (मयाम में सुवर्ण चन्द्र और वयस् के

साथ, 8 कानिक्क की उपाधि सङ्ग केसर, आफ-

रान मय० आवस्यन् चन्द्रक अयम्कालः।

काव्या [कम् + कत + टण] 1 प्रसिका या काव्यमयी

स्त्री 2 गुरु स्वायिनी पत्नी कान्यामल्लस्य शयनीय-

शिरातल व उत्तर० ११२१ मेष० १० जि० १०

७३ 3 प्रियङ्गु मना 4 बली इलायची 5 पृथ्वी।

मम०—अर्द्धप्रदोषुष अगोष दूध दे० अयोध०

काव्यार, रू० [कान् + कण्] 1 विद्या विद्यावान

वृक्षल गृह न गृहणीनीन काव्यारादितिष्यने

—रू० १०१२ भर्त० १०६ याज्ञ० २१६८

2 काव्य मरु 3 मगध लिः 4 1 काव्य रम

काव्यार काव्य 2 पहाड़ा भावपूर्ण।

काव्यि (स्त्री०) [कम् + कित् + 1] मनोहरता सौन्दर्य

मेष० १० अकिलटर्कान रा० ५ १० 2 चमक

प्रमा दीर्घ मेष० ४ ३ आकिल मगध १०

५१११ ४ काव्यार इन्द्रा ५ भर्त० रा० म

प्रमादीन सौन्दर्य (मा० २० शाभा और दीर्घ से

काव्यि की इस प्रकार भिन्न अर्थों से काव्यीय

काव्यार भाषाक्षेत्र मगध मगध प्रका दीर्घ काव्य

मगधमगध काव्यि काव्यमगध काव्यार काव्यि

मगधमगध १०० ११३ 6 मनोहर १० काव्यीय

काव्यीय काव्यीय काव्यीय काव्यीय काव्यीय

काव्यीय काव्यीय काव्यीय काव्यीय काव्यीय

काव्यीय काव्यीय काव्यीय काव्यीय काव्यीय

काव्यीय काव्यीय काव्यीय काव्यीय काव्यीय

काव्यीय काव्यीय काव्यीय काव्यीय काव्यीय

काव्यीय काव्यीय काव्यीय काव्यीय काव्यीय

काव्यीय काव्यीय काव्यीय काव्यीय काव्यीय

काव्यीय काव्यीय काव्यीय काव्यीय काव्यीय

काव्यीय काव्यीय काव्यीय काव्यीय काव्यीय

काव्यीय काव्यीय काव्यीय काव्यीय काव्यीय

काव्यीय काव्यीय काव्यीय काव्यीय काव्यीय

काव्यीय काव्यीय काव्यीय काव्यीय काव्यीय

काव्यीय काव्यीय काव्यीय काव्यीय काव्यीय

काव्यीय काव्यीय काव्यीय काव्यीय काव्यीय

काव्यीय काव्यीय काव्यीय काव्यीय काव्यीय

काव्यीय काव्यीय काव्यीय काव्यीय काव्यीय

काव्यीय काव्यीय काव्यीय काव्यीय काव्यीय

काव्यीय काव्यीय काव्यीय काव्यीय काव्यीय

काव्यीय काव्यीय काव्यीय काव्यीय काव्यीय

काव्यीय काव्यीय काव्यीय काव्यीय काव्यीय

काव्यीय काव्यीय काव्यीय काव्यीय काव्यीय

काम्यपुष्पः [काम्य पुष्पा यत्र काम्यपुष्पः + अन् पुष्पः ।
 साधु] एक वेश का नाम है 'काम्यपुष्प' ।
 कापिक (वि०) (स्त्री० स्त्री) [कपट + ठक्] १ बाल-
 साज, बेईमान २ चुष्ट, कुटिल, झूठ, पापमूल, चाटु-
 कार, चिह्नमाला ।
 कापिकम् [कपट + ध्यञ्] चुष्टता, जालसाजी, धोखा-
 देही ।
 कापिक [कुम्भित पन्था] लताव सड़क (बा० और
 बाल०) ।
 कापाल, कापालिक [कपाल + अन्, ठक् वा] शैव सम्प्र-
 दाय के प्रसिद्ध विभिन्न सम्प्रदाय का अनुयायी
 (बामाचारी) जो मनुष्य की शोषणियों की माला
 धारण करते हैं और उन्हीं में जाने पीते हैं, पञ्च०
 ११०० ।
 कापालिन् (पु०) [कपाल + अन् + इति] शिव ।
 कापिक (वि०) (स्त्री० स्त्री) [कपि ठक्] बन्दर
 जैसी लक्षण मूल का वा बन्दर की याति व्यवहार
 करने वाला ।
 कापिक (वि०) (स्त्री० स्त्री) [कपि + अन्] १ कपि
 से सम्बन्ध रखने वाला या कपि का २ कपि द्वारा
 निर्मित या कपि से व्युत्पन्न अथवा कपि मूल द्वारा
 प्रसन्न शोषणियों का अनुयायी २ भूरा रंग ।
 कापुष्पः [कुम्भित पुष्प की बटाई] शीघ्र बुजित
 अग्नि, कारर नराधम पात्री - मुकुट कापुष्प
 स्वायत्ततापि मुष्पति पञ्च० ११०५, ३६१ ।
 कापेयः [कपि + ठक्] १ बन्दर की जाति का २ बन्दर
 जैसा व्यवहार करने वाले दाव पेश ।
 कापीन (वि०) (स्त्री० स्त्री) [कपीन + अन्] भूरे रंग
 का भूरा रंग का तम् १ कपूर का सम २ सम
 त भूरा रंग । सम० अक्षय्य प्रार्थी में अर्पण
 का सम ।
 कापि (अप०) आशय देकर बुद्धि का प्रयत्न शान
 शान अथवा ।
 कापि [कम्, कपि] काम्य इच्छा सम्पन्नकाम्य
 पञ्च० ११०० ३५७ (प्राय मनुष्य के काम
 प्रयत्न) मनुष्य का काम इच्छा पञ्च० ११००
 पञ्च० ११०० ३ अमोघ पदार्थ सर्वत्र काम्य सम
 पञ्च० मनुष्य ५५ ३ अमोघ अनुपम ४ प्रेम या
 विषय भाग की इच्छा जो शीघ्र के बार उद्देश्य
 (पुरुषार्थ) में से एक है ५ अर्थ और अर्थ काम
 ६ विषयों से शान की इच्छा काम्यता मनु० ११०१०
 ६ कामदेव प्रयत्न ६ बलवत् ७ एक प्रकार का
 भाग । मनु० १ विषय इच्छित पदार्थ २ शीघ्र बात
 (हिन्दु पौराणिकता के अनुसार काम ही कामदेव है
 बड़ी कृपा से विषयों का पुत्र है । उसकी पत्नी
 ३४

रति है, जिस समय देवताओं को सरक के विरह बृद्ध
 करने के निमित्त अपनी सेवासों के लिए सेवासि की
 आवश्यकता हुई तो उन्होंने कामदेव से कहा कि मेरी
 जिससे कि विष का ध्यान पारसी की ओर बाधित
 हो, वही एक बात की जो एकाग्रता का काम तमाम
 कर सकती थी । कामदेव ने इस बात का बीड़ा
 उठा लिया परन्तु विष ने अपनी तपस्या के विघ्न से
 कुछ हो अपने तृतीय नेत्र की शक्ति से काम को नष्ट
 कर दिया । उसके पश्चात् रति की प्रार्थना पर विष
 ने कामदेव को मनुष्य के रूप में रूप देने की अनुमति
 दे दी । उसका विभिन्न विष वस्तु मनुष्य और पुत्र
 विविध है, बहुमूर्तता से सुनिश्चित है—अनुरूपित
 ही उसके वस्तु की होती है—और चाँच विविध
 पोषी के फल ही उनके बाण हैं । सम—अग्नि १ प्रेम
 को बाण प्रथम प्रेम २ उत्कट इच्छा, कामोन्माद,
 मदीयम १ कामाग्नि को प्रवर्धित करना २ कोई
 कामोन्माद पदार्थ अक्षय्यः १ मनुष्य का मनुष्य
 २ पुत्र की अनुरोध विष अक्षय्यः बाण का वृक्ष,
 अक्षय्य प्रेम वा इच्छा का प्रवाह—अक्षय्य
 (वि०) प्रेम के बसीमूल, अक्षय्य—अक्षय्य
 अक्षय्य (वि०) प्रेम वा कामोन्माद के कारण बना,
 (क) 'कोप', अक्षय्य कपूरी, अक्षय्य (वि०)
 जब इच्छा हो तभी प्रेम का नाम । अक्षय्य
 (वि०) काम्य, कामाक्षय्य—अक्षय्य प्रेम का नाम
 मनुष्यता उद्धान, अक्षय्य विष की उपधि अक्षय्य
 (वि०) मनुष्य ११० विषी, कामाक्षय्य—अक्षय्य
 प्रयत्न अक्षय्य कामोन्माद वा काम का दमन
 प्रभाव, अक्षय्य १ जब चाहे तब प्रेम करना,
 इच्छाकर काम २ अनिश्चित मनुष्यमोह—अक्षय्य
 (वि०) प्रेम का रोषी काम देव के कारण मनुष्य
 कामाक्षय्य न मनुष्य न लक्ष्मी—अक्षय्य अक्षय्यः
 प्रयत्न के पुत्र अक्षय्य का विशेषण—अक्षय्य (वि०)
 विषय काम्य अक्षय्य—अक्षय्य अक्षय्य
 १ कामदेव का बाण २ अनुरोध (क) बाण का
 वृक्ष, अक्षय्य (पु०) १ निष्ठ २ वृद्ध, अक्षय्य (वि०)
 प्रेम का रोषी, कामाक्षय्य—अक्षय्य हि अक्षय्य-
 कामाक्षय्यमोहमेव मेव ५, अक्षय्य (वि०)
 प्रेम वा इच्छा के बसीमूल कामोन्माद कामाक्षय्य
 वृक्ष (वि०) अक्षय्य पदार्थ प्राप्त करने के लिए
 मनुष्य ईच्छा १ कुरंग का विशेषण २ परमात्मा
 अक्षय्य १ काम का ऐच्छिक तर्पण २ विष द्वारा
 विविध अक्षय्यियों को छोड़ कर विषय विषयों का
 जिस से ऐच्छिक तर्पण प्राप्त ११५ अक्षय्य (वि०)
 कामोन्माद के बसीमूल, वा प्रथम रोषी—अक्षय्य काम
 की पत्नी रति, अक्षय्य अक्षय्य (वि०) प्रेम वा

कामोन्माद के लक्षितों का अनुवाची, - कार (वि०) इच्छानुसार काम करने वाला, अपनी कामनाओं में कित्त रहने वाला (-र) 1 ऐच्छिक कार्य, स्वत स्पूर्त कार्य - मनु० ११४१, ४५ 2 इच्छा, इच्छा का प्रभाव - मनु० ५१११, - वृत्तः 1 वेश्या का प्रेमी 2 वेश्यावृत्ति, - वृत्त (वि०) 1 इच्छानुसार समय पर कार्य करने वाला, इच्छानुसार काम करने वाला 2 इच्छा की पूरी करने वाला, (पु०) परमात्मा - वैशि वि०) कामात्मक (कि०) 1 प्रेमी 2 सभोग - वीर 1 प्रेम की रंगोली, मुनारी जल 2 सभोग - न (वि०) इच्छानुसार जाने वाला इच्छानुसार जाने जाने या कार्य करने के योग्य (-ता) बसती गवा कामुक स्त्री - मातृ० ३१६, - गति (वि०) बड़ीष्ट स्थान पर जाने के योग्य - रघु० १३७६, - वृत्तः 1 प्रयोजनार्थ का वृत्त, स्नेह 2 सन्निधि, भगपूर मूलोपयोग 3 विषय, इन्द्रियों को आकृष्ट करने वाले पदार्थ, - वर - वार (वि०) बिना किसी प्रतिबन्ध के स्वतन्त्र रूप से चलने वाला, इच्छानुसार भ्रमण करने वाला - मनु० ११५०, - वार (वि०) अनियमित प्रतिबन्धरहित (-र) 1 अनियमित गति 2 स्वतन्त्र या स्वेच्छापूर्वक कार्य, स्वेच्छाचारिता - न कामचारोक्ति मङ्गलगीय - रघु० १५१२३ अपनी इच्छा या अभिलाषा, स्वतन्त्र इच्छा, कामचारानुशा विद्या० मनु०, २१२० 4 विद्यवास्तविक 5 स्वाध्याय, - वारिन् (वि०) 1 बिना किसी प्रतिबन्ध के चलने वाला - मेघ० ६३ 2 कामात्मक, विषयी 3 स्वेच्छाचारी (पु०) 1 महत् 2 चिहिया, व (वि०) इच्छा या कामोन्माद से उत्पन्न - मनु० ७१६६ ६७, ५० - विलि (वि०) कामोन्माद या प्रेम की जीतने वाला - रघु० ९३३, (पु०) 1 स्वयं की उपाधि 2 जिव, - तात्तः कायल, - इ (वि०) इच्छा पूरी करने वाला प्राप्तिना स्वीकार करने वाला, - वा - कामधनु, वहीन (वि०) मनोहर विद्या देने वाला वृत्त (वि०) अपनी इच्छाओं को होने वाला, बड़ीष्ट पदार्थों को देने वाला - प्रीता कामधुवा हि मा रघु० ११८० २१६३, मा० ३१११, - वृत्त वृत्त (स्त्री०) मन्त्र इच्छाओं को पूरा करने वाली काल्पनिक गाय भग० १०१८, - वृत्ती माया कोयल, देव प्रेम का देवता - वेनु (स्त्री०) मण्डित की गै, मन्त्र इच्छाओं को पूरा करने वाली स्वर्गीय गाय - वृत्तिन् (पु०) शिव की उपाधि, - वरिन्, - वली (स्त्री०) कामध्व की स्त्री रति, - वार बलराम, प्रवेष्टवन् भानी इच्छा, कामना या माया को अभिव्यक्त करना वरिन् कामप्रवेष्टने समर्थ, - वरन् अनियमित या मन्त्र प्रदान - वरन् काम के वृत्त की एक प्रति, - वीणा

(व व.) विषयोपयोग में वृत्ति, - वृत्तः वीणवृत्तिना की मनाया जाने वाला काव्यरस का रस - वृत्त - वीणवृत्ति (वि०) प्रेमप्रवाहित वा प्रेमाकृत्य - उत्तरः ११५, वरतः वीर्यपात, - रतिवृत्त (वि०) कामात्मक, कामार्त लक्षणावयुवा नामरतिक भर्तु० १११२, - वृत्त (वि०) 1 इच्छानुसार रूप धारण करने वाला, वानामि र्वा प्रकृतिपुरुष कामरूप मन्त्रो मेघ० ६ 2 सुन्दर, सुहावना (वाः) (ब० व०) बंगाल के पूर्व में स्थित एक जिला (आसाम का पश्चिमी भाग) - रघु० ३१८०, ८४, - देखा - देखा देखा, रंजी, वृत्ता पुरुष की जननेन्द्रिय, लिंग, - लीन (वि०) कामोन्माद, प्रेम का रोगी, - वर इच्छानुसार चला हुआ उपहार, वल्लभ 1 वल्लभ चतु 2 काम का वृत्त (वाः) उद्योत्पन्ना वीरिनी - वर (वि०) प्रेम मान (वाः) प्रेम के बन्धीभूत होना, वर (वि०) प्रेमात्मक वर (वि०) इच्छानुसार कुछ भी कहना, मनमाना कहना, विह्वल (वि०) इच्छाओं का हसन करने वाला वृत्त (वि०) विषय वानना में लिये, स्वेच्छाचारी व्यस्ततात्मक मनु० ५११५४ वृत्ति (वि०) इच्छानुसार काम करने वाला, स्वेच्छाचारी, स्वतन्त्र न कामवृत्तिबन्धनीयमिच्छते कृ० ५८८ (स्त्री०) ति 1 मन्त्र अनियमित कार्य 2 मन की स्वतन्त्रता वृत्ति (स्त्री०) कामेच्छा में वृद्धि, वृत्तम् भगवन्मयी का फूल, वर 1 प्रेम का वाण 2 काम का वृत्त, - वारवन् प्रेमप्रधान रतिव्याप, संयोग बड़ीष्ट पदार्थों की प्राप्ति लक्ष वल्लभ चतु, - वृ (वि०) इच्छा को पूरा करने वाला - रघु० ५११३, वृत्तम् वात्स्यायनमनुविकृत रतिव्याप, वृत्तम् (वि०) बिना वास्तविक कारण के केवल इच्छामात्र से उत्पन्न भग० १११८

कामत (अध्य०) [काम + तमिन्] 1 स्वेच्छा से, इच्छा-पूर्वक 2 अपनी इच्छा से, मानपूर्वक, इरादतन, जानबूझ कर मनु० ४११०, - पदार्थवृत्त व कामत यात्र० १११८३ प्रेमावेश में, वाचनायका, कामुक-ताका मनु० ३११३४ इच्छापूर्वक, स्वतन्त्रता से, बिना किसी नियन्त्रण के ।

कामव (वि०) [वय + जिह्व + वृत्त] कामात्मक, कामा-नुर, वृत्त वाट कामना, वा कामना, इच्छा । कामनीयम् कमनीयपर भाव अवृत्त] लोचन आकर्ष-कता ।

कामव्यभिच (पु०) [काम वयोष्ट, वयनि - काम] दया + जिनि, वयादेश मन्त्र व नि०] कमेग, लठेरा ।

कामव (अध्य०) [कम् + जिह्व + वृत्त] 1 कामना या इच्छा के अनुसार, इच्छानुसार, कामज्वली 2 महतीपूर्वक चाहना मुद्रा० ११०५ ३ मन भर कर उत्तर०

१।१६ ४ इच्छापूर्वक, प्रसन्नता के साथ—शा० ४।४
५ अच्छा बहुत अच्छा (स्वीकृतिबोधक अर्थय)
मेमा हा मरना है कि मनागनम्यावृत्ता वा काम
भाष्यन्तु य शमी शि० २।४६ ६ जान लिया वि
यह सब है कि निस्सन्देह प्राय इसके पश्चात् नु
तर्वापि का प्रयोग होता है) काम न निष्कर्षित मश
ननभयम्भी मा भुवि० ३ शरीरविषया न नु दुष्टिर्मया ४०
१।३१ २।१, २५० ३।१३ ६।५ १३।३५ मा०
१।३४ ७ बसक मयम्बु न सन मे म्बु ० ०।४०
कहुषा अस्मिन्ना वा विराय नतिन रन्ता है
८ अधिक अच्छा चाह प्रय न के माय) काममा
मन्गानिष्ठद गृह कन्तुमर्प्य न नैवेदा प्रयच्छेत्
गृहोनाय कर्तव्यम् - मनु० ३।१९

कामयमान (वि०) काम जिह्व गानय गृह मय
कामयमान, तद्वा कमानक कामक म्बु० ११।५
कामयित् ०० २।

कामल (वि०) कम जिह्व कलक कामयक कामक
१ बसल म्बु २ मयम्बु।

कामविका (कमल) १। २५५ इवम माहक गगन।

कामवत् (वि०) काम मय मय बयम् १ इच्छुक
बाहने वाला २ कामयक।

कामिन् (वि०) स्त्री ०। काम कानि १ कामयक
२ इच्छुक ३ प्रसी प्रर (पु०) १ प्रम करन वाला
कामक स्त्रिया को आर विषय ध्यान देने वाला)
मया चन्दबसा बानि म पीय १ कामयनमाय मा०
३ स्त्री कामिनी मदनदुर्निमदा म्बु १ विषय ४।११
मन ० माकवि० ३।१६ २ ग्राह का गुप्ताय
३ चक्रवा ४ बिहिया ५ शिव की उपाधि ६ बहमा
७ कद्वारा श्री १ प्रम करन वाली मनमयी स्त्री
स्त्री मनु० ८।११- २ मनोहर और सुन्दर स्त्री।
उदयनि ह मासक कामनीगण्डा १० म्बु ० १।०
कृपा नैवा कथय कविता कामिनी कौटुम्बिक प्रग १।
२२ १ सामाज्य स्त्री मृगया इहय ननुय कामिनी
म्बु० १।१९ मेघ ० १२ ६३ म्बु० १।५
४ श्रीह स्त्री ५ मारद मागव।

कामुक (वि०) (स्त्री०) काम, की। कम उक ३।
१ कामना करवा हुआ इच्छुक २ काम मय कामयु
क १ प्रसी कामयु कामुं कुमानवैवहा
हतव्या अभिद्रका मन्वि० १ म्बु० ११ २३ म्बु०
६।९ २ बिहिया ३ शरीरवृत्त का धन की
इच्छुक स्त्री (की) कामयु या कामयक स्त्री
कामिनी, कामिनी | कान्ता नदी विषय नया अद्वय
अव कथिका। म्बु कामिनी। बरम्बि० सामु
कथिला। म्बु नि० शीष । एक वृक्ष का नाम मा०
१।३१।

काम्यल [काम्येन आवृत काम्य+ल] जनी कपड़े
या कबल से ढकी हुई गद्दी।

काम्यविक [कम् + उक्] लय या मीपी के बने आमुवनी
का विकला लय या मीपी का व्यापारी।

काम्योक्त [काम्योक्त + अल, १ कबाज देन का निवासी
मनु० १०।४४ २ कबाज का राजा ३ पुत्रग वृक्ष
४ कबाज वृक्ष के बोझ की एक जाति।

काम्य (वि०) [कम् + जिह्व + य] कामनाय इच्छा के
उपयुक्त—मुखा विष्टा य काम्यजनय मा० २।८
२ शिष्टक किमा विषय दुर्दृष्टय से किया गया विप०
जिप। अल काम्य कर्मण - म्बु० १०।५० मनु०
५।२ १२।८ अल १/१२ ३ सुन्दर मनोहर
मयमय लवमय नाली न काम्य म्बु० ६
२० २०२० ५१० म्या कामना इच्छा इगवा,
प्रार्थना हाहाकाम्य-म्बु० ३ म्बु० १।३५ मनु०
१० १ मम ० अविषय म्यायीनीहून प्रयोजन
कमन म्बु०) किमा विषय उदयय नवा भावी
२५ क दुष्टि न किया गया धर्मानुष्ठान सिद्
१०४०) शेष के अनुकूल भाव्य हासक १ स्त्री
का कान बाय राहुर २ मनन इच्छा न दिया
२५ उपहार एच्छिक अर मयम्बु स्वच्छापूर्वक
मरन आभयगया इतल मेच्छक हन।

काम्य (वि०) १ कुहर मय - की कादेश १ कुह
व का कटा इवमय

काम्य बन् काम्येभिश्च काम्यादिकानां काय वि
बन् आर ककार १ गरीर विमर्षित काय का
जापगता परोपका न चन्दन मनु० २३।
कादन मममा वृद्धा मनु० ५।१ इसी प्रकार
कायन बाबा मनसा अदि २ वृक्ष का नना ३ बीजा
का शरीर (तागे को छाड़कर बीजा का बीजा)
४ मयमय मयमय मयमय ५ मयमय पुत्री ६ घर
आकाम मयमय ७ कुटुम्बि ८ नैमिक स्वभाव
यम (ताय के माय या बीजा के बिना) अनु
निय से जोड़ का हाथ का भाग विवेचक कला
अनुना (यह अनुलो प्रवर्णन के लिए पावन मानी
जाता है और प्रवर्णन तोष करता है—पु०
मनु० ५।११ य आठ प्रकार के विवाहों में स
१३८) मम० आत्म पय म्बु ० क्लेश गरीर
न कटन या वृक्षा विच्छिन्ना आयुर्वेद के आठ
विम वा मे मे तीसरा मयमय गरीर में व्याप्त रोगों
का चिकित्सा—काम्य गरीर की माय कलम
कथय, स्व १ मेच्छक जाति (काम्यमिता और
गुह माता की मयमय) २ इस जाति का पुरुष-काम्य
इति लब्धी भाषा—मुद्रा० १, मा० १।३३१ म्बु० १

(स्त्री० स्था) 1 कायस्थ जाति की स्त्री
2 आँखों का वृक्ष (स्त्री०-स्त्री) कायस्थ की पत्नी,
-रिक्त (वि०) शरीरगत, शारीरिक।

कायक (स्त्री०, -विका), कायिक (स्त्री० स्त्री) (वि०)
[काय + कुञ्, स्थिधा टाप्, ह्यप् काय + उक्
स्थिधा ङाप्] शरीर सम्बन्धी, शारीरिक, शरीर विष-
यक कार्यकलाप मनु० १२।८, -का स्थान (यन
के उपयोग के बदले में जो कुछ दिया जाय)। नम०
-बुद्धि (स्त्री०) घराहूर रखते हुए किसी पशु या
आणिम्य-सामग्री के उपयोग के बदले में पशु या शिया
या स्थान 2 एका ग्राह्य जिसकी अदायगी में
मूलधन पर कोई प्रभाव न पड़े घराहूर रखते हुए पशु
को उपयोग में लाना।

कार (वि०) (स्त्री०-स्त्री) [कृ + अण्, घञ् वा] (समय
के अन्त में बनाने वाला, करने वाला सम्पादन करने
वाला, कार्य करने वाला निर्माता, कर्ता, रचयिता
- अर्थकार = रचयिता, कुम्हार स्वयंकार ब्राह्म
-रः 1 हृत् कार्य जैसा कि 'अपभ्रंश' में 2 किसी
एक व्यक्ति या शब्द का उद्धृत करने वाला पर जो
विभिन्न बिन्दु से युक्त न हो जैसा कि अकार, -मनु०
२।७६ १२६, ककार, कूकार आदि 3 प्रथम, अच्छा
-श्लो० १२।७ 4 धर्मिक नर 5 पात्र स्वामी
मालिक 6 सकल 7 शक्ति, सम्पत्ति 8 कर्म या कृति
9 हिम का दण्ड 10 दिवालय यवन 1 सम० अक्षर
एक बिम्बित या नीचजाति का पुरुष जो निवादा पिता
व वैदेशी माना में उत्पन्न हुआ -मु० मनु० १०।१६
-कार (वि०) कार्य करने वाला, अभिकर्ता भू
वृत्तीयर।

कारक (वि०) (स्त्री० -रिका) [कृ + कृञ्] (प्रत्येक समाज
के अन्त में) 1 बनाने वाला अभिनय करने वाला,
करने वाला, सम्पादन करने वाला, करने वाला कर्ता
आदि-स्वयंकार -वाश० ३।११०, २।११२,
वर्षसकलकारकी मनु० १।४- मनु० ७।२४ पञ्च
५।३६ 2 अभिकर्ता -कम्प० 1।३१० में सत्ता और
क्रिया के मध्य रहने वाला संबंध (या सत्ता और उभय
संबद्ध अर्थ मान) इस प्रकार के कारक मिनो में प
छ हो जा 'नववर्षकार की छोटकर में विभक्ति'य
से संबद्ध १ कर्ता २ कर्म ३ कर्म ४ सम्पत्ति
५ अवादान और ६ अभिकर्म ७ व्यवहार का वह
भाग जो इनके व्यवहार को बनाना है अर्थात्
वाक्य रचना या कारक प्रकरण। मम० -दीपकम
(अल० शां० म) एक अलकार जिसमें एक ही
कारक उत्तरांतर अनेक क्रियाओं में मयक्त हो। उदा०
-निश्चयि कृणति वेत्ति निश्चयति निश्चयति विलोक-
यति तिष्ठति, अन्तर्नदति चमिन्नुमिच्छति नवपरिणया

वयु शयने काश्च० १०, हेतु क्रियात्मक वा क्रिया-
परक कारण (वि०) आपक हेतु।

कारणम् [कृ + णिच् + लृट्] 1 हेतु, तर्क - कारणकोषा
कुटुम्बस्थ -मालवि० १।१८, २५० १।७६, भग० १।२,
२१ 2 आधार, प्रयोजन, उद्देश्य -कि पुन काश्चम्-
महा० भा० २।२०३ मनु० ८।३४७, कारणमानुषी
मुमु० २५० १६।२३ 3 उपकरण, साधन वाह्य०
२।२० ६१ 4 (त्या० २० में) वह तारक जो निश्चित
कार्य में किसी तत्त्व का प्रवर्तन कारण हो, या मिल के
समान्यतया पूर्ववर्ती कारण या इनका समुह जिन पर
कार्य निरन्तर चल रहा, बिना किसी लाक्षणिक कौशल
करता है, नियंत्रण के समान्यतया इसका तीन भेद
हैं (१) समशक्ति (समिष्ट और अमिश्रित) जैसा
कि इन्हें का कारण नानु धामे (अ) समशक्ति
(२) न ता शक्ति ही न अमिश्रित) जैसा कि कार्य
के लिए तन्मयता का समान्यतया निमित्त (उपकरण-
त्मक), जैसा कि कार्य के लिए तन्मयता की तन्मयता
5 अन्तःप्रकार कारण सृष्टिकर्ता, पिता-कु० ७।८१
6 तन्त्र तन्त्र साधको-पञ्च० ३।१४८ भग० १८।१३
7 किसी नाटक या काव्य का मूल या कथावस्तु आदि
8 इन्द्रिय 9 शरीर 10 बिम्ब, स्तम्भ १ प्रमाण या
अर्थकारण मनु० १२।११ 11 वा० २।१४ काट
मा या ज्ञाना निर्धार करती हैं। मम० उत्तरम्
विशेष तर्क प्रमाण के कारण का सूचना (स्वाकार
न करन) कारण का साक्षात्कार मान भना परन्तु
आत्मनिष्ठ (वि०) तन्त्र को अस्वीकृत का ईश, -कार-
णम परात्मिक या प्राथमिक कारण अणु मूल कारण
का गुण, -सूत (वि०) 1 जो कारण बना हो 2
कारण बनने वाला -बाला एक अलकार कारणों की
शृंखला प्रयोजन के लक्ष्य पूर्ववर्त्यस्थ हेतुता, तदा
कारणमात्रा स्थान-काश्च० १० -उदा० भग० २।१२,
६३ मा० २० ३०८ बाह्य (पु०) अभिमान, शक्ति
आदि (पु०) सृष्टि के आधार में उत्पन्न मूल
जड़ बिहोत (वि०) बिना कारण के, -शरीरम्
(कश्च० २०) शरीर का आन्तरिक बीजोत्पत्ति, मूल
मूल या कारणों को कारणता।

कारण [कृ + णिच् + लृट्] 1 पीड़ा, वेदना
2 तर्क में दालना।

कारणिक (वि०) [कारण + उक्] १ शरीरक, निर्माणक
2 कारण परक, निर्माणक।

कारणक [कृ + णिच् + लृट्, ईप् + लृट्] कारणक त
वर्ति शक्ति एक प्रकार की दलाल -मनु
वर्ष विहाय नीचमिनी कारणक. सेवते -विष्णु०
२।२३।

कारणमिन् (पु०) [कर एव कार, तं वमति, कार + मन्]

+ इति पूर्वो० । १ कसेरा २ कनित्र विद्या का मानन
पाठा ।

कारक [का इति रचो यस्य ब० त०] कौवा ।

कारस्वर [कार करोति—कार + कृ + ट, मुट्] किराच
पुल ।

कारा [कीर्तिते क्षिप्यते दण्डाहो यस्याम् कृ + अङ्ग युग्
वीथे नि०] १ कारावान, बन्दीकरण २ जेम्खाना,
बन्दीगृह ३ बीया का गर्दन के नाचे का भाग ४ बीडा, कण्ड ५ हुली ६ सोने का काम करने वाली
स्त्री । सम० अवारण्,—गृहम्—वेधम् बन्दीघर
जेम्खाना कारागृहे निबिडवासनेन मनुष्यवशेषाभिन
माप्रमत्तः १ तथ० ६।४० शा० ६।१० अर्थ० ३।५१
—मूल बन्दी कैदी, सख बन्दीगृह का रखवाला
कारागार का बन्दीखान ।

कारि (स्त्री०) [कृ + इप्] कार्यं कर्म (पृ०—उजो०)
कुलाकार क्षिपकार ।

कारिका [कृ + कृ + टाप्, इत्यम्] १ नरकी
२ अथवाय, रक्षा ३ व्याकरण, दर्शन तथा विज्ञान से
सम्बद्ध काव्य, वा पद्य लघु—उवा०, (ध्या० पर)
मनुस्मृति की कारिका तात्पर्यकारिका ४ एन्चला
वातना ५ व्याज ।

कारीक [करीच + अन्] कुल मोहर की करतियों का
ढेर ।

कार (वि०) (स्त्री० क) [कृ + अन्] १ निर्माता,
कर्ता, ब्रह्मकर्ता, नीकर २ कारीगर क्षिपकार,
कुलाकार—कारण कारिण तेन कृत्रिम स्वप्नहेतवे
—विद्वान्० १।१३ इति स्मृता कारुणेण मन्विन
नलस्य च इक्ष्म्य च लक्ष्मीजने त्रै० १।१८, पात्र०
२।२४९, १।१८० मनु० ५।१२८, १०।१२ ये ये
हैं—तथा च लक्ष्म्याय च मापिता रजकम्पना पञ्चम-
श्चर्यकारश्च कारव क्षिपिना मता ।)—कः देवता
के शिल्पी शिल्पकर्मा २ कला, विज्ञान । सम०
—वीटः लोच भारवे बाणा, डाकुः कः १ क्षिप्य ते
वनी कोई बन्तु, क्षिप्यकर्म द्वारा निमित्त वस्तु २ युवा
हाथी वा हाथी का बच्चा ३ पहाड़ी, बनी ४ फन,
झाल ।

कारणिक (वि०) (स्त्री०—की) [कटना + ठक्] दवायु,
हवायु, मदय—माणा० १।१ ।

कारण्य [कटना + धाञ्] दया कृपा रहस्य कारण्य-
मान्यते मोन० १ इतिव्य बाधव्यापदम् भावि०
१।१ ।

कारण्यम् [कटना + धाञ्] १ कारण्यम् २
२ दुष्टता ३ दुष्ट न करने वाला ४ कारण्यम् ५
५।१५ ६ कारण्यम् ७—११ कारण्यम् १२
लक्षण्यम् १३

कारण्यीय [कृ + अन्] कृत्रवीय का पुत्र हेतुय दग
का राजा त्रिमकी राजधानी माहिष्मती नगर वा
(पूजा के फलस्वरूप उमने दत्तात्रय ने कहा कर प्राप्ति
किये जैसे कि हजार भूजाये स्वर्णमय रथ का
दुष्प्रधानमार जहाँ जाये वा मकान वा, म्याय द्वारा
अतिष्ट निवारण का अतिष्ठ दिवसय श्रद्धा द्वारा
अपराधों से मुक्ति (मु० तृ० ६।१०१) वायुपुराण के
अनुसार धर्म म्या-याय पूर्वमे उमने ५४०० वर्ष तक
रज्य किया ५४००० यज्ञ किए, वह गवध
का समकालीन था उमने गवध का अपनी नगरी का
एक बाने में पशु की नीति बन्दीखाने में डाल दिया
मु० तृ० ६।६० कारण्यीय का परमुरास में भार
हाना क्योंकि वह परमुरास का पुत्र्य पिता जमदग्नि
की कपधने की उडा कर म गया था । कारण्यीय
की सहचार्यनी की कहते हैं ।

कारण्यम् [कृ + अन्] कृत्रा म लक्ष्मण्यम्-
मातुरास्वर सि० १।१० देवेन—का० ८२ ।

कारण्यिक [कृ + ठक्] कृत्रवीय का प्रथमकला—कारा-
निकी नाम भुक्ता भूष ब्रह्मण—दृष्ट० १३० ।

कार्तिक (वि०) (स्त्री० की) [कृ + अन्] कार्तिक
मास में लक्ष्म रहने वाला—रघु० १९।१९—क
१ वह महीना जब कि दुरा चक्रवा कृत्तिका नक्षत्र
के निकट रहता है (अक्षय्य-नक्षत्रा महीना) २ लक्ष्य
का विशेषण, (की) कार्तिक मास की पुजिमा ।

कार्तिकेय [कृत्तिका + अन्] कृत्तिका (क्योंकि
उसका पालन-पोषण कृत्तिका द्वारा हुआ था)
भारतीय पौराणिकता के अनुसार कार्तिकेय बृद्ध का
देवता है जिस जी का पुत्र है (परन्तु उसके जन्म में
बिभी स्त्री का प्रत्यक्ष हस्तक्षेप नहीं है) उसके जन्म
के समय में बहुत मो परिमिश्रितियों का उत्पन्न निकला
है । जिस न अपना बीज क्षिप्य में डेका (जो कि
बहुतरा के रूप में जिस के पास नहीं जब कि वह
पातली के साथ सहजता का मुक्तिकाल कर रहे थे)
जिसे इसे बहुतरा न करने के कारण तथा में डेक
दिया (इसीलिए स्कन्द को क्षिप्य का बन्तुत्व की
कहते हैं) । उसके पंचम्य वह कृत्तिकाको (जब
वह तथा में स्नान करने में) में लक्ष्य कर दिया
गया । कलस्वरूप वह सब वर्षको हुई और प्रत्येक
में एक-एक पुत्र की जन्म दिया परन्तु बाद में इन कृ
पुत्रों को सबे रहस्यवश रूप से जीवित एक कर
दिया गया इस प्रकार वह कृत्तिका, कारण्य तथा
कारण्य आदि नामों अवाधारण कर का पश्चिम बना
उमने ५४००० यज्ञ दत्तात्रय पदान्तर का पंचम्य करने
के द्वारा ५४००० यज्ञ दत्तात्रय पदान्तर ने जिस के
५४००० यज्ञ दत्तात्रय पदान्तर ने जिस के

बनभय या मरजन्मा कहते हैं। कहते हैं कि उसने बीच पहाड़ को बिहीन कर दिया इसीलिए वह बीच-बारण कहलाता है। एक मल्लिकार्जुन राजस तारक के बिच्छू युद्ध में बहू बैवतामो की सेना का सेनापति था—जिसने उसने राजसों को परास्त करके तारक को मार डाला, इसीलिए उसका नाम सेनापति और तारकजित्तु है, उसका चिह्न मयूराक्षी के रूप में किया जाता है। सम०—प्रसू (स्त्री०) पार्वती, कानिकेय की माता।

कालस्यम् [काल्म + ध्यञ्] पूर्णता, सम्पत्ता, सम्बाधन—ताम्रबोधन कालस्यम् द्विजाध्यायी पङ्क्तिपावनान्—मनु० ३।१८३।

कार्य (वि०) (स्त्री०—की) [कर्म + अण्] कीचड़ में भरा हुआ, मिट्टी में बना हुआ या घासे में लपकप।

कार्यट [कर्मट + अण्] 1 आवेदक, अभियोजक, अग्रणी 2 बिचरा 3 साया।

कार्यटिक [कर्मट + टक्] 1 तीर्थयात्री 2 तीर्थों के जना को लेकर अपनी आजीविका कमाने वाला 3 तीर्थ-यात्रियों का दल 4 अनुभवही नुबध 5 पिछलग्ग।

कालेयम् [कृपण + ध्यञ्] 1 गरीबी, दरिद्रता, गरीबी-अवस्थाकाप्या 2 दया, रद्दम 3 कबूती, बुद्धिहीन्य—मनु० २।३ 4 लपुता, हुल्कापन।

कार्पास (वि०) (स्त्री०—की) [कर्पास + अण्] कई हा बना हुआ,—सः—सन् कई की बनी हुई कोई वस्तु—मनु० ३।१३२६, १०।६४ 2 कागज,—सी कई का पोथा, बाड़ी। सम० अस्मि (नप०) कपास का बीज बिनीला,—वासिका तनुआ,—सौत्रिक (वि०) कई के बूत से बना हुआ—याज्ञ० २।१७९।

कार्पासिक (वि०) (स्त्री०—की) [कर्पास + टक्] कपास का या कई से बना हुआ।

कार्पासिका, कार्पासी [कर्पासी + कन् - टाप् ह्रस्व, कर्पास + ङीप्] कई या कपास का पोथा, बाड़ी।

कार्ष्ण (वि०) (स्त्री०—की) [कर्मन् + अण्] 1 काम का पूरा करने वाला 2 कार्य को पूर्ण रूप में अभीष्टानि करने वाला,—अण् बाहु, अभिचार निबिलनयना कर्षणे कार्यप्रज्ञा—वाग्मि० : ७९, बिच्छपाक० : २।६, ८।२।

कार्ष्णिक (वि०) (स्त्री०—की) [कर्मन् + टक्] 1 द्रव्यनिमित्त, हाथ से बना हुआ 2 बालुट्टी में फूल, मीन धातों में अल्पमिश्रित 3 रंगविराग या बेलबूटेदार वस्त्र।

कार्ष्णिक (वि०) (स्त्री०—की) [कर्मन् + उक्] काम करने योग्य अभीष्टानि और पूर्णतः काम करने वाला—अण्। प्रमूय स्वयं बाधिम्यकार्ष्णिके घा० १।६ 2 वीम।

कार्ष्ण (स० कृ०) [कृ + ध्यञ्] जो किया जाना चाहिए,

बनना चाहिए, सम्पन्न होना चाहिए, कार्यस्थित किया जाना चाहिए आदि, कार्यां सैकलीनहसमिचना जोतो-वहा माश्विनी घा० ६।१६, साक्षिण कार्ष्ण—मनु० ८।१६, इसी प्रकार वृष्ट, विचार आदि,—अण्। काम, मामला, बात कार्य त्वमान प्रतिपन्नकल्पम्

कु० २।१६, मनु० ५।१५० 2 कर्तव्य मि० २।१ 3 पेशा, जोखम का काम, आकरिमक कार्य 4 धार्मिककृत्य या अनुष्ठान 5 प्रयोजन, उद्देश्य अभिप्राय—मि० २।१६, मि० ६।५९ 6 कमी भाव व्यक्तता, प्रयोजन, मनभय (करण० के साथ) कि कार्य मकतो हुनेन दियतास्नेहस्वहस्नेह मे विक्षमः—

नृपतः कार्य भवर्षिबराणां पञ्च० १।५१ अथ ७१ 7 सन्धान विज्ञान 8 कानूनी अभिप्राय, व्यावहारिक मामला संपन्न आदि बर्हिमन्त्राध्य आदरा क क कार्यार्थिन पञ्च० ५, धनु० २।३३ ५ कर्म, किसी कारण का अनिवार्य परिणाम (विप० कारण)

10 [त्यज० में] कदाचित् विभक्तिकार्य—कर्मनिर्माण 11 नाटक का उपसंहार कादीयभेषमाशो ननुधर्मा रचयन् मुद्रा० ६।३ 12 स्वाध्य (भाष०) 13 मूलः सम०—अज्ञम (वि०) अपना कार्य करने में असमर्थ अज्ञम-अकार्यविचार किसी वस्तु के जीवित्य

में सबब रखने वाली वस्तु, किसी कार्यप्रणाली के अनुष्ठान या प्रतिकूल विचारविमर्श—अस्मि 1 किसी कार्य या विषय का अधोलक 2 वह ग्रह या नक्षत्र जो ग्रहोन्मि म किसी घटना का निर्णायक होता है,—अर्चः किसी उन्नतधर्मिपूर्ण कार्य का उद्देश्य, प्रयोजन मनु० ७।१६७ 2 मेखानियुक्ति के लिए आवेदनपत्र

3 उद्देश्य या प्रयोजन, अस्मिन् (वि०) 1 धार्यना करने वाला 2 अपना उद्देश्य या प्रयोजन सिद्ध करने वाला 3 सेवा नियुक्ति की मांग करने वाला 4 इत्यादय में अपने पक्ष का समर्थन करना, धावालय में जाने वाला पृष्ठ० ९, आत्मनम् किसी कार्य की मण्डल करने के लिए बैठन का स्थान, पट्टी, ईश्वरन् मरकटो काशी की देवमाल धनु० ७।१४१,—उद्धारः कर्तव्य की पूरा करना कष्ट (वि०) अक्षुब्ध, मूल कार्य,—कारणे (इ० व०) कारण और कार्य, उद्देश्य और प्रयोजन, भाव कारण और कार्य का

समय—काल, काम करने का समय, गोसम, उपयुक्त समय या अवसर—गौरवन् किसी कार्य की महत्ता, चित्तक (वि०) 1 दूरदर्शी, व्यापार, मतक, (कः) किसी व्यवसाय का प्रवर्धकनी, कार्यकारी अधिकारी याज्ञ० २।१७९ क्षुत्त (वि०) कार्यार्थिन, बेकार, किसी पद में उपाधन—अस्मिन् 1 किसी कार्य का निरोक्षण करना 2 मार्गजमिक मामलों की पूरागाह

—निर्णयः किसी बात का फैसला—पृष्ठः 1 निरर्थक

मनस्य वा शब्दस्य सम्पन्न होना चाहिए, कार्यस्थित किया जाना चाहिए आदि, कार्यां सैकलीनहसमिचना जोतो-वहा माश्विनी घा० ६।१६, साक्षिण कार्ष्ण—मनु० ८।१६, इसी प्रकार वृष्ट, विचार आदि,—अण्। काम, मामला, बात कार्य त्वमान प्रतिपन्नकल्पम्

कु० २।१६, मनु० ५।१५० 2 कर्तव्य मि० २।१ 3 पेशा, जोखम का काम, आकरिमक कार्य 4 धार्मिककृत्य या अनुष्ठान 5 प्रयोजन, उद्देश्य अभिप्राय—मि० २।१६, मि० ६।५९ 6 कमी भाव व्यक्तता, प्रयोजन, मनभय (करण० के साथ) कि कार्य मकतो हुनेन दियतास्नेहस्वहस्नेह मे विक्षमः—

नृपतः कार्य भवर्षिबराणां पञ्च० १।५१ अथ ७१ 7 सन्धान विज्ञान 8 कानूनी अभिप्राय, व्यावहारिक मामला संपन्न आदि बर्हिमन्त्राध्य आदरा क क कार्यार्थिन पञ्च० ५, धनु० २।३३ ५ कर्म, किसी कारण का अनिवार्य परिणाम (विप० कारण)

10 [त्यज० में] कदाचित् विभक्तिकार्य—कर्मनिर्माण 11 नाटक का उपसंहार कादीयभेषमाशो ननुधर्मा रचयन् मुद्रा० ६।३ 12 स्वाध्य (भाष०) 13 मूलः सम०—अज्ञम (वि०) अपना कार्य करने में असमर्थ अज्ञम-अकार्यविचार किसी वस्तु के जीवित्य

में सबब रखने वाली वस्तु, किसी कार्यप्रणाली के अनुष्ठान या प्रतिकूल विचारविमर्श—अस्मि 1 किसी कार्य या विषय का अधोलक 2 वह ग्रह या नक्षत्र जो ग्रहोन्मि म किसी घटना का निर्णायक होता है,—अर्चः किसी उन्नतधर्मिपूर्ण कार्य का उद्देश्य, प्रयोजन मनु० ७।१६७ 2 मेखानियुक्ति के लिए आवेदनपत्र 3 उद्देश्य या प्रयोजन, अस्मिन् (वि०) 1 धार्यना करने वाला 2 अपना उद्देश्य या प्रयोजन सिद्ध करने वाला 3 सेवा नियुक्ति की मांग करने वाला 4 इत्यादय में अपने पक्ष का समर्थन करना, धावालय में जाने वाला पृष्ठ० ९, आत्मनम् किसी कार्य की मण्डल करने के लिए बैठन का स्थान, पट्टी, ईश्वरन् मरकटो काशी की देवमाल धनु० ७।१४१,—उद्धारः कर्तव्य की पूरा करना कष्ट (वि०) अक्षुब्ध, मूल कार्य,—कारणे (इ० व०) कारण और कार्य, उद्देश्य और प्रयोजन, भाव कारण और कार्य का समय—काल, काम करने का समय, गोसम, उपयुक्त समय या अवसर—गौरवन् किसी कार्य की महत्ता, चित्तक (वि०) 1 दूरदर्शी, व्यापार, मतक, (कः) किसी व्यवसाय का प्रवर्धकनी, कार्यकारी अधिकारी याज्ञ० २।१७९ क्षुत्त (वि०) कार्यार्थिन, बेकार, किसी पद में उपाधन—अस्मिन् 1 किसी कार्य का निरोक्षण करना 2 मार्गजमिक मामलों की पूरागाह

—निर्णयः किसी बात का फैसला—पृष्ठः 1 निरर्थक

काम करने वाला आदमी 2 पावल, मनकी विभिन
3 आलसी व्यक्ति, - श्रेष्ठः काम करने में अक्षि,
आलस्य, मूर्खी, - श्रेष्ठः अधिकारी, भूत, - वस्तु (नं०)
लक्ष्य और उद्देश्य, - विभितः (स्त्री०) अमफलता,
प्रतिकूलता, दुर्भाग्य, - लक्ष्यः 1 बका हुआ कार्य-मनु०
३१२३ 2 कार्य की पूर्ति 3 किसी कार्य का अर्थ,
- सिद्धि (स्त्री०) सफलता, - स्वानम् काम करने का
जगह, कार्यलय, - हतु 1 दूसरे के कार्य में बाधा डालने
वाला, - हि० १३३ 2 दूसरे के हितों का विरोधी ।
- कार्यत (अव्य०) [कार्य 1 तमिल] 1 किसी उद्देश्य
या प्रयोजन के कारण 2 फलतः, अनिवार्य ।

कार्ययुक्त [कृत्य 1 न] 1 फलदायक, दुर्बलता दुर्बलपण
मेव० २९ 2 छोटापन अल्पता, कमो-रघु०
५१२१

कार्य [कृति - ण] विराजत खेतीद्वय ।

कार्याणि, यम् (या पलक) [कार्य अण कार्य आ
गण 1 कर्त्तु = श्रापण, कार्यय अणण वं गं ।
विश्वि विश्व मूल्य का भिक्का या बट्टा-मनु० ८१२३
९१२८८, (- कार्य) यम् वन ।

कार्याणि (वि०) (स्त्री०) की [कार्यण - णिङ्]
एक कार्याण के मूल्य का ।

कार्यिक = कार्याणि ।

कार्य [वि०] (स्त्री०) धर्मी [कृत्य - अण] 1 कृत्य
या कृत्य में सम्बन्ध रखने वाला, - रघु० १५२४
2 व्यास से सम्बन्ध रखने वाला 3 काले हरिण के
सम्बन्ध रखने वाला - मनु० २१४१ 4 काला ।

कार्यान्वित (वि०) (स्त्री०) - जो [कृत्यान्व - ण]
काले कोहरे से बना हुआ, - मन् लोहा ।

कार्यिक [कृत्यस्य अवरयम् कृत्य + टा] कामदेव की
उपाधि - सि० ११११

कार्य (वि०) (स्त्री०) लक्ष्य [कृ ईषन् कृत्यन्व नाति
का + क. को कादेण] 1 काला, काले या काले-
नीले रंग का 2 समय विनिश्चितकाल काल निताय
त मनोरथी रघु० १३१, तस्मिन् काले- उस समय
काव्यशास्त्रविनोदने कालो गच्छन्ति श्रीमयम् हि०
१११, बुद्धिमान् अपना समय वितर्कते हैं 3 उपयुक्त या
समुचित समय किसी कार्य को करने के लिये उचित
समय या अवसर (मव०, अवि०) मध्य० तथा अनु-
मान के साथ) रघु० ३१२२, ३१९, १०२९ पर्यन्त
कालवर्षी - भृक्ष० १०, ६० 4 काल का अंश या
अवधि (दिन के घंटे या घण्टे) करने काले दिवस्य
विषयः २१ मनु० ५१२३ ३ कृत्य 6 वेदा-
धिकारी के द्वारा ली दृष्टि से वे वे 'काल' भाषक एक दृश्य
7 परमात्मा जो कि विश्व का सत्कारक है, सत्कारि
वत् सत्कारक नियम का सत्कारक है, काल काला

सुवनफलके कीर्ति प्राणिधारी - मनु० ३३९
8 मय्य का देवता पयः - क कालस्य नर्तकशालागणः

पयः ११२६९ भाग्य, नियम 10 नील की
पुतली का काला भाग 11 कोपल 12 शनिग्रह 13 शिव
14 काल की माप (संगीत और छन्द शास्त्र में)
15 कालम्, गराइ लीचने तथा बेचने वाला 16 अनुभाग,
खण्ड, - मन् लोहा 2 एक प्रकार का सुगन्धित
द्रव्य । मव० अलक्षिक साधार, पदा विष्वा, - अमृद
एक प्रकार का चन्दन का वृक्ष, काला अगर - भावि०
१३०, रघु० ६१२ (अप०) उस वृक्ष की लकड़ी
अमृद० १५५, १५५ - अमि, - अमृद मृष्टि के अन्य
में प्रयोज्य - अण (वि०) काले नीले शरीर वाला,
। शरीर के काली मोती धारवाली तपस्वी - अविभक्त
काले हरिण की भाव, - अमृदमन् एक प्रकार का अमृद
या - मूर्धा कु० ३१२०, ८२ - अमृद कोपल, - अतिरेक
समय की प्राति दिवस, - अमृद 1 दिवस 2 समय
का बीतना 3 काल के बीन जाने के कारण प्राति,
- अमृदः 1 समय का प्रकाशक मूर्ध ही उपाधि
2 परमात्मा, - अनुभाविन् (पु०) 1 मध्यमस्त्री 2 विविधा
3 कालक पक्षी अमृदः समय की माप का देवता
माना जाता है सर्वेश्वरक, - अमृदः 1 अमृदः
2 समय की अवधि 3 दूसरा समय या अवसर, 'अमृद
(वि०) काल के सम्य में किया हुआ, 'मन् (वि०)
विश्व का सहज करने के योग्य - अकालजमा देखा
शरीरावस्था का० ८२, ४० ४ विष्वा बृह की
गोत्र केवल कोपित किए जाने पर ही अमृदीना अमृदु,
- अमृदः काला अमृद में भरा हुआ बादल, - अमृदम्
लोहा - अमृदः नियम किया हुआ समय, अमृदः
(स्त्री०) शोक मनना, मृतक, पातक या जन्म-मरण
में पैदा होने वाला अमृद दे० अमृदः, अमृदम्
लोहा, उधन (वि०) कृत्य जाने पर बंधा हुआ,
- अमृदम् नीलकमल - अमृदः - कालः शिव की उपाधि

कालः 1 मोर 2 विविधा 3 शिव की उपाधि
- उत्तर० ९, - कालम्, समय का नियत करना
- कालिक, कर्णी दुर्भाग्य, मूर्खता - कर्ण्य (२०)
मय्य, कालः कालाहल - कालः यम् कृतः द्रव्य
(क) हलाहल विष (क) गराइ मय्य में प्रयत्न तथा
प्रेम द्वारा पिया गया अमृदः शोकाति हर किल
कालकाम् बीर० ५०, कृत्य (पु०) 1 मूर्ध 2 मोर
3 परमात्मा, - कालः समय का बीतना समय का
अनुक्रम कालक्रमण समय रात्रि परत के अन्तर
या अन्तर में कु० ११२९ कृत्य 1 मय्य नियत
कालता 2 मय्य लोका 3 विषय समय की प्राति
मेव० ८२, काले कालाधि मा हून् पयः १ 2
मय्य विनयता अमृदमन् - अमृदम् कृत्य, विनय,

अंशवसुमानदी वसिष्ठ एकवचन अक्षम् । समय
 का अक्ष (समय सर्वत्र प्रभुते हुए) पोट एवं अक्ष म
 वसिष्ठ किया जाना है । २ अक्ष ३ (अक्ष १, २, ३) ।
 सपत्ति का अक्ष, अक्षन की वारंवारिधियां चिह्न
 मृत्यु के निकट जाने का समय, बोधित (वि०) ५५
 वृत्तों के द्वारा दुकाया हुआ अक्ष (वि०) १५० का
 के अक्षत समय या अवसर को जानने ताया अक्ष
 अक्ष हि नारीयामाख्यां मनोवचन ५५ १-२३
 शि० २१७ अक्ष १ वारंवारिधियों २ मूर्ता अक्ष नीन
 काक्ष, अक्ष, वसिष्ठ और वसमान अक्ष ५१० ५६

— कर्म मृत्यु कर्म, कर्मन् (पु०) १ किसी विशेष समय के लिए उपयुक्त आचरण रेखा २ निदिष्ट काल, मृत्यु न पुनर्जीवित कश्चित्कालकर्ममुपासन मन्त्रा, परितो कालकर्मणा—आदि —आरम्भ समय

बुद्धि, - निम्नोक्त माध्य या नियति का समावेश भाग्य निर्णय कि० १।१२ निम्नोक्त समय का निर्धारण करना, काष्ठविज्ञान, - मेखि १ समय बड़ का

जाता है। सत्रों में बहुत देर तक काम में हाथ न डालता। मनु०/१९३३ में किसी लम्बे समय का अथवा होना लघुता (वि०) उपयुक्त सामर्थ्य से सारे कालों की अप्रत्याशित कृति का जो जाति सार का काम होता है, मुख्य, मुख्यकर्म। समय में मनुष्य की क्षमता - एक विशाल नरक का नाम। मात्र ०.०००००० मनु० कर्मण्य नमः। मनु० की ओर प्रत्यक्ष (वि०) मनु० श्रेष्ठ नमः। हर क्षण की न्यायिता हरक्षण समय को ही विचारण। मनु० उत्तर ४ - क्षमिता (स्वा०) विचारण - मनु० १९३३३।

कालकम् [काल + क + क्] यङ् प्रत्ययः कः प्रत्ययः प्रत्ययः
2 गन्तिना गति 3 आद्य का गन्तिना काला भागः ।

[illegible]

कालक्षेपम् । कलशि इह, गच्छ भयता । मन्त्रन क दाता
जा कलक्षी म उत्पन्न होता है) ।

काव्या [काव्य अथवा टाप्] दुर्गा की प्रार्थना ।

कलाप- [काली मृत्यु आप्यने परमात-काल आप्य + कलाप]
 1 सिर के श 2 सार - कण 3 राक्षस पिपास
 भूत 4 कलाप व्याकरण का विद्यार्थी 5 कलाप
 व्याकरण का बोला ।

कलात्मक [कलाप + कृत्] 1 'कलाप के विद्यार्थियों का समूह' 2 कलाप की शिक्षा या उसके सिद्धान्त।

कालिका (वि०) (स्त्री०-की) [काल एक] 1 वास
 लक्ष्मी 2 कालायन किशोर कालिकोत्तरवा अमर०
 3 नीलमय केन्दु कुल, माययिक—क 1 सारम 2 बमला
 का 1 कालायन, काला रग 2 धूरी, स्वाही
 काली मयी 3 कई किस्मों में दिया जाने वाला मूल्य
 4 निश्चित समय पर दिया जाने वाला मासयिक व्याज
 5 बारलों का समूह, बनहार घटा जिसके बारसने का
 दर हो—कालिकेय निबिडा बलाकिनी रघु० ११/११
 6 होने में मिलाया जाने वाला छोट 7 यक्ष्ण जिगर
 8 कौरी 9 लक्ष्मी 10 मदिरा 11 दुर्गा,—कय काले
 चन्दन की लकड़ी ।

कालिङ्ग (वि०) (स्त्री०—की) [कलिङ्ग + अङ्ग] कलिङ्ग देश
में उत्पन्न वा उस देश का, + कः कलिङ्ग देश का राजा
—अतिबहादुर कालिङ्गसमर्थीरजसाधन रघु० ३।४०
2 कलिङ्ग देश का लीप 3 श्वाही 4 एक प्रकार की
ककड़ी का (ब० ब०) कलिङ्ग देश द० बलिङ्ग
— अणु तन्त्रज ।

कालिन्ध (वि०) (रत्नी० जी) [कालिन्ध + अण् + कर्त्तिन् + ट
पहल बा यमुना नदी से प्राप्त या लब्ध कालिन्धा
पुकिनेन् केमिकुपितान् — बेर्नी० ११२, रघु० १५१२]

सा० ४।११। उभ० कर्त्तव्यः—वेद्यः समराय का
विशेषण, -सुः (स्त्री०) सुख की पत्नी राजा, - सोवरः
मृत्यु का वेत्ता यव ।

कालिका (पु०) [काल + इति + क] कालिका—अथ ८८
वि० ४, ५३ ।

कालिका [के जले बालीयते -- क + ज + ली + क] कालिका
विशालकाय सर्प जो कि बमना नदी की तली में रहता
था । यह रत्नान सोवरी ज्यो के नाप के कारण सोवरी
के सम सदृश के लिए निर्दिष्ट था । कृष्ण ने जब कि
अभी वह बालक ही था उन सोप को भुक्षण दिया
रघु० ६।४९ । मन्० काला कर्त्तव्य कृष्ण के
विशेषण ।

काली [काल + वीच्] 1 कालिका 2 मसी काली मसी
3 पावती की 4 शिव की पत्नी 4 काले बाइली
की पत्ति 5 काले रंग की स्त्री 6 व्याप की माता
सायबती 7 रात, -तमस मैत्रा ।

कालीक [के जले बलति पयोऽपि क + कल् + इकन्
पूर्व० स्त्री०] एक प्रकार का बाला, कीट्य पत्नी ।

कालीन (वि०) [काल + क] 1 किसी विशिष्ट समय में
सम्बन्ध रखने वाला 2 अनु के अनुकूल ।

कालीयम्, कम् [काल + क क् वा] एक प्रकार की चन्दन
की लकड़ी ।

कालुष्यम् [कल् + यञ] 1 अशुभता, मन्त्री मन्त्रा
पन, पक्षिणा (नाम० से भी) -कालुष्यमुपार्ति वृद्धि
का० १०३ मन्त्री या मलिन हो जाती है
2 बलवान् 3 अपहर्षति ।

कालेष (वि०) [कलि + उक्] कलि-युग में सम्बन्ध रखने
वाला, मन् 1 विगार 2 कालो चन्दन की लकड़ी
कु० ३।९ 3 कैलर, आकराम ।

कालेष (पु०) 1 कुला 2 चन्दन की भाति ।

कालेषिक (वि०) (स्त्री० की) [कल्पा + ठक्] 1 केवल
विचार की, वाणी-काल्पनी 2 व्यापारि-2 सोटा
बनावटी (किसी बाला से) ।

काल्य (वि०) [काल् + यत्] 1 समय पर, अनु के अनुकूल
विचार, सुहावना सुन, स्वः की फटना प्रभावकाल
होना ।

काल्याणकम् [कल्याण + कम्] नायक्य, सुन ।

काल्यिक (वि०) (स्त्री० की) [काल्य + ठक्] विरह
वस्तर लम्बी कवचधारी -कम् कवचधारी व्यक्तिवा
का समूह ।

कालुकः [कुलतो वृक इव, वा ईनत् वृक इव, की काये] ।
1 मृदा 2 ककराक पत्नी ।

कालेय [कम्प्य पूर्वग इव, वा ईनत् वेरम् अङ्ग मन्त्र अतो-
तिर्यगवात्] केयर, आकराम ।

कावेरी [कं जलमेव वेर मरीरमस्या क + वेर + कम् +
३५

वीच्] कलिचवारत में बहने वाली एक नदी—कावेरी
सिरीता रघु० अक्षुणीवाधिकाकोत् रघु० ४।४
2 [कुलित वेर मरीरमस्या] वेरमा, रेदी ।

काव्य (वि०) [कवि + क्] 1 कवि या कवि के गुः
के द्वारा 2 मन्त्राव्याख्याक वा वैयम्बरी, वेरमा-मान
छन्दोबद्ध, -कः रत्नार्थों के दूर भुक्तार्थ, मन्
1 प्रज्ञा 2 लक्ष्मी, -कम् 1 कविता, महाकाव्य, -मेषदुन
नाम काव्य 2 काव्य, कविता कवितामयी रचना
(काव्य सास्य के रचयिताओं ने काव्य की निश्चि
परिभाषा दी है—मन्त्रोक्तो लब्धार्थो मनुष्याचननम् ।
पुन क्वापि काव्य १ काव्य रसात्मक काव्य-
—ना० व० १, रमणीयार्थप्रतिपादक लब्ध काव्य-
रम०, मरीर तावदित्याव्यवहित्वा पदावन्
—काव्या० १।१० दे० चन्द्रा० १।३ जी 3 प्र
मना काव्य 4 वृद्धिमान् अन्न वेरमा । मन्
—अर्थः कवितामन्त्रोक्ति चिन्तन वा विचार, और
दुसरे कवि के विचारों का चोर, काव्य चोर, -वश्य
हैना इव मन्त्रनाय काव्याचरोरा प्रपुनीमन्त्र-
विष्म० १।११—चोर दुसरे व्यक्ति की कवि
ताओं की चुराने वाला, -मीमांसक लक्ष्मिशास्त्री
विशेषक, -रत्निक (वि०) जो काव्य के लोभने का
सहाय नके या काव्यम रचना हो, -विष्म एक अन्
कार, इसकी परिभाषा—काव्यलिङ्ग हेतोर्वचिपदावन्
—काव्य० १० उदा०—चितोऽपि मन्त्र कन्दर्प मन्त्रि
नेऽपि चितोचन -- चन्द्रा० ५।१११ ।

काज् [म्भा०, दिवा० जा०—काज्—स्य—ते, काजित्]
1 चमकना, उज्ज्वल वा ५.५५ दिवाई देना—रघु०
१०।८६, ७।२४, कु० १।१५, वृद्धि० २।२५, नि०
९।७४ 2 प्रकट होना दिवाई देना, मेषमिमं न
दित प्रविष्टो वा कर्कशेरे महा० 3 प्रकट होना,
जो भाति दिवाई देना, निम्, (वेर०) 1 निकाल
देना, निर्वीक्षण करना, ठेस देना, बलावर्तन करना
दे० निम् पूर्वक कम्—1 लोचना 2 प्रकाशित करना
3 वृद्धि के मायने प्रस्तुत करना, मन्—चमकना
उज्ज्वल दिवाई देना 2 दिवाई देना, प्रकट होना
एवु सर्वेषु मेषेषु मृदाया न प्रकाशते—कठ०
3 की भाति दिवाई देना वा प्रकट होना (वेर०)
1 दिवान् प्रकाशित करना, भाषिकारकरना, उद्वा
दित करना, क्लेश करना -कलसरोजमन्त्रान् प्रकाश-
यितुम्—मन् १ सा० का० ५९ 2 प्रकाश में लाना
५ गीत करना, उद्घोषणा करना -कवाचित्कुलि
मिन् सर्वेषोप प्रकाशयत्—वाच० २० 3 वृद्धि
करवाना प्रकाशित करना (पुस्तक भादि)—अनीत
न तु प्रकाशित उमर० ४ ४ रोक्नी करना,
(दीपक) अजाना बला प्रकाशयत्के कुलसं लोक

विनं रविः—यय० ११११, ५११६, प्रसि—, 1. की
उरु प्रकट होता 2. विरोध या विषमतास्वरूप यम-
कना, वि—, 1. खिलना, बूझना (पुनः की मानि)
2. बचकना, कम्—, की माति विचार देना ।

काकः—कम् [काक् + कम्] ऊत में या बटाहमें के बनाने
के लिए प्रयुक्त होने वाला एक प्रकार का बांस
—हनु० १११ २, —कम् 'काक नामक बांस का
बूझ—कु० ७१११, रघु० ४११७, हनु० ११२८, —क
= काकः ।

काकि (पु० व० व०) [काक् + इक्] एक देश का नाम ।

काकिः—की (स्त्री०) [काक् + इन्, काक् + कम् + कीप्]
बना के किनारे स्थित एक प्रसिद्ध नगरी, वर्तमान
बारानसी, रात पावन नदियों में से एक—दे०
कापी । सम०—व द्विष की उपाधि, —राज एक
राजा का नाम, बंदा, बंकिा कीर बंदासिका के
पिता ।

काकि (वि०) (स्त्री०—की) (प्रायः कथक के मत में)
[काक् + इन्, स्त्रियां कीप्] दीप्तिमान, किसी का रूप
धारण करने हुए दिखाई देने वाला या प्रकट होने
वाला, उदा० चित्कायिन्— जो काकि के विजेता
की भांति व्यवहार करता है—दे० ।

काकी—दे० काकि । सम०—काकः सिद्ध की उपाधि,
—कथा बारानसी की तीर्थयात्री ।

काकरी [काक् + कविप्, र, कीप्, पु०० मत्वम्] एक
पीला चित्त कीर बहुधा बांकारी के नाम से पुकारते
हैं,—काकरीः कृतायामुत्पन्नत्वम् की पथिकपटीके
—मा० ११७ ।

काकरी (वि०) (स्त्री—री) [काकरी + कम्] काकरी
में अरण्य, काकरी का या काकरी से बाने वाला,
—रघु (व० व०) एक देश और उसके निवासियों
का नाम —दे० काकरी भी, —रघु 1. केसर, बाकरान
—काकरीरमन्त्रमुक्तमभिज्ञाङ्गरागम्—बीर० ८,
मनु० १, ४८, काकरीरौरवमुक्तमभिज्ञाङ्गरागम्
—बीर० ११, १ नी 2 वृक्ष की जड़ । सम० जम्,
—कम् (मपु०) केसर, बाकरान—मायि० ११७१,
वि० १११५१ ।

काकम् [कृतिरुत्तम् ययं यस्मात् व० स०] गहिरा । सम०
—कम् मांछ ।

काकम् [कवय + कम्] 1. एक प्रसिद्ध पक्षि का नाम
2 कवय । सम०—कवयः 1 गहड़ की उपाधि
2 कवय का नाम ।

काकयिः [कवय + इक्] यक्ष और अरुण का
विशेषण ।

काकरी [काकय + कीप्] पुच्छी, — ताम्रि इवमान मान
काकयि वास्तव्ययि च विवेक—भासि० ११६८ ।

काक् [कक् + कम्] 1. रगड़ना, कुरचना—यविष् विट-
पिता स्कन्धकावे स वृम—वेनी० २११८ 2. बिसले
कोई वस्तु रगड़ी जाय (जैसे कि वृम का तना)
सीताविष्पुत्रकारणा कपोलकाव—कि० ५१२६, दे०
'कपोलकाव' ।

काकाय (वि०) (स्त्री०—की) [काक् + कम्] काल,
वेसए रम में रना हुआ—काकायवसनायका—अमर०,
—कम् तान कपडा या वस्त्र इसे काकाये गृहीते
मालवि० ५, रघु० १५१७७ ।

काकम् [काक् + कम्] 1 लकड़ी का टुकड़ा, विशेषकर
हवन की लकड़ी मनु० ४१४९, २४१, ५१६०
2 लकड़ी, बाहरी लकड़ी का नट्टा या टुकड़ा यथा
काष्ठ व काष्ठ व समेयाता महोदधी—हि० ४१६९
मनु० ४१६० 3 लकड़ी बाह्य० २१२१८ 4 लम्बाई
मापने का उपकरण । सम०—अनार—अनारम्
लकड़ी का बर या घेरा, —अम्बुवाहिनी—लकड़ी का
डोम, —कदली बंगली केला, —कीड वृक्ष, एक छोटा
कीडा जो सूखी लकड़ी में पाया जाता है, —कुट्ट
—कुट्ट कुट्टवर्द्ध, —कटोडवा—पञ० ११३१२,
(जंगल में पाया जाने वाला वस्तु), —कुवाकः लकड़ी
की बनी एक कुहाल ज। किसी में से पानी उलीकने
या उसकी तली को क्षुरचने और माफ करने के काम
वाली है, लम् (पु०) —लम्बक वर्द्ध, लम्बु घघरीर
में पाया जाने वाला छोटा कीडा, —बाकः दिवार या
देवदार का वृक्ष, —हु पलाय (डाक) का वृक्ष,
—कुलिष्ठा कठपुतली, काव की बनी प्रतिमा,
—मारिक, लकड़हारा, —मडी (स्त्री०) बिना,
कम्ब, बर्षी, लकड़ी का पीलटा जिस पर घूर्ण को
रन कर ले जाते हैं, —लेखक लकड़ी में पाया जाने
वाला छोटा कीडा, काष्ठकट्ट, —लोहिम् (पु०) लोहा
जडा हुआ सोटा, बाढ, इम् लकड़ी की बनी
दीवार ।

काष्ठकम् [काष्ठ + कम्] अमर की लकड़ी ।

काष्ठका [काक् + कम् + टाप्] 1 समार का कोई भाग या प्रवेश
विमा प्रवेश—कि० ३१५५ 2. सीमा, हृद रम्य
विशालप्रदम्पनविना परा हि काष्ठ तपस्व—कु०
५१२८ 3 अस्मिन् सीमा, अरम सीमा, आधिक्य
काष्ठतन्मेन्नरमान्निद्रम्, कु० ३१३५ 4 बुद्धदीप
का नैदान नैदान 5 चित्त, निर्दिष्ट चित्त
6 अन्तरात् में बाधन और बाध का मार्ग 7 काल
की माप —के कला ।

काष्ठिक [काष्ठ + इन्] लकड़हारा ।

काष्ठिका [काष्ठिक + टाप्] लकड़ी का छोटा टुकड़ा ।

काष्ठिला (स्त्री०) [कुलिष्ठा हित् वा अष्टीलेख, को
कादेश] केले का पेड़ ।

कम् (आ० वा०—कात्ते, काकित) 1. बकना, बे०
काच् 2. काँचना, किसी रोग की प्रकट करने वाली
बाधाव्य करना।

काच्-का [काच्+कच्] 1. काँची, चुकाव 2. छीक
बाना, बच०—कुच्छ (वि०) काँची के पीकित,—कच्,
—कच् (वि०) काँची दूर करने वाला, कच्
निकालने वाला।

कात्तर (स्त्री०—री) [के जले बाधरति—क+वा+वृ
+कच्] बीजा।

कात्तर, कम् [काच्+कात्तर, कम् कम्कम् बाधारी वच
व० व०] बेल्ल, तालाव, छरीवर—कादि० १।४३,
वर्तु० १।१२, वीत० २।

कावु (वु) (स्त्री०) [काच्+क] 1. एक प्रकार का
माला 2. अस्पष्ट भाषण 3. प्रकाश, प्रभा 4. रोग
5. भक्ति।

कानुति (स्त्री०) [कानुति कावति को कावेन]
पनईपी, कृष्ण बार्ब।

कावुच (वि०) [कानुति कृष्ण वच व० व०] 1. कुच्छ,
मूलीया हुआ 2. छरासी 3. अत्यधिक, प्रसन्न
विभाव,—का 1. विल्ला 2. बर्बा 3. कीरा 4. साधन्य
अग्नि,—कम् अस्पष्ट भाषण,—कम् बड़ा डोल (सैकिक),
—की (स्त्री०) ठकन स्त्री

किम्बु (वि०) [किम्+कम्बु, कम्ब वः] निर्बल, तुच्छ,
नग्न।

किम्बाट [किम्+बु+अम्ब] 1. कम्बल की शाल का
अवधान, बाध का दूत, कम्बलक 2. वनका,
3. दीर।

किम्बुः [किम्बु बृहः सुकावयवविशेष इव—] हाक का
वेध जिसके बृह बड़े सुन्दर परानु निर्माण होते हैं
(विधाहीन न कोमले निर्वाहा इव किम्बुका—बाच० ७,
वर्तु० १।२०, रघु० १।३१,—कम् हाक का दूत, टेम्ब,—कि
किम्बुकी सुकम्बलकविनिर्णय इवम्—वर्तु० १।२१।

किम्बुकः [किम्बु कि० बाच्:] हाक का दूत, रे०
किम्बुक।

किम्बु [कच्+इन्+पु० इत्यम्] 1. मारियल का वेध
2. नीलकण्ठ पत्नी 3. बातक, पपीहा (इस पत्नी को
किम्बु, किम्बिनि, नीर किम्बिनि भी कहते हैं)।

किम्बुनी, किम्बुनिका, किम्बुनी, किम्बुनीका [किम्बु
कम्बि कम्+इन्+कीन्, पु० माच्,—किम्बुनी
कम्+टाप्, ह्रस्ववच] बृहदार आनुपम, कम्बनी
—वचकनकाकिम्बुनी वचकवापितस्वनी उत्तर०
५।५, ५।१, वि० १।७४, कु० ७।४९।

किम्बुरः [किम्+क+क] 1. बोझा 2. कोयल 3. मधु-
मक्की, 4. कामदेव 5. बाल रत्न,—रम्ब मज्जुन,
—रा कम्बुर।

किम्बुरतः [किम्बुर+कम्+कम्] 1. ठोठा 2. कोयल,
3. कामदेव 4. बालक वृक्ष।

किम्बल, —किम्बलक [किम्बु बल वच व० व०, किम्बु
बलम् कम्बाराति—किम्+बल+क] कम्बल का दूत
वा दूत वा कोई दूसरा पीसा—आकर्षित् पचकिम्ब-
कम्बलान्—उत्तर० १।२, रघु० १।५१२।

किम्बि [किम्+इन्+किम्ब] सूकर।

किम्बि [किम्बि+वा+क] 1. बु, नीक 2. अटमल।

किम्बु, किम्बु [किम्+कम्, स्वार्थे कम् व] बाध वा
बीट, बिछा, बाध, वीक—कम्ब०।

किम्बल [किम्+बल+कम्] 1. ठोठे का बाध 2. जोड़े
का जंग वा मुर्चा।

किम्ब [कम्+अम्+पु० इत्यम्] 1. जगाव, बट्टा, चकता,
बाध का चिह्न,—आस्थिति किम्बुपुत्रो ने रक्षति बीर्वा-
किम्बाट इति—व० १।१३, मृच्छ० २।११, रघु० १।५।
८४, १।८।५७, वीत० १ 2. चर्मकील, शिख वा मल्ला
3. वृक्ष।

किम्बम् [कम्+कम्ब, इत्यम्] पाप,—कम्,—कम्बु बहिरा
के निर्माण में कमीर उठाने वाला बीज, वा बीजवि
कम्—८।३२९।

किम् (आ० पर०—कैरति) 1. बाधना 2. दण्ड
3. (किम्बलति) स्वल्प करना, चिकित्सा करना।

किम्ब (स्त्री०—बी) [कि+कम्—किम्+वा+क]
1. चूर्त, मूला, कपटी—बर्बाति किम्बिम्ब उपद्रवम्
—मालवि० ४, अमर १७ ४१, मेघ० १।१ 2. कपूरे
का पीसा 3. एक प्रकार का कम्बलम्।

किम्बिन् (पु०) [किम्बुलिता बीर्वाडिरत्यम्—किम्बी
+इन्] बीका।

किम्बर=वे० किम् के नीचे।

किम् (अव्य०) [कु+किम् वा०] 'बुराई', 'हाथ' 'दोष'
'कर्म' और निम्बा के भाव को प्रकट करने के लिए
यह समस्त अक्षर के आदि में केवल 'कु' के स्थान में
प्रयुक्त होता है उदा०—किम्बा बुरा मित्र, किम्बर
—बुरा या बहुत पुण्य आदि, नीचे के समस्त पदों
को देखो। सम०—हाल बुरा सुमान वा नीकर,
—बर बुरा या बहुत पुण्य, पुरापोस्त पुण्य जिसका
तिर बोझ का हा तथा बोझ सरीर प्रत्यक्ष का—अयो
दाहरण बाह्योर्मायामास किम्बरान्—रघु० ४।७८—कु०
१।८ ईश ईश्वर कुबेर का विशेषण (स्त्री०—री)
1. किम्बरी मेघ० ५९ 2. एक प्रकार की बोधा,
—पुच्छ मूला के योग्य नीच पुच्छ, किम्बर—कु० १।
१४, ईश्वर कुबेर का विशेषण—अम्ब बुरा स्वामी
वा राजा शिताम व मज्जुतेत किम्बु,—कि० १।५,
—राजम् (वि०) बुरे राजा वाला (पु०) बुरा राजा,
—कवि (पु०) (कद्, ए० व०,—किम्बल) बुरा

—निमित्त (वि०) किन कारण वा हेतु को रखने वाला, किस प्रयोजन वाला, —निमित्तम् (अब्ज०)
 कर्षी, किस किए, —नृ (अब्ज०) १ क्या—किन्नु मे
 कर्षण सेवो परिश्रमाग्न वनस्व वा - नमः १०१०
 २. बीर की अधिक, बीर को कम—अपि वीरौक्यग्राह्यस्य
 हेतोः किन्नु महीकृते वनः १११५ ३ क्या, निम्न-
 न्येह—किन्नु मे राज्येनाथं, —नृ ज्ञान् (अब्ज०) १ किस
 प्रकार में, लम्बवत्, जैसे है कि क्या निम्नव्येह,
 क्या, लघुवत् किन्नु कम वीराध्याकरम् इष्टजन
 विगृह्यतेऽपि वन्यदुर्काभिनोऽस्मि शः ५ २ तेमा
 न हो कि—किन्नु कम क्या वयमस्यामेवमियमप्य
 स्मात् प्रनि स्यात् शः १ क्या, —वचान् (वि०)
 कञ्जम्, कृपण वराकम् (वि०) किस धर्मिण या
 स्फुटि से युक्त कुम्भ (अब्ज०) किनमा और कर्षिष
 वा किसवा और कय स्वय रापितेष लघुवत्पदान
 न्येह कि पुनः कृषकवत्पदेषु—का ० १०१ पदः ३
 १७, विकम् ३ प्रकारम् (अब्ज०) किस प्रकार न
 अवाच्य (वि०) किस शक्ति से सम्पन्न, कम
 (वि०) किस प्रकार का वा किस स्वभाव का, कम
 (वि०) किस मयन का, किस कर का, कर्षित,
 ली (स्त्री०) वनभूति, अकृषाह मयमप्यन्तान्
 कयवा किबरन्ती उत्तरः ११४२, उत्तरः ११४,
 —वराकम्: कर्षितजरी, कर्षीला, का (अब्ज०) १
 प्रलयाचक अथवा कि वा लघुलतेत्यस्य यागुगस्या
 का ० ७ २ या (किन्नु—(क्या) का लहलहन्की)
 —राक्षसि सुप्ता कि वा कायसि पदः १, तन्कि
 वाग्यामि कि वा विष प्रवन्धापि कि वा पशुधमेन
 व्यापारधामि नः, ११४४० ३, —विष (वि०)
 क्या जानने वाला, व्यापार (वि०) किस कार्य का
 करने वाला, बील (वि०) किस आराम का, स्थित्
 (अब्ज०) क्या, किस तरह अहे ११४४ इति पवन
 किमिदित्यन्वयीमि - मेघः ११।

किन्नु (वि०) [कि परिमाणस्य किन्नु व क्वि
 कि बाधेन] (कन्०, ए० व० पु०) कियान्, स्त्री०
 —किन्नात्, वप० किन्नु १ किनना बहा, किननी
 दूर, किनना, किनने, किनने विल्ला का किन गुधो
 का (प्रलयाचकना का एक रखने वाला) —किवा-
 म्काकस्तवैवस्थितस्य सजान पदः ५, नै० १११३०,
 क्वं कृतावाता किन्नु कियती वाति न दयात्— वा०
 ११२५, आत्मनि कियदुभयो न रजनि—का० १११३,
 कियदवस्थित रजन्वा—का० ४ २ किस किननी
 का कर्षणी किन्ना अर्ध का नदी, निम्ना—रावेति
 किन्नी वाया—पदः ११४०, वात् किन्तोऽरव,
 वेवी० ५१९ ३ कुष्ठ, बोझा या, बोझी लम्बा, कम्ब
 (अधिरिक्त कम रखने वाला)—निजहृति विकल्पः

वतिन कम्ब कियान्—वर्ग० २१७८ त्वदभिसरत्पर-
 लेन वलन्ती वमति पदामि कियमि वलन्ती वीर०
 ९। तम० एतिका प्रयास लजिजामीन वैदवकत
 वेष्टा, —कात् (अब्ज०) १ किननी देर २ कुष्ठ
 बोझा लम्ब, —किरन् (अब्ज०) किननी देर लम्ब—किन्-
 प्चिर आत्मनि वीरि कु० ५१५०—दूरम् (अब्ज०)
 १ किननी दूर, किननी दूरी पर किनने फाड़ने पर
 कियदुदू स श्लाघय पदः १ नै० १११३०
 २ बोझी देर के लिए दगा भी दूर।

किर [कृ + कृ] पूज्य।

किरक [कृ + कृ] १ निरक २ [किर + कृ] सूजर

किरण [कृ + कृ] १ प्रकाश का किरण सूक्ष्म, कम्बवा
 या किनो शीघ्रपान् गति की। किरण रश्मिकर-
 न्महिम्न—का० ५४ एका हि दामा नृपमजिवाते
 निमज्जतीन्दो किरणेष्विवाह कु० ११३, वा०
 ५१५ ए० ५१७४, सि० ५१५४ मय १ कमकवार
 उम्भन २ रश्मिकः। मय० वारिष्म (वृ) सुवे।
 किरान् [किर पयन्भूमिम् अस्मि वक्ष्यमीति किरात्]
 एक रश्मि पलाही वाति या शिकार करने वाली
 वीरिका कयामी है, पहाड़ी—वैवाक्यकिरातावत्कम्-
 भवा क यान् मयमा इति मटलककर्मिकक-
 र्नामिककद्वन्द्वकार न म् ११ मुमा० कु० ११९, १५,
 रत्न० २११२ बहुषी, अरणी ३ बोझा ४ लाईह,
 अथवापान ५ किरान्तेवकारी किर, —ता (व० व०)
 एक रेश का नाम, —कम्—आकिन् (वृ०) बन्द की
 उपाधि।

किरासी [किरात् + कीप्] १ किरान् वाति की स्त्री, २ चंवर
 दुलाम वाली स्त्री—रन् ० १९५७ ३ कुट्टिनी, कुली
 ४ किरात के वेष में लम्बी ५ लम्बी।

किरि [कृ + इ] १ सूजर, बगल २ कारन।

किरीट, कर्ण [कृ + कीटन्] सूकट, ताज, मुद्रा, किरी-
 वेष्टम्—किरीटबद्धाञ्जनस्य कु० ७१२२ २ आतारी।
 मय० वारिन् (वृ०) रावरी। वारिन् (वृ०)
 वर्जन का विसर्जन।

किरीटिन् (वि०) [किरीट + इति] ताज या मुकुट पहनने
 वाला,—मय० १११७, ४६ पदः ३—(वृ०)
 अर्जुन—मय० १११५ महा० में इस नामकरण की
 व्याख्या इस प्रकार है—पुरा कर्षण म बद्ध दृष्टतो
 दलचपरे, किरीट मृज्जि इति तेनाहुवा
 कि 'दलम्'।

किरीर (वि०) [कृ + ईरन्, मुट्] विर्गविच रव का,
 पिलकवार, पितृभार,—१ १ एक राक्षस किरीर
 वीर ने मारा था—वेवी० ९२ ललन या लहुरी
 रव। लय०—किन्नु—किन्नुन,—कृपण वीर के
 विशेषण।

किल [किन् + क] छोटा, तुच्छ, खेलखेल में हो जाने वाला । सम०—किचिन्, रेबी-मिकन के बखर पर भुवारी उतेजन, खन, हास, रोस बाधि माव ।

किल (कम् +) [किन् + क] निषेध ही, बेसक, निस्सबेह, अवश्य—अर्हति किल कितव उपद्रवम् —मालवि० ४, इद किलाव्यावमनोहर वपु श० ११८ २ जैसा कि लोग कहते हैं, जैसा कि बतलाया जाता है (बिबरन या परपरा दर्शन वाला) बम्ब बोयी किल कान्तीर्य—रघु० ६१३८, अथान कम किल बासुदेव—महा० ३ लठमूठ का कार्य, प्रमह मिह किल ना बकव रघु० २१२७ कि० १११२ ४ आधा, प्रत्याशा, मभावना पाचं किल बिजेधने कुकन् गण० ५ असतोष, अवधि, -एव किल केचिद्वन्ति - गण० ६ दूना—ख किल योत्सले—गण० ७ कारण, हेतु—(अत्यंत घिरल)—स किन्तुमस्तधान्—गण० 'क्याकि उसने ऐसा कहा' ।

किलकिल, ला [किन् + क, प्रकारे दीप्ताया वा हिलम् पक्षे टाप्] किलकारी, ह्वं और प्रसन्नतामूक चील ।

किलकिलावले (ना० वा० वा०) किलकारी धारणा कोना हक करना—मट्टि० ७११०२ ।

किचिन् [किन् + चन् + इ] १ बटाई २ हरी लकड़ो का पतला तल्ला, फलक ।

किचिन् (पु०) [किन् + चिन्, किन् + चिन्] बोझ ।

किचिन् [किन् + टिचन्, बुद्धि] १ पाप, मनु० ६१२३, १०११८, मन० ३११३, ६१४५ २ बुद्धि, अपराध, क्षति, दोष—मनु० ८१२३५ ३ राग, बीमारी ।

किलस्य—बन् [किचिन् प्रलिन—किन् + सन् + कयन् वा०, पु० वा०] पल्लव, कर्णल, मंजूर, मंजुआ—दे० किलस्य ।

किछोरः [किन् + च् + खोरन्] १ बछेरा, बन्ध पक्ष-साधक, किसी जानवर का बच्चा केसरकिछोर जा० २ तक्ष, बालक, १५ वर्ष से कम आयु का, अवयस्क (विधि में) ३ सुयं, री एक नवयवती, तवणी ।

किचिन्, च्छः [कि कि च्छाति कि + कि + वा + क, पूर्वस्य चिन् मन्थो, मुद, च्छन्, --किचिन्] वपु । एक देख का नाम २ उस प्रदेश में स्थित एक पहाड़ का नाम—ध, --छा एक नगरी, किचिन्वा की राजधानी ।

किन्नु (वि०) [कै + कु नि० साधु] बुद्ध, निम्ब, दूरा, --कुः (पु० स्त्री०) १ कोहली से नीचे मुखा २ एक हस्त परिमाण, हाथ भर की छम्बाई, एक वासिष्ठ ।

किन्ना—कम्, [किचिन् समति—किन् + कम् + क निन्ना, --कम्,] (उज्ज्व) वा०, पु० वा०] पल्लव, कीलस लंजूर वा कीलस—अथर किलसवरान्,

श० ११२१, किलसवनमूर्त्त करसई—२११०, किलसर्व सतर्वैरव पाचिन्—रघु० १११५ ।

कीकड (वि०) (स्त्री०—टी) [की लने हुत वा कयति गच्छति—की + कट् + क्त्वा] १ वरीष, वरिष्ठ २ कम्पुस, -कः बोझ, हा (ब० व०) एक देव का (बिहार) नाम ।

कीकस (वि०) [की कुतित यथा स्वात्ताया कसति—की + कस् + क्त्वा] कठोर, दृढ, - लम्ब हड्डी ।

कीकक [कीकवति सम्भावते—कीक + क्त्वा, वाचन्तविप य०] १ लोलाका वास २ हवा में लड़कड़ाते या सविं लीय करत हुए वास—सम्भावते मयूरमनिर्ल कीकका पूर्ववाया—मेघ० ५१, रघु० २१२२, ४७३१, कु० ११८ ३ एक जाति का नाम ४ बिराट राय का सेनापति (जब दीपदी, वीरगद्दी के बेल में, बेल बढे हुए अपने पाँचों पतियों के साथ राजा बिराट के दरबार में रह रही थी, उस समय एक बार कीकक ने उसे देखा, दीपदी के लीपर्व में उसके हुए में कामाग्नि प्रज्वलित हुई, तब से लेकर उसकी पाप दृष्टि दीपदी पर लगी रही और उसने अपनी बहुत (राजा बिराट की पत्नी) की सहायता से उसके सतीत्व को भंग करने की चेष्टा की । दीपदी ने अपने पति उसके अविष्ट ध्वजद्वार की शिखारिखा राधा से की, परन्तु जब राधा ने हस्तक्षेप करने में आमाकानी की तो उसने नीम से सहायता मांगी, और उसके सुझाव को मानकर उसने कीकक के प्रस्ताव के प्रति अनुकूलता दर्शाई । तब वह निषेध किया गया कि वे दोनों बाकी रात के समय बहुत के साथ चरेंगे मिलें, फलतः कीकक वहाँ गया और उसने दीपदी का आभि- ज्ञान करने का प्रयास किया, परन्तु जम्बेरा द्वीप के कारण वह दुष्ट द्वीपवा के बचाव भीम के भूयसाध में फल गया और उसके बन्धनान् हाथों से वह वहीं कुचला जाकर पीत का शिखार हुआ) । सम० किन् (पु०) द्वितीय पाण्डवराज भीम का विशेषण ।

कीकः [कीट् + क्त्वा] १ कीडा, छिन्—कीटोद्भिन् सुवन — मज्झिमसारोहिन वटा शिर हि० प्र० ४५ २ तिर- स्कार व च्छा को व्यक्त करने वाला छब्ब (बहुधा समान के अन्त में) द्विचकीट—अथव हाथी, इसी प्रकार पक्षिकीट जाति । सम०—क्वः - वंशक, - कम्प देसम, आ लाक्ष, -जतिः वृन्त ।

कीककः [कीट + कम्] १ कीडा २ मनव जाति का घाट । कीकस (स्त्री० की) [किन् + क्त्वा + क्त्वा, किन्, कीकस, कीकस (स्त्री० की)] कम्प वा, किन् की बाधक किन् प्रकार का, किन् स्थायका, - उज्ज्व कीकस कीककविचव कीकस प्रबोधव—स्त्री० १, १० १११३० ।

कीमात्र (वि०) [किल्ल कन्, ई उपधाया ईत्यम्, लय्य लोपो नामासमसश्च] 1 भूमिचर 2 गरीब, दरिद्र 3 कृपण 4 नष्ट, तुच्छ, -अः मय्य के देवता यम की उपाधि 2 एक प्रकार का बन्दर ।

कीरः [की इति जस्यस्वनाशब्दम् ईत्यति कीः ईरः, कर्] 1 शीता-एव कीरश्च अनेकवयस्य पीयूषमास्ता-दयति --भाषि० १।१८, रा (ब० व०) काःपीर देवा तथा उसके निवासी, रज्जु पात्र । सम० इच्छः काम का वृक्ष (इसे ताने बहुत पसन्द करते हैं) । -कर्मकम् सुखयो का परिगमि ।

कीर्णं (वि०) [कृ + क्त] 1 क्षितराया हुआ, फैलाया हुआ, फैला हुआ, बखरा हुआ 2 टूटा हुआ भरा हुआ 3 रक्ता हुआ घरा हुआ 4 क्षय को पहुँचाया गया दे० कः ।

कीर्तिः (स्त्री०) [कृ + क्त] 1 बखरेना 2 श्रवना क्षिपाना, धुन कर देना 3 धावत करना ।

कीर्तिष्व [कृन् + क्त्वि] 1 कथन कथन 2 प्रशिर का 1 कीर्तिवर्णन 2 मन्वर पाठ 3 वज कीर्ति ।

कीर्त्य कन् ।

कीर्तिः (स्त्री०) [कृन् + क्त्वि] 1 यश, प्रसिद्ध, कां इह कीर्तिमवाप्नोति मनु० २।१, नमस्य कर्त्तव्य मननकीर्तिम् -रघु० २।१३ मेघ० १५ 2 अनुष्ठान अनुपदेन 3 मील कीचर 4 बिस्मृति, विस्मृति 5 प्रकाश यथा 6 ध्वनि । सम० भाक् (वि०) यशस्वी विख्यात प्रसिद्ध (पु०) श्लोक का विवरण या कि कीरयो और पीडयो का संन्य विस्मयाच्ये वा, श्लोकः केवल यश के रूप में जीवित रहना यश के अतिरिक्त और कुछ नहीं छोड़ना अर्थात् मृत्यु, न० नामशेष आलेख्येष ।

कील (ध्व० पर०) 1 बाधना 2 नली करना 3 काल माहना ।

कीलः [कील + क्त] 1 फली लुटी कोलापरीय बानरः पञ्च० १।२१ 2 बाला 3 बली यमः 4 हथियार, 5 कोहनी 6 कोहनी का प्रहार - ज्ञानः 8 परमायु 9 शिव का नाम ।

कीलकः [कील + क्त] 1 फली या लुटी 2 लडा, लम्ब दे० कील ।

कीलकः [कील + क्त] 1 अमृतेषाम् स्वीयं देय देवतायो का पेय 2 मय्य ३ हैवान्, -लम् 1 मधिर 2 जल । सम० शिः समुद्र, कः पिशाच, भूत ।

कीलिका [कील + क्त + टाप्, इत्यम्] पुर की कील ।

कीलित (वि०) [कील + क्त] 1 बधा हुआ, बड्ड 2 निचर कील से गडा हुआ, कील ठोक कर बडा हुआ --नेम मम हृदयविषमममगारकीलिनम् गीत० ७, सा नखे-तसि कीलितेष - मा० ५।१० ।

कील (वि०) [क + ईल् + क्त] मवा, -कः 1 लुट्ट, कपरा 2 स्त्री 3 पत्नी ।

कुः (स्त्री०) [कु + क्त] 1 पृथ्वी 2 विद्रुव का कपरा जाकुति की बाधार-रेखा, सम० --कुः वनजम् ।

कु (ध्व०) 'करावो', झाड, नवमूल्य, पाप, कर्मका ओछापन, अमात्र वृष्टि आदि भावों को बहने लगने वाला उपमर्श, इसके स्वाभाविक अनेक हैं, उदा० का (करक), कव (कवोच्य), का (कोच्य), कि (किप्रयु) पञ्च० ५।१७ । सम० --कम् (नपु०) दूर कार्य, नीच कर्म, -कः अयक-कः --कम् छोटा गाँव या पुरवा (बड़ा राधा का कर्मकारी, अग्निहोत्र, डाक्टर या नदी न हो), -कम् (वि०) पडे पुराने कप पहने हुए, -कम् कृष्ण, कर्मका-कम् अनीवार्य, कम् (वि०) नीच कुल में उत्पन्न तपु (वि०) विद्वत्काय, कुल (पु०) कुंवर का विशेषण संजी करार बोधा, -कम् 1 कृतकर्मिक, हेतुभावात्मक 2 कर्मविद्वत् सिद्धान्त स्वतन्त्र विद्वान् कुलकर्म्यान् सत्तत्परैर्बुद्धयमनम् मत्ता० ३१ पञ्चः नर्क कामे की लुटी रीति सीधे कुलका अयापक-कुलः (स्त्री०) 1 कर्मका नहर 2 पारदर्शित कुल का (बान०) 3 बर्बाद सिद्धान्त, बर्बाद सिद्धान्त --मनु० १०।१५ देव 1 बुरा देश या बुरी कन्या 2 बुरा देश जहाँ जीवन की आशयक सामग्री उपलब्ध न हो या जो कयाचार से पीडित हो, -कम् (वि०) कुलप विद्वत्काय (हः) कुंवर का विशेषण, -की (वि०) 1 पूर्व, बूढ़ बरक 2 दुष्ट, -कम् बुरा पाप, नरिका छोटी नदी कः नदी, लपु छोले --सुपुरा भ्यामुनिका --पञ्च० १।२५ भावः बुरा स्वामी, मातृ (पु०) कम्, एकः 1 कुमाय, बुरा राजा । बाल० भे 2 बर्बाद सिद्धान्त, --कुः बुरा या दुष्ट पुत्र पुष्पः नीच या दुष्ट पुष्प, पुष्प (वि०) नीच दुष्ट, तिरस्करणीय, -कम् (वि०) अशुकर, तिरस्करणीय, नीच, अधम, कम् बुरी किन्ती कुलसे मतरन् जलम्-मनु० १।१६१, कम् --कम् पतिन आशुच, -कम् 1 बुरा उपदेश 2 बुरे कार्यों में सफलता प्राप्त करने के लिए प्रयुक्त मय -कम् अशुभ समय (बुरा का), -कम् (वि०) बुरे रस या म्वाद वाला, (कः) एक प्रकार की मदिन, कम् (वि०) कुलप, विद्वत् कम्, पञ्च० ५।१९, कम् टीन, जस्ता, कम् सीसा, -कम्, -कम् (वि०) गाली देने वाला, कम्लीय भावी, दुर्बल या कुशाचा होम्ने वाला (नपु०) दुर्बल, दुर्भावा, -कम् आकस्मिक प्रचड होडार, -कम् विवाह का अष्ट वा अनुष्ठित कम्-मनु० १।६१, कुलः

कुलः (स्त्री०) 1 कर्मका नहर 2 पारदर्शित कुल का (बान०) 3 बर्बाद सिद्धान्त, बर्बाद सिद्धान्त --मनु० १०।१५ देव 1 बुरा देश या बुरी कन्या 2 बुरा देश जहाँ जीवन की आशयक सामग्री उपलब्ध न हो या जो कयाचार से पीडित हो, -कम् (वि०) कुलप विद्वत्काय (हः) कुंवर का विशेषण, -की (वि०) 1 पूर्व, बूढ़ बरक 2 दुष्ट, -कम् बुरा पाप, नरिका छोटी नदी कः नदी, लपु छोले --सुपुरा भ्यामुनिका --पञ्च० १।२५ भावः बुरा स्वामी, मातृ (पु०) कम्, एकः 1 कुमाय, बुरा राजा । बाल० भे 2 बर्बाद सिद्धान्त, --कुः बुरा या दुष्ट पुत्र पुष्पः नीच या दुष्ट पुष्प, पुष्प (वि०) नीच दुष्ट, तिरस्करणीय, -कम् (वि०) अशुकर, तिरस्करणीय, नीच, अधम, कम् बुरी किन्ती कुलसे मतरन् जलम्-मनु० १।१६१, कम् --कम् पतिन आशुच, -कम् 1 बुरा उपदेश 2 बुरे कार्यों में सफलता प्राप्त करने के लिए प्रयुक्त मय -कम् अशुभ समय (बुरा का), -कम् (वि०) बुरे रस या म्वाद वाला, (कः) एक प्रकार की मदिन, कम् (वि०) कुलप, विद्वत् कम्, पञ्च० ५।१९, कम् टीन, जस्ता, कम् सीसा, -कम्, -कम् (वि०) गाली देने वाला, कम्लीय भावी, दुर्बल या कुशाचा होम्ने वाला (नपु०) दुर्बल, दुर्भावा, -कम् आकस्मिक प्रचड होडार, -कम् विवाह का अष्ट वा अनुष्ठित कम्-मनु० १।६१, कुलः

कुलः (स्त्री०) 1 कर्मका नहर 2 पारदर्शित कुल का (बान०) 3 बर्बाद सिद्धान्त, बर्बाद सिद्धान्त --मनु० १०।१५ देव 1 बुरा देश या बुरी कन्या 2 बुरा देश जहाँ जीवन की आशयक सामग्री उपलब्ध न हो या जो कयाचार से पीडित हो, -कम् (वि०) कुलप विद्वत्काय (हः) कुंवर का विशेषण, -की (वि०) 1 पूर्व, बूढ़ बरक 2 दुष्ट, -कम् बुरा पाप, नरिका छोटी नदी कः नदी, लपु छोले --सुपुरा भ्यामुनिका --पञ्च० १।२५ भावः बुरा स्वामी, मातृ (पु०) कम्, एकः 1 कुमाय, बुरा राजा । बाल० भे 2 बर्बाद सिद्धान्त, --कुः बुरा या दुष्ट पुत्र पुष्पः नीच या दुष्ट पुष्प, पुष्प (वि०) नीच दुष्ट, तिरस्करणीय, -कम् (वि०) अशुकर, तिरस्करणीय, नीच, अधम, कम् बुरी किन्ती कुलसे मतरन् जलम्-मनु० १।१६१, कम् --कम् पतिन आशुच, -कम् 1 बुरा उपदेश 2 बुरे कार्यों में सफलता प्राप्त करने के लिए प्रयुक्त मय -कम् अशुभ समय (बुरा का), -कम् (वि०) बुरे रस या म्वाद वाला, (कः) एक प्रकार की मदिन, कम् (वि०) कुलप, विद्वत् कम्, पञ्च० ५।१९, कम् टीन, जस्ता, कम् सीसा, -कम्, -कम् (वि०) गाली देने वाला, कम्लीय भावी, दुर्बल या कुशाचा होम्ने वाला (नपु०) दुर्बल, दुर्भावा, -कम् आकस्मिक प्रचड होडार, -कम् विवाह का अष्ट वा अनुष्ठित कम्-मनु० १।६१, कुलः

(स्त्री) बुरा व्यवहार बंद छोटा बंद कठबंद, नीम हकीम—सीस (वि०) अक्खड़ बुद्ध अक्षिष्ट बुद्ध स्वभाव ठलम् बुरा प्रगल्ह सारित (स्त्री०) भुइ नदी छाटा घात उच्छिद्यन्ते त्रिया सर्वा अप्य सुसरितो यथा यवः २।१ सूति (स्त्री०) १ तुरावरण दुष्टता २ जादू दिकाना ३ धूतता स्त्री छोटी स्त्री ।

कु १ (स्त्री०) बा० कबो) ध्वनि कता ।

१। (तुदा०) बा० कुजने । बड़बड़ाना कगल

२ विस्तारना कदन कता ।

११। (भदा०) प० कोनो भनभिराना कज्जा रजन करना (मधुमक्खो ही मान) ।

कुक्षम् [कुकेन आदानेन गानेन भाति कुक्षः वा १ एक प्रकार की पीछण भाँट ।

कुक्षील [को पृथिव्या कील इव] पहाड़ ।

कुक्षु (क्षु) ४ [कुक्षु वा क इत्यव्ययम् अलङ्घना कन्या या मत्स्य पाषाण्य ददाति कुक्षु (क्षु) दा + क] गगन भूगरो से मुमुक्षित (अलङ्घन) कन्या को विषमृधन विवाह में देने वाला ।

कुक्षु (क्षु) ४ [स्फुरने कामिना प्रथ नि० माधु] बहन कप, कल्ले के योग्य वा नित्यव क अपनी माँग में होते हैं २० ककुन्दर ।

कुक्षुग (ब०) [कु + क + क] एक दश का नाम इस 'दण्डार्ह' भी कहते हैं ।

कुक्षुः—लम्ब [कु + ऊल्लव कुगागम] १ बाँकर भसा—कुक्षुलाना गयो न न हृदय पथ्यन इव उत्तर० ६। ४० २ भूमी में बनी आग लम्ब [को कल्प १० न०] १ छिद्र लाई (लट स्थाणादिको म भरो हट) २ कवन बनर ।

कुक्षुट [कुक्षु + क्षिप नेन कुटति कुक्षु + कुट + क] १ मर्गा जगली मर्गा २ जल रूप मूस का फिसलाना बलती हुई लकड़ी ३ आग की बिगारी ।

कुक्षुटि, टी (स्त्री०) [कुक्षुट + इत् पक्षे जीप] मय पाषाण्य, धार्मिक अण्डारा से स्वाधसिद्धि ।

कुक्षुम् [कुक्षु गज्ज भावने कुक्षु + भाप + क बा०] १ जगली मर्गा २ मर्गा ३ बानिशा ।

कुक्षुर (स्त्री०—री) [कोवने आदाने कुक्षु + क्षिप कुक्षिचक्षि मृच्छन् जने दृष्टवा दृष्टि गम्यायने कुक्षु + दृ + क] कुना—यस्मै च न कुक्षुरे गृहगतैर्जातर चव्यने मृच्छ० २।१२। सम० बाध (पु०) हरिषो की एक भाति ।

कुक्षु [कु + क] पेट ।

कुक्षिः [कुक्षु + क्षि] १ पेट जिह्वाभ्यामाकुक्षि (युजय-पति) मृच्छ० १।१२ २ गर्भाशय, पेट का वह भाग जिसमें भ्रूण रहता है—कुक्षीनव्यारव कुक्षिज—रघु०

१।११ पि० १३।४० ३ किसी चीज का भीतरी भाग रघु० १०।६५ (यहाँ दाह्य द्वितीय अर्थ को भी प्रकट करता है) ४ गत ५ गुफा कन्दरा रघु० २। २८ ६७६ लंबार का स्थान ७ खाड़ी । सम०

कुक्षु १० दर दण्डम् ।

कुक्षिम्भोर (वि०) [कुक्षु + भू + इन् भूम्] अपना पेट भरने को बिना भरने वाला राशो प० बहुमात्रो ।

कुक्षुमम [क इमव हि भूमो केशर हाफगम लम्ब इडकुमकेगरा १० मान] रघु ६५ १५० १।० मर्गा ११ २१ मन० अहि एक पहाड़ का नाम ।

कुक्षु न० [न ११ पृ ४१ १] (परी की भाँति) ककप धनि क १ २ गा ३ दण्डना १ निको ग्रा भूगार ५ भकहन ७ बाया पृथिव्य करना ७ मल्लन अवरव ग लम १ टेडा होवा (क्षिचिच ग ३ मदीचन ग उवा—माधु लक्ष्म ११ भा ११) ४ त मधुचयुग्मिष्णु पक्ष० ३ बद न० मृगाना कवलकवायि उव क ११ ८ (२२८) पक्ष करना, छिद्रोवना ५२ न

१। १०५१० (पु ४ भी)—कोषधि, कुक्षधि कुक्षिचन/ १ कुक्षल दाना, कुक्षाना वा टेडा करना २ टीकी २२४ ३ इतना ३ छाटा करना बटाना ४ निक्षुडना मक्ष चिन होना ५ की और जाना बा , निक्षोदना टडा करना कुक्षाना (प्रेर० भी) कु १७ रघु० १।१५, न १० १।३ धि , निक्षोड टडा करना ।

कुक्षु [कुक्षु + को लान उरोज युवा अधि कनाल्लवमय-कुक्षुभार-विषम २।१६। लम लम्बम्—कुक्षु नुवक लम्ब लती १ (स्थिबो के) लम का उलाह कल अनार का दूत ।

कुक्षर (वि०) स्त्री० रा—री) १ जब गले जाने वाला रग वर जान वाला २—कुष्ठ, नीच, दुश्चरित ३ जब मानिन करने वाला, छिद्रालेवी, ४ बिबर तारा ।

कुक्षम् [कु + क्षो + क] कवक की एक भाति कुम्ब ।

कुक्ष [कु + जन + क] १ मृत् २ मगम वह ३ एक राक्षस जिसे कुक्ष न मार विरावा वा (नरक) भी इसी का नाम है) का लीना ।

कुक्षकल कुक्षिः भल [को पृथिव्या अम्भनमिष अ० ४० ४०, का पृथिव्या की पृथिव्या वा जलन य० त० वा य० त०] तेष लगाकर धर में धोने करने वाला पार ।

कुक्षधिः, कुक्षधिका, कुक्षमदी [कुक्षु + क्षिप अट + इन्, कुक्षु पाणी अतिष्ण कर्म० स०, कुक्षधि + कन् + टाप्, कुक्षधि + जीप्] कुहरा, दूध ।

कुक्ष् २० कुक्ष ॥

कुव (प्रा० उभ० - कुवति, कुवित) 1 काटना, बाटना 2 पीसना चूँच करना 3 रोच देना, मिखा करना 4 घुसा करना ।

कुवकः [कुट् + क्वल्] कुटने वाला, पीसने वाला ।
कुवकम् [कुट् - क्वट्] 1 काटना 2 कुटना 3 कुचन करना, मिखा करना ।

कुवट (वि०) नी [कुट्टमि नासयति स्वीया कुलम् - कुट् + मिष् + ल्यट् + क्तिप्, कुट्ट + इति वा] कुट्टनी हूरी, दलनी ।

कुवितम् [कुट् + वन्, तेन निर्वृत इत्यर्थे कुट् + वम् + इत्यञ्] प्रियतम के प्यार का विजाबटी तिरस्कार (कुट्टम कुकराणा) (नायिका के २८ हावभाव तथा अनुभव में से एक) आ० ४० परिभाषा देता है - केस लनाबरादीना वहे हूयेनि संभ्रमात्, शत्रु कुट्टमिनाम निरकरविभ्रनवन्, १४२ ।

कुवटक (वि०) (स्त्री० - की) [कुट् + वाकन्] जो विभक्त करता है वा काटता है सारङ्गसङ्गरविधा-विमकुन्वकटकुट्टाकपाथिकुलिखत्स हरे प्रमाह - मा० ५१३२ ।

कुवर्गः [कुट् + वारन्] गहाव, - रम् 1 वैवृन् 2 ऊनी संवल 3 एकलत् ।

कुविकः - वम् [कुट् + इम्] 1 लड़ना, छोड़-छाड़े फरारी को बना कर बनाया हुआ कर्सी पक्का फर्सी - छातेमुकानोपलकुट्टिये - सि० ३१४०, रघु० १११९ 2 बदन बनाने के लिए तैयार की गई मृत्ति 3 रत्नों की लाल 4 बनार 5 जाली, कुटिया, छोटा घर ।

कुविहारिका [कुट्टि मत्स्यमासाविकं हरति हरि - कुट्टि + ह + क्वल् + टाप्, इत्यञ्] सेविका, दासी ।

कुवक कुवमल ।

कुव [कुठचने लिखने - कुट् + क] वृत् ।

कुवर = ४० 'कुटर' ।

कुवारा (स्त्री० - वी) [कुट् + वारन्] कुल्हाड़ा (परम्) कुल्हाड़ी मातु केवलमेव पीयनवनच्छेदे कुवारा वयम् - मत्स्य० ३१११ ।

कुवारिणः [कुवार + ण्] लकड़हारा, लकड़ी काटने वाला ।

कुवारिका [कुवार + क्तिप् + कम् + टाप्, ह्रस्वरच्] छोटा कुल्हाड़ा, करता ।

कुवक [कुट् + वार] 1 वृत् 2 मंवर, वस्वर ।

कुवि [कुट् + वल् + मिष्] 1 वृत् 2 गहाव ।

कुवकः (पुं०) कुव, लवान् ।

कुवकः (क) [कुट् + क्वन्, क्वन् वा] एक बीबाई प्रत्य के बराबर का बारह मूट्टी (संक्रांति) बजार की लोख ।

कुवक (वि०) [कुट् + क्वन् मूट्] कुल्हाड़ा हुआ, पूरा किया हुआ, गहराया हुआ (जैसे खिला हुआ फूल)

रघु० १/१३० - क्वः कुल्हा कली विजृम्भणो-
वगमिषु कुवमलेषु - रघु० १६१७७, उत्तर० ६११७,
सि० २१७ कम् एक प्रकार का नरक मनु०
५८९ यात्र० ३१२२२ ।

कुवमलित (वि०) [कुवमलः इत्यञ्] 1 कलीदार, खिलता हुआ 2 प्रमत्त हसमत् ।

कुवकम् [कु - वक इत्यागम्] 1 बीबार भेदे कुवपाव पातने - यात्र० २१२० ३ सि० ३१४५ 2 (बीबार पर) पलस्तर करना लीपना पीसना 3 उल्लुक्ता विज्ञाना ।
तम० छेविम् (प०) घर म मय लगाने वाला
चोर, छेक लोहने वाला (कम्) बाई मरहा
(बीबार में) दरार ।

कव् [मुदा० पर० कुमति कुमिन] 1 गहरा देना सहायता देना 2 शब्द करना ।

कुक्क [कुप् + क + कन्] किसी जानवर का बर्मी पैरा हुआ बच्चा ।

कुक्क (वि०) (स्त्री० - की) [कुक्क + क्वन्] 1 मुँद जैसा मुँह देने वाला बद्धवार प, पम् मुँदी गाय कामनीय कुक्कपमात्रं विक्रम० ५१ मित्र] - ब्रम्भ कुलपाथी व मनु० १२ १७ जीवित बन्धुओं के प्रति घृणा व तिरस्कार का - पत्र जम्ब का 1 बर्मी 2 मुँह बद्ध ।

कुक्कि [कुप् इन्] लुप्त 'ब्रम्भका एक बीरा मूख गई हो ।

कुक्क (वि०) (स्त्री० - की) [कुक्क + क्वल्] मोटा स्वाम ।

कुक्क (म्भ० पर० वृष्णन कुक्कित) 1 कुक्कित दुक्का या मूख हो जाना 2 लड़ना और विकलता होना 3 मरुद्वि या मूख होना मुग्न होना 4 हँसना करना (मेर० या बुरा० पर०) खिलाना ।

कुक्क (वि०) [कुक्क + क्वन्] 1 मूटा मूख बच्चा लपकाप मरुद्वि कुक्कम कुं० ३१२० प्रभावहित हू गया कुक्की-बन्धुपलादिषु बुरा गारा० 2 मूख मूख बड़ 3 आनमी मुग्न 4 दुबल ।

कुक्क [कुट् + क्वन्] मूख ।

कुक्कित (पुं० क० क०) [कुट् क्ति] 1 दुका, मन्दीकुल (बार्न० स्त्री०) विधवाजनमयलेपकुक्कितम् रघु० ११७५, भाषि० २१७८ कुं० २१७० शारंगमकु टिनावृद्धि रघु० ११७९, विर्वाप रही 2 लड़ 3 विकलांग ।

कुक्क-वम् [कुक्क + व] 1 प्यार की शक्त का वर्तन, चिल-मपी, कटोरा 2 होम 3 कूड़, कुद मन्दीकुक्कम 4 पीकार वा पल्लव-विच्छेदन औ किसी देवता के नाथ पर चर्चाई समर्पित कर दिया गया हो 5 कम्बल वा

विद्यापान, - डः (स्त्री०--जी) पति के जीवित रहते व्यभिचार द्वारा किसी दूसरे पुरुष के तबोम से उत्पन्न स्त्रीय पत्नी जीवित कुछ स्थायु मनु० ३११०४, यात्र० ११२२२। लम०—आश्विन् (पु०) प्रवृत्ता, चित, अपनी बीविका के लिए जो कुछ पर निर्भर करता है अर्थात् वनंमकर, आरम्भ, -मनु० ३११५४ यात्र० ११२२४, ऊष्ण (कुम्भोज्जी) १ वह पाय जिसका ऐन या बोरी भरी हुई हो २ भरे पूर्ण स्तना वाली स्त्री, -कीटः १ रत्नाली स्थिया रत्नन वाला २ पार्थक्यतावलदी, नास्तिक, आर्य बाह्य, नील नील या दुरधरित व्यक्तित, बोलम्—बोलकम् १ कांजी २ कुम्भ और पालक का समुदाय।

कुम्भकः-कम् [कुम्भ + कम्बल] १ कान की बाली, कान का आयुष्य-बीज धृतेन न कुम्भलेन-मते० २१०१ और० ११ अनु० २१२०, ३११० रघु० १११५ २ कहा ३ रत्नी का मोला।

कुम्भलगा [कुम्भल + लिच् + लृप् + टाप्] बरा बालना (बल् को नाम धरे में रखना) यह प्रकट करने के लिए कि यह भाग छोड़ देना या इस पर विचार नहीं करना है, तदोक्तमन्त्राशय स्थिताविमो क्वेति चिते कुम्भे यदा यदा, ततोमि भावो पर्यवेक्ष्यमानताया विधि कुम्भलगा विचारार्थ। नै० १११४, तु० २१५५ से भी।

कुम्भलिम् (वि०) (स्त्री०--जी) [कुम्भल + इति] १ कुम्भलो से विमुक्ति २ नाशकार, लपिक ३ बुभावदार, कुम्भली मारे हुए (लोच की भांति) -पु० १ माप २ मोर ३ बरुण की उपाधि।

कुम्भिका [कुम्भ + कम् + टाप्, हल् + इति] १ कहा २ कमडल। कुम्भिन् (पु०) [कुम्भ + इति] सिद्ध की उपाधि।

कुम्भिलम् [कुम्भ + इलच्] एक नगर का नाम, विदर्भदेश की राजधानी।

कुम्भि (जी) र (वि०) [कुम्भ + इ (ई) रन्] बलवान् -- रः मन्व्य।

कुम्भः (अव्य०) [किम् + नाभल्] १ कहाँ से, किधर से -कस्य न वा कुन आयात - माह० २ २ कहाँ और कहाँ, और किस स्थान पर आदि ईदाम्बोड कुन - श० २१५ ३ कबो, किम लिए किस कार्य से किस प्रयोजन से -कुन इदमम्बोते - श० ५ ४ कैसे, किस प्रकार -कुम्भित च बाहु कुन कर्मायुहास्य-श० १११५ ५ और अधिक, और कम -न स्थानयोस्तयम्ब-विक्र कुतोज्य -वच० १११४३, ४३३, न मे स्तेनो वनपदेन न कवर्षो न स्त्रीरी स्त्रीरिणी कुत -छा० ६ कर्षीक, कवी कवी कुत केवल किम् अर्थ के अपा-दाय के रूप में ही प्रयुक्त होता है-कुत काकाल-कुलकम्-वि० पु० (अन्वय काकाल), कव कुत

के धामे 'चिद्' 'वन' या 'अपि' जोड़ दिया जाना है तो यह अनिश्चयबोधक बन जाता है।

कुलप [कु + तप् + अच्] १ बाह्य २ द्विज ३ सुवं ४ अविन ५ अविनि ६ बैल, माह ७ बोहता ८ मानका ९ बनाइ १० दिन का बाटर्षा मुहूर्त-बहुो मुहूर्ता विख्याता दण पच च मवंदा, तत्राष्टयो मुहूर्ता य स काल कुलप स्मृत। वच् १ कुल पास २ एक प्रकार का कवच।

कुलस्य (वि०) [कुल + ल्यप्] १ कहाँ से आया हुआ २ कैस हुआ।

कुलकम् [कुल + उक्त्वा १ इच्छा, मधि २ जिज्ञासा (कौतुक) ३ उत्पत्ति, उत्पत्ता, उत्कटना-कैलकला-कुलकेन च काचित् यमुनाजलमूले मज्जुलबज्जकुलकन विषयकं करेण दुक्के गीत० १।

कुलप, कुल (स्त्री०) [कुल + लृप् + लृप् + टाप्] १ कुली (तेम डालने के लिए बमरे की बनी)।

कुलहल (वि०) [कुल + हल + अच्] १ आश्चर्यजनक २ भ्रष्ट मनीष ३ प्रसमाप्राप्त, प्रसिद्ध, -कम् १ इच्छा, जिज्ञासा-उत्पत्तिजनक अविन न कुलहलम् -श० १, यदि विनासकलान् कुलहलम् -गीत० १, (पपी) कुल-हलेनैव मनुष्यलोचितम् रघु० ३१५४ ३१३१२, ३१५५ २ उत्पत्ति ३ जिज्ञासा की उत्पत्ति करने वाला, मुहावरा, मनोरञ्जक कौतुक या जिज्ञासा।

कुल (अव्य०) [किम् + चल्] १ कहाँ, किम बात में - कुल में शिशु पच० १, प्रवृत्ति कुल कर्त्तव्या -हि० १ २ किस विषय में मेजला मलू जाताया वच् कुलोप-मुज्यते- पच० १। -८ (कनी कनी 'कुल' का प्रयोग 'किम्' शब्द अर्थ० एक० व० के लिए किया जाता है) जब 'कुल' के साथ चिद्, वन, वा अपि, जोड़ दिया जाता है तो वह अर्थ की दृष्टि से अनिश्चय-व्यक्त बन जाता है, कुलापि, कुलचित् किसी पयह, कहीं, न कुलापि कहीं नहीं कुलाचित्-कुलचित्-एक स्थान पर दूसरे स्थान पर, यहाँ-वहाँ-अनु० १३४।

कुलस्य (वि०) [कुल + ल्यप्] कहाँ रहने वाला या कहाँ काम करने वाला।

कुल्य (ब्रा०) जा०-कुलयाते, कुलित्) वाली देना, बुरा-भला कहना, निन्दा करना, कलक लगाना, मनु० २१५४, यात्र० १३३१, शा० २१२८।

कुलसम्, कुलता [कुल्य + ल्यट्, कुल्य + लृप् + टाप्] दुर्बन्ध, वृणा, भर्त्सना, वाली देना-वक्तव्यां च कुलसम्-अनु० ४१६३।

कुलित (वि०) [कुल्य + क्त] १ ध्वित, तिरस्कारणीय २ नीच, अधम, दुर्धरित।

कुल [कु + लच्] कुला वाक्य पास।

कुम्भः-बन्ध-वा 1. छोट की बनी हाथी की झूल 2. दरी ।
कुम्हारः-सः-सकः [कु + ह + शिच् + अच्, पूर्वो०, कु + बन्ध
+ शिच् + अच् पूर्वो०, कुहार + कन्] 1. कुवाली,
कुर्पा 2. कांचन वृक्ष ।

कुम्भसम् = कुम्भसम् ।

कुम्भकू-वाः [कुम्भ + क + क नि० माघ, कु + उ + रञ्ज
+ कञ्] 1. चौकी 2. मचान पर बना मकान ।

कुम्भकः [?] कौवा ।

कुम्भः [कु + उन् + क्त, वा० शाक० पररूपम्] 1. भाला,
पंखदार बाण, अच्छी - कुन्ना प्रविर्गानि - काव्य० २
(अर्थात्-कुलपार्श्वः पुर्या) ; विरहिनिहन्तकुम्भ-
मुक्ताकनिकेतकिन्दनुरितास- -मोत० १ 2 छोटा जम्बू,
कौवा ।

कुम्भतः [कुम्भ + ता + क] 1. मिर के बाल, बालों का गुच्छा -
प्रतनुविरले प्रान्तेन्मीलम्ननाहर्कुलने - उत्तर०
१।२०, जोर० ४, ९, मीत० २ 2 कटारा 3 हथ, -वाः
(ब० ब०) एक देश तथा उसके निवासियों का नाम ।

कुम्भतः ('कुम्भ' का ब० ब०, पु०) एक देश और उसके
निवासियों का नाम ।

कुम्भितः [कुम्भ + शिच्] एक राजा का नाम, कश्च का पुत्र ।
सम् - जोकः एक यादव राजकुमार, कुम्भितेश का
राजा, जिसने निस्सन्तान होने के कारण कुम्भी को
गोध से लिया था ।

कुम्भी [कुम्भ + शीप्] 'गूर' नामक यादव की पुत्री पुत्रा
विक्रको कुम्भितोय ने गोध लिया । (यह पाद की
पत्नी पत्नी की, किसी आप के कारण पाद से सतान
न हुई, उसने इसी लिए कुम्भी को अनुमति दे दी कि
वह पुत्रोत्पत्ति के लिए अपने मन्त्र का प्रयोग करे
जिसके द्वारा वह किसी भी देवता का आवाहन करके
उससे पुत्र प्राप्त कर सकती है । फलतः उसने धर्म,
धर्म और इन्द्र का आवाहन किया और उसने क्रमशः
सुविष्टि, भीम और अर्जुन को प्राप्त किया । वह
कर्म की भी माता थी उसने अपनी कोमल-अवस्था
में मन्त्र का परीक्षण करने के लिए मृग का आवाहन
किया और उसके शरीर में उसने कर्म को प्राप्त किया)

कुम्भ (भा०-वदा० पर० - कुम्भित, कुम्भानि, कुम्भित)

1. कट्ट उड़ान करना 2. चिपकना 3. बाजिलन करना
4. बांट पहुँचाना ।

कुम्भ-बन्ध [कु + द (दो) + क, नि० पुन, वा कु + बन्ध,
पुन] यमों का एक घेर, मोड़िया (संकर और कोयल)
कुम्भाबधनाः कम्पुमयालाः - बट्टि० २।१८, प्रातः
कुम्भसंश्लिषितं कीर्तिनं वारुणाः - मेघ० १।१३,
- बन्धुन शीघ्रं का कुम्भ - बल्लके बालकुम्भानुविद्धम्
- मेघ० १५, ४७, - क 1. किन्तु की उपाधि
2. वीरत्व । सम् - - कट्ट वीरगी ।

कुम्भः [कुम्भ + भा + क] विल्ली ।

कुम्भीनी [कुम्भ + इति + शीप्] कमलों का समूह ।

कुम्भुः [कु + द + हु वा० पुन] बूढ़ा, मूसा ।

कुम्भ (विभा० पर० - कुम्भित, कुम्भित) 1. कुम्भ होना (त्रायः
उस व्यक्ति के लिए सम्पन्न जिस पर कोष किया
जाय, परन्तु कभी कभी कर्म वा सर्व० भी प्रयुक्त होते-
हैं) कुम्भित हितवादिने - का० १०८, मालवि० ३
२१, उत्तर० ३, चक्रोप तमयै त मूषक - रघु० ३।५६
2. उन्मत्त होना, मारमध्यं ग्रहण करना प्रवृत्त होना,
जैसा कि - दोषा प्रकुम्भित - सुषु० अति, 'कुम्भ
होना, भट्टि० १।५।५, परि - कुम्भ होता, प्र - 1 कुम्भ
होना, - निमित्तमनुविष्टं हि य प्रकुम्भित भूष म तस्या-
पमये प्रमोदति - पञ्च० १।२८३, 2 उन्मत्त होना,
बल प्राप्त करना, बढ़ना (प्रेम) उभायता, विद्वाना
विद्वाना ।

कुम्भित - दे० कुम्भित ।

कुम्भित (पु०) [कुम्भित मन्त्रध्यानी प्रति अग्न्य कुम्भित
- इत्] मछली ।

कुम्भितो [कुम्भ + शीप् + शीप्] छोटी-छोटी मछलियों पकड़ने
का एक प्रकार का जाल ।

कुम्भ (वि०) [कु + पु + अ + क] च्छित, दीर्घ, अधम,
तिरस्कृत ।

कुम्भ [कुम्भ + क्यप्, कुम्भ] 1. जपमान 2. बाँदी और
गोन का छोड़ कर और कोई जानू - कि० १।३५,
मन० ७।१६, १०।११३ ।

कुम्भे (वे) २ [कुम्भित वे (वे) २ अरीर वधम्] यम
दीर्घ और कोष का स्वामी, उत्तरदिशा का स्वामी
- कुम्भेयुता विमयुष्मरमो यन् प्रवृत्तं सम्यं विमय
- कु० ३।२५ (इस पर मल्लिक की टीका के अनुसार)
[कुम्भे ईश्वरता में उत्पन्न विधवा का पुत्र है, और
इसीलिए यह राक्षस का आधा भाई है । यम और
उत्तर दिशा का स्वामी होने के कारणका यह वध
और किरणों का राजा तथा वृद्ध का मित्र है, इसका
वर्चन विद्वत् शरीर के रूप में पाया जाता है, इसके
तीन टींग और आठ टींग के, और एक भीम के स्थान में
एक पीला चिह्न था] अथर्व, - अतिः ईमाश पर्यंत
की उपाधि, - विष्णु (रवी०) उत्तर दिशा ।

कुम्भ (वि०) [कु ईषत् उज्जवादीयं यम मर्क० मारा०]
कुम्भ, कुम्भित, - कः 1. बूढ़ी हुई लम्बार 2 पीठ पर
लिकना हुआ दूध, - कः कः की एक मेसिका, कहते
हैं कि उसका शरीर तीन स्थानों पर विकृत था (कुम्भ
और बलराम ने, जब वह बच्चा था तब वे रावणार्ज
पर कुम्भ का लेना, वह कर्म के लिए उदरन में था
रही थी । उन्होंने उसमें से कुछ उदरन मीठा, कुम्भ
ने जितना वे चाहते थे, उदरन उनको दे दिया । कुम्भ

उत्तरे इस अनुग्रह से अत्यन्त प्रसन्न हुआ, उत्तरे उसका दूध मिठाकर उसे पूरी तरह पीकर कर दिया, जब से वह अत्यन्त सुन्दरी स्त्री बनने लगी।

कुम्भक [कुम्भ + कम्] एक बरत का नाम + कम् ८। २४०, ५।२।

कुम्भिका [कुम्भक + टाप्, इत्यम्] माटवर्ग की अविवाहिता लड़की।

कुम्भ (पु०) [कु + म् + क्तिप्, कुकायम्] पहाड़।

कुम्भार [कुम् + कार्त्त, उपधाया उत्तम्] १ पुत्र, बालक, दुहा-रम् ३।४८ २ पीछे वर्ष से कम आयु का बालक ३ राखकुमार, दुवराब (विशेषण माटकों में) -विश्रा

चितकुमार महाभारतमहाभारतम् रम् १०।११

कुमारस्याम्बो नाम विष्णु ५ अनेष्टुमर्गम् कुमार -दुहा ० (अन्यकेयु ने राजन् को कहा)

४ मृद के रचना कश्चिन्, -कुमारकम् पुन्ये कुमारम् रम् ५।१९, कुमारार्जुन कुमारविष्णु -३५५

५ अग्नि ६ ताता ७ सिन्धु नदी। सम् - वाक्य १

बच्चों की देखरेख रखने वाला २ राजा कामिवाक्य

मुक्ता १ छोटे-छोटे बच्चों की देखरेख २ बर्तनवा

में स्त्री की देखरेख, प्रवृत्ति विद्या -रम् ३।१२

-वाक्त्ति, वाक्य मोर, वृ (स्त्री०) १ पार्वती

का विशेषण २ म्मा का वि०।

कुमारक [कुमार + कम्] १ बच्चा, मुदा २ अक्षि का ताता।

कुमारक्री (ना० वा० पर०) खेलना, खेड़ा करना (बच्चे की तरह)।

कुमारिक (वि०) (स्त्री० की) } [कुमारी + क्त्वि]

कुमारिम् (वि०) (स्त्री०-की) } कुमारी + इति]

जिसके मङ्गिका हो वही लड़कियाँ की बहुतायत हो।

कुमारिका, **कुमारी** [कुमारी + क्त्वि + टाप्, कुमार + डीप्]

१ दत्त से बाह्य वर्ष के बीच की लड़की

२ अविवाहिता लड़की, कन्या -गीति वर्णमुरीजेत

कुमारकुमारी लती मम् ५।१०, १।१८, व्याकृत-

ताम्बोपममाकुमारी रम् ५।१९ ३ लड़की, पुत्री

४ दुर्गा ५ कुल पीरों के नाम। सम् - कुम्

अविवाहिता स्त्री का पुत्र, - कम्बुटः विद्याह से पूर्व

प्रवृत्ति लड़की का स्वपुत्र।

कुम्भ (वि०) [कु + म् + क्तिप्] १ उपास्य, अग्नि

२ लोकी (कम्) १ लज्जे कुम्भिनी २ मात कम्भ।

कुम्भः -कम् [की मोहते इति कुम्भम्] १ लज्जे कुम्भिनी,

को कहते हैं कि अग्निदेव के अग्न शिलालो हैं -मोक्ष

विधि उपनिषदसंस्कृतसंस्कृतम् कुम्भम् -विष्णु ३।१९, इती प्रकार सम् ५।२८, ऋतु ३।२, २।

२१, देव ४० २ मात कम्भ, - कम् लोकी, -क

१. पिन्म का विशेषण २ अग्नि विद्या के विष्णव का

नाम ३. कुम्भ ४. कुम्भों की दूध लोकी ५. एक नाम

जिसने अपनी छोटी बहन कुम्भिनी की राय के दूध कुम्भ

को प्रसाद दिया -६० रम् १।१०५-८१। लज्जे

-कम्बुटः लोकी, -कम्बुटः, कम्बुटः कम्बुटः से

बरा हुआ लोकी, -कम्बुटः कम्बुटः कम्बुटः का

कम्बुटः, कम्बुटः, कम्बुटः, -कम्बुटः, कम्बुटः (पु०)

कम्बुटः।

कुम्भिका [कुम्भ + कम् + डीप्, कम्बु] कम्बुटः लोकी।

कुम्भिका [कुम्भ + कम्] १ लज्जे कुम्भों की कुम्भिका

-कम्बुटः कम्बुटः कम्बुटः कुम्भिका -कम्बुटः ५।

५१, वि० ५।१४ २ कम्बुटः का कम्बुटः ३ कम्बुटः कम्बुटः।

कम्बुटः -कम्बुटः, लोकी कम्बुटः।

कुम्भ (वि०) [कुम्भ + कम्, कम्बु] लोकी कम्बुटः की

कुम्भिका हो - कुम्भिका कम्बुटः - रम् ५।१९ - लो

१ लज्जे कुम्भों की कुम्भिका (लो कम्बुटः के अग्न

होने पर शिलालो हैं) -कम्बुटः कम्बुटः लो कम्बुटः

में दूध न कम्बुटः कम्बुटः कम्बुटः - ५।२

कुम्भिका कम्बुटः का कम्बुटः (न कम्बुटः) - रम् ५।१९

२ कम्बुटः का कम्बुटः ३ कम्बुटः कम्बुटः, - ५।२

कुम्भिक [कु + म् + क्तिप् + कम्बु] कम्बुटः का विशेषण।

कुम्भ [कुम् + कम् + टाप्] कम्बुटः का कम्बुटः।

कुम्भ [कुम् + कम् + टाप्] कम्बुटः का कम्बुटः।

कम्बुटः [कुम् + कम् + टाप्] कम्बुटः का कम्बुटः।

कम्बुटः [कुम् + कम् + टाप्] कम्बुटः का कम्बुटः।

कम्बुटः [कुम् + कम् + टाप्] कम्बुटः का कम्बुटः।

कम्बुटः [कुम् + कम् + टाप्] कम्बुटः का कम्बुटः।

कम्बुटः [कुम् + कम् + टाप्] कम्बुटः का कम्बुटः।

कम्बुटः [कुम् + कम् + टाप्] कम्बुटः का कम्बुटः।

कम्बुटः [कुम् + कम् + टाप्] कम्बुटः का कम्बुटः।

कम्बुटः [कुम् + कम् + टाप्] कम्बुटः का कम्बुटः।

कम्बुटः [कुम् + कम् + टाप्] कम्बुटः का कम्बुटः।

कम्बुटः [कुम् + कम् + टाप्] कम्बुटः का कम्बुटः।

कम्बुटः [कुम् + कम् + टाप्] कम्बुटः का कम्बुटः।

कम्बुटः [कुम् + कम् + टाप्] कम्बुटः का कम्बुटः।

कम्बुटः [कुम् + कम् + टाप्] कम्बुटः का कम्बुटः।

कम्बुटः [कुम् + कम् + टाप्] कम्बुटः का कम्बुटः।

कम्बुटः [कुम् + कम् + टाप्] कम्बुटः का कम्बुटः।

कम्बुटः [कुम् + कम् + टाप्] कम्बुटः का कम्बुटः।

कम्बुटः [कुम् + कम् + टाप्] कम्बुटः का कम्बुटः।

कम्बुटः [कुम् + कम् + टाप्] कम्बुटः का कम्बुटः।

कम्बुटः [कुम् + कम् + टाप्] कम्बुटः का कम्बुटः।

कम्बुटः [कुम् + कम् + टाप्] कम्बुटः का कम्बुटः।

कम्बुटः [कुम् + कम् + टाप्] कम्बुटः का कम्बुटः।

स्वीकार कर लिया गया। कहते हैं कि वह ऊ महीने होता था और फिर केवल एक दिन के लिए बाधता था। जब संका को राम की वामरकेता में घेर लिया तो राक्षस ने बड़ी कठिनाई के साथ कुम्भकर्ण को उपाया निकाले कि वह उसकी अक्षर शक्ति का उपयोग कर सके। २००० कलश सुत पीले के पक्वान् कुम्भकर्ण ने हजारों बन्धनों को अपना मुखाश्रय बनाने के अतिरिक्त कुम्भ को बन्धी बना लिया। अतः ही कुम्भकर्ण राम के हाथों मारा गया।—कार: १. कुम्हार—कलश १।१४५ २. कर्ण छकर बाति (वेष्मार्थ विप्रतत्परीक्षा-मुष्मकार. स उच्यते—उक्तता, वा माताकारजर्जरकवा कुम्भकारो व्यवाहृत परावर),—जोष: एक नगर का नाम,—क.—अप्य (५).—जीवित:—संघट: १. अमल्य मुनि के विशेषण—अकालोपवाक्य: कुम्भलोभोर्भूयित—रघु० ५।२२, १।१५५ २. औरव और पाँवों के बीचविचारार्थं युव होय का विशेषण ३. वसिष्ठ का विशेषण,—काली कुट्टिनी, कुटी (कनी कनी वह सज्ज माती के रूप में प्रयुक्त होता है)।—अप्य दिन का वह समय जब कि रात्रि पक्ष अस्तित्व के ऊपर उदय होता है,—कैक: २. (का०) चड़े का कैक २. (मा०) अनुभवपुत्र मनुष्य—रघु० कृपयक, —अभि: कुम्भी के तिर पर कलात्मकियों के बीच का भाँ।

कुम्भक [कुम्भ+कम्+क+क वा] १. स्तंभ का आधार २. (मल्लार्थ में) आनामाय का एक प्रकार जिसमें बाहिरे हाथ की अनुश्रुतियों के दोनों मधुने और वृक्ष वर करके बांध रोका जाता है।

कुम्भा [कुम्भित् उच्यते पुरवति इति—उच्य+अप्+टाप् कप् परकम्] वेष्म, आरंभना।

कुम्भीक [कुम्भ+कम्+टाप्, इत्यप्] १. छोटा बरतन २. वेष्म।

कुम्भी [कुम्भ+इवि] १. हाथों बाधि १।५२ २. मयवन्ध। तम०—मरक: एक विशेष प्रकार का मरक,—कल: हाथी के मस्तक से बहने वाला मर।

कुम्भिका [कुम्भ+इकम्] १. सेव कमा कर वर में मूने काक और २. कम्ब और, लेख और ३. लाना, पत्नी का भाई ४. कर्ण पूरा होने के पहले ही उत्पन्न बालक।

कुम्भी [कुम्भ+कीप्] पत्नी का छोटा पात्र, बहिया। तम०,—कल: एक प्रकार का विष्माला माँप उत्तर० २।२९—यक: (ए० व० या व० व०) एक विशेष प्रकार का मरक जिसमें पाथी मन कुम्हार के बानों की प्रति पकाने जाते हैं—यक: १।२२५, कम्० १।१७५।

कुम्भीक: [कुम्भी+क+क] कुम्भापञ्च। तम०—मज्झिका एक प्रकार की मन्त्री।

कुम्भीर: [कुम्भित्+वीर+अप्] बहिर्वाह,।

कुम्भीरकः, कुम्भीरकः, कुम्भीरकः [कुम्भीर+कम्, रत्न क, ततः कम् व] और—जोषेय महीनय कुम्भीरकवाति का प्रतिपचनम्—विष्म० २, कुम्भीरकः कापुष्पिय परिहृत्या पत्रिका—मासवि० ४।

कुम् (तुम्० पर०—कुरति) सज्ज करना, ध्वनि करना कुरकटः, कुरकटः [कुरम् इति अम्यवतकम् करोति—कुरम्+क+ट, कुरम्+कुर+अप् व] तारत पत्नी।

कुरकः (रवी०—की) [क+अङ्ग] १. हरिण—कम्बे वृद्धि कुरव कम्बत कि नाम तम्ब तम्—का० १।१४, ५।१ कम्बी कुरवी कुम्भीकुरीतु—तम० २. हरिण की एक जाति (कुरव ईशान्य स्वादुरिया-कुरिको म्हात्)। तम०—काली—कम्बत,—वेष्म हरिण जैसी जातों वाली रवी,—कालि: कम्बुरी।

कुरकः [कुर+अप्+अप्, कुर] दे० 'कुरव'।

कुरकिकः [कुर+विभक्त+अप्] केकडा

कुरकः [कुर+अट्+कि] कृता बनाने वाला, बोधी।

कुरकः, कुरकः, कुरकिका [कुर+अट्, कुरक+कम्, निम्बो टाप् इत्यप्] पीला मन्दाहार, कटमरी।

कुरकः [कुर+अट्] अष्टमीय की वृद्धि, एक रोग जिसमें पीते बड़ पीते हैं।

कुरटः (कः) [क+कुरप्, रत्नवोरवेद] कीच पत्नी, समुद्री ऊकाव।

कुररी [कुर+रीप्] १. माया कीच,—चकम्ब किन्ना कुररीय मूय—रघु० १।५८ २. वेद। तम०—कम्ब: कीच पत्रियों का मूह।

कुरवः (कः), कुरव (व) कम् [ईत् रवी वच इति, कुरव+कम्] सराबहार वा कटमरी की जाति,—कुरवका: रत्नकारिता वम् रघु० १।२९, मेघ० ७८, रघु० १।१८—व (व),—व (व) कम् मन्दाहार का कूल—वृद्धापासी मन्दाहारकम्—मेघ० ९।५, प्रत्याभ्यास विशेषकम् कुरवक रत्नामावहतामयम्—मासवि० ३।५।

कुटीरम् [कु+ईत्, उकारादेश] निम्बों का एक प्रकार का तिर पर मोड़ने का कपडा।

कुः (व० व०) [कु+उकारादेश] १. कर्णवाम दिक्की के निकट भारत के उत्तर में स्थित एक देश थिय कुञ्जासिधायम् पालनीम्—किं० १।१, थियय मस्मिन कुरववकामने १।१७ २. इस देश के राजा व १ पुरहित २ भात। तम०—जोषम् दिक्की के निकट एक विष्मन्त्र और जहाँ कोई पाण्डव का मरण हुआ था वहाँसे कुञ्जसे मन्त्रेण उग्र मन्त्र—१।१४, कम्० १।१४ जह्नुमय कुरवव मन्त्र (यम्०—मन्त्र २।१।म १।१८०००० विष्मन्त्र मन्त्र १४ के उग्रमन्त्र १।१२) मन्त्र मन्त्र १४

कुड भाग्य व विवाह।

—वासी (स्त्री०) उच्चकुलोद्भूत सती स्त्री.—बुधः
अच्छे कुल में उत्पन्न होता—इह सर्वस्वकलिनः कुल-
पुत्रमहादुःसा—मृच्छ० ४।१०.—बुधः १. सम्मान के
योग्य तथा उच्चकुल में उत्पन्न पुत्रव—कश्चम्बति
कुलपुरुषो वेशाचारमल्लं मनोज्ञमिति—यत्० १।१२
२. पूर्वव—पूर्ववः पूर्व पुत्रव—आर्षा सती साध्वी पत्नी,
—कृष्णा गर्भवती स्त्री की परिचर्या.—सर्षा कुल
का सम्मान या प्रतिष्ठा.—वर्षाः कुल की रीति, सत्ता-
समरीति वा ईमानदारी का व्यवहार, नीति,
—बधू (स्त्री०) अच्छे कुल की सदाचारिणी स्त्री,
—वारः मुख्य दिन (अर्थात् मंगलवार और बुधवार)
—विवा कुलकमालत प्राप्त ज्ञान, परंपराप्राप्त ज्ञान,
—विजः कुलपुरोहित,—बुधः परिवार का दूता तथा
अनुजयी पुरुष, इतः,— तन् कुल का व्रत या प्रतिज्ञा
—बलिभयसामिन्वाक्यानिर्ब हि कुलव्रतम्—रघु०
३।७०, विष्णुस्मिन्नधुनाज्यः कुलव्रतं पालयिष्यति क.
—भावि० १।१३.—येष्ठिन् (पुं०) किसी कुटुंब या
धर्मिकतथ का मुखिया, २. उच्चकुल में उत्पन्न शिल्प-
कार,—सेव्या १ कुल की प्रतिष्ठा २. सम्मानित परि-
वारों में मगना—यनु० ३।१९,—सन्ततिः (स्त्री०)
संतान, वंशज, वंशपरम्परा—यनु० ५।१९९,—संभव
(वि०) प्रतिष्ठित कुल में उत्पन्न,—सेवकः येष्ठ
नीकर,—स्त्री उच्च कुल की स्त्री, कुलकन्या,—अधर्माभि-
नवाक्यम् प्रदुष्यन्ति कुलस्त्रियः भग० १।४१,
—विपत्ति (स्त्री०) कुटुंब की प्राचीनता या
सम्पत्ति।

कुलक (वि०) [कुल + कन्] अच्छे कुल का, अच्छे कुल
में जन्मा हुआ, - कः १. शिल्पियों की श्रेणी का मुखिया
२. उच्च कुल में उत्पन्न शिल्पकार ३. बौद्ध, कम्
१. समूह, समूह २. व्याकरण की दृष्टि में सम्बद्ध श्लोको
का समूह, (पद्य में पन्द्रह तक के श्लोकों का समूह
जो एक वाक्य बनाते हों) उदा० ३० शि० १।१-१०,
रघु० १।५-९, इसी प्रकार कु० १।११-११।

कुलसा [कुल + सद् + सञ् + टाप् शक० परस्मैपु०] व्यभि-
चारिणी स्त्री—मृष्टा० ६।५, पात्र० १।११५। सम०
—वतिः प्रष्टा या जातिणी स्त्री का स्वामी।

कुलसः (अव्य०) कुल + तल्लिप् [वस्य मे]।

कुलस्यः [कुल + स्या + क पृषो० साध्] कुलधी, एक
प्रकार की दास।

कुलम्बर (वि०) [कुल + म् + कञ्, मुन्] अपने कुल का
शिलालिङ्ग चलाते वाला।

कुलम्बरः, -कः [कुल + म् + कञ्, मुन्] बोर।

कुलम्बतु [कुल + क्तुप्, सत्य वाक्यम्] कुलीन, अच्छे घराने
में उत्पन्न।

कुलम्बः, कम् [कुल पक्षितसमूहः अयत्रेज्य—कुल + अय

+ कञ्] पक्षियों का बोंसला,—कुलम्बकपोत-
कुलकुलकुला कुले कुलायदुषा—उत्तर० २।९, नै० १।
१४। २. शरीर ३. स्थान, जगह ४. बुना हुआ वस्त्र,
जांता ५. वस्त्र या पात्र। सम०—विष्वाधः बोंसले
में बैठना, बड़े सेना, बंधों में से बन्धे निकालने के लिए
बंधों के ऊपर बैठना।—स्वः पक्षी।

कुलाविका [कुलाय + ठन् + टाप्] पक्षियों का पिंजड़ा,
चिड़ियाघर, कबूतरखाना, दड़वा।

कुलालः [कुल + कालम्] १. कुम्हार,—ब्रह्मा येन कुलाल-
वजियमितो ब्रह्माष्टमाष्टावरे—यत्० २।९५ २. अक्षरी
मूर्गा।

कुलिः [कुल् + इन्, किम्] हाथ।

कुलिक (वि०) [कुल + ठन्] अच्छे कुल का, उत्तम कुल
में उत्पन्न, -कः १. स्वजन—वाश० २।२३३ २. शिल्पि-
तथ का मुखिया ३. उच्चकुलोद्भूत कलाकार। सम०
—वेष्ठा दिन का वह समय जबकि कोई शुभ कार्य
आरम्भ नहीं करना चाहिए।

कुलिङ्गः [कु + लिङ्ग + अच्] १. पत्नी २. चिड़िया।

कुलिम्, (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [कुल + इनि] कुलीन
उच्चकुलोद्भूत, (पुं०) पहाड़।

कुलिम्बः (ब० ब०) [कुल् + इन्ड] एक देश तथा उसके
शासकों का नाम।

कुलिर्,—रन् [कुल + इरन्, किन्] १. केकड़ा २. राशि
चक्र में चौथी राशि, कर्कराशि।

कुलि (स्त्री) कः—सम् [कुलि + णी + इ, पश्चे पथो०
वीथे] इन्द्र का वज्र वृषभ्य इत्युः कुलिज कुलिङ्गा
वीथ लक्षणे—कु० २।२०, अवेदनाम् कुलिजलतानाम्
१।१०, रघु० ३।६८, ४।८८, अयस ६६ २. वरुण
का निरा या किनारा पेश० ६१। सम०—बरा,
वालि इन्द्र का विरोधण, - नायकः संभुन की विशेष
रीति, रतिमबंध।

कुली [कुलि + डीप्] पत्नी की बड़ी बहन, बड़ी साखी।

कुलीन (वि०) [कुल् + क्] ऊँचे वंश का, अच्छे कुल का,
उत्तम परिवार में जन्म हुआ, दिग्वाधोचितविकाकुली-
नाम्—का० ११,—कः अच्छी नसल का घोडा।

कुलीनसम् [कुलीन भूमिलम् इयम् स्वति + कुलीन + गो
+ क] पामी।

कुलीरः, -रकः [कुल् + ईरन्, किन् ; कुलीर + कन्]
१. केकड़ा २. राशिचक्र में चौथी राशि, कर्क राशि।

कुलम्बकमुञ्जा [की पक्षिणा लम्बका, मुञ्जायिता मुख्य इव]
मुकाटी, जलती हुई लकड़ी।

कुलम्, (ब० ब०) एक देश और इसके शासकों का नाम।

कुलम्बकम् [कुल् + लिप्, कुम् शापोऽस्मिन् ब० त०]
काँची, -कः एक प्रकार का शनाव। सम०—अधि-
कुलम् काँची।

कुसुमः [कुस् + ऊलच्, पुषो० सस्य शास्त्रम्] 1 अनागार (सली), कोठी, भटार - को बन्धो वहुनि पुनै कुसुमापूरणादर्क-—हि० प्र० २० 2 भूमी से बनाई हुई जाग ।

कुसुमेयम् [कुसो + ली + अच्, अलुक् स०] कुसुम कमल - भूमाकुसुमशरजीमुदुरेयुरस्या (पन्था) - ग० ६।१०, रत्न० ६।१८, -अः सारम पक्षी ।

कुम्भः (कृपा० पर० - कुष्णाति, कुपित) 1 काटना निचोड़ना, लीचना, निकालना गिबा कुष्णन्ति मामानि - मट्टि० १८।१२, १७।१०, ७।२५ 2 जाँचना परीक्षा लेना 3 बमकना, मिल् - निचोड़ना, काटना, निकालना - उपानयोनिष्कुपित बिहङ्ग - रत्न० ७।५० मट्टि० १।३०, ५।४२, इसी प्रकार - कार्कनिल्कुपित इति कवसित मोमायुमिर्लोप्यन्त गगाट्ठम् ।

कुम्भकः [कुम्भ + काक्] 1 सूर्य 2 अग्नि 3 लग्न बदर ।

कुम्भः, कुम्भ [कुम्भ + क्चन] कोड़ (कोड़ १८ प्रकार का होता है) - गलकुम्भाभिन्नाय च - भर्तृ० १।१० । सम० - अरिः 1 गवक 2 कुछ पीछों के नाम ।

कुम्भित (वि०) [कुम्भ + इतच्] कोड़ से पीड़ित, कोड़-ग्रस्त ।

कुम्भित् (वि०) (स्त्री० - नी) [कुम्भ + इति] कोड़ी ।

कुम्भकः [कु ईषत् उप्मा अण्डेषु बीजेषु मय्य - व० स० शक्० परस्मैपदम्] एक प्रकार की लीकी, तूमडी, कुम्हड़ा ।

कुम्भ (वि०) पर० - कुष्पति, कुपित 1 आलस्यन करना 2 घेरना ।

कुम्भितः [कुम्भ + क्त] 1 आबाद देस 2 जो सूद मे जीविका चलाता है, दे० 'कुम्भीर' नी० ।

कुम्भी (वि०) व [कुम्भ + ईव] (इसे 'कुम्भीर' या 'कुम्भीर' भी लिखते हैं) । साहूकार, मूदकोर - वच्, 1 वह कर्जा या बल्लु जो व्याज सहित लौटावी जाय 2 उबार देना, मूदकोरी, सूदकोरी का व्यवसाय - कुम्भीवाद् दारिद्र्य परकरगतचम्पिजममात् - पञ्च० १।११, मनु० १।१०, ८।४१०, वाङ्म० १।१११ । सम० - वच्: सूदकोरी, मूदकोर (पठान) का व्याज, ५ प्रतिशत से अधिक व्याज - वृद्धिः (स्त्री०) बन पर मिलने वाला व्याज, - कुम्भीवृद्धिर्गुणं भाव्यति सकृदाहुना - मनु० ८।१५१ ।

कुम्भीवा [कुम्भी + टाप्] मूदकोर स्त्री ।

कुम्भीवाची [कुम्भी + वीच्, ए आदेश] मूदकोर की पत्नी ।

कुम्भीविकः - कुम्भीविन् (पु०) [कुम्भी + वृज्, इति वा] मूदकोर ।

कुम्भयम् [कुम्भ + उय] 1 फूल, - उदेति पूर्वं कुम्भयत्न पञ्चम, ग० ७।३० 2 ऋतु-जाय 3 पञ्च । सम० - अञ्जयन् पौतल की भूम्य जो अजय की भाति

प्रयुक्त होती है, - अञ्जयन् ईडी भर फूल, - अञ्जयन्, - अञ्जयन् (पु०) चम्पक वृक्ष (इसके फूल पीले रंग के सुगंधयुक्त होते हैं), - अञ्जयन्: फूलों का पुष्पा - अञ्जयन् यय कुम्भयन्नाय कुम्भयन्नायि करीणि सस्य काव्य० ३, - अञ्जयन् फूलों का गजरा, अञ्जयन्, अञ्जयन्, - इयुः, - अञ्जयन्, - अञ्जयन् 1 पुष्प-मय बाग 2 कामदेव, - अञ्जयन् कुम्भयन्नायार - मा० १ यहाँ 'कुम्भयन्नायार' की पढ़ा जा सकता है) - तस्मै नमो भगवते कुम्भयन्नाय - यत्न० १।१, ऋतु० ६।३३, बीर० २०, २३, रत्न० ७।११, वि० ८।७०, ३।२ कुम्भयन्नायारभावेन - गीत० १०, - अञ्जयन्: 1 उद्यान 2 फूलों का गुच्छा 3 बसंत ऋतु ऋतुना कुम्भयन्नाय - भग० १०।३५, इसी प्रकार भावि० १।४८, - अञ्जयन् केसर, जाफरान, आलक 1 गह्वर 2 एक प्रकार की माछ मटिया (फूलों से तैयार की गई) उञ्जयन् (वि०) फूल से बमकीला, कर्मुकः, चायः, - अञ्जयन् (पु०) कामदेव के विशेषण कुम्भ-चापमनेप्रयदगुणि - रत्न० १।३९, ऋतु० ६।२७, - वित्त (वि०) पुष्पों का अञ्जय हो गया है जहाँ

दुरन् पाटकीपुत्र (पठना) का नाम कुम्भपुराणि-योग प्रयन्तासीनो राक्षस मुद्रा० ७ लता खिली हुई लता, सबन्ध फूलों की जग्या विक्रम० ३।१०, स्वचक्रः फूलों का गुच्छा गुल्मदस्ता कुम्भमस्तचक्र-स्वचक्र द्वे गती स्ता मनस्विनाम् भर्तृ० २।३३ ।

कुम्भकरी [कुम्भ + क्तृप् + क्रीप्, मय्य व] ऋतुमती या रत्नत्वना स्त्री ।

कुम्भित (वि०) [कुम्भ + इतच्] फूलों से युक्त पुष्पों से गुमांजित ।

कुम्भयामः [कुम्भयन्नायभनीयानि इत्यादि आद्याति इति कुम्भय + भा + लो + क्] बार ।

कुम्भयः, -यम् [कुम्भ + उय] 1 कुम्भयन्, कुम्भयन्नाय बार केन वमाना - गग०, रत्न० ६।९ 2 केसर 3 स्यासी का जलपान, कमण्डलु, - यम् सोना, - यः बाह्य स्थेह (कुम्भयनी रम से तुलना की गई है) ।

कुम्भकः [कुम्भ + ऊलच्] 1 अनागार (सली), भटार, गृह (अनाज आदि के लिए) ।

कुम्भितः (स्त्री०) [कुम्भित्ना मृति] आलस्यारी, ठगी, बोला-देही ।

कुम्भयः [कु + स्तृप् + क] 1 बिष्णु 2 समुद्र ।

कुम्भः [कुम्भ + गिष् + अच्] कुम्भ, घनपति ।

कुम्भकः [कुम्भ + क्तृप्] छली, ठग, बोलाक (ऐलजासिक), - कम्, - का बोलाकी, बोला। सम० - कार (वि०) कपटी, छलिया चक्षित (वि०) दीपेय से डरा हुआ, एक करने वाला, आवमान, मजग - हि० ६।१०२, - स्वचक्रः, स्वचक्रः मुर्गा ।

कुल्लः [कु + हल् + कल्] 1. कुला 2. लीप-कल्
1. छोटा मिट्टी का बर्तन 2. लीप का बर्तन ।

कुल्लिका [कुह् + य, कुहन + क + टाप्, इत्यम्]
स्त्रियं की पूर्ण के लिए वाक्य कही साधनाओं का
अनुष्ठान, वंश ।

कुहरम् [कुह् + क - कुह राति, ग + क] 1. मूका, गडा
—जैसा कि 'नामिकुहर' या आत्स्य में 2. काम
3 गला 4. मासीप्य 5 मैबुल ।

कुहरितम् [कुहर + इतच्] 1 ध्वनि 2 कोयल की कुक्
3. मैबुल के समय ली, ली का शब्द ।

कुहूः (स्त्री०) [कुह् + कु, कुहु + ऊह] 1 नया बह-
विषम अर्थात् चान्द्रमास का अन्तिम दिन—(अमावस्या)
जब कि चन्द्रमा अदृश्य होता है, कर्मलैव यना
मदिय कुहू—नै० ११५३ 2 हम दिन की अष्टाष्टात्री
देवी—मनु० ३।८६ 3 कोयल की कूक पिनेन
रोपायकभागा महु कुहूनाहयन चन्दर्वीरवी नै०
१११००, उन्मालिनि कुहू कुहूगनि कन्तोलाया पिकाना
विर—मीन० १। मम० कण्ठः—मुक्कः—रबः—
—कण्ठः कायल ।

कू (स्त्री०) मुदा० जा०—कवने, कुवने) (क्या० उम०
कु कुनाति, कु कुनीते) 1 ध्वनि करना, कल-
रव करना 2 कटावस्था में कलन करना—महाभारत-
विश्वप्रभम्—भोट० ११५००, ११२०, ११५५ ३५५६,
११५२० ।

कूः (स्त्री०) [क + क्विप्] पिशाचिनी, बूईल ।

कूचः [क + चट] स्त्री का स्थान (विशेष कर प्रान या
अविवाहिता स्त्री का) दे० कुच ।

कूची, कूची [कूच + कन् + टाप्, ट + म कूच + टाप्]
1. बाग का बना छोटा दृश कूची 2 नाची ।

कूज् (स्त्री०) पर०—कूजति, कूजति) अम्पट ध्वनि करना
गूजना, कूजना, कूजना गूजल गम गमनि मय
मयुगधम्—गमा०, परमाहिता यमयय चरच
—कू० ३।३०, अनु० ६। २० म्प० २।३०, नै०
११२०० नि, चरि, चि, कूजना, कूज की
अम्पट ध्वनि करना ।

कूजः, कूजलम्, कूजितम् [कूज् + प्रव, कूज् + प्रट, कूज्
+ कन्] 1 कूजना कूज की ध्वनि करना 2 परिधा
की चम्पगष्ट ।

कूट (वि०) [कूट् + प्रच्] 1 मिथ्या, जैसा कि 'कूटा
म्य पूर्वभाषिण' में पात्र० १।८० 2 अचर, भिन्न,
दः, हम् 1 प्रायमात्री, भ्रम, धाना 2 शीव, जात
मासी में भरी हुई जोरना 3 अति प्रल, पेशीया या
उपलब्धकार म्बम जैसा कि कूटप्लोकि और कूटा-
म्योकि 4. मिथ्यात्व, अमथता (प्रायः मयाम में
विशेष के हल के साथ प्रयोग) 'कूटलम्, कूटे या

बोले में हलाने वाले शब्द 'कूला, 'मानम्' बाहि
5 पहाड़ का शिखर या चांटी—अथर्वान्वित तत्कृतानुवृत्ति-
बालुरेवम्—रघु० ४।७१, मेघ० १।१३ 6 उभार
या उभयगता 7 अपने उभारी मयम माघे की हड़दी,
मिर का पिना 8 लीग 9 मिरा, किनारा—याज्ञ०
३।९६ 10 प्रधान, मुख्य 11 गति, डेर, लघुहः
अप्रकृतम् बादला का समूह, इसी प्रकार अन्यकृतम्
—अनाज का डेर 12 हबोडा, घन 13 हल की फाली,
कुली 14 हरिणा की पमाने का जान 15 कुली,
जैसे उन्नी स्थान में कर्षी, वा हाथ की गटिका में
कृपाय 16. जयकलम, टः 1. बर, बाबात
2 अवस्थ की उपाधि; गम०—अल मूठा या कपट से
भरा पासा (मीमा या पासा मरा हुआ त्रिवले फेंकने
पर बर नाम डल पर ही बित हा) —कूटाक्षोर्षिदे-
विम—याज्ञ० २।२००—अवारम् छन पर इनी कंठरी,
—अवः अर्धा की मन्दिर्यता भाषिता कहाती, उन्मास,
—उत्तमः जायगात्रा में भरी यात्रना, कटवास, कटनीति
—कारः धामेनात्र, मूठा मवाट—कूम् (वि०) उमनेवाला,
धामा देने वाला 2 जाली दम्पावेव बनानेवाला
—याज्ञ० २।३० 3 घम देने वाला (पू०) 1. कायस्थ
2 प्रिय का विशेषण—कार्षीयः मूठा कार्षीय, —कूजः
गर्वा, छम्ब (पू०) टम —मुला पासव वाली तराव,
बम् (वि०) बड़ी मूट (मिथ्यात्व) कर्तव्य कम
मममा जाय (मेमा स्थान, घर, और देव बादि),
पाककः पिनादायकम् ज्वर जियने हाची इन्त
हाना है, इन्मिमानज्वर रचिरेण वैकृतवित्तदाकः
कूटन कटार डब कूटाकल् (अभिहीन)—मा० १।३९,
(कमा रधा इसी शब्द की 'कूटपालक' भी लिख देते
हैं)—वाल्मिकः कूटहार कुम्हार का बाबा,—वाक्य,
—कण्ठः जात, कटा—रघु० १३।३९,—आत्मन् मूठी माय
या ताल,—मोहलः स्थान का विशेषण,—कूजम् हरिण
एव परिधा का पमाने का जाल या कटा,—मुद्गल् छल
और हाने की लड़ा अथमयड रघु० १७।६९,
—आत्मन्मिः (पू० स्त्री०) 1 समल वृक्ष की एक जाति,
2 तब कटा में पुन कटा (एव उपकरण—मसा—जितसे
यमाना पाणिया का दण्ड देना है) —दे० रघु० १२।
१० और हम पर मन्मिन् की टोका, —आत्मन्म जाली
आनागन या फरमान—साहित्य (पू०) मूठा मवाह,
—म्ब (वि०) शिखर पर मूठा हुआ लबोण पर पर
अ, गिडन (ब्रह्मवनीमानक तालिका में प्रधान पर पर
अर्धधन),—म्बः परमात्मा (अवत, अपरिबर्तनीय, तथा
माधन) भय० १।८, १।१३,—स्वर्णम् लोटा सोना ।

कूटकम् [कूट् + कन्] 1 जाकमाजी, बोभादेही, बालाकी
2 उमने, उन्मना 3 कुली, हल की फाली । मम०
—वाक्यान्म मूठी हुई कहाती ।

कृष्कः (कम्+कृ) [कृ+कृ] वेरों वा वनगुहों में ।

कृष्कम्—कृष्क ।

कृष् (पु० उ०—कृषति—ठे, कृषित) 1. बीजना, कतवीत करना 2. बिजोड़ना, बंध करना (इस अर्थ में बा० बाबा बाबा हैं) ।

कृषिका [कृ+कृ+कृ+कृ, इत्यम्] 1. किसी वृक्ष का बीज 2. बीजा की कुटी ।

कृषित (वि०) [कृ+कृ] कम्, पुंरा हुआ ।

कृषाकः [कृ+कृ+कृ, पु०] पहाड़ी माकसू ।

कृष् [कृषति कम्पूका कृषितम्—कृ+कृ दीर्घस्य]

1. कृष्—कृष् पक्ष पक्षीनिवासि कयो वृक्षसि तुल्यं वनम्—कृष् २।४९, इषी प्रकार—कृष्ती नीचोऽस्तीति त्वं कृष् कृष् वा कृषति कृष्, कृष्कतकरक-हृषो कतः वेरों वृक्षसिवासि—कृष् ॥९

2. कृष्, रज, कृष्, कर्त वीरा कि 'कृष्कृष्' में

3. कृष् की कनी ठेक रकने की कुप्पी 4. कृष्क

—कृष्कनीकृष्क—कृष् ॥ 1. कम्—कृष्, कृष्

रीवासि—कृष्क, कृष्क—कृष् (बा०) कृष् का

कृष्क वा कृष्क, (बा०) कृष्ककृष्क कृष्क, जो

बा०कृष्क कृष्क नदी रजता, कृष्क कृष्क

रकने बाबा कृष्क की कृष्क वा कृष्क को ही

बा०कृष्, (बा०) कृष्ककृष्ककृष्क (कृष्) —कृष्क

रजता, कृष् के पानी कृष्कने का कृष्—कृष्ककृष्क,

कृष्ककृष्क रजता में पानी कृष्कने के कृष् कृष् कृष्क

कृष्क । कृष्ककृष्क कृष्क—कृष् कृष् के नीचे ।

कृष्क [कृ+कृ] 1. कृष् (कृष्क की वा कृष्क)

2. कृष्, रज, कर्त 3. कृष् के नीचे का कृष्क

4. कृष् कृष्के कृष्के कृष्क का कृष्क कृष् रजता

बा० ५. कृष्क 6. कृष् 7. कृष् के नीचे का

कृष् 8. कृष् की कनी ठेक-कृष् 9. कृष् के बीज की

कृष्क वा कृष् ।

कृष् (बा०) रः [कृषितः वाट तरणम् कृषितम्—क०

क०] कृष्क, कृष्क ।

कृष् [कृ+कृ] 1. छोटा कृष्, कृष्क 2. कृष्क,

कृष्क ३. कृष् ।

कृष् (ब० वि०) (स्त्री०—री) [कृ+व (ब० रम्]

1. कृष्क, कृष्क 2. कृष्क,—कृ,—कृ कृष् की

कृष्क वा कृष्क-कृष्क कृष्क कृष्क बा० बा०

—कृ 1. कृष्क वा कृष्क कृष्क कृष्क के पक्ष के

कृष् कृष् कृष् 2. कृष् की कृष्क कृष्क कृष्क

बा०—कृष् ४ ।

कृष्क [कृ+कृ]—कृ, की कृष्क उर्ध्व कृष्क कृष्

—कृ+कृ, कृष्ककृष्क] कृष्क, वाट—कृष्क

कृष्ककृष्ककृष्क कृष्क कृष्क कृष्ककृष्क

—कृष्क ४ ।

कृष्क, कृष् [कृ+कृ वि० दीर्घः] 1. कृष्क, कृष्

2. कृष्ककृष्क कृष्क 3. कृष्क 4. कृष्क—कृष्क

कृष्ककृष्ककृष्क कृष्ककृष्क कृष्ककृष्क कृष्क

कृष्क—कृ १ 5. कृष्क 6. कृष्क का कृष्क कृष्क,

कृष्क कृष्क के कृष्क का कृष्क 7. कृष्क, कृष् 8. कृष्क,

कृष्ककृष्क 9. कृष्क कृष्क, कृष्क कृष्क 10. कृष्क,

—कृ 1. कृष् 2. कृष्क । कृष्क—कृष्क—कृष्क

कृष्ककृष्क का कृष् ।

कृष्क [कृष्क+कृ+कृ+कृ] 1. कृष्ककृष्क कृष्क की

कृष्क, कृष्क वा कृष्क 2. कृष्क 3. कृष्क, कृष्क

4. कृष्ककृष्क कृष्क 5. कृष्क ।

कृष् (बा० उ०—कृषति—ठे, कृषित) 1. कृष्क कृष्क,

कृष्क 2. कृष्क,—कृष्ककृष्क कृष्क—कृष्ककृष्क

कृष्ककृष्ककृष्क कृष्क—कृष्क १४७७, ७९, १४२५,

कृष्क, कृष्क, कृष्क ।

कृष्क [कृ+कृ] 1. कृष्ककृष्क 2. कृष्क, कृष्क

कृष्क, कृष्क 1. कृष्क की कृष्क को कृष्ककृष्क के कृष्क

में कृष्क कृष्क कृष्क 2. कृष्ककृष्क की कृष्क ।

कृष्क [कृ+कृ+कृ, दीर्घः] कृष्क कृष्क के कृष्क का

कृष्क ।

कृष्क [कृ+कृ+कृ, कृष्क, कृष्क, दीर्घः वि०]

1. कृष्क—कृष्क २०१९ 2. कृष्क ।

कृष्क [कृष्क कृष्क कृष्क कृष्क कृष्क] 1. कृष्क

—कृष्ककृष्क कृष्ककृष्क कृष्ककृष्क—कृष्क ७३

१०५, कृष्क २०५८ 2. कृष्क का कृष्क (कृष्ककृष्क)

कृष्ककृष्क । कृष्क—कृष्ककृष्क कृष्क का कृष्ककृष्क

—कृष्क कृष्क १—कृष्ककृष्ककृष्ककृष्क कृष्क

कृष्क कृष्ककृष्ककृष्ककृष्क, कृष्क कृष्ककृष्ककृष्क

कृष्क कृष्ककृष्क कृष्क कृष्ककृष्क कृष्क कृष्क

कृष्क कृष्ककृष्क कृष्क कृष्ककृष्क कृष्क कृष्क

कृष्क कृष्ककृष्क कृष्क कृष्ककृष्क कृष्क कृष्क

कृष्क कृष्ककृष्क कृष्क कृष्ककृष्क कृष्क कृष्क

कृष्क कृष्ककृष्क कृष्क कृष्ककृष्क कृष्क कृष्क

कृष्क कृष्ककृष्क कृष्क कृष्ककृष्क कृष्क कृष्क

कृष्क कृष्ककृष्क कृष्क कृष्ककृष्क कृष्क कृष्क

कृष्क कृष्ककृष्क कृष्क कृष्ककृष्क कृष्क कृष्क

कृष्क कृष्ककृष्क कृष्क कृष्ककृष्क कृष्क कृष्क

कृष्क कृष्ककृष्क कृष्क कृष्ककृष्क कृष्क कृष्क

कृष्क कृष्ककृष्क कृष्क कृष्ककृष्क कृष्क कृष्क

कृष्क कृष्ककृष्क कृष्क कृष्ककृष्क कृष्क कृष्क

कृष्क कृष्ककृष्क कृष्क कृष्ककृष्क कृष्क कृष्क

कृष्क कृष्ककृष्क कृष्क कृष्ककृष्क कृष्क कृष्क

कृष्क कृष्ककृष्क कृष्क कृष्ककृष्क कृष्क कृष्क

कृष्क कृष्ककृष्क कृष्क कृष्ककृष्क कृष्क कृष्क

मम वपुषि नवबीजनेन पदम्—का० १४१, ममसाङ्ग—
मोचना, मध्यस्थता करना ममसि कृ—सोचना—दृष्ट्वा
मनस्येषमकरोत् का० १३६, दृढ निषेध करना
सकल करना,—सम्प, मैत्री कृ मित्रता करना
अस्थानि कृ—अवकाशों के प्रयोग का अभ्यास करना,
वड कृ—वड देना, हुरसे कृ—पवान देना, काल कृ—मरना
यनि, वृद्धि कृ—सोचना, इरादा करना, अभिप्राय होना
—उपकृ कृ—पितरों को जल का तर्पण करना, चिर कृ—देर
करना, बर्हुर कृ—बीजा बजाना, नखानि कृ—नाम्न साफ
करना, कम्हा कृ—सती-बध्ष्ट करना, कोमायं मय
करना, बिना कृ—अलग करना छोड़ा जाना जैसा कि
'मवनेन बिनाकृति रति' कु० ४१२१ में, मध्य कृ
बीच में रखना, संकेत करना—मध्यकृत्य स्मित कृष
कैशिकान्—मालवि० ५१२, बसे कृ—जीतना, बस में
करना, दमन करना, चमत्कृ आश्चर्य पैदा करना,
प्रवर्धन करना, सत्कृ सम्मान करना, सत्कार करना,
तिर्यक् कृ—एक ओर रख देना—प्रेर० (मारयति—ने)
करवाना, सम्पन्न करवाना बनवाना, कार्यान्वित कर
वाना—आज्ञां कारय रजोमि—मटि० १८६, मृग्य
मृग्येन वा कट कारयति—सिद्धा०—, इच्छा० (चिकी-
रति—ते) करने की इच्छा करना, अङ्गी—1. स्वीकार
करना, अपनाना—लवङ्गी कुङ्कुमि द्यङ्गीकृत्यु—अप०,
दक्षिणाभाषामङ्गीकृत्य—का० १२१ 2 मान लेना
स्वीकृति देना, अपनाना मान लेना 3 करने की
प्रतिज्ञा करना, विम्वेकारी लेना—कि चङ्गीकृतमन्त्र-
मन्त्रमन्त्रकाध्यामो अनो लज्जते—मुद्रा० ११८
4. दमन करना, अपना बनाना, अनुज्ञ करना—अय०
५२, अस्ति—बड जाना पोछे छोड देना, अस्ति०,
1 अधिकारी होना, हुकदार बनना, अधिक बनना,
किसी कर्मव्य के लिए पाकीकरण,—नैवाध्यकारिध्याहि
वेदवृत्ते—मटि० २१३४, कि० ४१०५ 2 लज्ज बनाना,
उत्प्रेक्ष करना, ('विषय पर' के विषय में 'के लिए'
'संकेत करके' 'उत्प्रेक्ष करने हुए' अर्थों के लिए अर्थ
कृत्य' शब्द का प्रयोग होना है—प्रीतमसमयमधिकृत्य
वीथयाम्—श० १, शकुन्तलामर्षकृत्य बसीमि—श०
२, रघु० ११६२) 3 धारण करना—अभिषेक नय
हुरि—मटि० ११० 4 अभिप्रेत करना, दबा लेना,
संकेत बनना 5 रोकना, रुकना, हाथ लीचना। अन्—
सुरत सकल में मिलना, अनुमन करना विशेषतः
नकल करना (कर्म व सब० के साथ)—बीलाधिपत्या-
मुचकार लक्ष्मीम्—मटि० २१८, मनु० २११९९, त्याग-
स्या हुरिमानुकुर्वन्तीम्—का० १०, अनुकरोति अन-
वष्टी माराधनस्य—६, अच—1 अधिकार दूर करना,
छुटाना, दूर अधिकार बनादर करना, योषधके बवा-
कृतिराम्—मटि० ८१२० 2. अहार करना, अति पदु-

आना, दूर करना, हाति पहुँचाना, हाति या अति
पहुँचाना (सब० के साथ) न कश्चिन्मया तस्याप-
कर्तुं शक्यम्—पच० १, अवा 1 दूर करना,
त्याग देना, हटाना, मिटाना—तत्रैव तिष्ठत्यपाकरोति
चन्द्र श० ६१०९, न पुत्रवास्तस्यमपाकरिष्यन्ति
कु० ५११४ 2. फेंक देना, अस्वीकार करना, एक
ओर रख देना, छोड देना शिवा भुजङ्गमपाचकार
रघु० ३५०, अश्वत्थरी 1 दोक्षित करना
2 मित्र बनाना (अश्वत्थरी के नी० वे०) अश्वत्थ—,
विभूषित करना मन्त्राणां शोभा बढाना—उभावलम्ब-
नुरञ्चिताम्या तपोबनावृत्तिपथ मताभ्याम्—रघु० १११
१८ कतमो बशोऽलङ्कृतो अम्भना श० १, आ,
(अर०) 1 पुकारना बुलाना, निमन्त्रित करना,
आकारयैमय 2 निकट लाना, आबिष् प्रकट
करना, दर्शनीय बनाना, जाहिर करना प्रदर्शन करना
(आबिष् के नी० दे०) उष (कर्म०—उपकरोति)
1 (क) मित्र बनाना मेवा करना, सहायता करना
अनुषङ्ग करना, उपकृत करना (प्राय सब० कभी-
कभी अर्थ० के साथ)—सा लक्ष्मीरूपकुडने भया परेवाम्
मटि० ८११८, आत्मनश्चोपकर्तुम् मेघ० १०१
श० २०१७४, मनु० ८१३९४ (अ) 1 हाजरी में बड
रहना, मेवा करना 2 (कर्म०) उपकरोति (क)
विभूषित करना, शोभा बढाना, सजाना (अ) प्रत्यक्ष
करना (सब० के साथ) मटि० ८११९, ११९ (ग)
नैवार करना, विस्तार से कार्य करना पूरा करना
निर्मल करना—उवा 1 सीपना, देना 2. प्रारंभिक
सत्कार सम्पन्न करना मनु० ६१९५ दे० उपकर्मेन्
3 उडा लाना, लाना 4 आरम्भ करना, उरी
उररी—, उररी—, ऊरी—, या ऊररी—स्वीकार करना,
दे० अगोत्र० ऊपर रघु० १५१० दे० उरी भी,
तिरस्—1 अपमान कहना, दुरा मला कहना, अनादर
करना, घृणा करना 2 पीछे छोडना, आगे बढना,
जीतना, दे० तिरस के नीचे०, रज्जु—पू, कोई (तिर-
स्कार मूचक) दक्षिणो—, या प्रदक्षिणो—, किसी वस्तु के
बाएँ ओर घूमना (अपना दक्षिण पाश्वर्य उसकी ओर
करने), प्रदक्षिणीकुडव्य सद्योदुताग्नीन् श० ४
प्रदक्षिणीकृत्य हुत दुताग्रमन्तरवर्तुरकम्पनी च, रघु०
२१७१, दुल्, बुरे डग से करना, चिक्—, सिक्कना,
दुरा मला कहना, अनादर करना दे० चिक् के नी०,
मल्ल—, नमस्कार करना, पूजा करना—मुनिपथं
नमस्कार्य—सिद्धा० दे० नमस् के नी०, वि—, अति
पहुँचाना, दुरा करना, मिक् 1 हटाना, हाँक कर
दूर कर देना मनु० ११५३ 2 तोड देना, निकट्वा
कर देना मटि० १५१५४, मिता—1 निकाल
देना, परे कर देना, निष्काश बाहर करना—मटि०

१५१००, रघु० १५५७ 2 निराकरण करना (मत
बाली का) 3 छोड़ना, त्यागना 4 पूर्व कथ से नष्ट
कर देना, ध्वस्त करना 5 बुरा मला कहना, नीच
मनवाना, तुच्छ समझना, ध्वस्त, अपमान करना,
बनाबर करना, धरा—, (प०) अस्वीकार करना
बहलाना करना, निराबर करना, झगल नहीं करना
तां हुनवान् पराकुर्बन्धमन् पुष्पकम् प्रति भट्टि०
१५१००, परि (परिकरोति) 1 घेरना 2 (परिष्क
रोति) विभूषित करना, सजाना रया हृमपरिष्कृत
महा०, (आल०) निर्मल करना चमकाना, गुड
करना (शब्दों का), पुरस् - सम्मुख रखना राजा
सकुलना पुरस्कृत्य वस्तव्य श० ६, हुने भरति
वाङ्मये पुष्कल्य शिखिबन्धम् वेणी० २११८-६०
पुरस् के नीके म 1 करना सम्पन्न करना
भारत करना (अधिकतर उसी अर्थ में प्रयुक्त होना
है जिसमें क) —आनन्दाय नरो वैवाण्णकारणि विगहि
तम पञ्च ६३५ भट्टि० २१३६, रघु० १६ मनु०
८१५४, ६०, ८१३९, अमर १३ 2 बलात्कार करना
अप्याचार करना, अपमान करना, भट्टि० ११९
3 सम्मान करना, पूजा करना, प्रति- 1 बदला देना,
बापिस देना, लौटाना पूर्व कृतार्थों मित्रार्थों नाश
प्रतिकराति ये रामा० 2 उपचार करना, व्याधि
निष्कारिण ते जातु प्रतिष्ठया हि तथ वै महा०
3 बापिस देना, लोको का यो कर देना, पुन स्थापित
करना मनु० ११२८५ 4 प्रतिष्ठापित करना रघु०
१२१९६, प्रभाषी 1 भरोसा करना विश्वास
करना 2 प्रमाण पुरुष मानना आज्ञा मानना सामान्य
सबविधिय प्रमाणाङ्कनम् श० ६ 3 आल गठाना
विनश्यत करना, बर्तित करना या नष्टहार करना
— देवन प्रभुणा हव्य अर्पति पञ्च ५ प्रमाणीकृतम्
— मनु० २११२१, प्रभुस्, प्रक करना पदार्थों
करना, दिसलाना जाह० करना— 1० पादुस् के
ली०, मनुष्य 1 प्रतिकूल देना (आमा०) प्रमण
करना, वि बदलना परिवर्तन करना प्रभ विन
करना विकारहेतो गति विधिगन्धे प्रेय ५ वेतमि
न एव वीरा कु० ११५९, रघु० १३१०० 2 म इति
विमोहना, विरूप करना विकृताकृति मनु० १५५२
3 उत्पन्न करना, पैदा करना, सम्पन्न करना मनु०
११७५, नास्य विष्णु विकुर्वन्ति दातया—महा० 4 विघ्न
झालना, हासि पहुँचाना कति पहुँचाना (आ०)
—हीनाम्यनूपकणि प्रवृद्धानि विकुर्वन्ते रघु० १७३
५८ 5 उपचार करना --विकुराणि दहरानघ
—भट्टि० ८१२, 6 (पत्नी को मारि) विव्हास-
वातक होना बिधि, प्रहार करना, धति पहुँचाना,
विघ्न— 1 सताना, कष्ट देना, तंग करना, हासि पहुँचाना

—कि सत्त्वानि विप्रकाराणि श० ३ कु० २११
2 बुरा करना दुष्प्रवृत्तार क०— श० ६, १३
3 प्रभावित करना परिवर्तन लाना—कमप० मवग न
विप्रकुर्वु कु० ११९५, व्या— 1 प्रकट करना
साक करना नामरूपे व्याकरवाणि छा० 2 २१
पावन करना व्याख्या करना 3 कहना बयान करना
—तन्मे सर्व भगवान् व्याकरणु महा० तम्
(मकुर्वते) (क) करना (रय अपराध)—ये पक्षा
परमशरीरमात्रिता रणानि सकुर्वन् मण्ड० १११
(ख) निर्माण करना तैयार करना (ग) करान
मयन्न करना 2 (रकुर्वते) (क) अमहान् करना
शोभा बढ़ाना—ककुम् समस्तुकुल माधवनीम्— शि०
५१०० (ख) निर्मल करना चमकना—वाङ्मया समल
कुराति पुष्प १ सम्पन्ना व रये—मनु० २१९ शि०
१६१०० (ग) बदला के उपचारण मे अधिकमित्र
करना—मनु० ५१३६ (घ) वेदविहित सम्कारो १०
(किसीपुरुष को) पवित्र करना, गुड करने का
शाम्भोक्त विधियों का अनुष्ठान करना मन्त्रक
भयवीर्य मेषिषेवो यदार्थवि रघु १-१३१
पाञ्च २१०४ लोको— एक बार मुझना परोक्ष
रूप से मुझना—माचोहना वाहनान भाषो कु०
२१६८ रघु० १११४।

कुक [कु + क्क] गमा ।

कुकलः [(र)] [कु + कल] अथ कु + क — १ । एक
प्रकार का तीतर ।

कुक (कु) कात [कुकः लम् — अण् । 'काकली
मरिगट ।

कुकवाकः [कुक + वाक् + जु + क् आदेश] 1 मुर्गा 2 मोर
3 छिाकिली सम—अथ कान्तिय का विशेषण

कुकटिका [कुट + कट् अण् कुकट + क्त डण्
इवम्, 1 पीता का मोर उक्त हुआ राम 2 पद
का पिच्छा भाग ।

कुकु (वि०) [हुतो - रक छ आदेश] 1 गन् देने
वाला, पीछा कर—मनु० ६७८ 2 बुरा, निरुद्ध
अनिष्टकार 3 हुट लो 4 सकटघन प उर
—अण्, —अण्, 1 काठनाई कट्ट बट ला १५४
मकट, अथ कुक्क महलीश—रघु० १०६
१३७७ 2 ग्रासैरिक्त तप, नाराय प्रार्थयथा
मनु० ५१२२२ ५१२१ १११०५ अण्, कुक्कण,
कुकुम्बु बड़ी कठिनाई के साथ हुक पूर्वक, बड़े कष्ट
साथ—अथ कुक्कण रक्षते हिं १११५५ ।
सम० —अण् (वि०) 1 जिसका जीवन खतरे में है
2 कष्टपूर्वक साथ देने वाला 3 कठिनाई से जीवन-
यापन करने वाला, —आण्ड (वि०) 1 कठिनाई से
ठीक हो सके, (दोरी का रोग) 2 कष्टसाध्य ।

कृत् (तुदा० पर० कृत्नति कृत्) 1 काटना काट कर फक देना, विभक्त करना फाटना बाँटना उधारा, टुकड़े २ करना नष्ट करना प्रहरति विभिमंच्छेदी न कृत्नति जीविनम्-१८२० ३:२१ ३५ मट्टि० ० ४० १५१७ १६:१० म० ० ८:१० अब काट फेंकना विभक्त करना फाट न टुकड़े ० करना उध 1 काटना या काट फटना फाटना एण० १:१४ मनु० ११:१० 2 नष्ट नष्ट करना टुकड़े काटना उच्छेदना एण० ५:१५ वि- 1 काटना फाटना टुकड़े २ करना--विश्रामाख्यप्रमाण स्या न्यसि निकर्तति एण० १:१९ निकर्ततिव मानस्य मट्टि० ३:११ मन्निहृत्कण्ठे एण० १:११ 1)

१) कथा० पर० कृत्नति कृत् 1 काटना 2 घटना

कृत् (वि०) [कृ + कृप] (प्रायः समास के अन्त में) निष्पादक कर्ता निर्माण अनुष्ठान उत्पादक रश्च- विना भादि पाप, पुण्य प्रणिमा भादि, (पु०) 1 प्रत्ययो का समूह जिसको धातु के साथ जोड़ने में (सज्ञा, विशेषण आदि) अन्त है 2 इस प्रकार बना हुआ शब्द ।

कृत् (वि०) [कृ + कृ] किया हुआ अनिष्टित निमित्त क्रियात्मक निष्पाद्य उत्पादित आदि (मू० क० क० ५-नना० उभ०)-मनु० 1 कार्य, इत्य कर्म-मनु० ३:१७ 2 सेवा लाभ 3 पत्न पूर्णिमास 1 लक्ष्य, उद्देश्य 5 पाप का वह पत्र जिसपर बार बिन्दु अंकित है 6 सवार के बार रूंगों में पहना यग जो मनुष्यों के १७००० वर्षों के बराबर है ३० मनु० १:३९, और इस पर कुल्हकी टीका परन्तु महा-गन्त के अनुसार यह यग मनुष्यों के ६०० वर्षों में अधिक वर्षों का है बार की मर्यादा मग, अकृत (वि०) किया न किया अर्थात् कुछ भाग किया गया पूरा नहीं किया गया, अकृत (वि०) 1 विज्ञान रागा मनु० १:२८ १, 2 सम्पत्ति, (क०) गाम वा वह भाग जिस पर बार बिन्दु अंकित है-अकृत (वि०) शिष्टाचार के कारण धनो हाथ आते हुए भग० १:१६ मनु० ४:१८, अनुकर (वि०) किसे हुए कार्य का अनुकरण करने वाला अनुसरी अनुसारा प्रया पर्यायी, अन्त (वि०) समाप्त करने वाला अवसायी (क्त) 1 मृत्यु का देवता यम-द्वितीय कृतान्त-मिवाटन्त व्यावपश्यन् १८० १ 2 भाग्य, प्राण्य कृतान्तमिवा न मन्त्रे न कृत्तम नौ कृतान्त मण० १०५ 3 दर्शित उपायार्थ इति प्रमाणित मिदान्त 4 पापकर्म, अनुभ कर्म 5 शनि ग्रह का विधोरा 6 नित्यार अन्त मृत्यु अन्त्य 1 रागा हुआ भोजन-कृतान्तमुदक भिष्य-मनु० ४:१९, १:१३ 2 पचा हुआ भोजन 3 मल, अपराध (वि०) अपराधी

होमी, मन्त्रिय, अभय (वि०) भय या सतरे से सुर-जित अभिषेक (वि०) राज्याभिषिक्त, यथा विधि पद पर प्रत्युत्त किया हुआ अभ्यास (वि०) अभ्यास अर्थ (वि०) 1 विमने अपना उद्देश्य निश्चय कर लिय है मन्त्र 2 मनुष्ट प्रमत्त परितुष्ट-कृत कृतार्थोऽस्मि निर्वाहनाहमा शि० १:२९ एण० ८:३, कि० ४० 3 मनुष्ट कृतार्थो 1 सफल ब्रह्मा 2 भगवई ज्ञान कान्त प्रत्युत्तरावच्छेदगुण्या कोष इत्यर्थेकृत-प्रमत्त ११ अवधान (वि०) होमियार मन्त्र न अवधि (वि०) 1 निश्चित नियम 2 हद बन्दा किया हुआ रोहित-अवस्थ (वि०) 1 बलाया हुआ प्रमत्त काय, हुआ 2 निश्चित निर्धारित अवस्थ (वि०) 1 शिष्यावरण 2 जन्म या अन्त्य विज्ञान में प्रकाश एण० १:१६२-आयस (वि०) प्रगत पक्षेय पु०) व भग्या आयस (वि०) होमी अपराधी मूर्च्छित गणो आयस 11४० 1 समय पर्याप्त विधायता 2 पक्ष मन्त्राला आयस (वि०) परिश्रम करने वाला मन्त्र कन्त वाला आयस (वि०) मन्त्रालय हुआ तत्प्राप्त (वि०) परिश्रमी प्रयत्न पु० उच्छा उच्छाह (वि०) 1 विद्या 2 पक्ष द्वार उच्छा कृतार्थ्य करने वाला उपकार (वि०) 1 अनुमोदित भयानक वाच्य सङ्गणक प्रत्य कृ० ३३ 2 विषमद्वय उपभोग (वि०) करना हुआ उपभोग कर्म (वि०) 1 विमने अपना काम कर लिया है एण० ३:२ दन्त वन एण० १:१ 1 एण० वा 2 मन्त्राली काय (वि०) शिष्यो इच्छते पूर्ण है मट्टि १ काय (वि०) 1 समय की दृष्टि में जो भिन्न है निश्चित 2 विमन दृष्ट का न 1८ प्रमाण है (म०) नियत समय याज्ञ० ५:१८ कृत्य (वि०) कृतार्थ एण० १:१० 2 मन्त्र परितुष्ट गा० १:११ 3 विमने अपना कर्म पूरा कर दिया है कृत्य नरादार, अन्त (वि०) 1 निश्चित समय की प्राप्तिपूर्वक प्रतीक्षा करने वाला वय सर्वे सांगुका कृतधाराभित्ताम-गा० १० १ 2 विम कोई अवसर उपलब्ध हो गया है अन्त (वि०) 1 अकृत मनु० ६:०१४ ८:१९ 2 जो पत्र किसे हुए उच्छा को नहीं जानना है कृत् 1 विम बालक का मूढनमस्कार हा गया है मनु० ५:१८ ९० अ (वि०) 1 उपहार मानने वाला, आभारी मनु० ३:०९, २:१०, याज्ञ० १:३०८ 2 शूद्राचारी (क्त) कुला, लोभ (वि०) 1 विमने लोभी के दर्शन किए हैं 2 जो अध्यापनवृत्ति के अध्यापक से अप्रयत्न कला हा 3 विमने लोभी के लब्ध मुक्ति हा 4 पक्ष प्रवर्धक, वातः किमी निश्चित समय के लिए रक्ता हुआ वैतनिक सेवक, वैतनिक

लेखक,—श्री (वि०) १ दूरदर्शी, शिक्षा रत्न के बाबा (दूरदर्शी) २ विद्वान् शिक्षित, बुद्धिमान—मुद्रा० ५१२०,—निर्मलधन परबामारी—निष्कण्ठ (वि०) इन-मकल, बहुप्रतिज्ञ, - पुत्र (वि०) बन्धुविद्या में निपुण, -पुत्र (वि०) पहले किया हुआ—प्रतिज्ञान, आक्रमण और प्रत्याक्रमण, बाबा बोलना और प्रविराध करना—रघु० १२१९४—प्रतिज्ञा (वि०) १ जिसमें किसी से कोई करार किया हुआ है २ जिसमें अपनी प्रतिज्ञा को पूरा कर लिया है बुद्धि (वि०), विद्वान् शिक्षित बुद्धिमान—मनु० ११०३ ३१२० मुक्त (वि०) विद्वान् बुद्धिमान् लक्षण (वि०) १ मुद्रादिन निर्दिष्ट २ वाणी मनु० ११-३० ३ अल्प सुशील परिभाषित विवेचित बन्धु पु० कर्त्तव्यता का—पु० ३ आ कर्त्तव्य शब्दार्थान् के साथ महाभारत के युद्ध में जोरकर रहा बाद में वह साव्यिक के हाथों मारा गया चित्त (वि०) विद्वान् शिक्षित गुरोर्दत्त कृतविद्योर्दत्त गच्छ० ६१०२ गुरुवर्यगिरिणा गृह्या विचिन्वन्मि प्रयो जना गुरुरन कृतविद्यश्च यद्वद भानाति सेविनम् पञ्च० ११६५ जेतन (वि०) वैतनिक, ननवाधार (नीकर बाबि) —पञ्च० ११६४,—वेविन् (वि०) बानारी दे० इनज जेज (वि०) मुद्रोक्तान् विमुचित—यनवति ह्वावसे कंठसे कुञ्जशाय्या—गीत० ११—श्रीधर (वि०) १ सावधार २ सुन्दर ३ पट्ट दक्ष—श्रीधर (वि०) पवित्र किया हुआ धर्म,—वरिष्ठ—अभ्येता, जिसमें अभ्यस्य कर लिया है—कृतपरिचयोर्ग्रन्थ उच्यते गान्धे मुद्रा० १ (मैंने अपना समय उच्यते साधन के अध्ययन में लगाया है) सकल्य (वि०) कृतनिश्चय पुष्टसकल्य,—सकल्य (वि०) समय आदि का नियत करने वाला—नामसमेत इनसकल्य वादयने मनु वैष्णु गीत० ५ संज्ञ (वि०) १ पुन जेतना प्राप्त, होना में आया हुआ २ उद्योगी समान (वि०) कर्मचारी सापत्निका बहु स्त्री (अम के पति में दूसरा विवाह कर लिया है, एक विवाहित स्त्री जिसकी सपत्नी भी विद्यमान हो, हस्त, हस्तक (वि०) १ दक्ष चतुर कुशल, पट्ट २ बन्धुविद्या में कुशल हस्तता १ कीलक दक्षता २ धनुविद्या या धनुर्विद्या में कुशल कौशल कृतहस्तता पुनरिय देवे यथा सावित्री—वेणी० ९११ महावी० ६१४१।

कृतक (वि०) [कृत + कृन्] १ किया हुआ, निर्मित मञ्जित (वि०) वैतनिक) यद्यकृत तत्तद्विषयम्—न्यायसूत्र २ कृत्रिम, बनाबटी ढंग में किया हुआ अकृतकविधितर्कालीनमाकल्पजात रघु० १८१५२ ३ कृडा भगवद्गीता या बहाना किया हुआ, मिथ्या, दिखावटी कल्पित कृतककलह कृत्वा—मुद्रा० ३, कि०

८१४६ ४ कृतक (पुत्र) (बहुधा समाज के अन्य में भी) —यन्त्रोपाने कृतकतन्त्र कालिका बहिषे के (दास मन्त्रारवृत्त) —वेद० ७५, सीधे न पुत्रकृतक पदवी मगसे (ब्राह्मि) —स० ४१३१।

कृतम् (अव्य०) [कृत् + कृत् वा०] पर्याप्त और अधिक नहीं, बस करो अथवा मत करो (कल० के साथ) अथवा कृत मन्हेहेन—स० १, अथवा—गिरु कृतम् रघु० १११६१ कृतमपरेन—उत्तर० ४।

कृति (स्त्री०) [कृ + कृत्] १ करी, उत्पादन, निर्माण, अनुष्ठान २ काव्य कृत्य कर्म ३ रचना काव्य, ल-रचना (गी) : बहूना गण्यमास कविप्रथमपदनिम् रघु० १५१३३, ६०६९, मै० २२११५५ ४ बाबू इन्द्रजाल ५ लति पहुँचाना मर हाकना ६ बीस की मक्का । लय० कर्, गवण का विशेषण।

कृतिम् (वि०) [कृत-दिक्] कृतकर्म, कृतार्थ, अनुष्ठ, परि-त्पत्, पलन कृत्त—काव्य बीरव कृतिना बध व मुचनानि च—उत्तर० ११३२ व कृत्यनिश्चित रघु कृती बवान्—रघु० ३१५१ १२१५५ २ (कृत) सीधायभासी, अच्छी किम्मतवाला, मायबाबू—स० ११०४, स० ७११९ ३ चतुर, मजबूत, बोध, विशेषज्ञ, कुशल, बुद्धिमान्, विद्वान्;—त नुरप्रसक्तनीकृत कृती—रघु० ११३२९, कु० २१०१, कि० २१९ ४ अच्छा, मज्जी, पवित्र, पावन—ठाकुरे कृतिनामि स्मृतास्तेच निर्मलविषेकरीषक—पट्ट० ११५६ ५ कृतकर्ता, भाषाकारी, बाह्यभाषाकार करने वाला।

कृते कृतेन (अव्य०) [कृ + कृत् वा०] कृत्य के द्वारा या समाज में के लिए, के निमित्त, के कारण—बन्धीया प्राप्तावा—कृते मनु० ३१३९, काव्य अकृतेर्जकृते—काव्य० १, म० ११३५, याज्ञ० ११२१६, स० ६।

कृति (स्त्री०) [कृत् + कृत्] १ बनवा, बाक २ (विशेष-त) मृगधर्म जिसपर (वर्गलिका ४) विद्याधी बैठना है ३ (लिखने के लिए) बोधपत्र ४ भोजन ५ कृतिता नखन, कृतिता मक्का । लय०—काव्य—बास्तू (पु०) सिव का विशेषण—स कृतिवाला-मनपरे यताया—कु० ११५४, बाकवि० १११।

कृतिता (व० व०) [कृत् + कृत्, कृत्] १. २० पक्षों में से तीसरा कृतिता नखन (६ तारों का पुंज) २ छ-तारे जो युद्ध के देवता कार्तिकेय की परिकरिका का कार्य करने वाली अप्सराओं के रूप में वर्णित हैं। लय०—तनवः,—बुधः,—कुतः कार्तिकेय का विशेषण,—अन-वीर।

कृत्य (वि०) [कृ + कृत्] १ मज्जी वांछित करने वाला, करने के योग्य मज्जीवाली २ चतुर, कुशल,—लु करीवर, कलाकार। कृत्य (वि०) [कृ + कृत्, पुं] १ जो किया वाला वांछित

सही, उचित, उपयुक्त 2. वृत्तिवृत्त, व्यवहार्य 3 जो राजनसि से पञ्चदश किया जा सके, विद्वत्सभाती - राजतः ५।२४७, -रसम् 1 जो किया जाना चाहिए, कर्तव्य, कार्य - मनु० २।२१७ ७।६७ 2 कार्य, व्यवसाय, करनी, कार्यभार - बन्धुवृत्तम् मेघ० ११४, अन्योपवृत्तम् - सा० ७।३४ 3 प्रयोजन, उद्देश्य, लक्ष्य - कृत्रिमरूपवित्तव्यवस्थाम् - रघु० २।१२, कु० ४।१५ 4 मसा, कारण, -स्थः कर्मवाच्य के कृदन्त के सम्भावनाचक प्रत्ययों का समूह मामत - तथ्य अनीय य और एस्मि, -त्वा 1. कार्य, करती 2 जानू 3 एक देवी जिसकी यज्ञादि के द्वारा पूजा इसलिए की जाती है कि विनाशकारी और जानू दोनों के कार्यों में सिद्धि प्राप्त हो ।

कृत्रिम (वि०) [कृत्वा निर्मितम् - कृ + क्त + मत्] 1 बना बटी, काल्पनिक, जो स्वतः स्फूर्त या मनमानी न हो, अजिन 'मित्रम्', 'सन्' आदि, रघु० १३।७५, १४।३७ 2 मोद लिया हुआ (बच्चा) - दे० नी०, -कः, 'बुधः' नकली या मोद लिया हुआ पुत्र, हिमवर्ष में माने हुए १२ पुत्रों में से एक, मोद लिया हुआ ऐसा बयस्क पुत्र जिसके पिता की स्वीकृति मोद लेने समय न की गई हो, दु० कृत्रिमः स्यात्प्रवय दत्त - वाङ्म० २।१३१, तु० मनु० १।१६९ मे भी, -मन् 1 एक प्रकार का नयक 2 एक प्रकार का मुग्धव्य इत्य० मम० -कृतः, 'बुधकः', एक प्रकार का मुग्धव्य इत्य०, भूप० -पुत्रः दे० कृत्रिम -पुत्रकः गृह्णा, पुत्रलिका - कु० १।१२९, -भूमि (रत्न) बनाया हुआ कर्म, -बन्धु वाटिका, उद्यान । कृत्र्यस् (अध्य०) एक प्रत्यय जो सक्तावाचक शब्दों के साथ 'तद्' और 'युवा' अर्थ को प्रकट करने के लिए जोड़ा जाता है उदा० अष्टकृत्यं त्राष्टगुणां त्राष्ट तद् का इसी प्रकार दन्तं, पर्व आदि ।

कृतम् [कृ - म, क्त] 1 जन 2 मयह, - म् गाय । कृतम् (वि०) [कृ + क्त] मारे, मत्पूर्व, समस्त एक कृत्वा नगरपरिषद्प्राधिकादुर्नक्ति श० २।१५ अम० ३।२९, मनु० १।१०५, ५।४८ । कृतमन् [कृ + क्त, नृमागम] इत् । कृतमन् [कृ + क्त] काटना, काट कर लेंक देना बिनाक्त करना, फाट कर टुकड़े २ करना । कृत् [कृ + क्त] अवस्थामा का मामा (कृप और कृपी दोनों भाई बहुत अगद्वत् क्षत्रि की मन्त्रान से, इनकी माता जानपदी नाम की जन्मना थी । कृप का पालन पोषण सन्तानु ने किया था । कृप बन्धुविद्या में बड़ा मिथुन था, महाभागन के युद्ध में वह कीरप पक्ष की ओर से लड़ा और अन्त में मारा गया । पाण्डवों ने उसे जरम दी । वह सात चिरजीवियों में से एक है) कृत्य (वि०) [कृ - क्त, न स्वभावम्] 1 बरीब, बरनीय,

बनाया, अवस्थाप्य - राजनसपत्य रामस्तो पात्यारच कृपया प्रजा - उत्तर० ४।२५ 2 विवेकमय, किसी कार्य को करने या विवेचन करने के उपयोग अथवा अनिच्छक, - कामार्ता हि प्रकृतिकृपयावितेनाधेतनेनु - मेघ० ५, इसी प्रकार जरावीरैर्बर्षधसनगहनालोपकृपय बर्ष० ३।१७ 3 नोच, अयम, कुष्ट - भग० २।४९ मुद्रा० २।१८ मनु० २।६९ ४ मृत, कृत्य, - कृत्य वृत्त, - कः मृत, कृपयेन समो वाता भुवि कोप्रि न विद्यते, अन- वनक्षेत्र वितामि य परेभ्य प्रयच्छति - व्यास । मम० बी, बुद्धि छोटे दिक् का, नीच मम का, - कृत्य (वि०) दीनदयालु ।

कृपा [कृ + पिदा० अक + टाप्, संघ०] रहम, दयालुता, करुणा - चक्रपाकवी पुरो विदुषो विदुने कृपावती कु० ५।२६, जा० ४।१९, लक्ष्मण कृपा करके ।

कृपाण [कृपा वृत्ति - कृ + वृत्तावाचकम् तारा०] 1 तजवार सपापु ब कसरियोः कृपाण - विक्रम० १।१, कृपणस्य कृपापत्य व केशकमाकारतो मेघ० -मुद्रा० २ बाहू ।

कृपाणिका [कृपाण + कृ + टाप्, इत्यम्] बड़ी, बुरी ।

कृपाणी [कृपाण + णी] 1 कीड़ी 2 बड़ी ।

कृपानु (वि०) [कृपां कति - कृपा + क्त्वा वादात्ते मि० इ] दगाऊ, कष्टापूर्णा, सख ।

कृपी [कृ + कृ] कृप की बहुत तथा शोच की पत्नी, 1 मम० -पतिः शोच का विशेषण, -सुतः अवलम्बका का विशेषण ।

कृपीडम् [कृ + कीटम्] 1 तल्लाडियाँ, जंगल की लकड़ी 2 दन, जलाने की लकड़ी 3 पानी 4 पेट । मम० वासः 1 पतवार 2 समूह 3 बाध, हवा । तम० योमि अजिन ।

कृनि (वि०) [कृ + इन्, अत इत्यम् संघ०] 1 कीड़ों के बरा हुआ, कीटयुक्त कृमिमुत्रनितम् मनु० २।९ 2 कीड़ी (मोग) 3 गधा ४ भकड़ी 5 लाक (रंग) । अम० -कीडा -कोक, रोग का कीड़ा, -कृत्यम् रोगी कपड़ा, कृन्, कृत्यम् नगर की लकड़ी, - जा मास कीड़ों द्वारा उत्पादित लाक रंग, - कृत्यः, -वास्तिष्कः बोंबा सीपी में रहने वाला कीड़ा, -वर्षकः, -वीकः बाकी, -वृक्षः मृत्त का पेड़, -कृत्यः रंग के पीत रहने वाली मछली, -शुक्तिः (स्त्री०) 1 दोहरी पीठ वाला बोंबा 2 सीपी में रहने वाला कीड़ा 3 बोंबा ।

कृनिव, कृनिव (वि०) [कृनि + न, क वा, कृत्यम्] कीड़ों के बरा हुआ, कीटयुक्त ।

कृनिका [कृनि + क + टाप्] बहुत सन्तान पैदा करने वाली स्त्री ।

कृत् (वि०) पर० - कृत्यति, कृत् 1. पूर्वीक वा बीच होता 2. (चक्रा की भांति) अंतरांतर हुआ होता (वेर०) पूर्वीक करता ।

कुच (वि०) (नय्य० कवीकम्, उत० कसिष्ठ) [कुच् + क, नि०] १ दुबला पतला, दुबल, शक्तिहीन, क्षीण - कुचतनु कुचादरो आदि २ छाटा, बाढ़ा, सूक्ष्म (आकार या परिमाण में) - पुद्गलपिन वाष्प कुचजन भर्तुं २१२८३ हरिद, नय्य-भर्तुं ७३०८ । सम० - बलः यकवी, - बल्ल (वि०) दुबला, पतला, (श्री) १. तन्मया २ प्रियतु मता, उबर (वि०) पनली कमर वाला विक्रम० २११६ ।

कुचला [कुच + ला + क + टाप्] (निर के) बाल ।

कुचानु [कुच् + आनुच्] आग-ग्रा कुचानुप्रतिमा-द्विचि-रूप० २१६९, ७३४, १०१७, कु० १५१ भर्तुं २१०७ । सम० रेलत् (पु०) शिव की उपाधि ।

कुचस्विन् (पु० 'हजाराश्च + इति) नाटक का पात्र ।

कुच् १ (तुवा० उच० - कुचनि - से कुष्ट) हल चलाया लुट बनाया ।

- ॥ (प्रा० पर० कर्षति, कुष्ट) १ बीचना, घसीटना पीरना, बीच देना फाड़ना प्रमद मित्र किम न कर्कर - रूप० २१२७, विक्रम० ११९, २ किमी का मोर बीचना, बाहुष्ट करना - मट्टि० १५४७ भग० १५७३ (सेवा आदि का) नेत्रव्य मा मालाम करना - न तेन महती कर्षन् - रूप० १५३२ ४ कुचना (बन्ध आदि का) - नायायनकाटसाङ्ग - रूप० ५५० ५ स्वामी होना, दमन करना, पालन करना अभिभूत करना - बलवानिन्द्रियदामा विहासमपि कर्षति - भर्तुं २१२१५, नक स्वस्वामिनामाय गजेन्द्रमपि कर्षति - पञ्च ३१४६ ६ हल चलाया, खेती करना अनु मोचकुष्ट क्षेत्र प्रतिक्रिय कर्षति सिद्धां ७ पाप्य करना, हासिल करना कुलसक्यं च पशुमि कर्षति च महत्तम - महा० ८ किसी से ले लेना किसी का धिक्कित करना (विक्रम०) अथ पीते बीचना, बीच ले जाना, घसीट कर दूर करना लडा करना निषीकना - बलाघनिप्रयपक्य निरक्षिते च चतुः ५१४ रूप० १६५५ २ हटाना उमर० १ ।
- ३ कम करना, घटाना, कम, बीचना बीच लेना - बीचना, लमीय पर्वचना, बलेचना, बीच लेना, निषीकना (बाल०) - केसोष्माकुच्य पुनरिति रि० ११०९, ज० ११३ इत्यनुना साङ्गोले बबकाकुटा - ब० १, अथ २१७२, कु० २१५९, रूप० ११०३
- २ (बन्ध आदि का) मुकाना - स० ३५, शि० ९४० ३ निषीकना, उबार लेना - हि० ३० १४, ४. बीचना, बलपूर्वक हल करना - मट्टि० १६१३ ५ किसी दुबरे विषय या वाक्य से हल ना देना, उच् - १. उबर बीचना, उकाड़ना - बल्लक्रीडितम् अलङ्कारकृतम् - रूप० १११४, वि० १११५ २ बड़ाना,

बड़ि करना नि - बड़ाना, कम करना, घटाना विष् - १ बाहर बीचना २ बीचना कर निकालना, बलपूर्वक निकालना, खीनना या उबरवनी लेना - निष्कटमर्षकमे कुचोत्त - रूप० ५१२९, हरि - बीचना, निकालना, घसीटना, प्र - १ बीच लेना, बीचना, बाहुष्ट करना २ (सेवा का) नेत्रव्य करना ३ (बन्ध का) मुकाना ४ बड़ाना, नि , १ बीचना २ (बन्ध का) मुकाना - सरासन तेषु विकृष्टता-मिवम् ज० ११२८, विष् - हटाना, लीन - निकट जाना ।

कुचकः [कुच् + कच्] १ हलबाहा, हाकी, किसान २ फाली ३ बैल ।

कुचाण, **कुचिक** [कुच् + आनुच्, किकच् वा] हलबाहा, किसान ।

कुचि (स्त्री०) [कुच् + इच्] १ हल चलाया २ खेती, कानकारी - पीयते बाहिसाम्यापि मत्स्येवपतिता कुचि - मट्टा० ३ कुचि किलष्टान्मुष्ट्या - पञ्च ११११, भर्तुं १५० ३१६४ १०७९ सम० १८४४ । सम० कर्षन् (नय०) खेती का काम - बीचिन् (वि०) खेती से निर्वाह करनेवाला किसान - कलम् खेती से होने वाली उदय, वा लाभ - पञ्च १६, - सेवा खेती करना किसानी ।

कुचोक्त [कुच् + कच् इचं] जो खेती से अपनी आविषादेन को किसान - कुचि चापि कुचोक्त - बाह्य ११२७६ भर्तुं ११३८ ।

कुचर [कुच - कु - टक र्पो०] शिव की उपाधि ।

कुच (वि०) [कुच् - क] १ बीचा हुआ, उकाड़ा हुआ, घसीटा हुआ आकृष्ट २ हल चलाया हुआ ।

कुचि [कुच् - कित्] विहान् पुच - (स्त्री) १ बीचना अर्कच २ हल चलाया भूमि मोचना ।

कुच (वि०) [कुच् + कच्] १ काला रंग का गहरा नीला २ कुष्ट, अमिष्टकर - अन्तः १ काला रंग २ काला हरिद ३ बीजा ४ कोबक ५ बालमाल का कुचपत्र, ६ कल्पित - बाठवी अलङ्कारकारी किन्तु (भारतीय पुराणशास्त्र के अनुसार) कुच वास्तव प्रसिद्ध मायक है, वेवताभी में सर्वप्रिय है । बसुवेक और रविका का पुत्र होने के कारण कुच कस का मान्य है, पर अजहारात वह मन्त्र और यथोक्त का पुत्र है, उन्होंने ही इसका वाक्य-लोचन दिया और यही कुच ने अपना बचपन बिताया । जब उसने कस द्वारा उसकी हत्या के लिए भेजे गये युवा भीरु बक आदि पूरा राक्षसी को मार मारता तथा दूर-बीरता के अनेक वारधर्षक कर्तव्य किये तो कस उसका विषय मन्त्र प्रकट होने लगा । वृषारम्भा के उसके मुक्त हावी ने मोक्ष के मार्गी की अर्घ्य तथा मोर्षि विमर्ष राधा उसका विधेय

प्रिय थी (तु० जयदेव के पी० की) । कृष्ण ने कम नरक केभि अष्टि तथा अन्य अनेक राक्षसों को भागिराया । यह अवन का समिष्ट मित्र या महाभारत के युद्ध में उसके अर्धन का रथ हाँका, पांचवाँ हितार्थ दी गई कृष्ण की सहायता हाँ कोरवा का नाश का मुख्य कारण थी । मकट के कई अवसर आय परन्तु कृष्ण की सहायता और उनकी कल्पनाप्रवण मति ने पाहवों को कोई आँच न भान थी । पाहवों का प्रयासलेख म सर्वेनाश हो जाने के पश्चात् वह तम नामक शिकारी के हाथ का मृग इ व म अ मित हो गये । कहते हैं कृष्ण के १६००० शत्रुओं थी परन्तु कर्मयोग मन्त्रमत्ता (रथ) था । १२२० शत्रु १२३ थी । कहते हैं उसका रथ मौरवा या बाल भी भाँच काना या नु अतिरिक्त मालनर तब इरण धन । अविध्यति नृप-गीत० ८, उसका पुत्र पशुम था । ८ महाभारत का विख्यात प्रणेता व्यास ५ अर्जुन १० अंग की लकड़ी-कृष्ण १ कालिया कालान्न २ मोहा ३ अवन ४ काली पुनवी ५ काली भिबं ६ सीसा । सम०-अभुव (नृ०) एक प्रकार के चदन की लकड़ी, अचलः रैवतक पर्वत का विशेषण, अखिलम् काले हरिण का चर्म, अचम् (नृ०)-अचलम्, अखिलम् मोहा कच्चा या काला मोहा, अचम्, अखिलम् (नृ०) बाल, अचली भाद्रपद कृष्णपक्ष का बाठवाँ दिन, यही कृष्ण का जन्म दिन है, इसे मोकुलाष्टमी भी कहते हैं, आवासः अश्वत्थ वृक्ष, उधरः एक प्रकार का माँप, कम्पम् लाल कमल, कम्पम् (वि०) काली करतूत बाला, मूर्धिरम्, दुष्ट दुश्चरित्र, रोषी, कालः पहाड़ी कीबा, कायः मीठा, काष्ठम् एक प्रकार की चदन की लकड़ी, काला अमर, कौहम् बूबारी, वस्तिः आय, आयोयने कृष्णगर्भि सहायम्-रघु० ६।४७, वीच विच का नाम, सारः काले हरिण की एक जाति, वेङ्गः मधुमखी, कम्प दूरे तरीको से कहाया हुआ वन, पाप की कमाई, ईषावनः व्यास का नाम, तमहुमरागम-कृष्ण कृष्णहीपावन बन्ने-वेनी० १।३, वनः बाँदमास का अक्षर पत्र, वनः काला हरिण-मृगं कृष्णमृगम् वामनवर्ण कम्पवर्माणं मृगीम्-स० ६।१६, वनः, वनः, वनः काले मृग का वनर, कम्पवः तीसरीय या कृष्ण वनदेव, कौहः वृक्षक पत्थर, वनः १. कालारत २. राहु ३. वृह, कम्पम् (नृ०) १. माघ-रघु० १।१ ४२, नृ० २।९४ २. राहु का नाम ३. वीच वृक्ष, दुष्परात्री, मुन्धा, देना नदी का नाम, कृकृतिः कीबा, कौहः, कालः पितृकवरा कालाम्-कृष्णसार वरचम्पत्त्वधि बाधित्यकाम्ये-स० १।६, अङ्कः मीठा, कालः, सारः अर्जुन का विशेषण ।

कृष्णकम् [कृष्ण + कम्] काले वृक्ष का चमड़ा ।

कृष्णकः [कृष्ण + ला + क] वृक्षों का पीला मुखा-पीला, —सम्प वृक्षी, बहुटली ।

कृष्णा [कृष्ण + टाप्] १ शीपों का नाम, पाहवा की पत्ता कि० १।२६ २ दक्षिण भारत की एक नदी जो ममलीगुप्त में समुद्र में गिरती है ।

कृष्णिका [कृष्ण + टाप् + टाप्] काली सरसो ।

कृष्णप्रभव (नृ०) [कृष्ण + इमनिच] कालिया, कालापप्र । कृष्णो [कृष्ण + डीप्] अँधेरी रात ।

क. १. पु० १२०—किरिण कोषः १ बखेरना इधर उधर फेंकना उधेरना डालना नित्य-नित्य करना —समाराशिम भजवना ३ चतुर्दशमामासपर शरभुवार को जय वीर्याति किरति—उत्तर १० ४।१ ६१ दिशि दिशि किरिण मल्लकशास्त्र मान० ४ श० १।३ अमर ११ २ छिनराता डकना सरना भट्टि० ३।५ १।५५ । अय— १ बखेरना इधर उधर डालना, अरहरति कुसुमम्—मित्रा० २ वैश स कुचवना (पीपल या आवास आदि के लिए) पूरा हर्ष, (पीपल और पक्षिया म । इस अय म पक्षिवा का रूप अप्रतिरते बनना है) अप्रतिरते वृषो हृष्ट कुकुरो भगार्थी इवा आधवाधी व-मिहा० अवा-उत्तर फेंकना अरुकोर करना, निराकरण करना अय— बखेरना फेंकना अवाकिन्मालमता प्रमत्त—रघु० २।१०, आ—, १ चारो ओर फेंकना २ मोहना, उय— १ ऊपर का बखेरना, ऊपर को फेंकना रघु० १।६७ २ मोहना, मोहक मोहना करना ३ उत्कीर्ण करना खड़ाई करना, मृति बनाना उत्कीर्णा इव वासवधिरम् निगानिद्रालसा बहिरण विक्रम० ३।२, रघु० ४।५९ उय (उपकिरति) काटना, चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना, परि, १ बेरना—परिकीर्ण परिवर्दिनी मृन रघु० ८। ३५ २ सोचना, देना, मोहना मही प्रवेष्ट परिकीर्ण मृनी—रघु० १८।३३, अ १ बखेरना, फेंकना उधेरना प्रकीर्ण पुष्पाणा हरिचरणमारम्भनिरयम वेनी० १।७ २ (वीच जाति) बोना, प्रति, (प्रतिस्किरति) चोट पहुँचाना क्षति पहुँचाना, काटना उगविहार प्रतिचम्कर नली—मित्र० १।५७ वि—, बखेरना, इधर-उधर फेंकना, छिनराता, कालाता—कु० ३।६१, कि० २।५९, भट्टि० १३।१४, २५, विनि—, कृष्णा, कौहना, उत्तर फेंकना—कु० ४।९, कम्प—, मित्राणा, छिमिचय कृष्ण, कृष्ण पर मन्त्रमद्व करना, कम्प—कौहना, कृष्ण करना, पीपल—रघु० १।४ ।

५। (कृष्णा० उम०—कृष्णाति, कृष्णी) क्षति पहुँचाना, चोट पहुँचाना, नार डालना ।

कृ (पूरा० उम०—कीर्तवति-ने, कीर्तित) १ अनेक-

करना, दोहराना, उच्चारण करना—भातिन बीतिन
एव—रघु० १।८७, मनु० ७।१६७ २।२२४ २ कहना,
जम्बर पाठ करना, बाँधना करना, सभाचार देना
—मनु० १।३९, ९।४२ ३ नाम लेना, पुकार करना
४ स्तुति करना, यज्ञोवाच करना, स्मरणार्थ उत्सव
मनाना—अथप्रबन्ध गुणान् भ्रानुरधिकीर्णच विक्रम
—अष्टि० १५।७२, पंच० १।४।

कल्प (धा० भा०—कल्पते, कल्प) १ योग्य होना, यथेष्ट
होना फलना, प्रकाशित करना, निष्पन्न करना, पैदा
करना, हुलकना (सं० के साथ)—अल्पते रक्षणाय—भा०
५।५, पञ्चानुपूर्वसहस्रर कल्पते विधमाय—विक्रम०
१।१, विधाधरी बल्लभाय कल्पते कु० ५।४४, ६।२९
५।७९, पंच० २५ रघु० ५।१३, १।४०, भा० ६।२३
अष्टि० २२।२१ २ सुप्रबद्ध तथा विनियमित होना, सफल
होना ३ होना, बटिन होना, बटना—अस्मिन्ने ह्य
जीति—अष्टि० १६।२२, ९।४४, ४५ ४ तैयार होना
सज्जित होना—अकल्पे बाधकुञ्जरम्—अष्टि० १।८९
५ अनुकूल होना, किसी के काम जाना, अनुमेवत
करना ६ जान लेना, (घेर०) १ तैयार करना कम
से रक्षना, तबारना २ निश्चित करना स्थिर करना
३ बटिना ४ साधन जुटाना, उपसङ्गन करना
५ तैयार करना, कम्—, फलना, प्रकटना, सम्पन्न
करना (सं० के साथ) भा—, (घेर०) बल्लभ
करना, उद्याना, उद्य—, १ फलना, परिचाय निकालना,
(सं० के साथ) मनु० १।२०२ २ तैयार होना,
तयार होना—मनु० १।२०८, ८।३३३, अरि—,
(घेर०) १ फैलना करना, निर्धारण करना, निश्चित
करना २ तैयार करना, तैयार होना ३ पुनर्पुनः
करना—भा० २।९ अ—, होना, बटिन होना
२ सफल होना (घेर०) १ आधिकार करना, उपाय
निकालना, (बोवमार्) बनाना २ तैयार होना, तैयार
करना, वि—, संवेह करना, सदिष्ट होना (घेर०)
संवेह करना, कम्—, (घेर०) १ बुद्ध निश्चय करना,
बुद्ध लक्ष्य करना, निश्चित करना २ इरादा करना,
इरादा रखना, लक्ष्य—, तैयार होना।

कल्प (धु० क० क०) [कल्प + क्त] १ तैयार किया हुआ,
किया हुआ, तैयार हुआ, सुसज्जित—अनपविताहवेवा
—रघु० ९।१० विधाहवेय मे सुसज्जित २ काटा हुआ,
छीका हुआ—कल्पतेक्षनकरमनु०—मनु० ४।३५
३ उत्पन्न किया हुआ, पैदा किया हुआ ४ स्थिर
किया हुआ, निश्चित ५ बोधा हुआ, आधिपत्य।
धन०—जीवन अधिकार पत्र, हस्ताक्षर, धूः
कोषाच।

कल्पित (स्त्री०) [कल्प + क्त] १ विन्यति, सफलता
२ आधिकार, बलावश ३ कल्पित करना।

कल्पित (कि०) [कल्प + क्त] खरीदा हुआ, पोस निव
हुवा।

केकडा (ब० ब०) एक देहा और उसके निवासी मनुष्य-
कोमलकेकडासिनां दुहितर - रघु० ९।१७।

केकर (वि०) (स्त्री० री) क मृत्ति नेत्रतारा कर्तुं शील-
मन्य - कु + कर् अलुक् ता०] मंत्री मास वाला,
- रघु मंत्री मास, मनु आकेकर। सम० अक्ष
(वि०) बद्धदृष्टि, मंत्री मास वाला।

केका [के + कै + ह - य अलुक् स०] मोर की बोली
केकाभिर्नीलकण्ठाभ्यरयति वनत ताण्डवापुमिच्छाद्य-
भा० ९।२० बहवमवादिनी केका रघु० १।३९,
३।६९ २३।७ २६।९६ मध० २२, मनु० १।३५।

केकावक, केकिकः केकिन (पु०) [केका + वलव, केका
+ टन केका इति] मोर इत केकिबीडाकमलक-
रव पञ्चमदशा मनु० १।३७।

केकिना [के मृत्ति कुम्भित अथक + टाप्] तम्ब।

केन [क्तिन् + क्त] १ घर आबास २ रहना बस्ती
३ सदा ४ इच्छा कतिन, इरादा चाह।

केतक [किन् + क्त] एक पैसा प्रतिभान्त्यक्ष बनाति
केतकानाम्—अट० १५ २ अक्षर— कम् केवदे का फूल
केवई क्षुण्णिवर्त्त मेघ० २४, २३, रघु० ९।१७,
१३।१९, - की एक पीठा—केवडा (=केतक)—द्विष्टि-
मिव विद्यते क्षुण्णि केतकीनाम्—अट० २।२३
२ केतकी का फूल—अट० २, २०, २४।

केतव्य [किन् + क्त] १ घर, आबास—अकस्मिन्निहिवान
केतव्यं यज्जमाना—भा० २।९, वन वरचकेष वरवति
विनवकेतना - बीत० ७ २ निश्चय, सुभावा ३ स्वाध,
अनह ४ पताका, सडा—अन्य भीमेन यस्ता यस्तो
रचकेतनम्—वेणी० २।२३, वि० १४।२८, रघु० ९।१९
५ चिह्न प्रतीक उल्लास मकरकेतन ६ अनिवार्य कर्म
(आधिकारी)—निवापाञ्जलिहारेण केतव्यं आदिकर्मणि,
तन्मोक्षकारो अस्तस्य किं जीवन् किमुतामवा—वेणी०
३।१९।

केतित (वि०) [केन + क्त] १ सुभावा गया, आधिकार
२ आबास, बना हुआ।

केतुः [का + तु की आदेश] १ पताका, सडा पीना-
क्षुण्णिवर्त्त केतोः प्रतिवात नीचमानस्य भा० १।३४
२ बुद्ध, प्रधान, नेता, प्रमुख, विक्रिय व्यक्ति (अनुवा
न्यास के अन्त में) - कल्पवापा अनुचकेतुम्—रघु०
२।३३, कुम्भस्य केतुः स्त्रीतस्य (राधव) - राजा०
३ बुद्धमन्तरा, बुद्धकेतु - मनु० १।१८ ४ चिह्न, अक्ष
५ उज्ज्वलता, स्वच्छता ६ प्रकाश की दिक्च ७ तीर-
मयल का गया बहु को पुराणा के अनुसार वैदिकेय
राजत का कवच है तथा जिसका निर राहु है- कुर-
वह सकेतुराचकवर्त्त पूर्ववक्ष्यमिदानीम्—महा० १।९।

सम्० ब्रह्मः बभरोही शिरोविन्दु (जहाँ महाबल व रविद्वार एक दूसरे का मिल रहे हैं) - म २२१ घण्टे (स्त्री०) ध्वज का दृश्य १०१२०३ रत्नम् नीलम वैदुष्यं बलम् स्वजा, पञ्चाक्षर।

केदारः [के शिखि दानो, म्य व० स०] १ पानी भरा हुआ सेत, चरागाह २ बाइया आलवान् ३ पहाड़ ४ केदार नामक पहाड़ जो हिमालय का एक भाग है ५ शिव का नाम। मय० ब्रह्मन् पिट्टी का बना एक छोटा सा नाव जो पानी का गेदर नाव, शिव का विशेष है।

केदारः [के मूजि नार अन्त० स०] १ तिः २ लोहा ३ गाल ४ जोड़।

केलिपतः [के जले निपात्यतेऽर्था के, नि + पृ + चिच् + क्त्] पतवार, डाह, चपू।

केन्द्रम् (नपु०) १ बृज का मध्य बिन्दु २ बृज का प्रमाण ३ अणुबुद्धि से लब्ध से पहला, चौथा, भागवाँ और बसवाँ स्थान।

केन्द्रः, --रन् [के बाही शिखि वा शानि, वा + ऊर् कश्च अन्त० स० तारा०] टाह, बिजायड, बाजूबज केन्द्रा न शिखरवालि पुर्व हाग न चन्द्रोच्चला - मय० २१२९, रपु० ११९८, कु० ७१९९, रः एक रतिवर्ग।

केरलः (व० व०) दक्षिण भारत का एक देश (पूर्वमान मकाबार) और उसके निवासी भा० ११२९, रपु० ४१५४, --स्त्री (स्त्री०) १ केरल देश की स्त्री २ ज्योतिर्विद्वान्।

केल् (न्य० पर०--केलित, केलित) १ हिलाना २ खेलना खिलाड़ी होना, कीडा पराबल या केलिप्रिय होना।

केलकः [केल् + कल्] नर्तक, कलाबाजी करने वाला मट।

केलकः [केला बिलास दीव्यपरिमन् - केला + सच् + क] स्फटिक।

केलिः (पु०--स्त्री०) [केल् + इल्] १ खेल कीडा २ आनन्द-प्रमोद, मनोरंजन - केलिचलनमणिपुञ्ज आदि शीत० १, इति हि मयदवर्तिके बिलासिनि बिलासिनि केलिपरे-न० गङ्गाभाष्यव्याख्यानियमनाकले रह केच - न० ३१५७, मय० ८१३५७ अन्त० ४११३ ३ परिहास, मय०, हवीरद्वयी - लिः (स्त्री०) पुर्वी १ पत्नी - कला कीडा शिव कला बिलासिना भुजाप्रिय मञ्चरा २ मञ्चरा का बाणा - किल नाटक में नायक का विशेष लक्षण (यह प्रकार का विद्वत्), - किलाधनी मनि, कामदेव की पत्नी, - कोषः अट - बुद्धिका पत्नी की छोटी बाल, - कुपित (वि०) लेट में रष्ट - केर्ला० ११० - कोषः नायक या पात्र नर्तक, नर्तिका, मृदङ्ग, निकेतनम् समिदरय लक्ष्म आगामनवन, निर्वा बमरा, समत ८ नायकः नायक, -- वर (वि०) कीडार, बिलासी, आनन्द

पि० ब्रह्मः परिहास, कीडा मनोरंजन, -- ब्रह्मः कदव- ३ का ब्रति, ब्रह्मन् तिलापय्या, मुचमय्या काच -- नायक वनम गानम् गा० ११, - कृतिः (स्त्री०) पञ्च सखि गामोदयि मला, विधेय मिच।

केलिः केलिः का असाक ब्रह्म।

केलिः [केलि कीडा १ मय कीडा २ आनन्द-कीडा] मय० ब्रह्मन् तिलापय्या रक्ती र्द कोचल, - क्ली प्रमोद ५१११ बलिदान, कीडादान - ब्रह्म मनोरंजनार्थ पाया हुआ नाव।

केवल (वि०) [केव मेनो पूरा कल्] १ निशिष्ट एका लिः अगाधान २ अकेला, साध, एकल एकाग्र ३ अतुष्टा गतिनस्य न केवला शिव प्राप्तेन सह- दान गुणानि रपु० ८१० न केवलना पयसा प्रमृति प्रवेष्टि वा कामबुद्धा प्रयत्नाम् २१३३ १५११ कु० २१३४ ३ पूज, मसल, परम पूरा ४ नान, बलावृत्त (भूमि० आदि) कु० ५११२ ५ आलस मय, भूमि शिव, विमल वानय केवला नाति - रपु० १७१७ - लम् (अव्य०) कवल, मिच, एकाग्र पुण का मे, मिताल, सर्वथा केवलमिदम पृच्छामि-का० ११५ न केवलम् अवि न मिर्क वलिक, उक्त लक्ष्य विशेषं केवल मूलतानि परप्रमोद - रपु० ८११२ मु० ३११९, २०१३१ मय०--अलम् (वि०) परम एकना ही विमला मार है कु० २१६, वैवाचिक मिद नातिक (वा ज्ञान को किमी और मात्रा में प्रवीण न हा) इसी प्रकार वैवाचन।

केवलतः (अव्य०) [केवल + तमिच्] कवल, निग, सर्वथा, निपट, मिर्क।

केवलित् (वि०) (स्त्री० जी) [केवल - इति] १ अवला एकाग्र २ आनन्द की एकाग्र के परम मिदुल्य का पशानी।

केलः [किलः केलिनाति वा किलः प्रन माव्योपच]

१ वाक विकीर्णकाम गतेभूमिप कु० ५१६८ २ मित्र के वाप - केलेय मृगीना - वा - कवाच वृत्त मि०, रक्तेजा मय० ७१०७ केलप्रपणना- विर रपु० ११६८ ३ बोरे वा धर की अवल ४ प्रमोद की शिख ५ बल का विमोद ६ लक्ष प्रार का पुण्य ७ मय०--अलः १ वा का मिग २ नीच लट्ठने हुए लम्बे बाल, बाला का मुण्डा ३ मण्डल सम्पत्ति मय० २१६५ उल्लखः अधिप या मृदङ्ग बाल, कर्मन् (नपु०) (मित्र के) बायाँ का मयमय - कला - नागा का पैर, - कीड, र्द लक्ष, बायाँ की मीठी मृगील (वि०) बायाँ में पकड़ा हुआ धनु - धनुश्च वायाँ का पकड़ना, बायाँ में पकड़ना केशव लक्ष तथा धनुश्चक्रायाँ -- वही० ३११२, २०, मेच० ५०, इसी प्रकार वच रतेयु केशव - वा० ८

—कम्पू दूधित नवायन, —किम्पू (पु०) मारी, हुज्जाम,
—बाहू बालो की बड़, —पखः, —पाखः, —हस्तः बहुन
अधिक अथवा सवारे हुए बाण न केसराय प्रसन्नोक्त
मुयुर्बलिप्रियरश्च विचित्र चमरें कु० ११४८, ३१५३.
पु० कथपक्ष कथहून श्रादि दण्ड वृद्ध भूः—भूमिः
सिर या गरीर का अन्व भान वही बाल उमरत है
—प्रसाधनी, —साधनम्, साधनम् चणो, रचना
बालों को संवारना, देशः स्वर्ग-वनम् ।

केसः [के + अट् + अच्, एक ग-कृप्पम्] 1 उत-1
2 विष्णु का नाम 3 सट्पत् 4 भारी ।

केसव (वि०) [केसा प्रसन्ता सन्धम्भ, के + व] बहुत
या सुन्दर बालों वाला, कः विष्णु का विशेषण-केशव
अथ जगदीश्वर गीत० १, केशव पतित दृष्टया
पण्डरा हर्षनिर्देशा—मुखा० । तम० बाबुच-आम
का बाल (अच्) विष्णु का सम्भ, —आलम्भः, आवास
अथवा बाल ।

केसकेसि (अव्य०) [केसेन् केसेन् गृहीत्वा प्रवृत्त घटम्
—पूर्वपदस्य आकार इत्यच्] एक दूसरे के बाल
कीच कर, मोच कर की जाने वाली लड़ाई आटा-
होटी—केसाकेसवमघुद्ध राजसा वानरै सह- महा०,
वाल्म० २१२८३ ।

केसिक (वि०) [स्त्री०-की] [केस + क्त] सुन्दर या बल-
वान् बाला वाला ।

केसिन् (पु०) [केस + इति] 1 सिंह 2 एक राजस जिसको
कुल्ल ने भार गिराया या 3 एक और राजस जो देव
सेना को उठा कर ले गया और बाद में दम्भ द्वारा
भारा गया या 4 कुल्ल का विशेषण 5 सुन्दर बालों
वाला । तम०—सिपुबन्धः, —सवनः कुल्ल के विशेषण
अम० १८११ ।

केसिनी [केसिन् + स्त्रीप] सुन्दर बड़े बालों स्त्री 2 विधवा
की पत्नी, राखन और कुल्लकर्ण की माता ।

केस (क) १, —रन् [के + म् (यु) + अच् अमर, तम०]
1 (सिंह आदि की) बाल — न हृत्पद्वीति तमस्यमे-
वदो विमोक्षजिह्वरश्चक्षितारकेसर एतन् १११४,
वा० ७११४ 2 कुल का रोना या तन्पु—मोघ दृष्टवा
हरितकपिश केसरैरर्बकै—मेघ० २१, वा० १११७
वाक्यि० ३१११, म्पु० ४१५३ सि० ११७३ 3 बकुल
का रोना 4 (आम आदि का) रोना या रोच, —रन्
बकुल वृक्ष का कुल—रपु० १११६ । तम०—अलकः
मेघ पहाड़ का विशेषण, —चरन् केसर, आकरान ।

केस (क) किम्पू (पु०) [केस + इति] 1 सिंह अनुहु-
को बलवन्ति न हि गोवायुस्तानि केसरी मि० १६।
२५ अनुवर्ष केसगिज दग्धै—रपु० २२२, वा० ७१३
2 शेर, मर्बोस, आगे बर्ष का प्रथम (ममाल के
अन्त में)—नु० कुंजर, सिंह आदि ३ पादा 4 भीरु

या गलमन का पैर 5 पुत्राग वृक्ष 6 हनुमान के पिता
का नाम । तम०—मुनः हनुमान का विशेषण ।

कै (का० पर०) कायनि तदः करना, धनि करना ।

कैकुक्षम् [किङ्क्ष + अच्] किङ्क्ष वृक्ष का फल ।

कैकयः [कै + अच्] कैकय देश का राजा, द० कैकय ।

कैकसः [कै + अच्] राजस, मित्राच ।

कैकेयः [कै + अच्] राजा अच्] कैकेय देश का राजा या
राजकुमार, यो कैकेय देश के राजा की बेटी, राजा
दशरथ की सबसे छोटी पत्नी, भरत की माता (जब
राम का राजगद्दी दिनेन बाली थी, तो कैकेयी को
कोटल्या में कम प्रसन्नता न थी, परन्तु उसकी शर्मा
मरता बहो दृष्ट ३ उसे राम से पुगता इच्छ था,
इस मन्त्र बला होने का अच्छा अवसर समझकर
मन्त्रवा ने कैकेय के अनुसार राजा दशरथ से
व दा वन्दान मागने के लिए उद्यत हो गई जो उन्होंने
प, कर्मा देने की प्रतिज्ञा की थी । एक बार मे
उसने अपने पुत्र भरत के लिए राजगद्दी तथा दूसरे बार
मे राम की लिए राजगद्दी का निर्वाहन माग । रोक्ताव
दशरथ ने कैकेयी को उसके दूधिन प्रस्तावों के लिए
बहुत बुरा नशा कहा परन्तु अन्त में उसकी हठ
के आगे झुकना पड़ा । इस दुष्कृत्य के कारण कैकेयी
का नाम बदलाना हो गया ।)

कैटवः [कैट + वा + अच्] राजस का नाम जिसे विष्णु
ने भार गिराया (= बड़ा बलवान् राजस वा कहा
जाता है कि वह जो, यह दोनों राजस विष्णु के काम
में निकले जब कि वे रावे हुए थे, परन्तु जब राजस
बड़ा को लाने के लिए होता तो विष्णु ने उसकी पार
गिराया ।) तम०—अरि, किम्पू (पु०)—रिपु—हन्
विष्णु के विशेषण ।

कैतवम् [कै + वा + अच्] कैकेय का फल ।

कैतवम् [किङ्क्ष + अच्] 1 जूए में लगाया गया दीव
2 बड़ा सेकना 3 मूत्र, पोषा आलसाओं वाला अच्
पोषा की हृदय धारणित मन्त्रिय बरबोचस्तद्वीर्य
कैतवम्—कु० ३१९, व 1 छत्री, बालबाज 2 पुत्राग
3 घट्टे का रोना । तम०—प्रयोधः बालाकी, दीव,
—बाध मूत्र, बालबाजी ।

कैदारः [कैदार + अच्] बाबल अथवा, —रन् सेने का
तम्पू, 'कैदार' की इसी व्युत्पत्ति ।

कैकुक्षिकः [किम्पू + क्त] [स्वाय] 'और किन्तना अधिक'
स्वाय, एक प्रकार का तर्क (किम्पू 'और किन्तना
अधिक' के व्युत्पत्ति) ।

कैरवः [के अले दीति कैरव इत्यः तस्य प्रिय कैरव
अच्] 1 मुवागे पोषा देह-पोषा, बालबाज 2 मन्त्र
—अच् शेरत कुम्भ जो बन्दीय के समय विश्रुता है

—कनो विकासयति कैरवचक्रालम्—सर्ग० २।७१।

सम०—कनः चन्द्रमा का विशेषण ।

कैरविन् (पु०) [कैरव+इति] चन्द्रमा ।

कैरविको [कैरविन्+कीप्] १ स्वेन फूल वाला कुम्भ का पीठा २ बहु सरोवर जिसमें स्वेत कमल मिले हों ३ स्वेत कमलों का समूह ।

कैरवी [कैरव+कीप्] चदिनी, ज्योत्स्ना ।

कैरासः [के जले साहो दीप्तिरस्य - कैराम+अच्] पहाड़ का नाम, हिमालय की एक चोटी, शिव और कुबेर का निवास स्थान—वेद्य० ११, ५८ रघु० २।३५। सम०—नाकः १ शिव का विशेषण २ कुबेर का विशेषण—कैरासनाथं तरसा विमोचु—रघु० ५।२८, कैरास-नाथमुपहास निवर्तयामा—विक्रम० १।२।

कैरात [के जले कर्तते—कृत्+अच्, कैरातं तत् स्वार्थे क्त्वा प्राप्ता०] मछला - प्रमोक्ष कैरातः शिखरि पति-सर्वां त्रति मुहु (तनुवाकी वाक्पत्)—सा० ३।१९, मनु० ८।२९०, (इसके जन्म के विषय में दे० मनु० १०।३४) ।

कैरावन् [कैरात+अवन्] १ पूर्ण पृथक्ता, अकेलापन एकात्मिकता २ व्यक्तित्व ३ प्रकृति से आत्मा का पारस्पर्य, परमात्मा के साथ आत्मा की तद्रूपता ४ धर्मिता, मोक्ष ।

कैराविक (वि०) (स्त्री० की) [कैरा+उक्] बालों के समान, बालों की भाँति लुप्य, कः मृगार रस, विहासित,--कन् बालों का गुच्छा,—की नाट्य लीली का एक प्रकार (अधिक मुद्रा कैराविकी सम्बद्ध है) ।

कैराविर [कैराविर+अच्] किशोरवत्सा बाल्यकाल कीमार बाबु (चन्द्रवत् बालों के नीचे की)—कैराविरमारच-रचात् ।

कैरावन् [कैरा+अवन्] सारे बाल, बालों का गुच्छा ।

कैराकः [कुक् बाधाने अच् तारा०] १ वेदिना—वनयुव-परिजष्टा वृत्ती कोरैरिवादिता रामा० २ मुलावी रथ का हुक (चक्राकार),—कोकाला ककलस्यरेण लघुवी दीर्घा मन्त्रार्चना—गीत ५ ३ कोयल ४ मँडक ५ विष्णु का नाम । सम०—कैकः १ कव्तर, २ मूर्ख का विशेषण ।

कोकलकम् [कोकान् चक्राकान् महति नादयति नच्+अच्] आल कलल किचित्कोकलःकलस्य लघुके नेने स्वयं रन्वत् उत्तर० ५।३९, नीलमणिनामयति तन्नि तव कोकल वारयति कोकलकम्—गीत० १०, शि० ४।४६ ।

कोकलः [कोक+आ+इन्+अ] लघ्वेन बोधा ।

कोकिलः [कुक्+इन्] १ कोयल—वृत्कोकिली मन्त्रपुरं पुक्त्वं-मु० १।३२, ४।१९, रघु० १२।३९ २ अन्तरी हुई मकड़ी । सम०—आवाकः,—अन्तः कोक का वृक्ष ।

कोकलः (ब०ब०) एक देश का नाम, ब्रह्मादि वीर समूह का मन्त्रवर्ती मूक ।

कोकला [कोकल+टाप्] रेणुका, जयवर्मा की पत्नी ।

सम०—कुलः परजुराम का विशेषण ।

कोकलारः [को जागति इति लम्भा उत्तिरय काले पु० तारा०] आश्विन मास की पूर्णिमा की रात में मनाया जानेवाला भाद्रपदपूर्व उत्सव ।

कोटः [कुट्+अच्] १ किला २ जोपड़ा, छप्पर ३ कुटिलता ४ बाड़ी ।

कोटरः-रच्, कोट कोटित्य राति ग+क ता०] वृक्ष की लोखर नीबारा शुकमर्गकोटरमुखभ्रष्टास्तकमानव सा० १।१४, कोटरमकालबुध्दा प्रबलपुरोधानवा गमिते—मालवि० ४।२ ऋतु० १।२९ ।

कोटरी, कोटकी [कोट+री(वी)+विभच्] १ नवी स्त्री २ दुर्गदेवी का विशेषण (अम्भ क्य में वर्धन) ।

कोटिः—वी (स्त्री) [कुट्+इन्, कोटि+कीप्] १ मनुष्य का मुद्रा हुआ शिरा—भूमिगिहितकवाटिकार्यकम्—रघु० ११।८ उत्तर० ४।२९ २ चरमसीमा का किनारा नोक या बार—सतुवर्णी वस्तस्य कोट्या विष्णु—मा० ९।३२, बङ्गलकोटिलम्बन् रघु० ९।१४, ३।४९, ८।३९ ३ शयन की बार या नोक ४ उच्चतम बिन्दु, आधिक्य पराकोटि, पराकाष्ठा, परमोत्कर्ष—परां कोटिमानव-स्याध्वमच्छन्—का० ३।९९, इसी प्रकार कोणकोटिना यन्मा—अब० ४, अत्यंत कुपित ५ चन्द्रमा की कलाएँ—मु० २।२। ६ एक कराड़ की सख्या—रघु० ५।२१, १२।८२, मनु० ९।६३ ७ (गणित) ९० कोटि के साथ की सम्पूर्क रेखा ८ समकोण बिन्दु की एक भुजा (गणित) ९ श्रेणी, विभाग, राज्य—मनुष्य०, प्राणि० आदि १० विधावास्तव प्रकृति का एक पहलु, विकल्प । सम०—ईश्वरः करोकवति,—विष्णु (पु०) कामिवास का विशेषण—अन्ना (गणित) समकोण बिन्दु में एक कोण की कोज्या—इक्ष्वा दी विकल्प,—शायम् पतवार,—वातः दुर्ग रसक,—वैष्णव (वि०) (सा०) निम्न बिन्दु पर प्रहार करने वाला, (आर्म्ब०) अत्यन्त कठिन कार्य को सम्पन्न करने वाला ।

कोटिक (वि०) [कोटि+क+अ] किसी वस्तु का उच्च-तम शिरा ।

कोटिरः [कोटि राति रा+क ता०] सम्भावितों द्वारा अस्तक पर बनी शीघ्र के रूप की बालों की चोटी २ नेवका ३ हनु का विशेषण ।

कोटि (दी) क [कोटि(दी)+की+अ] नैदा, पदेल ।

कोटिकः (अव्य०) [कोटि+अच्] करोड़ों, अत्यन्त ।

कोटरीः [कोटिरीरवति ईर्+अच्] १ मुकुट, ताव २ किला ३ सम्भावितों द्वारा अस्तक पर बनी गई बालों की चोटी की शीघ्र लीली दिखाई देती है, जटा

—कीटीरबन्धनचतुर्मुखबोधपद्धत्यापारपरमम्, अथ
मृतमर्त्य-नी० १११८।

कोट्टः [कुट्ट + क्त] नि० गुण] कुर्त्त, किला ।

कोट्टवृत्ति [कोट्ट वार्त्ति वा + क, गोरा० डीप् तारा०]

1 गान स्त्री जिसके बाल बिखरे हुए हों 2 दुर्गादेवी

3 बाण की माता का नाम ।

कोट्टार [कुट्ट + आरक्य पु०] 1 किलेबन्दी वाला नगर
पुरा 2 नालाबन्दी लोडिया 3 कुड्डी, नागना 4 लम्पट
दुराचारी ।

कोणः [कुण करणे क्त, कर्त्तरि लप् वा तारा०] 1 किनारा
कोना—अर्धेण कोणं कथयन् स्थितस्य—विश्वसाक० ११०
युक्तयन्त्रे तु पुनः कोणं नयनपथयोः नामिः ।

१३२ 2 वृत्त का अन्तर्वर्ती बिन्दु 3 बाणा की कमान

मांगी बर 4, 5 4 प्रकार का अक्ष का १४

धारा 5 लकड़ी काटी, पटा 6 डाल बजाने का लकड़ा

7 मंगल घर 8 जानघर । सम०—आधात ६० इय्य

ब्रह्माता [विविध बाणयन्त्रों का मिश्रित अर्थ]—कोण

पार्थिव सर्वश्रेष्ठपथवर्त्तमान्यस्य सधटवर्त्तः बीजी०

११२२ (भरत द्वारा २१ गद्दी परिभाषा—वृक्षद्वारा

सहस्रांग भेरीशतशतानि च एकदा एव स्वयमे

काशावातः स उच्यते । कृष्ण सटमल ।

कोणय दे० कोणय ।

कोणाकोणि (अव०) एक कोण से दूसरे कोण तक एक

किनारे से दूसरे किनारे तक निरल अक्ष

कोणवत्, डन् [कु + विज्] क कोणवत्तावा दण्डो उच्य

वत् ० [वत्तप २२२२ कर १८८८ मिनि काट्ट

म्बु २२२—२१० २१०० कोणवत्तावा दण्डो उच्य

कानाम् भाग्यं ५१० ४०० ४०० ।

कोट्टः [कु + विज्] क कुट्ट ६४ ६४ ६४ ६४

कोटी का अनाद जिस गणेश लोग मानते हैं ३३३

वर्षावृत्तान्त वर्त्तमान दुर्गा कोट्टवाणा भवन्ता—भा०

२१००० ।

कोष [कु + पठ्] 1 खाद्य भूसा २४—अथ न

गच्छति नितान्तबलोऽपि नाग—पञ्च० ११०३ न २४

कोष कार्य कोष मत कर 2 (अ० २२) छात्र

रिक्त विरोध विकार—अर्थात् पितृपुत्र वा २४

कोष । सम० अक्षय—आविष्ट (वि०) कट्ट

अनुमिन्, कम् 1 कोषी वा छट्ट पुण्ड 2 कोष का

आर्त्त—अथवा, 1 कोष का कारण 2 बावटी कोष

—अथः कोष की अवस्था, कैवः कोष की पचनवस्था

प्रीतिवत्ता ।

कोषि (वि०) [कु + कृ + इत्] 1 रोषणीय विरुद्ध

कोषी 2 कोष पैदा करने वाला 3 पकील जाल के

पिचियों में प्रवेश विकार उत्पन्न करने वाला वा

रोषणीय वा कोषी स्त्री—अर्थात् कोषिन् दुरतापरा-

२६

वात् पादागत कोषवाचक—कु० ३१८, सम० ६५।

कोषिन् (वि०) [कोष + इति] 1 कोषी, विरुद्ध

सत्यमेवामि यदि मुदित मयि कोषिनी गीत० १०

2 कोष उत्पन्न करने वाला 3 विरुद्धवा शरीर में

विरोध विकारों का उत्पन्न करने वाला ।

कोषल (वि०) [कु + कल् + इत्] 1 गुण

1 मनुष्य मनु नामक (आम० मे श्री)—अथवा

लोकान्तरि (करम)—आ० ६१२ कामलविटपातुकारिणी

बाह ११०१, मायामु महतां चित्त मन्त्रपुलकामस्य

नर्त० २१६६ 2 क, मनु मन्द कामल मीनम

(क) त्विदं मुह २४ मयूर १२ कोषिन् कामल

कामल कि च द्या अन्तर्नि भवत् २१६०

३ अन्तर्नि मन्द ।

कोषलकाम कामल 1 कामलहा के देते ।

कोषल्य कोषल्यक क अन्तर्नि विरुद्धात् २० म०

पञ्च० अन्तर्नि एक क कोषल्य—अन्तर्नि

दुरात् कामली दुरात् कामली कामली कामली

कृत् मा० २२ मन्द २१६० अन्तर्नि ११३३

कोरक—कम् [कु + कृ] 1 कर्त्त अन्तर्नि पञ्च

मन्द २२२२ स्थित कृत्तक नन्तर्नि कामली—आ०

२३२ (अ० २०) कर्त्त के समान कर्त्त कामली—अन्तर्नि

अन्तर्नि पञ्च अन्तर्नि पञ्च पञ्चामा अन्तर्नि

बाह्य वल्लभात् अन्तर्नि पञ्च पञ्चामा अन्तर्नि

हरी के देते 4 एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य ।

कोरक कर्त्तक ।

कोरक (अ०) कोरक 1 कर्त्तक अन्तर्नि

2 पिसा अन्तर्नि पञ्च पञ्चामा अन्तर्नि

३ पञ्चामा अन्तर्नि पञ्च पञ्चामा अन्तर्नि

कोर कुट्ट + अन्] 1 सूअर बराह जि० १४४३

2 अन्तर्नि का बना बना अन्तर्नि 3 स्त्री की छाता

4 अन्तर्नि पञ्च अन्तर्नि पञ्च अन्तर्नि 6 अन्तर्नि

7 अन्तर्नि पञ्च अन्तर्नि पञ्च अन्तर्नि 8 अन्तर्नि

लक्ष् 1 एक लक्ष का भार 2 काली मिर्च 3 एक

पञ्च का भार । सम० अन्तर्नि कलिय देव का नाम

पुष्प दण्ड ।

कोलम्बक [कु + लम्ब + क्त] बीणा का ढाँचा ।

कोला, लित, स्त्री (स्त्री) [कु + ल + टाप्, कुल् + धन्,

कुल् + अच्, डीप् ०] १० बदरी ।

कोलाम्बक, लम्ब [कोल + आ + हल् + क्त] एक लक्ष

व से लोको के बोलने का शब्द, हंगामा ।

कोविद (वि०) [कृ + विद् + क्त] विद + क] अन्तर्नि

अन्तर्नि विद्वत् कुल विद्वत्मान प्रवीण (सम० वा

अन्तर्नि के साथ परम्परा बहुरा समास में) गुणदोषको

निम्न जि० १४५३ ६९ पञ्चावलीमुद्रणकला-

कोविदशाम्बुद्वान् मेघ० ३० अनु० ७२६ ।

कोविदार-रन् [कु + वि + द + वन्] एक वृक्ष का नाम,
कनार-चित्त विहारयति कस्य न कोविदारः
—रन् ० ११६।

कोक (ब) रन् [कुक् (ब) + वज्, वन् वा] 1 तरल
पदार्थों को रक्षन का बर्तन, बाल्टी 2 डोल, कटोरा
3 पात्र 4 सड़क, डोली, दराङ, टुक 5 म्यान, आभरण
6 पेटी, डकना, डकन 7. आभार, डेर—रन् ० ११९

1 आभारगुह 9 अजाना, स्वया पैता रक्षने का स्वान
मन् ० १४१९ 10 निधि, स्वया, दीक्षत निधेच-

वर्धमानकोवजानम् रन् ० ५११ (आलं०) कोलस्त-

पत का० ४५ 11 सोता, चांदी 12 लक्षकोश,
अभ्यायं सयम शब्दावली 13 अमलिका फूल, कली

सुजानयो पक्षकोशयो विभम् रन् ० ११८,
१३१२, इत्थं विधित्यति कोषागते द्विरेके हा हस्त

हस्त तन्निनी गज उज्जहार—रन् ० 14 किसी फल की
चिरी 15 फली 16 जायफल, कठोरत्वका 17 रेसम

का कीड़ा या० ११४७ 18 शिल्पी, नवाँसय
19 अष्ठा 20 अष्टकोष, पोले 21 शिल्प 22 गैव,

मोला 23 (वेदां० में) पात्र कीच की संध मिलकर
खरीर रचना करने हैं— जिसमें बास्या निवास करनी

हैं, अत्रयय, श्रानयव आदि 24 (विधि में) एक प्रकार
की अपराधियों की अग्नि परीक्षा दु० पात्र०

२११४। रन् ०—अविपत्तिः—अव्यक्तः 1 अजानपी,
वैतनाम्न्य (दु० आधुनिक विस्तारी) 2 कुबेर,

—अनाट अजाना, आभारगुह, -कारः 1 अल
बनाने वाला 2 लक्षकील का निर्माता 3 जोड़े के

रूप में रेसम का कीड़ा 4 बीजवासी, -कारकः रेसम
का कीड़ा, -कुन् (दु०) एक प्रकार का ईल, बृहन्

अजाना, आभारगुह—रन् ० ११२९, -रन् ० सारल,
पायकः -कोकः अजानपी, बीसाभ्यल, -वैदकः, कन्

वन रक्षने का लंछल, तिजोरी—वास्तु (दु०) सीपी
में रहने वाला कीड़ा, कोषवासी, वृद्धिः 1 वन की

वृद्धि 2 कोतों का बड़ जाना, -वास्तिका म्यान में
रक्ता हुआ पात्र, वन् किन्ना हुआ पात्र, -रन् (वि०)

पेटी में वन्, म्यान में वर (रन्) बीसवीट, कोष-
वासी,—हीन (वि०) कमहीन, निर्जन।

कोशाक्षन् [कुक्ष + ण्] रित्यत, वृक्ष (अधिक वृद्ध कन्
= कोषाक्षिक)।

कोशाक्षन् (दु०) [कोष + अन् + वन् = कोशाक्षन् +
इति] 1 वास्तिक, व्यापार 2 व्यापारी, वीधार

3 वृक्षालम् ।

कोषि (वि) व् (दु०) [कोष (व) + इति] नाम का वृक्ष ।

कोष्क [कुक् + वन्] 1 हृदय, कोष्का आदि खरीर के चीनरी
अंश या आभास 2 पेट, उदर 3. आभ्यन्तर कक्ष

4. अन्नमाभार, अन्न का कोठा,—कन् 1. बहारपीवारी

2. किसी कक्ष का कड़ा छिस्का । उ०—अन्नारण
माभार, आभारगुह—पर्वतभरितकोष्ठाभार मांछ-

वापितयै गृहं अविपत्ति - वैपी० १, रन् ० ११८०,
—अग्निः पावन क्षिति, नामाद्यय का रत्न, पक्षः

1 कोषाभ्यल, बहारपी 2 बीबीदार, पहरदार 3. चिपाही
(आधुनिक नगरपालिकाधिकारी से निष्ठा-श्रुता),

—कृतिः प्रलोत्सर्ग ।

कोष्कः [कोष्ठ + कन्] 1 अन्नमाभार 2 बहारपीवारी,
—कन् ईट वृत्ते से बनाया गया गण्डों के पानी पीने

का स्थान (बालकाल की भाषा में 'रवेल्' कहते हैं) ।

कोष्क (वि०) [ईषकुम् - को - कावेत्] 1 बोटा गरम,
मुनगुप्ता रन् ० १८४ अन्व गरी ।

कोत्त (श) ल (ब० ब०) एक देश और उसके निवासियों
का नाम—पितृरत्नस्तरमुनकोत्तलान्—रन् ० ११६, ११५,

६३१, मगधकोमलकेयवाशिनां बुद्धिर १११७ ।

कोत्त (श) का अयोध्या नगर ।

कोत्तलः [की हलति स्पर्धने अन् पुष्यो तार०] 1 एक
प्रकार का वाद्ययन्त्र 2 एक प्रकार की मटिरा ।

कोष्कविदः [कुक्कुट + ठक्] 1 मुर्गे पालने वाला, या मुर्गों
का व्यवसाय करने वाला 2 बहु साधु जो बकते समय

अपना म्यान नीचे जमीन पर रखता है जिससे कि
कोई कीड़ा आदि पेटों के नीचे न दब जाय 3. (अतः)

रानी ।

कोल (वि०) (स्त्री० - ली) [कुल्ल + वन्] 1 कोल से
बँधा हुआ, या कोल पर होने वाला 2 पेट से सम्बन्ध

रखने वाला ।

कोलेव (वि०) (स्त्री० - वी) [कुल्ल + वन्] 1 पेट में
होने वाला 2 म्यान में भिन्न अति कोलेवमुद्रय

वकारापनम् मूलम्—वृद्धि० ४१११ ।

कोलेयकः [कुली बडोयित्त—वृक्षम्] तलवार, लज्ज—बाम-

पाशवल्गुभिन्ना कोलेयकेन का० ८, चिकमाकु० १।

९० ।

कीकः, कीकुषः (ब० य०) [कुक्कु + वन्, कोकुष + वन्]
एक देश तथा उसके निवासी बालकों का नाम (वे०

कोकष) ।

कीड (वि०) (स्त्री० - डी) [कूट + वन्] 1. अपने निजी
घर में रहने वाला, (अतः) स्वतन्त्र, मुक्त 2 पाकघर,

घरेलू, घर में पला हुआ 3 आलस्य, बेईमान
4. जाल में फँसा हुआ, हा 1 बालकामी, बेईमानी

2. झूठी गवाही देने वाला । उ०—अः कूटय वृक्ष—अतः
(वि०) बामउत्तः) स्वतन्त्र बड़ों को अपनी कृष्णानुसार

अपना कार्य करता है, गाँव का कार्य नहीं,—वास्तिक
(दु०) कृष्ण गवाह— वास्तिक झूठी गवाही ।

कीडविदः, कीडिकः [कूट + कन्, कूटक + ठक्, कूट + ठक्]
1. बड़ेबिबा, चित्तिका व्यवसाय पक्षियों की कड़क चिबरे

में बन्ध कर लेचना है 2. पंक्तिओं के मांश का चिकोटा, कसाई, शिकारघोर ।

कीटिलिका [कुटिलिका] हरति मृगान् बङ्गारान् वा—कुटिलिका + अण् 1. शिकारी 2. लुहार ।

कीटिलम्ब [कुटिल + ध्वञ्] 1. कुटिलपना (वा० तथा बाल०) 2. दुष्टता 3. बेईमानी, जाकसाजी, —स्वः 'बाणवद भीति' नामक भीतिसाधन का बध्मात प्रवेता बाणवद, चन्द्रगुण का मित्र और मन्त्रकार, मुहुराक्षस नाटक का एक महत्त्वपूर्ण पात्र कीटिल्य कुटिलकमिति ए एच येने कीयाग्ली प्रलम्बमदाहि बन्धवन् —मुद्रा० १:७ स्थिति भा भूयभावेन कीटिल्यसिध्—मुद्रा० ७ ।

कीटुम्ब (वि०) (स्त्री०—की) [कुटुम्ब तद्वत्त्व मांशवन्धव कुटुम्ब + अण्] किसी परिवार या गृहस्थ के लिए आवश्यक, क्षुब्ध, शिकारिक सम्बन्ध ।

कीटुम्बिक (वि०) (स्त्री०—की) [कुटुम्बे तद्वत्त्व प्रसूत—कुटुम्ब + ठक्] परिवार का; बनावे वाला, —किसी परिवार का पिता या स्त्री ।

कीलक [कुलप + अण्] पिशाच, राक्षस । मय० बन्धः मीमांसा का विरोध ।

कीलुकम् [कुलक + अण्] 1. इच्छा, कुतूहल, वासना 2. उन्मुक्तता, आशेष, धानुरता 3. आश्वर्षजनक वस्तु 4. वैवाहिक कगना—रघु० ४:१ 5. विवाह से पूर्व वैवाहिक कगना बोधने की प्रथा 6. पर्व, उत्सव 7. विरोधकर 'ब्रह्म' यदि पुन उत्सव कु० ७:७ 8. खोजी, हर्ष, आनन्द, प्रसन्नता भर्तृ० ३:१४० 9. खेल, मनविनाश 10. मीन, नृत्य तथाशा 11. हैमो, मजाक 12. बर्बाद अभिवादन । तम० बालार, रघु—गृह्य आमाद-धवन कीलुकपाशमागान् कु० ७:१९, किष्वा मङ्गलम् 1 महान् उत्सव 2 विरोधत विवाह-सम्कार रघु० १:१५३—तोरण—अण् उत्सव के अवसरों पर बनाये गये मंगलसूचक विषय द्वार ।

कीलुहलम् (स्वम्) [कुलुहल + अण्, ध्वञ् वा] 1. इच्छा शिखासा, कषि—विषयमात्रावन्कीलुहल विक्रम० १:१९ वा० १ 2. उन्मुक्तता, उत्कण्ठा 3. कुतूहलवर्धन, आश्वर्षजनक ।

कीलिक [कुल + प्रहरणमस्य —ठक्] वाला चलाने वाला, नेत्राक्षरदार ।

कीलेवः [कुल्लोः अपत्यं ठक्] कुली का पुत्र, वृषिष्ठिर, भीम और अर्जुन का विशेषण ।

कील (वि०) (स्त्री०—की) [कुल + अण्] कुल के सम्बन्ध रखने वाला या कुल से आता हुआ (अक क्षारि) ।

कीलीक [कुल + अण्] 1. बाला, उल्लस्य 2. मुताङ्ग, पुष्पाक्षिप 3. संशोटी—कीलीमन्तसज्जवर्षरतर कम्पा पुस्तपादकी—मनु० १:१०१ ४. पिचका—उ. पात्र, अनुचित करने ।

कीलकम् [कुल + ध्वञ्] 1. टोकापन, कुटिलता 2. कुलकपण ।

कीलार (वि०) (स्त्री०—ली) [कुमार + अण्] 1. कनक, बूबा, कम्पा, बुबारी (स्त्री और पुरुष दोनों) कीलार पति, कीमारी भार्या 2. मृदु, कोमल, —रघु 1 कनक (पक्षि वर्ष तक की बचसा) बुबारीकम् (१९ वर्ष की आयु तक) कुमारीपन—पिता रक्षति कीलारे पत्नी रक्षति बीबने मनु० ९:१३, देहिनीप्रियम् क्या है कीलार बीबन बरा मय० २:१३३। तम०—अण्वन् बन्धों का पालनपोषण व चिकित्सा,—हर (वि०) विवाह करने वाला, कम्पा को पत्नी कहें बहुल करने वाला, व कीलारहर स एव हि बर—काव्य १ । कीलारकम् [कीलार + कन्] बचपन, लाकम्, किमोरावकम् कीलारकेतय गिरिवध्वरुणा दधान—उत्तर० ९। १९ ।

कीलारिक [कुमारी + ठक्] वह पिता जिसकी सम्पत्ति सर्वस्वी हो हो ।

कीलारिकेय [कुमारिका + ठक्] ब्रविवाहिता स्त्री का पुत्र ।

कील्व, 'कुल्व'—अण्] कान्तिक का महीना ।

कीमूरी [कीमू + अण्] 1. चांदनी—छांनिना नहू लीति कीमूरी कु० ४:१३३, अक्षिपुष्पमतेय कीमूरी देव-मन्त्रम् रघु० ६:८५, (सत्य की व्युत्पत्ति—की मोक्ष देने वाला यन्त्रा तेनामो कीमूरी मता) 2. चांदनी का काम देने वाली कोई चीज अर्थात् प्रमत्ता देने वाली तथा ठण्डक पहुँचाने वाली—स्वयम्भुव लोकस्थ व नेरकीमूरी कु० ५:७३ या कीमूरी मयनबोर्बकत मुजम्मा वा० १:३४, —३ चरिका 3 कान्तिक मास का पूर्णिमा 4 अनार्यजन माम की पूर्णिमा 5 उत्सव 6 विशेषत बहु उत्सव जब बर्षों में, मन्दिरों में सर्वत्र दीपावली होती है 7 (पुस्तकों के नामों के अन्त में) व्याख्या, स्पष्टीकरण प्रत्युन विषय पर प्रकाश डालने वाली उदा० तर्ककीमूरी, साक्ष्यतर्ककीमूरी, मिथ्यात-कीमूरी आदि । मय० पतिः अन्धमा—बृहः दीवट ।

कीमोवकी, कीमोवो [की पूर्णिमा मोदक—कुमोदक + अण् + कीप् कु पश्चिम मोदयनि—कुमोद + अण् + कीप्] दिवस की गदा ।

कीरव (वि०) (स्त्री०—की) [कुल + अण्] कुलसे संबंध रखने वाला अथ अश्वप्रजनपितृव कीरव तद्वत्वेयः—वेप० ४८,—कः 1. कुल की सम्पत्ति अन्ध्यामि कीरवस्त २. २ न कोपात् बेकी० १:१५ 2 कुलको का रावा ।

कीरवः [कुल + अण्] 1. कुल की सम्पत्ति—कीरववस्तवाये—अभिषूक एव सलमावते बेकी० १:१५, २५, कीरव्ये कुनहस्तता पुनश्चि देवे यथा कीरिचि—६:१२२ 2 कुलको का साक्षक ।

कीर्यो [कीक माया का लब्ध] वृत्तिक राशि ।

कील (वि०) (स्त्री०—की) [कुल+कम्] 1. परिवार के संबंध रखने वाली, वैतुक, आनुवंशिक 2. बच्चे बनाने का, पुत्राप्त, -कः बालमानी सिद्धांतों के अनुसार 'वर्णित' की पुत्रा करने वाला, -कम् बालमानी वास्तों के सिद्धान्त और व्यवहार ।

कीलकः [कुल+कम्, कुल] व्यक्तिपरिकी स्त्री का पुत्र, दुरासी, वर्षककर ।

कीलकिलेकः [कुलटा+कम्, वनकायेकः] 1 सती प्रसारिणी का पुत्र 2 वर्षककर ।

कीलिक (वि०) (स्त्री०—की) [कुल+कम्] 1 किसी बंध के संबंध रखने वाला 2 कुल में प्रचलित, वैतुक, वंशपरंपरागत, -कः 1 कुलाहा—कीलिको विष्णुकमेव राजकन्या निवेद्यते- पृ० ११२०२ 2 विधवा 3 बालमानी, वास्त सिद्धान्तों का अनुयायी ।

कीलीन (वि०) [कुल+कम्] क्वानी, कुलीन, -कः 1 प्रसारिणी स्त्री का पुत्र 2 बालमानी वास्त सिद्धान्तों का अनुयायी, -कम् लोकापवाद, कुला—आत्मिकागत किमपि कीलीन भूयते—आत्मवि० १, तदेव कीलीन-मित्र प्रतिनाति—विष्णु० २, देव० ११२, कीलीन-मात्मावयवावयवो—रघु० १४१३, ८४ 2 अनुचित कर्म, दुराचरण—क्याते तस्मिन् विधमसि कुले जग्न कीलीनयेतत्—वेणी० २१० 3 पक्षों की लड़ाई 4. मूर्ख की लड़ाई 5. सत्ता, पृष्ठ 6. उच्च कुल में जन्म 7. गुप्तांग, बोधि ।

कीलीनम् [कुलीन+कम्] 1 कुलीनता 2 वस की कुला ।

कीलूतः [कुलूत+कम्] कुलूतो का राजा—कीलूतविषय-वर्मा—मुद्रा० ११२० ।

कीलिकः [कुल+कम्] कुला, शिकारी कुला ।

कील्य (वि०) [कुल+कम्] उच्च कुल में उत्पन्न, सामान्य ।

कीले (वे) र (वि०) (स्त्री०—री) [कुले (वे) र+कम्] कुलेर के संबंध रखने वाला, कुलेर के पास से जाने वाला—दान सस्मार कीलेरम् रघु० १५४५,—री उत्तरदिशा,—वत. प्रतप्ते कीलेरी भास्वातिव रघुदिशम्—रघु० ४१६६ ।

कील (वि०) (स्त्री०—की) [कुल=कम्] 1 रेखी 2 कुल बास का बना हुआ ।

कीलम् (कम्) [कुल+कम्, कम्, वा] 1. कुल-लेय, प्रवृत्तता, सर्वादि 2. कुलजता, वज्रता, कुरुराई—किमकीलानुत्तरप्रवृत्तनापेक्षितया—मुद्रा० ३, क्षा-हृदि हस्तिय वचनानां कीलम् दृष्टि विकारपितेया—सि० १०१३ ।

कीलिकम् [कुल+कम्] वन, निवसत ।

कीलिकान, कीलिकी [कीलिक+कम्, कुल+कम्+

कीम्] 1. उपहार, चढ़ावा 2. कुलक प्रथम प्रकृता, कविवादन ।

कीलिकः [कीलस्या+कम्, कवीप.] राव का विशेषण, कीलस्या का पुत्र ।

कीलस्या [कीलस्येते नवा—कम्] दक्षरव की ज्येष्ठ स्त्री तथा राव की माता ।

कीलस्यावधिः [कीलस्या+किम्] कीलस्या का पुत्र राव, मरि० ७१९० ।

कीलाम्बी [कुलाम्+कम्+कीम्] नवा के किनारे स्थित एक प्राचीन नगर (जिसे कुल के पुत्र कुलांब ने बसाया था—यह नगर ही वस्तु देव की राजधानी थी) ।

कीलिक (वि०) (स्त्री०—की) [कुलिक+कम्] 1 उल्ले में बन्ध, ध्याय में रक्ता हुआ 2 रेखी, -कः 1 विद्या-पित्र का विशेषण 2 उत्पन्न—उत्तर० २१२९३ कीलकार 4 मूरा 5 गुण्ड 6 नेबका 7 मवेरा 8 भुवरा रत्न 9 को प्लावन को जानता है 10 इन्द्र का विशेषण, -का प्लाका, पानपात्र, -की 1 विहार प्रदेश में बहने वाली एक नदी का नाम 2 दुर्गद्विषी का नाम 3. चार प्रकार की नाट्यशैलियों में एक—मुद्रासारान्वयवर्मा कीलिकी तात् कथ्यते वे० सा० ६०, ४११, तथा जागे पीछे । मम० अरातिः,—अरिः कीला,—कल-नारिकय का वृक्ष, शिकः राव का विशेषण ।

कीले (वे) कम् [कीलस्य विकार—कम्] 1 रेखम वच० ११४४ 2 रेखी कपडा—मनु० ५११२० 3 रेखम का बना स्त्री का पटी कोट—मिर्गीम कीलेव-मुपारवावयवम्यङ्गमेवम्यङ्गकार कु० ७१९, विष्णु-वृष्य कीरोप मृच्छ० ५१३, शत्रु० ५१९ ।

कीलीकम् [कुलीर+कम्] 1 व्याज लेने का व्यवसाय 2 आत्मस्य अकर्मण्याता ।

कीलुसिकः [कुलुति+कम्] 1 ठग, बदमाश 2 बाजीगर ।

कीलुस्य [कुलुस्यो अकविस्तव नवाः—कम्] एक विश्वात रत्न जो समुद्रमग्न के फलस्वरूप १३ वर्ष राखी के साथ समुद्र से प्राप्य हुआ तथा जिसकी विष्णु ने अपनी वज्रस्वरूप पर धारण किया हुआ है सकीलुस्य हीव-तीव कृष्णम् रघु० ११६९, १०१०१ ख०—कलकः—कलम् (पु०)—हृष्यः विष्णु के विशेषण ।

कू [भ्या० का० कृमे] 1. वृ वृ लब्ध करना 2. बुझा 3. पीका होना ।

कमल [क इति कथति जलावते क+कम्+कम्] जाला । सम० क्लृप्तः केतक वृक्ष, वन-जानीन वृक्ष, -वाक् (पु०)—वातः क्षिपकरी ।

ककरः [क इति कम् कर्तुं कीलमय-क+क+कम्] 1. एक प्रकार का तीर 2. आरा 3. निर्बल व्यक्ति 4. रोम ।

ककु [क+कम्] 1. वन—कीरोसेपेन कीलम् कुल्लुवाम्—रघु० ११६५, सतं कल्लुवावयवम्यङ्गकार क—११६८,

की वसि) विक्रय करना, स्वस्थ करना, 4. प्रेम करना, प्रेम से जीत लेना—सर्वस्वार्थकर्म सीताम्—रत्ना० 5. अनुष्ठान करना, प्रस्थान करना 6 (आ) आरम्भ करना, शुरू करना प्रत्यक्ष अनुष्ठानकर्म क—कि० २।२८, रघु० १७।३३, निम्न— 1. चले जाना, चल देना, बिना होना 2. निकलना, प्रकाशित होना—वट्टि० ७।७१, वर—, (आ०) 1 साहस प्रदर्शित करना, वसित वा खुरचीरता दिखाना, बहादुरी के लक्षण करना—अकस्मिन्तयेदर्शान् सिंहवत् पराक्रमेण—मनु० ७।१०१, वट्टि ८।२२.९३ 2 बाधित मुड़ना 3. चढ़ाई करना, आक्रमण करना, परि—, 1 इधर उधर भ्रमना, चक्कर लगाना—परिक्रम्यावलीकष च (माटकी में) 2 पकड़ लेना, व—(आ०) 1 आरम्भ करना, शुरू करना—प्रथमके च प्रतिवस्तुमुत्तरम्—रघु० ३।४७, २।१५, कु० ३।२ 2 कुचलना, ऊपर पैर रख कर चलना—वट्टि० १५।२३ 3 जाना, प्रस्थान करना, वसि—, बाधित जाना चि—(आ०) 1. मे से चलना, विष्णुस्तेषां विचक्रमे—नील पद्म रत्ने—वट्टि० ८।२४ 2. छाना मारना, पराजित करना जीतना 3 फाटना, बोलना(पर०), व्यसि—, 1 उल्लंघन करना 2 समय बिताना, व्युत्प—दे० उन्—, तन्—, 1 जाना वा एकत्र होना 2 पार जाना, पार करना, मे से जाना 3 पहुँचना, जाना 4 पार चले जाना, स्थानान्तरित होना 5. बाधित होना, प्रविष्ट होना कोलो ह्यय सर्वमनु द्वितीय रुचोपकारजममाधन से रघु० ५।१०, तत्वा—, 1. अधिकार करना, कब्जे में लेना, अग्नय समयेव समाधत्त ह्य द्विरहमाग्निना, तेन सितामन विध्य-मल्लिख चारिमदलम्—रघु० ६।४ 2 छाया मारना, जीतना, हसन करना

अः [कम् + चञ्] 1 कदम, पैर निविक्रम, सागर—अद्वन्द्वेण क्रमेणैकेन लम्बित—महा० 2 पैर 3 गति प्रगमन, मार्ग, क्रमान् कलेच दौगन में, क्रमशः, काल-कलेच उत्तरोत्तर, समय पाकर, आत्यन्तः, भाष्य का उल्लट जाना—रघु० ३।७, ३०, ३० 4 प्रवर्धन, आरम्भ—अश्वमेध वितनक्रमे कनो सि० १४।५३ 5 नियमित मार्ग, क्रम, श्रेणी, उत्तराधिकारिणा, निमित्तनै-मितिकदोरय क्रमः—श० ७।३० मनु० ७।२४ १।८५ २।१७३, ३।६९ 6. प्रणाली रीति—नेत्रकमेणोपहरोध सूर्यम्—रघु० ७।३९ 7 हनना, पकड़ क्रमगता बद्धोः कम्पका—मा० ३।१६ 8. (दूसरे जन्म पर आक्रमण करने से पूर्व की जानवर की) स्थिति 9. तैयारी, तत्परता—वट्टि० २।९ 10 व्यवसाय, साहसिक कार्य 11. कर्म वा कार्य, कार्यविधि—कोऽप्येव कालः क्रमः—अथ ४३।३३ 12. वेदवाणी की सम्बर उल्लंघन करने की विशेष रीति—कम्पठ 13. वसित,

सावध्यः—सम्पत्ति। तत्त० अनुसूतः—अन्वयः, निवसित क्रम, समुचित व्यवस्था,—कालः—अवकाश (वि०) वसपरम्पराभाषा, आनुवसिक, एक बहू की सहरोक्षा, अव—अन्वः अनिवसितता।

कम्पक (वि०) [कम् + कृन्] कम्पक, प्रणाली के अनुसार,—कः बहु विचारणी जो किसी नियमित पाठ्यक्रम का अध्ययन करता है।

कम्प [कम् + स्पृट्] 1 पैर 2. घोड़ा, कम् 1 कदम 2 पद रखना 3 जाने बढ़ना 4 उल्लंघन

कम्पतः (अव्य०) [कम् + तसिन्] क्रमशः, उत्तरोत्तर।

कम्पतः (अव्य०) [कम् + वत्] 1 ठीक क्रम में, नियमित रूप से उत्तरोत्तर, क्रमानुसार 2 क्रम से, भाषा के अनुसार रघु० १२।५७, मनु० १।६८, ३।१२।

कम्पिक (वि०) [कम् + ठन्] 1 उत्तरोत्तर, सिद्धिसे बार 2 वसपरम्परागत, पैतृक, आनुवसिक।

कम्पुः, कम्पुः [कम् + उ, कम् + व] सुपारी का पेड़—आस्था-दिशांक्रमक समुद्रात् सि० ३।८१, विष्णुपाक० १।८।८।

कम्पल, कम्पलकः [कम् + एल् + अच्, कम् + व] ठंड -निरोधने के लिये प्रथम कम्पलक कम्पक-आत्मवेव विष्णुपाक० १।७९, सि० १२।१८, मै० ५।१०४।

कम्पः [क्री + अच्] खरीदना, मोल लेना। तत्त०—बारीक़ः मही, मेला,—क्रीत (वि०) मोल लिया हुआ,—कम्पन्व वैनामा, विक्रयनामा दानपत्र (गृह लेनादिक क्रिया तुल्यमप्याजगन्तितम्, पत्र कारवले यत्तु कम्प-लेभ्य तदुच्यते बृहस्पति), विक्रयी (हि० व०) व्यापार, व्यवसाय, खरीद-फरोकन मनु० ८।५ ७।१-७ -विक्रयिकः व्यापारी मोदागर।

कम्पन् [क्री + स्पृट्] खरीदना, मोल लेना।

कम्पिकः [कम् + ठन्] 1 व्यापारी, मोदागर 2 क्रैता, मोल लेने वाला।

कम्प (वि०) [क्री + यत्, नि०] मही में विक्रय के लिए रखनी हुई वस्तु, बिकाऊ (विप० 'कम्प' जिसका अर्थ है 'मोल लिये जाने के उपाय')।

कम्पन् [कम्प + यत्, स्पृट्] कम्पना भाव, मुद्रा (शव या लाश) रघुटगतमर्ग कम्पन्व्यवप्रति-मा० ५।१६। तत्त०—अच्, अच्, भुक् (वि०) कम्पना भाव आने वाला, मनु० ५।१३३, (पु०) 1 शेर, चीता आदि मांसभक्षी जन्तु,--उत्तर० १।४९, 2 राक्षस, पिशाच—रघु० १५।१६।

कम्पन् (पु०) [कृत् + इमिन्ट्] पतलापत्र, कुकता, बुद्धलापनलापन।

कम्पिकः [कम्प + ठन्] बाराकस।

कम्प (वि०) [कम् + क] मजा हुआ, बारबार क्या हुआ

(यू० क० कु०).—तः १ कोड़ा २ पैर, पय० सम०
- बलिन् (वि०) संबंध ।

कान्तिः (स्त्री०) [कम् + क्तित्] १ वृत्ति, प्रगमन
२ कदम, पय ३ जाग बढ़ने वाला ४ आक्रमण करने
वाला, अभिभूत करने वाला ५ नक्षत्र की कोणीय
दूरी ६ कान्तिबलय, सूर्य का भ्रमण मार्ग । सम०
कलाः, मन्त्रालय, वृत्तान्त, सूर्य का भ्रमण मार्ग,
रातः वह बिंदु जहाँ कान्तिबलय विद्युत् रेखा से
मिलता है बल्लभ १ सूर्य का भ्रमण मार्ग २ उच्च
कटिबन्धोय क्षेत्र, उच्च कटिबन्ध ।

काय (वि) कः [क्री + क्त्वा कृ + ठक्] १ केना,
करीद्वार २ व्यापारी, सोदागर ।

कान्तिः [कम् + हन् हवम्] १ कीड़ा २ कीट-दे० कुम्भि ।
सम०—कन अंग की मकड़ी, शोकः कादो ।

क्रिया [कृ + क्त, रिङ् आदेश, इयङ्] १ करना, कार्या
निति, कार्य सम्पादन, निष्पादन करना, उपचार
वर्ग—अर्थकृत् हि प्रणयिषु सनामाक्रियार्थकियेव
वर्ग० ११४ २ कर्म कृय, व्यवसाय क्रिमदारी
प्रणयिकिया—विक्रम० ४१५, मनु० २।४ ३ चेष्टा
सारोक्तिक चेष्टा, अम ४ अभ्यापन, शिक्षण क्रिया
हि वस्तुपद्धिता प्रसीधति -रत्न० ३।२९ ५ (नृत्य
गायन आदि) किसी कला पर आधिक्य ज्ञान
शिष्टा क्रिया कर्मविविधत्वसम्बन्धा मालवि० १।१६
६ आचरण (वि०) शास्त्र-सिद्धान्त) ७ मार्गदर्शक
रचना मनुष्य मनोविवर्धनी क्रियामिमा कालिदास-
स्य विक्रम० १।० कालिदासस्य क्रियाया कथ
परिचयो बहुमान मालवि० १८ दण्डि मन्कार
आधिक मन्कार ९ प्रायश्चित्ततरवृत्त मन्कार
प्रायश्चित्त १० (क) आश्र (ख) और्ध्वदेशिक
मन्कार ११ पुत्र १२ औपचारिक वि० अयं प्रयोग
इत्यत्र शास्त्रिक्रिया मालवि० ४ शीतल उवाच
१३ (व्या० में) क्रिया से द्वारा अभिहित कर्म
१४ चेष्टा या कर्म १५ विशेषतः वैज्ञानिक दशम में
प्रतिपादित यात दशमों में से एक द० समन
१६ (विधि में) साध्यादिक मानवमाधना से तथा
अन्य परीक्षाओं द्वारा अभिप्रयोग की जानकी, करना
१७ प्रमाण द्वारा । सम० अश्विन्त (वि०) शास्त्रोक्त
मन्त्रों को करने वाला अध्यापक १ किसी कार्य की
सर्जित या हाथी कार्यसम्पादन—क्रियापत्रमन्त्रनुजीवि
पात् कृता कि० १।४६ २ कर्मकाण्ड में मुक्ति,
कुटकार, अमृतपय विशेष प्रकार का करार या
प्रतिज्ञा-पत्र क्रियापुत्रमन्त्रवेत्त बोधार्थ यशदीयने
मनु० १।५३, अथर्वण (वि०) गवाहों के बयान
के कारण मुकदमा हार जाने वाला व्यक्ति, इन्डियन्
दे० 'कर्मोन्मय', कलापः १ हिन्दु धर्मशास्त्र द्वारा

विहित समस्त कार्य २ किसी व्यवसाय के समस्त
विवरण, —कारः १ अधिकारी, कार्यकर्ता २ शिलारम
करने वाला, नौसिखिया, नवकला ३ इकरागनामा,
प्रतिज्ञापत्र, — वैविध्य (पु०) (पौष प्रकार के साक्षियों
में से एक) वह साक्षी जिसका साक्ष्य पक्षपातपूर्ण हो,
—विवेकः गवाही साक्ष्य, पट्ट (वि०) कार्यदेन,
—वचः बोधोपचार की रीति यहव, क्रियावाचक
शब्द, पर (वि०) अपने कर्मव्य-पालन में परिश्रम
शील, वाकः अभियंका या बाढ़ों के द्वारा अपने दावे
को पुष्टि में दिए गये प्रमाण, दस्तावेज तथा गवाहियाँ
आदि जो कानूनी उपयोग का तीसरा अंग है, खोणः
१ क्रिया के साथ संबंध २ तरकीब और साधनों का
प्रयोग जोय आवश्यक धार्मिक अनुष्ठानों का परि-
त्याग, क्रिया पत्र वचनस्य दस्ता मनु० १०।४३,
वच आश्रयकता क्रियाओं का अवयववाची प्रमाण,
वाचक, वाचिन् (वि०) कर्म को प्रकट करने
वाला, क्रिया से बना सत्रा शब्द, —वाचिष् (पु०)
बाड़ी अभियंका वाचि कार्य करने का नियम,
हिमः वर्गकृत्य को सम्पन्न करने की रीति—मनु०
०८० विशेषणम् १ क्रिया की विशेषता प्रकट
करने वाला शब्द २ विधेय विशेषण संकाशित
(स्त्री०) दूसरी को ज्ञान देना अभ्यापन—मालवि०
११९ सन्निहितः किसी कार्य की आवश्यकता

क्रियावन् (वि०) क्रियाः मनुष्य कर्म में व्यस्त किसी
व्यय से व्यवहार का जानने वाला यस्तु क्रियावन्
पुत्र स विज्ञान वि० १।५३।

की (क्रिया० उभ०) कोणा १ कोणीय, कील १ करोटना
माल लेना महान पु० प्येन कील कादनीस्तबा
शा० ३।१ कोणीय मज्जीवितमेव पथमम्यत्र
वेदस्ति तदस्तु पा० नै० ३।८७ ८८ पञ्च० १।१३
नन० ०।१७७ २ निममय अदल, बदली—कश्चित्तमह-
विमल्लभायक आचार्य पण्डितम् महा०, बा—,
करीटना विस् कथ देन १।३ छुडाना दाम देकर
फिर से नवा देना निस्तार करना, परिव (आ०)
१ भोजन-समोपाय गन्तव्य कर्तव्य तब नाधि-
यम भोट० ८७३ २ क्रियाएँ पर लेता कुछ सत्य
के लिए मोक्ष लेना (निर्वाण) मृग्य में कर्म तथा
सम्पन्न के माय, जेव कनाय वा परिकेत सिद्ध०
३ वापिस करना बदल देना चुकाना कृतोपकृत
पायो पक्षिणाग्रविषयम् मनु० ८।८ वि
, बेचना (इस अर्थ में आ०) तथा जनमहमेव
विकीर्णो मुत पति-राम० विकीर्णीत तिलान् मुद्रान्
मनु० १०।९०, ८।१९७, २२२, शा० १।१२
२ निममय, बदलावदली—नाकम्माच्छाङ्गीमाता
विकीर्णति तिरीस्तिज्ञान्—पञ्च० २।१५।

कीड़ (आ० पर० कीडति कीडिन) 1 खेलना मनो रञ्जन करना वाग्रा कीड़नुसारम्बा पञ्च० १ एष कीडति कृपयन्त्रचरिनाऽन्यायप्रसक्तो विधि-मुच्छ० १०।५९ २ जूआ खेलना पासो से खेलना बङ्गोवय घृत कीडन-मुच्छ० नासै कीडैकदविदि मन० ४।७४ याज० १।१३१ ३ हँसो दिन्मगो करना मजाक करना खिलो उडाना-सद्वृत्तस्तनभषडस्तनव कृष गणैमम कीडति-गान० ३ काडिध्यायि ताडदेनया विक्रम० ३ एडमायाप्रहसन् कीडन्ति घनिनाऽर्ध० ५ ि० १ ३ पञ्च० १।१८७ मुच्छ० ३ अनु (आ०) खेलना खिलो करना जी बह० १। साधननुकाडमानानि पश्य बु-दानि पक्षिणम्-भट्टि० ८।१० आ परि लय (आ०) खेलना कौतुक करना-मकीडन्ते मणिभयंय कण पेथ० ७० परन्तु मम पुबक कीड (पर०) कालत्रय कान के चर्च को प्रकट करता है सकीडन्ति शकटानि मया० गाडियाँ बूँ बूँ करती है ।

कीड [कीड + घञ्] 1 किलोल मनवद्वलाब खेल आभोद 2 हँसो खिलो मजाक ।

कीडनम् [कीड + ल्यट्] 1 खेलना खिलो करना 2 खेलने की चीज खिलौना ।

कीडनक, कम्, कीडनीय, लयञ [कीडन + कन् कीड + अनौपच कीडनीय + कन्] खेलने की चीज खिलौना ।

कीडा [कीड + ज + टाप्] 1 किलोल मी बहलाता खेलना आभोद-नाथकीडानिरतबुबनिस्ताननिकर्ममर्गः प्रथ० ३३।६१ २ हँसो खिलो मजाक । मम० गृहम् आभोद भवन शैल आभोद निवास का कम देन बाला एक बनावनी पड़ाइ आयोदगिरि-कांडासील कनकर स्त्रीबध्दप्रसनीय मेघ० ७३, नारी वेरया-कोप लूतमय का काप प्रमत् १० बभ्रु मनोरञ्जन के लिए खेला गया मोर रघु० ६६।१६ रत्नम कापकनि मेघन ।

कीड (वि०) [की + क्त] मोल लिए हुआ दे० का-त हिन्दुधर्मशास्त्र म प्रतिगदिन १२ प्रकार के पुत्रो म से एक अपने नैसागि घाना पिता मे मोल लिया हुआ पुत्र कीटवच नाम्ना विष्णी याम० २।१३१ मनु० १७४। मम० अनुवाय रिम बन्तु को मोल लेकर पछाना किय का निराकरा करना लरोधो हुई बन्तु को वापिस करना (कुछ बातों में धर्मशास्त्रो मे अनुमदित) ।

कुञ्च (पु०) कुञ्च [कुञ्च + क्विन् अच् वा] बलकुक्कुटा बगला ।

कुच् (विबा० पर०) कृपयि कुड गन्ते हाना (कोच ने पाथ में सम्प्र०) हरये कृपयि कभी कभी उपरि प्रति

आदि शब्दो के भी साथ-समोपरि म कुड, म नो बधि कुडो मूठ प्रति बदल हो कृपित होना कृपयन् न प्रतिकृपयत् मनु० ६।१० लम् कृपित होना मकृपयति म्बा कि रव दिदुधु मा मृगोणे भट्टि० ८।३६ ।

कुच् (स्त्री०) [कुच् + विद् + क्वाब कोप]

कुच् (आ० पर० काशति कुट्ट) 1 खिलाना मजा खिलाप करना शाक मनाना कोश-न्यस्त कर्वावय भट्टि० ६।१० २ बालना किलकिलाना कका दना कोटय करना पुकरान-आगह कुकोश जीवनाश मनना व भट्टि० १।१ १ अनु दया करना कृपा करना अभि खिलप करना भा, १ खिलना जोर से पुकरान अये मीनीनाथ कुर ११ गमो खिनया प्रसाइ ताकोपन मर्क १२०३ २ लरोखानी मनाना मर्गमयी दना गण बाह्यमया कुर अचियो दण्डमर्हेनि मनु० ८ ५३ भट्टि० १। १२ परि खिलाप करना प्रयाग मया व उत्तर में ताया दम्बि १ खीलाता हस्तगण आकाश विकास ल्याविषयम मुच्छ० १।६१ भट्टि० १।६ ४ १६।३ २ उच्चाण करना (कर्म० के साथ) ३ पुकराना (कर्म० के साथ) ४ मृजना घटा खिलाप करना शाक मनाना ।

कुञ्च (वि०) [कुच् क्त] 1 खिलाना हुआ २ पुकारा हुआ छत्र खिलाना कीधन-रत्न ।

कुर (वि०) [क्त + रक घञो क्] 1 निर्बय निर्दुर बडोर हुदय निकरुण-तस्याभिषयकमस्मार कल्पि कर्त्तव्यता रघु० १२।१३ मघ० १०५ १नु० १०।१ २ कडा कडा ३ दाहण भयकर भेषण ४ तापक री अन्ध-कर ५ घात चान गला हुआ ६ कुनी ७ कब्जा ८ अजब ९ गम तेज अन्धकर-मनु० ८।३३-२ वाज बागला रघु १ वाज २ हय्या कुरता ३ भीषण कुर । मम० आकृति (वि०) डरावनी सूरत बागला (ति) रावण का विमेषण आचार (वि०) पूर और खर आचरण करने वाला, आचार (वि०) १ मया नर बावजन्तुओ मे मरा हुआ (मैमे कि कोई नदी) २ क रभाउ का कर्मन् (ना०) १ एकराजित कर्मन् २ कठोर धर्म-कुन् (वि०) भीषण कुर निर्मम कोष्ठ (वि०) कड काठे बागला जिस पर मुकु बिरे धन का अंतर न हो मन्थ मन्थक कुञ् (वि०) १ बडा रुष्टि बागला कुदृष्टि डालन बागला २ बल दृष्ट राखिन् (१०) पहाड़ी कीबा लोचन शनिबह का विमेषण ।

कुत् (पु०) [कु + कुच] क्रेता, मरीदहार याज० १।१६ । **कोच** [कुञ्च + अच्, वा० गुण] एक पहाड का नाम दे० 'कीञ्च' ।

कोष्ठः [कृ+वञ्] 1 सुख 2 वृक्ष की कोठर, गढ़ा—हा हा हस्त तथापि अग्न्यदिपि कोष्ठं मनो बाधति—उद्धट 3 सीमा, वक्ष स्पक्ष, छाती, कोठीछाती से लगाया गी० २।३५ 4 किसी वस्तु का मध्यभाग—विक्रमाक० ११।३५-३० 'कोष्ठ' (नपु०) 5 क्षत्रिय का विशेषण, डग्न—डा 1 छाती, सीमा, कन्धों के बीच का भाग 2 किसी वस्तु का मध्यवर्ती भाग, गढ़ा, कोठर। मम०—अक्षकः, अक्षद्विः—पादः कलुषा, वक्ष् 1 प्रास्तवर्ती केव 2 पक्ष का पक्षलेख 3 मध्यूरक 4 वसीयननामे का परवर्ती उपरारधिकार-पक्ष।

कोटीकरणम् [कोष्ठ+चि+ङ्] मृत्। आदिगण करना, छाती से लगाया।

कोटीमुखाः [कोष्ठया मुखमिव मुखमस्या व० म०] गेडा।

कोषः [कृ+पञ्] 1 कोष, गुप्ता कामान्कोषोऽभिजायते अग० २।९२, इमी प्रकार कोषात् कोषात् 2 (मा० शा० में) कोष एक प्रकार की भाषना है जिससे रीश्तर का उद्भव होता है। मम० उल्लिखत (वि०) कोष से मुक्त, छाया, स्वत्व, मुक्ति (वि०) कोष से अभिभूत या कोषोन्मत्त।

कोषण (वि०) [कृ+मृत्] मुक्ते के मरना हुआ, कोषा-विष्ट, कुब, विह्वित—वधमेव कुत तदेव कुस्ते हीनायति कोषण-वेषी० १।३१- मय कुड हुआ, कोष।

कोषाल (वि०) [कृ+वापुश्] कोषाविष्ट, विह्विता, मृत्सेल।

कोषः [कृ+पञ्] 1 चित्ताना, बीज, बीजहार, कृपा देना, कोलाहल 2 बीजाई कोषण, एक कोल-बीजाई अकृतिपुर तरेण मत्वा—रघु० १३।७९, समुद्रात्पुरी कोषी या—कोषवी। तम०—तालः,—व्याभिः एक बड़ा डोल।

कोष्ठन (वि०) [कृ+मृत्] चित्ताने वाला, मय बीज चित्तानाहट।

कोष्ठ (पु०) (स्त्री) [कृ+तुन्] गोवड (इन शब्द की रूप रचना में यह शब्द सर्वनाम स्थान में वनिर्वाच्य कोष्ठ बन जाता है, तथा अन्यत्र कोष्ठ, एव करादि में हि० तथा बन्धी त० व० की छोटकर सर्वत्र विकल्प है)।

कोष्ठाः [कृ+अ] बलकुवकुटी, कुटरी, बगला—मनोहर-कोषमिनादिताभि सीमानाराम्यामुक्तयति वेत्त ऋतु० भा०, मनु० १२।९४ 2 एक पर्वत का नाम (कहते हैं कि यह पहाड़ हिमालय का पीठा है, तथा कातिकेय एवं परशुराम ने इसे बीच दिया है)—हमहारं मनु-पतिविकोचवर्त्त वसकीचराम्य वेध० ५७। तम०—अक्षकम् कस०इको के रेखे, बरासिः—अदिः—रिपुः 1. कातिकेय का विशेषण 2. परशुराम का विशेषण

कारकः—सूचनः 1 कातिकेय और 2 परशुराम के विशेषण।

कीर्त्यं [कृ+व्यञ्] कृता, कठोरबुद्धयता।

कलम् [म्भा+पर०—कलमति, कलमित] 1 पुकारना, चित्ताना 2 रोना, चित्तान करना, (म्भा० वा० कलमने या कलमने) बड़का पाया।

कलम् [म्भा०—दिवा० पर०—कलामति, कलाम्यति, कलाम] बक जाना, बक कर चुर होना, अवलम होना न बकलान न विव्यधे—अदि० ५।१०२, १५।१०१, चि०, वच जाना।

कलम, **कलमकः** [कलम्+वञ्, अक्ष वा] बकाबट कलमि अवसाव दिनीदिनदिनकलमा कुतपक्षय वाय्मनर्दे—शि० ४।१६ मनु० ७।१५१, त० ३।२१।

कलान्त (वि०) [कलम्+क] 1 बका हुआ, बक कर चुर हुआ, नमानपकलान्—रघु० २।१३, मेघ० १८, ३६, विष्णु० २।२० 2 मुक्ति हुआ, म्लान—कलान्तो मन्मथलेख एव मन्मथीयमे मन्मथि—म० ३।३६, रघु० १०।४८ 3 हुक्का—पल्ला।

कलमि (स्त्री०) [कलम्+कितम्] बकाबट। तम०—विह्व (वि०) बकाबट दूर करने वाला, बलदायक।

किलम् [विभा० पर०—किलमति, किलम] गीला होना, जाई होना, तर होना—वेर० तर करना, बीका करना—म वीन केवदयन्माय—अग० २।२३, अदि० १८। ११।

किलम (वि०) [किलम्+क] गीला, तर। तम०—कल (वि०) बीजहार गीला बाला।

किलम् 1 (दिवा० वा०—(रुध के मत में) पर०, किलम्यते किलम्यते, किलम्यति) 1 हुकी होना, वीकित होना, कष्ट उठाना—अप्युपवेशकहर्ण मातिविलसते व सिध्या—माहवि० १ अथ परार्थे किलम्यति लाक्षिणः प्रणिम् कुलम् मनु० ८।१६९ 2 कुल देना, लगाना, ii (क्या० पर०—किलमति, किलम) कुल देना, वीकित करना, लगाना, कष्ट देना,—किलमति लम्परिपालनमुक्तिरेव व० ५।६, एव-माराध्यमानोऽपि किलमति मुक्तायम्—कु० २।४०, रघु० ११।५८।

किलमि, किलम्य (वि०) [किलम्+क] 1 हुकी, वीकित, लठट वस्त 2 कष्टग्रस्त, लताया हुआ 3 मुक्ति हुआ 4 अमगत, विरोधी उठा—माता दे कम्पा परिष्कृत, कृषि (रचना आदि) 6 मज्जित।

किलमि (स्त्री०) [किलम्+कितम्] 1. कष्ट वेदना, दुःख, पीडा 2 ठेका।

कलीब (व) (वि०) [कलीव (व) +क] 1. विह्वला मनु-लक, वधिया किता हुआ—मनु० ३।१५०, ५।२०५, वास० १।२२३ 2. दुस्वार्थहीन, बीज, दुर्बल, दुर्बल्यता

—रघु० ८।८४, क्लीबान् पाकविता—मू० १।५
३. कायर ४ नीच अथ ५ सुस्त ६ नपुंसक लिंग का,
—क, कम् (—क, कम्) १ नामदं, हिजडा, —न
मू० फेनिम यस्य विष्टा बापु निमज्जति मेधु बोम्माद-
बुम्माया होन क्लीब स उच्यते दापभाग में उद्धृत
कात्यायन २ नपुंसक लिंग ।

कलेकः [किल् + कञ्] पीडापन, आर्द्रता, ठरी, नयी
—सा० १।२९ रघु० ७।२१ २ बहुते बाका, बाघ से
निकलने वाला मवाद ३ दुःख, कष्ट रघु० १५।३२,
(= उपद्रव मल्लि०) ।

कलेकः [किल् + कञ्] पीडा, वेदना, कष्ट दुःख तक-
लीक—किमात्मा कलेकास्य पदमृणीत—सा० १, कलेक
कलेन हि पुनर्नक्षता विवर्ते कु० ५।८६, मय० १२।५
२. मुस्ता, कोष ३ सांसारिक कामकाज । सम०—अक्ष
(वि०) कष्ट सहने में समर्थ ।

कलीक (कल्) [क्लीब (क) + क्यञ्] १ नामदी (सा०)
—वर कलम्प पुत्रा न च परकलमाभिगमनम्—पञ्च० १
२. पुत्रावर्हीनता, भीकता, कायरता—कलीक्य मास्म नम
पार्य म० ३३ ३ अनुपपन्नता नामदी लालि-
हीनता—रघु० १०।२६

कलेकम् [कल् + कल्] क्लेश ।

कल (कल्) [किल् + कल्, कु आदेश] १ किलर, कहीं
—कल सेव्योन्म यला क्व च नु गहना कलिकुरता
—उत्तर० १।३३, क्व—क्व (अब किसी समान वाक्य
अंत में प्रयुक्त होता है तो इसका अर्थ है 'भारी
कतर' 'असमर्थ'—क्व कहा हृदयप्रवाहिनी क्व च ते
विषयसनीयमायुषम्—मालवि० ३।२, क्व सुव्यंग्रमयो वक्ष
कल चाल्यविषया मति—रघु० १।२, कि० १।६, सा०
२।१८ २. कभी कभी 'क्व' का प्रयोग 'किम्' शब्द के
अर्थ का होता है क्व प्रदेगे अयात् कस्मिन् प्रदेगे
(क)—अवि १ कहीं, किसी जगह २ कभी कभी (ल),—चित्त
१ कुछ स्थानों पर—प्रतिष्ठा वर्षादिद्विगुणीकलमिद
सुख्यन्त एवोपला सा० १।१४, चतु० १।२, रघु०
१०।४१ २ कुछ बातों में स्वचित् गोचर क्वचित्
शोचोर्ज, क्वचित् क्वचित् (क) एक जगह—दूसरी
जगह यहाँ-वहाँ क्वचिद्विज्ञानं क्वचिदपि च हा
हेति वदितम् मत्त० ३।१२५ १।५ (ल) कभी-कभी
(समय सूचक) क्वचित्पथा सचरते मृग गाम् क्वचित्
वनानां पनतां क्वचित्कच—शु० १३।११ ।

कल् (कल्) पर०—कल्पति, कल्पित) १ अस्पष्ट शब्द
करना, झगड़ाना, टपटन शब्द—इति बोधघटीय
विधिव्य करिषो हस्तिनकाहृत क्वचम्—हि० २।८६,
कल्पनान्निपुणी—मय० २८, चतु० ३।३६, मेघ० ३६
२. निगमिष्यामि, (भीरों का) बुलान, कल्पट नाम
—शु० १।५४, उत्तर० १।२४, मत्त० १।८४ ।

कल्पः, कल्पनम्, कल्पित, क्वाच [कल् + कल्, क्लृप्त क्व,
कल् + वा] १ साधारण शब्द २ किसी भी वाक्यार्थ
की स्थिति ।

कल् (वि०) [कल् + कल्] किञ्च स्थान से सबब रखने
वाला, कहीं पर होने वाला ।

कल् (म्) पर०—कल्पति, कल्पित) १ उचालना, काड़ा
बनाना २ पचाना ।

कल् [क्वा + कल्, कल् + वा] काड़ा, लगातार मदी जाँच
में तैयार किया गया बोल ।

क्वाचित्क (वि०) [स्त्री०—स्त्री] कस्मात् वदित,
चिरल, बलाचारण, इति क्वाचित्क पाठ ।

क [सि + क] १ नाथ २ अन्तर्धान, हानि ३ किसीकी
४ अंत ५ किसान ६ पिछ्म का नरसिंहकाचार
७ राजस ।

कम् (क्) (तमा० उच०) अणोति अणुते, कृत) १ चीट
पड़वाना, अति पड़वाना—हमा ह्रिष व्यावतपातमश-
नोत्—कु० ५।५४ २ तोड़ना, टुकड़े २ करना—(कम्)
त्व किसानमिति पूर्व मल्लो—रघु० १।१७२, उच०, वरि-
चि उनी अर्थ में प्रयोग जो कम् का मूल अर्थ है ।

कम्, कम् [कम् + कम्] १ कलहा, निमेष, एक सेकंड
मे १।५ माप क बराबर समय की माप अणमान-
मुचितस्त्री सुप्तस्त्री इव ह्रद रघु० १।७३, २।९
मेघ० २६, कल्पनविषयम् कुछ देर ठहरा २. क्व-
का—अहमिति कल्पकाय स्वनेह कल्पति माक्यो०
१, गृहीत शय सा० ७ मेरा क्वकाय भाषके सुपुर्ब
हैं क्वचित् बापका कार्य कर देने का मैं आपकी क्वच
वेला हू ३ उपयुक्त क्व या क्वसर—रहो मास्ति क्वचो
मास्ति मास्ति प्रार्थिता नर—पञ्च० १।१६८ मेघ०
१२, क्वचित्कच—यसा० १४३ ४ उत्तम, हर्ष, सुखी
५ आश्रय दासता ६ केन्द्र मध्यमग । सम०—अन्तरे
(अव्य०) दूसरे जग, कुछ देर क पचान् कोच
कणिक बिलब, क्व अ्यातिवो (कम्) पानी (—वा)
१ रात—अनाथार्थ क्वचदापतिवय मे० १।१६३ रघु०
८।७४, १६।४५, शि० ३।५३ २ हल्की 'करः पति
चोद, सा० १।७०, 'चरः रात में बूझने वाला, राजस,
शान्मुक्त प्रभुरपि क्वचदाचरणम्—रघु० १।१७५,
'आन्वय रात्रि में अन्वापन रहोषी, —वृत्तिः (स्त्री०)
— क्वका, क्वचा विजली, —विजलः शिपुः, —क्वचुर
(वि०) कल्पवादी, क्वच, क्वचर वि० ४।१३०
—आम्य (अव्य०) क्वचर के लिए, रात्रि (पुं०)
क्वचर विजलिन (वि०) क्वचर में नष्ट होने
वाला (पुं०) नास्तिक दार्शनिकों का क्वचवाय की वह
मान्यता है कि क्वचित् का अनेक पदार्थ प्रतिक्षण नष्ट
होकर नया क्वचर रहता है ।

कल्क [कल् + कल्] काप, कोक ।

अपयम् [अप् + स्तुद्] अति पटुभावा, मार हाकना, बायल करना ।

अपिच (वि०) [अप + ठन्] अपस्थापी, अधिरस्थापी
-- स्वप्नेषु अपिचसमागमोपसर्गेषु -- रघु० ८।१२, एक-
स्य अपिका प्रीतिः हि० १।६६, का विचकी ।

अपिन् (वि०) (स्त्री० - नी) [अप + इति] १ अवकाश
रखने वाला २ अपस्थापी, नी बिचकी ।

अति (वि०) [अप + क्त] बायल, चोट लगा हुआ, अति-
बल, काटा हुआ, फाटा हुआ, चीरा हुआ, तोड़ा हुआ,
दे० अण् - रक्तप्रनाशितमुख अतिविग्रहाय - वेणी०
१।७, रघु० १।२८, २।५६, ३।५३, -- तम् १ करोष
२ बाय, चोट, अति अने आरविबासल जान तस्यैव
वर्णनम् उणा० ४।७, आर अने पशियन् - मुच्छ०
५।१८ ३ भय, बिनाश अनरा - अतात् किस बायत
इत्युप - रघु० २।५३ । सम० अरि (वि०)
विजयी, उबरम् पेशि, - कास, आघात से उत्पन्न
आनी अण् १. इति - स छिन्नमूल अतयेन रेणु
रघु० ७।४३, वेणी० २।२७ २ पीय, मवाद, - वीकि
(स्त्री०) अष्ट स्त्री बहु स्त्री विनका कीमार्ग प्रस
हो जका हो, विक्षत (वि०) विस्तार, जिसका
शरीर बहुत जगह से कट गया हो, तथा बाबो ने
भरा हो, - वृत्तिः (स्त्री०) इद्रिता, जीविका के
आचनो से बाँधत, अतः बहु विचारों जिसने अपनी
धार्मिक प्रतिज्ञा या वन भग कर दिया हो ।

अतिः (स्त्री०) [अप् + क्तित्] १ चोट, बाय २ माल,
काट, फाड़ - विस्त्रब्ध क्रियता बराहृतिमि मुस्ताअति
पचले - अ० २।६ ३ (आल०) कर्बो, हाति,
मुकसान मुख सजायेते तेम्य सर्वेभ्योऽपीति का
अति सा० इ० १७ ४ हास, अय, म्युता - प्रताप-
अतिशीतला कु० २।२४, हि० १।११४ ।

अपु (पु०) [अप् + तृप्] १ जो काटने और कपरेका जोदने
का काम करता है - (पुतिकार या सगतगण) २ परि-
चारक हाथाल ३ कोकबान मारपि ४ हाइपिता
तथा अपिच भाता से उत्पन्न समान - मु० मनु० १०।९
५ हासी का पुत्र, उदा० बिदुर) ६ बह्मा, ७ मछली ।

अप्य, अप्य [अप + क्तिप्] अन्, तत् बायने नै + क]
१ अविग्राज्य गतिन प्रभृता गमयणं २ अपिच जाति
का पुत्र्य अतात्किन बायत इत्युप अत्रस्य सख्यो
मुखस्य कड रघु० २।५३, १।६९ ७१ - अमशय
अत्रपरिग्रहभावा अ० १।२१, मनु० १।३२२ । सम०
अप्यकः परचुराम का विशेषण अर्जः १ बहादुरी,
हीनक श्रुयोग्य २ अपिच क कर्तव्य, ३ राज्यपाल,
उपसायक, अप्यः १ अपिच जाति का पुत्र्य - मनु०
२।३८ २ अपिच मात्र, अपअपिच, वृत्ति या निकम्मा
अपिच, पु० बह्मपु ।

अपिचः [अने राष्ट्रे साप् उत्सापसं काटी वा यः ताप०]
दूतरे वषं या सैनिक जाति का पुत्र्य - हाडप्य अपिचो
वैद्यस्वयो वर्णा द्विजातय - मनु० १०।४ । अण०
- अणः परचुराम का विशेषण ।

अपिचका, अपिचवा, अपिचिका [अपिचा + कन् + टाप्,
ह्रस्व अपिच + टाप् - अपिचा + कन् + टाप् इत्यम्
वा] अपिच जाति की स्त्री ।

अपिचाणी [अपिच + ङीप्, वानुच्] १ अपिच जाति की
स्त्री २ अपिच की पत्नी ।

अपिची [अपिच + ङीप्] अपिच की पत्नी ।

अप् (वि०) (स्त्री० - नी) [अप् + तृप्] प्रसाप्त,
तहिष्णु, विनम्र ।

अप् (म्भा०) - अपनि ते, अपित उपवास करना, डबकी
होना - मनु० ५।६९, (धेर० वा चुरा० उच०) - अप-
वति - ते अपित) १ कंकना, मेखना, डालना
२ चुक चाना ।

अप्यः [अप् + स्तुद्] बीडयिन् - अण् १ अपविग्रता, कलीच
२ नाश करना, बसाना, निकास देना ।

अप्यक [अप्य + कन्] बीड या वैवहाय - नम्यअप्यके
देसे रवक कि करिष्यामि बाण० ११०, कय प्रवम-
मेव अप्यक -- मुद्रा० ४ ।

अप्यनी [अप् + स्तुद् + ङीप्] १ अप्य २ बाक ।

अप्यन् [अप् + अण्, नटम्] अपराध ।

अपा [अप् + अण् + टाप्] १ रात - विनयकपुच्छि एव
अपा अ० ९।४ रघु० २।२०, मेघ० ११०
२ हन्दी । सम० - अतः १ रात में बुझने वाला २ राजल,
निशाच - तत, अपाटी बुपिणाली - पट्टि० २।१०,
- अरः, - नाकः १ कन्दमा २ कपूर - अणः काका
बादल, - अरः राजन, पिशाच ।

अप् (म्भा०, आ०) - अमते, साम्यति क्षात वा क्षमित)
१ अनुमति देना इजाजत देना, चकने देना - अता
नृपाक्षरक्षमिरे ममेता स्त्रीरललाभ न तवावकस्य
रघु० ७।३४, १२।४६ २ क्षमा करना माफ कर
देना (अपराध आदि) - क्षान् न क्षमाय भर्तु० १।११,
अमस्य परमेस्वर निजस्य मे भर्तुनिवेशरीत्य देवि
अमम्येति वपुष नम्र रघु० १४।५८ ३ वैवहाय
होना, चप होना, प्रतीक्षा करना रघु० १५।४५
४ सहने करना गम आ जाना, भुगतना - अपि
अमतेऽप्यपुत्राया प्रकृतय - मुद्रा० २, नाशाचक्रकरान्
ना अमते स्वसुतानपि - हि० २।१०७ ५ विरोध
करना, रोकना ६ सज्जम वा बोध्य होना - अते रवेः
आलपितु क्षमते क अपातमस्काचमकीमह मय - हि०
१।३८, १।९५ ।

अप्य (वि०) [अप् + अण्] १. वैवहाय २. क्षमकीक,
विनम्र ३. पराष्ट उचय, योग्य (तवाह वै वा सं०),

अधि० अथवा अनुगत के साथ) -अभि० हिं अथवाही
 कर्मातीकस्य न सम -वाङ्० ११४१, ता हि राज-
 निधी तयो जया -रघु० ११५५, हृदय न त्वयर्थावितुं
 जया -रघु० ८१५९ -मनजय, निर्मलमहावि
 4 समनुवृत्त, योग्य उचित, उपयुक्त -तयो युक्त-
 अधिव न हि तत्त्वर्त्तं हि -उत्तर० १११४, आत्मकर्म
 जय देहं आधो धर्म इवावित -रघु० १११३, न०
 ५१२१ 5 योग्य, समर्थ, अनुकूल -उपयोगजय देह
 -विष्णु० २, तप जयं साधयितुं य इच्छति -न०
 ११२८ 6 सहने योग्य, सह 7 अनुकूल, निवृत्त।
 जय [जय + जय + जय] 1 वीर्य, सहिष्णुता, भावी
 -जया कधी य विने य वतीनायेव भूयन् -हिं०
 २, रघु० ११२२, इटो१, ठेकः जया का वैकान्त
 काकस्य वहीर्ये -वि० २८८३ 2 पुष्पी 3 कुर्वा का
 विधेयव । सम० -अ. मगजहृद्, -गुण्य -गुण्य राया ।
 जयिन् (वि०) (स्त्री० -जी), जयिन् (वि०) (स्त्री०
 -जी) [जय + जय्, जय् + चिन्, स्त्रियां ङीप्
 च,] वीर्यवान्, सहनशील, जय करने के स्वभाव
 वाला -आयं जयिन्नु क जयी -वि० २१४३, वाङ्०
 २१२००, ११२११ ।
 जय [जि + जय्] 1 वर, निवास, आवास -वातवाह्य
 वयस्य -मनु० ११११, निर्बन्धन युक्तस्वाध्यायाभा-
 वयस्य ह -महा०, 2 हावि, ह्रास, डोहन, बटाव,
 कल, मूलता -आयुजय -रघु० ३१६९, वनजये वर्धनि
 बाठराणि -पञ्च० २११८८ इसी प्रकार चन्द्राय,
 जययज आदि 3 विनाश, अंत, समाप्ति -निधायये
 वाहि हिनेव बाधुताय -अनु० ११९, जयव ९०
 4 आधिक्य कति -मनु० ८१४०१ -अ. (मूल्य आवि
 का) निरता 6 हृता 7 प्रलय 8 ज्योतिष 9. रोग
 10. निर्मुक्ता, (वीर्यमयि नें) अथ । सम० -अर
 (जयकर जी) (वि०) नाश या तबाही करने वाला,
 कर्वाही करने वाला, -अकाल 2. प्रलयकाल 2. जयनि
 का जयव, -अकाल तथैविक की जाती, -अकाल कल्पन,
 अथोपयत्, -अकालि (स्त्री०) - अकाल नाश करने का
 अवसर, -रोगः तथैविक, राक्षसका, -आयु प्रलयकाल
 की हवा, -अयम् (स्त्री०) कर्वाहा, कर्वाही ।
 जययु [जि + जयय्] तथैविक के रोगी की जाती,
 तथैविक ।
 जयिन् (वि०) (स्त्री० -जी), जय + इति 1. ज्ञान-
 मान, वृत्तिने वाला -आरम्भमूर्ती अधिनी जयेन
 -अनु० २१६०, ज्ञानोन्मुख, अधिमान -न बाधुताविष
 जयी -रघु० १०१०१, मनु० ११११४ 2 अवरोधवस्त
 3. मन्वर, मन्वर - (पु०) कल्पना ।
 जयिन् (वि०) [जि + जयय्] 1. वरदाय करी वाला,
 वरदा करी के अवसर, मन्वर ।

जय (स्त्री० -पद० -अरति, अरति) (अकाल प्रदीप अवर्धक
 तथा अवर्धक दोनों प्रकार के होता है) 1. अकाल,
 अरकाल 2. जय देहा, मही की कति हृता, उदेल्या,
 निराकाला -रघु० १११४३; अहि० ११८३ 3. वृत्त-वृत्त
 करके चिरना, टपकना, रिक्तता 4. अन्त होना, बटना,
 निरता 5. अवर्ध होना, अवधाय न होना -अधीनस्थ
 अरति तप अरति विष्णुवायु -अनु० ५११३०
 6. निवृत्तता, वसिष्ठ होना (जया० के साथ) (वेर०
 -आरयति) आरोप कथाना; अवलोकन करना (आव
 का उपवर्ध के साथ), वि- , विष्णुवायु, वृत्त वाता ।
 जय (वि०) [जय + जय्] 1. विष्णुने वाला 2. जयव
 3. मन्वर -अर तथैविक मूर्तावि वृत्तवायु अर उदेल्या
 -मनु० ११११९ -र वाचक, -रघु १ नाथ
 2. मन्वर ।
 जययु [जय + ययु] 1. वृद्धे, टपकने, दूर-दूर चिरने
 की वृत्तिने की जिता 2. वतीना का वाता -अकाल-
 निवृत्तमन्वरति -रघु० १११८८ ।
 जयिन् (पु०) [जय + इति] वरदाय का जीवन ।
 जय (पु०) उर० -आलयति - ते आलित 1. बीना,
 बी देना, पवित्र करना, साक करना -अरते रते
 आलयिन् अनेत क अलयनस्वाध्यायमन्त्रं वर
 -वि० ११८८, हिं० ५१९, 2. निरा देना - (अवक)
 तेषामनुवृत्तेषां राजन् प्रजापत्यात्मन -महा०, वि- ,
 बोकर नाक करना -रघु० - ५१४४ ।
 जयः जययु [जय + जय्, अनुयु वा] 1. जीव 2. जाती ।
 जय (वि०) (स्त्री० - जी) [जय + जय्] वैदिक
 जानि से तयव रखने वाला आधो धर्म जित इय
 ननु वृद्धाधोयस्य गुप्ती उत्तर० ११९, रघु० १११३,
 -अनु १ अधिव जानि 2 अधिव के गुण जीता
 इस प्रकार वतकानी है जीव तयो वृत्तिवाचक वृद्धे
 वाच्यमानवन्, राजनीम्वरजायव जय करे स्वभाव-
 जय भव० १८१८३ ।
 जयल (पु० क० क०) [जय + ल] 1. वीर्यवान्, सहन-
 शील, सहिष्णु 2. जया किया गया, ता पुष्पी ।
 जयिन् (स्त्री०) [जय + यिन्] 1. वीर्य, सहनशीलता,
 जया - सातिवधेयमेव किम् -अनु० २१२१, जय०
 १८१४२ ।
 जययु (वि०) [जय + यु, वृद्धि] वीर्यवान्, सहनशील,
 -यु यिता ।
 जय (वि०) [जय + क] 1. वर, वृत्तता हुआ 2. जीव,
 पण्डा, परिशील, वृद्ध, वृद्धता-यता जयजय
 कपोलमानवन् -म० ३११०, अर्थे जया जय० ८२,
 जयजय प्रलयवृद्धा अधिवोर्धन वृद्धन् -८०, ८९
 3. वृद्ध, वृद्ध, जय 4. वृद्ध, निवृत्त ।
 जय (वि०) [जय + य वा०] अवरोधशील, अवरोध का

बाहक, सिन्ध, बरपरा, कटु, भारी, -रु: 1 रस, जक
2 बीरा, राव 3 कोई भारीय या कटु पदार्थ- जने
कार्मिकावहण बाहं तस्यैव वर्तनम् -उत्तर- ५।७
कार्मिके प्रक्षिपन् -पृष्ठ- ५।१८ (कार्मिके अने क्षिप्
—एक लोकोक्ति बन गया है इसका अर्थ है पीडा
को जो पहले से ही बसछ है और बढ़ा देना उसे
जो और अधिक बुरा कर देना' जैसे पर नमक
छिड़कना' 4 बीरा 5 बरपाण ठग रन् 1 काला
नमक 2 पानी। सम० अक्षन् समुद्दी नमक
-अक्षन् समुद्दी का लग अन्नु भारी रम या
कारा पानी—उब, उबक, उबकि, समुद्र लाग
समुद्र, जब, क्षिपन् समुद्दी लाग मुद्राणा—मदी
नमक में लाने पानी की नदी क्षिपि (स्त्री०)
क्षिपि (स्त्री०) क्षिपि-क्षिपारब्ध का नदी प्रणदा
पमक्षिका उज्जुट, मैकक लाग पदार्थ रस
काय रस।

कारक [कार + कन्] 1 कार, रह 2 रम जक
3 पिजरा पक्षियों के रहने की टाकरी या जाल
4 बोरी 5 संकरी, कमिका।

कारकम्, -ना [कार + णिप् + क्युट दूब वा, बोधारेपण
विशेषकर व्यभिचार का।

कारिका [कार + क्युट + टाप् इत्वम्] भुम्।

कारित (वि०) 1 कारने पाना मे से टपकाया हुआ
2 जिस पर (व्यभिचार) का मिथ्या अपवाद लगाया
गया हो।

कारणम् [कार + णिप् + क्युट] 1 वाला (पानी से
बोकर) साफ करना 2 छिड़कना।

कारित (वि०) [कार + णिप् + कन्] 1 बोया हुआ साफ
किया हुआ, पवित्र किया हुआ 2 पेश हुआ प्रदिन
(बदला चुकाया हुआ) - उत्तर- ५।०८।

क्रि० 1 (स्वा० पर०) कार्यति क्षिप या क्षीण 1 मुझना
क्षीयना 2 राज्य करना, शासन करना स्वाधी होना।

ii (स्वा०, स्वा०, क्वा० पर०) क्षयति क्षिणोति
क्षिणति 1 नष्ट करना घट कर लेना, बर्बाद
करना, घट करना न तदर्थ शस्त्रभूना क्षिणोति
-रन् ० २।४० 2 न्यून करना बर्बाद करना
-रन् ० १९।४८ 3 मार डालना, क्षति पहुँचाना
—(कर्मावस्थ-क्षीयते) 1 बर्बाद होना, घटना
नष्ट होना, न्यून होना (बाल० बी) प्रतिक्षणमर्थ
काय क्षीयमानो न भवत्ये हि० ५।६९ प्रवासन-
क्षिपिनिमुहयनम् शायो मति क्षीयते पञ्च २।४
अमर ९३, मर्त्य २।१९, (पेर०) -क्षययति या क्षप-
यति 1 नष्ट करना, बुरा हटा देना, समाप्त कर देना
—अययि च क्षपयतु नीलनीलित पुनश्च परित-
क्षितिरावयतु—श० ७।३५, रच० ८।५७, मेघ० ५३।

2 समय बिटाना, क्षय—, घटना, क्षीय होना, न्यून
होना, पति—, क्ष, क्षय—, 1 कम होना, क्षीय
होना 2 क्षय होना, बुझना-पतना होना।

क्षिति (स्त्री०) [क्षि + क्लिप्] 1 पृथ्वी 2 निवास,
बासना घर 3 हानि, बिनाश 4 प्रलय। सम०—ईक्ष-
—ईक्षरः राजा रन् ० १।५ ३।३ ११।१, कन्-
बल कन्-मुचाल, क्षिप् (पु०) राजा, राजकुमार,
क्ष 1 क्षा 2 गडोका, क्षेपका 3 नमक वह
4 क्षिप् के द्वारा मारा गया नमक नाम का राखत
1 -क्षम् जहाँ पृथ्वी और आकाश मिलते हुए प्रतीत
होता है (क्षा) भूना का विशेषण—तन्म पृथ्वी
या सतह देख कक्षा—क्षर पहाड़ कु० ७।१५
माच—प०—क्षति बालः—क्षुप् (पु०)

रक्षिन् (पु०) राजा प्रन्—रन् ० २।५१, ५।३९,
६।८६ ७।३ १।७५—क्षम ममल वृह—प्रतिष्ठा (वि०)
पृथ्वी पर रहने वाला क्षु (पु०) 1 पहाड़—सर्व-
क्षिपिता नाम विष्णु० ४।२७ (यहाँ इस शब्द
का अर्थ राजा या है। कि० ५।२०, मर्त्य ९।२६
८ राजा—सम्बन्ध भूयश्च—रक्षन् कारी, क्षीर
क्षु (पु०) क्षा—सर्वण (पु०) नव० क्षीर क्षीर,
क्षिपि (स्त्री०) पृथ्वी की गति क्षीयमुक्षयक्षर
क्षुक्षुक्षु क्षुक्षु क्षिपि।

क्षिप् [क्षिप् + क] 1 रोग 2 मृग 3 क्षीय।

क्षिप् (पु०) उज्ज०—क्षिप् प्रति या क्षिपि पूर्व होने पर
पर०—क्षिप् पर० क्षिपि ने क्षिपति, क्षिप्य
—कैकना क्षालना—रना प्रवृत्ति करना, क्षिप्यन,
जान देना (क्षि० १ रक्षी कभी मृग के साथ)
अक्षय इति तु क्षिप् अक्षयक्षय इत्यपि—मन् ०
३।८८ क्षिप्ता या क्षिप्यते मवि—महा०, का० १२,
१० प्रतिपुष्टक यो मर्त्य ० ३।६७ 2 रक्षना पक्षमा,
लगना अक्षयक्षिपि क्षिप्ता क्षीयक्षिप्ता क्षिप्ता
—म० ७।२४ यक्ष ० १।३० भग० १६।१९ ३ क्षीरो-
पित करना, लगना (कलक बादि)—मृत्वे बोधान्
क्षिपति हि० ० ४ फेक देना क्षम देना, उतार
देना मुक्त होना—कि० मंस्य मरव्यथा न क्षुपि क्षो
न क्षिप्यते यन मुद्रा० ५।१८ ५ क्षुर करना, नष्ट
करना—मा० १।१७ ६ अक्षोकार करना क्षा करना
७ क्षपमान करना क्षमना करना, बुझना कहना,
बसकाना—मन् ० ८।३१० ७७०, क्षा० ३।१०,
क्षि० 1 क्षिप् करना क्षम लमाना २ क्षाराव
क्षरना क्षपवाद करना ३ क्षो बड़ जाना, क्षय—,
१ उतार फेंकना क्षोडना त्यागना २ क्षिप्यकार
करना क्षमना करना क्षा, १ फेंकना, क्षम देना,
प्रहार करना २ क्षिपि ३ क्षिपि लेना, क्षीयना,
क्षीयना, ले लेना—क्षपयदमाक्षिप्—रन् ० ७।७,

मर्त्य ० १५३, मेघ ० ६८४ संकेत करना, इशारा करना 5. परिस्थितियों से अनुमान लगाना - आख्या कविनागलियाते 6 (तर्क के रूप में) आलोचन करना 7 अवहेलना करना, उपेक्षा करना 8 निरस्कार करना, ठप्प—, छालना चतु० ११२ उच 1. डालना, फेंकना कपुषि कषाय तत्र तत्र शम्भुप क्षिपत - मा० ५१३१ 2 संकेत करना, इशारा करना निष्कर्ष निकालना छत्र कार्यमुपक्षिपन्ति मुष्क ० १३३ 3 बारम्ब करना शुरू करना 4 अपमान करना, होटना-कटकारना नि 1 नीचे रखना, स्थापित करना, घर इना भाज० १११०० अम० ८० 2 सीपना दोहराने में मुडुबे करना मनु० ५१३, ३१३७९ १८० 3 गिरविम रखना 4 फेंक देना बस्तीकार करना ५ अदान करना परि 1 घनन गङ्गाक्षोत परिश्रान्त कु० ६३८ 2 आलस्य करना, पर्या बोझा (बाजो का) एकत्र करना (केसान) पर्याश्रित् काविदुरावचम ह् ७१४, म 1 रखने डालना नायेम्य प्रक्षिपेदमौ -मनु० ६५३ भार ह्मे प्रक्षिपन् मृ० ५११ 2 बीच में डालना अनशित करना-डाले मूत्र वैश्व त्रक्षिपन् कैय वि 1 पकना चालना 2 मत मोड़ना 3 ध्यान हटाना, लम 1 मचय करना डेर लगाना आचार्यात्मक्षान्तोवारासु निषादिभि -रघु० १५० भाट० ५८६ 2 पोछे हटाना, नष्ट करना 3 छाना करना कमी करना, मसिपन करना क्षिप्येत क्षय इव नष्ट दीर्घायामा विद्याया मच १८८, मनु० ७१४।

क्षणचक्षु [क्षिप + क्पन् हा०] 1 भजना फेंकना, डालना 2 सिद्धकना, दुबकन करना।

क्षिपन्ति, श्री (स्त्री०) [क्षिप् + क्ति, क्षिपण + क्ति] 1 कप्यु 2 जान 3 हथियार, नि प्रहार।

क्षिपन्तु [क्षिप + क्पन्तु] 1 घरीर 2 बसत चतु।

क्षिपा [क्षिप् + अक्ष + टाप्] 1 भेजना, फेंकना, डालना 2 रानि।

क्षिप्य (पु० क० इ०) [क्षिप + क्ति] 1 फेंका हुआ, बिखेरा हुआ, उछाला हुआ, छला हुआ 2 त्यागा हुआ 3 अवज्ञान, उपेक्षण, अनादृत 4 स्थापित 5 ध्यान हटाया हुआ, ६ (दे० क्षिप), स्वयं गोलो लगन से बना बाज। मम० क० १२ पागल कुला, क्षिप (वि०) उचार मन, विमना, - वैह (वि०) प्रमनजरीर केटा हुआ।

क्षिपिः (स्त्री०) [क्षिप + क्तिन्] 1 फेंकना भेज देना 2 (पक्षियों आदि के) कूट अणु को पकट करना।

क्षिप्य (वि०) [क्षिप + क्ति] (म० अ०-अपीरम, उ० अ०-लेपिष्ठ) छजीव, भाङ्गुगामी, -प्रक्षु (अप्य०) जन्मी,

पुर्ती से, गुरन्त-विनाश कजति क्षिप्रमामाचविभाषमि मनु० ३१३७९ शा० ३१६ मृष्टि० २१६४। सम० कारित् (वि०) आङ्गुगामी अक्षिप्यी।

क्षिपा [क्षि + अक्ष + टाप्] 1 हानि, विनाश, बर्बादी, ह्नाम 2 अनौचित्य सर्वसम्मान आना का उल्लापन उदा० नयमहोषेन पार्ति उपभाषाय पदार्थ गमयति मि० १०।

क्षोजनम् [क्षि + क्तिन्] पाठ १२३४ म म निकली हुई गम्यताह ३० १३४।

क्षीय (वि०) क्षि + क्ति टाप् । 1 पतला हुआ, क्षय प्राप्ति निरूपण हुआ पक्षा हत्या या नमन लक्ष कर हाप हुआ भाङ्गुगामी १३४५ जानाया १३४५ २३५ ३४५ ४५ ५५ ६५ ७५ ८५ ९५ १०५ ११५ १२५ १३५ १४५ १५५ १६५ १७५ १८५ १९५ २०५ २१५ २२५ २३५ २४५ २५५ २६५ २७५ २८५ २९५ ३०५ ३१५ ३२५ ३३५ ३४५ ३५५ ३६५ ३७५ ३८५ ३९५ ४०५ ४१५ ४२५ ४३५ ४४५ ४५५ ४६५ ४७५ ४८५ ४९५ ५०५ ५१५ ५२५ ५३५ ५४५ ५५५ ५६५ ५७५ ५८५ ५९५ ६०५ ६१५ ६२५ ६३५ ६४५ ६५५ ६६५ ६७५ ६८५ ६९५ ७०५ ७१५ ७२५ ७३५ ७४५ ७५५ ७६५ ७७५ ७८५ ७९५ ८०५ ८१५ ८२५ ८३५ ८४५ ८५५ ८६५ ८७५ ८८५ ८९५ ९०५ ९१५ ९२५ ९३५ ९४५ ९५५ ९६५ ९७५ ९८५ ९९५ १००५ १०१५ १०२५ १०३५ १०४५ १०५५ १०६५ १०७५ १०८५ १०९५ ११०५ १११५ ११२५ ११३५ ११४५ ११५५ ११६५ ११७५ ११८५ ११९५ १२०५ १२१५ १२२५ १२३५ १२४५ १२५५ १२६५ १२७५ १२८५ १२९५ १३०५ १३१५ १३२५ १३३५ १३४५ १३५५ १३६५ १३७५ १३८५ १३९५ १४०५ १४१५ १४२५ १४३५ १४४५ १४५५ १४६५ १४७५ १४८५ १४९५ १५०५ १५१५ १५२५ १५३५ १५४५ १५५५ १५६५ १५७५ १५८५ १५९५ १६०५ १६१५ १६२५ १६३५ १६४५ १६५५ १६६५ १६७५ १६८५ १६९५ १७०५ १७१५ १७२५ १७३५ १७४५ १७५५ १७६५ १७७५ १७८५ १७९५ १८०५ १८१५ १८२५ १८३५ १८४५ १८५५ १८६५ १८७५ १८८५ १८९५ १९०५ १९१५ १९२५ १९३५ १९४५ १९५५ १९६५ १९७५ १९८५ १९९५ २००५ २०१५ २०२५ २०३५ २०४५ २०५५ २०६५ २०७५ २०८५ २०९५ २१०५ २११५ २१२५ २१३५ २१४५ २१५५ २१६५ २१७५ २१८५ २१९५ २२०५ २२१५ २२२५ २२३५ २२४५ २२५५ २२६५ २२७५ २२८५ २२९५ २३०५ २३१५ २३२५ २३३५ २३४५ २३५५ २३६५ २३७५ २३८५ २३९५ २४०५ २४१५ २४२५ २४३५ २४४५ २४५५ २४६५ २४७५ २४८५ २४९५ २५०५ २५१५ २५२५ २५३५ २५४५ २५५५ २५६५ २५७५ २५८५ २५९५ २६०५ २६१५ २६२५ २६३५ २६४५ २६५५ २६६५ २६७५ २६८५ २६९५ २७०५ २७१५ २७२५ २७३५ २७४५ २७५५ २७६५ २७७५ २७८५ २७९५ २८०५ २८१५ २८२५ २८३५ २८४५ २८५५ २८६५ २८७५ २८८५ २८९५ २९०५ २९१५ २९२५ २९३५ २९४५ २९५५ २९६५ २९७५ २९८५ २९९५ ३००५ ३०१५ ३०२५ ३०३५ ३०४५ ३०५५ ३०६५ ३०७५ ३०८५ ३०९५ ३१०५ ३११५ ३१२५ ३१३५ ३१४५ ३१५५ ३१६५ ३१७५ ३१८५ ३१९५ ३२०५ ३२१५ ३२२५ ३२३५ ३२४५ ३२५५ ३२६५ ३२७५ ३२८५ ३२९५ ३३०५ ३३१५ ३३२५ ३३३५ ३३४५ ३३५५ ३३६५ ३३७५ ३३८५ ३३९५ ३४०५ ३४१५ ३४२५ ३४३५ ३४४५ ३४५५ ३४६५ ३४७५ ३४८५ ३४९५ ३५०५ ३५१५ ३५२५ ३५३५ ३५४५ ३५५५ ३५६५ ३५७५ ३५८५ ३५९५ ३६०५ ३६१५ ३६२५ ३६३५ ३६४५ ३६५५ ३६६५ ३६७५ ३६८५ ३६९५ ३७०५ ३७१५ ३७२५ ३७३५ ३७४५ ३७५५ ३७६५ ३७७५ ३७८५ ३७९५ ३८०५ ३८१५ ३८२५ ३८३५ ३८४५ ३८५५ ३८६५ ३८७५ ३८८५ ३८९५ ३९०५ ३९१५ ३९२५ ३९३५ ३९४५ ३९५५ ३९६५ ३९७५ ३९८५ ३९९५ ४००५ ४०१५ ४०२५ ४०३५ ४०४५ ४०५५ ४०६५ ४०७५ ४०८५ ४०९५ ४१०५ ४११५ ४१२५ ४१३५ ४१४५ ४१५५ ४१६५ ४१७५ ४१८५ ४१९५ ४२०५ ४२१५ ४२२५ ४२३५ ४२४५ ४२५५ ४२६५ ४२७५ ४२८५ ४२९५ ४३०५ ४३१५ ४३२५ ४३३५ ४३४५ ४३५५ ४३६५ ४३७५ ४३८५ ४३९५ ४४०५ ४४१५ ४४२५ ४४३५ ४४४५ ४४५५ ४४६५ ४४७५ ४४८५ ४४९५ ४५०५ ४५१५ ४५२५ ४५३५ ४५४५ ४५५५ ४५६५ ४५७५ ४५८५ ४५९५ ४६०५ ४६१५ ४६२५ ४६३५ ४६४५ ४६५५ ४६६५ ४६७५ ४६८५ ४६९५ ४७०५ ४७१५ ४७२५ ४७३५ ४७४५ ४७५५ ४७६५ ४७७५ ४७८५ ४७९५ ४८०५ ४८१५ ४८२५ ४८३५ ४८४५ ४८५५ ४८६५ ४८७५ ४८८५ ४८९५ ४९०५ ४९१५ ४९२५ ४९३५ ४९४५ ४९५५ ४९६५ ४९७५ ४९८५ ४९९५ ५००५ ५०१५ ५०२५ ५०३५ ५०४५ ५०५५ ५०६५ ५०७५ ५०८५ ५०९५ ५१०५ ५११५ ५१२५ ५१३५ ५१४५ ५१५५ ५१६५ ५१७५ ५१८५ ५१९५ ५२०५ ५२१५ ५२२५ ५२३५ ५२४५ ५२५५ ५२६५ ५२७५ ५२८५ ५२९५ ५३०५ ५३१५ ५३२५ ५३३५ ५३४५ ५३५५ ५३६५ ५३७५ ५३८५ ५३९५ ५४०५ ५४१५ ५४२५ ५४३५ ५४४५ ५४५५ ५४६५ ५४७५ ५४८५ ५४९५ ५५०५ ५५१५ ५५२५ ५५३५ ५५४५ ५५५५ ५५६५ ५५७५ ५५८५ ५५९५ ५६०५ ५६१५ ५६२५ ५६३५ ५६४५ ५६५५ ५६६५ ५६७५ ५६८५ ५६९५ ५७०५ ५७१५ ५७२५ ५७३५ ५७४५ ५७५५ ५७६५ ५७७५ ५७८५ ५७९५ ५८०५ ५८१५ ५८२५ ५८३५ ५८४५ ५८५५ ५८६५ ५८७५ ५८८५ ५८९५ ५९०५ ५९१५ ५९२५ ५९३५ ५९४५ ५९५५ ५९६५ ५९७५ ५९८५ ५९९५ ६००५ ६०१५ ६०२५ ६०३५ ६०४५ ६०५५ ६०६५ ६०७५ ६०८५ ६०९५ ६१०५ ६११५ ६१२५ ६१३५ ६१४५ ६१५५ ६१६५ ६१७५ ६१८५ ६१९५ ६२०५ ६२१५ ६२२५ ६२३५ ६२४५ ६२५५ ६२६५ ६२७५ ६२८५ ६२९५ ६३०५ ६३१५ ६३२५ ६३३५ ६३४५ ६३५५ ६३६५ ६३७५ ६३८५ ६३९५ ६४०५ ६४१५ ६४२५ ६४३५ ६४४५ ६४५५ ६४६५ ६४७५ ६४८५ ६४९५ ६५०५ ६५१५ ६५२५ ६५३५ ६५४५ ६५५५ ६५६५ ६५७५ ६५८५ ६५९५ ६६०५ ६६१५ ६६२५ ६६३५ ६६४५ ६६५५ ६६६५ ६६७५ ६६८५ ६६९५ ६७०५ ६७१५ ६७२५ ६७३५ ६७४५ ६७५५ ६७६५ ६७७५ ६७८५ ६७९५ ६८०५ ६८१५ ६८२५ ६८३५ ६८४५ ६८५५ ६८६५ ६८७५ ६८८५ ६८९५ ६९०५ ६९१५ ६९२५ ६९३५ ६९४५ ६९५५ ६९६५ ६९७५ ६९८५ ६९९५ ७००५ ७०१५ ७०२५ ७०३५ ७०४५ ७०५५ ७०६५ ७०७५ ७०८५ ७०९५ ७१०५ ७११५ ७१२५ ७१३५ ७१४५ ७१५५ ७१६५ ७१७५ ७१८५ ७१९५ ७२०५ ७२१५ ७२२५ ७२३५ ७२४५ ७२५५ ७२६५ ७२७५ ७२८५ ७२९५ ७३०५ ७३१५ ७३२५ ७३३५ ७३४५ ७३५५ ७३६५ ७३७५ ७३८५ ७३९५ ७४०५ ७४१५ ७४२५ ७४३५ ७४४५ ७४५५ ७४६५ ७४७५ ७४८५ ७४९५ ७५०५ ७५१५ ७५२५ ७५३५ ७५४५ ७५५५ ७५६५ ७५७५ ७५८५ ७५९५ ७६०५ ७६१५ ७६२५ ७६३५ ७६४५ ७६५५ ७६६५ ७६७५ ७६८५ ७६९५ ७७०५ ७७१५ ७७२५ ७७३५ ७७४५ ७७५५ ७७६५ ७७७५ ७७८५ ७७९५ ७८०५ ७८१५ ७८२५ ७८३५ ७८४५ ७८५५ ७८६५ ७८७५ ७८८५ ७८९५ ७९०५ ७९१५ ७९२५ ७९३५ ७९४५ ७९५५ ७९६५ ७९७५ ७९८५ ७९९५ ८००५ ८०१५ ८०२५ ८०३५ ८०४५ ८०५५ ८०६५ ८०७५ ८०८५ ८०९५ ८१०५ ८११५ ८१२५ ८१३५ ८१४५ ८१५५ ८१६५ ८१७५ ८१८५ ८१९५ ८२०५ ८२१५ ८२२५ ८२३५ ८२४५ ८२५५ ८२६५ ८२७५ ८२८५ ८२९५ ८३०५ ८३१५ ८३२५ ८३३५ ८३४५ ८३५५ ८३६५ ८३७५ ८३८५ ८३९५ ८४०५ ८४१५ ८४२५ ८४३५ ८४४५ ८४५५ ८४६५ ८४७५ ८४८५ ८४९५ ८५०५ ८५१५ ८५२५ ८५३५ ८५४५ ८५५५ ८५६५ ८५७५ ८५८५ ८५९५ ८६०५ ८६१५ ८६२५ ८६३५ ८६४५ ८६५५ ८६६५ ८६७५ ८६८५ ८६९५ ८७०५ ८७१५ ८७२५ ८७३५ ८७४५ ८७५५ ८७६५ ८७७५ ८७८५ ८७९५ ८८०५ ८८१५ ८८२५ ८८३५ ८८४५ ८८५५ ८८६५ ८८७५ ८८८५ ८८९५ ८९०५ ८९१५ ८९२५ ८९३५ ८९४५ ८९५५ ८९६५ ८९७५ ८९८५ ८९९५ ९००५ ९०१५ ९०२५ ९०३५ ९०४५ ९०५५ ९०६५ ९०७५ ९०८५ ९०९५ ९१०५ ९११५ ९१२५ ९१३५ ९१४५ ९१५५ ९१६५ ९१७५ ९१८५ ९१९५ ९२०५ ९२१५ ९२२५ ९२३५ ९२४५ ९२५५ ९२६५ ९२७५ ९२८५ ९२९५ ९३०५ ९३१५ ९३२५ ९३३५ ९३४५ ९३५५ ९३६५ ९३७५ ९३८५ ९३९५ ९४०५ ९४१५ ९४२५ ९४३५ ९४४५ ९४५५ ९४६५ ९४७५ ९४८५ ९४९५ ९५०५ ९५१५ ९५२५ ९५३५ ९५४५ ९५५५ ९५६५ ९५७५ ९५८५ ९५९५ ९६०५ ९६१५ ९६२५ ९६३५ ९६४५ ९६५५ ९६६५ ९६७५ ९६८५ ९६९५ ९७०५ ९७१५ ९७२५ ९७३५ ९७४५ ९७५५ ९७६५ ९७७५ ९७८५ ९७९५ ९८०५ ९८१५ ९८२५ ९८३५ ९८४५ ९८५५ ९८६५ ९८७५ ९८८५ ९८९५ ९९०५ ९९१५ ९९२५ ९९३५ ९९४५ ९९५५ ९९६५ ९९७५ ९९८५ ९९९५ १००५ १०१५ १०२५ १०३५ १०४५ १०५५ १०६५ १०७५ १०८५ १०९५ ११०५ १११५ ११२५ ११३५ ११४५ ११५५ ११६५ ११७५ ११८५ ११९५ १२०५ १२१५ १२२५ १२३५ १२४५ १२५५ १२६५ १२७५ १२८५ १२९५ १३०५ १३१५ १३२५ १३३५ १३४५ १३५५ १३६५ १३७५ १३८५ १३९५ १४०५ १४१५ १४२५ १४३५ १४४५ १४५५ १४६५ १४७५ १४८५ १४९५ १५०५ १५१५ १५२५ १५३५ १५४५ १५५५ १५६५ १५७५ १५८५ १५९५ १६०५ १६१५ १६२५ १६३५ १६४५ १६५५ १६६५ १६७५ १६८५ १६९५ १७०५ १७१५ १७२५ १७३५ १७४५ १७५५ १७६५ १७७५ १७८५ १७९५ १८०५ १८१५ १८२५ १८३५ १८४५ १८५५ १८६५ १८७५ १८८५ १८९५ १९०५ १९१५ १९२५ १९३५ १९४५ १९५५ १९६५ १९७५ १९८५ १९९५ २००५ २०१५ २०२५ २०३५ २०४५ २०५५ २०६५ २०७५ २०८५ २०९५ २१०५ २११५ २१२५ २१३५ २१४५ २१५५ २१६५ २१७५ २१८५ २१९५ २२०५ २२१५ २२२५ २२३५ २२४५ २२५५ २२६५ २२७५ २२८५ २२९५ २३०५ २३१५ २३२५ २३३५ २३४५ २३५५ २३६५ २३७५ २३८५ २३९५ २४०५ २४१५ २४२५ २४३५ २४४५ २४५५ २४६५ २४७५ २४८५ २४९५ २५०५ २५१५ २५२५ २५३५ २५४५ २५५५ २५६५ २५७५ २५८५ २५९५ २६०५ २६१५ २६२५ २६३५ २६४५ २६५५ २६६५ २६७५ २६८५ २६९५ २७०५ २७१५ २७२५ २७३५ २७४५ २७५५ २७६५ २७७५ २७८५ २७९५ २८०५ २८१५ २८२५ २८३५ २८४५ २८५५ २८६५ २८७५ २८८५ २८९५ २९०५ २९१५ २९२५ २९३५ २९

—**बारीक**—**बारीक**, दुग्ध सागर, विह्वलित जमा ।
दूध **दूध**—**दूध** १ दूध, गुल्म, पीपल वीर मयूक नाम
 के पुत्र २ बजीर, खर मलाई, दूध की मलाई
 —**सबुद्ध** दुग्धसागर सार मकन हिंदीर दूध के
 साग या फेन ।

बीरिका [**बीर** + **ठर** + **टाप**] दूध से बना योग्य पदार्थ ।
बीरिन् (वि०) [**बीर** + **इनि**] दूधिया दुधार दूध दन
 वाला ।

बीव (स्त्री०) **दिवा** ० **पर** ० —**सावनि** क्षात्रार्थ १ मत
 वाला होना मद्योन्मत्त होना नशे में होना २ बकना
 मूढ़ में निकलना ।

बीव (वि०) [**क्षीव** + **कनि**] १ उन्मत्त मद्योन्मत्त
 मद्य भूय जय यय जयमन क्षीव क्षमभयम्
 कृपाय [वि०] १ ११५ भाषा दृष्टमन सत्र
 वेणी ० ५१७ ।

बु (ब्रह्म०) **पर** ० **बीर** ० **मन** १ जीवना दृष्टार्थ
 मद्योन्मत्त निरस्त दूध क क्षीव चक्षुः मद्योन्मत्त १
 ११३ बीर ० १० भट्टि ० १४ १० २ बीमन ।

बुध (बु०) **क** ० **क** ० [**बुध** + **क**] १ कृष्ण दूध कृष्ण
दूध **रघु** ० १११० २ (ब्रह्म०) ब्रह्मन् प्रमत्त
 बुद्धजनसूत्र एष मार्ग कां १४६ ३ पोसा दूध
 ० बुद्ध । मद्य ० **बनस** (वि०) पदधानपी पछ
 ताने वाला ।

बुध (स्त्री०) **बुध**, मा [**बु** + **विध** उगागम, **धु**
क **बुध** + **टाप**] क्षीवत वाला क्षीव ।

बुध (ब्रह्म०) **उभ** ० **अर्थ** ० **मत्त** ० **अर्थ** १ बुधलना
 धिम्मा (पेरा में) बुधत राजन रगदना गीम देना
 क्षीवर्षि मर्षि पाताले भट्टि ० ५ ० ६ न व था
 क्षीवर्षि क्षीवर्षि पादार्थनक्षीवर्षि ११४० १५ ६६
 २ उत्तेजित करना बुध होना [ब्र०] प्र बुध
 लना क्षीवर्षि गीमना मिथ्यम्य प्रचक्षोद गद्योग
 विधीयत भट्टि ० १४३३ ।

बुध (वि०) [**बुध** + **रक**] (म० अ०) **आदोयम** ० **अ** ०
 —**बोधिष्ट** १ बुध अर्थ छोटा सा बुध हत्का
 २ कवीना, नीच दुष्ट अथवा सुदोषी नून शरण
 प्रार्थ—**कु** ० १११० ३ दुष्ट ४ कृ ० ५ ग्राह दंड
 ६ कृष्ण, कृष्ण मेघ ० १३ डा १ मद्यमस्वी
 २ अगदाल स्त्री ३ अगदाल विकलांग स्त्री ४ बेश्या
 —**उपसृष्ट** इव बुधार्थिष्ठमवना कां १०३ ।
बुध ० —**बुध** बुध राशों में आशों में लगाना जान
 वाला बजन या लग्न —**बुध** बुध के भीतर का छोटा
 वा रश्मि, —**बुध** छोटा शन बुध एक प्रकार का
 हत्का कोष्ठ धिष्ठा १ बुध २ बुध वाली क
 बनी, —**बुध** लाल बुध की मकरी जन्तु काई
 की छोटा नीव, बुधका हास या मकरी बुध

(वि०) बोध मन का कवीना, —**रश्मि** महद,—**रश्मि**
 मामकी बीमारी (बुधन में ४४ रोगों का उत्पन्न
 है) शन छोटा शन या बोधा (नीरी), —**बुध**
 हत्का या बोधा माना अर्थानि पीतल ।

बुध (वि०) [**बुध** + **रक**] बुध हत्का (विशेष कर
 रश्मि व जन्मों के लिए प्रयुक्त) ।

बुध **दिवा** ० **पर** ० **अर्थ** ० **अर्थ** ० **अर्थ** ० **अर्थ** ०
 लयना भट्टि ० १६ ६ ६ ६ १३९ ।

बुध (स्त्री०) **बुध** [**अध** + **विध** **बुध** + **टाप**] बुध
 सारनि बुध —**पर** ० ११३३ ११८३ । **सम** ०
आत **आविष्ट** १ यथाहित क्षम (१०)
मद्य **मद्य** ० **मद्य** ० ११० ११० —**विप्रासित** (वि०)
मद्य **मद्य** ० **विप्रासित** (स्त्री०) बुध जान होना ।

बुध (वि०) **अध** ० **मद्य** ० **मद्य** ०

अर्थ ० **अर्थ** ० **अर्थ** ० **अर्थ** ०

बुध **मद्य** ० **मद्य** ० **मद्य** ० **मद्य** ०

बुध **मद्य** ० **मद्य** ० **मद्य** ० **मद्य** ०

बुध **मद्य** ० **मद्य** ० **मद्य** ० **मद्य** ०

बुध **मद्य** ० **मद्य** ० **मद्य** ० **मद्य** ०

बुध **मद्य** ० **मद्य** ० **मद्य** ० **मद्य** ०

बुध **मद्य** ० **मद्य** ० **मद्य** ० **मद्य** ०

बुध **मद्य** ० **मद्य** ० **मद्य** ० **मद्य** ०

बुध **मद्य** ० **मद्य** ० **मद्य** ० **मद्य** ०

बुध **मद्य** ० **मद्य** ० **मद्य** ० **मद्य** ०

बुध **मद्य** ० **मद्य** ० **मद्य** ० **मद्य** ०

बुध **मद्य** ० **मद्य** ० **मद्य** ० **मद्य** ०

बुध **मद्य** ० **मद्य** ० **मद्य** ० **मद्य** ०

बुध **मद्य** ० **मद्य** ० **मद्य** ० **मद्य** ०

बुध **मद्य** ० **मद्य** ० **मद्य** ० **मद्य** ०

बुध **मद्य** ० **मद्य** ० **मद्य** ० **मद्य** ०

कुपिन् (पु०) [कुप + इति] नाई ।

कुल (वि०) [कुलं कति नु क्वाति—कुल + क्त + क]
छोटा, स्कल । सम०—सत्ताः पिता का छोटा भाई
—तु० कुल ।

कुलज (वि०) [कुल + जन्] 1. स्वल्प, सूक्ष्म 2 तीव्र,
दुष्ट 3. पतन्य 4. निर्बल 5 दुष्ट, द्वेषयुक्त 6. बन्धा ।

कुलज [जि + जन्] 1. जेत, मैदान भूमि— बीयने बालि-
सस्यापि सत्सेवपतिना हवि—मुद्रा० ११३ 2 भूषण
भूमि 3 स्थान, आवास, भूषण, गोदाम—रुपटसामय
जीवनस्ययात्रायाम्—पञ्च० ११९१, भर्तृ० ११७७,
मेघ० ११६ पुष्पस्थान, तीर्थस्थान—अथ क्षत्रपचन-
पिबुन क्रीडन तद्विषया—मेघ० ४६ भग० १११
5 बाढा 6 उर्वरा भूमि 7 जन्मस्थान 8 पत्नी—अपि
नाम कुपतेरियममवर्णनेषसम्भवा स्यात्—वा० १,
यनु० ३११८५ 9. कावलेष शरीर (आत्मा का कर्म
क्षेत्र)—योगिनो य विधिन्वन्ति क्षेत्रादन्तरवर्तिनम्
—कु० ११७७, भग० १३१, २, ३ 10 मन 11 घर,
नगर 12 सपाट आकृति जैसे कि बिम्बुज 13. रेखा-
चित्र । सम०—अधिदेवता किसी पुष्प भूस्थल की
अधिष्ठात्री देवता,—आसीव, कर, कुचक, केलिहार,
—वर्षिन्वत् उगमिति, रक्षागणित,—कल (वि०)
व्यापितीय उपपत्ति (स्त्री०) व्यापितीय प्रमाण,
—अ (वि०) 1 क्षेत्र में उत्पन्न 2 शरीर से उत्पन्न
(अ.) हिन्दूधर्मशास्त्र के अनुसार २२ प्रकार के पुत्रों
में से एक अपने पति के निमित्त सत्तातोपपत्ति करने
के लिए विधिपूर्व नियम किए गए किसी सक्थी द्वारा
उत्पत्ति पत्नी में उत्पादित सन्तान—यनु० १११९७
१८० यात्र० ११६८, ६९, ११२८, ज्ञात (वि०)
बुद्धि पुष्प की पत्नी में उत्पादित सन्तान, अ (वि०)
1. स्थानीयता की आनने वाला 2 चतुर, राज (अ.)
1. आत्मा—तु० भग० १३१-३, यनु० १२१२
2. परमात्मा 3. व्यक्तिचारी 4. किसान,—वर्षि भूमासी
भूमिचर,—पञ्च देवता के लिए पवित्र स्थान, वाक.
1. क्षेत्र का रत्नवाला 2. क्षेत्र की रक्षा करने वाला
देवता 3. शिव का विशेषण,—कलम् (गणित में)
आकृति को लम्बाई चौड़ाई का गुणनफल, अक्षि
(स्त्री०) क्षेत्र का बँटवारा,—भूमि (स्त्री०) भूमि
जिसमें खेती हो जाय,—राजि म्यागिनाय आकृतिनो
द्वारा प्रकट किया गया परिमाण, विष् (वि०)
—क्षेत्र (पु०) 1 किमाय 2 क्षति, जिसे आत्मा-
रिमक ज्ञान हो—कु० ३१० 3 आत्मा, स्व (वि०)
पुष्प भूमि में रहने वाला ।

क्षेत्रिक (वि०) (स्त्री०) की [क्षेत्र + क्त] क्षेत्र से
सम्बन्ध रखने वाला, अ 1. एक किसान—यनु०
८१२४१, १५३ 2. पति—यनु० १११४५ ।

क्षेत्रिक (पु०) [क्षेत्र + इति] कुचक, कात्तकार, कतिहर
—यात्र० २११६१ 2. नाममात्र का पति—अ० ५
3. आत्मा 4. परमात्मा भग० १३१३३ ।

क्षेत्रिक (वि०) [क्षेत्र + क्त] 1 क्षेत्र से संबंध रखने वाला
2. असाध्य रोग, जिसका उपचार दवावहार प्राप्ति पर
ही हो अथवा इस जीवन में जिसका उपचार न हो
सके—अष्टोप्य क्षेत्रिको येन मय्यपातीति नाञ्जनीन्-
भट्टि० ६१३२, यनु० 1 आगिक रोग 2 चरागाह,
गोचरभूमि, अ व्यक्तिचारी, पराधाररत ।

क्षेत्र [क्षिप् + क्त] 1 क्षेत्रता, उछालना, डालना, इतर
उपर हिलाना (अंगों की) गति—कन्धोपानुगम
मेघ० ४७, भूक्षेपमात्रानुमाप्रदेशात् कु० ३१६०
2 क्षेत्रता, डालना 3 क्षेत्रता, प्रथित करना 4 आवागम
5 उत्पन्न 6. समय बिताना कालक्षेप 7 बिलम्ब,
देरी 8 अपमान, दुर्बल प्रप करानि शृङ्खल
—यात्र० २२२०६, रत्नोप ९ अनादर, क्षणा 10 बमब,
अनुकार 11 कुला का गुच्छा, कुमुमस्तम्भ ।

क्षेत्रिक (वि०) [क्षिप् + क्त] 1 क्षेत्रने वाला, क्षेत्रने
वाला 2 मित्राया हुआ, बाध में चुलाया हुआ
3 यात्रिकों से युक्त, अनादरपूर्ण,—अ बनावटी या
बीध में मिलाया हुआ ।

क्षेत्रिक [क्षिप् + क्त] 1 क्षेत्रता, डालना, क्षेत्रता,
निर्देश आदि देना 2 (समय) बिताना 3 कुलना
4 गाली देना 5 मोफन, क्षि, —की (स्त्री०)
1 कम्प 2 लकड़ी फाटने का आल 3 मोफन या
ऐसा उपकरण जिसमें लकड़ करकड़ कैंके जायें ।

क्षेत्र (वि०) [क्षि + क्त] 1 प्रसन्नता सुख और आनन्द
देने वाला, गुण, उदार, राजोन्मुखी बार्नराष्ट्रा ये
हयुस्तन्ये क्षेपनर भवेत् भग० ११७५ 2 समृद्ध,
आराम में, सुखी 3 मुरझित, प्रसन्न, अ, यनु०
1 शान्ति, प्रसन्नता, आराम, कल्याण, कुसलता क्षि-
न्वति क्षेममदक्षमात्कामिचराय तस्मिन् कुरबधकामते-
कि० ११७, वैश्य क्षेम ममागम्य (पुष्कन्तु) यनु०
२१२७, अथवा सर्वजलितवाक्षा क्षेम मक्षिप्यति—यच०
२१२ 2 मुरझा, बचान,—क्षेपेण हज वाग्बधाम्—कुच०
७३, सक्तुल—यच० १११४९ 3 सरक्षण करने वाला,
प्रस्ता करने वाला—रदु० १५१६ 4. अवाप्त की
मुरझित रचना—तु० योगक्षेम 5. मुक्ति, शास्वत
आनन्द,—अः एक प्रकार का मुग्धत्व इत्य । सम०
—कर ('क्षेमकर' की) (वि०) मंगलप्रद वाग्नि और
मुरझा करने वाला ।

क्षेत्रिक (वि०) (की) [क्षेत्र + इति] क्षुरजित, वाक्मम
से रक्षित, प्रसन्न ।

क्षेत्र (स्त्री०) पर० आयाति, आग) क्षीन होना, नष्ट होना,
क्षय होना, क्षय होना, नृक्षाना ।

—अर (अ०) १ बह, २ राहु, भारोही बिरोधितु
आपना गमा का विशेषण,—अरक १ बमकेतु २ बह,
उत्तमक मगल ग्रह,—आगिनी दुर्गा कुल्लक शिव,
— अ १ पत्नी —अवनीत सप्त स नैकवा तनुम् नै०

२।२, मनु० १२।६३ २ बायु हुवा तमासीव यवा
सूर्यो बुताननिधनाम्नय महा० ३ सूर्य ४ बह

—उदा० आपोक्लिमे यदि यवा स किलेन्दुवार —तारा०
५ टिङ्गा, ६ देवता ७ बाण, अविष गऊ का विशेषण

अंताक बायु ध्वेन, अविषाक शिव का विशेषण
अस्तन १ उदयाचल २ बायु का विशेषण, हुन्ना,

ईश्वर बलि गऊ के विशेषण अती (स्त्री०) पृथ्वी,
अस्वाम् १ बृज की जोहर २ पत्नी का मोमला

अवा आक सनया—अति (स्त्री०) हुवा में उडान
—अव पत्नी,—(अ०) वक्न एक प्रकार का जलकुंकुट

—अवेक आकाशमंडल बिज्ञा ज्योतिष बिज्ञा,—अवत
बौर, बर (बेचरी जी) १ पत्नी २ बावल ३ सूर्य

४ हुवा ५ राजन (श्री अर्जन् लंघरी) १ उखने
बाकी अक्षरा २ दुर्गा की उपाधि, अस्तन आकासीय

अस्त बौर, बर्षा, काहंग आदि ज्योतिष (पु०)
अनुपु,—तमाल १ बावल २ बर्षा,—अोल १ अनुपु

—अवेतोली धिलसि बिज्ञा विधुल्लेखपुष्टि मेघ०
८१ २ सूर्य,—अस्तन सूर्य—अव अतिबाध अनुपु

अनुपु—अदि ३।५, अवार अचकार, अनुपु
आकाश का पूर, अस्तमवता को प्रकट करने की आल०

अविषाक—इस प्रकार की व अस्तमवता इय अलाक
में बतलाई गई है मन्वन्त्यामसि स्वात वाशभुग

अनुपु, एव अन्त्यामुतो याति सपुष्पकउक्षर मुभा०,
—अव बह,— अस्तन अवेन,—अति आकाश की मलि

बुई,—अस्तन मिश्रालता, अवावत,—अति शिव का
विशेषण,—अति (मनु०) वर्षा का पानी बोल आदि

—अस्तन बई, पाला,— अव (बेचरी जी) (वि०)
आकाश में बिबाध करने वाला वा रहने वाला,— अती-

रन् आकासीय खरीर,—अस्तन हुवा, बायु, अनुपु,
—अवेन (वि०) आकाश में उत्पन्न शिव बौर,

—अस्ती पृथ्वी, अस्तिकम् सूर्यकांत वा बहकाल
अति—हर (वि०) विल (राति) का हर ध्वज हो।

अस्तन (वि०) [अव अटन्] कडोर, डोम व महिवा।
अस्तन [अ + अ + अण्, मुन्] अस्तन, बाला की लट।

अव (स्त्री० + अवा० पर० अति-अजाति, अतिन)
१. जाने वाला, प्रकट होना २. पुनर्जन्म होना ३. पवित्र

करना, (बुरा० उच०— अचवाति, अतिन) अकड़ना,
अपना, अदना,—अव—मिलाना, गडमड करना, उठना

—अव ८।५४, १३।५४, मुद्रा० ४।१२।
अति (वि०) [अ + अ] १ अकड़ा हुवा, अस्तन, अरा

हुवा, अस्तनविल, अस्तननीवकापल दिग्गजवा-

मण्डलम्—अ० ७।११ २ निविचल, सम्मिलित ३ अडा
हुवा, अस्तन, अरा हुवा (तमासगत) अति, रत्न।

अव [अवा० पर० अजाति, अति] अवन करना, विनोषा,
आदिस्त करना।

अव—अक [अ + अण्, कन् च] मचानी, रई का
इडा।

अवचण् [अ + अण्] बी।

अवाक [अ + आक] पला।

अवाजिका [अ + अ + टाप् अवा अ + अण्
अवायं आवा यथा व० स० अवाज + अण् + कन्

+ टाप् हुम्न] कडको धम्मव।
अव [अवा० पर०— अवाजिका] लंगवाना ठहर-ठहर का

अवना अवाज प्रमथनजन पथिक पिपासु नै०
११।१०३।

अव [अ + अ] [अ + अण् + अण्] अवाडा, धिकलाव, पुन्
यावेन अवा मिद्रा० मनु० ८।५४ अतु० १।

१४। तम० अवे, अवे अवनपत्नी।

अवचण [अ + अण् + अण्] अवन पत्नी लुटकमलावर
लेमिलअवनमनविष भरदि तदावन् नीत० ११ नेच

अवचणअवचण—अ० ८० एको हि अवनचरा मनिनी
हस्तव—अवा० ४७ अण् अवा कर जाने वाला,

तम०—रत्न सन्धातिथी का पुन मेवुद।
अवचण, अवचणिका [अ + अण् + टाप्, अवन + अण् +

टाप्] अवन पत्थि की आति।
अवचरीक, अक, अवचरीक [अ + अ + अण्] नीटन् कन

व, अवन + अण् + अण्] अवन पत्नी—अति०
२।७८ बौर ८, मनु० ५।१४, वाङ् १।१७४ अमह

११।

अव [अ + अण्] १ क २ अवा कवा ३ फूलाही
४ ल ५ वास तम० अवाक पीकदान, अवाक

१ पीक २ कवा ३ जानवर ४ जोड़े का बर्तन।
अव [अ + अण्] १ अवा—अवा तय कान का अवन-

माग करने वाला—अ० अक २. अवनवा हाव।
अकानुअव बाव बलाते समय हाव की विशेष अवस्थिति।

अकिका [अ + अण् + कन् + टाप् अवन] १ अकिका
२ कान का बाहरी विवर।

अक (ह) अकिका पापकडार, लिहकी।

अकिकी, अकिकी [अ + अण्] अक, अक + अण् + अण्]
अकिका।

अकिक (वि०) [अ + अण्] अकिक, न अकिक आकिकी।
अकिक [अ + अण् + टाप्] १ अकिक २ एक प्रकार का

वाह।

अकिक (पु०, स्त्री०) [अ + अण्] अकिकी।

अकिक [अ + अण् + टाप्] १ कलाही २ अकिकी, अवे-
लिया।

कट्टरक (वि०) [कट्ट + एरक] ठियमा ।

कट्टा [कट्ट + कन् + टाप्] 1. काट, मोफा, काटोला
2. लुला, पालना । सम० -- अन्व सोटा या लकड़ी जिसके
सिरे पर लोपड़ी जड़ी हो (यह छिव जी का हथियार
समझा जाता है तथा सम्बन्धी और यागी इसे धारण
करते हैं) -- मा० ५।४, २३ 2. दिनीप, बर, "भून्
५०) शिव की उपाधियाँ, अजिन्नु (५०) शिव का
विशेषण, आम्बुस आम्बु (वि०) 1 मोच, टुप्
परित्यक्त, बदमाश 3. मूलं, बेबकूफ ।

कट्, का, कटिक्का [कट् + कन् + टाप्, इन् + वा]
काटोला, छाटी काट ।

कट्ट दे० लट्ट ।

कट्टा [कट्ट + कन्] मोलना, टुकड़े टुकड़े करना ।

कट्टिका कट्टी [कट्ट + अन् + टाप्, कन्, ह्रस्व, लट्ट +
वीप्] कटिवा ।

कट्टः [कट्ट + गन्] 1. तलवार न हि लङ्गो विद्वानां
कर्मकार हाकारणम् उद्धृत, लङ्ग परामुख आदि
2. गैरे के सीप 3. गैडा-रघु० १।६२, मनु० ३।२७२,
५।१८, लङ्ग लाहा । सम० -- आवातः तलवार का
बाव, आवातः श्मान, काश, आवातम् भैस व।
मास, आवात गैडा, कोशः श्मान, -- बर लङ्गवारी
गैडा, -- बेन्, बेन्का 1 छोटी तलवार 2 गैडे की
परादा, वन् तलवार को धार, कानि (वि०) हाव
में तलवार लिये हुए, धारम् भैस के सीपों का बना
पाव, पिचातम् पिचातकम् श्मान, -- पुत्रिका चाकू,
छोटी तलवार, प्रहार तलवार का आवात, फलम्
तलवार का फलक (गूठ को छाड़ कर शेष तलवार) ।

कट्टयवत् (वि०) [कट्ट + यवत्] तलवार से मुमज्जित ।

कट्टनिक [कट्ट + टन्] 1. लङ्गवारी गैडा 2. कसाई ।

कट्टयिन् (वि०) (रघु०) नी [कट्टय + इनि] तलवार से
मुमज्जित (५०) गैडा ।

कट्टवीर्यम् [कट्टय + ईर्य वा०] दराती ।

कट्ट, कूरा० पर० कट्टयगि, कट्टिन 1 तोहना, काटना
टुकड़े २ करना, कुबलना भट्टि० १५।५४ 2. पूरी
तलह हगना, नट्ट करना, मिटाटना -- रजनीचरनाचन
लङ्गने निमित्त निशि श्रि० ३।१११ 3. निराश करना
भगवान करना, (प्रलय में) हनना करना स्थिति
कट्ट न कट्टित भूयि दन पच० १।१४५ 4. बिघ्न
हालना 5. धोखा देना ।

कट्ट, इन् [कट्ट + कन्] 1. दरार, खाई, विच्छेद,
काटा, अविश्रय 2. टुकड़ा, भाग, लट्ट, अश विव,
कातिमल्लङ्घनेक भैस० ३० काट्ट 'बास' आदि
3. अश का अनुभाग, अश्याय 4. लम्बवत्, सपात,
समूह -- लङ्गवत् पच० का० २३, -- क 1. बोनी, लीड
2. रत्न का एक दोष, -- क 1. एक प्रकार का नमक

2. एक प्रकार का ईस, गन्ना । सम० -- कट्टम् 1. बिगड़े
हुए बादल 2. कामकेल में दाँतों का चिह्न, अलि
(रघु०) 1. तेल की एक नाप 2. सरोवर या झील
3. वह स्त्री जिसका पति व्यभिचारी हो, -- कट्टा छोटी
कट्टानी, -- काट्टम् मेघदूत जैसा छोटा काव्य -- परि-
भाषा -- कट्टकाव्य भवत्काव्यम्यकदेनानुसारि व
मा० व० ५६४, क एक प्रकार की लीड, -- बारा
कैची, -- बरम् शिव का विशेषण -- महेश्वर लीलाङ्ग-
नित्यम् लङ्गवत्तो -- गमा० १, यनानेन जगन्मु
लङ्गवत्तुदेवो हर कथायते महावी० २।३३
2. जमदीन का पुत्र, परशुराम का विशेषण, -- पर्व
1 शिव 2 परशुराम 3 गड्ड 4 टूटे दाँत वाला हाथी,
पाक हलवाई, प्रलय विषय का आशिक प्रलय
जिसमें स्वर्ग से नीचे के सब लोकों का नाश हो जाता
है, कट्टकम् वृत्त का अंग, मोक्ष काट के लट्ट,
कट्टकम् एक प्रकार का नमक, -- चिकार चीनी,
अकंशा मिमरी, -- झोला अस्तरी, व्यभिचारीनी
स्त्री ।

कट्टक, -- कन् [कट्ट + कन्] टुकड़ा, भाग, अश, -- क 1
चीनी, लीड 2. जिसके नामून न हो ।

कट्टन (वि०) [कट्ट + न्] 1. तोड़ने वाला, काटने
वाला, टुकड़े २ करने वाला 2. नट्ट करने वाला,
माने वाला म्मरगल्लवधन मय शिरसि कट्टनम्
गीत० १०, भवज्वरलङ्घनम् -- १२, -- क 1 तोड़ना
काटना 2. काट केना, शनि पट्टेबाना, बोट पट्टेबाना
अरगल्लवधनम् -- पच १, कट्टय भुजवधन
जनय रत्नलङ्घन गीत० १३ 3. हताश
करना, (प्रलय में) निराप करना 4. बिघ्न हालना
रत्नलङ्घनवजितम् -- रघु० १।३६ 5. टगना, धोखा देना
6. (तर्क का) निराकरण करना न० ६।१३०
7. बिद्रोह विराध 8. बर्बास्तरी ।

कट्टन, लम् [कट्ट + लम् नि०] टुकड़ा ।

कट्टन (अव्य०) [कट्ट + गन्] 1. अशों में, टुकड़ों में, कू
काट कर टुकड़े २ करना 2. धोड़ा २ करके, टुकड़ा २
कर के, टुकड़े २ कर के ।

कट्टित (भू० क० क०) [कट्ट + क्त] 1. काटा हुआ,
गाड़ कर टुकड़े २ किया हुआ 2. नट्ट किया हुआ,
ध्वंस किया हुआ 3. (तर्क का) निराकरण किया हुआ
4. बिद्रोह किया हुआ 5. निराप किया हुआ, धोखा
दिवा हुआ, परित्यक्त -- कट्टितयवस्तिविषयम् -- गीत०
८, ता वह स्त्री जिसका पति अपनी पत्नी के प्रति
अविश्वास का अपराधी रहा हो और इसलिए उसकी
पत्नी उससे नूट हो, लङ्कृत माहित्य में वर्जित १०
प्रकार की नायिकाओं में से एक -- रघु० ५।६७, मेघ०
३९, परिभाषा इस प्रकार की है -- पार्वतीति प्रिगे

यस्या कर्मवर्जोपधिहितः, सा कश्चित्ति कथिता वीर-
रीष्मन्कथिता—सा० ६० ११४। सम०—विषह
(वि०) अंगहीन, विकलांग—वृत्त (वि०) बाधार-
हीन, सुचरित्।

कश्चिनी (कञ् + क्ति + क्नी) पृथ्वी।

कथिकाः (ब० ब०) लोल, लाजा, तला हुआ या भुना
हुआ मसाला।

कथिरः [कञ् + किरि] १. लैर का पेड़, —मात्र० ११३०२
२. इन्द्र का विशेषण ३ चाँद।

कञ् (म्भा० उभ०—कनति—ते, जान, कर्म० कन्यते—जायने)
कोचना, जानना, कोसला करना—कनसाकृतिष्ठं तिह
—पञ्च० ३११७, मनु० २०२१८ अट्टि० १११७,
अभि—, कोचना, उह—, बुराई करना, उह निकालना
उन्मूलन करना, उखाड़ना (आल० बी०)—बङ्गानुल्काय
तरता—रघु० ४१३९, ३३, १४७३, मेघ० ५२,
अट्टि० १२५५, १५५५, मा० ११३४, वि० १. कनना,
कोचना २. कननागा, गाड़ना—ऊनद्विषयं निजनेत्
—मात्र० ३११, वसुधायां निषकनतु—रघु० १२१३०,
अट्टि० ४१३, ११२२ ३. (स्वयं के रूप में) उठाया
—निषकान जयस्तम्भान्—रघु० ४१३९ ४. जमाना,
स्थिर करना, बुसेटना—निषकान वरं नृपे—रघु० ३१५५,
१२१९०, अट्टि० ११८, हि० ४७३२, परि—, (लाई
अभि) कोचना।

कनकः [कञ् + क्नुज्] १. कनिक २. गेंद लगाने वाला
३. चूहा ४. कान।

कनकञ् [कञ् + क्नुज्] १. कोदक, कोसला करना, पोला
करना २. गाड़ना।

कनिः,—नी (स्त्री०) [कन् + इ, स्थियां ङीप्] १. जान
—रघु० १७६६, १८१२२, मुद्रा० ७३३१ २. गुफा।

कनिष्ठञ् [कञ् + इज्] कुदाल, कुर्पा, गैती।

कनुरः [क पिपति उच्चतया—क + पु + क] गुपारी का
पेड़।

कर (वि०) [कं मुसविमलितस्येन अस्ति अम्य - क + र
अवया कश्चिन्नियं राति -क + रा + क] (वि०
—मुद्र०, लक्षण, इव) १ कठोर, कुरीरा, ठोस
२. कम्पु, टेक, कस्त—रघु० ८१९, स्मर करः कल
कलु—काव्या० १५९ ३. तीखा, चरपरा ४. बना,
बनन ५. पीडाकर, हानिक, कर्मस ६. टेक बारबाना
—वेद्वि करमवनकरसातम्—गीत० ७. नरम—कराज्
—भाषि ६ कूर, मिष्टुर, —रः १. गवा—मनु० २।
२०१, ४१११५, १२०, ८१३००, बाण० २११९०
२. कम्पूर ३. बनवा ४. कीवा ५. एक राजस का नाम
वो राजस का वीरका बाई का वीर वो राज के द्वारा
मारा गया का—रघु० १२५४२। सम०—कञ्जु,
—कर, —रविः कूर्प, —कुडी १. चर्चों का अस्तवस्त

२. नाई की हुकाम, कोच, क्वाच चकोर, तीतर,
—कोलन उच्छेद मास, —मुहम्,—वेहम् गधों का
अस्तवस्त, —कन्—कल (वि०) नुकीली नाक वाला,
—कञ्जु कमल, —कञ्जिन् (पु०) जरहुस्ता राम का
विशेषण, —माव गधों का रेंकना,—कल कमल,—बावम्
लोहे का बर्तन,—बाल लकड़ी का बर्तन,—प्रिय
कञ्जुतर,—कान्जु गधों से लीची जाने वाली गाड़ी,
—कञ्ज १ गधों का रेंकना २ समूही बाज, —आका
गधों का अस्तवस्त,—क्ववा जवली चमेली।

करिका [कर + कन् + टाप्, इत्यम्] पिसी हुई कस्तूरी।
करिण्यम्, व (वि०) [करी + म्भा (धमादेश)] पजो में
+ कण्, मुम्] गधी का दूध पीने वाला।

करी [कर + क्नीप्] गधी। सम०—कञ्जु मित्र का
विशेषण,—कृक गधा।

कर (वि०) [कञ् + कृ, रश्मात्तादेशः] १. खेल २. मूर्त,
मूढ़ ३. बुर ४. विविध वस्तुओं का इच्छुक—क
१. बोहा २. हौस ३. चमड ४. कामदेव ५. मित्र, व
(स्त्री०) लकड़ी जो अपना पति स्वयं चुने।

कर्ष (म्भा० पर०—कर्षति, कश्चिन्) १ पीडा देना,
बैधान करना २ कड़कड़ सख्य करना।

कर्षकम् [कर्ष + क्नुज्] कराचना।

कर्षिका [कर्ष + क्नुज् + टाप्, इत्यम्] १. उपव्यस रोग
२. पञ्चक।

कर्षी (स्त्री०) [कर्ष + उज्] १. करोच २. कञ्जूर का
वृक्ष ३. चतुरे का पेड़।

कर्षरम् [कर्ष + उरिप्] बाँधी।

कर्षी (स्त्री०) [कर्ष + ऊ] आज, कुजली।

कर्षूर [कर्ष + ऊर] १. कञ्जूर का पेड़ २. विष्णु,—रघु
बाँधी २ हस्ताक,—री कञ्जूर का पेड़—रघु० ४१५७।

कर्षरः [- कर्षर वृक्षो० कस्य च] १. चोर २. बदमाज,
ठग ३. भिकारी का कटोरा ४. कोपडी ५. मिट्टी का
फूटा हुआ बर्तन ठीकरा ६ छाता।

कर्षेरिका, कर्षेरी [कर्षर + कञ् + ङीप्, + कन् + टाप्,
इत्यम्, कर्षर + ङीप्] एक प्रकार का मुर्गा।

कर्ष (कै) (म्भा० पर०—कर्षति कश्चित्) १. जाना,
फिलाना, चलना २. चमड करना।

कर्ष—(कै) (वि०) [कर्ष (कै) + कञ्] १. विकलांग,
अपाह्न, अपूर्ण (अवहीन) २. ठिगना, ओछा, कद में
छोटा, बें—कञ् दम करब की लफ्फा। सम०

—आक (वि०) ठिगना, ओछा, छोटा।

कर्षवः—टप् [कर्ष + वट्] १. मगर जिसमें पैठ भरती
हो, बडी २. पहाड़ की तराई का बाँध।

कञ् (म्भा० पर०—कनति, कश्चित्) १. चकमा-फिरना,
हिलाना-कुलना २. एकत्र करना, संग्रह करना।

कलः—कञ् [कञ् + कञ्] १. कश्चिन्—मनु० १११७, ११४

बाध० २।२८२ २ पुष्पी, भूमि ३ स्थान, वनह
४. वृत्त का डेर ५ तलछट, नाद, ठेक बादि के नीचे
जमा हुआ मैल, क दुष्ट या छरारही नारनी—सर्प
कुर बल कुर सर्पति कुरतर बल, यन्वीविषक
सर्प, बल केन निवासने— बाध० २९, विषवरतोऽ
प्यतिविषम बल इति न मुषा बदन्ति किञ्चित्, यदय
नकुलहोरी तकुलहोरी पुन पिबन्— बाध० [बलीह
१ कुबलना २ बायल करना या क्षति पहुँचाना
३ दुष्यह्वार करना, धुगा करना—पराजे बलीकुलोऽय
वृत्तकार— मृच्छ००] मम० उल्लि (स्त्री०) दुर्वचन
दुर्भाव, — बाध० लल्लिहान, नू (पु० स्त्री०) नाह
देन बाना, साप करने वाला, — मुनि पारा तसनी
दुष्टा की मगति ।

कलक [क + ला + क कल] बड़ा ।

कलति (वि०) [कल्लनिकेया अस्मात् कल्ल] अत्य
नि० मायु] नये सिर वाला नडा—युवकलति ।

कल्लिक [कलति + क + क] पहाड़ ।

कलि, — की (स्त्री०) [कल् + इन्] ठेक की तलछट, बली
स्थाल्या वैदूर्यमय्या पथति विक्कलसीमिण्यनैरचन्द-
नाई भन० २।१०० ।

कलि (जी) न, नम् [ने वरवमुच्छिडे लीनम्—पु००
वा ह्रस्व] लयाम का इहाना, लय्य का रास ।

कलिकी [कल् + इति + कीप्] कलिहारी का समूह ।

कलीकार, कलि (स्त्री०) [कल् + क्ति + क + कन्,
क्लिन् वा] १ बाट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना २ दुष्य
बहार भा० १।२९ ३ बनिष्ट, उल्लास ।

कल्ल (अव्य०) [कल् + उन् वा०] यह अव्यय निम्नाकिन
अर्थों का प्रकट करता है १ निस्सन्देह निश्चय ही
अवश्य, तत्त्वमुच मार्ग पथानि कल्ल ते विषयीभवन्ति
भा० ४।१० अनुत्तम कल्ल विक्रमालङ्कार—विक्रम०
१, न अस्मान्नित्य रघु कृती भवान् रणु० ३।५१
२ अनुरोध, अनुनय—वनय प्रार्थना न कल्ल न कल्ल
बाण सन्निगदवायमस्मिन् भा० १।१०, न कल्ल न
कल्ल मृगे माहस कार्यसत्तम्—नामा० ३ ३ पुछनाछ
—न कल्ल नामभिक्कुडो गुरु विक्रम० ३ (= किमयि-
कुडो गुड) । न कल्ल विवितास्ते तथ निबल्लसत्तवाण्यहन्
केन—मुद्रा० ४, न कल्लसत्तवा पिनाकिना गमित क्षात्र्ये
मुद्रुदुगता मतिम् कु० ४।२४ ४ प्रतिषेध (किमालक
संज्ञाओं के साथ) निर्वागितेऽर्थे केवल कल्लसत्तवा कल्ल
वाचिकम् बि० २।३० ५ तर्क न विदीर्षे कडिना
कल्ल म्रिय—कु० ४।५, (वच०) कार इते विवाद के
निर्देशन के रूप में उद्धृत करता है) विधिना वच रूप
वञ्चितसत्त्वदीनं कल्ल रीतिना पुबन्—४।१० ६ कभी
कभी 'कल्ल' पूरक की भाँति वर्त कर दिया जाता है
७. कभी कभी वाचकालङ्कार की तरह प्रयुक्त होता है ।

कल्ल (पु०) [कल् इतिव कल्लपति इति इति—क + कल्
+ किल्] अलङ्कार ।

कल्लरिका पेश का वेश्मन बहो रीतिक कोन कवावद करे ।

कल्ला [कल् + कल्—टाप्] कलिहारी का समूह ।

कल्ल [कल् + किल्, तं कलि—कल् + ला + क] १ कल्ल
विशेष हाल कर बीबिनी बीबी बाब, चक्री

२ गदा ३ चमड़ा ४ चानक पत्ती ५ मलक ।

कल्लिका [कल् + कल् + टाप्, इत्यप्] कड़ाई ।

कल्लि (जी) ड (वि०) [कल् + इन् + टल् + व, कलि +
दीप् + टल् + व] नये सिर वाला ।

कल्लाह (वि०) [कल् + वात् उप० ल०] बड़ा, नये सिर
वाला—कल्लाहो दिवसभरम्ब किरनी कल्लाहिली
मस्तके—यन० २।९० विक्रमांक० १।८।९९ ।

कल्ल (ब० ब०) भारत के उत्तर में स्थित एक पहाड़ी प्रदेश
तथा उसके अधिवासी यन्० १।०४ ।

कल्लर (ब० ब०) एक देश तथा उसके अधिवासियों का
नाम ।

कल्ल [कल् + व नि० नस्व व] १ श्लेष २ हिवा, निष्पु-
रना ।

कल्ल [कालि इतिवाचि स्वति निश्चयीकरोति—क + लो
+ क] १ काव, कुबली २ एक देश का नाम है०
कल्ल ।

कल्लि (पु०, स्त्री०) [क + कल् + व] १ अपमानमुप
अभिमानित (समाप्त के जन्म में)—दीवाकरव कल्लि
को व्याकरण अच्छी तरह न जानता हो या कुछ
गया हो ।

कल्लस [वध प्रकारे हित्त्वं पु०० अकारलोच] पोख ।
सम० रत्न बज्रिय ।

कल्लिक [कल् + कल्] तला हुआ वा धुना हुआ अनाव ।

कल्ल (१) (अव्य०) नया माफ करते समय होने वाली
ध्वनि कल्ल कलारना ।

कल्ल, —डा, —डिका, डी (स्त्री०) [क + कल् + वल्,
स्विता टाप्—काट + कल् + टाप्, इत्यप्, काट + कीप्]
अर्धी टिकटी बिट पर मूर्ख को रख कर किता तक डे
बाते हैं ।

कल्लव [कल् + वल् + वा + क] काड, मिथी, —कल्ल कुड-
कोप प्रवेश में बिद्यमान इन का श्रिय वन जिसे कल्लव
और कल्ल की सहायता से बलि ने बना दिया वा ।
सम०—प्रव० एक नगर का नाम ।

कल्लविक, कल्लविक [कल्लव + कल्, कल्ल + कल्]
हृ० ई ।

कल्ल (वि०) [कल् + कल्] १ बुरा हुआ, बोझ बन
हुआ २ कड़ा हुआ, पीरा हुआ, —कल्ल १ बुराई
२ बुराव ३ कड़ा, पीरका ४ अलङ्कार वाक्य ।
कल्ल—व० (स्त्री०) कड़ा, पीरका ।

सत्त्वकः [आन+कम्] १. सोदने वाला २ कर्जदार,—कम्
साई, परिसा।

साला [साल+टाप्] बनाया हुआ तालाब।

सालिः (स्त्री०) [सन्+सिन्] खुदाई, सोजला करना।

साधम् [सन्+धृन् क्त्] १ कुदाली २ बायसाकार
तालाब ३ बागा ४ बन, जंगल ५ विस्मयापवादक
भय।

साध् (म्भा० पर० सादति, सादित) आना निगल लेना,
मिलाना शिकार करना, काट लेना—प्राकृपादयो
पतति साधति पृष्ठमासम् हि० १।८१, सार्वभाष ४
बुध्यति मनु० ५।३२, ५३, अट्टि० ६।६, १।३८
१।४८३, १०१, १५।३५।

साधक (वि०) (स्त्री० रिक्ता) [साद+धृल्] माने वाला
उपयोग करने वाला, क कर्जदार।

साधय [साद+ल्युट्] दान, मन् १ आना बसाना
२ भोजन।

साधिर (वि०) (स्त्री०—री) [सादि+रञ्] लैर वृक्ष
का, या लैर वृक्ष की लकड़ी का बना हुआ सादिर
गुप कुर्वीत मनु० २।४५।

साधुक (वि०) (स्त्री० की) [साद+उन्+कम्] उत्पत्ती
हानिकर हेतुपूर्ण।

साधम् [साद+धृन्] भोजन, भोज्य पदार्थ।

साधय [सन्+ल्युट्] १ खुदाई २ अर्पित। सम०—उद्यक
नारियल का पेड़।

साधक (वि०) (स्त्री०—निका) [सन्+धृल्] सोदने
वाला, लैनिक।

साधि (स्त्री०) [सनिरेष पृषो० वृद्धि] आन।

साधिकः—कम् [आन+ठञ्] दीवार में किया हुआ छेद
द्वार, तरेड।

साधिकः [आन+इलच् बा०] घर में सेंच लगाने वाला।

सार,—रिः (स्त्री० री) [स्य आकाशाय आधिक्यन
वृच्छति—स+वृ+अण्, स+आ+रा+क+ङीष्
वा ह्रस्व] १६ होल के बराबर अनाज का माप।

सारिष्य (वि०) [सारिप्+पृ+लज्] एक सारी-प्र
अनाज पकाने वाला।

सार्ध (स्त्री०) नेतायण, दूसरा यण।

सिद्धिः (स्त्री०—री) [सिद्ध्यति अर्थ किरति सिद्ध्य +
ङ्+क पृषो०] १ लोभवी २ साट या चारपाई का
पाया।

सिद्ध्यि (म्भा०, मुदा० पर०—आन्यति, सिद्ध्य) ब्रह्मर करना,
लीचना, कष्ट देना ii (दिवा० वषा०, आ०—सिद्धते,
सिद्धे, सिद्ध) १ पीछित होना, कष्ट महना, कष्टवस्तु
होना, क्लेश होना, चक्रान अनुभव करना, अवसाद वा
आपत्ति अनुभव करना—सा० ५।७, कि नाम यदि
सिद्धते पुनः—वेणी० १, स पुच्छो य सिद्धते नेमिद्वी

—हि० २।१४१, पराभूत—सा० ३।७, अट्टि० १५।१०८,

१७।१० २ डरना, प्रस्त करना, (वेर०)। परि
पीछित होना, कष्ट महना, दुःखी या क्लेश होना।

सिद्धिर [सिद्ध्य+किरच्] १ सन्ध्यासी २ दरिद्र ३ चन्द्रिका।

सिद्धि (भू० क० कृ०) [सिद्ध्य+क] १ अवसाद प्राप्ति,
कष्ट वस्तु, उदास दुःखी, पीछित मुक्त लोभ सिद्धि
यदि सज्जित लाघवि कुरुषु—वेणी० १।११, अवज्ञाण-
वृथासिन्धमानस योन० ३ २ क्लान्त, चक्रा हुआ
आत्म सिद्ध सिद्धि सिद्धिरिषु पद व्यस्य गन्तासि
यव—मेष० १३ ४ तयोपकाराज्जलिस्मिन्मन्त्रयथा
रघु० २।११ चौर० ३।२०, जि० १।११।

सिद्धि लभ [सिद्ध्य+क] १ उमर भूमि या परमी जमीन
का गन्डा मन्त्राय मन्त्रहीन भूमि २ अनिरिक्त मूल्य
जो किमा मूलमय मे जोडा गया है मनु० ३।२३
३ सम्पूरक ४ मन्त्रव्यय या मन्त्रालय ५ आत्मन्त्र
पन् शून्यता। सिद्धि का प्रयोग मू या कृ म मध्य भी
होता है सिद्धीभू अगम्य होना बन्ध होना अनभ्यस्त
रहना स्थिताभूत विमानाना वदपानभयानपयि कु०
२।४४ सिद्धीकृ (का) रोकना बाधा हालना अगम्य
बनाना, राखना—रघु० ११।१६ ८३ (म) परती
छाड़ना उजाड़ना पुष्टन नष्ट कर देना—विषयपयि
लोक्य प्रसिद्धा भन्तु बुन्मा हि० २।३६।

सुद्धाह [सुम् इत्यध्यक्षगत् कृता गाहन्त सुम्+गाह
+अच्] काना टट्ट या बाधा।

सुरः [सृ+क] १ मुम रघु० १।८५ रा२, मनु०
४।६३ २ एक प्रकार का सुमय इव्य ३ उत्तरा
४ साट का पाया। सम० आभास, शेष भाग
मारना—वल् वल (वि०) बिपटी नाक वाला,
—पक्षी बाँध के पक्षि ह्म, प्र अथवालाकार नाक
का बाण दे० सुत्रप्र।

सुरली [सृ+मह लाति पीन पुन्येन यव सृ+ला+क
+ङीष्] (सम्भूत या धनुष आदि का) सैनिक अस्त्रास
अस्त्रप्रयोगसुरलीकल्हे वधानाम् महावी० २।३६,
दुरात्यन्तसुरलीकेजिजनिताम्—५।५।

सुरालक [सृ इव अर्पित पर्याप्ताति सृ+अल्+अण्]
लोहे का बाण।

सुरालिष्क [सुराणाम् आलिषि कापति प्रकाशते सुरालि
+क+क] १ उत्तरा रज्जने का चर २ लोहे का
तीर ३ तफिया।

सुल्ल (वि०) [ः सुल्ल, पृषो०] छोटा, जोडा, अथय,
नीच दे० सुत्र। सम० सल्ल बाधा।

सोचर दे० 'सचर'।

सड [से अटति अट्+अच्, सिद्ध्य+अच् वा] १ नीच,
छोटा मगर, पुरसा २ कृक ३ बलराय की मरा
४ जोडा (दि० सत्तासल्ल 'सेट' खोपडा तथा ह्म

को प्रकट करता है जो 'अभावा' वा 'अवस्था' बाबि लज्जे से युक्ता या सकृत् है, अथवा अभावः अभावा नगर) 'अस्त' के लिए देवे स के नीचे ।

लेखिकाः, -कः [किट् + इन् क्नेटि, क्नेटि तानोश्च्य, तानोश्च्य वा] वैतालिक, स्मृतिपाठक वा गृहस्वामी वा वा कथा कर अगाता है।

लेखिन् (पु०) [लिट् + लिञि] बुराबारी, दुष्टारिण ।

१ अस्माकं, आत्मन्, उदासी
 २ ब्रह्मन्, भान्ति-ब्रह्मन्मुनिपुत्राभ्यश्चब्रह्मज्ञातव्यं
 उक्तम् ॥२८॥ अथैवमेवम् ॥ यच्च ३२, यच्च
 १८१५ ३ पीडा उग्रता अमर ३ ४ दुःख, शोक
 युक्त एव चिन्तनं यदि भवति नास्ति किञ्च ३० ३०
 ११२३, अमर ५३ ॥

संक्षेपम् । अत्र १ काप ह्नाग देस । लाई रागिन्वा य पून ।
 ओल् (म्या० पर० नवनि, खेसित) १ हिलाता, हघर-
 उघर आता जाना २ कापना ३ खेचना ।

कोक (वि०) [श्वेत् + कृत्] श्वेत ही रंगमया क्रीडापूर्ण
 अर्थ ४१२२ विक्र० ४।११. ६०।

कोशमय [जेन् र म्युट] 1 हिलान, 2 खल, ननारवन
3 तमाग।

कोडा [अंठ । अ ट प । कोडा, बेल ।

बोझि: (श्री०) [वे आकाशे ब्रलति पर्याप्नोति मे
बल । इत् । 1. श्रीडा, खेल 2. तीर ।

श्रीविः (५३०) [खोट + इन्] वा दाक श्री- वपुर श्री ।

कोड (वि०) [कोड] अर्द्ध विकलांग, लगदा, पद्म ।

जोर (ज) (वि०) [जोर (लृ) + भव्] पशु, लगडा ।

शोलकः [शोल + कन्] 1. पुराण 2. बाँधो 3. मुपारी का छितका 4. डेगधी ।

सोपि [सोल् + इत्] क. कस ।

कथा (बद.० पर०) (आध्यात्मिक लकारों में आ० प्री)
 - स्थापति, स्थाना प्रस्था, प्रस्था करना, समाचार
 देना (सब्र० के स.अ) धर्म० स्थायने १ कहलाना
 - स्थाप ६१९७ प्रस्थिज्ञा या परिचित होना, प्रेर०
 - स्थापयति - दे १ ज्ञात कराना, प्रकथन करना
 - यन् ७३२१ २ कठना, घोषणा करना, वर्णन

करना—अर्धं २।५९, मनु० १।१९९ ३. स्तुति करना, प्रशंसा करना, प्रशंसा करना। अणि—, (कर्म०) प्राप्त होना, प्रेर० बोधना करना, प्रकटन करना, आ १ बहना, बोधना करना, समाचार देना (प्राप्त सम्प्र० के साथ),—ते रामाय बषापायमाचक्ष्विविबुधविविध रघु० १।५।५, ४१, ७१, ९३, १।२।२, ९१, भग० १।१।१, १।८।६, (कर्म) की सव० के साथ—आख्यादि अर्द्धे प्रियसंनस्य) पञ्च० ६।१५ २ बोधना करना, ध्याना करना ३ पुकारना, नाथ लेना—रघु० १०।५१, मनु० ४।६ परि—, मुद्रांशयत, होना, परिरुद्ध—, गिनती करना, प्र० सुपरिचित होना, प्रख्यात—, १ पुकार जाना २ इकार करना, मना करना, प्रसिद्धीकार करना ३ वना करना, प्रसिद्ध करना ४ वक्षित करना ५ पीछे छोड़ देना, आगे बढ़ जाना— याल्लि० ३।५, शि— सुपरिचित या प्रसिद्ध होना, ध्या—, १ बहना समाचार देना, बोधना करना— भट्टि० १।५।११ ३ ध्याकृ० करना, वर्णन करना राखस्यापि ते जस्य ध्याक्यास्यापि मद्र० ३ नम्य लेना पुकारना विद्वद्देवीजाजाजी ध्याध्याना सा विदुःमाला भूत० १५, सम्— गिनना, गणना करना, हिमाव लगाना, जोड़ना नावत्येव च तत्पदानि साक्ष्यैः सङ्गच्छयन्ते— सारी० ।

लघात (यू० क० क०) [लघातः क्त] 1 आत- रहु०
 १८१६ 2 नाम लिया गया, पुकारा गया 3 कहा गया
 4. विभूत, प्रसिद्ध, बदनाम । सम०—लघात (वि०)
 कृष्यात, दुष्ट, बदनाम ।

शक्ति { व्या. विना } विष्णु, प्रसिद्धि, वस्तु, कौटि,
प्रतिष्ठा - धन ० १२३६, वच ० ११७१ २ नाम,
सौख्यं, विविधान ३ वर्णन ४ प्रससा ५. (दशनं ० में)
ज्ञान, उपयुक्त पद द्वारा धन्नुको का विवेचन करने की
शक्ति - शि. ४५५ ।

3 विश्वास करना, प्रशिक्षित करना ।

ब (वि०) [बि-]क (केवल समास के अन्त में प्रयुक्त)
 की जाता है, जाने वाक्य, प्रतिभाएँ होने वाला, छ-
 रने वाला, जेप रहने वाला, मैकुन करने वाला, ब
 1. कर्णार्थ 2. क्लेश का विशेषण 3. दीर्घ भाषा ('बुर')

सत्य का सक्षिप्त रूप, कृष्ण सास्त्र में),—बन्
वायन ।

वचनम् - वच् [वचञ्जन्यस्मिन् - वच् + ल्यट्, व आदेशः]
(कृष्ण लोचन 'वचन' को अचूक समझते हैं) जैसा कि एक

गण [गन् + गण्] १ देवद, गुरु, समूह, दल, सङ्घ
—गणिकगणनारम्भे, गणन— आदि २ भावा, श्रेणी
३ अनुयायी या अनुचर वर्ग ४ विशेषतः अर्धदेवों का
गण जो शिव के सौम्य माने जाते हैं और गणेश के
अधीनस्थ में रहते हैं इस गण का कोई अर्धदेव—गणाना
त्वा गणपति हवामहे कवि कवीनाम् आदि गणा
नमोऽस्तुतयावतया - कु० १५५, ७६०, ७१, मेघ०
३३, ५५, कि० ५१३ ५ समान उद्देश्य को प्राप्त
करने के लिए बना मनुष्यों का समाज या गणा ६ सम्प्र-
दाय (दर्शन या धर्म में) ७ २७ स्य, २७ हाथी ८१
घोड़े और १३५ पदाति सैनिकों की छोटी टोली
(अलोहिनी का उग्रभाग) ८ (गण०) ब्रह्म ९ पाद
बन्धन (छन्द शास्त्र में) १० (ग्या० में) घातुआ या
जन्दा का समूह जो एक ही नियम के अधीन हो तथा
उस श्रेणी के पहले शब्द पर जिसका नाम रक्खा गया
हो उदा० म्बादिगण अर्थात् भू से आरम्भ दोन
वाली घातुओं की श्रेणी ११ गणेश का विशेषण। सम०
—अध्वर्यु (पु०) गणेश अध्वर्यु कौलास गृहाह त्रिम
पर शिव के गण रहते हैं, अध्वर्यु अध्वर्युति
१ शिव—सि० ११७ २ गणेश ३ सैन्य दल का मुखिया
सेनापति, शिष्यों के समूह का मुखिया गुरु, अनुया
या जानवरों की टोली का मुखिया, धूपपति अलम्ब
सहस्रभोजना भोज्यपदार्थों को बहाने से समान
व्यक्तियों के लिए बनाया प्राय—मनु० ४१०९, २१९
—अध्वर्यु (वि०) दल या टोली का एक व्यक्ति
(रु०) किसी धार्मिक सभा का सदस्य या नेता मनु०
३१५४, ईश शिव का पुत्र गणपति (दे० नी० गण
पति), अन्ननी पार्वती का विशेषण बृहन्नम मित्र
—ईशान ईश्वर १ गणेश का विशेषण २ शिव
का विशेषण, उत्साह नैराकार ३ वर्गीकरण
करने वाला ४ भीममेन का विशेषण,—बृहत् (अव्य०)
सब कार्यों में बड़ी शक्ति, अर्थात् एक विशेष ऊँची मन्त्रा
ब्रह्मन् गृणीयण का सहस्रभोज उद्योगार छन्द
(मनु०) पक्षों द्वारा घाया गया तथा विविधतः छन्द,
—शिव (वि०) दल या टोली बनाने वाला, बीजा
१ बहुओं की एक साथ बीजा, सामूहिक बीजा २ बहुत
से व्यक्तियों का एक साथ बीजा-संस्कार, देवता
(ब० ब०) उन देवताओं का समूह जो प्राय टोली
या श्रेणियों में प्रकट होते हैं—अमर० परिभाषा देना
है—आदित्यविषयवस्तुसुविता आस्त्रादिना, महा
राजिकताध्यायच द्वापच गणदेवता - ब्रह्मन् सार्व-
जनिक भवति, पचायवी भाव,— कर् १ किसी वर्ग या
समूह का मुखिया २ विचार्य का अध्यापक, गुरु,
—आत्मकः १. शिव की उपाधि २ गणेश का विशेषण
—आत्मिका दुर्गा की उपाधि, क,—वति १ शिव

२. गणेश (गणेश, शिव और पार्वती का पुत्र हैं, एक
आत्मिका के अनुसार वह केवल पार्वती का ही पुत्र
है क्योंकि उसका जन्म पार्वती के शरीर के बेल से
हुआ। यह बुद्धिमत्ता का देवता और बाबाओं को
हटाने वाला है, और इसीलिए प्रत्येक बहुलपुत्रों का
कार्य होने पर उसकी पूजा होती है तथा
आवाहन किया जाता है उसका विष्णु ग्रन्थ ईटी हुई
अवस्था में किया जाता है, उसकी तोह निकली हुई
है, चार हाथ हैं बूढ़े उर सवार हैं तथा सिर हाथी का
है, इसके सिर में दाढ़ केवल एक है दूसरा दाढ़ शिव
जी के अन्नपुत्र में प्रविष्ट होने हुए परशुराम का
राक्षस के लिए युद्ध करने समय टट गया (इसी लिए
गणेश का एकदन्त या एकदन्त भी कहते हैं उसका
हाथी का शिर है इस बात पर प्रसाद हासन वालों
जनेक कहानियाँ हैं। कहते हैं कि गणेश ने ध्यान से
मुनिक महाभारत तथा ध्यान में ब्रह्मा में शिपिकार
के रूप में गणेश को सेवाएँ प्राप्त कर ली थी) - वर्यत
दे० गणाधन—बीठकम छा १ अन्तरधन मुन्य किनी
वर्ग या जाति का माध्या (ब० ब०) कुनै किसी
जाति या वर्ग का नेता मनु० (पु०) १ शिव का
विशेषण गणमन्त्रका कि० ५१४ २ गणेश का
विशेषण ३ किसी वर्ग का नेता अध्वर्यु सहस्रभोज,
मित्रक मोहन करना यज्ञ सामूहिक संस्कार,
राज्यम् वसिष्ठ का एक साम्राज्य राज्य रावों
का समूह, वृत्तम् दे० मुन्यकम् हुक्, हुक्क
मुन्य द्रव्य की एक जाति।

गणक (वि०) (स्त्री०) किका) [गन् + गन्] बहु
वन देकर जरीया हुआ, क १ बहुजनित का जाता
२ उपोत्तिथि के पात्र पुस्तककार लघुमन सिद्ध वैद्यो-
प्रसि कि गणकसाधनवसारोप्रसि, केवीश्वर्यु नव
पद्यति भर्तृम्भा कि वाचाध्वर्युति पनि सुधिरप्रवाही
मुधा० की अर्थानिधी की पत्नी।

गणन [गन् + गण + गन्] १ गिनना, हिसाब लगाना
२ जोड़ना गणना करना ३ विचार करना, अन्वेषण
करना ध्यान रखना ४ विचारात अन्वेषण विमर्श
करना।

गणन [गन् + गिन् + गन्] हिसाब लगाना, हिसाब करना
अन्वेषण करना, गिनती करना का वा कथना सन्नेने
अपकलनेनाम्नि संघट्टसिमुक्त (अव्य०) - का०
१५७ (हमें क्या वाचककेन्द्र है ... कु० कपा)
मेघ० १०, ८७, ८५ ११५४, वि० ११५१, कान्य
५४। सम० - वति (स्त्री०) १ गणपति,—वति बहु
वति को मानने वाला,—अहलाच विनामयी।

गणक (अव्य०) [गन् + गन्] कौनों में, कौनों में जेनों
क ५ म मे।

गणिका (स्त्री०) [गण् + इन्] गिनना ।

गणिका [गण + टञ् + टाप्] १ गण्डी, बेचिया गृथान्-रकना गणिका व यस्य वज्रमसोमेव वज्रममेना-
-मृच्छ० ११६, गणिका नाम पादुकान्तरप्रतिष्ठव
केच्छुका बुभेन पुननिर्वाक्यत मृच्छ० ५, निरकाशय
हविमयेनवन् विद्यमानवादापरादगणिका शि० १११०
२. हविनी ३ एक प्रकार का कुल ।

गणित (वि०) [गण् + क्त] १ गिना हुआ गण्यमान,
हिमाव लगाना हुआ २ गणना किया हुआ, देसगण
किया हुआ-दे० गण-सम् १ गिनना हिमाव लगाना
२ गणना विज्ञान गणित (इसमें अकर्मणित [गणनागणन
या अकर्मणित] की अकर्मणित और वेद्यगणित सम्मि-
लित है)-गणितमय बना। गैरगणित हिमाविलो ज्ञात्वा
मृच्छ० १०० ३ अग्नी का गण्ड ४ गण्ड ।

गणितम् (प०) [गणित + इति] १ जिसमें हिमाव
लगाना है २ गणितज्ञ ।

गणित (वि०) (स्त्री० स्त्री) [गण् + इति] (कितनी
बन्तुओं की) टोनी या लोड की रकने वाला, बहव-
णिन्, कुनों के लूड को रकने वाला, रघु० १५३
(प०) अध्यापक (शास्त्रों की बेसी को रकने वाला) ।

गणेश (वि०) [गण + ऐय] गिनती किये जाने के योग्य,
जो गिना जा सके ।

गणेश [गण् + ऐय] कर्मिकार बृह (स्त्री०) १ रडी
२ हविनी ।

गणेशका [गणेश + क + क] १ कुटनी बूनी २ सेविका ।

गण्ड [गण्ड + जच्] १ गाल, कनपटी समेत मूल का
समस्त पादव-गण्डाभोगे पुलकपटल-मा० २१५ नदीव-
माहावगण्डकेलम् कु० ७१८२, मेघ० २६, ९२,
अमर ८१, श्रुत० ४१६, १११०, व० १११७, लि०
१२१५ २ हाथी की कनपटी मा० १११ ३ बुल-
बुला ४ फोडा, रसीली, सूजन, फुली-अयमपरो गण्ड-
स्वोपरि विस्फोट-बुधा० ५, तदा गण्डरापरि पिटिका
समुत्ता-स० २ ५ गण्डमाता या गर्दन के अन्त्य फोडा
फुली ६ बोझ, गोट ७ चिह्न, चम्पा ८ गैडा ९ मृत्रा-
शय १० नायक, पोडा ११ बोटे के साथ वा एक
मान, मावृष के रूप में बोटे के नीचे पर लगा
हुआ बटन । लम्-—अङ्ग गैडा, उपचाम्प तकिया
—मृगमण्डोपचामानि शयनानि कुमानि व-—मृग०
—मृगमण्ड हाथी की कनपटी से भरने वाला मय, -कष
पादुका की बोटी पर बना फुला, -शाय बड़ा गाँव,
बैरा-—ब्रह्म गाल, -कलकम् पीडा गाल -कृतमृग-
गण्डकर्मविषयमृगकर्मद्विरास्यकर्मले प्रमथा-शि०
११४७, -विशति (स्त्री०) १ हाथी के गडबल का छिद्र
जिससे मद भरता है २ 'गिति की गति वाल'
अर्थात् बोटे, बोध और प्रसन्न बाल- निर्धोतवाना-

मलयगण्डविनि (गण) रघु० ५१४३, (वही बलि-
नाथ कहला है—प्रसूतो गंडो गण्डविनी) १०१०२,

गाल-—गाला कठमाका रोष (जिसमें गर्दन की
निस्टियों में सूजन हो जाती है),—मृग० (वि०)
अत्यन्त मृद, विमकुल मृद-—बिला बड़ी चट्टान,
और १ मृत्रान या बोटी से नीचे गिराई गई

विदास चट्टान कि० ७१३७ २ गलक, -साहूवा
नदी का नाम, (इसे 'गडकी' भी कहते हैं),—स्वल्पम्,

स्वल्पी १ गल गण्डमन्त्रेषु प्रदवारिषु पच०
११२३३ मृद्राः ७, गण्डमन्त्रो प्रोचितपचनेषा

रघु० ५१५० अमर ७७ २ हाथी की कनपटिया ।

गण्डक गण्ड + कन्] १ गैडा २ रकावट बाधा ३ गोट
गट ४ चिह्न चम्पा ५ फोडा, रसीली फुली

६ विगाजन विगाय ७ चार कीडी के मृग्य का
निकका। पच०-—बोटी है गडकी ।

गण्डका [गण्डक + टाप्] लोटा, पिण्ड या बली ।

गण्डकी [गण्डक + टीप्] १ एक नदी का नाम जहाँ गंगा
में मिल जाती है २ यादा गैडा । लम्० गुच,

-—बिला गालिग्राम (पत्थर का) ।

गण्डकित् (प०) [गण्डक + इति] सिव ।

गण्डि [गण्ड + इति] ब्रह्म का तना ब्रह्म से लेकर उस
स्थान तक जहाँ से शांकारा आरम्भ होती है ।

गण्डिका [गण्डक + टाप्, इत्यम्] १ एक प्रकार का कफ
२ एक प्रकार का पेय ।

गण्डीर [गण्ड् + ईरन्] नायक बुरबीर ।

गण्डू (प०, स्त्री०) [गण्ड् + ड् ऊङ्] १ तकिया
२ गोट गोट ।

गण्डू (स्त्री०) १ गोट, गोट २ हड्डी ३ तकिया ४ तेल ।
लम्०——बह एक प्रकार का कीडा, केंचुआ 'जम्बू'

सीला, -—बड़ी छटा केंचुआ ।

गण्डूक-—बा [गण्ड् + ऊञ्] (पानी का) मुहवर, मुट्ठी
पर -गण्डय गण्डूकजल कण्ठे (बही) -कु० ३१३७

उत्तर० ३११६, मा० ११३४, गण्डूकजलमानेन कफटी-
कफटीगते-—उद्धट २ हाथी के सेंड की नोक ।

गण्डोल [गण्ड् + ओलच्] १ कण्ठी लोड २ गह्वर ।

गल (प० क० क०) [गल + क्त] १ गला हुआ ध्वनीत,
सदा के लिए गला हुआ मुहा० ११२५ २ गुजरा

हुआ, बीता हुआ, पिछला-गलाया राशी ३ मृन मुर्दा
विषगत-कु० ४१३० ४ गला हुआ गहूँचा हुआ गहूँचने

वाला ५ अन्नगत अन्न विधन, बेंडा हुआ विधाय
करना हुआ सम्मिलित (बहुधा समाजों में-—प्रासाद-

प्राप्तगत -पच० १, बेंडा हुआ, सलगत -रघु०
३१६६, मग्न में बेंडा हुआ, इसी प्रकार जाऊँ लम्-

गत सर्वत्र विद्यमान ६ फेंटा हुआ, चटाया गया
आपद्गत ७ संकेत करते हुए, संबोध रखते हुए, के

विषय में, की वाक्य, विषयक, संबद्ध (बहुधा समास में) —उपमा बहुवचनान्तये विद्यते—ब० ५, कर्मण्यस्य विषयः—ब० ४. वचनवि नक्षत्री लक्ष्मी-वर्त विष्णुपि पुष्पकम्.—ब० १, इती प्रकार 'पुष्पगत स्वेदः' आदि.—तन्। यदि, अन्ता—अनुपपत्ति बनाना वरिष्ठविचारानाम्—ब० ७७, वि० ११२ २ वाक्य, कर्मणे की रीति—कु० ११४, विष्णु० ७११ ३. वचना ४. यदि लक्षण में प्रथम पद के रूप में प्रयुक्त हो तो इसका 'मुक्त' विरहित 'चित' और 'विना' कर्मों में अनुवाद करते हैं। वच०—अन्त (वि०) इच्छिम्, अन्ता—अन्तम् (वि०) १ विरहित अपनी वाचा समाप्त कर ली है २ अनिष्ट, परिचित, (स्वी०) चतुर्ध्वी से मुक्त अवावस्था,—अनुपपत्ति पूर्वोपहार का वचन का अनुवाची होता,—अनुपपत्ति (वि०) दूसरों की वचन कर्मों वाक्य, अन्तमुवाची—वतानुपपत्ति को कर्मों न कर्मों सरवाचिक—वच० ११४२, कर्म वेदा वाक्य वचने कर्मों वा केवल अन्त-मुकरण करने कर्मों होते हैं—मुद्रा० १५, अन्त (वि०) विष्णु कर्म कर्म का वचन है—अन्त (वि०) १ विरहित २ कर्म हीन (स्वी०) कर्म का विषय पदों ही किया जा चुका है),—अन्त, कीर्ति,—अन्त (वि०) अन्त, मृत—वच० २१११, अन्तम् १. वाक्य कर्म, वच० २ विष्णु—वच० ११७, वच० ११२१, मुद्रा० ७११ २ (अन्तिय में) शरों का अनिवारित वचन,—अन्त (वि०) विष्णुओं से मुक्त, प्रथम,—अन्तम् (वि०) वीर्य, अन्त, अतिमुद्रा,—अन्तम् जो अनुपपत्ति होने की वचन को पार कर चुकी हो, वृद्धि,—अन्तम् वि० उत्साहहीन, उदास, —अन्तम् (वि०) अन्त या सामर्थ्य में विरहित, अन्तम् (वि०) पाप का जून में मुक्त, पवित्रीकृत, —अन्त (वि०) पुनः तरोतावा,—अन्त (वि०) बहो, मुद्रित, वचनाहीन,—अन्तम् (अन्त०) बीता हुआ कर्म, —अन्तम् (वि०) आकर वापस आया हुआ मनु० ७१४६,—अन्त (वि०) वीर्यरहित, वृद्धा, अन्त, अन्त का अन्त,—अन्त (वि०) जीवन्मुक्त, मृत,—अन्त (वि०) लगभग गया हुआ, तकरीबन जाता हुआ—पतत्रावा रजनी, —अन्तम् १ विष्णु स्वी २ (विरक्त प्रथम) बहु लोको जिसका पनि परदेस गया हो (=प्रवित्तमत्ता) —अन्तम् (वि०) १ कान्ति हीन, राशि से रहित, अन्त २ वन से वञ्चित निर्धनोक्त, गाड़े की यन्त्रणा में पीडित, अवसक्त (वि०) बहुत मायु का, वृद्ध, मुद्रा, कर्म,—अन्त वीर्य हुआ कर्म,—विर (वि०) अन्त मित्राप से रहने वाक्य, पुनर्विहित,—अन्त (वि०) पीडा से मुक्त, —रीति (वि०) जिसका वचन बीत गया है,—अन्त

(वि०) १ वृत्त, अन्त, जीवन्मुक्त २. अन्त, —अन्तः प्राची जिसका मय न जाता हो,—अन्त (वि०) सांसारिक विषयवासनाओं से उदासीन।

कर्मि (स्वी०) [वच + कर्मि] १ विम, वचन, जाना, वाक्य—वर्तिमानिता वच० ४१७८, अतिव्यवस्था—ब० ११४, (म) विरहित अन्त अतिव्यवस्था—कु० ११११, उनकी बीबी वाक्य को मत सुचारो इसी प्रकार वचनगति वच० १, वचनगति वेध० १६, १०, ४६, उत्तर० ६१२३ २ पूर्व, प्रवेश—अन्त वचनमुक्तों में वचनवेदाति में गति रचु० १४ ३ काव्येष, वृत्तावस—अन्तम् वि० ३११९, मनो रचानामवतिर्न विद्यते—कु० ५१६४, नास्त्यवतिर्नाना वानाम् विष्णु० २ ४ मां, कर्मों देवगातिहि विष्णु ५ जाना, पूर्ववत्, प्राप्त करना वचनोपा वति—वच० १ स्वर्ग प्राप्ति ६ माय, फल—अन्त नैतिर्ननमा दन० १०३ ७ अन्त, वचन दान बोधो माक्षस्तिबो वचनो अन्त विरहित—वच० २१४३, वच० १११६ ८. अन्तम् अन्तम्, स्वि, अन्तम्, अन्तम्—वचनोपा वति रचु० ८१२७ वचनवचनवेध है वचनो अन्तम्—वच० २११४ वच० ११४१, ४२० ९ अन्त, तरकीब, प्रवाची, दूसरा उपाय—अनुपपत्ति वचन गति मुद्रा० १, का कर्मि—अन्त हो कर्मि है? कुछ कर्मि हो सकता (प्रथम मांको में प्रयुक्त होता है) वच० १११९, अन्तम् अनिवारित—ब० १५८ १० अन्त, रक्षावक, अन्त, अन्त—वचन, अन्तम् विष्णुमा गतिर्योग्य वच० ११३२०, ३२२ अन्तम् सन्ति वचनो व न में वीह्वरिणी मिद्रा० ११ अन्त, उद्यम, प्राप्तिस्थान अन्त० २१४३, मनु० ११० १२ मार्ग वच १३ प्रयाग प्रयाग (अन्त) १४ वचना, फल, परिणाम १५ वचनाकर्म माय, विष्णु १६ वचन वच १७ वचन की अन्त ही कर्म में हीन गति १८ रिमन वाक्य वाच, वाच १९ जान, वृद्धिमुद्रा २० वचनम्, आवागमन मनु० ८१७ २१ जीवन् २० अन्तम् (वेध, वचन, वाच वच वाचि) २२ (अन्त) उपलब्ध तथा विष्णुविशेष आत्मक अन्तम् (अन्त, विष्णु आदि) जब कि वह किसी किया या वचनक से पूर्व अन्तम् जाय। अन्तम्—अनुपपत्ति वचन के मर्ग वा अनुपपत्ति करने वाला, अन्तम् वचन, हीन (वि०) अन्तम्, निश्चयाय परित्यक्त।

अन्त (वि०) (स्वी०—वी) [वच + अन्तम्, अनुपपत्ति कर्म, वच] १ अतिव्यवस्था, वच, अन्त २ अन्तम्, विरहित—अन्तम् वच वि० ३११९, अन्तम् वीर्य-विषयः—१११२१।
अन्त (अन्त० वच०—अन्त, वचि) १. अन्तम् कर्म, अन्त

करवा, बोलना, बर्णन करना—अथावाचे गदावचम्
—सि० २।६९, बहु ब्रवाद् पुरस्तात्तस्य मता किलाहम्
—१।१३९, कुडायाप्यथा अये कुमारी—रघु० ६।४५

2 गन्धना करना, नि—, धोषणा करना, बालना
कहना—रघु० २।३३ ।

गन्धः [गन्ध + गन्ध] 1 बोलना, भाषण 2 वाक्य 3 रोग,
बीमारी असाध्यः कुष्ठो काय प्राप्ते काले गदो यथा
सि० २।८४, वनस्पते न नव पदमावधौ रघु०
१।४, १।७।८ ४ वर्यव, वर्यवदाहृत, वन् एक प्रकार
का विष। सन्ध० अन्धरी (सि० व०) दो अश्विनी
कुमार देवताओं के वैद्यः—अन्धरीः सव रोगां का राजा
अर्थात् तपेदिकः—अन्धरः बावन्, अराति औषधि
दवा ।

गर्वाश्विन् (वि०) [गर्ह + श्विन् + शस्वन्] 1 मुख
वाचान, बाहूनी 2 कायक, शिष्यो—न्तु कायदेव ।

गन्धः [गन्ध + गन्ध + टाप्] 1 क्रीडापर्यटन या गदा मुक्ताव
—सचूर्णभाषि गदया न सुषोषनोक्त—वन्धो १।१५ ।

सन्धः अन्धः कृष्ण सि० २।८४, अन्धवाचि(वि०)
दाहिने हाथ में गदा लिए हुए—अर । वन्धु की उपाधि,
—कृत् (वि०) गदाधारी, गदा से युद्ध करने वाला
(पु०) विष्णु की उपाधि, मुकुट गदा से लडा जाने
वाला युद्ध,—हस्त (वि०) गदा से सुसज्जित ।

वन्धि (वि०) (स्त्री० श्री) [गन्ध + धि] 1 गदा
धारी—अन्ध १।११७ 2 रोगग्रस्त, वन्ध (पु०)
विष्णु की उपाधि ।

गन्ध (वि०) [गन्ध इत्यव्ययत वर्तते गन्ध + गन्ध + गन्ध]
हकलाने वाला, हकला कर बोलने वाला—नात्क
राशिषि गन्धवेन वचना अमर ५३, गन्धवदगन्धव्यु-
द्बन्धिनीलाक्षर की देदीति वदेत् अर्त्त० ३।८, सामन्व-
गन्धवपद इतिरिग्वचाच—गोत० १०,—इन् (अव्य०)
अटक-अटक कर बोलने या हकलाने का स्वर बिल
लाप से वाच्यगन्धवम् रघु० ८।४३, व, वन्
हकलान, अस्पष्ट या उलट-मुलट भाषण । सन्ध०
—अन्धि हन्ध या नाक मुचक मन्द अस्पष्ट ध्वनि
—वाच (स्त्री०) मुखकी आदि में अन्धहित अस्पष्ट या
उलट-मुलट वाणी, स्वर (वि०) हकलाने वाले स्वर
से उच्चारण करने वाला (र) 1 अस्पष्ट तथा हक-
लाने का उच्चारण 2 भंसा ।

गन्ध (स० क०) [गन्ध + यन्] जाने जाने या उच्चारण
किए जाने के योग्य—गन्धमतस्वया मन्—मृत्तु० ६।४७
—अन्ध नस्तर, गन्ध रचना अन्धविरहितरचना, तीन
प्रकार (गन्ध, पन्ध, वन्ध) की रचनाओं में से एक
दे० काव्या० १।११ ।

गन्ध (म, ल) क ४१ गन्धवा ने समान धार, ४१
रतिवो का वजन ।

गन्ध (वि०) (स्त्री०—श्री) [गन्ध + गन्ध] 1 जो जाना
है, बुझता है 2 किसी स्त्री से मैथुन करने वाला ।
गन्धी [गन्ध + ट्ठन् + ङीष्] बैलगाड़ी । सन्ध० रन्ध
बैलगाड़ी ।

गन्ध (वृत्त० आ०—गन्धवने) 1 जनि पशुधाना, चोट पहुँ-
चाना 2 पूछना, मानना 3 चलना फिरना, जाना ।

गन्ध [गन्ध + गन्ध] 1 दू, वास्य गन्धमाग्राय वाय्वी
—वेध० २१, अपघ्नन्तो दुरित हृष्यगन्धं स०
६।३, रघु० १।२।७३, (व० स० के उत्तरपद के रूप
में प्रयुक्त होने पर यह सन्ध बदलकर 'गन्धि' हो
जाना है यदि इससे पूर्व उद्, पुनि, मु वा मुरनि में से
कुछ जोड़ दिया गया है, या समास तुलनार्थक है
अथवा 'गन्ध का अर्थ 'जा सा', 'बोहा बा' है—उदा०
—मुरनि, मुरनिगन्धि, कलकलनि मुखम् 2 बंधे-
धिक दर्शन में प्रतिपादित २४ गुणों में से एक गुण,
वहाँ यह पुष्पी का गुणार्थक लक्षण है, पुष्पी को 'गन्ध-
वती' कहा गया है तर्क० स० 3 वस्तु की केवल
गन्धमात्र जा सा, बहुत ही छोटे परिणाम में वृत्त-
गन्धि योजनाम्—सिद्धा० ४ सुगन्ध, कोई सुगन्धित
सामग्री—एषा घटा मेधिता गन्धवृत्ति मुख० ८,
वाच० १।२३१ 5 गन्धक 6 पिछा हुआ चन्दन वृत्त
7 सवोय, सन्धव, पटौल 8 वन्ध, बहुभार—वैद्या
कि 'वातगन्ध' में,—गन्ध 1 गन्ध, वृ 2 कालो बन्धर-
लकड़ी । सन्ध०—अधिकम् एक प्रकार का सुगन्ध
द्रव्य,—अन्धकवन्धम् गन्ध दूर करना,—अन्धु (पु०)
मुवांसित जल,—अन्धका बसो नींद का वृक्ष, अन्धम्
(पु०) गन्धक, अन्धकम् बाँध सुगन्ध द्रव्यों का
मिश्रण जो देवताओं पर बढ़ाया जाय, देवताओं की
प्रकृति के अनुसार, यह मिश्र-मिश्र प्रकार का होता है,
—अन्धुः छन्दुर, वाचीकः सुगन्धो का बिस्त्रा,
अन्धव (वि०) गन्धमयुद्ध, बहुत सुगन्धित—अन्ध-
स्वोत्पन्नगन्धवाद्वा—अन्ध०, (द्वयः) नारनी का पेठ
(द्वयम्) चन्दन की लकड़ी—इन्धिवन्ध नाक, धानेन्द्रिय,
—इन्ध, वन्ध, धिन्,—इन्धित्त्वं (पु०) 'गुवाच—
हाथी' सर्वोत्तम हाथी—अथवाति वधान्गान्धवन्धिवि-
कलमोपेय तन्—विक्रम० ५।१८, रघु० ६।७, १।७।७०,
कि० १।७।१०—उत्तमा मदिरा, साराच,—उत्तम् सुग-
न्धित जल,—उत्तमीविन्ध (पु०) गन्धद्रव्यों से वाची-
विका कमाने वाला, वाची,—जोतु (गन्धोत्तु वा
गन्धोत्तु गन्धविलास,—वाचिका 1 सुगन्ध द्रव्य बनाने
वालो सेविका सिल्पकार स्त्री जो दूसरे के घर उसके
निबन्धन में रहती है—वाचिका—काली (स्त्री०)
व्याप्त की माता मत्तवती काव्यक वन्ध को लकड़ी
कुटी एक प्रकार का गन्धद्रव्य डेलिका, डेलिका
कस्तूरी,—गुण (वि०) गन्धगुण वाला गन्धयुक्त,—आयन

नय का सुवर्ण, - कस्य सुवासिन्, सुवर्णित जल, आ नासिका, सुवर्ण विपुल तथा सुवर्ण आदि रत्नवाच - तैलम् सुतद्वार लेऽ, सुवर्णित इत्यो ले तैवार किया गया तेल, - वाय (नपु०) अगर की लकड़ी, प्रथम सुवर्णित इत्य, धूर्तिः (स्त्री०) कस्तूरी मक्खनः छन्दुर, - नासिका, नासी नासिका, नासिका एक प्रकार की चमेसी, -यः एक पितृवसे, वलासिका हस्ती, - वलासी आया हस्ती की जाति, वावाचः गन्धक, - विवाचिका बने का घड़ा, (बपनी गध स पितामा को आकृष्ट करने के कारण तथा कालेरन का होने के कारण सम्भवत इसका यह नाम पड़ा है), पुष्पः 1 बेत का पीचा 2 केवडे का पीचा, (व्यञ्ज) कस्तूरीदार पुष्प पुष्पा नील का पीचा, पुष्पा भुतनी, प्रेतनी, - छत्री 1 श्रियमुक्ता 2 चम्पककली, वयुः आम का वृक्ष, वयु (स्त्री०) पृथ्वी, वायव्यः 1 गौरा 2 मन्वक (न्, वयु) मेरु गहाड के पूर्व में स्थित एक पहाड़ जिसमें चरन के जनेक प्रमल हैं, वायवी मंदिरा, बराब, - वायिनी नाव, वायव्यः मन्वकिनाय - मुषद - धूर्तिः, सुवी (स्त्री०) छन्दुर, वय 1 मन्वकिनाय 2 कस्तूरीमय, - वयुल साह, मोहनः मन्वक, - मोहिनी चम्पक की कली, - धूर्तिः (स्त्री०) सुवर्णचर्मों के तैवार करने की कला, - रावः एक प्रकार की चमेसी (वयु) 1. एक प्रकार का वयवय 2 चरन की लकड़ी, - कला श्रियमुक्ता, - कोलुपा मय मन्वी, - वयुः वायु - राधिन्धिव मन्ववहः प्रयाति - न० ५१४, विवाचिका मन्ववह मुनेन कु० ३१२५, - बह्व नासिका, - वायुकाः 1. वायु 2 कस्तूरीमय, - बह्वी नासिका, - विवाचः वेहू, - वयुः आम का पेड़, व्या-कुलम् कंकाल का पेड़, - धूर्तिनी छन्दुर, - लेखरः कस्तूरी, - वाट चम्पक, लोकम् मन्द कुमुदिनी, - हविरका मन्कारिका, स्वाभिनी के पंथ-पीछे सुवय केकर चलने वाली वैविका ।

मन्वकः [मन् + कन्] मन्वक ।

मन्वकम् [मन् + मन्वृ] 1 मन्वकताय, अधिगम प्रयत्न 2 वोट धूर्तता, धति धूर्तता, मार डालना 3 प्रकाशन 4 सुवर्ण, संवृत्त, बकेल ।

मन्वकी [वय + मन् + क्ति, मन्व वयम्] 1. पृथ्वी, 2. वाय 3. व्याह की मन्वा लक्ष्यता 4. चमेसी का एक भेद ।

मन्वीः [मन् + मन् + क्ति] स्वर्णीय नावक, अर्थ दलों का अर्थ जो देवताओं के सर्वसे तथा सगोत्रज माने जाने हैं, कहते हैं कि वह कथाओं के स्वर को मन्वर बना देते हैं - सोम जीर्ण दवावासी मन्वरश्च सुवा विरम् बाल० १७१ 2 मन्वर 3 घोडा 4 कस्तूरीमूत्र 5 मन्व के बाद तथा पुनर्जन्म से पूर्व की आत्मा

6. कोयल । तम० मन्वरम्, - दूरम् मन्वरों का मगर, आकाश में एक काल्पनिक मन्वर, तमकता धरी- चिका आदि किसी नैसर्गिक घटना का परिचय, रावः चिचरव, मन्वरों का स्वाामी, - विवाह सतीत कला, विवाहः ननु० ३१२७ में वर्णित बाह प्रकार के विवाहों में से एक, इस प्रकार का विवाह सुवक और युवनी की पारस्परिक इच्छा और सुवर्ण वेव का परि नाम है, इसमें न किसी प्रकार की रीतिरस्म की आवश्यकता है और न किसी छत्रे लक्ष्मियों की अनु मति की, कासिदास के कल्पलुकार यह है कथमप्यवाच्यवृत्ता स्नेहप्रवृत्तिः - ब० ४११९, वेव कार उपवेदा में से एक, विवाह सतीत कला वा विवेचन है, - हस्तः, हस्तः एरड का पीचा ।

मन्वारः (व० व०) [वय + वृ + क्त] एक देव और उसके सासका का नाम ।

मन्वाली (स्त्री०) 1 मिह 2 मत्त सुवय । तम० बर्क छोटी इलाहवी ।

मन्वाल् (वि०) [मन् + आलु] सुवर्णित, सुवासन, सुतद्वार ।

मन्विक (वि०) [मन् + क्ति] (केवल समाप्त के अन्त में प्रयोग) 1 मन्वाला जैसा कि 'उत्पलमन्विक' 2 लेख पात्र रखने वाला - धातुमन्विक (नामवाच का आई), कः 1 सुवयो का विवेका 2 मन्वक ।

मन्वित (व०, स्त्री०) [मन्वते जानने वय + वृ + क्त] विषय न विभक्ति, मन् + क्तिन् प्रकाश की किरण, सूर्यकिरण वा चन्द्रकिरण, मितः (व०) मन्व (स्त्री०) मन्वि की पत्नी स्वाहा का विशेषण । तम० - करः वाणिः, हस्तः सुव ।

मन्वितकम् (व०) [मन्वित + कम्] मन्व - चन्मन्वायेन मन्वितमानव रचु० ३१३७, (नपु०) पाताल के सात प्रभाओं में से एक ।

मन्वीर (वि०) [मन्वति जलमय, मन् + ईरन्, नि० मन्वायम्] = [मन्वीर] 1 मन्वीर उतालास्त इये मन्वीरयम् पुष्पा हरितिकृमा - उत्तर० २३०, भाति० २१०५ 2 मन्वीर आवाज बाजा (डोल की गति) 3 बना, मटा हुआ, (अमक की गति) दुर्घय 4 जगाध, मन्वावी 5 मनीन, कंजीवा, महदपुत्रं, उत्तम 6 मूल, रहस्यपूर्ण 7 गहक, दुर्बोध, दुर्गन्ध । तम० मन्वम् परभावा, वेव (वि०) मन्वत भेदक या अन्य प्रवेसी ।

मन्वीरिका [मन्वीर + कन् + टाप्, दाह्यम्] मन्वीर आवाज बाजा बजा डाल ।

मन्वीरिकाः [?] छात्रा गायन निका ।

मन्व (म्वा० व०) मन्वर्तन गत - प्रे० मन्वर्तन, मन्वत - विमर्तन, विमार्तन जा०) जाया, चयना

किराना—गच्छन् माया पुनर्देवमाय—विष्म० ५.
—गच्छति पुर शरीरं शरीरं पश्चात्तस्तुत वेत. ज०
११३५, स्वाधुना गच्छते—अथ आप कही जा रहे हैं ?
2 विदा होना, बसे जाना, दूर जाना, जाना होना
प्रस्थान करना—उत्तिष्ठन्तं ज्योतिरेक जगाम—ज०
५१३० 3 जाना, पहुँचना, सहारा लेना, जा जाना,
समीप जाना—अथगच्छति गच्छते—पञ० ११३, एतो
गच्छति कर्तारम् मनु० ८१९९, आप पापी पर प्रह-
सता है—५१९९, इसी प्रकार—शरीरं मुर्छां वच्
आदि 4. गुजरना, बीटना, (समय का) बीतना
होना—काम्यसात्प्रयिनोदेन कालो गच्छति बीतताम्
हि० १११, गच्छता कामेन चलन 5 अवस्था
या दशा को प्राप्त होना, होना, अनुभव करना, मुच-
तना, सोचना गम जाना और त्वान्त मन्त्राओं के
साथ अवस्था कर्म की सत्ता के साथ जुड़ना है)
—दक्षिणाम्युपहृत्स्वतां—रघु० ११३ पश्चाद्गमाया
मुपुक्षी कवाम कु० ११२९, उपा नामवाची हुई,
इसी प्रकार—गुप्ति गच्छति—मुप ही जाता है, बिबाद
नत—उपास हो गया, कोष न गच्छति—कूट नहीं
होगा है, जानूँ नत—रघु से मुक्त हो गया 6 मह
बाध करना, मनुन करना—मुरो सुतां को गच्छति
मुनाम्—पञ० २११०७, याज्ञ० ११८०, प्रेर०—1 विज-
कना, पहुँचना, (दवा को) प्राप्त होना 2 उपबोध
लेना, (समय की भाँति) बिताना 3 स्पष्ट करना,
जाना करना, बिबरन देना 4 अर्थ कतलाना, समझ
करना, बिचार व्यक्त करना—ही मन्त्रो प्रकृतार्थं यम-
कट—“तो नकार एक तकारात्मक अर्थ को प्रकट
करते हैं” अर्थात्, दूर जाना, बीत जाना, अर्थात्, 1 अवि-
बहण करना, अवाप्त करना, के लेना—अविगच्छति
अहिमान् अन्धोऽपि विचारपरिपुहीत—भास्वि० १११३,
अन्धकाराविगच्छति—मनु० २१२१८, ७१३३ ज०
२१६५, रघु० २१६९, ५१३५ 2 निष्पन्न करना, बुर-
झित करना, दूरा करना—अर्थ सप्रतिपक्ष प्रयुक्तिवन्
जहायवानेय—भास्वि० ११९ 3 समीप जाना, की
ओर जाना, पहुँचना, बैठ रखना—मुनामयोऽवसन्नमयी
मुपतिनां विगच्छते—पञ० ११३८५ 4 जानना, सीखना,
अध्ययन करना, समझना—लेम्योऽधिगम्य निजमान्त
पिज्ञान् उत्तर० २१३ कि० २१३१, मनु० ७१३०,
याज्ञ० ११९९ 5 बिबाह करना, (पति के रूप में)
बहण करना—मनु० ११९१, अथवा, प्राप्नो जाना,
होना, घटित होना, मनु० १ मिलना—जुलना, पीछे
चलना, साथ चलना—ओदकान्तात् मिलन्तो ज्योऽनुभव-
ज्व—ज० ४, जानं मनुष्येऽवगम्यमपनी धृतिरिवाह
स्मृतिरवगच्छन् रघु० २१२, ९, कि० ५१२, मनु०
१२११९, पञ० ११७३ 2 नकल करना, मनुष्य होना

उत्तर दना—भास्फलिता यन्प्रमदाकृतां देवदुष्कीर्य-
निम्बमच्छन् रघु० १५१३३, कि० ६१३६ अन्तर—,
बीच में जाना, सम्मिलित होना, अवहित होना
दे० अन्तर्गत, अथ, 1 दूर चले जाना, मुदा हो जाना,
(समय आदि की भाँति) बीत जाना—पञ० २१८
2 आच्छल होना, अन्तर्धान होना, मे चले जाना
अर्थात्, निकट जाना, समीप होना दानं करना—गन
ममिज्जमुपेहर्षय रघु० १५१५९, कि० १०००
मनुमेकाग्रमासीनमभिभव्य महर्षय मनु० ११७
2 मिलना, (अकस्मान् वा उवाच मे) घटित होना
3 सहारा करना, अनुन करना याज्ञ० २१००
अथवा, 1 समीप जाना, पहुँचना, निकट जाना—गन-
नाम्नायतो गृह—हि० ११८०८ 2 प्राप्त करना लाभ
करना, अथवा, 1 उठना, ऊपर जाना 2 की मार
जाना, मिलने के लिए आने बढ़ना, अथवा, महमन
होना, स्वीकार करना, जिम्मेवारी लेना, मानना, मनु
करना, बचनाना, अथ, 1 जानना, सोचना, बिचा-
रना, समझना, बिबाध करना परस्तादकमभव्य एष
—ज० १, कथं सान्तां विरामिते आन्त इत्यवगच्छति
मूलं—मृच्छ० १, ज० १०१६१, रघु० ८१८८, अर्द्धि०
५१८१ 2 बिचार करना, जानना, समझना (मेर०)
बहण करना, प्रकट करना, सफेद करना, बाहिर करना,
कहना अर्द्धि० १०१६२, ज्ञा—, 1 जाना, पहुँचना
2 जा जाना, प्राप्त करना, (विशेष दवा को) पहुँच
जाना (मेर०) 1 मे जाना, जाना, बहण करना ज्ञान-
वितापि विदुरम् बीम० १२ 2 सीखना, अध्ययन
करना—रघु० १०१७१, 3 प्रतीक्षा करना (जा०),
जु—, उठना, ऊपर जाना—अन्धकारादीषु वरुणमुपलब्ध-
—रघु० १११० जने० पा० २ अक्षुरं कुटना, विचार
देना विष्म० ५१२३ 3 उदब होना, निकलना, देना
होना, जान लेना इत्युच्यता वीरवमुलेभ्य मन्त्रम्
कथा रघु० ७११९, ज० ११६ प्रतिष्ठ वा विख्यात
होना—रघु० १८१२०, ज०—, 1 जाना, निकट जाना,
प्राप्त करना, पहुँचना—रघु० १८८५ २ बैठना, अन्तर
बुलना जि० १११९ ३ अनुभव करना, मुचतना
—तोषो चोऽमुपावकट—रामा० 4 अवस्था को प्राप्त
होना, प्राप्त करना, अविबहण करना—अधिकृतताम्-
पवने हि विधी—जि० ११९, तानप्रदांस्त्वामिदमवगच्छन्-
कु० ११८ 5 जान लेना, स्वीकृत देना, महवत होना
6 रघोष के लिए स्त्री के निकट जाना सुना मना
प्रमत्ता वा रडो अघोषगच्छति—मनु० ३१३०, ५१४०
उवा—, 1 जा जाना, पहुँचना (स्थान पर जा अवस्थित
के पास) २ पहुँच जाना अवस्था का चले जाना
प्राप्त करना मुपिमुपायत, पश्चात्त्वमुपायत आदि
3 लेना, प्राप्त करना—याज्ञ० ३११३३ जि० १ पहुँच

जाना, प्राप्त करना, अभिग्रहण करना, हासिल करना
 १ न दुस्मान व मित्रच्छति—मन्० १८३६, १३३
 २ जान प्राप्त करना, सोचना, विष् (विष्) , १ बाहर
 जाना, जुदा होना—प्रकाश निर्गम—मन्० ४, हुतबहुपरि-
 पेदावाम् निर्गत्य कक्षात्—चतु० ११२७, मन्० ९१८३,
 मन्० ६३ अथ ६१ २ हुताना, जैसा कि—निर्गत-
 डिगङ्कु' में ३ (किली रोय से चिकित्सा द्वारा) मक
 होना परा—, १ बाधित जाना, तब परागत एवास्मि
 —उत्तर० ५ २ बेरना लपेटना, व्याप्त करना—स्फुट-
 परागपरागतकुञ्जम्—सि० ६१२, वरि—, १ जाना,
 बक्कर लमाना,—न ह्य तत्र फरिगम्भ— राजा०, यथा
 हि मेव सूर्ये नित्यं परिगम्भते—ब्रह्म० ३ बेरना,
 सि० ९१२६, घट्टि—१०१६, विनापरित—आदि ३ सर्वं
 फेला मव दिशाओं में व्याप्त होना ४ प्राप्त करना
 वृक्षताम् आदि ५ जानना, खजना, सीखना
 रघु० ७११७ ६ जरना, (इत लवार से) चले जाना
 —यय वेधो जातविचरपरितता एव क्लृप्ते—मन्०
 ३१३८ ७ प्रभासित करना, इस्त करना, जैसा कि
 —सुचका परिवत—मै, क्ली—, १ निकट जाना, की
 ओर जाना २ घुरा करना, लपट करना ३ जीतना,
 अभिभूत करना, इति—, १ बाधित जाना २ बढ़ना,
 की ओर जाना प्रका—, बाधित जाना, जीत जाना
 क्लृप्त्—, (लकार करने के लिए) जाने जाना, बढ़ना
 या मिलना प्रत्यक्षप्राप्तिविधातिथेय रघु० ५१२,
 प्रत्यक्षच्छति मुक्ति स्थिरतम पुष्पे निकुञ्जे प्रिय
 —गीत० ११, मासि० ३१३, वि , (तमय आदि का)
 १. जीत जाना,—सम्प्रययि लपटि व्ययमि—सि० ९१७
 २ जोलन होना, जलजान होना—मलज्वाया लज्जापि
 व्ययमविव दूरं वृक्षत—गीत० ११ अथ० ११११,
 मन्० ३१२, ५९, (त्रै०) व्यनीत करना, धिताना
 —विजयमयस्त्रिज एव क्षपा स० ६१५, विविष्
 १ बाहर जाना २ जलजान होना, जोलन होना विज
 जलज होना क्लृप्—, (मा० में प्रयुक्त) १ मिल जाना,
 इकट्ठे चलना, मिलना, मुकाबला करना अक्षर्त
 लममि—दक्ष०, एते भवन्त्यो कस्मिन्कस्यामन्वाकिप्यो
 लमच्छे—अनर्थ० २ २ सहजान करना, लगी करना
 आर्वा व परतगता—अथ० ११२०८, मन्० ८३७८,
 (त्रै०) इकट्ठा करना, मिलाना या एकत्र करना
 —रघु० ७१७, लममि—, १ निकट पहुंचना २ अथ-
 यन करना ३ प्राप्त करना, अभिग्रहण करना यमं
 समधिपच्छति यस्मैने तस्य तद्वन्—मन्० ८१४१६
 क्लृप्त्, घुरी तरङ्ग से जान केना, लक्का— १ पास
 पहुंचना २ आ बढ़ना ।

जय (वि०) [जम् + जप्] (अभाव क प्रत्यये में) जान
 जाना, हिम्मे जुकने जाना पास जान जाना, पहुंचना

जाना, प्राप्त करने जाना, हासिल करने जाना आदि
 जयम, गुरोगम, हृदयम आदि, कः १ जाना,
 हिलना—जुलना २ प्रयाण करना अथर्ववेदाहुगम
 ३ आक्रमणकारी का कृष करना ४ लडक ५ अभिधा-
 रिता, विचारकृष्यता ६ ऊपरिपत्न, अटकलपन्नु निरी-
 क्षण ७ स्त्री-समीप, सहवास—दुर्वृत्तनाम—मन्०
 ११५५, याज्ञ० २१२९३ ८ पास आदि का क्षेत्र ।
 लय—आत्मक जाना-जाना ।

जयक (वि०) (स्त्री०—विष्ठा) [जम् + जम्] १ लके-
 तक मुखाव देने वाला, प्रणाम, अनुकम्पनी—नवेव
 मयक पाश्चिज्यवेदजयवी—मा० ११७ २ विद्वानो-
 त्पायक ।

जयलम् [जम् + जम्] १ जाना, गति, बाल—ओपी-
 मारावसमयना मेघ० ८२, इमी प्रकार जयल-
 मने—भृंगार० ७ २ जाना, गति (वैशेषिक इसे
 पाँच कर्मों में से एक कर्म समझने हैं) ३ निकट पहुँ-
 चना, पहुंचना ४ अभिधान ५ अनुग्रह करना, मृ-
 तना ६ प्राप्त करना, पहुंचना ७ सहवास ।

जयिन् (वि०) [जम् + इनि] जाने के विचार वाला
 —जैसा कि 'शायमयी' (पु०) यानी ।

जयनीय, जय (स० कृ०) [जम् + जनीयर्, जम् वा]
 १ सुपम, उपास्य धिकारस्व वमनीयामि वसुता -
 म० १ २ सुबोध, आसानी से समझ में आने वाला
 ३ अभिप्रेत, निहित, अर्धवृत्त ४ उपयुक्त, बाधित,
 योग्य—याज्ञ० ११५५ ५ सहवास के योग्य—दुर्व-
 मया नाथं अथ० ११७८, अजिकायां स्विब अथ
 गम्भा रहसि बाधित, तोरसि ब्रह्म० ६ (जीवि
 आदि से) उपचार योग्य—न जम्बो मन्त्राणां—मन्०
 ११८९ ।

जयनारिका, जयनारी [जम् + जयि = जय, ल जय -- निम्नगति
 विजति—जम् + जम् + जम् + टाप्, इत्यम्, जम् + जम्
 + जम् जीव] एक वृक्ष का नाम ।

जयनीय (वि०) [= जयनीय]—रघु० ११३९, मेघ० ६४,
 ६६,—१ कमल २ जयनी, नीम् । लय०—वैवि-
 (वि०) (श्री) की गति) इरान्त, अविमल ।

जयनीय, जयनारिका [जम् + टाप्, जयनीय + जम् + टाप्,
 इत्यम्] एक नदी का नाम जयनीराया पयसि
 —मेघ० ४० ।

जयः १ गया प्रदेश गया उसके आस पास रहने वाले लोग
 २ एक राक्षस का नाम,—आ विहार में एक नगर जो
 एक तीर्थ स्थान है ।

जय (वि०) (स्त्री० स्त्री) [जीयते जम् + जम्] मिग
 लने वाला, र १ येव, जयबल २ जीवारी, गम
 ३ मिललना (गंगा का भी यही अर्थ है) र, रम्
 १ जहर २ विपनामक जीववि, रम् विजकना, ग

करना । सम०—अधिका १ साक्षा नामक कीडा
२ इस कीड़े से प्राण लाल रंग स्त्री एक प्रकार की
मच्छरी,—इ (वि०) बिच देवे वाला बहुर देने वाला
(—बन्धु) बिच,— बत मोर ।

मरकम् [गु + मरुट्] १ निगलने की क्रिया २ छिड़कना
३ बिच ।

मरकः [गु + मरुच्] भूत, मर्मस्थ बच्चा दे० मर्म

मरकः,—कम् [गिरति बीजम् गु + कल्च् नाग०]
बिच, जहर, दुःखपदमयोपी कष्टे न मा परलघुति
—मीत० ३ मरकमिव कलबनि मलयममीरम् ४
स्वरगमलज्ज्वलन मम गिरति मरकनम्—१० २ मरि क
बिच कम् नाम का गट्टक । सम० जरि पन्ना
मरकनमणि ।

मरित (वि०) [गर + इतच्] विषयक जिते जहरा गया
गया ही ।

मरिभम् (प०) [गुत् + इमिच् मरादेण] १ ब्रह्म भारी
पन शि० १४० २ मरुत्थ बहामन मरिभा प०
१३० ३ उन्मत्ता श्रेष्ठता ४ आरु गिरिय म म
एक मिट्टि जिसके द्वारा अपने आपको इच्छानुसार
भारी या हल्का कर सकते हैं—१० मिट्टि ।

मरिष्ठ (वि०) [गुत् + इच्छन् मरादेण] १ सबसे भारी
२ कथ्यन मरुत्थपूर्ण (गुत् शब्द की उन्मादस्था)

मरीचम् (वि०) [गुत् + ईयमुन् मरादेण] अधिक भारी
अपेक्षाकृत बहामन अपेक्षाकृत मरुत्थपूर्ण (गुत् की
मध्यमावस्था)—अतिरेक एकादशरीयम् शि० १५
बृहत्पत्तणी भारी प्राक्कणार्द्ध मरीचमा शि० १
११० शि० २, २४ ३३ ।

मरुत् [मरुत्स्था इत्ये की + इ पुनो मरुत्पु
—इत्] १ पर्वतों का राजा (यह बिना नाम के
पर्वतों में उत्पन्न कथप का पुत्र है यह पर्वतों का
राजा मरीचों का वैमिश्रित सन् और अरु का बड़ा
भाई है एक बार इच्छा की मरुत् और उसकी मीन कदु
में 'उच्छेद' अर्था के रग के विषय म शब्द हुआ
यिनका हार गई और शर्न के अनुसार उसे कदु की
पानी बनना पड़ा । मरुत् माना की स्वतन्त्रता
प्राप्त करने के लिए स्वर्ग में इन्द्र के पास गया वहाँ
के मरीचों के लिए अमृत का बहा जाने में मरुत् को
उत्तरे म म ऊन्नत पड़ा अन्त में वह अमृत प्राप्त
करने में असमर्थ था ५२२ बिनामो म्बनवता
प्राप्त हो गई । मरुत्पु इन्द्र यमन का छोटा भाया क
पाय से ले मरुत् १ मरुत् का शिख की मरुत् को बिच
किया गया है । मरुत्का बहुरा वरुन न क जाने ज्यो
मरुत्क और मरुत् मरुत्की है । २ मरुत् की मरुत्
का बना अन्त ३ विविध वैमिश्र अरु मरुत् । सम०
अथवा सय के मरुत्वि अरु मरुत् मिमल — अथु

बिष्णु का विशेषण—अविश्रुतम्—अव्यक्तम् (प०)
—अतीवम् पद्मा—अथ बिष्णु की उपाधि अथ
एक प्रकार की विविध वैमिश्र अरु—का दे० (३)
ऊपर ।

मरुत् (प०) [गु + गु + उर्ज] १ पत्नी के पर, राज
२ साता मिमलमा । सम० बोधिम् (प०) बटे

मरुत्त (वि०) [गरुत् + मरुत्] पत्नी—गरुत्तपत्नीविष
मीमदनेन—रु० ३१५० (प०) १ मरुत् २ पत्नी

मरुत् [—मरुत् इत्य क] मरुत् पत्नी का राजा ।

मरुत् [गु + गु] १ एक प्राचिन मरुत् बड़ा का एक पुत्र
२ मरुत् ३ केचुका शि० ४० ४० मरुत् की सतान सम०
—अति (मरुत्) ७४ तीर्थ ।

मरुत् [मरुत् इति मरुत् इति मरुत्—मरुत्—१] मरुत्
मरुत्त २ एक प्रकार का वाद्ययंत्र ३ एक प्रकार की
—मरुत् ४ मरुत्त मरुत् शिलान का मरुत्ता मरुत्
मरुत्त मरुत् की मरुत्त ।

मरुत् [मरुत् इति मरुत् इति मरुत्—मरुत्—१] मरुत्
मरुत्त २ एक प्रकार का वाद्ययंत्र ३ एक प्रकार की
—मरुत् ४ मरुत्त मरुत् शिलान का मरुत्ता मरुत्

मरुत् [मरुत् इति मरुत् इति मरुत्—मरुत्—१] मरुत्
मरुत्त २ एक प्रकार का वाद्ययंत्र ३ एक प्रकार की
—मरुत् ४ मरुत्त मरुत् शिलान का मरुत्ता मरुत्
मरुत्त मरुत् की मरुत्त ।

मरुत् [मरुत् + मरुत्] १ मरुत्त की मरुत्त २ मरुत्त
की मरुत्त या मरुत्तमरुत् ।

मरुत्त [मरुत् + मरुत्] १ मरुत्त की मरुत्त २ मरुत्त
की मरुत्त या मरुत्तमरुत् ।

मरुत्त [मरुत् + मरुत्] १ मरुत्त की मरुत्त २ मरुत्त
की मरुत्त या मरुत्तमरुत् ।

मरुत्त [मरुत् + मरुत्] १ मरुत्त की मरुत्त २ मरुत्त
की मरुत्त या मरुत्तमरुत् ।

मरुत्,—मरुत् [गु + मरुत्] मरुत् मरुत् मरुत्—मरुत्त
मरुत् मरुत् मरुत् मरुत् मरुत् मरुत् मरुत् मरुत् मरुत् मरुत्

मरुत् [मरुत् + मरुत्] १ मरुत्त की मरुत्त २ मरुत्त
की मरुत्त या मरुत्तमरुत् ।

गतिहा [वही: वस्तुस्थिति:—गर्भ+उत्पत्ति] गुलाहे का कार-
नामा, लहड़ी, (स्त्री) गुलाहा अपनी लहड़ी पर
बैठे समय पर धूम्र के नीचे भरे में रहता है।
गर्भ (स्त्री) पर०, पुरा० उभ०—गर्भति, गर्भति,—ते)
सब करता, बहाइता।

गर्भः (स्त्री०—बी) [गर्भ+जन्म] 1. गन्ध—ज
गर्भमा बाधित रहति—गुच्छ० ५।१७, प्राप्ते तु बोधमे
वर्ष गर्भमी ह्युत्तरायते—सुभा०, गर्भे की तीन बड़ी
विशेषताएँ हैं:—अधिकात् बहुद्वार लोमोष्ण च न
विदति, सत्तोषस्तथा निरव चीणि शिखेत गर्भात्
—पाण० ७० 2. गन्ध, वृ०—गन्ध सफेद कुमुदिनी।
सम०—अन्ध,—अन्धः 1. एक कुशविशेष 2. गुल,
—आङ्गुल्य सफेद कमल,—गन्धः चर्मोपविशेष।

गर्भः [गु+वञ्, अच् वा] 1. इच्छा, उच्छा
2. लालच।

गर्भन्, गर्भित (वि०) [गु+वृत्, क्त वा] लोभी,
लालची।

गर्भिन् (वि०) (स्त्री०—बी) [गर्भ+इति] 1. इच्छुक,
लालची, लोभी—नवाग्रामिषगर्भित,—मनु० ५।२८
2. उत्पन्नपूर्वक किसी कार्य का पीछा करने वाली।

गर्भः [गु+भन्] 1. गर्भाशय, पेट—गर्भेय वसति—पञ्च०
१, पुनर्गर्भे च संभवम्—मनु० ६।१३ 2. भ्रूण, गर्भ-
स्व बच्चा, गर्भाधान—नरपतिमुज्ज्वल्य गर्भमाधान
रात्री—रघु० २।७५, गर्भोन्मेषाग्रपत्न्या कु०
१।१९ ३. गर्भाधान काल-गर्भाष्टमेत्ये कुर्वीत बाह्यग-
स्तोत्रपयनम्—मनु० २।३६ 4 (गर्भस्व) बच्चा ज०
६ 5. बच्चा, बच्चासावक 6. किसी वस्तु का अग्र्यन्तर,
अथवा नीतरीभाग (इस अर्थ में समस्त पञ्च)—त्रिम-
गर्भैर्मयूकैः—श० ३।३, अग्निगर्भा शोभीय ५।१,
रघु० ३।९, ५।१७, ९।५५, शि० ९।६२ भा० ३।१२,
मुद्रा० १।१२ 7. आकाश-प्रसूति अर्थात् सूर्य किरणों द्वारा
जोत मातृक साधित और आकाश में लक्षित बाष्पराशि
जो बरसात में फिर इस बरसों पर बरसती है, तु० मनु०
१।३०५ 8. भीनरी कमरा, प्रसूतिकागृह, बच्चा काना
9. अग्र्यन्तरीय प्रकोष्ठ 10 छिद्र 11 अग्नि 12 बाह्यार
13 कटहल का कटोला छिद्रका 14. नदी का पाट, वि-
शेषतः माघपव चतुर्दशी को गंगा का जब कि वर्षाऋतु
अपने यौवन पर होती है तथा परिचा उमड़ कर चलते है।
सम०—अङ्गु (गर्भ+ङ्गु मी) अक के बीच में विच्छेदक
जैसा कि उत्तर राक्षसित के मातर्वे अक में कुश और लव
के जन्म का दुष्य, या बालरायणण में शोमास्वयवर, सा०
६० परिभाषा देता है—अङ्गुद्वारप्रविष्टा यागङ्गुदागम्यवा-
दिमान् अङ्गुद्वारः स गर्भाङ्गुः सवीर्य फलवानि।
२०९, अन्धकारित, (स्त्री०) आराम का गर्भ में प्रविष्ट
होना,—अन्धकारम् 1. बच्चादानी 2. भीतरी कमरा,

निजी कमरा, अन्तःपुर 3. प्रसूतिकागृह 4. मन्दिप
का पुत्राकल, जहाँ देवता की प्रति स्थापित रहती है,
—आध्यात्म 1. गर्भ रहना, गर्भधारण—गर्भाधानअन्ध-
परिचयान्तरमावदमाताः (बच्चाका):—मेघ० ९. 2. एक
संस्कार, ऋतु-स्नान के पश्चात् एक शुद्धि संस्कार
(यह संस्कार ही बाह्यिक पल में विवाह की पूर्णता की
बैध ठहरता है) पाण० १।११,—आश्वय योगि, बच्चे-
दानी, आश्वयः गर्भ का कच्चा गिरना, गर्भपात,
इस्वर जन्म से ही बनी, अन्मजात बनी, पैदाहमी
राजा या रईस,—उत्पत्ति भ्रूण की रचना, उन्मजः
कच्चे गर्भ का गिर जाना, उन्मजासिनी वह गाव वा
स्त्री जिसे बिना ऋतु के गर्भ का स्त्राव हो जाय,—अर
(वि०) गर्भ धारण करने वाला, आलः ऋतु काल,
गर्भधारण का समय,—कोल,—च गर्भाशय, बच्चेदानी,
—कलेस गर्भधारण करने का कष्ट, प्रसव की पीड़ा,
—अन्ध, गर्भ की कच्ची अवस्था में गिर जाना,—अङ्गुल्य,
—अन्मज्ज देवत्वम् (नपु०) 1 घर के भीतर का
कमरा, घर का मध्यभाग 2. प्रसूतिकागृह 3. मन्दिप
का वह कक्ष जिसमें देवता की प्रतिमा स्थापित हो

—निर्गन्ध गर्भबन्धात्—मा० १,—अङ्गुल्य गर्भधारण,
गर्भ होना आसिन् (वि०) गर्भपात करने वाला,
—अन्मज्ज, गर्भस्वम्भ, गर्भाशय में बच्चा का हिमन्म-
डोचना—अन्मज्ज (स्त्री०) 1 जन्म, प्रसूति 2 गर्भाशय
—आलः,—सी जन्म से हो गुलाव (तिरस्कार वृक्ष
शब्द),—इह (वि०) (कर्त० ए० व० भूक्) गर्भपात
करने वाला,—अर गर्भवती,—आरब्ध—आरम्भ गर्भ-
स्थिति, गर्भ में सन्तान को रखना, अन्ध गर्भपात,
पाणिम् (पु०) साठ दिन में पकने वाला घान,
छाटो घान,—आल पीये रहितने के बार गर्भ का गिर
जाना,—अन्मज्ज,—अन्मज्ज (नपु०) गर्भस्व बालक का
पालन-पोषण—अनुष्ठिते विषमिमाप्लेख गर्भजर्मणि
—रघु० ३।४२—अन्ध शयनागार, प्रसूतिकागृह,
मातृ वह महीना जिस में गर्भ रहे,—अन्मज्ज प्रसव,
बच्चे का जन्म,—बीचा गर्भवती स्त्री (आल०) बड़ी
हई गवा जब कि उसका पानी किनारी से बाहर बहता
हो,—अन्मज्ज गर्भस्व बालक की रक्षा करना,—अन्ध,
—अन्मज्ज बच्चा, शिशु, तपन, अन्मज्ज गर्भ हो जाने
का चिह्न—अन्मज्ज गर्भ की रक्षा और उसके विकास
के लिए किया जाने वाला एक संस्कार,—अन्मज्जः
(स्त्री०)—आलः 1 गर्भाशय—मनु० १।१७८ 2. गर्भा-
शय में रहना,—अन्मज्ज (स्त्री०) गर्भाधान के
आरम्भ में गर्भजाव हो जाना, देवता प्रसवपीछा,
आरम्भ गर्भ की उत्पत्ति और वृद्धि,—अन्मज्ज एक
प्रकार का जीवार जिससे बरे हुए बच्चे को पेट से
निकाला जाता है,—अन्मज्ज गर्भाशय,—अन्मज्ज,—अन्मज्ज

(स्त्री०) गर्भवती होना,—कृष् (वि०) 1. गर्भाशय में विद्यमान 2 अन्तरिक, आन्तरिक, आन्त गर्भ गिर जाना, गर्भ का कच्ची अवस्था में बह जाना—वर गर्भ-आश- पंच० १, याज्ञ० ३।२० मनु० ५।१६।

गर्भवक [गर्भ+कन्] बालो के बीच धारण की हुई पुष्प-माला,—कृष् को रातो और उनके बीच के दिन का समय ।

गर्भवः [गर्भरय बन्ध इव च० त०] गर्भ का बह जाना । गर्भवती [गर्भ+जगृप्+डीप्, बन्धम्] गर्भिणी स्त्री ।

गर्भिणी [गर्भ+इनि+डीप्] गर्भवती स्त्री (बाहे मनुष्य की हो या पशु की)—गोयमिणीप्रियमबोलपमालभारि-सेव्योपकण्ठविपिनारलयो भवन्ति मा० १।०, याज्ञ० १।१०५, मनु० १०१४। सम० अवलोकन्य दार्ढ्यपना, गर्भवती स्त्री और नवजात बच्चे की सेवा और परि-चर्या,—बौद्धम् गर्भवती स्त्री की प्रबल इच्छाएँ या रसि, —अवधारणम्,—अवकृति (स्त्री०) (आयुर्वेद शास्त्र का एक विशेष अङ्ग) गर्भ के विकास का विज्ञान ।

गर्भित (वि०) [गर्भ+इतप्] गर्भयुक्त बरा हुआ ।

गर्भोत्पत्ति (वि०) [उत्पत्ति म० त०] 1 बालक को गर्भ में ही सन्तुष्ट 2 आहार और सन्तान के विषय में सन्तुष्ट 3 जालसी ।

गर्भुह (स्त्री०) [गृ--उति, मुट्] 1 एक प्रकार का घास 2 एक प्रकार का नरकुल 3 सोना ।

गर्भ (म्भा० पर० गर्वति, गर्विन) बमदी या अहंकारी होना, (केवल भू० क० कृ० के रूप में प्रयुक्त जो कि विशेषण ही समझा जाता है और गर्भ से बना है) कोऽर्थाश्रयाय न गमिन् पंच० १।१४६।

गर्भ [गर्भ+जडा] 1 बमड, अहंकार या कुछ घनजन-धीनगर्भ हरति निमेषात्काल सवं योह० ४, मृग्य हानी योवनगर्भं बहुमि मालवि० ४ 2 अल० आश्रय य ३३ व्यभिचारिभावों में से एक रूपघनविद्यादि प्रयुक्तार्थोत्कर्षज्ञानधीनपराबहेलन गर्भ रस०, या ज्ञा० ६० के अनुसार—गर्भो मय प्रभावधीविद्यासन्कु-कृतादिज, अवज्ञासविलामाङ्गवसानाविनयादिक्त् ।

गर्भदः [गर्भ+दद्+अप्] बीकीदार, धारणाल ।

गर्ह (म्भा०, चुरा० आ०) बीकी स्त्री पर० भी) गर्हते, गर्हयते, गर्हित 1 कलक लगाना, निन्दा करना, झिड़की देना बिचमा हि दणा प्राप्य देव गर्हयते नर हि० ४।१, मनु० ४।१९९ 2 बीकी ठहराना आरोप लगाना 3 संक्ष प्रकट करना, वि- , कर्त्तव्य करना नि-दा करना, झिड़की देना—न विगर्हन्ति साधव—मनु० १।१६८, १।४६, १।१५२ ।

गर्हणम्,—का [गर्ह+गृह्, गर्ह+गृप्+टाप्] निन्दा कलक, झिड़की, दुर्वचन ।

गर्हण [गर्ह+ज+टाप्] दुर्वचन, निन्दा ।

गर्हण (वि०) [गर्ह+जगृप्] निन्दीय, निन्दा के योग्य, कलक दिय जाने के योग्य—गर्हो कुर्वाणुने कुले—मनु० ५।१४९। सम०—गर्वित (वि०) अपचम्य कहने वाला, दुर्वचन बोलने वाला ।

गर्ह (म्भा० पर०—गलति, गर्हित) 1 टपकाना, चुभाना, पसीजाना,—चुना—बलविबलसन्तुष्टिम्—का० १०३, अन्धकपोलमूलगमिती (अधुनि)—अमर० २६।११, भाषि० २।२१, रघु० ११।२२ 2 टपकना, या गिरना सरदमच्छगल्लननापमा जि० ६।४२, ९।७५, प्रतोदा जगल्ल गट्टि० १४।९९ १७।८७, गल्लगमिस्स पीत० २, रघु० ७।१० मेघ० ४४ 3 बोझल होना, अलस होना गुजर जाना, हट जाना संसर्गेन सह गलति मुक्कनस्नेह—का० २८९ बिद्या प्रमादगति नाभिषि पित्तनामि बीर०, जर्न० २।४४, गट्टि० ५।४३, रघु० ३।७० 4 साना, निगलना (गु मे मबड) प्रे० या चुरा० उभ० (गु० क० कृ०—गलित) 1 उडेलना 2 गिराना निचोड़ना 3 बहना (भा०) निष् टपकना, रिसना चुना—रघु० ५।१७ वर्ष्—, टपकाना, गट्टि० २।४ बि—, 1 टप-काना बिष्म० ४।१० 2 टपकना, चुना 3 बोझल होना, अलस होना ।

गल [गल्+अप्] 1 कठ, गर्दन न गरल गले कस्तूरीय २ अजागलस्तन—मनु० १।१६४, अमर० ८८ 2 सान बूझ की लाव 3 एक प्रकार का बाधवाच । मर० अङ्कुर गले ४ एक विशेष रोग (सूजन), उज्ज्वल पीडे की गल के बाल, अयाल, ओष गले की रसोली, कम्पक गाय बैल की गर्दन का नीचे लटकने वाला बमडा आलर गल्लः गडमाला, गले का एक रोग जिससे गाठ सी निकल आती है,—कल्लः ।

गल्लम् 1 गला पकड़ना गला घोटना गलेसाबरोष करना 2 एक प्रकार का रोग 3 घास में कुलपत्र के कुछ दिन अर्थात् बीघ, सतमी, अष्टमी, नवमी, त्रयोदशी और तीन इससे जागे के चर्बन् (नपु०) अलनाली, गला, हारन मूह, लेकला हार,—वर्त्त (वि०) 1 गले की क्रिया में निपुण, बूझ साने और हजम करने वाला तन्मूकता रखने—युष्मते चैव तीर्थेषु गलवातास्तपस्विन—यच० ३ अने० पा० 2 पिछलग्नु, पाटुकार इतः मोग कुण्डिका उपविह्वा । सुष्ठी गर्दन की शिथिली की सूजन, स्तनी (गले-स्तनी भी) बकरी—हस्त 1 गले से पकड़ना गला घोटना, अर्धचन्द्र या गरदनिया 2 अर्धचन्द्राकार बाण तु० अर्धचन्द्र हस्तिता (वि०) 1 गले से पकड़ा हुआ, गर्दनिया देवर निकाला हुआ, गला घोट्टा हुआ ।

गल्लकः [गल्+बुन्] 1. कल्ल, गर्दन 2 एक प्रकार की गल्लमी ।

कलम् [गल् + कल्] १. रिल्ला, चूना, टपकना २. चूना, पिचक माना ।

कलमिलना, कलमी [गल् + कल् + जीप्, गुल् + कल् + टाप् इत्यम्, — गल् + कल् + जीप्, गुल्] १. छोटा बड़ा २. छोटा बड़ा जिसकी रेंदी में छेद करके डेब मृति पर टाप देते हैं, जिससे कि उस छेद से बराबर जल टपकता रहता है ।

कलिकः [गलि, इत्य क, गल् + इन वा] हृष्ट पुष्ट परन्तु मट्टा ईक । दे० कलि ।

कलित (गु० क० कृ०) [गल् + क्त] १ टपका हुआ, नीचे गिरा हुआ २. पिचका हुआ ३ रिसा हुआ, बहता हुआ ४. नष्ट, भोजन, वस्त्रित ५. बंधन-रहित, दीना ६. काली हुआ, पू पू कर जो काली हो गया हो ७. खाना हुआ ८. क्षीण, निर्बल किया हुआ । तम० — कलम् बड़ा हुआ या बसाध्य कोई जब कि हाथ पैर की अंगुलियों की मल कर गिर जाती है — इत्य (वि०) इत्यहीन, — मलम जिसकी भाँसों में देखने की शक्ति न रहे, बचा ।

कलितकः [गलित इव कायति — कै + क] एक प्रकार का मूल्य ।

कलम्वः [कलम् स० त०] एक पक्षी जिसके गले से मांस की रेंदी सी गटकती रहती है ।

कलम् (ग्या० जा० — कलमे, कलिमत) साहूड़ी या विहवस्त होना, प्र०, — साहूड़ी या आत्म विहवासी होना — या इच्छन सक्तीवचनेन प्रगल्भियतम प्रवर्तते — वि० १०१८, न भौतिककण्डिकाटी सलाका प्रगल्भने कर्मणि टङ्किकायाः — विष्णुभां ११६, टाकी का काम करने में सक्षम या साहसी नहीं हो सकना ।

कलम् (वि०) [गल् + कल्] साहसी आत्मविहवासी, जीवट का ।

कल्ला [मकाना कष्ठानां समूहः — गल् + कल् + टाप्] कठों का समूह ।

कल्लः [गल् + क] गाल, विशेषकर मूक के दोनों किनारों का पार्श्वकर्षी गाल (अक० शास्त्री इन सख को 'गाम्' अर्थात् गंवाक मानते हैं — गु०, काव्य० ७ में दिए गए उदाहरण का — ताप्तूलमृतगस्तोऽयं जलं जल्पति मानुष, परन्तु गु० प्रबभूति के प्रयोग की — पातालप्रतिमकलसल्लिखरप्रक्षिप्तपार्श्वकम् — मा० ५१२२ । सख० — बल्लुरी गाल के नीचे रखा जाने वाला छोटा गोल तखिया ।

कल्लकः [गल् + कल्, = गल्, तं गलित का + क, ततः स्वाधे कम्] १. सराब का निवास २. पुष्कराज, नीलमणि, दे० नी० 'कल्लक' ।

कल्लकः भवित्ता नीने का प्लाका ।

कल्लकः [गल् + कल् + इत्यम्] १. रिल्ला, चूना, टपकना २. चूना, पिचक माना ।

१. स्मटिक २. वैद्वर्धनवि ३. कटोरा, सराब नीने का निवास ।

कल्ल (ग्या० जा० — कल्लते, कलिह) कल्लक कमाना, निष्ठा करना ।

कल्ल [कुल्ल सभासों, विशेष कर स्वर्गों से बारम्बार होने वाले जलों के बारम्बार में 'पो' सख का स्थानापन्न पर्वति] तम० — अकः दोहनवान, सरोजा — विष्णुभां ११६, सख-कलितयवाणां लोचनैरङ्गनामां — ७११, कु० ७५८, देव० ९८, 'आलम् — बाली, जिलमिली, — अकिल (वि०) जिककियों वाला, — अकल् नीनों का मूत्र (गोऽयम्, गोबधम् या गवाधम् किन्ना जाता है), — अकल् बरागाह, गोचरमृति, — अकली १. बरागाह २. जोर, नाव जिसमें पशुओं के जाने के लिए बांध रखा जाता है, — अकिका नाव, — अहूँ (वि०) नाव के मूल्य का, — अकिकम् नाव और बेई, — अकल १ गोपी २ जाति से बहिष्कृत, — अकल् बैल और बाड़े, — अकलित (वि०) नाव की गल्ल वाला, — अकलितम् प्रतिदिन नाव को चारा देने की नाव, — इत्य १ गोपी का स्वाधी २ बड़िया बैल, — ईक, — ईकर नीनों का स्वाधी, — उड्ड मर्वातम नाव ५१ ईक ।

कल्ल [गो + कल् + कल्] बैल की जाति — गोतकुली गाय — तम० — कल्ल कर्षिपुन्यगवैविमिनी — कु० १५९, अहूँ ११३१ ।

कल्लक [गवाय वाक्याय अलनि — गल् + कल् + कल्लक] = तमय ।

कल्लिकी [गो + इनि + जीप्] गोको का मूत्र या कल्ल ।

कल्ले, — गु, — गुका [?] पशुओं को बिलाने का चारा, बास ।

कल्लेकम् गेक ।

कल्ले (ग्या० जा० — कल्ले ५२० — गल्लेते, गल्लेवति, गल्लेवति) १ ईदना, भोजना, तलास करना, पुष्ट ताक करना — तमयवे यत प्राप्तस्तर्षाभ्यो गल्लेकनाम — कुमा० ५५, १७६ २ प्रयत्न करना, उत्कट इच्छा करना, प्रबल उद्योग करना — गल्लेवमांश्च बहिर्दीपुर्ण जलम् — अहूँ ११२१ ।

कल्ले (वि०) [गल्ले + कल्] कोजने वाला, — क. कोज, पूरताक ।

कल्लेकम्, — का [गल्ले + कल्, गुल् + टाप् का] किसी वस्तु की कोज, या तलास ।

कल्लेवित (वि०) [गल्ले + क] कोजा हुआ, ईदना हुआ, तलास किया हुआ ।

कल्ले (वि०) [गो + कल्] १. गो यदि पशुओं के वृक्ष २. गोओं से प्राप्त मूत्र, बड़ी जाति ३. पशुओं के लिए उपयुक्त, — अक १. गोओं की हेड़, गवैरी २. गोचर-

भूमि ३ वायु का वृक्ष ४ वन्य की डोरी ५ रत्नीय
बनाने की सामग्री, पीला रंग, च्छा १ गीतों की
हृद २ हो कास के बराबर दूरी ३ वन्य की डोरी
४ रंग देने की सामग्री, पीला रंग ।

गन्धुत्तम्-ति (स्त्री०) [गो धृति पुरो०] १ एक काम
या हो मील की दूरी को माप २ हो काम क बराबर
दूरी का माप ।

गह् (बुरा) उम०- गहयति-ने १ (अगल की भाँति)
तबल या मोड़ होना २ गहराई तक पहुँचना ।

गह्व (वि०) [गह + लृट्] १ गहरा सघन, गह्व
२ अमेघ, अश्वेध, अलघ्य, दुर्गम ३ दुर्बोध अथवा
अव्य रहस्यपूर्ण-मेवाधम परमगह्वर्या यागिनाम्य
गम्य पञ्च० ११२८५, सप्त० २५४ गह्वरा कर्मको
गति-अम० ६०३ शा० ११८ ४ कठोर कठिन
पीडाकर कष्ट गहन तमोर शा० ३११५
५ गह्वर किया हुआ पीछ किया हुआ शा० ११३०
-अन् १ गह्वर गहराई २ अगल झाड़ो या झुरमुट
पौर या अश्वेध जाल यदनुत्तमाना निधि गहनयोग
शीक्तिम् मोत० ३ भाषि० ११०० ३ छिपने का
स्थान ४ गुफा ५ पीडा, दुःख ।

गह्वर (वि०) (स्त्री०-रा-री) [गह् + वरच्] गहरा
दुस्तर एक १ रसातल अथाह लार्ड २ झाड़ी या
झुरमुट अगल ३ गुहर करार गौरीगुहर्गह्वरमा-
विशेष-रघु० ११०६ ४६ अतु० ११२३ ४ दुर्गम
स्थान ५ छिपान की जगह ६ गुहा ७ गुह्य ८ राना
चिम्बाना ९ अनामकप, निकुञ्ज रो १ गुफा
कहना कोह ।

गा [गै - हा] गाना शब्द ।

गाङ्गा (वि०) (स्त्री० की) [गङ्गा अण] गंगा नदी
गंगा पर होने वाला २ गंगा से प्राप्त या गंगा से आया
हुआ गाङ्गाभय मितसम्पद यामुन क-अलाभमभय
मज्जन काव्य० १०, कृ० १३३ ग १ भीम
का विशेषण २ कान्तिकेय की उपाधि गम् १ विशय
प्रकार का बघी का जल (इः स्वर्गीय गंगा से अल
बाला माना जाता है) २ माना ।

गाङ्गा, -देव [गाङ्गा + अद् अच्, प्रक० परकप, पृष्ठा०]
सीमा मङ्गली, या अमृतमिष ।

गाङ्गावति [गाङ्गा + वति] भीम या कान्तिकेय का नाम ।

गाङ्गेय (वि०) (स्त्री०-की) [गाङ्गा-इक्] गंगा पर
या गंगा से होने वाला, --अ भीम या कान्तिकेय का
नाम, --अच् वाला ।

गाङ्गेय [गाङ्ग अच् गति, गाङ्ग + ग + क] गाङ्ग ।

गाङ्गेयक-वत्सल ।

गङ्ग (धु० क० कृ०) [गाङ्ग + क्त] १ दुबकी लगावा
हुआ, बीता लगावा हुआ, स्थान किया हुआ, गह्वर

बुरा हुआ २ बार २ दुबकी लगावा हुआ, बाजित,
सघन या घना लगा हुआ-तपस्विनाहो तमसां प्राप
नदी नुरगवेध-रघु० ११७२ ३ अत्यन्त बुरा हुआ,
कम कर लीचा हुआ, पक्का बुरा हुआ, कड़ा हुआ
गाङ्गाङ्गैर्बहुभिः-रघु० १६१०, --गाङ्गाङ्गिज्ज
--अवध ३६ घट कर छाती से लगाया-वीर० ६
४ सघन, साह ५ गह्वरा दुस्तर ६ कलहान्, प्रचण्ड
अत्यधिक, तीव्र-गाङ्गाङ्गोत्कलितकुक्षितङ्गाङ्गैस्ताम्य-
नीति-मा० १११५ मेघ० ८३, प्राणमाहङ्गम्याम्
-भृगुार० १२, अमर ३२, गाङ्गत्वेन तप्तम्-वेध०
१००-इम् (अव्य०) व्यामपूर्वक बार में अत्य-
धिकता के साथ, अतएव प्रचण्डता में, अत्यपूर्वक
सम० भृष्टि (वि०) अथ मुट्ठी वाला, लोभपु
कन्म, (वि०) तलवार ।

गङ्गपत्त (वि०) (स्त्री० ती) [गङ्गपति-अण]
१ किसी दल के नेता से संबध रखने वाला २ गङ्गेय
से संबध रखने वाला ।

गङ्गपत्य [गङ्गपति-अच्] गङ्गेय की पूजा करने वाला
--स्वम् १ गङ्गेय की पूजा २ किसी दल का मेलुत्सव
बीचरात, मेल्स ।

गङ्गपत्य [गङ्गपत्या सम्भू-यञ्] गङ्गेय का सम्भू ।

गङ्गेय [गङ्गेय + अच्] गङ्गेय की पूजा करने वाला ।

गङ्गेय (वि०) अ-अच् [गङ्गाङ्गेयस्य सङ्गा-अ पूर्वपद-
दीर्घो चिकार्येण] अर्जुन का वान (यह वान वृक्ष में
बन कर दिया, वृक्ष में अग्नि का और अग्नि में
अर्जुन की, जबकि आँख बन की जगहों में उसने
अग्नि की बहावता की) गङ्गेयक अत्यन्त हस्तात्-अम०
११८२ २ वन्य । सप्त०-अव्यञ् (धु०) अर्जुन
का विशेषण-वेध० ४८ ।

गङ्गेयिन् (धु०) [गङ्गेय + इनि] अर्जुन का विशेषण
तृतीय पाठव राजकुमार-वेधी० ४ ।

गङ्गातलिक (वि०) (स्त्री०-की) [गङ्गात + ठक्]
जाने जाने के कारण उत्पन्न ।

गङ्गातलिक (वि०) (स्त्री०-की) [गङ्गातल + ठक्]
अधानुकारक से अथवा पुरानी लकीर का कफरी बनने
से उत्पन्न ।

गागु [गै-गुन] १ सीप २ गाने वाला ३ बचर्च
४ कायल ५ योग ।

गागु (धु०) (स्त्री०-की) १ गवेदा २ गवय ।

गाङ्ग [गै-गन् गाङ्गुरिहा अण] १ गरीर, अपातित-
२ गाङ्ग व्यासत गाङ्गलक्ष्य श० २१४ अथवा
लघुवाचि यदन ३१३ २ गरीर का जप वा
अवयव-गुणपरित्यागान न त गाङ्गाधराकारगर्हन्ति
श० ३१८८, अम० ३१२०९, ५१२०९ ३ हाथी के
अन्ये पैर का ऊपरी भाग । तम० अत्यन्तकी

उद्यत,—आवरणम् ढाक,—उत्साहम् सुगन्धित पदार्थों से शरीर को साफ करना,—कर्म (वि०) शरीर को कुछ सा दुर्बल बनाने वाला कार्यही लीला,—घट्टि दुबला पतला शरीर—रघु० १८१—क्षुब्ध रोगते, बाक,—मृता दुबला-पतला और सुकुमार शरीर इकट्ठा करने,—सकोविन् (पु०) हाउ बहा सप्री (उद्यमते या छलांग लगाते समय यह अपने शरीर को निकोड लेता है इसीलिए यह नाम पड़ा) —संस्पर्श छोटा पक्षी, गोनाबोर ।

गाय [गै + गन्] गीत, भजन ।

गायक,—विक्कः [गै + वक्न्, गाय + ठन्] 1 सगोत्रबला गवैया 2 पुराणी अथवा धार्मिक काव्यों का लय से साथ गायन करने वाला ।

गाथा [गाय + टाप्] 1 छन्द 2 धार्मिक श्लोक या छन्द जो वेदों से संबंध न रखता हो 3 प्लाक गीत 4 एक प्राकृत बोली । सम० आर प्राकृत काव्यकार ।

गाथिका [गाथा + कन् + टाप् इत्यम्] गीत शब्दक —वाङ्म० ११५५ ।

गाथ् (धा० आ०—गाथते, गाथित) 1 लड़ा हाना ठहरना, रहना 2 कृष करना गोता लगाना दुबकी लगाना—गाथिताने नभो भूप भट्टि० २२१२ ८१३ लोचना, तलाश करना पुष्पनाथ करना 4 सकलित करना, गूँथना या बांधे में गिराना ।

गाथ (वि०) [गाथ् + वञ्] तरणीय जो बहुत उठगा न हो, उबला,—सरित कुबन्तो गाथा पयश्चापशानकरं यान्—रघु० ४१२४, तु० अगाथ, वञ् 1 उबली या छिछली जगह, घाट 2 म्यान, जगह 3 लालमा, कलितका 4 पेदी ।

गाथि,—गाथिन् (पु०) [गाथ् + इन् गाथ + इति] विद्या-मित्र के पिता का नाम (बहु इन् का अवतार तथा राजा कीसाम्ब के पुत्र के रूप में उत्पन्न माना जाता है) । —का,—मन्त्रक,—पुनः विद्यामित्र का विशेषण, मन्त्रक—पुरम् कान्यकुब्ज (वर्तमान कन्नौज) का विशेषण ।

गाथेयः [गाथि + ठक्] विद्यामित्र की उपाधि ।

गाथय [गै + वृट्] गीत भजन गीत ।

गाथी [गन्धी + वञ् + होय] बैलगाड़ी ।

गाथिनी [गो + दा + गिति पुन०] 1 गगा का विशेषण 2 काशी की एक गजकुमारों स्वयंस्क की पत्नी तथा अक्षर की माता । रम० सुत 1 वीथ्य 2 कालिकेय तथा 3 अक्षर का विशेषण ।

गाथर्व (वि०) (गो०—वै०) [गन्धर्व + वञ्] गन्धर्वों से संबंध रखनेवाला,—वै० 1 गायक, दिव्य गवैया 2 षाठ प्रकार के विद्याहोमों में एक—गाथर्व समवा-मित्र—वाङ्म० ११६१, (व्याख्या के लिए दे०

'गन्धर्वविद्या') 3 कामदेव का उपदेश जो मनीष के संबंध रखता है 4 षोडा—वैन् गन्धर्वों की कला अर्थात् गोता-बजावा,—कापि बेला चारुनस्य गाथर्वं कौतु-गतस्य मुञ्च० ३१ सम० चित्त (वि०) चित्तके मन पर गन्धर्व ने अधिकार कर लिया है,—आत्मा सगोत्रमवन, गायनालय ।

गाथर्व (वि०) क [गाथर्व + कन् गाथर्व + ठक्] गवैया ।

गाथार [गन्ध + वञ् गाथ + वृ + वञ्] भारतीय सर-गम क सात प्रधान स्वरों में तीसरा (मगीत के मकेतो में बहुधा 'ग' से प्रकट किया जाता है) 2 मित्र 3 भारत और पार्शिया के बीच का देश, वर्तमान कश्मीर 4 उस देश का नागरिक या सामक ।

गाथारि [गाथ + वृ + इन्] शक्ति का विशेषण, दुर्योधन का मामा ।

गाथारी [गा+आरम्यापत्यम्—इडा] गाथार के राजा सुबल की पुत्री तथा धनराष्ट्र की रानी (गाथारी के १०० पुत्र—एक दुर्योधन तथा ९९ उसके भाई—हूए । उसके एते पुत्रराष्ट्र भय से इमलिए वह सदैव अपनी आँखों पर पट्टी बांधे रखती थी (सम्भव अपने आप के अपने गर्म की ध्वनि में लाने के लिए), जब कौन सबके सब घर गया तो गाथारी और धनराष्ट्र अपने भतीजे युधिष्ठिर के भाव रहे) ।

गाथार्ये [गाथार्ये अपत्यम्—ठक्] दुर्योधन का विशेषण । गान्धिक [गन्ध + ठक्] 1 मुगधिन इथा (इनर नेल फुलेल आदि) का विशेषण तथा 2 निर्णायक कारनिज कम मुगधिन इथ्य (इनर नेल फुलेल आदि) —पञ्चाना गान्धिक पथ्य किमयी काव्यनार्दिक—गन्ध० ११२३ ।

गाथिन् (वि०) [गन्ध + गिति] (केवल समय के अन्त में प्रयुक्त) 1 जाने वाला घूमन वाला, और करन वाला—वेदगामी—माथवि, • सुमन्तामी—रघु० २१३० और की बाल चलने वाला—कुह्य—पञ्च० २१०, अलस अमर ५९ 2 सवाणी करने वाला—द्विरव—रघु० ४१४ 3 जाने वाला, पहुँचनेवाला, लग्न करने वाला संबंध रखन वाला—नन् भव्यीगामी दाथ—वा० ४ द्वितीयगामी न हि शब्द एव न—रघु० २१९९ 4 नैम्य करने वाला, पहुँचने वाला, घटने वाला—विचकटगामी धामं, कर्तुमायि किया—अलय 5 सयक्त सद्व्यवर्तमानिनी माथवि० ५ 6 देनेवाला सौपने वाला—वा० १, दाथ० २११९५ ।

गाथीयन् [गन्धोर + ध्यडा] 1 गहराई, बाह्य (बल वा ध्वनि आदि की) 2 गहराई, अगाधता (बर्ष का वर्णन आदि की)—मनुह हव गाथीयै—रामा०, वि० ११५५, रघु० ३३२२ ।

गाथ [गै + वञ्] गीत, भजन, गीत—वाङ्म० १११२२ ।

गायक [नै + भृज्] गवैया, मयीलेला - न नटा न बिना
न गायका - मृ० ३।२७।

गायक, भृज् [गायत्री + भृज्] गीत सुक्त ।

गायत्री [मयन्त गायत्री - गायन् + वा क + ङीप्] १ + ३
गाथाओं का एक वैदिक छन्द - गायत्री छन्दसामयम्
- भग० १०।३२ २ मध्या प्रात और मायम, क
सम्प्रत्यये का ह्रास्व व द्वारा बोला जान वाला एक
मन्त्र इसके अर्थ में बहुत से पापों का प्रत्यर्पण
होता है वर पत्र पत्र है तस्मिन्नुक्तेषु सर्वा दक्षय
वीमिहि विद्या शान प्रव दवाय - कृ० ६७।१०
यस गायत्री छन्द मन्त्रित नया भवत - कथोरन
सूक्त

गायत्रिण् [नै + भृज्] जी। [गायत्रि र्ति वट सूक्त]
का गायक बिनाय कर सामवेद के मन्त्रों का पठन
करने वाला।

गायत्रि (स्त्री० - जी) [नै] गुरु मन्त्रों का - गंधर्वगोप
रागमन्त्रोक्तान् नै १२० अर्थ २७३ धन १
- मय १ गणना २ गायत्रीविद्या में गुरु मन्त्रों
विकार करने वाला।

गायत्रि (वि०) (स्त्री० जी) गंधर्वगोप मय १ गणना
को लक्षण उक्त का मन्त्र २ गंधर्वगोप मय २
में लक्षण रखने वाला - इ इम १ भा २४ १
३ २ मन्त्रों के बिना को नम २४ का मन्त्र गुरुमन्त्र
गायत्रिण् कृ० १३ २२३ द्वारा यद्विद्वान् ५-५
४ बोला।

गायत्रिक [गायत्रि + ठक्] जादू मन्त्र करने वाला २
गायत्रिक गंधर्वगोप या गंधर्वगोप अर्थों पर के
विकार।

गायत्रित (वि०) (स्त्री० जी) गन्धमान ५ १ २ अर्थ
१ गन्ध की आकृति का बना हुआ २ मय का
भारि, गन्धवर्धित ३ ध १ ३१ मय १

गायत्रि (वि०) (स्त्री० जी) गन्धमान ५ १ २ अर्थ
में प्राप्त या मय में मय १ मय १

गायत्रिण् [नै] गंधर्वगोप मय १ ३

गायत्री (वि०) (स्त्री० जी) गायत्रि मय १ ३
उत्पन्न अर्थ १ गायत्रि मय १ ३ अर्थ
२ गायत्रि मय १ ३ अर्थ १ ३ अर्थ १ ३

गायत्रि (वि०) (स्त्री० जी) [नै] मय - जण ५ वा]
गायत्रिक (स्त्री० - जी) (वि०) १ गंधर्वगोप मय १
वयक २ गंधर्वगोप मय १ मय १ ३।

गायत्रिण् - गंधर्वगोप मय १ मय १ ३। गंधर्वगोप
मय १ का मय १।

गायत्रिण् [गंधर्वगोप मय १] गंधर्वगोप का पद व प्रतिष्ठा।

गायत्रिण् [गंधर्वगोप मय १] गंधर्वगोप का पद व प्रतिष्ठा।

के द्वारा मय १ का पद व प्रतिष्ठा।
मय १ में से एक पद अर्थ १ मय १ का पद
है नया मय १ का मय १ मय १ है इम १ मय १
अ-भाषान किया जाता है मय १ मय १
२ वर मय १ मय १ मय १ मय १ मय १
परिहार का प्रमाण गंधर्वगोप का पद और प्रतिष्ठा

गायत्रिण् [वि०] (स्त्री० जी) [गंधर्वगोप मय १]
मय १ का पद व प्रतिष्ठा। मय १ मय १
अनुष्ठान गंधर्वगोप का पद व प्रतिष्ठा। मय १

गायत्रिण् [वि०] (स्त्री० जी) [गंधर्वगोप मय १]
अर्थ १ मय १ मय १ मय १ मय १ मय १
अर्थ १ मय १ मय १ मय १ मय १ मय १

गायत्रिण् [वि०] (स्त्री० जी) [गंधर्वगोप मय १]
मय १ मय १ मय १ मय १ मय १ मय १
मय १ मय १ मय १ मय १ मय १ मय १

गायत्रि १ मय १ मय १ मय १ मय १ मय १
मय १ मय १ मय १ मय १ मय १ मय १
मय १ मय १ मय १ मय १ मय १ मय १

गायत्रि मय १ मय १ मय १ मय १ मय १
मय १ मय १ मय १ मय १ मय १ मय १
मय १ मय १ मय १ मय १ मय १ मय १

गायत्रि [वि०] (स्त्री० जी) [गंधर्वगोप मय १]
मय १ मय १ मय १ मय १ मय १ मय १
मय १ मय १ मय १ मय १ मय १ मय १

गायत्रिण् [वि०] (स्त्री० जी) [गंधर्वगोप मय १]
मय १ मय १ मय १ मय १ मय १ मय १
मय १ मय १ मय १ मय १ मय १ मय १

गायत्रि १ मय १ मय १ मय १ मय १ मय १
मय १ मय १ मय १ मय १ मय १ मय १
मय १ मय १ मय १ मय १ मय १ मय १

गायत्रिण् [वि०] (स्त्री० जी) [गंधर्वगोप मय १]
मय १ मय १ मय १ मय १ मय १ मय १
मय १ मय १ मय १ मय १ मय १ मय १

गायत्रि १ मय १ मय १ मय १ मय १ मय १
मय १ मय १ मय १ मय १ मय १ मय १
मय १ मय १ मय १ मय १ मय १ मय १

गायत्रिण् [वि०] (स्त्री० जी) [गंधर्वगोप मय १]
मय १ मय १ मय १ मय १ मय १ मय १
मय १ मय १ मय १ मय १ मय १ मय १

गायत्रि १ मय १ मय १ मय १ मय १ मय १
मय १ मय १ मय १ मय १ मय १ मय १
मय १ मय १ मय १ मय १ मय १ मय १

गायत्रिण् [वि०] (स्त्री० जी) [गंधर्वगोप मय १]
मय १ मय १ मय १ मय १ मय १ मय १
मय १ मय १ मय १ मय १ मय १ मय १

होमिनी की स्थापन स्थितः पुष्पिणा इव मानवः—**हु०**

१।१. ७।४०, उप—, वृत्ता, प्रविष्ट होता, वि—

१ गीता स्थापना, हुक्की स्थापना, स्नान करना

(दीक्षा) स व्यापृत विगाडमन्त्र—**रघु०** १।१।१

२. प्रविष्ट होता पैरना, व्याप्त होता (आत्म० भी)

—विषमोर्ध्व विगाह्यते नय कुलदीर्घ पयसाविधाधाय

—**कि०** २।३, **रघु०** १।३।१ ३ आन्वोमित करना

विजृम्भ करना—विगाह्यमाना सरस्वतीमि—**रघु०**

१।३।०, **सम्**—, वृत्ता, अन्तर जाना पैरना अन्त

मार्हिष्ठ चाम्बरम् **सट्टि०** १।५।११।

गाह [गाह् + घञ्] १ हुक्की स्थापना गोता स्थापना

स्नान करना २ गहराई अन्वयन प्रवेश।

गह्वन् [गाह् + ह्युट्] हुक्की स्थापना गोता स्थापना,

स्नान करना—**जाति०**।

गाह्ति (वि०) [गाह् + क्त] १ स्नान किया हुआ

गोता स्थापना २ पैरना हुआ, वृत्ता हुआ दे० गाह्।

गिन्धुक् [= गेन्धुक् पत्र०] १ गैर २ एक वृक्ष का नाम

दे गेन्धुक्।

गिर (स्त्री०) [गृ + क्तिप्] (कर्म०, ए० व०—गी

करण० हि० व०—गीर्माय जाति०) १ माधन, गन्ध

बाधा—बन्धव्यवस्थिते तस्मिन् समर्थ गिरमाधम—**हु०**

२।५।३, बन्धनीनां सुतयैव गिरा कुलमाधिष्यन् श०

१, प्रवृत्तिना कम् माधुरा गिर—**कि०** १।२।१,

सि० २।१५ पाठ० १।३।१ २ मरस्वती का आवाहन,

स्तुति, गीत ३ विद्या और बाष्प की देवी मरस्वती।

सम० देवी (गीर्देवी) बाष्प की देवी मरस्वती,

—वति (गी वति, गीर्वति, गीर्वति) १. देव-

ताको के गण बृहस्पति २ विद्यायुक्त पुत्र, रत्न

(गीरत्न) बृहस्पति, ज्ञा (ज्ञा) य (गीर्वाण) देव

देवता—परिचलित गीर्वाणवेनोद्गर—**भाग्य०** १।६३, ८४।

गिरा [गिर + क्तिप् + टाप्] बाष्प की स्थापना, माधन,

माधन।

गिरि (वि०) [गृ + इ क्तिप्] पर्वत, आदर्शनीय, पूज-

नीय, —रि १ पहाड़, पर्वत, उत्थापन पर्वत

अन्वये मूढ गिरया न पन्ति किम्—**भृगुसार०** ११

२ प्रवायेऽपि निष्कम्प गिरय श० ३ विपन्न

बट्टान ३ आत्म का रोग ४ सम्पादितों की सम्मान-

पूषक उपाधि—उदा० आत्मगिरि ५ (गज० में)

आठ की सख्या ६ गैर (जिससे बन्धे संकोते हैं),

—रि (स्त्री०) १ निष्कम्पा २ चूहा, मूसा (इस

अर्थ में गिरी की लिका जाता है)। सम०—**ह्यन्**

१ अर्धा पहाड़ २ मिद का विशेषण ३ हिमालय

पहाड़, ईश, १ हिमालय पर्वत का विशेषण २ मिद

का विशेषण—सुता गिरीसप्रतिष्ठास्तमानकान्—**हु०**

५।३,—कण्व पहाड़ी कण्व,—कण्व इन्द्र का

पुत्र,—कण्व, —कण्व कण्व पुत्र की वाति—**कण्व**

पुत्रा कण्व—**कण्विका** पुत्री, —कण्व एक बाल से

अन्धा या एक आँख वाला व्यक्ति, —कण्वन् पहाड़ी

मिच्छुक्, —कण्व पहाड़ की चोटी, —कण्व एक पत्नी का

नाम, गुह गैर—**गुहा** पहाड़ की गुफा, —**खर** (वि०)

पहाड़ पर ब्रम्ह बाबा गिरिधर इव नाम प्राचमार

विषमि श० ३।५ (४) बार, —**ख** (वि०)

पहाड़ पर उत्पन्न (अन्) १ अन्नक २ मेक ३ गुग्गुलु

४ किन्नाभोज ५ मोहा (खा) १ (हिमालय की

पुत्री) २ गैरी ३ पहाड़ा कन्या ३ मलिका कन्या

४ गंगा का विशेषण सम०—**अन्ध** सुत

१ अन्धेय का विशेषण २ गणेश का विशेषण, बलि

गैर का विशेषण अन्ध अन्ध, आन्ध्र पर्वतमाका,

खर इव का खर, खन् पहाड़ी कन्या, पहाड़

पर विद्यायुक्त कुम् ३ गुरी गिरिधरी का समाधिस्थ

वसे पुत्रम् सम० ७।३० (३) डारन् पहाड़ी भाषे,

बाहु मेक अन्ध इव का खर, —**अन्ध** पहाड़ी

दक्षिणाध मे दक्षिणाम एक जिला, —**गरी** (गरी)

पहाड़ की छाया चम्पा या गरी, **गड** (गड)

(वि०), पहाड़ों से गिरा हुआ मलिकरी १ गार्वती

२ गगानदी ३ गिरिया (पहाड़ से निकलकर बहने

वाला) ४ अन्धगिरिन्दिरापुरदुर्गास्थिनी—**गति०**

—**गिच्छ** (कि० ४) पहाड़ का इलाक, गीन्

एक पर्वतार वृक्ष कालका गुग्गुलु छिन्नाबीन

पुष्ट पहाड़ की चोटी प्रजात पहाड़ का इलाक,

—**अन्ध** पहाड़ की समतल भूमि, —**विद्या** पुरा, पाय,

—**गि** (पु०) इन्द्र का विशेषण, —**गु** (वि०) पहाड़

पर उत्पन्न (अन्) १ गंगा का विशेषण

२ गार्वती का विशेषण—**अन्ध** गड्ढा वृक्ष, —**अन्ध**

पहाड़ी एक विशालकाय हाथी, **गु**, **गुग्गुलु** मेक

पहाड़ (पु०) १ अर्धा पहाड़ २ हिमालय का

विशेषण, **गड** हिमालय पहाड़, —**अन्ध** अन्ध मे

विद्यमान (रात्रन्) एक नगर का नाम, —**अन्ध** एक

प्रकार का पत्नी, —**अन्ध** गणेश का विशेषण, —**अन्ध**

पहाड़ की चोटी, —**गु** (अन्) (पु०) विद्या का विषे-

ण, —**गु** (न०) पहाड़ मलिकका, —**सार** १ मोहा

२ तीन ३ अन्ध पहाड़ का विशेषण—**सुता** गीता

पहाड़, —**सुता** गार्वती का विशेषण, —**अन्ध** पहाड़ी नदी।

गिरिग गिरिधर, गिरिधर [गिरि + र्ध + क, गिरि

+ या + क + कन्, गिरि + ग + क्तिप् + कन्] गैर।

गिरिका [गिरि + कन् + टाप्] ऊँछ पहाड़।

गिरिक [गिरी केलापर्वत छेडे—गिरि + गी + क का]

विद्या का विशेषण प्रजापतिपुत्रावो गिरिधरकण्व

—**रघु०** २।४१, गिरिधरकण्वार प्रजापति का पुत्री

—**हु०** २।६०, ३०।

अंकन, कोई भीटा योम या पिठ—मोक्षमुक्तिका
 क्षिति—मुष्क० ५ ३ ऐश्वर्य के कोई का कोवा
 ४ मोती—निर्वात हारमुक्तिकाविषय हिमाम्न रघु०
 ५१७०। तम०—अन्वयण एक प्रकार का मुनी।

गुनी [गु+नी] दे० 'गुदिका'।

गुह [गु+ह] १ खोरा, राव, इस के रस से तैयार किया
 हुआ गुह—गुहपात्रा—विद्या०, गुहोयन वाक्०
 ११६०१, गुहविटीयां हरीतकी मसैयै गुपु०
 २. मेकी, पिच्छ ३ लेकने की नेव ४ गुहमर, वाक्
 ५ हाकी का चिरह्नकार, कवच। तम०—अन्वयण
 गुह का लक्षण,—अन्वयण कवच,—जीवनम् गुह वाक्
 कर उभासे हुए भीट बाधन,—गुहम्,—वाक्,—व
 (गु०) गुहा ईश—वेनु (स्त्री०) गुह देने वाली
 माय, जो प्रतीक रूप से गुह की बना कर शास्त्रियों की
 उपहार में दी जाय,—पिच्छम् गुह के मन्त्र,—अन्व
 यण का वेद,—अन्वयण काव,—अन्वयण—गुह-बाधकी
 कवच,—हरीतकी गुह में रखी हुई हरी, मुरखे
 की हरी।

गुहक [गुह+क] १ पिच्छ, मेकी २ वात ३ गुह से
 तैयार की हुई औषधि।

गुहकम् [गुह+क+क] गुह से तैयार की हुई लारव।

गुहा [गुह+टाप्] १ कपास का पीठा २ हटो, गोली।

गुहाका [गुहयति लकोचयति देहेनिवासीति इति गुह तत्रा-
 कति प्रकाशयति गुह+आ+क+क+टाप्] १ लम्बा
 २ जिहा। तम०—ईश १ अर्जुन का विशेषण
 —मम देहे गुहाकेन यन्मायम् इष्टुमर्हति—मम०
 ११७७ (मौला में और कई स्थानों पर) २ शिव का
 विशेषण।

गुहगुहायनम् [गुहगुह इत्येवमयन यस्य -ब० त०] छाँड़ी
 बादि के कारण कष्ठ से गुहगुह की आवाज निकलना।

गुहरे [गुह+एरक] १ पिच्छ, मेकी २ कीर, टुकड़ा।

गुम् [गु+उम०—गुमयति-ने गुमित] १ गुना करना
 २ उपदेश देना ३ नियमित करना।

गुम् [गु+अच्] १ बर्ष, स्वभाव (गुन वा अक्षर)
 गुम्न, गुम्न २ (क) अच्छी विशेषता, विशिष्टता
 उत्कर्ष, अच्छता—कल्पे से गुना—या० १ रघु०
 ११९, २२, साम्प्रत्ये तस्य को गुम्—यच० ५१२०८,
 (ब) नीरस ३ उपवास, क्षम, भलाई (करम) के
 बाध) गुहा० ११२५ ४ प्रमाण परिमाण फल, गुम्
 परिमाण ५ वागा, बोरी, रस्सी, डोर—वैजयान्त्य
 —कु० ५१८, ५१९, यत वरेण गुम्नहीताति—भावि०
 ११९ (यहाँ 'गुम्' का अर्थ विशिष्टता की है)
 ६. गुम्न की बोरी—गुम्नकृत्ये गुम्नो निबोधिता—कु०
 ५११५, २९, कमकपि कुतश्चिद्गुम्नकृत्यम्—रघु० ९१५४
 ७. वाद्यवर्ष के द्वार वि० ५१५७ ८ स्नायु ९ बोरी,

विशेषण, बर्ष—यम्० ११२२ १० विशेषता, लघ
 पदार्थों का वर्ष वा लक्षण, वैशेषिक के लघ पदार्थों
 में से एक (गुम्न की लम्बा २४ है) ११ प्रकृति का
 लक्षण वा उपादान, समस्त रचित वस्तुओं से लघ
 तीन गुम्नों में से कोई एक (यह है—मरव, रजस् और
 तमस्)—गुम्नविधानाम् कु० २१४ यम० १४५

रघु० ११२७ १२ बोरी, सूत का नामा १३ इन्द्रियबन्ध
 विषय (यह पाँच है—रूप रस गन्ध, स्पर्श और
 लब्ध) १४ भावति गुना (लम्बाओं के बाद लम्बा के
 जल में मगकर प्रायः 'तह' या 'गुना' या 'बार' की
 प्रकट करता है)—आहारो हिमन् स्त्रीणां बुद्धिस्तासां
 वसुपूर्णा वदगुणो व्यवसायस्य कामधन्याश्च स्मृत
 पाण० १८ इसी प्रकार विगुण,—अतगुणो भवति
 सीमाता हो जाता है १५ नीच तरह काचित अल
 (विप० मुष्क) १६ आधिक्य, बहुतायत वृत्तता

१७ विशेषण, वाक्य में अन्वयिण लब्ध १८ इ उ च
 तथा ल के स्थान में ए, ओ अर और जल अन्वया
 व, ए ओ अर और जल स्वर का आदेश
 १९ (अम० शा० में) रस का अन्वयिणगुण मन्त्र के
 अनुसार ये रसस्वादिगुणों बर्मा क्षीरार्थ इत्यादि
 उत्कर्षवैशेष्यस्ते स्वरचक्रस्थानयो गुना काव्य० /

(अम० शा० के प्रणेता ब्रह्मण पठित जगन्नाथ इन्द्रो
 तथा अन्य विद्वान् गुणों को लब्ध और प्रत्य दोनों का
 बर्ष मन्त्रक है तथा प्रत्येक के इस वल प्रकार बर्णनाये
 है। परन्तु धर्मज केवल तीन गुण मन्त्रना है और
 दूसरों के विचारों की समासाचना करने के पश्चात्
 कहता है—माधुर्येण प्रमादगव्यात्कथयाने न पुनर्वच
 —काव्य० ८) २० (आ० और मी० में) शब्द समूह

का अर्थ, बर्ष या गुण माना जाता है—'दा० वैपकरण'
 लम्बाई के बार प्रकार ज्ञान है जति गुण किया
 और इत्य, इन अर्थों का समन्वय के लिए यद्यपि प्रत्य
 का गी, वाक्त्त वल को द्विचक रण्डर देन है
 २१ (राजमोनिनाथ में) कार्य करने के समर्थ
 प्रक्रम सही रीति (चिदमगर्जनाति नियर छ रीतिर्य
 गानाओं के द्वारा व्यवहार में लानाई गई है १ लघि
 शालि मुनह २ विद्वत् पुरु ३ यान बढ़ाई करना
 ४ स्थान या आनन अर्थात् पहाड़ ५ शयन अर्थात्
 शरणस्थल हुंदा ६ ईश या ईश्वर आर्चना विद्वतो
 यामयामन ईशमाधय अमर० दे० पाञ्ज० ११३६६
 यम्० ७११६० शि० २१२९ रघु० ८१२ २२ तीन
 गुम्नों से व्युत्पन्न तीन की लम्बा २३ (आ० व) मन्त्रक
 बोधा २४ आनेविद्य २५ निचले वर्णों का विशिष्ट
 बोधन यम्० ११७४ २६ २६ रमाइया
 २७ नीच का विशेषण २८ परिमाण लक्षण। तम०
 —अन्वयि (वि०) मव प्रकार के गुणों से गुम्न गुण।

गु (गु) स्थित (गु० क० कृ०) [गु (गु) कृ + क्त]
इच्छा गुहा गुहा, बाधा गुहा गुहा गुहा ।

गुच्छ [गुच्छ + क्त] १ बाधना गुच्छना गुच्छो
बाधनाम्—बाधना १११ २ एक स्थान पर रहना
रचना, करना, क्रम पूर्वक रचना ३ संकल्प ४ गल-
गुच्छ, गुच्छ ।

गुच्छना [गुच्छ + क्त + टाप्] १ एक जगह गुच्छना, तथी
करना २ क्रम पूर्वक रचना, रचना करना ३ गुहा
नक्षत्र (क्षेत्र और वर्ष का), अच्छी रचना बाधने
गच्छाई को सम्पन्न करना गुच्छना मत्ता ।

गुह्य (गुहा० जा०— गुह्ये गुह्य, गुह्यं) प्रयत्न करना चेष्टा
करना, ११ (हि०) जा० गु० क० कृ० गुह्य,
१ घाट पहुँचाना मार्ग छिपाना अर्थात् पहुँचाना
२ जाना ।

गुह्यम् [गुह्य + क्त] प्रयत्न, छेद ।

गुह्य (गु० क० ली०) [गु + क्त उन्मत्] १ गु० अ०
—गुह्यम्, उ० अ० गीरठः । १ गौरी बाजिल
(वि० लक्ष्म०) (आल० से भी) टेन चुड़ंगतो गुह्यं
सर्ववम् विचित्रिजे—रघु० ११३४ ३१३५ १२११०२
अनु० ११३ २ प्रसन्न बड़ा लम्बा विस्तृत ३ लंबा
(काल मात्रा या लंबाई में) आरम्भगुह्यं—अनु०
२१५, गुह्यु विवेकध्वंश लक्ष्मणु—नेत्र० ८३४ महत्त्व
पूर्ण, आश्चर्यक, बड़ा—विभवगुह्यं कृत्यं—अ० ४१८
स्वार्थाल्लता गुह्यना प्रणयिक्थं विव्रम० ६१९
५ गुहाध्य, असह्य—कालाविरहगुह्यना साधन—नेत्र०
१६ बड़ा, अत्यधिक, प्रचंड, मोड़ गुह्य प्रह्वं
प्रबन्ध नागमि—रघु० ३१३७, गुह्यं विरहगुह्यम्
—अ० ४१५, अग० ६१२२ ७ अष्टौ आरणीय
८ भारी, गुहाध्य ९ अजीष्ट, शिव १० अहंकारी
चर्चरी, दण्डित ११ (छन्द शास्त्र में) दीर्घमात्रा (या तो
स्वयं दीर्घ, अथवा सयुक्त व्यंजन से पूर्व होने के कारण
दीर्घ) उदा० 'ईर' में ई, तथा 'नस्कर' में त, (यह
छं में श्राव 'न' लिखा जाता है) मातो भी केच्छा-
जिनी केरलो—बाधि),—व पिता—न केवल तद्गु-
ह्येकमात्रकः क्षिणावन्तेकवर्गगुह्योऽपि स—रघु० ३१३१,
४८, ४११, ८१२९ २ कोई भी अष्टौ या आरणीय
गुह्य, गुह्य गुह्य या नवमी, गुह्यं (अ० व०) गुह्य-
वत्त्व गुह्यम्—अ० ४११५, अग० २१५, भावि० २१७,
१८, १९, ४९, बाह्या गुह्यां ह्यविचारणीया—रघु०
१५४५ ३ अध्यापक, शिक्षक गुह्यशिक्षा ४ विशेष-
तया धार्मिकगुह्य, आध्यात्मिक गुह्य भी गुह्यरूपानी
व शीघ्रा प्रतिनयनम्—रघु० ११५७ (परिभाषिक
कर्म के गुह्य बहु हैं जो गायत्री मन्त्र का उपदेश करे
और किसी को वेदाध्यायन करे— स गुह्यं किया
हृत्वा वेदमन्त्रं प्रवक्ष्यति—बाह्य० १३४) ५ स्त्री, भी

प्रधान, अध्यापक शास्त्रक—व्यक्तिमाणां गुह्ये स क्ली
—रघु० ४११० वर्ष और आश्रमों का प्रधान गुह्य-
नृणां गुह्ये निवस्य २१६/ ६ बृहस्पति देवगुह्य
गुह्य नेत्रमहृदये, चोदयामास बामव—कु० २१२९
७ बृहस्पति नक्षत्र—मुक्ताभ्यानुगा विश्वामात्रीमधि
नम श्रियम् शि० २१२ ८ नये सिद्धान्त का
अध्ययना ९ पुण्य नक्षत्र १० कौश और पांडवों के
गुह्य ११ सीमांतकों के एक सप्रदाय का नेता प्रभाकर
(उमर नाम पर प्रभाकर या प्रभाकराय कहलाना
है) अर्थ शिष्य को शिक्षा देने के उपलक्ष्य में
गुह्यशिक्षा—गुह्यशास्त्रमहर्षि पतिये—रघु० ५१७

उत्सव (१५०) अत्यंत सम्मानार्थ (—व) १७-
मात्रा का प्रवा उपमाना कर्म उपदेश पर-
भाराधान शिष्य—अन अष्टौ पुण्य वक्ष्यमवी
६ गुह्यं नपञ्जितो गुह्यन ३१० १५० भावि०
७ ३ तत्त्व १ अध्यापक को शिष्या भार्या २ तत्त्व-
पत्र का शब्द का उत्सव अर्थ गुह्यरत्नों का नाव
अनु० ११३५ तत्त्वस्य तत्त्वित्वं गुह्य-वत्त्वं ४ अनु-
चित लक्ष्य रहने वाला (हिन्दुधर्म शास्त्र के अनुसार
ऐसा व्यक्ति महापातकियों में गिना जाता है) अति-
पातकी गु० अनु० १११०३ २ जो अपनी सितेनी
माता के साथ व्रजिचार करता है दक्षिणा आध्या-
त्मिक गुह्य को ही जाने वाली दक्षिणा—रघु० ५११,
—देवता पुण्य नक्षत्र काव्य (वि०) वचने में वचन
अनु० १ पुण्यनक्षत्र २ गुह्य, —वर्ष एक प्रकार
की होलक या नवगुह्य गुह्य-पुनराव आश्विन
सापेक्ष महत्त्व वा मूल्य—वसिष्ठ, —वसिष्ठ (पु०)
गुह्य के घर रह कर अपने बाला बहुचारी, —वात्सर
बृहस्पति बार, वृत्ति (स्त्री०) बहुचारी का अपने
गुह्य के प्रति आचरण ।

गुह्य (वि०) (स्त्री०—की) [गुह्य + क्त] १ अग भारी
२ (छन्द० में) दीर्घ ।

गु (गु) धरः [गुह्य + क्त + लिट् ; अन्-गुह्यो] १ गुह्यराज
का प्रदेश या पिता सेना मार्ग परिवचनकारिज
गुह्यराजा या सत्तार्ष विजितकराज सोममार्ग विनायक
—विष्णुसाम० १८१७ ।

गुह्यिणी, गुह्यी [गुह्य + इति + क्त + गुह्य + क्त] नवचकी
रत्न—उदा० गुह्यिणी नानुगच्छति न स्थिति रत्न-
स्थानम् ।

गुह्य [= गुह्य, इत्यं क] गुह्य गु० गुह्य ।

गुह्यच्छ, गुह्यच्छ [- गुह्यच्छ १०० गुह्य विवर् १२५ स
गुह्य + उन्मत्] गुह्य, गुह्य १०० गुह्य ।

गुह्य [गुह्य + क्त] अकास्य उकार] टक्षना—आगुह्य-
कीर्तिपदार्थगुह्यं कु० ७१५५ गुह्यारविना
का० १० ।

गुल्म, लम्बः गुह-मक इत्येतत् तारा० ॥ गुला का
मुह मुरमुह वन भाही मनु० ११४४ ७१११
१२१२८ पात्र० २१२१२ २ सिपाहिदा का दल सैन्य
दल निमेष ४१ पत्राणि २७ अक्षराभाही ९ रचाराही
ओर ९ गजाराही हात है ३ बुगं ४ तिल्ली ५ तिल्ला
का बट जाना ६ गव को पुलिस चौकी ७ घाट ।

गुलिम्ब (वि०) (स्त्री० ली०) गुल्म - इनि। इरमु। ता
साइम्ब-मे उपनेवादा बहा दुई नि-सरा बाला नि ली
के रोग से मृत ।

गुल्मी (गुल्म - अक्ष - इनि) नब ।

गु (गु) बाक गु अक्ष गुपार का रह ।

गुह (स्त्री० उभ० गुहो न) इकता छिपाना र २
डाकना गुल्म रचना गुह ब गुहो न गुणन प्रकटा
कराति मने ० १३ गहकम इरमु इनि मर
३१०० रघ० १६१०० आट्ट ० ११० ० उप
आनगन करना नर गुहो न गुहो न १५० १००
१८१३० आट्ट ० १०१२२ शि० ११३० मि । निगम
गुल्म रचना ।

गुह (गुह - क) १ कातिकय का विगण गुह इका प्राप्ति
हताशक्ति का० १ कु० १११४ २ घाट ३ निघाद
या काशाल का नाम आ भुगवैर का राजा तथा
भगवान राम का मित्र था ।

गुहा (गुह टाप) १ गका कदग छिपन का स्थान
-गुहा निबद्ध परिभाषा दोष स्थ० ० २ ० १
बस्य नब्ब निहित गुहायाम मरु० २ छिपाना
इकता ३ गका कि ४ गुह ५ मय० आहित
(वि०) इदय में रक्त गुहा करम इरमु मय
(वि०) गुहा रैम मरु क बोड मरु का मरु मरु
का शब्द १ गुहा २ टार ३ रमा मा ।

गुलिम्ब (गुह - इनि) वन भाग

गुहेर (गुह - गक) १ अमिन वर पक्ष २ रगर

गुह (स० क०) गुह वष १ छिपन क २

गोपनीय गुल्म रचना क याय निरु गह ब गहनि

- मनु० ११३० २ गुह ताहान्दका मरुका

(मका निवृत्त) ३ रमपण भग० १०६० गुह

१ पावड २ कडका भाग १ मरु रमपण मने

कैवलय गुहायाम भाग ११० ० १ मनु०

१०११३ २ मरु इरिद गुल्म या रचा को बनने

निघ। मय० गुह मरु र विगण दोषक

गुह निघम मरु भावितय १ गुहवण

२ मरु इरिद हा वर मय मरु र १ विगण

गुहक मरु गाताय क मुह यरु ० १ मरु रम रैमा

गह भवदेता की भगा जा कुह र मरु र मरु र

कोय क मरु र गुहकम मयाय मय० ०

मनु० १०१३० ।

गु (स्त्री०) [ग] क टिलाप । कडा करक २ मरु
किडा ।

गुह (पू० क० क०) गुह - क १ छिपाना गुह गुल्म

गुह गुहा २ गुहा गुहा मय० अक्ष कडका

अक्ष मय अक्षम मय मरु गुहायाम बनना

ह मिडा न इम प्रका मयाधान किया है भवद

वणागमाद हय मिह वरुविपयान गहायाम इरु

विरु वरुविपयान गहायाम रमपण उपयय अ

हिन्दुयम शास्त्रो र विगण १ रकार के पत्रो में म

मरु मरु रम रचा का गुह गुह मरु रम रम रम रम

गुह मरु र गुहा रम रम रम रम अक्षम है मरु

प्रमपण मरु रम रम रम रम मरु रम रम रम

१३ मरु रम रम रम रम मरु रम रम रम

मरु रम रम रम रम मरु रम रम रम

मरु रम रम रम रम मरु रम रम रम

मरु रम रम रम रम मरु रम रम रम

मरु रम रम रम रम मरु रम रम रम

मरु रम रम रम रम मरु रम रम रम

मरु रम रम रम रम मरु रम रम रम

मरु रम रम रम रम मरु रम रम रम

मरु रम रम रम रम मरु रम रम रम

मरु रम रम रम रम मरु रम रम रम

मरु रम रम रम रम मरु रम रम रम

मरु रम रम रम रम मरु रम रम रम

मरु रम रम रम रम मरु रम रम रम

मरु रम रम रम रम मरु रम रम रम

मरु रम रम रम रम मरु रम रम रम

मरु रम रम रम रम मरु रम रम रम

मरु रम रम रम रम मरु रम रम रम

मरु रम रम रम रम मरु रम रम रम

मरु रम रम रम रम मरु रम रम रम

मरु रम रम रम रम मरु रम रम रम

मरु रम रम रम रम मरु रम रम रम

मरु रम रम रम रम मरु रम रम रम

मरु रम रम रम रम मरु रम रम रम

मरु रम रम रम रम मरु रम रम रम

मरु रम रम रम रम मरु रम रम रम

मरु रम रम रम रम मरु रम रम रम

मरु रम रम रम रम मरु रम रम रम

मरु रम रम रम रम मरु रम रम रम

मरु रम रम रम रम मरु रम रम रम

मरु रम रम रम रम मरु रम रम रम

मरु रम रम रम रम मरु रम रम रम

मरु रम रम रम रम मरु रम रम रम

मरु रम रम रम रम मरु रम रम रम

मरु रम रम रम रम मरु रम रम रम

मरु रम रम रम रम मरु रम रम रम

मरु रम रम रम रम मरु रम रम रम

मरु रम रम रम रम मरु रम रम रम

मरु रम रम रम रम मरु रम रम रम

मरु रम रम रम रम मरु रम रम रम

मरु रम रम रम रम मरु रम रम रम

मरु रम रम रम रम मरु रम रम रम

पुष्य० तारा०] १ एक बार ब्याई हुई गी, पहलीटी
गाय (मङ्गलसूना गी) -आपीनभारोहहनप्रयासागुण
-रच० २।१८, स्त्री नाशस्मृकृत पठनी दलनवनस्या
इव गृष्टि सुसुगन्ध करोति मुष्ण० ३ २ (दूसरे
पुष्पों के नामों के साथ जुड़कर) किसी भी पद्म का
(सादा बच्चा, वास्तितार्पणः हस्तिनी का(सादा)बच्चा।

गृह्य [ग्रह + क] १ घर, निवास, आश्रम भवन न गृह
गृहमत्याहुर्महिणी गृहमुच्यते-पञ्च० ६।८१, पद्म वानर
मूर्च्छन सुग्री निर्गृहीकृता० पञ्च० १।३९० २ पत्नी
(उपयुक्त उद्धरण कई बार निदर्शनों के रूप में प्रयुक्त
होता है) ३ गृहस्थ-जीवन ४ मेषादि राशि ५ नाम
या अभिधान हा (पृ० ब० व०) १ घर निवास
हम ना गृहा भूदा० १ रक्त-कापलविग्रह गृहा
गणमार्जुननिर्गृहमिषय ने० २।३६ तत्रागार
वनपरिगृहान्तरणारमदायम् मेघ० ३५ २ तनी
३ घर के निवासी, कुटुम्ब। मम० अक्ष. सराखा,
मोक्षा, मोक्ष या आयताकार जड़की अक्षिपः इस
- ईश्वर १ गृहस्थ २ किसी राशि का स्वामी
- अक्षयि गृहस्थ, सर्व धरेल मामला धरेल जाने
-गृहाधीनार्थिभिर्या-मनु० २।६३, अश्वत्थ
एक प्रकार की काँची, -अश्वत्थजी देखनी अश्वत्थ
(पृ०) तिल, (एक आयताकार पत्थर जिस
पर मसाले पीने डाले हैं, आराम गृहादिका,
आश्रम गृहस्था का आश्रम, ब्राह्मण के धार्मिक
जीवन की दूसरी अवस्था दे० आश्रम उत्थात
कोई धरेल बाधा, - उपकरणध धरेल बरतन, गृहस्थ
के उपयोग की सामग्री, - कच्छप - गृहाश्रम दे०
कपोत, -तक पालन कर्तार करणम् १ धरेल
मामला २ घर की इमारत अर्थम् (न०) गृहस्थ
के लिए विहित कर्म, शास्त्र वाकर धरेल तोकर
गन्धुस्वराभुहुरयो हरिणक्षणाता येनाक्षिप्यन् सतत
गृहकर्मदासा-मर्त० १।१, कल्लु, धरेल लगवा भाई
भाई की लड़ाई, -कारक घर बनाने वाला, राज
योग १।१४९, -कुक्कुट पालन भुग, कार्यम् घर
का कामकाज मनु० ५।१५० धृत्वी साध लने
हुए दो कमरों का घर जिनमें से एक का मुख पूर्व
और दूसरे का पश्चिम का ओर हो, छिन्न १ घर
की गुप्त बातें या कमजोरियाँ २ कीटविक्रम जनन,
घ, -जात घर में ही पैदा हुआ नौकर, वास्तिका
बोला, कपटवेष्ट, आनिम् (गृहेजानिन् यी) घर
में ही नीलमारजा, अनुभवभूय, अक्ष, धूर्त, लठी
घर के सामने बना बच्चरा, - दात धरेल सेवक
- देवता घर की भविष्यवाणी देवता, (व० व०)
कुल देवताओं का समूह, -देवता घरकी देवता-यासा
बलि सपदि मद्गृहेहलीनाम मुष्ण० १।९, नक्ष.

मम हवा, नाशनः श्रमलो कन्वर, - नील चिडिया,
पारोदा, -वर्ति १ गृहस्थ ब्रह्मचर्य आश्रम के पश्चात्
विवाहित जीवन बिताने वाला घर का मालिक
२ यजमान ३ गृहस्थ के उपयुक्त कर्म अर्थात् आतिथ्य
आदि - पाल १ घर का मरसक २ घर का कुत्ता,
घोसक घर की जगह, घर भूभाग जिस पर घर
की इमारत बनी हुई है और जो घर का घेरती है,
प्रवेश नये घर में विधिपूर्वक प्रवेश करना, - बच्च
पालन नेवला -बलि ईश्वरदेव यज्ञ में दी जाने वाली
आहुति, अर्वागष्ट अत्र सब जीवजन्तुओं की वितरण
करना, मनु० ३ २६५ 'भृक्ष' (पृ०) १ कौवा
२ चिडिया नीलारम्यमर्हन्नुजामाकुलशामयैत्या
-मध००३ देवता घर का देवता जिसे आहुति दी जाती
है - बच्च १ घर में निर्वाचित व्यक्ति प्रवासी २ घर
का नाम करना ३ घर में संघ लगाना ४ अक्षयलता
किसी हकान या घर की बर्बादी या नष्ट, -धृति
(स्त्री०) बाल्य स्थान वह जमीन जिस पर कोई
मकान बना हो, धेविम् (वि०) १ घर के कामों
में नक्काश करने वाला २ घर में कलह कराने
वाला मणि दीपक वास्तिका धर्मदीप, मृग
कुत्ता मेघ १ गृहस्थ २ यजमान -धेविम् (पृ०)
गृहस्थ-गृहधारीयधने मण्यकम् -मर्तिका० प्रजाय गृह-
मधिनान्-रच० १।३ दे० गृहपति - वक्ष्य उत्तर
आदि के अनुसार पर सदा कहाराने का डडा या कोई
और उपकरण-यज्ञ स्थपनाकाधीनपीगवर्गनिमित्त-कु०
६।४१, वास्तिका बाढी घर से मिली हुई बगीची
- बिना घर का स्वयं। कुल पालन नाता, आमाद
के लिए पाला हुआ नाता अवय १३ संवेक
व्यावसायिक मर्यादनिर्माता स्वपति - स्व गृही दूसरे
आश्रम में प्रवेश करके रहने वाला नकटा छाहिना-
मीना प्रत्यवायेगृहस्थना उत्तर० १।९ दे० गृहपति
और मनु० ३।३८ १।२० आश्रम गृहस्थ का जीवन
दे० गृहाश्रम सर्व गृहस्थ के कर्तव्य।

गृहयाम्य [गृह + यिच् + आत्य] १ गृहस्थ, घरबार वाला
(तारा० के अनुसार गन्धकल्पभूम में दिया गया
'गृहयाम्य' रूप गृह नहीं है)।

गृहयाम् (वि०) [गृह + यिच् + आत्] पकड़ने वाला
ग्रहण करने वाला।

गृ० की [गृह + इति + ङीप्] गृहस्वामिनी पत्नी गृहपत्नी
(घर का कार्यभार सम्भालने वाली स्त्री) -अन गृह
गृहमियाहुर्महिणी गृहमुच्यते गृह गृहिणीहीन
कान्तारादतिरिक्ताने पञ्च० ४।८११ सध० पञ्च
गृहस्वामिनी का पद या प्रतिष्ठा अश्वत्थ गृहिणीपद
यवनया वाला कुलस्थावय छ० ६।१३ स्थिता
गृहिणीपदे १८।

मैरिष (वि०) (स्त्री०-की) [मिरि, टङ्] पहाड़ पर ।

उत्पत्ति.—क-कम् गत, कम् लाता ।

मैरिष [मिरि+इक] शिवाजीत ।

मो (पुं०, स्त्री०) कर्तुं मो [गच्छत्यनेन गम् करने हो ताग०] 1 मवेशी गाय (ब० ब०) 2 गी मे उप लब्ध बस्तु—दूध, मांस चमड़ा आदि 3 तारे 4 आवाज 5 हस्त का बज 6 प्रकाश की द्योति 7 शीरा 8 स्वयं 9 बाण, (स्त्री०) 1 गाय युगप गोकपधराधिका बीम् रघु० ११३ धीरिष्य गम् गाव द्यूठ० १०१६ 2 पृथ्वी द्योत गाम यज्ञाय रघु० ११२६ गामानमारा रघु० ५१-६ ११३३ भग० १५१३, मेघ० २० 3 बाजी मध्य रथोद्धारार्थाय गा निगम्य रघु० ५१२ २५९ कि० ४०० 4 बाजी की देवता—मरुक्की 5 माता 6 दिवा 7 जल (ब० ब०), ९ बाण (पुं०) 1 मीठ डील—अमरुतातकिलम्कण मुख स्वर्णिम गौरिहि क-ज- १०, मनु० ६१३२ तु० अरुण 2 गरीर ३ बाण रोमटे 3 इन्द्रि 4 वृषाणि ५ मृग 6 (गच्छि म नी की सख्या 7 चन्द्रमा 8 पाठा 9 मम० कष्टक,

कम् बैला श्राग लड़ा हुआ कम्न जाने के अन्तर्गत स्थान या मरु 2 गाय क मृ 3 गाय क मृ का नाव ठकी 1 गाय का बल 2 मरुवर 3 मृग 4 बालिष्ठ 5 मृगटे के मिर म वृषा का अंग 6 त्रक को दूने 5 दक्षिण में स्थित एक तीर्थस्थान का नाम जिस का विस्तारान अत्रिगोर्ध्वनिर्वाभोरुयम्—१० ११३ 6 एह प्रकार का बाण बिगड़ा किण्टिका येता पक्षी, किल कील 1 हल 2 घात—कुलप 1 गोश्री का लड़ा इष्टिभ्याकलाकुलपनम् १ दृष्ट्य गोवर्धनम्—गीत० ४ माकुल्लर तुलाम्य—म/० 2 गोपाला 3 गोकुल एह गौड (जहाँ हृण क गालन पोषण हुआ) कुलिक (वि०) 1 दलदल म कमी गाय का उद्धार करने में सफल 1 देवे गाम 2 जेगा वक्रदृष्टि कुलम् गाय का गोबर श्रीरम गाय का दूध का नामन दृष्टि मृ पम्त गाय पहलीही मोषणम बैला की जोड़ी मोषण मोषण पशुपाला धर्मि 1 कडे मृ २ वर 2 गोश्र १

मृ पशुओं की पकड़ना दाल आदिभक्त के रूप में गाय को घास का कीर देता या भोजन का वर माय जो गाय को देने के लिए द्रव्य कर देता वर दूतम् 1 बरिष का पानी 2 गाय का बी बन्ध मृ एक प्रकार की बन्धन की लकड़ी वर (वि०) 1 बारागाड 2 बार बार जाने वाला, अथवा जेने वाला बारबार मरने वाला पितृव्यशोकर कु० ५१७३ 3 शेष शक्ति या पराज के अन्तर्गत—अवाकनमनोवरम् रघु० १०१५, इती ।

४५

प्रकार बुद्धि, दृष्टि अथवा आदि 4 पृथ्वी पर बुझने वाला (र०) 1 पशुओं का क्षेत्र बारागाड उपासित पशुधनगान्धोवरान वि० ४१०

2 मरुत विभाग प्राय श्रव 3 इन्द्रका का पराज इन्द्रियो का विषय श्रवणगोवर पिष्ट, (कहीं मृक बाजी म बना का मके नहीं ठहरा) नयन गोवर या दिव्याई देता 4 क्षत्र पराम पशुव हर्षार्थि न गोवरम अर्त० २१६ ५ (४०५०) पकड़ देवान शक्ति प्रभाव नियन्त्रण क काश्य न गोवरान्तर मन्—मन् ११२६ अति नम पनागवनीर्वांस रति रमणबाजगोवरम् मा० १ 6 क्षितिज चयन (नप०) 1 गोवम 2 विष्णु मृग (समस्त नायने का)

मृशाल के अन्तर्गत पशुधनका दशहस्तेन बहान दशहसान समस्त पशु धाम्यधिकान् दशहानदगोवम बाण १ बलक गिर का विमेषण क्षारक स्थाना चरवागा जरा बुझ डील या मीठ बलक गामत्र

क्षारिकक गाम्यनवना अन्तर्गत बलक मृश डील या मीठ तीर्थम गोपाला प्रम 1 गोपाला 2 पशुपाला 3 पशुवर बल क म पशुपाला पशुपाला मृशाल मृशाल 4 दमा प्रकार बालिष्ठ ५ बरिष्ठाना आदि मन् ११२६

4 न 1 प्रमपान वरुद गोवर्धनम् ५ वर ११० दमा मृशाल न ० मदमाकाकु विरिन्तम् गयमदगातकामा मृश १६

५ मयमय ६ वर १ वर ३ वर ९ मरुद 10 मयान दीन 11 क्षुती क्षाना 12 बरिषा ४ मन् 11 जति मेरा ११ १ ३) पहाड कल पशु ३ (वि०) समान १ म मयमय एक ही गान का सबका बाज ५ पहाड बाज का बगनालि कवाकन बगनाला बिष्ट (५) कडा का विमेषण—हाड लाडा गोवर्धनमयमय रघु० २१७३ ५१७३ कु० ५१७३ मयमय स्थितिम्

नम लेकर प्रकारना मय नम म प्रकारना स्वर्णिम मय मेघनागवर्धन गोवर्धनक बलकम्—कु० ६१८ १ ३) 1 गोश्री का मय 2 पशु—बलक हृणाल बा गोशरी नामक नदी बलक 1 बाल काटने की दाँतवा नयाम गोवर्धनमयमय—रघु० २१३३ 2 केजाल मयका ३ मयका की व्याख्या) हृणगादमयमय—उल्ल० १ (गाम०) मे भिन्न प्रकार की व्याख्या है) बरिषम 1 हल 2 फावड़ा कुर्पा,

बाररी दक्षिण देश की एक नदी का नाम,—बुष्ट, १) बुष्ट स्थाना—बुष्ट 1 गो का दूध निकालना 2 गाय का दूध 3 गोको का दहने का समय, गोहमम् 1 गोश्री को दहने का समय 2 गोश्री को गोश्री—बोझी वह बलक विमम दूध बुझा बाय—इक

४५

मोच, —कम्प गीतों का समूह, गवैरी, —बरा पहाड़
—बुच, —बुचः 1. नेहू 2. संतरा, —बुकिः पूर्वी की
बुल, छप्पा का समय (तन्मा समय हो नीचे बंगलों
से बर कीटती है, उनके बगने से बुल के बाहर एकत्र
हो जाते हैं, इसी लिए इस काल का नाम 'बोचुकि'
पड़ा), —बेनुः बुच देने वाली नाव जिसके नीचे बछड़ा
हो, —अः पहाड़, —बन्दी माया सारस (पत्नी), —बर्दः
1. सारस पत्नी 2. एक देश का नाम, —बर्दिकः महा-
बाध्य के कर्ता पतञ्जलि बुमि, —बकः, —बाकः 1 एक
प्रकार का हाथ 2. एक प्रकार का रत्न, —बाचः
1. हाँक 2. भूमिचर 3. ब्याला 4. गीतों का स्वामी,
—बाकः ब्याला, —बिज्जकः मोचुच, —यः ब्याला (एक
बर्तनचर जाति) —बोपवेसस्य विष्णो —अध० १५
2. गीताला का प्रवाल 3. गीत का बजीलक 4 राजा
5. प्ररक्षक, अभिजात्यक, (बी) 1. गाने की पत्नी
—गोरीनीनयनोचरमर्दनचंचलकरमुचमाजी —वीत० ५,
—बन्धकः, —इकः ईकः ब्यालों का भूमिवा, कृष्ण का
विशेषण, —बकः सुपारी का पेड़ 'बकु' (स्त्री०) गाने
की पत्नी 'बकुडी' बोरी, गाने की तबल पत्नी —नाय-
बकुडीकुलचौराय —माया० १, —बकिः 1 योशो का
स्वामी 2. लोह 3. नेता, भूमिवा 4. दूर्य 5. इन्द्र
6. कृष्ण का नाम 7. शिव का नाम 8. बरग का नाम
9. राजा, —बकुः बजीब बाय, —बागली छप्पर को सभा-
सने के लिए उसके नीचे लम्बी टेढ़ी बस्ती, बलमी,
—बाकः 1 ब्याला 2. राजा 3. कृष्ण का विशेषण
'बाजी' गीताला, बोचर, —बालकः 1. ब्याला 2. शिव
का विशेषण, —बाकिङ्ग, —बाली ब्याले की पत्नी,
गोरी, —वीतः बंदन पत्नी का एक प्रकार, —बुछम्
नाय की वृद्ध (अकः) 1. एक प्रकार का बन्दर 2. दो,
चार वा बीस सरी का एक हार, —मुडिक्क शिव के
ईक (नादिवा) का गिर, —बुचः बजान बछड़ा, —बुरम्
1. नवरत्नार 2. मुख्य दरवाजा —कि० ५/५
3. भूमिचर का बजा हुआ तोरणहार, —बुरिक्क नाम का
बोचर, —प्रकाचम् बड़िया नाय का लोह, —प्रचारः
बोचरभूमि, बजुओं का बरागाह —वाज० २/१११,
—अवेकः गीतों का बंगल में लीटने का समय, नाय-
काल का छप्पा समय, —बुन् (पु०) पहाड़, —बजिक
(वि०) डाँक, कुतामाजी, बंजम् 1. मुगोल
2. गीतों का समूह, —बजम्-२० बजुमि, —बजिलिका
कीली नाय, केष्ट बी, —बकः ब्याला, —बजल्ग गी का
नाक, —बालः 1. एक प्रकार का नेटक 2. गी-र-अन्तः-
कुली बलवर्धन व हि गोत्रायुधमालि केरार १/१०
११/१५ 3. नाय का विलोच 4. एक सम्बन्ध का
नाम, —बुचः, —बुचम् एक प्रकार का याद १
—अध० ११/११ (कः) 1. नवरत्नार, बड़ियाल

2. एक तरह की (बोर के द्वारा लगाई गई) लक, —
(अम्) टेडानेड़ा बना हुआ मकान, (अम्)
—की) उपमाका रत्नने की छायाछकु क आकार की
बेली जिसमें हाथ डाल कर गाना के वादों को गिनते
रहते हैं, —बुच (वि०) बेल की जाति बुद्ध, बुचम्
गाय का बुच, —बुचः नीलगाय, गवय, एक प्रकार
का बिल, —बैकः 'गोमेव' नाम का एक रत्न (यह
रत्न हिमालय पहाड़ और हिमन्तु नदी से प्राप्य
है गया श्वेत, पीला, लाल और सहरे नीले रंग का
होता है), —बाम्बु बेलमाड़ी, रत्नः 1. ब्याला
2. गोपाल 3. संतरा, रत्नकुः 1. मुगर्बो 2. बन्दी
3. नम्पुचव, विनवर साधु, रत्नः 1. गाय का दूध
2. बड़ी 3. छाछ, 'अम् मट्टा', —राजः बिया साँव, —बलम्
रो कोस के बराबर दूरो का माप, —रहितिका, रटो
मैना पक्षी रोबना एक मुगर्बित पदार्थ जिसको
उत्पत्ति बोचुच, मोरिल से मानी जाती है अथवा जाया
के गिर से उपलब्ध होता है, लक्षयम् नमक की माया
जा गाय को रो जाती है—बोम् (गु) लः लयूर, एक
तरह का बन्दर—दा० १/३०, —बो० बिया, —बलः
बछड़ा, 'बाकिन्' (पु०) भेड़िया, बर्बकः चूरा के
निकट ब्याचन प्रवेश में स्थित एक स्थित पहाड़
'बन्', बाटिल (पु०) कल्प का विशेषण, ब्या
गोत्र नाय, बावम्, —बाकः गीताला, बिचः 1. गो-
पालक, गीताला का अध्यक्ष 2. कृष्ण 3. बृहस्पति,
—बिच् (स्त्री०), बिता गोवर, बिलसः बोर,
तश्के (अप बीए जयस में बरने के लिए छोटी जाती
है), बियम् दूध का मूल्य, —बुचम् गीतों का लहड़ा,
—बुचारक बड़िया लोह या माप, —बुचः बड़िया लोह,
—बकः शिव का विशेषण, बकः 1. गोसाला 2. गीतों
का समूह, बोचर भूमि, बकुम् (नपु०) गोवर,
—बाकम्, —का गीतों की रत्नने का स्थान, बकुम्
गीतों की तीन जोड़ी, अकः गीतों का स्वाय, बोठ,
—लकः ब्याला, —लकुः नीलगाय, गवय की एक
जाति, —कर्वीः बोर, तश्के (यह समय जब नीचे
प्रात काल बरने के लिए लोक की जाती है), ब्रुजिक
नाय बजने की रम्मी, लम्बः 1. नाय का
ऐन, बोड़ी 2. फूलों का गुच्छा, गुलदस्ता आदि
3. बार लड़ की मोतियों की माला, लम्बा, नी
बजुओं का गुच्छा, स्वायम् गोसाला, —स्वामिन्
(पु०) गीतों का स्वामी, 2. बामिक साधु 3
लहड़ों के साथ लपटने वाली तम्पानचूचक पदवी
(उदा० बोपदेव गम्पामित्), —हृष्या गोचर, —हृम्
(हृम्) बोचर, हिल (वि०) गीतों की रत्ना करने
वाला।

बोचुच [?] तरबुच।

वा व्यवधान-सहित (वि० मुख्य वा प्रधान) —बीजे कर्षण विज्ञान: प्रधाने गीहकृष्यज्ञान—विज्ञा० 3. बाल-कारिक, कपक, अग्रधान अर्ध में प्रयुक्त (कम्य वा अर्ध बाधि) 4. प्रधान बीर अग्रधान अर्ध की समानता पर स्थापित जाता कि 'बीजी मज्जा' में 5. गुणा की वचना से संबद्ध 6. विशेषण ।

बीजम् [बुज+जम्] नारहली निचली वा चटिया जव-विधि ।

बीजक [बीज+कम्] 1. नारहान ज्वि का नाम 2. बीज का पुत्र, उत्तानम् 3. बीज का सावा, कुपाचार्य 4. बुद्ध 5. न्यायशास्त्र का प्रवेता । सम०—संज्ञका बोधायनी गदी ।

बीजकी [बीज+की] 1. बीज की पत्नी, कुत्री 2. बीजा-वरी का विशेषण 3. बुद्ध की विद्या 4. बीजक द्वारा प्रणीत न्यायशास्त्र 5. कुत्री 6. बीरीचन ।

बीजनीम् [बीज+जम्] नेहू का छेद ।

बीज्ये [बीज+जम्] महाभाष्य के प्रवेता पतञ्जलि मुनि का विशेषण ।

बीजिक [बीज+कम्] बीजी या न्यासे की स्त्री का पुत्र ।

बीजिक [बीज+कम्] बीज स्त्री का पुत्र ।

बीर (वि०) (बी०—रा—री) [बु+र, वि०] स्वेत (सिंहासनी) बुधवासको—रघु० २।३५, विरह-कण्ठवेदीरस्य उख—वेध० ५९.५२, शत्रु० १।९ 2. बीरा का, बीर—रक्त-बीरोपनामोपवितामवीरम्—कु० ७।१७, रघु० १।६५, बीराजि बर्ष न कदापि युवा:—रघु० 3. काकरेय का 4. वनकला हुआ, उज्ज्वल 5. विद्वत्, स्वच्छ, सुन्दर,—र: 1. लफेद रंग 2. बीरा रंग 3. काक रंग 4. लफेद वस्त्रों 5. वनकला 6. एक प्रकार का बीरा 7. एक प्रकार का हरिण,—रघु 1. लफेदर 2. बाकरान 3. होना । सम०—अलक: एक प्रकार का काला बंदर जिसका भूँह लफेद हो, —सर्वक: लफेद वस्त्रों ।

बीरकम् [बीरका+जम्] न्यासे का कार्य, नोपासन ।

बीरकम् [बुज+कम्] 1. बीज, वार (सा०)—दुरेभमा-भाषितबीरवीरकम्—रघु० ३।११ 2. महत्त्व, ऊँचा मुख्य वा मुख्यान्न—स्वयिकमे नीरवभाषानम्—रघु०—१।११८, १।८३९, कार्यवीरवेध—बुध० ५, गुप्ता वा महत्त्व 3. सम्मान, वाद, विचार—तथापि यन्म-ज्वि ते बुधैरपारित बीरकम्—वि० २।७१, प्रबोधना-पेक्षितका प्रपूर्णा प्रावचनम् बीरवभाषिते—बु० ३।१, वनच १५ 4. सम्मान, वशीला, महत्त्व—कोश्वी गदी बीरकम्—पंच० १।१४५, संयु० २।१४५ 5. बुद्धरता 6. (छं में) दीर्घता (बीज की वज्र की) 7. (अर्ध-सिक की) शत्रुई—अध्यायी बीरकम्—भा० १।१० ।

सम०—अलकम् सम्मान का पद,—हीरक (वि०) प्रकृत, वक्षसी, विख्यात ।

बीरकित (वि०) [बीर+कित] अत्यंत सम्मानित, बीरक वृत्त ।

बीरिका [बीरी+कम्+टाप्, हल्] कुमारी कन्या, अवि-बाहिता लड़की ।

बीरिक [बीर+इकम्] 1. लफेद वस्त्रों 2. इस्पात वा लोहे का बुरा ।

बीरी [बीर जीम्] 1. पार्वती—बीता कि 'बीरीनाथ' में 2. आठवर्ष की बान् की कन्या—अष्टवर्षी वषेन्नीरी 3. वह लड़की जो अपनी रजस्वला नहीं हुई, कुमारी कन्या 4. मोरे या पीले रंग की स्त्री 5. पुष्पी 6. कुम्भी 7. मोरोचन 8. वस्त्र की पत्नी 9. प्रसिद्धा मत्ता 10. तुम्हरी का पीना 11. मजीठ का पीना । सम०—कन्य:—नाथ: शिव का विशेषण,—बुध: द्विषाक्य वहाङ्ग—बीरीभूरीर्द्धरवाविवेक—रघु० २।२६, वि० ५।२१, —क: कातिकेय (कम्) अन्नरक,—बु: शोचिकी अर्ध जिसमें शिवांग (की मृत्ति) स्थापित किया जाता है,—बुध: कातिकेय,—अस्मिन् हस्ताक,—कुत: 1. कातिकेय 2. गणेश 3. ऐसी स्त्री का पुत्र जिसका विवाह आठ वर्ष की अवस्था में हुआ था ।

बीरकलिक [बुधनाम् + ठक्] बुधवर्षी से वाच व्यवधार करने वाला ।

बीरकलिक [बीरकल+ठक्] जो वाच के बुध वा अक्षुष विज्ञों को पशुमानता है ।

बीरकलिक [बुध+ठक्] किसी लेना की टोकी का एक सिपाही ।

बीरकलिक (वि०) (स्त्री—की) [बीरकल+ठक्] ती बीजों का स्वामी ।

ब्या [बु+या, हि], विस्वात् बजो मोन] पुष्पी ।

बय, बम् (भ्या० भा०—प्रचते, कम्पते) 1. टेढ़ा होना 2. बुद्ध होना 3. मुकना ।

बयम् [बय्+म्] 1. बयाना, वाड़ा करना, आम हो जाना 2. एक जगह नत्थी करना 3. रचना करना, सिक्का (इस अर्थ में—'बयना' लब्ध की है) ।

बय्: [बय्+नक्] बुद्ध, मुक्ता, लब्ध ।

बयित (बु० क० क०) [बय्+यत्, नलोप] 1. एक जगह नत्थी किया हुआ या बांधा हुआ 2. रक्षित—बर्ष: कतिपयवैरेक बयितस्य स्वर्दीरि—वि० २।७२ 3. कम्प-वद्ध, बेचोख 4. वाड़ा किया हुआ 5. बाँधना ।

बय् (भ्या०, कथा० पर०; वृत्त० उभ०, भ्या० भा०—अन्वति, अन्वति; बययति—ते, बयति, बयते) 1. बुधना, बांधना, नत्थी करना—यङि० ७।१०५ अर्ध बययते 2. कम से रचना, बेचोख करना, विविधित सिक्किते में बाँधना 3. बटना, बटा बटाना

4 लिखना, रचना करना - बध्नामि काव्यप्रमाणित
विस्तारपूर्वकम् - काव्य० १० 5 बनावना, निर्माण
करना, पैदा करना - बध्नामि वाण्यविस्तारपरम्
प्रकृतयः - का० १०, भट्टि० १७।११, बध् - , बांधना,
गन्धी करना, बुझा० १।४, अन्तर्द्विष्ट करना - अना-
प्रानेनैवविष्टि न केनै - रघु० २।८ 2 जोड़ना,
बीजना करना ।

बध्नाः [बध् + धन्] 1 बांधना, बुझना (आत्म० मे भी)
2 कृति, प्रबन्ध रचना, साहित्यिक कृति पुस्तक
अभ्यास्ये, बन्धकृत बन्धनयानि आदि 3 दीप्त
तापयि 4 ३२ मात्राओं का श्लोक, अनुष्टुप छन्द ।
सम० - कारः, कृत (पु०) समक रचयिता अन्धा-
रमे सम्प्लित्यदेवना बन्धकृपायामगति काव्य० १
- कुटी, कुटी 1 पुस्तकालय 2 कलाविन्द
- विस्तार - विस्तार - बन्ध का कई भागों में विभा-
जन, विस्तारमयी शैली, लक्ष्मि किसी पुस्तक वा
अनुवाद या अध्याय (संस्कृत में 'अनुभाव' आदि क
पद्यों 'अध्याय' शब्द के अन्तर्गत बन्ध) ।

बन्धकृपा - ना [बध् + कृत्] दे० 'बध्ना' ।

बन्धिः [बध् + इन्] 1 बाँध, बूझा, उच्चार - स्तनो मान
शब्दी कनककलशविस्तारमयी - भर्तृ० ३।२०, इसी
प्रकार 'विशारन्धि' 2 रस्सी का बचन या बाँध, रस्म
की बाँध - इदम्पुत्रहितवृत्तप्रतिष्ठायां स्वयंवेद्ये यं १।१८
बुद्ध० १।१, भर्तृ० २।४३, भर्तृ० १।५७ 3 कपडा
पैसा रस्मों के सिद्ध रूपों के बन्धन से बाँध, अनाद
बटुषा, बन्ध, सम्पत्ति कुम्भीदाहरिद्वय परकरनध्वि-
क्षममान् पञ्च० १।११ 4 मरकुल की बाँध, कसे
आदि की पोरों की बाँध या जोड़ 5 जरीर के बन्धन
का बाँध 6 टेढ़ागन, साँझना-जरीरना, मिथ्यात्व, लचार्ई
में उलट फेर 7 जरीर की बाँधिकाओं में सूजन,
कठोरता । सम० - छेदक, भेदः मोचक निगूहक
जैवकतया भङ्गनीध्विभेदना छेदयेत् प्रथम बदे
- भर्तृ० १।७७३, बाण० २।२४, कर्ण०, कर्णम्
1 एक गुण-बहुल बूझ - विस्तार० १।१३ 2 एक
प्रकार का बन्धन इष्टम् - अन्धकार 1 विद्या ४ - यम
पर दूम्हे और बुद्धिमान का बटुषा करना 2 बन्धन,
- बुरा कर्म ।

बन्धिका [बन्धि + क] 1 उपायिनी, दीपक 2 राजा
विश्वरूप के यही अज्ञानवाम क अवसर पर मरुतु बः
मान ।

बन्धित दे० बन्धित ।

बन्धित्य (पु०) [बध् + इन्] 1 या बहुत सी पुस्तकें पढ़ना
ही, किताबी अध्ययन इन्धन भोज्य इन्धिका
वाग्विद्या बग भर्तृ० १।२।२ 2 विद्या, पण्डित ।

बन्धित्य (वि०) [बन्धित्यन्तेत्यञ्च] गतिमान्, बन्धित्य ।

बन्धुः [ध्वा० बा० - बन्ते, बन्त] 1 निवन्धना, भवकना,
ना जाना, समायत्त कर देना न इना पृथिवी कृत्स्नो
मज्झिम् बन्ते पुन महा०, भर्तृ० १।१३ 2 पक-
डना 3 बह्वच सन्धना हावेव बन्ते विनेस्वरनिना-
प्रायेचरणी बाध्यागो भर्तृ० २।३४, हिताधुनाम् बन्ते
मन्त्रादिन् स्पष्ट फलम् शि० २।४९ 4 बन्धों को
मिला जुला कर बाण्ड्य लिखना 5 नष्ट करना,
लम् नष्ट करना भट्टि० १।२४, ॥ ध्वा० पर०,
भर्तृ० उभ० बन्ति, बन्धयति - ते) माना निवन्धना ।
बन्धनम् [ध्वा० + बन्ट] 1 निवन्धना, ला देना 2 पकडना
भुय या चन्दना वा चन्दनात् ।

बन्त (पु० क० क०) [ध्वा० + क्त] 1 बाधा हुआ, निवन्धना
हुआ 2 पकडा हुआ पतिवन्त, बन्त, अधिपुन, - बन्त,
विश्वरूप आदि 3 बन्धन-बन्त, लम् अधोऽध्वारित सन्ध
या बाधक । सम० - बन्धन इष्टमन्त नृवं या चन्दना
का बन्त होना, - बन्धक बह्वच-बन्त नृवं या चन्दना
का उभवा ।

बन्धु (कृपा० उभ०) [वेद में 'बन्धु'] - बन्धुवर्ति, बन्धुवर्त;
प्र० बाह्यवर्ति सन्धन-बन्धुवर्ति 1 पकडना, लेना, बह्वच
करना, पकड लेना, बाधना लपक लेना, कस कर
पकडना तथाजगुनु पारान् राजा राजी च बाधवी
रघु० १।५३ आमाने मुझसे हस्ती बाधी कन्धस्तु
बुद्धत मुञ्च० १।५०, त कष्टे बन्धुह - का० ३६३
पार्थि बन्धुह, चण्ड बन्धुहना 2 प्रान्त करना, लेना,
स्वीकार करना, बन्धुवर्त बन्धुन करना - प्रजानायेव
बुद्धयं त नाम्ना बन्धुवर्तनी - रघु० १।१८, नु०
७।१२४, १।१२३ 3 बन्धन में लेना निरस्तार
करना कन्धी बनाना बन्धुवर्त बन्धुवर्त विष्णु०
१, बन्धन चारान् बन्धुवर्त - भर्तृ० ८।३४ 4 निर-
स्तार करना, रक्ता, रकडना - भर्तृ० ६।३५ 5 मोह
लेना, बाण्ड्य करना - महाराजबन्धुवर्तबन्धना मया
विष्णु० ४, इदमे मुझसे नारी मुञ्च० १।५०,
माधुवर्तिये बन्धुवर्त बन्धुवर्त - रघु० १।८।३
6 जीन लेना उकमाना, अपनी मार करने के सिद्ध कु-
माना लम्बकवर्त बन्धुवर्तान् बाध० १।३७ प्रबन्ध
करना, लम्बुट करना, लुप्त करना, अनुकूल करना
बन्धुवर्तान् परिचयं बन्धुवर्तान्बाधा हि विता-
नमार्थिन - भर्तृ० १।१७, ३।३ 8 हस्त करना, पकडना,
चिपटना (भूत प्रेतादिक का) जैसे कि 'विश्वरूपवर्त'
वा 'वेतालवर्त' में 9 बाण्ड्य करना, लेना - बन्धुवर्त-
बन्धु १, बह्वच भि० १।२३ भट्टि० १।२९
10 बांधना, बाधना, परवाना, समझना कि०
१।०८ 11 ध्यान देना, विचार करना, विस्तार
करना, मान लेना बन्धुवर्त बन्धुवर्तान् तवैव बन्धु
तम् - ब० १, परिहाराविविधित कसे परवाना न

गृह्यता वव - श. २।१८ एवं वनो गृह्यति
 मालि० १ मनु० ३ 12 (इन्द्रियो द्वाग्) मय
 लना या प्रश्रम कना उा निनादम गृह्यती सव
 - रघु० ११।१० 13 पायत हाता, मस्तिर से
 पकडना मय २० रघु० ११।१६ 14 अनुमान
 लगाना अक क गता अना हता नेशवव
 विहारेव गृह्यते १५५ मय मनु० १।२५
 15 उन्नायण १६ १ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १०० १०१ १०२ १०३ १०४ १०५ १०६ १०७ १०८ १०९ ११० १११ ११२ ११३ ११४ ११५ ११६ ११७ ११८ ११९ १२० १२१ १२२ १२३ १२४ १२५ १२६ १२७ १२८ १२९ १३० १३१ १३२ १३३ १३४ १३५ १३६ १३७ १३८ १३९ १४० १४१ १४२ १४३ १४४ १४५ १४६ १४७ १४८ १४९ १५० १५१ १५२ १५३ १५४ १५५ १५६ १५७ १५८ १५९ १६० १६१ १६२ १६३ १६४ १६५ १६६ १६७ १६८ १६९ १७० १७१ १७२ १७३ १७४ १७५ १७६ १७७ १७८ १७९ १८० १८१ १८२ १८३ १८४ १८५ १८६ १८७ १८८ १८९ १९० १९१ १९२ १९३ १९४ १९५ १९६ १९७ १९८ १९९ २०० २०१ २०२ २०३ २०४ २०५ २०६ २०७ २०८ २०९ २१० २११ २१२ २१३ २१४ २१५ २१६ २१७ २१८ २१९ २२० २२१ २२२ २२३ २२४ २२५ २२६ २२७ २२८ २२९ २३० २३१ २३२ २३३ २३४ २३५ २३६ २३७ २३८ २३९ २४० २४१ २४२ २४३ २४४ २४५ २४६ २४७ २४८ २४९ २५० २५१ २५२ २५३ २५४ २५५ २५६ २५७ २५८ २५९ २६० २६१ २६२ २६३ २६४ २६५ २६६ २६७ २६८ २६९ २७० २७१ २७२ २७३ २७४ २७५ २७६ २७७ २७८ २७९ २८० २८१ २८२ २८३ २८४ २८५ २८६ २८७ २८८ २८९ २९० २९१ २९२ २९३ २९४ २९५ २९६ २९७ २९८ २९९ ३०० ३०१ ३०२ ३०३ ३०४ ३०५ ३०६ ३०७ ३०८ ३०९ ३१० ३११ ३१२ ३१३ ३१४ ३१५ ३१६ ३१७ ३१८ ३१९ ३२० ३२१ ३२२ ३२३ ३२४ ३२५ ३२६ ३२७ ३२८ ३२९ ३३० ३३१ ३३२ ३३३ ३३४ ३३५ ३३६ ३३७ ३३८ ३३९ ३४० ३४१ ३४२ ३४३ ३४४ ३४५ ३४६ ३४७ ३४८ ३४९ ३५० ३५१ ३५२ ३५३ ३५४ ३५५ ३५६ ३५७ ३५८ ३५९ ३६० ३६१ ३६२ ३६३ ३६४ ३६५ ३६६ ३६७ ३६८ ३६९ ३७० ३७१ ३७२ ३७३ ३७४ ३७५ ३७६ ३७७ ३७८ ३७९ ३८० ३८१ ३८२ ३८३ ३८४ ३८५ ३८६ ३८७ ३८८ ३८९ ३९० ३९१ ३९२ ३९३ ३९४ ३९५ ३९६ ३९७ ३९८ ३९९ ४०० ४०१ ४०२ ४०३ ४०४ ४०५ ४०६ ४०७ ४०८ ४०९ ४१० ४११ ४१२ ४१३ ४१४ ४१५ ४१६ ४१७ ४१८ ४१९ ४२० ४२१ ४२२ ४२३ ४२४ ४२५ ४२६ ४२७ ४२८ ४२९ ४३० ४३१ ४३२ ४३३ ४३४ ४३५ ४३६ ४३७ ४३८ ४३९ ४४० ४४१ ४४२ ४४३ ४४४ ४४५ ४४६ ४४७ ४४८ ४४९ ४५० ४५१ ४५२ ४५३ ४५४ ४५५ ४५६ ४५७ ४५८ ४५९ ४६० ४६१ ४६२ ४६३ ४६४ ४६५ ४६६ ४६७ ४६८ ४६९ ४७० ४७१ ४७२ ४७३ ४७४ ४७५ ४७६ ४७७ ४७८ ४७९ ४८० ४८१ ४८२ ४८३ ४८४ ४८५ ४८६ ४८७ ४८८ ४८९ ४९० ४९१ ४९२ ४९३ ४९४ ४९५ ४९६ ४९७ ४९८ ४९९ ५०० ५०१ ५०२ ५०३ ५०४ ५०५ ५०६ ५०७ ५०८ ५०९ ५१० ५११ ५१२ ५१३ ५१४ ५१५ ५१६ ५१७ ५१८ ५१९ ५२० ५२१ ५२२ ५२३ ५२४ ५२५ ५२६ ५२७ ५२८ ५२९ ५३० ५३१ ५३२ ५३३ ५३४ ५३५ ५३६ ५३७ ५३८ ५३९ ५४० ५४१ ५४२ ५४३ ५४४ ५४५ ५४६ ५४७ ५४८ ५४९ ५५० ५५१ ५५२ ५५३ ५५४ ५५५ ५५६ ५५७ ५५८ ५५९ ५६० ५६१ ५६२ ५६३ ५६४ ५६५ ५६६ ५६७ ५६८ ५६९ ५७० ५७१ ५७२ ५७३ ५७४ ५७५ ५७६ ५७७ ५७८ ५७९ ५८० ५८१ ५८२ ५८३ ५८४ ५८५ ५८६ ५८७ ५८८ ५८९ ५९० ५९१ ५९२ ५९३ ५९४ ५९५ ५९६ ५९७ ५९८ ५९९ ६०० ६०१ ६०२ ६०३ ६०४ ६०५ ६०६ ६०७ ६०८ ६०९ ६१० ६११ ६१२ ६१३ ६१४ ६१५ ६१६ ६१७ ६१८ ६१९ ६२० ६२१ ६२२ ६२३ ६२४ ६२५ ६२६ ६२७ ६२८ ६२९ ६३० ६३१ ६३२ ६३३ ६३४ ६३५ ६३६ ६३७ ६३८ ६३९ ६४० ६४१ ६४२ ६४३ ६४४ ६४५ ६४६ ६४७ ६४८ ६४९ ६५० ६५१ ६५२ ६५३ ६५४ ६५५ ६५६ ६५७ ६५८ ६५९ ६६० ६६१ ६६२ ६६३ ६६४ ६६५ ६६६ ६६७ ६६८ ६६९ ६७० ६७१ ६७२ ६७३ ६७४ ६७५ ६७६ ६७७ ६७८ ६७९ ६८० ६८१ ६८२ ६८३ ६८४ ६८५ ६८६ ६८७ ६८८ ६८९ ६९० ६९१ ६९२ ६९३ ६९४ ६९५ ६९६ ६९७ ६९८ ६९९ ७०० ७०१ ७०२ ७०३ ७०४ ७०५ ७०६ ७०७ ७०८ ७०९ ७१० ७११ ७१२ ७१३ ७१४ ७१५ ७१६ ७१७ ७१८ ७१९ ७२० ७२१ ७२२ ७२३ ७२४ ७२५ ७२६ ७२७ ७२८ ७२९ ७३० ७३१ ७३२ ७३३ ७३४ ७३५ ७३६ ७३७ ७३८ ७३९ ७४० ७४१ ७४२ ७४३ ७४४ ७४५ ७४६ ७४७ ७४८ ७४९ ७५० ७५१ ७५२ ७५३ ७५४ ७५५ ७५६ ७५७ ७५८ ७५९ ७६० ७६१ ७६२ ७६३ ७६४ ७६५ ७६६ ७६७ ७६८ ७६९ ७७० ७७१ ७७२ ७७३ ७७४ ७७५ ७७६ ७७७ ७७८ ७७९ ७८० ७८१ ७८२ ७८३ ७८४ ७८५ ७८६ ७८७ ७८८ ७८९ ७९० ७९१ ७९२ ७९३ ७९४ ७९५ ७९६ ७९७ ७९८ ७९९ ८०० ८०१ ८०२ ८०३ ८०४ ८०५ ८०६ ८०७ ८०८ ८०९ ८१० ८११ ८१२ ८१३ ८१४ ८१५ ८१६ ८१७ ८१८ ८१९ ८२० ८२१ ८२२ ८२३ ८२४ ८२५ ८२६ ८२७ ८२८ ८२९ ८३० ८३१ ८३२ ८३३ ८३४ ८३५ ८३६ ८३७ ८३८ ८३९ ८४० ८४१ ८४२ ८४३ ८४४ ८४५ ८४६ ८४७ ८४८ ८४९ ८५० ८५१ ८५२ ८५३ ८५४ ८५५ ८५६ ८५७ ८५८ ८५९ ८६० ८६१ ८६२ ८६३ ८६४ ८६५ ८६६ ८६७ ८६८ ८६९ ८७० ८७१ ८७२ ८७३ ८७४ ८७५ ८७६ ८७७ ८७८ ८७९ ८८० ८८१ ८८२ ८८३ ८८४ ८८५ ८८६ ८८७ ८८८ ८८९ ८९० ८९१ ८९२ ८९३ ८९४ ८९५ ८९६ ८९७ ८९८ ८९९ ९०० ९०१ ९०२ ९०३ ९०४ ९०५ ९०६ ९०७ ९०८ ९०९ ९१० ९११ ९१२ ९१३ ९१४ ९१५ ९१६ ९१७ ९१८ ९१९ ९२० ९२१ ९२२ ९२३ ९२४ ९२५ ९२६ ९२७ ९२८ ९२९ ९३० ९३१ ९३२ ९३३ ९३४ ९३५ ९३६ ९३७ ९३८ ९३९ ९४० ९४१ ९४२ ९४३ ९४४ ९४५ ९४६ ९४७ ९४८ ९४९ ९५० ९५१ ९५२ ९५३ ९५४ ९५५ ९५६ ९५७ ९५८ ९५९ ९६० ९६१ ९६२ ९६३ ९६४ ९६५ ९६६ ९६७ ९६८ ९६९ ९७० ९७१ ९७२ ९७३ ९७४ ९७५ ९७६ ९७७ ९७८ ९७९ ९८० ९८१ ९८२ ९८३ ९८४ ९८५ ९८६ ९८७ ९८८ ९८९ ९९० ९९१ ९९२ ९९३ ९९४ ९९५ ९९६ ९९७ ९९८ ९९९ १०००

करता, रोकना 3 कैलासा, विस्तार करना, प्रति -
 1 धामना, पकडना, सहायता देना वगैरहप्रतिगृहीत
 भनम मालि० ४, मनु० २।४८ 2 लेना, स्वीकार
 करना प्राप् करना ददाति प्रविगृह्याति - पच०
 २, अमोवा प्रतिगृह्यान्मावर्षानुपवर्षमासिप - रघु०
 १।६६ २।२२ 3 उपहार स्वीका लेना या स्वीकार
 करना 4 तद्वत व्यवहार करना, विराज करना,
 गवायला करना रोकना प्रतिगृह्यात् काकुत्स्थस्त-
 मर्षमंजमाधन रघु० ४।६० १।४८ 5 पापि
 पदम करन मनु० १।३२ 6 आजा मानना
 समनुकूल होना, मानना मानना 7 आग्रह लेना,
 अवनीत होना, वि 1 धामना या पकडना 2 कलह
 करना लड़ना विवाद करना, विगृह्य चके वर्मार्तिदोष
 क्ल ५ दयमन्मास्वमहादय वि० १।५१
 २।८० ६।२६, १।३०३, लक्ष 1 सहह करना
 पदम करना सकम करना जोड़ना लपुध बनम्
 1 मान 2 मानुष प्राप्त करना 3 दमन करना
 रोकना (नाका को) लगाम देना 4 (पुन्य आदि
 का) द्वारा लायना 5 (प्राप्त होना) 6 (प्राप्त
 वर्तमान चाहति ने) लेना प्राप्त करना वगैरह।

वह: वह, अनु 1 पकडना पकड करना अधिपार
 इमाना जीनकाल २६५ कवच १५० १।५१
 2 पकड पकड, प्रसार ककटोपधारा पद
 १।२० 3 लेना, मान करना, स्वीकार करना, प्राप्
 4 बुराना, लटना-ब्रह्मलोकांश्चमंदस्य छेदयन्मम म
 -मनु० १।२०३ इमा वकार पदह 5 लपुध का
 माक, बटमारी 6 पदम लगना ६० पदम 7 वह
 (वह गिनती से रोहू -गुह्यपक्षो मगलपक्ष वृषश्चा
 ब्रह्मगति, शुक्र मनेवरा राहु कर्कश्वरि वहां नव 1)
 -नलवरा, मय, यह कुलपि (रात्रि १५० ६।२० १।२०
 १।२०० गृह्या स्तनमात्र मयवर्षेण भारवना
 गनेवरा मय पदमारा वह ब्रह्मपाव ला मनु०
 १।३ 8 उरुलप उच्चारण दुष्टाना (दम प्रादि
 क) नामज निहर् नवोर्षान्दोषण कुत मनु०
 १।३१, प्रम १३ 9 भयमदोष छेदय १
 10 विप्राविश वना 11 कौन्टो १५ मय १
 मय विपय उदं हा कना के विपय २ उमा मेहन
 मनेव या कुमरा से पत कर देना ३ १० (विवा
 व धाण्याना का) ४११, प्रम १३ १३ मयवने व
 मय या उपकरण १४ वृक्षवर्तिता, ये अग्रवम १
 15 प्रयोध आकमान १६ अनुवह मयव १ मय
 अमोन (वि०) वहां के वहां व विपय, अ-
 कर्षव, राहु का विपय, (मय) वहां की टकरा
 लपोक: सुर्ष, माधाय आक: प्रव नक्ष
 (नक्षत्रों का विपय केन्द्र), -अग्रव: १. वि० २. मय-

पालतु (पशु आदि), 4 आवर्षित (विप० 'वन्य')
5 नीच क्षीय (शब्द की तरह) केवल जोड़े व्यक्तियों
द्वारा प्रयुक्त कृन्तन देहि में भायें काम बाण्डालनृत्तये
—रस० या कटिले हारते यन —सा० व० ५३४,
यह शब्द उक्तिर्वा के उदाहरण है 6 अन्न, अन्नोत्त,
—अन्नः पालतु नृत्तर —अन्नम् 1 गन्ध माषन 2 देहात्
में तैयार किया हुआ भोजन 3 मैयुन । सम० अन्नः
गन्धः, —कर्मन् घामीन का अन्वय, —कुञ्जकुम्भ कुम्भ
—घर्मः 1 घामीन का कर्मन् 2 श्मोभोग, मैयुन,
—पञ्चः पालतु जानवर, बुद्धि (वि०) रज्जु मन्त्रा
किया, अनादी, अन्नभा वेरा रडी, कुञ्ज स्त्री
मभोग, मैयुन ।

घावन (पु०) [घम् + घ, घ + आ, वन् + रि]।
1 पत्थर बढ़ान कि रि माने रदम्बनि प्रज्जन्पभा-
द्विनि शवाण मन्थन इति महावी० १ अग्नि शवा
रहिति अग्नि दलति ब्रह्मस्य ब्रह्मन् —उत्तर० १।२८
शि० ४।२३ 2 पत्राङ्ग ३ बादल ।

घातः [घट् + घञ्] 1 कौर कौर के बगवर कोई वन
मनु० ३।१३३, ५।२८ याज्ञ० ३।५५ 2 भावन
पोषण 3 सूर्य या चन्द्रमा का ग्रहणघन भाग ।
सम० आच्छादनम् भोजन वस्त्र प्रर्षाति अनिवाय
भोजन माषन, श्लेषम् घने में अटकने वाला (मछली
का कटा) आदि कोई पदार्थ ।

घाह (वि०) (स्त्री० ह्री) [घट् + घञ्] 1 पकड़ने वाला
मूट्टी में पकड़ने शाला, लेने वाला धामने वाला
प्राप्त करने वाला, ह 1 पकड़ना पकड़ना 2 पट्टि
पाल, मगरमच्छ—रागघाहवन्तो—अनु० ३।४५ 3 बन्दी
4 स्वीकरण 5 सम्पत्ति, ज्ञान 6 हट, दूड़ाघह
7 निर्वाण, दूड निश्चय —मग० १३।१९ 8 रोग ।

घाहक (वि०) (स्त्री० ह्रिका) [घट् + कृञ्] प्राप्त
करने वाला, लेने वाला —कः 1 बाज, श्वेत 2 बिच
विक्रितक 3 श्रेता, स्वोदार 4 पुलिस अधिकारी ।

घोषा [घिरण्यवया -यु + घनिप, नि०] गर्वन, गर्वन का
पिछला भाग घोषाव ज्ञातिगम मुहुरनुपमनि स्यन्दने
दत्तदृष्टि म० १।३। सम० छप्पा घोड़े के गले
में लटकना हुआ घटा ।

घोषालिका दे० घोषा ।

घोषिन् (पु०) [घोषा + इनि] ऊँट ।

घोष्य (वि०) [घसने रणान् + घनिन्] गरम, उष्ण,
—अन् 1 गर्मी का मौसम, गरम शब्द [उपेष्ट और
आपाङ्ग के महीने] घोष्यसमयवर्षिकृत्य मोष्याम्
स० १ रघु० १६।५४, भावि० १।३५ 2 गर्मी,
उष्णता । सम० काशीन (वि०) गर्मी के मौसम

से संबंध रखने वाला,—ऊष्ण, —अन्, —अन्वा नव-
मलिका लता, मेहारी ।

घेष (स्त्री०-घी), घेष (स्त्री०-घी) (वि०) [घोषा + घञ्,
डञ् + वा] गर्वन पर होने वाला वा गर्वनवचयी,—अन्,
—अन् 1 गले का घटा, वा हार 2 हाथी की गर्वन
में पहनी जाने वाली बड़ीर —आक्षत्प करिषां वेष
विपरीते विमोचि रघु० ४।४८, ७५ ।

घेषकम् [घोषा + डकञ्] 1 गले का घातुवच—उदा०
अस्माकं मणि घातमी न घषिरे घेषक दोष्यवचम्—सा०
द० ३ 2 हाथी के गले में पहने जानेवाली बड़ीर ।

घेष्यक (वि०) (स्त्री० ज्यिका) [घोष्य + कृञ्] 1 गरमी के मौसम में बाया हुआ 2 गरमी के शब्द में
दिया जाने वाला (हृण बारि) ।

घष्यवच् [घी + निष् + कृष्ट पुन हृत्] 1 मुर्खता
सूज जाना 2 बकाबट ।

गहल (ग्रा० ग्रा०) गहलते, गहलन्) बाना, नियतना ।
गहल (ग्रा० उभ०, घृग० ग्रा०—गहलति—न, ग्राहयति—ते)
1 जुआ खेलना, जुग में खेलना 2 लेना प्राप्त करना ।
गहलः [गहल + अच्] 1 पास में खेलने वाला 2 बाज,
बाड़ी बाना, गर्न बाना 3 पाया 4 जुआ खेलना
5 बिसाल ।

गहान (पु० क० कृ०) [गर्ह + कृञ्] 1 क्लान्त श्रान्त,
बका हुआ, शान्त, अवसन 2 रानी, बीसारी ।

गहमिः (स्त्री०) [गर्ह + नि] 1 अवसाद, क्लान्ति, बका-
बट घनरक्षणावृक्षति—अनु० १।५३, ब्रज्जगानि
मुरतवतिना घेष० ३०, ३१, सा० ४।६ 2 क्लान्त
अथ आरमोदय पर्यन्तानि यं नीतिरितोयसी—शि०
२।३०, यदा यदा हि सर्वस्य गमयिर्भवति भारत
अव० ४।३ 3 दुर्बलता, निर्बलता 4 बीसारी ।

गहास्तु (वि०) [गर्ह + स्तु] क्लान्त, शान्त ।

गह्य (ग्रा० पर०)—अधीति, गह्यन्) 1 जाना चला-
फिरना 2 घुमाना, घटना 3 छीन लेना, उच्छिन्न
करना बहुरासगन्तु प्राप्तात् ज्ञानोचोचरके बह
—अटि० १५।३० ।

गही (ग्रा० पर०)—ग्रायति, गह्यन्) 1 चिरस्ति वा अक्षि
अनुभव करना, काम करने की ची न करना, (तुनु-
अन्त्य के माघ) 2 क्लान्त वा शान्त होना, बका हुआ
या अवसन अनुभव करना 3 बाहल छोड़ना, हलो-
ग्राह होना उदात्त होना—अटि० १९।१७, १९।२
4 छीन होना, उच्छिन्न होना—अटि० अन्—अन्—अन्
1 मुखा देना, मुक्क कर देना, घोट पहुँचाना, कति
पहुँचाना 2 बका देना ।

गही (पु०) [गर्ह + घी] 1 चकवा 2 कपूर ।

वर्धित्यम् (वि०) [बटी + ध्या + क्त् + भुम्, धवादेशः]
बर्तन में पूँक मारने वाला, मः कुम्हार ।

वर्धित्यम् (वि०) [बटी + बट् + क्त्, भुम्, ह्रस्व] जो
बड़ा भर (पानी) पोता है ।

बटी [बट + क्त्] 1 छोटा बड़ा 2 २४ मिनट के बराबर
समय की माप 3 छोटा जल-बड़ा जिससे दिन की
बर्धिया मिनटों का कार्य लिया जाय । सम० कार.
कुम्हार, - बट्ट, - बाहू (वि०) दे० 'बट्टबहू', यन्त्रम्
1 पानी ऊपर उठाने वाली रहट को बर्धिया, कुंए पर
पड़ा हुआ रस्सी-बोल दे० लखट्ट 2 दिन का समय
जानने का एक साधन ।

बट्टोत्पत्तिः [?] हिंदिया नाम की राजसी से उत्पन्न भोग
का एक पुरुष (यह बहुत बलवान् पुरुष था, कौरव और
पाण्डवों के युद्ध में यह बहुत बीरतापूर्वक पाण्डवों की
ओर से लड़ा परन्तु इन्हें से पाण्डव मर्तिन द्वारा कर्ण क
हाथी मारा गया तु० मुद्रा० २।१५) ।

बट्ट (भा० भा०) - बट्टे बहुधा चुरा० उम० बट्ट
वति ठे, बट्टिन 1 हिन्दी, हरकन देना दे०
'बाबूबट्टिना लना में 2 स्पष्ट करना समझना, हाथों
से समझना बट्टिन लचकट्टिन बोला मन्त्र० १।०८
बट्टि० १।१० 3 बिकाना, मरहलना 4 ई० दे०
की भावना ने बोलना 5 बापा पढ़ाना, प्रब
, ओदन, परि प्रसार करना सि० १।६५ वि
1 हड़ताल कर देना, लिटा-बितर करना बट्टेना
उठा देना सि० १।१४, भर्तु० ३।५४ 2 समझना
चिन्तना, रगड़ना कारखानेनविश्वविद्यालयविद्यालया
रुतु० ३।८, ५।९ कु० १।९, कि० ८।४५ सि० ८।०६,
१३।६१, लम्-1 बचपाना 2 डकट्टा करना
बिलाना 3 एकत्र करना, सज्ज करना 4 रगड़ना
बिलाना, दबाना - रतु० ६।३३ ।

बट्टः [बट्ट + बट्ट] 1 बाट लकी के लट में पानी तक
कनी छोड़िया 2 हिलना बुलना, आन्दोलन 3 चुनी
घर । सम० कुटी चुनी घर, प्रबलत्वाय नाय के
नी० १०, - बौधिन (पु०) बाट में प्राप्त महसूल से
अपना निर्वाह करने वाला 2 वर्षभरकर (वैद्यार्थी गृह-
काम्यता) ।

बट्टका [बट्ट + भृ + टा +] 1 हिलाना, बुलाना, हर-
कन देना, आन्दोलन करना 2 रगड़ना 3 जीविका
पति, अन्धा, व्यवसाय, पैसा ।

बट्टः [बट्ट + बट्ट] एक प्रकार का व्यवहन, बट्टी ।

बट्टा [बट्ट + बट्ट + टा +] 1 बटी, 2 लोहे का या काने
का बोल पट्ट जिससे समय की सूचना के लिए सूबरी से
पीट कर बजाते हैं । सम० - बट्टा बट्टा बट्टा बट्टा
- बट्टा, - बट्ट बट्टियों से बका जेट, साहः पटा
बकाने वाला, - बट्टा बट्टे की आवाज, बकः नाँव

की मुख्य मटक, राजमार्ग, मुख्य मार्ग (बसबन्धनरो
राजमार्गों बट्टापथ स्मृत कौटि०), - बट्टा 1 कासा
2 बट्टे की आवाज ।

बट्टिका [बट्टा + क्त् + कन् ह्रस्व] छोटी बट्टियाँ,
बूचक ।

बट्टु [बट्ट + उच्] 1 हाथी की छाती पर बची एक पट्टी
जिसमें बूचक लगे होते हैं 2 ताप, प्रकाश ।

बट्टः [बट्ट इति सत्य कुर्वन् डीगन् भृ + क्त्] ३
मनुष्यवत् ।

बट्ट (वि०) [हनु मुनी भ्रा बट्टेसस्य भाग०]
1 सहत, दुष्ट, कटोरा, डोस-सहायक बट्टाचन गा०
१।३५, नाया बट्टाचन गा० ३।१०, भृ० १।१८
2 मचन बट्टि बिनका बट्टाचनभाष १मर०
२।०३, भृ० १।११ अमर० ३ गता टुला, पूर्व,
पूर्वविकसित (कैने नि कुच) बट्टयति मुचने कुच
यनतने मृगमदक्षिणविते गीत० ३ अनुबन्धक
मचन मुच दो घनकुचपुगे धनिबट्टाचनी भृत० ८,
भर्तु० १।८ अमर० २/४ (बट्ट की भाषि) लक्ष्मी
गा० २।१२ ५ निर० स्वायी ६ अमेर ७ बट्टा
अन्धकार, प्रबंर ४ पुं १ लृभ भाष्यशाली ब
बाहल बट्टाचन टाक् नदनमर पय गा० ३।१०
घनबट्टिकलागो निमपनाप्य ज्ञात विक्रम० ६।१०
2 लोहे का मृत्पा गदा ३ लरीर ४ (कनि में)
सम्पाद्योक्त घन (किमी कट्ट की उनी लक्ष का दो
बार गुना करने से उपलब्ध घनघन) 5 बट्टाचर,
प्रसार 6 सज्ज, समुच्चय परिमाण राशि, प्रभाव
या समभाव 7 अथवा, बट्ट 1 सास बट्टी, बट्टा
2 लोहा 3 गीन ४ बट्टी तथा वस्त्र । सम०
अथवा, अन्तः बाटलो का लार बट्टाचन के
रगड़ान् पागे वाली रतु नरद - अन्तः (नपु०) बर्षा
आकर बर्षा रतु, आयस बाटलो का आयजन
बर्षाचतु - बट्टायस का मचनप्रिय प्रिये रतु० ५।१,
अथवाः लुहा के बट्ट, अथवा परावरन, अन्त-
गिह, उक्क जोले, जोलः बाटलो का एकत्र होना,
कन्त्र जोर, - कालः बर्षाचतु, बट्टाचन 1 मेघ-
धनि, बाटलो की गडगडाहट वा गरव, बिजली की
कटक 2 लरीर और ऊँची दहाड़ या नाच, लोकाः
बाडी लोने की मिलावट, - बट्टाचनः गाड़ी रसदल,
साकः एक प्रकार का पत्ती, चामक, सारंग, लोकाः
बातक पत्ती, - नाया बट्टी (यह बाटलो का मुख्य
अवगन समझा जाता है - मेघ० ५), बट्टाचनः बाटो
कोहरा, लजन गुवार, - बट्टी 'बाटलो का घास' अन्त-
गिह, आकाश - बट्टी 'बट्टीचनपदयोकेकल्ले' - कि०
५।३४, - बट्टाचनः बाट, बट्टाचन (भा० में) किसी
वस्तु की बट्टाचन-बाट्टाचन और बाट्टाचन का मुख्यक

बनवा डोलवन, —मूलम् (नमित में) बन-राशि का मूल संक. —रक्तः १ बाड़ा रत्न २ कर्क बाड़ा ३ कपूर ४ जल. —कर्मः बन का कर्म, (नमित में) छटा बात, —कर्मम् (नपुं०) बाकाब —बनपर्यंत सहस्रमेव कुर्वन् —कि० ५११७. —कर्मिका, —कर्मि विजयी - वासः एक प्रकार का कपूर, कुम्हड़ा, बह्मनः १ सिव २ इन्द्र, —कर्मिक (वि०) 'बावन की माति काला' पहुरा काला, पक्का रव, —अः १ राम और कृष्ण का विशेषण, लम्बः बर्बादनु, —हार १ कपूर-बन-बारीहाहार - रथ० १, (स्वैत पदार्थों में उन्मूल्य) २ पारा ३ बल, स्वप्नः भ्रमचर्चन, सुस्तच्छब्दा (नमित में) कुवारी की रिंटी बादि नामों का माप (एक हाथ लंबा, एक हाथ मोटा या चौड़ा और एव हाथ ऊँचा हो) ।

कर्मिका : [हृन् + कर्म, हृत्तेर्बलम् वित्त्वम्यास्तम् बाष् + च] १ इन्द्र २ चिकुचिड़ा, या मदनस्त हारी ३ पानी में बग हुआ या बरछाने वाला बावक ।

कर्मिक : [कर्म लेकम् अकृति अतिशयमिति कर्म + कट् + कर्म, कर्म० कर्मकम्] बाकाब, बरछा कर्मकी ।

कर्मिक (वि०) [कर्म + रा + क] १ कर्मक, कर्मगत करने वाला, बरछा कर्म करने वाला - कर्मरत्ना बारम-बाज ललित - वा० ५११९ २ कर्मक व्यति करने वाला, (बावनों की माति) बड़बड़ बच्च करने वाला, —रः १ कर्मक कर्मक व्यति, मन्त्र बड़बड़ या बारम की व्यति २ कोलाहल, बोर ३ टाकावा, डार ४ हुनो, अडुहाल ५ उल्लू ६ तुवालि ।

कर्मिका, —री [कर्म + टाप्, कर्म + वा] १ चुक की बामुचम की माति कर्म बारी २ चुकलों की कर्म व्यति ३ गवा ४ एक प्रकार की बीका ।

कर्मिका [कर्म + ठन् + टाप्] १ बामुचम की माति प्रमुक्त होने वाले चुक २ एक प्रकार का वाद्ययंत्र ।

कर्मिका [कर्म + टाप्] बुरा के चरुगने का लक्ष्य ।

कर्म : [कर्मि अज्ञातम् + कर्म नि० पुं०] १ ताप, गर्मी —कि० ११९७ २ गर्मी को हटाने, निवारण - निवारण-हारीकृष्णमगमन बर्ष शिवायेमधिपोषेष्टम् नपु० ११९८ ३ स्नेह, पत्नीता - ति० ११९९ ४ कड़ाह, उठावने का पाप । मय० कर्म कर्म १० ५११४. —कर्मः कर्मिकानु धन्य, —कर्मम् (नपुं०) स्नेह, पत्नीता, वा० १११०, वा० १११७. —कर्मिका वाय, पित्त, कर्मोरी, (रवे हुए पत्नीने और गर्मी के बारीर पर पैदा होने वाले छोटे छोटे राने). —वीथितिः कर्म - रपु० १११४. —कर्मिः कर्म - कर्म ५१११. —कर्म (नपुं०) स्नेह, पत्नीता कि० १११५ ।

कर्म, कर्मकम् [कर्म + कर्म, कर्म + वा] १ रवक, बिहार २ वीथिका, पूरा करना ।

कर्म (आ० अथा० पर० —कर्मि, कर्मि, कर्मि) काना, निमन्ना, (यह अचूरी वातु है —कर्म वातु के कुछ लकारों में ही इसके रूप बने हैं) ।

कर्मर (वि०) [कर्म + कर्मर] १ काठ, पेड़ - बावनको कर्मर भावि० ११३४ २ निमल जाने वाला, हृष्य करने वाला कुपदसुखमूकमरो द्वीकार्ति - वेनी० ५१३५ ।

कर्म (वि०) [कर्म + रक] पीडाकर, अनिकर, —अः १ दिन कर्मो मयिप्यति प्रविप्यति सुप्रदोषम् - मुमा० २ कर्म महावीर - ६१८, कर्म केसर, जाकरान ।

कर्म, टा [कर्म + अच्, कर्मया टाप्] नदन का पिछला भाग ।

कर्मिक [कर्म + टक] १ कटी बजाने वाला २ नाट का बाग्न ३ कर्मो का पीठा ।

कर्म [हृन् + कर्म + कर्म] १ प्रहार, बाधात, बारीक, चोट व्यापार वा० ११३३. नयनारवात नीत० १० कर्म प्रकार पाणिप्रात, निरोवात कर्मि २ बार डालना चोट पहुँचाना महार करना, बच करना दिवायो मुखाया व कर्म गिपुबानाकर्मिपुम् —उत्तर० ३१४४ कर्मकान नीत० १, वाग्न० २१५५, ३१५२ ३ बाग्न ४ मुननक्रम । लक्ष्य० —कर्मः कर्मर राशि पर कर्म करना कर्मिः कर्मर बाग्न दिव, —कर्म कर्म नयन, बार कर्मर दिन —स्वात्म कर्मर-बाना, बचसान ।

कर्मक (वि०) [हृन् + कर्म, मारनेवाला, महार करने वाला, हथपारा, महार कर्मि बच करने वाला ।

कर्मक (वि०) [हृन् + कर्म + कर्म] हथपारा कर्मि, कर्म १ प्रहार करना, बार डालना, हथपारा करना बच करना (कर्म) पक्ष बलि देना ।

कर्मिक (वि०) (कर्मो —बी) [हृन् + कर्म + कर्मि] १ प्रहार करने वाला, मारने वाला २ (पक्षियों को) पकड़ने वाला या मारने वाला ३ विनाशकारी । लक्ष्य० —कर्मिक, —कर्मिक बाग्न रथेन ।

कर्मिक (वि०) (कर्मो —नी) [हृन् + कर्म + कर्म] १ मारने वाला, महारकारी कर्मिकर, चोट पहुँचाने वाला २ कर्म कर्मिक ।

कर्मिक (वि०) [हृन् + कर्म + कर्म] बार जाने के दोष, वह व्यक्ति जिसे बार देना चाहिए ।

कर्म [कर्म + कर्म] कर्मिक, ठर कावा ।

कर्मिक [कर्म + कर्म] १ नी में तले हुए नुके (विद्योते विद्यते छिद्र होते हैं) (इसी को देखकर कर्मिक में नुके पड़ते हैं कहा था —छिद्रोपवर्षा कर्मिकीकर्मि) ।

कर्म : [कर्म + कर्म] १ बाह्य २ गोचरदुषि वा चराचर का बाध —कर्मिकारवात् कर्म० ५, कर्मिक कर्मिके

उरक नामक वृक्षविशेष,—उरः 'बी का समूह' सात समूहों में से एक,—बीजमः बी में एक उबने हुए चायक,—पुष्पा बी की नदी, बीजितः बजित,—बारा बी की बजितक बारा, बुर,—बुरः एक प्रकार की मिठाई,—केलमी बी का वस्त्र ।

बृताषी [बृत् + अम् + चिबृ + ङीप्] 1 राग 2 सारस्वती 3 एक व्यंजन (इन्द्र के स्वर्ग की मुख्य व्यंजनाएँ निम्नांकित हैं—बृताषी मेमका रम्भा उबंसी च तिलोलभा, मुकेडी मज्जुबाबाका कम्पलेम्प्यमो बुर) । सम० वर्णसंज्ञा बड़ी इलायची ।

बृत् (म्भा० पर०—वर्षति, वृष्ट) 1 रवना, बिसना अर्थात् तत्कनककृष्णवर्णवृष्टाव्यम् बीर० ११, पञ० ११४४ 2 कृषी करना, परिष्कृत करना (भाषणा) चमकाना 3 बुद्धिमान, बीमना बुरा करना होपछानम् कलहराचमने वृष्ट न कि चमत् ५७० ३११७५ 4 होर करना, प्रतिहन्ती हाना (जैसा कि सक्' में) उम्, बुरचना,—बुराचरित्रवृष्टपायवीठम् मही छिटाव् रघु० १७७८, सक् प्रतिहन्तिता करना, होराहोरी करना, प्रतिस्पर्धा करना स प्रयोजनियुक् प्रयोक्तृभि सञ्चर्य सह विप्रसजिनी रघु० १९३६ 2 रवना, बुरचना ।

बृजिः [बृ + जित्] सूत्र (स्त्री०) 1 बीमना, बुरा करना, बुरचना 2 होराहोरी, प्रतिहन्तिता, प्रतिवायिता ।

बोडा, बोडक [बृ + अम्, अम् वा] बोडा । सम०—बजिः मंडा ।

बोड़ी, बोडिका [बोट + ङीप्, बृट् + अम् + टाप्, इत्यम्] बोड़ी, हाथान् बरव—आटाकलेङ्ग करिबोटि पदाति—बृषि बोटिबि बितिभुजम् अस्व० ५ ।

बोष (म) स [= बोमस, पृषो०] एक प्रकार रेंपने वाला जन्तु ।

बोष्ठा [बृ + अम् + टाप्] 1 नाक, बोषोम्लन मूलम्—मूष्ठा १११६ 2 बोड़े की नपुमा, (सूत्र की) बृषन—बृषरायमानबोरोमोक्त—का० ७८ ।

बोभिन् (पृ०) [बोभा + हिन] सूत्र ।

बोष्ठा [बृ + ट + टाप्] उग्राय का वृक्ष ।

बोर (बि०) [बृ + अम्] 1 बरकर, डरावना, बोचन, बलात्क,—सिवाबोरकरना पञ्चाद्वृषे विद्वनेति ताम्—रघु० १२३९, तत्कि कर्मणि बोरे वा निबो—बोसि केवळ—बह्म०, बोर लोके विततमयज—उत्तर० ७५, मनु० ११५० १२१५४ 2 हिज, प्रच्छन्न,—टः सिव,—ए राट,—रघु 1 सत्राल, बीजवला 2 बिज । सम०—आकृति,—ब्रह्म (वि०) देखने में डरावना, बरकर विकाराज,—बुद्धम् कांता,—राजन्,—रतिम्,—बालम्,—बालिन् (पृ०) बीरव,—ककः सिव का विशेषण ।

बोळ,—बळ [बृ + अम्, रस्य म] बट्टा, गुला हुआ बड़ी बिसने वाली न हो (उत्तु स्नेहमयम बजित बोळ—बुध्ते गुण०) ।

बोषः [बृ + अम्] 1 कोलाहल, हल्ला, हुमासा—स बोषो बार्तराट्मां हुदवानि अदारयन् मन० १११९, इसी प्रकार रघु०, मुग्ध०, कण्ठ० बार्ति 2 बादलों की परब स्मिचमग्रीवोषम मेघ० १४ 3 बोषना 4 बरकाह, ब्रह्मति 5 बाला ह्यब्रवीन्मावाव बोषब्रह्मणुपस्विनान्—रघु० ११५६ 6 बोपदी, बालों की हम्ना—गङ्गावा बोष—काव्य० २, बोषादावीय—मूष्ठा ७ 7 (ब्रा० में) बोपम्वर्जनों के उच्चारण में प्रयुक्त बोषमनि 8 कायस्थ, कम् कांता ।

बोषवन्—वा [बृ + वृत्] प्रकाशन, प्रकषन, उच्चस्तर के बोझना, सार्वजनिक एगन—आवासीय बंधावधारित बलात्कृत्यवृत्तकाना कृत.—बृहा० ३१२६, रघु० १२७२ ।

बोषकिल्मः [बृ + चिन् + इत्यम्] 1 बिहोम्बी नाट, हुंकारा 2 बाह्य 3 कोयल ।

ब्र (वि०) (स्त्री०) [केवल सवात के कला में प्रयोज्य] [हन् + क, लिङां ङीप्] ब्र करने वाला बिनासक, बुर करने वाला, बिकल्पक—बाह्यमन्त्र, बाह्यमन्त्र, वातमन्त्र, पित्तमन्त्र, ब्रम्भन करने वाला, बुर करने वाला, पुष्पमन्त्र, ब्रम्भन आदि ।

ब्रा (म्भा० पर०—ब्रह्मन्, ब्रात ब्राण) 1 ब्रूवा, पता लगाना, ब्रू का प्रत्यक्ष ज्ञान करना—स्युज्ज्वलि ब्रूो हलि विप्रमन्त्रि ब्रूज्ज्म—हि० ३११४, भावि० ११९९, ब्रूवन करना ब्रेर०—आपवति ब्रूवकान्—बहि० १५११०९, (अब, ब्रा, उच, वि, सक् ब्रादि उपसर्ग लगने पर भी इस बात के बच्चों में बिबेक कतर नहीं जाता मन्त्रवाद्यां बोष्ठां—मेघ० २१, बोकोद्वय—विप्रमन्त्री रघु० ११४३, दे० बहि० २१० १४१२०, रघु० ३१३, १३७०, मनु० ४२०९ भी) ।

ब्राण (बृ० क० बृ०) [ब्रा + ण] ब्रा,—कम् ब्रूवने की बिदा, ब्राणन सूकरी हलि मनु० ३१२४ 2 ब्र, बृ 3 नाक—ब्रह्मिन्द्राणि ब्रूवाण्यब्राणरत्नमन्त्रात्मनि—सां० का० २६, ब्रह्म० ६१२७, मनु० ५१ १३५१ सब—इन्द्रिज्मन् ब्रूवने की इन्द्रिय, नाक—माता—ब्रवति ब्राणम्—सर्ग स०,—अकम् (वि०) 'बो' बौधों का काम नाक से लेता है ब्रवति अथा (बो) ब्र कर अपने मार्ग का ज्ञान होता करता है,—सर्वत्र (वि०) नाक की सुहावना, वा सुकर सुखद्वार, सुवन्धुवत (—कम्) लुज्ज, सुवन्ध ।

ब्रातिः (स्त्री०) [ब्रा + जित्] ब्रूवकी की बिदा—ब्राति—रमेवबवरी—मनु० ११५८ 2 नाक ।

क [चम् (वि) + ड] १. चम्पना २. कम्पना ३. मोर (कम्प०) विन्मोहित, बर्षों की बतलाये वाला कम्पन्य
— १. संवोधन (मीर, बी, तथा, इसके अतिरिक्त)
— कम्प या उचितियों की चीकने के सिद्ध प्रयुक्त किया जाता है; (इस बर्ष में यह उस प्रत्येक कम्प या उचित के साथ प्रयुक्त होता है जिसे मिलाता है या इस प्रकार बिने हुए अन्तिम कम्प या उचित के परवाना रक्खा जाता है, परन्तु यह वाक्य के आरम्भ में कभी प्रयुक्त नहीं किया जाता है) यनी निम्नमूल्य भ्रमति च किमप्यासिद्धि च - मा० ११३१, ती नुम्पुल्लपी च - रघु० ११५७, मनु० ११६४, ११५ कुलेन काल्या बसता मयेन नुम्पुच तैस्तीविरनचरान् - रघु० ११७९, मनु० ११२०५, ११२१६ २. विवोधन (परन्तु, तथापि, ती जी) - सायविदमायनपय स्फुरति च बाहु - ड० ११२६ ३. निवचन, निर्वाचन (निस्तन्वेह, निवचय ही, ठीक, विमकुल, सर्वथा) कर्तित एवमार्थ तब च यद्विना बाह्यनयस्यो - वच०, से तु बायंत एवायी ताचावच द्युसे स ठी - रघु० १२१४५ ४. कर्त (यदि - वेत्) कीर्तिर्तु वेच्छते (= इच्छते वेत्) नूड हेतु मे नवत मनु - यदा०, कोमरवास्ति (अस्ति वेत्) द्युन किन् - कर्तु० २१४५, मने० पा० ५. यह प्रायः पाचपुष्टि के सिद्ध भी प्रयुक्त होता है - बीम पार्थस्तवैव च - वच० (कोककार उद्वर्त्तत बर्षों के साथ 'च' के विन्मोहित बर्ष मीर बतलाते हैं जो कि संवोधन या समुच्चय के सामान्य बर्षों के अन्तर्गत हैं - १. कम्पाच - बर्षात् मुक्क तच्च की किली बीन तच्च से मिलाता - बी विज्ञासत वा पानच, दे० कम्पाच २. समाहार बर्षात् समुच्चयार्थक संबंध - यथा पाणी च पाणी च साविपायम् ३. इतरेतरयो - बर्षात् पारस्परिक संवोध - यथा पक्षराच लघोचनच पक्षराचघोषी ४. समुच्चय - बर्षात् सब मिलाकर यथा वयति च वयति च); दो उचितियों के साथ च की बार २ बावृति होती है १. 'एक मोर - दूसरी मोर' 'बर्षा - तथापि' अर्थ - विरोध को प्रकट करने के सिद्ध - न कुम्पना लकनेनुमुषी च का किमपि वेदजनञ्ज विवेचितम् - विक्रम० २१९, ११३, रघु० १११७ वा २. दो बातों का एक साथ होना - या कम्पवहित चटणा को प्रकट करने के सिद्ध (उवाही - लोही) - से च प्रायुष्यवत्स नुमुषे चापिपूजः - रघु० १०१६, ११४०, कु० ११५८, ६१, मा० ६१७, मा० ११३९ ।

कम् (म्वा० उच० - चर्कति - से, चर्कित) १. कुट होना, समुपट होना २. प्रतिरोध करना, मुकाबला करना ।

कम्पत् (धरा० वर० (विरक्त) - मा०) चर्कति - स्ते. चर्कति १. चमकना, उज्ज्वल होना मध्यचर्कित

चर्कति नीलमलिनबीजोचनं कोचनम् - नील० १०, चर्कतत् पाचचमूरचर्चना - वि० ११८, प्रह्लि० ११२७ २. (मार्ग०) प्रसन्न होना, समुद्र होना - विन्मोति कोमवेवमातुकाचिराम तस्मिन् कुलचर्कतते - वि० ११२७, वीर० चमकाना, प्रकानित करना - वि० ११६, वि० चमकना, उज्ज्वल होना ।

चर्कित (वि०) [चर्क + क्त] (वर के कारण) १. चरचरात हुआ, कोपता हुआ, मय, साधन - मेच० २७ २. बरामा हुआ, प्रकल्पित, कोचकका व्याधानुसारचर्कित हरिणीव याति - मृच्छ० ११२७ अयत ४६, मेच० ११ ३. नयमीत, बीह, लसक - चर्कितविलोकितासकन रिखा - नील० २, नीलस्यचर्कितेक्षरा (विश) - रघु० १०७३, तम् (कम्प०) मय से, नीचकका होकर, लयल होकर, विरमय के साथ - चर्कितमूर्ध्वत तथापि पाच्यमम्य माकवि० ११११, लयचर्कितम् - नील० ५, मा० ११४ ।

चर्कोट [चर्क + मोरन्] पञ्चविधेय, तीतर की याति का पक्षी (कहते हैं कि चम्पना की किरनें ही इसका बाहार हैं) - ज्योत्स्नायामनवाससेन यपुषा यताचचर्कोटा - वना - विज्ञा०, ११११, इतचर्कोटासि किमोकेति - रघु० ११५९, ७१२५, चुरचचर्कोटये तच्च वचन - चम्पना रोचयति कोचनचर्कोट - नील० १० ।

चम्प [किमते जनेन, क चम्पयं च वि० विन्म - मारा०] - बाड़ी का वहिवा - चम्पत्यपरिवर्त्तते दुष्कायि च दुष्कायि च हि० ११७३ २. कुम्हार का वाक ३ एक तीक्ष्ण मोल बरच, चर्क (विन्म का) ४ तेज वेरने का कोलू ५ वृत्त, मध्यम कलापचर्कम् विवेक्षितायनम् - रघु० २१२४ ६ दल, समुच्चय, लघु - वि० २०१६ ७ राग्य, एकाचिपय ८ बाँट, विज्ञा, बाय - मनु० ९ वर्तुलाकार लीक लूह १०. देह के भीतर के 'चर्कच', भूलाकार आदि ११. कालचर्क, बर्ष समूह १२. क्षितिज १३ तेजा, समूह १४. लम्ब का कम्पाच वा समुपाय १५. ज्वर १६. नदी का मोल, - क १ हंड, चर्कवा २ समूह, रक, बर्ष । लय० - बर्क १. देही नदीन वाला हल २. बाड़ी ३. चर्कवा, - क १. बाबीचर, लवेरा २. पुष्ट, चर्, लय ३. लवर्नूदा, तीमार, - बाबीचर, - बावृति (वि०) कर्त्तुलाकार, मोल, - बावृति विन्म का विवेक्षण, अन्तर्गत ज्वर बाको वा चर्कचर्कार वति, - बावृति, - बावृति चर्कवा - बावृति होनकुचकुट - मनु० ५१ १२, - लवेरा १. 'चर्कवाणी' विन्म का साथ २. जिसे का लवीच अधिकारी, उलवीचिन् (पुं०) लोको, - चर्कचर्क १. नाचन, २ एक प्रकार का कुम्पन हल, - चर्कः नाचपुन लकिता, - लति (स्त्री०) चर्क.

कार मति, सोलाई में बुझा, —बुझः बघोक बुझ, —बुझण, —भी (स्त्री०) बुझाधीर, परकोटा, काई, —बार (वि०) बूत में बुझने वाला, —बुझावनिः मुकुट में लगी सोलमणि, —बोझक, —बोझिन् (पु०) कुम्हार, —तोर्चन् — एक पुष्प स्थान का नाम, —बेङ्गः सूजर, —बर 1 बिष्णु का विशेषण- चक्रवरप्रभाव- रघु० १६।५५ 2 प्रभु, प्रान्त का राज्य पाल या शासक 3 भाव का कलाबाज या बाजीगर, —बारा पहिए का बेरा- भावि, पहिए की नाह नामन् (पु०) 1 चक्रवा 2 लोहे की मासिक धातु, बासक 1 दल का नेता 2 एक प्रकार का मुगध-द्रव्य, —नेति पहिए की परिधि या बेरा भीरवैष्णवस्वरूपि च दया चक्रोन्मिश्रमेण भेष० १०९, —बावि बिष्णु का विशेषण, —बाव गवक 1 गाड़ी 2 हाथी, बाल 1 राज्यपाल 2 सेवा के एक प्रभाव का अधिकारी 3 क्षितिज, क्षण, बाल्यक युव, —बालः कः, —बाकः सन्, उन् 1 वृत्त, मरल 2 सङ्ग्रह, वर्ग, समुच्चय, राशि-कैरवचक्रबालम् भर्तृ० २।७४ 3 क्षितिज, (कः) 1 पुराणों में वर्णित एक पर्वत-शृङ्खला जो भूमिदल को दीवार की भाँति घेरे हुए तथा प्रकाश व अन्धकार की सीमा समझी जाती है 2 चक्रवा, मन् (पु०) 1 चक्रवारी 2 बिष्णु का नाम, —नेविनी रात, भकः-भसिः (स्त्री०) सराह मान आगेप्य चक्रार्जिभूषणतेवास्यच्छेद यत्नोत्थि-क्षिता विभाति रघु० ६।३२, —कवचस्मिन् (पु०) लप की एक मति, —बुझः सूजर, बासन् पहिये से चलने वाला बाहुन, रवः सूजर, —बस्मिन् (पु०) 1 सञ्जाद, चक्रवर्ती राजा, सत्तार का प्रभु, सन् 2 तक सीने राज्य का स्वामी (आसम्भ्रसितीष जयर०) पुष्पमेव नृपतेत चक्रवर्तिनमाप्नुहि श० १।१२, तव तन्नि कुचावेनी नियत चक्रवर्तिनी, आसम्भ्रसितीषोऽपि भवान् वन करप्रव उद्भूत, (जहाँ चक्रवर्तिन् सन् न-दोष है, वहाँ हुसरा जहाँ है 'आकार प्रकार में चक्र से मिलता जुलता' 'गोम'), —बाकः (स्त्री०) —की) चक्रवा-दूरीभूते मवि लहरे चक्रवाकीभि-वीकान्-मेघ० ८।, —बाकः 1 सीमा, द्व 2 दीवट 3 कार्य में प्रयुक्त होना, बलः बन्धर, पुष्पन-जीवी, —बुझिः व्याज पर व्याज, चक्रवृद्धि व्याज- मनु० ८। १५१, १५६, —बुझःदीन्यदः की बरलाकार स्थापना, —कीकन् राय, (कः) चक्रवा, —आङ्गकः चक्रवा, —हृल्लः बिष्णु का विशेषण ।

चक्र (वि०) [चक्रविद कावलि-ई+क] पहिये के आकार का, मंडलाकार, कः (तर्क०) बंदल में तर्क करना ।

चक्रम् (वि०) [चक्र+कतुप; मत्य व] 1. पहियों

वाला 2. मंडलाकार, (पु०) 1. तेजी 2. प्रभु, सञ्जाद 3 बिष्णु का नाम ।

चक्रावली, चक्रवर्ती [व० व०] हस्तिली ।

चक्रिका [चक्र+ठन् टाप् 1. डेर, दल 2. दुरमतिवि 3. बुटना ।

चक्रिन् (पु०) [चक्र+इति] 1 बिष्णु का विशेषण-—मि० १३।२२ 2 कुम्हार 3 तेजी 4. सञ्जाद, चक्रवर्ती राजा, निरकुण शासक 5 राज्यपाल 6 मन्त्रा 7. चक्रवा 8 मनुष्यक, मुखावरि 9. लोप 10 कीटा 11 एक प्रकार का कलाबाज या बाजीगर ।

चक्रिय (वि०) [चक्र च] गाड़ी में बैठ कर जान वाला, यात्रा करने वाला ।

चक्रोद्भूत (पु०) [चक्र+उद्भूत, मत्य व, नि० चक्रस्य चक्रोद्भावन] तथा-—मि० ५।८ ।

चक्र (वदा० वा०-चष्टे) [आर्चबानुक लकारो में अनिर्णयित] 1 देखना, पर्यवेक्षणा करना, प्रत्यक्षज्ञान प्राप्त करना 2 बोलना, कहना, बतलाना (मन्त्र० के माध०) जा . बोलना, बोधना करना, वर्णन करना, बयान करना, बतलाना, पढ़ाना, ममाचार देना (संज्ञ० के माध०) रघु० ५।१९, १२।५५, मनु० ४।५६, ८०, इत्याख्यानविद आचक्षते मा० २।२, कहना, लघोचित करना भाषि० १।६३ 3 नाम लेना, पुकारना सरि . 1 बापना करना, वर्णन करना 2 निम्नता 3 उत्प्रेक्ष करना 4 नाम लेना, पुकारना-वेदप्रदाना-दाचार्य पितर परिचक्षते, मनु० २।१७, वन० १७।१३, १७, ब्र . 1 कहना, बोलना, निबन्ध बनाना-स्वयमायु किलातिस्वयं दहति प्रतमिति प्रचक्षते-रघु० ५।८६ २. नाम लेना, पुकारना बोध्यात्मन कार-यिता ते जेवन्न प्रचक्षते मनु० १२।१२, २।१७, ३।२८, १०।१४, अन्वा-त्यान देना, छोड़ देना, पीछे हटा देना, व्या- , व्याख्या करना, टीका लिखन करना ।

चक्रम् (पु०) [चक्र+चक्षि] 1. अन्व्यात्मक, बधे-विज्ञान का चिह्नक, दीक्षाचक्र, आध्यात्मिक चक्र 2. बृहस्पति का विशेषण ।

चक्रव्य (वि०) [चक्रवे हित स्वात् चक्रवृत्+वत्] 1. मनोहर, प्रियदर्शन, मुद्रावता, मुखर 2. क्षीणों के लिए हितकर, व्या प्रियदर्शन या सुखी स्त्री ।

चक्रवृत् (नपु०) [चक्र+उत्ति] 1. जीव, वृक्ष तमसि न पश्यति विनेन किना तच्चक्षुरपि-अन्वलि० १।९, कृष्ण-कारे दधचक्रः श० १।१, तु० प्राणचक्रवृत्, आनचक्रवृत्, नयचक्रवृत्, चारचक्रवृत् भावि हज्जों की 2 दृष्टि, दर्शन, नजर, देखने की क्षमि-चक्रवृत्पर्व प्रही-वते- मनु० ४।४१, ४२। वन०-—कीचर (वि०) वृक्ष, दृष्टिकोचर, दृष्टि-वराह के अन्तर्गत होने वाला,

—बालम् प्राच प्रतिष्ठा के समय मूर्ति की बाँसों में रम करना,—बचः दृष्टि-वरास, कितिज, —बलम् आलो की डोह, बक,—राजः (कञ्जुराजः) १ बाँसों में लाली २ 'बाल' का प्रेम' बाल लड़ाने से उत्पन्न प्रेम वा अनुराग —पुरुषसुरागमनम् मनसोजन्मपरना—मा० ११९, चञ्जुराजः कोकिलेषु न परकलनेषु—का० ४१ (यही इस तरह का बच 'बाल बंद जाना' की है), —रोहः (कञ्जुरोह) आँस की बीमारी,—विचय १. दृष्टि-वरास, निगाह, उपस्थिति, दृश्यता—बलविषया तिम्रितेषु कपोतेषु—हि० १, मनु० २।१९८ २ दृष्ट का विषय, कोई की दृश्य पदार्थ ३ कितिज, बलम् (पु०) लाप, कि० १६।४२, नै० १।२८।

चञ्जुलम् (वि०) [चञ्जु + मनु] १ देखने वाला, जोकी बाँस, देखने की लक्षित वाला,—तदा चञ्जुलता प्रीतिरातीतमरका इवो—रघु० ४।१८ ०ता ४।१३, २. अच्छी दृष्टि रखने वाला।

चञ्जुलः, -र [चञ्जु + उज्ज्व, उरब् वा] १ बुद्ध २ मावी ३ बाह्य (नपु० की)।

चञ्जुल्यम् [चञ्जु + ल्य + ल्यट्, ल्यट् लृट् नारा०] १. इधर उधर घूमना, भ्रमना-भ्रमना, भ्रम करना बिप चञ्जुल्य रात्री—बाण० ९७, चञ्जे स चञ्जुलचञ्जुल्य-चञ्जेन—नै० १।१४४, २. भ्रम २ या टेड़ा-मेड़ा वाला।

चञ्जु (म्या० पर० चञ्जुति, चञ्जुन) १ चलावमान करना, लहराना, हिलाना—समरधिरति चञ्जुल्यचञ्जुल्यचञ्जुना—उत्तर० ५।२, मा० ५।२३, चञ्जुल्यचञ्जु—आवा० ४, चञ्जुल्यमान—गीत० १ २. चिपचिपति हुमति विभीषति रोषति चञ्जुति मृञ्जति नापन्—गीत० ४।

चञ्जुः [चञ्जु + अच्] १ टोकरी २. पाँच मनुषियों से जाया जाने वाला वायव्य, पचास मान।

चञ्जुलीन् (पु०) [चञ्जु + ल्य, भित्ति, यङोल्] जीरा,—करी बरीकरीति चेद् विष् सरीकरीति काम्, सिबरी बरीकरीति केन चञ्जुलीतिचञ्जुली—उद्भट।

चञ्जुलीक [चञ्जु + ल्य, भि० हितम्] जीरा,—चुल्लयति मवीवा चेतावा चञ्जुलीक—रत्न०, कुम्भ लतावाचिमुक्त-मकरन्द रत्नावाचि चञ्जुलीक, प्रभवप्रकृष्टप्रभव-चञ्जुलकातरनाचवीतः—विजया० १।४, धिक्काक० १।२, भाषि० १।४८।

चञ्जुल (वि०) [चञ्जु + अच्, उच्च गति कालि का + क वा लारा०] १. चलावमान, हिलता हुआ, कपमान, चरचराता हुआ भ्रमन् गतिहरिणीसमुच्चलाली—गीत० २७, चञ्जुलकुम्भक—कोय० ७, अमर ७९ २. (आलं०) चलचित, चलल, अस्थिर जोया मेघ-विश्राममध्यविश्रमलीलाशयनीचञ्जुलता अलं० ३५४, हि० २।१९, अमरचञ्जुलमनिरम्—अम० ५।२४, -क

१ चञ्जु २ प्रेमी ३ स्वेच्छाचारी, ला १ विचली, २. चलीकी अविच्छापी दीपी लक्ष्मी।

चञ्जु [चञ्जु + अच् + टाप्] १ जेत से लनी कोई वस्तु २ पुत्राल का बना पुतला, नृदृष्टा, नृद्विषा।

चञ्जु [चञ्जु + उज्] १ प्रसिद्ध, विख्यात, विहित २ चतुर (जैसे कि अक्षर चञ्जु) दे० चञ्जु, च्च हरिच, च्च,—च्च (स्त्री०) चोच, च्च सम० च्च, च्च पत्नी की बन्द चोच—चञ्जुपुट चपल्यन्नि चकारपोता रम० भाषि० २।१९, अमोच चञ्जुपुटमीनमृदा विहायमा नेन विहस्य मृष—नै० १।२९, अस्मिन्-चञ्जुपुटेन पजनी—२।२, ४, अमर १३,—महारः चोच से दूग मारना,—भृत्, भृत् (पु०) पत्नी,—तुषिः चञ्जु, लीचिक पत्नी।

चञ्चूर (वि०) [चञ्चु + उरच्] चतुर, विवेचन।

चञ्चु १ (म्या० पर०—चञ्जित, चञ्जित) टुटना, भिरना, झलन होना ॥ (चुरा० उज्) चाटघति—ते)

१ मार डालना, जमि पहुँचाना २ बीचना, नोकना, उच्, १ मयभीत करना डालना, डराना २ उल्ले-डना, हुलाना, नाच करना, नै० ३।७ ३ मार डालना, जमि पहुँचाना।

चटकः [चट + कञ्] चिरिया, मोरैया।

चटका, चटिका, [चटक + टाप्, शस्तेलच] चिरिया।

चट्, -ट (नपु०) [चट् + क्] हुपा तथा चापमृत्ती से पूर्ण शब्द, दे० चाट्, टु पेट।

चटुक (वि०) [चट् + लृच्] १ कम्पमान, चरचराता हुआ, अस्थिर, घुमकट, दोलायमान—आवस्तवीकान अमरच-टुलावापदम्—शि० ५।९ नासातिमाचचटुनी स्मरत मुनेन—रघु० ९।५८, चटुकलफरोद्धतमप्रेक्षितानि मेघ० ४० २ चंचल, चलल (जैसा कि प्रेम)—कि

लब्ध चटुक लयेह ययला लीलाभ्रमेतां वसाम् अमर १४, चटुकप्रेक्षा दधियेन ७१, ३ चरिया, सुन्दर, चिकर इति चटुकचाटुद् चाटुचरिणी राजिका-मधि चयनवातम्—गीत० १०, ला दिवली।

चटुलीक, चटुलीक (वि०) [कर्म० ल०, भि० लापु] १ कपनशील २ प्रिय, सुन्दर ३ मधुरभाषी।

चच (वि०) [चञ्जु + अच्] (समाह के अन्त में) विख्यात, प्रसिद्ध, कुशल, कीर्तिकर अक्षरचञ्च, च चना।

चचक [चञ्जु + कञ्] चना—उपस्थितिप्रिय हि चचक शाला कि प्राटुक भल्लुम्—चच० १।१३२।

चञ्च (वि०) [चञ्जु + अच्] १ (क) हिल, प्रचण्ड, उच्च, आवेगपूर्ण कापी, हट्ट अर्धकमेोरपरचञ्चवात् गुरो हुलागप्रतिमाद् चिमेचि—रघु० २।४९, भाषि० १।२०, दे० की० चञ्ची २ उच्च, गरम जैसा कि 'चञ्चापु' में ३ अधिक, कुर्लीका ४ तीका, तीकन,—उच् १ उच्चता चञ्ची २ आवेग, चोच। सम० चञ्चु,—दीपिति.

चन्द्र (आ० पर०—चन्द्रवि, चन्द्रित) १ चन्द्रमा, प्रसन्न होना, वृष होना ।

चन्द्र [चन्द्र + चिच् + ङङ्] १ चन्द्रमा, कपूर ।

चन्द्रम, -चन्द्र [चन्द्र + चिच् + ल्युट्] चंदन (चंदन का वृक्ष, इसकी लकड़ी या इससे तैयार किया गया कोई स्निग्ध पदार्थ—मुगध और क्षीतलता की दृष्टि से अत्युत्तम समझा जाता है) । अनेकायायुश्चन्द्रमनेचने च० ८७१ मणिप्रकारा सरत च चंदन पृथी प्रिये यान्ति जनस्य सेव्यनाम् च० ११२, गव च आपत लाकडचन्दन किल क्षीतलम्, पुष्पात्रस्य सत्यमेवचन्दनादतिरिच्यते च० ५१२०, विना मलयमयच चंदन न प्रराहति—११६१। सम० अक्षय—अहि गिरि, मलय पर्वत जडकम् चन्दन का पानी पुष्पम् लोग, -सार अरधन अष्ट चन्दन का लकड़ी ।

चन्द्रि [चन्द्र + किरिच्] १ हाथी २ चन्द्रमा अणि मानमममृतीचयसो विमनगारदबान्दरबोदक। --भावि० ११११३ मुकुन्दमुलचान्दरे चिरमिव चकारायनाम्—४११।

चन्द्र [चन्द्र + चिच् + रक्] १ चन्द्रमा, यथा प्रह्लाद नाच्यन्ते च० ५१२, इतचन्द्रा तमस्य कीमदा—८३०, न हि महर्षे उपोत्तमा चन्द्रचाण्डालवर्मा—हि० ११६१, मूख चंदन आदि, पर्यायचन्द्र सरत्त्रियामा—कु० ७१२६। पौराणिकचन्द्र के लिए दे० भीम) २ चन्द्र ग्रह ३ कपूर विजयनम्राधिकचन्द्र-मागतविभावनकापालत्रप पाण्डुराम् न० ११५१ ४ मयूर पक्षी में आँख का चिह्न ५ जल ६ मान (जब चन्द्र ग्रह ममान के जल में पड़कर हाता है तो इसका जल जाता है) ग्रह प्रमुख श्रीमान् यथा पुष्पचन्द्र 'मनुष्या मं चन्द्रमा' अर्थात् एक अष्ट वा महांमुखा व्यक्ति), हा १ इलायची २ चूना चमरा (जिस पर केवल छन हो हो) । सम० अम् चन्द्रमा को किण्व अयं आभा चन्द्रमा 'बुधामणि, 'मौलि' 'सोकर शिव के विशेषण, आत्मन् १ चंदनो २ चंद्राश ३ प्रभात कल (जिसमें केवल छन हो हो)—आत्मन्, औरत—आ—आत, -समव—मन्वन्,—बुध बुध-ग्रह,—आत्मन् (वि०) चन्द्रमा जैसे मन वाला (क) कांतिकेय का विशेषण—आशीठ शिव का विशेषण, आभास 'मृष्टा चंद्रमा' वास्तविक चन्द्रमा से मिलती मुलनी आकाश में दिखाई देने वाली आकृति—आत्मन् कपूर,—इच्छा कमल का पीया कलसा का मयूर, राज का कुमदिनी का बिलसा, उच्चः चन्द्रमा का उगना, उच्च चन्द्रागतमणि—आत्म चंद्रकांतमणि (चन्द्रमा के प्रभाव में कहते हैं इस मणि से रत्न बनता है) । इवति च द्विपक्षमाचुदगते चन्द्रकांत—उत्तर० ६१२२, वि० ४१५८, अमह ५७, मर्त्य० ११२१, मा०

११२४ (स,—सम्) राज को निकले वरमा स्वेत कुम् (सम्) चन्दन की लकड़ी—कला चन्द्रमा की रत्न—राहोश्चन्द्रमाविमानचरी हैवात्तमाकाश मे—मा ५१२८,—कात्मा १ रात २ चांदनी,—काति चार (नपु०) चाँदी,—कला चाँदमास का अंतिम ति (अमावस्या) वा नूतनचन्द्रविषय जब कि चन्द्र दिखाई नहीं देता,—बुद्ध कर्कराशि, राशिचक्र में चंद्र राशि, मौल चन्द्रलाफ, चन्द्रमडल,—मौलिका चाँदनी—ग्रहचक्र चन्द्रमा का राहुग्रस्त होना,—चन्द्रमा १ मछली बुध—बुधचणि मौलि,—सोकर १० के विशेषण 'रहस्य' लभ्य चन्द्रसोकर—कु० ५१५८ ८६, र३० ६३६ हागा (पु०, ब० ब०) 'चन्द्रमा की रजिवा' २७ नख (पराधी की दृष्टि से यह रत्न की पुत्रि की की और चन्द्रमा को व्याही गई की बुति चंदन की लकड़ी (स्त्री०) चांदनी, मानन् (पु०) कपूर पाण्ड कंदकिरन्—वेध० ७०, मा ५१२—प्रभा चन्द्रमा का प्रकाश, आका १ बह इत्यादि २ चंदनी किं बहु अनुस्मार (०) का चिह्न अस्मन् (नपु०) कपूर जामा दक्षिणभारत की गज नदी अस्त तलवार दे० चन्द्रास,—मुक्ति (नपु०) चाँदी अणि चन्द्रानि अणि,—देका,—केला चन्द्रमा की बला, देणु माहिर्यचोर,—लोक चंद्रसा—सोहकम् सोहन्—सोहकम् चाँदी,—बल राधाव वा चन्द्रमा, भारत के राजकुमारों बुद्धी बड़ी पति चंदन (वि०) चन्द्रमा जैसे मुख वाला,—अस्म एक प्रकार की प्रतिभा व तपस्या—चाँदचण,—कात्मा १ चाँदरा (चर में छक उपर की मखिल का ककरा) च० ११४० २ चंदनी,—आत्मिका चाँदारा, सिला चंद्रकांतमणि—अटि० १११५,—संज्ञ कपूर, संभव बुध (वा) छोटी इलायची,—आत्मो-क्यन् चांद्र स्वर्ण की प्राप्ति,—हम् (नपु०) राहु का विशेषण हास १ चमकीली तलवार २ राजन की तलवार—हे पाणव किमिति बाळकच चन्द्रासम् बालरा० ११५६, ६१ ३ केरल का एक राजा, मुघात्मक का पुत्र (यह पुनर्जन में पैदा हुआ था, और इसके बावें पैर में छ अंगुलियाँ थी, इसी कारण इसका पिता राजाओं द्वारा मारा गया और यह अनाथ और वीर हो गया) । बहुत प्रबल करने के पश्चात् उसका राज्य उसे फिर मिल गया । बिल समव चन्द्रम के बोधे के साथ बुद्धी हुए कुल और अर्जुन राजन में भावे तो इसके उनसे मिलता कर की) ।

चन्द्रक [चन्द्र + क्] १ चाँद २ मोर के पंखों में आँख का चिह्न ३ माखन ४ चन्द्रमा के आकार का वृत्त (पानी में ठेल की बुँद मिलने से बन जाता है) ।

चन्द्रकिन् (पु०) [चन्द्र + किन्] मोर,—वि० ३४५९ ।

चक्रवर्त्तु (पुं०) [चक्र + च्त्वि + क्तृ, भाषेत्] चक्रि, -नक्षत्र-
तापहृत्पुत्राणि ज्योतिष्मती चक्रवर्त्तव्य राशिः—रघु०
१।२२।

चक्रिका [चक्र + ठ्ठ् + टाप्] १. चक्रिणी, ज्योतिष्मा—इत.
स्तुतिः का कम् चक्रिकाया मयश्चिन्म्युत्तरकीकरोति
—नै० ३।११६, रघु० ११।११, काम्युक्तेः कुम्भीकरीच
परिहृत्तया चक्रिका—मासि० ४ २. (समास के
अन्त में) विमोक्षिकरण, प्रस्तुत विषय पर प्रकाश
बालना। जलकारचक्रिका, काव्यचक्रिका—पु०—कीमुदी
३. जयमगाहट ४. बड़ी इलायची ५. चन्द्रमाया नामक
नदी ६. मल्लिका कृता। सम०—अम्बुजम् चन्द्रोदय
होने पर मिलने वाला कुम्भ,--भाषः चन्द्रकांतमणि,
—वाग्मि (पुं०) चक्रोर पत्नी।

चक्रिकः [चक्र + इलच्] १. शिव का विशेषण।

चक्रि (म्बा० पर०—चपति) सांत्वना देना, डाँड देना।

ii (चुरा० उभ०—चपयति—ते) पीसना, चुरा
करना, मोड़ना।

चपटः=चपेटः

चपल (वि०) [चप + कल, उपकोकारस्वाकार] १ हिलने-
डुलने वाला, कपटान, धरचराने वाला—कुम्भज्योति
यवनचपलं शासिनो धीतमला—श० १।१५, चपला-
यलाक्षी—वीर० ८ २. अस्थिर, चपल, चमकिल,
दोलायमान—भा० २।११, चपलमति भावि ३. अंगुर,
अनिल, अचिकं—मल्लिकार्जुनतजलमतितरलं तद्वज्जी-
विममतिचपलचपलम्—मोह० ५ ४ फूँतीला, चपल.
चुल्ल—(चलम्) लौहवाष्पचपलम्यद्योयते—का० १।१८
५. बिचारावृत्त, अविषेकी—पु० चापल, —कः १. मछली
२. पारा ३. बातक पत्नी ४. जय ५. गुणं इव्य।

चपला [चपल + टाप्] १. बिचारी—कुम्भकमुमुम चपला-
मुपमं रतिपतिमनकानने—वीर० ७ २ अभिचारिणी
स्त्री ३. बहिरा ४. चप की देवी लक्ष्मी ५ बिह्व।
सम०—जलः चपल तथा अस्थिरमन स्त्री। शि०
१।१६।

चपेटः [चप + इट् + क्तृ] १. चपक २. चाटा।

चपेटा, चपेटिका [चपेट + टाप्, चपेट + कन् + टाप्, इलच्]
चट्टा—अपकोषभाषावः शिष्याय चपेटिकां ददाति
—महा० १।

चप् (म्बा० पर०—चपति, चप्) १. पीना, जाचमन
करना, बढ़ा जाना, —चपाय चप् माथीकम्—अष्टि०
१।५१४ २. जाना, जा—(जा—चापति) १. जाचमन
करना, एक साँस में पी जाना, चाटना—नाथेमे
हिममणि धारि चरपेय—वि० ७।१४, भावि० ४।३८,
उभ० ४।१ २. चाट लेना, पी जाना, सोक लेना
—जाचमति स्वेदकवाग्युक्ते ते—रघु० १।१२०,
१।६८।

चक्रवर्त्तव्य, चक्रकारः, चक्रकृतिः (स्त्री०) १. चिन्मय,
जाचमन २. सेल, तमासा ३ काव्य सोमवर्ष (जिससे
काव्यरस की अनुमृति होती है)—चेतचक्रवर्त्तव्य
कवितेज रम्या—भावि० ३।१, तदपेक्षया वाच्यस्वैव
चक्रकारित्वात्—काव्य० १।

चक्ररः [चक्र + चरच्] एक प्रकार का हरिण,—रु०—रघु
वीरी (प्रायः चक्रर मृग की पूछ से बनी),—री, चक्रर
की भाषा—यस्यार्चमुक्तं गिरिराजशब्दं कुर्वन्ति बाल-
व्यजर्नैश्चमर्षं कु० १।१, ४८, शि० ४।६०, मेघ०
५३। सम०—कुम्भम् चक्रर की पूछ जो वसे का काम
देती है, (—चक्र) मिलहरी।

चक्रिकः [चक्र + ठ्ठ्] कोविदार वृक्ष, कचनार
का पेड़।

चक्रलः,—सम् [चक्रलस्मिन् चक्र + अमच् ताग०] सोमपात्र
करने का लकड़ी का चमचे के आकार का यज्ञ पात्र,
—पात्र० १।१८१, (चमसो भी)।

चक्र (स्त्री०) [चक्र + ऊ] सेना पर्येता पाण्डुपुत्राणासा-
चार्यं महुती चक्रम् भग० १।३, वासवीना चक्रनाम्
—मेघ० ४३, गजवती जयनीकहवा चक्र रघु०
१।१० २ सेना का एक भाग जिसमें ७२९ हाथी
७२९ रथ, २१८७ सवार ६-७ ३६४५ पदाति हो।
सम०—चक्र सैनिक, घोड़ा,—मावः, च०,—चक्रि
सेनापति, कमांडर, सेना नायक—रघु० १।३७
—हरः शिव की उपाधि।

चक्रुकः [चक्र + ऊर, उत्त्वम्] एक प्रकार का हरिण—चक्रासल
चापचक्रुकचर्मजा—शि० १।८।

चक्र (चुरा० उभ०—चपयति—ते) जाना, चलना-
फिरना।

चक्रकः [चक्र + कृक्] १ चक्रा नामक पीछा जिसके पीछे,
मुगधयत्त कुल समते है २ एक प्रकार का कुम्भ इव्य,
—कम् इस वृक्ष का कुल—अष्टापि ता कलकचक्रक-
वामपीतोम्—वीर० १। ३. सम०—चक्रा चक्रककी,
स्त्रियों का एक आभूषण जो बने में पहना जाता है
२ चक्रा के फूलों की माला ३. एक प्रकार का छत्र,
दे० परिधिष्ट, —रम्या देसे की एक जाति।

चक्रकालः [चक्रकैव पनताचवविशेषेण अलति, चक्रक
+ कल + ऊप्] कड़हल का पेड़।

चक्रकावली, चपा, चपावती [चक्रक + कृत् + कृप्, कल
वीर्यच, चक्र + कृत् + टाप्, चक्रा + कृत् + कृप्
वत्] नगा के किनारे एक प्राचीन नगर, अथर्वेय की
राजवाणी, वर्तमान नामकपुर।

चक्रालः=चक्रकालः।

चक्रः (स्त्री०) [चक्र + ऊ] एक प्रकार का काव्य जो
मक्ष और पक्ष दोनों रचनाओं से युक्त होता है तथा
जिसमें एक ही विषय की चर्चा होती है—चक्रचक्रम

काव्यं चम्पूरिखमिषीयते - सा० २० ५५९, उवा०
मोक्षचंपू, नलचंपू और भारतचंपू आदि ।

चम्पू (च्वा० जा० - चयते) किसी जगह जाना, हिलना-
जुलना ।

चम्पू [चि + चम्पू] 1 सचात, सवह, समुच्चय, डेर, राशि
—चयसिखयाभिव्यवधारित पुरा - जि० ११३, मृदा
चय - उत्तर० २१९, मिट्टी का डेर, कचारा चय
—भृत्० ११५, बालों का मोड़ी (गुच्छा), इसी प्रकार
चमरीचय - सि० ४६० कुसुमचय गुणारचय आदि
2 किसी भवन की नींव की मिट्टी का टीला 3 किले
की लाई की मिट्टी का टीला 4 कुम्भवाचीर 5 किले
का द्वार 6 लिपार्ई, चौकी 7 भवनो का समूह, बिनाल
भवन 8 लकड़ियों का बट्टा ।

चम्पूचम्पू [चि + चम्पू] 1 चुनना, चीनना (फूल आदि का)
2 डेर लगाना, बट्टा लगाना ।

चम्पू (च्वा० पर० - चरति, चरित) 1 चलना, घूमना, इधर-
उधर जाना, चक्कर काटना, भ्रमण करना - नष्टा-
वाहका हरिनामिसावो मन्मन्द चरन्ति - श० १११५,
(यहाँ 'चर' का अर्थ 'वास करना' भी है) - रत्निभाषा
हि चरताम् भग० २१६९, कवचबेहराण्य रामस्यैव
मनोरमा - रच० १२५९, भृत्० २१२३, ६१६८,
८१२३६, ९१३०६, १०५५५ 2 अन्वेषण करना, अनु-
ष्ठान करना, परीक्षण करना - चरत किल दुश्चर
तप - रच० ८७९, याज्ञ० ११६०, भृत्० ३१३०,
3 करना, व्यवहार करना, आचरण करना (याय
'अधि' के साथ) - चरन्तीना च कायन - भृत्० ५१९०
९१२८७, आत्मवसवमुतेषु यचरेत् - महा०, नव्या त्व
साधु भावर - रच० १७६, (यहाँ पर शब्द 'भावर'
भी हो सकती है) 4 वास करना - मुचिर ति चरत्
सत्त्व - हि० ३१९ 5 जाना, उपमांश करना 6 काम
में लगना, व्यस्त होना 7 जाना, चरने रहना, किसी
न किसी अवस्था में विद्यमान रहना । प्रेर० - चाशयति
1 चलाना, हिलाना - गुलाना 2 भोजना, निवेदन देना,
हिलाना 3 घूर करना 4 अनुष्ठान करना, अध्ययन
कराना 5 समीप कराना, - जति 1 अनिकमन करना
उत्सवधन करना, बबहा करना 2 अपायार करना,
अनु - अनुकरण करना, छाया नकल करना, पाँजे
चलना, जय - 1 अनिकमन करना, अपायार करना
2 बबहा करना, जति - 1 अपायार करना, उत्सवधन
करना 2 (पति के रूप में) विश्राम को देना, बाँधा
देना - भृत्० ५१११२, ९११०२ 3 जानू करना, मग
चूँ करना - तथैवाभिचरन्ति - याज्ञ० ११२९५, ३१२८९,
जा० - 1 कर्म करना, अपायार करना, करना, अनु-
ष्ठान करना - तथैवाभिचरन्ति - याज्ञ० ११२९५, त्वं च तत्प्रेष्टवाचरे - विभक्त० ५१२०, रच०

११८९, भृत्० ५११५६, न चाप्याचरितः पूर्वैरयं बर्मा
— महा० 2 वर्तवि करना, व्यवहार करना, आचरण
करना - पुत्रमिवाचरेत् लिप्यम् - सिद्धा०, पुत्र मित्र-
ववाचरेत् वाच० ११३ घूमना, इधर-उधर फिरना
4 वायव्य लेना, अनुसरण करना - रच० ४१४४, उच० -
1 ऊपर जाना, उठना, निकलना, आगे बढ़ना - सि०
१७५२, 2 उठना, प्रकट होना, (शब्द) निकलना
उच्चचार निनवोऽस्मसि तस्या - रच० ९७३३, १५१
४६, १६८७, कोलाहलजनितद्वचरेत् - का० २७
3 बोलना, उच्चारण करना - शब्द उच्चरित एव
मामगात् - रच० ११७३ 4 प्रलोत्सर्ग करना,
पुरीषोत्सर्ग करना - तिरस्कारोच्चरेत्काष्ठलोष्ठच-
तृणादिना - भृत्० ६४९ 5 (आ० में प्रयोग) (क)
उत्क्रमण करना, बिचलित होना - भृत्० ८३३१,
(ख) उठना, बढ़ना ने० ५१४८, प्रेर० बुलवाना,
उच्चारण करवाना, उच - 1 सेवा करना, हाजरी
देना, सेवा में प्रस्तुत रहना - तिसिन्धुचचार प्रत्यह मा
मुकेशो - कु० ११६०, सममुचर भटे मुद्रिय चायिय
व - भृत्० ११३१, रच० ५१६२, भृत्० ३११९३
2 (रागी की) सेवा करना, चिकित्सा करना, परि-
चा करना 3 व्यवहार करना 4 निकट जाना, बुल-
ठाना, बाँधा देना, धरि, 1 जाना, इधर उधर
घूमना 2 सेवा-बुधूषा करना, सेवा करना या सेवा में
उपस्थित रहना - भृत्० २१२३३, भृत्० ३१४० 3 वा
भास करना, परिचयी करना, सेवा करना, प्र,
'इधर उधर चलना, एठ कर चलना 2 फैलना, - बाँधत
रोना, वर्तमान होना १ (प्रवा का) प्रचलन होना
4 कार्य आरम्भ करना, कार्य अपनाना, कार्य करने
लगना - भृत्० ९१२८४, प्रेर०) इधर उधर फिराना,
वि - 1 इधर उधर घूमना, भ्रमण करना, - रच०
२१८, मेघ० ११५ २ करना, अनुष्ठान करना, अन्वेषण
करना 3 कर्म करना, बर्तवि करना, व्यवहार करना,
(प्रेर०) 1 सोचना, विचारना, मनन करना 2 चर्चा
करना, वादविवाद करना - रच० १४१४९ 3 हिसाब
लगाना, अनुमान लगाना, हिसाब में गिनना, विचार
करना - परेषामाभिमर्षे, यो विचार्य बलाबलम् - यच०
३, मुचिरचयं यत्कृतम् - जि० ११२२, जयि, - 1 पच-
भष्ट होना, बिचलित होना 2 उत्सवधन करना,
विश्वास धान करना काटपूर्व व्यवहार करना,
सम् - (आ०) जब कि कर्म के साथ प्रयोग हो)
चलना, घूमना, जाना, गुजरना, इधर उधर फिरना
— शान्ति लभचरन्ताम् - भृत्० ८३३२, क्वचित्स्था
सचरेत् सुतामा - रच० १११९९, ने० ९१५७, तव-
ग्ना बनाना - कु० ११६ 2 अन्वेषण करना, अनुष्ठान
करना 3 दे देना, हस्तांतरित होना । (प्रेर०) 1 इधर

उपर सेवना, नेतृत्व करना, संचालन करना, -म० ५५/५
2 कैलाना, इधर उधर बुझाना 3 पहुँचाना,
समाचार देना, दे देना, तीप देना 4. चरने के लिए
पुड़ना ।

चर [चि०] (स्त्री० - री०) [चर + चञ्] 1. हिलने-डुलने
वाला, जाने वाला, चलने वाला (समाप्त के अन्त में)
2 कोपता हुआ, हिलता हुआ 3 अंगम द० 'चराचर'
- मनु० ३।२०१, भग० १३।१५ 4 तबीब मनु०
५।२९, ७।१५ 5 (शय्य की मर्ति प्रयुक्त) 'चर-
कालीन, मृतपूर्व आश्रय' 6 पदमे घनवान् पा,
इमी प्रकार वेदमन्त्र' १५५।कचर (मृतपूर्व अश्रय
पद), -चः 1 हुत 2 लक्षण पशो 3 अज्ञा लोचना
4 कीड़ी 5 मण्डप 6 मालवार । सम० अक्षर
[चि०] अगम और अक्षर चराचराणा नृत्ताना
मुक्तिराधारता गत कु० ६।६७, २।५, भग० ११।४३,
(चञ्) 1 मुष्टि की समस्त रचना ससार मनु०
१।५७, ६३, ३।७५, भग० ११।३, ९।१० 2 आकाश
बन्तरिज, -इत्यम् अगम वस्तु- मुक्ति वह मृति
जिसका बल्लुस या सारो निष्कामी भाव ।

चरक [चर + कञ्] 1 हुत 2 रमता साधु, अक्षय ।

चरह [चर + चट्] अज्ञ पशो ।

चरज, -नञ् [चर + ल्युट्] 1 पैर छिरति चरज एव
मस्तके चारवैनम् -वेणी० ३।३८, आत्मा काममन्मो-
यसि चरज विषयमृतम् - ३९ 2 अहारा, स्नान, धूपी
3 वृक्ष की जड़ 4. श्लोक की एक पंक्ति या पाद
5 बीबाई 6 वेद की शाखा या संप्रदाय 7 वण
-नञ् 1 हिलना-डुलना, प्रयत्न करना बुझना
2. अनुष्ठान, अभ्यास मनु० ६।७५ 3 जीवनचर्या,
बालचलन, (नैतिक) व्यवहार 4 निष्पत्तना 5 आना,
उपयोग करना । सम० - अनुत्तम, -उत्तम बहु पानी
जिसमें किसी घड़ेय बाण्डण या आध्यात्मिक उपदेष्टा
के पैर घोसे जा चुके हैं, - अरविचम्, कमलम्,
-वज्रम् कमल जैसे पैर, -आयुधः मृगी, -आत्मस्थानम्
पैरो के नीचे रीठना, कुचलना, पद हलिन करना
-हलिन (पुं०) -वर्धन (मपुं०) टकाना, व्यास पण,
काम्य, -कः बुझ, -वतम् (बुझने के चरणों में) गिरना,
साष्टान प्रणाम करना अथवा १७, -वसित (वि०)
चरणों में हस्तवत् प्रणाम करना - वेध० १०५,
-सुपूषा, सेवा 1 उपपन्नाम 2 सेवा, भक्ति ।

चरण [चि०] [चर + चमच्] 1. अस्ति, अमय, बाजरी
-चरना क्रिया 'अमयेष्टि क्रिया या अमयेष्टि संस्कार'
2. पंचमूर्ती, बाघ का -पुष्टं तु चरय नवो - अमर०
3. (आयु की दृष्टि से) बुढ़ा 4 विष्णुस बाहर का
5. पक्षिणी, पक्ष्मी 6. सबसे नीच, सबसे कम, -नञ्
(अव्य०) आक्षिप्तकार, अन्त में । सम० -अक्षतः

-अक्षिः -अक्षान् (पुं०) पक्षिणी पर्वत (पुर्व
और पश्चिमा इसके पीछे ही अस्त हो जाने वाले माने
जाते हैं) ; -अक्षत्वा अस्ति वशा (बुढ़ापा), -कालः
मृत्यु की वृद्धि ।

चरि [चर + इच्] जीव, जन्तु ।

चरित (मू० क० कृ०) [चर + क्त] 1. बुझा हुआ या
फिरा हुआ, गया हुआ 2 अनुष्ठित, अभ्यस्त 3 अक्षय
4 ज्ञात 5 प्रस्तुत तत्त्व । आना, हिलना-डुलना,
मान कम करना करना, अभ्यास, व्यवहार, कृत्य, कर्म
उदाहरिताना कि० १।१०, सर्व व्यवहय चरित
मन्त्र करोति १।८१ ३ जीवनी, आत्मजीवनो
ब्रह्मसंस्कार इतिहास कृतानी उत्तर रामचरित
रामजीन प्रमुष्यते-उत्तर० १।२ इसी प्रकार 'हस्तकुमार
चरितम् आदि । सम० -अर्थ (वि०) 1 अग्ने अपना
अधीष्ट ध्यय पूरा कर लिया है, सफल समयावधाय
मुंड चरितार्थमिवाभवत् म्पु० १।१७, १०।३६,
२।१७ कि० १३।६२ 2 सत्पुष्ट, नृप 3 कार्यन्वित,
संपन्न ।

चरित्रम् [चर + इच्] 1 व्यवहार, जीवन बालचलन
अभ्यास, कृत्य, कर्म 2 अनुष्ठान उपदेशन ३ इतिहास,
जीवनचरित आत्मकथा, बुझान, साहसकथा 4 प्रकृति,
स्वभाव 5 कर्मका अनुभासित नियमों का पालन
मनु० ३।२०, ९।७ ।

चरित्रम् [चि०] [चर + इण्यच्] अगम, सक्रिय, इधर
उधर घूमने वाला ।

चरः [चर + उच्] उठने वाला, आदि से, देवताओं
तथा पितरों की सेवा में प्रस्तुत करने के लिए
नंवार की गई आहुति - रघु० १०।५२, ५४, ५६ ।
सम० स्वाामी देवताओं तथा पितरों की सेवा में
प्रस्तुत करने के लिए चादलों को उबालने का कर्म ।

चर्च । (बुग० उम० - चर्चयति - ते, चर्चित) पड़ना,
ध्यान पूर्वक पढ़ना, अनुशीलन करना, अभ्यसन करना ।
1 (बुढ़ा) पर० चर्चित, चर्चित) 1 माली देना,
विपकारना निम्ना करना, बुराभावा कहना, चर्चा
करना, विचार करना ।

चर्चनम् [चर्च + ल्युट्] 1 अभ्यसन, आदृति, बार२ पढ़ना
2 तरी में उद्वेग लगाना ।

चर्चरिका, चर्चरी [चर्चरी + कञ् + टाप्, ह्रस्व, चर्च-
+ अञ् + झोप्] 1 एक प्रकार का गान 2 (स्त्री०
में) गालियाँ बजाना ३ विद्वानों का लक्षार पाठ
4 आमोद प्रमोद, हर्षयानि 5 उत्सव 6 सुशायव
7 चुपराते बाल ।

चर्चा, चर्चिका [चर्च् + चञ् + झोप्, चर्चा + कञ् + टाप्
ह्रस्वम्] 1 आदृति, स्वर पाठ, अभ्यसन, बार२ पढ़ना
2 बहुत, पुछ-पाछ, अनुशीलन 3 विचार विमर्श

—११५१, नगरावोदयकम्—इत्थं २. बने जाना, चल देना, (किसी के स्थान को) छोड़ चलना—स्वानावयुष्यकमपि—अ० ११२९, पुण्योन्मत्तवदपयम्—रघु० १२।२७, अ— १. हिलाना, जाना, कोपना—यत् ० २।४ २. जाना, सैर करना, चलने जाना, प्रस्थान करना, कूच करना ३. हस्त होना, बाधाबुधत्त या क्षुब्ध होना ४. गटकना, विचलित होना, वि- १. हिलाना-चलना, चलना पतति पतने विचलति पने लङ्कितमवपुष्यायम्—गीत० ५ २. जाना, जाने बहना, चक देना ३. क्षुब्ध होना, बाधाबुधत्त होना, (समुद्र की गति) कला होना—अथाकीदम्बसा पति—मट्टि० १५।७ ४. विचलित होना, गटकना—बाह्य० १।३५८, ii (गुवा० पर०—चलति चलित) खेलना, खीड़ा करना, केसि करना ।

चक (वि०) [चक् + अच्] १. (क) हिलाने-चलने वाला कपिले वाला, डोलने वाला, चरचराने वाला, (जीव भासि को) घुमाने वाला—चलामात्रा दृष्टि स्पृष्टि—अ० १।२४, चककाकपल्लकैरमात्यपुत्रै—रघु० ३।२८, कहाराने वाले—यत् ० १।६ (क) अयम (विप० स्मिन्)—चञ्चलचले लक्ष्ये—अ० २।५ २. अतिवार, चंचक, परिवर्तनशील, विचित्र, डीबाडोल—द्विधास्त्वन-वस्थितं नृणां न शक्य मेव चकं तुह्यन्ते—कु० ५।२८, प्रायश्चल नीरवभाषितेषु—३।१ ३. बलवती, अत्यंत, नयनर—चका लक्ष्मीचला प्राचाचकं जीवितवीर्यं ४. अत्यवस्थित, —कः १. कचकरी, नेपथु, कोच २. बायु ३. पारा—का १ चक की देवी लक्ष्मी २. एक प्रकार का युवक प्रज्व । लय०—अति चलायमान (==अति-चल) ;—चलाचले च ललारे चर्म एको हि निचल—यत् ० ३।१२८, लक्ष्मीमिव चलाचलाम् कि० ११।३ (चलाचला-चंचला—मल्लि०) नै० १।६०, (क) कीचा,—अज्ञातः गटिया बाय, बात रोग, —आलम्ब (वि०) चलपिता, चंचलमना, —इतिवच (वि०) १. मायुक २. विचयी, —इषुः बहु चनुचंर जितका शीर लयमभूत हो इवर उभर विर जाता है, अयोध चनुचंर, —कर्मः पुष्पी से बहु एक की वास्त-कि दूरी, —चञ्चुः चकोर पक्षी, —चञ्च, —चञ्चः अचञ्चल वृक्ष ।

चलन (वि०) [चल + गृह्] कतिशील, चरचराने वाला, कयमान, डीबाडोल, —चः १. चर २. हरिष, —चञ्च १. कोपना हिलाना, डीबाडोल होना—चलनात्मकं कर्म—पक्ष सं०, हस्त०, जान० आदि—तल्ल पुनञ्चल-चलनमनोहरवदनमतिरतिरायम्—गीत० ११ २. चयना, भरवना, —नी १. सामान्य स्त्रियों के पहनने के लिए लईना, पेटीकोट २. हावी को बाँधने की रस्ती ।

चलनकम् [चलन + कम्] एक छोटा लईना या पेटीकोट जिसे नीच जाति की स्त्रियाँ पहनती हैं ।

चलिः [चल + इन्] आचरण, चावर ।

चलित (यु० क० कृ०) [चल + क्त] १. हिला हुआ, चला हुआ, आन्दोलित, क्षुब्ध २. गया हुआ, विचलित एकमुक्ता स चलित ३. कथापत् ४. ज्ञात, जाँचपट (दे० चल्), —तम् १ हिलाना, स्थिति करना २ जाना, चलना ३ एक प्रकार का मूल्य—चलितं नाम नाट्यमन्त्रेण मासवि० १ ।

चलुः [चल + उल्] (पानी का) एक बूट, चुल्हूवर ।

चलुकः [चल + क्] १ चुल्हूवर (पानी) २. अंशलिघर वा एक बूट (पानी) यु० 'चलुक' ।

चम् । (म्वा० उभ०—चयति—ते) जाना; ii (म्वा० पर०—चयति) मार डालना, क्षति पहुँचाना, चोट पहुँचाना ।

चमकः, —कम् [चम् + क्त्] मुरापाच, प्लाक, मदिरा पीने का मिलाव अग्नेः सिरस्त्रैश्चकोरैरेव—रघु० ७।४९, मृगं शालाकिल्लं पिबति चमकं क्षालयमिव—का० १।२९, कि० ९।५६, ५७,—कम् १ एक प्रकार की मदिरा २ मनु, सहृद ।

चयतिः [च् + यति] १ जाना २ मार डालना ३ ह्लास, निर्बलता, क्षय ।

चयलः [च् + चालच्] १ यज्ञ के करने में लगी लकड़ी की फिरकी २ छत्ता ।

चह् (म्वा० पर०, चूरा० उभ०—चहति, चहयति—ते) १ दुष्ट होना २ ठगना, चोखा देना ३ गहकार करना, खेचड़ी बनाना ।

चाकचचकम् [चक + अच्, चिञ्च्, चकचक—तस्य नाव—एयम्] जलधामाना, प्रजा, चमक-दमक ।

चाक (वि०) (स्त्री०—जी) [चक + अच्] १ चक से किया जाने वाला (मृद) २ मडलाकार ३ चक का पहिए से सबब रखने वाला ।

चाकिक (वि०) (स्त्री० जी) [चक + ठक्] दे० ऊ० चाक, —कः १ कुम्हार २ तेजी—चाह० १।१६५, (तेलिक—मिता०, हुमरों के मत में चाकटिक—माही-वान) ३ कोचवान, चालक ।

चाकिकः [चकिन् + अच्] कुम्हार या तेजी का कुच ।

चाकुच (वि० स्त्री०—जी) [चकुच् + अच्] १ दृष्टि पर निर्भर, दृष्टि से उत्पन्न, २ जोर से संभव रखने वाला, जीव का विषय, वास्तिक ३ दुष्य, जो दिखाई दे, चम् दृष्टि पर निर्भर जान । सम० ज्ञानम् जीकों देवी बगानी, मा प्रयाग ।

चाक्कः [चि + इ चम् अङ्गम् यञ्च व० म०] १ अन्न-मेषिका चाक २ दातों की लकड़ी या खीरवं ।

चाकचचकम् [चञ्चल + चञ्च्] १ अतिचरना, हुतगति,

विकोला, (जाँच जाँच का) कल्प, चरकना—नाम०
२।९० २. चंचलता ३ चंचरता ।

चालः [चद+चञ्] चरमाच, उच्च (जो पहले उसमें दूरा
विस्थापन बना लेता है जिसे वह उभरा चाहता है)
—नाम० १।३३९ —(चाडा = प्रसारका विधास्य से
परचनमपहृति—पठित०) ।

चादुःख (नपु०) [चद+उञ्] १ मरुत तथा प्रिय वचन,
मौढी बात, चापल्यही, ठगुरगुहाती (विशेषकर किसी
प्रेमी के द्वारा अपनी प्रेमिका के प्रति) —प्रिय विधाया
प्रकटित चादुःख—अनु० १।१४, विरचितचादुःखचरचन
परचरचितप्रणिगातम्—गीत० ११, अमर ८३, पंच०
१, शा० ८।१४, नीर० २० (गीतगोविंद के दशवें
सर्ग का अधिकांश भाग इसी प्रकार की चादुःकारिता
से भरा हुआ है) २ स्पष्ट भावना । सम० —उक्तिः
(स्त्री०) कुशाग्र और झूठी प्रवृत्ति के वचन,
—अस्वीकृत, —कार (वि०) प्रिय तथा मरुत बोझने
वाला, चापल्य विधायात प्रियतम इव प्रार्थनाचाटु-
कार—मेघ० ११, —चदु (वि०) झूठी प्रवृत्ति करने
में कुशल, दूरा चापल्य—अः मल्लरा, नांद, —जोष
(वि०) तुदरगापुर्वक हिलने वाला, —अस्व लेकड़ों
अनुदीन, बार-बार की जाने वाली कुशाग्र—पटु-
चादुःखैरनुकम्प—गीत० २, नम्रपुङ्गवस्तु नीर विलोक-
यति चादुःखैव मुक्तये—मर्तु० २।११ ।

चाकलः [चकल+चञ्] नामर चाकलीति के प्रख्यात प्रजेता
विष्णुपुत्र, कीटिन्व जी इन्दी का नाम है दे०
कीटिन्व ।

चाकर (पु०) कल का लेकड़ को प्रतिष्ठित मलमोड़ा वा,
जित सब मरुत कृष्ण को मरुता के गया तो इस
दुरीत मोड़ा को कृष्ण से करने के लिए भेजा गया ।
मलमोड़ में कृष्ण ने इसे पकाड़ दिया और पुष्पी पर
पीड़ डाला तथा इसके तिर को चूर्ण कर दिया ।

चालालः (स्त्री०—की) [चालाल+अञ्] पठित, जघम
—दे० चालाल किमर्थ विधातिरचला—मर्तु०
३।५९ अनु० ३।२३९, ५।२९, नाम० १।९३ ।

चाटालिका—चंडालिका ।

चातकः (स्त्री०—की) [चत्+चञ्] चातक, पपीहा,
(कवि समय के अनुसार वह केवल वर्षाकाल में ही
रहता है) —सूक्ष्म एवं पतित चातकमुने विधा प्रयो-
गिष्य—मर्तु० २।१२१, दे० २।५१ नीर रघु०
५।१७ । सम० —आमलकः १ वर्षाकाल २ बाहल ।
चातलम् [चत्+चिच्+लृट्] १ हटाना २ क्षति
पहुँचाना ।

चातुर (वि०) (स्त्री०—री) १ चार की संख्या से सबद्ध
२ होशियार, योग्य, बुद्धिमान् ३ मरुतवासी, चाप-
कुश ४. बुद्धिचक्रक, प्रत्यक्षज्ञानालम्क—रघु चार

पट्टियों की भाँती,—री कुशलता, दक्षता, योग्यता
तद्वत्चातुरीगुरी—नी० १।१२ ।

चातुरज्य [चतुरज+अञ्] चीनक या चार राज्यों के खेल
में चार का शब्द,—अः छोटा शील तकिया ।

चातुरिकः [चतुर्बन्धे विहितः—उञ्] (स्त्री०—की) एक
ऐसा प्रत्यक्ष जो चार विभिन्न-विधियों की प्रकट करने
के लिए लब्ध में जोड़ा जाता है ।

चातुराचमिक (वि०) (स्त्री०—की), चातुराचमिन्
(वि०) (स्त्री०—की) ब्राह्मण की धार्मिक-जीवनचर्या
के चार काँचों में से किसी एक में रहने वाला ।
दे० 'आचम' ।

चातुराचम्य [चतुराचम+अञ्] ब्राह्मण की धार्मिक-
जीवनचर्या के चार काल । दे० 'आचम' ।

चातुरिक, चातुर्यक, चातुरिक (वि०) (स्त्री०—की)
[चातुर+उञ्, चतुर्बन्ध+अञ्, उञ् वा] १ चौथे वा,
हर चौथे दिन होने वाला,—अः चौथवा बुद्धार,
मूनीनाम ।

चातुराचमिक (वि०) (स्त्री०—की) [चतुर्बाह्वा+उञ्]
चौथे दिन होने वाला ।

चातुर्यकम् [चतुर्बन्धे वृत्तये इति] राजस-विद्याः ।

चातुर्यिकः [चतुर्बन्धे+उञ्] जो चातुर्यक की चतुर्बन्धे के
दिन की पक्षा है (वह 'अनघ्याय' का दिन है) ।

चातुर्यलोक (वि०) (स्त्री०—लिका) [चतुर्बन्धे वृत्तः
—अञ्+लृट्, चतुर्बन्धे+उञ्+टाप्, लृट्+अञ्] जो
चातुर्यलोक वृत्त का अनुष्ठान करता है ।

चातुर्यलम् [चतुर्बन्धे+अञ्] हर चार वृत्तों के चतुर्बन्धे
अनुष्ठेय वृत्त वर्णों कर्त्तिक, फाल्गुन और मार्गश्र के
बारह में ।

चातुर्यम् [चतुर+अञ्] १ कुशलता, होशियारी, दक्षता,
बुद्धिमत्ता २ आचम्य रमणीयता, शीघ्रत्व—चूचातु-
र्यम्—मर्तु० १।३ ।

चातुर्यवर्ग [चतुर्बन्धे+अञ्] १ हिन्दुधर्म के मूल चार
वर्गों की समष्टि—एव सामाजिक वर्ग चातुर्यवर्गअदी-
न्यम्—मनु० १०।१३, अह् १।१३ २ इन चार
वर्गों का वर्ग या कर्त्तव्य ।

चातुर्यव्यम् [चतुर्यव्य+अञ्] चार प्रकार (सामूहिक
रूप से), चार प्रकार का प्रमाण ।

चातुर्य [चत्+अञ्च—चातुर्य+अञ्] १ भूमि में
कोई कर बनाया हुआ हवनकुश २ कुशा, धर्म ।

चातुर्यिक (वि०) (स्त्री०—की) [चतुर्य+उञ्]
चतुर्य से बनाया हुआ या उत्पन्न २ चतुर्यल से
सुगन्धित ।

चतु (वि०) (स्त्री०—ही) [चत्+अञ्] चतुर्वा से
सबब रहने वाला, चतुर्बन्धे—चतुर्बन्धेनाम विभि-
न्नाष्टीयमिष्यः विदग्ध—वि० २।२, —अः १. चौदहवा

२. कुलपत्नी ३. चन्द्रकांतमणि, — इन् १ बांदायण नामक व्रत २ ताजा बरकर ३ मन्वीर नक्षत्र, — इति बांदायण । तम० — बाबा चन्द्रनामा नाम नदी, — बालः चन्द्रमा की विधियों के अनुसार गिना जाने वाला महीना, — इतिः बांदायण व्रत रखने वाला ।

चन्द्रकम् [चान्द्र + क + क] बुद्धा बरकर, सोठ ।
चान्द्रवत् (वि०) (स्त्री ली) [चन्द्रमत् + वत्] चन्द्रमा से सबंध रखने वाला, चाँद-संबंधी-तन्मोदया चन्द्रमसेव केवा कु० ११२५, चन्द्र गता पद्मगुणान् भुङ्क्ते पद्मा-
पिता चन्द्रमसोयमिष्याम्—११४३, रघु० २१२९, भग० ८१२५, — सम् भुङ्गिष्ये नक्षत्रपुत्र ।

चन्द्रमस्तारकः, — वि० [चन्द्रमसोऽस्तारक्यं किम्] बुधवह ।

चान्द्रायणम् [चन्द्रस्यायनमिषायनमत्र, पूर्वपदात् सञ्जाया चान्द्र, सञ्जाया दीर्घं स्वार्यं चान्द्र वा—तारा०] एक चान्द्रिक व्रत या प्रायश्चित्तारमक तपश्चर्या को चन्द्रमा की बुद्धि व जन्म से विनियमित है । इस व्रत में वैदिक ब्राह्मण को १५ ग्राम या कीर का होना है। बुधिया से प्रतिदिन एक-एक घण्टा रहता है यहाँ तक कि अमावस्या के दिन निदान विराहार् व्रत रक्खा जाता है, उसके पश्चात् फिर कुलपक्ष में एक कीर से आरम्भ करते बुधिया तक बढ़ाकर फिर १५ ग्राम तक लाया जाता है। पु० पात्र० ३१३२४, मनु० ११२१३ ।
चान्द्रायणिक (वि०) (स्त्री ली) [चान्द्रायण + ङ] चान्द्रायण व्रत का पालन करने वाला ।

चान्द्र (चन् + चन्) १ चनुष, —ताने चाँदनीये बहति चनुषा की भयस्यावकाश—वेणी० ३१५, इसी प्रकार 'चापपाणि' २ हाथ में चनुष लिये हुए ३ इन्द्र चनुष ४ (व्याक्ति) वृत्त की तोरणाकार रेखा ५ चनु गति ।

चापलम्, — लम्ब [चाल + लम्, व्यञ्ज वा] १ हृत्पति, स्फूर्ति २ चंचलता, अस्थिरता, सक्रमणशीलता कि० २१४१ ३ विचारसुप्त या आवेशपूर्ण आचरण, उतावलापन, उद्वेग इत्यं चिक चापलम्—उत्तर ४, तन्मन्वी कर्ममालम् चापलाय प्रचोदित, रघु० ११९, स्वचित्तवृत्तिरिव चापलेभ्यो निवारणीया—का० १०१ ४ (चोड़ आदि का) अडियलपन—पुन पुन मूतनिग्रिह-चापलम्—रघु० ३१४२ ।

चापलः,—रघु [चमर्वा विकार तन्मूकनिमित्तान्वा चमरी + चन्] (कमीर हा, री) चींगे, चवर या चमरी की पूँछ, (यह मोरछल या पत्ते की भाँति झुकता है जाती है, और एक राजकीय चिह्न समझा जाता है—कमी-कमी यह केमुपट की चाँति चाँदे के शिर पर झूराया जाता है) — व्याकृपते निष्कृत्यमभि मञ्जरीचापराजि—विक्रम० ४१४, अवेद्यासीत् प्रयमेव भूपते, कविप्रम छत्रमुने च चापरे—रघु० ३११५, कु०

७१४२, हि० २१२९, मेघ० ३५, चिन्मन्त्रनिषाचक इषितरत्नावामवष्णामरम्—विक्रम० ११४, ख० ११८ ।
तम० छान्द्र, —चाहिनु (पु०) चवर बुलाने वाला, चँवर पदार, —चाहिनी चँवर बुलाने वाली राधा की सेविका पुष्टे श्रीलावलम्वरधित चावरचाहिनीनां मनु० ३१६१, कुल्ल, पुष्क ३ लपारी का पेड़

२ केतकी का पीठा ३ काम का पुत्र ।

चावरिन् (पु०) [चावर + इति] चोड़ा ।

चावीकरम् [चमीकर + लम्] १ सोना-तन्मामीकराङ्गव —विक्रम० १११४, रघु० ७५५, हि० ४१२४, कु० ७१२४ २ चतुरे का पीठा । तम० —अलम् (वि०) ताने की तरह का ।

चावुष्ठा [चम् + ला + क, पुषो सावु] बुर्गा का रोडकर — मा० ५१२५

चाविल्ला [चम् + ल्ल + टाप् = चम्पा + लम् + इलम्] चपा नाम की नदी (समस्त वर्तमान 'चबल' नदी) ।
चाविल्ले [चम्पा + ल्ल] १ चणक वृक्ष २ नाकेनर का पेड़ — लम् १ तन्म, विशेषकर कसल फूल का २ सोना ३ चतुरे का पीठा (अभि रा बर्षों में पु० भी) ।

चावु (म्पा० उम० चायति से) १ खिरीजन करना, अच्छा बुरा पहचानना देख लेना—वि० १२१५ २ चुका करना ।

चारः [चर् + चन्] १ अस्वा, कुम्हा, चाल, भ्रमण —चमलचाराक्षीय —विक्रम० ५१२ श्रीरासेने परि च विचरेत् पादचारण गीरी मेघ० ६०, वैदक चमल २ गति, मार्ग प्रगति भगलचार, हलिकार आदि ३ मेधिया, चर, गुप्तचर, हुत—मनु० ७१८४, ११२६१, हे० चारचक्षुस्ती० ४ अनुष्ठान करना, अभ्यास करना ५ बरी ६ बचन, बेड़ी,—रघु इतिन चिप । तम०—अन्तरितः मेधिया — ईलम् — चनुष (पु०) 'गुप्तचरों को आँख के स्थान में प्रयुक्त करने वाला' राधा (या राजनीतिज्ञ) को गुप्तचर या मेधिया रखता है और उन्हीं के माध्यम से देखता है, चार-चक्षुर्मधीपति—मनु० ११२५६, पु० कामन्दकः नाम पश्यति गन्धेन, वेदै पश्यति च विज्ञा, चारै पश्यति राजान चक्षुर्मधीपतिरे जनाः । रामा० ली—वल्गाय-स्वति ब्रूयता सर्वनिर्वाहाराधिया, चारेण तस्मादुज्ज्वले राजानश्चारचक्षुः । लम्—चम्पु (वि०) कलित बाल वाला, लजीला । — एकः चौराहा,—छाः चौर यांदा, चावुः दीप्पकालीन मनु मन्व पवन, मन्व वायु ।

चारक [चर् + चिप् + च्चुक्] १ मेधिया २ च्वाका ३ चेदा चालक ४. तावी ५ अस्वादीही, चवार ६. काराचार निगदितचरमा चारके निरोद्धव्या—रघु० ३२ ।

चारणः [चर् + चिप् + च्चुक्] १ चमचवीच, लीकवाली

प्रत्याह परमेस्वरः—यु० १।२५ (कर्मबा०) समाना, बहना—अथोऽयः पश्यतः कस्य महिमा नोपवीयते—हि० १।२ मट्टि० १।३३ वि० ४।१०, वि—, इकना चरना, बीजना, बिहोरना (मुख्यतः कर्तात् प्रयोग) —विधितं समुत्प्रेष्य गीरदीः—वट० १, समुत्प्रेष्यविधितं विप्रव्यवहारात्मकम्—स० ७।११, मट्टि० १०।४२, विस्—, निर्धारण करना, संकल्प करना, निश्चय करना परि—, 1. अभ्यास करना 2. प्राप्त करना, लेना (कर्मबा०) बहना—रघु० ३।२४ अ—, 1. इकदठा करना, चुनना 2. झोड़ना 3. बहाना, विकसित करना—प्राचीनमानासववा रराज बा—रघु० ३।७, वि—, 1. एकत्र करना, चुनना 2. जोड़ना, इकना—विधित-सर्वत्र समानात् समानावाटः—बा० ५, विधित्—, निर्धारण करना, संकल्प करना, निश्चय करना—विनिश्चये कस्यो न मुक्तमिति वा दुःखमिति वा—उत्तर० १।३५, सन्—, 1. एकत्र करना, संग्रह करना, संकल्प करना—रक्षाबोनासवमपि तपः प्रत्यह सचिनोति—स० २।१४, रघु० १९।२, मनु० १।१५ 2. सम्मिलन करना, व्यवस्थित करना, ठीक से रखना—मट्टि० ३।३५, सन्—, संग्रह करना, जोड़ना।

विकल्पाः [विस् + कृ + कृप्] वृक्ष, हकीम, डाक्टर—उचितवेलातिक्रमे विकल्पका दोषमुदाहरन्ति—माल-वि० २, मट्टि० १।८७, मात० १।१६२।

विकल्पना [विस् + कृ + कृप् + टाप्] जीव्य सेवन करना, जीवजीवनाट, इलाक करना, स्वस्थ करना।

विकल्पः [वि + कृप्, कुप्] जीव्य, महत्त्वक, कर्म, दलमल।

विकल्पार्थ [कृ + कृप् + कृ + टाप्, द्वित्वम्] (कोई काम) करने की इच्छा, कामना, अभिलाषा, इच्छा।

विकल्पित (वि०) [कृ + कृप् + कृ, द्वित्वम्] अविलम्बित, इच्छित, आभिप्राय,—सन् अविकल्प, आभाव, अभिप्राय।

विकल्पित (वि०) [कृ + कृप् + उ, वातोद्वित्वम्] कुल करने की इच्छा वांछा, इच्छुक,—मग० १।२३, ३।२५।

विचुर (वि०) [वि इत्यप्यका सङ्ग करोति - वि + कृ + कृ] 1. हिलने-डुलने वाला, कम्पमान, चञ्चल, अस्थिर 2. विचार पूर्ण, आवेकयुक्त—र० १ मिर के बाल—मग दक्षिरे विचुरे कुद मानवं—कुनुमानि—गीत० १२, इसी प्रकार—अनवरदक्षिरे रचयति विचुरे तरकितवृत्तमानने ७ 2. पहाड़ 3. रेगने वाला, क्षीय सम०—उपपन्नः—कल्पः—निकरः—कलः—कालः—आरः—हस्तः बालों का मुच्छा वा डेर—कल्पाकरोरविचुरनिकरः कर्मपूरो मयूर—प्रह० १।२२।

विकृत [विचुर वि० वीर्य] बाल।

विकृष्ट [विक् इति ल्यप्कृत ल्यप्तेन कायति ल्यप्तायते—विक् + कृ + कृ] लघुवर।

विकृष्ट (वि०) (स्त्री०—वा,—वी) [विक्, विक्प्] विक् तं कर्णात्—कृष्ण बाधे + कृप् वारा०]

1. विकृष्टा, चमकदार 2. फिल्लनी 3. स्निग्ध 4. मधु, चर्बीका—लघु परिभाषितायेनां भवान् वा कस्यापि तपस्विन इगुवीतैलविकृष्टगुणीषेस्य हृस्ते प्रतिष्ठाति—स० २,—वाः गुपारी का पेड़,—अन् विकृष्टमधुष का फल, गुपारी।

विकृष्टा,—वी 1. गुपारी का पेड़ 2. गुपारी।

विकृष्टः [विक् + अस्तम्] जी का आटा।

विकृष्टा=विकृष्टा।

विकृष्टः [विक् + हरप्, वा०] बूहा, मुहा।

विकृष्टम् [विक् + यद् + कृप्, वातोद्वित्वम् वही मुक् च] गरी, तरबट, ताजवी।

विकृष्टः [?] एक प्रकार का कद्दू।

विकृष्टाः [पु० व० व०] एक वेष्ट तथा उसके निवासी।

विकृष्टा [विक् + वि + कृ + टाप्] 1. इसकी का पेड़, वा उत्तका फल 2. बुचची का पोषा।

विद् (भ्या० पर०—वृत्ता० उप०—वेदति, वेदयति—ते) भोजना, बाहर भोजना (बैते कि किसी सेवक को भोजना जाता है)।

विद् (भ्या० पर०, वृत्ता० अ०—वेदति, वेदयते, वेदित) 1. प्रत्यक्षज्ञान प्राप्त करना, देखना, नजर डालना, वृत्तिदोषार करना—नेचूनवेतप्रत्यक्षम्—मट्टि० १७।१६, चित्तै रामस्तत्कृष्णम्—१४।६२ १५।३८, २।२९

2. जानना, समझना, चौकम होना, सतर्क होना—परैरम्भाहृष्टमात्रमात्रमान न वेदयते—इस० १५४ चैतन्य प्राप्त करना 4 प्रकट होना, चमकना।

विद् (स्त्री०) [विन् + विक्प्] 1. विचार, प्रत्यक्ष ज्ञान

2. प्रज्ञा, बुद्धि, समझ—अम० २।१, ३।१ 3. हृदय, मन 4. आत्मा, जीव, जीवम में सजीवता-विज्ञात 5. ब्रह्म। सव०—आत्मन् (पु०) 1. चित्तमसिद्धात् या कसि 2. केवल प्रज्ञा, परमात्मा,—आत्मकम् चैतन्य,—आत्मतः जीव (जो सांसारिक शालमाओं में मित है),—उत्पलतः जीवों के हृदय का हृदय,—अन्ः परमात्मा या ब्रह्म, प्रवृत्तिः (स्त्री०) विचारविमर्श, चिन्तन, कसि (स्त्री०) क्षामसिक्त शक्ति, बौद्धिक शक्ति,—स्वकर्मम् परमात्मा, (अव्य०) 1 'किम्' गीर 'किम्' से व्युत्पन्न अन्य शब्दों के साथ जुड़नेवाला अव्यय (जैसे वि - कद्, कयम्, कव, कडा, कुच, कुत आदि) प्रथमे कि अर्थों में अनिश्चयात्मकता जाती है - यथा कुचयिन्=कही, केचित्=कोई 2 'चि' अति।

विद् (पु० क० क०) [वि + कृ] 1. संग्रह किया हुआ,

देर लगाया हुआ, अबार लगाया हुआ, इकट्ठा किया हुआ 2 जमा किया हुआ, सचित 3 प्राप्ति, गृहीत 4 बका हुआ—कमिकुलचितम्—भर्तृ० २।११५ जमाया हुआ, बका हुआ, - तन् भवत ।

चिता [चित + टाप्] पूर्व को जलाने के लिए चुनकर रखी हुई लकड़ियों का ढेर, चितिका—कुड सप्रति ताच-बाधु में प्रणिपाताञ्जलियाचिताचिताम्—कु० ५।३५, चिताभस्मन्—कु० ५।६९। सम०—अग्निः शव को जलाने वाली आग, बूडकम् चिता ।

चितिः (स्त्री०) [चि + क्तन्] 1 तट्टह करना, इकट्ठा करना 2 ढेर समुच्चय, पूज 3 अम्बार टाल, चट्टा 4 चिता 5 चौकार आयताकार स्थान 6 समझ ।

चितिका [चिता + क्त + टाप्, इ-चम] 1 टाल चट्टा 2 चिता 3 करघनी ।

चित्त (वि०) [चिन् + क्त] 1 देखा हुआ, प्रत्यक्षज्ञात 2 सोचा हुआ, विचारविमर्श किया हुआ मनन किया हुआ 3 सम्म्यक् किया हुआ 4 अविमर्श अभिलषित इच्छित—तन् 1 देखता ध्यान देना 2 विचार चिन्तन, अवधान, इच्छा अधिप्राय उद्देश्य प्रवृत्त मतनं भव-भग० १।८५७ अनेकचित्तविधानम् १६।१६ 3 मन—यदासी दुर्बारे प्रमरति मदचिन्तनकरण—भा० १।२०, इसी प्रकार 'चलचित्त' आदि समस्त शब्द 4 हृदय (बुद्धि का स्थान माना जाता है) 5 तर्क, बुद्धि, तर्कनाशक्ति । सम०—अनुवर्तित (वि०) मन के अनुकूल कार्य करने वाला अनुरजन-कारी,—अपहारक,—अपहारिन् (वि०) मनोहर, आकर्षक, मोहक,—आलोच भावनाओं के प्रति मन की आसक्ति, किसी एक वस्तु में अनन्य अनुराग, आसक्तः आसक्ति अनुराग, उद्रेक. धमर, गर्व,—देवचन् सहयति, मर्तव्य,—उन्मत्ति,—समुन्मत्तिः (स्त्री०) 1. महानुभावता 2 चमर, दर्प, चारिन् (वि०) हमरे की इच्छा के अनुसार काम करने वाला, कः जन्मन् (पु०),—भूः—भौमि. 1 प्रेम, भावस 2 प्रेम का देवता काम देव चित्तयोनिरभवत्पुनर्न य रघु० १९। ४६, सोम्य प्रसिद्धिभक्तं जन्म विराजन्मा मा० १।२०, —क (वि०) दुखरे के मन की बात जानने वाला,—नासः देहीही,—निवृत्तिः (स्त्री०) सलोच, प्रसन्नता, प्रसन्न (वि०) स्वस्थ, शान्त, (—कः) मन की शान्ति, प्रसन्नता हर्ष, खुशी,—येः 1. विचारभेद 2 अवगति, अभिरता, —वीडः मनोमृगता, - विभोः मन का उचाटन

विभक्तः—विभक्तः चित्तप्रवा, बुद्धिप्रवा, उन्मत्तता पापकल्प,—विभक्तः वैनी-अनं,—वृत्तिः (स्त्री०) 1 मन की अवस्था या स्वभाव, रवि, भावना—एवमारवाभि-श्रावणभावितोष्टयचित्तवृत्ति प्रार्थयिता विदग्धवते—श० २ 2 आन्तरिक अभिप्राय, संवेद 3. (योग—द०

में) मन की आन्तरिक क्रिया, आन्तरिक दृष्टि—योग-विचित्रदुष्टिनिरोध योग०—वेकला कष्ट, चित्ता — वैकल्प्य मन की व्यवस्था, परिधानी—हारिन् (वि०) मनोहर, आकर्षक रचिकर ।

चित्तवन् (वि०) [चित् + वन्, मस्य व] 1 सर्वस्य, नर्कयुक्त 2 सकल, सब ।

चित्तवन् [चि + वन्] सम-दाह करने का स्थान,—श्व 1 चिता 2 काष्ठचयन, (देही का) निर्माण ।

चित्र (वि०) [चिन् + क्त चि + क्तन् वा] 1 उज्ज्वल, स्पष्ट 2 चितवर्ण, रम्यदार लबलीकृत 3 चित्रकल्प, रचिकर मा०—१।४ 4. चित्रि, विभिन्न प्रकार का, माति २ का पञ्च० १।२३६, मनु० १।२४८, वाङ्म० १.८८५ आचर्यजनक, अद्भुत, अजीब,—नः 1 रग-विरगा वर्ण रग 2 अलोक वस्त्र,—कम् 1 नसवीर, चित्रकारी आलेखन—चित्रे निवेष्ट्य परिकल्पितसत्त्व-योगा श० २।९ पुनरपि चित्रीकृता कांता ज० ६।१०, १३२१ आदि 2 कमकीला आभूषण 3 असाधारण छवि आश्चर्य 4 माध्यायिक तिलक 5 आकाश गंगा 6 धम्मा 7 सफेद कोक, फुलझहरी 8. (शा० शा० में) काव्य के तीन भेदों में अन्तिम काव्यभेद (यह शब्दचित्र और 'अर्धवाच्यचित्र' दो प्रकार का है, काव्यसौन्दर्य मुख्यरूप में अलंकारों के प्रयोग पर निर्भर करता है, जो शब्दों की ध्वनि और अर्थ पर निर्भर है) अन्तः परिभाषा देता है—शब्दचित्र वाच्यचित्र-व्यङ्ग्य त्ववर स्मृतम् काव्य० १) 'शब्दचित्र' का उदाहरण रसमगार से उद्धृत किया जाता है—निषा-चिपुत्रनेषाय चयीसाचपलशवे, गोभारिवोभजेमाय गोत्राये ते नमो नमः ।—कम् (अव्य०) कहा । कंठा विस्मय है । क्या अद्भुत बात है—चित्र ध्विरो नाम व्याकरणमोध्यते सिद्धा० । सम० अजी, —वेधा,—कोचना एक पञ्चविधेष, वैना,—अङ्गु (वि०) बारी बार, चित्तोदार, शरीरशारी (कम्) तिरु, —अन्मन् रगदार अलंको से प्रसाधित वाक्क—वाङ्म० १।३०४, —अङ्गुः एक प्रकार का पूड़ा,—अस्ति (वि०) तस्वीर में उतारा हुआ, चित्रित, आरम्भ (वि०) चित्रित—रघु० २।११, कु० १।४२—आकृतिः (स्त्री०) चित्रित प्रतिकृति, आलोचित्र, —आवत्तम् इत्यत आरम्भ चित्रित वृत्त, चित्र की कपरेडा - विक्रम० १।४,—उत्तिः (स्त्री०) 1 रचिकर वा वाक्प्राप्तुर्व से पूर्ण प्रवचन अवस्थित वे पञ्चमगदविपचिवाकित-सदर्थविपचयुक् विक्रम० १।१० 2 आकाशवाणी 3 अद्भुतकहानी, —अव्ययः हस्ती से रवा कीका मात —कम् कवृत्तर,—कपालावः रोचक तथा मनोरञ्जक कहानियां मुनामा,—कम्पकः 1 छीट की बनी हाथी की झुक 2 रग विरगा कालीन,—कः 1 चित्रकार

2. नाटक का पात्र या अभिनेता,—कर्मन् (नपु०) 1. जसा-
चारण कार्य 2. विभूषित करना, सजावट 3 तस्वीर
4 जाहू, (पु०) 1 आश्चर्यजनक कृतत्व करने वाला
जाहूवर 2 चित्रकार, 'चित्र' (पु०) 1 चित्रकार
2 जाहूवर,—कालः साक्षरत्व और 2 चीता, कारः
1. चित्रकारी करने वाला 2 एक वर्णसंकर जाति
(स्वपतेरिण गान्धर्व्या चित्रकारो व्यजायत—पराशर०),
—कूटः एक पहाड़ का नाम, इलाहाबाद के निकट एक
जिले का नाम रघु० १२१५, १३१४७ उत्तर० १,
—कृत् (पु०) चित्रकार, कृत्वा चित्रकारी,— न
—कृत (वि०) चित्रित किया हुआ, गन्धर्व् हुतात्म,
—कृत्वाः यमराज के कार्यालय में मनुष्यों के मुख तथा
अङ्गुष्ठों को लिखने वाला—मृदा० १२० गृहम्
चित्रित कर,—कृत्यः बटकलपञ्च और असंबद्ध बात,
विभिन्न विषयों पर बातचीत,—रघु० (पु०) भूतें वृक्ष,
—कृत्यकः कपास का पीछा, म्बस्त (वि०) चित्रित
तस्वीर में उतारा हुआ कु० १२४६, पक्ष. चकोर-
छदुक्ष लोतर,—कृत्,—कृः 1. जालम्, तस्वीर 2 रंगान
या चारखानेदार कपड़ा,—कृत्, (वि०) 1 भिन्न र भागा
में चित्रक 2 ललित पदावली से युक्त, बाबा मना,
सारिका,—चित्रकः मोर,—कृत्ः एक प्रकार का बाण
—कृत्ः चित्रिया, कर्मकम् चित्र-मटल, चित्र रचन
का कला,—कृत्ः मार,—भाष्य. 1 आग 2 सूर्य (चित्र
भाष्यविभाषीति दिने रवी राज्ञो बह्वी—काव्य० ०,
अंश्वर चित्रि का निवेद्यो दिया गया है) 3 औरव
4. यशस्व का पीछा,—कृत्यकः एक प्रकार का माप,
—कृत्ः चित्तीदार हरित,—कृत्यक मोर, बोधिवृ
(पु०) अर्जुन का विशेषण,—रघुः 1 सूर्य 2 गधवों
के एक राजा का नाम, मुनि नामक पत्नी से कश्यप क
१६ पुत्र हुए चित्ररथ उनमें से एक है—अत्र मुनेभ्य
नमश्चित्ररथेनादीना पञ्चदशमां भ्रातृणामधिको गुणो
बोद्धव्यचित्ररथो नाम समुत्पन्न—वायु० १३६, चित्रक०
१,—कृत्य (वि०) सुन्दर रूपरेखा वाला, अत्यन्त मङ्गला
कार—दक्षिणतः बलावती दक्षिणचित्रकेले भूमी गीत०
१०, (का) बाणावुर की पुत्री, उपा की एक सहेली
(जब उपा ने अरुमा मरण जानी सहेली चित्रकेला को
मुनाया, तो उसने यह मुझाव दिया कि इस चित्र का
बाध-यास के राज्यो में प्रस्थाप जाय, इस प्रकार जब
उपा ने अर्धकृष्ण का पञ्चान दिया तो चित्रकेला ने
अपने जाहू के द्वारा अर्धकृष्ण को उपा के मङ्गल में
बलिदान दिया),—कृत्यक चित्रकार—देवविद्या चित्रकार
की मुद्रिका, कृषी, चित्रिच (वि०) 1 रत्नविद्या
चित्रकला 2 बेलकूटेरन, कृत्वा चित्रकला—वाल्मी
चित्रकार हा कार्यालय,—चित्रचित्र (पु०) सात
अधियों (गरीब, प्रगिरत, अत्रि, पुलस्त्य, पुलह कम्,

और वसिष्ठ) का विशेषण, 'अ' बृहस्पति का विशेषण
—कृत्य (वि०) चित्रित,—कृत्य युद्ध के अवसर पर
हाथों की विषय अवस्थिति ।
चित्रकः [चित्र + कृत्] 1 चित्रकार 2 सामान्य शेर
3 छोटा शिकारी चीता 4 एक वृक्ष का नाम,—कृत्
मस्तक पर साम्प्रदायिक तिलक ।
चित्रक (वि०) [चित्र + कल] चित्रकबारा, चित्तीदार,
कः रत्नविद्या रत्न ।
चित्रा [चित्र + अच + टाप्] बाह्र मास का चौदहवाँ नक्षत्र
हिमनिर्मुक्तयाद्यो चित्राचन्द्रमसोरिव—रघु० ११४६ ।
नमः अटीरः, इक्षः पीद ।
चित्रिक [चित्र + क + पयो० भाष्] चित्र का महीना ।
चित्रिणी [चित्र + णिन्, चित्र अस्त्यर्थे इति वा] भाति २
के वायुदेव और श्रेष्ठताओं से युक्त स्त्री, रतिशायन
में बंथित बार प्रकर (पतिनी) चित्रिणी शक्ति
और हिमना या कौरवों को श्रियों में गृह ।
रतिमजरी में चित्रिणी का परिभाषा इस प्रकार दो
गई है भवति रतिमजरा नान्तर्यामी न दीर्घा
निलवृक्षमनुना स्तिघन, नान्तर्यामी—धन कठिन-
कृत्वाद्या मूर्धो बद्धगीला, नान्तर्यामीचित्रा चित्रिणी
चित्ररथम् ॥ ॥
चित्रित (वि०) [चित्र + कृत्] 1 रत्नविद्या, चित्तीदार
2 चित्रकारी से युक्त ।
चित्रिन् (वि०) (स्त्री०—यां) [चित्र + इति] 1 आश्चर्य-
कारी 2 रत्नविद्या ।
चित्रिणीये (ना० घा० आ०— 1 आश्चर्य पेश करना,
आश्चर्यजनक होना—गङ्गाधरचरितमाधविचित्रिणीये जीव-
लाक महावीर० ५, मट्टि० १३६६, १८२३
2 आश्चर्य करना ।
चित्रा (पु०) उभ० चित्रयति—ते, चित्रित) 1 सोचना,
विचारना, चिन्तन करना, चिन्तन करना—तन्त्रपुरा
पितृव्यचिन्तयामास—पञ्च० 1 चिन्तय नावत्केनापदे-
शन पुनराध्यायद गच्छाय—वा० 2 साधना, विचार
करना मन में लाना तत्प्राप्तम् (वि०) न चिन्तयेत्
हि० १, तत्प्राप्तम् वक्ष राजा मनमात्र न चिन्तयेत्
मनु० ८१८८८, ८२५८८, पञ्च० ११३५५, और० १
3 ध्यान करना, देवध्यान करना, हस्तरेण रचना
—रघु० ११६६ 4 प्रत्यक्षदर्शन करना, याद करना,
5 मङ्गल करना, उपाय करना, साधन करना, मोक्ष
कर आदि निकालना काश्चिच्छिचित्रयतम् हि०
१ 6 अंगान् रचना सम्मान करना 7 मोक्षना,
विशेषना करना 8 चर्चा करना, निष्पन्न करना,
प्रतिपादन करना, कम्, बार, बार चिन्तन करना,
पिच्छा याद करना, मन में लाना वा० २१५, अम०
८८८, परि, 1 सोचना, विचारना, कृतना चिन्तय

तात्पर्यविशिष्टा स्वयं कदाचित्तेति यदि योगमर्हत् - कु०
५।१७, मन्० १०।१७ 2. चिन्तन करना, याद करना,
ध्यान में लाना 3. तरकीब निश्चयना, मान्य करना,
वि - 1. सोचना, विचारना 2 चिन्तन करना,
आकलन करना, ध्यानमान्य होना - सा० ४।१
3. विचारकोटि में लाना, ध्यान रखना, कथाल करना
- अन्त्यान्त्यादि विविध मयमयानुषङ्गं कुल बारम्भ
- सा० ४।१९ 4 इरादा करना, निश्चय करना, निश्चय
करना - 5 उराय ईदना मान्य करना, लोच
विकालना, सम् - 1 सोचना, विचारना, विमर्श
करना, चिन्तन करना हाना - अ० १।३५९, पोर० ३२
2. (मन में) मान्यता, रिमोचना जानना।

चिन्तामन्त्र - ना [चिन्ता + मन्त्र] 1 सोचना विचारना
चिन्तनमन्त्र इति - मन्त्रादिचिन्तनम् मन्त्र० १।२।
2 आनुर चिन्तन।

चिन्ता [चिन् + चिन् + अङ् + टाप्] 1 चिन्तन, विचार
2 बुद्ध या लोकपूर्व विचार पराशर, 'कचर
- चिन्ताजह दर्शनम् - सा० ४।५ इसी प्रकार 'चोत-
चिन्ता' १० 3 विचारविमर्श, विचारण 4 (मन्त्र०
सा० में) चिन्ता - ३३ मन्त्रा मन्त्रों में से एक
- ध्यान चिन्ता हितानास्ते सुव्यवस्था ब्रह्मलक्षणम्
- सा० ५० ५०१। मन्त्र० आकुल (वि०) चिन्ता-
मन्त्र, आकुल, आनुर - कर्मन् (मन्त्र०) चिन्ता करना
- पर (वि०) चिन्तनशील चिन्तानुर मन्त्रिः
कारुणिक मन्त्र - (यह मन्त्र के पास होता है, कहने
हैं, उसकी सब कामना पूर्ण कर देता है) दार्शनिकों
की भाँति - काव्यमन्त्रेन विकीर्णो हन् चिन्तामणिर्मया
- सा० १।१२, लक्ष्मणम् ह्रीं मेरुमि लब्धु चिन्ता न
चिन्तामणिमप्यनर्घम् १० ३।११ १।१५९ - वैशम्प, (मन्त्र०)
परिचय बरन, मन्त्रानुह।

चिन्तिनी [- तिलिनी, पृ० नम्य चत्तम्] इसली का
पेड़।

चिन्तित (वि०) [चिन् + क्त] 1 सोचा हुआ, विमुष्ट
2 उपेन, विचार किया हुआ।

चिन्तितः (स्त्री०) चिन्तिया [चिन् + क्त] सोच
विमर्श, विचार।

चिन्त (मन्० ह०) [चिन् + क्त] 1 सोचने-विचारन के
योग 2 सोचने के योग्य, मान्य विने जाने वा
उराय ईद लिये जाने के योग्य 3 विचारतापेक्ष,
सहित, प्रष्टव्य कथ्य कश्चिदनुष्ठानकार्त्तये उता-
हन्मन्त्र (मन्त्रानुह) एषिचिन्ता सा० ४० १।

चिन्तय (वि०) [चिन् + यट्] विमुष्ट-चिन्तना से पुनः,
अत्यधिक (जैसे कि परममा)। सम्। विमुष्ट जान-
क्य 2 परमात्मा।

चिन्त (वि०) [चिन् + क्त] भाषिका विमर्शय नि + क्तम्,

वि भाषेत्] चरटी नाक वाला, - ४: चिउडा, चपटा
किया हुआ चावल या अनाज, बीले।

चिपिट [चि + पिट् चि भाषेत्] १० चिपट। मन्०
- बीह (वि०) छोटी बदन वाला, - नाक, - नासिक
(वि०) चरटी नाक वाला।

चिपिटकः, चिपुटः [चिपिट + क्त] = चिपिट पृ० मापु]
चिउडा, बीले।

चिपु (पु) क्त [चिन् (वि०) + क्त] पृ० लम्ब]
ठाही, चिपुकं मुद्रुन ह्युशामि यावत् - भावि० २।३४
याज्ञ० ३।१८।

चिपिः [चि + चिक् वा०] लाटा।

चिर (वि०) [चि + रक्] दीर्घ, दीर्घकाल तक रहने वाला,
दीर्घकाल में चलना आया, पुराना - चिरबिरह, चिर-
काज, चिरदिनम् - आदि, रम् दीर्घकाल (वि०)
'चिर' मन्त्र का अन्वयान कारका में एक कथन किया
विशेषण की गति प्रयुक्त होता है और चिन्तामन्त्र
वर्ष प्रकट करता है - 'दीर्घकाल' 'दीर्घकाल तक'
'दीर्घकाल के पश्चात्' 'दीर्घकाल में' 'आधिर कार'
'अन्त में' आदि - न चिर पदने बलेत् मन्त्र० ६।९०,
तन प्रवाता चिरमरमना वृत्ताम् - रम्० ३।३५, ९२,
अमर ७९, कियचिरेष्वर्थायुषं प्रतिपत्ति दाम्यति - सा०
९, रम्० ५।१४, प्रीतामि ते सोम्य चिराय जीव
- रम्० १।१५७, कु० ५।४७, अमर ३, चिरानुत-
ल्यर्थायुषमना यदी - रम्० ३।२६, १।१६३, १।१६७,
चिरस्य कार्यं न नृत् प्रजापति, ४० ५।१५, चिरे
कुर्वातु - सन०। ख० - आकुल (वि०) दीर्घ आयु
वाला (पु०) देवता, - आलोचः चिरम्वित घेरा नाके-
बन्दी उत्सव (वि०) दीर्घ काल तक रहने वाला,
कार, कारिक, कारिन् किम् (वि०) मन्त्रर,
चिरम्वी, डोला, दीर्घसुनी, कालः दीर्घकाल, - कारिक,

काकीम (वि०) दीर्घकाल से चलना आया हुआ,
पुराना, दीर्घकाल में चलना, (राम के विषय में) जीर्ण
वा दीर्घकालानुबन्धी, जात (वि०) बहुत समय पहले
उत्पन्न, पुराना, बीचिन् (वि०) दीर्घबीबी (पु०)
उन सात चिरबीबीयों का विशेषण जो 'अमर सप्त' से
वाते हैं (अमरवातामि बलिष्ठाः, ह्युमाश्च चिरीषः,
कृप परदुःसम्य सप्तैरे चिरबीचिन्) - वाकिन् (वि०)
देर से पकने वाला, - पुष्प बहुत बूझ, - विचित्र पुराना
जिह्व मेदिन् (पु०) तथा, - राचम् बहुत रते, दीर्घ-
का - उचित (वि०) जो दीर्घकाल तक रह चुका हो,
चिबीचिन् (वि०) दीर्घकाल से निश्चिन्त, प्रबली,
- गुला, सुलिका वह साग जो फलें बछड़े से कुली हो
सिद्ध पुराना नीकर, - रम्, क्वाधिन्, चिन्त
(वि०) तिहाक देर तक करने वाला, नाम रहने
वाला, पायेदार।

चिरञ्जीव (चि०) [चिर + जी + जन्] दीर्घायु या लम्बी उम्र वाला, —व काम का विशेषण ।

चिरञ्जी, चिरिञ्जी [चिरे अर्द्धति पितृवृत्तात् यन्नेहम् अट् + जन्, पृषो० सारा०] 1 चिराहित या अविवाहित लड़की जो सयानी होने पर भी अपने पिता के घर ही रहे 2 लक्ष्मी, जवान स्त्री ।

चिरत्न (चि०) (स्त्री०—स्त्री) [चिरे मय चिर + तन्] चिरकालीन, पुराना, प्राचीन ।

चिरस्तन (चि०) (स्त्री०—स्त्री) [चिरम् + टण्डुल मुट् च] चिरामत, पुराना प्राचीन—स्वहस्तदत्ते मुनिमानस मुनिचिरस्तनस्तावदभिन्यवीचिञ्चत्—सि० १११५ चिरस्तन मुहूर्त्—आदि ।

चिरार्वात (ना० वा० पर०) (चिराप्ते भी) बिलम्ब करना, ढील देना—कथं चिरवति पाञ्चाली—वेणी० १ किं चिरावति भवना तस्मैते चिरवति प्रवर्यो विनाद—मृच्छ० ३१३ ।

चिरिः [चिरोति मनुष्यवत् वाक्यानि चि + रिक] मोता । **चिर** [चि + रुक्] कण्ठे का गेह ।

चिरिंसी [चिर + षट् + जन्, ङीष् पृषो०] एक प्रकार की ककड़ी ।

चिम् (मुदा० पर०—चिन्ति) कपड़े पहनना, बस्त्र धारण करना ।

चिमली (चि) चिम्ला [चिल + मी (चि) ल् + भृत्] टाप् इत्यम् 1 एक प्रकार का हार 2 ज्वनू 3 बिजली ।

चिम्ल (म्भा० पर०—चिम्लन्ति चिम्लित्) 1 डीला होना चिचिक होना चिमिल्ला होना 2 आगम से काम करना, कीड़ासक्त होना ।

चिम्लः—स्त्र्या [चिम्ल् + जन्, स्त्रिया टाप्] चील । सम०—भास्वः गठकतरा, जेबकनरा ।

चिमिलका, चिमिली [चिम्ल् + इन् + कन् + टाप् चिम्लि + ङीष्] झीमुर—गु० बोल्लका ।

चिमिः [चीम् + इन् पृषो०] ठोड़ी ।

चिह्नम् [चिह् + जन्] 1 निशान, चम्पा, छाप प्रतीक कुम्भचिह्न, चिल्ला, कलम—आनेषु वपचिह्नेषु रघु० ११४४, ३१५५, सविपातस्व चिह्नानि—पंच० ११७७ 2 संकेत, इति—प्रसाधचिह्नानि पुर कलानि रघु० २१२१—प्रहर्षचिह् २१६८ 3 राक्षचिह्न 4 कलम चिह्न । सम० कारिण् (रे) 1 चिह्न लगाने वाला दाब लगाने वाला 2 प्रहार करने वाला, बायल करने वाला, हल्का करने वाला 3 बराबना, बिकराक ।

चिह्नित (च०) [चिह् + क्त], 1 निशान लगा हुआ, नके छिद्र, मुद्रांकित, किसी पर का चिह्न लगाये हुए—भास्व० २८६१, २११८८, दिवा चरेषु कार्याय चिह्निता राखवासी—मनु० १०१५५, २११७० 2 दावी 3 आल, बर्निहित ।

चीत्कार [चीत् + क् + वच्] अनुकरणमूलक सम्ब, कुछ जानबारी की कल्पन विशेषकर गन्धे की रेंक या हाथी की चिंकार—स विवीदनि चीत्काराद्द्वयैस्तान्द्रियो यथा—हि० २१३१ बेनायक्यचिचर वो बदनचिचुतय पाय्नु चीत्कारवत्य मा० १११ ।

चीन [चि + नक् दीर्घ] 1 एक देश का नाम बर्तमान चीनदेश 2 हुरिण का एक प्रकार 3 एक प्रकार का कपड़ा या (पु० ब० व०) चीन देश के निवासी या वासक—मनु १ अक्षा 2 अक्षा के किनारा पर बौचने के लिए पट्टी 3 मीमा । सम० जंशुकम्—वासम् (नपु०) चीन का कपड़ा रजम, रेशमी कपड़ा चीनांशुकमिह केतो प्रतिपाल नोपमानव्य-ध० ११३६ क० ३१३ अनष्ट ७५ कर्पूर १४ प्रकार का कपूर, जम्ब इस्रात पिच्छम् १ गिन्दूर २ मीमा बज्जम् मीमा ।

चीमाक [चान् + जक् अण्] १४ प्रसार का कपूर ।

चीरम् [चि + क्त दीर्घश्च] 1 विषय पटा पुराना कपड़ा बज्जी मनु० ६१६ २ तत्कल ३ वस्त्र या पाशाक ४ चार लड़कियाँ का माँतगों का हार ५ बीड़ी बानी रेखा लकीर ६ रेखाएँ बनाकर छिन्न ७ सोमा । सम० परिग्रह, वास्तु (वि०) १ बल्कलकारी कु० ६१९८ मनु० ११.१०१ २ चिचये या जट पुरान कपड़ पहने हुए ।

चीरि (स्त्री०) [चि + कि दीर्घश्च] १ जाँघों का टुकन का पर्दा २ झीमुर ३ नाच पहनने वाले कपड़े की झालर या मोट ।

चीरि (व०) का [चीरि + क् + क + टाप्] [चीरिका पृषो० साधु] सोडपुर ।

चीर्ष (चि) [चि + नक् पृषो० अट् ईत्वं] १ किया हुआ, अनुष्ठित पास्त २ अभीत, बोहोला हुआ ३ विशेष किया हुआ विनाशित १ सम० पर्ष लज्जुर का गेह ।

चीर्षिका [ची + ला + क + टाप् इत्यम्] झिगुर ।

चीर्ष (म्भा० उभ०—चीर्षतिने) १ पहनना, बोहना २ केना ग्रहण करना ३ पकड़ना ।

चीरम् [चि + च्वरत् नि० दीर्घ, चीम् + जन् वच्] १ पोशाक, कटा पुराना, चिचड़ा प्रेतचीरवद्धा म्बनोप्रदा रघु० ११११६ २ मिश्रक का परिधान, विशेषकर बौद्ध मिश्र के वस्त्र, चीरराशि परिचरते—मिह्रा०, चीरचीरपरिचरदा मा० १, प्रसाक्षित मेतन्मवा चीरवस्त्रम् मृच्छ० ८ ।

चीरिचरि (पु०) [चीर + चिनि] १ बौद्ध या जैन मिश्रक २ मिश्रक ।

चुक्कार [चुक् + जन् = चुक्क + जा + रा + क] सिंह की गर्जन या बहाह ।

बुध [बुध् + रुद्, मत उत्पन्न] 1. एक प्रकार की अवलंबित या सम्बन्धीयता 2 अटोल, कम् अटोल, अम्कता ।
यत्न० कम्कम् इतली का कम्, -बल्लभकम् अटोलिदृष्टा
बोका, सम्बन्धीयता ।

बुध [बुध् + टाप्] इतली का पेट ।

बुधिनम् (पु०) [बुध् + इयनिच्] अटोल, अटोलपन ।

बुधुकः, -कम्, बुधुकम् [बुध् इति अव्ययसंज्ञक कायति
-क + क, पुषा० दीर्घ] बुधो का बिक्राना या बुधी ।

बुधुम् (वि०) [कुछ समासों के अन्त में प्रयुक्त] प्रख्यात,
प्रसिद्ध, विभूत, कुशल -वस्त्र, चारु आदि ।

बुध्या, हा [बुद् (इ) + अच् + टाप्] छोटा कुम्हा या
अस्त्रालय ।

बुत् (म्भा० पर० - ५५५) बुता, टपकना, दे० अ्युत् ।

बुतः [बुत् + क] बुता ।

बुत् (ब्रा० उभ० - बोदयति ते चादित) 1 भोजना,
निदेश देना, आगे फेंकना प्रेरित करना, हाँकना,
बकेलना बोदयात्मान् यत् १२ प्रबोधित करना
स्फूर्ति देना, ठेलना, सजीव बनाना उकसाना -रपु०
५१२४, मार्गप्रदर्शन करना, फुलसाना रपु० १०१६७
3 सीधला करना, खरित करना 4 बदन करना,
पुछना 5 साधन निवेदन करना 6 प्रस्तुत करना,
नर्क या आर्षेप के रूप में सामने लाना, बरि
1. बकेलना, निदेश देना, भोजना 2 उकसाना, प्रोत्सा-
हित करना, प्र- 1 ठेलना, प्रबोधित करना, स्फूर्ति देना
उकसाना -चापलाय प्रबोधित -रपु० ११९ 2 हाँकना
हाँकना, स्फूर्ति देना, बकेलना 3 निवेदन देना
लम्, 1 निवेदन देना, उकसाना, ठेलना 2 फेंकना,
आगे बढ़ाना ।

। बुधो (बुन् + अच् वि० जीप्) दूती, कुटनी ।

बुद् (म्भा० पर० - बोयति) बर्न बर्न चलना, बने पाँव
चलना, बुधबाप बिलकना ।

बुधुक [-विदुक, पुषो०] छोटी ।

बुधुम् (म्भा० - ब्रा० उभ० - बुधति -ते, बुधयति -ते,
बुध्वात) 1 बुधन करना, (आज० ते जी) विस्मयति
बुधयति अलङ्कारकम् हरिकवत इति विविधेयत्वम् -
गी० ९, विद्यामूर्ध किमुपबन्धुधुम् -हु० ११८ अथवा
१९, हि० ५११२ 2 बुद्धिमार्ता पूर्वक स्वर्ण करना,
हूँ हूँ चलना -उत्तर० ५११५, बरि - बुधना - अहु०
९११७, अथवा ७७ ।

बुधुः, -आ [बुध् + अच्, बज्, वा, स्थिवां टाप्] बुधन,
बुधना ।

बुधुः [बुध् + अज्] 1 बुधो वाला 2 काशी, कायाचल,
कामुक 3 बहमास, उभ 4 बिलने भुज सिखा, बिम्बने
अनेक सिधों को बु धिना, पलकवाही बिहान् 5 बुधक
कवच (कमलक) ।

बुधुः [बुध् + अज्] बुधना, बुधन -बुधुः देहि मे भार्य
कामचांशकपुत्रवे -रत्न० ।

बुद् (ब्रा० उभ० - बोयति -ते, बोयित) 1 बुधना,
बुधना - अहु० ८१३३३ विदुः ३१७ 2 (आज०)
बहन करना, रखना, बचिकार में करना, लेना, बारण
करना -अबुधुः अज्बन्धुः अज्बन्धुः अज्बन्धुः अज्बन्धुः
बरा [बुद् + अ + टाप्] बोटी ।

बुदिः - रो (स्वी०) [बुद् + फि, बुदि + जीप्] छोटा
कुम्हा ।

बुधुकः [बुध् + उक्कम्] 1 गहरा कीचड़ 2 एक बूँट या
हवेसी भर पानी, बुल्, - नवी स नत्र बुधुके लवुः
- न० ८१५५, आत्मा विद्यावचनमुक्ता प्रवृत्तिम् -विदु-
नाहु० ११३७ 3 छोटा बर्तन ।

बुधुम् (पु०) [बुधुक + इनि] बुध, उल्सी ।

बुधुम् (म्भा० पर० - बुधुम्बति) 1 बुधना, ठोकना,
इधर उधर हिलना बोलबोल होना, उद् - 1 छोटे
केना 2 आश्चर्य होना -अम्बोयेनीकिन्कीरुडविष
बुधुकं कम्बुधुम्बन्धुयो मे -महावी० ५१८ ।

बुधुम्बः [बुधुम् + बज्] बुधुयो की साह प्यार करना ।

बुधुम्बा [बुधुम् + टाप्] बकरी ।

बुधुः (म्भा० पर० - बुधुति) बेलना, कीडा करना,
प्रबोधनाद में प्रीतिपूर्वक संकेत करना ।

बुधुः [बुध् + इन्] बुधा ।

बुधुः [बुधुः + जीप्] 1 बुधा 2 बिता ।

बुधुकम्, बुधुकम् [बुध् + अकम्] बकारर बकार, बुधुक
पुषो] बुधो का बिक्राना - बुधी - वि० ७१९१ ।

बुधुकः [बुधा + अज्, हज्] बुधा ।

बुधा [बुध् + अज्, लज् + दीर्घ] 1 बाजों की बोटी
बुटिया (मुम्बन लस्कार के बखर पर रखी हुई
सिखा) रपु० १८५१ 2 मुम्बन लस्कार 3 बुधों की
या मोर की कलसी 4 ताब, बुधुट, उल्सी 5 शिर

6 विचार, बोटी 7 बीबारा अटारी 8 कुम्हा

9 (कलाई में लहना वाले वाला) बाधुधुम् । उभ०

-कवकम्, -कवम् (अहु०) 1 बुधन लस्कार -अहु०

२१५५, -वाहः बाजों का बुधुः, केह कम्बु -बुधा-

पावे बल्लुवरकम् -वेध० ९५ -बधि, -कम्

1 शिर पर बारण किया जाने वाला बाधुधुम्,
बुधामि, बीधुधुम् (आज० ते जी) 2 बुधिया केह
(ः - बलाह के अन्त में) ।

बुधार, -क (वि०) [बुधा + अ + अज्, बुधा + अज्]

1 शिर पर बुटिया रखने वाला, बिनाबुध 2 क-
नीबारा ।

बुतः [बुध् + कट पुषो०] 2 नाम का बूँट, -बीडलरक-
कनायकविद्या बुते नवा सम्बन्धी-विदुः २१७,
बुताकुरावायकनायकः -हु० १११२ 2 कावरी

के पीछे हाथों में से एक, वे० पंचवान, —सम् वृषा, नमदार ।

पूर्ण (पूर्व० उभ० —पूर्णवति—ते, पूर्णित) वृषा२ करना, कुचलना, पीस देना ३ चकनाचूर करना, कुचल देना, —सम्, —रगड देना, कुचल देना सर्व्वणामि मदया न सुयोधनोव—वेणी० १११५ ।

पूर्णः—पूर्ण [पूर्ण + अच्] १ वृषा २ घाटा ३ घुस ४ सुवन्धित वृषा, पिता हुआ चन्दन, कपूर आदि —वर्षित विफलप्रेरणा पूर्णवृष्टि मेघ० १८ कः १. सविधा २. पूना । सम० कारः पूना फूँकने वाला, —कुस्तलः वृषा, वृषराले बाल अलक—सम केर-छकातानी पूर्णकुस्तलवल्कलि—विक्रमाङ्क० ६१२, —सम्पन्न कङ्कड, बजरी, —वारव शिगरफ, मिन्दूर, —बोकः मन्त्र इन्नों का पूर्ण ।

पूर्णकः [पूर्ण + कन्] मूल कर पीसा हुआ अनाज, मनु—कम् १. सुवन्धित वृषा २ मध रचना की एक शैली को कणकटु ज्यों से रहित तथा अल्प समाम वाली हो—अकठोराकार स्वल्पसमांशं पूर्णकं विद् —छ० ६ ।

पूर्णकम् [पूर्ण + क्त्वं] कुचलना, पीसना ।

पूर्णः—पूर्ण (स्त्री०) [पूर्ण + इन्, पूर्णित + ङोष्] १. पीसा हुआ, वृषा २ सौ कीड़ियों का समूह ।

पूर्णित [पूर्ण + क्त + टाप्] १ मूना हुआ और पिता हुआ अनाज, सम् २ सरल पक्षरचना की एक शैली ।

पूर्णित (वि०) [पूर्ण + क्त] १ पीसा हुआ, चूरा किया हुआ २ कुचका हुआ, रगड़ा हुआ, चूर-चूर किया हुआ, टुकड़े २ किया हुआ—कु० ५१२४ ।

पूर्णः [पूर्ण + क पूर्वो० दीर्घ] बाल, केश, —का १ ऊपर का केश २ शिखर ३ घूमकेतु की शिखा ।

पूर्णिक [पूर्ण + पूर्ण पूर्वो० दीर्घ] १ घूर्ण की कलगी २ हाथी की कनपटी ३ (माटकों में) नेपथ्य में पात्रों द्वारा किसी घटना का संकेत—अन्त्यर्जवनितासत्यं वृषवार्चनं पूर्णिका—सा० ४० ११०, उवा० महावीर वरिष्ठ के पीछे बंक के आरंभ में ।

पूर्ण (स्वा० पर०—पूर्णवति, पूर्णित) पीना, चूना, घुस लेना ।

पूर्णा [पूर्ण + क + टाप्] १. (हाथी का) बगरे का तल २. वृक्षना ३. मेखला ।

पूर्णम् [पूर्ण + क्त्वं] घुस जान वाले मोम्य पराश ।

पूर्ण १ (पुदा० पर० वृत्ति) १ घोर पट्टधाना, मार डालना २ बाधना, एक जगह बोलना, ३ (स्वा० पर० वृषा० उभ०—वर्षति, वर्षयति—ते) बलाना, दम्भ-हित करना ।

पूर्णवति [पूर्ण + वत्] १ घोर, घातक, घातक, घातक (विशेष) २ अनुपधीराहा को पीसने को, घोर से मारना—सा० ५४ में लडा ।

वेदः—क [विद् + अच्, वा टल् कः] १. नीकर २. विट, उपपति ।

वेदि (वि०) का, वेदिः (दो) (जी)—[विद् + क्त्वं] टाप्, इत्, पक्षे क्वम्, ङोष्, इत्थम् वा] सेविका, दासी ।

वेतन (वि०) (स्त्रि० जी) [वित् + क्त्वं] १ सजीव, जीवित, जीवधारी, मचेत, मवेदनशील वेतनावेतनेषु मेघ० ५, सजीव और निजीव २ दुश्मान, नाः १ सचेत प्राणी, मनुष्य २ आत्मा, मन ३ परमात्मा, वा १ ज्ञान, सत्ता, प्रतिबोध वृत्त्यवति मदीया वेतना वज्रवतीक रम०, रघु० १-११४, वेतना प्रति-पद्यते मजा फिर प्राप्त कर लेता है २ सत्य, प्रजा पञ्चमहाभूमिनीयामाप्रसादमिव वेतना रघु० १७१ ३ जीवन, प्राण सजीवना मग० १११६ ४ वृद्धिमत्, विकासविमर्श ।

वेतम् (सु०) [वित्, अमुन्] १ बलना ज्ञान २ वित्त-शाल आत्मा मर्कता गणक ३ मन, वृद्ध आत्मा वेत पमादर्शन भर्त० २१२१, मच्छादि पुर शरीर घावित परनादमस्तुत वेत ज० ११३६ । मय० क म्भन, भवः—भ (१) १ प्रेम, आश्रय २ कामदेव, विकास मन्त्रा विकृति, सवेग क्षाम ।

वेतोमन् (वि०) । वेतन मन्त्र [विन्ता, जीवित ।

वेद (अप०) यदि अर्जुन वि यद्यपि (आपक के आरम्भ में कभी भा प्रयोग नहीं होता) अथ रावमुरीकरावि तर्किकर्मात्ता प्रतिशारीय वदाम भाषि० ११६४, कु० ६१२ हरिकेद न, यदि ऐसा कहा गया । हम उनसे दते हैं) तो ऐसा नहीं (विवादाम्भय विदय) में लपटा प्रयास होता है) मन्त्रिधानमात्रेण रावमुरीना दण्ड कर्त्तुं विमोक्षेण ज्ञान० अथ वेद-पान्थु गद ।

वेदि (पु० क० व०) एक इन्द्र का नाम नवर्गिणार वेदीनां प्रवर्तनप्रवर्तन मा शि० २१२५ ६३ । सम० —पतिः, —वृत्तु (पु०) राज् (पु०)—राजः शिशु-पाल, वरमार्ग का पुत्र, बीरवत्त का राजा—शि० २१२६, वे० शिष्टापाल ।

वेद्य (वि०) [वि + यन्] १ डेर लेगाने के योग्य २ एकत्र करने योग्य, सघट्ट किसे जाने के योग्य ।

वेद्य (स्वा० पर० वेदनि) १ ज्ञाना, हिलना-चुलना २ हिलना, क्षुब्ध होना कापनी ।

वेद्य [विन् + क्त्वं] १ वरन वीशाक—कुमु-मार्धन चार भेद इतना—मग० २ (संज्ञा के अन्त में) बुना, हुट, कमीना अत्यधिकम् = बुरी गन्ती । सम० प्रज्ञासकः बोधी ।

वेदिका [वेद + क्त्वं] टाप्, इत्थम्] बोली, बर्गिया ।

वेद्य (स्वा० आ० कटते, वेदित) १ हिलना-चुलना,

हिलना-डुलना, सक्रिय होना, जीवन के चिह्न दिखाना
-बदा स देनो जागति तरेबं चेष्टते जगत् -मनु०
१।५२ २ प्रयत्न करना, कोशिश करना, प्रयास करना,
सबसे करना ३ अनुष्ठान करना, (कुछ कार्य) करना
४ व्यवहार करना -वि १. हिलना-डुलना, चलना-
फिरना, गतिशील होना, इधर-उधर फिरना २ कार्य
करना, व्यवहार करना ।

टकः [चेष्ट + च्चल्] समीप का वासन विशेष, रनिबध ।
डनम् [चेष्ट + च्चुट्] १ गति २ प्रयत्न, प्रयास ।

डा [चेष्ट + अट् + टाप्] १ चाल, गति किमस्माक
स्वामिचेष्टानिष्पन्नो हि० ३ २ सकेन, कर्म-चेष्टया
माप्येन च नेत्रवक्त्रवि० १२५ लक्ष्यतेऽन्तर्गतं मन -मनु०
८।२६ ३ प्रयत्न, प्रयास ४ व्यवहार । सम० - नास
सृष्टि का नाश, प्रलय निष्पन्नम् किसी व्यक्ति की
गतिविधि पर जोर रचना ।

द्वैत (मू० क० कू०) [द्वेष्ट + क्त] हिला, चला,
हिला-डुला, -तम् १ चाल, वगभगिमा, कर्म २ क्रिया
कर्म, व्यवहार कपोलपाटलादेशं भ्रमं रयचेष्टितम्
मनु० ४।६८, तत्सकामस्य चेष्टितम् मनु० २।४
काम करना ।

द्वैतम् [द्वेन + व्यञ्] १ जीव जीवन प्रजा, प्राण
सर्वेन २ (वेदान्त २० में) परमात्मा जो सभी प्रकार
की मवेदनाओं का स्रोत और सब प्राणियों का मूल-
तत्त्व समझा जाता है ।

द्वैत (वि०) [द्वित + ठक्] मानसिक, बौद्धिक ।
प, -त्यम् [द्वित + अच्] १ सीमा बिज्ज बनायेवाला
पत्थरी का ढेर २ स्मारक, समाधि-प्रस्तर ३ यज्ञ
ग्रन्थ ४ धार्मिक पूजा का स्थान, देवी, बहु स्थान
जहाँ देवमूर्ति प्रस्थापित रहती है ५ देवालय ६ बौद्ध
और जैन मन्दिर ७ गूलर का वृक्ष, या सड़क के
किनारे उगने वाला गूलर का पेड़-वेष्ट २३ (रघु-
वृक्ष - मल्लिक०) । सम० - तब, -द्वय, -वृक्षः किसी
पवित्र स्थान पर उगा हुआ उडुम्बर अर्थात् गूलर का
पेड़, -वाकः देवालय का सरसक, -वृक्षः साधु-सन्ध्यायी
का आवास या कमण्डलु ।

: [द्वि + अच्] एक वाद्य मास का नाम जिसमें कि
चन्द्रमा बिचा नक्षत्र पुन में स्थित रहता है, (यह
महीना मार्ग और अश्लेष के अश्वेजी महीनों में माना
है) २ बौद्ध विष्णु, - च्चन् मन्दिर, मृतक की समाधि ।
सम० - आश्वि (स्त्री०) चैत्र की पूणिमा, सप्तः
कायदेव का विशेषण ।

द्वैतम्, -द्वैतम् [द्विचर + अच्, व्यञ्, वा] कुत्र के
उच्चारण का नाम -एकी यथी चैत्ररथप्रदेशान् सौराज्य-
रम्भानपरो विद्वर्जन् -रघु० ५।६०.५० ।

द्वै, द्वैतिका, द्वैतम् (पु०) [द्वैती विद्यतेऽस्मिन् द्वैती

+ इञ्, चिन्ता + ठक्, इति वा] चैत्रमास, चैत्र का
महीना ।

द्वैती [चिन्ता + अच् + ङीप्] चैत्र मास की पूणिमा ।

द्वैतः [वेदि + व्यञ्] सिद्धपाल, -अभिषेक प्रतिष्ठापुः
सि० २।१ ।

द्वैतम् [वेल् + अच्] कपड़े का टुकड़ा, बस्त्र । सम०
-बाधः धोबी ।

द्वैत (वि०) [चल् + चञ्, पुषो० साधु०] १ पवित्र,
स्वच्छ २ ईमानदार ३ होसियार, दख, कुशल
४ मुक्तक, हकिर, प्रसन्नता देने वाला ।

द्वैतम् [कोचति आधुनोनि - कुप् + अच् पुषो०]
१ बत्कल, छाल २ चमड़ा, जाल ३ नारियल ।

द्वैती [चूट् + अच् + ङीप्] छोटा लहंगा, साया पेटी-
कोट ।

द्वैतः [कोचति सवृणोति सरीरम् - चूट् + अच् + ङीप्]
चोमी अगिया ।

द्वैतना [चूट् + च्युट्, स्थियां टाप् च] १ नेजना, निर्देह
दना, 'रंजन' २ स्फूर्ति देना, जागे होकर ३ प्रोत्सा-
हन देना, उकसाना, उत्साह बढ़ाना, उत्तेजना प्रदान
करना ४ उपदेश, पुनीत आदेश, वेदविहित विधि ।
सम० - गुहः खेलने के लिय नैद ।

द्वैतित (मू० क० कू०) [चूट् + चिच् + क्त] १ नेजा,
निर्देह २ स्फूर्ति दिया गया, हूका गया ३ उकसाया
गया, प्रोत्साहित किया गया उत्तेजित किया गया
४ तर्क के रूप में सामने प्रस्तुत किया गया ।

द्वैतम् [चूट् + च्युट्] १ आलेख करना, प्रस्न पूछना
२ आलेख ३ आश्चर्य ।

द्वै(वी)रः [चूट् + चिच् + अच् चुरा + ण] चोर, लुटेरा
- सकल चोर पत स्वया मूहीतम् विष्णु० ४।१६,
द्वैवारदलप्रभाचोरं चञ्चु -मत्स्य० १।१७ ।

द्वै (वी) रिक्ता [चोर + ठञ् + टाप्] चोरी, लूट ।

द्वैरित (वि०) [चूट् + चिच् + क्त] चुराया गया, लूटा
गया ।

द्वैरितकम् [चोरित + कन्] १. चोरी, चौर, स्तेम
२ चुराई हुई वस्तु ।

द्वैत (पु०, व० व०) [चल् + चञ्] दक्षिण भारत में
एक देश का नाम, वर्तमान तमिल, -क, -ली,
अगिया, कोली ।

द्वैतकः [चोल, कं, क] १ राजस्थान २ छाल या
बत्कल ३ चोली ।

द्वैतकिन् (पु०) [चोलक + इति] १ राजस्थान के कुच-
जिन सैनिक २ सतरे का पेड़ ३ कलाई ।

द्वैत(लो)वृक्षः [चोलस्य व (उ) च्चुक इव, व० त०,
सक० पर०] साका, पगड़ी, फिरीट, मुकुट ।

द्वैतः [चूट् + चञ्] १ चूना, (आधु० में) सूजन ।

बोध्यम् = बुध्यम् ।

बोव(क) (वि०) (स्त्री—डी (नी)) [बुवा + अण्
—इल्योरन्तेः] 1. बिबाधुक्त, कलगीदार 2. मूष्यन
सम्बन्धी—इण्— कण् मूष्यन संस्कार ।

बोवन् [बोव + अण्] 1. बोरी, लट 2. रहस्य, छिपाव
सम०—रहस्य छिपे छिपे स्त्री संयोग,— वृत्तिः (स्त्री०)
लटने की भावत ।

बवन् [ब्व + ह्यट्] 1. चलना—फिरना, गति 2. बञ्चित
होना, हानि, बञ्चना 3. मरना, नष्ट होना 4. बहना
टपकना ।

ब्व (म्वा० बा०—अवने, व्युत्) 1. गिरना, नीचे गिर
पड़ना, फिसलना, डूबना (आल० भी) —स० २।८
2. बाहर निकलना, बहना, बूद २ करके टपकना,
बार निकालना—स्वतन्त्रभूत बहिर्गमिर्वाहुरभूद—रघु०
३।५८, मट्टि० १।७४ 3. बिचलित होना, भटकना,
अलग हो जाना, (कर्तव्य भावि) छोड़ देना (अपा०
के साथ), अस्माद्धर्माल् अव्येत्—मनु० ७।१८, १२।
७१, ७२ 4. छो देना, बञ्चित होना अच्योष्ट सत्त्वा
नृपतिः—मट्टि० ३।२०, ७।१२ 5. अदृश्य होना,
अज्ञ होना, नष्ट होना, गायब होना—रघु० ८।१५,
मनु० १२।१६ 6. घटना, कम होना; परि—, 1 बले

जाना, उड़ जाना, बच जाना 2. प्रवचन करना
3. भटकना, अलग हो जाना, छोड़ देना 4. क्षोना,
बञ्चित होना 5. गिर पड़ना, नीचे गिरना, प्र— अलग
हो जाना, नीचे गिर पड़ना भावि (लगभग वह सब
अर्थ जो परि पूर्वक 'व्यु' के होते हैं) ।

व्युत् (म्वा० पर०—अ्योतति 1. बूद २ गिर कर बहना,
रिसना, बूना, मरना—इव शोणितमस्यत्र सप्रहारेऽ-
व्युत्तयो—मट्टि० ६।२८ 2. गिरपड़ना, नीचे
गिरना, फिसलना—इव कवचमच्योतीत्—मट्टि०
६।२९ 3. गिराना, बहाना ।

व्युत् (म० क० क०) [व्यु + क्त्वा] 1 नीचे
गिरा हुआ जिसका हुआ, गिरा हुआ 2 दूर किया
गया, बाहर निकाला गया 3 बिचलित, मुला हुआ
4 उठाया गया । सम० अधिकार (वि०) पदभ्युत्
रिग गया,—आत्मन् (वि०) दूषित आत्मा माला,
दुर्गत्यामा कु० ५।८१ ।

व्युत्ति (ग्री०) [व्यु + क्तिन्] 1 अण् पतन, अवपतन
2 बिचलन 3 बूद २ गिरना, रिसना 4 क्षोना,
बञ्चित होना—अव्युत्ति कुयम् ३।१० 5 अदृश्य
होना नष्ट होना 6 योनिरुद्ध 7 मुदा ।

व्युत्तः [व्युत्त पृथो० उ०—रम्य दीर्घ] आम का वृक्ष ।

७

ऊ [उ० + व, क वा], अंश, खंड ।

ऊनः (स्त्री०—नी) [ऊ यज्ञादी उदेनं गच्छति—ऊ + नम्
+ ण] बकरा ।

ऊनकः (स्त्री० नी) [ऊ + क्त, नृक्, ह्रस्व] बकरा,
कण्—नीला कपड़ा ।

ऊनकः [ऊनक + कण्] बकरा ।

ऊवा [उ० + वट् + टाप्] 1. डेर, पूंज, राशि, संघात
—उवाच्छटा निप्रवनेन—वि० १।४७ 2. प्रकाश
किरण—अणु, काशिय, दीप्ति, प्रकाश—वि० ८।१८
3. अविच्छिन्न रेखा, लम्बर—ऊवेतराम्बुच्छटा—काव्य० ।
उण्—आकाश पिचकी,—कण्ः कुपारी का वृक्ष ।

ऊवः [ऊववति अनेन इति—ऊ + विप् + वत्, ह्रस्वः]
कुतूहल, वृत्ति,—अण् ऊता, ऊतरी—अनेनमासीत्
अनेन वृत्तेः वतिवत् ऊववने व वाने—रघु०
१।१६ मनु० ७।१६ । उव०—ऊट,—वाटः ऊव एकड़
कर पल्ले वाला,—आरकम् 1. ऊता लेकर पल्लमा,
स ऊता रकवा—अणु० २।१७८ 2. राजकीय

अधिकार के रूप में छत्र धारण करना,— वतिः 1 राजा
जिसके ऊपर राज्य की मर्यादा के विह्वलक्य छत्र
किया जाय, प्रभुसमाश्रान्त सत्ताट् 2. वंशुदीप के
प्राचीन राजा का नाम,—अण्ः 1. राजकीय छत्र का
चिन्नाश, राज्य का नाश, राजगद्दी के उलारा जाना,
सिंहासनभ्यति 2. पराजयता 3. रक्षासन्धी 4. परित्यक्त
अवस्था, वैधव्य ।

ऊनकः [ऊन + क + क्] शिव की पूजा के लिए अम्बिर,
—कण् कुतूहलता, वृत्ति ।

ऊवा, ऊवाकः [ऊ + वट् + टाप्, ऊवा + कण्] कुतूहलता,
वृत्ति—अणु० ५।१९—मात्र० १।१७९ ।

ऊविकः [ऊव + कण्] ऊता लेकर पल्ले वाला ।

ऊविम् (वि०) (स्त्री०—नी) [ऊव + वि] ऊता रखने
वाला या लेकर पल्ले वाला—(पु०) नाई ।

ऊवरा [ऊव + वारण्] 1. वट् 2. कुच्छ, पर्वतशाला ।

ऊव (म्वा०—पूरा० उव०—ऊवति—ते, ऊववति—ते,
ऊव, ऊवित) 1. उकना, ऊपर से डीर देना, पर्वत करना

—हमैरछना—येष० ७६, पञ्चः शेषात्समिलित्पुनर्वि-
पक्षमिच्छादयन्तीम्—येष० ९०; छत्रोपात्त...

काननाम्ने --१८ २ (बाहर की मर्ति) छिछाना,
छापना ३ छिपाना, ढक लेना, बहच करना (बाल०),
गुप्त रखना—ज्ञानपूर्व कृत कर्म छादयन्ते इत्यस्य
—महा०, छन्न दौषमुदाहरन्ती—मुञ्छ० ११४, —अञ्च,
छिपाना, ढकना, छापना, आ , १ छापना
नाम्नादयति कीपीनम् - पञ्च० ३१७ २ छिपाना,
ढकना जानीराच्छादयत्प्रभाम् महा० ३. बन्ध
धारण करना, कपड़े पहनना—मनु० ३१७, बन्ध-
माच्छादयति, उच् उपादना, कपड़े उतारना, उच् ,
१ आच्छादिन करना २ छिपाना, ढकना, धरि
१ छापना, पहनना दर्शित परिच्छाद्य पञ्च० २.
टीपिकर्मपरिच्छन्न (गर्भत्र) त्रि० ३१९ २ छिपाना
छापना, प्र , १ रजः -देहना, पर्दा डालना, अब
गुठिन करना--(बन्) प्राच्छादयदमेरात्मा मोहार
भव चन्द्रमा महा० २ छिपाना, ढकना, भेस बद
लना प्रच्छादय स्वात् गलान् मनु० २७३ प्रदान
प्रच्छन्नम् २६४, मनु० ४१९८, १०००, चौर० ४
३ कपड़े पहनना बन्ध धारण करना ४ ढकावट
डालना, रोधा अटकाना, प्रति , १ छिपाना, ढकना
२ छापना, लपेटना लप् - १ छिपाना २ अचगुठिन
करना, लपेटना ।

छन्, छन्दम् [छद् + अच्, भूट वा] १ आवरण, चादर
अल्पछन्द, उत्तरछन्द आदि २ स्कन्ध, पक्ष छदहम
कवन्तिबालम् ने० २६९ ३ पत्र, पर्ण ४ म्यान,
झोल, गिरफ, पेटी, बक्सा ।

छदिः (स्त्री०) छदिम (नपु०) [छद् + कि इम वा]
१ गाड़ी की छन २ घर की छत या छप्पर ।

छन्दम् (नपु०) [छद् + मनिन] १ घोषा दन वाले वस्त्र,
कपटवेश २ दलोल, बहाना राज-बहालछन्दा ममय्य
सार महा० २१५ चलनछन्दा जग० २५०
१२२, शि० २२१ ३ जालमात्रो, बेईमानी जालकी
--छन्दाय परिददामि मृत्यवे उत्तर० १४५ मनु०
४१९९, १३२१ मम० सावस बना हुआ तपस्वी
पाण्डो, कपेय (अप०) अज्ञान रूप में, भेस बदल
कर, -वैशान् (पु०) जिलाडी, टग, भेस बदले हुए ।

छदिन् (वि०) (स्त्री० भी) [छयन + इति] १ शास्त्र
साध, धोखेबाज २ भेस बदलते हुए (समय के अन-
ने) उदा० बाह्य छदिन् --बाह्य का रूप धारण
किये हुए ।

छन् (बुरा० उभ०) --छदयति ते, छदित १ पसन्न
करना, गुच्छ करना २ कुसलाता, बहुकाना ३ छापना
४ प्रसन्न होना, उच् - १ छापगुली करना, कुसलाता,
आमन्त्रित करना- स्वयंप्रच्छयित उक्तेन--सा० ५,

पानी पीने के लिए कुसलाता गया २. प्रार्थना करना,
निवेदन करना ३ अनुभव करना ४ कुछ देना ।

छन्ः [छन्द + चन्] १ कामना, इच्छा, कल्पना, चाह,
अभिलाषा, --विश्रयतां देवि वस्ये छन्द इति --विक्रम०
३, जैना भाष चाहें २ स्वतन्त्र इच्छा, अपनी छोट,
मन की मोज, कामचार, स्वतन्त्र या इच्छानुकूल
आचरण वष्टे काले त्वमपि दिवसस्यायनचछन्दवर्ती
--विक्रम० २११, गीत० १, याज्ञ० २१९५, स्वच्छन्दम्
अपनी स्वतन्त्र इच्छा के अनुसार, निरपेक्ष रूप से
३ (बत) बसता, निवन्धन ४ मतलब, इरादा
आशय ५ बहुर ।

छन्वन् (नपु०) [छन्द + अजुन्], कामना, चाह, कल्पना,
इच्छा मत्तो--(गृहीयात्) पूर्ण छन्दोऽनुवृत्तेन या
यान्त्येन पण्डितम् बाण० ३३२ स्वतन्त्र इच्छा,
स्वच्छाचरण ३ मतलब, इरादा ४ जालसाजी,
बालाकी, धोखा ५ वेद, वैदिक मूल्यों का पावन पाठ
म च कुलपतिराष्ट्रछन्दसा य प्रयोक्ता--उत्तर०
३४८, बहल छन्दमि पार्णिनि के द्वारा बहुधा प्रयुक्त,
प्रथमछन्दसामिब -रघु० १११, याज्ञ० ११४३, मनु०
४१९५ ६ वृत्, छन्द ऋक् छन्दसा आमात्य-ज० ४,
मायतो छन्दसामहम्-मन० १०३५, १३१५ ७ छन्दो
का ज्ञान, छन्द शास्त्र (छ. वेदाङ्गो में से छन्द शास्त्र
जो एक वेदाङ्ग माना जाता है अन्य वेदाङ्ग हैं -
गिरा, व्याकरण कल्प निकुल और ज्योतिष) । मम०
-- छन्दम् वेद का पद्यात्मक भाग या कोई दूसरी पावन
रचना- यथादितेन विधिना नित्य छन्दस्कृत पठेत्
--मन० ४१०० गः (अर्वांग) १ श्लोको का
मस्वर पाठ करन वाला २ मगायक या सामयान
का विद्यार्थी--मनु० ३११५ (भट्टा सामवेदाध्यायी)
अङ्गः छन्द शास्त्र के नियमों का उल्लेखन--विहितः
(स्त्री०) सन्द परीक्षा छन्द शास्त्र का एक अन्य
कभी कभी इसे दर्पदर्शित माना जाता है- छन्दो-
विहित्या मकलस्तत्पञ्च निरक्षित-काव्या० ११२१

छन् (वि०) [छद् + च] १ ढका हुआ २ छिपा हुआ
गल रहस्य आदि दे० छद् ।

छमन् [छ + अजन्] अनाय मन्त्रित्वहीन जिसका कोई
सम्बन्धी न हो ।

छब् (बुरा० उभ०) छदयति, छदित बसना करना, कं
करना ।

छब्, छब्ब छब्बि (स्त्री०), छबिक छबिन् (स्त्री०)
[छब् + बज्, स्यद् इन्, छदि + बन् + टाप् छब् +
इति वा] बसना, कं करना अवस्थित ।

छक्,--छक् [छन् + अच्] १ जालसाजी, बालाकी, धोखा,
दगाबाजी--विच्छेदे गठपलायनच्छलान्-रघु० ११३१,
उलमय न पृच्छते-मुञ्छ० ११८, याज्ञ० १६१,

मनु० ८।४९, १८७, अथर्व १९, सि० ११।११२ बर-
मासी, वृत्तांत ३ दलौल, बहामा, व्याज, बाह्यरूप,
(इस अर्थ में बहुधा उत्प्रेक्षा बतलाने के लिए इसका
प्रयोग किया जाता है), परिक्षाबल्यच्छलेन या न परेषा
वृहत्तस्य बोधरा—न० २।१५, प्रत्यय्यं पूजामुपदाच्छ-
लेन—रघु० ७।२० ५४, १६।२८, अट्टि० १।१, अथर्व
१५, मा० ९।१४ इत्यादि ६ हेत्वाभास
७ योजना उपाय तरकीब ।

छन्न, —ना [छल् + ल्युट् स्विवा टाप् च] धोखा देना,
ठगना, बुद्धि में दूसरे का पराजित करना ।

छन्नयति (ता० घा० पर०) अपनी चतुर्गई से बुद्धि में दूसरे
को पराजित करना घाला देना, ठगना हासि छन्नयते
गीत० १ दीर्घाञ्जोलाग्रछन्नयान् भीमान् रघु० १।५
६१, अथ० १०।३६ अथर्व ४१ ।

छलिकम् [छल + क्त] एक प्रकार का नाटक वा मृच्छ
छलिक दुष्प्रयोगमूढाहन्ति—वाक्यि० २ ।

छलित् (पु०) [छल + इति] ठग, उपपकार, धठ ।

छलित्, —स्त्री (स्त्री) [छल् + क्तिप्, लो क्तिणि—ला + क
गौरां ङाच्] १ बल्कल, छल २ छलने वाली लता
३ सन्तान, प्रजा, सन्तति, बीजाव ।

छविः (स्त्री०) [छपति बहारा छिपति छनो वा—छो + वि
छिज् वा छेप्] १ छाया, बेहरे की मुर्ती, बेहरे का
रंगरूप—हिमकरोदवशात्पुनश्छविः—रघु० १।३८,
छवि पाण्डुरा—अ० १।१०, वैश० १।१२ सामान्य
रंगरूप ३ मोल्दर, छाया, छवि—छविकर मुखवर्ण
मृगुच्छिन् रघु० ९।४५ ४ ब्रजाव, दीप्ति ५ लंबा
छाल ।

छान (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [छो + वत्] बहरे या बहरी
से सम्बन्ध रखने वाला—यात्रा० १।२५८, —ग (स्त्री०
स्त्री) १ बहरी बहरी, शास्त्राग्रछायता यथा (वर्जित)
हि० ४।५१ मनु० ३।२६० २ मय रात्रि गच्छ
बहरी का दूध । सम०—भोजन (पु०) मेढिया, मुख
कार्तिकेय का विशेषण रघु, बहल्लः आग की देवता
अग्नि की उपाधि ।

छायक [छाय + क्त] गच्छ करने की छाया ।

छायल (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [छान + लप्] बहरी से
प्राप्त होने वाला या उससे सम्बन्ध—अ० बहरी ।

छात (वि०) [छो + क्त] १ कटा गया, बिचकल २ निर्बल
दुबलागला कृम ।

छात्रः [छात्रं पुरोर्बेगुप्पावरणं शीतमस्य—विद्वान् + छात्र + ज]
विद्यार्थी, शिष्य, —अत्र एक प्रकार का वस्त्र । सम०
—गच्छ, छात्र का अन्यमन्त्रक विद्यार्थी विशेष स्त्रीको
का केवल आरम्भिक पद पाठ हो, सर्वत्र एक दिन
रमले हुए दूध से निकाला हुआ बरकन,—अल्लः
मन्दबुद्धि या वृत्त विद्यार्थी ।

छात्रम् [छा + क्तिप् + वच्] छात्र, छात्र ।

छात्रवत् [छात्र + क्तिप् + ल्युट्] १ आचरण, परा (आल०
भी) विनिर्मित छात्रवत्प्रताया—मनु० २।७२ २ छिपाया
३ वध ४ परिचान ।

छात्रित (वि०) दे० छात्र ।

छात्रिण [छात्र + क्त] वृत्त, कपटी मनु० ५।१९५ ।

छान्दस (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [छन्दस् + क्त] १ वैदिक,
वेदों के लिए विशेष वाक्य जैसा कि 'छान्दस प्रयोग'
२ वेदाध्यायी वेदज्ञ ३ पञ्चमय छान्दाबद्ध स वेद-
ज्ञाता वाङ्मय ।

छाया [छो + टाप्] १ छाँह छाँव (१० समाम के अन्त
में छाया हो जाता है जब कि छाँह का समानता का
बोध अपेक्षित था यदा० इत्युच्छायान्छायाय रघु०
४।२० इसी प्रकार आ० १० मृदा० ४।२१ छाया
मय सानुगता नियम्य कृ० १।५४५ अन्वर्था
ति मन्त्रा वादपस्त्रीरुमृण्य श्रमयान् परिणय छायाया
सांख्यिका ग० ५।३ मधु० १।३० १।६ १।७०
मधु० ५०२ प्रोविश्वः मति वक्ष्य छाया न
मच्छी मन्त्राग्रहप्रसादं शुद्धं तु रणजने मुक्तमावकाश
ग० ७।३२ ३ समान्यता समानता ४ सम्य
कतया दीप्तप्रभ ५ रगो का मर्यामभय ६ दीप्ति
प्रकाश छायामण्डल-अथ रघु० ६।५ रत्नच्छाया
आश्रय मधु० १।६७ रग—मा० ६।५४ बन्ध
का रगत स्वाभाविक रंगरूप केवल छायाध्यययी
छाया स्वा न मुञ्चति ग० ३ मेघवर्तनति प्रियं तव
मन्त्रच्छायानुकारी यमो मा० २०९ लोन्दय—आम
च्छाव भवनम् मेघ० ८०।१०४ १० रक्षा ११ पर्वक
रक्षा १२ अन्धकार १३ रिश्चन १४ दुर्गा १५ मूर्ध की
पत्नी (पह मूर्ध की पत्नी मन्त्रा की प्रकृति या छाया
ही या, फलम विम मयय सजा अपन पति का बिना
बताये अपने पिता क चर जलौग ही ता छाया से मूर्ध के
तोन सन्तान हुई दो पुत्र—सावर्ण और यानि एव
कन्या तपनी) । सम० बहल्ल चन्द्रमा,—छाया छाया
नगर बलने वाला, बहल्ल शीघ्रा, दपन,—नमस,—मुक्त
मृगपुत्र शानि लघु बहल्ल जिसकी छाया बनी हो
छायादार पेठ मेघ० १ द्वितीय (वि०) वह जिसका
माघ एक माघ छाया हो अकेला, कश्च, पयोवरण
—रघु० १।३०, भृत् (पु०) बन्धमा, भाव चन्द्रमा
नम्य छाया का मापको, बिचक्य छहरी भुजबध
चन्द्रमा, कश्चम् छाया द्वारा काल का ज्ञान करान
वाला पात्र, भूपचडी ।

छायाय (वि०) [छाया + मीट्] प्रतिबिम्बित, छायादार ।

छि (स्त्री) [छो + क्ति वा०] गाली, अपमान ।

छिक्ता [छिक् + क्ति + क टप्] छीकना, छीक ।

छित (वि०) दे 'छात' ।

छिन्ति: (स्वी०) [छिद् + क्तिप्] काटना, टुकड़े-टुकड़े करना ।

छिन्न (वि०) (स्वी० सी) [छिद् + ध्वन् प्रत्यये] १ काटना, काट देना, चीरना, कटाई करना काटना, छेदना, टुकड़े २ करना, विदीर्ण करना, खण्ड खण्ड करना विभक्त करना नैन छिदन्ति शस्त्राणि-भयं २।२४, रघु० १२।८०, मनु० ४।६१, ७० याज्ञ० २।३०२ २ बाधा डालना, विघ्न डालना ३ हटाना दूर करना, नष्ट करना, भान्त करना, मारना ४ छाया छिन्ति भन्तं २।३३, एतन्म सशय छिन्ति सान्तं सममुद्यति महान् गणवो रघमप्राप्ता नामाशा न भुविऽप्याम्, अर्चन्तुमुखैर्वाणिछिच्छेद कदम्बोमुखम रघु० १२।९६, कु० ३।१६ अब काट डालना, टुकड़े २ कर देना, अलग २ करना, विभक्त करना २ भेद बनाना ३ मुच्यन्ते करना ३ मुच्यन्ते परिभाषा देना, सीमित करना (इस अर्थ में इस शब्द का प्रयोग व्याय में बहुमत में होता है), दं अवच्छिन्न आ, १ काट डालना, काटना, टुकड़े २ करना २ छानना समानता, लं लेना कु० २।४६, मा० ५।२८ ३ काट डालना, अलग कर देना—मनु० ४।२१९ ४ हटाना सींचकर दूर करना ५ सींचना, सींचकर दूर करना, उड़ान करना निकालना ६ बखेरना करना, ध्यान न देना, उन्मू, १ काट डालना नष्ट करना, जम्मुलन करना, उखाड़ देना नर्त्तच्छावात्मना मूल परेषा कानित्यया म. १०, कि वा स्मिन्मूल गुरु स्वयमुच्छिन्नात् रघु० ५।३१ १०३, १०४ १।४७ २ हस्तक्षेप करना, विघ्न डालना रोकना अर्थेन तु विहीनस्य पुरुषस्याल्पमेधम, उच्छिन्नान्ते क्रिया सर्वा शीघ्रे कुर्वातो यथा—पञ्च० ७।८४, मनु० ३।१०१ एति १ काटना, काट डालना टुकड़े-टुकड़े करना २ घायल करना, लग भग करना ३ अलग करना विभक्त करना, बुरा करना—अनेन परिच्छिन्न—सिद्धा-४ सही-सही निश्चित करना, सीमा बनाना, परिभाषा करना, निश्चय करना, भेद बताना निवेदन करना—अध्वस्था भगवती नौ मुनदाख्य परिच्छेत्तुमर्हति—मालावि० १, (म) यश परिच्छेत्तुमिगतालम् रघु० ६।३७, १३।५९, कु० १।१८ प्र १ १ काट डालना टुकड़े २ करना २ लं भाना ३ गिस लेना वि, १ काट डालना, काटना, चीरना विभक्त करना—वदयं विच्छिन्न सति कुतश्चान्तरिमव तत् ३० १।९, रघु० १।१२०, मनु० १।१६ २ बाधा डालना, ताड़ देना, समाम कटना घायल करना, नष्ट करना, (कुल का दीपक) बुरा देना-विच्छिद्यमानेऽपि कुले परस्य—अहि० ३।५२, अमर ७४, लम्, १ काटना, काट डालना, विभक्त करना २ दूर करना,

साफ कर देना, निवारण करना, हटाना (बदेह आदि) ।

छिन् (वि०) [छिद् + क्तिप्] (ममाम के अन्त में) काटने वाला, विभक्त करने वाला, नष्ट करने वाला, हटाने वाला, खण्ड-खण्ड करने वाला—अर्माच्छिद्राध्वमपाद-पाताम् रघु० ५।६ पञ्चछिद्र फलस्य—मालावि० २।८।

छिद्रम् [छिद् + क्तन्] १ छिद्र का वज्र, २ छिद्र ।

छिद्रा [छिद् + अद् + टाप्] काटना विभक्तन ।

छिद्रि (स्त्री०) [छिद् + इन्] १ कुच्छा २ छिद्र का वज्र ।

छिद्रिः [छिद्र + क्तिप्], १ कुच्छा २ शब्द ३ अस्मि ४ रसा डाली ।

छिद्रुर [छिद्र + क्त] १ काटने वाला, विभक्त करने वाला २ आपाना में छिद्रन वाला ३ छिद्र हुआ, अर्थात् अस्मिन् सत्यने न छिद्रुराप्ति हर रघु० १६।६७ ४ शत्रु ५ पूर्ण बदमाश, छठ ।

छिद्र (वि०) [छिद् + क्त, छिद्र + अच् वा] छिद्रा हुआ, छिद्रा में पुक्त—अथ १ छिद्र, दगर, काट कटव, रघु गतं विवर, दग्ग नर्त्तच्छिद्राणि नात्येव प्राण-स्यायनानां तु याज्ञ० ३।१९, मनु० १।२३९ अथ पञ्चछिद्राश्चैतल्लक्षण—मृच्छं ७।१, इसी प्रकार काष्ठं धर्मि २ दोष, वृद्धि, दुष्प्रत्यय—व हि संप्रयमात्राणि पर-च्छिद्राणि पश्यमि आत्मनो बिलम्बमात्राणि पश्यन्ति न परयसि—महा० ३ भेद या क्षीण अज, दुर्बल पक्ष, दोष न्यूनता नाम्य छिद्र परा विद्याश्चिदाच्छिद्र परस्य तु तनेत्तु कर्म इवाङ्गानि लेखितव्यमात्मन—मनु० ३।१०५, १०७, छिद्र निष्कस्य सद्रमा विद्याप्यशक्तु—हि० १।८१ (यदा छिद्रं का अर्थ 'सूत्र' भी है), पञ्च० ३।३९ मयं अनुबोधिन्, अनुसन्धानिन्, अनुसारिन्,—अन्वेषिन् (वि०) । दोष या वृद्धि हुईने वाला २ दूसरा को वृद्धि याता को खोजने वाला, दूसरो में दोष निवारने वाला छिद्रान्तरो—सर्पाणां दुर्जनानां च परच्छिद्राऽर्जोविना—पञ्च० १,—अन्तरः बत, नर-कुल सारकडा आत्मन् (वि०) जो अपना वृद्धि दूसरो पर पकट कर लेते हैं कर्त्त (वि०) जिसने कान बिधवा लिये हैं कर्त्त (वि०) १ दोषों का प्रदर्शन करने वाला २ दाघदर्शी ।

छिद्रित (वि०) [छिद्र + क्त] १ छिद्रा में पुक्त २ बिधवा हुआ, छिद्रा हुआ ।

छिद्र (मू० क० क०) [छिद् + क्त] कटा हुआ, विभक्त हुआ हुआ, विदीर्ण हुआ हुआ खण्डित, काटा हुआ, टूटा हुआ २ नष्ट हुआ, दूर किया हुआ दे० छिद्र, —का बाग्राङ्गना, वर्याः सम० केस (वि०) जिसके बाल काट लिये गये हैं, बिम्बका लीर या मूण्डन हो

पुका है—पुक्कः कश्चित् पुक्कः—हीच (वि०) जिसका सन्देह नष्ट नया है—वासिक (वि०) जिसकी नाक फट गई है—विक्क (वि०) जो पूरी तरह काट दिया गया है, जिसका बंध भंग हो गया है, क्षयविशत, काटा हुआ—क्कत्त, क्कत्तक (वि०) कटे हुए खिर बाग, —पुक्क (वि०) जिसे बड़ से काट दिया गया है—रप्पु ७।४३, —क्कत्तः एक प्रकार का वस्त्र—सत्तव (वि०) जिसके सन्देह दूर हो गये हैं, सन्देहमुक्त, पुष्ट ।

कुसुम्भर (स्त्री०—री) [कुसुम् इत्यस्य क्तप्रत्यये दीयते निर्मल्यति क्त्वात् कुसुम् + इ । अण्] कुसुम्भर नाम का जन्तु, मन्त्राणु—पाञ्च० ३।२१३, मनु० १२।६५ ।

कुप (पुं० पर०—छपति) स्वयं करना, घुना ।

कुपः [कुप + क] १ स्वयं २ सारी, सबाह ३ सचय, गुड़ ।

कुपि (स्त्री० पर०—छोरति, छुरित) १ काटना, विभक्त करना २ उत्कीर्ण करना, ii (गुदा० पर०—छुरति, छुरित) १. बांधना, सानना, लोपना, जड़ना, पोतना, बचनमुद्धृत करना २ मिलाना, —वि सानना, लोपना, जड़ना, पोतना—मनश्चिन्ताविच्छुरिता निबन्ध कु० १।५५, वीर० ११, विक्रम० ४।४५ ।

कुरचम् [कुर + च्चट्] सानना, लोपना—उद्योत्तनाममच्छुरचचकला रात्रिकापात्रिकीयम्—काव्य० १० ।

कुरा [कुर + क + टाप्] घुना ।

कुरिका [कुर + क्वन् + टाप्, इत्यम्] बाकू, घुरी ।

कुरित (पुं० क० क०) [कुर + क्त] १. कश्चित्, जडित २. ऊपर फैलाया हुआ, पोता हुआ, बाष्पकहित किया हुआ—अनेकानुष्कारितामरस—मि० ३।४, ७ इन्दु किरणच्छातिमन्त्रौ काव्य० १० ३ समाधिप्रित, मन्त्रप्रित—परमारेण कुरितामलच्छरी—सि० १।२२ ।

घुरी, घुरिका, घुरी [घुर + झीप्, घुरी + कन् + टाप् इत्यम्, घुरी पुं० दीर्घः] बाकू, घुरी ।

घुरि (स्त्री० पर०, घुरा० उ०) छुरति, छुरयति ते) जलाना ii (घुरा० उ०) छुरति, घुरन् १. घेलना २ चमकना ३ घमन करना ।

छेक (वि०) [छे + हेकन् बा० तारा०] १ पालतू, चरन् (जैसे कि हिरण्यन्तु) २ नागरिक, शहरी ३ ब्राह्मण, नागर । सम०—अनुशासः अनुशास क पथं यदा ये ये

एक, एक बार वर्णवृत्ति जो कि व्यवधान समूहों में अनेक प्रकार से तथा एक ही बार बटने वाली समानता है—उदा०—आदाय बहुलमन्त्रनन्वीकुर्वन्त्ये परे प्रमराण, अथयेति मन्त्रमन्त्र कावेरीवात्स्यायनः पवनः—सा० व० १३४, —अथह्युतिः (स्त्री०) अथह्युति कर्त्तृकार का एक श्रेष्ठ चन्द्रालोक तोताहरण निरूपण करता है—छेकाह्युतिरन्त्यस्य छेकातस्तस्य निरूपणे, प्रक्रम्यन्त्यये मन्त्रं काम्, कि न हि नूपुरः—५।२७, —उक्ति. (स्त्री०) बकोक्ति, व्याख्यात्मक बकोक्ति, उपचर्चक मुहाविरा ।

छेब [छिद् + चञ्] १ काटना, गिराना, तोड़ डालना, लच्छ-लच्छ करना—अभिज्ञापछेदपाताना किन्ते मन्दन-हुना—कु० २।४१, छेदी दमस्त वाहो वा—भाकवि० ४।४, रघु० १४।१, मनु० ८।२७०, ३७०, पाञ्च० २।२२३ २४०, २ निराकरण करना, हटाना, छिन्न-मिन्न करना, तोफ करना, जैसा कि 'समयच्छेद' में ३ नाश, बाधा निहान्छेदार्थिताम्ना मुद्रा० ३।२१ ४ विराम, अवसान, समाप्ति, लोप होना जैसा कि 'धर्मच्छेद' में ५ टुकड़ा, भाग, कटीली, लच्छ, अनुशास—वित्तिकसल्यच्छेदपात्रेवन्त—मेघ० ११, ५९, अभिनवकरिवन्तच्छेदपात्र कपोल—मा० १।२२, कु० १।४ या० ३।३, रघु० १२।१००, ६ (वर्षित में) भाजक, हर (मिन्नराशि का) ।

छेबन् [छिद् + म्यट्] १ काटना, काड़ना, काट डालना, टुकड़े २ करना, लच्छ-लच्छ विभक्त करना—मनु० ८।२८०, २९२, ३२२ २ अनुशास, भण्ड, टुकड़ा, भाग ३ नाश, हटाना ।

छेबि [छिद् + इन्] बड़ई ।

छेमच्छ [छिम् + चञ्चन्, एचम्] मात्पितृहीन, जनाब ।

छेलकः [छे + हेल्क] बकरा ।

छेविकः [छेद + ठक्] बेत ।

छो (दिवा० पर०—छपति, छान या छिन्न—घेर० छापयति) काटना, काट का टुकड़े टुकड़े करना, कटाई करना, लजनी करना, बट्टा—१।१०१, १५।४० ।

छोटिका [छुट् + च्चुन् + टाप्, इत्यम्] चुटकी ।

छोरचम् [छुर + च्चट्] त्याग करना, छोड़ देना ।

ज

ज (वि०) [जि-जन्-ज् + ह] (प्रमास के अन्त में) ये वा में उत्पन्न, पैदा हुआ, बसाज, जवनीय, उद्भूत, बाहि—अविनेत्रज, कुलज, जलज, जनिज, जन्मज,

उज्ज्वल बाहि, —कः १. पिता २. उत्पत्ति, जन्म ३. विच ४. मृतना, घेर या पिशाच ५. विजेता ६. कान्ति, प्रभा ७. विष्णु ।

कञ्जः (पुं०) १. मलय पर्वत २. कुता ।

कञ्ज (महा० पर०)—अतिथि, अतिथि या अन्ध) जाना, या लेना, मध्य करना, उपभोग करना—अट्टि० ४।३९, १३।२८, १५।४६, १८।१९ ।

कञ्जकम्, कञ्जिः [कञ् + कृत्, इत् वा] खाना, उपभोग करना ।

कञ्ज (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [कञ् + कृत्, नि०] हित्वा पुनायामः] हिलने-डुलने वाला, बङ्गल सूर्य जाता था अथवा तत्सम्बन्धित—अट्टि० १।११५। १, इत् विशेष अवलम्ब-मन्त्रणादि बङ्गुवेत्—महा०, (पुं०), काय, हवा (नपुं०) सत्तार—अवतः पितरो बन्ने पावतोपरमेस्वरो—रघु० १।१ । सम०—अस्वा, -अस्मिका दुर्गा, -अस्मन् (पुं०) परमात्मा, -आविः शिव का विशेषण, -आवार १ समय २. काय, हवा, -आयुः—आयुस् (पुं०) हवा, -ईक्ष, -शोः शिव का स्वामी, परमदेव, -उद्धारः सत्तार की मुक्ति, -कर्तृ, कञ्ज (पुं०) सृष्टि का बनाने वाला, -कञ्जस् (पुं०) सूर्य, -मायः विश्व का स्वामी, -मिलतः १ परमात्मा २ विष्णु का विशेषण—अनविधातो बहुवैक्यनि—वि० १।१ ३ सांसारिक अस्तित्व, -आयः, अतः हवा शक्तिः १ परम-पुत्र २ विष्णु का विशेषण ३ शिव की उपाधि ४. ब्रह्मा का विशेषण (नि-स्त्री०) पृथ्वी, -ब्रह्मा पृथ्वी, -साक्षिन् (पुं०) १. परमात्मा २ सूर्य ।

कञ्जली [कञ् + कृत् नि० नाच] पृथ्वी, (समीहते) नयेन-येन कञ्जली सुवीचन—कि० १।७, समीक्ष्य भानि कञ्जली जपती—५।२० २ लोग मनुष्य ३ नाच ४. कन्यो मेघ (वे० परिशिष्ट) । सम०—अवीचरः, ईचरः गङ्गा—१० २।१, कृत्, (पुं०) वृक्ष ।

कञ्जः (कृ०)—१. कञ्ज २. वीह ३. जन्तु ।

कञ्जः [आसनि मूढेजेन—आन् + अञ् पु० तारा०] कबज ।

कञ्ज (वि०) [कञ् + इ अ जान मन् गलति कञ् + अञ्] कदमाश, कालक, धूर्त, कञ् १ गंधर २. कबज ३ एक प्रकार की मरिचा (पुं०) (अनिम हो क्यों मैं भी) ।

कञ्ज (वि०) [कञ् + कञ् अयादेश] बाया हुआ ।

कञ्जिः (स्त्री०) [कञ् + कृत् अयादेश] १ खाना २. भोजन ।

कञ्जिः [कञ् + कृत्, हित्वा] हवा ।

कञ्जन् [कञ् + कृत्, हित्वा] १ पुट्टा, कुन्हा, वृत्त, पटव करने काञ्चीमञ्च सत्रा कञ्जिभरम्—गीत० १२२ निशर्वा का पेड़ ३ सेना का पिछला भाग, सेना का सुरक्षित भाग । सम० कृष्णी (वि० व०) किली मुम्बरी के कृष्ण के ऊपर के बरदे, कन्या अग्नि-वाग्नि स्त्री, कामुक—अनुविदेवधने परमपुत्र लचनचक्रावाः—अट्टि० १।१७३ ।

कञ्ज (वि०) [कञ् + कृत्] १. कबजे पिछला, अन्तिम—अट्टि० १४।१८ मनु० ८।२७० २. कबजे दूरा अत्यन्त दूर, कमीना, अन्ध, निव ३ नीच कुल में उत्पन्न, -अः कृत् । सम०—अः १ छोटा बार्द २. कृत् ।

कञ्जिः [कञ् + कृत्, हित्वा] (आत्म्यकारी) बरत, हषियार ।

कञ्जु (वि०) [कञ् + कृत्, हित्वा] प्रहार करने वाला, बध करने वाला ।

कञ्जन् (वि०) [कञ् + यङ् + अञ्, वातोहित्वा बडो लृक् व] हिलने-डुलने वाला जीवित, चर—विदाम्भिरिब बङ्गल—रघु० १५।१६, शोकाग्निरिब बङ्गल—महावी० ५।२०, मनु० १।६९, अञ् चर या हिलने-डुलने वाला पदाब्ज रघु० २।६४ । सम०—इतर (वि०) अचर, स्वाचर, कुटी छाता, छतरी ।

कञ्जन् [कञ् + यङ् + अञ् पु०] १. मस्सल, मुल्लान बगह, ऊसर मृमि २. मुरमृत् वन ३. एकाल निर्जन स्थान ।

कञ्जालः [कञ्जल, पु० सायु] वेद, बाँव, बीमा निम्न ।

कञ्जुलम् [कञ् + यङ् + कृत्, वातोहित्वा बडो लृक् व] विष, बहर ।

कञ्जु [कञ्जन्ते कुटिल मच्छति—कञ् + यङ् + अञ्, यडो लृक् पु०] जाध, टखने से नेकड़ घुटने तक का भाग, पिच्छली । सम०—आरः, -कर्तृकः बावक, हरकावा, हुन, मन्देडहर, आचम् टाको के लिए कबज ।

कञ्जाल (वि०) [कञ्जाल + अञ्] शीघ्रबाधक, प्रज्वी, -स १ हरकाग २. हरिण, बाराहसिवा ।

कञ्जिन् (वि०) [कञ्जु, इत्] प्रभावक, प्रज्वी, कुर्लीला ।

कञ्ज, कञ्ज (महा० पर०) जजनि, बज्जति) लडना युद्ध करना ।

कञ्ज (महा० पर०) जजति) बूझ जाना, (बालों का) बल आकर बटावट होना ।

कटा [कट् + अञ् + टाप्] १. बटे हुए बाल, आपस में बल आकर बिपके हुए बाल अवस्थानि सङ्कुलीड-निचित बिभ्रज्जटामञ्जलम्—शं० ७।११, बटाव बिम्बाश्रित्यम् मनु० ६।६, मा० १।२ २. तन्तुमय जड़ ३. सामान्य जड़ ४. शाखा ५. सतावरी का पोषा । सम०—बीर, -टङ्क, -टीर, -बज्ज शिव के विशेषण, कृत्ः १ जटाओं के रूप में बटे हुए बालों का समूह २. शिव की जटाएँ जटावृत्त-यो वरनि विनिबडा पुराणिदा—महा० १४, -अवातः दीप, लैप, -बर (वि०) जटावाला ।

कटावः [कट् कट्टामायः बस्य व० स०] स्वेनी और बज्ज,

2. व्यक्ति, पुरुष (बाहे मनुष्य हो या स्त्री) - क्व वय क्व परोक्षमन्थो मनुष्यो समवेक्षितो जन श० २।१८, तत्सव किमपि इदं यो हि वस्य प्रियो जन - उत्तर० २।१९, इसी प्रकार 'समीजन' लहेनी, 'वासजन' लेवक, 'अवनाजन' बाधि (इस अर्थ में 'जन' या 'अवजन' का प्रयोग बहुधा वक्ता के द्वारा स्त्री या पुरुष दोनों के लिए एकवचन या बहुवचन में किया जाता है और उसमें पुरुष भी प्रथम पुरुष के रूप में प्रयुक्त होता है) अथ जन प्रष्टुमनास्तपायने कु० ५।४० (मनुष्य), भगवत्परदानय जन प्रति-

कृताचरित समम्भ मे रघु० ८।८१ (स्त्री), पशुमानः शरातुर इतिमि वातापि नो रक्षमि - नगा० १।१ (स्त्री, व० व०) 2 सामूहिक रूप में मनुष्य, लोग

सत्तार (ए० व० या व० व० में) - एव जना गृह्णाति - मन्त्र० १, सतीमपि शान्तिकुलैकसयया जनाग्रयया मनुष्यो विभक्तुते - श० १।१७ 3 वस राष्ट्र कवीला 4 बहु लोक से परे का सत्तार, देवत्व का

प्राप्त मनुष्यों का स्वर्ग। सम० अस्मिन् (वि०) अमाचारण, अमागम्य, अतिमानव, -अक्षिप, -अक्षिमाव राजा, अक्षः 1 वह स्थान जहाँ मनुष्य नहीं रहने

बहु स्थान जो बसा हुआ नहीं है 2 प्रदेश 3 यम का विशेषण, -अस्मिन् मृत सदाव, कान मे कहना या एक ओर होकर कहना (अव्य०) एक ओर का (नाटकी०) सा० ६० रम्यक के निदेश की परि-

भाषा इस प्रकार बतलाता है - विपत्ताकारकाव्यान्ना- नपदायोनिरुक्ताय, अयोध्यामन्त्रण यत् स्वाज्ज्वालने तज्ज्वातिताम्, ४२५, अर्धनः विष्णु या कृष्ण का विशेषण, -अस्मिन् अर्धिया, अस्मीर्ष (वि०) माता

से ठसाठस भरा हुआ, जनसकुल, आचार लोकआचार लोकरीति, -आव्य वसंथाळा, मराय, वसिकायम, -आव्यः मध्य, सामियाणा, -इवः, -ईवः, -ईवः

राजा, -इष्ट (वि०) लोकप्रिय (ष्ट) एक प्रकार की बनेली, -अवहृदयन् यस, कीर्ति, -ओष, जनसमर्द भीष्ट, जमघट, -कारिन् (पु०) अलम्कार, चतुन् (पु०) 'लोकलोचन' सूर्य, -चा छाता, छतरी, देव

राजा, वः 1 जनसमुदाय, वस राष्ट्र पात्र० १।३९, 2 रावधानी, साम्राज्य, वसा हुआ देश -अनपदे न गव पदमावधो रघु० १।४, वाशिष्ठाये

अनपदे -पृ० १, मेघ० ४८ 3 देस (वि०) पुर मगर) अनपदवधूलोचने पीषमान मेघ० १९ 4 जनसाधारण, प्रजा (वि०) प्रभु 5 मनुष्यजाति

- वक्षि (पु०) किसी जनसमुदाय या देश का राजा -अव्यः 1 अकाम्य, किंवदन्ती, अनभूति 2 लोका- पवाद, बदनामी, -विष (वि०) 1 साक हितेच्छ

2 सर्वप्रिय, -अव्या सर्वसम्पत्त वया, -रक्षकन् कोटी

को मुख देना, लोकप्रियता का प्रसाद प्राप्त करना,

-अः 1 किंवदन्ती 2 बदनामी, लोकापवाद, लोक- अग्र के मात लोकों में से पाँचवाँ, बहुलोक के ऊपर स्थित लोक, -वाक् ('जनेवाद्' भी) 1 वमाचार,

जनभूति 2 लोकापवाद, -अवहृदय लोकाप्रिय बलन, -भुत (वि०) विख्यात, प्रसिद्ध, -चक्षुः (स्त्री०) किंवदन्ती, जनरव, संवाच वि० बना वसा हुआ,

स्वाम्य दण्डक वन के एक भाग का नाम - रघु० १।४२, १।४२२, उत्तर० १।२८, २।१७।

जनक (वि०) (स्त्री०) निष्ठा [जन् + जित् + क्त] जन्म देने वाला, पैदा करने वाला, कारण बनने वाला या उत्पन्न करने वाला, जनकजनक दुःखजनक बादि,

क. 1 पिता, जन्म देने वाला 2 विदेह या मिथिला के प्रसिद्ध राजा सीता का चर्मपिता। वह अपने प्रभु ज्ञान अच्छे कार्य और पवित्रता के कारण प्रसिद्ध था। राम के द्वारा सीता का परिचय किये जाने पर उन्होंने देगय के लिया, मुक्त और दुःख के प्रति उदासीन हो गये और आने समय दार्शनिक चर्चा में बिनाया। पाण्डवचन भूति जनक के पुरोहित और परामर्श दाता थे। सम० - आत्मज्ञा, तन्वा,

मन्थिनी, भुता जनक की पुत्री सीता के विशेषण। जनक्य [जनेमा मच्छति बहि जन + मज् + क्त्, भूमागम] बाधाल।

अन्ता [जनता समूह नल्] 1 जन्म 2 मातों का समूह मनुष्य वर्ग, समुदाय - पश्यति स्म जनता दिनाम्यसे पार्श्वी मणि दिवाकराविह रघु० १।१८२ २५।६३ शि० १।१६।

जनन (वि०) [जन + न्] पैदा करने वाला, उत्पन्न करने वाला अन्त मन् 1 जन्म, पैदा होना, - यावज्जननम् यावन्मरणम् माह० १३ 2 पैदा करना, उत्पादन करना मृत्रन करना आभाजननात् - कु० १।६२ 3 साक्षात्कार प्रत्यक्षीकरण उदय 4 जीवन,

अस्तित्व यदैव पूर्वं जनने छरीर मा हसरोषामक्षुपती समर्ब - कु० १।५३ श० २।२ नाथ कुल वसपरराग। जननि (स्त्री०) [जन + नि] 1 माता 2 जन्म।

जननी [जन् + जित् + नि + क्त] 1 माता 2 दया, दयालुता कल्या 3 जमादार 4 लाभ।

जननेजन् [जनात् एतयति हीन जन + जन् + जित् + स्वस भूमागम] होशमनपूर का एक प्रसिद्ध राजा एतयति का पुत्र और अर्जुन का पिता (जनमेजय का पिता सीत के काटे जाने से मर इसलिए जनमेजय ने उस क्षत्रि का प्रतिशोध करने के लिए अमार से संपर्जाति का समूह बिनाश करने के लिए दुःख सन्ध्य किया। तबद्वारा एक संपर्ग का जारी किया गया जिसमें लक्षक की छोड़ कर और सब संपर्ग जला दिये गये।

वास्तव्य भूमि के बीच में पड़ने से उसका के प्राय कचे और सर्वप्रथम जन्म कर दिया गया। इस वजह के कारण ही वैशम्पायन ने राजा को महाभारत की कथा सुनाई, राजा ने भी बड़ा हल्का के पाप का प्रायश्चित्त करने के लिए उस कथा को ध्यानपूर्वक सुना।

जन्मिन् (वि०) (स्त्री-बी) [जन् + जिप् + वृत्] पैदा करने वाला, जन्म देने वाला, सृष्टिकर्ता—(पु०) पिता।

जन्मिणी [जन्मिन् + ङीप्] माता।

जन्म (नपु०) [जन् + जिप् + क्तुन्] दे० जन ३।

जन्मि, जन्मिका, जन्मी (स्त्री०) [जन् + इन्, जनि + कन् + टाप्, जनि + ङीप्] 1 जन्म, सृजन, उत्पादन 2 स्त्री 3 माता 4 पत्नी 5 स्त्रुवा, पुत्रवधू।

जन्मि (वि०) [जन् + जिप् + क्त] 1 जिसे जन्म दिया गया है 2 पैदा किया हुआ, सृजन किया हुआ, उत्पन्न किया हुआ।

जन्मिन् (पु०) [जन् + जिप् + वृत्] पिता।

जन्मिनी [जन्मिन् + ङीप्] माता।

जन्म (पु०) (स्त्री०) [जन् + उ, जन् + ऊङ्] जन्म, उत्पत्ति।

जन्म (नपु०) [जन् + उत्ति] 1. जन्म धिमांरणीनां जन्म—मात्रि० १११६ 2 सृष्टि, उत्पादन 3 जीवन, अस्तित्व—जन्म सर्वस्वाय्य जयति कलितोत्तम भवन—मात्रि० २१५५। सम०—जन्मजन्म जन्म सं जन्मा जन्मान्ध।

जन्म [जन् + पुन्] 1 जानवर, जीवित प्राणी, मनुष्य—सं० ५१२, मनु० ३१७१ 2 आत्मा, व्यक्ति 3 निज जाति का जानवर। सम०—जन्म 1 पापे की क्षीपी 2 बोध, कलः मूलर का दूध।

जन्मका [जन्म + क + क + टाप्] लाभ।

जन्ममयी [जन्म + मत् + ङीप्] पृथ्वी।

जन्मन् [जन् + मन्] उत्पत्ति।

जन्मन् [जन् + मन्तिन्] 1 जन्म—ना जन्मने सत्यम् प्रपदे—कु० ११२१ 2 मूल, उत्सव उत्पत्ति, मृष्टि—आकर पयराणां जन्म काचमणे कुन हि० प्र० ४४, कु० ५१६० (समय के जन्म में) से उत्पन्न या उदय—सरलम्कचसदृज-मा दवाग्नि—मेघ० ५३ 3 जीवन, अस्तित्व—पूर्ववर्ष हि जन्मम्—मनु० १११००, ५१३८, मग० ४५५ 4 जन्म-स्थान 5 उत्पत्ति। सम०—अधिपः 1 निज का विशेषण 2 (अधिति में) जन्म लम्ब का स्वायी,—अस्तरम् दूतग जन्म,—अस्तरय (वि०) दूसरे जन्म से सम्बद्ध या किसी दूसरे जन्म में किया हुआ,—जन्म (वि०) जन्म से ही जन्मा,—जन्मजी आदयः कुलपक्ष की मष्टयी, कीकुम्भ का जन्म दिन,—कीकः विष्णु का विशेषण,—कुलकी कर्म-शिका में बनाया गया चक्र जिसमें जन्म के समय की वृद्धों की स्थिति दर्शायी गई हो,

—जन् (पु०) पिता,—जन्मन् जन्म स्थान,—तिविः

(पु०, स्त्री०)—जन्मन्, जन्मिका, जन्मिन्,—क (वि०)

पिता,—जन्मन्,—जन्म जन्म के समय का मूल, —मात्रम् (नपु०) जन्म से बारहवें दिन रचना गया

नाम,—जन्मन्,—शिका बहु पत्र या पत्रिका जिसमें

जन्म देने वाले बालक के जन्म काल के मूल्य या वृद्धि

बापि बतलाये गये हो,—प्रसिद्धा 1 जन्म स्थान

2 माता—सं० १,—जन्म (पु०) जानवर, जीवित प्राणी

—मोक्षना जन्मजात सतत—मृच्छ० १०१६०,

जन्मा मातृमाया—यत्र स्त्रीमायापि किमपर जन्म-

मायावदेव प्रत्यावाप्त विमलति वक्ष्य सत्कृत प्रकृत

व विक्रम० १८१६,—मृष्टिः (स्त्री०) जन्म स्थान,

स्वदेस, जीवः जन्मपत्र,—टीमिन् (वि०) जन्म का

रोबी, जिसे जन्मसे ही रोम लगा हो,—जन्मन् बहु लज्ज

जो जन्म के समय हो,—जन्मन् (नपु०) योनि,—जो जन्म

जन्म से प्राप्त कर्तव्यों का परिपालन,—साधकम् जीवन

के उद्देश्यों की सिद्धि,—स्थानम् 1 जन्मभूमि, स्वदेस,

बहु बार वही जन्म लिया है 2 मर्नास्थ।

जन्मिन् (पु०) [जन्मन् + इति] जानवर, जीवधारी प्राणी।

जन्म (वि०) [जन् + भ्यात्, जन् + जिप् + यत् वा]

1 जन्म देने वाला, पैदा होने वाला 2 जात, उत्पन्न,

3 (समास के जन्म में) से उत्पन्न, जनित 4 किसी वक्ष

या कुल से संबंध 5 मन्त्र, सामान्य 6 राष्ट्रीय, न्य

1 पिता 2 मित्र, दूस्ते का सम्बन्धी या सेवक

3 साधारण जन 4 जनमुक्ति, किबदली,—जन्म 1 जन्म,

उत्पत्ति, सृष्टि 2 जात, सृष्ट, उत्पादित बन्तु, (विप०

जनक)—जन्माना जनक काल—भाषा० ४५, जनकस्य

स्वभाषो हि जन्मे तिष्ठति निश्चितम्—अष्ट०,

3 क्षीर 4 जन्म के समय होने वाला अपचकुन

5 बाजार, मन्दी, मेला 6 सन्नाह, पृष्ठ—तत्र जन्म रथो-

धोर पार्वतीयैर्गवैरभूत्—रघु० ४१७३ 7 निन्दा,

अपराध—आ 1 माता की सहृदी 2 बच्चा का सम्बन्धी

बच्चा की सेविका—याहीति जन्मानवदकुमारी रघु०

६१३० 3 मुक्त, जानवर 4 स्नेह।

जन्म [जन् + पुं वा० न जनार्देश] 1 जन्म 2 जानवर

जीवधारी, प्राणी 3 जात 4 सृष्टिकर्ता, सृष्टा।

जन् (स्वा० पर०)—जपति, जपित या जपत 1 मन्त्र रचन में

उच्चारण करना, मन ही मन में बार २ कहना, गुन-

गुनाना—जपप्रति तर्कालापमन्त्राक्षिप्त् गीत० ५,

हरिहरति हरिहरति जपति सकामम्—४, नै० १११२६

2 मन्त्रों का गुनगुनाना, मन ही मन प्रार्थना करना

—मनु० १११२४, २५१, २५९, उक्०, कान में कहना

कानापुष्टी करके अपने मनुमूक कह लेना, पित्रोह के

लिए मूककाना या उकसाना—उपजन्मानुपजपेत्—मनु०

७११७७।

अक्षः [अप् + अक्ष] 1. मन ही मन प्रार्थना करना, बीजे स्वर से किसी मन्त्र को बार २ दुहराना 2. वेदपाठ करना, वेदताजी के नाम बार २ दुहराना—मन्त्र ३।७४, याज्ञ० १।२२ 3. मन्त्र स्वर से उच्चरित प्रार्थना। सम० - बरायणः (वि०) प्रार्थना मन्त्रों को बीजे स्वर से उच्चारण करने में श्यस्त, बाला अप करने की माना।

अज्यः, **अज्य** [अप् + यत्] 1. मन्द स्वर से या मन ही मन में बोली जाने वाली प्रार्थना 2. जगने योग्य प्रार्थना 3. अपी हुई प्रार्थना।

अज्य, **अज्य** [म्भा० पर० - जयति, अजयति] समोप कराना नु० यम् ॥ (म्भा० जा० जयते जयते) अज्याई लेना, बारी लेना।

अज्य [म्भा० पर० जयति] माना।

अजयति (पु०) मनुष्य से उत्पन्न एवं बाह्य पशुगण का पिता, (अमर्त्यत्वं मनुष्यवत्तां और च लोक का पुत्र वा, बहु बड़ा ही पुण्यात्मा अजि वा, कहते हैं कि उसने वेदों का पूर्ण स्वाध्याय किया था, उसकी पत्नी रेणुवर की जिससे पौत्र पुत्र हुए। एक दिन रेणुका म्लान करने के लिए नदी पर गई तो वहाँ उसने किसी गधवं दम्पती (कुछ के मतानुसार वह विजय व और उसकी पत्नी में) को जल में डीठा करते देखा। उस मनोहर दृश्य को देखकर उसके मन में ईर्ष्या जागी और वह उन दूषित विचारों से कलुषित हो गई, नदी में स्नान करने पर भी वह पवित्र न हो सकी जब वह वापिस घर आई तो क्रोध के अवतार अजयति ने उस क्षतीव्य की कान्ति से हीन देखकर बड़ा क्रमकाया और अपने पुत्रों को उसका सिर काट देने की आज्ञा दी। परन्तु पहले चारों पुत्रों ने ऐसा क्रूर दुष्कृत्य करने में मानाकामी की। परन्तु राम उनका सबसे छोटा पुत्र था। उसने मुरत पिता की आज्ञा का पालन किया फलत एक दुष्टाई से अपनी माता का सिर काट डाला। इससे अजयति का क्रोध सात हो गया और उसने परशुराम से बरदास मांगने के लिए कहा। बाला परशुराम ने अपनी माता को पुनर्जीवित करने की मांग की जो मुरत ही स्वीकार की गई।

अजयत् वेमनम्।

अज्यती (पु० हि० व०) [जाया च पतिवत्] पति और पत्नी—पु० अज्यती और जायापती।

अज्यातः [अज्य + अज्य नि० मन्त्र व० अज्य + आ + ला + क] 1. बारा कीचड़ 2. काई, सेवार 3. केचड़े का पोषा।

अज्यामिनी [अज्यात + इनि + डीप्] एक नदी।

अज्यीरा [अज्य + ईरन्, व आदेश] चकोतरे का (नीच की वाधि का) पेड़,—रन् चकोतरा।

अज्य,—वृ (स्त्री०) [अप् + कु पुषो० अजयन, अज्य + अज्य] आमन का पेड़, आमन (सम० - अज्यः, - डीचः मेव पहाड़ के चारों ओर फैले हुए सात हीनों में से एक। **अज्य** (पु०) कः (स्त्री०) [अज्य (वृ) + क + क] 1. नीच 2. नीच मनुष्य।

अज्युलः [अज्य (वृ) तन्नाम कल लाति ला + क] एक प्रकार का वृक्ष, केचड़ा,—रन् इत्ये के मित्रों एवं दुष्टों की मर्त्यियों द्वारा किया गया परिहास या परिहासार्थक अभिनन्दन।

अज्य [अज्य + कः] 1. जवाड़ा (प्राय व० व०) 2. दात 3. लाना 4. कुतर-कुतर कर टुकड़े करना 5. क्षय, अक्ष 6. टुकड़ 7. टीवी 8. अज्याई, उषामी 9. एक रासस का नाम जिसे इन्द्र ने मार गिराया था 10. चकोतरे का पेड़। मम०—अजयति, - डीच, - जेयिन्-रिपुः इन्द्र का वधेषण, अरिः 1. जान 2. इन्द्र का वज्र 3. इन्द्र।

अज्यका, **अज्या**, **अज्यिका** [अज्य + कन् + टाप्, अज्य + जिच् + अ - टाप्, अज्या + कन् + टाप्, इत्यम्] अज्युहारी, उषामी।

अज्य (बी) र [अज्य मक्षनर्हि रति ददाति अज्य + रा + क, अज्य + ईरन्] नीच या चकोतरे का पेड़।

अज्य [जि० अज्य] 1. जीन, विजयोन्मय विजय, सफलता, जीतना (पुष्ट में लेन में या मुकदमे में) 2. मयम दमन जीतना—जैसा कि इन्द्रियजय में 3. सुयं का नाम 4. इन्द्र का पुत्र अजन्त 5. पाण्डव राजकुमार युधिष्ठिर 6. निम्न का सेवक 7. अर्जुन का विश्वेश्वर, —आ 1. दुर्गा २. दुर्गा का सेवक 3. एक प्रकार का मन्त्र। सम०—अज्यहृ (वि०) विजय विलास बाला, —अज्य (वि०) विजयोन्मास बनाने वाला, —अज्यहृकः 1. अज्येश्वर 2. पाशों से बंधना, —अज्यः, —अज्येश्वर, —आ विजय का डिहोरा, —अज्यका जीत का डका, एक प्रकार का डोक जिसे विजय की लूचता देने के लिए बजाया जाता है—अज्य विजय का समिन्ध, —अज्यः 1. राजा 2. ब्रह्मा का विशेषण 3. विष्णु का विशेषण, —अज्यः एक प्रकार का पाश, —अज्यकः 1. राजकीय हाथी 2. अरतात्मक उपचार, —अज्यिनी नदी (इन्द्राणी) का विशेषण, —अज्यः 1. अजयति 2. चारों ओर उच्चरित अजयकार, —अज्यः विजय बनाने के लिए बनाया गया स्तम्भ, विजयलूचक स्तम्भ—निषजान अवस्तमान् नज्जामोतोऽन्तरेषु न —रपु० ४।१६, १९, अज्यहृकः [अज्य रावो मय - व० म०] विष्णु प्रदेस का राजा, इन्द्रावन का बहुगोई, (क्योंकि वृत्राष्ट की पुत्री वृत्राक्षला अजय को व्याही थी) एक बार अजय विकार के लिए गया—वहाँ अज्य में उसे रोपड़ी दिखाई दी। उसने रोपड़ी से अपने लिए और अपने

साधियों के लिए भोजन माँगा। अपनी बाजू की बाली से द्वीपदी ने उनको पर्याप्त मात्रा में प्रातराश परोस दिया। उसने इस कार्य से तथा उसके लोन्धयं से वह इतना अधिक मृग्य हुआ कि उसने द्वीपदी को अपने साथ भाग चलने के लिए कहा। उसने क्रोध के साथ उसकी बात को अस्वीकार कर दिया परन्तु वह उसे बलपूर्वक उठा कर ले जाने में सफल हो गया—क्योंकि द्वीपदी के पति उस समय बाहर निकास के लिए गये हुए थे। जब वह वापस आये तो उन्होंने उस अपहृता का पीछा किया, उसे पकड़ कर द्वीपदी को मुक्त कराया—नया बहुत निरस्कृत हो जाने पर उसे भी छोड़ दिया। उसने बलिमय्य को मारने के उपाय ढूँढ़ने में बड़ा भाग लिया। अन्त में वह जर्जुन के द्वारा महाभारत की लड़ाई में मारा गया।

अथर्व—[जि + स्पृष्ट] 1. जीतना, दमन करना 2. हाथी और घोड़ों आदि का कवच। सम०—पुञ् (वि०) 1. जौनपोष से सुसज्जित 2. विजयी।

अवन्तः [जि + अञ्, अन्तर्देशः] 1. इन्द्र के पुत्र का नाम, —पीलोमीसम्प्रदेश अवन्तेन पुत्रेण—विष्णु० ५।१४, अ० ७।२, रघु० ३।२३ ६।८ 2. शिव का नाम 3. चन्द्रमा, —तो 1 क्षण्डा या पताका 2 इन्द्र की पुत्री 3. दुर्गा। सम०—पञ्च (विधि में) न्यायाधीश द्वारा दो नई लिखित व्यवस्था (दोनों दलों में से किसी एक के पक्ष में) 2. अवबोध यह के लिए छोड़े हुए घोड़े के मस्तक पर लगा नामगुट्ट।

अविन् (वि०) [जेतु शीलमस्व—जि + धनि] 1. विजेता, पराजिता—विष्णुसहस्रनामविनिर्दिष्टाः स्तुते वासुदेवात्ता—विद्वत्ता 2. लक्षण (युक्तवत्) जीतने वाला—आज्ञ० २।७९ 3. मनोहर, आकर्षक हृदय को दमन करने वाला—अगति अविनस्ते ते भवा नवेन्युकलादयः—मा० १।३६, (पु०) विजेता, जयधीर—वीरस्याः नैवमात्मनस्तास्ताम्भजनपदाञ्जयी—रघु० ४।३४।

अव्य (वि०) [जि + यत्] जीतने के योग्य, प्रशंस्य, जो जीता जा सके (वि० वेद)।

अवृक्ष (वि०) [ज + अञ्] 1. कठोर, ठोस 2. पुराना, अधिक आयु का—अयमतिजरात् प्रकामगुर्वीः परिणम-दिककटिकस्तटीविमर्ति—जि० ४।२९ (यहाँ 'जरा' का अर्थ 'कठोर' भी है) 3. क्षीण, जोर, निर्बल 4. पूर्णविकसित, पक्का, परिपक्व, जराठकवल—जि० १।१२४ 5. कठोर हृदय, क्रूर, —ठः पाण्डु, पाँचों पाण्डवों के पिता।

अरुण (वि०) [जू + स्पृष्ट] बड़ा, क्षीण, निर्बल।

अरत् (वि०) [जू + सत्] 1. बड़ा अधिक आयु का 2. निर्बल आर्तः। सम०—आरुः एक ऋषि जिसने बाण्डुकि माँ की बहुत से विवाह किया था [एक दिन वह अपनी

सिर अपनी पत्नी की गोद में रखे ली रहे थे, सूर्य ढूँढ़ने को था। पत्नी ने यह देख कर कि सध्याकालीन प्रार्थना का समय बीता जा रहा है, आहस्ता से जगा दिया। परन्तु नींद में बाधा पहुँचने के कारण जरतकाश को क्रोध आ गया और वह अपनी पत्नी को छोड़ कर सदा के लिए वहाँ से चला दिया। आते समय वह अपनी पत्नी को बता गया कि तुम गर्भवती हो और तुम्हारा पुत्र ही तुम्हें सम्भालने वाला होगा—साथ ही साथ वह सपने वश के अर्थ को बतावेगा। यह पुत्र ही 'आस्तीक' था]—नवः बृहन्नैल—दारिद्र्यस्य परा मूर्ति संमानप्रविणाभ्यता, जग्द्गबधनः सर्वस्तथापि परमेस्वर—पञ्च० २।१५९।

अरती [जू + सत्] डीप [एक दूरी गारी।

अरस्तः [जू + अस्, अन्तर्देशः] 1. बड़ा आदमी 2. भैंसा।

अरा [जू + अञ् + टाप्] ('जरा' शब्द के स्थान पर कर्म० द्वि० व० के अग्रे अञादि विभक्ति पड़े होने पर विकल्प से 'जर्म' आवेश हो जाता है) 1. बुढ़ापा—कैकेयोः शकुन्येवाह पलितच्छपता जरा रघु० १२।२, तम्य घर्मतेरागोदुः बुद्धव जराया (जराया) विना १।२३ 2. क्षीणता, निर्बलता, बुढ़ापे के लक्षण दुर्बलता 3. पावनशक्ति 4. एक राक्षसों का नाम—दे० 'जरासभ' नी०। सम०—अवस्था क्षीणता, —औषं (१३) यथोक्त, निर्बलीकृत, दुर्बल—अर्त्त० ३।१७, —सन्धः एक प्रसिद्ध राजा और योद्धा, बृहदय का पुत्र (एक वीरगणिक कथा के अनुसार यह अलग अलग दो टुकड़ों के रूप में पैदा हुआ, 'जरा' नामक राक्षसों ने इन दोनों टुकड़ों को जोड़ दिया—द्वीपिण्य यह 'जरासन्ध' के नाम से प्रख्यात हुआ। अपने पिता की मृत्यु के पश्चात् यह मगध और केरि देश का राजा बना। जब इसने सुना कि कृष्ण ने मेरे जमाता कस को मार डाला तो हमने बड़ी भारी सेना लेकर १८ बार मथुरा को घेरा—परन्तु हर बार मँहड़ी सन्धि पड़ी। जब पण्डितों ने राजसूय यज्ञ का अनुष्ठान किया तो अर्जुन, कृष्ण और भीम बाह्यण का क्रय धारण करके केवल अपने शत्रु को मार कर बन्दी राजाओं को कैद में छुड़ाने के लिए जरासन्ध को राजधानी में गये परन्तु जरासन्ध ने बन्दी राजाओं को छोड़ने में इकार दिया, नव भीम ने उसे इन्द्र मृष्ट के लिए लक्षकारा। जरासन्ध बाहर निकल कर आया—दोनों में घोर युद्ध हुआ—पर अर्जुन में जरासन्ध भीम के हाथों मारा गया।

अराधयिः [अराता अराधय—किञ्] जरासन्ध का नाम।

अराधू (नपु०) [अराधेति—इ + अण्] 1. सपि की कँचुकी 2. जूज की ऊपरी झिल्ली 3. पौषि, गर्वासाध।

सम० ख (वि०) गर्भाशय से उत्पन्न, पिण्डवत् - मनु० १।४३, कु० ३।४२ पर मल्लि० ।

चरित् (वि०) [जरा + इत् + वृ] १ बूझा, बयोवृद्ध २ क्षीण, निर्बल ।

चरित् (वि०) (स्त्री० - जो) [जरा + इत्] बूझा, बयोवृद्ध ।

चक्षुषम् [जृ + ऊञ् +] माँस ।

ज्वर (वि०) [ज्व + अर] १ बूझा, निर्बल, क्षीण २ जीर्ण, फटा पुराना, दृढ़ा फटा, तोड़कर टुकड़े - किया हुआ, मण्ड-मण्ड किया हुआ, छोटे-छोटे टुकड़ों में विभक्त जराज्वरिणीस्थानकोटया मृगा का० ११, मात्र जराज्वरिणी विज्ञाय मृदावी० ३११/ विमर्षन् घग्ना-मिल्लैठान् पानो ज्वरपण्ण उत्तर० ११००, मि० ४।५३ ३ चावल, शराबिष्ठान ४ साशरा, सोलला (जैम का गेरे घड़े की आवाज), -रस इष्ट का अष्टा० ।

ज्वरित (वि०) [ज्वर + णिच् + क्त] १ बूझा, क्षीण, निर्बल २ भिन्ना पिप्सा, क्षीण क्षीर, फटा-पुराना, बिपक्षे बिपक्षे हुआ ३ पूरी तरह जराभूत, अयाय्य मम-शरद्वर्गिणीणि सा प्रमाद गो० ८ ।

ज्वरीक (वि०) [ज्वर + ईक + वि०] साधु १ बूझा क्षीण २ योगे-योगे ज्वरी से भरा हुआ, मोहद्ध ।

ज्वृत् [जृ + वृ + णिच् + क्त] १, यौनि २ हाथी ।

जल (वि०) [जृ + अक्] स्पर्शहीन, ठण्डा भावित, जड़ ।

सब पानी - तात्पर्य त्रयोविधित्वं वशाया आर जल का पृथक् विद्यन्ति पञ्च० १।३२२ २ एक सुगन्धित पोषाण का पोषा, लस ३ छोटलवा ४ पुरावाट नखन । सम० अञ्चलम् १. सरना २. निहार ३. काई, -अञ्जलि १. कुल्लू मर पानी २. मृक के (रतर) को जल नपण कुपुत्रमानाए कुनो जलाञ्जलि पाण० ९१ भाग्यशाली जलाञ्जलि स्रग्भल लोके न दत्ता यय अभय ९७ गृही जला-ञ्जलि हा का ज्वरे है साह सा, पायना), -अद्वयः सारस, -अद्वी शक, -अव्यक्तः पडियाल, मगरमच्छ बल्ययः सरत्, पतञ्जल, -अविहृतः -सम् वरुण का विशेषण, (सम्) पुरीषाहा मध्य पुञ्ज, -अविष वरुण का विशेषण, -अविष्का कुम्भी, -अजः जल में पड़ने वाला दूध का प्रतिविम्ब अजम्बः १. तर्प चतु २. मोठे पानी का समूह -अविन् (वि०) प्यासा, -अवतारः नदी के किनारे राब रर उतरने या पाट, अष्टोत्सा वडा पीकीर हावा -अमुका जोक, -आकर सरना पीशरा, कुम्भी, -आकाञ्छ, -काञ्चन, -काञ्चिन् (पु०) हाथी, -आकः ऊर्ध्वरत्न, -आविका जोक, -आवारः तालाब, सील या सरावर, जलाशय, -आवुका जोक, -आई (वि०) पीना (ईम्) पीले रूपसे (ई) पानी से तर पट्टा, -आलोका शक, -आवतः भँवर, जल-

गुम्ब, -आसकः १ तालाब, मरोवर, जलाशय २ मछली

३ समुद्र, -आधयः १ तालाब, जलाशय, -आधु-

यम् कमल, -इम्ब १ वरुण का विशेषण २ समुद्र,

-इम्बनः वाहवाग्नि, -इम्बः जलहन्ती, ईम्, -ईम्बरः

१ वरुण का विशेषण २ समुद्र, उच्छ्रवातः नाली,

परीवार २ झलक कर बहना, -उदरम् जलोवर नाम

का रोग जिसमें पेट की लम्बा के नीचे पानी इकट्ठा हो

जाता है, -उज्ज्व (वि०) जलधर, -उरगा, -ओक्त्

(पु०) ओक्त्तः जोक, कम्पकः मगरमच्छ, -कपिः

सैम, कपोत, जलक, -करङ्कः १ एक साल

२ नाग्यल ३ बादल ४ तन्त्र, कपल, -कम्पः कोचड,

काक, जलकोआ, -कान्तः हवा, -कान्ताः वरुण का

विशेषण, किराटः मगरमच्छ, पडियाल, -कुक्कुटः

जलमृगं मुगोरी, -कुन्तलः -कोप्रः काई, मेवारज, -कूपी

१ अन्ना, कृपा २ ताजब, ३ भवर, -कूर्मः सूँप,

-केलः (पु०) कोडा (स्त्री०) जल में बिहार

करना एक दूसरे पर पानी उछालना, -किया मृत्को

का पितरा को जल तोष देना, -कृष्णः १. कल्ला

२ च. कोर तालाब ३ भवर, -चर (वि०) ('जलेवर'

भा) जल में गटने वाले जीव-जन्तु 'आलोचः' 'बोवः

मछला, -चारित् १ जलजन्तु २. मछली, -ज वि०

जल में उत्पन्न या पैदा, (जः) १ जलजन्तु २ मछली

३ काई ४ चन्द्रमा (जा. -जम) १ सोल २ सङ्ग

-अथगठे निषेध दम्भो जलज कुम्भार -गु० ७।६३,

११, ६०, (जम्) कमल 'आलोचः' मछला, 'आलमः'

बहुना का विशेषण -काञ्चरी वरुणेश प्राञ्जलिजल-

जामनम्-कु० २।३०, -जञ्चु १ मछली २ कोई जल

का जन्तु -आमुका जोक, कम्पन् कमल, -आधुः मगर-

मच्छ -आविन् (पु०) मछलाहा । -सरङ्ग १. लहर

२ एक बाग विशेष जिसमें जल से भरा हुआ

कटारा (छड़ी के आकार से) मय स्वर पैदा करता

है । -साञ्जम् (सा०) पानी पीटना (आल०)

ठण्डे काम -का छलना, -जलः जलातङ्ग रोग, पातल

कुने के कटने से ब्रह्मकायपत्र, -इः १ बादल -आम्ने

विरालाको के जलदा इव सञ्जना -पञ्च १।२९ २ कपूर,

'अशानः' साल का वृक्ष, 'आलमः' वर्षाचतु, 'कालः'

वयोवृद्ध जल पाट, सफ़ेद, हनुतः एक प्रकार का

वाद्य यन्त्र, देहता जन्मेको जलानी, -ओकी होम्बो,

चरः १ बाण २ समुद्र, चार पानी की चार,

-आः १ समुद्र २ मछली ३ चार की संख्या 'गा

नरी, 'आ' चरि 'आ' लक्ष्मी वन की देवी 'रसना

पूखी, -सकुलः ऊर्ध्वरत्न, -चरः जलपुत्र (इसके

मरीर का निजका बाधा भाग मछली के आकार का

तोता है), -निधिः १. समुद्र २. चार की संख्या, -निगमः

१ नाली, पानी का विकास २ जलप्रपात, सरने के

पानी का नदी में गिरना, शीलि: काई, सेवार,—पट-
कम् बादल,—पति 1 समुद्र 2 वरुण का विशेषण,

—वह: जलयात्रा - रघु० १७।८१, वाराणसी-जल-
कपोत, —विस्तृत आय पृष्ठम् पानी में होने वाला

कूल, कमल आदि, पूर: 1 जल की बाढ 2 पानी की नदी,--कुण्डबा कई सेवार, प्रबालम मुक्तक पितरो

को जल तर्पण, प्रसन्न-जल के द्वारा विनाश - प्रान्त
नदी का किनारा, प्रायः जनबहुलप्रदेश जलप्रायः

नूपं स्यात् अमरः—प्रियः १ पातक पत्नी २ मल्ली
—पत्य उरबिलास—प्यापनम् अलप्रलय, बाढ बध्

मछली, -बासक, बासक विध्य पहाड बासिका
दिवली -विहाल अदविलाव -विष्णु, विष्णुम बल

2 कसुबा 3 कंकड़ी - मू (वि०) जल में उत्पन्न - मू

(पु०) 1 बादल 2 पानी जमा करके गहने का स्थान 3 एक प्रकार का कपूर, —जबकि पानी में रहने

वासा एक कीड़ा,—मच्छुक्कम् एक प्रकार का वाद्य
मन्त्र, जल दर्दर,—जार्ज नाली जलप्रवाली, मृष

(पु०) बाबल—मेघः ६९ 2 एक प्रकार का वृक्ष,
—मूर्ति: शिव का विशेषण मूर्तिका ओला, सन्तान

1 पानी निकालने का बन्ध - रहट 2 फव्वारा 'बुहम्',
'विशेसनम्', 'मन्धिरम्' इत्येक के मध्य बना बवन (शोभ्य)

प्रबन्ध) का प्रकाशन जिसके नाम पर कुहारे हों—कवि
द्विचित्र अलङ्कारमन्त्ररम—श्रुत०-११२, - वाचा जल

यात्रा से नख जादि के द्वारा यात्रा, यात्रा पानी की सवारी—यात्रा एकत्र: जलककट एकत्र:—यात्रा

1. मगर 2. पानी की बूँद, बूढ़ाबाँदी, जलकण 3. साँप,
—रक्त: समुद्री या साधारण तमक —राक्ति: समुद्र, —छा,

—हनु कबल,—कब धनरपञ्च, कला महूर, भाग
—बाकल: कौबिल्ला पञ्जी—बाकल अल धे बसना.

—बाहु: बादल,—बाहूनी पानी की बांरी,—बिबुबत्
कारवीय बिबुबत् (३२ या ३३ सितम्बर)।—बाहिष्क

—**साहित्य** (५०) दिग्गज का विशेषण.—**सकल** कार्य

—सुखः सुखरूपः। सुखः सुखरूपः। सुखः सुखरूपः।
 —सुखः सुखरूपः। सुखः सुखरूपः। सुखः सुखरूपः।

2. एक प्रकार की मछली 3 कौवा 4 बौक,—स्वानम्,
—स्वानः, ताकाय, मारोयड, मर्यायड,—मरु छोटा

कलकत्ता (ब्रीष्म भवन) जो पानी के मध्य बना हो
या जिसमें कीलें लगे हों। —कलकत्ता (पृ०) ब्रह्म-

हावी, —हारिणी माली, —हस्तः १ ज्ञान २ समुद्रफेन
(कहीयेरी नामक जलधर का पीतरी कपडा) ।

कलकल [कल + कल् + कल्, भुवनात्] बाण्डाल ।

1. वाचक 2. एक प्रकार का कपूर ।

जलका, जलानुका, जलिका, जलुका, जलूका [जले थाका-
यति प्रकालने - जल + था + क + टाप्, जले
अर्थात् गच्छति - जल + जल + उक् + टाप्, जल + उन्
टाप् जलम् आको यस्य पयो०] जौक ।

अलेखम्, अलेखातम् [अले + जन् + ड, क्त वा भ्यत्प्रत्यया
अलक | कमल ।

जलेजयः [जले + जी + क्त्वं सप्तम्या अलुक्] १ मङ्गली
२ विष्णु का नाय ।

जल्प (म्वा० पर० जल्पति जल्पित) बोधना, बातें करना,
मलाप करना—इतिरहितकपोलं जल्पतोरक्रमेण—उत्तर०

१।२१ एकन जल्पनग्नस्याभारम् पञ्च १।११६,
मर्त्तः १।१८३ ३ गतमानाना तस्यष्ट उच्चारण करणा

3 प्रलाप करना किच किच करना बालकलख करना
कलकलखानि करना बधि बोलना धारें करना

प्र , 1 बोलना कहना बातें करना कु० १।६५
2 पकड़ना बल बोलना मलाप करना ।

अल्प [यत् । घञ्] 1 वक्तुमा भाषण 2 पचयन
माचयन 3 मातृकालय एलाय गण-गण 4 वाचविचार

बायबांन उ बासकलव प्रेमणि, मय-सय ५ बगदाबबाद
बायबुद ।

पाकन् वा । शान्नी गणी ।

कुर्ती, तेजी द्रुतता जबो हि सप्त परम विभूषणम्

मन्. ३१२१, स. १८, (सि) विरा विप्रा
जवेन पीठानुर्वातदभ्युत सि. ११२ २ वंश ।

सम०—आजकल बंगवान् पीडा, द्रुतगामी पीडा,—आजकल
तेज हवा आषी ।

बेगवान् रघु० १/५६ अ इतनामो बोडा तेक बोडा

अथ चाल, इति गति र्थः ।
अथ चाल, अथ चालो [अथ चालो अथ चालो अथ चालो] अथ चालो अथ चालो

1 कनात 2 विक, पर्दा नर ससारान्ते विकसति

अथवा [भु + भस्] पशुओं के परम योग्य वास ।

अन्व (अन् + टाप्) अन्वन्त, अन्व ।
अन्व (अन् + उन् + अन्ति — णे) अन्ति कर्तुंवाणा, अन्ति

वस्तु १ (दिवा० पर०—अस्यति) स्वतन्त्र करणा, मुक्त करणा,

॥ (म्वा० पूरा० पर०- जज्ञनि, ज्ञासवति) १ चोस
पहुँचाना, क्षति पहुँचाना, प्रहार करना २ अज्ञात करना

अपमान करना, उद् - , धारणा निजीमत्तोन्मास
विष्णु जगद्गुरुम् ति. १३०, अदि. ८। १२०।

वहकः [हा + कन्, शित्त्वम्] १ लक्ष्य २ बालक ३ क्षय
की देखली ।

जङ्गल (वि०) (स्त्री०—ती) [हा + जङ्] छोड़ने वाला, त्यागने वाला । छत्रं लक्षणा, स्वार्था लक्षणा का एक प्रकार (इसे 'लक्षणाश्रया' भी कहते हैं) जिसमें शब्द अपने मुख्यार्थ को छोड़ देता है परन्तु एक ऐसे अर्थ में प्रयुक्त होता है जो किसी न किसी प्रकार उस मुख्यार्थ से सम्बद्ध है, उदा० 'गंगाया घोष' (गंगा में बर) में 'गंगा' शब्द अपने मुख्यार्थ को छोड़ कर 'गंगावत' को प्रकट करता है तु० 'अवहस्तार्था की भी ।

जहाजक [हा + जान् + कन्] महाप्रलय ।

जह्नु [हा + जन् द्वित्वम्] रघु का बच्चा ।

जह्नु [हा + न् द्वित्वाकारतोपपन्न] मुरीच का पुत्र, एक प्राचीन राजा जिनमें गंगा का अपनी पुत्री के रूप में गङ्गा मिल गया । १ वर गङ्गावती अशोक की तपस्या के द्वारा स्वयं से इस धरा पर लाई गई थी मंदान में आकर उसने राधा जह्नु को यज्ञधाम का पाना में दे दी दिया । जह्नु ने क्रुद्ध हो कर गंगा को पी बाधा । इसका क्रुधि और क्रुधित कर भगवान् ने उनसे ज्ञापन को जानने दिया । जह्नु ने प्रसन्न होकर गंगा का अपने कानन द्वारा बरकरार रखा करने की स्वीकृति दी । प्रसन्न गंगा जह्नु की पुत्री समझी गई और उसे जाह्नवी, जह्नुकन्या, जह्नुनगया जह्नुनन्दो या जह्नु मुखा आदि नामों से पुकारा गया—तु० रघु० १।८५, १।१५ ।

जागर [जागृ + घञ् भृञ्] जागरण, जागना जागने रहना, रात्रिजागृत्यते विद्याशेष रघु० १।३४ 2 जाग्रत अवस्था की वन सृष्टि 3 कवच, जिरह-वस्त्र ।

जागरणम् [जागृ + ल्यट्] 1 जागना प्रवृद्ध रहना 2. बबर-दारी, सतर्कता ।

जागरा [जागृ + क् + टाप्] दे० जागरण ।

जागराणि (वि०) [जागृ + क्त] जागा हुआ तत् जागना ।

जागरिन् (वि०) (स्त्री०—त्री) जागरक (वि०) [जागृ + लृट्, द्विगो डीप् य जागृ + ऊङ्] 1 जागरणशील जागना हुआ, निद्राशून्य स्वपत्नी जागरकस्य यावाम्यं वेद कल्पेन रघु० १०।३४ 2 खबरदार, सतर्क --वर्षाश्रावणजागरक- रघु० १४।१५, सि० २०। ३९ ।

जागरति, जागरति, जागति [जागृ + क्तिन्, जागृ + क् + लृट् + टाप्, भृञ्, जागृ + क्, गिञ्जवेत्] जागरण, जागने रहना ।

जागृक [जागृ + क्] कैटर, बाइरान ।

जागृ (कथा० पर०—जावति, जागरित) जागते रहना,

खबरदार या सतधान रहना (बाक० नी) —जीमूतर्षि-वैशम्पायन महाकाव्य स्वयम्भवि—रघु० १७।११, मुरी बाह्नुष्यचित्तावामावर्षे धार्य य जावति—मृदा० ७।१३, गन को बैठ रहना या निद्रा शून्यता शब्दमुक्तानां गत्या जागति तपसी—मग० २।११ 2 निद्रा से जगाया जाना जागते रहना, जागे का देखना, बुरदगी होना ।

जागती [जघन + जङ् + डीप्] 1 गृह 2 जघा ।

जाङ्गल (वि०) (स्त्री०—की) [जङ्गल + क्] 1 देहांगी, बिनोपम 2 जङ्गली 3 बर्बर, अमन्य 4 बबर, उम्बर कः बघोर, तीतर—क्यू 1 मांस 2 हरिण का मांस ।

जाङ्गलम् [जङ्गल + क्] बहुर, विष ।

जाङ्गलि, जाङ्गलिक [जङ्गल + क्, उङ् वा] लीप के करने वा चिकित्सक, विषवेध ।

जाङ्गल [जङ्गल + क्] 1 शूकरा दूत 2 डेट ।

जाङ्गल (प०) [जङ्गल + क्तिन्] जाङ्गल, जङ्गल वाला—बड़ी-बोलीजिह्वावादी सि० ११।३ ।

जाडर (वि०) (स्त्री०—री) [जाड + क्] पेट से सब्ज रखने वाला या पेट में होने वाला, उदरवर्ती बीधर क पाचनमण्डि, जाडर रस ।

जाडयम् [जाड + क्] 1 ठंडक धीनलता 2 बनावटि अल्पसि निष्कम्यता 3 बुद्धि की कल्पना, बेवकूफी, ब्रह्मा-पञ्चादय वस्तुवाचिण्य—मृ० २।१५, जाडय विद्या हरति २।२३, जाडय क्षीयति कल्पते—५५ 4 जिह्वा की नीरसता ।

जघ (तु० क० क०) [जङ् + क्त] 1 अतिरस्य में जाया गया, जघ्न दिया गया, वैदा किया गया 2 उगा हुआ, निकला हुआ 3 उधुधु, उत्पन्न 4 अनुमूल, वस्त्र (प्रायः समास में) दे० 'जघ्',—कः पुत्र, वैदा (पाटकों में पाय 'जोह' वा प्रेम 'जोह' के अर्थ में प्रयुक्त—जयि जात कथयितव्य कथय उत्तर० ४, 'जोहरे बच्चे' 'जोहरे लाल, दुलारे'),—क्यू 1 वस्तु, बीजवादी, प्राची 2 उत्पादन, उधुधु 3 जेह, प्रकार, खेती, जति 4 खेती बनाने वाली वस्तुओं का समूह—वि-

सेषविशेषिणकोणजातम् रघु० ५।१, उपरित का समूह वर्णान् हर प्रकार की सम्पत्ति, इसी प्रकार कर्मजातम् (सब कर्मों का समूह)—क्यू १६ उच कुछ जो मुख में सम्पत्ति है 5 हाक, कच्चा । सम० अस्त्रा माता,—अस्त्र (वि०) मारक, कुद, जङ्ग (वि०) जङ्गल रहने वाला,—इति (स्त्री०) जातकमेवकार, —उक्त बोरी जागृ का बैठ,—क्यू १६ उच उचने के जन्मते ही अनुष्ठेय संस्कार—रघु० १।१८ ।

कजल (वि०) (गोर की भाँति) गृह वाला,—कजल (वि०) कालक, —कज (वि०) चिकने होने वा पक निकल जाने ही, बचावक, अनुचितक,—कज (वि०)

कपच 3 मकड़ी 4 जोंक 5 बिचवा 6 मोहा

7. बूँद, मुँह पर डालने का ऊनी कपडा।

काष्मिणी [बाल + हनि + क्रीप्] पिछो से सुसुपित करना।

काष्मण (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [जङ् + णिङ् भा० म]

1. बुर, निरुद्ध, कठोर & उतावला, अविशेषी, —स्वः (स्त्री—स्त्री) 1 बबबाबा, छठ, लुच्चा, पाजी, कुकर्मो—अपि शायते कतमेव हिम्मावेन गत स आत्म इति—विष्मय० १ 2 निर्धन आदमी, नीच, बचम।

काम्पक (वि०) (स्त्री० स्मिका) [आत्म + कन्] सुपित, नीच, कमीना, निरस्करणीय।

काष्मण् [जवन - व्यञ्ज्] 1 बाल, नेत्रो 2 क्षीघ्रता, लवरा।

अक्षय एक प्रत्यय जो शरीर के अङ्गों के अधिप्रायक वस्त्रा सब्जों के अन्त में मूल का प्रवृत्त करने के विग बाहर जाता है—कनकाहम्—कान की जर, इन्ही प्रकार और ओष्ठ आदि।

क्षयो [जस्तु + अण् + क्रीप्] गङ्गा नदी का विशेषण।

ज (स्मा० पर०) (परा और वि पूव मान २२ आ०)

जगति, जित्) 1 जीतना हारना प्रथम प्राप्ति करना दमन करना अर्थात् तुलनाधिकृता आस्वानभि वन्द पटकाति—पञ्च० ११३३०, मट्टि० १५१७६ ५५

2 मात कर देना, आगे बढ़ जाना परिजाननम् मुष्टि लोभायमेव जिगाय मा मू० २१२३ रत्न० ३१३४ पट० २२, वि० १११९ 3 जीतना (विजिजय करना या जूए में जीतना), विजिजय करके हस्तगत करना

—मानवीयत बुधा तता मही—रत्न० १११५५ (मही वि० का वर्ष विजय प्राप्ति करना भी है)—मनु० ७१९९ 4 दमन करना, दबाना, नियन्त्रण रखना

(कामावेन आदि पर) विजय प्राप्त करना 5 विजयी होना, प्रयुक्त या सर्वोत्तम बनना (प्राय नान्दी पलोच या अधिप्रायन आदि में प्रयुक्त)—अयतु अयतु महाराज (गाँठकों में), स अयति पौरजड सक्तिभि गक्तिनाथ

—मा० ५११, वित्तमुनितिला यय मुरेभ्य—रत्न० ११४, अर्चु० २१२ जीत० १११, प्रेर० जाययति, जित नामा, विजय विमाना, मन्त्र—जिगीषति जीतने की

हस्तगत करने की, आगे बढ़ जाने की, रोक करने की होइ कपाने की इच्छा करना, अवि—जीतना, हारना पञ्चकना—मट्टि० १११२, विष्णु 1 जीतना, हारना

—रत्न० ११५१, मट्टि० २१५२, ११९५ वाज० ३१२९२ 2 जीत लेना, विजिजय द्वारा हस्तगत करना मनु० ८११४४, वय—(जा०) 1 हारना, जीतना, विजय प्राप्त करना, दमन करना—य पराजयते बुधा—वाज० २१०५, मट्टि० ८१९ 2 जीतना, वजिजय होना 3 जीत

किया जाना या वशीभूत किया जाना, (कुछ) अनाद्य अनाद्य—अन्यगतपराजयते—सिद्धा०, अन्यगत करना

कठिन वा असह्य लगता है—मट्टि० ८१७१, वि०—(जा०) 1 जीतना 2 हारना, वशीभूत करना, दमन करना

व्यजेष्ट वज्जयम्—मट्टि० ११२, प्रायस्त्वम्बुससेयवा विजयते विजय स पुष्पायुध—गीत० १०, मट्टि० २१३९ १५१३९ 3 मात कर देना, आगे बढ़ जाना—अक्षय—वक्रमम्बुज विजयते विद्धि० ११३३ 4 जीत लेना, विजिजय करके हस्तगत करना मूजविजितविमान

रत्न० १११०५, ११५९ शा० २१३३ 5 विजयी होना, भेष्ट या सर्वोत्तम होना विजयता देव स० ५, जि [जि - डि] विगाय।

जिगम्बु [गम + जन् सन्-बद्धावर्त्तात् द्वित्वम्] प्राण, जीवत।

जिगीषा [जि + मत् + अ + टाप्] 1 जीतने की, दमन करने का या वशीभूत करने की इच्छा यान मन्त्रार कोवर् देवमन्त्रावर्त्तावर्त्ताया—रत्न० १५१४५ 2 स्पर्शी अति

इति 3 प्रयत्नना 4 अन्ता व्यवसाय जीवनवर्षा। जिगीषु (वि०) [जि + सृ + उ] जीतने का इच्छुक।

जिह्वस्ता [जन् मन् + ज चगादेश 1 जीतने की इच्छा बुद्धि 2 हाथपाव माना 3 प्रयत्न उद्योग करना।

जिह्वस्तु (वि०) [जन् मन् + घनादेश] बुद्धि नन्वा।

जिघांता [जन् मन् + ज + टाप्] मार डालने की इच्छा रत्न० १५१२१।

जिघांशु [जन् + सृ + उ] मार डालने का इच्छुक चातक १) गन् बेंगे।

जिघृक्षा [जृह् + सृ + अ + टाप्] अदम्य करने की या मन की इच्छा।

जिह्र [वि०] [घ्रा + श जिघ्रादेश] 1 लूचने वाला 2 अन्ध-बलाज अन्मान लगाने वाला, निरीक्षण करने वाला उदा० मनाजिह्र सपत्नीजन—सा० ६०।

जिह्वासा [जा + सृ + अ + टाप्] जानने की इच्छा कुतूहल, कौतुक या ज्ञानेप्ता।

जिह्वाणु (वि०) [जा + सृ + उ] 1 जानने का इच्छुक ज्ञानेय प्रश्नशील भग० ११४४ 2 बुद्धि।

जित् (वि०) [जि + क्विप्] (तयात् के अन्त में प्रयुक्त) जीतने वाला परास्त करने वाला, विजय प्राप्त करने वाला सारकजित् कंसजित्, सहस्रजित् आदि।

जित् (मू० क० क०) [जि + क्त] जीतना हुआ, अधिभूत, दमन किया हुआ, (अणु या आशेष आदि) संयत, 2 हस्तगत प्राप्त, (विजिजय द्वारा) प्राप्त 3 मात दिया हुआ, आगे बढ़ा हुआ 4 वशीभूत, वशीभूत या प्रभावित कायचित् जीजित् आदि। वय—अक्षय (वि०) मशीप्राप्ति वा सुरक्ष वरने वाला,—अक्षय (वि०) जितने अपने सम्पत्तों की जीत किया है, वेता विजयी, —अरि (वि०) जितने अपने सम्पत्तों पर विजय

आजय लेने वाला जाति—परलोकबुवाय् -रघु० ८।
८५, रजोबुधे जन्मति का० १।

१. प्रसन्न, सतुष्ट
 २. सम्पन्न, आर्जित, देसा हुवा, युक्ता हुवा भग०
 २।२ ३. सज्जित, सम्पन्न, युक्त ।

मणि (स्त्री०) [हृ + क्तिप् नि० हित्वा दीर्घश्च टाग०]
मणि यें घी की आहुति देने के लिए काठ का बना
अर्धचन्द्राकार सम्भ्रम, लुबा ।

बुद्धोक्ति: [बु + क्तिप्] 'बुद्धोक्ति' किया से सम्भव होने वाले यक्षानुष्ठानों का परिभाषिक नाम, इससे ज्ञिष्ठ वस्तुना के लिए दूसरा नाम 'यक्षति' है। अग्नि सर्वोद्देश्यो बुद्धोत्तमयक्षति किया मम० १८४ (दे० मेघातिथि तथा दूसरे माध्यकार सबैज नारायण बुद्धति यज्ञ नुष्ठानों को 'यक्षिष्ठ होम तथा यक्षति यक्षानुष्ठानों को 'तिष्ठ होम का नाम देने हे—दे० श्रवणनाथन—१११५ मी) ।

प्रश्न: (स्त्री०) [यू + स्विच्] 1 ज्ञान 2 पर्यावरण 3 गलतियों
4 सरस्वती का विरोधन ।

शुक्रः [शोक शब्द] तुला राशि ।

बूट: { बूट - १, नि० ३३३३ } धिपटे हुए तथा म० ३३
बनाय हुए केसा का म० - ३३३३ भुवनेश्वर
बलपञ्चकनद्वारा म० ३३३३

बूढ़कन [ज] कन, बू कर मोरी बनाव हुए बाल गन ।

कृति: श्री० [ज. किन्द्वा] बाल शत ।

कृष्ण (विवा. जा. रूपते वर्ण) १ बाल पशुवाना एतः
पशुवाना मायना २ कृष्ण शाना (सम. के माय) भव
नसम्यक् विवा युवो मातृ. १११ ३ पुराणा
शाना ।

कृति (श्री०, [अथ + कृति कृत्] दुष्कार जड' ।

૧ (સ્વા. પર. અર્થ) : નમ્ર બનાના નોંધા દશ્યના
 ૨ આમે થઈ જાના ।

पूज, पुष्प (भा० भा०) पुष्पे पुष्पे, ज्योतिष, पुष्पे
 1 उवासी मेना समुदाई देना मनु० ४१३
 2 सोलसा, विष्णार करना (अधना) (कल अर्द्ध दे०)
 - परचुनियुवाभाय वसुध पुष्पांघ्रि मनु० ३१२
 3 उवासी, कीनाता, सर्वत्र प्रसार करना पुष्पा
 पुष्पनामप्रतिदुष्प्रसार आचार्यार्ति वेणी० १ तुम्हे
 पुष्पति (पर० कनियमिन) —मनु० ३१५ भाग ३१५
 एक एक पुष्पा निर्यादितो पुष्पे ३१८ ४ प्रस
 होना, उदय होना अपनी भाव विस्थान् कन्येय होना
 व्यक्त होना सकल्योनिर्जमावभूतमायानपाचाय
 मनु० पुष्पे क० ३१२ ५ आगम मे होना ६ (वसुध
 की भाँति) पीछे पुष्पे, वस्त्रा बाता प्र० उवासी
 विष्णार, प्रसार करवाना, उ०, वस्त्र होना, उदय
 होना, पुष्पा—म० ३१५५, वि० उवासी देना,

उवासी सेन्स, मूँह कोकना-अवधुम्भितस्य वापरे-महि-
 १५१०८ विदुम्भितमिमान्तरिणे- मूच्छ- ५
 २ लुलना, झिलना (पूज्वा मादि का) ३ सर्वत्र कीज
 खाना, अग्रान करना, भर देना मूच्छना मयल्लुमर्दिनि
 स्वना न केवम सधनि मायवीरते पथि अय्युव्वल्लन
 विदीकसामिपि मूच्छ- ३११९, १२१७२, रत्नोन्नकारस्य
 विदुम्भितस्य ३१४२ ४ उदय होना प्रकट होना,
 लब्ध, प्रचल्य करना, हाथपीठ माग्ना, कोजिज
 करना-अग्र्य बान्मज्जातन्तुगभरसी रोड् समुज्ज्वलते
 - भर्त्त- २१६ ।

[illegible][illegible]

कल (पृ. ११, वि. ४, पृ. ११) १. ज्ञानन बाबा विजयन २. विजयन
का विवरण ।

बेल्गाव (१०) गजम कमरा ब्रह्मम केलो पर जरीर के
गमना बने शुभ उदघाटन ।

श्वेतमय [प्रिय + मय] 1 ज्ञान 2 भाजन ।

१ विप्रयो सफल विप्रयः क्षान्त कान्त बाका इहमिह
 मयन्मः वैचर्यस्य किञ्चन्यानिश्चय भविष्यतीति—मा०
 २१० वन्द्यैर्न गृह्यैर्न गृह्य ६१६, १६७२
 १ विप्रय जी १ विप्रयो विप्रता २ पारय वन्द्य
 १ विप्रय जी २ विप्रयपन।

जैन । जिन । जन् । जैन सिद्धान्तों का अनुयायी, जैन मन
को मानने वाला ।

जीविनि (५०) प्रख्यात 'हृषि' और शार्ङ्गिक विमर्शने दर्शन
प्रदाय में 'पूर्वजीवात्मा का प्रथमन किंवा जीवात्मा
कृतमुष्णमात्र सहसा हस्ती भूति जीविनिष्—पंच०
२।३३।

वीर्यवृत्त (वि०) (स्त्री०- की) [वीर्य + वृत् + वाप् + क्त] 1. दीर्घवीर्य, जिसके लिए वीर्यान् की इच्छा की जाय—वीर्यवृत्त ननु ब्रूते परिवर्त्या—रघु० २ पुष्कला-मलका, कुसकाय, -क 1 चन्द्रमा राजान जनकान्ममूक सहसा वीर्यवृत्त त्वां नृ व—आशि० २।७८ 2 कपूर 3 पुष 4 दवाई, औषधि 5 किसान ।
वीर्य [वीर्यस्य मुरो अपत्यम् वीर्य + क्त] बहुवचन के पुन कच की उपाधि ।

वीर्यवत् [विद्वा + धाञ्] टेढ़ापन बोला कृता व्यवहार ।

वीर्यवृत्त [वृत्तिमि अरोचकस्य परिवर्जान् अनेन वृत्त + अट् + मि० गृण] नम्रवती स्त्री का प्रथम सवि, दाहृट् ।

वीर्यवृत्त [वृत् + इन् मोटि + गम् + इ रिक्तत्वात् म्] शिव की उपाधि ।

वीर्य [वृत् + वञ्] 1. मन्त्राय सुतोऽयम प्रयत्नना आनन्द 2. वृत्ती बप् (अभ्य०) 1 इच्छानुमा। आराम से 2 वृत्तवाप किमिनि शोधमास्तते अ० ५, आशि० २।१७ ।

वीर्य, वीर्यवत् (स्त्री०) [वृष्मणे उपवृज्यते वृष् + क्ता + टाप् वृष् + इति] स्त्री, नारी—नृ० पासा पोषित् ।

वीर्यिका [वृष् + क्त + टाप् इ वम] 1 नई कल्मयो का समूह 2 स्त्री, नारी ।

व (वि०) [जा + क] (समाय क अन्त में) 1 जानन करना परिचित कार्यज निमित्तज पासकज, सबज 2 बुद्धिमान जैसा कि ज्ञयम में (अपने आपकी बुद्धिमान समझता हुआ) 3 1 बुद्धिमान और विद्वान् पुष्ट 2 सौम्य विरिण् आ मा 3 दुष्ट नम्रज 4 मयन नम्रज 5 बह्ना का विशेषण ।

वर्षित, वर्ष (वि०) [जा + णिच् + क्त] उतारा गया सम्राटन स्पष्ट किया गया सिखाया गया ।

वर्षित (वि०) [जा + णिच् + क्त] 1 समस्त 2 बुद्धि 3 शोधना ।

वा (अभा० उभ० आनाति, जानीये, जान) 1 जानना (सब चीजों में) सीखना, परिचित होना या जानी रख मुली प्रामो वरकाशीत स रखसाम्—मट्टि० १।१० 2 जानना, जानकार होना परिचित या विज्ञ होना जाने उपसर्ग दीर्घम्—श० ३।१ जानन्मि हि मेराबा जहल्लोक वाचरेण् मनु० २।११० १२३ ७।१४४ 3 जान्म करना निश्चय करना सोच करना—आयता क क कायाचीनि मृच्छ० १ 4 समझना, जानना बबबोच करना, महसूस करना, अनुभव करना—जैसा कि बुझ, सुझ आदि में 5 परीक्षण करना, जांच करना, वास्तविक जगि जानना—वायपुत्र विज जानी-वायु—हि० १।७२, वाय० २१ 6 पहुँचाना न लं बुद्ध्या न पुनरुक्ता ज्ञास्व क कामवाचित्—मेघ०

१३ 7 निहाय करना, खाल करना, मान करना—जानाति त्वां प्रकृतिपुत्र कामक मयान—मेघ० ६ 8 काम करना, व्यस्त करना (सब० के साथ) मपिचो जानीये—सिद्धा०—बहु ची मे अपने आपकी यज्ञ में व्यस्त करता है (सपिचा-सपिच) प्रेर० (ज्ञाप यति, ज्ञापयति) 1 शोधना करना सूचित करना कत-लाना, ज्ञात करना, अधिसूचित करना 2 निवेदन करना कहना (ज्ञा०) छानल विज्ञायते, जानने की इच्छा करना जानना निश्चय करना—रघु०

२।२६ मट्टि० १।३३ ४।९१ अनु० अनुमान देना इज्जत देना स्वीकृति देना 'हो' करना महमत होना स्वीकार कर लेना अनुजानीति मा ममनाय उत्तर० ३ 2 मलाई करना 'बहात में बचनबद्ध होना, बचन देना (विवाह में) मा ज्ञातमात्रा वनविश्वामित्रेन जानाद्रावर्ग में पिता दण्ड० ५० 3 जमा करना माफ करना 4 प्रार्थना करना 5 अपनाना अप—, छिना मुना रखना, इनकार करना मुकना (ज्ञा०) एतमपजानीते—मिद्धा० आभानमपजानान् ज्ञातमात्राजपिहम मट्टि० ८।२६ अशि० 1 पहुँचाना—आत्मकानाम्मन्त्र नृपम्—महा० 2 जानना समझना परिचित होना जानकार होना दण्ड० ४।१४ ११३ १८ ५५ 3 ध्यान रखना खयाल रखना मानना 4 मान लेना स्वीकार करना बह—, नृपम् ममना भूषा वत्ता निरन्तर करना अपजाना जहजानाति या वस्त्रम्—रघु० १।१७ मट्टि० १ प्रग० १।११ क—जानना, समझना, जानना निश्चय करना (प्रेर०) अ—दना आदेश देना, निदेश देना विस्वास दिवाना 3 वरिजित करना, जान के लिए धृष्टी देना परि जानकार होना जानना परिचय होना—बुधभाज्यविनि परिज्ञाय नच० १

मनु० ८।२६ 2 बोझना, निश्चय करना—सम्यक परिज्ञाय—पञ्च० १ 3 पहुँचाना तवभितीय कश्चित् परिज्ञातोऽस्मि—श० २ अशि (ज्ञा०) 1 परिज्ञा करना सूत्रापारम्परेन कन्यादान प्रतिज्ञानीत प्रम० ४ मट्टि० ८।२६ ६४, मनु० १।१२ 2 पुष्ट करना 3 जानना अधिसूचित करना, जाना करना चि 1 जानना शनकार होना मनु० १।२१ 2 सीमना समझना, जान लेना 3 निश्चय करना मानम करना 4 निहाय करना मान लेना, खयाल क—(प्रेर०) 1 निवेदन करना, प्रार्थना करना (विप० अज्ञापयति)—आनपुत्र जति मे विज्ञाप्यम्—(राज०) ननु आज्ञापय उत्तर० १, रघु० ५।२० 2 समाचार देना, सूचना देना 3 कहना, बतलाना, कम्, (ज्ञा०) जानना, खबजना, जानकार होना 2 पहुँचाना 3 देखबीक ले रहना, परस्पर सहमत

होना (कर्म० या करण० के साथ) - पिता पितर वा सखानीसे-सिद्धा० 4. लखानी करना, खबरदार रहना-बुद्धि० ८१२७ 5 राखी होना, सहमत होना 6 (पर०) राख करना, सोचना-मानु मातर वा सजानासि-सिद्धा० (वेर०) सूचना देना ।

सख (वि०) [स+ख] जाना हुआ, निश्चय किया हुआ, समझा हुआ, सोचा हुआ, समवधारित दे० 'जा' ऊपर । सम०-सिद्धान्त पूर्वरूप से वास्तवों में निष्पन्न ।

सखि [स+खिन्] 1 पंतुक सख, पिता, भाई आदि, एक ही राख के व्यक्ति (समष्टि रूप से) 2 बन्धु, बाधक 3 पिता । सम० सख, रिस्तेदारी -वेदः सखियों में कूट, बिन् (वि०) वा निकटस्थ व्यक्तिसे ये सख्य होवता है ।

सख्य [स+खि] 1 सख, रिस्तेदारी ।

सख्य (पु०) [स+ख] 1 बुद्धिमान् पुरुष 2 परिचित व्यक्ति 3 समानता, प्रतिभू ।

सख्य [स+ख्य] 1 जानना, समझना, परिचित होना प्रयोजना - सख्यस्य योगस्य च ज्ञानम् भा० ११३ 2 विद्या, शिक्षण-बुद्धिमाने क्षुधमनि-मन० ५११०९, ज्ञाने मीन सखा शरी-रूप० ११२८ 3 सेवना, सजाना, जानकारी ज्ञानताज्ञानता बाध मनु० ८१२८८, जाने अनजाने, जानबूझकर, अनजाने में 4 परच ज्ञान, विशेषकर उस चयन और दर्शन की ऊँची सचाइयों पर मनन से उत्पन्न ज्ञान जो मनुष्य को अपनी प्रकृति या वास्तविकता को जानना, तथा वास्तवसाक्षात्कार या परमात्मा से मिलन की बात सिद्धासता है (विष० कर्म) पु० ज्ञानयोग और कर्मयोग भग० ३१३ 5 बुद्धि ज्ञान और प्रज्ञा की इन्द्रिय । सम०-अन्वेषकः ज्ञान, पूर्वता, अन्वेष्य (वि०) सर्वविध, बुद्धिमान्, -इन्द्रियस्य प्रत्यक्षीकरण की इन्द्रिय (बहु पाँच हैं-स्पर्श, रसना, श्रवण, कर्ण, और घ्राण 'बुद्धीन्द्रिय' शब्द की देखो 'इन्द्रिय' के नीचे), -आत्मन् वेद का बाह्यिक वा रहस्यवाद विषयक भाग जिसमें वास्तविक ज्ञानज्ञान वा बहुज्ञान का उल्लेख है इसके विपरीत उत्कारों का ज्ञान (कर्मकांड) की वेद में निहित है, -कृत (वि०) मानवस्य कर वा इरादनन किया हुआ, -कृत्य (वि०) समझ के द्वारा जानने कीव, -कृत्य (नपु०) बुद्धि की भाँव, मन की भाँव, बौद्धिक स्वप्न (वि०) सर्व कृत्यम्) -सर्व मनु समवेक्ष्ये निश्चित ज्ञानकथना मनु० २१८, ४१२४, (पु०) बुद्धिमान् और विद्वान् पुरुष, -सख्य वास्तविक ज्ञान, बहुज्ञान, सख्य (नपु०) सख्यज्ञान की प्राप्ति रूप तत्त्वा, - सः मनु, वा वास्तविकता का विशेषण, -सुख (वि०) जिसमें ज्ञान की कमी है, -निश्चयः,

निश्चित, निश्चयीकरण, - निश्चय (वि०) सख्ये ज्ञानज्ञान को प्राप्त करने पर हुआ हुआ, -सखः वास्तविकता, सार्थकता-वेदः सख्ये वास्तवज्ञान प्राप्त करने वा परमात्मानुभूति प्राप्त करने का मुख्यसाधन, - निश्चय, विचारना, -आत्मन् अधिक कथ्य का वास्तव, - सख्यम् 1 सख्ये ज्ञान प्राप्त करने का साधन 2 प्रत्यक्ष ज्ञान की इन्द्रिय ।

सख्य (कर्म०) [ज्ञान + सखि] ज्ञान पूर्वक, मानवज्ञकर, इरादतन ।

सख्य (वि०) [ज्ञान + सख्य] 1 ज्ञानपूर्वक, निश्चय - इतरा रहने स्वकर्मका बन्ने ज्ञानयोगे बुद्धिना रूप० ८१२० 2 ज्ञान से भरा हुआ, -सः 1 परमात्मा 2 शिव की उपाधि ।

सखिन् (वि०) (स्त्री० मी) [ज्ञान + खि] 1 प्रतीया-वालो, बुद्धिमान् (पु०) 1 श्रोत्रियो अधिकवक्ता 2 खि या मन्त्रांगी ।

सख्य (वि०) [स+खिन् + ख्य] ज्ञानज्ञान वाधा, मिथ्याने वाला, सूचना देने वाला, मर्यादक, क 1 अध्यापक 2 समानताका आशी कर्म (दर्शन से) मार्गक ज्ञान अज्ञान-मक नियम (यहाँ उन सखा से बर्तनाय है जो ज्ञाने ज्ञाधिक्य सर्व की ज्ञेयता की नियमों के मध्य में कुछ अधिक व्यक्त करते हैं) ।

सख्य [स+खिन् + ख्य] ज्ञानज्ञान सूचना देना सिद्धासता, सोचना करना, सकन देना ।

सखि (वि०) [स+खिन् + ख] 1-भावा नया, सुविन किया गया, सोचित किया गया, प्रकाशित ।

सोप्ता [स+सन् + ख + टाप्] जानने की इच्छा ।

स्य [स्य + ख + टाप्] 1 बन्धु की शरी-विश्राम सन्तानमिद व शिष्यजगद्व्यवस्थामन् -सः २१९, रूप० ३१५९, ११११५, १२१०४ 2 चाप के तिरों को मिलाने वाली सीधी रेखा 3 पुष्पी 4 माता ।

स्य (स्त्री०) [स्य + ति] 1 बुद्धिमान्, सब 2 बुद्धिमान्, त्यागना 3 दारवा, नदी ।

स्य (स्त्री० - सौ) [अयमनवीरसिमेने प्रहस्य बुद्धो वा + स्यन्तु ज्यारि] 1 आयु में बढ़ा, अधिकतर वयस्क प्रवर्धमेव स किम ज्यवान् -उत्तर० ९ 2 हो में बढ़िया बेष्टर, योग्यतर-मनु० ४१८, ३१३७, भग० १११, ८ 3 बहुतर, बहुतर 4 (विधि में) को व्यवस्थित न हो बर्धा वयस्क वा अन्ये कार्यों के लिए उत्तरदायी ।

स्य (वि०) [अयमेवावस्थितमेव बुद्धः प्रवर्धो वा + स्यन्तु, ज्यारि] 1 आयु में सब से बड़ा, बेटी 2 बेष्टतन, सर्वोत्तम 3 प्रवृद्ध, प्रवर्ध, वृद्ध, उत्पन्न, -सः 1. बड़ा भाई, रूप० १२११५, १५ 2. पञ्चमवय (ज्येष्ठ का बहीना), -सः 1. सबसे बड़ी बहन 2. १८

वी. अक्षर वृत्त (तीन तारों वाला) ३. विचली मंजूरी
४. छोटी विचली ५. मूला नदी का विशेषण ।
वच०—अक्षः १ सबसे बड़े भाई का भाग २ सबसे
बड़े भाई का पैरु कपाति में वह भाग जो सबसे बड़ा
होने के कारण उसे मिले ३ तबीयतमान, अक्षु (नपु०)
१. अनाथ का पोषण २. मांछ (चावली का), अक्षकः
१. शाहूज बचवा गृहस्थ के धार्मिक जीवन में उच्चतम
या सर्वोत्तम साधन २ गृहस्थ ताल पिला का बड़ा
भाई, ठाक, बन्धुः सर्वोच्च धार्मिक शाहूज मानि
—सुविः बड़ा का कर्त्तव्य, स्वधू. (स्त्री०) बड़ी
साथी ।

अक्षक [अक्षक + अक्ष] वह चादमस्त । अक्षक पूर्य चन्द्रमा
अक्षक मन्त्रमन्त्र न मिश्र होता है, वे ३ का महीना
(मई-जून), अक्षी १ अक्षक मास की प्रथमा २ अक्षि
कक्षी ।

अक्षी (अक्ष० आ० अक्षकः) १ परामर्श देना, नवीकृत २०
२. इष्ट वांछि धार्मिक कर्मका पावन करना ।

अक्षीर्षक (वि०) [अक्षिर्ष + मयट] तारों से युक्त अक्षि
से बरा हुआ, क्षुब्ध २० १५५९, पु० ११० ।

अक्षोत्ति (वि०) (आ० बी०) [अक्षोत् + अक्ष] १. गणित
या कलित अक्षोत्ति, -क १ अक्षक ईश्वर २. अक्ष
बेदाङ्गों में से एक (अक्षित अक्षि १२ एक अक्ष) ।

वच०—विज्ञा जगत् अक्षक अक्षित अक्षोत्तिविज्ञान
अक्षोत्तिरी, अक्षोत्तिः [अक्षोत् + अक्ष] अक्षि अक्षक
—क १०० ब्रह्म, तारा नक्षत्र ।

अक्षोत्तिष्ण (वि०) [अक्षोत्ति + अक्ष] १ अक्षोत्तम तेजस्वी
देवीपदान, अक्षोत्तिमं नक्षत्रताराग्रहलक्षणं अक्षो-
त्तिष्णत, चन्द्रमसे राशि —अपु० ११२२ २ स्वर्गीय
—(पु०) पूर्व, —ती १. राशि (तारों के प्रकाशमान)
२. (रश्मि० में) मन की तात्त्विक अवस्था अक्षि
क्षान्त बलवान् ।

अक्षोत्ति (नपु०) [अक्षोत्ते सुखते वा—अपु० + अक्षु] इत्य
कारेण] प्रकाश, प्रका, चमक, ईषित- अक्षोत्तिरेक
कथाम—अ० ५११०, अपु० २१७५, वेद० ५ २ बड़ा
अक्षोत्ति, वह अक्षोत्ति जो बड़ा का रूप है वच० ५१२४,
१११० ३ विचली ४ स्वर्गीय पिण्ड, अक्षोत्ति (ब्रह्म
अक्षक वांछि)—अक्षोत्तिपिच्छाक्षिरेव विद्यामा—कु०
अक्षि, वच० १०१२१, वि० ११२१ ५ देखने की
क्रिया ६ अक्षोत्तीक उच्चार—(पु०) १ सुयं २ अक्षि ।
वच०—अक्षक—अक्षक, अपु०, —अक्षक अक्षि की
विचलता, —अक्षक अक्षोत्तम ते अक्षोत्तीरेक, —अक्षक
राक्षसक, —अक्षक अक्षक, ईश्वर, —अक्षक अक्षोत्तीक
अक्षक—अक्ष (अक्षोत्तीक) धुन ताप, —वि० (पु०)
अक्षक वा ईश्वर, —अक्षक, अक्षक (अक्षोत्तीकत्वम्)
अक्षितअक्षोत्ति अक्षकअक्षि, अक्षितअक्षोत्ति ।

अक्षोत्ति [अक्षोत्तिरेक अक्षाम्—अक्षोत्ति + अक्ष, उपधाक्षोत्ति]

१ अक्षमा का प्रकाश—अक्षोत्तिरेकअक्षोत्तीकत्वम्
तमे कथाय पुनिते—अपु० ११४२, अक्षोत्तीकतो निवि-
धति प्रयोगान्—अपु० ११४४ २ प्रकाश । वच०
ईशः चादि, —अक्षिः बहोर पक्षी, वृक्षः दीपट
दीपाधार ।

अक्षोत्ती [अक्षोत्ती अक्षि अक्षम् अक्षोत्ती + अक्ष + अक्षि]
चादनी रात ।

अक्षी [अक्षि अक्ष] ब्रह्मर्षि उल्लेख ।

अक्षोत्तिष्णः [अक्षोत्ति + अक्ष] सर्वोत्तमोत्तमा, गणक, देवज्ञ
या अक्षोत्ती ।

अक्षोत्ति [अक्षोत्ति + अक्ष] अक्षक अक्ष ।

अक्ष (अक्ष० प० अक्षि अक्षं) वृक्षार या आदेश से गर्म,
हीना अक्षक अक्ष २ अक्ष होता ।

अक्षर [अक्षर + अक्ष] १ वृक्षार ताप, (आपु० में) वृक्षार
की गर्मी स्वच्छमात्र अक्षर प्राज्ञ २ अक्षमा अक्षिरेक अक्षि
वि० ११४४ (आपु० में) अक्षर, मदनअक्षर,
मदनअक्षर अक्षि २ अक्षमा का वृक्षार, मानसिक वीर
कष्ट दुःख, अक्षक—अक्षु में मनमो अक्षर रामा०,
मनसमन्तदुःखिते अक्षरे अपु० ११४४, वच० ११३० ।

मम० अक्षि वृक्षार का वग या नेत्री, —अक्षकः
अक्षरप्रमाणक, वृक्षार कम करने वाला, —अक्षोत्तिरेकः,
वृक्षार का हलाक, अक्षर प्रमाणक अक्षि ।

अक्षरित, अक्षरि (वि०) (स्त्री०—अक्षी) [अक्षर + इत्तप्,
इति वा] अक्षरान्त अक्षरित ।

अक्ष (अक्ष० वच० अक्षोत्ति अक्षित) १. तेजी से चलना,
दबकना, दीपट होना, चमकना, —अक्षति अक्षितअक्षो-
त्ति—अ० ११३० कु० ५१३० २ चल जाना, चल
कर मस्त हो जाना (आपु० में) कष्टवस्त होना
—अक्षमचक्रमक्षुत्तरचक्रनेन अक्षति म हा चलचक्र-
चक्रनेन—अक्षि० ७ ३ उत्सुक होना, —अक्षाल अक्ष-
स्थितये स राजा—अक्षि० ११४, प्रेर० अक्षकति—ने,
आमरतिने १ आय अक्षाना, आय अक्षाना २ देवीपद-
मान करना, रोसनी करना प्रकाश करना—अक्षुर्वा
मुक्षानि सहस्रोअक्षकम् वि० ११४२, अक्षकचक्रमक्ष-
लम्बितकक्षकमक्षकम् अक्षि अक्षोत्ती—अक्षि० १२,
अक्षि, नेत्री से चलना अक्षकस्थमान होना—अक्षकानि
अक्षकम् अक्षि० ११९८ (प्रेर०)—१. अक्षाना,
आय अक्षाना २ चमकाना, रोसनी करना ।

अक्षक (वि०) [अक्ष + अक्ष] १ दहकता हुआ, चमकता
हुआ २ अक्षकाना, दहनशील, —अक्षः १ आय—अक्षक
अक्षक अक्षि अक्षक अक्षक अक्षक अक्षक—अक्षि० ५१३९,
१२, वच० ११२९ २ तीन की संख्या, —अक्षक, अक्षक,
दहकना, चमकना । वच० अक्षकम् (पु०) सुयंकान्त
पक्षि ।

उत्तर, हाक - शीत तटस्थतायुक्त भूतं - २१११,
श्रीपुत्रविताली - ३१५५, निष्पत्तितालीय इव प्रवृत्त
— कुं० ३१६, उच्चारणात्पश्चात्तटीयतम वि०
५१८८ २ अक्षर के अन्तर्गत (विनये स्वभावतः कुछ
हाक है) - अक्षरकोषतटीपरिच्छेदक - शीत० १
नो कुल सति चान्य सनतते—भूपार० ७, इसी
प्रकार बचनतः, कटिपट, शीर्षकट, कुक्षतः, कण्ठतः
कलातः आदि, इव भवेत् । तब—अक्षरतः
शीतो की टक्कर से मिठी उठावना, तट वा इत्यादि
पर तिर से टक्कर मारना अभ्यस्तानि तटाधान
निमित्तराहुता गजा—कुं० २१५० स्व (वि०)
(आ०) किनारे पर विद्यमान कूलस्थित २ (आ०)
अलग अलग हुआ, अलग-अलग, उदासीन नया
निष्क्रिय—तटस्थ स्थानवांस्तु वदयति मोन व नञते
—मा० १११४, तटस्थ नैराश्यात् २२२० ३१३२,
मवा तटस्थस्य भुवद्वयानि नै० ३१५५, (अ०) तटस्थ
का अर्थ 'कूलस्थित' की है ।

तटाकः—अक्ष [तट + आक] तालाब (जो कम-गया अथ
अथवा पोषो के लिए पर्याप्त गहरा हो) १० २२२ ।
तटिनी [तटस्थस्या हि कोट्] नदी-कटा वर तटस्थ
नतटिनीशेषि वसन् भूतं ११२० ११३० १०३
तट् [तृ० ३३० नाशयत—, तट्] १० १०३
मारना, टकराना गाहना मारना निवारण-
प्रवृत्तिरुत्पत्तिम् २० २१५०, (नो) तटिना मात
तैवका गमा०, तृ० ३१६१, कुं० ५१२४ भूतं ११
५० २ पीटना मारना, वदयत्यय पीटना, अक्षरान्
पठुवाना—आकवेगप्रवर्धनं दशरथणि नाशयेत्
—आ० १११२२, व ताडयेन्प्रापि भूतं ४,
११९९, पादेन यस्याडयते—अमर ५२ ३ पट्टा करना
(होम आदि का) पीटना ताडयमाना भूरीष मद्रा०
अवाकयन् भूरीषाव—अग्नि० १३३ वेणी० ११०
४ बजाना, (बीना के तारों का) आतन करना
—आनुवितन्वीरिण ताडयमाना कुं० ११४० ५ वम
करा ६ बोलना ।

तटनः दे० तडाग ।

तडाकः [तट् + आक] तालाब, गहरा झोड़, अक्षात्प
—कुट्टकवलीयलोदितश्चनयुग्ममिव शरदि तडागम्
—गीत० ११, भूत० ४१०३, याज्ञ० १०३३० ।

तटस्थतः दे० 'तटाधान' [उच्चैः करिकराक्षेपे गवाधात्
विपुर्वाः अक्ष] ।

तटिन् (ली०) [ताडयति अक्षन् - तट् + इति] विपत्ती,
वन वनासे उठिता भुवद्वि- वि० ११७, देव० ७६,
तृ० ६१५५ । तब—कर्मः बाधक,—अज्ञा विपत्ती
की कर्म विपत्ति महर् हैं, ऐसा विपत्ती की सेवा ।
तटिन् (वि०) [तटिन् + कर्त्तुं, कर्त्तुम्] विपत्ती बाधा

अवरोहि विनाश तटिन्वापि लोक विपत्तः

११४, वि० ५१४, (पुं०) बाधक वि० ११२१ ।

तटिन्वा (वि०) [तटिन् + कर्त्तुं] विपत्ती से युक्त कुं०
५१२५ ।

तट् (आ० आ०) गृहने, तटिन्वा प्रहार करना ।

तटकः [तट् + क्तु] लज्जन पत्नी ।

तटुकः [तट् + उक्त] कुटने छड़ने और पिछोछने के
पश्चात् शेष अक्ष (विशेषतः बाधक) [स्व, बाध, तटुक
और अक्ष वह बाध प्रकार एक दूसरे से मिल
हैं अन्य अक्षम प्राप्त तटुक बाधमुद्धाने, निरनु
तटुक प्राप्त स्थिरमममुद्धानाम्]

तत (पुं० क० कुं०) [तत् + त] कैलाश हुआ विस्मयित
परा हुआ—(दे० तत) —तमी तमोर्निर्भयम् अनाम
कि० ११२४, ६१५० कि० ५१११ तत् तारा
शाला बाजा ।

ततम् (त०) [अक्ष- तत् + तमिन्] १ [इय स्थान पा
वर्त्ति] से, वही से —व च निभारिष हृदय विवर्त्तने
प ११० हृदयम् २० ३११ मा० २११० ५१० ६१३
१० ११२ वही तत्तर ३ पक्ष तत्त उमक बाध तत्
कोनपर्याप्तमात्रम् का० ११० बया ६६ कि०
११० भूतं २१२३, ३१५९ ४ इमं तत्त पञ्चन इमं
का० ५ तब, उस अवस्था में तो [यदि का सह
मात्रन्वी] यदि गृहीतमिदं तत् किम् का० ११०,
अमाश्वमध्व यदि मयने प्रमोक्त तत्त तमाप्ते तृ०
३१५६ ६ अक्षे परे उदये बाध, और जाने इसके
वतिरिक्त तत्त परतो निर्माणपरिष्यत् का० १११
७ उमम उमकी अपेक्षा, उसके अतिरिक्त —व लम्बा
बाध काय मयते भाषिकं तत्त —अ० ६१२३, १
३६ ८ कई बार 'तत्त' शब्द के लम्बा के रूप की
भाति प्रयुक्त होता है —यथा तस्मात्, तस्मा, ततोऽत्र
वापि दुष्यते सिद्धा० । अतः ततः (क) यही-यही
—यत्त उच्चस्तत सर्वे तत्त उच्चस्ततो जय —यहा०,
भूतं ७१८८ (क) यवोकि—इतिविष्ट, कतो क्त
—उत्तस्ततः यहाँ कहीं-वही यतो वत बद्धचरणाभि-
वर्त्तते तत्ततत्त, प्रेरितभावकोचना—अ० ११२३, ततः
किम् तो फिर क्या, इससे क्या लाभ, क्या काय-आप्ता
भिय सकलकामयुतास्तत्त किम्—भूतं ३१७३, ७४,
मा० ६१२, ततस्ततः (क) यही-वही, इस-अक्षर—ततो
विपत्तिनि भाष्यानि प्रादुर्गासन्तस्तत —यहा० (क)
'किं क्या' 'इसके बारे' 'अपेक्षा तो फिर' (मातृकोर्त्तं
प्रयुक्त) ततः प्रवृत्ति तत्त से लेकर ('यत्त प्रवृत्ति' का
वह सम्बन्धी) —युष्मा तत, प्रवृत्ति ये विपुलवर्धने
अमर ६८, भूतं ११८८ ।

ततस्तत् (वि०) [ततत् + तत्] वही से जाने वाला, वही
से चलने वाला कि० ११३७ ।

तसि (अर्थ० वि०) (मित्त्व बहुवचनोत्, कर्त० कर्म० नति) [तत् + तसि] इतने अधिक, उदा०—तसि पुष्पा तस्मिन्—आदि,—सिः (स्त्री०—तन् + त्सिन्) 1 अंगी, पक्षि, रेखा—विशेष क्रिया बराहृतिभिर्गन्नाञ्जति पञ्चमे - श० २१५, बलाहकततोः सि० ४१५४, ११५ 2. मण, दल, मनु० 3. पञ्चक-य ।

तत्त्वम् [तत् + त्विप्, तुक्, एषो० तन् + त्व] (कभी कभी 'तत्त्वम्' भी लिखा जाता है) 1 वास्तविक स्थिति या वस्तु 2. तथ्य—वय तत्त्वान्नेषान्मयुक्तर हनाम्ब खलु कुनी - श० ११२४ 3. यथार्थ या मूल प्रकृति - मन्वास्म्य महावाहो तत्त्वमिच्छामि वेदिनुम्—मग० १८११, ३१२८ मनु० ११३, ३१९६, ५१८२ 4 मानव आत्मा की वास्तविक प्रकृति ... 1. ... अंगी परमात्मा के समनुकूल विराट् सृष्टि या भौतिक समार 5 प्रथम या यथार्थ सिद्धान्त 6 मूलतत्त्व या प्रकृति 7 मन 8 सूर्य 9 वायु का भेद विशेष, विस्मय 10 एक प्रकार का मनुष्य । मग०—अभिधीतः अमन्दिश दण्डाराप या घोषणा, -अर्थः मन्वाही वास्तविकता यथार्थता वास्तविक प्रकृति, अ, -विद् (वि०) दार्शनिक, बहुज्ञान का वेत्ता, स्थानः विष्णु की तपोवन पुत्रा में विहित एक अग्न्यास (इसमें शरीर के विभिन्न अंगों पर गुरु अक्षर या अन्य चिन्ह बनाने के साथ कुछ प्रार्थनाएँ बोली जाती हैं)।

तत्त्वतः (अर्थ०) [तत्त्व + तत्] वस्तुतः, सम्बन्ध ठीक ठीक - तत्त्वत एतामुपलभ्यते - श० ११, मनु० ७१० ।

तत्त्वं (अर्थ०) [तत् + त्वन्] 1 उस स्थान पर, वहाँ, मामले, उस और 2 उस अवसर पर, उन परिस्थितियों में, तब, उस अवस्था में 3 उनके लिए, इसमें निरापय यन्त्रोपा, प्रजास्तव हेतुस्त्वद् बहुवचनम् रघु० ११६३ 4 प्राय 'तद्' के अधि० के रूप के अर्थ में प्रयुक्त—मनु० २१११२, २१६० ६१८६, याज्ञ० ११२६३, तथापि 'तव भी' 'तो भी' (यद्यपि का सह संबंधी) तब तत्त्वं 'बहुत में स्थानों पर या विभिन्न विषयों में' 'यहाँ-वहाँ' 'प्रत्येक स्थान पर' अथवा विविधानुसारं तत्त्वं तत्त्वं विपरिवर्त मनु० ७१८१ । तत्त्व—अवस्थ (वि०) (स्त्री०—सी) श्रीमान्, महोदय, भट्टेय, आदरणीय, महानभाव, (सम्मानपूर्ण उपाधि को नाटकों में उन व्यक्तियों को दी जाती है जो वक्ता के समीप उपस्थित न हों) - पूर्य तत्त्ववानवधारण मयवामपि; आदिष्टोऽस्मि तत्त्ववता काश्यपेन श० ४, तत्त्ववान् काश्यपः श० १, आदि, त्व (वि०) उस स्थान पर कहा हुआ या वर्तमान, उस स्थान से संबंध ।

तत्त्वत्त (वि०) [तत् + त्वत्] वहाँ उत्पन्न या जन्मा हुआ, उस स्थान से संबंध ।

तथा (अर्थ०) [तद् प्रकारे वात्तु विचक्षितत्वात्] 1 वैसे, इस प्रकार, उस रीति से—तथा मां वक्ष्यामि—श० ५, भूतस्तथा करोति—बिक्रम० १ 2. और भी, इस प्रकार भी, भी—अनागत विधाता व प्रत्युत्पन्नमति-स्वभा—रघु० ११३१५, रघु० ३१२१ 3. तब, ठीक इसी प्रकार, सम्बन्ध वंसा ही—यथाय राजन्यकुमाः तत्तथा—रघु० ३१४८, मनु० ११४२ 4. (अनुरोध के रूप में) ऐसा निश्चित जैसा कि ('यथा' को पहले रम कर) दे० यथा ('यथा' के सहसंबंधी के रूप में 'तथा' के कुछ अर्थों के लिए 'यथा' के नी० दे०) तथापि (प्राय 'यद्यपि' का महामन्त्री) 'तो भी' 'तब भी' फिर भी 'निम पर भी' प्रथित दुष्यन्तस्य चरित तथा-रीति न लभ्यते श० ५, वर महात्माभिन्नते पिपायमा तथापि नान्यस्य करोम्युपायनाम्—वात० २१६, वयु-प्रकर्षादवयवदुष्ट रक्षुस्तथापि नीरैर्विनयाददुषयत—रघु० ३१२६, ६२, तथैति 'महामर्षि', 'प्रतिज्ञा' को प्रकट करना है, तथैति संशयिष भर्तृशत्रुमादाय मुनी मरुत प्रतप्से - कु० ३१०२, रघु० ११९२, ३१६३, तथैति निष्क. न (नाटकों में) तथैव 'उसी प्रकार' 'ठीक उसी भाँति' तथैव च 'उसी ढंग में' तथाच 'और इसी प्रकार', 'इसी ढंग में', 'इसी प्रकार' कहा गया है कि 'तथाहि' 'इसी लिए' 'उदाहरणार्थ', इसी कारण (यह कहा गया है कि) न वेदा विद्वेषे नून महाभुतसमाधिना, तथाहि सर्वे तस्यानन् परार्थकला गुणा - रघु० ११८५, ११३१ 1. मग०—कुल (वि०) इस प्रकार किया ... -गत (वि०) 1 ऐसी स्थिति या वस्तु में होने वाला तत्त्वान्ताया परिहास-पूर्वम् रघु० ६१८२ 2 इस गुण का, (तः) 1. बुद्ध - बाले विन बाध्यमुदरं तत्त्वतत्त्वान्स्वेष जन सुवेना, सि० २०८८ 2. जिन, वृष (वि०) 1 ऐसे गुणों से युक्त या संपन्न 2. ऐसी अवस्था को प्राप्त, ऐसी अवस्था में—तथाभूना दृष्ट्वा नृपसर्दस पाञ्चालनन-याम् वेणी० ११११ - राजा बुद्ध का विशेषण, रूप, -रुचिन् (वि०) इस आकार प्रकार का, इस प्रकार दिखाई देने वाला,—विष (वि०) इस प्रकार का, ऐसे गुणों का, इस स्वभाव का—तथाविस्तावसेषमस्तु स—कु० ५१८२, रघु० ३१४,—विषम् (अर्थ०) 1 इस प्रकार, इस रीति में 2. इसी भाँति, समान रूप से ।

तथातत्त्वम् [तथा + त्व] 1 ऐसी अवस्था, ऐसा होना 2 वस्तु स्थिति या मूल बात, तथापि ।

तथ्य (वि०) [तथा + यत्] यथार्थ, वास्तविक, असली—प्रियमपि तथ्यमाह प्रियवरा—श० १,—अथ्य मन्वाही, वास्तविकता सा तथ्यमेवाभिहता भवेन कु० ३१६३, मनु० ८१२७६ ।

तत् (सर्व० वि०) [कर्त्त० ए० य०—स (पु०), सा (स्त्री०), तत् (नपु०)] 1 बहु, अविद्यमान वस्तु का उल्लेख (तद्विधि परीक्षे विधानीयात्) 2 बहु (प्रायः 'यद्' का सहसम्बन्धी)—यस्य बुद्धिर्बलं तस्य—पृ० १३ बहु बधति प्रख्यात—सा रम्या नगरी महान्तं नृपति सामन्तचक्रं च तत्—पृ० ३१३७ कु० ५१७१ 4 बहु (किसी वेशे हुए या अनुमृताय का उल्लेख) उत्कम्पनी मयपरिस्फलिताशुक्रान्ता ते लोचने प्रतिविश विदुरे क्षिपन्ती—काव्य० ७, भाषि० २१५ 5 बहो, समरूप, बहु, बिल्कुल बहो, (प्रायः 'एव' के साथ)—तानीन्दिषाणि सकलानि तदेव नाम—पृ० २१६०, कमी कमी 'उद्' के रूप उत्तम पुरुष और मध्यम पुरुष के सर्वनामों के साथ प्रयुक्त होते हैं, साथ ही बल देने के लिए निर्देशक तथा सम्बन्धबोधक सर्वनामों के साथ भी (इसका अनुवाद प्रायः 'इसलिए' 'तो' करते हैं)—सोहमिण्याविशुद्धात्मा—रघु० ११८८, (मैं बहो व्यक्तित्व, जत मैं, मैं अमूक व्यक्तित्व), स त्वं निबन्धं विहाय कञ्चाम् २१४०, 'अतः तुम्हें बापिस आ जाना चाहिए', जब तद् की बापुति की बाप तो इसका अर्थ होता है "कई" विग्रह २—तेषु तेषु स्थानेषु—का० ३६९, भग० ७१२०, मा० ११३१, तैत्ति० त्वं का कर्म० रूप, क्रिया विद्येय के बल के साथ 'इसलिए' 'इस कारण' 'इस विषय में' 'इसी कारण' अर्थात् को प्रकट करता है,—तैत्ति० हिं बहि ऐसा है तो फिर (अर्थ०) 1 बहो, उधर 2 तब, उस अवस्था में उस समय 3 इसी कारण, इसीलिए, फलस्वरूप—तदेहि विमर्शमां भूमिभूतारवः—उत्तर० ५, मेघ० ७११०, रघु० ३१४६ 4 तब ('यदि' का सहसम्बन्धी) नचापि—बहि महत्कृतुहल तत्कथयामि—का० १३९, भग० ११५५ 1 सज्ज—अवतारम् (अर्थ०) उसके पश्चात् तुरन्त, ठीक फिर,—अनु (अर्थ०) उसके पश्चात्, बाद में—सन्धेय मे तदनु जलव श्रोत्र्यमि श्रोत्रेयम् मेघ० १३, रघु० १६१८७, मा० ११२९,—अन्तः (वि०) उन्हीं में नष्ट होने वाला, इस प्रकार समाप्त होने वाला—अर्थ—अर्थीय (वि०) 1 उसके निमित्त अभिप्रेत 2 उस अर्थ से युक्त,—अर्थ (वि०) उस योग्यता से युक्त,—अर्थि (अर्थ०) 1 बहो तक, उस समय तक, तब तक तदर्थं काली पुराणशास्त्रमृनि लतापाविविचारयो विवेक—भाषि० २११४ 2 उस समय से लेकर, तब से—स्वामी दीर्घसन्धिविधे मुखे पाण्डिता—भाषि० २१६९,—एकचित्त (वि०) उस पर ही मन को स्थिर करने वाला—काव्य० विद्यमान क्षण, वर्तमान समय, 'जी (वि०) समग्रित्त, प्रत्युत्पन्नमिति—काव्यम् (अर्थ०) अविराम, तुरन्त, क्षण 1 इस क्षण, फलहाल 2 विद्यमान या वर्तमान समय रघु०

११५१, अचम्, अचम् (अर्थ०) तुरन्त, प्रत्युत्पन्न, फौरन—रघु० ३११४, वि० ११५, याज्ञ० २११४, अमर ८३, क्रिया (वि०) बिना मजबूती के काम करने वाला—गत (वि०) उस ओर गया हुआ या निर्देशित, तुला हुआ, उसका अवन, तत्सम्बन्धी, मुखः एक अलंकार (अर्थ०) स्मृत्युज्य मुख योगादरपुञ्जल-गुणस्य यत्, वस्तु तद्गुणतामेति मन्थते स तु तद्वृण—काव्य० १०, दे० बन्ना० ५११४१, अ (वि०) व्यवधानधुस्य, तात्कालिक,—अः जानने वाला, प्रतिभा-शाली, बुद्धिमान्, दार्शनिक, तृतीय (वि०) उसी कार्य को तीसरी बार करने वाला,—अन (वि०) कज्जुम, रश्मि, चर (वि०) 1 उसका अनुसरण करने वाला पश्चवर्ती चरिया 2 उसी को सर्वोत्तम पदार्थ मानने वाला बिल्कुल तुला हुआ नितान्त सत्यम्, उत्सुकतापूर्वक व्यस्त (प्रायः मयास में प्रयोग) सम्राट् समाराजन्तत्परांभून् रघु० २१५, ११६६ मेघ० १०, याज्ञ० ११८३ मनु० ३१२६२, परावच (वि०) पूर्णतः सत्य या आमतः—पुष्प 1 मूल पुरुष, परमात्मा 2 एक समास का नाम जिसमें प्रथम पद प्रधान होता है या जिसका उत्तरपद पूर्वपद द्वारा परिभाषित या विशिष्ट कर दिया जाता है, शब्द की मूल भावना भी स्थिर रहती है यथा, तत्पुरुष, नन्तुप कर्मधारय येनाहं म्या बहुवीहि—उद्भट्ट, कृष्ण (वि०) पहली बार बटने वाला, या होने वाला,—अकारि तत्पूर्वनिबद्धया तथा कु० ५११०, ७३३०, रघु० ७१६२, १४१३८ 2 पूर्व का, पहला,—अवच (वि०) पहली बार ही उस कार्य को करने वाला, एक एक प्रकार का भाग, भाग उसके अनुकूल, भाग्यम् 1 केवल वह मित्रं मायुनी, आयन्तं तुच्छ माया युक्त 2 (दशम०) सूक्ष्म तथा मूलतत्त्व (उच्य०) शब्द, रस, स्पर्श, रस और गन्ध—वाच्य (वि०) उसी को संकेतित या प्रकट करने वाला, विद् (वि०) 1 उसको जानने वाला 2 सचाई को जानने वाला,—विच (वि०) उस प्रकार का, रघु० २१२२, कु० ५१७३, मनु० २१११२,—हित (वि०) उसके लिए अच्छा (न) एक प्रत्यय जो प्रातिपदिक लक्ष्यों के आगे व्युत्पन्न शब्द बनाने के लिए लगाया जाता है । तथा (अर्थ०) [तस्मिन् काले तद्—रा] 1 तब, उस समय 2 फिर, उस मामले में (यथा का सहसम्बन्धी) भग० २१५२, ५३, मेघ० ११५२, ५४५९, बहा बहा तथा जब कभी तथा प्रसूति तब मे, उस समय में लेकर कु० ११५३ 1 मम० मुख (वि०) बार व्य उपकान या शुक किया हुआ, (अन्) आरम्भ । तद्वत्तम् । तथा + त्वं । मीजुदा समय, वर्तमान काल । तदानीं (अर्थ०) [तद् + तानीम्] तब, उस समय ।

तपनीयम् (वि०) [तपनीय + तपुन्, तुट्] उस समय से सबब रखने वाला, उस समय का तपकाशीन, -एयो- प्रिय कार्यबहादायोन्मिक्तस्तपनीयमप्य संयुतः— उत्तर० १ ।

तवीय (वि०) [त्व् + उ] उससे संबंध रखने वाला, उसका, उसकी, उनके, उनकी—रघु० १८१, २१२, १८, २५ ।

तद्वत् (वि०) [तत् + मत्पु] उससे युक्त, उसको रखने वाला, जैसा कि 'तद्वापरीहः' में—काव्य० २. (मध्य०) 1. उसके समान, उस रीति से 2. समान रूप से, समान रीति से, इसकिए साथ ही ।

तनु (वि०) उभ०—तनोति, तनुते, तन—क० वा०—तनुते, तनुते, तनन्त्ये—तितनति, तितनति, तितनि-ति 1. फैलाना, फैलाना करना, तना करना, तानना—वाङ्मो. हकारयोस्तयो—अमर० 2. फैलाना, बिछाना, पसारना—भट्टि० २३३०, १०३२, १५११ 3. हकना, बरना—उ तमी तमोनिरमिमम् उताम्—वि० ११२३, कि० ११११ 4. उत्पन्न करना, पैदा करना, रूप देना, देना, बेंट देना, प्रदान करना, त्वयि विमुने भवि सर्पवि सुवानिचिरपि तनुते तनुवाहम्—मोत० ४, पितुर्ममं तेन तवान सोम्यकः—रघु० ११२५, ७७७, यो हृद्वेन वसविषु तनुते मनीषा—आदि० ११५५, १० 5. अनुष्ठान करना, पुरा करना, तपन करना—(ब्रह्मिक)—इति वितीतो भवति कवाचिको महाकन्दो बह्वीनकाखनः सभास्कुविषमायुः कवे उवान सोपान परपराविष—रघु० ११६९, मनु० ४१२०५ 6. रचना, करना, (ब्रह्मिक) विज्ञाना, ब्रह्मा—आम्नां वाला तनोम्यह, वा—तनुते टीकाम् 7. फैलाना, लूकाना (बन्धु भावि का) 8. काटना, लुनना 9. प्रचार करना, प्रचारित होना 10. बाह्य रचना, टिका रचना । उभ०—अव—, 1. हकना, फैलाना 2. उतरना आ—, विस्तृत करना, बिछाना, हकना, ऊपर फैलाना—कि० १६१५ 2 फैलाना, पसारना 3. उत्पन्न करना, पैदा करना, लूकन करना, बनाना—कि० ११८८ 4. (बन्धु या बन्धु की होरी) तानना—भीर्त्तु बन्धुपि चातता—रघु० ११९९, ११४५५, उन्—, फैलाना व्र 1. फैलाना, पसारना अतस्तत्वं विनयैर्वादि कथयो विष्णु प्रतन्यति न—अनु० ११२४ 2. हकना 3. उत्पन्न करना, पैदा करना, लूकन करना विज्ञाना करना, प्रदर्शन करना, प्रस्तुत करना—तद्वृत्ति-कृत्य इतिविर्वाच्यस्य प्रतायते—वि० २१३ 5. अनु-ष्ठान करना (ब्रह्मिक) का, वि०—1 फैलाना, बिछाना—एकस्तिविनतयिष्णु मृच्छ० ११२ 2. हकना, बरना—प्रत्येदविष्णुविनत वदन त्रिपादा भीर० ९, यो वितत्य विनतः क्षुम्—नेच० ५८ 3 रूप देना, बनाना केवीक्यादिक्यादिक्रिस्तस्यां तोरवजम्—रघु० १४१

4. (बन्धु का) तानना—कनुचित्तव किरतीः बरान्—उत्तर० ११२, भट्टि० ३१४७ 5. उत्पन्न करना, पैदा करना, लूकन करना, देना, प्रदान करना 6. (बंध का) रचना या विज्ञाना—विपदपर्वप्रबोटी नायवीतो वितन्यते 7. करना, अनुष्ठान करना (ब्रह्मिक वा किसी संस्कार का) द्रु० २१४५ 8. विज्ञाना करना, प्रस्तुत करना, अनु—, बाधु करना, ii (आ० ४२०—बुरा० उभ०—तनति, तन्यति—हे) 1. बरोडा करना, विस्वाध करना, विस्वाध रचना 2. लक्ष्यता करना, हृद्य बंटाना, मरव करना 3. पीछित करना, रोगघस्त करना 4. हानिकुल होना ।

तन्यः [तनोति विस्तारयति कुम्भ—तन् + कम्प] 1. पुच 2. लम्बा—कम्पका वा पुची, चिरि, कम्पि—आदि ।

तन्मिन् (पु०) [तन् + इमिन्] पतकापन, कुम्भारता, कुम्भता ।

तनु (वि०) (स्त्री० नु, म्नी) [तन् + उ] 1. पतका, पुचका, पुच 2. कुम्भार, नाचक, नुड (ब्रह्मिक), सोम्य के चित्तम्यकम्—रघु० ११२२, तु० तन्यङ्गी 3. बटिया कोक (कवाचिक) चतु० ११७ 4. छोटा, बोझा, लम्हा, कच, कुच, बीजित—तनुवाचिबोधि १९—रघु० ११९, ११२, तनुवाचो सुवहः—वि० २१९१, बोझा देने वाला 5. पुच्छ, बहुत्वचि, छोटा—अमर २७ 6. (वही की भाँति) उभय, छोटा, (स्त्री०) 1. करीर, अक्षति 2. (बाहुरी) कन, बड़टी-करण—अप्यवाचि—इत्यस्तपुनिरित्यु वस्तुवाचिवा-चिरीच. उ० १११ अक्षति १११, नेच० १९ 3 प्रकृति, किसी वस्तु का कः भीर चरित 4. बाज । उभ०—अक्ष (वि०) सुकुमार बङ्गु वाचा, कोनवाची (—वी) कोनवाचिनी स्त्री—कृत् रोक्कृत्, कृत् कच, रघु० १५११, १२१८९,—कः पुच,—का पुची,—कच (वि०) 1. अपने जीवन की बोधित में हाकने हाक 2. अपने व्यक्तित्व की छोड़ने वाला, मरने वाला,—त्यक्त (वि०) बोझा व्यव करने वाला, बचा देने वाला, बटि, कम्प—आपन् कच, अचः पुच । व पुची—अन्य—नाक—कृत् (पु०) सरोरधारो जो बीचवारी वस्तु, विशेष कर मनुष्य—कम्प मित 7. मृतो तनुविस्ततः किम् मर्त्ये ३१३३,—अप्य (वि०) पतकी कवर, कवर वाला,—रतः पसीना,—हृत्,—हृत् करीर का डाल,—वारम् कच, अचः पुची,—अन्य—रिक्की छोटी स्त्री, वा एक वर्ष का कड़का,—हृत्, पसीना,—हृत्ः पूरा, लम्बा ।

तनुक (वि०) [तन् + उचक्] फैला हुआ विस्तारित ।

तनुक् (पुं०) [तन् + उचि] करीर ।

तनु (स्त्री०) [तन् + क] करीर । उभ०—कनुक,—कः पुच,—कनुका— का पुची,—कम्प वी,—कम्प (पु०)

बाध—तन्मपाद्भववितानमाधिवि—वि० ११९२, अच-
कृतस्वापि तन्मपादौ बाध विना याति कथाविदेव
—हि० २१६७, तन्म १ तर पर उये हुए बाध
(पु० जी) २ पत्नी के पक्ष बाध (ह) पुत्र ।
जतिः (स्त्री०) [तन् + क्तिन्] १ रस्ती डोर, पुत्र
२ पति, मेरी । सम०—बाध १ गोरक्षक २ विराट
के घर रहते समय का सहदेव का नाम ।
तन्मुः [तन् + मुन्] १ बागा, रस्ती मार डोर, पुत्र—विना
कृतवितान्—मा० ५११० मेघ० ७० २ मकड़ी का
बाधा—रघु० १६१२० ३ रेखा—विततन्मुपुण्य
कारितम्—पु० ४१२९ ४ तन्मान बच्चा, जन्तु
५ मरमच्छ ६ परमारमा । सम० काष्ठम् जुलाहों
का एक बीछार बिहते ताना साक किया जाता है
—कीटः रेखम का बीछा,—नायः बड़ा मरमच्छ,
—निर्वातः ताड़ का बूझ,—बाध मकड़ी—मः १ तरखो
२ बच्चा,—बाधम् ऐता बाजा बिहते तार कते हुए
हों,—बान्धु बुधना,—बाध १ जुलाहा २ करावा
३ बुवाई—निबद्धा केले का बूझ,—साका जुलाहे का
कारखाना,—कलत्त (वि०) बुना हुआ, सिंका हुआ
—बारः बुधारी का वेष्ट ।
तन्मुकः [तन्मु + क्] सरखों के हाने ।
तन्मुनः—मः [तन् + तुनन्, पले नि० कलम्] बड़ियाल ।
तन्मुन्य—कम् [तन्मु + र, कम् वा] मृषाल, कमल की
माख ।
तन्मु (पु०) उभ०—तन्मपति—ने नमित्त) १ हकूमत
करना, नियन्त्रण रखना, प्रशासन करना—प्रजा प्रजा
स्वा इव तन्मवित्वा—स० ५१५ २ (आ०) पालन
पोषण करना, निर्वाह करना ।
तन्म्वु [तन् + वच्] १ करावा २ बागा ३ ताना ४ बजान
५ अधिष्ठित बस परम्परा ६ कर्मकाण्ड पद्धति, कप-
रेखा, संस्कार—कर्मना मृगपञ्चावतन्मन्—कात्या०
७ मुख्य विषय ८ मुख्य सिद्धान्त, विषय, बार शास्त्र
—वितमपतिवितन्मविचारम्—नीत० २ ९ पराधीनता,
पराधीनता—बैशा कि 'वितन्म' 'परतन्म', ईवनन्
कुचन्—इच० ५ १० वैज्ञानिक कृति ११ अन्वय
सूचकान (फिली अन्वयिक के) —तन्वी पञ्चमिरेतन्म-
कार शास्त्रम्—यच० १ १२ तन्म-संहिता (वित्तमें
देवताओं की पूजा के लिए अथवा अतिमानव शक्ति
प्राप्त करने के लिए बाहु-टोना या मन्त्रतन्म का वर्णन
है) १३ एक से अधिक कार्यों का कारण १४ जातु-
टोना १५ मुखोपचार, बच्चा, तावीज १६ हवाई,
कीर्तन १७ क्लेश, क्षय १८ वेष्टम्बा १९ कार्य
करने की बड़ी रीति २० रात्रिकीय परिजन, अनुचर-
कर्म, मूलकर्म २१ राज्य, देश, प्रभुता २२ सरकार,
हकूमत, प्रशासन—कोकतन्माधिकार—स० ५ २३ देना

२४ डेर, जमाय २५ घर २६ सजावट २७ बीकट
२८ प्रसन्नता । सम०—काष्ठम्—तन्मुकाष्ठ बाध,
—बाधम् १ बुवाई २ करावा,—बाध १ मकड़ी
२ जुलाहा ।
तन्मकः [तन् + कन्] नई वेष्टम्बा (कोरा कपड़ा) ।
तन्मकम् [तन् + क् + क्] शास्त्रि बनाये रखना अनुशासन,
नियन्त्रण, प्रशासन रखना ।
तन्मि,—वी (स्त्री०) [तन् + इ, तन्मि—वीच्] १ डोरी
रस्ती—मन्० ४१८ २ बन्धु की डोरी ३ बीचा का
तार तन्मीमात्र नयनसहित सारविस्वा कर्त्तव्य
मेघ० ८९ ४ स्नायु तार ५ पूछ ।
तन्मा [तन् + चञ् + टाप्] १ आलस्य बकाबट, बकान
कानि २ ऊँच वैधिय तन्मालस्यविचर्चनय वाज०
११५८, महावी० ७४४२ हि० ११३४ ।
तन्माम् (वि०) तन्मा + आमन्] १ बका हुआ परि-
चात २ निद्राल, आलसी ।
तन्मि,—वी (स्त्री०) [तन् + क्मि तन्मि + वीच्] निद्रा
मुता ऊँच ।
तन्मच (वि०) (स्त्री० वी) [तत् + मचद्] १ उत्कठा
बना हुआ २ तस्वीन मा० १४४१, स० ११२१
३ तन्मच, तथेकम्प ।
तन्मी [तन् + मीच्] मुकुमार या कोमलाक्षी स्त्री इयम-
धिकमनोका कलमेनापि तन्मी स० ११२० तथ तन्मि
कुचावेती निवतं चक्रवर्तिनी उद्धृत ।
तम् (आ० पर० (आ० बिरल) तपति तपन्) (अक०
प्रयोग) (क) बमकना, (आग वा सूर्य की भाँति)
प्रज्वलित होना तमस्तपति बमोवा कचमाधिर्धिष्यति
—स० ५११४, रघु० ५११३ उत्तर० १११४, भग०
१११९ (ख) गर्म होना, उष्ण होना, गर्मी फैलना
(ग) पीडा सहन करना तपति न मा किलसमयव
मेघ पीत० ७ (घ) शरीर की कुच करना, तपस्या
करना अर्धमततनुतापं तप्या तपासि मनीरच
उत्तर० ११२३ २ (तक० प्रयोग) (क) गर्म करना,
उष्ण करना, तपाना मटि० ११२ भग० १११९
(ख) बकाना, दग्ध करना, बका कर समाप्त कर देना
—तपति तनुमापि मदनस्त्वामिह मां पुनर्देह्येव—
स० ११७, अङ्गीरसवृत्तम्—११७, (ग) पीडा
मुकसान पहुँचाना, बराब करना—यास्वन्मुतस्तप्यति
मां समन्धु—मटि० ११२३, वगु० ७४६ (घ) पीडा
देना, दुःख देना—कर्मबा—इत्यष्टे, (कुछ कोन इसे
दिवा० की बात मानते हैं) १ गर्म किया जाना, पीडा
सहन करना २ जोर तपस्या करना, (आग 'तपम्' के
साथ) डेर—तापयति—ते, तापित, १ गर्म करना,
तापना, नवन तापितपापिताधिकम्—सि० २०७५,
न हि तापयितुं कथं सागरान्मन्वुचोक्तम्—हि० ११८९,

2. बचना देना, पीड़ित करना, लताना—भूख तापित कन्वर्षण गीत० ११, बट्टि० ८।१३, अन्तु, 1 पक्षा ताप करना, अफसोस करना, झिन्ना होना, 2 पछताना अन्तु- 1 तापना, गम करना मुसमाना, (सोना आदि) पिचलाना (जिस समय अक० के रूप में बम करना अवर्ष प्रकट करने के लिए यह धानु प्रयुक्त की जाती है या जब इसका कर्म स्वयं शरीर का हो कोई अंग होता है तो उस समय भी मनेपव म प्रयुक्त होता है) उन्वर्षण सुवर्ण सुवर्णकार महा० पान्तु उलपान आतर-भट्टि० ८।१ शि० २०।४० उलपान पार्ण। महा० 2 आ पी जाना यन्त्रणा देना पीड़ित करना तपना शि० १५७ उच- 1 गम करना तपना 2 पीड़ित करना दुःख देना शि० १।६५ निम्न, 1 गर्म करना 2 पीड़ित करना 3 परिष्कार करना परि, 1 गम करना अलाना नन्व करना 2 प्रशस्ति करना गम लपारा पश्चात्, पछताना वेद प्रकट करना शि- 1 उचकना उचकूबक को भाति आ म । पीविनर २५५ अन्तु १।१४ 2 तपना गम करना सन् 1 गम करना इतरा - मन्त्रावधायिका भट्टि० ३।३ सन्तपायसि मन्त्रि तम पयसा नाम पित शयन अन्तु १।५७ 2 दुःखा होना पीडा महन करना बिप्र होना सन्तपना त्वमसि तप्यम मध० ७ दुःखियों का दिवापि मयि निपटान मनभा १ गुरु मम महा० अन्तु ० ८७३ रखताना ।

तप (वि०) [तप + अच्] 1 अलात वाला तपान वाला नया कर समाप्त करने वाला 2 पीडाकर कष्टकर दुःख, ३ 1 गर्मी आग आँध 2 सूर्य 3 शीघ्र अन्तु शि० १।६६ 4 तपस्या धार्मिक कड़ी साधना। सम० अक्षय, अन्त शीघ्र अन्तु का अन्त और वर्षा अन्तु का आरम्भ गंधर्वोन्वला तात्पर्य पुनरायेन द्वि युज्यते नद कु० ६।४४ ५।२३ ।

तपती [तप + णत् + ङीप्] तापती नदी

तपन्तु [तप + ल्युट] 1 सूर्य प्रतापातपनी यथा रच० ४।१२, ललाट-तप-तपति तपन उत्तर० ६ मा० १ 2 शीघ्र अन्तु 3 सूचक-तपाना 4 एक नरक का नाम 5 निज का विशेषण 6 मशर का पीछा। सम० -आश्रयः, तपस्य पय कण और सुषोष क विशेषण - आश्रयः, तपसा, यमुना और यादावरी का विशेषण, इच्छन् तावा, उचक-मन्त्रि सूर्यकान्त पार्ण, छत्र सूर्यमुखी फूल ।

तपनी [तपन + ङीप्] गोदावरी नदी या ताप्ती नदी ।

तपनीकम् [तप + अनीप्] माना विशेषण बहु या आग में तपाया जा चुका है -तपनीपाद्योक्त भास्वि० ३,

तपनीयोपानधुगमयाय प्रसादीकरोतु-महावी० ४, अलस्युगन्ती तपनीयपीठम् -रघु० १८।४१ ।

तपस् [तपु] [तप + अमुन्] 1 ताप गर्मी आग 2 पीडा कष्ट 3 तपश्चर्या धार्मिक कड़ी साधना, आश्र- नियन्त्रण -तप किंहेद तदवाप्तिमाधनम्-कु० १।६४ 4 आत्मबल और आत्मोत्साह के अभ्यास से सम्बद्ध ध्यान 5 नैतिक गुण सूर्य 6 किसी विशेष वन का विशेष वनव्यपासन 7 मान लक्ष्य म से एक लोक अष्टान्त्र अन्तु ३ नगर का नगर (-पु०) माघ का महीना-नरसि मन्दिर नरसिधामान्-शि० ६।६३ (पु० नपु० 1 शि० अन्तु 2 हेमन्त 3 शीघ्र अन्तु) मन्० अनुभाष धार्मिक तपश्चर्या का प्रभाव

अष्ट दहशत दश क्लेश धार्मिक कड़ी साधना का कारण धर्मम, चर्या इतरा साधना तप इन्द्र का दिवापन बल माधना का धना तपस्वी अन्त रम्यान्तपाधना शि० २० १।१३ सम- प्रयान्तात्तपनेपु २६ शि० १।२३ रघु० १।६१ मन्० १।०४५ विधि प्रमदान व्यक्ति म यमो-रघु० १५५-प्रभाव, -बलम् कड़ी साधनाओं के फलस्वरूप प्राप्त शक्ति नप द्वारा प्राप्त सामर्थ्य या प्रवीणता राशि मन्त्राओं लोक जनलक्ष्य के ऊपर का लक्ष्य बलम् नपार्ण पवित्र वन जहाँ मन्त्रास कठोर साधना मन्त्रि हो कृत तपोपवन न्यावर्तनीय प्रेक्ष ३० १ ग्यु० १।१० २।१८ ३।८, बृह (वि०) जो बहुत रं कर चुका हो, विशेष मन्त्रि से प्रेरित धन । बन्धी अत्यन्त कठोर साधना -स्वस्ती 1 धार्मिक २ साधना की भूमि 2 बनाय ।

तपस [तप + असच्] 1 सूर्य 2 चन्द्रमा 3 पत्नी । तपस्य [तपस यत्] 1 फाल्गुन का महीना 2 अर्जुन का विशेषण स्वा धार्मिक कड़ी साधना तपश्चरम । तपस्वति (ना० वा० पर०) तपस्या करना सुरासुरपुत्र मोक्ष सन्नीकम्पनय्यति स० ७।९ १२ रघु० १३।४१ १५।४९ भट्टि० १।२१ ।

तपस्विन् [वि०] [तपम् + विन्] 1 तपस्वी भक्तिविध 2 शरीर दमनीय असहाय हीन सा तपस्विनी निबुना भक्तु श० ४ मा० ३ नै० १।१३५ (पु०) तप्यासी तपस्विताया-यमवेक्षणीया-रघु० १५।६७ । सम० वषम् सूयमुखी फूल ।

तप्त (भु० + कृ०) [तप + क्त] 1 गर्म किया हुआ, जला हुआ 2 रक्ताण्व गर्म 3 पिचला हुआ, गला हुआ 4 हुली, पीड़ित, कष्टवस्त 5 (तप का) किया गया अनुष्ठान । सम० काञ्चनम् आग में तपाया हुआ सोना, -कृष्णम् एक प्रकार की कठोरसाधना, -कृष्णम् साऊ की हुई थोड़ी ।

तम् (विधा) ० पर०—ताम्यति, ताम्य १. वयं वृद्धा, वृद्ध-
स्वाहा होना २. परिष्ठात होना, वक जाना—कमित-
क्षिरीयपुष्पमृगनैरपि ताम्यति क्य-मा० ५।११ ३. (वयं
वा करीरं) पुष्पी होना, वीर्यं वा पीक्षित होना,
पीक्षा देना, कर्म करना—अपिषति युष्-
क्यम्यपुष्पम् ताम्यति—नीच ५. माडोरकटा कमित-
क्षिरीरपुष्पमृगनैरपि ताम्यति—मा० १।१५ १।१३, वयं
७, क्य-०, उतावला होना—वृद्ध किमेवमुताम्यति
४० १।

तन्मय [तन् + य] १. अन्तर्धार २. धर की गीत, -यः १. राहु
का विशेषण २. तन्मय कृत ।

तन्मू (न०) [सू० + मन्मू] अन्धकार—किं सामान्यिष्णु-
वचनस्तमसा विवेका त केतुहसिकरिपो बुधिर नाक-
रिक्त्—सं० ७१४, विक्रम० ११७, वेप० १७ २ नरक
का अन्धकार—मन्० ४१२४ ३ सामाजिक अन्धेरा,
धन, जाति—युनिमुताग्रवचमस्मितीरोचिता मम च
मुक्तामिषं तमसा मन—सं० ९१६ ४ (सां० ६० में)
अन्धकार या अज्ञान, प्रकृति के तन्मू १ मूर्ति में से
एक (इसरे दो हैं—राज्य, रजस्व)—सं० ९१६१, मन्०
१२१२४ ५ रज, लोक ६ पाप (पुं० न०) १ राहु
का विशेषण । सम०—अपहृ (वि०) अज्ञान या
अन्धकार को हूर करने वाला, ज्ञान देने वाला,
प्रकाशित करने वाला—कि० ५१२२, (हृ०) १ सूर्य
२ चन्द्रमा ३ ज्ञान,—काण्यः—अन्ध बौर अन्धकार
—बुधः ६० 'तमस्' अपरा (४),—अन्ः १ सूर्य २ चौर
३ ज्ञान ४ विष्णु ५ शिव ६ ज्ञान ७ सुदेव
—उद्योतिस्त् (पुं०) युगन्,—तस्तिः व्यापक अन्धकार,
—मू (पुं०) १ उज्ज्वल शरीर २ सूर्य ३ चौर
४ ज्ञान ५ लैप्य, प्रकाश,— बुधः १ सूर्य २ चन्द्रमा
—निदृ,—मणि. युगन्,—बिकार रोग, बीमारी—हृन्,
हूर (वि०) अन्धकार को हूर करने वाला (पुं०)
१. सूर्य २ चन्द्रमा ।

सकलः [तन् + कलन्] १. लक्षकार २. कुडी ।

तपस्विनी, तपः । तपस् + विनि + ङीप्, तप + टाप् । रातः ।

समाप्तः [सम् + कालम्] । एक बूझ का नाम (इसकी
छात्र काली होती है) —तकनमयाकीनीलबहुलोत्पद-
म्युबरा—भा० १।१९, रघु० १३।१५, ४९, गीत० ११
2 मल्लक पर चम्पक का सांघ्रायिक तिलक (चिह्न)
3, तलवार, बल्ल । मम० पञ्चम १ मल्लक पर
सांघ्रायिक चिह्न 2. तमाक का पत्ता ।

सन्धिः—सौ (स्त्री) [सन् + धृन्, सन्धि + क्रीड्] १ रास
—विशेषकर, काको बलिघाटी रास—स सौ सौ न-
रनिनय्य सताम्—वि० १।२१ २ मूर्छा, बेहोशी
३. क्रीडा ।

कनिका (वि०) [कनिका + कन्] काका,—कन् १. कन्-

कार.—एतत्तन्मात्रमन्विष्यते त्विदम् — नीति ११,
 कश्चरभोरति मन्विष्यते मन्विष्यते मन्विष्यते मन्विष्यते
 —२, किं १।२ २. मानसिक मन्विष्यते (मन्विष्यते)
 प्रथम ३ मन्विष्यते, मन्विष्यते । मन्विष्यते — मन्विष्यते (मन्विष्यते)
 मन्विष्यते मन्विष्यते १।३४ ।

तमिस्र [तमिस्र + टाप्] १ (अभिचारी) राय—सूर्य तप-
त्वावरणाय दृष्टे कल्पेत शोकस्य कथं तमिस्रा—रघु.
५।१३, मि. ६।४३ २ व्यापक अन्धकार ।

कर्मण्यः [तमस् + मयट्] राहु ।

तस्या, तस्यिका [तस्यति वञ्चति—तस्य् + वञ्च् + टाप्,
तस्य् + ण्वल् + टाप्, इत्थञ्] वाय, जी ।

तत् (म्हा० बा०—तयसे) १ जाना, हिलना-बुलना-आप्यु-
बात रब तेवे पुरात् नहि० १४७५, १०८ २ रज-
वाली करना, रखा करना ।

सतः [सु + क्त्वं] १ पार जाता, पार करना, पार - बट्टि -
 ७५५ २ माड़ा - दीर्घास्ति यथादेशं यथाकालं ततो
 यथेष्ट - मनु. ८५० ३ सड़क ४ घाटवासी नाव ।
 सम - बन्धु नाव का माड़ा, स्वात्मन् घाट, बहु
 स्वान् यहाँ नाव आकर ठहरती हैं ।

तरलः, तरलुः [तरं बलं मार्गं वा विनोति—पर+वि
+ल, पक्षे पृषो० उलोप] विज्ज, लकडहन्ता ।

संज्ञा- [सु + भञ्ज्] 1 लहर उत्तरा ३१५७, भन् ३१८१, एव १३६३, स ३७ 2 किसी वस्तु का भण्डार या अनुमान (जैसे कबालरिस्तार का) 3 कुव, उलाव, सरपट पीकड़ी, (बोरे जाहि की) कमाने लगाने की क्रिया 4 कपड़ा, वस्त्र ।

तण्डुली [तण्डु + इनि + डीप्] षष्ठी ।

तरङ्गित (पि०) [तरङ्ग + इत्] 1 महराता हुआ, महरा
के साथ उछलने वाला 2 छलकता हुआ 3 बरबराता
हुआ —तत् कषायमान - कषायतर्गङ्गतानि बाष्पा
- गीत० ३ ।

तरण [तु + स्युट] १ नाव, बेड़ा २ स्वर्ण, जम् १ पार करना २ जीवना, पराजित करना ३ बण्, डाँड ।

सरणिः [नृ + अनि] । सूर्यं २ प्रकाश किरण. - णि, जी
(स्त्री०) रेखा, बङ्गनई नाव । सम० - रत्नमाला ।

तर्पणः—इमं [तु + अर्पण] 1 सामान्य भाव 2 बहनाई (जो जलते हुए कदबू या चट्टों को बाँधो से बाँध कर बनाई जाती है) 3 चप्पू या डोढ़। सम०— वाष्पा एक प्रकार की भाव।

तारण्डी, तारव, तारणी (स्त्री०) [तारण + डीप्, सू + ञधि,
तारण + डीप्] नाव, बड़ा, बड़वाई ।

संज्ञा: [तु + क्त] 1 समूह 2 प्रत्यक्ष बीजार 3 मंडक
4. राक्षस ।

जल (दि०) [लृ + कलच्] १. जलमान, जलराता हुआ, झिल्ला हुआ, बरबराता हुआ—तापानिततरलविषु-

विवाहवन्द्य रघु० २३।३६ घन इव तरलबलाके
-गीत० ५ शि० १०।४० शि० १।२६ २ चबल
अम्बिर चपल वैराधितारस्तरला स्वयं मन्त्रिण
परे शि० २।११५ अमर २७ ३ मानदार चमक
दार चकीला ४ द्रवरूप ५ कामुक स्वेच्छावारी
- १ हार की मध्यवर्ती मणि - मुखतामयोऽप्यनरल
मध्य बासव० ३५ हागस्तागस्तरयुक्तान् (मस्ति
नय क मतानुसार यह मेवदुन का प्रकाश है) २ हार
३ समनल सनह ४ लकी गहराई ५ हाग ६ मोला
का मण्ड ।

तरलघनि (ना० घा० पर०) कपन उत्पन्न करना लहराना
इधर उधर हिलना अचना अमर ७

तरलाघने (का० धा० प्रा०) कापना हिलना इधर उधर
अचना हिलना

तरलाघित (तरल + कप घन) बड़ी लहर कम्पना
नरकित (वि०) [तरल इत] हिलता हुआ घणघराता
हुआ आदीर्घित होत हुआ मुकुतरङ्ग गीत० ११
हारा ९ ।

तरवारि । तर समागत विरलबल वारयति तर + वृ +
णिच् इत् । तनवार ।

तरत् (नप०) वृ अमत् १ बाल वग २ बीयं
शक्ति ऊँचा कलाशनाथ तरता विमोक्ष - रघु० ५।२८
१।१७७ शि० १७ ३ तर पार करने का स्थान
४ चढ़नी बड़ा ।

तरत्तम् [वृ अमत्] आमिष माम ।

तरत्तम् [न आनय मी] ताव ।

तरत्तम् (वि०) (स्त्री० मी) १ तज दुर्गिता २ मज
बुत गविना लो पायमी न बनवर रघु ७ ७२
१।१५ १६ ७७ { } तज र ३ अशुतामी दूत
२ पायमी ३ ७३ ४ १ १ मज व विमोक्ष ।

तरायु, तरायु नयय तरय नयय नयय अलगत
प्रयोजित नयय नयय नयय नयय नयय नयय
की ताय ।

तरि रो [त्रि] १ गीत घनय १ इति
की १ नय गीत नय मोदय नयय नयय
उत्तर शि० २ ७६ २ नयय नयय का नयय ३ नयय
का नयय नयय (नयय) १ सम नयय नयय
डाह ।

तरिक, तरिकिन् (पु०) [तर + कृन्, तरिच् + इति]
मस्लाह ।

तरिका, तरिनी, तरिचम्, तरिजी, [तरिक + टाप् तर
+ इति + कीप् वृ + ट्ठन् तरिच + कीप्] ताव
किसी ।

तरिच [वृ + ईप्] १ बेग तार २ समुद्र ३ तलम
अवित ४ स्थान ५ कार्य धन्य व्यवसाय पेसा ।

तव [वृ + उन्] वृक्ष - नवसरोहणविधिलस्तवरिच मुकर
समुद्रमुद्र माधवि० १।८ । सम० कच्छ, - डम्,
कच्छ, डम् वृक्षा का मुद्र या समह जीवलय
वृक्ष की डह - तलम् वृक्ष के तने के पास का स्थान
वृक्ष की डह मल काता वृक्ष वन्दर - राग
१ कली या कुल २ कोमल अकुर अलुका - राज
ताल का पेड़ लुहा पेड़ ११ ही उत्पन्न होने वाला
पीया बिलालिनी नव मस्तिष्का लता साविन्
(पु०) पली ।

तरुण (वि०) [वृ + उन्] १ चक्री जवानी वाला जवान
पुरुष पुरुष २ (क चकना मज्जात मुकुमार कोमल
मर्तु ३।५९ (न) नवादिन, (सूय की मति)
श्री आकाश में ऊँचा न हो कु० ३।५४ ३ नूतन,
नया तरुण दधि बाल० १६ तरुण सर्वप्राय
नवीन रिच्छलानि च दधानि अल्पवयस्येन मुन्नि
शाम्यन्ते मिष्टमघनाति छ० १ ४ जिम्मादिल
विशद - श्री युवा पुरुष जवान - पञ्च० १।११ भावि०
२।६० - श्री युवनी या जवान स्त्री - बुद्धय तरुणी
विषय बाल० १८ । मय० - ज्वर एक सप्ताह
हल वाला बुझार - इति (नप०) पीय दिन का
जमाया हुआ दूध - वीतिका मेनसिल ।

तरुण (वि०) [नय गी वृक्षा म भग हुआ ।

तर्क (वृ०) उभ० तर्कयति ने तर्कित १ कल्पना
करना अटकल करना सको करना विश्वास करना
अन्दाज लगाना अनुमान करना - स्व तावकत्वा
नय शि० ६ नय ५ २ तर्क करना विचार
रना विमर्श करन ३ बाल करना मान लेना
(विमर्श) ४ सोचना इरादा करना अविप्राय
रचना विचार में रहन (पातु न वेदकस्फटिक
विशद तर्कयन्ति उगम - मेघ ५४ ५ विमर्श करना
६ बयव ७ बयव प्र १ तर्क करना विचार
विमर्श करना २ सोचना विमर्श करना खयाल
करना कल्पना करना मद्रि० १।९ वि० १ अट
कल करना अन्दाज करना २ सोचना कल्पना
विमर्श करना ३ नय विमर्श करना तर्क
करना ।

तर्क तर्क अर्थ १ कल्पना अन्दाज अटकल प्रमथले
तर्क विमर्श २ २ तर्कना अटकलबाजी चर्चा
दुसरे तर्कना कुल पुनःस्मिन्नवद रिने जामाया तर्क
विमर्शापेक्षयाकाश इवानी तर्कनिमित्त आक्षेप
पाराह्वयने - शारी० तर्कप्रतिष्ठ स्मृतयो विभिन्ना
-महा० मयु० २।१।०६ ३ तर्क ४ व्याव, तर्कशास्त्र
-यत्काव्य मयुर्वच विविनपरास्त्वर्क यस्मोक्तय - नै०
२२।१५५ तर्कशास्त्रम् तर्क वीथिका ५ (व्याव० में)
उपहासात्यव होना, बहु परिचाय जो पूर्व कथित तथ्यों

(पक्ष) के विपरीत हो 6. कामना, इच्छा 7. कारण, प्रयोजन । सम०—विष्ठा न्यायसास्त्र ।

तर्ककः [तर्क + क्तृ] 1. वादी, प्रस्ताव करने वाला, प्राची 2. तर्ककारणी ।

तर्कुः [तुं स्त्री०] [कृत् + उ नि०] तर्कवा, मोहे की तकली जिस पर सूत लिपटता जाता है—तर्कुं कर्नेत-साधनम् । सम०—विष्ठा—वीठी: धीबली (तर्कुवे के किनारे पर लिपटा हुआ सूत का गोला ।

तर्कुः [—तरकु. पृषो०] लकड़बग्गा, बिजुः ।

तर्कुः [तुल् + क्तृ] यवभार उपातार शोरा ।

तर्ज (स्वा० पर०, चुरा० प्रा० पाय पर० भी) तर्जनि तर्जयति—ते, तर्जित 1. पमकाना, घुड़काना, धराना—मनीमकुल्या तर्जयति श० १. ब्रह्मनातलिभोदने-स्तर्जयतिव केतुभिः रघु० ४।२८ ११।७८, १२।४१, भट्टि० १४।८० 2. सिद्धकाना, बुरा-भला कहना, निन्दा करना, कलक लगाना—भट्टि० ६।३, ८।१०१, १७।१०३ 3. झिन्नी उठाना, अपह्वास करना ।

तर्जयन्, ना [तर्ज + क्तृ] 1. घमकाना, डगाना 2. निन्दा करना—रघु० ११।१३ कु० ६।४५ ।

तर्जनी [तर्जन + ङीप्] अंगुठे के पास वाली अंगुली ।

तर्जः, तर्जकः [तुल् + क्तृ, तर्ज + क्तृ] बछड़ा—जि० १२।४१ ।

तर्जिः [तु + जि] 1. बेडा 2. सूर्य ।

तर्ज (स्वा० पर० तर्देति) 1. झनि पहुँचाना, बोट पहुँचाना 2. मार डालना, काट डालना—भट्टि० १४।१०८, 'तर्ज' भी दे० ।

तर्जयन् [तुल् + क्तृ] 1. प्रमत्त करना, नून करना 2. पति प्रमत्तता 3 (प्रयत्न व्यक्ति द्वारा किये जाने वाले) पवित्र यज्ञों में से एक, पितृयज्ञ (दिग्गत पूर्वज के पितरों के निमित्त ब्रह्म-तर्पण) 4. समिधा, (यज्ञीय अग्नि के लिए इधन) । सम०—इच्छुः भीष्म का विशेषण ।

तर्जन् [तुल् + क्तृ] यज्ञीय स्तम्भ का शिखर ।

तर्जः [तुल् + क्तृ] 1. प्यास 2. कामना, इच्छा 3. समुद्र 4. नाव 5. सूर्य ।

तर्जयन् [तुल् + क्तृ] प्यास, पिपासा ।

तर्जित, तर्जित (वि०) [तर्ज + इतच् तुल् + उलच्] 1. प्यासा 2. क्षत्रिकाधी, इच्छुक ।

तर्हि (अव्य०) [तुल् + हिच्] 1. उस समय, तब 2. उस विषय में, क्या—तर्हि 'जब-जब' बहि-तर्हि 'अगर-तो' कब-तर्हि 'तो फिर किस प्रकार' ।

तर्जः, तर्ज [तुल् + क्तृ] 1. मनुष्य—मनुष्यत्वविषय श्रुत्योक्तं भूयैव मृतत्वम्—रघु० ४।२९, (कभी कभी मर्त्यों में बहुत परिवर्तन न कर, मर्त्य के अन्त में प्रवेश) —महीतलम् भूमि की सतह अर्थात् पृथ्वी

—गुहे तु वर्षयते मृतमवाकसा—म० ७।३२, नमस्तलम् 2. हाथ की हथेली—रघु० ६।१८ 3. पैर का तला 4. बाहु 5. कण्ठ 6. नीचपन, पक्ष का बहि-यापन 7. निम्न भाग, नीचे का भाग, आधार, पैर, पैदी—देवाशेषति वेतसीतकले वेतः समस्तकले

—काव्य० १ 8. (अतः) वृक्ष या किसी वस्तु की नीचे की भूमि, किसी भी वस्तु से प्राप्त शरण—कर्म मयस्कृतं तले निषोदति—रघु० १।१२ 9 छिद्र

गङ्गा—मः 1. तलवार की मूठ 2. तालवृक्ष, कम

1. तालव 2. जङ्गल, वन 3. कारण, मूल, प्रयोजन

4. बाँधी बाहु पर पहुँच जाने वाला चमड़े का फीता (इसी अर्थ में 'तला' भी) । सम०—अक्षय्याः (स्त्री०) पैर की उगली—अक्षयम् सान अक्षय्यो की में बीया

—इक्षजः सुधर, उठा नदी घातः पण्डितः तालः एक प्रकार का वाद्ययन्त्र—चम्पू, बालम्, बालपम्

धनुषं का चमड़े का दस्ता, —प्रहारः पण्डितः—सारकम् अथोक्तम्, तङ्ग ।

तलकम् [तल् + क्तृ] बड़ा नाविक ।

तलकः (अव्य०) [तल् + क्तृ] पैदी में ।

तलाबो [तल् + अब् + क्तृ] बड़ा ।

तलिका [तल् + क्तृ] तल, अधोवन्धन ।

तलितम् [तल् + क्तृ] तला हुआ मीस ।

तलिन (वि०) [तल् + इतच्] 1. पतला, दुर्बल, कृपा 2. थोड़ा कम 3. पण्डित, स्वच्छ 4. निम्न भाग में या निचली जगह पर स्थित 5. पृथक्, भन् विस्तरा, गद्दीदार लम्बी चौकी ।

तलियम् [तल् + इतच्] 1. कर्म लगी हुई भूमि, लड़का 2. बिस्तरा, लटिया मीठा 3. चढ़ावा 4. बड़ी तलवार या बाक ।

तलुम् [तल् + क्तृ] हवा ।

तलकम् [तल् + क्तृ] बङ्गल ।

तल्यः, तल्यम् [तल् + पक्] 1. गद्दीदार लम्बी चौकी, बिस्तरा, मीठा मण्डप विमाननिद्रनल्यम् उष्माधिकार

—रघु० ५।७५, 'बिस्तरा छोड़ा' उठा 2. (आक०) पत्नी (जैसा कि 'गुल्मल्य' में) 3. मादी में बैठने का स्थान 4. ऊपर की मञ्जिल, बुरई, कंगूरा, बढारी ।

तल्यकः [तल् + क्तृ] (नीकर आदि) जिसका कार्य बिस्तरों बिछाने या तैयार करने का है ।

तल्यकः [तल् + क्तृ + क्तृ] 1. अष्टता, सर्वोत्तमता, प्रसन्नता 2 (समास के अन्त में) श्लेष (इस अर्थ में यह शब्द मदैव प० होता है । समास के पूर्व पद का बाह्य कोई लिय हो), — नौतल्यकः श्लेष शाय, इसी प्रकार 'कुमारी नल्यक' श्लेष कथा ।

तल्यिका [तल्यिन् लीयते मत् + ली + क्तृ, इतच्] ताली, कुञ्जी ।

विकल्पित स्वर प्रथम टेक—यथा तानं विना रागः
—भाषि० ११११९, तानप्रदायिष्यमिषोपमम्—कु०
११८, —नम् १ पिस्तार, प्रसार २ ज्ञानेन्द्रियो का
विषय ।

तन्मन्त्र [तन् + मन्] पतसापन, छोटापन— हास्यप्रथा
तानवमससाह—विश्रमां० १११०१ ।

त.नुरः [तन् + ऊरन्] भँवर, जलावर्त ।

तान्त (वि०) [तन् + क्त] १ बका हुआ, निडाप न्तान
२ परेशान, कष्टग्रस्त ३ स्नान, मुर्झाया हुआ— दे०
'तन्' ।

तान्तावन् [तन् + वन्] १ कातना, बुनना २ जाला ३ बुना
हुआ कपड़ा ।

तान्त्रिक (वि०) (स्त्री० स्त्री) [तन् + ठक्] किसी शास्त्र
या सिद्धान्त में सुविज्ञ २ तन्त्रों से सम्बद्ध ३ तन्त्रों से
प्राप्त शिक्षा, —कः तन्त्र सिद्धान्तों का अनुयायी ।

तान्त्रः [तन् + त्रन्] १ मर्मी, चमक-चमक—अर्धमयुक्तताप
—शब्० ५११०, भा० २११३, मनु० १२१७६, कु० ७।
८४ २. सताना, पीछित करना, कष्ट, सन्ताप बेचना
—इतरतापशतानि तेष्वेच्छया वितरितानि सहे चतु-
रान्त—उद्भूट, समस्तार काम मनसिब्रमिषाद्यप्रस-
रयो—शब्० ३१८, अर्जु० १११६ ३ खेद, दुःख । मम०
—अथम् तीन प्रकार के मनाप जो मनुष्य को इस
ससार में सहन करने पड़ते हैं—अर्थान् आर्थारिक्त,
आभिर्देविक और आभिर्भौतिक, —हुर (वि०) सोतस्मता
देने वाला, यमी दूर करने वाला ।

तान्त्रः [तन् + त्रिन् + म्युट्] १. धृष्ट २ दीप्य चतु
३. सूयकान्तमणि, कामदेव के हाथों में से एक नम्
१. जलाना २ कष्ट देना ३ ठोकना-पाटना ।

तान्त (वि०) (स्त्री०—स्त्री) १ मन्त्रासा से सम्बद्ध, बड़ी
माधना से सम्बन्ध रखने वाला २ भक्त, स. (ग्वा०
—मी) दानप्रस्थ, भक्त, मन्त्रासो । मम० इष्टा
अग्र, —तन्त्रः—द्वयः त्रिपाट का बृक्ष, इगुर्दी ।

तान्त्रवन् [तान् + वन्] तान्त्रा ।

तान्त्रिकः [तान्तिन छानयति तान्तिन - छद् + कृ + कृ + कृ]
तमात्र का वृक्ष या फूल (मनु०) प्रकुलनतापच्छ
निर्मेरबीभूमि शि० ११२२, व्यन्तन्तापच्छमृष्टा-
वलिभिर्निव तमोवल्गरीभिर्निवते मा० ५१६ (इसी
अर्थ में 'तान्तिन' शब्द भी प्रयुक्त होता है) ।

तानी [तन् + त्रिन् + वन् + कृ] १ तानी नदी जो मुरत
के निकट समुद्र में गिर जाती है ४ यमुना नदी ।

तान् [तन् + वन्] १ मय का विषय २ दोष, कमी,
३. किन्ता, दुःख ४ दण्डा ।

तान्तरन् [तान् + ए + कृ] १ पानी २ बी ।

तान्तरन् [तान् + ए + कृ] १ तान्तर कर्म
—यन् ११६४, रघु० ६१३७, ११२२, ३७, अथ

७०, ८८ २ तोमा, तीथा, ली कदली वाला
सरोवर ।

तान्त (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [तमोऽस्त्यस्य वन्] १ काला,
अन्धकारग्रस्त, अन्धकार सम्बन्धी, अन्धरा २ प्रकृति के
तीन गुणों में से एक— भग० ७१२२, १७२,
मातृवि० १११ मनु० १२१३३-४ ३ अज्ञानी ४ दुष्प्र-
मती, स. १ दुष्प्र दाहक दुर्वान २ लीप ३ उल्लङ्घ
सम् अन्धरा—स्त्री १ रात कालीरात २ नींद
३ दुर्गा का विशेषण ।

तान्त्रिक (वि०) (स्त्री० स्त्री) [तमस् + ठक्] १ काला,
अन्धकारग्रस्त २ तम से सम्बन्ध रखने वाला, तम से
उत्पन्न या तमोमय ।

तान्त्रिकः [तमिस्त्रा, अन्] तम का एक प्रमाण ।

तान्त्रिक [तन् + उल्लङ्घ + कृ + कृ] १ सुपारी २ पान
(जिसमें कच्चा चूना गूँगाकर सुपारी की साव मग
भोजन के पश्चात् चकाते हैं) तान्त्रिकभूतगन्धोऽय
मस्त त्रयान् मानुव काव्य० ७, रागी न मन्त्रित-
स्तबाधरुपे तान्त्रिकसचिपि—भृगुार० ७ । मम०
करकूटः— देखिका पानदान ब, बर बाहकः
पान-दान लेकर अमीरो के पाँजे चलने वाला लोकर
बस्ती पान की बेल रघु० ६१६४ ।

तान्त्रिक [तान्त्रिक - ठक्] तमोले पान बेचने वाला ।

तान्त्रिकी [तान् + कृ] पान की बेल तान्त्रिकीना दान
स्त्र चरिता पानभूय रघु० ६१६४ ।

तान्त्र (वि०) [तन् + र्क + कृ] तान्त्रे के रङ्ग का लाल
उदित लविता तान्त्रन्तान् एवास्तमेति च, छम्
ताबा । मम० अक्ष १ कौवा २ कोयल अक्ष-
काम् अक्षन् (पु०) पक्षराजमणि उपजीवित
(पु०) कमेरा तान्त्रे की चौड़ बनाकर भँवन निर्धार
करने वाला जोष्ठ (तायाठ या तान्त्राठ) काग
हूठ कु० ११६४, कार कमेरा तान्त्रे क' व प
करने वाला कुम्भि इन्द्रवायुटी एक प्रकार का लाल
हीडा चूड़ मुगों प्रयुक्त पीतल, — इ. लाम चन्दन
की लकड़ी पट, —पञ्चम तान्त्राष्टिका त्रिम पर प्राय
भूदान के वाता तथा प्रतीका के नाम खुद रहते थे
—यात्र० ११३१९, —पक्षां सलप पक्षी य निकलने
वाली एक नदी का नाम, (कहते हैं कि यह नदी
मोर्तियों के कारण प्रसिद्ध है), रघु० ६१५२, पाल्मव
अथोक्तवृक्ष, त्रिपुः एक देश का नाम (पताः—ब०
ब०) इस देश की प्रजा या शासक, —वृक्षः चन्दन के
वृक्षों का एक भेद ।

तान्त्रिक (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [तान् + ठक्] तान्त्रे का
बना हुआ तान्त्रिक, —कः कसेरा, तान्त्रे का कार्य
करने वाला ।

तान् (प्रा० बा०—प्राये, तान्त्रिक) १. किसी समाज

रेखा में प्रगति करना, फैलाना, विस्तार करना 2 रेखा करना, सरक्षण में रखना, —वि-—फैलाना रचना करना —चट्टि० १६।१०५।

तार (वि०) [तृ + निष् + बन्] 1 (स्वराधिक) ऊँचा 2 (शब्दाधिक) उमाल, कर्कश —भा० ५।२० 3 चमकीला, उज्ज्वल, स्पष्ट —हारांस्तारांस्तारकान्ठिकां (मन्त्रि०) इसको मेघदूत का प्रबोधक मानते हैं, उरसि विहितस्तारां हार —अमर २८ 4 बच्छा, अष्ट, मुरख, —१ 1 नदी का किनारा 2 मोती की चमक 3, सुन्दर और बड़ा मोती —हारमल्लहारमुरखिदचनम्—मोत० ११ 4 उज्ज्वल, —१—रघु 1 तारा वा बहु 2 कपूर रत्न। चाँदी 2 जोश की पुतली (पु०) भी माना जाता है। सम०—अक्ष कपूर, अरि मोह गम —अन्वय तार का विराटा या उत्कापतन पुनः पुनः या चमकी की बेल, —बाबु, चाँद चाँद काटती हुई या सनसनाती हुई हवा बुझिकरण—सीता, —स्वर (वि०) ऊँचे स्वर का वा उमाल ध्वनि का —हार 1 सुन्दर मोतियों की माला 2 एक चमकीला हार।

तारक (वि०) (स्त्री०—रिका) [तृ + निष् + बन्] 1 जाने के जाने वाला 2 रखा करने वाला, बचाकर रखने वाला बचाने वाला, —कः 1 चालक, खिरीया कर्मचारी 2 बुझाने वाला, बचाने वाला 3 एक राजस जिससे कातिकेव ने मार विरावा वा (यह बजांग और बरासी का पुत्र वा परिव्राजक पहाड़ पर तपस्या काक इसने बहूदेव को प्रसन्न किया और बरवान माना कि मुझे वसति में, ३ दिन के बच्चे का छोड़ कर और कोई न मार सकें। इस बरवान की बहोला बहु देवताओं का मान लगा। दुखी होकर देवता बहूला के पास गए और इन राजस की मारन के लिए उनका सहायता मांगी (दं० कु० २) बहूला न उन देवताओं का उत्तर दित। कि केवल मित्र का पुत्र ही उन्हें परास्त कर सकता है उसके पदमाश कारिकेव वा क्रम द्वारा और उसने अरु क्रम में मातर्वे दिन उस राजस का काम नगम कर दिया। —क, —अक्ष बड़नई बेड़ा —कम् 1 अल का पुतली 2 जोश। सम० अरि अस्त (पु०) कातिकेव का विशेषण।

तारका [तारक + टाप्] 1 तारा 2 उमका घूमके 3 जोश की पुतली सदृश दृशमूषनारकाम्—रघु० ११। १९, और० ५ अर्ध० १.११।

तारकणी [तारक + णि + ङीप्] तारो भरी रात, बहु रात जिसमें तार जलते हुए हों।

तारकित (वि०) [तारक + क्तप्] तारो वाला, सितारों भरा, तारावर्धित।

तारकः [तृ + निष् + क्तप्] नाव, बड़नई, —कम् 1 तार उतारना 2 बचाना, बूझाना, पुनः करना।

तारवि, —जी (स्त्री०) [तृ + निष् + वनि, तारवि + ङीप्] बड़नई, बेड़ा।

तारतम्यम् [तारतम + ष्यञ्] 1 क्रमांकन, अनुपात, तारेख महत्त्व, तुलनात्मक मूल्य 2 अन्तर, वेद—निर्गुण निचनवेतवाँईकोस्तारतम्यविधिमुक्तवेतवाँ, कोचन—विधिना विनिमिता रेख एव वयवैवयमिका—उ

तारकः [तारक + बन्] कानुक, मण्ड, बिबदी।

तारा [तार + टाप्] 1 तारा वा बहु—दृश्ये १ : —रघु० ४।१९, अर्ध० १।१५ 2 तार तारा—रघु० ६।२२ 3 जोश की पुतली, जोश का डेका—काम्पा—मन्त्र प्रमोदादिनिरसि मधुभान्तारतारककोर—भा० १।३०, विरमस्तेरतार—१।२८, कु० १।४४ 4 मोती 5 (क) वासरराज बाकी की पत्नी, अंबर की माता, इसने अपने पति को गम और बुद्धि के साथ बुद्ध न करने के लिए बहुत समझाया। राम द्वारा बाकी के मारे जाने पर इसने बुद्धि के विवाह कर लिया (क) देवपुत्र बृहस्पति की पत्नी, एक बार कम्पवा इसको उठा कर ले गया और बाधना करने पर भी बाधित नहीं किया। चोर बृद्ध हुआ, कष्ट में बड़ा ने सोच को इन बात के किए विवक्ष कर दिया कि तारा बृहस्पति को बाधित है ही बाध। तारा के बुध नामक एक पुत्र का कथ्य हुआ। यह बुध ही चन्द्रबन्धी राजाओं का पूर्वज कहलाया (क) राधा हरिचन्द्र की पत्नी तथा रोहितात की माता—दुखीको तारापत्नी भी कहते हैं। सम०—अक्षि, —जालीक, —पति चाँद—रघु० १।३९, कु० ७।४८, अर्ध० १।३१, —वच परावरण वातावरण —अन्वयम्—नक्षत्रमान नक्षत्रकाल भूषा रात, —अन्वयम् 1 ताराकोक, राक्षिक 2 जोश की पुतली—कुकः नृपक्षिरा नाव का नक्षत्र।

तारिकम् [तार + ठप्] किराया भाड़ा।

तारक्यम् [तारण + ष्यञ्] 1 युवावस्था, जबानी 2 ताड़नी (बालों)।

तारेव [तारा + बन्] 1 बुधबहु 2 बाकि के पुत्र अगर का विशेषण।

तारिकः [तर्क + ठप्] 1 नैयायिक तारिक 2 दार्शनिक।

तारवः [तृ + बन् तार्क + ष्यञ्] 1 गवह का विशेषण —वस्तेन तारवति किल काश्चियेन—रघु० १।४९ 2 गवह का बड़ा भाई अवच 3 गाड़ी 4 घोड़ा 5 सप 6 पत्नी। सम० अक्षः पिन्नु का विशेषण, —नामकः गवह का विशेषण।

तारवी (वि०) [तृतीय + बन्] तीव्रता।

तारवीक (वि०) [तृतीय + ईक] 1 तीव्रता—तारवीको-

कतवा विरोधमनसस्य प्रबन्धे—नै० ३।१३६, ताली-
बीकं पुरारेस्तवतु यदनप्लोषनं लोचन व—ना० १,
बने० पा० ।

तालः [तल + जण] 1 ताल का वृक्ष - अर्ध० २।१०, रघु०
१।५।२ 2. ताल का वृक्ष वृक्षा सङ्घा 3 तालिया
बजाना 4 फटफटाना 5 हाथी के कानों का कड़कहाना
6. (संगी० में) टेक देना नियम मात्राओं पर लगी
बजाना—कणिकसलतानैर्मुषया नयमानम्—उभर०
३।१९, मेघ० ७९ 7 कानों का बजा एक बाद्ययन्त्र
—रघु० १।७१ 8 हुबेली 9 ताला कुशी 10 तलवार
को मूठ. —लघु० 1 ताल वृक्ष का फल 2 हस्ताल ।
सम०—आशुः 1 बलराम 2 ताल का पत्ता जो लिखने
के काम जाता है 3 पुस्तक 4 जारा, —अक्षरः नाथने
वाला, नट —केतुः भीष्म का विशेषण, क्षीरकम्प,
—नवः ताल का निक्षेपण, —ध्वजः—भूत (पु०)
बलराम का विशेषण, —वज्रम् 1 ताल का पत्ता जिस पर
लिखा जाता है 2 कान का आभूषण विशेष बड़-
बूड़ (वि०) तालों के द्वारा मापा गया, लया-मक
संगीत में मात्राकाल से चिह्नियमित, —अर्धल. एक प्रकार
का बाद्ययन्त्र, लीन करताल, —वज्रम् जर्जर का एक
उपकरण, —रक्षणकः नर्तक, अभिनेता, —अक्षरः बलराम
का विशेषण, —बनैन् वृक्षों का समूह, —वृक्षम् पत्ता—स०
३।२१, कु० २।३५ ।

तालकम् [ताल + कम्] 1 हस्ताल 2 कुम्हरे, पटखनी ।
सम०—आशु (वि०) हरा, (—कः) हरा रंग ।

तालकः [= तालक] कान का आभूषण विशेष ।

तालम् (वि०) [ताल + यत्] ताल से सम्बन्ध रखनेवाला
ताल स्थानीय । सम०—बर्णः ताल स्थानीय अक्षर
बर्णात् इ, ई, ए, ऊ, अ, और य तथा ए, —स्वर
ताल स्थानीय स्वर—बर्णात् इ ई ।

तालिका [तल + ठक्] 1 लुली हुबेली 2 तालो बजाना
—यर्षकेन म हस्तेन तालिका मप्रपद्यते—पञ्च० २।१०८,
उष्णाटनीय करतालिकाना दानादिधानी ।वतीमिरेव
—नै० ३।७ ।

तालितम् [तल + तिप् + त, बन्ध + क्तवम्] 1 रगदार
कवचा 2. रस्ती, खोरी ।

ताली [तल + तिप् + अच् + डीप्] 1 पहाड़ी नाद का
पैठ, ठाड़ का वृक्ष 2. ताली 3. सुगन्ध युक्त मिट्टी
4. एक प्रकार की कुशी । सम०—लघु० ताल के वृक्षों
का समूह—रघु० ४।३४, १।५७ ।

तानु (नपु०) [तरनयनेन बर्णा—तु + उन्, रन्ध्र क ।
ऊपर के छतों और छींके के बीच का नरुङ्गा पूरा
महत्वा परिष्कृततालव—अधु० १।११ । सम०
—विष्णुः मगरमच्छ, —स्थान (वि०) ताल स्थानीय
—(नपु०) ताल ।

तालुरः [तल् + तिप् + ऊर] बलाबन, मेयर ।

तालुबकम् [तल + तिप् + क्तवम्] ताल ।

तावक (वि०) (तवी० की) तालकीन (वि०) [युष्मद्
+ अच्, तवक आदेश तवक + क्तवम्] तैरा, तैरी
—तप स्व वस्ते क्व च तावक वपु कु० ५।४, कि०
३।१२. मासि० १।३६, ९६ ।

तावत् (वि०) ('यावत्' का सत्र संबंधी) [तल् + वाचतु]

1 इतना उतना इतने से तु यावत् एकाजी तावत्
इदुमो मे नै—रघु० १।२।४५, हि० ४।७७ कु० २।३१
2 इतना जिसका इतना बड़ा, इतना विस्तृत—यावती
सम्बद्ध वृत्तिस्तवती दातुमर्हसि—नपु० ८।१५९
९।२६० भग० २।४६ 3 उतना समस्त, याग याव
इता तावद्भुक्तम् गण० (अध्म०) 1 पहले (विना
और कुछ काम किये) श्रायं इतस्माद्वदगम्यवाम
श० १, आह्लादयस्व तावत्प्राद्वकप्रवृत्तकालमिमे
विक्रम० ५।११ मेघ० १३ 2 किसी की बार में

इसी बीच में मन्थे स्थिरप्रतिबन्धो मय, अहं नाथत
स्वाभिनिबिलदातितमनुवर्तित्ये श० २ रघु० ३।३२
3 अनौ—गच्छ तावत् 4 निरमर्दह (किसी उक्ति पर
बल देने के लिए)—स्वमेव तावत्प्रभायो राजाहाही—मुद्रा०
१, तुम स्वयम् स्वमेव तावत्परिचितय स्वयम् कु०
५।६७ 5 सत्प्रभु, बन्तुत (स्वाकृतिपूषक)—पुष्टला-
वद्रघु जि० १ 6 के विषय में के संबंध में—विद्रह
स्तावदुपस्थित हि० ३, एव कुने नव नावत्केलस हिना
प्राययाका भावयति पञ्च० १ 7 पूर्णरूप में—तावत्प्र-
कीर्णभिन्नयोगवागम्—रघु० ७।४ (तावत्प्रकीर्ण -
'कथ्येन प्रसारित—मस्ति० 8 आपस में (ओहू) कितना
आश्चर्य है । 'यावत्' का महत्वपूर्ण के रूप में तावत्
अर्थ देखा—'यावत्' के नीचे) सम०—कुरवः
(प्रध्म०) इतनी बार, यावत् केवल इतना—अर्थ
(वि०) इतने वर्ष पुराना ।

तावत्तिक (वि०) तावत्क (वि०) [तावत् + क, इद्] इतने
से मोन किया हुआ, इतने मूख्य का, इतनी कीमत का ।
तावुरिः [पु० शीक गन्ध] वृष गण ।

तिष्ठ (वि०) [तिष्ठ + क्त] 1 कइवा, लीला (छ १सी
में मे ए) मेघ० २० 2 मुगधित—मेघ० १३, —कतः
1 कइवा शब्द, (कट्ट के नीचे दे०) 2 कुटज वृक्ष
3 तोसापन 4 सुगंध। सम०—गण्डध मरतो, —बाहुः
परा, —कलः—परिचः कतक का पीछा, —तारः और
का वृक्ष ।

तिष्ठ (वि०) [तिष्ठ + क्त] 1 वैन, मुकीला
(छन्दों की गति) 2 प्रपञ्च 3 गरम, ताहक 4 लीला,
चरपरा 5 उमेरक जोसीला, लघु १ मनी 2 तीक्ष्ण-
पन। सम०—अंशु 1 सुयं—निगोशस्तगत—गीत०
५ 2 आग 3 तिष्ठ, —करः, —दीर्घतिष्ठ, —रश्मि सुयं ।

सिन्धु १ (म्बा० बा०) (सिन्धु का लितान् इच्छार्थक) तिमि
जति, तिमिजित) १ सहन करना बहन करना साथ
निर्वाह करना, साहस के साथ युगलना तिमिजमाण
स्व परेश तिम्याम्—मालवि० १११७, तिमिजिमस्व
भारत—भय० २११४ महावी० २११० कि० १३१६
भय० ११४७, ११ (चुरा० उभ० या प्रेर०) नेत्रयति
—दे, तिमित) १ पैना करना पनाना—कुसुमवापय
तेजयवकुपि रघु० ११३९ २ उकसाना उगमित
करना, मड़काना ।

सिन्धुः [सिन् + उट् द्विभम् ह्रस्वम्] चलनी (नपु०)
झाडा ।

सिन्धिका [सिन् + कन् + टाप् द्विभम्] मन्त्रशांति
साहचर्यता स्थायि शब्द ।

सिन्धु (वि०) [सिन् + सन् + उट् द्विभम्] सहण्य
सहन करने वाला सहनशील ।

सिन्धु [सिन्धुसिन्धुन अर्थात् तिमि भण्ड
१ जुगन् २ एक प्रकार का कोडा इन्द्रधनुषी वोर
बहुतेरा ।

सिन्धुः, सिन्धुः [तमि इति शब्द गति दद्यात् ग + क
बकोर तीनङ् ।

सिन्धुः [सिन्धुसिन्धुन गति इ वा० हि तारा०]
१ तीर २ एक क्षुब्ध जो कृष्णधनुर्वेद का प्रथम
अध्यायक वा ।

सिन्धु [सिन् + कन् + उट् द्विभम्] १ अग्नि २ प्रेम ३ समय
४ वर्षा क्षुब्ध या शरद ।

सिन्धु (पु० वा स्त्री०) [सिन् + इति पूर्वो वा ङीप्]
१ साय दिवस—तिमिरेव तावन्न शुष्यति मुद्रा० ५
कु० ६१९३, ७१२ २११ की मख्या । सम० अथ
१ अभावस्था २ वह तिथि जो आरम्भ होकर सूर्यो
दय से पूर्व हो या दो सूर्योदयों के बीच में ही समाप्त
हो जाती है,—वर्षी पञ्चाङ्ग—वर्षी चरि बुद्धि
बहु दिन जिसमें तिथि दो सूर्योदयों के अन्दर पूरी
होती है ।

सिन्धुः (पु०) एक वृक्ष विशेष—वाय्वर्हस्तानशस्य कोटर
वति स्कन्धे तिनीय स्थितम्—वा० १७ ।

सिन्धुः, ङी, सिन्धुसिन्धु, सिन्धुसिन्धु ।—तिमिती पूर्वो
तिमिती + कन् + टाप्, ह्रस्व, तिम् + ईकन् वि०]
इसकी का वृक्ष ।

सिन्धु, सिन्धुक-सिन्धुक [सिन् + कु० नि०] तिन्धु + कन् पले
कस्य क्] तैम्नू का पेड़ ।

सिन्धु (म्बा० पर०) तेमति, तिमित) भाई करना, पीका
करना, सर करना

सिन्धु [सिन् + इन्] १ समूह २ एक बड़ी विशालकाय
मछली, झेल मछली रघु० १३१० । सम० कोष्
समूह,—अथ एक राजस जिसे इन्द्र ने दशरथ की

महायना से मारा था (इसी युद्ध में कैकेयी ने मृच्छि
वज्ररथ के प्राणों को रखा की और उनमें दो वर प्राप्त
किये इन्हीं वरों से कैकेयी ने बाद में राव को १४
वर्ष का वनवास दिलाया ।

तिमिजित [तिमि—सिन् + कन्, मूम्] एक प्रकार की
मछली वा तिमि मछली को तिमिल जानी है—भावि०
११५५ अज्ञान तिमिल एक ऐसी बड़ी मछली जो
तिमिजित का भी तिमिल जानी है—तिमिजितमिलो-
प्यमि नद्यमिलोप्यमि रावब ।

तिमिजित (वि०) [तिमि + कन्] १ तिमिहीन स्थित निरचल
२ आर्द्र मीलन वर ।

तिमिर (वि०) [तिमि + किरम्] अन्धकारमय, विष्य
स्थानी दृष्टीवि तिमिरे रवि गीत० ५ बभूवुस्तिमिरा
दिश मुद्रा० ४ रम अन्धकार तमिर तिमिर
मपकरोति चन्द्र श० ६१९ कु० ६११ सि०
११७२ अन्धकार ३ डग मुर्बा । सम० क्षरि,
—भूष (पु०) रिपु सूर्य ।

तिमिरा [तिमि जाति स्त्रिया ङीप्] जानवर पक्ष या
पक्षी (स्त्री०) ।

तिमिरा (वि०) [तिमि + कन्] १ टेडा पारस्य
तिमिरा मतं तिमिरातमन्नुसारवे जि० ११२
यथा तिमिरातमन्नुसारवे उत्तर० ३१५
२ अनियमित ।

तिमिर (अव्य०) [तरति दृष्टिपथ न् + अनुम्] बाँधेपन
५, टेंपेन से निरच्छेपन — स तिर्यक् यन्मिरोऽवति
—अमर० २ के बिना ५ अनिरक्त ३ कृपाप,
प्रच्छन्न रूप से बिना दिखाई दिये (अप्य साहित्य में
निरस शब्द का स्वभाव प्रयोग नहीं मिलता—यह
मुक्यत प्रयुक्त होता है (क) क के साथ—इकना,
बूना करना आगे बढ़ आना (रघु० ३१८ १६२०,
मनु० ४१५९, अमर० ८१ अट्टि० ११६० हि० ३१८)
(ख) वा के साथ—इकना छिपाना अभिभूत करना
अन्तर्धान होना (रघु० १०१८ ११९१) और (ग)
मू के साथ—अन्तर्धान होना (रघु० १६१२०, अट्टि०
११७१, ११७४४) । सम०—करिन्—कारिणी १ परदा,
पूषट—तिरस्कारिणी अलस भवन्ति—कु० ११४५,
मालवि० १११ २ कनात, कपडे का पराँ,—कार
—छिपा १ छिपाना, अन्तर्धान करना, बूना—कुल
() १ जिसकी बहहेलना की गई हो, अपमानित,
निराश्रुत २ गहित ३ गुप्त ठका हुआ,—वाल्मी
१ अन्तर्धान होना, दूर हटाना अथ छान्ति तिरोधान-
मयिष्याम्—गङ्गा० १८ २ आच्छादन अयमुच्छन,
म्यान, आध अोजन होना तिमि(वि०) १ जोखल
हुआ, अतहित २ ठका हुआ तिमि हुआ, गुप्त ।

तिमिरा (वा० वा० पर०) १ छिपाना गुप्त रजना

2 बाबा डालना, रोकना, रुकावट डालना, दृष्टि से जोखल करना - तिरयति करवाना प्राहुकत्व प्रमोह
—मा० ११४० बारम्बार तिरयति बुद्धोद्दयम् बाण-
पूर—३५ 3 मोतना ।

तिरयन् (अ०) [तिरस्+अस्+क्विप्, तिरस् तिरि
जायेक, अच्चेर्नलोप] टेढ़ान से, तिरछान से तिरछा
या टेढ़ी दिशा में - बिलोकयति तिरयन्—काव्य० १०
वेद्य० ५१, कु० ५१७४ ।

तिरयन् (वि०) (स्त्री०—तिरयन्ती विरलत—तिरयन्ती)
[तिरस्+अस्+क्विप् तिरस् तिरि जायेक,
अच्चेर्नलोप] 1 टेढ़ा, बाधा, अनुप्रस्व, तिरछा
2 मुड़ा हुआ, बक (पु० नपु०) जानवर (जो मनुष्य
की भाँति सीधा न चल कर, टेढ़ा चलता है) निम्न
जाति का या बुद्धिहीन जानवर इत्यादि दिखे न
तिरयिष कश्चित् पाषादिरामादितपीडय स्यात्—नै०
३१२०, कु० ११४८ । सम० अन्तरम् बाणपार माया
हुवा मध्यवर्ती स्वान, चौदार्द,—अन्तरम् मूर्ध्व द्वारा
बाधिका पोरकमय,—ईश (वि०) तिरछा देखने वाला,
—जातिः (स्त्री०) पशु-पक्षी की जाति (विप० मनुष्य
जाति),—अन्तरम् चौदार्द,—अन्तरम् तिरछी जाति
करके देखना,—बोधिः (स्त्री०) पशु-पक्षी की बुद्धि
या बड़—तिरयन्तीनी च जायेक—मनु० ५१२००,—अस्ति
(पु०) जानवरों की दुनियाँ, पशु बुद्धि ।

तिरकः [तिर+क] 1 तिरक का पीछा—नालाभ्येति तिर-
प्रधुनपक्षीन्—घोष० १० 2 तिरक के पीछे का चीज
—आकस्मात्प्राप्तिकीयाता विक्रीभाति तिरैस्तिमान्,
कृत्तानितरेवैन कार्यमय भविष्यति । पञ्च० २१५५
3 बस्ता, बन्धा 4 छोटा कण, इनका बड़ा जितना
कि तिर—1 सम०—अन्तु—उपकम् तिर बीर जल
(दोनों को मिला कर मूठकों का तर्पण किया जाता
है) स० ३, मनु० ३१२२३,—उत्सवा एक अन्तरा
का नाव,—जोषक,—अन्तु मिल और हुब मिश्रित भाव,
—अन्तु तिरक को पीत कर बनाई गई पीठी, 'अ
तिरकों की डली,—आकस्मात् यस्ता, तिरक के बराबर
खरीद पर होने वाला—कामा दाव—अन्तु, कलि
(स्त्री०)—कली,—मूर्ध्वम् तिरक के निकालने के पश्चात्
बची हुई तिरकी का अन्तु—तन्मूलकम् अलिङ्गन (जिस
प्रकार तिरक बाधक दिखते हैं, इसी प्रकार अलिङ्गन
में दो घटोर दिखते हैं),—सैकम् तिरकों का तेल—अर्ध
साप्तीन, (—अर्ध) चन्दन की लकड़ी,—पर्वी 1 चन्दन
का पेड़ 2 रूप देख 3 तारपीन,—रस तिरकों का
तेल,—स्वेद तिरकों का तेल,—होव बह हाव जिसमें
तिरकों को बाहुति दी जाव ।

तिरक (तिर+क) 1 सुन्दर कुलों का एक वृक्ष,—आकामना
तिरककिपाति तिरककीवद्विरेपप्रमोह—आकामि० ३१०

न ज्ञानु शोभयति स्व वनस्वती न तिलकस्तिलक-
प्रमोहमिव—रघु० ११४१ 2 खरीर पर पड़ी चित्ती
या खाल पर हुवा कोई नैमगिक चिह्न, -क,—अन्तु
1 चालन की अकड़ी या उबटन जादि से किमा गया
चिह्न मूले मधुकीस्तिलक प्रकाशय—कु० ३१३०
कस्तूरिकास्तिलकमात्र विषाद साय भाषि० २१४,
११२१ 2 किसी वस्तु का अलङ्कार (पुञ्ज 'प्रमुख'
'बेष्ठ अर्थ में समान के अन्त में प्रयुक्त), का एक
प्रकार का हार—अन्तु 1 मृषाया 2 फेकड़े 3 एक
प्रकार का नमक । सम० आम्बव मस्तक ।

तिरकपुत्र [तिर+पुत्र+अन्तु मृम्] तेली ।

तिरकः (अव्य०) [तिर+क] तिर तिर करके, कण
कण करके अत्यन्त अल्प परिमाण में ।

तिरस्त (पु०) एक बड़ा सोप ।

तिरव [तिर+वन्] लोच का पेड़ ।

तिरव्युष (अव्य०) [तिरव्यो गानो यास्वन् काले तिष्ठन्
+गानि०] गीता के रोहने का समय (अर्थात्
सायकान का समय बड़ चप्पा बोलने पर)—अतिष्ठन्
जपन् सन्ध्याम् भट्टि० ४१४, (तिष्ठन्—रात्रे
प्रवयनादिका) ।

तिरव [तुप्+वप्+नि०] 1 २३ मन्त्रों में आठवीं नक्षत्र,
इसे पुष्य भी कहते हैं 2 पीर मान (चान्द्र),—अव्यम्
कलियुग ।

तीक् (स्वा० वा० नोकते) जाना, हिलना चुकना, मु०
'टीक' ।

तीक्य (वि०) [तिक्+क्यन्, दाचं] 1 पैना (अभी बजो
में) तीका सि० २११०९ 2 गरम उष्ण (किरको
की भाँति) अन्तु० १११८ 3 उत्तेजक अशीला
4 कठोर प्रबल, मजबूत (उपाय जादि), 5 कच्चा
चिरचिदा 6 कठोर, कटु कड़ा, मरुत,— मनु० ७१४०
7 अनिष्टकर, अहितकर, अशुभ 8 उत्सुक 9 बुद्धि
मान कतुर 10 उत्साही, उत्कट, ऊर्ध्वस्वी 11 भक्त,
आत्मत्याग करने वाला,—अन्तुः 1 जवाभार 2 कम्बी
मिचं 3 काली मिचं 4 काली खरसो या राई,—अन्तु
1 कोहा 2 इस्पात 3 पर्वी, तीकापन 4 मुड़, जहाई
5 बिच 6 मृग्य 7 मरुत 8 समुद्री नमक 9 लिफता ।
सम०—अन्तु 1 मूर्ध्व 2 माय, आकस्मात् इस्पात,
उपाय प्रयत्न मायन यज्ञयुन तश्चर्य,—अन्तुः व्याड,
कर्मन् (वि०) उद्यमा, उत्साही ऊर्ध्वस्वी, ईश्वरः
व्याघ्र—आर तन्त्राय पुण्यम् शीघ्र—पुण्या 1 लीन
का पीछा 2 बहरे का पीछा—बुद्धि (वि०) मोह-
बुद्धि तन्त्र कतुर पाषा कृतपट्टीड रविम मूर्ध्व
रस 1 जवाभार 2 जटुर का पाना, जटुर मधु
प्रयुक्ताना रीत्यगतायाम् मुद्रा० ११० लोहम्
इस्पात, जूक बी ।

तीक्ष्ण (दिवा० पर० तीक्ष्णति) गाढा होता, तर होता ।

तीरन् [तीर् + ञ्] 1 तट, किनारा - नदीतीर सगर
तीर आदि 2 उभाल, कपार, काग या भार, -रः 1 एक
प्रकार का बाज 2 सीसा 3 टोन ।

तीरित (वि०) [तीर् + क्त] मूलज्ञाया हुआ मयजिन, साध्य
के अनुसार निर्णीत, -सम् किसी बान का मोक्ष विचार ।

तीर्थ (वि०) [तृ + क्त] 1 पार किया हुआ पार पहुँचा
हुआ 2 कियाया हुआ प्रसरित 3 पोछे छाड़ा हुआ
बाये बड़ा हुआ ।

तीर्थम् [तृ + यक्] 1 मार्ग भटक रास्ता, घाट 2 नदी
में उतरने का स्थान घाट (नदी के किनार बनी हुई
सोढ़ियाँ) विषमोपि विषादस्त नय कृततीर्थं परमा
विकाराय -निक० ५ (यही तीर्थ का अर्थ उपचार
या साधन भी है) तीर्थ सर्वविधावतारोपायम् -का०
४४ 3 जलस्थान 4 पवित्रस्थान पार्ययात्रा का उप
युक्त स्थान मन्दिर आदि जो किसी पुण्यकार्य के लिए
अपि कर दिया गया हो (विशेष कर बहु जा किया
पावननदी के किनारे स्थित हो) शक्ति मनो यस्तस्मि
तीर्थेन किम् मनु० २।५५ रघु० १।८५ 5 मार्ग,
प्राप्त्यर्थ साधन -तदनन तीर्थेन घटत-आदि मा०
१ 6 उपचार, तरकीब 7 पुण्यात्मा, पाप्यथापि
ब्रह्मा का पात्र, उपयुक्त ब्राह्मण ८ वनस्पतदुस्तव्य
तीर्थेभ्यः साधो सव्य -वाग० १, मनु० ३।१०३
8 बर्मेपेक्षेष्टा, अष्ट्यापक यथा तीर्थोर्दामनयविद्या
क्षितिता -मालवि० १ 9 ज्ञात, मूल 10 यज्ञ
11 पत्नी 12 उपदेश शिक्षा 13 उपयुक्त स्थान या
क्षेत्र 14 उपयुक्त या यथापूर्वं रीति 15 हाथ के कुछ
भाग जो देवताओं और पितरों के लिए पवित्र होत हैं
16 उर्वरशास्त्र के विभिन्न सिद्धान्त यारो 17 शिवा
चित्त लज्जा 18 स्मरण 19 शास्त्र 20 अग्नि के
सम्मान सूचक प्रत्यय जो सन्तो और सम्प्रदासियों के नामों
के साथ जोड़ा जाय - उदा० आनन्दतीर्थ आदि । सम०
—उपक्रम पवित्र अल -तीर्थोक्त च वाङ्मय तान्यत
बुद्धिर्बहुत उत्तर० १।१३. -कर 1 जैन बहुवृत्त,
बर्मेसाधोपेक्षेष्टा, जैन सन्त (इन वर्ग में 'तीर्थकर'
भी) 2 श्रमणाधी 3 अतिव्यक्त शारीरिक सिद्धान्त या
बर्मेसाधन का प्रवर्तक 4 विष्णु, -काक, -ध्वज,
—जायक तीर्थ का कीडा बर्मे लोलुप तीर्थोपवीची
—भूत (वि०) पावन, पवित्र, -आत्मा किसी पवित्र
स्थान के दर्शनार्थ जाना, पावनस्थानों की यात्रा,
—राक्षः प्रवास, इलाहाबाद, -राक्षिः जी (स्त्री०)
बनारस का विशेषण, -वाक, सिर के बाल, -विधि
(और आदि) हस्तकार जो किसी तीर्थ स्थान पर किये
जायें, -सेविन् (वि०) तीर्थ में वास करने वाला
(पु०) सारथ ।

तीर्थिक- [तीर्थ + ठन्] तीर्थ यात्री, बहु सम्पत्ती शास्त्रज्ञ जो
तीर्थों के दर्शनार्थ निकला हो पण्डा ।

तीर्थरः [तीर् + ण्य] 1 समुद्र 2 शिकारी 3 राजपुत्री की
किसी क्षत्रिय (वर्णसत्कर) के समान से उत्पन्न वर्ण-
सत्कर मन्तान ।

तीक्ष्ण (वि०) [तीक्ष् + क्त] 1 कठोर, गहन, पैना, तेज,
प्रचण्ड नरवा नात्मा उग्र-विलक्षणताधारणशीलपण्या
रघु० २।४८, धार या प्रचण्ड प्रयत्न उत्तर० ३।
२५ 2 गरम उष्ण ३ कमकीला 4 व्यापक 5 अनन्त,
अमास 6 भयानक ७ अज्ञान - ब्रह्म 1 गरमी तीक्ष्णपन
2 विनारा 3 ग्राह्य इष्टान 4 टोन, रागा, -ब्रह्म
(अर्थ०) प्रचण्ड रूप में तेजी से, अत्यन्त । सम०

आनन्द गाव का विदारण - वसि (वि०) क्षीप्र-
गामी फुलीला पोषकम् 1 माहमपुर्ण तीर्थ 2 क्षुर-
वीरता - सवेन वि०, 1 दृढ़ आवेगयुक्त, दृढनिश्चयी
2 अयुध अत्यन्त तेज ।

तु (अर्थ०) [तुद् + क्त] (बाप के आरम्भ में नितान्त
प्रयोग भाव प्रायः प्रथम शब्द के पश्चात् प्रयोग)
1 विराध सूचक अव्यय अर्थ 'परन्तु' इतके विप-
रीत 'हमरो ओर' 'तो भी' -स सर्वत्र मुक्तानामन्य
ययो, एक तु मुनमुलदर्शनमुख न लेने का० ५९,
रिपयै तु पित्रुभ्याः समीपनयनमवस्थितमेव -ब०
५ (इस अर्थ में 'तु' बहुधा 'कि' और 'पर' के साथ
जोड़ दिया जाता है और 'किन्तु' तथा 'परन्तु' तु के
निगूढन वाक्य के आरम्भ में प्रयुक्त होते हैं) 2 और
अब तो और एकदा तु रनिहायो समुपसृप्यावतीत्
३० ८, राजा तु तामासी भुत्वाज्जवान् -१२
3 के सम्बन्ध में के विषय में, की बात -प्रत्ययना
शास्त्रानुद्दिश्य पाक, चन्द्रोपराग प्रति तु केनापि विप्र-
लब्धासि -मुद्रा० १ 4 कभी कभी इससे 'मेद' या
श्रेष्ठ गुण' का पता लगाता है -मुष्ट पयो मुष्टतर तु
गुणम् -गण० 5 कभी कभी यह 'बलात्मक' अव्यय के
रूप में प्रयुक्त होता है भीमस्तु पाण्डवाना रीह,
गण० 6 कभी कभी केवल यह पद पूर्ति के लिए हो
प्रयुक्त होता है -निरर्थक तुहोपाधि पूरकप्रयोगवन्
चन्द्रा० २।९ ।

तुष्कार, तुष्कार, तुष्कार (पु०) विन्ध्याचल पर रहने वाली
एक जाति के लोग -तु० विष्णुका० १।८९३ ।

तुङ्ग (वि०) [तुङ्ग + क्त] 1 ऊँचा, उन्नत,
लम्बा, उत्तुप, प्रमुख -अनभिनिमित्त विषुवच्छलदर्शनतर-
लिततुङ्गतरङ्गम् -नीत० ११, तुङ्ग क्लोत्सगविकार-
रोह रघु० ५।३।७०, सि० २।४८, मेघ० १।२।५
2 दोष ३ गुरुवहार 4 मुख्य, प्रधान 5 उग्र,
घोसीला, -व 1 ऊँचाई उन्नतता 2 पहाड़ 3 चोटी,
शिखर 4 बुचबुह 5 पैदा 6 नारियल का पेड़ । सम०

—बीच पारा —अध दुर्वास्त हाथी, मयमत हाथी
—अत्रा एक नदी जो कुष्मा नदी में मिलती है, —वेना
एक नदी का नाम —लेखर पहाड़ ।

दुर्ग [दुर्ग + डीच्] 1 रात 2 हल्की । सम० — ईक
1 चन्द्रमा 2 सूर्य 3 'शिव की उपाधि 4 कुष्म की
एक उपाधि, —वसि चन्द्रमा ।

दुग्ध (वि०) [दुग् + क्षिप् + तुव् + लो + क] 1 खाली गाय
अभार, मत्स्य 2 बल्प भृङ्ग नगण्य 3 परित्यक्त सम्प
रित्यक्त 4 नीच कमीना, नगण्य तिरस्करणीय निक
म्मा 5 गरीब, दीन दुर्लभ — छद्म तुष्य भूमी । सम०
—दु एरण्ड का वृक्ष बाण्य, —बाण्यक भूमी दूर ।

दुग्ध [दुग् + अच्] इन्द्र का वज्र ।

दुग्ध [दुग् + उय] मूसा ब्रह्मा ।

दुग्ध (दुदा० पर० — तुयति) 1 देहा करना मोड़ना
मुकाना 2 चालबाजी करना ठगना चोखा देना ।

दुग्ध [दुग् + अच्] 1 मूह बेहरा घोष (सूत्रक की)
—बृधनगुर्धराताम्रकुटिले (शुका) —वाय्या० २।९
2 हाथी की सूड 3 उपकरण की नोक ।

दुग्धिः [दुग्ध + इन्] 1 बेहरा, मूह 2 बोंछ —हि (स्त्री०)
नामि, भूषी ।

दुग्धिन् (पु०) [दुग्ध + इनि] शिव के बैल का नाम ।

दुग्धिन् (वि०) [दुग्ध + म] दे० 'दुग्धिन्' ।

दुग्धिन् (वि०) [दुग्ध + म मिष्मा० लच् वा] 1 बाधूनी
बाबाल 2 उम्हरी हुई नामि बाला 3 गप्पी — तु०
'दुग्धिन्' ।

दुग्धः [दुग् + डक्] 1 बाय 2 पत्थर लब्ध एक प्रकार
का मोला घोषा या तुमिया जो मुमें की मर्ति बाय
में डाला बाय —त्वा 1 छोटी इलायची 2 नील का
पीछा । सम० —अकव्रमन् तुमिया या कामीस जो जॉकों
में दवा की मर्ति लगाया जाय ।

दुग्ध (दुदा० पर० — तुयति, तुम) 1 प्रहार करना बायल
करना, बाधात करना तुदाव मदया बारिन् मट्टि०
१५।८१, १५।३७, वि० २०।७७ 2 चमोना बहुस
चमोना 3 खरोचना, चोट पहुँचाना 4 पीडा देना
नैन करना, लमना, कष्ट देना —तुनीक्षधारापतनोष-
क्षायकस्तुयति केत प्रथम प्रवासनाम् —अतु० २।४,
१।२८, आ—, प्रहार करना, ताडना देना, यन्० ४।
६८, अ—, शरणा चोट पहुँचाना बायल करना
(दे०) प्रेरित करना, बाध डकेलना (बाल०), डार
डालना, बार २ बाधक करना (किसी काम को करने
के लिए) —प्रविस भृमिनि प्रतोषधाना न चलनि
बाधकृता दमनवेक्य मृच्छ० १।५६ ।

दुग्ध [दुग् + डक् + लो + क] 1 पेट, मोह । सम० — क्षुधिका,
—क्षुधी नामि का नैन परिराज्य, परिरुन् दुग्ध
(वि०) दुग्ध, बालसी ।

दुग्धन् (वि०) [दुग्ध + मत्तुप् मत्स्य बल्बन्] तोंबाला
मोटा ।

दुग्धिन्, दुग्धिन्, दुग्धिन् (वि०) [दुग्ध + डक्, तुव्
+ इनि तुमि + म, तुम्य + इत्यच्] 1 मोटे पेट बाला
2 जिसकी तोह बड़ नई है 3 भरा हुआ, लबा हुआ
—यकस्त्वन्दिनामभरिन्दिनामभय ग्रहामान्य —नामि०
१।६ ।

दुग्ध (वि०) [तुव् + क्त] 1 प्रहृत चोट किया हुआ बायल
2 मताया हुआ । सम० —बाय दर्जी ।

दुग्ध (वि०) कथा० पर० — तुम्यति तुम्याति चोट
मारना क्षति पहुँचाना प्रहार करना मट्टि० १७।
७९ ९० ।

दुग्ध (वि०) [दु + मूलक] 1 जहाँ पर शोरगुल मच रहा
हो कोलाहलमय भग० १।१३ १९ 2 मोपण कोंची
रन्० ३।५७ 3 उत्तमित 4 उद्विग्न बड़काया
हुआ व्याकुल व्यथितस्थित रन्० ५।६९ (पु० नपु०)
1 होहल्ला हुगामा 2 व्यथितस्थित बड़ पड़ रण
सकुल ।

दुग्ध [दुग्ध + अच्] एक प्रकार की लोकी ।

दुग्धर [दुग्ध + रा + क] एक गन्ध का नाम दे० दुग्धर
रन् एक प्रकार का बाध —म नाम पूरा ।

दुग्धा [दुग्ध + राय] 1 एव प्रकार की लम्बी लोकी
दुधार गाय ।

दुग्धि, डी (स्त्री०) [दुग्ध + इन् दुग्धि + डीच्] एक
प्रकार की लोकी कड़वी सुखी —न हि दुग्धीफलविह्वलो
कीमावध प्रयाति महिमानम—नामि० १।८० ।

दुग्ध (दु) क [दुग्ध + उठ] एक गन्ध का नाम ।

दुग्ध [दुग्ध + उठ] एक गन्ध का नाम ।
—तुगमनुरहतस्तथा हि देणु श० १।३१ रन्०
१।४२ ३।५१ २ मन विचार —भी बोधी । सम०

आरोह बृहत्सवार उपचारक साहस —प्रिय,
—यन्, जो ब्रह्मचर्येय् ब्रह्मन्-कन या बनिबाय
ब्रह्मचर्य स्वीयम के लभाव में विवश हो ब्रह्मचर्य
जीवन बिताता ।

दुग्धिन् (पु०) [दुग्ध + इनि] बृहत्सवार ।

दुग्ध [दुग् + मय + अच् युम वा क्षिप्] बोहा —मान्
मङ्गलुक्कनुरङ्ग एव —श० ५।५ रन्० ३।३८, १।३३
—गन् मन विचार नी बोधी । सम० —अरि मैसा
—द्विचक्षी यम —प्रिय, यन् जो मेघ ब्रह्मचर्य
यत्र रन्० १।३६१ बाधिन्, साधिन् (पु०)
कथना, —ब्रह्मन् किन्नर बाला, —स्वानम् ब्रह्मन्
अवधाना —स्वम् चोरो का डल ।

दुग्ध [दुग् + मय + लच् युम] बोहा रन्० ३।६३
१।७० ।

दुग्धन् [दुग् + डक्] 1 बनावलित 2 एक प्रकार का यत्र ।

गुरासङ्ग (पुं०) [गुर + सङ्ग + भिष् + भिष्वा (कृ०)
ए० व०—गुरासङ्ग] दन्त, कु० २।१, रघु०
१५।४०।

गुरी (गुर + गृ + ग्री) १. एक रेशेदार उपकरण जिससे
बुलाहे बाने के चारों की साँठ करके बन्धन बन्धन
करते हैं २. गली, बुलाहे की गाल—सङ्कटापगुरीगुरी
—नै० १।१२ ३. बिचकार की बूची।

गुरीष (वि०) [गुर + ष, बाह्यलोप] बीषा,—कृ०
बीषाई, बीषा माय, बीषा (वेदा० ६० में) २ आत्मा
की वस्तुर्ब बबस्था जिसमें वह बड़ा अर्थात् परमात्मा
के साथ नराकार हो जाती है। सम०—बर्ब: बीषे
बर्ब का मनुष्य, धृष्ट।

गुरष्क: (ब० व०) गुरी लोग।

गुर्य (वि०) [गुर + य, बाह्यलोप] बीषा, नै० ४।१२३,
—यैष १ एक बीषाई, बीषा माय २ (वेदा० ६० में)
आत्मा की बीषी बबस्था जिसमें आत्मा बड़ा के साथ
नराकार हो जाती है।

गुम् (प्रा० पर०, घ्रा० उभ०—भोक्ति, भोक्तृयति—ते,
(तुल्ययति—'मी जिसे कुछ लोप 'गुमा' की नामवाचु
मानते हैं) १. तोलना, मापना २. मन में तोलना,
विचार करना, सोचना ३. उठाना, ऊपर करना
—भीतासे तुलिते—महावी० ५।१७, रीलस्त्वगुमित्तस्या-
द्वेरादधान इव हिङ्गम्—रघु० ४।८०, १२।८९, शि०
१५।३० ४ सम्भालना, पकड़ना सहारा देना—पृथिवी-
तले तुलितमूत्रुच्यते—शि० १५।३०, ११ ५. तुलना
करना, उपमा देना (करने के साथ)—मुञ्चं स्वेध्यापारं
तवपि च शङ्काह्वेन तुलितम्—मत्तु० ३।२०, शि०
८।२२ ६ तुल्य होना, समकक्ष होना (कर्म० के साथ)
प्रासादात्मा तुल्यितुमन् यच्च तैस्तैर्विसेवै—येष० ५४
७. तुलका करना, मईया, करना, तिरस्कार करना—
अन्त:सार चन तुल्यितु नातिष्ठ शक्यति त्वाम्—येष०
२०, (यहाँ 'तु' का अर्थ है 'सम्भालना या बहा के
जाना') शि० १५।३० ८. सन्नेह करना, अभिस्वाप्त
पूर्वक परीक्षण करना—क अद्वास्वति मृतायै सर्वो मां
तुल्यिष्यति—मृच्छ० ३।२५, ५।४३ (यहाँ कुछ संस्करणों
में 'तुल्यिष्यति' भी पाठ है) ९ आंच करना, परीक्षण
करना, दुईया करना—हा बबस्थे। तुल्यति—मृच्छ०
१, (तुल्ययति),—उष०—सम्भालना, सहारा देना,
बाने रहना।

गुलम् [गुल + लृट्] १ तोलना २ उठाना ३. तुलना करना
उपमा देना आदि,—मा १ तुलना २. तोलना ३. उठाना
उपग्रह ४ निर्धारण करना, आकना, प्राक्कलन करना
५. परीक्षा करना।

गुलसी (तुला सादृश्य स्थिति नाशयति— तुला + हो। क
+ हो) एक पवित्र पीषा जिसकी हिङ्गु विशेषकर

हिङ्गु के उपरान्त पूजा करते हैं। सम०—कम्प
(सा०) तुलसी का पत्ता, (बाल०) बहुत तुल्य
उपहार,—विष्णुः कार्तिक भूषणा श्रावणी की, शालग्राम
की प्रतिमा के साथ तुलसी का विवाह।

गुला [नोस्वेज्जवा—गुल् + भज + टाप्] टरायू, टरायू
की बंदी।

गुल्ल व १. टरायू में रखना, तोलना २. बाप तोल ३. तोलना

४. बिलाना—गुल्लना, समानता, समकक्षता, समता
(बं०, करण० या सम्यक् में प्रयोग)—कि पूर्वोद्वेगि
गुलामुपवाति सङ्कल्पे—वेणी० ३।८, गुला ब्यारोहति
वन्तवसत्ता—गु० ५।५, रघु० ८।१५, उष० परस्पर—
गुलामपिरोहता है—रघु० ५।१८, १५।८, ५० ५. गुला
राशि, सातवीं राशि—अवधि गुलामपिच्छो मास्मानपि
अन्यपदकानि—यं० १।३३० ६. घर की छत पर

लगा हुआ सहतीर ७ सोना चांदी तोलने का १०० एक
बड़ा। सम०—कुक: कम तोलना,—कीटि:—ही
नूपुर (पैरों में पहनने का भिन्नी का बानूचन)—ठीका
बलस्तीरवाच्योत्पलस्त्वसत्तुलाकोटिनिमादकोमल:—

शि० १२।४४,—कीटि:—क: ठोस द्वार कठिन
परीक्षा,—हलम् सटीर के बराबर ठोस कर होने का
चांदी का किसी ब्राह्मण के लिए दान,—अष्ट: टरायू का

पल्लव,—बट: १. व्यापारी, व्यवसायी, लौहार २. राशि-
चक्र में तुलाराशि,—वाट: व्यापारी, व्यवसायी, लौहा-
नर,—परीक्षा तुला द्वार तोलने की कठिन परीक्षा,—

गुल्ल: सोना, बचाहराट तथा अन्य मूल्यवान् वस्तुओं को
एक मनुष्य के भार के बराबर होने का दान में किसी
ब्राह्मण के लिए ही आई) गु० तुलाराज,—अष्टह:—

—अष्टह: टरायू की बंदी या डोरी,—मालम्,—कवि:
टरायू की बंदी,—बीजम् वृषची, गुला,—गुलम् टरायू
की डोरी।

गुलित (गु० क० ड०) [गुल + क्त] १ तोला हुआ,
प्रतिगुलित २ तुलना किया हुआ, उपमित, बराबर
किया हुआ—मत्तु० ३।३६, वै० 'गुल'।

गुल्य (वि०) [गुल्लया संज्ञित यत्] १. समान प्रकार का
लोभी का, समुलित, समान, समूह, अनुस्यू (बं० वा
करण० के साथ अथवा समास में) मत्तु० ४।८६, बाह०
२।७७, रघु० २।१५, १२।८०, १८।१८ २. लोभ

३. लवक, बड़ी ४ लवकरी। सम०—कर्म समकक्षी,
सबको समष्टि से देखने वाला, फलम् विककर
पक्षपात करना, सहपात,—कीटि: (अं० वा० में)

५. अन्कार, एक ही विशेषण रखने वाले कई पदार्थों
का एकत्र संबोध, पदार्थ बाहे प्रसंगानुसूत हो अथवा
असंबद्ध—विशतानां सङ्कटानां सा पुनस्तुल्यवैयर्थिता

—काण० १०, तु० चमत् ५।४१,—कम्प (वि०)
अनुस्यू, समकक्ष, समान, समूह।

कुवर (वि०) [कु+वरन्] 1 कपाय, कसेका 2 बिना दाही का (कुवर की) ।

कुम् (विभा० पर०—तुष्यति, तुष्ट) प्रसन्न होना, समुष्ट होना, परितुष्ट होना, बुझ होना (श्रावः करव० के श्राव) —रत्नैर्हस्तपुत्रं देवा—मनु० २।८० मनु० १।२७७, कण० २।५५, मनु० २।११, १५।८, रघु० १।६२, श्रेर०—तोषयति वै, प्रसन्न करना, परितुष्ट करना, समुष्ट करव, परि—, परितुष्ट होना, प्रसन्न होना, समुष्ट होना—बसमिह परितुष्टा वलकलैस्त्व व कल्या—मनु० १।५०, अत्यक्तं च परितुष्यति काशिकाया २।२, तन् प्रसन्न होना, परितुष्ट होना समुष्ट होना—समुष्टो नार्जवा भती नर्वा नार्वा तर्जव च मनु० १।६०, मनु० १।५, मय० १।१७ ।

कुम् [कु+क] बनाव की मूली, बजानाया तत्सर्व (बज्जबनम्) तुषाणी कथन बचा—मनु० ४।७८ ।
कुम्—कविः—कलकः बनाव की मूली या बुर की बाव,—कम्पु (मनु०),—उपकम्प बावक या जी की कांभी,—कम्पु,—सारः जाल ।

कुम्बर (वि०) [कु+कार्] ठन्डा, शीतल, तुषाराच्छन्न (बाके के कारण शीतल), बोल से मुक्त—वि० १।७, कर्षा हि तुषाव न वारिषारा स्वापु तुषांश्च स्वयते कुम्भार—म० १।११, ८।१ कोहरा, पाना २ बर्ग, विष्णु—कु० १।६, मनु० २।१३ बोल—रघु० १।४८४ व० ५।१९४, बुध, लोचकरी, कुम्हार, ठन्डे पानी की बीजकर—पुष्पकुम्भारैर्विनिर्मितैराणाम् रघु० २।११, १।१८६, एक प्रकार का कुम्बर । सम०—अक्षिः,—किटि,—कलकः हिमालय पहाड़—तुषारादिवात,—वेध० १०७, कणः बोल के कण, हिवकण, कुम्हरा पाना,—कणः डरवी का बीजक,—किरक, रक्तिः कम्पना,—बजव ४९, वि० १।२७,—वीर (वि०) 1. हिम की शक्ति श्वेत 2. हिम के कारण श्वेत,—८ कुम्बर ।

कुम्भिक (स० य०) [कु+भित्] उपवेकताओं का समूह को पिन्की में १२ का १९ कहे जाते हैं ।

कुम्भ (ब० क० क०) [कु+क] 1 प्रसन्न, तुष्ट, बुझ, परितुष्ट, परितुष्ट 2 को कुल करने पाह है उसी से समुष्ट, तथा कण के प्रति उदासीन ।

कुम्भिः (स्त्री०) [कु+भित्] 1. समीप, परितुष्ट, प्रसन्न, शीतोष्ण 2. (स० य० में) नील स्त्रीकृति, प्रायः कण से बकि की कालिका न होना ।

कुम्भः [कु+कुम्] कर्षयति कालों में पहुँचने की गति कुम्भ—कुम् ।

कुम्भिन (वि०) [कु+इन्, कुम्भरच] कम्पा, शीतल,—कम्प 1. हिम, बर्ग 2. बोल, कुम्हरा तुषावकर्म—कुम्भिः कर्षयिः—मनु० ४।७, १।१५ 3. पर्वती

4 कुम्बर । सम०—अक्षुः,—कार,—किरक,—कुम्भिः,—रक्तिः 1 कम्पना,—वि० १।१० 2 कुम्बर, कलकः—अक्षिः,—कलकः हिमालय पहाड़,—रघु० ८।५४,—कणः बोल की बुर—बजव ५४, लक्ष्मी बर्ग ।

कुम्भि 1 (पुं०) उम—तुषयति—वे) निकोडना, 11 (पुं०) बा०—तुषयते) मरना, मर देना ।

कुम्भः [कुम्+कम्] तरकस मिलितशिकीमुष्पाटमि-पटलकृतस्मरपुनविकासे गीत० १, रघु० ७।५७ ।
सम० बा०ः कनुर्बर ।

कुम्भी, कुम्भीर [कुम्+भीष्, कुम्+ईरन्] तरकस—रघु० १।५९ ।

कुम्भरः [कु+कम्प, कु+कुम्भो] 1 बिना दाही का मनुष्य 2 बिना नील का बेल 3 कपाय, कसेका 4 हिजड़ा ।

कुम्भ (विभा० बा०—तुष्यते, तुम्) 1 जल्दी से जाना, शीघ्रता करना 2 बोट पहुँचाना, मारना ।

कुम्भ [कुम्+कम्] एक प्रकार का बाधकम् ।

कुम्भे (वि०) [कुम्+कम्] कन ऊठ तस्य तस्यम्] कुम्भीका तेज, शीघ्रकारी 2 हुनगामी बेडा, मं कुम्भी, शीघ्रता,—कम्पु (बल्य०) कुम्भी से, जल्दी से कुम्भानीयतां तुम्भे पूर्वकचन्निमानने—तुषाव० ।

कुम्भे,—कम्पु [कुम्भे तादृशते कुम्+कम्] एक प्रकार का बाधकम्, तुम्भी—मनु० ७।२२५, कु० ७।१० । सम०—कणः उपकरणों का समूह ।

कुम्भः, कम् [कुम्+क] कई,—कम्प 1 पर्वारिच, माकाल बाय 2 बाल का मुष्का 3 सहस्रतुल का पेड़,—अम 1 कपाय का पेड़ 2 लम्प की बनी,—की 1 कई 2 दीये की बनी 3 गुलाबों का बुझ या कुम्भी 4 चित्रकारी की कुम्भी या तुम्भी 5 नील का पीछा । सम०—कर्मकम्प—कम्पु कुम्भी, कर्षाई कई पीनने की कुम्भी,—विष्णुः कई,—कलकरी बिनीला कई के पीचे का बीज ।

कुम्भकम् [कुम्+कम्] कई ।

कुम्भिः (स्त्री०) [कुम्+भित्] चित्तरे की कुम्भी ।

कुम्भिका [कुम्+कम्+टाप] चित्रकारी की कुम्भी, केडनी,—उम्भीकितं कुम्भिकयं चित्रम्—कु० १।११ 2 कई की बनी (दीपक के लिए अथवा उबटन बादि लकाने के लिए) 3 कई मरा नहा 4. बर्ग, छेद करने की लताव ।

कुम्भीक (वि०) [कुम्भीन्+क, मनीप] चुप रहने वाला, बीनी, स्वल्पभावी ।

कुम्भीन् (अव्य०) [कुम्+भीन् बा०] नीरवता में चुपचाप, चुपके से, बिना बोले वा बिना किसी शोरवृत्त के कि ब्रह्मास्तुम्भीनास्ते—विष्णु० २, न वीर्य इति वीरियं मत्स्या तुम्भीं वसुह ह मय० २।९ । सम०—अव्यः नीरवता, निस्तम्बता, शीकः क्षामोक्ष, स्वल्पभावी वा बीनी ।

तुल्यम् [तुल्य + तन्, हीनं] 1 बटा 2 तुल 3 पाप
4 कण, तुल्य बटा ।

तुह्, (तुवा + पर + तुहति) मारना, चोट पहुँचाना—दे०
तुह् ।

तुल्यम् [तुह् + क्त, हलोपसर्ग] 1 बास - कि जीर्ण तुल-
मान मानमहतामवेसर केसरी अर्त्त० २१२९ 2 बास
की पत्ती, सरकण्डा, तिनका 3 तिनकों की बनी कोई
चीज (जैसे बैठने की बटाई), तुल्यता के प्रतीक रूप
में प्रयुक्त—तुल्यमिव सङ्कलनमोर्ध्व तात्पर्यशब्द—अर्त्त०
२१२७, दे० 'तुलीकु' भी । सम० अग्निः 1 मृग
या तिनकों की आग - मनु० ३११६८ 2 जस्सी तुल्य
जाने वाली आग अग्निः गिराट, अदबी ऐसा
जङ्गल जिनमें बास की बहुतायत हो—आकर्त्त हवा
का बवम्बर, मनु०, अणु (नपु०), कुङ्कुमम्,

नीलम् एक प्रकार का सुगन्ध इत्य् इन्द्रः ताड का
तुल्य, —उष्का तिनकी की माला, फूल की आग की
जो—ओष्कम् (नपु०) फूल की भापरी, बाष्क, इम्
बास का डेर, कुडी कुडीरकम् बास फूल की कुटिया
केतु ताड का तुल्य, बोधा एक प्रकार की गिर-
मिट, गौह, बाह्विम् (पु०) नीलम् नीलकान्त मणि
हर मोमेद, एक प्रकार का रत्न कल्पवृक्षा,
अलुका तिनकी का लार्वा, तुल्य 1 ताड का तुल्य,
अनुर 2 नारियल का पेड़ 3 सुपारी का पेड़ 4 कनेकी
का पीठा 5 छुहारे का तुल्य, बाष्कम् मङ्गली अनाज
को बिना बोये उगे, प्लवः 1 ताड का तुल्य 2 बास,
बीजम् दन्त ब-दन्त लडाई, तुली बटाई, सरकण्डा
का बना मुहा - प्राय (वि०) तिनके के तुल्य का
निकम्प, नगण्य, बिम्बः एक शक्ति का नाम - रघु०
८।७७, —अग्निः एक प्रकार का रत्न (अम्बर, राल),

—अणुः जमानत या जामिन प्रतिभू (सम्भवत
'अणवत्पुण' का अशुद्ध पाठ), रत्नः 1 नारियल का
पेड़ 2 बास 3 ईल गुप्ता 4 ताड का पेड़ तुल्य
1. ताड का पेड़, अनुर का तुल्य 2 छुहारे का तुल्य
3 नारियल का पेड़ 4 सुपारी का पेड़ औत्तमं
एक प्रकार का सुगन्धित बास, लारा केले
का पेड़, सिंह कुल्हाड़ा, हर्ष्य, बास फूल का
बना बर ।

तुल्यम् [तुल्य य + टाप्] बास का डेर ।

तुलीय (वि०) [वि + लोय सप्र०] तीसरा बम् तीसरा
भाग । सम० - बहुतिः (पु०, स्त्री०) हीचडा ।

तुलीयक (वि०) [तुलीय + क्त] प्रति तीसरे दिन होने
वाला, (दुवार) तैया ।

तुलीया [तुलीय + टाप्] 1 बाह्र पक्ष का तीसरा दिन, तीस
2 (स्त्री० में) धर्म कारक वा उसके विनमित-पेहलू ।
सम० - कुल (वि०) (लेन बादि) तीन बार जाता

गया, —सत्पुण्यः कर्मकारक का समान, —अनुक्ति
(पु० स्त्री०) हीचडा ।

तुलीयम् (वि०) [तुलीय + र्नि] तीसरे बंध का अधिकारी
(बाध का) ।

तुल्य (स्त्री० पर०, स्त्री० उभ०) तर्पति, तुल्यति, तुल्ये, तुल्य
1 काटना, कण्डक करना, बीरना 2 मार डालना,
मष्ट करना, बहार करना—अर्त्त० ११३८, १४१३,
१०८, १५११, ४४ 3 मुक्त करना 4 बचना
करना ।

तुल्यः (दिवा०, स्त्री०, तुवा० पर०) तुल्यति, तुल्यति, तुल्यति,
तुल्य 1 सत्पुष्ट होना, प्रसन्न होना, परिपुष्ट होना
अथ तत्पर्यन्त मांसाहार अर्त्त० ११२९, प्राचीन
वातपुष्प कूर—१५१२९, (प्राय करण० के साथ,
परन्तु कभी-कभी संध० या अर्ध० के साथ भी) —को न
तुल्यति विनेन हि० २१७४ तुल्यस्तीतिविनेन—अर्त्त०
२१३४, नालिस्तुल्यति काष्ठाना नापनामा महीधरि,
मातङ्ग सर्वभूताना न पुता बामलोचना—वच० ११३७,
तस्मिन्नु सत्पुष्टोवास्तरे यज्ञे—महा० 2 प्रसन्न करना,
परितुल्य करना, —प्रेर० परितुल्य करना, प्रसन्न करना
—इच्छा तितुल्यति, तितुल्यति, ॥ (स्त्री० पर०
चुरा० उभ०—) तर्पति, तर्पयति—दे० 1 बलाना,
प्रसन्नित करना 2 (भा०) सत्पुष्ट होना ।

तुल्य (वि०) [तुल्य + क्त] सत्पुष्ट, सत्पुष्ट, परिपुष्ट ।

तुल्यि (स्त्री०) [तुल्य + क्त] सतोष, वरिष्ठोप, रघु०
२१३९ उ३, ३१३ मनु० ३१२७१ अण० १०१८
2 अतिमृत्ति, उ३ 3 प्रसन्नः परिपुष्टि ।

तुल्य (दिवा० पर०) तुल्यति तुल्यति 1 व्यासा होना, —अर्त्त०
७१०६, १४१३०, १५५१२ 2 कामना करना, कामना
यित होना, उत्पुष्ट या उत्कृष्ट होना ।

तुल्य (स्त्री०) [तुल्य + क्त] (कर्त्त० ए० व०—तुल्य-इ)
1 व्यास तुल्य तुल्यत्वात्त्य विवति ललित स्वातु
तुल्यि—अर्त्त० ३१२२ अणु० १११२ 2 लालसा,
उत्पुष्टता ।

तुल्य दे० तुल्य । सम०—अर्त्त (वि०) व्यास से बाहुल्य,
व्यास, हनु पानी ।

तुल्यि (मू० क० इ०) [तुल्य + क्त] 1 व्यासा—वट०
९, अणु० १११८ 2 लालची, व्यासा, लाल का
इच्छुक ।

तुल्यम् (वि०) [तुल्य + क्त] कोजी, लालची, व्यासा ।

तुल्यम् [तुल्य न + टाप् क्त] 1 व्यास (बा० बीर
माल०) 2 तुल्य लालचकन हि० ११७१, अणु०
१११५ 2 तुल्य, लालसा, लालच, जीव, शिष्टा
—तुल्यो जिह्वि अर्त्त० २१७७ ३१५, रघु० ८।२ ।
सम०—अण० इच्छा का लाल, मन की लालि, संतोष ।

तुल्यानु (वि०) [तुल्य + अनु] बहुत व्यासा ।

पू (इवा० पर०, पूरा० उभ०—तुषेति, तुषेति—ते, तुष, इच्छा० तितुषति, तितुषति) कति पर्वणमा, आषाढ पर्वणमा, पार गच्छा, गृहार करना—यु तुषेत्तुषि जीकोज्जं विते मा निष्पराकमन्—महि० १।१९ (तामि) तुषेत्तु पूरा सह सन्मयेन १।१९।

तु (इवा० पर०—उरति, तीर्थ) 1 पार पर्वणं जाना, पार करना—केनोपुषेन परलोकासीं तरिष्ये—मृच्छ० ८।२३, स तीर्था कपिषाम्—रघु० ४।३८, मनु० ४।७७ 2 पार पर्वणमा, (मार्ग) तय करना, कु० ७।४८ नेच० १८ 3 बह्ना, तीरना—क्षिप्ता तरिष्यत्पुत्रके न पर्जन्य—महि० १२।७७ 4. पुर्ण करना, जीत लेना, पार करना, विजयी हो जाना तीर—हि तरलपानवम्—का० १७५, इच्छाम् महतीर्ण—रघु० १४।९, मय० ८।४८, मनु० ११।३४ 5 किनारे तक जाना, पारगंत होना—रघु० ३।३० 6. पूरा करना, सम्पन्न करना (प्रतिष्ठा का) पालन करना—दीपातीर्णप्रतिष्ठ—मृद्वा० ८।१२ 7 बचाया जाना, बच निकलना,—नाबो बर्चनयातीर्णा बय तीर्णा महावयात्—हृदि०, कर्मका०—तीर्थते, पार किया जाना, (दे० तारवति—ते 1 के जाना, माने बढ़ना 2 पर्वणमा 3 बचाया, उद्धार करना, मुक्त करना, इच्छा०—क्षितीर्षति, तितरिषति (तितरीषति) पार करने की इच्छा करना—दोर्म्यां तितरीषति तरङ्गवतीमुनवज्जम्—गाम्ब० १०, कति—1 पार पर्वणमा, जीत लेना, विजयी होना—मय० १३।२५, हि० ४, अय—1 उमरना, बकड़ित होना—रघावततार य—रघु० १।५४ १३।९८, नेच० ५० 2 बह्ना, में गिरना—सागर बर्चनित्वा कुच वा महानक्षतरति—स० ३ 3 प्रविष्ट होना, घुसना, जाना—माकवि० १।२२, सि० १।३२ 4 पुर्ण करना, दमन करना, पार करना 5 (किसी वेष्टा का) अनुष्ठ के रूप में इस बरती पर अवतार लेना—तु० अवतार, दे०—जाना, बाहर जाना, जाना—रघु० १।३४, उभ०—1 (पानी में से) बाहर निकलना, (बहाव से) उतरना, निकलना—रघु० १।१७, सि० ८।९१ 2 पार जाना, पार पर्वणमा अवतारिषुरमोधिम्—महि० १५।११, १०, रघु० १२।७१, १६।१३, नेच० ४७ 3 दमन करना, जीतना, पार करना—अवतनवर्णवापुतीर्णम्—मृच्छ० १०।४९ इसी प्रकार—रोलोतीर्ण, निम्न—, 1 पार पर्वणमा—मनु० ३।४ 2 पूरा करना, सम्पन्न करना, निष्पन्न करना 3. पार करना, पूरा करना, जीतना—रघु० ३।७ 4 पूरा करना, अन्त तक जाना—रघु० १४।२१, ३०—पार पर्वणमा, दे०—अपना, बोझा देना—मा तथा प्रतापं—स० ५, कित्तेयं कविनि प्रतापितमना स्तप्यं विद्यामन्त्रि—मनु० १।७८, सि०—1 पार जाना, पार करना, पूरा जाना—रघु० ३।७७ 2 देना,

स्वीकृत करना, प्रदान करना, समिदान करना, अर्पित करना, द्रष्टा करना, अनुग्रह करना—मयवाग्वादीचरते बर्चनं वितरति—स० ७, वितरति नृप प्राप्ते विद्यां यथैव तथा बडे—उत्तर० २।४, निवासहोतोष्टनं वितरेव—रघु० १४।८१, मा० १।३ 3 देना करना, उपानयन करना—ज्योत्स्नामङ्गलिह वितरति हंसमेवी—फि० ५।११, नीत० १ 4. से जाना, ज्यति—, पार करना, पूरा करना, जीत लेना, सन् 1 पार करना 2 तीरना, बह्ना 3 पूरा करना, जीत लेना, अन्त तक जाना।

तेजन् [तिज् + ह्युट्] 1 बीत 2 देना करना, देण करना 3 जाना 4 प्रवीण करना 5 बचकाना 6 डरकडा, नरकुल 7 बाण की नोक, हतय की चार।

तेजकः [तिज् + णिच् + कल्] एक प्रकार का तीतर।

तेजस् (नपु०) [तिज् + भुत्] 1 तेजो 2 (चाक्षु की) देनी चार 3 अग्नि क्षिप्ता की चोटी, बाण की लपट की नोक 4 गर्मी, चमक, दीप्ति 5 प्रभा, प्रकाश, ज्योति, कांति—रघु० ४।१, मय० ७।९, १०।३० 6 गर्मी या प्रकाश, लुपि के पाँच मूलतत्त्वों में से एक—अग्नि (अन्य चार में हैं पृथिवी, अप्, वायु और आकाश) 7 गीतर की कांति, तीर्थदेव—रघु० ३।१५ 8 तेजस्विना—स० २।१४, उत्तर० १।१४ 9 ताकत, शक्ति, सामर्थ्य, साहस बल कीर्ति, तेज—तेजस्नेजति साम्प्रतु—उत्तर० ५ 10 तेजस्वी—तेजसा हि न वय समीक्यते—रघु० १।११ 11 आरमबल, जोब या ऊर्जा 12 चरित्रबल, जोज्यविता 13 तेजोवृष्ट कालि महिमा, प्रतिष्ठा प्रभुता, गौरव—तेजोविषेष्वाभूमितां (राजसूयसी) इवान—रघु० २।७ 14. तीर्थ बीज, लुक—स्यावसाजीय यदि ये न तेज—रघु० १४।९५, रघु० २।७५, इत्यन्तेनाहितं तेजो इवानां भूतये नृम—स० ४।१ 15 वस्तु की मूल-प्रकृति 16 अर्क, सत 17 आत्यिकसमिन्, नैतिक शक्ति, जाहू की कति 18 जाव 19 मज्जा 20 पित 21 चोडे का वेग 22 ताका मज्जन 23 सोना। स०—कर (वि०) 1 कालिचर्चक 2 तीर्थचर्चक, कालिचर्च—अङ्ग 1 अयमान, प्रतिष्ठा का नाव 2 अवसाद, हुतोत्सा-हता,—मज्जन् प्रकाश का परिवेष्ट,—मूर्ति: पुनः,—कयः परवाना बह्ना।

तेजस्व् तेजोवत् (व०) [तेजस् + वत्, मय व] 1 उज्ज्वल, चमकीला, साक्षार 2 तेज, तीका 3 गीर, तीर्थसाही 4 ऊर्जस्वी।

तेजस्विन् (वि०) (स्त्री०—नी) [तेजस् + विनि] 1 चमक-वार, उज्ज्वल 2 क्षतिघाती, तीर्थचम्पक, वसवान्—फि० १६।१६ 3 गौरवसाही, बहुमानवान 4 प्रतिष्ठ, विख्यात 5 प्रचंड 6 अग्निवादी 7 विविशम्पत।

तेजित (वि०) [तिच् + तिच् + क्त] 1 पनाया हुआ, तेज फिटा हुआ 2 उत्तेजित, उदीप्त, प्रणोदित ।

तेजोवच (ब०) [तेजस् + वच] 1 यशस्वी 2 उज्ज्वल, चमकदार प्रकाशमान—यग० ११।४७ ।

तेजः [तिच् + वच्] नीला या तर होना आर्द्रता ।

तेजन् [तिच् + ल्युट्] 1 नीला करना, तर करना 2 आर्द्रता 3 चटनी, चिर्च यस्ताला (जो भाजन को चक्कर बनाये) ।

तेजन् [तिच् + ल्युट्] 1 खेल, मनोरंजन, आमोद-प्रमोद 2 विहारभूमि, जोरास्थल ।

तेजस (वि०) (स्त्री० स्त्री) [तेजस् + अच्] 1 उज्ज्वल, शानदार, प्रकाशमान 2 प्रकाशमय—नैजसय वनुष प्रयुष्यं रघु० ११।४३ 3 शान्तय 4 जोशीला 5 आजस्वी, दमर्द ७ शास्त्रवाली, प्रबल, सम्यक् । सम०—आकर्तनी कुठाली ।

तेजित (व्या०) (स्त्री०—स्त्री) [तिज्जि + क्त] सहजसीक, सतिष्ण ।

तेजितः [तेजि + क्त] तीतर ।

तेजितः (पु०) 1 नैडा 2 देवता ।

तेजितः [तिज्जि + अच्] 1 तीतर 2 नैडा, रम् तीतरो का समूह ।

तेजिरीय (पु० ब० व०) [तिजिरीया प्रोक्तम् अजीयते—तिजिरी + छ] यजुर्वेद की तेजिरीय शाखा के अनुयायी, यः यजुर्वेद की तेजिरीय शाखा (कृष्ण यजुर्वेद) ।

तेजिरः [तिजि + अच्] आँका का, एक रोग बुधलापन ।

तेजिक (वि०) [तीर्ज + क्त] पवित्र, पावन, क. 1 एक सम्प्रदायी 2 किसी नवीन धार्मिक या दार्शनिक विद्वान का प्रतिपादन करने वाला कच् पवित्र जल (जैसा कि किसी पुण्यतीर्थ से लाया हुआ हो) ।

तेजम् [तिज्जि + क्त] 1 नल-लभेत मिक्तान् नैलमाय यन्तः पादयन् भर्तु० १।१ पाश० १।२८३, रघु० ८।३८ 2 घृष । सम० घड़ी चिर्च बरया—अम्बज्जः शरीर में तेज की मालिश करना—कण्वकः खलो वचिका, वचनी 1 चन्दन 2 वृष 3 तारपीन,—विज्जः सकट निल पिपीलिका छात्रो काज रोय की पिडीटा, काज दिगट का वृक्ष,—आजिलो वमेली, वाली दीवे की बत्ती, अम्बज्ज नैला का कोमल—स्फटिकः एक प्रकार की मणि ।

तेजज्जः एक देश का नाम, वर्तमान कर्नाटक प्रदेश, जा (ब० व०) इस देश के लोग ।

तेजिक, तेजिन् (पु०) [तेज + क्त, तेज । इति] तेजो तेज वेरने वाला ।

तेजिनी [तेजिन् + क्त] दीवे की बत्ती ।

तेजोवच [तिज्जि + वच] श्रेष्ठ—अम्बज्ज निजो का सेत ।

तेजः [तिज्जि + वच्] नीला पीर्यासी तिज्ज + अच् +

जीप्—तेजी, ता अस्ति अस्मिन् मासे—तेजी + अच् । पीय का महीना ।

तोक्क [तु + क] सन्तान, वच्चा ।

तोक्कः [तोक् + कच्] चातक पत्ती ।

तोडनम् [तुड् + ल्युट्] 1 टुकड़े 2 करना, अच्छा करना 2 काटना 3 बोट पहुँचाना, अति पहुँचाना ।

तोडनम् [तुड् + ल्युट्] पहुँचों को या हावी को हिकने का बकुल ।

तोडः [तुड् + वच्] पीडा, वेदना, तताप ।

तोडनम् [तुड् + ल्युट्] 1 पीडा वेदना 2 बकुल 3 वेहरा मूँह ।

तोडरः—रम् [तुड् + तिज्जि + ल्युट् + अच्, वि०] 1 कोड़े का बट्टा 2 भाला, नैडा । सम०—बट्टः अतिवेद ।

तोडम् [तु + विच्, तवे पुन्यं याति—ता + क नि०] साम्, पानी—क० ७।१२ । सम०—अजिवातिनी पाटनम् ।

वृक्ष—आचारः, आक्षयः सरोवर, कुडी, अलाप्य तोयाचारपचाय वस्त्राक्षानिप्यन्द्रेजाङ्किता—न० १।१४—आक्षयः समुद्र, सागर,—ईकः वक्त्र का विशेषण

(—वाम्) पूर्वापाद नक्षत्रम्,—अक्षयः अजोन्मोचन बर्षा अक्ष० ३७, कर्मन् (गुण०) 1 अक्षयार्धन

2 दिवंगत पितरो को जलनर्पण,—अक्षयः कर्मन् एक प्रकार की तपश्चर्या जिसमें कुछ निश्चित समय तक जल पीकर ही रहना पड़ता है,—औडा जलविहार

—मेघ० ३३, मार्गः नारदल, वरः एक जलबन्धु,—अक्षयः—यः जोला, व बादल—रघु० ६।१५,

विज्जम् १।१४, अक्षयः राव चतु, वरः बादल—विः,—विजिः समुद्र,—वैदी पुम्बो,—अक्षयम् कनकफण, निमंसी, मलम् समुद्रप्रेत,—वृक्ष (पु०) बादल,—अक्षयम् 1 जल-बडी 2 औषध,—राज्,—राजि

समुद्र, बेला जल का किताग, समुद्रतट, अक्षयः (नदियों का) संगम रघु० ८।१५ कुलिका तीरी

—अक्षिका, बुधक मैदक ।

तोडरः वच [तुड् + वच् आचारः स्वट का तारा०] 1 महारा-बदार बनाया हुआ द्वार 2 बहिर्द्वार, प्रवेश-द्वार

गणानुपाधाय नारमाद् बहि—जि० १२।१, दुरास्त्वयः सुरपतिबन्धुवारणा तोरचन—मेघ० ७५

3 अक्षायी रूप से बनाया हुआ सोबाहार—कु० ७।३ रघु० १।४१, ७।४, ११।५ 4 स्नानाभार के निकट का चन्दर,—अक्षयार्धन, कष्ट ।

तोडः क्, तुम् + वच्] 1 तोड या बार को तारा में तोल दिया गया हो 2 सोने चाँदी का एक तोला या १२ भाग का बार ।

तोडः [तुड् + वच्] सन्तोष, परितोष, प्रसन्नता, खुशी ।

तोडनम् [तुड् + ल्युट्] 1 सन्तोष, परितोष 2 सन्तोषप्रद परितुष्टि ।

तीक्ष्णम् [तोष + ण + इ] वृत्तः, षोडा ।

तीक्ष्णः (शोक गन्ध) तुला राशि ।

तीक्ष्णः (पुं०) वह छोपी जिसमें से मातो निकलती है,
-कम् मोती ।

तीक्ष्णम् [तुम् + ण्] तुष्टी का शब्द । सम० चिकम्
नृत्य, नाच और बाज की सकेलडा, तेहरी स्वरमपति
—तीक्ष्णिकं ब्राह्मण व कामरौ रसकी गन --मनु०
७।४७, उलार० ४ ।

तीक्ष्णम् [तुला + ण्] तराजू ।

तीक्ष्णः, -तीक्ष्णिकः [तुलित् + ठक्, तुलिका + ठक्]
चित्रकार ।

त्यक्त (मू० क० क०) [त्यज् + क्त] 1 छोड़ा हुआ,
त्यागा हुआ, परित्यक्त, उन्मुक्त 2 उत्सृष्ट, जिसने
आत्मसमर्पण कर दिया है 3 कतराया हुआ, टाका
हुआ -दे० त्यज् । सम० अग्निः वह ब्राह्मण जिसने
अग्निहोत्र करना छोड़ दिया है -बीक्षित, प्राण (वि०)
प्राण देने के लिए तैयार, कोई भी जोक्षिम उठाने का
तैयार -मदर्थे त्यक्तजीविना भग० १।९, लज्ज
(वि०) निर्लज्ज, बेलाश ।

त्यज् (म्भा० पर० त्यजति, त्यक्त) 1 छोड़ना (सब अर्था
में) त्यागना, उत्सर्ग करना, चले जाना कार्य धानो-
त्यज्वाशु -मेघ० ३९, मनु० ६।७७, ९।१७७, य०
५।२६ 2 जाने देना, बरखास्त करना, मेवाभक्त
करना, -मद्वि० ६।१२२ 3 छोड़ देना, त्यागना,
उत्सर्ग करना, आत्मसमर्पण करना -मनु० ३।१६,
मनु० २।९५, ६।३३, भग० ६।२४, १६।२१ 4 कत-
राना, टाकना 5 कुटकारा पाना, मुका करना -भग०
१।३ 6 बख्खेलना करना, उपेक्षा करना त इमेव-
स्थिता युद्धे प्राचास्त्यक्त्वा धनानि च --भग० १।३३
7 उद्धृत करना 8 वितरण करना, प्रदान कर देना,
हुत (संचय) आरवयुद्धे त्यजेत् याज्ञ० ३।४७, मनु०
६।१५, मेर० -कुडवाना, इच्छा -नित्यसति छोड़ने की
इच्छा करना, परि -1 छोड़ना, उत्सर्ग करना,
त्याग करना 2 सब त्याग करना, छोड़ देना, रह कर
देना, निराश्रयि देना -प्रारब्धकृपाभूताना न परित्य-
जति -मुहा० २।१७ 3 उद्धृत करना- तुषमप्यपरि-
त्यज्य सत्पुत्रम्, कम् -1 त्यागना, बायामशेषामृत
सत्यवर्जम् -रघु० १।४३४ 2 टाकना, कतराना
-मनु० १।८१ 3 छोड़ देना, निराश्रयि देना -मनु०
५।८८१ 4 उद्धृत करना -उदा० -सत्यज्य विक्रमादित्य
वैद्यमन्त्र दुर्लभम् -राज० ३।३४३ ।

त्यागः [त्यज् + घञ्] 1 छोड़ना, परित्याग, छोड़ देना,
छोड़ कर चले जाना, विमोक्ष -न माता न पिता न
स्त्री न पुत्रस्त्यागमर्हति -मनु० ८।३१९, ९।७८
2 छोड़ देना, बरखास्त कर देना, निराश्रयि देना

मनु० १।११२, भग० १७।४१ 3 उपहार, दान,
धर्मार्थ दान, करे इत्यादयस्त्याग मनु० २।६५, हि०
१।१५४, रघोपाय सम्भूताधर्मात् -रघु० १।१७
4 मुक्तहस्तता, उधारना रघु० १।२२ 5 आव,
मलोत्सर्ग । सम० -भुत, -जीव (वि०) मुक्त हस्त,
उधार, बायबोल ।

त्यागिन् (वि०) [त्यज् + णिन्] 1 छोड़ने वाला, परि-
त्याग करने वाला, छोड़ देने वाला 2 प्रधाता, धाता
3 सोयंसाकी, कुरबीर 4 वह जो धार्मिक अनुष्ठानों
के कष्टस्वरूप किसी पारितोषिक या पुरस्कार की
अपेक्षा नहीं करता है - यस्तु कर्मफलत्यागी न त्यागीत्य-
भिविद्यते -भग० १७।११ ।

त्यज् (म्भा० जा० - चपते, चपित) शर्मना, नबाजना,
संज्ञत में फँस जाना -चपते तीक्ष्णित्वात्त्यज्यो-
द्वर्तिवचो गङ्गा० २८, अथ, पृथ्वी, शर्म के
कारण कार्यनिवृत्त होना नम्यादबलैर्यद्ये भट्टि०
१।४।८ यनापचयन साधुसमाधमतेन नृप्यानि -महा० ।
त्रया [त्रय् + अङ् + टाप्] 1 शर्म, लाज मन्दबशाभर
सी० १२ 2 हया, शर्म (अच्छ और बुरे अर्थ में)
3 कामुक या व्यभिचारिणी स्त्री 4 प्रसिद्धि, ख्याति ।
मय० निरस्त, -हीन (वि०) निर्लज्ज बसम्, -रच्छा
केला ।

त्रयिष्ठ (वि०) [अयम् एषाम् अतिगयेन नृप तृप् +
इष्टम्, तृषाब्दस्य त्रयादेश] अत्यन्त सन्मुष्ट ।

त्रयोयत् (वि०) (स्त्री० - सी) [तृप् + ईयमुन्, तृप्
गन्धस्य त्रयादेश] अपेक्षाकृत अधिक सन्मुष्ट ।

त्रयु (नपु०) [अस्मि वृष्ट्वा चपते लज्जते इव त्रय् + उन्
ताप्] टीन, रागा -यति मयिस्त्रयुणि प्रतिबध्यते-
पच० १।७५ ।

त्रयुज्, - त्रयुज्, त्रयुज् (नपु०), -सम् [त्रय् + उज्, त्रय् +
उज्, त्रय् + उज्, त्रय् + उज्] टीन, रागा ।

त्रय्यम् (नपु०) मट्टा, बाँका हुआ स्त्री ।

त्रय (वि०) (स्त्री० - बी) [त्रि + त्रयम्] तेहरा, त्रिगुणा,
तीन बागों में विभक्त, तीन प्रकार का - चकी वै विद्या
त्रयो वयुषि सामानि - शा०, धनु० १।२१, - सन्
तिगङ्गा, तीन का समूह - अदेवमावीत् त्रयवेव त्रयते
वशिष्ठम् छत्रयुधे च कामरौ -रघु० ३।१९, लोकचक्रम्-
भग० १।१२०, ४३, मनु० २।७६ ।

त्रयस् (त्रिशाब्दं पुं०, कर्तृ० व०, व०, समास में त्रयोव,
अथवा मर्यादावक शब्दी के साथ) टीन । सम०
- अन्धारिक्त (वि०) तैतीसवीं - अन्धारिक्त (वि०)
या स्त्री०) तैतीसवीं, त्रिक्त (वि०) तैतीसवीं - त्रिक्त
(वि० या स्त्री०) तैतीस, - त्रय (वि०) 1. तेरहवां
2. तेरह जोड़ कर - 'त्रयोवस सतम्' एक की बेरह,
- दक्षम् (वि०, व० व०) तेरह, दक्षम् (वि०)

तेरहवीं, बसो चान्द पक्ष की तेरहवीं तिथि, - नवति (स्त्री०) निरानवे - बसुधाश्रम (स्त्री०) नयेन - विश (वि०) १ तेहनदा २ तेहन स पुन बिजति (स्त्री०) नईन बजित (स्त्री०) नरेसठ, सप्तति (स्त्री०) तिहतर ।

मयी [मय + डीप्] १ तीनों बेदों की समष्टि (ऋग्वेद - सामानि) - यथोपमाय विष्णुवारवने नम का० १ ती यथोपमिनरा बिहा परिपाठितो उतर० २ मनु० ४।१२५ २ तिगहु, चिक, निसमूह व्यघानिष्ट समावेद्यामती नरनिजिबयी सि० २।३ ३ गृहिणी या विवाहिता नारो जिसका पति तथा बालबच्चे जीवित हो ४ गृहि समझ । नव० - तनु १ सुयं का विशेषण हुको प्रकार यथोपमा २ शिव का एक विशेषण - अर्ध तीनों वेदा में बजित यम अग० ९। २१, बुक्क बाह्यम ।

मल (मल०, वि०) पर० नवति नवति, नस्त) १ बराना कोपना, हिलना, नय के कारण बिचलित होना २ डरना, भयभीत होना, डर जाना (अपा० के साथ, कमी-कमी सम्भ० या करन० के साथ) - प्रमद बनात् नवति - का० २५५, कपेरनामिपुनरावात् - भट्टि० १।११, ५।७५, १।४४८, १५।५८, सि० ८। २४, कि० ८।७, डेर० - डराना, भयभीत करना, - वि० - , भयभीत होना - विस्तृतमुक्कहृदिनीमृजं कटाक्ष - मनु० १।९, कम् - , डरना, भयभीत होना, नस्त होना - भट्टि० १५।३९ ।

॥ (पुरा० उच० प्राप्तति - ते) १ बाना, हिलना - कुल्ला २ बामना ३ लेना, एकड़ना ४ विरोध करना, रोक्कना ।

मल (वि०) [मल + क] पर, नवय, - कः हृदय, - मन् १. मन जमल २ मानवर । लम० रेणुः मनु, मल का कच या मनु को सूर्यकरण में हिलना हुआ दिखाई देता है - मु० जाकातररते भावी सुख वदुस्वते रज, अवन तत्त्वमाधाना वतरेणु प्रचखते - मनु० ८।१३२, वास० १।३९१ ।

मलरः [मल + अरु + वा०] डरकी (कुल्ला) का एक उपकरण जिसमें बावों की मकी रख कर बुलते हैं ।

मलुर, मलु (वि०) [मल + उरच् मल + मन्] चीर, कोमले बाका, डरपोक - मलमुरिबुल्लमुर पुरज्जी - रघु० १५।७७, सीता सीमिथिया लपटा लप्रीची मलमुरिकाय - भट्टि० ६।७ ।

मल (म० क० क०) [मल + क] १ भयभीत, डरा हुआ, आतंकित - कर्तव्यममुराङ्गनिषीतपुष्टि - मा० ५।८ २ डरपोक, चीर ३ कुलीला, चकल ।

मल (म० क० क०) [म + क तस्य नवन्] रखा किया गया, बधिराहित, डरलित, बचाना गया, - कम् १. रखा

प्रमिग्धा प्रम्ला अन्तर्वायाय व लग्नं न प्रहर्तुमना- गमि ७० १।११ रघु० १५।३ २ लग्न, सहारा, आश्रय भट्टि० ३।१० ।

मल (म० क० क०) [म + क] १ प्रक्षित बचाया गया, रखा किया गया ।

मलुच (वि०) (स्त्री० - ची) [मलुच + मन्] रंगे का बना हुआ ।

मल (वि०) [मल + मन्] १ पर, चलनशील २ डराने वाला, - कः डर, नय जानक - अल कङ्कवृकिकम्बु- कस्य विमति बालाद" बामन - रत्ना० २।३, रघु० २।३८, १।५८ २ लोकना करने वाला, भयभीत करने वाला ३ मजिपन दोष ।

मलन (वि०) [मल + निच् + स्मृट्] झोकाक, डरावना, भयङ्कर - मल डराने की किया डराना ।

मलिन (वि०) [मल + निच् + क्त] डराया हुआ, आतंकित भयभीत ।

मि (म० वि० - केवल व० व०, कर्त्त० पू० पर, स्त्री० तिङ्, नपु० प्रीति) तीन-त एक हि नवो लोकस्त एव नय बाधमा - मनु० २।२९९, प्रियतमाविराडी तितु- विरवी - रघु० १।१८, नीति बर्वाण्यदोषोत कुवाबतु- मती लती मनु० १।९० । नम० अक्षः १ तिहाई माय २ नीबरा बंध, - अक्षः - अक्षकः शिव का एक विशेषण - अक्षरः १ ईश्वर लोकक बक्षर 'मीम' को तीन बक्षरों से मिल कर बना है 'दे०' 'म' में २ जोड़ी मिलाने वाला चटक (बहु सख तीन बचों से मिल कर बना है) - अक्षुडम्, अक्षुडम् १ बहु तीन रक्षिर्वा बिनके बहारे बहरी के तीनो एकसे दोनों किनारों पर लटकते रहते हैं २ एक प्रकार का अवन, सुर्वा - अक्षुडम् - किम् नीत बजनि (मिका कर), - अवि- काला बाला - अक्षमा, मार्गका, अक्षका गना नवी (तीनो लोकों में बहने वाली) के विशेषण, - अक्षकः (शिव) एक भी यद्यपि लौकिक साहित्य में प्रयोग विरल है) तीन भावों वाला, शिव शिवकक लवाचि बरसं कु० ३।४४ अक्षुडम् अक्षुडकीलनेन - रघु० २।४२, ३।४९, 'अक्ष' कुबेर का विशेषण - अक्षका पार्वती का विशेषण अक्ष (वि०) तीन बरं पुराना (अक्ष) तीन बरं अक्षित (वि०) शिरालिहा, - अक्षीतिः (स्त्री०) शिराली, - अक्षम् (वि०) चौबीस, अक्ष - अक्ष विदोष विमृजाकार (- अक्ष) - अक्ष, शिवज अक्षः तीन दिन का काम, अक्षित (वि०) १ तीन दिन में उपस्थित या अनुपस्थित २ हर तीसरे दिन बहने वाला (यथा बुद्धार) तैया, - अक्षम् (तुचम् जी) तीन पञ्चांगों की समष्टि मनु० ८।१०६, कक्षम् (पु०) १ पिच्छ पहाड़ २ पिच्छ या कुल, - अक्षम् (नपु०) बाह्य के तीन मुख कर्तव्य

अर्थात् ब्रह्म करना, वेद का अध्ययन करना, तथा दान देना (—पुं०) जो इन तीन कर्मों को सम्पन्न करने में व्यस्त हो, ब्राह्मण, —कावः बृहत् का नाम, — कावम् तीन काल अर्थात् भूत, वर्तमान और भविष्यत् या तीन समय — प्रातः, मध्याह्न तथा सायम् 2. क्रिया के तीन काल (भूत, वर्तमान और भविष्यत्) 'ज', 'दक्षिण' (वि०) सर्वत्र, — बृहः सीलोन का एक पहाड़ जिस पर राक्षस की राजधानी लफा स्थित थी — सि० २।५, — बृहत्कम् तीन फलों का बाकू, — कील (वि०) त्रिमुखाकार, त्रिकोण बनाने वाला (—कः) 1 तीन कोन वाली बाकृति 2 योगि, — बृहत्कम्, — बृहत्की तीन बातों का समूह, — कवः सांसारिक जीवन के तीन पदार्थों की समष्टि अर्थात् धर्म, अर्थ और काम, — न बाधतेऽयं विमलः परस्परम् — कि० १।११, दे० नी० 'विमल', — वल (वि०) 1. त्रिगुना 2. तीन दिन में सम्पन्न, — नर्तः (ब० ब०) 1. भारत के उत्तरपश्चिम में एक देश, इसका नाम 'अलघर' भी है 2 इस देश के निवासी या शासक, — वर्तः कावामकन स्त्री, स्वरिणी, — वृष (वि०) 1 तीन शेरों से युक्त लगड़ी — वृताप यौगी त्रिगुणा बभार या — कु० ५।१० 2. तीन बार जावृत्ति किया हुआ, तीन बार, त्रिविध, तेहरा, त्रिगुना — वृत्त व्यतीयुक्त्रिगुणानि तस्य (दिनानि) — रघु० २।२५ 3. सरक, रजस् तथा तमस् नाम के तीन गुणों से युक्त, (— वृत्त) (सा० द० में) प्रधान (वा) (वेदा० द० में) 1. माया 2. दुर्गा का विशेषण — वृषाक्ष (पुं०) शिव का एक विशेषण, — वृषाक्ष (वि०) (ब० ब०) तीन या चार — गत्वा वषान् त्रिचतुराणि पदानि सीता — बालरा० ६।३४, — वृषारिख (वि०) नेतालीमरी, — वृषारिखत्त (स्त्री०) नेतालीस, — वृषत्त (तपु०) अमली तीन लोक 1. स्वर्गलोक, अन्तरिक्षलोक तथा भूलोक या (२) स्वर्गलोक, भूलोक, पाताललोक, — बृहः शिव का एक विशेषण, — बृहदा एक राक्षसी, जिसकी राक्षस ने अशोकवाटिका में सीता की देखरेख के लिए नियुक्त किया था, जब सीता वही बन्दी के रूप में रखी गई। उस समय त्रिजटा ने स्वयं सीता के साथ बहुत अच्छा व्यवहार किया, तथा अपनी दूसरी सहचरियों को भी प्रेरित किया कि वह भी ऐसा ही करें, — बीषा, — व्या तीन चिह्नों की त्रिव्या, या ९० कोटि, अर्धव्यास, — वत्ता, वनूष, — वष, — वषम् (वि० ब० ब०) ३ × ९, नी का त्रिगुना अर्थात् सत्ताइस, सत्तम्, — वत्ती तीन बड़ियों का समूह, — वृष्वम् 1 (तंसार से बिरंता) सन्ध्या की के तीन डंडों को बांधकर एक किया हुआ 2. त्रिगुना अर्थ — वर्णात् धन, बाणी और कर्म का, (— वः) एक वर्गविष्ट सन्ध्या की अवस्था — वृषिन् (पुं०) धर्म-

विष्ट साधु वा सन्ध्याती विसर्गे सांसारिक विषय मात-
नाओं का त्याग कर दिया है, और जो अपने दक्षिणे हाथ में तीन-बंध (एक जगह मिला कर बंधे हुए) रखता है 2 जिसने अपने धन, बाणी और शरीर को बंध में कर लिया है — वृ० वाग्दण्डोऽयं मनोदण्ड काय-
दण्डस्तस्यैव च, वस्तुंते निहिता बुद्धौ चिदम्भीति स उच्छते-
मनु० १२।१०, — वृद्धः (ब० ब०) 1 तीस 2. तैत्तिरीय देवता, (— वः) देवता, अमर — कु० ३।१, — वृद्धः
— वृद्धवत् इन्द्र का वध — रघु० १।५४, — वृद्धिपः, — वृद्धिः वृद्धि के विशेषण, — वृद्धवत् विष्णु का एक विशेषण, — वृद्धिः राक्षस, — वृद्धवत् बृहस्पति का विशेषण, — वृद्धवत्, — वृद्धवत् 1 स्वर्ग 2. मेघ पर्वत, — वृद्धवत् देवताओं का योजन, — वृद्धवत् बृहस्पति का विशेषण, — वृद्धः एक प्रकार का कीड़ा, वृद्धवृद्धी (इन्द्रयोग) बृद्धं त्रिदशमोपमायके दाहशक्तिभिर्ब कृष्णवर्मनि — रघु० १।१४२, — वृद्धवत् गुलसी का पीछा, — वृद्ध, — वृद्धिता अमरा या स्वर्ग की देवी — कैलासस्य त्रिदशवर्तिनाऽपणस्यातिथिः स्या — वेद० ५८, वृद्धवत् आकाश, — वृद्धवत् तीन दिनों की समष्टि, — वृद्धवत् 1. स्वर्ग, विमान्येव त्रिदशस्य मार्ग — कु० १।२८, ग० ७।३ 2 आकाश, पर्यावरण 3 प्रमत्तता, — वृद्धवत् ईशः 1. इन्द्र का विशेषण 2 देवता, — वृद्धवत् गंगा, — वृद्धवत् (पुं०) देवता वृद्ध (पुं०) शिव का एक विशेषण वृद्धवत् शरीर में होने वाले तीनों दोष अर्थात् बाल, पित्त और कफ, — वृद्धवत् गंगा, — वृद्धवत् (वृद्धवत्) — वृद्धवत् वृद्धवत् शिव के विशेषण रघु० ३।६६, कु० ३।६६, ५।७२, — वृद्धवत् (वि०) निरामयेवी, वृद्धवत् (स्त्री०) निरामये, — वृद्धवत् (वि०) तीन गुना गति अर्थात् पन्द्रह, — वृद्धवत् (वि०) तरेपनवी वृद्धवत् (स्त्री०) तरेपन, वृद्धवत् कावः, — वृद्धवत् 1 हाथ जिसकी तीन अंगुलियाँ फैली हुई हों 2 त्रिपुत्र निकल गया हुआ प्रसन्न — वृद्धवत् डाक, — वृद्धवत् निराहार, अर्थात् शूलोक, जलरिक्त तथा भूलोक, या आकाश, भूलोक तथा यामास 2 वह स्थान जहाँ तीन सहकें मिलनी हो, — वा गंगा का विशेषण — वृद्धवत् वृद्धवत् वृद्धवत् वृद्धवत् स तमाकरोह पुच्छतमुतः — कि० ६।१, अमर ९९, — वृद्धवत्, वृद्धवत् तीन वर दावा, — वृद्धी 1 हाथों का तंतु — नासत्कर्णौ वृद्ध विपरीच्छेदिना-
वपि — रघु० ५।४८ 2. मायवी कन्द 3. तिपार्थ 4. गोपायवी नाम का पीछा, — वृद्धवत् डाक का वेड — वृद्धवत् (वि०) 1. तीन वरों वाला 2. तीन अर्थों से युक्त, तीन कीर्तार्थ, — रघु० १५।६६ 3. विनाश (पुं०) वामनाक्षरा नमवान् विष्णु का विशेषण, — वृद्धवत् (वि०) त्रिमुखाकार (— वः) 1 हाथ 2. हुंसेकी 3. एक हाथ परिमाण 4. तट वा किनारा, — वृद्धवत् त्रिकोण, त्रिपुत्र,

—दुसरा दुर्गा का विशेषण,—दुष्कर्म,—दुष्कर्म चन्दन,
राज या मोहर से बनाई हुई तीन देवार्थ,—दुर्ग १ तीन
नगरी का समूह २. दुष्कर्म, अन्तरिक्ष और भूकर्म में
यह राजस द्वारा बनाये गये सोने, चाँदी और लोहे के
३ नगर (देवताओं की प्रार्थना पर यह तीनों नगर—
उत्तम रहने वाले राजसों समेत शिव जी द्वारा जका
विये गये) —कु० ७।४८, अथर्व २ वेध० ५९ अर्च०
२।१२३, (रु) इन नगरों का अधिपति राजस अन्तरिक्षः
अग्नि, ज्य, ब्रह्मणः शिव, (पु०) हरिः शिव के
विशेषण—अर्च० २।१२३, रघु० १७।९४, दाह
तीन नगरों का बलाया जाना—कि० ५।१४, (—री)
अथर्वपुर के निकट एक नगर को पहले बंदिवा के
राजाओं की र. ७७७ की बा २ एक देश का नाम—वीरव
(वि०) तीन पीढ़ियों में सम्पन्न रहने वाला, पर तीन
पीढ़ियों तक अजने वाला,—अथर्वः बहु हाथी जिसमें
मह का जाव हो रहा हो,—कका तीन फलों (हरद
बहेरा और जीवका) का समान—अग्नि,—अग्नी,
अग्नि,—अग्नी स्त्री की नाभि के ऊपर पड़ने वाले
तीन बल (जो सौम्य का चिह्न समझे जाते हैं)
—आयोबरीगरिस्तस्त्रिचकीकतामाय—अर्च० १।९३
८१, पु० कु० १।३९,—अथर्व स्त्रीसहवास मेषन,
स्त्रीसहवास,—अथर्व विशेषण,—अथर्व तीन नौक
—पृथ्वी या यास्त्रिभुवनमुरोर्ध्व कच्छीवरमय—वेध०
३१, अर्च० १।१९,—अथर्व तिमिलिका महल—अर्च०
गया कु० १।२८,—अथर्व चिकुट पहाड़—अथर्व बृह
का एक विशेषण,—अग्निः हिन्दुओं के शिवदेव अथवा
विष्णु और महेश का संयुक्त रूप कु० २।४,—अग्नि
तीन लकी का हार,—आषा राशि (तीन पहर बाण्यो
—आर्यन और अर्य का आषा आषा पहर इमन
पूवक है)—संक्षिप्तत जग इव कश्च दीर्घायामा विद्यामा
—वेध० १०८ कु० ७।२१, २६ रघु० ९।३० विष्णु०
३।२२,—अग्निः तीन कार्यों (कोष कोष और मोह)
से होने वाला अधिपति—राजस तीन रानो (नया
पिनो) का समूह,—देवः राज, शिव (वि०) तीनों
लियों में प्रयुक्त अर्थात् विशेष, (रु) एक देश जिसे
सकन कहते हैं, (वी) तीनों लियों की समष्टि,—लोचक
तीनों सार, ईशः द्रव्य "आकाश" तीनों बाकों का स्वाभाव
हृन्म का विशेषण रघु० ३।४५ २ शिव का विशेषण
—कु० ५।७७ (—वी) तीनों लकों की समष्टि
विश्व—आषावेध विशेषी हरिः हरिश्चन्द्रविष्णु
विष्णुवायु—अर्च० ३।१९, का० ४।२२,—अग्नीः
१. आध्यात्मिक जीवन के तीन पदार्थ—अर्थात् बर्ष, अर्ध
और काम—कु० ५।३८ २ तीन स्थितिवाँ हाथ,
विपरीत और वृद्धि—अथर्व स्वाम व वृद्धिच विशेषों
पीढ़िविधान—अथर्व०,—अथर्वम् पहले तीन बर्षों

(आश्विन, अश्वि और वैश्व) का समाहार,—आर्य
(अथर्व०) तीन बार, तीन सर्वदा,—विष्णुः वायना-
वतार विष्णु,—विष्णुः तीनों वेदों में व्युत्पन्न आश्विन
—विष्णु (वि०) तीन प्रकार का, नेहुरा विष्णुम्,
—विष्णुचक्र इन्द्रलोक, स्वर्ग—विशिष्टपरमेश्वर पति
अथर्व रघु० ६।३८, "सद् (पु०) देवता—वेध०,
—वी (स्त्री) प्रयाग के निकट त्रिवेणी संगम जहाँ
गया यमुना और सरस्वती मिलती हैं,—वेधः तीनों
वेदों में निष्पात आश्विन, आश्विनः अथर्व का विष्णु
सूर्य लकी राजा हरिश्चन्द्र का पिता (विष्णु वृद्धिमान्
अर्थात् और व्याघ्र पराजय राजा वा, परन्तु उसमें
यह एक बड़ा दोष था कि वह अपने व्यक्तित्व को
बहुत प्रेम करता था। उसने इसी शरीर में स्वर्ग
जाने की इच्छा में यज्ञ करना बाधा, फलतः उसने
अपन कुनमूक बलिष्ठ में यज्ञ कराने की प्रार्थना की,
परन्तु जब उन्होंने इस प्रार्थना का स्वीकार न किया
ता उसने उनका १०० पुत्रों में प्रार्थना की, परन्तु
उन्होंने भी इसके प्रस्ताव का बेहतर बना कर ठुकरा
दिया। विष्णु ने उन सबका कारण और न्यूनक
कहा और इसके बदले उन्होंने उसे आश्विन बनने
का श्राव दे दिया। जब विष्णु की ऐसी दुर्दशा हुई
ता विष्णुविष्णु ने जिसका परिवार एक दुर्भिक्ष के समय
विष्णु का आचार्यपत्न हो गया था उनका यज्ञ
सम्पन्न कराना स्वीकार कर लिया। उसने यज्ञ में
देवताओं का आवाहन किया जब देवता यज्ञ में न
आये ता विष्णुविष्णु ने पूँव हो अपनी लक्ष्मी से विष्णु
को इसी शरीर से ऊपर स्वर्ग में भेजा। विष्णु
ऊपर ही ऊपर उठता चला गया और आकाशमण्डल
से जा टकराया। वह इन्द्र तथा दूसरे देवताओं ने उसे
सिर के बल बचक दिया। ता ओ नेत्रद्वारे विष्णु-
विष्णु ने आँखें आँखें आँखें का बीच ही में विष्णु
वही ठहरो कह कर रोक दिया। फलतः आश्विन
राजा सिर के बल वही दाँखमोठाई में नक्षत्रपूज के
रूप में ब्रह्म गया। इसीलिए वह आश्विन (विष्णु-
अथर्वविष्णु) विष्णु वा २ प्रसिद्ध हो गई। २ वाचक
पक्षी ३ शिल्पी ४ विष्णु ५ अथर्व ६ हरिश्चन्द्र का
विशेषण आश्विन (१) विष्णुविष्णु का विशेषण
—आषा (वि०) तीन ली (सक) १ एक ली तीन
२ तीन ली आषा १ विष्णु २ (विष्णु) किरिट
३, दुष्ट अथर्व (पु०) एक राजस जिसकी राम ने
पारा था,—अथर्व तिरमूल, "अथर्वः आर्य (पु०)
शिव का विशेषण अथर्व (पु०) शिव का विशेषण,
—अथर्वः चिकट नाम का पहाड़, अथर्वः (स्त्री०)
तरेख,—अथर्वम्, अथर्वी दिन के तीन काम अर्थात्
श्राव, मन्वाह और सायम्,—अथर्वम् (अथर्व०) तीनों

४ (वि०) [दे-दो या दा-क] (प्रायः समासान्त प्रयोग)
देने वाला, स्वीकार करने वाला, उत्पादन करने वाला,
पैदा करने वाला, काट कर फेंकने वाला, नष्ट करने
वाला, बुर करने वाला यथा बन्द, अन्न, गरुड,
तोषद, अनलद आदि, बः 1 उपहार, दान 2 पहाड़.
- बन् पत्नी, - हा 1 गर्भ 2 पदचानाप ।

दंष्ट्र (भा० पर० - दशति, दष्ट इच्छा० दिदक्षति)
काटना, डक मारना - भट्टि० १५४ १६१९, मृणा-
निका अवशान् ११० ३२. खा लिया, कुतर लिया,
उध - वटनी, अचार आदि खाना - मूलकेनोपदस्य
भुङ्क्ते - सिद्धा०, सम् १. काटना, डक मारना सद-
ष्टायरपल्लवा - अमर ३२ 2. चिपटना, सलान रहना,
या चिपके रहना उरसा सदष्टसर्पत्वचा - श० ७:११,
३:१८. सदष्टवस्त्रेऽवबलानितम्बेभ्य २५० १६६५,
४८ ।

दंष्ट्र [दंष्ट्र + ष्ट] 1. काटना, डक मारना मुग्धे विभेहि
ममि निर्दयस्तवंशम् - गीत० १० 2. मर्द का डक
3. काटना, काटा हुआ स्थान छेदो दशस्य दाहा वा
- मालवि० ४४ 4. काटना, फाटना 5. डस, एक
प्रकार की बड़ी मक्खी २५० २५, मनु० १४०,
याज्ञ० ३१२५ 6 ऋटि, दोष, कमी (मणि आदि की)
7 दांत 8 वीलापन 9 कचब 10 जोड़, अंग । सम०
बीकः मैसा ।

दंष्ट्रक [दंष्ट्र + ष्टक] 1 कुत्ता 2. बड़ी मक्खी 3. मक्खी ।
दंष्ट्रकम् [दंष्ट्र + ष्टक] 1. काटने या डक मारने की क्रिया
- उदा० दष्टायक दंष्ट्रान् कान्त दासीकुर्वन्ति योषित
- मा० २० 2 कचब, गिरहकृत्तर शि० १३२१ ।

दंष्ट्रित (वि०) [दंष्ट्र + इत] 1 काटा हुआ 2. घृत्कचब,
कचब से मुसज्जित ।

दंष्ट्रिन् (पु०) [दंष्ट्र + णिन्] दे० 'दशक' ।

दंष्ट्री [दंष्ट्र + ङीष्] छोटा डस या बनमासी ।

दंष्ट्रा [दंष्ट्र + ष्ट्रा + टाप्] बड़ा दांत, हाथी का दांत,
विशैला दांत, प्रसङ्ग मणिमुद्ररेमकवचवदट्टाङ्कुरान्
भर्तु० २४६, २५० २४६, दंष्ट्राभय मृगाणामाय-
पत्य इव व्यक्तमार्तावलेपे, नाजभङ्गं सन्ते नृवर
नृपतयस्त्वदाङ्गाः मार्कण्डेया मृदा० ३१२२ । सम०
अन्नः, - अमृषः जगली मूत्र, कराल (वि०)
भयकर दांतों वाला, - श्विः एक प्रकार का वीप ।

दंष्ट्राक (वि०) [दंष्ट्रा + क] बड़े बड़े दांतों वाला ।

दंष्ट्रिन् (पु०) [दंष्ट्रा + इन्] 1. जगली नृवर 2. लीप
3. लकड़बन्ना ।

दश (वि०) [दश - अच्] योग्य, मशय, विवेचन, चतुर,
कुशल, - नाटके च दशा वयम् - रत्ना० ११६, मेरी स्थिते
दावीर दोहदो - कु० ११२, २५० १२११ 2. उचित

उपयुक्त 3 तैयार, सुबहार, सावधान, उद्यत - याज्ञ०
११७६ 4 चरा ईमानवार, - भा० 1 विख्यात प्रजापति का
नाम [दश प्रजापति ब्रह्मा के उन दस पुत्रों में से एक
था जो उसके दाहिने अंगुठे से पैदा हुआ था । मानव
समाज के पितृपरक कुलों का बहु प्रमाण था, कहते हैं
उसके बहुत सी कन्याएँ थीं, जिनमें से २७ ती नक्षत्रों
के रूप में चन्द्रमा की पत्नी थी और १३ कवय की
पत्नियाँ थी । एक बार दश ने एक महायज्ञ का
आयोजन किया, परन्तु उसमें उसने न अपनी पुत्री सती
को आभंगन दिया और न अपने जामाता शिव को
बुलाया । फिर भी सती यज्ञ में गई, परन्तु वहाँ अप-
मानित होने के कारण वह जलती आग में कूद कर
भस्म हो गई । अब शिव ने यह सुना तो वह बड़े
उत्तेजित होकर उसके यज्ञ में गये, और यज्ञ का पूर्णतः
विनाश कर दिया । कहते हैं, कि फिर भी शिव ने
दश (जिसने मृग का रूप धारण कर लिया था) का
पीछा किया और उसका सिर काट डाला । बाद में
शिव ने उसे पुनः प्रिया दिया । तब से लेकर दश
देवताओं की प्रभुता स्वीकार करने लगा । हमारे
मतानुसार जब शिव बहुत उत्तेजित हुए तो उन्होंने
अपनी जटा में से एक बाल तोड़ा और बलपूर्वक उसे
जमीन पर पटक दिया, वहाँ से तुरन्त एक राक्षस
निकल आर शिव के आदेश की प्रतीक्षा करने लगा ।
उसे दश के यज्ञ में श्राकर उसके यज्ञ को नष्ट करने
को कहा गया - तब वह बलवान् राक्षस कुछ गधों को
(उपदेशों को) साथ लेकर यज्ञ में गया और वहाँ
उपस्थित देवी तथा पुरोहितों का काम तमाम कर
दिया । एक और मतानुसार दश का सिर स्वयं शिव ने
काटा था 2 दुर्गा 3 आग 4. शिव का बेल 5. बहुत
भी प्रेमिकाओं में आसक्त प्रेमी 6. शिव का विशेषण
7. मानसिक शक्ति, योग्यता, धारिता । सम०
अध्वरग्वत्सकः - ऋतुचक्षिन् (पु०) शिव के विशेष-
ण, - कन्या, - जा, - तमया 1. दुर्गा का विशेषण
2 अश्विनी आदि नक्षत्र, - कुतः देवता ।

दशायः [दश + आय] 1 गिद्ध 2 गण्ड का विशेषण ।

दक्षिण (वि०) [दक्ष + इन्] 1. दायी, कुशल, निपुण,
समर्थ, चतुर 2 दायी, दाहिना (विप० बायाँ)
3. दक्षिण पार्श्व में स्थित 4. दक्षिण, दक्षिणी बैसा कि
दक्षिणबायू, दक्षिणदिक् में 5. दक्षिण में स्थित
6. निष्कपट, जरा, ईमानदार, निष्पक्ष 7. सुहावना
मुलकर, शीकर 8. शिष्ट, नागर 9. नाजानुबारी,
बसवती 10. पराशित, - काः 1. क्षीय हाथ या बाजू
2. शिष्ट व्यक्ति, ऐसा प्रेमी (मन्यक) जिसका मन
अन्य नायिका द्वारा हर लिया गया है परन्तु फिर भी

बहु केवल एक ही प्रेयसी में अनुरक्त है 3 शिव या विष्णु का विशेषण। सम० अग्नि दक्षिण की ओर स्थापित अग्नि इसका 'अन्वाहारेपचन' भी कहते हैं अथ (वि०) दक्षिण की ओर मचेत करता हुआ।

—अथर्व दक्षिणी पहाड़ अर्थात् मलयगर्भत अग्निमुच (वि०) दक्षिण की ओर मुँह किये हुए दक्षिणोष्णम्

—अथर्व भूमध्य रेखा से दक्षिण की ओर भूय की प्रगति, बहु आचार्य अथर्व सूर्य उत्तर से दक्षिण की ओर बढ़ता है अथर्व की दक्षिणी अयन सीमा अथर्व

1 बायीं हाथ 2 दाहिना या दक्षिणी पार्श्व—आचार (वि०) 1 ईमानदार आचरणशील 2 पावन अनुष्ठान के अनुसार शक्ति का उपासक आशा दक्षिण दिशा

'बलि यम का विधायक इतर (वि०) 1 बायीं (हाथ या) २ द० ४१९ 2 उत्तरी (-ग) उत्तर दिशा उत्तर (वि०) दक्षिण उत्तर की ओर मुँहा हुआ वृत्तम् मध्याह्न रेखा अथवा (अथर्व-दक्षिण पश्चिम की ओर पश्चिम (वि०) दक्षिण पश्चिमी (-आ) दक्षिण पश्चिम दिशा—बुध, आथर्व (वि०) दक्षिण पूर्वी—बुध, आथर्वी दक्षिण पूर दिशा समुद्र दक्षिणा सागर—रुच्य सारथि।

दक्षिणत (अथर्व०) [दक्षिण + तमिन्] 1 दाईं ओर से या दक्षिण दिशा से 2 दाईं ओर का 3 दक्षिण दिशा की ओर (सम्ब० के साथ)।

दक्षिणा (अथर्व०) [दक्षिण + आच] 1 दाईं ओर दक्षिण की ओर 2 दक्षिण दिशा में (अग० के साथ [दक्षिण + टाव] आ 1 (यज्ञादिक धार्मिक कृत्यों का दाना हुति पर) दानों को उपहार 2 दक्षिणा (आ प्र०) पति की पुत्री तथा भूतकप यज्ञ का पत्नी समझा जाता है—पत्नी सुदक्षिणेत्यामादध्वर्ययव दक्षिणा—रघु० १। ३१ 3 भेट उपहार दान जूक पाश्चात्तिक प्राण दक्षिणा गुरुदक्षिणा आदि 4 अथर्वी दुधार गाय बहु प्रसवा गाय 5 दक्षिण दिशा 6 दक्षिण देश अथर्व दक्षिण मार्ग। सम० अर्ह (वि०) उपहार प्राप्त करने के योग्य या अधिकारी आभक्त (वि०) 1 दाईं ओर मुँहा हुआ 2 दक्षिण की ओर मुँह हुआ काक दक्षिणा प्राप्त करने का मध्य बन्ध भारत का दक्षिणी प्रदेश अथर्व दक्षिणापथ बिदेसक पथपुर नाम मयस्क—आ० १ अथर्व (वि०) दक्षिणा-मुच।

दक्षिणाहि (अथर्व०) [दक्षिण + आहि] 1 दूर दाईं ओर 2 दूर दक्षिण में के दक्षिण की ओर (अग० के साथ दक्षिणाहि वामात् सिद्ध०।

दक्षिणीय, दक्षिण्य (वि०) [दक्षिणार्हण] दक्षिणा १ यत् वा [यत्रीय उपहार को ग्रहण करने के योग्य या अधिकारी] जैसा कि दक्षिण।

दक्षिणैव (अथर्व०) [दक्षिण + एवम्] की दाईं ओर (अथर्व०

या सम्ब० के साथ) दक्षिणेत वृत्तादिकामाग्य इव अयने ज० १ दक्षिणेत वामम्।

दक्ष्य (अ० क० कृ०) [दक्ष + कृ] 1 जना हुआ अथर्व मयम् हुआ 2 (आल०) शक्यमान सताया हुआ हुआ 3 दुर्गमस्थान 4 अथर्व 5 गुण नीरम स्वाद होन 6 दुर्बल अभिमान दुष्ट (दुर्बल सुख दास्य समास का प्रथम पद) नाछापि मे दग्धदह पत्ति उत्तर ६ अथर्व दग्धोदरम्याथ व कुर्यात्पातक मरुत् हि० ११६८ इसी प्रकार दग्धदरम्याथ न० ३८८।

दक्षिका [दक्ष + कृ + गप् इत्यम्] मुग्धे मुन हुए बाधक।

दक्ष्य (वि०) (स्त्री० क्ली०) ऊँचाई गहराई या पहुँच की भावना का प्रकट करने के लिए सजा शब्दों के साथ लगने वाला प्रत्यय : कदधान परमासीय—आ० ११० कालाज्या वरगन्धदधन्यकु (मग) मा० ३१३ ५१४ यज्ञ० ५१०८।

दक्ष्य (अग० १५० दक्ष्यति त अर्धित) सजा देना अमान करना मयम् करना १६ द्विकर्मक शत्रुको म स म् शत्रु—अन महस व दक्ष्यत मनु० १५३६ ११३ यज्ञ० ५१०९ श्विन् दक्ष्यन् दक्ष्यन् रव० १५५।

दक्ष्य इव दक्ष्य अथ १ दक्षिण दक्ष्य छड़ी गदा अर्धत साया पतनु निरक्ष्यकाण्ड समदक्ष्य इवैव मृज मा ५११ अथर्वदक्ष्य २ गजबन्ध राजमना अ प्रत्यक्षय अ अतः १० ५१३ उप नून मय्का क स 'दक्ष्य' का दिना गज दक्ष्य—कु० मनु० ४४५ ३ ४ अय्यामी का दक्ष्य ५ हाथी की सूँ ६ कपल आदि का दक्ष्य या वृत्त छतरी आदि की मृज ब्रह्मापदम्भदक्ष्य दक्ष्य० १ (आरम्भिक मय क) २ उप मयम्भुधरदक्ष्यमयम्भुधर मा ५६ कु० ३ ९ इसी प्रकार कयल दक्ष्य आदि पतवार दक्ष्य ८ रद का दक्ष्य ९ मय्या मनु० ८३३ १५०९ गज ५१३ १० गहन शारीरिक दक्ष्य सामान्य दक्ष्य गय १ घटकाताम रघु० १६ एव गजोपध्वर्यापु मीरगदक्ष्यो राजा मृद्व० १ दक्ष्य दक्ष्यय पा मनु० १०६ इतदक्ष्य स्वयं राजा लेभ मृज मया वतिम रघु० १५५३ ११ कद १२ आरम्भक मयला १२मा १२६ अजित चार उपायो मे मे अजित दे० उपाय मनु० ७१०९ शि० ५६ १३ मेना मय्य दक्ष्यका दक्ष्य स्वदेशान्त व्य शिष्यत रघु० १३६० मनु० ३५५ ९१२९६ कि० ५११ १४ सौगवस्था का एक रूप अथर्व १५ वशी करण नियन्त्रण पतनमय्य वाधमय्य मय्यादक्ष्य कायदक्ष्यस्तवैव व मय्येने निहिर बद्धी विदधर्मी म

उपस्थे—मनु० १२।१० 16. बार हाथ के परिमाण का नाथ 17 सिंग 18 भय 19 सरीर 20 यम का विशेषण 21 विष्णु का नाम 22 शिव का नाम 23 पूर्व का लेखक 24 बोझा (अन्तिम पाँच वर्षों में 'पुलिन' है) । सम०—अभिन्म 1 (यक्ति के बाह्य-सूचक) इच्छा और मृगच्छा 2 (बाह्य०) वाक्पद, क्रम, -अभिः मुख्य दण्डाधिकरण, अन्विक्त मेला की एक टुकड़ी, -तव हृतवतो दण्डानोर्कैवित्रभृते त्रिदम्—आलवि० ५।२, -अनुपन्थाय 'न्याय' के अन्तर्गत दे०—अर्ह (वि०) दण्ड देने जाने के योग्य, दण्ड का भावी, -अन्तिका हैम, -आज्ञा दण्डि कर्मे के लिए न्यायाधीश का वाक्य -आहूतम् मद्वा, छात्र, -अर्मेन् (मनु०) दण्ड देना, माहना करना, कर्मः पहाड़ी कीवा, -कर्म लकड़ी का दण्ड या सोटा, -अहम् तन्मात्रो का दण्ड व्रतण करना, तीर्थयात्री का दण्ड लेना, सामुद्रो जाना कर्मन् वरान् रखने का करना, दण्डका एक प्रकार का डाल दन्तः अङ्ग-परिक्षेप न करने के कारण बना हुआ मेखक, देव-कुलम् न्यायालय, वर, -वार (वि०) 1 इच्छा रखने वाला, दण्डकारी 2 दण्ड देने वाला, ताड़ना करने वाला—उत्तर० २।१०, (-रः) 1 राजा अमनृतं मनुष्यवरात्मन् रघु० १।३ 2 यम 3 न्यायाधीश समीप दण्डाधिकरण, -वाक्कः 1 न्यायाधीश, पुलिस का मुख्य अधिकारी, दण्डाधिकरण 2 मेला का मुखिया, लेनापति, कीर्तिः (म्यो०) 1 न्याय प्रसादन, न्याय-करण 2 नागरिक तथा सैनिक प्रसादन, दण्डित गण्यसासनविधि, गण्यजन रघु० १८।६६, मेतु (पु०) 1 राधा, -रः राधा बाबूकः दरबान, द्वारपाल, -वर्तिः यम का विशेषण, -वत् 1 दण्ड का गिरना 2 दण्ड देना, पक्षम् दण्ड देना, माहना करना --वाक्कम् 1 सप्रहार प्रघात 2 कठोर तथा दारुण दण्ड देना -वाक्कः, -वाक्कः 1 मुख्य दण्डाधिकरण 2 द्वारपाल, दण्डोद्धारण पोष मुकुटार चलने—अन्तराल 1 घरीर की बिना रुकावे नभ्रदार करना (दण्ड की भाँति सीधे लड़े रह कर) 2 मृग पर सेट कर प्रवास करना, -अन्तिकाः हाथी, -अङ्कः दण्डाज्ञा पर अमल न करना, -मृत् (पु०) 1 कुम्हार 2 यम का विशेषण, नाम (म) वः 1 दण्डकारी 2 दण्डवाग कम्पासी, कार्यः रात्र्यार्थ, मुख्यवाक्य, -वाज्ञा 1 वरान का जल्प 2 दण्ड के लिए कृष दण्डिद्वय के लिए प्रस्तावन, -वाक्कः 1 यम का विशेषण 2 अमर्य मृति की उपाधि 3 दिन, वाक्किन्, -वाक्किन् द्वारपाल सज्जरी, पट्टेदार, वाक्किन् (पु०) पुलिस अधिकारी --विधिः 1 दण्ड देने का नियम 2 दण्डाधिकार --विधायकः यथाधी की रस्ती बाधने का लज्जा, -अहम्

एक प्रकार की झुह-रचना जिसमें सैनिक पाल २ कनारों में लड़े किए जाते हैं सास्त्रम् दण्ड निर्णय का सास्त्र, दण्डविधान, हस्तः 1 द्वारपाल, पट्टेदार सतरी 2 यम का विशेषण ।

वक्क [दण्ड + कम्] 1 छोटो, दण्डा भादि 2 पक्षिन्, कठार 3 एक छर—दे० परिशिष्ट, कः, का, -कम् दक्षिण में एक विशाल प्रदेश जो नर्मदा और गोदावरी के बीच में स्थित है (यह एक बड़ा प्रदेश है कहते हैं राम के समय यहाँ जङ्गल था) प्राप्तादि बुलान्यपि दण्डकेर्णा रघु० १४।२५, कि नाम दण्डकेर्म उत्तर० २, न्यायोपधाया पुनरुपमयो दण्डकाया वने व उत्तर० १।१३-१५ ।

वक्कम् [दण्ड + क्त्वा] दण्ड देना माहना करना जुमाना करना ।

वक्कविधि (मध्य०) [वक्क + विधि] दण्डेदक प्रहृय प्रहृय पुद्गल दण्ड द्विध, पूर्वपदवीर्ष] माठियों की लड़ाई बहु मारपीत जिसमें दोनों ओर से लाठी चलती हो दण्डों की साँठों की ग्राह ।

वक्कार [दण्ड + क्त्वा + अङ्] 1 माठी 2 कुम्हार का चाक 3 बड़ा, नाथ 4 मयमन जागी ।

वक्क [दण्ड + अङ्] दण्डकारी, छत्राद्वार ।

वक्का [दण्ड + टाप्] 1 लकड़ी २ पक्षिन् कठार श्रेणी 3 मानियों की लड़ी हार 4 रस्ती ।

वक्किन् (पु०) [दण्ड इति] 1 बोधे जायम में स्थित ब्राह्मण, मन्थारी 2 द्वारपाल, इयादीवान 3 डीव चलाने वाला 4 जैन मन्थारी 5 यम का विशेषण 6 राजा 7 दण्डकुमार चरित और काव्यादयो का रच विता, दण्डी कवि जाने जगति वाक्कोके कर्तारः मित्राश्रयन्, कवी इति ततो व्यासे कव्यास्त्विति दण्डिनि उद्धृत ।

वत् (पु०) [सर्वनाम स्थान का छात्र कर सर्वत्र 'दन्त के स्थान में 'दन्त' आदेश विकल्प म] दन्ति । सम० छत्र ('दण्ड') होट्ट बाण्ड ।

वत् (म० क० क०) [वा + क्त्वा] 1 बिना हुआ, प्रदरा, प्रमृत्त किया हुआ 2 साया हुआ, विगलित, लक्षित 3 रक्ता हुआ फैलाया हुआ—दे० वा, वा 1 हिन्दू धर्मशास्त्र में वर्णित १२ प्रकार के पुत्रों में से एक ('दत्तियम' भी कहते हैं) माना किता वा दधाना यमादि पुत्रभावि लक्ष्मणीतस्युक्तं स ज्यो दत्तियम मृत् 1 मनु० १।१५८ 2 वैवाक्य के नामा के माघ मगने वाला उपाधि म० मृत् के अन्तर्गत उद्धरण से 3 जीव और जनमृग का पुत्र दे० 'वराणेय' मी०, लक्ष्म उपाधि दान । यम—अन्तिकाकम् अन्तिका-विक्कम् वा हुड पत्त का न देना, या दान की हुई वस्तु का वापिस लेना, हिन्दू धर्मशास्त्र में वर्णित १८ उपाधि-

कारों में से एक—अथवा (वि०) सावधान—आनेकः एक ऋषि, अथि और अनन्या का पुत्र जो बड़ा विष्णु और महेश का अवतार माना जाता है,— आक्षर (वि०) 1 आक्षर प्रदर्शित करने वाला सम्मानपूर्ण 2 सम्मान प्राप्त, सुकृष्ण एकहिम्न जिसको दहेज दिया गया है 1, हस्त (वि०) जिसने दूसरे की सहायता के लिए हाथ बढ़ाया है, हाथ का सहारा पाये हुए— सम्मान दलहस्ता मेघ० १०, भम्भु की भुजा पर टेक लगाये हुए—स कामरूपरदलहस्ता—रघु० ३१७ (आलं०) साहाय्यवान्, समर्थित साहाय्यन सहायता-प्राप्त देवनेत्र दलहस्ताबलम्बे रत्ना० १८, बाल्या मेघ कृष्णार्थ्या मुखिरमथर्वदेनहस्ता करानि रेणी० २१२१।

हस्तकः [दत्त + क्त] मोर लिया हुआ पुत्र—याज्ञ० २। १३०, दे० दत्त ऊपर।

हव् (आ०) जा० हवने) देना, प्रदान करना।

हव (वि०) [दा + ध] देने वाला प्रदान करने वाला।

हवन् [दद् + भूट] उपहार, दान।

हव् (आ०) जा० दहने) 1 गड़ना 2 धारण करना, धार रखना 3 उपहार देना।

हवि (नपु०) [वृ + हुन्] 1 जमा हुआ दूध दही क्षौर दधिवाहन परिषमते—सारी० दधोदन आदि 2 तारपीन 3 वस्त्र। सम०—अक्षन्, ओशनव् दही मिला हुआ मात, उत्तरव्, उत्तरकम्, वम् दही की मलाई, तोड़, उधर,— उधकः जमे हुए दूध का कागर कुचिका जमे हुए और उथले हुए दूध का मिश्रण—आरः रई, अन् नाडा मक्खन,—अक्ष कैव,—अक्ष, हारि (नपु०) दही का तोड़, मक्खव् दही का मक्खना, ओषः बन्धर—अक्ष (पु० व० व०) दही मिला हुआ तन्,—आरः, स्नेह, नाडा मक्खन—स्नेह अक्षरिका दही।

हवित्व [दधि + त्वा + कृ०] कैव, कपित्व।

हवीकः (पु०) एक विकसित ऋषि, जिसने अपने शरीर की हड्डियाँ देवताओं को दे दी थीं और स्वयं मरने के लिए जलत हो गया था। इन हड्डियों से देवताओं के शिल्पी ने एक बच्चा बनाया और इसने इसी बच्चे के द्वारा वृष तथा अश्वान्न राक्षसों को परास्त किया। सम०—अवित्व (नपु०) 1 हन्त्र का बच्चा 2 हीरा।

हवुः (स्त्री०) हव की एक कथा जो कश्यप को व्याही गई थी। वही हवियों की माता थी। सम०—अ, पुत्र,—संयक,—हवुः, एक राजसूय, अथि—हिं (पु०) देवता।

हव्य [दम् + तन्] 1 दांत, हाथी का दांत विषयन (गीघ या अन्य चिकित्से कानुशो का) वदसि यदि किचिदपि दन्तसिचिकीमूरी हरति दन्तिभिरमभिषोम्

—मीन० १०, सर्वदात, बराह् जावि 2 हाथी का दांत, पञ्चदन 'पाषाणिका—मा० १०५ 3 हाथ की नाक 4 पर्वत की षोटी 5 लताकुच, पर्वतशाला। सम०—अथय दात की मोक,—अक्षरं दातो के बीच का स्थान,—अक्षर दातो का निकलना,—अक्षरसिन्धु—अक्षिन् (पु०) दात अपने दांतों की अक्षर की मति प्रयुक्त करते हैं, (माने वाले धाम्य को अपने दांतों के बीच में रखकर पीसने वाले), एक प्रकार के साधु सत्वाही, तु० मनु० ११७, कर्षण नीवू का वृक्ष,—आर हाथीदात का काम करने वाला बलाकार, काष्ठम् दातन कूर लडाई घातिन् (वि०) शीर्ष को मति पहुँचाने वाला, दांतों को बराब करने वाला जब दांतों का किच-किचाना दांत पीसना जाल दांतों का डोलपन,

हव हाठ वायकामुदारगोचनकुनो दन्तकान् योदयन् मर्त्त० १४३, कुतु० ११२ अक्ष (वि०) (वह बच्चा) जिसके दांत निकल जाते हो, दांत

निकलने का समय अक्ष दांत की उध, काष्ठम्

1 दांतों का बाना माफ करना 2 दातन (—क)

धर का वृक्ष मीलमिरी का पेड़ वक् एक प्रकार

का वक्मवृक्ष रघु० ११७ कु० ३१२ (आव

काष्ठधरो मे प्रयुक्त) वक्कम् 1 दांत का वाक्वच

2 कुः फल बकिडा 1 दांत का वाक्वच सि०

११७ 2 कुन्द—अक्षम् 1 दातन 2 दांतों का बाना

माफ करना पक्ष दांतों का निरन्—बाली 1 दांत

की नाक 2 मनुष्य, पुष्पम् 1 कुन्द कुन 2 कटक

रत्न निमज्जो,—अक्षान् दातो का बाना,—अक्ष

हाथी के निर का अक्षान्न—अक्ष दात बाहर

निकलने होते हैं)—अक्ष दा० का मेल—अक्ष,—अक्ष

अक्षम् मनुष्य, मूलीया (व० व०) दन्त वर्म

अर्थात् लृत् वृत् वृत् लृत् और लृत्, रोष दात की

पीडा वक्कम्—अक्ष (नपु०) हाठ गुला बराहोति

दन्तवास्तसा कु० ५१२४, सि० १०८६, वीक्ष

—वीक्ष,—वीक्षक,—वीक्षक बना का पेड़,—वीक्ष

1 एक प्रकार का बाबा, सारमी 2 दांत कटकलाना

—दन्तवीक्षा वाक्वच प० १, वक्कं माह्यजति

के द्वारा दांतों का टटना,—अक्षान् दात का टटना

—अक्ष (वि०) मूटा, बरपरा (—अ) नीवू का पेड़,

—अक्षरा दातो के ऊपर मेल की पपड़ी, आक्ष दातों

पर लगाने का दन्तमज्ज दन्तमज्जन नि०—अक्ष,—अक्ष

दात की पीडा,—अक्षि (स्त्री०) दात कुरेमरी,

—अक्ष मनुष्यों की मूखन लक्कं दातों का रक्कना,

—अक्ष दातों में (उठा पानी) लम्पना—अक्ष नीवू

का पेड़।

हवत्क [दन्त + क्त] 1 योगी जिम्बर 2 मूटी पतहम्पी।

हवावति (अव्य०) [हवीष हवीष प्रहृष्ट प्रवृत्त वृद्ध

समासात् इत्, पूर्वपदवीर्षं] ऐसी लड़ाई जिसमें एक दूसरे को दौतो से काटा जाय।

दन्तावल, दन्तिन् (पु०) [दन्तिनायितो दन्तो यस्य दन्त + वलच्, दीर्घं दन्त + इति] हाथी, भ्रामि० ११६० तुर्ग्युक्तवशापर्वैर्ध्वज्यते मनवन्तिन हि० ११३५, रघु० ११७१, कु० १६१२।

दन्तुर (वि०) [दन्त + उरच्] बड़े २ या जाग निकले हुए दौतो वाला - झुकरे जिहने बँब दन्तुरा जायते नर - तारा०, सि० ६१५४ २ दन्तिदार, दन्तुरित दारा दार, दशानेदार, उन्नतावनत विषम (आल०) अन्नबं-गर्भमितदन्तुरेण विक्रमांक० १५० ३ उमिल ४ उठना (बालो का) लडा होना। सम०-छब नीड़ का पेड़।

दन्तुरित (वि०) [दन्तुर + इतच्] बड़े या आगे निकले हुए दौतो वाला २ दौतेदार, उन्नतावनत, लड़े रोगटो वाला केतिकदन्तुरिताशे - गीत० १ पुलकभर ११, का० २८६।

दन्व (वि०) [दन्त + यत्] दौतो से सम्बन्ध, त्व (अधीन वर्ण) दन्तस्थानीय वर्ण, दे० 'दन्तमूलोप' ऊपर।

दन्वच् (पु०) दौन।

दन्वकृक् (वि०) [दन् + कृक्] १ काटने वाला, विषेला २ उन्पाती, क १ सप सप २ रंगने वाला जन्तु ३ राजस इक्ष्मति दक्षिणे दन्वकृकाञ्जिबधामो - अट्टि० ११२६।

दन्, दन्म् । (स्वा० स्वा० पर०) दमति, दम्नोति दम्ब - दम्बा० चिप्सति, बीमसि, दिदिमिबति। १ जर्जि पहुँचाना, चोट पहुँचाना २ धोखा देना ठगना ३ जाना, ॥ (चुरा० उभ० दम्भयति ते) ठेलना, उकमाना, डकेलना।

दम्ब (वि०) [दम् + रक्] बाधा, स्वल्प, अदभ्रदर्भावि-शय्य स स्वलोम् कि० ११३८ दे० अदम्ब-अ समुद्र, -अम्ब (अव्य०) बोझ, बरा, किसी अस तक।

दम् (वि०) पर० दामयति, दमिषि, दान्त प्रेर० दमयति। १ पालना जाना २ सान्त्व होना मनु० ४१३५, ५१८, ७१४१ ३ पालना, बश में करना, जीतना, रोकना - दम्नो दामयति राजधान् - अट्टि० १८१०, दमिषा-प्यरितक्षानान्-११४२, १९, १५१३० ४ सान्त करना।

दम्बः [दम् + घञ्] १ पालना, दमन करना (बश में करना) २ आत्मनिग्रहण, अपनी उग्र भावनाओं को बश में करना, आत्मसमय - अम० १०१६, - (निग्रहो बाह्य-दुष्कीर्ण दम् इत्यभिधीयते) ३ दुराई की ओर से मन को हटाना, दुरी वृत्तियों का दमन करना (कुत्सिना-त्कर्त्तव्यो विप्र यच्च चित्तनिग्रहः, म कीर्तितो दमः) ४ मन की दृढ़ता ५ दम्ब, जमना मनु० १०२८४ २९०, याज्ञ० २१४ ६ दकदक, कीचड़।

दम्ब, वु [दम् + अच्, अच्च् वा] १ अपनी उग्र वृत्तियों को रोकना, या बश में करना आत्मनिग्रहण २ दम्ब।

दम्ब (वि०) (स्वी०-नी) [दम् + ल्युट्] १ पालने वाला, दवाने वाला, बश में करने वाला, जीतने वाला हुजाने वाला-आमदम्यस्य दमने नैव निर्वचमुमुहंति-उत्तर० ५१३२, भर्तृ० ३१८९ इसी प्रकार सर्वदमन 'अरि-दमन' २ शान्त निरावेश, नम् १ पालना, बश में करना, दवाना नियन्त्रित करना २ दम्ब देना, शाहना करना बुधन्ताता दमनविषय सचिद्येध्यायनन् महावी० ३१३४ ३ आत्मसमय।

दमयस्वी [दमयति नाशयति अमङ्गलादिभ्यम् दम् + णिच् + शतृ + ङीष्] विद्वान् के राजा भीम की पुत्री (इसका नाम दमयन्ती) इस लिए पड़ा था कि इसने अपने अनुपम सौन्दर्य से सभी सुन्दर महिलाओं का धर्म चूर चूर कर दिया था नै० ११८८ भुवनत्रयमुधुवाभसी दमयन्ती रमणीयतामय उदियोग यत्पुनर्नृपिषा दम् यन्तीति तत्रार्थना दम्बी। एक स्वर्णहस्त ने पहल दमयन्ती के सामने नन के गुण और सौन्दर्य की प्रशंसा की फिर उसी के द्वारा दमयन्ती ने अपने प्रेम का समाचार उसकी भिजवाया। उसके पश्चात् स्वयंवर में दमयन्ती ने नन का ३० बहुत से प्रतिप्रागियों में से जिनमें कि इन्द्र, अग्नि, यम और बरुण यह राजा दम् भी स्वयं उपस्थित थे, पति के रूप में चुन लिया और फिर दोना प्रसन्नता पूर्वक अपना शास्त्रयुक् जीवन बितान लगे। परन्तु उनका यह सुखमय जीवन अधिक देर तक नहीं रहता था। नन के सौभाग्य से ईर्ष्या करने वाला कलि नन के शरीर में पड़िष्ट हो गया और उसने नन का अपना सारा पुष्कर के साथ जूआ खेलने के लिए उकसाया। खेल की गर्मी में ही मूढ़ राजा न अपना मकसुद दाँव पर लगा दिया और स्वयं तथा पत्नी को छोड़ सब कुछ हार गया। फलतः नन और दमयन्ती को बँधव एक वस्त्र पहने राजधानी से निकाल दिया गया। दमयन्ती को बहुत से कष्ट उठाने पड़े। परन्तु उसकी वृत्ति-शक्ति में कोई अन्नर न आया। एक दिन जब दमयन्ती पड़ी सो रही थी, हताश होकर नन उसे छोड़ कर चल दिया। सब दमयन्ती को विवश होकर अपने पिता के घर जाना पड़ा। कुछ समय के पश्चात् वह फिर अपने पति से मिली और फिर तो प जीवन उन्मोने निषाधिसुख में बिताया दे० 'नल' और 'शकुन्तल'।

दमयिन् (वि०) [दम् + णिच् + लृट्] १ पालने वाला, दमन करने वाला २ दम्ब देने वाला, शाहना करने वाला ३ विष्णु का विशेषण।

दमित (वि०) [दम् + क्त] १ पाला हुआ, सान्त, आत्म

किया हुआ 2 विजित, दमन किया हुआ, बधीमृत, परास्त ।

धम् (ध्) धम् (ध्) [धम् + उन्स, पक्षे दीर्घ] भाष ।

धम्नी [भाषा ध पतिवध इ० स०] भाषायाश्च दमादेशा द्विवचन [पति जीर पत्नी, रघु० ११५, २१०, मनु० ३।११६ ।

धम् [धम् + रम्] 1 बोका, आलमाजी, दाबपेच 2 धामिक, पालक -- अण० १९।४ 3 बहकुर धम्, आरम्भकाया 4 पाप, दुष्टता 5 धम् का बन्ध ।

धम्भम् [धम् + ल्युट] ठगना, बोला देना, छद्म ।

धम्भम् (धु०) [धम् + भिनि] पालकही, धर्म दण्ड० ११३० अण० १३० ।

धम्भोक्ति [धम् + अनुत् धम्भम् धम्भित् प्रमाणे अर्थान् पर्यालोचि -- अण० इत्] इच्छा वाय ।

धम्भ (वि०) [धम् + ध] 1 पालने के योग्य गधायो जाने के लिये 2 दण्ड दिये जाने योग्य 3 नया बछड़ा [जिसे प्रशिक्षण तथा अनुभव की कमी है] -- आर्द्रिण नाम पुद्गलवर्णितः धर्मि धम्भ निष्ठाऽपि ननु विक्रम० ५, मुक्ती पुर यो भुवन्स्य गिरा धुवम् दयम् मयुज विमाने रघु० ६।७८ मुद्रा० ३।३ 2 बह बछड़ा जिसे अभी गधगता है ।

धम् (म्वा० भा० दयन्, दयित) दया आन, कृपा का भाव होना, परत लगना, सजाना धर्म प्रदान करना (सर्व० के माध) राधम्भ इत्यमानेऽप्यारभ्येति नव लक्ष्मण अट्टि० ८।१९९, लेका दयसे न कर्मजन्तु -- १।३३ १५।६३ 2 ध्या करना, अच्छा लगना, शक्तिर होना दधमाना प्रमदा ७० १।३, अट्टि० १०।९ 3 रक्षा करना नगजा नगजा इयिना दयिता अट्टि० १०।९ 4 जाना, हिलना-डुकना 5 स्वीकार करना, देना, विनय करना नियन करना 6 बाट पहुँचाना ।

धया [धम् + अङ् + टाप्] नृस, सुकुमारता, कृपा, अनुकम्पा, सहानुभूति- निर्गुणध्वनि सत्त्वेयु दया कुर्वति साधव -- हि० १।९०, रघु० २।११, इतो प्रकार भूतदया । सम० -- धृष्ट, धृष्ट ब्रह्म के विशेषण, -- जीर (अन० सा०) बीतापूर्व कृपा की भावना, कृपा के फलस्वरूप उदय होने वाला धीररस-उदा० जीभूतबाहुन (नामान्य मे) गरुड से कहता है -- शिरापूर्व स्थान्त एव धनमद्यपि देहे मम मोक्षमस्ति, नृपति न पश्यामि तवापि तावत् किं भजनाय धिरोतो यक्षमम्, नु० 'दयावीर' के अन्तर्गमन रस० में ।

धयालु (वि०) [धम् + आल् + लृ] कृपा, सुकुमार, सत्य, कृपापूर्ण -- यस्य शरीरे भय मे दयालु -- रघु० २।५७, ३।५२ ।

धयित (धु० क० ड०) [धम् + क्त] धिय, बाहा हुआ, इष्ट -- अट्टि० १०।९, -- ज पति, मेरी, धिय धयित -- विक्रम० ३।५, भाषि० २।१८२, -- सा पत्नी, मेघवी -- यमिनाजीवितालम्बनार्थी -- मेघ० ४, रघु० २।३, भाषि० २।१८२, कि० ६।१३, दयिताभिः जोड़ का ब्रह्म, पत्नीभक्त पति ।

धर (वि०) [धृ + ङप्] काटने वाला, पीरने वाला (प्राय समासान्त में), धृ, -- रघु १ गुफा, कन्दरा छिद्र 2 धार, धृ 1 भय, ज्ञान, धर, -- सा दर पुनरा निम्बे हीयमाना रसाहरम -- शि० १९।२३, न जान हर्षेन विविधादर कि० १।३३, -- रघु (अण०) बोहा, धरा (समाप्त में) दामोदरपत्नी निरञ्जिन भाषि० २।१८२, ७, इन्द्रिगलितमस्त्रीवस्त्रिचञ्चल मरणा -- अर्द्ध० गीत० १ इतो प्रकार -- वरदलित -- विकसित-उत्तर० ४ पृ० ३, भय० निमिरध नय का अन्धकार, हर्षित दर्शनमिरमन्निवारम-गीत० १० ।

धरन् [धृ + ल्युट] तोड़ना, टुकड़े २ करना ।

धरणि (धृ० स्त्री०) धरणी [धृ + णि, धरणि -- ङीप्] 1 भवर 2 धारा 3 हिलाना ।

धर्य (स्त्री०) [धृ + णि] 1 हृदय 2 भाव, भय 3 पहाड़ 4 चट्टान किनारा, टीला ।

धर्या (धु० ब० व०) [धृ + क] कमीर की सीमा को छूना हुआ एक देश -- ब मय भास, धम् क्षिण्य ।

धरि (वी० स्त्री०) [धृ + ङीप् धरि -- ङीप्] गुफा, कन्दरा काटी इरीयुद्ध ५० १।१०, एका मापि मुन्दरी वा इरी वा अर्ध० १२० ।

धरिषा (अदा० पर० धरिषति, धरिषति श्रे० धरिष-यति, इच्छा दिरिषति दिरिषति) 1 निर्जन होना शरीर होना, -- अक्षय्य पक्षत कस्य महिमा योग्यीयने उपर्यपर पश्यन्त सर्व एव धरिषति हि० २।२, अट्टि० १८।३१ 2 कष्टग्रस्त होना, -- युक्त ममेव किं यन्तु धरिषति यथा हरि -- अट्टि० ५।८९ 3 दुःखता पतना होना, धरिषति विषयदुःखे कुमुद-कान्त्यस्तारका -- विक्रम० ११।७४ ।

धरिष (वि०) [धरिष + क] निर्जन, शरीर बनावट, दुःखाग्रस्त न मनु मनु धरिषो यस्य तुष्णा विशाखा, पनसि ध पतिमुष्ट कोर्जवान को धरिष-धर्तु० २।५०, -- धृ शरीरी जाह्नवीया हि श्रेष्ठेऽपि धरिषताया धरिषः १, मुच्य० ३।२४ ।

धरीवरः [धरी भय लग्नकमुद्रा यस्य] 1 बुजारी 2 जूए पर लया दीव, -- रघु १ बुजा लेजना 2 पीसा, बसा, वे० दुरीवरः ।

धरिः [धृ + ङ् + ङप्] 1 पहाड़ 2 कुछ टूटा हुआ धरि-वाय ।

2. एक ही वस्त्र, रश्मिः सूर्य-सती एक हजार, -साह-
स्रस्र वस्त्र हजार, -हवा 1 गङ्गा का विशेषण 2 गङ्गा
के सम्मान के उपलक्ष्य में उल्लेख शुक्ला वस्त्रों को
मनाया जाने वाला पर्व 3 सूर्य के सम्मान में अश्विन
शुक्ल दशमी को मनाया जाने वाला पर्व (विजया
दशमी)।

वसत्य (वि०) (स्त्री०-बी) [वसन् + तयम्] दस भागों
से युक्त, दस गुना।

वसन्ता (अव्य०) [वसन् + ता] 1 दस प्रकार से 2 दस
भागों में।

वसन्त, नम् [वसन् + ह्युट् नि० नलोप] 1 दांत, - मुहु-
र्मुहुर्वसन्तविशेषितोपध्या - सि० १७१२, शास्त्रविद्वत्ता
-मेघ० ९० मय० १०१२७ 2 काटना, - न पहाड़
की चोटी, - नम् कचक। सम०-अमु शाली की चमक
-कु० ५१२५, - अम् दात से काटने का चिह्न
काटना, -उच्छिष्ट 1 हाट 2 चुम्बन 3 बाह, -अम्,
-वासन् (नपु०) 1 हाट 2 चुम्बन, -वम् बुडका
भरना, दात का चिह्न वसन्तपद मयद्वारमत मय
जनवति चेतसि संदम् -गीत० ८, - बीज अनार का
पेड़।

वसन्त (वि०) (स्त्री०-बी) [वसन् + वट् मट्] दसवीं।

वसन्ति (वि०) (स्त्री०-बी) [वसन्ति + इति] बहुत
पुराना।

वसन्ती (स्त्री०) 1 चान्न मास के पक्ष का दसवाँ दिन
2. मानव जीवन की दशांश दशांश 3 शताब्दी क
अन्तिम दस वर्ष। सम०-वस, (वसन्ती गत) (वि०)
१० वर्ष से अधिक आयु।

वस्य (वि०) [वस + क्त] काटा गया, डकू मारा गया
आदि।

वस्य [वस + क्त नि० टाप्] वस्त्र के छोर पर रहने वाले
बाने, कपड़े पर लगी आकर, मगरी, - वसता-
कुर्छ पवनलोचन वस्य वस्य मच्छ० ११२०, छिन्ना
हवाभरपटल वस्य पतति ५४ 2. दीये की बत्ती
-वस्य० ३११२९, कु० ४१३ 3 आयु, वा जीवन
की अवस्था-२० नी० 'वस्यो' 4 जीवन की एक
अवस्था या काल-जैसा कि वास्य, जीवन आदि-रस्य०
५४४ 5. काल 6 स्थिति, अवस्था, परिस्थिति-नीचै-
मच्छन्नुपरि च वस्य वस्येति-मेघ० १०९,
विश्वामि हि वस्य प्राप्य वैषं गृह्यते मट्-हि० ४१३
7. अम की स्थिति या अवस्था 8. कर्मों का काल
-वास्य 9. ग्रहों की स्थिति (जन्म के समय) 10 मन
लक्ष्य, सम०-अन्त, 1. बत्ती का छोर 2. जीवन का
अन्त -निमित्तविषयसन्निहः स वस्यन्तुर्विषयान् -रस्य०
११११ (वस्यं लक्ष्य दोनों वर्षों में प्रयुक्त हुआ है),
-कव्यः लीप, दीपक, -कव्यः 1. वस्त्र का छिनाटा

2 लीप, दीपक, -वाक्य -विषय 1 भाग्य की परि-
पक्वावस्था भाग्य के अनुसार फल प्राप्ति 2 जीवन
की परिवर्तित दशा।

वस्यार्थी (ब० व०) [वस्य + आनि भुर्गभूमयो वा यत्
ब० ल०] 1. एक देश का नाक सपत्न्यन्ते कतिपय-
दिनस्थाविहता वस्यार्थी -मेघ० २३ 2 इस देश के
निवासी।

वसिन् (वि०) (स्त्री०-नी) [वसन् + इति] दस रत्नने
वाला (पु०) दस भागों का अजीबक।

वसोर (वि०) [वस + एरक्] काटनेवाला, उपद्रवी, अशिष्ट
कर, पीडाकर - १ शरारती या बिहला अनु।

वसे (सै) वस्यः [वसोर + कन्] ऊँट का बच्चा।

वस्यु [वस + युच्] 1 दुष्कर्मियों या राजसों का समूह
जो कि वेवताओं के विद्रोही तथा मानव जाति के सत्
से और इन्हें के द्वारा मारे गये (इस अर्थ में प्रायः
वैदिक) 2 जातिव्यतिरेक, अपने कर्तव्यकर्मों से अलग
हो जाने के कारण जाति से बहिष्कृत गु० मय०
५१३३१ १०४५३ चोर लुटेरा, चक्का पासी
कुलो दस्युविकासि येन श० ५१२०, रस्य० ११३, मय०
७१४३ ४ वस्यु, उत्पत्तिलाल मा० ५१२८ 5 आत-
तामी, उद्यम, अत्याचारी।

वस्य (वि०) [वस्यति पाठ्युत्तम् । रक्] बंजर, अधोष,
विनाशकारी ली १५० हि० व०) दोनों अश्विनी-
कुमार, देवों के बंध, अ 1 गवा 2 अश्विनी नक्षत्र।
सम० वस्य (स्त्री०) सूर्य की पत्नी और अश्विनी-
कुमारों की माता सत्ता।

वस्य, (व्या० पर० दहति, दग्ध - दृष्ट्या० विवर्तित)
ब्रह्माना, मूलसत्ता (आल० में नी) -दग्ध विवर्त दहन-
किरणनिर्दिता ब्रह्माकारा देवी० ३१६, ५१०, अपरि-
मदनात्मो दहति मय मानस देहि मूषकमलमृषाम्
गीत० १०, श० ३११७ 2 उड़ा देना, पूर्ण रूप से
मिट कर देना 3 पीडा देना, सताना, कष्ट देना, दुःखी
करना इत्यादिप्रत्ययप्रतिष्ठ चालस्य दहति श० ५,
तत्त्वविषयिण सत्य दहति माम् ६१८, एतत् वा दहति
मयुहमस्मदीयं क्षीमाव्यभिचयिष्ठिषय परिवर्तयति
-मूष० ११२२, रस्य० ८१८९ 4 (आयु० में) वर्ष
गोहे या कास्टिक तैलाब से जला देना, निम्न, -
1. जलाना, जलाकर समाप्त कर देना 2 सताना,
दुःख देना, पीडा करना, बरि - जलाना, मूलसत्ता
-विधि विधि परिष्कारा मयय कवकेन-रस्य० ११२४
मय० ११३०, अ 1 जलाना 2 पूरी तरह से जला
देना 3 पीडा देना, सताना 4. कष्ट देना, पिडा-
ना, -जलाना -अभिजन. सवस्यतो वसिन्ना -वस्य०
२१३९।

वस्यु (वि०) (स्त्री०-नी) [वस + ह्युट्] 1 जलाना,

कि दुराचलनकार बल की पुष्टि होती जाती है) के कोई का एक नल 2 दिति, कल्पन की पत्नी, देवताओं की माता 3 पावती 4 देवती नलन 5 कदु, या विनता 6 दन्ती का पीषा। सम०-पति 1 शिव का एक विशेषण 2 चन्द्रमा, - पुत्र देवता।

राजात्म्य [वज् + अय + अण्] गिह ।

राक्षिण (वि०) (स्त्री जी) [दक्षिण + अण्] 1 यजीय दक्षिण से सम्बद्ध अथवा उपहार से सम्बद्ध 2 दक्षिण दिशा से सम्बन्ध रखने वाला - अण् यजीय दक्षिणाधा का समूह या सचम।

राक्षिणस्य (वि०) [दक्षिण + ल्यप्] दक्षिण से सम्बन्ध रखने वाला या दक्षिण में रहने वाला, दक्षिणी अस्ति राक्षिणस्ये वनपदे महिलास्य नाम नमरम् पञ्च १, - ल्य 1 दक्षिण देश का निवासी भारद्वाजपुरा ऋषि राक्षिणास्या 2 नारियल।

राक्षिणिक (वि०) (स्त्री जी) [रक्षि + ठक्] यजीय राक्षिणा सम्बन्धी।

राक्षिण्यम् [दक्षिण + ल्यङ्] 1 (क) नम्रता शिष्टता सुजनता नम्र राक्षिण्यस्तेन नाम्ना मगधवज्जग रघु० ११३१ (क) कुपारुता - चिकम० ११० अर्ण० १०२ मा० ११८ 2 किसी प्रेमी का अपनी प्रेमिका के प्रति) बनावटी नचा कतिहासीन शिष्टाचार मा० ११५ 3 दक्षिण से जाने की या सम्बन्ध रखने की स्थिति - स्नेहवाक्षिण्ययोर्मान्य कामीव प्रतिभार्ता म - चिकम० ११४, (यहाँ इन शब्द के दोनों ही अर्थ हैं - प्रथम नचा द्वितीय) 4 तालमेल सामन्त्य मद्रमति 5 नैपुण्य, चतुराई।

राक्षी [दक्ष + इङ् + डीप्] 1 दक्ष की पुत्री 2 पत्नी की माता। सम० - पुत्र पाणिनि।

राक्षीय [दाक्षी + ठक्] पाणिनि का मान्यपक्षी नाम।

राक्ष्यम् [दक्ष + ल्यङ्] 1 चतुराई कुशलता उन्मुखता बलता, योग्यता - अम० १८१४ 2 सचाई अलपट्टन ईमानदारी।

राक्षः [दक्ष + धञ् कुल्लम्] बलाना, जलन।

राक्षक [वज् + शिप् + ल्युल, ल्यप् इ] दान, हाथी का दंत।

राक्षि (लि) कः, - का [वज् + धञ् + इप्, डल्लोभेद] अनार का पेड़ - पाकारुण्यकुटोराडिमकान्ति वक्त्रम् - मा० ११३१, अमर १३ ८ छोटी इलायची, - अण् अनार का फल। सम० - शिव, - बलका तोता।

राक्षिण्य [रा + शिन्व वा०] अनार का पेड़।

राक्ष [रा + शिन्व = रा + शीन् + ड + ठक्] 1 बड़ा दांत, दाढ़ 2 समूच्य 3 कामना, इच्छा।

राक्षिण [राड + कन् + टाप्, इल्लम्] दाढ़ी, - मनु० ८१८८१, (कुल्लम् वल्लम्)।

राक्षसिक (वि०) (स्त्री जी) [राक्षस + ठक्] (यहाँ नलित के बाहर चिह्न) राक्षस और मृगजला किए हुए, क इय, पाक्षिकी, पूर्व।

राक्षिक [राक्ष + ठक्] तावना देने वाला, बल देने वाला, बल (वि०) [रा + क] 1 बाँटा हुआ, काटा हुआ 2 बोया हुआ, पक्षिकीकृत 3 काटी हुई (कलम)।

राक्षि (स्त्री०) [रा + शिन्व] 1 देना 2 काटना, नष्ट करना 3 विनय।

राक्ष् (वि०) (स्त्री० जी) [रा + लृप्] 1 देने वाला स्वीकार करने वाला 2 उदार (पु० ला) 1 दाता कु० ६१२ दानी भूमि० ११६९ 3 महाजन उदार देने वाला 4 अध्यापक।

राक्ष्युह [राप् + ऊठ + अण्] जलकुक्षट दाक्ष्युहिन निरस्य काटरयति श्कावे निलीय स्थितम् - मा० ११७ 2 पातक पत्नी 3 दादल 4 जल कीटा दाक्ष्युह भी लिखा जाता है)।

राक्षम् [रा + धृन्] काटने का एक उपकरण एक प्रकार का दानी या चाक।

राक्ष [वद + धञ्] उपहार दान। सम० व दन्ती।

राक्ष् (स्त्री०) उम०-दानी-ने, काटना बोलना इच्छा-वोदामनि ने सोचा करना (यहाँ सन्नत केवल रूप की दृष्टि से है अर्थ की दृष्टि में नहीं)।

राक्षम् [रा + धृन्] 1 देना स्वीकार करना अध्यापन 2 मोपना समर्पण करना 3 उपहार दान पुस्तका - मनु० २११५८ अम० १७१२० बाज्ज० ३१०७४ 4 उदारता, दानीय समर्पण पुस्तका, दानवीरता रघु० ११६९ अर्ण० ११४३ 5 समर्पण हाथी के मस्तक से धूने वाला रस मद्र सवानतोयेन विनाशि नाम शि० ४१९३ कि० ५९ चिकम० ४१२५ पञ्च १०७५ (यहाँ शब्द का अनुप्रास अर्थ भी बटना है) रघु० २१३, ४१५, ५१४३ 6 रिक्तत धूस, अपने शत्रु के ऊपर विजय प्राप्त करने के बार उपायों में से एक, दे० उपाय 7 काटना, बाटना 8 पक्षिकीकरण, स्वच्छ करना 9 रक्षा 10 आसन अङ्गुलिभित। सम०-कुम्भा हाथी की घुटपुडी से बहने वाले मद्र जल का प्रवाह, - अमरः दान देने का धर्म, दानकवी धर्म, - पति 1 अत्यन्त उदार पुष्ट 2 अक्षर, इच्छा का एक विध, - चक्षु दान-लेख - पाक्ष् दान लेने के योग्य व्यक्ति, बाटुण, - राक्षिण्यम् च्छण परिचोष करने की इमानता, - निक्ष (वि०) गिरवत केकर फोटा हुआ, बीर 1 बहुत दानी व्यक्ति 2 राज् बीकता के फलस्वरूप कोरम, बीरतापूर्ण दान बीकता का रस, उभा० परकु-राय बिकने सात हीनों वाली इस पृथ्वी की दान कर दिया-नु० रस० में बी गई ('दाक्षीर' के अन्तर्गत) उचित - निक्षिद्विचक्षि के मद्र दियामाचिने कक्षक-

रमणीयं कुण्डलं चार्पयामि, अकलमयवकुल्य हाकृपा-
येन निर्वन्द बहुलसिखिरवारं मौलियावेदयामि, —सील,
—हार, —शील (वि०) अत्यन्त उदार या दानशील ।

दानकम् [दान + कन्] पुष्कल दान ।

दानवः [दानो अपत्यम् - दन् + अण्] राक्षस, पिशाच
—विदिवमुद्धतदानवकष्टकम् — श० ७३ । सम०
— हरिः १ देवता २ विष्णु का विशेषण, गुरुः गुरु
का विशेषण ।

दानवैयः [दन् + ऊङ् + उक्] = दानव ।

दान्त (भू० क० क०) [दन् + क्त] १ गालतु जवा में
किया हुआ, दमन किया हुआ नियन्त्रण, लगाम डालना
रोंका हुआ, २० दन् २ गालतु मनु ३ पक्ष ४ उदार,
सः १ गालतु २ दमन ३ दमन का वृक्ष ।

दानिः (स्त्री०) [दन् + क्त] आत्म संयम, यश में
करना आत्मनियन्त्रण ।

दानिक (वि०) [दन् + उक्] हाथी दान का बन्
हुआ ।

दायि (वि०) [द + दायि + क्त] १ दिनाश दान
२ आदने के लिए दान दिया गया, ३ दिनाश पर
अपेक्षित लगाया गया हो ३ दायि दायि दायि
गया या ४ अतिशय प्रदान ।

दानम् (नपु०) [द + दानम्] १ छोटी मात्रा, पीला,
रस्सी, २ कुली या मजरा, हार - अथवा बहुत दिनाश
दामे या पिशाच दान दिया - भेष० ३२ कलकलक-
दामलोरी - नील० १ शिः ४५० २ लोरी घाटी
(बैले बिजली की) विद्युत्मान हमराजोव किशयम्
—मातृका ३२० भेष० ३३ ४ हठी पट्टी : सम०
—अञ्जलम्, अञ्जलम् रोदे की : हठी राक्षस की
रस्सी शिः ५०० — उदार कृपण का विशेषण ।

दानवी [दान + वी + क्त] वह रस्सी जिसके सहारे
पशुओं के गेरे बांध दिए जाते हैं ।

दायिनी [दानम् + दानि + क्त] बिजली ।

दायिपत्यम् [दायिनी + पत्य्] विवाह, स्त्री पुत्र या पति-
पत्नी सम्बन्ध ।

दायिक (वि०) (स्त्री० - की) [दान + उक्] १ प्रोवे-
राज, पावण्डा २ धमाडी, अभिमानि ३ आङ्गभर
त्रिय, बौली ।

दायः [द + दान्] १ उपहार, पुस्तक, दान - रत्नमि
रसते प्रीत्या दाय दक्षिणमुवर्तते - भा० ३२, प्रीतिदाय
मा० ४, मातृवि० ८१९९ २ वैवाहिक उपहार (जो
वर या बच्चे को दिया जाय ३ भाग, अन्न, उत्तराधि-
कार, पैसुका मरति - अनपत्यस्य पुत्रस्य माता दायमवा-
न्वात् - मनु० १२१७, ७७, २०३, १९४ ४ भाग,
हिस्सा ५ सीपना, समपण करना ६ बाटना, वितरण
करना ७ हाथि, विनाश ८ वैदुष्याक ९ स्थान,

अग्रह । सम० — अथर्वतन्त्रम् उत्तराधिकार में प्राप्त
सम्पत्ति को उल्लेख करना - मनु० १०७९ - अर्ह (वि०)
पैतृकसम्पत्ति को पाने का दावेदार आहः १ जो पैतृक
सम्पत्ति के एक भाग का अधिकारी हो, उत्तराधिकारी
— पुमान् दायोदोऽन्याया स्त्री - निच०, याज्ञ० २१११८,
मनु० ८११६ २ पुत्र ३ बन्धु, बान्धव, निकट या दूर
का सम्बन्धी ४ दावेदार या दावेदार होने का बहाना
करने वाला गवां गोक या दायदः - सिद्धा० - आह,
— आहो १ उत्तराधिकारी २ पुत्री, आहम्
१ उत्तराधिकार में २ सम्पत्ति २ उत्तराधिकारी
बनने की स्थिति - काव्यः पैतृक सम्पत्ति को बाटने
का मध्य, बन्धुः १ पैतृक सम्पत्ति का भागीदार
२ पत्नी - भागः उत्तराधिकारियों में सम्पत्ति की बांट
(सम्पत्ति का विभाजन) ।

दायक (वि०) (स्त्री० - यिका) [द + दान् + क्त]
दने वाला स्त्रीकार करने वाला (समाम के अन्त में
प्रयुक्त) उत्तराधिकार ।

दायः [द + दान्] १ दान, निवृत्त, फलित सिद्ध २ दान
हुआ पौत्र - भा० ३०० पत्नी - २०० ब्रह्ममी दान
कर्मन्तु दुःखीदाम - क० ६६३ उदार दायतासिद्धिदाय
सिद्धि प्राप्त - उत्तर० ८ पञ्च १११००, मनु०
११११२, २०१७, श० ४१६ २१२९ । सम० -
— दायि (वि०) भागीदार अधिकार - उपसम्पन्नः,
— दायः, परिग्रहः, — ग्रहणम् विवाह, नये दायपरिग्रहे
— उत्तर० १११९ - कर्मन्तु (नपु०) - क्रिया विवाह
— १११० ।

दायक (वि०) (स्त्री० - रिका) [द + दान् + क्त] तोड़ने
वाला फाटन आका टुकड़ा करने वाला - दारिका
वृद्धयदारिका विन्तु, कः १ लड़का पुत्र २ बच्चा,
शिशु ३ जानवर का बच्चा ४ गोव ।

दारणम् [द + दान् + क्त] टुकड़े २ करना, फाटना,
बीटना, कोटना, दो कर देना ।

दारवः [दन् + अण्] १ पत्नी २ समुद्र, — वः, — वः
सिन्दूर ।

दारिका [दारक + टाप इत्यम्] १ पुत्री २ बेव्या ।

दारित (वि०) [द + दान् + क्त] फाटा हुआ, विरक्त
किया हुआ, खण्ड २ किया हुआ, बीरा हुआ ।

दारिद्र्यम् [दारि + द्र्यम्] गरीबी, निर्बलता - दारिद्र्य-
दोषो गुणराशिनाशी - सुभा० ।

दारी [द + दान् + क्त] १ दार २ एक प्रकार
का रोग ।

दाह (वि०) [दा + दान्] फाटने वाला, पीरने वाला,
: १ उदार या दानशील व्यक्ति २ कलाकार - ब
(नपु०) (पु० भी) १ लकड़ी, लकड़ी का टुकड़ा,
अहोरी २ गुटका ३ उत्तोलन दण्ड ४ चटखनी

5. देवदार वृक्ष 6. कच्चा लोहा 7. पीतल । सम०
—अब्धः मोर, —आघातः लुटवई, —गर्भी काठ की
पुतली, —जः एक प्रकार का डोल, —व्यञ्ज कठरा,
काठ का बर्तन, —पुत्रिका, —पुत्री लकड़ी की गुड़िया,
—मुष्पाङ्गवा, —मुष्पाङ्गा छिपकिली, —घनम् 1 कठ-
पुतली 2 लकड़ी का घन, —बन्धू लकड़ी की गुड़िया,
सारः चन्दन, —हस्तकः लकड़ी का चर्मव ।

दासकः [दास + कन्] 1. देवदार का पेड़ 2. कृष्ण के मारवि
का नाम —उत्कन्धर दास इत्युवाच— शि० ४।१८, —का
1. कठपुतली 2. लकड़ी की मूर्ति ।

दास्य (वि०) [दु + जिच् + उतन्] 1. कहा, मस्त—उत्तर०
३।३४ 2 कठोर क्रूर, निर्दय, निष्ठुर, —मध्यमे
विस्मयदायकचित्तवृत्ते— श० ५।२३, पशुमारण-
कर्मदारण ६।१, मनु० ८।२७ 3 भेषज, भयानक,
भयकर— दा० ६।२९ 4 घोर, प्रवण्ड, उग्र, तीव्र,
अस्थूल पीडाकर (शोक, पीडा आदि), —हृदयकुमुद-
शोषी दास्यो शोषमोक—उत्तर० ५ 5 बहुत तेज,
कर्कश (शब्द आदि) 6. नृशम, रामाञ्जकारि, —जः
भयानक रस, —बन्धू उग्रता निर्दयता, बहिस्तता आदि ।

दास्यम् [दु + ष्यच्] 1 कडापन, मस्ती, दुइता 2 पुष्टि,
मर्मण ।

दास्युः—रम् [दास्यु + ण] 1 दक्षिणावर्ती (दाईं ओर लुकने
वाला) शब्द 2. जल ।

दास्ये (वि०) (स्त्री०—सौ) [दाम् + ज्य] कुछ काम का
बना हुआ—दास्ये मुञ्चत्युद्वपल वीतनिशो वपूर—श०
४, (अने० पा०) ।

दास्ये (वि०) (स्त्री०—सौ) [दास + ज्य] काठ का बना
हुआ ।

दास्येयम् [पशियत शब्द—दास + ज्य + क] बन्धुभागह,
न्यायालय ।

दास्येयिका [दास्ये + ठञ्] दर्शन आसनों से परिचित ।

दास्येय (वि०) (स्त्री०—सौ) [दस्य + ज्य] 1 दास्य का
बना हुआ, लवित्र 2 मित्र पर पिता हुआ (सन्
आदि) ।

दास्येयिक (वि०) (स्त्री०—सौ) [दस्येय + ज्य] दस्येय
देकर मर्मदाया मरा या आत्मा किया गया, लवित्र
वर्णन का विषय अर्थात् उपमेय—स्वायत्त दास्येयि-
कत्वेन विवाहित—साकर ।

दास्यिः [दास्यति असुरान्—दस्य + जिच् + थि] इन्द्र ।

दास्यः [दुनाति दु + ण] = दस्य । सम०—दास्यिः, —अनलः
—बहुत, अज्जल की भाग, दास्यिः—अनलम्बुन-
दास्यिः क्षीलमात्रिमदश्रिय, शानदीपनहावापुर्यं नल-
समागमः—मायि० १।१९०, ३४ ।

दास्यः [दसति हिनस्ति मस्त्यन्—दन् + ट, मस्त्य दास्यन्]
मनुष्य, मनु० ८।४०८, ४०९, १०।३४ । ज्य०—ज्यः

मनुष्यों का गाँव, —नविनी व्यास की माता सत्यवती
का विशेषण ।

दास्येयः—दास्येयिः [दस्येय + ज्य, इज् + वा]—दस्येय का
पुत्र, —रघु० १०।४४ 2. राम और उसके तीनों भाई,
विशेषकर राम—रघु० १२।४५ ।

दासाहीः (ब० ब०) [दसाह् + ज्य] दसाह् के बंशज,
यादव शि० २।६४ ।

दासेरः [दासी + दुह] 1. मछुबे का बेटा 2. मछुबा
1 ऊँट ।

दासेरकः [दासेर + कन्] मालव देश, —जः (ब० ब०)
मालव देश के निवासी या वास्तव्य, हे० 'दासेर' भी ।

दास्यः [दास्य + ज्य] 1. कुलाभ, मेवक—पृथक्मंशारा
—अनु० १।१, दुह, कर्ष, आदि 2 मछुबा 3 गुड़,
चीरे कर्ष का पुष्प, मनु० 'युत्त' । सम०—अनुदास्यः

—कुलाभ का मेवक (अन्यत्र विनय मेवक) (कभी
कभी बन्ना के द्वारा यह शब्द विनयवा' का लुचक
समझा जाता है) —जः मेवक या गुदाभ—कर्मरत्नत्रय
मयि पश्यमि स्वस्तिमानि दाम्भजन यः—विष्णु०
४।२९ ('पीडनार या समान्य व्रतगमूह के लिए
'दास्यकुलम्' समस्तभार प्रयुक्त किया जाता है)

दासी [दाम + ङाय] 1 मेविका, लोकगरी 2 मछुबे की
पत्नी 3 गुड़ की पत्नी 4 भेष्या । सम०—बुधः,

—सुतः मेविका या मृत्पत्र स्त्री का पुत्र—समम् दामियो
का समूह, (त्रिभुवना 'मव' ए० ब० 'दास्य'
शब्द समाप्त में प्रयुक्त होता है तो उसका शाब्दिक
अर्थ नष्ट हो जाता है, उदा० दास्यः पुत्रः,—सुतः
त्रिनाल का बेश (हराम का बन्ना—एक प्रकार का
अवशब्द) दास्यः पुत्रः लकुनिलुप्यकै—श० २,
परन्तु 'दास्य' मनु 'मेविका के समान ।

दासेरः—रकः [दासी + दुह, दासेर + कन्] 1 दासी या
मेविका का पुत्र 2 गुड़ 3 मछुबा 4 ऊँट—शि०
१२।३२ ५।६६, (इस अर्थ में 'दासेर' शब्द भी है) ।

दास्यम् [दाम + ष्यच्] दासता मलावी, सेवा, अजीनता
परिचुके तत्र दास्यमपि क्षमः—श० ५।२७, मनु०
८।६० ।

दास्यः [दह + ष्यच्] 1 जलन, दहयामि, —दाह्यक्षित्विष
कुलकर्मणि—रघु० ११।६२, छेरी दहस्य दाहो वा
—मालवि० ४।४, कि० ५।१२ 2. (आकाश की
भाति) दहकती हुई लाली 3 जलन की उत्प्रेरना

4 ताप, सताप । सम०—अगुव (नपु०)—काष्ठम्
एक प्रकार का मुग्ध, अगर,—आवक्य (वि०) जल
उठने वाला, अगर जलन वाला दगार, —तरः,

तरल (नपु०),—स्वल्प दूरी के अन्तर्गत का स्थान,
वमशानभूमि,—दूर (वि०) दूरी की दूर हुनने वाला
(—रन्) उत्तरी पीका, दस ।

रखना, शर्त लगाना 7 बेचना, व्यापार करना (सम्बन्ध के साथ) -अवेरीयुबधुभोगानाम् - भट्टि ८१२२, (उपसर्ग पूर्व होने पर कर्म० या सम्बन्ध० के साथ, -शत शतस्य वा परिचीभ्यति सिद्धा०) 8 उठाना, अपव्यय करना 9 प्रसन्न करना 10 प्रसन्न होना, हर्ष मनाना 11 पागल होना पीकर मस्त होना 12 नींद आना 13 कामना करना, 11 (म्वा० पर० चुरा० उभ० देवति देवयति-ने) बिलाप कराना पीडा दिलाता प्रकृषित कराना, सताना, 11 (चुरा० अ० -देवयते) पीडा महन करना बिलाप करना अतनाद करना बरि-बिलाप करना क्रन्दन करना पीडा महन करना । भट्टि० ४१३४ ।

विष् (स्त्री०) [दीव्यन्त्यन् दिव् + वा आधारे डि वि-तारा०] (कर्म० ए० इ० घी) 1 मृग, रघु० ३४, १२ मेघ० ३० 2 आकाश 3 दिन 4 प्रकाश उजाला विशेष० वह समस्त शब्द जिनका पूर्वपद दिव है, अधिकशः अनियमित हैं उदा० दिवस्पति इ० २ का विशेषण -अनतिक्रमणीया दिवस्पतेराज्ञा श० ६ -विष्पुष्पिष्यो स्वर्ग और पृथिवी, -विषिष, -विषिष्य - विषिष्य, विषिष्य (घ) र (पु०) विषोक्त (पु०) विषोक्त, -स स्वर्ग का रहने वाला देवता श० ७ रघु० ३११९ ४० दिविष्यदुर्बले गीत० ७ ।

विष्म (नपु०) [दिव् + क] 1 स्वर्ग 2 आकाश 3 दिन 4 वन जङ्गल अरण्य ।

विषतः -सम् [दीव्यतेऽत्र दिव् + असच् किकच्] दिन-दिवस इवाभ्रयामसनाप्यये जीवलोकेस्य -श० ३११० । सम० -ईश्वर, कर सूर्य, ऋतु० ३१०० -जन्म प्राण काल, प्रभात -विषम सायंकाल मृषास्त-मेघ० ११ ।

विषा (अव्य०) [दिव् + का] दिन में दिन के समय विषाम् -दिन निकलना । सम० -अवम कोवा -अवम उल्लू, कण्ठकी, -अविका छलुन्वर, -कर 1 सूर्य कु० ११२, ४४८ 2 कौवा 3 सूरजमुखी फूल, -भीतिः 1 बाण्डाल, नीच जाति का पुत्र 2 नाई 3 उल्लू, विषम् (अव्य०) दिन रात, प्रबोध दिन का दीपक या लैम्प, अप्रसिद्ध पुत्र, -भीत, -भीति 1 उल्लू - विषाकरावृक्षति यो गृहात् नीनं विषाभीत-विषावकारम् -कु० ११२ 2 बार सँघ लगानेवाला -अव्यय पध्याङ्ग, -रात्रम् (इ० अ०) दिनरात, -अनु सूर्य, -अव (वि०) दिन में होने वाला -रघु० १९१३४, स्वप्नः, -स्वावः दिन के समय सोना ।

विषाज (वि०) (स्त्री०-जी) [विषाज -टुप्, तुद च] दिन का वा दिन से सम्बन्ध रखने वाला -कु० ८४९१, भट्टि० ५१९५ ।

विषि [दिव् + इप्] वाय पत्नी, नीलकण्ठ (विबः जी) ।

विष्य (वि०) [दिव् + यत्] 1 देवी, स्वर्गीय, आकाशीय

2 अतिप्राकृतिक, अलौकिक परबोधैकविष्यचक्षुष

-वि० १९१२९, भग० ११८ 3 उज्ज्वल, क्षामहार

4 मनोहर, सुन्दर, -अ 1 अलौकिक वा स्वर्गीय

प्राणी - विष्यानामपि कृतविषया पुरस्तात् - वि०

८१६४ 2 जो 3 यम का विशेषण 4 वार्त्तिक, -अव्य

1 देवी प्रकृति विष्यता 2 आकाश 3 देवी परीक्षा

(यह दस प्रकार की गिनाई गई है), तु० वाङ्म०

२१०२ ९५ 4 शपथ सत्योक्ति 5 लीप 6 एक

प्रकार का चन्दन । सम० -अनु सूर्य, -अव्यय -वारी,

स्त्री स्वर्गीय अप्सरा दिव्य कन्या, अप्सरा -अविष्य

(वि०) कुछ लौकिक तथा कुछ अलौकिक (जैसा कि

अर्चन) उक्तम् वर्धा का जल कारिण (वि०)

1 शपथ उठाने वाला 2 आग्न परीक्षा देने वाला

गामय गण्य चक्षुः (वि०) 1 अलौकिक दृष्टि

रखन वाला दिव्य आँखों से मुक्त रघु० ३१४५

2 अन्धा (पु०) बन्दर (नपु०) श्वपीय माँस

अलौकिक दृष्टि मानव आँखों द्वारा अदृश्य पदार्थों को

देखने की शक्ति ज्ञानम अलौकिक ज्ञानकारी - बुद्ध

(पु०) उपायिनी प्रश्न दिव्यलोकान्तर्गत तत्त्वों की

पृच्छाओं का घटना कम की पृच्छाएँ शकुन विचार

-आमृष उपदेवता रत्नम् काव्यमर रत्न जो स्वामी

को सब इच्छाओं को पूरा करने वाला कहा जाता है

दायानिके का मणि -गु० बिनामणि रत्न स्वर्गीय

रत्न जो आकाश में चलता है रत्न पाग, वक्त्र

(वि०) दिव्य वस्त्रों को धारण करने वाला (स्व)

1 वृष 2 सूरजमुखी का फूल सति (स्त्री०)

अकाशगङ्गा सार साक का वृक्ष ।

विष् (तुदा० उभ०-विशति-ते दिष्ट, प्रेर० देवयति-ते

इष्ठा० दिदिति-ते) 1 सकेत करना, दिखलाना

प्रदर्शन करना (साक्षों के रूप में) प्रस्तुत करना

संज्ञित सन्नि मेल्युक्तया विशेष्यतो विशेषे य

-मनु० ८४५ ५३ 2 अभिप्रेत करना, निवृत्त

करना इष्टां गति तस्य मुरा दिशस्ति-महा० 3 देना,

स्वीकार करना प्रदान करना, अर्पण करना, लीपना

कागमक भवते निबं दिव्य - वि० ११६८, रघु०

५१३०, १११२ ११७२ 4 (कर के रूप में) देना

5 स्वीकृति देना -रघु० ११४९ 6 निवेदन देना,

बादेस देना, हुक्म देना 7 अनुज्ञा देना, इजाजत देना

-स्मयु विदिति न विबः पुरपुरीष्य -वि० ५१२८,

अति- 1 अभिप्रेत करना, लीपना 2 प्रयोग का

विस्तार करना, सादृश्य के आधार पर चटाना -इति

ने प्रत्यया उक्तास्तेऽप्रातिविषयते-वि०, वा प्रधान-

नक्तमिहवृत्तानामपि विदिति-वारी०, अ- 1 संकेत

करना, इजारा करना, दिखलाना २. इच्छन करना,

प्रस्तुत करना, कहना, बोधना करना, बतलाना, बतलाना देना मनु० ८।५४ ३ ठोप रचना, बहाना करना—विषयकप्रमपदिव्य—रघु० ११।३१, ३२, ५६, शिर. बुलस्यवीनमपदिव्य—रघु० ५०, शिररई के बहाने की वृत्ति देते हुए ४. उल्लेख करना, निर्देश करना—रहस्य मन्त्रां वृत्तौनापदिष्टा—रघु० १०२, आ—, १ करना, दिखलाना २ आदेश देना, आशा देना, निर्देश देना—पुनरप्यादि तावदुक्ति—कु० ४।१६, आदिशदस्वाभिमम बनाय—मट्टि० ३।९, ७।२८, रघु० १।५४, २।९५, मनु० ११।१९३ ३ उद्दिष्ट करना, बलम करना, अधिन्यस्त करना—मट्टि० ३।३४ अध्यापन करना, उपदेश देना, शिक्षा देना, अङ्कित करना, निश्चित करना रघु० १२।६८ ५ विक्षिप्त करना ६ आगे जाने वाली बात बताना, उद्—, १ सकेत करना ज्ञापन करना, बोधित करना, उल्लेख करना—प्रचोदितमासनम्—कु० १।३५ पचोदितव्यापारा—स० ३, जनेकमुक्त उद्दिष्ट शब्दे—मेडि० २ उल्लेख करना, निर्देश करना, सकेत करना—स्मरमुद्रित्य—कु० ४।३८ ३ अविज्ञाय रचना उद्देश्य रचना, निर्देश करना, अधिन्यस्त करना, अर्पित करना—कलमुद्रित्य—मव० १७।२१, उद्दिष्टावर्णनहिता मवस्य पुत्राम्—मा० ५।२५, मध्यमिलावर्णित्य प्रविष्ट—रघु० १४ सिकाना, उपदेश देना—सता केनपदिष्ट विषयमसिचारावतमिवम्—अर्तु० २।२८, उच—, १ अध्यापन करना, उपदेश देना, सिकाना—मुक्तमुप-विष्टते परत्य—का० १५६, मार्कशि० १।५, रघु० १६।४३, मग० ४।३४ २. सकेत करना, इशारा करना, उल्लेख करना—मुक्तमुपविष्टय—रघु० ८७३ ३ कथन करना, बतलाना, बोधना करना—कि कुलेनो-पदिष्टेन वीलमेवाय कारवम्—मुच्छ० १।७ ४ निर्दिष्ट करना, अङ्कित करना, स्वीकृति देना, निश्चित करना—न द्वितीयवच साध्वीना वचिङ्कृतापदिष्टते—मनु० ५।१६२, २।१९० ५ नाम लेना, पुकारना, विद्—, १ सकेत करना, इशारा करना, दिखलाना—एकैक निर्विद्यम्—स० ७, अकमुत्था निर्विद्यमि—आदि ३ अधिन्यस्त कर देना, दे देना—निर्विष्टां कुलपतिना स पर्वकाकामव्यास्य—रघु० १।९५ ३ बुलाना, निर्देश करना, सकेत करना ४. अधिन्यस्तानी करना ५. उपदेश देना ६ बतलाना, सवाचार देना, अ—, १ सकेत करना, इशारा करना, दिखलाना, निर्देश करना—सम्पाधिकार-पुनर्क. प्रकृतेः उद्दिष्टा—रघु० ५।६३, २।१९ ७. बतलाना, कथन करना—अव० ८।२८, मट्टि० ४।५ ३ देना, स्वीकार करना, उपहार देना, प्रदान करना—विषयीः पथि भुविपदिष्टयोः—रघु० ११।९, ७।१५, वि सज्जोपि प्रविष्टसि बलं वार्षिकवचारादेव

—येव० ११४, मनु० ८।२६५, अत्रा—, (क) व-स्वीकार करना, बुर फेंकना, कतराना—प्रत्यादिष्टविशेष-मध्यमविधि—स० ६।५, (ख) पीछे बकेलना,—रघु० ६।२५ २ पकाइ देना, प्रत्याख्यान करना (व्यापित का)—काम प्रत्यादिष्टा स्मरामि न परितुह मुनेस्तनयाम्—स० ५।३१ ३ बुद्ध बनाना, निश्चेत करना, परास्त करना, वृष्टभूमि में फेंक देना रघु० १।६१, १०।६८ ४ विपरीत आशा देना, वापिस बुलाना, व्याप—, १ नाम लेना, पुकारना,—व्यपदिष्टते अर्पित विष्कम्भीयत—सि० १५।२८ २. मिथ्या नाम लेना, मिथ्या पुकारना—विषय मा व्यपदिस्तस्यपर व यासि—मुच्छ० ४।९ ३. बोलना, गर्व से कहना—अग्नेर्वादि-मने कुले व्यपदिष्टसि—वेणी० ६।७ ४ बहाना करना, डोग रचना—महावी० २।११, सन्—, १ देना, स्वीकृति देना, अधिन्यस्त करना, मौपना—मट्टि० ६।१४१, याज्ञ० २०३२ २ आशा देना निर्देश देना, शिक्षा देना उपदेश देना सन्देश भेजना—किन्तु बल दुष्यस्त-स्य युक्तकपमस्यामि सन्देशव्यम्—स० ४, सि० १।५६ ५।३ सन्देश के रूप में भेजना, सन्देश सीपना—अव विदवात्मने तौरी सन्निवेश मिष सलीम्—कु० ६।१।

विद् (स्वी०) [दिशि ददायवकाशम् विद् + क्विप्] (कतु० ए० व०—दिक्—म्) १ दिशा दिग्विन्दु, बार दिशाएँ रीतिष का बिन्दु आकाश का चौड़ाई दिग प्रसेदुर्मर्यादा वय सुका—रघु० ३।१६, विदि दिशि किरति सजलकज्जालम्—गीत० ४ २ [क] बल्य का केवल निर्देश इति, (सामान्य रूप देना का) सकेत इतिदिक्, आध्याहारो हाग बहुल प्रयोग, (क) (अत) रीति रूप, प्रणाली—मुन पाठोक्तदिशा मा० द०, दिशि मुनकुना प्रदिशता, दासीसत्र मुप-सत्र रज सममिदा दिश अमर० ३ प्रदेश, अम-राल स्थान ४ बिदेश या दूरस्थ प्रदा ५ दृष्टिकोण, विषय को सोचने की रीति ६ उपदेश आदेश ७ 'दल' की सख्या ८ पक्ष दल ९ काटने का बिन्दु (विश्व० समाम में स्वरादि, सञ्चोष तथा उच्च व्यञ्जनादि सञ्चो से पूर्व 'किन्' तथा अञ्चोष व्यञ्जनादि सञ्चो से पूर्व 'दिक्' हो जाता है उदा० दिगम्बर, दिग्गज दिक्पथ, दिक्कृति आदि)। म०—अमरः दिशाको का किरारा या क्षितिज दूर का अंतर, दूरस्थ स्थान—भासि० १।२, रघु० ३।४० १६७, १६।८७ नामा-गन्तागता राजान आदि, अन्तरम् १ दूसरी दिशा २. मध्यवर्ती स्थान, अन्तरिक्ष, अन्तराल ३. दूरवर्ती दिशा, दूर्य प्रदेश, बिदेश,—अन्तर (वि०) दिशाएँ ही विस्तार वर्य हो, विस्तृत नम, विवस्त्र—विमम्बर-त्वेन विवेचित वयु—कु० ५।७२, (—र) १. नम विद्म (देन या बौद्ध सप्रदाय का) २ सायु, संघासी

3 शिव का विशेषण 4 अथेरा, ईसा,--ईश्वर: दिशा का अधिष्ठात्री देवता कु० ५।५३, दे० अष्टदिक्पाल,--कर: 1 युवा, जवान आरम्भी 2 शिव का विशेषण, कारिका--करी, जवान लड़की या स्त्री, करिन्,--पञ्च--हस्तिक--चारण. (पु०) बहु हाथी जो पृथ्वी को सभालने के लिए किसी दिशा में स्थित कहा जाता है। (यह आठो दिशाओ में स्थित होने के ११ अष्ट दिग्गज कहलाते हैं) दिग्दिशोपास्तु भस्वकार-विष्म० ७।१ वहलम् पृथ्वी को दिशाया का भवत्योक्त अक्षम् 1 क्षितिज 2 समस्त विजय अयं, विजय दिग्गजय सव दिशाया में भिन्न २ देशो को जानता विश्व का विजय करना स निविजयमप्राजवीर मय इवाकरान विष्माक० ७।१ इक्षोम इक्ष दिशाओं दिशाना वरुन सामान्य अय रेखा का प्रारम्भ करने करना--नाम 1 पृथ्वी को दिशा का हाथी दे दिग्गज 2 कोशम इ ममसामा इ एक इति (यन् वा इ मेघ० १४ म म० ५० की० ७।४५ १९ जो वरा मदिग है आश्रित है), मण्डलम् = दिक्चक्रम् भावन् ब्रह्म दिग् वा सकेर--मुखम आकाश की कोई सी दिशा या भाग इति भेद इति वाहनिदिग्मुखम् विष्म० ७।६ अमरः १ मोह भाग या दिशा भूल जाना वस्त्र (१४०) विष्कुल गता विवस्त्र (वस्त्र) 1 दिग्मन्त्र सप्रदाय हा जैन ग बोड भिक्षु 2 शिव का विशेषण विभाषित (वि०) विभूत विष्मयन या सब दिशाओ में प्रसिद्ध।

विशा। दिशु + अद् --टाप्। पृथ्वी का चौथाई भाग तरफ, प्रदेश। मम०--गज, पाल, दे० दिग्गज दिक्पाल।

विश्व (वि०)। दिशि भव दिशु ३।१ पृथ्वी की किसी दिशा में सम्बन्ध रखने वाला, या किसी दिशा में स्थित।

विष्ट (वि०)। दिशु क्त। 1 दिखलाया हुआ, सकेतित निर्देश किया हुआ, इत्यादि से बनाया हुआ 2 बणित उल्लिखित 3 स्थिर, निर्दिष्ट 4 निर्दिष्टित, भादेस दिया हुआ,--ष्टम् 1 अधिन्यास नियन्त्रीकरण 2 भाग्य, नियति, सौभाग्य या दुर्भाग्य भा दिष्टम्--म० २ 3. आदेश, निर्देश 4 उद्देश्य ध्येय। सम०--अन्त नियत स्थि हुए समय का समाप्ति, मृत्पु दिष्टन्-साध्यपति भवानपि पुत्रदाकात् रघु० १।३०।

दिष्टिः (स्त्री०)। दिशु + क्तिन्। 1 अधिवास, नियन्त्रीकरण 2 निर्देश, आज्ञा, दिशा, 'मन्त्र', उपदेश 3 भाग्य, किस्मत, नियति 4 अश्ली। अत, प्रमथना, पुनः कार्य (जैसा कि पुनःक्रम)--दिष्टिः पुनः कार्य पुनः कार्य--५५, दिष्टिः पुनःक्रमो महान्मूल--वा० ७३।

विष्टिषा (अम्य०)। दिष्टि का करण० ए० व०। भाग्य से, सौभाग्य से, ईश्वर का धन्यवाद, मैं किसना प्रसन्न हूँ, कितना सौभाग्यवाली, साबाश (हर्ष या बधाई का उद्गार)--दिष्टिषा प्रसन्नतु दुर्भाग्यम्--मा० ४, दिष्टिषा सोय महाशत्रुरञ्जनामन्त्रधनं--उत्तर० १।३७, देवा० ५।१२, दिष्टिषा शुच्य बधाई देन, दिष्टिषा बनेरली मभाग्यमेव पुत्रमनुवर्धनेन बापुमान्बधते--श० ७।

विह्। (अवा० उ००) दिग्धि, दिग्धि, दिग्धि--दिष्टा० दिविक्षिति 1 लोपना साधना पोतना, विद्याना--माट्ट० ३।२१ ३।४६ 2 मैला करना, छष्ट करना, अपवित्र करना रघु० १६।१५, लम्--1 लन्देह करना अनिश्चित रहना याज्ञ० ३।१६, सर्वथा विजयो युधि पञ्च० ३।१२ 2 भूल करना हतबुद्धि होना (कर्मका०)--पाम्न् आमकारकेन काश्यामदिग्धि माधेन्द्र्य (जटा)।--मा० १।२ या--वृषैर्जिविनि-सृष्टिबलभय मदिग्धपारावता--विष्म० ३।२, कु० ६।६० 3 अक्षेप आरम्भ करना।

हो (दिशा० वा०) दीयते दीन। लट् होना, मरना। दीक्षु (अवा० वा०) दीक्षते दीक्षित 1 किसी धर्म मन्त्रकार के अनुष्ठान के लिए अपने आपको तैयार करना दे० नी० दीक्षित 2 अपने आपको समर्पित करना 3 शिष्य बनाना 4 उपमन्य सन्स्कार करना 5 यज्ञ करना 6 आगम मयम करना।

दीक्षक (दाक्ष + क्त)। अध्यात्मिक मार्ग-दीक्षी।

दीक्षणम्। दीक्षु + क्त। दीक्षा देना समर्पण।

दीक्षा (दीक्ष + क्त + टाप्)। 1 किसी धर्म-संस्कार के लिए समायोज्य पक्षीकरण रघु० ३।४६, ६५ 2 यज्ञ से पूज किया जाने वाला प्रारम्भिक संस्कार 3 धर्मसंस्कार विवाह दीक्षा--रघु० ३।३०, कु० ७।१, ८।२४ 4 यज्ञोपवीत संस्कार करना, किसी विशेष उद्देश्य के लिए अपने आपको समर्पित करना। मम० अन्त पूर्वकृत यज्ञादि कर्म की कृतियों की शान्ति के लिए किया जाने वाला पूज-यज्ञ।

दीक्षित (मू० क० क०)। दीक्षु + क्त। सम्पारित, (किसी धर्म-संस्कार के अनुष्ठान के लिए) दीक्षा-प्राप्त--एने विवाहदीक्षितम् युय० उत्तर० १ अपवित्राध्यात्म्येव दीक्षिता अन्तु पौरवा--म० २।१६ रघु० ८।७५, १।१२४ वेणी० १।२।२ 2 यज्ञ के लिए तैयार 3 बन लेकर (किसी पुण्य कार्य के लिए) तैयार--रघु० १।१६० 4 अभियुक्त रघु० ६।५,--तः 1 दीक्षा-कार्य में व्यस्त पुराजित 2 शिष्य 3 बहु पुण्य विभने या जिसके पूर्व-पुण्य ने ग्यान्टिदाय जैसे बृहत् यज्ञों का अनुष्ठान किया हो।

दीक्षिः। दिशु + क्तिन्, दिग्धि, दीक्षन्। 1 उबके हुए चावल 2 स्वर्ग।

दीपति: (स्त्री०) [दीपि + क्तिन्, इट्, ईकारलोपश्च ।]
1 प्रकाश की किरण रघु० ३।२० १३४८ ने०
२।६९ 2 आभा, उजाला 3 शारीरिक कान्ति स्मृति
-मत् ० २।२९ ।

दीपितम् (वि०) [दीपित + मत्तुप] उज्ज्वल (पु०)
मूर्त्यं - कु० २।२ ३।३० ।

दीपी (बधा० आ० दीपोते) 1 चमकना 2 दिवाई देना
प्रणीत होना ।

दीप (वि०) [दी + क्त मध्यम] 1 गरीब दीपः 2 दीपि
नष्ट-अष्ट कष्टघटन दारिद्र्य प्रमाण 3 दिवा
उदाय विषय जाह्नव्य सा 'बहो' रज दीपा
गिन० ६ ४ दीप रजःपुत्रा 5 भद्र वाचनेय
न० ० १ ५ दीप प्रदीपि दुःखो या विदः
घटन दानादी बन्धन यन्त्र १६१ दिव्य
दीपाङ्गणोत्थितम् - पु० १९। भग्न ब्याल
असल (१६०) दीप दीपिका कर्त्तव्य दान् बन्धु
दीप-दुर्विद्या का। मत् ।

दीपितः (स्त्री०) [दीपि + क्त] 1 एक सन्ने का विहार मक
-विहारवासी मया पाठ्यमहात्मिका दीपारण्यम-द्व
2 मित्रा ३ सन्ने का चमकण ।

दीप्य (दिवा० आ० दीपयते दीप्य वाग्म० ददायते)
1 चमकना जगमगना (मात्र० भा०) -मूर्त्यं ३०३
स्मृति नृपगुणोद्यम मन्मथि मालि० ११०
नक्षत्रीय इव दीपय माणहारजिग्य रागणाकम
-न० ०।६६ भाट्टि० २।२ रघु० १६।६४ १० प्र०
४६ 2 जलना प्रकाशन होना प्रयापया वेद चरद
दीपयते का० १०५ 3 उरकना प्रश्रयण होना
बड़ना (भाळ० भा०) रघु० ०।४३ भाट्टि० १५।
शि० ०।३१ ४ काय में आगबल होना १२-
३।५५ 5 चमकना होना -पेर० दीपयति-ने अ
सुलगाना प्रश्रयण करना रागना करना प्रका
करना क्राशनामन्महापदसुजायै (इ.पु.) मा०
७, उद्-पेर० 1 आग सुलगाना 2 उदधीत करना
उत्तेजित करना, उद्योपित करना प्र-सम्- चमकना
जगमगाना ।

दीपः [दीप् + लिच् + अच्], ली० दीपः, प्रकाश नृपदाना
वनस्तेषु प्रकाश सहरजि अन्तरस्थे त्वि मूर्त्तिर्यज
नैव कनचित् - रघु० १।२२ न हि दीपो परदार
रघोपकुन - शारी० इमो प्रकार ज्ञानदीपः । सम०
-अभिज्ञा 1 अमावस्या 2 -दीपावली आराधनम्
दीप बाल में रज कर देवमूर्ति की आरती उतारना,
आति, -ली, अवली -उत्सव 1 दीपविन
राय के समय रीतनी करना 2 विशेषका से दिवाला
का उत्सव भी कार्तिक की अमावस्या में मनाया जाता
है, -अभिज्ञा दीपक की ली किरट् दीपक का फूल

दीपे का गुल - कुरी, -कुरी दीपे की बनी -ध्वजः
कात्रन बाधय, बुद्धि दीपाधार, दीवट, पुष्प
चपा का वृक्ष मातृत्व दीपक रघु० ११।५१,
माला प्रकाश करना, रागना करना सन् पुनय,
अभिज्ञा दीपक का ली -अभुला दीपों की पवि
रगना ।

दीपक (वि०) (दीप + क्त) [दीप + क्त - ध्वल]
1 आग सुलगाने वाला प्रश्रयण करने वाला
2 रागना करने वाला उद्-वल बनाने वाला 3 सवित्र
यन वेला भू-दर उत्तर वाता, विष्णुय करने वाला
4 रागना करने करने वाला शि० ०५५
५ दीपिका में वन जाके का उद्-वल करने वाला
रचनात्मक ॥ प्रदीप नावद्व कान्तमर्मा रघुरयेश
मन्म १६६४ उद्-वल १।०५ 2 उद् ३ कामदेव
नातिरयः । दीपक म - कम् 1 रागना केसर
३।५७० दा एक अत्रका जमम सन्ने विजेय
सन्ने रागना या दम अत्रिक रागना प्रहृष्ट और
प्रफुरा सन्ने अत्रिका दीपे जाये या जममे
क ३ दीपय (प्रका और प्रहृष्ट) एक ही कर्म के
प्रकाशन दीपे जाये महुत्तिल्य पमम पदना-
रक - नना मीर कट्टु बह्मण रागना दीपकम
३।५७० १० १० ज्ञान वर्त्तन कर्त्तव्यता
धर्मक दीपक दाना यदन मर्त्तन कर्म प्रदीपन
महापति ० ६९ ।

दीपक (न०) दीप्य १५० - मृट् 1 आग सुलगाने
वाला प्रकाश करने वाला 2 पुष्टिकारक पाचनशक्ति
क दीपक करने वाला ३ उत्तमक उद्योग ४ केसर
हाकरा

दीपिका दीप - लिच् + ध्वल - टप् इकमी 1 प्रकाश,
माला रघु० ३।६१ ० ३० 2 समान के अन्त
म) माधन वन करने वाला स्पष्टकर्ता नर्क-
वर्षिका ।

दीपय (दि०) [दीप + लिच् + क्त] 1 जिसका आग लगा
दो गई हो 2 प्रश्रयण 3 रागनाकरना प्रकाशय
4 प्रयत्न प्रकाशित ।

दीप्य (पु० क० क०) दीप्य - क्त 1 जलाया हुआ,
प्रकाश, सुलगाना हुआ 2 दहनका हुआ सन्ने
प्रकाश उज्ज्वल बनना अत्र-दीप करने वाला 3 प्रकाश-
४ उत्तेजित उदात्त पत् 1 तिहू 2 दीप का
पेट सम् सोना । सम० अद्-मूर्त्यं, अद्-विस्को,
अभि (वि०) [आग की मर्त्ति] सुलगाना हुआ
(-विक्) 1 चमकनी हुई आग 2 अवस्थ का नाम,
-अद्-पेर -आत्मन् (वि०) जलोके स्वभाव का,
-उत्सव मृत्कारणमार्ग विरय, मूर्त्यं, -कीर्ति
कार्तिक का विशेष, जिह्वा लोभकी (आलकारिक

हडाना या दूर करना कठिन हो, जिसका मुकाबला करना कठिन हो, अर्थात् — नीलम् कदाचन दुर्गति दुष्प्रवृत्तहार, — नीतिः (स्त्री०) दूरा प्रयासन भावि० ५१३६, बन्ध (वि०) १. कमजोर बन्धहीन २ सोप काय, शक्तिहीन — उत्तर० ११२४ ३ स्वल्प घोडा कम — रघु० ५११२, बाल (वि०) गये मिर बाल बुद्धि (वि०) १ बेवकूफ, मूर्ख, बूढ़ २ कुमार्ग दुष्ट मन का, दुष्ट-भय० ११०३ बौध (वि०) जो क्षीप्त समस्त में न बाधे, जिसकी गह तक न पहुँचा जाय, दुर्ग्राह्य निमार्गदुर्बोधमबाधविनलवा बन्ध भूपत्तीना चरित बन्ध जनन — कि० ११६ अथ (वि०) भाग्यहीन अभागा — अथा १. बहु पत्नी जिसे उसका पति न चाहता हो २. बुरे स्वभाव की स्त्री कलहाग्र प्रती, भर (वि०) जिसे निभाता कठिन हो, भासा भार, भाव्य (वि०) भाग्यहीन अभागा (स्वयं) दूरी किस्मान भक्षम् १ लाट सामग्री की कमी अभाव, अकाल पक्ष० २१४७, मनु० ८१२२, कि० ११७३ २ कमी, अल्प दूरा मेवक, अल्प (पु०) दूरा भाई अति (वि०) १ मूर्ख, दुर्बुद्धि बेवकूफ अनादी, २ दुष्ट, छोटे दूरव बा मनु० ११७० — अथ (वि०) गाराबोर लुकार या हिज, धरोभारा दीवाना, — अथ (वि०) निग्रयनम्क हताश्या दुःख उदास, मनुष्य दुर्जन दुष्ट पुत्र — अथ अश्लिष्टम् दूरी नसीहत, दूरा परामर्श, अथम् दूरी मीन अजाडितिक मूल्य, अर्थात् (वि०) निर्लेख अजिन्त — अश्लिष्टा, जाली एक प्रकार का उपलब्ध मूल्य प्रवृत्त सा० ६० ५५३ मित्र १ दूर दस्त २ धनु, कुल (वि०) दूरे सेहरे बाल, विद्वान् बहुराज मनु० ११९० २ कटुभाषी अस्वीकृताया बहुराज — मनु० २१९९ — कुल्य (वि०) बहुत अधिक मूल्य का महीना — मेघम् (वि०) मूर्ख बेवकूफ मन्द-बुद्धि, बुद्ध (पु०) मूर्खमति मन्दबुद्धि मन्थ्य बूढ़ — अन्तर्भावित्य व्याकूर्तमिति दुर्गमसोऽप्यलम् जि० २१२६, — योष योषव (वि०) अनेक, दो जीन न का सके, (—क) दूराष्ट्र और गांधारी का ज्येष्ठ पुत्र (दुर्योधन बचपन से ही अपने बड़े भाई पाण्डव से घृणा करता था, विशेष कर भीम से। इसलिए पाण्डवों का विनाश करने के लक्ष्य उसने यथाशक्ति प्रयत्न किये। जब उसके पिता दूराष्ट्र ने अश्विष्ठि की युवराज बनाने का प्रस्ताव रखा, तो दुर्योधन को अच्छा न लगा, क्योंकि दूराष्ट्र ही उस समय राजा थे, इसलिए दुर्योधन ने अपने अन्धे पिता को इस बात पर राजी कर लिया कि पाण्डवों का निर्विनाश कर दिया जाय। बारम्बार उसका भावी निराशस्वत्व बुना गया—और उनके रहने के लिए एक विद्यालय

महान बनवाने के बहाने दुर्योधन ने लाख, सेबों कादि दहनघोल सामग्री से एक मवन इस आका से बनवाया कि पाण्डव सब उसमें जल कर मर जायेंगे। परन्तु पाण्डवों को दुर्योधन की इस बाल का पता लभ गया था अतः वह मुरझित उस मवन से निकल भागे। फिर पाण्डव इन्द्रप्रस्थ में रहने लगे यहाँ रहते हुए उन्होंने बड़े ठाट बाट के साथ एक राजसूय यज्ञ का आयोजन किया। इस घटना ने दुर्योधन की ईर्ष्या और शोषादि को और भी अधिक भड़का दिया— क्योंकि दुर्योधन का पाण्डवों की शरणागत में जला कर मारने का बहाना पहले ही निष्फल हो चुका था। फलतः दुर्योधन ने अपने दिमाग का उपसाया कि पाण्डवों का हस्तिनपुर में आकर गुआ लेखने के लिए निमन्त्रण दिया जाय क्योंकि दुर्योधन विशेष रूप से जूए का शौक्लिन था। इस जूए के रूप में दुर्योधन का अपने माना बुद्धि की महापटा प्राप्त था। दुर्योधन ने जूए की डीब पर लगाया बही हार गया यहाँ तक कि इस हार से अन्धे होकर उसने अपने आप को, अपने भाईयों को और अन्य से दौरादी का भी दाँव पर लगा दिया। और इस प्रकार जूए में सब कुछ हार जाने पर शर्त के अनुसार दुर्योधन का १० वर्ष का बनवास तथा एक वर्ष का अज्ञानवास विधान के लिए अपनी पत्नी तथा भाइयों सहित बतन की शरण लेना पड़ा। परन्तु यह दोषकाल भी समाप्त हो गया। बतन में आकर पाण्डव और कौरव ने भारतीय नाम के महायुद्ध की तैयारी की यह युद्ध १८ दिन रहा और मारे कौरव अपने अधिकतर बन्धुबान्धवों सहित इस युद्ध में मारे गये। युद्ध के अन्तिम दिन शाम का दुर्योधन से इन्द्र युद्ध हुआ और शाम ने अपनी मर्त से दुर्योधन को जवा ताड कर उसे मौत के घाँट पहुँचाया। योनि (वि०) नोच जानि में उपग्र, अथम् इन्द्र का सख्य (वि०) जो कठिनाई में दबा व सख के दिखाई न दे सख (वि०) १ जिसका प्रयत्न करना कठिन हो दुष्प्राप्य दुस्तथाप्य रघु० ११६७ १७७०, कु० ४४० ५४६६ २ जिसका बुझना कठिन हो विषय मिलना दफ्तर हो, विरज बुझान्मुल्लयम् शा० ११६३ सर्वोत्तम वेष्ट उग्रम् ४ प्रिय, प्यारा ५ मूल्यवान् अश्लिष्ट (वि०) लाट गार से बिगड़ा हुआ, अत्यधिक लाट प्यार में पला हुआ जिसे प्रसन्न करना कठिन है—हा मण्ड-दुर्गति वेणी० ४ विक्रम० २१८ मा० ९ २ (अतः) स्वेच्छाचारी, नटनट अशिष्ट उच्छ्वस न स्तुहयामि सन्तु दुर्नीलायासमे शा० ७, (—सम्) स्वेच्छाचारिता, अस्वभाव्य, स्वेच्छव जाली दस्तावेज —अथ (वि०) १ जिसका वर्णन करना कठिन हो

अवर्धनीय २. वह वात जिसका मतलाना उचित न हो ३ अनुचित कोलने वाला, गाली देने वाला, (—बन्) गाली, फटकार, दुर्वचन, —बन्धु(मर्पुं) गाली, मित्रक, —बन्ध (वि०) बुरे रंन का, (—बन्ध) बाँधी, —वसति (स्त्री०) पीड़ाजनक निवासस्थान—रघु० ८।१४, वह (वि०) गाली, जिसे दोना कठिन हो—उत्तर० २।१०, कु० १।१०,—बाण्य (वि०) १ जिसका कहना या उच्चारण करना कठिन हो २. कुमावी, बड़बान ३ कठोर, क्रूर, (बन्ध) १ मित्रकी, दुर्वचन २ अव-गामी, लोकापवाद,—बाण्य अपवाद, अपयश दुर्गति, —वार, —वारण्य (वि०) जिसका मुखाबला न किया जा सके, असह्य—रघु० १।४८७, कु० २।२१, बासना १ मोड़ी कामना, बुरी इच्छा—भाति० १।८६ २ कपोलकल्पना, —बासत्तु (वि०) १ बुरा वचन वारण किये हुए २ नगा (पुं०) ३ एक बड़ा कोधी श्वभि, अति और अनसुया का पुत्र इसे प्रसन्न करना अत्यन्त कठिन था, बहुत से स्त्री पुरुषों को उसने अपमान तथा मुसीबत सहन करने के लिए पाप दिया। बमवर्धन के क्रोध की भाँति, इसका क्रोध भी प्रायः एक लोकोक्ति बन गया, —विगाह—विगाह्य (वि०) जिसमें प्रवेश करना कठिन हो, जिसका अवगाहन मुश्किल हो, अवाध, विविक्त्य (वि०) अव्यस्तताय, अतस्यं,—विक्लव अकुशल, नौसिकुवा बेवकूफ, मन्द बुद्धि, मूर्ख २ विक्लुल बनाही ३ बाँधे से ज्ञान मे ही कूला हुआ, गंवित, झूठा वचन करने वाला—वृषाशस्त्र ग्रहणबुद्धिबन्ध—वेणी० ३, ज्ञानलवबुद्धिबन्ध बह्मापि नर न रजयति—भर्तृ० २।३,—विष (वि०) १ कमीना, अशम, नीच २ दुष्ट, दुस्वरिष ३ गरीब, दरिद्र —विदधाने हविषवदुर्विष—मं० २।३३ ४ मन्वदुष्टि, मूर्ख, बेवकूफ,—विषक औदत्य, उच्छ्वटना, विनीत (वि०) १ (क) बुरी तरह से शिक्षित अशिष्ट, असभ्य, दुष्ट—आसिदरि दुर्विनीतानाम् श० १।२५ (ख) अकलक, नटकट, उपद्रवी २ हठीला, दुराग्रही —विषाकः १ दुष्परिणाम, बुरा नतीजा उत्तर० १।४०, महावी० १।७ २ पूर्व वचन के या इस वचन के किये हुए कर्मों का बुरा परिणाम, विस्मृततत्त्व स्वेच्छाचार, अकलकपन, नटकटपना, वृत्त (वि०) १ दुष्परिण, दुष्ट, अनज्य २ बदमाश, (तन्) दुरा-चरण, अशिष्ट व्यवहार,—दुष्टिः (स्त्री०) बाँधी कारिका, अनापदिष्ट,—अच्छदुराट नरक निर्णय (विधि में) —कल (वि०) नियमों का पालन न करने वाला, जो नाशकारी न हो, दुष्टम् वह सब जो बुरी रीति से किया गया है,—द्वय (वि०) दुष्ट दुरव का, गुच्छ विचारों वाला, दम् (पुं०) बैरी,—द्वय (वि०) दुरात्मा, विष का कोटा, दुष्ट ।

दुरोदरः [दुष्टमाममस्तात् उदर यस्य ब० सं०] १ बुराही, दुष्टकार २. पासा, जूआ ३ बाजी, दीव, —रम् बुरा खलना, पासे से खेलना दुरोदरच्छाजिता सवीहते नयन जेतुं जगतीं सुयोजन—कि० १।७, रघु० १।७ । दुल् (बुरा० उभ०—दोल्घति ते दोलित) झुलना इधर-उधर हिलना झुलना, इधर उधर घूमना, झुलना —नाट बेहोल्घेवाशु—रति० दोलयन हाविवाही—भर्तृ० ३।३९ २ हिलाकर ऊपर का करना ऊपर पंखना दालयति धलि वायु शब्द० ।

दुलि (स्त्री०) [दुल् + लि] छोटा कछुआ या कछुड़ी ।

दुष् (दिवा० पर० दुष्यति दुष्ट) १ बुरा या भ्रष्ट हो जाना, दूषित होना घाटा उठाना २ मर्मित होना असता होना (स्त्री का), कलमिन होना अपवित्र होना विगहना रघु० १।६६, मनु० ३।४ १।३८ १०। १०३ ३ पाप करना गलती करना गलती होना ४ असती होना अवश या अदाहीन होना ५ दूषयति (परन्तु दूषयति दापयति याद अर्थ है दूषित करना भ्रष्ट करना) १ भ्रष्ट करना विगा-हना नष्ट करना क्षयिष्म करना विघट होना दूषित करना घबरा उठाना कलमिन करना विचारित करना, अपवित्र करना (शा० यथा आल० मे) न भोना भरणार्थमि केव दूषित यथा मच्छ० १०। २३ पुरा दूषयति स्थगोम रघु० १।३० ८।६८ १०।४३, १०।४ मनु० ५।१ १५ ७।१९५ याज्ञ० १।१९, अमर ३० न त्वेन दूषयिष्यामि सम्प्रयह—महावनम महावी० ३।२८ दूषित नहीं बर्कना उल्लंघन नहीं करेगा तादृगा नदी आदि २ वारंश भ्रष्ट करना, उच्छाह भग करना ३ उल्लंघन करना अवज्ञा करना मनु० ८।३६४ ३६८ ४ निराकरण करना हटा देना, रद्द कर देना ५ दाप लगाना निन्दा करना, दाप निकालना, विभी के विषय में बुरा कहना दोषारोपण करना दूषित सबलोकेय निपादश्च नमि प्यति गमा०, याज्ञ० १।६६ ६ मिलावट करना ७ मिथ्या या बनावटी करना ८ निराकरण करना, छानन करना, प्र, १ भ्रष्ट होना, विगहना, विमान होना याज्ञ० ३।१९ २ पाप करना, कलनी करना, अदाहीन या असती (अपक्व) होना—भय० १।४०, मनु० १।७५ (वेर०) १ विगाहना, भ्रष्ट करना गलत करना, घबरे लगाना २ दाप लगाना, निन्दा करना, दाप निकालना सम् दूषित या कलमिन होना —(वेर०) १ दूषित करना भ्रष्ट करना, गलत करना, घबरे लगाना २ उल्लंघन करना ३ दोषारोपण करना, निन्दा करना, दाप निकालना ।

दुष्ट (दू० क० दुः) [दू+क] १ विपदा हुआ, खराब हुआ, क्षतिग्रस्त, बर्बाद २ दूषित, बन्ने लगा हुआ

उत्सर्जन किया हुआ, कलुषित 3 मलिन, प्रष्ट 4 पापलक्ष, बदमाश—दुष्ट 5 दोषी, अपराधी 6 नीच, अधम 7 दोषयुक्त, सर्वोच—जैसा कि तर्क० में हेतु 8 पीडाकर, निकम्मा। सम०—आत्मन्, —आत्मन् (वि०) सोटे मन वाला, दुष्ट हृदय वाला, —नक्कः बदमाश हाथी,—बेतन्, बी, बुद्धि (वि०) सोटे मन का, दुर्भाक्तापूर्ण, दुःशील,—बूष मजबूत परलु अडियल बैल, (जो गाड़ी न लीचे) बदमाश बैल।

दुष्टिः (स्त्री०) [दुष् + क्तिन्] प्रष्टाचार, सोट।

दुष्टु (अव्य०) [दुस् + स्वा + क्ति] 1 सगर, दुरा 2 अनुचित रूप से, प्रदुस् रूप से, गलती से।

दुष्यन्तः (पु०) चन्द्रवंश में उत्पन्न एक राजा, पुर ही सन्तान, शकुन्तला का पति, भरत का पिता (जगन् में सिकार भेलता हुआ, एक बार दुष्यन्त हरिण का पीछा करता हुआ कण्व ने आश्रम की ओर निकल गया। वहाँ कण्व को गोप ली हुई पत्नी शकुन्तला ने उसका स्वागत-सत्कार किया। शकुन्तला के अलौकिक मोहरों से राजा दुष्यन्त उस पर भाहित हो गया उसने उसका अपनी रानी बनाने के लिए राजी कर लिया और फलतः गान्धर्व विवाह कर लिया। कुछ समय शकुन्तला के साथ बिना कर राजा अपनी राजधानी का लौटा। कुछ महीनों के पश्चात् शकुन्तला ने एक पुत्र को जन्म दिया। कण्व ने यह उचित समझा कि शकुन्तला का उसके पति के घर भेज दिया जाय। जब शकुन्तला दुष्यन्त के पास गई और उसके नामने लड़ी हुई तो दुष्यन्त ने—लाकनित्वा के रर से—कहा कि विवाह करने की बात ठा ठा रही मैंने तो तुम्हें कभी देखा तक नहीं, परन्तु उसी समय उसे स्वर्गीय बाणी ने बतलाया कि शकुन्तला उसकी वध पत्नी है। फलतः उसने शकुन्तला को पुत्र समेत स्वीकार कर उसे अपनी पटगनी बनाया। वह राजा तनी बुढ़ा-बढ़ा तक सुखपूर्वक रहे, और फिर अपने पुत्र भरत को राज्य देकर बंगल की ओर चल दिये। दुष्यन्त और शकुन्तला का उपयुक्त वर्णन महाभारत में दिया हुआ है, कालिदास द्वारा रचित कहानी कई महत्त्वपूर्ण बातों में इससे भिन्न है दे० 'शकुन्तला')।

दुष् [दु + मुक्] 'दुरा, सगर, दुष्ट, प्रष्टिया, कठिन या मुश्किल आदि अर्थों को प्रकट करने के लिए मन्त्रा लक्ष्यो से पूर्व (कभी २ धातुओं के पूर्व भी) लगाया जाने वाला उपसर्ग। (वि०) म्बर और ध्वजना से पूर्व दुष् का म् बदल कर र् हो जाता है, ऊष्म वनों के पूर्व बिम्बर, व् और घ् से पूर्व घ् नया क् और प् से पूर्व व् हो जाता है। सम० कर (वि०) 1. दुष्ट, दुरी तरह से करने वाला 2. करने में कठिन, कठोर

या मुश्किल—वक्तु सुकर कर्त्तु दुष्करम्—करने की अपेक्षा कठिना आसान है,—अमर ४१, मुष्क० ३११, मनु० ७१५५, (—रम्) 1. कठिन या पीडाकर कार्य, कठिनाई 2 पर्यावरण, अन्तर्गता,—कर्मन् (पु०) कोई भी बुरा काम, पाप, दुर्मै, कात्तः 1. दुरा समय—मुद्रा० ७१५ 2. प्रलयकाल 3. शिव का विशेषण,

कुलम् दुरा या नीच बरामा—(आदवीन) स्वीरल्य दुष्कुलाशी मनु० २:२३८, कुलीन (वि०) नीच जाति में उत्पन्न,—कृन् (पु०) दुष्टपुत्र, कृन्तन्,—कृन्तिः (स्त्री०) पाप दुष्कृत्य उभे मुहूर्तदुर्कृते—मन० २१ ५० क्रम (वि०) क्रमहीन, अस्वस्थ, अव्यवस्थित,—धर (वि०) 1 जिसका पूरा करना कठिन हो मुश्किल—रघु० ८:७९, कु० ७१५५ 2 अगम्य दूर्यम 3 दुरा करने वाला, दुष्टोद्धार करने वाला, (—र) 1. रोज 2 द्विधायोग दान या संपत्ति, धारिन् (वि०) कठोर तपस्या करने वाला, धरित (वि०) दुष्ट दुर्गावरण करने वाला, परित्यक्त (मम) दुर्गावरण, दुरा बाल-चलन—विजित्यन्त (वि०) जिसका हत्या करना कठिन हो अमाध्य,—अध्वजः इन्द्र का विशेषण,—अध्वजः शिव का विशेषण,—तर (वि०) (दुष्टर या दुस्तर) 1. जिसका पार करना कठिन हो—रघु० ११२, मनु० ७१५४२, पञ्च० १११११ 2 जिसका दमन करना कठिन हो, अपराज्येय अजय, तर्क० मिथ्या तर्कना०—पक्ष (दुष्पक्ष) (वि०) 'जिसका ह्मम होना कठिन हो,—फलम् 1 दुरी तरंग म् गिरना 2 दुर्बल, अप-शब्द—धीरवह (वि०) जिसका पकड़ना सहज करना या लेना कठिन हो, (—ह्) दुरी पत्नी—धुर (वि०) जिसका पूरा करना, या जिसका सन्तुष्ट करना कठिन हो,—प्रकाश (वि०) अप्रामाद अन्वकारमय, धूमिल, प्रकृति (वि०) दुरे स्वभाव का, नीच प्रकृति का,

प्रजम् (वि०) दुरी सन्तान वाला,—प्रज (दुष्प्रज) (वि०) कमखोर मन का, दुर्बुद्धि—प्रजर्ष,—प्रजुष (वि०) जिस पर प्रहार न किया जा सके, दे० 'दुर्धर्ष'—रघु० २:२३, प्रकाशः बदनामी, कलक, अपकीर्ति,—प्रवृत्तिः (स्त्री०) दुरा ममाचार, कुख्याति—रघु० १:२५१,—प्रसह (दुष्प्रसह) (वि०) 1. जिसका प्रतिरोध न किया जा सके, अशानक 2 असह्य—मालवि०

५ प्राय, प्राप्य (वि०) अप्राप्य, दुष्प्राप्य—रघु० १:४८, मग० १:३६, शकुन्तम् दुरा मगुन, अपसक्तुन,—कला वृत्ताष्ट की इकलौती पुत्री जो अमरुत को व्याही गई थी, आत्मन् (वि०) जिसका प्रवृत्त करना या आसन करना कठिन हो, अविनेय, (नः) वृत्ताष्ट के १०० पुत्रों में से एक (यह बहादुर बोधा का, परन्तु दुष्ट और दुर्गति। जब बुधिष्ठिर शीपरी को दीव पर लपक कर हार गया तो बुध्यासन

१. कर्तुं ११८८, दूरीकृत— १ फासले पर हटा देना, हटाना दूर करना, —आश्रमे दूरीकृतकले - दश० ५, मासि० ११२२ २ बर्चित करना अलग करना --मुष्क० ११४ ३ राकना, परे करना ४ आगे बढ़ जाना, पीछे छोड़ जाना, दूर रखना श० ११९ इसी प्रकार दूरीभू दूर रहना परे रहना, अलग रहना, फासले पर रहना दूरीभूत मयि सहचरे चक्षु बाकीमिवैकाम् । सय० अस्तारित (वि०) रम्बा दूरी होने से वियुक्त —आपात दूर से निशाना लगाना आप्लाव (वि०) दूर तक बूटन वाला लम्बा छलांग लगाने वाला आच्छ (वि०) १ ऊँचाई पर चढ़ा हुआ दूर तक अग बढ़ा हुआ २ गहरा उबरा —कुराकुर लल प्रायः अगम विक्रम०६ ईतिथिधन (वि०) मेगा दुष्टि वाला गत (वि०) दूर हटा हुआ दूरस्थ दूर गया हुआ अग तब बरा हुआ गहराई १० मा० ५५ दूरस्थ आश्रमिक हूरगदय १०० दूरगम दूरगम्य पर यों ११ ना देलन की दिव्य धर्मक ब्रह्म १ गिट २ ५६ न पुस्त पवित्र बर्तित (वि०) दूर बं, अग ३ ग अद्युष्टि, बुद्धिमान (५) १ गद २ गद ३ गद ३ अष्टा पैगम्बर कवि दष्टि दूर तब इवन क बर्तित २ बुद्धिमान अद्युष्टि पात १ दूर ३ गित्ना २ दूर क अग ३ बुद्धिमान से गित्ना —पाव (वि०) विस्तृ पाट वाला गद १२२ —घार (वि०) १ बहुर चीग (दोप) २ अ कठिनाई से पार किया हा सफ बाध (वि०) पार तथा अग भाई अगम से निवृत्ति मय० ६ —आव (वि०) दूरवर्गी ५ मक १ विद्यमान शोधन (वि०) दूरा पर विद्यमान दूर हटाया हुआ दूर गम क्रामले पर, बस्त्रक (वि०) गमा विस्मयन (वि०) नीचे दूर तक लटकने वाला बेचिन् (वि०) दूर ही बीषम वाला सत्य (वि०) दूर प अग १ फासले पर, दूरवर्गी कष्टालेप्रगणित ११ पुनर्दूरमस्ये मय० ३ ।

दूरत (अण०) [दूर + तम्] १ दूर से फासले से नदग्य दूरतस्यवेत् पच० ५१९ बर्तित व शीराम ३५ विमुञ्चति दूरत मीर० २ २ दूर फासले पर —पच० ११९ ।

दूरेव्य (वि०) [दूरे मव दूर + एव्य] दूरी पर मौजूद दूर से आया हुआ ।

दूरैन् [दूरे उत्सार्यम् दूर + यन्] बिछा देना ।

दूर्य [दूर + य + टाप् रीष] भूमि पर फैलने वाली एक जात, दूब (यह बास देव पूजा के लिए पवित्र समझी जाती है) । सय० अक्षुर दूब के कोमल पत्ते —विष्णु ११२ ।

दूरिका, दूरी [दूरी + कन् + टाप्, ह्रस्व, दूर + कन् + डीष्, रत्य ल] तिल का बीजा ।

दूब (वि०) [दूप् + गिच् + अच्] (समाधान में प्रयुक्त) दूषित करने वाला, अपवित्र करने वाला—उवा० 'पवित्रदूब' ।

दूबक (वि०) [स्त्री०—बिका] [दूप् + गिच् + क्त] १ अष्टा-वार करने वाला अपवित्र करने वाला, विषाक्त करने वाला दूषित करने वाला बिगाड़ने वाला २ उत्कषेप करने वाला प्रवक्ता करने वाला, गुधराह करने वाला ३ अपराध करने वाला, अनिक्कम करने वाला, अपात्री ४ अक्षुब्ध बिगाड़ने वाला ५ पापी दुष्कृत क कुपय पर धरने वाला, अष्ट करने वाला बदनाम या दुष्ट गम

दूषणम् दूर । अट्ट १ बिगाड़ना अष्ट करना, विषाक्त करना बर्बाद करना अपवित्र करना आदि २ उत्कषेप करने बोडना (समझौता आदि) ३ पचष्ट करना बर्बाद करना सतीव अष्ट करना ४ गाली देना निद्रा करने कलकित करना रच० १२१५ ५ बदनामी अष्टाष्टा ६ विपरीत आलोचना आक्षेप ७ निराकरण ८ दोष अपराध दुष्टि, पाप जुने नाम्नायुक्तकोते यदि दिवा मूर्यस्य कि दूषणम् भव् ११९३ हा हा चिक परमुहवासदूषण—उवा० १४० मनु० १२१३ हि० १९८ ११५, २१८० च एक राक्षस राजण की सेवा का एक मायक जिससे भगवान् राम ने मांग गिराया था । सय०—अष्टि राम का विघाण आबह (वि०) कलक में किसी का फेंसने वाला

दूषि बी (स्त्री०), [दूप् गिच् + इन्, दूषि + डीष्] दोष और का काच

दूषिका [दूप् + कन् + टाप्] १ लेखनी चित्रकार की कूँची २ एक प्रकार का बाल ३ बीड़ औलों का कीचड़ ।

दूषित (वि०) [दूप् + गिच् + क्त] १ अष्ट, दूषित, विकृत २ राटिल अविश्वस्त ३ अपहत, हतोत्साहित ४ कल-विन बदनाम ५ मिथ्याशोधरहित, बदनाम, निश्चित ।

दूष्य (वि०) [दूप् + गिच् + पत्] १ अष्ट होने के योग्य २ गृहणीय, दम्पतीय दूषनीय अय्य १ मवाद, राद २ बिष ३ कपास ४ पाशाक वस्त्र ५ तम्बू सि० १०१५—अष्टा हाथी का चमड़े का तग ।

दू (नुरा० भा० द्विपने दिन—दृष्टा० विवरितते) [इसका स्वतन्त्र प्रयोग विरल है—शाय आ उपसर्ग लग कर प्रयुक्त होता है] आवर करना सम्मान करना, पू करना, प्रतिष्ठा करना—द्वितीयाद्विपते उवा०—हि० श० ७, मुद्रा० ७३, महि० १५५ २ रच-वाली करना, मन लगाना (शाय—ज के साथ) ३ अपने आप के अच्छी तरह कमाना, बल्लन करना,

ध्यान रक्षना—भूरि श्रुतं शास्त्रमादित्यस्ते—मा० १।
५४. इच्छा करना ।

बृह. i (म्वा० पर०—बृहति, बृहित) 1. पुष्ट करना,
2. समर्पण करना ।

ii (म्वा० जा०) 1. दुःख होना 2. विकसित होना या बढ़ना ।

पुष्टि (यु० क० क०) [दह. + क्त] । पुष्ट किया गया
समाप्त, 2. विकसित, यष्टि ।

कृकम् [५+कक्] छिद्र, मूराण ।

वृद्ध (वि०) [वृद्ध + क्त] १ विरार, वृद्ध, मरुवृद्ध, अमर, अक्षय—अम० १५३३, हि० ११५५, रघु० ११३७८
 २ ठोस, पिच्छला ३ अमृत्, अमर्यादा ४ विरार, सर्वोत्तमी—अम० ७३२८ ५ वृद्धता पूर्वक बोधो वृद्धा, कस कर बन्द किया हुआ ६ मृदुल ७ स्मृता वृद्धा, वरिष्ठ, लघन ८ मरुवृद्ध, वृद्ध, बड़ा, अमर्यादा, ताकतदार, कठोर, अविनाशी—अम० ४११५३१

वृद्धानुवापम्—ब्रू० १८८, ब्रू० १९३५ १. वडा
 10. (बनुन को बाँधि) बुझाये वा सामने में कठिन
 11. टिकाऊ 12. विद्याकाण्ड 13. निविष्टता, अशुक्ल,
 —बन् 1. मोटा 2. गह, शिखर 3. अधिकता, बहुतायत,
 ज़ेबा दर्जा.—कन् (काम्) १. वृद्धानुवाप. कम कर
 2. अत्यधिक, ज्यादा, ऊपर हैं : पूरी तरह से। सम०

—बद्ध (वि०) बद्धकृत (की बाँधा, बद्धपुरुष (पद्म)
 हीरा—द्रुपि (वि०) बद्धकृत बद्धकृत रखने वाला
 —बाण्यः—बन्धिनः बाँध, —बन्धित (वि०) बद्धपुत्री से
 पकड़ने वाला अर्थात् हुन बाँधकर बाण्य के बाँधे पड़ने
 वाला, —बन्धकः बन्धनपत्र, —बन्ध (वि०) बन्धित
 सुरक्षित दरवाज़ों वाला, —बन्ध धुन का विशेषण
 —बन्धन, —बन्धन (प०) बन्धक बन्धनी, —बन्धन्य

(वि०) 1. दृष्ट संकल्प वाला, अक्षिप्त, अटल 2. दृष्ट.
—नीरः, —कलः नारियल का पेड़, —प्रतिष्ठ (वि०)
प्रथ का पक्का, बात का धनी, महामति पर विश्वास
—प्ररोहः मूलर का पेड़, —प्रहारिन् (वि०) । कलः
प्रहार करने वाला 2. कल कर माग्न वाला, अचूक
कल्पवृक्ष करने वाला, —अक्षिप्त (वि०) निष्ठावान्,
अटल, —अति (वि०) कृतकल्प, रिचरबुद्धि, अक्षिप्त,
—दृष्टि (वि०) कल्पवृष्टि वाला, कृपण, कञ्जल, (स्थिः)
ताम्रवार, —मूलः नारियल का पेड़, —सोमन् (पुं०)
संगी की सुधार, —वैरिन् (पुं०) विरस्य शत्रु, निष्कलप
दुश्मन, —कल (वि०) 1. बर्ष साधना में अटल 2. अक्षिप्त
अमल 3. वैर्यवान्, आग्रही, —सन्धि (वि०) 1. कल
कर बुझा हुआ, सत्यता पूर्वक विहा हुआ 2. सत्यन,
सहाय । सटा हुआ, —सौहृद (वि०) अटल विश्वास
वाला ।

पुलिः (पुं० स्त्री०) । [पु + लि, लुप्तः] मलक, —मन् २।

कृष्णः (स्त्री०) [कृष्ण् + कृ नि०] सौंप, कृष्ण ।

इन्द्रः (इन्द्र + कृ नि०) 1. इन्द्र का वज्र 2. सूर्य 3. राजा
यम, मर्य का देवता, अन्तक ।

पृष्ठ । (ध्या० पर०, पुरा० उक्त०—वर्षति, वर्षयति—ते)
प्रकाशित करना, प्रज्वलित करना, सुलगाना ।

ii (विधा० पर०--वृत्ति, वृत्त) १. चमक कराना, अङ्कुर कराना, बीज होना,--स किस नात्थमा वृत्ति - उन्नर०, वृत्तान्तवृत्तमानविधिचतुर्विधः। २. वाप्योत्तु - गीत० १ ३. अत्यन्त प्रमत्त होना, ३. अक्षय्य या दुर्दान्त होना ।

वृत्त (वि०) [वृत् + क्त] 1 घमण्डी, अहंकारी 2 महोन्मत्त
असम्यक्, पागल ।

वृष (वि०) [वृष् + रक्] घमण्डी, ब्रह्मकाली, बलवान्
शक्तिशाली ।

दृष्ट (प्रा० पर०—पश्यति, दृष्ट) १ देसना, नजर डालना
प्रबलांकन करना, समीक्षा करना, निहारना दृष्टि-
गोचर करना—प्रत्यक्ष भाग्यशायम्—वेध० १११०,
११, रघु० ३४२२ २ निरीक्षण करना, सम्मान करना,
विचार करना—आत्मवत्सलम्बुधुय य. पश्यति स पश्यि-
त्वाप० ५३ दर्शन करना, प्रतीक्षा करना, देखना
जाना—प्रदृष्टयौ मुनि ऋट् ब्रह्माभिमिव बालवः
—रामा० ४. मन से दृष्टिगोचर करना, सीखना,
जानना, समझना—बभ्रु० १११०, १२२१ ३ निरी-
क्षण करना, जोख करना ६ हुँसा, अनुत्पन्न करना,
परीक्षा करना, निषेध करना—काठ० ११२७, २।
३०५ ७ अन्तर्धान की विषय दृष्टि से देखना—बुधि-
दर्शनास्तोमान् इवर्ष—नि० ८. प्रिय होकर देखते
रहना—कर्मवा० दृश्यते १. दिखाई देना, दृष्टिगोचर
होना, रसनीय होना, प्रकट होना—सब सम्भाव्य वपुर्न
दृश्यते—कु० ४११ १, रघु० ३४०, भट्टि० ३११९,
मेष० ११२२ २. प्रतीत होना, दृष्टमान होना, दिखाई
देना, मालूम होना—रघु० ३१४५ ३. निजना, दिखाई
देना, बटित होना (पुलक आदि में)—हितीयात्रेविधा-
न्तेषु ततोऽप्यभाषि दृश्यते—सिद्धा०—हस्ति प्रयोगो भाष्ये
दृश्यते ४. खोज किया जाना, जाना जाना,—आमा-
त्यप्रतिनिधितुर्बन्धितयै दारुणं दृष्ट्वा त्वया—ज० ४१५,
प्रेर०—दर्शयति—ते १. किसी को (कर्म), संप० वा
संब० कोई चीज (कर्म) देखाने के लिए प्रेरित
करना, दिखलाना, संकेत करना—दृश्यं तं पौराणिकम्
—पंच० १, दर्शयति भक्तान् हिट्—सिद्धा० अत्र-
विज्ञानारम्भं च रामाचार्यमहाशयौ—रघु० १२१५, १।
४७, १३१४, बभ्रु० ५१५७ २ दिष्ट करना, करके
दिखलाना,—बहि० १५१२३ ३. दिखलाना, दर्शन

करना, दर्शनीय बनना—तदेव ये दर्शय देव रूपम्
—अन० ११।४५ 4 (न्यायालय कादि में) प्रस्तुत
करना—मनु० १।१५८ 5 (साक्षी के रूप में) उप-
स्थित करना अथ श्रुति दर्शयति 6 (आ०) अपने
आप को दिखलाना, प्रकट होना, अपनी कोई वस्तु
दिखलाना सबो भनाना दर्शयते सिद्धा० (अर्थात्
स्वयमेव), स्वा गृहेऽपि बनिता कथमाप्य ह्रीनिमीलि
खलु दर्शयिताहे नै० ५।७१, स मन्तत दर्शयते गन-
समय कृताधिप्यामिव भाग्य बन्धुनाम कि० १।१०
इच्छा० दिदृक्षत देवता की इच्छा करना अनु—
मावदृश्य के रूप में देखना प्रेर० 1 दिखलाना
प्रदर्शन करना 2 स्पष्ट करना, व्याख्या करना आ,
प्रे० दिखलाना, सकेत करना—उत्कलान्तिनपथ
वर्णिताभिमुखो ययो रथ० ६।०८ उच , प्रयागा
करना, मुञ्च १।११ जग का देखना मनगल भाव
देखना उपपद्यत सिंहनिपानमधम रथ० १।६०
उपपद्यताम दुनमपि मले मत्पियाध प्रियमा कालक्षेप
ककुभम्भो गर्वते पर्यते ते—वेध० २० उच , देखना
अवलोकन करना—प्रेर० माग्ने रखना, समाचार
देना परिचयन करना राज पुत्रा मामुपदश्ये हि०
३, नयर्वा दूनवे गजि मन्मन्वापदशितम् रथ० ४।
१०, नि , प्रेर० 1 दिखलाना सकेत करना—रथ०
६।३१ 2 मिट्ट करना करके दिखलाना 3 दिखा
करना, बातचीत करना बर्बा करना (जैसे पुनर्कादि
में) 4 अध्यापन करना 5 उदाहरण देकर समझाना दे०
निदर्शना प्रे०, प्रेर० 1 दिखलाना सकेत करना बाज
लेना, प्रदर्शित करना 2 मिट्ट करना, करके दिखलाना,
सम् , 1 देखना, अवलोकन करना—भट्टि० १६।१
2 प्रतीतीति देखना, समीक्षा करना—प्रेर० दिखलाना
प्रदर्शन करना, श्लोत्र निकालना—आत्मान मृनवसदस्य
हि० १, भट्टि० ४।३३ मातृवि० ६।१।

दृष्ट (वि०) [दृश् + कृत्] (समाप्त में) 1 देखने वाला,
अधीक्षण करने वाला, सर्वेक्षण करने वाला, समीक्षा
करने वाला 2 विवेचन करने वाला मानने वाला
3 (के समान) दिखलाई देने वाला, प्रनीत होने वाला
(स्त्री०) 1 देखना, समीक्षा करना, दृष्टिगोचर करना
2 आँख, दृष्टि—सर्वे दृष्टमृदुस्वनागराम् रथ० ११।
६९ 3 ज्ञान 4 'दो' की संख्या 5 ब्रह्मशा। मम०
—अप्यक्षः सूर्य, —कर्णः शीर्ष —क्षत्रः दृष्टि की क्षीयता
या क्षति, दृष्टला दिखाई देना गोचर दृष्टि परास
—अस्मत् आत्मा, श्लोकः ज्या पराकोटि की दूरी की
सम्बन्धिता, पथः दृष्टिपरास, पथ दृष्टि, श्लोक,
—जिवा मीन्द्रिय, प्रमा, भक्तिः (स्त्री०) प्रेमदृष्टि,
अनुरागवरी चितवन—सम्बन्धम् उच्चाधर विरमेव,
—विशः शीर्ष, —दृष्टिः तर्प, शीर्ष।

दृक् (स्त्री०) [दृश् + कृत्] पत्थर, दे० दृक् ।
दृष्टा [दृश् + टाप्] आँख। तम०—आकाशिक—कयक,
उपपन्न स्वत कमल।

दृष्टान् [दृश् + आन्च्] 1 आध्यात्मिक गुरु 2 बाह्य
3 शोकपाल —सम् प्रकाश, उजाला।
दृष्टि, —क्षी (स्त्री०) [दृश् + इत्, दृश् + कृत्] 1 आँख
शास्त्र।

दृष्ट (म० क०) 1 देखने जाने योग्य, दर्शनीय 2 देखने के
3 सुन्दर, दृष्टिसुखद प्रिय—रथ० ६।३१ कु० ७।६४,
इत्य दृष्टाई देन वाला पदाव—मातृवि० १।१।
दृष्टन् (वि०) [दृश् + कृत्] (समाप्त में) 1 देखने
वाला, दृष्टिगोचर करने वाला 2 (आल०) परिचित,
जनकार जैसा कि धर्मात्मा दृष्टवा रथ० ५।२४ तथा
'वदानी पारदृष्टन' १।२० में।

दृष्ट (स्त्री०) [दृ + अदि पृ, ह्रस्वपथ] 1 चट्टान, बड़ा
पत्थर—मेघ० ५५ रथ० ६।३४ अने० १।३८
2 चक्की का पत्थर शिला (त्रिप्त ग मसाला जादि
पीसा जाय)। —उपल, मसाला आदि पीसने के लिए
सिद्ध—(दृष्टिमात्रक चक्किया से लिया जाने वाला
कर)।

दृष्टत् (वि०) [दृष्ट + कृत्] पथरीला, चट्टान से बना
हुवा—सौ एक नदी का नाम जो आर्यावर्त की पूर्वी
सीमा बनाती है तथा सरस्वती नदी में मिलती है।
गु० मनु० २।१३।

दृष्ट (भ० क० क०) [दृश् + कृत्] 1 देखा हुआ, अव-
लोकन किया हुआ, दृष्टिगोचर किया हुआ, पर्यवेक्षित
निहार हुआ 2 दर्शने—त्यवेक्षणीय 3 माना गया,
खयाल किया गया 4 ब'ए होने वाला, मिला हुआ
5 प्रकट होने वाला व्यंग्य 6 जाना हुआ, मालूम
किया हुआ 7 निर्धारित निर्णीत, निश्चित 8 बंध
9 नियत किया गया, दे० दृष्ट पृष्ठ हाकुओ से
हर। तम० अल्ल, —तम 1 उदाहरण, निदर्शन,
दृष्टात-कथा—पूर्णचन्द्रोदयाकाशी दृष्टान्तोऽत्र महार्णव
शि० २।३१ 2 (अल० शा० में) एक अलंकार
जिसमें कोई उक्ति उदाहरण देकर समझाई जाय
(उपमा और प्रतिबन्धना से भिन्न—दे० काव्य०
१०, और रम०) 3 शास्त्र या विज्ञान 4 मृत्यु (गु०
दृष्टात) —अर्थ (वि०) 1 जिसका ज्ञान बिल्कुल स्पष्ट
तथा व्यक्त हो 2 व्यावहारिक, —कष्ट, —दुःख जिसने
मूसोबत लेली हो, कष्ट सहन करने का अव्यस्त हो
गया हो कष्ट पहेली, मूढ़ पन्न—होष (वि०)
1 असमं होष देखा गया हो, जिसे अपराधी समझा
गया हो 2 दुष्प्रसंगी 3 जिसका बहःफोड़ हो गया
हो, जिसका पता लगा लिया गया हो, —अव्यय (वि०)
1 विद्यास रखने वाला 2 विषयस्त—रथ० (स्त्री०)

वह कथा जो रजस्वला हो गई हो,—असिद्ध (वि०)
1 जिसने कष्ट और मसीबते से लो हो 2 जो आने वाले अनिष्ट का पहले हो से भाग लेता है ।

दुष्टिः (स्त्री०) [दृश् + क्तिन्] 1 देखना, समीक्षण
2 मन की आँख से देखना 3 जानना, जान 4 आँख, देखने की शक्ति नजर केनेदानी दृष्ट त्रिलोक्यायि
—विष्णु० २, चलापाङ्गा दृष्टि मृगसिन्—श० १।१६,
—दृष्टिस्मृतीकृतजयन्त्रयमरवमारा उतर० ६।१९
म्ह० ७।८ श० ४।२ देव दृष्टिप्रसाद दुष्ट हिं १
5 नजर, चिन्तन 6 विचार, भाव शुद्धदृष्टिरमा
का० १७३ एषा दृष्टिमकष्टम्य—भग० १६९
7 विचार प्रारंभ 8 दृष्टि दृष्टिमता ज्ञान । सम०

दृष्ट - दृष्टम् स्थलरथ दृष्ट, -लेख, निगाह हाथ का अवलोकन करना—पृथ तौर का निशाना चारुमारी लक्ष्य, गोचर (वि०) दृष्टिगराम के अनुराग जो दिखाने दे दृश्य—पृथ—दृष्टि-पाम पाम 1 निहा रता, निगाह डालना—माने मृगप्रोक्षणि दृष्टिगत कुराव
म्ह० १३।१८ मनु० १।११ ९६ ३।६६ 2 देखने की क्रिया, आँख का कार्य—रत्न रत्नोदयिनिदृष्टिपामा
—कु० २।३१ (मन्त्रि० पात्र का अर्थ प्रथा रसांने है जो हमारी समझ में अनावश्यक है) दृष्ट (वि०) दृष्टिमान से परित किया हुआ अर्थात् देख लिया कि किसी प्रकार की अशुद्धि नहीं है, दृष्टिपूर्व व्यवसाय
—मनु० ६।६५ बन्धु दृष्ट—विशेष कनवियों से देखना, कटाक्ष, निगछा नजर बिछा नजर-विज्ञान
—विशेष अनुगम भरी दृष्टि, हाव-भाव से पुरुष नजर, विश्व मीप ।

दृष्ट, दृष्ट (भ्या० पर०) दर्शित दर्शन 1 स्थिर या दृढ़ होना 2 विकसित होना बढ़ना 3 समृद्ध होना 4. कमाना ।

दृ (वि०) कया० पर०—दीर्घान् दर्शान् दीर्घ 1 फट जाना टूट जाना टूटने २ होना 2 फाटना, चीरना, विभक्त करना बिहीन करना अण्ड २ करना, टुकड़ करना । कर्मका- दीर्घान् 1 फटना टूटना अण्ड २ होना,—कर्मका प्रलपता व सङ्क्रया न दीर्घमनया विज्ञया ३—अलम करना, प्रेर०—द
—दा—रगति—ने 1 टुकड़े २ करना, चीर डालना कोटरकर विभक्त करना 2 तिर-विजग करना, बलरता, बि, टुकड़े २ करना, फाड़ डालना, विभक्त करना, काट कर टुकड़े २ राना—एरिड किल सर्व-स्तस्या विरदार स्तनी द्विज—रघु० १२।२२, न विदीर्घ कठिना सलस्त्रिया कु० ४।५, रघु० १।४।३ 2 फाटना (आल०)—चित विचारवृत्ति कथं न कोवि-दार—अनु० ३।६, भग० १।१९, (बव, मा तथा प्र वादि उपलब्ध लयन पर वातु का अर्थ नहीं बरलता है) ।

दे (भ्या० जा०) दयते, दाय—इच्छा० दित्तये) रखा करना, पालना, पोसना ।

देही-वधवान् (वि०) [दोष + यञ् + शानच्] अत्यन्त चमक ने वाला, उद्योतिष्मान्, जगमगाता हुआ ।

देव (वि०) [दा + यत्] 1 दिव्य जाने के लिए, उपहृत किये जाने के लिए रघु० ३।१६ 2 दिव्य जाने के योग्य, भैर के लिए उपयुक्त 3 वस्तु जो वापिस करने के लिए है विमात्रिकैकदेशेन देय महर्दाभयुपयते—विष्णु माक० ४।१७, मनु० ८।१७९, १८९ ।

देव (भ्या० आ०—देवते) 1 क्रीडा करना खेलना, ब्रुआ खेलना 2 विहाय करना 3 चमकना, परि—, विलाप करना, शाक मताना ।

देव (वि०) (स्त्री०) की [दृश् + अच्] दिव्य, स्वर्गीय
—भग० ९।११, मनु० १०।११७—क 1 देव, देवता एकी देव ब्रह्मा वा शिव वा मनु० ३।१२०
2 वर्षा वा देवता इन्द्र का विशेषण तथा 'हावक वर्षाणि देशा न वर्षां मे 3 दिव्य पुरुष, बाह्यप 4. राजा शासक 'उमार्गिक मनुष्यदेव' मे 5 बाह्यकों के नामा क माध लगे वाची उपाधि जैसा कि गाविन्द देव पुरुषोत्तमदेव मे 6 (नाटकों में) राजा को संबोधित करने के लिए समान सूचक उपाधि—नरपच देव देवी० ४ प्रजापतिपति देव आदि 7 (समाधान में) अपने देवता के रूप में—मया मातृ, पित्र । सम०—अक्ष भगवान् का अक्षावतार—अगार,—रघु मरिच,—अवता स्वर्गीय देवी, अक्षरा—अक्षिदेव, अक्षिदेव 1 उच्चतम देवता 2 शिव का विशेषण—अक्षिः इन्द्र का विशेषण—अक्षम् (मपु०) अक्षम् 1 देवताओं का आहार, दिव्य भोजन, अमृत 2 वह भोजन जो पहले भगवान् की मूर्ति के आगे प्रस्तुत किया गया है—वे० मनु० ५।७ तथा इस पर कुन्त्य भाष्य अक्षिष्ट (वि०) 1. देवताओं की प्रिय 2. देवता पर बढ़ाया हुआ, (ष्टा) तांबूली, पान सुपारी, अरण्य बाग रघु० १०।८०,—अक्षिः राक्षस अक्षयम्, मा देवपूजा,—अक्षयः अक्षिर, अक्षः उच्चैः श्रवा का विशेषण, इन्द्र का घोडा, —आक्षिः देवोद्यान, नन्दन कल,—आक्षिः, आक्षिन् (पु०) 1. भगवान् की मूर्ति का मेवक 2 एक नीचकोटि का बाह्य जो मूर्ति की सेवा हाग, तथा मूर्ति पर आये हुए बढ़ाये के अपना जीवन-निर्वाह करता है,—अक्षम् (पु०) गूँठर का वृक्ष,—आक्षयम् मरिच—मनु० ४।४९, अक्षम् 1. दिव्य हविषार 2. इन्द्रधनुष,—आक्षः 1 स्वर्ग 2 मरिच,—आक्षः 1. स्वर्ग 2 अक्षयवृक्ष ३. मरिच 4. कुमेद पहाड़,—आक्षः अमृत, वीर्य,—अक्ष (वि०) (अक्ष०) ५० व० देवदे ३) देवताओं की पूजा करने वाला,—दुष्कः

देवदत्त बृहस्पति का विशेषण,—इन्द्र,—ईशा: 1. इन्द्र का विशेषण 2. शिव का विशेषण,—उज्जालम् 1. दिव्य बाण 2. नन्दन वन 3. मन्दिर का निकटवर्ती बाग,—भुक्ति: (देववि) 1. सन्त जिनमें देवत्व प्राप्त का सिद्धा है, दिव्य भूरि, यथा, भवि, भूय, पुत्रस्य, अमि-रन आदि—एव कर्त्तव्य देवार्थी—कु० ६।८४ (अर्थान् अगिरत्) 2. नारद का विशेषण—भग० १०।१३, २६,—भोक्तृ (ननु०) मुनेष पदेन,—कथ्या स्वर्गीय देवी, अम्बरा,—कर्मन् (ननु०) कार्यम् 1. धार्मिक कृत्य या मत्कार 2. देवों की पूजा,—काष्ठम् देवदारु का वृक्ष, कुण्डन प्राकृतिक जरना, कुलम् 1. मन्दिर 2. देवों का समूह, कुण्या स्वर्गीय गंगा—कुलसम् लीम, कालम्—कालकम् 1 परंता में बनी एक प्राकृतिक गुफा 2 एक प्राकृतिक तालाब या जलाशय सन् ० ४।२०३ १ १० निकटवर्ती तालाब, विक्रम् एक गुफा, कन्दरा, गणः देवों की एक श्रेणी मयिका अम्बरा, सर्वम् बादल की मण्डराहट—गायत्र स्वर्गीय गायक गन्धर्व,—गिरि: एक पहाड़ का नाम—भग० ४२, गुहः 1. (देवों के गिना) कथ्य का विशेषण 2. देवों के गुरु बृहस्पति का विशेषण, गृही सर हस्ती या उसके बिनारे पर स्थित स्थान का विशेषण गृहम् 1 मन्दिर 2 राक्ष-शासक, सर्व देवों की पूजा या सेवा विष्टितस्तौ (दि० व०) देवों के देव अश्विनोक्तुमार, छत्रः १०० लक्ष की मोतियों की माला,—नवः 1 गुलर का वृक्ष 2 स्वर्गीय वृक्षों (मदार) गरिजात, मजान कल्प और हरिश्चन्द्र) में से एक,—नाड 1 आग 2 राहु का विशेषण,—वस्तः 1 अग्नि के शब्द का नाम भग० १।१५ 2 कोई व्यक्ति (अभिहित रूप में किसी भी व्यक्ति के लिए प्रयुक्त) देवदत्त पत्नी वीनो देवदत्त दिया म भुक्ते आदि,—बाव (पु०, नपु०) देवदारु की जाति का पेड़—कु० १।५४, रपु० २।३६,—वस्तः मन्दिर का सेवक—(सी) 1. मन्दिर या देवों की मेजिका 2. देवता (जिसे मन्दिर में लाचने के लिए लगाया गया है),—वीचः जौध,—वृत्तः विषय सर्वसाहक, रवहुत,—वृष्टिः 1. दिव्य होल 2. लाल फूलों वाला तुलसी का पीठा,—देवः 1. ब्रह्मा का विशेषण 2. शिव—कु० १।५२ ३ विष्णु,—श्रीषी देवमूर्ति का अङ्ग,—श्वः धार्मिक कर्त्तव्य या पद,—सही 1 यथा 2. कोई भी पावन नदी—मनु० २।१७, भक्तिम् (पु०) इन्द्र के द्वारपाल का नाम,—मावरी एक क्षिति का नाम जिसमें प्रायः सज्जन प्राजा जिधे जाती है,—मिकावः देवावास, स्वर्ग,—मिकावः देवताओं की निवा करने वाला, मन्त्रिक,—मिन्त्रि (वि०) देवता द्वारा रचित, प्राकृतिक,—मिन्त्रि इन्द्र का विशेषण,—मन्त्रः 1. स्वर्गीय मार्ग

आकाश, अन्तरिक्ष 2. आवापय,—मन्त्रः देवता के नाम पर स्वच्छन्द छोड़ा हुआ पञ्च—मन्त्र,—मन्त्रि (स्त्री०) अम-रावणी का विशेषण, इन्द्र की नगरी,—मन्त्रः बृहस्पति का विशेषण, प्रतिवृत्ति: (स्त्री०)—प्रतिष्ठा देवमूर्ति, देवता की प्रतिमा,—प्रवन्तः बृहदिन्द्रकी प्रजापति, प्रविष्ट मन्त्रों प्रवन्त, भविष्य की बातें बतलाना,—प्रियः देवों की प्रिय, शिव का विशेषण (देवताप्रियः) एव अनियमित समाप्त, हमका अर्थ है 1. बकरा 2. मूढ, (पशु की भांति जड़—बैसाकि तेज्यताम्यं देवता प्रिया काव्य०)—वक्तिः देवताओं की दी जाने वाली आहुति, बह्वृत् (पु०) नारद का विशेषण, बाह्वृत्तः 1 बहु ब्राह्मण जो गंगा नदीवा मन्दिर में प्राप्त आय में कर लेता है 2 आदराणीय ब्राह्मण,—भवन् 1 स्वर्ग 2 मन्दिर 3 गुलर का वृक्ष, भुक्ति: (स्त्री०) स्वर्ग जाति, (स्त्री०) गंगा का विशेषण,—भूयम् देवत्व दिव्यप्रकृति—भूय (पु०) 1 विष्णु का विशेषण 2 इन्द्र का विशेषण, भवि 1 विष्णु की मणि, भीष्म 2. सूर्य—मानुष्य (दि०) दृष्टि के देवता तथा बादल ही जिसकी प्रतिपालिका माना हो जिसे केवल वर्ग का जल ही लम्ब हो जो मिचर्दी को छोड़कर वे जल धारा के जल पर ही निर्भर हो, (वह देव) जा और प्रकार की जलधारा तथा संचित ही—देवों नमस्त्वष्ट्य-म्बुपत्न्योत्रिपालित, स्थानदीमानुको देवमानुषक यथाकम्—अमर०, नु०—वितन्वति जेममदेवमानुको (अथान नदीमानुका) विराय तस्मिन् कुरवचकासते—कि० १।१७,—वाक्क विष्णु की मणि जिसे कौस्तुभ कहते हैं,—वृत्ति: दि० दृष्टि,—वक्कम् यज्ञभूमि, यज्ञ-स्थली—देवयजनमभवे वापे—उत्तर० ४,—वक्ति: (वि०) देवताओं के आहुति देने वाला,—वक्कः बहु हुवन जिसमें बरिष्ठ देवताओं के निमित्त अग्नि में आहुति दी जाती है, (पृष्ठस्थ के १४ नैतिक यज्ञों में से एक—मानु० ३।८१ ८५—दे० पञ्चम),—वाक्क किसी देवप्रतिमा का जन्म, या सवारो निकालने का उत्सव,—वाक्क, एक दिव्यरथ,—वृत्तम् चार दृष्टों में से एक, कु-मृग, मनमृग,—वोनि अतिमानव प्राणी, उपदेव 2. दिव्य उत्पत्ति वाला,—वोवा अम्बरा रघुस्वम् देवी रव या रघुम्—राव,—रावः इन्द्र का विशेषण,—वक्ता नवमलिका लता, मेवारी—स्मिन् देवता की मूर्ति या प्रतिमा—वोक्कः स्वर्गलोक, दिव्य-लोक मनु० ४।१८२,—वक्कम् आप का विशेषण,—वक्कम् (नपु०) आकाश,—वक्कम्, क्लिप्पम् (पु०) विषयकर्मी, देवताओं का जलौ—वाक्की दिव्य प्राणी, आकाशवाणी,—वक्कम् वक्ति का विशेषण,—वक्कम् धार्मिक अनुष्ठान, धार्मिक व्रत (तः) 1. वीथ्य का विशेषण 2. कालिकेय का विशेषण,—वक्कः राजस, वक्की देवों की कुलिया करना

का विशेषण,—लोकम् देवनिमित्त किये गये यज्ञ का बचा हुआ अंश—भूतः 1 विष्णु का विशेषण 2 नारद का विशेषण 3 पावन शास्त्र 4 देव -सत्ता 1 देव ताओं की सत्ता, सुषर्मा 2 जूए का घर -सम्ब 1. जुआरी 2 जुआरी में प्राय जाने वाला 3 देव सेवक सायुज्यम् किसी देवता से मिलकर एक हो जाना देवमयाजन, दत्तव्यप्राप्ति सेवा 1 देवों की सेवा 2 स्कन्द की पत्नी, स्कन्देन साक्षादिव देवसेनाम् ७५० ७१ (मल्लिक—देवसेना—स्कन्दपत्नी सम्बन्ध यहाँ देवों की सेना का ही मूल रूप में वर्णन है) पति कार्तिकेय का विशेषण स्वयं देवों की सपति (धर्म कार्यों के निमित्त) देवांगित सपति मयूख यज्ञसोमना देवस्वत द्विदुर्वा मनु० १११० २९ हविस् (नपु०) बलिगण।

देवकी (देवक + डीक्) दत्तक की एक पुत्री, वसुदेव की पत्नी कृष्ण की माता। तम० मन्वन् पुत्र बलम् (पु०) —सुनु श्रीकृष्ण के विशेषण।

देवकः (देव् + कट्) कारीगर, दस्तकार।

देवता (देव + तल् + टाप्) 1 दिव्य प्रतिष्ठा या शक्ति देवत्व 2 देव मुर कु० ११३ देव की प्रतिमा 4 मूर्ति 5 ज्ञान इन्द्रिय तम० अमर, रम् बालार, रम्, गृहम् मन्दिर अथवा इन्द्र का विशेषण—अश्वत्थमन् देव पूजन—आयतनम् आलय, —देवम् (नपु०) मन्दिर देवालय प्रतिमा देवमूर्ति प्रतिमा स्वाम्य देवमूर्ति का स्थान।

देवधर्म (वि०) (देवम् अचरि प्रपति देव। अच + क्विन् अदि आदेश) देवोपासक।

देवम् (पुं०) (देव + क्विन्, पति का छोटा भाई देवर देवम् (वि० + क्विन्) पास - तम् 1 सौम्य देवि का नि 2 ब्रह्मा सेवना, पाप का खेल 3 खेल कीड़ा विनोद 4 प्रबोध-स्वल्प, प्रमाद-वाटिका 5 कमल 6 स्पर्धा, जाने बड़ जाने की हथ्था 7 मामला व्यवसाय 8 प्रवसा मा ब्रह्मा सेवना पास का खेल।

देवयानी (स्त्री०) असुरगुरु शुक्राचार्य की पुत्री (एक बार देवयानी अपने पिता के शिष्य कच पर मंत्रित हो गई पान्थ कच ने उसके प्रेम को ठुकरा दिया। देवयानी ने उसे शाप दे दिया, बदले में कच ने भी देवयानी को शाप दिया कि वह एक अश्वि की पत्नी बनेगी। दे० 'कच'। एक बार देवयानी ईश्वरों के राजा कृष्णर्षी की पुत्री अपनी सखी शर्मिष्ठा के साथ स्नान करने गई, अपने वस्त्र उतार कर तट पर रख दिया। हवा ने उनके वस्त्र बदल दिये, अब उन्होंने बदले हुए वस्त्र पहनें तो दोनों आपस में अपहने लगी, यहाँ तक कि क्रीड में आकर शर्मिष्ठा ने देवयानी के पैर पर तमाचा मारा और उसे एक कूर्प में कैद किया। लोकाय से

ययाति ने उसे कूर्प से निकाल कर उसके प्राची की रक्षा की। उसके पश्चात् देवयानी के पिता की स्वीकृति से ययाति का देवयानी के साथ विवाह हो गया और शर्मिष्ठा का देवयानी के प्रति अपने दुर्बल हार के कारण उसकी क्षमा बनना पड़ा। देवयानी ने ययाति के साथ कई वर्ष सुखपूर्वक बिताये, मनु और नृसिंहा नामक उसके दो पुत्र हुए। उसके पश्चात् ययाति शर्मिष्ठा पर आसक्त हो गया। इस बात से दुर्बल होकर देवयानी ने अपने पति का छोड़ दिया तथा अपने पिता के घर चली आई। शुक्राचार्य ने अपनी पुत्री के करने पर ययाति का ब्रूहात की अपाधना का शाप दिया। दे० ययाति)।

देवर, देव (पुं०) (देव् अर दिव + क्विन्) पति-प। भाई (बड़े छोटा हो या बड़ा) मनु० ३१२ १५० याम० ११२१।

देवक (देव + क + क्विन्) देवमूर्ति का मेव एक शिव काश्ति का हाथ का बिसका अपना निवार देव-प्रतिमा पर प्राप्त चक्रों के ऊपर नियंत्रण है।

देवसात् (नपु०) (देव + सात्) देवताओं की प्रकृति का समान अनुबल कर देवता बनना।

देविक (वि०) (स्त्री०) की देविक (वि०) (देव + क्विन् दिव + क्विन्) 1 दिव्य दक्षिणा में युक्त 2 देव म पति।

देवी (देव + क्विन् + टाप्) 1 देवी देवी 2 दम् 3 मर स्त्री 4 रात्री विज्ञान रात्र्याभिव्यक्त रात्री (अथ महिषी विमने रात्र्याभिव्यक्त के अवसर पर पति के साथ सब रात्र-सम्कारों में रात्री के नाम भाग लिया हो) देवराज्य नामय देव रात्र्याभिव्यक्त रात्री स्त्री यवस्थितिया पर रात्रि बोधयुक्त—मासिक ५११ देवराज्य रात्रि परिवारपर कच अत्रयया—काश्च १० 5 सम्मानमूचक उपाधि जो संबंधित महिलाओं के साथ प्रयुक्त होती है।

देव (वि० + अच) 1 स्थान जगह—देव को अनुबलनेक-शिष्य मूच्छ ३१२ इमी प्रकार स्कन्ददेवो ज० ११९ हारदेव, कच्छदेव आदि 2 प्रवेश, मन्त्र, प्राप्ति य देव अथवा तमेव कुक्ते बाहुप्रताप-जितम्—दि० ११७१ 3 विज्ञान भाग पक्ष, अंश (किसी 'पूर्व' के) जैसा कि एक देव, एकदेवीय 4 संस्था, व्यापार। तम०—अश्वि (पुं०) विदेसी, अमरम् हुसग देव विदेसी भाग मनु० ५१७८, —अमरवि (पुं०) विदेसी,—आकाश, कर्कः स्थानीय कानून या प्रथा, किसी देव के शक्ति-विवाह—मनु० ११८८, काश्च (वि०) उपयुक्त स्थान और समय की जानने वाला—अ, वास (वि०) 1 स्वदेवीय, स्वदेवीय 2 ठीक देव में उत्पन्न 3 अक्षी, बारा,

निर्मलबंशोद्भव,—भावा किसी देश की बोली,—कण्ठ
अभिप्रेत, उपयुक्तता—व्यवहारः स्थानीय, प्रचलन,
देशविशेष की प्रथा ।

देशकः [विष् + वृत्] 1. शासक, राज्यपाल 2. शिक्षक, गुरु
3. पत्र-प्रवर्तक ।

देशना [विष् + विष् + युच् + टाप्] निर्देशन, अनुदेश ।

देशिक (वि०) [देश + ठप्] स्थानीय, किसी विशेष स्थान
से सम्बन्ध रखने वाला, देशी —कः 1. आध्यात्मिक
गुरुः 2. यात्री 3. पत्र-वर्तक 4. स्थानों से परिचिन ।

देशिनी [विष् + चिति + जो१] तर्जनी, अंगूठे के पास वाली
अंगुली ।

देशी [देश + ङीप्] किसी देशविशेष की बोली, प्राकृत का
एक भेद—दे० काव्या० ११३३ ।

देशीय (वि०) [देश + छ] 1. किसी प्रान्त से सम्बन्ध रखने
वाला, प्रान्तीय 2. स्वदेशीय, स्थानीय 3. किसी देश
का निवासी (समासार्थ में) जैसा कि मगधदेशीय,
तमिऴीय, बंगदेशीय आदि में 4. अन्न, लघुभरण, बीमाप्ल-
वर्ती (सम्पत्तियों के अन्त में प्रत्यय की शक्ति प्रयुक्त)
—अष्टादशसंदेशीयों कम्पा दत्त—का० १३१, लगभग
१८ वर्ष की लड़की [जिसकी आयुसीमा १८ हो]
—रघु० १८३९, इसी प्रकार 'परदेशीय' आदि ।

देश्य (वि०) [दिष् + प्त] 1. जिसकी ओर सकेत करना
हो, या जिसे प्रमाणित करना हो 2. स्थानीय, स्थानीय
3. देशी, स्वदेशी 4. अस्सी, शरा, निर्मल बंशोद्भव
5. अन्न, लघुभरण—दे० ऊपर 'देशीय'—कः 1. चरम-
दीय तथाह,—अभियोक्ता विशेषणम्—मनु० ८५२,
५३, किसी देशविशेष का निवासी,—कण्ठ प्रत्योक्ति,
तर्कालि, पूर्वपक्ष ।

देश—हुम् [दिह + वच्] शरीर—देह बहुलि रहना इस
मन्त्रवाहा—आदि० ११०४, दे० नी० समस्त शब्द ।
सम०—अन्तरम् अन्ध (दूसरे का) शरीर, 'आप्तिः
(स्त्री०) दूसरा अन्ध लेना,—अन्धत्वभावः श्रुतिश्रुता,
आचारिकों के सिद्धान्त,—आचरणम् कचप, पोशाक,—ईश्वरः
माता, जीव,—उद्भव,—उद्भूत (वि०) शरीरत्र,
सहज, जन्मजात कम् (पुं०) 1. सूर्य 2. परमात्मा
3. पिता, कोषः 1. शरीर का आचरण 2. पर, बाजू
3. त्वचा, चमड़ा, कचः 1. शरीर का ह्रास 2. रोग,
बीमारी,—कल (वि०) शरीर में प्राप्त, मूलरूप,—कः
पुत्र,—का पुत्री,—स्वायः 1. मृत्यु 2. इच्छामृत्यु, शरीर
की छोड़ना,—दीर्घं सोयध्वतिकरणे जन्मकम्पासरव्यो-
देहकामात्—रघु० ८१९५,—वः पारा,—वीचः जीव,
—कर्मः शरीर के कर्मों की क्रिया,—इच्छकम् हुडी,
—आचरणम्, बीमा, जीवन,—विः बाजू, कल,—वृत्
(पुं०) वाम, हवा,—कल (वि०) मूर्त, लक्ष्मी—रघु०
१११५,—कम् (पुं०) शरीरचारी, जीवचारी, विवे-

चतः मनुष्य,—वृत् (पुं०) 1. जीव, आत्मा 2. सूर्य,
—वृत् (पुं०) जीवचारी, मनुष्य—चिन्मां देहभूता-
मसारताम्—रघु० ८१५१, भग० ८१४, १४१४

2. शिव का विशेषण 3. जीवन्, जीवन्मयित,—आत्मा
1. भरण, मृत्यु 2. पोषक पदार्थ, आहार,—कण्ठम्
मत्स्या, स्वभा के ऊपर काला तिल,—काम्ः पोष जीवन्-
भाव में से एक, प्राणवायु,—सारः मज्जा,—स्वभावः
शरीर का स्वभाव या गुण ।

देहधर (वि०) [देह + धृ + क्त्वं, मृत्] देह, उदरभरि ।

देहवन् [देह + वतुप्] शरीरचारी, (पुं०) 1. मनुष्य 2. जीव ।

देहता [देह + ता + क] मदिरा, मराह ।

देहलि,—ली (स्त्री०) [देह + ला + कि, देहलि + ङीप्]
दवावे की बीजक में नीचे वाली लकड़ी जिसे काँच
कर घर में बसते निकलते हैं,—विषयस्थानी मुक्ति
यथनया देहलीदनपुष्पे—मेघ० ८७, मृच्छ० ११९ ।
सम०—वीचः देहलीपर रक्ता हुआ दीपक,—व्यास, दे०
'व्याय' के अन्तर्गत ।

देहिम् (वि०) (स्त्री०—मी) [देह + इति] शरीरचारी,
शरीरी (पुं०) 1. जीवचारी प्राणी—विशेषतः मनुष्य
—त्वचधीन कम् देहिनां सुखम्—कु० ८१०, लि०
२, ४६ भग० २१३३, १७१२, मनु० ११३० ५५३१
2. आत्मा, जीव (शरीर में प्रत्योक्ति)—नवा शरी-
राणि विहाय जीवन्मन्यानि सत्यानि भवानि देही
—भग० २१२२, १३, ५११४,—मी पुष्पी ।

दे (च्वा०—पर०) दायित, दात 1. पवित्र करना, सुद्ध
करना 2. पवित्र होना, 3. रक्षा करना, अन्—1. बकल
करना, उज्ज्वल करना 2. पवित्र करना ।

दैतेयः [दिति + इक्] दिन ५१ पुत्र, राक्षस, दैत्य, । सम०
—इज्यः—गुहः,—पुत्रोऽयम् (पुं०)—पुत्रः अनुदो के
गुरु शूकाचार्य के विशेषण,—निष्ठुरः विष्णु का विशेष-
ण,—वायु (स्त्री०) दिति दैत्या की माता,—केवला
पुष्पी ।

दैत्यः [दिति + प्य] दे० 'दैतेय' । सम०—अतिः 1. देवता
2. विष्णु का विशेषण,—देवः 1. विष्णु का विशेषण
2. वाम,—वर्तिः हिरण्यकशिपु का विशेषण ।

दैत्या [दैत्य + टाप्] 1. जीवन् 2. मदिरा ।

दैन्य (स्त्री—नी), दैन्यिनि (स्त्री०—नी), दैन्यिक (स्त्री०
—की) (वि०) [दिन + जन्, दिन दिन प्रथः दिन-
दिन + जन्, दिवः ८४] आर्थिक, प्रति दिन का,
—आदि० ११२३ ।

दैन्यम् [दैन्य + जन्, व्याज् ५१] 1. शरीरी, मदिरा-
वन्ध, दैन्यीय अवस्था, दुर्बला—दरिद्राणां दैन्यम्
—संगा० २, इन्द्रोर्ध्वं त्वदनुसरणमिच्छकामो विवर्ति
—मेघ० ७४ 2. कष्ट, भय, विचार, शोक, उत्साह-
हीनता 3. दुर्बलता 4. कमीनाम ।

द्वैतिका [द्वैत + क्रीप्] प्रतिदिन की मजदूरी, दिनभर की उजाल, ध्यायी ।

द्वैतच, —**द्वैत** [द्वैत + अण्, ध्वञ्, वा] सम्बाधि, सम्बाधन ।

द्वैत (वि०) (स्त्री—बी) [देव + अण्] देवों से सम्बन्ध रखने वाला, दिव्य, स्वर्गीय सम्स्कृत नाम देवी बाग-न्याख्याता महर्षिभि —काव्या० १।३३, रघु० १।६० याज्ञ० २।२३५, भग० ४।२५, १।१३, १।६३, मनु० ३।७५ २ राजकीय, —कः (अर्थात् विवाह) आठ प्रकार के विवाहों में से एक (इसमें कन्या यज्ञ कराने वाले ऋत्विज् को ही देवी जाती है) —यज्ञस्य ऋत्विजे देव —याज्ञ० १।५९, (विवाह के आठ प्रकारों के लिए दे० 'उद्वाह' या मनु० ३।५१), बम् १ भाष्य, निर्यात भवितव्यता, किम्पत दैवमविद्वांस प्रमाणयन्ति —मृदा० ३, बिना पुष्पकारेण देवमत्र न मिध्यानि —'भगवान्' उन्नी की सहायता करते हैं जो अपनी महायता आप करते हैं, —देव निहन्त्य कुरु पीरुवमात्म शस्त्रपा—पञ्च० १।३५१ देवता १ सयोग से भाग्ययज्ञ अकस्मात् २ देव, देवता ३ धार्मिक मन्त्रकार, देवी को आहुति । मय०—अस्वयं देवी उत्पात, आकस्मिक अनयं, —अधीन, —आयस (वि०) भाग्य पर निर्भर —देवायस कुले अयम मयायन नु पीरुवम —वेणी० ३।२३, —अष्टोत्तमः देवताओं का एक दिन अर्थात् मनुष्य का एक वर्ष, —उपयुक्त (वि०) दुर्भाग्ययन्त अभाग्य —मृदा० ६।८ —कर्मण (नपु०) देवताओं को आहुति देना, —कोविद, चित्तक, ज्ञ अर्थात् भीक्षुव्य वक्ता, याज्ञ० १।३२३, वाम० १।२५ —यति (स्त्री०) भाग्य का फल —मुक्ताब्ज चिरपरिचित याज्ञिकी देवयन्ता—मेघ० ९६, तन्त्र (वि०) भाग्य पर आश्रित, —बीषः जाल, —हुविषाक भाग्य को निन्दता भाग्य का बुरा फल या प्रतिकृता उत्तर० १।६०, —बीषः भाग्य की कठोरता, पर (वि०) १ भाग्य पर मरोड़ा करने वाला, भाग्यवादी २ भाग्य में लिखा हुआ, भाग्य—प्रजनः अभिव्यक्तयन, व्याप्ति पुनश्च देवीं का एक युग (१२००० देववर्षों का एक युग माना जाता है, इस विषय में दे० मनु० १।७१ पर कुल्ल०), —योगः सयोग, इतिहास भाग्य, बीका —दैवयोगेन दैवयोगात् भाग्य से, अकस्मात्, —लेखकः अभिव्यक्तता, उपोत्थि, —वक्ता, —सम्प निर्यात का बल, भाग्य की अचीनता, —वाणी १ अकाशवाणी २ सम्स्कृत भाषा —तु० काव्या० १।३३ ऊपर उद्धृत, —हीन (वि०) भाग्यहीन, किस्मत का मारा, अभाग्य ।

दैविक [देव + कन्] देवता ।

दैव्य (वि०) (स्त्री—ली) [देवता + अण्] दिव्य, तत्त्व देव, देवता, दिव्यता—नृप वा दैवतं विप्र वृत्त मनु

चतुष्पदं, प्रवक्ष्यामि कुर्वीत—मनु० ४।३९, १।५३, अमर ३ २ देवों का समूह, देवताओं का पूरा समूह ३. देवमूर्ति (यह शब्द पु० की बतलाया जाता है परन्तु चिरल प्रयोग है, मम्मट इस बात को शब्द का 'अप्रयुक्त' काल' दोष बतलाते हैं—दे० 'अप्रयुक्त') ।

दैवतत् (अव्य०) [देव + तत्] मयोगवशा, किस्मत से, भाग्य से ।

दैवत (वि०) [देवता + ध्वञ्] किसी देवता का संबोधित, या मान्य—याज्ञ० १।९९, मनु० २।१८९, ४।१२४ । **दैवत**, लक्षः [देव + ला + क, देवत + अण् दैवत + कन्] प्रेतपूजक, किसी दुष्ट आत्मा (भूत प्रेतान्तिक) का उपासक ।

दैवारिष [देवारीन् मधुरान् वार्ति आश्रयदानेन दैवारिष समुद्र, मत्र भद्र देवारिष अण्] दास ।

दैवामुखम् [दैवामुख्य वरम् अण्] देवताओं और गणना के मध्य रहने वाला स्वाभाविक दाया ।

दैविक (वि०) (स्त्री—की) [देव + क्] देवताओं से सम्बन्ध रखने वाला, दिव्य मनु० १।२५ ८।१०९ —कम् अवयवभाषी घटना ।

दैविन् (प०) [देव + इति] आतिथी ।

दैव्य (वि०) (स्त्री—ध्या ध्यायी) [देव + यञ्] दिव्य ध्वञ् किन्तु, भाग्य २ दिव्य दासिनी ।

दैविक (वि०) (स्त्री—की) [देव + क्] १ स्थानाय प्राणीय २. राष्ट्रीय ममता देश से सम्बन्ध रखने वाला ३ स्थान मन्त्रवा ४. किसी स्थान से परिचित ५ अभाग्यन करने वाला मनेवक निदराज, दिव्य—न वाला क १ अस्माक, मृ २ पथ दर्शक ।

दैष्टिक (वि०) (स्त्री—की) [दैष्ट + क्] भाग्य में लिखा हुआ, भाग्य का भाग्यवादी ।

दैष्टिक (वि०) (स्त्री—की) [दैष्ट + क्] शारीरिक दृढसम्बन्धी ।

दैष्ट (वि०) [दैष्ट भव ध्वञ्] शारीरिक, —हृ आरमा (शरीरगत) ।

दे (विवा० पर०—घति, दिन प्रेर० दायरांत, इच्छा० विस्तारि) १. काटना, बाटना २. फल काटना, अनाज काटने, अब —काट काटना —यदस्यास्मयमे लुब्ध-वद्यति —सप्त० ।

दोग्ध (पु०) दुह + कृत् १ ग्वाल, गृध्र दोहने वाला, दूधिया घेरी स्थिते दोग्धरि दोहवले—कु० १।२ २ बछड़ा ३. चारण या घाट (यह माई का काँव जो पुरस्कार प्राप्त करने के लिए कविता की रचना करता है) ४. जो स्वार्थवश कोई कार्य करता है (अपने आप को लाभ पहुँचाने के लिए) ।

दोग्धी [दोग्ध + क्रीप्] १ दुधक माव २. दूध पिलाने वाली माव ।

दोहवः -- दम् [दोहमाकर्षं ददाति -- दा + क] गर्भवती स्त्री की प्रसव दधि प्रभावती दोहवसिती ते - रघु० १४।४५, उपेत्य का दाहदुग्धसोमना यदेव बने तदपयवाहृतम् -- ३।६, ७ २ गर्भावस्था ३ कलौ जाने के समय पीसो की इच्छा (उदाहरणन अशोक बाहता है कि तद्विधियां उसे ठोकर मारें, बहुल चाहता है कि उसके ऊपर मदिरा के कुम्भे किये जायें) -- मरीरहा दोहवसेकसत्तेरागानिक कोरकमुत्तिरन्ति -- ने० ३।२१, रघु० ८।६२, मेघ० ७८ दे० प्रियम् ४ उत्कट अमिलाध-प्रवर्तिनमहासमरदोहदा नरपतय -- वेणी० ४ ५ सामान्यत कामना, इच्छा। सम० -- कलवम् १ भूष, गर्भ (दोह् दलक्षण) २ जीवन की एक अवस्था से दूसरी में प्रवेश।

दोहवन्तरी [दोहव + मनुष्य + ङीप्, वत्सम्] गर्भवती स्त्री जिसे किसी वस्तु की इच्छा हो।

दोहन (वि०) [दुह् + ल्युट] १ दोहने वाला २ अभीष्ट पदार्थों को देनेवाला -- नम १ दोहना २ दूध की बाल्टी, औ दूध की बाल्टी।

दोहकः [दोह + क्त + क] दे० दोहद क्या वहमि दोह लम् (अने० पा०) लकिनकामिसाधारणम् -- प्राक्वि० १।१६।

दोहसी [दोहल + ङीप्] अशोकवृक्ष।

दोहा (वि०) [दुह् + ध्याप्] दुहने योग्य, दूध देने योग्य, -- दूध दूध।

दोः क्षीयम् [दुक्षील + ध्याप्] दूरा रवभाव, दुष्टता, दुर्भावना।

दोः सार्धकः [दुसाध + क्त] १ द्वारपाल, द्वपादोवान २ गांव का अवशोक।

दोक्ष (भू) कः [दुक्षल + ङ्] रेशमी आचरण मे डका हुआ रेश, -- कम् नदिया रेशमी वस्त्र।

दोषणम् [दूत + ध्याप्] तदेष, दूत का कार्य।

दोषलक्ष्यम् [दुरासन् + ध्याप्] १ दुष्टता, दुष्ट स्वभाव, दुर्भावना रघु० १५।७२ २ दुर्वनता -- गुणानामेष दोषास्त्वेषां दुरि बुरा नियुगये -- काव्य० १०।

दोषलक्ष्यम् [दुर्गत + ध्याप्] १ गरीबी, कमी, अभाव -- पंच० २।१२ २ दखिला, दुब

दोषलक्ष्यम् [दुर्गन्ध + ध्याप्] बुरी या अक्षयिकर गंध।

दोषलक्ष्यम् [दुर्जन + ध्याप्] दुष्टता, दुर्भावना।

दोषलक्ष्यम् [दुर्वीचिन + ध्याप्] कष्टमय जीवन, विपद्-वस्त जीवन।

दोषलक्ष्यम् [दुर्वल + ध्याप्] नर्पकता, दुर्वलता, कमजोरी, निर्बलता -- ननु० ८।१७१, अथ० २।३।

दोषलक्ष्यम् [दुर्पना + ङ्, ङक्] अभावी स्त्री (जिसे उलका पति न चाहे) का पुत्र।

दोषलक्ष्यम् [दुर्गन्ध + ध्याप्, उभयपदवृत्ति] दुर्गन्ध, बद-

किस्मती, -- याज्ञ० १।२८१।

दोषलक्ष्यम् [दुर्धर्त + ङ्] भाइयो का आपसी कह।

दोषलक्ष्यम् [दुर्गन्ध + ध्याप्] १ बुरा स्वभाव, २ मान-सिक पीडा, कष्ट, लेह, विषाद ३ निराशा।

दोषलक्ष्यम् [दुर्गन्ध + ध्याप्] अनिष्टकारी उपदेश, बुरी सलाह -- दोषलक्ष्यम् पतिविनयति भत् ० २।४२।

दोषलक्ष्यम् [दुर्बल + ध्याप्] दुर्बल, अपभाषण।

दोह् दम्, दोहवन् [दुह् + ङ्] १ मन की दुरवस्था, शत्रुता (इस अर्थ में 'दोह् द भी) २ गर्भावस्था -- सुदक्षिणा दोह् दलक्षण दधी रघु० ३।१३ ३ गर्भ-वती की प्रसव कालसा ४ इच्छा।

दोह् दम् [दुह् + ङ्] मन की दुरवस्था शत्रुता।

दोहल [दुष्म + दृप्] द्वन्द्व का शिखरण।

दोहारिक (स्त्री० की) [द्वार ठक, औ आयम] द्वारपाल, परगटार रघु० ६।५९।

दोषलक्ष्यम् [दुराचर + ध्याप्] १ दुराचरण दुष्कृत, दुष्कृत्य।

दोषलक्ष्यम् (वि०) (स्त्री० -- ली), दोषलक्ष्य (वि०) (स्त्री० की) [दुष्कृत अन्त्य अं स०, स्वाच् ङ्, दुष्ट कुलम् प्रा० म० -- दुष्कृत + ङ्] नीच कुल में उत्पन्न, नीच घराने में उत्पन्न।

दोषलक्ष्यम् [दु + स्वा + कृ -- दुष्ट तस्य भा० ङ्] बुराई, दुष्टता।

दोष्य (अ) क्तः [दुष्य (अ) ल + ङ्] दुष्यत का पुत्र दोष्यनिमप्रतिरचनतय निवेद्य ज० १।२०।

दोषिह [दुहित् + ङ्] दाहिना, पुत्री का पुत्र मनु० ३।१४८ १।१३१, अन् तिल।

दोषिवाचक [दोहित + ङ्] दोहने का पुत्र।

दोषिनी [दोहित + ङीप्] दाहिनी, पुत्री की पुत्री।

दोषिनी [दोह् + दनि + ङीप्] गर्भवती स्त्री।

दु (अदा० पर० -- षीति) अक्षर होना, मुकाबला करना हमला करना, आक्रमण करना -- भट्टि० ६।११८, १।४।२०४।

दु (नपु०) [दृ + ङ्, कित्] १ दिन २ आकाश ३ उत्रावा ४ स्वर्ग (-- दु०) आग (पद अर्थात् व्यवसाय विचक्षितियों के जाने पर 'दिव्' (स्त्री०) के स्थान में 'दु' आवेग होता है, इस समासों में दु का प्रयोग होता है)। सम० -- यः पत्नी, -- यः १ बह, २ पत्नी, अथ स्वर्ग दीप्य करना, -- दुषि (स्त्री०), -- यो स्वर्गवा, -- निवातः देवता, नुर शोकान्मिनाज्जल दुषिवातभूयम् -- भट्टि० २।२१, -- यतिः १ दुर्व २ द्वन्द्व का विशेषण, -- यतिः दुर्व, शोकः स्वर्ग, -- यः, सद् (प०) १. नुर, देवता, -- यि० १।४३ २. बह, -- सारित् (स्त्री०) जना।

बुक् [बु + क्] उत्कृ० । सम० अरि कीवा ।

बुन् (म्हा० आ०) — बोलने, बोलिन या बोलित—इच्छा०
दिशुनिने, दिशुनिने) चमकना, उजला होना,
प्रममगाना—दिशुते च यथा रवि भट्टि० १४।१०४,
१।०६ ७।१०३, ८।८९, प्र० बोलयति 1 प्रकाश
करना, दीदीपमान करना—भट्टि० ८।१६ कु० ६।४
2 स्पष्ट करना, व्याख्या करना, समझाना 3 अग्नि-
व्यवस्था करना अर्थ प्रकट करना, अग्नि, प्रेर०
प्रकाश करना—(पु० ६।३६, उ०) — प्रकाश करना
दीपक जलाना, सजाना, सुसुधीय करना—रघु० १०।
८० बि चमकना उज्ज्वल होना—अष्टाश्लिष्ट
सभावेद्यामसो नृग्यामिचयी शि० २।३, १।२० ।

बुति (स्त्री०) [बुत् + इन्] 1 दाहिनी उजाला बालि
ती० द्ये—काच काश्चनससर्गादने मा० रानी बुतिम्—र०
प्र० ११ मा० २।१० रघु० ३।६० 2 प्रकाश प्रकाश
की चरण अ० १।६१ 3 महिमा, गौरव मनु०
१।८७ ।

बुसित (वि०) [बुत् + क्त] प्रबलित, चमकदार, उजाला ।

बुम्भम् [बु + म्हा + क्] 1 आमा, पत्र कान्ति 2 बल,
नामधेय, शक्ति 3 बंध मम्पति 4 प्रोत्साहन ।

बुम्भन् (पु०) [बु + क्तिन्] मूर्ध् ।

बुत्, —सम् [दिक् + क्त, उ०] 1 खेलना, जुआ खेलना
पासे से खेलना बुत् हि नाम पुरस्स्यासिहासन
गजपद् मुच्छ० २, इभ्य लब्ध बुतेनैव, दाग मित्र
बुतेनैव दत्त मुक्त्त बुतेनैव सर्वं नष्ट बुतेनैव—र० ३,
अप्रार्थितार्थनिकषते तल्लाके बुतमुक्ते—अनु० ९,
२२३ 2 जीता हुआ पुरस्कार । सम०—अधिकारिन्
(पु०) बुतगृह का स्वामी, जुआ खिलाने वाला कर
—कुल्ल बुजा खेलने वाला, जुआरो अथ बुतकर
सभिन्न बलीकियते मुच्छ० २,—कारः,—कारक.
1 जुआघर का रखने वाला 2 जुआरी,— छोड़ा पासा
से खेलना, जुआ खेलना,—बुजिमा, पीजिमा अधिकन
मास की प्रीतिमा, (इस समय उर साधारण लक्ष्मी
देवी के सम्मान में खेलों का उत्सव मनाते हैं) — बीछम्
कीटी (खेलने के काम जाने वाली), बुतिः 1 पेशे-
वार जुआरी 2 जुआघर का रखवाला,—सभा,—समाजः
1 जुआलाना 2 जुआरियों का समूह ।

बुं (म्हा० पर०) बायति 1 बुना करना, तिरस्कार मुक्त
व्यवहार करना 2 विक्रय करना ।

बुं (स्त्री०) [बुं० ए० व०] [बुन् + डी] स्वयं,
ईकृष्ट, आकाश—बीभृमिरीयो हृषय ममश्च—पञ्च०
१।१८२, श० २।२४, (इन्द्र समान में 'बुं' को बदल
कर 'बाबा' हो जाता है—उदा० छाशापुत्रिणी, बाबा
भूमी—सुलोच और भूलोच) । गम०—भूतिः पत्नी,
सद् (बाबद्) देवता ।

बुनः [बुन् + वन्] 1 प्रकाश, व्योति, उजाला जैसा कि
'बुना' में 2 बुन 3 नदी ।

बुनक (वि०) [बुन् + क्] 1 चमकने वाला 2 प्रकाश-
मय 3 व्याख्या करने वाला, व्याख्य करने वाला, इत-
लाने वाला ।

बुनित् (नपु०) [बुत् + इन्] 1 प्रकाश, उजाला, चमक
2 नाग । सम०—इच्छुव (बुनित्गिद्ध) जूयन् ।
द्रक्ष्यन्तम् [द्रक्षन्ति अनेन—द्रक्षन्—स्पृष्ट पृथो० ह्रस्व] आर
का मान मा बट्टा, एक नीला ।

द्रवयति (ता० वा० पर०) 1 दुड़ करना, जकड़ना, कसना
(श०) पचा— अटाकट अग्नि द्रवयति 2 समर्थन
करना पुष्ट करना अनुमान करना—निवेश लीलाना
तदितमिर्मा बुद्धि द्रवयति—उत्तर० २।२७ बिसुद्धि
स्वयं—वयि तु मम अस्ति द्रवयति ४।११ ।

द्रवित् (पु०) [द्रु० इमनिन्] 1 बसाव दुड़ना बसाने
इमेव द्रवित्मणोय पत्रिकम् गगा० ४७ 2 पुष्टि
ममर्थन उक्तस्यार्थस्य द्रवित्—अकर 3 प्रकाशन,
पुष्टीकरण 4 मरना ।

द्रव्यम् ('द्रव्यम्') [द्रव्यन्ति अनेन द्रु + स, र् आदेशः]
जमे हुए द्रव का बोल पतला द्रव्य ।

द्रु (म्हा० पर०) इमनि इधर-उधर जाना, दौड़ना,
इधर उधर भागना—भट्टि० १४।७० ।

द्रव्यम् [द्रोक सत्य से द्रुपत्] इम नाम एक प्रकार का
मिक्का ।

द्रव (वि०) [द्रु + अप्] 1 बड़े की भांति दौड़ने
वाला 2 बूने वाला, रिस- वाला गीला टपकने वाला
आसिप्य काश्चिद् इवरागमने (पादम्)—रघु०
७।७ 3 बहने वाला, नीला 4 तरल (विप० कठिन)
कु० २।११ 5 पिघला हुआ, तरल बनाया हुआ
—अ 1 जाना, इधर उधर घूमना मयन 2 गिरना,
टपकना, रिसना, निखलन 3 मगड़, प्रत्यावर्तन
4 खेल, विनोद, कीड़ा 5 तरलता, द्रवीकरण 6 तरल
पदार्थ, प्रवाही 7 रस यत्न 8 काड़ा 9 बाल, डेज
(द्रवीकृ पिघलाना तरल करना द्रवीकृ—पिघलाना,
पसीजना जैसे दया से द्रवीभवति मे यत्न, महाभयो०
७।३४, द्रवीकृत प्रेक्षा तब हृदयमस्मिन्नाथ इव—उत्तर०
३।१३, द्रवीकृत मन्त्रे पतिव बलकृपेय गयनम्—मुच्छ०
' २५) । सम० आधरः 1 छोटा बर्तन या पात्र
2 चुल्ह, —अ राव, इच्छन् तरल पदार्थ,—इहा
1 लाज 2 मोद ।

द्रवन्ति [द्रु + क्तु + डीप्] नदी, दरिया ।

द्रविका (पु०) 1 दक्षिण के पाट पर स्थित एक देश—अस्ति
द्रविका काश्ची नाम नदी—अन० १३० 2 उग्र देश का
निवासी अरुद्रविकाभिप्रायेकया निवृष्टी का०
२२९ 3 एक नीच जाति— तु० अनु० १०।२२ ।

द्रव्यम् [द्रु + द्रवन्] 1 दौलतमन्त्री, वन, सपत्ति, द्रव्य
—वेधो० ३१००, भाषि० ४१२९ 2 सोना रघु०
४१७० 3 सामर्थ्य, शक्ति 4 बीरता, विरुध 5 बात
सामर्थ्य सामान । स० अविधतिः, ईश्वरः कुंवर
का विशेषण ।

द्रव्यम् [द्रु + यत्] 1 वस्तु सामर्थ्य, पदार्थ, सामान
2 अवयव, उपादान 3 सामर्थ्य 4 उपयुक्त पात्र
(विशेषि ब्रह्मण वरुने के लिए) मुद्रा० ३११६ दे०
'अद्रव्य' भी 5 मन्त्र तत्त्व गुणों का आधार वैशेषिकों
के सात प्रयोगों में से एक (द्रव्य नो है पृथिवी, अग्नि, वायु, आकाश, काल, दिवा, ममता) 6 स्वायत्तीका
कोई पदार्थ दीनत, सामर्थ्य, सपत्ति वन तत्त्व
किमपि द्रव्य या हि यन्म प्रिया जन उत्तर० ११०
7 प्रीति दवाई 8 लज्जा शास्त्र० ११ 9 रसा
10 मदिरा 11 जने, दाव । सम० उज्ज्वल, बुद्धि
—सिद्धि (स्वा०) वन की अवधि प्रीति रस
लता वन की बहुतायत —परिचय रसा । या धन र।
मन्त्र, प्रकृति, (स्वा०) माया वा स्वभाव —सत्कार
यज्ञ के पदार्थों का शुद्धकरण वाचकम मन्त्र म ।
मूचक ।

द्रव्यम् (वि०) [द्रव + मन्त्र] 1 पत्र दौलतमन्त्र
2 सामर्थ्य से अन्तर्हित ।

द्रव्यम् (सं० कृ० वि०) 1 देने वाले के पास, ज्ञान
लाई दसके 2 प्रयोजनार्थ 3 दन्ते अनुसरण
काने या परीक्षा करने का पात्र 4 प्रिय इच्छा
कुन्दर लब्धा द्रव्यगता पर दृष्टम श०
भर्तृ० ११८ ।

द्रष्टु (पु०) [दृश् + क्त] 1 दृष्ट मार्मिक का से
देखने का शक्ति शक्ति शक्ति मन्त्रद्रष्टार म
2 व्याख्याता ।

द्रष्टु [दृश् + क्त] 1 दृष्ट मार्मिक का से

द्रष्टा (ब्रह्म० दिवा० द्राष्टि द्राष्टि) 1 साता 2 रोना
की प्रतीति करना 3 उद्गा, भाग जाना, निरीद
जाना, सोना, सा जाना प्रभावकर प्रत्यक्षकारिक
सदा निद्रावृत्तलक्षण न० ११०१ नाय के समर्थो
रहस्यमन्त्रा निद्राति नाय — भर्तृ० ३१९३ भाषि०
११४१, मट्टि० १०१३६, पा० ४१९ वि०, ११११११
करना, भाग जाना उद्गा ।

द्रष्टा (अव्य०) [द्रा + क्त] जन्मी से, मुख्य उन्नी समय
नृपाल । सम० —द्रष्टृ कर्तृ से अन्तर् २ निवाता
हुआ जल ।

द्रष्टा [द्राष्टृ + क्त] 1 द्राष्टि 2 द्राष्टि 3 द्राष्टि 4 द्राष्टि
(मन्त्र की शक्ति या कर्तृ) द्राष्टि द्राष्टि के व्याप
गौत० १२, रघु० ४१९५, भाषि० १११४, ४१३२ ।
सम० —द्रष्टा मन्त्र का रस, मदिरा ।

द्रष्टा (ना० धा० पर०) 1 लम्बा करना, फैलाना,
विस्तार करना 2 बढ़ाना, गाढ़ा करना —द्रष्टावति हि
ये शोक स्मरणार्थ गुणान्वय मट्टि० १८१३३ 3 उद्गा
रना, देर करना ।

द्रष्टावति (पु०) [द्राष्ट + वतिन्] द्राष्ट आदेश ।
1 लम्बाई 2 अज्ञान रक्षा का दर्जा ।

द्रष्टावति (वि०) [अविशयेन दोष दोष + दृष्टन द्राष्ट
आदेश] 1 सबसे अधिक लम्बा 2 अत्यन्त लम्बा
(दोष की उ० अ०) ।

द्रष्टावत् (वि०) (स्वा० लो) [दोष + दृष्टन्, द्राष्ट,
आदेश] ओक्षादृष्ट लम्बा बहुत ल था (दोष का
म० अ०) ।

द्रष्टा (वि०) [द्रा + क्त नञ् श-वन] 1 उद्गा हुआ
भागा हुआ 2 माना हुआ निद्रावत् जम् 1 शीत
भा भाषा प्रयोजन 2 द्राष्ट ।

द्रष्टा [द्रा + क्त अञ् पठ] 1 द्राष्ट दम्भ
2 द्राष्ट द्राष्ट 3 द्राष्ट द्राष्ट 4 द्राष्ट का विना
यत् नञ् पठ ।

द्रष्टावति [द्राष्टि अञ् पठ] 1 द्राष्टि

द्रष्टा [द्राष्ट + क्त] 1 मन्त्र द्राष्ट प्रयोजन 2 द्राष्ट
3 द्राष्ट द्राष्ट 4 द्राष्ट द्राष्ट द्राष्ट द्राष्ट ।

द्रष्टक [द्राष्ट + क्त] 1 द्राष्टक द्राष्ट द्राष्ट 2 द्राष्ट
द्रष्टक द्राष्ट द्राष्ट 3 द्राष्ट द्राष्ट द्राष्ट 4 द्राष्ट
5 द्राष्ट द्राष्ट द्राष्ट 6 द्राष्ट द्राष्ट द्राष्ट द्राष्ट ।

द्रष्टावत् [द्राष्ट + क्त] 1 द्राष्ट द्राष्ट 2 द्राष्टक
द्रष्टा 3 द्राष्ट द्राष्टक 4 द्राष्ट ।

द्रष्टावति [द्राष्ट + क्त] 1 द्राष्ट द्राष्ट द्राष्टक का
2 द्राष्ट द्राष्ट द्राष्ट द्राष्ट द्राष्ट द्राष्ट द्राष्ट द्राष्ट
नञ्क। द्राष्टा द्राष्ट द्राष्ट द्राष्ट द्राष्ट द्राष्ट द्राष्ट द्राष्ट
नञ्क उक्त निवाता —द्रष्टावती ।

द्रष्टाविक [द्राष्टि + क्त] आभासी द्राष्ट कम् का
नमक ।

द्रु [द्रा० पठ० द्राष्टि द्राष्ट द्राष्ट] 1 द्रीडना,
वन्त भाग जाना द्राष्टि करना (प्राय कर्म के
मात्र) द्राष्टि नदीना द्राष्टि द्राष्टि द्राष्टि द्राष्टि
नञ्क म० १११०८, रक्षाति भीनामि द्राष्टि
द्रष्टि ३६ द्राष्टि द्राष्टि द्राष्टि द्राष्टि 2 द्राष्टि
बालना द्राष्टि द्राष्टि द्राष्टि द्राष्टि द्राष्टि द्राष्टि
मट्टि० १११९, 3 द्राष्टि द्राष्टि द्राष्टि द्राष्टि
विना (द्रा० मो) द्राष्टि द्राष्टि द्राष्टि द्राष्टि द्राष्टि
काय मा० ११०८, द्राष्टि द्राष्टि द्राष्टि द्राष्टि
५१२२ वि० ११९ मट्टि० २१२२ 4 द्राष्टि
द्राष्टि द्राष्टि द्राष्टि द्राष्टि द्राष्टि द्राष्टि द्राष्टि द्राष्टि
उद्गा द्राष्टि द्राष्टि द्राष्टि द्राष्टि द्राष्टि द्राष्टि द्राष्टि द्राष्टि

1. पीछे भागना, अनुसरण करना, साथ जाना - गृ० ३१३८, १२१६७, १६१२५, शि० ११५२ 2. पीछा करना, पीछी करना, शशि --, 1 हुमला करना, धावा बोलना, (धनु के सामने) जाना-जात्रा इत्यादयोऽप्यभि-
व्यन्त मू० ५१२१ 2. आ पड़ना 3. ऊपर से चले जाना, उप --, 1 हुमला करना, आक्रमण करना - गृ० १५१२३ 2. की ओर भागना, प्र --, भाग जाना, प्रत्यावर्तन, पीछे जाना (कर्म या अर्थ के साथ) - ग्याःप्रवर्ति बन्धानि - शि० ४, भृ० ११०७९, प्रति - भागना, उड़ना, चले जाना - मट्टि० ६११३, शि - भागना, भाग जाना प्रत्य-
वर्ति, प्रेत - भगा देना, बिदका देना, किरा किरा कर देना भा० १०५२ भा० ३ :

11 (रक्षा) पर० पुनर्वा, 1 शक्ति पहुँचाना प्रसिद्ध करना - न दुःखार्थिना क्वि - मट्टि० १५१८२ २५ 2 जाना, 3 पक्षगता :

हु (पु० भा०) [हु - हु] 1 लड़ना 2 आशा का जना उपकरण (पु०) 1 हुल सम० ३१२१ 2 हावा - सम० - किलिम देवदत्त गुप्त, पञ्च 1 सामग्री गुला या घाँसी 2 बड़की हथौड़ी जेठ जाड़े का उपकरण 3 कुठार कुल्लाही 4 बड़ा का लोहे का घण्टी कुल्लाही लकड़ काटने का यन्त्र (वि०) बड़ी लकड़ काटने - लक्षण] हु भागना लक्ष्मण एक उभ - विवाह ।

हुनः [हुन - क] 1 विशुद्ध 2 मधुमक्खी 3 बधभास - जम् 1 घनप 2 बसवरा । सम० हुः अग्नि काय, धान ।

हुना [हुन - टाप्] पल्लव का डोरी ।

हुनिः, [हुनी (स्त्री०)] हुन - हुन हुनि १-डोरी 1 एक छोटा कल्ला या कलुषी 2 डोरी 3 कान लभूरा ।

हुन (पु० क० ह०) [हुन - का] 1 सावुगामी कुर्मीना, दुगागामी 2 बड़ा हुआ, भागा हुआ, पलायन 3 पिछला हुआ, परल घुला हुआ द० इ० त. 1. विशुद्ध 2 वृक्ष 3 किल्ली - तम् (प्रत्य०) जम्बी में, कुर्मी में, वेग में तुम्हें - सम० पत्र (वि०) आधुनामी, किलिमिस्तम एक उरु का नाम दे० परिशिष्ट ।

हुनिः (स्त्री०) [हुन - पितृन्] 1 पिछाना, घुलना, 2 चले जाना, भाग जाना ।

हुपदः (पु०) पाताल देव के एक राजा का नाम (हुपद के पिता का नाम वृषा या हुपद और दोनो ने राज्य के राजा बनाये थे पञ्चविधा सोचो । जब हुपद को राजसूरी मार गई तो हुपद जा अधिक कठिनाइयों में प्रसन्न होने के कारण दोन अपनी छाया-

वस्था की मित्रता के आधार पर हुपद के पास गया, परन्तु उसने बमर्ह के कारण दोन का अपमान किया । इस कारण दोन ने उसे अपने शिष्यों (पाण्डव) द्वारा पकड़वा कर बन्दी बनाया—फिर उसका बाबा राज्य उसे वापस कर दिया । परन्तु यह हार हुपद के मन में स्वीकृत करनी रही, और एक ऐसा पुत्र पाने में इच्छा से जो उस हार का बदला ले सके, उसने एक यज्ञ किया । उस यज्ञार्थि ने बृष्टसुम्न नामक पुत्र तथा द्रौपदी नाम की पुत्री ने जन्म लिया । बाद में इसी पुत्र ने पाण्डवों में दोन या मिर काट लिया । दोन ही ।

हुमः [हु - भावज्यम्] पु० 1. बड़ा - अथ हुमा ३ मया अग्नि कथयः मे पुत्रो० ३१८ 2 पौरव वृक्ष । सम० - अग्नि हाथी, आधय पात्र ता - आधयः शिपिकी इतिवत्, 1. लकड़ का 2 बरुदा 3 पञ्चरात्र वृक्ष उदाल, कर्पिकार पुत्र मकल - अथ कीट - अथिः आन काट अथ लकड़ का वृक्ष - ब्रह्मन् वृक्षिदान, वही का समस्त

हुमिकी [हुम - हिति - हिति बला का समुद्र ।

हुषयः [हु - वयो मार, मार ।

हुह् [हुिमा० पाठ०] हुह्यति, हुह्यः 1 हुय्यि उप बाल - अथ या हुन पहुँचने की चेष्टा करना हुपपूर्वक हाव - लेने की इच्छा से प्रवृत्त रहना सम०] हावक या हुह्यति मधुमेव मात्रेणान्तरात्म न्यायिभवे मे ३. मट्टि० ५१३९, अग्नि - हाव पहुँचाना हुह्य कर्म का प्रयत्न करना, वृद्धत्व लब्धता (कर्म के साथ) - मन्मथरीमभितोऽपु जने मे मृदा० १ ।

हुह्, (वि०) [हुह् - किवप्] (समाप्त के अन्त में प्रयोग) [कर्त्त० ए० व० - अक वृ हुट - इ] अग्नि पहुँचाने वाला, चोट पहुँचाने वाला प्रहयन्त्र वाली लकड़ का व्यवहार करने वाली जि० २१३५, मनु० ३१० (स्त्री०) - अग्नि, हाव ।

हुहः [हुह् - क] 1 पुत्र 2 मरोवर, लीला ।

हुह्य, हुहियः [हु समारमति हन्ति - हुं हन् - अह्, हुह्यति हुह्येय हुह् - इन्त् पाठम्] बड़ा या पिछे का नाम ।

हु [हु - किवप्, दाष्] लोना ।

हुपनः [हुपण, पुनो० भा०] हथौड़ा कोड़े का हथौड़ा दे - हुपण ।

हुनः [हुन, पुनो० भा०] विष्णु ।

हुन [हुन - अह्, या हु] न । 1. जार मी बौम लक्ष्मी लोम, या सरोवर 2 हावन् (विशेष प्रकार का बागल) हाव से भरा बागल (विशेष से वर्षा इस प्रकार निकले हैन हाव से पाना) कोशमेवविषये गात्रे काय-पात्रस्थिते मयि, अनाभूतिहते मय्ये दोषमेव इवोचित,

मूक० १०१६ ३. पहाड़ी कीबा, बुरवारसोर कीबा
 ४. बिष्णु० ५. बल ६. लफेद चुलों वाला बल ७. कीरव
 पाण्डवों का गुह (दोष भरडाव श्वि का पुत्र था,
 इसका यह नाम इसलिए पड़ा कि तुलावी नामक
 अम्बरा की देखते ही अब उनका वीर्यपात हुआ तो
 उन्होंने उसको एक दोष में बुराित रक्खा । जन्म से
 ब्राह्मण होने पर भी दोष ने परशुराम से सस्त्रास्त्र
 विज्ञान की शिक्षा प्राप्त की । बाद में धनुर्विद्या और
 शस्त्र चालन दोष ने कीरव पाण्डवों को सिखलाया ।
 जिस समय महाभारत का युद्ध हुआ तो वह कीरव
 पक्ष की ओर से लड़ा, और जब भीष्म घायल होकर
 'परसव्या पर' लेट गये तो कीरवसेना की बागडोर
 दोष ने संभाली तथा चार दिन तक युद्ध करने पाण्डव
 पक्ष के हजारों योद्धाओं को मौत के घाट उतारा ।
 युद्ध के पन्द्रहवें दिन रात को भी सपना होता रहा
 और फिर सोलहवें दिन प्रातःकाल कृष्ण के मुखाव पर
 भीम ने दोष को मुला कर कहा कि अश्वत्थामा मारा
 जा (तथ्य यह था कि अश्वत्थामा नाम का हाथी
 युद्ध में काम आया था) इस पर बिष्वास न कर इस
 तथा की यथार्थता जानने के लिए उसने गन्धवादी
 युधिष्ठिर से पूछा । युधिष्ठिर ने भी, कृष्ण के परा-
 मर्शानुसार, बात को खलपुर्बक टाल दिया । उन्होंने
 'अश्वत्थामा' शब्द को ऊँचे स्वर से उच्चारण किया
 तथा 'गज' शब्द की भीमे स्वर से—दे० वेणो० ३१६,
 अपने एकमात्र पुत्र की मृत्यु का समाचार सब समझ
 कर अत्यन्त शोकवस्तु हो बुढ़ा पिता मुछिन हो गया ।
 उसी समय घुष्टघुम्न ने (जिसने दोष को मारने की
 प्रतिज्ञा की थी) उस अवसर से लान उठाकर दोष
 का बिर काट डाला ।—बा०—बा० एक विशेष गोल
 का बट्टा, या तो एक आड़क या चार आड़क, अथवा
 कारी का १/१६ भाग, या ३२ अथवा ६४ सेर,—बा०
 १. काष्ठ पात्र, प्याला, कटौती २. लकड़ी की कुण्ड या
 कोर । सम०—आचार्यः दे० ऊ० दोष, —काकः पहाड़ी
 कीबा,—कीरा,—बा,—दुल्हा,— दुहा एक दोष हूष
 देने वाली माय,—मुष्णम् ४०० गाँव की राजधानी,
 मुख्य नगर ।

दोषिः,—भी (स्त्री०) [दु+नि, दोषि+दोष] १. लकड़ी
 का बना एक अच्छाकार पात्र जिसमें पानी रखते हैं,
 अथवा पानी जिससे बाहर निकालते हैं, डोल, चिलमची
 कुप्पी २. अनाचार ३. काष्ठ की खोर ४. दो घुर्प या
 १२४ सेर के बराबर भारिता की माय ५. दो पहाड़ों
 के बीच की घाटीय, बहु—दोषोत्तलकान्तात्प्रदेशमधिनि-
 श्चनो नाथवस्यान्तिके प्रयागि—मा० ९, हिमवद्
 दोषी । सम०— बलः केनक का पोषा ।

दोषः [दुह+जम्] १. किसी के बिहव घटघ्न्य रचना,

आघात या आक्रमण करने की चेष्टा, क्षति, उपद्रव,
 ध्वि—अद्रोहपाप कृत्वा— पंच० २१३५, भग० ११३७,
 मनु० २११६१ ७।४८, १।१७ २. बोला, विस्वासघात
 ३. अस्याय, दोष ४. बिद्रोह । सम०—अष्टः १. पाकडी,
 पूर्न, छपवेची २. शिकारी ३. झूठा मनुष्य,—चिन्तमन्
 इष्ययिस्त बिचार, अपकार चिन्ता, हाति पहुँचाने का
 इरादा,—बुद्धि (बि०) उपद्रव करने पर उलाह या
 दूषित व्यवहार पर तुला हुआ (स्त्री० छि) दुरट
 प्रयोगन, बुरायाय ।

दोषायनः,— निः, दोषिः [दोष+कम् किच् बा, दोष
 +इच्] अश्वत्थामा का विशेषण— यशमेण कृत
 तदेव कुतः दोषायनि कोषन वेणो० ३१३१ ।

दोषवो [दुपद+अण्+दोष] पाञ्चानराज दुपद की पुत्री
 का नाम (स्वयम्भर में अन्न ने इसे प्राप्त किया ।
 जब उन्होंने घर आकर अपनी माता कुन्ती को कहा
 कि आज हमने बड़ी अच्छी वस्तु प्राप्त की है । तब
 माता ने कहा कि सब भाग्य में नाँद लो, क्योंकि
 कुन्ती व मृत्यु से निकला जान कभी झूठी नहीं हो
 सकती अब वह पत्नी माइनों की पत्नी बनी । जब
 यक्षिष्ठर जूए में अपने राज्य का हार गया, हीपची
 का हार गया, यहाँ तक कि अपने आप को भी हार
 गया तो दुःखमय ने और दुर्भाग की पत्नी ने उसका
 बड़ा अपमान किया । परन्तु हम प्रकार के अपमान
 की शरीर ने असाधारण महिष्णुता के साथ सहन
 किया । और जब कभी कटे अवसरों पर उसकी
 तब उसके गतिवों की परीक्षा हो गई तो उसने उनके
 मान को रक्षा की । हेतु कि उस समय जब दुर्वास
 ऋषि ने अपने माँह हठार शिष्यों के लिए राम की
 भोजन माँगा । अन्त में एक दिन उसकी महिष्णुता
 गमाव हो गई और उसने अपने शिष्यों को बडे ताने
 के साथ उसी पहाड़ में कहा जिसमें कि वह अपने
 मृत्यु में प्राप्त क्षति और अपमान का कटवा चूट पी
 रहे थे दे० किं० १।१९-२६, इसी के कलस्वरूप
 पाण्डवों ने युद्ध करने का दृढ़ संकल्प किया । यह उन
 पाँच सर्गों शिष्यों में से है जो प्रातः स्वरणीय समझी
 जानी हैं—दे० बहुरा ।

दोषवेयः [दोषदी+वच्] शरीर का पुत्र—भग० १।६।१८ ।

दुष्टः [दो दो महतिभयकतो डि प्रत्यय विन्धम्, पूर्वपद-
 रय अभावात्, उत्तरपरम्य नृसकल्पम्, नि०] चडिया
 जिस पर प्रहार करके घटों की मूलका दी जाती है,
 —इन् १ जाडा, जन्तु मगल, घनकथमगल नी) २. स्त्री-
 पुत्र, नर-जाडा इन्धानि भाव किया बिबु, कु०
 ३।३५, मेघ० ४६, न घेदिद इन्धवयोमयिष्यत्—कु०
 ७।६६, रघु० १।६०, मा० २।१४, ७।२० ३. दो
 वस्तुओं का जाडा, दो विरोधी अवस्थाओं या युद्धों का

जोडा, (जैसे कि मुल-मुल, धीस और उष्ण) —इन्डो-योज्यबेमा मुलमुलकादिभि प्रजा —मनु० १।२९, ६।८१, सर्वभूमिस्तिकरे निवसन्तर्पित इन्द्रमुलमिह किशोरिकचनोपि - वि० ४।६४ ४ सपदा, लडाई, कलह, टाण्टा, युद्ध ५ कुसती ६ सदेह, अनिचिनि ७ क्लिप्ता, गड ८ रहस्य, - इ. (ध्या० में) समास के बार मुख्य येषो में से एक जिसमें दो या दो से अधिक प्रत्येक मास जोड़ दिए जाते हैं, जो कि अममल होने की अवस्था में एक ही विभक्ति क रूप और (समुच्चय वाचक अवयव) अवयव से जाड़ जाते चाये इन्द्रम पा० २।१।०९ इन्द्र सामासिकरूप च भग० १०।३३। मम० चर, चारिन् (वि०) जाड़े क रूप म रहने बाउ (१०) चरवा दलित इन्द्रचर पतनिसम रघु० १।०० १ ६३ भाव वैराग्य अनन्त भिन्ना स्त्री और पुण्य (नर या मादा) का विभाग भूत (वि०) १ एक जाड़ा बनाये दुग २ गरीय अनिन्दन युद्धम मन्त्रयुद्ध अने को (३) क लह ई।

इन्द्रस (अवयव)। इन्द्र 'स' दा व क जाड़ म

द्वय (वि०) (स्त्री० यी) [द्वि + अण्] दोहरा दुपरा दो प्रकार का या तरह का—अनुश्रवण द्वयो गति मृदा० ३ मनी० २।१०४ अ१० पा० कमा कमा ६० १० में भी प्रयुक्त दो जि० २।१४ यम् १ जोड़ा गुल दाम (प्राय ममाम क अन्य म प्रयत्न) दिनयत्न इन्द्रमवसर रघु० १६ १।१९ ३। ४।४ २ दा प्रहार की प्रकृति द्वयग ३ स्थलाव यी जाड़ी, पुण्य। मम० —अतिथि (वि०) जिसका मन अम और नम इन दो गणों के पभाव म मुक्त हो गया है, मर महामा आत्मक द्वयप्रकृति से गुप्त —सादिन् डिजिह्व ३।१०।

द्वयस (वि०) (स्त्री० यी) द्वौ नक दा मके इन्द्रा ऊँचा जिसका हि 'द्वयता गहरा जिसका हि पट्टवन बाता' अर्थात् बलवाने वाला प्रयय आ मन्त्रा गन्दी के साथ लग गुन्धद्रुम म मर्यासि ६।० ११४ नारोनिनद्वयस बन्धव (अभ) रघु० १६।४६ सि० ६।५५

द्वयस, रघु [आध्या स-यवेतायुगाम्या पर पुष्य०—ताग०] १ विश्व का तृतीय युग मनु० ९।३०१ २ पासे का बहु पाषवं व्रिम पर दो को मरुवा अकिर है ३ मदेह क्षापाज, अनिश्चितता।

द्वयुधवायव (वि०) [अदम् + क् आमुध्यायव व० त०] दे० द्वयामुध्यायव।

द्वय (स्त्री०) [द्वि + गिच् + विच्] १ दरवाजा, फाटक —यात्रा० ३।१२, मनु० १।१८ २ उपाय, तरकीब, द्वारा 'के उपाय में' को प्रार्थित। मम० स्व, स्थित

(आस्थ, द्वारस्थ, द्वारस्थित, द्वारस्थिन) द्वारपाल, द्वयोदीवान्।

द्वारम् [द्वि + गिच् + अच्] १ दरवाजा, मोरख, प्रवेशद्वार, फाटक २ मार्ग, प्रवेश, घुसना, मुह, —अथवा कृत-वाह्वारे बसेस्मिन्—रघु० १।४, १।१८ ३ गरीर के द्वार या छिद्र (ये गिनती में नहीं हैं २० अम्) कु० ३।५०, मम० ८।१२ मनु० ६।४८ ४ मार्ग, माध्यम, माधन या उपाय द्वारेण 'में से' के माधन में। मम०—अथि. द्वयोदीवान्, द्वारपाल कच्छक दरवाजे की कुड़ी —कपाट, —द्वय दरवाजे का पसा या दिना, गोष —नायक, व पाल, पालक, द्वारपाल द्वयोदीवान् पहरदार, द्वा द्वयामवान का लकड़ी पट्ट १ दरवाजे का दिना २ दरवाजे का पर्दा पिछी दरवाजे का दहना पिछान दरवाजे की कुड़ी बलिमुह (पु०) १ कौर २ चिड़िया बाह्य दरवाजे की बाह्य द्वार का पाला यन्त्रम् ताल, कुड़ी स्व द्वारपाल।

द्वार (वि०) का द्वार के —क गुजरान व पश्चिमी किनार पर स्थित कृष्ण की राजधानी। द्वारका' क क वणन काल २०।१० ३।०३ ६०। मम०—इन्द्र कृष्ण का विवक्षण।

द्वारवती, द्वारवती = द्वारका।

द्वारिक द्वारिन् (पु०) द्वयोदीवान् द्वारपाल।

द्वि (सख्या० वि०) (कृ०) द्वि० व० पु० द्वी स्त्री० न्य० द्वे) दा दाता—मम० १२।१०१, १२।१०२ द्वि रघु० ५।६८ (वि०) १ विशाति और त्रिस्त म पूर्व द्वि का द्वि हो जायत चत्वारिंशत्, पञ्चाशत्, षाष्टि सप्तति और नवति म पूर्व द्वि का द्वि होता है परन्तु विकल्प से और असीति म द्वि में कोई परिवर्तन नहीं होता। मम० अक्ष (वि०) दो बाली वाला अक्षर (वि०) द्वयधरो दा अक्षरी से संबद्ध अक्षराल (वि०) दो अगुल लम्बा—(लम्) दो अगुल की लम्बाई अक्षराल दा अणुवा का मघान अक्ष (वि०) १ दो अक्ष रखने वाला २ सद्विष्य अस्पष्ट या द्वयधक ३ दा बाटो का ध्यान रखने वाला —अक्षीत (वि०) बयासीवा —अक्षीति (स्त्री०) य० भी, अष्टम् तावा —अक्षः दा दिन का समय, आत्यक (वि०) १ दा प्रकार के स्वभ बाता २ दो हाने वाला, आयुध्यायवः दो पिताओं का पुत्र गौर लिया हुआ बेटा, जो अपने मूल पिता की संपत्ति का भी साथ ही साथ उतराधिकारी हो। अक्षम् (द्वयम् द्वयधम्) अक्षोकी का सपह, क, —कक्षर १ कौरा (स्त्री०) काक' शब्द में दो क' होते हैं) २ चक्रवा (स्त्री०) काक' शब्द में भी दो 'क' हैं), कक्षु (पु०) अँ,

—**नू** (वि०) दो गीतों से विनियम किया हुआ, (कु०) तत्पुरुष समास का एक भेद जिसमें पूर्वपद सख्यावाचक होता है — इन्द्रो हिमुरपि बाहू— उद्भट.
—**नृष** (वि०) दुगुना दोहुरा, (हिनुजीह— दो बार हल चलाना, दुगुना बगना, बढ़ाना), —**पुषित** (वि०) 1 दुगुना किया हुआ, — कि० ४१५६ 2 दो तह किया हुआ 3 लपेटा हुआ 4 दुगुना बढ़ाया हुआ, —**वरण** (वि०) दो टांगों वाला, दो पैरों वाला —**चित्ररूपसूना भित्तिमुजाम्** शा० ४१५, —**चत्वारिण** (वि०) [चि-चत्वारिणः] चत्वारिणस्य, —**चत्वारिणसु** (स्त्री०) (चि-चत्वारिणसु) चत्वारिणसु, ज दुजन्मा, 1 हिन्दुओं के प्रथम तीन वर्णों में (ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य) कोई एक, दे० पात्र० १३० 2 ब्राह्मण (जिसपर पवित्रीकारक कृत्य या सत्कारों का अनुष्ठान किया जा चुका है) —**जन्मना जायते शुद्ध सत्काराद्विज उच्यते** 3 अजन्म जन्म जैसे कि पत्नी सोप मछली आदि सन्माननमयित्व द्विज - १० २११ शा० ४१२१ ए० १११० मुद्रा० ११११ मनु० २११३ 4 दाँत कोणें द्विजाना गण्यं मनु० १११३ (यहाँ द्विज शब्द का अर्थ ब्राह्मण भी है) ।
—**अग्रथ** ब्राह्मण अग्रणी यज्ञपत्रोत्तम जिस हिन्दुओं के प्रथम तीन वर्णों धारण करने हैं आक्रम द्विज का घर इन्द्र, ईश 1 चन्द्रमा सि० १२३ 2 गुरु का विशेषण 3 कपूर बास गुड चरित, राज 1 चन्द्रमा का विशेषण ए० ४१२३ 2 गुरु ३ कपूर, प्रथा 1 आश्रम का घराला 2 चक्रव (जहाँ पशु पक्षी पानी पिय, बन्धु बुद्ध 1 दो ब्राह्मण बनने का बहाना करना है 2 दो लग्न से ब्राह्मण हो, कम मेत हो तु० ब्रह्मचर्य सिद्धि (पु०) 1 क्षत्रिय 2 क्षत्र ब्राह्मण ब्राह्मण वंश धारी 3 ब्राह्मण विष्णु की उपाधि (गण्डारीटी) 4 शैवक बुद्ध, —**जन्मन्**, जाति (पु०) 1 हिन्दुओं के प्रथम तीन वर्णों में से किसी एक वर्ण का मनु० २१२६ 2 ब्राह्मण — कि० ११३९, कु० ५१६० ३ पक्षी पक्षी 4 दाँत क्षत्रीय (वि०) हिन्दुओं के प्रथम तीन वर्णों में से किसी एक वर्ण का —**विष्णु** 1 सोप — जि० ११६३, ए० ११६४ १४४१, मरि० ११२ 2 मनुष्यक, मिथ्यानिन्दक कुलकर्तार 3 कपटी पुरुष, ज (वि०) (ब० ब०), दो दाँत ए० ५१२५, भर्तु० २१२१, जिस (ब्राह्मिन् 1 बलीबली 2 बलीस से युक्त, — **विशत्** (ब्राह्मिन्) बलीस, **वसन्त** ३२ शुभलक्षणों से युक्त —**वसिष्ठ** (अश्व०) 1 बड़े से बड़ा, क्षु (वि०) दो दाँत रखने वाला, — **वस** (वि०) (ब० ब०) दाँत —**वस** (ब०) (ब्राह्म) 1 दाँतवाँ, मनु० २११६

2 बारह से युक्त, — **वसन्** (ब्राह्मन्) (वि०, ब० ब०) बारह, अशु. 1 बृहस्पति ग्रह तथा 2 देवों के गुरु बृहस्पति का विशेषण **अश्व० ३२** लोचनः कान्तिकेय का विशेषण **अश्व० १२** अंगुल का माप, **अशु** 1 बारह दिन का समय मनु० ५१८३, ११६८ 2 १२ दिन तक चलने वाला या १० दिन में पूर्ण होने वाला यज्ञ **आत्मन्** (पु०) पूर्ण, **आविष्कार** (ब० ब०) बारह सूर्य दे० आदित्य **आयुषु** (पु०) कुणः सहस्र (वि०) १२००० से गत **अक्षी** (ब्राह्मणी) पदि भाग के पक्ष की १०वीं तिथि, **वैश्वन्** विशालानाम नक्षत्र —**वेह** गणेश का विशेषण, **वातु** गणेश का विशेषण — **कान्तक** बहु मनुष्य जिसकी मन्त्रना हो चुकी हो — **नक्षत** (चि-ब्रह्मचर) ब्रह्मचरी नक्षत्र चि-ब्रह्मचरि । ब्रह्मचरे प हाथों आस्य गणेश का विशेषण **वस** 1 पक्ष 2 प्रधान पञ्चाश (चि-ब्राह्मचर) (वि०) **बाधन** पञ्चाशत (चि-ब्राह्मचर) (स्त्री०) **बाध** पक्ष ३ भाग पक्ष, दुःखा मनुष्य पदिका, पक्षी 1 दुःखा मनुष्य 2 पक्षी देवता पाषा, पाषा दुःख भोजन पाषाण (पु०) प्रायो विष्णु प्रसंगी () भूषण काण भूम (वि०) (मनुष्य का भर्ता) दो घाँवना भात, भात 1 भाग तथा 2 जन्म का विशेषण भात दीप भूष (३ भागों वाला) भागी पाद १ मुखा वाक् २ भीरा कु० द्विप २ वक्ष रक्ष प्राची—ए० ६४ मेघ० ५० **अन्नक**, भराति अन्नम मिह **रत्न** सोप रात्रि दा गत **रत्न** (वि०) 1 दो कर्णों का 2 दाँत का द्विदलीय **रत्न** (पु०) **वक्ष**, **रेख** गीत (भग्न दम्भ दो १ है) कु० ११२७ ११२३ १६ **वक्ष** (अश्व० में) द्विचक्षु **वक्ष** १५ कोणों का कोना या पाशों का घर **वाहि** वाहणी, **विश** (ब्राह्मिन्) (वि०) **वाह**—**मवा**, **विशति** (ब्राह्मिन्) (स्त्री०) **वाहति**, **विश** (वि०) दो प्रकार का, दो तरह का मनु० ७१६२ **वैश्वन्** अश्वमेष **वक्ष** में लीची जाने वाली हल्की गाड़ी **वसन्** 1 दाँत 2 एक ली दो —**वसन्** (वि०) दो मी में लीची हुआ या दो ली के मूल्य का —**वस** (वि०) दो फटे कुर वाला (क) कोई भी फटे दो कुर वाला मानवर —**वसिष्ठ** अग्नि का विशेषण **वसु** (वि०) (ब० ब०) दो बार छ, बारह **वसु** (विष्णु, ब्राह्मण) वासुधवा, **वसि** (स्त्री०) (विष्णु, ब्राह्मण) वासुध, — **वसन्त** (चि-ब्राह्मन्) (वि०) बहतरवाँ—**वसन्ति** (स्त्री०) (चि-ब्राह्मन्) बहतर, —**वसन्त**

पक्ष, पक्षवादा, —सहस्र, साहस्र (वि०) २००० से
युक्त (लक्ष्य) दो हजार, —नीत्य, हस्त्य (वि०)
दोनों ओर से हल चलाने वाला अर्थात् पहले लक्ष्यवादी की
ओर से और फिर चौहार्द की ओर से —सुवर्ण
(वि०) दो सोने की मण्डों से बनी हुई या दो
स्वर्ण मुद्राओं के मूल्य का —हन् (पु०) हाथी
हाथ्य, —वर्ष (वि०) दो वर्ष की आयु का,
—हीन (वि०) नायक विना हथिया गर्भवता स्त्री
—हन् (पु०) अग्नि का विशेषण ।

द्विक (वि०) विराम्य कालि —दि० १ —६ । दाहर
मोड़ी बनाने वाला दो से युक्त २ दूसरा ३ दावार
होने वाला ४ दा अचिर बड़ा हुआ दो पणिगत
—द्विक याव वरि मन् ११४१—

द्वितय (वि०) (अ० ५१) दो प्रत्ययों पर्य्य द्वि
तय्य दो से युक्त दो म विभक्त दुगुणा दाहरा
(कई बार १०० में प्रयुक्त) दुसमसुमा विमन्त्र
यदि बायीं द्वितयानि त त र्थ ० ८००
—यन् ब्राह्म, युगल र्थ ० ८१६

द्वितीय (वि०) दुदा दुगम द्वि-तीय दुसरा त्व
जोचित स्वर्णम न दृश्य द्वितीयम् दुसरा २१२६
मेघ ० ८३ र्थ ० ८१३, य १ परिहार मे दुसरा
पुत्र २ माध, माधोदार मित्र, (राय समय के
अन्त में) प्रत्यपरिपञ्चिदाय र्थ ० ११९५ इमी
प्रकार आग, दुष या चन्द्रमाम के पक्ष की
दायत्र, रानी, माया माधोदार । मन् ० आधस
बाह्य या गृह्य क आगत का दूसरा अक्षर
अर्थात् माधोदार ।

द्वितीयक (वि०) द्वितार । र्थ, दुसरा ।
द्वितीयाक्षर (वि०) द्वितीय दाक्ष ३ । ११ । (या
आदि) त्रयमे दा वर हउ भूपा जा चुका है ।

द्वितीयम् (वि०) (अ० ५१) द्वितीय । द्वितीय
स्थान पर हो रहा क्रिये हुए ।

द्विष (वि०) द्विषा । १ । भाग में विभवा, ३। दुःखों
में कटा हुआ ।

द्विषा (अर्थ०) द्विषा । १ । भाग में द्विषाभिप्रा
विषा-रामि (पु० ११३९, मन् ० ११२, ३२, द्विष
हृदय तन्म दुःखितयाभवता महा- २ दो प्रकार
में । मय० करणम् दो भागों में विभाजन
टुकड़े-टुकड़े करना, वरि १ उभयचर जन्म जल
स्थान-चर २ कैकडा ३ मगरमच्छ ।

द्विष्य (अर्थ०) द्विषा । १ । दो प्रकार के दा के प्रिसाव
में, जोड़े में ।

द्विष् (अ० ५१) उभ० —द्विष्ट, द्विष्टे, द्विष्टे । बुरा करना,
पसंद न करना, विशेषी दुःख न द्वेष्टि यउन्नमन-
स्वयञ्जानान्—वेणी ० ३१५, मन् ० २५७, ८८१०,

अद्वि० १७६१, १८१९, रम्य द्वेष्टि—मन् ० १५,
(प्र. वि मन् आदि उपसर्ग अगले पर इस धातु के
अर्थों में कोई परिवर्तन नहीं होता) ।

द्विष् (वि०) द्विष् । निष्पत्तिवादी, बुरा करने वाला,
गन्धर्व (पु०) दाक्ष —अप्रावेष्टयदक्षणा द्विषामो-
मित्रता यथो—रथु० १२११, ३१५ पक्ष ० ११० ।

द्विषा (वि०) द्विष् । द्विषा (द्विषत्व) वि० दाक्ष को सज्जन
करने वाला परिशोध लेने वाला ।

द्विषत् (पु०) द्विष्—द्विष् । दाक्ष (कर्म०) या मय० के
साथ । तत् पर ३००० द्विषाद्वि—रथु० ६३१,
११० २११ अद्वि० ५१०

द्विष्ट (वि०) द्विष्—कर्म । विराधी २ पणित अविष्—
अद्वि० नावा ।

द्विष् (अर्थ०) द्विष्—मुत्, दा वर द्विष प्रसिद्धनेन
आजहार हिमालय कु० ६६४ मन् ० २६० ।
मय० आगमम् (द्विषागमम्) गोदा मकलावा,
दुःख का अपने पति के पर दूसरा वार आना
—आष (द्विषा) हाथी उक्त (द्विषत्) (वि०)
१ पुनित पुनर्वाक २ अतिरक्त अनुपयोग,—अद्वि०
द्विषा । पुनर्वाक ३ स्त्री, आष—अक्षयम्
द्विषात् ।

द्विषः पक्ष (द्विषा द्विषात्) गन्धर्व आष द्वि-
अप् आ इत् । १ दाक्ष २ मय०मान, अक्षयम्
उपादन स्थान ३ भूलाक का एक भाग (मित्र २
मानान्तर इन भागों में मरुता भी मित्र २ है,
चार, सात दो या तेर, कमल की पक्षिमि की
मान मय क मय मेर के सारों ओर स्थित हैं, इनमें
स प्रयक का समुद्र एक दूसरा स विमुक्त करता है ।
मन् ० १५ में अद्वि० द्विषा का वर्णन है, परन्तु मान
की मरुता सामान्य प्रतीत होती है—पु० रथु०
१६५, और रथु० ७३३, केन्द्रीय भाग अक्षद्विष का
है त्रिषमे भारतवर्ष विद्यमान है । मय० कर्पूर
चान म प्राप्त कर्पूर ।

द्विषत् (वि०) द्विष । मन् ० दाक्ष से भरा हुआ
(पु०) मय०—नी पृष्ठी ।

द्विषिन् (पु०) द्विषा । द्विषि १ तेर वर्मणि द्विषि
द्विषि मिही ० ८ वीर, व्याघ्र । मय०—मय०—
मय० १ तेर की पृष्ठ २ एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य ।
द्विषा (अर्थ०) द्विषा । १ भाग में, दो तरह से,
दो भाग ।

द्विष (अर्थ०) द्विष् । १ पणित अविष्, अविष्का,
दुगुणा र्थ ० ११० मय० ३३४ ७३७ इमी
प्रकार अक्षद्विष, अक्षद्विष २ लक्ष्मी विरोध, द्विषा
मन् ० ८१२५ ।

द्विष्य (वि०) द्विष् । १ पणित अविष्, अविष्का,
दुगुणा र्थ ० ११० मय० ३३४ ७३७ इमी

करने वाला, —क शब्द —क्य पूजा, मुमुक्षा, सन्ता,
अश्वि ।

हेचिन्, हेचु (वि) [हेच + इति, हिच् + तुच्] पूजा करने
वाला, (पु०) शब्द ।

हेच्य (सं० क०) [हिच + क्यत्] 1 पूजा के योग्य 2
चिनीना, धूतित, अश्विकर —रचु० ११२८, च्य
शब्द भग० ६१२ ११२९ मनु० ११३०७ ।

हेचुषिक [हिचुष + ठक्] सूक्ष्म और शत प्रतिशत व्याज
लेता है ।

हेचुष्यम् [हिचुष + क्यञ्] 1 दुग्दी राशि मूल्य या माप
2 द्वित्व, द्वैतावस्था 3 तीन गुणों (अर्थात् सत्त्व
रजस और तमस) में से दो पर अधिकार रचना ।

हेतुम् [हिचा हतम् द्वितम तस्य भाव स्वार्थे अच्] 1
द्वित्व 2 हेतुवाद (रस०) दो विशद नियमों का
प्रकथन, जैसे कि जीव और प्रकृति ब्रह्म और विश्व,
आत्मा और परमात्मा एक दूसरे से भिन्न हैं तु०
अद्वैत कि शास्त्र अध्वनेन यस्य गलति द्वैतान्धकारो
स्वर — मायि० ११८६ 3 एक जगत् का नाम ।
मम० — ब्रह्म एक जगत् का नाम कि० १११
— वाचिन् (पु०) बहु दार्शनिक दो द्वैतसिद्धान्त का
मानता है ।

हेतिम् (पु०) [हेत + इति] द्वैतावादी दार्शनिक ।

हेतीयक (वि०) (स्त्री० की) [हितीय — ईयच्] 1
दूसरा — द्वैतायोनिका भित्तियमगमसस्य प्रबन्ध महा
काव्ये कश्चि नैवधीयचरिते मगौ निमगौज्ज्वल ने०
२१११० तु० मार्गीयक ।

हैच (वि०) (स्त्री० की) [हि + चमुञ्] दोहरी
दुग्दी (हैचोभू दो भागों में विभक्त होता अर्थात्
होना, हिचिचा में पड़ना मन में अनिच्छा होना)
— क्य 1 द्वैतावस्था दोहरी प्रकृति य अवस्था
2 दो भागों में विभक्ति 3 दुग्दी सावन गीण आर
अरु 4 विविधता भिन्नता सत्त्व विवाद विभद
— भूतिद्वैत तु मय स्थात् तत्र धर्मावृत्ती स्मृती—मनु०
२११४, २१३२ याज्ञ० २१३८ 5 सर्वज्ञ अनिच्छितता
मग० ५१२५ वेणी० ६१४६ 6 दो प्रकार का
व्यवहार, दुग्दीनीति विवेचनीति के छ प्रकारों में से
एक, दे० नी० द्वैतीभाव और गुण ।

हैचीभाव [हैच + भि + भू + चञ्] 1 द्वैता, दो प्रकार

को अवस्था या प्रकृति 2 दो अर्थ, विविधता,
विद्याभाव 3 सर्वज्ञ, अनिच्छितता द्वैतादोल द्वैता
निलम्बन — भूतद्वैतीभावकातर ममन — शा० १४ बुचिचा
5 विवेचनीति के छ गुणों में से एक (कुछ के मतानुसार
इसका अर्थ है—दो तरह का व्यवहार, दुग्दीपन,
बाह्य में शब्द के साथ मिश्र जैसे सत्त्व रचना — बलि
नीचिचतोर्म्य वाच्यमान समर्थन द्वैतीभावेन
तिष्ठेत् कावांशवदलक्षित दूसरो क मतानुसार
शब्द की सेना में फूट डालना और अपने स बलवान्
शब्द का छोटीर दुग्दियों में मुकाबला करना तथा
आक्रमण द्वारा उसे दुग्दी करना द्वैतीभाव स्वबलवय
विद्या करणम् याज्ञ० ११३४७ पर मिता० तु०
मनु० ७१७३३ व १६० से ।

हैच्यम् [हिचा + क्यञ्] 1 दुग्दी बाल 2 विविधता
विभिन्नता ।

हैच (वि०) (स्त्री०—की) [होय + अच्] 1 टापू में
सत्त्व या टापू पर रहने वाला 2 शेर में सत्त्व रजसे
वर्णा शेर को खाल का बना हुआ या व्याघ्र की आँख
में उका हुआ व शेर को खाल में उका हुई गायी ।

हैचकम् [हिचक् + अच्] दो दल दो गलियाँ ।

हैचायन [हैचायन + अच्] टापू में उत्पन्न वेदव्यास ।

हैच्य / वि० (स्त्री०) व्या, व्यी। [हीर + यञ्] टापू
निवासी या टापू में सत्त्व शि० ११७६ ।

हैचातुर (वि०) [हिचातु + अच्] 1 मानाजी बाला
अर्थात् अम्मदात्री माता तथा लीतली माता २
1 गणेश का नाम 2 अर्यमण का नाम — हुते हिचिचारी
पूजा याज्ञ० इमातुर युधि शि० ११६०

हैचातुक (वि०) (स्त्री० की) [हिचातुक + अच्] (बहु
देग) जहाँ नया तथा नदी दोनों का जल मिली के
काम आता है (तु० देवमातुक) ।

हैचक [हिचक् + अच्] 1 दो रागोद्देशों का एकाकी
मुद्र 2 एकत्र मुद्र व शब्द ।

हैराच्य [हिचाय + क्यञ्] 1 राजाजी में बैठता हुआ
उपनिवेश ।

हैचाधिक (वि०) [हिचर्ध + ठक्] प्रति दूसरे वष होने
वाला ।

हैचिच्यम् [हिचिच + क्यञ्] 1 द्वैतता, दुग्दी प्रकृति
2 विभिन्नता विविधता, भिन्नता ।

ब (वि०) [बा + ड] (समाप्त के अन्त में) रखने वाला, |
समाप्त करने वाला ब 1 बड़ा का विशेषण 2 कुबेर
3 भलाई, नेकी आचार गुण बम् बन दौलत, |
संपत्ति।

बन् कोषोष्णार उत्तर० ६२४।

बन् (चुरा०) उभ० धनकयनि-ते ध्वस्त करना मष्ट |
करना।

बट [ब + टट + क्त] अन् अन्त पश्यम् 1 तरङ्ग तरङ्ग
के पुलङ्ग 2 तरङ्ग द्वारा कटाए गयेका 3 तला
राशि।

बटक [बट + क्त] अन् अन्त पश्यम् 1 तरङ्ग तरङ्ग
के पुलङ्ग 2 तरङ्ग द्वारा कटाए गयेका 3 तला
राशि।

बटिका बटी [बटो + क्त] अन् अन्त पश्यम् 1 तरङ्ग तरङ्ग
के पुलङ्ग 2 तरङ्ग द्वारा कटाए गयेका 3 तला
राशि।

बटिन् (पु०) [बट + इति] 1 अन्त का विशेषण 2 मुन्ना
राशि नी - धनी।

बन् (ध्वा० पर०-धननि) शब्द करना।

बन्तु बन्तुक - का [यस्य यन्त्रम् यन् + उत् + पु०]
बन्तु + क्त] अन् अन्त पश्यम् 1 बन्तु का पीछा
2 लगाना।

बन् (ध्वा० पर०-धननि) शब्द करना।

बन् [बन् + क्त] 1 संपत्ति दौलत धन निर्णय रूपया
(सोना आदि) बल संपत्ति - धन ताजदमुलुमम्
हि० १ (बाल० श्री) जैसा कि लघुधन विधाधन
आदि में 2 (क) मूल्यवान् संपत्ति काई प्रियमय
वा स्निग्धतम पदार्थ प्रियमय निधि - कश्चन
कुलधनीरनुरञ्जनीय उत्तर० ११४ गुरारपाद धन
वाङ्मयम् रत्न० २४६ मानसम् अर्थमान०
आदि (ख) मूल्यवान् प्रिय यन्त्र १०१ ०
3 पूँजी (वि०) दाइ जा ब्याज 4 लट्ट का माल
बपहूत बन्तु ऊपरी आय 5 मूल्यवान् म निज्ज
को प्राप्त होने वाला पुरस्कार ज्ञान म जीव हुआ
पारितोषिक 6 पुरस्कार प्राप्त करने के लिए प्रति
योगिता प्रतिद्विष्टता 7 धनिका लक्ष 8 फाल्गु
अवशिष्ट 9 (गणि० म) जोड़ की राशि (वि०
अन्)। सम० - अधिकार संपत्ति में अधिकार,
उत्तराधिकार में संपत्ति पाने का हक अधिकारिन्,
-अधिकृतः 1 कोषाध्यक्ष 2 उत्तराधिकारी -अधि-
कृत्य, अधिक -अधिकृति, अधिक 1 कुबेर का
विशेषण कि० ५११६ 2 कोषाध्यक्ष, अपहारः
1 अर्थात् 2 लट्ट अलोट का माल अधिक (वि०)
धन के उपहारों से सम्मानित मूल्यवान् उपहारों से
सज्जित किंवा गया, मानवना बनाविता कि०

१११२ मालहार, बनादय, अविन् (वि०) बने-
ल्लुक लालची कर्तुल, आदय (वि०) मालहार
धनी दौलत मद -आचार बजाना, -ईसा, ईश्वर
1 कोषाध्यक्ष 2 कुबेर का विशेषण -अन्त (पु०)
धन की गयी -पु० अधीयन् एविन् (पु०) साह-
कार जो अपना कृपा मांग -केवि कुबेर का विशेषण
अय धन की हानि धनसत्वे बनेवि बाठराणि -
पञ्च० २१७८ मन्, यविन् (वि०) धन का
पयसा जातम् २४ प्रकार की मूल्यवान् संपत्ति
लभन्त द्रव्य - इ 1 अन्त का दानवील व्यक्ति
2 कुबेर का विशेषण रत्न० १२५, १७८०
3 अन्त का नाम अनुक्त रावण का विशेषण -रत्न०
१२५० ८१ इह अर्थात्, यविन् 1 -अविन्
(पु०) आग -यति कुबेर का विशेषण -अन्त
धनपतिमुहानुत्तरणम्दीयम् मेघ० ७५७ -बाल
1 कोषाध्यक्ष 2 कुबेर का विशेषण -विशालिका,
विशाली धन का रक्षक धन का तुलना लालच
ल दुराग प्रयोग मूल्यवान् -अह (वि०) धन को
पामडा मूल्यवान् मूल्यवान् पूँजी लोभानुष्णा निम्न,
अय 1 अर्थ 2 अण्डय स्थानम बजाना हर
1 उत्तराधिकारी 2 चार 3 एक प्रकार का मुद्रक
द्रव्य।

बन्क बनाया [बन्ध काम धन + क्त] कुन्ना,
लालच लालसा।

बन्क [धन + वि + क्त] 1 धन का नाम
(नप की व्युत्पत्ति) मन् अन्तपदान् जित्वा वित्ता
शय केवलम् मध्ये धनस्य तिष्ठति तेनाहुर्वा
धनः अयम् -मन्त्र० 2 अन्त का विशेषण।

बन्क (वि०) [धन अनु] धनी दौलतमद।

बन्क [धनमादयन्वेनाति अस्य ठन्] 1 धनवान् या
दौलतमद पुरुष 2 महाजन साहूकार दाण्डेडी
कल्याणम् मनु० २५१ याज्ञ० २१५ ३ धनि
4 ईमानदार शापारा ५ पित्र्य वृक्ष।

बन्क (वि०) (रत्न०-नी) [धन + इति] धनी मालहार,
दौलतमद (पु०) 1 दौलतमद 2 साहूकार बाह०
११८४१ मनु० ८१६१।

बन्क (वि०) [धन + इष्टम् अविन् की उ० अ०]
अत धनी धा तेहसी नान् (इसमें चार नकलें
का पुत्र है)।

बन्क बन्का [धनमस्ति अस्व -बन् + क्त + डीप्]
तलबी, अजान लबी।

बन् [धन् + उ] धन, (सम्बन्ध 'धन्' का ही रूप)

बन्क (वि०) [बन् + उति] 1 धन से सज्जित (मनु०)।

धनुष, - धनुषमाध सभयन बाणम् कु० ३१६६
इसो प्रकार इन्द्रधनु आदि (बहुव्रीहि मयाम के अन्त
में धनुष के स्थान में धन्वन् आदेश हो जाता है
धनु० (१८) २ बार हाथ के बराबर बाई की माप
याज्ञ० २११६७ धनु० ८१-२३ ३ वृत्त की माप
४ धन (१०) ५ मत्स्यन धनु० धन्वन् । सम० कर
(६०) - धनुष्कर धनुष से सुसज्जित (१२) धनुष
बनान वाला, - काण्डधम (धनु धाम्म) धनुष और
बाण लब्धम् (धनु लब्धम्) धनुष का भण्ड मय १९
- धनुष (धनुष) धनुष की डोर - यह (धनुषह) ।
धनुषारो ज्या (धनुष्या) धनुष की डोरों

अनवरत धन ग्यापयन्तम् धनुषम् - ज्ञ० २४-६२
धनुर्धम (धनुर्धम) धनुष - धनु (धनु) (धनुष) (धनुष)
(अदि) धनुषी - धनुष ० ११२२० ३३१२० ०
२११२० ११२३ ११६ ३३ - धानि (३३०) धनुष्पाणि
धनुष से सुसज्जित हाथ में धनुष लिए हुए - धानि
(धनुष्पाणि) धनुष की भाँति टटो रखा वक्ता, - बिद्या
(धनुर्विद्या) धनुर्विज्ञान - वृक्ष (धनुर्वृक्ष) १ धीम
२ प्रवचन का वृक्ष वेद (धनुर्वेद) बार उद्देशों
में से एक धनुर्वेद, धनुर्विज्ञान ।

धनु (धनी०) [धन + ऊ] धनुष कमान ।

धनुष (वि०) [धनु + धन] १ धन प्रदान करने वाला
- धनु० ३११०६ ४११० २ दीनप्रद धनु माल
दार ३ सौभाग्यशाली भाग्यवान् यदाभाग प्रद
शाली - धन्य जीवनमय भाग्यमय - भावि० (१०)
धन्या केय मय्यश ते धियमि - मद्रा० ११३ ४ अरु
उत्तम, गुणवान् - धन्य भाग्यवान् या सौभाग्यशाली
किम्मा वाता आकित - धन्यवान् धन्यवान् धन्यवान्
धन्यवान् - ज्ञ० ३१३३ धनु० ११११ धन्य कार्या १
विक्रिया कलवते प्राप्ते गी धीन ११३० २ कर्ण
नास्तिक ३ जादू, - धन्या १ धन्यो २ धनिया धन्य
दौलत, कोष । सम० - बाह १ माधुवाद दन्त क
लिए वाला जाने वाला शब्द माधुवाद २ अग्रा
मृति वाहवाह ।

धन्यधन्य (वि०) [धन्य + धन + धन्य मय] अपने प्राप्ता
भाग्यशाली मानने वाला ।

धन्याकम्, धन्य । आकत नि०] १ धन्य का पीछा
२ धनिया ।

धन्यम् [धनु + धन] धन्य (धन्य साहय म विज्ञ
प्रयोग) । सम० - धि धनुष रत्न की पीढ़ी ।

धन्यम् (धनु० ननु०) [धनु + धन] १ सुखी अमीन
मनुष्यि रत्न की पीढ़ी धन्य धन्य धन्य धन्य मङ्गल
महादेवादि - भावि० ११३११ मद्राट्ट कडो भूमि ।
सम० धन्यम् मद्र (जो चारा थोर फेंकी मनुष्यि क
कारण अवश्य हो) - धनु० ३३० ।

धन्यस्तरम् (ननु०) बार हाथ के बराबर दूरी की माप,
धनु० दक्ष ।

धन्यस्तार (धनु धिक्साशाश्व इत्यन्तमृच्छति - धनु ।
धन्यस्तार ३ दक्षता की पीढ़ी का नाम, (धन्य
है कि धन्यस्तार समुद्रमयन क धन्यस्तार अमृत हाथ
में लिए हुए समुद्र से पालन म धनु ननुशाश्व ।

धन्यस्तार (११३) (११३) धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३)
धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३)
धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३)
धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३)
धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३)

धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३) ।

धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३) ।
सम० धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३)
धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३)
धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३)
धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३)

धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३) ।

धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३) ।
धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३)

धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३) ।
धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३)

धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३) ।
धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३)

धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३) ।

धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३) ।
धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३)
धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३)
धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३)
धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३)

धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३) ।
धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३)

धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३) ।
धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३)

धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३) ।
धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३)

धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३) ।
धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३)

धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३) ।
धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३)

धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३) ।
धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३)

धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३) ।
धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३)

धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३) ।
धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३) धन्यस्तार (११३)

क्षेत्र समवेता युक्तवः—मग० १११, --ब्रह्मः वैशाख के महीने में ब्राह्मण को प्रतिदिन दिये जाने वाले सुगन्धित अन्न का घडा, --ब्रह्मवृत् (पु०) बौद्ध या जैन, --ब्रह्मवृत्, --ब्रह्म कानून का पालन, धार्मिक कर्तव्यों का सम्पादन कु० ७।८३, धारिन् (वि०) ब्रह्मवृत्तार करने वाला, कानून का पालन करने वाला, सद्गुणी, नेक—रघु० ३।४५, (पु०) मज्झिमी धारिणी १ पत्नी २ गतिवन्ता मनी माध्वी पत्नी, --चित्तमन्, --चिता भलाई या सद्गुणों का अध्ययन, नैतिक कर्तव्यों का विचार, नीति-विमर्श, --ज १. धर्म से उत्पन्न, वैष, पुत्र, असली बेटा नु० मनु० १।१०७ २. युधिष्ठिर का नाम, --जन्मन् (पु०) युधिष्ठिर का नाम, --जिज्ञासा धर्म गणन्यों पूछताछ, महाभरण विषयक पूछा—अथानोधर्मजिज्ञासा—वै०, --जीवन (वि०) जो अपने वर्ण के नियमानुसार निश्चित कर्तव्यों का पालन करना है, (न) वह ब्राह्मण जो दूसरों के धर्मानुष्ठान में साहाय्य प्रदान कर अपनी जीविका चलाता है, --ज (वि०) सही बात को जानने वाला, नागरिक तथा धार्मिक कानूनों का जानकार—मनु० ७।१४१, ८।१७९, ९।१२७ २. स्वायशील, नेक, पुण्यात्मा, --स्वाण जाने धर्म का स्वाग करने वाला, धर्मव्युत्, हारा (पु०, ७० व०) वैष पत्नी—स्त्रीणां भर्ता धर्मदायाय पुंसां—मा० १।१८, --होहिन् (पु०) गम्यत धातु बृद्ध का विशेषण, --ध्वज, ध्वजिन् (पु०) धर्म के नाम पर पालन करने वाला, छद्मवेशी, मन्थन युधिष्ठिर का विशेषण—आष कानूनी अभिमानकः वैष स्वामी, --नामः विष्णु का विशेषण, निवेशः धार्मिक भक्ति, निष्पत्ति (स्त्री०) कर्तव्य का पालन, नीति-पालन, धार्मिक अनुष्ठान—पत्नी वैष नी धर्मपत्नी—रघु० २।२, २०, ७२, ८।७. याज्ञ० २।१०८, --वषः भलाई का मार्ग, चाल चलन का सम्भार, --वर (वि०) धर्मपरायण, पुण्यात्मा, नेक, भला, --वास्तवः नागरिक या धार्मिक कानूनों का अध्यापक, --वास्तुः कानून का रसक (आल०) से इसे 'दर्श' कहते हैं), वस्तु, सत्ता, नलवार, --वीडा कानून का उत्कर्षण करना, कानून के प्रति आराध, पुत्र १. धर्मसम्मत पुत्र, (जो कर्तव्य ज्ञान की दृष्टि से उत्पन्न किया या माना गया है) केवल कामधामना का परिणाम न हो २. युधिष्ठिर का विशेषण, प्रवचन् (पु०) १. धर्म का व्याख्याता, कानूनी सलाहकार, २. धार्मिक शिक्षक, धर्म-प्रचारक, --प्रवचनम् १. कर्तव्य-विज्ञान—उत्तर० ५।२३ २. धर्म की व्याख्या करना, (न) बृद्ध का विशेषण, --वा (वा) निजिकः १ जो अपने सद्गुणों से व्यापारी की भाँति लाभ उठाने का प्रयत्न

करता है २. लाभदायक व्यवसाय को करने वाले व्यापारी की भाँति जो पुनस्कार पाने की इच्छा से धार्मिक कृत्यों का सम्पादन करता है, --वर्षिणी १ वैषभगिनी २ धर्मगुरु की पुत्री ३. धर्मबहन, अनुरूप धार्मिक कर्तव्यों का पालन करते हुए जिसको बहुत मान लिया जाता है, भागिनी सारणी पत्नी, भाषकः व्याख्यानदाता जो महाभारत तथा भागवत आदि ग्रन्थों की व्याख्या सार्वजनिक रूप से अपने श्रोताओं के सामने रखता है, धातु (पु०) १ धर्म-शिक्षा का महाप्राप्ति, धर्म का भाई २ वह व्यक्ति जिसको अनुरूप धार्मिक कर्तव्यों का पालन करने हुए, भाई मान लिया जाता है, --महाभाषः धर्ममयी, धार्मिक मामलों का मंत्री, --मूलम् नागरिक या धार्मिक कानूनों की नींव, वेद, --मूलम् सत्यम्, इत्ययम्, --मूल विष्णु का विशेषण, रति (वि०) भलाई और स्वाय में प्रमत्तता प्राप्त करने वाला, नेक, पुण्यात्मा, ध्यानील रघु० १।२३ --राज (पु०) धर्म का विशेषण, राजः १. धर्म २ दिन ३ युधिष्ठिर, और ४ राजा का विशेषण, रोचिन् (वि०) १. कानून के विरुद्ध, अवैध, अव्याप्य २ अनैतिक, लक्षणम् १ धर्म का मूल चिह्न २ वेद, (जा) सीमासा दर्शन—लोचः १ धर्मापरा, अनैतिकता, कर्तव्य का उत्कर्षण—रघु० १।७६, लक्षण (वि०) कर्तव्यशील, धर्मनिष्ठा, --रतिन् (वि०) त्याग परायण, नेक, --वास्तवः पुणिमा का दिन बह्वर्णः १. गित का विशेषण २ वैसा (धर्म की मसारी), विष् (वि०) (नागरिक तथा धर्म विषयक) कर्तव्य का ज्ञाना, --विधिः वैष उपदेश या आदेश, विष्णव कर्तव्य का उत्कर्षण, अनैतिकता, और (अर्थ० शा० में) भलाई या पवित्रता के कारण उत्पन्न और रस, शौर्यमहित पवित्रता का रस, रस० में निष्ठापित उदाहरण दिया गया है—मार्ग विषयमेतु राज-लक्ष्मीहारा पतन्त्रवका कृपालघारा, अपहृतनुरा विरः कृपालो मम तु मर्तिनं मनगपेयु धर्मात् ।

बृद्ध (वि०) सद्गुण व पवित्रता की दृष्टि से आगे बढ़ा हुआ (बृद्ध) —कु० ५।१६, वैतलिकः वह जो अपने आपकी उदार प्रकट करने की आशा में, अवैधरूप से कमाये हुए धन को दान कर देता है, --शास्त्रा १ व्यापार्य, व्यावहारिक २ धर्मवि-मत्ता, शास्त्रम्, --शास्त्रम् धर्मसंहिता व्यावहारिक हि० १।१७, याज्ञ० १।५, शील (वि०) व्यापशील, पुण्यात्मा, सहायारी या मददगार, --संहिता धर्मशास्त्र (विशेष रूप से मनु, याज्ञवल्क्य आदि ऋषियों द्वारा रचीत गृन्थिणी), --सङ्गः १. सद्गुण या स्वाय से अनुप्राय या भावसि २. पाण्डित्य, --सत्ता व्यापार्य,

दवाति दीपः—मामि० ११७४, रघु० २१७, अमर
२३१७, मेघ० ३६, भर्तृ० ३१७६, रघु० ३१९,
भट्टि० २११, ४१६-१ शि० ११३, १०१/६, कि०
५१५ ३. समालना, निवाहना धाम रचना,—गाम-
वास्यत्कष नामो मृधालमुद्रमि फलै कु० ६१०/
९ सहाग देना स्थापित रचना सपदिनिमयेनेभी
दधनुर्भवनद्वय रघु० ११२६ १० पैदा करना रचना
करना, उत्पादन करना, उत्पन्न करना बनाना—
मृधा कुडमलिताननन दधनी वायु स्थिता तस्य मा
अमर ७० ११ सहाग, भागना घन्ना हाना-शि० १,
३२ ५६ १२ सम्पन्न करना दा को भाग
इस धानु के अर्थ भी दूसर शब्दों के साथ जुड़ने में
विविध प्रकार के हो जाते हैं, उदा० मन वा,
मतिवा, धिय वा, मन को लगाना विचारों का अंगाना
वृक्ष संकल्प करना धन धा ग रचना प्रकट
होना, कर्म कर धा, कान पर हाथ रचना,
अस्तिस्मृ टगना, धोला देना भगवान् कुमुमायुध
रथा चन्द्रमसा च विषममनीषाभ्यामस्तिस्मृथायन कामि
जनसाध—श० ३ विक्रम० २ अक्षर , १ मन न
रचना, मानना ग्रहण रचना तथा विषयभूत ईश्वर
मामागर्भानुसंहि रघु० १५८१ २ अने आपकी
छिपाना, गुप्त रचना ओझल होना (म० ६० १०)
—भट्टि० ५१३२, ८१३१ ३ टकना, छिपाना, दृष्टि में
ओझल करना लपेटना, टाँकना (श्री ३० मा) शिनु
रत्नदंष्ट्र कीटि सी स्तूतसमाधिभि—महा० अनुमम

१ छुड़ना, छुछताछ करना अन्वेषण करना जाय
पडताल करना २ सचेत होना, अथन आपकी गान
करना ३ उत्पन्न करना सकत करना लक्ष्य बनाना
४ योजना बनाना, क्रमबद्ध करना क्रम में रचना
अधि—(क) कथा अधि का अ लुप्त हो जाया
है) । (क) बन करना, भेजना ध्वनित मधुप-
सबूहे अक्षयमधिविवाधि—मात० ५, इसी प्रकार-वर्णो
नयन-विषयानि (ख) टकना छिपाना गुप्त रचना
—आयो मुबं परिभवविधौ नाभिमान पिपत
—प्रसार० १७, प्रसारविहित विभक्त० १०२
शि० ११७६, भट्टि० ७१६९ २ टाकना, बाधा हाडना
प्रतिबन्ध लगाना दूधझुगिहितद्वार पातालमार्थनि-
ष्ठति—रघु० ११८० अधि (क) छुड़ना, बालना
बनाना कु० ३१६३ मनु० ११४२, भट्टि० ७१६८,
अम० १८१६८, (ख) १. सकत करना, व्यक्त करना,
व्यक्त कृतज्ञाना प्रस्तुत करना—साक्षात्सकैतिन
वार्ज्यमभिषत्ते न वाचक वाक्य २ तत्राम येनाभि-
दवाति सत्यम् २ अभिधान होना, पुकारना, अभिसम्-
१. किसी पर फेंकना, निज्ञाना लगाना, (गीर आदि
का) लक्ष्य बनाना २ ध्यान में रचना, (मन में)

मिथाना बनाना, सोचना—अध्ययकमभिसंधाय
—महावी० ५, अभिसंधाय तु फलम् मग० १७१२,
२५ विक्रम० ४१२/३ ओझा देना, टगना अथ
विज्ञानेक सकलमभिसंधाय मा० १११४ ४ अपने
पक्ष में कर लेना भिन्न बना लेना दूसरी का विषय
बन जाता तात्पर्याभासवस्थान् सामांशविषयकम्
मनु० ७११५९ (वशोक्तुयान्) ५ प्रतिज्ञा करना,
परदान करना ७ जोहना, अम्मा नीचे रखना, नीचे
फेंकना, अब मावधान होना ध्यान देना कान देना
उना वधना इबराज महावी० ६ आ (प्राप
५१० म) १ रचना करना उद्गता जनपदे न
गद परमादधी रघु० १४ मग० ५१४० श० ६१३
२ उपाग करना जमाना किसी की ओर मकेत
करना पोतपात्रमाधीत्य पल्ल श० १ मयदेव मन
य मय अग० १५० आशीर्वाता श्रेय धर्म धधी
—श्री ५२ ३ उत, आधिकार में करना बहुत
रचना गर्भमात्रण गजो रघु० २१७५/नरै बहन
किया, अथन इनकमयानपत्रलक्ष्मी कि० १३९
१ शो ३५ धारण करने हैं) कु० ७११६, ४ ओझा
रचना यामना मजगा देना शीत मरवाहन
मोमयार—म० १५५ ५ पै, कमी, उत्पादन करना,
मूजन करना उत्पन्न करना (भय या आश्चर्य)
छायास्वरूपिण दूध अयगदधाना श० ३१५३,
शि० ६१२० ६ देना समर्पित करना रघु० ११/१
७ नियुक्त करना स्थिर करना अथवा बाधाय
विवाग्माध्ये रघु० ७१२० ८ सम्पन्न करना कु०
११४७ ९ अनुष्ठान करना (अन आदिका) पालन
करना आचित, भेद खोलना प्रकट करना (अथ-
माहित में बहुत प्रयोग नहीं) उप १ रचना,
उठाना नीचे रखना अन्तर रचना अधिबान् बाहु-
मुपचाय शि० ११५४ हृदि चैनामुपचामुसर्हसि
रघु० ८१७७, (हृदयस्थिर करने के लिए) उपरहित
शिनि ताममधिया मृकुलजालप्रभाभन किमुके-रघु०
११३१, कु० ११६६२ निकट रचना, (घोरे आदि
का) जोतना मजारी० ६१५६ ३ पैदा करना, निर्माण
करना, उत्पादन करना मृच्छ० ११५३ ४ ऊपर
पालना मौपना मभा-ना, देख देख में करना
—तदुर्गाशत्रुद्वय—रघु० ७१७१, ५ नरिये के स्थान
में प्रयुक्त करना—वाममूजमुपचाय दश० १११
६ काम में लगाना, अध्ययनी करना, प्रधान करना
—किया हि दस्तुपहिता प्रकीर्तति रघु० ११२९
७ छुड़ना, छिपाना ८ देना, बनाना, लगाव देना,
उठा, १ निकट रखना, ऊपर रखना २ बहुतना
३ पैदा करना, मर्दन करेना, उत्पादन करना
—मनु० ३१८५, शिरस्—, १ छिपाना, गुप्त रचना,

2. (आ०) कृत्त होना, जोल होना -अभिपूय-
मस्तस्य कृष्णमेघस्तिरोदये -रघु० १०।४८, ११।११,
विरह के नी० भी देखिये मि०, 1 रचना, घरना,
बड़ देना--शिरमि निदधानोऽञ्जलिपुटम् मनु०
३।१२१, रघु० ३।५०, ६२, १३।५२ मि० १।१३
2. अरोसा करना, सौरना. देख रेस में रचना-निदधे
विश्रयाधसं चाये सोता व लक्षणे-रघु० १२।४४
१।४७६ 3. देना, समर्पित करना, जमा कर देना-दिनान्ते
निहित तेजः सविशेष हुताशनः-रघु० ६।१ 4. देना
देना, शास्त्र करना, रोक देना -साहित्ये निहित रजः
क्षिप्तो षट्० १.5 शस्त्र करना, (भूमि के अन्दर)
गाड़ देना, छिडाना--मनु० १।६८, परि० 1 (कर्मप्रा-
दिक) रहना धारण करना--ब्रह्म स मन्त्रा परित्याग
रोगी-रघु० ३।११ 4 अहंता भना देना घेरा
होम सेना 3, किसी की ओर मकर करना, पुरा
मिर पर रहना या धारण करना तुलसीदास पुराणपर
पाम स्थायभुव ययु-रघु० ५।१, रघु० १२।४७
2. कुलपुरोहित बनाना प्रणि, -रचना बोध करना
या भिटा देना, साध्याग प्रणत होना -प्रणिहितशिरम
वा कान्तभाइविराघम् गालवि० २।१२ तत्माश्रयम्
प्रणिधाय कायम् भग० ११।२४ 2 जड़ना, अदर
रचना, अन्तर भिटाना, भेटी में हल करना यदि
मणित्वपूर्ण प्रणिधीयते -पञ्च० १।३५, अने० पा०
3. प्रयोग करना, स्थिर करना, किसी की ओर सकल
करना -मत् प्रणिहितैःशपास -रघु० १५।४४, भट्टि०
६।१४२ 4 फैलाना बिगार करना सामान्यतः
प्रणिहितभूय निदयास्नेहहेतो भग० १०५, नदी
व्रति प्रणिहिते तु करे प्रियेण मम्य शर्पाम यदि
किञ्चिदापि स्मरामि--राज्य० ४ 5 (चर के रूप में)
बाहर भेजना, प्रतिलि 1 प्रत्योक्त करना सार्पयन
करना, मरम्मत करना, बदला मना, उपाय करना,
विच्छेद लग उठाना अर्थात् एव शय तु मे कवि-
स्फुटय येन स प्रविर्बोधित उत्तर० १ शिष्टमेव
कस्मात्प्रतिविहितमायेण मुद्रा० ३ 2 मरक्का
करना, कम से रखना, सजाना 3 प्रेषित करना,
बेचना, प्रवि -- 1. बाँटना 2. करना, बनाना, बि -
1. करना, बनाना, घटित करना, प्रभावित करना,
सम्पन्न करना, अनुष्ठान करना, पैदा करना, उत्पादन
करना, उत्पादन करना यथाकम पुनरावृत्ति का क्रिया
वृत्तेश पीर सङ्गीर्षधरा सः--रघु० ३।१० तपो-
देना विशेषायुः भट्टि० १९।२, विषयासुखेना
परमरमणीयां परिणमिष मा० ९।७, प्राय शुभ
व विदधायशुभ व जन्मो सर्वकुपय यववती भवित-
व्यवैव १।२३, ये द्वे कान् विधना ग० १।१, पैदा
करना, उत्पादन करना, समय का विनियमित करना

—तस्य तस्याबलां श्रद्धां तामेव विदधाम्यहम् भग०
७।२१ रघु० २।३८, ३।६६, (यह श्रद्धा 'विधा' के
साथ जुड़ने वाले शब्द के अनुसार और जो अधिक
अदल-बदल किए जा सकते हैं, तु० 'कु') 2. निर्धा-
रित करना, विधान बनाना, निर्दिष्ट करना, नियत
करना, स्थिर करना, आदेश देना, आज्ञा देना-प्राह-
नाभिर्वधनान्मयो ज्ञानकर्म विधीयते मनु० २।२९,
२।१९, याज्ञ० १।७२, शुद्धस्य तु सर्वार्थे नाम्ना भार्या
विधीयते ६।१५७, ३।११८ 3. कर बनाना, शकल
देना, मज्जित करना, (सर्पण करना--त वेधा विरंचे
नून मज्जभूतमसाधितम् -रघु० १।२९, अत्रानि चमक-
रन्ते स विधाय नून काले वष घटितवानुपदेत वेत
शुभाः ० 4 निर्गुल बनाना, प्रस्तिनयन करना
(मन्त्रा बोध का) 5 पहनना, धारण करना पञ्च०
१००२ 6 स्थिर करना, (मन्त्र आदि का) लगाना
भग० १००४ मनु० ३।५४ 7 कमबद्ध करना,
परिस्थित करना 8 तैयार करना स्मरण करना,
स्थिर 1 बीच में रहना बीच में रहना, हस्तक्षेप
करना प्रेक्ष्य स्थिरा महती अवस्था देहम् रघु०
१५।७ 2 स्थानाः ठहरना, ठहरा होना-सायव्यव-
हितमस्तः सः ५. -शब्द- भराभा करना,
स्थिताना रचना (कर्म के साथ)--त अद्वयवर्णि
भार्यम्-मुच्छ० ३।७ अर्थे विदधानोपमायुके दास्य-
किमपि कृष्णधर्मि-रघु० ११।४७, सख- 1 स्थाना,
पराज लाना मनुष्य बनाना, मिला देना यदि
उदकत संधीयते ततो मसणोर्गानि कुल्लूकं
2 बाँट करना मित्रता करना, मधि करना--शुभला
त हि मध्याह्न्यदिलच्छेतानि मधितान् ३।१८८,
वाण० १५०, काम० १।४१ 3 स्थिर करना, सकल
करना संधे दाम्प्रकाशकाम् रघु० ११।६९
4 (किसी अन्न या तोर आदि का) घनुष पर ठीक-
ठीक बैठाना, या ठीक में लगाना-धनुषयोध समधना
बाणम्-रघु० ३।६६, रघु० ३।५३, १२।५७ 5 उत्पादन
करना, पैदा करना पर्याप्त मयि रत्नोपचमराय
सधते गगनतलप्राणवेग गा० ५।३, मधने भुग-
मर्गति हि मर्दिदम् हि० ५।५१ 6 मुकाबला
करना, मुकाबले में सामने आना जतमकोर्धम सधते
प्राकटस्थो धनुषं--पञ्च० १।२९ 7 तुषारना,
म-त करना, स्वरूप करना 8 कष्ट देना 9 बहण
करना, सहारा देना, बाधदोष समाधना 10 अनुदान
देना, संनि-- 1. रखना, एकत्र रखना,--मनु० २।१८६
2. निरुद्ध रखना--ग० ३।१२, 3. स्थिर करना,
निर्दिष्ट करना--रघु० १३।१४४ 4. निकट करना
पहुँचना- प्रेर० निकट लाना, एकत्र सहण करना,
समा-- 1 एकत्र रखना या धरना, मिलाना, मनुष्य

करना 2. रखना, बरना, स्थापित करना, लागू करना
—पक्ष मूलि समाधत्ते केसरी भसदन्तिन पक्ष० १।
३२७ 3 जमाना, अभिषेक करना, राज्यही पर
बिठाया रघु० १७।८ 4 समाध्वस्त होना (मन
को) धातु करना मन समाधाय निवृत्तशोक
—रामा० न क्षयात् समाधातु मनी मदनवेपितम्
भाग० 5 संकेचित करना, (अन्वि या मन आदि
को) एकाग्र करना,— भय० १२।९, भर्तृ० ३।४८
6 संतुष्ट करना, (शका का) समाधान करना आलेप
का उत्तर देना इति समाधत्ते (टीकाभा में)
7 भरम्भत करना सुधारना ठीक करना हटा देना
—न ते शक्या समाधातुम् हि० ३।३७, उत्पन्ना-
मापद यस्तु समाधत्ते स बुद्धिमान् ३।७ 8 विचार
करना भट्टि० १२।६ 9 मोपना अर्पण करना
हस्तान्तरित करना 10 पेश करना, कार्यनिष्ठित करना
सम्पन्न करना (निम्नादिन इलाक म मोपमं वा
धातु के श्रमों को विषय किया गया है अधिन
कापि मुले सन्ति सन्ती प्यधिन कापि मराज्जले ततो
व्यधिन कापि बुद्धि श्रज्जान्ति न्नाधिन तापि मृतो
स्तानी नै० ४।१११ इससे भी अच्छा निगर्भाकन
अनन्तव का इलाक विधान परमार्थी विमर्ष व
विधान नवभूदा पवान तीर्षानाममलपरिग्रान विजगत,
समाधान बुद्धय गलु निराज नमोऽध्या भिरामाधान
न परिहृत्य त्व नव वयु गगा० १८)।

बाक [बा + क उणा० तस्य नष्टम् । 1 बिल
2 आचार आगय 3 आहार, मात 4 स्पृणा लभ
त्यत्र ।

बाटी [घट् + घञ् + डीप्] पावा आक्रमण
बाणक [बा + आणक] एव मोने हा मिकर (दीनार हा
अव)

बातु [बा + भुत्] मषटक या मूल भाग अवग्रह 2 मूल
तन्त्र, मूक या तत्त्व मूक मायवा अर्थात् पृथिवी,
आप, तेजस्, वायु और आकाश 3 रस मुख्य रस्य
वा रस, दरीर का अनिवाय उपादान (यह गिनती
में छान माने बात है रसासुक्ष्मात्ममेवोर्जिषमज्जा-
मुकापि यतव हई वार केद, स्वर्ष और त्यापु
को मिला कर दम मान लिये जाने हैं) 4 दरीर के
स्त्वितिविधायन तन्त्र (अर्थात् वात, गिर, कफ
त्रिदोष) 5 लज्जित पदार्थ बातु, कण्ठी बातु—व्य-
स्ताछरा बातुत्तेन यत्र, कु० १।७, स्वात्मालिख्य
प्रगवदुपिना बातुरागि शिलाया मेघ० १०५, -रघु०
४।७१, कु० ६।५१ 6 क्रिया का मूल, भूवादयो
बातव पा० १।३१, पदवादध्ययनार्थस्य वातो-
रभिरिवाभवन्—रघु० १५।९ 7 आत्मा 8 पर-
मात्मा 9 ज्ञानेन्द्रिय 10 पाश् महाभूर्वा का वृण

अर्थात् रूप, रस, गन्ध, स्पर्श और मन्त्र 11 हृद्दी ।
सम० उपकः सङ्घिया, बाक् काञ्चीक, वृ-कासीकम्—
कसीक, कुसक—(वि०) बातु के कार्य में दक्ष—किया
धातुकार्मिकी, धातुकर्म, क्षान्ति, धातुविज्ञान—अवः
शरीर के तन्त्रों का नाश, अयि रोग, अन् शिलाबीत,
शैलज तेल—आयकः सुहागा,—वा बाध पीष्टिक रस,
दरीर के सात मूल उपादानों में मुख्य उपादान
—बाठ पाणिनि की व्याकरण पद्धति के अनुसार बनी
धातुभा को सूची (पाणिनि के सूत्रों के परिनिष्ट के
रूप में धातु पाठ, पाणिनि निम्न एक आवश्यक
सूची हैं) धातु (पु०) पहाड मलम् 1 शरीरस्थ
धातुओं के मूल के अपवित्र ह्वात्तर 2 मोमा बाहि-
कम् 1 एक उपादान सोनामकवी 2 लज्जित पदार्थ
भारत (पु०) गवक राजक वीय,— बल्लभम्
मुहागा बाह् स्त्वितिविज्ञान धातुविज्ञान बाहिन्
(पु०) स्त्वितिविज्ञाना स्त्वितिविज्ञान (पु०) गवक—शेखरम्
जामाम गवक का पेशाव शासनम्, सनभम्
मोमा बाधयम अत्र ३।१०५ (त्रिदोष मयः)।

धातुमत् (वि०) धातु—धनुष] धातुश्रम मयः हुआ धातु
मयम् । सम० ता धातुभा का बाहुम्य, कु० १।४,
धातु (पु०) धा + धृप् । 1 निम्न 3 रचयिता, उपादान
प्रणेत 2 धरण करने वाला सधारक सहारा देने
वाला 3 मूर्ति के रचयिता ब्रह्मा का विशेषण
भय दुर्जनचनर्द्धि—अरणे धन पि धनदायक—हि०
१।१६१ रघु० १३।६ शि० १।१३ कु० ७।४४
वि० १०।३ 4 धातु का विशेषण 5 आत्मा
6 ब्रह्मा की प्रथम सृष्टि करने के कारण सत्त्वविधा
के नाव, तु० कु० ६।१७ 7 विवाहित स्त्री का प्रेमी
व्याभिचारी ।

धात्रम् [धा + ण्टल्] बर्तन, पात्र, ।

धात्री [धात्र डीप्] 1 दाई धार उपमाता उवाच
गात्रा प्रवर्मादिन वच रघु० ३।२५ कु० ७।५
2 माता—धात्रा० ३।८०, 3 पृथ्वी 4 यौवन वा वृक्ष ।
सम० पुत्र धाय का पुत्र, धर्म भाई 2 अभिनेता,
—कलम् आदित ।

धात्रेयिका, धात्रेयी [धात्रेयो + वृत् + टाप्, ह्रस्व, धात्री
इक् डीप्] धात्रेयुक्ता धात्रेयिकायाश्चतुर वचदध
मा० १।३२, कश्चिन्मन ना भालतीचात्रेय्या लब्ध
ज्जिकवा मा० १२ धाय, वृष मिलाने वाली धाय ।
धानम्—नी [धा त्यट् धान + डीप्] आचार, पात्र,
गद्दो, स्थान जमा कि ससीधानी, राजधानी, वम-
धानी ।

धाना. (स्त्री० व० व०) [धान + टाप्] धुने हुए जी वा
चावल, नीर 2 मत्स्य 3 जनावर, अन्य 4 कच्ची,
अकुर ।

चानुदंष्ट्रकः, चानुष्कः [चनुदंष्ट्र + ठक्, चनुप् + ठक् + क]
तीरंदा, (चनुप् के द्वारा अपनी जीविका कमाने)
वाला **चनुदंष्ट्र**—निमित्तादराद्वेषोर्वाचानुस्वयेदं वणि-
ताम्.—सि० २।२७।

चानुष्कः [चनुप् + ध्यञ्] वसि ।

चांधा (स्त्री०) इलायची ।

चान्मम् [चान् + यन्] 1. अनाज, अन्न, चावल 2. घनिया
(सत्य और बान्य, तथा तड़ुल और अन्न की भिन्नता
के लिए दे० तच्छन्) । सम०—अम्सम् माइ मे
तैवार को हुई काजी, अर्थः चावल या अनाज के रूप
में घन, अस्थि (नपु०) तुल या भूसी, बू या
बोकर—उत्तमः बड़िया अन्न अर्थात् चावल— कस्कम्
1. छिन्का (अन्न का), घान्यन्वा 2 भूसी, बोकर,
पुआल, —बोझ—बोझकम् अनाज की खली—अंशम्
अनाज का अंश, —चयसः बोला, बिहवा,—स्वच्
(स्त्री०) अनाज का छिन्का, —साधः अनाज का
व्यापारी,—राजः जौ,—बर्धनम् व्याज के लिए
अनाज उधार देना, अनाज की मुदबोरी,
—बीजम् (बीजम्) घनिया,—बोर उड़द (माष) की
दाह, बीर्यकम् अनाज को बाल,—जूकम् अनाज
का मिठी दूध,—सारः कूट पीट कर निकाला
हुआ अन्न ।

चांधा, चाण्पाकम् [चान् + टाप्, स्वाच् कन् च घनिया ।
चाण्पा (वि०) (स्त्री०—नी) [चन् + अन्] मर-
भूमि का, मरुस्थल में विद्यमान ।

चानकः [चानक पयो०] एक माछे की तोल ।

चानम् (नपु०) [चा + मनिन्] 1 आवास—स्थान,
गृह, निवासस्थान, घर—नुगासाह पुरोधाव घाम स्वाय-
भुव ययु, कु० २।१, पुष्य यायास्त्रिभुवनसुरोधाम
अण्डीवरस्य—मेष० ३३, भग० ८।२१, अर्जु० १।३३
2. जगह, स्थान, आश्रय—घियोपाम 3 घर के
निवासी, परिवार के सदस्य 4 प्रकाश किरण, महज
चामन्—मुद्रा० ३।१७, हिमचामन् सि० १।५३
5. प्रकाश, कान्ति, दीप्ति मुद्रा० ३।१७, कि०
२।२०, ५५, ५९, १०।६, अमर ८६, रघु० ६।६, १८।
२२, 6. राजयोग्य कान्ति, यश, प्रतिष्ठा—रघु० ११।
८५ 7. शक्ति, सामर्थ्य, प्रताप—कि० २।५७
8 जगम 9. सरीर 10. टोली, दल 11. अवस्था,
दशा । सम०—केलित्, —विधिः मूर्ध ।

चानिका, चामनी [चामनी + कन् + टाप् ह्रस्व, चमनी
+ अन् + डीप्] दे० चमनी ।

चार (वि०) [च् + णिच् + अण्] 1 मभालने वाला,
सामने शाका, सहारा देने वाला, 2 नदी की भाँति
प्रवाहित होने वाला, टपकने वाला, जाने वाला, —रः
1. विष्णु का विशेषण 2. उर्ध्व का आकारिक तथा

नाँव का बीछार, तेजी से उड़ा ले जाने वाली बड़ी
3 द्विप, ओला 4 गहरो जगह 5. चण्ड 6. हृद, सीमा ।

चारकः [च् + क् + क्त] 1 किसी प्रकार का बनेन (बस
टुक बाँट), जलपात्र 2 कर्जदार ।

चारण (वि०) (स्त्री०—नी) [च् + णिच् + ह्यट्]
सभालने वाला, सामने वाला, ले जाने वाला, सहा-
रन करने वाला, निहाहने वाला, रखा करने वाला,
रखने वाला, धारण करने वाला, जम् ! मभालने,
सामने, सहारा देने, सधारण करन या सुरक्षित रखने
की क्रिया 2 कच्चे में करना, सपनि 3 पालन करना,
दुहता पूर्वक पकड़ना, 4 याद रखना—बहणधारण
पट्टालक 5 । किसी का) कर्जदार होना,—नी
1 पकित या रेखा 2 शिरा, नलाकार बाहिका ।

चारणक [धारण + कन्] कर्जदार ।

धारणा [धारण + टाप्] 1 मभालने, सामने, सहारा देने
या सुरक्षित रखने की क्रिया 2 मन में धारण करने
का शक्ति, अचरी धारणात्मकस्वरूप शक्ति
धोधारणावनी मेघा अमर 3 स्मरण शक्ति 4 मन
को ध्यान रखना इवाम का धर्म रखा मन की दुह
भाजममरता परिच्छेदुमृताशु धारणा रघु० ८।१८,
मनु० ६।३२, याज्ञ० २।०१ । धारणायुर्न वैद्य
धायने यन्मनस्त्वया । 5 धैर्य दृढ़ता स्थिरता
6 निश्चयन विधि या निगिध निश्चयन नियम उप-
महार, हति धर्मस्य धारणा—मनु० ८।१८, ४।३८,
१।२५ 7 समग्र दृष्टि 8 धारणा अधिकार,
आलोचना 9 आस्था विश्वास । सम० धोयः
गच्छे भक्ति, मनोयोग,— शक्तिः (स्त्री०) धारणात्मक
स्मरण शक्ति ।

धारयित्री [च् + णिच् + ङीप्] पत्नी ।

धारा [धार + टाप्] 1 पानी की सरिता या धार धारने
हुए जल की रेखा, सरिता धार अर्जु० २।९३,
मेघ० ५५, रघु० १६।६६, आबद्धधारमधु प्रावन्त --
दश० ७५ 2 बीछार, बर्षा की तेज धरी 3 अन-
वरत रेखा—भाषि० २.२० 4 धड़े का छिद्र 5 धड़े
का कदम—धारा, प्रसाधयितुमप्यनिकोपकुरा सि०
५।६० 6 हाँसिया, किनारा, किसी बस्तु की किनारी
या सोमा—ध्रुव स नीलतेजःअन्धधारण रामोक्ता
सेलमुषिर्व्यवस्थति—श० १।१८ 7 तलवार, कुत्ताडा
या किसी काटने वाले उपकरण का तेज किनारा या
धार—वर्जित परसुधारया सम—रघु० ११।७८,
६।४२, १०।८९, ४१, अर्जु० २।२८ 8. किसी पहाड़
या चट्टान का किनारा 9 पहिना या पहिये का
गमनाह या पगिया रघु० १३।२५ 10 उकाव
की दीवार, याद, छावनी 11 मेना की अधिक
पक्ति 12 उच्चतम बिन्दु, सर्वोपरिता 13. सङ्कुच

14. यथा, 15. रात 16. हृस्वी 17. समानता,
18. केन का अधभावः । त्वम्—अधम् बाण का
चोड़ा फलका, अक्षुरः 1. वर्षा की बूंद 2. जोमा 3
(गन्तु का मुकाबला करने के लिए) सेना के आगे 2
बढ़ते जाना, —अंगः तलवार, —अरः 1. चापक रणी
2. घोड़ा 3. बादल 4. मरमाता हाथी, —अधिकृष्ट
(वि०) उच्चतम स्वर तक उठाया हुआ अवधिः
(स्त्री०) हवा, अश्रु (गन्तु०) अश्रु प्रवाह —अमरः
१. अक्षरः भारी वर्षा, मृगलाचार वर्षा चारः
सारमंही वृष्टिर्बहुवृत्त—हि० 3, क्रिष्णम् ४१,
—उज्ज्व (वि०) (गो के स्तन से निकला हुआ) गरम
(द्रव), गुह्य मलागार जिसमें कौबारा लगा हो,
घर जिसमें कौबारे से मुसज्जब स्नानागार हो --
रघु० १६१००, रत्न० १११३, बरिचः 1. बादल
2. तलवार, विप्रातः—पातः 1. धरिज का होना,
बौध्दार का टपटप गिरना मेघ० ४८ 2 तल को
पारा मरिना, अश्वत्थ पौधाग, अग्न्या (पत्नी का)
अमर ५१, रत्न० १११२, —बर्षः, वर्ष संवत्सः लगाना
को मृगलाचार वृष्टि रघु० ६८८, बाह्वि
(स्त्री०) अनवन्न, लगाना—उत्तरा० ६१२, शिवः
देवी तलवार ।

आरिणी [य + गिनि + ङीप्] पश्यो ।

चारिण् (वि०) (स्त्री०-जी) [भृ+गिति] 1. वे जाने वाला, बहन करने वाला, निवाहने वाला; मुरझाने लाने वाला, रखने वाला, सनातन शाला, सहाय देने वाला (पादाम्भोऽहचारि- गीता १०, क. भाष्य 2. स्मृति में रखने वाला, प्राणविक्रम मरण प्राप्ति रखने वाला, अन्तर्मा धारण करने श्रेष्ठा, अन्धिम्यो चारिणो बरा मनः १२:१०३।

धार्तराष्ट्रः [धृत् + राष्ट्र] १ धृतराष्ट्रका पुत्र २ एक प्रकार का द्रुम जिसके पत्र और बीज काली होती हैं - निपातन्नि धार्तराष्ट्रा कान्तिवशाग्मेतिनोपपद्ये वेणी० ११६, (यहाँ शब्द उपर्युक्त दोनों अर्थों में प्रयुक्त हैं) ।

ब्राह्मिक (वि०) (स्त्री०-की) [धर्म : उत्क.] 1 नेक,
पुण्यात्मा, न्यायशील, सद्गुणसंपन्न 2 सत्पराश्रित,
न्याय्य, न्यायोचित 3. धर्म से युक्त ।

वाणिज्य [धर्म] - अणु] सदगुणियों का समाज ।

वाच्यं च [वृत्तः + व्यञ्जः] अङ्कार, अविनय, ओढस्य,
ठिठाई, अकलङ्कन !

बाण (अ० २००) — बावति, धवति) 1 दीहना, जाने
 बढ़ना — अर्थात् बावति मयः — और ३६, बावत्यमी
 मृगजवाधमयेव रथ्याः श० ११८, लक्ष्मि पुरः
 शरीर बावति लक्ष्मिदसम्पुनः केतः ११३८, 2 किसी
 की ओर दीहना, किसी के महाकले में जाने बढ़ना,

आक्रमण करना, मुकाबला करना - भट्टि १६१७
3. बहना, नदी की भांति प्रवाहित होना - वाश्य-
भनितैकम् - सुख ४ दीबना, उड़ जाना ॥ १७०
उभ - पावनीत, पौर, बाबिन १ बोना, साक
करना, भाजना, निर्विकार करना, भुजना - दवाभासू-
स्तनवश। सुपीडय विभीषण, विदावका - धोना।
स रिपु से नमने - भट्टि १६१० श १६१२,
शि १७८ 2 उज्ज्वल करना, जमकाना 3. किसी
व्यक्ति से टकराना - भट्टि - शि, जो हाफना -
निर्वातं सति किञ्चन - अशो - शि ३५१, निर्वात-
दाना नलजगदभित्ति १५० ५, १६१, ७०

धावकः धाव... वृद्ध । 1 घोषा, 2 एक कवि (कवि)
 जाता है कि इनमें श्रीधर राजा के समय राजाधारा का
 रचना की थी - श्रीधरदेविकाशानन्दप्रिय यश
 काव्य १, अने १० प्रथमराजा धारकमौर्ययुग
 कविपुत्रादीना प्रवर्तमानिकका - भास्वि १ अने
 पा०

2 बहना 3 आक्रमण करना 4 पात्रना पवित्र काता, गहनता, बड़ा देना 5 (सो) को न भे गवाहना।

[illegible][illegible]

वि: (समस्त के अन्त में प्रयुक्त) आचार, सङ्कार, आशय
आदि उदाधि, वयधि, नागधि, जलाधि आदि ।

बिष् (पद्य) : वा बिक्न् । निम्हा, दुराट्, विवादा की भावना का प्रकट करने वाला निम्हायादिप्रत्यय अन्त्य - (बिष्कार, कटे मूठ, शर्म, दुःख, तन्म - कर्म भाव) बिक्ना वा तं व मदन व दया मा-वा-भू० २२. बिक्नां देहू तावना।ताम्-पु० ८।५० बिक्नान् बिक्नान् बिक्नान् कथयति मतत कीर्तनस्यो मूढः । बिक् तावन्ती कुपति बिग्जाता - वा० वेणी० ३।११. कनी गनी कर्न० सको० प्रौर मर्भ० के नाथ बिगबा। कटस्यया पद्य० १. बिङ्-सु०, बिगन्तु इत्ययमाद्य (बिक्त् निरस्कार कर्मा) अवज्ञा कर्ता, रद्द करना, दुरा भाव करना) । यम० - कारः- बिग्या निरक्ता कुट्टाग्या, निरस्कार करना अवज्ञा करना, इष्कः डाटकटार कताता, निरा - मन्० ८।१२९, - वाक्कम् अपवाच, डाट कटकार, अना ।

विष्णु (वि०) [वम् + मन् + उ] बोधा देने का दृष्टक,
बोधा देने वाला - भट्टि० १।३३।

विष्णु दे० वि० ॥

विष्णुः [वृ + ण्, [वृ + आदेश] देवों के गुरु बृह-
स्पति का नाम, जन्म निवासस्थान, आवास, घर
— या १ भाषण २ स्तुति, सूक्त ३ बुद्धि समस्त
महादेव० ६।७ ४ पृथ्वी ५ व्याका, कटार ।

विष्णुः [वृ + णि० आकार्य इकार] १ यज्ञानि
के लिए स्थान पवनकुण्ड अर्थात् रचित कृतार्थ
ज्या - म० ६।७ २ - गुरु के गुरु शुक्राचार्य का
नाम ३ शुक्र ग्रह ४ शक्ति सामर्थ्य ज्येष्ठ
१ आमन, आश्रम स्थान तमह घर न भोग्ये
विष्णुर्मानि हित्वा व्योममण्डलम् रघु० १५।३९
२ केतु - गुरु । मन्त्र ४ नारा नरय ।

वी (रवी०) [वी - विसृज सम्प्रसारण] १ (क) बुद्धि
मनस विषय समर्थ म गुणेश्वर - रघु० - ३०

क० कुम्भी मुष्ठी प्रार्थन (र) मन, बुद्धि दृष्ट
बुद्धि शला मग० २।५६ रघु० ३० २ विचार
कल्पना, उत्प्रेक्षा प्रणय न धि - वाय वनसे क०
६।२२ ३ विचार आत्मन, प्रयाजन नैमगिक प्रवृत्ति
कि० १।३७ ४ भक्ति प्रार्थना ५ यज्ञ । मग०
— विष्णु प्रत्यक्षज्ञान का अंग (कर्नेन्द्रिय), मन
केन्द्रका नेत्र रसना च त्वका सह नासिका चेति ५-
नासि चन्द्रिकाणि प्रचक्षते मुक्ता (६० १०)
बौद्धिक गुण, (सूक्ष्मा ध्वन्य चैव दृष्ट्य धारण तथा
ऊहावाहाविज्ञान सत्त्वज्ञान च धीमुक्ता काण
मृक), पति (विगं पति) देवों के गुरु बृहस्पति
वर्जित (५०), सचिव १ महादेव मन
(वि०) नर्मदाचर काव्यमयीमर्षी । २ बुद्धिमन्
वीर दूरदर्शी सलाहकार अस्ति (रवी०) बौद्ध
शक्ति - सत्त्वः सलाहकार परमेश्वर महा ।

वीर (वि०) [वी + क्] १ वीर मग पचा गया ६०
२ ।

वीरि (रवी०) [वी + क्तिन्] १ वीर, धूमना, २ वाग ।

वीर्य (वि०) [वी + मरु] वीर्यमान् प्रतिभाशाल
विद्वान् (रु०) बृहस्पति का विशेषण ।

वीर (वि०) [वी + क्] १ उदात्त उन्नत साहस
वीर्य उदा गति उत्तर० ६।१९ २ विचार मुद्रक,
अटन, टिकाऊ, बलाऊ, स्वादा रघु० २।६ ३ दुष्ट-
मनस्क धैर्यवान्, दृढचरित्र अधिव. बुद्ध निश्चय
बाला वीर्यतरणपथ वी० १७५ विकारहेती
सति विक्रिय-ने वेया न देशमि १ एह याग ६०
१।५२ ४ स्वतन्त्रता प्राप्त मावधान ५ योग
मिथ्याबुद्धि प्रशान्त सम्भार रघु० १।४ ६ मन्त्र
ब्रह्म, बलवान् ७ बुद्धिमान् दूरदर्शी प्रतिभाशाली

ममज्ञदार, विद्वान् चतुर - वृत्तेषु वीर सन्धीव्यंजन
म रघु० ३।१०, ५।३८, १६।७४ उत्तर० ५।३१
८ गहरा गभीर, ऊँचा स्वर, बोधनास्वर स्वरेण वी-
रेण निबर्तयन्निब - रघु० ३।४३, ५२, उत्तर० ६।१७
९ आचरणशील, आचारवान् १० (वायु आदि)
मन्द बुद्धि, सुहावना, सुखकर - वीरसमीरे यमुनातीरे
वसति बने बनमाकी - गीत० ५ ११ मुन्त्र, आलसी
१२ साहसी १३ हेतु, - रघु १ समुद्र २ राजा बलि
का विशेषण, - रघु केसर, चांकरान, - रघु (अव्य०)
साहमपूर्वक, दुष्टता के साथ, अधिग होकर वीर्य के
साथ - अर्जु० २।३१ अमर ११। मग० - उवाचः
अच्छे विचारों का धूरवीर व्यक्ति (काव्य नाटक में)
नायक अधिकतम क्षमावान्तिमस्वीरो महात्म्य
स्वैर्यात्सुमानो वीरादानो दुर्बल कथित - सा०
६० ६६ उन्नत सुरवीर परम्पु अविमानि (काव्य-
नाटक में) नायक मायापर प्रचण्डरूपलोचकार-
दम्भयन्त्र कायमहाकाशिनता वीरवीरोन्नत कथित
मा० ६० ६७ - केनम् (वि०) दुष्ट, अधिव दुष्ट
भग बाला माहसी, - ज्ञानान् (काव्य नाटक में)
नायक जो धूरवीर वीर मान्य व्यक्ति हो - मायाव्य
पूर्वर्ष्यान् विचारिको वीरप्रशान्त स्यात् - सा० ६०
६९ सक्ति (काव्य नाटक में) नायक जो बुद्ध
वीर धूरवीर होने के साथ-साथ क्षेमामि वीर
अभावजन हो निश्चिन्ता मूर्धन्य कलापरो वीर-
सक्ति स्यात् सा० ६० ६८, स्कन्ध प्रेता ।

वीरता वीर + तन् + मन् धैर्य साहस मनोबल
विपत्ती च महोत्त - वीरतामनुगच्छति हि०
: ४४ २ ईर्ष्या क दमः ३ गभीरता शान्तचित्तता
ग रादमात्र मन भवतो वीरता कल्पयामि - मेघ०
१४४ (हमर अर्थ) ४ लिए दे० धैर्य ।

वीरा (वीर + टाप्) काव्य नाटक में कथित नायिका जो
अपने पति या प्रेमी से ईर्ष्या रखती हुई भी उसका
उपस्थिति में अपनी बाधा भावमुद्रा से अपना राय
प्रकट नहीं होने देती रसमञ्जरी की उक्ति व्यङ्ग्य-
कोप प्रकाशिका वीरा २० सा० ६० १०१-५ भी
सम० अवीरा काव्य नाटक में कथित नायिका जो
अपने पति या प्रेमी से ईर्ष्या रखती हुई अपने राय
का अभिव्यक्त भी न देती है और अपनी ईर्ष्या
को छिपा भी लेती है - व्यङ्ग्यकोप प्रकाशिका
वीरा वीरा रसमञ्जरी ।

वीरता, (वीर + ता) [वी + लट् + इत् वीलटि ।
वीर्य + पुत्रो वेग ।

वीर्य [वीर्य मर्यादा पा + स्वरच्] मनुष्य मृग-
मानस-जाना नृपत्रतमत्पञ्चविंशतीना लुब्धक-
बोधगम्युना निरकारणवैरिणा जगति भर्तु० २।६१,

१।८५.—रघु बोझ,—री १. नकुले की ली
२. बकियाँ रखने की टोकरी ।

बु (स्वा० उम०—बुनोति, बुनुते, बुत) दे० 'बु' ।

बुब्ब (स्वा० बा०—बुसते, बुसित) १. बुकना २. बीना

३. कष्ट भोजना—ब्रे० बुसवति—बुकनाला, प्रवृत्ति करना, कम्—बुकनाला, उत्तेजित होना (बात० जी) संतुष्ट होकर कोष—बहि० १४१०९, ब्रे० बुकनाला, प्रवृत्ति करना, उत्तेजित करना—विश्वविश्वविद्यालय बी० लुक्कनलीव बपुर्नोम—हु० १।५२ ।

बुल (वि०) [बु+ल] १. हिका हुआ,—रघु० ११।१९
२. झोका हुआ, परित्यक्त ।

बुल्लि,—जी (ली०) [बु+लि, बुलि+लीव] ली,
खरिया—बुराया संतुष्ट, बुराबुलि कपडोंविषय—मंगा०
२२ । कन०—नक्कः लघु ।

बुर् [बुर्+बिबु] (कल० ए० व०—बु) १. (बा०)
बुबा, व बर्बा वाबिबुर् बहुलि—बुब्ब० ४।१७,
बबल्लुबिबुल्लुबुर् बुरल्लु—रघु० १४।७७, २. बुर्
का बहु भाव की कमी पर रक्का रहता है, ३. पहिए
की नाबि की बुरी के साथ फिर करने के लिए बुरी
के दोनों किनारों पर लगी कीक ४. नाडी का वन
५. कोक, बार (बात० जी) उत्तराश्विन, सूर्य,
कार्य—तेज बुर्बवती बुर्बी लक्ष्मिबु मिथिबि—रघु०
१।१४, २।७४, १।१५, १९, बु० १।१० बासीरत्नम-
कायपीरवर्क—कार्यस्वर्कल्लिता—मुद्रा० १।५,
४।९, वि० १।५०, १।५१ ६. प्रवृत्तय वा उन्वयतय
स्वान, हरावक, बबमान, बिबर, सिर मयांमुलमा
बुरि कीर्तनीवा—रघु० २।२, बुरि बिता त्व पति-
देवतामा, १४।७४, बबिबल्लु ते स्वेवाः पिदेव बुरि
बुबिबाल्—१।११, बुरि प्रतिष्ठापयितव्य एव—मालवि०
१।१९, ५।१९, (बुरि छ सिरे पर रखना वा माने
रखना—ब० ७।४) । कन०—कल (बुर्कल) (वि०)
१. रव के मय पर सड़ा हुआ २. सिर पर सड़ा हुआ
मुक्क, प्रवान, प्रमुक्क,—बहि० छिब का बिसेवम,
—ब० (बुर्ब, 'बुर्ब' जी) (वि०) १. बुबा
सैमाने वाला २. बोते जाने के बोम्ब ३. अच्छे गुणों
से युक्त वा महत्त्वपूर्ण कर्तव्यों से लदा हुआ ४. मुक्क,
प्रवान, बबपक्क प्रमुक्क,—बुकबुरी नव—विक्क०
५, (र०), १. बोला होने वाला जानवर २. जिसके
ऊपर किसी कार्य का भार हो ३. मुक्क, प्रवान,
बबपी,—बु (बुब्ब) (वि०) मार बहन करने
वाला २. काम का प्रवक्क, (ह०) बोला होने वाला
पशु, इसी प्रकार 'बुर्ब' ।

बुप (ली०) बोला, मार—रघुबुप देवी० १।५ ।

बुर्बि, बुर्बि (वि०) [बुर् बहति, बहिति वा, बुर्+ब,

क वा] १ बोला होने वा सैमाने के बोम्ब २. बोते
जाने के बोम्ब ३. महत्त्वपूर्ण कार्यों में नियुक्त (ब०,
—क) १. बोला होने वाला पशु २. मावपक्क कार्यों
में नियुक्त ३. मुक्क, प्रवान, बबपी ।

बुर्ब (वि०) [बुर्+बु] १ बोला सैमाने के बोम्ब
२. महत्त्वपूर्ण कार्य लिये जाने के बोम्ब ३. बोटी पर
बिबत, मुक्क, प्रमुक्क,—ब० १. बोला होने का पशु
२. बोला वा बैक की भाँड़ी में जुता हुआ हो नाबि-
नीलैबेत्तु बुर्ब—मनु० ४।१७, वेनव प्रियने बिब-
बुर्बबिबिबिबिबिबि—हु० १।७९, बुर्बि बिबामयोति
—रघु० १।५४, १।७८, १।७।२, ३ (अमरादिबि
के) मार को सैमाने वाला—रघु० ५।१९, ४. मुक्क
बबपी, प्रवान—म हि लीत बुल्लुबुर् सूर्यवस्या महाय
—रघु० ७।७१ ५. मपी, महत्त्वपूर्ण कार्यों पर
नियुक्त बबिबि ।

बुल्लु (लु) र [बु+ल, लुट] बल्लु के पीछा ।

बु (बुबा० पर०, स्वा०, स्वा०, कपा०, बुरा०+उम०
बुबति, बवति—ते, बुनोति, बुनुते, बुनानि, बुनीते
बुनयति—ते) १ बिलाना, मुक्क करना, कपाना
—बुबति पक्षपवन नै नबो बलाका—बुनु० १।१२
बुब्ब कल्लुबुबकिल्लयानि—देव० १२, बु० ७।४९,
रघु० ४।१७, बहि० ५।१०१, १।७, १।१२२ २ उत्तर
देना, हटाना, कैंक देना—बजमपि सिरिस्वम् बिप्यां
बुनोत्तुल्लिबुबा—ल० ७।२४ ३ कक मार कर उठा
देना नष्ट करना ४ बुकनाला, उत्तेजित करना (माने
की) पंका करना—बायुमा बयमानो हि वन बहति
पावक—महा०, पवमयूत, बनि बनु० १।२९
५ बजिष्ट व्यवहार करना, चोट पहुँचाना, क्षति पहुँ-
चाना—मा नबाकीरि रवे—बहि० १।५०, १।५१
६. जाने ऊपर से उतार कैंकना, अपने मापको मुक्त
करना—(बेवका) बारोहनि कनै पवबाबुबल्लममाप
पाबिबय—पंच० १।१९, (काब रहम्ब के निम्नलिखित
बलोक में इस बात के विभिन्न बगों के रूप में दिए
गये हैं—बुनोति बम्पकबमानि बुनोत्तुल्लि बत
बुनाति बुबति स्फुटितसिमुक्कल्, बाबुबिबुनयति
बम्पकुबुरीबुर् वल्लाने बबति बम्पमजरीव) ।
कन०—बिलाना, बबर—उबर करना, कपाना, सहारा,
—देव० पवमावयूत—रघु० ७।४१, लोमावयूत-
स्वावरी—देव० १५, वि० १।३, वि० १।३१९
२. उतार कैंकना, हटाना, परामृत्त करना, राजस्व-
मयबुव मानुक्—रघु० १।१९०, बुरबुर्बवयूतवा-
बरी—१।१९, १।५१, वि० १।४२ ३ बहल्लेमा
करना, बल्लिहति करना, उबेका करना, निरस्का-
मुक्त व्यवहार करना—बन्दी मावबुव पावपति-
—बिबन् ४।१८, पावपतः कीपवबावयूत—हु०

१।८, विक्रम० ३१५, उब्—हिला बालना, उठाना, ऊपर को उठालना, लहराना—कैनोंडानि बागराणि—का० ११७, रघु० १८५, १५५, उब्बुनीयात् सकेतुन् मट्टि० १९१८, कि० ५११९, मास्तभरो-दुतोऽपिमुलिबज--बज० २. उतार फेंकना, हटाना, दूर करना, नष्ट करना (आलं० श्री)—उब्बुतपावा—मेघ० ५५, सि० १८१८ ३. बाधा पहुँचाना, उत्तेजित करना, मड़काना, बिस्—, १ उतार फेंकना, हटाना, दूर करना, निकाल देना, नष्ट करना—निर्भूतोऽपरमोणिमा--गीत० १२, जाननिर्भूतकल्पना—भग० ५११९, रघु० १२१५७ २ उपेक्षा करना, निरस्कार-युक्त व्यवहार करना अवज्ञा करना ३ त्याग देना, छोड़ देना, फट देना, बि—, १ हिला ॥, इधर-उधर करना, कपाना, मुहुपवनविभूतान्—अनु० ६१०९, ३१० दीधी बेणी विभून्वाना महा० २ उतार देना नष्ट करना, निकाल देना, दूर भगा देना कर्पेविष-विन्नु धृतिम्—अट्टि० ११२८, रघु० ९७३२ अन० पा० उपेक्षा करना, धृष्टा करना, निरस्कारयुक्त व्यवहार करना रघु० १११०० ४ छोड़ना, छोड़ देना, त्याग देना नै० ११३५।

बूः (स्त्री०) [बू + क्विप्] हिलना बापना, लुब्ध होना।
 बूल (भू० क० कृ०) [बू + क्त] १ हिला हुआ २ उतार फेंका हुआ, हटाया हुआ ३ भडवाया हुआ ४ परित्यक्त, उजड़ा हुआ ५ फटकारा हुआ ६ परीक्षित ७ अधज्ञान, निरस्कारपूर्वक व्यवहार किया गया ८ अनुमानित। सम०—कल्पव, बाध (वि०) जिसने अपने पाप उतार फेंके हैं, पापमुक्त।
 भूति (स्त्री०) [भू + क्त] १. हिलाना, इधर उधर करना २ भडकाना।
 भूम (भू० क० कृ०) [भू + क्त, तस्य न] हिला हुआ लुब्ध।
 भूमिः (स्त्री०) हिलाना, लुब्ध करना।

भूयः (भ्वा० पर०) भूपायति, भूपायित्) गरम करना, गरम होना, ॥ (भृग० उभ० भूपायति-ते) १ धनी देना, सुवासित करना, धुपाना, सुगन्धित करना २ भयकना ३ बोलना।

भूष [भू + अच्] १ भूष, लोभान, गन्धद्रव्य, कोई सुगन्धयुक्त पदार्थ २ (गोद बिरोधा आदि सुगन्धित पदार्थों से उठने वाला) बाष्प, सुगन्धित बाष्प या धुआँ—भूषोपमणा त्वयितमात्रावम्—कु० ७११४ मेघ० ३३, विक्रम० ३१२, रघु० १६१५० ३ सुगन्धित धूलें। सम०—अमृष (भृगु०) एक प्रकार की गुग्गुलु की धुआने के साथ आती है,—अङ्कः १ ताग्रीन २ मरुत वृक्ष,—अहम् गुग्गुलु, पाषाण धूपदा अग्र-दान, धूप जलाने का पात्र,—भातः गन्धद्रव्य के धुएँ से

बासना, धुपाना,—भूष एक वेद जिससे गुग्गुलु निकलता है, मरुत वृक्ष।

भूषः [भू + अच्] १. धुआँ, बाष्प—भूषज्योतिःतल्लिखनवर्तां सन्निपात १५ मेघः—मेघ० ५ २. धूब, कोहरा ३. उल्का, केतु ४. बादल ५. (नस्य, छीक लाने वाला) धुआँ ६ उकार, उच्चार। सम०—आन (वि०) धुएँ सेना प्रतीत होने वाला, धुमेले रंगका,—आवर्तिः धुएँ का बाष्प या धूममात्रा,—अथवा नौमादर,—उच्चारः १ धुआँ या बाष्प उठना,—उच्चा यम की पत्नी का नाम, वसिः यम का विशेषण।
 केतवः, केतुः १. आन,—कोपस्य नन्दकुलकाननभूम-केतोः—मृग० १११०, रघु० १११८१ २. उल्का, पुच्छल तारा, गिरता हुआ तारा—भूमकेतुमिव किमपि करालम्—गीत० १. भूमकेतुरिबोषित—कु० २१३२ ३ केतु अः बादल,—अथवा अग्नि,—पाषाण धुआँ या बाष्प पीना,—महिषी कोहरा, धूब,—योनिः बादल नु० मेघ० ५।

भूमल (वि०) [भूम + ला + क] धूमला, भूरा-लाल, मटमैला।

भूमायति-ते (ना० वा० पर०) धुएँ से भर देना, बाष्प से डक देना, अँबेरा करना—भूमायिता वल विद्यो दलितारम्बिरा—नामि० १११०४, भृगु० १५५७।
 भूमिका [भूम + क्त + टा] बाष्प, कोहरा, धूब।

भूमित (वि०) [भूम + इत्] धुएँ से डका हुआ, अवकार-युक्त—कु० ४१३०।

भृम्बा [भूम + यत् + टाप्] धुएँ का बादल, प्रगाढ़ धुआँ।

भृम् (वि०) [भृम् + ग + ष] १ धूमला, धुएँ वाला, भृम्—मर्तु० ३१५५, रघु० १५११६ २. गहरा लाल ३ काला, अवकारावृत ४. मटमैला,—अः १. काले और लाल रंग का मिश्रण २ लोभान,—अम् पाप, दुर्भ्यसन दुष्टता। सम०—अदः एक प्रकार की शिकारी चिड़िया,—अच् (वि०) मटमैले रंग का,—लोभनः कवुतर,—लोहित (वि०) गहरा लाल, गाढ़ा मटमैला, (तः) शिथ का विशेषण,—भृम्कः अँट।

भृम्कः [भृम् + क + क] अँट।

भृन् (वि०) [भृन् (भृत्) + क्त] १ बालक, छठ, बरमास, मक्कार, जालमाय, २ उपद्रवी, क्षति पहुँचाने वाला,—तः १ ठब, बरमास, उचक्का, २. धुआरी ३. मेची, रसिया, बिनोदमिव भृन्—तत्ते भृत् इति स्थिता ध्रि-व काश्चिममेवापरा—रघु० ४११, भृन्तपरा भृवति भयं १६, इती प्रकार—भृत्तामभितारस्तवर-हृदाम्—गीत० ११४ चतुरा। सम०—भृन् (वि०) मक्कार, बेहमान, (पु०) चतुरे का पीछा,—अन्तुः मनुष्य,—रचना भृत् पिछा, बरमासी।

भृत्सकः [भृत् + क्त] १ गीवड़ २. बरमास।

पुत्री [पुत्र+पुत्र+विभक्त, अथ इत्यस्य स्त्री आदेशः] ग्राही
का जन, या अगला भाग ।

पुत्रकम् [पु+कृ+वा०] विष्, बहुर ।

पुत्रिः, स्त्री (पुं०, स्त्री०) [पु+त्रि वा०, पुत्रि+क्रीप्]

1 पुत्र, अनीत्यापेक्षया पुत्रिमूलकं नाशसिद्धते—शिव०

२।१४ 2 पुत्री । सम० कुष्ठिमन्, —केदारः

1 टीला, प्राचीर 2 जोता हुआ लोत, प्लवः बायु,

—यवतः पुत्र का डेर,—पुत्रिका,—पुत्री केतकी का
पीठा !

पुत्रिका [पुत्रि+कृ+टाप्] कोहरा, पुत्र ।

पुत्रर (वि०) [पु+र, कृष्ण न वस्त्रम्] पुत्र के रंग का
मुरा सा, पुत्रीला—सफेद रंग का, मटमैला—प्राची
दिवसपुत्रर—अम० २।५६, कु० ४।४, ६६, रघु०
५।४२, १५।१७, शिव० १७।४१, —रः 1 मुरारम
2 तथा 3 ऊँट 4 कत्तर 5 लेकी ।

पु 1 (पुत्रा० आ०)—कह्यो के मतानुसार पु का कर्मवा०

रूप—प्रियते, वृत् 1 होना, विद्यमान होना रहना

रहते रहना, जीवित रहना—आर्यपुत्र प्रिये एषा

प्रिये—उत्तर० ३, प्रियते वाचदेकोऽपि रिपुस्त्वावत्कुन

बुधम्—शिव० २।३५, १५।८९ 2 स्थापित या सुर-

क्षित रहना, रहना, बसते रहना—मुरतयमसमृतो

मुने प्रियते स्वेदलबोद्धमोऽप्रियते—रघु० ८।५१, २

कु० ४।१८ 3 सकल्प करना, 1 (आ०) पुरा०

उम० वासिने, वारयति-ते वृत्, वारितं 1 बामना,

समालना, ले जाना—मृज्जकमपि कोपित शिरसि

पुण्यधारयेत्—अनु० २।४, वैजयी वारयेद्यष्टिम्

लोचकं च कमण्डलुम्—अनु० ४।३६ मट्टि० १७।५४,

विक्रम० ४।३६ 2 बामना, समालना स्थापित

रहना, सहारा देना, जीवित रहना वृत्तमवर गीत०

१, तथा सर्वाणि भूतानि वरा वारयते समम् अनु०

१।३११, पंच० १।११६, प्रात कुन्दप्रसवसिधिल

जीवितं वारयेवा—वेद्य० १।१३, चिरमारुता वृताम्

रघु० ३।३५ 3 अपने अधिकार में बाये रहना

अधिकार में करना, पास रहना रहना—या सस्कृता

वायेते—मत्त० २।१९ 4 वारण करना, (कप,

कपदेव), लेना—केशव वृत्तयुक्तरूप—गीत० १,

वारयति कोकनवरूपम्—१०, 5 पहनना, वारण

करना, (वस्त्रालोकाराधिक) उपयोग में लाना, भित

कमलाकुचनयन वृत्त कुचल ५—गीत० १ 6 रोकना,

बन्द करना, निवृत्त करना, ठहराना, स्वगित

करना 7 बचाना, संकेत करना (संज्ञ०) या अधिक

के हाथ)—बाह्ये वृत्तमानस, मनो दये राजसूया

आदि 8 मननना, मनना 9 किसी व्यक्ति के लिए

कोई वस्तु निर्धारित करना, निवृत्त करना, निर्दिष्ट

करना 10 किसी का श्वशी होना (संज्ञ०, संज्ञ०

चिरल०),—पुत्रोत्पत्ते हे वारयति ये, आ० १, तस्यै

तस्य वा जन वारयति आदि 11 बचाना, रहना

12 पालन करना, अग्रास करना 13 हवाला देना,

उद्धृत करना (इस वाचु के अर्थ उन तथा शब्दों के

अनुसार, जिनसे यह जुड़े, विविध प्रकार के हो जाते

हैं—उदा० कलाता पु मन में धारण करना, वाय

रहना, शिरसा पु, पुष्पि पु शिर पर रहना अत्यंत

आदर करना अतरे पु बरोहर रहना, अमानत के

रूप में अमा करना, लम्बे पु सहमत करना, बन्ध पु

दण्ड देना, तथा देना, बल का उपयोग करना, जीवित,

प्राप्त्यन्तरी, गार्भं देहम् पु जीवित रहना, आत्मा

को स्थापित रहना, प्राणों का सुरक्षित रहना, कल पु

वृत्त का पालन करना तुलसा पु तराजू में रहना,

तोलना, मन, वसिन्, चित्तम्, बुद्धिम् पु किसी वस्तु

में मन लगाना, मन अमाना, सोचना, वृत्त सकल्प

करना गर्भं पु गर्भवती होना वारणां पु (एकाग्रता

समय का) पालन करना 1 अथ 1 स्थिर करना,

निर्धारित करना निविचन करना, शिव० १।३

2 जानना निश्चय करना समझना सही सही

जानना न विश्वमूर्तेरवधार्यते ऋषु—कु० ५।७८,

रघु० १३।५, उष्—1 ऊपर उठाना उन्नत करना

2 बचाना, परिचाय करना 3 बाहर निकालना,

उद्धृत करना 4 उन्मूलन करना, उच्चाटना (उप

पूर्वक पु के रही हैं रूप जो उद् पूर्वक हू के हैं) निम्न

, निर्धारण करना निश्चिन करना, नियम करना,

—निर्धारितोर्ध्व लेखेन कलमता कलु बाधिकम् शिव०

२।७० १।२० चि—1 वर पकड़ना, पकड़ लेना,

ग्रहण करना वारण कर लेना अशुक्त पल्लवेन

विघ्न अमर ७९ ५५ 2 पहनना, वारण करना,

उपयोग में लाना—रघु० १२।६० 3 स्थापित रहना,

वृत्त करना, महारा देना वामनेना, पंच० १।८२

भट्ट० ३।२३ 4 टकटकी लगाना, निवेष्ट देना,

सम्—1 बामना, समालना ले जाना 2 वाम लेना,

सहारा देना—अरै सहायते नाशि पंच० १।८१

3 बचाना, निश्चय में रहना, रोकना 4 मन में

रहना वाय रहना, समुद्—1, अथ से उच्चाव लेना

उन्मूलन करना दे० उद् पूर्वक 'हू' 2 बचाना, परि-

चाय करना, संज्ञ, 1 जानना, निर्धारण करना,

निश्चय करना शिव० १।६० 2 विचार विमर्श करना,

चिन्तन करना, सोचना, विचार करना—अनु० १०।७३,

एव सप्रभायं पंच० १ ।

वृत्त (नू० क० ह०) [वृ+कृ] 1 बामा गया, ले

जाया गया, बहन किया गया, सहारा दिया गया

2 अधिकृत किया गया 3 रक्खा गया, संचारित, वारण

किया गया 4 पकड़ा गया, अग्रमसात् किया गया,

सभाका गया, पहना गया, उपयोग में लाया गया 6. रज दिया गया, जमा किया गया 7 अम्बास किया गया, पालन किया गया 8 तोला गया 9 (कतुबा०) बारण किया हुआ, सभाला हुआ 10 तुला हुआ दे० ऊपर 'धु'। सम० - आत्मन् (वि०) पक्के मन वाला, स्थिर, शान्त, स्वस्थचित्त - बड़ (वि०) 1 बड़ देने वाला 2 बहु जिसको बड़ दिया जाता है पट (वि०) कपड़े से ढका हुआ राजन् (वि०) (देग भारि) अच्छे राजा द्वारा शासित राज्य विभिन्न वीर्य की विधवा पत्नी से उत्पन्न भ्यास का अंगठपुत्र (अच्छे पुत्र होने के कारण वृत्राष्ट्र राज्य का अधिकारी था, परन्तु अम्बास होने के कारण उसने प्रभु-सत्ता पावु को छोड़ दी। जिस समय पाण्डु बानप्रस्थ भेकर जंगल का आरंभ गया तो राज्य की वागडार फिर वृत्राष्ट्र ने स्वयं सभाल ली, और अपने अंगठ पुत्र धृष्टकेतु को सुप्रसन्न बनाया। जब युद्ध में भीम ने धृष्टकेतु का काम तमाम कर दिया तो वृत्राष्ट्र को बदला लेने की इच्छा हुई, फलतः उसने धृष्टिष्टिर और भीम को आमन्त्रित करना चाहा। श्रीकृष्ण उसकी इस बात को नुस्त नाइ गये, उन्हें विश्वास हा गया कि वृत्राष्ट्र ने भीम को अपना शिकार समझ लिया है। इस लिए श्रीकृष्ण ने लड़े की एक भीम की मूर्ति बनवाई। जिस समय वृत्राष्ट्र भीम का आमन्त्रित करने के लिए आये वहाँ तो श्रीकृष्ण ने भीम को लौहमूर्ति आने कम्हा दी जिसको कि बदला लेने के प्रबल इच्छुक वृत्राष्ट्र ने इस प्रकार इतना बल लगा कर दबाया कि वह लौह मूर्ति टुकड़े २ हो गई। इस प्रकार असफल प्रयत्न हा। वृत्राष्ट्र अपने पत्नी गांधारी समेत हिमालय पर्वत की ओर चला गया जहाँ कुछ वर्षों के पश्चात् वह स्वर्ग स्थान गया। -- कथन् (वि०) कबच पहले हुए कथंचित।

पुति (स्त्री०) [धृ + क्तिन्] 1 मेला, पर्वहन, हस्तगत करना 2 रचना, अचित्रन करना 3 स्थापित रखना सहाय देना 4 दुःख स्थिरता स्थैर्य 5 धैर्य स्पर्ति दुःखकल्प, साहस श्रम-सम भज धीन स्वयं भीतिगन्तुषाम् नै० ४।१०५, कि० ६।११ रघु० ८।६६ 6 सन्नाय, गुण, सुख, प्रगल्भता सुनी, हृष पुनैश्च धीर सदुपायवर्धनम् - रघु० ३।१०, १६। ८२, अर्जुनध्यानि न पुनिम् - विष्णु० २।८, शि० ७।१० १४ 7 साहित्यशास्त्र में वर्णित १३ अर्थात् चारीभाषा में सन्नाय को गिनती की गई है। ज्ञाना-भीत्यागमोऽस्तु सपूनेऽप्युहनापुति, साहित्यधनः ८.५। सहास प्रतिभादिहृष - सा० ४० १९८, १६८ 8 वज्र।

पुतिक्त् (वि०) [पुति + क्तृ] 1 एकका, स्थिर, दृढ़

अक्षिप्त 2 मनुष्य, प्रसन्न, प्रहृष्ट, पुष्ट - रघु० १३।७७।

पुत्सन् (पु०) [धृ + क्तृनिप्] 1 विष्णु का विशेष 2 बड़ा की उपाधि 3 मनुष्य, मैत्रिकता 4 व 5 समूह 6 चतुर व्यक्ति।

पुष 1 (म्हा० पर० वर्षति वक्षति) 1 एकत्र होना, सहन होना, चाट पटुबाना अति पटुबाना, 11 (म्हा० पर० चुरा० उभ० वर्षति, वर्षयति-ने)। नाराज करना, चाट पटुबाना अति पटुबाना 2 अपमानित करना, मर्दा से शून्य व्यवहार करना 3 बाबा बोलना जीतना, पराभूत करना, विजय प्राप्त करना नष्ट करना 4 आक्रमण करने का साहस करना, लम्काकरना चुनौती देना 5 (किसी स्त्री के साथ) बलात्कार करना स्त्रीवै हरण करना 11। (म्हा० पर० धृषयति घृष्ट)। 1 विनेर या साहसी होना 2 विवस्त्र होना 3 चमकी होना, उज्ज्वल होना, 4 दीठ होना उतावला होना 5 साहस करना निबर होना (नुमुरत के साथ) 6 लम्काकरना, चुनौती देना भट्टि० १४।१०२ 7 (चुरा० जा० - वर्ष-यते) हल्ला करना, आक्रमण करना, बलात्कार करना।

घृष्ट (वि०) [धृ + क्तृ] 1 विनेर, हाडही, विवस्त्र, 2 दीठ अक्षय निर्लज्ज, उच्छल, अविनीत घृष्ट पावर्ष वसति हि० २।२६ 3 प्रसन्न, दुःसाहसी 4 दुःचरित, लुब्धक, - घृष्ट विवसात्पातक पनि या प्रेमी कृतांग अपि निश्चिन्तजितोऽपि न लाज्जित, घृष्टदोषोऽपि विधावाक् कथितो घृष्ट-नायकः। सा० ८० ७२। सम० - कृष्ण दुपद का पुत्र और दोगरी का भाई (घृष्टदुष्म और उसका पिता दुपद दानो में भारत के युद्ध में पांडवों की ओर में लड़े। घृष्टदुष्म ने कई दिन तक पांडवों की मना क मुख्य सेनापतिव का पद संभाला। जब द्रौपदी ने पार मध्य के पश्चात् दुपद की मार डाला तो घृष्टदुष्म ने प्रतिज्ञा की कि मैं अपने पिता की मृत्यु का बदला लूंगा। आखिर युद्ध के सोलहवें दिन प्रायः काठ घृष्टदुष्म को अपनी प्रतिज्ञा पूरा करने का अवसर मिला जब कि उसने अत्यामृतक द्रौप का मिर कट डाला है द्रौप। उसके पश्चात् एक दिन यह पाण्डवसिंहिर में सी रहा का कि अचानक अश्वत्थामा ने आ दबाया और भीम के घाट उतार दिया गया।

पुष्पन् (वि०) [धृ + क्तृ] 1 साहसी, विवस्त्र 2 दीठ, निर्लज्ज।

पुष्मिः [धृ + मि] प्रकाश की किरण।

पुष्पन् (वि०) [धृ + क्तृ] 1 विनेर, विवस्त्र, साहसी, बहादुर, वल्लभा (अच्छे वर्ग में) 2 निर्लज्ज, दीठ।

बे (म्वा० पर० धयति, बीत—वेर० धायति, इच्छा० विस्तति) 1 बूटना पीना, घुट भरना, निगल जाना (जाल० भी) अघातसामवालोच्छ हथिर इनवातिनाम् भट्टि० १-१२९, ६१८, मनु० ४।५९, याज्ञ० १।१४० 2 बूम—धम्यो धयस्थानम्—मीन० १-३ बूम लेना, बीछ लेना, ले लेना ।

बेभुः [बे+नन्] 1 समूह 2 नद,

बेभुः (स्त्री०) [धयति सुतान् धीयते वसंती धा० न् इच्छ ताग०] गाय दुपार गाय धेनु भारा सुनता वाचमाहु उत्तर० ४।३१ 2 किसी बात की स्त्री (इस अर्थ में किसी भी पुनरावाचक नाम के आगे लग कर उसे स्त्रीवाचक शब्द बना देता है यथा लङ्गवेनु बहववेनु आदि 3 पृथ्वी [कई बार समास के अन्त में लग कर इससे अस्वार्थवाचो शब्द बनता है, जैसे अक्षिवेनु, लङ्गवेनु] ।

बेनुक [बेनु+कन्] एक राक्षस का नाम जिसको बलराम ने मार गिराया था। सम० सूक्तः बलराम का विशेषण ।

बेनुका [बेनुक+टाप्] 1 हथियो 2 दूध देने वाली गाय ।

बेनुव्या [बेनु+यत्, युक्] बह गाय जिसका दूध बधक रूप में सुरक्षित हो ।

बेनुकम् [बेनु+ठक्] 1 गोओ का समूह 2 रतिबध ।

बेयम् [बीर+प्यञ्] दुष्टता, टिकाऊपन, साधर्म्य, ठोसपन, स्थिरता, स्वाधिता, धीरज, मज्जस चैवंमवष्टम्भ्य—पञ्च० १, विपरिद चैवंम—अन० २।६३, इसी प्रकार 'चैवंवृत्ति' शि० ९।५९ 2 शान्ति, स्वस्थता 3 गुरुवाक्यण शक्ति, सारङ्गता 4 अनम्यता 5 हिम्मत, दिलेरी मंत्र० ६० ।

बेयतः [बीयन्+अन् पूर्वो० मस्य वत्वम्] भारतीय मरगम स्वरधाम के सान् स्वरों में छठा स्वर ।

बेयत्वम् [बीयन्+प्यञ्] चतुर्गर्ह ।

बोह = दुष्टम् ।

बोह् (म्वा० पर० धीरति) 1 जल्दी जाना, अच्छे कदम रखना, रीझना, दुस्की चलना 2 कुजाल होना ।

बोहरन् [बोह्+स्यट्] । (बोहा, हाथी आदि) बाहुन सवारी 2 जल्दी जाना 3 बोहो की तुल्की चाल ।

बोहकिः, बी (स्त्री०) [बोह्+जनि, बोहिनि+ङीप्] 1, अनवच्छिन्न बोधी या नैरन्तर्य—वैराग्यविवर्तने मनोज्ञपवने सद्यः स्वस्वमाधारीधाराबोहिनौतधामनि धरावीक्ष्यमाकम्प्यते, तेधा नित्यविनोदिना सुकुतिनां चाभ्योक्तयाना पुनः कालः किं करोति केतकि वतस्त्व चापि केतिल्लो—उज्जट, परम्परा ।

बोहितम् [बोह्+कत] 1 क्षति पहुँचाना, चोट पहुँचाना, प्रहार करना, 2 मयन, गति 3 बोहो की तुल्की चाल ।

बीत (यू० क० ड०) [बाप्+त] 1 बीया हुआ,

बहाया गया, साक किया गया, दबिच किया गया, प्रसाजन किया गया कुल्याम्भोभि पवनचपरी शासितो बीतमूका स० १।१५, मित्रा० ५८, कु० १।६, ६।५७ २यू० १६।४९, १९।१० 2 चमकाया हुआ, उज्जला किया हुआ 3 उज्जला, मफेद, चमकदार चमकीला चमकमाना हुआ, हरिशरवर्णिका धीरहर्म्य—मेघ० ७।४४ विकसद्भाषुधीताधाम् गीत० १२, तम् बीवी, सम० कठः मोटे कपड़े का रोजा कोषजम कीबेहम् बूनी हुई रेसम शिल्पम् स्फटिक ।

बीज् [बृश्+जण्] 1 भुरगान 2 विशेष रूप से तैयार किया गया) सकान बनाने के लिए स्थान ।

बीरितकम् [बीरित+जण्+कन्] बाते की दुस्की चाल ।

बीरेय (वि०) (स्त्री० यो) [धुर बहति इक्] बासा ले जाने के योग्य य 1 बासा होने का गुण 2 बोहा ।

बीतकम् बीतिकम्, बीत्यम् [वर्तय भाव कम् वा पूर्व+वृज्, ठञ् प्यञ् श] [बालसाङ्गी बहैमानी बरमावी] ।

ब्वा (म्वा० पर० धयति, ब्यात वेर० धायति) 1 एक मारना बजास बाहर निकालना निवृत्तजन

2 (इहा के उपकरण की भाँति) धोकरा फूक मार का बजाना—सख दध्मो प्रनप्यकां भय० १।१२, १८

रघु० ७।६३, मट्टि० ३।३४ १।७।३ 3 आग को फूकना फूक मारकर आग का उद्दोषण करना, चिगायिगी उठाना बो घमेच्छात य पावकम् महा०

4 फूक द्वारा निर्माण करना 5 फेवना फूक से उठाना फूक देना आ— 1 इहा भरना फूकाना

2 फूक मारना या इहा से भरना, (सख आदि की)

उप, फूक मारकर तेज करना, पखा करना नाभि मुनेनोपमयेन मनु० ६।५३ निम्न, फूक मारकर बाहर निकालना, प्र— (सख आदि) बजाना बह्नी प्रदध्मत् भय० १।१४ वि, बखेरना निगर बिगर करना, नष्ट करना ।

व्याकारः [व्या+कृ+अण्] सुहार, मोहकार ।

व्याक्षः अने० पा० व्याक्ष ।

व्यात (यू० क० ह०) [व्या+कत] 1 (बाधवाक्य की भाँति) बजाया हुआ, पंखा किया हुआ, भड़काया हुआ 2 हवा भरा हुआ, फूला हुआ, फुलाना हुआ ।

व्यात (वि०) [व्ये+कत] मोषा हुआ, विचार किया हुआ, दे० 'व्ये' ।

व्यायम् [व्ये+ह्यट्] 1 जनन, विचर, विचार, चिन्तन आना व्याय विक्षिप्यते अण० १२।१२, यण० १। १२, ९।७२ 2 विशेष रूप से सूक्ष्मचित्तन, चार्मिक मनन—सर्व व्यानाहवतोरीय—उ० ७, रघु० १।

३३ ३. दिव्य अन्तर्ज्ञान या अन्तर्विवेक ४. किसी देवता की व्यक्तिगत उपाधियों का मानसिक चिन्तन—इति ध्यानम् । सम०—मध्य (वि०) केवल मनन द्वारा प्राप्य, तत्पर,—निष्क पर (वि०) विचारों में जोया हुआ, मनन में लीन, चिन्तनशील,—स्य (वि०) मनन में लीन, विचारों में जोया हुआ ।

ध्यानिक (वि०) [ध्या + क्] मुख्य मनन और पवित्र चिन्तन के द्वारा अनुमति या प्राप्य ।

ध्यात्र (वि०) [ध्ये + क्] अन्वच्छ, मंला काया मलिन मट्टि० ८।३१ अथ एक प्रकार का वाय ।

ध्यायन् (पु०) [ध्ये + मनिन्] माय, प्रकाश (न्य०) मनन (ध्यायन्' कय मूळ) ।

ध्या (धा०) ध्या० ध्यायति, ध्यान, इच्छा० दिव्य,मनि कर्मदा० ध्यायते) भाष्यता, मनन करना, विचार करना, चिन्तन करना, विचार विमर्श करना, कल्पना करना, याद करना ध्यायतो विधायान पुन समस्तैक-जायते मग० २।६३, न ध्यान पश्योच्चरस्य भर्त० ३।११, चिन्तु ध्यायन् मनु० ३-२२४ ध्यायति चाग्य धिया पञ्च० १।१३९, मेघ० ३ मनु० ५।४७ १।२१, अनु० १ सोचना, ध्यान लगाना २ याद करना ३ मगलकामना करना, बाजीबाँद देना, अनुकूल करना, रघु० १।६०, १।७३६, अथ० बुरा सोचना, जग से जाप देना, जनि० १ कामना करना, इच्छा करना, लालच करना याज्ञ० ३।१३४ २. सोचना अथ० अवहेलना करना, मित् सोचना, मनन करना, वि० १ सोचना, मनन करना, याद करना—मट्टि० १४।६५ २. गहन मनन करना, टकटकी लगाकर देखना—अगुलीयकं निधायन्ती—मालवि० १, सि० ८।६९, १२।४, कि० १०।४६ ।

ध्याकिः [ध्या + क्] कुल बुनना ।

ध्रुव (वि०) [ध्रु + क्] (क) स्थिर, दृढ़ अथवा स्थावर, स्थायी, अटल, अपरिवर्तनीय—इति ध्रुवेच्छा-मगलायनी सुताम्—कु० ५।५, (ख) काष्ठ, मदेव रहने वाला, मित्य ध्रुवेण भर्ता—कु० ७।८५, मनु० ७।२०८ २ स्थिर (ओमिष में) ३ निश्चिन्त, अचूक, अनिवार्य—जातस्य हि ध्रुवो मृत्युध्रुव जन्म मृतस्य च—मग० २।२७ या ध्रुवाणि परिरज्य मधुवाणि निवेद्यते—वाय० ६३ ४ मेयावी, चारख-शील—जैना कि 'ध्रुवा स्मृति' में ३ मयबून, स्थिर, (दिन की राति) निश्चित, —कः १. ध्रुव तारा, रघु० १७।३५, १८।३४, कु० ७।८५ २ किसी बड़े वृक्ष के दोनों निरे ३ नाम्न रात्रिचक्र के कार्य से बह की दूरी, ध्रुवीय क्षांतर रेखा ४ बटवृक्ष ५ स्थान मूँटा ६ (बटे हुए वृक्ष का) तना ७ गोरा का आर-मिक पाद, टेक (समवेत गान की राति दोहराया

गया दे० मीन०) ८ समय, काल, युग ९ बड़ा का विशेषण, १० बिज्जु और ११ जिब की उपाधि १२ उत्तानपाद के पुत्र और मनु के पौत्र का नाम [ध्रुव उत्तर दिशा में स्थित एक तारा है, परन्तु पुराणों में उत्तानपाद के पुत्र के रूप में इसका वर्णन उपलब्ध है। सामान्य मर्त्य का ध्रुव तारे के उच्च पद को प्राप्य करने का वर्णन इस प्रकार है उत्तानपाद के मुखि और मुनीति नाम की दो पत्नियाँ थीं, मुखि के पुत्र का नाम उत्तम था तथा ध्रुव का जन्म मुनीति से हुआ था। एक दिन ध्रुव ने अपने बड़े भाई उत्तम की भाति पिता का गाढ में बैठना चाहा, परन्तु उसे राजा और मुखि दानों ने हुक्मारे दिया । १ ध्रुव मुखचना हुआ अपनी माता मुनीति के पास गया, उसने बच्चे को सात्वता ही और समझाया, कि सपनि और सम्मान कलौ परमेश्वर के बिना नहीं मिलते । इन बचनों को सुन कर ध्रुव ने अपने पिता के घर को छोड़ कर जंगल की राह ली । दक्षिण बहु बड़ी बच्चाही वा नो भी उसने योग तपस्या की जिसके फल-स्वरूप विष्णु ने उसको ध्रुव तारे का पद प्रदान किया) —बन् १ आकाल, अन्तरिक्ष २ स्वर्ग,—वा १ (लकड़ी का बना) वन का ध्रुवा २ लम्बी स्त्री, —बन् (अव्य०) अवश्य, निश्चित रूप से, यकीनन—रघु० ८।४९, रा० १।१८ । सम०—अक्षरः बिज्जु की उपाधि—आत्मैः तिर पर रखे मुकुट का वह स्थान जहाँ से बाल चमकते हैं,—तारकम्,—तारा ध्रुव तारा ।

ध्रुवकः [ध्रुव + कन्] १ तत का आरम्भिक पद (जो समवेत गान की भाति दोहराया जाय, टेक २ तना, मृत ३ स्तूना ।

ध्रुव्य [ध्रुव + व्यञ्] १ स्थिरता, दृढ़ता, स्थावरता २ अपाधि ३ निरचय ।

ध्रुव् (धा०) धा० ध्रुवते, ध्रुवत १ नीचे गिरना, विर कर टुकड़े होना, बुर २ हो जाना—मट्टि० १५। १३ १।५५५ २ गिरना, दुबना, हलाक होना—वा० १।४४ ३ नष्ट होना बर्बाद होना ४ झन होना—मुद्रा० ३।८, प्रे०—नष्ट करना, प्र—, नष्ट होना, मिट जाना, वि०—, १ गिरकर टुकड़ होना २ तितर-बितर हो जाना—चकर जाना ३ नष्ट होना, मिट जाना बर्बाद होना ।

ध्रुवः [ध्रुव + कन्] १ नीचे विर जाना दुबना गिर कर टुकड़े हो जाना २ हाँस, नाज, बर्बादी—सो पूर्व की किरण में धूमिकच ।

ध्रुविकः [ध्रुव + कन्] मुहूर्त का प्रताप ।

ध्रुवः [ध्रुव + कन्] १ ध्रुव, जगता, पताका, देवधन्वी, रघु० ७।४०, १७।३२, पञ्च० १।२६ २ ध्रुव वा

प्रमुख व्यक्ति, मंडा या भूषण (समाप्त के अन्त में)
 जैसा कि 'कुलध्वज' (कुल का भूषण या पूज्य
 व्यक्ति) में 3 वह बात जिसमें सच्चा लहराना है,
 4 चित्त, निमान, लक्षण, प्रतीक-भूषण, मकर
 भावि 5 देवता की भावि 6 पशुकाश्रम का चित्त
 7 व्ययसाय का चित्त—व्ययसाय लक्षण 8 जननेन्द्रिय
 (किसी जामवर को, चाहे नर हो या मादा)
 9 कलाल 10 किसी वस्तु से पूर्व की ओर स्थित घर
 11 घमड़ 12 पाकड़, (ध्वजीक सदा लहराना
 जाल में बहाने के रूप में प्रयुक्त करना) । मम०
 —अनुकम्प—पट्टा—बहम्प सदा—रघु० १२।८९
 —आहूत (वि०) युद्धभूमि में पकड़े हुए,—मुहम्प बह
 कभरा जहाँ सबे रखे जाते हैं—दुध, ताड़ का दूध
 —महुरण: वायु, हवा,—ध्वजम्प सदा सदा करने की
 कूटपत्ति,—ध्वि (स्त्री०) सबे का डहा या आम
 मनु० १२।८५ ।

ध्वजकम्प (वि०) [ध्वज + कम्प + कम्प्य व] 1 सड़ो से
 सजा हुआ 2 चित्त से युक्त 3 अपराधी के लक्षण से
 युक्त, दागो, (पु०) 1 जडा-बाहक 2 मछ बिच्छो
 कलाल ।

ध्वजि (वि०) (स्त्री०) ध्वि [ध्वज + ध्वि] 1 सच्चा
 बरदार सच्चा से जाने वाला 2 चित्तधारी 3 मुरा
 पात्र के चित्त वाला—मनु० ११।९३, (पु०) 1 ताका
 बाहक 2 कलाल, मछ बिच्छो—याज्ञ० १।१४।
 3 गाड़ी, गकट, रच 4 गहाड़ 5 माँप 6 मोर
 7 घोड़ा 8 बाइलन—नी मना रघु० ३।६०, सि०
 १२।६६ कि० १३।९ ।

ध्वजीकरणम् [ध्वज + ध्वि + कृ + कृत] 1 सड़ोमानन
 सबे को फहराना 2 दाबा स्थापित करना किसी बात
 को हेतु बनाने वाला ।

ध्वज् (म्भा० पर० ध्वनि ध्वनि) शब्द करना, ध्वनि
 पैदा करना गुनगुनाना भिन्नभिन्नाना, गुनना, प्रति
 ध्वनि करना, गजना बहावना शिथिलमाना इव
 ध्वजनुदिश—कि० १६।६६, अथ धोर बार ध्वनि
 नवनीला जलवर भासि० १।५०, बरिदावान मेघ
 वन्—मट्टि० १।५, १६।३, ध्वनि पशुपममूले ध्वज
 मयिदधानि—गीत० ५ प्रेर०—ध्वनयति गद्य करवाना,
 (बटी की भाँति) बजवाना, परन्तु 'ध्वानयति' अन्धध
 उच्चारण करवाना ।

ध्वजः [ध्वज् + अच्] 1 शब्द, स्वर 2 भिन्नभिन्नाना,
 गुनगुनाना ।

ध्वजकम्प [ध्वज् + कम्प] 1 ध्वनि निकालना 2 ध्वज
 करना, मुझाव देना, वा (अर्थ) लगाना 3 (सा०
 शा० में) ध्वजना शक्ति, शब्द या वाक्य की बहु
 शक्ति जिसके कारण यह मुझाव से भिन्न किसी
 ओर ही अर्थ का प्रकट करे मुझाव शक्ति—पु०
 अवन भी ।

ध्वजि [ध्वज् + इ] 1 शब्द प्रतिध्वनि, कोलाहल या
 शोर पृ० १५३ ध्वजि ध्वनिमन्त्रकम्प रघु० १५।१३
 २।३२ उत्तर १५।१३ 2 लघ, नाम स्वर सि०
 ६।४८ 3 वाद्ययंत्र की ध्वनि रघु० १।३१ 4 वादल
 गरज या गडगडाहट 5 केवल स्थितध्वनि 6 शब्द
 7 (सा० शा० में) वाक्य के तीन मुख्य भेदों में से
 सर्वात्म्य वाक्य जिसमें कि सर्वत्र का ध्वज्यर्थ, अर्थात्
 अर्थ की प्रतीति अधिक वस्तुकारक हो या जहाँ
 मुख्यार्थ, ध्वज्यर्थ के अधीन हो इत्युक्तमभिप्रायि
 ध्वज्य वाक्यान्वयार्थ कथित वाक्य० १ (रस
 गगात्र में ध्वनि के तीन भेद बताये गये हैं, दे०
 'ध्वनि के तीन') । मम० ग्रह 1 कान 2 ध्वज,
 या ध्वनि 3 ध्वजध्वनि वाक्य 1 एक प्रकार का
 वाक्य 2 वाक्यो 3 मुरला वगी चिकार भय या
 शक के कारण वाली का विकार दे० काकु ।

ध्वजित (पु० क० कृ०) [ध्वज् + कृ] 1 निराश्रित
 2 निहित ध्वनिमन्त्रकम्प लघु 1 शब्द 2 वादल
 को गरज या गडगडाहट जि० १।१२ ।

ध्वजिन् (स्त्री०) ध्वज कल्प्, नाम ध्वजी ।

ध्वजिन् ध्वज-अच् 1 ध्वज 1 कवी कवी निरकार
 प्रकट करने के लिए मयास के अन्त में प्रयुक्त किया
 जाता है उदा० नीयच्छात्र 2 मिश्रक 3 ध्वज
 ध्वजि 4 ध्वजि माया । मम० अर्वादि उन्म
 पुष्ट कथल ।

ध्वजि [ध्वज् + कृ] 1 शब्द 2 गुनगुनाना भिन्न
 भिन्नाना बजवाना ।

ध्वजिन् [ध्वज् + कृ] ध्वजिन् ध्वजिन् ध्वजिन् ध्वजिन्
 मुद्रा २ ध्वजिन् ध्वजिन् ध्वजिन् ध्वजिन् ध्वजिन्
 सि० ६।५० । मम०—उन्म, ध्वजिन् ध्वजिन्,
 1 ध्वज 2 ध्वज 3 ध्वज 4 ध्वजिन् ।

ध्वजि [ध्वज् + कृ] 1 ध्वजिन् 2 ध्वजिन् ।

अधोतिष-बुद्धिः (स्त्री०) दृष्टने वाले तारे- लुचकः
अधोम्य अधोतिषी-विष्मृत्ति न जानति बह्मणा
नैव साधनम्, परवाक्येन बतते ते वै नक्षत्रलुचका ।
या-अभिलिखेन य सास्व ईश्वरत्वं प्रपद्यते, न
पक्षित-लुचक ९५० ज्ञेयो नक्षत्रलुचक, बराह ०
२।१७, १८।

नक्षत्रिन् (पुं०) [नक्षत्र + इति] 1 चन्द्रमा 2 विष्णु
का विशेषण ।

नक्षः, नक्षन् [नक्ष + ल, हुकारस्य लोप] हय या पैर की
अंगुली का नाखून, पंजा, नखर नखानां पण्डित्य
प्रकटयतु कस्मिन्मृगपति-भाषि० १।२, ११, १२।
१२२ बीस की संख्या, -क्षः भाग, बस। सम०
-अक्षः लरोक्ष, नक्षत्रिन्-भाषि० २।३२, आशस्तः
लरोक्ष, नक्ष द्वारा किया गया बाध भा० ५।२१,
-आयुषः 1 व्याघ्र 2 सिंह 3 मृग, आक्षिन्
(पुं०) उत्सृ-ब्रूहः भार्द, -आक्षिन् नाखून की उड़
-आयुष बाध, ध्वन (यम्) नहरी, नाखून काटने
की कैंची चिह्नितम्, -रक्षनी नाखून काटने की
कैंची, नहरी, -यवन्, -अक्षः नक्षत्रिन्, नराक्ष, नक्ष-
पक्षलुचान् भाष्य कर्षणविष्णु-मेघ० ३५, -युषः धनुष
-रक्षणा 1 नक्षत्रिन्, 2 नाखून रंगना, चिह्नित-
(अपने पंजों में फाड़ने वाला) शिकारी पक्षी, लक्ष्म
छोटा सव ।

नक्षत्र्यच (वि०) [नक्ष + पञ् + लृट्, मुन्] नाखून मुन्-
वाने वाला, सि० १।८५।

नखर, -रन् [नक्ष + रा + क] अंगुली का नाखून, पंजा
नख। सम० आयुषः 1 व्याघ्र 2 सिंह 3 मृग
-आक्षः करवीर ।

नखामणि (अम्य०) [नखैश्च नखैश्च प्रहृत्य प्रवृत्त मुद्रम्
इ० न०] परस्पर नखाघात द्वारा होने वाला पुट,
नाखूनों की लड़ाई ।

नाखिन् (वि०) [नक्ष + इति] 1 बटे 2 नाखुवा वाला,
तेज पंजों वाला 2 कटीला, कटिदार (पुं०) व्याघ्र
या खेर जैसा नखधारी जन्तु ।

नक्षः [न गच्छति - न + यञ् + ङ] 1 पहाड़-कु० १।
१५, ७२ सि० १।७९ 2 वृज 3 पीका 4 सूर्य
5. तारा 6. सात की संख्या । सम० अक्षः बदर
-अक्षिणः, -अक्षिराजः, -अक्ष 1 (पहाड़ों का
स्वामी) हिमालय पर्वत ? सुवेद पर्वत, -अक्षि इन्द्र
का विशेषण, -उच्छ्रय पहाड़ की ढ़ेंच, ओक्ष
(पुं०) 1 पक्षी 2 कीबा 3 सिंह 4 जरम नाम का
काल्पनिक पक्षी, -अक्ष (वि०) पहाड़ पर उत्पन्न, पहाड़ी
-अक्षि १०।९, (अ) हाथी, जा, -अक्षिणी पर्वत की
का विशेषण, -वसि 1. हिमालय पहाड़ 2 (वनस्पतिवा
का स्वामी) चन्द्रमा, -विद् (पुं०) 1 कुम्हाड़ा

2 इन्द्र का विशेषण, -मूर्धन् (पुं०) पहाड़ की चोटी
-रक्षकः कार्तिकेय का विशेषण -रन् ० १।२।

नखरन् [नक्ष इव प्रसारा सत्यम् वा० र] कस्मा, अक्षर
(वि०) धाम-नगरमनाय मणि न करोति-अ०
२। सम०-अक्षिणः, अक्षिणः, अक्षका नगर
का मुख्य अक्षनायक, मुख्य काराधिकारी 2 नगर
पाल, नगर का अधीक्षक, -उच्छ्रयः उपनगर नगर के
आसपास की आबादी, -ओक्ष (पुं०) नागरिक,
-काक्ष शत्रुका कीबा एक निरस्तारयुक्त उक्ति
वस्तुः हाथी, -अक्षः 1 नगर के कार्य, नगर
2 नागरिक, प्रबलिय अक्ष में मृति को नगर के
चारों ओर घुमाना, -अक्ष उपनगर, -अक्षः प्रधान
मन्त्र, राजपण --रक्षा नगर का अधीक्षक या शासन,
रक्ष नगरवासी, नागरिक ।

नखरी [नगर + डीप्] नगर, । सम० काक्ष तारन
-अक्षः कीबा ।

नक्ष (वि०) [नक्ष + क्त, लृट् न] नगा विवरण, हय
हीन न गम्य स्नानमाचरेत् मुन् ० ४।४५ नक्ष-
अपणके वेदों ग्नक कि कश्चिति-भाष० ११०
2 बिना जोता हुआ, बिना बसा नुनसान अक्षः
1 नगा जिन् 2 अपणक 3 पानकी 4 सेना के साथ
रहने वाला भाट, बूझना हुआ भाट ला 1 नदी०
निर्लेख, (या स्वेच्छाधारिणी) स्त्री 2 रक्षकता
होने के पूर्व की आयु वाली लड़की इस अर्थ में त्वं
की आयु से कम की (अर्थात् ओ इधर उधर नगा
जा या सके) । सम० अक्षः, अक्ष 1 जो इधर
उधर नगा बूझ सके 2 विशेष रूप से (दिग्बर
मन्त्राद्य का) जैन या बौद्ध जिन् ।

नक्षक (वि०) [स्त्री-पिनका] 'नक्ष + कृन्' नगा,
विवरण, क 1 नगा जिन् 2 दिग्बर मन्त्राद्य
का जैन या बौद्ध जिन् 3 भाट ।

नक्षका, नक्षिका [नक्षक टप्, पक्षे इत्यम्] 1 नदी,
निर्लेख, (या स्वेच्छाधारिणी) स्त्री 2 रक्षकता
होने के पूर्व की अवस्था का लड़की ।

नक्षकलम् [दानव नक्ष क्रियते नक्ष + लिङ् + कृ-
त्-यच्, मुच्] नगा करना ।

नक्षत्रिण्य, -आयुष (वि०) [नक्ष + यञ् = इच्छुच्,
उकञ्] नगा होने वाला ।

नक्षः [न नति गच्छति न + यञ् + ङ] प्रेमी, आर ।

नक्षिकेत् (पुं०) अग्नि का विशेषण ।

नक्षिर (वि०) [न क्षिरम्, न क्षयेन नमस्त] दे० अक्षिर,
अ० ५।१, १२।७ ।

नक्ष (अम्य०) निषेधात्मक अम्य 'न' के लिए नागि-
नागिक मन्त्र ।

नक्षः [अमा परं नक्षति 'चोड पञ्चाने' के अर्थ में

'प्र' के पश्चात् 'न' को 'व' हो जाता है। 1 नाचना, यदि मनसा नटनीयम् - शीत० ४ 2 अभिनय करना (धोखे से चालाकी से) अति पहुँचाना, प्रेर० - नाटयति-ने 1 अभिनय करना, हाव भाव व्यक्त करना, (नाटकों में) नाटक के रूप में वर्णन करना, शरसार्थं नाटयति - स० १ 2 अनुकरण करना, नकल करना - स्फूर्तिकटकप्रतिनटयत्येष क्षैल अभिगतचरमिन् नृपपात्रैरभिधायम् द० ४१६५, (विशेष 'नचाया' अर्थ को प्रकट करने के लिए नट) यातु का 'नटयति' रूप बनता है - अर्ज० ३:१२६, ॥ (चुरा० उ४० नाटयति-ने 1 गिर गइना, गिरना 2 चमकना 3 अति पहुँचाना।

नटः [नट् + अच्] 1 नाचने वाला - न नटा न विष्टा न गायका अ० ३:० 2 अभिनेता कुर्वन्मय प्रहस-नस्य नट कुनात्रस-अर्ज० ३:१२६, १:१२, 3 पवित्र श्राव्य का पुत्र 4 अशोक वृक्ष 5 एक प्रकार का नर कुल। सम० - अस्त्रिका लज्जा, ह्रीं ईश्वरः शिव का विशेषण - चर्चा नाटक के पात्र का अभिनय, नृपञ्च, - बंभनम् हरनाम रत्न नाट्य रत्न नय, - बरः प्रधान नट सूत्रधार संरक्षक हरनाम (क) अभिनेता, नट।

नटयन् [नट + ह्यट्] 1 नाचना, नाच 2 अभिनय करना, हावभाव प्रकट करना, नाटकीय चित्रण।

नदी [नट् + डीप्] 1 अभिनेत्री 2 मुख्य नटी (सूत्रधार की पत्नी) 3 बेरवा, रदी। सम० - कुतः ननं की का पुत्र।

नट्या [नट् + य + टाप्] अभिनेताओं की मञ्चली।

नयः, -इच् [नल् + अच्, कस्य इत्यच्] नरकुल का एक भेद। सम० - अमारव, अमारव नरकुलों का बना शोषका प्राय (वि०) जहाँ नरकुल बहुत होते हो अथवा नरकुलों का जगल - संज्ञितः (स्त्री०) नरकुलों का मञ्च।

नयल (वि०) (स्त्री०-सी) [नय + ल] सरकड़ों से ढका हुआ।

नयिनी [नय + इनि + डीप्] 1 सरकड़ों का डेर 1 नरकड़ों का बना हुआ मुँहा या छम्मा, वह नदी जहाँ सरकड़ों के पीछे बहुतायत से हों।

नयिल, (वि०), नयल् (वि०) (स्त्री०-सी) [नय + इन्च्, इन्चुच्] सरकड़ें जहाँ पर बहुतायत से हों, या जो सरकड़ों से ढका हुआ हो, सरकड़ों से युक्त स्थान।

नयल [नय् + य + टाप्] सरकड़ों का डेर।

नयल (वि०) [नय + इन्चल्] सरकड़ों से व्याप्त - अथ सरकड़ों का डेर का छम्मा, दो नयलानीय नय परेश बलान्धपुलान्धमिनामयनयाः - रघु० १८/५।

नय (न०क०क०) [नय् + क्त] नुका हुआ, प्रयत, नुकने वाला, दमन वाला 2 नुका हुआ, अवसन्न 3 कुटिल, टेढ़ा - नय् याम्योत्तर रेखा (पथ्य दिन रेखा) से किसी पङ्क्ति की दूरी। सम० - अक्षाः क्षिरोविन्दु की दूरी अय (वि०) 1 नुके हुए जरीर वाला 2 नुकने वाला 3 प्रयत (वी) 1 नुके हुए बरंगे वाली स्त्री 2 स्त्री - नास्तिक (वि०) कपटी नाक वाला, - अक्षुः टेढ़ी जीहो वाली स्त्री।

नयितः (स्त्री०) [नय् + क्तित्] 1 नुकाव, नुकना, प्रयमन 2 नुकना कुटिलता 3 अभिवादन करने के लिए जरीर का झुकाना, प्रथति, आलोचना 4. (उद्यो० में) योगाज में स्थानप्रथम।

नय् (ध्या० पर० नदति, नदिन) 1 शब्द करना, कलकल ध्वनि करना, (बादल की भाँति) गरजना - बाध-शब्दाय नदति मधुर चानक्ये नयन् - मेघ० ९, नदपाकासगताया आनमधुमादिल्लाभे - रघु० १:७८, शि० ५:६१, अट्टि० २:१४ 2 बोलना, चिल्लाना, पुकारना, दहाड़ना (प्रायः सम्बन्ध, स्वन आदि कार्य के साथ) ननाद इत्यन्नाद, शब्द चोरतर नदिन - ब्रह्मा० 3 बरबराता - अ० नाटयति-ने 1 कोलाहल से भर देना, कोलाहलमय करना 2 शब्द करना, अय् - बहादना, जोर से पुकारना, (बैंग की आवाँ) राजना, कु० १:५६, नि - , शब्द करना, चिल्लाना - रघु० ५:७५, मार्क० ५:१०, अट्टि० ६:११७, ३ (प्रवर्धति) ध्वनि करना, नुचना, प्रतिध्वनि करना कम्पावा प्राणवन घोरा मङ्गा जिवाः प्रवर्धति आदि अस्ति - , नुचन, प्रतिध्वनि करना, प्रेर० - कोलाहल से भरना, नुचायमान करना वा० २:१२६, अट्टि० ३:१४, नि - , ध्वनि करना, नुचना - अय० १:१२, प्रेर० - कदन करवाना का वीन बजाना - अय० चिल्लाने बिनाघटे - अट्टि० १०।

नयः [नय् + अच्] 1 दरिया, बड़ी नदी (जैसी कि सिन्धु) शि० ६६, (यहाँ मल्लि० की टिप्पण - प्राकजोतसो नयः प्रत्यकजोतसो नवा ननंदा विनेत्वा) 2 नदी, प्रवहणी, नाला - कि० ५:१७ 3. समुद्र। सम० - रावः समुद्र।

नयच् [नय् + अयच्] 1 जोर, दहाड़ 2 बैंग की दहाड़।

नयी (नय + डीप्) दरिया, प्रवहणी, सरिता - रविरीतयला तपायवे पुनरोपेन हि नुमन्ते नदी - कु० ४४/५।

न० - ईन - ईक, कम्पाः समुद्र, - नुचलिकः एक प्रकार का नरकुल - क (वि०) बलोलम् (क)

नीधय का विशेषण (अय्) कनक - सरस्वत्यन्तरने का स्थान, नाट - बौद्धः भाड़ा, उतराई, किराया, - बरः शिव का विशेषण, पतिः 1. समुद्र 2 बरक का विशेषण, - ह्यट् उचका हुआ दरिया, - अयच्

नदीलक्षण,—सामुद्र (वि०) (देश आदि) जहाँ नदी के पानी से सिंचाई होती हो, सिंचित नदी या नहर द्वारा सिंचाई पर जो निर्भर करता हो, नं० ३।३८ नु० देवसामुद्र,—जब नदी की धारा,—बकः नदी का मोड़,—जब (वि०) (स्त) 1 नदी में स्नान करने वाला 2 नदियों के मथानक स्थानों उनकी गहराइयों और प्रवाहों को जानने वाला तत् समाश्रयप्रदाता सर्वानामाधिनस्तद्विषये नदीगणान् रघु० १६।७५ अन् 3 अनुभवी, चतुर,—सर्वं वर्जुनं वृक्ष ।

मह (भू० क० क०) [नह् + क्त] 1 बड़ा हुआ बाँधा हुआ, जकड़ा हुआ, धारा आगे से बढ़ धाराय किया हुआ 2 डका हुआ जरा हुआ अन्तर्ध्विन 3 सयुक्त, संयोजित दे० 'नह्', उच्च गाठ बंधन बंध गिरह । नद्यो [नह् + ष्टन् + षोप्] चमक के पीना ।

नद्यो, नद्यां (स्त्री०) [नन्दति सेवयाधि न तुष्यति न + नद्य् + ष्टन्] पति को बहुत ननानु पया च देव्या सद्विष्टपुष्यभूयेण—उत्तर० १। सय० नद्यां पति (नद्यां पति) ननदाई, पति की बहुत का पति ।

नद्यु (अव्य०) (मूल रूप से न और नु का सयुक्त रूप जिसे आज कल पुनश्च शब्द के रूप में प्रयुक्त किया जाता है) यह अव्यय निष्क्रान्त अर्थ प्रकट करता है—1 पुछताछ प्रश्न, ननु समान्यकृत्या गौतम—मालवि० ४ 2 निश्चय ही, अवश्य, निश्चय, क्या यह असंदिग्ध नहीं (प्रश्न सूचक बहु के साथ) यदा मेवाबिनी सिध्दोपदेशे मलिनयति तदाबाधस्य दावा ननु—मालवि० १ 3 निस्सन्देह, बेगल इतय उपपन्न ननु शिष्य सत्यवर्ग्य—रघु० १।६० शिवाक्ष नाथेन सदा सत्सङ्गिपुष्पा निपण्या ननु दिग्दर्शक—३।४५ 4 संशोधन सूचक अवयव (आ 'अ') ननु मानव—दश०, ननु मूर्ख पठितमेव पुष्पाधमन्—इ उत्तर० ४ 5 कृपा करक अनपेक्ष करक प्रय को प्रकट करने के लिए प्रविचारेणमक कथन के रूप में प्रयुक्त होता है—ननु मा प्रायः पतुर्गन्तव्यं कृ० ४।३० 6 कभी-कभी सहायनशब्द के रूप में प्रयुक्त होता है—ननु पदे परिकृत्य भण मृच्छ० । ननु अज्ञानधना मं वर्तते—सा० २, ननु शिष्यानु भवान्—विक्रम० २ 7 तर्कानुबद्ध बचा के समा आक्षेप करने या शिरोधार्य प्रमाण प्रस्तुत करने के लिए प्रयुक्त होता है (इसक "हवान् प्राय उच्यते जाता है) नद्यवेनानाभ्यव बुद्धिबलदिशरोणि अवन-नासा च बोमहादोना काव्योमोनि इवते—शारो० ।

नद्यु (स्वा० पर०) नद्यति, नदिन) प्रसन्न होना, हसित होना, खुश होना सन्नुष्ट होना, (किसी बात पर) हर्ष प्रकट करना—नन्ददुस्सन्नुष्टमेन सत्यवी—रघु० ३।२३, ११, २।२२, ६।३, अष्टि० १५।२८, प्रेर० ।

नद्यति से—प्रसन्न करना, खुश करना, हसित करना, आनन्दित करना—अन्तर्हिते सविनि तैव कुम् इती ये वृष्टि न नद्यति सरधरणीययोथा ज० ६।२ भट्टि० २।१६, रघु० १।५० अथि 1 हर्ष प्रकट करना प्रसन्न होना सन्नुष्ट होना आनन्दितबनाध-भिनदति—का० १०८ नाभिनदति न वृष्टि भण० २।५३ 2 बधाई देना, जय अवकाश करना स्वागत करना, नमस्कार करना—तापसीधिराभयमायासिष्ठति ज० ४ तमभयवत्प्रथम प्रबोधिनि रघु० ३।६८ २।७४ ७।६९, ११।३० १६।६४ 3 प्रशंसा करना तारीफ करना बधाया करना, अच्छा समझना नाम यम्यभिनदति द्विषोर्न स पुमान् कि० ११।७३ स० ३।०४ रघु० १०।३५ न ते बर्षाभिर्नदामि—स० २ ४ बरसा करना, बारिश पसन्द करना, अप्रीति करना (प्राय न क साथ) नाभिनदति केलिकला मा० २ नाभिनदेत मय्य नाभिनदन जीविनाम यनु० ६।६५ हि० ४४ आ पमन्न होना खुश होना आनन्दितारम्भा वृष्ट्या भट्टि० २० १४ प्रेर० प्रसन्न करना खुश करना उत्तर० ३।१६ या० १।२५६ प्रति 1 आशीर्वाद देना रघु० १।५३ मन्० ३।१६६ कु० ३।८३ 2 स्वागत करना बधाई देना, जयअवकाश करना, हर्ष प्रकट सम्कार करना प्रतिनद्य स ता पुत्राय—महा० यनु० २।५६ ।

नद्य [नन्द + ञ] 1 आनन्द मुल हर्ष 2 (११ इय नद्यो) एक प्रकार की धारा 3 मंडक 4 विष्णु 5 एक शास्त्र का नाम जो यदोरा का पति तथा कृष्ण का पालकपिता (जिसकी दल रेल में कृष्ण का रक्षक गया था वह कि कम उमर मारना चाहता था, 6 नद्य उग का प्रसिद्धता (यह कहा नदवश वा जिसकी भी भाई पाण्डित्य में काम करते थे तथा अन्तः-अन्त के पत्नी चाणक्य की नीति के द्वारा यममात्र मज दिय गया था) समन्ताया नद्य नव हृदरोग, ६। भूय—भूरा० १।१३ अगुहाले गलन नमृप्राय नद्य उगः भूगो १।३ ७७ ७७ १। मय०—आनन्दन

नद्य [नन्द + ञ] 1 आनन्द मुल हर्ष 2 (११ इय नद्यो) एक प्रकार की धारा 3 मंडक 4 विष्णु

5 एक शास्त्र का नाम जो यदोरा का पति तथा कृष्ण का पालकपिता (जिसकी दल रेल में कृष्ण का रक्षक गया था वह कि कम उमर मारना चाहता था, 6 नद्य उग का प्रसिद्धता (यह कहा नदवश वा जिसकी भी भाई पाण्डित्य में काम करते थे तथा अन्तः-अन्त के पत्नी चाणक्य की नीति के द्वारा यममात्र मज दिय गया था) समन्ताया नद्य नव हृदरोग, ६। भूय—भूरा० १।१३ अगुहाले गलन नमृप्राय नद्य उगः भूगो १।३ ७७ ७७ १। मय०—आनन्दन

नद्यन कण का विशेषण—प्राक्, अन्त का विशेषण ।

नद्यक (वि०) [नद्य + ञ] 1 पतिन व न राजा अनन्तित करने वाला प्रसन्न करने वाला 2 पुत्र होने वाला हर्ष मनाने वाला 3 पतिार का प्रसन्न करने वाला का 1 नद्यक 2 कृष्ण का तलवार 3 ननवार 4 न नद्य ।

नद्यविन् (पु०) [नद्य + ञ] विष्णु का विशेषण ।

नद्यवृ [नद्य + अद्यु + ञ] आनन्द, प्रसन्नता, खुशी ।

नद्यवृ (वि०) [नद्य + ञ] 1 खुश करने वाला मुद्राकरना, प्रसन्न करने वाला—कः 1 पुत्र—याज्ञ० १।०७६, रघु० ३।६६ 2 मंडक 3 विष्णु

का विलोपन 4 भिन्न-भिन्न इन्द्र का उद्धान, आनन्द-
धाम—अभिज्ञानशेषात्मा का क्रियते नन्दनदुःख। कु०
२।४१, रघु० ८।१५ 2 हृष्यमाने वाला, प्रसन्न हान
वाला, 3 हर्ष, सम० जन्म पीले धवन की लकड़ी
हरिचन्दन।

मयत्, मयन्त [मय + मय् अन्त आदेश मद् + भिज्
+ मय् (अन्त)] पूर डेटा ।

मन्त्रा [नन्त्र] १ गुणा तर्प आनन्द २ सम्पत्तता
 चनाइपता समृद्धि ३ छाटा मिट्टा का जल-पात्र
 ४ तनद पान को बहन ५ प्रशिपदा घण्टा जीव एक।
 इसा आइमान को तीन निशियां (यह गुण निशियां
 समझा जाती है) ।

नमि (पुं० स्त्री) । नमि-इन । हय प्रमत्ता ज्ञान
कीशान्दानन्दिवचन वि (पुं०) १ विष्णु का
विमर्षण २ शिव ३ शिव का अनुचर ४ बुद्धात्मन्
फाडा (इत जय म नयुं भा) । यम० ईश,
ईश्वर १ शिव का विशेषण २ 'शिव का प्रान
अनुचर धाम' वह तीर्थ जहाँ राम के बनवासमान
में भगत रहा रघु० १११८ छोटे अर्जुन का
रथ बचन १ शिव का विशेषण २ शिव ३ बाद
पक्ष का अन्त अर्थात् अवाक्य या पुणिमा ।

मण्डिकः । नान्दिः कन् ; 1 त्व प्रसन्नता 2 छाटा जल
पात्र 3 शिव का अनुचर । सम० ईश, ईश्वर
1 शिव का एक मकर अनुचर 2 शिव ।

नमिषः (वि०) [नन्द निनि नन्द निषः निनि वा,
 १ आनन्दित हृष्ट प्रसन्न अक्ष २ आनन्दित करन
 वाला प्रसन्न करन वाला (पु०) १ पुत्र २ नाटक
 म नाट्योपास या आद्याचरण कहन वाला अक्षि
 ३ निष का मुख्य अन्धकार हास्यान वा हर्ष केन निमि
 पर निमि मयारी करना है तृप्त प्रसन्न नरा
 कु० १४३ भा० १११ श्री १ पुत्रो अत्र ०-
 ११९ २ नन्द परि वा कहन ३ आनन्दित वा काम
 धन ४ अक्ष हृष्ट प्रसन्न का पूरा करना है तथा ५ अक्ष
 का अन्धकार कर्मक वसिष्ठ है, अनिष्टा निन्दता तम
 यन्त्रावबुद्धे अनात्त सन् ११२-१६९ ६ मया वा
 विषय ७ पवित्र कर्मा तुल्यो ।

मन्त्र (२०) । अथा इति पा - शतं । न मन्त्रा मन्त्रा
पह्निमाय । (प्रथम वेद मे इत्युक्तं) । यथा यथा
तन्मन्त्रात् ।

नपुस (पुं) नपुस । नञा समास प्रकृतिभाव] ३।
पुरुष न हो हिमदा ।

मनुष्यक - कम् । न पुमान् न स्त्री (न ०) स्त्रीपुंलिंगे मनुष्य
 जायते । १ उपपत्त्यगो (न स्त्री न पुंस्त्वो) २
 नामर्धे द्विवचो ३ भोक् इपाक् कम् । नरुसक
 लिंगे कः सूत्र २ अपत्यकः लिंगः ।

नप्तु (१०) [न पतन्ति फिलरो वन — न + पत् + नृक्
नि०] पाता नाजी (लहक का पुत्र या लहका का
पुत्र) ।

नमः [नम् + अच्] आशयः मानम् — अच् आकाश, अन्त-
रिक्षम् ।

मन्त्र (न०) [नष्टत मयं मह-गह-अमुत्तराया
लाइल] 1 आकाश अन्तरिक्ष—रघु० ५।१९
भग० १।१९, सु० १।११ 2 बदक 3 काहरा
बाप्य 4 पानी 5 जीवन की अवधि बाप्य (प०) 1
वर्षा २५३ 2 नागाध भूज 3 (नुलाई)—बसन्त के
अनुस्मृ इत्यर्थे म न० भी) श्रावण मास प्रत्या-
गन्त नभोम दायित श्रान्तिनालवनाभी—मेघ० ४, रघु०
१८८९ १० ४१ १८।५ 4 पाकिस्तान 1 सम०
अवृत्त चानक पक्षी कालिम् (प०) मिह—महा-
वदन्त—अमुत्तरा (१०) मुय वसन्त 1 बन्दना 2
अद्भुत घर (वि०) तमन विहारी कु० ५।१३,
(४) 1 भवा उपदेवता रघु० १८।६ 2 पक्षी
कुत वाद्यम् दुष्टि (वि०) 1 जवा 2 आकाश
की श्रोत देवन वाला होय, पूष वदन्त—मयी
आक ह गंगा—आत्म हवा क्षिति मुय—अङ्गलम्
शाममान अन्तरिक्ष नद नमःशब्दमार्गाशा—वा०
२० १० होय सन्ध्या रहस्य (प०) अश्वाकार
रेखु (प्र०) काहरा घट लय पुष्पा लिखु
(वि०) अकाश की चान्न वाला उन्नत बहुत
ऊपर न० अक्षलिङ्ग—मह (प०) देवत सि० १।११
लक्ष्मी (रघु०) 1 सांप्रण्य 2 आकाशवर्मा
स्वर्लो अजाय—स्पर्श वि० नमःशब्दी उन्नत

वर्षा (नव अमर) 1 आकाश 2 वर्षा ३
1 मयूर)

[illegible]

नभस्य गगनं गतः । अगस्त्यः 'सप्तर्षि' के अनुकूलः ।
 अगस्त्यः का 'सप्तर्षि' गणः । अगस्त्यः । अगस्त्यः ।

महत्त्व (वि०) [इनम - यथा मयः] बाणभक्त
मृगनाला मयाभुवन १०० दवा बाण ३०
१९३ मयः १०० ३३ वि० ११००

मन्त्रांक [नमः + प्रत्यय 1 अक्षरकार 2 र ह्रस्व का विभक्त्यर्थ
मन्त्रात्र (२०) अक्षर + विद्या प्रत्यय मन्त्र से प्रकृत
"१" क या वाद्वय कान्त य ।

[illegible]

महि० १५१, १०३१, १२३१, सि० ४५७, ब्रह्मण होता, परामश स्वीकार करना झुक जाना
—अथवा सविमान् नयेत् काम० ८५५ ३
झुकना, दबाना भीषा होना—जननीदुर्बरेणास्य
—महि० १५२५ नेम् सर्वदिवा—का० ५५ उन्-
वति नवति वरति मेघ—मृच्छ० ५१२ ४ ठह-
रना, झुकाव होना ५ झुका हुआ होना बह होना ६
अग्नि निकालना। अम्बु उठाना उल्लत होना
अथ—, १ झुकना नष्ट होना नोचे को झुकना
—सि० १७४ २ झुकाना फटकाना—त्वय्यादानु
अलमबनते—मेघ० ४५ उच्— १ (क) उड्य
होना, प्रकट होना, उभता—उल्लमोल्लम्य सीपते
दरिद्राणां मनोरथा—यच० २११ (ख) १ फट
करना, धमीप होना—उल्लमयकालदुहितम्—यच०
५ २ उड्य होना, चड़ना, ऊपर उठना (जा०
भी) उल्लमति नवति वरति यरति मेघ मृच्छ०
५१२५ नल्लत्वेनोल्लमन—अर्जु० २६९ ३१४ सि०
१७९ ३ उठाना, उल्लति करना—कि० १६३५ प्रेर०
ऊपर उठाना, सीधा खड़ा करना—उच— जाना या
जाना, पहुँचाना २ होना भाव में होना वसित होना
सामने जाना (सप्र० के साथ या अकेला) कस्याप्यन्त
शुक्लमुपगतं दुर्बलेकान्तो वा—मेघ० १०९ मल्ल
नाम कचमुपवसेत् स्वयमोर्ध्व—मेघ० ९१ यदेवो-
पननं दुर्कालुक् तद्वसतारम—विश्व० ३१२१
अर्जु० २१२१ मेघ० १० रघु० १०३९ ३ उप
स्थित करना देना, प्रस्तुत करना—एकलोपोपनन
प्रजाजकिम्—रघु० ८१६८ परि— १ नोचे को
झुकना, झुकना (जैसे कि कोई हाथी अपने दाँतों से
प्रहार करने के लिए) वप्रकीडापरिणतयत्रप्रक्षयोप
ददर्श—मेघ० २ बिन्दे नाम पवणसोत् २४ एव
—नि० १८१७ २ झुकना नमस्कार करना झुकाव
होना—अज्ञापरिणते (बदनकमल) महि० ११६,
३ परिवर्तित होना क्पातर्गित होना ऊपर चारु
करना (करन० के साथ) लनाभावेन
परिणतमस्या कयम्—विश्व० ६१८ और
बल वा स्वयमेव दर्शितुमायेन परिणतते
—भारी०, मेघ० ४५ ४ विकसित या परिपक्व होना
पचना, परिणतप्रसव बाणैश् उत्तर० ७१०
मेघ० १८ कि० ५१३७, मालवि० ३१८ अर्जु०
११२६ ५ (आयु में) बढ़ना, बड़ा होना, बूढ़ा होना,
बौध होना, परिणत शरम्भनिकानु प्रपायु—मेघ०
११०, इसी प्रकार 'अरत्परिणत' अति ६ बूढ़ा
(सूर्य बादि का) पश्चिम में छिपना अनेन लवने
परिणतो दिवस—का० ४७ ७ पच जाना, व्रत
परिणमेव यत्—महा०, व्र (प्रवर्तित) नमस्कार

करना, अभिवादन करना, विनम्र प्रवृत्ति करना
(कर्म० या सत्र० के साथ) न प्रवर्तति देवताम्
का० १०८, ता प्रणाम का० २१९ भय०
११४४ रघु० २१२१ (साध्याय अथवा बाँट बगों से
झुक कर प्रणाम करना दे० साध्याय) कण्ववत् प्रवणम्
इह की भाँति पूर्ण रूप से भूमि पर गिर कर नमस्कार
करना सब बगों से भूमि को स्पर्श करने हुए तु०
दहप्रणाम) वि, १ अपने आपको झुकाना नम्र
करना विनीत होना विनम्रति वास्य तरव प्रचये
कि० ६१४ अर्जु० ११६७ महि० ७५२ दे०
विनत विपरि—१ बदलना २ बहक कर खराब
होना लक्ष् १ झुकना नोचे को होना झुकाव होना
—सनतापी कु० ११३४ महि० ११३१ पशुम मनता
विश्व० ५१२६ २ नम्र होना विनीत होना
समसतामरीणां—रघु० १८१४।

नमत् (वि०) [नम् + अच्] झुका हुआ विनीत कुट्टर
बन्ध तः १ अभिनेता २ कुर्वा ३ स्वामी प्रम्
४ बाधन।

नम्यम् [नम् + ऋट्] १ विनीत होना, झुकना नम्र होना
२ दबना ३ विनम्र नमस्कार अभिवादन।

नम्यत् (अव्य०) [नम् + ऋक्] प्रामाण्य अभिवादन
प्रणाम पूजा (यह शब्द स्वयं सर्वत्र सप्र० के साथ
प्रयुक्त होता है नम्यै बदान्यगुणैः तत्रै नमोऽयम्
भामि० ११०४, नमस्त्रिभुवने नम्यम कु० ११४
परन्तु क के योग में कर्म० के साथ यमित्रय
नमस्कृत्य सिद्धा० परन्तु कभी कभी सप्र० के साथ
भी नमस्कृत्यो नमिहाय सिद्धा० यह शब्द मन्त्रा
शब्द का अर्थ रचना परन्तु समझा जाता है अव्य०)।
सम० कार, कृति (स्त्री०) कारयन् प्रणीत
मादर प्रणाम मादर अभिवादन (नमस दादर क
उच्चारण के साथ) कृत (वि०) १ जिसे प्रणति
दी गई है जिसकी प्रणाम किया गया है २ सम्मानन
अर्पित, पूजित—युक् आध्यात्मिक गुरु आत्मन्
(अव्य०) 'नमस्' शब्द का उच्चारण करना अर्थात्
विनम्र अभिवादन करना—इह कश्चित् पूर्वज्यो नवा
वाकं प्रणामहे उत्तर० १११।

नमस (वि०) [नम् + अच्] अनुकूल मान्युष्ट व्यवस्थित।

नमस्ति, नमस्यिन (वि०) [नमस् + क्यच् नमस्य + क्त
विकल्पेन यलोप] जिसे नमस्कार किया गया है।
सम्मानित जिसे प्रणाम किया गया है।

नमस्वति (ना० वा० पर०) नमस्कार करना श्रद्धांजलि

अर्पित करना, पूजा करना अर्जु० २१२४।

नमस्क्य (वि०) [नमस् + क्त] १ अभिवादन प्रणम करने का
अधिकारी सम्मानित, आदरणीय, वन्दनीय २ आदर-
युक्त, विनीत, सदा पूजा, अर्चना, श्रद्धा, भक्ति।

नमूचि [न + मूच + इत्] १ एक ईश्वर जिसे इन्द्र ने मार
भिराया था। वनमूचि नमूचेश्वरसे शिर रघु०
१२२, (जब इन्द्र ने असुरों पर विजय प्राप्त की तो
नमूचि नामक एक असुर ने इन्द्र का डटकर मुकाबला
किया और जल में इन्द्र को डूबी बना लिया।
उस ईश्वर ने इन्द्र से कहा कि यदि तू यह प्रतिज्ञा
करे कि मैं तेरे पुत्रों में से कोई भी नहीं हूँ, तो मैं तूसे
पानी में न डूबूँ तो मैं तूसे छोड़ दूँगा। इन्द्र ने
प्रतिज्ञा की और फलतः उस छोड़ दिया गया। फिर
इन्द्र ने संध्या समय पानी के जग के साथ (जो न
पानी था न सुखापान नमूचि का शिर काट डाला।
इससे एक कचन के अनुसार नमूचि इन्द्र का शिर था
उसने एक बार रघु की शक्ति को पी लिया
और उसे निर्बल एवं असमर्थ बना दिया, फिर
अश्विनीकुमारों (मरुतों ने भी) ने इन्द्र का वस्त्र
दिया, जिससे उसने नमूचि का शिर काट डाला)
२ कामदेव।

नमेकः [नम् + क] एक वृक्ष का नाम, छद्मक या सुपुत्राय
गया नमेकप्रभावनता कु० १५५ ३४३, रघु०
४३४।

नम्र (वि०) [नम + र] १ निर्बल प्रणयिणी, मुका हुआ
विना नीचे लटकने वाला भक्ति नम्रास्तव फल-
गर्भ ज० ५१२ स्तोकावली अनाम्या - मेघ० २०
पृ० ११०६, रघु० ११९ २ प्रणयिणी मादर
प्रतिभाषणसील, अनुपम नम्र प्रणयिता लिखित
रघु० ३१२५ इत्युच्यते नाभिरया मय नम्रा कु०
७२८ ३ सुखल, विनयो, विनयशील, अङ्गाल-
—मय० ५५ ४ कुटिल वृक्ष ५ पूजा करने वाला
६ मदन, उपासक।

नम्र (२१० आ०—नयते) १ जाना २ रक्षा करना।

नम्र [नी + मूच] १ निर्बल मार्गदर्श प्रबन्धन
२ अङ्गहार, निषेधका शासन, दिनचर्या—जैना कि
पूर्व में ३ दुर्गति, अवदुष्टि ४ नीति, शासन
विषयक बुद्धिमत्ता, राजनीतिज्ञता नामिक प्रशासन
और नीति नयप्रकार व्यवहार दुष्टनाम्—
मूच्य १३, नयमुचोचितमिव भूषते सनुपकार
फल विद्यमन्ति - रघु० १२७ ५ नीतिकता, न्याय,
न्यायपरता, न्यायता चलति नयान् विनीयता हि
मेत कि० १०२९, २३, ६१८, ६६४ ६ कप-
रेखा, दाया, बोझा—बुद्धा० ६११ ७ सिद्धांत
वाक्य, नियम ८ कम, पञ्चाङ्गी, रोग ९ पद्धति बाद
सम्पत्ति १० वार्षिक पद्धति वैशेषिक नये
मावा०, १०५। नम०—कोविद् च (वि०) नैति-
कमल, दूरदर्शी ज्ञान (१०) नमः ११ वदुष्टि
करने वाला, बुद्धिमान्, दूरदर्शी रघु० १२५—मेनु

(पु०) राज नीतिशास्त्र पारवत—विष्णु (पु०)

विचारकः राजनयिक, राजनीतिज्ञ—शास्त्रम्

१ राजनीतिशास्त्र, २ राजनीति का या राजनीतिक
अर्थशास्त्र या कोई अन्य ३ नीतिशास्त्र—शास्त्रम्
(वि०) न्यायपूर्ण, न्यायपरामर्श कि० ५१७४।

नम्र [नी + मूच] १ मार्ग दर्शन, निर्देशन, सहायन,
प्रबन्धन २ भेदा, निष्ठ लाना, नीयता ३ हृदयत
करना शासन करना ४ प्रापण ५ नीति। नम०
—अभिराम (वि०) नीति का प्रयत्न करने वाला,
प्रियदर्शन (—अ) बौद्ध अलक्ष १ दीपक, लौ
२ नीति का प्रयत्न ३ कोई प्रिय वस्तु—उपास-
नीय का करना कु० ४२३ मोक्षर (वि०)
दुष्प्रमाण दुष्टि—प्राम के जन्य—छद्म पलक, वच-
दुष्टि प्राम—मुद्रम् अक्षिणीयक—विचर १ कोई
द्वयमान पदार्थ २ अतिवृत्ति—अलक्ष्य नीति मेघ० ३९।

नम्र [न + मूच] १ मनुष्य पुमान् पुत्र सपुत्रयति
विशेष मोक्षार्थी नम्र रश्मि समुद्रमिव दुर्धर्ष नृप
भायमन पद्म कि० २० - मनु० ११६, २१२३
२ नम्र का मोहरा ३ दास्य की नीति, मनु०
४ परमात्मा निष्पुत्र ५ दोना गधों को दोनो
शर दोना फलक—हाथ के एक निने में दूसरे हाथ
के निने तक की लम्बाई ६ एक प्रवीण धूर्त का
नाम ७ अर्थ का नाम दे० नी० नरनारायण।
नम० अविद्य, —अविधि, ईश्वर, ईश्वरः
देव वति बाह्य नम० १०२७, मनु०
७१३, रघु० २१५, ३०० ७६२, मय० ३३,
पञ्च० १३१०, अलक्ष मनु—अनन्य विष्णु का
विशेषण,—अनन्य नमः इन्द्र १ नम

रघु० २१८ ३३३ ६८० मनु० १०५३ २ वंश,
विनाशक और शत्रु का शिकार करना एक तद-
कणिकनरेन्द्राभिमानो या विवेक—अन० ५१,
मुनिवृद्धा नरेन्द्र कर्माक्ष ६ नम्र—अन० २८८,
(यहाँ शब्द दोनो जगों में प्रयुक्त हुआ है)।—अनन्य
विष्णु का विशेषण, अलक्ष मनुष्यों में अलक्ष १३
कुमार राजा, कन्या मनुष्य की कोटी का
आध्यात्मिक गुण की १२ करने वाला अक्षरिन्
(पु०) विष्णु का बोधा अवतार पु० मुनिवृद्ध की नी०

विष्णु (पु०) गङ्गा विनाश भट्टि० १५१४

ना वल कृष्ण का नाम (वि० न०—नी) भूत

कृष्ण से दोनो एक ही माने जाते थे परन्तु पुराणों
और महाकाव्यों में वो भिन्न माने जाने लगे—
नर तो अर्जुन का समकालीन कृष्ण का नारायण
का क (कृष्ण माना गया इन्हीं दोनो पुरोहों अर्जुन
या अक्षिणरामों करने हैं कहा जाता है कि वह
दोनों हीमात्र पर्वत कही जायता और नपत्या किया

—(कभी-कभी बचकर केवल 'पि' रह जाता है) 1. बाचना, कबर कसना, बचन में डालना—अतिविम्वेन वसकने—सं० १, मदारनामा हरिना पिनडा—सं० ७२ 2 पहनना, कपड़े धारण करना—अट्टि० १४७ 3. डकना, (लिकाके में) बंद करना—सं० ११९, उद् बाचना, बकड़ना, गूचना—रघु० १७३०, १८५०, बरि—बेरना, अन्तर्जटित करना, पणिबृत करना—सदयति परिबद्ध शक्तिभि राक्षितानाम् सं० ५११, रघु० ६१६४, मालवि० ५११०, अतु० ६१२५, लम्—1 कसना, बाचना, बकड़ना 2 बरन पहनना, धारण करना, धारणा से मुसज्जित होना, सबाचना, लिबास पहनना—समनास्तीमन सैन्यम्—अट्टि० १५११, १५१३, १७४ 4 (किसी कार्य के लिए) आने आपको तैयार करना, (आ० इस अर्थ में) मूढाय मज्जते महा० छेत्तु बज्जमणीध गिरीयकुमुलज्जनेन मनज्जने मन्० २१६, टे० मज्ज भी ।

महि (अन्ध०) निषेध ही नहीं, निषेध रूप से नहीं, किसी भी अवस्था में नहीं, बिल्कुल नहीं—आजसा न हि न प्रेते वीथेम दसमूर्धनि अट्टि० १९१५ ।

महुषः [मह + उष] एक चन्द्रवर्णी राजा, ययाति का पिता, पुरुरवा का पोता और आयु का पुत्र यह बहुत बुद्धिमान, और बलवान राजा था । जब इन्द्र ने वृष का मार दिया, और उस बड़बुद्ध्या का प्रायश्चित्त करने के लिए वह एक सरोवर में जा छिपा, तो उस समय महुष राजा को इन्द्र के आसन पर बिठाया गया । वहाँ रहते हुए महुष इक्ष्वाकी के प्रेम को जीतने के विचार से मर्त्यावियों को पालकी में ओत कर उसके प्रबल की ओर चला । मार्ग में उसने मर्त्यावियों को 'सर्वे' 'सर्वे' (तेज चलो, तेज चलो) कह कर फूँसी से चलने के लिए कहा । उस समय अगस्त्य मुनि ने महुष को साँप बन जाने का शाप दिया । वह आकाश से इस पृथ्वी पर गिरा और तब तक इसी दुःखसा में पड़ा रहा जब तक कि युधिष्ठिर ने आकर उठार न किया हो ।

मा [मह + मा] नहीं, न (=न) ।

माकः [न कम् लक्ष्मं हु लक्ष्मं, तत्प तासि अथ इति लि० प्रकृतिभावः] 1 स्वयं—आमाकरधरमं नाम् रघु० ११५, १५१९ 2 आकाश मंडल, ऊर्ध्वतर गगन, अन्तर्लिङ्ग । सम० धरः 1 देव 2 उपदेव—नाथः, —नायकः इन्द्र का विशेषण, —अस्मिता अन्तरा—सर्व (पुं०) देव, —अट्टि० १४४ ।

माकिण (पुं०) [माक + इति] देवता, मुर—मि० १४५ । माकुः [मृ + उ माक आदेशः] 1 वस्त्रीक 2 पहाड़ । माकथ (वि०) (स्त्री०—की) [मलथ + अण्] तारा-

सम्बन्धी, मलयविषयक, —अण् २७ मलयों में छे चन्द्रमा की गति के आधार पर विना क्या महीना, १० बड़ी बाले तीस दिनों का एक मास—माहीचष्ट्या तु मासम-महोरात्रं प्रकीर्तितम्—सुर्व० ।

माकथिकः [मलय + ठञ्] २७ दिनों का महीना (जिसमें प्रत्येक दिन—चन्द्रमा की मलयान्तर्गति पर आधारित है) ।

मासः [मास + अण्] 1 साँप, विशेष कर काला साँप 2 एक काल्पनिक नामवैल्य जिसका मूख मनुष्य जैसा और पूछ साँप जैसी होती है तथा जो पत्तल में रहता है—मग० १०२९, रघु० १५८३ 3 हाथी—केच० ११, ३६ लि० ४१६३ विक्रम० ४१२५ 4 मगर-मच्छ 5 चूरा, आधाचारी व्यक्ति 6. (तमास के जन्म में), मध्यमास्थ और पुरुष व्यक्ति—उता० पुरुषनाम 7 बाबल 8 कुटी (बीवार में मड़ी हुई) 9 बागकेसर, नागराजीका 10 सरोरस्व पाँच प्राणी में यह बाघ जो बकार के डारा बाहर निकलती है 11 मात की लक्ष्मा—अण् 1 रांन 2 बीता । सम०

—अन्वया 1 हृषिनी 2 हाथी की सूँड़, —अन्वया हृषिनी, —अन्विषः शेष का विशेषण, —अन्वयः, —अन्वयः, —अन्विषः 1 मरुड का विशेषण 2 मोर 3 सिंह,

अन्वयः 1 मोर—पञ्च० १११५ 2 मरुड का विशेषण, अन्वयः मरुड का विशेषण, —अन्वयः इतिनायुर,

—इन्द्रः 1 प्रथम या श्रेष्ठ हाथी—तु० ११३६ 2 इन्द्र का हाथी रैराजत 3 शेष का विशेषण, —इन्द्रः 1 शेष की

उपाधि 2 परिभाषेमुत्तेजर ठञ्, कई अण्य पुस्तकों का प्रणेता 3 पतवलि, —अवरम् 1 मोहो का तथा (जो मैत्रिक छाती के बाँधते हैं), बज्जस्वाय 2 बज्जस्वाय का एक रोग विशेष, गर्वाग्रहमेव, —कैलाः कुचिठ फलों का एक वृक्ष, —गर्गम् सिन्धूर, —वृक्षः शिव की

उपाधि, —अण् 1 सिन्धूर 2 रांय, —विष्णुका वैमलिक, —जीवन्तम् रांया—अन्वयः, —अन्वयः 1 हाथी दाँत

2 बीवार में लगी कुटी या बीवारपीरी, —अन्वी 1 एक प्रकार का मुरजमूली फूल 2 वेव्या, —मल्लम्, —नायकम्

माकथेना मलयः, (क) साँपो का स्वाधी, —मल्ला हाथी की सूँड़, —विष्णुः बीवार में लगी कुटी या बीवारपीरी, —अन्वी

माकथमुल्ला पञ्चमी को मनाया जाने वाला उत्सव, —अवः एक प्रकार का रतिवध, —मा० 1 युद्ध में सन्धुकी को फसाने के लिए प्रयुक्त

एक प्रकार का जादू का जाल 2 वरुण का सत्त्व या जाल, —गुणः 1 वरुण का पीछा 2 पुण्याय वृक्ष, —अन्वयः हाथी पकड़ने वाला, —अण्ः गुलर का पेड़,

पीपल का पेड़, —अन्वयः भीम की उपाधि—मूषकः शिव की उपाधि—अन्वयः 1 तवेरा 2 साँप पकड़ने वाला, —अन्वयः ऐरावत का विशेषण, —अन्विषः (स्त्री०)

—**बहिष्का** 1. नये बूरे तत्त्वों में पानी की बहराई नापने के लिए अंशकित बांस विशेष 2. बरती में छेद करने का बर्तन, —रत्तन, रेणु सिद्धर, —रंग सतरा —राज्य बीच की उपाधि, —रत्ना, —रत्नारी, —रत्नी नाथकेसर, पान की बेल, —कोक: सांघों की बुनिया, सांघों का फूल, मूलोक के नीचे अवस्थित पाताल लोक, —**बारिक**: 1 राजकील हाथी 2 महाबत 3. घोर 4. गड्ढ की उपाधि 5 हाथियों का नृपपति 6 किसी समाज का प्रधान व्यक्ति, —बंजबन्, संभूतम् मिन्धूर, —साङ्गबन् हस्तिनापुर ।

नगर (वि०) (स्त्री०—री) [नगर+अन्] 1 नगर में उत्पन्न, नगर में पैदा 2 नगर से संबंध रखने वाला, नगरीय 3. नगर में बोला जाने वाला 4 नग्न, शिष्ट 5. चतुर, चालाक 6 बुरा, दुष्ट, दुष्प्रसंगी (त्रिपुले नगर की बुराईयों ग्रहण करती हैं), —र 1 नागरिक —वेब० २५, शा० ४।१९ 2 देवर, दांत का मांस 3 व्याख्या 4 नारंगी 5 बकाबत, कठिनार्थ, लभ 6. भ्रुकर्ता, जानकारी का लब्धन री 1 लिपि वर्षायाका जिसमें प्रायः सम्पन्न किसी जाती हैं- नू० देवनागरी 2, चालाक और बुद्धिमती स्त्री—हल्पा-थीरी स्वरानु लक्ष्य लक्ष्य नागरीमि ३० ६० १६ 3. स्मृही नाम का पौधा ।

नगरक, नागरिक (वि०) नगरेमव नृन्, नगर+ठक] 1. नगर में पैदा नगर में उत्पन्न 2 नग्न, शिष्ट, चालीन—नागरिकपुत्रा सजापवनाम्—शा० ५ 3 चतुर, बुद्धिमान, चालाक, —क 1 नागरिक 2 नग्न या शिष्ट व्यक्ति, धीर बहादुर, बहु प्रेमी जो अपनी पहली प्रेमिका को अतिशय प्रेम प्रदर्शित करता है, परन्तु किसी अन्य के अपनी प्रणय प्रार्थना करता है 3 जो नगर के दुष्प्रसंगों में फँस गया है 4 चोर 5 कलाकार 6 पुलिस का मुख्य अधिकारी —विष्णु० ५, शा० ६ ।

नगरपति, नागरी [नागरी+इट+क, नाग इव व्येटनि नाग+वि+इट+क] 1 लम्पट, दुष्टचरित्र 2 जाट 3 संबंध विधाने वाला ।

नागचक्र [नाग+च+क] नगर, नगरी ।

नागवन् [नागर+वन्] बुद्धिमत्ता, चतुराई ।

नागविक्रम [नागविक्रम+अन्] अभि ।

नाक [नट+अन्] 1 नाचना, अभिनय करना 2 कर्षाटक प्रिय ।

नाटकम् [नट+अन्] 1 त्वरित, क्लृप्त 2 क्लृप्त के इस क्लृप्त शब्दों में है पहला, परिभाषा आदि के लिए है० शा० २०७७, —क अभिनेता, नाचने वाला ।

नाटकीय (वि०) [नाटक+क] नाटकसंबंधी, नाटक-विषयक—पूर्वपद: प्रस्ताव नाटकीयत्व वस्तुतः—वि० २।८ ।

नाटार: [नटया अपत्यन् बारक] अभिनेत्री का पुत्र ।

नाटिका [नाट+कन्+काप्, हत्यम्] एक छोटा या कच्चा प्रहसन, एक क्लृप्त, उदा० रत्नाबली, प्रियदर्शिका, या बिडसाकभजिका, शा० २० परिभाषित करता है —नाटिका सम्पन्नता स्यात् स्त्रीशायी चतुराईका, प्रख्यातो धीरान्तरिस्त्रय स्थापनायको नृप, स्थापित पुरस्सवभा समीतव्यापुतामबा, कन्यानृणां कन्याश्च नायिका नृपसहाया, सप्रवर्तन नेताऽप्या देश्यास्त्रामेन शास्त्रिण, देवी पुनर्मेदेज्येष्ठा प्रगल्भा नृपसहाया, एव पदे मानवनी तद्वय समो ह्यो नृति स्यान्कीर्तिका स्थापितवर्णा मध्य पुन ५३९ ।

नाटिकम् [नट+गिन्+कत+कन्] अनुकृति किसी की चेष्टादि का अनुकरण, तर्केत हावभाव प्रदर्शन —भीतिनाटिकेन—शा० ५ ।

नाट्ये- [नटी+इकृकृ+वा] किसी अभिनेत्री या नर्तकी का पुत्र ।

नाट्यम् [नट+न्यात्] 1 नाचना 2 अनुकरणार्थक चित्रण भाग, हावभाव प्रदर्शन, अभिगम्य करना नाट्ये व दत्ता वयम् ग्ल० १।६, नून नाट्ये भर्वाप च चिर नार्दशीर्गवर्षीय विक्रमाक० १।२० 3 नृत्यकला, अभिनय कला नाट्यक या नाट्य भिनस्त्रवेर्देन्य बहुवायेष्ट समाराधनम् धाम्बि० १।४, टयः अभिनेता । म० आषाढ नृत्यकला का नृप, उक्तिः (स्त्री०) नाटकीय वाक्यविन्यास —**बहिष्का** कर्त्तु अभिनयवली नियमावली प्रिय शिव की उपाधि बाला 1 नाचघर 2 नाटक क्षेत्र के चर या स्थान, शास्त्रम् 1 नाट्य विज्ञान नृत्य गीत तथा अभिनय मन्त्री विद्या 2 नाट्यशास्त्र पर लिखा गया ग्रन्थ ।

नाटि-डी (स्त्री०) [नट+जिन्+इन्, नाटि+डीप्] 1 किसी पीछे का वाला डठल 2 कमल की भाँजली इडो 3 (चमनी या तारा की भाँज) नर्तियों के आकार का शरीर का अंग—बहिष्कृतवनाडीचक्रम् व्यवस्थितारामा मा० ५।१,२ 4 बाँसुरी, मुरली 5 नासूर बाला दाव, नासूर, नाडीचक्र 6 हाव या पैर की नख 7 चौबीस मिनट के समय के बराबर माप, बडी 8 आधे मूहल का कालमाप 9 ऐन्द्रजालिक शाल । सप्त० चरन एक पत्नी, खीरम् एक छोटा नरकुल, —चंच कीका, —चरीका मन्त्र देवता, —मंडलम् आकाशीय बिन्दुत्त रेखा, —मंडलम् नली के आकार का एक उपकरण, —अन् नासूर, नृपचक्र, रितने वाला फोडा ।

नाटिका [नाटि+कन्+टाप्] 1 नली के आकार का अंग 2 २४ मिनट का समय, बडी—नाटिका विष्णुदे पट्टः—मा० ७, का० १३,७० ।

माधि (जी) वध (वि०) [माधी वधति—माधी+धा+
अध्, वधायेत्, ह्रस्व, भृष् च, प्रथे ह्रस्वाभाव ।
(नय धादि) नलिकाकार अर्धों को गति देने वाला,
माधियमेन स्वातेन—का० ३५३.—अ सुवार ।

माधकम् [न माधकम्, इति] लिकका, मोहर लगी हुई
कोई वस्तु, एषा माधकमोषिका मरुगिका—पृच्छ०
१।२३, याज्ञ० २।२६० ।

मातिचर (वि०) [न अतिचर] जो बहुत लम्बी अवधि
का न हो, जो बीचकालीन न हो ।

मातिदूर (वि०) [न अतिदूर] जो बहुत दूर न हो
अधिक दूरी पर न स्थित हो ।

मातिबाध [न अतिबाध] दुर्वचन तथा अपवादों का
परिहार करना ।

माध् (धा० पर०) नाधनि-कभी-कभी आ० जो)
१ निवेदन करना प्रार्थना करना, किन्तो बान को
याचना करना (न० अथवा विक्रम० के साथ)
मोक्षाय नायने मुनि बोध० नायने जिम्मा पति न
भुभुन—कि० १३।१९, मनुष्यमिष्टानि नमिष्टदेव
नायनि के नाम न लोकनायम् नै० ३।२५ २ शक्ति
रक्षना, स्वामी होना, छा जाना ३ नय करना, कष्ट
देना ४ आशीर्वाद देना मगल कामना करना शुभा-
शीष्ट देना (केवल इस अर्थ में आ०), नायिताय
महावी० १।११, (मन्त्र) निम्नांकित पवित्र में
बननागा है कि यहाँ 'नायने' शब्द पर 'नायति' इत्य-
यादिप, क्योंकि यहाँ अर्थ केवल 'निवेदन या प्रार्थना
करना' है—वीन स्वामिनवाक्ये कुवयुग पञ्चन या
हुवा), सपिचो नायने—महा० ।

माधः [नाध् + अच्] १ धर्म, स्वामी, रक्षक मन बाधे
कृतस्वयंशुभ प्रधानम् रघु० ५।१३, ३।५५,
मिलीक, कलाम आदि २ पति ३ मारवाही खेल
की नाक में डाला हुआ रस्सा । मम० हरि पशु ।

माधवत् (वि०) [नाध + मनुष, वध्वम्] १ मनाग
जिसका कोई स्वामी या रक्षक है—नाधवत्स्वयंशु
लोकास्वभवाया विपत्स्यमे उत्तर० १।५३ २ ग
अधी पराधीन ।

माध [नाध् + धञ्] १ अँधी दहाड़ थिल्लाहट, नीच
गरजना, दहाड़ना महमाद, धन आदि २ धनि
—आ० ५।२० ३ (योगशास्त्र में) अनुनासिक ध्वनि
जिसे ह्रस्व चन्द्रबिन्दु (०) के द्वारा प्रकट करते हैं ।

माधिन् (वि०) [नाध् + गिनि] ध्वनि या शब्द करने
वाला, अनुनादी अक्षरबुधनादी रथ—रघु० ३।५९,
१।५५ २ रागने वाला, गरजने वाला—अर०, सिंह
आदि ।

मालेय (वि०) (स्त्री—वी) [मदी+इच्] नदी में
उत्पन्न, अजीव, समुद्रीय, —अन्व वैजयन्तक ।

माला (अध्य०) [न+माल्] १ अनेक स्थानों पर,
विभिन्न रीति से, विविध प्रकार से, तरह तरह से
२ स्पष्ट रूप से, अलग, पृथक् रूप से, ३ बिना
(कर्म० कर्म०) या अर्थ के साथ) माला माली
निष्कला लोक बाबा—बोध०, (विषय) न माला
शमुना रामात् बर्षणाचोक्षो वर—तदेव ४ (माला
के बारम्ब में विशेषण के रूप में प्रयोग) विविध
प्रकार का, तरह तरह का, माला प्रकार का, विभिन्न,
विविध माला फले फलति कल्पलतेव मुनि भवु०
२।६६, भग० १।९, मनु० १।१४८। सम० अत्यन्त
(वि०) विभिन्न प्रकार का, बहुपक्षी अर्थ (वि०)
१ विविध उद्देश्य या लक्ष्यों वाला २ विविध अर्थों
वाला, (शब्द के रूप में) अनेकार्थक—कारन्
(अध्य०) विविध प्रकार से करके,—रत्न (वि०)
विविध रस से युक्त—मालवि० १।६ अन्व
विभिन्न रूप वाला विविध प्रकार का, बहुपक्षी,
माला प्रकार का, अर्थ (वि०) विभिन्न रसों का,
विषय (वि०) विविध प्रकार का, तरह तरह का,
विविध, —विषय (अध्य०) विविध रीति से ।

मालाहः [माला + अण] नन्द का पुत्र ।

माल (वि०) [न० व०] अन्तर्हित, अनन्त ।

मालरोषक (वि०) [न अन्तरविनाशक—अन्तरा + छ,
—कन्] जो अलग न किया जा सके अनिवार्य रूप
में जुड़ा हुआ ।

मात्रम् [नय + ट्ठन्] प्रधाना स्तुति ।

माधिकरः, मादिन् (पु०) [माधी कराति—क+ट, ह्रस्व,
नन् + गिनि] माधी पाठ करने वाला (नाटक के
आरम्भ में मार्गात्मक बचन बोलने वाला) ।

माधी [मन्दिन् देवा अत्र नन्द् + चञ्, पुष्को नृदि औप]

१ हर्ष, सतोष, खुशी २ समृद्धि ३ अमानुष्यता के
आरम्भ में देवस्तुति ४ विशेषकर, नाटक के आरम्भ
में मंगलाचरण के रूप में आशीर्वादात्मक श्लोक या
श्लोकों का पाठ स्वस्मयन—आशीर्वाचनमयस्ता निस्व
यन्मात्रपुण्यते, देवहिन्दुपादीनो तस्मान्माधीति उज्जिना
या—देवहिन्दुपादीनामाशीर्वाचनपूर्विका, नदति देवता
वस्या मन्त्रमाध्वीति कीर्त्तना । मम०—कर दे०
'मादिन्—निस्वाह हर्षना महावी० २।४, कद
कृत् का उपकन—मुञ्च (वि०) (विषय पूर्वक या
वितर) जिनके लिए मादोमुख भाव किया जाय
(—अच्) 'माह्य' पितरों की पुण्यस्मृति में किया
जाये वाला भाव, विवाह आदि शुभ उत्सवों से पूर्व
की जाने वाली बारम्भिक स्तुति (क) कर्म का उपकन,
—बाधिन् (पु०) १ नाटक में मंगलाचरण के रूप
में माधी पाठ करने वाला २ डोल बजाने वाला,
—माह्य दे० अन्तर 'माधीमुख' ।

नामिन् [न जायति सरस्वताम्—न+जाप्+त्तन्, इद्]
नाई, हुआमत कलाने वाला—वच० ५।१। सम०
—हाला नाई की दुकान, बीरगृह, वह स्थान जहाँ
हूनामत होती हो।

नामिष्यन् [नामित+ष्यन्] नाई का व्यवसाय।

नामि (पु०, स्त्री०) [नह्+इङ् भ्रक्ष्वात्तेव] वृद्धी
—यथावर्तमानमिनामि—इत्त० २, निम्ननामि—नेच०
८१, रचु० ६।५२, नेच० २८ २ नामि के समान गर्त
—(पु०) १ पहिए की नाह पच० १।८१ २ केन्द्र,
किरणबिन्दु, मुख्य बिन्दु ३ मुख्य जघनी, प्रधान
—इत्तयनामिन्पयवहलस्य रचु० १८।२० ४ निकट
की रिस्तेदारी बिदादरी, (जाति नामि) का समुदाय
जैसा कि 'सनामि' में ५ सर्वोपरि पचु०—रचु० १।१६
६ निकटसंबन्धी ७ नामिय ८ अन्त्यमृति,—वि० (स्त्री०)
कस्तूरी (जर्षात् मृगनामि) (विसे० बहु० समान के
अन्त में प्रयुक्त 'नामि' शब्द बदल कर 'नाम' बन
जाता है) जैसा कि 'पद्मनाम' में। सम० जावर्त
नामि का गर्त, —जा-जन्तु (पु०)—यू बहमा के
विशेषण,—नाली,—नालन् १ नामिगञ्ज अमरगञ्ज,
नाल २ नामि का बिदारण।

नामिक (वि०) [नामिरस्त्वयि—लृच्] नामि से संबंध,
या नामि से जाने वाला।

नामोक्त्यन् [नामि+गीप्+त्ता+क] १ नामि का गर्त
२ पीडा, ३ विधीर्ष नामि।

नाम्न (वि०) [नामि+यत्] नामि से संबंध रखने वाला,
नामि से जाने वाला, नामि में रहने वाला नाम से
बुद्धा हुआ,—अथ जिव का विशेषण।

नाम (अव्य०) [नम+जिप्+ट] नामांकिन अर्था में
प्रयुक्त होने वाला अव्यय—१ नामधारी नामक, नाम
से—हिवालयो नाम नयाधिराम कु० १, नर्मन्दी
सुवृत्ता नाम—इत्त० ७ २ निस्सन्देह, निश्चय ही,
सबभूष, वास्तव में यथार्थ में अवश्य, वस्तुतः—मया
नाम जितम्—वेणी० २।१७ विनीतवेधेन प्रवेष्टव्यानि
तपोबनामि नाम—त० १, आधवासिनस्य मम नाम
—विक्रम० ५।१६, जब कि मैं जरा आरंभना हुआ
३ सम्भवत, कदाचित्—प्राय 'मा' के साथ अये
पदशब्द इन मा नाम रखिज—मुच्छ० ३, कदाचित्
(वरन्तु मुझे आशा नहीं) रसवालो का—मा नाम
अकार्य कुर्यात्—मुच्छ० ४ ४ समायना—तर्बेय
नामास्त्वयति कु० ३।११, त्वया नाम भूमि विनाम्य
—इत्त० ५।१६, क्या यह सम्भव है (निश्चितक इम से),
इसका प्रयोग 'अपि' के साथ बहुधा मिश्रायित अर्थ
में होता है—'येही इच्छा है' 'क्या ही अच्छा हो'
'क्या यह संभव है कि' 'आपि, दे० 'अपि' के अन्तर्गत
६ झूठमुठ का कार्य, बहाना (बलीक), कातरांतिको

नाम भूत्वा—इत्त० १।१०, इसी प्रकार 'भीतो नावाच-
प्लव' १०४, मार्गो मन्वीत होकर—परिचय नाम
विनीय च जगम्—कु० ५।३२ ६ (कोट् मकार के
साथ) माना कि, बधापि, हो सकता है, अच्छा—
तदुक्तु नाम लोकावेगाम—का० ३०८ करोतु नाम
नीतिज्ञो व्यवसायमितस्तत हि० २।१४, बधापि
यह स्वयं प्रयत्न कर सकता है, इसी प्रकार—मा०
१०।७, इत्त० ५।८ ७ आरचय—अथो नाम पूर्वत-
मारोहति—गण० ८ रोष या मित्रा—अथापि नाम
दक्षाननस्य परं परिचय—गण०, (यह वाक्य निवा-
सूचक भी हो सकता है), कि नाम विस्तुर सस्वाभि-
उत्तर० ४, अथापि नाम सर्वैरभिपूयते गृहा त०
६, नाम शब्द पाद प्रथम वाचक सर्वनाम तथा उसने
व्युत्पन्न कश्च कदा आदि अन्य शब्दों के साथ
प्रयुक्त होकर निम्नलिखित अर्थ प्रकट करता है
सम्भवत 'निस्सन्देह', 'मैं जानना चाहूँगा' यदि
कच नामैतत् उत्तर० ६ का नाम राजा प्रिय
वच० १।१४६, का नाम पाकाभिमुखस्य वसुधांरानि
ईदम्य पिपासुमीये उत्तर० ३।४।

नामन् (नपु०) [नायते अव्ययस्ते नम्यन् अविधीयते
जर्षाजिने वा स्मा। र्मान् वि० साधु] १ नाम
अभिधान, वैधान्तक नाम (विप० बोधम्) कि नू
मायैतदस्या—मुद्रा० १ नाम छह सर्वोक्तिन करना
या नाम लेकर बुलाना नामवाह्यरोदीया भट्टि०
५।५ नाम कु या हा, नाम्ना या नाम्ना कु नाम
रखता, पुकारना नाम लेकर बुलाना चकार नाम्ना
रचुमागमसम्बन्ध रचु० ३।२१ ५।३६, नी कुसलबी
चकार किल नामत १५।२२ चडापीड इति नाम
बन्धे—का० ३४, मातर नामन् पुच्छयम् श० ७
२ कवच नाम मन्त्रप्राप्तिसि सत्त्वतस्य पयसो
नामापि न ज्ञायते अन्त० २।६७ 'नाम भी नहीं'
अर्थात् 'कोई बिन्तु दिखाई नहीं देता है' आदि
३ (व्या० में) सन्ना नाय (विच० आख्यात) तत्ताम
यनाभिधधानि सत्त्व—या—सत्त्वप्रधानानि नामानि
निव० ४ शब्द नाम समामार्शक शब्द—इति वृत्त
नामानि ५ सामधी (विप० मृच)। सम०—केक
(वि०) नाम से विहित—रचु० १०।१३, —अनु-
ज्ञासम्, —अभिधानम् १ किसी के नाम की बोधना
करना २ शब्द संबंध, सम्बन्ध—अवराज (किसी
प्रतिष्ठित व्यक्ति को) नाम लेकर वाणी देना, नाम
लेकर बुलाना अर्थात् स्तुतिस्कार करना,—आली
किसी देवता की) नाम-बुधी,—अरच्यम्,—कर्त्तु-
(नपु०) १ नाम रखना, नाम होने के पश्चात्
वाक्य का नामकरण करना २ नाम वाच का अनु-
बन्ध,—अन् नामोक्तेन कृत्वा, नाम लेकर संबोधित

नारीकेटः—कः [किल् + कञ् = केलः, नारीः केलः
—घ० त०, पूर्वो ह्रस्वः, अथवा नल् + इल् सस्य
रः=नारि, केन अनेन इलति—इल् + क कर्म०
स०] नारियल—नारिकेलसमाकारा दृश्यते हि
सुहृज्जना—हि० ११९४ (यह शब्द इस प्रकार
(नारिकेल—ली, नारिकेर—ल, नाडि (डो) केर,
नालिकेर, नालिकेल—ली) भी लिखा जाता है।

नारी [नू—नर वा जातौ ङीष् नि०] १ स्त्री, अर्धन
पुरुषो नारी या नारी सार्वत. पुमान्—प्लु० ३१२७।
सम०—तर्पणकः १. आर, उपपति २ लम्पट—दूषणम्
स्त्री का दुष्यंसन (वे है—पानं दुर्जनससर्गः पत्या च
विरहोऽनन्तम्, स्वपौज्यगृहवामस्य नारीणां दूषणानि
घट—मनु० १११३.—प्रसंगः कामासक्ति, लम्पटता
—रत्नम् स्त्रीरत्न, श्रेष्ठ स्त्री।

नारिणः [नारीणामङ्गमिव शोभनमयं पश्य] मनरे का
पेड़।

नाल (वि०) [नलस्येवम्—अण्] नरकुल का बना हुआ
—लभ् १ पोला डठल, विशेष कर कमल की डंडी,
विष्णुकमलैः स्निग्धवेदयन्तैः—मेघ० ७६, रघु०
१११३, कु० ७८९, (पू० भी इस अर्थ में) २. शरीर
की नलिकाकार वाहिनी, धमनी ३. हुरताल ४ मूठ,
इस्का—लः नहर, नाली।

नालंभी (स्त्री०) शिब की बीणा।

नाला [नल् + ण + टाप्] पोला डठल, विशेषकर कमल
नाल।

नालिकः, —ली (स्त्री०) [नल् + णिच् + इन्, नालि +
ङीष्] शरीर की नलिकाकार वाहिनी, धमनी २
पोलाडठल, विशेषकर कमलनाल, ३. २४ घटे का
समय, घड़ी ४. हाथी के कानों का बीचने का
उपकरण ५. नहर, नाली ६ कमलफूल।

नालिकः [नलमेव नालमस्यम्य ठन्] मेसा—का १ कमल
की डंडी २. मली ३ हाथी का कान बीचने का
उपकरण, —कम् १. कमल का फूल २ एक प्रकार का
फूल से बजने वाला वाद्ययंत्र, बासुरी।

नालिकेर, नालिकेलि—ली दे० नारिकेर आदि।

नालिक [नात्यां कायति—कं + क तारा०] १ धान २.
बाला, मेजा ३. कमल ४. कमल की रेशेदार डंडी ५.
कमल के फूलों का रेशेदार डठल।

नालीकिनी [नालीक + ङीष् + ङीन्] १. कमल फूलों का
गुच्छ, समूह २. कमलों का आरोवर।

नालिक [नावा सरति—ठन्] जहाज का कर्मचार, बालक
—कवयानिरिति हे कृष्ण बाला नीलान्तिके दधि,
नालिकपुष्पे न विरशाकः—महा० २ पीतवाहक,
मत्स्यह ३. नौवासी।

नालिन् (पुं०) [नी + ङि] केवल, मत्स्यह।

नाम्य (वि०) [नावा तामं नी + यन्] १. जहाँ किसी वा
जहाज से जाया जा सके, (नदी आदि) जिसमें जहाज
चलाया जा सके नाव्याः सुप्रनरा नदी—रघु०
४।३१, नाम्य पयः केचिदतारिपुर्नजैः—शि० १२।७६
२ प्रशंसा के योग्य—अभ्य नयापन, मृतनता।

नावा [नव् + घञ्] १. जोखल होना—गता नावां तारा
उपक्रममसाधिव जने—मृच्छ० ५।२५ २. भग्याशा,
धन, बर्बादी, हानि—भग० २।४० रघु० ८।८८,
१२।६७, इसी प्रकार बिस? बडि? ३. मृत्यु ४.
मुमीबन, सकट ५. गरिहार, परित्रयान ६ भगदड़,
पलायन।

नाशक (वि०) [नश् + णिच् + क्तुल्] विध्वंसक, नाश
करने वाला।

नाशन (वि०) (स्त्री०—नी) [नश् + णिच् + क्तुल्]
नष्ट करने वाला, नाश कराने वाला, हटाने वाला
(ममाम में)—लभ् १. विध्वंस, बर्बादी २ दूर होना,
दूर कर देना, बाहर निकाल देना ४. नष्ट होना,
मृत्यु।

नाशिन (वि०) (स्त्री० नी) [नश् + णिन्] १ विध्वंसक,
नाश करने वाला, हटाने वाला २. नष्ट करने वाला,
नष्ट होने योग्य—भग० १।१८ मनु० ८।१८५।

नाष्टक [नष्ट + क्तुल्] कोई हथ्थ वस्तु का स्वाभी।

नाशा [नाश् + ञ + टाप्] १. टूटा स्तम्भधरनाशायुतया
—उत्तर० १।२९, भग० ५।२६ २. हाथी की सूँठ
३. दरवाजे की चौखट की ऊपर की लकड़ी। सम०
अण् नाक का अपभ्रंश भा० १।१८ छिन्नम्,
रत्नम्, विवरम् नयना, बाह (नपुं०) दरवाजे की
चौखट की ऊपर वाली लकड़ी, —परिच्छादः नाक का
बढ़ना नदी लगना, पुटः—पुट्य नयना, बंशः नाक
की हड्डी, —आवः सरी से नाक का बढ़ना।

नासिकंधय (वि०) [नासिका + धे + क्तुल्, मृन्, ह्रस्वश्च]
नाक के द्वारा पीने वाला।

नासिका [नास् + क्तुल् + टाप्, इण्यम्] नाक, दे० 'नासा'।
सम०—कलः नाक से निकलने वाला श्लेष्मा।

नासिकय (वि०) [नासिका + ण्यच्] १. अनुनासिक २. नाक
में होने वाला, —कयः अनुनासिक ध्वनि, —कण् नाक।

नासीरम् [नाभाय ईर्त्त—ईर् + क तारा०] मेला के सामने
जागे बढ़ना या लड़ना रः ई. (मेला का) अग्रभाग
—नासीरवायोर्भदयो महावी० ९, नै० १।९८ २.
मेला की पक्षि के जागे चलने वाला घोड़ा।

नास्ति (अव्य०) [न + अस्ति] 'यह नहीं है' अनस्तित्व,
'मेसा कि 'नास्तिकीरा' में। सम०—बाहः 'सर्वोपरि'
शासक या परमारमा का अनस्तित्व' मित्रांशु, नास्ति-
कला, अनास्था—बीडेनैव इत्येवा नास्तिबाहसरेण
—का० ४९।

नास्तिक (वि०) [नास्ति परलोकोः तत्त्वाधीश्वरो वा इति मतितस्य—ठन्] या—कः अनीश्वरवादी, अधिश्वासी, जो देवों की प्राप्ताधिकता, पुनर्जन्म और परमात्मा या विश्व के विद्याता के अस्तित्व में विश्वास नहीं रखता है—सि० १६७ मनु० २।११, १।२०।

नास्तिक्यम् [नास्तिक + य्यञ्] नास्तिकता, अनास्था, पावक्यम्।

नास्तिक. (पु०) आम का वृक्ष।

नास्थम् [नास् + यत्] नाक की रस्सी चालू बेल की नकल।

नाह् [नह् + णञ्] १ बघन, निरह २ फटा, जाल ३ महावराह कोष्ठबद्धता।

नाहुष, वि [नहुषस्याग्यम् नहुषः अण इण् वा] उपार्ति राजा की उपार्ति।

नि (अव्य०) [नी + ङि] (प्राय मन्त्र या क्रिया के पूर्व उपसर्ग के रूप में प्रयुक्त होता है क्रिया विशेष या मन्त्रवाचक प्रत्यय के रूप में विरल प्रयोग), गण० के अनुसार, इस शब्द के निम्नांकित अर्थ हैं— १ निबान, मोक्ष की ओर मान निगत निवृत्ति २ समूह या लघु, निकर, निक्का, ३ नीबना निक्का, निगुहीन ४ वृषभ, आदेश, निवेश ५ सतन्त्र, स्वायत्त्य निविज्ञान ६ कुशलतादिपुण ७ नियन्त्रण, निवृत्ति, निवृत्ति ८ सम्मिलन (में सम्मिलन) निपतनुदकम् ९ नातिष्ठ मातोष्य निकट १० प्रपमान, बुगई ११ निवृत्ति, निकर १२ विवर्णन, निवर्णन १३ विश्राम निवृत्ति १३ आश्रय, घर १४ मन्देह १५ निवृत्ति १६ पुट्टीकरण १७ (दुर्गादाम के अनुसार) निकला देना आदि।

निक्षेपः [निर + क्षिप् + णञ्] १ फेंकना, भज देना २ व्यय करना।

निक्षेपी, निक्षेपि (स्त्री०) [नि निक्षेपन शीघ्रने आ रो-यने अच्चा निर + क्षि + ल्यट्, वा निक्षेपना शेषि सोपानपठित यच् ब० ल०] सीढ़ी, खीला रघु-१।१।००।

निक्षेपः, निक्षेपः [निर + षप् + णञ्] १ मांस बाहर निकालना, बहिःश्वसन २ बाहर करना सम्भा मांस लेना, उवाच लेना।

निक्षेपम् [निर + ष् + ल्यट्] १ बाहर जाना बहिर्गमन २ निकाल, बाहर करवाना ३ महाप्रवाण मृग्य ४ उपवास, तरकीब, उपचार ५ बाण।

निःसह (वि०) [निर + सह + क्त] सहल करने या राकने के अयोग्य, असह्य २ निःसक्त, बलहीन, हतोत्साह, प्लान, श्रान्त, अति थिर निःसहासि जाता का० २, इसी प्रकार वा० २, ७, उत्तर० ३ ३ असहनीय, जो सहान न वा सके, अनिवार्य।

निःसारणम् [निर + ष् + णिप् + ल्यट्] १ निष्कासन, निकाल बाहर करना २ घर से निकलने का मार्ग, द्वार, दरवाजा।

निःसर्गः [निर + ष् + णिप्] शेष, बचन, फाल्गु।

निःसर्गः [निर + ष्] १ व्यय, लब्ध करना, अर्थव्यय २ बाधला का मोड़।

निकट (वि०) [नि समीपे कटनि नि + कट् + अच्] नज-दीकी, समीपस्थ, अग्रस्थ, आसन्न, हा, दृष्ट समीप्य (नजदीकी 'पाय' समीप' अर्थों की क्रिया विद्यमान के रूप में प्रकट करने के लिए निकट प्रयुक्त होता है— नजान निकट कालकाय समस्तमया बहम्—वा० ३।२)

निकर [नि + ह् + अच् अच् वा] १ डेर, बट्टा २ लुब्ध, समुच्चय, मगह ३ नज स्वेदावृण् इह हर्षादिनिकर गीत० ११, सि० १।१८, हनु० ६।१८ ३ मठरी ४ मत्त, मार, मत्त ५ उपयुक्त उपहार, बक्षिण ६ निधि, लज्जाना।

निकर्तव्यम् [नि हन् + ल्यट्] काट डालना।

निकर्षणम् [नि + कृ + ल्यट्] विषय या बिहार के लिए मूल्य खान, नगर में या नगर के निकट लोक का नजान २ दानान ३ पक्षी ४ जमीन का टुकड़ी की अर्थी खोना न मया हो।

निकष [नि कष + ण, णिप् वा] १ कसौटी, निकष-अस्तर, निकषे हेममेखे रघु० १०।४६ महावी० १।४ २ [आल०] कसौटी का काम देने वाली कोई वस्तु, पराक्षण—अन्वेष इति निकषस्तत्र चन्द्रकेतु उत्तर० ५।१०, आदेश शिक्षिताना सुचरितनिकष मृच्छ० १।४८, दण० १, का० ४४ ३ कसौटी पर बनी सोने की रेखा कनकनिकषस्त्रिचक्रिबलनेन प्रवर्तित न सा हरिजगद्भवेन पीत ३, कनकनिकषस्त्रिचक्रि विद्यु-द्विधा न प्रमोदनी—विष्णु० ५।१९, ५।१९। सव०

उपल, धावन (पु०), बाबाय कसौटी निकष-प्रसार सत्त्वमहामात्मिकोपलता तमोति—वीर० ११, मत्तनिकषकावा नु तेयो विषय—हि० १।२१०, २।८०।

निकषा [नि + कृ + अच् + टाप्] १ राखन बादि राजको की दाता, (अव्य०) २ निकट, अग्र, समीप, पास (कर्म०) के साथ—निकषा लौकिकमितम् दण०, विलक्ष्य लोको निकषा इति मयि—सि० १।१८। सव०—आत्मका राजस।

निकाल (वि०) [नि + कृ + णञ्] १ वृक्षल, विपुल, बहुल—निकामप्रता ओतोबहा—स० १।१६, २ इच्छुक ब०—वृक्ष कायना, बाह, वृक्ष (अव्य०) १ यक्षेष्ट, दण्डा के अनुसार २ आत्मसतोषार्थ, मन-भर कर, रात्री निहाय सतिष्ठत्यपि नास्ति—स० २, 'नै रात्रि को बी आराय से नहीं को पावा' ३ कालक्ष, आत्मिक—निकाम आत्मी—वा० २।१, (दण्डे

अन्तिम 'य' का लोप करके, इसे समास के प्रथमसङ्घ के रूप में जी बहुधा प्रयुक्त किया जाता है निराम-
निरुद्धा—गीत० ७, कु० ५१२३, शि० ५१५४।

निकायः [नि + चि + चञ्, कुरञ्] १ डेर, सघटन,
शेफी, समुच्चय, झुण्ड, समूह, महावी० ११५०
२ सारथ्य या विह्वलभर, विहास्य धार्मिक परिचय
३ घर, आवास, निवास-स्थल-कक्षीनिकाय आदि
४ शरीर ५ उद्देश्य, चावमारी, निशाना ६ परमारया।

निकायः [नि + चि + प्यत्, नि०] निवास, आवास,
घर—न प्रजापत्यो अन् कञ्चिन्निकाय्य तेऽपिष्ठनि-
मट्टि० ६१६६।

निकारः [नि + कृ + चञ्] १ अनाम फटकना २ ऊपर
उठाना ३ बच हटाना ४ अनादर साबंदारी
५ बचका, क्षति, अनिष्ट, अपराध, तीव्रो निकारा-
ज्व—वेणी० ६१४३, ४४६ ६ गाली, बुरा भला
कहना, बचमान ७ दुष्टता, द्वेष ८ विरोध, बचन
विरोध।

निकारणम् [नि + कृ + चि + प्युट्] बच, हटाना।

निकाशः—त [नि + काश् (स्) + चञ्] १ दधान,
दृष्टि २ क्षितिज ३ मासीय, पक्षी ४ समानता,
समरूपता (समास के अन्त में) मा० ५१२३।

निकाश [नि + कश् + चञ्] कुरचना रणवना—कि०
७६।

निकुञ्जः [नि + कुञ् + प्युट्] एक तोल जो ११४ कुदब
के बराबर है (आठ तोले के बराबर, तोल)।

निकुञ्जः—कम् [नि + कु + चञ् + क, पृथो०] लतामण्डप
लतागृह, कुञ्ज गर्णखाला यमुनानीरवानीनिकुञ्जे
मदमास्त्रिनम्—गीत० ५१२, ११, मनु० ११०३।

निकुञ्ज [नि + कुञ् + कम्] १ निष के एक अनुचर
का नाम रघु० २३३५ २ मुल और उपमुल के
पिता का नाम।

निकुञ्ज (क) कम् [नि + कुञ् + जम्बश् जम्बश् वा] बुद्ध,
सबह, पूज, समुच्चय—लतानिकुञ्जम्—गीत० ११,
किरम० आन० २०, चिकुर० ४३।

निकुञ्जलिका [नि + कुलीन + कन् + टाप्, इत्थम्] अपने
कुल की विशेष कला, आदानी हुनर, जो जन्म से
मनुष्य को उत्तराधिकार में प्राप्त होती है, किसी
घराने की परंपरागत विशेष कला या दस्तकारी।

निकुञ्ज (यू० क० कु०) [नि + कृ + प्य] १ विजित,
निकसाहिय, दीन २ तिरस्कृ भुञ्ज—उत्तर० ६१४
३ प्रथित, बोझा छाका हुआ ४ हटाया हुआ
५ कष्टग्रस्त, क्षतिग्रस्त ६ दुष्ट, बेईमान ७ अचम,
नीच, कमीना।

निकुञ्ज (वि०) [नि + कृ + कित् अचम, बेईमान, दुष्ट
(स्त्री०—स्त्री)] १ अचमपना, दुष्टता २ बेईमानी,

बालसाजी, बोझा—अनिकुञ्जनिपुणं ते वैष्टितं मान-
शौण्ड—वेणी० ५१२१, कि० ११५५ ३ तिरस्कार,
अपराध, अपमान—मुद्रा० ५१११ ४ गाली, निन्दकी
५ अस्वीकृति, निराकरण ६ गरीबी, दरिद्रता।
सम०—ब्रज (वि०) दुष्ट, दुर्मेना।

निकुञ्ज (वि०) —नी [मि + कृ + प्युट्] काट डालना,
नष्ट करना, विरहिणिकृन्त कृतमुत्साहकृतिकेतिकविशु-
ताद्ये (वसते) गीत० ११—कम् काटना, काट
डालना, नष्ट करना २ काटने का उपकरण, एकैक
नक्षत्रकृतेन सर्वे काष्ठायास्त विज्ञात स्यात्—शारी०।

निकुञ्ज (वि०) [नि + कृ + क्त] १ नीच, अधम,
कमीना २ आतिवहिकृन्त क्षुणित ३ गबाक देहाती।
निकेत [निकेतनि निवर्तानि अस्मिन् नि + कित् + चञ्]
घर, आवास, अचम, आनर धितनोकपीनिकेतनी
वर्गम्—रघु० ८१३३ १४५८ भग० १०११ कु०
५१५२, मनु० ६१२३ शि० ५१२६।

निकेतन [नि + कित् + प्युट्] प्याज मन् प्रथम, घर,
आलय, मित्राजो मन्मथजीर प्रविशेत निकेतनम् गीत०
११ मनु० ६१०६, १११०८ कि० ११६६।

निकोचकम् [नि + कुञ् + प्युट्] निकुञ्ज मियटन।

निकचन, निकचान [नि + चञ् + अप चञ् वा]
१ सरोतस्वर २ ध्वनि स्वर।

निका [निञ् + च + टाप्] जू क, बडा, नील ('निका'
का अणुद रूप)।

निकिञ्ज (यू० क० कु०) [नि + क्षिप् + क्त] १ फेंकना
हुआ, डाला हुआ, रक्खा हुआ २ ब्रमा किया हुआ
न्यस्त, चराहर के रूप में रक्खा हुआ ३ भेजा हुआ,
पहुँचाया हुआ ४ अस्वीकृत परिवर्तन।

निकोष [नि + क्षिप् + चञ्] १ फेंकना, डालना (कर्म
के माध), अन्न माग्याना आकाशानेषु कटाक्षनिकोषेण—
मा० ६० २ सरोहर, ग्याम, अमालन—पंच०
११२४, मनु० ८१४ ३ किसी के भरोसे पर या
अभिपूजि के निमित्त, बिना पोहर भगाये रखी हुई
जमा, झुली चरोहर—ममल तु निकोषन निकोष
—पञ्च० २१६६ पर मिता० ४ भेजना ५ फेंक देना,
परित्याग करना ६ मिटाया, मुखाया।

निकोषकम् [नि + क्षिप् + प्युट्] १ डालना, पैरो के नीचे
रखना कु० ११३३ २ किसी वस्तु को रखने का
उपाय।

निकसनम् [नि + कन् + प्युट्] लोचना, नाकडा—जैवा
कि ल्पानाधिकसनम्याव।

निकर्ष (वि०) [नि + कर्ष सर्वे प्रा० क०] टिन्ना—कम्
बल हटार करोड़।

निकात (यू० क० कु०) [नि + कश् + क्त] १ कोडा
हुआ, लोपकर निकाला हुआ २ कमाया हुआ, (कूटे

की भाँति) बोलकर बाड़ा हुआ, अन्तर बढ़ाया हुआ—
अर्थ निजातेमूहहारवतामुरस्त—रघु० १।७८
बन्ध्याउदीपनिजातय ६।३८, बाह निजात हव मे
हुदवे कटाज—भा० १।२९ ३ बाड़ा हुआ, बढ़ाना
हुआ ।

निजित (वि०) [निजित शिज लोपो यस्मात् ष० ङ०]
संपूर्ण, पूरा, समस्त, सब—प्रत्यक्ष ने निजितमधिराव
जात कस्त भवा यत् मेघ० १४ ।

निजः (वि०) [नि+जन्+जन् लट् ङ] बेड़ी से बंधा
हुआ भूखलित, बृहस्प निजहस्य च—यनु० ४।२१०,
ङ, ङ १ हाथी के पैरों के लिए कोष्ठ की
बहीर, बहायरानि परितो निगबान्मलावीत सि०
५।४८, मासि० ४।२० २ हथकड़ी, बेड़ी ।

निजित (वि०) [निज + इत्] हथकड़ी में बंधा हुआ,
बेड़ी से बंधा हुआ, भूखलित बाधा हुआ ।

निजः [निजन्, पुषो० वायु] यन्त्राणि का कुर्वा ।
निजः, निजान् [नि+जन्+जन्, वज्र वा] १ मन्त्र
पाठ, स्मृति पाठ २ ऊँच स्वर से बोली गई प्रायना
३ वाचन, प्रवचन ४ अर्थ सीखना ब्रह्मसिद्धिज्ञान
निगदेनैव सम्बन्धते—निघ० ५ उत्प्रेक्ष, उत्प्रेक्षीकरण
इति निगदेनैव व्याख्याताम् ।

निजितम् [नि+जन्+जन्] प्रवचन, वाचन ।

निजः [नि+जन्+जन्] वेद, वेद का मूल पाठ—साङ्ख्ये
साङ्ख्ये साङ्ख्ये निजमे पा० ६।३।११३, ७।२।१४
वैदिक उद्धारण, वेद का वाच्य तथापि च निजम्
बहनि (निजत में बहुधा प्रयुक्त) ३. सहायक वच
उपवेद, वेद वाच्य, यनु० ४।१९ तथा उनका कुलम्
वाच्य ४ वेद का शिपि वाच्य, ऋषिवा के वचन
५ (वाच्य का मूल जोत) वायु ६ निजवच, विद्वत्स
७ तर्क ८ व्यवहार, व्यापार ९ मही, मन्त्र
१० चलो फिरने घोषावरों की मधली ११ मार्ग
मही का मार्ग १२ नगर ।

निजितम् [नि+जन्+जन्] १ वेद का उद्धारण, या
उद्भूत वाच्य २ (उर्ध्व० में) अनुमान—प्रक्रिया में
उपसंहार, (प्राधान्य की भारतीय अनुमान—प्रक्रिया
में प्राधान्य व्यवस्था), घटाना ।

निज, निजान् [नि+जन्+जन्, वज्र वा] निजतना,
उकारना ।

निजितम् [नि+जन्+जन्] १ निजतना, उकारना
२ (कारण०) ब्रह्म कर लेना, पूर्ण रूप से सब कर
लेना—वा० १ नका २ यन्त्राणि का कुर्वा ।

निज (वा) च [निज, निजान्, रत्नोत्प्रेक्ष] १ निज-
तना, उकारना २ बोड़े का नका वा वर्धन यत्
(पु०) बोड़ा ।

निजित (पु० ङ० ङ०) [नि+जन्+जन्] १ निजना हुआ,

उकारना हुआ २ पूर्ण रूप से निजना हुआ, या सब
किया हुआ, जिना हुआ, गुप्त, अनर्थ बाधुरणीय
उपायमनांतिनीर्बस्योपमेयस्य यदध्यवसानं लैका—
काव्य० १० ।

निजित (वि०) [नि+जन्+जन्] १ जिनाया हुआ, गुप्त
—सि० १।३।४०, १ रत्न, निजी—ङ्ग (अर्थ०)
गुप्तवाप, निजी इन में ।

निजितम् [नि+जन्+जन्] उराना, जिनाना ।
निजितम् [नि+जन्+जन्] वच, हत्या ।

निजित [नि+जन्+जन्] १ रोक रचना, निजित
करना, दमन करना, बच में करना—जैना कि
'इन्द्रियनिजित' ङ यनु० ६।१७, पाञ्च० १।२२२
यनु० १।१६, यम० ६।३४ २ दबाना, रोकना,
कुचलना यनु० ६।७।३ ३ बौध कर पकड़ लेना,
प्रधिकार में कर लेना, निष्कार करना—स्वमिच्छे
नु बराना न ये प्रयत्न—मृच्छ० १।२२, सि० २।८८
४ कैद करना, कारागार में डालना ५ पराजय,
पछाड़ देना, पराजित करना ६ हटा देना, नष्ट करना,
हूट करना रघु० १।७५, १५।६, कु० ५।५६
७ रातो की रोकबाम, बिकिता ८ दण्ड, नडा
(विप० अनुवह) निजितानुवहस्य कर्ता—पञ्च० १,
निजितोप्यवबन्धुहीकृत—रघु० १।१९०, ५५, १२।
५२, ६३९ डाट, फटकार, नडा १० अक्षि, नाप-
नदगी, जुबका ११ (न्या० में) नर्कन बोध, नुटि
अनुमान—प्रक्रिया में भूल (निजके कारण हेतुवादी
प्राप्त हो जाता है) तु० मुद्रा० ५।१० १२ गूठ
१३ सीमा, डह ।

निजित (वि०) [नि+जन्+जन्] पीछे कर
लेने वाला दबावे व जा—जन् १ दमन करना,
दबाना २ पकड़ना, कैद करना ३ नडा, दण्ड
४ पराजय ।

निजित [नि+जन्+जन्] १ दण्ड २ कोमला जैसा
कि 'निजाकुले भूयान्' (यमवान्, मुग्धे सापश्ल करे)
अदि० ७।४३ में ।

निज (वि०) [नि+जन्, नि०] जितना जीवा उतना ही
तन्त्रा, वा १ नैव ४ पाप ।

निजित [नि+जन्+जन्] १ सम्भावनी २ विशेष रूप
से बौद्ध उकारवली जितनी व्याख्या वाक्य में अपने
निजत में की है ।

निजित [नि+जन्+जन्] १ निजितम् [नि+जन्+जन्, स्मृत् वा] रजतना
वर्धन करना, कि० २।५१ ।

निजित [नि+जन्+जन्, पमायेक] १ जाना, बोधन
करना २ बोधन ।

निजित [नि+जन्+जन्] १ बहिष्कार, उद्धार—रघु०
१।७८ २ स्वर का दमन करना वा बर्धन ।

निवाति: (स्त्री०) [नि + हुन् + इच्, कृत्वच्] कोहे की गदा ।

निपुण्यञ्जम् [नि + पुष् + क्त] ध्वनि, शब्द ।

निष्पन् (वि०) [नि + हुन् + क] 1. आश्रित, अनुसेवी, आज्ञाकारी (नौकर की भाँति), तथापि निष्पन्न रूप तावकीने: प्रहृषीकृतं मे हृदयं गुणैर्ब—कि० ३।१३, निष्पन्स्य मे भर्तृनिदेशोरक्षं देवि क्षयस्वेति बभूव नमः—रघु० १४।५८ 2. सिध्य, विषय 3. पराश्रित (अर्थात् विद्येय के निगादि का अनुसरण करने वाला—इति विशेष्यनिष्पन्नवर्गः 4. (सक्या वाचक शब्द के पश्चात्) गुणित ।

निषयः [नि + षि + अच्] 1. संग्रह, डेर, समुच्चय —कि० ४।३७ 2. अवयवों का सञ्चारजिसेने पूर्णता आजाय—जैसा 'शरीरनिषय' में 3. निश्चितता ।

निषाचः [नि + षि + ञच्] डेर ।

निषिकी: दे० नैषिकी ।

निषित्त (भू० क० कृ०) [नि + षि + क्त] 1. डका हुआ, आच्छादित, फैला हुआ, निषित्तं लम्पुपेयं नौरवै—इट० १ शि० १७।१४ 2. भरा हुआ, पूरित 3 उठाया हुआ ।

निषुल [नि + चुल् + क] 1 एक प्रकार का नरकुल 2 एक कवि, कालिदास का मित्र—स्थानादधभात् एरसनिषुलादुल्लसोदङ्गमूलं लम्—मेघ० १४, (यहाँ मल्लि०—निषुलो नाम महाकविः कालिदासस्य महा-ध्याय, परन्तु यह व्याख्या बड़ी सतिर्गुण है) 3 ऊपर से शरीर ढकने का कपड़ा, चादर, तु० निषोल ।

निषुलकम् [निषुल + कन्] वस्त्राण, बोली, अगिया ।

निषोलः [नि + चुल् + ञच्] 1. अवगुच्छन, वृष्ट, पर्वा ध्वात नीलनीषोलकाय—बौत० ११, नीलस्य नील-निषोलम्—५ 2. बिस्तरे की चादर 3. डोली का आवरण ।

निषोलकः [निषोल + क्त + क] 1. बनियान, बोली 2. सिपाही की आकट जो उरस्थान का काम दे ।

निषुचि: [प्रा० व०] एक प्रदेश जिसे आज कल तिरहुत कहते हैं ।

निषुचिः (पुं०) एक वायु जाति, पतित जाति (वायु क्षयित की सन्तान) दे० मनु० १०।२२ ।

निष् (बुद्धे०) उभ०—नेनेक्ति, नेनिकते, प्रणेनेक्ति, निक्ता) धोना, निर्मल करना, स्वच्छ करना—सन्तु पयः पपुर्नेनिषुर्बराणि—अ० ५।२८ 2 अपने आपकी धोना, निर्मल करना, स्वच्छ होना (आ०) 3. वीषण करना, बन्ध—, प्रकाशन करना, पानी छिड़-कना, निष्—, धोना, निर्मल करना, स्वच्छ करना —रघु० १७।२२, माघ० १।१११, मनु० ५।१२७ ।

निष (वि०) [नि + ञच् + इ] 1. अन्तर्गत, स्वदेसवात,

सहृदय, अन्तर्भव, अन्तर्भाव 2. अपना, स्वकीय, आत्मीय अपने दल का या अपने देश का—निषं वनुः पुनरन्व-निषां दक्षिम्—शि० १७।४, रघु० ३।१५, १८, मनु० २।५० 3. विशिष्ट 4. निरन्तर रहने वाला, चिरस्थायी ।

निम् (अदा० आ०—निकते) धोना, प्र—, धोना प्रशिक्षते ।

निटलम् ('निटिल' भी लिखा जाता है) [नि + टल् + अच्] मस्तक, निटिलतटञ्जित—दश० ४, १५ । सम०—अक्ष. शिख का नाम ।

निडीमम् [नीचैः डीन पतनमस्ति] पक्षियों का नीचे की ओर उड़ना, या झट्टा मारना, दे० 'डीन' ।

नितम्ब [निभृत् तन्म्यते कामुकं, तमु काभायाम्] 1. बूतड, (स्त्री का) पिछ्छा उभरा हुआ भाग, ओषि प्रदेश, कन्हा,—यात यच्च नितम्बयोगुलया मयं विलासयिष्य—श० २।१, रघु० ४।५२, १।१७, मेघ० ४१, भर्तृ० १।५, मालवि० २।७ 2. (पवंत का) डमान, पवंतश्रेणी, पार्श्व या पहलू—सनाकवर्जित नितम्बश्चिर (गिरम्) कि० ५।२७, सेव्या नितम्बा किम् भूधराणा किं वा म्मरस्मरेविक्षासिनीनाम् भर्तु० १।१९, विक्रम० ४।२६, अटि० २।८, ७।५८ 3 लट्ठी खट्वा 4 नदी का दलबा किनारा 5 कचा । सम०—विषम् गोलाकार कूड़ा, ऋतु० १।४ ।

नितम्बवात् (वि०) [नितम्ब + वात्] मुन्दर कन्हों वाला —श्री स्त्री वाह च्चुब नितम्बकनी दयितम्—गीत० १, विक्रम० ४।२६ ।

नितम्बिन् (वि०) [नितम्ब + इति] मुन्दर कन्हों वाला, मुड्डोक्त बूतड वाला (बहुधा 'जवन' के लिए प्रयुक्त) तु० मालवि० २।३, कि० ८।१६, रघु० १।१२६, 2 अच्छे पाशबीन वाला (पहाड़ आदि)—श्री 1 बड़े और मुन्दर कन्हों वाली स्त्री—कि० ८।३, शि० ७।६८, कु० ३।७ 2 स्त्री ।

नितराज् (अव्य०) [नि + तरा + अम्] 1. पूर्णरूप से, सर्वथा, पूरी तरह से—प्राज्ञास्त्यजामि कितरां तद-वाप्तिहेतोः—चौर० ४१, भर्तृ० ४।६ 2. अत्यन्त, अत्यधिक, बहुत ज्यादा—तुष्टति केतो नितरां प्रवा-सिना—ऋतु० २।४, बमर० १०, घोषितसप्तमि निवासे नितरामेवाद्भुतः सिधु—पंच० १।१०४, नितरां नीषांश्वीति—भाषि० १।९ 3. निरन्तर, सदा, लगा-तार 4. सर्वथा 5 निरवयव ही ।

नितरम् [नितरां तलम् अवभाणः श्रमिन्] पाठान के सात प्रभाओं में से एक, दे० पाठुल ।

नितस (वि०) [नि + तम् + क्त + दीर्घः] अवाधारण, अत्यधिक, बहुत अधिक, तीव्र—नितसकठिनं स्वं मय न वेद वा मानवीम्—विक्रम० २।२,—कम् (अव्य०)

निघ्न (वि०) [निघ्नन् वनं यस्यात्—घ० ल०] बरोव, हरिह—अहो निघ्नता सर्वापदामास्रवम्—मृच्छ० १।१४, यः—यम् १. ध्वंस, सर्वनाश, मरण, हानि—स्वयमेव निघ्नन् यमः—यम० ३।३५, स्नेच्छनिघ्नह निघने कलबलि करवाकम्—गीत० १, कल्याणेष्वपि न प्रयाति निघनं विद्याव्यमंतर्धनम्—भट्ट० २।१६ 2. उपसंहार, अन्त, परिसमाप्ति—यम् परिवार, बंध। **निघ्नानम्** [नि+घा+ल्युट्] 1. नीचे रखना, निघ्नारित करना, अमा करना 2. लभाल कर रखना, भुरक्षित रखना 3. मोघाम, आघार, आघव—निघ्नान वर्माशाम्—यमा० १८ 4. क्षयाना—निघ्नानवर्माशिव सागरा-वराह—रघु० ३।९, भय० १।१८, विरह लोकास्य परं निघ्नानम् 5. कोष, भंडार, संग्रह, दोहन।

निघि [नि+घा+कि] 1. घर, आघार, आगम—जल०, लोय०, तपोनिघि आदि 2. भंडारगृह, कोषागार 3. खजाना, भंडार, मध्य कुबेर के नौ खजानों के के लिए दे० 'नवनिघि' 2 समुद्र 5 विष्णु का विशेषण 6. सर्वगुणमय व्यक्ति : सम०—ईश्वर,—मध्य कुबेर का विशेषण।

निघ्नकम् [नितरां घृतेन हृत्पादादि बालनमघः] 1 ओषध-कल्पन 2. अमोघ, मेघुन—अतिवयवर्धनानुनिधुवन-लोत्सम्—गीत० 3. शि० ११।१८, वीर० ४, ९, २५ 3. आनन्द, उपभोग, केनि।

निघ्नानम् [नि+घ्न+ल्युट्] घर्शन, अवलीकन, दृष्टि।

निघ्नानः [नि+घ्नन्+घञ्] घर्शन, शब्द।

निघ्नो (वि०) [नघ्मिन्मिन्धः—नघ्+मन्+ङ] 1. परने की इच्छा वाला 2. भ्रातृ जाने या बच निकलने का इच्छुक—मट्टि० ४।३३।

निघ (ना) घः [नि+नघ्+अप्, घञ् वा] 1. ध्वनि, शोर-उज्ज्वलार निघदोमसि तस्याः—रघु० १।७३, ११।१५, ऋतु० १, १५ 2. (यक्षिणों का) चिन-विनाया, घुंजन करना।

निघ्नकम् [नि+नी+ल्युट्] 1. अनुष्ठान 2. किसी कार्य को पूर्ण करना, सम्पन्न करना 3. उद्वेगना।

निघ् (धा० पर०) निघ्ति, निघित, प्रविष्टति) शोक देना, निदा करना, शिष्टान्तेष्वप्य करवा, दूरा भला कहना, डांटना, फटकारना, भिक्कारना—निघिद क्व हृदयेन पार्यती—हु० ५।१, का निघती स्वादि धाम्यानि वाक्ता—भा० ५।३०, यम० २।३६, यम० ३।४२।

निघेक (वि०) [निघ्+कृत्] कलक लगाने वाला, निदा करने वाला, गाली देने वाला, बदनाम करने वाला।

निघ्नकम्, निघा [निघ्+ल्युट्, निघ्+अ+टाप् वा] 1. कलक, दोषारोप, डांट, फटकार, गाली, दूरा-भला कहना, बदनामी-व्याजस्तुतिर्मिषे निघा—कारण० १०, पर०, वेद० 2. क्षति, दुष्टता। सम०—श्रुतिः

(स्थो०) 1. व्याजस्तुति, स्तुति के रूप में निघ्ना 2. प्रच्छन्नस्तुति।

निघित (घृ० क० कृ०) [निघ्+तत्] कलकित, दोषा-रोपित, गाली दिया हुआ, बदनाम किया हुआ।

निघुः (स्थो०) [निघु+उ] भरा बच्चा पैदा करने वाली स्त्री, भृत्यवत्ता।

निघ (वि०) [निघ्+ल्युट्] 1. कलक के योग्य, दोषा-रोपण के लायक, निर्मल्य, गहित, अक्षय 2. क्षति, प्रतिषिद्ध।

निघ, -पम् [नियन् पिबति जनेन नि+पा+क] जल का घड़ा—यः कदम्ब का पेड़।

निघ (पा) ठ [नि+पठ्+अप्, घञ् वा] पठना, मस्वर पठ करना अध्ययन करना।

नियतम् [नि+पठ्+ल्युट्] 1. तीथे गिरना, तीथे उतरना, उतरना 2. तीथे की ओर उतरना।

नियन्ता [नियन्तु अस्याम्, नि+पठ्+क्यप्+टाप्] 1. किमलन वाली भूमि 2. रणक्षेत्र।

नियक् [नि+पठ्, घञ्] परिपक्व करना, पकाना।

नियत्ता [नि+पा+घञ्] 1. तीथे गिरना, तीथे जाना, तीथे उतरना—पयोबोलेते-नियत्तायुक्ता कु० ५।२४, ऋतु० ५।४ 2. आक्रमण करना, दूट पड़ना, अपटना, कटना रघु० २।६ 3. फेंकना, फेंक कर मारना, रागना—हु० ३।२५ 4. उत्तर, प्रयास, निमित्तनियताः भराः—भा० १।१ 5. मरण, मृत्यु—यम० ३।३१ 6. वाक्यमय कटना 7. अनियमित रूप, अनियमितता, अनियमित या अपवाद मानना, ऐसे निघता, निघातोऽयम्—आदि 8. अध्यय, वह अध्ययितके और रूप व हने—पा० १।४।५६।

नियतलम् [नि+पठ्+निघ्+ल्युट्] 1. तीथे फेंक देना, पछाड़ देना, मारना—यम० १।१२०८, 2. परास्त करना, हर्षित करना, बच करना 3. भयं स्पर्श करना 4. अनियमित या अपवाद मानना 5. शब्द का अनियमित रूप, अनियमितता, अपवाद।

निघालम् [नि+पा+ल्युट्] 1. बीना 2. जलाशय, ओहड़, पोखर, गाहना मछिया निघालसिलि भुवे-युहस्तावितम्—भा० २।६, हि० १।१७२, रघु० १।५३ 3. बीबच्चा, कुर् के सक्षीप वाली का हीन विषयं यक्षुओं के पीने का पानी भरा हो 4. कुर्वा 5. दूध की बाल्टी।

निघोडकम् [नि+पीड्+निघ्+ल्युट्] 1. निघोडना, बसाना, भीषना—मि० १।७४, ११।११ 2. जोड़ पड़वाना, बाधन करना, बा-द्वयाचार करना, बाधन करना, क्षति पहुँचाना।

निघुन (वि०) [नि+घुन्+क] 1. घुनुर, घासक, बुद्धिमान, कुशल वयस्य निघुननिघुनाः तेषामः—

मासवि० ३ २ प्रवीण, कुशल, जानकार, परिचित (अवि० या करण० के साथ) बाधि निपुण, बाधा निपुण ३ अनुभवशील ४ कुशल, विनयवत् ५ अर्थम, बहिया, कोमल ६ सम्पूर्ण, पूरा, सही—अन्व (अन्व०), निपुणत्व, १. कौशल से, अनुवाई से २. पूरी तरह से, पूर्णरूप से, सर्वथा ३ ठीक, साधारणी से, ब्यापक, सूक्ष्मरूप से—निपुणमन्विष्यन्पुलक्यवान् तस्य० ५९ ४. मरुता के साथ ।

निबद्ध (बू० क० क०) [नि + बध् + क्त] १ बाधा हुआ, कसा हुआ, हथकड़ी पहनाया हुआ, रोका हुआ वर किया हुआ २ जुड़ा हुआ, सबद्ध ३. निमित्त ४ लचिन, बधा हुआ ५ गवाह के रूप में बुलाया हुआ ।

निबध् [नि + बध् + क्त] १ बाधना, बसना, जकड़ना २. आमकिन गलतता भग० १६:५ ३ रचना करना लिखना ४ साहित्यिक रचना या हूनि प्रत्यक्षरलेखमप्रवर्त्तन—आमवैदग्ध्यनिपिनिबध् बके वाम० ५ सङ्गत उच्य ६ निपत्रण अवरोध वपन ७. प्रसारण ८ बध हथकड़ी ९ मर्पित का अनुदान, वध् कथया आदि यशस्वता के लगे में देना भुयः पितामहोपाया निबधो इत्यमर वा याज० २:१२१ स्मिन् मर्पित १० दुनियान मल ११ हेतु कारण ।

निबधनम् [नि + बध् + क्त] १. एक प्रवृत्त अकड़ना मित्राकर बाधना २ मरचना करना, निर्माण करना ३. निपत्रण करना रोकना और करना ४ बध, हथकड़ी ५ गट बध महारा ६ आशानिबधन आछा जीवलोक्तम् उच्यते ३, यममिबध मामकोनम्य मनसो द्वितीय निबधनम् या० ३ ६ पगश्रयता सवध पञ्च १:१७ अयोध्याश्रित ७ कारण, मज, हेतु प्रयोजन, आधार बुनियाद—आकप्रतिष्ठा निबध नानि देहिना अयशरत्नार्ति मा० १ अर्थात्त आदि, प्रवर्त्तना ३ अविबधन निष्कारण, आकस्मिक उत्तर० ५:७ ८ आचार गदो आचार या० २:६ ९ रचना करना, कबद्ध करना कु० ७:९ १० साहित्यिक रचना या हूनि पुस्तक ११ (मृमि का) अनुदान, निबोधन या हस्ततरण-प्रलेख-सङ्ग्रह, मन्त्रिबधना सि० २:११२, (यही 'निबधन' का अर्थ 'पुस्तक' भी है) १२ जीवी की जुटी १३ (आ० में) कार्य प्रकरण १४ भाष्य ।

निबन्धनी [निबधन + धीन्] बध, हथकड़ी, डोरी या रस्ती ।

निब (ब) हूण (वि०) [नि + ब (ब) हू + क्त] नष्ट करने वाला, विनाशक, (समाप्त में) वध् कि० २:५३, महावी० ३:१३ अन्व बध्, १५१, विनाश, हृष्या -वी० १:१३३ ।

निबिड (वि०) [नि + बिड् + क्त] सघन, तिनका, दे० 'निबिड' ।

निब (ब०) [न + भा + क्त] (केवल समाप्त के अन्त में) लघु, समान, अनुक्य उद्बुद्धमृगकनकाभनिन वृत्ति मा० १:५० इसी प्रकार 'बन्धनिमाना' आदि,—अन्व,--अन्व १ दर्शन, प्रकाश प्रकटीकरण २. बहाना, छपवेश, व्याज ३ चाल, जालसाजी ।

निबालनम् [नि + बाल + क्त] देलना, वृष्टि, प्रत्यक्षीकरण ।

निबृत्त (वि०) [नि + बृत् + क्त] १ अत्यन्त भीत २ गया हुआ, बीता हुआ ।

निबृत्त (वि०) [नि + बृ + क्त] १ रक्ताश्रुता, जमा किया हुआ, बीचा किया हुआ २ मरा हुआ, आपूरित चित्त या निभूत भाग० ३ छिटाया हुआ, गुप्त, वृष्टि से आसन्न, अनीक्षण, अतन्कोचिन—निबृत्तो भूया पञ्च० १, नमसा निभृतेहुता रघु० ८:१५, चन्द्रमा के अन्तर्निहित होने पर, जब चोद अस्त होने की वा सि० ६:१० ४ गुप्त प्रच्छन्न, सि० १:१४२ ५ कः चुर गान्त निभृत्तिरेक (कादत) कु० ३:४०, ५:१०, (अ) स्मिन्, निवत्, अचल गतिहीन श० १:१८ ६ मृदु सौम्य अनिभृता वायव - कि० १:३,६६ जो कामद न हो प्रवत्, २६- वा० २:१२ ७ बिनात नष्ट अनिभृताय प्रियेयु—मञ्च० ६८, प्रवामनिभृता बुधवर्षिष्य भूया० १ ८ दृष्ट जटल ९ अक्षी, अक्षमा निभृत्तिरेक गन्वा - गीत० ७ १० बध्, (दरवाजा) मरा हुआ, लम्ब (अन्व०) १, पुन कप से, प्रच्छन्न कप से, निजी तौर पर, बिना किसी के देखे श० ३, सि० ३:१७, मनु० ९:५३ २ चुपचाप, गान्ति से कि० १:३४ ।

निबल (बू० क० क०) [नि + बल + क्त] १ हुआ हुआ, हुआ हुआ, बारा हुआ, आप्लाविन अलस हुआ (आल० भी) निमज्जय पक्षीसाही, चितानिभल आदि २ नीचे गया हुआ, (सूर्य की भाँति) अल ३ अभिप्रेत, आच्छादिन ४ अवसन्न अवशुक्त ।

निबल्यम् [नि + बल्य + क्त] १ बुझी लमना, बोला लमना २ बिना के बुझना, लबन करना, हो जाना—तत्प्रे कावोतरं सार्धं वम्येज्ज बिड् निमज्जयन् मट्टि० ५:१२० ।

निबल्यन् [नि + बल्य + क्त] लान करना, बुझी लमना, बोला लमना, बुझना (आ० और आल०) दृष्ट निबल्यन्मूर्पति मुखायाम् नै० ५:१५, एव तत्तार-गहने उन्मरजननिमज्जने महा० ।

निबल्यन् [नि + बल्य + क्त] १. मीठा २ आमलक, बुलाया ३ आह्वान, नलवी ।

निबल [नि + नि + बल] वस्तु-निमिष बरना-बलकी ।

निमातृ [नि + मा + ल्यट्] 1. माप 2. मूल्य (निमातृम् = मूल्यम् - सिद्धां) ।

निमिः (पुं०) 1. जाँक का झपकना, निमेष 2. ईश्वराकु की एक सतान, मिथिला में राज्य करने वाले राजाओं के कुल का पूर्वज ।

निमित्तम् [नि + मि + क्त] 1. कारण, प्रयोजन, आधार हेतु - निमित्ततैर्मित्तिकयोरयं क्रमः - सं० ७३१ 2. कारणम्क या कीयाददर्शी कारण (विप० उपादान) 3. प्रतीयमान कारण, व्याज, निमित्तसाध अथ मध्य-साधितम् - सं० १११३, निमित्तमात्रेण पांडवकोषेन भक्षितव्यम् - वेणी० १ 4. चिह्न, संकेत, निशानो 5. दंड, लक्ष्य, निशाना - निमित्ताद्यग्राह्येषोद्योक्त-स्थेन बलितम् - मि० २१२७ 6. मध्यममूलक (गुण-बुज) शकुन - निमित्तं मूल्यमित्वा, सं० १, निमित्तानि च पय्यासि विपरीतानि केशव - सं० ११३०, रघु० ११९६, मनु० ६५०, याज्ञ० ११२०३, ३१७१ ('निमित्त' शब्द समास के अन्त में 'काग्य' या 'उत्पत्ति' अर्थ को प्रकट करने के लिए प्रयुक्त किया जाता है - किनिमित्तोऽप्यमातृक - सं० ३. निमित्तम्, निमित्तोऽप्यमातृक के कारण, क्योंकि, इस कारण कि । सम० - अर्थः (ग्रा० में) अर्कतः किया को अवस्था, तुमु-न्त्यतः प्रयोग, आक्षिप्ति (स्त्री०) किसी विशेष कारण पर आश्रय, कारणम्, - हेतु कारणात्मक या कीयाद-दर्शी कारण - क्त (पुं०) कोषा - अर्थ 1. प्रायश्चित्त 2. सामयिक संस्कार, - चिन् (वि०) अच्छे और शकुनों का जाता - (पुं०) उद्योतिषी ।

निमिः [नि + मि + क] 1. जाँक झपकना, जाँक बन्द करना, पलक झपकाना 2. पलकमात्र समय, पलमर 3. फलों का दण्ड होना 4. जाँक की पलक का शब्द होना 5. विष्णु । मन्त्र - अंतरम् क्षण भर का अन्तराल ।

निमीलनम् [नि + मील + ल्यट्] 1. पलकों बन्द करना, झपकना - नवनिमीलनमिति या यथा तै - मील० ४, अथ ३३ 2. मरणसमय आँखें मूंदना, मृत्यु 3. (स्थो० में) पूर्णघात ।

निमित्तक, **निमित्तिका** [नि + मील + क + टाप्, निमित्तक + कन् + टाप्, इत्यम्] 1. आँखें बन्द करना 2. जाँक झपकाना, पलक धारना, किन् की ओर जाँक मिथ-कामा 3. बालसाड़ी, बहाना, चालाकी ।

निमूकम् (अव्य०) [निमू + क् + ल्यट्, प्रा० सं०] नीचे जड़ तक - निमूककाचं कथति ।

निमेषः [नि + मिथ + क्] जाँक का झपकना, क्षण, दे० 'निमिष' - 'हरति निमेषात् काल' सर्वम् - मोह० ४, अग्निवेशेन कलशा-टकटकी लगाकर, एकटक दृष्टि से - रघु० २११९, ३१४३, ६१ । सम० - क्त (स्त्री०) निमेषी - क् (पुं०) जुगम् ।

निम्नः (वि०) [नि + म्ना + क] गहरा (शा० और बाल०) शक्तिहरिणीमेलना निम्ननामि - मेघ० ८२, अष्टु० ५११२, सि० १०५७ 2. नीच, अवस्थान, - म्बन् 1. गहराई, नीचो भूमि, निम्न देश (का) पश्यच्च निम्नाभिमुखं प्रसीपयेत् - कु० ५५५, न च निम्नादिब सखित निर्वर्तते मेततो हृदयम् - शा० ३१२, याज्ञ० २१११, अष्टु० २११३ 2. डलान, डाल 3. अवधान, मूर्च्छा, 4. अवसाद, निम्नता भाव - अलनिश्चितवर्गव्यक्त निम्नोन्नताभि - मा० ४४१० । सम० - उन्नत (वि०) ऊँचा नीचा, अवगत उन्नत, ऊँचडालावड, गतम् निम्नम्यान, - ता नदी, पहाड़ी नदी - रघु० ८८८ ।

निम्बः [निम्ब + अच्] नीम का पेड़, आम्र छिन्ना कुष्ठारेण निम्ब परिचरेत् य, यश्चैनं पयसा सिञ्चन्नीकाम् मधुरो भवेत् रामा० ।

निम्बोक्ष [नि + म्ब + क्] भूयाम् ।

निषत् (भू० क० कृ०) [नि + यम् + क्त] 1. रमन किया हुआ, निषत्तित 2. अतिभूत, निषत्तन में किया हुआ, मरम्भ, म्बामित 3. यदधी, मित्राजारी 4. मावधान 5. उपा हुआ, म्बायो, अवधान, शिखर 6. अवयवभावी, निषत्तित अचूक 7. अतिबाध 8. ध्रुव निर्वचन 9. विचारणीय विषय (प्रमाणानुसृत हो बाह्य अमरबद्ध) दे० 'न्युपयोगिता', तम् (अव्य०) 1. हमेशा, लगा-तार 2. निषत्तयामक रूप से, अवश्य, अतिबाधेन, निषत्त हो ।

निषत्ति (स्त्री०) [नि + यम् + क्त] 1. निषत्तन, प्रतिबन्ध 2. भाव्य प्रारम्भ, अभिनयता, किम्पन (बुरे हो या अच्छी हो) निषत्तिबलान् - दश०, निषत्तेनियोगात् सि० ४३४, कि० २१२२, वा२१ 3. धार्मिक कर्तव्य 4. आत्म निषत्तन, आत्म समय ।

निष्यत् (पुं०) [नि + यम् + ल्यट्] 1. साक्षि, धातक मि० १२१४ 2. राज्यपाल, शासक, स्वामी, विनि-यता - रघु० १११३, १५५१ 3. दण्ड देने वाला, सजा देने वाला ।

निष्यन्नम्, - ना [नि + यन् + ल्यट् ; निष्यां टाप् च] 1. रोक, आरक्षण, प्रतिबन्ध - अतिप्रयत्नानुयोगो दाघ तपस्विजन - शा० १ 2. प्रतिबन्ध लगाना, सीमित करना (किन्नी विशेष अर्थ में) अनेकार्थस्य शब्दस्यै-कार्पनिषन्नं सा० द० २ 3. निर्दशन, शासन 4. परिभाषा लगाना ।

निष्यन्ति (भू० क० कृ०) [नि + यन् + क्त] 1. रमन किया हुआ, रोक हुआ 2. अतिबद्ध, नीयित (किन्नी विशेष अर्थ में, शब्द के रूप में) ।

निष्यत् [नि + यन् + क्त] 1. निष्यन्न, रोक 2. लगाना, बंधीकृत करना 3. सीमित करना, रोक लगाना

4. निग्रह, निरोध—अनु० ८।१२२ 5. सीमाबंधन, हुरादी 6. नियम या विधि कानून, प्रचलन—नाम भेदास्तो नियमः—आरी० 7. नियमितता—रत्न० १।२० 8. निश्चितता, निश्चय 9. तबिया, प्रतिज्ञा, वत, वादा 10. आवश्यकता, अनिवार्यता, 11. कोई ऐच्छिक या स्वेच्छा से नहीन बाधित अनुष्ठान (वास्तु आवश्यकता पर निर्भर) —रत्न० १।१४, (२० मस्ति०, वि० १३।३१ तथा कि० ५।४२ पर) 12. कोई छोटा अनुष्ठान या छोटा वत, विहित कर्तव्य या यम की शक्ति अनिवार्य न हो—शोध-प्रिया नयी दाल स्वाध्यायोपस्थानिग्रह कर्मयोगोपास २ स्नान प नियमा दल—अभि 13. तपस्या, अग्नि, धार्मिक भावना निबन्ध विष्णुकाशिका भा० १, रत्न० १५।७८ 1 (सी० १० मं) इस प्रकार का नियम या विधि प्रियमें उन बात का विधान किया जाता है, जो यदि बहुत नियम न होता तो ऐच्छिक होती—विष्णुयामप्रस्थानी नियम पालिके मति 35. (योग० में) मन का निग्रह, योग में नमस्ति के बाठ मुख्य अंगों में दूसरा 16 (अल० में) कविसमय, बैसा कि तसन धनु में कोयल का बर्चन, बर्चा धनु में मोरों का बर्चन, निबन्धन नियम पूर्वक, अनिवार्यता। १४०—निष्ठा विहित संस्कारों का दृढ़ता पूर्वक पाठन, ब्रह्म लिंग नमिदा यम,—विष्णु (वि०) धार्मिक कर्तव्यों का दृढ़तापूर्वक पाठन, साधना।

निबन्धनम् [नि + य + क्त्वं] 1 अवरोध करना, छालन में रचना, निग्रह करना, रमन करना—नियमना-द्वयता व न्यायिता—रत्न० १।६ 2 प्रतिबन्ध, सीमा-निबन्धन ३ रीतिना, 4 विधि स्थिर निबन्ध।

नियमकाली [निय + मनु + क्रीप्] स्त्री क्रमे मासिक करने नियमित कर से होता हो।

निर्दिष्ट (भू० क० क०) [नि + य + क्त्वं + क्त] 1 अव-कृत, दमन किया नियमित 2 साक्षित, निर्दिष्ट 3 विनियमित, विहित, निर्धारित 4 स्थिर, संवेदित प्रतिज्ञात।

निबन्धः [नि + य + क्त्वं] 1. निबन्धन 2. धार्मिक व्रत निबन्धन (वि०) (स्त्री—निबन्ध) [नि + य + क्त्वं + क्त] 1 निर्बन्धन करने वाला, अवकृत करने वाला 2 रमन करने वाला, पकड़ने वाला 3 सीमित करने वाला, प्रतिबन्धन करने वाला, ध्वानपूर्वक परि-भाषा करने वाला 4 निर्दिष्ट करने वाला, साक्षन करने वाला, क 1 स्वाधी, साक्षक 2 शरणि 3 शत्रु, म० १।१ १—अपेक्षार, विद्यावाचक।

निग्रह (भू० क० ३०) [नि + य + क्त] 1 निरो-धिता, आग्रह, अनुविष्ट, आदिष्ट 2 अधिकृत,

निर्धारित 3. विचारारूप विषय को उठाने के लिए अनुज्ञात 4. संलग्न 5 उपबन्ध 6. निर्णीत।

निष्पत्तिः (स्त्री०) [नि + य + क्त्वं] 1 निवेद्याज्ञा, आदेश, हुक्म 2 नियोजन, आयोग, पर, कार्यभार।

निष्पत्तुम् [नि + य + क्त] 1. दस लाख 2 ही हजार 3 दस हजार करोड़ या १०० अरब।

निष्पत्तुम् [नि + य + क्त] वैयक दृष्ट करना, समाधान दृष्ट, व्यक्तित्व लक्षाई।

निबोध [नि + य + क्त्वं] 1. किसी काम में लगाना, उपयोग, प्रयोग 2. निवेद्याज्ञा, आदेश, हुक्म, निदेश, आयोग, कार्यभार, निर्धारित कर्तव्य, किसी की देश रेखा में आयुक्त कार्य—व साधकों माधव नीतिबोधे—आनवि० ५।८, मनोनिबोधकविबोधक ने—रत्न० ५।११ अथवा निबोध कस्वीद्वारा अनुवागवन्ध—उत्तर० १, आचार्यकृष्ण को निबोधोऽपुष्टीयतामिति

स० १, स्वमति स्थितयोगमनुसृत कृत (अपना काम करो—अपने निर्धारित कार्य में लगे) (नोकों को दूर हट जाने के लिए कहने की एक सिष्ट रीति जिसका श्राव नाटकों में अधिक प्रचलन है) 3 किसी के साथ संलग्न करना 4 आवश्यकता, अनिवार्यता तत्सिद्धे निबोधे न स विकल्पपराक्रम्य रत्न० १५।१९ 5 अवलम्ब वेष्टा 6. निश्चितता, निबन्धन

7 प्राचीन काल की एक प्रथा जिसके अनुसार निरु-स्थान विषयों को अपने देश या और किसी निष्कट सन्धी के द्वारा लतान पैदा करने की अनुमति है, इस प्रकार पैदा होने वाला पुत्र 'लोचन' कहलाता है, पु० अनु० १।५९—देवराज्ञा सपिशाहा रिचया सम्मर्द्धन-कलाया, प्रवेष्टिताधितलम्बा कलात्मक परिचये—२० १०, १५ मी। (व्यास ने इसी रीति से विप्रियोगों की विषयार्थों से पांडु जी—पुत्रराष्ट्र को पैदा किया)।

निबोधिन् (पु०) [निबोध + इति] अधिकारी, आश्रित, मंत्री, कार्यनिर्वाहक।

निबोधः [नि + य + क्त्वं] अर्थ, स्वाधी।

निबोधनम् [नि + य + क्त्वं] 1 एकदना, ललन करना 2 आदेश देना, विचार करना 3 उक्ताना प्रेरित करना 4. निवृत्त करना।

निबोधः [नि + य + क्त] किसी कर्म का कार्यभार सम्भालने वाला, कार्यनिर्वाहक, अधिकारी, वैयक, नीकर—विष्णुसिद्धि कर्मनु अनुसन्धि कर्मबोध्या—स० ७४५

निबोधु (पु०) [नि + य + क्त] 1 बोझ, बह-लान 2 पूर्वा।

निर् (अव०) [नि + क्त्वं, इत्यम्] (के कृत 'निर्' 'के द्रिष्ट' 'के दूर' 'के बाहर' आदि बर्णों को प्रकट करने के लिए सर्वोच्च व्यञ्जनों और स्वरों से पूर्व 'निर्'

का स्थापनापत्र; संज्ञा से पूर्व 'अ' या 'अनु' लगा कर भी इस अर्थ को प्रायः व्यक्त किया जा सकता है, दे० श्री० विदूष नये सवस्त सव्य, दे० 'विस्' और तु० 'अ' से। सम०—अंश (वि०) 1. पूर्ण, सवस्त 2. पूर्वजों से प्राप्त सम्पत्ति में भाग लेने का अधिकारी—अंश (ज्यो० में) जोशांश से मुक्त स्थान—अंशिन (वि०) जिसने अग्निहोत्र करना त्याग दिया हो—अंशुज (वि०) 'विश पर किसी प्रकार का दबाव न हो', कोई रोक टोक न हो, निदमन से मुक्त, उद्व, स्वतंत्र, स्वेच्छा-चारी, उच्छल—निरङ्कुश इव हिप—मान०, कामो निरामनिरङ्कुश—वीर० ७, निरङ्कुश—कवय-हिता०, अर्ध० ३१२०६, महारी० ३१३९, अंश (वि०) 1. अग्रहीन 2. साधनहीन, अंशिन (वि०) लघुवाहित, अंशिन (वि०) 1. 'विना बांधक का' 2. निष्कलक, निदोष 3. निष्कारण से रहित 4. लीला-सादा, जिसमें बनावट न हो (अ) शिव का विशेषण (ना) पुनिमा, अतिशय (वि०) जिससे बढ़ा बढ़ कर पुतरा न हो, अहितीय, अक्षय (वि०) 1. निर्वय, निरापद, सुप्रसिद्ध—रघु० १७५३ 2. निरपराध, निष्कलक, निदोष, निःस्पृह—कि० ११२, १३११, पूर्णतः सत्य, अक्षय (वि०) जो रास्ता भूल गया हो—अनुज्येय (वि०) निर्मम, निर्वय कठोरहृदय, (क) निर्दयता, निष्ठुरता—अनुज (वि०) जिसका कोई अनुयायी न हो, अनुनात्मिक (वि०) अनुनात्मिक से विभ, जिसके उच्चारण में नाक का योग न हो, अनुरोध (वि०) 1. अननुकूल, अवैधीपूर्व 2. निष्कलक, अज्ञातपूर्व—वा १०—अंतर (वि०) 1. सदा बना रहने वाला, लगातार होने वाला, अव्यवहित, अविच्छिन्न—निरंतराधिपतयै—भाषि० १११६, निर-तरास्तरवातवृष्टिषु—कु० ५१२५ 2. व्यवहाररहित, निरंतराज, सदा हुआ—मुड़े निरतरपयोधरता सर्वेष मुच्छ० ५१२५, हृदय निरतराह्वकडिनिस्तनबंकावरणमधमिदन्—वि० ११६६ 3. असह, सचन—वि० ११७५ 4. मोटा, स्पृह 5. बिस्तरनीय, (विश्व की रक्षा) ईमानदार, सच्चा 6. सदा बांधों के सामने रहने वाला 7. अविभ, समान, समक (अव्य०—अन्) 1. निर्विष, कमातार, सतत, अनवरत 2. विना किसी मजबूती अन्तराज के 3. सक्ती तरह से, कसकर, दृढ-तापूर्वक—(परिष्कलक) कार्यैरिर्व बल निरतराध-मर्मे—वेणी० ३१२७, परिष्कलके अने निरंतरम्—अनु० २१११ 4. पुरुष, अक्षय्यः अनवरत अव्य-यन, सपरिवश मज्जात, अन्तराज (वि०) जिसके बीच में स्थान न हो, सदा हुआ 2. तंत्र, बीजा, —अक्षय (वि०) 1. निस्वंगान, संतानरहित 2. अमरुत, सर्वरहित (वाक्य में सत्य की भांति) 3.

अप्रासंगिक 4. अमंगल, सप्ततिरहित, अव्यवस्थित 5. अनुपय, बाध जोलक—अनु० ८१३२ 6. विना नीकर-बाधों के, अनुपारयने जिसके साथ न हो—अ० 'अव्यय', अव्यय (वि०) 1. निरन्तर, वीर 2. साहसी, —अवराध (वि०) निदोष, निरीह, बीषरहित, कल-करीत (अ) जोलापन, अवराध (वि०) 1. पुष्टता से रहित 2. अवरहित, अनवरत 3. अवोष, अनुक, —अवैक (वि०) 1. जो किसी दूसरे पर निर्भर न हो, स्वतंत्र, किसी और की अपेक्षा न रखने वाला (अवि० के साथ) स्वायत्तिमानारत्ताभिरपेक्षमिवा-नये—कि० ११३९ 2. अवहेलना करने वाला ध्यान न देने वाला 3. मृणा से मुक्त, निर्वय—हि० १८७३ 4. कायरवादी, अज्ञातमान, उदासीन 5. मासारिक विनयवातनाश से विरक्त—मनु० ५४१६ 6. निःस्पृह, दूसरे से किसी पुरस्कार की इच्छा न रखने वाला—भाषि० ११५ 7. निष्प्रयोजन, (जा) उदासीनता, अवहेलना, —अविनय (वि०) जो दीनता या तिर-स्कार का पात्र न हो, —अविमान (वि०) 1. जो अहंमय्यता से मुक्त हो, बर्ष या अहंकार रहित 2. स्वाभिमानपूर्ण, —अविनाय (वि०) जिसे किसी वस्तु की चाह न हो, उदासीन—स्वमुक्तिनिरालोक जिससे लोकहेतो—अ० ५१५, अक्ष (वि०) वैश्वरहित, —अक्ष (वि०) 1. ओषधु-य, सर्वज्ञ 2. निरीह, —अक्षु (वि०) 1. जल से परहेज करने वाला 2. निर्दम, अक्षरहित, —अक्ष (वि०) अवैकाररहित, प्रतिबधरहित, निर्विष, अविनयित, निविध्य, पूर्णतः मुक्त—मागधी० ५ (अव्य०—अन्) मुक्त रूप से, —अक्ष (वि०) 1. निर्धन, गरीब, दरिद्र 2. अवैधीन, (सत्य या वाक्य) निर्ययक 3. अनर्थक 4. व्यर्थ, बेकार, निष्प्रयोजन—अक्ष (वि०) 1. बेकार व्यर्थ, अनामक 2. अवैधीन, अनर्थक, जिसका कोई लक्ष-युक्त अर्थ न हो (अव्य०) पूरक—निर्ययक नृ लीलादि पूरकप्रयोजनम्—चन्द्रा० २१६, —अक्षकाल (वि०) 1. मुक्त स्थान से रहित 2. जिसके पास कुतंत का समय न हो, —अक्षरह (वि०) 1. निवचन से मुक्त, अनि-वर्तित, अनवरत, नियमनरहित, सुविचार 2. मुक्त, स्वतंत्र 3. स्वेच्छाचारी, दुराग्रही, —अक्ष (वि०) निष्कलक, निदोष, अकलकनीय, जिसमें कोई आपत्ति न हो सके—हृदयनिरव्यक्तयो सुषो बन्धु—दश० १, —अक्षि (वि०) जिसका कोई अंग न हो, अहीन—उत्तर० ३१४८, —अक्षय (वि०) 1. अवरहित 2. अविनाश 3. अनरहित, —अक्षय (वि०) 1. अस्तव्य, निराशय—स० ९ २ जो सहारा न दे—अक्षय (वि०) पूर्ण, पुरा, समान, —अक्षयैव (अव्य०) पूरी तरह से, सर्वथा, पूर्णरूप से, विष्णु

—अक्षय (वि०) जोवन से परहेज करने वाला (वपु) उपवास,—अक्षय (वि०) जिसके पास हथियार न हो, निहत्था,—अक्षि (वि०) बिना हथड़ी का,—अक्षर (वि०) बमहरहित, अविमानसूत्र, विनीत नम,—अक्षु (वि०) अक्षुण्णता से युक्त,—आकाश (वि०) 1. जिसे किसी वस्तु की इच्छा न हो, इच्छा से युक्त 2. (वाक्य वा सत्य के अर्थ आदि को) पूरा करने के लिए जिसे किसी की अपेक्षा न हो,—आकार (वि०) 1. आकृतिसूत्र, आकाररहित, बिना रूप का 2. कुण, विक्रम 3. ऊपरवेकी 4. विनम्र, कृशील (रु) 1. परचार्या, सर्वव्यक्तिमान् 2. निव की उपाधि 3. विष्णु का विशेषण,—आकूल (वि०) 1. जो बकराया न हो, अनुहित, जो हतनुडि न हुआ हो 2. फिर, शांत 3. स्वच्छ, निर्मल, आकृति—(वि०) 1. आकाररहित, कपरहित 2. विक्रम (सि) 1. बहु बहुकारी जिनमें विधिपूर्वक वेदाध्ययन न किया हो 2. विशेषकर बहु शास्त्र जिनमें अपने वर्ण के लिए निर्धारित वेदाध्ययन के कर्तव्य को पूरा न किया हो,—आश्लेष (वि०) जिस पर बोधारोपण न किया गया हो, जिसका निरस्कार न हुआ हो,—आशु (वि०) निर्दोष, निरीह, निष्पाप —रघु० ८।४८, आचार (वि०) आचारहीन, धर्मघट्ट,—आश्वर (वि०) बिना होल्क का, होमरहित,—आश्व (वि०) 1. मय से युक्त—रघु० १।६३, 2. नीरोग, सुखर, स्वस्थ,—अक्षय (वि०) जिसमें धूप या गर्मी न हो, छायादार, (वा) रात, अक्षर (वि०) अपमानजनक,—आधार (वि०) 1. आधार-रहित 2. निराश्रय, आश्रयहीन (आलं० भी) निराधारो हा रोदिति कवय केवामिह पुर—मंगा० ४।३९,—आधि (वि०) निर्भय, चिन्तामुक्त,—आपद् (वि०) आवर्तिरहित, सकटयुक्त, आवाध (वि०) अवस्थापित, उत्प्रेषणरहित, बाधारहित, बाधामुक्त, 2. निर्बाध 3. जो बाधक न हो, जो पीडा न पहुँचाता हो 4. (विधि में) (मुकदमा या अभियोग का कारण आदि) मूर्खतापूर्वक प्रवाची—उदा० अस्वद्वन्द्वद्वितीयप्रकाशनाय स्वगृहे व्यवहरति—मिना०,—आध (वि०) 1. रोगयुक्त, स्वस्थ, नीरोग, मला-मंगा 2. निष्कलक, विमुक्त 3. निष्कपट 4. दोषों से मुक्त, निर्दोष 5. बरा हुआ, तपुर्ण 6. अमोघ (कः-कम्) नीरोगता, स्वास्थ, कल्याण, मंगल, आनन्द (रु) 1. जंगली बकरी 2. सुखर,—आधि (वि०) 1. बिना शीत का, शीत न करने वाला 2. बालनारहित, लाघव से युक्त 3. पारि-क्षमिक आदि न पाने वाला,—आध (वि०) जिससे कोई आधवनी वा गजस्थ प्राण्य न हो, लाघवरहित,

—आवाध (वि०) जिसमें परिग्रह न लगे, सुकर, आमान,—आध (वि०) जिसके पास हथियार न हो, निरस्त्र, निहत्था,—आवाध (वि०) जिसे कोई सहारा न हो, (आलं० भी) अहावी० ४।५३ 2. जो दूसरे पर आश्रित न हो, स्वतंत्र 3. जो अपना आश्रय आप ही हो, असहाय, अकेला—निर्वाणो जगोदरजननि कं वाणि शरणम्—अण०,—आश्व (वि०) 1. इधर उधर न देखने वाला 2. दृष्टिहीन 3. प्रकाश-रहित, अंधकारयुक्त मा० ५।३०,—आश (वि०) आशायुत्र, निराश, माउम्बीद—मनो बम्वद्वन्द्वी-निराशम्—रघु० ६।२,—आश्व (वि०) निर्भय,—आधि (वि०) 1. आधीर्वाद या बरहान से वञ्चित 2. निरिच्छ, इच्छारहित, निराश, उदासीन—अमच्छरप्यस्य निराशिषः सतः—शु० ५।७६,—आध (वि०) 1. आधयहीन, जिसे कोई सहारा न हो, आश्रयरहित 2. मिश्रहीन, हरित, अकेला, शरणरहित — निराधायुना बलमला,—आध (वि०) स्वाधरहित, फीका, बेमजा,—आश्वर (वि०) जिसे जोवन न मिले, उपवास करने वाला, जोवन से परहेज करने वाला (—रु) उपवास करना,—इच्छ (वि०) बिना इच्छा के, बाहररहित, उदासीन,—इच्छि (वि०) 1. जिसका कोई अंग नष्ट हो गया हो वा काम न दे 2. विकलांग, अर्धांग 3. दुर्बल, लघुवत, कमबोर 4. ज्ञान के साधन से हीन, जिसकी कोई इन्द्रिय बेकाम हो गई हो—अनु० १।१८,—इक्ष (वि०) इक्ष्मरहित,—इति चतुर्णां के लकट (अति-दृष्टि, अनादृष्टि आदि) से युक्त—रघु० १।६३, दे० इति,—इक्षर (वि०) ईश्वर की न मानने वाला नास्तिक,—इक्ष्म हल का काम,—इह (वि०) 1. तुम्हा से रहित, उदासीन,—रघु० १०।२१ 2. उध-महीन,—अच्छा (वि०) 1. जो स्वात न लेता हो, स्वामरहित (—उ) दवात-किवा का अभाव,—उत्तर (वि०) 1. उत्तर रहित, बिना उत्तर के 2. जो कुछ उत्तर न दे सके, चुप 3. जिससे बड़ा कोई और न हो,—उत्तव (वि०) बिना उत्तव का—विरतं नैव-मुनिनिरस्तः—रघु० ८।६६,—उत्ताह (वि०) जिसमें उत्ताह न हो, उत्साह रहित, स्फूर्ति युक्त (रु) उत्साह का अभाव, मालस्य—उत्तु (वि०) 1. उदासीन 2. शान्त, चुपचाप,—उत्तक (वि०) उत्तर-रहित, उत्तव,—उत्तोष (वि०) निरपेक्ष, निष्प्रिया, कः—पी, सुप्त,—उत्तेष (वि०) उत्तेजना रहित, जिसमें बबराहट न हो, गम्भीर, शांत,—उत्पन्न (वि०) जिसका आरम्भ न हुआ हो,—उत्पन्न (वि०) 1. सकट वा कट्ट से युक्त, जिनमें वा जहाँ कोई अंग वा उत्पान न हो, आध्यात्मिक, सुखर, निर्दोष,

सत्ताय-विपक्षियों के आक्रमण से सुरक्षित 2. राष्ट्रीय युक्तों या अत्याचारों से मुक्त 3 जो किसी प्रकार का कष्ट न पहुँचाये 4. सुरक्षित, शांतिमय, —उपधि (वि०) निष्कण्ट, ईमानदार —उत्तर० २।२, —उपपत्ति (वि०) अनुपपन्न, उपपन्न (वि०) 1. जिसकी कोई उपाधि या पद न हो —मुद्रा० ३ 2. गीम शब्द से असंबद्ध, उपपन्न (वि०) बाधारहित, जहाँ कोई रुकावट या साटन न हो, जहाँ किसी प्रकार की हानि न हो—निष्पत्तानि न कर्माणि सन्तानि —सं० ३, उपपन्न (वि०) अनुपपन्न, बेजोड़, अनुत्पन्न, —उपपन्न (वि०) जहाँ उत्पत्ति न होती हो, उपपन्न से रहित, उपपन्न (वि०) 1 अवास्तविक, धिम्मा, (बध्मापुत्र की भाँति) जिसका कोई अस्तित्व न हो 2. अभौतिक 3 नीरस, —उपाध (वि०) उपाधरहित, असहाय, —उपेक्ष (वि०) 1 आलस्य की या बालकों से मुक्त 2 जिसकी उपेक्षा न की गई हो, —उपेक्ष (वि०) तापयुक्त, शीतल शब्द (वि०) नक्षत्र, नक्षररहित, जिसमें गण न हो, बिना नक्ष के —निर्वक्ष इव किमुका, °बुद्धिः (स्त्रि०) सेमर का पेड़, —नक्ष (वि०) अभिमानरहित, —नक्षत्र (वि०) जहाँ कोई सिद्धि की न हो, —युज (वि०) 1 (यनुज की भाँति) बिना छोटी का 2. सपत्तिरहित 3. गुणरहित, बुरा, निकम्मा—निर्वुजः सोमते नैव विपुला-डंभरोऽपि ना —यामि० १।११५ 4. जिसका कोई विशेषण न हो 5 जिसकी कोई उपाधि न हो (कः), परवर्तमान, —नुह (वि०) जिसका कोई घर न हो, घररहित —नुहही निर्वुही कृता —पंच० १।१९०, (वि०) 1. जिसकी कोई प्रतिष्ठा न हो, प्रतिष्ठाहीन, —पंच (वि०) 1. बचनमुक्त, बाधारहित 2. गरीब, सपत्तिरहित, भिखारी 3. अकेला, असहाय (कः) 1 बड़, मुक्त 2. जुबारी 3. सन्त महारमा जो सब प्रकार की सामाजिक विषय वासनाओं को त्याग कर भ्रम होकर विचरता है, और विरक्त कथावी की भाँति रहता है, —पंचक (वि०) 1. निपुण, विशेषज्ञ 2. असहाय, अकेला 3. छोड़ा हुआ, परित्यक्त 4. निष्कल (कः) नाविक साधु, जपनक 2. विनोद साधु 3. जुबारी, —पंचिकः मंगा रहने वाला साधु, दिनेश्वर संप्रदाय का जैन-साधु, जपनक, —पंचक 1. वह राजा जहाँ दुष्कामचारों से किसी प्रकार का कर न लिया जाता हो 2. बड़ा बाजार जहाँ बहुत भीड़ नवका हो, —पंच (वि०) 1. कूर, निष्ठुर, निर्दय 2. निर्लज्ज, बेहया, —पंच (वि०) जहाँ कोई न रहता हो, जो आवास न हो, जहाँ कोई आना-जाता न हो, एकान्त, सुनसान (पञ्च) नक्षत्र, एकान्त सुनसान जगह, —चर (वि०)

1. जो कभी बड़ा न हो, सदा युवा रहने वाला 2. अनवर, जिसकी कभी मृत्यु न हो, (रः) देवता, सुर (कर्म० ब० ब०) —निर्वरा —निर्वरक, (रज्जु) जम्बू, सुधा, —चक्ष (वि०) 1. जलरहित, नक्षत्ररहित, जलरहित 2 जिसमें पानी न मिला हो (कः) उत्तर, बजर, बीरान उजाड़, —चिह्नः मैदक, —चीब (वि०) 1. प्राणरहित 2. मृतक, चर (वि०) जिसे बूझा न हो, स्वस्थ, —चिह्नः सुद, —चक्ष (वि०) 1 निर्दय, क्रूर, निर्दय बेरहम, कष्टारहित 2 उग्र 3 चनिष्ठ दृढ़, मजबूत, अत्यधिक, प्रचंड —मुग्धे विदेहि मयि निर्दयदतदभम् —गीत० १०, निर्दयनिश्चालसा रघु० १९।३२, निर्दयातलेषो मेष० १०६, —चक्ष (अर्थ०) 1 निष्ठुरता के साथ, क्रूरतापूर्वक 2 प्रचंडता के साथ, कठोरतापूर्वक —रघु० ११।४, —चक्ष (वि०) दस से अधिक दिनों का, —चक्ष (वि०) बिना दाँतो का, बुद्ध (वि०) 1 पीडा से मुक्त, पीडारहित 2. जो पीडा न दे, शोच (वि०) 1 मिरपराय शोचरहित —न निर्दोष न निर्गुणम् 2 अपराधशून्य, निरोह, प्रक्ष (वि०) सपत्तिरहित, गरीब, शोच (वि०) जो वायु न हो, मिश्रबल, कृपापूर्ण, जो देशपूर्ण न हो, —प्रक्ष (वि०) जो बुद्धि के हठों से रहित हो, हँ और विचार से परे हो, —निर्दोहो नित्यसत्यत्व की नियोज्यो मारयमान —जग० १।४५ 2 जो बीरों पर आधित न हो, स्वतंत्र 3. ईर्ष्या ह्वे से मुक्त हो 4 जो दो से परे हो 5 जिसमें युकाबला न हो, जिसमें किसी प्रकार का संग्रह न हो 6 जो दो सिद्धांतों को न मानता हो, —चन (वि०) सपत्तिहीन, गरीब, दरिद्र—समिन-स्मृत्त्वचोऽपि निर्बनः परिकृते—चान० ८२, (कः) बड़ा जैन, —चर्च (वि०) चर्चहीन, जघर्च, —चर्च (वि०) जहाँ पूजा न हो—चर (वि०) नक्षत्रों द्वारा परित्यक्त, उजाड़, —चाच (वि०) जिसका कोई अधिकारक या स्वामी न हो, —चिह्न (वि०) जिसे नींद न आई हो, जाग्रत, —चिह्नित (वि०) अकारण बिना कारण का, —चिह्नित (वि०) बिना पलक झपकाये टकटकी लगाने वाला, —चैव (वि०) बचरहित, चिह्नहीन, —चल (वि०) साक्षिरहित, कमबोर्, बलहीन, —चाच (वि०) 1. बाधारहित 2. जहाँ प्रायः जाना-जाना न हो, एकांत, निर्बन्ध 3. निष्पद, —चुद्धि (वि०) मुक्त, अशानी, बेवृत्त, —चुद्ध, —चुद्ध (वि०) जिसकी मसी न निकाली गई हो, जिसमें से दूर निकाल दिया गया है, —चुद्ध (वि०) 1. निष्ठुर, निष्ठक 2. नय से मुक्त, सुरक्षित निरापद—मनु० १।२५५, —चर (वि०) अत्यधिक, तीव्र, उग्र, बहुत नजबूत—चपामर निर्दय स्वर्णार—गीत० १२,

अवस्था में केवल एक ही अभिन्न तत्त्व (ब्रह्म) पर एकमात्र ध्यान केन्द्रित होता है, और जाता, जेय, तथा ज्ञान के विवेक का बोध नहीं रहता यहाँ तक कि आत्मचेतना का भी भास नहीं होता—निर्विकल्पक ज्ञातृज्ञानाद्विकल्पभेदलयावेश, नोचेत् चेत प्रविश सहसा निर्विकल्पे समाप्ति—अर्त्त० १।६१, वेणी० १।२१, (अय०—स्वप्न) बिना किसी सकोच या हिकच के,—विचार (वि०) 1 अपरिवर्तित, अपरिचय, निश्चल 2 विचार रहित—मालवि० ५।१४ 3 उदासीन स्वयंहीन—आनु० २।२८—विकास (वि०) जो जिला न हो, अविकसित,—विष्णु (वि०) बिना किस प्रकार के हस्तक्षेप के, जिसमें कोई बाधा न हो, विष्णु-बाधाओं से मुक्त (अन्य) विष्णो का अभाव,—विचार (वि०) अविमर्शी, विचार शून्य, अविवेकी रे रे स्वैरिणि निर्विचारकविते मात्मप्रकाशीभव—चन्द्रा० १ 2, (अन्य—रज्जु) बिना विचारे निम्नकोच विचि-कित्त (वि०) सन्देह या सका से मुक्त,—विशेष्य (वि०) गतिहीन, मज्जाहीन,—चित्तकं (वि०) जिन पर तर्क या सोच विचार न किया जा सके, विवेक (वि०) आशय प्रमोद से रहित, मनोरञ्जनशून्य—मेघ० ८६,—विष्णा विन्ध्य पहाड़ियों में बहने वाली एक नदी—मेघ० २८,—विश्व० (वि०) विचारशून्य, अविवेकी, सोचविचार न करने वाला, विचार (वि०) 1. बिना किसी विचार या युद्ध के 2 जिसमें कोई छिद्र या अन्तराल न हो, सदा हुआ, शि० १।४५,—विचार्य (वि०) 1 विवाद रहित 2 जिसमें कोई झगडा न हो, कोई विरोध न हो, विश्वसम्मत,—विक्रि (वि०) ना समझ, विवेकशून्य, अद्वारधी, मूर्ख—विक्रि (वि०) निरुद, निरुदक, विश्वसन्—अनु० ७।१७९, पंच० १।८५,—विशेष (वि०) कोई अन्तर न मानने वाला, बिना भेद-भाव के, किसी प्रकार का भेदभाव न रखने वाला—निर्विशेषा वय रवि—अह०, निर्विशेषो विशेषः—अर्त्त० ३।५०, 'भेद-भावका अभाव ही अन्तर' 2. जहाँ भिन्नता का अभाव हो, समान, तुल्य (श्राव समाप्त में) अभिन्न प्रयातनीत्यलनिर्विशेषम्—हु० १।४६, स प्रतिपत्तिनिर्विशेषप्रतिपत्तिरासीत्—रघु० १४।२२ 3. अव्येककारी, गूढ़-गूढ़ (कः) अन्तर का अभाव (निर्विशेषम् और निर्विशेषेण सत्य 'बिना किसी भेद-भाव के', 'समान रूप के' 'बिना किसी अन्तर के' जहाँ को प्रकट करने के लिए किया विशेषण के रूप में प्रयुक्त किये जाते हैं, स्वगुहनिर्विशेषवच स्वीयताम्—हि० १, रघु० १।९),—विशेष्य (वि०) बिना किसी विशेषण के,—विच (वि०) (श्राव बादि) जिसमें छद्म न हो—निर्विधा दुहुताः स्मृताः—विचय (वि०) 1. अपनी अन्तर्मुख या निरास स्थान से

निर्वासित किया हुआ—मनो निर्विधवार्यकायवा—हु० ५।३८, रघु० १।२८ 2 जिसके कार्य-क्षेत्र का अभाव हो किंच एव काव्य प्रचलनविचय निर्विधय वा स्यात्—सा० द० १ 3 (मन की प्राप्ति) विचय-वासनाओं में अनासक्त काय (वि०) बिना लीनो का—विहार (वि०) जिसके लिए आनन्द का अभाव हो,—वीर्य (वीर्य) (वि०) 1 विमः वीर्य का 2 नपुंसक 3 निष्कारण,—वीर (वि०) वीर विहीन—विहीर मूर्खान्तम्—प्रस० १।३१ 2 कायर बीरा बहु स्त्री जिसका पति न पुत्र मर गये हो बीर्य (वि०) शक्तिहीन, निर्बल, पुरुषार्थहीन, नपुंसक—निर्वीर्य गृहसापभाषितवसात् कि मे तथेवायुधम्—वेणी० ३।३४,—वृक्ष (वि०) जहाँ पेड़ न हो,—वृक्ष (वि०) जहाँ अच्छे वृक्ष न हो, वेग (वि०) निश्चेष्ट, गतिहीन शास्त्र, वेगरहित,—वेतन (वि०) अवैतनिक, बिना वेतन का,—वेष्टनम् जुलाहे की गरी, डरकी, बर (वि०) वैरभाव से रहित, स्नेही शान्तिप्रिय (रघु) शत्रुता का अभाव, अक्षय (वि०) लीला साहा, बरा 2 बिना भलाके का (अन्य०—ने) लीला-भावे दग से, बेलाय, ईमानदारी से, अक्षय (वि०) 1 पीडा से मुक्त 2 साज, स्वल्प,—अक्षेय (वि०) उदासीन, निरलेख रघु० १।३२५, १।४३९,—अक्षीक (वि०) जो किसी प्रकार की पीठ न पहुँचाये 2 पीडा रहित 3 अक्षय, मन से कार्य करने वाला 4 निष्कण्ड, लज्जा, पाण्डहीन,—अक्षय (वि०) जहाँ पीठों का उत्पाद न हो,—अक्षय (वि०) 1. स्पष्ट का, सारा, ईमानदार, सरल 2. पाण्डरहित—अर्त्त० २।८२, (अन्य०—अक्ष) सरलता से, ईमानदारी से, स्पष्ट रूप से, अवय ७९,—अक्षार (वि०) जिसके कोई काम न हो, बेकार, रघु० १।५।९,—अक्ष (वि०) 1 जिसके पीठ न लगी हो, अपरहित 2. जिसमें दरार न पड़ी हो,—अक्ष (वि०) जो अपनी की हुई प्रतिज्ञा का पालन न करे,—हिंस्र जाड़े की लयापि, हिंस्रशून्य,—हेति (वि०) निरस्त, जिसके पास कोई हथियार न हो,—हेतु (वि०) निष्कारण, बिना किसी तर्क, वा कारण के,—हीनक (वि०) 1. निर्गुण, बेहूता, पीठ 2. साहसी, निर्भीक ।

निरत (वि०) [नि + रत् + क्त] 1 किसी कार्य में लगा हुआ वा बंधि रखने वाला 2. प्रकट अनुरक्त, लज्ज, आकर्षण—वपवाधनिरतः—का० १।५ 3. प्रमत्त, लज्ज 4. विचान्त, विस्त ।

निरतिः (स्त्री) [नि + रत् + क्त] बुद्धि बाधक, अनुरक्त, बधित ।

निरकः [नि + क + क्] नरक—निरवयवधारमुद्रा-द्वयंती—अर्त्त० १।६३, अनु० १।६१ ।

निरवहानि (नि) का [निर + वह + हन् (ङ) + ध्युन्
- टाप्, ह्रस्वम्] बाहर, बाहरादीकारी ।

निरस (वि०) [निवृत्तो रसो यस्मान् प्रा० ब०] स्वाद-
रहित, फीका, सूखा—सः 1 रस की कमी, फीकापन,
स्वादहीनता 2 रसहीनता, सूखापन 3 उत्कण्ठा का
अभाव, भावना की कमी ।

निरसन (वि०) (स्त्री० जी०) [निर + स + ल्युट्]
निकालने वाला, हटाने वाला दूर भगाने वाला,
वि० ६।४७ 2 उड़ान या कै करने वाला वज्र
1 निकालना प्रक्षेपण, निष्कासन, हटाना 2 दूर करना,
वचन विरोध, अस्वीकृति, इकार 3 कै करना, दूक
देना 4 रोकना, दबाना 5 विनाश, बच उन्मुक्तन ।

निरस्त (भू० व १) [निर + अस् क्त] 1 दूर
हाल हुआ, दूर पैका हुआ, प्रत्यास्थान, हाका हुआ,
निष्कासन, निर्वासन कीलीनमीन गुहान्निग्नना
रघु० १।८४ 2 दूर भगाया गया नष्ट किया
गया ब्रह्मण तावदन्तेन नयो निरस्तम्—रघु०
५।७३ 3 छोड़ा हुआ परित्यक्त 4 दूर हटाया गया,
बर्जित, गुप्त निरस्त्यादय देणे एरुओपिद्रुमायते
हि० १।९९ 5 (बाज आदि) चलाया हुआ 6
निराकृत 7 उपाहा हुआ दूका हुआ 8 खीप्रनापूर्वक
उत्थान 9 राहा हुआ विनष्ट 10 डबाया हुआ
रोका हुआ 11 (कार प्रविज्ञा आदि) तोड़ा हुआ,
स्तम् 1 अस्वीकृति इकार 2 छोड़ देना हुतो-
प्यारण । मय० भेद (वि०) सब प्रकार के भेद-
भाव हटाये हुए वही समक्य, रास (वि०) विमने
समस्त सांसारिक अनुरागों का त्याग कर दिया है ।

निरस्तः [निर + अस् + क्त] 1 पकाना 2 स्वेद,
पखौना 3 चुकमों का निस्तार (निराक भी) ।

निराकरणम् [निर + आ + कृ + ल्युट्] 1 प्रत्यास्थान
करना, निकाल बाहर करना, रद्द कर देना निरा-
करणविकल्पा म० ६ 2 निर्वातन 3 अवकाश,
विरोध, प्रतिरोध, अस्वीकृति 4 लब्धन, उत्तर 5
तिरस्कार 6 यज्ञ के मृक कर्तव्यों की खेला 7
विस्मृति ।

निराकरणम् (वि०) [निर + आ + कृ + ल्युट्] 1 प्रत्या-
स्थान करने वाला, बाहर निकालने वाला, निकाल
बाहर करने वाला—रघु० १।४।५७ 2 विघ्न डालने
वाला, बाधक 3 ठुकराने वाला, तिरस्कर्ता 4 किसी
को किसी वस्तु से वञ्चित करने की चेष्टा करने
वाला ।

निराकुल (वि०) [निर + आ + कुल + क] 1 बरा
हुआ, व्याप्त ढका हुआ अनिकुलतकुलकुलुयममृहनि-
राकुलकुलकलापे कीत० १ 2 दुखी ३ 'निर'
के अन्वय भी ।

निराकृतिः (स्त्री०) निराकृत्या [निर + आ + कृ + क्तिन्,
निर + आ + कृ + आ + टाप्] 1 प्रत्यास्थान, निष्का-
सन अस्वीकरण 2 इकार 3 अवकाश, विघ्न, रुका-
वट, हल्लक्षेप विरोध, प्रतिरोध ।

निरास (वि०) [निवृत्तो रसो यस्मान् प्रा० ब०] उत्कण्ठा-
रहित, जिसमें रस न रहे ।

निराशिष्ट (वि०) [निर + आ + शिष्ट + क्त] जो शून्य
वाणिज्य कर दिया गया हो ।

निराशालुः [निर + श + आलु] कैब का वृक्ष ।

निरासः [निर + अस् + क्त] 1. प्रक्षेपण, निर्वासन,
बाहर कैक देना, हटाना 2 उमलना 3 निराकरण
4 विरोध ।

निरिगिणी—नी [नि निगम जनमिज्जति प्राप्नोति—
निर + इग + इति - ङीप्] परदा, वृष्ट ।

निरिजम्बु निरीक्षा [निर + ई + ल्युट्, अ + टाप् वा]
1 दुर्घट 2 देखना, ध्यान देना, नजर डालना,
अवलोकन करना 3 ईदना, खोजना 4 विचार,
मयाल - निरीक्षा की बाबत, के विषय 5 भाषा,
प्रत्याज्ञा 6 प्रहलसा ।

निरिजं, बम् [निर + ई + (ङ) + क] हल का फल ।

निश्कल (वि०) [निर + कल् + क्त] 1 अविच्छिन्न,
उत्थरित अभिव्यक्त परिभाषित 2 उत्कृष्टता से कोका
हुआ ल्युट्, - कल् 1 व्याख्या निर्वचन व्युत्पत्ति-
महित व्याख्या 2 छ बंदों में एक जिसमें अक्षरलिपि
शब्दों की व्याख्या की ग० है विशेषकर वैदिक शब्दों
की—भाष च बाहु इत्येक निश्कले नि० 3 वाक्य
ज्ञान निश्चय पर किया ग० प्राप्य ।

निश्कलः (स्त्री०) [निर + कल् + क्तिन्] 1 व्युत्पत्ति,
शब्दों की व्युत्पत्तिप्रदान व्याख्या 2 (अल० आ०
में) एक व्याख्यानकार जिसमें शब्द की व्युत्पत्ति की
मनमानी व्याख्या की जाय, परिभाषा इस प्रकार है—
निश्कलयोगिनो नाम्नामन्यास्तैवप्रकल्पनम् ईदृशैर्वचर-
तैर्वाने मय्य दोषाकरो भवान् बन्दा० ५।१६८,
(दोषाकर दोषाणामागम्) ।

निश्कलुष (वि०) [निर + उद् + लृ + क्त ह्रस्व]
1 अमृत आनुर 2 उमृकनारहित उदासीन ।

निश्चय (भू० क० इ०) [नि + च् + क्त] 1 अवधारित,
प्रतिष्ठ, अवकृष्ट नियमित मयन किया गया—
म० १।२७ 2 समीपित बरोहर । मय०—कंड
(वि०) जिसका सात एक गया हो दम घुट गया
हो—गुहः मन्त्रार का अवरोध ।

निश्चय (वि०) [नि + च् + क्त] परंपरागत, प्रचलित,
कड (शब्द का जब वि० यौगिक वर्धन व्युत्प-
त्त्यर्थ) कीने कावदववास्ति निश्चया संघ हा चलति
वच हि पितम् - न० ५।५७ 2 अधिवाहित,—कः

! अस्तनिधान, म्यास (जैसा कि 'मास' में 'मालिमा') । सम—कमला सद्य का वह गौण प्रयोग जो कला के विशेष आसय या विवेका पर निर्भर नहीं करता, बल्कि उसके स्वीकृत या लोककृत प्रचलन पर आधारित है ।

निकृष्टि (स्त्री०) [नि + कृ + क्तिन्] 1 प्रमिट्टि क्यानि 2 जानकारी, परिचय, प्रवीणता नृपविद्याम् निकृष्टिमागता कि० २६२ सपुष्टि ।

निरूपणम्—वा [नि + रूप + णिच् + क्तृत्वा टाप्] 1 रूप आकृति 2 दृष्टि, दर्शन 3 बूझना सोचना 4 निरूपयन अन्वेषण निर्धारण 5 परिभाषा ।

निर्घणित (भू० क० क०) [नि + ण् + णिच् + क्त] 1 देखा गया सोचा गया चिह्नित, बचलाकित 2 नियत, चुना हुआ निर्वाचित 3 विवेचन किया गया, विचार किया गया 4 निरूपण किया गया, निर्धारित ।

निर्घृत् [नि + कृ + क्त] 1 बस्तिर्कर्म का एक प्रकार 2 तर्क, युक्ति 3 निश्चितता, निश्चय 4 वाक्य जिसमें व्युत्पन्न न हो तत्पूर्व वाक्य ।

निर्घृतिः [नि + कृ + क्तिन्] 1 क्षय, नाश, विघटन 2 सकट, अविष्ट, विपदा, विपत्ति—सा हि नाकस्य निर्घृतिः—उत्तर० ५१३० 3 अविनाश आक्रोश 4 मृत्यु, मृतिमान् विनाश, मृत्यु वा विनाश की देवी दक्षिण-पश्चिम कोण की अर्चिष्ठानी देवी—मनु० ११११९१ ।

निरोधः, निरोधनम् [नि + बध् + क्त, क्तृत्वा] 1 रोक करना, रोकथाम में रचना हुक्माकार में रचना—मनु० ८१२१०, ३७५ 2 रचना रोक देना अमन ८७ 3 प्रतिबन्ध, रोक दमन, निबन्धन योगविधित्वान्-निरोध—योग० कृ० ३१४/ 4 रोकथाम, अवरोध निरोध 5 रोक पट्टेबाना दण्ड देन—अग्नि पट्टेबाना 6 ध्वज विनाश 7 अर्धज, नागमर्दनी 8 निराशा भगवाता ।

निर्णय [नि + गम + क्त] देश प्रदेश, म्यान ।

निर्णयनम् [नि + गन् + क्तृत्वा] वच, इत्यादि ।

निर्णयः [नि + गम + क्त] 1 बाहर जाना, चले जाना—रघु० १११३ 2 विदायसी, आश्रय होना—रघु० १११६६ 3 द्वार, मार्ग, निर्णय कथमप्यव्याजनिर्णय प्रयत्न—का० १५९ 4 निष्कमण, बाहर जाने का द्वार ।

निर्णयनम् [नि + गम् + क्तृत्वा] बाहर निकलना या चले जाना ।

निर्णयः [नि + गृह् + क्त] गृह का कोटर ।

निर्णयनम् [नि + गन् + क्तृत्वा] वच, इत्यादि ।

निर्णयः, इम् [नि + कृ + क्त] 1 सम्वावली, सद्य लवह 2 सुधीय ।

निर्णयनम् [नि + कृ + क्तृत्वा] गद्य टक्कर ।

निर्णयः [नि + कृ + क्त] 1 विनाश 2 बरडर हुआ का प्रचल साका, आर्षा 3 हवा की सनसनाहट, आकाश में हवा के साका के टकराने का लब्ध निर्धनोर्ध्व कुञ्जलानाञ्च विद्यासुर्यानिर्धोर्ध्व ओन्नया-मान मिहान रघु० ११६४, मनु० ११३८, ४११०५, ७ याज्ञ० १११६५ (वायुना निर्धोर्ध्व नायनसनाञ्च पतत्यथ, प्रचडधार्गनयोर्ध्व पिधोर्ध्व इति कथ्यते) 4 भूकम्प 5 बन्धपान—अहह दाक्षणी देवनिर्धय उत्तर० २ ।

निर्धयनम् [नि + कृ + क्तृत्वा] बलपूर्वक बाहर निकालना प्रकाशित करना ।

निर्धयः [नि + कृ + क्त] 1 रक्षा स्त्री० ४ रघु० ११३६ 2 निनाद १६४४ टट ठाक उद्यानि बोधे क्षोभयामास मिहान् रघु० ११६४ मार्गती निर्धोर्ध्व उत्तर० ३ ।

निर्धयः, निर्धयि (स्त्री०) [नि + कृ + क्तृत्वा] पूर्ण विजय, बलीकरण पराजय करना ।

निर्धर, —कृ [नि + कृ + क्त] मरना, जल प्रपात, पनधारकृष्टि बारिगवाह पहाड़ी सरना क्षीर निर्धरबारिगानम्—नागाः रघु० २११३, क्षा० २११७ २१, १०६ १ 1 मृती बगाना 2 हाथी 8 सुषे वा घोड़ा ।

निर्धरिन् (पु०) निर्धर + इति । पहाड़ ।

निर्धरिणी, निर्धरी [निर्धरिन् + टाप्] निधर + स्त्री] नदी पहाड़ी जलना स्थलधनुर्ध्वभूतिमानसो निर्धरिणी उत्तर० २१२० ।

निर्धय [नि + नो + क्त] 1 दुरीकरण हटाना 2 पून निर्धय देगला प्रचलन निर्धयन निर्धरीकरण मद-पिण्या आप म० ११३३ मनु० ८१३०१, ६०० ११०० याज्ञ० १११० कृष्य । त्वयमेव धारिणि कि० २१२० ३ घटना जट्ट ३ उपसहार, (नर्क० में) प्रदमन 4 शिक्षाविद्यया मरणा विचारण 5 किमी विचार्यनि द्वारा रक्षा आरक्ष विषय में स्थिर रक्षा गता मा गदरद देगला—मर्कटव्या पवर्काना निर्धयम्यागमा रागा मालिनि १ । सम०—आद्य निर्धय रा मार्ग 1 फरमान व्यवस्था (विधि में) ।

निर्धयक (पि०) [नि + नो + क्त] निर्धय देने वाला अग्निम फैलाना करने वाला ।

निर्धयनम् [नि + नो + क्तृत्वा] 1 निरूपण करना 2 हाथी के जान का धारणी कोण ।

निर्धयन (भू० क० क०) [नि + कृ + क्त] चुना हुआ, सद्य दिया गया रचक किया हुआ रघु० १७१२२ ।

निर्दिष्टः (स्त्री०) [निर + निज् + क्त] 1 चुलाई
2 प्रायश्चित्त, परिशोधन महावी० ५।२५।

निर्वोक्तः [निर + निष् + क्त] 1 चुलाई, सप्यई 2
समासन 3 परिशोधन, प्रायश्चित्त।

निर्वोक्तः [निर + निज् + क्त] बोली।

निर्वोक्तम् [निर + निज् + क्त] 1 समासन 3 प्राय-
श्चित्त परिशोधन (किसी अपराध के लिए)।

निर्वोक्त [निर + निज् + क्त] दूर करना निर्वासन।

निर्वोक्त, —ड (वि०) [= निर्वोक्त पृथो० माय्] 1 निष्क-
रण नृपति नियम 2 हुसरो की मृतिसे पर हर्ष
मनाने वाला 3 ईश्वरान् 4 वालीमलौक करने वाला,
विष्णु 5 व्यर्थ, अवाश्यक 6 प्रथं 7 पावल
उत्पत्त।

निर्वोक्त, नि [निर + द् + क्त, इन् + वा] कन्दरा
चुला।

निर्वोक्तम् [निर + द् + क्त] टुकड़े २ करना, मोड़ना
नष्ट करना।

निर्वोक्तम् [निर + द् + क्त] जलाना दहन करना।

निर्वोक्त (पु०) [निर + वा (सो) + क्त] 1 निराने
वाला 2 शाना 3 किमान, सती काटने वाला।

निर्वोक्त (वि०) [निर + द् + निष् + क्त] 1 काड़ा
हुला निर्वोक्त 2 जोला हुआ, काट कर जोला हुआ
—सि० १८।२८।

निर्वोक्त (पु० क० क०) [निर + दिह् + क्त] 1 लेप
किना हुआ, बालिश की हुई 2 सुपावित, स्तुलकाय
हुष्ट पुष्ट।

निर्वोक्त (पु० क० क०) [निर + दिह् + क्त] 1 इसारे से
कटाया हुआ, टिकाया हुआ सकेलित 2 बिलिष्ट
बिलिष्टीकृत 3 बलित 4 अविन्यस्त, नियत 5
वृद्धापूर्वक कहा हुआ प्रकृत 6 निरवय किया
हुआ निर्धारित 7 आदिष्ट।

निर्वोक्त [निर + दिह् + क्त] 1 इसारा करना। टक
लाना, मकेल करना 2 आवरण, हुक्म निवेदन २५०
१९।१७ 3 उपवेश अनुबंध 4 बललाना करना
बोधवा करना 5 प्रतीक्षा करना बिलिष्टीकरण
विशिष्टता बिलिष्टोत्प्रेक्ष्य अवस्थाय निर्वोक्त—महा०
भा० १९।११ 6 निरवय 7 पड़ोस सामीप्य।

निर्वोक्त, निर्धारणम् [निर + द् + निष् + क्त, स्तुद् वा]
1 वृद्धो में से एक की बिलिष्ट करना, या पृथक्
करना अवयव निर्धारणम् या० २।१।४१, विक्रम०
१।२२ 2 निरवय करना, फैलाना करना, निर्वय
करना 3 निश्चितता, निश्चय।

निर्वोक्त (पु० क० क०) [निर + द् + निष् + क्त]
निर्वाचन किया गया, निरवय किया गया, निर्वय किया
गया, निश्चित किया गया, दे० 'निष्' पूर्वक पु।

निर्वोक्त (पु० क० क०) [निर + द् + क्त] 1 हिलाया
गया हटाया गया २५० १२।५७ 2 परित्यक्त
अस्वीकृत 3 बलित, रक्षित 4 टाका गया ५ निराकृत
6 नष्ट किया गया, (दे० 'निष्' पूर्वक पु)।

निर्वोक्त (पु० क० क०) [निर + वाक् + क्त] 1 जो
दिया गया २५० ५।४३ 2 वचकाया गया, उक्तक।

निर्वोक्त [निर + द् + क्त] 1 बाह्य, हठ, विद,
दुराह निर्वचनकातका (मुक्ता) — २५० ५।२१,
कु० ५।६६ 2 बुद्धाह, भारी भाव, अत्यावकता
निर्वचनपुष्ट न ज्ञ २ — २५० १५।३२, अत एव बल
निर्वच — स० ३ १ डिंडाई ४ वाचारापन ५ कलह,
सगडा।

निर्वोक्त—दे० निर्वोक्त।

निर्वोक्त (वि०) [निर + द् + क्त] कठोर, दृढ़।

निर्वोक्तम्, — ना [निर + भस् + क्त] स्थिता टार प
1 बमकी, बुद्धकी सि० १।६२ 2 गाली निर्वकी
दुरा-मला कहना दोषारापन 3 हुसविना 4 जाल
रन जाल।

निर्वोक्त [निर + निज् + क्त] 1 फट जाना विकल
करना टुकड़े २ करना 2 फटन, बरार ३ स्पष्ट
उत्प्रेक्ष्य वा बोधवा—नामवि० ४ 4 नदी का लव
5 किसी बात का निर्धारण।

निर्वोक्त, निर्वचन निर्वच निर्वचन [निर + मर् + क्त,
स्तुद् वा निर + मर् + क्त, स्तुद् वा] रवडना
बनना हिलाना 2 ३ अविधायी (लकड़ी के टुकड़ों)
को भाव पैदा करने के लिए बापस में रवडना
अविधाय।

निर्वोक्त (वि०) [निर + मर् + क्त] 1 हिलाये जाने या
मने जाने के साथ 2 (अप की मर्ति) गड से
पैदा करने के साथ—अव्यु अरान (बहु लकड़ी मिस
रगड कर जग पैदा की जाती है)।

निर्वोक्तम् [निर + मर् + क्त] 1 मापना, गण
अवकाशमोक्तम् या० ३।२८ २ ५० ३ माप
कैलाव विन्यस्त अरान् अविधायी (अप २२२
पूज विकास की मर् प्राय नष्ट हुआ ३ अत्यन्त
रवडना निर्धारित ईदुता निर्धारित ४ जग — २५०
६ 4 मुष्टि लोका इन् का निर्माणमवधि नष्ट
नालनीयम् या० १।२२ ५ कप बनाकर आकृत
शरीरनिर्मोक्तमवकाश नन्वस्यानुनाव —महावी० १
6 रवडा कृति) अवन का उपयुक्तता बोधित
सुरीति।

निर्वोक्तम् [निर + मर् + क्त] 1 सुडना स्पष्टता
निश्चितता — किमो ११ता के बहावे का अवरोध,
कृष धारि—निर्वासाविज्ञानपुण्यदामनिकरे का वट्
वहावा रति—मुबार० १० 3 देवता पर समर्पित

करने के पश्चात् मुझमें हुए कूल-निर्मास्वैरव
ननुत्प्रेषणीतानाम्—सि० ८।६० 4 अवशेष ।

निर्मितिः (स्त्री०) [निर् + मा + क्तिन्] उत्पादन, सृजन,
निर्माण, कलात्मक वस्तु की रचना—नवरत्नचित्रा
निर्मितिमावधत्ती भारता कवेर्भवति ।

निर्मूलक (भू० क० क०) [निर् + मूल + क्त] 1 छाड़ा
हुआ मुक्त किया हुआ स्वतंत्र किया हुआ—रघु०
१।४६ 2 सांसारिक अनुरागों से मुक्त 3 विमुक्त
अलग किया हुआ कत्त साथ जिसने हाल ही में
अपनी कंचुली छोड़ी हो ।

निर्मूलनम् [निर् + मूल + निष् + ल्यट्] उच्छेदन जब से
उत्खार फेंकना, उन्मूलन (आल० भी) कर्मनिर्मूलन-
क्षय—भर्तृ० ३।७२ ।

निर्मूल्य (भू० क० क०) [निर् + मूल + क्त] पोछा गया,
बाँधा गया, रगड़ा गया निर्मुष्टरगोष्पर—सा०
६० १ ।

निर्मूलक [निर् + मूल + क्त] 1 मुक्त करना स्वतंत्र
करना 2 आल, बमड़ी, बिसेव रूप से कंचुली रघु०
१।४१७, जि० २०।१७ 3 कवच विरहवक्त्र 4
आकाश, अन्तरिक्ष ।

निर्मूलकः [निर् + मूल + क्त] मुक्ति छुटकारा—रघु०
१०।२ ।

निर्मूलनम् [निर् + मूल + ल्यट्] मुक्ति, छुटकारा ।

निर्मूल्यम् [निर् + मूल + ल्यट्] 1 निष्कमण बाहर जना
अस्वान करना, विवायगी 2 अन्तर्धान ओसल 3
मरव, मृत्यु 4 चिन्तन मुक्ति, परमानव 5 हाथों की
बीज का बाहरी किनारा बारण निर्माणमागप्रभिधन्
—वस० १७ निर्वाचनिर्वयसुज चलिन् निर्वादी जि०
५।४१ 6 पद्यों के पैर बाधने की रम्मी पैरवा
—निर्वाचनस्तस्य पुरो वृषुञ्ज सि० १०।४१ ।

निर्वाचनम् [निर् + यत् + निष् + ल्यट्] 1 बापस
करना, लौटाना, अपण करना, (धरोहर) प्रत्यर्पण
करना 2 अक्षपरिचोच 3 उपहार, दान 4 प्रतिहिता
बदला (जैसा कि पैर निर्वाचन) 5 बच, हत्या ।

निर्वाचिः (स्त्री०) [निर् + वा + क्तिन्] 1 निकलना
अस्वान 2 इस जीवन से बिदा लेना, मरण, मृत्यु ।

निर्वाचिः [निर् + यत् + निष् + क्त] मल्लाह, कर्जवार
वा बालक, नाविक, नाव में, बाला ।

निर्वाचः—सम् [निर् + यत् + क्त] बुद्धों या पौधों
का निर्वचक, बौद्ध, रत्न, राक्ष—शाल्विनिर्वाचविधि
—रघु० १।१८, मनु० ५।६ 2 अर्क, सार, काड़ा
3. कोई काड़ा तरक पदार्थ ।

निर्वृत्तिः [निर् + उठ + क्त] पुत्रों, साधु 1 कंचुगा,
बीमार, बुढ़ा वा कलक (जो लम्ब या वरबाओं पर
कमाला जाता है) क्तिनिर्वाचिर्वाचनीय—सि० १।

५५, (यहा मल्लिनाथ इसका अर्थ लिखते हैं—“यस्य
वारणाख्य उपाख्य” और वैजयन्ती का उद्धरण
देते हैं, समस्त इसका नाम इसकी हाथी के ऊपर की
समापना के कारण पड़ा है) चाक्षोरपनिर्वाहा
—रामा० 2 शिरोमूचन, बुझानि, मुकुट 3 बीमार
में लगी कुटी 4 दरवाजा, फाटक 5 सत्त्व, काड़ा ।

निर्वृत्तवन् [निर् + लुप् + ल्यट्] उखाड़ना, काड़ना,
छीलना ।

निर्वृत्तवन् [निर् + लुप् + ल्यट्] 1 कूटना, मृदवसोट
2 फाड़ डालना ।

निर्वृत्तवन् [निर् + लुप् + ल्यट्] 1 सुरचना, ज़रोंचना,
नोचना 2 सुरचनी रापी ।

निर्वृत्तवन् [निर् + ली + ल्यट्] 1 साधु 1 साधु की
कंचुली ।

निर्वृत्तवन् [निर् + वच् + ल्यट्] 1 उक्ति, उच्चारण
2 लोकप्रसिद्ध उक्ति लोकांकि 3 व्युत्पत्तिप्रसिद्ध,
व्युत्पत्ति 4 शास्त्रावली 5 व्युत्पत्ति ।

निर्वृत्तवन् [निर् + वच् + ल्यट्] 1 उद्देश देना मेट करना
2 विशेष रूप से पितरों की निवृत्तान तर्पण—मनु०
३।२४ २६ ३ उपहार पदान करना 4 पुरस्कार,
दान ।

निर्वृत्तवन् [निर् + वच् + ल्यट्] 1 नजर डालना, देखना
दृष्टि 2 बिह्व डालना ध्यान पूर्वक अवलोकन करना ।

निर्वृत्तवन् (वि०) (स्त्री०) टिका) [निर् + वच् + निष् +
ल्यट्] बुरा करने वाला निन्द्य करने वाला
समाप्त करने वाला कापान्वित करने वाला, सम्पन्न
करने वाला ।

निर्वृत्तवन् [निर् + वच् + निष् + ल्यट्] निर्याति पूर्ति,
कार्यान्वित ।

निर्वृत्तवन् [निर् + वच् + ल्यट्] 1 अन्त, पूर्ति सि०
१।६२ 2 निर्वृत्ति करना अन्त तक निवाहना,
अवित रकना—मानस्य निर्वृत्तवन् अन्त 3 ध्वस्त,
संबन्ध 4 (नाटक में) उपखण्ड, वह अन्तिम
अवस्था जब कि महात्मा परिवर्तन वा अन्तिम क्षण हो,
नाटक वा उपन्यास आदि का उपसंहार—तारिक
निमित्त कुट्ट—विह्वनाटकस्थेय अन्त्यमुक्त्यन्त्यनिर्वृत्तये
—मुद्रा० ६ ।

निर्वृत्तवन् (भू० क० क०) [निर् + वा + क्त] 1 मूल
भार कर बुझाया हुआ, (बाण या बीषक की बाँधि)
बुझाया गया—निर्वृत्तवन्—वैजयन्तीः प्रममावरीणाम्
—वेणी० १।७, कु० २।२ 2 लोहा हुआ, कृष्ण
3 पुन वरा हुआ ; जीवन है मृत ५ (सुर्ग की
बाँधि) अन्त 6 गान, बुझाया, 7 बुझा हुआ, वच्
1 बुझाना—१।१११, अन्तेनिर्वाचमाप्नोति निर्वात ।
इवाचक—वहा० 2 बुद्धि है बीजक होना, लोच

होना 3. विषटन, मृत्यु 4. माया या प्रकृति से मुक्ति पाकर परमात्मा से मिलन, साक्षत मानन्द—निर्वाण-मयि मन्येऽन्यन्तरां जयन्ति—कि० १११९, रघु० १२११ 5. (बीज-विषयक) सांसारिक जीवन से व्यक्ति का पूर्ण निर्वाण, बीजों की मोक्षप्राप्ति 6. पूर्ण और साक्षत शान्ति, सदा के लिए विश्राम—कि० १८३९ 7. पूर्ण संतोष या मानन्द, ब्रह्मानन्द, परमानन्द—अये लब्ध नेत्रनिर्वाणम्—श० ३, मालवि० ३११, शि० ४२३, विक्रम० ३१२१ 8. विश्राम, विराम 9. श्रुत्या 10. सम्मिलन, माहृषयं, संगम 11. हस्तिस्नान—दे० 'अनिर्वाण' रघु० ११७१ में 12. विज्ञान में शिष्टाय। सम०—वृक्षि० (वि०) प्रायः भाषों से मोक्ष या मृत्यु—निर्वाणमृषिष्ठमवाच्य बीयं संयुधायतीह वपुर्गुणेन—कु० ३१५२—अस्तक मृत्ति, मोक्ष।

निर्वाहः [निर + वह् + घञ्] 1. बोधा रोपण, पुर्वचन 2. ब्रह्माग्नी, लोकापवाह, परिवार—रघु० १४३४ 3. शास्त्रार्थ का निर्वाह 4. बाह का बहाव।

निर्वाणः [निर + वण् + घञ्] दे० 'निर्वणम्'।

निर्वाणम् [निर + वण् + निष् + क्तृ] 1. बहावा, बाहुति, विहावन या घाट 2. मेट, धान 3. बुझाना, गुल करना 4. उबेलना, बर्बरना (बीज का) बोना 5. पुरस्करण, प्रशान 6. निराकरण, उपशमन, शान्ति—कृतं ध्यानि मुक्तिवृत्तिनिर्वाणानि—उत्तर० ३ 7. विनाश 8. बर्ष, हत्या 9. उष्मा करना, विघ्नानि करना—अरीरनिर्वाणभाव—श० ३ 10. प्रकृतिज और उष्ण उपचार।

निर्वाणः, निर्वाणम् [निर + वण् + घञ्, निर + वण् + निष् + क्तृ] 1. निष्कामता, निर्वाणन करना, देण-निकास देना 2. बर्ष, हत्या।

निर्वहः [निर + वह् + घञ्] 1. निवाहना, निष्पन्न करना, संकलन करना 2. सम्पत्ति, अस्त 3. अस्तक निवाहना, सहारा देना, दुःखपूर्वक हटे रहना, बर्ष—निर्वाहः प्रतिपन्नवस्तुषु कतायेति विवक्षितम्—मुद्रा० २१८८ 4. बीजित रहना 5. एवास्थि, वषट् व्यपस्था, ब्रह्मज्ञता 6. वर्णन करना, ब्रह्मन करना।

निर्वहणम् [निर + वह् + निष् + क्तृ] दे० 'निर्वहण'।
निर्विण्य (भू० क० ड०) [निर + विण् + क्त] 1. निर्वह-वृत्त, शिष्य, वृष्ण० १११४ 2. बर्ष वा लोक से वधिमुक्त 3. लोक से छूट 4. दुष्पत्त, पक्षि 5. किञ्ची वस्तु से मुक्त—अस्त्याचमनस निर्विण्यः—बर्ष० १ 6. लोक, कुर्वाणा हुना 7. निष्पन्न, निर्विह।

निर्विण्य (भू० क० ड०) [निर + विण् + क्त] 1. उपवृत्त, अवाप्त, अनुवृत्त 2. पुनः उप-वृत्त—रघु० १२११, 3. पक्षिपक्षि से कम में

प्राप्त—निर्विण्यं वैदव्यवृत्तयोः—नी० 4. विवाहित 5. अस्त।

निर्वृत (भू० क० ड०) [निर + वृ + क्त] 1. संवृत्त, संवृत्त, प्रसन्न, निवृत्ती स्वः—ह० २१४ 2. निर्विण्य, वेष्टिकर, आराम में 3. विज्ञान, ब्रह्मात्।

निर्वृतिः (स्त्री०) [निर + वृ + क्तृ] 1. संवृत्ति, प्रसन्नता, वृष्ण, मानन्द, ब्रह्मति निर्वृत्तिकपदे मनः—विक्रम० २१९, रघु० ११३८, १२१५, श० ७११९ शि० ४१५४, १०२८, कि० ३१८ 2. शान्ति, विश्राम, विज्ञान 3. मुक्ति, निर्वाण—द्वारं निर्वृत्तिचरणो विद्यते कृष्णैतिर्वर्णयम्—ग्रामि० ४११४ 4. संवृत्ति, निष्पत्ति 5. स्वतंत्रता 6. अन्तर्धान होना, मृत्यु, विनाश।

निर्वृत (भू० क० ड०) [निर + वृ + क्त] निष्पन्न, अन्तर्धान, सम्पन्न।

निर्वृतिः (स्त्री०) [निर + वृ + क्तृ] निष्पन्नता, पूर्णता, सम्पन्नता—मनु० १२११।

निर्वहः [निर + वि + वण्] 1. बुधा, वृष्णा 2. वधि-मृत्ति, छक जाना 3. विचार, निराश, ब्रह्मचार—परिवर्तमानिर्ब्रह्मपक्षे—मुष्ण० १११४ 4. बीजता 5. लोक 6. विरक्ति—भग० २१५२, (एक प्रकार की भावना जिससे आत्मरस का उदय होता है—काव्य—निर्वहस्याविभावां प्रति शान्तिप्रिय नवमो रसः 7. स्वाध्याय, बीजता (तैत्तिरीय उपनिषद्वाच्यं में से एक), लु० रस० में ही कई परिभाषा हैं, (निष्पत्ति वृष्ट्या दिया गया है—वधि लक्षण वा वृक्षेणा न मयोशास्त्रं लक्ष्येति। अमुना ब्रह्मजीवितेन में ब्रह्मता का विफल कि फलम्।

निर्वहः [निर + वि + वण्] 1. काय, शान्ति 2. बर्ष-हृरी, जाका, मोकरी 3. बोधन, उपबोध, लेखन 4. वृत्तान्त की बहावणी 5. प्राक्विक्षित, परिबोधन 6. विवाह 7. मुक्ति होना, वेष्टिक होना 8. छिद्र, रंज।

निर्वृत्त (भू० क० ड०) [निर + वि + वह् + क्त] 1. वृत्त किया गया, ब्रह्मात्त किया गया 2. उन्मत्तवा शान्त, वधित, विकसित-वृत्तनिर्वृत्तिव्यव—भा० ०, निर्वृत्तवृत्तवरेति—१११७, (उपचित—अन्तर) 3. प्रतिवर्धित, पुनः वधित, अत्यवधानित, ब्रह्मपूर्वक वा अन्त तक प्राप्त किया गया—हा वात कदाचो निर्वृत्तस्त्यजस्येह—उत्तर० 3. निर्वृत्तः संवाक्यमात्रो वृद्धरक्षितवा—भा० ८, निर्वृत्त तात्पर्य कार्यात्मिकम्—भा० ४१९, १०, बह्वि० ७१८ 4. परित्यक्त, छोड़ा हुआ।

निर्वृत्तिः (स्त्री०) [निर + वि + वह् + क्तृ] 1. वध, वृत्ति 2. विचार, उन्मत्तन विदुः।

निर्वृहः [निर् + वि + हृ + घञ्] दे० 'निर्वृह' 1 कनुरा 2 शिरस्त्राण, कलमी 3 दरवाजा फाटक 4 दीवार में लगी छूटी या बँकी 5 काड़ा ।

निर्वृहन् [निर् + हृ + घञ्] 1 शव का दाहसंस्कार के लिए ले जाना, शव को चिता पर रखना 2 ले जाना बाहर निकालना, निचोड़ना हटाना 3 जड़ से उखाड़ना, उन्मूलन करना ।

निर्वृह [निर् + हृ + घञ्] मलोलसर्ग, मलयाग ।

निर्वृहः [निर् + हृ + घञ्] 1 ले जाना, दूर करना, हटाना 2 बाहर खींचना, उखाड़ना 3 जड़ से उखाड़ना, चिता 4 मृतक शरीर को दाह संस्कार के लिए ले जाना 5 निजी घन सचय निजी जमा - धन० १।१९९ 6 मलयाग, (वि० आहार) ।

निर्वृहिरि (वि०) [निर् + हृ + गिन्] 1 पालन करने वाला 2 व्याप्त, (गोचारिक) विस्तारवाला 3 गन्धकत ।

निर्वृति (स्त्री०) [निर् + हृ + क्तिन्] भाग्य से हटाना, दूर करना ।

निर्वृति [निर् + हृ + घञ्] ध्वनि, -रघु० १।०१ ।

निर्वृत्तः [नि + ली + अच्] 1 छिपने का स्थान, (जातशत्रु) का घट या माद, (पक्षियां) का स्थान—श० १।४ 2 आवास, निवास घर गृह (शाय समास के अन्त में) रहने वाला, वास करने वाला 3 अग्न्यहानि छिपना— विनाशे निलयाय गतुम् रघु० २।१५ (यहाँ यह शब्द 'प्रथम अर्थ' का भी प्रकृत करना है ।

निर्वृत्तम् [नि + ली + क्यट्] 1 किसी स्थान पर जमा उतरना 2 जरणगृह घर, गृह आवास ।

निर्वृत्तिः [नि + क्ति + ङ, नुम्] 1 देवता मिलनेमुचना नपि च निरवान्निर्वाणान् मया० १० 2 मरणा का दम । मम० -निर्वाण स्वर्गीय गया ।

निर्वृत्ति, निर्वाणः [निर्वृत् + टाप्, क्त् + टाप्, इत्थ च] गाय ।

निर्वृत्ति (१० व० कृ०) [नि + ली + क्त] 1 पिघला हुआ या गला हुआ 2 शब्द या निगाह हुआ, गुण 3 अन्तर्गमन, चिरा हुआ शब्दार्थार्थ 4 चरण नष्ट 5 परिवर्तन, स्थानांतरण (१० नि पूर्वक की) ।

निर्वृत्तये (अव्य०) [प्रा० सं०] न बोलना बोलना बन्द करके, शत्रुता को राख कर ('कु' के साथ प्रयुक्त होने पर गति' के रूप में या उपसर्ग के रूप में अथवा स्वतन्त्र शब्द समझा जाता है—उदा० निर्वृत्तये-कृत्य, निर्वृत्तये कृत्या—पा० १।१।७९) ।

निर्वृत्तम् [नि + क्त् + क्यट्] 1 विध्वंसना उड़ेलना, नीचे फेंकना 2 बोना 3 चित्तों के नाम पर बढ़ावा, मुठपुर्वकों को लक्ष्य करके दी गई आहुति—की न कुले निरपनामि निर्वृत्तयोति - सं० १।२४ ।

निर्वृत्त [नि + क्त् + क्यट् + टाप्] अक्षतयोनि, अविनाशित कन्या ।

निर्वृत्त (वि०) [नि + क्त् + क्यट्] 1 बापित होने वाला, आने वाला या पीछे मुड़ने वाला 2 ठहरने वाला पकड़ने वाला 3 उन्मूलक, निष्कालित करने वाला मिटाने वाला 4 बापित लाने वाला ।

निर्वृत्त (वि०) [नि + क्त् + क्यट्] 1 लीटाने वाला 2 पीछे मुड़ने वाला ठहरने वाला मन् बापित होना, मुड़ना, या बापित आना लीटना—इह हि पत्न्या नाम्नालक्षो न बापि निर्वृत्तम् छा० १।२ 2 न घटने वाला बन्द होने वाला 3 रुकने वाला, परहेज करने वाला (अपा० के साथ) 4 काम से हृष्य खींचना निष्क्रियता (विप० प्रवर्तन)—काम० १।२८ 5 बापित माना अमर ८६ 6 पश्चात्ताप करना, मुद्गार करने की इच्छा 7 जीस बात सम्झी प्रमि ।

निर्वृत्ति (स्त्री०) [नि + क्त् + क्यटि] घर आवास, आवासस्थान वासगृह निवासस्थान ।

निर्वृत्त [नि + क्त् + क्यट्] गीत वाग ।

निर्वृत्तम् [नि + क्त् + क्यट्] 1 गृह, आवास निवास-स्थान 2 परिधान, वस्त्र अन्वेषण शि० १०।९०, रघु० १०।६१ ।

निर्वृत्त मन्० ३।३३, इमां प्रवार घन दैत्यं कपोतं आदि २ मात पदना में से एक पदना का नाम ।

निर्वृत्त (वि०) [निर्वृत्त वाता यस्मिन् व० सं०] 1 से मुग्धित अहाँ बापु न हो दान्त रघु० १९।४२ 2 त्रिष बाट न लगी हो खान न पहुँची हो, बाधा रहित 3 मुग्धित अभय 4 मुग्धित बुद्ध कवच शरण किए हुए त 1 दग्धगृह, निवासस्थान श्रमथपरा 2 अकाट्य कवच तम् 1 बापु से मुग्धित स्थान निर्वृत्तनिर्वाणमिष प्रदीपम् कु० ३।४८ शि० १।३।३, रघु० १।३।५०, १।१७, मम० ६।९२ नायु का अग्रज दग्ध, निर्वृत्तगता रघु० १।३।५ 3 निरुक्त स्थान ४ बुद्ध कवच ।

निर्वृत्त [नि + क्त् + घञ्] 1 बीज, अनाज, बीज के रूप हुए होने 2 मृतक पूर्वकों के पितरों को या दूसरे व्यक्तियों का जेंद, जलतथैष (आदि के अवसर पर) एका निवापममिलि विवृत्तय मन्मन् - पा० १।४० निवापममि—रघु० ८।८९, निवापममम पिनुगाम् ५।८ १५।९१, मुद्रा० ४।५ ३ जेंद या उपहार ।

निवार, निवारणम् [नि + वृ + क्त् + अच्, क्यट् वा] 1 दूर रखना, रोकना, हटाना—देवनिवात्यैवच—रघु० ०।५ २ प्रतिषेध, बाधा ।

निवारः [नि + क्त् + घञ्] 1 रक्षता, रक्षता, निवार

करना 2 घर, आवास, वासगृह, विश्राम-स्थान
— निवासस्थिताया - मू० ११५, सि० ४१३,
५१३, म० ११८, मू० ३१२३ 3. रात बिताना
4. पोशाक, वस्त्र ।

निवासस्थान [नि + वस् + निष् + क्युट्] 1 निवासस्थान
2 पड़ाव, बेरा 3 समय बिताना ।

निवासिन् (वि०) [नि + वस् + निजि] 1 निवास करने
वाला, रहने वाला 2 पहनने वाला, वस्त्रों से ढका
हुआ कु० ७१२५, (पु०) निवासी, आवासी ।

निवि (वि०) [नि + वि + क] 1 निरस्त-
राल, सपन, लटा हुआ 2 बूझ, कमा हुआ, पक्का,
निश्चित मुष्टि रघु० १५८, १५४ 3 मोटा
अप्रवेष्ट, पना, अवश - रघु० ११११ 4 स्थूल
मोटा 5 गढ़ा 6 दिवाल 6 डंडी नाक वाला ।

निविशे (वि०) [निवृत्तो विधेयो कस्मात् व० म०]
अभिन, यमान, वः अन्तर का आवास ।

निविष्ट (मू० क० क०) [नि + विष् + क्त] 1
स्थित, अन्तर बीठा हुआ 3 पड़ाव डाला हुआ - रघु०
१०१८ 3 स्थिर, तुला हुआ 4 सकोदित दमन
किया हुआ, नियमित - कु० ५१३१ 5 दीक्षित 6
व्यवस्थित ।

निवीर्यम् [नि + व्ये + क्त सम्प्रसारणम्] 1 यज्ञापीत
पहनुना (माला की भाँति गले में धारण करना)
निवीत मनुष्याणा प्राचीनावीत पितृकामपवीत देवानाम्
— ई० म्या० 2 धारण किया हुआ बनेऊ त तम्
परदा, अभ्युदय, आचरण हुपट्टा ।

निवृत्त (मू० क० क०) [नि + वृ + क्त] विरा हुआ
लपेटा हुआ, तः, -तम् - अवमुन, परदा आव-
रण ।

निवृत्ति (स्त्री०) [नि + वृ + क्तित्] आवरण बेरा ।

निवृत्त (मू० क० क०) [नि + वृत् + क्त] 1 लौटा
हुआ, वापिस आया हुआ 2 गया हुआ, बिदा हुआ 3
कमा हुआ, परहेजदार, ठहरा हुआ, बिरत 4 सामा-
यिक कार्यों से परहेज करने वाला, इस सत्कार से
विरक्त, शान्त 5 असहायक के लिए पश्चात्ताप 6
सहाय्य पूरा, समस्त, दे० नि पूर्वक दूत - रघु०
कीटना । सम० — अवसन् (पु०) 1 श्रुति 2 विष्णु
की उपाधि, कारण (वि०) बिना किसी अन्य कारण
वा प्रयोजन के (— कः) अवस्था मनुष्य, सामायिक
दृष्टान्तों से अप्रभावित, - वंश (वि०) को मति
जाने से परहेज करता है, निवृत्तमास्तु जनक
— वसन् ४, -- रात्रि (वि०) जितेन्द्रिय — वृत्ति
(वि०) किसी व्यवसाय से उपरल होनेवाला, वृद्ध
(वि०) हृदय में पड़ाने वाला ।

निवृत्ति (स्त्री०) [नि + वृत् + क्तित्] 1, लौटना

वापिस आना, लौट आना सि० १४१४, रघु० ४१८७
2 अवसर्जन, विराम, उपरति स्थान — आपनिवृत्ती
— ध० ७, रघु० ८८२ 3 काम के दूर रहना,
निष्क्रियता (वि० प्रवृत्ति) 4 परहेज करना, अवधि
— प्राजापतान्निवृत्ति — धर्म० ३१३३ 5 छोड़ना,
बचना 6 वेगध, सामायिक कार्यों से उपराम, शान्ति,
सत्कार से विमुक्ति 7 विश्राम, आराम 8 आनन्द,
कैवल्य 9 मुक्ति, अव्यवहार करना 10 उन्मुक्त,
प्रतिरोध ।

निवेदनम् [नि + विद् + क्युट्] 1 बतलाना, कहना, प्रक-
थन करना समाचार, उद्घोषणा 2. अर्पण करना,
मीपना 3 समर्पण 4 प्रतिनिधान 5. चढ़ावा या
आहुति ।

निवेष्टम् [नि + विद् + क्युट्] किसी देवमूर्ति को नमो
लाना तु० 'निवेष्ट' ।

निवेश [नि + विष् + क्त] 1 प्रवेश, दाखल 2 पड़ाव
डालना, ठहरना 3 ठहरने का स्थान, शिविर, सेवा
सर्नानिवेश तुल्य प्रकार रघु० ५१५९, ७१२, सि०
१३१८०, कि० ७१३३ 4 घर आवास, निवास कि०
४११९ 5 बिस्तर, (छानो को) सुखीकरण — कि०
५१८ 6 जमा करना, अर्पण करना 7 विवाह करना,
विवाह जीवन में स्थिर होना 8 छाव, नकल 9.
संन्यस्तवस्था 10 आभूषण, सजावट ।

निवेशनम् [नि + विष् + क्त + क्युट्] 1 प्रवेश, दाखल
2 ठहरना, पड़ाव डालना 3 विवाह करना, विवाह
' केवल' करना (रात केवल 5 आवास, निवास,
घर आवास-स्थान 6 शिविर 7 कम्पा या नगर
8 बसला ।

निवेशः [नि + वेष्ट + क्त] आवरण, लिफाफा ।

निवेशनम् [नि + वेष्ट + क्युट्] ढकना, लिफाफे में ढक
करना ।

निज् (स्त्री०) (यह अन्ध, कारक की दूसरी विभक्ति के
हि० व० के पश्चात् सारी विभक्तियों में 'निजा' शब्द
के स्थान में विकल्प में आदेश हो जाता है, पहले
पाठ वचनों में इसका कोई रूप नहीं होता) 1 रात
2 हस्ती ।

निजसमम् [नि + सम + निष् + क्युट्] 1 देखना, अव-
लोकन करना 2 दृष्टि, दृष्टि 3 सुनना 4. जानकार
होना ।

निज (ग) रणम् [नि + ष + (निष् + क्युट्) वच,
हृत्वा ।

निजा [निजरा स्थिति तन्मूरोनि व्यापारम् — धो + क
माग०] 1 रात — वा निजा संबंधाना तन्मा जामति
सयमी - म० २१६९ 2 हस्ती । सम० अन्ध,
अवगः 1 उत्सू 2 राक्षस, भूत, पिशाच, जलित-

कनः—कन्यः—कन्या—अवसानम्, 1. रात विनाश
 2. पी कटना—अवः—निशाच, —अव (वि०)
 विष्टे रतीया बाता हो, रात का अन्ध, —अवीकः,
 —ईकः—नाचः—वसिः—वसिः—रन्ध्र चन्द्रमा,
 वाद—अवकाशः रात का पूर्वा भाग, —अवकाशः,
 —आकाश हस्ती, —आविः साध्यकालीन प्रकाश,
 —अवर्तः रात्रि का अवसान, पी कटना—कर 1
 वाद—कु० ४।११ 2 मुर्गा 3 कपूर, बुहुन् शव-
 नागार, —घर (वि०) (स्त्री० रा, —री) रात में
 घूमने फिरने वाला, रात को चुपचाप पीछा करने
 वाला (रुः) 1 राजस पिशाच, भूत, भेत रघु०
 १२।६९ 2 सिव का विशेषण 3 गौरव, 4 उल्लू
 5 लीप 6 चक्रमा 7 चौर वसिः 1 सिव और
 2 रावण का विशेषण (री) 1 राजसी 2 रात को
 निश्चित किये हुए समय पर अपने प्रेमी में मिलने के
 लिए जाने वाली स्त्री रात्रयन्मचमरेण ताडिता दुःस-
 त्रेण हृदये निशाचरी—रघु० ११।२० (वहा पर बहु
 शब्द 'प्रथम अर्थ' के लिए भी प्रयुक्त है) 3 बेव्या,
 —अवर्ण (पुं०) अवकाश, —अवर्ण ओस, कोहरा,
 —वसिन् (पुं०) उल्लू, —मिलन् (अव्य०) पर रात,
 सदैव—कुण्डम्, लक्ष्म कर्मिणी (रात को मिलने
 वाली) 2 पाला, ओस, —कुण्डम् रात्रि का आरम्भ,
 —कुनः नीचह—अवः लण, विहारः पिशाच, राजस
 —प्रथम्यु राजनिष्ठाविहारी—भट्टि० २।३९, —वसिन्
 (पुं०) मुर्गा, —हस्तः स्नेह कपल, कुमुद (रात को
 खिलने वाला) ।
 निशाच (भू० क० क०) [नि + शो + क्त] 1 पहनाया
 हुआ, धान पर चढ़ा कर तेज दिया हुआ, तेज वि०
 १।४३० 2 अचकाया दशा, अचकाया हुआ उज्ज्वल ।
 निशाचम् [नि + शो + ह्यट्] पहनाया, धान पर चढ़ाकर
 तेज करना ।
 निशाच (भू० क० क०) [नि + शम् + क्त] आनियुक्त,
 जात, चुपचाप, सह्यशील, तन्म घर, आवास, निवास
 —रघु० १६।४० ।
 निशाचः [नि + शम् + क्त] निरीक्षण करना, प्रत्यक्ष
 ज्ञान प्राप्त करना, दर्शन करना ।
 निशाचनम् [नि + शम् + क्त + ह्यट्] 1 दर्शन करना,
 अवलोकन करना 2. हटि 3 'चना 4 बार २ निरी
 क्षण करना 5 छाया, प्रतिबिम्ब ।
 निशाच (वि०) [नि + शो + क्त] पैना किया हुआ, धान
 पर तेज दिया हुआ—निशितानिवासा मरा श० १।
 १० 2. उदीपित, —अन्म मोहा ।
 निशीथः [निशीरे जना अस्मिन्—निशी अचारे बक
 —ताप०] 1 आधीरात—निशीथशीला महना हन-
 रिक्तः—रघु० १।१५, मेघ० ८८ 2. आने का समय,

रात—कुपी निशीथेऽनुवर्ति काशिनः—रघु० १।३,
 अमर० ११ ।
 निशीथिनी, निशीथ्या [निशीथ + इति + डीप्, निशीथ
 + यत् + टाप्] रात ।
 निशीथः [नि + शम् + क्त] 1. बक, हत्या—मा०
 ५।२२ 2 तोड़ना, (बहुवच आदि का) भुक्ताना
 —महावी० २।३३ 3. एक राजस का नाम जिसकी
 दुर्गा ने मार दिया था । सम०—अवनी, —वर्दनी
 दुर्गा का विशेषण ।
 निशीथनाम् [नि + शम् + ह्यट्] वध करना, हत्या करना ।
 निशीथः [नि + शि + क्त] 1 आचपहताल, खोज,
 पूछताछ 2 स्थिर मत, दृढ़ विश्वास, पक्का भरोसा
 3 निश्चरण, दृढ़ सकल्प, दृढ़ता—एव मे स्थिरा
 निश्चय मुद्रा० १ 4 निश्चिन्त स्पष्टता, अस्-
 विम्ब, परिचाय 5 पक्का इरादा, याचना, प्रयोजन,
 उद्देश्य—अकेयो कूरनिश्चया—रघु० १२।६, कु० ५।५ ।
 निश्चय (वि०) [नि + च + क्त] 1 अचर, स्थिर,
 अटल, अडिम 2 अपरिचय अपरिबर्णीय—अम०
 २।५३, —सा पृथ्वी । सम०—अव (वि०) दृढ़
 शरीरवाला, मजबूत (तः) 1 सागस की एक
 जाति 2 चट्टान, पहाड़ ।
 निश्चयक (वि०) [नि + चि + क्त] निश्चरक,
 निर्णयार्थक, अन्तिम या निश्चयार्थक ।
 निश्चयारम्भ [नि + चर + क्त] 1 मन्त्रार्थगं करना
 2 दवा, वायु 3 हठ, स्वेच्छाचारिता ।
 निश्चय (भू० क० क०) [नि + चि + क्त] निश्चिन्ता
 किया हुआ, निश्चिन्त किया हुआ, फैसला दिया गया
 किया हुआ, समापन किया हुआ (वर्तु०) में भी
 प्रयुक्त) अरावनमराय वा अमरदक्षि निश्चय रघु०
 १२।८३, —तन्म निश्चय, निर्णय, तन्म (अव्य०)
 निश्चय निश्चिन्त रूप में अवश्ययोग्य ।
 निश्चयिनी (स्त्री०) [नि + चि + क्त] 1 निश्चय
 करना, निर्णय करना 2 निश्चरण, दृढ़ सकल्प ।
 निश्चयः [नि + चम् + क्त] किसी कार्य पर किया गया
 परिश्रम, अचरवसाय, अनवरत परिश्रम ।
 निश्चयनी, निश्चयि, निश्चयी [नि + चि + ह्यट् + डीप्,
 नि + चि + नि, डीप् वा] लीची, जीना, तु० 'नि-
 थयनी' ।
 निश्चयः [नि + चम् + क्त] लीन जीवना, लीन
 लेना जाह करना—तु० 'निश्चय' ।
 निश्चयः [नि + चम् + क्त] 1 आसक्ति, मत्तमता 2.
 मज्जिमस माहुरव 3 लक्ष्य—वि० १०।३४, वि०
 १०।२९ रघु० २।३०, ३।३४ ।
 निश्चयि [नि + चम् + क्त] 1 आसक्ति 2 चन्-
 धर 3 आसक्ति 4 रच, माही ।

निर्विन् (अथ०) [निर्विन् + इति] 1 आसक्त, सलग्न
—वि० १२।२९ 2 तरकसधारी—पु० 1 बानुष्क,
बनुर्धर 2 तरकस 3 बदनधारी ।

निवर्ण (न० क० क०) [नि + तद् + क्त] 1 बंठा
हुआ, बासीन, बिभाल, आबित,—रघु० १।७९,
११।७५ 2 सहारा दिया हुआ 3 गया हुआ 4
सिन्न कष्टस्त नमूना—पु० विवर्ण ।

निवर्णकम् [निवर्ण + कन्] आसन ।

निवर्ण [नि + तद् + क्त्वा + टाप्] 1 कटोला पोका
2 व्यापारी का कार्यालय, दुकान 3 मछी, हाट
—वि० १८।१५ ।

निवर्णः [नि + तद् + प्वरथ] 1 गारा दलदल 2
कामदेव,—वी रात ।

निवर्णः (व० द०) [नि + तद् + अवृत्त] 1 नल
द्वारा लासित एक देश तथा उसके निवासियों का
नाम—अ० 1 निवर्ण देश का नामक 2 पहाड़ का
नाम ।

निवर्णः [नि + तद् + वृत्त] 1 भारत की एक जगती
बारिश आति, जैसे शिकारी, मछुवे आदि गहाड़ी
—मा निवर्ण प्रतिष्ठा रथमग्न शाश्वती समा
—नामा० रघु० १४।५० ७० 2 पतिन जाति का
मनुष्य, बाण्डाल एक वर्णमकर जाति 3 विसावर
छुड़ा स्त्री से बाण्डाल का पुत्र—मनु० १०।४
(सगीत में) निम्नतरमग्न का पहला (यदि गण्य
कता के अधिक निकट हो तो)—अग्निग या सप्तम)
स्वर—गीतकता विन्यासमिव निवर्णानुपाय—का०
२१, (यहाँ यह प्रथम भी रखनी) ।

निवर्णित [नि + तद् + निवृत् + क्त] 1 बंठाया हुआ 2
कष्टवस्त, दुखी ।

निवर्णित्वा (वि०) (स्त्री० —नी) [निवर्ण + इति]
बैठने वाला या लटने वाला विश्राम करने वाला
आराम करने वाला—रघु० ११।९२ ४।२, (पु०)
बहाणव,—वि० ५।४१ ।

निवर्णित्वा (वि०) [नि + तद् + क्त] 1 मना किया हुआ
बहिष्कृत, दूर हटाया हुआ रोका हुआ २० नि पूर्वक
सिद्ध ।

निवर्णित्वा (न० क० क०) [नि + तद् + क्त] 1 छिड़का
हुआ 2 बरा हुआ, टपकाया हुआ उड़का हुआ,
व्याप्त किया हुआ ।

निवर्णित्वा [नि + तद् + क्त] 1 प्रतिषेध दूर रचना,
दूर हटाना 2 प्रतिरक्षा ।

निवर्णित्वा [नि + तद् + क्त + क्त] 1 करना, हटाना
करना—अ० अधिक जैसा कि बलवत्ता प्रदान में ।

निवर्णित्वा [नि + तद् + क्त] 1 छिड़का 2 करना
मुक्तचित्तनिवर्णित्वा—अपु० १२।२ 2 दूर 2 टपकना,

रिसना, भरना, तैलनिवर्णित्वा—रघु० ८।१८,
टपकने हुए तेल की एक दूर 3 ज्ञान, प्रकाश
4 वीर्यपान, वीर्यसिक्चन गर्भवती करना, वीर्य—
कु० २।१६ रघु० १४।९० 5 सिखाई, 6 प्रकाशन
के लिए जल 7 वीर्य की अपवित्रता 8 मेला पानी ।

निवर्णित्वा [नि + तद् + क्त] 1 प्रतिषेध, दूर रचना,
दूर हटाना, रोकना, प्रतिरोध 2 प्रत्याख्यान, मुकरना
3 नकारात्मक अवयव—द्वी निवर्णित्वा प्रकृतार्थ समस्त
4 प्रतिषेध नियम (विप० विधि) 5 निवर्ण से
व्यापक करना अपवाद ।

निवर्णित्वा [नि + तद् + क्त] 1 अभ्यास करने वाला,
अनुमन करने वाला, भक्त, अनुमन 2 बार 2
जाने वाला बसने वाला आश्रयग्रहण करने वाला
3 उपभोग करने वाला ।

निवर्णित्वा निवर्णित्वा [नि + तद् + क्त + क्त + टाप् + वा]
1 सेवा करना लोकी हाजरी में कटे रहना
2 पूजा आराधना 3 अभ्यास, अनुष्ठान 4 वासति,
लगाव 5 रचना समना उपभोग करना, उपभोग में
लाना 6 परिचय, उपवास ।

निवर्णित्वा [वृत्त० आ०—निष्कयते] तालना, भाषना ।

निवर्णित्वा—कम् [निवृत् + अवृत्] 1 स्वर्णमूला (विवृ-मित्र
मृत्यु की परन्तु सामान्यरूप १५ मासे या एक वर्ष
के ताल के मान के बराबर) 2 १०८ से १५० वर्ष
के ताल का माना 3 छात्रों या कष्ट में पहुँचने का
स्वर्णमूला 4 माना—अ० बाण्डाल ।

निवर्णित्वा [निवृत् + क्त] 1 बाहर निकालना,
निकोडना 2 मन सारभूत अवृत्त, तन्त्र—इति निवर्णित्वा
(भव्यकारा द्वारा बहुरा द्युक्त)—मनु० ५।१२५,
भाषा० १३।३ 3 निवर्णित्वा 4 निवर्णित्वा ।

निवर्णित्वा [निवृत् + क्त + क्त] 1 बाहर निकालना,
निकोडना, लोचन—रघु० १२।९०, 2 धटाना ।

निवर्णित्वा [निवृत् + क्त + क्त] 1 पाम भेला
का) हाक कर दूर करता 2 बंध, हत्या ।

निवर्णित्वा (म०) [निवृत् + क्त + क्त + क्त] 1 बाहर
निकालना निर्गम निकाल 2 प्रसाध आदि का डार-
मर्धक 3 प्रसाध 4 अन्तर्धान ।

निवर्णित्वा (न० क० क०) [निवृत् + क्त + क्त]
1 निर्वाहित बाहर निकाला हुआ हाक कर बाहर
किया हुआ 2 बाहर गया हुआ, कट्टर निकाला हुआ,
3 वा हुआ जमा किया हुआ 4 उठराना हुआ,
निरत किया हुआ, 5 माना हुआ झिझका हुआ,
पैसाया हुआ 6 उराभला कटा हुआ छिड़का हुआ ।

निवर्णित्वा [निवृत् + क्त + क्त] 1 दामा जो
जाने राशियों व नियम में है ।

निवर्णित्वा [निवृत् + क्त + क्त] 1 बर से लमा हुआ प्रस-
निकोडना

बहुि० २।२६, धि० ८।११, मनु० २।१६, १।३० 2
प्रकाशित, क्षम्य, निष्कम्प—वा० १०।२४ (निर्जल
विहितः—अनन्तर 3. बहिष्ठा, पूर्व।

निष्कम्प (वि०) [निष् + पृ + क्त] 1. काड़ा बनाया
हुवा, जब मैं विजोया हुआ 2. जली प्रकार पकाया
हुवा।

निष्कलम्प [निष् + पृ + क्त] 1. अपद कर निष्कलना,
बीजता से बाहर जाना।

निष्कलितः (स्त्री०) [निष् + पृ + क्त] 1. जन्म,
उत्पादन—कल्पनिष्कलित 2. परिपक्वावस्था, परि-
पाक—मु० २।३७ 3. पूर्णता, समापन 4. संपूर्ण,
सम्पन्ना, समाप्ति।

निष्कल (न० क० क०) [निष् + पृ + क्त] 1. कम्पा
हुवा, उचित, उन्नत, पैदा हुआ 2. कार्यान्वित हुआ
पूरा हुआ, सम्पन्न 3. मत्पर।

निष्कलवत् [निष् + पृ + क्त] कटकना।

निष्कलवत् [निष् + पृ + क्त] 1. कार्यान्वि-
यन, निष्कलित 2. टपसहरण 3. उत्पादन, पैदा करना।

निष्कलः [निष् + पृ + क्त] 1. कटकना, बनाव साफ
करना 2. छात्र से उत्पन्न होने वाला शत्रु 3. हवा।

निष्कलित (न० क० क०) [निष् + पृ + क्त] 1. पाठ + निष् + क्त
निष्काया हुआ, बीजा हुआ—निष्कलितैर्दुःकफवज्ज
नू सेक—उत्तर १० ३।११।

निष्कल, निष्कलवत् [निष् + पृ + क्त] 1.
निष्काक रपड़ना, पीमडा चुर-चुर करना, कुचलना—
भुज्जतरनिष्कल—वेवा० ३ 2. साटना या घटना
जापान करना रपड़ देना—रपु० ४।७०, महावी०
१।३४ का० ५६।

निष्कलवत्—वि (न०) [निष् + पृ + क्त] निर्वता
प्रवाही तन्तुवाप पनाका अस्मान् अर्थ वा नि०
मापु [नवा कोरा कपडा] अस्मान्—दण्ड०।

निष् (अर्थ०) [निष् + क्त] 1. उपमर्ग के रूप
में यह मानकों के पूर्व लग कर विद्या (से दूर, के
बाह्य), निश्चित, पूर्णता, उपभोग, पार करना
अतिरिक्त बाह्य कर्मा को बतलाना है, उदाहरण दे०
बीछे 'निर्' के अन्तर्गत 2. सत्ता लब्धी के पूर्व उपमर्ग
के रूप में प्रयुक्त, होकर बहुत से नाम और विशेषण
बनाता है तथा निष्काकित अर्थ प्रकट करता है (क)
'मैं से' 'से दूर' जैसा कि 'निर्वन्', निष्कलवत्' वा
(क) अधिक प्रचलित 'मही' 'के विना' 'से दूर'
(अनायासकला या धन देने वाला), निष्कल—विना
लग के, निष्कल, निर्वन् बाह्य (विच्छे०) समाप्तों में
निष् का स्वरा के, अथवा वर्ग के तीसरे, चौथे या
पाँचवें वर्ग, वा क र म य व ह में से कोई वर्ग, परे होने
पर, बलक कर र हो जाता है, दे० निर्, कल्य वर्गों

के परे होने पर निर्वन्, वृद्ध के पूर्व वृत्ता वृद्धी
वृत्ते पूर्व वृत्त होता है, दे० वृत्त)। अर्थ०—कल्य
(निष्कल) (वि०) 1. विना काटों का 2. काटों से
वा समुच्चों से बका, जब तथा उत्पत्तों से मुक्त,—कल्य
(निष्कल) (वि०) अर्थ वर्गों के विना,—कल्य
(निष्कल) (वि०) निष्कल, वृद्ध वृद्ध,—कल्य
(निष्कल) (वि०) निष्कल, निर्वन्, कल्य—निष्कल-
वामाधिका—स० १।८, मु० ३।४८,—कल्य (निष्क-
ल) (वि०) निर्वन्, निर्वन्, कूर,—कल्य (निष्कल)
(वि०) 1. अर्थवत्, अर्थवत्, समस्त 2. प्राप्यवत्,
जीव, भूत 3. पुस्तकहीन, अन्तर 4. विकलवत्—(क)
1. बाधक 2. कोनि, भय 3. ब्रह्मा (—कल्य, स्त्री)
एक बड़ी स्त्री जिसके कल्य होने कल्य हो गये हों, या
जिसे अब रबीवर्ग में न होना हो,—कल्य (निष्कल)
(वि०) निर्वन् कल्य से रहित,—कल्य (निष्क-
ल) (वि०) वैन तथा दुर्बलताओं से मुक्त,—कल्य
(निष्कल) (वि०) 1. कामना वा अविनाशकहित,
निर्वन्, निर्वन्, स्वार्थरहित 2. सत्ता की सब
प्रकार की इच्छाओं से मुक्त (अर्थ०—कल्य) 1.
विना इच्छा के 2. अविच्छा पूर्वक,—कारण (निष्क-
ल) (वि०) 1. विना कारण के, अनावश्यक 2.
निष्कारण, निष्कारण—निष्कारणों वृत्त 3. निष्कार,
हेतुरहित (अर्थ०—कल्य) विना किसी कारण या हेतु
के कारण के अभाव में, अनावश्यक रूप से,—कल्य
(निष्कल) पश्चात्ताप में रत (अपराधी) जिसके
बाध रोएँ सब बूझ कर की ल्याया गया हो,—कल्य
(निष्कल) (वि०) 1. इसकी जीवनशर्मा समाप्त
हो गई जिसके दिन इन दिनों हों 2. जिसके कोई जीव
न लके, अर्थवत्—कल्य (निष्कल) (वि०) जिसके
पास एक पैसा भी न हो, अनर्थ, दारिद्र्य,—कल्य
(निष्कल) (वि०) जिसका कोई अन्वयभाव न रहा
हो सत्ता में अकेला रह गया हो (निष्कल) वृत्त पूर्व
कप से सबब विच्छेद करना, निर्मूल कर देना,

निष्कल 1. किसी के परिवार को तहत-नहत कर
देना 2. जिसका उधारना, भूली बका करना—निष्क-
लाकरोति दाहिमम्—विद्या०,—कल्य (निष्क-
ल) (वि०) गोच कुल का,—कल्य (निष्कल)
(वि०) कल्य, निर्वन्, निर्वन्, कूर,—कल्य
(निष्कल) (वि०) निर्वन्, निर्वन्, कूर,—कल्य
(निष्कल) (वि०) 1. केवल, विच्छेद, निर्वन्
2. गोच के अर्थवत्, गोचहीन,—कल्य (निष्क-
ल) (वि०) जो कल्य से बाहर चला गया
है,—कल्य (निष्कल) (वि०) 1. विद्याहीन 2. जो
आत्मिक संस्कारों का अनुष्ठान न करता हो,—कल्य
(निष्कल)—कल्य (निष्कल) (वि०) कल्यवत्

से रहित, -लेखः (वि.लेखः) = विवेक, -कल्प (विषय-
 कल्प) (अन्व०) पूर्ण कल्प है, -कल्प (विषयकल्प)
 (वि०) अन्धा, बिना अक्षों का, -कलारिख (विषय-
 त्सारिख) (वि०) जिसने कालीस पार जिने हो,
 -किल (विषयित) (वि०) 1 चित्ताजो से मुक्त,
 बसबद, बुराहित 2 बिचारहीन चित्तन क्षुब्ध
 -केलन (विषयेलन) केतनारहित, -केतस् (नचेतस्)
 (वि०) जो अपने ठीक होख में न हो -केष
 (विषयेष) (वि०) प्रतिहीन, निराकत, केष्वाकरण
 (विषयेषाकरण) (वि०) किसी को गति से बञ्चित
 करना, प्रतिहीनता का उत्पादक (कायदेव के एक
 वाक का विच्छेप), -कलस् (विषयकलस्) (वि०)
 जो वेदों का अध्ययन न करता हो, -किल (विषयिल)
 (वि०) 1 जिसमें घृणा न हो 2 निर्दोष
 3 निर्वाच, क्षतिरहित, -तनु (वि०) जिसके कोई
 लम्पान न हो, निस्सम्पान, -तन्त्र (वि०) जो आसली
 न हो, कुलीका, स्वस्व, -तन्त्रक, -तिविर (वि०)
 अन्धकार मुक्त, प्रकाशमान 2 पाप और नैतिक
 क्षमिताजो से मुक्त, -तन्त्र (वि०) कल्पनाशील,
 कल्पनाशील, -तल (वि०) 1 गोल, बर्तुलाकार -
 मुक्तकालास्व च निस्तकस्व -कु० १४२ 2 हिलने
 वाला, काने वाला, बोलने वाला 3 तन्वीरहित,
 -तुल (वि०) 1 मुझ से विमुक्त 2 विमल, स्वच्छ
 बालीकृत, ० बोरः नेह, ० रत्नम् स्फटिक, -नेल्स् वि०)
 निरग्न, ताप या क्षति रहित, नि सकल पुस्त्य
 हीन 2 उत्साहित, मन्त्र 3 नृप, -वच (वि०)
 शीत, निर्जल, -विज (वि०) 1 तीस से अधिक
 -विजिमानि वक्षसि वक्षस्व पा० ४१४७३
 तिहा० 2 निर्वाच, निर्दय, क्रूर -वद ५ (- व)
 तलवार, -वल् (पु०) कृपावारी, -वैनुष्य (वि०)
 तीन मुँहों वाला, रत्न ठका ठकम्) से क्षुब्ध, बंध
 (विषयक) (वि०) कीचड़ से मुक्त, स्वच्छ, कुट,
 -व्याक (विषयक) (वि०) बिना किसी डारे
 के, -विक्षुता (विषयविक्षुता) वह स्त्री जिसके न कोई
 पुत्र हो, न पति, -वच (विषयव) (वि०) 1 जिसमें
 कोई पत्ता न हो 2 जिसके पंजे न हो,
 बिना पंखों का (विषयवा छ वाच से इस प्रकार
 बोलना जिससे कि पंख बिना समुद्र के डार पार निकल
 जाय, बालक वीर्य पशुपाना (आल०) विषयवाकोलि
 (मृगं व्याक) (उपु०) बालक अथवा अपर्याप्त निवेन-
 नाशिकक करोति -विहा०, एकवच नून लपचा-
 कुलोन्नयन विषयवाकोलीमत् -वच० ११५, इसी
 प्रकार -वोटी मुक्करी, लार्ज स्वयंवाताज्जोवा,
 दिव्यवीर्य वदवालीतिविषयवाकोलीमत् -वाचि०
 २१११३, -वच (विषयव) (वि०) बिना पैरों का

(वच) एक गाड़ी को बिना पैरों या बिना पहियों के
 चले, -वर्षार (विषयवर्षार) (वि०) बिना तैयारी
 के, -वर्षार (विषयवर्षार) जिसके पास किसी प्रकार
 की संपत्ति न हो, -वृत्ता० २ (ह) वह लम्बावी
 जिसने न तो बिबाह किया हो, न जिसका कोई
 आशित हो और न जिसके पास कुछ सामान हो,
 -वर्षार (विषयवर्षार) (वि०) जिसका कोई
 अनुचर या पिछलनुमा न हो परीक (विषयरीक)
 (वि०) जो यथार्थ या सही सही परक न करे
 -वरीहार (विषयरीहार) (वि०) जो सावधानी न
 रखने कर्तव्य (विषयवरी) पार (विषयार) (वि०)
 सीमा रहित, असोमित, -वाच (विषयवा) (वि०)
 वापरहित निर्दोष पवित्र, -पुत्र (विषयपुत्र) (वि०)
 पुत्र रहित निम्नन्तान पुत्र (विषयपुत्र) (वि०)
 1 निजन बिना किंवा बसामी के उदाहर
 2 पुनन्ता होन 3 जो पुत्रिय न हो स्त्रीपुत्र नपुंसक
 लिंग (वि०) 1 हीमडा 2 काय पुत्राक (विषय
 लाक) बिना पुरानी का बिना भूमों का पौष
 (विषयौष) (वि०) पौषदान -वक्ष (विषयवक्ष)
 (वि०) स्थिर अथवा गतिमान प्रकाशक (विषय
 काक) (वि०) जानिबदार्शन, वैजिष्टपरहित, पूर्ण
 निष्प्रकाश ज्ञान निकल्पम् १०० -प्रकाश
 (विषयप्रकाश) (वि०) पारसक अस्पष्ट, अन्धकार
 भय -प्रचार (विषयप्रचार) (वि०) 1 न हिलने
 हुलने वाला 2 एक ही स्थान पर स्थिर रहने वाला
 2 नकेदित अयाया हुआ स्थिर किरा हुआ, -प्रति
 (ली) कार (विषयपति) (ली) कार प्रतिस्थि
 (विषयनिस्थि) (वि०) 1 जिसकी चिकित्सा न हो सके,
 जिसका कोई प्रतिकार न हो सके सर्वथा निष्पति
 कारेयमापवृत्तिका -का० १५१ 2 निर्वाच, बाधारहित
 (अन्व० रत्न) बिना किसी विघ्न के, प्रतिष्ठ (विषयव)
 (वि०) विष्मरहित, निर्वाच, बाधाक्षुब्ध -रपु० ८७१
 -प्रतिष्ठ (विषयप्रतिष्ठ) (वि०) 1 अपुरहित
 निर्बिरोध 2, बेजोड, अपरिज अनुपम, -प्रतिष्ठ
 (विषयप्रतिष्ठ) (वि०) 1 कांतिमान 2 प्रकाशीन
 जो प्रयुक्तमवर्ति न हो, मन्त्र बुद्धि, बड़ 3 उदासीन,
 -प्रतिष्ठ (विषयप्रतिष्ठ) (वि०) काचर, पीर,
 -प्रतीक (विषयप्रतीक) (वि०) 1 पीचा सामने देखने
 वाला, पीछे मुड़कर न देखने, वाला 2 (बुद्धि)
 बसबद, -कल्प (विषयकल्प) (वि०) विविध,
 अवाच, -वच (विषयवच) 1 विस्तारहीन 2 छान
 कपट से रहित, ईमानदार, -वच (विषयव वा
 विषयव) (वि०) 1 कांतिविहीन, विवर्ण विचार
 देने वाला -रपु० ११८१ 2 क्षतिरहित 3 निस्तेज,
 बुद्धिहीन, अन्धकारमय, -वच (विषयवच)

(वि०) बिना अधिकार का,—अधिकार (निष्प्रयोजन)
 (वि०) 1 निरुद्ध, जो किसी प्रयोजन से प्रवाहित
 न हो 2 निष्कारण, निराधार 3 व्यर्थ 4 अनुपयोगी,
 अनावश्यक (अर्थ—बन्ध) बिना कारण या हेतु के
 बिना किसी मतलब के—मुहा० ३—बन्ध (निष्प्रयोजन)
 (वि०) प्राणहीन निर्मय मृत्तक,—कल (निष्फल)
 (वि०) 1 जिसका कोई फल न निकले फलहीन,
 (आत्म० भी) असफल—निष्फलारभयत्ना—मृ०
 ५६ 2 अनुपयोगी बिना लाभ का निरर्थक—मु०
 ४।१३ 3 बाध ऊपर 4 (सब्द) निरर्थक 5 बिना
 जीव का, निर्जीव (—साक्षी) रत्न जिसके मन्त्रान
 हीना बन्द हो ६—अन्त (निष्फल) (वि०)
 बिना आधा का—शब्द (निष्प्रयोजन) (वि०) जो
 शब्दों में व्यक्त न किया गया ७ अकारण (नि
 शब्द) रीतिनुसार—क० १६३ आलापक (नि
 शब्दक) (वि०) प्रकृत एकान्तवा निवृत्त—कम
 निर्जन स्थान एकान्तस्थान—अर्थ निशब्द का
 मध्यमोक्तमार्ग—मन्० ३।१६३ शेष (नि शब्द)
 (वि०) बिना कुछ शेष रहे पूरा समस्त पूरा
 नि शेषविशेषाणिकोणजानम रघु० ५।१ शोध्य
 (नि शोध्य) (वि०) शोध्या हुआ, स्वच्छ—सस्य
 (नि सस्य) (वि०) 1 अमरिद्वय निविबल 2 सन्देह
 रहित, आशङ्कित महद्गुण्य रघु० १।१३९
 (अर्थ—अर्थ, निष्प्रयोजन अमरिद्वय रूप से निविबल
 रूप में, अवश्य ज्ञा (नि सस्य) (वि०) 1 ज्ञान
 सक्त, भक्तिरहित अनपेक्ष उदासीन २ निशब्द
 फलस्थानाश्रय—वि० १।१२४ 2 सामासिक आन
 किधा स मुक्त 3 निशब्द विद्युत् अनुपगुण्य
 4 अशब्द (अशब्द—शब्द) निस्स्वभाव भाव स सक्त
 (नि सक्त) (वि०) बहाण—सक्त (नि सक्त) (वि०)
 1 मत्स्वरहित दुर्बल पुस्तकाल 2 मोक्ष नगण्य
 अमर 3 मलाश्रित अना 4 जीवित प्राणियों से
 वञ्चित (—स्वप्न) १ शक्ति या ऊर्जा का अभाव
 २ मलाश्रिता ३ नगण्यता—स्तति (निस्स्तति)
 स्तत्य (निस्स्तान) (वि०) जिसका कोई सन्तान
 न हो, सन्ततिरहित—संविद्य (निस्मा-दण्य)।—सदेह
 (निस्सदेह) (वि०) दे० निशय सन्धि (निस्सधि
 नि सन्धि) (वि०) जिसमें दिखाई देने वाली कोई
 गठ न हो सदन सधन मटा हुआ—सत्त्व (नि
 सत्त्व) (वि०) 1 जिसका कोई शत्रु न हो—धन
 अधिकतमो नि सत्त्वोऽय जात—विष्णु० ४।१०
 2 जिसका कोई और दावेदार न हो जो सर्वथा एक
 ही का हो 3 अज्ञानशून्य सधन (निस्सम)
 (अर्थ—०) 1 बिना शत्रु के अनुचित समय पर
 2 दुष्टता के साथ,—सत्त्व (नि सत्त्व) (वि०)

वहाँ मार्ग उपलब्ध न हो, वहाँ मार्ग बचक हो
 (—क) बाधिराल का अंधेरा, कुप अंधेरा, धना
 अन्धकार,—संवाच (नि सवाच) (वि०) जो शक्ति
 न हो, प्रसक्त, विस्तृत—संसार (नि ससार) (वि०)
 1 नीरस, शार्ङ्गहीन, बिना मूत्र का 2 निष्क्रमा
 असार,—सौख्य (नि सीम),—सौख्य (नि सीम)
 (वि०) अपरिपेक्ष, सीमारहित—बहुह महता
 सीमानपरिपेक्षविभूतय भर्त० २।३५, नि सीम
 पदम् ३।३ स्नेह (—स्नेह) (वि०) जो
 चिकना न हो बिना चिकनाई का, शुष्क 2 स्नेह
 रहित भावनाशून्य हृष्टहीन उदासीन 3 जिससे
 कोई प्यार न करना हो जिसकी कोई देखभाल न
 करता हो पव० १८५ स्वह (नि स्वह या
 निस्स्वह) (वि०) गतिहीन स्थिर—रघु० ६।४०
 स्वह (नि स्वह) (वि०) 1 कामनाशून्य 2 ला-
 ग्नबाह उदासीन ३ वक्तव्यविशेषित्वा कि०
 ५, रघु० ८।१० 3 सन्तुष्ट, दाह न करने वाला
 4 सामासिक बन्धन से मुक्त—स्व (नि स्व) (वि०)
 निश्चय, इरिद—निश्चय बधिर सतम्—क० २।६,
 स्वाहु (नि स्वाहु) (वि०) स्वादरहित, बिना स्वाद
 का, बदभावा ।

विशेषात दे० नि सपरात ।

विशेषः [नि + लृ + घञ्] १ प्रदान करना अनुदान
 देना उपहार देना पुष्पकार देना—मनु० ८।१३३ 2
 अनुदान ३ मलात्तर्ग गुण्यो ४ मलान्यास ४ त्याग
 निशान्ति देना ५ मृष्टि, भार्गवोद्यम—कि० १।
 ५ १८३१ रघु० ३।३५ कु० ४।१६—निशान्त,
 निशान प्रकृति से स्वभाव ७ अदना—बदली बिनि
 मय । सम० ज निश (वि०) सहज अन्तर्गत
 स्वाभाविक,—विश (वि०) स्वाभावत और प्रकार
 का जिसमें निशान्तिदेकसम्बन्ध—रघु० ६।३९
 बिनीत (वि०) 1 स्वाभावत शिष्यो 2 स्वना-
 वत विनम्र ।

निसार [नि + सृ + घञ्] समुच्चय समूह ।

निसृज्य (वि०) [नि + सृ + लृट्] मारने वाला मष्ट
 करने वाला म् मष्ट इत्यादि ।

निसृष्ट (म० क० क०) [नि + सृ + लृट्] 1 सीपा
 गया दिया गया अपित 2 छोटा सया, त्यक्त 3
 विसर्जित 4 अनुज्ञात अनुमत 5 केन्द्रवर्ती मध्यस्थ ।
 सम०—अर्थ (वि०) जिसे किसी कार्य का प्रकल्प
 सीपा गया हो 2 दूत अधिकर्ता दे० सा० ६० ८६,
 ८७ हुती बहु र्थो जो नायक और नायिका के प्रेम
 को जान कर स्वयं उनका निशान्ति है—सविशुष निस्-
 स्टावहृत्कोत्प सुकवितव्य—मा० १ (वहाँ बगदर
 निस्सृष्टावृत्ती जब की व्याख्या इस प्रकार करता है

—नायिकाया नायकस्य वा मनोरथं ज्ञात्वा स्वयत्वा कार्यं साधयति वा ।

नित्तरन् [निष् + तु + स्मृत्] 1. बाहर जाना, बाहर जाना 2. पार करना 3. बचाना, मुक्ति, छुटकारा 4. तरकीब, उपाय, योजना ।

नित्तरन् [निष् + तु + स्मृत्] वच, हत्या ।

नित्तरः [निष् + तु + वञ्] 1. पार करना—संसार तब नित्तरपदवी न दीवसी—मट्टि० ११९ 2. छुटकारा पाना, छुटी, बचाव, उद्धार 3 मोक्ष 4 अन्तरिक्षोक्त, चुकीसी, बशायी—वेतस्य नित्तरः कृतः—हि० १ 5. उपाय, तरकीब ।

नित्तीर्थं (भू० क० ड०) [निष् + तु + क्त] 1. उद्धार किया हुआ, मुक्त किया हुआ, बचाया हुआ 2 पार किया हुआ (जाँच०) बेची० ६१३६ ।

नित्तीर्थः [निष् + तु + वञ्] चुमना, डक मारना ।

नित्तीर्थः [नि + स्तन् + वञ्] कपकरी, चढकन पति ।

नित्तीर्थं (ध्वं) दः [नि + स्तन् + वञ् पत्य विकल्पेन]

1. धार्ये, वा नीचे की ओर बहना, चुना, टपकना, बूब २ करके मिटना, झरना, रिसना—वल्कलशिला नित्तीर्थरेखाकिताः—छ० ११४ 2. जलज, जल, प्रतीक्षपथार्थं, रस—उत्तर० २१२४ मा० ९१६ 3 रसाह, ओष, पानी को बार—हिमाद्रिनिम्नद्वय इषावतीर्थः—रघु० १४३, ४१, १६७०, मयनित्तीर्थरेखयो—१०५८, मेघ० ४२ ।

नित्तीर्थिन (वि०) [नि + स्तन् + भिजि] टपकने वाला बहने वाला, रिसने वाला ।

नित्तीर्थः, नित्तीर्थ [नि + तु + अन्, वञ् वा] 1 मरिता, चारा 2 चाबलों का माँड ।

नित्तीर्थः, नित्तीर्थः [नि + स्तन् + अन्, वञ् वा] शब्द, आवाज, रघु० ३११९, रघु० ११८, कि० ५१६ ।

नित्तीर्थ (भू० क० ड०) [नि + हृत् + क्त] 1 पटखी दिया हुआ, आघात किया हुआ, बध किया हुआ मारा हुआ 2 प्रहार किया हुआ, चोट जमाया हुआ 3 अमुरक्त, भक्त ।

नित्तीर्थः [नि + हृत् + स्मृत्] वच, हत्या ।

नित्तीर्थः [नि + हृत् + अन्, सप्रसृज] आबाहुन, गुलाबा ।

नित्तीर्थः [नि + हृत् + वञ्] दे० 'नीहार' ।

नित्तीर्थः [नि + हृत् + स्मृत्] वच, हत्या ।

नित्तीर्थ (भू० क० ड०) [नि + वा + क्त] 1 रक्सा हुआ, बरा हुआ, टिकाया हुआ, स्थापित, जमा किया हुआ 2 सीपा हुआ, समपित 3 प्रदत्त, प्रयुक्त 4 कर्षित, खँवर रक्सा हुआ 5 कोषरक्ष किया हुआ 6 बंजाना हुआ 7. (चूक आदि) पड़ी हुई 8 नवीर स्वर में उच्चारित ।

नित्तीर्थ (वि०) [नितरां हीनः प्रा० स०] बचम, नीच, —नः नीच आदमी, बचम कुल में उत्पन्न ।

नित्तीर्थः [नि + हृत् + अन्] 1 मकर जाना, जानकारी का छिपाना—कार्यः स्वमतिनित्तीर्थः—मा० १११२, चन्दा० ५१२७ 2 गोपनीयता, छिपाव—वाङ्म० २१११ २६७ 3 रहस्य 4 बनिबोध, समझ, लका 5 कुटुम्बता 6 परिशोधन, प्रायश्चित्त 7. बहाना ।

नित्तीर्थः (स्त्री०) [नि + हृत् + क्त] 1 मकरना, जानकारी का छिपाव, बचम ८ 2 पालइ, सवरन, मनोगुप्ति 3 गोपनीयता, छिपाना, गुप्त रखना ।

नी (स्वा० उ०) नयति-ने, नीत) [द्विकर्मक धातु, उदाहरण नी० दे०] 1 ले जाना—नेतृत्व करना, लाना, पहुँचाना, लेना संचालन करना—भ्रमा प्राप्त नयति—मिठा०, नय मां नयेन वसति पयोमुषा—बिक्रम० ४४३ 2 निर्देश करना, निर्देश देना, शासन करना—मालवि० ११२ 3 दूर ले जाना, बहा ले जाना—नीता लका नीता सुरारिणा—मट्टि० ६१८९, रघु० १२१०३, मयु० ६१८८ ४ उठा ले जाना शा० ३१ ५ ० किमी के लिए ले जाना (जा०) 6 व्यय करना, (नमय) बिनावा—बेनामदमरन्ने दलदराबिन्ने विनाम्य-नायिबन—भावि० १११०, नीत्वा मासान् कनिचिन्—मेघ० २, खण्डि० कुशभयने निशा निनाय—रघु० ११५ 7 किसी बबल्वा तक हूँस करना—तपाप तरलनामानयदवयः—का० १४३, नीतस्त्वया पक्ष्मात् रत्न० ३१३, रघु० ८११९ (इस अर्थ में यह धातु नामों के साथ उसी प्रकार प्रयुक्त होती है जिस प्रकार कु

—उदा० १ अस्स नी छिपाना २ बंडम् नी दण्ड देना, मत्रा देना ३ बाह्यत्वं नी शम बमाना ४ कुच्छ नी मकटप्रस्त करना ५ चरितोर्त्वं नी वृत्त करना, प्रसन्न करना ६ पुनवत्तता नी फामयू करना ७ भस्मता नी ८ जस्मतात् नी उडाकर रास करना ९ बस नी अधीन करना, नीत लेना १० निष्कं नी ११ बिनाई नी नष्ट करना १२ कूडता नी सुइ बनाना १३ साक्ष्य नी गवाही मानना ८ निषचय करना, गवेष्टा करना, पूछताछ करना, निर्णय करना, फैसला करना—छल निरन्त्र मृतेन व्यवहारप्रवेक्ष्य—वाङ्म० २११९, एव शारङ्गेयु मिश्रेयु बटुषा नीयते क्रिया—महा० ९. पता लगाना, लोक के सहारे पीछा करना, कोच निकालना—एहीनिर्मेयं नीमां—मयु० ८१२५२, २५९, बचा नययक्ष्मकृतात्तैमंगव्य मयुयु. पदम्—८१४४, वाङ्म० २१५४ १० बिवाह करना ११ बहिष्कृत करना १२ (झों) धिक्का देना, अनुदेन देना—शास्त्रे नयते—मिठा०, प्रेर०—नाययति—ते, नायवर्धन करना, पहुँचवाना (करण० के साथ) तेन मां तरस्तीरवनाययत्—का० ३८, इच्छा० निनीयति

ले, ले जाने की कामना करना, अनु-मानना, अपने पक्ष का बना लेना प्रवृत्त करना कुमलाना प्रार्थना करना राजी करना, बहुलाना, (कोषादिक) शान्त करना, प्रसन्न करना, लुभाना-संयामुनीन प्रयत्न पदचान् रघु० ५।१५ विहताम्ब शयने परा कृपार्थानुनेतुमलला स तत्परे ११।३८, कि० १३। १७, भट्टि० ५।४६ ६।१३७ २ स्नेह करना भन् २।७७ ३ साधना अनुयासिन में रखना अथ १ दूर ले जाना दूर बढ़ा ले जाना निवृत्त करना-मन० ३।४२ २ (क) दृष्टाना नष्ट करना-जाना १० ६।२५ अनुनयनयामि भट्टि० ११।२० (ख) लुप्तता युगाना नष्टमात्र करना छानना ले लना रघु० १३।१४ २ उद्धृत निबन्ध करना शय हृदयादः शान्तिविषय विषय १ दूर करना (वहावादिक) २ का स्वीकृत उत्तराना चण्डा प्र गडगनय मूच्छं ६ अष्टाया नवयो भृगवावर्षा श० २ रघु० ६।२४ अग्नि-१ निवृत्त लाना सवालन करना नष्ट करना न जाना कि० ७ - भूदा० १५१० अनियत करना नाटकीय काम प्रार्थनाया या प्रयत्न नष्ट होना (बहुधा रण यामि कालदशा य प्रयत्न) दशित करना अतिमम नीय श० ३ कुमभावनयामिभनयथी मरुयो-श० ४ मृदा १० १११ उद्धृत करना अर्ध अग्नि आशान करना शिक्षा देना सधारा आ-१ न न हारवाना भूकन मर्यादवमनोपन -श० ७। भन् ७।११ २ पर्वानित करना पैदा करना उपन कना अग्राना उप नष्ट कर रघु० १० ५३ ३ रिम अक्षय्य भण्डुवाना अनी प्रना नष्टनय न ११० निकट न जाना हु शान् उद्धृष्टा अना शान्तनयन २ २ उठाना उपन कर साया लहा कर (१) दृष्ट मुद्राजत मद्र ३ एक बार के अने १। मुक्षीय भ० १० ५ अनुमान लाना शिक्षा करना अक्षय्य लगना प्र० अलगना उन ५ १।२२ अथ १ शिक्षा न जाना लाना ३। वैद्योपनीत्यजम् मूच्छ ७।६ मनु १ याकावि० १।५ क० ७।७५ ५ उठाता उग्र १ ले जाना शि० १।७५ ३ प्रयत्न करना उपस्थित करना रघु० १।२९ कु० ३।५० १ प्रकाश करना, पैदा करना, उत्पादन करना-उपनय-सर्वाङ्ग-यथ ३।१८०, उपनयसर्वाङ्गनयोःसबय-गीत० १० किसी अवस्था में लाना, अवस्थावि-शेष तक पहुँचाना पुराणाना नृप रायजीयकम् -कि० १।३९ ६ यज्ञाप्रणीत धारण कराना (आ०) १ मासकमुपनयते सिद्धा०, भट्टि० १।१५ रघु० ३।

२९, मनु० २।४९ ७ माडे पर रखना, माडे के नीकर रखना-कर्मकरानुपनयते-सिद्धा०, उवा-अवस्था विशेष में लाना घटाना, बि-१ निकट ले जाना, समीप पहुँचाना यात्रा० ३।२९५ २ मुकना बिनत होना, वक्त्र निनोय-३ उठेसना ४ कटित करना, निष्पन्न करना, निवृत्त, १ ले उठाना २ निषेध करना तय करना, कंसला करना, सक्षय्य करना दुर्द्ध करना कथमप्युपायमास्थनेष निर्णीय दशा० कि० १।३९ परि १ (बन्धि की) प्रद क्षिणा करना-नौ दपते बि परिणीय बद्धि(पुरोधा) कु० ७।८०-अग्नि पयषय च यत-रामा० २ विहताम्ब करना व्याहना-परिण्यसित पावनी अथा उपमा नप्रवर्णीकृतो ह्य कु० ४।४७ २ निषेध करना सन्न करना मनु० ७।१२२ प्र १ (सना शार्दि का) ननुव करना शनरन्त्रेण प्रणीतेन (बलेन) रामा० २ प्रयत्न करना देना उपस्थित करना-अध्य प्रणीय जन्कायमा भट्टि० १।७६ ३ अनाना (भाग) मुलगाश १५० ३।१ ६ बंधमयी क पाठ म श्रीमन्मन्त्रि कराना पुजना अर्चना करना विद्या प्रणीता म्मलन ह्री० ५ (दृष्ट आदि) देना-मनु० ७।० १२८ ६ विधारित करना शिक्षा प्रदान करना प्रमथान करना प्रोत्साहित करना विहित करना सान धर्मा प्रदाना प्रणीत रघु० १५।७७ मवाप्रणीत १ ममर्ग हि साधय कु० ६।३१ ७ लल्लता रवदा कना प्रणीत न तु प्रकर्षन उत्तर० ४ उत्तर लमर्गित तत्प्रणीत म्ममर्ग उत्तर० १२ ४ निषेध करना कार्यान्वित करना अनु० न कना प्रक ट कराना नै० १।१० ११ मनु० ३।१० ९ अक्षय्य विमल तक) पहुँचाना निम्न अवस्था में ले जाना प्रति शार्पिस ६ जाना बि-१ दानना न आना नष्ट करना (आ १५ २५५ ११ छोरक शरी कर्म के आन में शरीर का १।१ भाग १) उपायप्रवर्धननिर्वाहनादि रघु० १७।५७ ५ १३।३१ ४६ १५।४ कु० ११।१५१५ २ उपोषा मधुमिवजयसम रघु० ४।६० ६७ २ अध्यापन करना, शिक्षण देना शिक्षा देना प्रशिक्षित करना-विन-नुरत गुरुषा मुद्रियम् रघु० ३।२९, १५।६९, १८।५१, यात्रा० १।३११ ३ पालना वशीभ करना प्रसाधित करना निषेधित करना-वर्ण्य विनेष्यनिष्ठ दुष्प्रवृत्तान् रघु० २।८, १७।७५ कि० २।४१ ४ प्रसन करना (कोष आदि) श० करना (आ०) ५ श्यतोत हो जाना (समय का) विधाना--कथमपि यामिनी विनीय-गीत० ८ ६. पार ले जाना, सम्पन्न करना, पूरा करना ७ व्यव करना, प्रवृत्त करना उपकोष में (आ०) लाना,

कृतं विनयते—सिद्धा० ८. देना, प्रस्तुत करना, प्रदान करना, (अर्पण) अर्पित करना (आ०), कर विनयते—सिद्धा० ९. नेतृत्व करना, संचालन करना—कु० ७१९, तन्—, १ एकत्र करना २ एकत्र करना, प्रशासन करना, पञ्चप्रदर्शन करना ३ वापिस प्राप्त, लौटाना ४ निकट लाना, लाना—, १ मिलाना, एकता में आबद्ध करना, एकत्र करना रघु० २१६४, स० ५१५५ २ जा कर लाना लाना रघु० १२१०/१।
 नी (प०) [नी-विभक्] (समास के अन्त में प्रयुक्त) नेता, पञ्चप्रदर्शक, जैसा कि ग्रामणी, सेनानी और अग्रणी में।
 नीका (स्त्री०) कुत्ता, गूल, खेत की मिर्चाई के लिए बनी नहर।
 नीकार दे० 'निकार'।
 नीकाश (वि०) [नि+काश्+अच्, दीर्घ] दे० 'निकाश'—सि० ५१३५।
 नीच (वि०) [निक्षुब्धतमी शोभा विनोति—चि० ४, तारा०] १ नीच, छोटा, स्वल्प, छोटा, बीना २ निम्नस्थित, निक्षुब्ध भाग० ११११, मनु० २११९८, याज्ञ० ११३३१ ३ नीची, गहरी (आवाज) ४ नीच कमीना, बयम, दुष्ट, अत्यन्त छोटा—प्रारम्भतः न कल विभ्रमयेन नीचे—अर्ज० २१२७, नीचम् गोबरगतं सुखमास्त्यते कं—५९, आशि० १४८८ ५ निकम्मा निर्वर्क,—जा श्रेष्ठगाय। मम०—ना नदी—भोज्यम् प्याड,—बोधिन् (वि०) नीच कुलोत्पन्न, नीच घराने में जन्मा हुआ, इसी प्रकार 'नीचजाति'—बख्ख,—बख्खन्, वैकुण्ठमणि।
 नीच (वि०) का [नीच+कन् टाप् पठे ङ्य वा] बुद्धि या श्रेष्ठ गाय, ('नीचिकी' भी)।
 नीचकिन् (पुं०) [नीचक+इति] १ किसी वस्तु का शिलार २ बेल का तिर ३ ब्रम्ही गाय का स्वामी।
 नीचक (अव०) [नीचैन् इत्यस्य ट प्रागकच्] (प्राय विशेषण के अर्थ में प्रयुक्त) १ नीचा, नीचे, अध, के नीचे, तले, नीचे की ओर (वि० उपरि)—नीचैन्कञ्जुपरि च दशा चक्रैर्विक्रमेन—मेघ० १०९ २ नीचे मुककर, विनम्र हो कर, विनयपूर्वक—रघु० ५१६२ ३. आहिस्ता ४, कोमलता से—नीचैर्वास्त्यति—मेघ० ४२ ४ मन्द स्वर में—नीची आवाज से—नीचैर्वास्तु हिदिस्वितो ननु म मे प्रजेवरर योध्यति—अमर १७, नीचैर्वास्त—पा० १२१०, ५ छोटा, गूढका, बीना—तथापि नीचैर्विनायवद्भवन—रघु० ३१२४, (पुं०) पहाड़ का नाम—नीचैराध्य निरिन्द्रविस्तेष्व किमार्थहेतोः—मेघ० २९। सम०—पक्षिः (स्त्री०) द्विपक्षिपक्षि,—बुध (वि०) नीचे की मूँह किये हुए।
 नीकः,—कन् [निररां मिलित्वा अवा अन्—नि+ङ्

+क, लस्य इ तारा०] १. पक्षी का बोलना—कु० ७१११ २ विस्तरा, नब्दा ३ मीर, मट ४ रच का भीतरी भाग ५ स्वात, आवास, विद्यामस्त्वक। तय०—उपुचः,—अ पक्षी।
 नीकः [नीक+कन्] १ पक्षी २. बोलना।
 नीत (भू० क० क०) [नी+तत्] १ ले जाया गया, मचालित नेतृत्व किया गया २ लब्ध, प्राप्त ३ निम्न अवस्था को पहुँचाया हुआ ४ व्यतीत, बिताना गया ५ अली भाति व्यवहृत सही—दे० 'नी',—तन् १ घन २ भाव्य अनाज।
 नीति (स्त्री०) [नी+कित्] १ निर्देशन, दिग्दर्शन, प्रवच २ आचरण चालचलन, व्यवहार कार्यक्रम ३ अधिकृत्य, शास्त्रीयता ४ नीतिकोश, नीतिज्ञता, बुद्धिमत्ता, व्यवहारकुशलता आर्जव हि कुटिलेभ्य न नीति—ने० ५११०३, रघु० १२१६९, कु० ११२२ ५ योजना उपाय, कृत्यकृति भा० ६१३ ६ राजनय, राजनीति विज्ञान, राजनीतिज्ञता राजनीतिक बुद्धिमत्ता आरमोदय परम्पराभिर्दय नीतिनिर्मायनी—सि० ५१३० अर्ज० १०३०/७ आचारगाम्भ, आचार, नीतिशास्त्र आचारदर्शन ८ अवाप्ति, अविश्रुण ९ देना प्रदान करना प्रस्तुत करना १० मन्त्र, सहारा। सम० कुशल,—अ,—निष्क,—चिद् (वि०) १ राजनीतिविद्यार, राजनीतिज्ञ, नीतिज्ञ २ दूरदर्शी, बुद्धिमान्—बोव,—बृहस्पति की मात्री, बोवः आचार, नीतिविषयक भूत,—बोवन् ब्रह्मण का भोग,—निर्दापन हुनन् पञ्च० १. विषय-नैतिकता या दूरदर्शी व्यापार का क्षेत्र,—व्यस्तिक्य १ नीतिशास्त्र या राजनीति-विज्ञान के नियमों का उल्लेख २ चालचलन की बुद्धि, नीतिविषयक भूत,—लक्ष्मन् नीतिशास्त्र या राजनय नैतिकता।
 नीधम् (अन्) [निररां प्रियते व् मुञ्चति क दीर्घ—तारा०] १ छन का किनारा २ अवन ३ पहिए की परिया या बेरा ३ चक्रमा ५ रेबली जलज।
 नीपः [नी-प वा० गुणाभाव] १ पहाड़ की तलहटी २ कदव वृक्ष (बरगल में फूल देने वाला) नीपः प्रवीणयते—मुञ्च० ५११४, सीमन्ते च त्वदुपनयनं यन् नीप नृपाम् मेघ० ६५, ९ ३ अशोक जाति का वृक्ष ४ राजाओं का एक कुल—रघु० १४६६,—पन् कदव वृक्ष का फूल—मेघ० २१, रघु० १९१३७।
 नीरम् [नी+रम्] १ पानी—नीरानिमित्तो जमि माभि० ११९३ २ रस, खोसव। तय०—कन् १. कयल २ मोती, -वः वाक्त्र—वीर्यनिमित्तं से नीरव मे मासिकी गर्भ—वाग्भि० ११९१, सि० ५४२२,—विः,—विधिः, समुद्र,—खन् कयल।
 नीराकनम्,—मा [निद्+राच्+ङ्, सिचो टाप्] १.

सास्त्रात्मों की समकाला, एक प्रकार का वैदिक व धार्मिक एवं जिसको राजा या सेनापति आदिजन वास में सशस्त्र क्षेत्र में जाने से पूर्व बनाते थे (अर्थात् राजा के पुरोहित, मंत्री, तथा सेना के अधिकारी अपने विविध सास्त्रात्मों सहित वेद मंत्रों द्वारा) ४।४५, १७।१२, नं० ४।१४४ २. अर्चना के रूप में देवयूनि के सामने प्रदर्शित दीपक पुष्पाभा ।

नील (वि०) (स्त्री०) - ला (वस्त्रादि) - नी (जीव जन्तु आदि) [नील + अन्] १ नीला, गहरा नीला - नीलस्निग्ध अर्थात् शिखर नृतनस्त्रायबाहु - उत्तर० १।३३ २ नील मे रत्ना हुआ, - कः १ गहरा नीला या काला रत्न २ नीलमणि ३ नील का पेड़, बड़ का पेड़ ४ राम की सेवा में एक बानर मुख्य ५ नीलमणि, पर्वत की एक मुख्य शृङ्खला, - लघु १ काला नमक २ नीला बोधा - ३ मृत्तमा ४ विष । सम०

- अंगः सारम पक्षां, - अञ्जनम् मृत्तमा, - अञ्जना, - अञ्जना, - अञ्जना बिजली, अञ्जन् - अञ्जन्, अञ्जुलम् (न०) उत्पन्नम् नील कमल

- अक्षः काला बादल अंबर (वि०) गहरे नीले वर्णों में सुसज्जित (२ः) १ राजस्य विधाप २

शनि ग्रह ३ बलराम का विशेषण, अक्षयः प्रमान-

काल, पीठना, अक्षयम् (पु०) नीलमणि - कठः १

मोर, मा० १।३० मेघ० ७९ २ शिव का विशेषण

३ एक प्रकार का जलकुसुम ४ नीलकंठ पक्षी ५

नवज पक्षी ६ चिरिया ७ मधुमक्खी, - नीली नील

का रेशा, - नीलः शिव का विशेषण, - कठः १ छुहारे

का पेड़ २ गहव का विशेषण, - तक्षः नारियल का

बूझ तालः तमाल का बूझ, - कंकः - कम् अवेरा,

- पटलम् १ काका आचरण, काकी तह २ अने

आदमों की आँसू का जाला - पञ्च० ५, - पिच्छः बाज

पक्षी, - मुष्णिका १ नील का पोधा २ जलमयी - बः

१. चाँद २ बदल ३ मधुमक्खी - अचिरलम् नीलम

नीलकान्तमणि - नेपथ्याशितनीलरत्नम् - गीत० ५,

भाषि० २।४२, - नीलिकः मृगम्, - नीलिका १ लोह-

नीलिक २ काली मिट्टी, - राशिः (स्त्री०) अक्षर

की रेखा, गुप प्रवेग, चौर अक्षर - निशासनां-

अतनीचराज्य - चतु० १।२, - लोहितः शिव का

विशेषण, स० ७।३७ कु० १।५७ ।

नीलकम् [नील + कम्] १ काला नमक २ नीला द्रव्य

३ तृतिधा, - कः काली रव का बोधा ।

नील (सा) नु [नि + लङ् + क्तु, पूर्वदीर्घः] एक प्रकार

का बोधा ।

नीला दे० नीलो ।

नीलिका [नील + क + टाप्, इत्यम्] नील का पोधा

('नीलिनी' वी ।

नीलिम्बम् (पु०) [नील + इमिष्] नीलारं, काष्ठापन,

नीलापन ।

नीली [नील + अन् + लीच्] १ नील का पोधा - तक्ष

नीलीगल पा० पूर्व महाभांडवासीन् - पञ्च० १ एको

बहुलम् मीनामा नीलीनक्षत्रयोर्बन्धा - पञ्च० १।२९०

२ नीलमणिमयी की एक जाति ३ एक प्रकार का

रोग । सम० - राग (वि०) अनुराग में बुद्ध (वः)

१. नील के रम की जाति अपरिवर्तनीय स्नेह, दुःखानु-

रक्ति २ पक्का मित्र, - अञ्जनम् नील का खमीर

अञ्जन् नील का वर्णन ।

नीलरः [नी + प्लरङ्] १ व्यवसाय, व्यापार २ व्याव-

सायिक ३ धर्ममित्र, सम्पादी ४ नीलक, - रन्

जस ।

नीलाकः [नि + वच् + क्तम्, दीर्घः] १. कमी के

समय अनात्र की बड़ी मीन २ दुग्ध, अकाल ।

नीलारः [नि + वृ + क्तम्, दीर्घः] वगली बाबल जो बिना

कोते बोये उत्पन्न हो - नीलार सुकर्मकोटरमुख-

अष्टान्तरुज्जामय - स० १।१८, रघु० १।५०, ५।९, १५।

नीलिः, - नी (स्त्री०) [निष्पत्ति निवीयते वा नि + ल्ये

+ इत्, नीलि + लीच्] कर्म में लपेटी हुई बोती,

बाती के दोनों किनारों की गाँठ जो सामने घट पर

बाँधी जाय वनो की गाँठ नाडा, कमरबन्ध - अष्टान-

मिन्मा न बन्धनीयम् - रघु० ७।९, नीलीबन्धोक्तव-

नम् - मा० २।५ कु० १।३८, नीलि प्रति प्रविष्टि तु

करे विशेष - काव्य० ४, मेघ० ९८, शि० १०।१४

२ वृत्ती, मूलकम् ३ दीर्घ, बाजी, तर्त ।

नीकुत् (पु०) [नि + क् + क्तम्, पूर्वदीर्घः] कोई भी

आबाद देश, राज्य, राज्यम् ।

नीक्ष दे० नीक्ष ।

नीलारः [नि + लृ + क्तम्, पूर्वदीर्घः] १ वरम कपडा,

कंठल २ मसहरी, मन्त्रादी ३ कनाल ।

नीहारः [नि + हृ + क्तम्, पूर्वदीर्घः] १, कुहरा, बुध -

रघु० ७।९०, मात० १।१५०, मनु० ४।११३

२ पाला, भारी ओस ३ मधुमन् त्याग ।

नु (अव्य०) [नुद् + क्तु] प्रसन्नवाचकता का होलक तथा

'सन्नेह' एवं 'अनिषध्याः कता' प्रकट करने वाला

अव्य० - स्वलो नु माया नु कतिप्रमो नु - स०, अस्त-

नीलगहन नु विवस्वताविहं जलधि नु महीनि -

कि० ९।७, ५।१, ८।५३, ९।१५, ५४, १३।४, कु०

१।४७, शि० १०।१४, स० २८ २ 'अवाचना'

अ 'अवचन' के अर्थों को वतलाने के लिए इसे प्रस-

न्नवाचक सर्वनाम तथा उत्पन्न व्युत्पन्न सर्वों से साथ

बोझ दिया जाता है - कि श्वेतस्वामिः कल्पितोऽव्यवा

मा० १।१७, कर्च नु नृचविधिर्वि कल्पम् - पञ्च०,

दे० किन्तु वी ।

नृ (बधा० पर० नीति, प्रचीति, नृत्त—प्र० नावयति, ह्मन्ता० नृत्तवति) । प्रसन्ना करना, स्तुति करना, प्रसन्न करना—सहस्रवती लमिवन् नृत्ताय—कु० ७।१०, अट्टि० १४।१२२, दे० नृ० ।

नृत्तिः (स्त्री०) [नृ+विभृ] १. प्रसन्ना, सस्तुति, प्रसन्नित परमुत्तमवति (अने० पा०) त्वान् नृत्तान् व्यापयता भर्तु० २।५९ २. पूजा, समावर ।

नृत् (गु० उत्तम० नृत्ति—दे, नृत्त या नृत्त, प्रनृत्ति) १. बकेलना, बका देना, हांकना, ठेलना, प्रोत्साहित करना—मद मद नृत्ति पवनवचानुक्तो यथा त्वाम्—मेघ० ९ २ प्रोत्साहित करना, उकसाना, बाने बढ़ाना—शि० ११।२६ ३ हटाना, भगा देना, फेंक देना, मिटाना—अवस्तव्या नृत्तम नृत्तम तम—शि० १।२७, केदारबोधव्यसितनृत्त—रघु० ६।८८, ८।४०, १६।८५, कि० ३।३३, ५।२८ ४ फेंकना, बालना, भेजना—प्रेर० १ हटाना, दूर करना २ प्रोत्साहित करना, उकसाना, डकलना, ठेलना, बाने बढ़ाना,—अप०, भवाना, हटाना—अट्टि० १०।१३, उप०, बकेलना, बाने बलाना—शि० ४।९१, शिव—१. अस्वीकार करना, इकार करना—वाना अवस्तव्यावो वाच श्लाक च न निर्भवेत्—मनु० ४।२५ २ हटाना, मिटाना, प्र—मिटाना, दूर करना, हटाना—शि० ९।७१, शि० १। आवात करना, बीचना २ (बीणा आदि) बाधय बजाना—प्रेर० १ हटाना, दूर करना मिटाना, फेंक देना—नाप विनोदव दृष्टिभि—गीत० १०, शि० ४।६६ २ बाने बढ़ाना, (काल) बिताना ३ भाजना, बहुलाना, मनोरञ्जन करना—कलातु दृष्टि विनोदधर्म—श० १, रघु० १४।७७ ४ बिल बहुलाना रघु० ५।१७, लम्—१. एकत्र करना, संग्रह करना २ गान करना, बिलना ।

नृत्त, नृत्त (वि०) [नृ+तनप् (नृत्ता) नृ भावेश.] १. नवा—नृतनो राजा समाभाषयति—उत्तर० १, रघु० ८।१५ २ ताम्रा, बल्वा ३ भेट, उपहार ४ तात्कालिक ५ हाथ का, आधुनिक ६ कुदृष्ट पूर्व, अजीव ।

नृत्त (सम्ब०) [नृ+तनप्+अप्] असाह्य रूप से, विवर्त रूप से, विचलन ही, अव्यय, निस्तन्वह—अजापि नृत्त हरकोपवह्निस्तस्यि अवस्तवीयं हवा नृराष्ट्री ४० ३।३, मेघ० १।१८ ४६, भर्तु० १।१०, कु० १।१२, ५।७५, रघु० १।२९, २ अव्ययिक संभावना के लिये, दूरी संभावना है कि—उत्तर० ४।२३ ।

नृत्त—रघु [नृ+विभृ=नृ+नृत्+क] नावेक, वेरों का आधुनिक—अट्टि नृत्तमभिः पावे नृत्त नृत्ति नावेते—शि० २।७१ ।

नृ (पुं०) [नी+नृत् विभृ] (भर्तु० ए० व०—ना, लक्ष्य०, व० व०, नृत्ता या नृत्ताय) १. मनुष्य, एक व्यक्ति—स्त्री हो, बाहे पुत्रव, मनु० ३।८१, ४।९१, ७।९१, १०।३३ २ मनुष्यजाति ३ छतरंज का मोहरा ४ दूरजघरी की कील ५ दक्षिण लक्ष्य—सर्पिनी विवहो मानन्—अमर० १. लभ०—अस्ति-नास्ति (पुं०) शिव का विशेषण, कपलम् मनुष्य की छोपडी,—केसरिन् (पुं०) 'नर-सेर', नृत्तिहावतार में विष्णु भगवान्—गु० 'वर्गसह',—कलम् मनुष्य का मुख,—देवः एक राजा,—अवर्ण (पुं०) कुर्वे का विशेषण,—कः मनुष्यो का राजा, राजा, प्रमं 'अवर्ण' राजसूय यज्ञ जिसे सहाद सन्मन् करता है और जिसमें सभी पदों का कार्य सहायक राजाओं द्वारा किया जाता है,—अस्तमजः राज कुमार, युवराज,--आशी-रन्—मानम् राजभोज में होने वाला समीप, आत्मः तपेदिक, भय,--आत्मन् राजमही,

सिंहासन, राज की कुर्सी,--नृहृत् राजमहल,--'नीति' (स्त्री०) राजनय राजा की नीति, राजनीति—वेदयामनेव नृपनीतिर्नैककथा—भर्तु० २।४७—'शिव. भाग का देव, कलम् (नृ०), 'विष्णु' राजविष्णु राजा का मन्त्र, राजकीय अधिकार विष्णु, विशेष का स्वेन छत्र—आत्मन् राजविष्णु, 'समन्' 'सहा राजाओं की समा, वति,--वात्तः राजा,--वन्तु मनुष्य की लक्ष्य का जानवर, हस्तिक पशु, नृधन,--विभृन्म विभृन् राति, भैवः नरमेव यज्ञ, यज्ञ 'मनुष्यों के लिये किया जाने वाला यज्ञ', भार्गव्य, अतिथियों का सत्कार (दैनिक 'पच यज्ञों में से एक यज्ञ—दे० पंचयज्ञ),--लोके मरण-धर्मा लोगों का मसार, मरण्यलोक, बराह 'सूत्र' के अवतार में विष्णु भगवान्,—बाह्व कुर्वे का विशेषण,—केवल. शिव का नाम,—मनुष्य 'मनुष्य का सीत' अर्थात् असाभावना,—सिंहः १ सिंह जैसा मनुष्य, सेरेजर, प्रमुख मनुष्य, पुत्र अर्थात् २ विष्णु भगवान्, का बीणा अवतार, 'नृत्तिहावतार', नृ० नृत्ति ३ एक प्रकार का रतिवन्,--सेनय, सेवा मनुष्यों की शील,—लोभः वैभव छाकी मनुष्य, बड़ा अजरमी—रघु० ५।५९ ।

नृत्तः (पुं०) वैभवान् मनु का कुत्र, जो एक बाह्यन के शापवत् छिपकली बना ।

नृत् (वि०) पर० नृत्ति, प्रनृत्ति, नृत्त) नाचना, इकार उच्चार हिलना—नृत्ति नृत्तिजनन तनं लक्षि—गीत० १, कोकोमी पयसि महोत्सवं नर्तत—शि० ८।२३, अट्टि १।४१ २ रक्षय पर अभिनय करना ३ हाथ बाध बिखाना, मटके करना, प्रेर०—नर्त-यति—दे १. नचवाना—लक्ष्यो बीणादे किमवरकी नर्तयति नात्—भर्तु० १।६, लोके शिवालयनृत्तक

मेंसित काँतवा मे-मेव० ७९, उत्तर० ३११९
2 हिकनक पैदा करना,—का , (वेर०) 1. नाच
कराना 2. नचवाना, कुर्ती के साथ हिकाना—मर-
हिरासितनपुतमाके—रघु० ५१४२, बमर ३२, चतु०
३११०, उच—, 1. नाचना 2. किसी वृद्धों के आगे
नाचना—उपास्यंत देवेजम्, प्र- , नाचना, प्रति—,
नाच की नकल करके हूँ उठाना ।

नृतिः (स्त्री०) [नृत् + इत्] नाचना, नाच ।

नृत्यम्, नृत्यम् [नृत् + क्त, क्यप् वा] नाचना, अभिनय
कलन, नाच, नृक अभिनय, हावभाव—नृतादस्या
स्मिन्मसितरा कातम् मालवि० २१७ नृत्य मयूरा
विजय—रघु० ११७६९, मेघ० ३२ ३६ रघु० ३११९।
सप्त०—प्रियः शिव का विशेषण,— काता नाचकर
—स्वल्पम् रम्यकम्, नाचने का कमार ।

नृपः, नृपतिः, नृपसः । [नरात् पति रसति—नृ + पा + व
नृषा पति, व० त० नृ + पात् + वे० 'नृ' के नीचे ।
णिच् + ञच्]

नृपसं (वि०) [नृ + सत् + ञच्] दुष्ट, द्वेषपूर्ण क्रूर, जड़वा,
कमीना,—नृपसं० ३१२५ भनु० ३१६१, पात्र० ११६६।

नृपकः [निच् + ञच्] बोबो ।

नृप्यम् [निच् + स्पृट्] बोना, साफ करना, साबना ।

नृ (पु०) [नी + तृच्] 1 जो नेनृत् या पचप्रवर्जन करे
अर्थात्, सचायक, प्रवचक, (हाथियों तथा और जान-
वरों का) पचप्रवर्जन,—रघु० ४७५, १४२२, १६१
२०, मेघ० ६९, नैतास्वत्तु भुज् भुज्स्वत्तु वा—
सिद्धा०, मुद्रा० ७१४ 2 निदेशक, नृप-मर्त्य० २१८८
3 मुख्य, प्रथमो प्रथम 4 (वृद्ध आदि) देने वाला
मनु० ७१७५ 5 मालिक 6 नाटक का नायक ।

नेचम् [नपति नीयने वा अनन—वी + धृन्] 1 नेचुत्त
करना, मचालन 2 बाँध प्रायेण गृहिणीनेवा
कन्याचम् कुराति—कु० १८८५, २२९ ३०, ७१३
3 रई के डई की रस्ती 4 बुनी हुई रेशम, महीन
रेशमी वस्त्र नेचक्रमेगोपवरोच सुयम् रघु०
७१३९, (पहली कुछ भाष्यकार नेच' शब्द का सामान्य
अर्थ 'बाँध' ही मानते हैं) 5 वृक्ष की जड़ 6 बालन-
क्रिया की नली 7 गाड़ी, बाहन 8 रो की सख्या
9 नेता, मनुष्य 10 कलत्र पुत्र याग (पुन रो जवों
में पुल्लिग) । सप्त०—नेचनम् बाँधों के लिए मुरचा-
भुषार० ७, —जंत बाँध का बाहरी किनारा,
—बाँध, —अन्यत् (नपु०) बाँध,—बाँधवः बाँध का
रोग, नेच-प्रवाह,—अन्यः कुक्षर तथा सुन्दर पहाड़ी,
—अन्यत् वाराण, —कमीनिका बाँध की पुतली,—कीचः
1. अक्षिबोलक 2 वृक्ष की कमी,—कीचर (वि०)
दुष्टि-वरात के नीचे, प्रत्यक्षदेव, वृक्ष,—अन्यः पत्तक,
—अन्यः—कादि बाँध,—कमीनः बाँध का

बाहरी किनारा,—किचः 1. अक्षिबोलक 2. किल्ली,
—अन्यत् डीठ, बाँध का नेच,—कीचिः, 1. अक्ष-का
विशेषण (विचके बरीर पर, नीचम द्वारा दिये गये
साप के फलस्वरूप, स्त्री-बोधि से मिलते जुलते हुवार
पिङ्ग हो) 2 चमत्ता,—रचनम् बचन, वुरमा,—रचनम्
(नपु०) बाँध की बरीनी,—अन्यत् बाँध का पर्वी,
पत्तक,—स्तम्भः बाँधों का पचर बाणा ।

नेचिकम् [नेच + ठन्] 1 नली 2. वस्त्रव ।

नेत्री [नेच + डीच्] 1. नली 2. वस्त्री 3. स्त्री नेता
4 लक्ष्मी का विशेषण ।

नेचिक (अयम् एषाम् अतिशयेन अतिष्क— + इष्टम्,
अनिकस्य नेवादेशे) निकटतम, नुतरा, अत्यन्त निकट
(अतिष्क की उत्तमावस्था) ।

नेचीवम् (वि०) (स्त्री०-स्त्री) [अनयोः अतिशयेन
अतिष्क + इष्टम् अतिशयेन नेवादेशे] निकटतर,
अधिक पास (अतिक की मध्यमावस्था)—नेचीवही
भूषा—मा० १, निकट अकार, पट्टाकार ।

नेच [नी + नृच्] कुल-पुरोहित ।

नेचन्यम् [नी + चिच्, नी + नृच् पचन्यम्] 1. सचायक,
साधक 2 परिधान, पोसाक, वेष्टनूपा, वस्त्र—उत्तर
नेचन्यम्—रघु० ११६, राजेभनेप्यविद्यामनोवा—
१४१९, उच्चकनेप्यविद्यामनोवा—मा० १, पु० ७४७,
विश्रम० ५ 3 विशेषकर नाटक के नाच की वेष्ट-
नूपा विशेषेणपचनो पाचनो प्रवेष्टोऽप्यु—माचवि०
१ 4 परिधान कक्ष (बहु) नाटक के नाच अपनी
वेष्टनूपा बारम्ब कण्डे हैं, बहु लंबे परदे के पीछे
छाता) रमयच पृष्ठ लम्बे परदे के पीछे । सप्त०—
विद्यान्य परिधान-कक्ष की व्यवस्था—अ० १ ।

नेचालः (पु०) भारत के उत्तर में स्थित एक देश का नाम
सा—(व० व०) इस देश के निवासी,—अन्य लोका,
—नी जयकी कुहारे का वृक्ष या इसका फल । सप्त०
१ चा.—बास्ता मैनमिक ।

नेचालिका [नेपाल + डीच् + कन् = टाप्, ह्रस्वः] वैचलिक ।

नेच (वि०) (कर्म० व० व०—नेचे—नेचा) [नी + ञच्]
आधा,—अ 1 साग 2 समय, काल, धृत् 3. हृत्,
सीमा 4 बेरा, बाडा 5 बीबार की नीच 6. जाल-
ताडी, बोला 7 सायकाक 8 विवर, बाई 9 वच् ।

नेचि,—नी (स्त्री०) [नी + चि, नेचि + डीच्] 1. परिवि,
पहिये का बेरा, उपोद्भवा न रचोचनेवः—अ०
७१०, चक्रेविश्रमेय—वेच० १०९, रघु० १११७,
१ 2 किनारा, बेरा 3. हस्तचर्चरी, बरारी 4. वृत्त,
परिचि—उचविचि—रघु० १११ 5. वच् 6. पुष्पी,
—चिः तिगिक का वृक्ष ।

नेच् (पु०) [नेच् + तृच्] कोनवाच के प्रथम चतुर्विधों
(चिनी सख्या १९ होती है) में से एक ।

नेष्टुः [निष् + तुन्] मिट्टी का सीधा ।

नैः क्लेश (वि०) (स्त्री०-की), नैऋतिक (वि०) (स्त्री०-की) [निऋयस + अण्, ठक् वा] भोज या आनन्द की ओर ले जाने वाला ।

नैऋत्यम्, नैऋत्यम् [नि स्व + अण्, ध्यञ् वा] धनहीनता, गरीबी, दरिद्रता ।

नैक (वि०) [न + एक] जो अकेला न हो (प्रायः समास में प्रयुक्त) अत्यन्त (पु०) कृष्णः भृगुः परमपुरुष परमात्मा के विशेषण ।

नैकटिक (वि०) (स्त्री०-की) [निकट + ठक्] पासवर्ती, निकट का, सटा हुआ, —क सन्यासी या भिक्षु —भट्टि० ११२ ।

नैकट्यम् [निकट + ध्यञ्] सामीप्य, पड़ोस ।

नैकथेयः [निकथ + ठक्] राक्षस (निका का सत्ताम) ।

नैकुल्य (वि०) (स्त्री०-की) [निकुल्या परापकारेण जीवति — निकृति + ठक्] १ बेईमान, सूडा, क्रूर मनु० ४।१९६ २ नीच, दुष्ट, दुरात्मा ३ दुःशील, कल मित्रादि का ।

नैषध (वि०) (स्त्री०-मी) [निमय + अण्] वेद से संबंध, वेद में पाया जाने वाला, दे० 'कांडम्' — १. वेद का व्याख्याता — इति नैगमा २ उपनिषद् ३ उपाय, तरकीब ४ विवेकपूर्ण आचरण ५ सागरिक, ६ व्यापारी, सौदागर — भाराहाराधनयनपरा नैगमा सानुयन — विक्रम० ४।१ ।

नैषधकम् [निषट् + ठक्] बैदिक शब्दों का सङ्ग्रह (पाँच अध्यायों में) जिसकी व्याख्या पास्कने अपने निरुक्त में की है ।

नैषिकम् [नीषा + ठक्] बेल का सिर ।

नैषिकी [निषि + शोकमंशिरावेण, तत् स्वाद्यं कन्-नि-षिक + अण् + ङीप्] बढ़िया गाय ।

नैसर्गम् [निनल + अण्] घाताल, नरक । मम०—सखम् (पु०) मय, —महावी० ५।१८ ।

नैस्यम् [निष्य + अण्] नित्यता, शाश्वतता ।

नैत्यक (वि०) (स्त्री० की), नैत्यिक (वि०) (स्त्री०-की) [नय् + कन्, निस् + ठक्] १ नियमित रूप से बटने वाला, बार २ दोहराया गया २ नियमित रूप से अनुष्ठेय (विशेष अवसरों पर नहीं) ३ अपरिहार्य, अनवरत, अवश्यकणीय ।

नैवाधः [निवाध + अण्] शीघ्र शू ।

नैवानः [निवान + अण्] सम्बन्धुतासत्ता का वेला ।

नैवानिक [निवान + ठक्] निदानकारण का ज्ञाता, व्याधिकोविद ।

नैविकम् [निवेश + ठक्] आवेशों और निवेशों का पाठन करने वाला, डेक्क ।

नैवास्तिक (वि०) (स्त्री०-की) [निवाल + ठक्] अक-स्मात् या ईश्वरयोग से होने वाला उल्लेख ।

नैवृष्यम् [निपुण + अण्, ध्यञ् वा] १ दक्षता, कीशल, कुतुराई, प्रवीणता — नैवृष्योन्मेषमस्ति — उत्तर० ६।१०६, वि० १६।३० ३ कोई कार्य जिसमें कीशल की आवश्यकता हो सूक्ष्म बात ४ समझता, पूर्णता — मनु० १०।८५ ।

नैवृष्यम् [निपुण + ध्यञ्] १ लज्जाशीलता, विनम्रता २ गोपनीयता — नैवृष्यमवकाशितम् — मानवि० ५ ।

नैवृष्यकम् [निमय + अण् + ङन्] भोज, दास्य ।

नैवृष्यः [निमय + अण्] व्यापारी, सौदागर ।

नैवृष्यिक (वि०) (स्त्री०-की) [निमित्त + ठक्] १ किसी विषय कारण के फलस्वरूप उत्पन्न सबूत या निर्भर २ असाधारण, कभी कभी होने वाला, सांघातिक, किसी विशेष निमित्त से किया गया (विप०—नित्य), — कः उप्योमिषी भविष्यवक्ता कम् १ कार्य (विप०—काण्) निमित्तनैमित्तिककारण क्रम श० ७।३० २ किसी विषय अवसर पर ज्ञान वाला सम्कार, आवर्ती पक्ष ।

नैवृष्य (वि०) (स्त्री०-मी) [निमित्त + अण्] निमित्त-मात्र या कारण रहन वाला, सप्टिक, अश्वादी—कम् पवित्र बनस्वली जहाँ कुछ श्रुति मूनि रहते थे चिनको कि सीति ने महाभारत सुना । वा—रघु० १९।७ (नाम कारण इस प्रकार हुआ—यतस्तु निमित्तवेद निहृत दानव बलम्, अश्वेऽरिम् ततस्तेन नैमिषार प्यमस्तिम्) ।

नैवृष्ये [नि + मि + यत् + अण्] विनिमय बदलावदली ।

नैवृष्यम् [न्यषाध + अण्] बड़ या बरगद का फल, बरगद का पेड़ ।

नैवृष्यम् [नियत + ध्यञ्] नियत आत्ममयम् ।

नैवृष्यिक (वि०) (स्त्री०-की) [नियम + ठक्] नियम या विधि के अनुकूपी, निर्धारित, —कम् नियमितता ।

नैवृष्यिक [न्याय + ठक्] ताकिक, न्यायदर्शन के सिद्धांतों का अनुपायी ।

नैरंतर्ध [निरंतर + ध्यञ्] १ निरंतरता, निरंतर होने का भाव, अविच्छिन्नता २ सामान्य, नसक्ति ।

नैरपेक्ष्यम् [निरपेक्ष + ध्यञ्] अवहेलना, निरपेक्षता, उदासीनता ।

नैरपिकः [निरप + ठक्] नरकवासी, नरक योजने वाला ।

नैरप्यम् [निरप + ध्यञ्] निरप्यकता, बेदुबानी, बकवास ।

नैरप्यम् [निगद्य + ध्यञ्] १ जाका का अभाव, नाउ-म्योरी, निराशा तदर्थ नैरप्यम् — उत्तर० ३।१३

२ कानना का प्रत्यासा का अभाव—येनासा पुच्छत कृत्वा नैरप्यमवकाशितम्—वि० १, १८४, भावि० ४ ।

नैकतः [निवृत्त + क्त] जो सबों की धृत्वात् आता है, सर्वधृत्वात्प्रसारिवि ।

नैकत्वम् [निवृत्त + क्त] स्वाम्य, आरोग्य ।

नैर्ऋतः [निर्वृति + क्त] एक राक्षस-अयमप्रयोद्धेमा दाक्षरभ्युनैर्ऋतावधे - रघु० १०३६, ११२१, १२१४३, १४४, १५१२० ।

नैर्ऋति [नैर्ऋत + क्त] १ दुर्गा का विशेषण २ दक्षिण पश्चिमी दिशा ।

नैर्ऋत्यम् [निर्गुण + क्त] गुणों या बलों का अभाव, २ श्रेष्ठता की कमी अथवा गुणों का अभाव-नैर्ऋत्यमेव सावीरो विरासु गुणगौरवम्-भाषि० १८८ ।

नैर्ऋत्यम् [निर्गुण + क्त] निर्ममता, क्षान्ता-नैर्ऋत्यं न मापेक्षत्यान् तथा हि दस्युनि-ब्रह्म० २११३४ ।

नैर्ऋत्यम् [निर्मल + क्त] स्वच्छता शुद्धता निष्कलङ्कता ।

नैर्ऋत्यम् [निर्लज्ज + क्त] निर्लज्जता, बह्याई छीठपना ।

नैर्ऋत्यम् [नील + क्त] नीलापन गहरा नीला रंग ।

नैर्वि (वि) इयम् [निर्वि (वि) इ + क्त] मज्जकता मटा हुआ होने का भाव चनापन सज्जता ।

नैर्वेद + क्त] किमी देवता या देवयुनि को अर्पित देने के लिए भोग्य पदार्थ ।

नैव (वि०) (स्त्री०) नो नैविक (वि०) (स्त्री०-की) [निवा + क्त, उक्त] रात से सबब रहने वाला रात्रिविचरक रात को होने वाला-नैर्ऋत निमिर-मपाकरोति चन्द्र-शं० ११२९, नैवस्वार्थिर्हुतमूत्र इवश्चिन्मभूयिष्ठयूना-विष्णु० १८ कि० ५१२ २ रात्र को मनाया जाने वाला ।

नैवस्तम् [निवस्त + क्त] स्थिरता, अचलता, दृढ़ता ।

नैवस्तम् [निर्विचर + क्त] १ निर्धारण, निश्चिति २ निर्विचर समय पर होने वाला भस्कार ।

नैवः [निवच + क्त] १ निवच देश का राजा २ विश्व-वत, राजा मल का विशेषण ३ निवच देश का वासी, या जो निवच देश में उत्पन्न हुआ है ।

नैवार्थम् [निवर्त + क्त] १ अकर्मण्याता, क्रियाहीनता २ कर्म और उनके फलों से मुक्ति-भग० ३१४ १८४९ ३ बहु मुक्ति जो कर्म न कर केवल भाव, ध्यान आदि से प्राप्त की जाय (वि० कर्म मार्ग द्वारा प्राप्त मुक्ति) ।

नैविक (वि०) (स्त्री-की) [निवृत्त + क्त] निवृत्त कर मोल लिया हुआ, या निवृत्त से बना हुआ-कटकशास्त्र का अध्याय ।

नैविक (वि०) (स्त्री-की) [निवृत्त + क्त] १ मलिन, आक्षीर का, उपसंहारक-विश्वे विश्विमस्य

नैविकम्-रघु० ८१२५ २ निर्धन, निवृत्त, निवृत्त, उत्तर आदि ३ निवृत्त, वृद्ध, लक्षण ४ निवृत्त, पुरा ५ पूर्व रूप से जानकार, या निवृत्त ६ निरन्तर त्यागमय बुद्ध पवित्र जीवन बिगाने की

प्रतिज्ञा करने वाला, कः बहु सावक छत्र को बाध्यात्मिक शिक्षा ग्रहण करने के लिए निवृत्त काल के पश्चात् भी सर्वेष्ट बुद्ध की सेवा में रहे, और त्रिनेत्रे आक्रम्य ब्रह्मचारी तथा विद्वान्मय रहने की प्रतिज्ञा कर की है-कु० ५१६२ तु० ब्राह्म० १४९ ।

नैवृत्त्यम् [निवृत्त + क्त] कृता, कर्मकता, कठोरता ।

नैवृत्त्यम् [निवृत्त + क्त] स्वाध्याय, दृढ़ता ।

नैवृत्तिक (वि०) (स्त्री० की) [निवृत्त + क्त] स्वाध्यायिक अन्वयन, सहज अन्वयन-नैवृत्तिकी सुरविन-कुमुदमय सिद्धा मृज्जि स्थितिर्न मुसलैवततावतामि मा० १४९ रघु० ५१३७, ५१४६ ।

नैवृत्तिक [निवृत्त + क्त] कृपालवारी, लक्ष्मण रत्नने वाला ।

नो (अव्य०) [न + उ] नहीं, न, अत (शब्द 'न' की भाँति प्रयुक्त) भग० १७१८, पञ्च० ५१२४, अथर्व ५७, १०६२ ।

नोक्ते (अव्य०) [नो + क्ते - इ० व०] अन्याया, बरना ।

नोहनम् [नु + क्त] १ ठेलना, हलकना, बाने बढ़ाना २ हड्डना बुर करना, मिटाना ।

नोषा (अव्य०) [नो + षा] नो प्रकार, नो गुण ।

नोः (स्त्री०) [नुक्ते अजया नु + षी] अहत्त, नीका, पोत महता कुम्भपथ्येन कोतेय कायनीस्त्वया-शा० ३१ १ २ एक नलकम्प का नाम । लय०-आरोहः (नाबारोह) । अहत्त का यात्री २ नलकाह-कर्मचार, नाविक, पोतवाक - कर्मन् (नपु०) नलकाह की वृत्ति-मनु० १०३४, -चर, नीविकः नलकाह यात्री रघु० १८१, -ताव (वि०) जिसमें नाव चल सके जो नाव से पार किया जा सके, बंदः बाँध, बन्धु, -बान्धु पोत-कोषण नौकावन्, -वायिन् (वि०) नाव वा अहास से जाने वाला, नौवाणी-मनु० ८१ ४०९, -बाहुः कर्मचार, कर्मी, पोतवाहक केवट, -अ-लकम् पोतमग नौका का टूट जाना-नीपछने विषय-शं० ९, लावकम् अहासी देका, नीपमुह, पोतावली - बगानुत्थाय तरंगा नेता नीलावनीचताम् -रघु० ५१३४ ।

नौका [नो + क्त + टाप्] एक छोटी नाव, किस्ती-अथ विह सज्जनसंतिरेका अर्थात् अनामैवतरणे नौका - मोह० ११ लय० - बंदः बन्धु, पतवार ।

नौक (अव्य०) [नि + क्त + विवन्] विवाहितेयव, युवा अग्रज एव दीनता को छोटन करने के लिए 'कु' और 'नू' से पूर्व लगने वाला उपसर्ग । लय०-कण्वम्

—कारः 1. दीनता, अवधानता 2. अवावर, वृथा, अप-
मान—अवकारो हृदि वज्रकील इव मे तीक्ष्ण परित्य-
क्ते—महावी० ५।२२, १।४०, गंगा० ३२, —आवः
1. दीनता, अवधानता 2. घटिया करने वाला, मात-
हृती, अवधीनता, —आवित (वि०) 1. दीन, अव-
—वसित, अपमानित 2. आवे बढ़ा हुआ, श्रेष्ठता को
प्राप्त, अवधानीकृत—अवभावितवाच्यव्यत्ययजन
कामस्य अन्वार्थयुगलस्य—काव्य० १।

व्यस (वि०) [वियते निरुते वा अक्षिणी यस्य—ब० ग०,
बच् प्रत्ययः] नीच, अधम, दुष्ट, कमीना, —आः 1.
मैस 2. परशुराम का विशेषण, —अन् सुराव, छिद्र।

व्यसोचः [व्यक् स्मृद्धि—व्यक्+वृत्+अच्] 1. बरगद
का पेड़ 2. पुरस, कंबाई का एक नाप जिसकी लंबाई
उतनी होती है जितनी कि दोनों हाथों को फैलाने से
होवे। सम०—वरिवंशला श्रेष्ठ स्त्री (श्रेष्ठ स्त्री की
परिभाषा यह है—स्त्री सुकठिनी यस्या नितंबे च
विशालता, मध्ये क्षीणा भवेद्या सा न्यवशपरिमंडला
(अव्य०), दुर्वाकांडमिव ज्यामा न्यवशपरिमंडला
—मट्टि० ५।१८।

व्यसुः [नि+अच्+इ] एक प्रकार का बारहसिंगा
—रघु० १३।२५।

व्यसु (वि०) (स्त्री०—नीची) [नि+अच्+क्विन्]
नीचे की ओर मुड़ा या झुका हुआ, या नीचे की ओर
बाता हुआ 2. नुंह के बल लेटा हुआ 3. नीच, वृथा
के बोध, अधम, कमीना, दुष्ट—वि० १५।२१, (यहाँ
इसका अर्थ 'निम्न' या 'नीचे की ओर' भी है) 4.
अवावर, आलसी 5. पूर्ण, समस्त।

व्यसवन् [नि+अच्+स्पृट्] 1. चक 2. छिपने का
स्थान 3. कोटर।

व्यसः [नि+इ+अच्] 1. हानि, नाश 2. बरबादी, क्षय।
व्यसवन् [नि+अच्+स्पृट्] 1. जमा करना, लेटना 2.
बर्षाना, छोड़ना।

व्यस्य (यू० क० कृ०) [नि+अच्+क्त] 1. डाला हुआ,
फेंका हुआ, लिटाया हुआ, जमा किया हुआ 2.
अवावर रक्खा हुआ, अन्तर्हित, प्रयुक्त—व्यस्ताभारः
—कृ० १।७ 3. बर्षित, चर्षित—चित्रव्यास 4.
मुचुर किया हुआ, सीया हुआ, स्थानान्तरित—विक्रम०
५।१७, रत्न० १।१० 5. रहना, टिकना 6. छोड़ा हुआ,
एक ओर डाला हुआ, उत्सृष्ट। सम०—बंढ (वि०) इह
बोझने वाला, —वेष्ट (वि०) मरा हुआ, मृत, —सत्य
(वि०) 1. जिसने हथियार डाल दिये हो—आचार्यस्य
विश्वकर्मणोर्व्यस्तकारस्य श्लोकात्—वेणी० ३।१८
2. निरुक्त, अवर्षित 3. जो हानि कारण न हो।

व्यसवन् [नि+अच्+स्पृट्] तले हुए बावल, मुचुर।

व्यसः [नि+अच्+च] जाना, सिक्काना।

व्याधः [नियन्ति जनेन—नि+इ+धञ्] 1. प्रणाली,
तरीका, रीति, नियम, पद्धति, योजना—अधार्मिकं
विधिक्यार्धं निगृहीयात् प्रयत्नत—मनु० ८।३१० 2.
उपयुक्तता, औचित्य, सुरीति—कि० ११।३० 3.
कानून, न्याय या ईसाक, नैतिक विचारावली, न्याय्यता,
सबार्ड, ईमानदारी—याति न्यायप्रयुक्तस्य तत्त्वोपनि
सहायताम्—अनर्थ० १।४ 4. कानूनी मुकदमा,
कानूनी कारवाई 5. कानून के अनुसार दण्ड, निर्णय
6. राजनीति, अक्का शासन 7. समानता, भावस्य 8
लोककृद् नीतिवाक्य, उपयुक्त दृष्टांत, निर्दर्शना जैसे
कि 'दशापुत्र न्याय' 'काकानाकोप न्याय' 'धृष्टाक्षर
न्याय' आदि दे० नी० 9. वैदिक स्वर—न्यायैस्त्रिभिः
दोरभम्—कु० २।१२ (मस्ति० 'न्याय' शब्द का
अर्थ 'स्वर' करते हैं, परन्तु हमारी मम्मति में यहाँ
'पदानि' 'रानि' हैं जो कि तीन 'पदानि' 'अर्थात्
शुक्ल, यजुस् और सामन् में प्रकट किया गया है)
भर्तु० ३।५५ 10 (आ० में) विषयव्यापी नियम
11 गौतम ऋषि प्रणीत न्यायशास्त्र 12 तर्क शास्त्र,
न्यायदर्शन 13 अनुमान को पूरी प्रक्रिया (जिसमें
पक्षों अग अर्थान् प्रतिज्ञा हेतु उदाहरण, उपनय
और निगमन सम्मिलित हैं)। सम०—वचः बोधना
दर्शन, —वर्तित (वि०) आचरणशील, न्यायानुसार
आचरण करने वाला, बर्षित (वि०) न्याय और
धर्मानुमार्गित बाल कहनेवाला, शास्त्रम् तर्क विज्ञान,
तर्कशास्त्र,—सत्तिष्ठो उच्यते तथा उपयुक्त वाक्यहार
—सूत्रम् गौतम प्रणीत न्यायदर्शन के सूत्र।

विशो० कुछ मिथान्त-वाक्य या लाकड़ नीतिवाक्यों को
पाठकों के उपयोग के लिए संग्रह करने की अवधारि-
क से रख दिया गया है।

1. अध्वरकथाव्यायः [अध्वे क द्राव अदर लगना] अर्थ मे
'धृष्टाक्षर न्याय' के समान।

2. अध्वरपरचाराव्यायः [अधानुकरण जब लोग बिना बिजारे
दुसरो का अध्यानुकरण करते हैं और यह नहीं
कि हम प्रकार का अनुकरण उन्हें अवधारक में
होता देगा]।

3. अध्वरती दर्शनव्यायः [अध्वरती तारादर्शन का मिथान्त,
ज्ञात से अज्ञात का पता लगाना; शकाराचार्य की
निम्नांकित व्याख्या से इसका प्रयोग स्पष्ट हो जायगा
—अध्वरती विदर्शयिस्तसमीक्षयां स्मृता तारा-
मनुष्या प्रथममध्वरतीनि ग्राहयिष्या तां प्रत्याख्याय
परचादध्वरतीमेन ग्राहयति।

4. अध्वरकथनिकाव्यायः [प्रसोकवृत्तों के उच्चारण का न्याय]
रावण ने सीता को अध्वरकथाटिका में रक्खा था,
परन्तु उसने और स्त्रियों को छोड़ कर इसी वाटिका
में क्यों रक्खा, इसका कोई विशेष कारण नहीं बताया

या सकता। शायद यह हुआ कि जब मनुष्य के पास किसी कार्य को सम्पन्न करने के अनेक साधन प्राप्त हों, तो वह उसकी अपनी इच्छा है कि वह चाहे किसी साधन को अपना ले। ऐसी अवस्था में किसी भी साधन को अपनाने का कोई विशेष कारण नहीं दिया जा सकता।

5. **अव्यक्तोद्यमन्यायः** [पत्थर और मिट्टी के लोहे का न्याय] मिट्टी का डला कई की अपेक्षा कठोर है परन्तु वही कठोरता मनुष्य में बहल जाती है जब हम उसकी तुलना पत्थर से करते हैं। इसी प्रकार एक व्यक्ति बड़ा महत्त्वपूर्ण समझा जाता है जब उसकी तुलना उसकी अपेक्षा निम्नरे दर्जे के व्यक्तियों से की जाती है, परन्तु यदि उसकी अपेक्षा श्रेष्ठतर व्यक्तियों से तुलना की जाय तो वही महत्त्वपूर्ण व्यक्ति नगण्य बन जाता है। पाषाणोद्यमन्याय भी इसी प्रकार प्रयुक्त किया जाता है।

6. **कदमबुल (नोल्ल) न्यायः** [कदम बुल का कर्म का न्याय] कदम बुल की कलियाँ साथ ही जिल जाती हैं, जहाँ वहाँ उदब के साथ ही कार्य भी होने लगे, वहाँ इस न्याय का उपयोग करते हैं।

7. **काक लासीय न्यायः** [कोड़े और गाड़ के फल का न्याय] एक कीड़ा एक बुल की साछा पर बाकर बँठा ही था कि अचानक ऊपर से एक फल गिरा और कोड़े के प्राण पक्षे उड़ गये—अतः जब कभी कोई घटना घुम हो या अभुम अप्रत्याशित रूप से अकस्मात् घटती है, तब इसका उपयोग होता है—नु० चन्द्र०—यमया मेहन तत्र लाभो मे पयच मुधुच, तबेतकाक-तालीयमवितकितसम्रवम्। कुबलयानन्द में भी—पनत् तालफल यया काकेनोपभूकनमेव रहोदरने-समिगहृदया तन्वी यया भुक्ता। रे० 'काकतालीय' भी।

8. **काकदंतनवैषम्यन्यायः** [कोड़े के दाँत इँटना] यह न्याय उस समय प्रयुक्त होता है जब कोई व्यक्ति स्वयं, अकार्यकारी या असमर्थ कार्य करता है।

9. **काकाशिलोक्तन्यायः** [कोड़े की आवाज गोलक का न्याय] एकदण्टि, एकाल जाति शब्दों से यह कल्पना की जाती है कि कोड़े की आवाज तो एक ही होती है, परन्तु वह आवश्यकता के अनुसार उसे एक गोलक से दूसरे गोलक में ले जा सकता है। इसका उपयोग उस समय होता है जब वाक्य में किसी कथ्य या परोक्ष्य का जो केवल एक ही बार प्रयुक्त हुआ है, आवश्यकता होने पर दूसरे स्थान पर भी अन्वयाहार करने में—अर्थात्—हीपोसिथिवातरीयः इत्यत्र अतिथि वाक्यस्य काकाशिलोक्तन्यायेन अंतरीयस्योपन्यायः न्यायः।

10. **कुर्वचटिका न्यायः** [चूटटिडर न्याय] इसका उपयोग सांसारिक अस्तित्व की विभिन्न अवस्थाओं को प्रकट करने के लिए किया जाता है—जैसे रूठ के चलने समय कुछ टिडर ही पानी से चरे हुए रूठ को चाते हैं, कुछ बानी हो रहे हैं, और कुछ चिन्तुन बानी होकर नीचे को जा रहे हैं—काश्चित्पुन्यवति प्रयुर्याति वा काश्चित्पुन्यवति काश्चित्पातवित् करोति च पुनः काश्चित्पुन्यवत्याकुलाम्, अन्योप्यवति-पक्षतद्विनिमिषो कोकस्त्विति बोधवन्नेव कीदृति कुप-यचटिका न्यायप्रकृत्यो विधिः। मूच्छ० १०/५९।

11. **बहुदुष्टीयवस्तुन्यायः** [बुनी चर के निकट पीछड़ी का न्याय] कहते हैं एक बाड़ीवान बुनी देना नहीं चाहता था, जतन वह ऊँच-बाँध रास्ते से रात को ही चल दिया, परन्तु दुर्भाग्यवश रात भर इधर-उधर घूमता रहा, जब पीछड़ी तो देखता था कि वह ठीक बुनीचर के पास ही बड़ा है, विचल हो उसे बुनी देनी पड़ी इसलिए जब कोई किसी कार्य को जानबूझ कर टालना चाहता है, परन्तु में उसी को करने के लिए विवश होना पड़ता है तो उस समय इस न्याय का प्रयोग होता है—रे० बीचर—एविच बट्टदुष्टीयवस्तुन्याय मनुचवति।

12. **बुललार न्याय** [ककड़ी में बुल कब जाने से बचना का न्याय] किसी ककड़ी में बुल कब जाने से बचना किसी पुस्तक में दीमक लग जाने से कुछ बजारों की बाहुति से मिलते-जुलते चिह्न अपने आप बन जाते हैं, अतः जब कभी कार्य अनायास में अकस्मात् हो जाता है तब इस न्याय का प्रयोग किया जाता है।

13. **इच्छापुष्पन्यायः** [इच्छे और पूछे का न्याय] जब बड़ा और पूछा एक ही स्थान पर रक्ख गये—और एक व्यक्ति ने कहा कि इच्छे को तो पूछे चलीट कर ले गये और ला लिया, जो दूसरा व्यक्ति स्वभावतः यह समझ भेना है कि पूछा तो ला ही लिया क्या होया—स्वोक्ति यह उसके पास ही रक्खा था। इसलिए जब कोई वस्तु दूसरी के साथ विशेष रूप से अत्यंत मजबूत होती है और एक वस्तु के लक्षण में इस कुछ कहते हैं तो वही बात दूसरी के साथ भी अपने आप लागू हो जाती है, नु० मूषिकेय बंडो अतिथिः इत्य-नेन तत्सहचरितमपुन्यवस्तुमवधारितमकतीति श्वित-मयानन्यायादधीतरमापत्तीत्येव न्यायो बंडापुष्पिका—पा० ६० १०।

14. **देहलीदीपन्यायः** [देहली पर स्थापित दीपक का न्याय] जब दीपक को देहली पर रख दिया जाता है तो इसका प्रकाश देहली के दोनो ओर होता है अतः यह न्याय उस समय प्रयुक्त किया जाता है जब एक ही वस्तु दो स्थानों पर काम चाहे।

15. **मुकनापितपुत्रव्यायः** [राजा बीर नाई के पुत्र का व्याय] कहते हैं कि एक नाई किसी राजा के यहाँ नौकर था, एक बार राजा ने उसे कहा कि मेरे राज्य में जो लड़का सब में सुन्दर हो उसे लाओ। नाई बहुत दिनों तक इधर उधर भटकता रहा परन्तु उसे ऐसा कोई बालक न मिला जैसा राजा चाहता था। अन्त में थककर और निरास होकर वह घर लौट आया—तब उसे अपना काजा-बलूटा लड़का ही अत्यंत सुन्दर लगा। वह उसी को लेकर राजा के पास गया पहले तो उस काले कलटे बालक को देख कर राजा को बड़ा काश आया परन्तु यह विचार कर कि भानव मात्र अपनी बन्तु को ही सर्वोत्तम समझता है, उसे छोड़ दिया तुम सब कातमारमोय पद्मसिंह—हिन्दी—अपनी छाछ का कौन लट्टा बताता है।
16. **पंचप्रकाशकन्यायः** [कीचड़ खोकर उनारन का व्याय] कीचड़ लगने पर उसे धो डालने की अपेक्षा यह अधिक अच्छा है कि मनुष्य कीचड़ लगने ही न देवे। इसी प्रकार भयघ्न स्थिति में फँस कर उसने निकलने का प्रयत्न करने की अपेक्षा यह व्यादह अच्छा है कि उस भयघ्न स्थिति में डूब ही न पड़े—तुम—प्रकाशनादि पक्ष्य द्वारा दर्शयन् वरम—तो वही तो एक परदेज अच्छा।
17. **विशेषकन्यायः** [पिले की पीसना] यह व्याय उस समय प्रयुक्त होता है जब कोई किये हुए कार्य को ही दुबारा करने लगता है, क्योंकि पिले को पीसना फासू और व्यर्थ काम है तुम कृतस्य कार्य बुधा।
18. **बीजकुरकन्यायः** [बीज और जड़कुर का व्याय] कार्य कारण नहीं अन्यायाधित होते हैं वही इस व्याय का प्रयोग होता है (बीज से जड़कुर निकला और फिर समय राकर जड़कुर से ही बीज की उत्पत्ति हुई) अतः न बीज के बिना जड़कुर न मकना है और न जड़कुर के बिना बीज।
19. **लोहबुधकन्यायः** [लोह और चूबक का आकर्षण व्याय] यह अकृति सिद्ध बात है कि लोहा चुबक की ओर आकृष्ट होता है इसा प्रकार प्राकृतिक धनियट लोह का निष्कर्षवृत्ति की बढीकत सभी वस्तुएँ एक दूसरे की ओर आकृष्ट होती हैं।
20. **वृद्धिबुधकन्यायः** [बुरे से अतिन कः अनुमान] बुरे और अतिन की अवयवमात्री सहवृत्तिता नैसर्गिक है, अतः (जहाँ बुरा होता वहाँ भय अवयव होती)। यह व्याय उन्ही समय प्रयुक्त होता है जहाँ दो पदार्थ कारण-कार्य या दो व्यक्तियों का अनिवार्य संबंध बताया जाय।
21. **बुद्धिबुधकन्यायः (बुरा) व्याय** [बुरी कुमारी को बदलना व्याय] इस प्रकार का बदलना भावना जिसमें वह सभी बातों का जाय जो एक व्यक्ति चाहता है। महाभाष्य में कहा जाता है कि एक बुधिया कुमारी को इन्द्र ने कहा कि एक ही वाक्य में जो बदलाना चाहो मांगो, तब बुधिया बोली बुधा मे बहुतबीर पुत्रमोदन कांचनपाण्या भुञ्जीरन् (अर्थात् मेरे पुत्र सोने की थाली में भी हूँ प्रयुक्त बात लार्थ)। इस एक ही बदलान में बुधिया ने परि पुत्र धन वाक्य पशु सोना चाँदी सब कुछ माँग लिया। अतः जहाँ एक की प्राप्ति में सब कुछ प्राप्त हो वहाँ इस व्याय का प्रयोग होता है।
22. **शास्त्राचलकन्यायः** [शास्त्र पर वर्तमान अन्तर्मा का व्याय] जब किसी को शास्त्रमात्र का दखन प्राप्त है तो अन्तर्मा के दूर स्थित होन पर भी हम यही कहते हैं दशा सामने वृद्ध की शास्त्रा के ऊपर बाँध दिया देना है। अतः यत्र व्याय उस समय प्रयुक्त होता है जब कोई वस्तु चाहे दूर हो ही, निश्चितता के साथ पदार्थ में संलग्न होती है।
23. **सिंहबालकन्यायः** [सिंह का पीछे मुड़ कर देखना] यह उस समय प्रयुक्त होता है जब कोई व्यक्ति जाय चलने के साथ अपने प्रयुक्तकार्य पर भी धृष्टि डालता रहता है जिस प्रकार सिंह शिकार की तलाश में आगे भी बढ़ता जाता है परन्तु साथ ही पीछे मुड़कर भी देखता रहता है।
24. **बुद्धिबुधकन्यायः** [बुद्ध और कड़ाही का व्याय] यह उस समय प्रयुक्त किया जाता है जब दो बातें एक कठिन और एक अपेक्षाकृत आसान करने को हों तो उस समय आसान कार्य का पहले किया जाता है जैसे कि जब किसी व्यक्ति को बुद्ध और कड़ाही दो वस्तुएँ बसानी हैं तो वह बुद्ध को पहले बनावेगा क्योंकि कड़ाही की अपेक्षा बुद्ध का बनाना आसान या अल्पप्रयत्नाय है।
25. **बुध्यामिजनकन्यायः** [गड़वा खोदकर उसमें बुद्धी भराया] जब किसी मनुष्य को कोई बुद्धी अपने घर में लगानी होती है तो मिट्टी ककड़, आदि बार बार डाल कर और कूटकर वह उस बुद्धी को बूढ़ बनाता है, इसी प्रकार बारी भी अपने अधिपति की बुद्धि में नाना प्रकार के गर्क, और बुद्ध्यामि उपस्थित करके अपनी बात का और भी अधिक समर्थन करता है।
26. **स्वामिबुधकन्यायः** [स्वामी और सेवक का व्याय] इसका प्रयोग उस समय किया जाता है जब पागल और पाव्य पोषक और पोष्य के संबंध की बातलाना होता है या ऐसे ही किन्हीं दो पदार्थों का संबंध बताया जाता है।
- व्याय (वि०)** [व्याय + यत्] १ ठीक, उचित, सही, व्यायस्यत, उपयुक्त, योग्य—व्याय्यात्यय प्रविचलति

पद न बीरा.—मूल० २।८१, भग० १८।१५, मनु० २।१५२, १।२०२, रघु० २।५५, कि० १।५७, कु० १।८७ २ साधाम्य, प्रचलित ।

न्यासः [नि + अस् + भञ्] १ रत्नना, स्थापित करना आरोपन करना—उत्पत्त्या सूर्यामपवित्रपासु—रघु० २।२, कु० ६।५०, चरणन्यास, अग्न्यास आदि २ अतः कोई भी छाप, चिह्न, मोहर, छप्पा अतिशय-नक्षत्रास—रघु० १२।७३, जहाँ नक्षत्रिह्न शम्भ-चिह्नो से, भी बड़ गये, दत्तन्यास ३ उभा करना ४ बरोहर, अमानत प्रत्यपितन्यास इवान्तरास्था—ग० ४।२१, रघु० १२।८ वाङ्म० २।६७ ५ नीपना, बचन बड़ होना, सिपुदे करना, हुवाने करना ६ चित्रित करना चित्र रचना ७ छोबना, उतगै बाना स्थापना, निरुद्धाल देना—शम्भ भग० १८।२ ८ मन्त्र रचना, घटना ९ मोद कर निकालना (पत्र आदि में) पकड़ना १० शरीर के भिन्न भिन्न अंगों में भिन्न भिन्न देवनाओं का ध्यान जो सामान्य रूप में मन्त्र पाठ के साथ २।२५ रूप हवभाव सहित सम्पन्न किया जाता है । सम०—अपहृष किना बरोहर का प्रयासमान करना,—बारिन् (पु०) बरो हर रखने वाला, रहन रखने वाला ।

न्यासिन् (पु०) [न्यास + इति] जिसने अपने समस्त सांसारिक बन्धनों का काट डाला है, सत्यासी ।

न्यु (न्यु) अ (वि०) [नि + उज्ज् + क्त] १ मनोहर, सुन्दर, प्रिय २ उचिन्, ठीक ।

न्युज्ज (वि०) [नि + उज्ज् + क्त] १ नीचे की ओर झुका हुआ, या मुड़ा हुआ, ईश के डल सेटा हुआ—ऊर्ध्वोपनि न्युज्जकटाहकल्यै (श्रीमिन्)—नी० २२।३२ २ झुका हुआ टेंडा ३ उन्नतोदर ४ कुबरा,—ज्जः बड़ या बरगद का पेड़ । सम०—जङ्गलः जाड़ा, बक लक्ष्य ।

न्युत (वि०) [नि + ऊत् + क्त] १ कम किया हुआ, भट्टाया हुआ छात्र किया हुआ २ सदीय चटिया, हीन प्रभावयन् रक्षित या विहीन—जमा कि अर्ध-न्युत में ३ कम (वि०) अधिक ।—वाङ्म० २।११६ ४ सदीय (किमी जग में) पाद ५ नीच, दुष्ट, दुर्जन निच—कम (अर्थ०) कम, कम मात्रा में । सम०—अस (वि०) अपान विकलान्,—अधिक (वि०) कम या ज्यादा, असमान,—वी निर्दिष्ट अज्ञानी, मुर्ख ।

न्युतयति (ना० वा० पर०) घटना, कम करना ।

प

प (वि०) [पा + क] (समास के अन्त में बहुवचन) १ पीने वाला, जैसा कि द्विप 'अनेक्य' में २ चौकीसी करने वाला, रत्ना करने वाला हकमत करने वाला वैज्ञा कि 'गोप' 'नृप' और 'जिनिप' में प. १ बायु हुआ २ पत्ता ३ अड़ा ।

पक्कवः [पचति इवादिनिष्ठपञ्चमसमिति पच् + क्तिप् = पक् = खबर सत्य रूप कोलाहलशब्दो पच] १ चाँडाल का घर खबर या जमली आदमी का घर ।

पक्षितः (स्त्री०) [पच् + पितृन्] १ पक्षना २ पचना, हाडना या पाचन शक्ति ३ पक जाना, परिपक्व होना, परिक्वाबस्था विकास ४ प्रसिद्धि, प्रतिष्ठा । सम०—जुलम् अजीर्ण के कारण पेट में होने वाला दर्द, उदर पीडा ।

पक्षु (वि०) [पच् + पृच्] १ रखीदवा पाचक २ पकाने वाला ३ उदीपक, पचाने वाला—(पु०) जठराग्नि ।

पक्षुन् [पच् + पृच्] १ यज्ञाग्नि को स्थापित रखने वाले पुष्ट्य की दशा २ इस प्रकार स्थापित यज्ञाग्नि ।

पक्षिन् (वि०) [पच् + पितृन्, मन्] १ पक्का, पका हुआ २ परिपक्व, ३ पकाया हुआ ।

पक्व (वि०) [पच् + पठ, लक्ष्य वः] १ पकाया हुआ,

मुना हुआ, उबाना हुआ—जैसा कि 'पक्वाव' में २ पका हुआ ३ सेका हुआ, बरम किया हुआ, तपाया हुआ (वि० आम) पक्वेष्टकानामाकषम्—मुष्क० ३ ४ परिपक्व, पक्का, पक्वाश्म्याबरोष्ठी—मेघ० ८२ ५ सुविकसित, सुपरित, परिपक्व वैज्ञा कि 'पक्वशी' में ६ अनुभवशील, बुद्धिमान् ७ (कोड़े की) भाति) पका हुआ चिसमें पीप पड़ने वाली हो ८ सफेद (हाल) ९ लष्ट, खीयमाण विनाश के अन्त पर, अपनी मृत्यु का स्वागत करने के लिए पक्का । सम०—असिंहारः कुुरानी वेष्टि—अक्षय अक्षाला आदि हालकर बनाया गया मोचन,—आक्षयः पेट, उदर,—इच्छा पकी हुई ईद,—इच्छाकित्तम् पक्की ईंटों से निर्मित मकान,—ऊन् (वि०) १ पकाने वाला, २ पक्व होने वाला,—रत्नः वराच, बहिरा—बारि (नपु०) कोकी का पानी ।

पक्वकः (पु०) एक खैर जाति का नाम, पाच्यक ।

पक्व (मा० पर०, घृ०) उग्र, पखरि, पक्षयित्री १ सेना, ब्रह्म करन २ स्वीकार करना ३ पक्ष सेना, लक्ष्यारी करना ।

पक्षः [पच् + अच्] बायु, बुद्धा, अवाधि पक्षाधि नोर्द्ध-

येते—का० ३४७, इसी प्रकार 'उत्क्रियक' निकल
वाले हैं पंच वितके, पञ्चवृत्त, पञ्चभेदोक्त वक्त्र
—रघु० ४१०, ३४५ २. बाघ के दोनों ओर बने
पंच ३. किसी मनुष्य वा वस्तु का पार्श्व, कथा—स्त-
वेरमा उभयपक्षिनीतमिश्रा—रघु० ५७२ ४. किसी
की वस्तु का पार्श्व, वक्त्र ५. सेना का एक पक्ष वा
पार्श्व ६. किसी वस्तु का अर्धभाग ७. चात्र मात का
अर्धभाग, पक्षधारा (१५ दिनों का) (इस प्रकार के
वो पक्ष होते हैं—सुकपक्ष—चिन दिनों चन्द्रमा
निकल रहता है, कृष्ण वा तमिस्रपक्ष—अधिवारा
पक्ष) तमिस्रपक्षोपि सहा प्रियाभिरुत्तमा वतो
निविशति प्रदोषात्—रघु० ६३४, मनु० १६६६,
वाच० ३५०, सीमा वृद्धि समायाति सुकपक्ष इवो-
दुराट्—पंच० ११२४ ८. दल, गुट, पहलू—प्रमुदित-
पत्तल—रघु० ६१८६, वि० २११७, मय० २४२५,
रघु० ६५३, १८ ९. किसी एक दल से सबद्ध, अनु-
वाची, साथीदार—अनुपकोनवान्—हि० १ १०

मेची, अनुवाय, अनुह, अनुवायियों को लक्ष्या—मनु०,
विष्णु ११. किसी तर्क का एक पहलू, विकल्प, दो में
से कोई हा एक पक्ष,—बसो दूसरा पहलू, इसके विप-
रीत पूर्व एवामकपक्षस्तस्मिन्नामवस्तुतः—रघु०
४११०, २४३४, तु० पूर्वपक्ष और उत्तरपक्ष १२ एक
सामान्य विचार वैया कि 'पक्षादरे' में १३. पक्षों का
विषय, प्रस्ताव १४ अनुमान-प्रक्रिया का विषय (यह
वस्तु जिसमें साध्य की स्थिति तद्विध हो) तद्विषु-
धारण्यवान् पक्ष—तर्क०, दत्त वृद्धिपूर्व मूहीतपक्षा
—हि० २०११ (यहाँ इसका अर्थ 'अनुवृत्त' भी है)
१५. दो की संख्या की प्रतीकात्मक उक्ति १६ पक्षी १७
अधस्ता, दशा १८ अरीर १९. अरीर का अंग २०. राजा
का हाथी २१. सेना २२. दीवार २३. विरोध २४ प्रति-
बन्धन, उत्तर २५. राक्षि, मनुष्यव्यव (समाजमें 'बाक' का अर्थ
देने वाले व्यक्तियों के साथ), केवलपक्ष, तु० हल। तम०
—अंतः कोई से भी पक्ष का पक्षहवा दिन अर्थात्
जमावस्था या पूर्णिमा का दिन—अंतरज १. दूसरा
पार्श्व २. किसी तर्क का दूसरा पहलू ३. और विचार
का कल्पना,—आवातः १. अरीर के एक अंग का चारा
जाना, अक्षरकथा—आवातः १. प्रायक तर्क २.
मिथ्या परिहार या क्रूरिहार,—अक्षरः पक्षधारे में
केवल एक बार योजना करना,—अक्षरान् किसी भी
पक्ष का ही जाना,—अक्षः १. सुवज्रपट हाथी २. चन्द्रमा,
—क्षिप् (पु०) इन का विशेषण (पक्षों के पक्षों वा
मुवालों को काटने वाला), कु० ११२०,—कः वार
—इक्षम् १. किसी विचार के दोनों पहलू २. दो
पक्षधारे अर्थात् एक मात,—क्षारम् चोरदरवासा,
जिन्नी द्वार,—क्षर (वि०) १. पंचधारी २. एक का

पक्ष लेने वाला, किसी एक की तरफ़ारी करने वाला
(रु०) १. पक्षी २. चन्द्रमा ३. हिमावली ४. सुवज्रपट
हाथी,—काही पक्षों का मोटा पर बिंदि कमलकी वांछि
प्रयुक्त करते हैं,—पक्षः १. किसी एक की तरफ़ारी
करना २. (किसी वस्तु के लिए) स्नेह, प्रेम, चाह,
रक्षि—अर्थात् अक्षेपु हि पक्षपाता—कि० ३११२,
मेची० ३११०, उत्तर० ५११७, रिपुपक्षे वज्रपक्षपातः
—पुत्रा० ११३ ३. किसी दल विशेष की ओर अनु-
राग, हितवाच, तरफ़ारी—पक्षपातमय मेची मन्वते
—मातृवि० १, सत्य बना रक्षि न पक्षपातात्
—मर्त्य० ११४७ ४. पक्षों का विराम, पक्षोपवन ५.
हिमावली—वास्तिम् (वि०), १. पक्षपात करने वाला,
किसी एक दल का अनुवाची, (किसी एक विशिष्ट
बात का) तरफ़ार—पक्षपातिनी देवा अथि पावना-
नाम् मेची० ३ २. लहानुमति करने वाला—मेची०

३ ३. अनुवाची, हिमावली, विच—व सुरपक्षपाती
—विष्णु० १, (नै० २१५२ में 'पक्षपातिता' शब्द का
अर्थ है 'पक्षों की रक्षि' भी),—वाक्विः चोर दरवाजा,
—विष्णुः बंक पक्षी,—वाक्कः १. पार्श्व, वक्त्र २.
विशेषण, हाथी का पार्श्व,—मुक्तिः उत्तरी गूटी जिसकी
सूर्य एक पक्षधारे में तय रहता है,—मूलम् पंच की
जड़, वाक्कः १. एकतरफ़ा बहान २. एक पक्ष की
उक्ति, मतानिष्पत्ति,—वाह्वः पक्षी,—हुतः (वि०)
जिसका एक पार्श्व नकले में बेकाम हो गया हो,—हुतः
पक्षी,—होष १. पक्षद्व दिन तक होने वाला पक्ष २.
पक्षिक पक्ष।

वक्त्रः [पक्ष + कृत्] १. चोर दरवाजा २. पक्ष, पार्श्व ३.
साथी, हिमावली (समाज के अन्त में प्रयुक्त)।

पक्षता [पक्ष + तल् + टाप्] १. विपत्ति, हिमावत
२. दल विशेष का अनुगमन ३. किसी एक पक्ष का
होना।

पक्षतिः (स्त्री०) [पक्षत्वं मूलम्-पक्ष + ति] १. पंच की
जड़ अक्षिण्यवृत्तपुटेन पक्षी—नै० २१२,—कक्षं
क्षिप्र जटापुष्पतिः—उत्तर० ३४३, वि० १११९
२. सुकपक्ष की प्रतिपत्ता।

पक्षालः [पक्ष + आल् + वी] पक्षी।

पक्षिणी [पक्ष + इति + ङीप्] १. हाथी पक्षी २. दो दिनों
के बीच की रात (आवृत्तारक्षिण्य पक्षिणीत्य-
मिथीयते) ३. पूर्णिमा।

पक्षिन् (वि०) (स्त्री—पक्षी) [पक्ष + इति] १. पंचवृत्त
२. बावुवाला ३. तरफ़ार, दल विशेष का अनुवाची
—[पु०] १. पक्षी २. तीर ३. विच का विशेषण।

तम०—इक्षः—अक्षर—राक्ष (पु०)—राक्षः—विष्णुः
स्वामिन् (पु०) नक्ष का विशेषण,—क्षीः छोटी
पक्षिवा,—क्षाल १. पक्षता २. पक्षिवाचर।

ii (स्वा० वा०-पञ्चते) स्पष्ट करना, विशद करना ।

पञ्चतः [पञ्च+त] 1. अग्नि 2. सूर्य 3. इन्द्र का नाम ।

पञ्चन (वि०) [पञ्च+स्तुट्] पकाना, भोजन बनाना, परिपक्व करना -नः अग्नि-नञ् 1. पकाना, भोजन बनाना, परिपक्व करना 2. पकाने के उपकरण, बर्तन, पत्थन आदि ।

पञ्चपक्वः [प्रकारे पक्व इत्यस्य द्वित्वम्] शिव जी की उपाधी ।

पक्वा [पञ्च+अङ्+टाप्] पकाने की क्रिया ।

पचिः [पञ्च+इन्] अग्नि ।

पचेलिम (वि०) [पञ्च+एलिमञ्] 1. शीघ्र ही पकने वाला 2. परिपक्व होने के योग्य 3. स्वतः या नैसर्गिक रूप से पकने वाला ददस्य मातृफल पचेलिमम् - नै० १।१४, -भा 1 अग्नि 2. सूर्य ।

पचेलुकः [पञ्च+एलुक] रसोदया ।

पञ्चलटिका (स्त्री०) एक छोटी घंटी ।

पञ्चक (वि०) [पञ्च+कन्] 1. पाँच से पुस्त 2. पाँच से मबद्ध 3. पाँच से निर्मित 4. पाच में खरीदा हुआ 5. पाँच प्रतिजन लेने वाला, - क, -कम् पाँच वस्तुओं का समूह, 'अष्टलपचक' ।

पञ्चत् (स्त्री०) पञ्च, पञ्चममदाय, पञ्चधातु ।

पञ्चता, -स्त्वम् [पञ्चन्+तल्+टाप्, त्व वा] 1. पाँचगना स्थिति 2. पाँच का समूह 3. पाँच तत्त्वों की समष्टि -अनः पञ्च-ता-स्त्वं-नञ्-या उन पाँच तत्त्वों में धूलमिल जाना जिनसे शरीर बना है, मरणा, नष्ट होना, पञ्चता-स्त्वं नो मार डालना, नष्ट करना - पञ्चभिर्निमित्ते देहे पञ्चत्व च पुनर्गते, स्वा स्वा योनि-मनुप्राप्ते तत्र का परिचयना । रत्न० ३।३ ।

पञ्चदुः [पञ्चन्+अयुञ्] 1. समय 2. कौशल ।

पञ्चका (अव्य०) [पञ्चन्+का] 1. पाँच भागों में 2. पाँच प्रकार से ।

पञ्चन् (सं० वि०) [पञ्च+कनिन्] (सदेव बहुवचनान्, कर्त० कर्म० -पञ्च) पाँच (समाय में पूर्वपद होने के स्थिति में पञ्चन् के 'न्' का लोप हो जाता है) । सम० अञ्जः पाँचवाँ भाग, पाँचवाँ -अग्निः 1. पाँच यज्ञानियों का समूह (अर्थात्--अन्वाहार्य पञ्चन या वक्षिण, माहृण्य, बाह्वर्नीय, सभ्य और आवसथ्य) 2. पञ्चानियों की स्थापित रखने वाला गृह्य पञ्चानयो घृतकृताः--भा० १, मनु० ३।१८५ -अंश (वि०) पाँच सदस्यीय, पाँच अंगों वाला, जैसा कि पञ्चमः प्रणामः (अर्थात् बाहुभ्यां चैव जानुभ्यां शिस्त्या वक्षसा दृष्ट्वा), कृतपञ्चमभिर्निर्णयो नय किं० २।१२, (दे० मत्ति० और कावचक) (गः) 1. कछुवा 2. एक प्रकार का बोझा जिसके शरीर के विभिन्न भागों पर पाँच चिह्न हैं (श्री) पगाम का दहलौ, मुल्हरी (गम्) 1. पाँच भागों का मद्य या

समष्टि 2. भक्ति के पाँच प्रकार 3. पञ्चांग, तिथिपत्र, अंकी -तिथिबोर्डर च नक्षत्र योग, करणमेव च, चतु-रंगबलो राजा जगती यथामानयेत्, अह पञ्चांग बल-वानाकाश यथामानये-सुभा० शेष एक प्रकार का समुद्री कछुवा 'कुडिः (स्त्री०) तिथि, बार, नभश्च, योग, और करण (योगतिप्), इन पाँच आवश्यक अंगों की अनुकूल स्थिति, अंगुल (वि०) (स्त्री० ला, -लौ) पाँच अंगुल का माप, -अ (आ) जम् बकरी से प्राप्त होने वाले पाँच पदार्थ, अम्बरम् (नपु०) मंडकर्णी ऋषि द्वारा निर्मित कहा जाने वाला मरोवर--तु० १३।३८ अमृतम् देवपूजा के लिए पाँच मिष्ट पदार्थों का समूह (दूध च ताँकड़ा चैव चतुर्दश तथा मधु) अक्षिम् (पुं०) बुधग्रह - अवयव (वि०) पाँच अंग वाला (जैसे कि अनुमान प्रक्रिया इसके प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय और नियमन, यह पाँच अंग हैं) अवस्व, शत्रु (क्योंकि यह पाँचो तत्त्वों में घुल मिल जाता है) तु० 'पञ्चत्व' में -अक्षिक्म् भेद में पाँच पाँच प्रकार के पदार्थ -अशोतिः (स्त्री०) पञ्चमी, अहः पाँच दिन का समय, -आतप (वि०) पञ्चानिया (चारों ओर चार अग्नि, तथा उग्र सूर्य) में वषट्का करने वाला तु० रघु० १३।४१, आत्मन्, -आहयः, मुख-वस्तुः 1 दिन का विशेषण 2 मिह (क्योंकि इस मुख प्रायः खूब खुला होता है, चार पक्षों में सूर्य जैसा काम करते हैं -पञ्चम् आनन गम्य) (अर्थात्क विपुला तथा पश्चिष्ठा को प्रकट के लिए प्रायः विज्ञानों के नामों के प्रत्य में लगाया जाता है न्याय, तर्क आदि उदा० जगन्नाथ तर्कपञ्चानना,--इतिवम् पाँच अंगों की समष्टि (ज्ञानेन्द्रिय या कर्माक्षयः दे० इन्द्रि-यम्), इन्ः -बाण शर, कामदेव का विशेषण (क्योंकि इसके पाँच भाग हैं--अरविदमगोक च चतु च नवमल्लिका, नीलोत्पलं च पञ्चने पञ्चबाणस्य मायका), -उज्ज्वन् (पुं०, ब० व०) शरीर में रहने वाली पाँच अग्निवा, -कर्जन् (नपुं०-आयु० में) पाँच प्रकार की चिकित्साएँ अर्थात् 1. वयन -उष्टी करने वाली औषधियाँ देना 2. रेचन-छीक लाने वाली औषधियों का सेवन 3. नरय-छीक लाने वाली औषधियाँ-नमश्चर-देना 4 अनुवासन -नैलयकन बस्त्रिकर्म 5. निद्रु-बिना तेल का बस्त्रिकर्म, -कुञ्चन् (अव्य०) पाँच बार, -कोचन् पाँच काण की आहुति, -कोक् पाँच मसालों (पोपल, पिप्पराफल, चई, चिचकमूल और मोठ) का चूर्ण, -कोषाः (पुं०, ब० व०) पाँच प्रकार का परिधान 1. अन्नमय कोष या स्फुल शरीर 2. प्राणमय कोष 3. मनमय कोष 4. विज्ञानमय कोष (२, १, ४ व ४ से

मिल कर किम शरीर बनता है 5 आत्मस्थाय काय
—अर्थात् मांस) जिनसे आत्मा लिप्त समझा जाता
है,—ओसो पाँच कास की दूरी,—कड़कम्—कड़की
पाँच खाटा का समूह—गवम् पाँच गौआ का समूह
—गवम् गौ से प्राप्त होने वाले पाँच पदार्थों
(अर्थात् दूध, रहती घी मूत्र और गाबर—क्षीर दधि
तथा बाज्य मूत्र गायमखेब च) का समूह—गु
(वि०) पाँच गौआ के बदल खरोदा हुआ—गुज
(वि०) पाँच गुणा,—गुप्त 1 कछुवा 2 दशनवात्म
म वर्णित नीतिक्वाद का पद्धति वाक्का का मिद्वान
—चत्वारिंश (वि०) पैननासवी—चत्वारिंशत
पैनागीस—अर्थात् 1 मनार मनुष्य जान 2 एव
राक्षस जिसका शब्दार्थि का का शरण कर लिया
था तथा जिसका शब्दार्थ न मार गिराया व 3
अर्थात् 4 पाँच पाँच। नीच धर्मा अर्थात् दबल
मनुष्य गम्ब नाम और 5 हिन्दुओं का चर
मर। जानीय (ब्राह्मण शीतल देय और गुड तथा
पाचन विषाद का अन्वय भाग (इन दो अर्थों में व०
व 1) 1 पुरातनवर्ण क रि ए ड पञ्च ११ ११ १३
एव शरणभार्य। जनीय (वि०) पञ्चनी का
भवन (च) अनिरता वरुणपिया विरूपक—ज्ञान
1 नृप का शरण क्याकि वह पाँच प्रकार क ज्ञान से
युक्त है 2 पाप्मन मित्राता से परिचित मनुष्य
लक्ष्य, श्री नीच रथकारों का समूह लक्ष्य 1
नीच तारक की समष्टि अर्थात् पृथ्वी जल अग्नि
वायु और आकाश 2 (तन्नाम) तांत्रिका के पाँच
तन्त्र या पञ्चमकार—अर्थात् मल मांस मन्त्र मूत्र
और मेघुन—भी कहता है—तपस् (प०) एव
सन्ध्यामा वा श्रीम श्रुति म सुयों की शरण किष्का के
नीच चारों ओर आग जला कर बँटा हुआ तपस्या
करता है—30—हविर्नाममेषवा चतुर्णा मध्य
लसटतपसपमा—रघु० १३ ४१, कु० ११०
मनु० ६१२ और शि० २५१ भी—तप (वि०)
पाच गुण। (—घ) पचायत—त्रिंश (वि०) पैती
सवी,—त्रिंशत—त्रिंशति (अ०) पैतीस,—दश
(वि०) 1 पञ्चहवी 2 जिसमें उद्धत बड़ दुष्ट है
—पचा पञ्चदशसप्तम—एक भी पञ्चह—दशम् (वि०
व० व० पञ्चह—अह पञ्चह दिन की अवधि—दशम्
(वि०) पञ्चह से युक्त या निर्मित—दशो पूर्णिमा
—दीर्घम् शरीर के पाँच लम्बे अंग—बाह्र नेत्रद्वय
प्रभिरु नास तयैव च स्नयोरनर चैव पञ्चवीर्य
प्रधाने,—दश 1 पाँच पञ्चो से युक्त कोई जानवर
—पञ्च पञ्चला भव्या ये प्रोक्ता हतवैरिजि—भट्टि०
६१३३, मनु० ५१७ १८, याज्ञ० ११७७ 2 हावी
3 कछुवा 4 सिंह या व्याह—नव पाँच नदियों

का देश, वर्तमान पञ्चाव' (पाँच नदियों के नाम—कपुद्र,
विषाखा, इरावती, पञ्चमाणा और बितस्ता
या कश्मिर सतलुज व्यास रावी, बेनास,
और सेलम) —(श—व० व०) इन देश के निवासो—
पञ्चावी नवति (स्त्री०) पिचानव—नीराकम्
देवमूर्ति के सामने पाँच पदार्थों का दित्ताना और फिर
उसके सामने लबा लट जाना (पाँच पदार्थों के नाम
दीपक, कमल, वस्त्र, आम और पान का पत्ता),
पञ्चास (वि०) पञ्चपनवी, पञ्चासत् पञ्चपन,—पवी
पाँच कदम पञ्च १११५—पञ्चम् 1 पाँच पाँचों
का समूह 2 एक श्राद्ध जिसमें पाँच पाँचों में रखकर
भक्त दा जाता है—पञ्चा (प्र० व० व०) पाँच जीवन
प्रदव्यु प्राप्त अपान व्यान, उदान और समान,
प्रसास विविष्ट आकार का मन्दिर (जिसमें चार
कमर और एक मीनार या शिखर हो) —बाण
बाण, शर कामदेव के विशेषण द० पञ्चैव
भुज (वि०) पाच भुजावा का (च) पञ्चभुज
या पञ्चकाना न० पञ्चकाण भूतम् पाँच मूलतत्त्व
पृथ्वी अन्न, अग्नि वायु और आकाश अकारम
बाधमार्ग तन्त्राचार के पाँच मूलतत्त्व जिनके नाम व
प्रथम अक्षर म है (मल मास मन्त्र महा और
मैरुन, द० पञ्चतत्त्व 12) महापातकम् पाँच बड़े
पाप द० महापातक महापातक (प० व० व०)
पाँच दैनिक यज्ञ या एक ब्राह्मण क लिए अनुष्ठित है
द० महायज्ञ पाँच दिन रात्रि पाँच तन्त्रा का
समूह (व कई प्रकार के) इन पाँच हैं (१) नीलक
बन्धक बति रघुरागवच मास्त्रिकम् प्रवाल बति
विश्व पञ्चरत्न मन्त्रिपिम् (२) मुवण रत्न मुक्ता
राजावन प्रवालकम रत्नपञ्चकमारक्यान्म (३)
बनक हीरक नाल पद्मारागवच मोक्तिकम् पञ्चरत्नमद
प्राक्लमृगिभि पूवर्दशभि रात्रि पाँच रात्रियों का
समय रात्रिकम् (गणि० में) गणित को एक
क्रिया जिससे चार शून्य रात्रियों के द्वारा पाँचवीं
रात्रि निकाली जाती है लक्ष्यम् एक पुराण (क्यों
कि इसमें पाँच महत्त्वपूर्ण विषयों का उल्लेख है) सर्व-
वच पतिर्गणेश वशो मन्वन्तराणि च वसान्तराणि चैव
पुराण पञ्चलक्षणम् दे० पुराण भा लक्ष्यम् मयक
+ पाँच प्रकार—अर्थात् काच ५ मन्त्रव सामूह, विड
और सोवर्णल बटी 1 अवीर का जाति के पाँच
बुल—अर्थात् पोपल बेल बड़, हरद और बसो 2
दण्डकारण्य का एक भाग जहाँ से गादावरी निकलती
है और जहाँ रात्रि से सोता समेत बहुत विस्तार
व बहुत स्थान नासिक से दो मील की दूरी पर है
—उत्तर० २१८, रघु० १३१३१,—वर्षेजीव (वि०)
लगभग पाँच वर्ष की आयु का—वर्षी (वि०) पाँच

वर्ष का,—सप्तमम् पाँच प्रकार के वर्षों (अर्थात् बड़, गहर, पीपल, फल और बेतल) की छाल—विश (वि०) पच्चीसवा,—विशतिः (स्त्री०) पच्चीस—विशतिका पच्चीस का सबूत जैसा कि 'विशतपञ्च विशतिका' में,—विश (वि०) पाँच गुणा या पाँच प्रकार का,—वत्स (वि०) 1 जिसका जोड़ पाँच सौ हो 2 पाँच सौ (—तम्) 1 एक सौ पाँच 2 पाच भी —वत्स 1 हाथ 2 हाथी, विशः सिंह—व (वि०) (ब० ब०) पाच छ सन्तानेंऽपि बहुव्ययिप्रत्यय समाविता पञ्चवा भूत० ११३४ वल्ल (वि०) पैठवा,—वलि (स्त्री०) पैठ सप्तत पञ्चहारावा—वत्सति (स्त्री०) पञ्चहतर तुला (स्त्री०) घर में रहने वाली पाच बन्धुएँ बिनके शाग छाने ५ औषधी की हिमा हो जग्या करती हैं वे य ११ रच तुला गृहस्थस्व भूक्तोपचयपुस्तक कही 'बदकुभञ्ज'—वत्० ३१६८ (पूना) चक्की या मिन्दुटा अ ४ ओखली और पानी का बड़ा) —हावन (वि०) पाच वर्ष की आयु का ।

पंचमी [पञ्च + स्यट्—टोप] गतवर्ष में छल की कगड़ की बनी हुई दिवात ।

पंचम (वि०) (स्त्री०—मो) [पञ्च मत्] 1 पञ्चवाँ 2 पाचवाँ भाग बनावेवाला 3 दस चतुर 4 मुन्द उज्ज्वल,—च 1 भारतीय स्वाध्याय का पाँचवाँ (बाद के समय में मानवा) स्वर काचन कोकिल (काकिला) गीत पञ्चमम्—आरत) शरीर ५ पाँच प्रगो से उत्पन्न होने के कारण इसका नाम पञ्चम है—आयु मय, युगो नामेहराह्मकंठम्बम्, बिचरन् पञ्चमस्थानप्राप्त्या पञ्च उज्ज्वल 2 मगन स्वर वा राग का नाम—अवर्तन वृत्ता मगन नन्वि प्रपञ्च पञ्चम—मो० १०, इसी प्रकार उल्लिखित पञ्चम रागम—मो० १ कम् 1 पाँचवाँ 2 बैबल तानिका का पाँचवाँ मकार—मो 1 चान्दमास के पक्ष की पाँचवी तिथि 2 (व्या० में) अपादान कारक ग्रीष्मी का विशेषण 4 छतरज की कपड़े की दिवात । सम०—आयु कोयल ।

पंचालः (पु०, ब० व०) [पञ्च + कालः] एक देश तथा उसके निवासियों का नाम लः पंचालों का राजा ।

पंचालिका [पञ्चाय प्रपञ्चाय अलति—अञ्ज + क्त्वात् टाप् इत्यञ्] गुड़िया, पुतली तु० 'पञ्चालिका' ।

पंचाली [पञ्चाल—टोप] 1 गुड़िया पुतली 2 एक प्रकार का राग 3 गतवर्ष जादि खेल की कपड़े की बनी विशात ।

पंचाल (वि०) (स्त्री०—मो) [पञ्चायात् + बट्] पञ्चासवा ।

पंचाला, पंचालति (स्त्री०) पञ्चास ।

पञ्चालिका [पञ्चाय + क + टाप् इत्यञ्] पञ्चास शकों का संग्रह—अर्थात् 'चौर पञ्चालिका' ।

पञ्चरत्न [पञ्च + रत्न] पिचरा, चिड़ियाघर—पञ्चरत्न, भुजपञ्चर २—रत्न 1 पसलियाँ 2 ककाल, छठरी २ 1 शरीर 2 कलियुग । सम०—आखेर मछलियाँ पकड़ने का जाल या ठोकरी लूक पिचरे का तोता, पिचरे में बड़ तोता विक्रम० २१२३ ।

पञ्चि, मी (स्त्री०) [पञ्च + इत्, पञ्चि + डीप्] 1 कई का गहना जिसमें थंगा काता जाव पुनी 2 अमिलेव, पञ्चिका बड़ी पञ्चिका 3 निचिमान अजी, पञ्चा या पञ्चास । सम० काग कारक लवक निचिकार ।

पट् 1 (स्वा पर० परति) जाना हिलना-डुलना—पर० या पुरा० सम०—पटगति से 1 टुकड़े करना विदारण करना फाटना फाड़ मर मरग २ करता फाड़ मर खोलना बिमकर करना पञ्चि पञ्चापार धामाम दश १० १/११ १२ स्वर्ण राज्यपञ्चम राग० ११९४ मुच्छ २ २ गीता गीत गीतानु मुच्छ ३१२ ३ छटना भूमि भुमेदना दस गतिरत्नरत्न गीतमा २५० ११३३ ४ दूर करना हटाना ५ गीत शालता उद् १ पाठ शालता निकाल जेना दनेनीत्याटयगवान मन् २१६९ नीलमुपातोय पुष्पम् १५० १ २ अह मे उवा इना उम्मुक्त केना क० २१६३ गम् १५१९ ३ उद्गन करना बि १ गीत शालता (बनकरही) बिपाटगामास युवा नवाय—गम् ६१३ २ जीवता बाहुर निकालना उद्गन करना ।

1 (पूरा० सम० परति से) 1 गुचना बुनना बुनिरत्न नावरायास गुप्तायममिन काथ० २ २ बन्ध पहनाना लपेटना २ घेरता घेरा बनाना ।

पट् रत्न [पट् वेष्टन करण पञ्चमो क] 1 बन्ध पटनावा कपडा बिचडा अय पट सूखरिइता गता गाय पटविछटशरीरलकुन मुच्छ० २१९ मेवा खर्चा बलदेबाय प्रकाश ५१५ २ महीन कपडा ३ घुष्ट पट्टा ४ कपड़े का टुकड़ा जिस पर बिच बनाये जाय टब छपर, छन । सम०—उदकम् तवु कार 1 तुलाहा २ बिचकार—कुटी (स्त्री०), बचच, बाय, वेचन (मपु०) तवु शि० १०१६३, बास १ तवु २ वेष्टिकोट ३ सुगंधित चुन रत्न० १, बलक सुगंधित चुन ।

पटकाः [पट + क + क] १ सिधिर, पटका २ कई का कपडा पटका [पट् इति अन्त्यस्तस्य चरति पट् + चट् + क्त्वात्] चोर, तु० पाटपञ्चर, रत्न बिचडा, फटे पुराना कपडा ।

पटकाः [पट् + क + क] चोर ।

पटका (अन्त्य०) अनुकरण मूलक इति ।

पटकम् [पट् + कम्] १. छत, छपर—विमिश्रपटकां

पुष्पवर्षे जीर्णपुष्पम्—पुष्पा० ३।१५ 2. हकना, भाव-
रीय, अवधच्छन, लेपन—सिरसि महीपटम् दधाति
रीय—भावि० १।७४ 3 बाँझा का बाला 4 देर,
सम्बन्धय, राधि, परिमाण रसायपात्रे पटलेन रीवि-
षाम्—सि० १।२१, ब्रह्मपटलानि पत्र० १।३६१
बाँझपटले रघु० ६।६३, मुक्तापटलम्—१३।१७
नारकपटलम्—गीत० ७ 5 टोकरी 6 अनुचरवर्ग
नीकर चाकर ल, ली 1 वृक्ष 2 डठल ल
—लम् पुस्तक का अध्याय। सम० प्राल छन का
किनारा।

पटह [पटेन करने पट । हन + ह] 1 धोता नगाडा
डोल, लडा कुर्तन स-वाया पटहवा गुलिन उलायनी
साम् मेध० ३६ पटपटल बर्तनमौवनी रनिद रघु
१.७१ 2 बागम उतकम 3 पायन क०। भारन ।
मम० धोला द्रिष्टागवा जो हाल पोटल जाय
और पापमा क०। जो १। ४। 1। 1। 1। 1।
अवधम् लाया का एक वरन क रिया हाल पायन
हुग हय उधर घूमन

पटालका प [पट + ल + क] 1 गजाला
का पट 2 पट 3 मटा काडा बेलबम 4 कनाल
मम० अथ (पटाला क पट) "न आगमिता
यत्र एक प्रकार का रमज का निदशन है जो किस
पात्र के शोभना प्रकट रगमय पर आने का प्रक
काला है तु० ४। १। १।

पटिम्ब (पु०) [पट + इम्ब] 1 दधना बलुगई
2 निपुणता 3 कोशला 4 नेपुण ५ प्रवर्धन
मोक्षना आदि।

पट्टी [पट + ट्टी] 1 ललन का गेर बन्धन का लकडा
3 कामदेव—रघु० 1 कन्या 2 लता 3 पट 4 लेन
5 बाल 6 अंकाई। सम० ललन (पु०) ललन
का पट बर्तन विवरणन पट्टीरमा भावि०
१।७४।

पट्ट (वि०) (स्त्री०) ट्टी म० ६०—रगम उ० ७
पटिष्ठ [पट्ट + णिष्ठ] 3 पट्टी 4 1 चतुर
कुशल दल, प्रवीण (प्राय अधि० के माध) बधि
पट्ट 2 तीक्ष्ण, तीला चरपरा 3 प्रत्य काहरी
4 प्रवृद्ध मन्त्रज्ञ जीव, गहन अपमर्षि पट्टागस्तारी
न बाधपरपरा भिक्व० ६।१ उल्ल० ३।१५ कर्कश
मुष्पाय तेजस्विन्युक्त—विभिन्न पट्टपट्टासमिधो
माहीबाध—पुष्पा० ६, पट्टपट्टासमिधोमिधो
—रघु० १।७१, ७३ 6 प्रवध, स्वयं—सि० १५।४३
7 कठोर, कृ, पापावहव 8 मकार, बूरी, बालाक
छठ 9 मीरीन, स्वयं 10 लक्ष्मि, व्यस्त 11 बाहुपट्ट
बागी 12 शिला हुवा, कुलमा हुवा—हु—हु (नपु०)

पुष्पवर्षा, हाप की छतरी—हु (नपु०) नमक। लम्०
—लम्, —देवी (वि०) बाला बतुर, तीक्ष्णवर्द्धि।
पटोल [पट + ओल] परमल, ककडी की जाति का,
—लम् एक प्रकार का कपडा।

पटोलक [पटोल + क] कुलिन घोषा।

पट्ट हुम् [पट क इत्माव] 1 शिला लकी
(लिखने के लिए) पट्टिका शिलापट्टमविद्याना—रगु०
३ इसी प्रकार भालपट्ट आदि 2 राजकीय अनुदान
राजाभा—बाह्य० १।३१७ 3 किरोट मुकुट—रघु०
१।६४ 4 घग्गा निमोकाट्टा कणिमिधुम्मा
—रघु० १६।७ 5 रेशम—पट्टाधानम का० १७
मन० ३।७६, इसी प्रकार पट्टाशुष 6 महीन वा
रगीन कपडा बन्धन / जाडने का बन्ध—मट्टि०
१०।६० 8 शिखच्छन पगडा रगीन रेशमी लाका
रन्० १।६९ मिहामन 10 कुन्ति निरगई 11 डाल
12 चक्की का पाट 13 बीगाडा 14 नगर कस्बा
15 पट्टी नती का बघनी। सम० अर्द्ध पटगनी—उत्पा-
ध्याय राजाभा नया अन्य प्रमेला या हस्तवेष्टी के
लिखन बना लम् एक प्रकार का कपडा—देवी,
—महिषी, पट्टी पटगनी—बन्धन—बालस (वि०)
रगम या रगन बन्धा से मुक्तिप्राप्त।

पट्टनम नो [पट + नप + ट्टन + कोप] नगर।

पट्टिका [पट्ट + का + ट्टा + क] 1 लकी कम्क
बैसा कि हुरट्टिका में 2 प्रलेख या दस्तावेज
3 घग्गा कपडे का टुकडा—बन्धनकपडाविद्युटपट्टि
कम्—का० १४९ 4 रेशमी कपडे का टुकडा
५ बन्धनो या नती गट्टी। सम०—बायक रेशम
का बुनावट।

पट्टी (टटी) वा (स) [पट्टी (म) वा पट्टी पट्टी
+ सा (सो) + क] एक लेख बाग की बर्ली कणप-
प्रसपट्टि आदि रग (पट्टी) तीक्ष्णवर्द्धा यतीक्ष्णवार
धुरीराम वैजयन्ती)

पट्टोलिका [पट्ट + ल + क] गप्ट इन्धम् [एक प्रकार
का जप या पट्टा (मनिकट्टहृष्यबन्धनार पत्रभेद
—लारा०)]।

पट्टा [पट + ट्टा] पट्टी 1 बग से पट्टा या
दोहरना मस्वर पाठ करना। पृथग्याम करना—य
पेक्षुण्डादि 2 पाठ करना अध्ययन करना अनु-
शीलन करना इषोत्तमानव सारव अनुप्रोक्त पठम्
विज अनु० १।१७६ ४। ३ 3 (देवता का)
आवाहन करना ४ हुवाला देना, उद्धृत करना (किसी
पुस्तक का) उत्प्रेष करना—एगदध्याय्य धोनु
पुराणे यधि पठयते—महा० 3 बोधका करना, विम-
व्यक्त करना—आर्वा य परमो ह्यं पुष्यस्वेह पठयते
महा० 6. (अपा० के हाथ) .. से पट्टा, घेर—

१ वरन अता १ नरक सिन्हा १०० १०० १००
 २ वरन अता १ नरक सिन्हा १०० १०० १००
 ३ वरन अता १ नरक सिन्हा १०० १०० १००
 ४ वरन अता १ नरक सिन्हा १०० १०० १००
 ५ वरन अता १ नरक सिन्हा १०० १०० १००
 ६ वरन अता १ नरक सिन्हा १०० १०० १००
 ७ वरन अता १ नरक सिन्हा १०० १०० १००
 ८ वरन अता १ नरक सिन्हा १०० १०० १००
 ९ वरन अता १ नरक सिन्हा १०० १०० १००
 १० वरन अता १ नरक सिन्हा १०० १०० १००

[illegible]

१५ ३. शलभ, टिड्डी-बल, टिड्डा—पतंगबद्धिमुख
विशेषः—कु० ३।६४, ४।२०, पं० ३।१२६ ४. मधु-
मक्खी,—गम् १. पारा २. एक प्रकार की बयल की
लकड़ी ।

पतंगम् : [पत् + गम् + लब्, मुम्] १. पक्षी २. शलभ ।
पतंगिका [पतंग + कन् + टाप्, इत्यम्] १. छोटी चिड़िया
२. एक छोटी मधुमक्खी ।

पतंगिन् (पु०) [पतंग + इति] पक्षी ।

पतङ्गिका [पत मधु शिवकयति पीडयति—पुपो०] मनुष्य
की डोरी ।

पतङ्गिन् (पु०) पाणिनि के सूत्रों पर लिखे गये—महा-
भाष्य के प्रसिद्ध निर्माता, वासीनिक, योगदर्शन के
प्रवर्तक ।

पतङ्ग (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [पत् + गत्] उड़ने वाला,
अवरोहण करने वाला, उतरने वाला, नीचे प्राने
वाला (पु०) पक्षी—परम पुमानिव पति पतनाम्
—कि० ६।१, स्वचित्तया सञ्चरते मुराणा स्वचित्त-
ताना पतता स्वचित्तम्—रघु० १३।१९, शि० १।१५ ।
मन्त्र०—पतङ्गः १. प्राक्षित सेना २. युक्त के बर्तन,
पीकदान—नैमेकमाणिक्यमय मङ्गोलन पतङ्गश्च पारित-
वान्तेन स—नै० १६।२३,—भीष्मः बाण दधेन ।

पतङ्गम् [पत्—करणे अवन्] १. बाहु, हैना २. पर, पल
३. सवारों ।

पतङ्गिः [पत् + अङ्गिन्] पत्नी ।

पतङ्गिन् (पु०) [पतङ्ग + इति] १. पक्षी—द्विगताड-द-
वर पतङ्गिण (उनुरेति) रघु० ८।५६, ९।०७, ११।११,
१२।४८, कु० १।४ २. बाण ३. बाँहा । मम०
—केसरः विष्णु का विजयण ।

पतङ्गम् [पत् + ल्यट्] १. उड़ने या नीचे प्राने की क्रिया,
उतरना, अवरोहण करना, अपने आपकी नीचे पड़ना
२. (सूर्यादिका) अस्त होना ३. नरक में जाना ४. पत-
भ्रम ५. मर्यादा या प्रतिष्ठा में गिरना ६. अवपन्न,
ह्रस्त, नाश, विपत्ति (वि०) उदय वा उच्छ्वास—
ब्रह्मचरिणा नरेन्द्राणामुच्छ्वाया पतनानि च—याज्ञ०
१।३०७ ७. मृत्यु ८. नाच लटकना, (छाती का)
डरकना ९. पथश्राव होना ।

पतनीय (वि०) [पत् + अनोयत्] गिराने वाला, जालि-
भ्रष्ट करने वाला,—यम् पतित करने वाला पाप या
धर्म—याज्ञ० ३।४०, २९।८ ।

पतम्, पतलः [पत् + अम्, असप्, वा] १. चाँद २. पक्षी
३. टिड्डा ।

पतवायु (वि०) [पत् + लिच् + आलुच्] पतनोन्मुख,
पतनशील ।

पतका [पतयते प्रायते कस्म्यश्चिद्धोऽज्या—पत् + आक +
टाप्] लफ्फा, प्लग (माल० से भी) यं कामचञ्चरी

कामयते स इदं सुवर्णपताकाम्—इश० ४७, (सर्वो-
परि सोम्येय सौभाग्य का आनंद लेने से उठे)
२. स्वच्छन्द ३. सेकेत, लक्षण, चिह्न, प्रतीक ४. उपा-
स्थान या नाटको में आई हुई प्रासंगिक कथा, दे०
नी०—पताकास्थानकं ५. भागलिकता, सौभाग्य ।
सम०—अंशुकम्—महा—स्वात्मिकम् (नाट्य० में)
प्रासंगिक कथा की सूचना जब कि अप्रत्याशित रूप
में, किसी परिस्थितिबद्ध उसी लक्षण वाली कोई
दूसरी आकस्मिक अवधारित वस्तु प्रदर्शित की जाती
है (संघर्ष विनिर्देशात्मिकमन्त्रिणोऽज्य, प्रयुज्यते,
आगन्तुकं भावेन पताकास्थानकं तु तत्, मा० द०
२९९ (इसके अन्य प्रकारों की जानकारी के लिए
दे० १००-१०४ तक) ।

पताकिक (वि०) [पताका + क्त] महा उड़ाने वाला,
अवरोहणकारी ।

पताकिन् (वि०) [पताका + इति] महा से जाने वाला,
पताकाओं में प्रयुक्त (पु०) । महापरा महापरा
दाय ३. अज्ञा—स्त्री मेला (प्रमेय) रघुवर्मन्त्रो-
ज्यस्य कुं पुत्र पताकिनाम् रघु० ४।८५, कि०
१।२७ ।

पतिः [पति रक्षति—पत् + उयि] १. स्वामी, प्रभु मेला कि
पुत्राणां में २. मातृक, अपर्याप्त, स्वामी—अपराध ३
राजपात्र, जामक, प्रधान, करन वाला, शीघ्रीपति,
वतर्पण कुपयति आदि ४ प्रती प्रमदा पतिवर्धना
इति प्रोक्तं इति विवेचनेना—कु० ८।३० मम—प्रातिनी,
—स्त्री अवस्था जा अपने पति का बच कर देती है,
—देवता,—देवा बहु स्त्री जा अपने पति को देवता
ममता से पतिव्रता, सती स्त्री—क पतिदेवतामय
पतिवर्धनमय—मा० ५, लमलभत पति पतिदेवताः
शिरसिप्राप्य सप्तममारा—रघु० १।१७ वृष्टि स्थिता
स्व पतिदेवतानाम्—१०।७६,—यम् अपने पति के
प्रति (पत्नी का) कर्तव्य—आत्मा यती स्त्री—लीकः
वृद्धांति जगद्भूय ही जाने के पश्चात् पति पतिव्रता
है,—कला भक्त, श्रद्धालु, पितावती स्त्री, सती स्त्री
पितृ पति के प्रति निष्ठा, स्वाभिप्राय,—सोचा पति के
प्रति गर्वित ।

पतिव्रता [पति + वृ + लब्, मुम्] अपना घर धुने के
लिए नदार स्त्री—रघु० ६।१०, ६७ ।

पतितः (पु० क० क०) [पत् + क्त] १. गिरा हुआ,
अवकट, उतरा हुआ २. नीचे गिरा हुआ ३. (नैतिक
दृष्टि से) पतित, भ्रष्ट, दुर्गचरित ४. स्वचर्चभ्रष्ट ५.
अपमानित, जानबूझकर ६. पट में हारा हुआ,
पराजित, परास्त ७. प्रत्य, फसा हुआ ऐसा कि
'अवस्थापित' में ।

पतिरः [पत् + एरच्] १. पक्षी २. छिद्र या विवर ।

पलकम् [पलति पलन्ति बना धक्कितम्, पल् + लप्] कस्मा, गगर (विप० घाम) —पलने विद्यमानेऽपि घामे रत्न परीक्षा—मालवि० १ ।

पलितः [पल् + ति] १. पैल, पैल सैनिक—रघु० ७।१७ २. पैल चलने वाला घापी ३. बीर—(स्त्री०) १. सेना का छोटे से छोटा इस्ता जिसमें एक रथ, एक हाथी, तीन बुद्धसवार और पाँच पैदल सैनिक हों २. जाने वाला, चलने वाला । सम०—कायः पैदल सेना, —यणकः सेना का अधिकारी जिसका काम पैदल सेना की गिनती करना है, —संहतिः (स्त्री०) पैदल सिपाहियों की टुकड़ी, पैदल सेना ।

पलित् (पु०) [पदगया लेटति, पाद + लिट् + क्तिन्, पदा-देशः] पैदल सिपाही ।

पल्लो [पल्लि + डीप्, लृक्] मूर्ध्वाभिमुखी, भारी । सम० —आतः रश्मिणाम् अनपुर्—सत्यहृन्तम् मर्मपत्नी का कटिमुख या कण्ठनी ।

पल्लम् [पल् + लृप्] १ (वृक्ष का) पत्ता—घने भर कुसुमयुक्तलक्ष्मीनाम्—भूमि० १।१४ २ फूल की पत्ती, कलम का पत्ता—नीलोत्पलात्रधारया—श्री० १।१७ ३ पल्लु जिसमें ऊपर लिखा काम कायज, लिखा हुआ पत्र—यजमानोप्य दीपनाम्—श्री० ६, 'पत्र पर लिख कर विक्रम० २।१४ ४ पत्र, दम्पात्रेय ५ किन्ती शत्रु का पत्ता पना, स्पर्ध-पत्र ६ पत्ती का बाजू, पत्र पर ७ बाण का पल्ल—रघु० २।३१ ८ सामान्य पत्रपरी (रथ, घोड़ा, ऊँट आदि) —दिश पण पत्रेण वेगमिच्छन्तेनुवा—रघु० १।१४८ नै० ३।१६ ९ शरीर पर (विशेष कर मूल पर) चन्दन आदि सुगन्धित द्रव्य का चेर करना स्वयं कुवयो पत्र चित्र कुदण्य कपो-लयो—गीत० १२, रघु० १।१५५ १० तलवार या शस्त्र का फल ११ बाकू, छुरी । सम०—अंगम् १ भूर्ज वृक्ष २ माल चदन—अयुष्मिः शरीर (गर्दन, मध्यक आदि) पर अयुष्मिणो से केसर मिश्रित चदन या अंग किसी सुगन्धित पदार्थ में चित्रण करना, —अञ्जनम् मसी, —आरतिः (स्त्री०) १ गेह २ पत्ती का कपार, ३. शरीर पर सजावट की दृष्टि से चदनादि से रत्नचित्रण करना, —आवली १ पत्तों की पंक्ति २—आवली (३) —आहारः गले लाकर तिवोह करना—ऊर्ध्वं बुनने वाली रेशमी वस्त्र—स्नानीयवस्त्रक्रियया पञ्चोर्ध्वं बोधयज्यते—मालवि० ५।१२, —काहुला परों की फटाहाट, पत्तों की लड़-खाहाट, —दारका आरा, —मात्रिका गले के रेशे, —वरजः स्त्री, —वाकः लंबी छुरी, बड़ा बाकू (ली) १. बाण का पंचशाखा भाग २ लंबी, —वाच्यः मन्दक का सोने का आभूषण, टीका, —धुवम् पत्तों से बना पात्र, बोना—रघु० २।१५, —जा (वा) कः चपू—जकः,

—बंभिः,—नी (स्त्री०) शरीर को बल्लकृत करने के लिए चंचल, कैहर, गहूँरी या किसी अन्य सुगन्धित द्रव्य से शरीर पर लेप करना या चित्रण करना—कस्तुरीवरपत्रयंगनिकरो मृष्टी न गहम्वले भुंगार० ७ (काचवरी में बहुलता से प्रयुक्त) —वीधकम् मया पना या कौपल, —रथः पत्ती-व्यर्थीकृत पत्ररथेन सेन—नै० ३।६, 'इन्द्रः गहड़ का नाम, 'इन्द्रकेतुः शिष्णु का नाम रघु० १।८३०,—रे (ले) छा, —बल्लरी,—बलिः,—बल्ली (वि०) दे० ऊ० 'पत्र मंग'—रघु० १।७२, १।६७, शत्रु० १।७, सि० ८। ५६, ५९,—बाण (वि०) (बाण आदि) पत्ती से युक्त, —बाहः १. पत्ती सि० १।८।७ २ बाण ३. हाकिमा, चिट्ठीयाँ, —विशोषकः चित्रकारी की रेखाएँ—दे० 'पत्रम'—कु० २।३३, रघु० ३।५५, १।२९,—वेधः एक प्रकार का कानों का आभूषण, —साकः शकबाजी जिसमें मुख्यतया से पत्तें हों,—वेधः बेल का पेड़, —वृषिः (स्त्री०) काटा,—हिचक जाड़े की शत्रु जब पात्रा या बर्त पड़े ।

पत्रकम् [पत्र + कत्] १ पत्ता २ मोन्दय बढ़ाने की दृष्टि से शरीर पर बनाई गई रेखाएँ या चित्रकारी ।

पत्रका [पत्र + जिच् + पृ + टाप्] १. मोन्दय बढ़ाने के लिए शरीर पर बनाई गई रेखाएँ और चित्रकारी २ बाण में पत्र लगाना ।

पत्रिका [पत्रो + कत्—टाप्, ह्रस्वः] १. लिखने के लिए कागज २ बिट्टी, लेख, प्रलेख ।

पत्रिन् (वि०) (स्त्री०—णी) [पत्रम् अस्त्यर्थ इति] १ पत्तों से युक्त, परों वाला—मयूर—रघु० ३।५६ २ जिसमें पत्तें या पृष्ठ हों (पु०) १ बाण—ता विमोच्य वनितावधे बुधा रत्रिणः सह मुमोच राधकः—रघु० १।१७, ३।५३, १।६१ २ पत्ती—रघु० १।२१९ ३ बाण ४ पहाड़ ५ रथ ६ वृक्ष । सम०—बाहः पत्ती ।

पल्लसः [पल् + लृप्, रस्य लः] गल्ला, मार्ग ।

पलः [पल् + क (पञ्चार्थे)] रास्ता, मार्ग, प्रसार, (समाप्त के अन्त्य में) किनारा । सम०—कल्लला जाहू के बेल, —बल्लकः मार्ग बल्लाने वाला ।

पलिकः [पलिन् + क्तन्] १ बाजी, मुसाफिर, बटोही —पलिकबलिना वेध० ८, अमक १३ २. पत्रप्रद-सेक । सम०—संभतिः,—संहतिः (स्त्री०,—साधः यात्रियों का समूह, काफला ।

पलिन् (पु०) [पल् आधारे इति] (कर्तृ० पचा, पचापी, पान, कर्म० ब० ब०—पयः करण० ब० ब०—विधिः आदि, समाप्त के अन्त्य में यद् अण्ड बल्ल कर 'पल' हो जाया है—तोषाचारपत्राः, दृष्टिपत्रः, मण्डपत्रः, सत्यपत्रः, प्रतिपत्रम् आदि) १. मार्ग, रास्ता,

पथ धेयसाधेय पंथाः—अर्त्त० २।२९, वक्रः पंथाः—
—वेध० २७ 2. यात्रा, राहगीरी या पथंन—जैसा कि 'सिवायते सत् पंथातः' में (मे आपकी सुलद यात्रा की कामना करता हू, भगवान् आपकी यात्रा सफल करें) 3. परास, पहुच जैसा कि—'कणपथ, श्रुति', और 'वर्षत' में 4. कार्यपद्धति, आचरण की रीति, व्यवहारक्रम—पथः शुद्धेर्वायितार ईश्वरा मसीमसा-मादते न पद्धतिम्—रघु० ३।४६ 5. संप्रदाय, सिद्धांत 6. नरक का प्रभाग। सम०—देयम् सार्वजनिक मार्गों पर लगाया गया राजकर,—दुयः लैर का पेड़,—प्रज्ञ (वि०) मार्गों का ज्ञानकार—बाहक (वि०) कूर (कः) 1 शिकारी, बिहोमार 2 बोझा ढोने वाला, कुली।

पथिकः [पथ + इलच्] यात्री, राहगीर, वटोही।

पथ्य (वि०) [पथिन् + यन् + इतो लोप] 1. स्वाभ्य प्रद स्वाभ्यवर्षक, कल्याणकारी, उपयोगी (औद्योगिक आहार, सम्पत्ति आदि) अभियन्तृ पथ्यम् करना श्रोता बुद्धिर्बल—गमा०, यात्र० 3।१५ पथ्यमन्त्र 2. शोष उचित, उपयुक्त—इयम् 3 स्वाभ्यवर्षक या पौष्टिक आहार जैसा कि पथ्याशो स्वामी वर्तन में 2. कल्याण, कुशलक्षेम—उत्तिलमानम्न गरी मोक्षेय पथ्यमिच्छता—शि० २।१०। सम०—अपथ्यम् उन पदार्थों का समूह जो किसी रोग में स्वाभ्यवर्षक या हानिकर समझे जाते हैं।

पथः i (कुरा० आ० पदवते) जाना हिलना—बलना।

ii (दिवा० अ० पद्यते, पथ—पेठ—पादनिर्गत, इच्छा० पितृते) 1 जाना, चलना—करना 2 पथ जाना, पहुचना (कर्म) के माध। 3 हासिल करना, प्राप्त करना, उपलब्ध करना उपस्थितमातिपथ्य च पथाय वापयन्त—महा० 4 प्राप्त करना अनुगमन करना—स्वधर्म पथमागन्ते—महा० अनु—1 पीछे चलना अनुगमन करना, सेवा करना 2 स्नेहील जाना, अनुगमन होना 3 प्रविष्ट होना, अन्दर जाना 4 अज्ञानता 5. मालूम करना, देखना, निरीक्षण करना, समझना, अभि—प्राप्त जाना, नज्दक होना, पहुचना—रावणा-बर्जा नम राषव मन्दतुग्य अभिपेदे निद्राशाली आलीख मनवदुमम्—रघु० १।३०, १९।११ 2. समि-स्मित होना—मि० ३।२५ 4. अवलोकन करना, विचार करना, ख्वाल करना, समझना—अज्ञमध्य-पद्यत जनेन मूरा मयन गमाधियन मूर्तिरिति मि० १।२७ 4. सहायता करना, मदद करना, मयाभिपल्लं तम्—महा० 5. पकड़ना, पकान करना, आक्रमण करना, दबोच लेना, अधिकार में कर लेना, दस्त करना सबैतश्चात्रिाल्लेया चार्द्राष्टी यत्तापन्, चङ्कवातानि-पल्लानामुद्वर्धनाद्विब स्वप्नः—महा०, ६० 'अभिपल्ल'

6. लेना, धारण करना—मनु० १।३ 7. स्वीकार करना, प्राप्त करना, अभ्युप—, 1. दया करना, साहदना देना, आराम पहुचाना, तरस लाना, अनुग्रह करना (कष्ट से) मुक्त करना—कु० ५।२५, ५।६१ 2. सहायता मांगना, शींगता प्रकट करना 3. रहमत होना, स्वीकृति देना आ—, 1. निकट जाना, की ओर चलना, पहुचना—अटि० १५।८९ 2. प्रविष्ट होना, (किसी स्थान या स्थिति को) चले जाना या प्राप्त करना—निर्वहमापद्यते मूच्छ० १।१४ (उत्त जाना है) आपोर्दितेऽपथ्य परित यतया—भाषि० १।१७, इसी प्रकार क्षीर दीधभावमापद्यते—दारी० 3. कष्ट फैलना, दुःखिययस्त होना—अपथ्यमा परिपथ्य यः कामसन्वर्तते, एवमापद्यतेभिप्र राजा दशरथो यथा

गमा० 4. होना, घटित होना—अटि० ६।३१, पेठ०—1. प्रकाशित करना, सामने लाना, कार्यान्वित करना, निष्पन्न करना रघु० २।१५ 2. निकालना जन्म देना, पैदा करना—पथिमातमापादयति—का० १०५ 3. घटाना, कटघटन करना, ले जाना—रघु० ५।१५ 4. बदलना 5. निक्षेपण में लाना उब्—, 1. जन्म देना, पैदा होना उद्य होना, उत्पन्न होना उगना—उत्ताभ्यवर्त्तिन मय कोशप ममानधमा—मा० १।६, मनु० १।७३ 2. होना, घटित होना—पेठ०—1. पैदा करना, पैदा करना, जन्म देना, उत्पन्न होना, कार्यान्वित करना प्रकाशन करना बह्वाभ्युत्पादयति—पथ० २ 2. सामने लाना उप—, 1. पहुचना, निकट जाना, प्राप्त जाना, पथान्ता यत्तातटमुपपेद पथ० १ 2. हासिल होना, प्राप्त होना, निष्पत्ति होना—भग० ६।३६, १३।१८ 3. होना, घटित होना, आ पटना पैदा हो जाना—दीध एवमापद्यते—गारा० १, उपपत्ता हि शारेय प्रभुता सधर्तामर्क—ज० ५।८६—रघु० १।६० 4. यज्ज होना, संभाव्य होना—मेदवरी जगत, कारण-मुपपद्यते—दारी० कु० ६।६१, ३।१२ 5. उपयुक्त होना योग्य होना, पथल होना, अनुकूल मनुष्यित—(अधि० के साथ) या कर्त्तव्य गच्छ कौत्स्य नैतस्वद्यु-पपद्यते—भग० २।३, १८।७ 6. आक्रमण करना, पेठ० 1. किसी स्थिति में लाना, पहुचाना, प्राप्त करना विव्वासासमुपादयति 2. नेतृत्व करना, ले जाना 3. नैवार होना—रघुमुपादयति—वेणी० २ 4. किसी को कोई वस्तु ब्रह्मन करना, प्रस्तुत करना, उपहार देना—रघु० १५।८, १५।३२, यात्र० १।३१५ 5. प्रकाशित करना, विषय्य करना, उपार्जन करना, कार्यान्वित करना, काय में लाना, अनुष्ठान करना यावत् मानुषके मन्त्रमुपादयितुम्—का० १२, देवकार्यमुपादयिष्यतः रघु० १।१११, १७।५५ 6. व्याख्य उद्घारना, तर्क देना, प्रकाशित करना, ब्रह्म-

कित करना 7. संपन्न करना, सुख करना, मिल—
 1. निकलना, उगना 2 पैदा होना, प्रकाशित होना, उदय होना, कार्यान्वित होना, निष्पद्यते व सत्याभि-
 मनु० १।२४३, प्रेम् ० - पैदा करना प्रकाशित करना,
 जन्म देना, कार्यान्वित करना, तैयार करना एवं
 निष्पद्येकमेव पट निष्पादयति—पञ्च० ब—, 1 (क)
 की ओर जाना पहुँचना, आश्रय लेना चले जना
 पहुँच जाना ना जन्मने शैलवत् प्रपदे कु० १।२१
 (क्षितीय) कौत्स प्रपदे वरननुशिष्य—रघु० ५।१
 भट्टि० ४।१ कि० १।२ ११।६ रघु० ८।११ (ख)
 आश्रय ग्रहण करना शरणार्थमया कथ प्रपत्ये त्वयि
 दीयमान रघु० १।६६ 2 किसी विशिष्ट प्रवस्था
 को जाना पहुँचना या किसी विशिष्ट दशा में होना—
 रघु० प्रपदे इति पक्षभाष्य रघु० १६।३० मूर्त
 कर्णपिलन प्र० क० ७।१ इन्द्रासिम्बल्या प्रभा०
 रिम हा० ५ क्षति न करेति मया प्रपदे भासि०
 ६३३ अमर ० १ प्रपन्न करना जाह लना प्रपन्न
 गर करना प्राप्त करना, दमिल करना मदकर प्र
 प्रपदे मधुपेन भव्यसम ज्ञानि भासि० १०१ गृह
 ५।१ २।१११ काश बलाघ करना वि
 प्रपद्यते तैश्च मन्त्रि० १ (वृत्त करने के द्वारा)
 कथ मुद्रा प्रपद्ये (१११) पश्यामी मयि कथ
 दत्त अमर २० ५ प्राप्त करना अनुमति देना
 महर्षि होना स्वीकार करना १०० ५।१०
 6 निकट विमर्शना ज्ञाना (मम आदि का)
 पहुँचना 7 अथ जन्मा प्रगति करना 8 प्रत्यक्षज्ञान
 प्राप्त करना प्रति 1 कदम चलना चला
 पहुँचना मगर, लना किंसा इच्छित का आश्रय
 लेना रमायुध १ प्रपन्न लोका प्रिमथा प्रीतिम
 वाता इना ह० १।४३ 2 प्रपन्न करना कदम चलना
 लेना अनुमति देना (मम आदि) इति प्रपन्न प्राति
 पद्य—१० ४ प्रातिपद्य प्रदीप १० कु० ६१०
 ३ प्राप्त करना प्राप्त करना रि० ६।६ 4
 भासित करना उपलब्ध करना प्राप्त करना भोग
 लेना हस्ता लेना म रि लयन कवला श्रिय
 प्रापदे सकलान् गुणानि रघु० ८।१ १३ ५।१
 ४४ ११।३४ १२।७ १५।५५ अम० १५।१ रि०
 १०।६३ ५ स्वीकार करना मान लेना रि०
 १५।२२, १६।२४, 6 वसूल करना, फिर प्राप्त करना,
 पुन उपलब्ध करना, ग्रहण करना हा० ५।३१ कु०
 ४।१६, ७।१२ 7 मान लेना, स्वीकार करना—न
 मां प्रतिपत्तास्ते मा वेत्यतिथि मेधिमि भट्टि०
 ८।७५, हा० ५।२२, प्रमदा पतिवर्धना इति प्रतिपत्त
 हि विद्येतेतैरपि—कु० ५।३३ 8 धारणा, ग्रहण
 करना, पकड़ना—सुवचप्रतिपत्तयमिथि—रघु० १।४।

४७ 9 विचार करना, खयाल करना, सोचना,
 अवलोकन करना—ननुप्रह्वयमेव राघव प्रत्यपन्न
 समर्थमस्तरम्—रघु० ११।३९ 10 अपने विम्वे
 लेना, करने की प्रतिज्ञा करना, हाथ में लेना निर्वाह
 प्रतिपन्नवस्तु, सनायेतदि गोश्रवणम्—मुद्रा० २।१८,
 कार्यं त्वया न प्रतिपन्नवस्तुम् कु० ३।१४, रघु०
 १०।६० 11 जानी मरना सह्यन होना स्वीकृति
 देना—नयेति प्रतिपन्नय रघु० १०।१३ 12 करना
 अनुष्ठान करना, अभ्यास करना पालन करना
 -आचार प्रतिपन्नय हा० ४ विक्रम ०, 'ओप-
 चारिक आचरि (अभिवादन आदि) का पालन कर',
 शासनमहेना प्रतिपन्नय मुद्रा० ६।१८, आशा पालन
 करा 13 व्यक्ता करना बर्ताव करना किसी का
 कोई कथ करना (मव. ७ अथि क माय) स काल
 पव-द्वयानि कि कृष्ण प्रत्यपन्न रि० ५ मवान्
 मान्तिगुहदमासु प्रतिपन्नानाम महान् कथमथ प्रति-
 ० १० ० -उत्तर १० १० १० प्रतिपन्नमाप्रनय
 पञ्च० 14 (गन्त) देना (प्रयुक्त) देना कथ
 प्रतिपन्नमपि न प्रपद्ये—मुद्रा० ६।१६ पत्यक्षज्ञान
 प्राप्त करना चतुर्कार होना 16 जानना समझना
 परिधि १० १० मायना मान्य करना 17 धमना,
 धमना 18 जाना धमना होना (प्रेम) १
 देना प्रपन्न करना प्रदान करना अभिधान करना
 ममान् करना अभ्यास प्रतिपन्नमनमनित प्राप्तानि
 वृद्धि पराम भन० २।१८ मन० ११।६ गुणवते
 करना प्रतिपन्नताया—हा० २ सिद्ध करना प्रमाणित
 करना प्रमाण देकर पक्का करना उक्तमेवार्थमुद्रा
 ११ प्रतिपन्नदीर्घ ३ १ जाना करना स्पष्ट करना
 4 लाना या वापिस मा— (किसी स्थान पर) ले
 जना ५ लाना करना विचार करना 6 उपस्थिति
 का धारणा करना पुन प्रपन्न करना 7 उपार्जन
 करना 8 कार्यान्वित करना निष्पन्न करना बि—बुरी
 तरह बिस्म होना अमर्य होना अग्रस्तय धादि)
 का विफल होना ९ दुभाग्यजन्य या दुर्दशा होना
 म बहुपुर्ण विपन्नानामापदुद्वरणक्षम—रि० १।३१
 १ विकल्पा होना अज्ञान होना 4 मरना नष्ट होना
 नाथवनस्वरा लोकस्वमनाया विपन्नमे—उत्तर०
 १।४४ मुच्छ० १।३८ ज्ञाना 1 (पत्नी पर)
 उत्तरना नोषे भावा 2 मरना नष्ट होना—दे०
 व्यापन्न—(प्रेम)—मारना, निकल करना सन्—1
 'तैयार बाल' बाहर निकलना मफल्ना होना
 करना, समूह होना, लग्न होना पूरा होना,
 — सत्यव्यते व कामोद्य क कविचरणीयव्याम्
 —कु० २।५४, रघु० १५।७९, मनु० ३।२५४, ६।६९
 2 पूरा होना, (लब्ध आदि) जुड़ कर होना

व्याहृताः पंच पंचदश संपद्यन्ते ३. दान जाना, होना संपत्त्यन्ते नभसि भवतो राजहंसाः साहायाः—येषः ११, २३, सपदे अमसिलोद्गमो विभूषणम्—किं ७।५ ४ उद्यम होना, अज्य सेना, पैदा होना ५. एक जगह पड़ना, एकत्र होना ६. सुसज्जित होना, संपन्न होना, स्वामी होना—असोक यदि सद्य एव कुसुमैर्न सपत्त्यसे—मालवि० ३।१६, दे० 'सपत्र' ७ (किसी और) प्रवृत्त होना, करवाना, पैदा करना (सप० के साथ) साधोः शिशा गुणाय मपद्यन्ते नासाधो—पंच० १, मुद्रा० ३।३२ ८ प्राप्त करना, उपलब्ध करना, अधिग्रहण करना, हर्षित करना ९ सलग्न होना, लीन होना (अभि० के साथ) —(ये०) १. करवाना, होना, पैदा करना, सम्पन्न करना पूरा करना, कार्यान्वित करना इति नवमुपनिषत्कुलपटीय मसाद्य वाणिग्रहण म राज्ञा पञ्च० ७।२९ २ उपार्जन करना, प्राप्त करना, सज्जित करना, पैदा करना अधिग्रहण करना, हर्षित करना ३ सज्जित करना, संपन्न करना युक्त करना ४ बदलना स्थानान्तरित करना ५ करार या बादा करना, संप्रति—३ की ओर जाना पहुँचना २ बिचार करना, खयाल करना—कु० ५।३० लघा १. घटित होना, होना घटना होना २ हर्षित करना, प्राप्त करना, उपलब्ध करना ।

पद् (पु०) [पद् + विष्णु] (इमं गच्छ का पहले पति वचनो में कोई कर नहीं हुआ, कर्म० हि० ४० के पञ्चात विकल्प से यह पद के स्थान में आदेश हो जाता है) १ पैर २ चरण, बीजाई भाग (किमा कविता या श्लोक का) । मम०—काशिशु (पु०) पैदल चलने वाला, —हृतिः ली (म्वा०) (पदार्थि, —ली) राजा या मार्य, बटिया (आल० भी) इय हि पद्म मित्रता वीरव्याजिपदति—उत्तर० ५।२२, पञ्च० ६।६५, ६।५५, ११।५०, कविप्रथम पद्धतिम्—१५।२३, कविता का दिखावा गया पहला मार्ग २ रक्षा, पोषण, पृथक्ता ३ उपनाम, उग्रनाम, उपाधि या विशेषण, व्यक्ति-वाचक मन्त्रा शब्दों के समाधि में प्रयुक्त होने वाला शब्द जो धर्म या व्यवसाय का बोधक हो—उदा० गृह, दाम, दान आदि ४ विवाहादि निधि को सूचित करने वाली पुस्तक,—हिमम् (पद्धिमम्) पैरो का ठाणपन ।

पदम् [पद् + जञ्] १ पैर (इमं अर्थ में पु० भी होता है) पदेन पैदल—शिवरिपु प. मस्य—पे० १३, अथय पदमर्पयति हि—पञ्च० १।७४, 'कुमारो पर कदम रक्वा'—३।५०, १२।५२, पदं हि सर्वत्र गुणैर्निधीयते—३।६२, 'मृजो के द्वारा सर्वत्र कदम रक्वा जाता है—अर्थात् मृजों की ही कद होती है, अनपदे न मरः पदमादधी—१।४ 'देस में किसी भी रोग के कदम नहीं रक्वा'

यवविषं न पदं दधाति चित्—आदि० २।१४, पदं कु (क) कश्चम रक्ता (शा०)—शांति करिष्यसि पदं पुनराश्रयेऽस्मिन्—शं० ५।२५, (स) प्रवृत्त होना, गति-कार करना, कच्चा करना, (आल०) कृतं वपुषि नव-यौवनेन पदम्—का० १३७, कृतं हि मे कुपुहनेन प्रथमावकाशाद्वा हृदि पदम्—१३३, इसी प्रकार कु० ५।२१, पञ्च० २४०, कृत्वा पदं नो गते—मुद्रा० ३।२६, 'हमारे विष्णु' (शा०)—अपना कदम हमारी गर्दन पर रखकर), अग्नि पदं कु किमो के मिर पर चढ़ना, दीन बनाना—पञ्च० १।३२३, आकृति विशेष्येष्वावरः पद करोति—मालवि० १, मुन्द्रा रूप स्थान आकृष्ट करता है (आदर प्राप्त करता है)—जने सर्वोपय कारिना—शं० ४, (मित्रता या विश्वास का) बतवि करामा गया, बनें सर्व पार्वती प्रति पद कारिते—कु० ६।१४ २ कदम पग, दग तन्वो स्थिता कतिविदेव पवारिण गत्वा शं० २।१२, पदे पदे हुर कदम पर अक्षमाला-मदपदा पदात्यदमपि न वतन्मम्—या जलितव्यम् 'पाक कदम भी भत बनो' पितु पद मध्यममुत्पत्तती विक्रम० १।१५ 'विष्णु का बिधला कदम' अर्थात् अन्तरिक्ष (वैरागिक मतानुसार पृथ्वी, अन्तरिक्ष और मानाल पर होना लाक ही ब्रह्मनाशवार (पञ्चम अन्तरिक्ष) विष्णु के तीन कदम माने जाते हैं) इसी प्रकार—अवस्थान गच्छन्तु गच्छन्तु पद विमर्शिन विगाहमान—पञ्च० १३।१ ३ पदविष्णु पद—छाप, पदाक—पद-पक्ति—शं० ३।८, या पदावली—पगछाय, पदमनु-विषेय न महत्वा—भर्तृ० २।२८, महाजनों के पदविष्णु या ही चलना चाहिये ४ चिह्न, अक्ष, छाप, निशान—निवलयपदाक्ष बागामायय कठे—कु० २।६६, मेघ० ३।५, ९५ मालवि० ३ ५ पदान, अवस्था, रिषात् तपोवत् पदम् भर्तृ० २।१० आरमा परि-अमय पदमपनीत शं० १ 'कष्ट की अवस्था तक पहुँचाया' 'नदलव्यपदं हृदिवाक्येन—पञ्च० ८।११, 'हृदय में स्थान न गया' (अर्थात् हृदय पर छाप न छोड़ी), 'अपदे शक्तिर्नास्ति—मालवि० १, 'मेरे सन्देह स्थान से बाहर थे' अर्थात् निराधार—कुशकुटुम्बेयु मन्त्रा पदमधत्त—दण० १६२, कु० ६।७२, ३।४, पञ्च० २।५० १।८२, कृतपद स्तनयुगलम्—उत्तर० १।३५, 'स्तनयुगल विकासोन्मुख वा' ६ मर्यादा, हर्जा, पद, धर्मिता या अवस्था—भगवद्गीता प्रादिकपदमध्यासित-व्यम्—मालवि० १, वान्यैव गृहिणीपदं वृषतम्—शं० ४।१८, 'पदभी को प्राप्त करता है' वचन, 'राज' आदि ७ कारण, विषय, अवसर, वस्तु, माधका या बात—व्यवहारपदं हितम्—याज्ञ० २।५, समदे की बात या अवसर, कानूनी दृष्टि से स्वाभिव्य अधिकार, अवलम्बी कार्यवाई—लता हि संदेहपदेव वस्तुपु ज्ञान-

2. पीलर, पल्ल 3. कमलों का समूह—वर्तु० २।७३,
—आत्मः जगत्स्रष्टा ब्रह्मा का विशेषण, (—या)
लक्ष्मी का विशेषण,—आत्मन् 1. कमल पीठ—कु०
७।८६, 2. एक प्रकार का यागासन—उत्कृष्ट लक्ष्मण
पुनस्तु दक्षिण पद, बायोरी स्थापयित्वा तु पदासनमिति
स्मृतम्, (मः) जगत्स्रष्टा ब्रह्मा का विशेषण,—आत्मा
लौकिक,—उद्भवः ब्रह्मा का विशेषण—करः—हस्त विष्णु का
विशेषण (रा,— स्ता) लक्ष्मी का नाम,—कलिका पद्म
का बीजकोश,—कलिका कमल का अन्तर्लिङ्ग कूच, कली,
—केशरः—कम् कमलकूल का रेशा—कोशः,—कोवः
1 कमल का सपुट 2 सपुटित कमल के आकार की
उँगलियों की एक मट्ठा—बन्धु—बन्धु कर्मणो
का समूह,—बन्ध,—बन्ध (वि०) कमल की गंधवाला
या कमल की मी गंधवाला,—गन्ध 1 ब्रह्मा का
विशेषण 2 विष्णु का विशेषण 3 सूर्य का विशेषण,
—गुणा—गुहा घन की देवी लक्ष्मी का विशेषण
—जः,—जात,—भयः,—भूः—योगि,—संभव, कमल
से उत्पन्न ब्रह्मा के विशेषण, तनु कमल का रेंगेदार
हठल—नाभः,—भि विष्णु का विशेषण,—नालम्
कमल का हठल—पार्श्व 1 ब्रह्मा का विशेषण
2 विष्णु का विशेषण,—पुच्छ कर्णिकार का पीछा
—बन्धः एक प्रकार की कृत्रिम रचना जिसमें शब्दों को
कमल-कूल के रूप में अवस्थित किया हो—दे० काश्य०
९—बन्धः 1 मूर्ति 2 मनुष्यवत्,—राजः,—राम् माल
मालिनीय, रघु० १३।१३ १।३।३ कु० ३।५३,—रेखा
हृदयो में (कमल-कूल के आकार की) रेखायें जो
अपन घनवान् होंत का लक्षण हैं,—लोछन 1 ब्रह्मा
का विशेषण 2 कुंजर का विशेषण 3 सूर्य और
4 राजा का विशेषण (मा) 1 घन की देवी लक्ष्मी
का विशेषण 2 मा विद्या की देवी सरस्वती का
विशेषण—वाता लक्ष्मी का विशेषण ।

पद्मकम् [पद्म + कम्] 1 कमलकूल के आकार की अङ्ग-
रचना में स्थित घना 2 हाथी की सूँठ और चेतने पर
रगीन स्थान 3 बैठने की विशेष मूर्ति ।

पद्मकिम् (पु०) [पद्मक + इति] 1 हाथी 2 मोमरज
का बंध ।

पद्माक्षी [पद्म + मनुष्य, वरुण, दीर्घाक्ष] 1. कर्मी का
विशेषण 2. एक नदी का नाम—मा० १।१ ।

पद्मिन् (वि०) [पद्म + इति] 1 कमल रखने वाला
2 वितकबरा (पु०) हाथी—नी 1. कमल का पीछा
—सुरगज इव बिभ्रत् पाँधी दलकनाम्—कु० ३।
७६, रघु० १६।८८, मेघ० ३३, मालवि० २।१३
2. कमलकुर्मी का समूह 3. सरोवर वा झील जिसमें
कमल उगते हुए हों 4. कमल का रेंगेदार हठल
5. हथिनी 6. रतिराज्य के लेखकों ने किशोरों के चार

नेव किये हैं उसमें प्रथम प्रकार की स्त्री, इनका लक्षण
रतिमंजरी में इस प्रकार दिया है—मवति कमलनेत्रा
मासिकाभ्रदंष्ट्रा अचिरलकुचयुगा चाकैशी कृपांती
मुदुवचनमुषोला गीतवाद्यानुरक्ता सकलतनुमुनेषा
पाँधी पद्मिनी ।

पद्मेशवः [पद्मे जेत—शो + अच्, अलु० सं०] विष्णु का
विशेषण ।

पद्म (वि०) [पद् + यत्] 1. पद या चक्रियों वाला
2. चरण या पद की मापने वाला,—छा 1 मूह
2 शब्द का एक भाग,—छा पद्मट्टी, पद्म, बटिया,
—छम् (चार चरणों में युक्त) श्लोक, कविता
—मदीमपद्यरत्नता मन्त्रपैषा मया कृता—भार्ग०
१।४५, पद्म चतुष्पदी तत्त्व इत ज्ञानिगिति द्विधा
—छ० २ 2 प्रथमा स्मृति ।

पद्म [पदनेर्ग्रन्थ पद + रक्] गवि ।

पद्म [पद् + लृत्] 1 अन्तर्गम्य लोका 2 रघु 3 भार्गव ।

पद्म (स्त्री० उभ०)—पद्मागति—ने पद्मागति या पद्मिनी
प्रथमा कर्मा स्मृति करना—पु० पद्म ।

पद्मस्य [पद्माध्यने स्मृत्यनेने इव—पद्म + अच्] 1. ३२
हज का बंध 2. कोटा,—सम्पत्तल रात्रेय ।

पद्मक (वि०) [पद्मि जात—पद्मिन् + क्त पद्मप्रेषण]
भार्गव में उपपन्न ।

पद्म [पद् + कम्] [पद् + कम्] 1. गिरा हुआ हुआ
हुआ नीचे गया हुआ, सन्तर्पित 2. बसा हुआ,—दे०
पद्म । सम०—माः माप, मयः—विपकन पद्मग
कृष्ण कुन्त—श० ६।३० (—सम्मा माया, अरिः,
—अग्रजः, मायाजः मयः क विशेषण ।

पद्मि [पद्मनामक—विभक्ति वा, पा + क्ति, द्विवच]
चन्द्रमा ।

पद्मि [पा + क्ति द्विवच] 1. चन्द्रमा 2. सूर्य ।

पद्मि (वि०) [पा + क्ति, द्विवच] पादन-पापण करने
वाला, रक्षा करने वाला,—पु (स्त्री०) पात्री माता,
प्रतिपालिका ।

पद्मा [पार्ति रक्षति, महरयोदीन्—पा० द्विवच मृदागमश्च,
नि०] दरकार्थ्य का एक सरोवर—इद च पद्माविधान
मर—उप० १, रघु० १३।३०, भट्टि० ३।३३
2. भाग्य के दिशान में एक नदी का नाम ।

पद्म (पु०) [पद् + अमुन्, बी + अमुन्, इकारादेशच]
1 पात्री 2 दूध पय पान भुजगना केवल विपचर्षणम्
—हि० ३।४, रघु० २।३६, ६३, १५।७८, (बही दीना
जय अभिप्रेत है) 3. सीधे (हृष्ट बली में पूर्व पयम्
को बदल कर पयो) हो जाता है । सम०—मलः,
—हः 1 ओला 2 टापु,—जलम् ओला,—अक्षः जलापय
या सरोवर,—अम्बु (पु०) बायल—हः बायल
—मेघ० ७, रघु० १५।३७,—मुह्य (पु०) यो

—अरः १. बादल २. स्त्री की छाती—पद्मयोधरतटी
—गोन० १. बिप्लवभिमलिनतया पयोधर—कि०
४१२८, (यहाँ शब्द का अर्थ 'बादल' भी है)—रघु०
१४१२३ ३ ऐन औठी—रघु० २०३ ४ नागयल का
पेठ ५. गेड़ की हड्डी—धनु (पु०) १ समुद्र
२. ताताब, मरोवर, जलाशय,—चि०—निचः समुद्र,
कनु० २०३, मै० ४१५०,—बुध (पु०) बादल—रघु०
३१३, ६१५,—बाहू बादल,—रघु० ११३६, ।

पयोस्य (वि०) [पयो विकार पयस इदं वा-पयम्
+यन्] १ दूध से एक, दूध से बना हुआ २ पानों
से एक,—स्यः बिल्ली,—स्या रही ।

पयोस्थल (वि०) [पयः +ल्लभ्] दूध से भरा हुआ,
पयोष्ठ दूध देने वाला कः बकरा ।

पयोस्थिन् (वि०) [पयः +स्थिन्] दूधिया, जल से एक,
जी १ दूध देने वाली गाय रघु० २०३१ ४६६,
२ नदी ३ बहरी नौ गान् ।

पयोधिकम् [पयोधि +कम्] समदशाया ।

पयोधरी (स्त्री०) विष्णुपदों से निकलने वाली एक नदी
(कृष्ण विद्वान् इसे वर्तमान 'पान्ना' मानते हैं परन्तु
पान्ना की एक महाप्रायः नदी 'पुर्णी' है जिसकी
'पयोधरी' के साथ अभिन्नता अधिक स्पष्ट प्रतीत
होती है) ।

पर (वि०) [पू० +रा कर्त्तरि प्रच वा । (उब्र मापेय
स्थितिं बलादई स्यात्) है इस शब्द के रूप विकल्प से
कान्० मबो० अन्० और अर्थ० में सर्वनाम की
भाति होती है । १ दूसरा भिन्न अर्थ दे० पर
पु० भी २. दूरस्थित रहता हुआ, दूर का ३ परे,
आगे के दूसरे और प्रकटस्थान पर—मनु०
२१२३, ७१५५, ४ आद का पीछे का, आगे का
(अथ अपा० के साथ) वायव्यपार्ष्णिक दश मदनो
पञ्चमाम्—रघु० ५१६३ कु० १३२१ ५ उच्चतर
श्रेष्ठ, भिन्नतावादवि परा प्रदेये परमाणुताम् रघु०
१५१०२, इन्द्रियाणि पराण्याह—रिन्द्रियेण पर मन,
मनस्तनु परा बुद्धिर्बो बुद्धे परतस्तु म—अन० २१४३
६. उच्चतर, महत्तर, पूज्यतर, प्रभूत, मुख्य, सर्वोत्तम,
प्रधान—न तथा दृष्टव्यता पर दृष्टम्—अ० २,
कि० ५१२८ ७. (समाप्त में) आगे का वर्ण या ध्वनि
रखने वाला, पीछे का ८ विदेशी, अपरिचित अज-
नबी ९ विरोधी शत्रुतापूर्ण, प्रतिकूल १० अधिक,
अतिरिक्त, बड़ा हुआ—जैसा कि पर शतम्—एक
सी से अधिक ११ अन्तिम, आखीर का १२ (समाप्त
के अन्त में) किसी वस्तु को उच्चतर पदार्थ समझने
वाला, लोग, तुला हुआ, अतः प्राप्त, पूर्णतः सत्य
—परिचर्यापर—रघु० ११११, इसी प्रकार 'पञ्चानर'
लोकार, दैवपर, चित्तापर आदि—रः १ दूसरा,

व्यक्ति, अपरिचित, विदेशी (इस अर्थ में बहुधा ब०
ब०) यत् परेषा मृगघ्नोतामि—भासि० ११९, मि०
२०१७४, दे० 'एक' 'अन्य' भी २ गन्त, दृष्ट्यन्त, रिपु
उत्तिष्ठमानस्य परो नोपेक्ष्य पर्यामिच्छता—मि० २१
१, पञ्च० २१५८, रघु० ३१२१,—रम् उच्चतर
स्वर या बिन्दु, चरम बिन्दु २ परमात्म ३. मोक्ष
विशेष—वर्म०, करण०, और अधि० के एक
वचन के 'पर' शब्द के रूप किया विशेषण की भांति
प्रयुक्त किये जाने हैं—अर्थात् (क) परम् १. परे,
अधिक में से (अप०), वर्तमान परम्—रघु० १११७,
२ के पदवाच (अप०) अस्मात् पर—अ० ४११६,
तत् परम् ३ उस पर उसके बाद ४ परन्तु, क्योंकि
५ अन्वयात् ६ ऊँची मात्रा से, अधिकता के साथ,
अप्यधिक पूर्ण तरह से, सर्वथा पर दुस्मितादिभि
—अदि ७ अन्वय (व्य) परेषा आगे, परे अपेक्षा-
रूप अधिक बिना दूसरे परेण विधास्यति—मा०
५१२ २ इसके पदवात् अर्थान् कृतनिधाने कि विद-
द्या परेषा मयातो २१६९ ३ के बाद (अप० के
साथ) स्तर परागमने—उत्तर० २०३ (ग) परे
१ बाद में उसके पश्चात्—अथ ये दग्धाह्नये
—रघु० ८७३ २ अधिक से। मम०—अप०
शरीर का पिच्छला अंगः शिब का विशेषण, अन्नः
अन्न वा पण्या के देशों में पाया जाने वाला घोडा,
—अथोत्त (वि०) पराधीन पराधीन, परबल, मनु०
१०१५६५३,—अन्ता, '० ब० ब०) एक राधु का
नाम,—अतः शिब का विशेषण—अन्न
(वि०) दूसरे के भोजन पर निर्वाह करने वाला (बन्धु)
दूसरे का भोजन परिबुद्धता दूसरा के भोजन से
पालन-पोषण याज० ३१२६१ भोजिन् (वि०)
दूसरे के भोजन पर निर्वाह करने वाला
हि० १११२९, अपर (वि०) १. दूर और किकट,
दूर और समीप २. पूर्ववर्ती और पश्चवर्ती ३ पहले
और बाद में पहले और पीछे ४. ऊँचा और नीचा,
सबसे उत्तम और सबसे खराब—(रम्) (उक्त० में)
महत्तर और लघुतर मन्वाओ के बीच को वस्तु,
जाति (जो श्रेणी और व्यक्ति दोनों के मध्य विद्यमान
हो),—अधुतम् वृष्टि, अध्वन (अध्वन) (वि०)
१. अनुरक्त, जक्त समक २. आश्रित, वशीकृत
३. तुला हुआ, अनन्यभक्त, सर्वथा तीन (समाप्त
के अन्त में)—प्रभुर्बन्धनपरायण—मनु० २१५६, इसी
प्रकार—सोक० कु० ५११, अनिहोत्र आदि—(अम्)
प्रधान या चरम उद्देश्य, मुख्य ध्येय, सर्वोत्तम या
अन्तिम महाराग,—अर्थ (वि०) दूसरा ही उद्देश्य या
अर्थ रखने वाला २. दूसरे के लिए अभिप्रेत, अन्य
के लिए किया हुआ—(वै०) १. सर्वोच्च हित या

प्राप्त होना २. (मिथित वस्तुओं की) वस्ति, झटार, सबहु समूह-तोयातार्त्तस्करालीव रजे मुनि परपरमा-कु० ६१४९, रघु० ६१५, ३५, ४०, १२१५०
३ प्रवाली, कम, मुख्यवस्था ४ बग, कुटुब, कुल ५ जति, पोट, मार डालना ।

परंपरा (वि०) [परंपरा कावेत प्रकाशने कं + क]
यज्ञ में पशु का बध करना ।

परंपरीय (वि०) [परंपर + य] उत्तराधिकार में प्राप्त आनुवंशिक - कर्मों परंपरीयों स्व पुत्रपौत्रीयता नय-महि० ५११५ २ परंपराप्राप्त ।

परम्पु (वि०) [पर + मत्पु मत्पु व] १ पराधीन दूसरे के बल में, बाजापालन के लिए तत्पर—सा बाला परवतीति में विदितम्—अ० ३१२ भगवत्परवानय जन—रघु० ८८१, २०६, (प्रायः कारण) या अधि० के साथ) भावा यदित्य परवानसि त्व रघु० १५५९ २ शक्ति से बधित, निशक्त परवानिव जरीरोपतायेन—मा० ३ ३. पूर्णरूप से (दूसरे के) अधीन ३ स्वयं अपना स्वामी न हो, विजित, पराभूत—विस्मयेन परवानसि—उत्तर० ५ आनयेन परवानसि—उत्तर० ३, साध्वसेन—मा० ६ ।

परवत्ता [परवत् + तत् + टाप्] दूसरे की अधीनता पराधीनता, विक्रम० ५११३ ।

परकः [पर्याप्त इति पूर्वो०] पारमर्शज, नर्मक स्पर्श से, कहा जात है कि कोहा यदि दूसरी बात जाना बन जाती है, समस्त ५० वार्षिकों का पारमर्शक है ।

परकुः [पर भुजति—भृ + कु कृष्ण] कुहाड़ा, कुहाड़ी कुठार करना—सक्ति परकुषारवा नम—रघु० ११। ७८ २. छल, हथियार ३. बक । सम०—वर १. परशुराम का विशेषण २ ५. भेष की उपाधि ३. कुठारचारी संज्ञिक,—राम 'कुठारचारी राम' एक विश्वास बाहुकबोद्धा जो जमदग्नि का पुत्र और विष्णु का छोटा भक्तार था (इसने अपनी वात्स्यावस्था में ही अपने पिता की आज्ञा से जब कि उसके भाइयों में से कोई भी तैयार न हुआ, अपनी माता रेणुक का शिर काट डाला—दे० जमदग्नि । इसके पश्चात् ५ बार राधा कार्तवीर्य, जमदग्नि के भाग्य में जावे और उसकी भी की बौद्धिक के नवे । परन्तु वर जाने वर विश्व समय परशुराम की कला कम तो वह कार्तवीर्य से कहा और उसे मयबोध पहुँचा दिया । जब कार्तवीर्य के पुत्रों ने गुना गां वह बड़े क्रुद्ध हुए—कर्मः के आश्रम में जावे और जमदग्नि को अकेला पाकर उसे मार डाला । जब परशुराम—जो कि इस घटना के समय आश्रम में नहीं था, काचित आया, तो अपने पिता के बध का समाचार

सुन जायत क्षुब्ध हुआ, उसी समय उसने समस्त क्षत्रिय जाति का उन्मूलन करने की भीषण प्रतिज्ञा की । वह अपनी इस प्रतिज्ञा को पूरा करने में सफल हुआ, करते हैं कि उसने म पृथ्वी को इक्कीस बार क्षत्रिय जाति से मुक्त २१ । वह क्षत्रिय जाति का नाशकर्ता बाध म २२ बार के पुत्र राम क द्वारा जब कि वह केवल सोलह ही वर्ष के थे (दे० रघु० ११। ६८, ११) परास्त किया गया । कहते हैं कि कानिकेय की शक्ति में ईर्ष्या होने के कारण उसने क्रीच तर्त को भी एक बार तीरो से बीच दिया—तु० मेघ० ५७ सात चिरजीवियों में इनकी भी गिनती है, बिचाम किया जाता है कि परशुराम अब भी महेंद्र-पर्वत पर बैठ तपस्या कर रहे हैं—तु० गीत० १ क्षत्रियवधिरमये जमदग्निपताप म्परमि परमि भवित-भवतापम्, केसव भूतभृगुपातकप जय त्रयोदश हरे ॥

परश्व (श्व) व । पर + श्व + ड पर + व तदधाति—धा + क नि० तास्य सम्बन्ध, कृतादी, कुठार, परसा * , सिता रामपराश्वय मनाकयन्तुत्पल-परमागम—रघु० ६१४-१ ।

परस् [अर्थ०] [पर + अभि] (श्रेष्ठ्य मात्रत म इसका स्तम्भ प्रयोग विरल है) १ पर, आगे और भी २ इसके दूसरी ओर ३ दूर दूरी पर ४ अग्राद क । मे । सम० कृष्ण (वि०) अत्यन्त काला,—पुरुष (वि०) मनुष्य से लबा या ऊँचा—इत (वि०) तो से अधिक—कि० १३१२६ शि० १०५०,—बन्धु (अर्थ०) ब्राह्मण पक्षों सहज (वि०) एक हजार में अधिक—पर सहजा नरदस्तापामि तपसा—उत्तर० १११५, पर सहर्ष विचारं—महावी० ५११७ ।

परस्तात् (अर्थ०) [पर + अस्ताति] १ परे, के हुन, और, और जाने (सब) के साथ)—आदिपु ५ तमस परस्तात्—मग० ८१९ २ इसके पश्चात्, बाद बाद में ३ अपेक्षाकृत ऊँचा ।

परस्पर (वि०) [पर पर इति विग्रहे समासपदान्ते पूर्व-परस्व तु] आपस में—परस्परा विस्मयवन्ति लक्ष्मी-मात्रोक्त्याचकुरिवादेन—महि० २१५, (हर्ष० वि०) अयोध्या, एक दूसरा (केवल २० व०, में प्रयुक्त—प्रायः समास में) परस्परस्वोपरि परस्वीयत्—रघु० ३१२५, ७११५, अविज्ञातपरस्परं अपकर्ष—१७५१, परस्परानिवायवयम्—११५०, ३१२५, शिबो 'एक दूसरे के विरुद्ध' 'आपस में' 'एक दूसरे से' 'एक दूसरे के द्वारा' 'दोहरे के रूप में' 'आपस में' 'आदि जनों की प्रकट करने के लिए इस शब्द के कर्म० करण० और अपा० के एक वचन के रूप कियाविशेषण भी गति प्रयुक्त होते हैं—दे० मग० ३१११, १०१९ रघु० ४१७९, ६१४९, ७११७, ५१, १२१४ ।

परस्त्रीकम्, परस्त्रीभाषा [परस्त्री परार्थ परं भाषा वा]
दूसरे के लिए प्रयुक्त वाक्य, किया के दो कर्त्तों में से
(परस्त्री तथा आत्मने) एक जिसमें कि संस्कृत की
वातुओं के रूप चलते हैं ।

परा (अर्थ०) [पृ + क् + टाप्] 'परा' 'पीछे' 'उपे' क्रम
से 'एक ओर' 'की ओर' अर्थों को प्रकट करने के
लिए धातु या सज्ञा से पूर्व लगने वाला उपसर्ग ।
यन्० के अनुसार 'परा' के अर्थ निम्नलिखित हैं
—1. पार भङ्गना, बाधात करना आदि (पराहत)
2 जाना (परामत) 3 देखना, सामना करना (परा-
वृष्ट) 4 पराक्रम (पराक्रान्त) 5 की ओर निवेष्ट,
(परावृत्त) 6 अर्थिक्य (पराशित) 7 पराधीनता
(पराधीन) 8 उद्धार, मुक्ति (परावृत्त) 9 प्रतीयक्य
पीछे की ओर (परावृत्त) 10 एक ओर रख देना,
अवहेलना करना ।

परास्त्रकम् [परा + कृ + स्वट्] एक ओर रख देने की
क्रिया अस्वीकार करना, अवहेलना करना, तिरस्कृत
करना ।

पराक्रमः [परा + कम् + कञ्] 1 सूरवीरता, बहादुरी,
साहस, क्षीरं पराक्रम परिमये-सि० २।४४ 2 विरोधी
अतिपात करना, आक्रमण करना 3 प्रयत्न, वीर्य,
उद्योग 4 विष्णु का नाम ।

परातः [परा + तम् + ठ] 1 कुम्भराज, - स्फुटपरागप-
रागतपदकम् - सि० ६।२, अपर ५४ 2 वृत्ति-रम्०
४।३० 3 स्नान के पश्चात् सेवन किया जाने वाला
सुगन्धि चर्च 4 चन्दन 5 सुगंध या चन्दन का ग्रहण
6 वध प्रसिद्धि 7 स्वाधीनता ।

परात्मकः [परात् प्रचुरस्त्रीर वाति प्राप्तिर्वा - वा + क]
सम्बन्ध ।

परा(र्ग)त् (वि०) (स्त्री० स्त्री) [परा + क् +
+ क्तिन्] 1. परे या दूसरी ओर स्थित, से चामुष्मा-
त्परांशो जीवाः का० 2. मूह मोह कर (परावृत्त)
सि० १८।१८ 3 जो अनुकूल न हो, प्रतिपक्ष-ईवे
पराधि भावि १।१५ का-ईवे परावृत्तवातिनि
हो जाते-१।, 4 दूरस्थ 5 बाहरकी ओर निवेष्टित।
अतः-नुक (वि०) (परावृत्तकीर्तनानुमेतुमकाः
कतत्परे - रम्० १९।१८, अमर ९० अनु० २।१५५,
१०।११९ 2. (क) विमुख, उलट-मल्लं केवलं
स्वत्वा विवोऽप्राप्तित् परावृत्तम् - रम्० १२।११,
(ख) उदासीन, कतराने वाला, टालने वाला
—अनुपपरावृत्तको भाव - विक्रम० ४२०, क०
५।२८ 3 प्रातकम्, अनुकूल, अनुपपि न ते दोषोऽ-
स्माकं विविस्तु परावृत्तम् - अमर २७ 1. उपेक्षा
करने वाला - मर्यदवात्परावृत्तम् - रम्० १०।४३।
पराधीन (वि०) [परा + क] विकट विवा २ मृदा

हुम, विमुख 2 परावृत्त, अर्थात् अपने पास 3.
पर, उह न करने वाला, उपेक्षा करने वाला 4. पर
में होने वाला, उत्तरकावय 5. दूसरी ओर स्थित,
परे होने वाला ।

परावृत्तः [परा + वि + क्] 1. परावृत्त करना, विमुख,
बीतर अर्थात् करण, हार-रम्० ११।१९, अनु०
७।१९, 2. परावृत्त होना, सहन करने के योग्य न
होना (अपरा के साथ) अर्थव्यवस्थापकः 3. हारना,
हार, असफलता (नुकदमे वाहि में) अर्थव्यवस्थापिको
(साहित्य) अर्थ व्यवस्थापक परावृत्तः - वाङ्म० २।७९
4. परावृत्त, अर्थव्यवस्था 5 परित्याग ।

पराशित (मू० क० क०) [परा + शि + क्त] बीता
हुआ, वध में किया हुआ, हुआ हुआ ? कानून
द्वारा रक्षित, (नुकदमे में) हारा हुआ, पकड़ा हुआ ।

परावृत्त (न) सा [परा + क् + क्त] + अक्ष + टाप्] मोह-
योग चिकित्सा, वैद्य, हकीम या डाक्टर द्वारा इलाज,
वैद्य का व्यवसाय ।

परावृत्त [परा + क् + क्त] 1 (क) हार, असफलता,
परावृत्त-परावृत्तप्रवृत्त एक मानिना-कि० १।५९
(ख) मानमय, मानमर्दन, प्रतिपक्षमय - कुबेरस्य
यन सस्य सस्यीक परावृत्तम् - कु० २।२२, उप
पदपल्लववैरिपरावृत्तमिवमनु भवतु कुबेरम् - वीर०
१२ 2. मृदा, अवहेलना तिरस्कार 3 विनाश 4
लाप, विमोह (कभी-कभी 'परावृत्त' की लिखा
जाता है) ।

परावृत्तिः (स्त्री०) [परा + क् + क्त] १० 'परावृत्त' ।

परावृत्तः [परा + क् + क्त] 1. एकदं देना, बीकना
- देना कि 'केवलपरावृत्त' में 2. मृदा या (अनुप-
का तानना 3. विहा, आक्रमण, हुला - वाङ्मयः
परावृत्तः - महा० 4. भाषा विष्म - तनः परावृत्ति-
वृद्धमन्त्रो - कु० १।७१ 5. व्याप करना, अवलम्बन
6. विचार, विमर्श, चिन्तन 7. निर्णय 8. (उपेक्षा में)
पटाना, निश्चय करना कि अपना पक्ष वा विपक्ष छे-
दक है - आपतिविधि विष्म - वाङ्मयः परावृत्तः - उपेक्षा
वा - आपत्तक पक्षधर चर्चाः परावृत्तः कल्पते
भाषा० १९ ।

परावृत्त (मू० क० क०) [परा + क् + क्त] 1. मृदा
वधा, हाथ लगाया गया, उपेक्षा वधा, पकड़ा गया
2. मृदा अवलम्बन किया गया, पूर्णवृत्त किया गया
3. लोका गया, विचार किया गया, कृता गया 4.
सहन किया गया 5. उपेक्षा 6. (उपेक्षा में) अतः-ई०
परा पूर्वक 'मृदा' ।

परावृत्ति (अर्थ०) [पूर्वतरे वालने इत्यर्थे परमावृत्तः वाहि च
अवतरे] परितः वर्ष में, निपतर्क में, परिवार का
परावृत्त ई० पर (परा + क्त) के नीचे ।

बद्ध करना—प्रा० ३।१५ ३. बुझाना, सम्पन्न करना
४ वितरण करना ।

परिशीलितः [परि + शिल् + क्त] धर्म परामर्श साधु या
सन्ध्यासी, शक्त ।

परिशील्य (भू० क० क०) [परि + शिल् + क्त] १ फैलाया
हुआ, प्रसृत, इसर उधर बनेरा हुआ २. बिगड़ हुआ,
बीकबिकका स युक्त, भरा हुआ—प्रि० १६:१०,
२५० ८।४५ ।

परिकूटम् [प्रा० सं०] खरोश, प्राह, नगर के फाटक के
सामने की सड़ ।

परिकोषः [परि + कुप् + घञ्] अमर्य वाय, भोजनता ।

परिष्कृतः [परि + कृ + घञ्] १ इसर उधर भ्रमण
करना, दमस्तन घुमना—वि० १०:५ २ भ्रमण
धूमना रहना ३ प्रदक्षिणा करना ४ इच्छानुसार
महलना ५ मिश्रितना क्रम ६ तबाहीना रमणमर
७ घुमना । भय० सह बरती

परिष्कारः—कर्मकम् [परि + की + क्त + क्त्वा] १
सबूरी, भाषा २ सबूरी र कर्म से समाना ३
मान फेना, बर्गद डालना ४ विनिमय अरल-बदल
५ कपाह देकर की गई लक्ष मु० हि० ६।१२० ।

परिष्कृत्य [परि + कृत्य प्रा० सं०] १ बाह्र लगाया
बारों और बाई बादना २ घेरना ३ (नाट्य० में)
परिकर (३) ।

परिक्लृप्तः (भू० क० क०) [परि + क्लृप् + क्त] मर
हुआ परिष्कृत, उकताया हुआ ।

परिक्लृप्तः [परि + क्लृप् + क्त] गीतपन, नदी, झाड़ता ।

परिक्लृप्तः [परि + क्लृप् + क्त] कठिनाई बकाबट
कष्ट ।

परिक्लृप्तः [परि + क्लृप् + क्त] १. ज्ञान, बर्गदी, विनाश
परिक्लृप्ति अधिकतर रमणीय भूच्छ० १, वि. क-
ड० ८।४६ २. अन्तर्धान होना समाप्त होना
३. बर्गदी, नाश अपकलाह वि० १६।५७ मन्०
९।५९ ।

परिक्लृप्तः [परि + क्लृप् + क्त] कृष, शीत
हुना ।

परिक्लृप्तः [परि + क्लृप् + क्त] १ शीत
भाषना २. धाने के लिए पानी ।

परिक्लृप्तः (भू० क० क०) [परि + क्लृप् + क्त] १. बनेरा
हुआ, प्रसृत २. परिवेष्टित घेरा हुआ बरमपरि-
क्षितने मरने का ३. कु० १।३८ । भाई से घेरा
हुआ ४. ऊपर से फैलाया हुआ ऊपर डाला हुआ
५. छाड़ा हुआ, परिवेष्टित ।

परिक्लृप्तः (भू० क० क०) [परि + क्लृप् + क्त] १. अन्तर्हित,
कूट, २. बर्गद हुआ, झालित ३. कृष, चित्त हुआ,
थका हुआ ४. परिहृ किया हुआ, लपका बर्गद किया

हुआ भय० २।४५ ५. लोका हुआ, नाश किया
हुआ ६. कर्म किया हुआ बटाया हुआ ७. (कानून
में) दिवालिवा ।

परिक्लृप्तः [परि + क्लृप् + क्त] क्त, नश्य लोप] विष्कृत
नये में चूर ।

परिक्लृप्तः [परि + क्लृप् + क्त] १. इसर उधर
टहलना २. बनेरा फेलाता ३. बरना, परिवेष्टित,
बारों और बहना ४ घरे की सीमा, हृद जिससे कोई
बीह घेरी जाय रघु० १०।६६ ।

परिक्लृप्तः [परि + क्लृप् + क्त] १. प्रतिकूप, काई,
नगर या किने के चारों ओर बनी नाली या खात—
रघु० १।३०, १५।६६ ।

परिक्लृप्तः [परि + क्लृप् + क्त] १. प्रतिकूप, काई २. लीक,
सड़ ३. चारों ओर से आवरना ।

परिक्लृप्तः [परि + क्लृप् + क्त] १. बकाबट परिष्कारित,
बकाबट कु० १।५०, मन्० १।२३ ।

परिक्लृप्तः [परि + क्लृप् + क्त] १. परि + क्लृप् + क्त] यम प्रतिज्ञा
परिक्लृप्तः—ना [परि + क्लृप् + क्त] युष् विनो लही
बनत या हिसाब अधीभूना परिष्कृतना विनिष्कृतो
बनाका मर (मन्त्रि० इसको लेक समझते हैं) ।

परिक्लृप्तः (भू० क० क०) [परि + क्लृप् + क्त] १. घेरा हुआ,
अवेष्टित, बहना बनाया हुआ २. प्रसृत, चारों ओर
फैलाया हुआ ३. ज्ञान, समझा हुआ रघु० ३।३१
परिक्लृप्तः परिक्लृप्तः एव बवान् बनी ३. मन्त्रावी
३।४३ ४. बरा हुआ, डका हुआ, सम्पन्न (प्राय
समान्य में) वि० १।२६ ५. प्राप्ति, प्राप्ति भय०
३।५० ६. बाद किया हुआ

परिक्लृप्तः (भू० क० क०) [परि + क्लृप् + क्त] १. हुआ
हुआ २. उभारा हुआ ३. लुप्त ४. पिचला हुआ
५. बहना हुआ ।

परिक्लृप्तः [परि + क्लृप् + क्त] भारी बलक ।

परिक्लृप्तः (भू० क० क०) [परि + क्लृप् + क्त] १. विष्कृत
गुप्त २. बकाबट, जो समझने में अन्वय कठिन हो ।

परिक्लृप्तः (भू० क० क०) [परि + क्लृप् + क्त] १. अप-
नाया हुआ पकड़ा हुआ, डाल किया हुआ २. जालि-
मन किया हुआ घेरा हुआ ३. स्वीकार किया हुआ,
लिया हुआ ज्ञान किया हुआ ४. हावी बरा हुआ,
स्वीकृत किया हुआ, जाना हुआ ५. बर्गद दिया
हुआ, अनुग्रह किया हुआ ६. अन्वयण किया हुआ,
जाना जाना हुआ ७. विरोध दि. १. हुआ ८. परि-
पूर्वक 'बह' ।

परिक्लृप्तः [परि + क्लृप् + क्त] दिवाहिता स्त्री ।

परिक्लृप्तः [परि + क्लृप् + क्त] १. पकड़ना, बाधना, लेना,
बद्ध करना, आवरणम् परिक्लृप्तः रघु० १।४६,
लका परिक्लृप्तः भू० १, लका करना २. घेरना,

कन्य करना, चारों ओर से घेरा हालना, बांध बनाना
3 पकनना, (बेधभूषा की भाँति) लपेटना शीघ्रि-
परिवह - रघु० ८।३८ ४ चारण करना लेना—
मानपरिवह—अथ० १२, विवाह० श्री उत्तर० ४
5. प्राप्त करना लेना स्वीकार करना, अमीवार
करना—श्रीमो मुने स्वानपरिवहोऽयम्—रघु० १३।
३६, अर्थपरिवहोते ७० १२।१६, कु० ६।५३
विवाहपरिवह—मा० १ इसी प्रकार आसनपार-
वह करोतु देव उत्तर० ३ आसन-वहण कीजिए
महाराजा, बराज 6 बीच सपति सामान व्यक्त
सर्वपरिवह—अथ० ६।२१ रघु० १५।१५, विक्रम०
४।२६ 7 आवाह विवाह नवे शरपरिवह
उत्तर० १।१२—मा० ५।२७ स० १।२२ 8 पत्नी
रानी—प्रवतपा. ५२—रघु० १।५५ ९२
९।१६, ११।३३, १५।८, स० ५।२७ ३०, परिवह
वहोतेपि—स० ३।२१ 9 अपने रखने में लेना,
अनुवह करना—उत्तर० ७।११, भागवि० १।१३
10 अनुचर, अनुसेवी, नीकर-वाकर, परिव्रज सेवक
अनुवह 11 गृहस्थ, परिवार, परिवार के सदस्य
12 राधा का अन्तपुर, रजिवात 13. जह मू।
14. सूर्य या चन्द्रमा का वृहत् 15. उपच 12 तना
का पिछला भाग 17. किन्तु का नाम 18 मक्षेप,
उपसहार।

परिवहोन् (प०) [परि + वह + लृप्] पठि— स० ४।२२।
परिव्रजन् (प० क० क०) [परि + व्रज + क्त] 1 निचिल
बका हुआ 2 विमुख पराक्रमक।
परिव [परि + हन् + क्त, घातेन] 1 मोह की छत्र या
कर्म की घूमन मो हार को बर रखने के लिए
प्रयुक्त की जाय, अंगका—एक हस्तना नगरपरिव
प्रान्तावाहमूर्ति स० २।१५, रघु० १६।८६ शि०
३०, भागवि० ५।२ 2. (अन) रोक अवरोध
विघ्न, बाधा आगमवस्य सुकलोपि सोऽनवस्यवर्षमागं
परिमो दुरत्यय—रघु० ११।१७ 3 लाह की स्वाय
लमी हुई काठी, मुद्गर विसर्ग कोड़े की स्वाय जह
दो यह १। रघु० १२।३४ 4 लाह की गदा 5 अक्ष
पात्र, हा 6 सीसे की शारो 7 चर 8 मारना,
नष्ट करना 9 प्रहार करना—आघात या वध।
परिवहन् [परि + वहट + लृट्] घोटना, कड़ो अमान।
परिवातः,—वातनम् [परि + वृत् + क्त] वन्, नस्य त
लृट्पा। 1 मारना, प्रहार रना, हटाना, झुटकारा
पाना 2 मुद्गर, मोटे सिरे की छड़ी।
परिवोच [परि + वृच् + क्त] 1 कोलाहल 2 अनुचित
वाचन 3 वर्णन।
परिवृत्तम् (वि०) [श० स०] घूरे चौरह।
परिवृत्त [परि + वृत् + क्त] 1 घेर अमाना, एकत्र करना

2 जान पहचान, परिचित, वनिष्टा, सरकारी
सरक्षण—पुरुषपरिवचने—रघु० १।५९, अतिपरि-
चयावका 'अतिपरिचय' से होता है, अतिच अनाचर
भाव परिवच चकमकमिपातेन—रघु० १।४९,
सकमकसापरिचय का० ७६ 3 जांच, अन्वयन,
अभ्यास, मुद्गमर्ह—आवृत्ति, हेतुपरिचयसर्वव्यं वस्तुसर्व-
निकैव सा शि० २।७५ ११।५, वचपरिचय करीति
स० ५ ४ जान महावीर ५।१० ५ पहचान
नच० ९।

परिवर [परि + वर + क्त] 1 सेवक अनुचर, टहलवा
2 करीर रक्षा 3 रक्षक पट्टेदार 4 शब्दावधि,
सेवा।

परिवार [परि + वर + लृट्] सेवक टहलवा सहायक,
—अथ 1 सेवा टहल 2 हथर उभर जाना।

परिवर्त्ता [परि + वर + क्त + टाप्] 1 सेवा टहल
रघु० १।११ अथ० १८।४४ 2 अचना पूजा
—शि० १।१३।

परिवाच्य [परि + चि + क्त] वार्त्ता (कुछ व स्वा
पित)।

परिवार [परि + वर + क्त] 1 सेवा, टहल 2 सेवक
3 टहलने का स्थान।

परिवारक, परिवारिक [परि + वर + क्त] परिवार
+ क्त] सेवक टहलवा।

परिव्रज (प० क० क०) [परि + व्रज + क्त] 1 हंर
लगाया हुआ इकट्ठा किया हुआ 2 जानकार
वनिष्ट जान पहचान का 3 सीमा तथा अन्वयत।

परिचित (स्वी०) [परि + चि + क्त] जान पहचान
परिचय वनिष्टा।

परिवृत्त (स्वी०) [परि + क्त + क्त] 1 परिव्रज,
अनुचरवर्ग 2 गाव-सामान।

परिवृत्त [परि + क्त + क्त] 1 आवरण आवर
पोसाक 2 वस्त्र, वेधभूषा साक्षात्सक्तकमनीय
परिवृत्तानाम् कि० ७।४० 1 नीकरवाकर परिव्रज
टहलगा आभिनयदली रघु० १।७० ४ साज-
सामान, (छत्र चाकर आदि) ऊपरी सामान सेवा
परिवृत्तस्य रघु० १।१७ 5 सामान अलबाव,
व्यक्तिगत सामान निजी चीजें व सामान (वर्तमानादे,
तथा अन्य उपकरण आदि) विवाहसो या अथेवाष्ट-
मदस्य सपरिवृत्तव—अनु० १।१४१, ७।४०, ८।४०५,
१।७० ११।७६ 6 यात्रा का आवश्यक सामान।

परिवृत्त [परि + क्त + क्त] नीकर-वाकर, परिव्रज।

परिवृत्त (प० क० क०) [परि + क्त + क्त] 1 वेष्टित,
ढका हुआ, वस्त्राच्छादित, जिसमें वस्त्र पहने हुए हो
2 ऊपर फैलाया हुआ, या फैलाया हुआ 3 चिरा
हुआ (परिवर्तों से) 4 चिना हुआ।

परिष्कृतिः (स्त्री०) [परि + छिद् + क्त] १ पदार्थ परिभाषा, दीक्षित करना २ विभाजन, अलग अलग करना ।

परिष्कृष्य (भू० क० कृ०) [परि + छिद् + क्त] १ काटा हुआ, बिभक्त २ पदार्थ परिभाषा से युक्त, निर्धारित, निश्चयीकृत, कु० २१५८ ३ क्षीयित, मोटाबूझ, परिशीलित दे० परिपूर्वक छिद् ।

परिच्छेदः [परि + छिद् + क्त] १ काटना, विभक्त करना, विभक्त करना, (उक्ति और अनुक्ति में) विवेचन २ पदार्थ परिभाषा, फैला, पदार्थ निर्धारण, निश्चय करना परिच्छेदव्यक्तिभेदति न पृथगेऽपि विषये—मा० १३१, परिच्छेदालीन सकलवचनामाम-विषय १३० सब प्रकार की परिभाषा और निवारण—मा० १३१ इत्यास्तद्वद्व्युत्पन्नकं परिच्छेद-वाक्य मे मनः मा० ५१९ ३ विभक्त निष्पन्न मूढ-वृत्ति परिच्छेदा हि परिहृत्य यदाश्चा विगम्य अपरिच्छेदकर्मणा विपरिहृत्य एव ये हि० १११८ किं परिहृत्य परिच्छेद ११५३ ४ माया हृद मोमा स्थिर करना हृदय—अलम्बक परिच्छेदेन मा-लोच० २५ अनुभाव या पुनरुक्त का काष्ठ—अनु-भाष के अर्थ नामा २ निय है० अध्याय के अन्तर्गत ।

परिच्छेद (वि०) [परि + छिद् + क्त] १ पदार्थका से परिभाषा के द्वारा परिभाषणो वस्तु० ६१९ म्बु० १०१८ २ ताकने या अनुमान लगाने के द्वारा ।

परिचयः [प्रा० भ०] १ सदा साथ रहने वाले नौकर-बाका अनुपायिजन, अनुचरजन—परिचयो राजान-नमस्ति स्मिन्—मा० ६० २ आदमी को लेबकममूह, संविकारा का समूह, बाँटिया दाँभयो—म्बु० १०१२३ ३ मेवक दाम ।

परिचर्यापनम् [परि + चर्य + क्त] नौकर या लेबक का) गुल सकेन प्रमथे अर्थात् कुलपता सेठदा तथा स्वामी की कृपा एवं गठना तथा और दूसरे इन्हीं प्रकार के दाग प्रकट हों, उच्चस्वामीकीर्ण हय प्रचार परिभाषा बनाते हैं—प्रधानिरेयनासाठधपाप-पादपान्, स्वविचक्षणनामिकां प्रमथेयाम् स्थापयन्ति-तम् । (विह्वल के अनुभाव अर्थात् प्रिय म उपोक्षण किसी रमणी के द्वारा प्रयुक्त गुल सिद्धियाँ ही 'परिचर्यापनम्' है) ।

परिचयः [परि + ज्ञ + क्त] १ संलाप तथा २ पहचान ।

परिचयनम् [परि + ज्ञा + क्त] पूरा ज्ञान पूरी जानकारी ।

परिचयनम् [परि + ज्ञा + क्त] परिचयों का दाग बना कर उड़ना या परिचयों के बीच की झूल—दे० ईल ।

परिचयः (भू० क० कृ०) [परि + ज्ञ + क्त] १ मुका

हुआ, चिनत, इकना हुआ—मेव० २२ (बाद में) बुझ, इकना हुआ—परिचयते वरति—का० १५, १२, १३ ३ पक्का, परिपक्व, पका हुआ, पूर्णविकसित—शब्दशब्दार्थिक अर्थ परिचयत्रयस्य भाषाविधानम् उत्तर० ३११, मेव० २३—परिचयत्रयस्य भाषाविधानम्—मा० १८, सि० १११५९ ४ पूर्णविकसित हुआ, प्रोढ़, पूर्णविकसित परिचयत्रयस्य भाषाविधानम्—मा० ३१५९, मेव० १०० ५ (शोजन आदि) पका हुआ ६ कृपात्मकता का परिचयित (काय० के दाग) विकसित ४१८ ७ नम्राप, पर्ववृद्धि, अकनायी, अनेन समयेन परिचयित विसत—का० ४० ८ (पुत्र आदि) अन्न,—त अपने दात से बहारा करने के लिए मुका हुआ या पारवर्षात देने वाला हाथी (विश्वव्य-प्रसारक मत्र परिचयो मन—हुका०) सि० २१२९, सि० ६१३ ।

परिचयि (स्त्री०) [परि + ज्ञ + क्त] १ मुकना इकना न—हाला २ पक्कापन, परिपक्वता, विकास—महाबो० २१५३ ३ परिचयने कृपात्मकता, कायापन ४ पूर्णता ५ नवीजा, परिचय कल—परिचयित-पदार्थों अन्न परिचयने—मा० २१५४, ११५०, ११५०, महाबो० ११८८ ६ अन्न, उपहार तथापि अन्न-मान—परिचयितवर्षाया प्रीत्यस्तत्परिचयान् मा० ६१ ७, ११६ सि० ११११ ७ जीवन की अन्तिम छाती, मुहावा—मेवाकारा परिचयिभूत—विष्णु० ३११, अधवृद्धमान परिचयि विविध परिचयवस्तुनको रिचय—सि० ११३ (वहाँ ९० का अर्थ है अन्न का उपमहारा) ८ (शोजन का) पक्का ।

परिचयः (भू० क० कृ०) [परि + ज्ञ + क्त] १ ईका हुआ, निपटा हुआ २ विस्तृत, विज्ञान—परिचय-कथार—म्बु० ३३४ ।

परिचयः—कथनम् [परि + यो + अप, स्वरट् हा] विज्ञान—नवपरिचया वस्तु अने—काय० १० ।

परिचयः [परि + ज्ञ + क्त] कथार वचना, कथार पर कथार लोपना ।

परि (स्त्री०) भाव [परि + ज्ञ + क्त, पक्षे उपसर्गस्य शेषः] १ बदलना परिचयने, कृपात्मकता २ ताकने—अन्न न मध्यक परिचयमयेति—मुहान्, मुकस्य परि-चयमहेतुनोदयम् पक्षे १ नवीजा, निष्पत्ति, कल, प्रभाव—अपिचयमपि पक्षस्य परिचयः मुहावा—सि० २११५ मुकः ३११ परिचयमयेति नवीजि-वति शेषमे—कि० २१४, मय० १८१३, १८४ ४ पक्का, परिपक्वता, पूर्णविकसित—उपविकस्य परि-चयमयनाम्—कि० ४१२९, कलत्रपरिचयमयनाम्—अनु० उत्तर० २१२०, मा० ११२४ ५ अन्न, अनापि, उपहार, अन्नपान, हाव—विषया परिचयकरवर्षायाः

—श० ११३, बय. परिणामपादुरधिरस—का० १०, परिणामपूर्वति विवस.—का० २५४, विन समाप्त होने वाला हूँ 6 बुझापा—परिणामे हि विनीप-बन्धन—रघु० ८११ 7 (समय का) बीतना 8 (बल० शा० में) कपक से मिलता जुलता एक अलंकार जिसमें उपमेय के मूल उपमान में परिवर्तित कर दिये जाते हैं (चन्द्रालोक में दी गई परिभाषा और उदाहरण—परिणाम किमार्थवैशिष्टयो विषयात्मना, प्रसन्नेन दृग्व्येन वीक्ष्यते बधिरैस्तथा—५११८, २० रसमाधर में परिणाम के लीये), लय०—इतिवृत्ति (वि०) बुद्धिमान्, दूरदर्शी, बुद्धि (वि०) बुद्धिमान् (वि०—स्त्री०) बुद्धिमत्ता, दूरदर्शिता, धृष्ट (वि०) निष्ठा का एक स्वात्म्यप्रद हो धृष्टम् पोडाभूत अजीर्ण वा अम्बाभि, उदरपीडा, पीडा के साथ उदरबाध, बाधबोले का हई ।

परि (री) नाव [परि + नी + बन्] पहले उपसर्गस्य दीर्घ १. सतरज की बोट का चलाया 2 (सतरज की) नाव ।

परिणामकः [परि + नी + क्तृ] 1 नेता 2 पति —वि० ११७३ ।

परि (री) बाहः [परि + बा + बन्], पहले उपसर्गस्य दीर्घ १ परिधि, वृत्त, विस्तार, फैलाव, चौड़ाई, अर्थ—स्तनद्वयपरिणाह्यात्मनो कम्पलेन—श० १११९, स्तनपाणिनाह विनामयैवन्दौ वा० ३११५, विशाल बल स्वल्प—अनुते दुष्कृत कुलबाहुकृत परिणाह धास्मिन् कि० १२१२०, कृष्ण० ३१९, ग्ल० २११३, महावी० ७२४ २ वृत्त की परिधि ।

परिणाह्यत् (वि०) [परिणाह + लप्, मय्य वत्थय] विशाल, बड़ा, विस्तृत ।

परिणाहिम् (वि०) [परिणाह + इति] विशाल, बड़ा —कु० ११२५ ।

परिनिस्तक (वि०) परि + निम् + क्तृ] स्वाय चकन वाला, काने वाला—यलानां परिनिस्तक—भट्ट० ९१ १०९ 2 चुम्बन ।

परिनिष्ठा [परि + निष्ठा प्रा० न०] पुरा कोशल ।

परिणीत (यु० क० कृ०) [परि + नी + क्त] विवाहित —सा विवाहित स्त्री

परिमेतु (यु०) [परि + मो + तुप्] पति—श० ५११७, रघु० ११२५, १५१२५, कु० ७१११ ।

परितर्कन् [परि + तुप् + क्तृ] तुष्ट करना, सन्तुष्ट करना ।

परितप्त (कर्म०) [परि + तप्] (सत्ता के साथ प्राय कर्म० में, कभी-कभी स्वतंत्र रूप से प्रयोग) 1 इदंमित्रं, मम और, दुसा फिराकर, सब विद्याओं में, सर्वत्र, चारों ओर—रक्षाधि वेदि परितो निराकम्—भट्ट०

११२२, वि० ५१२५, ९१३९, कि० ११२६, माहिन-मल्लिग गहन परितो दुष्टाश्च विटपिन सर्वे भावि ११२१, २९ 2 की ओर, की दिशा में आपेदिरेअ-रत्न परित पतगा भावि० १११७, रघु० ९१५५ ।

परितापः [परि + तप् + क्तृ] 1 अत्यंत या दुःखसा देने वाली गर्मी—(पादप) समयानि परिताप छायाया लघितानाम्—श० ५१७ दुष्परितापानि गाथांश —३११८, ऋट्० ११२२ 2 पीडा, वेदना, व्यथा जोक वमकने निर्वासि हृदयपरिताप बहुस किम —मालव० ३११ 3 बिनाय मातम, भापे धिर-क्षितिविषयमिलाप सा परिताप चकाराक्यं गीत० ७४ कापना, मय ।

परितुष्ट (यु० क० कृ०) [परि + तुप् + क्त] 1 पूर्ण रूप से सन्तुष्ट—वयमिह परितुष्टा बल्लकस्यथ लक्ष्म्या भर्तु० ३१५ इसी प्रकार मनासि च परि तुष्टे कोर्षवान् का दण्डि—भन्० ३१५ 2 प्रसन्न, कुश ।

परितुष्टिः (स्त्री०) [परि + तुप् + क्त] 1 सन्तुष्टि पूर्ण सतोष 2 क्षोभी, हर्ष ।

परितोषः [परि + तुप् + क्त] 1 सम्मोष, इच्छा का अभाव (विप० योष) सब २४ परितोषो वि बनेषो विशेष भर्तु० ३१५ 2 पूर्ण मतोष, तुष्टि आप-विरोधादिदुःखानां नापु मय्ये प्रयोगविज्ञानम् श० ११२ 3 प्रसन्नता, क्षोभी, हर्ष, प्रसन्नता (अर्थ० के साथ) कु० ९१५९, रघु० १११२२, कुनिमि परितोष ।

परितोषक (वि०) [परि + तुप् + क्तृ + क्तृ] सन्तुष्ट करने वाला, तुष्ट करने वाला, क्तृ सन्तुष्ट करना ।

परित्यक्त (यु० क० कृ०) [परि + त्यज् + क्त] 1 छोड़ा हुआ, उन्मथ, सर्वथा त्याग हुआ 2 वीक्ष्यन्त, रहित (कर्म० के साथ) 3 (तोर आदि) छोड़ा हुआ 4 अभाववत्त्व ।

परित्यागः [परि + त्यज् + क्त] 1 छोड़ना, उत्सर्ग करना, सर्वथा त्यागना, छोड़कर भाग जाना, (पत्नी आदि का) सम्बन्ध विच्छेद अपरित्यागमयाचचारमय —रस० १२, कुतलोतापरित्याग—१५१२ २ छोड़ देना, त्यागना, फेंक देना, धिक्का होना, नदी छोड़ देना, त्यागना परित्याग करोमि वैष० १, 'नै अपना नाम छोड़ दूंगा' भन्० २१२५ ३ अक्षय्यमा, भूल-बुद्ध—मोहातस्य (कर्म०) परित्यागस्तापक परिकी-रित भग० १८७ ४ दूरस्थता, उदात्ता 5 ह्रासि, कनाली ।

परित्याग्य [परि + तप् + क्तृ] सकारण, सरासय, बचाना प्रतिगता, सुनि, कृत्कारा—परित्याग्य हापुना विनाकाय व दुष्कृतान्—भग० ६१८, राजपरित्याग विहस्तयोष वेनामिनेषं तुमुल चकार—रघु० ५१४९ ।

परिवाहः [परि + वह् + क्त्वा] वाह, भव, डर ।

परिवर्तित (वि०) [परि + र्त्त + क्त] कथन से उठा हुआ, आधारभूतक शब्दों से सुसज्जित (पूर्वतया जिगृह्यमान से युक्त) ।

परिवारम् [परि + वा + क्त्वा] १ वर्तमान, अवलम्बनी २ भक्ति ३ परिवार का वास्तविकत्व ।

परिवारिण (पुं०) [परि + वा + रि + णि] वह पिता जो अपनी पुत्री का विवाह ऐसे पुरुष से करता है जिसका बड़ा भाई अभी तक अविवर्हित है - मु० परिवर्णे ।

परि (री) बाह्य [परि + वह् + क्त्वा] पक्ष उपसर्गस्य दीर्घ] १ जलन २ व्याधा, पीडा दम शोक ।

परिवेष्ट [परि + वि + क्त्वा] शाव मरणा, मातम विलम्ब ।

परिवेष्टनम् - ना । परि + वि + क्त्वा [परि + दिव् + क्त्वा] परि + दिव् + क्त] १ विनाश विलम्बना राता-धना-व्यय से परिवर्तनाशरी - मु० १८५५ रघु० १८१८ अण० ५८८ तप का परिवेष्टन - याज्ञ० ३११ शि० १८११ २ पदचालन, वेद ।

परिवेष्टन (वि०) [परि + दिव् + क्त्वा] शोकमयन लट्प्रत्यय दृष्टी ।

परिवेष्ट (पुं०) [परि + दृ + क्त] तमाश्वीन वक्त्रक ।

परिवेष्टनम् [परि + वह् + क्त्वा] १ हमला आक्रमण बलात्कार २ अपमान निगडर तिरस्कार ३ दुर्व्यवहार कला व्यवहार ।

परि (री) जानम् [परि + वा + क्त्वा, पक्ष उपसर्गस्य दीर्घ] १ कान्ध पङ्कनता वक्त्र पारण करना २ पात्राक अपोवक्त्र कान्ध आनीचनार्थानविवृता कि० १११ शि० ११५१ ६१ ४६११ ।

परिचालीनम् [परि + वा + अनीय] अपोवक्त्र, नाभि से नीचे का पहरावा ।

परिवाहः [परि + वा + क्त्वा] १ नीकर वाका अनुहार टहलप २ आधार, आश्रय ३ निरत चाल ।

परिधि [परि + धा + क्ति] १ दीवार, मेंड बाह्य चोरा २ लूटे या चन्दमा का परिवेष्ट परिवेष्टन इत्यादि दीर्घानि रघु० ८१३०, लक्ष्मिपरिवेष्टनान्द्वयलम्बन लेने - शि० २११०८ ३. पक्षावधक ४ मित्रि ५ परिधि या वृत्त ६ वृत्त की परिधि ७. परिधि का चोरा ८ ('पक्षावध' बादि परिधि वृत्त की) लम्बिमा या लम्बिनी जो यज्ञकुण्ड के चारों ओर रखी रहती है लक्ष्मिपरिवेष्टनः वि० मन्त्र लम्बिमा कृताः - बृ० १०१०१५ । मन्त्र० लम्बिमेवरः मित्र का विशेषण - लम्बः १. लोकीदार २. किसी राजा या सेनापति का सहायक अधिकारी ।

परिवृत्ति (वि०) [परि + वृ + क्त] वृत्त द्वारा घुमावित या घुमावित किया हुआ ।

परिवृत्त (वि०) [परि + वृ + क्त] घुमावित घुमावित घुमावित घुमावित - प्रा० ५०० शिल्पक गृह्य ब्रह्मणे परिधुम् ब्रह्मना - म० ७३२, रघु० १११५० ।

परिवेष्टनम् [परि + वा + क्त्वा] अपोवक्त्र, नीचे पहनने का पहरावा ।

परिवेष्टन [परि + वह् + क्त्वा] १. दुःख, विनाश, डर बादी कष्ट २ अमरकला विषय, सहाय ४ जानि-ध्वनि ।

परिवेष्टन (वि०) [परि + वह् + क्त्वा] १ मिर कर जलन होने वाला २ बर्बाद होने वाला, नष्ट हो जाने वाला शि० २११३४ ।

परिवेष्टन (वि०) [प्रा० म०] विलम्बित गृहा हुआ, जम् (म्यक्ति हो) अन्तिम विलम्बित, परिधुम् ।

परिवेष्टन (स्त्री०) [परि + निर + क्त] आमा की लारी से घुमेमक्ति पुनर्जन्म से छुटकारा, पुनर्मास ।

परिवेष्टन [प्रा० म०] १ (किसी वस्तु का) पूरा जान या परिचय २ पुनर्निर्माण ३ वरम लीमा ।

परिवेष्टन (पुं० क० क०) [परि + नि + क्त + क्त] १ पुनर्निर्माण २ पुनर्निर्माण अपरिनिमित्तकारिणः स्यात्प्रा० प्रकाशनम् गणवि० १ ।

परिवेष्टन (पुं० क० क०) [परि + वह् + क्त] १ पूरी तरह पका हुआ, २ लोकीदार तथा हुआ, ३ विलम्बित पक्का प्रोड, मिष्ट, पूर्णता को जान (बात० की) प्रकृत्यकोष्ठः परिवेष्टनानि - बृ० ५११, इही प्रा० ५११ परिवेष्टनानि ४ लुप्तवर्तिन समझदार, काइया ५ पूरी तरह पक्का हुआ ६ मुक्ताने वाला, मन्त्र के निकट ।

परिवेष्टन (नम) [परि + वह् + क्त प्रा० म०] पुत्री, मूल-धन वाग्दाना ।

परिवेष्टनम् [परि + वह् + क्त] वादा करवा, प्रतिज्ञा करना ।

परिवेष्टन (पुं० क० क०) [परि + वह् + क्त] वादा किया हुआ वचन दिया हुआ, प्रतिज्ञा की हुई - शि० ७३१ ।

परिवेष्टन [परि + वह् + क्त] जम् बिरोधी, दुश्मन ।

परिवेष्टन (वि०) [परि + वह् + क्त] रास्ता रोकने वाला रोका अटकाने वाला, बिरोध करने वाला, किन्तु हालने वाला (वाचिनि के मतानुसार केवल वेद में मान्य, परन्तु मु० नीचे दिए हुए उद्धरणों में) - अथ पक्षी महामर्यादा - मुद्रा० ५, नावविषयसह तप यदि तत्परिधिनी मा० १५०, इही प्रकार भावि० १५२, अण० ३३४, बृ० ७३१०८, ११० (पुं०) रिपु, तपु प्रतिद्वन्द्वी, दुश्मन २. लूटेरा, चोर डाकू ।

परि (री) वाक्कः [परि + वह् + क्त, पक्ष उपसर्गस्य दीर्घ]

वीर्य] 1. पूरी तरह से प... जाना या बहारा जाना 2. पचना, जैसे कि 'अम्लपरिपाक' में 3. पक जाना, परिपक्वता, विकास, पूर्णता सि० ४।४८, कु० ६।१० 4. फल, मतीया, परिणाम प्रयत्नानां मूल मुकुटपरिपाको अनिभूताम् हावी० ॥३११, ३५० २:१३२, ३।१३५ 5. वतुर्गद, दूरस्थिता, कुशलता ।
परिपातक (वि०) [प्रा०स०] पीसा लास रघु० १९। १०, सिमु १३।४२ ।
परिपाति—टी (स्त्री०) [परि भागेन पाटि पाटन गति मत्वा प्रा०ब०स०. परिपाति + टीप्] 1. प्रचाली, रीति, प्रक्रम पाटोर तव 'टीपायक परिपाटी'विभा-मुरीकर्तृम् धामि० १।१२, कदवाना डाटी रमिक परिपाटी स्फुटयति—हस० ०४ 2. अवस्था, क्रम, उत्तराधिकार ।
परिपात्र [प्रा०स०] परिपचना, पुष्प निर्देशन, पूरा विवरण ।
परिपात्र (वि०) [अर्या०स०] निकट, पार्श्व में, पास, मजदीक ही ।
परिपात्रणम् [परि + पत्र् + णिप् + स्फुट्] 1 मर-आति पालना, रखा करना, सचरण करना, समाले रखना, जीवित रखना—किञ्चनानिगम्यपरिपात्रणवृत्तिरेव सि० ५।६ 2 मरण पोषक, मरवर्धन जातस्य परिपात्रणम्—मनु० १।२७ ।
परिपिष्टकम् [परि + पिप् + क्त + कन्] सीसा ।
परिपीडनम् [परि + पीड् + स्फुट्] 1 निषेधना, भीचना 3. अति पहुँचाना, चोट लगाना, नुकसान पहुँचाना ।
परिपुष्टम् [परि + पुष्ट् + स्फुट्] 1 हटाकर अलग करना 2. हलक या लाल उतागना ।
परिपूज्यम्, **परिपूजा** [परि + पूज् + स्फुट्, प्रा०म०] सम्मान करना, पूजा करना, अर्चना करना ।
परिपूत (भू०क०क०) [परि + पू + क्त] 1 विशुद्ध किया गया, विशुद्ध उत्पत्तिपरिपूताया किमस्या पावनात् उत्तर० १।१३, सि० ०.५ 2 पूरी तरह फटका हुआ, पिछोटा हुआ, भूमी से पृथक् किया हुआ ।
परिपुत्रम् [परि + पुत्र् + स्फुट्] 1 मरना सि० ४।६१ 2. पूर्णता की पहुँचाना, पूरा करना ।
परिपुत्र (भू०क०क०) [परि + पुत्र् + क्त] 1 पूरी तरह मरा हुआ, झुंझ-पूरा चीर, ममस्त, मागा, भन्नी आदि भरा हुआ 2 व्यवस्तुष्ट, मृत्यु ।
परिपुष्टि (स्त्री०) [परि + पुष्ट् + क्त] पूरा, पर्याप्तता ।
परिपुष्का [परि + पुष्क — अङ् + टाप्] पुष्क नाछ, प्रन ।
परिपुलक (वि०) [प्रा०स०] अति कोमल, सूक्ष्म, अत्यन्त मुड ।
परिपोट—पोटक [परि + पो + क्त] परिपोट + कन् (बायु० में) एक प्रकार का रोग (जिसमें कान की लाल गन्धे लगती हैं) ।

परिपोषणम् [परि + पोष् + स्फुट्] 1 खिलाता-पिलाना, भरज-पोषण 2 आगे बढ़ाना, उन्नति करना ।
परिप्रथम [प्रा०म०] पुष्कनाछ, प्रथमवाचचना, सबाद, 'नरकमयी आति परिप्रथमे'—पा० २।१।६३, ३।३।११० तर्हिद्वि प्रथिपातेन परिप्रथमेन मेधया—सग० ४।३६ ।
परिप्राप्ति (स्त्री०) [प्रा०स०] अधिग्रहण, उपलब्धि ।
परिप्रेष्य [प्रा०स०] सेवक ।
परिप्लव (वि०) [परि + प्लु + ण्यच्] 1 बहना हुआ 2 बरबराता हुआ, कापता हुआ, डाँटा हुआ, हिलोरे लेना हुआ, कम्पावसान 3 जम्पर, चलन सि० १।६।८८, --कः 1 ब्रजप्लावन 2 जल में डूबाना, मोला करना 3 किस्ती, नाव 4 उन्मादन अग्राधार ।
परिप्लुत (भू०क०क०) [परि + प्लु + क्त] 1 बाहुधस्त, बलात्पान 2 बहावाया हुआ, व्याकुल जैसा कि साक म 3 आद्रीकृत, विलस, रनात भन्म उच्छल छन्याग, सा हावाव ।
परिप्लुष्ट (भू०क०क०) [परि + प्लु + क्त] जना हुआ मुलसा हुआ भवभनाया हुआ ।
परिष (ब) [परि + ष (ब) + स्फुट्] 1 अमृष नोकर चाकर, टहलाइ दस प्रभुपरिषद्विषया अवाता मवर्धयताम् दश० १०८ २ उपमर, वाक अन्तर का सामान परिषद्वात वेदमात्र रघु० १६।१५ "उपप्लुत भामान मे सुगुण्यत कमर" 3 गज विज्ञ 3 मर्पान, दन्दीलव ।
परिष (ब) हंषच् [परि + ष (ब) + स्फुट्] 1 ३।४ नाह चाकर 2 वनाह पाय, ल-छाट 3 वृत्ति 4 पूजा ।
परिबाधा [प्रा०म०] 1 कष्ट, पीडा, म पापन 2. बका बट, उग्र व्यवा ।
परिष (ब) हंषच् [परि + ष (ब) + स्फुट्] 1 मर्मद, बलया 2 परिषद्वि, मयूरक ।
परिष (ब) हंष (भू०क०क०) 1 बहा हुआ, नावोत्तर 2 कलाकृता, समृद्ध हुआ 3 मयुक्त, मयान—लम् हावी की चिवाड़ ।
परिष [प्रा०म०] छिन्निभिन्म हीना टूट का टूटने - होना ।
परिभक्तवन् [परि + भक्त + स्फुट्] धमबाना, परबना ।
परि (सी) अकः [परि + भु + ण्यच्] पक्षे उपनर्गम्य दीर्घ । 1 कामान अति पहुँचाना, प्रसिद्धा भव, निम्नार, निगर, मानशानि पराकमः परिषद्दे वेदाय नुन-पिष (भूपणा) —सि० ०।८८, रघु० १०।३७. वेर्वा० १।२५, मन्त्री० १।८०, ३।१७ 2 प्रा, पात्रा । सम०—आपवन्—वन् 1. पूजा का पात्र, सि० ३।११ 2 अपवान, आपवन्मुने स्थिति,—विधि

प्रतिष्ठापन—शायी मूल—परिचयविधी नामिधानं
तमोनि—गुंवार १६।

परिचयिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [परि + भू + इति 1
यागदर, तुच्छ, जनादर वा भूषायुक्त व्यवहार करने
वाला 2. अपमानधर, निरकार, पीडित ।

परिचाकः [परि + भू + चक] दे० 'परिचाक' ।

परिचायिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [परि + भू + चिनि]
1. मानयने करने वाला, पूजा करने वाला, निरस्कार-
यक्त व्यवहार करने वाला 2. अज्ञान
करने वाला, प्राये बहु जाने वाला, श्रेष्ठ होने वाला
3. तुच्छ समझने वाला, उपेक्षा करने वाला 4. वंचित
परिचायित गदम् रघु० ११/५३, 'भीमशोपचार की
उपेक्षा करने वाला' ।

परिचायक [परि + चय + क्यट्] 1. वार्तालाप, प्रवचन,
कानबोध करना, धपधप लगाना गप्पें ठाकना 2
निन्दाभिरुपधि, चिकित्सावा सिद्धि, अणयन 3
निमग्न, बिधि ।

परिचाया [परि + चय + अ + टाप्] 1. व्याख्यान प्रव-
चन 2 निन्दा, हठका, पक्षु माली 3 पारिभाषिक
गद्यवाच्यो, पारिभाषिक पदावली, (किसी वय में
प्रत्यक्ष) नबनीकी गद्यवाच्यो इति परिचाया प्रकार
कम् सिद्धा०, दको मुखवर्दीयादिका परिचाया
महा० 4 (अत) कोई सामान्य नियम, बिधि या
परिचाया को सर्वत्र चट सके (अनियमनिवारको
न्याय विशेषः) परिचय प्रविशणराणि सर्व विषय
प्राप्तवन्तो नचा परिचाया, न चान् प्रतिहृष्यते कदाचित्
परिचायेन वरीयसी यदात्रा शि० १६/८० 5 किसी
की पुस्तक में प्रत्यक्ष मही या संशयको की सूची 6
(व्या० में) पाणिनि के ज्ञेय मुद्रा में लिखा हुआ
व्याख्यानार्थक मूल वा उन सूची के प्रयोग की रीति
बतलाता है ।

परिचय (सु० क० क०) [परि + भू + चत्] 1
आधा हुआ, प्रयोग में लाया हुआ 2 उपयुक्त 3
अभिज्ञान ।

परिचय (वि०) [परि + भू + चत्] विनय, वकील, हुका
हुआ ।

परिचयः (स्त्री०) [परि + भू + चित्] निरस्कार,
अपमान, जनादर, अवमानना—महा० १०/११ ।

परिचयक [परि + भू + च्यट्] किसी भूमि का समस्त
राजस्व छोट कर जो सचि की गई हो ।

परिचयः [परि + भू + चम्] 1. उपशोय—रघु०
१०/५२ 2 विशेष कर वैपुल्य—रघु० ११/५३, ११/२१,
२८/३ 3 दूसरे के सामान का सर्वेच प्रयोग ।

परिचयः [परि + भू + चम्] 1. वच निकलना 2.
चिरवा ।

परिचयः [परि + भू + चम्] 1. चुनना, इधर उधर
टहलना 2. चुना-फिरा कर बात कहना, वाग्जाल,
बकौल 3. मूल, ज्ञान ।

परिचयक [परि + भू + च्यट्] 1. चुनना, इधर उधर
टहलना, पर्यटन 2. चारों ओर चुनना, चक्कर काटना,
परिचय ।

परिचय (सु० क० क०) [परि + भू + चत्] 1. चिरा
हुआ, अक्षित 2 वच कर निकला हुआ 3 फंका हुआ,
अवगतिन 4 वाञ्छित, सुख (व्या० या काव्य० के
साथ) 5 अवहेलना कर, नाका ।

परिचय (वि०) [प्रा + च + चम्] बोलाकार, मोक,
चतुःकार, लम्पिद, मोलद 2 नैद 3 चुन ।

परिचय (वि०) [प्रा + च + चम्] 1. अक्षय मद्र, चि० १/७८ ।

परिचय (वि०) [प्रा + च + चम्] 1. अक्षय मद्र, चुनना, चिन्तुक
फीका परिचय सुखेययो दिवत—चि० १/३ 2.
अक्षय मद्र 3 बहुत चका हुआ चि० १/३२ 4
बहुत बाधा चि० १/३३ ।

परिचयः [परि + भू + चम्] विनाश चिरात् अवस्थानसु
पक्ष इव चौर परिचय—महावी० ३/४१ ।

परिचयः, परिचयक [परि + भू + चम्, च्यट् वा]
1 गदना, पीसना—कुचलना, परो के नीचे पीसना
3 विनाश 4 २ ट पट्टेबाजा, जति पट्टेबाजा
5 आत्मिक, परिचयक ।

परिचयः [परि + भू + चम्] 1 ईर्ष्या, अक्षय 2 चोच ।

परिचयः [परि + भू + चम्] 1 चुनच, चुनना, छीरन,
महक—परिचय कीर्तनको हर नामि० १/६३,
१५/३०, ७१, मेघ० २५ 2 अक्षयकृत पदावली का
पीसना 3 मृगमद्वय 4. गृहवात न्यपरिचयकोच-
वाच्यलक्ष्मीम् कि० १/११ 5. विरमवा 6. कलक,
चम्पा ।

परिचयित (वि०) [परि + भू + चत्] 1 सुचयित
2 कल्पित, लीनर्ष छोट ।

परि(री)चायक [परि + चा + च्यट् च्ये उपसर्गस्यदीर्घ]
1 मापना, (अक्षित या नाकत की) माप—मह
परायपरिचय विवेकमुद्रा महा० १/१०, कु० २/८,
मनु० ८/१२ 2 तोल, मका, मूल्य माप० २/६२,
१/३१९ ।

परिचयः, परिचयक [परि + च + चम्, च्यट् वा]
1 चुनना, मोक करना, तबाल करना, चला लगाना,
परिचय देवते हुए मोक निकालना 2. स्वयं, छम्पक
—चि० ७/७५ 3. नाक करना, पीसना ।

परिचयक [परि + भू + चि + च्यट्] 1. नाकना,
ताक करना, ताक-मोक करना 2. पी छीर गहर के
वनी दिखाई ।

परिचय (सु० क० क०) [परि + चा + चत्] 1. चयन,

मित्रव्ययी 2 सीमित 3. माया हुआ, मयायुका
4 विविचरिण, समचित। **हव०**—आधरथ (वि०)
बोड़े आधरथ चरण करने वाला, मध्यमकर्म से
अलङ्घ्य, -आधरु (वि०) अलङ्घ्य, बोड़ी उल्लंघनी
वाला, -आहार, बोधन (वि०) परदेखार, मिला-
हारी, कमबोजन करने वाला, -कव (वि०) बोड़ा
बोझने वाला, चित्तवाची, नये तुले लब्ध बोझने वाला
—मेव० ८३।

परिचितिः (स्त्री०) [परि + भा + क्तिन्] 1. माय, परि-
माण 2. सीमावचन।

परिचितम्बु [परि + मिन् + ल्युट्] 1. स्पर्श, मयक
रत्न० २।१२ 2. सम्मिश्रण, मेल।

परिमुक्तम् (अव्य०) [अव्य० स०] मुँह के सामने, (किसी
के) इधे विरुद्ध, चारो ओर।

परिमुक्त (वि०) [परि + मुह् + क्त] 1. भोला भाला,
प्रिय, मरल, मनाहार 2. आकर्षक परन्तु मूर्ख।

परिमुक्ति (भू० क० कृ०) [परि + मुक् + क्त] 1. पेटो
तले रोड़ा हुआ, कुबन्ना हुआ, पदरहित, दुष्यं बहार-
हस्त—परिमुक्तिमालीमालामयम्—मा० १।२२,
उत्तर० १।२४ 2. आक्षिप्त, परिभ्रम किया हुआ
3. मयका हुआ, पीसा हुआ।

परिमुक्त (भू० क० कृ०) [परि + मुक् + क्त] 1. धोया
हुआ, माँचा हुआ, धुंधला हुआ 2. मयका हुआ,
स्पर्श किया हुआ, वयवपाया हुआ बेबी० 3
3 आक्षिप्त 4 फेंका हुआ, व्याप्त, भरा हुआ—कि०
१।२३।

परिमेय (वि०) [परि + मा + यन्] 1. बोड़े सीमित
परिमेयपुर—मरी—रघु० १।३३ 2 जो माया जा
सके, जिना जा सके 3 मान्य, जिसकी सीमा हो
समाप्तिका।

परिमोक्षः [परि + मोक्ष् + घञ्] 1. हटाया, मुक्त
करना—प्रायो विषाणपरिमोक्षमुत्तमागन्तुं यज्ज्ञाञ्च-
कार नृपतिनिधिर्न क्षुरगै—रघु० १।६२, सीमा को
हटाया अथवा सीमा तोड़ डालना 2 मुक्त करना,
स्वतन्त्र करना, छुटकारा 3 छाली करना मज्झिमा
4 कथ निकलना 5. मोक्ष, निर्वाण।

परिमोक्षय [परि + मोक्ष् + ल्युट्] 1. मुक्ति, छुटकारा
2. मोक्ष देना।

परिमोक्ष [परि + मुक् + घञ्] 1. राना, मृटाना, चारी।

परिमोक्षिन् (पु०) [परि + मुक् + णि] चोर, छुटेरा।

परिमोक्षन् [प्रा० स०] 1. बहकाना, प्रबोधन देना,
कुलमाना, वयवयुक्त करना 2 व्यामोहित करना, प्रेम
में डबना करना।

परिमोक्ष (भू० क० कृ०) [परि + म्ना + क्त] 1. मुर्तीया
हुआ, मुक्ति, कुहलाया हुआ, कु० २।२ 2. व्याप्त,

विशेष 3 क्षीण, निस्तेज, हतप्रभ 4 मलिन,
कलकित।

परिरक्षकः [परि + रक्ष् + क्त] रक्षा करनेवाला, रक्षि-
भावक।

परिरक्षय, **परिरक्षा** [परि + रक्ष् + ल्युट्, अङ् + टाप्
च] 1 रक्षा, मवारण देखभाल करना मनु० ९।
५४ ७।२ 2 ध्यान रखना, बनाये रखना, पालन-
पोषण न सम। परिग्रहण क्षम से कि० १।६५

3 छुटकारा, बचाव।

परिरक्ष्या [प्रा० स०] गन्ना, मट्टः।

परि (ही) रक्ष, **परिरक्षय** [परि + रक्ष् + ल्युट्] रक्षित करना
अथवा भरण करना **परिरक्षित** रक्षित, रक्षित
१।७६, १।५२, उत्तर० १।२४ २७ कि पुरेव सम
क्षम परिभ्रमण न ददाति—मोन० ३।

परिराटिन् (वि०) [परि + रट् + णिन्] हार से
चिन्ताले वाला बोलन वाला रट् लयान वाला।

परिरक्षु (वि०) [प्रा० म०] बहुत हल्का (मा०)
(कपडा भादि) 2 बहुत हल्का या जम्दी पकने
वाला—क्षीण क्षीण परिरक्षु पय आलसा चारभुज्य
- मय० १३ 3 बहुत भारी उत्तर० ४. २१।

परिरक्षु (भू० क० कृ०) [परि + रक्ष् + क्त] 1 अन्न
रक्षित, सवाच बढ़ाया हुआ 2 नष्ट, लुप्त।

परिरक्षेज [परि + रक्ष् + पञ्] 1 कपड़ेका आलेखन,
विषय वाक्ता 2 चित्र।

परिरक्षेज [परि + रक्ष् + घञ्] 1 क्षति 2 उपेक्षा
भूल-भूक।

परिरक्षेजः [प्रा० स०] वय एक सम्पत्ति का वय का
आधान देखा क्षुब्ध वयगत आदान परिरक्षेज
- उत्तर० ३।३३।

परिरक्षेजम् [परि + रक्ष् + ल्युट्] 1 धारना (वाचना,
नचना 2 छोड़ देना, निलाशिल देना 3 दण्ड हत्या।

परि (ही) कर्तृ [परि + रक्ष् + क्त] पक्षे उपलब्ध
दीधे 1 परिरक्षण, (बह आदि का) धूमना 2

कालवक, कालक्रम, कालगति युगगतपरिवर्तन
मा० ७।३४ 3 युग का अन्त शि० १।७।२ 4

आवृत्ति, पुनरावर्तन परिवर्तन, अन्त अन्त तबी
दशा जीवलाकस्य परिवर्तन, उत्तर० ३, 'जीवन को

परिवर्तन अथवा' परिवर्तनार्थसे अन्त बदल हुआ
प्रकार जीवलाकपरिवर्तनधनुप्रवर्ति—मा० ७, स्वः

परिवर्तन मुच्छ० १६ प्रायवर्तन, पलायन, कालक्रम
7 वर्ष 8 पुनर्जनन, आचाराग्रन ९ विविध अथवा

बदली—शि० ५।३९ 10 पुनर्जातन, वापसी 11
आवास 12 किसी पुरतक का अध्याय या परिच्छेद

13 कर्माकार, विष्णु का दूसरा अवतार।

आसपास, पड़ोस, पर्यावरण (किसी नदी, पहाड़ या नगर का) — मोदाबरीपरिसरस्थ गिरेस्तटानि — उमर ३१८, परिसरविषये लोडमुक्ता: कि० ५१३८, 2. स्थिति, स्थान 3. लोडाई, जर्ज 4. मृत्यु 5. नियम, विधि ।

परिसरभण्ड [परि + भू + भण्ड] इधर उधर दौड़ना ।
परिसर्यः [परि + स् + भञ्ज] 1 इधर-उधर घूमना, 2 लोड में निकलना, पीछा करना, अनुसरण करना 3 घेरना, मण्डलाकार करना ।

परिसर्यञ्च [परि + स् + भञ्ज] 1 चलना, रेंगना 2 इधर-उधर दौड़ना, उड़ना, भागना — पतंगपते परिसर्यञ्च व तुल्य — मूख्य ३१२१ ।

परि (री) सर्वा, परि (री) सारः [परि + स् + भ + यक् + टाप् + भञ्ज वा पञ्जे उपसर्गस्य दीर्घः] इधर उधर घूमना किना इदक्षिणा, केरी ।

परिस्तरभण्ड [परि + स् + भण्ड] 1 बिछाना, फैलाना इधर उधर बसेरना 2 आचरण, इच्छन ।

परिस्फुट (वि०) [प्रा० सं०] 1. संख्या समान, व्यक्त स्पष्टोच्चर 2. तुल्यविकसित, फूटा हुआ, बढ़ा हुआ ।

परिस्फुरणम् [परि + स्फुर + भण्ड] 1 कपकपी, मधुरी 2. कली का झिलना ।

परिस्पर्शः [परि + स्पर्श + भञ्ज] 1. स्पर्श, बूट 2. स्पर्शना, चुनना 3. बहाव, चारा 3 अनुचरणम् दे० 'परिस्पृष्ट' ।

परिस्रजः [परि + स् + भञ्ज] 1 बहना, बहाव 2 नीचे सरकना 3 नदी, निहार ।

परिस्रावः [परि + स् + भञ्ज + भञ्ज] निकाम, निहार ।

परिस्रुप (स्वी०) [परि + स् + भञ्ज + भञ्ज] 1 एक प्रकार की बहोलीले सराव 2 रिमना, टपकना, बहना ।

परिस्रुता [परिस्त्रु + टाप्] 1 एक प्रकार की वादक सराव 2 रिमना, टपकना, बहना ।

परिहृत (वि०) [परि + हृ + भञ्ज] दीना किया हुआ ।

परिहृतभण्ड [परि + हृ + भण्ड] 1 छोड़ना, लजना, निष्का-
रित देना 2 टालना, कनराना 3 निराकरण करना 4. बहना, ले जाना ।

परि (री) हारः [परि + हृ + भञ्ज, पञ्जे उपसर्गस्य दीर्घः] 1 छोड़ना, लजना, निष्का-
रित देना, त्याग देना 2 हटाना, दूर करना जैसा कि 'विरोधपरिहार' में 4 निराकरण करना, निवारण करना 5. उल्लेख न करना, भुन, चुन 6 आच्छन्न, गुप्त रखना 7 गाँव या नगर के चारों ओर सामान्य भूखण्ड — यन् गन परीक्षारी सामान्य गणनयनः — मनु० ११२३३ 8. विरोध अनुदान, छूट, विशेषाधिकार, चुनने से माफ़ी या छुटकाग मनु० ७१२०१ 9. निरस्कार, अनादर 10. आपत्ति ।

परिहासिः [नि] (स्वी०) [प्रा० सं०] 1 चटी, कमी, नुकसान 2. मुर्झाना, क्षीण होना — रघु० १९१५० ।

परिहाय (वि०) [परि + हृ + भञ्ज] कनराये जाने के योग्य, टाले जाने के योग्य जिसमें बचा जाय, जिसे ले जाया जाय या दूर किया जाय — ककण ।

परि (री) हासः [परि + हृ + भञ्ज] 1 मसौला, मसहक, हँसी, ठट्ठा स्वार्थप्रकाशोप न कालु परिहासस्य विषय — मा० ६११६ परिहासपूर्वम् — मसौला में, हँसी दिवसों में रघु० ६१८० परिहासविजयितम् — ज० २१८८, मसौला में कहा हुआ — परीहासविषया सन इमप्रबन्ध एव भवन्, वेणी० ३११६, कु० ७०१९, रघु० ११८ मि० १०१२ 2 हँसी उठाना उहास करना । मम० — वेदिन् (पु०) विद्वत्क इमाहवा गतिरु कश्चिन् ।

परिहृत [भू० क० क०] [परि + हृ + भञ्ज] 1 कनराया हुआ 'गाल' हुआ 2 छोड़ा हुआ, परिहृत 3 निराकृत बराम्ब (बारोप या आपाति आदि) 4 दिया हुआ पकड़ा हुआ दे० परिपूर्वकम् ।

परीक्षकः [परि + ईक्ष + भञ्ज] परीक्षा लेने वाला, जाँच करने वाला — ग्राप करने वाला ।

परीक्षणम् [परि + ईक्ष + भण्ड] जाँच परीक्षण करना, परीक्षा इत्यन्ताना देना मनु० ११११३ ।

परीक्षा [परि + ईक्ष + भञ्ज + टाप्] 1. इम्प्टान, जाँच, परीक्षा — यन्त्रे विद्यमानेऽपि प्राप्ते रणपरीक्षा — भा० वि० १, मनु० १११९, 2 (विधि में) जाँच-पड़ताल के विविध प्रकार ।

परीक्षित (पु०) [परि + ईक्ष + भञ्ज, भुक्, सामर्थ्य दीर्घः] जर्ज का पीच अभिपन्न का पुत्र मुचिन्टि के पञ्चात् यद्री हस्तिनपुर की गद्दी पर बैठा, गौड शासक काटे जाने पर इसकी मृत्यु हुई । कहते हैं, इसी के राज्य से कश्मिर का आरम्भ हुआ ।

परीक्षित (भू० क० क०) [परि + ईक्ष + भञ्ज] परीक्षा किया, जाँच परीक्षा की गई — परीक्षितं काव्यमुत्कर्ष-
मेतन् — विश्व० ११२४ ।

परीत (भू० क० क०) [परि + हृ + भञ्ज] 1 बिरा हुआ, पर्वित 2 समाप्त हुआ, दीना हुआ 3 विगत, व्यतीत 4 पकड़ा हुआ, अधिकार में किया हुआ, भरा हुआ — कोयपरीतपातभम् कि० २१३५, मुद्रा० ३१३० ।

परीताप, परीपाक, परीवार, परीक्षित, परीहास आदि — दे० 'परिताप' आदि ।

परीप्ता [परि + आप् + भञ्ज + भञ्ज + टाप्] 1 प्राण करने की इच्छा 2 जम्दी, पीछना ।

परीरप [परि + ईक्ष + भञ्ज] एक कर्म ।

परीरभण्ड [परि + ईक्ष + भण्ड] 1 कलुषा 2. छड़ी 3 पोशाक, वेशभूषा ।

परीक्षितः (स्त्री०) [परि + क्षि + क्तिन्] १ अनुसन्धान, सूक्ष्मात्म, गवेषणा २ सेवा, परिचर्या ३ आहार, पूजा, श्रद्धाश्रमि ।

पक्षः [पृ + ३] १ जोड़ गौंठ २ अक्षयव, जग ३ समूह ४ स्वर्ग, वैकुण्ठ, ५ पहाड़ ।

पक्ष्म (अन्ध०) [पुर्वस्मिन् पक्ष्मरे इति पूर्वस्य परभाव उत्पन्न] मत बर्ष, पिच्छमा साम ।

पक्ष्महार [प० त०] घोडा ।

पक्षय (वि०) [पृ + उपत्] १ कठोर अन्धा मरुत, कड़ा (वि०) महु या हलधन) पक्षय शब्द पक्षया माया आदि २ (शब्द आदि) कटु आभासित निरुद्ध निरुक्तक कुर, निर्मल (वाक्) आकाश परवाहार मीरिणा रघु० ५८ पक्ष० १०३, अर्थिक १०३, शिरो० ५ दाउ० ११३० ३ (मन्द) कलकत्, ५५ शिखर, येन बह्मरायवन् पत्न्य रघु० ११०५ पक्ष० ४ कक्षा, मनुष्य भूतद्वय (काल) मैत्रा कुर्वन् मनुष्यमापदकवचक पक्ष० १२५ शीघ्र प्रवृत्त मनुष्य उत्पन्न [वाक्] आदि। वेचक परमपवनस्य सर्गस्थानप्रसङ्गवत् पक्षु० ११२२ २१२८ ६ दोस मादा ७ सक्ति, मैत्रा शब्द कटार वा दुर्जनवृत्त आचार्य अक्षयवत् । म० - अक्षर (वि०) वा अक्षय न हो, कोमल मनु - रघु० ५१६८, - अक्षय - अक्षय अक्षयिनि ।

पक्ष्म (पु०) [पृ + उत्] १ मण्डि, छवि, झाँक, मोट २ अक्षय, मणिक का लव ।

परीत (पु० क० ड०) [पर + इ + त] रिचयन, सुवशासन, मनु - कः सेन, मनु । पक्ष० - कर्ण, रघु० [पु०] मनुष्य का देवता, वधगात्र वि० ११५०, - कृतिः (स्त्री०), - वस्तः कविमान पु० ९८ ।

परीक्षित, परीक्षुः (अन्ध०) [परिस्मिन् अङ्गि, वि० माप०] हुनरे दिन, और दिन ।

परीक्षुः (स्त्री०), परीक्षुका [पर + क्षि + क्तिन्, परीक्षु + क्तिन्] वर नाथ या कई बार आया कुटी हो ।

परीक्ष (वि०) [अक्षय, परम - व० म०] १ कृत्रिमत्व के रहे, या बाहर, जो दिखाई न दे, अलोच २ अनुपस्थित - स्थाने वृत्ता मूर्तिवि परीक्षी - रघु० ७११३ ३ मनु, अज्ञान, अपरिचित परीक्षयमयो वन - म० २१८८, 'काम के प्रभाव में अपरिचित' - हि० ४० १०, - वः मन्थारी, - अक्षु १, अनुपस्थिति अलोचन २ (व० म० में) युवकाल (जो कला में न देखा हो) परीक्षे हिन्दु - ग० ३१०१११५, 'परीक्ष' के कर्म० तथा अर्थ० के ग० व० - (अर्थ० परी० उत्पत्ति) अनुपस्थिति में 'कृत्रिम' या 'परी० गोले' अर्थ का प्रकट करने के लिये विशालक्षेप के रूप में प्रयुक्त होते हैं (अव० के विना, या अक्ष) - परीक्षे

मन्त्रिकर्तुं शक्यते न प्रमादतः शालि० २, परीक्षे कार्यकुशल प्रत्यक्षे शिष्यादिन - भाष० १८, गोवा - हरेद्वय नाथ परीक्षमपि शेषमन् मनु० २११११ । म० - भोजः स्वास्ती की अनुपस्थिति में किसी वस्तु का उपयोग, - कृति (वि०) जोको से दूर रहने वाला (वि० - स्त्री०) अनुपत् और अज्ञात जीवन ।

परीक्षित, परीक्षी [पर + पृ + क्तिन् परः मनु उत्पत्ति] यथा व० म०] ऐलकट्टा (सीमुर के आकार वाले रंग का एक कीड़ा) ।

पक्षय [पृ + पश्य वि० पक्षयस्य प्रकार] १ वरमने माया मेष, पक्षयने माया कपल बाहल या मेष प्रवृत्त इव पश्येय सागरीरधिमहित रघु० १७१५ पक्षु पक्ष० १२५० पक्ष० १०५० १ वरिष्ठ अक्षयवत् भूतानि पश्येयप्रममम म० ३१६३ कृति का देवता अक्षयि इन्द्र ।

पक्षे (पु०) उच्यते - पश्यति - न, हावरा कर्मा वस्तु पश्यति वस्तुवत् ।

पक्ष्य [पक्ष + अक्ष] १ पक्ष मनु मैत्रा वि 'पुनर्व' में २ हाथ का पक्ष ३ पला ४ पाय का पला - कः हाथ का देव । म० - अक्षयम् पक्षे आकार कीला [प०] बाहल, कृतिः वाली मनुषी अक्षय (वि०) पक्षे वाक् विरही करने वाला, उच्यते परी की कृतिवा, साधु की की ओपरी, आचय, - कार पक्षयरी, तबोली, पान सेचने वाला, - कृतिवा, - कुटी पक्षी की कृतिवा, - कृतिवाः शालिवा, कर्मा कायका विचने शालिवाकण की पक्ष विच एक वने और कुक्षयो वा काड़ा पीकर रहता पक्षता है, र० म० ३१११०, इसके ऊपर मिताहारा की, - कृतिः कुक्षयो के विना वृक्ष (-अक्ष) पक्षी का डेर, - कृतिवाः विच का विचोचन, कौरक एक प्रकार का पुनर्व इव, - पक्ष पक्षे के वनाया मया पुनर्व को वनाय वच की कक्ष रक्षक पक्षता वाता है, - वैश्वी विचपुनर्व, - पक्षयः वक्षरी, - पक्ष (पु०) बाड़े की वक्षय, मिदिर मनु, - पक्ष पक्षी की हाकाओं पर रहने वाला वक्षकी मानवर, पक्ष (पु०) वक्ष मनु, - कक्ष पाय की वेन, - कृतिवा पाय का वक्ष, - कक्ष पक्षी की वेन, कक्षा पक्षी की कृतिवा साधु की का - कक्ष विचिवा कुक्षयिका व वक्षयवाचयवत् - रघु० १११५, १११५० ।

पक्ष्य (वि०) [पक्ष + अक्ष] पक्षी से पक्ष इत्या, पक्षी वाला - कृति १११५१ ।

पक्षि [पृ + कृति, पुन] १ पक्षी के मध्य वक्ष मय, शीघ्र वक्ष २ वक्ष ३ हाथ कक्षी ४ कक्षयट, प्रभाव, भूमाव ।

पक्षिन् (पु०) [पक्ष + इति] वृक्ष ।

पर्यंत (वि०) [पर्य + इत्थन्] दे० 'पर्यंत' ।
 पर्यं (भा० भा०-वर्तते) पार करना, अगमनवायु छोड़ना ।
 पर्यः [पर्य + अन्] 1. केस समूह, बना बाल 2 पार, अगमन वायु ।

पर्यः [पृ + प] 1 नया उमा बाल 2 पंयु-नीट, पंयुवाडी
 —वेन वीठेन पंयवधरति ६ पर्यं — पा० ४।४।१०
 पर सिद्धा ३ घर ।

पर्योक्तः [पृ + ईकन्] 1 सूर्य 2 बाय 3 जलाशय, तालाब ।

पर्यन्त (अन्व०) [परि + अन् + क्तव्य] चारों ओर, सब दिशाओं में ।

पर्यन्तः [परिगन्त अन्तन्-अन्ता० स०] 1 जाट, पलंग, सोका 2 अकमाली 3 समाधि-अवस्था में योगी के बैठने की विशेष अवस्थिति - योगासन 4 बीरासन —बलिष्ठ द्वारा की नदी परिभाषा—एक पादमर्क-स्मिन् शिवायस्योरी तु सन्वितम्, इतरस्मिस्तथैवोप बीरासनमुपाहृतम् । पर्यन्तं विषयं भावि—मुष्ट० १।१। सयं—बंधः बांध के सहारे बैठने की स्थिति जिसे 'पर्यन्त' कहते हैं, पर्यन्तपरिवारपूर्वकावन्तम्—कु० ३।४५, ५९.—नौमिन् (पु०) एक प्रकार का बाँध ।

पर्यन्तम्, पर्यन्तितम् [परि + अन् + क्तव्य, क्त वा] घूमना, इधर उधर घूमना करना, बाधा करना—।

पर्यन्तुषोः [परि + अन् + वृत् + क्तम्] किसी उक्ति का अन्तन करने के उद्देश्य से प्रस्ताव (वृत्तार्थ) विज्ञाता—हुता०) एतेनास्थापि पर्यन्तुषोःस्वानवकाशः—दाध० ।

पर्यंत (वि०) [प्रा० स०] से सीमा बद्ध, तक फैला हुआ—समुद्रपर्यन्ता पृथिवी—समुद्र की सीमा से बाबद्ध पृथ्वी—सः 1 बावर्न, परिधि 2 घोट, किनारा, मनवी, बरगसीमा, हृद —उत्तरपर्यन्तपारिणी—स० ४, पर्यन्तवनम्—रघु० १।१३८ शत्रु० ३।३ 4 पार्वर, कज—रत्न० २।३, रघु० १८।४३ ६ अन्त, उपसंहार, समाप्ति—पथ० १।२२५ । नव० देवः—पृ०—भूमिः मिला हुआ वा जुड़ा हुआ प्रदेश,—पर्यन्तः संलग्न पहाड़ ।

पर्यन्तिका [प्रा० स०] अच्छे पुणों की हानि, अष्टाचार, नैतिक पतन ।

पर्यन्तः [परि + इ + अन्] अस्ति, पतन, निःश्वास—काम-पर्यन्तम्—पाठ० ३।२१७, मनु० १।३०, ११।२० 2 (समय की) बर्बादी, या क्षीना 3 परिवर्तन, बदल-बदल 4. उलट-मुलट, अन्ववस्था, अवियमितता 5. क्षात्रीय मर्त्या का अतिक्रमण, कर्तव्य की अवहेलना 6. विरोध ।

पर्यन्तम् [परि + अन् + क्तव्य] 1 चारों ओर घूमना, प्रदक्षिणा 2 घोंघे की जीम ।

पर्यन्तवन्त (वि०) [प्रा० स०] पूरी तरह बुद्ध और पवित्र ।

पर्यन्तरोधः [प्रा० स०] बाधा, बिध्न ।

पर्यन्तलम् [प्रा० स०] 1 अन्त, समाप्ति, उपसंहार 2 निधारण, निश्चयन ।

पर्यन्तित (पु० क० कृ०) [परि + अन् + क्त + क्त] 1 समाप्त किया गया, अन्त तक किया हुआ, पूरा किया हुआ 2 नष्ट, लुप्त 3 निधारित ।

पर्यन्तवन्त, पर्यन्तलम् [परि + अन् + क्त + अन् + टाप्, क्तव्य वा] 1 विरोध, मुकाबला, बाधा 2 वैपरीत्य ।

पर्यन्त (वि०) [प्रा० स०] अंतुबो से भरा हुआ, अन्तुगिर्यवस्थित, जोसे बहाने वाला, अन्तुवृत्त पर्यन्तुभी प्रयत्नप्रयत्नीयत्नं लोचने सीलियन्तु विषेहे - कि० ३।३६, पर्यन्तुरस्वजन मूर्धनि चोपजघ्री - रघु० १३।३० ।

पर्यन्तम् [परि + अन् + क्तव्य] 1 फेंकना इधर उधर डालना 2 भेजना बकलना 3 भेज देना 4. स्मृतिग करना ।

पर्यन्त (पु० क० कृ०) [परि + अन् + क्त] 1 इधर उधर फेंका गया, झरोका गया पर्यन्तो घनजलम्भोपरि शिलीमुकासार देवी० ४, । स० १०।११ 2 घेरा हुआ, मच्छलाकृत 3. उलटाया गया, उधाला हुआ 4 पर्यन्त, एक ओर रक्का हुआ 5 प्रहार किया हुआ, घोट पहुंचाया हुआ, मारा हुआ ।

पर्यन्तः (रन्) पर्यन्तिका [परि + अन् + क्तव्य, पर्यन्त + क्त + टाप्] बीरासन पलंग ।

पर्यन्तुष (वि०) [प्रा० स०] 1. सीमा, संवा (पानी आदि) 2 अन्ववस्थित, उद्भिन्न, भयभीत—स० १ 3. कमहीन, अन्ववस्थित, उचल-मुचल—स० १।३० 4. उत्तेजित, जुध्म, खरापा हुआ—पर्यन्तुषोऽस्मि स० ९, शत्रु० १।२२ 5. भरा हुआ, पूरा—स्नेहं, कोषं भावि ।

पर्यन्तम् [परि + अन् + क्तव्य, पुषो०] जीन, काडी -वत्-पर्यन्तम्—का० १२६, जीन कहा हुआ ।

पर्यन्त (पु० क० कृ०) [परि + अन् + क्त] 1 प्राप्त किया हुआ, हासिल किया हुआ, उपलब्ध 2. समाप्त किया हुआ, पूरा किया हुआ 3. भरा हुआ, पूर्ण, समस्त, सारा, ममब पर्यन्तं पथेव धरत्पिथामा—कु० ७।२९, रघु० ६।४४ ६ बोध, लक्षण, यथेष्ट रघु० १०।५५ 5. काफ़ी, यथोचित—रघु० १५।१८, १७।१७ मनु० ११।७,—पन्थ (अन्व०) 1. स्वेच्छा-पूर्वक, तत्परता के साथ 2. क्षम्योप, काफ़ी, यथेष्ट रूप से पर्याप्तमाधामति उत्तर० ४।१, यथेच्छ भी लेता है 3 पूरी तरह से, बोध्यतापूर्वक, लक्ष्यता के साथ ।

पर्वणिः (स्त्री०) [परि + भाप् + क्तिन्] 1 प्राप्ति करना, अधिकृत 2 जन्म, उपसहार, समाप्ति 3. काफ़ी, पूर्णता, यथेष्टता 4. तृप्ति, संतोष 5. साधारण, पहाड़ की ढोला 6. उपयुक्तता, सख्यता ।

पर्वणि [परि + ह + घञ्] 1 चकर मगाना कान्ति 2 (समय की) समाप्ति, व्यतीति होना बीतना 3 नियमित परावर्तन, या आवृत्ति 4 बारी, उत्तराधिकार, उचित या नियमित क्रम -पर्वणि सेवायुक्त्य -कु० २।३९, मनु० ४।८७, मुद्रा० ३।२७ 5. प्रवाली, व्यवस्था 6. तरीका, रीति, प्रक्रिया की प्रवाली 7. समानार्थक पर्वणियाँ पर्वणी निबन्धनाय निबन्धन जरीरिजगम -पञ्च० २।९९, पर्वतस्य पर्वणि इमे—अरि 8. लोच. निर्वाण, पैदारी रचना 9. वमं गुण 10 (अ० में) एक अक्षर २० काव्य० १० चन्द्रा० ५।१०८, १०९. ला० द० ७२३ (विशेष) पर्वणि क्या विश्वण के रूप में प्रवृत्त होकर निम्नादि जय बनाता है 1. बारी बारी में, उत्तरातर नबरबार, निबन्धित क्रम से 2. यथावसर, कभी कभी -पर्वणि हि इवसे स्वप्ना. काय सुभासुभा -वेणी० २।३३ । सम० उत्तम एक अक्षर, बुझाफिरा कर करना वक्रांति या वाकप्रपञ्च से कहने की रीति जब बात को बुझा फिरा कर वा काव्यज्ञ के साथ कहा जाय उदा० दे० चन्द्रा० ५।९९, ला० द० ७०३ -वृत्त (वि०) गुण रूप के उदाहरण हुआ, जिसका स्थान छलपुर्वक ने किया गया है -वचनम् लब्ध समानार्थक, -वचनम् बारी २ सोना और पीकरी रचना ।

पर्वणो (अध्य०) [परि + भा + जन् + ई] हानि या क्षति का (हिसन) अभिव्यक्त करने वाला अध्यय जो प्राय क, घू या जन् से पूर्व लगाया जाता है यथा पर्वणोक्त्य = हिसिवा ।

पर्वणोक्त्यम् वा [परि, भा । जोष + ह्यट्] 1 सावधानता, गृहीता बिचार परिपक्व विमर्श 2. जानना, पढ़ाना ।

पर्वणित, पर्वणित्यम् [परि + भा + वृत् घञ्, ह्यट् वा] भाषित जाना, प्रयागमन ।

पर्वणित्य (वि०) [प्रा० सं०] बड़ा गढ़ना, पैला, मिट्टी में भरा हुआ रघु० ७।४० ।

पर्वणितः [परि + भन् + घञ्] 1 अन्त, उपसहार, समाप्ति 2 परावर्तन कान्ति 3 उल्टा क्रम या स्थिति ।

पर्वणित्यः [परि + भा + ह । घञ्] 1 बीजा बोने के लिए कंधों पर रक्ता गया घुमा 2. से जाना 3 बीजा, बार 4 बड़ा 5 अनाज को भंडार में रचना ।

पर्वणित्यम् [परि + उज् + ह्यट्] बिना किसी मनोपचारण के बारी और बुधपाय जल के छिटे देना ।

पर्वणित्यम् [परि + उज् + स्वा + ह्यट्] बड़ा होना ।

पर्वणित्य (वि०) [प्रा० सं०] 1 लोक पूर्ण, खेद वृत्त, निम्न, दुःख स्वप्न लोक, रघु० ५।९७ 2 अत्यन्त दृक्, कायुर, होलुक, प्रवर्ण दृक् रक्ता वाका—स्वर पर्वणित्य एव नाथव—कु० ४।२८, विक्रम० २।१९ ।

पर्वणित्यम् [परि + उज् + भञ् + ह्यट्] 1 जल, उचार 2 उचार लेना, उठाना, उधार करना ।

पर्वणित्य (मू० क० छ०) [परि + उज् + भञ् + ह्यट्] 1 बहिष्कृत किया हुआ, निष्काका हुआ 2. रोका गया (निबन्धित) आपनि उठाई गई ।

पर्वणित्य [परि + उज् + भञ् + घञ्] अपवाद, निवेद्य वृत्त निवेद्य वा विधि ।

पर्वणित्यम् [परि + उज् + स्वा + ह्यट्] सेवा, टहल, उपस्थिति ।

पर्वणित्यम् [परि + उज् + भा + ह्यट्] 1 पूजा सम्मान, सेवा 2 निश्चय, सिद्धता 3 पास पास बैठना ।

पर्वणित्य (स्त्री०) [परि + भप् + क्तिन्] बीना, बीजना ।

पर्वणित्यम् [परि + उज् + ह्यट्] पूजा, वर्षा सेवा ।

पर्वणित्य (वि०) [परि + भप् + क्तिन्] बारी, बी ठाका न ही गु० 'अपवृत्ति' 2. लोका 3. पूर्ण 4. वसती ।

पर्वणित्यम्—भा [परि + ह्य + ह्यट्] 1 तर्क द्वारा निवेद्य 2 जोड़ सामान्य पुनः-ता 3 अज्ञात, पूजा ।

पर्वणित्य (स्त्री०) [परि + ह्य + क्तिन्] बाज, पुछताड़ । वरुणम् [पर्वणा इतिना कायानि पर्वण + ई + क] वृत्तने का जोड़ ।

पर्वणो [पर्व + ह्यट्, सिध्या छीप] 1. पुणिमा, या वृत्त-प्रतिपदा 2 उत्तर 3 (भापु० में) जोड़ की छवि का विशेष रोग ।

पर्वण [पर्व + भञ्च] 1 पहाड़, गिरि—परपुष्पर-मायुपर्वणोक्त्य नित्यम् पर्वण० २।७८, न पर्वणो नलिनी प्ररोहित 2. चट्टान 3. कृत्रिम पहाड़ या डेर 4. 'सात' की मन्दा 5. वन । सम०—अरि इत्य का विशेषण, अत्यन्तः मैनाक पर्वण का विशेषण, -अत्यन्त पार्वती का विशेषण, -जाकारा पुष्पी, -जात्यः दारुण, अत्यन्त शरभ नाथक काल्पनिक जगु—काकः पहाड़ी कीवा, या नदी, वनः हिवा-लय पहाड़ का विशेषण जोषान् हृदी केला, -राज् (पु. , राज् 1. विस्तार पहाड़, 2. पर्वतों का स्थानी हिवालय, -स्व (वि०) पहाड़ी, पर्वत पर स्थित ।

पर्वण (मपु०) [पृ + वणिप्] 1 गाठ, जोड़ (बहुव्रीहि समास के अन्त में कभी कभी वचन कर 'पर्व' हो जाता है वैया कि कर्कशोपनिषदा—रघु० १२।४१' में 2. अक्षय, अन्न 3. 'अक्ष' भाव, अन्न 4. पुनः,

अध्याय (बैसा कि महाभारत में 5. जीने की सीढ़ी - रघु० १६/४५ 6 अथि निविचन तमय 7. विद्याध-
कर, चन्द्रमा के चार परिवर्तन अर्थात् दोनो पक्ष की
अष्टमी पूर्णिमा तथा अमावस्या 8. चन्द्रमा के परि-
वर्तन काल के अवसर पर अनुष्ठित यज्ञ 9 पूर्णिमा
या अमावस्या, -अर्धर्षि प्रहृक्नुपेन्दुमरणा विभावरी
कथय कथ अविध्यति मालवि० ८/१५ रघु० १/३३
मनु० ४/१५०, मनु० १/३४ 10. सूर्य या चन्द्रमा
का बहुल 11 उत्तरार्ध, त्योहार हर्ष का अवसर
12. सामान्य अवसर। तम० काल 1 चन्द्रमा
का द्वात्रिंशत् परिवर्तन 2 बहु काल जब चन्द्रमा
पूर्वतन्त्रिण में म गुरुत्वा है (मिलते या निकलते समय)

कारिन् (पु०) 48 बाधन जो चन्द्रमास्या आदि
के द्वात्रिंशत् अनुष्ठान या संस्कार का अपने काम के
कारण सामान्य शिरो म करना है वाग्विन् (पु०)
पर्व आदि सातव निविद्ध अवसरों पर भी अपनी
पत्नी से मैथुन करने वाला व्यक्ति चि चन्द्रमा
योगि: वेत, नरकुल, बहु, (पु०) अनाद का पुत्र
सन्धि: पूर्णिमा या अमावस्या तथा प्रतिपदा के मध्य
का समय अर्थात् पूर्णिमा या अमावस्या की समाप्ति
पर प्रतिपदा आरम्भ।

पर्व: [परं वन् मुच्यति पर + वृ + कृत् व व् विन् वा
मुच्यति वन् मुच् + वृत्, व् आदेश] 1 कुटार,
कुलहाडी - दु० परवृ 2 कस्त, द्विवार। तम०-
पर्वि 1. वर्षेष्ट का विशेषण 2. परवृत्त का
विशेषण।

पर्वक [पर्व + कृत् + टाप् +] पर्वको।

पर्वक: [= परवृत् + वा + क, पृषा०] २० 'परवृत्त'।

पर्वन् (स्त्री०) [पृ + वरि] 1 तथा, सम्मिलन, सम्मर्द
2. विशेषकर वर्षेष्टमा - बाङ्ग० १.९।

पक्ष: [पक्ष + भच्] पुष्पल, मूली, - कम् 1 मांस, वाग्विन्
2. कर्ष का लोक 3. गरल पदार्थों का मापने का मान
4. क्षय मापने का मान। तम० - क्षिप्ता पित्त,
-क्षे: ककुषा, -क्ष: -क्षम: पिप्पा, रण्डल,
-क्षार क्षीर, -क्ष: पक्वस्तर करने वाला, रात्र
-क्षि: 1. राक्षस 2. पहाड़ी बीबा, -वा चम्पाक्ष
की सिपुवीर छाया -अर्धत् क-ग्राह्य के समय गुरुवरी
के बील की तस्काहीन छाया।

पक्षकट (वि०) [पक्ष मांस कटति - पत् + कट् + भच्, मृन्]
बीर, बुधविल।

पक्षकर: [पक्ष मांस करोति - पक्षन् + कृ + भच्, द्वितीया
वा बहुङ्] पित्त।

पक्षकट: [पक्ष कवति - पक्षन् + कृ + भच्, द्वितीयावा
बहुङ्] 1. पक्षक, पिप्पा, क्षम, कम् 1 मांस
2. बीबड़, क्षमक 3. पित्त हुए तिल व बीबी मिला-

कर बनाई गई मिठाई, यमक। तम० - क्षर. पित्त
-क्षि: 1 पहाड़ी बीबा 2. राक्षस।

पक्षक: [पक्ष + वा + क] मछलियाँ पकड़ने का जाल या
टोकर।

पक्षाक्ष (पु०, नपु०) [पक्षस्य मांसस्य अर्धविभ - पक्ष
+ अक्ष + कृ] प्याज मनु० ५/५, बाङ्ग० १/१०५।

पक्षाक्ष: [पक्ष मांसम् आध्याते बाहुभ्योनं अक्ष पक्ष + भाप
+ चक्ष] 1 हाथी की पुटपुटी 2 पगहा, रस्सी।

पक्षाक्षमन् [पक्ष + अक्ष + लुट् रस्य ल] भातया लोटना
उठान अक्ष निकलना तम० १८/४३, रघु० १९/११

पक्षाक्षित (पु० क० कृ०) [पक्ष - भय + क्त] भागा
हुआ लोट्टा हुआ चौड़ा हुआ अक्ष निकला हुआ।

पक्षाक्ष: तम० [पक्ष + कालम्] पुष्पल, मूली १०८ -
तम० होहल आम का वृक्ष।

पक्षाक्षि पक्ष + अक्ष + इन्, धर्म का वर।

पक्षाक्ष [पक्ष + अक्ष + भण्] एक वर्ष डाक ११ पैर
किमुक्तवपकागागाकाशमम गुरा जि ५२ जम्
1 इस वृक्ष का फूल बाल्यवकाश्यावकाशमा वाडम्
पक्षाक्षमन्निर्लोहितानि कु० १/२९ 2 पक्षा पक्ष की
चलनमाध्यातराशोचराम्नात् शि० १/२१ ५/२
3 हुआ रत्न।

पक्षाक्षिन् (पु०) [पक्षाक्ष + इन्] डाक का पैर।

पक्षाक्षी [पक्षित + अक्ष, तस्य नाम, शीप] 1 मूली जो जिसके
बाक सके हो नये हों 2 गहली बार ही ध्यात्रे हुई
जी, बालगविनी।

पक्षित: [पक्षि + इन् + भण्, आदेश, रस्य ल] 1 बीबे
का लक्ष्य, बड़ा 2. कलोल परकाटा 3 लोहे की बदा
- दु० पक्षि 4. घोसाला, मोमहू।

पक्षित (वि०) [पक्ष + क्त] पुरा, वक्ता, लक्ष्य वालों
वाला, बुद्ध, बुद्धा, वातस्य ये पक्षितबीभिर्निरस्तकावे
(धिरदि) - वेनी० १/१९ - कम् 1 लक्ष्य प्राप्त वा
वालों की लक्ष्ये जी बुद्धारे के वादय हुई ही - बीबी-
क्षेवेवाह पक्षितकथना बरा रघु० १२/२, मनु०
५/२ 2 अधिक वा अलंकृत देख।

पक्षितकरच (वि०) [अपक्षित पक्षित क्षितेजोश्च पक्षित
+ कृ + क्त्वा, मृन्] लक्ष्य करने वाला।

पक्षितकथिन् (वि०) [अपक्षित पक्षितो वचति - पक्षित
+ वृ + क्त्वा, मृन्] लक्ष्य होने वाला।

पक्षक: [पक्षित अक्षयतेज, पक्षि + अक्ष + भण्, रस्य ल]
पक्षक काट - २० पर्वक।

पक्षकमन् [पक्षि + अक्ष + लुट्, रस्य ल] 1. बीन, माडी
2 रात, लगाम।

पक्षक: [पक्ष + अक्ष] अमाव का कड़ा बंधार, बारी।

पक्षाक्ष: - वृ [पक्ष + क्त्वा = पक्ष, कृ + क्त्वा = क्षय, कम्
बाकी लक्ष्य करने - कृ०] 1 अक्षुर, क्षीर, दूध की

—कल्पलवः, लवेव सनद्धमनाक्षपल्लवा—रघु० ११७

2 कली, मधरी 3 विस्तार, फलाव, अमस्तुति

4 लालरंग, महाङ्ग, अलकल 5 सामर्थ्य, शक्ति

6 वास की पत्नी 7 ककण, बाजुबंद 8 प्रेम केलि

9 पञ्चलता, वः स्वेच्छाचारी। सम० अंकुर,

—आधारः ताळा, अक्ष का मासिक का विशेषण
हुं अनाक वृक्ष।

पल्लवक [पल्लव + क + क] 1 स्वेच्छाचारी 2 लीला
गाथा 3 रङ्गी का प्रेमो 4 लालक वृक्ष 5 एक प्रकार
की मन्त्री 6 अंकुर।

पल्लविक [पल्लव भुगारा रम अतिरिक्त अल्प पल्लव -
ठन्] 1 स्वेच्छाचारी, रसिया 2 लीला, बाका
छेल।

पल्लवित [पल्लव + इत् + क्त] 1 अकृतित शान
थाया गई - कोपना से मुक्त 2 फेरा हुआ बस्तु
अन्य पल्लवित बस्तु रहने दो जीव अधिक विस्तार
3 लाभ से लाभ रम हुआ न लाभवा रम।

पल्लवित् [पल्लव + इत् + क्त] 1 गई -
कोपना से मुक्त नये कितलिया बाका - कु० ३१५४,
(पु०) वृक्ष।

पल्लवः, पल्लवी (स्त्री०) पल्लव + इत्, पल्लि - डीप्]
1 छोटा गीव 2 झोपड़ी 3 घर पहाड़ 4 एक
नगर या स्थला (नगरो के नामों के अन्त में प्रयुक्त
जैसे कि शिवाग्रपल्लव) 5 छिपकली।

पल्लिका [पल्लि + कन् + टाप्] 1 छोटा गीव, पहाड़
2 छिपकली।

पल्लवम् [पल्ल + ववच्] छोटा तालाव छपड़ मोह
नद्याम (अल्प मय) म पल्लवजलेभुता वय
वर्तमान भासि० ११३ पु० २१७, ३१३, १ सम०
—आधारतः कछुवा एक छपड़ का योग कीबड़।

पल्लः [प्ल + अल्] 1 बायु 2 परिचाकरण 3 अनाज फट
करना - वज्र मोहर।

पल्लवः [प्ल + स्पृत्, हुवा, बायु सर्पा पिबन्ति पवन न प
हूरेजान्ते - सुभा० पवनपदवी, पानसुत आदि—वज्र
1 परिचीकरण 2 फटकरना, चमरी, झरना
4 पानी 5 कुहरार का आवा (पु० भी) नौ झड़।
सम०—अज्ञान—भुज (पु०) साप, आलस्यः 1 हनुमान
का विशेषण 2 भीम का विशेषण 3 आग, आकाश
साप, सर्प, नाकः 1 गरुड का विशेषण 2 मोर
लव्यः - कुतः 1 हनुमान का 2 भीम का विशेषण
—व्याधिः 1 कुल के सलाहकार और मित्र उद्धव
का विशेषण 2 गरिया।

पल्लवः [प्ल + वानच्, मुक्] 1 हुवा, बायु- पवमान
पृथिवीवहामिव -रघु० ८१९ 2 एक प्रकार की
पद्मानि बिसे माहुरत्य कहते हैं।

पल्लवा [प्ल + वाप्, नि० माप्] बवहर, मीची, ललापात।

पल्लि [प्ल + इ] इन्द्र का वज्र।

पल्लित (वि०) [प्ल + क्त] पलित किया हुआ, छाना
हुआ मज्ज काली मिर्च।

पलित (वि०) [प्ल + इत्] 1 पुरीत पावन, निष्पाप,
परिशीलन (व्यक्ति या वस्तु) - नील आदि पलितानि
दीर्घ कुतपलितानि मनु० २१०, ३६, पलितो न
पलित स्थानम् आदि 2 शुद्ध, छाना हुआ 3 पञ्चादि
के अनुष्ठानों द्वारा पलित किया गया 4 पलित
करना, पाप छोना, प्रथ 1 छानने या शुद्ध करने का
उपकरण चलनी, झरना 2 कुश की दो पलियाँ जो
पत्र से बी की पलित करने तथा छीटे देने के काम
आती हैं 3 हुआ की बनी अगूठी जो कई पलित
अवस्था पर बोधी अंगुली में पहनी जाती है 4 बनेछ
या हनुमान के प्रथम तीन बर्ष पहनने हैं 5 तीक्षा
6 वृद्धि 7 जल 8 मक्खना पात्रना 9 अर्घ्य देने
का पात्र १०. बो ११ गृह मज्ज मयः सम० आलोचनम्
—आलोचनम् पञ्चापदीप्त धारण करने का सम्कार,
उपपन्न सम्कार, - पलित (वि०) दमयान की हाथ
से धारण वाला - वाक्पल्य जी।

पलितकम् [पलित + कं + क्त] मल या सुतली का बना
जाल या रस्ता।

पलित्य [पलित + क्त + क्त] 1 मर्चिनी (पाव भेली
आदि) के लिए उचित या उपयुक्त - वाङ् ० ११३१
2 पशुओं से या रेवड़ या बन्दे से मक्ख रचने वाला
- पशुओं का स्वाधी 4 पशुपुत्र।

पल्लु [सर्वमविशेषण पदवति- प्ल + कु, पछादेश]
1 मर्चिनी (एक या समरित) मनु० २२३, ३३१
2 जानवर 3 बलिपशु जैसे कि बकरा - नृपक्ष,
जगली के लिए स्मारक प्रकट करने के लिए नर बाघक
शब्दों के साथ जोड़ा जाता है पुरुषपक्ष, पक्षपक्षोप
को विशेष हि० १ तु० नृपक्ष नरपशु 5 एक उप-
देवता, शिव का एक अनुचर। सम०—अवधानम् पल्लुबलि
—विद्या 1 बलिपक्ष की प्रविष्टा 2 स्त्रीप्रसंग—वाक्पल्य
वह मन्त्र जो कि बलिके पशु के कान में बोला जाता
है, यह प्रसिद्ध गायत्रीमन्त्र साम्यमय अनुवृत्ति है -
पशुपक्षाय विद्या शिरच्छेदाय (विश्वकर्म्म) की मर्हि,
तली जीव प्रबोधयाव, बालः यज्ञ के लिए पशुओं
का बच, -वर्षा सहवास स्त्री प्रसंग बर्षः १ पशुओं
की प्रति या लक्षण 2 पशुओं की चिकित्सा 3
स्वच्छन्द यज्ञ मनु० ११६६ २. विषवाधिविद्या,
नाकः शिव का विशेषण, - वः पाला—वर्षाः १

शिव का विशेषण मेघ० ३१, ५१, कु० ११९५ 2
प्राका, पशुओं का स्वाधी 3 पशुपक्ष नामक शार्ङ्ग-
निक सिद्धांत का प्रतिपादन करने वाला वर्द्धन शास्त्र

—३० सर्व, —वाक्य: — वाक्यक: वाका, पशुओं का पालन करने वाला, —वाक्यक:—रक्षक पशुओं को पालना रखना, वाक्यक एक प्रकार का रतिवाच्य या मेषन प्रकार,—मेरव पशुओं को हांकना, आरव (अर्थ) पशुवध की गति के अनुसार—इष्टिपशु-मार मारित श० ६, वक्त, —वाक्य:— इच्छा पशु पत्र, —रक्षक: (स्त्री०) पशुओं को संभालने के लिए रखी —राक: सिंह केसरी ।

पश्चात् (अर्थ०) [अपर + अनि, पश्चात्] १ पीछे से, पिछली ओर से पश्चाद्दृष्टपुत्रमादाय श० १ पश्चाद्दृष्टमर्षति हरिश्च स्वायमायच्छदान - श० ४, (पाठान्तर) २ पीछे पीछे की ओर, पीछे की तरफ (विप० पुर) गच्छति पुर शरीर धावनि पश्चादय म्लुत वेत - श० ११३३, ११३३ (मय और स्थान की दृष्टि से) बाद में, तब, इसके बाद, उसके अनंतर —अर्थो पुरा दृष्टिपत्नी च पश्चात्—मनु० २१६०, तस्य पश्चात्—उसके बाद—रघु० ४१३०, १०१३ १७१९, १६१२९, मेघ० ३६, ४४ ४ आखिरकार अन्त में, अन्तनोक्त्या ३ पश्चिम से ६ पश्चिम की ओर, पश्चिम दिशा की तरफ: । मन्त्र० कुल (वि०) पीछे छोड़ा हुआ जाने बड़ा हुआ, पृष्ठभूमि में छोड़ा हुआ —पश्चात्कृता स्मिन्वज्जनाशिक्षोऽपि कु० ७१२/ रघु० १७१८, तस्य: पछताना, पछानि, पछतावा च पछताना ।

पश्चात्: [अपरवर्तनी अर्थ कु० श०, अपरव्य पश्चात्] (शरीर का) पिछला भाग या पार्श्व पश्चात् से प्रविष्ट मरपतनभयाद्भुत्सा पूर्वकायम् श० ११३ (मय और देख की दृष्टि से) अन्तिम —पश्चिमे वयसि वर्तमानम् का० २५ रघु० १९११ ५६, पश्चिमाद्यामिनीयामान् प्रमादमिवचनेना रघु १७१ स्मरन परिव्रामाशा १७१८, तत पश्चि मयो पितु पादया मुद्रा० ७ ३ पश्चिमी, पश्चिमो ढग का मनु० २१२२, ५१२२ (पश्चिमेव) किमभिनेय के रूप में 'पश्चिम में' बाद में पीछे' अर्थात् को प्रकट करने लिए, कर्म० या सब के साथ प्रयुक्त, इसी प्रकार पश्चिम में । मय० - अर्थ १ उन्मार्ग २ रात का पिछला पहर ३ गति का पिछला भाग उवाचना पश्चिमरात्रयोपरात् कि० ४११०, (पाठान्तर) ।

पश्चिमा [पश्चिम + टाप्] पश्चिम दिशा । मय० —उत्तरा उत्तर पश्चिम ।

पश्चात् (वि०) (स्त्री०-स्त्री) [दृष्ट् + शतृ, पश्चादेन] देखने वाला, प्रत्यक्ष ज्ञान करने वाला, अवलोकन करने वाला, दृष्टिपात करने वाला, निरीक्षण करने वाला आदि ।

पश्चात्गोहर [पश्चात् अनम् अनावृत्य हरति-इ + शतृ, श० त० अलक्ष समास] गोहर लुटेरा डाकू (वह व्यक्ति जो दूसरी की ज़ाबो के सामने ही या स्वामी के देखने रहने पर भी चोरी कर लेता है, जैसे मुनाग) ।

पश्चंती [दृष्ट् + शतृ पश्चादेन मनु] १ वेराग ग्री २ विमेष— प्रकार की ध्वनि ।

पश्चम् [अपव्यापानि समोभय निष्ठति यत्र -ग्रा० सत्यं क नि० अकारलोप] चर निवास आवास पश्य प्रदानमय त प्रमृगपृच्छे कीर्तन० ११३६ ।

पश्चम (पु०) पञ्चमप्रणीत महाभाग्य के प्रथम अध्याय का प्रथम आङ्गिक शब्दविशेष जो भक्ति रात्रनीति रपसाम शि० २११२ । यहाँ 'प्राप्त्यर्थ' का अर्थ है शिक्षा मान्य बरा के २ प्रस्तावना उपादोल ।

पश्च (तु) का, पश्चिम (पु० ब० व०) एक द्वार का नाम, सम्भवन पोशाक देशकामी ।

पा (म्भा० पर० निरति परि कर्मभा० पीयते) । पीना, एष नाम में चढ़ा जाना 'एव मन्य वीत भाति० ११६० दुशानस्य शीघ्र न पिबन्मृगस्त -वेणी० ११२५ रघु० ३१५४ कु० ३१३६ अष्टि० १६१२ १५६२ २ चूचना पिबन्मृगो पाययते च मिथ -रघु० १३१९, श० ११४४ चिन्त करमा (आश और कान से पीना) उत्पन्न मनाना, प्यान पूर्वक सुनना—निर्वाणपक्षिस्तमितेन चक्षुषा नृप स्य वान पिबन् मुशानम् रघु० ३११७ २१९७, ३१ ११३६ १३३३० मेघ० १६, कु० ७१६४ ५ अश्व-मायन करना, पी जाना (बाज) भायुर्होतानि पीत शीघ्र तु पतन्मि रघु० १२४८, प्र०—पाययति व, १ पिलाना पीने के लिए देना रघु० १३१९ अष्टि० ८१४९ ६ + २ पीचना -इच्छा० पियारति पीनं टी इच्छा करना श्लाघलं बल गिपासति कोटु कन भाति० ११९५ अनु बाद में पीना अनुसरण करना - अनुपाययि आगाध्विनं पग्लोकनं प्रता अलिय—रघु० ८६८ आ १ पीना -रघु० १४८ २२ २ पी जाना अवसापन करना चुस मना भापीतमयं नय मुच्छ० ५१२० उचैति सविपा हस्त रभयापीय पश्चिम् महर्ष० १ (अर्थ कान से) पीने का उन्मेश मनाना तो रात्रि दृष्टिमिग पिबन् रघु० ३११२ मि—, १ पीना, चूचना—अन एव निपीयतेऽनर पंच० ११८९, तस्यैव प्रियतमन निपीतमारम्—मनु० ६१३ २ (अर्थ या काम में) पीना लीनबालोक्तन करना परि आशमाम् करना—उपनिषद् पश्चिमी भाति० २४४०, ११ (अदा० पर०—पाति, पति) १ रक्षा करना, देख-माक करना, चौकसी रखना, बचाना, संभालन करना —(भाव जना० के साथ) पर्याप्तोऽपि प्रवा पानुम्

—रघु० १०१२५, पांशु त्वा" भूवेणस्य भूवर्षवर्षित
 वलपञ्चमस्य—मुटाजटा—मा० ११० जीवन् पुर
 शब्दपञ्चमस्य प्रजा प्रजाताय पितेव पासि—रघु०
 २१४८ २ हुकूमत करना, शासन करना—पांशु
 पृथ्वीम् भूपा मूच्छ० १०१६०, प्रेर० तत्त्वमसि
 ते १ रक्षा करना देखभाल करना चौकसी रखना
 सधारण करना कथ दुष्ट स्वयं धर्म प्रजापत्य
 तालियसि भट्टि० ५११३० मनु० १११०१ रघु०
 ११० २ हुकूमत करना शासन करना ता पुरी
 पालयामास राय० ३ पालन करना रखर रखना
 अनुपालन करना पूरा करना (प्रतिज्ञा वत आदि)
 पालिभाराय रघु० १२५५ ४ पालन पोषण
 करना सवर्धन करना पोषित रखना ५ प्रतीक्षा
 करना अशेषित० ५११५० ये तन्मयं कृपागमनम
 जेनी १ मनु १ बचाना सधारण करना
 देखभाल करना रक्षा करना मनु० ११३३ परि
 १ बचाना सधारण करना देखभाल करना रक्षा
 करना मनु० ११३३४ मनु० ११२५१ २ हुकूमत
 करना शासन करना मा० १०१२५ ३ पालन
 पोषण करना सवर्धन ना सधारण देना ४ रखर
 रखना पालन करना जम रखना चौक रखना—प्रतीक्षा
 मुकूनत परिपात्रयति ची० ५० ५ प्रतीक्षा करना
 इंतजार करना अथ सदनकपुष्पात्मकान् व्यननकृत्वा
 परिपालनायैष्य क० ४ ४६ इति— १ बचाना
 सधारण करना २ प्रतीक्षा करना इंतजार करना
 ३ अमल करना भक्षा मलना ।

पा (वि०) (समाम क अल में) (पा + विज) १ गीन
 बाला पक्षी जान बाणा जैसा कि सामान्य अर्थों
 में २ बचाना बाला देखभाल करने वाला स्थिर रखन
 वाला गोपा ।

पासि (सि) न (वि०) (स्वी० न. नो) [प्राय समाम
 के अल में] (पासि (सि) + न्य) पृथा० दीप
 कम्बित करने वाला अग्न्यातित करने वाला दूधन
 करने वाला—पिल्लगगकुलपासन महावी० ५ २
 विपाक करने वाला भट्ट करने वाला ३ दुष्ट
 विरक्ताजीव ४ बदनाम कुक्यात ।

पासि (सि) व (वि०) [पासि (सि) १ अन्] धल में भरा
 हुआ ।

पाशु (शु) [पाशु (शु) + कु दीर्घ] १ बल गद बुरा
 (जीव हुकर गिरन वाला) रघु० २१० अल०
 १११३ यात्र० १११५० २ बलकण ३ गाबर खाद
 ४ एक प्रकार का वपुः । मम० कासीयम् ब्रह्मा
 - कुली प्रभन्त १४ रागाग कृष्ण । बल वा
 हेर २ ऐसा कातुरी इत्यादि या किसी व्यक्ति
 विशेष के नाम में हो, निरुपदेशासन,—कुल (वि०)

बल ग वग हुवा कारम्,—अन् एक प्रकार का
 नमक चत्तरम् आना—बलन शिव का विशेषण
 बाबर १ बल का हेर २ लव ३ बल में डका
 नहाट ४ प्रमत्ता बाह्यिक विष्णु का विशेषण
 पदम्ब धूत की रसत वा तह—बलन वेड की
 बडी क गाम बाबा और मे मोद हर पानी बीच
 का स्थान आलबाल बाबला ।

पांशु (शु) व [पांशु (शु) + रा + क] १ हास भावकम्
 २ विकलांग लुजा जा गच्छा में बैठकर इधर उधर
 घूम ।

पांशु (शु) ल (वि०) [पांशु (शु) + लच्] १ धूल ।
 भरा हुआ धूलभूमित मा० २१४ २ अपवित्र
 दूधिन कृषियन कर्कर दारुणाम् भवाभ्यां
 परस्परवशापांशु म० ५५ ३ दूधिन करने
 वाला कृषियन करने वाला अपमानित करने वाला
 ईसा १८ तुपांशु न ल १८५५५ स्वच्छ
 बासी मध्य २ गिरवा बगल का १ स्वच्छ
 स्त्री २ प्रमत्ता या कर्मबन्धन स्त्री अ मत्ता स्त्री
 रघु० ५० ३ पाश ।

पाक (पच + घञ्) । राना प्रमथन सेकना उड
 लना २ (हट आदि) जीव लवाना खरना मनु०
 ५११५ यात्र० १११८३ (भाजन क) पचना
 ४ पका हुआ अपच्य फलपाकाना मनु० ११०६
 कलमथिभक्त्याक गजबहुमन्त्र—विक्रम० १११३, मा०
 १३१ ५ परिपक्वता पूर विकसित वर, मरि०
 ६ सम्पूत निपटारा पूरा करना सुखोद पाका
 मन्त्रैभूषणान् विज्ञापना कर्म—रघु० १३१४ ७ मज्जा
 परिणाम, फल परिफलन (आल० श्री) आध्यात्मिक
 धर्माभास पुर पाकांनर इकाम्—क० ११९० पाका
 भिमुक्तस्य देवस्य उमर० ३५, १४ कृत कार्य
 व कला का विकास ९ अनाज अन्न—नीशारराकादि—
 रघु० ५१९ (गच्छते इति पाक धान्यम्) १० पकने
 का क्रिया । फोड भोजन का पकना पीप पटना
 ११ बूझने के कारण भाग्य का लफेद हो जाना
 १२ गाणप्यानि १३ उत्पन्न १४ बन्ना शिशु
 १५ एक गणम किम इ-उ में आता वा । सम०—
 भाग्य, रघु आगए, रघु सत्त्व, स्वामन्
 म्साई अतीसार पुराना पचिस भविष्यत् (वि०)
 १ मन्त्र के विग नेपाग विकासाम्बु २ कृपापरा
 रण अन् १ काला नमक २ उदरवायु, पाच्य
 रक्तन का रक्तन बूझी कुम्हार का जाडा कल
 गुपयज (इति भेदो के वि० ५० मनु० २१४३ पर
 उत्पन्न०) कुम्मा मरिडा सासन इन्द्र या विशेषण
 कु० २१६३, भातमिः १ इन् के पूव अन्न का
 विशेषण २ बाल तथा ३ अर्जुन का विशेषण ।

पाकलः [पाक + ल + क] 1. आग 2. हुआ 3. हाथी का उबर - तु० कृष्णपाकल ।

पाकित (वि०) [पाकित् निर्बलम् पाक + इत्] 1. पका हुआ, प्रसाधित 2 (प्रकृतिक या कृत्रिम रूप से) पका हुआ 3. नमक आदि) उबाल कर प्राप्त किया हुआ ।

पाकुः, पाकुः [पक् + उक्, क आदेश] रसोद्भवा ।

पाक्य (वि०) [पक् + क्यत्, क आदेश] पकाने के योग्य प्रसाधित होने के लिये, परिपक्व होने के योग्य क्वः अवाप्ता शोरा ।

पाक्ष (वि०) (स्त्री०-की) [पक्ष + अङ्] 1 (कुण्ड या झुल्ल) पक्ष से संबंध रखने वाला, पक्षिक 2. किमी दल या पार्टी से संबंध ।

पाक्षिक (वि०) (स्त्री०-की) [पक्ष + ठक्] 1. पक्ष में संबंध, अर्धमासिक 2. पक्षी से संबंध 3. किमी दल या पार्टी का पक्ष लेने वाला 4 नकं बिपार 5. ऐच्छिक, वैकल्पिक, अनुमत परन्तु विशेष रूप से निर्धारित न हो - नियम पाक्षिके सति, -कः बहूलिया बिहीनार ।

पाक्षः [पातीति - या + क्तिप्, या वयोधर्म, न लघ्व-यति वा - लब्ध + अच्] विषयी मासिक पालन चालका, पापारमकयार्थगीब बुकधोभीर्यता मोचरम् - मा० ५।२४, तुगायन् पाक्ष चाला मा० ५ ।

पाक्क (वि०) : पाक्कयम्, तन्मात् सकति बिष्प्यतो भवति - या - गल् + अच्] बिक्षिप्, जिमका दिमाग कराह हो ।

पाक्येय, पाक्य (वि०) [पक् + इक पत् वा] 1 भोजन पक्कि में एक साथ बैठने के योग्य 2 माहृषय के उपपक्क ।

पाक्क (वि०) [पक् + क्त्तुल्] 1 पकाना, सेकना 2. पकाने वाला, पोष्टिक कः 1 रसोद्भवा 2 आग, कम् पित । सम० स्त्री महाराजिन, रसोई बनाने वाली स्त्री ।

पाक्क (वि०) (स्त्री०-नी) [पक् + क्त्तुल् - स्तुट्] 1. पकाने वाला 2 पकाने वाला 3 पकाने वाला, हाजिर, मः 1. आग 2. बटाटा अम्लता, क्व 1 पकाने की क्रिया 2 पकाने की क्रिया 3. बुलन-हील, भोजन पकाने वाली लैषधि 4 चाब भरना 5. तपस्या, शायचित्त ।

पाक्कलः [पक् + क्त्तुल् + कलन्] 1. रसोद्भवा 2. आग 3. हुआ, कम् पकाना, परिपक्व करना ।

पाक्क [पक् + क्त्तुल् + अङ्] टाप्] पकाना ।

पाक्कपाळ (वि०) (स्त्री०-नी) [पक्कपाळ + अङ्] पाक्क कपाळों में भर कर दी गई जाहूति से संबंध रखने वाला ।

पाक्कलः [पक्कल + अङ्] कुण्ड के लाल का नाम - (दधानी) निष्कानमभूयत पाक्कल्य सि ३।२१, भग० १।१५ । सम० - चरः कुण्ड का विशेषण ।

पाक्कल (वि०) (स्त्री०-नी) [पक्कली + अङ्] मास की पद्धती निधि से संबंध रखने वाला ।

पाक्कल्यम् [पक्कलन् + क्यत्] पद्धत का समुच्चय ।

पाक्कल (वि०) [पक्कल + अङ्] पक्कल या पक्कल में प्रचलित ।

पाक्कली (वि०) (स्त्री०-की) [पक्कली + ठक्] क्तिद-युद्धि पाक्क लम्बा के समूह में बना हुआ, या पाक्क लम्बो वाला, पाक्क भौतिकी सृष्टि मद्दाही० ६ पात्र० ३।१७५ ।

पाक्कलीक (वि०) [पक्कल + क्यत्] पाक्क लय का ।

पाक्कलीकम् [पक्कल + क्यत्] 1 पाक्क प्रकार का समीप 2 गायन मन्त्रों बाधयत् ।

पाक्कल (वि०) (स्त्री०-की) [पक्कल + अङ्] पक्कल में संबंध या पक्कलो के मासक मः 1 पक्कलों का देश 2 पक्कलों का राजकुमार क्वः (पु०पु०) पक्कल देश का लोग ।

पाक्कलीक [पाक्कली + क्यत् + टाप्] हम्ब [युद्धिया, पुनली स्तन्य श्यागाभ्रमिन् समुन्नी इत पाक्कलीकेश कीडा-योग तदन् विनय प्रापिता बधिता च मा० १०।१ ।

पाक्कली [पाक्कल + अङ् + डीप्] 1 पक्कल देश की राज कुमारी या स्त्री 2. पाक्कलो की पत्नी, होपवी ३. युद्धिया पुनली 4. (अल०) रचना की चार सैलियों में से एक सा० १० द्वारा दी गई गारभावा - कर्ष लेवे (अर्थात् मातृयध्यकीन प्रकाशकाम्यो चिल्ली) पुनईयो, समस्त पक्कलपदो क्व पाक्कलिको मत १२८ ।

पाक्क (अव्य०) [पट् + क्त्तुल् + क्त्तुल्] एक अव्यय जो बुलाने के लिए - अर्थात् लवोचन के रूप में प्रयुक्त हो जाता है ।

पाक्कलः [पट् + क्त्तुल् + क्त्तुल्] 1 विहारक, बिभाजक 2 गीब का एक माग 3 गीब का भाषा हिस्सा 4 एक प्रकार का संगीत-उपकरण 5. लक, किनारा 6. बाट की चौड़ियों 7 बुलचन या पूंजी की हानि 8 किला या बालित 9 पासे फेंकना ।

पाक्कलः [पाटयन् छिन्दन् चरति चर + अङ्, पुनो०] चोर, लुटेरा, पाइ लगाने वाला, कुमुमरकपाटक्कर - मा० ६, पधिनीपरिग्रसकपाटक्कर मावि० २।७५ ।

पाक्कल [पट् + क्त्तुल् + स्तुट्] क्षीर्ण करना, तोड़ना, काटना, कट करना ।

पाक्क (वि०) [पट् + क्त्तुल् + कक्] गीतरस बर्ष, बुलावी रंग, क्वे स्त्री पक्कलाम्यं तुल्यकम् - पिक०

२।७, पाठसपाधिकां किनदूर—मीन० १२. कः पीतरकत, प्यासी या मुलासी रन—कपोलपाठसाहेबि बभूव रघुपेठिनम् रघु० ४।९८ २ पाठर का फूल पाठल सलार्न सुरभिवनवाता—स० १।३, सन् १ पाठल बुल का फूल रघु० १६।५९, १६।६६ २ एक प्रकार का बावक जो बरसात में हीरा होता है ३ केसर जाड़पान । सम० उपलः क्षान, बुल, पाठर बुल ।

पाठल [पाठल + अन् + टाट्] १ माल लोछ २ पाठर का बुल तथा उसका फूल ३ दुर्गा का विशेषण ।

पाठलि. (स्त्री०) [पाठल + इति + पाठर का फूल । सम० बुलम् एक प्राचीन नगर भगवत की राखानी को राजा श्रीम मया क ममम पा स्थान है जिस कुछ को बर्तमान में पाठल है इसका पुलपुर या कुमुदपुर भी कहते हैं वे० मुद्रा० २।२ ४।१६, रघु० ६।२४ ।

पाठलिक, पाठलि. रन् [काच विद्याधी पाठलिकम् (पु०) [पाठल + इमनिच्] पीतरकन वन पाठलिया [पाठल + पन् + टाट्] पाठल क फूल का गुच्छा । पाठलम् [पठ् + अन्] १ तीव्रता पैनापन २ चतुरार्थ कौशल, इज्जता प्रवीणता—पाठर मस्कानकियु जि० १ कि० १।५४ २ ऊर्ध्व ४ फुरी उतावधानता ।

पाठलिक (वि०) (स्त्री०—की) [पाठल + ठन्] १ चतुर, तीव्र कुशल २ फुरी चाकबाज गककार ।

पाठिल (म० क० क०) [पठ् + निच् + कन्] १ फाडा हुआ चीरा हुआ २ फाटे ३ फिटा हुआ पाठा हुआ २ रिड छिड़ित रघु० ११।३१ ।

पासी [पठ् + निच् + कन् + डीव] प्रकल्पित । सम० भविष्य प्रकल्पित ।

पासीरः [पासीर + अन्] १ चन्द्रम पासीर नव पटीदान कः परिपाटीविद्याभुगीकर्तुम् ग्रामि० १।१० २ जेन ३ रात ४ बावल ५ चाली ।

पासः [पठ् + चञ्] १ प्रयत्न, मस्तर पाठ जाहति करना २ पढ़ना, बाचन अध्ययन ३ वेदाध्ययन, वेद पाठ, बह्मवाच, काष्ठार्थों के द्वारा पाँच ईमिक यज्ञों में से एक ४ युक्तक का मूलपुठ स्वाध्याय पाठभर अथ वक्त्रवृत्तवसावन इति आत्मनुक पाठ, प्राचीनपा पाठलु सुवर्धिवचवाचन इति पुल्लिङ्गान् मल्लि० कु० ६।७ ५२ । सम०—अस्तरम् हुनरा पाठ पाठभर—उक्तः विद्याम, पति,—योज इवित पाठ पाठ की मधुविद्या, निष्पन्नः किसी संदर्भ का पाठ निर्धारित करण,—संक्षरी, क्षालिनी पैना, पारिजा, प्राणा विद्याम, महाविद्यालय, विद्यावाहिर ।

पासकः [पठ् + निच् + कन्] १ अध्यापक, पाठ्यापक, नुव २ पुराण वा अन्य साहित्य ग्रन्थों का सार्वजनिक

पाठ करने वाला ३ आध्यात्मिक नुव ४ काच, विद्याधी, विद्यान् ।

पाठनम् [पठ् + निच् + कन्] अध्यापन, व्याख्यान देना । पाठित (पु० क० क०) [पठ् + निच् + कन्] पढ़ाया हुआ, पढ़ाया गया हुआ ।

पाठित (वि०) [पठ् + निच् पाठ + इति वा] १ जिसने किसी विषय का अध्ययन किया हो २ जाणकार, परिचित ।

पाठीक. [पठ् + इति] १ पुरीना या अन्य सामिक ग्रन्थों की कथा करने वाला २ एक प्रकार की मछली—विभुत्त पाठीन पर ४५५ पृष्ठ कि० ४।५ ।

पाथ [पन् + चञ्] १ व्यापार, व्यवसाय २ व्यापारी ३. खेल ४ खेल पर लगा या गया दीव ५. करार, ६ प्रमाण ७ हाथ ।

पाथि [पन् + इन्] हाथ बानेन पाथिनं तु ककपेन (विमानि) अने० २।३१, वि० (स्त्री०) मही (पाथी) का हाथ में बाधना विवाह करना,—पाथी-करणम् विवाह । सम० पुरीसी, हाथ से बहल की गई व्यापी गई पत्नी उक्तः उक्तम् विवाह करना बादी रघु० ३।२९, ८।३ कु० ७।७—पाथि (पु०)—बाहू इच्छा पति व्यापकनिष्ठ वृत्तिकम् शनिपाहृष्य बनमा रघु० १।२१ बास्वे पितृवशे-निष्ठन पाथिपाहृष्य योजने ५।१४८,—सः १ होल बजाने वाला २. कारीगर, शिल्पकार—कालः हाथ का प्रहार ब्रह्मा, कः नाथुन—मत्वा पाठनपाथि-आतिनमूर—मीन० १०—सम्पत् हवेनी, कर्तः विवाह की विधि,—वीरभर विवाह, पाथिपीडनमह इत्यमप्या कावयेमहि महीमिहिकायो—मै० ५।९९ पाथिपीडनविधेरनन्तरम् कु० ८।१ प्रचक्षिनी पत्नी जंच 'हाथों का मिलना' विवाह, नुव (पु०) कठ का बुल, नुवर का बुल,—नुवत्तम् हाथ के फेंक कर मारा जाने वाला आवृत्त, कल्प, नुव (पु०) नुव अंगुली का नाथुन—कालः १. लालिया बजाना २. होल बजाना सलार्न रखी ।

पाथिनि (पु०) एक प्रसिद्ध वेदाकरण का नाम, वह अन्य स्कन्ने पूर्व मन्त्रों ज्ञाने हैं कहते हैं कि आकरण का ज्ञान इन्होंने शिव से प्राप्त किया था । 'अप्या-व्यापी नाम का आकरण इन्होंने ही रचा ।

पाथिनीव (वि०) [पाथिनि + क] पाथिनि से संबंध देने वाला, या उसके द्वारा अध्याप्य गया—वि० ११।७५ कः पाथिनि का अनुवाची—अनुवन्तुहा पाथिनीग, नुव पाथिनि द्वारा प्रवीत व्याकरण ।

पाथिचय-व (वि०) [पाथि + च्या (वे) + चञ्, नुव] हाथ से बोकने वाला, हाथ से चुकने वाला, हाथ से पीने वाला ।

पांडुर (वि०) [पाण्डुर + ऊष्] 1. बबल, पीतबबल, सऊब 2. नेर 3. बबेली का फूल ।

पांडव [पाण्डोः लपत्यन् पाण्डु + वृ] पाण्डु का पुत्र या सत्तान, पांडु के १०० पुत्रों में से कोई सा एक - युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव - ब्रह्मा संज्ञति-पांडवा इव ब्रह्मरक्षातयव्यं - भा० - भूषण ५१६ । सम० - आभीरः कृष्ण का नाम, - केषः युधिष्ठिर का नाम ।

पांडवीय (वि०) [पांडव + छ] पांडवों से संबंध रखने वाला ।

पांडवेय = पांडव ।

पाण्डित्य [पाण्डित् + ध्यन्] 1. विद्वता, गहन अधिगम - विद्या विशेष गमक पाण्डित्यवैदध्ययो - भा० १७ 2. चतुर्धा कुशलता, दक्षता, योग्यता नवानां पाण्डित्यं व्रतयतु कस्मिन् मुनयति भा० ११२ ।

पांडु (वि०) [पण्डु + ड, नि० दीर्घः] पीत-बबल, सऊब सा, पीला पीताम्बिकलकरणः पाण्डुष्याय शृषा परिपूर्वकः - उत्तर ३१२२, - कुः 1. पीत-बबल, या पीताम्बुल इवैत रंग 2. पीलेया, परकान 3. सऊब हाथी 4. पांडवों के पिता का नाम [विचित्रवीर्य की विचित्रा अंबिका से ब्यास के द्वारा पांडु का जन्म हुआ था । पांडु रंग का पैदा होने के कारण उसका नाम पांडु पड़ा, क्योंकि ब्यास के साथ सहवास के अवसर पर उसकी माता पांडु रंग की हो गई थी - (यस्यापाण्डु-त्वमापान्ता विरूपं श्रेय मासिह, तस्मीदेव मुतस्ते वी पाण्डुरेव नविध्यति - महा०) - किसी कारण के कारण पाण्डु को स्वयं सन्तानोत्पत्ति करने से रोक दिया गया था । इसीलिए उसने कुन्ती को दुर्बिमाच्छिपि से प्राप्त मंत्र का उपयोग करके सन्तान प्राप्त करने की अनुमति दे दी थी, फलतः कुन्ती ने युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन को जन्म दिया, इसी मंत्र के उपयोग से माद्री ने नकुल और सहदेव को जन्म दिया । एक दिन पाण्डु अपने साग को भूलकर जिसके कारण वह सावधान था, उसने माद्री का आश्रित करने का हुक्मदाय किया, परन्तु वह उसके भ्रमरास में ही मृत्यु को प्राप्त हो गया । सम० - आश्रयः पीलिया परकान, - केषः 1. सऊब कंबल 2. गन्ध नादर 3. राजकीय हाथी की मूल - पुत्रः पांडु का पुत्र, पाँचों में से कोई एक, - युधिष्ठा, सऊब या पीली मिट्टी, - रत्नः सऊबी, पीलागन्ध, - लेशः लक्ष्मि या बनाई करेका, भूमि या किसी फलक पर लक्ष्मि से बनाई गई कोई करेका - पाण्डुलेनेन फलके भूमौ या ब्रह्म के लिये, भूनाक्षिर्भूतु पक्षीयं पक्ष्याग्ने निषेधयेन् - भा० - अक्षिणा शीघरी का विशेषण - अक्षिणः एक वर्ष मंडर जानि - वांशकान्पाण्डु-तोषाकलककारणवहारवान् - भू० १०१७ ।

पांडुर (वि०) [पाण्डुर + र] सऊब सा पीत-बबल, पीताम्बुल, पीला - छविः पांडुरा - य० ३११०, रघु० १४२६, कु० ३१३३, - रघु इवैत कुण्ड । सम० इजुः एक प्रकार की ईश, पीछा ।

पांडुरिचन् (पुं०) [पांडुर + इमनिच्] पीलापन, सऊबी या पीला रंग ।

पांडुष्याः (पुं०, व० व०) [पांडु देन, अभिजनोऽस्य राजा वा - पाण्डु + ष्यन्] एक देश का नाम, देश के निवासियों का नाम - तस्यामेव रघो पांडुष्या, पतान न विनेहिरे - रघु० ४४४९, - ष्यन् उस देश का राजा रघु० ११६० ।

पात (वि०) [पा + क्त] रक्षित, देखभाल किया गया, संभारित - ताः [पत् + क्त] 1. उड़ना, उड़ान 2. उतरना, अवतरण करना, उतरा 3. नीचे गिरना, पतन, पराजय (आल० भी) भू०, गृह०, बरनपातः पेरों में गिरना - रघु० १११२, पातोत्पत्तौ उदय नीर अस्त 4. नाश, विघटन, बर्बादी - कु० ३४४ 5. आघात प्रहार जैसा कि 'बहुपात' में 6. बहना, छूटना, निकलना - अमृकाने मनु० ८४४ 7. डालना फेंकना, गिराना बनाना - दृष्टि० रघु० १३१८, 8. आक्रमण, हमला 9. बटना, होना, घटित होना 10. दोष, त्रुटि 11. राहु का विशेषण ।

पातकः, कम् [पत् + क्त + क्त] पाप, धर्म (हिन्दु-धर्मशास्त्र में पाँच महापातक गिनते गये हैं - ब्रह्महत्या भ्रमणं स्वेयं भूर्ब्रह्मागमः, महाग्नि पातकम् 2, मसर्गश्चापि नैर्मलः - मनु० ११५४ ।

पतञ्ज [पतञ्ज + इञ्] 1. पानि 2. यम 3. कर्ष और सुधीय का विशेषण ।

पतञ्जल (वि०) (स्त्री० जी) [पतञ्जलि + अन्] पतञ्जलि द्वारा रचित, - पतञ्जले महाभाष्ये कृतभूरि परिश्रम - पञ्चभाष्येमुद्रा, - लम् पतञ्जलि द्वारा प्रयोग योगदर्शन, (ऐसा विद्वान् किना जाना है कि महाभाष्यकार पतञ्जलि ही योगदर्शन के प्रणेता थे, परंतु वह विचार सबेह में परे नहीं है) ।

पातनम् [पत् + क्त + क्त] 1. गिरने का कारण बनना, गिराना, नीचे लाना या फेंक देना, धकाड़ देना, नीचे पटक देना 2. फेंकना, डालना 3. हार करना, नीचा दिखाना । (विशेष - उन सजा फेंको के अनुनाय जिनके साथ 'पातन' लक्ष प्रयुक्त होती है, 'पातन' के शिन्तु अर्थ हैं - उदा० दैव्य पातनम् - ईशा गिराना' दण देना, यम्य पातनम् - यम का गिराना, सर्वपात कराना) ।

पाताकम् [पातागिन्मन्त्रवर्ण - पत् + आकम्] 1. पृथ्वी के नीचे स्थित सात लोको में से अंतिम लोक - पातालोक,

1. The first group of people who were involved in the project were the students of the school. They were the ones who were most interested in the project and they were the ones who were most involved in the project. They were the ones who were most interested in the project and they were the ones who were most involved in the project.

३ २३ ३३।
 गार्हपत्य २३, २३ ३३
 वाह्य २३, २३ ३३
 ३ २३ ३३
 ३ २३ ३३

पादोत्तम, पादादिह, ११, २० + ३० = ५० अक्षर, ५०
अक्षर ११ + ३० = ४१

प्रादिक ११२०, १२५१ ११३० ११२० ११२० ११२०
११२० ११२० ११२० ११२० ११२० ११२०

[illegible]

प्राप्तम् । पु० शेषा न० अथवा
पाठक । ३० ज्ञाने + १० + ७ = ४७

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

प्रा. १७० १२ ३७ ४० ४३ ४६ ४९ ५२ ५५ ५८ ६१ ६४ ६७ ७० ७३ ७६ ७९ ८२ ८५ ८८ ९१ ९४ ९७ १०० १०३ १०६ १०९ ११२ ११५ ११८ १२१ १२४ १२७ १३० १३३ १३६ १३९ १४२ १४५ १४८ १५१ १५४ १५७ १६० १६३ १६६ १६९ १७२ १७५ १७८ १८१ १८४ १८७ १९० १९३ १९६ १९९ २०२ २०५ २०८ २११ २१४ २१७ २२० २२३ २२६ २२९ २३२ २३५ २३८ २४१ २४४ २४७ २५० २५३ २५६ २५९ २६२ २६५ २६८ २७१ २७४ २७७ २८० २८३ २८६ २८९ २९२ २९५ २९८ ३०१ ३०४ ३०७ ३१० ३१३ ३१६ ३१९ ३२२ ३२५ ३२८ ३३१ ३३४ ३३७ ३४० ३४३ ३४६ ३४९ ३५२ ३५५ ३५८ ३६१ ३६४ ३६७ ३७० ३७३ ३७६ ३७९ ३८२ ३८५ ३८८ ३९१ ३९४ ३९७ ४०० ४०३ ४०६ ४०९ ४१२ ४१५ ४१८ ४२१ ४२४ ४२७ ४३० ४३३ ४३६ ४३९ ४४२ ४४५ ४४८ ४५१ ४५४ ४५७ ४६० ४६३ ४६६ ४६९ ४७२ ४७५ ४७८ ४८१ ४८४ ४८७ ४९० ४९३ ४९६ ४९९ ५०२ ५०५ ५०८ ५११ ५१४ ५१७ ५२० ५२३ ५२६ ५२९ ५३२ ५३५ ५३८ ५४१ ५४४ ५४७ ५५० ५५३ ५५६ ५५९ ५६२ ५६५ ५६८ ५७१ ५७४ ५७७ ५८० ५८३ ५८६ ५८९ ५९२ ५९५ ५९८ ६०१ ६०४ ६०७ ६१० ६१३ ६१६ ६१९ ६२२ ६२५ ६२८ ६३१ ६३४ ६३७ ६४० ६४३ ६४६ ६४९ ६५२ ६५५ ६५८ ६६१ ६६४ ६६७ ६७० ६७३ ६७६ ६७९ ६८२ ६८५ ६८८ ६९१ ६९४ ६९७ ७०० ७०३ ७०६ ७०९ ७१२ ७१५ ७१८ ७२१ ७२४ ७२७ ७३० ७३३ ७३६ ७३९ ७४२ ७४५ ७४८ ७५१ ७५४ ७५७ ७६० ७६३ ७६६ ७६९ ७७२ ७७५ ७७८ ७८१ ७८४ ७८७ ७९० ७९३ ७९६ ७९९ ८०२ ८०५ ८०८ ८११ ८१४ ८१७ ८२० ८२३ ८२६ ८२९ ८३२ ८३५ ८३८ ८४१ ८४४ ८४७ ८५० ८५३ ८५६ ८५९ ८६२ ८६५ ८६८ ८७१ ८७४ ८७७ ८८० ८८३ ८८६ ८८९ ८९२ ८९५ ८९८ ९०१ ९०४ ९०७ ९१० ९१३ ९१६ ९१९ ९२२ ९२५ ९२८ ९३१ ९३४ ९३७ ९४० ९४३ ९४६ ९४९ ९५२ ९५५ ९५८ ९६१ ९६४ ९६७ ९७० ९७३ ९७६ ९७९ ९८२ ९८५ ९८८ ९९१ ९९४ ९९७ १००० १००३ १००६ १००९ १०१२ १०१५ १०१८ १०२१ १०२४ १०२७ १०३० १०३३ १०३६ १०३९ १०४२ १०४५ १०४८ १०५१ १०५४ १०५७ १०६० १०६३ १०६६ १०६९ १०७२ १०७५ १०७८ १०८१ १०८४ १०८७ १०९० १०९३ १०९६ १०९९ ११०२ ११०५ ११०८ ११११ १११४ १११७ ११२० ११२३ ११२६ ११२९ ११३२ ११३५ ११३८ ११४१ ११४४ ११४७ ११५० ११५३ ११५६ ११५९ ११६२ ११६५ ११६८ ११७१ ११७४ ११७७ ११८० ११८३ ११८६ ११८९ ११९२ ११९५ ११९८ १२०१ १२०४ १२०७ १२१० १२१३ १२१६ १२१९ १२२२ १२२५ १२२८ १२३१ १२३४ १२३७ १२४० १२४३ १२४६ १२४९ १२५२ १२५५ १२५८ १२६१ १२६४ १२६७ १२७० १२७३ १२७६ १२७९ १२८२ १२८५ १२८८ १२९१ १२९४ १२९७ १३०० १३०३ १३०६ १३०९ १३१२ १३१५ १३१८ १३२१ १३२४ १३२७ १३३० १३३३ १३३६ १३३९ १३४२ १३४५ १३४८ १३५१ १३५४ १३५७ १३६० १३६३ १३६६ १३६९ १३७२ १३७५ १३७८ १३८१ १३८४ १३८७ १३९० १३९३ १३९६ १३९९ १४०२ १४०५ १४०८ १४११ १४१४ १४१७ १४२० १४२३ १४२६ १४२९ १४३२ १४३५ १४३८ १४४१ १४४४ १४४७ १४५० १४५३ १४५६ १४५९ १४६२ १४६५ १४६८ १४७१ १४७४ १४७७ १४८० १४८३ १४८६ १४८९ १४९२ १४९५ १४९८ १५०१ १५०४ १५०७ १५१० १५१३ १५१६ १५१९ १५२२ १५२५ १५२८ १५३१ १५३४ १५३७ १५४० १५४३ १५४६ १५४९ १५५२ १५५५ १५५८ १५६१ १५६४ १५६७ १५७० १५७३ १५७६ १५७९ १५८२ १५८५ १५८८ १५९१ १५९४ १५९७ १६०० १६०३ १६०६ १६०९ १६१२ १६१५ १६१८ १६२१

प्राप्त (वि०) । [तः म] पेश म सवता गङ्गा शम्भा
छम तेर धाने क ईश्वरा नन्द पादय प्राक्त

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 वासुदेव, तस्यै नमः । वासुदेव इति नाम । अष्टकम् ।
 वासुदेव इति नाम । अष्टकम् । वासुदेव इति नाम । अष्टकम् ।

१० २ सुगन्ध क रना ५५० ७०० १११५ १०
६९ ३ गान क रना ५५० ७०० १११५ १०

म शगद श्रीचन वाता क २३० । सम० अवार
आमार रम भीः २३० । अत्यथ अर्थाधन

पीना गाँविका, गाँधी 1 गुरुदिया की मन्त्री
2 गुरुदिया की मन्त्री - प (वि०) गुरुदिया

का स्थान २४० ३१६० १०१११ १००००० १०००००

श्रिया की प्रार्थना इस (वि०) मुद्रादान की लगवाला
कजिज (पु०) दाखल विद्वान, विभजन, नशा

पानकम् । पानं वनं । पानीयं पेयं, धृतः ।
पानिकः । पानः, ठक् । शराहं विवेचना, यत्नः ।

राजिन्मन् [पान + इन्मन्] पान पात्र, प्याला

जैसा कि 'प्रतिज्ञाया' पार मत', पूर्ण रूप से आत्मसात् करना, प्रवीण होना सकलसाध्य पारमत, - र: पारा (पार दूसरी ओर परे) कई बार समाप्त में प्रयुक्त होता है - उदा० पारमेयम् पारसमुद्रम् मया के पार या समुद्र के पार। सम०—अवारम् अवारम् हानो तट, पास का और दूर का (रः) समुद्र, सागर - श्लोकपारापारमुत्तर्जुमगन्तुवती वस० ४, भाषि० ४।११-अवचम् १ पार जाता २ पूरा पड़ना, अनु-हीलन, आघोपात्त अध्वयन ३ समझना, संपूर्णता या किसी वस्तु की समाप्ति जैसा कि बहुपादायण या मधुपादायण में, अवधी सरस्वती देवी २ चिन्तन मनन ३ कुर्य कर्म ४ प्रकाश, काज (वि०) दूसरे किनारे तक जाने का इच्छुक न (वि०) १ पार जाने वाला, नाव से पार उतरने वाला २ जो पार पहुँच चुका है जिसने किसी वस्तु का पूरा अध्वयन कर लिया है, पूर्णतः चित्त पूरा जाता (सब० के साथ, या ममान में) - मनु० - १।४८ याज्ञ० १।१११ ३ प्रकाश विद्वान् मत, गामिन् (वि०) जो तट के दूसरी ओर पहुँच गया है, वसोक (वि०) १ सामने के तट को दिखायाने वाला २ जिसके आगे पार दिखाई दे चुकान् (वि०) १ दूरदर्शी, बुद्धिमान, समझदार २ जिसने किसी वस्तु का दूसरा किनारा देख लिया है जिसने किसी बात का पूर्ण रूप से जान लिया है - भृगुसारदुष्टा रघु० ५।२६।

पारक (वि०) (स्त्री० की) १ पार करने की योग्यता रखने वाला २ साथे उ जान वाला बचाने वाला मौजबे वाला ३ प्रवृत्त करने वाला, संयुक्त करने वाला।

पारक्य (वि०) [परक्ये त्राय हिनम पर + प्यञ् कुक्] १ परगना दूसरे का २ दूसरी वरिष्ठ उद्दिष्ट ३ विरोधी अनुपापूर्ण क्यम् परकाय साधन पवित्र आचरण।

पारप्राथमिक (वि०) (स्त्री० की) [परप्रायः प्र] परया विरोधी, शत्रुतापूर्ण।

पारम् (पु०) [पार विच् + अत्रि] माना, स्वयं। पारप्राथमिक [परप्रायः प्रथमि - परप्रायः + ठक्] आधि-कारो पुष्प।

पारप्रेक्षः - कः (पु०) परपर चट्टान।

पारण (वि०) [पृ + स्पृट्] १ पार ल जाने वाला, उदा- रने वाला २ बचाने वाला, उद्धार करने वाला - व १ जारक २ माता, जम् ३ निष्यन्द करना, पूरा करना २ पाट करना बाचना ३ कन (उपवास) के परकाय दाशन करना, कन कायना काय वस्तुओं पारणम् विद्व० १, २, ३, १५ ३० भाषन करना - कु० ५।२२, (अध्वयहारवर्ग मल्लिक०)।

पारतः [पार तनाति पार + तन् + ड] पारा।

पारतन्त्र्यम् [परतन्त्र + ध्यञ्] पराश्रयता, अवधीता, अनु-सवा।

पारत्रिक (वि०) (स्त्री० की) [परत्र + ठक्] १ पर-लोक मन्त्री २ भावी जीवन के लिए उपर्यामी।

पारत्र्यम् [परत्र प्यञ्] सावी जीवन में प्राप्य फल परलोक पर मनु० २।२३६।

पारत्र [पार ददाति पार दा + क] पारा नि-चन पादायण म भाषि० १।२२।

पारत्राधिक [परत्राः ठक्] २ अधिकारी परदाम्यामी याज्ञ० २।२९५।

पारत्रायम् [परत्राय प्यञ्] २ अधिकार परदा गमन मनु० ११।५०, त्रि० ३।२३५।

पारत्रोक्त (वि०) (स्त्री० की) [परत्रेत् + क्] विदेश कादम्ब इत का क १ विदेश का गमन वाला २ यात्रा।

पारत्रेय (वि०) (स्त्री० की) परदाम ध्यञ् । विदेश से मन्त्र लाने वाला विदेश इय । अत्र देश का गमन वाला २ यात्रा।

पारभूतम् [इसका मृदु रूप समग्र प्राप्ति है] उपर्या-मैत्र।

पारमहृत्स्वम् [परमहृत् + स्वा] सर्वोद्घाट सम्प्राप्ति म मनन। सम० वरिष्ठ, अद्य०, इस प्रकार के मन्त्राणां म सम्बन्ध रखने वाला।

पारमाधिक (वि०) (स्त्री० की) [परमाधे + क] १ परमाधे अधिकारी सत्य अधवा अध्यात्म जान म सम्बन्ध रखने वाला २ वास्तविक जात्रायण पद्य में विद्यमान सत्य विविध पारमाधिक आदेशा त्रिकी प्रातीतिर्की व वदान ३ सत्य का ध्यान रखे वाला सत्यप्रद न ल ३ परमाधिक रव १।३१० ३ सर्वश्रेष्ठ सर्वोद्घाट मन्त्रात्म।

पारमिक (वि०) (स्त्री० की) [परम + क] मन्त्राधि-सर्वोन्म, मुख्य प्रधान।

पारमिन् (वि०) [पारमिन पाप्म - अलुक् सं] १ दूसरे तट या किनारे पर गया हुआ २ पार पहुँचा हुआ आ-पार गया गया हुआ ३ परमाकृत्य।

पारमेक्यम् [परमिद्विज् + प्यञ्] १ सर्वोपरिमा उपचनम पद २ मात्राचिह्न।

पारपरीय (वि०) (स्त्री० की) [परपरा + क्] पर-प्राप्त आनुवंशिक, वनकमगत।

पारपरीय (वि०) [परपरा + छ] परपराप्राप्त, अनु-वसिक।

पारपरीय [परपरा + यञ्] १ आनुवंशिक वन अधिकार कर्म २ परपरा म प्राप्त जिज्ञा, परपरा ३ अन्वेषिता, माध्यम्य। सम० उपरिष्ठ परीरा

प्राप्त निष्ठा, परम्परा (इस परम्परा को वीराजिक लोग प्रमाण मानते हैं) ।

पारिकल्प (वि०) [पार + लिप् + इण्] १ मुहावरा, तुष्टिकारक २ किसी कार्य को पूरा करने के योग्य, पार जाने के लिए समर्थ ।

पारलौकिक (वि०) (स्त्री०-की) [परलोकार्थ हितम् पर लोक + ठक् विपदबुद्धि] परलोक से संबंध रखने वाला या परलोकोपयोगी, - धर्म एको मनुष्याणां महाय पारलौकिक महा०, नै ५।१२ ।

पारवतः [- पारपता (पार + ता + पत् + अच्) कबूतर । पारवतम् [पारवत + घ्यञ्] पारवतवन, पारवतया, अजीवता ।

पारवत् (वि०) (स्त्री०-की) [परवत् प्रज] १ लोहे का बना हुआ २ कुठार से संबंध रखने वाला, - १ लोहा २ धृष्ट स्त्री में उत्पन्न बाह्यण का पुत्र प बाह्यणस्तु शुद्धायां कामादुन्नादयेत्मुनम् स पर वत्नेव शबस्त्वाम्पारवत् स्मृत - मनु० १।७८ या पर शवान् बाह्यणस्यैव पुत्र शुद्धापुत्र पाण्डव तमात्रु -- महा० ३ दामला हरामी ।

पारवचः, पारवचिकः [पारवच प्रहर्जमस्य -- अण्, पारवच + ठक्] फगता धारण करने वाला, कुठार धारी ।

पारव (वि०) (स्त्री०-की) [पारवदेवो भव अच् वा० यलोप] पारसी फारस देश का रहने वाला ।

पारविक. १ फारस देश २ फारस देश का, पारसीक ।

पारसी (स्त्री०) फारसी भाषा ।

पारसीकः [पुषो० साधु] १. फारस देश २. फारस देश का घोड़ा, काः (पु०, साधुः) फारस देश के रहने वाले -- पारमीकास्ततो जेतु प्रतप्ते स्मलवर्त्यता रघु० ४।६ ।

पारसीवैवः [पारसी + इक्, इनङ्, उभय पदबुद्धि] दोगला, हरामी (पारसी से उत्पन्न) ।

पारस्य (वि०) [परहस + घ्यञ्] उस सन्यासी से संबंध रखने वाला जिसने सब इन्द्रियों का दमन कर लिया है ।

पारा [पार + अच् + टाप्] एक नदी का नाम -- तदुत्पिष्ठ पारासिपुसंवेदयवाह्य नदीमेव प्रविशाय मा० ४।१।१ ।

पारावत [पार + वा + पत् + अच्] कबूतर ।

पारावचिकः [पारवच + ठक्] १. व्याख्यानदाता, पुराण तथा अन्य धार्मिक ग्रन्थों का पाठ करने वाला २ विध्य, विधायी ।

पारावक [पार + व् + उट्] पारव, कबूतर ।

पारावत [पारावत, पुषो० पण्डित] कबूतर, फास्ता, वैकुंठी-पारावत सरसिलाकममात्राजी काजी

अवस्यमुदिन वद कोऽग्रहेतु - पार्त्त० १।१५६ मय० ३८ २ बन्धर ३ पट्टाङ्ग । मय० - अङ्गि, - विष्णुः एक प्रकार का कबूतर ।

पारावारीक (वि०) [पारावार + रच्] १ दोनों छोर तक जाने वाला २ पुर्ण रूप से जानकारी ।

पारावतः, पारावतः [पारावत + अच्, यच्, वा] पारावत के पुत्र व्यास का विशेषण ।

पारावति [पारावत + इङ्] १. कुकुर का विशेषण २ व्यास का नाम ।

पारावतिन् (पु०) [पारावत + इति] १ भाव, सन्यासी २ विशेषकर वह जो व्यास के शारीर सूत्री के अध्ययन हो ।

पारिकल्पित् (पु०) [पारयति समारात् पारि बहुप्रदानम् तत्कार्षात् पारि + काश् + णिनि] ध्यानवन्त या चिन्ताशील मन्त्र, मन्त्राजी आ भावात्मक समाधि का भवन हो ।

पारिकल्पितः [परिकल्प + अच्] जनमेजय का कुल सूचक नाम, अर्जुन का प्रपौत्र और परिकल्पित् का पुत्र ।

पारिकल्प (वि०) (स्त्री०-की) [परिमा + इ] चारों ओर परिमा या बाई से घिरा हुआ ।

पारिकल्पः, पारिकल्पकः [पारिमस्य कल्पि इतिपारी समुद्र मन्मात्रान् पारिकल्पन्] १ स्वर्ग के पाँच ब्रह्मों में से एक (बहुते हैं कि समुद्र मन्त्र में 'पारि-जाल' की उपलब्धि हुई, जिसे इन्द्र ने अपने मन्त्र-कानन में लगाया, कृष्ण ने इन्द्र से छीन कर इसे अपनी श्रिया मन्त्रधामा के बाग में लगाया) - कल्पद्रु-माणादि पारिकल्पान् रघु० ६।६, १०।११ १७।७, २ मृग का पेड़ ३ सुगन्ध ।

पारिवाच्य (वि०) (स्त्री०-की) [परिचय + घ्यञ्] १ विवाह से संबंध रखने वाला २ विवाह के अवसर पर प्राप्त किया हुआ, व्यञ्ज ३ विवाह के अवसर पर स्त्री की मिली हुई सम्पत्ति -- वातु परिवाचय त्विहो विमजेरन् - बलिष्ठ २ विवाह व्यवस्था ।

पारितोष्या [पारितोष्य + घ्यञ्] बालों को बांधने के लिए योनिर्घों की लड़ी ।

पारितोषिक (वि०) (स्त्री०-की) [पारितोष्य + ठक्] मुसकर, तृप्तिकर, नास्वनाग्रव, अणु उपहार, पुर-स्कार -- महा० पारितोषिकमिदमवृत्तीयकम् - बृहत् ५ ।

पारितोषिकः [पारितोष्य + ठक्] बड़ा बरदार, सहाय के चलने वाला ।

पारितः [पारित, पुषो० इरा] भित्ति केमरी ।

पारितिकः [पारितोष्य + ठक्] लुटेरा, डाकू ।

पारितोष्यम् [परिपाटी + रच्] १ दम, प्रमात्ती, रीति (परिपाटी) २ निवसितता ।

पार्षवः [पार्षव गृहीत मन्] 1. साधी, सहचर 2. टहलजा
अनुचरक 3. सभा में उपस्थित, दर्शन, सम्भास्य ।

पार्षदः [पार्षद + द्य] 6 भास्य, सहस्य ।

पार्षिः (पुं०, स्त्री०) [पृष् + नि, नि० वृद्धि] 1. एरी

—उद्यमस्तन्मूलि पार्षिभायाम् - कु० १११, पार्षि

प्रहार—का० ११९ 2. सेना की पिछाडी 3. पिछाडी,

पिछला भाग—सुष्टपार्षिपर्याम्भित रघु० ४२६,

निसर्की पिछाडी सन्निहित हो गई है 4. टोकर

(स्त्री०) 1. व्यक्तिपारिणी स्त्री 2. कुत्ती का विशेष-

णमः । सम०—बहुः अनुयायी, - बहुलम् सन्तु को पीठ

पर आक्रमण करना, - बहुः पृष्ठवर्ती पाद 2 पृष्ठवर्ती

सेना का केमपति 3. विचाराज्य जो किसी राजा की

सहायता करे—मनु० ७२०७, वस्तुः टोकर कि०

१७५०, -बन्धु पृष्ठरक्षक, पीछे रहने वाली सेना की

टुट्टी, शरक्षित, -बहुः आश्रयिणी घोडा ।

पातः [पात + अच्] 1. प्ररक्षक, अधिभावक, सरक्षक

—यथा बोधाम्, बुधिमपात आदि 2. गाला—विवाद-

स्वामिपातयोः - मनु० ८५५, २२९, २४० 3. राजा

4. पीकद्वय । सम०—अः कुतुरमुता, सौप की

छतरी ।

पातक [पात + क्तृन्] 1. अधिभावक, प्ररक्षक 2. राज

कुमार, राजा, शासक, प्रभु 3. सार्वभ, बोधे का रत्न

वाक्ता 4. बोधा 5. विषयक सूत्र 6. पातक पिता ।

पातककृत् (पुं०) 1. एक व्यक्ति करने का पुत्र, (इन्होंने ही

सर्वप्रथम हस्तिविज्ञान की सिखा दी) 2. हस्तिविज्ञान ।

पातकः [पात + कृप् = पात + कृत् + क्तृन्] 1. पातक

का कृत् 2. वाक्पती, -की एक संज्ञकम् ।

पातक्यः—यथा [पात + क्तृन्, विभो टाप् च] एक

मुनय इव ।

पातन (वि०) [पात + क्तृन्] रक्षा करने वाला, मरक्षण

देने वाला, कि० ११९, -मन् 1 प्ररक्षण, संरक्षण

पालना, रक्षना, लालन-पालन करना—लघ्व० रघु०

१९३, इसी प्रकार प्रजां विहितं आद 2 बनाये

रखना, अनुपालन करना, (अनु प्रतिज्ञा, आदि की)

पूरा करना 3 ताजी ब्याई हुई गो का दूध पीना ।

पातकित् (पुं०) [पात + कृप् + क्तृन्] प्ररक्षक, मरक्षक,

पररक्षित करने वाला—रघु० २१६९ ।

पातला (वि०) (स्त्री०—गी) [पलाश + अच्] 1 डाक

का, डाक से उत्पन्न 2 डाक की लकड़ी का दण्ड

हुआ, मनु० २१६५ 3 दण्ड, लः दण्ड दण्ड । सम

—कृत्, कृत्तः दण्ड दे- का विशेषण ।

पारिः—की (स्त्री०) [पार + इन्] कान का सिरा

पारिः—की (स्त्री०) [पार + इन्] 1 कान का सिरा

—प्रवणपारि—गीत० ३ 2. कितावा, गीत, मगजी

—मन् ३१५५ 3. तेज सिरा, धार या नोक

—धामि० २३३ 4. हृद, सीमा 5. श्रेणी, पंक्ति,

—विपुल पुनकपाली—गीत० १, सि० ३५१ 6.

धम्मा, विह्व 7. बाध, पुल 8. गोद, अक 9. आयता-

कार नावका 10. अध्ययनकाल में दुरु हाग छात्र का

भरण-पाषण 11 नू 12 प्रशमा, स्तुति 13 बहु स्त्री

जिनके दाढ़ी-मुँछे हो ।

पारिका [पारि + क्तृन् + टाप्] 1 कान का सिरा 2 तल-

वार या किसी छुरी आदि काटने वाले उपकरण की

तेज धार 3 पत्तीर या मरक्षण आदि काटने की छुरी ।

पारित (पुं० क० कृ०) [पार + क्तृन्] 1 प्ररक्षित, मरक्षित,

आरक्षित 2. पालन किया हुआ, पूरा किया हुआ ।

पारिषय [पारि + ध्यञ्] बुद्धावस्था के कारण बालों

को मकंदी, बचलता ।

पारवज (वि०) (स्त्री—की) [पारवजः, अच्] पोखर में

उत्पन्न, नदी या मे शासन ।

पावक [पृ + क्तृन्] 1. आगः पावकस्य यस्मिन् स मृष्यते

कसबउज्ज्वलति सामरेणि य रघु० ११७५, ३१९,

१६८७ 2 अग्नि देवता 3. बिजली की आग

4. बिजक दूध 5 नील की लम्बा । सम० आतपकः

कार्तिकेय का विशेषण 2 मृदधान नामक वृष्टि ।

पारिकः [पावक + इञ्] कार्तिकेय का विशेषण ।

पावन (वि०) (स्त्री०—नी) [पृ + निच्, क्तृन्]

1 निर्मल करने वाला, पाप से मुक्त करने वाला, मुक्त

करने वाला, पवित्र बनाने वाला -पावास्त्रामाभिधो

नियम्यहरिणा गौरीगुरोः पावना—म० ६११७, रघु०

१५१०१ १५१५३, म० १८५५, मनु० २१२९, पात०

३३०७ 2. पवित्र, पुनीत, विमृष्ट, परिष्कृत—कु०

५११७, -न 1 आन 2 मन् इव्य 3. सिद्ध 4 व्याप्त

कवि, -1. मन् पवित्री करण, विमृष्टीकरण—पदनस-

नीरजनिजमपावन—गीत० १ 2 तप 3. जल

4. मोहर 5 मप्रहायमृषक तिमक । सम०—ध्वनि

शालनाद ।

पावनी [पावन + डीप्] 1 पवित्र मुलसी 2 गाय 3 गवा

नदी ।

पावनाम् [पावनाम् अपिहृत्य प्रीत्यम्-पावः १ अन्

डोप्] विशिष्ट वैदिक श्रावणा का विशेषण ।

पावरः (पुं०) पासे का बहु पहलु जिस पर 'शे' की लकवा

प्रकित हो, पासे को विशेष दृष्टि से फेंकना, पावर-

पननाम्न शोधित शरीर मृच्छी० २८८ ।

पाशः [पश्यते बध्मतेत्येव, पश् कर्तृणे चञ्] 1 डोरी,

भूषणका, बेडी फटा -पाशाकृष्टन्ननिबन्धनाममजल-

पाश म० ११३२, बाहुपाशोऽथ व्यापारिता मृच्छी०

९, रघु० ६१८८ 2 आश, शृङ्गेदार पित्राश, या फटा

3. बन्धन जो (बन्धन के द्वारा) मर्त्य की भाति

प्रयुक्त होता है—कु० २१२१ 4 पाशा—रघु०

गणिका जो अपनी पवित्रता तथा पावन जीवन के कारण प्रसिद्ध हैं (भागवत में उल्लेख है कि किस प्रकार उस गणिका ने तथा अर्जुनसिंह ने इस लोक के बंधनों से मुक्ति पाई)। सम० - अक्षः सिब का विशेषण।

विगणिका [विगल + ठन् + टाप्] 1 एक प्रकार का तारम 2 एक प्रकार का उत्तम्।

विगाशः [विग + अञ् + अण्] 1 गाँव का भुलिया या मालिक 2 एक प्रकार की मछली, - अण् प्राकृत स्वर्ण, - ओ नील का पीछा।

विगच्छः, - इम्, विगच्छः, - इन् [अपि + चञ् + छट्, अकालोप, पूर्वो०] पेट, उदर।

विगच्छकः [विगच्छ + कन्] पेट, औद्योगिक।

विगिहिका [विगिह + ठन् + टाप्] विहरी टाग की पिहली।

विगिहिल (वि०) [विगिह + इलच्] माट पेट वाला, स्वयंकाय।

विग्, वच् + उ पूर्वो० तारा०] 1 बट 2 एक प्रकार का बाट, (दा तोले के बराबर) कर्ग 3 एक प्रकार का कोड़। सम० - तलच् कई, बंद, बंद नाम का पेड़—सि० ५१६६।

विगुत्तः [विगु + ता + क] 1 कई 2 एक प्रकार का जल काक वा समुद्री कोवा।

विगुह्य (वि०) [विगु + अटन्] दबाकर, चपटा किया हुआ, - अ जीला की मूजन नेत्र-प्रदाह, - टच् 1. गंगा, अस्ता 2. सोसा।

विगुहा [विगु + अच् + टाप्] १६ मोलियों की एक लड़ जिसका बदन एक बरण (मोलियों की विशेष ताल) हो।

विगुह्य [विगु + अच्] 1 पृष्ठ का पर (बेम मोर हा) 2. मोर की पुष्ट शि० ५१५० 3 प्राण के रूप 4 बाजू 5 रंगों, शिला, - अण्, पुष्ट - अण् 1 ग्यान, शिवाक, काय 2 बाह्य का मोह 3 पवित्र, श्रेणी 4 डेर, मयकचय = अशोकपत्र के पीछे का मोह या रस 6. कला 7 हवन 8 टाग का पिहली 9 भाग की विषमय लार 10 सुपारी। सम० - बाष्पः बाज, ध्वन।

विगुह्य (वि०) [विगुह्य + लच्] 1 विपश्चिया, पिबना किमलनशाना, लमलमा तरुण मयंपशाक नबोदनम् पिबिहलानि च धर्मीन - छन्द० १ 2. पृष्ठवाला - ल, ल, ल, 1 बाह्य का मोह, भवनमंड 2 बाहन की काजी में एक चटनी 3 मलाई प्रमेन वही। सम० - लच् (पुं०) मन्त्र का पेड़ वा छिन्का।

विग् [अण० आ० - पिक्ते] 1. हन्के रग की पुट देना, रचना 2. मशी करना 3 मजाना ॥ (चु० ३३०

पिजयति-न) 1. देना 2 लेना 3. चमकना 4. सकल-वाली होना 5 रहना, बसना 6 चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना, भार डालना।

पिजः [पिज् + चञ्, अच् वा] 1. चमका 2. कपूर 3 हवा, च 4 डेर, - अण् नामधेय, पाक, - आ 1 क्षति, चोट 2 हन्की 3 कपास।

पिजट [पिज् + अटन्] शीत, आग की कीच।

पिजलम् [पिज् + लृट्] धुनकी, कई धुनने का उपकरण।

पिजर (वि०) [पिज् + अजच्] मलाई लिये पीले रंग का खाकी, मुनहरी रंग का, - अण् प्रदीपस्व सुवर्णपिजरा - मृच्छ० ३।२७, रघु० १८।४०, - अ ललाई लिये पीला या खाकी भरा रंग 2 पीला रंग - रघु 1 मोना 2 हन्ताल 3 अस्मयजर पिजरा।

पिजरकम् [पिजर + कन्] हन्ताल।

पिजरात (वि०) [पिजर + टनच्] पीले रंग का, हन्के भूरे रंग का।

पिजल (वि०) [पिज् + कलच्] 1. जोकसतप, भवमान, व्याकुल, विस्मय 2 (मना आदि) मानसिक, - अण् 1 हर नाम 2 कुश की पत्ता।

पिजालय [पिज् + अलच्] मोना, सुवर्ण।

पिजिका [पिज् + अण् + टाप्, इलच्] पुनी, कई का मान गहरा विमय कोने पर मृत् निकलता है।

पिजुषः [पिज् + ऊषण्] कान का मेल।

पिजटः [पिजट, पूर्वो०] जीवों की कीच, शीत।

पिजोला [पिज् + ओल् + टाप्] पत्ता की लड़कहाट्ट, पत्ता का लड़कहाट्ट जड़ करना।

पिटः [पिट् + क] सन्दूक, टोकरी टच् 1. घर, कुटीर 2. छापर, छन।

पिटकः, - कच् [पिट् + कन्] 1 सन्दूक, टोकरी 2 लगी 3. पत्ता लफाला, छाटा पत्ता लपूर (इस अर्थ में पिटका तथा पिटिका भी) - अण् गहयोगार पिटका मन्त्रा ५० २ 4 इष्ट के अर्थ पर एक प्रकार का आभूषण।

पिटक्या [पिट + प + टाप्] मनुकी का डेर।

पिटक [पिट + काक बो०] पिटारी, सन्दूक।

पिटुकम् [पिटुक, पूर्वो० कम् वा] बोनों का जमा हुआ मेल।

पिटरः, - रच् [पिट् + कण्] बर्तन, तमका, बटवाई (पिटरी) भी इसी अर्थ में - पिटर कचबसिमाय विजयागन्धिन दहनितराम - पञ्च० १।१२४, अठर-पिटरी दुपुण्य कर्मा विवचनाम् - मत्त० ३।११६, रच् नई का डहा।

पिटरका, - कच् [पिटर + कन्] बर्तन, तमका। सम० - कपास, लच् टोकरी, लपट्टी, लपटर।

विहकः—कम [पीठ + च्चल्, नि० साध्] छोटा फाड़ा, कुंसी; फकाका ।

विह् (इवा० आ०, घृ०) उभ० पिडते, पिडयतिने, पिडित । १ इचट्टा करके पीछी या मात्ता बनाना २ बांधना, धिलाना ३ डेर लगाना, इकट्ठा करना ।

पिड (वि०) (स्त्री० ही) [पिण्ड + अच्] १ टास, पत २ पिन्ना हुआ सघन सटा हुआ, ड, डम् १ पीछी, गोला, गम्भक (अथ विह, नच पिड आदि) २ लोटा बेली (मिट्टी का) ३ कौर प्राय मूत्रभर बज्ज रघु० २१५९ ४ आदि म पितरा का दिया जान वाला बाबली बाँह रघु० ११६६, ११८६, मनु० ३१०१६, ११७२ १२६ १४०, याज्ञ० १११० ५ भाजन गन् १४, १० १० आलाब ९, तमन हलाक ६ आदिवा वनि, निवाह १० १०

पिडयानवना मा० ७ ८ मास, अग्रिम १० मास को ग. ग. म. म. म. का मं १० गार शारीरक आवा गकानविचरिण्य मद्रिवाणा पिडय नारवा लघु भौतिक्य रघु १५० ११ ३४ मद्र मसुचय १२ गग का पिडयने मा० ५११६ १३ हाथी वा कुमचयन १४ मकान क आने का निकाला हुआ छत्रा १५ गग वा गध दध्य १६ (अक ग० मं) जाड, कुमयोग १७ (उया० म) घनत्व, डम् १ जिकन मावच्य नाकन २ माहा ३ ताडा मसयन ४ मना (पिड कु मास बनाना निर्माणा करना, डेर लगाना पिडोय गाग या लोटे बनाना) । सम० - अन्वाहयं पितरो का पिड जान क पदचान लाने के योग्य मनु० ३११२३ अन्वाहयंक्य पितरा क उद्देश्य म दिया हुआ भाजन, अग्रज्य आला, अग्रज्य इत्यान, अग्रज्यक, महावर, काक रग, अग्रज्य, आला, आलाक, अग्रज्य (पु०)

मिहक,—अग्रज्यका मन्वाकनवा के मिलित पिडदान तथा ललदान, आड और तपन,—अग्रज्य पिडदान में भाग लेना, मोल रसयध, लावान की तरह का मृगधन गाद, लैक्य, लैक्य गधदध्य विशेष, लावान,—ड (वि०) १ ओ भोजन देना है, जीवन निषेध के लिए आहार देने वाला इवा पिडदस्य कुले गधदध्यतु और विमकयति आट्ठमदय भुक्ते रघु० २१३१ २ मृत पितरो को पिड देने का अधिकारी याज्ञ० २११३२ (ड) पिडदान कन वाला मिहटतम सबधी पुरुष २ स्वाधी, अधिरक्षक, —हालक्य १ अग्रज्येष्टि क्रिया के समय पिड देना २ अग्रज्येष्टि की सध्या के समय पितरो को पिडदान देना,—निर्वाचक्य पितरो को पिडदान देना,—वातः जिहा देना, वा० १, —वातिकः जिहा से जीविका चकाने वाला, —वाक—वाक हाथी,—गुक् १ अग्रज्य

वृक्ष २ पीप का गुलाब ३ बनार (वृक्ष) १ अग्रज्य वृक्ष पर फूल आना, मजरी २ बीनी गुलाब का फूल ३ कमल फूल,— वाज् (वि०) पिड प्राप्त करने का अधिकारी (पु० ४० ४०) स्वर्गीय मृत पुरुष वा पितर मा० ६१२५ भूमि (इवा०) जीविका, जीवन निर्वाह का साधन, मूलक, मूलक्य गावर, यज्ञ आदि करके पितरो का पिडदान देना—वाज्ञ० ३११६, लेव पिड का वह अन्न जो हाथ में बिपकी रह जाय है (यह अन्न प्रणिममह से ठीक पूर्वकीर्ति मान पितरा को दिया जा है), —लोचः (मलान न हान क कारण) पिडदान का अनाद, सधयः जीवित नया मृत व्यक्ति क बीच का सबध जिसम वि पिडदान की पिडमकता व प्रति पात्रता का निर्धारण किग जाय ।

विहक कम् [पिण्ड + कं - क; १ लोटा, वाक्का, वाक्क २ लुटा का मृजन ३ भाजन का घाट ४ टास की पिड ५ गधदध्य लावान ६ गोहर - क बैलान, विशाच ।

विहक्य [पिड + च्चल्] वाक या पिण्ड बनाना ।

विहसः [पिड + कल्] १ पुक, बाँध २ टीला ऊर्ध्वभूमि या लैलजाल ।

विहसः [पिड + मन् + ह] मिहक, जिहा पर जीवन बापन करने वाला सध ।

विहसः [पिड + अन् + अच्] लावान, गधदध्य ।

विहसः [पिड + च्चल् + अच्] १ गध मिहक २ म्वाला ३ भेमा का घराज वाला ४ मिहक वृक्ष ५ निवा की अग्रज्यस्थिति ।

विहिः बी (स्त्री०) [पिड + इन्, पिड + डीच्] १ पिछी, गोला २ पहिये की गांभी ३ टास की पिडनी ५ लोकी, बीना ६ घर ७ ताड की जाडि का वृक्ष ।

डम० - गुक्क अलाक, वृक्ष, लेव एक प्रकार का लेव या उचन, - वृक्क लैक्यूर वेद, डीन हाकने वाला, कायर, बातवलापी मोह, वेहरा तु० वेहेकविन् आदि ।

मिहिका [पिण्ड + च्चल्, इचल्] १ वृक्ष, गोलाकार वृजन २ टास की पिडनी - डे० ड० मिह ।

मिहिका (वि०) [पिण्ड + च्चल्] १ दहा २ घर बनाना बघा माला या पिह्या २ पिडाकार बनाना हुआ, बदि जीवा डेर किया हुआ, बटोला ४ मिहिन ५ जोडा हुआ, गुना किया हुआ ६ पिना हुआ, सध्यात ।

मिहिन (वि०) [पिड + इनि] १ पिड प्राप्त करने वाला (पितर) (पु०) पिहारी २ पितरो की पिडदान देने वाला ।

मिहिनः [पिण्ड + इचल्] १ पुक, बाँध २ ऊर्ध्वभूमि, वक्क ।

चरित (वि०) [पिष्ट + ईर् + निच्] कीका, रसहीन, नीच सूत्रा, र १ जनार का वृत्त २ मसीओपी का नास्ति वच ३ समदर्शन दे० 'चरित'।

विशेषिकः (स्त्री०) [पिष्ट + आ + लृट्] खाते समय मुँह में बिना कण उठने, उच्छिष्ट।

विष्णुः कश्च [पिप् + ञ् + नि० + माप्] १ गल (गिल या मरमा को) २ गन्ध उन्न लावान ३ केसर ४ शीत।

पितामहः (स्त्री०-ही) [पिन् + डामहच्] १ दादा बाबा २ ब्रह्मा का विशेषण।

पितृ (पुं०) [पाति रक्षति वा + तृच्] पिता, तेनाम लोक पितृमान् विनेत्रा-—रघु० १३।२३, १।२४, २।१, ६३, री (वि० ब०) पिता-माता माता-पिता-प्रसूत पितरौ बड़े पार्षदीपर-स्वरो रघु० १।१, याज्ञ० २।११७, -रः (ब० ब०) १ पूर्वपुरुष, पूर्वज, पिता, -रः ६।२४ २ पितृकुल के पितर, पितृवर्ग-मनु० २।१५१ ३ पितर रघु० २।१९, ४।२० भव० १०।२९, मनु० ३।८१ १९२। सम० अक्षित (वि०) पित, डारा कमाई हुई पैतृक (मर्पति), -कर्मन् (न०), कार्यम्, कुलम्,—किमा मृत पूर्व पुत्रबाओ को के निमित्त किया जाने वाला दाय या ब्याहकम् कालम्बु कश्चित्पान, रघु० १।११६, कुम्भार मलय पर्वत में निकलने वाली नदी, वच. १ पूर्वपुरुषाओ के समस्त वंश २ पितर, वंश प्रबलक जो प्रजापति के पुत्र थे—दे० मनु० ३-१९, ४-५, बृहत् १ पिता का घर २ कश्चित्पान, बड़ा टकन किच शाय, घलक, बालित् (पुं०) पिता की हत्या करने वाला, लर्षचम् १ पितरा को दी जाने वाली ब्राहुति या ब्रह्मदान २ (मार्जेन व अवसर पर) पितर तथा इय दिवगत पूर्वजों के निमित्त दाय हाथ से ब्रह्म छोड़ना मनु० २।१७६ ३ तिल, तिषिः (स्त्री०) अमावस्या, तीर्थन्त तथा तीर्थ जहाँ शकर पितरा के निमित्त ब्याह करना विशेष रूप से फल दायक विहित है २ अंशु और तर्जनी के मध्य का भाग (उमके द्वारा दाग आदि करना पवित्र माना जाता है) बाणम् पितरा के निमित्त किया जाने वाला दान, बाणः पिता से प्राप्त मर्पति, विमम् नमावरा, —देव (वि०) १ पिता की पूजा करने वाला २ पितरा की पूजा समबद्ध (वा) अतिमन्त्रात् आदि द्विर पितर, देवत (वि०) पितरा द्वारा प्रायश्चित्त (नम्) दमशी (मेषा) लक्ष्म, इक्ष्म पितर से प्राप्त मर्पति, याज्ञ० २।११८, -फलः १ पित्रुन्, पैतृक लवच २ पितृकुल के लवच ३ पित्रु पक्ष प्राश्विन मास का कुल्य पक्ष जिसमें पित्रुपक्ष करना प्रसन्न माना गया है, —पैतः वच

का विशेषण, वचम् पितरो का लोक, पितृ (पुं०) दादा, बाबा, पितामह, पुत्री (वि० ब० पितृपुत्री) पिता और पुत्र, (पितुः पुत्रः प्रसिद्ध और लोक विभुन पिता का पुत्र, पुत्रवन् पितरो की पूजा, -वेतावह (वि०) (स्त्री० ही) पूर्व पुरुषाओ से प्राप्त, पैतृक, आनुवंशिक (ब० ब०-हा) पूर्व पुरुष, ब्रह्म (स्त्री०) १ दादी २ मायका-मीन मुटपुटा प्राप्त (वि०) १ पिता से प्राप्त २ पितृकुल क्रमागत से प्राप्त, वचम् पितृकुल के मातेदार (नपुं०-वच) पिता के लवच से रहितेशरी, अवत (वि०) पिता का कर्तव्य परायण प्रकृत, —अक्षित (स्त्री०) १ पिता के प्रति वन्द्य, जोखनम् पितरो का दिया गया भोजन - आनु (पुं०) पिता का भाई, चाचा या नाऊ,

चरितम् १ पितृपुत्र २ कश्चित्पान, जेच पितरा के निमित्त किया जाने वाला यज्ञ ब्याह ब्रह्म १ मृत पूर्व पुरुषाओ को प्रतिदिन लर्षण या ब्रह्मदान, ब्राह्मण द्वारा अनुष्ठेय वैश्व देव यज्ञो में एक एक पितृ यज्ञस्तु तर्पणम् मनु० ३।७०, १२२, २८३, वचम् (पुं०), राज, राजन् (पुं०) पक्ष का विशेषण क्व शिव का विशेषण, लोक पितरा का लोक बंश पिता का कुल, वचम् इमान, कश्चित्पान (पितृ वचश्च १ राजन्, पिताक शिव का विशेषण), —अक्षित (स्त्री०), लक्षम् (नपुं०) इमान, कश्चित्पान कुं ५।७७, ब्रह्म ब्याह, पितृकर्म, ब्याहम् पिता या मृत पूर्व पुरुषा के निमित्त किया जाने वाला ब्याह स्वम् (स्त्री०) (पितृस्वम्) पितृ स्वम्-मी) मृदा, कुत्ती मनु० २।१३१, अक्षीय कुत्तेरा भाई लक्षित (वि०) पितृपुत्र, पितृपुत्र, पुः १ पितापह दादा, बाबा २ मायका-मीन मुटपुटा-स्थानः, स्थालीयः अतिमावक (वा पिता के स्थान में है), हत्या पिता का वध, हृत् (पुं०) पिता की हत्या करने वाला।

पितृक (वि०) [पितृ आगतम् पितृ + कन्] १ पैतृक, कुलक्रमागत, आनुवंशिक २ औषधैर्देहिक।

पितृव्यः [पित्रु + व्यत्] १ पिता का भाई, चाचा २ कोई भी ब्याहपुत्र पुत्र-मातेदार -मनु० २।१३०।

पितृव्य [अति + वा + लृट् अपे अकारलोप] पितृव्योः, पौरीय म स्थित जान दादा में एक (जेच दा है) दात और काह) पित वरि चरितया माय्यानि का-वं पटाकन पच० १।३७८। सम० अक्षीयारः पित के प्रकार से उगलन दरवा का दौल, ब्रह्मताः (वि०) पित से प्राप्त परधान पितृपुत्र पितृपुत्र अक्षययि योग्य काव्य० १०, कोचः पितामह, -जीव पित-शिव की अधिकता, पितप्रकोप, —अक्षयः पित के प्रकोप से होने वाला अचर वा बुद्धार, —अक्षयि (वि०)

जिसके शरीर में पित्त की प्रधानता हो, या जो कभी स्वभाव का हो, प्रकोप पित्त का अधिकत्व या पित्त का कुपित हो जाना रखतु रक्तापित नामक रोग बाधु पित्त के प्रकाश म पेट में बाधु का पैदा होना अफारा, बिदग्ध (बि०) पित्त के प्रकाश में आकाश-अवयव, हर (बि०) पित्त के प्रकोप का गान्ध करने वाला ।

पित्तम् (वि०) [पित् + क] पित्त बहुत, जिसमें पित्त की अधिकता हो, लम् १ पीतल २ भात्रपय का वृक्ष विभाव ।

पित्त (बि०) [पित् + इतम् - पित् + यत् + रोह् + आदेशः । १ वेनक बरौनी का पुत्रैना २ (क) मन पित्रा म मयव रखने वाला म० ० ० ० (म) श्रोत्ररहित क्रियामयवी - अथ १ उपेय भाई २ प्राचमस अथ १ यथा नर नरु + पित्ता और असाधन्या का दिन, अथ १ यथा नर का नरु २ यगुने और नरना क बीच का श्वेती का अथ (पित्रा के मित पुत्र) ।

पित्तम् (पु०) [पत् + मय इय अस्वात्मयोग पित्तम् + मत् + पठ्ठी ।

पित्तम् [पत् + मल हन् + माय पठ् ।

पित्तान्त्रम्, अग्नि + चा + मय अ + अकारमाप] १ इकना सिमाना २ रवान ३ वादर बाया ४ दक्कन, बाया ।

पित्तायक (वि०) [अग्नि + घ + अन्तु, अपे अकारमाप] इकने वाला शिमान बाया प्रच्छन्न रखने वाला ।

पित्त (म० व० ह०) [अग्नि + नत् + क्त अपे अकारमाप] १ बरहा दुष बरा दुषा या बाधु किया हुआ २ सुमरित्रव ३ शिमाया हुआ प्रच्छन्न ४ बाधया हुआ शिमा हुआ ५ मयग हुआ इका हुआ, आर्वाट ।

पित्तक, -कम् [पा रक्षण आकाश नृ यातागर इवम्] १ पित्त का धन २ बिपत् ३ मयामय धन ४ लाटा या छड़ा ५ धन की बाँटार । म० ० - तोषु, धूक, धुत्, पान्ना (पु०) शिव की गणधिया ह० ३१० ।

पित्तकिन् (पु०) [पित्त + इति] शिव का बिरोधन ह० १७७ म० ११६ ।

पित्तितम् (टु०) [पत् + मन् + मत् + पठ्ठी ।

पित्तितु (बि०) [पत् + मन् + त्] शिव की उच्छा बाया पतनशील - वृ पठ्ठी ।

पित्तित्ता [पा + मन् + अ + टाप् + व्यास ।

पित्तित्त, पित्तित्त पित्तित्त (बि०) [पा + मन् + क् + पित्तित्ता + इति पा + मन् + त् + व्यास ।

पिपीलः, पिपीली [अग्नि पील अपे अकारमाप, पिपील + डीप् + पाटा बीडा ।

पिपीलक [पिपील + कन् + मकीडा ।

पिपीलिका [अग्नि पील + इकन् अपे अकारमाप] पीटा कम् एक प्रकार का माना (पीटा हाथ एकत्र किया हुआ माना जाना जाता है) ।

पिपीलिका [पिपील + टाप्, इवम्] पीटी । म० परिस्वल्पम् पीटीयो का इव उतर दीडना ।

पिप्यल [पा + अलप् + पृषी०] १ पीपल का पेड़-यात्र० ११३०० २ बुचक ३ आर्बट या कौट की आम्नीन-लम् १ बरबटा २ पीपल का बरबटा ३ मयामय ४ ब्रम् ।

पिप्यल, -लो (पृ०) [प् + अलप् + डीप् + पृषी० पठ्ठी ह्यस्वाभाव] पिप्यल पीपल नाम की औषध ।

पिप्यिका (पृ०) पीटा पर बसी हुई मल की पयडी ।

पिप्यु, अग्नि पत् + इ अपे अकारमाप] निशान, मित्त माया निम्न ।

पिप्यल (पीप + बाधन ह्यस्व) एक वृक्षविशेष (बिपीली) ह० ३३१ लम् इस वृक्ष (बिपीली) का फल ।

पित्त बग० उम०-वेल्चमिने १ कंकना डालना २ भेदना चलना करना ३ उन्नेहित करना उकमाना

पित्त (पु०) ह० पीपु ।

पित्त (बि०) [किश्रे चतुषी वस्य किश्रे अय पितामह] बीधियाई ओमो वाला - लम् बुध पाने वाली जीव ।

पित्तिका [पित्त के + क + टाप्] हडिनी ।

पित्त (पु० उम० पिपि - न) १ कप देना, बनाना निर्माण करना २ बरबान होना ३ प्रकाश करना, उम० करना ।

पित्त (बि०) [पित् + अ + कित्] ललाई लिये भुरग का, लाल सा साकी रस का मध्ये मयह ककुभ पिपिजी पि० ११३३ ११६, कि० ११३६ ग साकी रस ।

पित्तक [पित्त + कन्] बिपु अववा उसके अनुचर का विशेषण ।

पित्तक [पिपित्तमाचमनि-आ - चम्, बा० ४ पृषो०] भूत बैला, सैतान प्रेत दुष्ट प्राणी नन्दासित पितावापि भावनेन किम् २, वृ० ११३०, १०, ६६ म० आलव बह रवान अर्वा कारकी रस क करम् अघेरे में प्रकाश होता है। हु एक प्रकार का वृक्ष (सिंहार) बाया, लैलाट पिताव हाथ लावट होना आया सैतानो की बाया पे की पाहुन जिसका प्रधान नाटको में दिवता हूँ मस्कृ क अगधन लम् १ सैतानो की लया २ भूयो का पर येनाबास ।

पित्तकिन् (पु०) [पित्त + इति, कृक] धन के स्वामी कुबेर का विशेषण ।

वीतकम् [वीत+कम्] 1 हरताल 2. वीतल 3. केसर
4. सहृद 5. बजर की लकड़ी 6. बदन की लकड़ी ।

वीतनः [वीत करोति इति—वीत+निच्+त्वाट् वा वीत
नयति इति वीत+नी+ङ्] मूखर की जाति का वृक्ष
—वृक्ष 1 हरताल 2 केसर ।

वीतल (वि०) [वीत+ला क] पीले रंग का,—लः पीला
रंग,—लम् वीतल ।

वीतिः [पा+क्तिच्] बोझा (स्त्री०) 1 बूट, पीना 2
मदिरालम्ब 3 हाथी की सूँड़ ।

वीतिका [वीत+ठ्+टाप् इत्यम्] 1 केसर 2 हल्दी 3
पीली चमेली, या सोनचहरी ।

वीतुः [पा+स्तुन्] 1. सूयं 2 अग्नि 3 हाथियों के मुँह
का मुख्य हाथी, वृषपति ।

वीचः [पा+वच्] 1 सूयं 2 काल 3 अग्नि 4 देव
5 जल ।

वीचिः [- वीति, वृषो० तस्य व] बोझा ।

वीच (वि०) [प्याव+क्त, सप्रसारणे दीर्घ] 1 स्तूल,
भातल, हृष्टपुष्ट 2 बराबरा, बिहाल, मोटा—जैसा
कि 'वीनस्तनी' में 3 पूर्ण, बातामटोल 4. प्रभूत,
अधिक । तम०—ऊचच् स्त्री (वीनोष्ठी) घरे पूरे
ऐन (जीडी) वाली बाय, बकास् (वि०) बिहाल-
बलस्थल वाला, घरी पूरी छाती वाला ।

वीचकः [वीन स्तूलयति अन्त्यस्थि नाशयति—वीन+तो
+क] 1 नाक पर पुष्पभाव डालने वाला जुकाम 2
बासी, जुकाम ।

वीचः [पा+ङ् नि० वृक्, इत्यम्] 1 कोषा 2 मूयं 3
अग्नि 4. उत्तु 5 काल 6 सोना ।

वीचकः—वच् [वीच+ऊचन्] । मुखा, अमृत मनसि
बबमि काव पुष्पवीचपुष्पा जन्० २१९८, इसी
पौष्पवलहरीम सम० ५३ 2 दूध 3 ध्याने क बार
पहले मान दिन का नाय का दूध । तम० बहन्
(पु०), वचिः 1 कन्या 2 कपूर,—वचः 1 अमृतवर्ग
2 चन्द्रमा 3 कपूर ।

वीचकः [वीच+च्युन्] मकोडा ।

वीचुः [वीच+उ] 1 बाण 2 अन् 3 कीड़ा 4 हाथी
5 ताड़ का तना 6 फूल 7 ताड़ के कुत्तों का समूह
8 'वीच' नाम का एक वृक्ष ।

वीचुकः [वीच+कन्] बीटा ।

वीच् (इशा० पर० वीचनि) माना-नासा या हृष्ट पुष्ट
होना ।

वीचक (वि०) (स्त्री०—वीचरी) [व्ये+च्यतिच्, यत्र०
दीर्घ] 1. भरा पूरा, स्तूल, मोटा 2 हृष्ट पुष्ट,
बलवान् (पु०) पवन ।

वीचर (वि०) (स्त्री०—रा,—रो) [व्ये+च्यत्, यत्र०
दीर्घ] 1 स्तूल, बिहाल, हृष्टपुष्ट, भातल, मोटा—

ताजा रपु० ३१८, ५१५५ १५३२ 2. कूसा हुआ
मोटा, रः कड़वा, री३ तकनी 2. बाय ।

वीचा [वीचते पी० व+टाप्] जल ।

वच् (चुग० उभ० पुनयति—ते) । कुचलना, पीसना
2 पीड़ा देना, कष्ट देना, हर्ष देना ।

वृच् (पु०) [या+इयमुन्] (कर्त०—वृचाम्, वृचानी,
वृचाम्, कर्म हि० व० वृचाम्, वृचानी ए० व०
वृचम्) 1 वृष 2 नर पुनि विवर्धयति कुच
कुमारी नै० ५११० 2 इमान, मानव यस्यावां
स पुमांस्कोके हि० १ 3 मनुष्य, मनुष्य जाति, कौम,
गच्छ बघे पुसा रक्षपतिपदे मेघ० १२ 4 टह-
लथा, तेबक 5 पुमांस्य लब्ध 6 पुस्तिल पुनि वा
होरचन्दनम् अमर० 7 आधा । तम०—अनुच
(वि०) (पुमांस्व) [पुमा अनुच, तमासे पुनीयाया
अनुक्] वह जिसका बड़ा भाई भी हो अनुजा
(पुमन्जा) लड़का होने के बाद जन्म लेने वाली
लड़की अर्थात् बड़े भाई वाली लड़की, अल्पवय्
(पुमपयम्) लड़का, अर्थः (प्रमर्ष) 1 वृष या
मनुष्य का उरस्थ 2 मानव-बीजन के चार ध्येयों में
से कोई ना एक, अर्थात् बर्ष, वर्ष, काम या मोक्ष,
दे० पुचार्थ, आख्या (प्रमाख्या) नर की मन्त्रा,
आचारः (पुमाचार) पुष्प का आचार, बालचमन,
वचिः (स्त्री०) पुष्प की कमर—बाधा(पुचम्)

पति की कामना करने वाली स्त्री, कोकिलः (पुस्का-
किल) नर-कोयल कु० ३१३२, खेटः (पुवैट नर-
व्रत,—वचः (पुवच) 1 बेल, तांड 2 (ममात् के
जन्त में) मुख्य, सर्वोप, धेष्ठनच, पुष्प या किसी
भी खेती का प्रभूत व्यक्ति—वाम्पिकमिपुनिय
- राज०, इसी प्रकार 'नकुपुवच' जन्० २१३१, नर
पुवच—बादि, केतुः जिव का विशेषण—कु० ७१७७,
वचनी (पुवचनीय) रडो का बंटा, विह्वल्
(पुवचिह्वल्) शिरन, पुवच की अननन्धिय, अल्पम्
(पुवचम्) (नपु) लड़के का पैदा होना, नर-सन्तान
का जन्म लेना, वचः वह नक्षत्रपुत्र जिसमें कि लड़कों
या नरसन्तान का जन्म होना है, वक्तः (पुवक्त)
पुष्प-नास,—वचः (पुवच) 1 ब्राम्हिमान् में किसी
की जाति का नर 2 वृद्धा, वचकम् (पुवचकम्) नर
जाति का नक्षत्र नामः (पुनाम्) 1 पुष्पों में हाथी,
पूज २। जानरभीय पुवच 2 लठेर हाथी 3 लठेर
कमल । जावकम् ५ नाय केसर नाय का वृक्ष रपु०
१५७७, वक्तः,—वः (पुनाट—व) इस नाम का पुष्प

—नामवचः (पुनामवच) नर, पुलावापी, वल्लम्
(पुनामव) (वि०) पुनि नामवापी, (पु) पुनाम
नामक वृक्ष, पुवः नर-सन्तान, लड़का, अल्पवय्
पुका की अननन्धिय, विह्वल्,—वृचम् (पुवचम्) (पु)

यह लक्ष्य जो केवल पुंलिंग बहुवचनात् ही होता है—आरा पुंमूर्धन्य बाधता—अमर०, शेषः (पुंमोर) पुंस्व के साथ सहवात् या सव्य 2 किसी पुंस्व या पति का मनेन—पुंमोने क्षत्रिणी,—पत्नम् (पुंस्वम्) श्रेष्ठ राक्षसः (पुंस्वम्) नर-राक्षस,—कन्यम् (पुंस्वम्) नर का बेटा,—मित्र (पुंस्वम्) (वि०) पुंस्ववाचक (मध्य), पुंस्व वाचक (मध्य) 1 पुंस्व वाचक चिह्न 2 वीर्य, गोधन 3 पुंस्व की जननेन्द्रिय,—अस्तः (पुंस्वम्) बछड़ा, बच्चा: (पुंस्वम्) छद्मर,—केव (पुंस्वम्) (वि०) पुंस्व की वेश भूषा में, गर्वणी पोशाक पहनने हुए,—सकम् (पुंस्वम्) (वि०) पुंमोत्पत्ति करने वाला (मध्य) सर्व प्रथम परिष्कारात्मक या शुद्धीकरण संबंधी संस्कार, स्त्री के गर्भाधान के प्रथम चिह्न प्रकट होने पर पुंमोत्पत्ति । अंश के यह संस्कार किया जाता है—रघु० ३।१० 2 अम, वने 3 दृष्ट ।

पुंस्वम् (पुं + स्व) 1 पुंस्व का लक्षण, वीर्य, पुंस्वम्, गर्वनी यन्त्रात् पुंस्वे परीक्षित—आम० १।५५, 2 दृष्ट, वीर्य 3 पुंस्व ।

पुंस्व (अमर०) [पुं + स्व] 1 पुंस्व की भाति—रघु० १।२० 2 पुंस्व में ।

पुंस्वक (वि०) (स्त्री-स्त्री), पुंस्वक (वि०) (स्त्री-स्त्री) [पुंस्व मुक्ति कर्त्ता मन्त्रिणी—पुंस्व + कर्त्तृ (न्) + कर्त्तृ] अथवा, शेष, अथवा एक पति वर्त्तक अर्थात्, शुद्ध स्त्री में उत्पन्न निषाद की मन्त्राणां आगो निरादायकतायां आगो अर्थात् पुंस्वक—मनु० १०।१८, स्त्री-स्त्री 1 कन्यी नीज का पीछा 3 पुंस्वक अर्थात् की स्त्री ।

पुंस्वः—अन् [पुंमोस लनति—पुंस्व + लन् + इ] 1 बाध का वन वाला भाव—रघु० २।३१, ३।५०, ९।६१ 2 बाध, बधेन ।

पुंस्वितः (वि०) [पुंस्व + इतच्] पंथां से युक्त (यथा—बाध) ।

पुंस्वः—अन् [पुंस्व, पुंस्व] डेर, महत्, मधुष्यव ।

पुंस्वकः [पुंस्व, ला + क] आगो ।

पुंस्वः—अन् [पुंस्व + अन्] 1 पुंस्व—रघुनाथपुंस्वो बर्हति निपुण उत्तर० १।२७ 2 बाधो वाली पुंस्व 3 गोर को पुंस्व 4 पिछला भाग 5 किसी वस्तु का किनारा । मम०—अमन्,—अमन् पुंस्व का निरा,—अमन्: विष्णु, —अमन् पुंस्व की वड ।

पुंस्वकः—की (स्त्री०) [पुंस्व + अद् + इन्, पुंस्वकटि + कीन्] अर्थात् वीर्य वटकाया ।

पुंस्वकः (पुं०) [पुंस्व + इति] पूर्वा ।

पुंस्वः [पुंस्व + वि + इ] डेर, मधुष्यव, माया, राक्षि, सह—क्षीरवशेलेव लक्ष्मणपुत्रा—कु० ७।२९, प्रत्युपपन्नति मूर्धनि स्थिरतकः पुंस्वे निबुधे विद्व—वीता० ११ ।

पुंस्व (स्त्री०) [पुंस्व + इन्, पुंस्व] डेर माया, राक्षि । पुंस्वितः [पुंस्व + कन्] बीला ।

पुंस्वित (वि०) [पुंस्व + इतच्] 1 डेरी, मधुष्यव, एक जगह लगाया हुआ डेर 2 मिलाकर जीया हुआ, दबाया हुआ ।

पुंस्वः 1 (पुंस्व + पर०—पुंस्वित) 1 अर्थात् न करना, लिपटना 2 अल्पवर्तिन करना, बटना, पुंस्वना ॥ (पुंस्व + उभ०—पुंस्वित—ने) 1 मिथना 2 बाधना, जकड़ना 3 पीट-यति—ने (क) पीटना, चूर्ण करना (क) पीटना (म) चमकना ॥ (पुंस्व + पर०—पुंस्वित) 1 पीटना 2 मलना ।

पुंस्वः—अन् [पुंस्व] 1 महत् 2 लोचनी जगह, विवर, शोखला पत्र—मित्रपल्लकपुटो बनामि—रघु० १।६८, १।१२३, १।३।२२, यामिनि० ३।९, अमलिपुट, कर्णपुट आदि 3 बाना, पत्तों की तरहकरके बनाया गया, पुंस्वका—कुप्या पत्र पत्रपुट मदीयम्—रघु० २।६५, मनु० १।२८ 4 कोई उबला पात्र 5 कन्यी, क्षीमी 6 व्यान, डकना, आच्छादन 7 एकक (पुंस्व) की इन्ही वषों में । 8 बोधे का लुप, इः रत्नपटो, इन् वामकम् । मम०—उद्वज्जम् उद्वेज्जम्, उद्वज्जः वारिजम्,—क्षीकः 1 बंठन, कलसा, बड़ा 2 ताबे का पात्र,—कन्यः औषधियों सेवार करने की विशेष पद्धति, (प्रथम औषधियों को पत्तों में लपेट कर ऊपर से मुस्तानि पात्र सेते हैं और फिर आग में मूना जाता है—अनि-विष्णो मनीत्यादयः पुंस्वनाम्, पुंस्वनाकपटोकायां पत्र कवचो रघु—अमर० ३।१, —क्षीकः 1 पुंस्व, नवर 2 एक प्रकार का वाद्ययंत्र, आलोच 3 अल-यं या अल, अलम् कन्या या नवर—क्षी १।३।२६ ।

पुंस्वकम् [पुंस्व + कन्] 1 महत् 2 उबला या कम महारा प्याला 3 बोना या पुंस्वका 4 कल 5 वाद्ययंत्र ।

पुंस्विकी [पुंस्व + इति + कीन्] 1 कल 2 कल तनुह ।

पुंस्विका [पुंस्व + कन् + टाप्, इत्थच्] इलायची ।

पुंस्वित (वि०) [पुंस्व + कन्] 1 रपडा हुआ पीसा हुआ 2 लिपटा हुआ 3 टोका लगाया हुआ, सीया हुआ 4 क्षिप्त ।

पुंस्वी [पुंस्व + स्त्री] डेर, 'पुं' ।

पुंस्वः (पुंस्व + पर०) 1 छोड़ना, त्याग देना, तिलांश्वलि दे देना 2 परच्युत करना 3 निष्ठात्याग, विहा करना, बचना ।

पुंस्वः (पुंस्व + पुंस्वित) पीटना, चूरा करना, चूर्ण बना देना या पीन हाकना ।

पुंस्वः (पुंस्व + वज्ज) चिह्न, निशान ।

पुंस्वरीकम् [पुंस्व + ईकम् वि०] 1 स्वेतकमल, —उत्तर० १।२७, मा० १।७४ 2 लजेर छाया,—कः 1 लजेर

अन्त में) कोई भी छोटी वस्तु यथा अमिषुष, मिषापुष आदि, जो (दि० ५०) पुष और पुषों (पुषोक्त) पुष के रूप में गाद देना—रघु० २।१६।।
मम० अजायः १. जो पुष की कमाई पर निर्वाह करता हो; या जिसके निर्वाह की व्यवस्था पुष द्वारा की जाय २. एक विधाय प्रकार का मांस दे० कुटीरक—अभिन् (वि०) पुष चाहने वाला, इष्टिः, इष्टिका (स्त्री०) पुष लाभ की इच्छा से किया जाने वाला यज्ञ विशेष, काष् (वि०) पुष की कामना करने वाला, कार्यम् पुष मन्त्रों सम्प्राप्तिके, कुम्भकः वा पुष की भाँति माना गया हो, गाद किया हुआ पुष—क्यामकमुष्णिगिर्वाधितको जहानि माधे न पुष क्लृप्तं पदही भवति ७० ५१३, जात (वि०) इसे पुष जानने वाला या बारम्ब पुष श्री, पत्नी, —पत्नीः पुष २। पिता क प्रान अर्पण कर्त्तव्य बोध्य—आः देहे और पान, बोधोष (वि०) पुष न पौष की प्राप्ति होने वाला, आनुर्वाण भद्रि० ५।१५,—प्रातिनिधिः पुष के स्थान पर भयनया हुआ, (इति० इलकपुष), नाभः पुष की पार्श्व बंध (स्त्री०) पुष का स्ना—नाभः, मल्लः बन्धो म येम एवम वाया, बन्धः का देमा होन (वि०) जिसके पुष न हो, निस्सन्धान ।

पुष्कः [पुष + क्त] १ छोटा पुष, बालक, बच्चा याव, बन्धु (बन्धुत्व की प्रकट करने वाला शब्द) २ महिला, बडपुष्ता कु० १।२५, ३ पर्व ठग ४ टिडकी, टिडका ५ जन्म या पत्नीता, पत्नी, ६ बाल ।

पुषका, पुषिका, पुषी [पुषक टाप्, पुषी व न टाप् इत्यप् पुष टोय] १ बेटी २ महिला, पुनरा ३ (माता के अन्त में) कोई भी छोटी वस्तु यथा अमिषपुषका, मिषपुषका आदि । मम०

पुषः—पुष्क १ पिता का देहा दीहण माना के प्रायः पुष के स्थान पर माना, २ मम० ५।२७ ३ पुष जो पुषका माना जाता है, यथा १. क पय रत्न है (पौषर्देव पुष) यथा पुषर्देव नृप, पुषिका मम मा, पौषमगत पय २।१० ५।२७ ३ मित्र ४. ५. मानः पुषका माना किमम कयायता ता पुष न हो, भद्रा (प०) बडा पुषी अमान, ६ मम० पुषिन् (वि०) (स्त्री०) पुषा (इ०) पुषि अ माना, देहा माना रघु० २।१६, १ इय० २।१५ (पुष) पुष का पिता ।

पुषिष, पुषोष, पुष्प (वि०) [पुष प, उ, प् नृ] पुषमायमी पुषोषायक ।

पुषी [पुष + क्त] १ छोटा पुष या पत्नी की इच्छा ।
पुषल (वि०) पुष कृत्रिम यथा पुषल ७० म० मन्द, पित्र मराण कः पुषलम् पुषल

परमाणव—धीवर २ शरीर, भुवद्वय ३ आरमा ४ शिव का विशेषण ।

पुनर (अव्य०) [पुन + अन् उत्थम्] १ फिर, एक बार फिर, नये लिये से न पुनरेव प्रवर्तितव्यम् ७० ६, किमपय वत पुनर्विचर, मृदुगोतगभर—कु० ५।८७, इसी प्रकार पुनर्भूति फिर पत्नी बनना २ बाँधिम, विपरीत दिशा में (आधिक्य किताबी के साथ), पुनर्वा बाँधिम देना, लौटना, पुनर्वा इ—मम् आदि बाँधिम माना लौटना आदि ३ इसके विपरीत, उल्टे, परन्तु, मोड़ो तथापि इतना होन हुए भी (विरोध मुख कय र साथ)—प्रमाद द्वय मृन्मने मरी मन्शैष्टोतव, अशादानन्दयानि मां व पुन क्वामि नदिनि उत्तर० २।१६ मम पुन मन्मथ तत्रास्ति

उत्तर० ३ पुनः पुनः फिर फिर बार बार 'बहुधा' पुन पुन पुनर्मिषद्वयान् २७० २।२७, कि पुनः किता अघि, किता यम २०।१६ के मोक्ष पुनर्गय फिर, एक बार और, इसक विपरीत । मम० अविता बार बार की दृष्टि प्रायता

प्राण (वि०) फिर आया हुआ, लौटा हुआ अमोयुक्तस्य दहस्य पुनरागमन कुन मर्दे०, **प्राधान्य**, **प्रायेयम्** अभिमति अभि का पुन स्थापन, प्राप्ते १ बापकी २ बार ३ क्रम होना,

प्रावर्तिन (वि०) फिर म ममार म जन्म लेने वाला **आवृत्ति** स्त्री०, **आवृत्तिः** (स्त्री०) १ दोहराना २ फिर से ममार में आना, बार बार जन्म लेना यात्र० ३।१७, दोहराना (पुष्क आदि का) दूसरा सम्करण, **पुन** (वि०) १ फिर कहा हुआ, दोहराना यथा दुःखाया कया कया २ फलतः अनावश्यक प्रथम वाचा पुनरुक्तयेव रघु० ५।२८, ति० ५।६४ (क्षम्) पुनरुक्तता । दोहराना ३ वाहक, आरोहण, निम्नकता द्विक्रिय या पुनः क्रिय उत्तर० ५।१५ अर्च० ३।७८ अन्वत्

(पुन) द्वित्रयः वदाम पुनरुक्तयद्वयम्, पौरो मय पुनर्गमन पुनर्गमन वा आभास इत्यादि प्रकृत उदा० पुनरुद्धनीयकस्यापि पुनः, पाप, बह वरि मया पाशोऽप्यान्वयः मिव । पा० २०६०० (पुन) पुनर्गमन की पुनर्वि पुनः दूसरी प्राप्ति है अत्र कि मम के का लड़ा अने ममस दिया जाता है, व० ५।५७० २, पुनरुक्तः प्रथम (मोक्ष), **उत्थित** (स्त्री०) १ दोहराना २ वाहक, निम्नकता, द्विक्रिय, **उत्थानम्** फिर उठना पुनर्गमन

विन कया उत्थतिः (स्त्री०) १ पुनरुत्थापन २ फिर उठना होना, दोहरानागमन, **उत्थान**, **वाप**। क्वाषोऽप्याय पुनरागमन इत्यादि वने उ उत्तर० ५।१३ उचोका उदा प्रयाग आदि दृष्टि स्त्री,

—वक्त्रम् वाचसी, फिर जाना — वक्त्रम् (नपु०)
 बार २ जन्म होना, देहान्तरावयन, जन्म (वि०)
 फिर उत्पन्न हुआ, वक्त्रः, वक्त्रः बार २ उपाया,
 मासुन, बारविधा पुनर्विवाह करना (पुंस्य का),
 दूसरी पत्नी जाना, वक्त्रकारः किसी के उपकार
 का बदला चुकाना, बार २ जन्म होना, देहान्तरा
 वयन यथापि च अथयतु नीलसोहित पुनर्वय परि-
 नतसविष्टरात्मन् स० ७।३५, कु० ३।५ २ मासुन,
 वक्त्रः नया कर्म, पुनर्वयः, वृः १ विषया जिसका
 पुनर्विवाह हो गया हो २ पुनर्वयः, वक्त्रः १ फिर
 जाना २ बार २ प्रवर्ति करना (अल्प निकलना),
 —वक्त्रम् फिर कहना, वक्त्रः (प्रायः हि० व०)
 १ सातवीं मन्त्र (वा या तीन तारों का पुत्र) गा
 वराधिब दिव पुनर्वय रघु० १।३६ २ विष्णु
 वर ३ दिव का विशेषण, विवाह फिर विवाह
 होना, वक्त्रकारः (पुनः उत्कार) किसी उत्कार या
 वृद्धिकारक कृत्य का दोहराना, वक्त्रः, वक्त्रम्
 (पुनः वक्त्रम्) फिर से मिलना, वक्त्रः (पुनः-वक्त्रः)
 (वक्त्र में) फिर जन्म लेना, देहान्तरावयन ।

गुणः [=पुण्य, पु० सत्य सत्य] उदरपाय,
 वक्त्रा ।

गुणः [गुण्य + वृ] १ फेडा २ कमल का बीज कोष ।
 गुर (स्त्री०) (कर्म०, ए० व०-यु०, कर्म०, हि० व०
 पुण्यम्) [वृ + निष्] १ नगर, सहर जिनके
 चारों ओर सुरक्षादीवार हो । पुरम्निष्कलम्कमप्रसादा
 —रघु० १६।२३ २ दुर्ग, किला, बड़ ३ दीवार
 दुर्गवासीर ४ शरीर ५ बुद्धि । सम० द्वार (स्त्री०),
 —द्वारम् नगर का काटक ।

पुरम् [वृ + क] १ नगर, सहर (बड़े २ विशाल भवनों
 से युक्त, चारों ओर परिसर से घिरा हुआ, तथा
 विस्तार में ज० एक कोल से कम न हो) —पुरे तावत-
 मेवाभ्य तर्वाति रविरातपम् कु० २।३, रघु० १।५९
 २ किला, दुर्ग, मठ ३ बर निवास, आवास ४ शरीर
 ५ अन्न पुर, रनिवास ६ पाटलिपुत्र ७ पुण्यशाला
 पत्नी की बनी कुलवटगा ८ चमड़ा १० गुण्यम् ।
 सम० अष्ट नगराणि एव तत्रा कमुग वा रीनाम्,
 अविष्, अण्ड्या नगराद अराति, अरि,
 —अनुवृद्ध (इ०), रि० एव के विशेषण पुरा
 रनिधान्या कुमुमजः हि प्रहसि मन्त्रा० ६०
 निपुत्र, उल्लङ्घः नगर म १ या जान वाला इत्यत्र
 —उल्लङ्घम् नगराद्यान उपवन ओलम् (पु०) नगर
 से गूँथे हुए, कोट्टम् नगरप्रभृति दुर्ग म (वि०)
 १ नगर का दीवार २ अन्न ३ जिन द्विष्ट,
 निष्ट (पु०) निवृत्ति ४ अन्न ५ अन्न ६ नगर
 १ शान्त वा विश्रान्त २ अन्नाना, लोदी शान्त ।

पेट, छोटा नाँव वहाँ पेट लगती हो, —तीरकम् नगर
 का बाहरी काटक, द्वारम् नगर का काटक — निवेष्टः
 नगर की नींव डालना, —वाक् नगरपालक, दुर्ग का
 सेनापति, —वक्त्रः दिव का विशेषण, वक्त्रः नगर की
 बनी, कु० ४।३१, रघु० १।३१, —रक्त्रः, रक्त्रः,
 रक्त्रम् (पु०) कास्टल, निपाही, पुनिस-अवि-
 कारी, रक्त्रः दुर्ग का घेरा — वक्त्रम् (पु०) नागरिक,
 नगर का रहने वाला, वक्त्रः १ विष्णु का विशेषण
 २ दिव की उपाधि ।

पुरम् [पुर + कटम्] सोना, स्वर्ण ।

पुरम् [वृ + क्य, उत्पन्न, रपर] समृद्ध, महासागर ।

पुरम् (अव्य०) [पुर + तत्] सामने, जाने (विप०
 पश्चात्), पश्चाति नामित इत पुरतश्च पश्चात् —मा०
 १।४०, की उपस्थिति में वय पश्चाति तत्त्व तत्त्व
 पुरतो मा बुद्धि दीनम् वच. नत्त० २।५१ २ द्वार
 में इव च तेषा पुरतो विवचना कु० ५।७०
 अमय ४३ ।

पुरम् [पुर दारयति इति वृ + निष् + क्य, वृ]
 १ द्वार —रघु० २।७४ २ दिव का विशेषण ३ अग्नि
 की उपाधि ४ चोर, संच लवाने वाला, —रा वना का
 विशेषण ।

पुरम्, पुरी (स्त्री०) [पुर वेष्टस्वप्न वारयति वृ + क्य
 + क्री, पु० वा ह्रस्व तादा०] १ श्रेष्ठ विद्या
 हिता स्त्री, मातृका, विवाहिता स्त्री —पुरप्रोभा चित
 कुमुममुकुमार हि भवति उत्तर० ४।६२, मुहा० २।
 ७, कु० ६।३२, ७।२ २ वह स्त्री जिसका पति व
 वक्त्रे अविष्ट हो ।

पुरम् [पुर + का + क + टाप्] दुर्गा का विशेषण ।

पुरम् (अव्य०) [पूर्व, अग्नि, पुर आयेत्] १ सामने,
 जाने, उपस्थिति में, जाँके के सामने (स्वर्ण
 रूप से या संबंध के साथ) अम् पुर पश्चाति देव
 दाकम् —रघु० २।३६, तत्त्व चित्वा कश्चपि
 पुर मेव० ३ कु० ४।३, अमय ४३,
 पाव क, गम् वा और म् धातुओं के साथ
 प्रयोग (दे० धातु०) २ पूर्व में पूर्व से ३ पूर्व की
 ओर । सम० अरक्त्रम्, —कारः १ सामने या जाने
 रक्त्रा २ अधिमान । समम्मान वक्त्र आदर प्रवर्जन,
 अनुग्रह ४ पूजा महत्कारिता हाजरी देना ६ नौगरी
 ७ अन्नप्राशन ८ पूर्ण वस्त्र ९ आक्रमण करना
 १० दारप्राशन करना कुल (वि०) १ सामने रक्त्रा
 हुआ रघु० १।८० २ मन्त्राग्नि आदर से वर्तमान
 निपागा पुत्र ३ आरा की माता सदा अनुपम
 विद्या —पुण्य १ मन्त्रमन्त्रम् रघु० ८।९ ४ आराधित
 गुह्य ५ मन्त्र वा अन्न संपन्न मन्त्र ६ नौगरी
 नगर ७ अधिमान ८ दारप्राशन वर्तमान ९ पूजा

किया हुआ 10. प्रत्याक्षित,—किष्का 1 आदर प्रदर्शित करना, सम्मानित बताना, 2 आरम्भिक या शीकासबन्धी कृत्य,—बन्ध,—बन्ध (पुरोचन्,—बन्ध) (वि०) 1 मुख्य, अवधनी, सर्व प्रथम, प्रमुख, प्रायः सखा के बल सहित—स किशकली बतता पुरोचन् रघु० १४३, १५५, कु० ७५० 2 समास में प्रयुक्त) अधिष्ठित—इन्द्र-पुरोचमा देवा 'इन्द्र के नेतृत्व में देवता',—वसिः (स्त्री०) 1 पूर्ववर्तिता, (सिः) कुला,—भन्त,—माभिन् (वि०) 1 पहले या जाने जाने वाला 2 मुख्य, वस्तुत्व करने वाला, नेता (पुं०) कुला, चरणम् 1, आरम्भिक या शीका विषयक कृत्य 2 तैयारी, शीका 3 किसी देवता के नाम का अप तथा हुन में आहुति,—अव-बुध्क, अन्धः (पुरोचामन्) (वि०) पहले वेदा हुआ,—आव्य (पुं०).—आव्यः (पुरोचाम्,—आव्य) बाबलों को पीस कर बनाई गई तथा कपाल में रत्न कर प्रस्तुत की गई यज्ञ की आहुति वन० ७३२, —अव्य (पुरोचाम्) (पुं०) कुलपुरोहित, विशेषकर किसी राजा का, बाल्य (पुरोचामन्) 1 सामने रक्षता, पुरोहित द्वारा कराया गया उपचार,—विष्का (पुरोचिका) (और अब अन्ध निचो की जगह) मनचहेती बली, बल्य (वि०) पूरा होने के निकट, पूरा होने वाला—कु० ११०, प्रवृत्त (पुं०) पहली पंक्ति में आकर लड़ने वाला सैनिक रघु० १३७२, —अव्य (वि०) जिसका कम निकट ही हो, (निकट अधिक में) कम देने वाला रघु० २१२२,—आव्य (पुरोचाम्) (वि०) 1 बलान् प्रवेष्टी, अनधिकार प्रवेष्टी 2 छिद्रान्वेषण करने वाला 3 स्तुहाशील, ईर्ष्या प्राय समानविद्या परस्परवत् पुरोचामा माळवि० ११२० (यहाँ 'पुरोचाम्' सख का अर्थ 'ईर्ष्या' की है) (कः) 1 जाने का भाव, अवला भाव, गारी 2 बलान् प्रवेष्ट, अनधिकार प्रवेष्ट 3 दाह, स्पर्धा,—माभिन् (वि०) जाने रहने वाला, स्वेच्छा-वान्, नटल—अ० ५ ? बलान् प्रवेष्टी, अनधिकार प्रवेष्टी विष्क० ३३३, छिद्रान्वेषी, जासूस, बल्य (पुरोचामन्, वान) जाने की हवा साथने चलने वाली हवा माळवि० ५३३, रघु० ८३३८, तर (वि०) अवसर, (रः) आगे चलने वाला, अवहृत स० ६१२ 2 अनुसर, टहलना, मेवक गमियेव पुरमरी रघु० १३७ 3 नेता, या नेतृत्व करे, सर्वप्रथम, प्रमुख कु० १५५ 4 (समास ५ अन्त में) अनुचरो सहित, परिचरो सहित, के साथ मान पु' रघु, प्रभावपुर मरन्, बुकपुर मरा आदि—स्वाभिन् (वि०) भावने लगे रहने वाला,—हित (वि०) 1 सामने रक्षता हुआ ? निपकर, दून, आयुक्त (—सिः) 1 कार्यभार संभालने वाला, अधिकारी,

दूत 2 कुलपुरोहित, जो कुल में होने वाले सभी कर्म-कार्य या सत्कारों का संचालन करता है ।

पुरस्तात् (अव्य०) [पूर्व + अस्ताति, पुरा आवेश.] 1 आगे, सामान (प्रायः सर्व या अपा० के साथ) —रघु० २१४४, कु० ७३०, मेघ० १५, या स्वतन्त्र रूप से प्रयुक्त—अन्वन्ता पुरस्तात्—अ० ३१८ 2 तिर पर, सर्व प्रथम माळवि० ११३ 3 पहले स्थान पर, आरम्भ में 4 पहले, पूर्वतः 5 पूर्व की ओर, पूर्व में, या पूर्व की तरफ 6 आद्य में, आगे, अन्त में ।

पुरा (अव्य०) [पुरा । का] 1 पूर्व काल में, पहले, प्राचीन काल में पुरा अन्वन्ता—रघु० १७५, पुरा सगति मानसे वयस याग अब माळि० १३, वन० १११९, ५३२ 2 पहले अब तक, इस समय तक 3 पहले पहले, सबसे पहले 4 बोधे समय में, बीघा अचिरान् बांकी डेर में (इस अर्थ में प्राय वर्तमान काल के साथ, जहाँ कि अधिकृत काल का अर्थ प्रकट हो) पुरा मन्महीषी अवति वसुधावप्रति-रव-स० ७३३, पुरा वृषयति स्थनीम्—रघु० १२३३, आलोके मे निपतति पुरा सा दलित्याकुला वा मेघ ८५, नै० ११८, वि० १५५६, कि० १०५०, ११३५ 1 अन्तः अन्तः (वि०) जिस पर पहले अधिकार किया हुआ था, जो पहले अधिकार में था,—कथा पुराना उपस्थान,—अन्तः 1 पूर्व कृष्टि 2 अतीत की कहानी 3 पहला वृष वृषनेन-मृगकल्पे वृष्ट वेरम्, अन्तः—वन० २१२७,—अन्तः (वि०) पहले किया गया,—वीर्य (वि०) प्राचीन मूल (उत्पत्ति).—अन्तः, वीर्य का विशेषण,—विन् (वि०) अतीत में परिक्रित, पूर्व काल की घटनाओं का ज्ञाता, पहले अमाने या पूर्व कटित वस्ती का जानकारी बदल्यपर्यन्त वता पुराविह, कु० ५१२८, ११९, रघु० १११०,—अन्तः (वि०) प्राचीन काल में होने वाला या जैसे सख 2 पुराना, प्राचीन कहा पुराना उपस्थान (—सन्ध) 1 इतिहास 2 पुरानी वा काल्पनिक घटना पुराणोद्धारैरि च कथिता कार्य पदवी—मा० २१२३ ।

पुरा [पुर टाप्] 1 गंगा का विदाय 2 एक प्रकार का गव्य 3 पूर्व दिशा 4 किता ।

पुराण (स्त्री० जा, बी) [पुर नवम् निरु०] 1 गंगा, प्राचीन, पूर्वकाल संबंधी पुराणमित्येव स ताः सर्व न चापि काव्य नवमित्येवचम्—माळवि० ११२ पुराणपञ्चमयादनरम् रघु० ३७ 2 यद्योक्त पुरातन—अर्थे नित्य आरवतोऽप्य पुराण—अव० २१० 3 शीघ्र विनाशिताया, अन्तः 1 अतीत घटना या वृत्तान्त 2 अतीत की कहानी, उपस्थान प्राचीन वा पौराणिक इतिहास 3 कुछ विस्तृत

धार्मिक पुस्तकों को गिनती में १८ है तथा व्यस्य द्वारा प्रणीत बानी बानी हैं, यह पुस्तकें ही हिन्दु-पुराण का शास्त्र का अडार हैं, पुराणों में पाँच विषयों का वर्णन है और इसी लिए 'पुराण' को 'पञ्चलक्षण' भी कहते हैं—अथर्वच प्रतिसमेषच वसो लघ्वन्मरणाधि च वसानुश्रिति चैव पुराण पञ्चलक्षणम् । पुराण के अठारह नामों के लिए दे० अष्टादशानु के नीचे, --च. ८० कौटिल्यो के बराबर मूल्य का एक मिष्क। सम०

अन्तः यम का विशेषण, -- उल्ल (वि०) पुराणों में निदिष्ट वा विहित, -- कः 1 ब्राह्मण का विशेषण 2 पुराण पाठक, पुराण की रक्षा करने वाला, -- पुष्कः विष्णु का विशेषण ।

पुराण (वि०) (स्त्री० सी) [पुरा + ट्य, नटु] 1 पुराणा, प्राचीन, वि० १२१०, सम० ८१३ 2 वया बृद्ध, प्राक्कालीन, -- रत्न० ११८५, कु० ६१९ 3 पितृसन्धिताया, शीघ्र, --नः विष्णु का विशेषण ।

पुरि (स्त्री०) [पुर + इ] 1 नगर, शहर 2 नदी ।

पुरिष्य (वि०) [पुरि + शी + प्रत्य] शरीर में विश्राम करने वाला ।

पुरी [पुरि + शी] 1 शहर, नगर 2 शायकपुरीमित्र रत्न० ११३० 2 गड 3 शरीर । सम० मोहः पशु को पीना ।

पुरित्तु (पु०, नपु०) [पुरी देह नतीति + नत् + क्तिप्] 1 हृदय के पास की एक विशेष प्रन्थी 2 कतित्वा -- ('पुरित्तु' भी, पशुनु यह रूप अशुद्ध प्रतीत होता है) ।

पुरीषम् [पुर + ईषते, क्तिप्] मल, बिच्छा, वृत् (गौरव) । सम० ३२५० ५१७३ ६१७६ ६१७६ 2 कृश-हृदय, गदगी । सम० उत्सवः मन्त्र-पाठ, निग्रह वम् हाण्डवद्वय ।

पुरोबन् [पुरी + उ + बन्, ट्] मल बिच्छा, -- वम् मला मल कृता, मल-पाठ का नाम ।

पुरीषम् [पुरीष भियोन् पुरीषः मा + क्] उडर, माघ ।

पुष (वि०) (स्त्री० ६, सी) [प वालनपायवशो कु] ज्ञान, प्रज्ञा अधिक बहुत वे (पौरिकमाहित्य में पुष मन्त्र द्वारा श्रीकृष्णदास मन्त्राभा के शास्त्र में प्रयुक्त होता है) । क 1 'कृष्ण का पुराण 2 स्वर्ग देवताक 3 एक राजकुमार का नाम, नन्दवत्सा राजाओं में छोटा राजा । यह जीमष्ठा और यशोवर्त का पद ग जीता पुष था । जब यशोवर्त ने अपने पिता पुषा से पुत्रा कि क्या बड़े उनमें ग नेमा है जो घर सुगंध और दुर्बलता के बरतमले अपना जीवन ग मोदये देह, ना वह कबल पुष ही वा जिसने जीवन ग स्वीकार किया, एक हजार वर्ष के पदवान् यशोवर्त ने पुष का जीवन और सीरये उसे जीता दिया नवा उसे

अपने राज्य का उत्तराधिकारी बनवा । कीरव और पाइवों का पुष पुष पुष ही वा । सम० -- विष्णु (पु०) 1 विष्णु का विशेषण 2 राजा मुत्तलीमोत्र वा उसके भाई का नाम, -- वम् शोभा, स्वर्ण, -- वल्लः हम, -- खंड (वि०) बहुत विषयी, वा कामधुर, -- ह, हु बहुत, बहुत से, -- हत (वि०) बहुतों से आवाहन किया गया (नः) इन् का विशेषण - रत्न० ११३, १६१५, कु० ७१४५, सम० १११२२, 'विष्णु (पु०) इन्द्र जित् का विशेषण ।

पुष्कः [पुरि देहे सेने सी + इ पुरो० तारा० पुर + कुपन्] 1 नर, मनुष्य, मर्दे अथवा पुष्करी नारी वा नारी सार्थक पुमान् मच्छ० २१२३ सम० ११३२, ७१७३ ११७३, रत्न० २१७१ 2 मनुष्य, मनुष्य ज्ञान 3 किसी पीकी का प्रतिनिधि वा भद्रय 4 अधिकारी कार्यकर्ता अधिकारी, अनुचर, मेवक 5 मनुष्य की ऊँचाई वा माप शायी हाथ फैला कर लम्बाई की माप । ह्री पुष्करी प्रधानमन्त्रः मा हि पुष्करी पश्चिमा--मिच्छा 6 आगमा--हाविषी पुष्करी लोक आरम्भाक्षर गद च--मम० १५११५ आदि० 7 परमागमा ईश्वर (विषय की आगमा) शि० ११३२, रत्न० ११६६ 8 पुष्क (आ० में) प्रथम पुष्क, मध्यम पुष्क और उत्तम पुष्क (मिच्छा० में यही कम है) 9 आँख की पुष्करी 10 (साम्य० में), आगमा (वि०) प्रकृति) शास्त्रमन्त्रानुसार यह न उत्पन्न होता है, न उत्पादक है, यह निरूप्य है, नवा प्रकृति का दर्शक है सु० कु० २१३, साम्य० गद की सी, वम् मेक पर्वत का विशेषण । सम० अथम् पुष्क की ब्रह्मेन्द्रिय, दिव्य, अथः नरमन्त्रक, मनुष्य का मान माने वाला विमान अथम्, अथः तीन पुष्क, बहुत ही अथम् और पूर्ण अथम्, अधिकारः 1 पुष्क का गद वा शरीर 2 मनुष्य का मन्त्राक्षर वा शास्त्रजन कि० ११६१, अथम् पुष्करी मन्त्राक्षर, अर्थः 1 मानव जीवन के भार सुकर गतावी (अर्थात् धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष) में से एक 2 मानवप्रत्यय वा केष्ठा, पुष्कमन्त्र, हि० प्र० २५, अस्थिमालिका (पु०) शिव का विशेषण, आक्षः विष्णु का विशेषण, आयुषम्, आयुष, मानव जीवन की अथम् अक्षममति काम जीवजन्तु पुष्पायुषम्--विक्रम ६१४४, पुष्पायुषजीविनी निर्गतता निर्गतता रत्न० ११६३, आक्षिम् (पु०) मरभसी, राजत, मिश्राय इन्ः राजा, कुलः 1 अक्ष पुष्क 2 परमागमा, विष्णु या कृष्ण का विशेषण यस्मान् शस्त्रमालिका मन्त्राक्षर जीवजन्तु, अतोऽग्नि लोके वेदे व प्रिया पुष्पायुषम्--मम० १५१८८, कारः 1 मानवप्रत्यय, मनुष्यकेष्ठा, मरभसी काम, मरभसी,

पुलाक-कम् [पुल् + क् + नि०] 1 बोधा या मुरझाया हुआ वस्त्र, कपड 2 मात का पिड 3 संक्षेप सङ्ग्रह 4 लक्षितता लक्ष्मि 5 बावली का माड 6 विप्रता वृत्ता, त्वरा ।

पुलाकिन् (पु०) [पुलाक + इति] वृक्ष ।

पुलाकिन् [- पलायित पूर्व०] बोधे की सरपट चाल ।

पुलिन्-कम् [पुल् + इन् + लिप्] 1 रेतीला किनारा रेतीला समुद्रतट-रमते यमुनापुलिनबने बिजयी मुरारि रघुना-गीत० ७, रघु० १४।५२ कभी-कभी व० व० में प्रयुक्त-कालिदास पुलिनेषु कैलिकुलिनाममज्ज राते रत्नम् वेणी० १।२ 2 नदी का प्रवाह ३ जाने से तट पर बना छोटा टापू लघुद्वीप 3 नदीतट ।

पुलिन्धरी [पुलिन् + धनुस् + क्त०] नदी ।

पुलिन्धक [पुल् + विद् + क्त०] 1 (प्राय व० व० म) एक अक्षय्य जर्नि का नाम 2 इस जर्नि का एक मनुष्य, सबर अतिष्ठ जगली पहाड़ी रघु० १६। १९, ३२ ।

पुलिन्धक (पु०) मीप ।

पुलोचन् (पु०) एक राक्षस का नाम इन्द्र का श्वसुर । सभ०-भरि जिन्, जिन्-छिप् (पु०) इन्द्र के विशेषण आ युद्धो शची पुलाया की पुत्री गया इन्द्र की पत्नी ।

पुष् (धा०) देव० कृपा० पर० पोषति पुष्यति पुष्पाति 1 पोषण करना, (छानी से लगाकर, दूध पिलाना, पालना पोषना) शिशुन करना-तेजाय बरखविष साकममुपुषाण मयू० २४६ मय० १५। १३, भट्टि० ३।१३, १३।३२ 2 सहारा देना भरण पोषण करना परवरिश करना 3 बढ़ने देना झिलना विकसित होना, राजन मिलना-पुपोष तावध्यमयान विशेषण-कु० १।२५ रघु० ३।३२ न निरोधीयते स्वायी मैत्रमी पुष्यते परम् मा० २० ३ 4 बढ़ाना वृद्धि करना, माने बढ़ाना वर्धन (वृद्ध्यादि) पंचा मास्यि वृत्तानामुर्क्यं पुषुवर्त्तना रघु० ४।११९।५ 5 प्राप्त करना अधिकार में करना रखना उपभोग करना मयू० ३।३४ 6 बतलाना दिखलाना धारण करना, प्रदर्शन करना-कुरविनवमस्या पुष्यति स्वां न शोभा स० १।१९ कु० ३।२८, ७८ रघु० ६।५८ १८।३२ न हीनवरध्याह्नयः कदाचित्पुष्पाति लोके विपरीतसर्वम्-कु० ३।६३, मय० ८० 7 बढ़ना, पुष्ट होना, फलना-फलना समृद्ध होना 8 प्रशंसा करना, स्तुति करना,-प्रेर० या वृत्त० उम० पोषयति-दे 1 पालन पोषण करना परवरिश करना भरणपोषण करना आरि 2 बढ़ाना, उन्नति करना ।

पुष्करम् [पुष्क पुष्टि राति-ग + क] 1 नीला कमल 2 झड़ी

की जिह्वा की नोक जि० ५।३० 3 डाल का चमड़ा बर्षात् बहु स्थान जहाँ उस पर चोट मारी जाती है पुष्करेष्वादेतेषु मय० ६६ रघु० १७।११ 4 तलवार का फल 5 तलवार का ध्यान 6 बाण 7 बाण आकाश में-लिख 8 पित्रडा 9 जल 10 मादकता 11 नृपला 12 वृद्ध सन्ध्या 13 एकता 14 अजमेर के निकट एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थान १ 1 सरावर तालाब 2 एक प्रकार का शूल धौसा तासा 4 मृद ५ अश्वार्थ या इमिश पैदा करने वाले ब्राह्मण का समूह मय० ६ कु० २।५० 6 शिव का विशेषण १ रत्न पिड के साथ विशेष प्रभावी मने एक । मय० अक्ष विष्णु का विशेषण आद्य आहुतारत तीर्थ स्नान करने का एक प्रसिद्ध स्थान २० ७ 1 अक्ष परब्रह्म कमल का नाम प्रिय मोक्ष, तीर्थसंनमलपट व्याघ्र घोरघर शिवा क० की गृह-स्थिति गिर का विशेषण सज (मय० १०) को का नाम

पुष्करिणी [पुष्क + रिन् + क्त०] 1 नदीय 2 कमलसराय 3 सराय 4 शराय 5 कमल का पोष ।

पुष्करिन् (पु०) (धा०) १ पुष्ट २४ । कमल में भरी स्थली (पु०) झण्डा

पुष्कल (वि०) पुष् + कल् + विष्णु परकीर्णमा० मय १० गरा८ । 1 बहुत बड़ी प्रचुर भोजनार्थ प्रयत्ना नष्टारी मय पुष्कल हि० १।४ मय० २।२३३ 2 पर समस्त भयः ११।३१ 3 समृद्ध उन्नतन ज्ञानधार 4 श्रेष्ठ, प्रशंसित प्रमुख 5 निकट वर्ती 6 निर्बोधमय मृदुल बाला प्रतिध्वनि करने वाला म 1 एक प्रकार का बोल 2 वेद पूर्व का विशेषण कम् 3 १४ मृष्टियों के बराबर एक विशय नाम या मात्र 2 बार धान को भिक्षा ।

पुष्कलक [पुष्कल + क] 1 कमलरी मृग सीमि पुष्कलको दन मिदा 2 कुरी बरखनी कुरी ।

पुष्ट (पु० क० क०) [पुष् + क्त] 1 पालन-पोषण, खिलाया पिलाया परवरिश किया गया, शिशुन किया गया 2 फलना कुलडा हुवा बढ़ता हुवा, बलवान हुष्टपुष्ट 3 तृप्त किया गया, देखभाल किया हुवा 4 समृद्ध पूरी तरह सम्यक् 5 पूर्ण पूरा 6 पुरोष्यति बाणा ऊँची आकाश वाला 7 समुल ।

पुष्टि (स्त्री०) [पुष्ट + क्तिन्] 1 पालन-पोषण करना पालना परवरिश, करना, 2 पालन पोषण, सर्वधन, वृद्धि, प्रवृत्ति वृत्तिप्रतामयि वृत्ति विष्टोऽपि तनोपि परिचर्यै पुष्टिम् भाषि० १।१२ 3 पराक्रम वाहिनी, स्वकृता-अन्वत्य वृष्टिरिव पुष्टिरिवातुरस्य मृच्छ० १।४९, 4 धन-वीज, सम्पत्ति, वृत्त का धारण,--रघु० १८।१२ 5 समृद्धि, सम्पन्नता 6

अथः [पुष् + क्यप्] 1. कलियुग 2. पीब का महीना 3. आठवाँ नक्षत्र (तीन तारों का पुष्), इसे 'तिथ्य' नाम से भी पुकारा जाता है। सम०-रथः—पुष्प रथ ।

अथः [पुष् + लक् + अच्] दे० 'पुष्पलक' ।
स्तम् [पुष् + लक्] 1. पलस्तर करना, लेप करना, रेखाचित्र बनाना 2. मिट्टी का शिल्पकार्य, मिट्टी के खिलौना बनाना 3. मिट्टी, काष्ठ या किसी बात की बनी कोई वस्तु 4. पुस्तक, हाथ से लिखी पुस्तक । सम०—कर्मम् (नर्प०) लीपना पोतना, चित्रकारी करना ।

नक्त, -कम्, पुस्तौ [पुस्त + क्त, क्त्वा वा] पाठी, हाथ की लिखी पुस्तक ।

(भ्या० दिवा०—आ०, क्या० उभ०—पञ्चमे पुनानि, पुनीने पूर प्रेर०—पावयति—इच्छा०) पुपुषति, निपुषिष्यति, 'पुष्य' करना, छानना मुष्ट करना (रा० भौ० ११०) अवधवपाध्य पवने भट्टि० ६१६१, ३१११ पुष्याधमदधनेन तावदात्मान पुनीमहे—श० १ मनु० १११०५ २१६२, याज्ञ० ११५८, रघु० ११५३ भग० १०१३१ २ निपायना ३ नूनी मास करना, फटकना 4 प्रायश्चित्त करना, पारमार्जन करना 5 पशुधानना, विवेक करना 6 साधना, उपाय इत्यादि अधिकार करना ।

पुष्प [पु + गन् + क्त्वा] 1. समुष्णय, डेर, बरह, मात्रा (रा० ११६६ 2. समाज, निगम सध—याज्ञ० ११३०, मनु० ३११५१ ३ सुपारी, पुगी (रा० ४१६६ ६१६३, १३१३० 4 पशुति, मुण, मन्मथ यम् सुपारी । सम० वाज्रम् । बुकने का कर्त्तव्य रीक्षण 2. गान-दान,—वीटम्, वीटम् बुकने का कर्त्तव्य—कलम् सुपारी.—वैरम् अनेक लोगों से उचुना ।

पूज् [कृत् + उभ०—पूजयति—न, पूजित] 1. आराधना करना पूजा करना, अर्चना करना, सम्मान करना, सावर स्वागत करना—वदपुत्रम्कमिह पायं मृज्जितम् पूजितं सताम् सि० १५१६ मनु० ४१३१, भट्टि० २१०६, याज्ञ० २१४४ 2. उपहार देना, भेंट बढाना,—मनु० ७१२०३, लम्—1 पूजना, अर्चना करना, सम्मान करना 2 उपहार देना, (दक्षिणादि से) सम्मानित करना ।

पूजक (वि०) (स्थो०—जिका) [पूज् + कृत्] सम्मान करने वाला, आराधक, पूजा करने वाला, आरर करने वाला आदि ।

पूजकम् [पूज् + कृत्] पूजना, सम्मान करना, आराधना करना भग० १०११४ ।

पूजा [पूज् + ज + टाप्] पूजा, सम्मान, आराधना, आदर, भद्राञ्जलि—रघु० ११७९ । सम० अह् (वि०) अद्वैत, आदरणीय, पूज्य, अद्वैतपद ।

पूजित (भू० क० कृ०) [पूज् + क्त] 1. सम्मानित, आवुन 2 आराधित, प्रतिष्ठित 3 स्वीकृत 4 सपन्न 5 अनुमानित, सिकारित किया हुआ ।

पूजित (वि०) [पूज् + इलच्] अद्वैत, आदरणीय, कः देव ।

पूज्य (वि०) [पूज् + क्यच्] आदर का अधिकारी, सम्मान के योग्य, आदरणीय, अद्वैत,—अथः 1 अवसर ।

पूज् (कृ० उभ० पूजयति ने) एक जगह डेर लगाना बंध्य करना राशि लगाना ।

पूज् (अभ्य०) एक मारने की अनुकूलि का मुक्त शब्द ।

पूत (भू० क० कृ०) [पू + क्त] 1 शुद्ध किया हुआ, छाना हुआ, धोया हुआ (अभ्य० भी) दुष्टपूत म्प्रेसाद बन्धपूत जन्म विषय स पपरा बद्धपूत म्पूत समाचरेण मनु० ६१०६ 2 पिडाहिता हुआ रुका हुआ 3 प्रायश्चित्त किया हुआ 4 उन्मत्तकृत् आश्रय 5 मंडन वाता 7 8 9 मन्मथ दुर्गमय बद्धपूत, स 1 गत 2 मन्मथ कृत् पाप सत्त सवाह । सम० आत्मन वि० १ विषय घन वाता 7 8 9 पाप का विनाश करनेवाली दृष्ट की पत्नी राजा क्त्वा पूत ५ विनाशक भट्टि० ६१०९ नृपम् सत्त कृत् पाप दू पापश यत्त धाम्म्य निल पाप, वाच्य निपात पाप से गृह कल कटहल का पुष्प ।

पूतना [पू + क्त + यच् + टाप् एक राक्षसी जो कृष्ण का ब्रह्म ब्रह्म बालक या भाले का घसल करती दूध मय उनक दूध का मूत्र का प्राप्ति हृष्ट 2 राक्षसी या पूतनामूत्राग निबर्तारिणी भा० ११०५ ।

मम० अरि, सूक्ष्म, हल (रा०) हृष्टन के विशेषण ।

पूति (वि०) [पूज् + क्त] बद्धपूत महा हुआ दुग्ध युक्त दुग्ध दनेवाला जग० १३१० धि (स्थो०) ।

1 पवित्रा 2 दुग्ध सदा 3 बद्ध नपू 4 गदा पाती 2 पीप, मवाद । सम० अह् कम्पूरी मृग काष्ठम् देव रात्र कृत् काष्ठक सत्त कृत्

—मथ (वि०) बद्धपूत, दुग्धयुक्त, दुग्ध देने वाला सदा हुआ (प) 1 मवाद, दुग्ध, बद्ध 2 मथक (मथ) 1 जम्मा रागा 2 मथक राशि (वि०)

बद्धपूत, दुग्ध दनवाला आत्मिक (वि०) दुग्धमय नाक वाला—बद्ध (वि०) जिसके मुँह से बद्ध आती हो, बद्धपूत दूधित पाका (जिसमें से पीप निकले) ।

पूजित (वि०) [पूज् + क्त] सदा हुआ, अवधार, सहायता, कम् लोह, मल, पिष्टा ।

पूजित [पूजित + टाप्] एक प्रकार की जडा । सम०

—मुक्त शो कोय वाला सत्त ।

पूज (वि०) [पू + क्त तस्य न] मष्ट किया गया ।

तत्कामं प्रभवति पूर्णपात्रवत्स्या स्वीकर्तुं मम हृदय
च जीवित च मा० ४११. (पूर्णपात्र की परिभाषा—
हृषादुत्सवकाले यदलकाराण्युकारिकम्, आहूय
गृह्यते पूर्णपात्र स्यात्पूर्णकं च तत् । या—वर्षाधिक
यदानवायदलकारादिक पुनः, आहूय गृह्यते पूर्णपात्र
पूर्णकं च तत् । शरावली, बी (बी) ज नीव
मासी पूर्णिमा, पुनी ।

पूर्णकः [पूर्ण + कृत्] १ एक प्रकार का नृश २ रमाइया
३ नीलकण्ठ ।

पूर्णिमा, पूर्णिमासी [पृ - निष् + पूर्णि, मा कः टाप्,
पूर्ण - मास + ङीप्] बहु दिन जब चन्द्रमा पूर्ण हो
जाता है, पुनी मै० २१७५ ।

पूर्व (वि०) [पूर् - क्त नि०] १ पूर्व, पुरा २ दिवाया
हुआ, डका हुआ ३ पालन-पोषण किया गया रक्षा
किया गया, संम् १ पुन २ पोषण, पालन ३ पुन
स्कार पावना ४ पावन, उदारता का कृत्य-परिभाषा—
वार्ताकथनहागादिदेवनायतनानि च अन्नप्रदानमाराम
पूर्णमिच्छाभिधीयते मनु० ४१२२६ (वि० इत्तः)
अन्न द्वारा इस की परिभाषा अन्नित्यत्र नत् माग
वेदाना चैव पालनम्, आतिथ्य वैश्वदेवश्च इष्टमिच्छ
भियोयते । तु० इष्टापूर्व ।

पूर्वितः (स्त्री०) [पूर्व + क्तिन्] १ अन्ता २ पुरा करना,
पूर्णता, सम्पन्नता ३ तृप्ति, मनुष्टि ।

पूर्व (वि०) [पूर्व + अच्] (जब काल और दिशा की
दृष्टि से सापेक्ष स्थिति पकट करे जाती है तो इस
शब्द के रूप सर्वनाम की भांति होते हैं । मनु० वृ० ३
कृ० ३० ४०, तथा अपादानं व अधिहरणं एक,
४० में विकल्प से) १ सामने होने वाला, प्रथम
प्रमुख २ पूर्वी, पूर्व दिशा में स्थित, के पूर्व में ग्रामा
स्पर्धन पूर्व ३ पहले के से पहला ४ पुराना प्राचीन
—पूर्वसूरिनि रघु० ११६ ५ पूर्वोक्त, विगत, गिजला
पहला, पूर्वगामी (वि० उत्तर) । इस अर्थ में पाप
समाप्त के अन्त में प्रयुक्त गया 'अनुपूर्व' ६ उत्तरार्क
पूर्वोक्त ७ (समाप्त के अन्त में) पूर्ववर्ती, ये वृत्ता
अनुमेवैन मन्त्रमाभाषणपूर्वमाह रघु० २१५८,
गुप्य शब्दा मुनिर्गति मनु केवल राजपूर्व श०
२११६, तान् शिवनपूर्वमाह कु० ७१६७ ५१३५,
दशपूर्वश्च यमाकृश्या दशकठारिगृह विद्वंश्च रघु०
८१०५ इसी प्रकार मतिपूर्व मनु० १११६७
'इरादतन' 'जानवञ्जक' ११३२.—अन्वेषपूर्वम् अन्त
जाने श० ५१३, के पूर्वार्क, पूर्व पृथक्, वा० श०
पूर्व किलाय परिचित न रघु० १३१२, पय
पूर्व, सनश्चराम, कवचणमपमृग्यते ११५७ ५१२४
संम् अगता भाग, संम् (अन्व०) १ से पहले
(अप्रा० के साथ) मासपूर्वम् २ विगत काल में

पहले, पारभ में, पूर्वत, पहले ही त पूर्वमभिवाद्येत्
मनु० २१११७, ३१९६, ८१००५, रघु० १२१
२५ पूर्वण से पूर्व में (मन्त्र० या कर्म० के साथ)
अथ पूर्वम् 'अब तक' इसमें पहले पूर्व—ततः—पश्चात्
उपरि पहले तब, पहले बाद में, विगत काल में
पूर्वम् अधुना या अथ पहले आज । सम०
अबल, आहः उदयान्त (पूर्व दिशा का गराह
हृषके पौन में पूर्व और चन्द्रमा का उदय होता है)
अतः पूर्ववर्ती तत् की समाप्ति, अपर (वि०)
१ पूर्वी और पश्चिमी पुराणों में नाथान्थी बगल
कु० १११ २ पहला और अन्तिम ३ पहले का
और बाद का, पूर्ववर्ती और पश्चवर्ती । इसी दूसरे
में पूर्व (रघु०) १, तत् पश्च और बाद में ही
२ मन्त्र ३ समाप्त और अन्त विरोधा अर्थात्,
अमरद्वारा अभिमुख (वि०) (वि०) पूर्व दिशा की
आय म् विगत हुए प म् १११, अन्वृत्ति, पूर्वी
समुद्र अजित (वि०) पूर्ववर्ती द्वारा बन (रघु०)
पति मर्गति से, धम् । पुरा अथा माग
विगत पूर्वपरायणभिधायि सापेक्ष में स्वसम्पन्न-
नामान भन्तु० २१६७ समान पूर्वार्ध आदि
२ (उत्तर की) ऊपर का भाग श० २, रघु० १११
६, ७ उत्तिकाध के प्रथम भाग, अल्लः मध्याह्न में
पुनः, दाहय से पूर्व—मनु० वा० श० ७८७ (पूर्वाह्नपन,
पूर्वाह्नपन (वि०) मध्याह्न में पूर्वार्ध मन्त्रों),
आवेकः बादी, मुहूर्त आषाढ़ा वामनी नक्षत्र,
१० नक्षत्रों का पूर्व । इतर (वि०) पश्चिमी
उक्त उचित (वि०) पहले कहा हुआ उपर्युक्त
उत्तर (वि०) उत्तरपूर्व (वि०) व० २) पूर्ववर्ती
पहले या और बाद का कर्त्तुं (मनु०) १ पहला
भाग या कार्य २ प्रथम कार्य पहले किया जाने वाला
कार्य ३ पूर्व जन्म में किया गया कार्य, कल्प विगत
मात्र, कायः २ जानकर का शरीर का अगला भाग
पश्चार्धत प्रविष्ट सम्पन्ननयसा मृगसा पूर्वकायम्
श० ११७ २ मनुष्य का शरीर का ऊपर का भाग
मृगशू करणाननपूर्वकाय रघु० ५१३२, पर्यक-
वर्गस्य पूर्वकायम् कु० ३१५५, कायः विगत
काल, प्राचीन समय कर्त्तव्य काशीय (वि०)
प्राचीन, काष्ठा पूर्व पूर्व दिशा, कृत्स्न पूर्वजन्म में
किया हुआ कार्य, कौटिः (स्त्री०) वाक्प्रतियोगिता
की वाग्मिक तृप्ति विरादविषय, पूर्वपक्ष, गंगा
नर्मदा नदी, कौटिल (वि०) उत्तरार्क, ऊपर बनाया
रथा २ पहले से कहा हुआ या पूर्व प्रसृत (आश्वेन
आदि) ३ (वि०) १ जिसकी उत्पत्ति पहले हुई
ही पहले जन्मा हुआ २ प्राचीन, पुराना ३ पूर्वी
(जः) १ बड़ा भाई श० १६१६६, रघु० १५१३६

2. बड़ी पत्नी का सबका 3 पूर्वपुत्र, बापदादा, - कर्मन् (नपुं०) पहला जन्म, (पुं०) बड़ा भाई - रघु० १४।४४, १५।१५, - जा बड़ी बहन, बहिः (स्त्री०) पूर्वजन्म, - नामन् पूर्वजन्म का ज्ञान, बहिज (वि०) बहिजपूर्वी (वा) बहिज पूर्व दिशा, विरूपति पूर्वदिशा का अधिपति इन्द्र, - विरुप दिन का पूर्वभाग दोपहर से पूर्व का समय, - विरु (स्त्री०) पूर्व दिशा, विरुप भाग्य में लिला, देवः 1 प्राचीन देवता 2 राक्षस या असुर 3 प्रजमक, पिता, देवः पूर्वी प्रदेश, भारत का पूर्वी भाग, निपातः मयास में घण्ट की अनियमित प्राथमिकता तुं परनिपात, पक्षः 1 अगला हिस्सा या पार्श्व 2 कुलपक्ष (बान्धमान का प्रथमपक्ष) 3 विवाद का पूर्वपक्ष प्रथमवर्षनाधारित नर्क या प्रजन का दृष्टिकोण 3 किसी लक्ष का प्रथम भाग्य ४ दादी की प्रतिमा ५ अभि-योग, भागिना, बन्धु किसी समास या वाक्य का प्रथम रद वर्षतः उदयाचम जिसके पीछे मृत्यु का उदय होना माना जाता है पञ्चात्मक (वि०) पूर्वो पञ्चाली से संबन्ध रखने वाला पञ्चिनीयाः (पुं०, व० ब०) पूर्व देश के रहनेवाले पाणिनि के शिष्य, कित्ता-बहः बापदादा, पूर्वज, युक्तः 1 बड़ा का विशेषण 2 पिता, पितामह या पत्निमह में से कोई एक 3 पूर्वपुत्र, - पूर्व (वि०) प्रत्येक पूर्ववर्ती काल्पनी आधारवा-नक्षत्र जिसमें दो तारे सम्मिलित हैं - बन्धः बृहस्पति बह का विशेषण भागः अगला हिस्सा, - भाग्यपथा पञ्चीसवा नक्षत्र जिसमें दो तारे सम्मिलित हैं, - भुक्तिः (स्त्री०) पहले से किया हुआ अधिकार, भूत (वि०) पूर्ववर्ती पहले का, भीमात्मा प्रथम भीमात्मा वेद के अतर्गत कर्मकाण्डविषयक पृच्छा (वि०) उत्तरभीमात्मा या वेदान्त दे० भीमात्मा - रंजः नाटक का उपक्रम या शारम्भ, आमुज या प्रस्तावना, - मूर्धरग विभागेष भूतधारो निवर्तते सा० व० २८३, पूर्वराग प्रसाय नाटकीयस्य वस्तुन जि० २।८ - (दे० इस पर मल्लि०), रावः आरम्भिक प्रेम, दो व्यक्तियों के मिलन से पूर्व (अथवा दर्शन आदि के कारण) उनमें उत्पन्न द्वौनैशाका प्रेम रात्रि 1 रात का पहला भाग, क्वन् 1 होने वाले परिवर्तन का संकेत 2 रोग होने का लक्षण 3 दो महवर्ती स्वर या व्यञ्जनों में से पहला या स्थिर रहे क्वन् (वि०) बन्धा बन्धित (वि०) पहले से विद्यमान पहले का, पहले होने वाला बाधः बादी द्वारा प्रत्युत अभियोग मुहूर्त द्वारा की गई नानिज बन्धित (पुं०) अभि-योजकता या मुहूर्त, वृत्तम् 1 पट्टी चटना, रघु० ११।१० 2 पहला आचरण, आरब्ध (वि०) आरब्ध शब्द के पूर्वार्ध से संबंध रखने वाला, शेषः दे० पूर्व-

वत, लक्ष्यम् जहा का ऊपरी भाग, - संख्या प्रमातकाल, पी कटना, - जि० ११।४०, - सर (वि०) अपेक्षार, सागरः पूर्वी समुद्र रघु० ४।३२, - साहसः पहला या सबसे भारी अर्थदर्श, स्थितिः (स्त्री०) पहली या प्रथम अवस्था ।

पूर्वक (वि०) [पूर्व + कन्] (मयास के अन्त में) 1 पूर्ववर्ती, अनन्तविन - अनामयप्रश्नपूर्वकमाह - ल० ५ 2 पूर्ववर्ती पिछला, क पूर्वज, बापदादा ।

पूर्वमन् (वि०) [पूर्व + मन् + लप्] पहले जाने वाला, पूर्ववर्ती ।

पूर्वतः (अव्य०) [पूर्व + तल्] 1 पूर्व में, पूर्व की ओर, रघु० ३।४२ 2 पहले मानने ।

पूर्वज (अव्य०) [पूर्व + जल्] पूर्ववर्ती भाग में, पहली जगह ।

पूर्वम् (अव्य०) [पूर्व + बलि] पहले की मति ।

पूर्वम् (वि०) (स्त्री०-भी) पूर्वज (वि०) [पूर्व + इति, पूर्व + ल] 1 प्राचीन 2 पूर्वक ।

पूर्वजः (अव्य०) [पूर्वजिन् अहनि - पूर्व + एङ् लुक् नि० साधु] 1 पहले दिन 2 गत दिवस, बीते हुए कल - मनु० ३।१८७ 3 दिन के प्रथम भाग में, पी कटने पर 4 ओर में, सबेरे ।

पूर्व (व्या०) पर०, पुरा० उभ० - पूर्वजि, पूर्वजि-दे) डेर लगाना मचय करना, एकत्र करना ।

पूर्वः, पूर्वक [पूर्व + क्त्वं, क्त्वं वा] गठरी, चुकी ।

पूर्वक = पुनः - दे० ।

पूर्विका [= पूर्विका, रस्य ल] एक प्रकार की रोटी, पूरी ।

पूर्वः, पूर्वक [पूर्व + क, पूर्व + कल्] सहस्रत का मूल ।

पूर्वम् (पुं०) (कन्० - पूर्व बन्धी, - वच) [पूर्व + कान्त्] पूर्व, - सदा पात्र पूजा मयनपरिभाषा कलवति - भर्तु० २।११४, इत्यनोपपन्नमिति विद्या नास्ति पूजन् - शि० २।३१, सम० - अनुवृत्त (पुं०) शिव का विशेषण, - अन्नवः 1 बारह 2 द्वाद का विशेषण, आत्मा द्वाद का मगर (अमरावती) ।

वृ 1 (गुदा० आ० - प्रियते, पुत) - व्यस्त होना, सक्रिय होना (बहुधा 'व्या' उपसर्ग के साथ) - कार्य व्याप्ति - दे० व्यापुत - वर० (पारमति ते) 1. काम कराना, काम पर लगाना मीपना, निवत करना (बहुधा अधि० के साथ) व्यापारित बलवृत्ता विद्या मिहृत्वमकागतसत्त्ववृत्ति - रघु० २।३८ 2 रचना, जड देना, निश्चित करना निश्चय देना, हाकना - 'पारवामाय कर किरोटे रघु० ६।१९ उपायुक्ते व्यापारयामाय विप्रोचनानि कु० ३।६७, व्यापारित शिगति लक्ष्यमस्तवधाने - वेणी० ३।१९, रघु० १३।२५ ।

11 (जुही० पर० - विरति, पूर्व) 1. जाने के लक्षण 2

से मुक्त करना, प्रकाशित करना 3. भरना 4. रखा करना, जीवित रखना, जीवित रहना 5. उन्नति करना, प्रगति करना ।

iii (क्या० पर० पृष्ठाति) रखा करना ।

iv (चुरा० उभ० - पारयति-ने, कभी-कभी 'पार' स्वतन्त्र वाच्य मानी जाती है) 1. पार से जाना, नाव से पार उतारना 2. किसी वस्तु के दूसरे पार्श्व पर पहुँचना, निष्पन्न करना, अनुष्ठान करना, सम्पन्न करना, (घन का) पूरा करना 3. योग्य या समर्थ होना - अधिक न हि पारयामि इत्युम् भाषि० २।५९, श० ४ 4. सीपना, बचाना, उद्धार करना, निम्नतर करना ।

v (स्वा० पर० - पृषेति) 1. प्रसन्न करना खुश करना, तुल्य करना 2. प्रसन्न होना, खुश होना ।

पुक्त (भू० क० क०) [पृक् + क्त] 1. मिश्रित, संपुक्त - रघु० २।१२ 2. स्पष्ट, संपर्क में आना या, स्पर्श करने वाला, संपुक्त, - कण्ठ संपत्ति, दीप्त ।

पुक्तिः (स्त्री०) [पृक् + क्तित्] स्पर्श, संपर्क, मयाग ।

पुक्कष्य [पृक् + यन्] संपत्ति, घन दीप्त, अभ्रंश ।

पुक् 1. (अदा० आ० - पुक्ते, पुक्ते) संपर्क में आना ।

ii (क्या० पर० - पृषति, पुक्ते) संपर्क में आना सम्मिलित होना, मिल जाना एवं वदन दाशरथि-पुणर्वन्धवा शरम भट्टि० ६।३९ 2 मिश्रण करना मिश्राना 3 संपर्क में होना, स्पर्श करना 4. स्पष्ट करना, भरना, संपन्न करना 5. बढ़ाना वृद्धि करना, सम्पन्न मिश्रण करना, बोलना मिलना, मिश्राना-वाक्प्राप्तिव संपन्नो रघु० १।१, भट्टि० १।३।१०६, दे० मातृका 11. (स्वा० पर०, चुरा० उभ० पृषति, पारयति-ने) 1. स्पर्श करना, संपर्क में आना, रोकना, विरोध करना ।

पुच्छत [पृच्छ + क्त] पुच्छास करने वाला, गवेयण करने वाला - पुच्छकेन यदा भाष्य पुच्छेय विज्ञाना - पञ्च० ५।१३, याज्ञ० २।२६८ ।

पुच्छन्त्य [पृच्छ + क्त] पूछना, पूछनाछ करना ।

पुच्छ [पृच्छ + क्त + टाप्] 1. प्रश्न करना, पूछना, पूछनाछ करना 2. अविष्ट विषयक पूछनाछ ।

पुक् (अदा० आ० - पुक्ते) संपर्क में आना, स्पर्श करना ।
पुक् (स्त्री०) [पृ + क्विप्, मुक्] सेना - (पहले पाँच बन्दों में इस शब्द का कोई रूप नहीं होना, हि० वि०, हि० द० के पदवाच्य 'पुनरा' के स्थान में विकल्प से 'पुन' आदेश हो जाता है) ।

पुक्ता [पृ + क्तन्त + टाप्] 1. सेना 2. सेना का एक प्रधान जिसकी २४३ हाथी, २४३ रथ ३०९ घोड़े और १२१५ पैदल होते हैं 3. युद्ध, युद्धम, युद्धमेव ।
क्य० - कण्ठ इन्द्र का विशेषण ।

पुक् (चुरा० उभ० - पारयति-ति) 1. विस्तार करना 2. फेंकना, डालना 3. भेजना, निदेश देना ।

पुष्क (अव्य०) [प्र + अच्, कित्, मप्रसारण] 1. अलग-अलग, जुदा-जुदा, एक एक करके - ललाभ्यम् पुष्क पुष्क - भग० १।१८, मनु० ६।२६, ७।५७ 2. भिन्न, अलग, भिन्नपूर्वक भट्टि० ५।४, १३।४, रचिता पुष्कर्वता मिराम कि० २।२३ 3. जुदा, एक ओर, एकाकी विक्रम० ४।२० ४ छोड़ कर, सिवाय, अपवाद के साथ, बिना (कर्म० कर्म० वा अग्रा० के साथ) पुष्कामण, यमान, याम वा मिद्रा० भट्टि० ५।१०९ (पुष्क कृ० अलग २ करना, बोलना, जुदा-जुदा करना, विशेषण करना) । सम० - आभ्यता 1 अलग-अलग करना पुष्कना 2 भेद, भिन्नता 3 विवेक निर्माण आभ्यन्त (वि०) भिन्न, अलग आभिका कर्त्तव्यण मता, दीर्घकृता - कर्मणम् - क्रिया 1 अलग-अलग करना भेद करना 2 विशेषण करना पुष्क (वि०) भिन्न कुल से संबंध रखने वाला भिन्न (प० ब० क०) एक पिता की भिन्न पुत्रियाँ न मगान, या भिन्न-भिन्न जातियों की पुत्रियाँ न मगान चर (वि०) एकत्र जाने वाला, अलग जाने वाला, जन नाव पुष्प जान रहित, रसाद आदमी, पाकड़ जन नाव लोग न पुष्पवन-वन्धवा वरा अभिमानम ननुमदीय - रघु० ८।९, कि० १।३२५ 2 पुष्क इष्ट अजाना श० १।१।३९ 3 स्पष्ट आदमी, यानी, भावः पुष्कता ऐतदिकता (इसी प्रकार पुष्कशब्द) - कण्ठ (वि०) भिन्न-भिन्न करा या प्रकार का विष्ट (वि०) भिन्न-भिन्न प्रकार का, नावा प्रकार विष्ट शब्दा अलग गाना, - स्थिति (वि०) अलग गाना ।

पुष्को [प्र + क्त, मप्रसारण] 1. पुष्का ।

पुष्का (स्त्री०) पुष्क की दो पुत्रियों में से एक, कुन्ती का नाम । सम० जन्तव्य-मुक्, पुष्पुः पहले तीन पादों का विशेषण परान् पाप भवन्त का दण्ड व्यवहृत अवस्थाया यत इति पुष्कामुता स्पष्टपुक्ता वेणी० ३।९, अभिनव पुष्कामुत स्वेष्टेन रत्नरुपरे - कि० १।१८, - वस्ति पाद का विशेषण ।

पुष्का [प्र + क्त, क - टाप् मप्रसारणम् इन्द्रम्] कनकपुष्पा ।

पुष्की [प्र + कित्, मप्रसारणम्] पुष्को (कई पुष्को भी लिखे जाते हैं) । सम० इन्द्र-ईश्वर, भिन् (प०), वालः, वालकः, भुक् (प०) भुक्कः, गता, - लक्ष्य भगवन् प्रति 1. राजा 2. मृत्यु का देवता यम, बहलः, लक्ष्य भगवन्, - वरः पुष्क-पुष्कमान पुष्की कहानिय रघु० ८।९, - लोकाः परधलीक भुक्तीकः ।

40

[illegible]

स्पृष्टा वांति वाताः शनैः शनैः—अमरकोश पर भरत ।

पुष्पाभावाः—पुष्पाभावाः ।

पुष्पाकरा [पुष् + कृ + क्त, पुष्पे सेवनाय आकीर्त्यते - पुष् + आ + कृ + अप् + टाप्] छोटा पत्थर (जो बाट की भाँति प्रयुक्त किया गया) ।

पुष्पातकम् [पुष् + आ + तक् + अच्] दही और घी का समिधन ।

पुष्पोदरः [पुष्पत् उदरं यस्य, पुष्पो० तलोप] (यह शब्द पुष्पत् और उदर से मिल कर बना है, पुष्पत् के तु का अनियमित कारक के रूप में लाप हो गया। इस प्रकार यह शब्द अनियमित समासों की एक पूरी श्रेणी है—पुष्पोदरादित्वान् माधु० श्रे० 'गण' पा० ४।३।१०९ ।

पुष्प (भू० क० ह०) [प्रच्छ + क्त] 1 पुष्पा हुआ, पला लगाया हुआ, प्रसन्न किया हुआ, सवाल किया हुआ, 2 छिड़का हुआ । सम०—आयतः 1. धान्य विशेष, अनाज 2. हाथी ।

पुष्पिः (स्त्री०) प्रच्छ + क्तित् [पुष्प-ताछ, प्रसन्न वाचकता ।

पुष्पम् [पुष् स्पृष्ट वा चक्, नि० सायु] 1. पीठ, पिछला हिस्सा, पिछाड़ी 2. आनवर की पीठ जब पृष्ठमा-हस्तः—आदि 3. मतलब या ऊपर का पाखंड रभु० ४।३१, १२।६७, कु० ७।५१, इसी प्रकार अवतिपृष्ठ-चारिणीम् उत्तर० ३ 4. (किसी पत्र या दस्तावेज की) पीठ या दूसरी तरफ मात्र० २।९३ 5. पर की चपटी छत 6. पुस्तक का पृष्ठ । सम०—अस्थि (नपु०) रीढ़ की हड्डी, शीशः, रक्तः जो किसी लकड़ें हुए घोड़ा की पीठ की रक्षा करे, —अस्थि (वि०) कटुपान्, कूबड युक्तः—अस्थि (पु०) केरडा, —तल्पनाम् हाथी की पीठ की बाहरी मांसपेशियाँ । पुष्पिः 1. केरडा 2. रीढ़, कसम् किसी आकृति का पान्त् मायः, आकाः पीठ, मांसम् 1. पीठ का मांस 2. पीठ पर की हड्डी अथवा अवति (वि०) चुगलखोर, बदनाम करने वाला, कलकित करने वाला (दम्, —दम्) चुगली, पुष्पमांसान्न नक्ष्त्रं परोक्षं दोष-कीर्तनम् हेमचन्द्र गु० प्राक्पादयो पतति आदिनि पुष्पमांसम् हि० १।८१, धानम् मवारो, बंशः सैक की हड्डी बालु (नपु०) भकान की ऊपर की मजिल, बाह्यः (पु०), बाह्यः लट्टू बेल, अथ (वि०) पीठके बल शनैः वाला, भ्रूयः अगली बकरी, —भूमिन् (पु०) 1. मंश 2. बैला 3. हिजडा 4. भीम का विशेषण ।

पुष्पकम् [पृष्ठ + क्त] पीठ ।

पुष्पकम् (अव्य०) [पृष्ठ + तस्थिम्] 1. पीछे, पीठ पीछे, पीछे से—अच्छतः पुष्पतोऽभिधात् मनु० ४।१५५, ८।३००, अथ० १।१४ 2. पीठ की ओर, पीछे की

ओर—अच्छतः पुष्पतः 3. पीठ पर 4. पीठ पीछे चुपचाप, प्रच्छन्न रूप से (पुष्पतः क्त) 1. पीठ पर रहना, पीछे छोड़ना 2. उपेक्षा करना, तिलाजलि देना, छोड़ देना 3. विरक्त होना, हाथ लीखना, त्याग देना, तिलाजलि देना, पुष्पतो गम् अनुसरण करना, पुष्पतो भू— 1. पीछे लगे होना 2. उपेक्षित होना ।

पुष्पथ (वि०) [पृष्ठ + यन्] पीठ से सबच रहने वाला, अच्छे लट्टू घोड़ा ।

पुष्पिः (स्त्री०) [= पुष्पिन् पुष्पो०] एड़ी ।

पु (भू० क०, कथा० पर०) पिपति, पुष्पाति, पुष्पं कर्म० पुष्पं, प्रेर० पुष्पति ते इच्छा० पिपति (री) बति, पुष्पति 1. भरना, भर देना, पूरा करना 2. पूरा करना, (प्राप्ता आदि) पूरी करना, गुप्त करना 3. हवा भरना, (शास्त्र, इमरी आदि) बहावा 4. मनुष्ट करना, मुकाबल दूर करना, प्रसन्न करना

पितृनारात्—अटि० १।२ 5. पालना, परवरिश करना, पुष्ट करना, पालनपोषण करना, पालन करना ।

पेषकः [पेष + क्त, इत्यम्] 1. उल्लू 2. हाथी की पूँछ की बड़ 3. पलंग, गाम्वा 4. बादल 5. बू ।

पेषकित् (पु०) पेषिल [पेषक + इति, पेष + इत्यच्, इत्यम्] हाथी ।

पेषकः (पु०) कान का मैल, पक्ष, ने० विभृप ।

पेषः, —इत् [पिठ + अच्] 1. बैला, टोकरी 2. पेटी, लट्टू, —ट बना हाथ जिसकी अगलियाँ फैलाई हुई हों ।

पेषकः, —इत् [पिठ + इत्] 1. टोकरी, लट्टू, बैला 2. लघु-कषय, गुटरी ।

पेषाकः [—पेषक, पुष्पो०] बैला, टोकरी लट्टू ।

पेषिका, पेषी [पिठ + अच् + टाप्, इत्यम्, पेष + डीच्] छोटा बैला, टोकरी ।

पेषा [—पेष, पुष्पो०] बड़ा बैला ।

पेष (वि०) [पा + अच्] 1. पीने के योग्य, चढ़ा जाने के लायक 2. स्वारिष्टः—अथ पानीय, मद्य वा सर्वत आदि, या मात का माय, चाबलों की लपटी ।

पेषुः (पु०) 1. समूह 2. जनि 3. सुवर्ण ।

पेषुषः, —अच् [पोप + ऊयन्, वा० वृत्] 1. अमृत 2. उस गाय का दूध जिसे ब्याये मनी एक-सप्ताह से अधिक नहीं हुआ सातरात्रप्रमृतायाः और पेषुषमुच्यते—हारावलो, मनु० ५।६ 3. ताख की ।

पेरा (स्त्री०) एक प्रकार का वाद्ययंत्र अटि० १७।७ ।

पेषु (प्रा० पर०, चुरा० उभ०) पेलति, पेलयति—ते) 1. खाना, खलना—करना 2. हिलना, काँपना ।

पेलम्, पेलकः [पेल + अच्, पेल + क्त] अचकोप ।

पेलव (वि०) [पेल + वा + क] 1. मुकुमार, सुकोमल, मुदु, मुलायम, —अन्यः पेलवपुष्प पवित्रः कु० ४।२९, ५।४, ७।५ 2. दुबेल, पतला, क्षीम—अ० ३।२२ ।

वेदिः, वेदिम् (पु०) [वेल् + इन्, वेल् + इति] बोधा ।
 वेष्ट (व, स) ल (वि०) [गिष् (व, स) + अलच्]
 १ मृदु, मुलायम, मुकुमार रघु० १।४०, १।४५,
 मेघ० १३ २ दुबला-पतला सोण (रमर आदि)
 रघु० १३।३६ ३ मनाहर, मुन्दर, लावण्ययुक्त
 अल्ला भासि० २।२ ४ विशेषज्ञ, चतुर, कुशल
 भर्तु० ३।५६ ५ आत्मक, छत्रा ।

वेष्टिः, -शी [पिता + इन् वेष्टि + डोष] १ मांस का पिष्ट
 २ मांस राशि ३ अष्टा ४ पुष्टा याज्ञ० ३।१००
 ५ गर्भाधान के पश्चात् प्राथमिक बाद का कल्पा गम
 पिष्ट ६ स्थित क लिए तैयार कर्ता ७ पुष्ट का
 वस्त्र (पोल्स भा०) ८ एक प्रकार का वाद्ययंत्र ।
 मम० कोशः (व) पक्षी का अण्ड

वेष्ट [पिष्ट + चडा] पोसना करना, कुचलना शि०
 १।१६ ।

वेष्टनम् [पिष्ट + न्यट] १ बुद्धि बनाता पोसना २ कलि
 हान का वह स्थान जहाँ अनाज की बालों पर दायें
 चनाई धारी है ३ मित्र और शत्रु, पोसने का कार्य
 भा० पुराणम् ।

वेष्टन (स्त्री०) पोषणा पोषण [पिष्ट + अति
 पयणि + णीप् पिष्ट आ क्त] चक्की, मिल
 घरल ।

वेष्टार (वि०) [वेष् + ण्यन्] १ जाने वाला घुमने
 वाला २ नागकाय ।

वे (स्त्री० पठ० पायति) मुखता, मुखाना ।

वेणि [पिष्ट + ण्यन्] यन्त्र का कुम्भनाम ।

वेष्टक [पिष्ट + अण्] क्त ।

वेष्टर (वि०) (स्त्री०-रा) [विष्टर + अण्] किसी पात्र
 में डबाला हुआ ।

वेष्टीमणि (पु०) एक प्राचीन जड़ जो एक पर्यमाण
 का पणरा है ।

वेष्टिकम्, वेष्टिकम् [विष्ट + इन् + ण्यन्] भिक्षा पर जीवन निर्भर करना, भिक्षा-
 वृत्ति ।

वेष्टामह (वि०) (स्त्री०-हा) [पितामह + अण्] १ शत्रु
 या पितामह से संबंध रखने वाला २ उत्तराधिकार
 में पितामह से प्राप्त ३ अष्टा के महील बह्ना से अधि-
 ष्ठित, या बह्ना से सम्बन्ध रखने वाला रघु० १।५।
 ६०, हाः (ब० ब०) पूर्वपूरणा, बाप दादा ।

वेष्टार्थाह (वि०) (स्त्री०-बी) [पितामह + ठक्]
 पितामह से सम्बन्ध रखने वाला ।

वेष्टक (वि०) (स्त्री०-बी) [पिता + डोष] १ पिता से
 सम्बन्ध रखने वाला २ पिता से प्राप्त या आगा
 पुण्याश्री से सम्बन्ध पिता की परंपरा से प्राप्त—रघु०
 ८।६, १८।६०, मनु० १।१०४, याज्ञ० २।४७ ३ पिता

के लिए पुनीत,—अण् मृत पुरखाओं या पितरों के
 सम्मान में अनुष्ठित आह ।

वेष्टकम्, वेष्टकम् [पिष्ट + अण्] १ अविवाहिता स्त्री का पुत्र
 २ किसी प्रसिद्ध पुरुष का पुत्र (पितृमत पुत्र) ।

वेष्टकसेव, वेष्टकसेवीयः [पिष्ट + अण् + वच्, छण् वा] फूँकी
 या बुना का डेटा ।

वेष्ट (वि०) (स्त्री०-नी) वेष्टक (वि०) (स्त्री०-बी)
 [पिता + अण्, ठक् वा] पितीय, पितृसंबन्धी ।

वेष्ट (वि०) (स्त्री०-नी) [पिता + अण्] १ पिता या
 पुरखाओं से सम्बन्ध रखने वाला वेष्टक, पुष्टनी
 २ पितरों के लिए पुनीत,—अण् तर्जनी और अण्डे
 का मध्यवर्ती श्लेष का अण (इस अर्थ में 'वेष्टक' बी) ।

वेष्टक (वि०) (स्त्री०-वा) [पील + अण्] पील वृक्ष
 का लकड़ी से बना हुआ—मनु० २।४५ ।

वेष्टकम् [वेष्टक + ण्यन्] मुकुता, मुष्कालता, मुकुमारता ।

वेष्टाच (वि०) (स्त्री०-बी) [पिताच + अण्] राक्षसी,
 दारुणीय वह हिन्दु धर्ममात्र में बनिन आठ प्रकार

के विवाह में न आठवीं या निम्नतम श्रेणी का विवाह
 (इसमें किसी मोर्छे हुई प्रमत्त या पागल कल्पा का,

जसकी स्वीकृति के बिना उसका कोई आहूत किया
 जाता है) मुप्य मत्ता प्रमत्ता का रहो अतोपयच्छति

स पर्यगिष्ट विवाहानां वेष्टाचराष्टमोऽयम्—मनु०
 ३।६ पाठ० १।६१ २ एक प्रकार का राक्षस या

पिशाच जो किसी धार्मिक मस्कार के अवसर पर
 तैयार किया गया नेबद्ध २ रात ३ एक प्रकार की

अदृश्य भाषा जो यममच पर पिशाचों द्वारा बोली
 गया प्राकृत भाषा ४ एक निम्नतम रूप ।

वेष्टाचिक (वि०) (स्त्री०-बी) [पिताच + ठक्] नार-
 कीय राक्षसी ।

वेष्टकम्, वेष्टक [पिष्टनय भाव कर्म वा, पिष्टन + ण्यन्
 वा] १ बालों बदनामी, इधर की उधर लगाना,

कनक मनु० ७।४८ १।५५, मम० १।६२ २ बह-
 माशी, टगरी ३ दुष्टता, दुर्भावना ।

वेष्ट (वि०) (स्त्री०-प्री) [पिष्ट + अण्] बाटे का
 या पीठी का बना हुआ ।

वेष्टिक (वि०) (स्त्री०-बी) [पिष्ट + ठक्] बाटे का
 पीठी का बना हुआ कण्ड १ कचोदियों का डेर

२ अनाज से लीकी हुई मंदिरा ।

वेष्टी [वेष्ट + ङीप्] अनाज को सड़ाकर उससे तैयार
 की हुई मंदिरा—मु० गौडी

व. १।६० [पी गूड़ो गड एकसेही दस्य-तारा०]
 १ बच्चा अथवा अल्पवृष्य अल्पविकसित २ कम या विकृत

अंग वाला ३ विकृत, विकृत, - डः बालक जिसकी
 आयु ५ से सोलह वर्ष के भीतर की हो, मु०
 'अपीयड' ।

पोवः [पुट + वञ्] वर की नींव । सम०— हलः १ एक प्रकार का बरकुल २ कास ३ एक प्रकार की मछली ।

पोवक [पुट + क्यञ्] नौकर ।

पोडा [पुट + अच् + टाप्] १ भरवानी स्त्री, पुष्पो की भूमि वाली वाली स्त्री २ हिवडा, उभयलिनी ३ नौकानो ।

पोटी [पोट + झीप्] स्थूलकाय मगरमच्छ ।

पोटुलिका, पोडुली [पोटुलो, कन् + टाप्] हल्लर पोट लो + ह झीप्, पुषो०] पोटलो, मुल्लर पडरो ।

पोतः [पु + तन्] १ किसी भी जलनयन का बच्चा यदा शावक बड़ेडा अद्वयशावक अर्थात् १५ मन्व्य पार - भाषि० १५० मृगपान बरिपोत अर्थात्, कोरपोत नया पोडा उत्तर० ५१३ २ दस बरस का हाथी ३ जहाज, बेडा, बिस्ती पाता दुस्तरवागिंगाशिनरग हि० २११६५ मनु० ७२२ ४ वरच कपडा ५ पीधे का अकुर ६ घर बनाने की जगह । सम० आच्छादनम् तच् आच्छादक छोटी छोटी मरुतिन का झुण्ड, धारिन् (पु०) जहाज का स्वामी भोग जहाज का टूट जाना रख किन्तो या ताब का बण्ण या डांड कलिज् (पु०) व्यापारी हा ममूड म आ जाकर व्यापार कर बाह् विवेया ताबक ।

पोतकः [पोत + कन्] १ पण्डित २ छोटा पीगा ३ घर बनाने के निमित्त मृगण्ड ।

पोतकः [पोत + अच् + अच्] एक प्रकार का काग ।

पोन् (पु०) [पु + तन्] यज में कार्य कराई जाने मन्त्र अतिवर्जो में से एक । बड़ा नामक अतिवर्ज का सहायक) ।

पोन्था [पोत + य + टाप्] नौकाया का बरा ।

पोन्व [पु + टुन्] १ सूत्र की धुवन २ नौका जहाज ३ हल का फलका ४ बज ५ बन्ध ६ पोन् का पत्र । सम० आपुच, सूत्र, बराह ।

पोन्निन् (पु०) [पोन् + इति] सूत्र, बराह ।

पोलः [पुन् + न] १ डेर २ गाँज बिस्तार ।

पोलिका, पोली [पाली + कन् + टाप्, झर, पाल + झीप्] एक प्रकार की पूरी (गेहूँ की बनी हुई) ।

पोलिकः [पालन्य अर्थात् इव प्या०] जहाज का मस्तूल ।

पोवः [पुट + वञ्] १ पोवण मपालन मधारण २ पुष्टि, बृद्धि, सवर्धन, प्रगति ३ समृद्धि पाच्यं बाहुल्य ।

पोवणम् [पुप् + जिच् + म्यट्] पोसना, (छाती का) दूध पिलाना, पालना, मधारण करना ।

पोवणित् [पुप् + जिच् + इन् + क्यञ्] कोषण ।

पोविन् (वि०) [पुप् + जिच् + तृच्] दूध पिला कर पालने वाला, पालन-पोषण करने वाला (पु०) परवरित करने वाला, दूध पिलाने वाला ।

पोविन्, पोवु (वि०) [पुप् + जिनि, तृच् + व] दूध पिलाने वाला, पालन-पोषण करने वाला (पु०) पालक, पोषक रक्षक ।

पोव्य (वि०) [पुप् + व्यञ्] १ खिलाये जाने के योग्य, पालन-पोषण करने वाले योग्य, मपालनीय २ सुपालन, पालता कुत्ता समृद्ध । सम०— पुत्र, कुलः पोद लिया हुआ पुत्र वगैरे ऐसे सन्धिया का समूह जो पालन पोषण तथा रक्षा किये जाने के योग्य हो ।

पोव्यसोय (वि०) [स्त्री० यी] [पुत्रवली छत्र] वधवाओं से संबंध रखने वाला ।

पोव्यस्यम् [पुत्रवली + यञ्] वधवाया कुत्तयायन मनु० ९.१५ ।

पोसवन् [पुसवन अच्] दे० पुसवन ।

पोस्य (वि०) [स्त्री० स्त्री] [पुस स्त्री] १ पुत्र धारित भर्ति ११.१ २ महाना गैरवैय न्यय मदभिमी, गौरव ।

पोस्य (वि०) [स्त्री० स्त्री] [पुस्य अच्] वानाश्रम इन् बनाने का यन्त्र ५ म १६ वर्ष तक की आयु ।

पोडः [पुट् अच्] १ एक देश का नाम २ उम टण का राजा या निहाय ३ एक प्रकार का मनु ४ सप्त शायकेश निमर ५ भीष के शब्द का नाम ६ दूध दामे महादाम नामक पुत्राद भग० १.१५ ।

पोडक [पुट् कन्] १ गले (हँस) का एक भेद २ [गम कन्] एक बड़ा बरतन वाला बी । वजनकर इति १० मनु० १०.६६ ।

पोडिक [पुट् ठक एक प्रकार का मनु (हँस) पोडा ।

पोतदम् [पोतन् पुषो०] एक नौका ।

पोसिकम् [पोसि अच्] [पोस्य अच्] एक प्रकार का अट्ट ।

पोत्र (वि०) [स्त्री० वी] [पुत्रायाय अच्] पुत्र से प्राप्त या संबद्ध व पाना पुत्र का बेटा जो पानो पुत्र की बरा ।

पोत्रकेय [पुत्रिका + केय] लटकी का पुत्र जो अपने नाना का वध बलाय ।

पोन, पुनिक (वि०) [स्त्री०—की] [पुन पुन + टाप्, टिलोय] बार २ दाहराया गया, बार - होन वाला ।

पोन पुण्यम् [पुन पुन + व्यञ्] बार बार आर्वाणि लगातार दाहराया जाना ।

पोनकस्तम्, पोनकस्तयम् [पुनकस्त + अच्, व्यञ्, व] आर्वाणि - अतिप्रियास्तीति पौनरुक्त्यम् का०

२१० रघु० १.५१० २ अतिवर्ध, अनावरणकता निरर्थकता अभिव्यक्तता चद्रिकाया कि वीपिका-पोनकस्तयेन - विक्रम० ३ ।

पोनक्य (वि०) [पुनर् + अच्] १ विपने दूसरे पनि

से विवाह कर लिया है ऐसी विधवा से सबब रखने वाला 2 होनाया हुआ व 1 पुनर्विवाहिता विधवा का पुत्र, प्राचीन हिन्दु धर्मशास्त्र में स्वीकृत बाह्य पुत्रों में से एक—वाक्त्र ० २।१३० मनु० ३।१।० 2 एवं का पुत्र या पुत्रि मनु० १।१३६।

पौर (वि०) (स्त्री०—पौरा) । पुर अण् । किसी नगर या सहर से सबब रखने वाला व गहरा नागरिक (विप० जानाद) कु० २।६१ मध० ०३ १५ २।१० ३६ १-१, १६।१। मम० जगता याचक (स्त्री०) स्त्री नगर में रहने वाला स्त्री जानपद (वि०) गहरा व गहरा से सबब रखने वाला व १ है। गहरा पौर सामान्य शायद और नर १ वच १ जैना पौर नगरवासी व १ वद प्रमुख नागरिक व्यवसायवासी।

पौरकम् (पौ-ने) १ । पुर व नहर ३।१ 2 नगर के निवासी उदात्त।

पौरवर (वि०) (स्त्री०—पौरा) । पुर व नहर ३।१ 2 प्रगत इन्द्र सबबों १६६ १।१० पुत्रा। मम १, १० नरक।

पौरव (वि०) (स्त्री०—पौरा) । पुर व नहर ३।१ 2 उद्यम व पुत्र व नगरा पुत्रा १—१ 2 नगर के उद्यम व नगरा १६६ १।१० व सामाजिक १ मम १, १० नरक।

पौरवीय (वि०) (स्त्री०—पौरा) । पुर व नहर ३।१ 2 मम १, १० नरक।

पौरव्य (वि०) । पुर व नहर ३।१ 2 मम १, १० नरक।

पौराण (वि०) (स्त्री०—पौरा) । पुर व नहर ३।१ 2 मम १, १० नरक।

पौराणिक (वि०) (स्त्री०—पौरा) । पुर व नहर ३।१ 2 मम १, १० नरक।

पौरव (वि०) (स्त्री०—पौरा) । पुर व नहर ३।१ 2 मम १, १० नरक।

८।१८ 3 पुत्रवत्—मम० ३।८ 4 वीच युक्त 5 पुत्र का जननि-द्वय 6 मनुष्य की पूरी उँचाई खुली हुई अंगुलियों समान अपने दोनों हाथ ऊपर उठाकर खिली ऊँचाई तक मनुष्य पहुँचे 7 बाघवर्षी।

पौरव्य (वि०) (स्त्री०—पौरा) । पुर व नहर ३।१ 2 मम १, १० नरक।

पौरव्य (वि०) (स्त्री०—पौरा) । पुर व नहर ३।१ 2 मम १, १० नरक।

पौराण्य (वि०) (स्त्री०—पौरा) । पुर व नहर ३।१ 2 मम १, १० नरक।

पौराण्य (वि०) (स्त्री०—पौरा) । पुर व नहर ३।१ 2 मम १, १० नरक।

पौराण्य (वि०) (स्त्री०—पौरा) । पुर व नहर ३।१ 2 मम १, १० नरक।

पौराण्य (वि०) (स्त्री०—पौरा) । पुर व नहर ३।१ 2 मम १, १० नरक।

पौराण्य (वि०) (स्त्री०—पौरा) । पुर व नहर ३।१ 2 मम १, १० नरक।

पौराण्य (वि०) (स्त्री०—पौरा) । पुर व नहर ३।१ 2 मम १, १० नरक।

पौराण्य (वि०) (स्त्री०—पौरा) । पुर व नहर ३।१ 2 मम १, १० नरक।

पौराण्य (वि०) (स्त्री०—पौरा) । पुर व नहर ३।१ 2 मम १, १० नरक।

पौराण्य (वि०) (स्त्री०—पौरा) । पुर व नहर ३।१ 2 मम १, १० नरक।

पौराण्य (वि०) (स्त्री०—पौरा) । पुर व नहर ३।१ 2 मम १, १० नरक।

पौराण्य (वि०) (स्त्री०—पौरा) । पुर व नहर ३।१ 2 मम १, १० नरक।

पौराण्य (वि०) (स्त्री०—पौरा) । पुर व नहर ३।१ 2 मम १, १० नरक।

विशेषण—वीलस्य कथमन्यवारहृत्वे दोष न विज्ञात-
वान्—पंच० २।४, रघु० ४।८०, १०।५, १२।७२
2. कुन्नेर का विशेषण 3 विभीषण का विशेषण
4 चन्द्रमा ।

वीलिः (पु०, स्त्री०) पीली (स्त्री०) [पुल् + ल, पीलेन
निष्पत्—पील + डच्, वीलि + डीप्] एक प्रकार
की घुरी ।

पीलोमी [पुलोमन् - अण् अनो लोप, पीलोम + डीप्]
बाघी, पुलोमा की पुत्री, इन्द्र की पत्नी—आशीरव्या
न ते मुक्ता पीलोम्या सधुषी भव श० ७।२८ ।
मम० सधवः इत्यन्त का विशेषण ।

वीषः [वीषी - अण्] एक चाइमास का नाम जिसमें चन्द्रमा
पृथ्वी नक्षत्र में रहता है (दिसम्बर जनवरी में जाने
वाला मास), चौ पीय मास में जाने वाली पुणिमा,
रघु० १८।३५ ।

वीष्कर, -रक, (स्त्री०—री, -की) पुष्कर - अण्, वीष्कर
+ कण् नील कमल से सबंध रखने वाला ।

वीष्करिणी [पुष्कराणा समूह - वीष्कर - इति + डीप्]
कमलों से घेरा हुआ सरदार सरदार ।

वीष्कलः [पुष्कल + अण्] अनात्र का एक भेद ।

वीष्कल्य [पुष्कल + क्यञ्] 1 परिपक्वता पूर्ण विकास,
पूरी वृद्धि 2 बाहुल्य ।

वीष्टिक (वि०) (स्त्री०—की) [पुष्टि + ठञ्] 1 वृद्धि
करने वाला बलघाण कारक 2 पोषण करने वाला,
पोषक, पुष्टिकारक बलवर्धक ।

वीष्म्य [प्रादावना अस्मि - प्यन + अण्, उपधात्वाय]
रेवती नक्षत्र ।

वीष्म (वि०) (स्त्री०—शी) [पुष्प + अण्] फूल संबंधी
या फूलों से प्राप्त, कुपुमय, पुष्पान्, श्वी 1 पाटलि-
पुत्र नगर, पटना 2. (फूलों से तैयार की गई एक
प्रकार की) शराब ।

व्याद् (अव्य०) [व्याय + णटि (वा०)] हो, बनो आदि
अव्यय जो बोलने या पुकारने के लिए व्यवहृत होते
हैं ।

व्याम् (आ० आ०) [व्यायेन व्यान या पीन] फूलना,
मोटा होना, बढ़ना इ० नीचे 'प्ये' ।

व्यायनम् [व्याय + न्यट्] वर्धन वृद्धि ।

व्यायिनि (वि०) [व्याय + क्त] 1 वर्धित, वृद्धि को प्राप्त
2 जो मोटा हो गया हो 3 विप्राप्त, मगन किया
हुआ ।

(व्या० भा० - व्यायेत, पीन) 1 बढ़ना, वृद्धि को
प्राप्त होना, मोटा होना -मिट्ट० १।३३ 2 पुष्कल
होना, समृद्ध प्रेर० व्यायर्थायेने 1 बढ़ाना 2 बड़ा
करना, मोटा बनाना सुभी करना मनु० १।३१४
2 न्यून करना, इच्छानुसार समुष्ट करना ।

व्र (अव्य०) [व्र + क्त] 1 घातुओं के पूर्व उपसर्ग के रूप
में लग कर इसका अर्थ है 'आगे' 'आगे का' 'सामने'
'आगे की ओर' 'पहले' 'दूर' यथा प्रगम्, प्रस्था,
प्रचुर, प्रया आदि 2 विशेषणों के पूर्व लग कर इसका
अर्थ है - बहुत 'बहुत अधिक' 'अत्यन्त' आदि
पहुण्ट प्रसन्न आदि, दे० आगे 3 सजाओ (चाहे
घातुओं से बने हो) के पूर्व लग कर गण० के अनुसार
इसके निम्नांकित अर्थ होते हैं (क) आरम्भ उपक्रम
यथा प्रयाणम्, प्रस्थानम् प्राङ्गु (ख) लड़ाई यथा
प्रवालमुषिक (ग) शक्ति यथा प्रभु (घ) तीव्रता
आधिक्य यथा प्रवाद, पक्ष, प्रख्याप प्रमुल (ङ) क्षीण
या मूल यथा प्रथम, प्रपौत्र (च) पूर्ति, पूर्णता मूर्ति
यथा प्रभुक्तमन्नम् (छ) अभाव वियोग अनात्मत्व
यथा प्रीतिता प्रपणं वृक्ष (ज) आनन्द यथा प्रभु
(झ) श्रेष्ठता यथा प्राबाय (ञ) परिचयता यथा
प्रमथ अत्रम् (ट) अस्मिकाया यथा प्रच्यता (ड) अस्मिका
यथा प्रशम (ढ) सामान आश्रय यथा प्राकति (व)
मातर हाथ जोड़ता है (ड) प्रभुत्वता यथा प्रणम
प्रनाल ।

प्रकट (वि०) [प्र + कट् पच] 1 स्पष्ट भाव अज्ञान
प्रतीयमान अवयव 2 बेपर्दा, खुला हुआ 3 दृश्यमान
--इत्थं (अव्य०) साक्ष्य और से प्रत्यक्ष साक्ष्यजनित
रूप से, स्पष्ट रूप से (प्रकटी कृत व्यक्त करना, व्योक्तता
प्रदर्शन करना प्रकटी कृत व्यक्त प्रोत्ता जाहिर होना) ।
मम० प्रोतिचर्चो माह का विशेषण ।

प्रकटनम् [प्र + कट् + न्यट्] व्यक्त होने की क्रिया
व्योक्तता उपाह देना ।

प्रकटित (प्र० क० कृ०) [प्रकट + क्त] 1 व्यक्त, प्रदर्शित
अनावृत 2 साक्ष्यजनित रूप से प्रशोधन 3 जाहिर ।

प्रक्षेपः [प्र + क्षेप + क्त] क्षापता हिलाना, धरधराना,
प्रक्षेप धरधरी या (भुक्त्यर्थ के) चक्के बाला बाह
मनसिजबलान् प्राप्तानादपकता सुभा०, क्षिप्र-
पकयम् - सि० १३।४२ ।

प्रक्षयन (वि०) [प्र + क्षय + न्यट्] हिलाने वाला, --कः
1 हवा, प्रक्षय वायु, ओषी का मोड़ो प्रक्षयनेनानु-
बन्धनिये मुद्रा सि० १।६१, १।६३ 2 नष्ट का
नाम, नष्ट अत्यधिक या प्रक्षेप क्षयकपी, ओग्धार
धरधरी ।

प्रकरः [प्र + कृ (कृ) - अण्] डेर, समुच्चय, भाषा, संवत्
--मुक्ताकल्पप्रकरणार्थि गुणागुणार्थि सि० ५।१२,
वाण्यप्रकर कल्पवा वृष्टिम् - स० ६।८, रघु० १।५६,
कु० ५।१८ 2 गुणवत्ता पुण्यवय ३ मदर, लहयिता,
विपत्ता 4 विप्राय, प्रक्षय ५ आश्रय 6 सतीवधरजन,
अपहृण, रघु अंग की लकड़ी ।

प्रकायम् [प्र + कृ + न्यट्] 1 निरूपण करना, व्याख्या

करना, विचारविमर्श करना 2 विषय, प्रसंग, विधान, (विषय का) विषय कृतमन्त्रकथमाश्रित्य—सं० 3 अनुवाग, पाठ, परिच्छेद आदि किसी कृति का छोटा प्रमाण 4 बीका, अवसर 5 सामान्य, बात 6 प्रस्तावना, आमुख 7 नाटक का एक प्रेक्षित प्रसङ्ग कथावस्तु कृत्रिम हो जैसा कि मृच्छकटिक मालती-माधव, पुष्पवृक्षित आदि। सा० ८० काट हाग ही गई परिभाषा—भवेत्प्रकारेण बृज लौकिक कवि कल्पितम्, भृगुरोप्री नायकम्, विप्रोऽमात्योऽप्यथा वणिक्, सापायधर्मकामार्थं परे वर्णप्रणालक ५११।

प्रकरणिका, प्रकरणी [प्रकाशी + कन् + टाप्, ह्रस्व, प्रकरण + ङीष्] प्रकरण जो प्रकरण के अङ्गों से हो युक्त हो। सा० ८० बार उक्त परिभाषा इस प्रकार करता है—नाटिकेय प्रकरणिका। मार्गवाहः विनायिका समानवशाया ननुर्ध्वं च नयिका ५५६।

प्रकरिका [प्रकरो + कन् + टाप् ह्रस्व] एक प्रकार का विष्कम्भ या उपकथा जो नाटक में आगे वाली घटना को बनाने के लिए सम्मिलित कर दी जाय।

प्रकरी [प्रकर + ङीष्] एक प्रकार का विष्कम्भ या उपकथा जो नाटक में आगे आने वाला घटना को बनाने के लिए सम्मिलित कर दी जाय 2 नटों की पाशाङ्ग 3 रासवली 4 खोरहा 5 एक प्रकार का गीत।

प्रकर्षः [प्र + कृ + घञ्] 1 अञ्छा, प्रमुखाता मन्वैरिति—यु प्रकर्षादप्रयुक्त रघु रघु० ३३४ वर्ण प्रकर्षं सति कु० ३१२८ 2 तीव्रता, प्रबलन आधिक्य—प्रकर्षणेन शोकमनानेन—उत्तर० ३ 3 सामर्थ्य, शक्ति 4 निरपेक्षता 5 लम्बाई विस्तार प्रकर्षेण प्रकर्षति किया विशेषण के रूप में प्रयुक्त होकर 'अत्यन्त' 'अधिकता के साथ' या 'उत्कृष्टता के साथ' अर्थ प्रकट करते हैं।

प्रकर्षणम् [प्र + कृ + म्यट्] 1 लीजने की क्रिया, आकर्षण 2 झूल चलाना 3 बर्बाद लड़ाई, विस्तार 4 अञ्छता, लक्षोपरिता 5 ध्याय हटाना।

प्रकला [प्र + ल + अ] अत्यन्त प्रकाश भस्।

प्रकलपय [प्र + कल्प + णिच् + युच् + टप्] स्थिर करना, निश्चयपन, नियत करना—मनु० ८।२११।

प्रकल्पित (यु० क० क०) [प्र + कल्प + णिच् + क्त] 1 बनाया हुआ, कृत, निमित्त 2 निश्चय किया हुआ, नियत किया हुआ,—सा एक प्रकार की पहेली।

प्रकाशक, -कम् [प्रकृष्ट काठ—प्रा० सं०] 1 बृज का तिन चक्र से लाना जो तक—शिव० १।४५ 2 लाक्षा विन्यास 3 (समाप्त के अंत में) कोई भी छेद या प्रमुख प्रकार का पदार्थ—ऊर्ध्वप्रकाशितयने लक्ष्मा—शिव० ७।९ 3 अक्ष प्रकाश—महावी० ४।३५ ५।४८ 4 बुद्ध का ऊपरी भाग।

प्रकाशकः [प्रकाश + कन्] शब्द 'प्रकाश'।

प्रकाशर [प्रकाश + र + क] बृज पेक्ष।

प्रकाश (वि०) [प्रा० सं०] 1 भृगुराश्रित 2 अत्यन्त, अति, मनोरंजक सामान्य प्रकाश विस्तार—रघु० २।११, प्रकामाशोकनीयनाम् कु० ३।२४—अः इच्छा, आनन्द मनोव -अम् (अभ्य०) 1 आरंभिक, अत्यन्त—जानो ममया विषय प्रकामम् (अन्तरात्मा), सं० ४।२१, रघु० १।४४ मृच्छ० ५।२५ 2 पर्याप्तरूप से, मन भर कर, इच्छा, नुकूल 3 स्वेच्छापूर्वक, मन में। सम०—बृज (वि०) लक्ष्य कर जाने वाला, मन भर कर जाने वाला—रघु० १।६६।

प्रकार [प्र + कृ + घञ्] 1 ढग, रीति, तरीका, शैली क प्रकार किमन्तु—सा० ५।२० 2 किमन्त, किमन्त भेद, आदि (प्रायः समाप्त में प्रयुक्त) बहुप्रकार विविध प्रकार का, विप्रकार, नाना आदि 3 समरूपता 4 विवेचना, विशिष्ट गुण।

प्रकाश (वि०) [प्र + काश् + क्] 1 चमकीला चमकने वाला उज्ज्वल प्रकाशवाचकप्रकाशवाच लोकोक्त इत्यादि रघु० १।६८, ५।२ 2 साफ, स्पष्ट, प्रत्यक्ष शिव० १२।५६, सम० ७।२५ 3 विमल, प्राञ्जल शिव० १।४४ 4 विस्फार, विमुक्त, प्रसिद्ध, माना हुआ रघु० ३।४८ ५ लला, सार्वजनिक 6 बुझादि नाट कर साफ किया हुआ स्वाम, लुकी बगल रघु० ५।३१ 7 बिना हुआ, विस्तारित 8 (समाप्त के अन्त में) (१) समाप्त दिखाई देने वाला, सद्यः, शिथिलता—बुलना, शः 1 दीप्ति, कान्ति, भाषा, उज्ज्वलता 2 (बाल०) प्रकाशन, स्पष्टीकरण, व्याख्या करना (प्रायः पुस्तकों के नामों के अन्त में) काव्य प्रकाश, भाव प्रकाश, तर्क प्रकाश आदि 3 रूप 4 प्रदर्शन, स्पष्टीकरण शिव० १।५ 5 कान्ति, स्वाति, प्रसिद्ध यश 6 विस्तार, प्रसार 7 लुकी जगह, लुकी हुआ प्रकाश निर्मलाश्रमोक्तयामि—सा० ४४ सुवहुरी लीला 9 (पुस्तक का) अन्त्य, परिच्छेद या अनुवाच—अम् (अभ्य०) 1 कृते रूप से, सार्वजनिक रूप से—प्रतिप्रदर्शितो यत् प्रकाशं वनिनी वनम्—वाङ्म० २।५६, मनु० ८।१९१ १।२२८ 2 ऊँचे स्वर से, प्रकट होकर, (अनुबंध के अनुदेश के रूप में नाटकों में प्रयुक्त) —विप० आश्रयतम्। सम०—अत्यन्त (वि०) चमकीला, उज्ज्वल,—अत्यन्त (वि०) उज्ज्वल, चमकदार (पु०) शिव का विशेषण 2 सुवर्ण—ह्वर (वि०) जो दिखाई न दे, अदृश्य,—ऊर्ध्वः सुलभमनुना लरीवना, —नारी सारावना रती, देखा—अम् अनु-लाभ विम प्रवेश प्रकाशनारीयुत् एव वस्मात्—मृच्छ० ३।७।

प्रकाशक (वि०) (स्त्री०—शिका) [प्र + काश् + णिच्]

बुल 1. प्रकट करने वाला, कोजने वाला, उजाड़ने वाला, सूचित करने वाला, बतलाने वाला, प्रदर्शित करने वाला 2. अविवक्षित करने वाला, सकेत करने वाला 3. व्याख्या करने वाला 4. उजला, चमकीला, उज्ज्वल 5. माना हुआ, प्रसिद्ध, विख्यात, —कः 1. सूर्य 2. कोजी 3. प्रकाशित करने वाला । सम०—बालू (पुं०) मूर्ता ।

प्रकाशन (वि०) [प्र+काश्+णिच्+त्यट्] रोशनी करने वाला, विख्यात करने वाला, —भू 1. बतलाना, प्रकट करना, प्रकाश में लाना, उजाड़ना 2. प्रदर्शन, स्पष्टीकरण 3. रोशनी करना, चमकाना, उजला करना, —नः विष्णु ।

प्रकाशित (भू० क० ड०) [प्र+काश्+णिच्+क्त्वा] 1. प्रकट किया गया, स्पष्ट किया गया, प्रदर्शित, प्रकटोद्घृत 2. छापा गया, प्रणीतो न मु प्रकाशित उत्तर० ४ 3. रोशन किया गया, चमकाया गया, उद्योनिर्मात किया गया 4. जो दिखलाई दे, दृश्य, स्पष्ट, पकट ।

प्रकाशित (वि०) [प्रकाश+इति] साफ़, उजला, चमकाया आदि ।

प्रक्षिप्यम् [प्र+क्ष+त्यट्] इधर उधर बिखेरना, छितराना ।

प्रकीर्ण (भू० क० ड०) [प्र+क्ष+क्त्वा] 1. इधर उधर बिखरा हुआ, छितराया हुआ, बिछाया हुआ, बिना बितर किया हुआ—प्रकीर्णः पुण्याणां हरिचरणया रञ्जितरियम् वेणी० ११ 2. फैलाया हुआ, प्रकाशित, उद्योनिर्मात 3. लहराया हुआ—लहराया हुआ—णि० १२१७ 4. विपर्यस्त, शिथिल, अस्तव्यस्त 5. अव्य-वस्थित, अमंजु—बहुणि स्वेच्छया कामं प्रकीर्णयति-वीर्ये—णि० २१६३ 6. क्षुब्ध, उन्मेजित 7. बिजिध, भिथित—नैमा कि मट्टिकाव्य का प्रकीर्णकांठ, —कम् 1. नाता-समूह, फूटकर समूह 2. फूटकर नियमों के संग्रह का एक अध्याय ।

प्रकीर्णक (वि०) [प्रकीर्ण+क्त्वा] इधर उधर बिखरे हुए, छिदरे हुए, कः—कम् चक्र, मोरछल जि० १२१७, —क बोझा, —कम् 1. नाता समूह, फूटकर वस्तुओं का संग्रह 2. बिजिध विषयों का अध्याय ।

प्रकीर्णितम् [प्र+क्ष+त्यट्] 1. उज्जोषण, बोधना 2. प्रशंसा करना, स्तुति करना, श्लाघा करना ।

प्रकीर्तिः (स्त्री०) [प्र+क्ष+क्त्वा] 1. प्रशंसा, प्रशंसा 2. यश, क्वाति 3. बोधना ।

प्रकीर्णः [प्र+क्ष+क्त्वा] बारिदा का विशेष भाग । प्रकीर्णित (भू० क० ड०) [प्र+क्ष+क्त्वा] 1. बतिकृष्ट, कीर्णावित, वृत् 2. उत्सहित ।

प्रकीर्णम् [प्र+क्ष+क्त्वा] सुन्दर शरीर, सुशील काया ।

प्रकीर्णशी (श० व०—कीर्ण) दुर्गा का विशेषण ।

प्रकृत (भू० क० ड०) [प्र+कृ+क्त्वा] 1. निष्पन्न, पुरा किया हुआ 2. आरभ किया हुआ, बुल किया हुआ 3. नियुक्त किया हुआ, जिसे कार्य भार सेनाला वा बका 4. जसली, वास्तविक 5. चर्चा का विषय, विचारणीय विषय, प्रस्तुत विषय (अन्यकारणों में 'उपमेय' के लिए बहुधा प्रयुक्त) तथा अन्तर्भावोपेक्षा प्रकृतस्य समेत यत् काव्य० १० 6. महत्त्वपूर्ण, मनोरञ्जक, —तम् मूलविषय, प्रस्तुत विषय, वातु किमर्थेन प्रकृतमेव अनुसंगम् । सम०—अर्थ (वि०) मूल अर्थ को रखने वाला (—बः) मूल अर्थ ।

प्रकृतिः (स्त्री०) [प्र+कृ+क्त्वा] 1. किसी वस्तु की नैसर्गिक स्थिति, भावा, अङ्गवत्, स्वाभाविक रूप (विषय विह्वलित जो या तो परिवर्तन है या कार्य) प्रकृत्या गच्छम्—श० ११० उत्पत्त्यवस्थानप्रसंगान् सौत्त हि परमा प्रकृतिः कैलस्य रघु० ५१५४, मरण प्रकृतिं शरीरिण्या विह्वलितजीवितमवस्थाने बुधे—रघु० ८१८३, अर्थात् इह अक्षभवान् प्रकृतिनापण—श० २ (उद्गोत्रे किर अपना नामान्य स्वभाव कारण कर लिया है) प्रकृतिभावद्, प्रकृतिप्रतिपद् प्रकृति स्था होश में आना, अपना ीन्य किर प्राप्त करना 2. नैसर्गिक स्वभाव, मित्राज, स्वभाव, आरत, (मान-मिक) रचना, वृत्ति प्रकृतिरूपण, प्रकृतिमिति २० ती० 3. बनावट, रूप, आकृति—महानुभावप्रकृति, मा० १ 4. वसानुक्रम, वसावरणा—मृच्छ० ३ 5. मूल, स्रोत, भौतिक या भौतिक कारण, उपादान-कारण प्रकृतिस्वोपादानकारण च बहुधाभ्युपगम्यधम शारी० (ब्रह्म० १४४२३ पर की गई चर्चा का पुरा विवरण देखिये) यामाद् भवन्प्रकृतिरिति श० १११ 6 (माध्य० में) प्रकृति (पुरुष से विभिन्न) —भौतिक सृष्टि का मूलस्रोत जिसमें तीन (मूल, रज्जु और तन्मय) प्रधान गुण सप्रतिष्ठित हैं 7. (व्या० में०) मूलचातु या शब्द (प्रातिपदिक) जिसमें लकार और कारकों के पदमय समाए जाते हैं 8. आदर्श, नमूना, मानक (विशेषतः कर्मकाण्ड की पुस्तकों में) 9. स्त्री 10. सृष्टि रचना में बरमाया की मूल इच्छा (इसी को 'भाव' या घटीकृता कहते हैं) भृगु० १। १० 11 स्त्री या पुरुष की अन्तर्निहित, बोधि, निष्कृ 12. माता, (व० व०) 1 राजा के मन्त्री, मन्त्रिपरि-षद्, अन्त्यालय—रघु० १२१३, पंच० १४८, १०१ 2 (राजा की) प्रजा—प्रवर्तनी प्रकृतिरुताय पाणिनः—श० ७१२५, नृपतिः प्रकृतिरौचित्यम् रघु० ८। १८, १० 3. राज्य के संविधानी मान तत्त्व का अग अवर्ति १. राजा २. मन्त्री ३. मित्रराष्ट्र ४. को प ५. सेना, ६. प्रवेश ७. मङ्ग आदि ८. नगरपालिका या नियम (बहु भी कभी-कभी उपर्युक्त शब्दों के साथ

कोय विना जाता है) —स्वाभ्यन्तरात्मिकोद्योग-
तुल्यमानि च —अथ ४ अनेक शब्द जो ब्रह्म के सम्य
विचारमान होते हैं (पूरे विवरण के लिए २०. अनु०
७।१५५, और १५७ पर अनु०) ५ साठ प्रमाण
तत्त्व जिनसे शांखशास्त्रियों के अनुसार शब्दों के वस्तु
उत्पन्न होती हैं, वे ० सां० कां० १ ६ दृष्टि के पांच
प्रमाण तत्त्व, पांच महाभूत बर्तित पृथ्वी, जल, अग्नि,
वायु और आकाश। सम० ६६: राजा वा कृष्ण-
शिकारी, —कृष्ण (वि०) स्वाभाव से सुलभ, या विवेकहीन
—मेघ० ५, —तरल (वि०) चलन स्वाभाव का,
असक्त, बेवैक— अथ २७, —सुकः मन्त्री, (राज्य का)
कार्य विवेकिक—मेघ० ६, लोकात् समस्त प्रदेश वा
राजधानी अनु० १।२, क्वः प्रकृति में क्या जाना
विषय का विवरण निष्ठ (वि०) अन्तर्गत, सहज,
सैद्धांतिक अनु० १।५२, सुख्य (वि०) स्वाभाव से
प्रिय, अधिकार, स्व (वि०) १ प्राकृतिक अवस्था
में होने वाला, स्वाभाविक, अक्षयी २ अंतर्हित, सहज,
प्रकृति के अनुकूल अनु० ८।२१ ३ स्वस्व, तत्पुज्य
४ जिसने आराध्य प्राप्त कर लिया हो ५ स्वस्व,
आत्महीन ६ विवरण, सेवा।

प्रकृष्ट (मू० क० क०) [प्र + कृ + क्त] १ बीजकर
निकाला हुआ २ मुदीर्ष, मंदा, अतिविस्तृत ३ कर्त्त-
व्य पुत्र्य, खेपट प्रमत्त, वीरवशाकी ४ मुख्य प्रधान
५ विज्ञान, प्रज्ञान।

प्रकृत्य (मू० क० क०) [प्र + कृत्य + क्त] तैयार किया
हुआ, मन्त्रीपुत्र, व्यवस्थित।

प्रकोपः [प्र + कुप् + घञ्] मर्दाव, वदन्।

प्रकोष्ठः [प्र + कुप् + क्त] १ कोठरी में नीचे की मुखा,
बट्टे से ऊपर का हाव—आमप्रकोष्ठानि हेमवैच—कु०
१।४१, कनककलशप्रसन्निकप्रकोष्ठ मेघ० २,
अनु० १।५९ म० १।६ २ फाटक के निष्ठ का
कमरा भूमा० १ ३ घर का अंगन (घरों और
मकानों में बिता हुआ) बीकोर वा बलीकार अंगन
—इय प्रकोष्ठ प्रसन्निकार्थ—आर्य—मुक्त० ४।

प्रकोष्ठकः [प्रकोष्ठ + क्त] फाटक क पास का कमरा
—नसुविनप्रसन्निकप्रकोष्ठक नद प्रसन्निकप्रसन्निक प्रको
ठके कु० १।५६।

प्रकोरः [प्र + कृ + क्त] १ हाथी वा घोड़े की रखा
के लिए कवच २ कुला ३ लकड़र।

प्रकः [प्र + कृ + घञ्] १ पंच, करम २ दूरी मापने
का यंत्र, पंच का अन्तर (अनपच १० इच ३ बारम
बुक ४ प्रमथन धर्म या० ५।७४ ५ प्रकृत्य दान
६ प्रकाल, अवसर ७ नियमितता, कम प्रकाश
८ माया, अनुपात, माप। म० १० अथ नियमितता
और अनियमितता का अभाव, कम का ११ जाना, रचना

का एक दोष (काव्य० ७ में वर्णित 'मन-प्रकला'
वही है, समिति वा समक्यता का अभाव चाहे वह
अविश्वसित में हो चाहे एकता में—माये निश्चय
नियतनिबोधवस्तु को हट निश्चय बना —वह अवि-
श्वसित की समक्यता के अभाव का उदाहरण है, वही
'मता निश्चय' में अविश्वसित की अनिश्चितता को
जात कर दिया है, निश्चय निश्चय वस्तुनिश्चि-
ततास्वरूप पस्वने—रचना की अनिश्चितता का
उदाहरण है वही कविता की समक्यता को स्थिर
रखने के लिए कर्मवाच्य के अभाव कर्मवाच्य रचना
की आवश्यकता है उसी संघटि को बरकरार 'निश्चय'
रचना बुकबरा मतास्वरूप निश्चय बदने से होय का
परिहार हो जाता है—अधिक विवरण के लिए २०
काव्य ७ 'मन प्रकला' के नीचे।

प्रकल (मू० क० क०) [प्र + कृ + क्त] १ बारम
किया गया, बुक किया गया २ का, प्रकल ३ प्रकृत,
विचारकल ४ कर्मपुर।

प्रकलित [प्र + कृ + क्त + क्त] १ पीछे, प्रकाश, पट्टित
२ कर्मकल, लंकार ३ उचितकल का बारम करना
४ उच्च पर, अनुकूल ५ (किन्ती पुस्तक का) एक
अध्याय या अनुवाच—कथा उपाधिप्रकाश ६ (आ०
में) व्युत्पत्तिजन्य कल्पितनीच ७ अधिकार।

प्रकीरः [प्र + कीर + क्त] कीरा, बमोरकम, लंक का
बायोव-बमोर।

प्रकीर्य (मू० क० क०) [प्र + किर + क्त] १ तर,
नदी वाला बीला २ पूत ३ दवा से पसीया हुआ।

प्रकवः, प्रकवाः [प्र + कृ + क्त, प्र + कृ + क्त] बीला
की अन्तका।

प्रकव [प्र + कृ + क्त] नाक, बरवादी।

प्रकर २० प्रकर।

प्रकरणम् [प्र + कृ + क्त] कम २ वर्णित होना,
रिखा।

प्रकाकणम् [प्र + कृ + क्त + क्त] १ घोला, बो
हालना—अनु० १।४८ २ अंगना नाक करना, स्वच्छ
करना ३ बोने के लिए बोनी।

प्रकाशित (मू० क० क०) [प्र + कृ + क्त + क्त]
१ बोया गया, बोना गया २ स्वच्छ किया गया
३ जिसने प्रकाशित कर दिया है।

प्रकाश (मू० क० क०) [प्र + कृ + क्त] १ केक
या, हाका गया, उकासा गया २ उकासा गया—मा०
५।२२ ३ निरका हुआ ४ बीच में हाका गया,
नकली या भाग्य गया प्रतिपत्तिज प्रकोक' में।

प्रकीच [मू० क० क०] [प्र + कृ + क्त] १ बुझा
हुआ दूरेवा होने वाला २ नष्ट किया हुआ ३ जिसने
प्रायश्चित्त कर लिया है ४ मुक्त, अक्षय।

प्रयुक्त (यू० क० ह०) [प्र + युक् + क्त] 1. युक्त हुआ 2. भारपात्र सेवा हुआ 3 उत्तेजित किया हुआ । प्रयोज [प्र + भिज् + क्त] 1 आगे केकना उभारना केकना डालना 3 बसेरना 4 छोट घसाना बीच में मिलावना 5 गाड़ी का बक्क 6 किसी व्यापारिक वृत्त के प्रत्येक सदस्य द्वारा जमा की गई धनराशि । प्रयोजनम् [प्र + भिज् + क्त + ल्यट्] केकना डालना उछालना ।

प्रयोजनम् [प्र + भिज् + ल्यट्] उपेक्षा, लोभ ।

प्रयोजनः [प्र + भिज् + ल्यट्] लोभ का तीर 2 हल्का गुल्मा हुडबुडी ।

प्रयोजित (वि०) [प्र + भिज् + क्त] मुक्करी गीकार से पूर्ण कोलाहलमय ।

प्रवर (वि०) [प्रवृत् + क्त + प्र० स०] 1 अन्योन्य वारम यथा प्रवर्तकण 2 नेत्र मधुसूक्त तीक्ष्ण 3 अन्यत्र कठोर, रुखा ४ दे० 'प्रवर्तक' ।

प्रवृत्त (वि०) [प्र + क्त्वा + क्त] 1 साक्त प्रत्यक्ष स्पष्ट 2 (के समान) दिलाई देने वाला मिलना-जुलना (समास के अन्त में प्रयुक्त) अमृत सजगत् आदि ।

प्रवृत्ता [प्र + क्त्वा + क्त + टाप्] 1 प्रत्यक्षसेवना दुरयता 2 विभूति, वरा प्रमिष्टि —यवमन्त्रमप्रवृत्त मन्त्र यव पुरीमिमान् — रामा ३ उल्लाङ्घना 4 समकल्पना समा नना (समास में) याज्ञ० ३।१० ।

प्रवृत्त (यू० क० ह०) [प्र + क्त्वा + क्त] 1 प्रवृत्त, प्रमिष्टि, विभूत माना हुआ 2 पहले से मोल लिया हुआ, पूर्वव्याप्तिकार केवल पर अभ्यर्षित 3 वृत्त प्रमत्त । मन्त्र० — वस्तुक्त (वि०) प्रमिष्टि (यन्त्रा नाना) ।

प्रवृत्ति (स्त्री) [प्र + क्त्वा + क्त] 1 कीर्ति विभूति, प्रमिष्टि 2 प्रवृत्ता स्मृति ।

प्रवृत्तः [प्रवृत् + क्त + यम्य प्रा० ब०] कोहनी में ऊपर कचे तक की मूला ।

प्रवृत्ती [प्रवृत् + क्त] (नगर का) परकोटा, बाहर की दीवार ।

प्रवृत्त (यू० क० ह०) [प्र + क्त + क्त] 1 आगे गया हुआ 2 पृथक्, अलग । सम० काय, कायुक्त (वि०) जन्मस्थी, बूटने पर मूरी हुई गंगा वाला ।

प्रवृत्तः [प्र + क्त + क्त] प्रेम की आराधना में प्रथम प्रति, प्रेम की प्रथम अभिव्यक्ति ।

प्रवृत्तम् [प्र + क्त + ल्यट्] 1 आगे बढ़ना, प्रगति 2 प्रेम की आराधना में पहला कदम, दे० ऊ० 'प्रगम' ।

प्रवृत्तम् [प्र + क्त + ल्यट्] बहाइना, बिबाहना करवाना ।

प्रवृत्त (वि०) [प्र + क्त + क्त] 1 लाहरी, प्ररोधा करने वाला 2 हिमाली, बहावुर, निक्षक, उल्लाही, लाहरी, — रघु० २।११ 3 लाहरी, बाक्यद्वय — रघु०

१।२० 4 हाजिर जबाब, मुस्तैद 5 बुद्ध सकलनी, ऊर्ध्वस्त्री 6 (आय की दृष्टि से) परिपक्व कृ० १। ५।१ 7 परिपक्व विकसित, पूरा बड़ा हुआ बचवान् प्रगल्भवाक् कृ० ५।३० (प्रौढवाक्) मा० १।००

उत्तर० ६।३१ 8 कुशल का० १२ 9 जेबडक, उद्धत बगडो उपकारणीय 10 निर्लज्ज डीठ रघु० १।३।२ 11 गौरवशाली प्रमुख स्त्री 1 माइजी स्त्री 2 कर्षा, झगडाल स्त्री ३ उद्धत या प्रौढ़ स्त्री काव्यनाटक को नायिका में मंगक (मङ्ग प्रकार के लाङ्ग्यार व बूसा बागी में धनुर् ऊँचे दर्जे के व्यंज हार से युक्त शास्त्रीयना-सम्पन्न प्रौढ़ आयु की तथा अपने पति पर शासन करने वाली सा० द० १०११ १५५ मयवी उदाहरण) ।

प्रगल्भ (यू० क० ह०) [प्र + गल्भ + क्त] 1 बहाया हुआ पर किया हुआ भिलाया हुआ 2 अर्ध प्र परिपक्व तीक्ष्ण 3 दुष्ट प्रवृत्त 1 कठोर बर्तन डम 1 कर्मान् 2 ताम्या शारीरिक कर्मा डम (प्रत्य०) 1 अत्यधिक प्रयत्न 2 दुष्टाशुक्ल ।

प्रगल्भ (यू०) [प्र + गल्भ + क्त] उत्तम मान वाता ।

प्रगल्भ (वि०) [प्रगल्भ + क्त] यत्र प्र० क० ह० । 1 मोक्षा ईशानेश्वर वरणा (आप० गा० मे) बहू महाकायपुत्रायणीय व्यङ्ग्य म० १।१० 2 मुद्रासम्पन्न उत्तम गुणी से युक्त भद्रव्याप्यगुणा व करोगमो ननुमन् ननुमर्त्तव्यो रघु० १।३९ 3 (क) योग्य उपयुक्त गुणी मा० १।१६ (ख) प्रवीण १।४५ 4 कुशल वरुण (प्रवृत्ती कु 1 मोक्षा वरणा, कर्म से रक्षता व्यङ्ग्य वरणा 2 विक्रान्त वरणा 3 पालनपोषण करना परवर्तन करना) ।

प्रवृत्त (वि०) [प्र + क्त + क्त] 1 मोक्षा या समान किया हुआ 2 विक्रान्त किया हुआ ।

प्रवृत्त (यू० क० ह०) [प्र + क्त + क्त] 1 वामा हुआ समाना हुआ 2 प्राप्त, स्वीकृत 3 मधि के नियमा की अधीनता का अभाव दे० नीचे प्रगल्भ ।

प्रवृत्तम् [प्र + क्त + क्त] मधि के नियमा में युक्त स्वर जो स्वतंत्र रूप से बोला या लिखा जाय ईहद्वय द्विवचन प्रगल्भम् या० १।१।११ ।

प्रवृत्त (अव्य०) [प्रकृतेन गीयतेऽन प्र + गे के] ओर होत ही पी पटने ही इव प्रकाशमिवाविरातो प्रमे गवा नृपणामव तीरगद्वय बहि वि० १।२। साम्य व्यापारप्रमे तथा मयु० ६।९, ४।६५ । सम० सम (वि०) प्राप्त काष्ठ अनुष्ठेय कर्म निष्ठ, सम (वि०) जो दिन निकट जाने पर भी सोया पड़ा है ।

प्रवृत्तम् [प्र + क्त + ल्यट्] रक्षण, संभारण ।

प्रवृत्तम् [प्र + क्त + ल्यट्] लब्धी करना, भूषण, बुझना ।

प्रबोधनम् [प्र + बुध् + ल्युट्] 1 होकर करवाने बढ़ाना, बलपूर्वक बसाना, उकसाना 2 भरकाना, जमा देना
3 आदेश देना, निर्देश देना 4 नियम, विधि, समावेश।
प्रबोधि (बु० क० ड०) [प्र + बुध् + क्त] 1 बलपूर्वक बढ़ाया हुआ, उकसाया हुआ 2 भरकाया हुआ
3 निर्देशित, आदिष्ट, नियत किया हुआ—मनु० २।१९१ 4 बोधा गया, प्रेषित 5 निर्णीत, निर्धारित।
प्रबु (बुधा० पर०—पृच्छति, पृष्ट-प्रेर० प्रच्छयति, कर्म० पृच्छते इच्छा० पिपृच्छति, पूछना, सहाय करना, प्रश्न करना, पूछताछ करना (हिकर्मक) पप्रच्छ रामा रमणीमिनामम्—रघु० १।५२७, अट्टि० १।८, रघु० ३।५, अथ० २।७, बाह्यार्थं ब्रूयन् पृच्छन्—मनु० २।१२७ 2 ईदना, तकाछ करना, अनु—, पूछताछ करना, इधर उधर के प्रश्न करना, आ—, पूछना, प्रश्न करना 2 शिन् करना 3 बिना होना (बा०) आपृच्छन् प्रियतमस्य युगमस्मिन् सैन्यम्—मभ० १२, रघु० ८।४९, १२।१०३, गरि—, पूछना, प्रश्न करना, पूछताछ करना।

प्रच्छकः [प्र + च्छ + लिप् + च] आचरण, आच्छादन लपेटना, चादर, बिछावन बिस्तरे की चादर—रघु० ११।२२। सम०—कः बिछावन, चादर।

प्रच्छन्, ना [प्र + च्छ + ल्युट्] पूछताछ, परिपृच्छा।

प्रच्छन् (बु० क० ड०) [प्र + च्छ + क्त] 1 ढका हुआ, बरखाछावित, बरस रहने हुए, लपेटा हुआ, लिखाके में बन्द किया हुआ 2 निजी, गोपनीय—मनु० २।५४ 3 छिपा हुआ, गुप्त (दे० प्रपूर्वक क्त),—कम् 1 निजी द्वार 2 लरोखा, जाली छिद्रकी,—कम् (अभ्य०) गुप्त क्व मे वृषबाप। लव०—लवकरः गुप्तकर यो योगी करता हुआ दिखाई न दे, परन्तु चारी करे अवश्य।

प्रच्छन्वम् [प्र + छ्व + ल्युट्] 1 बहन 2 बाहर निकालना, उठाना 3 उलटी जाने वाली (रवा)।

प्रच्छन्विका [प्र + छ्व + ल्युट् + टाप्, इत्थम्] उलटी होना, री जाना।

प्रच्छन्वम् [प्र + छ्व + लिप् + ल्युट्] 1 ढकना, छिपाना 2 उत्तरीय, बेलनी। सम०—कः लपेटना, ढकना, चादर।

प्रच्छन्वि (बु० क० ड०) [प्र + छ्व + लिप् + क्त] 1 ढका हुआ, लपेटा हुआ, बरखाछावित आदि 2 गुप्त, छिपा हुआ।

प्रच्छानम् [प्रच्छन्ना जाता वच] बचन जाना, जायादार स्थान—प्रच्छानमुत्तममिश्रा दिवहा परिवाचरमणीया—स० १।३ मासि० ३।

प्रच्छिन्न (वि०) [प्र + च्छ + क्त] चुटका, निर्जल।

प्रच्छन् [प्र + च्छ + ल्युट्] 1 घात, बर्बादी 2 नुसार, प्रगति, विकास 3 बापसी।

प्रच्छन्वम् [प्र + च्छ + ल्युट्] 1 बिना होना, नुकाना, बापसी 2 हानि, बचना 3 रिलना, भरना।

प्रच्छन् (बु० क० ड०) [प्र + च्छ + क्त] 1 दूट कर बिना हुआ, लका हुआ 2 भटका हुआ, बिचलित 3 स्थान छष्ट, विस्थापित, पतित 4 कहेदा हुआ, भगाया हुआ।

प्रच्छुति (स्त्री०) [प्र + च्छ + क्त] 1 बिना होना, बापसी, 2 हानि, बचना जघनन—निम्न प्रच्छुति ब्रह्मा जघनति स्वर्गे न मोक्षमहे—सा० ४।२० 3 घात, बर्बादी।

प्रक्षः [प्रविष्य आवासां जायते जन् + च] पति, स्त्रीकी।

प्रक्षन् [प्र + क्ष + क्त] गर्भाधान करना, पैदा करना, जन्म देना, उत्पन्न—मनु० ३।११, १।११ 2 पशु (नर पशु का बाधा पशु से समन) में गर्भाधान करना 3 उत्पन्न करना,—पैदा करना—मनु० १।११।

प्रक्षन्वम् [प्र + च्छ + ल्युट्] 1 प्रक्षानन, बनन सोमि में वीर्य-समेक्षण 2 उत्पादन, जन्म, प्रसव 3 वीर्य 4 पुत्र का स्त्री की जननेन्द्रिय (सिग या मन) 5 सन्तान।

प्रक्षिका [प्र + क्ष + लिप् + ल्युट् + टाप्, इत्थम्] माता।

प्रक्षुक् [प्र + क्ष + क्त] खरीद, कावा।

प्रक्षत् [प्र + क्ष + क्त] आत्मकरन, वपसप, असाव धान या अन्नकाय कष्ट (श्रेयी का अग्निवादन करने में प्रयुक्त) अक्षुण्णमिदमुवा मोक्षधीरजमुद्रवा, प्रियस्य कोसलोद्धार प्रक्षत्प स तु कथ्यते।

प्रक्षयनम् [प्र + क्ष + ल्युट्] 1 बातचीत करना, बोझना 2 आत्मकरन, वपसप।

प्रक्षिन् (वि०) स्त्री०—नी [प्र + क्ष + इति] बाध, दुतगामी, वेदकम्—यु० आधुगामी दूत हरकार।

प्रक्षा [प्र + क्ष + च + टाप्] (बहु०) समान के जन्म में बढक कर 'प्रक्षत्' हो जाता है जब कि प्रथम पद न तु या क्त हो, दे० रघु० ८।३२ (८।२९)।

प्रक्षुजन, प्रक्षुति, वचन, प्रक्षोपति, जन्म, उत्पादन 2 सन्तान, प्रजा, क्षति बन्धे, क्षिणाद्यक,—प्रक्षार्थ-प्रतक्षिणां—रघु० २।७३ प्रक्षार्थं नृहनेक्षिणां—१।७, अनु० ३।४२, वाङ् १।२१९, इत्थी प्रकार ब्रह्म प्रजा, सर्वप्रजा आदि 3 लोभ, अनुप्य मनसु लज्जा प्रजा—रघु० ४।३, प्रजा प्रजा स्वा इव तक्षिणां स० ५।५, (बहु० प्रजा का समान) कर्ष नी है) रघु० १।७, २।७३, अनु० १।८ 4 वीर्य। सम० अंतकः युष्म का वैदता यम

—रघु० ८।४५,—ईदु (वि०) समान की इच्छा भावा, ईश्वर, ईश्वर अनुष्म का राजा, प्रभु—रघु० ३।६८ ५।३२, १।८।२९,—अपति,—अपत्यम्

प्रक्षु (बु० क० ड०) [प्र + क्ष + क्त] 1 दूट कर बिना हुआ, लका हुआ 2 भटका हुआ, बिचलित 3 स्थान छष्ट, विस्थापित, पतित 4 कहेदा हुआ, भगाया हुआ।

प्रक्षुति (स्त्री०) [प्र + च्छ + क्त] 1 बिना होना, बापसी, 2 हानि, बचना जघनन—निम्न प्रक्षुति ब्रह्मा जघनति स्वर्गे न मोक्षमहे—सा० ४।२० 3 घात, बर्बादी।

प्रक्षः [प्रविष्य आवासां जायते जन् + च] पति, स्त्रीकी।

प्रक्षन् [प्र + क्ष + क्त] गर्भाधान करना, पैदा करना, जन्म देना, उत्पन्न—मनु० ३।११, १।११ 2 पशु (नर पशु का बाधा पशु से समन) में गर्भाधान करना 3 उत्पन्न करना,—पैदा करना—मनु० १।११।

प्रक्षन्वम् [प्र + च्छ + ल्युट्] 1 प्रक्षानन, बनन सोमि में वीर्य-समेक्षण 2 उत्पादन, जन्म, प्रसव 3 वीर्य 4 पुत्र का स्त्री की जननेन्द्रिय (सिग या मन) 5 सन्तान।

प्रक्षिका [प्र + क्ष + लिप् + ल्युट् + टाप्, इत्थम्] माता।

प्रक्षुक् [प्र + क्ष + क्त] खरीद, कावा।

प्रक्षत् [प्र + क्ष + क्त] आत्मकरन, वपसप, असाव धान या अन्नकाय कष्ट (श्रेयी का अग्निवादन करने में प्रयुक्त) अक्षुण्णमिदमुवा मोक्षधीरजमुद्रवा, प्रियस्य कोसलोद्धार प्रक्षत्प स तु कथ्यते।

प्रक्षयनम् [प्र + क्ष + ल्युट्] 1 बातचीत करना, बोझना 2 आत्मकरन, वपसप।

प्रक्षिन् (वि०) स्त्री०—नी [प्र + क्ष + इति] बाध, दुतगामी, वेदकम्—यु० आधुगामी दूत हरकार।

प्रक्षा [प्र + क्ष + च + टाप्] (बहु०) समान के जन्म में बढक कर 'प्रक्षत्' हो जाता है जब कि प्रथम पद न तु या क्त हो, दे० रघु० ८।३२ (८।२९)।

प्रक्षुजन, प्रक्षुति, वचन, प्रक्षोपति, जन्म, उत्पादन 2 सन्तान, प्रजा, क्षति बन्धे, क्षिणाद्यक,—प्रक्षार्थ-प्रतक्षिणां—रघु० २।७३ प्रक्षार्थं नृहनेक्षिणां—१।७, अनु० ३।४२, वाङ् १।२१९, इत्थी प्रकार ब्रह्म प्रजा, सर्वप्रजा आदि 3 लोभ, अनुप्य मनसु लज्जा प्रजा—रघु० ४।३, प्रजा प्रजा स्वा इव तक्षिणां स० ५।५, (बहु० प्रजा का समान) कर्ष नी है) रघु० १।७, २।७३, अनु० १।८ 4 वीर्य। सम० अंतकः युष्म का वैदता यम

—रघु० ८।४५,—ईदु (वि०) समान की इच्छा भावा, ईश्वर, ईश्वर अनुष्म का राजा, प्रभु—रघु० ३।६८ ५।३२, १।८।२९,—अपति,—अपत्यम्

मुच्छ० १ १४५ ६ अनुरोध, प्रार्थना, निवेदन—
तद्गुणनाथानुग नाहसि त्व सर्वधिनो मे प्रणय विह्वलमुम्
रघु० २१२८ विक्रम० ४११३ ७ श्रद्धा भक्ति

८ मोक्ष। समय० अथराध प्रेम या मित्रता के
विरुद्ध अपचार, उन्मुख (वि०) १ प्रम्परा अपना
प्रेम प्रकट करने का उद्यत माध्याम० १३२ पमा-
वेश के कारण अतुर कलह प्रेमी का झगडा हार्थम
या झूठमुठ जा झगडा नाथ-परमाप्रणयल्लाह
प्रयागपरति-मय० (मल्लि नकला या रचित)
कुपित (वि०) प्रेम के कारण कुछ मय० १०५
कोष किमा नायिका का अपन नायक के पीछे भा-
गू का काव नयरा मे मया कोष, प्रकृत्य अनाधिक
प्रेम तीव्र अनुराग भग १ मित्रता का दूट जाना
२ विदनामयात बचनम प्रेमाभिधानि विमुख
(वि०) १ प्रेम से रगाहमय २ मित्रता काम म
अनिच्छक मय० २३ विहृति, विद्यान, नाथना
आदि की। अम्बोजनि न मानना।

प्रणयनम् [प्र + नी + लुट्] १ जाना से जाना २ सहा
करना पहुँचाना ३ पालन करना कार्यावस्था
करना अनुष्ठान करना कु० ६१२ ४ मिलना
अभरबाधन करना ५ निर्णयार्थ देना दण्डाज्ञा देना
परिनिर्णय या पञ्चनिर्णय देना तथा दण्डय प्रणयनम् ।
प्रणयवत् (वि०) [प्रणय + लृट्] १ प्रेम करने वाला
प्रोत्तिकर, स्नेही—रघु० १०१५३ २ स्पष्टकरना, जग
३ अत्यन्त उच्छलित आतुर।

प्रणयिन् (वि०) [प्रणय + इति] १ प्रेम करने वाला
स्नेही, कुशल, अनुरक्त मा० ३१९ २ प्रेम शयन
ध्यान ३ हृत्पुत्र लास्यविन उक्तचित्त ७० ३१३
मेष० ३, रघु० ११५५ ११३३ ४ मुग्धचित्त, धनिक
प० १ मित्र, पत्नी कुशाग्र—कु० १११ २ पति
प्रेमी ३ कुलाञ्जलि, विनम्र निवेदक प्राची स्पर्शान्
मना मृदुता प्रणयिकावैव विक्रम० ४१२५ ११४
४ पुरुष, भक्त कु० ३१६६—जी १ मुग्धो
प्रियतमा रघु० २ मयी, महेती।

प्रणयः [प्र + लृ + अण् शब्दम्] १ पवित्र अक्षर ओम्—
आसीमयीक्षितामाश प्रणयल्लवनामिष—रघु० ११११
मनु० २३३६ कु० २१२, प्रग० ३१२ २ एक प्रकार
का वाद्ययंत्र (शोभ या मुद्रा) ३ विष्णु या राम
पुरुष परमात्मा का विशेषण।

प्रणय (वि०) [प्रमना नायिका यय, यादेश अण्,
नरबन्] लम्बी नाक वाला बड़ी नाक वाला।

प्रणादी [= वमालो, मय ड] अन्तरागमन, अन्त प्रवेशन
माध्याम।

प्रणादः [प्र + लृ + षण्] १ डंभी आवाज, शीकार
अवन २ बहावना, बहाव ३ हिनहिनाता, रेंकना

४ हर्षातिरेक की बलकलध्वनि, बाहवा, क्या कुब
५ छुट्टाई देना ६ कान का विशेष राग (इस राग
म कानो मे अनयनाहो की बनि होती है)।

प्रणाम [प्र + नम् + षण्] १ झुकना नमस्कार करना
नमन या नति २ सादर नमस्कार अभिवादन दण्ड
बन् पणाम प्रणी यथा माध्याम प्रणाम कु०
६१११।

प्रणयक [प्र + नी + कृत्] १ नया नयापति २ पय
प्रवेशक अथवा भुक्ता।

प्रणाय (वि०) [प्र + णा + ण्यन्] १ अर व्याज २ सरा
इमान्दता स्पष्टवादी ३ अपि अतिमिलन—भट्टि०
६६० ४ आवेश प्राप्त विकृत।

प्रणाल, -ला, प्रणालिका [प्र + नल् + णा + लृट्]
हीन प्रणाला = कन + या + लृट् + नल् + णा + लृट्
नाली कुर्वने पूर्ण नयनयम बकबक से पलाता =
उ० म० = गि० ११६४ २ अर सरा अतिच्छल
निर्जमाग।

प्रणाश [प्र + नल् + षण्] १ अशय राति लोप
कि० १४१४ २ मृग विनाश यय १४११।

प्रणाशन (वि०) [प्र + नल् + णिन् + षण्] नष्ट करने
वाला शयन वाता नल् समुच्छलन उन्मूलन
रघु० ३१६०।

प्रणित (वि०) [प्र + णि + क्त] प्रमिता मुद्रन
किया हो।

प्रणिधानम् [प्र + नि + धा + लृट्] १ पयान करना
नियन्त करना व्यवहार अयाज २ महान प्रयत्न
शक्ति ३ धार्मिक मनन आश्रितन—रघु० ११३६
११९ विक्रम० २३४ मय नयन व्यवहार (अधि०
के साथ) ५ अर्थकलपनाप।

प्रणीध [प्र + नि + धा + णि] १ पौरुषा रहन वाला
नाक साध करने वाला २ मृदुतर मेवना ३ वासुध,
अधिया कु० ३१६ रघु० १०१४१ मनु० ७११५३
८११८ ४ दहनुषा, अनुचर ५ दहनाल ध्यान
६ निवेदन अनुरोध, प्रार्थना।

प्रणितार [प्र + नि + लृ + षण्] गहरी ध्वनि।

प्रणयतमम् प्रणयता [प्र + नि + लृ + षण्] १ पयो मे गिरना माध्याम प्रणाम निर्गत रघु०
६१६६ २ अभिवादन, नमस्कार सादर प्रणति
—कु० ३१६१ ६३५, रघु० ३१२५। मय० रत्न
अस्वाभ्या पर उच्चारण किया जाने वाला जाहू
का मय।

प्रणिहित (भु० क० ह०) [प्र + नि + षा + क्त] १ रचना
हुआ, व्यवहृत २ अया किया हुआ ३ फैलावा हुआ,
पसारा हुआ मेष० १०५ ४ वस्तु, समयित, मुगुई
५ एकवर्षित, लचमीन, मुटा हुआ ६ निर्धारित,

निर्दिष्ट 7 सावधान, चौकस 8 बचाव, उपलब्ध 9 भेद लिया हुआ (दे० प्रणि पूर्वक घा) ।
प्रणीत (भू० क० कू०) [प्र + नी + क्त] 1 मानने प्रस्तुत, आगे पेश किया हुआ, उपस्थित 2 बीजा गया, बिदा गया, प्रस्तुत किया गया उपस्थित किया गया 3 लाया गया, कम किया गया 4 कार्यान्वित कार्य में परिणत अनुष्ठित 5 सिखाया गया, नियत किया गया 6 फेंका हुआ भजा गया सेवामुक (दे० प्र पूर्वक नी) । त मर्चा से अविमर्कन का गई यज्ञाग्नि - तम् पकाया हुआ या सवारा हुआ कोई पदार्थ पका चटना अचार अदि ।
प्रस्तुत (भू० क० कू०) [प्र + त् + क्त] प्रसमाहित गया प्रस्ताव किया गया ।
प्रचल (भू० क० कू०) [प्र + च + ल] 1 होकर दूर किया हुआ पीछे रह गया हुआ 2 भगाया हुआ
प्रचूष (भू० क० कू०) [प्र + चू + ष] 1 हँस कर दूर भगाया हुआ 2 गर्निदोर किया हुआ 3 भगाया हुआ 4 झिंसा हुआ बीपला हुआ ।
प्रचोष (भू० क० कू०) [प्र + च + ष] 1 नगा 2 निर्मातृ अष्टा 3 किता मिष्टान्त का उद्धारक व्याख्याता अध्यापक 4 पुरनक का बीररा ।
प्रचोष (वि०) [प्र + च + ष] 1 पथप्रदर्शन किय जाने याय नेत्र देव होने याय जिसली । विनम्र विनीत प्रार्थनागरी 2 कार्यान्वित या निष्पन्न 'कवे जाने योग्य 3 निर्दिष्ट या निश्चर किये जाने याय ।
प्रचोष [प्र + चू + ष] 1 होकरा 2 निदेश देना ।
प्रस्त (भू० क० कू०) [प्र + त् + क्त] 1 बहाया हुआ ठका हुआ 2 फैलाया हुआ पमाया हुआ ।
प्रस्त (स्त्री०) [प्र + त् + क्त] 1 विस्तार, फैलाव प्रसार 2 सता ।
प्रस्त (वि०) (स्त्री०-नी) [प्र + त् + ञ्] पुराना प्राचीन ।
प्रस्त (वि०) (स्त्री०-न्-न्त्री) [प्रकृत तन् पा० म] 1 पलना, नूदन, मुकुमार मेघ० १९ 2 अगलर सीमित, भीडा-प्रस्तुतपमाम्-का० ४३, उत्तर १२०, मेघ० ४१ 3 दुबला पतला कुश 4 मण्य मामूली ।
प्रस्तवन् [प्र + त् + वृत्] गमना, गरम करना ।
प्रस्त (भू० क० कू०) [प्र + त् + क्त] 1 तपाया हुआ 2 गर्म रख 3 सतान, सताया हुआ, पीरित ।
प्रस्त [प्र + त् + ञ्] पार जाना, पार करना या जाना ।
प्रस्तर्क, **प्रस्तर्कणम्** [प्र + तर्क + ञ्, ल्यट्] 1 अफट कल्पना, अनुमान 2 विचारविमर्श ।
प्रस्तवन् [प्रकृत तन् पा० म०] निम्नलोके के मान विभागों से एक-दो पाताल, न खुले हाथ की हुंसी ।

प्रस्ताव [प्र + त् + वञ्] 1 अक्षर तन्-प्रस्ताव-नोदप्रार्थन सकेसे-रघु० २८, सा० ३११ 2 छात्र, नीचे भूमि पर ही फैलने वाला पौधा 3 शाखा-प्रशाखा, शाखा मन्त्रिभाग 4 अनुवर्ति गण या विरगी रोग ।
प्रस्तानि (वि०) [प्रस्तान + इति] 1 फैलाने वाला 2 अक्षर या तन्-वाला, -नी फैलाने वाली मन्त्र ।
प्रपात [प्र + त् + पञ्] 1 ताप, गर्मी-वच० ११०० 2 दोष, दहकती हुई गर्मी कु० २८, ३ आभा उज्ज्वलता 4 मर्चा मान यज्ञ मन्त्रादी० २८ 5 साहस दगावम शौर्य प्रतापमन्त्र भागीद्वय पदस्थानो दिश रघु० ४१५, यहाँ प्रताप का अर्थ गर्मी भी है ६ मक्ति, बल, ऊर्जा 7 उन्मत्ता उन्माद ।
प्रपात (वि०) [प्र + त् + णिच् ल्यट्] 1 गर्माने वाला 2 सताप देने वाला नम् 1 प्रलाना, तपाना गर्माना 2 पर्वत करना सताना दह देना न एक नरक का नाम ।
प्रतापम् (वि०) [प्रताप + मत्, लट्] 1 कानिश्चानी, अजबो 2 तन्मात्री मन्त्रिभाग ताकनवर पु० शिव का विशेषण ।
प्रतार [प्र + त् + णिच् - षञ्] 1 पार ले जाने वाला, 2 घोड़ा, अरसाजी ।
प्रतारक [प्र + त् + णिच् ल्यट्] उग छपरेखी ।
प्रतारणम् [प्र + त् + णिच् ल्यट्] 1 पार ले जाना - घोड़ा दान अना उम कपन या जलसाजी पाख मकरा पाख इदमाको दगाबाजी, पाख यदीच्छति वशीकृतं त्रगदेकन कर्मणा, उपास्यता कवी कल्पना अत्र प्रतारणा, प्रतारणासमर्थस्य विज्ञा कि प्रशानम उद्धृत ।
प्रतारित (वि०) [प्र + त् + णिच् - क्त] छला हुआ, उठा हुआ ।
प्रति (अव्य) [प्र + ति] 1 पातू के पूर्व उपसर्ग के रूप में लग कर निन्दाकर अर्थ है—(क) की आर, को दिशा म (ख) बापम, लौट कर, फिर (ग) के बिना क मुकाबले में विरोध (घ) ऊपर, धूषा (इम उपसर्ग + वृत्त कुछ वातुकी की देखिए) 2 सजापों (कृदन्त से सिद्ध) से पूर्व उपसर्ग के रूप में निन्दाकित अर्थ (क) समानता, समकक्षता, सादृश्य (ख) प्रतिस्पर्धा उपा प्रतिस्पर्ध (प्रतिस्पर्धीवन्ध्या), प्रतिस्पर्ध आदि 3 स्वतन्त्र रूप से सबबबोधक अव्यय के रूप में प्रयुक्त (कथं के साथ) निन्दाकित अर्थ—(क) की आर, की दिशा में, की तरफ-लौट दम्पनी स्वा प्रतिराक्षानी प्रस्थापयामास वसी वसिष्ठ—रघु० २४७, १७५, प्रत्यतिव विषेक—कु० १।

११, वृक्ष प्रतिविद्योतते विद्युत्—विज्ञा०, (ब) के विच्छेद, प्रतिच्छेद, की विपरीत विज्ञा में, सम्मुख—तथा वायव्यप्रति—मनु० ७।१७१, प्रदुष्टप्रति राक्षसेभ्यम्—रामा० वयावय, श्रवणरत्नमेव—रघु० ७।५५, (ग) की तुलना में, सममुख पर, के अनुपात में, जोड़ का लव महत्वाभि प्रति—रघु० २।१८, (घ) निकट, के मातृपात, पात की ओर, में, पर—समासेदुस्ततो नवा भुवनेपुर प्रति—रामा०, नवा प्रति (ङ) के समय, सममय दोगले में—आदित्य स्थोदर प्रति—यहा०, फाल्गुन राव चैत्र का भासो प्रति—मनु० ७।१८२, (च) की ओर से, के पक्ष में, के भाव्य में—वचन दो प्रतिस्थात्—विज्ञा०, हर प्रति हुमाहुम (अवयव)—बोध०, (झ) प्रत्येक में, हरेक में, जलम-जलम (विभाज्यवचक), वर्ष प्रति, प्रतिवर्षम वक्ष प्रति—वाङ्० १।११०, वृक्ष वक्ष प्रति सिचति—विज्ञा०, (ब) के सिचये में, के तवच में के बारे में, विचक, वाकत, विचय में—न हि मे मन्त्रीरिग्या विष्मता प्रति—का० १३२, कन्धोपराग प्रति मु केनापि निमलम्भाति—मुद्रा० १, धर्मप्रति—म० ५, मदीयुक्तयो उक्ते मचरममन प्रति—म० १, कु० ६।२७, ७।८३, वाङ्० १।२१८, रघु० ६।१२, १०।२०, १२।५१, (स) के अनुहार, के सममुख—मां प्रति (वैरी लम्पति में), (ज) के लामने, की उपस्थिति में (ट) क्योंकि, के कारण ४ स्पर्श सवचद्योषक अव्यय के रूप में (अपा० के साथ) इसका अर्थ है, (क) प्रतिनिधि, के स्थान में, के बजाय—प्रकुम्भ कुम्भाप्रति—विज्ञा० जहामे यो मारायनत प्रति—प्रति० ८।८९, अथवा (ल) की एवच में, के बदले—निकेय प्रति यच्छति माधान—विज्ञा०, अथो प्रत्ययत सम्मो—बोध० ३ अव्ययीभाव समास के प्रथम पद के रूप में प्राय इसका अर्थ है, (क) प्रत्येक में या पर तथा प्रतिस-वचनम्—(प्रतिवर्ष), प्रतिवक्ष, प्रवक्ष आदि, (ल) की ओर, की विज्ञा में—प्रस्थानि समामा इत्यने ६ 'प्रति' कभी कभी 'अप्यन्तर्' प्रकट करने के लिए अव्ययीभाव समास के अन्तिम पद के रूप में प्रयुक्त होता है रूपप्रति, साकप्रति (विशे) मिन्नाकिन खवासी में बहु लव साक्ष विनका दूसरा पद किमा के साथ अव्ययहित रूप से नहीं जुड़ा हुआ है, सम्मिलित कर दिए गए हैं, अन्य लव अपने-२ स्थानों पर मिलेंगे। वच०—अक्षरम् (अव्य०) प्रत्येक अक्षर में प्रत्यक्ष स्वेकवचप्रवच वाङ्०—अग्नि (अव्य०) अग्नि की ओर, अक्षम् १. (वरीर का) नीच या छोटा वग—वैदिक कि नाक २ प्रमाण, कन्धाय, अनुवाच ३. प्रत्येक वच ४. अक्ष (अव्य०—अक्ष) १. वरीर के प्रत्येक वच पर—अन्त-अन्तर्मासिध—वीत० १ २

प्रत्येक उपप्रमाण या उपाय के लिए,—अक्षर (वि०) १ सट कर पड़ोस में होने वाला २ उत्तरा-चिकारी के रूप में) निकटतम विद्यमान ३ उत्तरा-वार का, विष्कुल मुद्रा हुआ जीवेत् अधिवचन स ह्यस्य (बहुपत्न्य) प्रत्यनतर मनु० १०।८२, ८। १८५, अनितम् (अव्य०) हवा की ओर, या हवा के विच्छेद—अनीक (वि०) १ विरोधी, विच्छेद विच्छेद २ मुकाबला करने वाला विरोध करने वाला—६(क) गन्ध (—कम्) १ विरोध गन्धता (वप-रीत इय या स्थिति न सकमा प्रत्यनीकेषु स्थानु मय मुरापुरा राम० २ सन्ध की सेवा मय मुरा महे प्वासा प्रत्यनीकमता एवं—महा०, वैजयन्तिता प्रत्य-नीकेषु योषा—भव० ११।३२ (यहा प्रति) का अर्थ अक्षुभा भी है) ३ (अन० जाम्ब) अलकार इसमें एक व्यक्ति उस वच की जो स्वयं वाच्य नहीं हो सकता चोट पड़वाने का प्रयत्न करना है प्रतिपक्षम शक्तेन प्रतिकर्तुं तिरस्त्रिया या मदीयस्य तत्पत्तुर्ध प्रत्यनीक तदुच्यते—काव्य० १० अनुवाचम् प्रति कूल उपसहार—अत (वि०) सतक, सता हुआ साथ लगा हुआ, सीमावर्ती (ल) १ सीमा हर, रघु० ४।२५ २ सीमावर्ती देश विच्छेद प्रवेच्छों द्वारा अधिकृत प्रदेश, 'देश' सीमावर्ती देश, 'कर्म' साथ लगी हुई पहाड़ी—वादा प्रत्यन करना—अमर० अलकारः प्रतिषेध, बदले में अग्नि पशुधाना—साम्ये-प्रत्यपकारेण नोपकारेण दुर्वन—कु० २।६०, अव्यय (अव्य०) प्रतिवर्ष, अधिवचन बदले में दोबारापन, प्रत्यारोप,—अविवचम् (अव्य०) सन्ध की ओर, अक्ष झुटमुट का मूरज, अव्यवचम् (अव्य०) १ प्रत्येक वच में २ प्रत्येक विवेचना के साथ, विचार सहित, अक्षर (वि०) १ निम्न पद का, कथ सम्मानित २ अथम पतिन अत्यन निगम्य अव्ययम् (पु०) गेह अहुम् (अव्य०) प्रतिदिन, हस्तोद्य रोत्र विरि-शम्पन्धार प्रत्यहम् कु० १।६०,—आकार कोष, ध्यान, आवात १ प्रत्याक्षय २ प्रतिक्षया,—आचार उपयुक्त आचरण या व्यवहार, अक्षय्य अक्षेला, अक्षम अक्षम अक्षित झुटमुट का मूरज, आरंभ १ फिर शुरू करना दूसरी बार आरंभ करना २ प्रतिषेध आता १ उम्मीर पूर्ववादीना—मा० १।८ २ विषयात, भरोसा, उत्तरान् प्रभाव, उत्तर का उत्तर,—उत्तर १ कीवा २ उत्तर है मित्रता-वृत्तता पक्षी,—अक्ष (अव्य०) प्रत्येक अक्ष में,—एक (वि०) प्रत्येक, हरेक हर्कोई (अव्य०) कम् १ एक एक कटके, एक वार में एक, अक्षम, अक्षम, अक्षेमा, हर एक में, हर एक को (बहुधा विवेचनार्थक वच के साथ)—विशेष वक्षकारण प्रत्येक व वृत्तों व—रघु०

२।१६६, (बन्धु) भय, कतरा मङ्गलम् केन्द्रज्येष्ठ परिवेश,—अधिरम् (अव्य०) प्रत्येक घर में अलक प्रतिस्पर्धी प्रतिद्वंदी न० १।६३ पातालप्रतिममस्तक आदि मा० ५।२२ बाबा उवाची जादू आलम् (अव्य०) प्रतिमास मासिक विप्रम् गानु बिगेधी मुक्त (वि०) १ मूह के सामने लडा हुआ सामन स्थित प्रतिमुखागत मनु० ८।११ २ निकटवर्ती उम्भिन (अव्य०) नाटक की एक घटना या गौणकथा वस्तु जो नाटक के महान् पौरवर्तन या उच्छेद पर का या ता जल्दी लड़े या जीर भी अधिक देर कर दे० सा० ६० ३५६ और ३११ ३६५ मुहा मूकावले की मोहर मुहूर्तम् (अव्य०) प्रतिक्षण मूर्ति (स्त्री०) प्रतिमा, समानता सूचक आक्रमणकारी हाथियों के मूह का अग्रभा या नेत्रा रण प्रतिरोधी बोझा (सा०) मुह रण में बैठ कर लड़न वाला) —दीर्घनिमप्रतिरूप नय निवेद्य न० ४।१९ राज विराधी राजा राक्षम् (अव्य०) हर रात, रूप (वि०) १ तदनुरूप समान मुकाबल का भाग रखने वाला चेष्टाप्रतिक्रिया मनावानि —ख० १ २ उपयुक्त मूर्ति (बन्धु) विप्र प्रतिमा समानता, कर्मकर्म विप्र प्रतिमा लक्षणम् निगान विहृ, प्रतीक, लक्षण (स्त्री०) लक्षणी मन्त्र मिथी हुई प्रति, लोच (वि०) १ नैसर्गिक रूप व विहृ, व्युत्काल उलटा २ शक्ति विहृ (अपन प्रति से उच्च वर्ण की स्त्री की मलान) ३ विरोधा ४ नीच सुष्ट, अधम ५ वाम (अव्य०) लक्ष) बालों के विरहीत अनाज के विहृ रण विरहीत रूप से, लक्ष (वि०) शक्ति के विरहीत रूप में उत्पन्न अवर्ति अपने प्रति से उच्च वर्ण की स्त्री की समान, लोचकम् उलटा कम विरहीत रूप वस्तु रम् (अव्य०) प्रतिवर्ष हर साल वस्तु हर उगल में, —वर्षम् (अव्य०) हर साल वस्तु (नपु०) १ समान, प्रतिमूर्ति, प्रतिकल्प २ प्रतिदान ३ समानता प्रस्थापन प्रस्था एक अलकार जिसकी परिभाषा सम्यक् से यह की है—प्रतिवस्तुपना तु का सामान्यर द्विरे कंस्य वन वाक्यद्वये स्विन काव्य० १० उदा० तापेन भावते सूर्यं सुगन्धयेन गजने वन्दा० ५। ४८, वस्तु उलटी हुवा (अव्य०—लक्ष) हुवा के विहृ कीनाशुकमिष केना प्रतिवात नीरमान्य —ख० १।३४—वासरम् (अव्य०) प्रतिदिन —विहृम् (अव्य०) १. प्रत्येक पाशा पर २ एक एक पाशा पर, केवम् (अव्य०) प्रत्येक वर में या हरेक वेद के लिए,—विहृ विप्रवनीकारक औषधि —विहृम् मुचकृन् वृक्ष, और विपकी गानु—मुच वाक्यवकारी वेद,—केवम् (अव्य०) हर समय,

प्रत्येक अवसर पर—वेद १ पट्टी का घर, आलपात २ पट्टी—वेदिक (अ०) पट्टीमी, (नपु०) पट्टीमी का घर वेद पट्टीमी वेदम् वेद प्रतिशाध बदला प्रतिहिमा लब्ध १ प्रतिध्वनि, नृच,—सुधा वाक्यन्दराभिर्षी प्रतिवाक्योर्गि हरेनिर्गति नामान विहृम् १।१६ कु० ६।६४ म्पु० २।२२ २ गरज, दहाड जलिन (पु०) झूमू नौ बौद —लक्षकम् (अव्य०) प्रतिवर्ष हर साल लक्ष (वि०) नुप्य जट का लब्ध (वि०) विपयस्त कम में लब्धम् (अव्य०) प्रतिमध्या हर साल सुब सुब १ प्रम्पु का मूह २ छिपकली विरहित उत्तर० २।१६ सेव, गानु को ममा —स्थानम् (अव्य०) हर स्थान में हर स्थान पर जोतम् (नपु०) गारा का अग्रहीत हस्त, हस्तक प्रतिनिधि अधिका श्रमनाग्न प्रतिपुष्ट आश्रिता भूमी स्वामिसेवा समवन पुष्प्योत्पारत वेद न सति प्रतिहृम्का दि० - ३३।

प्रतिक (वि०)। कार्याण १४८न कार्याणस्य प्राया देज । कार्याण क मृत्य का या कार्याण से लप्रीदा हुआ।

प्रतिकार [प्रति + कृ + अप] प्रतिज्ञाध मर्तिपुति ।

प्रतिकर्म (वि०) (स्त्री०) वी [प्रति + कृ + तुव । प्रतिज्ञाध जेन वाला आश्रुति करन वाला —(पु०) विराधी विपक्षी ।

प्रतिकर्मन (नपु०) [प्रति + कृ + मतिन्] १ प्रतिज्ञाध प्रतिज्ञा २ हर्षाना उपचार प्रतिकार ३ शारीरिक भूगार कर्मपत्रा प्रमाधन जरीर-मृदा (अवला) प्रतिकर्म कर्ममयकर्म मयमे हि मनेकपकार हुनम् जि० १।४३ ५।२३ कु० ३।३ विरोध लक्ष्मी ।

प्रतिकर्ष [प्रति + कृ + चञ] १ एकदोकरन मयाजम २ किस्ती प्राप्ति जाने जाने जम्द का) पूर्ण विचार ।

प्रतिकर्ष [प्रति + कृ + चञ] १ लता २ सहायक सदेहर ।

प्रति (सी) कार । प्रति = कृ + चञ, पक्ष उपमर्त्य दीर्घ] १ प्रतिमाध पुरस्कार, प्रतिदान २ बदला प्रतिहिमा, प्रतिकृत ३ प्रतिविधान, मिश्राण, राक-यम उपचार इलाज वा चिकित्सा—विचार लनु प्रमाधनी-आवताज्जार्थ प्रतीकारस्य व० ३, प्रती-कारो व्याध मुक्तिमिति विप्रवर्तमान जन—अर्ध० ३। ९० ४ विरोध । मम०—कर्मन् (नपु०) औषादीदार काना मुपार करना, विचालम् इलाज करना, चिकित्सा करना—प्रतिकार्यैवमानमाधुय नति सेये त्रि कलाय कल्पने म्पु० ८।१० ।

प्रति (सी) कार । प्रति + कृ + चञ, पक्ष उपमर्त्य दीर्घ] १. पराजय २. दुष्टि, वर्धन, वापुष—(वाच-

प्रतिबोधनम् [प्रति + बोध् + क्युट्] पुनर्जीवन, पुन
सजीवता ।

प्रतिज्ञा [प्रति, ज्ञा + ज्ञञ् + टाप्] 1 मानना, अंगीकार
करना 2 वन, वचन, वादा, औपचारिक बोधना
—ईवालीयं प्रतिज्ञा मुद्रा० ४।१२ तीर्थी जवनैव
मिलतुमुत्तरा नदीं प्रतिज्ञाभिध तां गरीयसीम् दि०
१२।३६ 3 उक्ति दृढोक्ति बाणना प्रवचन
4 (न्या० में) परम्परापना सवाक्य पचागी अनुमान
का प्रथम अंग दे० 'न्याय' के अन्तर्गत (पर्वतो
वत्प्रमाणं) सामान्य उदाहरण है) 5 अभियोग
जारीपत्र । सम० पत्रम् वचनम् लिखित सविदापत्र
—अयं प्रतिज्ञा का तोड़ देना, बिरोध वचन के विरुद्ध
जाचरच करना विवाहित (वि०) जिसकी सगाई हो
गई हो, —सम्प्राप्त 1 वचन भंग करना 2 (न्या० में)
मूल प्रमाण का त्याग कर देना (इसी अर्थ में 'प्रतिज्ञा
हानि' शब्द भी प्रयुक्त होता है) ।

प्रतिज्ञास (भू० क० कृ०) [प्रति + ज्ञा + क्] 1 उच्चापित
उक्ता, दृष्टा पुस्तक कवित 2 वचनबद्ध महमत
3 माना हुआ अंगीकृत सम् वचन वादा ।

प्रतिज्ञानम् [प्रति + ज्ञा + क्युट्] 1 दृढोक्ति पकचन
2 करार, वादा 3 मानना स्वीकार करना ।

प्रतिज्ञार [प्रति + ज्ञा + अर्] डाढ़ बने बाधा, सम्प्राप्त या
साधिका ।

प्रतिज्ञाली [प्रतिज्ञा लालम् — प्रा० म० कोप्] (दरबार
की) कुली वाली ।

प्रतिज्ञासम् [प्रति + दुष् + क्युट्] देहना प्रवचन करना ।

प्रतिज्ञानम् [प्रति + दा + क्युट्] 1 पकटाना प्रवचन बाधिम
देना, (बिरोध आदि की) पुनर्गति 2 विनियम,
वस्तुना की अद्वयवदलो ।

प्रतिज्ञारणम् [प्रति + दु + क्युट्] 1 लडाई युद्ध
2 फाटना ।

प्रतिविधम् (पु०) [प्रति + दिव् + कानम्] 1 दिन 2 मृग ।

प्रतिवृष्ट (भू० क० कृ०) [प्रति + दृश् + क्त] 1 देखा
हुआ 2 दृष्टि बोधक दृश्यमान ।

प्रतिवाचनम् [प्रति + वाच + क्युट्] वाचा वचनना प्रमाण
करना प्राक्मण्य धारणा ।

प्रतिध्यायि, प्रतिध्यायः [प्रति + ध्यान् + इ धडा वा,
वृज्, प्रतिध्यानम्]

प्रतिध्यास (भ० क० कृ०) [प्रति + ध्याय + क्त] पछाड़
कर नीचे गिराया हुआ, लबाड़ा, विपन्न ।

प्रतिध्यानम् [प्रा० + ध्यन् + क्युट्] 1 बचाई देना, स्वायत्त
करना 2 धर्मवाद देना ।

प्रतिध्यायः [प्रति + ध्य + क्त] वृज्, प्रतिध्यायि ।

प्रती (स्त्री) वाह्यः [प्रति + गृह् + क्त], पक्षे उपलब्धन
दीर्घः] अडा, पडाका ।

प्रतिविधि [प्रति + नि + क् + क्] 1 स्थानापन्न, एवजी,
बह्म ग्यानि जो किसी दूसरे के बदले काम पर लगाया
जाय साधनवर्तमानिधिनं वधेना रघु० ११।१३,
१।८१ ४।५८ ५।६३ ९।६० 2 सहायक, प्रतिधि
3 स्थानापति 4 आमिन 5 प्रतिभा समानता, चित्र ।

प्रतिविधय [प्रा० स०] साधन्य निवध ।

प्रतिनिधित (भू० क० कृ०) [प्रति + नि + क् + क्त]
1 पराजित परास्त 2 निराहुत निरस्त ।

प्रतिनिधय (वि०) [प्रति + नि + क् + क्त] 1 जो
पहला कहा हुआ होने पर भी फिर दोहराया जाय
जिससे कि लम्बवर्ती और कुछ भी फिर दोहराया जाय
जिससे कि लम्बवर्ती और कुछ भी वह 'देवा जाय
तु० काव्य० ७ में दिय गय उदाहरण की उक्ति
सविता नामस्तान्म तद्वान्मगति च (यही नाम
शब्द की पुनर्गतिन यह बोलान क् लक्ष्मी की गई कि
मूर्ध्म लाल' हो निबलना है लाल' हो छपता है)

प्रतिनिधयतम् [प्रति नि + यन् लिच् + क्युट्] प्रति
साध प्रतिनिधना ।

प्रतिनिधय (वि०) [प्रति + नि + विभ् + क्त] दुराचरी
हठी एकका विहृ । सम० लक्ष्मी दुराचरी एकका
पक्का बुद्ध न तु प्रतिनिधयतम् लक्ष्मीलमाग
यदेत् अर्ध० २।५ ।

प्रतिनिधयतम् [प्रति + नि + क्त + क्युट्] 1 लीगना
बापसी 2 मुद्रना ।

प्रतिनिधय [प्रति + नृ + क्त] पाठ डक्कलना पीछ
हटना ।

प्रतिपत्ति (स्वा०) [प्रति + पद् + क्त] 1 हासिल
करना प्रवाति उपपत्ति बह्मकाकप्रतिपत्ति वचन

भाट 2 प्रत्यक्षज्ञान, वक्षान वचना (व्याप्य) ज्ञान
वाच्यप्रतिपत्तिमे-रघु० १।११ तदात्मद प्रतिपत्तिमे-

म अर्ध० १।१० गुणनाभाट निज कापतिपत्ति
१-११ तदात्मद प्रतिपत्तिमे-रघु० १।११ तदात्मद प्रतिपत्तिमे-

म अर्ध० १।१० गुणनाभाट निज कापतिपत्ति
१-११ तदात्मद प्रतिपत्तिमे-रघु० १।११ तदात्मद प्रतिपत्तिमे-

म अर्ध० १।१० गुणनाभाट निज कापतिपत्ति
१-११ तदात्मद प्रतिपत्तिमे-रघु० १।११ तदात्मद प्रतिपत्तिमे-

म अर्ध० १।१० गुणनाभाट निज कापतिपत्ति
१-११ तदात्मद प्रतिपत्तिमे-रघु० १।११ तदात्मद प्रतिपत्तिमे-

म अर्ध० १।१० गुणनाभाट निज कापतिपत्ति
१-११ तदात्मद प्रतिपत्तिमे-रघु० १।११ तदात्मद प्रतिपत्तिमे-

म अर्ध० १।१० गुणनाभाट निज कापतिपत्ति
१-११ तदात्मद प्रतिपत्तिमे-रघु० १।११ तदात्मद प्रतिपत्तिमे-

म अर्ध० १।१० गुणनाभाट निज कापतिपत्ति
१-११ तदात्मद प्रतिपत्तिमे-रघु० १।११ तदात्मद प्रतिपत्तिमे-

म अर्ध० १।१० गुणनाभाट निज कापतिपत्ति
१-११ तदात्मद प्रतिपत्तिमे-रघु० १।११ तदात्मद प्रतिपत्तिमे-

—सामान्य प्रतिपत्ति पूर्वकविम द्वारेषु बुद्ध्या स्वया
सं० ४।१६, ७।१, १८० १४।२२, १५।१२

12. प्रजापती, उपाय 13. बुद्धि, प्रजा 14. रिवाज, प्रयोग 15. उन्नति, नरकनी, उच्छ्वस्य प्राप्ति 16. यथा, प्रसिद्धि, स्वाति 17. साहस, भरोसा, विश्वास 18. सम्प्रत्यय, प्रमाण । सम० - बल (वि०) कार्य विधि का ज्ञाता, - बलः एक प्रकार का नगाड़ा, - भेदः मतभेद, दृष्टिकोण में अन्तर, विस्तार (वि०) कार्यविधि से परिचित, कुशल, चतुर ।

प्रतिपद् (स्त्री०) [प्रति + पद् + भिच् + क्त] 1 पहुँच, प्रवेश, मार्ग 2. आरम्भ, शुरु 3. प्रजा, बुद्धि 4. शुक्लपक्ष का पहला दिन 5. नगाड़ा । सम० - बल (प्रतिपदा का) नया चाँद, (विशेष रूप से पूज्य) - प्रतिपञ्चन-निर्मममात्मनः १८५, सुवर्ण एक प्रकार का नगाड़ा ।

प्रतिपदा, -वी [प्रतिपद् + टाप्, डीप् वा] शुक्लपक्ष का पहला दिन ।

प्रतिपन्न (भू० क० कृ०) [प्रति + पद् + क्त] 1. उपलब्ध, प्राप्त 2. किया गया, अनुष्ठित, कार्यान्वित, निष्पन्न 3. हाथ में लिया हुआ, आरम्भ 4. बचन दिया हुआ, लगा हुआ ५. सहमत, माना हुआ, स्वीकार किया हुआ 6. ज्ञात सत्यता हुआ 7. बचाव दिया गया, उत्तर दिया गया 8. प्रमाणित, प्रदर्शित (प्रति पूर्वक पद् देखो) ।

प्रतिपादक (वि०) (स्त्री० - विका) [प्रति + पद् + भिच् + क्त] 1. देने वाला, स्वीकार करने वाला, प्रदान करने वाला, समर्पित करने वाला 2. प्रदर्शित करने वाला, सहायता करने वाला, प्रमाणित करने वाला, स्थापित करने वाला 3. तोष-विचार करने वाला व्याख्या करने वाला, सोदाहरण निरूपण करने वाला 4. उन्नत करने वाला, माने बढ़ाने वाला, प्रगति करने वाला 5. प्रभावशाली, निष्पादन करने वाला ।

प्रतिपादकम् [प्रति + पद् + भिच् + क्त] 1. देना, स्वीकार करना, प्रदान करना 2. प्रदर्शन, प्रमाणन, स्थापन 3. अनुशीलन, व्याख्यान विस्तृत, रूप से प्रस्तुत करना, सोदाहरण निरूपण 4. कार्यान्वित, निष्पन्नता, पूर्णता 5. जग्य देना, पैदा करना 6. आवृत्ति, अभ्यास 7. आरम्भ ।

प्रतिपादित (भू० क० कृ०) [प्रति + पद् + भिच् + क्त] 1. दिया हुआ, प्रदत्त, स्वीकृत, प्रस्तुत 2. स्थापित, प्रमाणित, प्रदर्शित 3. व्याख्यात, तबियारण प्रस्तुत 4. उद्घोषित, उन्नत 3 जग्य दिया, पैदा किया ।

प्रतिपादकः [प्रति + पद् + भिच् + क्त] बचाने वाला, सरलक अभिवाचक ।

प्रतिपादकम् [प्रति + पद् + भिच् + क्त] संरक्षण, बचाना

रक्षा करना, पालन करना, अभ्यास करना ।

प्रतिपीडनम् [प्रति + पीद् + भिच् + क्त] अस्वाचार करना, उदात्ता ।

प्रतिपुन्यम् - पुन्या [प्रति + पुन्य + क्त, प्रतिपुन्य + क्त + टाप्] 1. बड़ाबलि क्षति करना, सम्मान प्रदर्शित करना 2. पारस्परिक अभिवादन, शिष्टाचार का विनिमय ।

प्रतिपुन्यम् [प्रति + पुन्य + क्त] 1. पूरा करना, भरना 2 (सुदृढार पिचकारी द्वारा किसी तरह पदार्थ को) अन्तः क्षिप्त करना ।

प्रतिप्रमाण [प्रति + प्र + न्य + क्त] बदल में किया गया अभिवादन ।

प्रतिप्रमाणम् [प्रति + प्र + वा + क्त] 1. बापिल कारना, सोटाग 2. विवाह में देना ।

प्रतिप्रमाणम् [प्रति + प्र + वा + क्त] बापिली, अस्वाकर्षण । प्रति प्रण [प्रति + प्र + न्य + क्त] के करने में पूका गया प्रण 2 उत्तर ।

प्रति प्रसव [प्रति + प्र + वृ + क्त] 1. प्रत्यपवाद, अपवाद का व्यवहार (जहाँ अपवाद के अन्तर्गत उदाहरणों में ही सामान्य नियम का विधान प्रदर्शित किया जाय) तुरकाभ्या कर्तार इत्यस्य प्रतिप्रसवोऽयम् (बाबका-दिनिरूप) शिदा० ।

प्रति प्रहार [प्रति + प्र + वृ + क्त] बदल में प्रहार करना, बम्पट के हटते बम्पट लगाना ।

प्रतिपन्नम् [प्रति + पद् + क्त] पीछे की ओर करना ।

प्रतिपन्न प्रतिपन्नम् [प्रति + पद् + क्त, प्रतिपन्न + क्त] 1. परछाई, प्रतिविम्ब, प्रतिमा, छाया 2. पारि-अभिद, प्रतिदान 3 प्रतिहिमा, प्रतिशोध ।

प्रतिपुन्यम् (वि०) [प्रति + पुन्य + क्त] मिलने वाला, पूरा किया हुआ ।

प्रतिपन्न (भू० क० कृ०) [प्रति + पद् + क्त] 1. बाँचा गया, बैसा हुआ, कसा हुआ 2. जोड़ा गया 3. अवकट, फकावट डाली गई, बाधित 4. टका हुआ, बका हुआ - शि० १।८ 5. सनाबूझ, अधिकार में करने वाला 6. फँसा हुआ, अन्तर्गत 7. दूर रक्का हुआ 8. विराड 9. (रक्षक) में) अनिवार्य तथा अविच्छिन्न रूप से समुक्त (जैसे माय और वीर) ।

प्रतिबंधः [प्रति + बन्ध + क्त] 1. बंधन, बाँधना 2. अव-रोध, फकावट, विघ्न - सप्त प्रतिबंधमनुना - १८० ८।८० । हावी ५।४ 3. विरोध, युकावका 4. बाध-रण, नाकेबंदी, बेरा 5. संबंध ८ (स्त्री० में) अनिवार्य तथा अविच्छिन्न सयोग ।

प्रतिबंधक (वि०) (स्त्री० - विका) [प्रति + बन्ध + क्त] 1. बाधने वाला, अवकट करने वाला, विघ्नकारक 3.

मुकाबला करने वाला, विरोध करने वाला, - क
याला, अंकुर ।

प्रतिबन्धनम् [प्रति + बन्ध् + ल्युट्] 1. बाधना, कसना 2.
कैद, बंधन 3. अवरोध, रुकावट ।

प्रतिबंधि, -धी [प्रतिबन्ध् + ईन्, प्रतिबन्ध् + डीष्] 1.
आरोप 2. ऐसा तर्क जो विरोध पर समान रूप से
प्रभाव डाले (इस अर्थ में प्रतिबन्धी शब्द भी है) ।

प्रतिबाधक (वि०) [प्रति + बाध् + क्तुल्] 1. हटाने वाला
दूर करने वाला 2. रोकने वाला अवरोध करने वाला ।

प्रतिबाधनम् [प्रति + बाध् + ल्युट्] हटाना दूर करना
अस्वीकार करना ।

प्रतिविबन्ध [प्रतिविबन्ध - विबन्ध + ल्युट्] 1. रूखाइ 2.
मुन्ना दुष्टान् पालनार्थं सर्वत्र प्रतिविबन्धनम्
- काव्य० १० ।

प्रतिविधित (वि०) [प्रतिविध विध + क्त] विमर्श
परछाई पड़ो ही दायन में प्रतिविम्बित ।

प्रतिबुद्ध (भू० क० क०) [प्रति + बुध् + क्त] 1. जाना
हुआ जगना हुआ 2. गहिराना हुआ देखा हुआ 3.
प्रसिद्ध विख्यात ।

प्रतिबुद्धि (स्त्री०) [प्रति + बुध् + क्तित्] 1. जागरण
2. विराधी अभिप्राय या हठाना ।

प्रतिबोध [प्रति + बुध् + क्त] 1. जानना जागरण
जगाना जाना तत्परोक्षपुनर्ज्ञान प्रिये - प्रतिबोधेन
विवादमानु मे - रघु० ८/४ अतिविरोधशायिना
- १८ सदा के लिए ली जान वाली कि० ६/१२
१०/४ 2. प्रत्यक्षज्ञान जानकारी 3. अनुदेश शिक्षण
4. तर्क, तर्कना मन शक्ति किमुन या प्रतिबोधवय
४० १/२२ ।

प्रतिबोधनम् [प्रतिबुध् + जिञ् + ल्युट्] 1. जगाना 2.
शिक्षण, अनुदेश ।

प्रतिबोधित (वि०) [प्रति + बुध् + जिञ् + क्त] 1.
जगाना हुआ 2. अनुदिष्ट, शिक्षित ।

प्रतिभा [प्रति + भा + क्त + टाप्] 1. दर्शन दृष्टि 2.
प्रकाश, प्रभा 3. बुद्धि, समझ - कि० १६/१, विक्रम०
१/१८, २३ 4. मेधा प्रकाश बुद्धि, विवाद कल्पना,
प्रकाश नवनवोन्मेषधालिनी प्रतिभा मना 5.
प्रतिबिम्ब, परछाई 6. बुद्ध्या, विद्वत् । लम० - अश्विना
(वि०) 1. मेधावो प्रकाशान् 2. बंधक, माहसी
- बुद्ध (वि०) माहसी, दिनेर, - हानि (स्त्री०)
1. बंधकार 2. प्रकाश या मेधा का अभाव ।

प्रतिभास (भू० क० क०) [प्रति + भा + क्त] 1. उद्गमन
प्रकाशन 2. जान, अन्वेषण, अवगण ।

प्रतिभासनम् [प्रति + भा + ल्युट्] 1. प्रकाश, दीप्ति 2. बुद्धि
या समझ, ज्ञान की चमक हि० १/१९, 3. हादिर
रवाबी, - प्रत्यक्षप्रतिभास - काव्यविरोध प्रतिभासवत्तव

भा० ३/११, वयचोवमुतेन कवचन प्रतिभास्य
प्रतिभासवानस्य शि० १६/१ ।

प्रतिभाक् [प्रति + भा + क्त] तदनुकृप भुज ।

प्रतिभाषा [प्रति + भाष् + टाप्] उत्तर अबाध ।

प्रतिभास [प्रति + भास् + क्त] 1. मन में स्पष्टि होना
चमकना चमकना (अवस्थात्) पवीर्य भाष्य
विचित्र प्रतिभासादेन नाव्य० १० 2. दृष्टि गता
3. अम माया ।

प्रतिभासनम् [प्रति + भास + ल्युट्] दृष्टि दर्शन प्रकाश ।

प्रतिभिम्ब (भू० क० क०) [प्रति + बिम्ब + क्त] 1. पर
विद्ध 2. भटा हुआ गूहा हुआ 3. निमग्न ।

प्रतिभू [प्रति + भू + क्त] 1. अनुमति प्रतिभिन
जमाना 2. भाष्य (प्रत्यक्ष) जाने का प्रमाणपत्र
विद्वत्तम मेधाना १० अतिरुम् इत्यमर
१/१८ २/२ ३/२ ४/२ ५/२

प्रतिभेदनम् [प्रति + भेद + ल्युट्] 1. अन्वेषण
मुसहना 2. काटना खण्डित करना 3.
(भाव) नष्टन जेन ३/१८ अन्वेषण

प्रतिभोग [प्रति + भू + क्त] जगना ।

प्रतिभा [प्रति + भा + क्त] 1. पौर्विक समानता
प्रतिभा अन्वेषण रूप रघु० १/२२ मनकला
मादधर (प्रति) समान में पुरा कृतानुगति
रघु० १/२२ 3/१८ अतिरुम् प्रतिबिम्ब मन्त्रिदु
हउवन्कषाप्रभय प्रतिभास्येन मुद्राप्रमाणेन (भा०
१/१८ ३/१८ ३/१८ १०/१८ १०/१८ भाष्य विराट्
६ होने दावा के बीच का हादिर कि मिर का अन्वेषण
सम० गन (वि०) मिर में अतिरुम् अन्वेषण
विचित्र अन्वेषण अन्वेषण का प्रतिबिम्ब रघु० १/२२
इसी प्रकार प्रतिभेद प्रतिभेद प्रकाश परिवारक
पुकारा मृति का मेदक ।

प्रतिभासनम् [प्रति + भा + ल्युट्] 1. नमूना प्रतिभुति 2.
प्रतिभा मृति 3. सभानता उपमा समकल्पना 4. बोध
5. दांश का मध्यवर्ती मिर का भाग पुरुषप्रतिभासनभास
- शि० ५/३५ 6 परछाई ।

प्रतिभुत्त (वि०) [प्रति + भू + क्त] 1. वाहन किया
हुआ पहना हुआ प्रयुक्त किया हुआ 2. कसा हुआ,
बांधा हुआ प्रकाश हुआ 3. शासन में सम्मिलन
क्षिप्यान्वेष 4. मुक्त छोड़ा हुआ 5. लौटाया हुआ,
वापिस किया हुआ 6. फेंका हुआ उछाला हुआ
(६० प्रतिपूर्वक मूक्) ।

प्रतिबोध, प्रतिबोधनम् [प्रति + बोध् + क्त, ल्युट्
का] मूलन कृतकारा ।

प्रतिबोधनम् [प्रति + बुध् + ल्युट्] 1. शिक्षण करना
2. प्रतिबोध, प्रतिविज्ञा, प्रतिदान - विप्रतिभासनभास
रघु० १/१८ १/१८ 3. मूलन कृतकारा ।

तत्त्वः [प्रति + यत् + क्] 1 प्रयास, उद्योग, चेष्टा
2 नैयारी, परिश्रम द्वारा सम्पादन-शि० ३।५६ 3 पूर्ण
या पूरा करना 4 नया गुण मिश्रान-सर्वा गुणा-
तन्मयत्वं प्रतिपत्त्य-पा० २।३।५३ पर काशिका
5 अभिलाषा, इच्छा 6 विरोध, मुकाबला 7 प्रति-
हिंसा, प्रतिशोध, बदला 8 बदो बनाना, कैद करना
9 अनुरोध ।

तथातन्म [प्रति + यत् + क् + ल्युट्] प्रतिशोध, प्रति-
हिंसा -- जैसा कि 'वैदप्रतिपत्त्यन्त' में ।

तथातना [प्रति + यत् + क् + ल्युट् + टाप्] विज-
प्रतिभा, प्रति शि० ३।३४ ।

तथातनम् [प्रति + यत् + ल्युट्] लौटना प्रत्यागन्त वापसी ।

तथोप [प्रति + यत् + क् + ल्युट्] किसी वस्तु का प्रतिकृ-
पना या बनाना 2 विरोध मुकाबला 3 प्रतिक्रिया,
व्यवहार 4 सहयोग 5 विपत्तिग्रस्त श्रेयधि-
सम्भार ।

तथोपिन् [वि०] [प्रति + यत् + घिन्] 1 विरोध
करने वाला, प्रतिकारक बाधक 2 संबद्ध या नदन्
का किसी वस्तु का प्रतिकृप बनाने वाला प्राय-
न्वागवियक रचनाओं में प्रयुक्त 3 सहयोग करने
वाला -- (पु०) 1. विरोधी, विरुद्धी, शत्रु 2 सहयोग
प्रतियोगित्व-विक्रम० १।१।३ 2 प्रतिक्रिया, जोड़ का ।

तथोद् [पु०] प्रतिशोधः [प्रति + यत् + क् + घञ्,
घञ्] शत्रु, विपक्षी ।

तिरस्कार, -रक्षा [प्रति + रस् + ल्युट्, अह् + टाप् वा]
बचाव, संभारण, रक्षा ।

तिरस्त्रः [प्रति + रस् + घञ्] काष, रोष ।

तिरस्त्रः [प्रति + रस् + अह्] 1 कालट, अगड 2 गृह
प्रतिपक्षिनि ।

तिरस्त्र (भू० क० कृ०) [प्रति + रस् + क्त] 1 अवरुद्ध
बाधित, बिज्जयकृत 2 रुका हुआ, अवरुद्ध 3 क्षति-
युक्त 4 विकलौक्य 5 केष्टित, घेरा हुआ हुआ ।

तिरोधः [प्रति + रस् + घञ्] 1 अटकाव, रुकावट
विज्ज 2 घेरा, नाकेबंदी 3 विपक्षी 4 छिपाना
5 घेरी, हकौती 6 निन्दा, घृणा ।

तिरोधित्वा, तिरिरोधित्वा [पु०] [प्रति + रस् + क्त, ल्युट्,
ल्युट्] 1 विपक्षी 2 लूटेरा, चोर - मात्स्य०
५।१० 3 रुकावट ।

तिरोधनम् [प्रति + रस् + ल्युट्] विरोध करना, रुकावट
डालना ।

तिरोधः [प्रति + ल्युट् + घञ्] 1 हासिल करना,
प्राप्त करना, ग्रहण करना 2 निन्दा, घाली, जरी-
कोटी (घुमाना) ।

तिरोधः [प्रति + ल्युट् + घञ्] वापिस लेना, ग्रहण
करना, हासिल करना ।

प्रतिबन्धनम्, प्रतिबन्धम् [ल्युट्] प्रतिबन्ध (स्त्री०) प्रति-
बाधक [प्रति + बन्ध् + ल्युट्, बन्ध् + क्त] निषेध
उत्तर, जवाब -- प्रतिबाधकदत्त केनाथ गणमानाय न
केदिभूभुवे शि० १६।२५, परभूतविदित कल यथा
प्रतिबन्धनीकृतमभिरीक्ष्यम् -- शि० ४।१९ ।

प्रतिबन्धनम् [प्रति + बन्ध् + ल्युट्] लौटाना, वापिस करना ।

प्रतिबन्धः [प्रति + बन्ध् + अघञ्] ग्राम, गाँव ।

प्रतिबन्धनम् [प्रति + बन्ध् + ल्युट्] वापिस ले आना, वापिस
ले आने में लगे रहना ।

प्रतिबाधः [प्रति + बन्ध् + घञ्] 1 उत्तर, प्रत्युत्तर, जवाब
2 इकाय करना अस्वीकृति ।

प्रतिबाधित (पु०) [प्रति + बन्ध् + क्त] 1 विपक्षी
2 प्रतिपक्षी सम्प्रदायों का मत में ।

प्रतिबाध, प्रतिबाधनम् [प्रति + बन्ध् + घञ्, प्रति + बन्ध् +
ल्युट्] उत्तर, प्रत्युत्तर, जवाब ।

प्रतिबाधित [पु०] लगे रहना, सम्प्रदाय, मत ।

प्रतिबाधित [वि०] [स्त्री० - ली] [प्रति + बन्ध् + क्त]
निकट रहने लगे हुए मत में रहने वाला -- पु० रड्डीसी ।

प्रतिबन्धनः [प्रति + बन्ध् + ल्युट्] प्रहार के बदले
प्रहार करना, बचाव ।

प्रतिबन्धनम् [प्रति + बन्ध् + ल्युट्] 1 प्रतिकार
करना, विरोध में काम करना विरोध करना, विरुद्ध
कार्य करना 2 अवस्था, क्रम 3 राक्षस 4 स्थाना-
पन्न संस्कार, संस्कारी संस्कार ।

प्रतिबन्धः [प्रति + बन्ध् + ल्युट्] 1 प्रतिशोध 2 उप-
चार प्रतिपक्ष, के उपाय ।

प्रतिबन्धित (वि०) [प्रति + बन्ध् + ल्युट्] अत्यन्त
अच्छ ।

प्रतिबन्ध [प्रति + बन्ध् + घञ्] 1 पड़ोसी 2 पड़ोसी
का कामस्थान, पड़ोसी । सम० -- बाधित्वा (वि०)
पड़ोस में रहने वाला (पु०) पड़ोसी ।

प्रतिबन्धित (वि०) [स्त्री० - ली] [प्रतिबन्ध + क्त]
पड़ोसी शत्रु है प्रतिबन्धित क्षणमिहायममद्गृहे
शम्यसि - मा० दा०, मुच्छ० ३।१४ ।

प्रतिबन्धः [प्रति + बन्ध् + ल्युट्] पड़ोसी ।

प्रतिबन्धित (भू० क० कृ०) [प्रति + बन्ध् + क्त] प्रत्या-
वृत्ति विपक्ष, पीछे की ओर मुड़ा हुआ ।

प्रतिबन्ध (भू० क० कृ०) [प्रति + बन्ध् + क्त]
समाम्भ्यं रखना में पराम ।

प्रतिबन्धः [प्रति + बन्ध् + ल्युट् + घञ्] 1 शत्रु के विरुद्ध
सेना की व्यवस्था करना 2 समुपचय, सहाय ।

प्रतिबन्धः [प्रति + बन्ध् + ल्युट्] विद्या, विद्या ।

प्रतिबन्धनम् [प्रति + बन्ध् + ल्युट्] किसी अस्वीकृत पदार्थ की
प्राप्ति के लिए अनशन करके देवता के सामने पड़े
रहना, बरना देना ।

प्रतिष्ठित (वि०) [प्रति + णि + क्त] अपने किसी अमोघ पदार्थ की प्राप्ति के लिए बिना लाये पीये देवता के सामने चरना देने वाला - अनया च किलाहमे प्रतिष्ठिताय स्वप्ने समाविष्टम्—रत्न० १२१।

प्रतिज्ञायः [प्रति + ण्य + णञ्] काप के बदले बाप, बदले में बाप।

प्रतिज्ञास्तनम् [प्रति + तात् + ह्यट्] 1 आदेश देना, हुत के रूप में येजना, आज्ञा देना 2 किसी हुत को बाहर से बुला येजना 3 बापस बुलाना 4 विरोधी आदेश, अधिकृत कथन -अप्रतिज्ञानम् अगत् रघु० ८।२७ (पूर्व रूप से एक ही शास्त्र के सामन में)।

प्रतिष्ठिष्ट (यू० क० ह०) [प्रति + शात् क्त] 1 आविष्ट, प्रेषित वि० ११।१ 2 विलजित किया हुआ अस्वीकृत 3 विस्मृत, प्रसिद्ध।

प्रतिष्ठा, प्रतिष्ठानम्, प्रतिष्ठायाः [प्रति + ष्ठ + क - टाप्, ह्यट्, ण वा] बुकाय, सर्वी।

प्रतिष्ठायाः [प्रति + ष्ठि + ण्य] शरणगृह, आश्रम 2 घर, आवासस्थान, निवासस्थान—याज्ञ० १।२१० मनु० १०।५१ 3 समा 4 यज्ञ मन्थन 5 मदद, सहायता 6 प्रतिज्ञा।

प्रतिष्ठायाः [प्रति + धू + ण्य] 1 स्वीकृति, सहमति, प्रतिज्ञा 2 मृज।

प्रतिष्ठायायम् [प्रति + धू + ह्यट्] 1 इमान् पूर्वक सुनना मनु० २।१५५ चयन देना, हामी भगना, सङ्गमन होना 3 प्रतिज्ञा।

प्रतिष्ठानम्, प्रतिष्ठति (स्त्री०) [प्रति + धू + णि + क्त, क्तिन् वा] 1 प्रतिज्ञा 2 मृज, प्रति-वर्ति रघु० १३।६०, १६।३१, लि० १७।६२।

प्रतिष्ठत् (यू० क० ह०) [प्रति + धू + क्] रचन दिया हुआ, सहमन, हामी भरी हुई।

प्रतिष्ठिष्ट (यू० क० ह०) [प्रति + तिष्ठ + क्त] 1 निषिद्ध, वजित, अननुमन, अस्वीकृत 2 अक्षिप्त, प्रसक्त।

प्रतिष्ठेयः [प्रति + तिष्ठ + ण्य] 1 दूर रखना २ हटाना, हाथ कर दूर कर देना, निकाल देना शिकम० १।८ 2 प्रतिष्ठेय यथा 'शास्त्रप्रतिष्ठेय' में 3 मुकुरता, अस्वीकृति 4 निषेध करना, विरुद्ध कथन। मम० अक्षरम्, उक्ति (स्त्री०) मुकुर जाने व गब्द, अस्वीकृति श० ३।२५, उपमा दण्ड द्वारा वजित उमा का एक वेद, इसकी परिज्ञाया न जानु अक्षि-रिन्दोस्ते मूलन प्रातिगजितम्, कलकिलो जडस्वोपि प्रतिष्ठेयमर्षे म। काव्या० २।३४।

प्रतिष्ठेयक, प्रतिष्ठेय (वि०) [प्रति + तिष्ठ + ण्य, ण्य + वा] 1 हटाने वाला, निषेध करने वाला, रोकने वाला 2 मना करने वाला (यू०) विघ्नकारक, निवारक।

प्रतिष्ठेयकम् [प्रति + तिष्ठ + ह्यट्] 1 दूर रखना, परे हटाना, रोकना 2 निवारण करना 3 मुकुरता, अस्वीकृति।

प्रतिष्ठाः, प्रतिष्ठकाः [प्रति + स्तब् + ण, प्रति + कम् + ण्य, ह्यट्] आसुप्त, मदेववाहक, हुत।

प्रतिष्ठकाः [प्रति + कम् + ण्य, ह्यट्] 1 भेषिया, हुत 2 चाबुक, हुटर।

प्रतिष्ठकाः [प्रति + कम् + ण्य, ह्यट्] चाबुक चमड़े का कोश।

प्रतिष्ठम् [प्रति + स्तम् + ण्य, परब] अवरोध, रुकावट, मुकादमा, विरोध विघ्न—आहुप्रतिष्ठमविबुद्धमम्—रघु० २।३२, ५९।

प्रतिष्ठा [प्रति + स्था + ण्य - टाप्] 1 ठहरना, रहना, स्थिति, अवस्था—अप्रोक्षेयप्रतिष्ठम्—मा० १, त० ७।६ 2 घर निवासस्थान, अन्तर्गम आवास-रघु० ५।२१, ११।५ 3 स्वीये स्थिरता, बुद्धि, स्वाधिया, गृहाधार—अप्रतिष्ठे रघु० २०६ का प्रतिष्ठा कुलम्ब न—उत्तर० ५।२५ अब जल में वसाप्रतिष्ठा—मा० ७ कथ प्रतिष्ठा नीम का० २८०, लि० २।३४ 4 आधार नीच, टिकाना जैसा कि गृहप्रतिष्ठा में 5 गया टेक सहरा (अन) कोनिभावन स्थित अलकार—स्थवना मया नाम कुलप्रतिष्ठा श० ६। ५४ ६ प्रतिष्ठे कुलस्य न ३।२१, कु० ७।२७, महाबा० ५।२१ 6 उच्छपद प्रमृता उच्छ अधिकार—मृदा० २।५ 7 अर्थान यदा कीर्ति प्रसिद्धि-मा निव १ प्रतिष्ठा वमयम साधवती मया गमा० (उत्तर० १।५) 8 मर्यादा प्रतिष्ठानम् पृष्टा० १।१४ 9 अभीष्ट वदार्थ की प्राप्ति निर्माण (इच्छा की) पूर्ण अतिमुक्तमात्रमवसादयति प्रतिष्ठा—मा० ५।९ 10 धार्मि विश्राम, विश्रान्ति 11 आधार 12 द्विवि 13 किसी द्रवप्रतिष्ठा की स्थापना 1४ सीमा, दद।

प्रतिष्ठानम् [प्रति + स्था + ह्यट्] 1 आधार, नीच 2 टिकाना, स्थिति, अवस्था 3 टांग पैर 4 गया यमना के समय पर स्थित एक नगर वा चन्द्रवर्ष के आदिकालान राजाश्री की राजधानी वा—मु० विष्णु० २।५ 'मोदामरी १७ स्थिता एक नगर का नाम।

प्रतिष्ठित (यू० क० ह०) [प्रति + स्था + क्त] 1 जमाया हुआ लड़ा किया हुआ 2 स्थित किया हुआ, स्थापित किया हुआ 3 रक्का हुआ अवस्थित 4 सम्प्रापित, प्रतिष्ठापित, अभिधीनित : पूर्ण, कार्यान्वित 6 कीर्तनी मन्त्रवान 7 विख्यात प्रसिद्ध (दे० प्रति पूर्वक स्था)।

प्रतिष्ठित (स्त्री०) [प्रति + ण्य + णि + क्त] किसी वस्तु क विवरण का यथार्थ ज्ञान।

प्रतिष्ठितारः [प्रति + स्तम् + ह्यट् + ण्य] 1 पीछे से जाना,

बापिल हुटाना 2 अत्यन्त, सपीडन 3 चारणा
कानित, समारोह 4 परित्यक्त करना, छोड़ना ।

प्रतिहृत (भू० क० क०) [प्रति + हृ + क्त]
1 बापिल लिया हुआ, पीछे को खींचा हुआ, एष
प्रतिहृत - क० १ 2 सम्प्रतिष्ठित करना, बनाने
करना 3. सपीडित ।

प्रतिस्थानम् [प्रति + स्तृ + क्त + घञ्] 1 पुनरुत्थान
2. प्रतिष्ठाया, परछाई ।

प्रतिस्थाना [प्रति + स्तृ + क्त + घञ् + टाप्] चेतना ।

प्रतिस्थान प्रति - स्तृ + क्त + टाप्] 1 पीछे मुड़ना
2 पुनरुत्थान 3 विशेषतः बिनाट अगन्तु का फिर
प्रकाश के रूप में जीन हो जाना ।

प्रतिस्थान [प्रति + स्तृ + क्त + घञ्] चेतना का जवाब
मनेज के बदल सदेग ।

प्रतिस्थानम् [प्रति + स्तृ + क्त + घञ्] 1 एक स्थान पर
मनना, एकत्र होना 2 दो युगों का मध्यवर्ती मक
मकाल 3 उपाय उपचार 4 अन्तर्निष्ठ प्रत्य
हमन 5 प्रसन्नता ।

प्रतिस्थान [प्रति + स्तृ + क्त + घञ्] 1 पुनर्निष्ठान 2 गयी
लय में प्रवेशकरण 3 दो युगों का मध्यवर्ती मक
काल 4 विराज, उपग्रह ।

प्रतिस्थानम् [प्रति + स्तृ + क्त + घञ्] चेतना
उपचार ।

प्रतिस्थानम् [प्रति + स्तृ + क्त + घञ्] 1 सामना
होना, जोष का होना 2 मुकाबला करना, विरोध
करना टक्कर देना ।

प्रतिस्थान - रम [प्रति + स्तृ + क्त + घञ्] कलाई या गरदन में
पहनने का ताबीज, र 1 मेवक अनुचर 2 कदा
विवाह - कक्ष सम्प्राप्तप्रतिमरण करण पाणि । अग
हानि] कि० ५०३३ (कौतुकमुद्र मन्त्र)
3 पुनरावृत्ति या होर 4 प्रभात काल सेना का
पुच्छभाग 6 एक प्रकार का आहु 7 बाब का पुरा
ग बाब पर पट्टी बाधना ।

प्रतिस्थान [प्रति + स्तृ + क्त + घञ्] 1 पीछे खना (बंसा
कि बहा के मानव पुषी द्वारा) 2 विघटन प्रत्ये ।

प्रतिस्थापनिक [प्रतिस्थापन - ठक] भाट, चारण
बंदी ।

प्रतिस्थापनम् [प्रति + स्तृ + क्त + घञ्] 1 बाब के
किताबों की मरहमपट्टी करना 2 बाब में मरहम
लपाने का उपकरण ।

प्रतिस्थाप [प्रति + स्तृ + क्त + घञ्] पीछे बिक
कनाम ।

प्रतिस्थाप (भू० क० क०) [प्रति + स्तृ + क्त] 1 भना
या, प्रेषित 2 प्रसन्न 3 पीछे डकेला या अन्धीकृत
4 मने में घूर (चारण के अनुमा प्रमाण) ।

प्रतिस्थान (भू० क० क०) [प्रति + स्तृ + क्त] स्नान
किया हुआ ।

प्रतिस्थान [प्रा० म०] बदले में व्याप, प्रतिप्रेष या बदले
में किया गया प्रेष ।

प्रतिस्थानम् [प्रा० म०] हृदय की चट्टकन ।

प्रतिस्थान [प्रा० म०] गुंज, प्रतिप्रेष - सि०
१३३१ ।

प्रतिहृत (भू० क० क०) [प्रति + हृ + क्त] 1 उलट
मागा हुआ, पछाड़ा हुआ 2 भगाया हुआ, दूर किया
हुआ पीछे डकेला हुआ 3 विराज किया हुआ, बबकट
4 बेजा हुआ, प्रेषित 5 प्रेषित, नापसंद 6 हुनास,
मनास । मम० कति (वि०) चुका करने वाला,
नापसंद करने वाला ।

प्रतिहृत (स्त्री०) [प्रति + हृ + क्त] 1 उलटकर
प्रहार करना, पछाड़ना डकलना 2 पलट पडना,
पराजित प्रतिहृत 3 पुनरुत्थान कि० १८१५,
वि० १००० 3 नाउम्मादी भगनाशा 4 काब ।

प्रतिहृतम् [प्रति + हृ + क्त] उलट कर प्रहार करना,
पछाड़ देना पलट कर मानना जाघान ६ बदले
जाघान करना ।

प्रतिहृत (भू०) [प्रति + हृ + क्त] पछाड़ने वाला
हटाने वाला पीछे धक करने वाला दूर करने वाला ।

प्रति (स्त्री) हार [प्रति + हृ + क्त] पछे उपसर्ग
दीक्ष 1 उलट कर प्रहार करना 2 दवाका
नाटक 3 दवाका, दारपाण 4 जादू ५ ऐन्द्रात्मिक
जादूकारी बान । सम०—भूष (स्त्री०) (धर की)
इहवी कु० ३१५८ रकी स्त्री दारपाण प्रतिहार
१५८ ६१०० ।

प्रतिहारक [प्रति + हृ + क्त] ऐन्द्रात्मिक जादूगर

प्रतिहृत [प्रति + हृ + क्त] हारी के बदला हार ।

प्रतिहृत [प्रति + हृ + क्त] अ - टाप् । प्रतिप्रेष बदला

प्रतिहृत (भू० क० क०) [प्रति + स्तृ + क्त] साथ बड़ा
गया साथ सट्टा दिया गया

प्रतीक (वि०) [प्रति + क्त वि० दीर्घ] 1 को अंग
महा हुआ 2 विघटन उलट 3 बिना प्रतिकूल

विचार - क 1 अवयव, अग—वि० १८१३

2 मंग, अय, -कम् 1 प्रतिप्रेष 2 गुंज बहना

3 प्रतीक (भू० क० क०) अर्थमा 4 (किसी द्रव्य या
वाक्य का) प्रथम मन्त्र ।

प्रतीकम्, प्रतीका [प्रति + ईस् + क्त, प्रति + ईस् +
क्त + टाप्] 1 इतबार करना 2 अपक्षा, आका
3 स्थान विचार प्रदान ।

प्रतीक्षण (भू० क० क०) [प्रति + उल् + क्त] 1 प्रिमकी
इतबार की गई अपक्षा की गई 2 विचार किया
गया ।

प्रतीक (च० क०) [प्रति + ईज् + क्तृन्] 1 प्रतीक्षा
किये जाने योग्य 2 क्यास या बिचार के योग्य
3 बन्धन, बाधणीय (च० ५।१३, मि० २।१०८
4 अनुसरणीय प्रतिपालनीय परिपूरणीय (च०
२।१८०।

प्रतीची [प्रति + अच् + चित् + डीप्] पश्चिम दिशा।
प्रतीचीन (वि०) [प्रत्यञ्च + क्त, ननापो दीर्घश्च]
1 पश्चिमी, पश्चात्पथ 2 भावी, परवर्ती अनुवर्ती।
प्रतीच्छक [प्रतिपत्ता इच्छा यस्य प्रा० ब० कप्] वहन
करने वाला।

प्रतीक्ष्य (वि०) [प्रतीची + क्त] पश्चिम में रहने वाला
पश्चात्ती पश्चात्पथवेत्सामी

प्रतीक्ष (च० क० क०) [प्रति + क्त] 1 प्रोन्वित
प्रदान 2 गुजरा हुआ बाग हुआ गया हुआ
3 विश्वस्त प्रदान 4 प्रमत्त प्रदान 5 स्वीकृत माना हुआ 6 प्रकारा गत जाना गया
—सोप्य वत् प्रदान इति प्रतीक्ष (च० १२।१५)
7 विद्यमान विद्युत प्रसिद्ध 8 दृग्गोचरप्रकृत 9
विपश्वास करने वाला शरीरा शरीर वाला विपश्य
10 प्रत्यक्ष लक्ष-च० १।१० ५।०६ १६।५० १५।
11 प्रतिष्ठित 12 अनुत्तर, विज्ञान बुद्धिमान

प्रतीक्षिः (स्त्री०) [प्रति + क्त + क्तिन्] 1 जाणा
निश्चित शरीरा-च० ७।३१ 2 विश्वास 3 जान
निश्चय, स्पष्ट प्राप्तिज्ञान या समझ (गित् वत्)
बोधस्थ प्रतिभासादेव वादप्रतीक्षि कथ्यः 10
4 दस, कीर्ति 5 आदर 6 लुपी।

प्रतीक्ष (वि०) [प्रति + क्त] कति दिया हुआ
लीटाया हुआ।

प्रतीक्षक (पु०) विदेह देवा का नाम।

प्रतीक्ष (वि०) [प्रतिपत्ता अगो यस्य प्रति + अच् + क्तृन्
अपर्युक्त] 1 विद्वत् प्रतिकूल विपरीत विरोधी
—तत्प्रपत्तापवने दि वैद्वत् च० ११।१० 2 उल्टा
विपरीत विपक्षा हुआ 3 पिछड़ा हुआ प्रोत्तमाग
4 अवधिकार, अग्रिम 5 अग्रिम अज्ञा का उन्मूलन
करने वाला हठी बुरावही-च० १।२४
6 विनकारी - व एक राजा का नाम महाराज
शास्त्रु के पिता तथा भीष्म के पितामह का नाम
यक्ष एक जलकार का नाम जिसमें तुलना के
सामान्य रूप का बदल कर उपमान की उपमेय से
तुलना करते हैं - प्रतीक्षमुपमानम्यायुपमेयवत्कल्पनम्,
स्वल्पोक्षमस्य पक्ष लक्षकस्तद्वत्ता विष्णु - चन्दा० ५।१९
[और अधिक विवरण तथा परिभाषा की जानकारी
के लिए काव्य० १० वें बर्णित प्रतीक्ष के अन्वय
दे० - चम्पू (अभ्य०) 1 इनक विपरीत 2 विपरीत
कमानुसार 3 के विपक्ष, के विरोध में - अर्जुनविद्वत्

अपि रोचतया या स्म प्रतीक्ष गम च० ४।१८।
गम० व (वि०) 1 विरुद्ध चलने वाला 2 विपरीत,
प्रतिकूल च० ११।५८ गमयन्व-वति (स्त्री०)
उल्टा चलन च० २।१५ लक्ष्म चार के विरुद्ध
जाना या नार चलाना (वि० १।५ इक्ष्मिणी स्त्री
कथयन् 1 लपटन 2 बुरावहूनी या गमयन्व
करने वाला कथन का डग विपक्षिन् (वि०) विपरीत
कथनार्थक। कर्ता प। ह। १२८० कथन लक्ष्म वाला
वि० ५।२५।

प्रतीक्ष्य प्र + लक्ष् + क्त वि० १।

प्रतीक्ष्य [प्रति + क्त + क्तृन्] 1 लक्ष्
लीपि या कट्टे आदि में हाई का प्रमाण
2 2 बार का प्रमाण का प्रमाण (चाना) 3 3
का प्रमाण प्रमाण

प्रतीक्ष्य प्रतीक्ष्य प्रतीक्ष्य प्रति वि० १।
चरा [प्रति + क्त + क्तृन्]

प्रतीक्ष्य (वि०) [प्रति + क्त + क्तृन्] प्रतिक्षीयत।

प्रतीक्ष्य प्रतीक्ष्य प्रतीक्ष्य प्रति वि० १।
चरा [प्रति + क्त + क्तृन्]

प्रतीक्ष्य प्रतीक्ष्य प्रतीक्ष्य प्रति वि० १।
चरा [प्रति + क्त + क्तृन्]

प्रतीक्ष्य प्रतीक्ष्य प्रतीक्ष्य प्रति वि० १।
चरा [प्रति + क्त + क्तृन्]

प्रतीक्ष्य प्रतीक्ष्य प्रतीक्ष्य प्रति वि० १।
चरा [प्रति + क्त + क्तृन्]

प्रतीक्ष्य प्रतीक्ष्य प्रतीक्ष्य प्रति वि० १।
चरा [प्रति + क्त + क्तृन्]

प्रतीक्ष्य प्रतीक्ष्य प्रतीक्ष्य प्रति वि० १।
चरा [प्रति + क्त + क्तृन्]

प्रतीक्ष्य प्रतीक्ष्य प्रतीक्ष्य प्रति वि० १।
चरा [प्रति + क्त + क्तृन्]

प्रतीक्ष्य प्रतीक्ष्य प्रतीक्ष्य प्रति वि० १।
चरा [प्रति + क्त + क्तृन्]

प्रतीक्ष्य प्रतीक्ष्य प्रतीक्ष्य प्रति वि० १।
चरा [प्रति + क्त + क्तृन्]

प्रतीक्ष्य प्रतीक्ष्य प्रतीक्ष्य प्रति वि० १।
चरा [प्रति + क्त + क्तृन्]

प्रतीक्ष्य प्रतीक्ष्य प्रतीक्ष्य प्रति वि० १।
चरा [प्रति + क्त + क्तृन्]

प्रतीक्ष्य प्रतीक्ष्य प्रतीक्ष्य प्रति वि० १।
चरा [प्रति + क्त + क्तृन्]

प्रतीक्ष्य प्रतीक्ष्य प्रतीक्ष्य प्रति वि० १।
चरा [प्रति + क्त + क्तृन्]

प्रतीक्ष्य प्रतीक्ष्य प्रतीक्ष्य प्रति वि० १।
चरा [प्रति + क्त + क्तृन्]

मुखस्य प्रत्ययी 3. (कानून में) प्रतिवादी - त सर्वस्व-
सत्ता: सपक्षविप्रत्ययिना स्वयम् - रघु० १७३१,
मनु० ८१७९, याज्ञ० २।६। सम० - बल (वि०)
माने में रुकावट, बाधक बना हुआ - कु० ११५९।
प्रत्यक्षयम् [प्रति + ऋ + णिच् + ल्यट्, पुकागमः] बाधित
देना, लौटा देना - सीताप्रत्यर्पणचित्र - रघु०
१५।८५।
प्रत्यक्षित (भू० क० कृ०) [प्रति + इ + णिच् + क्त,
पुकागमः] लौटाया हुआ, बाधित दिया हुआ।
प्रत्यक्षमन्त्रः - मन्त्रः [प्रति + अव + भूष् + घञ्] 1. गंभीर
चिन्तन, गहन मनन 2 परामर्श, नसीहत 3 प्रत्युप-
संहार।
प्रत्यक्षरोषणम् [प्रति + अव + ष + ल्यट्] रुकावट, बिध्न।
प्रत्यक्षसाधनम् [प्रति + अव + मो + ल्यट्] जाना या पीना
- पा० १।४।५२।
प्रत्यक्षवित्त (वि०) [प्रति + अव + मो + क्त] लाया हुआ,
पीया हुआ।
प्रत्यक्षव्यवहारः - व्यवहारम् [प्रति + अव + स्कन् + घञ्, ल्यट्
वा] विशेष तर्क जिसको कि प्रतिवादी उत्तर के रूप
में प्रस्तुत करता है परन्तु बहु आरोप के रूप में नहीं
समझा जाता, प्रतिवादी का बहु उत्तर जिसमें बहु
वादी के अभियोच का संकेत करता है।
प्रत्यक्षव्यवहारम् [प्रति + अव + स्वा + ल्यट्] 1. अपाकरण
2. शत्रुता, विरोध 3. घटास्थिति, प्रवृत्ति।
प्रत्यक्षहाराट् [प्रति + अव + ह + घञ्] 1. बाधित कीचना
2. विषय का विनाश, (सृष्टि का) प्रलय - सर्वस्थिति-
प्रत्यक्षहाराट् - रघु० २।४४।
प्रत्यक्षबाधः [प्रति + अव + भू + घञ्] 1. ह्रास, भूतता
2. अवरोध, रुकावट - उत्तर० १।९ 3 विषय या
विपरीत मार्ग, वैपरीत्य - मनु० ४।२४५ 4. पाप,
अपराध, पापमयता - अनुत्पत्ति तथा बाधये प्रत्यक्षबाधस्य
मन्त्रते - आबालि०।
प्रत्यक्षेयम्, प्रत्यक्षेया [प्रति + अव + ईच् + ल्यट्, अच्
+ टाप् वा] ध्यान रखना, ख्याल करना, देखरेख
करना - रघु० १७।५३।
प्रत्यक्षकः [प्रति + क्त्वा + भू + जच्] 1. (भूयं का)
क्षिपना 2. क्लृप्त, समाधि।
प्रत्यक्षोपेक्ष (वि०) (स्त्री० - विष्का) [प्रति + आ + लिप्
+ भू + क्त] ताना मारने वाला, व्यापपूर्ण, उपहासजनक,
विद्वाने वाला।
प्रत्यक्षव्यवहारः (भू० क० कृ०) [प्रति + आ + क्त्वा + क्त]
1. बना किया हुआ, 2. मुकरा हुआ 3. प्रतिविद्ध
निविद्ध 4. एक ओर रक्का हुआ, अस्वीकृत 5 पीछे
ढकेला हुआ।
प्रत्यक्षव्यवहारम् [प्रति + आ + क्त्वा + ल्यट्] 1 पीछे हटना,

अस्वीकार करना 2. मुकरना, मना करना, इन्कार
3. अबाहुकना 4. अर्त्तना 5. निराकरण।
प्रत्यक्षवित्तः (स्त्री०) [प्रति + आ + गम् + क्तिन्] बाधित
जाना, लौटना।
प्रत्यक्षगमः - प्रत्यक्षगमम् [प्रति + आ + गम् + अच्, ल्यट्
वा] लौटना, बाधित जाना।
प्रत्यक्षानम् [प्रति + आ + दा + ल्यट्] बाधित लेना,
पुनर्ग्रहण, पुनः प्राप्ति।
प्रत्यक्षविष्ट (भू० क० कृ०) [प्रति + आ + दिष् + क्त]
1 नियत 2 सूचित 3 अस्वीकृत, पीछे ढकेला हुआ
4. हटाया हुआ, एक ओर रक्का हुआ 5 तिरोहित,
अन्धकार में डाला हुआ - रघु० १०।६८ 6. बेनाया
हुआ, साधधान किया हुआ।
प्रत्यक्षैः [प्रति + आ + दिष् + घञ्] 1 आदेश, हुक्म
2. संभुवन, घोषणा 3 मना करना मुकरना
अस्वीकृत, पीछे हटना, निराकरण - प्रत्यादेशात् स्वयं
भवतो वीरता कल्पयामि - मेघ० ११४, १५, स०
६।९ 4 तिरोहित करना, वल्ल करना, तिरोबाता,
लज्जित करने वाला, अन्तहास्य करने वाला - या
प्रत्यादेशो रूपमविनायाः श्रिय - विक्रम० १, का० ५
5 मानवानी, बेताबनी 6 विशेष रूप से दिव्य
साधकाना, अतिप्राकृतिक बेताबनी।
प्रत्यक्षानम् [प्रति + आ + नी + ल्यट्] बाधित जाना, लौटा
जाना।
प्रत्यक्षवित्तः (स्त्री०) [प्रति + आ + पद् + क्तिन्] 1 बाधनी
2 अक्षि, सांसारिक विषयो के प्रति विराग, वैराग्य।
प्रत्यक्षमाया [प्रति + आ + म्ना + घञ्] अनुमान प्रक्रिया का
पौष्टव्य अंग अर्थात् निगमन (प्रथम प्रतिज्ञा की आकृति)।
प्रत्यक्षः [प्रति + अच् + घञ्] चुली, कर।
प्रत्यक्षक (वि०) [प्रति + आ + इ + णिच् + क्तिन्]
1. प्रमाणित करने वाला, व्याख्या करने वाला
2 विश्वास दिलाने वाला, प्रशंसा उत्पन्न करने वाला।
प्रत्यक्षनम् [प्रति + आ + इ + णिच् + ल्यट्] 1 (हुपहन
का) धर ले जाना, विबाह करना 2 (भूयं का)
क्षिपना।
प्रत्यक्षीयम् [प्रति + आ + लिङ् + क्त] निगाना लगाने
मय्य का विशेष आसन (विष्० आनीड)।
प्रत्यक्षवर्तनम् [प्रति + आ + वृत् + ल्यट्] लौटना, बाधित
जाना।
प्रत्यक्षवस्तु (भू० क० कृ०) [प्रति + आ + इवच् + क्त]
मानवना दिया हुआ, जिलाया हुआ, ताजा बन किया
हुआ, डाढ़य बचाया हुआ।
प्रत्यक्षवस्तुः [प्रति + आ + इवच् + घञ्] फिर से सामं
लेना, (सामं का) फिर लौट जाना, फिर चलने
लगना।

प्रत्यासक्तम् [प्रति + आ + क्त + क्त] बाधत
बधना, सान्त्वना देना ।

प्रत्यासक्ति (स्त्री०) [प्रति + आ + क्त + क्त] 1 समय
बीर स्थान की बुद्धि से) अत्यंत सामीप्य, समक्ति
2. बलिष्ठ सरक 3 साधुत्व ।

प्रत्यासक्त (भू० क० कृ०) [प्रति + आ + क्त + क्त]
समीप, निकट, समस्त, सटा हुआ ।

प्रत्यास (सा) रः [प्रति + आ + क्त + क्त, वच्, वा]
1. सेना का पृष्ठभाग 2. एक व्युह के पीछे दूसरा
व्युह—एसी व्युह रचना या योजना बन्दी ।

प्रत्याहारणम् [प्रति + आ + ह + क्त] 1. वापिस लेना,
पुनः ग्रहण करना, बसुली 2. रोकना 3. ज्ञानद्वियों का
निवर्तन करना ।

प्रत्याहारः [प्रति + आ + ह + क्त] 1. पीछे हटना,
वापिस चलना, प्रत्यागमन 2. पीछे रखना, रोकना
3. इन्द्रिय दमन करना 4. स्थिति का विघटन या प्रत्यु-
5 (व्या० में) एक ही स्थिति के उच्चारण में कई
अक्षरों का बोध, मृग के प्रथम अक्षर से लेकर अन्तिम
सांकेतिक वर्ण तक जाहना या कई मृगों के शान पर
अन्तिम मृग के अन्तिम वर्ण तक—यथा 'अ इ उ ण्'
मृग का प्रत्याहार 'अण्' तथा 'अ इ उ ण्, ण्, ए
ओङ्, ऐ औष' इन चार मृगों का प्रत्याहार 'अव'
(स्वर) है प्रत्याहार है, व्यञ्जनों का प्रत्याहार 'तल'
तथा 'अर्ध' वर्णों का 'सोत' 'अल' प्रत्याहार है ।

प्रत्युक्त (भू० क० कृ०) [प्रति + क्त + क्त] उत्तर दिया
गया बदले में कहा गया, जवाब दिया हुआ ।

प्रत्युक्ति (स्त्री०) [प्रति + क्त + क्त] उत्तर, जवाब ।

प्रत्युच्चारः, प्रत्युच्चारणम् [प्रति + उद् + च + क्त + क्त]
पञ्च, स्पष्ट वा । आवाज दोहराना ।

प्रत्युज्जीवनम् [प्रति + उद् + जीव् + क्त] पुनर्जीवन
होना, जीवन का फिर संचार होना, फिर से जी उठना
(आल० भी) ।

प्रत्युत्त (अव्य०) [प्रति + उत् + क्त + क्त] 1 इसके विप-
रीत—कृतभीष महापावर 'य इव गोधा निगतकू'
प्रत्युत्त हन्ते' यन्त्र काकेन्द्रमादर लब्धो जगति—भूमि०
१७६ 2 बलिष्ठ, भी 3 दूसरी ओर ।

प्रत्युत्तमः, उत्तमः (स्त्री०) [प्रति + उत् + क्त +
क्त + क्त, स्पष्ट, कित् वा] 1 (किसी कार्य का
करने का) बीड़ा उठाना 2 युद्ध की तैयारी 3 रात्रि
पर चढ़ाई करने के लिए प्रयाण 4. गौण कार्य जो
मुख्य कार्य में सहायक हो 5 किसी व्यवसाय का
समाहरण ।

प्रत्युत्थानम् [प्रति + उद् + स्था + क्त] 1 किसी के
विघट्ट उठना 2 युद्ध की तैयारी करना 3. किसी
अव्यक्त का स्वागत करने के लिए (अव्यक्त प्रसन्न

करने के लिए) अपने आसन से उठना—व्यु०
२१२१० ।

प्रत्युत्थित (भू० क० कृ०) [प्रति + उद् + स्था + क्त]
(किसी मित्र या शत्रु आदि को) मिलने के लिए उठा
हुआ ।

प्रत्युत्थम् (भू० क० कृ०) [प्रति + उद् + पद् + क्त]
1 पुनरुत्थापन, फिर से उत्पन्न 2 उद्यम, तत्पर,
कुटीक्षा 3. (गणित०) गुणा किया हुआ,—व्यु० गुणा ।
सम०—अस्ति (वि०) समय पर जिसकी बुद्धि ठीक
कार्य करे, हाज़िर जबाब 2 साहसी, दिलेर 3 तीव्र,
तीक्ष्ण ।

प्रत्युत्थाहरणम् [प्रति + उद् + आ + ह + क्त] मुकाबले
का उदाहरण, बिपक्ष का उदाहरण ।

प्रत्युद्गत (भू० क० कृ०) [प्रति + उद् + गम् + क्त]
अनिष्ट का स्वागत करने के लिए (सादर अभिवादन
स्वरूप) अपने आसन से उठा हुआ प्रत्युद्गतों या
भरत समेत—व्यु० १३६४ १०१२ 2 किसी के
विघट्ट जागे बड़ा हुआ ।

प्रत्युद्गति (स्त्री०) प्रत्युद्गत, प्रत्युद्गमणम् [प्रति +
उद् + गम् + क्त + क्त, अप् + क्त वा] अनिष्ट का
सकार करने के लिए अपने आसन से उठना या बाहर
जाना ।

प्रत्युद्गमनीयम् [प्रति + उद् + गम् + अनीयर्] स्वच्छ
तरंग का बोध—गृहीतप्रत्युद्गमनीयवक्त्रा—कु० ७३१
'प्रायुद्गमनीय वक्त्रा' का पाठान्तर दे० 'उद्गमनीय' ।

प्रत्युद्धारणम् [प्रति + उद् + ह + क्त] पुनः प्राप्त
करना, दी हुई वस्तु को वापिस लेना 2 फिर उठना ।

प्रत्युद्यमः [प्रति + उद् + यम् + क्त] 1 प्रसिद्धतुल्य, सम-
तोलन 2 रोक धाम, प्रतिक्रिया—व्यु० ८१८८,
पाठान्तर ।

प्रत्युद्यत (वि०) [प्रति + उद् + या क्त] दे० 'प्रत्युद्गत' ।

प्रत्युद्यमणम् [प्रति + उद् + यम् + क्त] पुनः उठना, फिर
उठलना, पलटा स्तरण जाना ।

प्रत्युपकारः [प्रति + उप + क्त + क्त] किसी की हानि
या सेवा का बदला चुकाना उपकार का प्रतिदान,
बदले में सेवा ।

प्रत्युपक्रिया [प्रति + उप + क्त + क्त, इयङ्, टाप्] सेवा का
प्रतिफल ।

प्रत्युपवेशः [प्रति + उप + विष् + क्त] बदले में परामर्श
या उपदेश कु० ११४६ ।

प्रत्युपपन्न (वि०) [प्रति + उप + पद् + क्त] दे०
'प्रत्यु' ।

प्रत्युपपानम् [प्रति + उप + पा + क्त] 1. समरूपता
का प्रतिरूप 2. नम्रता, आदर्श 3. मुकाबले की तुलना
—विक्रम० २१३ ।

अभ्युपगम (मू० क० कृ०) [प्रति + उप + कम् + क्त]
वापित प्राप्त, फिर लिया हुआ ।

प्रत्ययसंज्ञ, -वेदानम् [प्रति + उप + विद् + विप् + क्तम्,
त्युद् वा] आज्ञा-यासन कराने के लिए किसी को
बेरना ।

प्रत्ययस्यार्थान् [प्रति + उप + स्था + ल्युट्] भाष्यपात्र,
वृत्तिः ।

अनुप्रास (५० क० क०) [प्रति + वृत् + क्त] १ अवा
हुवा वा जमाया हुवा जदित अवा हुवा २ बाया
हुवा ३ भिन्न किया हुवा गावा हुवा, हुता पूर्वक
हुवा वा जमाया हुवा - प्रा० ५।१० उत्तर,
५० क० क०

प्रत्युक्तं अमुकं (पृ०) प्रयोगानि वाचयति अत्रकारः
५१ + ४८ = ९९, अत्रि उक् - अति, प्रभाष
अत्रि, अत्रिः ।

प्रमाण - वय : प्रवि - कव - क शोर, प्रमाण लक्ष्यः
 अथर्व वेद स्मृतिकालादीनां वैश्वीकाया मेघः ३
 ब । सुय २ आठ वस्तुर्वा ये स एक वयः
 कः नः यः

अथानुसङ्ग (अनु०) [प्रति - अथ - अस्ति] भाग, प्रमाण
प्रवृत्ति ।

प्रत्ययः [प्रति + उच् + वम्] इकावट् दावा विध्य
-विस्मय सर्वनाम्न प्रत्यय सर्वकर्मणाम्-हि० २।१५।

अथ १ (आ० भा० - प्रथमे, प्रथिमम्) १ (एवमेव का)
 ब्रह्मा २ (कीर्ति, ब्रह्माह्मादि का) देवानां - तथा
 मध्यस्थेन वसते मनु० १११५ ३ मुनिभ्याम् होता
 प्रसिद्ध होता - ब्रह्मसंहारव्यापी तीर्थ पावन मुनि प्रथमे
 मनु० १५१०१, अतोऽपि ताके देवे च प्रथिना
 पुण्योत्तम - अथ १५१८ सि० १११६, १५१२३, कु०
 १३ मेघ० २६, राघु० ५१५५ ११३१ ४ प्रकट होता
 उदय होता, प्रथमं भासा - अथा न तासां अथवा
 न प्रथमे - कि० ८१५३ ५ (ब्रा० उप०) प्रथमसि

—रे, सविन) 1 देहाना, उद्घोषणा करना - सज्जना
एव साधूनां प्रवर्तनं सुशोभकम्—भूटालम् १२, बहि०
१०।१०७ 2. विलसमाना, प्रकट करना, प्रवर्तन
करना, प्रकाशित करना, सुविन करना पाठ वयु
प्रवर्तनीय जयम्—कि० १।३५ ५।३, सि० १०।२५,
रत्न० ५।३३, छ० ३।१६ 3 बहाना विलसुन करना,
देहना करना, प्रवर्तन करना, बड़ा करना - धर्म्-
१।२५ 4. लोचना ।

प्रत्ययम् [प्र + स्युट्] 1. प्रीताना, विस्तार कराना
2. स्फोरना 3. प्रेक्षना, आगे की ओर बढ़ाना

[प्रश्न-उत्तर] 1. पहला, सबसे ज़ादे का—रघु०
 १।४४, हि० २।१६, कि० २।४४ 2 प्रमुख, मुख्य,
 प्रधान, श्रेष्ठतम बेरोज, अनुपम—वि० १५।४९,
 मनु० १०।४७ 3 आदि कालीन, अग्रत प्राचीन,
 प्राक्कालीन, प्राग्विक 4 पहले का, पूर्वकालीन,
 पहला, इमसे पूर्व का—प्रथम मुकुटापेक्षा—वेध०
 १३, रघु० १०।६७ 5 (आ० में) प्रथम मुख्य
 (अथ प्रमुख या तात्कालप्रवर्धितान के अनुसार
 तुल्य प्रमुख), का: 1 प्रथम (अथ, प्रमुख 2 वर्ष
 का प्रथम अग्रज का वर्तमान जन्म (अग्रज)
 1 पहले प्रथम सर्वप्रथम कु० ७.४४ रघु० १।६
 2 पहले ही पहले ही 7 पूर्वकाल 2 रघु० १।६
 1 अग्रज नृपति 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100
 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100
 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100
 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100
 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100
 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100
 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100
 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100
 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100
 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100
 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100
 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58 59 60 61 62 63 64 65 66 67 68 69 70 71 72 73 74 75 76 77 78 79 80 81 82 83 84 85 86 87 88 89 90 91 92 93 94 95 96 97 98 99 100
 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32 33 34 35 36 37 38 39 40 41 42 43 44 45 46 47 48 49 50 51 52 53 54 55 56 57 58

[illegible]

पृष्ठा [१४ + अक्षर - ८८८] अक्षरानि, अक्षरानि - १५० १५२० ।

[illegible]

प्रथमम् (पुं०) [पुष्योर्भव-पुष्य+इत्यमिच्] श्रीवाह,
विद्याभ्यासा, विस्तार, महत्ता—प्रथिमां हयानेन जवनेन
वनेन वा—अदि० ४।१३, (पुना) प्रारभ्यमाना
प्रथिमात्मन्यपु—-रपु० १८।४८।

प्रविधिः (कृषी०) [= वृषिणी, वृषी०] वृष्यी, वपती ।

प्रमाण (वि०) [पुनः प्रमाण, प्रमाणित] कलम नं०.

अबसे बीडा, अखण्ड विभाग (पु) की अन्विष्टा-
वस्था)।

अथर्ववेद (वि०) (स्वी०-सी) [पु० + ईयन्तु] अथर्ववेद
कृष्ण वेदा, चौथा वेदनाम 'पु०' की मूलनामिका।

प्रयु (वि०) [प्रय + उय्] व्यापक, दूर दूर तक फैला हुआ ।
प्रयुक्त [प्रय + उक्] विभक्त कीले (तु० प्रयुक्त) ।

प्रवर्जित (वि०) [प्रा० सं०] 1 दाईं ओर रक्खा हुआ
या लंबा हुआ दाईं ओर को घूमने वाला 2 सम्मान

पूरे, धर्मार्थ ३ सुख सम्पन्नमयपुत्र का का,
जब वह और तेरे और का इमाना प्रियम
कि शांतिना गायन मतेक उम्र धर्मार्थ या सुख को और

मवा [य + वा + मवा + टाप्] 1 प्याऊ व्याख्यात्यानाम्ब-
मलसमिता मवा कृपा प्रसारच—विक्रमांक० १८।७८
2 कृती, कुण्ड मन्० ८।१११३ पशुयो को पानी
पिलाने का स्थान, लेख 4 पानी का भंडार। तब०
—वाकिका बढोहियो को प्रस पिलाने वाली स्त्री
—विक्रमांक० १।८९, १३।१०, वनम् धीतोद्यान।

प्रवाकः [प्रकृष्ट पाठोऽयं प्र० व०] 1 पाठ व्याख्यान
2 किसी का अध्याय या भाग।

प्रवाकिः [प्रकृष्ट पाणि प्र० व०] 1 हाथ का अध्याय
भाग 2 हाथ की लुकी हुयेगी।

प्रवातः [प्र + पन् + वत्] 1 बने वाला विहायगी 2 नीचे
विरामा अध्याय —प्रवातमातामलप्रपात प्र० १०
कु० १५५ 3 आकस्मिक प्रकल्पन 4 वारिप्रवाह
जलमा, जलम बहु स्थान स्थितके रूपर पानी गिरना
रहना ६ रघु० १।१५ १ तह दवा 6 लड़ी
बहुत 7 दवाका बहुतान 7 विरहाभा शह भाग
—इका केमप्रपात 8 उत्पन्न प्रकल्पन स्वप्नम
जैसा कि दीपप्रपात में 9 किसी बहुतान में भयम
हाथकी नीचे विराम देना 10 उद्भव की एक विधा
रीति।

प्रवातकम् [प्र + पन् + क्त्वि + लृट्] विरामा (भूमि पर,
विरामा]

प्रवाकिः [प्र० व०] वार।

प्रवाकम् [य + वा + लृट्] पीना, पेय पदार्थ।

प्रवाककम् [प्रवात + क्त्वि] एक प्रकार का पेय।

प्रवाककः [प्रवाक + क्त्वि] प्र० व०] 1 पद बाधा
पड़वाता 2 कुल का विशेषण—तब० ११।११
3 बह्ना की उपाधि, ही पदवादी।

प्रवाकम् [प्र० व०] पाठ।

प्रवाकम् [य + वीट् + क्त्वि + लृट्] 1 भीषता विना
दवा 2 रसाकाराण्येक भीषाव।

प्रवीत (व) (वि०) [य + वा (व्याप्) + क्त्वि] मूत्र हुआ
फूला हुआ।

प्रवृत्ता (वा) व, [प्रवर्तन पूर्वान् नादवलि-प्र + पन् + म
+ क्त्वि + वत्] प्रवर्तन भाग का वृत्त, प्रवर्तन।

प्रवृत्तम् [प्र + पन् + लृट्] 1 घुमा करना, भ्रमना पूर्ति
करना 2 मोर्चाबल करना, मुई लयना 3 मन्वृष्ट
करना, मृष्ट करना 4 मंडल करना।

प्रवृत्ति (वृ० व० व०) [य + पृ + क्त्वि] भरा हुआ।

प्रवृत्त (वि०) [प्र० व०] विविध रीत वाला।

प्रवृत्तः [प्र० व०] पड़वाता—वाच० १।७८, —नी
पड़वादी।

प्रवृत्तम् (वृ० व० व०) [य + पृ + क्त्वि] 1 लिला हुआ, प्रवी,
विचलित—कोमलम् कान्तः प्रवृत्तम्—रघु० १।१९
‘प्रवृत्त’ का पाठ्यार।

प्रवृत्तः (स्त्री०) [य + पृ + क्त्वि] लिलाना, विस्तारण,
पुष्पित होना।

प्रवृत्त (वृ० व० व०) [य + पृ + क्त्वि] उत्पन्न कार्य [य]
1 घुमा लिला हुआ मचरित, मुकुलित न हि प्रवृत्त
महकारयेण मृजालार काहृति नदधाली—रघु०
१।३९, २।२९ कु० १।४५, ३।११ 2 लिले हुए
वृक्ष की भांति फैली हुई वा विस्तारवृक्ष (वाणि
वायि) 3 मृकारता हुआ 4 प्रवृत्ति उत्पन्नित
पसल। तब० मचन, मेष, लोचन (वि०) वृक्ष
के वारण किसी हुई मोला वाला, वलन (वि०)
हृवोत्पन्न या हृवमृक्ष हृवमृक्ष कहते वाला।

प्रवृत्त (वृ० व० व०) [य + वृ + क्त्वि] 1 बाधा हुआ
वना हुआ कमा हुआ 2 मका हुआ मचरित
प्रदक या हुआ।

प्रवृत्त (वृ०) [य + वृ + क्त्वि] एवेन सम्कार।

प्रवृत्त (य + वृ + क्त्वि) 1 वृक्ष वा वृक्ष
2 अर्थविच्छेदना नात्यय वैमर्ष अर्थविच्छेद प्रवी।
परमात्र विच्छेद वाप प्रवि वान् कवाप्रवृत्त क०
०१० विद्याप्रवृत्तवाचकप्रवृत्तवाच्य रघु० १।१३
२।५ व० १।३ 3 अर्थविच्छेद वा मृदमन वृत्त
हा प्रवृत्त प्रवृत्तवाच्यप्रवृत्त प्रवृत्त वृत्तवाच्य
वि० २।१३ 4 आर्थिक कृति वा वृत्तना,
विद्यान काव्यारम्भना प्रवृत्तवृत्तना भागवतप्रवृत्ति
लवर्कविच्छेदवादीना प्रवृत्तवाच्यप्रवृत्त—वाच० १
प्रवृत्तवाच्यप्रवृत्तवाच्य वाचि वाच 3 वृत्तवृत्त
वाचिना कल्पना जैसा कि ‘कपटप्रवृत्त व०’ तब०
कल्पना मृदमृष्ट की मृदमृष्टी किसी मचन के उपपन्न
पर वाच्यप्रवृत्त कल्पनाकृति प्रवृत्तकल्पना लोचकल्पना
वाचि कवा विदु।

प्रवृत्तकम् [य + वृ + क्त्वि] वृक्ष वा वृक्ष।

प्रवृत्त (वृ०) वृक्ष का कालान्तर।

प्रवृत्त (व) वृ (वि०) [य + व (व) वृ + क्त्वि] लवेष्टेष्ट,
मचोत्पन्न।

प्रवृत्त (वि०) [प्रकृष्ट वल वयं—प्र० व०] 1 वृत्त
मचन, लिलितवादी लालनवा धृवीर (पुष्प),
रघु० १।१० वान् ३।२३ 2 प्रवृत्त, मचन, नीच,
लालन, वृत्त वडा प्रवृत्तवृत्तवाच्य वृत्तवा
—वाच० १।२, प्रवृत्त वेववाय् रघु० ८।५०
3 वृत्तवृत्त 4 वृत्त 5 वृत्तवृत्त, विद्याकारी।

प्रवृत्त (व) वृत्त [य + व (व) वृ + क्त्वि + टाप्
वृत्त] वृ० ‘वृत्तिका’

प्रवृत्तकम् [य + वृ + क्त्वि] 1. प्रवृत्तवाच्य, प्रवीव
2. वृत्तवृत्ति, वृत्तवाच्य 3. वृत्त वृत्तना।

प्रवृत्त (वा) व०, क्त्वि [य + व (व) वृ + क्त्वि + क्त्वि]
2. वृत्त, वृत्त, विद्यावृत्त—वाच०... प्रवृत्तवाच्यवाच्य

भुवनिम नीलधाम् - भु. ५१३४, ११४४, ११८२, १२००
 १११२, ११५४ ३ भुवा ३ नीला की वरचन, का
 १ मिथ्य २. जन्तु। लम्—वचनस्यः १ लाम
 अथवाका भुव ३ भुने का भुव, - भवन्त् ताव लाम
 - लाम् ताव लाम् की लकी, भवन्त् (भु-)
 भुने की लम् ।

प्रश्नार्थः । प्रकृत्यो वाह - पा० न०] पृष्ठा का अर्थमान,
तथा ।

प्रकाशक (अध्य०) [प्रकाश - कप] । ईश्वर ।
२. प्रकाशक ।

प्रश्न ५० क. ३ [५ वृत्त] १ गंगा नदी
 २ ब्रह्मपुत्र ३ जामुना ४ गोमती ५ कावेरी
 ६ नर्मदा ७ सिन्धु ८ यमुना ९ ब्रह्मपुत्र १० गोमती
 ११ जामुना १२ कावेरी १३ नर्मदा १४ सिन्धु
 १५ यमुना १६ ब्रह्मपुत्र १७ गोमती १८ जामुना
 १९ कावेरी २० नर्मदा २१ सिन्धु २२ यमुना
 २३ ब्रह्मपुत्र २४ गोमती २५ जामुना २६ कावेरी
 २७ नर्मदा २८ सिन्धु २९ यमुना ३० ब्रह्मपुत्र
 ३१ गोमती ३२ जामुना ३३ कावेरी ३४ नर्मदा
 ३५ सिन्धु ३६ यमुना ३७ ब्रह्मपुत्र ३८ गोमती
 ३९ जामुना ४० कावेरी ४१ नर्मदा ४२ सिन्धु
 ४३ यमुना ४४ ब्रह्मपुत्र ४५ गोमती ४६ जामुना
 ४७ कावेरी ४८ नर्मदा ४९ सिन्धु ५० यमुना

[illegible]

प्रयोग (वि०) (गो०-ली) [प्र + पुष + शिच् +
अनु +] भाषण भाषना भव । भाषते भाषा
2. भाष, भाषना 3. भवतु भाषा 4. भाष, वृद्धिभाषा
+ शिच्चा उपदेश देना 6. किसी वस्तुत्व की वृद्धि
का प्रदर्शित ।

शब्दों (वि) की, प्रत्यय + की, व + वृ + वि +
वि + की] देव पठनी एकादशी, कार्तिक शुक्ला
एकादशी जिस दिन विष्णु अम्बाजी नार याम की
नीच देव के पदपात्र जायते हैं ।

प्रसोक्ति (पुं. क० क०) [प्र+वृत्+विप्+क] १. प्राप्ता हुआ, प्रप्राप्ता हुआ २. शिखर प्राप्ति, वृत्त प्राप्ति ।

प्रभञ्जकम् [प्र + भञ्ज् + क्तृ] दृक्ते दृक्ते करणा, मः
ह्वा, शिखेयकर लाठी, ज्ञानावात मे. ११६१ पंच.
११२२१।

अथर्वः [अथर्व वेद अथर्वानु—आ० व०] जीव का वेद ।

अथः [अ + भू + क्] क्तो, भू—अवधारणप्रत्यय
 भू—कृ० १११, अक्षिपत् भू प्रत्यय क् अन्तात्
 —११७७, भू० ११७५ २. जम्, वैदायक ३. वी का
 उद्भवत्वात्—गत्वा एव प्रत्ययवत् भव्ये शीरे
 सुवारी—वे० ११४ अन्ति का काय, (भाटा,
 मुक्ता आदि) कम्पयता—कम्पयः प्रत्ययवत्

-सं. १५ प्रवेसा, रचयिता—डु. २५ ६. सत्य
 त्याग ७ क्षमि, सावध, लीच, मज्ज करिमा
 (प्रभाव) ८ विष्णु की उपाधि ९ (महाकेश के नाम
 में) उल्कापतनी का नाम, अत्युत्तम सुव्यंजनों का
 -सं. ११२, डु. ११५।

प्रवर्धित (पुं०) [प्र + धृ + क्त] बालक, महाप्रभु ।

प्रथमिकम् (वि०) [प्र + भू + इच्छ्] प्रवृत्त, तात्पर्य-
वत्, लक्षितवाची, - क्तु १. प्रभू, स्वामी - सम्प्रदायि-
कस्यै रोचते - अ० ५३ विष्णु की उपाधि ।

[illegible][illegible]

प्रवाल [प्र + पाल् + प्रत्यय] १. पाल, दुरुही २. (नविष्ट०)
विष्णु का विष्णु ।

प्रमाण (क. ख. ग.) [+ भा + क्त] जो स्वयं वा
प्रकाशित होने लगा है तन् प्रकृता रक्षणी—क. ४,
तन् विम विमलना, वा कदमा ।

प्रभाषणम् [प्र + भा + लृट्] प्रकाश, कान्ति, शक्ति,
ज्योति, वाचक ।

प्रश्नांक [२० + ५०] १ कालि, दीप्ति, उवाचा
२ वरिचा, वर वरिचा तेव, प्रत्य कालि—उवाचा-
कालिच वरवने व० १ ३ सायधर, वीर, वरित,
वज्रवर्ता— वर० ११० ४ रात्रोपित वरिच (तीव्र
वरितो ये ते एक) ५ वरिचान्न वरित, वरिचिक-
वरित ११० २४४ १०, ११०, विरच० १, २, ५,
वराधुवर्ता : वर०—व (वि०) रात्रोपित ते
उपन्न प्रश्नांक अं वरत ।

प्रधातवम् [प्र + धा + ल्युट्] व्याकृता, अर्थकरण ।

प्रत्यय- [व + वाच् + क्त] दीप्ति, लीङ्प्रत्यय, क्प्रत्यय,
—क, —लृप्त् हारका के निकट स्थित एक सुविभक्त्यन्त
लीङ्प्रत्यय ।

प्रचालनम् [प्र + धा + ल्युट्] प्रकाशित होना, चलायमान होना, चलकला ।

प्रवाहपर (वि०) [प्र + भाव् + वरप्] उज्ज्वल, चमकीला, चमकदार ।

प्रविष्ट (भू० क० क०) [प्र + मिद् + क्त] 1 अलग किया हुआ, लखित, काबा हुआ, विभक्त किया हुआ 2 टुकड़े किया हुआ 3 काटा हुआ, विभुक्त किया हुआ 4 मुकुलित, विकसित, बिछा हुआ 5 बदला हुआ, परिवर्तित 6 विकसित, विकृत 7 निविष्टित 8 नष्ट में डूब, मदमस्त - कु० ५१८० (२० प्रपूर्वक मिद्), -अः मतवाला हाथी । सम० - अकञ्चनम् काजल ।

प्रभु (वि०) (स्त्री०-भू, च-बी) [प्र - भू + वृ] 1 बलवान्, मजबूत, शक्तिशाली - क्षुद्रिप्रभावाभ्यां च नान्त कोटि प्रभु प्रहर्तुं किमन्याह्ला २५२ समाधिभेदप्रभवो भवति - कु० ३१४० 3 गौड वा - प्रभुमन्त्रो वाम्नाय महा०, भू 3 अधिपान स्वामी प्रभुर्भुवर्भुवनत्रयस्य य मि० ११४२ 2 राज्यपाल शासक सर्वोच्च अधिकारी 3 स्वामी मालिक 4 पाग 5 विष्णु 6 शिव 7 ब्रह्मा 8 इन्द्र । सम० भक्त (वि०) अपने स्वामी में अनुरक्त राजभक्त (स्तः) ब्रह्मि पांडा (स्त्री०) अपने स्वामी की भक्ति, राजभक्ति स्वाभिमत ।

प्रभुता, -त्वम् [प्रभु + तन् + टाप् प्रभु + त्व] 1 आधिपत्य, सर्वोपहिता स्वामित्व शासन अधिकार श० ५१०५, विक्रम० ४११२ 2 मित्यन्त ।

प्रभूत (भू० क० क०) [प्र + भू + क्त] - 1 उच्चूत, उत्तम 2 प्रचुर विपुल 3 असम्भव प्रलेक 4 परिरक्ष, पूज 5 ऊँचा, उत्तम 6 लम्बा 7 प्रधान व मे । सम० वक्षोन्मेष (वि०) जहाँ हरीशचम और इधन की बहुतायत हो, वक्ष् (वि०) वयापद, बुद्धा उत्तर गौदा ।

प्रभूति (स्त्री०) [प्र + भू + क्त] 1 उद्गम, धृति 2 शक्ति, सामर्थ्य 3 पराजिता ।

प्रभृति [प्र + भू + क्त] 1 आर्य, शूद्र (इस अर्थ में यह बहुधा बहुव्रीहि नामात् के अन्त में प्रयुक्त इन्द्रप्रभृतयो देवा आदि) - (अथ०) 2 मे, मे लेकर, मुझ करके (अप० के साथ) गौडवाप्यभूमि पाणिना यियाम् उत्तर० ११६५ २५० ५१८० - अक्षप्रभृति आज (अव) मे लेकर, जल प्रभृति, नल प्रभृति आदि ।

प्रवेष्टः [प्र + भिद् + क्त] 1 पादना, पीटना, मोलना 2 प्रवास, विद्या 3 हाथी के गच्छन्वले मे मर का बहना २५० ३१३७ 4 अन्तर, भेद 5 प्रकार का क्रिय ।

प्रवर्णः [प्र + वर्ण + क्त] मिरना मिरकर अलग हो जाना ।

प्रवर्धकः [प्र + वर्ध् + क्त] नाक का एक रोग, रीजल ।

प्रवर्धित (भू० क० क०) [प्र + वर्ध् + क्त] 1 फेंका गया, डाल दिया गया 2 वर्धित ।

प्रवर्धित (वि०) [प्र + वर्ध् + क्त] टूटकर मिरना, लहना ।

प्रवर्ध (भू० क० क०) [प्र + वर्ध् + क्त] मिरा हुआ, नीचे पड़ा हुआ वर्ध् मिर पर बिगड़वाना मुकुट की शिखर पर चारण की गई कल-माला, शिखार-लबिनी फूलमाला ।

प्रवर्धकम् [प्रवर्ध + क्त] दे० प्रवर्ध ।

प्रवर्ण (भू० क० क०) [प्र - वर्ण् + क्त] रूखा हुआ, मोटा दिया हुआ रूखाया हुआ ।

प्रवत् (भू० क० क०) [प्र + वत् + क्त] बिचारा हुआ ।

प्रवत् (भू० क० क०) [प्र + वत् + क्त] 1 नष्ट में डूब, मदान्त श० ५१२ 2 उन्मत्त पागल 3 लापरवाह, उपेक्षक अवधान असावधान अनपेक्ष (अप० के साथ) 4 उन्मार्गगामी, भूल करने वाला (अप० के साथ) स्वाधिकारात्प्रमत्त - मध० ४ 5 चौपट करने वाला 6 स्वेच्छावागे लपट । सम० वीर्य (वि०) असावधानतापूर्वक गाथा हुआ - विला (वि०) लापरवाह अमानवान, बेसबर ।

प्रवत् [प्र + वत् + क्त] 1 बहना 2 शिव के गल (ओ भूत प्रेक्ष जाने जाने हे) ओ उनकी सेवा में गन हे कु० ३११५ । सम० अविव, नाच, पति शिव की उपाधि ।

प्रवक्ष्यम् [प्र + वक्ष् + क्त] 1 चौक गढ़वाना शक्ति गढ़वाना मान्य करना 2 वक्ष हथका 3 मान्य करना बिलाना ।

प्रवर्धित (भू० क० क०) [प्र + वर्ध् + क्त] 1 प्रदीप्त कन्धमन 2 बुझा हुआ 3 कलल किया हुआ ४५ किया हुआ मा० ३१८८ 4 अला भाति बिजला हुआ लम्ब जल गन्त छाछ मट्टा ।

प्रवर्ध (वि०) [प्रवर्ध + क्त] 1 प्रदीप्त 2 आकाश 3 लापरवाह 4 स्वेच्छावागे वक्ष्यमान ५ हर्ष प्रमत्तता, खुशी शि० ३१५६ १४१० ५ यन्त्र का पीथा । सम० - कालवम्, वक्ष् राजकीय अंग पुर से उड़ा हुआ, प्रमोद वन बहु उद्यान इसमें गया अपनी रागियों के साथ बिहार करना है ।

प्रवर्धक (वि०) [प्रवर्ध + क्त] लपट, कामुक ।

प्रवर्धकम् [प्र + वर्ध् + क्त] कामेच्छा ।

प्रवर्ध [प्रवर्ध् + क्त] 1 मुन्दरी नवयुवती २५० ११११, श० ५११७ 2 पत्नी का स्त्री कु० ५११२, २५० ८१७२ 3 कन्यारक्षि । सम० कालवम्, वक्ष् राजकीय अंग पुर के छाप उड़ा हुआ प्रमोद

उद्यान (जहाँ रानियाँ बिहार करनी हैं), कम ।
 1 नवयुवकी नवणी 2 स्त्री ।
 प्रमहुर (वि०) [प्र + मृ + धृज्] लापरवाह अनव-
 चान, असावधान ।
 प्रमदम् (वि०) [प्रकृष्ट मना यस्य-प्रा० व०] 1 मृग
 हर्षयुक्त प्रमत्त आनन्दित ।
 प्रमदम् (वि०) [प्रकृष्टो मन्य यस्य प्रा० व०]
 1 शोभाविष्ट चिह्नविहा बिडा हुआ (अधि० के
 माध० रघु० ३।३४ 2 कष्टग्रस्त शाकाग्न्या
 शाकसनन ।
 प्रमद [प्र + मृ + अच्] 1 मृग 2 बरबादी नाश
 निघन 3 बर ३ पा ।
 प्रमदम् [प्र + मृ + मृज्] समस्त वृत्ता नष्ट करना
 बर्खाल देना न विनाश का विनाश ।
 प्रमा [प्र + मा + धृज् + ण] 1 प्रतिबोध प्रत्यज्ञान
 2 (रु० म०) मर्दा भाव विमुक्त ज्ञान यथाश्रान्त
 कर्ता शोक शोक प्रपथ (यथा रजते इदं रजतामीन
 ज्ञानम् तर्क०) ।
 प्रमाणात् [प्र + मा + मृज्] 1 (नबाई चौहाई) माप
 रघु० १८।३ 2 आकार विस्तार परिमाण
 (नबाई चौहाई) 3 मान मानक -पुच्छिमा स्वामि
 बरबाना प्रमाण परम स्थित मुद्रा० ४-३
 4 सोमा परिमाण 5 माप्य महारत प्रमाण 6 अधि
 कारी सम्पादन निर्णय निष्पाद्य वह जिनका
 पात्र प्रमाण माना जाय भूत्वा देव प्रमाणम् पञ्च०
 १ यह मुनिक श्रीमान् हा निर्णय करने (कि क्या
 करना चाहिए) -आर्यमिश्रा प्रमाणम्-मात्र (वि०) १
 मुद्रा० १।१ श० १।२ व्याकरणे गौणनि प्रमाणम्
 7 मय्य ज्ञान यथाय प्रपथ या भाव 8 प्रमाण की
 रीति प्रमाण ज्ञान प्राप्त करने का उपाय । नैपारिक
 केवल बार प्रमाण प्रयश्च अनुमान उपमान यो
 शब्द मानते हैं वदानी और भीमासक अनुपलब्धि
 और अधोपनि हो और मानते हैं । माक्य केवल
 प्रपथ, अनुमान और शब्द को ही मानते हैं-० अनु
 मबं श्री 9 मुख्य, मुल 10 एकता 11 वेद, धारण
 पर्यन्त 12 कारण हेतु (प्रमाणी क) 1 अधिकारी
 मानना या समझना 2 आज्ञा मानना अनुमान होना
 3 माहित करना सिद्ध करना 4 यथोचित भाग
 बाटना । मम० अधिक (वि०) मापान्य मे अधिक
 अपरिमित अत्यधिक श० १।३० अस्तरम् प्रमाण
 की अन्य गीत अभाष प्रमाण-यना ज (-वि०)
 (तात्पर्य का भाव) प्रमाण पदार्थ का जानकार
 (ज्ञ) शिव का विज्ञापण हुज्ज (वि०) अधिकारी
 द्वारा स्वीकृत पत्रम् निमित्त अधिकारपत्र, पुच्छ
 विचारक, निर्णायक, ध ध, बचनम्, बोधयम्

अधिकृत वक्तव्य, आत्मन् 1 वेद, धर्मशास्त्र 2 नके
 विज्ञान सुख्य मापने की डोरी ।
 प्रमापयति (ना० धा० पर०) अधिकृत मपयना प्रमाण-
 म्बक्य मानना हि० १।१० ।
 प्रमापिक (वि०) [प्रमाण + क्त] 1 'नाप' का आकार
 वृत्तन करने वाला 2 प्रमाण या अधिकार का रूप
 धारण करने वाला ।
 प्रमापयति [प्रकृष्टो मानामह-प्रा० स०] 1 परमाना,
 ही परमाना ।
 प्रमाप [प्र + मृ + क्त] 1 प्रीति, सताप देना
 मानना 2 मृग करना, बिलाना 3 बध, हत्या
 विनाश मयिकाना प्रमाणन मन्वमाजायिन त्वया
 रघु० २।३१ ४ ५ हिमा कन्याधार 5
 बन्धन बलपूर्वक अपहरण ।
 प्रमापिन (वि०) [प्र मृ + क्त] 1 मृगना देने
 वना तम करने वाला मपयित करने वाला कष्ट
 देने वाला दुख पहुचाने वाला बध रक्षा हुज्ज
 प्रमापिनी बध त विवस्मनीयमायुधम-मालवि० ३।२
 मा० २।१ कि० ३।१४ 2 बध करने वाला, विनाश-
 करी 3 मृग करने वाला गतिमान करने वाला
 भग० २।६० ६।३४ ४ फाड़ने वाला गिराने
 वाला पछाने वाला रघु० ११।५ ५ काट कर
 गिराने वाला कि० १।३१ ।
 प्रमाप [प्र + मृ + क्त] 1 नवहेलना असावधानी,
 अनवधान, लापरवाही भूल-बक ज्ञान प्रमादस्मृति
 १ शक्यम् श० ६।५ चरि० १ 2 मादकता,
 पागलपन उन्मत्तता ३ मलनी भारी भूल मलन
 निर्णय ४ उन्मत्तता उन्मत्त मकट भय अहा प्रमाद
 मा० ३ उत्तर० ३ ।
 प्रमापयन् [प्र + मृ + क्त] 1 बध हत्या ।
 प्रमापयन् [प्र + मृ + क्त] 1 मित्र देना रगड
 देना धा देना ।
 प्रमित (मृ० क० क०) [प्र मा (मि) क्त] 1 मप
 तुला सीमन्त 2 कुछ वाहा मितविषया शक्ति
 विद-सहाधी १ ५१ शि० १६।८ 3 आन समझा
 हुआ 4 प्रमापित प्रमित ।
 प्रमित (रघु०) [प्र मा (मि) क्त] 1 माप माप
 2 मय या निश्चित ज्ञान यथाश्रान्त या प्रत्यक्ष
 3 किसी प्रमाण या ज्ञान के ज्ञान से प्राप्त ज्ञानकारी ।
 प्रमीकृ (वि०) [प्र + मिह + क्त] 1 घना मयन सटा
 हुआ 2 मृग बनकर रिकला हुआ ।
 प्रमीत (मृ० क० क०) [प्र मी + क्त] घरा हुआ, मृतक,
 त यज्ञ के अवसर पर बलि चढ़ाया हुआ या बध
 किया हुआ पशु ।
 प्रमीति (रघु०) [प्र + मी + क्त] मृग विनाश निघन ।

हुआ, पूर्व विकसित 2 उत्पन्न, उद्भूत, वैदा हुआ
यस्यायमगात् कृतिनः प्रकृष्ट श० ७. ११ 3 बड़ा
हुआ 4 गहराई तक गया हुआ यथा 'प्रकृष्टमूल'
में 5 लम्बे बड़े हुए यथा 'प्रकृष्टकेश' 'प्रकृष्टमधु' में।

प्रकृष्टिः (स्त्री०) [प्र + कृ + क्तिन्] वर्धन, वृद्धि।
प्ररोचनाम् [प्र + कृ + णिच् + क्त्वा] 1 उत्पन्ना उद्गीर्ण
2 निर्दलन, व्याख्या 3 (किसी व्यक्ति का) प्रदर्शन
विलम्बे लाग देल सर्व और पसद कर—अलोकसामान्य-
गुणस्तन्मूत्र प्ररोचनायै प्रकटीकृतश्च मा० १११०
(यहाँ 'प्ररोचनायै' का अर्थ जगद्वर पटित 'प्रवृत्ति
पाठवार्य'—ससार में पूर्णतः परिचित होने के लिए
करते हैं) 4 नाटक में आगे आने वाली बात का
रोचक वर्णन 5 ध्येय की पूर्णरूप में प्रतिस्थापना
दे० मा० २० ३८८ (अन्तिम दोनो अर्थ का बतलान
के लिए 'प्ररोचना' भी)।

प्ररोहः [प्र + रुह् + षच्] 1 अकुरित होना, अलुवा
निकलना, बढ़ना, बीजाकुरण यथा यवाकुरप्ररोह
2 अकुर अलुवा (बाल० में भी)—लक्षप्ररोह इव
लोचनल बिभेद—रघु० ८। १३ लक्ष्मण प्ररोहप्रतिमा
मिव मन्विष्यान् १३। ७१, कु० ३। ६०, ७। ७
3 फिलज सल्मान हा राघवकुलप्ररोह बेणी० ४
महावी० ६। २५ 4 प्रकाशकुर कुर्वन् मानसिवा
मयीना प्रमाप्ररोहास्तमप रत्नाणि रघु० ६। ३३
5 नवपल्लव या टहनरी, साखा कोपल।

प्ररोहणम् [प्र + रुह् + क्त्वा] 1 वर्धन अकुरण स्फुटन
2 कर्मो निरालना, अकुरण या उगाव 1 टहनता किमन्ध
स्फुटन, कोपल।

प्रसन्नम् [प्र + लप् + क्त्वा] 1 बात चीन करना बान
मध्य, सन्नाप 2 बाबालता, बालकल्ल बड़बड़, अमबड़
बात, बकबात—इद कस्यापि प्रसन्नम् 3 विनाप
रोना-बोना—उत्तर० ३। २९।

प्रसन्नित (भू० क० क०) [प्र + लप् + क्त] कहा हुआ
प्रसन्न किया हुआ, लप् बात—दे० ऊपर प्रसन्न।

प्रसन्नम् (भू० क० क०) [प्र + लप् + क्त] बोला दिया
हुआ, उगा हुआ।

प्रसन्न (वि०) [प्र + लप् + णच्, षच्, वा] 1 लटकन-
शील, नीचे की ओर झटकने वाला जैसा कि 'प्रसन्न
केश' में 2 उन्मत्त—यथा 'प्रसन्ननामिक' में 3
मन्वर, विलम्बकारी, —कः 1 लटकता हुआ, आश्रित
2 कोई भी नीचे की लटकने वाली वस्तु 3 शाखा
4 कण्टहार 5 एक प्रकार का हार 6 स्त्री की छाती
7 अन्ना या नीमा 8 एक राजपूत का नाम शिको
बलराज ने मारा डाना का। मय० अर्ध० बह पुत्रव
जिलके पोने लटकते हैं,—कनः, मयकः, हन् (पु०)
बलराज का विशेषण।

प्रसन्नम् [प्र + लप् + क्त्वा] नीचे लटकना, आश्रित
रहना।

प्रसन्नित (वि०) [प्र + लप् + क्त] लटकनशील, लटकने
वाला, निरक्षित।

प्रसन्नम् [प्र + लप् + षच्, मुमागम्] 1 प्राप्न करना,
लाम उठाना, अवाप्ति 2 बोला देना, छलना, ठगना
प्रवचना।

प्रसन्नः [प्र + लप् + णच्] 1 बिनाश सहार बिघटन—
स्थानानि कि त्रिभवन प्रसन्न गतानि भर्तु० ३। ७०
६९, प्रसन्न नीत्वा श० ११। ६६, 'निराहित करके'
(वस्तु के अन्त में) 2 समार का विनाश विरुद्धभाषा
विनाश कु० २। ६८, मय० ७। ५ 3 व्यापक विनाश
या बरबादी 4 मृत्यु परना निघन—प्रारब्धा प्रसन्नय
मासवदन्तो विरुद्धमृते बयम् मुद्रा० ५। ११ १११८
मय० ११। १४ 5 मूर्छा देहोपाय वेदना का न रहना
गन् कु० ६। २६ 6 (च० शा० म) वेदना का हानि
(3 व्यापकविनाश में से एक—प्रसन्न सुख ३ काही
गौरादि-इदमर्द्धनम्—प्रता० 7 रहस्यरहित बोध
या प्रणय। मय० काव्य शिवनाश का समय जलघर
मूर्छा विघटन के अवसर की काली घटा,—बहन्
मूर्छा विघटन के अवसर पर आग—यथोक्ति—मूर्छा
क विनाश का समुद्र।

प्रसन्नित (वि०) [प्रा० म०] उन्मत्त पल्लव वाला।

प्रसन्न [प्र + ल + षच्] टहनता, कर्ता लक्ष।

प्रसन्नितम् [प्र + ल + क्त] काटने का उपकरण

प्रसन्न [प्र + लप् + षच्] 1 बान बालीना प्रवचन

2 बाबालता बालकल्ल अमबड़ बात या बड़बाद
मा० १२। ६ 3 बिलाप, राना घाना—उत्तराध्याया
'प्रसन्निकुर' मयवान् बालरुचि—का० १७५ बेणी०
५। ३० 4 मय०—हन् (पु० एक प्रकार का अन्न)।

प्रसन्नित (वि०) [प्र + लप् + णिच्] 1 दातुरी बोलने वाला
—हा अमवप्रसन्नितम्—बेणी ३ 2 बाबालता बातकल्लव।

प्रसन्न (भू० क० क०) [प्र + लो + क्त] 1 पिचला हुआ
पुना हुआ 2 लुप्त, बिगड़ 3 निर्बोद्ध क्षतना लुप्त।

प्रसन्न (भू० क० क०) [प्र + ल + क्त] काट कर गिराया हुआ।

प्रसन्न [प्र + णिच् + षच्] 1, मलन वाला, लेप करने

वाला 2 एक प्रकार का मन्त्रोत्तर।

प्रसन्न [प्र + लिट् + षच्] एक प्रकार का रसा शोषण।

प्रसन्नितम् [प्र + लप् + क्त्वा] 1 (भूमि पर) लाटना 2

उत्तोलन, उछालना।

प्रसन्न [प्र + लप् + षच्] 1 अतिनाया का रस

लाया 2 दयवाना छलना।

प्रसन्नितम् [प्र + लप् + क्त्वा] 1 आनयन 2 ललवाना लुप्त

माना, लालच देना 3 प्रकाशन की वस्तु, बारा, दाना।

प्रकोष्ठी [प्रकोशन + ठीप्] रेत, बाक ।

प्रकोष्ठ (वि०) [प्रा० ल०] अथवा कुण्ड, बारबार करने वाला ।

प्रकम् [प्र + कम् + क्त्वं] 1 वर्जन करने वाला, बरता, उद्धोषक 2 अध्यापक, व्याख्याता—मनु० ७।२० 3 मुचकटा, बाराप्रबाहु बोलने वाला ।

प्रकम्, प्रकम्, प्रकम् (पु०) बर, दे० 'प्रकम्' और 'प्रकम्' ।

प्रकम् [प्र + कम् + क्त्वं] 1 बोलना, प्रकथन करना, बोधना करना, पच० १।१९० 2 अध्यापन, व्याख्यान 3 सोलकर समझाना, व्याख्या करना, अर्थ करना महावी० ४।२५ 4 वाग्विना 5 वचनशास्त्र, मनु० १।१८४। सम० धनु (वि०) बात करने में कुशल, वाग्मी ।

प्रकम् [प्र + कम् + क्त्वं] गह्वे ।

प्रकम् (वि०) [प्र + कम् + क्त्वं] 1 डलवा, झलाना वाला मुकाबदार, नीचे की बहने वाला 2 दाह, दुरारोह, विप्रप्राप्ति, चट्टान जैसा 3 कुटिल, मुका हुआ 4 अनुकूल, प्रवृत्त सलभ (प्रायः मन्त्रांत के अन्त में) वचनप्रवण—कि० ३।१९ 5 भक्त, अनुकूल, अद्वैत, गुणा हुआ, मुका हुआ, भरा हुआ नृमि प्राचप्राच-प्रवचनमार्ग के विषयवृत्ता मनु० ३।२९, वि० ८।३५, मुद्रा० ५।२१, कि० २।४४ 6 अनुकूल, उत्पन्न—कु० ४।२७ 7 आतुर, तत्पर कि० २।८ 8 युक्त, सम्पन्न 9 विनय, मुनील, विनीत 10 मुनीया हुआ, बर्बाद, क्षीण, कः चौराहा, जम् 1. उत्तर, डलवा उत्तर, चट्टान 2 पहाड़ का पारबर्माण, डलान, मुकाब ।

प्रकम् (वि०) (स्त्री०—ती, ली) [प्र + कम् + क्त्वं] यात्रा पर जाने के लिए तैयार । सम० बतिका उम नायक की पत्नी जो यात्रा पर जाने के लिए तैयार बैठा है (रीतिकावर्मा में जाठ प्रकार की नायिकाओं में से एक) ।

प्रकम् [प्र + कम् + क्त्वं] 1 बुने हुए कपड़े का ऊपर का भाग 2 अङ्गुष्ठ वि० १।११९ ।

प्रकम् (वि०) [प्रकम् बयो दस्य - प्रा० व०] बड़ी उन्नत का, बुद्ध, बुद्ध के ज्येष्ठे प्रवचनस्थान विद्वजः—उत्तर० ४, रघु० ८।१८ ।

प्रकम् (वि०) [प्र + कम् + क्त्वं] 1 मुख, प्रधान, सर्वोष्ठ या मुख, सर्वोत्तम, बीधान्—सकलके विरदति प्रवरो विमोद मुच्छ० ३।३, मनु० १०।२७, चट० १९ 2 ज्येष्ठ, रः 1 बुलावा, आह्वान 2 एक विशेष प्रकार का आवाहन जो अध्यापन के अवसर पर श्रमि को सर्वोत्तम किया जाता है 3 वंश परम्परा 4 कुल, परिवार, वध 5 पूर्वव 6 वाचप्रवर्तक क्षत्रि 7. लम्पान, संज्ञा 8. वक्रता, चारर, रघु अन्तर की

लकड़ी । सम०—बाहुनी (वि० व०) बलिनी-कुमारों का विशेषण ।

प्रकम् [प्र + कम् + क्त्वं] नि. निम्नोत्तम द्विवारिकमस्मिन्—प्र + कम् + क्त्वं] 1 यक्षीय जनि 2 विष्णु का विशेषण ।

प्रकम् [प्र + कम् + क्त्वं] लोचमान से पूर्व किया जाने वाला अनुष्ठान ।

प्रकम् [प्र + कम् + क्त्वं] आरंभ, उपक्रम, काम में लगाना ।

प्रकम् (वि०) (स्त्री०—लिका) [प्र + कम् + क्त्वं + क्त्वं] 1. बाल करने वाला, स्थापित करने वाला 2 प्रवर्तिनील, उर्ध्वता, जाने बहने वाला 3. वैरा करने वाला, जन्म देने वाला 4. प्रवीचक, प्रोत्साहक, उक्तमाने वाला, प्रवक्तृकाले वाला (दूरे वर्त में)।—कः बन्मदाना, प्रवर्तक, प्रवेता 2. प्रवीचक, प्रोत्साहक 3 विवाचक, मध्यस्थ ।

प्रकम् [प्र + कम् + क्त्वं] 1 कम्मे रहना, जाने बहना 2 आरंभ, शुरू 3 कार्यान्वय, नीच बालना, स्थापन, प्रतिष्ठापन 4 प्रोत्साहन, वक्तृवर्क बकाना, उद्दिष्ट 5 व्यसन होना काम में लगना 6 होना, बहति होना 7. स्थिरता, कार्य 8 व्यवहार, आचरण, कार्यविधि, या कार्य में प्रेरित करना, प्रोत्साहन देना ।

प्रकम् (वि०) [प्र + कम् + क्त्वं + क्त्वं] संवाहन करने वाला, या जो नीच जागता है, स्थापित करता है और उसे बकाठा रहता है या उल्लेखता है ।

प्रकम् (पू० क० क०) [प्र + कम् + क्त्वं + क्त्वं] 1 बौध दिया हुआ, बकाता हुआ, ककुम्मा हुआ, चक्कर जाने वाला रघु० १।१९ 2. नीच हाका हुआ 3. प्रेरित किया हुआ, उक्तमाना हुआ, वक्तृमाना हुआ 4. बुलमावा हुआ ५. जन्म दिया हुआ, निमित्त 6. पवित्र किया हुआ, छाया हुआ मनु० १।११९ ।

प्रकम् (वि०) [प्र + कम् + क्त्वं + क्त्वं] 1 प्रवर्तिनील, जाने बहने वाला 2. लक्षित रहने वाला 3. जन्म देने वाला, प्रवर्ती 4. हस्तेमान करने वाला ।

प्रकम् [प्र + कम् + क्त्वं] वृद्धि करना, बढ़ाना ।

प्रकम् [प्र + कम् + क्त्वं] भारी वृद्धि, मुकाबदार बर्बा ।

प्रकम् [प्र + कम् + क्त्वं] 1. बरकता 2. वृद्धी वृद्धि ।

प्रकम् [प्र + कम् + क्त्वं] विशेष बाला, विशेष बाला, बाणा पर बाला ।

प्रकम् [प्र + कम् + क्त्वं] 1 बहना, बार चक्कर बहना 2. बाह् 3. बाह् के लक्ष वर्तों में से एक (जो वर्तों को बलिमान करता है) ।

प्रकम् [प्र + कम् + क्त्वं] 1. कम्प वाड़ी या वाकली (विषयो के किम्) 2. वाड़ी, वाह्व, लवारी 3. बहाना ।

प्रवृत्तिः—ह्री [प्र+वृत्+इप्, प्रवृत्ति+ङीप्] रे०
‘प्रवृत्ति’ ।

प्रवाच (वि०) [प्रा० व०] वाणी, वक्ता—(कुर्वते)
वदाम्यनुलोमावाच प्रवाच कृतिना गिरः—सि०
२।२५ २. वासुकी, वाचा—मृग० ३।१९ ।

प्रवाचन् [प्र+वच्+णिच्+स्वट्] बोधना, उद्योगना,
प्रवचन ।

प्रवाचन् [प्र+वे+स्वट्] मुने हुए कपड़ों के किनारों के
बोट लगाया वा छटना वा सम्मिलना ।

प्रवाचिः—वी (स्वी०) [प्रवाच+ङीप्, नि०] हृत्सो वा
बुझाई की डरकी ।

प्रवास (भू० क० कृ०) [प्रपश्ये वातो यस्मिन्—प्रा० व०]
तुफान में पड़ा हुआ—तन् १ वायु का होका, ताजा
हुआ—प्रवातस्यनस्या देवी मालवि० ५ २ तुफानी
हुवा, जाँची—ननु प्रवातेऽपि निष्कंथा गिरय स० ९,
३. हुवादार स्थान, कु० १।४९ ।

प्रवाहः [प्र+वृ+वञ्] १. सञ्च वा ध्वनि का उच्चारण
२. बहिर्वाहन करना, उत्सृज्य करना, प्रवचन करना
३. प्रवचन, वाताकाश ४. वात, प्रतिवेदन, अफवाह,
किस्बन्दी—अनुरागप्रवाहस्तु वल्लभो सार्वभौकिक-
मा० १।१९, व्याघ्रो मानुषं जायतीति लोकप्रवाहो
दुर्विवाहः—हि० १, रत्न० ४।५ ५. जाकायाँका,
वल्गु ६. विवाह संबंधी भाषा ७ चुनौती के सञ्च,
पारस्परिक विरोध—हर्षं प्रवाहं नृपि सप्रहारं प्रचक्रन्
राजनिष्ठाभिहारी—वृत्ति० २।३९ ।

प्रवाहः, प्रवारकः [प्र+वृ+वञ्, प्रवार+कञ्] बादर,
बाष्पजनन ।

प्रवारणम् [प्र+वृ+णिच्+स्वट्] १ (इच्छा) पूर्ण करना
छोट की प्राथमिकता ३. निषेध, विरोध ४. काम्यदान ।

प्रवाहः (पु०) रे० ‘प्रवाल’ ।

प्रवालः [प्र+वृ+वञ्] १. विवेकजनन, विवेकवाता,
घर पर न रहना, परवेष्टनिवास—रघु० १९।४४ ।
वन०—कल,—स्व,—विस्त (वि०) विवेक की यात्रा
करना, घर पर न रहने वाला ।

प्रवालम् [प्र+वृ+णिच्+स्वट्] १. विवेक निवास,
अन्वामी कम के बाह्य करना २. निर्वाचन, देशनिकासा,
वन, हस्ता ।

प्रवालम् (पु०) [प्र+वृ+णिच्] वाणी, बटोही,
परवेष्टी ।

प्रवालः [प्र+वृ+वञ्] १. बहाव, चार बग कर बहना
२. गद्दी, पैदा वा बलमार्ग, चारा—प्रवाहस्ते वारां
विमलवचनारो विष्णु नः—नृग० २, रघु० ५।४९,
१३।१०, ४८, कु० १।५४, मेघ० ४९ ३. बहाव,
बहका हुआ पानी ४. बहिष्कृत बहाव, बहुत भुलका,
वैफल्य ५. घटना कम (नदी की चार की गति

बहुकना) ६. क्रियाता, सक्रिय व्यस्तता ७. ताकाव,
झोला ८. बहिया बोझ (प्रवाहो भूवितम्) नदी में
मृतना (शा०), व्यर्थ कार्य करना (माल०) ।

प्रवाहकः [प्र+वृ+वञ्] मृत मेल, पिशाच ।

प्रवाहणम् [प्र+वृ+णिच्+स्वट्] १ हांक कर भागे
बहुना २ बल्य करना ।

प्रवाहिका [प्र+वृ+वञ्+टाप्, इत्त्वम्] बल्य लग
जाना ।

प्रवाही [प्रवाह+ङीप्] रेत, बाक ।

प्रविकीर्ण (भू० क० कृ०) [प्र+वि+ङ+स्त] १. बसेरा
हुआ, इधर उधर छितराया हुआ २. तिनर बितर
किया हुआ, फैलाया हुआ ।

प्रविक्षाल (भू० क० कृ०) [प्र+वि+क्ष+क्त] १.
नामी, कुलाया हुआ २ प्रसिद्ध, मशहूर, विभूत ।

प्रविक्षालः [प्र+वि+क्ष+क्तिन्] मलहूरी, कीर्ति,
प्रसिद्धि ।

प्रविक्षयः [प्र+वि+चि+ञ्] परीक्षा, खोज, अनु-
संधान ।

प्रविचारः [प्रा० स०] विवेचन, विवेक ।

प्रविक्षिणम् [प्र+वि+चि+स्वट्] मगस ।

प्रविक्षित (भू० क० कृ०) [प्र+वि+क्त+स्त] १
विछाया हुआ, फैलाया हुआ २ विखरे हुए, अस्तव्यस्त
(वाला) ।

प्रविहार [प्र+वि+ङ+वञ्] फट कर टुकड़े टुकड़े
होना, कुलना ।

प्रविहारणम् [प्र+वि+ङ+णिच्+स्वट्] १ काटना,
विघीर्ष करना, तोड़ना, फट कर टुकड़े टुकड़े होना
२ कमी अमना ३ लचक, घुड़, लड़ाई ४ जीवनाड,
गड़बड़ी, हल्ला-मुल्ला ।

प्रविष्ट (भू० क० कृ०) [प्र+व्यच्+स्त] शाला, हुआ,
फेका हुआ ।

प्रविहृत (भू० क० कृ०) [प्र+वि+ङ+स्त] सितर-
वितर किया हुआ, मनाया हुआ, बसेरा हुआ ।

प्रविमल (भू० क० कृ०) [प्र+वि+मञ्+स्त] १.
अलग किया गया, विभुक्त २. हिले किया गया,
विभाजन किया गया, बाँटा गया, छिटारित किया गया
—ज्योतीषि वर्तवति च प्रविमलतरपिः—स० ७।९ ।

प्रविमलः [प्र+वि+मञ्+वञ्] भाव, उलझीन,
वितरण, वनीकरण—रघु० १९।२ २. हिल्ला, अंध ।

प्रविटः (पु०) पीका चमन ।

प्रविरक्त (वि०) [प्रा० स०] १. बहुत दूर दूर, विभुक्त,
अलगाया २. बहुत कम, बहुत थोड़ा, स्वल्प, थोड़ा
—प्रविरक्ता इव नृप्यनृपका—रघु० ९।३४ ।

प्रविलम्बः [प्र+वि+ली+वञ्] १. निविलम्बकर वह जाना
२. पूरी तरह रुक जाना वा अचंचल हो जाना ।

प्रविशुष्य (भू० क० क०) [प्र + वि + श् + क्त] काटा हुआ, मिकाका हुआ, हटाया हुआ ।

प्रविशब्जः [प्र + वि + श् + बज्] जगड़ा कलह, तक-
रार ।

प्रविश्वित (वि०) [प्रा० सत्] 1 विशुद्ध अकेला 2
विशुद्ध, बरग किया हुआ ।

प्रविश्लेष्मः [प्र + वि + श्लिप् + बज्] वियोग, जुदाई ।

प्रविश्लज्ज (भू० क० क०) [प्र + वि + श्ल + क्त] बिज्र,
उदास, हतोत्साह ।

प्रविष्ट (भू० क० क०) [प्र + विष् + क्त] 1 अन्तर
गया हुआ, घुसा हुआ—परधार्मिक प्रविष्ट शरपतनभया-
द्भयभा पूर्वकायम्—स० ११७ 2 लगा हुआ, व्यस्त
3. आरम्भ ।

प्रविष्टकम् [प्रविष्ट + क्त] रग भूमि का द्वार ।

प्रविस्त (स्ता) रः [प्र + वि + स्तु + श् + क्त, बज् वा]
परिच, दृष्ट ।

प्रवीण (वि०) [प्रकृष्टा ससाधिता बीणा येन प्रा० व०]
जतुर, कुशल, जानकार—आमोदानक्ष हरिद्वनुराणि
नेनु नैवायो अगति समीरमाप्रवीण—माघि० ११५,
कु० ७१८, १ ।

प्रवीर (व०) [प्रा० म०] 1 अक्षी, उत्तम, सर्वश्रेष्ठ
या पूज्य रघु० १४२९ १६१, भग० ११४८ 2
मज्जत, शक्तिशाली, शौर्यसम्पन्न, —र 1 बहादुर
व्यक्ति, नायक, योद्धा 2 मुख्य, पूज्य व्यक्तित्व ।

प्रवृत्त (भू० क० क०) [प्र + वृ + क्त] घुमा हुआ,
सकलित, छाटा हुआ ।

प्रवृत्त (भू० क० क०) [प्र + वृ + क्त] 1 चारंग किया
गया, धुव किया गया, प्रगत 2 स्थिर किया हुआ
—अधिरप्रवृत्त बीष्मसमयमाधिकार्य—स० १ 3
व्यस्त, खलन 4. जाने के लिए उद्यत, कटिबद्ध
5. स्थिर, निश्चित, निर्धारित 6 निर्बाध,
विबाधरहित 7 गोल, ल गोल धामूषण ।

प्रवृत्तकम् [प्रवृत्त + क्त] रग भूमि में अवतरण ।

प्रवृत्तिः (स्त्री०) [प्र + वृत् + क्तित्] 1 निरन्तर प्रग-
मन, प्रगति, आगे बढ़ना 2 उदय, मूल, ज्ञात, (शब्दों
का) प्रवाह—प्रवृत्तिरासीष्मब्धानां परितापो वतुष्टयी
—कु० २१७ 3 दक्षिण, प्रकटीकरण—कुमुदप्रवृत्ति-
समय—स० ४१७, रघु० ११४३, १४३९, १५४
4. उदय, आरम्भ, ध्रुव—आकालिकी दीक्ष्य मधुप्रवृत्ति
—कु० ११३४ 5 प्रयोग, व्यसन, मुकाब, दसान, संधि,
प्रचलता—स० ११२२ 6 आचरण, व्यवहार—रघु०
१४७३ 7. काम में लगावा, व्यवसाय, कियाधीलता
कु० ११२६ 8 प्रयोग, नियोजन (शब्द का) प्रचलन
9 अनवरत प्रचलन, बर्ब 10 सार्थकता, भावार्थ, (शब्द
की) स्वीकृति 11 निरन्तरता, स्वाभिमता, प्रवृत्त्य 12.

सक्रिय सांसारिक जीवन, सांसारिक जीवन में सक्रिय
मान लेना (विष० निवृत्ति) 13 समाचार, खबर,
न्युत बात—वीर्यतेज स्वकुशलमयीं हारविष्मन् प्रवृत्तिम्
—मेघ० ४, विष्णु० ४१२० 14 नियम की प्रवृत्ति-
गीमता या वैचता 15. भाव्य, निश्चित, निश्चित 16.
सञ्ज्ञान, बीजा प्रत्यक्षज्ञान, समकक्ष 17. हाथी का नख
(जो मस्ती की अवस्था में उसके नखत्वक से निकलता
है), 18 उज्ज्वलिनी नगरी का नामान्तर । सम०
कः बालुल, नेदिबा, दृष्ट, गुप्तचर,—निमित्तम् किसी
कर्म का किसी निश्चित कार्य में प्रवृत्त होने का कारण,
भावेः सक्रिय या सांसारिक जीवन, कार्य में
अनुरक्ति, सञ्चार में सुख तथा आनन्द ।

प्रवृद्ध (भू० क० क०) [प्र + वृष् + क्त] 1 पुरा कहा
हुआ 2 बड़ा हुआ, वृद्धि को प्राप्त, विस्तारित, बढ़ा
किया हुआ 3 पूरा, महारा 4 बजरी, बड़काठी
5 प्रचण्ड 6 विद्याल ।

प्रवृद्धिः (स्त्री०) [प्र + वृष् + क्तित्] 1 बढ़ना, वृद्धि
—रघु० ११७१, १७७१ 2 उन्नति, समृद्धि, परो-
क्षति, तरक्की, उत्कर्ष ।

प्रवेक (वि०) [प्र + विष् + बज्] नराम, मुक्त, छांट
का, अलत श्रेष्ठ ।

प्रवेकः [प्र + विष् + बज्] ठीक बाल, वेन ।

प्रवेष्टः [प्र + वी + ट] बी, वेन ।

प्रवेष्टिः, —नी (स्त्री०) [प्र + वेष् + इत्, प्रवेष्टि + ङीप्]
1 बालों का बूझा—रघु० १५१० 2 विहारे हुए वा
मृदाखीन बाल (पति की अनुपस्थिति में पितृदा
प्राय ऐसे बाल चारण करती हैं) 3. हमी की बूझ
4 रंजीन ऊनी कपड़े का टुकड़ा 5. (नदी का) प्रवाह
या धार ।

प्रवेत् (पु०) [प्र + वृष् + क्त] अजे की आदेशः] सारथि,
रथवान् ।

प्रवेत्तम् [प्र + विद् + विष् + क्त] बतलाना, ऐकान
करना, बोधना करना ।

प्रवेकः, प्रवेपक, प्रवेप वृ, प्रवेपनम् [प्र + वेष् + बज्],
प्रवेप + क्त, प्र + वेष् + बज् + क्त, प्र + वेष् + क्त]
कपकपी, छिद्रन, बरकरना, सिहरन ।

प्रवेरित (वि०) [प्रवेर + इत्] हवर उबर झाका हुआ,
फेंका हुआ ।

प्रवेकः [प्र + वेष् + बज्] एक प्रकार की मृष ।

प्रवेकः [प्र + विष् + बज्] 1. गीतर जाना, घुसना—नुर-
प्रवेकामिन्तुकी बन्धु—रघु० ७११, कु० १४४०
2. अपरिचयन, पैठ, वृष्टि 3 रंजनी में प्रवेक—तेज
पात्रप्रवेकश्चेत्—स० २० १ 4. (घर का) दरवाजा,
घुसने का स्थान 5 भाव, राक्षस 6 (किसी काम
का) पीका करना, प्रवेकन की उत्पत्ति ।

प्रवेशकः [प्र + विष् + क्त्वं] परिचायक, निम्नपात्रों (नीच पाकर) द्वारा अनिनीत विष्कम्भक (इसमें बोरा को रसमय पर अग्रस्तुत घटना का बोध होने वाली बातों की जानकारी के लिए ज्ञान कराना आवश्यक है); (विष्कम्भक की भांति यह नाटक की कथा तथा कथावस्तु के बजायतर भेदों को जो या तो बंधों के अन्तराल में घटित हो चुके हैं या अन्त में होने वाले हैं, जोड़ देता है, यह पहले बंध के आरम्भ या अन्तिम बंध के अन्त में कभी प्रयुक्त नहीं होता) साहित्यवर्णककार इसकी परिभाषा देते हैं—प्रवेशकोनु-दातोन्त्या नीचपात्रप्रयोचित, अंकघटातिसिन्धेय क्षेत्र विष्कम्भके दया—३०८, ३०९ 'विष्कम्भक'।

प्रवेशकम् [प्र + विष् + क्त्वं] 1 दाखिल होना, घुसना, अन्दर जाना 2 परिचय देना, नेतृत्व करना, संचालन 3 घर का मुख्य द्वार, फाटक 4 पैघुन, स्त्री मगम।

प्रवेशित (यू० क० क०) [प्र + विष् + णिच् + क्त] परिचित कराया हुआ, अन्दर पहुँचाया हुआ, अन्दर ले जाया गया, घुसाया हुआ।

प्रवेशः [प्र + वेष्ट् + क्त्वं] 1 भूचा 2 कलाई, पहुँचा 3 हाथी की पीठ का मांसल भाग (जहाँ महाबल बैठता है) 4 हाथी के पसूदे 5 हाथी की झुल।

प्रवेश्य (यू० क० क०) [प्र + वेष्ट् + क्त] 1 प्रवेश्य व्यक्त—श्री० ल०] स्वष्ट, शाक, प्रकट, बाहिर।

प्रवेशितः (स्त्री०) [प्र + वि + क्त्वं + क्तित्] प्रकटो प्रबल, दखीन।

प्रवेश्यारः [प्र + वि + क्त्वं + क्तित्] प्रबल का फैलाव या विस्तार।

प्रवेशकम् [प्र + क्त्वं + क्त्वं] 1 विदेश जाना, अस्वासी कप के बलना 2 निर्वासित होना 3 वानप्रस्थ हो जाना।

प्रवेशित (यू० क० क०) [प्र + क्त्वं + क्त] 1 विदेश गया हुआ या निर्वासित 2 सत्यासी या परिचायक बना हुआ,—ल० 1. साधु, सत्यासी 3 बीषे आश्रम में स्थित ब्राह्मण, निज 3 जैन या बौद्ध निज का शिष्य,—लक्ष् सत्यासी बन जाना, साधु का जीवन।

प्रवेश्य [प्र + क्त्वं + क्त्वं + टाप्] 1 विदेश जाना, देशान्तरगमन 2 पर्यटन, (साधु के रूप में इतस्तत) भ्रमण 3 सत्यास आश्रम, सत्यासी का जीवन, ब्राह्मण की जीवनचर्या में बीषा आश्रम (निज जीवन)—प्रश्नार्थ कल्पवृक्षा इवाभिता कु० १५६ (यहाँ यत्कि० के अनुसार 'प्रवेश्य' का तात्पर्य वानप्रस्थ या गृहीत आश्रम है)। ल०—अवस्थितः बहु पुत्रव धिक्कन सत्यास प्रहृष करके उस आश्रम को छोड़ दिया हो।

प्रवेशकः [प्र + क्त्वं + क्त्वं] ककड़ी काटने का उपकरण।

प्रवेश्य (यू०), **प्रवेशकः** [प्र + क्त्वं + क्त्वं + क्तित्] साधु, सत्यासी।

प्रवेशकम् [प्र + क्त्वं + णिच् + क्तित्] निर्वासन, देश-निकास, निर्वासित करना।

प्रवेशकम् [प्र + क्त्वं + क्तित्] प्रशसा करना, स्तुति करना।

प्रवेशः [प्र + क्त्वं + क्तित्] प्रशसा, स्तुति, प्रशस्ति, गुणमान करना—प्रशसावचनम्, प्रशसागमक या सम्मान-सूचक वाणी 2 वर्णन, उल्लेख—जैसा कि 'अग्रस्तुत-प्रशसा' में 3 कीर्ति स्थापित, प्रसिद्धि। ल०—अपना दण्डिद्वारा बर्णन उपमा के अनेक भेदों में से एक—बहुभोजोऽयमुद्भव पद्मचन्द शम्भुसिरोधुत, तो तुम्हारी स्वयम्भवेति सा प्रशसोपमोऽप्येत काव्या० २३११, मुखर (वि०) ऊँचे स्वर से प्रशसा करने वाला।

प्रशस्ति (यू० क० क०) [प्र + क्त्वं + क्तित्] प्रशसा किया गया, स्तुति किया गया गुणमान किया गया तारीफ किया गया।

प्रशस्त्वम् (यू०) [प्र + क्त्वं + क्तित् + क्तित्] समुद्र, मागर।

प्रशस्त्री [प्रशस्त्वम् + क्त्वं + र वादेश] नदी।

प्रशस्तः [प्र + क्त्वं + क्तित्] 1 गमन, शान्ति, स्वस्थ-चितता—प्रशस्तस्थितपूर्वाधिबन्धम्—रघु० ८।१५ कि० २।३२ 2 शान्ति, विश्राम 3 बुझाना, उपसमन कु० १।२ 4 विराम, अन्त, विनाश सि० २०।७३ 5. शान्तवना, मुष्टीकरण—शि० १९।५१।

प्रशस्तम् (वि०) (स्त्री०—नी) [प्र + क्त्वं + क्तित्] शान्त करने वाला, शान्तिस्थापित करने वाला बीरव बचाने वाला, दूर करने वाला (रोग आदि को),—कम् शान्त करना, शान्ति स्थापित करना, बीरव बचाना 2 दमन करना, धर्मबचाना, दिलासा देना, हलका करना—आपभातिप्रमनफल सपदो ह्युनभानाम्—मेघ० ५३ 3. चिकित्सा करना, स्वस्थ करना—जैसा कि 'व्याधिप्रशमनम्' में 4 (प्यास) बुझाना, (जाग) बुझाना, दमन करना, मिटा देना 5. विराम, शान्त 6. उपयुक्त रूप में प्रदान करना, उत्साह को प्रदान करना कम्० ७।५६, (सत्याचे प्रति पावनम्—कम्०, परम्० अन्य विद्वान् इसका अलंकार नहीं समझते हैं) 7. प्राप्त करना, रक्षा करना, सुरक्षित रखना—कम्प्रशस्तवन्स्वयमर्थेन समुपस्थिता रघु० ४।१४ 8 वध, हत्या।

प्रशस्ति (यू० क० क०) [प्र + क्त्वं + णिच् + क्त] 1 मानवना की गई, बीरव बचाया गया, स्वस्थचित, मुष्टीकृत, शान्त किया गया 2 (जाग) बुझाई गई, (प्यास) शान्त की गई 3. श्रावित्वत किया गया, परितोषित किया गया—उत्तर० १।४०।

प्रशस्त (यू० क० क०) [प्र + क्त्वं + क्तित्] 1. प्रशंसा किया गया, तारीफ किया गया, कलावा की गई,

स्तुति की गई 2. प्रशंसनीय, तारीफ के योग्य
3. सर्वोत्तम, श्रेष्ठ 4. सीमापराधी, प्रसन्न, आनन्दित,
शुभ । सम०—अभिः एक पहाड़ का नाम ।

प्रशस्तिः (स्त्री०) [प्र + क्षम् + क्तिन्] 1. प्रशंसा, स्तुति,
तारीफ 2. वर्णन उत्तर० ७३ किसी की (उदा०
संरक्षक) प्रशंसा में लिखी गई कविता 4. श्रेष्ठता,
महत्त्व 5. गुण कामना 6 निर्देशन, शिक्षण, निर्देश-
नियम जैसा कि 'नेमप्रशस्ति' (निष्पन्न का एक
प्रकार) में ।

प्रशस्य (वि०) (म० अ०—येयम् या ज्यायम्, उ० अ०
—श्रेष्ठ या ज्येष्ठ) [प्र + क्षम् + क्त्वा] प्रशंसा के
योग्य, तारीफ के लायक, श्रेष्ठ ।

प्रशस्त (वि०) [प्रशस्ता शास्त्रात् यस्य प्रा० अ०]
1. जिसकी जनक मायाजी द्वाय उग्र फैली हो
2. गर्भपिण्ड की पाँचवी अवस्था कहते हैं कि इस
समय गर्भस्थित बालक के हाथ पैर बन जाते हैं।
—का छोटी शाखा या टहनी ।

प्रशस्तिका प्रशस्ता + कन् + टाप्, इत्थम् । छोटी शाखा,
टहनी ।

प्रशान्त (भू० क० कृ०) [प्र + शम् + शिच् + क्त]
1. शांत, शान्तिप्राप्त, स्वस्थचित 2. निश्चल, सीम्य,
निस्संख्य बीर, निश्चेष्ट—अहो प्रशान्तरमणीयतो-
यानस्य 3. पालतु, बखीकृत, दयाया हुआ 5. समाप्त,
विरत, निवृत्त—तत्पर्यन्तकथ एव मम प्रशान्तम्—मा०
१।३९, प्रशान्तमस्मिन्—उत्तर० १ 'कार्य करने से
रुका हुआ या निवृत्त' 5 भूत, मरा हुआ (दे० प्रपूर्वक-
शम्) । सम० आत्मन् (वि०) स्वस्थमना, शान्ति-
पूर्ण, अक्षय्य—ऊर्ध्व (वि०) क्षीयशक्ति, निस्तेज,
विषम्य—काय (वि०) मनुष्ट, श्रेष्ठ (वि०)
आराम करने वाला, विश्रान्त, विरत,—वाच (वि०)
जिसकी समस्त बाधाएँ व सकट दूर हो गये हैं—
कि० १।१८ ।

प्रशान्तिः (स्त्री०) [प्रा० म०] 1. चैन, शान्ति, मनकी
स्थिरता, निश्चलता, विश्राम 2. आराम, विराम,
ठहराव 3. निराकरण करना, (प्यास) बुझाना,
(आग) बुझाना ।

प्रशान्तः [प्र + शम् + क्त] 1. शान्त, चैन, मनकी
स्वस्थता 2. (प्यास) बुझाना, (आग) बुझाना,
निराकरण करना 3. विश्राम ।

प्रशान्तम् [प्र + शाप् + क्त] 1. शांत करना, हकूमत
करना 2. आराम देना, बल पूर्वक बसूल करना
3. राज्य शासन ।

प्रशान्त्य (पुं०) [प्र + शाप् + क्त] राधा, शासक,
राज्यपाल ।

प्रशिक्षि (वि०) [प्रा० स०] बहुत हीना ।

प्रशिक्षः [प्रा० स०] शिक्ष का शिक्ष, पशुशिक्ष—शिक्ष
प्रशिक्ष्यैः शपणीयमानमवेहि तत्प्रश्नविशेषात्—संकर० ।

प्रशुद्धिः (स्त्री०) [प्रा० म०] स्वच्छता, पवित्रता ।

प्रशोचः [प्र + शूच् + क्त] सुखना, मूख जाना,
मुखापन ।

प्रशोचनम् [प्र + शूच् + क्त] छिड़कना, खरज—उत्तर०
३।११ ।

प्रश्नः [प्रश्न् + क्त] 1. सवाल, प्रश्नार्थ, परिपुच्छ,
परिप्रश्न (अविज्ञातप्रश्न प्रश्न इत्यभिधीयते) अना-
मयप्रश्न पूर्वकम्—श० ५, 'कुशलसेम के प्रश्न के
साथ' 2. अदालती जाँच इनाम या नुबेखा
3. विवादपद, विवादाम्यद विषय विवादस्तु दृष्टिकोण
—इति प्रश्न उत्पन्न 4. समस्या, हिसाब का प्रश्न
—अज्ञेय प्रश्न दास्यायि बुद्धि० ५ 5. नविय
सबको प्रश्नार्थ 6 किसी वस्तु का अनुमान या परि-
च्छेद । सम० उपनिषद् (पुं०) एक उपनिषद्
का नाम (इसमें छ प्रश्न तथा उनके छ उत्तर हैं)
—इति—इती (स्त्री०) पहेली, बुझान ।

प्रश्नकः [प्र + श्श् + क्त] शिक्षिता, हीनापन, शिक्षि-
करण ।

प्रश्नयः, प्रश्नयम् [प्र + शि + क्त, क्त] 1. आदर,
शिष्टता, सुजनता, विनम्रता, सम्मानपूर्ण अथवा
शिष्टतायुक्त व्यवहार, विनय—समाधत्तः प्रश्नयन्-
मूर्तिभि—सि० १।३३, रघु० १०।७०, ८३, उत्तर०
६।२३, त्रयम्बक आदरपूर्वक, सविनय 2. प्रेम, स्नेह,
आदर—पञ्च० २।२ ।

प्रश्नित (भू० क० कृ०) [प्र + शि + क्त] सुजन, नम्र,
शिष्ट, विनीत, शिष्टाचारयुक्त ।

प्रश्नित (वि०) [प्रा० स०] 1. बहुत हीना या विनम्रता
2. उन्माद-हीन, निस्तेज ।

प्रश्नित (भू० क० कृ०) [प्र + शि + क्त] 1. बरोडा
दिया हुआ, ऐंठा दिया हुआ 2. तर्कसमल, युक्तियुक्त ।

प्रश्नेयः [प्र + शि + क्त] बना सपक, सहति ।

प्रश्नयः [प्र + श्वा + क्त] मांस, खसल, स्वास-
प्रश्वासक्रिया ।

प्रश्न (वि०) [प्र + स्वा + क्त] 1. सामने खड़ा हुआ
—रघु० १।५।२० 2. मुख्य, प्रधान, अग्रणी, उत्तम,
नेता—पुनस्त्यप्रश्न. महाती० १।३०, ६।३०, सि०
१।१३० । सम०—बाह् (पुं०) हल जोतने के लिए
सहाय बना हुआ जान बल ।

प्रश् (स्वा०, क०, कृ०—आ० प्रसते, प्रसते) 1. बच्चे की
जन्म देना 2. फैलाना, प्रसार करना, विस्तार करना,
बढ़ाना ।

प्रसत्त (भू० क० कृ०) [प्र + स + क्त] 1. सम्म,
युक्त 2. अत्यन्त आसक्त या स्नेही—पञ्च० १।१९१

3 अनुवाची, अनुवक्त 4 स्विच, पुष्पा हुआ, भक्त, व्यस्त, व्यसनवस्त, प्रवृत्त—शि० ११६१, इसी प्रकार व्यस्त, निद्रा आदि 5 सदा हुआ, निवृत्त 6 अविच्छिन्न, निरन्तर, अनवरत—कि० ४११८, रघु० १३१४०, मा० ४१६, माकवि० ३११ 7 हासिल, प्राप्त, सम्पन्न, कालम् (अवध०) निरन्तर, लगातार—कि० १६१५५।

प्रसक्ति (स्त्री०) [प्र + सञ्ज् + क्तिन्] 1 आसक्ति, भक्ति, व्यसन सलग्नता, अनुरक्ति 2 मन्त्र, संयोग साहचर्य 3 प्रयोजनीयता, संबन्ध, प्रयोग जैसा कि 'अति प्रसक्ति' (अतिव्याप्ति) में 4 ऊर्ध्व चर्च सत्ताये विद्युत् शिव शिवा प्रसक्तिम् कि० ५१५० 5 उपसहार, बढ़ावा 6 विषय प्रवचन का विषय 7 सहायता का दृष्टि होना।

प्रसक्ता [प्रा० सं०] 1 कृत् योग, राशि 2 विचार विमर्श। प्रसक्तावत् [प्र + सम् + क्त्वा + क्यप् + क्यट्] 1 गिनता 2 विचारण, मनन, गहन चिन्तन, भाव चिन्तन मृता-प्यरोगीतिरपि श्लेषमिन् हर् प्रसक्तापरौ बभूव—कु० ४१३० 3 कीर्ति, प्रसिद्धि विभूति, अजलायवी, भुगतान।

प्रसन्नः [प्र + सञ्ज् + क्तृन्] 1 आसक्ति, भक्ति, व्यसन, सलग्नता—स्वल्पयोग्ये मुक्तप्रसन्ने कु० १११९ तस्यास्यावर्तकोमलस्य मतन भूत प्रसने किम्—मृच्छ० २१११, शि० १११२२ 2 मेल-योग अन्त सपर्क, साहचर्य संबन्ध निवर्तनामस्मात् मज्जिका प्रसगात्—मृच्छ० ४३ अवयव संयुक्त 4 व्यस्तता, एकाग्रता, कार्यपरता—भूविश्रियायां विरलप्रसन्नै कु० ३१४३ 5 विषय, लोचक (प्रवचन या विवाद का) 6 अवसर, घटना दिव्यप्रसन्नयेन—का० १११, यात्राप्रसन्नेन—मा० १ 7 संयोग समय, अवसर अन्तु ११५ 8 संवर्धन घटना काष्ठ समोचना का हाना—नरवरो जगत् कारणमुपपद्यते कुत संवर्धनस्यैव प्रसगात् मारी०, एव वानवस्या प्रसन्न तदेव, कु० ३११६ 9 सबद्ध तर्कना, या वृत्ति 10 उपमहा अनुमान 11 सबद्ध भाषा 12 अविशोध्य प्रयोग या संबन्ध (व्याप्ति) 13 माता पिता का उन्मेष (प्रलंघन, प्रसन्न, प्रसन्नत् यद् क्रिया विशेषण के रूप में प्रयुक्त होकर निम्नांकित अर्थ प्रकट करने हैं 1 के सर्वेष में 2 के फल स्वल्प, के कारण, क्योंकि, के रूप में 3 अवसरानुसार 4 के क्रम में (यथा कथा-प्रसङ्गेन 'वाचनीय के मिलसिने में)। सम०—निवारणम् यथिति में इस प्रकार की स्थिति का रोकना, बसल (अवध०) समय के अनुसार, परिस्थितिबद्ध, विनिर्मुक्ति (स्त्री०) इस प्रकार की अकटस्थिति की पुनरावृत्ति का न होना।

प्रसन्नानम् [प्र + सञ्ज् + क्यट्] 1 ओढ़ने की क्रिया, मिशाला, एकत्र करना 2 व्यवहार में लाना, सबल बनाना, उपयोग में लाना।

प्रसक्तिः (स्त्री०) [प्र + सम् + क्तिन्] 1 अनुग्रह, कृपा-सुता, शिष्टाचार 2 स्वच्छता, पवित्रता, विशुद्धता। प्रसन्नानम् [प्र + सम् + क्त्वा + क्यट्] मिशाल, मेल।

प्रसन्न (सू० क० कु०) [प्र + सम् + क्त] 1 पवित्र, स्वच्छ, उज्ज्वल, निर्धन, विमल पारदर्शी कु० ११ २३ ७१७५, श० ५१२० 2 सुधा, आनन्दित, प्रनुष्ट, शान्त गंगा शरन्नयति सिन्धुपति प्रसन्नाम्—महा० ३१९ सम्भीराया पयसि सगितश्वेतसीध प्रसन्ने—मेष० ४० (यहाँ प्रथम अर्थ भी अभिप्रेत है), शु० ५१३९, रघु० २१६/३ इयाल अनुग्रहशील, कृपासु, मंगलप्रवर्धक हि मा कामधुर्वा प्रसन्नाम्—रघु० २१६३ ४ सरल सीधा स्पष्ट, सुबोध (अर्थ) 5 मन्त्र, मन्त्री प्रसन्नने नर्क विक्रमः = प्रसन्नप्रायस्ते तर्क मा० १—ल्ला-1 प्रसादन अनुरजन 2 लीची हुई मदिगा। सम०—आत्मन् (वि०) कृपासुमना मंगलप्रवर्धक—ईरा लीची हुई मदिगा, कल्प (वि०) 1 शान्त प्राय 2 सत्यप्राय,—मृच्छ ब्रह्म (वि०) कृपासुवृष्टि वाला, प्रसन्न चेहरे वाला, मुस्कता हुआ सलिल (वि०) स्वच्छ पानी वाला।

प्रसन्नः [प्रसत्ता सभा समानाधिकारो यस्मात् प्रा० ब०] बल, हिमा, प्रवृद्धता प्रमादुतादि रघु० ४१३०—अन्ध (अवध०) 1 बलपूर्वक जबरदस्ती,—इन्द्रियाणि-प्रमादीनि हरति प्रसन्न मन भग० २१६०, मनु० ८ ३३२ 2 बहुत अधिक, अत्यन्त तदार्थमि गीतरागेण हारिणा प्रसन्न हृत श० ११० ऋतु० ६१०५ 3 आग्रहपूर्वक—भग० १११०१। मम० हलन्तम् बलपूर्वक दबाता श० ७१३३ हरन्तम् बलपूर्वक अपहरण।

प्रसमीक्षणम्, प्रसमीक्षा [प्र + सम् + क्तिन् + क्यट्, प्रसम् + क्त + अच् + टाप्] विचारण, विचारविमर्श, निर्धारण।

प्रसयनम् [प्र + मि + क्यट्] 1 बचन, कला 2 जाल। प्रसर् [प्र + म् + क्त्वा] 1 जाने जाना, प्रगमन करना—श० ११२९ 2 मुक्त या निर्वासित मुक्त क्षेत्र, यद्वा गति—रघु० ८१२३, १११२०, महा० ३१५, हि० १११८६ 3 फैलाव, प्रसार, वितर, वित्सार, फैलाव—शि० ११३१ ४ वित्सार, जायाव, बड़ी मात्रा शि० ३१३५ ५ प्रचलन, प्रवाह—शि० ३११०, ६ सजिवा, प्रवाह, धारा, बह—पपात स्वेदाम्बुप्रसर इव हर्षाभुक्तिर—सीत० ११७. समूह, ६ समूहबद्ध, लड़ाई ९ लोहे का बाण १० चाल ११ विषप्रदायका।

प्रसरणम् [प्र + वृ + रुट्] 1. आने जाना, बीडना, बढ़ना
2. बच निकलना, भाग जाना 3. दूर तक फैलाना
4. धनु को घेरना 5. लीजम् ।

प्रसरणिः,—णी [प्र + वृ + णि, प्रसरणि + ङीप्] वृत्त
को घेर लेना ।

प्रसरणम् [प्र + सृ + रुट्] 1. चलना, सरकना, आने
बढ़ना 2. व्याप्त करना, सब दिशाओं में फैलना ।

प्रस (स) क [प्र + सृ + क्, पञ्च पृथो० सात्य स]
हेमत शत्रु ।

प्रसवः [प्र + वृ + ऋप्] 1 जन्म देना, जनन, प्रसूति,
जन्म, उत्पादन 2 बच्चे का जन्म, गर्भ मोचन, प्रसूति
—यथा 'आसन्नप्रसवा' में 3 सम्मान, प्रज्ञा, छोटे बच्चे,
बालक केवल की प्रसवा भूया —उत्तर० १, कु०
३८७ 4 सोत मूल जनस्थान (आल० से भी)
कि० २४३ 5 फूल, मञ्जरी—प्रलवविमृतिषु भूम्हो
विरक्त—मि० ३४२, नीता लोप्रमवरजसा पाण्डुना-
मानने श्री—मेघ०, कुदप्रमवशिखिल जीवितम्—११३,
रघु० १२८, कु० ११५५, ४४, १४, ८१५, ९, मा०
१२७, ३१, उत्तर० २२० 6. फूल, उत्पादन ।
सम०—उन्मुक्त गर्भ से मुक्त होने वाला, उत्पन्न होने
वाला पति प्रतीत प्रलवमुन्मी प्रियां दरर्ष—रघु०
३१२—गृह्य प्रसूतिकागृह, अच्चाचर,—बसिन् (वि०)
उपजाऊ, उर्वर, जन्ममूल फूल वा पत्ते की छल्ल,
बुल—बेचना, अच्चा प्रसव काल की पीड़ा, बच्चा
जनने का कष्ट,—स्वकी माता,—स्वात्म १ प्रसूतिका-
गृह, 2 जाल ।

प्रसवकः [प्रसवेन पुण्यादिना कायति सोमने प्रसव + कं
+ क] पियाल वृक्ष चिरीजी का पेड़ ।

प्रसवणम् [प्र + वृ + रुट्] 1 पैदा करना 2 बच्चे को
जन्म देना, उपजाऊन ।

प्रसवतिः (स्त्री०) [प्र + वृ + णि, अन्तादेश] अच्चा स्त्री ।

प्रसवन्ती [प्र + वृ + णि + ङीप्] अच्चा स्त्री न परवेत्
प्रसवन्ती क तदस्कांमो द्विजोत्तम—मन० ४४४ ।

प्रसविन् (पु०) [प्र + वृ + णि] पिता, प्रजनक ।

प्रसविनी [प्रसविन् + ङीप्] माता ।

प्रसव्य (वि०) [प्रगत सव्यात्—प्रा० स०] प्रतिकूल,
अलक्ष्य, बाधों, उलटा ।

प्रसृज् (वि०) [प्र + सृ + ङ्] सहजधील, सहिष्णु, सहन
करने वाला,—ह्रः 1. शिकारी जानवर वा पक्षी
2. मुकाबला, सहन क्षमि, विरोध ।

प्रसृज् (वि०) [प्र + सृ + रुट्] शिकारी जानवर वा पक्षी,
वृत्त 1. साधना करना, मुकाबला करना 2. सहन
करना, बर्दाश्त करना 3. पराजित करना, विजय प्राप्त
करना 4. क्षमिधन, परिदृश्य ।

प्रसृज् (अव्य०) [प्र + सृ + (लता) लृप्] 1. वृक्ष पूर्णक,

प्रसृज् (अव्य०) [प्र + सृ + रुट्] 1. वृक्ष पूर्णक,
वस्तुव्याप्तिकृतात् भव० २४, वि० १२७.

2. क्षमिधन, अव्यत ।

प्रसतिष्ठा [प्रपता साति (माद्य०) लो + क्तिन्—वस्या
—प्रा० व०, क् + टाप्] एक प्रकार का चावल
(छोटे दाने वाला) ।

प्रसाहः [प्र + सृ + ङ्] 1. अनुग्रह, कृपा, दक्षिण,
कल्याणकारिता—कुष दृष्टिप्रसाह 'कृपा दर्शन दीप्ति',
इत्याप्रसादादस्यास्त्व परिचयीरो मव रघु० ११९,
२२२ 2. अच्छा स्वभाव, स्वभाव में कल्याणकीलता
3. बीरता, क्षमि, मन की स्वस्थता, क्षमि, क्षमि,
उल्लेखना का अभाव—मन० २४४ 4. स्वच्छता
निर्वलता, उज्ज्वलता, पारदर्शिता, (पानी वा मन
आदि की) पवित्रता—मञ्जा रोष पठनकलुषा युक्तोश्च
प्रसाहम्—विजय० १८, स० ३३२, शान्तद्वि-
प्रसाहा—मि० ११९, रघु० १७१, कि० १२५,
5. प्रसादमयुक्तता, क्षमि की विशदता, प्रसन्न के
अनुसार, तीन मुणों में एक—प्रसाह गुण, परिभाषा-
क्षुब्धमनामिषत् स्वच्छमलमलहसं य, व्याप्ते-
व्यवस्थासोही संबंध विहितस्त्विति—काव्य० ८,
यावदर्थकपदार्थकप्रमर्षमस्य प्रसाद, वा मृतमात्रा
वाक्यां कृतमलमलरमि निवेदयन्ती वटणा प्रसादस्य
—रस०, हे० काव्य० ११५, सा० ४० १११ भी
6. भगवान् की मूर्ति को मोन लगाया हुआ वैश्व का
अवस्थित 7. बड़ाया, पुरस्कार 8. क्षमिधन जेट
9. कुशल, क्षेम । सम०—उन्मुक्त (वि०) अनुग्रह
करने के लिए उत्तर पराङ्मुख (वि०) 1. अनुग्रह
को आपिष कीचने वाला 2. जो किसी के अनुग्रह की
अपेक्षा न करे,—वाचन् अनुग्रह का पात्र,—स्व (वि०)
1. कृपा, मलप्रद 2. क्षान्त, सुष्ट, क्षमिधन ।

प्रसाहक (वि०) (स्त्री०—हिका) [प्र + सृ + ङ् + ङ्]

1. पवित्र करने वाला, स्वच्छ करने वाला, स्फटिक
सवृक्ष विशद करने वाला 2. सल्लो देने वाला, हास्य
बनाने वाला 3. आनन्दित करने वाला, कुस करने
वाला 4. अनुग्रह करने वाला, प्रसन्न करने वाला ।

प्रसाहन (वि०) (स्त्री० भी) प्र + सृ + ङ् + रुट्]

1. पवित्र करने वाला स्वच्छ करने वाला, निर्मल हो
विमुक्त करने वाला—कर्म कृतकृत्स्व वक्ष्यम्प्रसाहनम्
—मन० ११७ 2. सात्वता देने वाला, हास्य बनाने
वाला 3. कुस करने वाला, क्षमिधन करने वाला,
रः राक्षसीय संघ,—मन० 1. निर्मल करना, पवित्र
करना 2. सात्वता देना, हास्य बनाना, क्षमि करना,
मन स्वस्थ करना, 3. प्रसन्न करना, सुष्ट करना
4. कल्याण करना, अनुग्रह करना,—मा 1. क्षेम, कृपा
2. निर्मली करण ।

प्रकाशित (भू० क० ड०) [प्र+सृ+विप्+क्त] 1. पवित्र किया हुआ, स्वच्छ किया हुआ 2. खुल किया हुआ, प्रसन्न किया हुआ 3. पूजा किया हुआ 4. बीरव संघाया हुआ सात्वता दिया हुआ ।

प्रसाधक (वि०) (स्त्री०—वि०) [प्र+साध्+ञ्] 1. निष्पन्न करने वाला, पूरा करने वाला 2. पवित्र करने वाला, छानने वाला 3. सजाने वाला, अलंकृत करने वाला, कः पावर्चर, धरने स्वामी की वस्त्र पहनाने वाला सेवक ।

प्रसाधक्य [प्र+साध्+स्युट्] 1. निष्पन्न करना, कार्यान्वित करना, करवाना 2. व्यवस्थित करना, कर्मबद्ध करना 3. सजाना, अलंकृत करना, विमूषित करना, शरीरसज्जा, वेष्टन—भू० ५१८ 4. सजावट, आभूषण, सजाने वा विमूषित करने का साधन—भू० ७१३, १०.—म०, मन्०, नी०, कवी० । तम०—विधि सजावट, मृगार,—विशेषः सबसे ऊँचा मृगार—प्रसाधन विशेषः प्रसाधन विशेष—विष्णु० २१३ ।

प्रसाधिका [प्रसाधक+टाप्+इत्वम्] सेविका, वह स्त्री जो अपनी स्वामिनी के मृगार की देख-रेख करे—प्रसाधिकाकन्धितमप्रपादमाश्रित्य—रघु० ७१७ ।

प्रसाधित (भू० क० ड०) [प्र+साध्+क्त] 1. निष्पन्न, पूरा किया हुआ, पूर्ण किया हुआ 2. विमूषित, सुसज्जित ।

प्रसारः [प्र+सृ+चञ्] 1. फैलाना, विस्तार करना 2. फैलाव, प्रवृत्ति, विस्तार, प्रसारण 3. विज्ञापन 4. साधनसेवक के लिए देश में हजर उबार फैल जाना ।

प्रसारक्य [प्र+सृ+विप्+स्युट्] 1. विदेशों में फैलना, कफना, बुद्धि, प्रवृत्ति, फैलाव 2. फैलाना—यथा 'आप्रसारक्य' में 3. सृष्टि को फैलाना 4. ईश्वर और वायु के लिए समस्त देश में फैल जाना 5. अर्धस्वर कवी (प्रसारक) का स्वरों (ह, ख, ग, उ) में बहल जाना, प्रसारण ।

प्रसारिकी [प्र+सृ+विप्+ङीप्] सृष्टि को फैलाना ।

प्रसारित (भू० क० ड०) [प्र+सृ+विप्+क्त] 1. प्रसार किया हुआ, फैलाया हुआ, प्रवृत्त किया हुआ, कफना हुआ 2. (हारी की बाँध) फैलाया हुआ 3. प्रवृत्त किया हुआ, रफा हुआ, (विश्व के लिए) रफा हुआ ।

प्रसाद [प्र+सृ+चञ्] अपने प्रभाव में जाना, धीरे फैल, वरदायि करना ।

प्रसाद (भू० क० ड०) [प्र+सृ+क्त] 1. बाँटा हुआ, कटा हुआ 2. कफन, वस्त्र, काम में लगा हुआ 3. पूजा हुआ, प्रदत्त हुआ, आलस्य (करम० वा कवि०) के साथ—कफना कफना वा प्रदत्तः—पिंडा०, रघु० ८१३, —कन् पीव, भवाव ।

प्रसक्तिः (स्त्री०) [प्र+सि+क्तिन्] 1. बाण 2. पट्टी 3. बंधन, बन्धन की पट्टी ।

प्रसिद्ध (भू० क० ड०) [प्र+सि+क्त] 1. विख्यात, विख्यात, प्रसिद्ध 2. सजा हुआ, अलंकृत, विमूषित रघु० १८४१, भू० ५१२, ७१६ ।

प्रसिद्धिः (स्त्री०) [प्र+सि+क्तिन्] 1. कीर्ति, ख्याति, प्रसिद्धी, विमूषित 2. सफलता, निष्पन्नता, पूति—कि० ३१३९ मन्० ५१३ 3. मृगार, सजावट ।

प्रसीधिका [प्रसाधनेज्याम् प्र+सृ+ञ्] इत्यम्, टाप्, सीधवेस] बाटिका, छोटा उद्यान ।

प्रसूत (भू० क० ड०) [प्र+सृ+क्त] 1. सोया हुआ, निश्चित 2. प्रगाढ़ मिठा में ।

प्रसूतिः (स्त्री०) [प्र+सृ+क्तिन्] 1. निद्राश्रुता, प्रगाढ़ मिठा 2. लकड़ों का रोय ।

प्रसू (वि०) [प्र+सृ+क्तिन्] 1. प्रकाशित करने वाला, पैदा करने वाला, जन्म देने वाला—स्त्रीप्रसूषाधि—हेतुज्या—याज्ञ० १७३—(स्त्री०) 1. माता—मालर-पितरौ प्रसूजनविगरी—अमर० 'जनक-जननी' 2. बोड़ी 3. फैलने वाली—ग ४ केला ।

प्रसूका [प्र+सृ+क्तन्—टाप्] बोड़ी ।

प्रसूत (भू० क० ड०) [प्र+सृ+क्त] 1. उत्पन्न, जन्मित 2. पैदा किया हुआ, जन्म दिया हुआ, उत्पादित,—नम् 1 कुल 2 कोई उपजाऊ स्रोत ता जन्मा स्त्री ।

प्रसूतिः (स्त्री०) [प्र+सृ+क्तिन्] 1. प्रसूजन जनन, प्रसव 2. जन्म देना पैदा करना, गर्भपोषण, बच्चे को जन्म देना—रघु० १८१६ 3. बच्चे को जन्म देना 4. बच्चे देना—ने० १११५ 5. जन्म, उत्पादन, जनन—रघु० १०५३ 6. गर्भ, प्रकट होना, (कुला का) विस्तार—रघु० ५१२४, भू० ११४७ 7. कुल, पैदावार 8. सति, प्रजा, अपत्य—रघु० ११२५, ७७, २१५७, भू० २१७, क० ११२४ 9. उत्पादक, जनक प्रसूता—रघु० २१६३ १० माता । तम०—कन् प्रसव से उत्पन्न होने वाली बीजा, —वायुः प्रसव से समय नवनिष्ठ में उत्पन्न होने वाली वायु ।

प्रसूतिका [प्रसूत+ङन्+टाप्] बच्चा स्त्री, वह स्त्री जिसने अपनी हाल में बच्चे को जन्म दिया है ।

प्रसून (भू० क० ड०) [प्र+सृ+क्त, तस्य मत्वम्] पैदा किया गया, उत्पन्न,—कन् 1. कुल—सत्ताया पूर्व-मृगाया प्रसूनस्वाभाव—भू०—उत्तर० ५१२०, रघु० २११० 2. कली, बंधरी 3. फल लभ—भू०, —वायुः कामदेव का विशेषण,—कवी पुष्पवृद्धि ।

प्रसूनक्य [प्रसून+क्य] 1. कुल 2. कली, बंधरी ।

प्रसूत (भू० क० ड०) [प्र+सृ+क्त] 1. जन्मे बड़ा हुआ 2. नष्टा हुआ, कफना हुआ 3. फैलाना कफना, प्रसारित किया गया 4. फैला, कफना किया हुआ

- 5 व्यस्त, जगा हुआ 6 कुर्नीला नेत्र 7. सुखीक, बिनीत
—तः हाथ की खुकी हथेली, जजलि —तः, - तन् दौ
पल का माप, —सा टाग। सम०—अः पुत्रों का विशिष्ट
वर्ग, व्यवहार जनिन पुत्र, कुडगोलकपुत्र।
- प्रसूति (प्री०) [प्र + स्तु + क्तिन्] 1 जागे जाना,
प्रसूति 2 बहुता 3 फैलाये हुए हाथ की हथेली,
जजलि 4 मुट्ठी भर (यही दौ पल की माप समझी
जाती है) परिश्रोन, कविचम्पूहृदि यवाना प्रसूतये
अम० २।४५, याज्ञ० २।११२।
- प्रसूत (वि०) [प्र + स्तु + क्तृप्] इसर उघर
फैलने वाला भावि० ६।१
- प्रसूत (वि०) [प्र + स्तु + क्तृप्] बरता हुआ चूने
वाला टपकने वाला।
- प्रसूत (पू० क० क०) [प्र + स्तु + क्तृप्] 1 एक ओर
हाला हुआ, शाना हुआ 2 चायत क्षतिग्रस्त छटा
फैलाई हुई अगुली (अङ्गुली प्रसूता याम्नु ता प्रसूता
उदीरिता)।
- प्रसेकः [प्र + सिक् + क्तृप्] 1 बहुता रिमना, टपकना
2 छिड़कना आई कना 3 उद्गिरण प्रसवण
- अम० २।६४ उद्गमन के।
- प्रसेविका [—प्रसीदिका पु०] छोटा उछाल बाटिका।
- प्रसेव, प्रसेवक [प्र + सिक् + क्तृप्, प्रसेव + क्तृप्]
1 सेवा, (अनाज के लिए) बोरी 2 चमड़े की बोतल
3 काष्ठ का बना छोटा उपकरण जो सेना की गर्दन
के नीचे लगाया जाता जिसमें कि उसका स्वर जपेक्षा-
कृत कुछ गहरा हो पाय।
- प्रसक्तम् [प्र + स्कन् + क्तृप्] 1 कृ जाना, छाना
जमाना 2 विरोधन, गुलाब जलिसार, ज निव का
विरोधन।
- प्रसक्त (पू० क० क०) [प्र + स्कन् + क्तृप्] 1 फलाग
हुआ, छाती लगाकर पार किया हुआ 2 पदिन
हुका हुआ 3 परास्त ल. 1 जातिबहिष्कृत
2 पारी, बलिभजनकारी।
- प्रसक्त [प्रसत कुन्य चकम् प्रा० म०] मोलाकार
वेदी।
- प्रसक्तम् [प्र + स्तु + क्तृप्] 1 उडकाना 2 इगम-
माना, बिर जाना।
- प्रस्तार [प्र + स्तु + क्तृप्] 1. पर्वक्षया, पुष्पक्षया
2 पर्वक, छटिया 3 समतल सिलार, हनुवार, समतल
4. कत्तर, बट्टान 5 मूखवान् पत्तर, रत्न।
- प्रस्तारणम्, —ता [प्र + स्तु + क्तृप्] 1 पलम 2 लम्बा
3 विडोनी।
- प्रस्तार [प्र + स्तु + क्तृप्] 1. कलेरवा, फैलाना, बाष्पा-
कृत करना 2 पुष्पक्षया, पर्वक्षया 3 पक्ष, साट
4. कपटी लपट, समतल हनुवार 5. समतली, चंचल

- 6 (छन्द० में) समाधि नवो समेन छन्द की हस्त
तथा दीर्घ मात्राओं की श्रौतिका नालिका।
- प्रस्ता [प्र + स्तु + क्तृप्] 1. बारभ, शुक 2 आम्र
3 उत्कल, सकेत, मधुर् नाममानप्रस्ताव श०
४. अवसर, मौका, समय, अतु, उपयुक्तकाल
स्वराप्रस्तावाश्च नाल, परिहास्य समय - भा०
१।४६, सिध्याय बहुता पत्यु प्रस्तावमदिसद्वृत्ता
शि० २८ 5 प्रवचन का प्रयोजन, विषय, नीचेक
6 नाटक की प्रस्तावना द० 'प्रस्तावना' नीचे। सम०
—यज्ञ ऐसा वातकाल जिसमें प्रत्येक अन्तर्वादी
भाग ल।
- प्रस्तावना [प्र + स्तु + क्तृप् + क्तृप्] 1. प्रसविन
या उद्गमिन गीत का कारण बनना, प्रस्ताव, सराहना
2 शुक आरम्भ—वायव्यमचरितप्रस्तावनादिदिदिम
महाव० १५४ 3 उद्गम प्रसिद्धा, श्रम्य—प्रस्ता-
वना इय कटनान्कम्य मा० २ 4 नाटक के
आरम्भ में मुखधार तथा किसी एक पात्र के बीच में
हुआ परिवागमक वार्तालाप (इसमें नाटककार तथा
उम्मी वादना व परिचय देकर श्रोताओं के सम्मुख
नाटक की घटनाओं को रक्सा जाता है) परिवाचा के
लिए द० 'आम्र'।
- प्रस्तावित (वि०) [प्र + स्तु + क्तृप् + क्तृप्] 1 बारभ
किया हुआ शुक किया हुआ 2 उन्मिश्रित, इक्षित
मा० ३।३।
- प्रस्तार [—प्रस्तार नि० इक्षम्] पर्वक्षया, पुष्पक्षया।
- प्रस्तार, —व (वि०) [प्र + स्तु + क्तृप्, सम०, पर्वे तस्य
म] 1 कोलाहल करने वाला, खयावमान 2 जीव-
महका मूख बनाते हुए।
- प्रस्तुत (पू० क० क०) [प्र + स्तु + क्तृप्] 1 विश्वी
प्रसमा की गई हो, या स्तुति की गई हो 2 बारभ
किया हुआ, शुक किया हुआ 3 निष्पक्ष, कुल, कार्य-
निष्ठ 4 छटित 5 उपायत 6 प्रस्तुत किया गया,
उद्घोषित, विचारधीन या विचारणीय (द० प्रपूर्वक
स्तु) तन् 1 उपस्थित विषय, विचाराधीन विषय
अधुना प्रस्तुतमनुसिद्धताम् 2. (सल० सा०)
विचार के विषय की कमेरवा बनाना, उपनय, द०
'प्रकृत', अपस्तुप्रसदा हा या सैव प्रस्तुतायवा
काव० १०। सम०—अङ्कुरः एक अङ्कुर जिसमें
कोता के मन में निहित किसी बात को प्रकटित
ने के लिए सचारी परिस्थिति का उत्प्रेक्ष किया
जाता है, द० कथा० ५।६४, वीर कुव० (प्रस्तुताङ्कुर
के नीचे)।
- प्रस्थ (वि०) [प्र + स्था + क्तृप्] 1 जाने वाला, रुकने करने
वाला, पाकन करने वाला—यवा 'वागप्रस्थ' में
2. वाया पर जाने वाला 3. फैलाने वाला, विस्तार करने

बाला 4 बुढ़, स्थिर, -स्वः, -स्वम् 1 समतलभूमि, चौरस मैदान, जैसा कि औषधिग्रन्थ या इन्द्रग्रन्थ में 2 पर्वत के शिखर पर समतल या चौरस भूमि, -प्रस्थं हिमाद्रेश्मृगनाभिगान्ध किचित्त्वणत्किप्ररमभ्युवास-कु० १।५४, मेघ० ५८ 3 पञ्च का शिखर या चोटी -वि० ४।११ (यहाँ यह चौथे अर्थ को भी प्रकट करता है) 4 एक विशिष्ट माप जो ३२ पलों के बराबर होता है 5 'प्रस्थ' के तोल के बराबर कोई वस्तु। सम०—पुष्पः तुलसी का एक भेद, दोना मन्था।

प्रस्थान्ध (वि०) [प्रस्थ + पञ्च + अच्, मुमागम] प्रस्थमात्र पकाने वाला।

प्रस्थान्ध [प्र + स्था + ल्यट्] 1 प्रयाण करना, कुछ करना, विद्या, प्रगमन करना -प्रस्थानधिकलगततरलम्बान्धम् -सा० ५।३, रघु० ५।८८, मेघ० ४१, जम्ब ३१ 2 पहुँचना—कु० ६।६१ 3 कुछ करना, किसी मैदान का या आकाश का कुछ करना 4 प्रयाणी पद्धति 5 मृग्य, मरण 6 निकृष्ट श्रेणी का नाटक—दे० सा० व० २७६, ५४४।

प्रस्थान्ध [प्र + स्था + लिच् + ल्यट्, पुकागम] 1 भोजना स्थिर-स्थिर करना, प्रेषित करना 2 दूतावास में नियुक्ति 3 प्रमादित करना, प्रदर्शन करना 4 उपयोग करना, काम में लगाना 5 पशुओं का अपहरण।

प्रस्थापित (भू० क० क०) [प्र + स्था + लिच् + क्त पुकागम] 1 योजना गया, प्रेषित 2 स्थापित, सिद्ध।

प्रस्थित (भू० क० क०) [प्र + स्था + क्त] प्रयात, जाने बढ़ा हुआ, विदा हुआ, विमर्जित यात्रा पर गया हुआ (दे० प्रपूर्वक 'स्था')।

प्रस्थितिः (स्त्री०) [प्र + स्था + क्तित्] 1 चले जाना, विदा होना 2 कुछ करना, यात्रा।

प्रस्थाः [प्र + स्था + क्त] स्नान-पात्र।

प्रस्थः [प्र + स्तु + अच्] 1 उमड़ कर बढ़ना बहु निकलना, निःस्रवण—उत्तर० ६।२२ 2 (बूध की) धारा या प्रवाह—रघु० १।८४।

प्रस्तुत (भू० क० क०) [प्र + स्तु + क्त] सरना हुआ रिखटा हुआ, बहकर निकलना हुआ। सम०—स्तनी बहु स्त्री जिसकी छाती से (मलम्मेहादिरिक के कारण) दूध टपकता है—उत्तर० १।

प्रस्तुता [प्र + स्तु + क्त] पीनवपुः।

प्रस्तुतवपुः [प्र + स्तु + क्त] बड़कन, धरधराहट, कंपकंपी।

प्रस्तुत (वि०) [प्र + स्तु + क्त] 1 खिला हुआ, विकसित, (चूक बाँध) फूला, हुआ 2 उद्घोषित, प्रकाशित, (रिपोर्ट बाँध) फैलाई हुई 3 सरल, साफ, प्रकट, स्पष्ट।

प्रस्तुतित (भू० क० क०) [प्र + स्तु + क्त] ठिठुरता हुआ, कापता हुआ, धरधराता हुआ, कम्पायमान।

प्रस्तुतवपुः [प्र + स्तु + ल्यट्] 1 फूट निकलना, खिलना, मुकुलित होना 2 स्पष्ट या साफ करना, खोलना, प्रकट करना 3 टुकड़े-टुकड़े करना 4 खिलाना, विकसित करना 5 अनाज फटकना 6 छाड़ 7 छेदना पीटना।

प्रस्तुति (वि०) (स्त्री०—सी) [प्र + स्तु + लिच्] समय से पूरे गिर जाने वाला (गर्भ), कच्चा गिरना।

प्रस्तुत [प्र + स्तु + अच्] 1 बूँद-बूँद गिरना, टपकना, बहना रिसना 2 बहाव, धारा 3 जीबी या स्तन से टपकने वाला दूध - प्रसवेण (पाठान्तर 'प्रसवेण') अभिवर्धनी बालालोकप्रवर्तिना—रघु० १।८८ 4 मूत्र, -वा - (ब० व०) उमड़ते हुए आँसू।

प्रस्तुतवपुः [प्र + स्तु + ल्यट्] 1 बहु निकलना उमड़ना, टपकना, सरना, बूँद बूँद गिरना 2 स्तन या जीबी से दूध बहना—(कुलकान्) घटस्ननप्रसवर्धनव्यवर्धयत्—कु० ५।१४ 3 रक्तप्रस्राव, प्रस्राविका निर्धार 4 सरना, फोवारा-समाधिता प्रसवणी समस्तन—श्रुतु० २।१३ मनु० १।२४४ याज्ञ० १।१५९ 5 नाली टोनी 6 पहाड़ी सरिताओं में बना पोखर पचक 7 स्वेद, पसीना 8 मृग्योत्पन्न ज-एक पञ्चदश का नाम - जन्-स्थानमप्यगो गिरि प्रसवणी नाम उत्तर० १।

प्रस्तुत [प्र + स्तु + अच्] 1 बहाव उमड़ना मूत्र।

प्रस्तुत (भू० क० क०) [प्र + स्तु + क्त] उमड़ा हुआ टपका हुआ बूँद-बूँद कर गिरा हुआ, रिसा हुआ।

प्रस्थ (स्था) व [प्र + स्तु + अच्, अच् वा] ऊँची आवाज।

प्रस्थापः [प्र + स्तु + अच्] 1 निद्रा 2 स्वप्न 3 निद्रा लाने वाला अश्व।

प्रस्थापवपुः [प्र + स्तु + लिच् + ल्यट्] 1 मुकाभा निद्रित करना 2 ऐसा अश्व जो आकाश में व्यक्ति को मुखा दे रघु० ३।६१।

प्रस्थित (भू० क० क०) [प्र + स्थि + क्त] पसीना आया हुआ पसीने से भर।

प्रस्थेव [प्र + स्थि + अच्] बहुत अधिक पसीना।

प्रस्थेवित (भू० क० क०) [प्र + स्थि + लिच् + क्त] 1 स्वेदाच्छन्न पसीने से मगबोर, पसीना आया हुआ 2 पसीना लाने वाला, गर्म।

प्रस्थवपुः [प्र + स्तु + ल्यट्] बध, हत्या।

प्रस्तुत [प्र + स्तु + क्त] 1 कायल, बध किया हुआ, मारा हुआ 2 पीटा हुआ, (दोल आदि) झंझना - व स्वरं प्रहतपुच्छः कुरी-रघु० ११।१४, मेघ० ६४ 3 पीछे ढकेला हुआ, धिजित, पराजित 4 ऊँचवाँ हुआ, कुमाया हुआ 5 लड़ा हुआ 6 (पगड़ड़ी) बिछा-पिटा, पतानु-वर्तित 7 निष्पन्न, विहाय।

प्रहरः [प्र + ह + ल्यप्] दिन का आठवाँ भाग, प्रहर (तीन घंटे का समय) - प्रहरे प्रहरेऽसहोष्णारितानि नामानवेत्यादिपदानि न प्रमाणात् - तर्कः ।

प्रहुरकः [प्रहुर + कम्] एक प्रहुर ।

प्रहारणम् [प्र + हृ + ल्यट्] १. प्रहार करना, मारना
 २. डालना, फेंकना ३. धामा करना, क्षामण करना
 ४. दायक करना ५. हटाना, बाहर निकालना ६. क्षत्र
 क्षत्र, या (उर्ध्वी) लुभारं प्रहरणं महेश्वर-
 -विभक्त १, रघु ११/७३ वय ० ११, या ० ८१९
 ७. संघात, युद्ध, लड़ाई ८. डकी हुई पालकी या डोला ।

प्रहरणीयम् । प्र + हृ + णीयर् । क्त्वं, लृक् ।

प्रहरिन् (पुं०) [प्रहर + इनि] 1. रत्नबाला 2. पहरेदार,
घटी बाला ।

प्रश्न (वि०) [५-६-७५] 1. ग्रहार करने वाला,
पीटने वाला, हथका करने वाला 2. सड़ने वाला,
सपोषी, योद्धा 3. तीरंदाज, निशाने बाज, धनुर्धर ।

प्रहर्ष [प्र + हृष + घञ्] १ अत्यधिक हर्ष, अत्यानन्द.
उत्पत्ति -- गुरुः प्रहर्षः प्रबभूव नात्मनि -- रघु० ३।१७
२. मित्र का लड़ा होना ।

प्रहृष्यन् [प्र + हृष् + ल्यप्] उत्सहित करता, प्रहृष्ट
करता, आनन्दित करता,—वः वृष वृष्ट ।

प्रहृषं (वि) जी [प्र + हृष् + णिच् + ल्यप् + ङीप् + प्र
+ हृष् + णिच् + णिनि + ङीप्] 1. हृत्वी 2 एक
छन्द का नाम, दे० परिशिष्ट ।

प्रहर्षः [प्र + हृ + उलङ्] बुध् प्रह ।

प्रहसनम् [प्र + हस् + भ्यट्] १. जोर की हँसी, बहुहास,
लिकछिहाकर हँसना २. मजाक, ठिठोली, व्यंग्योक्ति,
उपहास—विक् प्रहसनम्—उत्तर ४ ३. व्यंग्योक्त,
व्यंग्य ४. स्वांग, तमाशा, हँसी का मुकाला नाटक
— सा० २० वें की गई परिभाषा—भाष्यवन्मन्त्रितम्
—जुलकावाड़ा कुँडिनिमित्तम्, भूयैदप्रहसन् कृतं निम्नानां
कविकल्पितम्—५५३ तथा भावे, उवा० कव्यपेक्षि ।

प्रशस्तनी [प्र + हस् + शतृ + ङीप्] 1. एक प्रकार की बसेली, ऊँची, बुधिका, बासन्ती 2. एक बड़ी अगोठी।

प्रवृत्ति (मू० क० कु०) [प्र + वृत् + क्त] होसता
हजा, — लव्य होसी, हारय ।

प्रहस्तः [प्रतप्तः प्रसृतो हस्तः -- प्रा० श०] 1. खुला हाथ जिसकी अंगुलियाँ फैली हों, (बप्पड़) 2. रावण के एक सेनापति का नाम) ।

प्रहसनम् [प्र + हा + ल्युट्] त्यागना, छोड़ना, भूल जाना
—अनु० ५।५८।

प्रहासि (स्त्री०) [प्र+हा+णि, क्त्वाच्] 1. त्यामना
2. कमी, कपास ।

ब्रह्मोत् [ब + हु + ब्रज्] १. बार करना, पीटना, पीट
करना—बाह्यः ३।२४८ २. बाकल करना, बा

हासना 3 आवाह, मुक्ता, चोट, ठोकर, पील—रघु.
 ७।४६, मृष्टिप्रहार, ठक्करप्रहार यदि 5. ठोकर— बँसा
 कि पादप्रहार: बीर कलाप्रहार: ये 6. बोली नारना ।

प्रहारणम् [प्र + ह + णिच् + ल्युट्] बाष्पणीय उपहार ।

प्रश्न: [प्र+हृ+प्रत्यय] 1. जोर की हूँ, प्रहृष्ट
2. मज्जा, दिल्ली, हूँ 3. व्यंग्योक्ति, व्यंग्य
4. मत्क, मट, पात्र 5. शिव 6. दर्शन, दिखावा
—वेणी २।२८ 7. एक तीर्थ स्वान का नाम—दुः
प्रहाम ।

प्रहासिन् (पुं०) [प्र + हस् + णिप् + णिनि] विद्वत्प्रहसक,
मसखरा ।

प्रहिः [प्र + हि + क्तिप्] कृष्णः ।

प्रतिष्ठा (पू० क० इ०) [प्र + भा + क्त] 1. रक्षा हुना, प्रत्युत्त दिया हुना 2. बढ़ाया हुना, फैलाया हुना 3. सेवा हुना, प्रेषित, निर्देशित— विचारनामै प्रेषित हुना 4. पू० ५।१२ 4. छोड़ा हुना, मिटाया कटाया हुना (वीर बाबि का) 5. नियुक्त किया कया 6. समर्पित, उपयुक्त, —सम्पाद, बटनी ।

प्रहीन (यू० क० इ०) [प्र+हा+क्त, ईप्, उत्त्व न,
कत्वम्] छोड़ा गया, खाकी किया गया, त्यागा गया,
बन किया, निराकरण, बाटा ।

प्रकृतः, तन् [म + हु + क्त] भूतयत्, यत्किञ्चिदप्येव, वैभिक
पाँच यत्नों में एक, त० अ० ३।१५४।

प्रहृत (मू० क० ड०) [प्र+हृ+क्त] पीटा गया, बाधात किया गया, चोट किया गया, बाधत किया गया।
—तत्प्र मक्का, प्रहार, चोट।

प्रत्यय (मू० क० इ०) [ध + ह्य + क्त] १. सूच, प्रवच, ज्ञानवित, आज्ञावित २. दुकवित करना, रोजावित करना (रोंगटे काँटे होना)। धन०—आज्ञावित—वित्त, —मनस् (वि०) मन से सूच, हृदय से ज्ञानवित।

ग्रहणकः [पहण्ट-कम्] काक, कीया ।

महोत्सकः [प्र + हिल् + भ्युक्] १. एक प्रकार का सुहाव,
सीटी रोटी २. एकेकी—दे. ली. 'प्रोत्सिक्' ।

प्रहेला [प्र + हिल + अ + टाप्] मुक्त वा अनिश्चित

प्रहेलिका: (स्त्री०) , प्रहेलिका [प्र + हिल् + क्त्वं, प्रहेलि + क्त्वं + टाप्] पहेली, बुद्धीबल, कूट इन्द्र, विचित्रकूट-
मंडन में दी गई परिभाषा-
व्यक्तीकरण कर्मचारी
व्यक्तीकरण मोपमात्, यत् आह्वयराज्यो कर्मचारी वा

॥ इति का । यद्वा बाणी नीर बाणी नी प्रकार की है ।
तत्त्वानिष्ठितः कष्टे निराभासकमवितः, यद्वा
अविभाज्येण कः कृति यद्वा । (यद्वा बाणी का
उत्तर है - ईशानकर्मयुक्तः) यद्वा बाणी का
उत्तर है । यद्वा निराभासकमवितः निराभा-
सकमवितः निराभासकमवितः निराभासकमवितः

नाम कासेति निवेदयाम् । (यहाँ पहिली का उत्तर है— सारिका) यह नामों का उदाहरण है । दम्भी ने सोलह प्रकार की पहिलियाँ बतलाई हैं— काव्या० १।१६—१२४ ।

प्रह्लाद (भू० क० ड०) [प्र+ह्लाप्+क्त, हल्] लुप्त, भावविषय, प्रसन्न ।

प्रह्ला (ह्ला) कः [प्र+ह्लाप्+क्ञ्, रत्नयोरन्त्यम्]

1. अत्यधिक हर्ष, प्रसन्नता, खुशी, आनन्द 2 शब्द, आवाज 3 हिरण्यकशिपु राक्षस के पुत्र का नाम (पंचपुराण के अनुसार प्रह्लाद अपने पूर्व जन्म में ब्राह्मण थे । जब उसने हिरण्यकशिपु के यहाँ अग्न्य किया तो भी उसकी विष्णु के प्रति अनन्यभक्ति बनी रही । उसका पिता यह नहीं चाहता था कि उसका अपना पुत्र ही उसके शीर लाने देवों का ऐसा पक्का जस्त बने । अतः उससे छुटकारा पाने के उद्देश्य से उसके अपने पुत्र प्रह्लाद को माना प्रकार की यातनाएँ दीं । परन्तु विष्णु की कृपा से प्रह्लाद का कुछ नहीं बिगड़ा, उसने शीर भी अधिक उत्साह से इस बात का उपवेश करता बारम्बार कर दिया कि विष्णु सर्वव्यापक, सर्वत्र और सर्वशक्तियमान है । हिरण्यकशिपु ने आधावेश में प्रह्लाद से पूछा कि बता कि यदि विष्णु सर्वव्यापक है तो इस बूझ के स्तंभ में यह मुझे क्यों नहीं दिखाई देता ? इस पर प्रह्लाद ने स्तम्भ पर चक्के का आघात किया (हूतरे मतानुसार स्वयं हिरण्यकशिपु ने क्रोध में चरकर अपने पुत्र के विश्वास की मूर्खता का उसे विश्वास दिखाने के लिए स्वयं स्तम्भ की ठोकर मारी) फलतः विष्णु नरसिंह (अर्ध मनुष्य तथा अर्ध सिंह) के रूप में प्रकट हुआ और हिरण्यकशिपु के टुकड़े टुकड़े कर दिने । प्रह्लाद अपने पिता का उत्तराधिकारी बना और बुद्धिमत्ता पूर्वक, तथा व्यापकपूर्वक राज्य किया ।)

प्रह्ला (ह्ला) क्व (वि०) [प्र+ह्लाप्+क्विप्+स्वट्, रत्नयोरन्त्यम्] आनन्द देने वाला, प्रसन्न करने वाला—रघु० १।४,—कम् हर्ष या प्रसन्नता देना करना, आनन्द देना, लुप्त करना—यथा प्रह्लादनामकम्—रघु० ४।१२ ।

प्रह्ला (वि०) [प्र+ह्ला+क्, वि० लाप्] 1 समुद्रों, तिरछ, झुका हुआ वि० १।१५१ 2 झुका हुआ, नीचे की झुका हुआ, विनम्र,—विनीत एव प्रह्लादस्य अक्षय्य एवा विद्याना य न—महावी० १।७७, १।१७ 3 दीन, विनीत, सुधी, विनयी—प्रह्लादविर्भावकथो हि कथा—रघु० १।१८० 4 अनुरक्त, प्रसन्न, व्यस्त, भाग्यवत् । लभः—अन्यथैति (वि०) सम्मान के विह्वल स्वप्न दोनों हाथ जोड़ कर फिर झुकाए हुए ।

प्रह्लासि (भा० पा०—वर०) विनीत करना, प्रसन्न

प्रह्लासिका (स्त्री०) दे० प्रह्लेसिका ।

प्रह्लासः [प्र+ह्ले+क्ञ्] झुकावा, आनमन, निमनन ।

प्रह्लु (वि०) [प्रह्लुप्ता असतो वयम्—प्रा० ब०] 1 ऊँचा, लंबा, कर्तार, ऊँचे कद का (मनुष्य)—साक्षप्रार्थनहा-भूज—रघु० १।१३, १।५१९ 2 लंबा, बढ़ाया हुआ—सा० २।१५,—ह्लुः लंबा मनुष्य, बड़े कद का आदमी—प्राह्लस्ये फले लोभापुद्गाहुरिव धामन—रघु० १।३ ।

प्राह्ल (अव्य०) [प्राहि मन्त्रमर्थे अस्मि तस्य लुक्]

1 पहले (अपा० के माघ)—सकलानि मिमिमानि प्राक्प्रभातागतौ मम भट्टि० ८।१०, ९, प्राक् सृष्टे केवलामने कु० २।८, रघु० १।४७८, भा० ५।३१ 2 सबसे पहले, पहले ही—प्रमन्यव प्रागपि कोसलेने रघु० ७।२४ 3 पहले, पूर्व—पूर्व जन्म में (पुस्तक के)—प्रति प्रागेव निर्दिष्टम् यनु० १।७१ 4 पूर्व में, से पूर्व विद्या में ग्रामाग्राक् पूर्वमे 5 मायन 6 जहाँ तक हो बहाँ तक, पर्यंत, तक प्राक् कवारात ।

प्राकटयम् [प्रकट+व्यञ्ज] प्रकट करना प्रकाशप करना, कुख्याति ।

प्राकरविक (वि०) (स्त्री०—की) [प्रकरण+ठक्] विचारणीय विषय में मरब रखने वाला, प्रस्तुत विषय (अनकार का विषयों द्वारा प्राक् उपपद्ये के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है) से संबंध—अप्राकरविकस्याभिधानेन प्राकरविकस्याक्षेपोऽस्तुतप्रसमा—काव्य० १० ।

प्राक्विक (वि०) (स्त्री०—की) [प्रक्व+ठक्] भेद्यतर या अधिक अच्छा समझ जाने का अधिकारी ।

प्राक्विकः [प्र+आ+क्व+इकन्] 1 मौडा, माह 2 दूसरे की स्त्री से अपनी औचिकता बनाने वाला ।

प्राकाव्यम् [प्रकाव+व्यञ्ज] 1 हल्का की स्वनता—प्राकाव्य से विम्विन्—कु० २।११२ स्वेच्छा-चारिता 3 अनिवार्य सकल्प, शिव की आठ प्रकार की सिद्धियों में से एक (जिसकी प्राप्ति से सब मनोरथ पूरे हो जाते हैं) दे० 'सिद्धि' ।

प्राह्लस (वि०) (स्त्री०—ता, सी) [प्रह्लसि+क्ञ्]

1 मौलिक, नैसर्गिक, अपरिवर्तित, अविभक्त—स्वाताम-मिनी मिले य सहजप्राकृतार्थि—वि० २।११, (इस पर देवों विनये) 2 प्रचलित, सामान्य, साधारण 3 असम्भृत, मवार, असम्य, अक्षिजित प्राह्लन इव परिभूषमाणामारानं न वमसि—आ० १४६, भा० १।८२४ 3. नमन्य, महत्वादीन, लुब्ध—युवा० १, 4. प्रकृति से उत्पन्न प्राह्लतो लभः 'प्रकृति' में ही पुनः लीन होना 5 प्राणीय, देह्यती (बोली), दे० नी०—ता बोझा मनुष्य, साधारण व्यक्तित्व, देहाती पुन्य,—कम् एक देहाती या प्राणीय बोली को संस्कृत के व्युत्पन्न तथा उसके पिछली-मुक्ती है—प्रकृतिः

सकृन् तत्र भवं तत्र जायत च प्राकृतम्—हेम०
(नमने बहुत सी बोलियाँ सकृन् नाटकों में निम्न
कोषी के पात्रों या स्त्री पात्रों द्वारा बोली जाती हैं)
तन्मूल्यस्तत्समो देशीत्यनेक प्राकृतकम्—काव्या०
११३३, ३४, ३५ त्वमप्यस्माद्वसजनयोम्ये प्राकृतमार्गे
प्रचुरोऽस्ति—विह० १। सम०—अतिः नैसर्गिक शब्द
अर्थात् पवोली देश का शासक दे०, सि० २१२६ पर
मस्ति०,—उदासीनः नैसर्गिक तटस्थ अर्थात् वह राजा
जिसका राज्य नैसर्गिक मित्र राज्य के परे है,—अथः
सामान्य या साधारण सुखार,—अस्य विषय का पूर्ण
विषयन,—विषय नैसर्गिक मित्र अर्थात् वह राजा
जिसका राज्य नैसर्गिक शब्द राज्य से मिला हुआ है
(अथवा जिसका नेत्र उस देश से पृथक् है जिसके साथ
मित्रता का संबंध हो चुका है)।

प्राकृतिक (वि०) (स्त्री०—की) [प्रकृति + ठञ्]

- 1 नैसर्गिक, प्रकृति से अन्तर्गत—महाबी० ३१३१
- 2 भ्रान्तिजनक भ्रमोत्पादक।

प्राक्तन (वि०) (स्त्री०—नी) [प्राक् + टप्, तुडागम]

- 1 पहला, पूर्व का, पिछला—अपेक्षिते प्राक्तनबन्धविद्या
—कु० ११३० 2 पुराना, प्राचीन, पहले का 3 पूर्व-
जन्म से संबंध, या पूर्वजन्म में किये हुए कार्य
—मत्स्योरा प्राक्तना इव—रघु० ११२०, कु० ९११०।
- प्राक्चर्यम् [प्रचर + ध्यञ्] 1 पैनापन 2 तीक्ष्णता
3 बुद्धता।

प्रागल्भ्यम् [प्रागल्भ + ध्यञ्] 1 साहस, भरोसा—निःसाध-

- मत्वं प्रागल्भ्यम्—सा० द० 2 बमड अहंकार,
- 3 प्रवीणता, कुशलता 4 विकास बढ्पन, परिपक्वता
- वृद्धिप्रागल्भ्य, तम प्रागल्भ्य आदि 5 प्रकटीकरण,
- प्रतीति—अथान प्रागल्भ्य परिणतकच संततनये
- काव्य० १० 'जो प्रतीति हुआ 6 बाक्पटता
- प्रागल्भ्यहीनस्य नरस्य विद्या गन्ध यथा कापुष्पस्य
- हृत्से (यहाँ 'प्रागल्भ्य' का अर्थ 'साहस' भी है)—मा०
- ३१११ 7 धृष्टता, भरोसा 8 बुद्धता, ठिठ्ठाई।

प्राचारः [प्रकृष्ट जागर—प्रा० म०] चर, भवन।

प्राक् [प्रा० म०] उपरतम विन्दु। सम०—तर (वि०)
प्रथम, अग्रणी,—हर (वि०)—मुख, प्रधान—रघु०
१११२३।

प्राक्ताः [प्राक् + कृत् + अच्] पतला जमा हुआ दूध।

प्राक् (वि०) [प्राक् + यच्] मुख, अग्रणी, उत्तर,
अगिच्छेत्।

प्राक्ताः [प्रकृष्ट जायत—प्रा० म०] बुद्ध, कड़ाई।

प्राक्ताः [प्र + कृ + धञ्] टपकना, दूध दूध गिरना,
रिक्तता।

प्राक्चर, प्राक्चरक, प्राक्चरिक, } [प्र + चृत् + क, प्राक्च
प्राक्चरक, प्राक्चरिक } + कन्, प्राक्च + ठक् प्र

+ प्रा + चृत् + कन्, प्राक्चर + ठक्] अतिथि,
पाहुना, अस्मागत, मेहुमान—चिरापरराक्षस्यतिमांशलोपि
रोष अन्धप्राक्चिको बन्धु—भावि० २११६, भवच-
प्राक्चिकीकृता जने (कथा)—नै० २१५९।

प्राक्चन् [प्रकृष्टमय बन्धु—प्रा० म०] एक प्रकार की
ढोलक, पथर।

प्राक्चन् (नम्) [प्रकर्षेण वर्जनं भवन यत्र—प्रा० म०]
1 सहज जावन 2 (चर का) फल 3 एक प्रकार
की ढोलक।

प्राक् प्राक्च (वि०) (स्त्री०—नी) [प्र + बन्ध् + क्तिच्]

- 1 सामने की ओर मुड़ा हुआ, सामने विस्तृत जाये
- रहने वाला 2 पूर्वदिशा संबंधी, पूर्व का 3 प्राथमिक,
- पहला, पूर्वकाल का (पू० म० म०) 1 पूर्वदेश के
- माथे 2 पूर्वीय वैचारक। सम०—अथ (वि०)
- (प्रागय) पूर्वदिशा की ओर दृष्टि करे हुए,—अथवाः
- (प्रागभाव) पिछला, भूता का अभाव, किसी वस्तु
- की उत्पत्ति के पूर्व का अस्तित्व, उत्पत्ति से पूर्व की
- अवस्था,—अविहित (वि०) (प्रागविहित) पूर्वोक्त,
- अवस्था (प्रागवस्था) पहली दशा,—न तर्हि प्राग-
- वस्थाया परिहीयसे—मा० ४, 'पहली अवस्था की
- अवस्था कभी पर नहीं हो,—आवत् (वि०) (प्रावा-
- यन) पूर्वदिशा की ओर बढ़ा हुआ,—निमित्तः (स्त्री०)
- (प्रागुक्ति) पूर्वोक्त, —उत्तर (म०) (प्रागुत्तर)
- पूर्वोत्तर का,—उत्तरी (स्त्री०) (प्रागुत्तरी) पूर्वोत्तर
- दिशा,—कर्मन् (नम्) (प्राक्कर्मन्) पूर्वकर्म में किया
- हुआ कार्य—कालः। प्राक्कालः। पहला युग,—कालीय
- (वि०) (प्राक्कालः) १ पूर्वकाल से संबंध रखने
- वाला, पुराना, प्राचीन,—दूत (वि०) (प्राक्दूत)
- जिसकी नाक पूर्वदिशा की ओर मुड़ी हुई हो (कुल-
- प्रास) वन्दु० २१७५,—कृतम् (प्राक्कृतम्) पूर्वकर्म
- में किया गया कार्य,—चरचा (प्राक्चरचा) स्त्री की
- जननेन्द्रिय, योनि, चिरम् (अव्य०) (प्राक्चिरम्)
- समय रहते, देर न करके,—अव्यञ् (नम्) (प्राक्-
- अव्यञ्)—आतिः (स्त्री०) (प्राक्आति) पूर्वजन्म
- अव्योतिः (प्राक्व्योतिच) 1 एक देश का नाम,
- कामरूप देश का नामान्तर 2 (म० म०) इस देश
- के रहने वाले लोग, (नम्) एक नगर का नाम,
- अव्येष्ट विष्णु का विशेषक—वर्त्मन्य (वि०) (प्रा-
- वर्त्मन्य) दक्षिणपूर्वी,—देशः (प्राव्येश) पूर्वदिशा का
- देश,—हार,—हारिक (वि०) (प्राहार, प्राहारिक)
- जिसका दरवाजा पूर्वदिशा की ओर हो,—आवः
- (प्राक् आव्य) पहली वाचस्पदता का तर्क, पहले से
- ही निर्णीत मुकदमा—आचारोपायसंज्ञोऽपि पुनर्जायते
- यदि, सोऽपिचैवोचित पूर्व प्राक्आवस्य से उत्पत्ते
- 1.—आहारः (प्राक्प्रहार) पहला मुका, कालः

ऊर्जा या क्षिति,--त्या संन्यासी बनने से पूर्व अपनी सारी संपत्ति को दान कर देना ।

प्राजिकः [प्र + जन् + ठञ्] बाज, पक्षी, श्वेत ।

प्राजित्, प्राजिन् (पुं०) [प्र + जन् + तुप्, प्र + जन् + भिज्] सारापि, चालक, रथवान्--सि० १८।७ ।

प्राजोक्तम् [प्राजो देवताञ्च-प्राजेश + जन्] रोहिणी मन्त्रः ।

प्राज्ञ (वि०) (स्त्री०-ज्ञा, ज्ञी) [प्रकर्षणं ज्ञानाति इति -प्र + ज्ञा + क-प्रज्ञ, ततः स्वार्थे-अन्] 1. मनीषी

2. बुद्धिमान्, विद्वान्, चतुर--किमुच्यते प्राज्ञः कलु कुमारः उत्तर० ४,--ज्ञः 1. बुद्धिमान् पुरुष तेष्व्यः प्राज्ञा न विभ्यति वेदी० २।१४, भग० १७।१४

2. एक प्रकार का होता,--ज्ञा 1. बुद्धि, समझ 2. चतुर या समझदार स्त्री,--ज्ञी 1. चतुर या बिजुपी स्त्री

2. विद्वान् ३६६ की ५वीं 3. सूर्य की पत्नी का नाम ।

प्राज्य (वि०) [प्र + जन् + श्यत्] 1. प्रचुर, पर्याप्त, बहुल, अधिक, बहुत-तब भयतु किञ्चिज् प्राज्यमुष्टिः प्रजानु--सं० ७।३४, रघु० ११।६२, सि० १४।२५

2. बड़ा, विशाल, महत्त्वपूर्ण--प्राज्यविक्रमाः--कु० २।१८, अत्रि प्राज्य राज्यं तुलमिव परित्यज्य सहसा

--संवा० ५ ।

प्राज्यक (वि०) [प्र + जन् + क्तञ्] निरञ्जल, स्पष्टवक्ता, ज्ञात, ईमानदार, निष्कण्ट ।

प्राज्यजि (वि०) [प्रजज्ञा अज्यजि र्जन-प्रा० व०] निरञ्जता और सम्मान के विरुद्धकम्प जितने अपने हाथ जोड़े हुए हैं ।

प्राज्यजित्, प्राज्यजित् (वि०) [प्राजित् + क्त, इति वा] हे० 'प्राजित्' ।

प्राज्यः [प्र + जन् + ज्य, जन् वा] 1. नास, स्वास

2. जीवन का साँस, जीवनसक्ति, जीवन, जीवनदायी वायु, जीवन का मूलतत्त्व (इस जगत् में प्रायः व० व०,

क्योंकि प्राण विनशी में पाँच है--प्राण, अपान, ध्यान, व्यान और उदान)--प्राणैरुपकोचमलीमग्नैर्वा--रघु० २।५१, १२।५४

3. जीवन के पाँच प्राणों में से पहला (चित्तका स्वास कोकड़े हैं) भग० ४।२० 4. वायु,

मन्दर बीचा हुआ साँस 5. ऊर्जा, बल, सामर्थ्य, शक्ति, जीसा कि 'प्राणसार' में 6. जीव वा आत्मा

(वि०) शरीर 7. परमात्मा 8. ज्ञानेन्द्रिय,--अमृ० ४।१४ 9. प्राणों के सकल आकस्मिक वा प्रिय, प्रिय

आहित वा पदार्थ,--कोश-कोशः कोशकः प्राणाः प्राणाः शाना न भूपतेः--सि० २।१२, अर्धपर्वविमर्शको बहि-

वचराः प्राणाः--सं० 10. कविता का छन्द, काव्य-मयी प्रशिक्षा, स्फूर्ति 11. महत्वाकांक्षा, स्वासग्रहण

--वीरा कि महाप्राण और अल्पप्राण में 12. प्राण 13. समय का मापक साँस 14. कोबान, पौध । सप्त०

--अभिप्रायः जीवित प्राणी का, वच, जान देना,

--अवधः जीवन की क्षति,--अधिक (वि०)

1. प्राणों से जी प्रिय, 2. सामर्थ्य और बल में क्षय, --अधिकायः पति,--अधिकः आत्मा,--अतः मृत्यु,

--अधिक (वि०) 1. पातक, नखर 2. जीवन भर रहने वाला, जीवन के साथ ही समाप्त होने वाला

3. काँसी का रज (कम्) वच,--अध्वर्याग् (वि०) पातक, प्राणनाशक,--अध्वन् ज्ञानेन्द्रिय,--आधत्तः

जीवन का नाश, जीवित प्राणी का वच--अतु० १।६१, --आधार्थ्यः राजा का वैध,--आध (वि०) पातक,

नखर, प्राणपातक,--अध्याय जीवन को क्षति,--अध्यायः देवमूर्तों का मानस-पाठ करते हुए साँस रोकना,--ईक्षः,

--ईक्षरः प्रेमी, पति--अधय ६७, भाषि० २।५७, --ईक्षा,--ईक्षरी पत्नी, प्रिया, गृहस्वामिनी,--अध-

मन्--अतर्क्यः आत्मा द्वारा शरीर को छोड़ देना, मृत्यु,--उपाहारः भोजन,--अध्वन् जीवन का क्षरण,

प्राणी को मर,--आतक (वि०) जीवन का नाश करने वाला,--अन् (वि०) पातक, जीवन-नाशक,--छेदः

वच, हत्या,--त्यागः 1. आत्महत्या 2. मृत्यु,--अन् 1. पानी 2. क्षिप्र,--अधिका प्राणों की मेट,--अधः

काँसी का रज,--अधिकाः पति,--आधन् प्राणों की मेट, किमो की ज्ञान वधाना,--अधिकाः किसी की ज्ञान पर

आक्रमण,--आरः जीवित प्राणी,--आरभ्य 1. प्ररभ-पोषण, जीवन का सहारा 2. जीवनसक्ति,--आरः

1. प्रेमी, पति 2. यम का विशेषण,--निष्ठः साँस रोकना, स्वासावरोध,--अतिः 1. प्रेमी, पति 2. आत्मा,

--अतिरिक्तः ज्ञान जीविम में अलगा,--अतिरिक्तः जीवन-चारण करना, जीवन या अस्तित्व रखना,--अव (वि०)

जीवन देने वाला, जीवन बचाने वाला,--प्रवाचन् प्राणों का चला जाना, मृत्यु,--अविकः प्राणों के समान

प्यारा प्रेमी, पति,--अव (वि०) वायुपक्षी,--आ-स्थन् (पुं०) समृद्ध,--अव् (पुं०) प्राणचारी जन्तु

--अवपतित प्राणमूर्ता हि देव--रघु० २।४३,--अव-मन् 1. प्राणों का चला जाना, मृत्यु 2. आत्महत्या,

--आवा जीवन का सहारा, प्ररभ-पोषण, जीविका --विच्छपातआवाप्राणधानो भववतीम्--मा० १--जीविः

(स्त्री०) जीवन का जीत,--एवम् 1. मृत 2. नचना, --रौधः 1. स्वासावरोध 2. जीवन को क्षरण,

--विनाशः,--विनाशः जीवन की क्षति मृत्यु,--विधीयः गरीर से आत्मा का विच्छेद, मृत्यु,--अविकः प्राणों का

अतर्क्य,--अविकः साँस का रोकना,--अविकः,--अविकः --अविकः जीवन को क्षरण, जीवन को मर, जीवन

क्षरण,--अविक (नपुं०) शरीर,--आर (वि०) जीवन ही जिसका वच है, सामर्थ्य से युक्त, कल्याण, शक्ति

--विरिचर इव नावः प्राणसार (आधन्) विभक्ति सं० २।४,--हृर (वि०) 1. प्राणपातक, जीवन का क्ष-

हरण करने वाला, चानक—पुरो मय प्राणहरो अभि-
व्यक्ति, नीत० ७ 2. फांसी—हारक (वि०) शालक
(कम्) बयकर वि० ।

प्राणकः [प्राण + क + क] 1. जीवित प्राणी, जीवधारी
अन्तु 2. सोबाण ।

प्राणकः [प्र + अन् + क] 1. बायु, हवा 2. तीर्थ स्नान
3. प्राणधारियों का स्वामी ।

प्राणकः [प्र + अन् + क्युट्] गला,—मन् 1. स्वातप्रववाह,
सांघ सेना 2. जीवन, जीवित रहना ।

प्राणकः [प्र + अन् + क, अन्तादेस] बायु, हवा ।

प्राणकः [प्राणन्त + क्यि] 1. भूख 2. सुवकना
3. हिचकी ।

प्राणकः (वि०) (स्त्री०—व्यी) [प्र + अन् + निच् +
भ्यत्] उचित, योग्य, उपयुक्त ।

प्राणित (वि०) [प्र + अन् + क्त] जीवित, जीवधारी ।

प्राणित (वि०) [प्राण + इति] 1. सां सेने वाला, जीने
वाला, जीवित (पु०) जीवित या जीवधारी प्राणी,
जीवित अन्तु यथा—प्राणित प्राणवन्त स० १११, मेघ०
५ 2. अनुपय । सम० अज्ञान किसी अन्तु का अंग,
—आत्मन् प्राणीवर्ग, —अन्तुन् (मुग्) की लड़ाई, मेड़ो
की लड़ाई । तीतर बटेर आदि अन्तुओं को लडा कर
जुवा खेला,—वीडा अन्तुओं के प्रति करता, हिता
जीवन को प्रति, जीवित अन्तुओं को कष्ट देना, हिता
जुवा, बूट ।

प्राणितक [प्राणीत + ध्यञ्] कृष्ण ।

प्रातर (कम्) [प्र + अत् + अरन्] 1. तड़के, पी फटने
पर, प्रभात काल में 2. कल तड़के, अगले दिन सुबह,
कल प्रात काल । सम०—अह्नः दिन का प्राग्विक
काल, बीगहर पहले, आकाः प्रात कालीन अत्रय,
कलेवा—अन्यथा प्रातराशाय कुर्वाम त्वाभल वयम्
—अहि० ८१८, —आहिन् (पु०) जिसने कलेवा कर
लिवा है, या प्रात काल का भोजन कर लिवा है,
—कर्मन् (पु०)—कर्मन्—कर्मन् (प्रात कर्म
—आदि) प्रात कालीन कर्म,—कालः (प्रात काल)
प्रात का समय,—नेवः बारन विनका कर्तव्य किसी
राजा या अन्य महापुरुष को उपयुक्त मान द्वारा प्रात
काल खाना है,—विष्णी (प्रातर्विचर्या) नया नदी,
—विष्णु दोपहर से पहले,—अह्नः दिन का पहला पहर
—वीष्णु (पु०) बीवा,—वीष्णुन् प्रात काल का
भोजन, कलेवा,—कल्वा (प्रात कल्वा) 1 प्रात
काल की लब्धा या प्रजन,—लब्धः (प्रात समय)
सबरे का समय, प्रभावकाल,—लब्धः—लब्धन् (प्रात
कर्म)—आदि) मोमवान द्वारा प्रात कालीन तर्पण,
—लब्धन् (प्रात स्नानम्) सबरे ही नहाना,—होवः
(प्रातर्होवः) प्रातःकाल का वध ।

प्रातस्त्व (वि०) (स्त्री०—वी) [प्रातर + टप्, टुट्]
प्रात काल से सबडे, सुबह का ।

प्रातस्तरान् (कम्) [प्रातर + तरप् + आम्] सुबह
बहुत सबरे प्रातस्तरा पतविम्बः प्रबुद्ध प्रणमन् रविम्
—अहि० ४१४ ।

प्रातस्त्व (वि०) [प्रातर + त्यक्] सुबह का, प्रभात
कालीन ।

प्रातिः (स्त्री०) [प्र + अत् + इन्] 1. अगूठे और तर्जनी
के बीच का स्थान 2. बरना ।

प्रातिका [प्र + अत् + क्युन् + टाप्, इत्यम्] जवा का
पीया ।

प्रातिकूलिक (वि०) (स्त्री०—वी) [प्रातिकूल + ठक्]
विपक्ष, विरोधी, प्रतिकूल रहने वाला ।

प्रातिकूल्यम् [प्रातिकूल + ध्यञ्] प्रतिकूलता, विरोध,
सन्धता, अननुकूलता, अनेकोपपन्नता ।

प्रातिगोत्र (वि०) (स्त्री०—वी) [प्रतिगोत्र + लज्]
शत्रु का मुकाबला करने के लिए उपयुक्त ।

प्रातिगोत्र [प्रतिगोत्र + अन्] विवागाधीन विधाय ।

प्रातिगोत्रिक (वि०) (स्त्री०—वी) [प्रतिगोत्र + ठक्]
प्रतिदिन होने वाला ।

प्रातिगोत्र (वि०) (स्त्री०—वी) [प्रतिगोत्र + अन्]
1 विरुद्ध, प्रतिकूल 2 शत्रुतापूर्ण, सम्ममबन्धी ।

प्रातिगोत्र्यम् [प्रतिगोत्र + ध्यञ्] सम्मम, विरोधिता ।

प्रातिपक्ष (वि०) (स्त्री०—वी) [प्रतिपक्ष + अन्]
1 उपक्रम करने वाला 2 प्रतिपक्ष के दिन उत्पन्न,
प्रतिपक्ष से सबडे ।

प्रातिपक्षिक [प्रतिपक्ष + ठक्] अग्नि, कम् नाम शब्द
का परिगणन रूप, विभक्ति विज्ञ के मुद्रने से पुं
सम्भा शब्द—अर्थवदवानुरप्रत्यय प्रातिपक्षिकम्—पा०
११२।४५ ।

प्रातिपक्षिक (वि०) (स्त्री०—वी) [प्रतिपक्ष + ठक्]
पौर्णमासी वरानिमी या पराक्रम से सबडे ।

प्रातिपक्ष (वि०) (स्त्री०—वी) [प्रतिपक्ष + अन्] प्रतिपक्ष
या विध्वना से संबध रखने वाला, अन् प्रतिपक्ष या
विशद कल्पना । अमानत देने के लिए (प्रतिपक्ष के रूप
में) खडा होना ।

प्रातिपक्षिक [प्रतिपक्ष + ध्यञ्] अमानत या प्रतिभूति
होना, प्रतिपक्षिता, किसी कर्मधार को (कर्महारी में)
उपस्थित करने का उत्तरदायित्व होना (क्योंकि वह
विशालापान है नवा कर्म का उपवा वापिस कर देगा) ।

प्रातिपक्षिक (वि०) (स्त्री०—वी) [प्रतिपक्ष + ठक्]
1 जो केवल दिवाई मो रे पर सम्पुन, ही उत्तक
अत्रय 3 प्राग्विक 2 दिवाई नी देने वाली ।

प्रातिलोचिक (वि०) (स्त्री०—वी) [प्रातिलोच + ठक्]
आज के विरुद्ध, विरोधी, सन्धतापूर्ण, अनेकोपकर ।

प्रातिशोभ्यम् [प्रतिशोभ + भ्यञ्] 1. उलटापन, उल्टापन या प्रतिफल बन—अन्० १०११ 2. समुद्रा, विरोध, कन् युद्धी भावना ।

प्रातिशेषिकः, प्रातिशेष्यकः, प्रातिशेष्यकः [प्रतिशेष + ठक्, प्रतिशेष्य + भञ् + कन्, प्रतिशेष + भ्यञ् + कन्] पढ़ीसी ।

प्रातिशेष्यकः [प्रतिशेष + भ्यञ्] 1. सामान्यतः पढ़ीसी 2. बराबर के घर में रहने वाला पढ़ीसी (मिरतर-गृहवासी—इन्०) ।

प्रातिशाल्यम् [प्रतिशाल्य भवः—भ्य] व्याकरण का एक ग्रन्थ जिसमें स्वरसंवि तथा अन्य वर्षपरिवर्तनों के नियमों का उल्लेख है जो कि वेद की किसी भी शाखा से पाये जाते हैं तथा जिसमें स्वरापाठ समेत उच्चारण की पद्धति बतलाई गई है (प्रातिशाल्य चार हैं—एक तो ऋग्वेद की बाह्य शाखा का, दो यजुर्वेद की दोनों शाखाओं के लिए, तथा एक अथर्ववेद का) ।

प्रातिशिव्य (वि०) (स्त्री०—की) [प्रतिशिव + ठक्] विशिष्ट, अलामान्य, अपना निजी ।

प्रातिहन्त्रम् [प्रतिहन्त्र + भञ्] बदना, प्रतिशोभ ।

प्रातिहारिकः, प्रातिहारिकः, प्रातिहारिकः [प्रतिहार + भञ्, प्रतिहार + कन्, प्रतिहार + ठक्] जादूगर, ऐम्-बालिक ।

प्रातिशिक (वि०) (स्त्री०—की) [प्रतीति + ठक्] सम-क्षिक, केवल मन में विश्वास, काल्पनिक ।

प्रातिशिकः [प्रतीप + भञ्] सत्यन का वृत्त नाम ।

प्रातीशिक (वि०) (स्त्री०—की) [प्रतीप + ठक्] 1. उलटा विरोधी, विपरीत ।

प्रात्यक्षिकः [प्रात्यक्ष + ठक्] प्रात्यक्ष का एक राजकुमार ।

प्रात्यक्षिक (वि०) (स्त्री०—की) [प्रात्यक्ष + ठक्] 1. श्रोत्र का, विश्वासपात्र 2. किसी स्त्री की विश्वासपात्रता के हेतु बमानत देने के लिए (प्रतिभु के रूप में) कहा होता ।

प्रात्यक्षिक (वि०) (स्त्री०—की) [प्रात्यक्ष + ठक्] प्रतिदिन होने वाला, निरन्तर, प्रतिदिन ।

प्रात्यक्षिक (वि०) (स्त्री०—की) [प्रात्यक्ष + ठक्] 1. प्रात्यक्षिक 2. पूर्ण ज्ञान का, पूर्णज्ञ का बहुधा बार होने वाला ।

प्रात्यक्ष्यम् [प्रात्यक्ष + भ्यञ्] प्रथम होना, पहला उदाहरण, प्राथमिकता ।

प्रातिशाल्यम् [प्रातिशाल्य + भ्यञ्] किसी व्यक्ति या पदार्थ के चारों ओर हाथों से चल कर हाथों का जाना, और प्रातिशाल्य किये जाने वाले पदार्थ को सर्वत्र अपनी दाईं ओर रखना ।

प्रातुष् (अन्व०) [प्र + अतुः इति] दिखाई देने के साथ, स्पष्टतः, प्रकटकृत से, दृष्टि में (प्रातुः भू, क और

कत् के साथ प्रयोग, प्रातुः अत्यन्त इव कितः दूर प्रवेष्ट—अ० ८, १२, क, क और अन्तः के अन्तर्गत भी देखिए) । अन्व०—करकम् (प्रातुष्करण) प्रकटीकरण, प्रवचन करना, प्रातुः (प्रातुष्कः) 1. अतिशय में जाना, उदय होना—अतुः प्रातुष्कितम्—अन्व० १० 2. प्रकट या प्रवचन होना, प्रकटीकरण, सर्वत्र 3. सुनने के योग्य होना 4. पृथ्वी पर देवता का प्रपट होना ।

प्रातुष्कम् [प्रातुष् + कत्] प्रकटीकरण ।

प्रातुष्कः [प्र + दिव् + भञ्, उपसर्गस्य दीर्घः] 1. बहुतों और तबनी के बीच का स्थान 2. स्थान, कबल, प्रवेष्ट ।

प्रातुष्कम् [प्र + प्रा + दिव् + भञ्] गेट, दान ।

प्रातुष्किक (वि०) (स्त्री०—की) [प्रातुष्क + ठक्] 1. पूर्ण दृष्टिगोचर वाला 2. सीमित, स्थानीय 3. कबल,—क एक बिन्दु का स्थानी ।

प्रातुष्किकी [प्रातुष्क + इति + दीप्] तबनी बँकनी ।

प्रातुष्क (वि०) (स्त्री०—की), प्रातुष्किक (वि०) (स्त्री०—की) [प्रातुष्क + भञ्] प्रातुष्क + भञ्] सम्भावना, सम्भाव से संबद्ध ।

प्रातुष्किकम् [प्रातुष्क संज्ञानं, लक्षणानाम्—प्रातुष्क + ठक्] नामकारक सत्य, कोई भी दृष्टिकरण ।

प्रातुष्किक (वि०) (स्त्री०—की) [प्रातुष्क + ठक्] 1. अत्यन्त स्पष्ट या प्रमुख, सर्वोपरि, अत्यन्त प्रमुख 2. प्रातुष्क से संबद्ध या उससे उत्पन्न ।

प्रातुष्किकम् [प्रातुष्क + भ्यञ्] 1. प्रमुखता, सर्वोपरिता, प्रमुख, उदाहरण 2. प्रातुष्क, सर्वोपरिता 3. प्रमुख या प्रधान कारण (प्रातुष्किकेन, प्रातुष्किकम्, प्रातुष्किकतः) मुखर रूप से 'विशेष दृष्टि से' तथा 'प्रधान रूप से' भग०—१०११ ।

प्रातुष्किक (वि०) [प्र + अति + इ + क्त] अती-वांति पड़ा लिखा, (प्रातुष्क की वांति) अत्यन्त विज्ञित ।

प्रातुष्क (वि०) [प्रातुष्कान्—प्रा० अ०] 1. दूर का, दूरवर्ती, दूर 2. गुणा हुआ, रचित रहता हुआ 3. कला हुआ, बसा हुआ 4. अनुकूल,—अन्व० बाकी,—अन्व० (अन्व०) 1. अनुकूलता के साथ, उचितपूर्वक, समनुकूलता के साथ, उपयुक्तता से युक्त—समाजने में अनुकूलतावाहः सम्प्रेतर प्रातुष्किकः अनुकूलता—अन्व० १११० 2. देखेय से ।

प्रातुष्कः [प्रकृत्य अन्तः—प्रा० अ०] 1. किनारा, हाथिया, शास्त्र, मन्त्री, और—प्रातुष्कस्तोषेदर्थः—अ० ४१७ 2. (गोष्ठ व जीव आदि का) किनारा—प्रा० ४१२, गोष्ठः, नयनः 3. हृद, मीमा 4. अग्निम किन्ना, मोता,—योगनप्रातु—पंच० ४ 5. विन्दु, १. तपः—अन्व० (वि०) पास ही रहने वाला,—पूर्वम् नगर के बाहुर का, नगराक्षर, कितने के निकट होने वाला

उत्पन्न—विरस (वि०) अन्त में रहती,—सूक्ष्म (वि०) २० 'आंतरसूक्ष्म',—स्व (वि०) जो सीमा पर रहता है ।

अन्तरम् [प्रकृष्टम् अन्तर व्यवधानं वच—आ० व०]

1 लंबा और सुनसान मार्ग, जनसूक्ष्म या बीरान सड़क 2 आवासीय सड़क, निर्जन सूक्ष्म 3 अत्यंत उजाड़ 4 वृक्ष की कोटर । तन्—सूक्ष्मः लंबी सुनसान सड़क (जिस पर वृक्ष या छाया न हो) ।

प्रापक (वि०) (स्त्री०—पिका) [प्र + आप् + कृत्]

1 ले जाने वाला, पहुँचाने वाला 2 प्राप्त कराने वाला, सामग्री से वस्तु कराने वाला 3 स्थापित करने वाला, बीच बनाने वाला ।

प्रापकम् [प्र + आप् + कृत्] 1 पहुँचाना वा जाना

2 प्राप्त करना अधिकृत्य अवाप्ति । ले जाना पहुँचाना वा जाना ३ सामग्री से वस्तु करना ।

प्रापिका [प्र + प्र + पृ + कृत्] बीरान् व्यापारी

—आधिकारिक प्रापिकाद्वारा [आ० ४१११]

प्राप्त (भू० क० कृ०) [प्र + आप् + कृत्] 1 प्राप्त

अवाप्त, उपलब्ध, अजिन 2 पहुँचा हुआ निर ३ ३ बटित मिला हुआ 4 (अर्थ) उठाया हुआ 'मन सहन किया हुआ 5 पहुँचा हुआ आया हुआ उपस्थित ६ पूरा किया हुआ 7 उचित मही 8 विषय के अनुसार । तन्—अनुकूल (वि०) जान क लिए अनुमन, बिदा होने के लिए जिसने अनुमति प्रदान कर दी है—अर्थ (वि०) मफल (अ०) लब्ध पदार्थ

—अन्तर (वि०) जिसे बीका या अवस मिल चुका है—उत्पन्न (वि०) जो उत्पन्न हो गया है या जिसने

उत्पत्ति अथवा उत्पन्न पर प्राप्त कर लिया है—कारिन्

(वि०) मही कार्य करने वाला—काल (वि०)

1 समयावकाल, यथाकाल, उपयुक्त २० अवाप्त काल

2 विवाह के योग्य 3 नियत प्राय में मिला (क)

अचित समय, उपयुक्त वा अनुकूल अव—अवस्थ (वि०)

प्राप्ति उत्पत्ति में समाविष्ट अवाप्ति मूल तु० 'प्राप्त'—अवस्थ (वि०) जिसने वस्तु को अन्त में दिया है

—बुद्धि (वि०) शिक्षण प्राप्त किया हुआ प्रकाश

युक्त,—आरंभ होता होने वाला वस्तु—अवस्था (वि०)

विलम्ब अनोख पूरा हो गया है,—बीज (वि०)

तत्पन, वयस्क, अवाप्त,—अव (वि०) 1 सुन्दर, मनोहर

2 बुद्धिमान्, विद्वान् 3 उपयुक्त, समुचित, सुयोग्य,

—अवधार (वि०) वयस्क, बालिका जो कानून की

वृद्धि के अपने कार्य को अवाप्त का अधिकारी हो

(वि०) अवयस्क) —औ (वि०) जिसकी उत्पत्ति

किसी और के द्वारा हुई हो ।

प्रापिका (स्त्री०) [प्र + आप् + कृत्] 1 प्राप्त करना

अधिकृत्य, उपलब्धि, अवाप्ति, प्राप्त इत्यं, वच, °

सूक्ष्म आदि 2 पहुँचना, प्राप्त करना 3 पहुँच, आगमन 4 देखना, मिलना 5 पराप्त, पहुँच 6 अनुमान, अटक 7 हिस्सा अंश, टेर 8 माय किस्म 9 उजड़, पैसावार 10 किसी पदार्थ को प्राप्त करने की शक्ति (गाठ सिद्धियों में से एक) 11 सच, समुच्चय सहति 12 किसी योजना की मफल सहायि सुचारुगम । तन्—आशा किसी चीज को प्राप्त करने की आशा (गाठकीय कथावस्तु के विकास का १५ भाग) उपायापायम सुचारुगम प्राप्त्या प्राप्त सजवा—सा० व० १ ।

प्रापकम् [प्रबन्ध + ध्यञ्] 1 प्रभूता सर्वोच्चता बाल आका 2 शक्ति बल पावन ।

प्राप्ता (वा, लिङ् [प्रभा (वा) ल + ठक मृगे का व्यापार कृत्य वाला ।

प्रबोध (वि०) क [प्र + आप् + कृत्] प्रबोध प्रबोध मठा । मरक प्रबोध 'अपराध' असक । वृत्ता

प्रत काल उपयुक्त मज्जन माध अन्त आध्यात्मिक रात्रि को अवाप्त है ।

प्राप्तप्रत्यय [प्रभा + अण] स्त्रीपुंल्लभ ।

प्राप्तप्रत्यय [प्रभा + अण] स्त्रीपुंल्लभ । 1 प्रभाप का विशेषण 2 नीय का विशेषण ।

प्राप्तप्रत्यय [प्रभा + अण] स्त्रीपुंल्लभ । 1 प्रभाप का विशेषण

प्राप्तप्रत्यय [प्रभा + अण] स्त्रीपुंल्लभ । 1 प्रभाप का विशेषण

प्राप्तप्रत्यय [प्रभा + अण] स्त्रीपुंल्लभ । 1 प्रभाप का विशेषण

प्राप्तप्रत्यय [प्रभा + अण] स्त्रीपुंल्लभ । 1 प्रभाप का विशेषण

प्राप्तप्रत्यय [प्रभा + अण] स्त्रीपुंल्लभ । 1 प्रभाप का विशेषण

प्राप्तप्रत्यय [प्रभा + अण] स्त्रीपुंल्लभ । 1 प्रभाप का विशेषण

प्राप्तप्रत्यय [प्रभा + अण] स्त्रीपुंल्लभ । 1 प्रभाप का विशेषण

प्राप्तप्रत्यय [प्रभा + अण] स्त्रीपुंल्लभ । 1 प्रभाप का विशेषण

प्राप्तप्रत्यय [प्रभा + अण] स्त्रीपुंल्लभ । 1 प्रभाप का विशेषण

प्राप्तप्रत्यय [प्रभा + अण] स्त्रीपुंल्लभ । 1 प्रभाप का विशेषण

प्राप्तप्रत्यय [प्रभा + अण] स्त्रीपुंल्लभ । 1 प्रभाप का विशेषण

प्राप्तप्रत्यय [प्रभा + अण] स्त्रीपुंल्लभ । 1 प्रभाप का विशेषण

प्रायः [प्र + अय् + कृन्] १. अपयमन, विदायनी, जीवन
 में प्रयाण २ आभरण अनशन, जन रक्षता, किसी
 इच्छा के लिए जाना पीना छोड़ कर चरना देना,
 (प्राय 'प्राप्' उपबिल' आदि शब्दों के साथ, वे० नी०
 पायोपवेशन ३ बड़े से बड़ा भोग, अधिकारा अवस्था
 ४. अधिकता, बहुतायत, प्रचुरता ५ जीवन की एक
 दशा, विशेष (समास के अन्त में लग कर 'प्राय' वा
 अनुवाद निम्नांकित होता है) (क) अधिकारा में बहुधा,
 अधिकतर, लगभग, तकरीबन—यत्नप्रायो गिरन जाने
 मृतप्रायः लगभग मरा हुआ मरने से बड़ा कम
 तकरीबन मरा हुआ या (ख) से युक्त, सम्यक् मरा
 हुआ, अत्यधिक प्रचुर कष्टप्राय शरीरम् इतर १
 आत्मप्रायो दूध पशु २ कमलपौरप्रय वनातिष्ठा
 उत्तर ३१२४ सुगन्ध म मरा हुआ ५ ५५ ३
 ममान्, 'मलना-अन्तरा ३३५ १५२ ५५ ५५ ५५
 प्राय क्वचनम् प्रादि ५५० उद्योगमन्त्र उपवेशन
 उपवेशनम् उपवेशनिका बिना साध ५५ १ २
 देता और इस प्रकार मरने का हेतु भी कर्त्तव्य प्रयत्न
 अनशन मरा प्रायोनेशन हून विद्धि पशु ४
 प्रायोपवेशनमर्त्तनदीनबैभव ५५० ८१३ प्रायश्च
 वेनारुद्र वनवासस्थान्य वेनो ५१५ उयेन
 (वि०) बिना आये रहकर मृत्यु की बात कहने
 काभा उपविष्ट (वि०) आभरण अनशन करन वाला
 बालम् सामान्य चरनापनम् ।

प्रायजम् [प्र + अय् + कृन्] १ प्रवेश आरम्भ शुरू
 २ जीवनपथ ३ ऐच्छिक माय् ननु० १०३३
 ४ शरण लेना ।

प्रायशीच (वि०) [प्र + अय् + अनीच्] लाञ्छनारम्भ
 आरम्भिक, दीक्षात्मक,—यत्न गोमयाय वा प्रथम दिन ।

प्रायश्चत्त (अव्य०) [प्राय + चत्त] बहुधा, अधिकतर अधिकांश
 में, सर्वथा—आशाबन्ध कुम्भसदृश प्रायशो ह्यङ्गानाम्
 सद्यपि प्रायश्चित्तस्य विप्रयोगे कर्णादि मेघ० १० ।

प्रायश्चित्तम्, प्रायश्चित्त (स्त्री०) [प्रायस्य पापस्य-
 चित्तं विनाशेन यस्मात्] ब० सं०, नि० सूट]
 १ परिशोध, पापनिष्कृति क्षतिपूर्ति, पाप से निम्तार
 पाने के लिए धार्मिक साधना मातृ पापश्च भवत
 प्रायश्चित्तमिवाकरान् २५० १२१९ (प्रायो नाम
 तप प्रोक्त चित्त निश्चय उच्यते तपानिश्चयसयोगात्
 प्रायश्चित्तमिवायते हेमाद्रि) २ सतोष सुधार ।

प्रायश्चित्तम्, (वि०) [प्रायश्चित्त + इति] जो पापों का
 परिक्षोभ करे ।

प्रायश्च (अव्य०) [प्र + अय् + कृन्] १ अधिकतर, बहुधा,
 साधारणतः, अधिकांशतः प्रायः प्रत्येकमास में
 स्वयंसेवकमात्र कु० ६२०, प्राया भूयास्त्यजति
 प्रयत्नविशेष स्वामिन सेवनात् पृ० ५१२१,

प्राया गच्छति यथ मायारहितस्तत्रैव वास्त्यायद प्र०
 २१९३ सर्वथा, अधिकतर, व्यवसाय, कदाचित्
 तब प्रायः प्रसादादि प्रायः प्राप्तावधि जीवितम्
 पृ० ५१ ।

प्रायश्चित्त, प्रायश्चित्त (वि०) (स्त्री० क्री०) [प्रायश्च
 + कृन्, प्रायश्च + कृन्] याचा के लिए आग्रह
 या उपयुक्त ।

प्रायश्चित्त (वि०) (स्त्री० क्री०) [प्रायश्च + कृन्] प्रयत्न
 सामान्य

प्रायश्चित्त (पु०) [प्रायश्चित्त + कृन्] प्रयत्न
 धार ।

प्रायश्चित्त (पु०) [प्रायश्चित्त + कृन्] प्रयत्न
 धार ।

प्रायश्चित्त (पु०) [प्रायश्चित्त + कृन्] प्रयत्न
 धार ।

प्रायश्चित्त (पु०) [प्रायश्चित्त + कृन्] प्रयत्न
 धार ।

प्रायश्चित्त (पु०) [प्रायश्चित्त + कृन्] प्रयत्न
 धार ।

प्रायश्चित्त (पु०) [प्रायश्चित्त + कृन्] प्रयत्न
 धार ।

प्रायश्चित्त (पु०) [प्रायश्चित्त + कृन्] प्रयत्न
 धार ।

प्रायश्चित्त (पु०) [प्रायश्चित्त + कृन्] प्रयत्न
 धार ।

प्रायश्चित्त (पु०) [प्रायश्चित्त + कृन्] प्रयत्न
 धार ।

प्रायश्चित्त (पु०) [प्रायश्चित्त + कृन्] प्रयत्न
 धार ।

प्रायश्चित्त (पु०) [प्रायश्चित्त + कृन्] प्रयत्न
 धार ।

3. नास्तिक, आवेदन, विनती, प्रयत्न-प्रार्थना -कदा-
चित्प्रत्यक्षप्रार्थनामन्त्रः पुरेभ्यः कथयेत्—सं० २। सम०
—अङ्कः प्रार्थना कर्त्तव्यकार करना, -सिद्धि- इच्छा
की पूर्ति, प्रार्थनासिद्धिवाचन—रघु० १।४२।
प्रार्थनीय (सं० क०) [प्र + अर्थ + कर्त्तव्य] 1. प्रार्थना
या आवेदन किये जाने के उपयुक्त 2. अधिककर्त्तव्य,
चाहने के योग्य, - वन् प्रतीय या द्वार वृत्त ।
प्रार्थित (नू० क० क०) [प्र + अर्थ + क्त] 1. याचना
किया हुआ, प्रार्थना किया हुआ, पूछा हुआ, आवेदन
किया गया 2. अधिकप्रार्थित, इच्छित 3. आश्रय, शत्रु
के द्वारा विरोध किया गया—रघु० १।५६ 4. मारा
गया, चोट की गई (दे० प्र पूर्वक अर्थ) ।
प्रार्थिन् (वि०) [प्र + अर्थ + णिन्] 1. माँगने वाला,
प्रार्थना करने वाला 2. कामना करने वाला, इच्छा
करने वाला—अन्व कविप्रसादप्रार्थी वसिष्ठाभ्युपहास्य-
ताम्—रघु० १।३।
प्रार्थन्य (वि०) [प्र + आ + ल्यन् + अच्] 1. झुलता
कटकता हुआ—प्रार्थन्यश्रुतिप्रार्थनप्रहास - वंशी०
२।२८,—कः 1. मोलियों का बना मानव 2. स्त्री
का स्तन,—वन् छापी तक कटकने वाला कठहार
—प्रार्थन्यमुक्त्यर्थ प्रार्थनका निवारण शशीकृतवासवकन
—रघु० १।१४, मुक्ताप्रार्थनका ५० ।
प्रार्थन्यक [प्रार्थन्य + कन्] दे० 'प्रार्थन्य' ।
प्रार्थन्यिका [प्रार्थन्य + कन् + टाप्, इत्यच्] छोले का हार ।
प्रार्थन्य [प्र + की + ल्यन् = प्रलेय + अच्] हिम, कुहरा,
बोझ, गुहार—ईशाचलप्रार्थन्यकवनेच्छया - गीत० १
प्रार्थन्यकवनेच्छवरमीश्वरोऽपि (अभिषेते)—सि०
४।६४, मेघ० १९। सम० - अग्निः - अन्नः हिमा-
च्छादित पहाड़, हिमालय मेघ० ५७ - अक्षु, कारः,
- रश्मि 1. चन्द्रमा 2. कपूर, - लेखः बोला ।
प्रार्थनः [प्र + अर्थ + क्त + अच्] जी ।
प्रार्थनम् [प्र + आ + ल्यन् + अच्] फावड़ा, सुरपा, कुबाल ।
प्रार्थनः [प्र + आ + ल्यन् + अच्] 1. बाढ़, बेरा 2 (हेय०
के मतानुसार) उत्तरीय वस्त्र 3 एक देश का नाम ।
प्रार्थनम् [प्र + आ + ल्यन् + अच्] ओढ़नी, चादर बिछे-
ला कोई उत्तरीय वस्त्र, चाँगा, कबाड़ा या गुपट्टा ।
प्रार्थनीयम् [प्र + आ + ल्यन् + कर्त्तव्य] उत्तरीय वस्त्र ।
प्रार्थनः [प्र + आ + ल्यन् + अच्] 1 उत्तरीय वस्त्र, चाँगा,
कबाड़ा 2 एक जिले का नाम । सम०—कौटः दीपक,
पर्वत ।
प्रार्थन्यक [प्रार्थन्य + कन्] उत्तरीय वस्त्र, चाँगा या
कबाड़ा - यदीच्छति कम्बदशाविधानं प्रार्थन्यकं सूत्रग-
तं हि सुवचन्—मृच्छ० ८।२२, जातीकुसुमवासिन
प्रार्थन्यकान्प्रार्थितः मृच्छ० १ ।
प्रार्थन्यकः [प्रार्थन्य + क्त] उत्तरीय वस्त्रों का निर्माता ।

प्रार्थन्य (वि०) (स्त्री०—) स्त्री । प्रार्थन्य + अच् । याचा
संबंधी, याचा में करने या दिये जाने के योग्य ।
प्रार्थन्यक (वि०) (स्त्री०—) स्त्री । [प्रार्थन्य + क्त] याचा
के लिए उपयुक्त ।
प्रार्थनीय [प्रार्थन्य + अच्] चतुराई, कुशलता, प्रवीणता,
दक्षता—आभिषेक कथा प्रार्थनीय वस्त्रेन - उत्तर० ४,
१५।६८ ।
प्रार्थन्य (नू० क० क०) [प्र + आ + ल्यन् + क्त] चिरा हुआ,
बेरा हुआ, उका हुआ, परखी वाला,—सः, तन् वृषट,
बुरका, चादर (स्त्री०—) स्त्री ।
प्रार्थन्यः (स्त्री०) [प्र + आ + ल्यन् + क्त] 1 बेरा, बाढ़,
बाढ़ 2 आध्यात्मिक अन्वकार ।
प्रार्थन्यक (वि०) (स्त्री०—) स्त्री । [प्रार्थन्य + क्त] गीण,
अप्रधान, कः झुट ।
प्रार्थन्य (स्त्री०) [प्र + आ + ल्यन् + अच्] वर्षा ऋतु,
मौसमी हवा, वर्षा काल (आषाढ़ और आवर्ण काल
का महीना)—कलापिमां प्रार्थन्य पश्य नृप्यम् रघु०
१।५१, १९।३७, प्रार्थन्य प्रार्थन्यि इतीति शठवी आर
जते प्रार्थन्य—मृच्छ० ५।१८, मेघ० १९। सम०
—अर्थः (प्रार्थन्य) वर्षा ऋतु का अन्न,—कालः
(प्रार्थन्यकाल) वर्षा ऋतु ।
प्रार्थन्य, का [प्र + आ + ल्यन् + क्त, प्रार्थन्य + टाप्] वर्षा
ऋतु, वर्षा काल ।
प्रार्थन्यक (वि०) (स्त्री०—) स्त्री । [प्रार्थन्य + क्त] वर्षा
ऋतु में उत्पन्न,—कः मोर ।
प्रार्थन्यक (वि०) [प्रार्थन्य जायते अन् + क्त, अलृक्
सं०] वर्षा ऋतु में उत्पन्न ।
प्रार्थन्यक (वि०) [प्रार्थन्य + एव] वर्षा ऋतु में उत्पन्न,
वर्षा ऋतु से उत्पन्न—सा कि शक्या नमयितुमिह प्रार्थ-
न्येन वरिषेन मासि० १।३०, ४।६, रघु०
१।३९ 2 वर्षा ऋतु में देव (ऋण आदि) का
1 कर्म वृत्त 2 कुटुम्ब वृत्त,—अन्व बहुवचनकता,
मातृत्व, प्रार्थन्य ।
प्रार्थन्यक [प्रार्थन्य + अच्] 1 एक प्रकार का कर्म का वृत्त
2 कुटुम्ब वृत्त, अन्व बहुवचन, नीलम् ।
प्रार्थन्यक (नपु०) बहिया कमी चादर ।
प्रार्थन्यक (वि०) (स्त्री०—) स्त्री । [प्रवेशन + अच्] प्रवेश
करने पर जो दिया जाय या किया जाय (किसी घर
में या रागमंच पर) ।
प्रार्थन्यक, प्रार्थन्यक [प्रवेशन + अच्], पक्षे उत्तरपक्ष-
वृद्धिच [आभिक साधु या मन्त्रास्त्री का जीवन ।
प्रार्थन्यक [प्र + अर्थ + अच्] 1 जामा, स्वादा बसना,
निवाह करना, पुष्ट होना मनु० ११।४३, धर्म
आदि 2 आहार, भोजन ।
प्रार्थन्यक [प्र + अर्थ + अच्] जामा, पुष्ट होना, स्वाद

चकना 2. बिलाना, स्वाद चकाना—मनु० २।२९,
3. आहार, भोजन ।

आजलीयम् [प्र + अञ् + अनीयर्] आहार, भोजन ।

प्रासत्यम् [प्रस्त + व्यञ्] अंठना, स्तुत्यता, प्रमु-
खता ।

प्रासित (मू० क० क०) [प्र + अञ् + क्त] आया हुआ,
चका हुआ, उपभुक्त,—तन्म मृत पुरखाओ के पितरों को
उदकवान और पिण्डवान, पितरों के औषधदेहिक
सस्कार—प्रासितम् पितृतर्पणम् मनु० ३।७४ ।

प्राग्निक् [प्रस् + ठक्] 1 परीक्षक 2 मध्यम्य, विदा-
यक, न्यायाधीश अहो प्रयोगाभ्यन्तर प्राग्निक्
—मालवि० १ ।

प्रासः [प्र + प्रस + घञ्] 1 कैंकना, डालना, (तीर)
छोड़ना 2 बर्छी, भाला, फलकहार अस्त्र (जिसमें
फल लगाया हुआ हो) । मनु० ६।३२, कि० १६।६ ।

प्रासकः [प्रास + कन्] 1 बर्छी, भाला, या फल लगा हुआ
अस्त्र 2 पासा ।

प्रासंनः [प्र + सञ्ज् + घञ्], उपसर्गस्य दीर्घ । बँलो के
लिए हुआ ।

प्रासङ्गिक (वि०) (स्त्री०—की) [प्रसङ्ग + ठक्]
1 बनिष्ठ संयोग से उत्पन्न 2 संपन्न, सहज 3 प्रसथा-
नुकूल, आकरिमक, आगामी, यदाकदा होने वाला
—प्रासङ्गिकीना विषय कथानाम—उत्तर० ७।९
संबधानुकूल, अस्त्रानुकूल, अवसरानुकूल 6 उपा-
ख्यान विषयक ।

प्रासङ्ग्यः [प्रासङ्ग + यत्] हल में जुटने वाला बँल ।

प्रासाह [प्रसीदन्ति अस्मिन् प्रसङ्ग + घञ्], उपसर्गस्य
दीर्घ । 1 महल भवन गगनचूबी विज्ञान भवन
भिष्म कुटीपति प्रासाद सिद्धा०, मेघ० ५४
2 राजप्रवा 3 मंदिर का देवालय । सम०—अङ्गनम्
जिसी घरम् या मन्दिर का आगमन, आरोहणम् महल
में जाना या प्रविष्ट होना, कुक्कुट पात्र । इन्द्र
तलम् महल की मन्त्रा चरगा छत्र पुष्ट महल
की बाड़ी पर बन । छत्रा—प्रासिच्छा मन्दिर का
प्रासिच्छा या अभ्यन्त्रण, सायिन (वि०) मन्त्र
में होने वाला, भूङ्गम् किसी महल या मन्दिर का
कलस या गीतार कगुरा ।

प्रासिकः [प्रास् + ठक्] भाग रखने वाला शर्मी पारो ।

प्रासुनिक (वि०) (स्त्री०—का) [प्रसूति + ठक्] पमज
से सबब रखने वाला, बच्चे के जन्म से सबब ।

प्रस्त (मू० क० क०) [प्र + अस् + क्त] 1 कैंका गया,
(बर्छी भाला आदि) चलाया गया, डाला गया, छोड़ा
गया 2 निर्वासित किया गया, बाहर निकाला गया ।

प्रास्ताधिक (वि०) (स्त्री०—की) [प्रस्ताप + ठक्] प्रस्ता-
पना का काम देने वाला, प्रस्तापना या परिचय,

प्रास्ताधिक—जैसा कि 'प्रास्ताधिक विचार' में
(भाषिणी—विकास का प्रथम या प्रारम्भिक बँल)
प्रास्ताधिक चकनम् प्रास्ताधिक में विद्या भया विवरण
2 अन्तु के अनुकूल, अवसरानुसार, सामयिक 3 समय,
प्रसंगानुकूल, (प्रस्तुत विषय से) सबब—अप्रास्ता-
विकी महत्येषा कथा—मा० ७ ।

प्रास्तुत्यम् [प्रस्तुत + व्यञ्] विचार विमर्शका विषय
होना ।

प्रास्वानिक (वि०) (स्त्री०—की) [प्रस्वान + ठक्]
प्रायण से सबब या विद्या के अवसर के उपयुक्त—रघु०
२।७० 2 विद्या के अनुकूल ।

प्रास्विक (वि०) (स्त्री०—की) [प्रस्व + ठक्] 1 तोल
में एक प्रस्व 2 एक प्रस्व में मोल लिया हुआ
3 प्रत्यमर मोल का 4 एक प्रस्व बीज से बोया गया ।

प्रास्वच (वि०) (स्त्री०—की) [प्रस्वच + अञ्] छरने
से उत्पन्न ओत से निकला हुआ ।

प्राह [प्रकथेय 'माह' शब्दों यव—प्रा० ब०] नृत्यकला
की शिखा ।

प्राह्ण [प्रथम व तदनुषङ्ग कर्म० स०, टप्, अङ्गादेश
जन्म] दोपहर से पहले का समय ।

प्राह्णन (वि०) (स्त्री०—की) [प्राह्ण + टप् तुट् नि०
एवम्] मध्याह्न से पूर्व होने वाला, या मध्याह्नपूर्व
सबकी ।

प्राह्णतराम—तन्नाम् (अभ्य०) [प्राह्ण + तरप् (तम् +
काम्, नि० एवम्)] प्राय काल, बहुत सबेरे ।

प्रिय (वि०) [प्री + क] (न० अ०—प्रेमम् उ० अ०
प्रेल 1 प्रिय प्यारा प्रसन्न आया हुआ, रमणीय
भनकूल बन्धुप्रियाम् कु० १।२६, रघु० ३।००

2 मृहावना हँविकर—ताम्रधनुस्ते प्रियमप्यस्मिन्
रघु० १।६ 3 चाहने वाला, अनुरक्त, भक्त
—प्रियमवदता श० ६।१, प्रियारामा वैदेही—उत्तर०

७ य० 1 प्रेमी पति—स्त्रीशामास प्रणयबचन
विभ्रमा हि प्रियेण मेघ० २८ 2 एक प्रकार का
मृग या प्रिया (स्त्री), पत्नी स्वामिनी—प्रिये

काहनाल प्रिये रम्यशीले प्रिये—गीत० १० 2 स्त्री
1 साटी इलायची 4 समार, समुचन 5 लीब
हुई मरिचा 6. एक प्रकार का चमेकी (काकल)

—यम् 1 प्रेम 2 कृपा, सेवा अनुग्रह प्रियमर्चयित
लने खया से विक्रम० १।७, मरिप्रियाविविदासा
—मेघ० २२, प्रिय से प्रिय मे, मेरी अच्छी सेवा की

मई—भन० १।२३, पञ्च० १।३६५ १२३ 3 सुखद
समाधि—रघु० १२।९१, प्रियनिवेशोवतारम् श० ४
4. आनन्द, सुख,—यम् (अभ्य०) बड़े मुहावने या

वचिकर डब से । सम०—अतिवि (वि०) आतिथेय,
अतिविशालकर करने वाला,—अप्यः किसी प्रिय वस्तु

का अभाव वा हासि, —अस्तिव (वि०) सुख और सुख, अधिक और अधिकतर (आकारादि) (यन्) सेवा और कतिपय, अनुसूच और कति, —अन्तः नाम का वृत्त, अहं (वि०) १ प्रेम वा कृपा का अधिकारी उत्तर० ३ २ मिलनसारः (वि०) मित्र का नाम, —अनु (वि०) जीवन का प्रेमी, —आत्म (वि०) अन्तः तम बार सुनाते वाला आत्मार्थक अधिकतर अन्तः आत्मन् (वि०) मिलनसार सुखद, अधिकतर —अस्तिव (वि०) —अस्तिव कृता से युक्त वा मैत्रातृक वस्तुता वास्तव्य से वचन —अस्तिव (स्त्री०) आत्मप्रपन्न वा सुखद बटना अन्तः आत्मन् किन्ती प्रेमी वा प्रेयसी के साथ (पराउत्तरी) —रत्न० १२१२, —स्तिव (वि०) १ मन्त्रा वाहने वाला, सेवा करने का इच्छुक २ मित्रता से युक्त स्नेही, —कर (वि०) सुख देने वाला या पेटा करने वाला —अस्तिव (वि०) अनुग्रह पूर्वक विनम्रता से युक्त अन्तः आत्मन् करनेवाला, —अस्तिव अपनी पत्नी से प्रेम करनेवाला पति अपने भाग्य को अत्यन्त वाहने वाला, भाव (वि०) मित्रता अन्तः आत्मन् करनेवाला सेवा करने का इच्छुक, —कार —आस्तिव (वि०) अनुग्रह करने वाला, भला करने वाला —अन्तः (वि०) मन्त्रा करने वाला, मित्र, द्वितीय —अन्तः प्रपन्न वा प्यारा अस्तिव, —आस्तिव अपनी पत्नीको प्रपन्न प्यार करने वाला पति, —तौषाणः एक प्रकार का रत्नवाचक सेबुन का आसन विशेष, —अहं (वि०) अन्तः से सुख, —अस्तिव (वि०) देखने में सुखान्त, सुखद देखी वाला, सुखद मनोहर, सुखचूत —अहं प्रियवर्त्तन कुमार —उत्तर० ५, २५० ११७४ स० ३११२, १८० १ नाना २ एक प्रकार का झुण्डा का वृक्ष ३ गन्धर्व के राजा का नाम—अन्तः ५१५३, —अस्तिव (वि०) राजा अन्तः का विशेषण, —अन्तः (वि०) मन्त्रा करने का अधिकार —अन्तः तिव का विशेषण —अन्तः एक प्रकार का पत्थी, —अन्तः अन्तः पति का अन्तः —आत्म (वि०) अत्यन्त कृपाय वा मुष्ठीय —अन्तः २१२, (अन्तः) भावा में आकरटना, —आत्मन् (अन्तः) बहुत ही रोचक वस्तुता, अन्तः कि एक प्रेमी का अपनी प्रेयसी के प्रति कष्ट, —अन्तः (वि०) अपने अन्तः प्रेमी पार्थकी प्राप्त करने की इच्छा करने वाला, —आत्मन् प्रेमी की भावना उत्तर० ६१११, —आत्मन् कृता से युक्त वा अधिक शब्द, —आस्तिव (वि०) मन्त्राणी, —अन्तः (वि०) अन्तः आत्मन् का प्रेमी—अन्तः ५११—अन्तः (वि०) महिला का अधिकार, (वि०) अन्तः आत्मन् का विशेषण—रत्न (वि०) बहुतरु, दूर हीर, —अन्तः (वि०) रोचक तत्ता कृपापूर्वक दत्त होने के वाला (अन्तः) कृता से युक्त, अन्तः आत्मन् एक प्रकार का—विश्व० २११२, —अन्तः प्रिय मित्र, —अन्तः अधिक नामक पीना, —अन्तः (अन्तः) प्यारी चीज, —आत्मन् (वि०) कृता से युक्त शब्द होने के वाला, —अन्तः आत्मन् करने वाला, (स्त्री०) कृपाय और रोचक शब्द,

— बाह्यिका एक प्रकार का बाह्यवन, — बाह्यि (वि०)
 कृपा से युक्त तथा मधुर शब्द बोलने वाला, बाह्यलस
 — मुसलमान पुष्पा गजन्त सतत प्रियवादिन रामा०,
 — बाह्य (प०) कृष्ण का विशेषण, संज्ञातः प्रिय
 व्याप्त का सम्भव, सख प्रिय मित्र, (स्त्री० — की)
 सहोदा, अत्यन्त सहोदी (किसी स्त्री की), सख
 (वि०) 1 सख का प्रेमी 2 सख होने पर भी प्रिय
 संज्ञेः । प्रिय समाचार प्रेमी का समाचार
 2. बपक नाम का वृक्ष — सखामक अथ प्रिय व्याप्त
 या पत्राक्ष । से मिलन सखचरी प्यारी पत्नी
 मुहूर्त्त (प०) प्रिय या प्रणयप्रिय मित्र हासिक मित्र
 स्वयम् (वि०) पाप का प्रेमी रघु० १२०८१ ।
 प्रियवद (वि०) प्रिय वाक्वा प्रिय — वर अथ मुस
 मयुः—वासा प्रिय बाल्य वाला प्यारी बालें बाल
 बाधा मिलनसार रघु० ५१२० रघु० ३१६४ इ
 1 एक प्रकार का पक्षी 2 एक गन्धक का नाम ।
 प्रियक — कृ० 1 एक प्रकार का हरिण—सि० ४१३०
 2 प्रिय नामक वृक्ष 3 प्रिय नाम का कला 4 मयु
 मयवा = एक प्रकार का पक्षी 6 प्रायान केंतर
 कन् अन्तर वृक्ष का कुल शि० ११२४ ।
 प्रियकुर प्रियकुर प्रियकुर (वि०) प्रिय + कृ + कृ
 क्युन् अन्तर्वा मुन् । 1 अनुप्राप्त प्रसन्न अथवा कृपा करने
 वाला, लेह करने वाला — प्रियकुर में प्रिय इत्यन्त्य
 रघु० १४१८ 2 लवकर 3 मिथुनसार ।
 प्रियकृन् [प्रिय + कृ + कृ] एक कला का नाम (बहुने है
 कि यह कला रम्यो के स्पर्श मात्र से मिल उठती है)
 प्रियकृष्णया प्रियकृष्णिः न० १२ (निमग्नित
 लोचं ये उन् मयी बन्धिमयोः का एकत्रिणं का
 प्रिय गय है जहाँ विभिन्न परिस्थितियों में वृद्धों के
 कुला का आना बलवन्त गया है) पादावातादमाक
 मिथककुलको कीर्णशान्तिनामो श्रीवां प्रियमि
 पयःशुभिकमति बहुल शीघ्रगृह्यसेवकः । मन्त्रारो
 — नमःबाधयत् पटमुद्रमनात्मन्मको बन्धवामान् कुतो
 गीताश्रयकर्मकनितो ब पुरो नर्तना कनिका ।
 2 बरी पीपल, कृ (प०) । जाकारल, केर ।
 प्रियतम (वि०) [प्रिय + तम] सबसे प्रिय, सबसे अधिक
 प्यारा — ब प्रेमी, वति प्रियतमः प्रियतम इव
 प्रायनायुकात्—वेद्य ३११००—अ पक्षी, स्वाभिनी
 इलमया, प्रेयसी ।
 प्रियतर (वि०) [प्रिय + तर] अधिक प्रिय, अत्यन्त
 प्यारा ।
 प्रियतम, स्वयं [प्रिय + तम + टाप्, प्रिय + त्व] 1. प्रियतम
 होता, प्यार 2 प्रेम, स्नेह ।
 प्रियतमिन्, प्रियतमिन् (वि०) [प्रिय + म + क्तिन्]
 कृष्ण, का, वृद्ध लेह का पाप, अत्यन्त प्रिय ।

प्रियाणः [प्रिय + अण् + अण्] प्रियाण नामक वृक्ष, दे०
'प्रियाण'—का अमुरो की डेल ।

प्री १ (क्या० उ००) प्रीणाति, प्रीणीते प्रीत १. प्रसन्न करना,
मुग्ध करना, सन्तुष्ट करना, आनन्दित करना—प्रीणाति
य मुचरितं पितर न पुत्र—अणु० २।६८, सन्तु-
मितुं पित्रियुरापासु—अट्टि ३।३८, ५।१०५, ७।६५
२. प्रसन्न होना, मुग्ध होना—कश्चिन्ममस्ते प्रीणानि
वनवासे—महा० ३. कृपामय बर्ताव करना, अन्वह
दर्याना ४ प्रसन्न वा हँसमुख रहना—प्रेर० (प्रीण-
यति—हे) प्रसन्न करना, सन्तुष्ट करना ।

॥ (विवा० आ०) (प्रीयते—प्री) किया का कर्मवाच्य
का कर्त्ता सन्तुष्ट या प्रसन्न होना तुण होना प्रका-
मप्रोदय यज्जना प्रिय णि० १।१३ रणु० १।३०,
१।३३ याज्ञ० १।२४५ २ स्नेह करना, प्रेम करना
३ सहर्मान या मङ्गने देना, सन्तुष्ट होना ।

प्रीय (वि०) [प्री + क्त, तत्प०] १ प्रसन्न, सन्तुष्ट,
तुण २ पुराना प्राचीन ३ पहला ।

प्रीयन् [प्रीय + ल्यट्] १ प्रसन्न करना सन्तुष्ट करना
२ जो प्रसन्न या सन्तुष्ट करता है ।

प्रीत (न० क० क०) [प्री + क्त, तत्प०] प्रसन्न, मुग्ध,
प्रसुष्ट, आनन्दित प्रीतामिन् मे पुत्र वर मुनीष्य
—रणु० २।६३ १।८१, १२।१६ २ आनन्दयन्,
आह्लादित, हर्षपूर्ण मेघ० ५ ३ सन्तुष्ट 'प्रिय
प्यारा ५ कृपा, स्नेही। मम०—अनन्य,—क्षि-
—कणम् (वि०) हृदय मे मुग्ध, मम से आनन्दित ।

प्रीतिः (स्त्री०) [प्री + क्त, तत्प०] १ प्रसन्नता, आह्लाद,
मनोष, मुग्धी, आनन्द हर्ष, तुनि युवनालोकप्रीति
कु० २।४५ १।२१ रणु० २।५१ मेघ० ६२ २ अनु-
ग्रह, कृपापाना ३ प्रेम, स्नेह, आदर मेघ० ५।१६,
रणु० १।५७, १२।५४ ४ पसन्द, चाह, मुग्धी, व्यसन
—तुन० मृगवा० ५ मित्रता, लोहाई ६ कामदेव की
एक पत्नी का नाम, रति की मौत (मपली सबाता
रत्नाः प्रीतिरिति श्रुता) । सम०—कर (वि०)
प्रेम या अनुराग उत्पन्न करने वाला, कश्चिन्, कर्मन्
(तपु०) मैत्री या प्रेम का कर्ता, कृपापूर्ण कार्य,—
नाटक मे विद्वत्क या ममकरा,— वत्त (वि०) स्नेह
के कारण दिया हुआ (सन्) स्त्री की दी हुई सपति,
विशेषकर विवाह के अवसर पर तास वा हवनुर द्वारा,
—वाण्य,—वायः प्रेमोपहार, मित्रता के भाते दिया गया
उपहार—मदयसरोज्य प्रीतिपायस्य—आ० ४, रणु०
१५।६८,—कणम् प्रेम वा लोहाई के कारण दिया
हुवा वत्त,—वाण्य प्रेम की वस्तु, कोई प्रिय व्यक्ति,
वा वस्तु,—पुर्वम्,—पुर्वकम् (अणु०) कृपा के साथ,
स्नेहपूर्ण,—अनन्य (वि०) मन मे मुग्ध, प्रसन्न, आन-
न्दित,—कुण् (वि०) प्रिय, स्नेही, प्यारा—वि० १।१०,

—कणम् (तपु०),—कणम् मैत्री मे मरी हुई वा
कृपापूर्ण वाणी, कर्मन् (वि०) प्रेम वा हर्ष की बढ़ने
वाला (कः) विष्णु का विशेषण, वाक् मित्रकम्
विचारविमर्श—विवाहः प्रीति या प्रेम के कारण होने
वाला विवाह प्रेम मन्त्र (जो केवल प्रेम पर आधा-
रित हो), आह्वय पितरों के सम्मानार्थ किया जाने
वाला औपवेशिक संस्कार या यज्ञ ।

प्री (म्वा० आ०—प्रवने) १ जाना, चलना-फिरना २ कुदना,
उठकना ।

प्री १ (म्वा० पर०—प्रोयति, प्रुष्ट) १ जानना, छा पी
जाना २ मस्र करना ३ (क्या० पर०—पुष्पाति)
१. आई या चर होना २ उठकना, छिड़कना ३ जरना ।
प्रुष्ट (न० क० क०) [प्रु + क्त] जमाया हुआ, भाया-
रिया हुआ जमा कर राख किया गया ।

प्रुष् [प्रु + क्त] १ वर्षा ऋतु २ धूप ३ पानी की
बूंद मिटाना ।

प्रीक्षक [प्रु ईन् + क्त] दशक तमासावीन, देखने वाला,
दृश्य इष्टा ।

प्रीक्षकम् [प्रु + ईन् + क्त] १ देखना दृष्टि डालना
२ दृश्य, दृष्टि दर्शन ३ जाँच—वकिल सुरिणी प्रीक्षका
—मेष० ८२ ४ तमासा, ताबेजिक दृश्य दिखावा ।

मम०—कटव आन लेना ।

प्रीक्षकम् [प्रीक्षक + क्त] दिखावा, तमासा ।

प्रीक्षिका [प्रु + ईन् + क्त, इन्धम्] तमासा देखने की
लोकान स्त्री ।

प्रीक्षणीय (वि०) [प्रु + ईन् + क्त] १ रक्षणीय,
विचारणीय, निगाह डालने के योग्य २ देखने के लिए
उपयुक्त, मनोहर, सुन्दर—मेघ० २, रणु० १४।९
३ विचारणीय, ध्यान देने के योग्य ।

प्रीक्षणीयकम् [प्रीक्षणीय + क्त] दिखावा, दृश्य, तमासा
—वि० १०।८१ ।

प्रीक्षा [प्रु + ईन् + क्त + टाप्] १ दृष्टि डालना, देखना,
तमासा देखना २ बकलोकन, दृश्य, दृष्टि, दर्शन
३ तमासावीन होना ४ कोई ताबेजिक तमासा,
दिखावा, दृष्टि ५ विशेष कर पिछेतर का तमासा,
नाटकीय प्रदर्शन, अभिनय ६ बुद्धि, समझ ७ विमर्श,
विचारणा, पर्यालोचन ८ वृक्ष की छाया । सम०
—अ (आ) वाटः, रणु०, मुहूर्त्, स्वाण्य १. पिने-
टर, नाट्यशाला, रंगशाला २ सम्प्रणा-मन्त्र—सम्प्रणः
प्रोता दर्शन की नीड, सम ।

प्रीक्षात् 'प्री' [प्रीक्षा + क्त] विचारणीय, बुद्धिमान्,
विद्वान् (पुष्प) ।

प्रीक्षित (न० क० क०) [प्रु + ईन् + क्त] देखा हुआ, विचार
किया हुआ, मस्र डाला हुआ, निगाह में के निकाला
हुआ, बकलोकन किया हुआ,—तपु०, कण, उचि, अणक ।

प्रेषित (पू० क० क०) [प्र+इप्+क्त] 1 (सवेता देकर) भेजा हुआ 2 आविष्ट, निवेष्टित 3 भुजा हुआ, स्थिर, निविष्ट होकर, (दृष्टि) डाली हुई 4 निर्वासित ।

प्रेष्य (वि०) [अयमेवायतिशयेन प्रिय-प्रिय+इष्टन्, उ० अ०] अत्यंत प्यारा, प्रियतम, --ब्धः प्रेमी, पति, --ब्धः पत्नी, स्वामिनी ।

प्रेष्य (वि०) [प्र+इप्+क्त] आवेश दिये जाने के योग्य, सेवे जाने या प्रेषित किये जाने के योग्य, ब्यः सेवक, मूख, दास, --ब्धः सेविका, दासी, ब्यम् 1 दूतमाली को भेजना 2 सेवा । सम० ब्यः सेवको का मनुह, --ब्धः सेवक की चारिता, सेवा, बन्धन मालादि ५।१२, ब्यः 1 सेवक की पत्नी 2 सेविका, दासी, बर्नः सेवकवृत्त, अनुचरवर्ग ।

प्रेष्टि [प्र पूर्वक इ वा, पु, लोट, प्रथ्य० पु०, एक व०] । सम० कटा विशेष प्रकार की आचारविधि क्रियमें कटाइयो का निवेष्ट है, -- कर्षका एक विशेष अनुष्ठान जिसमें सब प्रकार की अपवित्रता बर्जित है, --द्वितीय एक अनुष्ठान विशेष जिसमें किसी और की उपस्थिति वर्जित है, --तृतीया एक अनुष्ठानविशेष जिसमें व्यापारियों की उपस्थिति निषिद्ध है (दे० पा० २।१।७०) ।

प्रेष्य [प्रिय+अप्] कृपालु होना, अनुग्रह, प्रेम ।

प्रेषः [प्र+इप्+क्त, वृद्धि] 1 भेजना, निवेष्ट देना 2 आवेश, तमावेश, आमागमन 3 बुझ, कष्ट 4 पागल-पन, उन्माद 5 कुक्षयना दवाना मर्दन करना भीचना ।

प्रेष्यः [प्र+इप्+क्त, वृद्धि] सेवक, भूय, दास ब्यः दासी, सेविका ब्यम् सेवा, दासता । सम० भावः सेवक की क्षमता, सेवक की शक्ति उपयोग करना सेवा -- कु० ६।५८ ।

प्रोक्त (पू० क० क०) [प्र+क्त्+क्त] 1. कहा हुआ बोला हुआ, उच्चारण किया हुआ 2. नियत किया हुआ निर्धारित किया हुआ ।

प्रोक्तव्यम् [प्र+उक्त्+क्त] 1 सिद्धकाय पानी सिद्धकना --मनु० ५।१।८, राज० १।१।८ 2 छोटें दवा अभि शक्ति करना 3 दवा में पशु का दूध को सिद्धन या अभिमन्त्रण के लिए जल, पुष्पाजल (ब० ब० कपी-कपी यह शब्द 'पवित्र जल से पुनित कलश' के लिए भी प्रयुक्त होता है, जिस अर्थ में बहुधा प्रयुक्त होने वाला शब्द 'प्रोक्षणीपात्र' है) ।

प्रोक्षणीयम् [प्र+उक्त्+अनीयद्] पवित्रीकरण (प्रोक्षण) के लिए उपयुक्त जल ।

प्रोक्षित (पू० क० क०) [प्र+उक्त्+क्त] 1. जलमात्रेण से पवित्र किया हुआ 2. यज्ञ के अवसर पर बलि चढ़ाया हुआ ।

प्रोक्ष्य (वि०) [प्रा० स०] अत्यन्त वीक्षण या ब्रह्मणः । प्रोक्ष्यः (अव्य०) [प्रा० स०] 1 बहुत ऊँचे स्वर से, जोर से 2 बहुत बलिता से ।

प्रोक्षित (पू० क० क०) [प्रा० स०] बलि ऊँचा, उत्तुन, उन्नत ।

प्रोक्ष्यात्मन् [प्र+उक्त्+क्त+अप्+क्त] बध, हत्या ।

प्रोक्ष्यन् [प्र+उक्त्+क्त] त्यागना, क्षान्ना कर देना, छोड़ना ।

प्रोक्षित (पू० क० क०) [प्र+उक्त्+क्त] त्यागना हुआ, क्षान्ना किया हुआ, परित्यक्त, हटाया हुआ ।

प्रोक्ष्यम् [प्र+उक्त्+क्त] 1 मिटा देना, पीछे देना, छोड़ देना--ने० ५।१६ 2 अवशिष्ट पदों हुए को बुरा लेना ।

प्रोक्ष्य (वि०) [प्र+उक्त्+अनीयद्] को ऊपर उठ गया हो, या उठ गया हो ।

प्रोक्ष प्रोक्षि [प्र+क्त्+क्त, कित्, वृद्धि] दे० प्रोक्ष, प्रोक्षि ।

प्रोक्ष (पू० क० क०) [प्र+क्त्+क्त, सप्रसारणम्] 1 मिला हुआ, टाँका लगाया हुआ, --कु० ७।४९ 2 मड़ा या सीधा कंठाया हुआ (विप० बोले) 3 बधा हुआ, बर्षा हुआ, कष्टा हुआ--महावी० ६।१३ 4 बिड़ किया हुआ, झार-झार किया हुआ --रघु० १।७५ 5 पारित, झार-झार निकला हुआ --तर्कालङ्कारोक्तान् बर्षात् (चन्द्रकिरणान्) विसर्जित करी मकलयति --काव्य० १० 6 बसाया हुआ, बधा हुआ--महा० १।१५, --तम् बरष, दूना हुआ कपड़ा । सम० उक्तव्यम् 1 छनरी 2 बरष-भरा, तम् ।

प्रोक्ष्य (वि०) [प्रोक्ष्य उत्कृष्ट --प्रा० स०] सर्वत्र ऊपर उठाये हुए या फैलाये हुए ।

प्रोक्ष्यन् [प्र+उक्त्+क्त] कोलाहल हुम्का-गुल्ला ।

प्रोक्ष्य (पू० क० क०) [प्र+उक्त्+क्त] मड़ा हुआ ।

प्रोक्ष्य (वि०) [प्रा० स०] बहुत ऊँचा या उन्नत ।

प्रोक्ष्य (वि०) [प्रा० स०] पूरा मिला हुआ, पूना हुआ ।

प्रोक्ष्य [प्र+उक्त्+क्त+अप्+क्त] छुटकारा करना, माफ कर देना, हटाना, निर्वन्धित करना ।

प्रोक्ष्य (पू० क० क०) [प्र+उक्त्+क्त] 1 हटाया गया, छुटकारा पाया हुआ, निष्कासित 2. जाने बढ़ाया गया, उकसाया 3. परित्यक्त ।

प्रोक्ष्य [प्र+उक्त्+क्त] 1. अत्यनुपवि, उत्कटता 2. बढ़ावा, उद्दीपन ।

प्रोत्साहक [प्र + उत् + सह + णिच् + क्तुल] उकसाने वाला भडकाने वाला ।

प्रोत्साहनम् [प्र + उत् + सह + णिच् + क्तुल] उकसाना उदीपन भडकाना प्रमोदन ।

प्रोष् (स्वा० उभ० प्रायति ते) १ समान होना जोड़ का होना मुकाबला करना (सम्प्र० के साथ) पुत्रोपासम् नक्षत्रन मंदि० १५८८ १५८०
२ योष्य होना यष्यत होना सज्ज होना ३ भरा हुआ या पूरा होना ।

प्रोष (वि०) । प्रोष—ष [१ विख्यात सुविश्रुत २ रक्षा हुआ स्थिर किया हुआ ३ भ्रमण करना यात्रा पर जाना, योग चलना बुखान्मृदकान् व प्रिय प्रोष मनुजनेन तारा० ष—ष्य १ घोड़े की नाक या नथुना—तै० ११६० गि० ११११ १२१३३ २ मूजर की घुबन ष १ कल्ला नितब २ लुदाई ३ वज्र पुराने कपड़े ४ गर्म कलस ।

प्रोषिन् (पु०) । प्रोष—इति । पांडा ।

प्रोषुष्ट (भू० क० कृ०) । प्र + उद् + शुप् + क्त [१ गूजना प्रविष्टनि करना २ कण्ठाहल करना ।

प्रोष्योष्यन्—का [प्र + उद् + ष्य + क्तुल] १ रोमान करना घोषणा २ ऊँचा गन्ध करना ।

प्रोषीय (भू० क० कृ०) । प्र + उद् + दीप् + क्त [वग पर रक्षा हुआ जलना हुआ देदीप्यमान—भर्तृ० ३१८८ ।

प्रोक्षिन् (भू० क० कृ०) । प्र + उद् + भिद् + क्त [१ अक्षुरित जैबुवा फटा हुआ २ फट कर निकला हुआ ।

प्रोक्ष्मन् (भू० क० कृ०) । प्र + उद् + भ्—क्त । फटा हुआ निकला हुआ ।

प्रोक्ष्य (भू० क० कृ०) । प्र + उद् + यम + क्त [१ उताया हुआ २ सक्रिय परिश्रमशील ।

प्रोक्ष्यः [प्र + उद् + बह् + षञ्ज] बिबाह ।

प्रोक्ष्य (भू० क० कृ०) । प्र + उद् + तम + क्त [१ बहुत ऊँचा या उन्नत २ उमरा हुआ ।

प्रोक्ष्यति (वि०) । प्र + उद् + लाप् + क्त [१ रोज से मुक्त हो उठा हुआ, स्वाध्यायमूल्य २ सुगठित, हडाकट्टा ।

प्रोक्ष्यन् [प्र + उद् + क्षि + क्तुल] कुरचना, चिह्न लगाता ।

प्रोक्षित (भू० क० कृ०) । प्र + बन् + क्त [परदेस में गया हुआ, विदेश में रहने वाला, घर से दूर, अनुपस्थित, परदेस में रहने वाला । सम० अलुका बहु स्त्री विस्का पति परदेस गया हो, श्रुगारकाव्याप्तिर्गत बाट नाविकाओं में से एक सा० द० में दी गई परिभाषा—नालाकार्यकावत्वा दूरदेहे गत पति, ना मनोमव-कुचार्ता भवेत् प्रोक्षितमयुक्ता—११९ ।

प्रो (प्रो) ष [प्रकृष्ट मोष्ठो यस्य—आ० ब०, परकृष्यन्, पसेवृद्धि] १ बेल, बलीवर्ष २ तिपाई, चौकी ३ एक प्रकार की मछली (छो—मी) । सम०—पव-भात्रपव मास (हा) पूर्वभात्रपवा और उत्तरभात्रपवा नाम का पञ्चीसवा व छत्तीसवा मक्षप ।

प्रो (प्रो) ह (वि०) । प्र + उह् + षञ्ज, परकृष्यन्, पस वृद्धि । नाविक विवाही ह १ तर्क, उक्ति २ हाथी का पैर ३ ग्रवि जोड़ ।

प्रो (प्रो) ङ (वि०) । प्र + बह् + क्त सम्प्रसारणम्, परकृष्यन् पसे वृद्धि [१ पूरा बड़ा हुआ वृणविकसित परिपक्व पका हुआ पूरा बना हुआ, पूर्ण (जैसे कि वज्रमा)]—प्रोढपूर्ण बरद्वी—मेघ० २५ प्रोढनालीवि-पाण्डू आदि सा० ८११२८ २ बयरक बुका नुड जनने त्रि मन्मथप्रोढसुहृदो निशीथस्य यौवनस्य सा० ८—सि० ११३९ ३ बना साधन धार प्रोढ

तन् कुहकृतमयं बहम् भा० ७३३ सि० ४६४ ४ विस्तार बलवान् ममय ५ प्रचड उभट ६ प्ररोसा करन वाला साहसी, बेचटक ७ बसडी हा साहसी और बड़ी ठग की स्त्री अपने स्वामी के सामने भी निर्भीक और निर्लज्ज काव्यरचनाओं में वज्रान धार प्रकार को मूख स्थितों में से एक मेघ भाषाशालाद्रु बंदुवाला विस्तार तक्षणी मना उच्छपञ्चासता प्रोढा भवेद्वृद्धा मत परम । सम० अलुका साहसी स्त्री दे० ऊपर उक्ति (स्वा०) साहसयुक्त वा हर्षपूर्ण उक्ति प्रताप (वि०) बड़ा तजस्वी बलवान्—बोधन (वि०) बराही में बड़ा हुद, इलती बराही का ।

प्रो (प्रो) कि (स्त्री०) । प्र + बह् + क्तिन् । १ पूर्ण वृद्धि या विकास परिपक्वता पूर्णता २ वृद्धि बचन ३ गौरव गेवद्य समुपति प्रताप—विक्रम० १११५ ४ माहम, निर्भीकता ५ वयस अहकार आत्मविश्वास ६ उम्मार कष्टा उछाग । मम० बाल बाव्हिदमगता से युक्त गर्वीकी बाणी २ माहमपूर्ण उक्ति ।

प्रोक्ष (वि०) । प्र + भाप् + षञ्ज । चतुर, विद्वान्, कुशल । पक्ष [पक्ष् + षञ्ज] १ बटवस गूलर का पेड़—पक्ष-प्रोह इव तीक्ष्ण विभेद—रघु० ८१९३ १३१७१ २ सामग के सात दीपों में से एक ३. पार्वत द्वार वा पित्रवादे को वगबाबा निबो गुप्त द्वार । सम०—जाता—समुद्रवाचका सरस्वती नदी का विशेषण, तीर्थन्—प्रक्षयवन्, राप् (पु०) वह स्थान जहाँ से मरम्बनी निकलती है ।

पक्ष (वि०) । पक्ष + षञ्ज [१ तीरत हुआ, बहता हुआ २. कृता हुआ छत्रांग लगाता हुआ, वः १ तीरगा, बहना २ बाढ़, बरिसा का बढ़ाव ३ कुलांघ, छत्रांग ४. वेडा बदनई, डोबी, छोटी नौका—नाववेष्ण सार्न पक्षाय पक्ष छत्रिस्तूरयत्—पक्ष० २१३८, सर्व ज्ञान-

विशेष 4. स्वर की ध्वनि का लम्बा करना, प्रदीर्घ करना ।

प्लु 1 (धा०, विभा० कथा० पर०—प्लोवति, प्लुष्यति, प्लुष्याति, प्लुष्ट) जलाना झुलसना, बरकचाना, बर्षा लोहे से बानना—प्लु० १।२२ मट्टि० २०।३४ ।

11 (कथा० पर० प्लुष्याति) 1 छिड़कना, नीला करना 2 लेप करना 3 भरना ।

प्लुष्ट (यू० क० कृ०) [प्लुष् + क्त] झुलसाया गया, जलाया गया, बाना गया ।

प्लेष् (धा० धा० प्लेवते) सेवा करना, हाजरी देना, सेवा में उपस्थित रहना ।

प्लोवः [प्लुष् + वज्] बलाना, बन्तवाही होना ('प्रोव' भी) ।

प्लोष्य (वि०) (स्त्री० भी) [प्लुष् + ल्युट्] बलना, झुलसना, जल कर राख हो जाना—तात्पर्यीक पुरा-रेस्तद्वयानु मचनप्लोषण लोषण व - मा० १, (पाठान्तर),—बन्धु जलना, झुलसना ('प्रोष्य' भी) ।

प्ला (बधा० पर० प्लाति, प्लात) बाना, विपक जाना ।

प्लात (यू० क० कृ०) [प्ला + क्त] 1 बाना हुआ 2 भूना ।

प्लावन् [प्ला + ल्युट्] 1 बाना 2 भोजन ।

फ

फण् (धा० पर०—फणक्ति, फणिकत) 1 लाने—धाने बलना—फिरना, फुटी से जाना, सरकना, धीरे-धीरे बलना 2 गलती करना, दुष्टबद्धार करना 3 फूल उठना ।

फणिकत [फण् + क्त + टाप्, इत्यम्] 1 एक अवस्था सिद्ध करने के लिए पूर्वेपक्ष, उक्ति या प्रतिज्ञा जिसको बनाये रखना है—फणिकतानिभाष्यफणिकता विषमा कुण्डलनामवापिता—नं० २।१५ 2 पक्षपात, पूर्वेचिन्तित सम्मति ।

फट् (अब्ध०) एक अनुकरणमूलक शब्द जिसे बादू मन्त्राधिक के उच्चारण करने में रहस्यमय रोनि से प्रयुक्त किया जाता है अन्त्राय फट् ।

फट् [स्फुट् + अच् प्रथो०] 1 साँप का प्रसारित किया हुआ फणा (फटा भी इसी अर्थ में) निर्विवेचनाय संपन्न कर्तव्या मल्ली फटा (पाठान्तर—फणा) विद्य भवन्तु मा भूदा फटाटोपो मयङ्कुर एव० १।१०६ 2 दाँत 3 घुत्ते, ठग, फिनब ।

फटिगा [फट् इति शब्दभिन्नानि फट् + इङ्ग अच् टाप्] सींगुर, टिङ्गी, टिङ्गा, फटिगा ।

फण् (धा० पर० फणति, फणित) 1 बलना—फिरना, इधर उधर घूमना, भ्रमणमेंजिरे फेनुमेंनुहाहरिराजसा—मट्टि० १।४।७८ 2 बनावस उत्पन्न करना, बिना किसी परिश्रमके पैदा करना (यत्र वर्षं कुक्षे के मना-नुसार प्रेरणार्थक किया का है) ।

फण्—[फण् + अच्, फिवां टाप्] किसी ची साँप का कौसाया हुआ फण—विप्रकृत पञ्च फण (कथा) कुष्ठे—हं० ६।१०, मणिनि फणर्व—रघु० १।१। १२, कु० १।१८, मट्टिनि मुक्कलोनि लेवः फणाफलक-

स्थितान् भवु० २।१५। सम०—कर साँप, करः

1. साँप 2 शिव का नाम भुव (यु०) माप, मणि साँप के फण में पाई जाने वाली मणि, मण्डकम् साँप का कुण्डलीकृत घरीर कणालफलमण्डलम् रघु० १।२। १८, तत्कणामण्डलोर्ध्वमणिद्योतिनिविहम्—१०।७ ।

फणिन (यु०) [फणा + इनि] 1. फणचारी साँप, सामान्य साँप, सपे उद्गिरिता वदगरल फणिन पुष्पाणि परिमलोद्गारे भाषि० १।१२५८ फणी मयूरस्य गले निवीरति ऋतु० १।१३, रघु० १६।१३, कु० ३।२१ 2 गडू का विशेषण 3 पतञ्जलि का विशेषण, (पाणिनि के सूत्रों पर महाभाष्य के प्रणेता) फणि-भाषिनाभाष्यफणिकता नं० २।१५। सम० इच्छ

ईश्वरः 1 शेषनाम का विशेषण 2 मरीचो के अधिपति अनल का विशेषण 3 पतञ्जलि का विशेषण, कोल लव बटेर लहणा विष्णु का (शेषनाम जिनकी शय्या है) विशेषण पति 1 दासिक या शयनाग का विशेषण 2 पतञ्जल का विशेषण—प्रिय बायु कोन अफीम मध्यम् (पाणिनि के सूत्रों पर किया गया भाष्य) महाभाष्य भुज् (यु०) 1 मार 2 मरुत का विशेषण ।

फणारिन् (यु०) [फणारन् इनि] पत्नी ।

फण् [फण् + अच्, रक्तपोरभेद] हाक-मु० फलक ।

फण्डकम् (गु०) पानदान पान रखने का डब्बा ।

फण्डीकः [स्फुर + इङ्ग, फातो फण्डीकेश] मुने हुए हाथ की हुंसी । फण् 1 ताजा मङ्कुर का टङ्गी का मङ्कुरा 2 बुलुता, - का बुलुता ।

फण् 1 (धा० पर० फणति, फणित) 1. फल बाना, फल पैदा करना—नामाफणं. फणति फण्फणेत पिशा—मट्टि०

२।४०. परोपकाराय हुमाः फलानि सुभा०—विधानु-
ष्ठापितः फलतुः च मनाश्चर्य भवतु—भा० १।१६ (इस
अर्थ में प्रायः सकर्मक के रूप में धातु का प्रयोग होता है)
—मौन्यस्यैव फलानि विविधयेवासि यतीतय—मुद्रा०
२।१९ 'निष्पन्न या वदित करना' २ परिणामयुक्त
होना, सफल होना, पूरा होना, निष्पन्न होना, काम-
याब होना 'कैकेयि कामाः फलितास्तवेति—रघु०
१३।५९, १५।७८, यथा न फलः अणदाचरणां (मनो-
रथाः)—मट्टि० १४।११३, १२।६६, नैवाकृति फलानि
नैव कुलं न लीलम्—अनु० २।९६, ११९ ३ फल
निकलना, परिणाम या मत्तीका पैदा करना—फलित-
पर्यायक कपः—अन्वेन—हि० १, फलितं नस्तहि
मगवती पादप्रसादेन—भा० ९, कि० १८।२५, अल.
करोति दुर्लभं नूनं फलति माधुचु—हि० ३।२१, 'दुष्ट
व्यसित बुरे कार्य करते हैं और मले पुष्पों को उनका
परिणाम युक्तता पड़ता है' ४ पक्का होना, पक जाना।
ii (म्हा० पर०—फलति, फुल्ल या फुल्ल (पहले अर्थ
में), हमारे अर्थ में फलित) १ बलपूर्वक तोड़ना,
खंड २ करना, फट जाना, दरार पड़ना—तस्य
मूर्धानमासाद्य पफलासिबरो हि स—महा० २. प्रवि-
फलित फलित पड़ना, अक्स पड़ना—कि० ५।३८ ३ जाना।

फलम् [फल + अच्] १ फल (बाज० से बी) जैसे वृक्ष
का—उदेति पूर्वं कुमुम तत फलम्—झ० ७।३०,
रघु० ४।३३, १।४९ २ फलम्, पैदावार—कृषिकल
—मेघ० १६ ३ परिणाम, फल, नतीजा, प्रभाव
—अस्पृष्टः पापपुण्यैरिहं फलमनुते—हि० १।८३,
फलेन शास्वसि—पञ्च० १, न नव. प्रभुराफलोदयात्
स्विकर्मा विरराम कर्मण. रघु० ८।२२, १।३३
४. (अत) पुरस्कार, सतिपूति, पारितोषिक (धुम
या अशुभ) प्रनिफल—फलमस्योपह्वामस्य मध
प्राप्यसि पथ्य माम्—रघु० १२।३७ ५. कृत्य, कर्म
(विप० बचन) —बुद्धते हि फलेन साधको न तु कटेन
निजोपयोगिताम्—न० २।४८, 'मने पुरुष अपनी उप-
योगिता कर्मों से सिद्ध करने हैं न कि बचनों से'
६. उद्देश्य, आशय, प्रयोजन—परोक्षज्ञानफला हि
बुद्धयः—पञ्च० १।४३, किमपेक्ष्य फलम्—कि० २।२१
किं भाष्य को विचार में रखकर, मेघ० ५४
७. उपयोग, मलाई, लाभ, हित अगता वा विकलेन
कि फलम्—भाषि० २।९१ ८. लाभ या भूभराजि
का व्याज ९. प्रजा, मन्तान—रघु० १४।३९
१०. (फल की) मिठी ११. पट्टिका या फलक
१२. (सम्भार का) फल १३ सीर की नोक या सिरा,
बाज, गीतकार—मुद्रा० ७।१० १४. डाल १५. अङ्ग-
कीच १६. उपहार १७ (गणित में) गणना-फल
१८. गुणनफल १९ रज.लाभ २० जायफल २१. हल

का फल, फली। तय०—अवयः=फलानम्,—अन्व-
यन्वाः परिणामक्रम, फलपरम्परा,—अनुवेष्ट (वि०)
जिसका अनुमान फल वा परिणाम पर निर्भर हो
—फलानुमेयाः प्रारम्भाः सत्कारा. शास्त्रना इव—रघु०
१।२०,—अवयः वास,—अन्वेष्टिन् (वि०) (कर्मों के)
पुरस्कार या सतिपूति की शीघ्र करने वाला,—अन्वेष्टा
(कर्मों के) फल वा परिणामों की भाषा, नतीजे का
ध्यान, अक्षनः छोटा,—अप्यन् इमली,—अन्वि (नपु०)
नारियल,—आकाशा (अन्वेष्ट परिणामों की) भाषा
—वे० फलापेक्षा,—आयवः १. फलों की पैदावार,
फलों का मार,—भवति नद्यास्तुरवः फलानवेः—झ०
५।१२ २ फलों का योग्य, पक्का,—आयव (वि०)
फलों से बरा हुआ,—आयव एक प्रकार के अंगूर
(जिसमें गुटलियाँ या बीज नहीं होते),—अन्वेष्टिः
(स्त्री०) १. फलों की पैदावार २ फायदा, लाभ
(ति) लाभ का वृक्ष (कभी-कभी इसी अर्थ को प्रकट
करने के लिए 'फलान्वयि' भी लिखा जाता है).

—उद्भवः १. फलों का दिखाई देना (जाना), फल
या परिणाम का निकलना, अवशिष्ट पदार्थ वा सफलता
की प्राप्ति—आफलोदयकर्मणाम्—रघु० १।५,
—उद्भवः फलों का ध्यान, वे० फलापेक्षा,—आयव
परिणाम या फल की दृष्टा,—आयः फलों का उद्भव,
—केसरः नारियल का पेड़, अन्वः हित वा लाभ को
पहुँच करने वाला,—अन्वि,—अन्विन् (वि०) (फले-
वहि या फलेवाहिन्) फलों से भरा हुआ, योग्य से
फल देने वाला, स्वाध्याया कुलमुपैति वृत्तं स्वान्य-
नोरवतः फलेवहि—कीर्ति० ३।६०, भा० ९।३९,
—व (वि०) १ उपजाऊ, फलदार, फल देने वाला
यन्त्र ११।१४२ २ ल कर वा फायदा पहुँचाने
वाला (व) वृक्ष, निवृत्तिः (स्त्री०) परिणामों की
समाप्ति,—निवृत्तिः फलों का उत्पादन, आयः (फले-
वाक' भी) १. फलों का पकना २. परिणामों की
पूर्णता, पावः फलवृक्ष,—पूरः,—पूरकः लाभान्व
नीच का पेड़. प्रबलम् १. फलों का देना २. बिबाह
के अवसर पर एक संस्कार विशेष,—अन्विन् (वि०)
फल को विकसित करने वाला वा फल देने वाला,
—भूमिः (स्त्री०) वह स्थान जहाँ मनुष्य अपने
१. का शुभाशुभ फल मोलता है (अर्थात् स्वर्ग या
नरक),—अन्वि (वि०) फलदायी, फलों से पूर्ण,—अन्विः
१ फलों का जानने लेना २. भोजाधिकार,—अन्विः
१ अन्विष्टपदार्थ या फल की प्राप्ति मुद्रा० ७।१०
२ अजबूरी, पारिजयिक, राखम् (पु०) तरबूना
—अन्विन् तरबूज, वृक्षः फलदारवृक्ष,—वृक्षक कट-
हल का वृक्ष,—आयवः बनार का पेड़,—अन्विः लाभ
का पेड़,—अन्वि १. फलों की बहुतायत २. सफलता,

—साधकम् अभीष्ट पदार्थ की उपलब्धि का उपाय
उद्देश्य की प्रति, स्नेह अलरोट का पेड़ हारी
काली या दुर्गा का विशेषण ।

कलकम् [कल + कन्] १ पट्ट लकड़ा, शिला पटल या
पट्टी—काल बाल्या भुवःकम् के कीर्ति प्राणिहार
—भट्ट० ३।३९ बुन विज बादि २ बपटी सनह
—बुधमानकपाल फलक म का० २१८ धामुख
मण्डफलकविजम् १० ० ४३३३ नु० न ३ डाल
४ पत्र वृष्ट ५ विज क ७ ६ हाथ की श्वेली ।
सम०—बाणि (वि०) (य)डा की भाति) डाल म
मुयन्जिन यम्बम् म-कगावय ड ग आविष्क-
एक प्रयतिविषयक उपकरण

कलत्ता (अव्य०) [कल + तन्ति] रत्नवस्त्र परिणामक ।
यथाचन ।

कलम्बु [कल + लुट्] १ कल अन्तः स्त्रोत्र २ कल
या परिणाम उपाय ३ न

कलकम् [वि०] [कल + कन्] १ कलक रत्नदा
२ कलदायी, परिणामशील फलक लम्बकम् तो
'प्रियम्' नामक लता

कलिका [कल + क्त] टाल रत्नवका स्त्री ।

कलित् (वि०) [कल + इति] कल म पूण कलदायी
(आल० भी) पुष्टिपथ कलितर्षेव बुधमानुयान
रत्नता—भट्ट० १।४७ मूळ ० ४१० नु० ।
पुल ।

कलित् (वि०) [कल + इत] कला से पूर्ण कलदायी
—म कटहल का पेड़ ।

कलसी, कली, कलान् + डीय कल + अच् + क्रीप् प्रियम्
लता (कवियों के द्वारा इसे आम की पत्ती कह
गया है नु० ग्ध० ८।६१) ।

कलम्बु (वि०) [कल + उ, कृक व] १ बिना गुद का,
रहीन मस्तरहित मारविहीन मार नने पाक्षम
पास्य फल्य पंच० १।० २ अयोग निगयक
महर्षहीन—शि० ३।३६ ३ अल मूक ४ निर्मल
व्यर्थ ५ दुर्बल, बलहीन मित्सार ल्यु (स्त्री०)
१ बसन्तद्वन्द्व २ मूलक का वृक्ष ३ गया के पास एक
नदी । सध०—उत्सव बसन्तोत्सव होनी का प्याहार ।

कलम्बु [कल + उन्म, कृक व] १ कलान् का महीना
२ इन्द्र का नायान्तर,—नी एक नक्षत्र का नाम कु०
७।६ ।

कलम्बु [कल + यन्] कृक ।

कलिक, कलिकम्बु [कल + कृक + इज्, कल वा] सोरा
राज ।

कल (वि०) [कल + कन्, नि० लाप्] सुमय प्रक्रिया
द्वारा निर्मित, आसानी से बनाया हुआ (जैसे काड़ा)
—ह, बच्चा बर्त, कड़ा—कलमनायामनाथ कलाय-

विशेष—मिद्रा० फाल्गुनविशेषण—भट्टि० १।१७
(दे० भाष्य) ।

कल—कम्बु [कल + अण कल, कल वा] १ हल का
कल फाल्गु मयू० ६।१६ २ बालों की माय निकालना
मीमनबाग नै० ३ १६—क १ अलराम का विशेषण
२ शिव का विशेषण ३ नीच का पेड़ कम्बु १ मृत्ती
कपड़ा २ योग हुआ स्त्री

कलान् [कलान् अण] १ महीन का नाम (त्राकवरी
माय म अण २ अर्धन का विशेषण मूला म
नाम की त्यक्त ह्य प्रक ७ २ अलराम का नामानुसूत
नक्षत्राण्ड ३ शिव नाम्ने द्विमत पक्ष सेन मा
कलान् वि० ४ अण का नाम द्विमत अर्धन कल
है । सम अनुज १ अण ३ पक्ष २ अलराम
३ कलान् और महेद ३ ४ अण ५

कलान् [कलान् अण] १ महीन का नाम (त्राकवरी
माय म अण २ अर्धन का विशेषण मूला म

कलान् [कलान् अण] १ महीन का नाम (त्राकवरी
माय म अण २ अर्धन का विशेषण मूला म

कलान् [कलान् अण] १ महीन का नाम (त्राकवरी
माय म अण २ अर्धन का विशेषण मूला म

कलान् [कलान् अण] १ महीन का नाम (त्राकवरी
माय म अण २ अर्धन का विशेषण मूला म

कलान् [कलान् अण] १ महीन का नाम (त्राकवरी
माय म अण २ अर्धन का विशेषण मूला म

कलान् [कलान् अण] १ महीन का नाम (त्राकवरी
माय म अण २ अर्धन का विशेषण मूला म

कलान् [कलान् अण] १ महीन का नाम (त्राकवरी
माय म अण २ अर्धन का विशेषण मूला म

कलान् [कलान् अण] १ महीन का नाम (त्राकवरी
माय म अण २ अर्धन का विशेषण मूला म

कलान् [कलान् अण] १ महीन का नाम (त्राकवरी
माय म अण २ अर्धन का विशेषण मूला म

कलान् [कलान् अण] १ महीन का नाम (त्राकवरी
माय म अण २ अर्धन का विशेषण मूला म

कलान् [कलान् अण] १ महीन का नाम (त्राकवरी
माय म अण २ अर्धन का विशेषण मूला म

कलान् [कलान् अण] १ महीन का नाम (त्राकवरी
माय म अण २ अर्धन का विशेषण मूला म

कलान् [कलान् अण] १ महीन का नाम (त्राकवरी
माय म अण २ अर्धन का विशेषण मूला म

कलान् [कलान् अण] १ महीन का नाम (त्राकवरी
माय म अण २ अर्धन का विशेषण मूला म

कलान् [कलान् अण] १ महीन का नाम (त्राकवरी
माय म अण २ अर्धन का विशेषण मूला म

कलान् [कलान् अण] १ महीन का नाम (त्राकवरी
माय म अण २ अर्धन का विशेषण मूला म

कलान् [कलान् अण] १ महीन का नाम (त्राकवरी
माय म अण २ अर्धन का विशेषण मूला म

कलान् [कलान् अण] १ महीन का नाम (त्राकवरी
माय म अण २ अर्धन का विशेषण मूला म

कलान् [कलान् अण] १ महीन का नाम (त्राकवरी
माय म अण २ अर्धन का विशेषण मूला म

कलान् [कलान् अण] १ महीन का नाम (त्राकवरी
माय म अण २ अर्धन का विशेषण मूला म

कलान् [कलान् अण] १ महीन का नाम (त्राकवरी
माय म अण २ अर्धन का विशेषण मूला म

कलान् [कलान् अण] १ महीन का नाम (त्राकवरी
माय म अण २ अर्धन का विशेषण मूला म

कलान् [कलान् अण] १ महीन का नाम (त्राकवरी
माय म अण २ अर्धन का विशेषण मूला म

कलान् [कलान् अण] १ महीन का नाम (त्राकवरी
माय म अण २ अर्धन का विशेषण मूला म

कलान् [कलान् अण] १ महीन का नाम (त्राकवरी
माय म अण २ अर्धन का विशेषण मूला म

कलान् [कलान् अण] १ महीन का नाम (त्राकवरी
माय म अण २ अर्धन का विशेषण मूला म

कलान् [कलान् अण] १ महीन का नाम (त्राकवरी
माय म अण २ अर्धन का विशेषण मूला म

कलान् [कलान् अण] १ महीन का नाम (त्राकवरी
माय म अण २ अर्धन का विशेषण मूला म

कलान् [कलान् अण] १ महीन का नाम (त्राकवरी
माय म अण २ अर्धन का विशेषण मूला म

कलान् [कलान् अण] १ महीन का नाम (त्राकवरी
माय म अण २ अर्धन का विशेषण मूला म

2 गृह का श्राव या बुलबुला 3 बुक। मम० विष्णु
1 बुलबुला 2 सोखला विचार, अनन्तरि चारिन्
(पु०) जानने के काम का रूपडा।
केष (क) क [केन + कन्] दे० 'केन'।
केनिक (वि०) [केन + इलच्] आगदार बुलबुले वाला
फनिलभम्बुराणि रचू० १३।२।
केरः, केरणः [क + रा + क, क + रण् + अच्] गीदह।
केरवः [के इति ग्वा यस्य व० स०] 1 गीदह-कृदन्तः

चण्डहासकृति भा० ५।११, 2 वृत्तं बदमाश, ठग
3 राक्षस पित्राज।
केव [के + व + इ] गीदह।
केलम्, केला केलिका केली [केल्यन्तं वृत्ते निक्षिप्यते,
केल + अङ् स्थिषी टाप्, केल + इन् कन् + टाप्
केलि + ङीप्] उच्छिष्ट भावन भोजन का बचा हुआ
भाग, मूत्रन।

उ

बहु (प्रा० प्रा० बहुने वञ्ज बहुना गमना)
बहुम १०। बहुना इति बहुना बहुना बहुना
बाहुय

बहुिष्ठ (वि०) [बहुन् इत्यन् बहुदेव १० अ०
अप्यन् अपि अयन् अहं बहुन् ही उपसर्गः
बहुीयस् (वि०) [बहुन् + ईदमुन् अयन् म० अ०
साहचर्य अधिक, बहुन् अयन् अयन् अयन् अयन्

बकः [बकु + अच्, पुषो० मायु] 1 बगरा 2 3। पुन
पाकडा (बगला बहा मृत पक्षा १) वह अपन रज म
दूसरी को फाल लेता है। 3 ग० राक्षस का नाम
जिसे भीम ने मारा था 4 एक राक्षस का नाम 'अन
कृष्ण ने मारा था 5. कुबेर का नामावर। मम०—बक
--रुतिः--बलचरः--बलिक छविन। पु०, बगल
की भाँति आचरण करने वाला। हाथी, राक्षस--अप
दृष्टिर्नैष्कृतिक स्वार्थसाधनतत्पर, शत्रु मर्यादितः
वच बकचतुर्वा द्विज मनु० ४।१२६, जिन् (पु०)
--निबुद्धः 1 भीम का विनाश 2 हृण का। बग
बन,-- अन्तर् बहुले की भाँति आचरण, पाखंड।

बकुलः [बकुल + उरच्, रेकस् ककुलम्, मलोप] एक। मील-
सिरी वृक्ष (कहा जाता है कि कविसमयानुसार तब
प्रियो द्वारा बहिरा का गन्धु सिद्ध करने पर हममें
मंजरी फूट जाती है) --कालिययो (अर्वा केसर
या बकुल) बदनमहिरा दोहदच्छपनास्या --मेष०
७८, बहुल लीचुमद्वयसेकात् (विकसित) (इस प्रकार
के अन्वयों से सबद "कविसमयों के लिए प्रियो के
दीचे उद्धारण देवों) --लम् मीलसिरी वृक्ष का सुगन्धित
फूल--भावि० १।५४।

बकेका [बकाया बकसमुहाताम् ईदक गतिपंथ--ब० म०]
छोटी बकरी।

बकेका (पु०) बकका।

बटु (प्रा० प्रा० बटुने वञ्ज बहुना गमना)
बटुना इति बटुना बहुना बहुना बहुना
बाहुय

बटु (प्रा० प्रा० बटुने वञ्ज बहुना गमना)
बटुना इति बटुना बहुना बहुना बहुना
बाहुय

बटु (प्रा० प्रा० बटुने वञ्ज बहुना गमना)
बटुना इति बटुना बहुना बहुना बहुना
बाहुय

बटु (प्रा० प्रा० बटुने वञ्ज बहुना गमना)
बटुना इति बटुना बहुना बहुना बहुना
बाहुय

बटु (प्रा० प्रा० बटुने वञ्ज बहुना गमना)
बटुना इति बटुना बहुना बहुना बहुना
बाहुय

बटु (प्रा० प्रा० बटुने वञ्ज बहुना गमना)
बटुना इति बटुना बहुना बहुना बहुना
बाहुय

बटु (प्रा० प्रा० बटुने वञ्ज बहुना गमना)
बटुना इति बटुना बहुना बहुना बहुना
बाहुय

बटु (प्रा० प्रा० बटुने वञ्ज बहुना गमना)
बटुना इति बटुना बहुना बहुना बहुना
बाहुय

बटु (प्रा० प्रा० बटुने वञ्ज बहुना गमना)
बटुना इति बटुना बहुना बहुना बहुना
बाहुय

बटु (प्रा० प्रा० बटुने वञ्ज बहुना गमना)
बटुना इति बटुना बहुना बहुना बहुना
बाहुय

बटु (प्रा० प्रा० बटुने वञ्ज बहुना गमना)
बटुना इति बटुना बहुना बहुना बहुना
बाहुय

बटु (प्रा० प्रा० बटुने वञ्ज बहुना गमना)
बटुना इति बटुना बहुना बहुना बहुना
बाहुय

बटु (प्रा० प्रा० बटुने वञ्ज बहुना गमना)
बटुना इति बटुना बहुना बहुना बहुना
बाहुय

बटु (प्रा० प्रा० बटुने वञ्ज बहुना गमना)
बटुना इति बटुना बहुना बहुना बहुना
बाहुय

बटु (प्रा० प्रा० बटुने वञ्ज बहुना गमना)
बटुना इति बटुना बहुना बहुना बहुना
बाहुय

बटु (प्रा० प्रा० बटुने वञ्ज बहुना गमना)
बटुना इति बटुना बहुना बहुना बहुना
बाहुय

बटु (प्रा० प्रा० बटुने वञ्ज बहुना गमना)
बटुना इति बटुना बहुना बहुना बहुना
बाहुय

बटु (प्रा० प्रा० बटुने वञ्ज बहुना गमना)
बटुना इति बटुना बहुना बहुना बहुना
बाहुय

बटु (प्रा० प्रा० बटुने वञ्ज बहुना गमना)
बटुना इति बटुना बहुना बहुना बहुना
बाहुय

बटु (प्रा० प्रा० बटुने वञ्ज बहुना गमना)
बटुना इति बटुना बहुना बहुना बहुना
बाहुय

बटु (प्रा० प्रा० बटुने वञ्ज बहुना गमना)
बटुना इति बटुना बहुना बहुना बहुना
बाहुय

बटु (प्रा० प्रा० बटुने वञ्ज बहुना गमना)
बटुना इति बटुना बहुना बहुना बहुना
बाहुय

बटु (प्रा० प्रा० बटुने वञ्ज बहुना गमना)
बटुना इति बटुना बहुना बहुना बहुना
बाहुय

बटु (प्रा० प्रा० बटुने वञ्ज बहुना गमना)
बटुना इति बटुना बहुना बहुना बहुना
बाहुय

बटु (प्रा० प्रा० बटुने वञ्ज बहुना गमना)
बटुना इति बटुना बहुना बहुना बहुना
बाहुय

हुआ, कसा हुआ 2. मुकलित, बेधियों से जकड़ा हुआ 3. बरी, पकड़ा हुआ 4. अवपट्ट, कारावासित 5. कमर कसे हुए 6. समत, दबाया हुआ, रोका हुआ 7. निमित्त, बनाया हुआ 8. त्वार किया गया, रिकामा गया 9. मिलाया गया, सहित 10. पक्का बनाया गया, दृढ़ 1. सम-अनुसूचित, अनुसूचितान्व (वि०) दस्ताना पहने हुए, - अकम्पित (वि०) हाथ जोड़े हुए, बाहर या सम्मान प्रदर्शित करने के लिए नम्रता पूर्वक दोनों हाथ जोड़ कर नमस्कार करते हुए, अनुराग्य (वि०) स्नेह में बसा हुआ, प्रेम के कारण अनुरक्त, प्रसन्नचन में जकड़ा हुआ, अनुसूच्य (वि०) पश्चात्ताप करने वाला, आत्मक (वि०) जिसकी बांधकारें बड़ गई हैं, सकुलकुल, उत्तप (वि०) उत्तप या त्वीहार बनाते हुए, - उत्तप (वि०) मिलकर प्रयत्न करनेवाले, क्लृप्त, क्लृप्त (वि०) दे० 'बद्धपरि-कर' - क्रोध, क्लृप्त, रोष (वि०) 1. क्रोध अनुभव करते हुए, क्रोध या रोष की भावना रखते हुए 2. अपने क्रोध का दमन करने वाला, - चित्त जलत् (वि०) मन को किसी ओर जमाये हुए, मन को किसी ओर दृढ़तापूर्वक लगाने वाला, जिह्वा (वि०) जिसकी जिह्वा कील दी गई है, - दृष्टि, - नेत्र, कोषण (वि०) बांध को एक ओर जमा कर ताकने वाला टकटकी लगाकर देखने वाला, - बार (वि०) लगातार अभिप्रेक्षित रूप से रहने वाला, लेप्य (वि०) नाटकीय वेशभूषा धारण किये हुए, परिष्कर (वि०) कमर बांधे हुए, कमर कसे हुए, तैयार सज्जित, प्रसिद्ध (वि०) 1. जिसने कोई बात या प्रतिज्ञा की है 2. दृढ़ सकम्प वाला, बाध (वि०) स्नेहशील दिल लगाये हुए, मृग्य (अवि० के साथ) दृढ़ त्वयि बद्धमाबोधेगी विक्रम २, सुष्टि (वि०) 1. मूटठी बांध हुए 2. मूटठी भीके हुए, कज्ज, मूल (वि०) जिसकी जड़ गहुराई तक गई हो जड़ पकड़ हुए - बद्धमूलस्य मूल हि महद्वेगरो स्त्रिय सि० २१२८, जीव (वि०) जीव बाधे हुए, जीन रहने वाला, चुप अदृश्यत त्वच्छरमारविन्दबिस्लेषु आ दिन बद्धमीनम् रघु० १३१२३, - राग्य (वि०) बाधस्त, मृग्य, अनुगस्त पंच० ११२३, बलति (वि०) अपना बाध स्वान विधर करने वाला, बाध (क०) जिह्वा रोके हुए, चुप रहने वाला, वैषम्य (वि०) कण्ठकी से प्रस्त, बंद (वि०) जिसको किसी से थोर चुप्पा हो गई हो या पक्की जन्मता हो गई हो, सिद्ध (वि०) 1. जिसने अपनी थोटी बांध ली है, (थोटी में गाँठ दे ली है) 2. जो अपनी बन्धा है कायक, स्नेह (वि०) अनुराग्य करने वाला स्नेहशील ।

वय् (म्वा० जा०) - बीभत्सते - मूल अर्थ को बसाने वाले वय् वायु का लगना रूप) बिन करना, चुप्पा करना, अस्थिर रखना, लकोष करना, सिद्धाका, जन्मा (अपा० के साथ) येम्बो बीभत्समानाः - उत्तर० १ ।
बधिर (वि०) [बन्ध् + किरिप्] बहुरा, - अन्विनिर्बन्धव बधिरौकृतचुते - वि० १३३, मनु० ७।१४९ ।
बधिरवत्ति (ना० वा० पर०) बहुरा बनाया (बाँध० से भी) बधिरितासेषविमल्लाराम् का०, महावी० ६।८० ।
बधिरित (वि०) [बधिर + इतप्] बहुरा किया गया, बहुरा बनाया गया ।
बधिरितम् (प०) [बधिर + इतप्] बहुरागम ।
बन्ध्, बी (स्त्री०) [बन्ध् + इन्, बन्धि + डीप्] 1. बधन, कारावास 2. कैदी, बन्धुका - कु० २।६१ ।
बन्ध् (कृपा० पर०) बन्धाति, बद्ध०, कर्म० बध्यते) 1. बांधना कसना, जकड़ना - बद्ध न सञ्जाति एव तावत्करणे बद्धोऽपि च केशपाश कु० ७।५७, रघु० ७।९, कु० ७।२५, मट्टि० ९।७५ 2. दबोचना, पकड़ना, जेल में डालना, जाल में कसना, बंदी बनाना - कर्मणिर्न स बध्यते अग० ४।१४, बलिर्बन्धने - मट्टि० २।३९, १४।५६ 3. जंजीर में बांधना, बेदी में जकड़ना 4. रोकना उठाना, दमन करना यथा बद्धकोप बद्धकोष्ठ आदि में 5. पहनना, धारण करना न हि च्छासिनि पार प्रसवामीति बध्यते पंच० १।७२, बन्धुर्बन्धुलिवाणि मट्टि० १४।७, 6 (जाँच आदि का) बाँधकट करना, विरस्तार करना यद्वय बन्धुवि यवप्ररोह कु० ७।१७, या बन्धाति से बन्धु (चित्रकट) रघु० १३।४ 7 स्थिर करना, जमाना, (बाँध या मन आदि) निर्देष्टित करना, डालना (अवि० के साथ) दृष्टि सक्रिये बन्धम् - मद्रा० १।२, रघु० ३।४ ९।३६ मट्टि० २०।२२ 8. (बाल आदि) बाँधना, मिलाकर जबरना मद्रा० ७।१७ 9 निर्माण करना, मरंचन करना, रूप देना, व्यवस्थित करना बद्धागिनाकन-नितापिगुणयुक्ताम् - कि० ८।५७, मृगकुल रोमन्व मध्यस्थतु० ग० २।६ तस्याञ्जलि बन्धुमती बन्ध्व रघु० १६।५ ४।३८, ११।३५, ७८, कु० २।५७, ५।३ मट्टि० ७।७७ 10 एकत्र करना, रखना करना (कविता श्लोक आदि) निर्माण करना तुष्टीर्बद्ध तद्वत्तु रघुवर्धनि सत्त्वनिष्ठम् - विक्रम० १।१०७ श्लोक एवंप्रया बद्ध - रामा० 11 बनाना, पैदा करना, (कर्म आदि) जन्म देना - रघु० १०।६९, शं० ६।४ 12. गन्तना, अधिकार में करना, ग्रहण करना, मज्जा कर रखना उत्तर० २।८, ('बध्' के अर्थों में उन सज्ञाओं के अनुसार बिनसे ऋ

संयुक्त होता है, नाना प्रकार के परिवर्तन होते हैं ।
 उदा० अक्षुब्ध बन्धु भीड़ों में बल डालना, त्योरी
 चढ़ाना, अक्षुब्ध मुट्ठी बांधना, अक्षुब्ध बन्धु नम्र
 निवेदन के लिए हाथ जोड़ना चित्त, चित्त, चित्त,
 मन हृदय, बन्धु मन लगाना, दिल लगाना
 प्रीति, भाव, रस बन्धु, प्रेमपाश में बद्ध होना,
 मृग होना, सेतु बन्धु पुल बनाना सेतु का निर्माण
 करना, बैर बन्धु घृणा पैदा होना शत्रुता
 लक्ष्य, लोहब बन्धु मैत्री करना मोक्ष बन्धु गो-
 बांधना मठ बन्धु, मठ बनाना गोल बांध कर
 बैठना चीन बन्धु पूर्वी साधना परिकर बन्धु कक्षा
 बन्धु कम्प कम्पना, तैयार हो जाना दे० बद्ध क नाव
 समस्त बन्धु प्र० बंधुवाग बनवाना रचवाना
 निर्माण करवाना रघु० १२१०, अनु० १ बांधना
 अकृता पि० ८१६० २ लग जाना बांधना मृग
 शान्ता तन्त्रेवाधारण मास ११ नरि० ३५२० ३
 ३ उपनिषद् रचना सुत्राग अनुगण करना पद
 बिजुली पर चलना मनुहरकुट्टरुद्धमानस का०
 १२५ का पु० मन्त्रमनुवाक्यमा मन्त्रमन्त्रोपायवाक्य
 सम्प्रदाय पा० ७ ३ दबाव डालना प्रति करना
 अन्ध आश्रय करना १ बांधना उकड़ना
 कम्पना मनु० ११००० २ बांधना निर्माण करना
 व्यवस्थित करना आवृत्त १००० नरमर्मापद क०
 ४९ आवृत्त १००० मनु० ११३० वि०
 ५१३३, बांधना श्रमभित्त नरमर्मापद नि० १३
 ३ स्थिर करना जमाता निर्माण करना रघु०
 ८१०० उ० बांधना उकड़ना कठमुदबद्ध
 मूढा० ६ रघु० १६६० वि० बांधना कम्पना
 उकड़ना अनुचित करना उकड़ना म बांधना म म
 बल न कम्पनि निवर्तन घनउद्ध म ८६
 ११९ ११७ ११९० मनु० ६१७० १०००
 २ स्थिर करना उकड़ना स्थिर निवर्तन वि० १०
 ५१९९ ३ बनाना, निर्माण करना मन्त्राग करना
 व्यवस्थित करना—हेमनिबद्ध बन्धु पायागबन्धु
 कृप आदि ४ लिखना रचना करना या निवर्तन
 मोनबन्धु कथा—क० ५ निम्न दराव डालना घेरित
 करना अथवा आश्रय करना परि० १ कम्पना बांधना
 २ पल्लवना ३ घेरा डालना चारो ओर से बांधना
 ४ निष्कर्षण करना उड्डाना ५ विघ्न डालना
 उकावट डालना प्रति० १ कम्पना उकड़ना बांधना
 पोतनिवर्तनराम्य (बेनुप) रघु० २११ २ स्थिर
 करना, निवेष्टित करना कु० ७१९१ ३ स्थिर करना
 उड्डाना, मड्डना—वि० मणिमन्त्रवृत्ति मोनबन्धु १३
 ११७५, बहुलाभूतमकुशोदयप्रतिबन्धमध्याय वि०
 लयम् वि० ११८ ४ अवरोध करना, विघ्न डालना,

पीछे हटाना, निकाल देना, बंद कर देना—अवि-
 बन्धाति हि श्वेय पूज्यपूजाव्यतिक्रम रघु० ११७९
 ५ रोकना, हस्तक्षेप करना—मैनमन्त्रा प्रविष्णीतम्
 क० ६, लम् १ मिला कर बांधना या कम्पना, एकत्र
 करना, संयुक्त करना, साथ लगाना २ सरचना करना,
 बनाना दे० मबद्ध ।

बन्धु [बन्धु + बन्धु] १ बन्धु बन्धुन यथा—आकाशम्
 २ बालों को बांधने की पट्टी, फीता वि० १०० ५११०,
 पा० ११३० ३. शृङ्खला बेड़ी ४ बेड़ी डालना,
 कारागार में डालना, जेल में बंद करना मनु०
 ८१३१० ५ बांधना पकड़ना पकड़ लेना—मबन्धु
 रघु० १६१५ ६ निर्माण, सरचना, व्यवस्थापन
 मन्त्राग महाकाव्यम्—सा० ८० ६ ७ बांधना,
 धारणा विचारना हे राजानस्यजित सुकविशेषबन्धु
 विशेषम—वि० १००० ८८१०० रघु० ६१८१ ८. लघोः
 मिलन प्रथम मन्त्रक ९ जोड़ना मिलावा, मिश्रण
 करना रघु० १४१३, अक्षुब्धबन्धु आदि १० पट्टी,
 रत्न ११ मन्त्राग सामानस्य १२ प्रकटीकरण, प्रदर्शन,
 निष्कर्षण रघु० १८१५२ १३ बन्धु, मबन्धुन (वि०
 मुक्ति०) अर्थात् सामारिक बंधनों से पूर्ण मोक्ष) बन्धु
 मोक्ष व या वक्ति कुट्टि सा पार्थ साधिका वि०
 १८ ४ बन्धुमन्त्रे बन्धु मन्त्रमन्त्राग कुर्वति कर्म
 पणाना—भा० ४११ रघु० ११५८, १८१७
 १४ नम परिणाम १५ स्थिति अनाविद्यास, बाधन-
 कृपा रघु० २१६ कु० ५५ ५९ १६ मैथुन
 कर्म समय विशेष आसन १७ बन्धु, (रतिमन्त्रो ३
 डम रत्न) के १६ आसन बन्धु गये हैं जब कि और
 मन्त्र ८६ नम बढ़ा देने हैं १७ गोट किनारी, कृप
 रत्ना डाका १८ किसी श्लोक का कोई विनिश्चय कप-
 २० मन्त्रबन्ध पद्मबन्ध मुरबन्ध काव्य० ९
 १९ मन्त्राग कण्डरा २० गरीर २१ अमानत बरोह ।
 मन्त्र—कर्मण्य बेड़ी डालना कारागार में डालना
 मन्त्रम् पूरी सेना या क्षत्रियिणी सेना अर्थात् मन्त्रा-
 रोही अथवा मन्त्री मन्त्रोही तथा पवारि, पारम्पर्य,
 अन्ध भाविक या कृषि मन्त्ररचना सत्त्व पञ्चमी
 को बांधने का मन्त्र (उदा० हृषी आदि) ।

बन्धु [बन्धु + बन्धु] १ बांधने वाला उकड़ने वाला
 २ बांधने वाला ३ बंध, गांठ रन्ध्रे ५५६ का तत्त्वा
 ४ मैत्र १४ गांठ बांध ५ बरोहुर अमानत ६ गरीर
 का अन्वयात् ७ अन्ताबद्धी विनिमय ८ बंध करने
 वाला बांधने वाला ९ पतिगा १० नगर ११ बांध
 या बन्ध (वि० मन्त्र के अन्त में)—बन्धु सत्त्वबन्धकम्
 बाण० २१७६, कर्म बांधना, स्मित करना, की
 १ अमरी रत्नो न म त्वा कीमदारबन्धकथा प्रबोधम्
 —मा० ७ बेची० २ २ बेचना, धारणना—बन्धा

मुतोति नवेति बन्धकीषायेत्यम् - का० २३७,
३. हुकिनी ।

बन्धनम् [बन्ध् + स्तृत्] १ बाँधने की क्रिया, बकडना कसना,
हु० ५१८ २ चारों ओर से बाँधना, कपेडना, बाँधिन
—विमलसाक्षात्कृतबन्धनानि—हु० ११३९, बटव बन्ध-
नम्—गीत० १०, रघु० १९।१७ ३ गाँठ, बन्धि
(बाँध० से भी) रघु० १२।७९, बाधाबन्धनम् आदि
४. बेड़ी डालना, जंजीर से बाँधना, कैद करना
५. मृच्छिका, बेड़ी, पगहा, रज्जु आदि ६ गिरफ्तार
करना, पकडना ७ बाँधना, कैद, जेल, कारा, जैसा
कि 'बन्धनागार' में ८. बन्धीगृह कारागार, जेलखाना
—त्वा कारागारि कर्मलोडरबन्धनस्यम् श० ६।२०,
मनु० १।२८६ ९. बन्धाना, विधाया मरचना,—नेतु-
बन्धनम्—हु० ५।६ १० ममकत करना, मिलाटना,
बोडना ११ चोट पहुँचाना, जलन पहुँचाना १२ डकी
डकल (पुल का) बल—श० ३।६ १।१८ हु०
५।१४ १३ म्नाय, पुट्टा १४ पट्टी । मम०
—आ(आ)मार-रघु, आत्म्य कारागार जेलखाना
—अन्धि १ पट्टी की गाँठ २ जाल ३ पशुओं को
बाँधने का रस्ता, बालक-रक्षित् (पु०) काराध्यक्ष
जेल का अधीक्षक,—बेधनम् (नपु०) कारागार स्व
बन्धी, कैदी,—स्तम्भः लूटा (हाथी आदि पशुओं को
बाँधने का) बन्ध,—स्थानम् प्रत्यक्ष लूटाका ।

बंधित (वि०) [बन्ध् + इत्] १ बंधा हुआ जकड़ा
हुआ २ कैदी बन्धी ।

बंधिषः [बन्ध् + ष] १ कामदेव २ बन्धने का पला
३ बन्धा, मस्ता ।

बन्धुः [बन्ध् + उ] १ रिश्तेदार, बन्धु बाधक, मक्खी—यत्र
हुवा अपि मृगा अपि बन्धवो मे उभर० ३।८ मान्-
बन्धुनिवासनम् रघु० १०।१७, श० ६।२२, भग०
१।९ २ किसी प्रकार के संबंध से बंधा हुआ भाई
—बन्धालबन्धु सह यानी, बन्धु बन्धु आध्यात्मिक भाता
—श० ५।९ ३ (विधि में) सत्तातीय बन्धुजन
अपना निजी सगेज बन्धु (बन्धु तीन प्रकार के हैं
आत्म, 'पितृ' तथा मान्) ४ मित्र (जैसा कि नीचे
'बन्धुकृत्य' में) प्राय समास के अन्त में—महाभारत
बन्धो—मा० १।३९, 'मघ का मित्र अर्थात् गुणामित
१।३३ ५ पनि—वीदेहिबन्धो'दय विद्वे रघु०
१५।३३ ६ पिता ७ माता ८ भ्राता ९ बन्धुजीव
नाम का बन्धु १० वह व्यक्ति जिसका किसी जाति
का व्यवसाय से नाममात्र से संबंध हो, अर्थात् जो
जाति में बन्धु लेकर अपनी उस जाति के कर्तव्यों का
पालन न करना हो (प्राय निरस्कारबन्धक शब्द)
स्वमेव बह्मबन्धुनोद्भिदो दुर्नप्रयोग—आदि० ६,
मु० लघ्वन्धु । लघ०—कृत्यम् १ मनोवन्धु का

कर्तव्य—स्वयि तु परिसमाप्त बन्धुकृत्य प्रजानाम् श०
५।८ २ वैधीपूर्ण कार्य या सेवा कश्चित्कोष्य व्यव-
सितमिदं बन्धुकृत्य त्वया मे—मेघ० ११६, -बन्ध-
१ रिश्तेदार, भाई-बन्धु २ बन्धुजन, स्वजन, जीव-
जीवक बल का नाम—बन्धुजीवममृगारधरपल्लवमुल्ल-
सितमित्तयोर्वयम्—गीत० २, रघु० ११।२५, इत्तम्
एक प्रकार का स्त्रीधन या स्त्री की संपत्ति, विवाह के
अवसर पर कन्या के मन्त्रियों द्वारा कन्या को दिया
गया धन यात्रा० १।१४४, प्रीति (स्त्री०) ।
१. रिश्तेदार का प्रेम—बन्धुप्रीत्या—मेघ० ४९ २ मित्र
के लिए प्रेम भाव १ मित्रता २ रिश्तेदारी—बर्ग
भाई-बन्धु, स्वजन—हीन (नि०) बन्धुबाधको या मित्रा
से रक्षित ।

बन्धुक १ बन्धुजीव नामक पेड़ २ हरामी (सन्तान) वर्ण
सकर, का-की अस्ती स्त्री (दे० बन्धनी) ।

बन्धुता [बन्ध् + तल् + टाप्] १ रिश्तेदार भाई-
स्वजन (मातृहृक रूप से, २ रिश्तेदारी संबंध ।

बन्धुवा बन्धु + वा + क + टाप् ; अगती गवा

बन्धुव (वि०) [बन्ध् + उज् + लृट्] १ डंडा, ११४ लहरदार

जंजीर नीचा गि० ३।३० हु० ५।१ २ मुका हुआ

सन्तान शान्त बिन बन्धुगर्भ १५० १३६५

१ सन्तानि ३ डंडा बन्धु ४ मुलावर मनोहर

गुप्त प्रिय श० ६।१७ (गर्भ) हृत्स्व अर्ध हावा

डाल भी है ५ बन्धु ६ हाथिकर उगारामर

—१ १ हृत् २ सारम् ३ औषध ४ लली ५ यानि

रा (ब० ब०) नन्दे वा लक्ष गदाये रा जमनी

स्त्री, रज मुकुट नाज ।

बन्धुल (वि०) [बन्ध् + लृट्] १ मुका हुआ बन्धु

हस्तान बला २ मुहावर लुप्तता आचार्य मुन्दर

ल १ हरामी (सन्तान) —परमनिरता परमपुष्टा

परमपुष्टं विना परमज्ञानम् परमनिरता गुणेश्वरकाया

गजकनभा हृत् बन्धुता ललाय मुकुल० ६।२८

(विद्वत् के प्रवन भी के पूय बन्धुता नाम) का

यह उतर है जो स्वयं बन्धुलो ने दिया २ बन्धुता

का संबंध ३ बन्धु नाम का पद ।

बन्धुक [बन्ध् + ऊक] एक बल का नाम—नव करनिकरेश

स्पष्टबन्धुकमुनरनवरचिन्मते शंकर विज्ञानी—गि०

११।६६, ऋतु० ३।५ कृष्ण हृत् बल का पुल

बन्धुकृतिबाधकोऽयमर्थ—गीत० १० ऋतु०

१।२५ ।

बन्धुर (वि०) [बन्ध् + ऊप्] १ डाँडाबोल, उल्लासजन

२ मुका हुआ सन्तानवाला, विनय ३ मुहावरा,

लुप्तता प्रिय मु० बन्धुर, -रज्जु किर मुराज ।

बन्धुमिः [बन्ध् + ङि] बन्धुजीव नामक बल ।

बन्धव (वि०) [बन्ध् + षत्] १ बांधे जाने के योग्य, बेड़ी

द्वारा बकने जाने योग्य, कीद किये जाने या बन्दी बनाये जाने के योग्य याज्ञ० २।२४३ २ मिलाकर बौधने या जोहने के योग्य ३ निर्माण किये जाने के योग्य बनाये जाने या मर्यादित बिय जाने के योग्य ४ निवृत्त निगृहीत ५ बौद्ध ब्रह्म जा उपजाऊ न हो निष्पन्न निरर्थक (व्यक्ति या वस्तु) -अव्ययप्रवन्ते -रघु० ११।७५ अव्ययप्रवन्तश्च बहुवचनम् १० कि० १।३३ ६ प्रियवा मामिह राजसव आगि बंद हो गया जो ७ (समान के अन्त में) बहीन विरहित। सम० पल (वि०) निरर्थक अर्थहीन मुत्तल।

बन्ध्या बन्ध्या : गतुं नक्षत्रकी नक्षत्राणां विज्ञानेति गुर्वी समयः २ बौद्ध भौ ३ एक देश का मध्यप्रदेश। शास्त्रप्रद। मम जनय पुत्र सुत या कुत्रिषु सुत बौद्ध राजा का पुत्र। जो अर्थात् पौर क्षत्रभक्त्या विभक्त। १० १।४६ १।४। तत्राने एव हन रामां शक्तिं एव तत्रात्वा १० गद्यप

बन्धुः पदार्थः पुत्रः बन्धनः गतः।

बन्धुकी [बन्धु जा। दीप नक्षत्र] दग ० उपाधि

बन्धु (बन्धु) [भू ३।६४ म बन्धु दवा १] हुम भूरा जाकी राजा [१०] हुम भूरा जाका मम विराट् रघु १ १६ ११।५५ बन्धु बन्धात् बन्धु बन्धु १० १। २ विस्तार ग १ काण गये मिर बान्धु १ जाग २ नवग ३ लाकी रग १ भूरे बाडा रग १ एक पादव का नाम-वि० २।५० ६ शिव का विशेषण ७ विष्णु का विशेषण। मम०- बाधु १ सोना २ गेह सुषणगीर ३-बाह्य विभागदा के गम से उगल अर्द्धक एक पुत्र [युधिष्ठिर द्वारा छोड़े गये प्रवसेय के छोड़ को देल भाल अर्जुन करता था। वह छोडा भूमता हुआ मणिपुर देश में बला गया। उस समय वही बभ्रुबाहुन राज्य करता था। वह ब्रह्मलोचन गणकमी था। जब वह छोडा उसके पास लाया गया और उसने छोडे के सिर पर बैसे पट्ट पर 'पादव' का नाम पड़ा तथा यह जाना कि उसका पिता अर्जुन राज्य में आ गए हैं तो वीर्यता से बहू उनके पास गया, वह सम्मान के साथ अपना राज्य और कोष, अवसाहत उनके सामने प्रस्तुत किया। अर्जुन ने उस बुरे समय में बभ्रुबाहुन के सिर पर प्रहार किया और उसकी कायरता के लिए उसे डाँटा फाँकारा और कहा कि यदि वह सम्मान पराक्रमी होता, तथा अर्जुन का सम्मान पुत्र होता तो उसे अपने पिता से डरता नहीं चाहिए था और न इस प्रकार हीनता बिलसानी चाहिए थी। इन गानों से उस वीर युवक को अत्यन्त क्रोध आया,

जोष में भरकर उसने अर्जुन पर एक अव्ययनाकार बाण छोडा जिससे उसका सिर बह से अलग हो गया। सयोगवश उस समय वही विभागदा के पास उलूपी विद्यमान थी, उसने अर्जुन को पुनर्जीवित कर दिया। अर्जुन ने श्री बभ्रुबाहुन को अपना सम्मान पुत्र मान लिया और अपनी पाशा पर आगे बल दिया।

बन्धु (२४० पर० बन्धि) जाना बलना-फिरना।

बन्धु [भू + बन्ध, द्विव मय च] मध्यमकी योग

बन्धुवाली बन्धु + अन्त + पत् + जीव] मक्की।

बन्धु [भू + अन्त, बन्धु + मन्] एक प्रकार का अन्त।

बन्धु (२४० पर० बन्धि) जाना बलना-फिरना।

बन्धु बन्धु अन्त एक प्रकार का अन्त राजाग १।

बन्धु बन्धु बन्धु ३ १० प्रकार का अन्त, राजाग १।

२ बन्धु रदी

बन्धु बन्धु बन्धु मक्की

बन्धु [भू + अन्त, बन्धु + मन्] १ अर्थात् न ही समय अन्त न २ नून नून भूण ने बन्धु १० १।

बन्धु [बन्धु उरध एक वृद्ध बन्धु-उपसर्गम बन्धु बन्धु बन्धु लोभ-भूमि० १२४।

बन्धु (२४० अ० बन्धु) १ बन्धु २ देना ३ बन्धु ४ लान पड़ना माग डालना, नष्ट करना ५ फैलाना वि माग डालना नष्ट करना - वि० १।२९ १।

बन्धु [भू + बन्ध + अन्त] १ की वृद्ध-बन्धुकाह-लोभवर्ती-रघु० १६।१४ (केशवसे) मति कुसुम मन्थ क हरेदेव बन्धु विक्रम० ४।१० पाठाभार २ पक्षी की वृद्ध ३ वृद्ध का पल (विशेषकर मोर की) देव० ४४ क्र० १।१५ वि० ८।११ ४ पत्ता जगन्नाथ कन्धवर्धमान रघु० ६।१७ ५ अनुचरवर्ती लोकाचारक सम०-भार १ मोर की वृद्ध २ मोरछल, लाठी की मुठ में बन्धु मोर के पक्षों का गुच्छा।

बन्धु [बन्धु + अन्त] पत्त।

बन्धु [बन्धु + इन्] जाग - (१५०) कुल नामक वास।

बन्धु [बन्धु + इन्] योग-आवासकुलोन्मुखबन्धुनाति (बनानि) रघु० २।१७ १६।१४ १६।३७। सम० आका मोर के पंख से युक्त बाण -बन्धुः कर्ति-केय विशेषण।

बन्धु (पु०) [बन्धु + इन्] मोर-रघु० १६।१४, विक्रम० ३।२, ४।१०, बन्धु० २।६। सम०-कुसुम, -कुसुम एक प्रकार का संघर्ष, व्याख्या बुना का विशेषण - बान्धु - बान्धु कर्तिकेय का विशेषण।

बन्धु (पु०, नपु०) [बन्धु + (कर्मणि) इति] कुल नामक वास-कु० १।९० २ विस्तार या कुलवाक का

विष्णीना—(पु०) 1. आग 2. प्रकाश, दीप्ति (नपु०)
1. जल 2. यज्ञ। सम०—केल.—व्योतिः (पु०)
आग का विशेषण,—बुधः (बहिर्मुख) 1. आग का
विशेषण 2. देवता (जिसका मुख अग्नि है),—सुष्मन्
(पु०) आग का विशेषण, सद् (बहिर्बुद्) (वि०)
कुशनामक वास के आसन पर बैठा हुआ (पु०)
पितर (ब० ब०)।

बल 1 (म्वा० पर० बलति) 1 सास सेना, जीना
2 अनाज सग्रह करना 11 (म्वा० उभ० बलति-ते)
1 देना 2 चोट पहुँचाना अति पहुँचाना, भार डालना
3 बोझना 4 देखना, चिह्न लगाना। प्रेर०—(बालयान
ते) पालना-पोसना, भरणपोषण करना।

बलम् [बल् + अल्] 1 सामर्थ्य शक्ति, ताकत वीर्य,
जीज 2 जबरदस्ती, हिंसा जैसा कि 'बलान्' से
3 सेना, बल, फौज, सैन्यदल भवदभीष्ममद्रोह
वृतराष्ट्रबल कथम् वेणी० ३।२४.४२, भग० १।१०,
रघु० १६।३७ 4 मोटागन, पुच्छ (शरीर की)
5 शरीर, आकृति रूप 6 वाय, युक्त 7 हथियार
8 गोद, गमन (लोबान की तरह वा सुगन्धित गोद)
9 अक्षुर, अलुबा, (बलेन 'सामर्थ्य' के आधार पर
'की बदौलत—बाहुबलेन जित, भीरुबलेन ' बलान्
'बलपूर्वक' 'जबरदस्ती' 'हिंसापूर्वक' 'इच्छा के विरुद्ध
बलाभिरा समायाता पंच० १, हृदयमर्थये तस्मिन्नेव
पुनर्वलते बलान्—गीत० ३), ल 1 कौवा 2 कृष्ण
के बड़े भाई का नाम दे० नी० बलराम 3 एक
राक्षस का नाम जिसे इन्द्र ने मारा था। सम०
—अबलम् अत्यधिक सामर्थ्य, शक्ति (ब) सेना
का प्रधान, अणकः बलन हेम० १।५६—अश्विचिता
बलराम की बीणा, अष्टः एक प्रकार का शहरीर
—अधिक (वि०) सामर्थ्य में बढ़चढ़ कर, अत्यंत
बलशाली, अभ्यक्षः 1 सेनापति मनु० ३।१८२,
2 युद्धप्री, अनुबः कृष्ण का विशेषण अश्विचिता
(वि०) सामर्थ्य से युक्त, बलवान्, शक्तिशाली,
—अबलम् 1 तुलनात्मक सामर्थ्य और असमर्थता,
आपेक्षिक सामर्थ्य तथा दुर्बलता रघु० १।३।५९
2. आपेक्षिक सार्वकता तथा नगस्थता, तुलनात्मक
महत्त्व तथा महत्त्वशून्यता समय एव करोति बला-
बलम्—छि० ६।४४, अक्षः बाइल के रूप में सेना,
—अरातिः इन्द्र का विशेषण, अबलेन. सामर्थ्य का
अभिमान, - अक्षः—अक्षः 1 क्षयरोग, तपेदिक 2 कफ
का अधिकत्व 3. मले में वृज्जन (आहार नली का
अवरोध), आसिष्का एक प्रकार का मूत्रजम्बी फूल,
हस्तिकुटी, - बाहः पानी, - उष्ण, उपेत (वि०)
सामर्थ्य से युक्त, मजबूत, शक्तिशाली, ओषः सैन्य-
दल का समूह, अर्धस्य सेना—छि० ५।२,—शोचः

में अव्यवस्था, गदर, विद्रोह, अक्षम् 1 उपनिषद्,
साध्याय 2 सेना, समूह, अक्ष् 1 नगर का फाटक,
मुख्यद्वार 2 सेत 3 अनाज, अन्न का ढेर, शि० १४।७
4. युद्ध, लड़ाई 5 बसा, मज्जा (जा) 1 पृथ्वी
2 सुन्दरी स्त्री 3 एक प्रकार की चमेली, वः बेल,
बलीबर्ष, वर्षः शक्ति का अभिमान, वेवः 1 बायु,
हवा 2 कृष्ण के बड़े भाई का नाम दे० नी०
बलराम, द्विक् (पु०) निष्चयन. इन्द्र के विशेषण
—बलनिपुदनमर्थपात च तम् रघु० १।३ पतिः
1 सेनापति, सेनानायक 2 इन्द्र का विशेषण, प्रब
(वि०) ताकत देने वाला वरुधर्षक प्रसू बलराम
की माता रोगिणी, अक्षः 1 बज्रान् मनुष्य 2 एक
पक्षी का बेटा 3 बजराम का नाम दे० नी०
4 लाघ्न नामक वृक्ष, भिद् (पु०) इन्द्र का विशेषण
प० २, अनु (वि०) बलवान् शक्तिशाली
राम बलवान् राम' हुआ व बड़े भाई का
नाम (यह वसुदेव और देवकी का भातर्वा पृथ
वा रस की कृष्ण का निकार होने न बनान
के लिए यह रार्शणी के गन्धशय में स्थानान्तरित
कर दिया गया। यह और कृष्ण दोनों का
गर्भक न नन्द द्वारा पालन-पोषण किया गया। जब
उसका उम्र ही था तब इसने शक्तिशाली राक्षस धनुक
और प्रलब्ध को मार गिराया तथा अपने भाई कृष्ण
की भाँति अनेक आश्चर्यजनक काम किये। एक बार
मदिर के नशे में जिसका कि वह बहुत शौकीन था
यमुना नदी को निकट आने का आदेश दिया जिससे
कि वह स्नान कर मके जब उसी रात्रि पर ध्यान
नहीं दिया गया तब उसने अपने अल को फाली से
यमुना नदी को खींचा, अन्न में यमुना ने मनुष्य का
रूप धारण कर उससे क्षमा मांगी। एक दूसरे अव
सर पर उसने दीवारों समेत समस्त इन्दिनापुर को
अपनी भार खींचा। जिस प्रकार कृष्ण पाण्डवों के
प्रसन्नक थे, उसी प्रकार बलराम कौरवों के प्रसन्नक
थे जैसा कि उसकी इस बात से प्रकट होता है कि
वह अपनी बहुत मुभदा का विवाह दुर्योधन से करना
चाहता था न कि अर्जुन से। इतना होते हुए भी
उसने महाभारत के युद्ध में न पाण्डवों का पक्ष लिया
और न कौरवों का। इसका वर्णन नीली वेदाभूषण
धारण किये हुए 'हल' से जो कि उसका अत्यंत प्रभाव-
शाली शस्त्र था, समुज्जित किया जाता है। उसकी
पत्नी का नाम रैवती था। कई बार इसे खेचना
का अवतार और कई बार विष्णु का आठवाँ अव-
तार समझा जाता है—तु० गीत०),—विष्वास्तः सत्य
दल की व्यूहचरणा, - अक्षतम् सेना की हार, - सुबलः
इन्द्र का विशेषण, - अक्षः मोठा, सैनिक, - विस्तिः

(स्त्री०) १ गिविर, पहाड़ 2. राजकीय छावनी,
—हनु (पुं०) इन्द्र का विशेषण, हीन (वि०)
बलहीन, दुबल, अशक्त ।

बलज (वि०) [बल शायत्यस्मात्-अं+क] इतन शक्ति
इतना बलशाली इतना स्फूर्तिमय इतना मृदु इतना कम
—वि० ६१२४। सम० गु (या किष्ण का
रूपांतर) अन्तर्मा यथानत्यनुनाकजन्मसदृशका बल
क्षयु काव्या० १, २६ (गौडीया के प्रसाद गुण का
एक उदाहरण) ।

बलज [बल + ला + क] इन्द्र का विशेषण ।
बलज (वि०) [बल + मनु] १ मन्वन्त शक्तिशाली
ताकनवर-विशिष्ट बलवान्ति मे मात २१०
२१११ २ बलज हटा कटा ३ मधन बलका (प्रथ
कार आदि) ४ अन्तर्मा मन्वन्त प्रजापति
—बलवान्तिप्रसादा विद्वान्मन्त्रि कपति मनु० १००
५ अति मन्वन्त अन्तर्मा ६ २५० १००
(अर्थ) १ मन्वन्ती से शक्ति का मन्वन्त
शिवबालकविशेष कु० १५९ २ अत्यधिक अन्वन्त
अतिशय माया में बलवदपि शक्तिशाली मन्वन्त
अतः —श० ११० शीघ्रति बलवदुपेयव नारी शि०
८१२ श० ११११ ।

बला [बल + अन् + टाप्] शक्तिमयज्ञान या मन्वन्त
(यह पण विश्वामित्र ने राम और लक्ष्मण का बताया
था) को बलाविबला प्रभावित रघु० ११११ ।

बलाक, —का [बल + अक + अच्, स्त्रिया शब्द] ० ग
शैव्या + नयनमृग व भवन्त बलाक मध०
९ मृच्छ० ११२/१० का प्रिया नाता
बलाकिका [बलाका + कन् + टाप् इन्धम] छात्र जान
बगला ।

बलाकिक (वि०) [बलाका + इति] बलाका या मन्वन्त
से भरा हुआ बलाकिक निधि बलाकिका मध०
१११५, कु० ७१११ ।

बलाकार [बल + अन् + क्त्वा] १ बलात् २ अन् ।
१ हिमा का प्रयास करना बलमय २ अन् ।
नाशन, अनिष्टमय बल अत्याचार, छानाछाना ३
१०४७ बलाकारण निबन्ध आदि ३ अन्मय
४ (विधि में) उनमण द्वारा अभय का शक्ति
तथा शून्य की वापसी के लिए बल का प्रयोग करना ।

बलाकृत (वि०) [बलात् + कृत] जिसके साथ जबर
दस्ती की गई हो या जो परास्त कर दिया गया हो ।

बलाहक [बल + आ + हा + क्तुन्] १ बाल बलाह-
कच्छेदविभक्तगामकालसन्ध्यामिव शालुमत्स्य कु०
१४ २ एक प्रकार का बगला या सारु ३ पहाड़
४. प्रलयकालीन सात बावलों में से एक ।

बलि [बल् + इत्] १ बाहुति, भेंट, बड़ाया (पाप

पापिक) नीवारण बलाकृत —श० ४१०,
१४० २ दैनिक आहार (चावल, अनाज तथा घी
आदि) में से कुछ अन्न का सब जीवों को उपहार
(इसे भूतपूज भी कहते हैं) दैनिक पच महायज्ञा में
से एक बलिपूज देवे यज्ञ (१० मनु० ३१६०१)
इसका अनुष्ठान घर के द्वार के निकट, भाजन करने
से पूर्व दैनिक आहार का कुछ अन्न बाहर आकाश में
फेंक कर किया जाता है यासा बलि मरिचि मनु
पदहस्ता हमें दत्त मारमणैव विमुक्तपूर्व मृच्छ०
१० ३ पूजा आगमन—श० १४० मध० ५५, श०

४ १ उच्छ्रित ५ देवमर्त्य पर उड़ाया नैवेद्य ६ भुक्त
व भुक्त प्रजापति मन्वन्त से नाम्या बलि
मन्वन्त मनु० १११ मनु० ७१० ८१००३

बल का हटा ६ १३ प्रसिद्ध शासक का नाम (यह
प्रसिद्ध है पुत्र विरोध का पत्र था बहुत शक्तिशाली
यह ईशनाओं का अन्तर्मा करता था) फलस्वरूप
देवताओं ने विष्णु ने महायज्ञ की प्रार्थना की ।
विष्णु ने अरुण और अर्जुन का पुत्र बन कर बामन
का उपहार धारण किया । उसने मायु का वन धारण
किया । और बलि के राम जाकर उसमें तीन पण
पृथ्वी माया । स्वभाव से यद्वर बलि ने निम्नकोच
प्रकट रूप में इस सामान्य प्रार्थना को स्वीकार कर
भिया । पन्तु शीघ्र ही बामन ने अपना विराट् रूप
दिखाया और तीन पण मायना गृह किया । पहले
पण से उसने मारने पृथ्वी को आच्छादित कर लिया
दूसरे पण से मन्वन्त अन्तर्मा ३ और तीसरे पण के लिए
म्यान ने पकर उसे बलि ५ सिर पर रख दिया
और तीन बाल का उसको अमम्य सेना समेत पाताल
लाकर भेंट कर वहाँ का शासक बना दिया । इस
प्रकार विष्णु एक बार फिर इन्द्र के शासन में आ
गया ।—छल्लसि विक्रम बलिमन्त्र बामन मात
१ रघु० ११२५ मध० १० लि (अन्) १२

बली (पाप बलि) शिला मण है । सम० कर्म
(मनु०) १ सब जीवजन्तु के भोजन देने २ कर
प्रदान, बानस ३ देवता को नैवेद्य अर्पण करना
४ सब जीवजन्तु को भोजन देना धर्मसि (पुं०)
विष्णु का अन्तर्मा नन्दन पुत्र, सुत बलि के
पुत्र बाण का विशेषण पुष्ट-अन्वन्त कीटा-प्रिय
आन्-रूप-बन्धन विष्णु का विशेषण भुज (पुं०)
१ ५ ३ २ चिडिया ३ बगला या मार्ग—मन्त्रिबल,
वेदमन्त्र लक्ष्मन् (पुं०) पाताल लोक, बलि का
आवासस्थान व्याकुल (वि०) पूजा में अथवा सब
जीव जन्तुओं की भोजन देने वाला मेघ० ८५—हनु
(पुं०) विष्णु का विशेषण हरण्य सब जीव जन्तुओं
की भोजन देना ।

बलिन् (वि०) [बल + इति] मज्जुत, शक्तिशाली, ताकतवर, रघु० १६।३७, मनु० ७।१५४—(पु०)
1 भेता 2 सूवर 3 ऊँट 4 साँड़ 5 संनिक 6 एक प्रकार की बमेली 7 कफारमक वृत्ति 8 बलराम का विशेषण ।

बलिन्, बलिन्ध [बलि + इति, वा, बलपोरधेय] दे०
बलिन्ध भ ।

बलिन्धम् [बलि + इत् + लृत् + भृष्] बलिन् का विशेषण ।
बलिन्धत् (वि०) [बलि + भृष्] 1 पूजा या आहुति की सामग्री तैयार रखने वाला रघु० १६।१४ 2 कूट उठाहने वाला ।

बलिन्धन् (पु०) [बल + इतिन्ध] सामर्थ्य प्राप्त शक्ति ।

बलिबर्द दे० बलीबर्द ।

बलिष्ठ (वि०) [बलवत् (बलिन्) + इष्ठ] अत्यन्त बलशाली, अत्यन्त मज्जुत अतिशय शक्तिशाली छ ऊँट ।

बलिष्णु (वि०) [बल + ष्णु] अपमानित अनादृत तिरस्कृत ।

बलीकः [बल + ईकन्] छान की मूँहरे ।

बलीमत् (वि०) (स्त्री०) [बली + मत्] [बलवत् (बलिन्) + मत्] 1 अपेक्षाकृत मज्जुत, अधिक शक्तिशाली 2 अधिक प्रभावी 3 अपेक्षाकृत महत्त्वपूर्ण ।

बली (स्त्री०) बर्ब [वृ + विवृत् = वृ ई वदच् - ईवरी नो ददाति दा + क, ईवर्द, बली बासी ईवदच् कर्म० म०] साँड़, बैल गोपत्य पुमान् बलीबर्द ।

बल्य (वि०) [बल + यत्] 1 मज्जुत शक्तिशाली 2 शक्तिप्रद, स्वयं बौद्ध भिक्षु स्वयं बोध शूक ।

बल्यन् [बल्य + अच् + कति वा + क] 1 बल्यन् - कुञ्जेल्लोकात् श्रीरत्नचर्पाचया बल्यन् सचरन् - बेणी० ६।२ जि० ११।२ 2 ग्लोडया 3 विराट के यहाँ भीम का नाम जब वह रसायन का कार्य करता था, —बो रत्नात्न कि० ४।१३। मम० —युक्ति, लो (स्त्री०) जवान बर्बलिन (गोपी) हरीचरहाकुलबल्लवयुर्बर्बलमलीवधन् पठनीयम गीत० ६ ।

बल्यन् —का (?) एक प्रकार का मोटा घास-मनु० २।६२ ।
बलिहका बलीहका (ब० ब०) एक (बल्य) देश का नया उसके अधिकांसियों का नाम ।

बल्यन् (वि०) [बल्य + अयन्] बलडा (एक खेप का बलडा) ।

बल्यन् (वि०) ली (नी) (स्त्री०) [बल्यन् + इति + लोप्]
1. बहु गाय जिसका बलडा पूरा बढ़ गया हो न० १६।१२ 2. बहुप्रसवी गाय (जिसके बहुत बछड़े पैदा हुए हैं) ।

बल्य [बल्य + क्त] बकरा । मम० —करी साल बल्य ।

बल्य (वि०) [बल्य + अल्य] 1 अत्यधिक, यथेष्ट, प्रचुर, पुष्कल, बहुविध महान् मज्जुत उन्नर० १।१८, ३।२३, जि० १।८ मामि० ६।२७ 2 चिमका, सचन 3 लोमश (पृष्ठ की भाँति)—मा० ३ 4 कठोर, बृद्ध, मटा हुआ ल एक प्रकार का इक्षुरम ईँड, गन्ना —ला बड़ी इलायची । मम० गन्ध, एक प्रकार का वदन ।

बलिम् (अक०) [बल्य + इमन्] 1 मं स बाहर (अपा० के साथ) —निबन्धावसथ पुरादवर्ति रघु० ८।१५, ११।४ 2 बाहर की बाग दरवाजा के बाहर (विप० अन्त, बलिम्ब 3 बाह्य बाहर की ओर से अन्त बलि पुत्र एवं विवर्मानम मा० १।४० १०—बि० १।९६ (बलिष्क 1 बाहर की ओर खाना में तिका लना हाक कर बाहर कर देना मनु० ४।३८० याज्ञ० ६।९३ 2 गति में बाहर करना बलिम्, वा, बाहर गना चर जान । मम० बल्य (ब०) बाहर का बाहर की ओर का गन्ना 1 बाहरी भाग 2 बाहरी अंग उपस्थि बलिगधि, बाहरी दाना ३ बलिम्बि मा १०४ चर (वि०) बाहर का बल्य की ओर का बाहर की तरफ का—बलिष्चरा पाशा दश० द्वारम् बाहर का दरवाजा दह कीज ।

बल्य (वि०) (स्त्री०) हु-ह्वा [बल्य + कुन्तीप —म० अ०—मूयस १० अ०—मूयिष्ठ] 1 अधिक, पुष्कल प्रचुर बहुत शक्तिमान बहु गतदरि श० ४ 'यह भी उसके लिए अधिक था' (इतना अधिक जितन की उसमें अपेक्षा न की जा सके) —बल्य प्रष्टव्यम मद्र० ३ भव्यम् हेनोर्दु हातुभिच्छन्-रघु० १३ 2 अन्त अलक यथा 'बल्य' और बहु प्रकार में 3 बाग बाग किया गया दोहराया गया 4 बल्य विद्या 5 भरापूरा समृद्ध (सामान के अन्तर्गत) 6 बल्य देश—आदि (अव्य०) और उद्गतायन में बल्यधिक अवयव अतिशयपूर्वक, बड़े परिमाण में 2 कुछ लगभग, प्रायः जैसा कि बहुल्य' म (कि बहुला अधिक् कहने से क्या लाभ ?) मक्षर में बहुल्य बहन सोचना, बहुत मानना, ऊँचा मन्त्र लगाना बहुल्य मानना कद्र करना स्वस्व-भाविराममान बहुल्यमात्रे वयम् कु० ६।२०, यथात्रिभु शक्तिमा भूतबहुलता भव—श० ४।९, ७।१, रघु० १२।९ भग० ४।३५, ब्रिटि० ३।५३, ५।८४, ८।१२।। मम० बल्य (वि०) अनेक बल्यों वाला (शब्द) बहुत से बल्यों से बना हुआ, —अव्य, —अव्य (वि०) अनेक स्वरों से युक्त, बहुत स्वरों वाला, —अव्य, —अव्य (वि०) अव्युक्त, —अव्य (वि०) अनेक संतापों से युक्त (स्वः) 1 सूजर 2 बूझा,

बुहा, (स्था) वह गाय जिसके बहुत बछड़े बछड़ियाँ हैं,—अर्थ (वि०) 1 अनेक बच्चों से युक्त 2 बहुत से उद्देश्य रखने वाला 3 महत्त्वपूर्ण,—आश्रित (वि०) बहुभोजी, पेट,—उचकः एक प्रकार का विश्व जो अज्ञात नगर में निवास करता है तथा घर घर भिक्षा माँग कर अपना निर्वाह करता है—तु० कुटोचक,—उपाय (वि०) प्रभावी, क्रियावान्,—अर्थ (वि०) अनेक ऋवाजों से युक्त, (स्त्री०) श्रम्येय का नामान्तर,—एवम् (वि०) अति पापमय,—अर (वि०) अति-क्रियाशील, व्यस्त, उद्योगी (र.) 1. भङ्गी, झाड़ देने वाला 2 ऊँट (री झाड़ू—कालम् (अर्थ०) बहुत देर तक कालीन (वि०) बहुत समय का, पुष्टाना प्राचीन—कृष् एक प्रकार का नारियल का पेट, सम्बद्धा कस्तुरी मूत्रक—गन्धवा 1 युयिवाकता 2 बपाकली—गुण (वि०) . १०० गदगुणों से युक्त 2 कई प्रकार का, तरह-तरह का, अनेक धातु में युक्त अल्प (वि०) बहुभाषी मुखर बाबाल, ज (वि०) बहुत जानकारी रखने वाला, अच्छा जानकार मुखर,—तुलम् कोई पदार्थ जो बहुधा घास की भाँति हो अतः महत्त्वपूर्ण या निरन्करणीय हो निदर्शनमसा-गणा लघुबहुवचन नर—शि० २५०, स्वकः—स्वच्छ (पु०) एक प्रकार का मोरवृक्ष, बलिष्ठा (वि०) 1 जिसमें बहुत दान और उद्धार प्रस्तुत किया जाय 2 उदार, दानशील—बायिन् (वि०) उदार, दान-शील उदारतापूर्वक दान देने वाला, दुग्ध (वि०) बहुत दूध देने वाला (स्थ) गेहूँ (स्था) बहुत दूध देने वाली गाय,—दुग्धन् (वि०) बड़ा अनुभवी जिसने बहुत सेवा मुना हो,—दोष (वि०) 1 जिसमें अनेक दोष हो बहुत मो बुरियाँ हैं अनिदष्ट पाप-पूर्ण 2 अपराधों से युक्त, भयदायी बहुदोषा हि शर्वरी मूत्र० १५८ धन (वि०) बहुत धनी धनाढ्य,—बारम् इन्द्र का वज्र, धेनुकम् दूध देने वाली गौश्री की बड़ा सकरा—नावः सवः, वषः व्याज (वम्) अश्वक, (त्री) तुलसी का पौधा,—वधू, वधू पात्रः (पु०) बड़ का वृक्ष,—पुष्प 1 मूंग का पत्र 2 नीम का वृक्ष, प्रकार (वि०) बड़ा प्रकार का, नाना प्रकार का, विविध प्रकार का, प्रज (वि०) बहुत मन्तान वाला, अनेक बच्चे वाला, (अ.) 1 सूअर 2 मूत्र—एक घास,—प्रतिज्ञ (वि०) 1 नामा प्रकार की उज्ज्व और बाक्यों से युक्त, पेचीदा 2 (विधि में) अभियोग पत्र के रूप में जहाँ कई प्रकार का श्लोक लगे,—प्रव (वि०) अप्रत्य उदार, उदार, दाता प्रवृत्तः अनेक बच्चों की माँ, प्रेयसी (वि०) जिसके बहुत से प्रेमी हो,—कल (वि०) फलों से समृद्ध, (कः) कदम्ब का वृक्ष, बलः सिंह,

बायिन् (वि०) मुखर, बाबाल,—बन्धारी तुलसी का पौधा,—अल (वि०) बहुत माना हुआ, मुख्यवान्, कीमती, सम्मानित,—बलिः (स्त्री०) बड़ा मुख्य, या मुख्योक्त—कि० ७१५,—बलम् सीसा,—बालः बड़ा सम्मान या आदर, ऊँचा मूल्यांकन,—पुष्पबहुमानो विगलित—मर्न० ३१९, वर्तमानकवेः कालिदासस्य क्रियायां कथं परिचयः बहुमान—मालवि० १, विष्णु० ११० कु० ५३१, (नम्) उपहार जो बों द्वारा छांटो को दिया जाय,—बाध्य (वि०) बाधनीय, माननीय, बाध कलामय, छलयुक्त, होही पच० १३०१,—धार्मगा यमा रत्न० १३३,—मार्गी जहाँ बहुत मो मड़कों मिलने हो मूत्र (वि०) मधुमेह रोग से पीड़ित—मूत्रन् (वि०) विष्णु का विशेषण, मुख्य (वि०) मुख्यवान् ऊँची कीमत का,—मृग (वि०) १०१ बहुत से मृग हों—रत्न (वि०) रत्नों से समृद्ध—रूप (वि०) 1 अनेक रूपी, बहुरूपी, विश्वरूपी 2 चित्तकला परबेदार, रम्यरिगा या चारखानेदार, (प) 1 छिपकली, गिरगिट 2 बाल 3 मृग 4 शिप 5 विष्णु 6 बड़ा 7 कामदेव, रेतस (पु०) बड़ा व विशेषण,—रोमन् (वि०) कटुलीमी, राएदार (पु०) भेड़ सवबन् मुनिया धरनी बल्लभम् (ध्या० में) एक के अधिक वस्तुओं का ज्ञान कराने का प्रकार अर्थ (वि०) बहुरूपी, रम्यरिगा,—बायिन् (वि०) बहुत बच्चों तक रखने वाला,—बलिन् (वि०) अनेक कठिनाइयों से युक्त, नाना विघ्नबाधाओं से भरा हुआ, विष (वि०) अनेक प्रकार का, तरह-तरह का, विविध प्रकार का,—बी (बी) अश्व शरीफ,—बीह (वि०) बहुत बावलो वाला—तत्पुत्र कर्मधारय वेनाह स्त्री बहुबीह—उद्धट (यहाँ यह ममास का नाम भी है), (हिः) संस्कृत के चार मुख्य समामो में एक (इसमें दो पद पास-पास रख दिये आते हैं विशेषणपरक पद (बाहेर वह सभा हो या विशेषण) को पहले रखते हैं, जो दूसरे पद को विशेषित करता है, परन्तु वह दोनों पद सूचक-सूचक अभीष्ट अर्थ का प्रतिपादन नहीं करते, बल्कि मिलकर एक अन्य अर्थ दोनों के शब्द का निर्माण होता है। यह ममास विशेषणपरक होता है। परन्तु कभी-कभी इसका प्रयोग सत्राओं को आति किया जाता है जहाँ यह किसी विशिष्ट व्यक्ति के अर्थ में सम्यक्स्थित होता है उदा० चक्रपाणि, शशिसेखर पीतांबर, चतुर्वर्ण, जिनः, कुसुमसर आदि,—सन्तु मोरैया बिडिया,—अर्थः अदिरवृक्ष का एक पत्र,—चक्रः विष्णु का विशेषण,—भूत (वि०) 1 विघ्न पुत्र, प्रविहान्—हि० १११, पच० २११, रघु० १५३५ 2 बेवों का जानकार—मनु० ८१५०,—सन्तति (वि०) अनेक वाक्य-वचनों

बाका (वि०) एक प्रकार का बाल,—सार (वि०) बहुत अधिक मज्जा या रस से युक्त, सारयुक्त, (रः) सारियुक्त, सार,—सुः १ अनेक बच्चों की माँ २ सुकरी, सरी,—सुतिः (स्त्री०) १ अनेक बच्चों की माँ २ बहुत बार ब्याने वाली गाय,—स्वभ (वि०) कोलाहलपूर्व (कः), उत्कृ,—बाधिक (वि०) जिसके स्वामी अनेक हों ।

बहुक (वि०) [बहु + कन्] महंगा खरीदा हुआ. क १. सूर्य २. महरा का पीषा ३ केकड़ा ४ एक प्रकार का जलकुम्भट ।

बहुतर (वि०) [बहु + तरप्] अपेक्षाकृत असह्य, अनिक, ज्यादातर ।

बहुतम (वि०) [बहु + तमप्] अत्यन्त अधिक, अनिशाय ।

बहुतः (बन्ध०) [बहु + तम्] नाना पाषाणों से, कई तरह से ।

बहुता, नन्व [बहु + तल् + टाप्, त्व वा] बहुनायन, प्राचुर्य व्यस्यता ।

बहुतिष (वि०) [बहु + तिषुक्] ज्यादातर अधिक, अनेक-काले गते बहुतिष—शब्० ५१३, नस्य मूवि बहुतिषा स्तिषयः कि० १०१२ ।

बहुवा (बन्ध०) [बहु + वाच्] १ कई प्रकार से, विविध प्रकार से, बहुत तरह से बहुवाप्यागम्यविषा ग्यु० १०१२६, भग० १३१४ २ भिन्न भिन्न रूप में या रीतियों से ३ बारबार, दोहराकर ४ विविध स्थानों या दिशाओं में ।

बहुव (वि०) [बहु + कुलप्, नलोपः] (म० अ० —बहोयस्, उ० अ० बहियष्ट) १ पिनका, सधन मटा हुआ २ बिज्ञान, विस्तृत, आपन, विपुल बड़ा ३ प्रचुर, यथेष्ट, पुष्कल, अधिक, असह्य अविनय-बहुलता का० १४३ ४ अनेक, बहुत प्रकार का, अनगिनत मा० १११८ ५ भगवत्परा, समृद्ध प्रभूत —अस्मिन् क्लेशबहुले किं नु दुःखमय पथम्—हि० १११८४, भग० २४३३ ६ मयूकन, मलम ७ कृत्तिका नक्षत्र में जिसका जन्म हुआ है ८ काल, लः १ मास का कुलपक्ष,—प्रादुर्गमबहुलसाधारण ग्यु० ११११५, करेण यानोर्बहुलावसाने सचुक्ष्यमाणेव शशा अकरेखा कु० ७१८, ४१३३ २ अग्नि का विशेषण —का १. वाय २. इलायची ३. नील का पीषा ४. (ब० ब०) कृतिकानक्षत्रम् १ आकाश सज्जे निर्भ, (बहुलीकृत) १ प्रकाशित करना, सोलना, मज्जाक्रीड करना २ सवन या सटाकर बनाना जि० १३१४४ ३ बहाना, विस्तार करना, वृद्धि करना —भूतेषु किं च कथमा बहुलीकरोति—वायि० १। १२२ ४ फटकना, —बहुलीकृ १. फैलाना, विस्तृत करना, घुमा करना—विशेष्यार्थ बहुली भवति

—यच० २।१७५ २ दूर तक फैलना, प्रकाशित होना, बहनाम होना, मुविहित होना, दूर दूर तक फैल जाना बहुलीभवत् सोढु न तत्पूर्ववर्षयो रग्यु० १४१३८ । सम० आलाप (वि०) बावूनी, बापाल, मुलर, गम्भा इलायची ।

बहुलिका (स्त्री०—ब० ब०) कृतिकानक्षत्र ।

बहुलः (अव्य०) [बहु + लम्] १ अत्यंत, बहुतायत के साथ, अत्यधिकता के साथ मेघ० १०६ २ बार बार, दोहरा कर, मुहुर्मुहुः —चत्वारिंशद्वांष्टिं स्पृशामि बहुशो वेपथुयतीम् श० ११२३, क० ४१३५ ३ साधारणतः, सामान्य रूप से ।

बाहुल्यम् [बहुल + अच्] बहुल वृत्त का कल ।

बाह् (भ्वा० आ० बाहते) १ स्नान करना २. गोता लगाना ।

बाहवः [बहवा + अण बहयोरभट्] ३० 'बाहव' ।

बाहवेय (वि०) [बहवा + इक्] ३० 'बाहवेय' ।

बाहव्यम् [बाहव + यत्] ३० 'बाहव्यम्' ।

बाह् (वि०) [बहु + क्त्वि० भाष्] (म० प्र० —नाभी यस् उ० अ० माविष्ट) १ दुःख, मज्जित २ ऊँचे स्वर का शब्द (अव्य०) । यकीनन निश्चय ही, अवश्य, वस्तुतः, हाँ (प्रत्येक उगार के रूप में) —बाणस्य चन्दनदाम, एव निश्चय, चन्दनदाम —बाह्वम्, एव म विहरा निश्चय मुद्रा० १ बाह्वेय दिक्मेव पाषाण्य कर्म साधयान पुत्रजनने ग्यु० ११५२ २ बहुत अच्छा, तथास्तु, शब्दम् ३ अत्यंत बहुत ज्यादा जि० १७७ ।

बाण. [बाण् + घञ्] तीर बाण भर धनुष्यमाण मम पत बाणम् कु० ३१६६ २ तीर का निशाना बाण का लक्ष्य ३ तीर का पथमूक भाग ४ गाथ का ऐत या ओही ५ एक प्रकार का पीषा (नाम-मिठी भी) —बकचबाणदलावतबोर्जिक रजिरे हाँवरे क्षणविभ्रमा शि० ६१६६ ६ एव राक्षस का नाम बलि का पुत्र —नृ० उवा ७ एक प्रसिद्ध कवि का नाम जो सातवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में राजा हर्षवर्धन के दरबार में विद्यमान था (इ० परिशिष्ट २). उमने कादंबरी, हर्षचरित तथा और कई पुस्तकें लिखीं (आर्या० के ३७ वें श्लोक में नावर्धन में बाण के विषय में निम्नांकित कहा है आता शिल्लिखिनी प्राग्यथा शिल्लिखी तन्नावगच्छामि, प्रागल्भ्यमधिकमाप्नु बाणी बाणो बभूवैति । इसी प्रकार—बुधवर्धन पञ्चबाणस्तु बाण —प्रस० ११२२) १ 'पीष' की संख्या के लिए प्रतीकात्मक उक्ति । सम० अलपथ बन्धु, —बाधितः, ली (स्त्री०) १. बाणों की सेनी २ एक बाण में अन्वित पीष स्त्रीकों का एक कुलक. —आयकः नरकस, नीचः बाण का पराज, —आयक

बाणों का समूह, - बिल्व (पुं०) बिल्व का विशेषण,
—बुध, —वि: तर्कस, —कम्ब: बाण का पराज, —वाणि
(वि०) बाणों से सुसज्जित, —वात 1. तीर की मार
(हुरी की मार) 2 तीर की पराज, —मुक्ति, —मोक्षणम्
बाण मारना, तीर छोड़ना, —मोक्षणम् तर्कस, —बुद्धि:
(स्त्री०) तीरों की बीछार, —वार: वारस्वाण, कम्ब,
उरस्वाण तु० वारबाण, पुला: बाण की पुत्री
उवा का विशेषण, दे० उवा, हन् (पुं०) बिल्व का
विशेषण ।

बाणिनी [बाण + इनि + ङीप्] दे० बाणिनी ।

बादर (वि०) (स्त्री०—री) [बादर + अन्] 1 बर 4
बूझ से प्राप्त या सबद्ध 2 कई का बना हुआ —र
कई का पीछा, बाड़ी - रम् 1 बेर 2 रेजम 3 पाना
4 कई का वस्त्र नक्षिणावर्त शब्द रा क र स
का पेड़ ।

बादरायण [बादरी + फक्] वेदान्त दर्शन के भारतीय
मूलों का प्रणेता बादरायण (जिसे प्रायः व्यास का
नामान्तर माना जाता है) । मय० सूत्रम् वेदान्त
दर्शन के सूत्र, सम्बन्ध कल्पित या दूर का सम्बन्ध
(आधुनिक रूप) ।

बादरायणि [बादरायण + इङ्] व्यास का पुत्र
मुक्त ।

बादरिक (वि०) (स्त्री०—की) [बादर + अङ्] बेर
एकत्र करने वाला ।

बाध् (म्भा० जा० बाधने, बाधित) 1 तग करना उत्प्री
हित करना, सताना, अध्याचार करना, छेड़ना कष्ट
देना, दुखी करना, परेशान करना, पीडा देना उन
न मार्षध्वनिकों बबाधे रघु० २।१६ न तथा बाधने
स्कन्धो यथा बाध्यान् बाधने मुभा०, मेघ० १३
मनु० १।२२९ १०।१२२, भट्टि० १६। ५ 2 मुका
बना करना, विरोध करना निष्फल करना, रोकना
रुकावट डालना, अवरोध करना, हस्तक्षेप करना
—कि० १।११, उत्तर० ५।१२ 3 आक्रमण करना,
हमला करना, आवा बोलना 4 अनुचित व्यवहार
करना, अन्याय करना 5 बोट पहुँचाना, क्षति पहुँ
चाना 6 हाक कर दूर करना, पीछे डकड़ना, हटाना
7 स्पर्शिल करना, एक ओर रखना, रद्द करना,
तोड़ना, मिटाना (नियम आदि) रघु० १७।५७,
अभि 1 बोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना 2 दुख
देना, तग करना, सताना, धा, दुख देना, सताना
क्षति पहुँचाना, धरि कष्ट देना पीडा पहुँचाना
—शब्० ७।२५, प्र 1 कष्ट देना, सताना, तग
करना, धिक्काना, क्षति पहुँचाना सम्प्रतिष्ठानेव तस्मि
प्रवापते (प्रत्ययान्त) हि० १, भट्टि० १२।२ 2 हाक
कर दूर हटाना, मिटाना, पार करना—कम्ब नु देव

सकथेन पीडयेण प्रबाधितुम्—महा०, सङ्—कष्ट
देना, मराना ।

बाध्—बा [बाध् + धञ्] 1 पीडा, यानना, कष्ट,
मत्ताप—रग्न्या सह कम्भने मदनबाधा विक्रम० ३
2 रुकावट, छेड़छाड़, परेशानी —इति भ्रमरबाधा
निरूपयति शं० १ 3 क्षति, क्षति, बाटा, बोट
चरणस्य बाधा मालवि० ४, याज्ञ० २।१५९
4 भय सतरा 5 मुकाबला, विरोध 6 आपत्ति
7 प्रयास्यान, निराकरण 8 स्वगत, रद्द करना
9 अनुमान प्रक्रिया में नुटि, हेत्वाभास के पाँच रूपों
में से दे० नी० बाधन । मय०—अपवाद: अपवाद
का लक्षण ।

बाधक (वि०) (स्त्री०—बिक्का) [बाध् + क्तृन्] 1 कष्ट
देने वाला सताने वाला उत्पीडक 2 छेड़छाड़ करने
वाला परेशान करने वाला 3 उन्मूलन 4 बाधा
डालने वाला ।

बाधनम् [बाध् + ल्युट] 1 तग करना उत्पीडन, परेशान
करना अमानि पीडा शं० १ 2 मिटाना 3 हटाना,
स्वगत 4 निराकरण, प्रयास्यान —बा पीडा, कष्ट,
चिन्ता, अमानि ।

बाधित (म० क० कृ०) [बाध् + क्त] 1 तग किया
हुआ, उत्पीडित, परेशान 2 पीडित, सन्तप्त, कष्टवस्तु
3 बिहड़, अवकष्ट 4 रोकना हुआ प्रगृहीत 5 एक
बार रक्का गया, स्वगत 6 निराकृत 7 (तर्क० में)
सम्बिद्ध, विवाधस्त, असंगत (कल्पन व्यर्थ) ।

बाधिर्यम्, बाधिर; ध्यञ्] ५३।गण ।

बाध्यकिनेयः [बाध्यकी + इङ्, इन्द्रादेश] दोषका, बर्ध
मकर ।

बाध्यक [बाध् + अण] 1 रिक्तेदार, सबधी—वस्यार्थास्त-
स्य बाध्यका—हृ० १, मनु० ५।७४ १०१, ४।१७९
2 मानुषपरक रिक्तेदार 3 मित्र—धनेभ्य परा बाध्यको
नास्ति लाङ्—मुभा० 4 भाई । सम०—अन्तः रिक्ते-
दार बन्धु-बाधक—दारिद्र्योपायपुरवस्य बाध्यकवजो
बाध्ये न मतिष्ठते—मृच्छ- १।३६, पञ्च० ४।७८ ।

बाध्यव्यञ्ज [बाध्यक + ध्यञ्] सगोत्रता, रिक्तेदारी ।

बाध्यवी [बाध् + अण् + ङीप्] दुर्गा का विशेषण ।

बाध्यहीरः [?] 1 आप का नृदा 2 अस्त 3 नया बज्रुर
4 बेध्या का पुत्र ।

बाह् (वि०) (स्त्री०—ह्री) [बह् + अण्] मोर की पूँछ
के च. हो से बना हुआ ।

बाह्यद्वय, बाह्यद्विः [बृहद्वय + अण्, इङ् वा] राजा
जरासब का पितृपरक नाम ।

बाह्यस्वत (वि०) (स्त्री०—ती) [बृहस्पति + अण्] बृह-
स्पति से सबद्ध, बृहस्पति की कन्या या बृहस्पति
को प्रिय ।

बहुस्पत्य (वि०) [बहुस्पति + यत्] बहुस्पति से सबब रहने वाला,—स्थः 1 बहुस्पति का शिष्य 2 भौतिक-वाद के उग्ररूप के शिक्षक बहुस्पति का अनुयायी, भौतिकवादी,—स्थम् पुष्पनक्षत्र ।

बहिन (वि०) (स्त्री०—नी) [बहिन + अण] मोर से संबद्ध या उत्पन्न ।

बाल (वि०) [बल् + ण या बाल + अच्] 1 बच्चा, शिशु-वत्, अवयस्क, न्याना बालेन स्थनिरेण व' मनु० ८।७०, बालाशोकमुषोडगगमुभग भेयो-मुल तिष्ठति—विश्व० २।७, इसी प्रकार बालमन्दारवृक्ष मेघ० ७५, रघु० २।४५, १३।२४ 2 नया उगा हुआ, बाल (रवि या अर्क)—रघु० १२।१०० 3 नूतन, वर्धमान (चन्द्रमा) पुष्ये वृद्धि हरिदीपिनेरनुप्रवेशादिव बालचन्द्रमा रघु० ३।२२, कु० ३।२९ 4 बालिश 5 अनजान, अवोष, ल 1 बालक, शिशु-बालादिव सुभाषित बाह्यम् मनु० २।२३९ 2 बालक, युवा, तद्वत् 3 अवयस्क (१६ वर्ष से कम आयु का)—बाल आषोडशाहपात्—नारद 4 बछेरा, अवयव 5 मूलं भ्रूयु 6 पूँछ 7 बाल 8. पीव वर्ष का हाथी 9 एक प्रकार का गन्धद्रव्य । सम०—अग्रम् बाल को नार —अध्यापक बच्चों का शिक्षक,—अध्यापक, बाल्यावस्था में अध्ययन, (अध्ययन में) शीघ्र लगाना, अवयव (वि०) प्रभातकालीन उषा की भाँति फाल (ज) प्रभातकालीन उषा —अर्कः नवोदित सूर्य—रघु० १०। १००, अवबोधः बच्चों की शिक्षा, अवयव (वि०) तद्वत्, नवयुवक विश्व० ५।१८ अवस्था बचपन —आलयः प्रातः कालीन रूप —इत्यु नया बढ़ता हुआ चन्द्रमा—कु० ३।०९, इष्टः बरी बर का पैर —उपचार. (आयु०) बच्चा की चिकित्सा—उपधीतम् लगोटो, रक्षासी, कदली केले का नया पीछा, कुम्भ—इन् एक प्रकार की नई बमेली (इन्) बमेली की नई बिली हुई कली अलके बालकुन्दानुबिद्धम् —मेघ० ६५, कुम्भिः यं कुम्भं बालक के रूप में कुम्भ,—कीडनम् बच्चे का बिलोना या खेल,—कीडनम् बच्चे का बिलोना, (कः) 1 गैर 2 सिब का विशेषण,— कीडा बच्चों का खेल, बालको या लड़कों का खेल,—विश्वः बह्मा के रोम से उत्पन्न, अगुठे के समान आकारवाली दिव्य मृत्तिका (जो गिनती में साठ हजार समझी जाती है) नृ० रघु० १५।१०,—वर्षिणी पहली बार गाभिन हुई गाय,— गोपालः "तस्मिन् गाला" बालगोपाल के रूप में कुम्भ का विशेषण,—वह बालको को पीडा पहुँचाने वाला पिनाच (या उपवह)।—कण्डः—कण्डवम् (पुं०) हूँ का चाँद, बढ़ता हुआ चाँद—मा० २।१०,—हरितम् 1 तट्ठों के खेल 2 बालकीला, बालकीलन के कारनाम—उत्तर०

१,—वर्षः कार्तिकेय का नाम, (वर्ष) बच्चे का व्यवहार, व (वि०) बालों से उत्पन्न,—तमयः कविर का बाल, खैर—तन्मय बाजीकर्म,—तुम्ह नई हूँ, हरी चास, बलक. खैर, विः बालो वाली पूछ—वि० १२।७३ कि० १२।४७,—वाक्या 1 बालों की मींग में पड़ने जाने के योग्य आभूषण 2 बालों की बोटी में धारण की जाने वाली मोतियों की लड़ियाँ,—बुद्धिका,—पुष्पी एक प्रकार की बमेली, बोबः 1 बच्चों की शिक्षा 2 अनुभवशून्य नये बालकों की शक्ति के अनुसार कोई कार्य —भद्रकः एक प्रकार का विष,—भारः बाल से भरी हुई लम्बी पूँछ—बाधेतात्काशयितव्यमरी बालभारो दवान्ति—मेघ० ५३,—वाचः बचपन, बाल्यावस्था अथवा अवयव एक प्रकार का जवन,—भोक्ष्य. मटर,—भूयः भूय छीना यक्षोपवीतम् बल स्थल रे ऊपर से पड़ने जाने वाला जनेऊ—राजम् वैदूयमणि, नीलम्,—रोमः बच्चों का राग—लता नूतन बेल—रघु० २।१०—लीला बच्चों के खेल, बालको का मनोविनोद—वस्तुः 1 नन्हा बछड़ा 2 कव्चर—वायव्य वैदूयमणि नीलम् बालम् (नपुं०) ऊनी वस्त्र बाहु. जगली बकरा—विषया बाल्यावस्था में हो त्रिमका पनि मर गया हो व्ययव्य खबर बौरी (सुरागाय के बालों में बनी बौरी या एक प्रकार का राखिजु ठं)—रघु० ५।६६, १०।११ १६।३२ ५७ कु० १।१३ तस्मिन् बाल्यावस्था में बना मित्र बचपन का दोस्त,—संस्था भट्टपटा मुहूर्त्त (पुं०) बचपन का मित्र,—सूर्य सूर्यक वैदूयमणि, नीलम् हस्ता बच्चे की हस्ता हस्त बालो वाली पूँछ ।

बालक (वि०) (स्त्री०—लिका) [बाल + कन्] 1 बच्चो ब्रैसा, नन्हा, अवयस्क 2 अनजान,—क. 1 बच्चा, बाल 2 अवयस्क (विधि में) 3 अँगुठी 4 मूलं या बड़ 5 बड़ा ककण 6 हाथी या घोड़े की पूँछ, कम् अँगुठी । सम० हस्ता, वच्चे की हस्ता ।

बाला [बाल + टाप्] 1 लड़की बच्चा 2 सांझ वर्ष से कम आयु की युवती 3 लड़की, युवती आने तपसो दीर्घ सा बाला परवतीति मे विहितम्—सं० ३।१, इय बाला मा प्रत्यनवरनमिन्दीवरलप्रमणोरं वज्र जिगति भर्तुं ३।६३, मेघ० ८३ 4 बमेली का एक भेद 5 नागियम 6 पुनकुमारी का पीछा 7 इमायची 8 हल्ली । सम० हस्ता स्त्रीहत्या ।

बालि [बल् + इन्] एक प्रसिद्ध बानदराज का नाम —दे० 'बालि' । सम०—हम् हम् (पुं०) राम का विशेषण ।

बालिका [बाला + कन् + टाप्, इत्यम्] 1. लड़की 2. कान की बाली की चुड़ी 3 छोटी इलाकची 4. रेत 5. पत्तों की सरसराहट ।

बालिम् (पु०) [बाल + इति] एक बानर का नाम दे० बालि ।

बालिनो [बालिन् + डीप्] अधिनी नक्षत्र ।

बालिधन (पु०) [बाल + धननिच्] बचपन वात्स्यायना लङकाम् ।

बालिष्ठा (वि०) [बाहि षणित् बहि + श + इ प्रत्ययान्ते] 1 बच्चा जैसा अर्वाध मूल 2 बच्चा 3 मूल जनान मनु० ३।१७६ 4 लापरवाह ज 1 मूल बृद्ध 2 बच्चा बाल्य शब्द नाक्या ।

बालिदयम् [बालिन् + यञ] 1 उच्चकपट वचन 2 बचकानापन मूर्खता बचक्य ।

बालो बालि डीय एक प्रकार की श + की शाला

बालीश (पु०) मन्त्रावराध

बालु - बालकम् [बाल + लुच्] बाल जनान प्रकार मण्ड 247

बालुका दे० बालुका ।

बालुकी बालुकी बालुकी [बालु + क्य - क्य एक प्रकार के ककड़ा ।

बालूक [बाल + लुच्] एक प्रकार का बाल ।

बाल्य (वि०) (पु०) या [बालि + टा] 1 बालि होने का काल 2 मनु० मुलायम 3 बाल के मतान बाल्य ।

बाल्य बाल [बाल + टा] 1 बचपन बचपन वात्स्यायन मिव वजा मतानां बालम् मनु० १।६५ कु० १।७ 2 जनदमा दे० बालन को अर्वाध कु० ७।६ 3 समझ को आधिपत्यता मूलता प्रवाधता ।

बालुका बालिका बालिका (पु० ब० व०) [बलिदेश मवा बलि - वल्] बलि + टा पु० पक्ष दीध रम् [बलि के अर्वाधता, क 1 बालीको का राजा 2 बाल्य का घोड़ा कम 1 कम डाकरोन 2 हीप ।

बालि (पु०) एक देश का नाम । सम० ज (वि०) बाल्य देना मण्ड अल्प देन का मतान ।

बाल्य ध्वम् [बाध पु० मण्ड मण्ड बा] 1 आसु मधु क स्तम्भित बाधवृत्तिकल्पु ज ० ० 2 बाध प्रवाध पु० 3 लाश । सम० अल्प मण्ड 1 आसु

उत्तुङ्ग आसुओं का आना कष्ट (वि०) मिकता गला भर आया हो, गह्वर बट वाला बुद्धिमत् आसुओं की बाढ़ पूरा आसुओं का फूट पड़ना आसुओं की बाढ़, -बारबार लिखित पुनरावृत्त बाधपूर मा० १।३५, मोक्ष मोक्षम् आसु बहाना, - बिलु (पु) आसु की बृद्ध सविध (वि०) जो आसुओं के कारण व्यस्यत हो ।

बाल्यावस्ते (मा० वा० जा०) आसु बहाना, रोना - नलिक

मिति बाध्यापित मण्डवत्या - मा० ९, विक्रम० ५।९ ।

बाल्य (वि०) (पु० - स्त्री) [बल + ल्य] बकरे से उत्पन्न या प्राप्ति - मनु० २।४१ ।

बाह [बाहु पु० बह + लिच् + अच्, बहयोरभेद] 1 भुजा 2 बांहा ।

बाह्या [दे० बाह] भुजा मां प्रत्यालिङ्गेनोयतामि लाजा-बाह्याभि ज० ३ सम० बाह्यि (अन्व०) इत्याह्नि भुजा म भुजा त० बाहु-बाह्यि ।

बाह्यीका (प० व०) [बाह + ईका वयोरभेद] पञ्चास के अध्यायी क 1 पञ्चाही 2 बेल ।

बाहु [बाध व ध्वम्] 1 भुजा - आन्तमिदमाश्रयव स्तुत्यन व बाहु कुल फल्गिनास्य - ज० १।१६ इसी प्रकाश मन्त्रबाहु अर्द्ध 2 कर्ण 3 पशु का अंगना दे० 4 द्वार की नील का बाहु 5 (पु० व०) ममका प्रकाश मण्ड १० (वि० व०) बाह्यि नक्षत्र मा० उत्पन्नम् (अन्व०) भुजाओं को ऊपर उठा कर बाहुधर कन्दि - प्रवृत्ता ज० १।३०, - कुष्ठ कुष्ठ (वि०) नक्षत्र जिसका हाथ विकृत हो गया है कुष्ठ (क्षी का) बाहु देना बाल्य शैल्य की मार लपेट देना हाथों को लैलाकर बांधी हुई दुःख ज भविष्य वर्ष का व्यक्त - पु० बाहु गङ्गा म - ज्ञान० १००।१७, मनु० १।३१

2 नाग व्या [गण० व०] बाप के तिरार को मित्रन वाली सोयी देना - ब, - बन् - बाधम् भुजाओं की रक्षा करने वाला कर्षकविशेष, बन्धः 1 उड़ की भाति लड़ी भुजा 2 भुजा या मुक्के से दफिन करना - पाञ 1 मन्त्रयुद्ध में एक बेरा बनना जैसा कि आर्याणा के समय किया जाता है, प्रहरणम् पूमा की लड़ई मन्त्रयुद्ध - बन्धम् भुजा की ताकत मामाशियों की शक्ति भुजधम्, भुजा भुज में पहना जाने वाला भाषण बाहुबद्ध अयद, भेदिन (पु०) विष्णु का विशेषण, - मूलम् 1 कास, 2 कप और बाहु का जोड़, मुद्रम् हाथापाई मन्त्रयुद्ध पूमा की लड़ई योष योषिन् (पु०) युद्धि योद्धा धुमेबाज - सता भुजा की भाति बेल अन्तरम् स्तन वल स्थल शीघ्रम् भुजाओं की शक्ति व्याघ्राय कर्मण, बालिन् (पु०) 1 शिव का विनयण 2 शीम का विशेषण सिद्धम् भुजा का ऊपरी भाग कल्प मन्त्रध भविष्य जाति का पुत्र सहजम् (पु०) कार्तवीर्य राजा का विशेषण (महाराज) भी इसका नामान्तर है ।

बाहुक, बाहु . के - क] 1 बन्ध 2 कर्कोटक के द्वारा बौना बना दिये जाने पर ल का बदला हुआ नाम ।

बाहुगुण्यम् [बहुगुण - ध्वज] अनेक लक्षण और श्रेष्ठताओं का स्मारक ।

बाहुबलकम् [बहुबलक + अच्] नैतिक कर्तव्यों का स्मृति

के रूप में निरूपण जिसके रचयिता इन्द्र कहे जाते हैं।

बाहुवशेषः [बहुदन्त + ड] इन्द्र का विशेषण।

बाहुरा [बाहु + दा + क + राप्] एक नदी का नाम।

बाहुनाभ्यम् [बहुभाप् + व्यञ्] मुखता, बाचाकता, बाहुनीयता।

बाहुकष्यम् [बहुरूप + व्यञ्] बहुरूपता, विविधता।

बाहुलः [बहुल + अण्] 1. अग्नि 2. कार्तिक का महीना, —सम 1. बहुरूपता 2. भूजाओं की रक्षा के लिए कवच विशेष। सम०—घोषः मोर।

बाहुलकम् [बाहुल + कन्] 1. अनेकरूपता 2. व्याकरण में प्रयुक्त विधिविशेष, बाहुलकाच्छन्दमि, किसी रूप, अर्थ या नियम की विविध या असीम प्रयोजनीयता।

बाहुल्ये [बहुल + डक्] कार्तिकेय का विशेषण।

बाहुकष्यम् [बहुल + व्यञ्] 1. बहुतायत, प्राचुर्य, यथेष्टता 2. बहुरूपता, अनकता, विविधता 3. बन्धुओं का सामान्य क्रम या प्रचलित व्यवस्था।

बाहुबाह्वि (अव्य०) [बाहुभिर्बाहुभिः प्रहृत्येदं प्रवृत्त युद्धम्] भूजा से भूजा मिला कर, हस्ताहन्ति, प्रमासान युद्ध।

बाह्य (वि०) [बहिर्भव व्यञ्, टिलाव] 1. बाहर का, बाहर की ओर का, बाहरी, बहिर्देश, बाह्य स्थित —विग्रहः किमिदं नूतनापयद् बह बाहुविषयैर्विपश्चितम्—रघु० ८।८९, बाह्योद्याने-मेघ० ७, कु० ६।४६, बाह्यनामन् 'बाहरी नाम' अर्थात् पत्र की पीठ पर लिखा हुआ पत्र या चिटोता, सगनाम—मुद्रा० १ 2. विदेशी, अपरिचित—पंच० १ 3. बहिष्कृत, कटघरे से बाहर—आश्विनपूर्वर्वाच्यमानवाह्याः—कु० १।३६ 4. समाज से बहिष्कृत, जातिबहिष्कृत, —ह्रस्व 1. अपरिचित, —ह्रस्व, बाह्येय, बाह्ये (अव्य०) बाहर, बाहर की ओर, बाहरी ढंग से।

बाह्वृक्ष्यम् [बह्वृक्ष + व्यञ्] ऋग्वेद का परम्परागत अध्यापन।

बिद् (भ्या० पर०—बेटति) 1. शपथ लेना 2. अभिशाप देना 3. चिन्तना, और से बोलना।

बिदकः—कन्, बिदका [=पिटक, पृषो०] फोड़ा, फुली।

बिदकम् [बिद् + क] एक प्रकार का नमक।

बिदालः [बिद् + कालन्] 1. बिस्ला, बिलाव 2. आँल का डोला। सम०—यवः,—यवकम् १६ माघे के ताल का बड़ा।

बिदालकः [बिदाल + कन्] 1. बिलाव 2. आँल के बाहरी आवरण पर मलमल लगाता,—कन् पीली मल्लम्।

बिदीक्य (पुं०) [बिदेष्टि बिद् व्यापकमोऽथ यस्मि बिदीजा, पुषो० वृद्धिः] इन्द्र का विशेषण,—स० ७।३४।

बिद्, **बिद्** (भ्या० पर० बिदति) 1. क्षण्ड क्षण्ड करना 2. बटना।

बिदलम् दे० 'बिदल'।

बिन्दु [बिन्दु + उ] 1. बुद्, बिंदी जलबिन्दुनिपातेन कमशः पूयते घटः "छोटी-छोटी बूंदें मिल कर एक साराबर बन जाती हैं", बिन्दोयें यणी लोके नैव बिन्दुर्विद्वान्भि मनु० ७।३३, अमुना (कुतूहलस्य) बिन्दुरीण नावोपितः—भा० २ 2. बिंदु, बिंदी 3. ज्ञात्री के धरौ पर स्थित बिंदी या बिन्दु—कु० १।७ 4. मृग, मिफर—रामः कूपीरमिषाऽजगत्कृता कृतादव किदूषणस्युपबन्धवः—ने० १।७१। गम० चित्रकः बिन्दोदरः हर्मिणः, जालम् जालकम् 1. बूंदों का समूह 2. हाथों के मूढ़ और शरीर पर बनाये गये चित्रण चित्रित,—सम० 1. पामा 2. शतरंज की तिसात रेखा शिख का विशेषण,—पत्र, एक प्रकार का भासक फलम गानो रेखक 1 अनुस्वार 2 एर प्रकार का यंत्र,—रेखा बिन्दुओं की पंक्ति, बासर गन्तारान का दिन।

बिम्बोकः [बिम्बाक, बिम्बा] 1. अभिमान के कारण अपने प्रियतम पदार्थ की ओर उद्योगितता का प्रदर्शन मनाक प्रियकपालो बिम्बाका नादरक्या—प्रतापः २, या, बिम्बाकमर्तनवर्णनं नरकुनीष्टेऽन्यथा—भा० २० १२९ 2 घमट के कारण उद्योगितता 3 बिंद परक या प्रतिक्रियायक भूकण—महायजुः आर्वापित निश्चिकाय कश्चिद्बिम्बोर्बेकमहायिता पराशर शि० ८।९ (विष्णवे महि०)।

बिम्बित्वा [बिद् + मत् + अ + टाप्] भ्रमन की इच्छा, बीधने की या छेद करने की इच्छा।

बिम्बितु (वि०) [बिद् + मत् + उ] छेदने या बीधने की इच्छा।

बिम्बोषणः [भी + मत् + लृट्, एर राक्षस का नाम, राक्षस का भाई (यद्यपि वह अन्य राक्षस या परन्तु साक्षी सीता के अपहरण के कारण बड़ा मित्र था, उसने राक्षस का इस दुःख के लिए बहुत दूरा भला कहा। उसने बार बार राक्षस को समझाया कि यदि जीवित रहना चाहते हो तो सीता को राम के पास वापिस पहुँचा दो। परन्तु उसने बिम्बोषण की चेतावनी पर कोई ध्यान नहीं दिया। अंत में जब उसने देखा कि राक्षस का विनाश अवश्यभावी है तो वह राम के पास चला गया और उसका पक्का मित्र बन गया। राक्षस की मृत्यु के पश्चात् राम ने बिम्बोषण को लका की राजगद्दी पर बिठा दिया। बिम्बोषण मान चिरजीवियों में गिना जाता है—दे० 'चिरजीवित')।

बिभक्षुः, **बिभक्षिषु** [भिष् + लृट् + उ, विकल्पेन इट्] क्षाम।

बिम्बः—**बम्** [बी + बन् नि० साच्] मृगमण्डल या चन्द्र-
मण्डल—बदने लगे तब नीलीयते चन्द्रबिम्बमनुचरे
— सुभा०, इसी प्रकार सूर्य०, रवि० आदि 2. कोई
सोल या मण्डलाकार सतह, मण्डल या गोला जैसे
'नितम्बबिम्ब' गोलाकार कुत्ता, 'ओषीबिम्ब' आदि
3. प्रतिमा, छाया, प्रतिबिम्ब 4. बोधा, दर्पण 5. कलश
6. उपमित पदार्थ (बिम्ब० प्रतिबिम्ब)।— बम् एक वृक्ष
का फल (यह जब पक जाता है तो जाल रंग का हो
जाता है, तब तो स्त्रियों के होठों की तुलना इसी से
की जाती है) —रक्तछोककृष्ण विसंघितगुणी बिम्बापरा
लक्षक —मालवि० ३१५, पक्वबिबाधरोष्ठी मेघ०
८२, तु० नै० २६। मम०—ओष्ठ (वि०) (बिबा
(बी)ष्ठ) बिब फल के समान लाल लाल सुदृढ़ होता
वाला मालवि० ३१५, (—ष्ठ) बिब फल की
भाति ओष्ठ—उपामुले बिम्बफलमण्डले—कु० ३६३।

बिम्बकम् [बिम्ब + कन्] 1 मृगमण्डल या चन्द्रमण्डल
2 बिबफल।

बिम्बिका [बिम्ब + कन् इत्थम्] 1 मृगमण्डल या चन्द्रमण्डल
2 बिब का पोषा।

बिम्बित (वि०) [बिम्ब + इत्थम्] 1 प्रतिबिम्बित प्रति छाया
पड़ी हुई 2 भित्तित।

बिम् (तु० पर०, बुरा० उभ०) बिम्बित बेलयति—त) सब
लख कराना कड़ाना, ताड़ना, बाटना, टुकड़े-टुकड़े
करना।

बिम्ब [बिम् + क] 1 छिद्र, बिबर, जूड़ (हल चलाने में
बनी गहरा सोचो रेखा) अन्तर्भाजिल मित्र
प्राप्तिनि नक्षत्रमहि—पञ्च० ३१३ २पु० १२५,
2. रिक्तस्थान, गल, छिद्र 3. द्वारक, छिद्र सूराम,
4. कबारा, फोटर ल. इन्द्र क घोड़े 'उर्ध्व' अथवा व।
नामान्तर। मम० ओष्कम् (पु०) बिम् में रहने
वाला जानवर, कारिन् (पु०) बूढ़ा, धोमि (वि०)
बिलबलुओं की मल्लक जानवर यथाया बिल-
योग्यः—कु० ६३९, बासः गम्भार्जार, बासिन्
(बिलेबासिन्) (पु०) साप।

बिम्बकः [बिम् + कम् + क्त्वं, मृम्] सप, साप।

बिम्बिका [बिम्बिते—सी + अच् अलक् स०] 1 साप
2. मूसा, बूढ़ा 3. माव में रहने वाला कोई भी
जन्तु।

बिम्बः [बिम् + ला + क नि० अकार लापः] 1. गर्न
2. विशेषतः पाँचला, आलवाल। सम०—कूः दम
बच्चों की मा।

बिम्बः [बिम् + बन्] बेल नामक वृक्ष—स्वप्न 1 बेल का फल
2. एक विशेष तोल, पल भर। सम०—बंङः शिब का
विशेषण, वैशिका, वैशी बेल का छिस्का (जो लकड़ी
के समान कड़ा होता है)।— बलम् बेलों का जंगल।

बिम्बकीया [बिम्ब + छ, कुक्] वह स्थान जहाँ बेल के
पोषे लगाये गए हों।

बिम् (बिषा० प० विस्वयति) 1 जाना, हिलना-डुलना
2 उकसाना, प्रेरित करना, मड़काना 3 फेंकना, हाल
देना 4 टुकड़े टुकड़े करना।

बिम्ब [बिम् + क] 1 कमल तनु 2 कमल की तनु
बाला डडी—पाषेयमृगसुज बिम् ग्रहाय भूय—बिक्रम०
६१५, बिम्मलमधनाय स्वादु पानाय तीयम—भर्तृ०
३१०० मेघ० ११ कु० ३१३, ३१९; मम०
— कण्टिका, कण्टिन् (पु०) छाटा सारम्—कुमुदम्,
पुष्पम्,—प्रभुलम् कमल का फूल,—अम्बुबिम् घृतवि-
कार्मबिम्प्रमृना सि० ५१८,—बाबिका कमल
तन्मुभा का लान वाली,—अन्वि कमलडडी के ऊपर
की गल छेद कमल की तनुमय डडी का टुकड़ा,
अम कमल तनु पूर, कमल तनु कमल का रोसा,
नामि (स्त्री०) कमल का पीधा घीघनी,—नासिका
एक प्रकार का मारम्।

बिम्बलम् [बिम् + ला + क] नया अकुर, अम्बुवा कली।

बिम्बितो [बिम् + इति] 1 कमलितो, कमल का पोषा
भर्तृ० ३२९ 2 कमलतनु 3 कमल का समूह

बिम्बित (वि०) [बिम् + इत्थम्] बिम् से सबद्ध या प्राप्त।

बिम्ब [बिम् + क] (१०) गतियों के बराबर) सने
का गाल।

बिम्बक (पु०) विष्णुमाकदेवचरित नामक काव्य का
रचयिता।

बीजम् [वि + जन्, ङ उपसर्गः दीर्घ अवयारभेद]
बीज (आल० में भी) बीज का दाना, अनाज
— अरथबीजाबिलिदानालिना कु० ५१५ बीजा-
बिलि पतति कीटमुत्पाद ग्रीड—मृच्छ० ११९, रघु०
१९५३ मत्त० ९३३ 2 बीजम् पञ्च 3 मूल,
स्रोत कारण, बीजपकृति ग० ११९, (पठान्तर)
4 बीजं शुक्, कु० २५५, ६० 5 किमी गटक की
कपावन्तु का बीज, कहानी आदि,—दे० मा० ६० ३१८
6 गूदा 7 बीजगणित 8 बीजमण, जः नीब् का पेड,
(बीजाङ्ग 1 बीज बोना—अ्योमनि बीजाकुतने—माघि०
११८ 2 बीज बोने के बाद हल चलाना)। मम०
—अक्षरम् मन्त्र का प्रथम अक्षर अक्षुरा बीज का
अकुर—कु० ३१८, अन्वः बीज और अकुर का
व्याप, २० 'व्याप' के अन्तर्गत, अन्वः शिब का
विशेषण, अन्वः जननाव, साद बोधा,—आद्ययः,
—पूरः—पूरकः विपरीत नीब्, चकोतरा, (रम्,—रकम्)
नीब् का फल,—अङ्गष्टम् अन्धा बीज—उद्यम्य बोला,
—कर्तुं (पु०) शिब का विशेषण—बीजः,—बीज 1. बीज
पात्र 2 कमल का बीजपात्र,—गन्धितम् बीजगणित
का विज्ञान,—गुप्तिः (स्त्री०) बीजकोष, फली, सेम,

छीमी,—बर्तकः रंगशाला का व्यवस्थापक,—बाल्यम्
बलिया,—स्थानः नाटक की कथावस्तु के स्रोत को
बतलाना,—पुरुषः कुल प्रवर्तक,—कलकः बीजपूर का
पेड़,—मन्त्रः रहस्यमय अक्षर जिससे मंत्र आरम्भ
होता है,—मातृका-कमल का बीजकोष,—बहः दाना,
अनाज,—बायः 1. बीज बोने वाला 2. बीज का बोना,
—बाहुनः सिब का विशेषण,—सूः पृथ्वी,—लेख्य
(पु०) प्रसष्टा, प्रजापति ।

बीजक [बीज + कन्] 1. सामान्य नीबू 2 नीबू या
चकोतरा 3 जन्म के समय बच्चे की भुजाओं की
स्थिति,—कम् बीज ।

बीजक (वि०) [बीज + लच्] बीजों से युक्त, बीजों वाला ।

बीजिक (वि०) [बीज + उन्] बीजों से भरा हुआ,
जिसमें बहुत बीज हों ।

बीजिन् (वि०) (स्त्री०-नी) [बीज + इनि] बीजों से
युक्त, बीज रखने वाला (पु०) 1. वार्षिक पित्त
या प्रजनक (बीज का बोने वाला) (विप०) श्रेजिन्
—खन या स्त्री का पति या स्वामी) दे०—मनु० ९।
५१ तथा आगे 2. पित्त 3. सुय ।

बीज्य (वि०) [बीज + यत्] 1. बीज से उत्पन्न 2. सम्मा-
नित कुल का, सत्कुलोद्भव ।

बीमत्स (वि०) [बम् + मन् + घञ्] 1. बुधोत्पन्नक,
चिनीना, दुर्घबयुक्त, भीषण, जुगुप्साजनक—हस्त बीम-
त्समेवासे वर्तते मा० ५, 'अदो' यह निश्चित रूप
से चिनीना दृश्य है' 2. ईर्ष्यान्, प्रवेष्टी, विद्वेषपूर्ण
3. बर्बर, क्रूर, झूठवार 4. मन से विरक्त,—स्तः
1. जुगुप्सा, चिनीनापन, गर्हणा 2. बीमत्सरक, काष्ठ
के आठ या नौ रंगों में से एक—जुगुप्सात्वायिभावस्तु
बीमत्सः कथ्यते रसः—सा० ६० २३६ (उदा० मा०
५।१६) 3. अर्जुन का नामान्तर ।

बीमस्तुः [बम् + मन् + उ] अर्जुन का विशेषण । महा०
इस प्रकार व्याख्या करता है—न कुर्यात्कर्म बीमस्तं
युष्मन्मातः कथंचन, तेन देवमनुष्येषु बीमस्तुरिति
विमुक्तः ।

बुक् (बम्) [बुक् + विक् + पुषो० उपधातोपः] अनु-
करणमूलक सव्य । सम०—कारः सिंह की दहाड़ ।

बुक्क (म्वा० पर०, ब्रा० उ०) बुक्कति, बुक्कयति-ते)

1. ओकना—हि० ३।५२ 2. बोलना, बान करना ।

बुक्कः—बक् [बुक् + कच्] 1. हुरद 2. दिल्, छाती
—बुक्कावातैर्यद्वितिकटे प्रीडवाक्येन राधा—उद्भूट

3. हरिर्, कः 1 बकरा 2. समय ।

बुक्क (पु०) [बुक् + क्त] हुरद, दिल् ।

बुक्कम् [बुक् + लृट्] ओकना, गी गी करना ।

बुक्कः [= पुक्क, पुषो० शब्दः] पंखा ।

बुक्का, ककी [बुक् + टाप्, जीप् वा] हुरद, दिल् ।

बुक् (म्वा० उ०—बोदति-ते) 1. प्रत्यक्ष करना, देखना,
समझना, पहचानना 2. समझ लेना, जान लेना ।

बुद्ध (यू० क० क०) [बुध् + क्त] 1. ज्ञात, समझा हुआ,
प्रत्यक्ष किया हुआ 2. जगया हुआ, जागरूक 3. देखा
हुवा 4. प्रकाशमान ।

बुद्धिमान् (दे० बुध्) —डः 1. बुद्धिमान् या विद्वान् पुरुष,
अधि 2. (बोधों के साथ) बुद्धिमान् या ज्ञानयोगीति
से प्रकाशमान पुरुष जो सत्य के प्रत्यक्ष ज्ञानद्वारा
जन्म-मरण से छुटकारा पा चुका है तथा जो स्वयं
युक्त होने से पूर्ण संसार की मोक्ष या निर्वोण प्राप्त
करने की रीति बतलाता है 3. शाक्यसिंह का नाम
'बुद्ध' जो बौद्धधर्म का प्रसिद्ध प्रवर्तक था (उमने
कौण्डिन्यस्तु में जन्म लिया और ईसा से ५६३ वर्ष
पूर्व निर्वोण प्राप्त किया, कई बार उसे विष्णु का
नया अवतार माना जाता है, जयदेव कहता है
नित्यमि यक्षविचैरहृद् भूतिज्ञान सद्यःबुद्धय दक्षित-
पद्माक्षत केशव भूतबुद्धशरीर । जय जगदीश हरे
—गात० १) सम०—आगमः बौद्धधर्म के सिद्धान्त और
मन्त्रव्य, उपासकः बुद्ध की पूजा करने वाला, यथा
एक पुण्यतीर्थस्थान का नाम, मार्गः बुद्ध के सिद्धान्त
और मत, बुद्धवाह ।

बुद्धि (स्त्री०) [बुध् + क्तिन्] 1. प्रत्यक्ष ज्ञान, संबोध
2. मति, समझ, प्रज्ञा, प्रसिद्धा तीक्ष्णता नादन्तुया
बुद्धिः शम० २।१०९, शास्त्रेयबुद्धिना बुद्धि—रभ०
१।१२३ ज्ञान—बुद्धिर्धर्म्य बल तस्य हि० २।१२२
'ज्ञान ही शक्ति है' 4. विवेक, विवेचन, सूक्ष्म विचा-
रणा 5. मन मूढ़ परप्रत्ययनेयबुद्धि—मालवि०
१।२, इसी प्रकार 'कृपण' पाप' भावि 6. बीमाम
रहना, प्रम्युत्सप्रमत्तिव 7. बारणा, सम्मति, विश्वास,
विचार, भावना, भाव दुरात्मबलोक्य व्याघ्रबुद्ध्या
पलायने—हि० ३, जनया बुद्ध्या मुद्रा० १, 'इस
विश्वास से'—अनुकोलबुद्ध्या मेघ० ११५ 8. आसय,
प्रयोजन, प्रायोजना (बुद्ध्या) 'इरायतन' 'प्रयोजन से'
'ज्ञानवृक्ष कर 9. सचेत होना, मुर्छा से जागना मा०
४ 10. (सा० ६० में) सांख्यशास्त्र में वर्णित पञ्चवीध
तत्त्वों में से दूसरा । सम०—अतीत (वि०) बुद्धि की
पूर्व से परे, अज्ञानम् किसी की समझ का तिर-
स्कार करना या निरुद्ध मत रखना—अज्ञानाकां वचनं
बुद्धस्तितरिप बुद्धन्, प्राप्नोति बुद्धयवज्ञानव्यपमानं च
पुष्कलम्—पच० १।६३,—इतिबुद्धं प्रत्यक्षीकरण की
इन्द्रिय, विप० कर्मविद् (यह पांच है—कान, स्पर्श, बौद्ध
विज्ञा और वाक्—कोयं स्वस्वचक्षुषी विज्ञा नासिका
चैव पंचमी, इनमें कभी कभी 'मनस्' जोड़ा जाता है)
—कव्य-वाङ्मय (वि०) पूर्व के भीतर, उपकव्य
करने योग्य, प्रतिभा,—बौद्ध (वि०) 'तर्क' का

व्यवहार करने वाला, तर्कयुक्त बात करने वाला
—**नृषन्**—**नृषकम्**, **पुरःसरम्** (अर्थ०) इरादतन, जानबूझ
कर स्वेच्छा से, — **भ्रमः** मन का उबाट, मन की विषय-
गामिता, — **योगः** ब्रह्म से बौद्धिक मायुज्य, — **लक्षणम्**
बुद्धिमत्ता या प्रतिभा का चिह्न — **आरम्भस्यान्तर्मग्नम्**
द्वितीय बुद्धिलक्षणम्, — **बोधवत्** प्रतिभा की शक्ति,
— **हास्य** (वि०) समझ या बुद्धि से युक्त, — **हासितुं**
संयत्न (वि०) बुद्धिमान् समझदार, — **सज्जः**, **सहायः**
परामर्शदाता, — **होम** (वि०) प्रशिक्षाशून्य, मूर्ख,
बेवकफ ।

बुद्धिमतः [बुद्धिः मनुष्यः] 1. समझ से युक्त, प्रज्ञावान्,
विवेकपूर्ण 2. समझदार, विद्वान् 3. तेज, चतुर,
तीक्ष्ण ।

बुधबुधः (पुं०) बुधग्रह, मंगल जातविनष्टा पयसामिव
सूर्यबुधा पयसि—पृ० ५.५ ।

बुधः [म्वा० उ०] दिवा० प्र०—**बोधयितुं बुध्यते**, बुद्धः ।
1. ज्ञान, समझता नवाध ज्ञाना—**ब्रह्मदम्** नाद इत्य
बोधितम्—**शि०** ११२, ११२४, नाबुद्ध कलद्रुमता विहाय
ज्ञान तमामन्यमिषवबुधम्—**रघु०** १४।४८, यदि
बुध्यते हरिगण्डि स्वतन्त्रधरा—**भ०** १५३ 2. प्रयत्न
करना देखना, परीक्षण, ध्यान से देखना—**हिरण्य**
हसमबोध नेपथ्य—**न०** १११३, **अति लज्जितवर्धमान**
बुधे च न बुधोपम—**रघु०** १४३, १२३९ 3. सोचना,
विचार करना, समझना, मानना अदि 4. ध्यान देना,
चिन्त लगाना 5. सोचना, विमर्श करना 6. ज्ञान,
सचेत होना, सोकर उठना—**दरदधि गिरमन्तर्बुध्यते**
सो मनुष्य—**शि०** ११४, ते च प्रापुनदन्वन् बुधे
वादिपूरुष—**रघु०** १०६ 7. फिर से सचेत होना,
होश में आना शरीरबोध सुग्रीव मोल्लुञ्चत्वर्ण
तासिकम्—**भट्टि०** १५।५७, **प्रेर०**—**बोधयति** न० 1. ज्ञा-
नाना, ज्ञात करना, सूचित करना, परिचित करना
2. अध्यापन करना, समाचार देना, (शिक्षा आदि)
प्रधान करना 3. परामर्श देना, चेताना—**बोधयन्त**
हितहितम्, **भट्टि०** १८।८२, **भग०** १०११ 4. पुनर्बोधित
करना, फिर जान डालना, होश दिलाता, सचेत करना
5. फिर ध्यान दिलाता, याद दिलाता—**श०** ५१
6. ज्ञाना, उठाना, उत्तेजित करना (आल०)—**आकाले**
बोधितो भ्रात्रा—**रघु०** १२।८१, ५।७५ 7. (गण-
द्वय को) फिर से सुवासित करना 8. फैलाना,
बिखाना—**मधुरया मधुबोधितमाधवी**—**शि०** ६।२०
9. बोधित करना, संवहन करना, संकेत करना
—**इच्छा** **बुध** (बो) विधित-ते, बुधयते—**ज्ञान**
की इच्छा करना आदि, **अनु** 1. जानना, समझना
2. सीखना, जानकार होना, सचेत होना, **प्रेर०**—
1. परामर्श देना, चेताना—**रघु०** ८।७५ 2. ध्यान

दिलाना—**आर्ये सध्यगन्बोधितोऽस्मि**—**श०** १, **अथ**—
जानना, ज्ञात करना, समझना—**मनु०** ८।५३, **भट्टि०**
१५।१०१, **प्रेर०**—1. ज्ञात करना, सूचित करना,
परिचय देना—**ब्रह्मबोधानुपुरुषमबोधयत्येव केवलम्**
—**शारी०** 2. उठाना, जगाना—**रघु०** १२।२३,
उद्- 1. जगाना, उठाना 2. फैलाना बिखाना—**प्रेर०**
जागरूक करना, उत्तेजित करना, प्रबुद्ध करना, जगाना,
नि- 1. जानना, समझना, ज्ञात करना—**निबोध** साको
नव चेतुकुलहलम्—**कु०** ५।५२, ३।१४, **मनु०** १।६८,
वाज० १।२ 2. मानना, विचार करना समझना, प्र-
जगाना, उठाना, आल कोलाना—**श०** ५।११, **शि०**
१।३० 3. बिखाना, फैलाना, बिखाना **माधेऽङ्गीव**
म्यसकमाङ्गी न प्रबुद्धा न सुप्तान्—**मेघ०** १०—**प्रेर०**
1. सूचित करना जगाना—**रघु०** ३।६८ 2. जगाना,
उठाना **रघु०** ५।६५ ६।५६ 3. फैलाना, बिखाना
कु० १.१५ **प्रति-** जगाना उठाना **मनु०** १।७४,
वाज० १।३३० **प्रेर०** 1. सूचित करना जगाना,
परिचित करना समाचार देना **रघु०** १।७४, **शि०**
६।८ 2. जगाना, उठाना—**बि-** जगाना, उठाना—**कु०**
५।५७ 1. जगाना, उठाना 2. फिर से सचेत
करना—**अथ मोक्षपरायणा मनी बिबशा कामवधुवि-**
बोधिता—**कु०** ६।१ **सम्-** जगाना, समझना, ज्ञात
करना, जानकार होना **भट्टि०** ११।३०, **प्रेर०**—
1. सूचित करना परिचित कराना, सूचना देना—**नवा-**
गलित्र समबोधयन्तम्—**रघु०** १३।२५ 2. संबोधित
करना ।

बुध (वि०) [बुध् + क] बुद्धिमान्, चतुर, विद्वान्,—**बु-**
1. बुद्धिमान् या विद्वान् पुरुष—**निरीय यम्य क्षिति-**
रक्षिण कथा तथादियन्ते न बुधा मुधामिव—**न०**
१।१ 2. दब, न० १।१ 3. बुध ग्रह रक्षत्येनं नु
बुधयोग—**मुद्रा०** १।६, (यहां 'बुध' का अर्थ 'बुद्धिमान्'
भी है) **रघु०** १।७३, १३।७६ । **सम०**—**ज्ञानः**
बुद्धिमान् या विद्वान् पुरुष, तातः चन्द्रमा, — **विम्व**,
घारः—**हास्यः** बुधवार, —**रत्नम्** मरकतमणि, पद्मा,
—**पुतः** पुकरवा का विशेषण ।

बुधानः [बुध् + आनच्, (कृत् च)] 1. बुद्धिमान् पुरुष, क्षत्रि
2. धर्मोपदेष्टा, अध्यापयपक्षक ।

बुधित (वि०) [बुध् + शत] ज्ञाना हुआ, समझा
हुआ ।

बुधित (वि०) [बुध् + क्लिच्] विद्वान्, बुद्धिमान् ।

बुध्यः [बुध् + क्त, बुधादेशः] 1. बर्तन की लसी 2. वेद
की जड़ 3. निम्नतम भाग 4. शिव का विशेषण
(अन्तिम अर्थ में 'बुध्य' भी) ।

बुध्य, **बुध्य** (म्वा० उ०) **बुध्यति**—ते, बुध्यति—ते 1. प्रत्यक्ष
करना, देखना, भांपना 2. विमर्श करना, समझना ।

बुभुक्षा [भुज् + सन् + ज + टाप्] 1. खाने की इच्छा, भूख 2. किसी भी पदार्थ के उपभोग की इच्छा।

बुभुक्षित (वि०) [बुभुक्षा + इतच्] भूखा, भुखमरा, भुधा-पीडित -- बुभुक्षितः किं न करोति पापम् पच० ६। १५ या बुभुक्षितः किं किकरेण भुङ्क्ते -- उड्डट।

बुभुक्षु (वि०) [भुज् + सन् + उ] 1. भूखा, सामारिक उपभोगों का इच्छुक (विप० मूलशब्द)।

बुभुक्षा [भू + सन् + ज + टाप्] होने की इच्छा।

बुभुक्षु (वि०) [भू + सन् + उ] बनने ली या होने की इच्छा वाला।

बुल् (चुरा० उभ० बोलयति -- ने) 1. इबना गोना लगाना बोलानि प्लव पयमि 2. बुडाना।

बुलिः (स्त्री०) [बुल् + इत्, कित्] 1. भय, डर।

बुल् (दिवा० पर० बुल्यति) खोदना, उगलना, उछलना।

बुल् (बम्) [बुल् + क पश्चे प्यो० कवम्] 1. बुर, भया 2. कूडा, पदार्थ 3. माया का मूला मोहर 4. धन, दौलत।

बुल् (चुरा० उभ० बुल्यति -- ने) 1. सम्मान करना आदर करना 2. अनादर करना, निष्कारपूर्वक अवहेलना ध्यायक अवहार करना।

बुल्लम् [बुल् + चय्] भुने हुए मसि का टुकड़ा।

बुल्कम् -- बुल्क।

बुलो, बुलो (स्त्री) [बुलन्तीत्यया संज्ञानि -- ब्रजन -- गद् + ल + डोष् पूरा० साधु] किसी मन्त्रासि या साधु महात्मा की गद्दी।

बुल् (म्वा० तुदा० पर० बुलति, बुलति) 1. उडाना, उगना -- बुलितमन्त्रेण भट्टि० ३।१४ 2. इलायना पर० -- पाकन पोथण करना।

बुल्कम् [बुल् + ल्युट] (होषी के) नघाउने का -- अर्थ -- शि० १८।३।

बुल्लि (म० क० कृ०) [बुल् + लन्] 1. उमा हुआ बड़ा हुआ -- भासि० २।१०५ 2. विषादः दुःखा, -- तम् हापी की विषाद -- शि० १५।१५, कि० ६।२९।

बुल् (म्वा० तुदा० पर० बुलति, बुलति) 1. उगना, बड़ना, फैलना 2. दहाड़ना, डब् 1. उडाना, उगना की करना मन्० १।१४, भट्टि० १८।२ नि, नष्ट करना, हटाना शि० १।२९।

बुल् (वि०) (स्त्री० -- ली) [बुल्, अर्जि] 1. विस्मृत, विगत, बड़ा, मूल या० १।५ 2. चौड़ा, प्रसन्न, विस्मृत, दूर तक फैला हुआ दिनीयमनो म बुल्द भूभास्तम् -- रघु० ३।५४ 3. विस्मृत, यथेष्ट, प्रचुर 4. मज्जन्, शक्तिशाली 5. मन्दा, ऊँचा देवदाह-बुल्दम्बु कु० ६।५१ 6. पूर्वविक्रमिन् 7 मटा हुआ मधन -- स्त्री० बाणी -- शि० २।६८, -- नपु० 1. वेद 2. साधवेद का मध (साम) -- मण० १०।३५ 3. बड़ा :

सम० -- अङ्ग, -- काय (वि०) रघुलकाय, विशालकाय (ग) बड़े डीलडोल का हापी, आरम्भम्, -- आरम्भ-कम् एक प्रसिद्ध उपनिषद्, मानपय बाह्यण के अन्तिम छः अध्याय, -- एका बड़ी इलायची, -- कुशि (वि०) तुदिल, बड़े पेट वाला, -- केतुः अग्नि का विशेषण, -- गृहः एक देश का नाम, -- गोल्म् तरबूज, -- शिपः नीबू का पेड़, जघन (वि०) प्रशस्तकुल्लों वाला, -- जीवस्तिका, जीवन्तो एक प्रकार का पोषा, -- डक्का बड़ा डोल, नटः, मलः सा, रात्रा विराट के दरबार में नृत्य और संगीत शिक्षक के रूप में रहते हुए अर्जुन का नाम, नेत्र (वि०) दूरदर्शी, भनीषी, पाटलः धनुष, पाळः बट या गुल्हर का बुल् भट्टारिका दुर्गा का विशेषण, भानुः अर्जि, -- रघु, 1. इन्द्र का विशेषण 2 एक रात्रा का नाम, अग्नमध का पिता राबिन् (तु०) एक प्रकार का नाम, अग्नमध का पिता राबिन् (तु०) एक प्रकार का नाम, अग्नमध का पिता राबिन् (वि०) प्रशस्त कुल्लों वाला बड़े निनबों वाला।

बुल्लिका [बुल् + ली + कन् + टाप्, ह्रस्व] उगरीय वज्र, दुग्गा, गोमा, चादर।

बुल्लतिः [बुल् + लति -- पायस्स गदि०] 1. दबा के गृह, (इनकी पत्नी 'साग' के बेटे राजा अग्रहरण के लिए दे० तारा या माया व नौके) 2. बुल्लति प्रद बुल्-मर्त्ययोग्यदुष्ट -- रघु० १२.५६ 3. एक स्मृतिकार का नाम मज्ज० १।४। मण० पुरोहितः इन्द्र का विशेषण, -- बाग, बासरः गुल्हार।

बेडा [वेट याप्] भाव, स्थिती।

बेह (म्वा० बा० बेहेने) उद्याय करना, बेष्टा करना, प्रत्या करना।

बेजिक (वि०) (स्त्री० -- की) [बेज डक्] 1. तीरसंघर्ष 2. मॉलिक 3. गर्भविषयक 4. मधुमन्त्रकी, काः मन्त्रा, नया भङ्ग, कम् कारण, मोत, मन्त्र।

बेलाव (वि०) (स्त्री० -- ली) [बिजाल + अण्] 1. बिलाव म सन्ध रम्बने वाला 2 बिलाव की (विजालता का रम्बने वाला। सम० कृतम् 'बिलाव जैसा बन' अर्थात् बिलाव की भाति अरना देव तथा दुर्भावनाओं का परिवर्तन और सगलता की आहु में छिपाय रम्बना। -- बलिः बां स्त्री सहवाम न मिलने के कारण ही साधु कोवन बिताये (इम लिए नहीं कि उसने अपनी इन्द्रियों को वम में कर लिया है) -- बलिः -- बलिम् (प०) धर्म का आह्वान करने वाला, पालकी, होंगी।

बेल्ल [बिदल + अण् बवयोर्भेदः] दे० 'बेल्ल'।

बेल्बिक [बिज + डक्] जो महिलाविषयक कायों में मनो-वाग्यपूर्वक लपनेवाला हो, प्रेमनिपुण, प्रेमी शक्तिस्थ नाम बिर्होष्ट बेल्बिकाना कुलजनम् -- मालवि० ५।१४।

बेल्ल (वि०) (स्त्री० -- ली) [बिल्ल + अण्], 1। बेल के बुल्

या लकड़ी से सबड़ या निर्मित 2 बेल के पेड़ों से
डका हुआ, - लकड़ बेल के पेड़ का फल।

बोधः [बुध् + बज्] 1 प्रत्यक्ष ज्ञान जानकारी, समझ,
आलोचना, विचार - बातों का सुखबोधाय नर्भ०
2 विचार, किस्मत 3 समझ, प्रतिभा पूजा बुद्धिमत्ता
4 जगना, आगच्छ होना जगति की स्थिति जेत-
नता 5 विना फलता फलना 6 शिक्षण परामर्श,
बोधावनी 7 जगना उठाना 8 उपार्थ पद। मम०
अतीत (वि०) अर्थ ज्ञान के बारे कर (वि०)

सिद्धान्त वाचा, मौलिक ज्ञान ज्ञान (वि०) 1 वाचन
या मष्ट (श्री उपयुक्त मन्त्र गाकर प्रारम्भ करने
स्वाध्यायी को जगना 2 शिक्षक अध्यापक पुनः
(वि०) मध्याह्नक सन्ध्या 3 अर्धरात्रि 4 वाचन
सामान्य शब्दों का अर्थ 5 ज्ञान विज्ञान 6 ज्ञान
या माल की निष्ठा का त्याग कर ज्ञान का समझ
करने हे १० मम० ११, श्री उपार्थ

बोधक (वि०) (रत्नो धिका) [बुध् + क] 1
1 पुनः दोहरा, (विशेष) 2 ज्ञान का
वाचा 2 ज्ञान देवता अध्यापक ज्ञान देना
3 अभिप्रेत 4 जगाने जगना उठाने जगना का
अर्थिया जगाम

बोधन [बुध् + णच्] 1 बुध्धन मन्त्र समूह
आध्यात्म विज्ञान ज्ञान देना मयधवाचन तादृश
बोधनम् ११० १११ 3 ज्ञान करन 4 ज्ञान
करना 3 जगाना उठाना समर्थन ज्ञान विज्ञान
अवबोधन समझबोधन वि० ११० 4 बुध् देना
श्री 1 कानिबुध्धता एकादशी जब प्रभाव 3 ज्ञान
अपनी धार माध का बोध व्यापक करने हे 2
उत्तरी एकादशी 2 बनी पीरल।

बोधात्म [बुध् + आनच्] 1 बुद्धिमान् पुरुष 2 बुद्धि
का विशेषण।

बोधि [बुध् + इन्] 1 पूर्ण मति या ज्ञान का प्रकाश
2 बुद्ध की ज्ञान से प्रकाशित प्रतिभा 3 पावन वर
वृक्ष 4 मुग्धा 5 बुद्ध का विशेषण। मम० तब
हुकः बुधः पावन वटवृक्ष, व (त्रिनिधो का)
अर्थात्, लक्ष्मः बौद्ध मत्तामो या महात्मा जो पूर्ण
ज्ञान की उपलब्धि के मार्ग पर अग्रसर है तथा जिसके
केवल कुछ ही जन्म अवशिष्ट हैं त्रिनिधो पार करने
वह पूर्णबुद्ध की स्थिति को प्राप्त कर लेता और
जन्ममरण के चक्र से छुटकारा पा जायगा (यह
स्थिति पावन तथा सत्कृत्यों की दीर्घमुक्तता को पार
करके प्राप्त की जाती है) - एषविचरतिविलसितैरति-
बोधिमन्त्रै मा० १०२१।

बोधिनि (भू० क० इ०) [बुध् + नि + क्त] 1 ज्ञानाया
गवा, सुचित किया गया, अवगत कराया गया 2 फिर

ध्यान दिलाया गया 3 परामर्श दिया गया, शिक्षण
प्रदान किया गया।

बौद्ध (वि०) (स्त्री०-डी) [बुध् + णच्] 1 बुद्ध या
समझ से संबन्ध रखने वाला 2 बुद्ध विषयक, बुद्ध
द्वारा प्रचारित धर्म का अनुयायी।

बौध [बुध् + णच्] बुध् का पुत्र, पुत्रवा या विशेषण।
बौधायन [बौध + भाग्य पुराण - बौध + क] एक
प्राचीन मति का निरूपक नाम जिसने श्रीगदि सूक्तों
की रचना की।

बुध् [बुध् + लृच्] 1 सूर्य 2 बुद्ध की बुद्धि
3 इन 4 मन्त्र का पौषा 5 सीमा (पु० ?) 6
बुद्ध का विषयक नाम।

बुद्धम् [बुध् + मन्त्र नकारव्याकारे] ज्ञानो रत्नम् - वे
दे ज्ञान के अग्रगण्य या अति महत्त्व के अकारणोप
पद। रत्नम् वा।

बुद्धा (वि०) [बुद्ध + वात्] 1 बुद्ध से संबद्ध
2 बुद्ध या प्रकाशित से संबद्ध 3 पूर्ण ज्ञान के प्रवृत्त
संबद्ध, पावन पावन 4 बुद्धि के योग्य 5 बुद्धि
के योग्य श्रोतार्यपूर्ण या आर्ग्यकारी, - बुद्ध 1 वेदा
मति का एक विचार महावीर १० ११० 2 लघुपुत्र
का बुद्ध 3 पावन का पद 4 मूख नामक दास
5 बुद्ध 6 बुद्ध का विशेषण 7 कानिबुध्धता का
विशेषण बुद्धा दुर्गा या विशेषण, मम० - बुद्ध विज्ञान
का विशेषण।

बुद्धात्मन् (पु०) [बुद्ध + मन् + वात्] अति का
विशेषण।

बुद्धता मन्त्र [बुद्ध + तात् + वात्] 1 पा-
न भाग्य की न होना 2 12 प्रकृति।

बुद्धान (पु०) [बुध् + मन्त्र नकारव्याकारे] ज्ञानो
रत्नम्। 1 परामर्श या निर्गाकार और निर्बुद्ध
समझ ज्ञान है (वेदान्तियों के मतानुसार बुद्ध ही
इस दुःखमय ससार का निर्माण और उपादान कारण
है यही भवभ्यापक आत्मा और विश्व की जीव
शक्ति है यही वह मूलतत्त्व है जिससे ससार की सब
वस्तुएँ पैदा होती हैं तथा जिसमें फिर वह लीन हो
जाती है - अस्ति तावान्त्थुबुद्धमुक्तस्त्वभाव सर्वत्र
संबन्धितसमन्वित बुद्ध-आरी०) नमोभूता बुद्धिनि-
भुवनः - बुद्ध मन्त्र - मन्त्र ३।८४, कु० ३।१५
2 स्तुतिपरक श्रुति 3 पुनीन पाठ 4 वेद - कु० १।११,
उत्तर० १।१५ 5 ईश्वरपरक पावन अक्षर, २०
- एकक्षर पर बुद्ध मन्त्र २।८१ 6 पुरोहितवर्ग
या बुद्धि सम्बन्ध - मन्त्र १।३२ 7 बुद्धि की
शक्ति या ऊर्जा - मन्त्र ८।४ 8 कानिबुध्धता का
तपस्या 9 बुद्धवर्ग, लक्ष्म - भावस्ते बुद्धि वर्तते
- स० १ 10 बोध या निर्वाण 11. बुद्धिमान्,

अध्यात्मविद्या 12. वेदों का शाङ्ख्यभाव 13. बनवीसत,
उपनि, — (पुं०) परमात्मा, ब्रह्मा, पावन विदेवों
(ब्रह्मा, विष्णु, महेश) में प्रथम विष्णुको संसार की
रचना का कार्य सीया गया है (संसार की रचना का
वर्णन बहुत ही शायें में विष्णु २ है, मनुस्मृति के
अनुसार यह विश्व संघकारावृत्त था, स्वयम्भु मगवान्
ने संघकार को हटा कर स्वयं को प्रकट किया। सबसे
पहले उसने जल पैदा किया तथा उसमें बीजवपन
किया। यह बीज स्वर्णिम अंडे के रूप में हो गया,
जिससे ब्रह्मा (संसार का स्रष्टा) के रूप में यह स्वयं
उत्पन्न हुआ। फिर ब्रह्मा ने इस अंडे के दो अर्ध
किये—जिससे उसने सुलोक और अंतरिक्ष को जन्म
दिया, उसके पश्चात् उसने दस प्रजापतियों (मानस
पुत्रों) को जन्म दिया जिन्होंने सृष्टि के कार्य को पूरा
किया। दूसरे वर्णन (रामायण) के अनुसार ब्रह्मा
से ब्रह्मा का जाग्रत हुआ। उससे फिर मरीचि का
जन्म हुआ, मरीचि से कश्यप और कश्यप से फिर
विश्वस्वाम् ने जन्म लिया। विश्वस्वाम् ने मनु की
उत्पत्ति हुई। इस प्रकार मनु ही मानव संसार का
रचविद्या है। तीसरे भूतान्त के अनुसार स्वयंभु ने
कुम्हरे अंडे को दो अर्धों (नर और नारी) में
विभक्त किया उससे विराज और मनु का जन्म
हुआ—सु० सु० २१७, मनु० ११३२ तथा जाये।
पौराणिक कथा के आधार पर ब्रह्मा का जन्म उस
कमल से हुआ जो विष्णु की नाभि में उगा था। स्वयं
अपनी पुत्री सरस्वती से उसने अर्धव संघ द्वारा सृष्टि
रचना की। ब्रह्मा के प्रारम्भ में पाँच तिर थे, पशु
एक तिर शिव ने अपनी बनामिका से काट दिया था
पुत्रीय मेघ की आश से मरुम कर दिया। ब्रह्मा की
सहारी हुंल है। उसके अनंत विशेषण हैं त्रिनमें से
अधिकोड उसकी कमल में उत्पत्ति का संकेत करते
हैं) 2. शाङ्ख्य—स० ४४ 3. मत्त 4. सोमयाग में
विष्णु चार ऋत्विजों (पुरोहितों) में से एक
3. अर्धज्ञान का श्राव 6. सूर्य 7. प्रतिभा 8. सात प्रजा
पतियों (मरीचि, अग्नि, अमरिख, पुलस्त्य, पुलह,
मनु और वसिष्ठ) का विशेषण 9. बृहस्पति का
विशेषण 10. शिव का विशेषण। स०—अस्वरम्
पावन अस्वर 'अ',—अस्वरम्: शोभा,—अस्वरम्: वेद पाठ
करते समय हाथ जोड़ कर बाहर बमिवादन
2. आध्यात्म या ब्रह्म का सम्मान (वेद पाठ के प्रारम्भ
क्या समाप्ति पर),—अस्वरम् 'ब्रह्मा' का अंडा,
बीजब्रह्म अंडा जिससे यह स्रष्टा संसार
का विश्व का उत्पन्न हुआ—ब्रह्माध्यात्मवचः—स० १.
—पुराणम् 1. कदाच पुण्यों में से एक पुराण,
—अधिकांश गोदावरी नदी का एक विशेषण,

—अधिवचः,—अधिवचनम् वेदों का अध्यात्म,
—अध्यात्मः वेदों का अध्यात्म,—अध्यात्म (मपुं०) गोमूत्र,
—अध्यात्मः—नः मारायन का विशेषण,—अध्यात्मम्
1. ब्रह्मान का अध्यात्म 2. परमात्मा में अनुरक्ति
3. एक प्रकार का जादू या मन्त्र,—अध्यात्मम् ब्रह्मा से
अधिष्ठित एक अस्त्र, आध्यात्मः शोभा,—आध्यात्मः ब्रह्म
में लीन होने का आध्यात्मिक सुख या आनन्द—ब्रह्मान्त्य
साक्षात्काम—महावीर० ७।३१, आरम्भः वेदों का
पाठ आरंभ करना—मनु० २।७१, आध्यात्मः (हस्तिसाधु
के पवित्रमोक्ष में) सरस्वती और दुष्यन्ती नदियों के
बीच का मार्ग—सरस्वती दुष्यन्तीनद्योर्ध्वदन्तर, तं
देवनिर्मितं देशं ब्रह्मावर्तं प्रचक्षते मनु० २।१७, १९,
मेघ० ४८,—आध्यात्मम् गहन समाधि के लिए विशिष्ट
आध्यात्म,—आध्यात्मः (स्त्री०) प्राचीनपरक मर्षों का पाठ,
स्वस्तिवाचन, वे० ब्रह्मपञ्च, उच्छ्रिता वेदों को मूल
जाना या उनकी उपेक्षा करना—मनु० १।१५७,
(अधोतवेदस्यानध्यासेन विस्मरणम्—हुल्नु०),—उच्छ्रित
वेद की व्याख्या करना, ब्रह्माध्यात्मविषयक समस्याओं
पर विचार विमर्श,—उपवेशः ब्रह्मान्त्य या वेद का
शिक्षण, 'मेघ' (पुं०) आकाश का ब्रह्म,—आध्यात्मः (ब्रह्माधि
या ब्रह्म अध्यात्म) शाङ्ख्य अध्यात्म,—देशः मङ्गल, जिन्ना
(कुक्षेत्र) व मत्स्याध्यात्म पञ्चालाः शूतेनकाः, एष
ब्रह्माधिदेशो वे० ब्रह्माध्यात्मोदन्तम्,—मनु० २।१९१,
—कर्मका सरस्वती का विशेषण,—करः पुरोहित वर्ग
को दिया जाने वाला सुख, कर्मन् (मपुं०)
1. शाङ्ख्य के धार्मिक कर्तव्य 2. यज्ञ के चार मुख्य
पुरोहितों में शाङ्ख्य का पद, कर्मन्: ब्रह्मा की आज्ञा,
—कर्मन्: ब्रह्मान्त्य से सबड वेद का भाग, कर्मन्
महान्त्य का वेद,—कर्मन्: एक प्रकार की साधना
—अधोरात्रोचितो भूत्वा पूर्णमास्या विशेषतः, पञ्चमय
विनेम् प्रातर्ब्रह्मकूर्चमिति स्मृतम्,—हुल्नु (वि०)
स्मृति करने वाला (पुं०) विष्णु का विशेषण,—कर्मन्:
एक ज्योतिषिद् का नाम जो सन् ५९८ ई० में उत्पन्न
हुआ था,—शोभा: विश्व,—गीरकम् ब्रह्मा से अधिष्ठित
अस्त्र का सम्मान—मट्टि० १।७९, (आ भूम्भोको
बाह्य पाश धति),—आध्यात्मः शरीर का विशिष्ट जोड़,
ब्रह्मपाठ,—ब्रह्म,—विज्ञातः—ब्रह्म,—रक्तम् (मपुं०),
—रक्तम्: एक प्रकार का मृत, पिशाच, ब्रह्मराक्षस
को जीवन भर क्षुणित क्षुणित में कैद रहता है दूसरों
की पत्नियों का तथा शाङ्ख्यों की संपत्ति का अपहरण
करता है (परस्व वीक्षित हुक्को ब्रह्मस्वमपहरण
करण्ये निषेध वेदे अस्ति ब्रह्मराक्षसः—पाञ्च० ३।१२१२,
सु० मनु० १२।९० बी),—अस्त्रकः शाङ्ख्य की हत्या
करने वाला,—आध्यात्मः ब्रह्म के ब्रह्मे दिन की रक्तका
स्त्री, शोभा: 1. वेद का अस्वर पाठ 2. पावन स्रष्टा,

वेदवक्ता—उत्तर० ६।९ (पांडांतर), ज्ञः ब्राह्मण की हृत्वा करने वाला, —अथ १ ब्राह्मिक शिष्यवृत्ति, वेदाध्ययन के समय ब्राह्मण बालक का ब्रह्मचर्यजीवन, जीवन का प्रथम आश्रम अधिकृतब्रह्मचर्य ब्रह्म-स्वाश्रममाचरोत्तर—मनु० ३।२, २।२४९, महावीर० १।२४ २ ब्राह्मिक अध्ययन आरम्भसमय ३ कौमार्य, सतीत्व विरति, इन्द्रियनिग्रह, (यै) वेदाध्ययनसीक, —दे० ब्रह्मचारिन् ((यै) सतीत्व, कौमार्य, ब्रह्मचर्य सतीत्व रक्षण की प्रतिज्ञा स्थापनम् सतीत्व या ब्रह्मचर्य में गिर जाता, इन्द्रियनिग्रह का अभाव —चारिकम् वेदों के विद्यार्थी का जीवन, चारिन् (पु०) १ वेद का विद्यार्थी जीवन के प्रथम आश्रम में वर्तमान ब्राह्मण या यज्ञोपवीत धारण करने के पश्चात् दीक्षित होकर गुरुकुल में अपने गुरु के साथ रहना है तथा वेदाध्ययन के समय ब्रह्मचर्याश्रम के नियमों का पालन करता रहना है जब तक कि वह गुरुस्वाश्रम में प्रविष्ट नहीं हो जाता है मनु० २।६१ १३० ६।८७ २ या आजन्म ब्रह्मचारी रहने की प्रतिज्ञा करना है चारिकी १ दुर्गा का विशेषण २ वह स्त्री जो सतीत्व व्रत का पालन करती है या कार्तिकेय का विशेषण—आर० ब्राह्मण की पत्नी का प्रेमी —बीचिन् (पु०) जो ब्रह्मज्ञान के द्वारा ही अपनी आजी विका कामता है—अ (वि०) जो ब्रह्म को जानता है (ब) १ कार्तिकेय का विशेषण २ विष्णु का विशेषण—आत्मन् सत्यज्ञान, दिव्यज्ञान विश्व की ब्रह्म के साथ एकरूपता का ज्ञान, —अष्टेष्ट ब्राह्मण का बड़ा भाई अष्टोत्तिस् (नपु०) ब्रह्म या परमात्मा की ज्ञानश्रद्धाति तत्त्वम् परमात्मा का यथार्थ ज्ञान, तेजस् (नपु०) १ ब्रह्म को कीर्ति २ ब्रह्म की कान्ति, बहु कीर्ति या कान्ति जो ब्राह्मण को चारों शर में घेरे हुए समझी जाती है, अः वेदज्ञान के प्रदाता गुरु—अथ १ ब्राह्मण का श्राप २ ब्राह्मण का दिया गया उपहार ३ शिव का विशेषण, —आत्मन् १ वेद पढ़ाता २ वेद का ज्ञान जो उत्तराधिकार में या वशानुक्रम से प्राप्त होता है —आत्मादः १ ब्राह्मण, जो वेदों को आनुवंशिक उपहार के रूप में प्राप्त करता है २ ब्राह्मण का पुत्र, —आत्मा सहस्रत का पेड़, —विन्मन् ब्रह्मा का दिन, —वैत्यः बहु ब्राह्मण जो राजस मन जाय—मनु०, ब्रह्मवह, —विष्-हेचिन् (वि०) १ ब्राह्मणों से घृणा करने वाला २ वेदविहित कृत्यों या भक्ति का बिरोधी, अपावन मित्रोपवरवादी, —हेचः ब्राह्मणों की घृणा, —मन्वी सरस्वती नदी का विशेषण, —मात्र, विष्णु का विशेषण, —निर्वर्णम् परमेश्वर में लीन होना, —निष्ठ (वि०) परमात्म-विषय में लीन, (अः) सहस्रत का पेड़, —वज्र १ ब्राह्मण का पद या वर्ण २ परमात्म का स्थान,

—वक्त्रिः कुल नामक वाद्य, —वरिन् (स्त्री०) ब्राह्मणों की सेवा, —वाक्त्रः डाक का पेड़, —वारत्तवन् वेदों का पूर्ण अध्ययन, सारे वेद—उत्तर० ४।९, महावीर० १।२४, —वाक्त्रः ब्रह्मा द्वारा अधिकृत अस्त्र विशेष मट्टि० १।७५, —विन् (पु०) विष्णु का विशेषण, —वृक्षः १ ब्राह्मण का बेटा २ हिमालय की पूर्वी सीमा से निकलने वाला तथा गया के शाल मिल कर बंगाल की खाड़ी में गिरने वाला 'वृक्षपुत्र' नाम का दरिया, (बी) सम्प्रती नदी का विशेषण वृक्ष, —वृत्ती १ (स्वर्ण में) ब्रह्मा का नगर २ वाराणसी, —वृत्तम् बड़ाष्ट पराणों में से एक का नाम, प्रकृतः ब्रह्मा के ही वर्ष बीतने पर सृष्टि का विलास जिसमें स्वयं परमात्मा भी विजीन माना जाता है—व्यक्तिः (स्त्री०) परमात्मा में लीन होना—अन्तः ब्राह्मण के लिए निरस्कार-मूक शब्द, अतोय ब्राह्मण—मा० ४, विक्रम० २ २ जो केवल जाति से ब्राह्मण हो, मात्र मात्र का ब्राह्मण—बीजम् इक्ष्वरवाचक अक्षर छ, —ब्रुवाच जो ब्राह्मण होने का बहाना करता है, —अवन्म ब्राह्मण का आवास—आयः सहस्रत का वृक्ष, —आयः परमात्मा में लीन होना, मूल्यम् ब्रह्मा की सृष्टि—अय० ८।१९, —भूत (वि०) जो ब्रह्मा के साथ एक रूप हो गया है, परमात्मा में लीन, —भूतिः (स्त्री०) सद्भा, मूल्यम् १ ब्रह्म के साथ एकरूपता २ ब्रह्म में लीनता, मोक्ष, —भोजन—अ ब्रह्ममूर्ध प्रतिमाजगाम रघु० १८।२८ ब्रह्ममूर्धम् कण्ठे अय० १४।२६, मनु० १।९८ २ ब्राह्मण, ब्राह्मण का पद या स्थिति, —भूय (नपु०) ब्रह्म में अय, —अयलवेला लक्ष्मी का विशेषण—भोजिता, वेदान्त-भोजन जिसमें ब्रह्म या परमात्माविषयक अर्थ है, —भूति (वि०) ब्रह्म का रूप रखने वाला, —भूतवृत्त शिव का विशेषण—भूतवृत्तः मूत्र वात का पोषा, —आयः (गृह्य द्वारा अनुष्ठेय) दैनिक पंचयज्ञों में से एक, वेद का अध्ययन तथा तत्त्वर पाठ—अध्ययन ब्रह्म यज्ञ मनु० ३।७० (अध्ययनशब्देन अध्ययनमपि गृह्यते—कुल०), —कीर्ण ब्रह्मज्ञान का अनुशीलन या अभिषन्धन, —कीर्ण (वि०) ब्रह्म से उत्पन्न, —रत्नम् ब्राह्मण को दिया गया मूल्यवान् उपहार, —रत्नम् मूर्ध में एक प्रकार का बिस्तर जहाँ से जीव इस शरीर को छोड़ कर निकल जाता है, राजसः दे० ब्रह्मवह, —रत्तः शुक्रदेव का विशेषण, —रत्तिः १ ब्रह्मज्ञान का मंडल या समस्त राक्षि सपूर्ण वेद २ परब्रह्म का विशेषण, —रीतिः (स्त्री०) एक प्रकार का रीतिर—रे (के) आ, निश्चितम्—रेचः विद्याता के द्वारा मस्तक पर लिखी गई वक्तियां जिनसे अनुष्ठ का आश्रय प्रकट होता है अनुष्ठ का श्रावण, —रीचः ब्रह्मा

वर्ष के माने हुए चार वर्षों में सर्वप्रथम वर्ष का, (पुष्य - बह्मा - के मूल से उत्पन्न - ब्राह्मणोऽयं मूलमासीत् ऋक्० १०।१०।१२, भाष्य० १।३१, १६) ब्राह्मण जन्मना जायते बृहत् संस्कारैर्हि वि उच्यते, विधया याति विप्रस्य तिमि, श्रोत्रिय उच्यते, या - ब्राह्मण कुलेन जन्ते स्वाध्यायेन धृतेन च, एतियुक्तो हि यस्मिन्नेति स हि वि उच्यते) 2 पुरोहित, ब्रह्मशाली या धर्मशास्त्री 3 अग्नि का विशेषण 4 वेद का वह भाग जो विधि यज्ञ के विषय में मन्त्रों के विनियोग तथा विधियों का प्रतिपादन करता है साथ ही उनके मूल तथा विवरणात्मक व्याख्या का तत्संबन्धी निदर्शनों के साथ जो उपाध्यायों के रूप में विद्यमान हैं प्रस्तुत करता है वेद के मन्त्रभाग से यह विलुप्त पृथक् है ७ वैदिक रचनाओं का समूह जिसमें ब्राह्मण अथ मन्त्रमणि है (वेद के मन्त्रों की मूल अपौरुषेय या धृति माना जाता है) प्रत्येक वेद का अपना पुनरुक्त ब्राह्मण है ये हैं ऋग्वेद के मेन्देय या आश्वलायन, और यजुर्वेद की या मन्वायन ब्राह्मण है यजुर्वेद का शतपथ सामवेद का श्वेताश्वि धर्षिषा तथा छ और है, अथर्ववेद का गोपय ब्राह्मण है। सम० अतिरिक्त ब्राह्मणों के प्राग्विक सदीय या निरस्कार सूचक स्वभाव ब्राह्मणों का अनादर ब्राह्मणान्तिकमयागो भवताव भूतय महावीर० २।८० अपाध्याय ब्राह्मणों की शरण में जाता अम्युपवर्षित (स्त्री०) ब्राह्मण की रक्षा या पालन पोषण ब्राह्मण के पति प्रदर्शित हुआ मनु० १।८७

जन्म ब्राह्मण की हत्या करने वाला - जातम्, - जाति (स्त्री०) ब्राह्मण की जाति ओषिका ब्राह्मण के लिए विहित कृति के साधन इष्यम् स्वयं ब्राह्मण की संपत्ति, निम्नक ब्राह्मणों की निम्न करने वाला ब्रह्म जो ब्राह्मण होने का बताना करता है नाम मात्र का ब्राह्मण जो ब्राह्मण जाति के मीन कर्तव्यों का पालन नहीं करता है बहवा ब्राह्मणबुद्धि निगमान्त दश० मनु० ७।११/१२० भूविष्ट (वि०) जिसमें अधिकतर ब्राह्मण ही रहते हैं यथ ब्राह्मण की हत्या, ब्रह्महत्या सतर्पणम् ब्राह्मणों के मित्राना या मृत्यु करना।

ब्राह्मणकः [ब्राह्मण + कन्] 1 अयोग्य या नीच ब्राह्मण नाम मात्र का ब्राह्मण 2 एक देश का नाम जहाँ बौद्धा ब्राह्मणों का वास हो।

ब्राह्मणमात्र (अभ्य०) [ब्राह्मण + मात्र] 1 ब्राह्मणों में 2 ब्राह्मण की पदवी की - जैसा कि ब्राह्मणान्त्र भवति वनम् में।

ब्राह्मणान्त्रिणम् (पु०) [ब्राह्मणे विहितानि शास्त्राणि सन्ति द्वितीयायै वचन्युपस्थापनम् - अलुक् ४०, बंश् + इति]

एक पुरोहित का नामान्तर, ब्रह्मा नामक ऋषिच का सहायक।

ब्राह्मणी [ब्राह्मण + ङीप्] 1 ब्राह्मण जाति की स्त्री 2 ब्राह्मण की पत्नी 3 प्रतिमा (नीलकण्ठ के मतानुसार बुद्धि) 4 एक प्रकार की छिपकली 5 एक प्रकार की भिरब 6 एक प्रकार का वास। सम० शक्ति (पु०) ब्राह्मण स्त्री का प्रेमी।

ब्राह्मण्य (वि०) [ब्राह्मण - घ्यञ्, वा यत्] ब्राह्मण के योग्य, -अथ शनिप्रह का विशेषण अथ 1 ब्राह्मण की पदवी या दर्जा, पुरोहित्य या पात्रकीय कृति, सत्य शपथ ब्राह्मण्येन - मुक्छ० ७ पत्र० १।६६, मनु० ३।१७ ७।२२ 2 ब्राह्मणों का समुदाय।

ब्राह्मो [ब्राह्म + ङीप्] 1 ब्रह्म की मूर्तिमयी शक्ति 2 वाणी की देवी सरस्वती 3 वाणी 4 कहानी, कथा 5 पारमिक प्रथा या रिवाज 6 रोहिणी नक्षत्र 7 दुर्गा का नामान्तर 8 ब्राह्मविवाह की विधि में परिणीता स्त्री 9 ब्राह्मण की पत्नी 10 एक प्रकार की बूढ़ी 11 एक प्रकार का पीपल 12 नदी का नामान्तर। सम० कथ बाराही कंद, पुन ब्राह्मी का पुन - २० ऊ०, मनु० ३।२७, ३७।

ब्राह्म्य (वि०) (स्त्री० - ह्यप्) [ब्राह्मण - घ्यञ्] 1 ब्रह्मा अर्थात् विद्या से संबंध रखने वाला 2 परमात्मा से संबंध 3 ब्राह्मणों से संबंध, ब्राह्म्य वाच्यम्, ब्रह्मना विस्मय। सम० ब्रह्मते - ब्राह्ममहर्षि, - ब्रह्म अतिविस्मय २० ब्रह्मयज्ञ।

ब्रह्म (वि०) [ब्र + क्] बनने वाला, बहाना करने वाला, अपन आपका उस नाम से पुकारने वाला जो उसका वास्तविक नाम न हो (शमस के अन्त में) यथा ब्राह्मणब्रह्म, अविमर्श में।

ब्रू (बदा० उभ०) ब्रवीति कृते या जाह् (भाष्यकायक लकारों में इस वातु में अनाधारण परिवर्तन होता है इसके रूप ब्रू वातु से बनाये जाते हैं) 1 कहना बोलना वाग करना (विकर्मक वा०) तां ब्रूयात् २ मेष० १०१, गम यकाश्चित् सर्वं भ्राता कृते ग्य विद्वत् भट्टि० ६।१ या भागवत वर्म कृते - मित्रा० किन्वा प्रतिब्रूमहे - भा० १।४६ 2 कहना बोचना मकेत करना (किसी व्यक्ति या वस्तु की ओर) अहं तु शकृन्तनामपि कृत्वा ब्रवीमि ज० २ 3 बोधना करना, अकथन करना, प्रकाशित करना निवृत्त करना बुझते हैं कलेन साधनो न तु कण्ठेन निबन्धे नेतिताम् न० २।४५, रत्न० २।१३ 4 नाम लेना, पुकारना, नाम रखना छवि दद्यां ये कवचस्तन्मणिमय्य ते ब्रूते श्रुत० १५ 5 उत्तर देना - ब्रूहि मे प्रश्नान्, अनु कहना, बोलना, बोधना करना, निवृत्त - व्याख्या करना, व्युत्पत्ति बतलाना,

प्र—कहना बोझना, बात करना—महि० ८८५,
प्रति—, उत्तर में बोझना, उत्तर या बचाव देना

—प्रत्ययवीथीयम्—रघु० २।४२ वि—, १. कहना,
बोझना २ मलत्त कहना, भिन्ना वतकाना ।
लोभकम् (नपुं०) करा, जात, पात ।

अ

अः [वा + ङ] १. शुक्र ग्रह का नामान्तर २ अय, भ्रान्ति,
आमास, — अय १ तारा २ मज्ज ३ ग्रह ४ राशि
५ सत्ताइस की संख्या ६ मधुमक्खी । सम० —ईकः,
—ईकः सूर्य,—अयः,—अयः १ तारापूर्व, मज्जपूर्व
२ राशिपूर्व ३ ग्रहों का राशिपूर्व में अयय —मोक्षः
तारामंथल,—अयम्—अयम् राशिपूर्व, वतिः
अयमा,—अयकः ज्योतिषी ।

अधिकका (?) जीमूर ।

अज (मू० क० ङ०) [अज् + ष] १ विभक्त, निषी-
कृत, निदिष्ट २ विभाजित ३ मेधित, पूजित ४ अस्त,
वर्तित ५ अनुरक्त, सम्यक्, अदाल, निष्ठावान्
—अज० १।३४ ६ प्रसाधित, (भोजन आदि) पक्व
हे० अज्,—अजः पूजक, आराधक, उपसक्त, पुजारी
वा दास, स्वाभिमत नीकर—अजोऽपि मे सखा वेति
—अज० ४।३, १।३१, ७।२३,—अजम् १ हिम्मा,
मात २ भोजन—अज० ३।७४ ३ उबाला हुआ चावल,
मात उत्तर० ४।१ ४ पानी में डाल कर पकाया
हुआ कोई भी अन्न । सम०—अजिमात्रः भोजन की
इच्छा, भूख,—उपसाधकः रसोद्भवा,—अजः भोजन की
वासी,—अजः नावा प्रकार के वृक्ष अर्थों से तीव्र की
वई वृक्ष,—अजः रसोद्भवा,—अजम् भूख,—अजः भोजन
मात्र पर दूसरों की सेवा करने वाला नीकर, जिसे
सेवा के बदले केवल भोजन ही मिलता है—अज०
८।४१५, इच्छः भोजन से अरुचि, मदाग्नि, अज्ज-
मात का मोह,—रौचन (वि०) भूख को उत्तेजित
करने वाला,—अजल (वि०) अपने पूजक और भक्तों
के प्रति कुपान्,—अजाना १ अतृप्त-कल (प्राथियों की
बात सुनने का कर्म) २ भोजन-गृह ।

अजितः (स्त्री०) [अज् + क्त] १ विजय, पुत्रकरण,
विभाजन २ प्रमाण, अर्थ, हिम्मा ३ उपसना, अनु-
रक्ति, सेवा, स्वाभिमत—अज० ७।३७, रघु० २।६३,
मुद्रा० १।१५ ४ सम्मान, सेवा, पूजा, अद्वय ५ विन्यास,
अवस्था—रघु० ५।७४ ६ सजावट, अलंकार, भूषण
—अजितमुक्ताफलमस्तित्वे—अज० ७।१०, १४, रघु०
१३।५९, ७५, १५।३० ७. विजय । सम०—अज
(वि०) विजय अविवाहन करने वाला,—अजम्,

पूर्वकम् (अध्य०) भक्तिपूर्वक, सम्मानपूर्वक, आज्
(वि०) १ अर्पण, अद्वय २ वृद्ध अनुराग रखने
वाला, निष्ठावान्, अद्वय, आर्ष भक्ति की रीति
अर्थात् परमात्मा की उपासना (शास्त्रत आग्नि और
पौष्ट प्राप्ति की रीति 'भक्ति वा उपासना' ही समझी
जाती है), अर्थः सानुराग निष्ठा, अद्वयपूर्वक उपा-
सना, आर्षः अनुराग का विश्वास ।

अजितम् (वि०) [अजित + मनु] १ उपसक्त, अद्वय
२ निष्ठावान्, स्वाभिमत अनुरागी ।

अजित (वि०) [अजित, आ + क] स्वाभिमत,
विश्वासपात्र (जैसे कि बोझ) ।

अज (पुरा० उच०—अजयति—ते भजित) १ आना,
निगलना यथाभिष्ट इमे मन्त्र्यैर्मन्त्र्ये स्वापरीर्षीन्
अज० १ २ उपयोग में आना, उपयोग करना
३ बर्बाद करना नष्ट करना ४ काटना ।

अज [अज् + अज्] १ आना २ भोजन ।

अजक (वि०) (स्त्री०—अजिका) [अज् + क] १ आने
वाला, निर्वाह करने वाला २ देव, भोजनग्रह ।

अजल (वि०) (स्त्री०—अजी) [अज् + ल] आने वाला
निगलने वाला अज् आना, निगलना जीविका
पचना ।

अज (वि०) [अज् + अज्] आने के योग्य, भोजन के
लायक, अजम् कोई भी भोज्य पदार्थ आज पदार्थ,
आहार, (आज० मी)—अजयभक्तयो प्रीतिविपरीतेषु
कारणम् हि० १।५५, अज० १।१११। सम० अजः
(अजयकार मी) पाक रसोद्भवा ।

अज [अज् + अ] १ सूर्य के बारह रूपों में एक, सूर्य
२ अजमा ३ शिव का रूप ४, अज्जी किम्मत, आश्व,
मुलद नियति, प्रसन्नता आने भग आशीनस्व—रघु०
७।३, अजमिन्त्राश्च बाधुश्च अर्ध सत्पथयो इव आश्व०
१।२८२ ५ सम्प्रभता, समृद्धि ६. मयिवा, अज्यता
७ प्रसिद्धि, कीर्ति ८. लावण्य, लोचन ९ उच्छर्ष,
अज्यता १० प्रेम, स्नेह ११. प्रेम्भवा रगरेभिर्वा, केनि,
आमोव १२. स्त्री की योगि—आश्व० ३।८८, अज०
१।२३७ १३. समृद्ध, वैदिकता, धर्म की आत्मा
१४ अजल, अज्यता १५. अज्यता का अभाव, अज्यतिक

विषयों में विरति 16. मोक्ष 17. सामर्थ्य 18. सर्व-
शक्तिमत्ता (मनु० भी अन्तिम १५ अर्थों में),—ननु
उत्तराफल्गुनी नक्षत्र । सम०—अक्षरुरः (आयु० में)
चिह्न, योगिहार पर की गूटिका, —आश्विनम् वायव्य-
मुख प्रधान करना, ध्वजः शिव का विशेषण, —देवः
पूर्ण स्वेच्छाधारी, लम्पट- देवता विवाह की अधि-
ष्ठात्री देवता, वैश्वतम् उत्तराफल्गुनी नक्षत्र, अश्विनः
विष्णु का विशेषण, भस्मकः चिट, दलाल, भवुआ,
वैश्वतम् वैवाहिक आनन्द की उद्घोषणा ।

भगम्बर [भग + भृ + णिच् + लृच्, भृच्] एक राग जो
गुवाचन में ब्रह्म के रूप में होता है ।

भगवत् (वि०) । भग + भवत् । 1 यशस्वी प्रसिद्ध
2 सम्मानित अद्वैत, दिव्य, पवित्र (देव उद्देश्य तथा
अर्थ प्रसिद्धि) 3 यममाननीय व्यक्तियों का विशेषण ।
—अथ भगवन् कुशली काश्यप ७।० ५ भगवन्वरक-
नय जन रघु० १।८१ इसी प्रकार भगवान् चाण्डदेव
—आदि (पु०) 1 देव देवता 2 विष्णु का विशेष
वर्ण 3 शिव का विशेषण 4 जिन का विशेषण
5 बुद्ध का विशेषण ।

भगवतीयः [भगवत् + छ] विष्णु का पूजक ।

भगवत्सु [भज् + कालन कृत्वम्] भोगी ।

भगवत्सु (पु०) [भगवत् + इति] शिव का विशेषण ।

भगिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [भग + णि] 1 यज्ञा-
कुलता, भग्न भाग्यशाली 2 वैभवशाली गान्धारी ।

भगिनिका [भगिनी + कन् + टाप्, इत्वम्] बहन ।

भगिनी [भगिन् + ङीप्] 1 बहन 2 भोग्यायवती स्त्री

3 स्त्री० । सम० पतिः, भर्ता (पु०) बहन का
पति, बहवाई ।

भगिनीयः [भगिनी + छ] बहन का पुत्र, भानवा ।

भगीरथः [?] एक प्राचीन मूर्धन्यो राजा का नाम समर
का प्रवीर, जो अविनाश धार साधना करके स्वर्ग में
दिव्य गया का उतार कर इस पृथ्वी पर लाया तथा
राजा समर के ६० हजार पुत्रों (पूर्वपुरुषों) की प्रथम
को पवित्र करने के लिए इस पृथ्वी में पानाल लोक
को ले गया । सम० पञ्चः,—प्रथम भगीरथ का
प्रवास जो किसी अतिशुद्ध कार्य या श्रीमन्त्रों को
आत्मकारिक रूप से प्रकट करने के लिए प्रयुक्त किया
जाता है, धुता गया का विशेषण ।

भग्न (भू० क० क०) [भञ्ज् + क्त] 1 टूटा हुआ, हड्डी
टूटी हुई, टूटा फूटा, फटा-पुराना 2 हताश, ध्वस्त,
निराश 3 अवच्छिन्न, गृहीत, निरुचित 4 बिगाड़ा हुआ
तोड़ा-फोड़ा हुआ 5 पराजित, पूर्णरूप से परास्त,
छिन्न-भिन्न किया हुआ उत्तर० ५ 6 दहाया हुआ,
विनष्ट (दे० भञ्ज्),—ननु पैर की हड्डी का टूटना ।
सम०—अक्षयम् (पु०) क्षय का विशेषण,—आयु

(वि०) जिसने कठिनायियों और आपत्तियों पर
विजय प्राप्त कर ली है,—आश्व (वि०) निराश
—भर्ता २।८४, हताश—भर्ता ३।५२., अक्षयम्
(वि०) जिसका उत्साह टूट गया हो, जिसकी वृद्धि
अवसन्न हो गई हो, जिसका उत्साह, भंग हो गया
हो,—उच्छ्व (वि०) जिसके उद्योग निष्फल कर गये
हों, निराश, जिसका विकास अवच्छिन्न हो गया हो,
—कन्यः—प्रकन्यः अभिव्यक्ति या निर्माण में सममिति
का अतिक्रमण, दे० 'प्रक्रमण', श्लेष (वि०) निराश,
हताश,—वर्ष (वि०) विनीत, जिसका घमड़ टूट गया
हो,—मिह (वि०) जमकी नींद में बाधा डाल दी गई
हो,—याचनं (वि०) जिसके पाश्वर्ग में पीडा होती हो
—पृष्ठ (वि०) 1 जिसकी कमर टूट गई हो
2 सामने आता हुआ,—प्रतिष्ठ (वि०) जिसने अपनी
प्रतिष्ठा गंवा दी हो—अन्यत् (वि०) निरुत्साहित,
हताशाहित क्षम (वि०) जो अपने हर्षों में निष्का-
वान् न हो—सकृत् (वि०) जिसकी योजनाओं को
उत्पादहीन कर दिया गया हो ।

भग्नो [— भगिनी, पु०० साधु] बहन ।

भङ्गा (वा) रो [भगिनि लब्ध करोति भग्न + क्त + ष्]

+ ङीप्] डाल, गोमर्षी ।

भङ्गितः (स्त्री०) [भञ्ज् + क्त] टूटना, (हड्डी का)
टूटना ।

भङ्गः [भञ्ज् + क्त] 1 टूटना, टूट जाना, छिन्न-भिन्न

होना, फाड़ डालना, टुकड़े टुकड़े करना, विभक्त

करना—वार्धगलाभङ्ग इव प्रवृत्त—रघु० ५।४५,

4 टूट, हड्डी का टूटना भङ्गदेव 3 उल्लाङ्गना, काटना

—आत्मकालिका भङ्ग—१० ६ 4 पार्श्वभ्य, विरले-

वर्ण 5 अंश, टुकड़ा, अङ्ग, विमुक्त बंध—पुष्पोन्मथ

पल्लवभङ्गमिन्त्र ७० ३।६१, रघु० १६।१६

6 गतन अथ गतन, ध्वंस, विनाश, बर्बादी ऐसा कि

राज्य, भूत आदि में 7 अलग अलग करना, तिर-
वितर करना दाशभङ्ग. मा० १ 8 हार, पराभव,

पराभव, पराजय पञ्च० ४।४१, शि० १६।७२

9 असफलता, निराशा दृग्गण—रघु० २।४२, बाणा-

भग आदि 10 अस्वीकृति, इकारि—कु० १।४२,

11 छिड़ दार 12 भिन्न, बाधा, इकाट—निर्ज्ञा

गति आदि 13 अननुष्ठान, निरुचन, स्वयं

14 भगवद 15 मोड़, तह, लहर 16 सिङ्गडन, झुकाव,

लम्बोच्च या सटाना उत्तर० ५. 17 गति, चाल

18 लकवा, फालिज 19 बालसाक्षी, बोखेबाजी

20 नहर, जलमार्ग, नाली 21 गोमर्षीक वा घूमघुमाकर

कहने या करने का डग-दे० भवि 22 पतन । सम०

—नमः बाधाओं को हटाना,—वाता हृत्वी,—आर्ष

(वि०) वैदिकान, वाक्साध ।

मन्त्रा [मन्त्र + अ + टाप्] 1 पटसन 2 पटसन से तैयार किया एक भावक देव । सम० कबज् पटसन का पराग ।

मन्त्रि, — श्री (स्त्री०) [मन्त्र + इन्, कृष्णम्, भक्ति - डीप्] 1 टूटना, हड़डी का टूटना विच्छेद, प्रभाव 2 हिलोर 3 लूकाब सिकुडन - दृग्गच्छीति प्रथम-मधुरासमेध बुम्बितोऽस्मि उज्जट, ल० १३ 4 लहर 5 बाढ़ बात 6 टेढ़ा मोर्न, बुभावहार या चक्करवार भाग 7 गालमोल या बूमबुमाकर कहने या करो का ठग बागबाल मन्त्रवत्करण कथनान् काव्य० १० बहुमक्तिविशारद - रघु० 8 बहाना छपवेव आभास प पाकवत्प्रतिविम्बवद्वाया धाराममम केनयिष मननित - विक्रम० ११ 9 डावपेच डालभाभी धोखा 10 व्ययोक्ति 11 व्ययोपहार आनुतर 12 पय - रघु० १३ ११ 13 अन्तराल 14 हठी लज्जा धोखता । सम० - भक्ति (स्त्री०) मन्त्रावन् कदमी या तरांग की मृजला में विभाजन लहरियेवार सीता - मेघ० ६० ।

मन्त्रिन् (वि०) [मन्त्र + इनि] 1 गीष्ट टूटने वाला भगुर अस्थायी तदपि तत्त्वमन्त्रिण् कर्णति केन् मनु० २ । ११ 2 किसी अभियोग में पछाड़ा नुका ।

मन्त्रिन् (वि०) [मन्त्र - मन्त्र + लहरियेवार करना ।

मन्त्रिन् (पु०) [मन्त्र + इनि] 1 (हड़डी का) टूटना मोहना 2 सिकोर हिलोर 3 बुधरागान 4 छपवेव धोखा 5 आलुतर, व्ययोक्ति 6 कुटिलता ।

मन्त्रिन् [मन्त्र + इन्] आनेधियों में कोई दोष ।

मन्त्रुर (वि०) [मन्त्र + इन्] 1 टूटने के योग्य मिहुर कड़कबल 2 बुझा पतला मस्तिर अनिय नभर आपरगाला प्रणया कोपान्मलगमडगुरा । १० ११८८, लि० १६१० 3 परिवर्तनशील चर 4 कुटिल, टेढ़ा 5 बक बुधराग - गतिमूल नव भाग मन्त्रुरभू मील० १० 6 जालसाज बईया बालाक ७ किसी नदी का मोह ।

मन्त्रुः (स्वा० उ०) मन्त्रित ने, पाल्नु व्यवहार आ० भक्त । (क) हिस्से करना वितरित करना बंटना भरेत् पैक रिक्कम् मनु० ११०० न तत्पुत्रैर्मेत्कार्यम् - २०९, ११९ (क) निदिष्ट करना, निबल करना, अनुमान करना गायत्री वगैरेशब्दम् १० डा० 2 किसी के लिए प्राप्त करना, हिस्सा देना, भाग देना पिण्ड वा भजते सीतम् मनु० १०५९ 3 स्वीकार करना, बहण करना मा० ११२५ 4 (क) बाधक देना, (बपने बाप को) धमक कराना, चुड़ैल रखना - जिहाताल मेवे - का० १७९, दातर्लिक मन्त्रस्व कथिदपरम् - मर्द० ३१५५, म कथिद्वर्णनामपचमकुट्टीति भजते

- का० ५११०, भाषि० ११८१, रघु० १७१२८, (क) जग्यास करना अनुमन करना वालन करना - मेवे बर्मेनातुर रघु० ११२१ 5 उपभोग करना, अधिकृत करना रखना मोहना अनुभव करना, मनोरंजन करना विभुरि भजतेतरी कलकृष्ण भाषि० ११७५ न मेजिरे सीमवशेष सीतिम् मर्द० २१८० व्यक्ति भजन्त्यापना सा० ७३१ भाषितमयोर्गिप भावेव भजते कैव कथा सरीरिण् - रघु० ११७३ मा० ३१९ मन्त्र० ११३५ 6 कथा में प्रस्तुत रहना सेवा करना रघु० २२३ पब० १११ ९ मृच्छ० १३१ 7 आराधना करना सम्कार करना (कैव मान कर) पूजा करना ४ लौटना बुझना पहर करना स्वीकार करना लज्ज पराक्याव्यतरद् भजने प्रलभि० १२ ९ शारीरिक सुखोपभोग करना - पब० ४१५३ 10 बुझना होना भक्त बनना 11 अधिकार में करना 12 भय न पड़ना (इस बात के अर्थ - सजाई का साथ जुधकर बिबिध रूप ग्रहण कर लेने हैं) उता० मिश्री भज सीता, मुहूर्त भज् बन्धु हाता भाष भज वेध प्रदर्शित करना आदि) बि 1 विजय करना होना विजय मेरु में उदधिगमकृत नै० १११५ पक्षिना व्यग्र भजामाह्वि रघु० १११२९ १०५५ शि० ११३ 2 जग्यास करना सपनि पैक ४१२८ गति) बंटना विनाश आना व गा साई १ भेद करना 4 भग्नात करना गुजा करना मन्त्रि हिम्मा देना हिस्से में किसी को प्रसार करना बिभ यदा वस्व च मन्त्रभक्तम् (मर्द० उ०) भाजवति ते कई विद्वानों के भग्यामय ७ 'त्र नव' के ही प्रार० का है) 1 काना २ हाता ।

मन्त्रक [मन्त्र + कृत्] 1 बंटने वाला बिना 2 गुजक भक्त लयवत् ।

मन्त्रक [मन्त्र + कृत्] 1 हिस्सा बनाना बंटना 2 स्वस्थ ४ सेवा आराधना पूजा ।

मन्त्रमान (वि०) [मन्त्र + शान्ति] 1 बंटने वाला 2 उप भाषना ३ योग्य सही उचित ।

मन्त्रम् । १५० प० मन्त्रित भग्न इच्छा विवर्धति) 1 मोहना फाड़ डालना छिन्नभिन्न करना चूर चूर करना रूकड़े टुकड़े करना लच्छा करना भजिज मर्द० ५१३ मन्त्रवत्ता भूषी ४१३, बमचूर्णवर्णानि च ३१२२ बहुरभाजि वस्वया - रघु० ११३९ 2 उगाड़ना, उखाड़ना भनकपुपन कपि मर्द० ९१०, ३ (किने में) बरार डालना 4 गन्धना करना प्रवाल कर्ष कराना, निरास करना, प्रगति रोकना पिनाकिना मन्त्रवलोखा ली - कु० ५११ 5 पकड़ना, रोकना, बिज डालना, निरीक्षित

करना—यैसा कि 'मन्मथि' में 6. हठाना, परास्त करना—जगन्नि राम परिचय रामात् जगन्नाथाय भगवत् स द्विमेव—नं० २२।१३३, अथ—, तोड़ डालना, ध्वस्त करना—कु० ३।७६, प्र-- , 1. तोड़ डालना, ध्वस्त करना, बर्षिष्यो उडाना 2 रोकना विप्लवाकर करना, निरुद्धिना करना 3 भग्नाश करना, निराश करना ।

11 (चुरा० उभ० मञ्जवयति ते) उज्ज्वल करना,
समकाना ।

मन्त्रक (वि०) (स्त्री०-जिका) [भञ्ज्, म्बुल्] ताडने
वाला, बटिन वाला ।

मञ्जुषा (वि०) (श्री०-नी) [अञ्जु . म्युट] 1 गाढने
 बाधा, दुःखद करने वाला 2 निरस्फार करने वाला,
 राकने वाला 3 भ्रमनाश करने वाला 4 प्रबल पीडा
 पहुँचाने वाला, -अजु 1 तीव्र बालना ज्वलना करना
 विनष्ट करना 2 दुःखना दूर करना भगवा देना
 -समुद्रियमयमञ्जुनाय यत्नाम्-गी० १० ३ पराजित
 करना, हारना 4 भ्रमनाश करना 5 राकना, विघ्न
 डालना, बाधा पहुँचाना 6 कष्ट देना, पीडा करना
 - अः दापो वा गिरमा ।

ब्रूकलैंड [ब्रूकलैंड + कैंड] मूत्र का एक रोग जिसमें दाँत गिर जाते हैं, हाठ टेढ़े हो जाते हैं।

मन्त्रः [नमः + वसवः] मंदिर के पास उठा हुआ वृक्ष ।
 मन्त्रः १ (मन्त्रः परः मन्त्रित, मन्त्रित) १ पोषण करना,
 पालना पोषण, निवार रक्षना २ भाड़े पर लेना
 ३ वसवूरी लेना ॥ (वृक्षाः उभः मन्त्रयन्ते)
 बोधना, बातें करना ।

मदः [यदः अषः] १ योडा, सैनिक, लखने वाला
- तूफान वातुरीगुनी नै ११२, वायव्यसुविधंत
मदस्य २२।२२ - अष्टि ११।१० २ मृतिभंगी,
भाबैत सैनिक, भाबे का टट्टू ३ जानिबहिष्कृत
वर्णसंकर ४ पिशाच ।

महिष (वि०) [मट् + इष] शब्दाका पर रत्नकार वैयाया
गया प्राप्त ।

बहुः [अट् + भृज्] १ प्रभु, स्वामी (राजाओं का सर्वोपि-
करण के लिए सम्मान सूचक उपाधि) २ विद्वान्
बाह्यालो के नामों के साथ प्रयुक्त होने वाली उपाधि
चतुर्थापास्त्य पौत्रः-आ० १, इसी प्रकार 'कुमारिक
भट्टः' आदि ३. कोई भी विद्वान् पुरुष या सार्वजनिक
४ एक प्रकार की मित्र जाति जिसका व्यवसाय
साट या शारणों का व्यवसाय अर्थात् राजाओं का
स्तुति गान है-आध्यात्मिककथायां भट्टो जातोऽनुवाचकः
५ बाट, बन्धीजन। सम०-आध्यात्मः प्रसिद्ध अध्यापक
या विद्वान् पुरुष को ही गई उपाधि २. विद्वान्, -ब्रह्मणः
= ब्रह्मणः, इत्याहाराय ।

महार (वि०) [मृदु स्वाधित्स्विच्छति - च - मृदु]
 1 अद्वास्पद, पूज्य 2. व्यक्तिवाचक सत्ताओं के साथ प्रयुक्त होने वाली सम्मानसूचक उपाधि - यथा - महार-हरिश्चन्द्रस्य पद्मचन्दो नृपायते - इत्यं० ।

महाराज (वि०) (स्त्री०-रिका) [महार+कन्] अश्वेय,
पूज्य—आदि दे० ऊ० 'महार' । सम०—वास्तवः
रविवारः ।

भर्तृहृन् [भट्ट - हन् - कीय] १ (जर्नाप्रविकल) रानी,
राक्षसुमारी, (नाम्को में दासियों द्वारा रानी को
संवाधन करने में बहुधा प्रयुक्त) २ ऊँचे पद की
महिला ३ आराधन की पत्नी ।

मह [मण्ड - अच्, ति - नलोप] विशेष प्रकार की एक मिश्र जाति ।

अहितः [भण्ड - इत्यच् । अ. नलोप] । नेता, योद्धा
2 टहलया नाङ्ग ।

नम (म्वा० पु० नमति । १ कहना, बोधना-पुष्कोत्तम
इति भणितव्यं-विष्मः ३, प्रष्टुः १०।१६ २ वर्णन
करना-काव्य म काव्येन समाधत्तार्थत्-ने० १०।५९
३ नाम लना पुकारना ।

अक्षयम्, अजितम्, अर्जितम् (स्त्री०) [अक्ष + कृट्, क्त, क्तिन्] १ बहुला, बोलना, बाँटें करना, बचन, प्रवचन, बातलाय - न देखेयमानम् जनयति अक्षयम् अर्जितम् - प्राप्ति० ४३९, २७७, क्षीयत्यक्षयम् अजित हरिर्गमयम् - गीत० ७. इह रत्नमक्षय-तुल्यम् ।

मन्त्र १ (म्वा० वा० मन्त्रोत्ते) १ मन्त्रना करना, छिड़कना
२ खिली उठाना, व्यस्य करना ३ सोलना ४ उप-
हाम करना मन्त्रना करना ॥ (बुरा० उ०
मन्त्रवर्तिने) १ मन्त्र प्यशाकी बनाना २ बकना
वेना (बाहुपठ—भट) ।

अणुः [अणु + अणु] १ मांड ममलरा, किल्लक-अणुवेष्टस्य
कतरि भण्डपुनपिपात्रका — सर्व २ एक मिश्रवाति
का नाम तु 'अणु' । अणुः — अणुपिपात्र (५०)
अनाडी सन्यासी, डोगी — हासिनी वेष्टा, वागवता ।

अण्वक [अण्व् + कन्] एक प्रकार का लज्जन पक्षी ।
अण्वन [अण्व् + न्युट्] 1 कवच, बक्तर 2 अग्राम, बुड
3 उत्थात, दृष्टता ।

भण्डिः-डी (स्त्री०) [भण्ड् + ड, भण्डि + डीय्] लहर,
तरंग ।

अण्डिल (विः) [अण्डः इण्ड] सुन्दर सुम, सम्पन्न,
सौभाग्यशाली, - लः 1 अण्डी किम्मत, प्रसन्नता,
कल्याण 2 वृत्त 3 कारीगर, सभ्यकार ।

महन्तः, भग् + हन्, अन्तादेशः, मलोपश्च] 1. बौद्ध धर्मा-
नुयायी के लिए प्रयुक्त होने वाला जादर सूचक कब्ज
-महन्त तिबिरेव न कुर्वन्ति-मुद्रा ४ 2. बौद्धविष्णु ।

महाकः [मन्त्र + भाक, नर्कः] सम्पत्ता, कीर्त्या ।

भद्र (वि०) [भम्+रक्, वि० मलोप] 1 भद्रा, सुखद, समृद्धिका 2 सुभ, भाग्यवान् जैसा कि 'भद्रमुक्' में 3 प्रयुक्त, सौख्य, मुख्य-पत्रच्छ भद्र विजिता-रिभद्र-रम्- १४३१ 4 अनुकूल, मंगलप्रद 5 कृपालु, सयय, अष्ट, सौहार्दपूर्ण, प्रिय, (सबोवन एक वचन में प्रयुक्त होकर अर्थ होता है 'पूज्य श्रीमान्' 'प्रिय मित्र' 'पूज्य माहर्षे' 'पूज्य श्रीमनि' 6 सुहावना, उपभोग्य, प्रिय सुन्दर-पञ्च ११८१ 7 स्तुत्य, स्वाभ्य, प्रशंसनीय 8 प्रियतम, प्यारा 9 बटकार, बाहुत रमणीय, पालम्ही, इन् उल्लास सीमाय कल्याण, आनन्द समृद्धि भद्र भद्र वितर भगवन् भूमये मंगलाय- मा० ११३ ६७ त्वयि वितरन् भद्र भूमये मंगलाय उल्ल० ३१४८ (इस अर्थ में बहुधा ब० ब० में प्रयोग) सर्वे भद्राणि पश्यन् भद्र ते 'ईश्वर तुम्हारा कल्याण करें' तुम्हें ऐश्वर्याशाली बनाए' 2. सोना 3 लोहा इत्याद, इ- 1 बेल 2 एक प्रकार का खरन पत्ती 3 विशेष प्रकार का हाथी 4 छपरेवी, पालकी-मन् १२५८ 5 शिव का नामान्तर 6 देशपर्वत का विशेषण 7 एक प्रकार का कवचवृक्ष (भद्रा छू हुआमन करना, बाल नूटना कवचकरणम् मुष्टन- 1 सम०-अङ्ग-बलराम का विशेषण, - आकार, - आकृति (वि०) सुभ लक्षणों से युक्त, - आत्मज-तलवार -आत्मजम् 1 राजासन, राजगद्दी, सिंहासन 2 समाधि की विशेष अवस्थिति, योग का आसन, ईश-शिव का एक विशेषण एका बड़ी इलायची-कपिल-शिव का एक विशेषण कारक-(वि०) मंगलप्रद काली दुर्गा का मामान्तर कुम्भ-किमी तीर्थ के जल से (विशेषकर गंगाजल में) भरा हुआ मुनहरी पड़ा, -मजितम् आरु के रक्षाचित्रों की बनावट, घट, घटक एक पड़ा जिसमें अग्न्य की पविर्दा डाली जाय दाह (पु० नपु०) चीड़ का वृक्ष, -पावन् (पु०) मज्जनशीली चीड़म् 1 राजगद्दी राज-कुर्सी सिंहासन पृ० १३१० 2 एक प्रकार का पन्धर कीड़ा, -अन्त बलराम का विशेषण -अक्ष (वि०) मायात्मक चेहरे वाला विनम्र सम्बो धन के रूप में प्रयुक्त मान्यवर महोदय 'पूज्य श्रीमान्'-स० ७, सुभ एक विशेष प्रकार के हाथी का विशेषण, रेजु-इन्द्र के हाथी का नाम, बर्धन् (पु०) एक प्रकार की नवमल्लिका, -शाकः कातिकेय का विशेषण, -अवन्, -अियम् चन्दन का काष्ठ, -धी (स्त्री०) चन्दन का वृक्ष, -सोया गया का विशेषण ।

भद्रक (वि०) (स्त्री०-द्रिका) [भद्र+कन्] 1 वृक्ष, मङ्गलमय 2 मनोहर, सुन्दर, -कः वैवदाय का वृक्ष ।
भद्रकूर (नपु०) [भद्र+क+कृप्, नपु०] सुख सम्पत्ति का दाता, समृद्धकार ।

भद्रकम् (वि०) [भद्र+मलुप्] मंगलमय, - (नपु०) वैवदाय का वृक्ष ।

भद्रा [भद्र+टाप्] 1. गाय 2. चान्द्रमास के एक की दोहव, सप्तमी और द्वादशी 3 स्वर्गा 4 नागा प्रकार के पीछे के नाम । सम०-अवन् चन्दन की लकड़ी ।
भद्रिका [भद्रा+कन्+टाप्, इत्थम्] 1 नागीव 2 दोहव, सप्तमी व द्वादशी नाम की तिथियाँ ।
भद्रिलम् [भद्र+इत्थम्] 1 सवृद्धि, सीमाय 2 कंपनशील वा बरबदाहट वाली गति ।

भद्रम् [भम्+भा+क] 1 मक्खी 2 बुद्धी ।

भद्रमरालिका, भद्रमाली [भम् इत्यकारनञ्चस्य भ्र बाहुल्यम् आकाति -भ्रमर+भा+का+क+ङीप् -भ्रमराली+कन् टाप्, इत्थम्] 1 गोमक्खी 2 डोस ।

भद्रमारु [भद्रा+रु+अप्] गाय का रोमना ।

भयम् [विभेयस्मात्-भी-अपादाने अच्] 1 डर आतंक, विभीषा, आशका (प्राय अपा० के माध) भोगे रोग भय कुले क्षुत्तिमय विने नृपालाङ्गयम् अ० ३१३३ यदि म्बरमपारय नान्ति भूयोर्भयम् इती० ३१४ 2 डर, काम जगद्भयम् आदि 3 अनग्न शोचिम सकत तावद्भयस्य भेदभ्य दाहद्भयमनाशनम्, भागत नु भय रोग्य नर कुयोद्योषितम् हि० ११५७-कः बोमारी री। मम० अस्मित, -आकात्त (वि०) उबरयन्त आनुर, जाने (वि०) डरा हुआ जान-क्षुति मयभीन आबह (वि०) 1 भयात्पादक 2 जोषिम बाला-स्वयमे निचन अय परधमी मयाबह मम० ३१३५ उग्रर (वि०) भय से युक्त कर (भयकर भी) 1 डरान वाला भयानक, भयपूर्ण 2 क्षतरणक मकटपूर्ण इसी प्रकार भयकारक 'मयहुत हिंजव पृथ म प्रयुक्त किया जाने वाला डोस मारु बाज हुत (वि०) भय के कारण भाग्न वाला, परानित भगाया हुआ, प्रतीकार भय की दूर करना, डर हटाना, प्रह (वि०) भयदायक भयपूर्ण, भयानक, प्रस्ताव भय का अवसर, -बाह्य उग्रोक्त बाहुण, बहु बाहुण जो अपनी जान बचाने के लिए (यह समझ कर कि बाहुण अवश्य है) अपने बाहुण होने को बुराई बता है, विष्णु (वि०) आतंक-पीडित, अहं हर की अवस्था होने पर सेना की विशेष क्रम-व्यवस्था ।

भयानक (वि०) [विभेयस्मात्-भी+आनक] भयकर, भीषण, भयजनक, डरावना-क्रियत पर भयानक स्थात्-उत्तर० २, वि० १७१०, मम० ११२७, -कः 1 व्याघ्र 2 राहु का नामान्तर 3 भयानक रक्त, काव्य के आठ या नौ रत्नों में एक-दे० 'रक्त' के अनर्थात्, कम् दाह, डर ।

भर (वि०) [भृ+भृप्] धारण करने वाला, देने वाला,

भरणपोषण करने वाला आदि,—रः 1. बोझा, भार, वजन—भरणये भर कृत्वा पञ्च० १, "अपने तीन बुरी पर ही अपने आपकी सहारा देने वाला", फल-भरणपरिणामश्चामजम्बु—आदि—उत्तर० २।००, भरण-शब्दा—मुद्रा० २।१८ 2 बड़ी मक्या, बड़ा परिमाण, समूह, समुच्चय—वते भर कुमुदपत्रकमालकीनाम्—भाषि० १।९४, ५४, शि० १।६७ 3 प्रकाय, राशि—आविष्य—निर्व्यूहसौहृदभरेति गुणोऽप्यलेति मा० ६।१७, सोभामरि मभूता—भाषि० १।१०३, कोपभरण गीत० ३।७ ताल की एक विशेष माप ।

भरतः [भू + अट्] 1 कुहरार 2 सेवक ।

भरण (वि०) (स्त्री०—जी) [भू + णट्] धारण करने वाला, निवारण करने वाला सहारा देने वाला, पालन पोषण करने वाला, जम् 1 पालन-पोषण, निवारण करना सहारा देना रघु० १।-१, शि० ७।३० 2 वहन करने या ढोने की क्रिया 3 पालन पोषण करना 4 पूर्णकारक भोजन—भाडा मजदूरी ज भरणी नामक नक्षत्र ।

भरणी [भरण + णीप्] तीन तारों का पूज्य या दूसरा नक्षत्र है समय—भूः राहु का विशेषण ।

भरणः [भू + णट्] 1 स्वामी, प्रभु 2 राजा शामक 3 बेल, लोह 4 कीड़ा ।

भरण्यम् [भरण + यत्] 1 पालन-पालन करने वाला सहारा देने वाला पालन-पोषण करने वाला 2 मजदूरी, भाडा 3 भरणी नक्षत्र क्या मजदूरी भाडा । समय—भूज् (पु०) भूति-सेवक, भाडे का ठीकर ।

भरण्युः [भरण्य (कृत्वा०) - उ] 1 स्वामी 2 प्रणयक 3 मित्र 4 अग्नि 5 चन्द्रमा 6 सूर्य ।

भरतः [भर + ततोच् + नत् + ट्] 1 शकुन्तला और दूष्यन्ता का पुत्र जो चक्रवर्ती राजा था । इसका नाम पर हम दश का नाम भारतवर्ष है । यह कौश और राजा का दूरवर्ती पूर्वपुरुष था 2 दशरथ की सबसे छोटी पत्नी कैकेयी का बेटा राम का एक भाई यह बड़ा धर्मात्मा और पुण्यशाली व्यक्ति था, राम के प्रिय इसकी इतनी अगाध भक्ति थी कि जब कैकेयी का शत्रित भाग के अनुसार राम वन में जान को नेपात्र हुए तो भरत को यह जानकर अचानक दुःख हुआ कि उसकी अपनी माता ने ही राम की निषामित किया फलतः उसने अपनी प्रभुसत्ता को अस्वीकार कर राम के नाम (राम की आज्ञाओं का लाकर उनको राज्यप्रतिनिधि के रूप में सिंहासन पर रखकर) से तब तक राज्यप्रशासन किया जबतक कि बीसहृदय का निर्वासन समाप्त करके राम वापिस अधीष्ठा नहीं आये 3 एक प्राचीन मनि का नाम जो नाट्यकला तथा संगीतविद्या के प्रवर्तक माने जाते हैं 4 अग्निनेता

रथमय पर अभिनय करने वाला पात्र—तत्किमिदु-दामते भरता—मा० १।५ 5 भाडे का ठीकर, केवल धन के लिए काम करने वाला ठीकर 6 बंसी, पहाड़ी 7 अग्नि का विशेषण । समय—अवधः 'भरत का उपदेश आता', राम का विशेषण—रघु० १।५७१, —अवधम् भारत के एक भाग का नामान्तर,—अ (वि०) भरतभास्व या नाट्यशास्त्र का शास्त्रा, —पुत्रकः अग्निनेता—अर्थात् भरत का देश अर्थात् भारत, भास्वम् नाटक के अन्त में दिया गया श्लोक, एक प्रकार की तान्दी (नाट्यशास्त्र के प्रवर्तक भरत मुनि के सम्मानार्थ कहा गया) तथापीदमम्भु भरतभास्वम् (प्रत्येक नाटक में शालक्य) ।

भरतः [भू + अय] 1 प्रभुसत्ता प्राप्त राजा 2 अग्नि 3 मगार के किसी एक प्रदेश की त्रिपिण्डी देवी, लोकपाल ।

भरद्वाजः [अथत् मरुद्भि भू + अर = भर इत्या आयेने दि + जन + ऋज भरद्वासी द्वारपत्र कर्म० म -] 1 मान श्रुति में स ग क नाम 2 आतक पक्ष ।

भरति (वि०) [भर + इतप्] 1 परिवारता किया गया, राजा पामा गदा 2 भरा हुआ, भरपूर—अगजाल कर्ता कुमुदभरतीरमभिनय—भाषि० १।५४, ३३ ।

भरतः [भू + उत्] 1 पति 2 प्रभु 3 शिव का नामान्तर 4 विष्णु का नाम 5 ताता 6 समूह ।

भरत आ. जी (स्त्री०) [भ इति लब्धेन क्वचित् भ + ण्य - क] गीत ।

भरतकम् [भू + उत् + क्त नला हुआ भात ।

भरत [भूज् + णट्] 1 देश का नाम 2 ब्रह्मा का नाम ।

भरण्य [भूज् + ण्यत्] शिव का विशेषण ।

अजन्त (वि०) [भूज् + ण्यत्] 1 भूने वाला तलने शान पकने लगे 2 नष्ट करने वाला,—जम् 1 भूने या तलने की क्रिया 2 कहाँही ।

भर्तृ [भू + नृत्] 1 पति यद्भर्तरेव हितमिच्छति तत्कन्यम् भर्त० ७।१ स्त्रीणा भर्ता धर्मदारादयः पुत्रम् मा० ६।१८ 2 प्रभु स्वामी, महत्तर भर्तृ शपेन मेघ० १, गज भूत आदि 5 नेता, सेनापति मुख्य रघु० ७।६१ 4 भरणपोषण कर्ता, भावहृत्कनो प्रसक्त । समय—स्त्री अपने पति का पक्ष करने वाली स्त्री, शरक तुवराज, राजकुमार, राजाधिकारी, कुमार (नाटक में बहुधा प्रयुक्त संबोधन)।—धारिका युवराज्ञी (नाटकी में प्रयुक्त संबोधन शब्द)।—अस्मत् पतिवत, पतिमक्ति (ता) साध्वी पतिवता पत्नी—भु० पतिवता, —लोकः पति की मृत्यु पर लोक,—हृदि एक प्रसिद्ध राजा जो तीन

खसक (मुबार, नीति, वैराग्य), वाक्यपदीय तथा
महिकाव्य का रचयिता है।

भर्तृहारी [भर्तृ + भर्तृ + हीप्] विवाहिता स्त्री जिसका
पति भीषित हो।

भर्तृहस्त (अन्त्य०) [भर्तृ + हाति] पति के अधिकार में
हुआ विवाहित हुई।

भर्तृ (चुरा० आ० भर्त्सयते, कभी २ पर० भी)

1 धमकाना बुझकना 2 छिड़कना, बुरा भला बहना
अपवाद कहना 3 व्यर्थ करना निम्न—, 1 छिड़
कना निन्दा करना, गाली देना 2 आगे बढ़ जाना
बहल लगना, लज्जित करना कु० ३१५३, १

भर्तृकः [भर्त्स + क्तृल्] धमकी देने वाला बुझकने
वाला।

भर्त्सनीय, भर्त्सना, भर्त्सितम् [भर्त्स + ल्युट् रित्रया टाप्
का वा] 1 धमकाना, बुझकना 2 धमकी छिड़को
3 बुरा भला कहना, गाली देना 4 अभिभाष।

भर्त्सन् [भृ + मन्तिन्, नि० लकोप] 1 मजदूरी भाड़ा
2 सोना 3 नामि।

भर्त्सना [भर्त्स + यत् + टाप्] मजदूरी मंदा।

भर्त्सन् (नपु०) [भृ + मन्तिन्] 1 सहारा सधारण, पालन
पोषण 2 मजदूरी, भाड़ा 3 सोना 4 भाने का सिक्का
5 नामि।

भक्ष् 1 (चुरा० आ०—भ्राजयते भालित) बलना, अवलो
कन करना, -भि, (पर० भी) 1 देखना अवलो
कन करना, प्रत्यक्ष करना निगाह डालना निमाप्य
भूयो निजगौरिमाधनं वा नाम भान्, महर्षेय यस्मी
—भाषि० ३११७६ वा यन्मा न मर्षिनि निजाल
यसि प्रसातनीलार्गविन्दमदमङ्गिपदै कटाक्षे ३१८
॥ (म्वा० आ०) दे० 'भल्ल'

भक्षन् (म्वा० आ० भल्लत, भल्लित) 1 प्रणन करना
बयान करना, कहना 2 बायल भला वाय पहुँचाना
बार डालना 3 देना।

भक्षन्, भक्षी-भक्ष्य [भल्ल् + अच् स्थिदां हीप्] एक
प्रकार का अन्न या दान—स्वविदाकनार्वाकृष्टभक्ष्यवर्षी
—रघु० ११६६, ४६३, ७५८, रुक् १ रीछ
2 शिव का विशेषण 3 भिक्षावे का पोषा (भल्ल्सी
भी)।

भक्षकः [भल्ल + क्तृ] रीछ।

भक्षकः, भक्षकः [भल्ल् + भृ + अच्, भल्लात् + क्तृ]
भिक्षावे का पोषा।

भक्ष्यकः, भक्ष्यकः [भल्ल् + क्तृ, यस् एषो० ह्रस्व]
1 रीछ, भल्ल्—वर्षति कुहुराशामन भक्ष्यकमुनाम्
—उत्तर० ११२१२ कुता।

भक्ष्य (वि०) [भल्ल + क्तृ + भृ + अपादाने अच्] (समात्
के क्त्य में) उद्यत होता हुआ वा उत्पन्न, जन्म लेता

हुआ,—कः 1 होना, होने की स्थिति, सत्ता 2 जन्म,

उत्पत्ति भवो हि लोकाभ्युदयाय तावुत्तम—रघु०

३११४, वा० ७१२७ 3 ज्ञान, मूल 4 सांसारिक

अस्तित्व सांसारिक जीवन जीवन—वैसा कि यथा-

णव भवसागर आदि में कु० २१५१५ तत्सार

6 कुशल-अस्व स्वास्थ्य समृद्धि 7 भेष्टता, उत्पत्ता

8 शिव का नाम दसत्य कथा भवपूर्वपत्नी—कु०

११२१ ३१७२ ९ देव, देवता १० अभिग्रहण, प्राप्ति।

सम० अस्ति (वि०) सांसारिक जीवन पर विषय

पान वाला भीतराग अस्तित्व ब्रह्मा का विशेषण

अन्तरम् दूसरा जीवन (भूत या भवि) पञ्च० १।

१०१—अस्ति, अर्थात्, समृद्ध सागर,—तिष्ठन्

सांसारिक जीवन कपी समृद्ध अवस्था, भी गया

नदी अर्थव्यय सांसारिक जीवन कपी प्रगल्भ सुन-

सान ममार, अर्थव्यय गणेश या कार्तिकेय का

विशेषण उच्छ्रब्ध सांसारिक जीवन का विनाश

रघु० ११७४ क्षिति (स्त्री०) जन्मस्थान

वस्त्वरा दावारल प्रगल्भ की आग छिद् (वि०)

सांसारिक जीवन के बधना की कारणे वाला जन्म

की पुनरावृत्ति की रोक्ने वाला भवच्छिदरम्यमक-

पादपाशव का० १ छेद पुनर्जन्म का रोकना

शि० ११३९ बाध (नपु०) देवदास का ब्रह्म भूति

गक प्रसिद्ध कवि का नाम दे० पर्व० २। भवभूते

महत्पादभूषणमय भारती भाषि एषकृतकाव्ये

किमन्यथा गोविनि दावा। अन्त० सप्त० ३६

बध् (तु०) बन्ध्यादि मत्कार के अवसर पर बजन

वाजा डोल भीति (स्त्री०) सांसारिक जीवन से

एकदम डर ६।१११।

भवन् (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [भृ + गतृ] 1 होने वाला,

धरति होने वाला घटने वाला 2 वर्तमान समर्पण

व भव च भावि च—रघु० ८१७ (सर्व० वि०)

(स्त्री०—स्त्री) आदर्शमूक या सम्मानमूकच सत्ताय

प्रिमका अनुवाद है आदर्शणीय भीमन् पूज्य

श्रीमति (मध्यम पुण्य पुण्यवाचक सर्वनाम के अर्थ

में बहुधा प्रयुक्त पण्यु किया अन्य पुत्र की)—अथवा

कथ भवान् मय्यत—मालवि० १, भवन् एव आगन्ति

गच्छता च कुलस्थितिम्—उत्तर० ५१२३, रघु० २१४०,

३१४८ ५११६ प्राय इसके साथ 'अव' या 'व' भी

जोड़ दिया जाता है (दावा को देखो) कभी कभी 'म'

के साथ लगा दिया जाता है यन्मा विशेषविषय वेसम-

भाषिपुक्ने मा० ११९।

भवहीन (वि०) [भवत् + छ] वाक्यपर महोदय का,

आपका, तुम्हारा।

भवन् [भृ + ल्युट्] 1 होना, अस्तित्व 2 उत्पत्ति,

जन्म 3 बायल, निवास, घर, कवन—अथवा भवन-

प्रत्ययान् प्रविष्टोऽस्ति—पृष्ठ० ३, येष० ३२
४. स्थान, आवास, आहार जैसा कि 'अभिनयनवनम्'
में पृष्ठ० ११९१ ५. इमारत ६. प्रकृति । सम०

—उत्तरन् चर का मध्यवर्ती भाग,—चरिन्,—स्वामिन्
(पुं०) चर का स्वामी, कुल का पिता ।

अवसन्,—तिः [भू० + भव् (सिच्) अन्तादेशः] इस समय,
वर्तमान काल में ।

अवसती [भू० + शतृ + ङीप्] गुणवती स्त्री ।

अवसती [भव + ङीप्, आनुक्] शिव की पत्नी या पार्वती
का नाम—आलम्बताश्चरमश्च अवो भवात्या—कि०
५१२९, कु० ७८४, येष० ३६, ४४ । सम० गुह.
हिमालय पर्वतः—विशेषण, पतिः शिव का विशेषण
—अभिवसति सदा यदेनं जनेरावदिनविमर्शो भवार्ता-
पतिः—कि० ५१२१ ।

अवापुक् (वि०) (स्त्री० स्त्री) अवापुष् (वि०) अवापुष्
(वि०) (स्त्री०) (वि०) आपकी माँ, पुम्हारी
माँ ।

अविक्रि (वि०) (स्त्री०—स्त्री) १ डाऊ, उपयुक्त, उप-
योगी २. सुख, फलदा-फलदा हुआ,—कम् सपञ्चता,
कल्याण ।

अवितव्य (वि०) [भू + तव्यत्] होने वाला, घटित होने
वाला, होनहार (बहुधा भावभाव्य में प्रयोग होता है
अर्थात् करणकारक को कर्ता के रूप में तथा किया गपु०,
ए० व० में रक्तकर—तथा मम सहायेन अवितव्यम्
—श० २, गुरुणा कारणेन अवितव्यम्—श० ३),
—अव्य अवश्यभावी; अवितव्यं अवश्येव यद्विधेर्मेतस्मि
स्थितम्—सुभा० ।

अवितव्यता [अवितव्य + तल् + टाप्] अनिवार्यता, होनी,
प्रारब्ध, भाग्य—अवितव्यता बलवती—श० ६, सर्वकुचा
भगवती अवितव्यतेव—मा० ११२३ ।

अविन् (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [भू + वृष्] होने वाला,
भावी—रघु० ६१५२, कु० ११५० ।

अविन्ः [अयाय इतः सूर्यः, पृथोः साधुः] कविः (अवि-
नित्—पुं० जी इसी अर्थ में) ।

अविन्ः [भू + हव्] १. प्रेमी, उपपति २. लम्पट,
कासी ।

अविन्नु (वि०) [भू + हव्] = अविन्, होने वाला ।

अविन्व (वि०) [भू + नृद् + स्व + शप्, पृथोः त् कोपः]
१. जाने जाने वाला २. भावी, आसन्न, निकटवर्ती,
—अव्य भावी काल, उत्तर काल । सम०—कालः
अविन्वत् काल,—अव्य जाने होने वाली बातों की
बालकारी,—पुत्राव्य बढाव पुत्रार्थों में से एक
का भाव ।

अविन्वत् (वि०) (स्त्री०—स्त्री) भू + नृद् + स्व
+ ङम्] होने वाला, भावावी अवयव में होने वाला ।

सम०—कालः उत्तर काल,—अव्य-वाविन् (वि०)
जाने होने वाली घटनाओं को बताने वाला, अविव्य-
भावी करने वाला ।

अव्य (वि०) [भू + यत्] १. विद्यमान, होने वाला,
प्रस्तुत रहने वाला २. जाने होने वाला, जाने वाले
समय में घटित होने वाला ३. होनहार ४. उपयुक्त,
उचिन्, लायक, योग्य—कि० १११३ ५. अच्छा,
बढ़िया, उत्तम ६. शुभ, भाग्यवान्, आनन्दप्रद—कु०
११२५, कि० ११२० १०१५ ७ मनोहर, प्रिय, सुन्दर
८. मोक्ष, शान्त, मृदु ९ मत्स्य,—अव्य पार्वती,—अव्य
१ मत्ता २ भावी काल ३ परिणाम, फल ४. अच्छा
कम्प सम्पत्ति—रघु० १०१३ ५ हड्डी ।

अव्य (इशा० पर० अर्थान्) १. भौकना, गुराना, भूकना
२. गायी देना, सिद्धकना डाटना—कटकारना,
घमकारना ।

अव्यः, अव्यकः [भू + अच्, क्वन् + क्] कुना ।

अव्यक्तः [भू + क् + नृद्] कुना, अव्य कुने का बीकना,
गुराना ।

अव्यत् (पुं०) [भू + अच्] १ मूर्त २. माँस ३. एक
प्रकार की बालक ४. समय ५. योगी ६ पिछला भाग
(स्त्री० और मपु० जो) ७. शोनी ।

अव्यक्तः [भू + ह्युद्] मधुमक्खी ।

अव्यक्तः [भू + भव् अन्तादेशः] काल, समय ।

अव्यिन् (वि०) [भू + क् + नृद्] जल कर भस्म बना हुआ,
—तम् भस्म—आमि० १८४ ।

अव्यक्ता, अव्यक्ता, अव्यिन्ः (स्त्री०) [भू + ह्युद् + कन्
+ टाप्, भस्म + टाप् + भस्म + ङम्] १. बीकनी
२. जल करने के लिए चमड़ का पात्र, भस्मक ३. चमड़े
का बैला, सोली ।

अव्यक्तम् [भस्मन् + कन्] १. सोना या चाँदी २. एक
रोग जिस में जो कुछ लाया जाय तुरंत पचा जैसा
जात हो (परन्तु वस्तुतः पचता नहीं) और तीव्र
भूख लगे रहता ३. बीका का एक रोग ।

अव्यक्तम् (नपुं०) [भू + मनिन्] १. राख—(कल्पते)
—भूव विताममरजो विमुद्यय—कु० ५१७९ २. विभक्ति
या पवित्र राख (जो सरीर में मली जाती है),
(अव्यक्ति हु राख में आहुति देना अर्थात् व्यर्थ कार्य
ना,—अव्यक्त, अव्यक्ति, जला कर राख करना,
अव्यक्तु जल कर राख हो जाना—अव्यक्तस्य देहस्य
पुनरागमनं कुतः—सर्व०) । सम०—अभिः भोजन
के अव्यक्त पच जाने से तीव्र भूख का लगे रहना,
—अव्यक्त (वि०) जो केवल राख के रूप में रह
जाय—कु० ११७२,—आहूयः कपूर,—अव्यक्तम्
—अव्यक्तम् सरीर पर राख बनना—अव्यक्तव्यक्तम्
अव्यक्तु पचने—काव्य० १०,—कारः बीबी,—कुतः

राक्ष का डेर,—अम्बा,—अम्बिका,—अम्बिकी एक प्रकार का गधहृत्, सुलभ, 1 कुहरा, हिम 2 धूल की बीछार 3 गाँवों का समूह,—प्रिय शिव का विशेषण,—रौप्य एक प्रकार की बीमारी तु० अस्माग्नि, लेपनम् शरीर पर राक्ष मलना बिधि राक्ष से किया जाने वाला अनुष्ठान वैष्णव कपूर स्वागम् राक्ष मल कर निर्मल करना ।

अस्मता [अस्मन् + तल् + टाप्] राक्ष का श्रोता ।

अस्मत्सत् (अभ्य०) [अस्मन् + सानि] राक्ष की रिपति म ण्ड जलाकर राक्ष कर देना ।

आ (अवा० पर०)—आनि मात प्रेर० आपयति—1, इच्छा० विभासति) चमकना उज्ज्वल होता चमकदार या चमकीला होना पक्षिबिना सरा भाति मर खलजने बिना, कटुवर्णविना काष्ठ मानस विषयोविना भाति० १।११६ समशीत्य भाति जगती जगती—कि० २।२५ रघु० ३।१८ दिवादि देना प्रीति होना युष्मिन् न प्रतिभाति किञ्चित् महाभाष्य 3 हाता विद्यमान होना 4 इनराना अग्नि चमकना 5 दिवि र्गर्भत सूर्य इवाभिनाति—मह० आ 1 चमकना जगमगता शानदार प्रसन्न होना—मोक्षदण्डक—जगमगता मलानि तमोनुद वक्ष्युता इवावम् —रघु० ३।३३ 2 दिवादि देना, प्रकट होना रघु० ५।१५ 30 १।३।१६ निष्—1, चमक उठना जगमगता अक्षकीर्णजगम निर्वर्धो—रघु० १।१६६ 2 प्रगमि करना उन्नी करना, विचारों में भाग बनना वेदाद्वयं हि निर्वर्धो—मनु० ५।१४ २।१० प्र—1 प्रकट होना 2 चमकना, प्रकाशित होना लगना प्रभात काल होना नत् प्रभातारजनी श० ४ प्रभातकला शनिनक्षत्र—रघु० २।३ प्रति—1 चमकना चमकदार या चमकीला प्रकट होना प्रतिभात्यस्य वतर्नि कन्वा माम् घट० १५ 2 इनराना बनना 3 दिवादि देना प्रकट होना—स्त्रीरत्नमुष्टिररग प्रतिभाति मा मे ज० २।१, रघु० ५।४७, कु० ५।३८ ५।५६ 1 मुद्रना मन् में बिना मोनर प्रतिभाति मे वि—1 चमकना—अर्थ० २।७१ 2 दिवादि देना प्रकट होना व्यति (आ०) बहुत चमकना, जगमगता अग्नि लोकयुग बुधाक्षिप श्रुतदृष्टा रमणीयता अपि श्रुतिगामितया दयस्त्वर्थानिमाते निरारा धरा ये न० २।७२ (यहाँ किश इमी प्रकार युगम्, 'बुधो' और गुणा के साथ भी बन सकती हैं तु० गा० १।३।१६) ।

आ [ना + अच् + टाप्] 1 प्रकाश आभा, कान्ति, मोन्द्य—तावद्वा भारवेति यावद्भाष्य मोदय उद्भूट 2 छाया, प्रतिबिम्ब । मम० श्रीरक्ष—अः सूर्य गण तारापुत्र, तारकावली,—विक्टरः प्रकाशपुत्र किष्णा का समूह,—नेत्रिः सूर्य,—वन्द्यम् प्रभातकाल तदोद्यम ।

आकर दे० आस्कर 'भास्' के अन्तर्गत ।

आस्त (वि०) [भक्त—अण्] 1. जो निमित्त रूप से दूसरे से भोजन पाता हो, पराश्रित, सेवा के लिए प्रतिभूत अर्थात् अनुजीवी 2 भोजन के योग्य 3 पटिया, गीण (विष० मुख्य) 4 गीण अर्थ में प्रयुक्त ।

आस्तिक [भक्त + ठक्] अनुजीवी, पराश्रयी ।

आश (वि०) [स्त्री०—शी] [भक्षा + अण्] पेट, भोजनमण्ड ।

भाग [भृ + बञ्ज्] 1 खण्ड अथ हिस्सा प्रभाग, टुकड़ा जैसा कि भागहर, भागश आदि में 2 नियतन, विनयन, विभाजन 3 भाग्य, किस्मत निर्माणभाग परिणत उत्तर० ४ 4 किसी पूर्ण का एक खण्ड भिन्न 5 किसी भिन्न का अंश 6 चौथाई, चतुर्थ भाग 7 किसी वस्तु की परिधि का ३५० वा घात या अंश 8 राशित्वक वा तीसरी अंश 9 कल्पि 10 कक्ष, अन्तराल जगह क्षय स्थान रघु० १८।४७ । सम० अर्थ (वि०) इत्य या ईत्यक सम्पत्ति या हिस्सा होने का अधिकार करणना हिस्सा का विभाजन जाति (स्त्री०) [गात्र + णे] भिन्न राशिया क घटा क० ४२ सुभाष्य क ता चेषम् 1 हिस्सा खण्ड अथ नीतिरभाष्ययोर्विभक्तं रघु० १।५० 2 किस्मत भाग्य परम्य 3 अन्वयो 'अमन, सौभाग्य' अङ्गवेष्य परम पदम्—भर्तृ० २।१२ 4 सम्पत्ति 5 आनन्द (य) 1 क० श० २ 2 उत्तराधिकारी भास् (वि०) आशयपर हिस्सेदार साक्षीदार धुम् (यु०) राजा धम् कक्षणा लक्षणा शब्दव्यक्ति का एक भेद शब्द का गीण प्रयोग जिससे शब्द अपने अर्थ का अंश रचना में तथा अज्ञान का देना है, अद्वयता लक्षण भी इस ही कहते हैं उदा० साय देवदन हर 1 महोत्तराधिकारी 2 (गणि० में) भाग या नकसीम हार. (गणि० में) भाग ।

भागवत (वि०) [स्त्री०—तो] [भागवत भागवत्या वा इदमोप्य दत्तवा का अण्] 1 विष्णु से मन्त्र रखने वाला या विष्णु की पूजा करने वाला 2 देवता संबंधी 3 पवित्र दिव्य पुष्पशील, त विष्णु या कृष्ण का अनुचर अथवा भवन तम् अठारह पुराणों में से एक ।

भागवत् (अभ्य०) [भाग + णच्] 1 खण्डों में या अंशों में, खण्ड खण्ड करके 2 हिस्से के अनुसार ।

भागिक (वि०) [भाग + ठक्] 1 खण्ड सम्बन्धी 2 खण्ड बनाने वाला 3 भिन्न सम्बन्धी 4 व्याज बहुत करने वाला (भागिक लभम्) 'मो' में से एक भाग अर्थात् एक प्रतिशत, इस प्रकार भागिक विधिति भाति ।

भागिन् (वि०) [भृ + णिच्] 1 हिस्से या अंशों से युक्त 2 हिस्सा रखने वाला, हिस्सेदार 3 हिस्सा लेने वाला, भाग लेने वाला, बाँची यथा धुम्

4. सम्बन्धित, इस्त 5 अधिकृतकारी, स्वामी—मनु० १।५३ 6 हिस्से का अधिकारी—मनु० १।१६५, ब्राह्म० २।१२५ 7 माय्यामान्, किस्मत वाला 8 बटिया, गीन ।

मानिनेयः [मनिनी + इक्] बहन का पुत्र, भानवा, — यी भानजी ।

मागीरणी [मागीर + अण् + ङीप्] 1 यमा नदी का नामास्तर—मागीरणी निर्मलसीकराणाम् कु० १।१५ 2. यमा की तीन मुख्य शाखाओं में एक ।

माग्यम् [मज् + व्यत्] 1 किस्मत प्रारब्ध, तकदीर, सीभाग्य या देव—स्त्रियादचरित्र पुरुषस्य भाग्य देवा न जानाति कुतो मनुष्य मुभा० (बहुधा ब० व० में) ल० ५।३० २ अच्छा भाग्य या श्रमण रघु० ३।१३ 3 अमृष्टि सम्पत्ति—भाग्येयन्त्येकिनी शं० ४।१३ 4 आनन्द, कल्याण, सम० आपल (वि०) भाग्य पर आश्रित—भाग्यायतनत परम् शं० ६।१६

उच्च सीभाग्य का प्रमान, भाग्यशाली घटना कमः भाग्य की बाध किस्मत का फेर भाग्य कमेण हि जनानि भवन्ति यानि सूक्त० १।१३

धोका भाग्य की बेला किस्मत का मेल—विष्णुच बुरी किस्मत, दुर्भाग्य—रघु० ८।४३, ब्रह्मा (अव्य०) बिधि की इच्छा से, भाग्य से किस्मत से भाग्यवदा ।

भाग्यवत् (वि०) [भाग्य + मतुप्] 1 भाग्यशाली, सौभाग्यसम्पन्न, जानन्वित 2 समृद्धशाली ।

भाङ्ग (वि०) (स्त्री० गी) [भङ्गा + अण्] पटन से निर्मित, मन का बना हुआ ।

भाङ्गक [भाङ्ग + कन्] फटा पुराना कपड़ा, जीर्ण हीन विषयः ।

भाङ्गीनम् [भङ्गाया भवन क्षेत्रम् भङ्ग + सन् या पटमन का कल ।

भाङ्ग (बुरा) उभ०) बटिना वितरित करना दे० 'भज्' प्रे० ।

भाङ्ग (वि०) [भाङ्ग + विप्] (प्राय समास के अन्त में) 1 हिस्सेदार, साथी, साथी 2 रखने वाला, उपयोग करने वाला, अधिकार करने वाला, प्राप्त करने वाला सुख, रिक्त 3 अधिकारी 4 भाङ्गक, अनुभव करने वाला, सधैतन 5 अनुकूल 6 रहने वाला, वासासी, निवास करने वाला यथा 'कुहरभाङ्ग' 7 जाने वाला, छुटारा लेने वाला, खोजने वाला 8 पुष्पा करने वाला 9 भाङ्ग में बसा हुआ 10 अवलोकनशील, कर्तव्य—मट्टि० १।२१ ।

भाङ्गक [भाङ्ग + क्] 1. बटने वाला 2 (गणि० में) वह अंक जिससे भाग किया जाए ।

भाङ्गनम् [भाङ्गतेजोर्भाङ्ग + क्] 1. हिस्से बनाना, बटिना 2. (अंक में) भाग 3. पात्र, बर्तन, प्याला,

बाली पुष्पभाजनम्—म० ४, रघु० ५।२२ 4 (आल०) आचार ग्रहण करने वाला, भाग्य स विधो भाजनं नर पञ्च० १।४३, कल्याणानां स्वर्गमि बहुधा भाजन विधयर्षे मा० १।३, उत्तर० ३।११, मालवि० ५।८ 5 योग्य या पात्र, योग्य पदार्थ या व्यक्तित्व—महाभूषा एव भवन्ति भाजनान्युपदेशानाम्—का० १०८ 6 प्रतिनिधान 7 ६४ पत्तों की बाप ।

भाङ्गितम् [भाङ्ग + क्त] हिम्मा, अश ।

भाङ्गी [भाङ्ग + अण् + ङीप्] बावल भाग का माह दलिया ।

भाङ्ग्यम् [भाङ्ग + प्यत्] 1 अश हिम्मा, टाय, 3 (अंक में) काभाग ।

भाटम्, भाटकम् [भट् + षञ् व्यञ्ज वा] मजहूरी, भाडा, करिया ।

भाटि (स्त्री०) 'भट' जिच् + इञ् । 1 मजहूरी भाडा 2 वेदा की कम्पई ।

भाट्ट । भट् अण् । भट्ट का अनुयायी कुमारिक भट्ट भूषा स्थापित ममामादर्यन क मित्रता का अनुयायी ।

भाण [भा + षञ्] । पाटपकाश का एक भेद इसमें केवल रंगमय नर एक ही पात्र होता है जो अन्त-विद्यो के स्थान का अकाशमण्डित का वष्टेष्ट प्रवीण करने पूरा कर देता है । भाण स्यादूर्ध्वरिणी नाना-वस्त्रास्तरामय एकाङ्गक एवाव निपुण पवित्रो विट मा० ८० ५।३३, जगो के इलाक भी देखिये, उदा० बसन्तिनिक मुकुटामन्द सीतामधुकर आदि ।

भाणक [भण् + क्] उठ सक कोषण करने वाला ।

भाण्डम् [भाण्ड + अच्, भण् + इ स्वायं जय का—नारा०] 1 पात्र बर्तन वासन (बाली) कटोरी गिलास आदि ।

नीलभाण्डम् 'नील रम्बने का मटका' इसी प्रकार 'नीलभाण्ड' 'हृष की हाडी' मुग मण्ड आदि 2 मजूक टुक पेटी मजूकनी कुम्हार — पञ्च० १।३ औजार या उपकरण यत्र 4 सर्वोत्त-उपकरण 5 सामान, बर्तन माल पण्यसामग्री दुकान-दार की बाणिज्यवस्तु भूग्रासामीनि भाण्डानि—पञ्च० १।६ माल की गाँठ 7 (आल०) कोई भी मूल्यवान् संपत्ति निधि ज्ञान या खुशमन्दे तनुमय तत्पुन-भाण्ड हि मे उत्तर० ४।०४ 8 नदी का तल 9 बाँटे की जीन वा साथ 10 मईती, मकराण, — अण्डाः (ब० व०) बर्तन, पण्यसामग्री । सम० अ (आ) वार, — रघु मंकारवर, सामान का कोठा (सा०) वहाँ पर का सामान और बर्तन आदि रखे जते हैं) भांडा-गाराङ्कृत विपुलां ता स्वयं भोगमात्रि—विष्णुमा० १८।४५ 2 कोष ज्ञान 3 संसृह, मोबाव, भंडार, — वसिः सोडारम, भूतः नाई—अतिभाण्डकम् विनिमय, सामान की बदलावली की व्यवस्था, — नरकः बर्तन

की अन्तर्बस्तु, - वृक्षम् वर्तनों के रूप में पुँजी, - बाला गोदाम, मण्डार ।

माण्डक, - कम् [माण्ड + कम्] छोटा वर्तन, कटोरा, - कम् माल, पण्यसामग्री, वर्तन ।

माण्डारम् [माण्ड + ऋ + जन्] गोदाम, मण्डार ।

माण्डारिन् (पुं०) [माण्डार + इनि] गोदाम या मण्डार का रखवाला ।

माण्डिक (स्त्री०) [मण्ड् + इन् पुषो० साधु] उत्तरे का घर पेटी । सम० बाहः नाई — बाला नाई की दुकान ।

माण्डिकः - ल [माण्ड + इन् माण्डि + लच्] नाई ।

माण्डिका [माण्डि + कन् + टाप्] उपकरण जोहार यन्त्र ।

माण्डिकी [माण्ड + इनि + डीप्] पेटी, टोकरी ।

माण्डरीः [मण्ड् + ईरच् पुषो० साधु] बड़ का या गुलर का वृक्ष ।

मात (भू० क० कृ०) [मा + त्त] चमकना हुआ जग मगाता हुआ, चमकीला, त उपवास प्रमाण मात काल ।

मातिः (स्त्री०) [मा + क्षित्] 1 प्रकाश चमक बालि आना 2 प्रत्यक्षज्ञान, ज्ञान या प्रतिनि ।

मामुः [मा + गुन्] घूर्ण ।

मात्र, मात्रव्यः [मात्रपदी वा पीजमामी अस्मिन् माते मादी (मात्रपदी) + अण्] चांद्रव्य के एक मास का नाम (अगस्त और सितम्बर के मास में जाने वाला) — वाः (स्त्री० - व० व०) पच्चीसवाँ और छब्बीसवाँ गणन (पूर्वाभाद्रपदा और उत्तराभाद्रपदा) ।

मात्रपदी, मादी [मात्रपद् + डीप् मात्रा + अण् + डीप्] मात्रपद् मास की पूर्णिमा ।

मात्रव्यमुरः [मात्रमानुरपत्यम् - मात्रमान् + अण् उकार देशः] सती साध्वी माना का पुत्र ।

मलम् [मा माये ल्युट] 1 प्रकट होना, वृक्षमान, 2 प्रकाश, कालि 3 प्रत्यक्षज्ञान, ज्ञान ।

मानुः [मा + नु] 1 प्रकाश, कालि, चमक 2 प्रकाश-किरण - मण्डितासिलदिकप्रान्तावच्छादो पाम्नु मानव — मा० १।१२९, सि० २।५३, मनु० ८।१३२ 3 घूर्ण, — मानु लघुचतुर्ग एव - ल० ५।४, भीममानी निदावे - मा० १।३० 4 सौख्यं 5 दिन 6 राजा, राजकुमार, प्रभु 7 निज का विशेषण - स्त्री० सुन्दर स्त्री । सम० - केव (ल) रः घूर्ण, - लः घातिह — निजम्, - वाट रविचार, इतवार ।

मानुष्क (वि०) [मानु + मनुस्] 1. व्यक्तिमान्, चमकीला, चमक करता हुआ 2 सुन्दर, मनोहर - दु० लूर्णं कृ० १।१५, रघु० १।३६ ऋगु० ५।२ - ली दुर्वाचन की पत्नी का नाम ।

मानिनी [मान् + निनि + डीप्] 1. सुन्दर लक्ष्मी, कामिनी - रघु० ८।२८ 2. कामुकी स्त्री (बहुव प्यार

के कारण ऐसी स्त्री के लिए 'चंदी' शब्द भी प्रयुक्त हुआ है) - उपधीयत एव कापि होमा परितो मामिनि ते मुनयस्व नित्यम् - मा० २।१ ।

मार. [म् + चञ्] 1 बोझ, बजन, तोल (बाल० से ली) कुचमारानामिता न योधित - मनु० ३।२७, इसी प्रकार - ओशीमार मेघ० ८२, मार कायो जीवित बसकीलम मा० १।३७, 2 (माकमण बाबि का) धक्का (युद्ध बाबि का) अत्यन्त विषयिष माग उत्तर० ५।५ 3 अतिरंज, मार या उड़ान - रघु० १।१८ 4 भ्रम, महुनत जग्यास 5 राशि बड़ी मात्रा - लक्ष बड़ा 6 २००० पल माने के तोल के बराबर 7 बोझा डोने के लिए जुआ । सम० - आकाश (वि०) बोझ से अत्यन्त दबा हुआ अधिक बोझा लिए हुए उड़ते हुए बोझा डोने वाला उपबोध मन्त्र बोझा डेकर डोवन वापन करना, कुलो वा डोवन यन्त्रि बोझ उड़ान का लकड़ी बाह (वि०) (स्त्री० चारीही) बोझा डोने वाला बाह बोझा ल डोने वाला कुली बाहम बोझा डोने वाला जानवर (मन्त्र) गाड़ी यागाधी का पिन्ना बाहिक कुली, सह (च०) जो अधिक बोझा उठा सके (अन) बहुत मजदूर बनवाने हुए, हाथ बोझा डोने वाला कुली श्रान्ति (पुं०) हथेली का विशेषण ।

मारब्ध [र] एक प्रकार का काल्पनिक पक्षी जिसका वर्णन केवल कहानियों में पाया जाता है ('मारब्द' मी) ५५० ५।१०२ ।

मारत (वि०) (स्त्री० ली । [भरत + अण्] भरत से मन्त्रध रखन वाला या भरत की सम्मान, - ल 1 भरत की मन्तान 2 भारनर्णन या हिन्दुस्तान का निवासी 3 अतिमैता लम् 1 भरत का देश, भारत सि० १।४।५ 2 संस्कृत में लिखा हुआ एक अत्यन्त प्रसिद्ध महाकाव्य जिसमें अमल उपान्यासों के साथ भरतवर्षी राजाओं का इतिहास पाया जाता है (व्यास या कृष्ण-हैपायन इसके रचयिता माने जाते हैं परन्तु यह जिस विशाल रूप में आज प्रिक्ता है निश्चित रूप से अनेक व्यक्तियों की रचना है) - अचर्वाचकिमुदयेव विरचित-वान् मारताक्यममृतं य, तमहमरायमकृष्णं कृष्णहैपा-यन अवे - देवी० १।४, व्याकृतिरा नियतं सार विषयस्य भारतं वन्दे, भूषणहर्षव सज्जो महाकुलां भारती बहति - बाबा० ३।१ - ली बाजी, बाष्प, बचन, बाजी-बहाह भारतीनिर्वाच - ईतर० ३, समर्पिष भारताय नुपमा योक्तुमर्हति - मु० १।७९ नवरत्नसिंधी निमित्तिमावर्तती भारती कवेर्वयति - काव्य० १ 2 बाजी की देवता, सरस्वती 3 विशेष प्रकार की लैली भारती संस्कृतभाषा का व्यापारी नटाक्षर - ल० व० २८५ ४ कथा, बटेर ।

भारद्वाजः [भरद्वाजस्यापत्यम् - अण्] 1 कीरव पाठकों की नैतिक शिक्षा के आचार्य गुरु होय 2 अगस्त्य का नामान्तर 3 मङ्गलपद 4 चातक पत्नी, अम्ब हृदयी ।

भारवः [भार वार्ति वा + क] धनुष की होरी ।

भारविः [?] किगताईनीय नामक मस्तककाव्य के रचयिता नाबख्ता भारवेर्मानि दाबन्माधस्य नादय, उचिते च पुनर्वाचे भारवेर्मा र्वेरिव, भारवेर्चंगीरवम् - उद्धृत ।

भारिः [इभस्य हरि पृथो० नाभ्] सिंह ।

भारिक, भारिक् (वि०) [भार + ठक, इति वा] भारी पु० बोला होने वाला, कुली ।

भार्गः [भर्ग + अण्] भर्ग दश का रात्रा ।

भार्गवः [भृगोरपत्यम् अण्] 1 लूकाचार्य, लूकप्रह का शास्त्रा और अनुसूतों का आचार्य 2 परशुराम दे० परशुराम 3 शिव का विशेषण 4 धनुर्धर 5 हाथी । मय० प्रियः हीरा ।

भार्गवी [भार्गव + ङीप्] 1 दूध 2 लक्ष्मी का विशेषण ।

भार्ग्वः [भू + ध्वत्] मेवक, पराध्वी (मध्य-धोषण किये जाने के योग्य) ।

भार्या [भर् योग्या + भार्य + टाप्] 1 धर्मपत्नी - सा भार्या या गृहे बसा सा भार्या या प्रजावती सा भार्या या पतिप्राज्ञा मा भार्या या पतिव्रता हि० १।१९६ 2 धारा जानवर । सम० - जाड (वि०) अपनी पत्नी के बेशरान से जीवन निर्वाह करने वाला, - ऊड (वि०) विवाहित (पुरुष) - भार्योडं तमवजाय - अटि० ४।१५, - क्षिनः पत्नी से प्रभावित पति, जोरक का मुलाम ।

भार्याकः [भार्या + क् + उण्] 1 एक प्रकार का मृग 2 उस बालक का पिता जो अन्य पुरुष की पत्नी से उत्पन्न हो ।

भार्यम् [भा + लृप्] मस्तक, ऊलाट बट्याना निजभान-पट्टिबिहित स्तोक महडा धनम् - भर्ग० २।४९, (स्मर-पट्टि) बपु सद्यो मालानलभसितजालास्पदममृत-भारि० १।८४ 2 प्रकाश 3 अक्षर । सम० - अङ्क 1 भाष्य-बान् पुष्प जिसके मस्तक पर भाष्य रेखा विराजमान है 2 शिव का विशेषण 3 भारा 4 कछुवा कण्ठः 1 शिव का विशेषण 2 गणेश का विशेषण, बर्हन्म सिद्धर - इक्षिम् (वि०) 'मस्तक या ललाट को देखने वाला' बर्हन्म वह नीकर जो अपने स्वामी की इच्छाओं के प्रति लावधान रहता है, दुष् (पु०) लोचन शिव का विशेषण पट्टः - दुष् मस्तक, ललाट ।

भारुः [भू + उण्, दृष्टि, रय ल] सूर्य ।

भारुक्, भारुक, भारलुक, भारलूक [भरुते हिमस्ति प्राणिन मय + ठक (ऊक) + अण्, भरु (हम्) + क + अण्] रीछ, मालु ।

भाबः [भू भावे बज्] 1 होना, बसा, अस्तित्व नामसो विद्यते भाव मय० २।१६ 2 होना बटित होना, बटना 3 स्थिति, अवस्था, होने की अवस्था लता-भावेन परिजनमन्या रूपम् विक्रम० ४, कातरभाव विवर्णभाव जाति 4 रीति, ढंग 5 दर्जा, स्थिति, पद, हेलियत - देवीभाव ममिता काव्य० १०, इसी प्रकार प्रेय्यभावम् किकरभावम् 6 (क) यथार्थ दशा या स्थिति यथार्थता, वास्तविकता मय० १।०८ (क) निष्कण्टता, अक्षित स्थिति में भावनिबन्धना रति

रघु० ८।५२, २।२६ 7 सहज गुण, चित्तवृत्ति प्रकृति, स्वभाव उत्तर० ६।१४ 8 झुकाव या मनो-वृत्ति, भावना विचार, मत, कल्पना - पञ्च० ३।४३, मनु० ८।२५ ४।२५ 9 भावना, संवेद्य, रति या मनो-भाव एको भाव पञ्च० ३।६९, कु० ६।९५ (नाट्य विज्ञान या काव्यरचना में भाव बहुवचन)

प्रकार के होते हैं प्रधान या स्थायीभाव, तथा ग या व्यभिचारिभाव । स्थायिभाव मितनी में जाठ या नी है, तदनुसार अपने २ स्थायिभाव से युक्त रस भी जाठ या नी है । व्यभिचारिभाव मितनी में तेनीय या कीतीस है तथा स्थायिभावों का विकास करने एवं सर्वजन करने में सहायक होते हैं, इनके कुछ भेदों की परिभाषा तथा मितनी के लिए - रस० का प्रथम भागन या काव्य० का चौथा समुत्पाद देखो) 10 प्रेम, स्नेह, अनुराग - इन्मार्ग नाम क्रियया विवक्षु - कु० १।१५, रघु० ६।१५ 11 भाविभाव, प्रवीणत्व, सारास, आशय, इति भाव (श्राप आध्यकारों द्वारा प्रयुक्त) 12 अर्थ, आशय, तात्पर्य व्यञ्जना भा० १।२५ 13 प्रस्ताव, सत्कल्प 14 हृदय, भावना, मन-तथोक्ति-भावत्वात् - भा० १।१२, मय० १।८।१५ 15 विद्यमान पदार्थ, वस्तु, चीज, तत्त्वार्थ, - अगति अविनष्टे ते भावा नवेनुकलादय - भा० १।१७, १९, रघु० ३।६१ उत्तर० ३।३२ 16 प्राणी, जीवधारी वस्तु 17 भाव-मय मनन, चिन्तन (= भावना) 18 आचरण, वृत्ति-विधि, हावभाव 19 रीति श्रोतक हावभाव या रस की अभिव्यक्ति, प्रेम लक्ष्य - भा० २।१ 20 जल्प, 21 सत्कार, विषय 22 वर्गस्थाय 23 इच्छाक्षक्ति 24 अतिमात्रव स्थिति 25 उपदेश अनुदेश 26 (नाटक में) विद्यान् और सम्माननीय व्यक्ति, योग्य पुरुष (सर्वोच्चमज्ज) - भाव अयमस्मि - विक्रम० १, तां सज्जु भावे तस्य सर्वं धर्मां पाटिता - भा० १ 27. (भा० में) भाववाचक संज्ञा का आशय, भाषात्मक विचार भावे कत 28 भावभाव 29 (व्योक्ति में) जल्पकुशल की स्थान 30 वाक्य । सम० - अणुप (वि०) स्वाभाविक, (वा) छाया, - अन्तरम् विन्य स्थिति

अर्थः 1 स्पष्ट अर्थ वा स्थिति किसी कथ्य वा

3. भविष्य--समतीर्थ च भवष्य भावि च--रघु० ८।७८, प्रत्यक्षा इव यद्भावाः किमन्ते भूतभाविनः--काव्य० १०, नै० ३।११४ होने के बोध्य 5. अव-
श्यभावी, भवितव्य, प्रादुर्भावित या पूर्वनिर्दिष्ट भव-
भावि न तद्भावि भाविष्येण तदवयवा हि० १
6. उत्कृष्ट, सुन्दर, मध्य,--मी 1. सुन्दर रघु 2. उत्तम
या साध्वी महिला--कु० ५।३८ 3. स्वेच्छाधारिणी
रघु 1।

भावुक (वि०) [भू + उक्ञ्] 1. होने वाला, घटने
वाला 2. होनहार 3. समृद्ध, प्रसन्न 4. शुभ, मंगलमय
5. काव्य में वचि रत्नने वाला, गुणग्राही,--क० बहनोंई
(बहुधा नाटकों में प्रयुक्त),--कम् 1. प्रमत्तता,
कल्याण, समृद्धि या एतु को बुद्धवन्तो भावुकाना
परंपराम्--काव्य० ७ ('अप्रयत्नात्' नाम काव्य
रचना के दोष का उदाहरण 2. प्रेम और प्रणयान्माद
से पूर्ण भावा 1।

भाष्य (वि०) [भू + ध्यन्] 1. होने वाला, घटित होने
वाला, प्रायः 'भवितव्यम्' की भाँति भावक्य में प्रयुक्त
कि तैर्भाव्य मम सुदिबर्त्त। भर्तु० ३।४ 2. भविष्य
3. अनुष्ठेय या जो पूरा किया जाय 4. सोचने जाने
या कल्पना किये जाने योग्य 5. सिद्ध या प्रदर्शित
किये जाने योग्य 6. निर्धारण या श्लेषणा किये जाने
योग्य,--अथ 1 प्रारब्ध, अवश्यभावी 2 भवितव्यता 1।

भाष्य (म्भा० आ० भाषते, भाषित) 1. कहना, बोलना,
उच्चारण करना--त्वयि कमीष्य प्रति साधु भाषितम्
--कु० ५।८१, बहुधा द्विकर्मक,--द्यौता प्रियामेत्य
वचो बभाषे--रघु० ७।१६, आबध्बल काममिद
वभाषे--कु० ३।११, भट्टि० १।२२२ 2. बोलना,
संवाचित करना--किञ्चिद्द्विहस्यायंपति वभाषे रघु०
२।४६, ३।५१ 3. बोलना, बोधना करना, प्रकथन
करना--सितपालमुच्यतेः प्रीत्या तमेवार्थप्रभाषतव
--रघु० २।५१ 4. बोलना, बातें करना 5. नाम लेना,
पुकारना 6. वर्णन करना, अनु 1. बोलना, कहना
2. समाचार देना, बोधना करना--मनु० १।१२२८,
अथ--, शिडकना, बुरा भला कहना, बदनाम करना,
निन्दा करना, बुराई करना--अहममुपाय न किञ्चि-
द्वभाषे--भाषि० ४।२७, न केवल यो महतोऽपभाषते
श्रुयोति तस्मादायि स पापमाक-कु० ५।८३,
अथि--., 1. बोलना, भाषण देना--मनु० २।१२८
2. बोलना, कहना 3. प्रकथन करना, बोधना करना,
कहना, समाचार देना 4. वर्णन करना, आ--1. बोलना,
भाषण देना,--वैसम्पायनवचन्यासीदृग्भाषाव का०
१।१७ 2. कहना, बोलना,--आमाधि रामेण वचः कनी-
यान्--भट्टि० ३।५१, परि, परिपाटी स्थापित
करना, औपचारिक रूप से बोलना, प्र, कहना,

बोलना--स्वितवी कि प्रभावंत--भव० २।५४,
प्रति, 1. बदले में कहना, उत्तर देना--भट्टि०
५।३१२ कहना, वर्णन करना 3. एक के बाद बोलना,
सुनकर बोलना 4. नाम लेना, पुकारना कामिनि
तामपरीति प्रतिभाषते महाकवयः--श्रुत० ९, वि-
, ऐच्छिक नियम के रूप में निर्धारित करना, सम्-
, मिलकर बोलना, बातचीत करना--मनु० ८।५५ 1।

भाषणम् [भाष् + ण्यट्] 1. बोलना, बातें करना, कहना
2. वक्तृता, शब्द, बात 3. कृपापूर्ण शब्द 1।

भाषा [भाष् + षञ् + टाप्] 1. वक्तृता, बात--यथा
'वाचभाष' में 2. बोली, जवान--मनु० ८।१६४
3. सामान्य या देहाती बोली (क) बोली जाने वाली
संस्कृत भाषा (विप० छन्दस् वा वेद)--विभाषा भाषा-
याम्-या० ६।१।२८१ (ख) कोई प्राकृत बोली
(विप० संस्कृत) मनु० ८।३३२ 4. परिभाषा, वर्णन
--स्थितप्रज्ञस्य का भाषा--भव० २।५४ 5. सरस्वती का
विशेषण, वाणी की देवी 6. (विधि में) अविशेष
की चार अवस्थाओं में से पहली, शिकायत, आरोप,
रोषारोपण 1. सम० अन्तरम् 1. अन्य वाणी या बोली
2. अनुवाद, वचः आरोप, शिकायत--दे० 'भाषा'
6 ऊपर,--लक्षः एक बलकार का नाम जिसमें
शब्दक्रम का न्यास इस प्रकार किया जाता है कि
बापे बाप उसे संस्कृत समझें और बापे प्राकृत (कोई
न कोई वेद)--उदा०--प्रञ्जलमधिमञ्जीरे कलमञ्जीरे
विहारसरस्वतीरे, विरसाहि कैलिकीरे किमाहि कीरे
व गङ्गासरस्वतीरे सा--५४२, (एच स्लोकः
संस्कृतप्राकृतचोरसेनीप्राध्यावन्नागरापप्रवेष्टेकविष
एव), कि त्वां मयामि विष्ण्वेदाकवाचकारिणि,
काम कुप बराहो देहि मे परिचयम्--मा० ६।११,
(यह संस्कृत या खीरसेनी में है) इसी प्रकार ६।१० 1।

भाषिका [भाषा + कन् + टाप्, ह्रस्व, इत्यम्] वक्तृता,
भाषा, बोली 1।

भाषित (भू० क० क०) [भाष् + ण्त] बोला हुआ, कहा
हुआ, उच्चारण किया हुआ, तब भाषण, उच्चा-
रण, शब्द, बोली--मनु० ८।२६ 1। सम०--मुञ्च
==उत्सर्पक 1।

भाष्यम् [भाष् + ण्यत्] 1. बोलना, बातें करना 2. सामान्य
या देहाती भाषा की कोई रचना 3. व्याख्या, वृत्ति,
टोका जैसा कि 'वेदभाष्य' में 4. विशेषकर सूत्रों की
वृत्ति जैसी शब्दग व्याख्या और टिप्पण होते हैं
(सूत्रार्थ वचने यत्र पदेः सूत्रानुसारिणि, स्वपदानि
च वच्यन्ते भाष्यं भाष्यविदो विदुः)--सहितपास्याप्तोऽ
स्यैव भाष्यस्याचंगरीवस, मुक्तिस्तरता भाषो भाष्य-
भूता प्रवन्तु मे--सि० २।२४ 5. पाणिनि के सूत्रों पर
पतंजलि का महाभाष्य 1। सम०--कारः--कुञ्ज

(पुं०) 1. भाष्यकार, टीकाकार 2 पतञ्जलि ।

भास्व (भ्या० आ० भास्ते, भासित) 1 चमकना, जग-
मगाना, जगमग करना -तावत्कामनुपातपशुचम
विभ्य बभासे विधो भासि० २।७५, ४।१८, कु०
६।११, मट्ट० १०।६९ 2 स्पष्ट होना, विस्तर होना,
मन में होना-त्वदङ्गमायवे दृष्टे कस्य चित्ते न भास्ते,
भास्तीसधनुस्त्वलाकदलीनां कठोरता चन्दा० ५।४२
3 प्रकट होना-भ्रेर० (भासयति-त) 1. चमकाना,
देदीप्यमान करना, प्रकाशित करना अचिदसस्तनु-
मध्वरदीप्तितामसमभासमभासयदीधवर --रघु० ९।२१,
मन० १५।९ 2 जाहिर करना, स्पष्ट करना, प्रकट
करना-मट्टि० १५।४२, अथ- , 1 चमकना, कि०
३।४६, 2 प्रकट होना, प्रकाशित होना, स्पष्ट होना
-बाहोस्विन्मुखमभासते युवत्या -शि० ८।२९,
अथ- , प्रकट होना, के समान चमकना, की तरह
दिखाई देना-स्थानानां स्वर्ग इवावभासे-कु०
७।३, रघु० ७।४३ १६।१२, उच्च- , चमकना, के
समान दिखाई देना, -निष्- , चमकना- कि० ७।३६,
प्रति- , 1 चमकना 2 दिखाई देना 3 स्पष्ट होना,
प्रकट होना, वि- , चमकना ।

भास्व (स्त्री०) [भास् + क्विप्] 1 प्रकाश, कान्ति, चमक
-दुशा निघोन्दीवरचावभासा नै० २२।६३, रघु०
९।२१, कु० ७।३ 2 प्रकाश की किरण-वि०
५।३८, ४६, ९।९, रत्न० १।२४, ४।१३ 3 प्रतिबिम्ब
प्रतिभा 4 मझिमा, कीर्ति, विभूति 5 कालसा, इच्छा ।
सम०-करः 1 सूर्य-धि० ११।६९ रघु० ११।७
१२।२५ कु० ६।४९ 2 नायक 3 अग्नि 4 शिव
का विघ्नघन 5 एक प्रसिद्ध योनिघी का ११ की
सताव्दी म हुए हैं, (रघु०) साना, 'प्रिय मास, 'सप्तसौ
मासकुल सप्तयो, -करि धनिग्रह ।

भासः [भास् भावे घञ्] 1 चमक प्रकाश कान्ति
2 उज्ज्वला 3 मूर्ती 4 गिद्ध 5 गोष्ठ गोधाला
6 एक कवि का नाम -भासो हाम कविकुलगुरु
कालिदासो विनासः प्रसन्न० १।२२, मालवि० १ ।

भासक (वि०) (स्त्री०-सिका) [भास् + क्विप्] 1 प्रकाश
करने वाला, चमकाने वाला, रोशनी करने वाला
2 बिलकाने वाला, विस्तर करने वाला 3 बोधमय्य
बनाने वाला, -कः एक कवि का नाम ।

भासकम् [भास् + क्विप्] 1 चमकना, जगमगाना 2 उद्योति-
मय, क्षुत्तिमान् ।

भासक्य (स्त्री०-सी) [भास् + क्विप्, अन्त्यायेज्] 1
चमकदार 2 सुन्दर, मनोहर, -ता 1 सूर्य 2 चन्द्रमा
3 नक्षत्र, तारा, -सी नक्षत्र ।

भास्वः [भास् + क्विप्] सूर्य ।

चमकुर (वि०) [भास् + क्विप्] 1 चमकीला, चमकदार

भय्य कि० ५।५, रघु० ५।३० 2 चमकक, रः
1 नायक 2 स्फटिक ।

भास्वन् (वि०) (स्त्री०-सी) [भस्मन् + क्विप्, मधन्तरान्
न टिलोप] राक्ष से बना हुआ, राक्ष बाला -शि०
४।६५ ।

भास्वत् (वि०) [भास् + क्विप्, मय्य व] चमकीला,
चमकदार क्षुत्तिमान्, देदीप्यमान् कु० १।२, ९।९०
पुं० 1 सूर्य भास्वानुदेध्यति हसिष्यति पञ्चजालि
मुभा०, रघु० १६।४४ 2 प्रकाश, कान्ति, भाभा
3 नायक, -सी सूर्य की नगरी ।

भास्वर (वि०) [भास् + वरच्] चमकीला, प्रकाशमान,
चमकदार, उज्ज्वल रः 1 सूर्य 2 दिन ।

भिस्व (भ्या० आ० भिस्ते, भिस्ति) 1 पूछना, प्रार्थना
करना, मागना (द्विकर्मक) भिक्षापात्रो वन प्रिया
मट्टि० ६।९ 2 याचना करना (भिक्षा की) व
यज्ञार्थं सूत्रादिभ्यां भिस्ते कर्हिचिन् मनु० ११।२४ २५
3 बिना प्राप्त हुए पूछना 4 क्मांत या दुखी होना ।

भिक्षन्, [भिस् + क्विप्] मागना, भिक्षा मांगना
भिक्षावृत्ति, भिक्षारोपन ।

भिक्षा [भिस् + क्विप् + टाप्] 1 मागना याचना करना
प्रार्थना करना मनु० ६।५६ 2 दान के रूप में जो
बीज दी जाय, बीज, -मयति भिक्षां देहि 3 यज्ञद्वारी,
माया 4 सेवा । सम० अटनम् बीज भागते हुए
चूमना (म) भिक्षापरी, साधु-जन्म माय कर प्राप्त
किया गया अन्न, बीज, जलनम् (जन्म) = भिक्षाटन,
-अचिन् (वि०) बीज मागने वाला (पुं०) भिक्षारी
-अर्ह (वि०) भिक्षा के योग्य दान के लिए उपयुक्त
पदार्थ-जानिन् (वि०) 1 भिक्षा पर निर्वाह करने
वाला 2 बेईमान, उपवीचिन् (वि०) भिक्षा पर
जीने वाला भिक्षारी, -करचन् भिक्षा लेना बीज
मागना, -करचन्-अर्धन्, अर्ध बीज मागते हुए चूमना
पात्रम् भिक्षा ग्रहण करने का बर्तन बीज के लिए
कटोरा-इसी प्रकार भिक्षापात्रम्, भिक्षापात्रनम्,
-पात्रकः भिक्षारी बन्धा (निरस्कार-सूचक शब्द),
-वृत्ति (स्त्री०) बीज माग कर जीना, मागु या
भिक्षा का जीवन ।

भिक्षान् (स्त्री०-की) [भिस् + क्विप्] भिक्षारी, साधु,
भिक्षक ।

भिक्षित (मू० क० ड०) [भिस् + क्विप्] याचना की गई,
माँगा गया ।

भिस्व [भिस् + क्विप्] 1 भिक्षारी, साधु भिक्षा व
भिक्षावे दत्तात्-मनु० ३।९४ 2 साधु, बीज मागन
में पहुँचा हुआ साधु (यह कि वह कुटुम्ब, घर
द्वार छोड़ कर केवल भिक्षा पर निर्वाह करता है),
सम्यासी 3 ब्राह्मण का बीज मागन, सम्यास

4. बौद्ध भिक्षुक । सम०—बर्षा विद्या मीमाणा, साधु का जीवन,—सङ्कः बौद्ध भिक्षुओं का समाज—सङ्कली फटे पुराने कपड़े, पीढ़र ।

भिक्षुकः [भिक्षु + उक्] विचारो. माधु—मधु० १५११ ।

भिक्षुः [भिक्षु + क्त] 1. भाग, अंश 2. लच्छ, टुकड़ा 3. दीवार, विभाजक दीवार ।

भित्तिः [भिद् + क्त] 1. तोड़ना, लच्छ-लच्छ करना, बोटना 2. दीवार, विभाजक दीवार, समवा सोध-भित्तिम्—दश०, शि० ४१६७ 3. (अतः) कोई स्थान, जगह या भूमि जिन पर कुछ किया जा सके, आधार, आधार—चित्र-कर्म रचनाभित्ति विना कर्ते—मुद्रा० २१६४ लच्छ, लव. टुकड़ा, अथ 5 कोई भी टूटी हुई वस्तु 6 दरार, नद 7 धटाई 8. कमी लच्छ 9 अवसर । नद० ज्ञानः बूहा, कोरः संघ लगा कर घर में बसने वाला चोर, बल्लः 1 एक प्रकार का बूहा 2. बूहा ।

भित्तिका [भिद् + क्त + टाप्] 1 दीवार, विभाजक दीवार 2. घर की छोटी छिपकली ।

भिन्ना [भिन्ना + पर० भिन्नति] बोटना, टुकड़े २ करके बोटने वाला । ॥ (कथा० उभ० भिनति, भित्ति, भिन्न) तोड़ना, फाड़ना, टुकड़े २ करना, काटकर अलग २ करना, फट जाना, छिन्न करना, बीच में से तोड़ना अतिशयतमभ्यस्त कि भिनति न भूमत—हि० ३१५५ वेधां कश्च न हवति न भिनति लज्जा—मुद्रा० ३१३४, शि० ८१३९, मनु० ३१३३ रघु० ८१५५, १२७७ 2 मोटना, उखड़ना, मुवाई करना—उत्तर० १२३३ 3 बीच में से निकल जाना—पंच० १२११, २१२४ 4. बोटना, पृथक्-पृथक् करना हिवा भिन्ना सिद्धिभिः रघु० ११३९, अग्रसत्र करना रघु० ११३३ 5. उल्लंघन करना, अतिक्रमण करना तोड़ना, भंग करना समय लक्ष्यभोजिनम् रघु० १५१४, निहृष्टश्च भिन्नि भिन्नम् दामवोऽतो बलविधा मष्टि० ७१६८ 6. हटाना, दूर करना शि० १५१८७ 7. विघ्न डालना, स्काट डालना जेसा कि 'समाधिचिद्विद्' में 8. बदलना, परिवर्तन करना, (न) भिन्नति यन्ता भित्तियवमुक्तं कु० ११११ या विष्वालोपमदारभिनन्वतय. अर्थ सहते भूयाः—स० १११४ 9. छिडाना, फुकाना, फेंकना—सुवौश्रुतिभित्तियारविन्नु कु० १११२, नवोपसा भित्तियैकपञ्चमम् स० ७११९, वेध० १०७, 10. तितरवितर करना, बखेरना, उड़ा देना—भिन्नसा रत्नपुष्पः—स० ११३३, भिन्नः ११११ 11. बौद्ध लोकना, बिखरना, पृथक् २ करना—मुद्रा० ३१३३ 12. डौंसा करना, बिखोव करना, बौधना—कर्मकुलम् भित्तिं विधे—कु० ११५९ 13. वेध

लोकना, मध्याकोड़ करना 14. बटकाना, उखाट करना

15. वेध करना, बिखित करना । कर्मबाल्य—विधे, 1. टुकड़े २ होना, फटना, बरबराता—मुक्त० ५१३२

2 बाटा जाना, बिपुल किया जाना 3. फेंकना, बिखरना, छिडाना 4. सिधिल या विघात किये जाना

—प्रस्थानविद्यां न बाल्यवीदीम्—रघु० ७१९, १६

5—पृथक् होना (मया० के साथ) रघु० ५१३७,

उत्तर० ४ 6. नष्ट किया जाना 7. संशयोड़ किया जाना, बोझा दिया जाना, दूर चले जाना—कहकौ

मिच्छते मन्त्र—पंच ११९४ 8. गूब, पीछित, वा व्यथित किये जाना जेर० भेदवति है 1 लच्छ २ करना,

छाड़ना, बोटना फाड़ना बाधि 2 नष्ट करना, बिखरित करना 3. बौद्ध लोकना, पृथक् २ करना 4. बटकना

5. मनीष या मन्त्र से बिथाना । इच्छा० (विहितवति

—ने) तोड़ने की ब्रह्मिकाय करना, जन्म—, बोटना,

तोड़ डालना, उक्—, फूटना, बलना (पीसा) पैदा होना कु० ११२४—रघु० ११३१, भिन्नु—,

1. फाड़ना, फटकर बल्य २ होना, टूटना—बहि०

११६७ 2. बौधना, बोझा देना—उत्तर १११, अ—,

1 तोड़ना, फाड़ना, काटकर पृथक् २ करना 2. बुरा,

(हाथी के मस्त्वल से) कु० ५१५०, अहि०—, काड़

कमाना, बेटना, बुरा 2. वेध लोकना, बोझा देना

3. भिक्षुकना, नाली देना, निष्ठा करना—अतिविध

कालामपराधकृतम्—हि० ९१५८, रघु० १५२२

4. अस्वीकार करना, नुकरना, 5. बुरा, खर्बई करना

—कु० ७१३५, वि—, 1 तोड़ना फाड़ना 2. वेध

करना, बुरा 3. बोटना, अलग २ करना 4. हलछेप

करना 5. बखेरना, तितरवितर करना, उक्—,

1. तोड़ना, काड़ कर टुकड़े २ करना, टुकड़े २ होना

2. बिल जाना, बंघटित होना, लच्छ होना, बिखित

होना, बिडाना, एक अवसर रचना—अन्वोष्यविधिवृत्तौ

समीनान् मा० ११३३, बहि० ७१५ ।

विचकः [भिद् + क्तुन्] टक्कार,—कम् 1. हीरा, 2. इन्द्र का बज्र ।

विवा [भिद् + वक् + टाप्] 1. तोड़ना, फटना, फाड़ना,

पीरना—हि० ९१५ 2. बिखोव 3. बखर 4. बखर,

बाधि, फिल ।

विधिः, विधिरम्, भिक्षुः [भिद् + धि. किरप् कु वा] दण्ड का बज्र ।

विधुर (वि०) [भिद् + धुरप्] 1. तोड़ने वाला, फाड़ने

वाला, टुकड़े टुकड़े करने वाला 2. बुराबुरा, बीज

टूटने वाला 3. सम्मिश्रित, विचकमप, बिना हुका,

सिद्धि—नीतयानवृत्तिविधुराभ्यस्योपपद—हि० ११२६,

११५८,—ए पण्ड वृक्ष,—रघु बज्र ।

विधः [भिद् + क्तुन्] 1. वेध से बहने वाला बौध 2. एक

विशेष नर का नाम—तीव्रदासम् इन्द्रोद्यमविशेषोर्न-
मयेवस्तुषु विशेषितम्—रघु० ११।८ (३० पंक्ति०) ।
मिश्रम् [मि + रक्] दक्ष ।

मिश्र [मि + रक् + इन्]—मिश्रि पाठयति—पाल
+ मण्] 1 हाथ से फेंका जाने वाला छोटा माला
2 मोफिया, (मोफिया या मुलेस बैठा एक उपकरण
जिसमें रखकर पत्थर फेंके जायें) ।

मिश्र (भू० क० ड०) [मि + क्त, तस्य नः] 1 टूटा
हुआ, फटा हुआ, टुकड़े टुकड़े किया हुआ, काटा हुआ
2 विभक्त, विभुक्त 3 पृथक्कृत, विच्छिन्न, अलगाया
हुआ 4 फेंकाया हुआ, फुलाया हुआ, झुला हुआ
5 अलग, इतर (अपा० के साथ) — तत्साध्य मिश्र
6 नानास्व विविध, 7 डीका किया हुआ 8 सल्लिख्य,
मिलाया हुआ, मिश्रित 9 विचलित 10 परिवर्तित
11 प्रचल्य, बदोन्मत्त 12 रहित, हीन, बंचित,
(३०/विद्),—अः किसी रत्न में दोष या छोट,—अम्
1 लव, लव्य, टुकड़ा 2 मजरी 3 बाव, (छुरे आदि
बोके का) बाधात 4 मिश्र राशि। सम०—अञ्जनम्
बहुत सी औषधियों को पीसकर तैयार किया गया
सुगन्ध—प्रयति—मिश्राञ्जनवर्षता बना हि०
१२।९८ मेघ० ५९, अट्ट० ३।५, अर्थः स्पष्ट,
विशद, सुबोध,—अथ 'दूसरी माता से उत्पन्न'
बहिला बार्द,—अथ 'मदोन्मत्त हामी (जिसके
मस्तक से मद रिसता है),—अथ (वि०)
मेघहीन (सेना आदि),—अथ (वि०) कमहीन,
कमरहित,—मति (वि०) 1 पग छोड़ कर चलने
वाला, 2 तेज बाल चलने वाला, गर्भ (वि०)
(कैव में) टूटा हुआ, अस्थवस्थित, भुजलम् भिन्न
राशियों की गुणा, अथः भिन्नराशि का विभक्त
--वर्षिण (वि०) अन्तर देखने वाला, वर्षिण
--प्रकार (वि०) अलग प्रकार या किस्म का
--माजलम् टूटा, बर्तन, डीकरा, अम्लम् (वि०)
अनेकाल में बाव काया हुआ, प्रायःकाल छोट से
आहत, वर्षादि (वि०) जिसने 'य' पर मीमांसी का
उल्लेखन कर दिया है, निरादर्युक्त,—अः कानापावा-
रविमयार्थ—उत्तर० ५ 2 असैन नवियजन
—अधि (वि०) अलग धाँव रखने वाला,—मिश्रक-
विधि लोक रघु० ९।३०,—लिङ्गम्—अथम् रचना
में किम और वचन की अमागति दे० वाच्य० १०
—अर्थः,—अर्थस्क (वि०) प्रलोभन करने वाला,
भुस (वि०) बुरा जीवन बिताने वाला, परित्यक्त,
—वृत्ति (वि०) 1 बुरा जीवन बिताने वाला,
मुलार्थ का अनुसरण करने वाला 2 अलग प्रकार की
भावनाएँ, अधि वा लघेन रखने वाला 3 नाना प्रकार
के व्यवसाय करने वाला,—अर्थि (वि०) न हुआ

हुआ, विषटित,—अथ (वि०) 1 बरती हुई आवाज
वाला, हुकमाने वाला 2 बेसुरा,—अथ (वि०)
जिसका हृदय बीच दिया गया हो रघु० ११।१९।
निर्विचका (स्त्री) एक प्रकार का पीषा, श्वेतम्, साफे
बुचबी ।

मिस्त [मि + तक्] एक जंगली माति। सम०—कवी
नील माय, लव लाघवम्, भूषणम् भूषणी का
पीषा ।

मिस्तोयः, दक्षः [मिस्तप्रियम् उट पत्र यस्य व० स०,
मिस्तोय + क्] कौघप्रक्ष ।

मिषम् (पु०) [मिनेत्यस्मात् रोम भी + वृक्, ह्रस्वच]
1 बंध, विकसिक मिषनामसाध्यम् रघु० ८।९३
2 विष्णु का नाम। सम०—मिस्तम् औषधि या दवा
—वाचः कठबंध, वरः श्रेष्ठ बंध ।

मिष्ठा, मिष्ठिका, मिस्तदा, मिस्तदा (स्त्री०) घुना
हुआ या नला हुआ अनाज ।

मिस्त (स्त्री०) [मस् + क्त, टाप्, इत्थम्] उबाले हुए
चायक ।

मी (बहु०) पृ० विभेति, भीत) 1 डरना, भय जानना
अथवा होना—मयोविभेति किं बाल न स भीत विमु-
चति 1 रावणाविभेति मृगम् मट्टि० ८।७०, हि०
३।५५ 2 बावुर या उत्कृष्ट होना (जा०) श्रेर०
(आययति) डरना, मुचकर्वेन आययति सिद्धा०
(आययते, बीचयते) डराना, बाव देना, सकल करना
मुचो आययते—सिद्धा० स्तनितेन बीचयित्वा बारा—
हस्ते परामुचति—बृह० ५।२८ ।

मी (स्त्री०) [मी + विष् + मय, डर, जानक, वषात,
वास, अमीः 'मिर्मय'—रघु० १५।८ वपुष्मान् भीतमी-
वीमी भूतो राज प्रसृत्यते—मनु० ७।५४ ।

भीत (भू० क० ड०) [भी + क्त] 1 सन्नत डराया हुआ,
आतंकित, वस्त (अपा० के साथ)—न भीतो वरणा-
वसि—बृह० १०।२७ 2 खतरे में डाला हुआ,
आवृण्णम्। सम० भीत (वि०) अथम् डरा
हुआ ।

भीत हार (वि०) [भीत + हृ + कण्] डराने वाला ।

भीतकुरम् (अथ०) [भीत + कृ - अण्] किसी को
कायर के नाम से पुकारना ।

भीति (स्त्री०) [भी + क्तिन्] 1 डर, आशंका, भय,
नाम 2 बाधकी वरधाराहृद। सम०—आदित्यम्
भयभीत होने का नाट्य करवाया हुआभाव विच-
काना ।

भीष (पि०) [मिनेत्यस्मात्, भी अयावने मक्] भवा-
नक, बाव देने वाला, भवावह, वरधाना, बीचक—न
मेधिरे भीषविषेय भीषिन्—अथ० २।८०, रघु०
१।१६, १।५४, —कः 1 चिब का विशेषण 2 द्वितीय

पाण्डव राजकुमार (यह पवन देव द्वारा कुन्ती से उत्पन्न हुआ था, बचपन में ही वह अपनी अमाधारण शक्ति का प्रदर्शन करने लगा, जहाँ इसका नाम भीम पड़ा। बहुभाषी होने के कारण इस बुकादर 'भीम' के पेट वाला भी कहने लगे थे। इसका अचूक शत्रु इसकी यक्षा थी। महाभारत के युद्ध में अपने महत्वपूर्ण कार्य किया और युद्ध के अन्तिम दिन अपनी अमाप शक्ति से दुर्गन्ध की जवा की नीर दिया। इसके जीवन की कुछ पत्थरी मूर्ख्य घटनाएँ हैं। हिंडव और बक शासन का गडाइना, ब्रह्मण का पराजित करना और बक के विनाश कर दुशान्तन के (जिसने प्रोचवा के प्रति अमान्यता करने का प्रयत्न किया) का भाषण प्रतिज्ञा, दुशान्तन के रक्त का पीकर प्रतिज्ञा की पुनः ब्रह्मण का पराजित करना राजा विराट के प्रति रमोच के रूप में कावच के साथ मन्त्रयुद्ध तथा कुछ और कारनामों के निमित्त उसने अपनी अमाधारण शक्ति दिखलाई। इसका नाम अपनी असमर्थ शक्ति व सत्य के कारण लोह प्रसिद्ध हो गया।) सम० उबरी उमा का विशेषण, कर्मज (वि०) भयानक पराक्रम कायम भय० ११२५ ब्रह्मण हरवनी शस्त्र का, विकराल, माह (वि०) डगवना शब्द करने वाला (क०) १ भयानक या डंका आवाज शि० १५१०, २ सिंह ३ उन सात बादलों में से एक जो मृत्ति के प्रलय के समय प्रकट होंगे, पराक्रम (वि०) भयानक पराक्रम वाला, रक्षी मनुष्य के सन्ततत्व वर्ग में सातवें महीने की सातवीं रात (यह अमृत तब तक का बाल कहा जाता है) (सप्तसप्ततिमे वर्षे सप्तमे मास मघमी, रात्रिमीमरवी नाम नारायणमुत्पन्नः)।
—कृष्ण (वि०) भयानक कृष्ण का विकार (वि०) भयानक विक्रमशील—विक्रमशिल्प विद्वत् शि० १००।
विशालकाय डगवनी मूल का शासन सम० विशेषण शेष १ द्वितीय पञ्चम—अन्तराष्ट्र १०० प्रकार का कुर।

भीमरज (नपु०) युद्ध लड़ाई।

भीमा [भीम + टाप्] १ दुर्गन्ध का विशेषण एक प्रकार का महद्वय, रोचना ३ हृत् ।

भीम (वि०) (स्त्री० क, क०) [भी + कृ] १ डरपाक, कायर, भयपूक,—आख्या बीह हि० १२६ २ बड़ा हुआ (बहुधा समाज में) पाप, अघर्म, प्रतिज्ञाभंग आदि, —कः १ गीद्व २ व्याघ्र, क (नपु०) बड़ी, स्त्री० १ डरपोक २ २ बकरी ३ छाया ४ काम-कुर। सम० सेतु (पु०) हरिज, रात्रि: बुद्धा, मही,—कृष्ण (वि०) कायर, डरा हुआ,—हृक्: हरिज ।

भीम (सु) क (वि०) [भी + कृ + क्त, क्लृप्त्वा वा] १ डरपाक, कायर, बुझदिल, साहसहीन २ बकरी —कः १ बत २ उत्पत्ति ३ एक प्रकार का गन्ना क जंगल, वन ।

भीम (सु) (स्त्री०) [भीर + ऊठ, पहले रत्नयोगेन्द्र द्वारा क र्णी त्व रत्नसा भीरु यत्नाशनीना—म्यु० १३१२४ ।

भीम (सु) क [भी + क्लृप्त्वा] रोच भास ।

भीषण (वि०) [भी + णिन् + म्यट्, लुकात्म] ब्राम्हण, विकराल टण्डन, बौर, दाहक विम्वरि हाश्रमभीषणाय शि० ३१४५, क. (साहित्य म) १ भयानक रस दे० भयानक २ शिव का नाम ३ कर्तुर कपोल—अन्ध भय का उत्तेजित करने वाली कोई भी वस्तु ।

भीषा [भी + णिन् + अट् + टप् लुकात्म] १ ब्राम्हण या डगने की किताब भयानका २ डराना सम० डगा

भीषित (वि०) [भी + णिन् + क्त लुकात्म] डगाया हुआ भयानक ।

भीष्म (वि०) [भी + णिन् + मक् लुकात्म] भयानक डगवना, भीषण कराल, क्ल: (साहित्य म) १ भयानक रस दे० भयानक २ शास्त्र पिशाच दानव भूत पैन ३ शिव का शिष्य ४ जन्तु का गया से उत्पन्न पुत्र (संतनु) में काठ पुत्र हुए, बाठबी पुत्र यही था, व वाल पुत्रों ने पर जाने के कारण उन बाठबी पुत्र हैं अपने पिता की राजगद्दी का उत्तराधिकारी था। एक बार राजा ननु नदी के किनारे घूम रहे थे तो उनकी बुद्धि सत्यवादी नामक एक सावधमयी लक्ष्मी कन्या पर पड़ी वह एक सख्खे की बेटी थी। उन्हीं राजा डगनी उबार का पा फिर भी उसके मन में उसके मित्र उत्कट उत्कट अर्गल बुरा फलन उत्तर इस कन्या के पुत्र का शासन करने के लिए है। उन्हीं के भावा विना ने कहा कि यदि हमन्तु द्वारा राजा ननु के कोई पुत्र हुआ तो राजा की उमर विकरारी हो जाए पुत्र विद्वान होने के कारण उसे राजा के शासक के रूप में मान्यता मिलेगी। जन्तु उत्तनु के पुत्र ने अपने पिता को प्रमत्त करने के लिए उनके सामने भीषण प्रतिज्ञा की कि मैं कभी राजगद्दी पर नहीं बैठूंगा, और न कभी शाहू कहूँगा जिससे कि किसी समय भी किसी पुत्र का पिता न बन सकूँ। अतः यदि आपकी पुत्री से मेरे पिता का कोई पुत्र होगा तो विधिवत रूप से वही राजगद्दी का अधिकारी होगा। यह भीषण प्रतिज्ञा बीष्म ही लोगों में विदित हो गई और तब से लेकर उसका नाम भीष्म पड़ गया। यह जातीय अधिकारिण राजा, और अपने पिता की मृत्यु के बाद उसने

सत्यवती के पुत्र विचित्रवीर्य को राजगद्दी पर बिठाया तथा काशिराज को दो कन्याओं के साथ उसका विवाह कराया। एवं अपने पुत्र तथा पौत्रों (कीरव पांडवों) का अधिभावक बना रहा। महाभारत के युद्ध में वह कीरवों की ओर से लड़ा, परन्तु शिखंडी की सहायता से अर्जुन ने युद्ध में भीष्म को बाध कर दिया, तब उसे 'वरशय्या' पर रक्खा गया। परन्तु अपने पिता से इच्छामृत्यु का वरदान पाने के कारण वह तब तक प्रतीक्षा करता रहा जब तक कि उत्तरायण में न प्राविष्ट हो, जब भूमि ने वसन्त विष्वक् को पार किया तब कही उसने अपने प्राण त्यागे। वह अपने सयम, बृद्धिमत्ता, सकल्प की दृढ़ता तथा ईश्वर के प्रति अतन्त्र भक्ति के कारण अश्वत्थ प्रसिद्ध हो गया।। सम० जननी गंगा का विशेषण, — पञ्चकम्बु कानिक शुक्ला एकादशी से पूर्णिमा तक के पाँच दिन (यह पाँच दिन भीष्म के लिए पावन माने जाते हैं)। —सू० (स्त्री०) गंगा नदी का विशेषण।

भीष्मकः [भीष्म + कन्] 1. शन्तनु का गंगा से उत्पन्न पुत्र 2. विदर्भ के राजा का नाम, जिसकी पुत्री शर्मिष्ठा को कृष्ण उठा लाया था।

भुक्त (भू० क० कृ०) [भुज् + क्त] 1. खाया हुआ 2. उपभुक्त, प्रयुक्त 3. भोग, अनुभव किया 4. अधिकृत किया, (विधि में) अधिकार में लिया- २० भुज्, —क्तम् 1. उपभोग करने या चालने की क्रिया 2. जो खाया जाय, आहार 3. वह स्थान जहाँ किसी ने खाया है। सम०—उच्छिष्टम्, —शेषः, समुचितम् किये हुए भोजन का अवशिष्ट, नूटन, उच्छिष्ट अंश, —भोग (वि०) 1. जिसने कुछ भोगा है, या भोग्य उठाया है, उपभोक्ता 2. जो प्रयुक्त किया गया है, उपभुक्त, नियुक्त, —सुप्त (वि०) भोजन करके सोया हुआ।

भुक्तिः (स्त्री०) [भुज् + क्तित्] 1. खाना, उपभोग करना 2. (विधि में) अधिकृत सामग्री, सुखोपभोग वच० ३१९४, याज्ञ० २।२२ 3. खाना 4. वह की दैनिक गति। सम०—भक्षः एक प्रकार का पोषा, भूय, —भक्षित (वि०) जिसके उपभोग करने की अनुमति नहीं है।

भुज् (भू० क० कृ०) [भुज् + क्त, तस्य नः] 1. झुका हुआ, झिनत, प्रवण—वायुमल, स्वामुन आदि 2. टेढ़ा, बक, —भट्टि० ११८, विक्रम० ४।३२ 3. टेढ़ा हुआ (भग्न का अर्थ)।

भुज् 1. (पुं० पर० भुजति, भुज्) 1. झुकाना 2. मोड़ना, टेढ़ा करना। 11 (स्वा० उभ०) भुजक्ति, भुज्को 1. खाना, निगमना, का पी खाना (वा०)—अयनस्वी न भुञ्जीत—अनु० ७।७४, ३।१४६, भट्टि० १४।२२,

भुज० २।५, 2. उपभोग करना, प्रयोग करना, (सम्पत्ति, भूमि आदि को) अधिकार में करना—विक्रम० ३।१, मनु० ८।१४६, याज्ञ० २।२४ 3. शारीरिक उपभोग करना (वा०)—मध्यं भुञ्जे महाभुज्—रघु० ८।७, ४।७, १५।१. १८।४, लुक्य वा कुक्ष्य वा पुमान्-त्येव भुञ्जते—मनु० १।१४, 4. हृकृत्य करना, शासन करना, प्रसन्न करना, रखवाली करना (पर०) राजंश्यामिवाभुनक्त—रघु० १२।१८, एक. कृत्स्नां (शरीर) मगपरिग्रहाशुभाहभुनक्ति०—श० ३।१४, 5. भोगना, सहन करना, अनुभव करना—बुद्धो नरो दुःखगतानि भुङ्क्ता सिद्धा० 6. बिताना, (समय) व्ययन करना—प्रेर० (भोचयति न) बिताना, भाजन करना, इच्छा० (बभुषति न) खाने की इच्छा करना आदि।

अनु० उपभोग करना, (बुरे या भले का) अनुभव करना, (बुरे कल) भुगताना मेघमुक्तविषदा म-चन्द्रिका (अन्धभुक्त)—रघु० ११।३९, कु० ७।५, उप—, 1. भुजा लेना, बनना—सप्तमामुपभुञ्जाना फलादि—कु० ६।१०, 2. शारीरिक रूप से मजबूत लेना (व्या—स्वोपभोग) 3. खाना या पीना—अधोप-भुक्तेन बिलेन कु० ३।३७, पयः पुत्रोपभुक्त्वा—रघु० २।१५, १।५७, भट्टि० ८।४०, 4. भोगना, सहन करना, सेवना—मनु० १२।८, 5. अधिकार में करना खाना, परि 1. खाना 2. उपभोग करना, आनन्द लेना—न सद्यः परिभोक्तुं नैव शक्नोमि हातुम्—श० ५।१९ कि० ५।५, ८।५७, तम् 1. खाना 2. उपभोग करना 3. शारीरिक रूप से मजबूत लेना।

भुज् (वि०) [भुज् + क्विप्] (समय के अन्त में) खाने वाला, मजबूत लेने वाला, भोगने वाला, राज्य करने वाला, शासन करने वाला, स्वामुज्, हुतभुज्, पापं क्षितिं अही० आदि, (स्त्री०) 1. उपभोग 2. लाभ, हित।

भुजः [भुज् + क] 1. भुजा—आस्थिति कियद्भुजो मे रक्षति मोर्विकिनाङ्क इति—श० २।१३ रघु० १।३४, २।७४, २।५, 2. हाथ 3. हाथी का सूँठ 4. लुकाव, बक, मोड़ 5. गणितविषयक जादुई का एक पावर्ष, व्यादिभुज् विकीर्ण 6. विकीर्ण आधार। सम० अन्तरम्, —अन्तरालम् हुदव, छाती—रघु० ३।५४ ११।३२, बालवि० ५।१०, —आसीदः मुजपाश में जकड़ना, बाहों में लिपटाता, —कीडरः बगल, —व्या आधार की लम्बरेखा, —वृष्णः—बाहुबंध, बक, —सम् हाथ, —वृष्णम् लिपटना, जीर्णियन करना—वटय मुजवम्बनम्—गीत० १०, कु० ३।३९, —अर्धम्—भुजा की सामर्थ्य, पुद्गों की शक्ति, —वृष्णम् छाती—रघु० १३।७३, —सूक्ष्मं बंधा, —क्षिप्रम्—क्षिप्रम् (मनु०) बंधा, —सूक्ष्मं आधार लम्बरेखा।

भुजः [भुज् मज्जने क, भुज् कुटिलीभवन् सन् गच्छति यम् + इ] सौप, सपं भुज्यापमेवसवीतजाया-भुज्य० ११, मेम० ६०। मय० अलक, अलकः आयो-जिन् (पु०), -वारणः, भोजिन् (पु०) १ मरु २. मीर ३. मीर नेवले का विशेषण, ईश्वरः राजः शेष के विशेषण ।

भुजङ्गः [भुज् सन् गच्छति यम् + ङङ्, मुम् द्विष्य] सौप, सपं - भुजङ्गमणि कोपित शिरसि पुण्यबद्धारयो-भने० २।४ २ उपपत्ति, रक्षिया या मोन्दयप्रमी अभूमिषा भुजङ्गमहिभाविनानाम् वा० १९९ ३ पति, प्रभु ४ लोका, इल्लनी ५ राजा १। मध्य पित ६ आलेषा नक्षत्र ७ आर की मक्या । मय० इण्ड नागराज शेषभाग का विशेषण ईशः १ भूमि का विशेषण २ अ-का विशेषण ३ पतञ्जलि का विशेषण ४ गिजल मुनि का विशेषण कस्या सौप ५ लक्ष्मी कस्या, भुम् अरुषा नक्षत्र, भुज् (पु०) १ मरु का विशेषण २ मीर मता यान की बन ताकुनी, हुम् (पु०) मरु का विशेषण ३ भुज्या-नक आदि ।

भुजङ्गमः [भुज्, यम् + ङङ्, मुम्] १ सौप २ राहु का विशेषण ३ आर की मक्या ।

भुजा [भुज् + टाप्] १ राहु टाप् निहन्तभुजा सन्वेक बोपकटम् जि० ७।३ १ २ हाथ ३ सौप की कुहनी ४ चक्र, घरा । मय० कष्ट प्रयुगी का नाञ्ज ५ हाथ, -कयः १ कोहन २ जाली, -कुल्ल कथा ।

भुज्य [भुज् + क्थिप्] १ दाम, लौक २ मावी ३ गौरी, भुज् जो कलाई पर पहना जाय ४ रोग, व्या १. परिचारिका, लोका, दासी अथागदा फिल्टभुज् भुज्या -रु० ६।५३, मय० ६।४ पात्र० २।९० २. कारागारा, कथा ।

भुज्य (भ्या०) आ० भुज्ये १ महारा दत्ता, स्वागित रत्ना २ चुनरा, छांटना ।

भुर्भुर्का, भुर्भुरी (स्त्री०) एक प्रकार की मिठाई ।

भुज्यन् [भवत्य, भू-आधागदी-भुज्] १ लोक (लोकों के नाम या तो तीन हैं- भुज्यन्त या चौदह-इह हि भुज्यान्मये बीरगणभवेन भुज्यन् -भु० ३।२३ ३० 'लोक' भी. भुज्यालोकनरीति -कु० २।४५, बुकलावितम् मे० ५ २ पृथी ३. स्वर्ग ४ प्राणी, जीवधारी जन्तु ५ भवत्य, मानव ६. गान्नी ७ चौदह की कथा । मय० ईशः पृथी का स्वामी, राजा, ईश्वरः १ राजा २ शिव का नाम, -लोक (पु०) देवता, भवन् चिलोकी (भुलोकी, अलसिज और बुलोकी, वा स्वर्गलोक भुलोकी और पाताल लोक), वाक्की यना का विशेषण, -कालिन् (पु०) राजा, वासक ।

भुज्यन् [भू + क्त्यन्] १ स्वामी, प्रभु २. स्वर्ग ३ ब्रह्म ४. कन्दमा ।

भुज्, भुज्यन् (अथ०) [भू + भुज्] १ अलसिज आकाश (तीनों लोकों में से दूसरा, भुलाक से ठीक ऊपर) २ रहस्यमय राज्य, तीन व्याहृतियों में से एक (भुर्भुव इव) ।

भुजिन् (पु०) [भू + जित्, क्त] समुद्र ।

भुज्यिन्, -ही (स्त्री०) एक प्रकार का जन्म वा जन्म ।

भू १ (भ्या० पर०)-(आ० विरक्त)-भवति, भूत १ हाता, वरित हाता कथाय अवेष्टाम अस्या किमभवत् मा० १०-९, 'उसके भाग्य का क्या हुआ' उल्ल० २।२७ यद्वावि नद्वक्तु, उत्तर० ३, 'हाने दो जो कुछ होता है' इसी प्रकार दुहितो भवति हृष्टो भवति आदि २ उत्तर हाता यदपय मवेष्टाम् भन्तु ११।२७ आत्मकमेण हि वनानि भवन्ति यानि भुज्य० १।२३ ३ कृत्वा, निकालन, उदय हाता कथाकुर्वति मयाह-मय० २।६३, १।६१० ४ ब्रह्म हाता हाता, उपस्थित हाता- नातताविषये दोषा हन्तुर्भवति वचन भन्तु १३५१, यद मयसो भवत् आदि ५ जीवित रहना, विद्यमान रहना भुज्यन्-भुज्यः राजा चित्तमनिर्नाय वाम०, भुज्यन् विबुधस्य परान्तर भट्ट० १।१ ६ जीवित रहना विदा रहना, लौम मेना त्वमिदानी न भाष्यमि-मा० ९, आ. काश्चिदतस्तु कथं न भवति मय० १०, दुर्गम्यन प्रहर नश्य न भवति मा० ५ (तुम मर चुके हो, अब तुम्हें लिस नहीं जायेगा) भग० ११।३० ७ किया जो दत्ता वा अकथा से रहना, अच्छी वा बुरी तरह जीतना भवान् स्वये कथ भविष्यति पर० २ ८ ठहरना, रुट रहना रहना उत्तर० ३।३७ ९ सेवा करना, काम जाना इह गदोदर भविष्यति- ल० १ १७ मयव होना (इस वर्ष में प्राय लूट लूटकर)-भवति भवान् वाज-गच्छति मित्रा ११ ननुस्व करना, लवाजन करना, प्रकाशित करना (मय० के साथ)-वानाथ कथिना विदुत् पीना भवति सत्याय दुग्धलाय सिता भवेत् महाभा०, मुखाय तज्जगवदिन भुज्य कु० १।२३ सम्मूर्तिर्बेध प्रत्ययप्रकार कि० १।२२०, न तस्या कथ्य भुज्य-रु० ६।३४ १२ साथ देना, सहयोग करना, सेवा अङ्गुलीभवन् १३ मयव रहना, पास रहना-नात्य ह मन जाया भुज्यः ऐत० वा०, मय० ६।३९ १४ व्यथन होना व्यापन होना (बधि० के साथ)- वरजलाभने कृत्वा कापानां स्वयं ह्यभुत् यद्वा० १५ पूर्ववती लया वा विशेषण के साथ 'भू' याना का वर्ष है 'वह होना जो पहले नहीं था' वा केवल साथ 'होना'- लोलीय लये होना, कुलीय

काका होना, पयोचरीन् स्नान का काम देना, इसी प्रकार अश्वीन् साधु होना, प्रविचोन् गुप्तचर का काम करना, आर्हीन् पिचलना, अश्वीन् राक्ष बन जाना विचवीन् विषय बनाना, इसी प्रकार एक मतीन्, तरुणीन् आदि विभे०, 'मू' धातु का अर्थ सबद्ध क्रिया विशेषण के अनुसार नाना प्रकार से परिवर्तित होता रहता है उदा० अश्वेन् आगे रहना, नेतृत्वं करना अंतर्गुं लीन होना, सम्मिलित होना —ओषस्त्वन्मयस्यस्य—काव्य० ८ अन्धशान् और तरह होना, बदलना न मे बचनमन्यथाभितुमर्हति स० ४, आर्षिन् प्रकट होना उदय होना, स्पष्ट होना दे० आर्षिस् तिरोभू ओषत्स होना शोषात् सध्या होना, सायकान् होना पुनर्गुं फिर बिवाह करना दुरोक् अवसर होना, आगे लगे होना प्रादुर्गुं उदय होना, दिखाई देना, प्रका होना, सिध्यान् झूठ निकलना, वृषात् व्यर्थ होना आदि) प्रेर० (भाव यति—दे) 1 उत्पन्न करना अस्तित्व में लाना सना बनाना 2 कारण बनना, पैदा करना जन्म देना 3 प्रकट करना, प्रदर्शन करना, निरूपण करना 4 धाकना, परवरिस करना सहारा देना सधारण करना, जान डालना—पुन लुजति वर्षाभि भययन् भावयन् प्रवा०—महा०, देवान् भावयन्ताने ते देवा भावयन्तु ब०, परस्पर भावयन्त भवे परमभाष्यस्य भग० ३।११, महि० १६।२७ 5 सोचना, विमर्श करना विचारना, खाल करना कल्पना करना 6 देखना समझना, मानना अर्थमन्त्र भाष्य नित्यम् माह० २७ छिद्र करना, साहित करना, पक्का यात्र० २।११ ८ पवित्र करना 9 हासिक करना प्राप्न करना 10 मिटाना, मिश्रण, तैयार करना 11 परि वर्तन करना, कपालारित करना 12 डुबोना,—सराबोर करना । इच्छा०—अनुपति, होने की या बनने की इच्छा करना, क्षति,—अतिरिक्त होना आगे बढ़ जाना अधिक हो जाना, अनु०—, 1 मने लेना अनुभव करन बहुभूत करना, भोगा (दुरा वा भना) अमल मुक्तमन्त्र—रघु० १।२१ २० २।४५ रघु० ३० आर्यकुलार्ता हि शोषाणा फलमनुभक्तमन्त्रमनेन—भा० १२१ श० ५।३ 2 प्रत्यक्ष करना बोध होना समझना 3 भाष करना परीक्षण करना,—प्रेर०—आनन्द मनवाना, अनुभव या महभूत करवाना—आनीयो न हि कस्तुर्या शपथेनानुभाष्यते—आमि० १।१२०, अर्चि—, 1 विजय प्राप्त करना वसन करना परास्त करना, आगे बढ़ जाना, उत्तम होना—भग० १।३९, कि० १०।२३, रघु० ८।३६ 2 आक्रमण करना, हुनका करना—विपरीतिनकारकिकम्—कि० २।१४ अम्यभावि भरतावस्तता—रघु० १।११६

3 नीचा दिखाना अपमान करना 4 प्रभुत्व रखना, प्रभाव रखना, व्याप्त होना उद्—उदय होना, उगना उद्भूतध्वनि, प्रेर० पैदा करना, सूजन करना, जन्म देना रघु० २।६२, वरा १ हरना, परास्त करना जीत लेना 2 घोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना, सताना, पर 1 हरना दमन करना जीतना, हाथी होना (अन) आगे बढ़ जाना पछाड़ देना लज्जाद्वरेक परिभूय पथम् मुद्रा० ७।१९ रघु० १०।३५ 2 पुच्छ समझना, उपेक्षा करना, घृणा करना अनादर करना अपमान करना मा ना महारमन् पारम् महि० १।२२ ४।३७ 3 क्षति पहुँचाना, नष्ट करना, बर्बाद करना 4 कष्ट पहुँचाना, दुख देना 5 नीचा दिखाना, कठिण करना प्र० १ उदय होना निकलना, फूटना जन्म लेना, उप जना पैदा होना (अपा० के साथ)—ओभात्कोष प्रभवति हि० १।२७ स्वाय नृवागमरीयेयं प्रभवत् प्रभापति—स० ७।९ पुच्छ प्रभवत्प्राप्तेविमयेन सहस्त्रिजाम् रघु० १०।५०, भग० ८।१८ 2 प्रकट होना दिखाई देना हि० ४।८४ 3 घृणा करना बड़ाना, दे० प्रभुन 4 प्रभवत् होना कतिधासी होना छा जाना, प्रभुत्व होना बल दिखाना प्रभवति हि प्रहिन्वा स्वेन योगीश्वरीय मा० ९।५२, प्रमत्ति भगवान् विधि का० ५ 5 बोध्य होना समान होना, क्षति रखना । तुमुन्मत्त के साथ—कुसुमान्धवि भाववृत्तमात् प्रभवत्पापुग्नोहितु परि—रघु० ८।५४, स० ९।३० विष्म० ३।९ उत्तर० २।४ 6 नियन्त्रण रखना, प्रभाव रखना, छा जाना स्थायी होना (बहुधा संबंध के, कभी २ मध० या अर्चि० के साथ)—यदि प्रविश्यान्माराधन—स० १ उत्तर० १, प्रभवति विश्वस्य कल्याणमनस्य महाराज—भा० ४ उत्तरभवति अनुसाकरी देवी—देवी० २ 7 जोड़ा का होना प्रभवति मल्ली मधुमध गृहात् ० ८ पराजित होना घबेष्ट होना—रघु० १५९ 9 रक्ष जान० (अर्चि० के साथ)—रघु० पृष्ठे प्रभवत् नारमनि—रघु० ३।१९ 10 उपयोगी होना 11 माचना करना अनुप विनय करना चि—(प्रेर०) 1 सोचन विमर्श करना विचारना 2 जानकार होना जानना, प्रत्यक्ष करना देखना—स० ४ ३ कलना करना निरूप्य करना स्पष्ट करना, नष्ट—, 1 उदय होना, पैदा होना उपजना, फूटना कचमवि नृकनेरिधिमन्वा दृशा समभवति—भा० २।२, बर्षसंस्वापावासी सन—कामि युगे युगे—भग० ४।८, कि० ५।२२, महि० १।१२८, मनु० ८।१५५ 2 होना, बनना, विचारना होना ३ घटित होना, बटना होना 4 संभव होना, 5 घबेष्ट होना, लज्ज होना ('तुमुन्मत्त' के साथ)—न वनिषन्तु सवधावि धातुना—वि० १।२७

6. निष्ठा, एक होना, समिप्यमान होना—संज्ञासम्बन्ध-विशेष्येति महान्वासा मयापका—वि० २।१००, संज्ञासंज्ञा निष्ठेति—मा० ५।१७ 7. उक्त होना 8 पकड़ने के योग्य, (मेरे) 1 पैदा करना, उत्पन्न करना 2 कल्पना करना, सोचना, उद्भावना करना, चिन्तन करना 3 अनुमान लगाना, अटकल लगाना—मा० २, 4 सोचना, अन्वेषण करना 5 सम्मान करना, आदर करना, आदर प्रदर्शित करना—प्राप्तोपेक्षित समा-पक्षित्वा वगैरह—रघु० ५।११, ७।८ 6 सम्मान करना, उपहार देना, अर्पण करना—कु० १।१७ 7. मङ्गला, बोधना—मृच्छ० १।१६।

ii (प्रा० उ०) प्रकटित (है) हासिल करना, प्राप्त करना।

iii (प्रा० अ०) माधवते) प्राप्त करना, उपलब्ध करना।

iv (प्रा० उ०) - माधवति—दे) 1. सोचना, चिन्तन करना 2. निम्नाना, मिश्रित करना 3 पवित्र होना ('यू' के प्रेर० रूप से संबद्ध)।

यू (वि०) [यू+विभृ] (समाज के अन्त में) होने वाला, विद्यमान, बनने वाला, घटने वाला, उठने वाला, उपजने वाला, चित्तवृत्ति, आत्मवृत्ति, कल्पवृत्ति आदि—(यू०) विभृ का विशेषण।

यू (स्त्री०) [यू+विभृ] 1 पृथ्वी (वि०) संसारिक वा स्वर्ग-विश्व मर्यादाविश्व प्रोक्तमे भूवर्ग—रघु० १।४, १८।४, देव० १८, बालेयवृक्षमन्त्रे भूमिं सति प्रा० 2 विभृ, भूवर्ग 3 भूमि, धर्म—माहातीपरिचय—महा० १, भविष्यपुराणः (माहात्म्यः)—देव० ६४ 4 भूमि, भूवर्ग 5 ब्रह्म, स्थान, क्षेत्र, भूवर्ग—कालभूमि, उपवनभूमि आदि 6 सामग्री, विषय-वस्तु 7 'एक' की संज्ञा की प्रतीकार्थक अभिव्यक्ति 8 व्यापित्व की भाङ्गिण की भाषावर्णा 9 (भारती का प्रतिविधान करने वाली) मन्त्रे पञ्चो (तीनों में) व्यापित्व या रहस्यमूलक अक्षर 'अ' जिसका उच्चारण प्रतिविधित्व संख्या के समान प्रवर्तक करते हुए किया जाता है। सम०—उत्पन्न सोमा, कल्पः कल्प-वृक्ष का भेद, कल्पः भूचाल, —कल्पः भारती का व्याप, —कल्पः कल्प के पिता वास्तुदेव का विशेषण, —काक १. एक प्रकार का वृक्ष 2 धनवृत्ति 3 एक प्रकार का कस्तूर—केसः बट-वृक्ष, —केसः राजसी, पिशाचिनी, —विभृ (यू०) सुन्दर, सरल विशेष प्रकार का अक्षर, —वर्गः भवभूति का विशेषण, —वृक्ष, —वेष्टु भूमि के नीचे का भोग्य, तहजाना, धौकः भूमिनीक, भूवर्ग—भूनीकमृच्छिते—गीत० १, 'जिहा भूनीक, —कल्पः काका, अक्षर—कल्प विभृवर्णा, भूवर्गवर्णा—अक्षर (वि०) भूमि पर बूने वाला वा खूने वाला

(८) विभृ का विशेषण, —कल्प, कल्प 1. यू कल्प, (इसे ही सामीप्य 'गठ' कहते हैं) 2. संवकार—कल्पः 1 एक वर्णीन का बीड़ा 2 हाथी, कल्पः, —यूः नैर्ऋत्य बरातल, पृथ्वीतल, तृण (भूतृण) एक प्रकार का सुवर्णवृक्ष वास, वाः सुन्दर, देवः, —यूः बाह्य, वनः राधा वरः 1 पहाड़ 2 विभृ का विशेषण 3 कल्प का विशेषण 4. 'सात' की संख्या 'ईश्वर' रास हिमालय पहाड़ का विशेषण 'क' वृक्ष, —कल्प एक प्रकार का भारती का बीड़ा, केंचुला, —नेतृ (यू०) प्रभु, शासक, राजा, —यूः प्रभु, शासक, राजा, —वर्गः 1 राजा, 2 विभृ का विशेषण 3 इन्द्र का विशेषण, —वर्गः वृक्ष, —वर्ग एक विशिष्ट प्रकार की घरेली, —वर्गिणः पृथ्वी का चेटा, —वर्गः राजा, प्रभु—वर्गवर्ण प्रभुता वाचिपत्य—यूः, —यूः मन्त्रवृक्ष, —यूः, —यूः 'भारती की बेटा' सीता का विशेषण, —वर्गः भूचाल, —वर्गवर्ण भूचाल, —विभृ, —कल्प भूनीक, भूवर्ग, —कल्प (यू०) राजा प्रभु, —कल्पः क्षेत्र, स्थान, बग, भू (यू०) राजा, —कल्प (यू०) पहाड़—दत्ता मे भूवर्ग माधवमातीकमिति—कु० १।१, रघु० १७।७ 2 राजा, प्रभु—विभृवर्ण विभृवर्ण भूवर्ग—रघु० १।१८१ 3 विभृ का विशेषण—कल्पवृक्ष पृथ्वी, भूवर्ग, भारती, —कल्प (यू०), —कल्पः वृक्ष, धौकः (भूनीक) भूवर्ग, कल्पवृक्ष भूवर्ग, —कल्पः राजा, प्रभु, भूवर्ग भूवर्गवर्णा, —कल्प 'भारती पर हस्त, राजा, प्रभु, —कल्पः विभृ का विशेषण, कल्प (यू०) वर्ग, धौक का मिट्टी का टीका, —यूः बाह्य, —कल्प (यू०) 1. भूवर्ग 2 माधववर्णा 3 वर, —कल्पः देव पहाड़ का विशेषण, —कल्पिन् (यू०) भूमिपर, भूमि का स्वामी।

यूका, —कल्प [यू+कल्प] 1. विभृ, रण, वर 2. करना 3. काज।

यूकः [यू+कल्प]—कल्प—कल्प] भविष्यक बोधा।

यूत (यू० क० क०) [यू+कल्प] 1 जो हो यूका हो, होने वाला, वर्णमान 2 उत्पन्न, मिश्रित 3 वस्तुतः होने वाला, जो वस्तुतः घट यूका हो, वर्णमान 4 टीक, उचित, धरती 5 वर्णित गया हुआ 6 उपलब्ध 7. मिश्रित या मिलाया हुआ 8 उत्पन्न, समान दे० 'यू', —तः 1. पुत्र, वर्णा 2 विभृ का विशेषण 3 'यन्त्र'वाक्य के कल्पवृक्ष की वस्तुवर्णी का विभृ, —तः 1. प्राणी (माधव, विभृ, वा वस्तुतः)—कु० ५।४५, पंच० १।८७ 2 वर्णित प्राणी, कल्प, वीचवारी—यूतुं कि य कल्पों खूनी करीत—वाचि १।१२२, उत्तर० ५।६, ३. भेद, भूत, पिशाच, रामच 4. उत्पन्न (दे० नीचे है)—वर्णित पृथ्वी, कल्प, विभृ,

वायु और आकाश) — त वेदा विदये नूनं महाभूत-
समाधिना रघु० १।२९५ वास्तविक बटना, तथ्य,
वास्तविकता 6 अतीत, भूतकाल 7 सत्तर 8 कुशल
क्षेम, कल्याण 9 पाँच की सख्या के लिए प्रतीकात्मक
अभिधायि। सम० अनुकम्पा सब प्राणियों के लिए
करना—भूतानुकम्पा तब भैत रघु० २।४८, अन्तक
मृत्यु का देवता यम अर्ध तथ्य वास्तविक तथ्य
यथावत् स्थिति, सचाई वास्तविकता आयें कबयाम
से भूतार्थम् श० १ भूतार्थशाभाह्वियमाचनना कु०
७।१३ के अद्यास्थिति भूतार्थ सर्वा या नृत्वाप्यनि
मृत्तु० ३।४४ कथनम्, व्यावृत्ति (स्त्री०)
तथ्यवर्णन—भूतार्थव्यावृत्ति सा हि न सृति परमार्थन
रघु० १०।३३, अत्यन्त (वि०) इत्यां से युक्त
या नत्वो से बना हुआ, अत्यन्त (पु०) 1 जीवात्मा
(विप० परमात्मा) आत्मा 2 ब्रह्मा का विषयपण
3 शिव का विशेषण 4. मूलनख 5 गरीर 6 मृद
सत्त्व—आवि 1 परमारदा 2 (साध्य० में) अह्वार
का विशेषण, अर्त्त (वि०) प्रेतादिष्ट आवास
1 गरीर 2 शिव का विशेषण 3 विष्णु का विशेषण
आविष्ट (वि०) मृता प्रेतादि से प्रयाशन
आवेशः मृत या प्रेत का किसी पर सत्कार होना,
—इच्छा—इच्छा भूतो का आवृत्ति देना, इच्छा
कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी, ईश 1 ब्रह्मा का विशेषण
2 विष्णु का विशेषण 3 शिव का विशेषण भूतेभ्यः
मुक्तमुक्तिलब्धनयसकृन्तुमृताब्दा मा० १।४
इत्यत्रः शिव का विशेषण—रघु० २।४६, उन्माद
मृत प्रेतादि के चढ़ने से उत्पन्न पागलपन, —उन्मूढ
—उन्मूढ (वि०) पिशाच से पीड़ित, —ओवनः बाबला
की बाणी, —कर्म कर्म (पु०) ब्रह्मा का विशेषण
कालः 1 बीता हुआ समय (आ० में) अतीत या
भूतकाल, —केली तुलसी, —कालिः (स्त्री०) भूत-प्रेत
की सवारी, नमः उत्पन्न प्राणियों का समुदाय
2 भूतप्रेत या पिशाचों का समूह जग० १८।४,
—काल (वि०) जिसपर भूतप्रेत सवार हो गया हो,
—कालः 1 जीवित प्राणियों का समूह, समस्त जीव,
सृष्टि—उत्तर० ७, जग० ८।१९ 2 भूतप्रेतों का समूह
3. गरीर, —जगः 1 ऊँट 2 सहस्रानु, (ज्नी) तुलसी
—कामुर्द्वी कातिक मास के कृष्णपक्ष की चतुर्दशी,
—कारिण (पु०) शिव का विशेषण, कनः तरबों के
ऊपर विजय, —इवा सब प्राणियों के प्रति करना,
प्राणिमात्र पर दया, —करा, —कामी —कारिणी पुत्री,
—काय शिव का विशेषण, मातिका दुर्गा का
विशेषण, —मातिका 1 पिशाचों का पीठा 2 सरबों
3. काशीनिर्ध, —निधकः गरीर, —वसिः 1 शिव का विशेष-
ण—कु० ३।४४, ७४ 2. वसि का विशेषण 3 काली

तुलसी, भुविष्या आदिभ्य मास का पूर्वमासी, —पूर्व
(वि०) पहले से विद्यमान, पहला भूतपूर्वकालयम्
—उत्तर० २।१७, पूर्वम् (अव्य०) पहले, —मृत्तुति
(स्त्री०) सब प्राणियों का मूल, वसिः—भूतप्रेत
दे० कदाच (पु०) जन्म बाह्यम जो अपना निर्वाह
मृति पर कदावे से करता है दे० देवता, भर्तृ
(पु०) शिव का विशेषण, भास्वः ब्रह्मा का विशेषण
2 विष्णु का विशेषण, भास्वः—आविष्ट पिशाचों
की भाषा —अह्वार शिव का विशेषण, कनः सब
प्राणियों की बलि या आवृत्ति देना, वैदिक पाँच ब्रह्मों में
से एक इन्द्रवैश्वदेव, वसिः उत्पन्न प्राणियों का
मूलकोन राक्ष शिव का विशेषण अर्ध भूत प्रेतों
का समुदाय वास बड़े का वृक्ष, बाह्य शिव
का विशेषण, विष्णु 1 अपस्मार, मिरकी 2 भूत
या पिशाच की सवारी विज्ञानम्, विज्ञा पिशाच
विज्ञान—वृक्ष विभीतक वृक्ष बड़े का पेड़, सत्तार
मन्त्रालय सत्तारः भूत पिशाच का आवेश, —सत्तार
शिव का जलप्रलय, या विनाश—सर्व सत्तार की
सृष्टि, उत्पन्न प्राणियों का समुदाय, सुखम् सुख
तत्त्व, स्थानम् 1 जीववर्गी प्राणियों का आवास
2. पिशाचों का वासस्थान, हत्वा जीववर्गी प्राणियों
की हत्या।

भूतप्रेत (वि०) | भूत+प्रेत | 1 सब प्राणियों समेत
2 उत्पन्न प्राणियों वा मूलतत्त्वों से निर्मित।
भूतिः (स्त्री०) [भू+क्तिन्] 1 होना, अस्तित्व 2 जन्म
उत्पत्ति 3 कुशल-क्षेम कल्याण आनन्द संपत्ति
प्रजातायेव भूतार्थ त नाम्नों वसिष्ठहृत् रघु०
१।२८, मरपतिभुक्तभूतार्थ २।७४, स बाह्य भूतार्थ
जन्मानु भुक्तम्—विष्णुका० १।२ 4 सफलता
अच्छा भाग्य 5 जन-दीक्षित, लोभाय विपत्तिलोकार-
परेण मनस विवेकते भूतिमस्तुतेन वा कु० ५।७९
6 गौरव, प्रशिक्षा, विभूति 7 राक्ष—भूतभूतिरङ्गीन
भोगमात्र—वि० १५।७१ (बहु) 'भूति' शब्द का
अर्थ धन भी है), स्फुटोपम भूतिविशेष समुद्रा—१।४
8 रचीन कारियों से हाथी का मुखार करना कसि
च्छेदेति विरचितता भूतिमज्ञे कथम् जग० १९
9 तपस्वा या अविचार के अनुष्ठान से प्राप्य अति-
मानव क्षिति 10 तला हुआ आस 11 हाथियों का नद,
ति 1 शिव का विशेषण 2 विष्णु का विशेषण
3 पितृपण का विशेषण। सम०—कर्मन् (नपु०)
कोई भी सुख कृत्य वा उत्सव, —कर्म (वि०) समुद्र
का इच्छुक (कः) 1 राजभगवन् 2 बृहस्पति का
विशेषण, कर्मन् सुख वा सुख स्वयम्, —कीलः
1 छिद, कर्म 1 कार्द 3. भूतभूति, तद्वत्ता, —कर्म
(पु०) शिव का विशेषण, कर्मः कर्मभूति का विशेष-

बन, कः शिव का विशेषण, निबालम् अनिष्टा
नमश्च, भुवचः शिव का विशेषण, - बाहुनः शिव का
विशेषण ।

भूमिकम् [भूमि + कन्] 1 कपूर 2 चन्दन की लकड़ी
3 अश्वि का पीठा, कायफल ।

भूमत् (वि०) [भू + मत्पृष्ठ [भूमिचर - पृ० राजा, प्रभु ।

भूमन् (पु०) [बहुव्रीहि बहु + इमानिच इलोपे म्भादेश]

1 भारी परिमाण, प्राचुर्य, यथेष्टता, बड़ी सख्या
-भूमना रसानां महता प्रबोधा मा० ११६, नभयव
शुक्लानि चेतसि पर भुवानमानन्त्ये ६१९, 2 दौलत
नपु० 1 पृथ्वी 2 प्रदेश, जिला, भूखण्ड 3 प्राचा
जनन 4 बहुवचनता (सख्या की) आप स्थाभूमि
अपर० तु० पु०भूजन ।

भूमि (वि०) (स्त्री -यां) [भू + मयट्] मिट्टी का,
मिट्टी का बना या मिट्टी से उत्पन्न ।

भूमिः (स्त्री०) [अचन्यमितम् भूतानि - भू + मि किञ्च ना
टीप । 1 पृथ्वी (विप० स्वर्ग, गगन या पानाल) सीर्भूमि-
रापाहृदय यमरथम्वर० ११७८०, रघु० २१७६ 2 मिट्टी,
भूमि उत्पत्तिनी भूमि अ० १, कु० ११२४
3 प्रदेश जिला, देश भू विरमभूमिः 4 स्थान,
जगह जमीन भूखण्ड प्रमदवनभूमयः - प्र० ६
अश्विनाभूमि - न० २२१११, रघु० १५२० ३१६१,
कु० ३१५८ 5 स्थल स्थिति 6 जमीन भूतपति
7 कहानी घर का फल यथा 'सत्ताभूमिका' प्रसाद
में 8 अश्विचि, हावभाव 9 (नाटक में) किसी
पात्र का चरित्र या अभिनय - तु० भूमिका 10 विषय
पदार्थ, जाचार विव्वासभूमि, स्नेहभूमि आदि 11 दर्जा,
विस्तार, मोमा कि० १०१५८ 12 भिन्ना, उबान ।
सब० अन्तरः पड़ोसी राज्य का राजा, इन्द्रः

--ईश्वरः राजा, प्रभु, कर्बवः कदम्ब का एक भेद
गृहा भूमि में बिबर या गुफा, गृहम् भूगर्भपृष्ठ,
मोग, सहखाना, बल बलमय भूचाल- कः
1 मयलग्रह 2 नरकामुर का विशेषण 3 मनुष्य
4 भूमिच नाम का पीठा, (जा) मीतः का विशेषण,
- जीविन् (पु०) वैश्य, - तलम् भूतल, पृथ्वी की
तलह - तलम् भूतल, - देवः काष्ठान बरः 1 पहाड़
2 राजा 3 सात की सख्या, - नाचः, कः, बलिः,
- पालः, - भूम् (पु०) राजा प्रभु, - रघु० ११४७,
- कलः लेख बोझा, निबालम् ताड का वृक्ष (जिससे
ताड़ी तैयार की जाती है), - भूचः मयलग्रह, - भूरवरः
1. राजा 2. विलीप का नाम, - भूत् 1 पहाड़ 2 राजा,
- कम्पा एक प्रकार की बनेली, - रक्तः लेख बोझा, - नाचः
भूत् (का) मिट्टी में निक आना, - कैवलम् मोहर
- कर्बवः - कम् मटक सरीर, सब, - सब (वि०)
भूमि घर लोने वाला (कः) जंगली कबूतर, - लयनम्,

- लय्या भूमि पर सोना, - लयनः - भूत् 1. मयलग्रह
2 नरकामुर का विशेषण, (-बा-ला) सीता का
विशेषण, लयिदेशः देश का सामान्य दर्शन, - लय्
(पु०) 1 मनुष्य 2 मानवजाति 3 वैश्य 4. वार ।

भूमिका [भूमि + क + टाप्] 1 पृथ्वी, जमीन, मिट्टी
2 स्थान, प्रदेश, स्थल (भूका०) 3 कहानी, नवाभ्यक्त
1 पात्र दर्जा मयभोगमजा भूमिका साक्षात्कुर्वन्
- यांग० या नैयार्थकार्दिभिराभा प्रथमभूमिकाया-
भवतारिन् - साध्यप्र० 5. लिखने के लिए नक्सा
- दे० अक्षरभूमिका ५ नाटक में किसी पात्र का
चरित्र या अभिनय या घट्य यज्जते भूमिका ना
स्तु तथैव भावन सर्वं कर्म्य पाठिना, कामन्दक्या
प्रथम भूमिका नाव एकाधीन मा० १, कश्मीरभूमि-
काया वतमानोर्वशी वारुणीभूमिकाया वतमानया
मेनकया पुष्टा विष्णुम० ३, मि० ११९९ 7 नाटक
के पात्र की अभिनय सम्बन्धी पोका 8 सत्राष्ट
9 किसी पुस्तक की प्रस्तावना या परिचय ।

भूमो [भूमि + ङीप्] पृथ्वी, दे० भूमि । सब० - कर्बव
भूमिकदह - प्रति, - भूम् (पु०) राजा, - क्
(पु०) क्त्वा ।

भूयम् (नपु०) होने की स्थिति - जैसा कि बहुभूमम् में
- दाधारविभूयम् छि० १४८१ ।

भूयसात् (अव्य०) [भूय - क्त्वा] 1 अधिकतर, बहुधा,
सामान्यतः, साधारण नियम के रूप में 2 अत्यधिक,
बड़े परिमाण में 3. फिर, और आगे ।

भूयत् (वि०) (स्त्री० - झी) [बहु - ईवन्, इलोपे म्भादेश]
1 अधिकतर, अपेक्षाकृत सशुभ में अधिक या बहुत
2 अधिक बड़ा, अपेक्षाकृत अधिक विस्तृत - कु०
१११३ 3 अपेक्षाकृत अधिक महत्त्वपूर्ण 4 बहुत बड़ा
या विस्तृत, अधिक, बहुत, अत्यन्त - अवति च पुन-
र्भूयामेवः फल प्रति लब्धा - उत्तर० २१४, अश्व भर
वितर भगवन्मयसे मङ्गलाय मा० ११३, उत्तर० ३१४,
रघु० १०४६१, उत्तर० २१३ 5 सम्पन्न, बहुत - एव-
प्रायभूयपृथ्वी स्वकृति - मा १, अर्थ० 1 अधिक,
अत्यधिक, अत्यन्त, अधिकतर, बहुत करके 2 और
अधिक, फिर, आगे, और फिर, इसके अतिरिक्त,
- पापेयमृत्युश्च विष बहुधाव भूयः - विष्णु० ४१११
रघु० २१११, मेघ० १११ 3 बार बार, मूर्धन्तु
- 'राम राज्य का रूप भूयसा वर कि० वि० के रूप
में प्रयुक्त होता है तो निष्पत्ति अर्थ होते हैं
1. अत्यधिक, बहुत अधिक, अत्यन्त, अपरिमित, अधि-
कांश में - न करो न च मृदसा मृदु रघु० ८८८,
पञ्चाशत्तम प्रथिच, वरपतनययात् भूयसा पूर्वकायम्
अ० ११७ 2 बहुधा, साधारणतः - भूयसा जीविचर्म
एवः - उत्तर० ५) । सब० - कर्बवम् 1. वार वार

हेसना 2 बार बार व्यापक दर्शन पर आधारित अनुमान, - भूयस् (अब्ध०) पुन पुन, बार बार - भूयोभूय सविधानवरीरध्यपार्यवर्तन्-मा० १।१५, - विष्ट (वि०) 1 अपेक्षाकृत विद्वान् 2 अत्यन्त विद्वान् ।

भूयस्त्वम् [भूयस् + त्व] 1 बहुतायत, बहुलता 2 बहु-सत्त्वकता, प्रबलता ।

भूयिष्ठ (वि०) [अतिशयेन बहु + इष्टन् म्यादेशे युक् च] 1 अत्यत, अत्यत असत्त्वक या प्रचुर 2 अत्यत महत्त्व पूर्ण, प्रधान, मुख्य 3 बहुत बड़ा या विस्तृत, अत्यधिक, बहुत, बहुत से, असत्त्व 4 मुख्य रूप से, अत्यन्त स्वस्वचित्त, अत्यन्त संचरित या मुक्त, मुख्यतः भरा हुआ या परिच से युक्त (समास से अन्त में) अधिक-रूपभूमिष्ठा परिषद् श० १, भूयसांभूयिष्ठ बाह्य-रोज्यते -श० २, रघु० ४।७. 5 प्राय अधिकतर, लगभग सब (बहुधा कर्ता) रूप के पश्चात् -अये उचितभूमिष्ठ एव तपन मा० १, निर्वाणभूमिष्ठ-महात्म्य दीर्घम् कु० ३।५२, विक्रम० १।८, छम् (अब्ध०) 1 अधिकायत, अत्यत श० १।३१ 2 अत्यधिक, बहुत ज्यादा, अधिक से अधिक भूमिष्ठ भव दक्षिणा परिजने श० ४।१७, रघु० ६।४, १३।४ ।

भूर (अब्ध०) [भू + रुक्] तीन व्याहृतियां में से एक ।

भूरि (वि०) [भू + रिन्] 1 बहुत, प्रचुर अनस्य, यनेष्ट 2 बड़ा, विस्तृत, (पु०) 1 विष्णु का विशेषण 2 ब्रह्मा का विशेषण 3 शिव का विशेषण 4 इन्द्र का विशेषण (नपु०) सोना (अब्ध०) 1 बहुत, अधिक, अत्यधिक नवाम्भुभिर्भूरि विलम्बिता घना -ग० ५।१२ 2 बार बार प्राय भूभूमि, सम० -महा-महा, -तेजस् (वि०) अतिशान्तिमुक्त (पु०) अग्नि, -रक्षिण (वि०) 1 मत्स्यवान् उपहार या पुरस्कार से युक्त 2 पुरस्कार देने में उद्योग, दानवीर, -दायस् उदारता, -जन (वि०) दलितमद, घनाढ्य, -बाधन् (वि०) अतिकर्षित से युक्त, -प्रयोग (वि०) जिसका बहुत उपयोग हुआ है, सामान्य व्यवहार में जाने वाला (अब्ध०), -श्रेष्ठ (पु०) शकवा, -जागः (वि०) घनाढ्य, समृद्धिवाली, -जागः गीरद या लोमड़ी, रत्न गमा, -लाभ, बहुत कायदा, -विष्णु (वि०) बड़ा महादुर, बड़ा मोठा, भूयिष्ठः (स्त्री०) बहुत बारिण, -धवल् (पु०) कौरवों के पक्ष से लड़ने वाले एक बाढ़ का नाम जिस सार्वर्षिक में यमपुर भेजा था ।

भूरिन् (स्त्री०) [भू + इन्, पु० + साप्] पृथ्वी ।

भूर्जः [भू + ऊर्ज + अच्] भाजपत्र का पत्र भूर्जगो-ज्वरारोप्यास वि० २, कु० १।७ । सम० कण्टक-शर्पणकर जाति का पुष्प, जाति से बहुलकृत बाहुल्य

की उसी वर्ष की स्त्री से उत्पन्न सन्तान -बात्या तु जाते विनात्यापात्ता भूर्जकण्टक भृ० १०।२१, पञ्च भाजपत्र का वृक्ष ।

भूर्जिः (स्त्री०) [भू + नि, नि० उत्त्वम्] पृथ्वी ।

भृ (म्भा० पर०, घृ० उभ० -भृषति, भृषयति -ते, भृषित) 1 अर्ककृत करना, सजाना, भृगार करना -भृषि भृषयति भूत वपु -भट्टि० २०।१५ 2 अपने आपको सजाना (आ०) भृषयते कन्या स्वयमेव 3 फैलाना, बखेरना, बिखाना रघु० २।३१, अग्नि, -अलङ्कृत करना, भृषित करना, सौम्य देना शि० ७।३८, वि, अलङ्कृत करना, सजाना केयूरान् न विभृषयति पुरुषम् -भर्तु० ५।१९, शि० ९।२३, कु० १।२८ ।

भृषणम् [भृ + ल्युट्] 1 अलङ्करण, सजावट 2 अल-कार, भृगार, सजावट का सामान क्षीयन्ते नल् भृषणानि सतत वाग्भृषण भृषणम् -भर्तु० २।१९ रघु० ३।२, १३।५७ ।

भृषा [भृ + क + टाप्] 1 सजाना, भृषित करना 2 आभूषण, सजावट जैसा कि 'वर्णभृषा' ३ रत्न ।

भृषित (भू० क० कृ०) [भृ + क्त] सजाया हुआ सुभृषित -मणिना भृषित सर्व किमसौ न प्रदक्षुर ।

भृष्य (वि०) [भू + ण्य] 1 होने वाला बनने वाला जैसा कि अन्नभृष्य 2 बन या समृद्धि की इच्छा करने वाला भर्तु० ४।१३५ ।

भृ (म्भा० जुहो० उभ० भृति से विभक्ति -भृभृते भूत कर्मणां भ्रियते, इच्छा० विभक्तिविनि या भृभृति) 1 भरना भरकर की न विभक्ति केवलम् -पञ्च० १।२२ 2 भरना भ्रान्त होना पूर्ण होना अभाषीद् स्वनिना लोकान् भट्टि० १५।२४ 3 रखना सहारा देना, समारम्भना, पोषण करना घृर धरिण्या विभ राम्भभृष रघु० १८।४६ कर्मो विभर्ति धरणी लब्ध पृष्ठकेन चो० ५०, भट्टि० १७।१६ ४ सधारण करना, भूष पिलाना आकृत-याकृत करना, प्ररक्षण करना, संभाल रखना, परवरित करना दर्शनाभर काल्येय मा प्रपच्छेदवरे धनम् -श्र० १।१५ ५ धारण करना, रखना अधिकार में लेना -सन्धाभार सलिल धारनायनकमोय -कि० ७।५७, पिङ्गनङ्गन लब्ध विभर्ति सितीन्द्रा -भाषि० १।७४, अन्विष्य च्छद बभार बाला -कु० १।२९ इन्द्रोर्वेन त्वदनुसारेणिकण्टकाक्षीविभर्ति -मेष० ८४, श० २।४ ६ पहचाना -विभरजटा महामल श० ७।११, ६।५ विदाहिकीनुक ललित विभर एव (तत्त्व) रघु० ८।१, १०।१० जटावध विभृषाप्रित्यम् -भर्तु० ६।६ ७ महवृत्त करना अनुभव करना, भागना, महन करना (हर्ष या दुःख आदि) भावशुद्धिसहितैव जनी नाटकीय बभार

भोजन - शि० १४५०, सवासयविम शक-वट्टि०
१७१०८, व० ७१२१८ समर्पण करना, प्रदान करना,
देना, पैदा करना। योवने सरलबारा बोधा बिभ्रति
सुभूष सुभा० ९ रजना, धामना, धारण करना
(स्मृति में) १० भादे पर लेना मनु० ११।६२,
याज्ञ० ३।२३५ ११ लाभा, वा से जाना, उच्-
करना, सहारा देना, सौभालना-भूबोलमुपिभ्रते-गीत०
१, लम् १ एकत्र करना, जोड़ना, इकट्ठा करना
-त्यागाय सभूतापानाम् रघु० १।३ ५।५ ८।३,
भट्टि० ६।१० २ उत्पन्न करना पैदा करना प्रकाशित
करना, सम्पन्न करना -सुरनश्रमसभूता मूलं स्वदलव
रघु० ८।५१, कि० ०।१२, मेघ० ११५ ३ सधारण
करना पालन पोषण करना, दूध पिनाना ४ तैवार
करना सज्जित करना विक्रम० ५ रघु० १०।५४
५ देना अर्पित करना, प्रस्तुत करना।

भुक्त (भ) [भूवा कुश (कुम्भ (ग) + अच्) भाव
पकोष्ठ इमित्तप्रापन यस्य, इति सप्तसाण] इती क
येष धारण करने वाला नट।

भुक्ति टी। भूव कुटि (कुम्भ + इन) कौटिल्य १०
मप्र०] मोह। २० भू (भु) कुटि।

भुज (अध्या०) अग्नि की उत्पत्ति आवाज को अभिव्यक्ति
करने वाला अनुद्विगायक (जम्ब)।

भुज् [भस्ज् + कु सप्र कुप्रम] एक स्त्री जो भुजस
का पुत्रपुत्र माना जाता है इस बात का दर्शन मनु०
१।३५ में मिलता है मनु स उत्पन्न दल मनुपुत्रों में
से एक (एक बार जब श्रियो का इस बात पर एक
मन न हो सका कि बह्या विष्णु और शिव में से
कीन सा देवता बाह्या की पूजा का श्रेष्ठ अधिकारी
है तो भुज का। इन तीनों देवों के चरित्र का परीक्षण
करने के लिए प्रेमा गया। वह पहले बह्या के निवास
स्थान पर गया और जानबूझ कर प्रणाम नहीं किया
इस बात पर बह्या ने उसे बहुत फटकारा परन्तु जमा
मौजमें पर बहुत धात हो गए। उसके पश्चात् वह
कीलाश पर्वत पर शिव जी के पास गया तथा पहले
की शीति प्रणामादि के सिद्धाचार का पालन नहीं
किया। प्रतिहिंसापरायण शिव क्रुद्ध होकर भुज का
उस समय भस्म कर देना यदि भुज शब्दों से भुज ने
उन्हीं धात न किया होता। (एक दूसरे बृत्तान्त के
अनुसार भुज का बह्या ने आदर सत्कार नहीं किया
इसलिए भुज ने साग दे दिया कि सत्कार में उसकी
आराधना और पूजा नहीं होगी, शिव को भी किंग
बन जाने का अभिशाप दिया क्योंकि जब भुज शिव
के पास गया तो उस समय वह उससे मिल न सका
क्योंकि उस समय शिव अपनी पत्नी पार्वती के साथ
विराजमान थे, अन्त में वह विष्णु के पास गया और

जब उसे साता हुआ पाया तो उसने विष्णु की
छातीपर ठाकर भारी त्रिसने उसकी जीभ चुक
वाई। का बर्हिमान के बजाय उस समय विष्णु ने
मुदुता के साथ भुज से पूछा कि कही उनके
पर मे चोट तो नहीं लग गई, और यह कहने के
साथ ही भुज का पैर जने २ मलने लगा। तब
भुज ने कहा कि यह विष्णु ही सबसे अधिक बलशाली
देवता है क्योंकि इसने अपने सबसे शक्तिशाली अस्त्र
कृपालता और उधारना से अपना स्थान सबसे प्रभु
बना लिया है, इसलिए विष्णु ही सब की पूजा का
सर्वोत्तम अधिकारी भवना नया। २ जबद्वि श्रि
का नाम ३ शुक का विशेषण ४ शुक व्रत ५ उत्प-
पान दन्वा बहान भुवपानकारणमप्युक्तम्
दण० ६ समतल भूमि, पहाड़ की समतल कोटी

७ जग का नाम। मय० उहह परम्परा का
विशेषण ज, तब शुक का विशेषण - मन्व-
१ पाशुराम का विशेषण बीरो न मय्य मन्वान्
मनुजन्तापि जग० ५।३६ २ शुक, - वसि-
पराशराम का विशेषण - भूपर्नियसोऽवर्षे पत्
को चराम मय० ५३ इसी प्रकार भुजका पत्

ब्रह्म परमराज में प्रवर्तित वश ब्राह्म-
वृक्षार जमा - शाईल श्रेष्ठ लसक परबुराम
का विशेषण सुत सुनु १ परमुराम का विशेषण
२ शुक का विशेषण।

भुज् [भु + नन क्त् नृत् को बीरा धामि० १।५, रघु०
८।५३ २ एक प्रकार की मिट्टी, तर्जया ३ एक प्रकार
का पत्नी भोग रात्र ४ सम्पत् कामुक, व्यापारी,
तु० भ्रमर - साने का कलश, - वच् अन्नक, - बी
भीरी - भुजी पुप पुरव स्त्री बाछति नव नवम्।
मम० - अशोष्ठ आम का पद, - क्षाम्ना युविका जेले
आवली भीरो का पात मक्खिया का शब्द - वच्
१ जवर २ अन्नक (आ) भाग का पोषा, - वसिका
छोटी इलायची, राज् (पु०) १ एक प्रकार की बड़ी
मक्खी २ जवरा नाम का पोषा रिटि रोडि
शिव का एक वन (जो बहुत कुसुम कहा जाता है)।
रोल एक प्रकार की मिट्टी, बल्लकः कटव वृक्ष
का एक भेद।

भुज्जार, रच् [भुज्ज + ञ + अच्] १ सोने का कण्डक या
पट २ विशेष आकार का कण्डक, झरो गिरिशर
मुरभिस, ३ पुष्पोंय भुज्जार बेनी० ६ ३ रायदा
धिके के अक्षर पर प्रयुक्त किया जाने वाला पडा
वच् १ स्वर्न २ मीन।

भुज्जारिका भुज्जारी, भुज्जार + कन् + टाप् इत्ययं। भोजुर।
भुज्जिन् (पु०) [भुज्ज + इनि] १ वट वृक्ष २ शिव के एक
पक्ष का नाम।

भुङ्गिरि (री) रि: [भृङ्ग + रट् + इन्, पृषो० साधु] दे०
भुङ्गिरिटि ।

भुङ्गेरिटि [भृङ्गे + रिटि + इ, अलृक् स०] शिव के एक गण का नाम ।

भुष (स्वा० आ० भर्त्ते) भूतना, तलना ।

भुषिका [= भिरुष्टिका, पृषो० साधु] एक प्रकार का भुषणी का पीषा ।

भुषि (स्त्री०) [?] लहर ।

भुत (([भृ० क० ह०] [भृ + क्त]) 1 धारण किया हुआ
2 सहारा दिया हुआ, संचारित, पालन पोषण किया गया, बूच पिला कर पाला गया 3 अधिकृत, सहित सज्जित 4 परिपूर्ण, भरा हुआ 5 भाड़े पर भिया गया, बैतनिक, —तः भाड़े का नौकर भाड़े का टट्टू बेतनमोगी, —उत्तमस्त्वयायुषीयो मे मध्यमस्तु हृयोक्ल अवसो भारवाही स्यादित्येव त्रिविधो भूत —मिना० ।

भुतक (वि०) [भूत धरण बेतनमुपजीवति कन्] मजदूरी पर रक्सा हुआ, बैतनिक क भाड़े का नौकर । सम० अध्यापकः भाड़े का अध्यापक, अध्यापित (वि०) भाड़े के अध्यापक द्वारा सज्जित (क्) वह विद्यार्थी जो अपने अध्यापक को फीस देकर पढ़ा है (आधुनिक काल का फीस देकर पढ़ने वाला विद्यार्थी) मनु० ३।१५६ ।

भुति (स्त्री०) [भृ + क्तिन्] 1 धारण करना सहायता सहारा देना 2 संचालन संचारण 3 नेतृत्व करना मार्ग-प्रदर्शन 4 परवरिश सहायता सपोषण 5 आहार 6 मजदूरी, भाड़ा 7 भाड़े के बदले सेवा 8 प्यो, मूलधन । सम० अध्यापनम् वन उकर पडाना (विशेषण वेदाध्ययन), भुक् (पु०) बेतनमोगी नौकर, भाड़ा का टट्टू —क्यम् किमी विशेष काम के लिए पारिश्रमिक के बदले दिया जाने वाला पुरस्कार ।

भुत्स (वि०) [भृ + भृत् + क्त्वं] जिसकी परवरिश की जानी चाहिए, पालन-पोषण किये जाने के योग्य क्व 1 कोई भी सहायता चाहने वाला व्यक्ति 2 नौकर, आश्रयी, दास 3 राजा का नौकर, राज्य मन्त्री, स्या पालन-पोषण करना, बूच पिलाना परवरिश करना, देखभाल करना जैसा कि 'कुमारमुप' में 2 संचारण, सपोषण 3 बीबिन रहने का साधन, आहार 4 मजदूरी 5 सेवा । सम०—क्यः 1 सेवक, पराश्रित 2 सेवकजन, —भर्तु (पु०) कुल का स्वामी बर्तः सेवकों का समूह, —वस्तव्यम् नौकरों के प्रति कुना, भुति (स्त्री०) नौकरों का अन्न-पोषण मनु० ११।७ ।

भुत्सि (वि०) [भृ + भिन्] पाला पोसा गया, परवरित किया गया ।

भुत्ति [भृत् + इ, सप०] भवक, अनावर्त ।

भुत्ति (वि०) पर० भुवति नीचे गिरना, दे० भ्रम् ।

भुत्ति (वि०) [भृत् + क] (म० अ० अशीवत्, उ० अ० आशात्) मजदूर, शक्तिवासी, ताकतवर, गहन, अत्यधिक, बहुत ज्यादा, क्षम् (अव्य०) 1 ज्यादा बहुत ज्यादा अत्यंत, गहराई क साध, प्रचण्डता के साथ अत्यधिक, बहुत ही अधिक, बहुत करके तम-वक्ष्य करोड या भूतम् कु० १।२५, रघुभूषा कर्णास ११ नाहित रघु० ३।६१, युकोप नरमे स भूतम् ३।५६ मनु० ३।१७० ऋतु० १।११ 2 प्राय, बार-बार 3 अपेक्षाकृत अच्छी रीति से । सम० कोषण (वि०) अन्नन कोषी, बुद्धिमान, पोषित (वि०) अत्यन्त कष्टग्रस्त सहृदय (वि०) अत्यन्त प्रसन्न ।

भुष्ट [भृ० क० ह०] [भृ + क्त] तला हुआ भूना हुआ सखा हुआ । सम० अन्नम् उबाला हुआ या तला हुआ पान्य जन सखा (ब० ब०) भूने हुए भौ ।

भुष्टि (स्त्री०) [भृ + क्तिन्] 1 तलना, भूतना, सखा करना 2 रबड़ा हुआ बाग या उपवन ।

भृ (क्या० पर० भृयाति) 1 धारण करना परवरिश करना सहारा देना पालन पोषण करना 2 तलना 3 कलकल करना निन्दा करना ।

भृक [भी + क्त्वं] मंडक — पट्टे निम्नने करिणि भंको भवति मृगं 2 शरपोक आवसी 3 बावल की 1 छोटा मंडक 2 मंडकी । सम० भुक् (पु०) सौप, रब, जख मंडको का रगना ।

भृक [भी + क] 1 मंडा भेव 2 बेडा घनई ।

भृक [भृक पृषो० साधु०] , मंडा ।

भृक [भृत् + क्त्वं] 1 टटना टुकड़े टुकड़े होना काटना, (लक्ष्यपर) आधार बनना 2 बीरना काटना 3 बिभका करना, विमुक्त करना 4 बीधना, छिड़क 5 भग, बहाव 6 बाधा, बिधन 7 विनाशन, विधो-जन 8 छिड़, गले, बिबर, दरार 9 बोट, कति बाध 10 भिन्नता अन्तर—नयोरभेदप्रतिपत्तिरस्ति ये—मनु० ३।१०, अमौरवभेदेन—कु० ६।१२, अग० १८।१९, २९ रम०, काले जाति 11 परिकल्पन, विकार बुद्धिमत्त्व मग० ३।२९ 12 फूट, अक्षयति 13 विद्वति, भेद सोलना जैसा कि 'रहस्यभेद' में 14 विश्वासघात, वेसद्रोह 15 किरण, प्रकार — भेदा पचमभाषयो निधे—अमर० सिरीकुपुण्येव 16 हतबाध (राजय में) शत्रुत्व में फूट झेलकर उसकी जीत कर किसी को शोक करना, शत्रु के विरुद्ध मफलता प्राप्त करने के बार उपायों में से एक दे० 'उपाय नीर उपायकतुष्टय' 18 पराजय 19 (आनु० में) देवन दिधि, अन्न कोष्ठ साक करना । सम०—अनेकी

(वि० ब०) 1 फूट और मेघ, समहयति और सह-
मति 2 भिन्ना और एककृता भदाभदजानम
उत्पन्न (वि०) फूटने वाला, भिन्नने वाला विक्रम०
रा०, कर, कुम् (वि०) फूट के बीर होने वाला
बासिन्—वृष्टि, बुद्धि, (वि०) विश्व को परमात्मा
से भिन्न समझने वाला, प्रत्ययः द्वैतवाद में विश्वास,
—बासिन् (पु०) जो द्वैत मिथान को मानता है सह
(वि०) 1 जो विश्व को या नियुक्त हो सके 2 कल-
चित होने योग्य, द्रवणीय, प्रलीभन द्वारा बा फसाया
जा सके ।

भेदक (वि०) (स्त्री०) बिका) [भिद + कृत्] 1 तोड़ने
वाला, गण्ड खण्ड करने वाला विक्रम करने वाला,
अलग अलग करने वाला 2 चीयने वाला, छिद्र करने
वाला 3 नाट करने वाला, विनाशक 4 भेद करने
वाला, अलग करने वाला 5 परिभाषा देने वाला
क विशेषण या विवेककारी विशेषण ।

भेदक [भिद + कृत्] 1 टुकड़े टुकड़े करना चाहना
काटना 2 बंटना, अलग अलग करना 3 भेद करना
4 फूट के तोड़ना, भग्नगण्ड पैदा करना 5 भग्न कर
मिथान करना 6 उपाटना लपटना - न सञ्च ।

भेदित् (वि०) [भिद + कृत्] 1 तोड़ने वाला विक्रम करने
वाला, भेद करने वाला आदि ।

भेदित्, भेदित् [भिद + कृत्] 1 कृत् 2, गुण 3 गुण,
वर्ण ।

भेदित् [भिद + कृत्] भिद्येय सञ्च । सम०- भिद्ये (वि०)
भिय द्वारा बा पड़वाता जा सके ।

भेदित् [विशेष्यभावात्—भो—इत्] धीमा नासा बडा इत्
भेदित्, -री (स्त्री०) [भी + कृत्] 2 गुण भेदित्, धीय
धीमा नासा बडा इत् । भग० ११२ ।

भेदित् (वि०) भयानक भयपूर्ण डरावना भयानक
— भयानक का गह भेद, डम् भयानक भयानक ।

भेदित् [भेदित् + कृत्] मोरड, भूमात् ।

भेद (वि०) [भी + कृत्, रम्य क] 1 भयानक, भय
2 भय, भयानक 3 भयानक, भयानक 4 भय
5 भयानक, भयानक, भयानक, भयानक ।

भेदक, - कम् [भेद + कृत्] नाव, वेडा ।

भेद (वि०) [भी + कृत्] भयानक, भयानक ।

भेदक [भेद वागमय प्रयति—त्रि—इत्] 1 भयानक, भय
भयानक या दवा भयानक वात् भयानक भयानक
भयानक भयानक १२, भयानक भयानक भयानक भयानक
भयानक भयानक १३ 2 विक्रम का भयानक
3 एक प्रकार का भाव । सम० अ (आ) गार,
रम् अगार (भयानक भयानक) की दुका अगार
कोई चीज जो दवा लाने के बाद ली जाय ।

भेद (वि०) (स्त्री०—भी) [विशेष्य भावमूहो वा—अण
भिला पर भावन-विशेष्य करने वाला, कम् 1 माय
भीय मन् १११५, यात्र ११२ 2 आ कृ०
भिला में प्राप्त हो, भीय, दात—भेदक कर्तव्यभित्तम्
मन् २११८८, ११५ । सम०—भेदक भिला में
प्राप्त आहार, भिला का अन्न, —भिला (वि०) भिला में
प्राप्त अन्न को लाने वाला, (पु०) भिलानी, माय
—आहार भिलानी, कावः भीय मायने का सम०,
भयानक, —भयानक, —भयानक भीय मायने के लिए
इधर उधर भिलाना, भयानक भिलाना, भिला एकत्र करना
भीयिका, —भिला (स्त्री०) भिलारीयन, —भयानक (पु०)
भिलानी, भयानक ।

भेदक, भेदक [भिद्येय मयूह—अण] भिलानी का
सम० ।

भेदक [भिला + व्यञ्ज] 1 माय कर प्राप्त किया हुआ अन्न,
भिला, भीय, दात दे० 'भेद' ।

भेद (वि०) (स्त्री०—भी) [भीय + अण] भीयविषयक,
भी 1 भीय की पुत्री नल की पत्नी दमयन्ती का
पितामह नाम 2 माय भुवना एकादशी, या उस
दिन किया जाने वाला उत्सव ।

भेदक [भीय + अण] भीयमेत + इत्, व्यञ्ज] भीयमेत का पुत्र ।

भेदक (वि०) (स्त्री०—भी) [भीय + अण] 1 भयानक,
डरावना, भयानक भयानक 2 भेदक, भयानक, भयानक
का (हमक आठ कम् भिलाने गये है) एक रूप ।

भी 1 दुर्गादेवी का एक रूप - भिन्न-वर्गीय पदार्थ
में एक विशेष गतिनी का नाम 3 बाह्य रूप की
वस्त्र या किम्वारी जो दुर्गा देवी के उत्सव पर दुर्गा
का प्रतिनिधित्व करे, - भयानक भयानक । सम०

इहा (वाम्) का विशेषण विव का विशेषण—तर्कक,
—भावना इहानी में तर्कक तर्कक भावना तर्कक
भावना का भावना का परभावना में लीन होने के
योग्य बनने के लिए भेदक द्वारा उसको विभक्ति के
लिए उनका ही जाने वाला भावना ।

भेदक [भेदक + अण] भेदक दवा, --क. लवा ११०
कावक ।

भेदक [भिद्येय कम् भेदक—स्वायं वा व्यञ्ज] 1
1 भयानक देना विविक्तता करना 2 दवाका,
भीयानक दवाई 3 भयानक, भयानक ।

भेदक [भीयानक + अण] भेदक [विद्वत्] भयानक की
पुत्री हविमणी का निष्पत्तिक नाम ।

भेदक [भीय + कृत्] 1 उपभक्ता 2 कर्ता
करने वाला 3 उपभोग में लाने वाला प्रयोक्ता
4 भयानक करने वाला भयानक करने वाला भोगने
वाला (पु०) 1 काविक, उपभोक्ता, उपभोक्ता 2
पति 3 राजा, सावक 4 प्रेमी ।

भोज [भुज् + भञ्ज्] 1 खाना, खा पी खाना 2 सुको-
पयोग, आस्वाद्य 3 स्वादिष्ट 4 उपभोगिता, उपादे-
यता 5 हुकूमत करना, सामन्य, सरकार 6 प्रयोग,
(बरोबर बाबि का) व्यवहार 7 भोगना, प्रशमा
अनुभव करना 8 प्रतीति, प्रत्यक्षज्ञान 9 स्वीतभोग
दैन्य, विषयभुज् 10 उपभोग, उपभोग की वस्तु
—भोजे रोजभोज भोज १३३५, भग० १३३२
11 भोजन, हावत, भोज 12 बाहार 13 नैवेद्य
14 भोज, फावदा 15 भोज, राजस्व 16 धनमपत्ति
17 वेष्टा को दी गई मजदूरी 18 बच्चा भुजाव बच्चा
19 हाथ का फैलाया हुआ कप—इसदलिनभुजङ्ग-
भोजान्नवपत्ति आदि भा० ५१२३, रघु० १०७,
११५९ 20 हाथ। सम०—आर्ह (वि०) उपभोग्य
(हनु) मपत्ति, रोजत भोज्य अनाज, अन्न आदि
वस्तु के लिये हुई वस्तु भोजका उपभोग तब तक
किया जाय जब तक कि वह छुड़ाई न जाय, आखिरी
किसी व्यावसायिक प्रशस्तिवाचक द्वारा म्युतिमान
—भोज म्युतिवतरतम्य प्रती भोजावली भवेत् हुमं
—आवातः अनानवाता अन्नपुर कर (वि०)
सुखद या उपभोगप्रद, सुखम् वेष्टावा को दा गई
मजदूरी, —गृहम् मल्लिकार्जुन, अन्नपुर अनानवाता
—भुजा मासारिक उपभोगों को इच्छा लक्ष्म्याम्भन
महोदय पितुराजोति न भोगलुब्धया रघु० ११
‘स्वाभोग्य उपभोग’ भा० २, केहू. भोग गरीर
सूक्ष्मगरीर या कारणगरीर जिसके द्वारा व्यक्ति
परलोक में भग्न पृथक् भुजायुक्त कर्मों का महद्वय
भोगता है वह गरीर कति राज्यपाल या विद्या
विपति,—वात य ईश विज्ञाचिका भुज् भुजक
को केवल जीविका के लिए नौकरों करता है वस्तु
(भुज्) उपभोग की वस्तु या पदार्थ सम्यक् (भुज्)
भोगवास दे०—स्वाभोज् । उपभोग का भोगन गरीर
2 अन्नपुर ।

भोजक (वि०) [भोग + भुज्] 1 सुखद प्रशस्त
देने वाला खुशी देने वाला 2 प्रसन्न समृद्ध 3 एक
बाला, महामन्दर कुशल्याकार (पु०) 3 मण
2 पहाड़ 3 नृप्य प्रशस्त, जीर गावत (स्त्री०—
गी) 3 पालाक गमा का विशेषण 4 सर्वपितापिता
3 पालाक कोक के भाग—पितृविक्रमो क० तद्वत्
4 वाग्दामन की शतायाति की गत ।

भोजिका [भोग + भुज्] मांस, पौष्टिक का अन्न २१

भोजि (वि०) [भोग + भुज्] 1 खाने का
सोफा 3 भोजने वाला अनुभव करने वाला
करने वाला 4 ग्राहीकता स्वामी इन 10 १
का अर्थ है (गमा के अर्थ में प्रयोग) २ ११ १
6—द्वार 7 अन्न के अन्न, विषयवाचक अर्थ

भोजन पंच० ११६५, (यहाँ इसका अर्थ 'कला से
युक्त भी है) 8 वनाड्य सम्पत्तिशाली (पु०)
1 गौप्य गमाजिनालम्बि पितृभोगि का कु० ५१
३० रघु० २१३२ ४४८ १०७, ११५९ 2 राजा
3 'वययो 4 नाई 5 गौप्य का मुखिया 6 आरुप्य
नगर गौ राजा के अन्नपुर की स्त्री जो गौ की
रूप में अभिविक्रम न हो रखेले उपपत्ति । सम०

भुज् इस गण या कार्मिक—आन्त वायु तथा
भुज् (पु०) 1 नबला 2 मार वस्तुभुज् चदन ।
भोग्य (वि०) [भुज् + भ्या कृत्] 1 उपभोग के
योग्य या काम में लाने योग्य रघु० ११६५ पंच०
११५७ 2 भोगने योग्य या सहन करने लायक
पंच० १ 3 लाभदायक पंच० 1 उपभोग का
बाई पदाय 2 दोस्त सम्पत्ति आपदाय 3 अनाज
अन्न तथा वेष्टा कारगता ।

भोज [भुज् + भञ्ज्] 1 भानर (या भाग) का प्रसिद्ध
राजा (यैसा माना जाता है कि राजा भोज दमयी
शताब्दी के अन्त में या १२वीं शताब्दी के आरम्भ
में हुए यही संस्कृत जान व बड़ अभिभावक थे म.
स्वकीकृतभरण आदि कई प्रयोगों का उत्तर प्रष्टेता समझा
जाता है) 2 एक गण का नाम 3 विद्वान् का राजा का
११ भोजन द्वारा रम्य विनोद—रघु० ५१३ ५१
—५१ का. (पंच० ब० ब०) एक गण का
नाम । सम०—अधिप । कम का विनयन इच्छा
भोजों का राजा, कटवृत्तों द्वारा स्थापित एक नगर
का नाम देव, राजा राजा भोज दे० (१) उपर
वर्त । राजा भोज 2 कस का एक विशेषण ।

भोजक [भुज् + भुज्] 1 खाना, भोजन करना—अजीर्ण
भोजन विषय 2 बाहार 3 भोजन (खाने के लिए)
—भोजकता 4 उपभोग करना उपभोग करना
5 उपभोग की सामग्री 6 जिसका उपभोग हो
जाय—रापति दोस्त आपदाय न शत्रु का विना
वण । सम० अधिकार चारे का वायदा लाय
सामग्री का स्वीक्षण व वीक्षण का पद—आन्तवाहनम्
(प०) राजा, काम, नैवेद्य, लब्ध भोजन करने
का योग्य भोजन व सम० त्याग आहार का त्याग
गवय भोजि (स्त्री०) न अन्नवृत्त खाने का कमरा
विज्ञान आदिभोजन भोजन विज्ञान भोजन कुत्ति
(प०) भोजन भोजन विज्ञान (वि०) भोजन
अन्न व पचन अन्न व पचन ।

भोजक (वि०) [भुज् + भुज्] भक्षणीय स्तन पौष्टिक
व्यय आहार ।

भोजक (वि०) 1 भुज् + भुज् + भुज् । दो भुजरा का
भोजन कराय विमान माना ।

भोज्य (वि०) [भुज् + भुज्] 1 जो खाना या एक

2 उपभोग के योग्य, अधिकार में करने के योग्य
3 भोगने के योग्य, अनुभव करने लायक 4 भोग
मुख के योग्य अथवा 1 आहार, खाना - स्व भोग
ग्रह च भोग्यभूत - पृष्ठ ० २, कु० २।१५ मनु० ३।१४०
2 स्वाद्य भोग्यो का भक्षण, खाद्य पदार्थ 3 स्वादिष्ट
भोजन 4 उपभोग । सम० काक भोजन करने का
समय तत्रैव आपस्त धरीर का प्रापयिक रस ।

भोज्या [भोज्य + टाप्] भोज की एक रानी रघु० ६।५९
श- १३ ।

भोज गक दश का नाम, (कहने हैं कि गिब्यत का ही यह
नाम है) । सम०-अथ भूतान कहलान वाला प्रवेश ।
भोज्य (वि०) [भोज + छ] निव्यतवासी ।

भोजनार (मत्र) मू वि० ।

भोज (अध्य०) [भो + जोह] मबोधन सूचक अव्यय
त्रिमदा अनुवाह होता है जरे भी जहाँ जोह बाह
र काऽन भी स० २, (स्वर या सव्य अव्यय परे
रान पर पदान विसर्ग का कोप हा जाना है) अथि
मा पराणिपच-श० ७, कर्मा-करी इसको दाहगया जाना
है भी भी शक्यमनुवाहवातिना जानपदा मा० ३
दमक अर्थात्कन भी का प्रयाय लोक नचा 'प्रचन
श इकना क लिंग भी होता है ।

भोजङ्ग (वि०) (स्त्री० की) [भूजङ्ग + जङ्] सपिल,
नाप जेता मय आपनेवा नायक नक्षत्र ।

भौट्ट [भोट + जङ् पुरा०] तिब्बती तिब्बतवासी ।

भौत (वि०) (स्त्री० ली) [भूतानि प्राणिनोऽधिकृत्य
प्रभूत तानि देवता वा अस्य जङ्] 1 जीवित प्राणियों
से सम्बन्ध रखने वाला 2 मूलभूत, भौतिक 3 वैसाविक
4 योग्य, विलिप्त -तः भूतजैत व पिशाचों की पूजा
करने वाला, देवल, पुजारी -तन् मूल-भौतों का समष्ट ।

भौतिक (वि०) (स्त्री०-की) [भूत + ठक्] 1 जीवित
प्राणियों से संबंध रखने वाला -मनु० ३।७४ 2 स्थूल
मल्बो से निर्मित भौतिक भौतिक -पिण्डोच्चनास्या
खलु भौतिकैव -रघु० २।५७ 3 भूत-जैतो से संबध
रखने वाला -क शिव का नाम, -अन्व मोती ।
मम० भट विहार, विद्या जाहूरी अत्रिहार ।

भौल (वि०) (स्त्री०) [भूमि + जङ्] 1 पारिव 2 पृथ्वी
पर होत वाता मिट्टी का बना हुआ भौतिक भौमो
मन स्थानपरिग्रहोऽयम् -रघु० १३।१९ १५।१९
3 मिट्टी वा मिट्टी से निर्मित 4 मगल से संबध
म 1 मगलपद 2 नरकापुर का विशेषण 3 अल
4 प्रकाश सम० दिनम्, बार बाहरः मगल
का १।१९० रत्नम् मृगा ।

भौवन [भूमि + ण] देवों के शिष्यों विषयकर्म का नाम ।

भौविक (वि०) (स्त्री० की) [भूमि + ठक् मत्तु]

भौम्य (वि०) [भूमि + जङ्] पारिव, भौतिक, पृथ्वी

पर रहने वाला वा विषयवा ।

भौरिक [भूरि सुवर्णमधिकरोनि - ठक्] राजकीय कोल में
सुवर्णाभ्रम, कोषाभ्रम ।

भौवन दे० भौवन ।

भौवाविक (वि०) (स्त्री०-की) [भ्यावि + ठक्] भ्यावि
अवति मू से नारम्भ होने वाली वातुओं से सम्बन्ध
रखने वाला ।

भ्रंश [भ्रा० वा, दिवा० पर० प्रसृते, प्रसयनि, प्रष्ट
(अधिक० अया० के साथ) 1 गिरना, टपकना, उल्ट
जाना -हस्ताग्रष्टमिं विद्याभरणम् - स० ३।२६
2 गिरना विचलित होना बलम कुट जाना
भ्रूयाप्रष्ट हि० ४ रघु० १४।१६ 3 वल्लित
होना को देना बल्लितजी वृत्तेस्त - भट्टि०
१४।७१, पच २।१०८ ४।३० 4 बल निकलना, जान
जाना सहायात् बल्लित केचित् - भट्टि० १४।१०५,
१५।५९ 5 लीन होना, मुलाभा, घटना 6 जोलक
होना नष्ट होना, बलम होना -वाक्यि० १।८ १२
अ० प्रसयनि-से । गिरना पछाड देना 2 वल्लित
करना बरि 1 गिरना टपकना, उल्टना
निकलना 2 बहकना, नटकना 3 बलम हो जाना
पचप्रष्ट होना विचलित होना 4 कोना, वल्लित
होना मनु० १०।२० अ- 1 गिरना, टपकना
निकलना प्रसयमानाभरणमनुमान-रघु० १४।५४
2 कोवेना, वल्लित होना - प्रसयने लेखक पुष्प०
१।१४ अ० पछाडना नीचे डालना, नीचे गिरना
रघु० १३।१६ वि 1 गिरना, टपकना
2 बर्बाद होना लीन होना 3 गिरना, नटकना,
पचप्रष्ट होना 4 को देना ।

भ्रंश, स [भ्रंश भावे वज्] 1 गिर पड़ना, टपक
पड़ना, गिरना, फिसलना, नीचे गिरना -देहेऽयं न
प्रक्रमतो न क्रोमात् -रघु० १५।७४, कलकलव-
प्रसरिताप्रकोष्ठ -मेष० २ 2 लीन होना, घटना,
हाड होना 3 पड़न, नाच, बर्बादी, वल्लित 4 नाच
जाना 5 जोलक हो जाना 6 को जाना, हासि,
वल्कना -स्मृतिप्रभात् दुःखिनाथ -मेष० २।६६
हती प्रकार 'जानिप्रस' स्वाक्षप्रस' 7 नटकने वाला
प्रष्ट हो जाने वाला, विचलित ।

अश्व [अश्व + जङ्] दे० प्रशस्व

अश्व १ न (वि०) (स्त्री०-की) [अश्व + ल्यट्]
1 श्व पैर देने वाला -मनु० 1 गिर पड़ने की क्रिया
2 गिरना वल्लित होना को देना ।

अश्विन (वि०) [अश्व + श्विनि] 1 नीचे गिरने वाला,
पतनशील 2 जीर्ण होने वाला 3 नटकने वाला,
4 बर्बाद होने वाला, नष्ट होने वाला ।

अश्व दे० अश्व ।

अङ्कः [भूषा नृत्यो भाषण यस्य व० स० अकारादेश]
स्त्री की वेशभूषा में नट (नाटक का पात्र) ।

अञ् (स्था० उभ० भ्रमति ते) खाना निमलना ।

अञ्जलम् [अञ्जु + ल्युट्] लम्बे की क्रिया, भुनाना, सेकना ।

अञ् (स्था० पर० भ्रमति) शब्द करना ।

अञ्जः स्त्री० भूमय ।

अञ् (स्था० दिवा० पर० भ्रमति भ्रमति भ्राम्यति भ्रान्त) 1 इधर उधर घूमना, हिलना भुनाना मारा मारा फिरना, टहलना, (बाल स भी) - भ्रमति भुवने कल्पलता - मा० १११४, वना निपटास्तु भ्रमति च किमचालिस्ति च - ३१ (बहुधा स्थान में कर्म) भुव चक्ष्म दक्ष० - दिक्कमण्डल भ्रमति मानस वाप-लेन - भर्तृ० ३१७७, इसी प्रकार निजा अञ् 1 इधर उधर मानसे फिरना 2 मुहना चक्कर काटना, घूमना, वर्तुलाकार गति होना - सूर्यो भ्राम्यति नित्यमेव यमने - भर्तृ० २१९५, भ्रमता भ्रमरेण गीत० ३ 3 मटक जाना, भटकाना, इधर-उधर होना विच-लित होना 4 डगमगाना, लडखडाना, डाँडाडोल होना, सदेह की अवस्था में होना, झिझकना मा० ५१२० 5 मूल करना, मूल में घुसना होना गलती पर होना, - आचरणकास्तु तालव्य इति ब्रह्म 6 घुरघुराना, कड़कडाना, कापना, चक्कर होना - चक्र-भ्राम्यति - पञ्च० ४१७८ 7 घेरना, घेर (भ्रमयति - ठे, भ्रामयति - ठे) टहलाना, फिराना, घूमना चक्कर दिखाना, आबतित करना - भ्रमय जलदान भीमार्जुन - मा० ९१४१ 2 भुनाना, भ्रम में डालना घुमराह करना, उलझाना, उल्लिख करना, झलट में डालना, चकरा देना, डाँडाडोल करना - विकारस्वी-तस्य भ्रमयति च तामीलयति च उत्तर० ११३५ 3 लहराना, (लहराव) घुमाना, दोलायमान करना - नीलारविन्ध भ्रमयान्चकार - रघु० ९१३ उच्च 1 भ्रमण करना इधर उधर घूमना, गडबडा जाना - आचरत्युच्चमयति प्रसीकति पतत्युच्चानि मूर्च्छयति नील० ४ 2 झुलना, झूल में घड़ना 3 विजृम्भ होना, व्याकुल होना रघु० १२७७, वरि 1 टहलना, घूमना, भ्रमण करना, इधर-उधर हिलना-डुलना - परिभ्रमति कि वृषा क्वचन चित विप्रयत्नाम् - भर्तृ० ३११३७ 2 महराना, चक्कर लगाना परिभ्रमन्मूर्खचटपटाकुलै - कि० ५११४ 3 घूमता, परिक्रमा करना, मुडना, 4 घूमना मारा मारा फिरना (कर्म० के साथ) 5 मोडना, प्रदक्षिणा करना, वि , 1 घूमना, इधर उधर चक्कर काटना 2 महराना, आबतित होना, चक्कर खाना 3 उडा देना, तितर बितर करना, इधर उधर बखेरना 4 गडबडा जाना, अस्थिरस्थित होना, व्याकुल होना,

विस्मित होना - अण० १६११६, (घेर०) चकरा देना, उल्लिख करना प्रभामनसचन्द्रो जगदिदमहो विभ्रम यति काव्य० १०, यम - 1 घूमना टहलना 2 गलती पर होना, व्याकुल होना, उल्लिख होना, घडडा जाना ।

अञ् [भ्रम + क्त्वा] 1 घूमना, टहलना, बहलकदमी बरना 2 चक्कर खाना आवतित होना, घूम जाना 3 चक्करकार गति परिक्रमा 4 घटकना, विचलित होना 5 भुल गलती अस्तुष्टि गलतकदमी भ्रान्ति शुकती रजतमिति ज्ञान भ्रम 6 गडबडी व्याकु-लता उलझन 7 मंवर जलाना 8 कुम्हार का चक्र 9 चक्की का पाट 10 खराद 11 बुझि 12 कौवार। अल प्रवाह । मम० आकुल (वि०) पहराया हुआ - आलस्य विकलीगर शस्त्रमार्जक ।

अञ्जम् [भ्रम् + ल्युट्] 1 इधर-उधर घूमना टहलना 2 मुडना भ्रान्ति 3 विचलन पथभ्रमण 4 कापना, रगमगाना, चक्करना लडखडाना 5 गलती करना 6 घूर्वन, घुमेरी - भी 1 एक प्रकार का खेल 2 जाक ।

अञ्ज (वि०) [भ्रम् + जन्] घूमना टहलना आदि । मम० कुटी एक प्रकार का छाना ।

अञ्ज [भ्रम + कर्त्तृ] 1 मम० की और मनिनेरि रामपूजा विकसितवदनामनल्पप्रत्येयि त्वयि चरनेरि च सरमा भ्रमर कथ का सरोचनी ग्यजति वाम० ११२०० (यही द्वितीय अर्थ भी सुझाया जाना है) 2 प्रेमी मीनवर्षप्रेमी, लम्पट 3 कुम्हार का चक्र - रघु घूर्णन, घुमेरी । मम० - अतिथिः चम्पा का गोषा - अजिनीष (वि०) मक्खियो से लिपटा हुआ रघु० ३१८ - अलकः मस्तक पर की लट, - इष्टः इयोनका का वृक्ष, - उत्सवा माघवी लता, कारण्यक मक्खियो से मरी हुई पेटी (इसे चार अपने साथ रखते हैं और जब चोरी करने जाते हैं तो इन मक्खियों को छोड़ देते हैं जिससे कि यह बन्नी हुआ दें) - बीड, मिरों की जाति - शिवः कटम्ब वृक्ष का एक भेद, - खावा भोरे द्वारा मत्ताया ज्ञाना - ज० १, कञ्जकम्ब मक्खियों (भीमों) का वृक्ष ।

अञ्जक [भ्रम + कर्त्तृ] 1 और 2 पलावर्त, मंवर, - कः, - कम् 1 मस्तक पर लटकने वाला बालों की लट 2 लोखने के लिए नैव 3 लट्टु ।

अञ्जिका [अञ्जक + टाप इत्यम्] [लड दिखाना में घूमने वाली ।

अञ्जिः (स्त्री०) [भ्रम् + इ] 1 आबतित, मोड, चक्करकार गति इधर-उधर घूमना, भ्रान्ति - उत्तर० ३११९, ५१३, मा० ५१२३ 2 कुम्हार का चक्र 3 खरादी की खराद / मंवर 5 बखर 6 मोलाकार मैत्रिक कम्-जवस्था 7 झूल, गल्ली ।

अन्व दे० अंश ।

अक्षिप्त् (पु०) [अक्षस्य भावः इयन्ति, अतो र] प्रचक्षता, आयाचकता, उपना, उत्कटता ।

अष्ट (वि०) [अष्ट + क्त] १ पतित, नीचे पड़ा हुआ २ गिरा हुआ ३ भटका हुआ, विचलित ४ विप्लव, विचलित, निष्काशित, निकाला हुआ—यथा 'अष्टाधिकार' में ५ प्रक्षया हुआ, क्षीण, बर्बाद ६ ओझल, खोया हुआ ७ दुष्टचरित्र, दूषितचरित्र । सम०

अधिकार (वि०) अपना अधिकार या पद में विचलित, पदच्युत, क्षिप्त (वि०) विहिन कर्मा को विमन नहीं किया, वृष्ट (वि०) ०४ प्रकार का गृह्य म प्रमत्त घोसः श्री धर्मयुत हा गया है ।

अक्ष (स्त्री०) अक्ष० अक्षते) चमकना दमकना चमकमाना, जगमगाना रुद्रभञ्जिरे फेब्रुवरी हस्तिराक्षमा अष्टि० १५७८ १५७९, चि जगमग करना, देदीप्यमान होना विभाजने मकरकेतनमय—यन्ति रत्न० ११०१ ।

आक्ष (स्त्री०) आ० आक्षते) चमकना दमकना चमकमाना, जगमगाना रुद्रभञ्जिरे फेब्रुवरी हस्तिराक्षमा अष्टि० १५७८ १५७९, चि जगमग करना, देदीप्यमान होना विभाजने मकरकेतनमय—यन्ति रत्न० ११०१ ।

आक्षः [आक्ष + क्त] गाल मूषों में से एक, अक्ष एक प्रकार का भाग ।

आक्षक (वि०) (स्त्री०—जिज्ञा) [आक्ष + क्त] चमकाने वाला, देदीप्यमान, कम्पित, उन्ना में व्याप्त पित ।

आक्षयः [आक्ष + अय] आभा कान्ति, उज्ज्वलता, गोन्दय ।

आक्षिप्त् (वि०) [आक्ष + णिप्] चमकने वाला, जगमगाने वाला ।

आक्षिप्त् (वि०) [आक्ष + णिप्] चमकने वाला, देदीप्यमान, उज्ज्वल, दीप्तिकेन्द्र, अक्षः १ शिव का विशेषण २ विष्णु का विशेषण ।

आत् (पु०) [आत् + त् पु०] १ भाई सन्तोष २ अनिष्ट मित्र या सबन्धो ३ निकटवर्ती गिरदार ४ मित्रवत् संबन्ध का विच्छेद (मित्र मित्र) आत् कष्ट—महो यन् ३१३७, २१३८, तत्त्व चिन्त्य तद्वद आत् बोह० । सम० अक्षि, अक्षिक (वि०) जिसका भाई केवल नाम के लिए हो, नाम भाग का भाई, अः भतीजा (जा) भतीजी—आया (आतुजीया श्री) भाई की पत्नी, मांभी, मेच० १०, -वस्तु बहन के विवाह पर भाई द्वारा बहन की दी गई संपत्ति, द्वितीया कान्तिक श्रृङ्गा द्वितीया (इस दिन बहुतेरे अपने भाईको का अपने घर पर आमन्त्रित करती हैं और उनकी आतिथ्य करती हैं, भाई की इस दिन

बहनों को उपहार देने हैं, सबसब यह दिन इस लिए मनाया जाता है कि इस दिन यमुना ने अपने भाई को आर्वाचन किया था—नु० पमद्वितीया), पुत्रः (आतुपुत्र) भतीजा, अक्षः भाई की पत्नी, अस्तुरः पति का बड़ा भाई, बेटा, -हस्ता भाई की हस्ता ।

आत्क (वि०) [आत् + क्त] भाई से सबन्ध रखने वाला । आत्क्य [आत् पुत्र ध्यन] १ भाई का बेटा, भतीजा २ शत्रु, शत्रुघ्नी ।

आत्क्य (वि०) [आत् + क्त] जिसके एक या अधिक भाई हैं ।

आत्कीयः, आत्कीयः [आत् + क्त] भाई का पुत्र, भतीजा ।

आत्क्यः [आत् + क्त] भाईका, आत्क्य ।

आत् (स्त्री०) [अक्ष + क्त] १ शत्रु उग्र भूमा किशो २ भूमा हुआ चक्रण खाया हुआ घनया हुआ, ३ भूमा हुआ कुपयामी भटका हुआ । अक्षहाया हुआ अक्षहाया हुआ अक्ष उग्र भूमने फिरने वाला अक्ष म उग्र और उग्र म अक्ष भूमने फिरने वाला, चक्रण काटने वाला अक्ष १ भूमना, अक्ष उग्र फिरना, अक्ष पर्वतदुर्ग आत्क्य दन्तचक्र मह भन्त० २१४२ गलती, भूल ।

आत्क्यः (स्त्री०) [अक्ष + क्त] १ शत्रु उग्र फिरना, भूमना २ भूमक भूमना, अक्षक्य करना ३ अक्षि, गोलाकार या चक्राकार भूमना—चक्राक्षानिराक्षत—रेयु विनोत्स्यगमिबारावलीम्—विष्णु० १५ ४ भूल, गलती, अक्ष, व्यामोह, मिथ्याभाव—वितामि चन्दनभान्या दुविपाक विषदमय उत्तर० १४६ ५ अक्षहाय, उद्भिन्ना ६ अक्ष, अनिष्टक, अक्ष । सम० कर (वि०) विष्णु करने वाला, अक्ष में हालन वाला, -नाक्षत्रः शिव का विशेषण, अक्ष (वि०) अक्ष या भूल का दूर करने वाला ।

आत्क्य (वि०) [आत् + क्त] १ भूमने वाला, भूमने वाला, -आत्क्यमहाविष्णुम्—आत्क्य २१३३ २ भूल करने वाला, गलती करने वाला, अक्षक्य—पु० एक अक्षक्य जिसमें दो वस्तुओं की पारस्परिक समानता के कारण एक वस्तु को भूल से अन्य वस्तु समझ लिया जाता है, आत्क्यमानव्यवहितवस्तुस्यदर्शनं काव्य० १०, उदा०—कपाले माजरी पक्ष इति करान् लोड गतिन, अक्षि—विष्णु० ३१२, मां ११२, श्री ।

आक्षः [अक्ष + क्त] १ शत्रु-उग्र भूमना २ बोह, भूल, गलती ।

आक्षक (वि०) (स्त्री०—जिज्ञा) [अक्ष + क्त] १ भूमने वाला २ आवर्तित करने वाला ३ उलझाने वाला, बोहा देने वाला—क १. सुरजमुखी भूम २ एक प्रकार का बुक पत्थर ३ बोहवाय, बबबाय, ठग ४ नीबड़ ।

मधु, कुलों का रस - मकरन्दमुन्दितानामरविन्दानामय
महामाण्यः भावि० १।६, ८ २ एक प्रकार की
चनेली ३ कोयल ४, भीरा ५ एक प्रकार का मृग
नित आश्वत्थ, इय् कुलों का केशर ।

मकरम्बवत् (वि०) [मकरन्द + मनुष्] मधु में पूर्ण, जो
पाटल की बेल या पाटल का फल ।

मकरिन् (पु०) [मकर + इति] समुद्र का विशेषण ।
मकरी [मकर + डीप्] मादा बखियाल । सम० - पशुम्,
--- केसा लशमी के मूलपर 'मकरी' का चिह्न प्रथमः
एक नगर का नाम ।

मकुटम् [मकु + उट, अनुनासिकलोभ] ताव-गु- 'मकुट' ।
मकुतिः [मकु + उति पृथो] गुहशामन, गवा की शीर
से शुद्धी के लिए आदेश ।

मकुटः [मकु + उरश्च, पृथो] १ लीसा, दर्पण २ बकुल
का वृक्ष ३, काला + अरश्च की चमेला ५ कुशा
के बाक का डंडा ।

मकुम्भः [मकु + उलब्ध, पृथो] १. बकुल का वृक्ष
२ काठो ।

मकुष्टः, मकुष्टकः [मकु + उ पृथो नलोप मकु भूयां
मकुप्ति प्रतिहन्ति-मकुः स्तक् अष्] एक प्रकार
की लाबिया ।

मकुष्ठः [मकु + स्था + क] मात (कोविदे का एक
प्रकार) ।

मकुष्ठकः [मकु + कुलक् + कन् पृथो नलोप] १. कली
२ दली नामक वृक्ष ।

मकुक् [मकु + आ०-मकुक्ते] ज्ञान, हिमना-त्रु-ना ।

मकुकुलः [मकु + कुलक्] पय, गुग्गुलु, गेहू ।

मकुलीनः [मकु + लीन्] खडिया मिट्टी ।

मकु (मकु + पठ् मर्यादा) । इकट्ठा होता है अथवा
मकुल करके २ अर्थ माना ।

मकुः [मकु + पठ्] १. काय २ गुणवत् ३. अन्तः
मकुहः सम० बीरे, शिवाय इह ।

मकु (शरी) का : मकु + उट् + क्त्वा + क्त एक ही
मकुम्बकी प्रः मकुम्ब नामनमधु नविता (मकु
व मकुम्ब) । मकु - बन्धु मकु ।

मकु, मकु (मकु + पठ् मर्यादा, मकुनि) मकु + क्त
सकता ।

मकुः [मकु सजागा प] यज, यजविषयक कृत्य अथ
अनन्य मयज अर्थात् १५० ५११६, सम० १. ५
१५० ३१३९ । सम० अस्मि, -अनन्यः यजामि

---अनुह्व (पु०) शिव का विशेषण किया यज
विषयक कार्य कृत्य, - भ्रातृ (पु०) राम का विशेषण ।

---ह्वि (पु०) यदाव, राक्षस १५० ११२३
---हेविन् (पु०) शिवका विशेषण, -हन् (पु०)

१. हन् का विशेषण २. शिव का विशेषण ।

मकुषः [मकुष + अन्. भव दोष दधानि वा मकु
+ क] एक देश का नाम, विद्वान् का देशीय

अन्ति मकुषे पुण्यपुरी नाम नगरी - इति
अनाध्वरवा मकुषप्रतिष्ठ --- १५० ५१२१ १ ५
बन्दी, चागा, -धाः (५० ५०) १. मकुष देश
अभिनामी, मकुष २ बड़ी पीपल । सम० उद्भव
बड़ी पीपल, -मुनी मकुष का नगरी, -मितिः (स्त्री)
मागधी निर्ग या निखायट ।

मकु (मकु + कृ०) [मकु + क्त] १ गोता लगा हु,
हकरी लगाई हुट २. मराकोर, दूबा हुआ ३ ल
निन (दं० मकु) ।

मकु [मकु + अन्, पृथो] १ विध्व के एक द्वीप का नाम
का नाम २ एक देश का नाम ३ एक प्रकार
औरिदः मकु ४ मकु नाम का दूधवा नक्षत्र, ५
एक प्रकार का फल ।

मकुष मकुषन् (पु०) [मकुषन् + न्] अन्तर्देश, 'ह्व' +
इत्यञ्जो इट् का नाम ।

मकुषन् (पु०) मकु पूजाया कर्त्तुम् नि० इत्यच्, वा
मकुषन् + अन्. ए० ५० मकुषा, कर्म० व.

मकुषान् १. इह का नाम-दुर्गाहा म कुषा म-
मकुषा दिवम् १५० ११२६, ३१६६, कि ३१६

३१२ २ उन्मू देखो ३ श्यास का नाम ।

मकु [मकु + अन् बन्धु बन्धु, टाप्] दन्ता नक्षत्र
पाच तारी का समूह है । सम० अथोवसो मा
कुणा यथोदनी, अथ, -भुः लुक्कतः

मकु (मकु + आ०-मकुक्ते) । जाना, हिनना-ह्व
२ मकु + अन् इत्यञ्जो कर्त्तुम्

मकुकुलः [मकु + कुलक्] दाबना, दबाव की आश ।

मकुकुटः [मकु + कुट्] दर्पण, शिवा ।

मकुलम्ब [मकुल + उन्] गुहा अथवा ३. गुहा
गुहा के लिये कहते हैं अथवा गुहा की गुहा + उन्

मकुलः [मकुल + उन्] गुहा अथवा ३. गुहा
गुहा के लिये कहते हैं अथवा गुहा की गुहा + उन्

मकु [मकु + अन् अन्. भव दोष दधानि वा मकु
+ क] एक देश का नाम, विद्वान् का देशीय

मकुषः [मकुष + अन्. भव दोष दधानि वा मकु
+ क] एक देश का नाम, विद्वान् का देशीय

मकुषन् (पु०) मकु पूजाया कर्त्तुम् नि० इत्यच्, वा
मकुषन् + अन्. ए० ५० मकुषा, कर्म० व.

मकुषान् १. इह का नाम-दुर्गाहा म कुषा म-
मकुषा दिवम् १५० ११२६, ३१६६, कि ३१६

३१२ २ उन्मू देखो ३ श्यास का नाम ।

मकु [मकु + अन् बन्धु बन्धु, टाप्] दन्ता नक्षत्र
पाच तारी का समूह है । सम० अथोवसो मा
कुणा यथोदनी, अथ, -भुः लुक्कतः

मकु (मकु + आ०-मकुक्ते) । जाना, हिनना-ह्व
२ मकु + अन् इत्यञ्जो कर्त्तुम्

मञ्जुषा दे० मञ्जुषा ।

मञ्जु (मञ्जु + अञ्) १ धामना २ ऊँचा या मञ्जु होना ३ जाना, चलना फिरना ४ चमकना ५ अलङ्कृत करना ।

मञ्जुः [मञ्जु + टाप्] १ शय्या, चारपाई, पलंग, बिन्दरा २ उभरा हुआ आसन बंधा, सम्मान का आसन राज्यासन मिहासन—तत्र मञ्जुषु मनाजिबेवान् रञ्ज ० ६१२ ३१० ३ मकान, टाँस (धेर क रसवान के लिए) ४ व्यासपीठ ऊँचा आसन ।

मञ्जुकम् [मञ्जु + कन्] १ शय्या बिन्दरा २ उभरा हुआ आसन या बेदी ३ औष्य सुरक्षित स्थान का होना । सम० आश्रय, स्वयंसेवा आश्रम में रहने वाला ब्राह्म ।

मञ्जुष्का [मञ्जु + क् + टाप् + क्] १ कुम्भी २ बटोला या की ३ माथी (जहाँ पाद म बसना) हुआ स्तंभ (ब्रह्मरूप ब्रह्म) म भरा सामान (दा २२१) है ।

मञ्जुश्चरम् [मञ्जु + अर्] १ कुल २ गुच्छा ३ मीना ३ तिलक नाम का पौधा ।

मञ्जुश्चरि, हो (स्त्री) [मञ्जु + च + इन् शब्द परकाम पति होय, १ कोपल अकुर और निबप महार मञ्जुरी कु० ४३८ मनुष्यान्तरिक्षयन् मञ्जुरी रज्जु ११४६ १६५१ इसी प्रकार - स्फुरन् कुञ्ज कुम्भयोः स्फुरन्मचिम्भञ्जरी-गान् १० मूल मुक्तारयो धतु वर्गमम कणमञ्जरी-काव्य ० २७१ २ कुल का गुच्छा ३ कुल कली ४ कुल का वृक्ष ५ ममानागर गुच्छा ६ बाँसी ७ रज्जु ८ तुलसी ९ तिलक का पौधा । सम० चावरम् मञ्जरी की शकल का चवर पत्ते जैसी मञ्जरी विक्रम ० ४१० मञ्जु वेतन का पौधा ।

मञ्जुश्चरित (वि०) [मञ्जु + च + इन्] १ कुल या बीरा क गुच्छा से युक्त २ वृत्त पर लगी हुई कलें आदि ।

मञ्जुष्का [मञ्जु + क् + टाप्] १ बकरी २ बीगे (कुलो) का गुच्छा ३ लता ।

मञ्जुः, - बी [मञ्जु + इन्, पले कोप्] १ कुलो (या बीरो) का गुच्छा २ अता । सम० फला केले का पौधा ।

मञ्जुष्का [मञ्जु + क् + टाप् + इत्तम्] वेष्ट्या, बागमना, बाजाक ली, रही ।

मञ्जुष्कम् (पु०) [मञ्जु + इतिच्] सौन्दर्य, मनोहरता ।

मञ्जुष्का [अतिशयेन मञ्जुमयी इच्छन् मनुषो लोप ताता०] मजीठ । सम० ब्रह्म एक प्रकार का मूष-रोष,—एतन् १ मजीठ कारण २ मजीठ के रस जैसा काकुरक और टिकाऊ लक्ष्मन् स्थायी अनुराग ।

मञ्जुषीः—रज्जु [मञ्जु + ईत्] मधुर, वैरा का आभूषण शिख्यानमञ्जुमञ्जीर प्रविशत निकेतनम् पीठ०

११, या मञ्जरमञ्जीर त्वञ्च मञ्जीर रिपुमिव कोलम् लालम् १ मा० १—रज्जु वह स्वभा जिसमें रई की रस्सी लपेरी जाती है ।

मञ्जुली (पु०) वह गाँव जिसमें बोबिया का निवास हो ।

मञ्जु (वि०) [मञ्जु + उन्] प्रिय, सुन्दर, मनोहर मधुर, सुषुप्त हृदिकर, आश्चर्य—स्वच्छदममञ्जुममञ्जुवस्तिन ते (स्मरामि) उत्तर ० ६१६ अदिदलवरिन्द मन्व्यमान मन्द त्व किमपि लिहन्ती मञ्जु गुञ्जन् मञ्जा—भामि ० ११५ तन्मञ्जुमन्त्रसित इवमितानि तानि—२५१ सम०

केसिन (पु०) कुल का विशेषण, कलन (वि०) सुन्दर गौर वाला, (मा) १ इमिती २ राजहन्—कलनं नाल दग का नाम—पिप् (वि०) मधुर स्वर वाला—तत्र मञ्जुगिर मञ्जु काव्या ० २१९, मञ्जुः प्योरी मञ्जु घोष (वि०) मधुर स्वर बोलने वाला, बासी १ मन्दर मञ्जु २ दुमों का विशेषण ३ इन्द्र ही पत्नी जन्वी का विशेषण—पाठक नाल ग्राम बट्टा का विवरण भाषित, बाष् (वि०) मधुर बालन वाला मित्रमनुवर्ति मुक्तन मञ्जुबाक पञ्चदशम्—रज्जु ० ५१७ १-१३९—बन्तु (वि०) सुन्दर मल वाला मनोहर स्थान,—स्वर (वि०) मीन स्वर वाला ।

मञ्जुल (वि०) [मञ्जु + ल + क् + टाप्] प्रिय, सुन्दर हृदिकर, मनोहर मधुर मृगी (बाबा) । सम्यक् मञ्जुल-मञ्जुल सीमनि केलादममनुपालम् बीत ० ११ कुञ्जित राजहमना बचने मदमञ्जुलम—काव्या ० २३३६ लम् १ लनामध्य कुञ्ज, कतामृद २ निभर, कुञ्ज ल एक प्रकार का जलकुक्षुट ।

मञ्जुषा [मञ्जु + ऊषन् + टाप्] १ लहूक इच्छा, पेटी, आधार मदीयपट्टरालाना मञ्जुषाया मया कृता—भामि ० ४१५, २ बड़ी टाकरी, पिटारा ३ मजीठ ४ पत्थर ।

मञ्जु, मञ्जु [मट् + अप् = मट् + चि + डि + डीप्, मट् + कान् + डीप्] आला ।

मट्स्फटि [मट् + स्फट् + इ] 'चमक का आरम्भ', आरम्भ अभिमान ।

मट्कम् (नपु०) छत की मूहर ।

मट् (पदा० पर० मर्ति) १ रतना, बसना २ जाना, ३ पीटना ।

मट्, मट् [मट्स्फट् मट् मट्स्फट्, १ मन्वासी की कोठर, सायक की कुटिया २ बिहार, निवास ३ बिद्यामंदिर मन्वाविद्यालय, ज्ञानपीठ ४ देवालय, मन्दिर ५ बेलगाड़ी—छी १ कोठरी २ मट्टी, बिहार । सम०—आश्रयम् विद्यामन्दिर, महाविद्यालय ।

मट् (वि०) [मट् + मट्, ठ मन्वायेक] पत्ते में धूर, मल पोकर मतवाला ।

मत्त (भू० क० क०) [मन् + क्त] 1 चित्तित, विस्वसित, कल्पित 2 सोचा हुआ, माना हुआ, खयाल किया हुआ, समझा हुआ 3. मुख्यमान माना हुआ, सम्मानित, प्रतिष्ठित--रघु० २।१६, ८।८ 4 प्रवसित, मुख्य-वान् 5 अटकल लगाया हुआ, अनुमान लगाया हुआ 6 मनन किया हुआ, चिन्तन किया हुआ, प्रत्यक्ष किया गया, पहुँचाया गया 7 सोचा गया 8 अभिप्रेत उद्दिष्ट 9 अनुमोदित स्वीकृत (दे० मन्)। तत् चिन्तन, विचार, सम्मति विश्वास, पर्यवेक्षण-निश्चयन-मतमूलमन् भग० १।१६ केषाचिन्मनेत-आदि 2 सिद्धान्त, उद्गूल, पन्थ धर्ममत विश्वास-ये मे मन-मिव नित्यमनुनिष्ठान्ति मानवा-भग० ३।३१ 3 उप-देख, अनुदेख, सलाह 4. उद्देश्य, योजना, अभिप्राय प्रयोजन 5 समनुमोदन, स्वीकृति प्रणय। तय० - ब्रह्म (ब०) पाते के खेल में परीजन कन्तरम् 1. भिन्न दृष्टि 2 मित्र पन्थ- अक्षलम्बनम् विशेष प्रकार को सम्मति रखना।

मतकूः [माद्यणि अनेन-मद्+अकूच् दध्यत गरा०] 1 हाथी 2 हादल 3 एक ऋषि का नाम-रघु० ५।३३।

मतकूचः [मतङ्ग+अन्+ङ] हाथी न हि कमलिनो दृष्ट्वा हाहृष्येषते मतङ्गञ्च भालवि० ३ कि० ५। ४७, रघु० १२।७३।

मतलिका [मत मतिम् अलमि भूषयति मत + अल् + लृच् पुं० साधु] मनीषिता, मनीषेयता प्रकट करने के लिए इस मन्त्र को सज्जनों के अन्त में जोड़ दिया जाता है, योगतलिका 'अष्ट गी' तु० उ३। मतलकी दे० मतलिका।

मतिः (स्त्री०) [मन् + क्तित्] 1 बुद्धि, समझदारी, भाव, ज्ञान, सकल्प मतिरेव बलाद्गरीयसी हि० २।८६, अल्पविषया मति --रघु० १।२ 2. मन, हृदय - मय तु मतिर्न जनामर्तुः समति - भाषि० ४।२९, इसी प्रकार दुर्बलति, मुमति 3. सोचना, विचार, विश्वास, सम्मति, भाव कल्पना, संस्कार पर्यवेक्षण -विचरहो बलमानति मे मति --मनु० २।१९, मय० १८।७८ 4 अभिप्राय, योजना प्रयोजन दे० मत्वा 5 प्रस्ताव निवारण 6 सम्मान, प्रतिष्ठा, भावर कि० १०।९ 7. अविज्ञा, इच्छा, कामना-प्रायो-पवेशनमतिर्नृपतिर्बभूव रघु० ८।९४ 8 मन्त्रा, परामर्श 9 याव, प्रत्यास्मरण (अस्मिन्, वा, जाथा, मन लयाथा, निश्चय करना, सोचना, मत्वा (कि० वि०) 1. जानबूझकर, साभिप्राय, स्वेच्छा से मत्वा बुकसावरेत् कृच्छम्-मनु० ४।२२३, ५।१९ 2 इस विचार से कि व्याधमत्वा कलायते। तय० - ईश्वरः विश्वकर्मा का विशेषण, वर्ष (वि०)

प्रज्ञावान्, बुद्धिमान्, चतुर, - ईश्वर मतिविज्ञा, - विश्वकर्मा निश्चित विश्वास, बुद्ध विश्वास, - पूर्व (वि०) साभिप्राय, स्वेच्छाचारी, मनेच्छ, पूर्वम्, पुनश्च (अव्य०) सप्रयोजन, साभिप्राय, स्वेच्छा से, लुकी से, -प्रकृष्टः बुद्धि की अष्टता, चतुरार्थ, - अर्थः विचारविमर्शना, - अर्थ, विचारों से 1 व्यापार, मान-सिक भ्रम, मन की भ्रान्ति -श० ६।९ 2. नृति, नमनी, मूल गस्तफहमी, विषय, विषयः मन की अव्यवस्था या धीवानापन, पायलपन उन्माद, सात्त्विक (वि०) बुद्धिमान् चतुर, हीन (वि०) मूर्ख अज्ञानी, मूढ़।

मत्त (वि०) [अस्मद् + क्त मदादेश] मेरा सन्तुष्ट कर मरुत सर, अस्त्व वने धुने भट्टि० ८।१६, लक्ष्म वटमल।

मत्तुकुः [मद् + क्तिप्, कुप् + क मत कर्म० म०] 1 अट-मन् मत्तुषादिष पुरापरिष्करो -श० १।६९८, 2 बिना दत्त का हाथी 3 छाटा हाथी 4 बिना दाढ़ी का मनुष्य 5 जैम 6 नारियल का पेड़, मत्तु टापी या जवाबों के लिए कवच। तय० अरि पटभय का पोषा।

मत्त (भू० क० क०) [मद् + क्त] 1 मछे में चूर, मन बाला, मदीन्यत (आल० में भी) - ज्वात्स्नोपानमदात्मन वपुषा ममावचकाञ्जना - वि० १।११, प्रजा मत्तकण्डो जगदिवसो विभ्रमयति - काव्य० १०, इसी प्रकार ऐश्वर्यं वने बलं आदि 2 पागल विस्मृत 3 मदबाला, मीषण (हाथी) - रघु० १०।२३ 4 चमड़ी, अटकारी 5 मूछ, अतिहृष्ट, हर्षोद्दीप्त 6 प्रीतिविषयक, केलिपरायण, खेरी, - लः 1 पिय ककड़ 2 पागल मनुष्य 3 मदबाला हाथी 4 कोयल 5 धैमा 6. चतुर का पोषा। तय० आत्मव्य (फिनी घनी पुष्प के) विशाल भवन की बाह, इस मदबाला हाथी 'मत्त' मत्त हाथी के मनुष्य चाल वाली स्त्री अर्थात् बलमयति, - काठि (शि) श्री एक मुन्दर नावध्यवनी स्त्री, हस्तिन् (पुं०) नाम धारकः मदबाला हाथी, (-ज-जम्) 1. विशाल-भवन के चारों ओर बाह 2. किसी विशालभवन के ऊपर बनी अटारी 3 बराह, अस्ति 4 भवन का मुमन्त्रित रहिर्वाय, - (जम्) कटी हुई मुगारी।

मत्तम् [मत् + मन्] 1 हथ हारों बनाया बूट 2 जान प्राप्त करने का साधन 3. ज्ञान का साधन।

मत्तः [मत् + मन्] 1 मछली 2. मत्स्य देश का भागी। मत्तः [मत् + मन्] 1 ईश्वर, बाह करने वाला 2. अतुल लाभनी, लोभी 3. दरिद्र 4. मूढ़, १ 1 ईश्वर, बाह-अवस्थाचकाक्षी मत्तारम्भ का० ४५, परबुद्धि बटमत्तारणा-कि० १३।७, वि० १९।३।

कु० ५।१७ २ विरोधिता, श्वृता रघु० ३।६०
३ वयड - छि० ८।७१, ४ लोप, लालव ५ कोप,
कोपायेन ६ अंत या मच्छर ।

मत्सरिन् (वि०) [मत्स्य + इति] १ ईर्ष्यान् इह
करने वाला—परस्परमत्सरि मना हि मानिनाम्—छि०
१५।१ २।११५ छुट्याम्हा परगणममरी जनुप्य
—मच्छ० १।२७, रघु० १।८।१९ २ विरोधी, श्वृतापूषे
३ लालयित, स्वाधरन (अधि० के साथ) ४ दृष्ट ।

मत्स्य [मत् + स्यन्] १ मछली—इले मत्स्यानिवा
पश्यन् दुर्बलान्तरात्तरा मनु० ७।२० २ मछलियों
की विशेष जाति - मत्स्य दम का रात्रा त्वयो
(वि० व०) मान गति स्स्या (व० व०) एक
देश तथा उल्फ ४ रमिया का नाम मनु० १।१९
रात्र० १।८३, १ मम०—अवका, असी एक विशेष
प्रकार की सोमयना अब्, अवत बाब (वि०)
मछलियाँ बाकर पलने वाला मत्स्यभक्षी अवतार
विष्णु के हम अवतारों में सबसे पहला अवतार
सानवे मनु के सोमयना म दूधिन हुइ सगरी रघुको
शदभन हो गई और मवन मनु तथा सन्निधया
(इनका विष्णु ने मछली बनाकर बचा लिया था) ३।
छोड़कर मब जावध रो पाणी कालकर्मलित हा गये।
४० इस अवतार का जयदेवचित्त वर्णन प्रथमपा-
चिञ्चन धनवानसि बंद विहितवहितचरिचमलेद
केशव धनवीनसरीर जय जगदोश हरे गान० १
—अवका १ रावचिरेया (एक सिकारी पक्षी)
२. मत्स्यभक्षी—अधुरः एक राक्षस का नाम आभीष.
मछुवा, आभाली धानी मछलियाँ रखने की टोकरी
(जिसे मछुवे प्रयुक्त करते हैं) - उबरिन् (पु०)
बिराट का विशेषण, उबरी सत्यवती का विशेषण
- उबरीवः व्यास का विशेषण उचबीचिन् (पु०)
मछुवा,—कारणिका मछलियाँ रखने की टोकरी गन्ध
(वि०) मछली की गंध रखने वाला, (धा) सरस्वती
का नाम—अवः एक प्रकार की मछली की बटनी
वासिन्—बीवत्, बीचिन् (पु०) मछुवा—आत्मन्
मछलियाँ पकड़ने का जान बेल मत्स्यवासियों का
देश, - भारी मत्स्यवती का विशेषण, -मात्स्यः—मात्स्य.
मत्स्यभक्षी उकाव, कुररपक्षी—पुरषन् जठरह
पुराओं में से एक, -अवः, -अविन् (पु०) मछुवा
—अवः मछली पकड़ने का कांटा, बसो, अन्ध
(वि०) नी मछलियाँ रखने की टोकरी, -रङ्ग, रङ्ग,
—रङ्गः रावचिरेया (मछली जाने वाला एक
सिकारी पक्षी), -वेवन्, -वेवनी मछली पकड़ने
की बंधी, -सहकाः मछलियों का झुंड, -मत्स्यच्छिडा,
मत्स्यच्छी मोटी या बिना हाक की हुई चीनी ही ही
इसं लीचुपान्द्रोहितस्य मत्स्यच्छिदोपमता—मात्स्यि० ३।

मत् दे० मत्स्य ।

मत्स्य माष ।

मत्स्य (वि०) (स्त्री० नी) [मत् + स्यट्] १ बिलाने
वाला, मेषन करने वाला २ बाट पहुँचाने वाला,
छानि देने वाला ३ मारने वाला, मष्ट करने वाला,
नामक—मत्स्य मधुमत्स्यमनुवतमनुसर गंधिके कीत०
२ मः एक मूत्र का नाम, -मत्स्य १ मत्स्यन करना,
बिलाना, बिलम्ब करना २ बिलना, रगड़ना ३ छलित,
बाट, नाश ४ मम०—अवका, अवतः मन्दरावक
पहाड़ जिसको रई का श बनाया गया था ।

मत्सि [मत् + इ] रई का डडा ।

मत्सित (म० क० क०) [मत् + क्त] १ मत्सा मत्सा,
बिलोया गया, बिलम्ब किया गया, मूत्र हिलका गया
२ कृत्रला गया पीसा गया चूटकी काटी गई ३ कष्ट-
ग्रस्त, दुःखी अग्याकार पीडित ४. मत्स किया हुआ,
नाश किया हुआ ५ स्थानप्रष्ट (दे० मत्स्य), मत्स्य
(बिना पानी डाले) मत्सा हुआ बिलम्ब मट्टा ।

मत्सिन् (पु०) [मत् + इति] (क०) १० व०—मत्सा कर्म०
व० १० मत्स्य) रई का डडा मूत्र प्रचुलेषु मत्सो
निर्वर्तनेनरन्तु कुम्भेषु मूदङ्गमन्वरम् कि० ५।१९, नै०
२२।४८, २ वायु ३ उज्ज, ४ पुरुष का लिंग ।

मत्स्य [मत् + स्यट्] (अ) रत् + टाप्] यमूना नदी
के दक्षिणी किनारे पर बना हुआ एक प्राचीन नगर,
कृष्ण की जन्मभूमि तथा उसके कारनामों का स्थल,
यह गहर की सात पृष्ठनगरियों में एक है, (दे०
अवन्ति) और आज भी अरारों की लक्ष्मा में बहुत
लोग वसनायें यहाँ जाते हैं । कहा जाता है कि इस
नगर को लघुचने ने बनाया था - निर्वर्तने निर्वर्तनोर्जु
मयुरा मयुराङ्गि—रघु १५।८, कलिम्बक्या मयुरा
गतापि मयूरोमिलसक्तजलेषु भाति—१।४८, १ मम०
ईक्ष. —माव. कृष्ण का विशेषण ।

मत्स्य उतामपुत्र सर्वनाम के एक वचन का रूप जो प्रायः
समस्त शब्दों के आरम्भ में प्रयुक्त होता है अथा
मदर्थ, 'मेरे लिए' 'मेरी क्षति' 'मत्स्यस' 'मेरे विषय'
में सोचकर' मत्स्यचनम्, मत्स्यनेत्र, मत्स्यवन्, मत्स्यवन् ।

मत्स्य । (वि०) पर० माछनि, मत्स्य १ मत्स्य होना, मछे
में घूर होना—बीक्ष्य मत्स्यमित्रा तु ममाद—छि०
१०।२७ २ पावक होना ३ बाध्य बनाना, लुकी
मत्स्य ४ प्रत्यय या दृष्ट होना । हेर० (माचरति)
१ मछ में घूर करना, मत्स्यमत्स्य करना, पावक बना
देना २ (मदवर्ति) उत्तसिन करना, प्रत्यय करना,
लुका करना—मा० १।१९ ३ प्रयोज्यमाद को उत्तेजित
करना मा० १।९, उच्च—, १ मत्स या मछ में घूर
होना (मात्सं से नी) २ पावक होना—मनु० ३।
१९१, हेर०—मछे में घूर करना, मत्स्यमत्स्य करना

—बीव० १०३ मीठा मादक पेय शराब सीबी
हुई शराब बिनमले स्म तथोवा भृषभिजिययमम्
—रघु० ४१६५, ऋ० ११३४ पानी ५ शकर
६ मिठास—पु०(बु०) १ वसन्त ऋतु—स्व नृ हृदय-
ज्जम सखा कृष्णमायाजितकार्मुकी मधुः ५० ४१७४-
२५, ३१०, १०, चंब का महीना भास्वरस्य
मधुमाषवाविष रघु० १११७ मासे मधो मधुःको-
किलभुज्जनादे रामा हरन्ति हृदय प्रथम नगशाम
—ऋतु० ६१२४३ एक राक्षस का नाम जिसे बिष्णु
ने मारा था ४ एक और राक्षस जिसके पिता का
नाम लवण था तथा जिसे शत्रुघ्न ने मारा था
५ बसोक वृक्ष ६ कान्त वीर्य राजा का नाम । सम०
अष्टौला शहर का लौहा जमा हुआ शहर,
—आचार्य मोम आपत्त (वि०) पहली बार शहर
बनने वाला मनु० १३१० आद्य एक प्रकार का
बाम का वृक्ष, आस्त्य (शहर से) सीबी हुई मीठी
शराब—आस्त्याव (वि०) शहर का स्वाद बनने वाला
आहुति (स्थो०) यज्ञ में मिष्टान्न की आहुति देना
—उत्तिलष्टम् उत्तलम् उत्थितम् मधुमांस्त्रयो का
मोम, उत्तलम् वसन्तोत्थलम्—उत्तलम् मधुजलम् शहर
मिला हुआ पानी जलमधु उच्छानम् वसन्तोत्थलम्
—उत्तलम् मधु का आवास मधुग का नामान्तर
—रघु० १५१५—कण्ट कोयल कर १ भोग
—कुटजे लाल तेनेहा तेने हा मधुकरेण वयम्
—भावि० १११०, रघु० ४१३० वेध० ३५१४७ २ प्रेमी
कामुक, गण, श्रेणि (स्थो०) मक्खियों का मूड
—कबीरी १ मीठा मीड़ बकोतरा २ एक प्रकार
का लुहारा, कालम्ब—बनव मधुराक्षस का पेन
—कार्—कारिन् (पु०) मधुमक्खी कुचकुटिका
कुचकुटी एक प्रकार का नीबू का पेड़, कुल्या
मधु की मक्खी कुल (पु०) मधुमक्खी केजड़ का
मक्खी,—कोका,—ब. मधुमक्खियों का छत्रा कम
शहर की मक्खियों का छत्रा (ब० व०) मदिग हान
की होड़, आपानक, क्षीर क्षीक लवण का रस
—काका कोयल, ग्रह मधु का तर्पण—शेष शायम्
—कण्ट मोम,—आ १ मिमरा २ पुच्छी शम्बोर
एक प्रकार का मीड़ जिस द्विज निवृत्त
—मिहिल (पु०). मधु मजन रिपु शत्रु
क्षुब्ध, मिष्टान्न के विशेषण ३१ मधुगिष्णा मधो
निवृत्ता, मीन० ५ रघु० ११६८ मि० १०११
—कुका, कम् मन्ना, ईर प्रथम तीन मांस पदार्थ
अर्थात् शकर शहर और बी वीप रामपद इत
नाम का पेड़ होर मनु या मि स लीजना इ
१ मीरा २ कामुक इव लाड कुला का एक नृ
—कुल, आम का पेड़ क्षत्रु एक प्रकार का पीला

मासिक चारा शहर की चार, कृत्ति राव, गृह,
मालिकेकर एक प्रकार का नारियल मैनु (पु०)
भीरा व मधुकर, या पिषकड राजप्रिया केर
विष्णो रमन्ते मधुप सह भावि० १११२६, ११३३
(यहां दोनों अर्थ अभिप्रेत हैं) पदलम् शहर को
मक्खियों का छत्रा पति कृष्ण का विशेषण एवं
‘शहर वा मिथुन एक सम्मानयुक्त उपाहार जो किसी
अतिथि को या कला व रीता के द्वार पर भा जाने
पर हुल्ले को भेंट किया जाता है इसमें निम्नांकित
पाँच पदार्थ शामिल होते हैं दधि मणिजल क्षौद्र मिना
चैतरेच पचमि प्राश्नने मधुगर्क समामो मधुगर्क
उत्तरा ०४, अंगस्वदन्तमधुगर्कमपि म तद व्यथा
सकमदवर्गशनाम यदेव गार्ह्यन्मधु भीमजावर
मिषेण पुष्पाहविर तदा कृत्वा नै० १६११ मनु०
३१११९ तथा आम वष्य (वि०) मधुगर्क का
अतिशयोक्ति वर्णिका—वर्णानां वा पोषा पार्थिव
(पु०) भीरा पुरम् श्री मधुग का विशेषण
मधुयज्जितकामन मधुरामधु हरि मेयने भावि०
४१४९ पुष्प १ अना १ वन २ मीरिमरा वा वृक्ष
३ दन्ता वृक्ष ४ मिमरा वृक्ष प्रथम शराब की
एक प्रमेह मधुग, शराबपान मत्त प्राशनम्
गुर्द्विकरण को शहर मक्खी का भोजन जिसमें नव
जात गिणु का मत्त वत्सरा भाग है विश्व बरगम
का विशेषण कल एक प्रकार का नारियल—कलिका
एक प्रकार का सुशरा बहुला माषबी लता—बी
(बी) अथवा वा वृक्ष—बी(बी) अणु एक प्रकार
का नीबू बकोतरा बल—आ मलिका मधुमक्खी
मज्जन अन्वेषण का पेड़—मह शराब का लड़ा
मि०, हली (स्थो०) मधु की लता माषबी
१ एक पत्रा का मादक पेय २ कोई भी वस्तु शत्रु
का पत्र माषबीलम् एक प्रकार की मादक मदिग
—मादक भी १—वेह मादक २०—पक्षि (स्थो०)
गया लव नुष्टी रस १ नह का वृक्ष (जिसमें
२४ रस होते हैं) मन्ना, दन् ३ मिठाम (स)
१ अना वा पुन्ना २ शराब का पेड़ लवण एक
वृक्ष वा आम लिह, लेह, लेहिन् (पु०)
लोह्य भीरा दमा प्रसार मधुना लेह, वनम्
वह वृक्ष जहाँ मनु नामक राक्षस रहता करता था
जिसका मादक गुण मधुग समरी वमाई बी
(न, कायक भाग (पु० व० व०) वा २ पीन
काय शराब के आम पर आम बरान वा ३ इटक
शराब पीन नाम जिसके उद्भवता प्रमदानामाठ
यावकनदा मधुराग (वि०) १०९ क्षात्रिय नृ गमिन्
न मधुना शक्ति नृ हृदय मधुकरे मि० १०११४
(कभी कभी यह शहर एक बकरी की होता है) २०

कि० ८।५७, जलः भीरा मासिक को मरदानाम
मरेज मधुव्रतम् भाषि० १।११७, तस्मिन्मधु मधुव्रते
विधिवताम्नाम्बोकाकोजति ४६, सर्करा सहृद से
तैयार की हुई शक्कर, -साकः एक प्रकार का (महुए
का) पेठ, -शिखन्, -जेवनं मोम, सक् सहाय,
-सारणि, -मुहुन् कामदेव, -सिक्क एक प्रकार
का बिज, -सुवनः भीरा स्थानम् मधुमक्षिणी का
छाया, स्वरः कोयल हन् (५०) १ राह का नष्ट
करने वाला या एकत्र करने वाला २ एक प्रकार का
सिकारी पक्षी ३ उर्वारिणी, मविध्यवक्ता ४. शिण
का नामान्तर ।

मधुक [मधु + कन् कं । क वा] १ एक वृक्ष । -- मधु
महुडा का नाम २ जगत् का वृक्ष ३ एक प्रकार का
पक्षी, कम् १ जस्ता २ मुर्खता ।

मधुर (वि०) । मधु माधुर्यं राशि रा -- क मधु अमरद्वय-
वा १ मीठा २ राहयुक्त मधुमय ३ मृदुवद मना
तत्र प्राकयेक लचका -- अहो मधुरमाग्यं दर्शनम्
श० १ कु० २० उल्ल० १।२८ ४ मरीजा
(स्वर), ५ लाल रंग का गन्ना ईक २ वाज
३ राव गुड ४ एक प्रकार का आम मधु १ माधुर्य
२ मधुरीय शरीर ३ विप १ जस्ता हम् । अकार०
मिठास के साथ मृदावने दंग में राहतना के साथ
मम० अक्षर (वि०) मधुर स्वरि वाला मिष्टभाषी
स्त्रीला आलाप (वि०) मधुर स्वरों का उच्चारण
करने वाला (५) मधु या मरीजे राह मधु गन्ना
निसर्ग पशितानाम् कु० ४१६ (-वा) मैना मरदाना
रिका -- कश्चक एक प्रकार की मछली -- अम्भीरम् नीड़
की एक जाति जयम् मधुवाम् द० फल एक
प्रकार का पेड़वाँ बेर जातिन् जाव् (वि०)
मधुरभाषी अर्था एक प्रकार का छत्रों का पेड़,
स्वर - स्वर (वि०) मधुर स्वर से बगाने वाला
मधुरस्वर ताला ।

मधुरता, स्वम्, मधुर तल् टाप् श्व वा] माधुर्य
पुरुषवर्णन, शोचकता ।

मधुरिचम् (५०) [मधु + इतिचम्] माधुर्य शोचकता
मधुरिमानिमानेन बबोऽमृन् - भाषि० १।११३ ।

मधुलिका [मधुल + कन् + टाप् इत्यम्] फाली सरमा
राई ।

मधुक [महु + ऊह नि० ह्यप् वा] १ भीरा २ एक
वृक्ष का नाम महुडा, - कम् मधुक (महुए) इस
का फल -- लूवीना पाण्डुमधुकदाप्ता कु० ७।१४,
स्मिन्मयो । पञ्चदशविंशत् गीत० १०, टपु०
६।२५ ।

मधुक [मधु + लाति ला । क पूर्वो०] एक प्रकार का
वृक्ष, - ली आम का पेड़ ।

मधुलिका [मधुल + कन् + टाप् इत्यम्] एक प्रकार
का वृक्ष ।

मध्य (वि०) [मन् + धत्, नस्य व, ताग०] १ बीच
का, केन्द्रीय मध्यवर्ती केन्द्रवर्ती -- मेघ० ४९ मनु०
२।२१ २ जलवर्ती मध्यवर्ती ३ बीच के बरों का मध्य
वर्तमाने कृष्ण, बीच का प्राच्य विष्णुविहता विर
यन् मध्या भन् ० २।२७ ४ तटस्थ, निष्ठा
५ मध्य, यथावी ६ (य्यो० में) मध्यभाग -- ध्य, -- ध्यम्
१ मध्य केन्द्र मध्य या केन्द्रीय भाग अत्र मध्यम्
दोपहर दिन का मध्य -- सहजवीर्धिनः सङ्घाति
मध्यमह् मा० १ मूर्धे शिराविन्दु पर ह् । अर्थात्
नीक शिर के ठीक पर ह् व्योममध्ये विक्रम० २।१
२ शरीर का मध्यभाग, कमर मध्ये आमा मेघ०
८०, मर्दिबलममध्या कु० १।३९, विद्यावद्विज्ञान

नृवृक्षमध्या रघु० ६२२३ ३ पेट उदर मध्य
नैलव्य चर बभार बाग कु० १३९ ४ किमी
धम्नु का भीरा मया ५ बीच की स्थिति या दगा
६ बाइ की काज ७ मधीन में मध्यवर्ती मन्त्र
८ किसी देश की मध्यवर्ती राशि ध्या बीच क
अमृणी ध्यम् दम जगत् की मक्ष्मा (मध्य के कथ
करण० अरा० और अरि० के रूप कि० वि० की
प्राप्त पवकृत हुए हैं) (क) मध्यम् में के बीच म
(ख) मध्यम् में से, बाय से (ग) मध्यम् में से के
बीच (मध० के मध०) में तथा मध्यात् काक प्रवाच
पद्य० १ (घ) मध्ये १ बीच में में मध्य म
रघु० १२।१९ २ में क अन्तर के मोर, हनुवा
(इह क अम्यवीमात्र सत्य के आदि पर के रूप में
प्रयोग है) उदा० मध्य जम् गता में मध्वेऽहम्
पर में भाषि० १।२१, मध्येनगरम् नगर के
भीतर मध्येनदि नदी के बीच में मध्यपृष्ठम् पीठ पर
मध्यभक्तम् भोजन करने के पश्चात् फिर दोबारा
भोजन करने में पूर्व बीच में ली जान वाली जीवधि
मधुरम् पृष्ठ में भाषि० १।१२८ मध्येतम सभा
में या सभा के सामने -- नै० ३।७६ मध्येममम्
समुद्र के बीच में शि० २।२३ । मम० -- अहृपति,
ली (स्त्री०) बीच की अमृणी -- अहम्, । अहन्
के स्थान में) मध्याह्न दोपहर ह्यप्, विद्या दोप
हर के समय की जाने वाली चिय, काल -- विद्या
मध्य दोपहर का समय स्थानम् दोपहर का तहाना
कन् अर्चव्यास ग (वि०) बीच में जाने वाला
म० (वि०) केन्द्रीय मध्यवर्ती, बीच में होने वाला,
गन्ध, जम का वृक्ष सहजम् पहण का मध्य
विमम् (परधिनम् श्री) १ मध्य दिन, दोपहर
२ दोपहर का उपहार, बीचकम् बीचक बर्तकार का
एक मेढ, इसमें सामान्य विवेचन जो सत्यतः विवेच

पर प्रकाश हाकता है बीच में स्थापित किया जाता है, उदा०—मट्टि० १०।२४, —बैहः 1 मध्यवर्ती स्थान या प्रदेश, किसी चीज का मध्यवर्ती भाग 2. कमर 3. रेट 4. वाय्मोत्तर रेखा 5 केन्द्रीय प्रदेश, हिमालय तथा विन्ध्य पर्वत के बीच का भूगोल हिमवद्बिन्ध्य बोर्बन्ध बल्गवित्तलनादसि, प्रत्येक प्रयागाण्ण मध्यदेश स कीर्तित—मनु० २।२१—बैहः शरीर का प्रमुख भाग, रेट,— वषम् मध्यवर्ती पद, 'लोषिन्' दे० मध्यमपदलोपिन्,—वस्तुः सहस्रमन्वारिता, समागम—भाषः १ मध्य भाग 2 कमर,—भाषः बीच की स्थिति, सामान्य स्थिति,—अवः पीछी सरनो के छ. दातों के बराबर का एक तोल, रात्रः,—रात्रिः (स्त्री०) बाधी रात, रात का बीच—रेखा केन्द्रीय या प्रथमवाय्मोत्तर रेखा—लोकः तीनों लोक के बीच का लोक अर्थात् मर्त्यलोक या सत्मा—ईश्वरः, ईश्वरः राजा,—वयस् अथेद उन्न-वाला, वसिन् (वि०) बीच में स्थित, केन्द्रवर्ती (पु०) विवाहक, मध्यस्थ, वृत्तम् नाभि,—सूत्रम् = मध्यरेखा दे०,—स्व (वि०) 1 बीच में स्थित या विद्यमान, केन्द्रीय 2 मध्यवर्ती, अन्तर्वर्ती 3 बीच का 4 बीच—पचास करने वाला, दो इको के बीच मध्यस्थाना करने वाला 5 निष्पक्ष, तटस्थ 6 उदासीन, लगाव-रहित—श० ५, (स्वः) निर्णायक, विवाहक, मध्यस्थ 2 बिच का विशेषण, स्वस्वम् 1 मायया केन्द्र 2 मध्य स्थान या प्रदेश 3 कमर—स्थानम् 1 बीच का पड़ाव 2 बीच का स्थान अर्थात् वायु 3 तटस्थ प्रदेश—स्थित (वि०) केन्द्रीय, अन्तर्वर्ती ।

मध्यतः (अव्य०) [मध्य + तसिन्] 1 बीच से, मध्य में, में से 2 में ।

मध्यम (वि०) [मध्य + म] बीच में स्थित या वर्तमान, बीच का, केन्द्रीय पितृ पद मध्य-मनुष्यतन्त्री—विष्णु० १।१९, इसी प्रकार 'मध्यमलोक-पाल', मध्यमपदम् मध्यमरेखा 2 मध्यवर्ती, अन्तर्वर्ती 3. बीच का, बीच की स्थिति या विशेषता का, बीच के दर्जे का यथा 'उत्तमाधममध्यम' में 4 बीच का, औसत दर्जे का—तेन मध्यमसत्त्वोनि मित्राणि स्थापि-ताम्यत—रघु० १७।५८ 5. बीच के कद का 6 न सबसे छोटा न सबसे बड़ा, (माई) बीच में उत्पन्न—अथमसि पितरौ वा मध्यम पाण्डुरोऽयम्—केपी० ५।२६ 7. निष्पक्ष, तटस्थ,—अः 1 समीप में पथम स्वर 2 विशेष संगीत पद्धति 3 मध्यवर्ती देश, दे० मध्यदेश 4 (अव्य० में) मध्यम पुरुष 5 तटस्थ प्रभु—अन्तर्वर्ती मध्यममात्रवन्ते—रघु० ११।७ 6 प्रान्त का राज्यपाल, या 1 बीच की जगह 2 विवाह योग्य कन्या, वयस्क कन्या 3. कनक का बीचकोप 4 काव्य-

शास्त्रों में वर्णित एक नायिका, अपनी जवानी की उम्र के बीच पहुँची हुई स्त्री, तु० सा० द० १००, वयः कमर । सम०—अव्युक्तिः बीच की जगह, आहुरणम् (बीज० में) समीकरण या बीच की राशि का निरसन, कला बीच का आंगन, जात (वि०) दो के बीच में उत्पन्न, मज्जला,—वयम् (समान के) बीच का पद, 'लोषिन्' (पु०) तत्पुरुष समास का एक अर्वांतर भेद जिसमें कि रचना के बीच का वाक्य लुप्त कर दिया जाता है, इसका सामान्य उदाहरण 'शाकपात्रिह' है, इसका विग्रह है शाक-प्रिय पात्रिह यहाँ बीच के शब्द 'प्रिय' का लोप कर दिया गया, इसी प्रकार छायातद वा गुह्यताना आदि शब्द हैं वाक्यः अर्जुन का विशेषण, वृक्ष (अव्य० में) मध्यमगुण बहू पुरुष श्रमको सम्बोधित किया जाय, भूतक किसान, अर्थात्, अतिर (ओ अपने लिए और अपने स्वामी के लिए खेती का काम करना है)

रात्रः बाधी रात—लोक बीच का सभार, भूनाक 'पाल राजा रघु० २।१६, वयस् (नपु०) प्रौढ़ा वस्था, बीच की उम्र वयस्क (वि०) प्रौढ़ बीच की उम्र का संज्ञक, बीच के दर्जे का गुणवैशेष, जैसे कि गहने कापड़े, पुष्प आदि उपहार भेज कर परस्त्री को फुसलाना, अ्याज ने इसकी निम्नांकित परिभाषा की है प्रेषण गन्धमास्थाना धूपमृगणवास्तवाम् प्रलोभन चाभ्यागानेभ्यम् मग्नं स्मृत साहस्य तीन प्रकार के दण्डभेदों में द्वितीय प्रकार मनु० ८।१३८ (न-सम्) मध्यवर्ग के प्रति अपराध या अपराधकार, स्व (वि०) बीच में होने वाला ।

मध्यमक (वि०) (स्त्री०—यिका) [मध्यम + कन्] बीच का बिलकुल बीचोबीच का ।

मध्यनिका [मध्यमक + टाप् इत्थम्] बधिरक कन्या या विवाह योग्य उम्र की हो गई हो ।

मध्यं दे० मध्य के अन्तर्गत ।

मध्यः एक प्रसिद्ध आचार्य तथा शास्त्रप्रणेता, वैष्णव संप्रदाय के प्रवर्तक तथा वेदान्तपूजार्थ के भाष्यकर्ता ।

मध्यकः [मधु + अन् + अच्] मीरा ।

मध्यिका [मधु ईजते प्राप्नोति -- मधु + ईज् -- क + टाप्, पुष्पां हृत्स्व] कोई भी मादक पेय, मीठी हुई सराब ।

मनु 1 (स्वा० पर० मन्ति) 1 चमक करना 2 पूजा करना 11 (चूरा० जा० मानवते) चमकी होना, 111 (विवा० तना० अ० मन्ते, मन्ते, मत) 1 सोचना, बिबास करका, कल्पना करनी, चिन्तन करना, उम्मेला करना, बिचारना—अन्वु केअपि सन्निकृते अलभिधे पक्ष परे मेदिरे -- मुना०, वस्तु मध्ये कुमारे-नाथेन अन्वुकास्त्रमाश्लिष्यन्तम्—उत्तर० ५, कब मदागमन्ते 'आपकी क्या छद्मति है' 2. झगका करना,

बादर करना, मानना, देखना, समझना, मान लेना ।

—समीक्षा दृष्टिस्त्रिभुवनमपि ब्रह्म मनने—भर्तृ० ३।८४, अमलचानेन परार्थ्यजन्मना स्थितवेत्ता स्थितिमन्तमन्वयम्—रघु० ३।२३, १।३२, ५।८६, भग० २।२९, ३५, भट्टि० १।११७ स्मनविनिहितमपि हारमुदार सा मनते कृतानुविध भाग्य—गीत० ४ ३ सम्मान करना, आदर करना, मान करना, मूल्यवान् समझना, बड़ा मानना, बरेष्य समझना—वस्यानुवक्तिण इमे भूवनाधिपत्य भोगादय कृपणलोकमता भवन्ति—

—भर्तृ० ३।७९ ४. जानना समझना प्रत्यक्ष करना पर्यवेक्षण करना लिहाज करना यत्वा देव घनपति सक्त यत्र माक्षाइत्यन्तम मेघ० ७३ ५ स्वीकृति देना, हाथी भरना अमल करना नन्मन्यस्व मम वचनम् भू० ३८ ६ साधना विचार विमर्श करना ७. इराधा करना कामना करना आशा करना ८ मन लगाना 'मन्' धातु व अर्थ उम गह्वर क अनुसार अमक साध इसका प्रयोग होता है विविध प्रकार से बदलने रहने हे उदा० बहु मन् बहु मानना बड़ा समझना बहुत मन्थ आचना, बरण्य समझना, पूज्य मानना बहु मनने ननु त तनुमगार-सजनचित्तमपि रेणुम् गीत० ५, बहु के अन्तर्गत भी दे०, लभु मन् तुच्छ समझना, चुना करना, अपमान करना—शं० ७।१, अन्वेषा मन् और तरह सोचना मर्दह करना, साधु मन् भन्ना साधना, अनुपादन करना, मतोबजनक समझना, शं० १।२ असाधु मन् आपसद करना, तुषाण मन् या तुषण मन् तिनके जैसा समझना, हलवा मन्थ लगाना तुच्छ समझना—हरिमध्यमस्य तुषाय शि० १५।११ म मन्

अवज्ञा करना, अवहेलना करना, प्रेर० (मानयति-न) सम्मान करना, श्रद्धा दिलाना, आदर करना, अभिवादन करना, मूल्यवान् समझना मान्यमानय—भर्तृ० २।७७, इच्छा० (भोमासते) १ विचार विमर्श करना, परीक्षण करना, अन्वेषण करना, पूछताछ करना २ लक्ष्य करना, पूछताछ के लिए बुलाना (अभि० के साथ), अनु—स्वीकृति देना, हाथी भरना, अनुमोदन करना, स्वीकार करना अनुमति देना, अनुज्ञा देना, मजूरी देना राजन्यान्स्वपुर्नि-वृत्तयेऽनुमते रघु० ६।८७, १।६२०, तत्र नाहमनु-मन्मुमुक्षु मोक्षवृत्ति कलभस्य चेष्टितम्—रघु० १।१३९, कु० १।५९, ३।६०, ५।६८, भर्तृ० ३।२०, रघु० १६।८५, प्रेर०—छुट्टी मागना, अनुमति मागना स्वीकृति मागना—अनुमान्यता महाराज—विक्रम० २, अभि— १ कामना करना, इच्छा करना लान्छयित होना—मनु० १०।९५ २ अनुमोदन करना, हाथी भरना ३ सोचना, उत्प्रेक्षा करना, कल्पना करना, मानना

अन्व—, चुना करना, हेम समझना, अवज्ञा करना, नीच समझना, तुच्छ समझना—चतुर्विधोक्तानवमरस मानिनी—कु० ५।९३, मनु० ४।१३५, विक्रम० २।११ प्रसि—, सोचना, विचारना प्रेर० १ सम्मान करना, सम्मानित समझना, आदर करना २ अनुमोदन करना, प्रशंसा करना ३ अनुज्ञा देना, अनुमति देना, वि (प्रेर०) अनादर करना, तुच्छ समझना, अवज्ञा करना, नीच समझना—स्त्रीविधिवानितानां वापुस्वाणां विवर्धने भदन—मृच्छ० ८।९, लघु—, १ महमत होना, एकमत होना, एक मत का होना २ हाथी भरना, स्वीकृति देना, अनुमान करना, पसंद करना ३ सोचना अयाग करना, मानना ४ स्वीकृति देना, अधिकार देना ५ मान करना, सम्मान करना महत्त्वपूर्ण समझना रुचिदर्शिमहानाथ्य काले समन्वयेऽर्थाविम भट्टि० ६।६५, समस्त बन्वन् १।२ ६ अनुज्ञा देना अनुमति देना (प्रेर०) सम्मान करना आदर करना प्रीतिष्ठा करना ।

मनम् [मन् । न्यट्] १ साधना, विचार विमर्श करना गहनचिन्तन करना, अवधारणा करना—मननाम्मुनि-रेवासि—हरि० २ प्रज्ञा, समझ ३ उत्कंसगत अनुमान ४ अटकल, अदावा ।

मन्त् (नपु०) [मन्त्यतेऽनन् मन् करणे असुन्] १ मन, हृदय समझ प्रत्यक्षज्ञान प्रज्ञा, जैसा कि सुमन्त्, दुमान् आदि में २ (दर्शन० में) सञ्ज्ञान और प्रत्यक्ष-ज्ञान का आन्तरिक जग या मन, वह उपकरण जिसके द्वारा ज्ञेय पदार्थ ज्ञात का प्रभावित करते हैं, (स्था० २० में मन एक इच्छा या चार्च माना गया है जो ज्ञान्मा में सर्वथा भिन्न है)—तदेव सुखदुःखाद्युपलब्धिसाधन-मिन्द्रिय प्रतिबोध भिन्नमप्यु नित्य च—त० कौ० ३ चेतना, निर्णय या विवेचन की शक्ति ४ सोच, विचार उपदेश कल्पना, प्रत्यक्ष, पश्यन्तदूरान्माप्य-वृध्यम् कु० ३।५१ रघु० २।२७, कायेन वाचा मनसाऽपि शशवत्—५।५ ५ योजना, प्रयोजन, अभिप्राय ६ सकल्प, कामना इच्छा, रुचि, इस अर्थ में 'मनस' शब्द का प्रयोग बहुधा धातु के अनुमत रूप के साथ (नुम् के अन्तिम 'म्' का लोप करके) होता है, और विशेषण शब्द बनते हैं—अयं जन प्रष्टुमान-स्तपानिधे—कु० ५।४०, मनु० वाम ७ विचारविमर्श ८ स्वभाव, प्रकृति, निजाज ९ तेज, ओज, सत्त्व १० मानस ११ सरोवर (मनसा मन् सोचना चिन्तन करना याद करना—कु० २।९३, मन्ः कु मन को स्थिर करना, विचारों का निर्दिष्ट करना, (सन्न० या अवि० के साथ), मन कन् मन लगाना स्नेह हो जाना अभिमाने मनो बहन्त्यान्तरसान् विलग्न हा रघु० ३।४, मन समझा अपने आपको स्वयं करना मनसि

उद्धृ मन को पार करना, वनसि क सोचना, ध्यान रखना, बृह सकल्प करना, निर्धारण करना, मन में रखना । मम०—अभिधावः प्रेमी, पति, —अनवस्थानम् अनवधानता, —अनुम् (वि०) मनो नुकूल, रुचिकर, उपहारिन् (वि०) हृदयहारी, —अभिनिवेशः लुब्ध मन लगाना, प्रयोजन की वृत्ता, —अभिराम (वि०) मन के लिए सुखद, हृदय को सुख करने वाला—रघु० १।३९, —अभिधावः मन की लाजसा या इच्छा, —आप (वि०) हृदयहारी, आकर्षक, सुहावना, —आन्त (वि०) (मनस्कान्त या मन, कान्त) मन का प्रिय, सुहावना रुचिकर, —आरः पूर्ण प्रत्यक्ष ज्ञान (बुद्ध या बुद्ध का) पूरी चेतना, ज्ञेयः मन की उच्चाट, मानसिक अव्यवस्था, गत (वि०) मन में विद्यमान, हृदय में छिपा हुआ, आन्तरिक, अन्दरूनी, गुप्त, ज्ञेय न वक्ष्यति मनोगतमाचिहेतुम्—०३।१२ २ मन पर प्रभाव डालने वाला, वाञ्छित (अन्व) १ कामना, चाह—मनोगतं सा न गमाक क्षितितुम्—कु० ५।५१ २ विचार, चिन्तन, भाव, सम्पत्ति, —मति (स्त्री०) हृदय की इच्छा, —मन्त्री कामना, चाह, सुता मेनसिक, बहुधा मन को हाराना, —प्राप्तिन् (वि०) मन को हाराने वाला या आकृष्ट करने वाला, —अ, —अन्वन् (वि०) मनोनात, (पु०) कामदेव, —अव (वि०) विचार की शक्ति, फुल्ला, बाधुनामो २ चिन्तन और विचारण में नेत्र, ३. वैतुक, पिनु नुत्य सन्ध्य रखने वाला—अवम् (वि०) पिला के समान, पितृनुत्य, —आत (वि०) मन में उल्लस, मन में उलित या वेदा हुआ, —किञ्च (वि०) धन से लूचने वाला अर्थात् दूसरों के धन के विचार भाँपने वाला, —अ (वि०) सुहावना प्रिय, रुचिकर, सुन्दर, लावण्यमय—इयमविकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी—स० १।२०, रघु० ३।७, ६।७ (अ) एक गन्धर्व का नाम, —आ (वि०) १ मेनसिक २ मादक पेय ३. राजकुमारी, —ताप, बीडा १ मानसिक पीडा या वेदना अथवा २ परवानाप, पछतावा, —तुष्टिः (स्त्री०) मन का शरीर, —तोषा तुला का विशेषण, —वृष्णः मन या विचारों पर पूर्ण नियन्त्रण मनु० १०।१० तु० विदग्धिन्, वस (वि०) वसति, विमका मन किसी वस्तु में पूरी तरह लगा रहा हो, मन से बिया हुआ, बाह्य, —दुःखन् मन का क्लेश, पीडा, मनस्ताप, नाशः दुःख का नाश, विजिज्जता, पायलपन, —वीर (वि०) पतार किया हुआ, चूना हुआ, —वीरिः विष्णु का विशेषण, —वृत्त (वि०) १. मन जिसे पवित्र मानना हो, अन्तरात्मा द्वारा अनुमोदित, —अन-पूर्व लमाचरेत्—मनु० ६।४६ २ सुहावा, सप्रेत, प्रवीण (वि०) मन की रुचिकर या सुखद,

—प्रसादा चित्त की स्वच्छता, मानसिक शक्ति, —प्रसि (स्त्री०) मानसिक सन्तोष, हर्ष, खुशी, —भवः, भूः १. कामदेव मनोज्ञ—२ रे मनी मम मनोज्ञवशासनस्य पावाभूजव्यवभारतमानमनम्—भामि० ५।३३, कु० ३।२७, रघु० ७।२२ २ प्रेम, प्रणयान्ताद, कामुकता—अत्याकरो हि तारीयामकामजो मनोभव—रघु० १२।३३, —अवनः कामदेव, —अव (वि०) पृथक् वेष्टिते, —आविन् (वि०) १ इच्छानुसार गमन करने वाला २ नेत्र, फुल्ला, —योगः दत्त चित्ता, लुब्ध ध्यान देना, योगिः कामदेव, रंजन्म् १ मन को प्रसन्न करना २ सुहावनापन, रच १ मन की गाड़ी, कामना, चाह अवतरत सिद्धिपथ शक्यः स्वमनोरथस्येव—मालवि० १।२२ मनोरथानामम-तिर्न विद्यते—कु० ५।६४, रघु० ३।७२, १२।५९ २ अघोष्ट पवार्य—मनोवाय नमस्ते—स० ७।१३ ३ (नाटक में) गकेन, पराजय रूप से या मृत्यु से प्रकट की गई कामना, —हाथक (वि०) किसी एक व्यक्ति की आज्ञाओं को पूरा करने वाला, —कः कल्प तद का नाम विद्धिः (स्त्री०) कल्पना की शक्ति, हवाई किले बनाना, रच (वि०) आकर्षक, सुखद, रुचिकर, प्रिय सुन्दर—अवधनअमनोरमान् तस्या (अधुनालीच)—स० ६।१०, —आ १ कवनीय स्त्री २ एक प्रकार का रंग, —राज्यम् 'कल्पना का राज्य' हवाई किला—मनोरा-ज्य विज्जमयमेनम् यह हवाई किले बनाना है, —अवः चेतना का नाश लीज्यन् मन की बचलता, मन की लहर या मोर, बाच्छा, —आञ्जल्यन् हृदय की अवि-लाष इच्छा, विकारः, विकृति (स्त्री०) मन का संबंध—वृत्तिः (स्त्री०) १ मन की किम्वशीलता, इच्छाशक्ति २ स्वभाव, चित्तान्ति, वेदः विचारों की तेजी, —व्यथा मानसिक पीडा या वेदना, बीका, —का मेनसिक मन शिनाविष्कारिता निवेष्टु, कु० १।५५, रघु० १२।८०, बीका (वि०) मन की शक्ति नेत्र, —लवः मन की (किसी वस्तु में) आलस्य, लतापः मन की व्यापा, रूप (वि०) हृदय में स्थान, मानसिक, स्वैरं मन की वृत्ता, —वृत्त (वि०) निराश, हुर (वि०) सुखद, लावण्यमय, आकर्षक, कवनीय, प्रिय—अम्यामनोहर्ष वपुः—स० १।१७, कु० ३।३९, रघु० ३।३२ (र) एक प्रकार की कवेली, —(रम्) काना, —हर्ष—हारिन् (वि०) हृदय को हर्ष करने वाला, मनोहुर, रुचिकर, सुखद—हर्ष मनोहारि च पूर्णं वचः—कि० १।४, —हारी अलसी या अवि-चारिणी स्त्री, —हृत् हृदय का उत्काश, —हृत् मेनसिक।

मनसा [वनश्+अन्+टान्] अन्वय की एक पुत्री का नाम, नामराज अन्वय की बहुत तथा चरकाव वृत्ति की पत्नी, इसी प्रकार 'मनसावैरी' ।

मनसिजः [मनसि जायते-अन् + ज, अलुक् स०] 1. काम-
देव रघु० १८।५२ 2 प्रेम, प्रणयान्धव मनसिज-
रुज सा वा दिव्या ममालम्पयोहितुम् विक्रम०
३११०, श० ३१९।

मनसिजः [मनसि धोने-क्षी + अच् सप्तम्या अलुक्]
कामदेव शि० ७।२।

मनसः (अभ्य०) [मन् + नस] मन म, हृदय स
- रघु० १४।८१।

मनसिजम् (वि०) [मन् + जिन] 1 बुद्धिमान्, प्रज्ञा-
वान्, चतुर, ऊँच मन वाला उच्चरामा रघु० १।
३० पञ्च २।१२० 2 विद्यमाना दानिध्वज हृद
सकल्प बाह्या कु० ५।९, नी 1 उदार मन की या
अभिमानिनी स्त्री, मनस्विनीमानसिध्वजदक्षम् कु०
३।३२, मालश्रि० १।१९ 2 बुद्धिमत्ता या मनीषा
3 बुद्धि का नाम।

मनाक् (अभ्य०) [मन् + आक्] 1. जरा गढ़ा मा
अल्पमात्रा में, म बन्नाक् बिल्कुल नहीं 7 पात्र्य
बिह्वलमना न मनागपि ग्या भाषि० १।३३, १११
2 जनें जनें, बिलद से। मय०—ऊर (वि०)
बोड़ा करने वाला, (रघु) एक प्रकार की मधयुक्त
अवर की लकड़ी।

मनाका [मन् + आक् + टार्] हृषिनी।

मनित (वि०) [मन् + क्त] ज्ञात, प्रत्यक्षज्ञान, समझा
हुआ।

मनीकम् [मन् + कीकन्] मूर्त्ति, प्रजन।

मनीषा [मनस ईषा व० त०, लक०] 1 चाह, कामना
- यो कुर्वन् कथामितु तनुते मनीषा भाषि० १।९५
2 प्रज्ञा, समझ 3 सोच, विचार।

मनीषिका [मनीषा + क्त + टाप् इत्यम्] समझ, प्रज्ञा।

मनीषिता (वि०) [मनीषा + इतच्] 1 अभिलषित
बांछित, पसन्द किया गया, प्यारा, प्रिय मनीषिता
सन्ति गृहेषु देवता—कु० ५।४ 2 रुचिकर, - तत्त्व
कामना, इच्छा, अभीष्ट पदार्थ—मनीषित द्यौरि
वेन दुष्ठा रघु० ५।३३।

मनीषिन् (वि०) [मनीषा + इनि] बुद्धिमान्, विद्वान्,
प्रज्ञावान्, चतुर, विचारशील, समझदार रघु० १।
१५, (पु०) बुद्धिमान् या विद्वान् पुरुष मुनि, पण्डित
—माननीयो मनीषिणाम्—रघु० १।११, तत्कारवत्येव
मिरा मनीषी—कु० १।२८, ५।३९, रघु० ३।४४।

मनुः [मन् + उ] 1. एक प्रसिद्ध व्यक्ति जो मानव का प्रति-
निधि और मानवजाति का हित माना जाता है (कभी
कभी यह दिव्य व्यक्ति समझे जाते हैं) 2. विशेष-
तः चौदह कमान्न प्रजापति या भूलोक प्रभु—मनु०
१।१३ (सबसे पहले मनु का नाम स्वायम्भुव मनु है,
जो एक प्रकार के नीच ज्ञाया समझा जाता है, इसके

बस प्रजापति या महर्षियों का जन्म हुआ। इसी को
मनुस्मृति नामक धर्मसंहिता का प्रणेता माना जाता है
मानवी मनु ब्रह्मन् मनु कहलाता है क्योंकि उसका
जन्म विवस्वान् (सूर्य) से हुआ। यही जीवहारी
प्रजापति की वर्तमान जाति का प्रजापति समझा जाता
है। जल प्रलय के समय मनुस्वावतार के रूप
में त्रिपुण ने इसी मनु की रक्षा की थी। ज्योतिषा पर
गाम्यन करने वाले सूर्यवर्षी राजा के सूर्यवर्ष का प्रव-
र्तक भी यही मनु समझा जाता है—दे० उत्तर० ६।१८
रघु० १।११ चौदह मनुओं के कथन निम्नलिखित
नाम हैं 1 स्वायम्भुव 2 स्वाराचिष 3 अतीति
4 नामस 5 रौतन 6 चाक्षुष 7 ब्रह्मवर्ष 8 सावित्रि
9 ब्रह्मवर्षा 10 ब्रह्मवर्षा 11 धर्मवर्षा 12 हव-
सावित्रि 13 रोषवर्षा 14 इन्द्र सावित्रि।

3 चौदह की संख्या के लिए प्रतीकात्मक धर्मव्यक्ति,
-मनु (स्त्री०) मनु की पत्नी। मम० अन्तरम्
एक मनु का बाल (मनु० १।७९) के अनुसार यह
काल मनुष्यों के ४३२०००० वर्षों का होता है, इसी
का ब्रह्मा का १।१४ दिन मानते हैं, क्योंकि इस प्रकार
के १४ कालों का योग ब्रह्मा का एक पूरा दिन होता
है। इन चौदह कालों में से प्रत्येक का अधिष्ठातृ-
मनु पृथक् २ है, इस प्रकार के छ काल बीत चुके हैं,
इस समय हम मानव मनुस्मृत में रह रहे हैं, और
सात और मनुस्मृत अभी बचते हैं। ४. मानवजाति
'अचिक', 'अचिपति', 'ईश्वर', 'मति', 'राजः राजा,
प्रभु लोकः मानवों का मृष्टि—अर्थात् भूलोक,
जातः मनुष्य,--अर्थः स्वराज,--प्रणीत (वि०)
मनु द्वारा शिक्षित या ग्राह्यता,--मनुः मनुष्य, मानव,
जाति,--राज (पु०) कुबेर का विशेषण,--अर्थः
विष्णु का विशेषण संहिता धर्मसंहिता जो प्रथम
मनु द्वारा रचित मानी जाती है, मनु द्वारा प्रणीत
विधिविधान।

मनुष्यः [मनोऽन्तर यक् लुक् च] 1 आदमी, मानव, मर्त्य
2 नर। मम० इन्द्रः—ईश्वरः राजा, प्रभु-रघु०
५।२, जातिः मानव जाति, इमान, देवः 1 राजा
रघु० २।५२ 2 मनुष्यों में देव, ब्राह्मण,--अर्थः
1 मनुष्य का कर्तव्य 2. मानव चरित्र, इमान की
विशेषता,--अर्थः (पु०) कुबेर का विशेषण,--आर-
जः मानवहृत्पा, ब्रह्मः आधिपत्य, अतिथियों का
सत्कार, गृहस्थ के पाँच वैदिक कृत्यों में एक,
दे० नृपञ्च,--लोकः मरणशील (मर्त्य) मनुष्यों का
सत्कार, भूलोक, विज्ञा,--विज्ञा (स्त्री०),--विज्ञान
इमान, मानवजाति,--श्रीकृष्ण मानववर्णन--(परी)
कुतूहलेन मनुष्यखोजितम्—रघु० ३।५४,--सना
1. मनुष्यों की सना 2. चौदह, कमान्न।

कनोक्थ (वि०) [मन्+यन्] मानसिक, आत्मिक ।
सम० कोक्, -कः आत्मा को आवृत करने वाले
पाँच कोषों में से दूसरा कोष ।

मनुः [मन्+नु] 1 बोध, वपराध - बुद्धि मनु परि-
कल्प्य भावि० २११३ 2 मनुष्य, मानववाति दु
(स्त्री०) सप्तम ।

मनु (पु०) [मन्+नु] ऋषि, मुनि बुद्धिमान्
मनुष्य, परामर्शदाता, सलाहकार ।

मन्त्र, पुरा० जा० मन्त्रयते, कभी कभी 'मन्त्रयति' भी मन्त्रिन)

1. सलाह लेना, विचार करना, सोच विचार करना
मन्त्रणा करना, परामर्श लेना न हि स्त्रीभिः सह
मन्त्रयितुं युज्यते पंच० ५ मनु० ७।१४६ 2 उपदेश
देना, सलाह देना, परामर्श देना अतीतकालस्य च
रक्षणार्थं यन्मन्त्र्यते तस्य परमो हि मन्त्र - पंच०
२।१८२ 3 वेदपाठ को अभिमन्त्रित करना जादू से
युक्त करना 4 कहना, बोलना, बार्ते करना गुन
बुलावा - किमपि हृदये कुर्याद मन्त्र्यते श० १, किम-
काकिनी मन्त्रयति - श० ६ हला मनीतशाकापरिम
देज्योकिता द्वितीया त्व कि मन्त्रयन्त्यासी मा० ०
जन्तु - 1 अभिमन्त्रित करना, जादू करना विसृष्ट्य
वामदेवामनुमन्त्रितोऽश्वः - उतर० २ 2 आशीर्वाद
करके बिठा करना - रचकारोय कृष्णेन यत्र कर्षाज्जु-
मन्त्रित - महा०, अग्नि, 1 वेदमन्त्रों द्वारा अभिमन्त्रित
करना, - पशुगमी योऽग्निमन्त्र्य कर्तुं हत - अमर०
याज्ञ० २।१०२, ३।३२६ 2 युक्त करना, बोधना
जा - 1, बिठा करना विलम्बन करना आमन्त्रयस्य
सहचरन् - श० ३, दु० ६।१४ 2 बोलना, बुलाना
कहना, मनोवर्षित करना, आवाकाप करना तमाम-न
दाबन्ध का० ८१, वेणी० १ 3 कहना, बोलना
परिब्रज्योऽश्वेवामन्त्रयते का० ११५ अष्टि०
१।१८ 4 बुलाना, निमन्त्रित करना, उप, उपदेश
देना, उक्तगाना, फूसगाना, नि, प्योता देना, बुलाना,
बुला भेजना - विग्न्यानिमन्त्रितायचैवमभिजगमुमेहृदये
- रघु० १५।५९, ११।३२, याज्ञ० १।२२५,
- जादू से अभिमन्त्रित करना सज्ज, सलाह करना,
परामर्श या सलाह लेना, - मम हृदयेन सह समन्वोक्त-
वानसि - मुद्रा० १ ।

मन्त्रः [मन्+त्र] 1 (किसी भी देवता को संबोधित)
वैदिक सूक्त या प्रार्थनापरक वेद मन्त्र, (वेद का पाठ
तीन प्रकार का है - यदि ऊन्वोबद्ध और उच्चास्वर से
बोला जाने वाला है तो ब्रह्म है, यदि मध्यम और
मध्यस्वर से बोला जाने वाला है तो यजुष्य है, और
यदि ऊन्वोबद्धता के साथ मेषता है तो सक्त्वं है)
2. वेद का संक्षिप्त पाठ (बाह्यत्र पात्र को छोड़कर)
3. मोहन, बलीकरण तथा आवाहन के मन्त्र, - न हि

जीवन्ति जना मनामन्त्रा - भावि० १।१११, आचम्यो
हि मन्त्रमनोषधीना प्रभाव रत्न० २ रघु० २।
३२ ५।५७ 4 (प्रार्थना परक) यजुष्य जो किसी
देवता को उद्दिष्ट करने के बोला गया हो 'मौ नम
सिवाय' आदि 5 गुन्त्रवर्णा मन्त्रणा परामर्श, उप-
देश सकल्प योजना तस्य समुत्तमन्त्रस्य रघु०
१।२० १७० पंच० २।१८२, मनु० ७।१८
6 गुन्त्र योजना या मन्त्रणा रहस्य । सम० - अराचमन्त्र

मोहन परक या आवाहन के मन्त्रों से सिद्ध की वेष्टा
मन्त्राराधनतत्परेण मनसा मीना इमंशाने निष्ठा
मन्त्र० ३।४ उच्यते, - ब्रह्मन्, तोषन् वारि
(नपु०) मन्त्रों द्वारा अभिमन्त्रित जल मन्त्र पढ़कर
पवित्र किया हुआ पानी उच्यते, परामर्श द्वारा
समर्थन करा करणम् 1 वेदपाठ 2 सम्बर वेदपाठ
करना का वैदिक सूक्तों का कर्ता - काण्ड मन्त्रणा
या परामर्श का समय कुल्ल (वि०) परामर्श देने
में बहुत कुन् (पु०) वैदिक सूक्तों का प्रयोग या
रचयिता रघु० १।४ १।६१ १।५।३ 2 वेद पाठ
3 मन्त्रोद्धार परामर्शदाता 4 राजदूत मन्त्रक
ज्ञान, विज्ञान गुण्यि (स्त्री०) गुन्त्र मन्त्राह गुह्य
गुन्त्राच गुन्त्रद्वय या अभिमन्त्रं विज्ञा अग्नि - शि०
२।०३, श 1 सलाहकार परामर्शदाता 2 विज्ञान
बाह्यत्र 3 गुन्त्रचर च, दान् (पु०) आध्या-
त्मिक गुह्य या आचार्य ब्रह्मन् (पु०) 1 वैदिक
सूक्तों का द्रष्टा 2 वेदों में निष्ठात बाह्यत्र,
- शोधित, अग्नि, पुन्त्र (पु०) 1 वैदिक सूक्तों
का द्रष्टा ऋषि 2. परामर्शदाता सलाहकार, वेष्टा
मन्त्र द्वारा आहूत देवता अथ सलाहकार, निर्धन्व-
मन्त्रणा के पश्चात् अग्निम निर्णय वृत्त (वि०) मन्त्रों
द्वारा पवित्र किया हुआ प्रथम मन्त्रों का प्रयोग,
बी (बी) जन्म मन्त्र का प्रयोगांतर, श्वेदः युक्त
परामर्श का प्रकट कर देना, वेद लाप देना मूलः
शिव का विच्छेदन, मूलम् जादू - बन्धम् जादू के
सकेत से युक्त एक रहस्यमूलक रेखाचित्र, तावीज,
- शोधः 1 मन्त्रों का प्रयोग 2 जादू, बन्धम्
(बन्ध०) बिना मन्त्र बोले, - शिष्य दे० ऊ० 'मन्त्र',
विज्ञा मन्त्रविज्ञान, जादू, - अस्कारः वेदपाठ से

युक्त कोई मन्त्र या अनुष्ठान, - संहिता वेद के
समस्तसूक्तों का सङ्ग्रह, - साधकः बाह्यचर, आजीवर,
साधनम् 1 जादू द्वारा मन में करना, या कार्य
सिद्धि 2 मोहनमन्त्र, आवाहनमन्त्र, - साधन (वि०)
जादू के मन्त्रों से बलीकरण या कार्यसिद्धि के योग्य
2 मन्त्रणा द्वारा प्राप्य, - सिद्धिः (स्त्री०) 1 किसी
मन्त्र की प्रियावीकृति, या सम्मन्त्रणा 2 मन्त्रज्ञान से
प्राप्त होने वाली सक्ति, - बन्धु (वि०) कर्मों द्वारा

किसी सिद्धि को प्राप्त करने वाला,—हीन (वि०)
वेदमन्त्रों से रहित अथवा विकृत ।

मन्त्रमन्त्र—वा [मन्त्र + मन्त्र] विचार, परामर्श ।

मन्त्रमन्त्र (वि०) [मन्त्र + मन्त्र] मन्त्रों में युक्त—रघु०
३।३१ ।

मन्त्रिन्.—मन्त्रिन्, वि० ।

मन्त्रित (मू० क० क०) [मन्त्र + क्त] १ त्रिसका परा-
मर्श लिया जा चुका है २ जिस पर सलाह ली गई
परामर्श लिया गया है ३ कहा हुआ, बोला हुआ
४ मंत्र पढ़ा हुआ, अभिमन्त्रित ५ निश्चित निर्धारित ।

मन्त्रिन् (पू०) [मन्त्र + णिनि] मन्त्री, सलाहकार राजा
का मन्त्री रघु० १३ मनु० ८।१ । मम० बुर
(वि०) मन्त्रालय के शासक को मन्त्रालय में समर्थ,—वर्ति,
प्रधान, प्रमुखः भूषणः, बरः, केष्ठ प्रधान
मन्त्री मुख्यमन्त्री प्रकाश केष्ठ या प्रमुख मन्त्री
—श्रीधर वेदों में निष्णात मन्त्री ।

मन्त्र, मन्त्र (मन्त्रा० मन्त्रा० पर०) मन्त्रति, मन्त्रति मन्त्रानि
मन्त्रति, कर्म वा० मन्त्रयते १ विलोना, मन्त्रना (प्राय
द्विकर्मक—मुखा माग्न मन्त्रम्—या देवानुरे मन्त्रमन्त्रि-
चर्ममन्त्रे—क० १।३० २) मुख्य करना, विलोना बुझाना
ऊपर नीचे करना तस्मान् मन्त्रादिषु मन्त्रयामासु
रघु० १६।३९ ३ पीस डालना, अन्धाधर करना,
साला कष्ट देना हुली करना मन्त्रयो मा मन्त्र
मित्रमाय सान्त्वय करोति—वृ०, शान्ति मन्त्रे शिखिः
मन्त्रिनी पद्मिनी वायव्यस्याम् वेद० ८।४ चोट
पट्टेना अति पट्टेना ५ नष्ट करना मार डालना
छेदना करना, कुचक डालना मन्त्रानि कौरवजन
समरे न कोपात् वेदो० १।१५, अमन्त्रीय णानी
कम्—मट्टि० १५।४६, १६।३९ ६ मन्त्र डालना,
विस्थापित करना, उच्—, १. मन्त्र करन मारना
नष्ट करना मीमांसाकृतमुखमात्र महसा हुली
मुनि वैमिनिम् पञ्च० २।३३, वैद्यमुख्य मा०
१।१८, 'मन्त्र करके या उच्चाङ्क कर २ त्रिमास'
जलात् करना ३ काटना, काटना वा डीलना—रघु०
२।३७, विलु,—१ विलोना विलोना बुझाना—अमृ-
त्वायै विविध्यामहे जलम् महा० २ रम्य से जाग
वैरा करना ३ छरीचना, पीटना ४ पूर्णतः नष्ट करना
कुचक डालना, वृ—, १ विलोना (समुद्र) प्रमथ-
मानो निरिवेध भूय रघु० १।११४ २ तंग करना,
मत्स्य कष्ट देना, हुली करना, सताना ३ गद्गार
करना, छरीचना, बाधात करना ४ काट डालना,
काट देना ५ उच्चाङ्क देना ६ मार डालना, नष्ट करना
मा० ७।९, २।९ ।

मन्त्रक [मन्त्र करने वाला] १. विलोना, इधर उधर विलोना,
बाधोक्ति करना, मुख्य करना—मन्त्रादिषु मुख्य

वाङ्मयम्—उत्तर० ७।१६, रघु० १०।३ २ गद्गार
करना, नष्ट करना ३. निश्चित वेद ४ रई का डंडा
(मन्त्रा नी) ५ सूर्य ६ सूर्य की किरण ७ अक्षि
का मेक, दीध, मोतियादि ८ चर्म से बन्धित मुकु-
नाम का उपकरण । मम० मन्त्रक,—अग्नि,—गिरि,
—पर्वत,—कालः मन्त्रक पर्वत (जो रई के डंडे के
रूप में प्रयुक्त हुआ)—शामि० १।५५,—उदकः,
उदधिः और सामर,—बुधः विलोने के रस्सी, वेला,
—कम् मन्त्रक,—वन्त्रः,—वन्त्रकः रई का डंडा ।

मन्त्रक [मन्त्र + क्त] रई का डंडा,—कम् विलोना, मुख्य
करना विलोहित करना, इधर उधर विलोना
२ चर्म से बंधा मान मुकुतां—नी मन्त्री, विलोनी ।
मम० छोटी विलोनी मन्त्री ।

मन्त्रक (वि०) [मन्त्र + क्त] १ विलिप्त मन्त्र, विलिप्त-
कारी मुक्त अर्धमन्त्र—मन्त्रमन्त्रा— वृ० ४, प्रायमि-
जनमन्त्रा जेष्ठ तदेव, मन्त्रमन्त्राजगन्निहाम्—गीत०
११—वि० १।४०, ७।१८, १।६२, रघु० १९।२१
२ मन्त्र मुद्र, मुद्रा—मन्त्राधिक ३ नीच महारा,
कोला मन्त्रा ४ विलिप्त, विलिप्त चौडा, बडा
५ मुका हुआ टेडा बक,—१ मन्त्रा कोष्ठ २ मर
के बाल ३ काष्ठ गुस्ता ४ नाका मन्त्रा ५ रई का
डंडा ६ इकाष्ट नाका ७ मन्त्र ८ फल ९ मन्त्रा
मुचक १० वैष्णव मन्त्र ११ मन्त्र पर्वत १२ हरिण
का विलिप्त—रा दीकेरी की कुम्हारकी विलिप्त अपनी
स्वामिनी को राम के राममन्त्र के अवसर पर
अपने दो पूर्ववत् वरदान । मन्त्र से राम का वीरह
वर्ष के लिए निर्वाप्त, हुल्ले से मरत का गम्भीर होना ।
राजा से मानने के लिए उक्तावा,—रम् कुमुम्भ ।
मम० विलिप्त (वि०) निर्वाप्त करन में मन्त्र विलिप्त-
हस्ति से मुक्त मा० १।१८ ।

मन्त्रक [मन्त्र + क्त] चर डालने से उत्पन्न हुआ ।

मन्त्राक [मन्त्र—आनक] १ रई का डंडा मन्त्री २ मन्त्र
का विशेषण ।

मन्त्राधिक [मन्त्रान् + क्त] एक प्रकार का वान ।

मन्त्रिन् (वि०) [मन्त्र—णिनि] १ विलोने वाला मन्त्र
करने वाला २ कष्ट देने वाला, तंग करने वाला
(पू०) वीर्य, कुच नी विलोनी मन्त्री ।

मन्त्र (मन्त्रा० वा०) मन्त्रते बहुधावैधिक प्रयोग १ पीकर
भूत लेना २ प्रवृत्त होना, हर्षयुक्त होना ३ डीला-
डालना, विलिप्त होना ४ चपकना ५ लने २
चपकना, टहलना, बुझना ।

मन्त्र (वि०) [मन्त्र + क्त] १ नीला, विनिष्कारी, बक
बैज, कुत्ता, मर, मरवावली करने वाला—(वि०)
विनिष्कार मन्त्रा विलिप्तमन्त्र—गु० १।११, उक्तावै-
धिकिने विलिप्तमन्त्रे उक्ता वाह—गीत० १ २. निष्क-

त्साही, तटस्थ—उदासीन 3 जड़, मयबुद्धि, मूढ़, अज्ञानी, निर्बल—मस्तिष्क, मन्त्रोप्यमन्त्रतामेति ससर्गेन विपरिधत—मालवि० २।८, मन्त्र कथियसः प्रार्थी गमिण्याभ्युपहास्यताम्—रघु० १।३, विधित्ति मन्त्राचरित महारमणम्—कु० ५।७५ 4 बीमा, गहरा, सोचला (ध्वनि क्षीय) 5 कामल, पुष्पला, मृदु रचा 'मय स्मितम्' में 6 बोहा अल्प, जरा सा, मन्त्रोदरो दे० अमन्त्र भी 7 दुर्बल बलहीन, कमजोर यथा मयाग्नि में 8 दुर्भाग्यवस्त अनाया 9 मुर्झाया हुआ 10. दुष्ट, दुर्चरित्र 11. शराव की लत वाला, -वः 1 शनिग्रह 2 यम का विशेषण 3. सृष्टि का विघटन 4 एक प्रकार का हाथी—सि० ५।४९ दम् (अव्य०) 1. बीमे से, कमरा, बीरे-बीरे—यात्र यन्त्र नितम्बयोरुक्तया मय बिलासविध—भा० २।१ 2 बीरे २, हल्के २, शान्ति से—मन्त्र मन्त्र नुदति ५-१२ चानुक्लो यथा त्वाम्—मेघ० ९ 3 बीमे-बीमे, मय गति से, मय स्वयं से, हल्केपन से 4 मन्त्रभस्वर में, गहराई के साथ (मन्त्री छु डीलडाल करना, -मन्त्रो-कृती वेव—ख० १, मन्त्री भू बीमा होना, कम नाकनचर शाना) । मय० अज्ञ (वि०) कमजोर अक्षो बाला

(अन्) मज्जा का भाव, मज्जाशीलता, सार्धभावन -अग्नि (वि०) दुर्बल पावन शक्ति बाला, (निः) अग्निमात्र, पावनशक्ति की मयता, -अनिलः मृदु पवन, -अन्तु (वि०) दुर्बल स्वास बाला, -आकास्ता एक छद का नाम, दे० परिनिष्ट १, -अन्नम् मन्त्रबुद्धि बाला, मूल, अज्ञानी—मन्त्राभ्यामपिपुष्पवा बलि०, -आवर (वि०) 1 कम आवर प्रवर्धित करने वाला, अज्ञा करने वाला, लापरवाह 2 अज्ञापात्र, -अन्नम् (वि०) हुताश, उन्मादहीन—मन्त्रोत्पन्नः कुटीरिण मृत्पात्रवादिना माधव्येन—स० २, -अवरी राजस्य की पत्नी का नाम, पाँच सती स्त्रियों में दे० एक—तु० अह्वया, -उज्ज (वि०) कोष्ठा, गुणगुणा (—अन्तु) कोष्णता, गुणगुणान, -औलुक् (वि०) बीमो उत्पुङ्गता बाला, पराङ्मुख, कथिक्थ—मन्त्रोत्पुङ्गोऽस्मि नमगमनम् प्रति—भा० १, -कले (वि०) कुछ बहुरा, मुक्ति—बहिराग्न्यकर्म अयान्, 'अभाष की अपेक्षा कुछ होना अच्छा है'—कालिः चन्मया, -कारिन् (वि०) बीमे २ काम करने वाला, यः क्षति, -क्षि, -क्षिन् (वि०) क्षने २ चलने वाला, बीमो गति बाला, -केतम् (वि०) 1. मन्त्रबुद्धि, मूल, मूढ़ 2 अत्यमनस्क 3 मूर्खता, अपेक्ष, -कथ्य (वि०) पुष्पला, मन्त्र, आभास्य—मेघ० ८०, -कमनी क्षति की माता, -की, -कज, -कति, -केकम् मय बुद्धि, मूल, मूढ़, क्षतिन्, -काव्य (वि०) काव्यहीन, दुर्भाष्यवस्त, अनाया, रयनीव, वेचारा, -रक्षि (वि०)

पुष्पला, बीमे: दुर्बल, -बुद्धि: (स्त्री०) हल्की बारिदा, स्मित, -हासः, हास्यम् हल्की हसी, मय मुस्कान ।

मन्त्रः [मन् + जट् + भृच् शक० परकम्] मूगे का वृक्ष । मन्त्रम् [मन् + ल्यट्] प्रशमा, स्मृति । मन्त्रधन्ते [मन् + णिच् + लान् + क्रीप्] दुर्गा का विशेषण । मन्त्र (वि०) [मन् + अर] 1 बीमा, विलम्बकारी, दुस्त 2 मोटा, सघन वृक्ष 3 विस्तृत, मूल, -रः 1 एक पहाड़ का नाम (इसकी समुद्रमग्न के समय देवासुरो ने यवानी—रह का हडा बनाया था बीर तब सुधा का मयन किया था) —पुनर्नमन्त्राद्यमुते क्षीरोर्मय इवाभ्युत्तम् रघु० ४।१७, अग्निबलघरमुन्त्र धूमदर ए—गीत० १ सोमैव मगरभूम्यक्षिणा भोधिर्धर्षणा शि० २।१०० कि० ५।८० 2 मोनिर्वा (बाठ या सोलह कड़ियों का) का हार 3. स्वर्ण 4 दर्पण ५ इन्द्र के नखनकानन में स्थित पाँच वृक्षों में से एक मन्त्रार वृक्ष, दे० मन्त्रा । सम० आचस्ता, कालिनी दुर्गा का विशेषण ।

मन्त्रक्षालः [मन् + क्षालच्] 1 अग्नि 2 जीवन् 3. निद्रा ('मन्त्रसाम्' की किष्का बाधा है) ।

मन्त्राक्षः [मन् + अक्ष] बाटा, धडी । मन्त्राक्षिणी [मन्त्रकच्छि + कृष् + णिभि + क्रीप्] 1 यवा

गयी—मन्त्राक्षिणी वाति मन्त्रकच्छे मुक्तावली कच्छननेव मूवे—रघु० ११।४८, कु० १।२९ 2 स्वर्णा, विपद्गता (मन्त्राक्षिणी विपद्गता) —मन्त्राक्षिणा सलिलशानिर्देव्यवाता मन्त्रि—मेघ० ९७ ।

मन्त्रावली (मा० वा० वा०) 1 शनैः शनै चलना, बिन्दव करके चलना, पिछड़ना, मटरगण करना, देर लगाना —मन्त्रावली न कसु मुहदामरपुपेतावकृत्वा—मेघ० ४०, विक्रम० ३ १५ 2 दुर्बल होना, कुछ होना, पुष्पला होना—रघु० ४।४९ ।

मन्त्रारः [मन् + आरच्] 1 मूगे का पेड़, इन्द्र के नखनकाननस्थित पाँच वृक्षों में से एक—हस्तप्राप्यस्तवममिथो बालमन्त्रारवृक्ष—मेघ० ७५, ९७, विक्रम० ४।३५ 2 आक का पीठा, मन्त्रार वृक्ष 3 मन्त्रे का पीठा 4 स्वर्ण 5. हाथी, -रम् मूल के वृक्ष का फूल—कु० ५।८०, रघु० १।२३। सम०—आला मन्त्रार के फूलों की माला—मन्त्रारमाला हरिश्चन्द्र पितृदा—ख० ७।२, -अक्षी माधमूरी छत ।

मन्त्रारकः मन्त्रारकः, मन्त्रारः [मन्त्रार + कन्, मन् + भा + क + भृच्, मन् + भाक] मूगे का वृक्ष दे० 'मन्त्रार' ।

मन्त्रिधम् (पुं०) [मन् + धानिच्] 1 बीमापन, विलम्ब-कारिता 2 मुस्ती, बकता, पुर्बका ।

मन्त्रिरम् [मन्त्रोऽय मन् + किरच्] 3. रहने का स्थान, आवास, गृह, यवन—कु० ७।५५, मनु० ८।९९,

रघु० १२।८३ २ आवास, रहने का घर दवा बीरा-
विषयदिग् ३ नगर ४ शीबिर ५ देवालय । मय०

मयुः बिल्ली मयिः शिव का विशेषण ।

मयिरा [मयि + टाप्] बुडसाल, अस्तबल ।

मयुरा [मयु + उरप् + टाप्] १ अवधसाला, बुडसाल
अस्तबल प्रकण्टोऽय प्लवग प्रविशति नृपतेर्मयिरे मयु-
रया एत० २।२ रघु० १६।४१ २ शय्या चटार्ई ।

मय्य (वि०) [मय् + रक्] १. नीचा गहरा, गभीर,
लाबाला, बरमराना यथोदमद्रव्यविनाष्टी कि०
१६।३, अ२२, मय० १० रघु० १।-६ इ-
१ मय्यर्दान २ एक प्रकार का दान ३ एक प्रकार
का प्राची ।

मय्यवः [मय् + वक् + ण, मय् + वक् + ण० त०] १ काम-
देव प्रेम का देवता मय्यथा ना मय्यविव नाम
मानव करोति तस्य० २१, मय० ३३ २ प्रेम, प्रण
योग्यात् प्रबोधयते मुपु इवाद्य भवमय मयु०
१।८ इसी प्रकार पराजयमयय जप श० ४१
३ केष । सम० आनव एक प्रकार का काम क
पेड—आनव १ आन का पेड २ स्त्री की अंग
कर (वि०) प्रेमोन्मोदक बुडव प्रेमकेति, मयाग
मयुन लेख प्रेम पत्र—म० ३।२६ ।

मय्यन. (पु०) १ मृत कानाकुम्भी (दण्डोर्मैलिनम् मय्यम्)
कराति लहृकारम्य कमिकोन्मिकानर मय्यना
मय्यनोऽयव मलकोलिकमिस्वन बाव्या० ३।११
२ कामदेव ।

मय्यु [मय् + युक्] १ कोष्ठ, दोष नागवमी, कण
गुम्मा—रघु० २।३२, ४१ ११।४६ २ अबा, लोच
कण्ट दुख उत्तर० ४।३ कि० १।३५, अष्टि० ३।४९
३ विपश्यस्त या दमनीय स्थिति कर्मोमान ४ अन्न
५ अन्न का विशेषण ६ जिन का विशेषण ।

मय्यु (म्या० पर० मय्यति) जाना, हिलना कुलना ।

मय्य [अस्मद् सम्बन्ध-सर्वनाम उभयपुरुष—सब० ए० व०]
मेरा । सम० ऊपर, ऊपरम् मेरापन मयना
स्वार्थ ।

मय्यता [मय + तल् + टाप्] १ अपने मन की भावना
स्वाप्न, स्थिति २ चर्मद, अविमान, आरामनिर्भरता
३ व्यक्तित्व ।

मय्यतम् [मय + तल्] १ मेरापन, अपनापन, स्वाधिक की
भावना २ स्नेहयुक्त वादर, अनुराग, मानना - कु०
१।१२ ३ अहंकार, चर्मद ।

मय्यतानः [मय्य + तान, यलोप, मकारादेश, आप
पुडागम] भावविषय का विषय ।

मय्य (म्या० पर०) जाना, हिलना-कुलना ।

मय्यकः 'काव्यमयक' का लपेटा ।

मय्य (म्या० भा० कर्षते) जाना, हिलना-कुलना ।

मय्य (वि०) (स्त्री०—मी) 'पूर्व' 'मे वस्तु' सरचित 'हे
बना हुआ' अर्थ को प्रकट करने वाला ललित का
प्रत्यय, उदा० कनकमय, बाण्डमय, तेजोमय और जल-
मय आदि, यः १ एक दानव, दानवों का शिल्पी
(कहते हैं कि इसने पांडवों के लिए एक मय्य ब्रह्म
का निर्माण किया था २ घोड़ा ३ डेट ४ कम्बर ।
मय्यकः [मय + कट्] बालपुत्र की झोपड़ी, पर्वशाला ।

मय्य (यु) ल्लकः [मय्यल्लकः पृथो मायु]

मय्य [मय + कु] १ किङ्कर स्वर्गीय मनीज २ हरिष.
बारहसिगा । सम० राज कुबेर का विशेषण ।

मय्यकः [मा + ऊन मयादेग] १. प्रकाश की किरण,
रश्मि, अणु कान्ति, दीप्ति—विस्मयति विस्मयैरानि-
मिन्मय्युक्त श० ३।२ रघु० २।४६ शि० ४।५६,
कि० ५।५ ८ २ मोक्षय ३ आला ४ बुधबही
की कील ।

मय्यक [मी + ऊन] १ मोर स्मरति गिरिमयूर एव
देव्या उत्तर० १।२० कवी मयूरम्य तमे निवीदति
मयु० ११३ २ एक प्रकार का कुल ३. 'पूर्व'
शतक का प्रयोग, एक कवि दम्पत्योरविषयकुर-
निकर कर्णपुरो मयूर प्रमथ० १।२२.—ही मोरनी
मुक्ति पर ललात्मापदना निमिरी न पुनरिषसा-
नरिना मयुरि बिड० १ या अरुण करोती न क्वो
मयूर हाव में आया एक पक्षी आधी में डेटे हो
पक्षियों में अच्छा है' अर्थात् नौ नकड न ठेरह उचार ।
सम० हरि छिपकली केयु कान्तिकेय का विशेषण,
बीचकम् गुनिया चरकः गृह कुपट पूका मोर
की शिला मुत्तव्य तृतिमा वस्तिम् (वि०) पक्ष-
युक्त, मोर के पंखों में युक्त (आप आदि) - रघु०
३।५६ रच कान्तिकेय का विशेषण—अस्मकः आत्माक
मोर शिला मोर की शिला ।

मयूरक [मयुर + कन्] मोर कः—कम् तृतिमा, नीला-
बोधा ।
मयूरक [म् + दन्] महामारी पक्षियों का एक लक्ष्यमक रोग,
जिस प्रकार रोग, लक्ष्यमक रोग ।

मयूरकम् मयूर मरथनेन—नृ + ह० यन्मा—बापी बाबिन्
मयूरकमिकाबद्धसापापमार्गी मेघ० ७६, शि०
४।५६, मयु० ३।२१, (कबी-कबी 'मयूर' भी शिला
जगाई ।) सम० मयिः (पु०, स्त्री०) पक्षा,
— शिला पक्ष की शिल्पी ।

मयूरकम् [म् + भावे ल्युट्] १ मरना, मयु—मयूर प्रकृति
मरीरिणाम्—रघु० ८।८७ वा—ललाकित्तस्य बाकीति-
मैरणादितिप्रकृतेः—मय० १।३४ २ एक प्रकार का
विष । सम० डेत, डेतक-(वि०) मयु के हाव
लगाप होने वाला,—मयिपुक्त,—अमयुक्त (वि०)
मयु के विरुद्ध, मरणात्मक, विषबाध,—कर्मयु

(वि०) मत्स्य, मत्स्यहीन, - निरुपय (वि०) मरने के लिए बुद्ध निरुपय वाला पंच० १।

मरत्तः [मृ + अनच्] मृत्यु।

मरत्तः, - वत्तः [मरत्त इति लघ्वयति मर + हो + क, पुषो०, मरत्त + कन्] फूलो का रस - भाषि० ११५, १०१५, सम० - जोकस् (नपु०) फूल।

मरारः [मर मरजमसति निवारयति मर + अल् + अच् लस्य रत्वम्] सती, धान्यागार, अनाज का भंडार।

मराल (वि०) [मृ + मालच्] १ मृदु चिकना स्निग्ध २ सौम्य कोमल, क (स्त्री० - ली) १ हस, बलाक राजहंस - मरालकुलनायक कथय रे कथ वर्तताम् - भाषि० ११३, विवेहि मरालविकारम् - भीत० ११, नै० ६।७२ २ एक प्रकार का बलघर पक्षी, कारकव ३ घोड़ा ४ बाइल ५ अजन ६ अनारो का बाग ७ ब्रह्मण उग।

मरि (री) च [म्रियते नश्यति श्लेषमाधिकमनेन - मृ + इच्, इचवा] काली मिर्च की झाड़ी - चम्पू काली मिर्च।

मरीचिः (पु० स्त्री०) [मृ - इचि] १ प्रकाश की किरण - न चन्द्रमरीचय - विक्रम ३।१०, सवितामरीचिमि - ऋतु० १११५, रघु० १११३, १३।६ २ प्रकाश का कण ३ मृगतृष्णा, - चि प्रजापति, प्रथम मनु से उत्पन्न दस मूल पुत्रों में से एक, या ब्रह्मा के दस मानव पुत्रों में एक, यह कथ्य का पिता बा २ एक स्मृतिकार ३ कुञ्ज का नामान्तर ४ कज्जु। सम० - लोवच् मृगतृष्णा, - भाषिन् किरणों से चिरी हुई, उज्ज्वल, चमकदार (पु०) सूर्य।

मरीचिका [मरीचि + कन् + टाप्] मृगतृष्णा।

मरीचिन् (पु०) [मरीचि + इनि] सूर्य।

मरीचिन्त् (पु०) [मरीचि + मनुप्] सूर्य।

मरीचुच (वि०) [मृच् (यञ्त्वात्) द्वित्वम्] - अच्] बार २ मरने वाला।

मरुः [म्रियतेऽस्मिन् मृ + उ] १ रेगिस्तान, रेतीली भूमि, बीराना, जल से हीन प्रदेश २ पहाड़ या चट्टान (पु०) ब० व०), एक देश और उसके अधिवासियों का नाम। सम० - उज्जुवा १ कपास का पीछा २ ककड़ी, - कण्ठः एक जिले का नाम, कः एक प्रकार का मन्त्रव्यय, देशः १ एक जिले का नाम २ जल शुष्य प्रदेश, द्विच, - द्विचः ऊट, - कण्ठः, - कण्ठम् (पु०) बीराना, उजाड़, - वक्, - वृच्छम् रेतीली मरु-भूमि बीराना - रघु० ४।३१, - भू, (ब० व०) बारवाड़ देश, - भूमिः (स्त्री०) मरुस्थल, रेतीला मरुदेश, - मरुतः एक प्रकार की मूली, - स्थलम्, - स्थली बीराना, उजाड़, बरार - तत्प्राप्नोति मरु-स्थलेऽपि मिहरी मेरी छोटी नाविकम् - मरु० २।४५।

मरुतः [मरु + क] मोर।

मरुत् (पु०) [मृ + उति] १ हवा, वायु, पवन - विश्व प्रसेदुमयतो ननु सुखा रघु० ३।१५ २ वायु का देवता - कि० २।२५ ३ देवता देवी वैमानिकानां मरुतामपयदाकृष्टलीलान्तर लोक पालान् रघु ६।१, १२।१०१ ४ एक प्रकार का पीछा, मरुतक (नपु०) अष्टिपथ नाम का पीछा। सम० आदोल (हरिण या जैसे की बाल से बना) एक प्रकार का पत्थर, कः एक प्रकार की सेम, लोबिया, कर्मन् (पु०) किया उदर वायु अफारा कोक पवित्रमोतर दिशा गज देवसमूह, - तनय, - पुत्र ज्ञत, सुनु १ हनुमान के विशेषण २ श्रीम के विशेषण पञ्चम् हवा में लहराने वाला अण्डा (सूत का बना कपड़ा) - पट बादवान - पति बाल इन्द्र का विशेषण पञ्च आनाश अन्तरिक्ष पञ्च सिंह - कलम् ओला बड़ १ विष्णु का विशेषण २ एक प्रकार का यज्ञ पात्र रच बड़ गाड़ी जिसमें देव प्रतिमाएँ रख कर इधर उधर ले जाई जाती हैं ओक बहु लोक जिसमें 'मरुत' देवता रहने हैं कर्मन् (नपु०) जाकाया अन्तरिक्ष बाहु १ बूझा २ अग्नि लक्ष १ बनि का विशेषण २ इन्द्र का विशेषण।

मरुतः [मृ + उत] १ वायु २ देवता।

मरुता [मरुत + नप्] सूर्यवंश का एक राजा, कहते हैं उनमें एक यज्ञ किया जिसमें देवताओं ने प्रतीक्षक सेवक का कार्य किया मृ० तदप्येव श्लोकोऽभिगीतो मरुत पर्विष्टोऽग्रे मरुतस्यावसन् मृदे जाविज्जनस्य काम-प्रेषित्वेदेवा ममासह इति।

मरुतकः [मरुतिव तन्मि हुमति मरुत + नक् + अच्] मरुतक पीछा।

मरुत्तम् (पु०) [मरुत् + मनुप् मरुत व] १ बाइल २ इन्द्र का नामान्तर ३ हनुमान का नामान्तर।

मरुतः [मृ + उत] एक प्रकार की बलस कारकव।

मरुतः [मरु + वा + क, मि० दीर्घ] १ एक पीछे का नाम, मरुता २ राहु का विशेषण।

मरुत (व) क [मरुत + कन् वनपौरवैव] १ एक प्रकार का पीछा मरुता २ धूने का एक नैव ३ व्याघ्र ४ राहु ५ मारुत।

मरुतः [मृ + ऊक] १ मोर २ बारहसिया हरिण।

मरुतः [मरु + अटन्] १ मरुत कण्ठ द्वार वरुति केनापि वतमनेन मरुत, केहि विज्जति लज्जिय करो-मृज्जनासन्नम् - भाषि० १।१९ ३ मरुदी ३ एक प्रकार का सारस ४ एक प्रकार का रत्नच, लोभोव, मंथन ५ एक प्रकार का चिब। सम० - मरुत (वि०) मरुत जैसे मृदु वाका (कम्प) तावा, - मरुतः वायुमू, - मरुतः एक प्रकार का वायुमू, - मरुतः

मर्वाणि (पु०) [मर्वा + इनि] पड़ोसी, सीमांत
वासी ।

मरु (स्वा० पर० मर्बति) १ जाना, हिलना-जुलना २
भरना ।

मर्कः [मृत् + कञ्] १ विचारणा २ परामर्श, समन्वया
३. नस्य, छींकलाने वाला ।

मर्जयन् [मृत् + ल्यट्] १ रवचना २ परीक्षण, पूछनाछ
३ विचारणा, तयन्वना ४ उपवेश देना, सल्लाह देना
५ विटाफा मल देना ।

मर्बः, मर्बयन् [मृत् + कञ्, ल्यट् वा] सहनशीलता, सहि
ष्णुता, धैर्य ।

मर्जित (भु० क० कृ०) [मृत् + क्त] १ सहन किया हुआ
सबर के साथ सहा हुआ २ जमा किया गया, माफ
किया गया, सम् सहनशीलता, धैर्य ।

मर्जित् (वि०) [मृत् + णिनि] सहन करने वाला धैर्यशील ।
मरु (स्वा० वा० कृ० पर०) मरुतं मरुपनि। क्षामना,
अधिकार में रचना ।

मरुः, मरु [मृज्यते साध्यते मृज् + कल् टिप्पण-तारा०]

१ मेल, मरणी अपविष्टता मूल, अमूल सामग्री मल
बायका जमा—का० २, छाया न मूर्च्छित मलोपहत
प्रसादे बुद्धे तु दर्पयते मूलमायकासा श० ७।३२
२ तलछट, कूड़ाकरकट, भाव, पुरोष गाबर ३
(चातुर्य) का मेल, जय, कोट ४ नैतिक दोष या
अपविष्टता, पाप ५ खरीर का कोई भी अपविष्ट भाव
(मनु के अनुसार इन प्रकार के बारह भाव हैं—वसा
कुम्भमूल मरुदा मृचविद् प्राणकर्माविट शल्यमायु-
दुष्टिका स्वेद्यो हारद्वेष्टे मृजा मला मनु० ५।१३५)
६. कपूर ७ 'मलीखेपी' जलचरविषेय का प्रभाजन
के काम जाने वाला पीतरी कच ८ समाया हुआ
जमड़ा चमड़े का कप, मरु एक प्रकार की छाटी
बातु । सम०—अचर्ययन् १ मेल बुर करना पविष्ट
करना २ पाप बुर करना, हरिः एक प्रकार की
सज्जी,—अचरोचः कोष्ठवद्वता, कश्च अक्षयिन्
(पु०) जाऊ देने वाला, भगी,—आचहू (वि०) १ मेल
पैदा करने वाला, मैला करने वाला, मलिन करने
वाला २ दूषित करने वाला, अपविष्ट करने वाला,
—आचकः पेट,—उत्कर्षः टट्टी जाना, पेट से मल
निकासना, ज्व (वि०) परिवारिक, लोचक चम्
पीय, मवार,—दूक्षित (वि०) मै ग, मदा, मलिन,—इच.
देवन, जलिसार, बाकी दाई जो बच्चे की आचय-
कताओं का ध्यान रखती है, पुष्कम् किसी पुस्तक
का पहला पुष्ठ, आचर्यपुष्ठ (बाह्य पुष्ठ),—मृज्
(पु०) कोबा,—मरुक्क कोपीन, लमोट,—आच वल-
रीय या लीन का बहीना ('मलमाध' इली लिए
कहलता है कि इस अधिक भाव में कोई भी भाविक

कृत्य नहीं किया जाता है), चक्षु (स्त्री०) रव-
त्यला स्त्री, जो स्त्री कपड़ों से हो,—चिर्बन्ध,—चिर्ब-
न्धनम्, बुद्धि (स्त्री०) मलम्बान, कोष्ठबुद्धि—हारक
(वि०) मैल या पाप को हूर करने वाला ।

मलमम् [मल + ल्यट्] कुचलना पीसना,— कः तम् ।

मलम् [मलते वरति चन्दमाधिकम् मल + कयन्] १ भारत
के दक्षिण में एक पर्वत श्रृंखला जहाँ चन्दन के वृक्ष
बहुतायत में पाये जाते हैं (कवित्तमूलाय प्राय मलय-
पर्वत से चन्दन वाली पवन का उत्सर्ग किया करता
है, यह पवन चन्दन तथा अन्य सुगन्धित पौधों की
सुगन्ध को इधर उधर फैलाने के साथ-साथ कामार्त
व्यक्तियों को विशेष रूप से प्रभावित करती है)
स्तनाविद विमानम्भा शैली मलयपर्वतरी रच०
४।५१ १।२५ १।२१ २ मलयश्रृंखला के पूर्व में
स्थित देश, मलाबार ३ उद्यान । इन्द्र का मन्दन
कानन । सम० अचक्षु,—अजि,—यिरि,—चर्वन
मलय पर्वत,—अमिल काव,—लमीर मलयपर्वत
में चलने वाली पवन, दक्षिणीपवन अमिलचर्वनता
पार्वतीमलकोमलमलयसमीरे गीत० १, पु० अचक्षु-
राक्षिभ्यदक्षिचामिलहृत्क पुनास्ते मनोयथा कृत
कर्तव्य बहुदामी यथेष्टम्—का० उचक्षुच चन्दन
की लकड़ी—अ चन्दन का वृक्ष अथि मलयज अथि
माय कस्य गिरामस्त विचरन्ते माय० १।११,
(अ—अम्) चन्दन की लकड़ी (—अम्) राहु का
विशेषण, रक्षु (पु०) चन्दन का बुरा,—दुष्-
चन्दन का पेड़, बालिनी दुर्गा का विशेषण ।

मलका [मलेन मनोमालिन्येन अर्कान् कृष्टिन् मण्डलित-यक
+ मल् + क् + टाप्] १ भूगर्भाग्रय या कामुक स्त्री
२ हूरी, अन्तरंग लक्ष्मी ३ हविनी ।

मलिन (वि०) [मल् + इन्] १ मैला, गन्दा, चिनीला
अपविष्ट, बलुद्ध, छष्ट, कर्नाकित, कमलित (आक० ले
भी) गन्दास्तवङ्गप्रसा मलिनोभवति श० ७।५७,
निर्मित मृदा मलिन यत् कुहमे वेणी० ३।४
२ काला, अक्षरामय मलिनमपि हिवाशोषक-
लक्ष्मीं तनोति म० १।२०, अतिमलिन कर्तव्ये अर्कान्
लक्ष्मणावतीव निपुणा पी दाष्ट०, सि० १।१८
३ वापी, पुष्ट, कुशचरि मलिनोचरित कर्म कु-
नेनेन्वसाप्रतम् काव्याः २।१७८ ४ नीच, पुष्ट,
अथ लचव प्रकटी वसति अलिनाभवत—चि०
१।२३ ५ मेघाच्छन्न, तिरोहित,—मल् १ पाप, दोष,
अपराध २ मृदा, ३ मोहापा,—म, नी रचत्यला
स्त्री । सम०—अम् (पु०) 'काला वापी' मली,
स्याही,—आल्य (वि०) १ काले या मीके मृदु काला
२ नीच, नगर ३ बह्वी, दूर—अल (वि०) तिरोहित,
दूषित, मेघाच्छन्न,—अल्य (वि०) मलिन, दे०

महत) [मह + कति] 1 बड़ा, बृहत्, विस्तृत
विशाल बिस्तीर्ण महान् मिह व्याघ्र आदि 2
पुष्कल, यथेष्ट विपुल, बहुत से, अत्यन्त—महाजन,
महान्, इत्यरादि 3 मन्त्रा विस्तारित, व्यापक
महान्ति बाहु यस्य स महाबाहु इसी प्रकार महती
कथा महान्ध्या 4 बृष्टपुष्प बलवान्, नाकनवर
इति महान् वीर 5 प्रचंड महान् अत्यधिक महती
तिरोवेचना महती पिपासा 6 म्यूल, निर्बल मघन
—महानवकार 7 महत्त्वपूर्ण महान् माघी भर
त्कार्यमुपस्थितम् महती बाली 8 ऊँचा उन्नत
प्रमुख पूज्य उदात्त महत्कुलम् महान् जन
9 उन्मत्त—महान् घोष ध्वनि 10 महर
या डेर में महान् प्रयुक्त प्रातःकाल महर
महाराज ११ बहिरुत्तर डेर में 11 ऊँचा महान्
(पुं०) 1 ऊँ 2 अंग का विशेषण 3 (माक) -
महान्तर बहिर् नन्व (यन से निम्न) माघी ० १०
मान गय १० बीम तर्फी म म हूमा मनु १० १०
सा० ३१०० आदि ननु ० 1 बहणन अन्ना
अभक्ष्यता 2 राज्य उत्तिष्ठेण 3 पवित्रज्ञान (अव्य०)
बहुन अधिक व्यापक बहुव्याप्य अव्यय (वि०)
महन् शब्द न्युक्त मन्त्र के प्रथम पद के ह्य म
तथा कुछ अन्य स्थानों पर अवर्णित ही रहता है
परन्तु कर्मकार्य और बहुव्रीहि समासा में बहुधा क
महा बन जाता है। मम० आवास विज्ञानमन्त्र
आसा ऊँची आशा आचरण (वि०) अथ
आचर्यजनक—आश्रय बड़ा का महारा बड़ा क
पान—बडा (वि०) बडा हाग कवि पा र्ति नाम
बडा लोग के मर म, —शेष (१०) बहन् प्रदेन १०
अधिकार करने वाला—तात्त्विक महन् के रत्न म
तन्वी में से हुआ—बिलम् अन्तिम, —ऊँचा बडा
की सेवा—स्वात्मम् ऊँचा स्थान उन्नत स्थान

महती [महन् + तीव्र] 1 एक प्रकार की बीण 2 महान्
की बीणा अवैतमाल महती मुहुर्मुहु शिशु० ११०
3 लक्ष्य लेगन का पीठा 4 बहणन महत्तर ।

महत्तर (वि०) [महन् + तार] अपेक्षाकृत बड़ा विशाल
—ए 1 प्रधान, मुख्य या सबसे बड़ा व्यक्ति अर्थात्
सामान्यतया पुष्प—उत्तर० ४ 2 कपूकी या राज
मन्त्र का महाप्रतिहार 3 दरबारी 4 लोक का मुखिया
या सबसे बड़ा आदमी ।

महत्तरकः [महत्तर + कन्] दरबारी आदमी, किसी राज
मन्त्र का महा प्रतिहार ।

महत्त्वम् [महन् + त्व] 1 बड़ापन विशालता विस्तृति
महाविस्तार 2 लक्षितता विस्तृति ऐश्वर्य 3 आब
क्षयकता 4 उन्नत अवस्था, ऊँचाई, उन्नत 5 गह
रता, प्रचण्डता, ऊँचा परिमाण ।

महनीय (वि०) [महन् + नीयत्] सम्मान के योग्य
आदरणीय, प्रतिष्ठित श्रीमान यक्ष्मी उदात्त
श्रेष्ठ—महनीयशासन—११० ३१६१, महनीयकीर्ति
११२५ ।

महौत् [मह + औत्] किसी पद का मुख्यविष्ठाता ।

मह्व (महत्) (अव्य०) [मह्, अह्] मूलक से ऊपर
क लोको में म चौथा लोच (स्वर और वनत् के
बीच का लाक) (इसी अर्थ में 'महलोक' शब्द भी) ।
महत्त्व महत्त्विक [अर्द्धी भाषा से व्युत्पन्न शब्द महत्
। ला + क] १० के अन्तपुर में रहने वाला
बोडा या हिजडा ।

महत्त्वक [महन् कन्] निर्बल कमजोर पुराना,
क 1 राजा क अन्तपुर का साजा या हिजडा
विशाल भवन महत्त्व

महत्त्व [न्यु०] महत्त्व अन्त 1 उन्नत स्थान का
अन्तर 2 गहरा आर्द्रति पत्र 3 प्रकार आसा
क—महत्त्व स्वामी महत्त्व महत्त्व विस्तृति—मा०
१० १० १० ४ सात लाक म म चौथा
१० महत्त्व ।

महत्त्वत महत्त्विक (वि०) 1 महत्त्व—महत्त्व विनिहा
महत्त्व उन्नत कमजोर महत्त्वक नाममात्र ।

महा [मह + हा पा पा]

महा [मह + म० और ब० म० में प्रथम पद क रूप में
तथा कुछ अन्य अतिप्रथम शब्दों के आरम्भ में
प्रयुक्त महत्त्व का व्यापक रूप] विशेष० उन
महत्त्व शब्दों की सूची—महत्त्व आदि पद महा है
बहुत अधिक है तथा और अनेक शब्द बन सकत
१ 'मह' में अतिप्रथम आवरण का ब' कर्त्तु 'मह' पद
यह पदक है 'मह' का ग' है । म०—अति शिव
का विशेषण अति 'मह' म० महत्त्व (म
1 ऊँ 2 एक प्रकार का बृहत् पुम 3 शिव का
महत्त्व, अन्त एक पदार्थ का नाम—अन्त
महत्त्व का माया महत्त्व अत्यधिक (वि०) दूर तक
गता हुआ महाप्रधान न्, आकर बडा पत्र, अति
लक्षणी गच्छी । क—सम) रसोई अनुभाष
(वि०) महाप्रधानी चोख्खी उदात्त यक्ष्मी
महाप्रधान उदार श्रीमान् शि० शि० ११० सा०
३ 2 मुलवान् ईमानदार कर्मज्ञ (क) प्रतिष्ठित
आदरणीय व्यक्ति, —अन्तक 1 म० 2 शिव का
विशेषण अन्तकार 1 और बन्धन 2 आध्यात्मिक
अन्त, अन्त (ब० व०) एक देश और उसके
आवासियों का नाम अन्त, अन्तक (वि०)
उत्तम कृत् म मन्त्र मन्त्राङ्कुर (प न)
उत्तम काम ऊँचा कुल, अन्तक सोम का
अन्तक लीला हुआ रस, अन्तक (राजा का) मुख्य

या प्रधानमन्त्री अंशुक शिव का विशेषण अंशुकम्
रम लखर, अस्म (वि०) बहुत लड़ा (अस्म)
हमली का फल अस्मन् सुनुमान जगल विगा
जगल, अर्ध (वि०) अतिमध्यवार् ऊँची काम
वाला (अर्ध) एक प्रकार की बटर, अर्ध (वि०)
मूल्यवान् कीमती, अर्धस् (वि०) ऊँची आन आ
वाला, अर्धव 1 महासागर 2 शिव का नामान्तर

अर्धव एक अरब वर्ष (वि०) 1 अविम 1
वान् बहुत कीमती ६० २१२२ 2 अनमल अनन्
मेय उत्तर ० ६१११ (हंस) सफेद चन्दन की
लकड़ी अचरोह बटवन्, अशनिध्वज वज्र इ रूप
में एक बड़ा सड़ा रथु० ३१२६ अशनि (१३०)

पेट आननमड, अस्मन् (पु०) मूल्यवान् रथ
लाल अष्टवी आश्वत्थ लकड़ा अष्टमी दुर्गाष्टमा

—असि बही नलहार, असुरी पुन का नामान्तर
असु हाथहर बाद का समय आकार (वि०)
विस्तीर्ण, विनाल बड़ा, —आश्वत्थ 1 प्रधान अश्वत्थ
शिव का विशेषण, —आश्वत्थ (वि०) जनशान अश्वत्थ
(—वृक्ष) कदम्ब का दूत अश्वत्थ वि० 1 महाशय
महाभनक उदारवन् महाशय अश्वत्थमा अश्वत्थ
महारमा कौटिल्य मृदु ० ३ शिवान् महाशयान्
महाभनका ६० १० उत्तर ११६२ 2 श्रीमान्
पूजा अष्ट प्रत्यक्ष (३०) परमा मा मनु० ११०६
(महाशयवत् का नी बही अश्वत्थ आ महाभन अश्वत्थ
का) आनक पर प्रधान का बड़ा शिव आनक

मन्त्र 1 बड़ा रूप या उदाम 2 विशेष का
मात्र का आनन, भाषणा बड़ा शिव, —आश्वत्थ का
का विशेषण —आश्वत्थ (वि०) उदवद काशी में
हाथ में तेज वाता अश्वत्थ (—अ) कोई बड़ा महा
भिक काव, आलय 1 दवालय 2 तबिय रवान

आश्वत्थ 3 बड़ा अश्वत्थमान 4 नाथमान् बड़ा
लोक 6 परमान्मा (—मा) एक विशेष देवता का
नाम, आश्वत्थ (वि०) महाशय महाभनक उदार
वन्ता, उदारवन्ता २० महाभन (—व) 1 उदार

मना या उदारवन्ता अश्वत्थ महाशयवन्तर्त्त—भाषि०
११७० 2 समुद्र, —आश्वत्थ (वि०) 1 उदम पर
पर अधिकार करने वाला 2 ताकनवर, बलवान,

—आश्वत्थ: बड़ा या महाशयान, —अश्वत्थ (वि०) 1
उदारवन्ता, उदारवन्ता महाशय उदारवन्ता —रथु०
१८१३३ 2 महान् उदवन् और बाजार रवाने वाला,
महत्वाकांक्षी, अश्वत्थ 1 महत्त्व अर्थात् महान् उदवन्
कु० ५५५३, रथु० १३१२०, मनु० ११३ 2 मुनिया
वा नेता 3 एक पर्यंत भूजाला, आश्वत्थ इत्यन्तु,
अश्वत्थ इत्ये की राजधानी अमरावती, अश्वत्थ (पु०)
मुहम्मद का विशेषण, —अश्वत्थ बड़ा वनस्पति, बड़ा

आरी योद्धा भग० ११४ ईसा —ईसाव शिव का नाम
ईसामी पार्श्वी का नाम, ईश्वर 1 महाशय
स्वायी 2 शिव का नामान्तर 3 विष्णु का नाम
(—री) दुर्गा का नाम, उभा (उभन) के स्थान
पर) महाकाय बेल हृष्टपुष्ट बेल महाभनता बलवन्तर
स्मृशशिव रथु० ३१३२ ३१२२ ६१७० वि० ५१७०,

उत्पलम् ११६ बड़ा नील कमल, उत्पल 1 एक
बड़ा पर्व या रूप का अवसर 2 कावदेव, उत्पल
(वि०) कर्मस्वी अश्वत्थी अश्वत्थी (—हृ) रथु०

उत्पल 1 महासागर रथु० ३११३ 2 इन्द्र का
विशेषण अश्वत्थ नामा उत्पल (वि०) बड़ा समुद्र
पानी या नामान्तर बड़ा उत्पल या अश्वत्थ आन

समष्टि (वि०) 1 प्रादुर्भाव उत्पल बलवन्त समुद्र
रथु० ११२ 2 मात्र ३ पद स्वामी १ कर्म
कुष्ठर ग ४ अश्वत्थ नामान्तर ५ अश्वत्थ की राजधानी

का नाम ६ महाशय उत्पल (वि०) बड़ा देव नाम
मना रथु० 1 बड़ा रथ 2 अश्वत्थ —उत्पल
(वि०) अश्वत्थमान्ता या उदारवन्ता बड़ा उत्पल

(वि०) महाशय २० उत्पल (वि०) अश्वत्थ
अश्वत्थ देवता अश्वत्थमान्ता उत्पल (वि०) अश्वत्थ
ऊँचा (—श शिवता लकड़ा का दूत अश्वत्थ

(—वृक्ष) पक्ष उत्पल (आन० श्री) उत्पल पद
उत्पल बड़ा आकार उत्पलवाय मुख्य शुक
विहार अश्वत्थ उत्पल बड़ा शिव रथु० ११००

उत्पल (वि०), विनाल अश्वत्थ का (—वृक्ष)
शिव ११ विशेषण उत्पल 1 एक बड़ा दुर्गा ताता

2 बड़ा अश्वत्थ दुई लकड़ी अश्वत्थ (स्त्री०) बड़ी
महामुद्र या महाभनता अश्वत्थ मात्र अश्वत्थ

1 बड़ा अश्वत्थ या मन्त्र (मनु० ११३६ में बड़ा अश्वत्थ
मानवजानि के मूलपुरुष या वन अश्वत्थानि के लिए

पयक्त हुआ २ परन्तु यह बड़ा अश्वत्थ के सामान्य
अर्थ में भी प्रयुक्त होता है) 2 शिव का नाम

ओष्ठ (महाष्ठ) (वि०) बड़ा होठों वाला
(—वृक्ष) शिव का विशेषण —ओष्ठ बहुत ताकनवर,

अतिबलवाली प्रतापी जसवी, महाभनता मानवता
वनाशिता कि० १११९, (पु०) बड़ा कूरवीर या

योद्धा, मल्ल ओष्ठान् विष्णु का वक्त्र ओष्ठवि
(स्त्री०) 1 ब्रह्मा ओष्ठवि का पीवा, अश्वत्थ बड़ा
2 दुर्गा नाम, ओष्ठवन् सर्वोपरि उत्पल, रामवाय

सब लोगों की अश्वत्थ बड़ा 3 अश्वत्थ 4 लहसुन 5
एक प्रकार का शिव, वल्लनाम, —अश्वत्थ 1 समुद्र 2
बल का नाम 3 महाशय का नाम, अश्वत्थ लहसुन,
—अश्वत्थ एक प्रकार की तीली कीड़ी, अश्वत्थ 1 बेल
का पेड़ 2 लाल लहसुन, अश्वत्थ (वि०) विष्णु लंग
(—कु) शिव का विशेषण, अश्वत्थ (वि०) 1 अश्वत्थ

हाथों बाका 2. चिबड़े बहुत टाकल मिळता हो—कन्ये: शिव का विशेषण, —कन्ये (वि०) बड़े-बड़े काम करने वाली (५.) शिव का विशेषण, —कन्ये सुनल एक की छिड़ीवा की रात, —कन्ये 1. कविशिरोमणि काश्मिरात कन्युति, बाय और भारति बादि महाकवि 2. कुलपार्थ का विशेषण—कन्ये: शिव का विशेषण (—क) पुत्री, —कन्ये (वि०) स्नुस्काय, बड़ा महाकाय, बलिकाय (—क) 1. हाथी 2. शिव का विशेषण 3. विष्णु का विशेषण 4. शिव का एक अनुपार, मंदी देव, —कन्ये की कनिक बाह की पुनिचा, —कन्ये: प्रत्ययकर्ता के रूप में शिव का एक रूप 2 एक प्रसिद्ध मन्दिर या शिव (महाकाय) का मन्दिर, ('महाकाय' का यह मन्दिर उज्जैन में विद्यमान है, काश्मिरात में अपने वैकुण्ठ की रूपना द्वारा इसे बन कर दिया है, वहाँ (महाकाय=शिव) देवता, उसका मन्दिर, पूजा बादि के साथ-साथ मन्दरी का लपिच मयम मिलता है पु० मे० ३०-३८, २५० ११४ 3. विष्णु का विशेषण 4. एक प्रकार की लोकी या कन्यु, 'पुन्य' उज्जयिनी की मन्दरी, कन्ये कुपल देवी का उपासना रूप, —कन्ये कीक कन्ये, महाकाय (इसके शिव में दुरा विचारों को काश्चित् काश्चित् में किया है हा० २० ५५९ में दे०) (महाकाय विन्दी में पांच है -रघुपति, कुमारचमय, विराता-पुत्रीय, विष्णुकायच, और नैवचरित 1. बरि सह-काय=मेघवृत्त की पुत्री में सम्मिलित किया जाय हो क: महाकाय हो चाहे है परन्तु वह कन्या केवल परम्परा-काय, स्त्रीक मन्त्रिकाय, विक्रमाकदेवचरित और हरविषय बादि का भी महाकाय की दृष्टि से विचार किया जाने का समान अधिकार है) —कुमार: राजा का सबसे बड़ा पुत्र, पुत्रराज, कुल (वि०) लक्ष्मणपुत्र, उज्जयिनीकुल, ऊँचे कुल में उत्पन्न (सम्) उज्जयिनी में जन्म, ऊँचा कुल, कुलम्पु और साचना, भारी उपस्था, —कन्ये: शिव का विशेषण, कन्यु महापुत्र, उपा० मन्वन्त—रघु० ११५९, —कन्ये: विष्णु का विशेषण, कन्ये: शिव का विशेषण, —कन्ये: महाकायपाल, उपसाधक, और: नन्दा, देव, —कन्ये:—रघु (बड़ी संख्या की सरव की संख्या) —कन्ये: बड़ा हाथी है० विकर्तन्, कन्यति: मनेम देवता का एक रूप, रघु: एक प्रकार की रेत (कम्) एक प्रकार का मन्वन् की मन्दरी, कन्ये: सुरागाय, पुन्य (वि०) मनेम मन्वन् (मोषि बादि) कन्ये: विजाय डील की नाम, कन्ये: राहु का विशेषण, और 1 डेट 2 शिव का विशेषण, —कन्ये (५.) डेट कन्ये की हुई सराय, कन्ये मंदी, मेला (—क) ऊँचा और, कोमाहल, मुसमारा,

—कन्ये (५.) सावेनीय मनेम, —कन्ये: (स्त्री०) विजाय मेला, —कन्ये: बटपुत्र, —कन्ये: शिव का विशेषण, कन्यु (वि०) विरही सुनलो की हृदी बहुत बड़ी हो (—पु) शिव का विशेषण, कन्ये: 1 लोनों का समूह, बहुत से प्राणी, साधारण जनता—महाकाय देव नता: त पन्था, महा० 2. जनसंख्या, जीव-प्राय—महाकाय स्मेरकुली मविष्मति कु० ५१७० 3 बड़ा बावनी, प्रविष्टि पुत्र, प्रपुत्र व्यक्ति—महा-कन्ये सत्य कन्ये नोक्षि कारक, पचपचरित ठोके चते मुक्ता कन्येचम्—पुन० 4 किसी व्यवसाय का मुखिया 5 लोचपर, व्यापारी- नारीय (वि०) 1 हाथ-डील 2 उत्तम शक्ति का, व्योमिष् (५.) शिव का विशेषण, —कन्ये (५.) कठोर रूप करने वाला 2. विष्णु का विशेषण, —कन्ये नीचे के हात लोको में से एक, दे० पाताम, निष्ठा: निवृत्त, नीच (वि०) मन्वन् देव वा तीव्र (कन्ये) जिवाही, —कन्ये (वि०) 1. बड़ी भारी कनिक वा दीप्ति से युक्त 2. तैजस्वी, कनिकाली, कीर्त्युक्त (५०) 1. बुरा और, दोहा 2 कनिक 3. कनिकेय का विशेषण (म०) वारा, —कन्ये:—कन्ये: 1 बड़े दांतों वाला हाथी 2. शिव का विशेषण 1 मन्दी मुवा 2. भारी हथ हवा (मन्वन् के साथ पर) प्रथम हथ का प्रभाव, —कन्ये (म०) कन्येय युक्त, —देव: शिव का नामांतर (—की) पन्थी का नामांतर, कन्ये: पीप का पुत्र, —कन्ये (वि०) 1 कन्येय 2. कीवरी, मुसमान (—कन्ये) 1. लोना, 2. मंच, पुन 3. मुसमान केन्युवा, —कन्ये (५०) शिव का विशेषण, —कन्ये 1. लोना 2. शिव का विशेषण 3. मेव का विशेषण, —कन्ये शिव का विशेषण —कन्ये: बड़ा हाथी, —कन्ये 1 नवा, कुला लोकी बड़ी नदी लक्ष्मणोविमयेति महानका मन्वन्—वि० २१२०० 2. बकाय की लोकी में बिरने वाली एक नदी, —मन्वा 1 लोकी हुई सराय 2. एक नदी का नाम, —नरक: इन्कील नरकों में से एक, —कन्ये: एक प्रकार का नरकुल, मेवा—कन्येकाविन सुनला लोकी, पुनविनी, —कन्ये 'महालाटक' एक नाटक का नाम जिसे 'हनुमानक' (हनुमान के नाम से सर्वविध रूप के कारण) भी कहते हैं, कन्ये 1. ऊँची आवाज का, 2. बड़ा होल 3. नरक में बकाय नाम, 4. लोना 5. हाथी 6. सिंह 7. काम 8. डेट 9. शिव का विशेषण, (कम्) एक कावेयं, —कन्ये: शिव का विशेषण, —मन्वा 'महानिषा', मन्व, —मन्व: शिव का विशेषण, —मन्वा 'महानिषा' (बोझ के अनुसार) कनिक-सता का पूर्ण नाम, निष्ठा 1. आशीरवाद, रात का दूसरा वा तीसरा पहर महानिषा पु विशेषण मन्वन्

होता है, भारी ठंडा, बवाई रोग, मक्कासक बीमारी,

महादेवरः शिव या महादेवर का बड़ा भक्त, - पुषः मगरमच्छ, पहियाल, मुनिः बड़ा ऋषि 2. व्यास (नपु० नि) आयुर्वेद की जड़ोबूटी, - धूर्त्तम् (पु०) शिव का विशेषण, मूलम् एक बड़ी मुन्नी (कः) एक प्रकार का प्याज, धूर्त्त (वि०) अत्यन्त क्रोमती (स्वः) लाल, मग 1 कोई भी बड़ा जानवर 2. हाथी, - मेघः मृगे का पेड़, - मोहः मन का भारी आकर्षण (- हा) दुर्गा का विशेषण, यज्ञः महायज्ञ गृहस्थ द्वारा अनुष्ठेय दैनिक पांच यज्ञ या और कोई धर्मकृत्य - अध्यापन ब्रह्मयज्ञः पितृयज्ञम् तपणम्, होमो दैवो (देवयज्ञः) बलिजोती (भूत यज्ञ) नृयज्ञाः निषिपूजनम् मनु० २१००-७२, - यमकम् 'बहुवचन' अर्थात् किसी श्लोक के चारों चरण जहाँ शब्दशः एक से हैं, परन्तु अर्थ भिन्न हैं, उदा० दे० कि० १५५२, यहाँ बिकासमीयुर्जगतीसमार्गणाः' पक्षि के चार भिन्न २ वर्ष हैं, तु० मट्ट० १०११ की भी, यात्रा 'बड़ी नौयात्रा' काशी यात्रा, मृत्यु, - शम्भुः विष्णु का विशेषण, युग्म् बहुव युगे मनुष्यों के चार युगों का समाहार अर्थात् ३२०००० मानववर्ष, योगिन् (पु०) 1. शिव का विशेषण 2. विष्णु का विशेषण 3. मुर्गा, - रजस्तम् 1 सोना 2 धतूरा, - रजम्ब 1. केसर 2 सोना, - रत्नम् बहुवचन रत्न, - रचः 1. बड़ी गाड़ी या रथ 2. बड़ा योद्धा या नायक - कुतः प्रभावो जनयस्य महारथजयद्वयस्य, विरपतिमुत्पादयितुम् वेणी० २, रघु० १११, गि० ३१२ (महारथ की परिभाषा एक दशसहस्राणि योषधेस्तस्य धन्विनां, गन्धमास्तप्रवीणस्य विजयेः स महारथ), - रत्न (वि०) अत्यन्त रमोला (स.) 1. गन्ना, ईज 2. पारा 3. बहुवचन धानु (सम्) 'तवर्गों का आयुक्तेदार मांड, - रत्नः 1. बड़ा राजा, प्रभु, या सम्राट् 2. गन्नाधो या बड़े २ व्यक्तियों को सम्मान संकोषित करने की रीति (महाराज, देव, प्रभु, महामहिम), धृतः एक प्रकार का आम, - राक्षिकाः (पु०, व० व०) एक देवसमूह का विशेषण (मिनती में यह देव २२० या २३१ माने जाते हैं), - राक्षी मुख्य रानी, राजा की प्रधान पत्नी, - राक्षिः, - री (स्त्री०) दे० ब्रह्मचर्य, - राक्षः 1. 'महाराष्ट्र' भारत के पश्चिम में पठारों का एक देश 2. महाराष्ट्र देश के अधिवासी, पठाटे (व० व०) (स्त्री) मुख्य शक्ति बोनी, महाराष्ट्र के अधिवासियों की भाषा - तु० दण्डी - महाराष्ट्रभाषा भाषा प्रकृतं प्राकृतं विदुः - काव्या० १३४, - रूप (वि०) रूप में बलवान् (कः) 1. शिव का विशेषण 2. रत्न, - रौतम् (पु०) शिव का विशेषण, - रौत (वि०)

बड़ा डरावना (-त्री) दुर्गा का विशेषण, - रौतः इकतीस नरकों में से एक मनु० ४८९-९०, - लक्ष्मी

1. नारायण की शक्ति या महालक्ष्मी 2. दुर्गापूजा के उत्सव पर दुर्गा बनने वाली कन्या, - लक्ष्मि बहुल्लिख (कः) शिव का विशेषण, - लोभः कौचा, - लोभम् चुम्बक, बलम् 1 एक बड़ा जंगल 2 विद्यवान में एक बड़ा जंगल, बराहः 'महाबराह' विष्णु का विशेषण, तृतीय अवतार 'बराह मुकुर' के रूप में, बसः शिशुमार, सुप्त, बल्यम् 1. नवा वाक्य 2 अविच्छिन्न रचना या कोई साहित्यिक कृति 3. महदर्थ प्रकाशक वाक्य - जैसे तत्त्वमसि, ब्रह्मैवे सर्वम् आदि, - बातः आधी, संभाषात, वास्तव्यम् पार्श्वनि के मूनों पर काव्यायन द्वारा रचित नाटिक, - बिदेहा योगदर्शन में प्रदर्शित मन की अवस्थाविशेष या वृत्ति-विशेष, - बिभाषा सविकल्प नियम, - बिबलम् मेघ की सन्नधि 'संक्षालित वसनाविषुव' (जब सूर्य मीन राशि में मेघराशि पर सक्रमण करता है), - बीरः 1. बड़ा धूर्तवीर या योद्धा 2. मित्र 3. इन्द्र का बल 4. विष्णु का विशेषण 5. गरुड का विशेषण 6. हनुमान् का विशेषण 7. कोयल 8. तफेंद बोझा 9. वज्राग्नि 10. यज्ञपात्र 11. एक प्रकार का बाज पक्षी, - बीर्षी युगों की पत्नी सत्ता का विशेषण, - बूबः भारी पैल, छंड, बेग (वि०) बहुत तेज, प्रबलबल वाला (कः) 1. लंबी चाल पबल वेग 2. ऊपर 3. गरुड पक्षी, - बेस (वि०) तरंगमय, - ब्यर्थः (स्त्री०) 1. भारी बीमारी 2 (काला कोढ़) काढ़ का प्रधान रूप, - ब्याहृतिः (स्त्री०) अत्यन्त युद्ध शब्द अर्थात् भू, मृग्य और स्वर, ब्रत (वि०) अत्यंत धर्म-निष्ठ कठोरतापूर्वक ब्रत का पालन करने वाला (सम्) 1 महाव्रत, बहुत बड़ा कठिन ब्रत, महान् धर्म-कृत्य का पालन 2 कोई भी महान् या प्रधान कर्तव्य प्राणैरपि हितावृत्तिगोहो व्यावर्जनम्, आरक्षणीय प्रियाधानमेतन्मयीमहाब्रतम् - महावी० ५५५, - ब्रित्ति (पु०) 1. भक्त, संन्यासी 2. शिव का विशेषण, - ब्रह्मिः 1. शिव का विशेषण 2. कातिकेय का विशेषण, - ब्रह्मः 1 बड़ा शल - भग० ११५ 2 कनपटी की हड्डी, मस्तक 3 मानव बलि 4 विशिष्ट ऊँ मन्त्रा, - ब्रह्मः एक प्रकार का धतूरा, शब्द (वि०) ऊँची ध्वनि करने वाला, अत्यंत कोलाहलपूर्ण, ऊंचम मचाने वाला, - बल्लः सुग्री केकडा या झींगा मछली यन० ३१२७२, - बल्लः बड़ा गृहस्थ, शिरम् (पु०) एक प्रकार का सांप, - बुद्धिः (स्त्री०) जीतियों की क्षीरी, - बुल्ला सरस्वती का विशेषण, - बुधम् बाधी, - बुधः (स्त्री० - त्री) 1. उज्ज्वलदन्त बुद्ध 2. व्याला, - बुल्लान्

माराणसी का विशेषण, अथवा बृद्ध का विशेषण,
—स्वातः एक प्रकार का दवा, अथवा 1 सरस्वती का
विशेषण 2 दुर्गा का विशेषण 3 सकेय बाँध, संकांशि
(स्त्री०) मकर सम्पत्ति, —सती बड़ी सती साध्वी स्त्री,
सत्ता असीम अतिरिक्त, —सत्यः यम का विशेषण,
—सत्यः कुबेर का विशेषण, संविधिप्रदः शान्ति
और बृद्ध के मन्त्री का पद, —सत्तः कुबेर का विशेषण
सत्तः बटवृक्ष, —सत्तपनः एक प्रकार की घोर तापदा
—दे० मनु० ११२१२, सांविधिप्रदः शान्ति और
बृद्ध का (परराष्ट्र) मन्त्री, —सारः एक प्रकार का
सर का वृक्ष, सारथिः अथवा का विशेषण, —साहसम्
अविश्राब्ध, बलात्कार, अत्यधिक धिक्कार, —साहसिक
डाकू, बटवार, साहसीलुटेरा, —सिंहः खरम नाम का
एक कपा के बणित जन्तु, —सिंहिः (स्त्री०) एक
प्रकार की जादू की शक्ति, —सुखम् 1. बड़ा आनन्द
2. सन्तोष, —सुखमा रेत, —सुतः सैनिक डोल, —मेन 1
कालिकेय का एक विशेषण 2. विशाल सेना का सेना-
पति (या बड़ी सेना, —स्वः डेट, —स्वली
पृथ्वी, —स्वल्पम् बड़ा पद, —स्वः एक प्रकार का डोल
झुंका) विष्णु का विशेषण, —हविष् (मनु०) घी,
—हविष्य (पु०) एक पहाड़ का नाम ।

महिला [मह + कृत + टाप्, सत्वम्] कोहरा, पुंश्व ।
महिल (म० क० ड०) [मह + कृ] सम्मानित पूजित,
बहुमानित, मंडेव—दे० मह, —कृ शिव का प्रियूल ।
महिलम् (पु०) [मह + इतनिष् टिकोप] 1. बहुपन्न
काष्ठ के डी—अथ मल्लव महिलम् कश्य गिरामस्तु
विजयते—नामि० ११११ 2. बस, सौरव, ताकत
अथिष्ठ कु० २१६, उत्तर० ४१२१ 3. ऊँचा पर्व उन्नत
पर्वत, का ऊँची प्रतिष्ठा 4. सिद्धियों में से एक—अपना
बरीर चुकाना—दे० सिद्धि ।

महिदः [मह + इतन्, लत्य रत्वम्] सुयं ।

महिला [मह + इतन् + टाप्] 1. स्त्री 2. मदमत या
विकसित स्त्री—विशेष विकलहृदया विजयमोना-
कने महिला नामि० २१८ 3 प्रियम् नाम की नरा
4. एक प्रकार का मंददम्ब या सुगन्धित पौधा
—रेवक । सम०—आह्वया प्रियम् लता ।

महिमारीकम् दक्षिण भारत में स्थित एक नगर का
नाम ।

महिषः [मह + टिक्] 1 भेसा (यम का वाहन माना
जाता है) माहन्ती महिषा विनामर्त्यकभृगंमृदुभा
शिवम् म० २१६, एक राजस का नाम विमे दुर्गा
में भार विराया था । सम० अथैव कालिकेय का
विशेषण—असुर, महिष नाम का राजस धीरानिनी
जयनी, जयनी—पृथ्वी दुर्गा के विशेषण, धनी
दुर्गा का विशेषण, अथवा यम का विशेषण, धनी

पालकः भैरव रत्नने वाला, बहुलः बहुलः वन के
विशेषण—कुलात् कि साक्षान्महिषहृगोऽपि
पुन काव्य० १० ।

महिषी [महिष + ङीप्] 1. नैस, मनु० १५५, बाह्य०
२१५९ 2. पटराणी, राजमहिषी—महिषीसह—रघु०
११८८ २१२५, ३१९ ३ रात्री 4. पक्षी की माया
५ स्त्रीदासी, लेखिका सेरभी 6. व्यभिचारिणी स्त्री
7 अपनी पत्नी की वैधायनित से अहित धन—मु०
माहिकि । सम०—वालः भैरव के रत्नने वाला,
लक्ष्म. भैरव के सिर से अलंकृत लवा ।

महिष्मत् (वि०) [महिष + मत्, पुंश्व टिकोप]
बहुत ही भैसे रत्नने वाला, या जहाँ भैसे बहुतायत
से हों ।

मही [मह + कृ + ङीप्] 1 पृथ्वी—जैसा कि महीपाल
और महीमत् आदि में—मही रम्या धम्या—महू०
३१७ 2. मृत्ति, मिट्टी 3 भूतम्पति, जमीन—आवाध
4. देश, राज्य 5. एक नदी का नाम जो अरावली की
झाड़ी में गिरती है 6. (आ० में) समतल बाह्यति
की आचाररेखा । सम० इय, ईश्वरः राजा, —न म
मही नमहीनपराक्रमम् रघु० १५५, कंकः मृच्छा
कित् (पु०) राजा, प्रभु रघु० ११११, ८५, १९१
२० कः 1. भगवत्पद 2. वृत्त (अर्थ) हरा अवरक,
—तलम् बरातल, —दुर्गम् मिट्टी का किला, मुमुक्षु
—वरः 1 3. पहाड़ रघु० १५२ कु० १८९ 2.
विष्णु का विशेषण, अ 1 पहाड़ मनु० २१०, सि०
१५२४, रघु० ३१६ १३३ 2 विष्णु का विशेषण,
भावः, कः, पति, भुक् (पु०), अथवा
(पु०), अथवाः राजा भग० ११२०, रघु० २१४
११३, भुक्, सुत, —सुत 1 भगवत्पद 2. नरका-
सुर का विशेषण, भुवी, भुवा सीता का एक विसे-
षण, प्रकल्प भूचाल, प्ररोह, बहू (पु०) बहू
वृक्ष कि० ५१०, सि० २०४९, प्राचीनम्, अथवा
समुद्र, अर्ध (पु०) राजा, भुत् (पु०) 1 पहाड़
कु० १२३ कि० ५११ 2 राजा, प्रभु, कस्त
कैचुआ—भुव बाह्यण ।

महीषत् (वि०) [म० अ०, महिष + इयम्] अपेक्षाकृत
बड़ा विशाल अपेक्षाकृत अधिक शांतिप्राप्ती जारी
या महत्काय अधिक लाकड़वार यन्त्रवत् पुं० महायमा,
उदात्तता प्रकृति अल्प या महीयम महने नाथ
समग्रपि गता कि० २१२, सि० २१३३ ।

महीना अथवा । महिष, पुंश्वः मायु] स्त्री, नारी ।
या (अथ) [मा शिवप] प्रतिवर्षोत्सव अथवा
(यवार्थम् क विरला) प्राय लोद लकार की किया
के साथ बड़ा हुआ यज्ञार्थ या बृहद्विकारमनादरेण
नामि० २१९ (क) भृह लकार की किया के साथ

मकी बुझ न हो) 2. सम्मान करना 3. उहासी, किम्पला 4. निर्वमता 5. कोष, आवेश 6. वस्त्र की किमारी वा छातर (घोट) 7. दुष्टरा रीति
मायवः [मयोरपत्यम् अन्, अस्यायं मायम्] 1. लड़का, बालक, छोकरा, बच्चा 2. छोटा मनुष्य, मुन्हा (विस्कार लूचक) 3. सोलह (बीस) लड़ियों की मातियों की माता ।

मायवकः [मायव + कन्] 1. लड़का, बालक, बच्चा, छोकरा (प्रायः तिरस्कारलूचक के रूप में प्रयुक्त)
2. छोटा मनुष्य, बौना, मुन्हा - मायामाणवकं हरिम् - भाग ३ पूर्व अक्षिण 4 छात्र कर्मशास्त्र पठने वाला, विद्यार्थी 5. सोलह (वा बीस) लड़ियों की मातियों की माता ।

मायवीय (वि०) [मयवेद अन्] बालकों जैसा, बच्चों जैसा ।

मायवम् [मायवानां सन्तु यत्] बच्चा या छोकरा की टोली ।

मायिका [माय् + अङ् नि० मायम् + कन् + टाप् इत्यम्] एक विशेष बाट (बाँट पत्र बज्ज के बराबर) या तोल ।

मायिकम् [मयि + कन् + घञ्] लाल ।

मायिक्या [मायिक्य + टाप्] छिपकली ।

मायिक्यम्, मायिक्यम् [मयिष्य (मय्) + अच्] सेंधा मक्क ।

मायिकि (वि०) (स्त्री० - की) [मयन + ठक्] किसी श्राव्य पर शासन करने वाला या उससे सम्बन्ध रखने वाला, -कः श्राव्य का शासक, राज्यपाल ।

मायिकः [मतङ्गस्य मनेरयम् अन्] 1. हाथी - जि० १।१४ 2. नीचतम जाति का पुत्र, बाण्डाल 3. किरात, भील, कूड़ो या बर्वर 4. (सपास के अन्त में) कोई भी सर्वोत्तम कस्तु - उदा० इलाहक मातंग । तम० - विचारः एक कवि का नाम, -कः हाथी जैसा विद्यालय मन्त्र्य - रघु० १३।११ ।

मायिपुत्रः [मयुक् समास] 'बहु यो घर में अपनी माता के शासन ही अपनी बुरीरिखा बताता हो' अरथे, कायर, केहीबोरा, बुद्धिहीन ।

मायिरूपम् (पु०) [मातरि यत्पि स्यवति बन्धते विष्कामि] छिन्न, अलङ्कृतं वायु - पुनरुक्ति विधितः मातरिमाययन्त्यं जलमस्ति यन्मार्गि मातरीनां रजोभिः शि० ११।१७, कि० ५।१६ ।

मायिनिः [मतकस्यापत्यं पुमान् - मतक + इङ्] इन्द्र के श्राव्य का नाम । तम० मायिनिः इन्द्र का विशेषण ।

मायिनी [माय् पुत्रायां तुप् न कोषः] माता, माँ ।

मायिनीय [माय् + आयिन्] माता, ही (हि० व०) माता माँ, -ही माँ ।

मातिः (स्त्री०) [मा + क्तिन्] 1. माप 2. किन्तन, विचार, प्रत्यय ।

मातुलः [मातुलता मातु + इलच्] 1. माया - तम० १।२६ मनु० २।१३०, ५।८१ 2. बहुरे का पीछा 3. एक प्रकार का लीप । तम० पुनः 1. माया का बेटा 2. बहुरे का फल ।

मातुलकः दे० मातुलिनः ।

मातुला, मातुलानी, मातुली [मातुल + टाप्, डीप्, वा, पठे आनुक् व] 1. मायी माया की पत्नी - मनु० २।१३१, याज्ञ० २।२३२ 2. परमन ।

मातुलिनः, मातुलुङ्गः [मातुल + मत् + लप्, मृत्, पूर्वो + साच्] एक प्रकार का मीठ् का वृक्ष - (पूर्वो) मायाः प्रेक्षितमातुलुङ्गमुपः प्रेषो विनास्यन्ति बाम् - भा० ६।१९, - कम् इत वृक्ष का फल, चकोतरा ।

मातुलेयः (स्त्री - ली) [मातुल + ल, मातुली + लक् वा] माया का पुत्र ।

मातु (स्त्री०) [मात् पुत्राया तुप् न कोषः] 1. माँ, माता - मातृपदपदारेणैव पवति स पञ्चति, बहुलं नु विदुः माता वीरवेणातिरिच्यते मुभा० 2. माता (बाहर तथा वात्सल्य लूचक) - मातर्लक्ष्मि प्रत्यय कश्चिद्वरम् - मत्० ३।१४, ८७, अयि मातर्देवमनमयवे देवि सीते उत्तर ४ 3. गाव 4. लक्ष्मी का विशेषण 5. दुर्गा का विशेषण 6. अन्तरिक्ष, आकाश 7. पुत्री 8. देव माता - मातृश्वो वसिष्ठपुत्र - मृच्छ० १ (व० व०) देव माताओं का विशेषण, जो हिव की परिचारिका कही जाती है परन्तु श्रुत्या स्वयं की परिचर्या में लिप्त रहती है (वे भिक्षा में बाध है - बाह्यी मातृश्वरी कही गाराही देवकी तथा, कीमारी वैव चामुदा चकिरेण्यमातरः । कुछ के मत में यह केवल सात है - बाह्यी मातृश्वरी चैव कीमारी वैवकी तथा, मातृश्वरी चैव गाराही चामुदा मय मातरः । कुछ लोग इनकी संख्या १६ तक बतलाते हैं) । तम० - केसरः माया, -मयः देव माताओं का समूह, -मयिनी विपरीत स्वभाव वाली माता, -मायिनी (पु०) माता के साथ वसन करने वाला, -मोक्षम् मातृकुल, -मोक्षः, -मोक्षकः, -मायिन् (पु०), ज्ञः माता की हवा करने वाला, -मातुलः 1. मातुलता 2. हन् का विशेषण, -चक्षुः देवमाताओं का समूह, देव (वि०) जो माता की अपनी देवता मानता है, माता को देवता की आराधना करने वाला, -मन्त्रः कातिकेय का विशेषण, कल - (वि०) मातृकुल से संबद्ध, (-कः) माया, माया आदि, -मिन् (हि० व०) (मातृपित्री या मातरपित्री) माता-पिता, -पुत्री (मातृपुत्री) माँ और बेटा, -पुत्रम् देवमाताओं की पुत्रा, -कम्, -कम्पः मातृकुल के संबंधी - रघु० १२।१२, (व०

ब०) मातृकुल के रिस्तेदारों का समूह. वे ये हैं—मातृ-
पितृ स्वसु पुत्रा मातृपौत्रा स्वसु भ्राता मातृपौत्र-
पुत्राश्च विशेषा मातृबापबा, नन्धनम् देवमातृकाओं
का समूह.—मातृ (स्त्री०) पार्वती का विशेषण.—मूकः
बुद्धि व्यक्त, बहि.—मूकः देवमातृकाओं के निमित्त
किया गया यज्ञ—मूकः कतिपय का विशेषण.—स्वसु
(स्त्री०) (मातृस्वम् वा मातृस्वसु) माता की बहन,
पौसी, —स्वसेव. (मातृस्वसेव) माता की बहन का
पुत्र (पौ) पौसों की एसी, इसी प्रकार मातृस्व-
सोकः—मा ।

मातृक (वि०) [मातृ + क्त] 1 माता से आया हुआ,
या उत्तराधिकार में आया—मातृक व वन्द्यवित्त
व्यक्त रघु० ११५६, ९० 2 माता मन्त्री.—क.
माता,—का 1. माता 2 दाही 3 बानी, दाई 4 श्रोत,
मूक 5. देवमातृका 6 जबरों में जिसे हुए कुछ
रेखाचित्र जो बाहु की शक्ति रखने वाले कहे जाते
हैं 7 इस प्रकार प्रयुक्त की गई वर्णमात्रा (ब० व०)।

मात्र (वि०) (स्त्री०—मा, मी) [मा + त्र] इतनी मात्र
का जिसका कि 'इतना' जैसा लगा या 'तैसा' जिसका
कि 'वहाँ तक पहुँचता हुआ' वहाँ तक कि 'अबों को
प्रकट करने के लिए सन्त्राओं के साथ जोड़ा जाने
वाला प्रत्यय, जैसा कि उपमाकी विलि: (इस अर्थ
में अन्धकार के अन्त में 'मात्रा' शब्द का प्रयोग भी
किये गये हैं, दे० नी०), वन् 1 एक मात्र (बाहू
वह सम्पूर्ण, चौड़ाई, ऊँचाई की हो; बाहू डीनडोल,
स्वाम, दूरी या सख्या की हो, प्रयोग बहुधा समास
के अन्त में उदा० अमुल्लिख्यम् प्रगुनि के गगन
चौड़ाई, किञ्चिन्मात्र मात्रा कुछ दूरी जोसमात्र एक
कोस को दूरी पर रेखावाचकवि रेखा तक की चौड़ाई
भी, इतनी चौड़ाई जितनी कि एक रेखा की दृष्टि
है;—रघु० ११२३ इसी प्रकार जलमात्रम् विविधमा
त्रम् एक लक्ष का अन्तराल सलमात्रम् सख्या में से
जलमात्रम् इतना—जैसा या बड़ा जितना कि हाथ
तालमात्र, यन्मात्रम् आवि 2 किसी चीज का पूरा
मात्र, वस्तुओं को पूर्ण समष्टि, राशि जीवमात्र या
प्राणिमात्रम् जोसमात्रियों प्राणियों का समस्त समुदाय,
मनुष्यमात्रो मर्त्य, प्रत्येक मनुष्य मरणशील है
3. किसी चीज का सामान्य मात्र, केवल एक बात का
उल्लेख अधिक नहीं, इसका अनुवाद प्रायः 'केवल',
'लिक' का 'ही' आदि अर्थों से किया जाता है;
—वात्सिवायेन हि० १५८, केवल वाति है; टिट्ठि-
मात्रेण समुद्रो व्याकुलीकृतः—२११४९, केवल टिट्ठरे
के द्वारा, वाचासाम्यं कथ्यते—क० २, केवल बाकी
द्वारा इसी प्रकार सर्वमात्रम्, संवामात्रम्—वच०
१८६ सामान्य अर्थों के अन्त कुछ कर 'मात्र' शब्द

का अनुवाद 'ज्योंही' 'ही' आदि हैं, टिट्ठमात्रः—रघु०
५५१, 'ज्योंही वह देखा गया त्योंही' 'जैसे जाने
पर ही', मृतवाने, 'जाने के बाद ही', प्रविष्टमात्र
एव तत्रवसति क० १ आदि ।

मात्रा [मात्र + टाप्] 1. मात्र—देखो 'मात्रम्' ऊपर
2. मात्रादक, मात्रक, मात्रक 3. लक्ष मात्र 4. मात्र की
इकाई, एक कुट 5. मात्र 6. मात्र, वन् 7. मात्र, बंध
—सुरेन्द्रभाषाभित्तमर्चनीरवात्—रघु० ३१११ 8. सम्पादक,
अल्प परिमाण, छोटी मात्र दे० मात्र (१) 9. वर्ष,
महत्त्व—राजेशि कियती मात्रा—वच० ११४०, 'राधा
किस वर्ष का है, क्या महत्त्व है उसका' अर्थात् मैं
उसे कोई महत्त्व नहीं देता—काश्यप इति कम्पी मात्रा
बु० १ 10 वन, संपत्ति 11 (ऊपर: मात्र में) एक
मात्रा का मात्र, ह्रस्व स्वर को उच्चारण करने में लगने
वाला मात्र 12 मात्र 13. शीतिक लंघार, श्रुतद्वय
14. मात्रों के अक्षरों का समूह (अतिरिक्त) मात्र,
अर्थात् मात्रा 15. कान की बाली 16. मातृवचन, बन्ध-
कार । मात्र० ऊपर, मापीमात्रा का मात्र, —ऊपर,
—मूलम्, वह छत्र जिसका विविध मात्राओं की
मिनती के आधार पर होता है—उदा० भार्या,—कनका
बटका सङ्गः गार्हस्थ्य सामर्थ्य या संपत्ति में आश्रित
या अनुत्तम मात्र० १५५०—मन्त्रः एक प्रकार के छंदों
का समूह दे० परिशिष्ट १. स्वर्गः शीतिक लंघार,
शीतिक तत्त्वों के मात्र इन्द्रियों का मनोव, मात्र०
२१६४।

मात्रिका [मात्रा + टक् + टाप्] मात्रा, या अन्य मात्र
का हस्तस्वर के उच्चारण में लगने वाला मात्र
(मात्रा) ।

मात्रिक (वि०) (स्त्री० मी) मात्रिक (वि०)
(स्त्री० मी) [मात्र + क्त] बाहू करने
वाला, ईर्ष्यालु, विद्वशी असुपायक ।

मात्रयम् [मात्र + यम्] ईर्ष्या, बाहू लक्ष्मण, विद्वेष
प्रति प्रयुक्त मात्रयम् कला० २११४९, कि०
३५५३ ।

मात्रिक (वि०) [मात्र + क्त] मात्रा, मातृगीर ।

मात्रः [म् + मात्र] 1. जितनी, मचन, जितनी करना
2. मात्रा, विनाश 3. मात्र, मात्रक ।

मात्रुर (वि०) (स्त्री० मी) [मात्र + क्त] 1. मात्रुर
से आया हुआ 2. मात्र में उपनय 3. मात्र में रहने
वाला ।

मात्रः [म् + मात्र] 1. मात्रा, मात्रा 2. मात्र, मात्रा
3. मात्र, मात्रक ।

मात्रक (वि०) (स्त्री० मात्रा) [म् + चिप् + क्त]
1. मात्र करने वाला, उच्चारण करने वाला, शीतिक
करने वाला 2. मात्रमात्रक,—का वन्द्यवित्त ।

हीनार की जाती है—बचान मनु माष्ठीकम्—महि०
१४१४ 2. मयूरी से जीपी हुई सराव—हाष्ठी
माष्ठीकचित्ता न भवति यवत—गीत० १२
(=मयो—टी०) 3 मयूर । तम०—कलम् एक
प्रकार का मारिदल ।

माय् । (स्वा० आ० 'यन्' का इच्छा=वीभावसे)
11 (स्वा० पर०, घृता० उभ०='यन्' का घेर०)

मायः [यन्+यञ्] आहर, सम्मान, प्रतिष्ठा, माहर
विचार—मानद्विधात्मना—यञ्० २।१५९, यञ्० १।७,
इती प्रकार 'मानयन्' आदि 2 गर्व (अच्छे भाव में)
आत्मनिर्भरता, आत्मप्रतिष्ठा—अग्निसे मानहीनत्व
तुल्यत्वं च समागति - यञ्० १।१०५, रघु० १।५८१
3. अहंकार, बलवत्त्व, अवलम्ब, आत्मविश्वास 4 सम्मान
की बहुत मानना 5. ईर्ष्यायुक्त क्रोध, हाह के कारण
उद्दीप्त रोष (विशेषतः स्त्रियों में), क्रोध, - मूच यदि
मानयमिच्छाम्—गीत० १०, माचये मा कुच मानिनि
मानयये—९, शि० १।८४, भावि० २।५९—यन्
1 मायना 2 माय, मायवत्त्व 3 जायमान, संवचना
4. मायवत्त्व, मायने का बंधा, मायवत्त्व 5. प्रमाण
सत्ताधिकार, प्रमाण वा प्रवर्धन के साधन,—येजी
माणुनीचप्रसादा रसमायकर्मतयोक्तान्तेनां रसचर्मने
कि मायम्—रत्न०, मानाभावाद्, (विद्याभाष्यव भाषा
में बहुधा प्रयुक्त) 6. समानता, मिलना-युक्तता । यञ्०
—अन्तर्गत (वि०) वर्णयान्, अहंकारी, बर्गही, उन्नतिः
(स्त्री०) बहुत आहर, भारी सम्मान, उन्मादः
बर्गद का नाश,—कलङ्कः,—कलितः ईर्ष्यायुक्त क्रोध से
उत्पन्न लज्जा,—कलितः (स्त्री०)—अज्ञः,—हानिः
(स्त्री०) सम्मान की हानि, दीनता, अपमान, अप-
प्रतिष्ठा,—कलितः सम्मान वा गर्व की हानि—य (वि०)
1. सम्मान करने वाला 2 बगडी, —बलः मायने का
बंधा, बल—चित्तः पुष्पिष्ठा इव मानवत्त्व—कु० १।१,
—यञ् (वि०) सम्मानकारी बन मे समृद्ध—यहीउत्ता
मानयना भवति—कि० १।१९,—वाल्मीकि ककडी,
—वरिककम्बन् मानव्यं, दीनता,—मङ्गल वे० 'मानयति',
—मायन् (वि०) गौरव से समृद्ध, आनन्द वर्धना
—कि जीने तुल्यमति मानमहतामयमेव केतरी—मत्०
२।२९,—बोधः माय ठीक की ठीक रीति—यन्०
१।३३०,—रश्मि एक प्रकार की बलमयी, एक छिन्-
युक्त जलकलश जो पानी में रखा हुआ लाने जाने
भरता रहता है, उन्नी से समव भी माय की जाती
है,—यन्म 1. मायने की छोटी 2 (लौहे की) बगी-
जो खरीर में छेदी बाध, करचनी ।

मायःशिक (वि०) [यन् शिक+यञ्] नैवतिस से युक्त ।
मायने,—मा [यान्+यन्, शिकार्थ टाप् च] 1. सम्मान
करना, माहर करना 2. कृता—वि० १।१२ ।

मायवीच (वि०) [यान्+अनीचर्] उन्माद के बीज,
माहरनीच, प्रतिष्ठा होने का अधिकारी (अर्थ० के
साथ) —येनां युनीनस्वपि मायनीयान्—कु० १।१८,
रघु० १।११ ।

मायव (वि०) (स्त्री०—सी) [मनोरथत्वं यन्] मनु से
संबंध रखने वाला, या मनु के बंध में उत्पन्न—मान-
वत्त्व राजविषंक्षय प्रलम्बितारं क्षयितारम्—उत्तर०
३, यन्० १।११०७ 2. मानवसंबंधी,—यः 1. मनुष्य,
बादमी, इत्यादि,—अनीचको मानवानां ततोऽयं प्रथितोऽ-
भवत्, कृष्णबाधवत्तत्त्वाम्मिनीयतास्तु मानवाः—महा०
यन्० २।९, ५।३५ 3. मनुष्यजाति (ब० ब०)—यन्
एक विशेष प्रकार का बंध । तम०—इन्द्र,—केच,
—यतिः मनुष्यों का स्वामी, राजा, प्रभु—यन्०
१।४।३२ बर्गसाधकम् मनुसहिता, मनुस्मृति,—रत्नसः
मनुष्य के रूप में राजस या पिशाच तेजी मानव-
राजता परहित स्वार्थ मिथ्याति ने—मत्० २।७४ ।

मायवत् (वि०) [माय+यन्तु, यवन्] बगडी अहंकारी,
अभिमान, वर्णयान्,—ली बगडी या हपीद्ध स्त्री
(ईर्ष्या के कारण कूट) ।

मायव्यम् [मायव+यन्] (मायव्यम् जी) कड़कों का समूह ।

मायव (वि०) (स्त्री०—सी) [यन् एव, यमस इव वा
यन्] 1 मन से संबंध रखने वाला, मानसिक, भाषिक
(विष० कारीरिक्त) 2 मन से उत्पन्न, इच्छा से
उत्पन्न—कि मायवी सृष्टि—स० ४, कु० १।१८,
यञ्० १०।१ 3. केवल प्रसाद विचारनीय, कल्पनीय
4. उपलब्धित, अल्पित 5. 'मानव' शरीर पर रहने
वाला,—तः विष्णु का एक रूप,—सम् 1. मन, बुद्धि
—तपवि मयमानलो बहुति मन मानवम्—गीत० १०,
अपि च मानवमव्यवधि—भावि० १।१११, मायवं
विषयेविना (माति) १११ 2. कैलास पर्वत पर
स्थित एक पुनीत शरीर—कैलासशिखरे राय मनसा
निर्मितं तत्र, बहुला प्रापिर्वं यन्मातव्यमानवत् तत्र ।
गम० (कहा जाता है कि यह शरीर ही राजहंशों
की जन्मभूमि है, राजहंस प्रतिवर्ष प्रतकाल के आरंभ
होने के अवसर पर या बरसात हवाओं के आगमन
पर इस मगोवर के तट पर जा विराजते हैं—वेच-
स्यामा विहो दृष्ट्वा मानतोत्पन्नकेतयान्, दृष्टिं
राजहंशानां येव मृगुरसिम्बलन्—विष्णु० ४।१४, १५,
यस्यास्तीये कृतवत्ततो मानवं संविकृत्य भाषावर्धन
व्यवमनमृचभाषावि प्रेष्य होताः—विच० ७९ वे० केच०
११, घट० ९ जी) रघु० १।२१, केच० १२, भावि०
१।३ 3 एक प्रकार का मयक । तम०—आत्मकः
राजहंस, रासक,—कल (वि०) कोनशरीर जाने के
लिए उत्पन्न केच० ११,—कीकम्,—क्षयिन् (पुं०)
राजहंस—कलम् (पुं०) 1. अवलंब 2. उपलब्ध ।

मानसिक (वि०) (स्त्री० की) [मन्त्र-+उच्च्] मन से उत्पन्न, मन सम्बन्धी, आत्मिक, क विष्णु का विशेषण ।

मानिका [मन्+णिच्+ङ्ङन्+टाप्, इत्यम्] 1 एक प्रकार की लीची हुई सराब 2 एक प्रकार का ताल ।

मानित (भू० क० कू०) [मान+इतच्] सम्मानित आदर-प्राप्त, प्रतिष्ठित ।

मानिन् (वि०) [मान्+णिजि] 1 मानने वाला समझने वाला अभिमान करने वाला (समझ के अन्तर्ग) 2 जैसा कि पश्चिममानिन् में 2 सम्मान करने वाला आदर करने वाला (समझ के अन्तर्ग) 3 अभिमानी घमण्डी आत्मविमाननी पराभवात्पुनस्तव एव मानिनाम् कि० १।४१ पञ्चद्विमात्रा मनो हि मानिनाम्-शि० १।५१ 4 आदरणीय, अतिममानिन भि० १।५५ 5 अद्वैतायुक्त, कोष्ठयुक्त भूट (पु०) सिंह की 1 आत्मविमानिनी स्त्री, दुष्ट सम्मन्त्र वाला, पक्षे निश्चयवाली गर्वयुक्त (अच्छ अर्थों में) -चतुर्दि गीज्ञानबन्धनमानिनी कू० ५।५३ रघु० १३।३८ 2 कुपित स्त्री (द्वन्द्वयुक्त गर्व के कारण) अपने प्रति म भूट माधवे मा कुब मानिनि मानमय-मान० १, कि० १।३६ 3 एक प्रकार का मुगन्धयुक्त या महकदार लीचा ।

मानुष (वि०) (स्त्री० की) [मनोऽयम् अण्, युक् च] 1 मनुष्य की, मानवी, इंसानी मानुषी तन्, मानुषी वाक् रघु० १।६०, १।६२, १।६२, १।६२, १।६२ मनु० १।१०४ 2 कृपालु, दयालु, -क 1 मनुष्य, मानव, इंसान 2 मिथुन, कन्या और तुला राशियों का विशेषण, -की स्त्री, -क 1 मनुष्यत्व 2 मानव प्रपल या कर्म ।

मानुषक (वि०) (स्त्री-की) [मानुष+कन्] मनुष्य सम्बन्धी, इंसानी, मरणशील, मर्त्य ।

मानुष्यम्, मानुष्यकम् [मनुष्य-अण् वृत् वा] 1 मानव प्रकृति, मनुष्यत्व, इंसानीय 2 मनुष्य जाति, मानव-संज्ञित 3 मानवसमुदाय ।

मानुष्यकम् [मानुष+कन्] मोक्षार्थं प्रियता मनोहरता । आत्मिक, मरण+उच्च्] वह जो मरण-तन्त्र से सुरक्षित है, आशुगर, बावीगर, ऐन्द्रजालिक ।

मात्सर्यम् [मत्सर+प्यङ्] 1 मत्सरता, मन्दता, अकर्मण्यता 2 दुर्बलता ।

मात्सर्यः, मात्सर्यकः [मत्सर+कन्] एक प्रकार का वृक्ष ।

मात्सर्यम् [मत्+प्यङ्] 1 मत्सरता, सुस्ती, मत्सरता

2 मत्सरता 3 दुर्बलता, निर्बल स्थिति, क्षमिमात्र

4 विराट्, अभासित 5 रोग बीमारी, बलवन्तता ।

मात्सर्यम् (पु०) [मात्सर्य-मात्+र्ये वृत्] वृक्षारक का पुत्र एक सुवर्ण लीचा (जो पिता के रेट से उत्पन्न

हुआ था), ज्योंही वह रेट से बाहर निकला कि श्रुतिगो ने पूछा 'कम् एव मात्सर्य', इन पर इन्द्र नीचे उतरा और उमने कहा "मा मात्सर्य", इसीलिए वह वृक्ष 'मात्सर्य' के नाम से प्रसिद्ध हुआ ।

मात्सर्य (वि०) (स्त्री-की) [मत्सर-अण्] काम से सबंध रखने वाला या काम में उत्पन्न-आचार्यक विविध मात्सर्यमावीगसीत् मा० १।२६, २।४ ।

मात्सर्य (वि०) [मात् अर्थात् कर्मणि प्यङ्] 1 मान करने के योग्य, आदरणीय जहमपि तब मात्सर्य हेतुमिस्त्रय नैश्च मा० १।२६ 2 आदर किये जाने के योग्य, सम्माननीय, प्रद्वेय रघु० २।६५ पात्र० १।११ ।

मात्सर्य मा-मिच्+गुट्, युकायच्] 1 मापना 2 रूप बनाना बनाना, क-तराक ।

मात्सर्य [मा विष्टव अपत्य यस्य] कामदेव ।

मात् (वि०) [स्त्री-की] 1 [मम इत्-अस्मद्+अच्, मम+दत्] 1 मरा 2 (मवाचन में) बाधा ।

मात्क (वि०) (स्त्री-मिका) [अस्मद्+अण्, ममादेश] मग मेरे पक्ष से संबंध रखने वाला, -मात्का मात्क-मात्क किमुक्त्येन सञ्चय-मम० १।१ 2 स्थावी, लालची, कोभी, कः 1 कंज 2 माया ।

मात्कीन (वि०) [अस्मद्+अच्, ममादेश] मेरा -जो मात्कीनस्य ममसो द्वितीय निबन्धन-मा० २, भाषि० २।३२, २।६ ।

मात्कः [मात्का अस्ति अस्-मात्का-अच्] 1 बाधुवर, बावीवर, ऐन्द्रजालिक 2 राक्षस, मृत पेट ।

मात्का [मोक्षे अनन्, मा+य+टाप् वा० मेत्स्य] 1 बोला, जामसाजो कपट, कुंठा, दीव, दुष्टि, वाक्

पञ्च० १।३५९ 2 आहूगरी, अविचार, अमृ-दोष, इन्द्रजाल-स्वप्नो नू माया नू मतिप्रयो दु-ब० १।७ 3 अवास्तविक या मायावी विष, कल्पलवुष्टि,

मनालीला, अवास्तविक आभास, छाया-माया मकी-द्राव्य परीक्षितोपति रघु० २।६२, भावः अभास के प्रथम पद के रूप में प्रयुक्त होकर 'मिथ्या' 'माया' 'छाया' बर्ण को प्रकट करता है -उत्ता० मायावचनम्

मिथ्या सत्यं, मायावचनं वादि 4 राखनैतिक दार्शनिक, भाव, दुष्टि, कुंठा, नीति की भाव 5. (वेदान्त० में) अवास्तविकता, एक प्रकार की प्राप्ति विकल कारण

मनुष्य इस अवास्तविक विश्व को वास्तविक ठहरा परमात्मा से निम्न अतिशयत्वम् समझता है 6 (सांख्य० में) प्रधान या अकृति 7 कुंठा 8 दया, कष्टा 9 दुष्ट की माता का नाम । सच०-मात्कार

बोले से काम करने वाला, मात्क (वि०) मिथ्या, प्राप्तिमान्, उपवीक्षिन् (वि०) मात्कावी और कपटपूर्ण जीवन बिताने वाला-सच० १।२८८, -कार०, उच्च्-कीचिन् (पु०) बाधुवर, बावीवर

—क मरकत्त, डेवी बुड की बाटा का बाय, बुड बुड, —वर (वि०) कलपुर्न, प्रभातक, —बु (वि०) बोधा देने में कुशल, बाससाय, ठग, —अन्यः 1 बोधा, बाससायी वा दीर्घक का प्रयोग 2 बाहु का प्रयोग, बुध (वि०) मिथ्याहरिण, प्रभातक वा काया पुन, संकम् बाहु-टोना, —बोध बाहु करना, —कचकम् बुटे वा कपटपुर्न कच, —बायः प्राप्ति का सिद्धांत इस सिद्धांत के अनुसार सारी बुद्धि मिथ्या समझी जाती है, बुडबाय, बिन् (वि०) कपट बाय करने में कुशल, वा बाहु की कला, बुताः बुड का विशेषण ।

बाससाय (वि०) [बाया + मनु] 1 कपटपुर्न, बास-साय 2 प्राप्तिपुस्त, प्रभातक प्रयोगवाक्य 3 इन्द्रबाय की कला में कुशल, बाहु की क्षमति लगाने वाला ४ कपट का विशेषण, —ती प्रबुद्ध की कला का नाम ।

बासविन् (वि०) [बाया वासवर्षे विनि] 1 बोधेबायी वा बाय के काम देने वाला, बुटपुर्न का प्रयोग करने वाला, बोधेबाय, बाससाय-बसविट मूढविषः परामर्श प्रवर्ति बासविन् ने न बायिन —वि० १।४० 2 बाहु के कार्य में कुशल 3 प्रभातक, प्राप्ति-वाक्य, (पु०) ऐन्द्रबायिक, बाहुवर 2 बिस्वी नपु० बायक ।

बासिक (वि०) [बाया + इन्] 1 कपटमय, बाससाय 2 प्राप्तिमान्, प्रभातक, —कः बाहुवर, कम् बायक ।

बासिन् (वि०) [बाया + इनि] १० बायाविन् —पु० 1 बायीवर 2 वृत्त, ठग 3 बड़ा वा काम का नामान्तर ।

बायुः [वि० उन्] 1 सूर्य 2 पित ऋणिक रस (इत बर्ष में नपु० जी) ।

बायुर् (वि०) (स्त्री० सी) [मयूर + कम्] 1 मोर से संबंध रखने वाला, वा मोर से उत्पन्न होने वाला 2 मोर के पंखों से बना हुआ ५ (बायी की प्राप्ति) मोर द्वारा बाँधा जाने वाला ६ मोर की द्रिय, रन् मोरों का समूह ।

बायुर्क, बायुर्किकः [बायुर् + कम्, ठक् वा] मोर पक-कने वाला ।

बायः [नु + बन्] 1 हुवा, बच, कतक —अन्येप्राप्ति-नामायीदमाटी रथ कलपान् रायठ ५।१४ 2 बाधा, बिन्, विरोध 3 कामदेव, प्रभातक 4 बुद्धि कटोरे, कटोरापारोपि पादोपकम् - सी० १ (वही 'मार्क' का मूल्य वर्ष 'हुवा' है) —बायु० १।१ 4 प्रेम, कचवीर्य ५ वृष्ट ६ बायिक, (मोर्न के अनु-सार) विनायक । वयु०—कम् (वि०) वैयर्थिहृत्

प्रेम के संकेत करने वाला — बायाहु रतिकेभिन्क-रमारणे—गीत० १२, बायिन् (पु० ?) बुड का विशेषण, —अरिः रिपु शिव, बायक (वि०) हुवा—कच मारकाल के स्वयि विधात कर्तव्य

हि० १, —बिन् (पु०) 1 शिव का विशेषण 2 बुड का विशेषण ।

मारकः [नु + मिन् + कम्] 1 कोई वातक रोग, महामारी, 2 कामदेव 3 हुवा करने वाला, विनायकता 4 बाय ।

मारकत (वि०) (स्त्री०-सी) [मरकत + कम्] पत्ते में संबद्ध, —काय काम्यनसत्तर्नाद्धते मारकती वृत्तिम् —वि० प्र० ४१ ।

मारकम् [नु + मिन् + कम्] 1 हुवा, कच कतक, विनाय —पञ्चमारकमहायन ४० १।१ 2 बायु का विनाश करने के लिए किया गया बाहुटोना 3 पूरणा, राय कर देना 4 एक प्रकार का विष ।

मारिः (स्त्री०) [नु + मिन् + इन्] 1 वातकरोध, महा मारी 2 हुवा, बबायी, विनाश ।

मारिच (वि०) (स्त्री० जी) [मरिच + कम्] मिर्च का बना हुआ ।

मारिचः [मा रिष्मति विनस्ति मा + रिन् + क] किसी मुख्य पात्र को सूत्रधार द्वारा नाटक में संबोधित करने के लिए सम्मानयुक्त रीति आरम्भ, अध्येय —दे० उत्तर० १, मा० १ ।

मारी [मारि + जीव] 1 रोग, वातक रोग, सफाया रोग 2 वातक वा मारक रोगों की अधिकता से रचना हुआ ।

मारीक (पु०) 1 ताड़का और सुन्प राखन की समान मारीक माय का राखन । यह स्वर्णमय का रूप धारण करके राय की सीमा में दूर भगा न गया जिससे कि राखन की सीमा का अग्रहण करने का अवसर मिल गया 2 एक विधात या राखणीर हाथी 3 प्रकार का रोगा कच मिर्च की आदिमा का मन्त्र ।

मायक (पु०) 1 मय का अर्थ 2 माय 3 रस भाग मयक ।

माय (वि०) (स्त्री०-सी) [मयन् + कम्] 1 मयन् संबंधी या मयन् से उत्पन्न होने वाला 2 बायु से संबंध रखने वाला, बायवी, हुवा, —कः 1 हुवा-रपु० २।१२, १४, ४।४४, मयु० ४।१३ 2 बायु का देवता, पवन की अधिकता से देवता 3 ब्यास केना 4 प्राय, सरीर के तीन मूल रवों (कत, पित, क) में से एक ५ हाथी की बुद्धि, —सम्प्राप्ति नाम का मय । वयु०—कम् काय—कम् कम्—कम्, —कम् 1 कृत्वा के विशेषण 2 जीव के विशेषण ।

वाक्यः [नकोऽन्यत्—इत्] 1 अनुमान का विशेषण
—रूप० १२१० 2 जीव का विशेषण ।

वाक्यः, मार्गशब्दः [मार्गशब्दः अन्वयम्—अन्, मूलम् + अन्]
एक प्राचीन शब्द का नाम । सम०—पुराणम्
(इस शब्द द्वारा प्रणीत) एक पुराण ।

मार्गः । (स्वा० पर०, पुरा० उभ० मार्गति, मार्ग-
यति-ते) 1 शोधना, बुझना 2 तलाश करना, पीछे
पड़ना 3 प्राप्त करने का प्रयत्न करना, कोशिश करने
रहना—आत्मोत्कर्ष न मार्गत् परेषा परिनिम्बया, स्वगु-
णैरेव मार्गत् विप्रकर्षं पृथग्बलात्—मुद्रा० 4 निवेदन
करना, प्रार्थना करना, वाचना करना—अरं बरेव्यो
नृपतेरमार्गति भट्टि० ११२२, याज्ञ० २१६६,
5 विवाह के लिए मांगना ।

ii (पुरा० उभ० मार्गयति—ते) 1 जाना, हिलना-
बुलना 2 छानना, बर्णकृत करना । परि०, शोधना,
बुझना ।

मार्गः । मार्ग + अन् । 1 रास्ता, सड़क, पथ (आत्म०
की) - अग्निहरणमार्गमादेशय—अ० ५, इसी प्रकार
—विचारमार्गप्रतिष्ठेन केतवा—मु० ५१४२, रघु० २१७२
2 कम, रास्ता, मूलब (जो पार कर लिया गया
हो)—वायोरेव परित्यक्त्य ब्रह्मति मार्गम्—अ०
७७ 3 पर्वण, पराज—कि० १८१४ 4 किंच,
अपविष्ट—रघु० ५१४८ १५१४ 5 बहुपथ 6 जीव,
पूछताछ, गवेषणा 7 गहर बुझना, जलमार्ग 8 साधन,
रीति 9 सही मार्ग उचित पथ मुमार्ग, अमार्ग
10 पक्षी, रीति, प्रणाली, कम, चलन—वाति०—रघु०
७७३१, इसी प्रकार कुल० शास्त्र० धर्म० आदि
11 शैली, वाक्यविन्यास—इति वेदमार्गस्य प्राप्ता इति
गुणा स्मृता—काव्या० ११४१, वाचा विचित्रमार्ग-
नाम्—११२ 12 गुहा, मल्लहार 13 कस्तुरी 14 'मृग-
शिरस्' नाम का मूल 15 मार्गशीर्ष का महीना।
सम०—तीरतन्त्र सड़क पर बनाया गया उत्सवसूचक
महाराष्ट्रार द्वार—रघु० १११५, बर्षकः पथप्रदर्शक,
—वेनु, अनुगन्तु पार कोस की दूरी, अन्वयन्
रोक, बाध,—रक्तः सड़क का रक्तबाला, सड़क पर
पहरा देने वाला,—श्लोकः दुसरे के लिए मार्ग
प्रशस्त करने वाला, स्व (वि०) यात्रा करने वाला,
बढोही,—हर्षवत् राक्षस पर बना हुआ महल ।

मार्गः [मार्ग + अन्] मार्गशीर्ष का महीना ।

मार्गवचनम्,—का [मार्ग + वचन] 1 याचना करना, प्रार्थना
करना, निवेदन करना 2 शोधना, तलाश करना,
बुझना 3 गवेषणा करना, पूछताछ करना, जाचपड़ताल
करना,—अ० 1 भिक्षुक, अनुगम चिन्तय करने वाला,
साध 2 बाध, गुहात् रम्यमार्गवचन काव्य० १०,
अर्थेय सत्ताद्वयमार्गवचनवचन पीठरीय वेदकम्पकम्

—मि० ११४१, विष्णु १७७, रघु० ११७, १५
3 'पथ' की सत्ता ।

मार्गशिरः मार्गशिरस्, (पु०) मार्गशीर्षः [मृगशिरा + अन्,
मृगशीर्ष + अन्] (नवंबर और दिसंबर में पड़ने वाला)
हिन्दुओं का नवा महीना जिसमें कि पूर्वपक्षमा मृग-
शिरस् मूल में विद्यमान है ।

मार्गशीरी, मार्गशीर्षी [मार्गशिर + शीर्ष, मार्गशीर्ष + शीर्ष]
मार्गशीर्ष के महीने में जाने वाली पूर्वमासी का दिन ।

मार्गिकः [मृगान् हुम्नि—मृग + हुम्] 1 मार्ग 2 शिकारी ।

मार्गित (मृ० क० हु०) [मार्ग + क्त] 1 शोधना हुआ,
बुझा हुआ, पूछताछ किया हुआ, 2 जिसके पीछे २
फिरा गया हो, बर्णकृत, निवेदिन ।

मार्ग्य (पुरा० उभ० मार्गयति—ते) 1 निर्मल करना,
स्वच्छ करना, पोंछना—मु० मृ० २ ध्वनि करना ।

मार्ग्यः [मृ० (मार्ग्य + अन्) + अन्] 1 स्वच्छ करना, निर्मल
करना मोटा 2 बोरी 3 विष्णु का विशेषण ।

मार्ग्यक (वि०) (स्त्री लिकार) [मृ० + क्त] स्वच्छ
करने वाला, निर्मल करने वाला, बर्णकृत ।

मार्ग्यन (वि०) (स्त्री—ली) स्वच्छ करने वाला, निर्मल
करने वाला,—अन् 1 स्वच्छ करना, साफ करना,
निर्मल करना 2 पोंछ देना, रबड़ कर मिटा देना
3 साफ कर देना, पोंछ डालना 4 उड़ते में मल बल
कर शरीर स्वच्छ करना 5 हाथ से या कुत्ता के शरीर
पर मल के छीने डालना, मः शोधनम्,—अन्
1 स्वच्छ करना, निर्मल करना, साफ करना 2 डोके
की भाषा—मावूरी कश्चित् मार्गना बनावि—आत्मि०
११८८,—मी बुहारी, लबी झाड वा बुल ।

मार्जारः (मः) बिलाब कपाले मार्जारः एव इति
कर्णलेखि सन्निध काव्य० १० 2 मंथमार्जार ।
सम०—कच्छः मोर, करणम् एक प्रकार का मैवुन वा
रतिवन्ध ।

मार्जारकः 1 बिलाब 2 मोर ।

मार्जारी 1 बिल्ली 2 मूढक बिलाब जोतु 3 कस्तुरी ।

मार्जारीयः 1 बिलाब 2 शूद्र ।

मार्गितम्—(मृ० क० हु०) 1 स्वच्छ किया हुआ, मल-मल
कर मोजा हुआ, निर्मल किया हुआ 2 बुहारा हुआ,
साध या बुध से साफ किया हुआ 3 अर्णकृत किया
गया ।

मार्गिका दही में जीने और ममाले डाल कर बनाया गया
स्वादु पदार्थ मीलव ।

मार्गच्छः 1 सुयं अय मार्गच्छ किं तत्तु तुरी सप्तभि-
नि काव्य० १०, उत्तर० ६१३ 2 मदार का
पौधा 3 सूत्र 4 बारह की सत्ता ('मार्गच्छ' मी) ।

मार्गिक (वि०) (स्त्री—की) मिट्टी का बना हुआ,
मिट्टी का, अ० 1 एक प्रकार का पहा 2 धडे का

हकूम, वाली, कम् बिट्टी का लीवा गुम्फये हरि-
पाखी मातिकसकलैनिहनुकाम भाम् - भामि०
२।४९।

मालवम् मरमलीला ।

मालविक-डोलकिया, मृदग बजाने वाला, -मन् नयर, कम्बा ।

मालविक-मृदग बजाने वाला, डोलकिया ।

मालवम् मुकुता (शा० नीर आल०) लकीलापन, दुर्ब-
लता अभितप्तमयोऽपि मार्देव मज्जे कैव कथा करी

रिख रम् ० ८।४३, मुकु हा जाता है, स्वगरीर-

मालवम् कु० ५।१८ २ नरमी, कृपा, कोमलता,

उदारता सम० १६।२ ।

मालीक (वि०) (स्त्री० की) अगूरो से बनाया हुआ,
-कम् बराब -जि० ८।३० ।

मालिक (वि०)-गहरी अनर्दष्टि रखने वाला, तत्त्व
विश्लेषादिक से पूर्ण परिचित, (मर्मज्ञ दे०)-मालिक
को मरदानामस्तरेण मनुकतम् भामि० १।११७,
१।८, ४।४० ।

माल-दे० 'मारिब' ।

मालिः (स्त्री०) स्वच्छ करना, मलमलकर माजना,
निर्मल करना ।

मालः १ बंगाल के पविचम या दक्षिण-पश्चिम में एक
जिले का नाम २ एक बर्रर जाति का नाम, पहाड़ी
३ बिष्णु का नाम, -कम् १ घवान २ जैनी भूमि
उठी हुई या उन्नत की हुई भूमि (मालमुन्तभूत-
कम्) दीपभावरु मालम्-वेच० १५ (दीपभावरुमुन्-
तवकम्-मलि०) ३ घोडा, जालसायी । सम०
-कम्कम् कुल्ले का जोड़ ।

मालकः १ नीम का पेड़ २ दाँव के पात का जल
३ नारियल के कोर से बना पात्र, - कम् माला ।

मालकीः, ली (स्त्री०) (धुपधित स्पेट फूलों से युक्त)
एक प्रकार की बनेली-तन्मन्वे स्वचिह्न मृज्जतबने-
नास्वादिता मालकी-मन्०, जालकमालीनीम्-वेच०
१८ २. मालकी का कुल खिरसि बहुलमाला माक-
लीभि समेता-खटु० २।२४ ३ कली, सामान्य कुल
४ कम्बा, लक्ष्मी ५ रात ६ चांदनी । सम०-झारकः
मुद्रापात्र, पवित्र वायुफल का छिन्का, -कम् वाय-
कम्, -माला मालकी या बनेली के फूलों की माला ।

माल्य (वि०) (स्त्री० की) मलय पर्वत से आने
वाला, -कः मलय की ककड़ी ।

माल्यः १ एक देश का नाम, मलयभारत में कईमान
माक्या २ राय का नाम, या स्वराम की रीति,
-मः (दे० व०) मालया प्रदेश के अधिपति ।

मय०-मलीका-कम्बा, -मृषीः मालका का राजा ।

माल्यकः - १ माल्य दासियों का देश २ मालका का
निवासी ।

मालली एक पीवे का नाम ।

माला १ हार, लज्ज, गजरा अनभिगतपरिमलाऽपि हि

हरति दृश मालतीमाला वास० २ देखा, पवित्र,

सिलसिला, सेवी या तांता गुणोद्दीनीनामिमाला

मा० १।१, आबद्धमालाः वेच० ९ ३ समूह,

समुद्र, समुच्चय ४ लड़ी, कम्हार जैसा कि 'रत्न

माला' में ५ अपमाला, जजीर -जैसा कि 'अक्षमाला'

में ६ लकीर, लहर, कीच जैसा कि 'तन्निमाला' की

'विष्णुमाला' में ७ विशेषणों का सिलसिला

८ (माटक में) अपने मनोरथ की सिद्धि के लिए नाना

वस्तुओं का उपहार । सम० उपमा उपमा का एक

भेद जिसमें एक उपमेय की अनेक उपमानों से तुलना

की जाती है उदा० जनयेनच राज्यश्रीर्नयेनच मन

रिबता मल्ली साध विवादेन पथिनीच हिमाम्भमा

काव्य० १०, करः, कार १ हार बनाने वाला

फूल-विज्ञेता माली कृती मालाकारा बहुलमपि

कुचापि निवसे भामि० १।५४, पञ्च० १।२०० २

मालियों की एक जाति, -मूल्य एक प्रकार का मुद्राधित

पात, दीपकम् दीपक अलंकार का एक भेद, मन्मट

ने इसकी परिभाषा बताई है मालादीपकमाद्य वेच-

नोत्तरगुणावहम् काव्य० १० उदा० जैसी उसी स्थान

पर ।

मालिक १ फूलों का व्यापारी, माली २ रगने वाला
रमरोज ।

मालिका १ माला २ पवित्र, देखा, सिलसिला ३ लड़ी

कम्हार ४ बनेली का एक प्रकार ५ अनमी

६ बेटी ७ महल ८ एक प्रकार का पक्षी ९ मादक

पेय ।

मालिन् (वि०) १ माला पहनने वाला २ (नगर से

जन्म में) मालाओं से सम्मानित, हारो से मुहोर्धित

गजरो से लपेटा हुआ समूहमालिनी पृथ्वी, मंशु

मालिन्, मरीचिमालिन्, ऊर्ध्वमालिन् आदि, नप०

फूलमाली, हार बनाने वाला, नी १ फूलमालिन्,

हार बनाने वाले की पत्नी २ चम्पा नगरी का नाम

३ सात वर्ष की कम्पा जो दुर्गा पूजा के उत्सव पर दुर्गा

का प्रतिनिधित्व करे ४ दुर्गा का नाम ५ स्वर्गा

६ एक छह का नाम दे० परिशिष्ट १ ।

मालिन्कम् १ मालावन, मरणी, अपवित्रता २ मलिनता

दूषण ३ पापपूर्वता ४ कालिमा ५ कष्ट, दुःख ।

मालुः (स्त्री०) १ एक प्रकार की लता २ एक स्त्री ।

मालु०-मालुः एक प्रकार का लीप ।

मालुटः १ लेक का वृक्ष २ ऊँच का वृक्ष ।

मालेया बड़ी हलाक्यी ।

माल्य (वि०) हार के उपयुक्त या हार से संबद्ध, मन्म

१. हार, गजरा - मालयेन तां निर्वचनं बधान कु०

७१९, कि० ११२१ २ कुल—अ० ११११, यन्० ४७२ ३ सुमिरनी या मिराताम्। मम० आश्वः कुली की मही, - वीरकः कुलमासी, मालाकार, - कुलः पटहन, - वृत्तिः कुलो का व्यापारी।

मालवकम् (वि०) माला बारण किए हुए, हारों से सुशोभित (पु०) १ एक पर्वत या पर्वतशृङ्खला का नाम—उत्तर० ११३३, यन्० ११३२६ २ कुलेय का पुत्र एक राजसूय (मात्यवान्) राजसूय का मामा और मंत्री था, उसकी बहुत सी योजनाओं में वह सहायता देता था, अपने पूर्वकाल में बोर तपस्या द्वारा उसने ब्रह्मा को प्रसन्न किया। इसके फलस्वरूप उसके लकादीप की सृष्टि की गई। कुछ वर्षों वह अपने भाइयों समेत वहाँ रहा, परन्तु बाद में उसने लका को छोड़ दिया। कुबेर ने फिर लका पर अपना अधिकार कर लिया। उसके पश्चात् फिर जब राजसूय ने कुबेर को निर्वाचित कर दिया तो मात्यवान् फिर अपने बन्धु बांधवों समेत वहाँ आ गया और वरमा राजसूय के साथ रहा।

मालकः एक प्रकार की वर्षाकर जति।

मालवकी कुली या मूलकेवासी की प्रतिबोधिता।

मायः १ उदर (एक बचन पोषे के अर्थ में तथा ब० व० कल या बीज के अर्थ में) निलम्ब प्रत्यिच्छति माया० सिद्धा० २ माने की एक विशेष लील, माया—माया विद्यतिमो भाग पञ्चम्य परिकीर्तित—वा—गुञ्जाभिरंशमर्षा ३ मूल बहसू। मम० अ०, माय कलुषा—आत्मन्य धी के साथ पकाय हुए उदर, मायः घोडा, ऊन (वि०) एक माशा कर्म—बर्षकः सुनार।

माधिक (वि०) (स्त्री०—की) एक माघे के मूल्य का।

माघीयम्, माघ्यम् उहदो का जेत।

माल् (पु०)—मास दे० (पहले पांच बचनों में इस शब्द का कोई कर्म नहीं होता, हि० वि० के हि० ब० के पश्चात् विकल्प से मास के स्थान में माल् आदेश हो जाता है)।

मासः, तम्—महीना (यह चाँद, सौर, सावन, नाक्षत्र या ग्रहस्थिति में से कोई भी हो सकता है)—न माने प्रति-पक्षों या केमरालि वैधिलि—मटि० ८१५, २ 'वारह' की लक्षा। अ० अनुमासिक (वि०) प्रतिमास होने वाला, अ० अमावस्या का दिन, —अमावस्य (वि०) मास में केवल एक बार जाने वाला, —उपमासिनी १ पूरा महीना भर उपवास रखनेवाली स्त्री २ कुटुम्बी, कम्पट या दुश्चरित्र स्त्री (अव्योक्ति—पूर्वक), कालिक (वि०) मासिक, मास (वि०) एक मास का, जिसकी उत्पत्ति हुए एक महीना हो चुका है, अः एक प्रकार का बलकुलुट, —देव (वि०) जिसे महीने भर में चुकाना हो, —अजितः

अमावस्या या प्रतिपदा का चंद्रमा, —अश्वेकः महीने का आरम्भ, —अश्वः वर्ष।

मासकः महीना।

मास्यः उबले हुए बाबलों की पीच, माँड।

मासकः वर्ष।

मासिक (वि०) (स्त्री०—की) १ महीने में सबब रखने वाला २ प्रतिमास होने वाला ३ एक महीने तक रहने वाला ४ एक महीने में चुकाया जाने वाला ५ एक महीने के लिए नियुक्त, —अ० अर्थक मूल्यविविध को किया जाने वाला शब्द (अनुष्य के घरने के प्रथम वर्ष में)—पितृणां मासिक आढम्बाहार्य विदुर्दुषा।

मासीन (वि०) १ एक मास की आय का २ मासिक।

मासुरी दाड़ी।

माह्, (अ०) उप० माहर्त ने) मापना।

माहाकुल (वि०) (स्त्री०—की) माहाकुलीन (वि०) (स्त्री०—की) १ सत्कुलपुत्र, उत्तम कुल का नामी बराने या प्रख्यात कुल का।

माहात्म्यिक (वि० स्त्री०—की), माहात्मनी (वि०) (स्त्री०—की) १ खोदागरी के लिए उपयुक्त २ महाजनोचित, बड़े आदमी के योग्य।

माहात्मिक (वि०) (स्त्री०—की) उन्नत-मना, उदाराशय, उत्तम, महानुभाव यत्नशील।

माहात्म्यम् १ उदाराशयता, महानुभावता २ ऐश्वर्य, महिमा, उत्कृष्ट पद ३ किसी इष्ट देव वा हिन्दु विभूति के मूल, या ऐसी कृति जिसने इस प्रकार के देवी देवताओं के गुणों का उद्घोष दिया गया हो—वैसा कि देवीमाहात्म्य, अग्निमाहात्म्य आदि।

माहाराजिक (वि०) (स्त्री०—की) सम्राट के उपयुक्त, साम्राज्यसंबंधी, राजकीय या राजोचित।

माहाराज्यम् प्रभुता।

माहाराष्ट्री दे० महाराष्ट्री।

माहिरः इन्द्र का विशेषण।

माहिष (वि०) (स्त्री—की) भैरव या जैसे से उत्पन्न वा प्राप्त, जैसा कि माहिष दहि।

माहिषिकः १ भैरव रखने वाला, ग्वाला २ अस्त्री या अग्निधारिणी स्त्री का आर—माहिषीयुक्ते नारी वा यस्याय अग्निधारिणी, ता युष्ठा कामयति व. अ. वै माहिषिक स्मृत—कालिका पुराण ३ जो अपनी पत्नी के, श्वाशुरी पर निर्वाह करता है—अहिषीयुक्ते नारी शोचनोपासित वनम्, उपजीवति वस्तुस्थाः त वै माहिषिक स्मृत—वि० पु० पर बीबर०।

माहिष्यती एक नगर का नाम, हेतुव राजाओं की कुल-क्यामत राजधानी यन्० १५११।

माहिष्यः अश्वि पिता और ईश्वर माता से उत्पन्न एक भिन्न वा वर्षाकर जति।

—अभिषेकः कृता वा विराधार आरोप, —अभिषेकसम्पन्न
कृता भाषे, मिथ्या दोषारोपण, —अभिषासः १. झूठी
मिथ्यावाणी २. कृता वा अन्वय्य दाषा, —आधारः
मूलतः वा अनुचित आधारण, —आहारः मूलतः भोजन,
—उत्तरम् कृता वा नोलभ्योक्त जवाब, —उपचारः
बनामटी कृता वा सेवा, —कर्मन् (तृ०) कृता कार्ये,
—कोषः, —कोषः कृत् कृत् का पूसा, —कृष्यः मिथ्या
पूष्य, बहूः, बहुकम् समयने में भूल होना, मूलतः
समझना, —कृष्यं पाकड, ज्ञानम् असुद्धि, तृटि
मूलनफहमी, बर्तनम् पाकडधर्म, नास्तिकता, —कृष्यः
(स्त्री०) मनविशेष, नास्तिकता के सिद्धांतों को
मानना, पुष्पः ४ ॥ १३५, —प्रतिष्ठ (वि०) झूठी
प्रतिष्ठा करने वाला, दयाबाज, —कर्मन् कार्यात्मिक
कार्य, —अतिः भय, असुद्धि, तृटि, कर्मन्—वाक्यम्
मिथ्यातव, झूठ, झाली कृता विवरण, कर्तव्यम् (पु०)
कृता गवाह ।

मिथ् (भा० भा०, दिवा० बुरा० उभ० येदते, येदति-ते,
येदयति ते) १ भिकना या झिगप होना २ पिच
लना ३ घाटा होना ४ प्रम करना म्नेह करना ।

॥ (भा० उभ० मदति ते) दे० मिथ् ।

मिद्धम् १ मन्दा, निटल्लापन, मुन्लो २ अहता, निहाल्लुना
मन्दता (उमाह की धो) ।

मिन्धु (भा० बुरा० पर० मिन्दति, मिन्दयति) द०
मिद् ॥ ।

मिन्धु (भा० पर० मिन्धति) १ छिडकना, तर करना
२ मन्मान करना, पूसा करना ।

मिन्धु (तुदा० उभ० मिलति ते, सामान्यत मिलति
मिन्धति) १ सम्मिलित होना मिलना साथ होना
—इयच्छते मिलति एतन् ६ २. जाना या परस्पर
मिलना, सम्मिलित होना, इकट्ठे होना, एकत्र होना
ये वाक्ये सुहृद् समुद्रिममये दृष्टान्तिलिङ्गकु
लास्ते सर्वत्र मिलन्ति हि० १।२।१०, याता कि न
मिलन्ति प्रथम १०, मिन्धतिमिलोम्य गी०
१, स पाके ममिनाज्यय भोजनमिन्धति न य
—मिन्धति ३ मिश्रित होना, मिलना, मयक में जाना
—मिलति तच्च तीर्थमंगद—याना० ७ मिलना,
मुकाबला करना (युद्धादि में) सधन होना, मटना,
५ घटित होना होना ६ मिलना, साथ आ पड़ना
धेर० येदयति—ते, एकत्र जाना, इकट्ठे होना, सम्मिलन
हुवाना ।

मिन्धु १. सम्मिलित होना, मिलना, एक स्थान पर
एकत्र होना २ मुकाबला करना ३ मयक में मिश्रित
होना, मयक में जाना व्यालनिलयविलनेन गरलाधिव
कसयति कसवसवीरम् मीत० ४ ।

मिन्धु (भू० क० क०) १ एक स्थान पर जाना हुआ,
१०१

एकत्र हुआ, मुकाबला किया गया, मिश्रित २ मिला
हुआ, मुठभेड़ हुई ३ मिश्रित ४ एक स्थान पर रहने
हुए, सबको बहुत किया हुआ ।

मिन्धुः मनुष्यकी, बीरा—परिजनमकरन्मामिकास्ते
भवति मन्नु चिरायुषो मिन्धिता भाषि० १।१, १५।

मिन्धुः एक प्रकार का छीप ।

मिन्धु (भा० पर० येदति) १. छोर करना, कोलाहल
करना २. कुञ्ज होना ।

मिन्धु (परा० उभ० मिन्धयति ते 'मिन्ध' की ना०
बा०) मिलना, गड्ढमड्ड करना, जोड़ना, घोलना,
मयक मारना बढ़ाना साथ न मिश्रयति यद्यपि ये
बर्षाभि—ग० १।३१, न मिश्रयति लोचने भाषि०
२।१६० ।

मिन्धु (वि०) १ मिला हुआ, घोला हुआ, गड्ढमड्ड किया
हुआ मिलाया हुआ गद्य पद्य मिश्र च तन् विधेय
व्यवस्थितम्—काव्या० १।११ ३१ ३२, रघु० १६।
३२ २ साथ गया हुआ, सम्बन्ध ३ बहुविध, नाना
प्रकार का ४ उलझा हुआ, अस्तर्बलित ५. (समास
के अन्त में) मिश्रणसमेत, अधिकारण युक्त, छः
१ आदरणीय या योग्य व्यक्ति यह शब्द प्रायः बड़े बड़े
पुरुषा बीरा विद्वानों के नामों से पूर्व लगाया जाता है
आर्यमिथा प्रमाणम् बालवि० १ वशिष्ठमिथं,
मदनमिथं आदि २ एक प्रकार का हाथी, कम्
१ मिश्रण २ एक प्रकार की वृत्ती, सलज्ज ३ लवः
जः लम्बर—अर्थ (१७०) मिश्रित रस का
(अर्थ) एक प्रकार की काली अमर की लकड़ी,
—अर्थः लम्बर ।

मिन्धु (वि०) १ मिश्रित गड्ढमड्ड किया हुआ २ फुटकर,
क मयाजक ३ व्यापारिक वस्तुओं में मिलावट
करने वाला, कम् लारी बिट्टी में पैदा किया गया
नमक ।

मिन्धु (मिन्धना, घोलना, मयक करना) ।

मिन्धु (भू० क० क०) १ मिला हुआ धुला हुआ,
मयक २ बढ़ाया हुआ ३ आदरणीय ।

मिन्धु (तुदा० पर० मिन्धति) १ जाल खोलना, सपकना
२ देखना, विवशनापूर्वक देखना जातबेदो मुका-
बला मिन्धनामाच्छिन्नामि न—कु० २।४६ ३ प्रति-
हिता करना, होड़ देना, प्रतिस्पर्धा करना, उब्-
१ जाले खोलना—उन्मिच्छामिन्धयति—अर्थ० ५।१,
२ (जालों की तरह) खोलना—कु० ४।२ ३ सपकना,
मिन्धना, फुटित होना ४ उदय होना ५ लचकना
जगधमना, पि जाले मटना—अर्थ० ५ ।
॥ (भा० पर० येदति) आई करना, तर करना,
छिडकना ।

मिन्धुः प्रतिस्पर्धा, प्रतिहिता, —कम् बढ़ाना छपवेष, घोलना,

दांकेपेन, जालसाजी, झूठा आभाम, बाकमेनयेकेन मिथेनानीय दण०, (उत्प्रेक्षा प्रकट करने के लिए वक्ष्या 'छत्र' की भांति प्रयुक्त होता है) — स रोम-कृषीपथिवाजजगन्कृता कृताश्च कि दूषणानुन्यबिन्दव-—ने० ११२१, इदने विनिवेक्षिता भूजङ्गी पिशुनाना रसनामिषेण धाना—भाषि० १११११।

मिष्ट (वि०) 1. मधुर 2. स्वादिष्ट पर्यहार - कि मिष्ट-मन्न सन्मूकगणानां, तु० ज्ञाई कास्ट पत्तं विफोर स्वादित' (Why our heads before the wine ?) अर्थात् बन्दर क्या जाने बदरक का स्वाद 3. तर किया हुआ, गोला किया हुआ - ष्टम् मिष्टान्न, मिठाई।

मिह् (म्भा० पर० मेह्रति, मीह) 1. मुञ्चोत्सर्ग करना 2. मीला करना, तर करना, छिड़कना 3. वीर्यपात करना।

मिहिका पाला. हिम।

मिहिरः 1. मूयं मयि तावन्मिहिरोऽपि निदोऽयत-भाषि० २१३४, यति मय्यचिराद्विदाधामिहिरज्ज्वालासते सुध-ताम्—१११६, ने० २१३६, ११५४ 2. बादल 3. चन्द्रमा 4. हवा, वायु 5. बड़ा आदमी।

मिहिरासः शिव का विशेषण।

मी० (कषा० उभ० मीनाति मीनीने, श्रेय साहित्य नें विरल प्रयोग) 1. मार डालना बिनाश करना, बोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना 2. बटना, कम करना 3. बदलना, परिवर्तित करना 4. अतिक्रमण करना, उत्पन्न करना ॥ (इहा० पर० चुरा० उभ० मयति, मययति -ने) 1. जाना, हिलना जलना 2. जानना, समझना (यतिमत्त्वोयं) ॥ (चुरा० आ० मीयते) सरना, नष्ट होना।

मीह (भू० क० कु०) 1. मुञ्चोत्सर्ग, वेगाव किया गया 2. (भूच को मयि) बहाया गया।

मीधुवन्, मीधुवन् (प०) शिव का विशेषण।

मीलः 1. मछली मुपमोन इव ह्र० - रघु० ११३, मीलो नृहन् क्लेशा मतिमयानु-भाषि० १११३ 2. बारहूकी आधा मील अर्थात् 3 बिण्ण का गहना अवनार ६० यन्त्राकार ॥ म० अण्डम् मछली का अण्डा, मछली के अण्डों का समूह - आवागतिम्, मयिन् (प०) 1. मछली 2. सारम्, आसन्नः समुद्र - केतवः कामदेव, कक्षा सरवस्ती का विशेषण - गन्धिका ओहृह, पञ्चम, -रङ्गः -रङ्गः राधिकाया बहरी (एक शिकारा पट्टी)।

मीलः मयम्बक नाम का समुद्री-दास्य।

मील १० पर० मीलोति 1. जाना, हिलना-जुलना 2. जाना।

मीमांसः 1. १-१००० तक हस्ता है १००० तक करता है,

अनुसंधानकर्ता, परीक्षक 2 मीमांसादर्शनशास्त्र का अनुयायी।

मीमांसन् अनुसंधान, परीक्षण, पृष्ठताछ।

मीमांसा यहन विचार, पृष्ठताछ, परीक्षण, अनुसंधान, रस-गङ्गाधरनाम्नी करोति कुतुकेन काव्यमीमांसाम् रम०, इसी प्रकार हलकं अलंकारं आदि 2. भारत के छः मुख्य दर्शनशास्त्रों में से एक। (मूल रूप से यह दो भागों में विभक्त है,—जैमिनि द्वारा प्रचलित पूर्व-मीमांसा और बादरायण के नाम से विख्यात उत्तर-मीमांसा या ब्रह्ममीमांसा। परन्तु इन दोनों दर्शनों में समानता की कोई बात नहीं है। पूर्वमीमांसा तो मुख्यतः वेद के कर्मकाण्डपरक मर्मों की सही व्याख्या तथा वेद के मलपाठ के सदिष्ट अर्थों का निर्णय करना है। उत्तर मीमांसा मुख्यतः ब्रह्म अर्थात् परमात्मा की स्थिति के विषय में विचार करता है। अतः पूर्वमीमांसा की केवल 'मीमांसा' के नाम से तथा उत्तरमीमांसा की 'वेदान्त' के नाम से पुकारते हैं। उत्तरमीमांसा में जैमिनी के दर्शनशास्त्र की उत्तरार्धता की कोई बात नहीं है, इसी लिए उसको अब एक पृथक् दर्शन माना जाता है), मीमांसाकुलमुग्रभाष सहसा हस्ती भूमि जैमिनिम्—पञ्च० २१३३।

मीरः 1. समुद्र 2. मोना, हृद।

मील (म्भा० पर० मीलति, मीलति) 1. अर्धं मूदना, पल्ल को बन्द करना, आश्रय साधना, लपकी पक्षे विर्यति मीलनि अणमपि शिव तदाकोकानां गीत० १० 2. मूदना (बीज वा फूलों का) मूदना वा बन्द होना नयनयुगधर्मिकत् मि० १११२, तस्या मीली-लनुनेष भट्टि० ११५४ 3. मूलीना, अन्तर्धान होना, नष्ट होना 4. मिलना, एकत्र होना - प्रेर० (मीलयति ने) बन्द करवाना, मूदवाना, (बीज वा फूल आदि का) बन्द करना - गोषाग्रमायाममय चतुरो लोचने मीलियया-मेघ० ११०, जा—, प्रेर० बन्द करना, नेत्रे बाधनीयन्—काव्या० २१११, उद्— 1. आलं मीलना—उदवीलीक्ष लोचनं भट्टि० १५१०२, १६१८ 2. जगाया जाना, उद्बुद्ध किया जाना मि० १०१०२ 3. फूलाना, फूल मारना कि० ४१३, मा० ११३८ 4. प्रसूत किया जाना, फैलाया जाना, मुच्छे बनना, मृष्ट हो जाना उपमिश्रमृषव - दीत० १ तम० ११२० 5. दिखाई देना, अकुर मूदना ॥ वायव्येनो जय तिमिरिते शैलोऽथ मूलीकति -प्रकाश० ११०, भाषि २१०६ (शैर०) मूलीना ललित-दुर्मूल्य वज्रगवत विक्रम० ११५, मूच्छ० ११३३ मि० १. अर्धं मूदना रघु० १२१५५ म० १५२ 2. मृष्ट के कारण आलं मूदना, सरना निमिमील मरलकायया हतचंद्रा तपसेव कीमुदी - रघु० ११६८

• (आंश वा फल आदि का) मृदना या बन्द होना
निर्मोक्षिनामिष पकजानाम् रघु० ७।६४ 5.
आमन होना, मण्ड होना, अन्न होना (आमं०) नरेवो
जीवलोकोऽप्य निमोक्षति निर्मोक्षतः हि० ३।१४५,
वर्तिनिर्मोक्षितमक्षया हरि० (वेग०) बन्द करना,
मृदना ऊष्माग्निनाऽपि दृष्टिनिर्मोक्षितेवाधकारेण
मृ० ३० १।३३, अग्निमोक्षदम्बजयम तजित्नी—वि० १।
११, लोकापय न्यमोक्षयत्—काव्या० २।०६१ कु०
३।२६ १।५७, रघु० ११।२८, लम्—बन्द होना,
मृना (वेग०) 1 बन्द करना या मृदना, उपात
विमोक्षितलोचना नप रघु० ३।२६, १३।२० 2
मजिद करना अथवा करना घुसला करना विकार
उत्पन्न अथवा क मथा उपपत्ति च उत्तर० १।३९।
नोत्तमम् 3 अग्नि का मृदना, मृपकना मृपका 4 2
आमना का मृदना 3 फल का बन्द होना।

मोक्षित (म० क० कु०) 1 बन्, मृदा हुआ 2 अन्ना
हृ० 3 अन्ना का विनाशित होना नष्ट हुआ, मोक्षित
लम् (अल० में) एक अन्ना का जिनके दाँव का
अन्तर या वेद उनकी प्राकृतिक या कृत्रिम समानता
+ कारण पूर्णरूप से अन्नाष्ट रहता है मध्यम इसकी
परिभाषा करना है मध्यम लक्षण वस्तु वस्तुनः परि-
गृह्या, निरन्तर हुआ यापि कर्मोक्तिमिति मन्त्रम्
काव्य० १०।

मोक्ष (परा० पर० मोक्षति) : जाना, हिलना, मृदना
धारा होना।

मोक्षः वेना का नायक, मेकाप्यक्ष।

मोक्षः मो० क० कु० 1 एतद्भूम, अचकीट, केवला 2 वायु।
मो० मु० क० कु० 1 शिव का विशेषण 2 वानर, वै०
3 मोक्ष 4 चित्ता।

मुक्तकः पात्र।

मुक्तः [मु० क० कु०] मुक्ति लक्षणा 'मुक्ति' भाषा
मुक्तम् [मु० क० कु०] 1 ताज, किरीट ताज
मुकुट मुकुटमनसोविभिरप्यशत रघु० २।१३
2 शिवा 3 शिखर, मोक्ष या मिरा।

मुकुटी [मुकुट + टोष्] अग्न्या बटकाना।

मुकुत्तः [मुकुत् + दाप् + कृषो० मु०] 1 विष्णु या
कुण का नाम 2 पात्र 3 मृत्पत्रात् पात्र या रत्न
4 कुंभर की नी निधियों में से एक 5 एक प्रकार
का ढोल

मुकुटः [मु० क० कु०] मुकुट देवता का शीसा—गणि-
नामपि निरूपयप्रतिपत्ति परत एव लभ्यते, स्वमहिम-
दशोपलब्धि—मुकुट त्रायते मन्त्रात्—आम० शि०
१।७७, न० २२।४३ 2 कली, दे० 'मुकुल' 3 कुम्हार
के चाक का डडा 4 मोक्षमित्री का पेड़।

मुकुलः—लम् [मु० क० कु०] 1 कली आभिर्भूत प्रथम-

मुकुला कल्पलीवधानुकच्छम्—वेध० २१, रघु० १।३१
१५।१९ 2 कली जलो कोई वस्तु—वाक्यदन्तमुकु-
लान् (तनयापि)—न० ७।१७ 3 करीर 4 आर्या
जीव (मुकुलीह, कली की माति मृदना—कु०
५।६३)।

मुकुलित (ब०) [मुकुल + इतच्] 1 कलियों में युक्त,
कलीदार, फूल 2 अथमृदा, आबाबंद दरमुकुलित
नयनमरोजम्—गीत० २, कु० ३।७६।

मुकुलः, मुकुलकः [मुकु + स्वा + क, मुकुल + कन्] एव
प्रकार का आभिया, रोज।

मुक्तः (म० क० कु०) [मु० क०] 1 ढीका किया
हुआ, शिथिलित, भंड या धोमा किया हुआ 2 स्वतंत्र
छोड़ा हुआ, आजाद किया हुआ, विश्राम दिया हुआ
3 परित्यक्त, छोड़ा हुआ त्यागा हुआ, एक ओर फेंका
हुआ, रत्नार दिया हुआ 4 फेंका हुआ, डाला हुआ,
कार्यमक्त किया हुआ, डकेला हुआ 5 मिरा हुआ
अवधारित 6 मलान, अवसन्न 7 निकास हुआ, उत्सर्ग
8 मोक्ष प्राप्त किया हुआ (दे० मु०),—कता ज
सार्वत्रिक मोक्ष के बन्धनों से मुक्ति या चका 9
जिसने सामाजिक आभिकियों को त्याग कर पूर्ण मोक्ष
प्राप्त कर लिया है, अपमुक्त लम्, मुक्ताभिर्गण
योगत युवताना च लोचया, मनी न भिद्यते यथ
म न मुक्ता ज्यया वपु—मुभा०। सम०—अन्तर-
विगडर सप्रदाय वा जन साधु,—अत्यन्त (वि०)
जिसने मोक्ष प्राप्त कर लिया है (पु०) 1 सामाजिक
बन्धनाजी और पापी से मुक्त आत्मा 2 वह आत्मा
जिसकी आत्मा अपमुक्त हो गई है,—आत्मन (वि०) 3 जने
आत्मन से उठा हुआ, कच्छः बौद्ध, कच्छुकः 4
साधु जिसने अपनी कोल्मी उतारा दी है, कच्छ (वि०)
दुराई मचाने वाला (अन्व० ठम्) एट्ट फूट क
उत्ते स्वर से, बोर से—रघु० १।४६८, कर, हस्त
वि०) उदार, लुटे राय वाला, दानी, चतुर् (पु०)
सिंह, बसम दे० मुक्तावर।

मुक्तकम् [मुक्त + कन्] 1 अन्त आध्यात्म 2 सरल मद्य
3 एक पृथक्कृत श्लोक जिसकी कर्ष स्वयं अपने में
पूर्ण हो दे० काव्या० १।१३ 4 मुक्तक श्लोक
एकैकशमस्कारकम सताम्।

मुक्ता [मुक्त + टाप्] 1 मोती—हारीज हरिणाक्षीया
पति स्तनपण्डले, मुक्तानामप्यः—वेध के वध रमर-
किपुरा, अमर १०० (यहा 'मुक्ताना' का कर्ष
'दोषमुक्त लत' भी है) मोती जनेक छोटी से उपलब्ध
बतकाये जाते हैं परन्तु विशेष कर समूही लीपी से
प्राप्त होते हैं, करीज मोमतराहस्यमस्तवादि
बुक्कबुक्कबेनुजानि, मुक्ताकलानि प्रवितानि लोके
तेषां तु बुक्कबुक्कबेध भूरि—मल्लि०) 2 बेचना,

गणिका । सम० - अवारः, अवारः मोती का घोषा, आवालि - ली (स्त्री०) कलसः मोतियों का हार मुक्ता मोतियों का हार, मोतियों की लड़ी देव० १६, रघु० १६।१८ कालम् मोतियों की लड़ी या करवनों, बालम् (नपु०) मोतियों की लड़ी, पुष्पः एक प्रकार की चमेली प्रभुः (स्त्री०) मोती की सुक्ति प्रालम्ब मोतियों की लड़ी, कलम् १ मोती कल ११६ रघु० १।२८ १६।६२ २ एक प्रकार का फूल ३ मोताफल या कुम्हड़ा ४ कपूर, बणि मानो बलु (स्त्री०) मोती का घोषा, लता, लम् हार मोतियों की माला, सुक्ति छोटे बहु बाँधा या मोती जिसमें से मोती निकलने हैं ।

मुक्ति (स्त्री०) [मुक् + क्त] १ छुटकारा, निम्नतर उन्मोचन २ स्वातन्त्र्य उद्धार ३ मोक्ष आनन्दजन के चक्र से आत्मा का मोचन ४ छोड़ना त्याग, परित्याग टालना समग्रमुक्ति लनेषु यत् ० २।६२ ५ कैलास विरा देना छोड़ देना मुक्त करना ६ आजाद करना सोलना ७ स्वयं मुक्त होना, स्वयं परिशोध करना । सम० क्षेत्रम् बाराणसी का विशेषण बार्ध मोक्ष का रास्ता, मुक्त लोभान ।

मुक्ता (अव्य०) [मुक् + क्त्वा] १ छोड़कर परिष्कार करके २ निवाह छोड़ कर बिना ।

मुष्क [सन् + अच्, हिन् धातो पूर्व मुद् ध] १ मूँह (आल० से भी) बाष्पधात्रय मुष्कमासीत् अच् - १०।१०।१२ सम्भ्रमज्ज मुष्कमिव - देव० २४ त्व मव मुष्क अच् विक्रम० १ वेदे मुष्काय या प्रति-निधिवृत्ता बलिये २ चहुरा मुष्कमय्यन् परिष्कारार्थं मुष्का भयाद्य दृष्टा - विक्रम० १।१७, नियमनाममुष्की वृत्तिकेष्वि ३० ७।२१, इसी प्रकार बन्धुकी मुष्कचन आदि ३ (किसी जानवर की) घृण वृथनी या मोहरी ४ अश्वाय, हराय, पुराभाय ५ किनाय, नोक, (बाण का) फल, प्रमुख दुर्गाग्निपात्रामुष्क मिलीमुख कु० ५।५४, रघु० ३।१७ ५० ६ (किसी उपकरण का) की चार या तीन नोक ७ चुचक स्तनाग्र - कु० १।४०, रघु० ३।८ ८ पक्षी की चोंच ९ दिक्ता, तरण जैसा कि दिक्कम्ब, अन्त्युष्क में १० विवर द्वार, मूँह नीबारा मुष्कमर्कोटमुष्क-अष्टासकपायव ३० १।१६, नदीमुत्तरेण समुद्र मासिजत् रघु० ३।२८, कु० १।८ ११ प्रवेश द्वार दरवाजा, गमन मार्ग १२ आरम्भ, शुरु, सञ्जीवनीहीनम् - कीमुनीमुखम् रघु० ३।१, विष्णुजीवरविहिमनिहृद-विमलम्बु वल्लव नयनम्बु - ९।२५, १।७६, षट् ० २ १३ प्रस्तावना १४ शुरु, प्रथम, प्रमुख (इस अर्थ में प्रयोग अनाल के अल में) अन्त्युष्कम्बु लल्ल वल्लुम्बुम्बुते कर्षणात्मा भावि० १।२१, इसी

प्रकार इन्धमुष्का देवा' आदि १५ सनह, ऊपरी पार्श्व १६ साधन १७ श्रोत, जन्मस्थान, उत्पत्ति १८ उष्णा रच जैसा कि 'मुष्कमुष्क' में १९ वेद, भूति २० (काव्य में) नाटक में अभिनयादि कर्म का मूलश्रोत एक सधि । सम० अग्निः १ दावानल २ आग के मुख वाला बेताल ३ अग्निमन्त्रित या यज्ञीय अग्नि ४ चिता में अग्न्याधान के अवसर पर आग के मुख पर रखी जाने वाली आग अग्निल, उष्णवास मास, अग्नि केकड़ा, आकार बेहुरा, मुष्कछवि द्यौः - आलम्ब अचराम् - आलम्ब, आलम्ब मुष्क मुष्क की लार इन्धु नन्दमा जैसा मुँह अग्नि कोल सुन्दर मुख, उत्का दाशाल कलम्बु बमल जैसा मुख बुरा दान गच्छक प्याज - अयल (वि०) बातूना बाबल अघेहिदा मूँह पर लगाई जाने वाली आग कीरि (स्त्री०) मिष्ट - अ बाष्पय आलम्ब मूँह की जड़ कण्ड मुखण प्याज मुखिका मुष्का निरीलक मुष्क आलसी मूँह की शीत ताकने वाला निवासिनी सरस्वती का विशेषण - षट् बृष्ट - कुम्भन काम क्षणमुष्कपटपीनमरावन्त्य मय ० ६२ पिष्क (माजिन का) प्रास पुरणम् १ मूँह की चरना २ एक कुत्ता पानी मुहना, प्रसन्न पसत्रचदन मुख की प्रसन्नमुद्रा शिव सतरा बच्चा भूमिका प्रस्तावना कलम्बम् १ भूमिका २ इन्कन आचरण मुखम् पान लगाना दे० काबूल, भेष बेहुरे का चिह्न हो जाना अच् (वि) मिष्टभावी, मधुराचर, बाजलम्बु मूँह वाला अक्षयम् लगाम की मुखरी या बन्ना राय बेहुरे का गग रघु० १।२।८ १७। ३१ काबूल मुख लेष १ (दालक के) उपरी भाग पर लट्कना २ कप प्रकृति बाने पुरुष की एक बीमारी बल्लभ अनार का पेड़ बाष्कम् १ मूँह से बजाया जान वाला बाजा फूल मार कर बजाया जाने वाला बाजा २ मूँह से बम बम्' शब्द करता बात, बालन ह्वास की मुगधित बनाने वाला एक गणद्वय, बिलम्बिका बकरी आलम्बम् मूँह काटना, बर्पाई लेना, लक्ष (वि०) दासी केने वाला अस्त्रोलभावी बदबवान, बुद्धि (स्त्री०) मूँह की चोना या निर्धन कहना, क्षेत्रः राहु का विशेषण - लोचन (वि०) १ मूँह की स्पष्ट करने वाला २ तीक्ष्ण तीक्षा (न) चरपराहट, तीक्ष्ण, (नम्) मूँह का ताक करना, शी (स्त्री) 'मुख का लोचन' मिय मुखमुद्रा, मुखम् उच्चारण की मुखिका, अन्त्या-यक मुख, बुरम् होठों की तरफ़ से ।

मुष्कम्बुः [मुक् + अच् + अच्, मु] विचारी, साधु । मुखर (वि) [मुक् मुष्कम्बुपाय कर्षन राति रा + क] । बामूनी, बाबाय, बाबन्ट - मुखरा

आलेशा गर्भदाती रत्न २, मुखरतावसरे द्वि विराजते
—कि० ५।१६ ३. कोलाहलमय, ललाटार लज्ज
करने वाला, टनटन बजने वाला, (गाथे की गाँठ)
समझने करने वाला—स्तम्भेरमा मुखरम्पुल्लकविजस्ती
रत्न० ५।७२, अन्तः कुम्भम्बरसकुनो यत्र रम्भो
बनात् उत्तर० २।२५, २०, बा० १।५, मुखरदधीरं
रयज यम्भीर रिपुभिर्ब केलिदु कोलम्—गीत० ५,
मुच्छ० १।३५ ३ ध्वननशील, अनुनादी, गुंजने वाला
(श्राप समाप्त के अन्त में)—स्वान्—स्वाने मुखरकुम्भो
शाककुनैर्निर्भरायाम उत्तर० २।१४, यम्बली मुखर-
शिलरे (लताकुंजे) गीत० २, रत्न० १३।४९
४ अभिष्यम्बक या मुम्बक ५ अक्षीसभाषी, गान्ती देने
वाला, बज्जवान ६ उपहास करने वाला, हँसी विलम्बी
करने वाला (मुखराष्ट्र राज्य करवाता, बुलवाना,
प्रतिध्वनित करवाता), रः १ कीटा २ नेता मुख्य
या प्रधान पुरुष यदि कार्यविपणि स्वाभ्युत्थरत्नव
हृष्यते द्वि० १।२९ ३ बल ।

मुखरवति (ना० वा० पर०) १. प्रतिध्वनित या कोला-
हलमय करना गुजाना २ गुम्बाना या बातें करवाना,
अत एव शुभ्रा मां मुखरवति—मुद्रा० ३३ अवि-
मुचिन करना, बोधना करना, अभिज्ञापन करना ।

मुखरिका मुखरी [मुखर + कन् टाप, इत्यम्, मुखर + क्रीड्]
लगाय की बत्ती, लगाय का दहना ।

मुखरित (वि०) [मुखर + इत्यम्] कोलाहलमय वा अनु-
नादित किया हुआ, बजना हुआ, कोलाहलपूर्ण—गच्छो-
द्दीनार्कमाला मुखरितकुम्भस्ताण्डवे बूलवाने
मा० १।१।

मुख्य (वि०) [मुख आदौ भव—यत्] १ मुख या चेहरे
से संबन्ध रखने वाला २ बड़ा, प्रधान, प्रमुख, प्रथम,
महँ प्रधान, उत्तम, द्विजातिमुख्य, वारमुख्या,
योगमुख्या आदि राज्य नेता, पञ्चप्रदक्षक ध्वज
१ प्रधान यज्ञह्वय या आधिक सत्कार २ वेदों का
पठनपाठन । सम० अर्थ. राज्य का मुख्य या मुख
(विप० नीज) आशय—आत्मः मुख्य चांद्र मास, मुखः
भूषितः प्रभुसमाश्रय राजा, सर्वोपरि प्रभु—अग्निम्
(पु०) प्रधान मन्त्री ।

मुमुक्षुः एक प्रकार का जल कुकट ।

मुम्ब (वि०) [मुम्ब, क्त] १ अजीर्ण, मूछित २ हस्त-
बुद्धि, प्रबोधमत्त ३ मूढ़, अज्ञानी, मूर्ख, जड़—भाषाकु-
केन मुम्बेन मुम्बापुरिणि भाषित—भाषि० २।२९
४ हारल, लीलावादा, भोला भाला—उत्तर० १।४६
५ मूख करने वाला गुम्ब में पड़ा हुआ ६ शरीरहित
संस्तता से मोहित करने वाला (अभी प्रेरक से
अपरिचित), बाधमुख्य, (क) अवभाषरत्नविभव
मुम्बायु तपस्विक्कम्बायु श० १।२५, रत्न० १।३४,

(अतः) मुम्बर, शिव, मनीहर, काँत—हरिहरिह मुम्ब-
वभुनिकरे विलासिनि विर्कास्य केविलरे गीत० १,
उत्तर० ३।५,—म्बा कुमारी मुख्य मोक्षपत्र से आकर्षक
किचोरी, मुम्बर तन्मी, (काव्यकृतियों में यह एक
मायिका का नेत्र माना जाता है) । सम०—अक्षी
मुम्बर बाँझों वाली बुकती बियाली मुम्बाख्या स
लम् रिपुबातावधिरदूत उत्तर० ३।४४, आत्मना
मुम्बर मुख वाली, बी, बुद्धि, बलि (वि०)
मूर्ख, मूढ़, जड़, भोला-भाला, भावः लावणी,
भोलापन ।

मुम् । (भा० वा० नोचते) बोझ देना, उठाना, दे०
मुख्य ।

१। (मुद्रा० उच०—मुख्यनि—ने, मुक्त) निश्चित करना,
मुक्त करना, छोड़ना, जाने देना, डीमा होने देना,
स्वतन्त्र करना, छुटकारा करना (ध्वज आदि से)

मनाय बसोबनो वनमुचैर्मनोच—रत्न० २।१
३।२०, यत्न० ८।२०२, मोक्षने मुम्बदीना वैचीवीचं-
विचिर्गिणि—कु० २।६१, रत्न० १०।४७, वा मवान-
ज्ज्ञानि मञ्चतु विच्छ० २, मबवान् करे आपके अम
स्मान न हो—होतासाह न होए २ आवाह करना,
डीमा छोड़ना (बाधी की गाँठ)—कथं मुम्बति बहिष.
समवन् मुख० ५।१४, अपनी बाधी वा कंठ को
डीमा देता है अर्थात् बोकारा करता है ३ छोड़ना,
परित्याग करना, उन्मुक्त करना, छोड़ देना, एक बीर
हाल देना, उत्सर्ग करना रात्रिर्गता प्रतिवता वर
मुख्य सव्याम्—रत्न० ५।९ मुनिमुता प्रभवस्मृति-
रोचिना अम च मुक्तमिदं तस्मा भवः श० ६।७,
मीम मुम्बति कि च कैरवकुले भाषि० १।४, भाषि-
भूति भाषिनि तमसा मुम्बात्नेव रात्रि—विक्क० १।८,
मेच० ९९, ४१, रत्न० ३।११ ४ अलग रखना, अप-

हरण करना, बलवाना, दे० मुक्ता ५ बालना, रेंकना,
उछाल देना, पटक देना, बोझ उतारना मुनेय
शराभमुखो रत्न० ९।५६, भट्टि० १।५३ ७ निष्का-
लता, गिराना, उछेलना, टपकना (अशु) हलकावा
—अपस्तपाय्यपुत्रा मुम्बस्त्यभुवीव लता—अ० ४।११,
विचिरहन् मुम्बतो बाणमुख्य मेच० १२, भट्टि०
७।२ ४ उच्चारण करना, बोलना मा० ९।५,
भट्टि० ७।५७ ७. प्रधान करना, अनुगमन देना, अर्पण
करना १०. पहुँचना (भा०) ११ उत्सर्ग करना
(बल०, का)—कर्मशा० (मुख्यते) डीमा किया जाना,
छुटकारा पाना, स्वतन्त्र होना, बोधमुक्त होना;—मुख्यते
हर्षपापेभ्यः प्रेर० (नोचवति—दे) १. स्वतन्त्र वा
मुक्त करना २. गिरवाना ३. डीमा छोड़ना, आवाह
करना, छुटकारा देना ४ उद्धार करना, मुक्तवाना
५. गुना हटाना, (बोरे आदि पर से) साव उतारना

6 प्रदान करना, अर्पण करना 7 प्रसन्न करना
आशुभित करना इच्छा ० 1 (मुमुक्षुनि) मुक्त या
स्वतंत्र करने की इच्छा करना 2 मुमुक्षुन-मोक्षित
मोक्ष प्राप्त करने की इच्छा करना । अब, उता
देना उठा देना आ, । पहनना, धारण करना
धारा बोग बाधना वा बलना सामुद्रचपीवाधरण
द्वितीयम् रघु० १११० १०८६, १०८७ कि०
११११, आमुद्रचपि रत्नप्रथम-भट्टि० १०१०
१ हालना, फेंकना हालना आशुभयन्त र्थाय कटा
लान-येथ० १५ उद्, । खालना रघु० ६१०
2 डोछा करना मुक्त करना, स्वतंत्र करना 3 उठा
रना, नीच ले जाना एक अंग करना, छोड़ना, परि
त्याग करना भट्टि० ३१२२ निम्, । स्वतंत्र करना
आजाद करना, मुक्त करना हिननिर्मुक्तयोर्थाय
चिन्ता चन्द्रमसोर्गि रघु० ११६६ भग० ७१२
2 छोड़ना, खाली कर देना, परित्याग करना
परि, । स्वतंत्र करना, मुक्त करा देना, मुक्त करना
-मेधाधराधरिमुक्तमहाकुवक्षः श्रुत० ३१७, वीर०
९ 2 छोड़ना, खाली कर देना, परित्याग करना
प्र, । स्वतंत्र करना, मुक्त करना, छुटकारा देना
2 फेंकना हालना उछालना 3 गिराना उन्मूलन
करना, बीज विखरना, प्रति, । स्वतंत्र करना
मुक्त करना, छुटकारा देना आजाद करना -मार्गिन-
प्रतिमुक्तस्य रघु० ८१३३ अमु मुरङ्ग प्रतिमोक्तुम्
हंसि ३४६ 2 धारण करना पहनना 3 खाली कर
देना छोड़ना, परित्याग करना 4 फेंकना हालना
हालना कि - 1 स्वतंत्र करना मुक्त करना 2 छाड़
देना, एक अंग हाल देना, परित्याग करना, खाली कर
देना -विषय्य बासाति मुक्तिं साधनम् श्रुत० ११
७ 3 जाने देना डील देना भट्टि० ७१५० 4 अल-
माना, अलग रखना कु० ३१३१ 5 गिराना
(भीषु) हलकाना धर्मश्रुणि विषय्य राधन
रघु० ८१२५ 6 फेंकना, हालना सन्, गिराना
आमुक्त करना ।

मुक्तः भावः ।

मुक्तु (क) कुम्भः 1 एक कुल का नाम 2 माघाता क पुत्र
एक प्राचीन राजा का नाम (देवापुर मयाग मे देव
ताजी की लड़ायता के बदले उसे बिना किसी शर्त के
लम्बी नींद का मुक्त प्राप्त कर का बरदान मिल-
या । दोनों का बाधक था कि जो कोई उसका नींद मे
विघ्न डालेगा मरम् हो जायगा । अब कुम्भ ने बल
कुम्भ कालवदन की सारना बाधा तो उसे मुक्तकुम्भ की
बुद्ध में बदल दिया । अर्थात् प्रविष्ट होने ही मुक्तकुम्भ
राजा की सेवागति से कालवदन मरम् हो गया ।
सम० प्रसन्नकः कुम्भ का विशेषण ।

मुक्तिर [मुक्तु - किरण] 1 देवता 2 गृह 3 भाग ।

मुक्तिनिष्ठः एक प्रकार का कूल, गिलगुली ।

मुक्तुही 1 अमुलिया बटकाना 2 मुक्तु ।

मुक्तु, मुक्तु (म्भा० पर०, वरा० रम० भाजि
मुक्तुनि भाजति ते, मुक्तुयति ते) 1 अम्भ
करना निर्मल करना 2 धुल करना ।

मुक्तुजः [मुक्तु + अ] एक प्रकार का घास (जिसमें १५
वृक्षों का लहारी रेशा करी बाँधा) मनु०

६३ 2 धारायति राजा धज का नाम (बहय है १५
मुक्तु राजा भाज का भावा बा) । सम० केश
1 शिर का विशेषण 2 विष्णु का विशेषण केजिन
(पु०) शिखु का विशेषण अम्भयन्त यन्त्राधीन प
नना अधीन लहारा धारण करना अधीन उन्मूलन
सम्कार बासम् (पु०, शिर का विशेषण) ।

मुक्तुजरा [मुक्तु + अन्, रमन् की रेशदार जड़ ।

मुट् (म्भा० पर०, वरा० उभ० माटति माटयति १
1 कुचलना दाटना पीसना बुरा करना 2 बर्तार
करना बुरा भला करना (इस पद में धातु मुट् का
भी है) ।

मुण (पु० १०० मुणीन) धीनता करना ।

मुण् म्भा० पर० मुष्टा, कुचलना पीसना ।

मुण्ड (म्भा० पर० मुण्डति) 1 लार कर्म करना मुट्ना
2 कुचलना पीसना । २ म्भा० आ० मुण्ड १) डहन ।

मुण्ड (वि०) । मुण्डः अण्, । मुट्ना हुआ 2 कल
हुआ छाटा हुआ । कुण्डिन ४ अथवा शीघ्र ३
1 त्रिकोण सिर मुट्ना हुआ हो या गया हो 2 मटा
हुआ या लता सिर 3 घालक 4 नाई 5 पैर का तल
त्रिकोण ऊँची ऊँची भावाएँ आग दी गई हो ३
विशेष विशेष आश्रम की स्त्रीमण्डली, इम् 1 'मर
2 लता । सम०-- अथमम् लोत्र, कल नासिक
का पैर, बर्तारही एसा जनपद जिसके सिर मुट्ना
हो, मोहम् लोत्र, -शक्ति एक प्रकार का शक्ति ।

मुण्डकः [मुण्ड + कन्] 1 नाई 2 पैर का तल त्रिको
वही बड़ा तालवार भाग दी गई हो, ठूठ, कल सिर ।
सम० उपनिषद् (ग्री०) अथर्ववेद की एक शा
निरुद्ध का नाम ।

मुण्डनम् । मुण्ड + कन्, सिर मुट्ना, मुट्ना ।

मुण्डित (मु० १० कु०) । मुण्ड + क्त । 1 मटा हुआ
2 कटारा हुआ या छाटा हुआ भाग हुआ -सम
का ।

मुण्डित् (पु०) । मुण्ड + क्त । १ नाई 2 पैर का तल
विशेषण ।

मुण्डित् शीर्षी ।

मुट् (वरा० उभ० माटयति १) 1 मिजाना, घालना
2 म्भय करना, निर्मल करना ।

॥ (म्हा० मा० मोदले, प्रेर० मोदमति मे, इच्छा० मुमुक्षिते वा मुमाविषते) हर्ष मनाना, प्रसन्न होना हृष्ट या आनन्दित होना यक्षे दास्यामि मादिष्य रूपमानविमोहिता भग० १६।१५, मनु० १।२३०, २९१ मट्टि० १५।१६, अनु० अनुमानन करना मज्जुर देना, अनुमति देना स्वीकृति देना रघु० १।६३, भा० १ प्रसन्न या हर्षित होना हर्ष मनाना २ मुगधित होना, (प्रेर०) मुगधित करना, मुवासि करना परिमलैतामोदयल्लो दिश भासि० १।०६ प्र० अन्यतः प्रसन्न होना वृहत् स्पृहा होना रघु० ५।८५ मा० १।२३।

मृद, मुदा (स्वी०) । १२२ - (भाषे) विषय मृद गण । हर्ष, आनन्द प्रसन्नता स्वर्गो, मनोय गितुर्मद तन तनान मोदयक रघु० १।२५, यवनत पुराहीनका मृदमादधान ति० १।५८ १।२३, 'यदादे वतये विदमति जडा प्रवृत्त मद्रम् ननु' इत्यादि मृदा गीत० ११ कि० पा० १, रघु० ३।३०।

मुवित (मु० क० ह०) । मुद + क्त । प्रसन्न हर्षित आनन्दित तथा हर्षयुक्त, तत् १ प्रसन्नता, आनन्द, स्वर्गो हर्ष २ एक प्रकार का पंचुनासिद्धन, ता हर्ष आनन्द।

मुविर् [मुद + किरत्] । बाह्य प्रचुर पुरन्दरधनुर्गजिभमदमृदग मुवजम गीत० २, या, मुजमि नासर्गि ह्य भविनि मुदरानिह्रियाय भासि० २।८८ २ प्रेमी, कामाक्षक ३ मंडक।

मुवी [मुद + क + क्] व्यासना, वादनी।

मुवर् [मुद + क्] । एक प्रकार का साविता, मुग २ दफना, आवरण ३ एक प्रकार का समुद्री पक्षी।

मव० मुव० -- मोविन् (पु०) पांडा।

मुववः [मुद विगति गु + अच्] । हथौडा मोगरी, जैसा कि माहमुदगर शकगवायं कृत एक छोटा काव्य। मे -- रघु० १।७३ २ गतका गदा ३ मिट्टी के डेरे लोहने वाली पावरी ४ इच्छा, लाह के छोटे मुदर ५ बत्ती ६ एक प्रकार की चमली (इस अर्थ में यह शब्द नए भी होता है)।

मुववः [मुदग + ला क] एक प्रकार का घास।

मुववः (पु०) एक प्रकार की मृग।

मुववम् [मुद + रा + वृद्ध, पुषी०] । मोहर लगाना, मृदाकित करना, छापना, चिह्न लगाना २ मुदना बंद करना।

मुववति (ना० भा० पर०) । मोहर लगाना अनका मुद्र या मुद्रयनम् - मुद्रा० १ २ मृदाकित करना, चिह्न लगाना, भक्ति करना ३ दफना, मुदना (आक०) -- विवरानि मुववम् शानुषीयिषि मञ्जवो जयति -- भासि० १।९०।

मुवा [मुद + रक्त + टाप्] । मोहर गाने या मृदाकित

करने का उपकरण विशेषतः मोहर लगाने की अगुटी नासोक्ति अगुटी अनया मुद्राः मुद्रयत मुद्रा० १, नाममुद्राक्षराण्यनुवाच्य परम्परमन्त्राकृत्य ग० १ ७ मोहर छाप देह विह्वल मनुमृदम् मा० १०१ मित्रमृदाकित (वाह) गीत० १ प्रीति पत्र, पातारण (जैसा कि मृदाकित कर म दिया जाता है) भगद्गीतामृद शकृत्कर्मात्मामि-मुद्रा० १ मोहर लगा विवरः अनया पैसा आदि विवरः २ पदक लक्षणा ६ वि० २ विह्वल विवरः पनाशः ३ विह्वल ७ रक्त करण्य अनया मोहर लगा देना मेरा मृदाकित करण्य ७ उक्त० ५।२० १।२। मृदाकित मद्रव-मृद-मुद्राकित मद्रा मद्रा २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १०० १०१ १०२ १०३ १०४ १०५ १०६ १०७ १०८ १०९ ११० १११ ११२ ११३ ११४ ११५ ११६ ११७ ११८ ११९ १२० १२१ १२२ १२३ १२४ १२५ १२६ १२७ १२८ १२९ १३० १३१ १३२ १३३ १३४ १३५ १३६ १३७ १३८ १३९ १४० १४१ १४२ १४३ १४४ १४५ १४६ १४७ १४८ १४९ १५० १५१ १५२ १५३ १५४ १५५ १५६ १५७ १५८ १५९ १६० १६१ १६२ १६३ १६४ १६५ १६६ १६७ १६८ १६९ १७० १७१ १७२ १७३ १७४ १७५ १७६ १७७ १७८ १७९ १८० १८१ १८२ १८३ १८४ १८५ १८६ १८७ १८८ १८९ १९० १९१ १९२ १९३ १९४ १९५ १९६ १९७ १९८ १९९ २०० २०१ २०२ २०३ २०४ २०५ २०६ २०७ २०८ २०९ २१० २११ २१२ २१३ २१४ २१५ २१६ २१७ २१८ २१९ २२० २२१ २२२ २२३ २२४ २२५ २२६ २२७ २२८ २२९ २३० २३१ २३२ २३३ २३४ २३५ २३६ २३७ २३८ २३९ २४० २४१ २४२ २४३ २४४ २४५ २४६ २४७ २४८ २४९ २५० २५१ २५२ २५३ २५४ २५५ २५६ २५७ २५८ २५९ २६० २६१ २६२ २६३ २६४ २६५ २६६ २६७ २६८ २६९ २७० २७१ २७२ २७३ २७४ २७५ २७६ २७७ २७८ २७९ २८० २८१ २८२ २८३ २८४ २८५ २८६ २८७ २८८ २८९ २९० २९१ २९२ २९३ २९४ २९५ २९६ २९७ २९८ २९९ ३०० ३०१ ३०२ ३०३ ३०४ ३०५ ३०६ ३०७ ३०८ ३०९ ३१० ३११ ३१२ ३१३ ३१४ ३१५ ३१६ ३१७ ३१८ ३१९ ३२० ३२१ ३२२ ३२३ ३२४ ३२५ ३२६ ३२७ ३२८ ३२९ ३३० ३३१ ३३२ ३३३ ३३४ ३३५ ३३६ ३३७ ३३८ ३३९ ३४० ३४१ ३४२ ३४३ ३४४ ३४५ ३४६ ३४७ ३४८ ३४९ ३५० ३५१ ३५२ ३५३ ३५४ ३५५ ३५६ ३५७ ३५८ ३५९ ३६० ३६१ ३६२ ३६३ ३६४ ३६५ ३६६ ३६७ ३६८ ३६९ ३७० ३७१ ३७२ ३७३ ३७४ ३७५ ३७६ ३७७ ३७८ ३७९ ३८० ३८१ ३८२ ३८३ ३८४ ३८५ ३८६ ३८७ ३८८ ३८९ ३९० ३९१ ३९२ ३९३ ३९४ ३९५ ३९६ ३९७ ३९८ ३९९ ४०० ४०१ ४०२ ४०३ ४०४ ४०५ ४०६ ४०७ ४०८ ४०९ ४१० ४११ ४१२ ४१३ ४१४ ४१५ ४१६ ४१७ ४१८ ४१९ ४२० ४२१ ४२२ ४२३ ४२४ ४२५ ४२६ ४२७ ४२८ ४२९ ४३० ४३१ ४३२ ४३३ ४३४ ४३५ ४३६ ४३७ ४३८ ४३९ ४४० ४४१ ४४२ ४४३ ४४४ ४४५ ४४६ ४४७ ४४८ ४४९ ४५० ४५१ ४५२ ४५३ ४५४ ४५५ ४५६ ४५७ ४५८ ४५९ ४६० ४६१ ४६२ ४६३ ४६४ ४६५ ४६६ ४६७ ४६८ ४६९ ४७० ४७१ ४७२ ४७३ ४७४ ४७५ ४७६ ४७७ ४७८ ४७९ ४८० ४८१ ४८२ ४८३ ४८४ ४८५ ४८६ ४८७ ४८८ ४८९ ४९० ४९१ ४९२ ४९३ ४९४ ४९५ ४९६ ४९७ ४९८ ४९९ ५०० ५०१ ५०२ ५०३ ५०४ ५०५ ५०६ ५०७ ५०८ ५०९ ५१० ५११ ५१२ ५१३ ५१४ ५१५ ५१६ ५१७ ५१८ ५१९ ५२० ५२१ ५२२ ५२३ ५२४ ५२५ ५२६ ५२७ ५२८ ५२९ ५३० ५३१ ५३२ ५३३ ५३४ ५३५ ५३६ ५३७ ५३८ ५३९ ५४० ५४१ ५४२ ५४३ ५४४ ५४५ ५४६ ५४७ ५४८ ५४९ ५५० ५५१ ५५२ ५५३ ५५४ ५५५ ५५६ ५५७ ५५८ ५५९ ५६० ५६१ ५६२ ५६३ ५६४ ५६५ ५६६ ५६७ ५६८ ५६९ ५७० ५७१ ५७२ ५७३ ५७४ ५७५ ५७६ ५७७ ५७८ ५७९ ५८० ५८१ ५८२ ५८३ ५८४ ५८५ ५८६ ५८७ ५८८ ५८९ ५९० ५९१ ५९२ ५९३ ५९४ ५९५ ५९६ ५९७ ५९८ ५९९ ६०० ६०१ ६०२ ६०३ ६०४ ६०५ ६०६ ६०७ ६०८ ६०९ ६१० ६११ ६१२ ६१३ ६१४ ६१५ ६१६ ६१७ ६१८ ६१९ ६२० ६२१ ६२२ ६२३ ६२४ ६२५ ६२६ ६२७ ६२८ ६२९ ६३० ६३१ ६३२ ६३३ ६३४ ६३५ ६३६ ६३७ ६३८ ६३९ ६४० ६४१ ६४२ ६४३ ६४४ ६४५ ६४६ ६४७ ६४८ ६४९ ६५० ६५१ ६५२ ६५३ ६५४ ६५५ ६५६ ६५७ ६५८ ६५९ ६६० ६६१ ६६२ ६६३ ६६४ ६६५ ६६६ ६६७ ६६८ ६६९ ६७० ६७१ ६७२ ६७३ ६७४ ६७५ ६७६ ६७७ ६७८ ६७९ ६८० ६८१ ६८२ ६८३ ६८४ ६८५ ६८६ ६८७ ६८८ ६८९ ६९० ६९१ ६९२ ६९३ ६९४ ६९५ ६९६ ६९७ ६९८ ६९९ ७०० ७०१ ७०२ ७०३ ७०४ ७०५ ७०६ ७०७ ७०८ ७०९ ७१० ७११ ७१२ ७१३ ७१४ ७१५ ७१६ ७१७ ७१८ ७१९ ७२० ७२१ ७२२ ७२३ ७२४ ७२५ ७२६ ७२७ ७२८ ७२९ ७३० ७३१ ७३२ ७३३ ७३४ ७३५ ७३६ ७३७ ७३८ ७३९ ७४० ७४१ ७४२ ७४३ ७४४ ७४५ ७४६ ७४७ ७४८ ७४९ ७५० ७५१ ७५२ ७५३ ७५४ ७५५ ७५६ ७५७ ७५८ ७५९ ७६० ७६१ ७६२ ७६३ ७६४ ७६५ ७६६ ७६७ ७६८ ७६९ ७७० ७७१ ७७२ ७७३ ७७४ ७७५ ७७६ ७७७ ७७८ ७७९ ७८० ७८१ ७८२ ७८३ ७८४ ७८५ ७८६ ७८७ ७८८ ७८९ ७९० ७९१ ७९२ ७९३ ७९४ ७९५ ७९६ ७९७ ७९८ ७९९ ८०० ८०१ ८०२ ८०३ ८०४ ८०५ ८०६ ८०७ ८०८ ८०९ ८१० ८११ ८१२ ८१३ ८१४ ८१५ ८१६ ८१७ ८१८ ८१९ ८२० ८२१ ८२२ ८२३ ८२४ ८२५ ८२६ ८२७ ८२८ ८२९ ८३० ८३१ ८३२ ८३३ ८३४ ८३५ ८३६ ८३७ ८३८ ८३९ ८४० ८४१ ८४२ ८४३ ८४४ ८४५ ८४६ ८४७ ८४८ ८४९ ८५० ८५१ ८५२ ८५३ ८५४ ८५५ ८५६ ८५७ ८५८ ८५९ ८६० ८६१ ८६२ ८६३ ८६४ ८६५ ८६६ ८६७ ८६८ ८६९ ८७० ८७१ ८७२ ८७३ ८७४ ८७५ ८७६ ८७७ ८७८ ८७९ ८८० ८८१ ८८२ ८८३ ८८४ ८८५ ८८६ ८८७ ८८८ ८८९ ८९० ८९१ ८९२ ८९३ ८९४ ८९५ ८९६ ८९७ ८९८ ८९९ ९०० ९०१ ९०२ ९०३ ९०४ ९०५ ९०६ ९०७ ९०८ ९०९ ९१० ९११ ९१२ ९१३ ९१४ ९१५ ९१६ ९१७ ९१८ ९१९ ९२० ९२१ ९२२ ९२३ ९२४ ९२५ ९२६ ९२७ ९२८ ९२९ ९३० ९३१ ९३२ ९३३ ९३४ ९३५ ९३६ ९३७ ९३८ ९३९ ९४० ९४१ ९४२ ९४३ ९४४ ९४५ ९४६ ९४७ ९४८ ९४९ ९५० ९५१ ९५२ ९५३ ९५४ ९५५ ९५६ ९५७ ९५८ ९५९ ९६० ९६१ ९६२ ९६३ ९६४ ९६५ ९६६ ९६७ ९६८ ९६९ ९७० ९७१ ९७२ ९७३ ९७४ ९७५ ९७६ ९७७ ९७८ ९७९ ९८० ९८१ ९८२ ९८३ ९८४ ९८५ ९८६ ९८७ ९८८ ९८९ ९९० ९९१ ९९२ ९९३ ९९४ ९९५ ९९६ ९९७ ९९८ ९९९ १००० १००१ १००२ १००३ १००४ १००५ १००६ १००७ १००८ १००९ १०१० १०११ १०१२ १०१३ १०१४ १०१५ १०१६ १०१७ १०१८ १०१९ १०२० १०२१ १०२२ १०२३ १०२४ १०२५ १०२६ १०२७ १०२८ १०२९ १०३० १०३१ १०३२ १०३३ १०३४ १०३५ १०३६ १०३७ १०३८ १०३९ १०४० १०४१ १०४२ १०४३ १०४४ १०४५ १०४६ १०४७ १०४८ १०४९ १०५० १०५१ १०५२ १०५३ १०५४ १०५५ १०५६ १०५७ १०५८ १०५९ १०६० १०६१ १०६२ १०६३ १०६४ १०६५ १०६६ १०६७ १०६८ १०६९ १०७० १०७१ १०७२ १०७३ १०७४ १०७५ १०७६ १०७७ १०७८ १०७९ १०८० १०८१ १०८२ १०८३ १०८४ १०८५ १०८६ १०८७ १०८८ १०८९ १०९० १०९१ १०९२ १०९३ १०९४ १०९५ १०९६ १०९७ १०९८ १०९९ ११०० ११०१ ११०२ ११०३ ११०४ ११०५ ११०६ ११०७ ११०८ ११०९ १११० ११११ १११२ १११३ १११४ १११५ १११६ १११७ १११८ १११९ ११२० ११२१ ११२२ ११२३ ११२४ ११२५ ११२६ ११२७ ११२८ ११२९ ११३० ११३१ ११३२ ११३३ ११३४ ११३५ ११३६ ११३७ ११३८ ११३९ ११४० ११४१ ११४२ ११४३ ११४४ ११४५ ११४६ ११४७ ११४८ ११४९ ११५० ११५१ ११५२ ११५३ ११५४ ११५५ ११५६ ११५७ ११५८ ११५९ ११६० ११६१ ११६२ ११६३ ११६४ ११६५ ११६६ ११६७ ११६८ ११६९ ११७० ११७१ ११७२ ११७३ ११७४ ११७५ ११७६ ११७७ ११७८ ११७९ ११८० ११८१ ११८२ ११८३ ११८४ ११८५ ११८६ ११८७ ११८८ ११८९ ११९० ११९१ ११९२ ११९३ ११९४ ११९५ ११९६ ११९७ ११९८ ११९९ १२०० १२०१ १२०२ १२०३ १२०४ १२०५ १२०६ १२०७ १२०८ १२०९ १२१० १२११ १२१२ १२१३ १२१४ १२१५ १२१६ १२१७ १२१८ १२१९ १२२० १२२१ १२२२ १२२३ १२२४ १२२५ १२२६ १२२७ १२२८ १२२९ १२३० १२३१ १२३२ १२३३ १२३४ १२३५ १२३६ १२३७ १२३८ १२३९ १२४० १२४१ १२४२ १२४३ १२४४ १२४५ १२४६ १२४७ १२४८ १२४९ १२५० १२५१ १२५२ १२५३ १२५४ १२५५ १२५६ १२५७ १२५८ १२५९ १२६० १२६१ १२६२ १२६३ १२६४ १२६५ १२६६ १२६७ १२६८ १२६९ १२७० १२७१ १२७२ १२७३ १२७४ १२७५ १२७६ १२७७ १२७८ १२७९ १२८० १२८१ १२८२ १२८३ १२८४ १२८५ १२८६ १२८७ १२८८ १२८९ १२९० १२९१ १२९२ १२९३ १२९४ १२९५ १२९६ १२९७ १२९८ १२९९ १३०० १३०१ १३०२ १३०३ १३०४ १३०५ १३०६ १३०७ १३०८ १३०९ १३१० १३११ १३१२ १३१३ १३१४ १३१५ १३१६ १३१७ १३१८ १३१९ १३२० १३२१ १३२२ १३२३ १३२४ १३२५ १३२६ १३२७ १३२८ १३२९ १३३० १३३१ १३३२ १३३३ १३३४ १३३५ १३३६ १३३७ १३३८ १३३९ १३४० १३४१ १३४२ १३४३ १३४४ १३४५ १३४६ १३४७ १३४८ १३४९ १३५० १३५१ १३५२ १३५३ १३५४ १३५५ १३५६ १३५७ १३५८ १३५९ १३६० १३६१ १३६२ १३६३ १३६४ १३६५ १३६६ १३६७ १३६८ १३६९ १३७० १३७१ १३७२ १३७३ १३७४ १३७५ १३७६ १३७७ १३७८ १३७९ १३८० १३८१ १३८२ १३८३ १३८४ १३८५ १३८६ १३८७ १३८८ १३८९ १३९० १३९१ १३९२ १३९३ १३९४ १३९५ १३९६ १३९७ १३९८ १३९९ १४०० १४०१ १४०२ १४०३ १४०४

+शेषजम् । विद्या २. उपवास, - व्रतम् सन्यासी
की प्रतिष्ठा क्र० ५१४८।

सम् (म्भा० पर० मृ० वृत्ति) ज्ञाता, हितना—बुलना ।
 मुमुक्षा [मोक्षपुच्छिणा सम् + ख + टाप्, धातोङि-
 ल्यप्] इच्छाकारे वा मोक्ष की इच्छा ।

मुमुक्षु (वि०) [मृ + लृ + उ] 1 बरी या स्वतंत्र होने का इच्छुक 2 कार्यभार से मुक्त होने का इच्छुक 3 (बाप मादि) छोड़ने की प्रसन्न रतु. २१५८ 4. सांसारिक जीवन से मुक्त होने का इच्छुक मोक्ष, प्राप्ति करने के लिए प्रयत्नशील,--कृ: मोक्ष के लिए प्रयत्नशील इति कु० २१५१, जग० ४११५, विक्रम० १११।

मनुजान् [मृज् + जानश्, सम्प्रदायाद्द्वित्वम्] बाहल ।

कुतुर्वा [मु + तन् + अ + टाप्] बरने की इच्छा महि.
३५७।

पुनर् (वि०) [पु + सन् + उ] मरणासन्न, मृत्यु के निकट ।

मुद्र (मुद्रा० पर० मुरति) चरना, अन्तर्गत करमा, परि-
क्षण करमा, मियटना ।

मरुः { मरु + क } एक राक्षस का नाम जिसे कृष्ण ने मार
मिराबा का, रज्जु परिवृत्त करना, बेरता। सम०
—अरिः १ कृष्ण का विशेषण—मुरारिमारादुपसर्ग-
वशी नीन० ? २ 'जयभारतव' नाटक का
प्रणेता,—विष्णु,—विष्णु, विष्णु, कर्षण,—रिपु,—
वैरिण, हनु (पुं०) कृष्ण या विष्णु के विशेषण
—प्रकीर्णवर्णविष्णुवर्णयति मुद्रादयो मुरारित नीत०
१. मरुवैरिणो राक्षसाय विष्णुनातम् १०।

मुरकः [मुरात् वेष्टनात् काये - जन् + ड] १ एव प्रकार का दोन का मुख सामान्य नमिहस्ताहत मुरकारव... का० १११, सगीताय प्रहस्यमुरका - वेष्ट० ४४, ५६, वागीज० ११२२, कु० ६५१ २ किसी श्लोक की आधा की मुख के रूप में व्यवस्थित करना, मुरकाबंध की इसे ही कहते हैं काव्य० ९। ३। ४५० - कसः कटुहस का पेड ।

मुरका [मुरख + टाप्] 1. एक बड़ा डोल 2. कुबेर की बत्ती का नाम ।

मुरखण्ड एक नदी का नाम (इसे ही बहुधा 'नर्मदा' मानते हैं)।

मुरली [मूर + ली + क + टाप्] केरल देश में निकलने वाली एक नदी का नाम (उत्तर २ में 'तमसा' के नाम इकट्ठा जलेश्वर माता है) मुरलीमाधवीपूत-लक्ष्मी देवता रक्ष. रच० ४१५५।

मुरली [मुरम् मङ्गलसिन्धेयम् कति—मुर + का + क +
लीम्] मङ्गुरी, मङ्गी, मङ्गु । सम्—मरुः कुम्भ का
पिसेवम् ।

मूर्छा (ध्या० वर० मूर्च्छा, मूर्च्छा, या मूर्छा, हल धातु को

‘मूछं’ वा ‘मूच्छं’ की निम्नलिखित हैं) १ ठोस बनाना, जमना, नाक होना २ मूछित होना बेहोश होना, मुर्दा जाना अचेतन होना, सत्कारहित होना—यत्समु-
खाति मूच्छत्यपि नीलम् ४ श्रीशार्ङ्गिज्जातिष्वमूमूछित-
यनाद्यातेन कीदृश्यम्—नीलम् ३, अट्टि १५/५५
३ उयना, बड़ना, बलवान् वा शक्तिशाली होना
मूछं मरुज तेजो हविषेव हविर्भव रथम्

१०१७९ मुमुक्षु सख्य रामाय १२१५७ मुकुन्दयमी

ii (धा० पर० मोक्षति) चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना, हाना करना ।

iii (दिवा० पर० मृष्यति) 1. बुराया 2 नोबना, नष्ट करना—भट्टि० १५।१६ ।

मुषकः [मुष् + क्] बुरा ।

मुषक है० 'मुसल' ।

मुषा-नी [मुष् + क + अण्, कीष् वा] कुठाली ।

मुषित (भू० क० क०) [मुष् + क्त] 1. मृटा गया, चोरी किया गया, अपहृत 2. अपहरण किया गया, छीन कर ले जाया गया 3. वञ्चित, मुक्त 4 उठा गया, बोला दिया गया 5. येन मुषितोऽस्मि का० ।

मुषितकम् [मुषित + क्त] बुराई हुई संपत्ति ।

मुषाः [मुष् + क्] 1. चटकोप 2 पोता 3 गठीला नचा हुट्ट-मुट्ट पुरुष 4 रागि, बर, परिमाण, सम्मुख्य 5. चोर । सम० - वेदः अष्टकोप का स्थान - श्रुत्यः द्विजहा, बधिया किया हुआ पुत्र, - शोकः पानो की सूजन ।

मुष (भू० क० क०) [मुष् + क्त] बुराया हुआ भ० ५।२०. - ध्वस् बुराई हुई संपत्ति ।

मुष्टि (प०, स्त्री०) [मुष् + क्तिच्] 1. मीचा हुआ हाथ, मुट्ठी—कनाकाभरत विधिरे निर्बिडोऽपि मुष्टि—रघु० १।५८, १५।२१, सि० १०।५९ 2. मुट्ठीवर, चिनना एक मुट्ठी में बांधे, स्वापाकमुष्टिपरिवर्धितकः श० ५।१६, रघु० ११।५७, कु० ७।६९, वेद० १८ 3. मुठ, बरता 4. एक विशेष तोल, (= एक पल के बराबर) 5. पुत्र का ताल । सम० - वेदः वन्य का शीश का भाग, बहु भाव जो हाथ से पकड़ा जाता है, कुलम् एक प्रकार का मोल, बुझा, बलतः मुक्केबाजी, बंधः 1. मुट्ठी बांधना 2. मुट्ठीवर, - मुड्डम् मुक्केबाजी, मुठेबाजी ।

मुष्टिमोषः [मुष्टिमोषं प्रयोजनस्य क्त] 1. मुवार 2. हारों की विलिप्त स्थिति 3. एक राजल का नाम, कम् मुक्केबाजी, मुठेबाजी । सम० - जलकः बलराज का विशेषण ।

मुष्टिक [मुष्टिक + टाप्] मुट्ठी ।

मुष्टिक्यः [मुष्टि + य + क्त] बच्चा, बालक, शिशु ।

मुष्टिमुष्टि (अव्य०) [मुष्टिभिः मुष्टिभिः प्रकृत्य प्रवृत्त मुड्डम्] मुक्केबाजी, मुठेबाजी, हस्ताहस्ति युद्ध ।

मुष्कः राई, काली लकड़ी ।

मुष् (दिवा० पर० मृष्यति) धातना, विवक्षत करना, दुकड़े २ करना ।

मुष्कः कम् [मुष् + कल्] 1. कलका, मदा 2. मुसल (पातल कुटने के काम आया है) —मुसलविषयिके च पातलकसे मुसरम् भाति कमेव हुंकेतेन—मुहा० १।४,

मनु० १।५६ । सम० - आनुषः बलराज का विशेषण, अनुकूलम् मुसली और बल ।

मुसलाभ्यस्तिसि (अध्व०) [मुसले भुवनैः प्रकृत्य प्रवृत्त मुड्डम्] मुसल या गदाओं में लड़ना ।

मुसलम् (प०) [मुसल + इति] 1. बलराज का विशेषण 2. शिव का विशेषण ।

मुसल्य (वि०) [मुसल + यत्] मदा से बुर-बुर किये जाने अथवा मार दिये जाने योग्य ।

मुस्य (बुरा० उभ० मुस्यन्ति ते) डेर लगाना, इकट्ठा करना, सबहु करना, मजबूत करना ।

मुस्तः, -स्तम्, स्ता [मुस्य + क्त] पिचवा टाप् एक प्रकार की घास, मोषा विक्षम् कियता बट्टहृत्तिभिर्मुस्ता-क्षति पन्थले- श० २।५९, रघु० १।५९, १५।१९ । सम० - अक्षः आशः मुखः ।

मुस्य [मुस्य + क्त] 1. मुसली 2. शीशु ।

मुह (दिवा० पर० मुह्यति, मुष् वा मुह) मुहाना, मुहित होना, बेचना नष्ट होना, बेटीब होना इत्याह इष्टमाहृता स्वरजेष भूषोह वा भट्टि० ५।२१, १।२०, १५।१६ 2. उड्डिम होना, विड्वान होना, बबराणा 3. मुह बनना, जड़ होना, मोहित होना 4. मलती करना, भुल होना—डेर० (मोहयति ते) 1. जड़ करना, मोहित करना —ना मुहुराकम् भवन्त-वन्यवन्ता का० १।३२ 2. अस्तव्यस्त करना, बबराना, उड्डिम होना वन० १।२, ७।१६, परि बबराना जाना, उड्डिम हो जाना (डेर० वा०) मुहमान, बहुमाना, ललचाना—भट्टि० ८।११, व. जडीभूत होना, मुष् होना, वि- , अन्वयविकृत होना, बबराना, उड्डिम होना, विड्वान होना - वन० २।७२, १।६, २७ 3. मुह होना वा मोहित होना, लम् 1. प्रयास होना 2. मुह वा लजानी होना (डेर०) मोहित करना, जडीभूत करना—अक्षर-अनुवचनेन संभोहित नीति० १२ ।

मुहिर (वि०) [मुह + किरिप्] मुह, मुह, बड़, -र 1. कामदेव 2. मुह, मुह ।

मुह्य (अव्य०) [मुह + उल्लिक्] बहना, ललचाना, निरंतर, बार बार—बीबावङ्गावितानं मुह्यन्वयति लम्बने वतपुष्टिः श० १।७, २।६, (इत अर्थ में ज्ञानः शिष्यं कर दिया जाता है) मुह्यन्तिः 1. बार बार, फिर फिर, 'यः बहूः - मुह्यन्ति' अतिभावेऽपि कः मुह्यति मुह्यन्तिः 2. मुह बनने वा लज के लिए, मोटी डेर के लिए वेद० ११५, उत्तरीतर वाक्चरों में 'यः, अर्थ' एक बार, दूसरी बार' अर्थ को प्रकट करने में प्रयुक्त होता है - मुह्यन्वयते वाक्चः मुह्यः कति विड्वान्, मुह्यन्वयते नीतिः मुह्यः नीचो रोषिती मुहा०, मुहा० ५।१ । अव्य०—अव्य,

- कम्बु (ननु०) पिष्टयेच, पुनरपि, कम्बु (पु०) होता ।

मूर्धः-कम्बु [कम्बु + क्त] १ एक मूत्र, सवय का अन्तर्ग, निमिष--नवाब्दवालीकमूर्धतला मूर्धने रघु० ३।५९, लम्बाधरेख मूर्धतरागा—पञ्च० १।१९४, मेघ० १९, कु० ७।५० २ काल, सवय (बुन या कम्बु) ३ अठतालीस मिनट का काल, तैः श्रोतिषी ।

मूर्धलकः [मूर्धल + कन्] १ निमिष, क्षण २ अठतालीस मिनट का काल ।

मू (ज्या० पर० मयते) बाधना, बधना, कटना ।

मूक (वि०) [मू + कृ] १. मूका, मौन, मूणा, बाक-कृत्य मूक करोति बाचाल, मूकाञ्च (काननम्) कु० ३।४०, ललीमिष दीप्य विचारमूकम् गीत० ७ २ बेचारा, दीन, दुःखी, कः १ मूना मीनामूक—हि० २।२९ (पाठान्तर), मनु० ७।१४९ २ बेचारा, दीन ३ मछली । तय०—अम्बा दुर्गा का एक रूप, नामः मूणी, मूकता, बाककृत्यता ।

मूकिलम् (पु०) [मूक + इमनिच्] मूकापन, मूकना मूणी ।

मूक (पु० क० ड०) [मू + क्त] १ जदीमूत माहिन २ उद्दिष्ट, व्याकुल, विह्वल, मूकमूत से हीन—किं कर्तव्यतामूकः 'करणीय कर्तव्य की मूक से हीन व्यक्ति इसी प्रकार 'हीमूक' मेघ० ९८ ३ नःसमूह, मूर्ख, मूखबुद्धि, अज, अज्ञानी अन्तस्व हेतुबद्ध हास्यमिच्छन् विचारमूकः प्रतिभासि मे त्वम्—रघु० २।४७ ४. ज्ञान, ज्ञानमूर्ख, प्रतारित, विचलित ५ अयस्य अन्वा ६ लक्ष्योत्पादक, डः मूर्ख, बट्ट मन्दमति, अज्ञानी पुण्य—मूक परशत्यमनजवटि मालवि० १।२ । जय०—जलकम् । मय से अज्ञीमूत २ निर्बुद्धि, अज, मूर्ख, -कर्मः मूल मर्म, -बाधः अष्टौ भाव नलत, विचारण, नलत चारणा, केतल, केतम् (वि०) निर्बुद्धि, मूर्ख, अज्ञानी—अनन्यमति मूकमेतान् प्रिय-नर्कं हृदि सम्पन्नकितं रघु० ८।८८, की, बुद्धि, मति (वि०) निर्बुद्धि, अज, मूर्ख, सीधासाधा हि० १।३०,—लक्ष (वि०) मोहित, होखाना ।

मूक (वि०) [मू + क्त] १ बाधा हुआ, करता हुआ २ कही किया हुआ ।

मूकम् [मूक + क्त] मूक, बेसाध, बाध्नु मूक समन्-जेन्-कम् ४।५९, मूर्ख बकार 'मूक', लघुसंका की सव० अन्वाञ्च मूर्धनवरी रोग, कलमः पेट के नीचे का स्थल मूर्ध मूत्र मरा रक्तस्य, अजकृद् दे० 'मूकसं', कृष्णम् पीड़ा के लक्ष मूत्र का जला, मूकधारण, मूत्र २ बेसाध का पीड़ा देकर जला, —पीडा मूर्धनवरी, पीडा,—लक्ष मूत्र का जल कय

होना, कहरः, रघु मूत्र रक्त जाने से पेट की सूजन, -बेधः मूत्रनवरी रोग, निरोधः मूत्र का रक्त जाना, -कलमः मूर्धनवरी, बधः मूत्रनलिका, परीक्षा मूत्र-निरीक्षण, मूत्र की परीक्षा करना, मूकम् पेट का निचला भाग मूकाञ्च, जलः मूत्रनलिका मूकहार, वर्षक (वि०) अधिक बेसाध जाने की दवा, मूकल, मूकः, लम्ब मूत्रनवरी पीडा, लय पसाव जाने में रुकावट, पीडा के साथ रक्त पेशाव जाना ।

मूकवति (ना० वा० पर०) पेशाव, लघुसंका करना तिष्ठन्मूकवति महा० ।

मूकल (वि०) [मूक + ला + क] पेशाव जाने वाली (दवा), मूत्रवर्षक औषधि ।

मूकित (वि०) [मूक + इतच्] मूत्र के रूप में निकलना हुआ ।

मूर्क (वि०) [मूर् + क्त मूर् आदेशः] बड़ मन्दमति बूढ़, मूर्ख अनजान की १ मन्दमति बूढ़ न तु प्रचिनविषयमूर्खनां वनमाराधयेत् मनु० २।९ ८, मूर्खबलादपराधिन मा प्रतिगादविध्यमि विषय० २ एक प्रकार का मोबिया । तय० मूकम् मूर्खता, अज्ञाना, अज्ञानता ।

मूर्च्छन् (वि०) (स्त्री०—नी) [मूर्च्छ + निच् + म्यत्] १ जदीमूत करने वाला अज्ञान या बेहोशी पैदा करने वाला, (कामदेव के एक नाम का विशेषण) २ बढ़ाने वाला बर्धन करने वाला, बल देने वाला, कम् १ मूर्छित होना, बेहोश होना २ (सगी० में) स्वरा-रोहण, स्वरविद्याम स्वरो का निर्गमित आरोहणारोहण, स्वरात्मजस्य स्वरसंज्ञान करना, लयपरिचर्जन करना, स्वरमात्रस्य, स्वरमात्रयै—स्फुटीवचनमात्रविशेष-मूर्च्छनाम् मि० १।१०, मूयोमय स्वधमय कृता मूर्च्छना चिस्वरान्ति मेघ० ८९, वर्णानामपि मूर्च्छना-निरवय तार विराये मनु मूर्च्छ० ३।५, लय स्वरा-स्वरो नामा मूर्च्छनास्वर्गविज्ञाति पञ्च० ५।५४ (मूर्च्छा वा मूर्च्छना की परिभाषा कलात्मकताओं मन्थानामारोहणकारोहणम्, ना मूर्च्छस्वच्छने वामन्वा एता मय लय च, अधिक विचार के लिए दे० मि० १।१० पर मूर्च्छन् ।

मूर्च्छा [मूर्च्छन् (मात्र) अक + टाच्] १ बेहोशी, लका हीनता रघु० ७।४४ २ जालि अज्ञान वा व्याधी ३ बाध्नु मूक कर रक्त बनाने की प्रक्रिया,—मूर्च्छा मर्तो मूता वा निचर्जन पाण्डोऽन रक्त—वाणि० १।८२ । मूर्च्छल (वि०) [मूर्च्छा + लच्] बेहोश, अचेत, चेतना-रहित ।

मूर्च्छल (पु० क० ड०) [मूर्च्छा अज्ञान अन्व-भाण्, मूर्च्छ + क्त का] १ बेहोश, अचेतहीन, चेतनारहित २ मूर्ख, अज, मूक ३. मूर्च्छा हुआ, मूर्च्छ ४. मूर्ख

किया हुआ, तीव्र किया हुआ 5 उद्धिन्, व्याकुल
6 अरा हुआ, 7 फूटा हुआ ।

मूर्ति (वि०) [मूर्च्छ + क्त] 1 बेहोश, मज्जाहीन 2 जब,
मूढ़ 3 शरीरवागी, मूर्तिमान् मूर्ती विष्णुस्तपम इत
नो भिन्नभारतकृत्युष श० ११३६ प्रसाद इव मूर्तमे
मूर्ति स्मृताईवीनल उत्तर० ३११४, रघु० २१६०
७३००, कु० ७३४० पञ्च० २१०९ 4 भौतिक,
पावित्र 5 ठास, कडा ।

मूर्ति (स्त्री०) [मूर्च्छ + क्त] 1 निश्चित आकार और
सीमा की कोई वस्तु भौतिक, तत्त्व इव्य मत्त्व
2 रूप दृश्यमान आकृति प्रतीक, आकृति मूढा० ११२
रघु० ३१२७ ११४४ ३ मूर्तिमान्, शरीरवागी
प्रतिविम्ब कालि० ३ ४ कल्पवृक्ष मूर्ति उत्तर०
३१४ ३४० २११० ५ प्रतिमा प्रतिमूर्ति पुनला
द्वारा ५ मूर्तियं ६ ठोसपना कडारान् । मम०
४२ सचरवि० १ शरीरवागी मूर्तिमान् उत्तर०
१ २ प्रतिमा का पुनरावृत्ति या किसी दृश्य प्रतीमा
का पुनराकृत्य में लगाया गया है ।

मूर्तिमान् (वि०) [मूर्ति + मान्], 1 भौतिक पावित्र
2 शरीरवागी, देवमान् साकार शकुन्तला मूर्तिमानो
च सन्निधौ श० १११५ तब मूर्तिमान्ति मन्मथ
कर उत्तर० १११८ रघु० १०१६४ ३ पहा
ठोस ।

मूर्धन् (पुं०) [मूर्ध्ना + क्त] 1 मूर्ध्ना मूर्ध्ना मूर्ध्ना
उपधाया दीर्घा प्राञ्जलदेवो रमागमच १ मन्त्रक
नो 2 मिर, —नेतेन मूर्ध्ना हरिश्चन्द्रोदय श०
१११८ रघु० ११८१ कु० ३११२ ३ उच्चतम या
प्रमुख भाग, चोटी लिलार, शृंग सिर अश्विन्-मन्
वेदाभा मूर्ध्नि देवगतिर्वेदा महा० तब राधाश्री के
शीर्षमाय पर' आदि मूर्ध्ना पर्यन्तमूर्ध्नि श० ५१३,
मेघ० १३ ४ (अन) नेना, मुखिया, मुख्य सर्वोपरि
प्रमुख ५ सामन का, हराबल, अष्टभाग म किल
सम्यग्मूर्ध्नि महायना यथवत् प्रतिपद्य महारथ रघु०
१११९ मम०—अन्त सिर का मुकुट, अविच्छिन्न (वि०)
अविच्छिन्न, किरीटवागी, प्रसारिषि पद पर प्रतिष्ठा
पिता, —रघु० ११८१ (स्त्री०) १ अधिमथित या अधि-
विस्तारवा २ अधिय जाति का पुत्र ३ मूर्ध्नी
४ मूर्ध्नीभिषिक्त (१) अधिवेष अधिमथन, प्रतिष्ठा
पत्र, अधिविस्तार १ बाह्य पिता और अधिय माता से
उत्पन्न एक वर्णसंकर जाति २ अधिमथित राजा
— कर्णो कर्णरी (स्त्री०) कलरी ३ १ (सिर
के) बाल — पर्याकुला मूर्ध्ना — श० ११४०, विष्णु
विहीनमूर्ध्ना — कु० ११४, 'साकारिरेक मे उम रजो
मे अर्पणं बाल नोच हाळे' २ अद्याल क्लोसिस्
(पुं०) दे० बह्मन्-प्र या मूढा भाव पुण्य शिरीग

का गेह, रत्न उबले चाबको का मांड, वेष्टनम्,
साक्षा मुकुट शिरोभाष्य ।

मूर्धन् (वि०) [मूर्ध्नि अव यन्] १ मिर पर विद्यमान
२ मूर्धन् अवर्धन मूर्ध्नी य उच्चरित होने वाले वर्ण
म्, म् ट् ट् ट् ट् ट् ट् ट् और न ऋट् ट् ट् ट् ट् ट् ट्
३ मुख्य प्रमुख सर्वोत्तम ।
मूर्धन् २० मूर्धन् ।

मूर्ध्नी, मूर्ध्नी, मूर्ध्नी [मूर्ध्नी + क्त] १ मूर्ध्नी
कन, गन्तु दृश्यम् एक प्रकार की लम्बा जिनक
द्वारा से चरण का शरीर अधियों का (किमृत्)
नवागी तैयार की गयी है ।

मूर्ध्नी, १३३० उम० मूर्ध्नी—न जब जमाना, वृद्ध होना,
मिर होना ११ (मृगा० उम० मूर्ध्नी—न मूर्ध्नी)
पौषा लतामा उमाना गाम्ना, उव उमाहना, जब
मे कटना मृगच्छेदन करना कि० ११४९ विनष्ट
करना विध्वंस करना मित् जब से उलाहना
उन्मथित करना ।

मूर्ध्नी [मूर्ध्नी + क्त] १ जब (आ० मे मी) नम्रमानि
मूर्ध्नीमान् तेषाम श० ३१२० या, शाकिना
पौनस्य ११० मूर्ध्नीम् जब पकड़ना जब जमाना,
वृद्धमूर्ध्नी मूर्ध्नी हि मर्द्ध्नीम्गे स्थित—मि०
२३८ २ जब किमोवन्त का सबसे नीचे का
किनारा या छोर कस्यादिचदासीद्रमना तदानीय-
द्व्युत्तमूर्ध्नीम् भूतस्य रघु० ७१० इसी प्रकार
प्राचीनमे मध० ०१ ० नीचे का भाग या
किनारा बाधार किसी भा ० का किनारा जिसके
महारे १६ किसी दूसरी वस्तु से जुड़ी हो बाह्योर्म-
लम् मि० ७३३ इसी प्रकार पादमूल, कर्णमूल,
ऊरुमूल आदि ४ आरम्भ मूल आयुष्माच्छानु-
मिच्छामि श० १ ९ आधार, नीच नील, नील,
उत्थान्त—सर्वोर्ध्नीमूलका—महा०, 'रक्षोर्ध्नी स्थिति-
मूलम उत्तर० ११६ इति केषांमूलक नम मूल
मूलम् इसका खान या प्रमाण मान्य किया जाना
चाहिए' ६ किसी वस्तु का ० या पर, पर्यन्तमूलम्
मिर्मूलम् आदि ७ पाठ मूल सर्वत्र (आध्य से
विच्छिन्न) ८ परीम जास पास, सामीप्य ९ मूलचन
मूलपुत्री १० कुम्भमायन मेवक ११ वयमूल
१२ राजा का अपना निजी परेग से पुत्रमूलप्रयत्न
०० ३१२६ मनु० ७११४ ०० विच्छेदा जो
स्थित १४ कथम् मूल का स्थायी न हो— वन्० ७३०२
(अस्मादिच्छेदा कुलम् ० १४ प्यारह नागकाजी का
पुत्र जो मल्लप्रम नक्षत्र में से उत्पन्न होता (मूलनक्षत्र)
है १५ हाडी आह जला १६ पोपरा मूल १७ अगु-
नियो की विशेष स्थिति । मम० आधारम् १ नाभि
२ जननद्वय के ऊपर एक रहस्य मय बुल आधार

मूली, —आयुसमय मूल आवासस्थान—, आश्रित (वि०)
 जो कन्दमूलादि साकर जीवित रहे आहूत मूली
 कच्छकः पूर्णव्यस पूर्णविनाश, पूरी तरह उखाड़
 फेंकना, —कर्मन् (नप०) आहू, कारण मलहेनु
 आवि कारण, कु० १।१३, कारिका भट्टी चन्दा
 —कृच्छ्र कृच्छ्रम् एक प्रकार की तपस्या कथन
 बड़े साकर निर्वाह करना—केसर नीड़ गुण किसी
 मूल का गुणक ज जड़ होने से उत्पन्न होने वाला
 पोषा (अन्) हाग अदरक बेबा कस का विषयग
 इव्यम् बन्धन मलपन माल वाणिज्यवस्तु पत्रो
 —बाहु लसीका निकुलमय (वि०) जड़ से बाट
 डालन वांता, पुष्प रक्षुपाल' किसी परिवार का
 वंशप्रवर्तक पुरुष प्रकृति (स्त्री०) मांसा का
 प्रधान या प्रकृति कन्द कटहल का पत्र भट
 कस का विषयग अन्य पुराना तथा दुर्लभमाग
 मेवक—बच्चनम मूलपात्र बिलस पुत्री माण्ड
 वस्तु माल विमूक्त रथ शाकट—शाकटमय वह
 खेत जिसमें मूला गावर आदि मूल गोधे बोय जा
 है स्थानम् १ आधार नीड २ रजःम ५ हव
 हव्यु क्षोत्स् (नप०) प्रधान मूल या किसी मूल
 का उदगम स्थान ।

मूलक, कम् [मूल + क] १ भरी २ भर जड़
 —कः एक प्रकार का क्रि० सम० यौतिका
 मूली ।

मूला [मूल + ब् + टाप्] १ एक रीध का नाम मरा
 वा २ मूल नक्षत्र ।

मूलिक (वि०) [मूल + ठङ्] मूलभूत मौलिक क
 भवन, मर्यादी ।

मूलिन् (प०) [मूल + इति] वृक्ष ।

मूलिन (वि०) [मूल + इति] जड़ होने से उत्पन्न शाला ।

मूली [मूल + लीप्] एक छोटी छिपकली ।

मूलैर [मूल + एरक्] १ राजा २ जटायामी बालभट्ट ।

मूल्य (वि०) [मूल + यत्] १ उखाड़ इन बोध २ मोल
 लेने के योग्य स्थल ३ कीमती माल लगन—
 कीर्णान्ति स्म प्राणमस्यवर्णामि शि० १८।११
 शान्ति० १।१२ २ मज्झिमे, विरायाय भारा वैन
 ३ लाज ४ पूजी, मूलचन ।

मूल्य (स्वा० पर०) मूलित मूलित, मूलाना लूटना अय-
 हाण करना ।

मूल [मूल + क] १ वृक्षा, मूला २ गोल मिटकी मोषा
 रोशनदान ।

मूलकः [मूल + क] १ वृक्षा मूला २ बार । सम०
 —अराति बिलाव बाह्य, गणेश ।

मूलपत्त [मूल + पट्] मूलाना, मूलके से अमिका लेना
 उठा लेना ।

मूला, मूलिका [मूल + टाप् मूलिक + टाप्] बृहिया
 कुपला ।

मूलिक [मूल + किकन्] १ वृक्षा २ बार ३ सिरीष का
 पेड़ ४ एक देश का नाम । सम० अहू, अरुच्य
 इव गणरा के विषयग अब बिलाव अराति
 बिलाव उत्तर स्थलम् आदि ।

मूलिकार (प०) वृक्षा ।

मूली, मूलिक मूलिका, मूल हीय मूल + इति मूलग
 ट् + ब् वृक्षा मूला मूला ।

म (मूला०) भा० [परन्तु तिग वृत् ३ और मूल म
 (र०) 'छिपरी मूल' माना नरुहाना पय की
 प्रायः रचना जीवन में बिदा लन प्र० (मूलमय
 वे) तम कला रचना का उच्छा (मूलमय
 १ मान की उच्छा करने २ मान के नरुहाना
 मरणमय अद्वैता में माना अनु बाद में माना
 मन्त्र मन्त्रमय रचना मन्त्रमय ।

मूलद भागः ।

मूल [मूल + क] १ वृक्षा २ बार ३ सिरीष का
 पेड़ ४ एक देश का नाम । सम० अहू, अरुच्य
 इव गणरा के विषयग अब बिलाव अराति
 बिलाव उत्तर स्थलम् आदि ।

मूल [मूल + क] १ वृक्षा २ बार ३ सिरीष का
 पेड़ ४ एक देश का नाम । सम० अहू, अरुच्य
 इव गणरा के विषयग अब बिलाव अराति
 बिलाव उत्तर स्थलम् आदि ।

मुक्ता [मृत् + अङ् + टाप्] १ स्वच्छ करना, निर्मल करना, धोना, महाना-धोना २ स्वच्छता, निर्मलता - मटि० २।१३, सुटि ३. आकार-प्रकार, निर्मल लक्ष्मा और स्वच्छ मुखमण्डल ।

मुक्ति (वि०) [मृत् + क्त] धो हाला गया, स्वच्छ किया गया, हटाया गया ।

मुक्तः [मृत् + क्त] शिव का विशेषण ।

मुद्रा, मुद्राली, मुद्री [मृद + टाप्, मृद + क्रीप्, पक्षे आनुक्] पार्वती का विशेषण शङ्ख मुष्टि कालकूट-मणिकुट मुद्रो मुद्रालीपतिः - गीत० १२ ।

मुच्य (मुदा० पर० मुणति) बच करना, हत्या करना, नष्ट करना ।

मुणालः, लम् [मृत् + कालन्] कमल की तन्तुमय जड़, कमल-तन्तु - भङ्गुपि हि मुणालानामनुबन्धनानि तन्तव - हि० १।१५, सूत्रं मुणालादिब राजहंसो विक्रम० १।१९, चतु० १।१९, विक्रम० ३।१३. - लम् सुगन्धित घास की जड़, वारिणमूल । सम भङ्गः कमलतनु का टुकड़ा, सुत्रम् कमलवृत्त का तन्तु ।

मुणालिका, मुणाली [मुणाल + क्त + टाप् इत्थम्, मुणाल + क्रीप्] कमलवृत्त या तन्तु - परिमृदिनमुणाली-म्लानमङ्ग-मा० १।२२, या परिमृदिनमुणालादुबला-स्यङ्गकानि - उमर० १।२४ ।

मुणालिन् (पु०) [मुणाल + इति] कमल ।

मुणालिनी [मुणालिन् + क्रीप्] १. कमल का पौधा २. कमलों का समूह ३. वहाँ कमल बहुतायत में मिलते हैं ।

मृत (भू० क० कृ०) [मृत् + क्त] १ मरा हुआ, मृत् की को प्राप्ति २ मृतक जैसा, अर्थ, निष्फल मृदा दण्ड पुत्रयो मृत सैयुनमप्रवम्, मृतमशोचिष्य आठ मृता यत्रस्त्वदक्षिणः पंच० २।१३ ३. मरम किया हुआ, फूटा हुआ - मुच्छी गतो मृतो वा निवर्धन पाण्डोऽत्र रत्नः भाषि० १।८२, तत् १. मृत्यु २. मिथ्या में शान्त अन्न, दान या मिथ्या दे० अमृतम् (८) । सम० भङ्गम् शव, अण्डः मृत्युः - अशौचम् किसी संबंधी की मृत्यु से उत्पन्न आश्रयता, अशौच, दे० 'अशौच', - उद्गूढः समुद्र, सागर, कल्प (वि०) मृतप्राय, बेहोश, मृह्य कबूतर, बाघः रजवा, विधुर, - निधतलः जो सबों को कश्मिस्तान में डोकर ले जाता है, मलः, मलकः गीदह संस्कारः प्रत्येष्टि या और्ध्वदेहिक कृत्य, संजीवन (वि०) मृत् की जिलाने वाला (मृत्, जो मृदा का पुनर्जीवन करना, (नी) मृदा को जिलाने का अर्थ, मरा या मारीक, मृतकम् मरे हुए (मृत जात) बच्चे की तन्म देना, - म्लानम् किसी की मृत्यु जाने पर म्लान करना ।

मृतकः, कम् [मृत् + क्त] मृदा शव ध्रुव न जीवन्तः

उपहत मृतका मन्त्रमनयो, न येवामानन्द जनयति अज-
श्रायमर्षिणि भाषि० ४।१९, कम् किसी संबंधी की मृत्यु हो जाने पर उत्पन्न अशौच । सम० अंतकः गीदह ।

मृत्तवः (पु०) मृत् ।

मृतात्मकम् [मृत् + अलः शिष् + क्तलः] एक प्रकार की मिट्टी, पिंडोर या विक्रम मृत्तिका ।

मृतिः (स्त्री०) [मृत् + क्तिन्] मृत्, मरण ।

मृत्तिका [मृत् + क्तिन् + टाप्] १ पिंडोर मिट्टी मनु० १।१८२ २ नाजी मिट्टी ३ एक प्रकार की गंधयुक्त मिट्टी ।

मृत्युः [मृत् + युक्] १ मरण जानस्य हि ध्रुवा मृत्यु-
ध्रुव जन्म मृत्युश्च भग० २।२० २ मृत्यु का एकता यमराज ३ कृष्णा का विशेषण ४ विष्णु का विशेषण ५ माया का विशेषण ६ हरि का विशेषण ७ काम देव । सम० मृत्युश्च एक प्रकार का क्षोण वा और्ध्वदेहिक संस्कार क अवसर पर बजाया जाता है, नायक, पात्र, या शिव का विशेषण, पात्रः मृत्यु या यम का पदा पुण्यः ईश, यशस्, प्रतिबद्धा वि० मरणशील, मर्म फला, लो केला, बीज, बीज, नाम, राज (पु०) मोरका देवता, यमराज लोक १ मृदा की दुनिया यमलोक २ भूलोक मर्मलोक तु० मर्मलोक बचनः १ शिव का विशेषण २ पशुकी कोबा, मृति (स्त्री०) केकरी ।

मृत्युमज्ज्य [मृत् + जि + ल्यक्, मृत्] शिव या विशेषण ।

मृत्ता, मृत्ता [मृत् + म (स्त) + टाप्] १ मिट्टी, पिंडोर २ अश्वी मिट्टी या पिंडोर, विक्रम मिट्टी ३ एक प्रकार की गंधयुक्त मिट्टी ।

मृत् (कथा० पर० मृदानि, मृदिष) १ निचाड़ना पदार्थों को चला मम जे मरिच शोभ आन्य मृत्प्रादिकर्तने वर्णा० ५।४० २ कुचलना रोदना मृत्ते टुकड़े कर देना, हत्या करना, नष्ट करना, पीस देना, गूँथ देना, चकनाचूर कर देना नाभमर्दोऽन्वादीव - मटि० १।५।१५, आन्यमृदान्प्राप्तानामवर्तनं मृत्पु० १।८।५ ३ मसलना, गूँथना, घिसना, खोस करना शि० ४।५१ ४ बीन लेना, आगे बढ़ जाना ५ पीछे देना, गहर देना, हटाना, अग्नि निष्ठाहना भीषना, कुचलना अथ रोदना कुचलना, उच्च - १ निचाड़ना भीषना २ नष्ट करना, मार डालना, कुचल देना यामिदान्मृत्प्राप्तं ने० ५।११०, करि..., भीषना निचाड़ना-परिमृदिनमुणाली दुर्बलमण्डलकानि - उमर० १।२४ २ मार डालना नष्ट करना ३ पीछे देना, गहर देना, अ कुचलना, चकनाचूर करना, पीस देना, शया कर देना चि १. भीषना, निचाड़ना २ अक-
नाचूर करना कुचलना, पीसना मनु० ४।७० ३ मार

हालना, नष्ट करना, तब्—, इकट्ठा कर निचोड़ना, पकनाचूर करना, पीस देना, हथिया करना ।

मुष्ट (स्त्री०) [मुद् + विषय] पिछोर, मिट्टी का गारा—आमाव कुम्भभव मुद्ब वने मुद्गध न हि—कुमुमानि धारयन्ति—मुष्मा० प्रभवति गविबिम्बोद्ग्राहे मयिने मुदा वयः उत्तर० २१४ २ मिट्टी का टोला, चिकनी मिट्टी का लौटा ३ मिट्टी का टोला ४ एक प्रकार की सुगन्धित मिट्टी । सम० बजः मिट्टी की डली या लौटा—करः कुम्हार, कास्थ्य मिट्टी का बनेन, गः एक प्रकार की मछली, बयः (मून्-बय) मिट्टी का डेर—पयः कुम्हार, पात्रम्, आश्रम मिट्टी का बनेन चि० मिट्टी के बने पात्र चिबः मिट्टी का लौटा, बुद्धिः आत्मी बुद्ध, मया च मयिपदबुद्धिना नवने मुहीनम्—ज० ६ लोष्टः मिट्टी का डोला शकटिका (मुच्छकटिका) मिट्टी की छोटी गाड़ी, (मुक्क द्वारा निर्मित इस नाम का एक नाटक) ।

मुक्क [मुद् + अण्व् कृष] १ एक प्रकार का डोला या मुरज, डकली २ बीस । सम० कलः कटहल का वृक्ष ।

मुर (वि०) [मुद् + अण्व्] १ कीड़ाशील, गिलाहो २ क्षणभङ्गुर, क्षणिक, अस्थायी ।

मुरा दे० 'मृद' (स्त्री०) ।

मृषि (भु० क० क०) [मुद् + णि] १ मीठा हुआ, निचोड़ा हुआ मुरतमूदिता बाक्कनिता अर्जु० २१४४ २ कुचला गया, पीसा गया, पीस डाला गया, रौंदा गया, भार डाला गया ३ मसल दिया गया, हटाया गया (दे० मुद्) ।

मुषिनी [मुद् + णि + इण्] अछो चिकनी मिट्टी ।

मुष्ट (वि०) (स्त्री०—डु—डो) [मुद् + कु] (म० अ० अदीयम्, उ० अ० अदिष्ट) १ चिकना कामल, पतला, लचीला, मुकुमार—मुद् लोक्षणर यद्वयने तदिद भगवथ दुश्यो स्वयि—मालवि० ३१२, अथवा मुद् वस्तु हिसिन् मुद्गुनवारमने प्रज्ञानक रघु० ८१४५, ५७ ज० १११०, ४११०, २. कामल, मुकुमार, नम्र न लखी न च भूषसा मुद् रघु० ८१९, बाण हृषामुद्गुनना प्रतिसङ्गहार—११४७ दया के कारण कोमल मन वाला ११८३, स० ६१ महविमूद्-तामगच्छन् रघु० ५१५६, 'दयाद' स्तान्मूलभानिला नदीरवी-पातयत्यपि मुद्गुनटदुमम् ११७९, 'मुद् और मन्द पवन भी' ३ दूरक, कमजोर—सर्वथा मुद्गुसी रात्रा—हि० ३, ततस्तै मुद्गुज्ज्वल गम्भीर शर पीडिता—महा० १, मध्यम, मयन—हुः पतिवह—हुः (अथ०) कोमलता से, मध्यम, मयन, मधुर इन से—स्वमसि मुद् कर्णीनिकर ज० ११२३, बादयते मुद् वेणुम्—गीत० ५ । सम० झु (वि०) कोमल

अगों वाला, (—मू) टीन, जगन (—सी) कोमल प्रयो वाली स्त्री, उत्पलम् कामल अर्थात् नीलकमल, कार्णायकम् सोमा, कोष्ठ (वि०) नरम काठे वाला विते हलके विरचन से दन्त का जाय, —गन्ध (वि०) मन्द वा अलसपूर्ण बाल वाला, (ना) हमी राजहमी, बसिन्, —छवः, स्वच्, स्वचः (पु०) एक प्रकार के बीजपत्र का वृक्ष, वन, सरकड़ा या नरकुन—वर्षकः, पर्वन् (नपु०) नरकुल, बँत पुष्प स्तिरिच का वृक्ष—पूव (वि०) जो आरम्भ में मद हो, स्तिग्ध हो, मौम्य तथा मुहावरा 'भारिन् (वि०) मधुर बोल्ने वाला, रोमन् (पु०) रोमकः छुरगान, स्वर्ण (वि०) सुने में नरम ।

मुकुलकम् [मुद् + कु + ल + क] सोला, स्वर्ण ।

मुकुल (वि०) [मुद् + ल] १ स्तिग्ध, कामल, मुकुमार २. कु, मरम्ब वायु—लम् १. जल २ अगर की लकड़ी का एक पेड़ ।

मृही, **मृहीका** [मुद् + मृ + टाप् च] अमुरी की बेल या गुच्छा—वाच तदीया परिपीय मृही मृहीकया गुन्धगता स हत— नै० ३१६०, भावि० ४१३३, ३७ ।

मृष [मृ + उभ मर्बनिने] गीला होना या गीला करना ।

मृषम् [मृ + क] मयाम, यद्, लडाई—मरुदविहितमृषम् भुज्यावेमस्य परयत् मृषेयिभूयतः—कि० १२३३, रघु० ३१६५, महावी ५११३ ।

मृष्य (वि०) [मुद् + मयट्] मृही का बना हुआ, रब० ५१२ ।

मृम् (पु०) पर० मृगनि, मय० १. स्पृश करना हाथ से पकड़ना २ मलना मृगुदानी ३ मोचना, विमर्श विचार करना, अभि—राश्री करना, हाथ से पकड़ना, आ, स्पृश करना, हाथ लगाना, हाथ डालना (आल० ने भी), नवानामाष्टसरोजवाह्य—हि० ४१४, शरासनग्या मृगुदाममो कु० ३१६४, जि० ११३४ २. मृष्टा भारना, ला जाना—रघु० ५१९ ३ आक्रमण करना, हमला करना; आमुष्ट न. पद रर—कु० २१३१, बरा— १ स्पृश करना, मलना, मुग्मुदानी परमगन्त हृषदेहेन पाणिना तदीयमङ्ग कुलिमङ्गणाङ्कुतम् रघु० ३१६८, जि० १७१२१, मुच्छ० ५१२८ २ किसी पर हाथ डालना, आक्रमण क, हमला करना, पकड़ लेना—मुच्छ० ११३९ ३ दूषित करना, अष्ट करना, बलाकार करना, ४ विचार विमर्श करना, बितन करना—कि अविनेति मङ्ग पङ्क बनयना परामुगानि भावि० २१५३ ५. मन से मोचना, प्रस्ताव करना—बन्धारम्भे विष्णुविद्यानाय सम्बिनेष्टदेवता सम्भारपरामुगानि—काश० १, बरि— १ स्पृश करना, बरा झू जाना सिम्बरकते, परि-मुष्टदेवकोम अदि० १०४५ २ जाल करना, बि—

मेदि हे० 'मेदि' ।

मेव (वि०) [मिच् + भृत् मेवाव हित यत् वा] 1. यत्र के लिए उपयुक्त—वाच० १११५, मनु० ५।५४
2. वर्य संबंधी, कबीर—मेवमेवावेनेवे, रघु० ११।५,
3. विबुध, पुष्पकील, पवित्राद्या, रघु० १।८४
१।११, १।४८१, —व्य० 1. बकरा 2. और का वेव
3 जी (मेदिनी के अनुसार), व्या कुछ पीयो के नाम ।

मेव्या [मन् + भृत् अकारस्य एवम्] 1 एक अन्तरा (अनुमत्ता की जाती) का नाम 2 हिमालय की पत्नी का नाम । सम०—अन्तरा पाण्डवी का नाम ।

मेवा [वान् + इन्, नि० छाच्] 1 हिमालय की पत्नी का नाम—मेवा वृणीमावपि माननीया (उपमेवे) कु० १।८८, ५।५ 2 एक नदी का नाम ।

मेवका [मि इति नाद्योऽयम्] 1 मोर 2 बिल्ला 3 बकरा ।

मेदिन्, मेदी (स्त्री०) एक पीवा जिसे लहरी कहने हैं इसके पत्ती से काक ला रज निकाला जाता है, जिससे कि अंगिको के नाखून, पैरों के तले तथा हाथ की हथेलियाँ रंगी जाती हैं ।

मेय् (व्या० वा० मेपते) जाना, हिमाल-बुलना ।

मेय (वि०) [या (यि) + यन्] 1 तापने योग्य, जो नाचा जा सके 2 बिलका अनुमान लगाया जा सके 3 बुझाने जाने के योग्य, श्रेय, जो माना जा सके ।

मेय [मि + व] उपार्यालो में बर्चित एक पर्वत का नाम (ऐसा माना जाता है कि ब्रह्मन् बह् इसके चारों ओर घुमते हैं, यह भी कहते हैं कि ये सौने और रत्नों से भरा हुआ है) —विबज्य मेयं वदति साहित्यः—नै० १।११, स्थापत्येव समाप्तहेममहिमा मेयं ये रोषते कर्तुं० १।१५१ 2 छात्रावाला के बीच का बुरिवा 3 द्वार के बीच की गलियारी । सम०—आमन् (पु०) शिष का विशेषण, यन्मन् तद्वृत्ते के आकार की बनी एक काष्ठति ।

मेयक [मेय + कन्] पुन, पुनी ।

मेक [मिक् + यन्] बिलाप, एकता, सत्ताप, अवसाय, सत्ता 'मेकन्' नी ।

मेकान् [मिक् + मिच् + स्मृट्] 1 एकता, संयोग 2 सत्ताप 3 मिश्रण ।

मेका [मिक् + मिच् + यन् + टाप्] 1. मित्रता, समापन 2. समवाय, सत्ता, समाज 3. कुर्वा 4. नील का पीवा 5. स्वाही, मयी 6. संकीर्त की वाद्य, स्वरमान । सम०—अन्मुकः,—अन्मुः—अन्मुः—अन्मुः अन्मा अन्म अन्म अन्म ।

मेय् (व्या० वा० मेपते) पूजा करना, सेवा करना, दण्ड करना ।

मेय [मिपति अन्त्योऽय लपति—मिच् + यन्] 1. मेय,

मेय 2 मेय राशि । सम० अन्म इन्म का विशेषण, अन्म एक ठनी कदम वा बुला, वाकः—वाल्मर्क गार्ग्या, वाल्मर्क मेय वा बकरे का मांस, युष्मन् मेयो का रेवड ।

मेवा [मिभ्योऽस्ती मिच् + यन् + टाप्] छाटी इलायची । मेविका, मेवी [मेय + कन् + टाप्] इलम, मेय + कीर्] मेय (मादा) ।

मेहः [मिह् + यन्] 1 लघुर्धका करना, मूत्र करना 2 मूत्र 3 मूत्र लघवी रोम 4 मेहा 5 बकरा । सम०—अनी हृदी ।

मेहक [मिह् + स्मृट्] 1 मूत्रोत्सर्ग करना 2 मूत्र 3 मित्र ।

मेय (वि०) (स्त्री०—नी) [मिच + यन्] 1 मित्रसद्वी 2 मित्र द्वारा दिया गया 3 दोस्ती, कृपापूर्ण सौहार्दपूर्ण कृपायु मनु० १।८७ भय० १।११ 4 मित्र नाम के देवता से संबंध रखने वाला (कैता कि 'मूर्त') कु० ७।९, अः 1 ऊँचा या पूर्ण आहार 2 एक विशेष वर्णसंकर जाति मनु० १०। २। 3 गुदा की 1 मित्रता, दोस्ती, मन्मथ 2 अनिष्ट संबंध वा आहर्ष्य मित्राप, मयक प्रत्यये स्मृतिरुक्तमन्मथोदयैरीकयाय मेय० ११ 3 अनुप्रासा नाम का नक्षत्र यन् 1 मित्रता दोस्ती 2 सलाहपूर्ण करना—मनु० ६।१५२ 3 अनुप्रासा नाम का नक्षत्र, (इसी वर्ष मैं 'मेयमन्' लब्ध थी) ।

मेयक [मेय + कन्] मित्रता दाम्नी ।

मेयवचन [मिचरच वचनस्य इ० सं०, मिचम्यावह, मिचवचन + यन्] 1 वास्तीक का विशेषण 2 अन्तरा का विशेषण 3 यत्र के प्रतिनिधि आश्रयो में से एक ।

मेयवचनः [मिचवचन + इन्] 1 अन्तरा का विशेषण 2 वशिष्ठ का विशेषण 3 वास्तीक का विशेषण ।

मेवेय (वि०) (स्त्री०—वी) [मेवे मित्रतायां लाप्, मेय + इन्] दोस्त वा मित्र से संबंध रखने वाला, दोस्ती, — अः एक वर्णसंकर जाति का नाम ।

मेवेयक [मेवेय + कन्] एक वर्णसंकर जाति का नाम मनु० १०।११ ।

मेवेयिका [मेवेयक + टाप्, इत्यन्] मित्रों या मित्रराष्ट्रों में संबंध, मित्रवृद्ध ।

मेव्य [मिच + यन्] मित्रता, दोस्ती, मैत्री ।

मेविका [मिचिकायां यच—यच्] मित्रता का राजा रघु० १।१३२, ४८,—स्त्री कीला का नाम रघु० १२।२९ ।

मेवुय (वि०) (स्त्री०—वी) [मिपुनेन मिपुन्यन्—यच्] 1. युष्मत्तव, जुका हुआ 2. मित्रवृद्ध में नायक 3. संबंध से संबंध रखने वाला,—यच् 1. रति कीर्त,

संयोग, मृत संयुनमग्रम् पञ्च० २।१४ २ विवाह
३ मित्राण, सयाण। सम० ७७२: संयुनोपाय का
उत्तेजना, -अभिन् (वि०) सहवामी, संराष्कम् स्त्री-
मभाग से विकल।

संयुक्तिकः [संयुज् + क्तृ + टाप्, टावम्] विवाह द्वारा
मित्राण, वैवाहिक गठबंधन।

संयोजकम् (नपु०) ममल बुट।

संयोजकः [संयोज् + क्तृ + टाप्, टावम्] हिमालय और मना क पुत्र
(एक पर्वत) का नाम, यही एक ऐसा पर्वत था
जिसके डेन समूह में मित्रता होने के कारण अद्यतन
रहे जहाँक इन्द्र ने और दूसरे पर्वतों के बाव बाट
हान्त। १० कु० १।१००। सम० स्थल (रत्ना) पार्वती
का ७४५।

संयोजकः (पु०) मनुष्य, माहीगीर।

संयोजकः (पु०) एक गलत का नाम जिस ग्राहक ने मात्र
मित्रता का। सम० हनु (पु०) कुल का विशेषण।

संयोजकः—अर्थ, संयोजकः—अर्थ [मित्र देशभेदे भव इह]
एक प्रकार का प्रादिक वय अधिगर्भित वृद्धि वीज-
संयोजकम् जि० ११।५१ मया० ३८।

संयोजकः [संयोज् + क्तृ + टाप्, टावम्] मनुष्य, भौग।

संयोजकः (नपु०) किसी धानक की उत्तरी टूटि म्यात्र।

संयोजकः [संयोज् + क्तृ + टाप्, टावम्] १ उद्योग, स्वतन्त्र करना, मूल करना, मुक्ति देना
२ हीना करना, क्षालना, क्षिणावना ३ बलपूर्वक
छोड़ना ४ डालना, फेंकना, उछालना ५ डलवाना।

संयोजकः [संयोज् + क्तृ + टाप्, टावम्] १ मुक्ति, छुटकारा तथा स्वतन्त्रता
साधना तथा बन्धों मोक्षों व प्रवर्धन का०, मय०
५१ लक्ष्मणोपाय सुकादय १५० १५०० पुराणा
व भुरो मोक्षम् १५११ २ उद्योग परिचाय
मात्र ३ परममक्ति, आवागमन प्रवर्धन पुनरुत्थन के
विकार में आत्मा की मुक्ति, मानवजीवन के कार
उत्तेजना में से अस्वस्थ ४० अर्थ, मय० ५।१८
१८।३०, १५० १८।१८, मय० ६।३५ ४ मय०
५ अथ पवन, अवस्थान मित्रता वन्धनार्थमपेक्ष-
मोक्ष-कु० १।३१ ६ हीना करना क्षालना वन्धन
मुक्त करना वोजयासाधनामय मय० ११
७ डलवाना, गिराना डालना क्षालना, अधुनाय
८ क्षिणावना लगाना, फेंकना डालना क्षालना
९ डलवाना, क्षिणावना १० (किसी
वृक्ष आदि का) परिचाय करना ११ (उदात्त) में।
वृक्षवन्धन वृक्ष को मुक्ति। सम० उपायः मोक्ष
प्राप्त करना या मायन, हेतुः पेट पीनी यात्री
हनुमत्प्राप्त के साथ लब्धव्य होने वाला विशेषण,
-कारण सूत्र-पुरी कीकी मायक उत्तरी ६। विशेषण।

संयोजकम् [संयोज् + क्तृ + टाप्, टावम्] १ लक्ष्मण, मूल करना, परम

मुक्ति, स्वतन्त्रता देना २ उद्योग, छुटकारा ३ हीना
करना, क्षालना ४ छोड़ना, परिचाय करना, त्याग
देना ५ डलवाना ६ अवस्थान करना।

संयोजकः (वि०) [संयोज् + क्तृ + टाप्, टावम्] १ स्वार्थ, स्व-
हीन, निष्कल, लाभार्थित अस्वच्छ-मायका मोक्ष
वरमविशेष नाथसे लब्धकाया-मय० ६, मोक्षवृत्ति
कलमस्य वेष्टितम्—१५० ११।३९, १८।१५, मय०
१।१२ २ निश्चय निष्प्रयोजन, अनिश्चित ३ छोड़ा
गया परिचय ४ प्राकटी, -अः बाह, बेरा, प्राकटी,
धनु (अर्थ०) स्वार्थ, बिना किसी प्रयोजन के,
बिना किसी उपयोग के। सम०—कर्मन् (वि०)
अप्रायुक्त कायी में व्यस्त,—पुष्पा दास स्त्री।

संयोजकः—साधवन्दी, दाह।

संयोजकः [संयोज् + क्तृ + टाप्, टावम्] १ केने का पीछा २ मोक्षान्वय वा
सोहृद्वन्धन का पेश,—अः १ केने का वृक्ष २ कपास
का पीछा ३ नील का पीछा—अर्थ केने का फल।

संयोजकः [संयोज् + क्तृ + टाप्, टावम्] १ अवन, स्यासी २ परममक्ति,
छुटकारा ३ केने का पीछा।

संयोजकः (वि०) [संयोज् + क्तृ + टाप्, टावम्] छोड़ने वाला,
स्वतन्त्र करने वाला, -अर्थ १ छोड़ना, मुक्त करना,
स्वतन्त्र करना, मोक्ष २ बुझा उठारना ३ निर्मूल्य
करना उत्सर्जन करना ४ किसी कर्मव्यवहार का अर्थ
का परिचाय करना। सम०—अर्थः क्षमा, (कपड़ा
जिससे बूझ बल बाँध जाना जाय)।

संयोजकः (वि०) [संयोज् + क्तृ + टाप्, टावम्] छोड़ने वाला,
स्वतन्त्र करने वाला।

संयोजकः [संयोज् + क्तृ + क्तृ = संयोज् + क्तृ + क्तृ] १ केने
का पीछा या फल २ वन्धन की लकड़ी।

संयोजकः—अर्थ [संयोज् + क्तृ + टाप्, टावम्] बटी, बोली,—अर्थ बुझा बात
की दा पनियाँ जो बाह के बन्धन पर दी जाती हैं,
(अन्तर्मुखपत्रमय)।

संयोजकम् [संयोज् + क्तृ + टाप्, टावम्] १ (मात्रे) क्त
जब कभी बातचीत चलती है या अवगमनका होकर
नायिका का नाम आदि कुरेवती है तो उस समय वृक्ष-
बाप बिना इच्छा के अपने पित्र के प्रति स्नेह की
अभिप्राय। उक्तवत् वनि ने इसकी परिचाय दी
है—कान्तमयवतादी हवि तद्वाचवाचित।
प्राकृतमभिवाच्य संयोजकमभिवाच्ये ॥ ३० सा०
१० १६१ भी।

संयोजकः [संयोज् + क्तृ + टाप्, टावम्] १ मानव, पत्रवत्ता, हर्ष, लुकी
वचनवाच्य मादाय उत्तर० २।१२, १५०
५।१५ २ वरहम्य, सुमति। सम०—आयकः काय
का पेश।

संयोजकः (वि०) [संयोज् + क्तृ + टाप्, टावम्] [संयोजक-सु + क्तृ + टाप्] बुझाना, आर्षवन्धन, प्रसक्ततावाचक,—अ-

—कम्प विदार्य, कम्पु-वाक्य० १।२८९.—कम्प एक बन्ध संकर वासि (अथिष पिता और मृग माता से उत्पन्न)।

मौलिकम् [मृ+मृ] १ हर्ष, प्रसन्नता २ प्रसन्न करने की क्रिया ३ मौलः।

मौलिकता, मौलिकता [मृ+मृ+तन्+डीप्=मोद-यन्ती+कम्+टाप्, ह्रस्व] एक प्रकार की चमकी।

मौलिक (वि०) [मृ+मृ] १ प्रसन्न, सुखी मृग २ प्रसन्नता-शायक, आनन्दप्रद, बी १. माता प्रकार (अथिष, मल्लिका, मृही) के पीछे के नाम २ कम्परी ३ आदक या लीची हुई सराब।

मोरकः [मृ+मृ] १ मीठे रस वाला एक वीषा २ तापी आर्य वय का वृक्ष, -इन्म लगे की जड़।

मोरकः [मृ+मृ] १ मोर, कुटेरा २ मोरी, कुट ३ कुटकासोट, मोरी, ठंडा के बाना, हटाना (बाक० से बी) -न पुन्यमोचनहोयुवात्मता - मृच्छ० १, एटि-मोच प्रचोच-वीत० ११ ४ मुराई हुई अपतित। सम० कृष् (५०) मोर।

मोरकः [मृ+मृ] कुटेरा, मोर।

मोरकम् [मृ+मृ] १. कुटना, लसोटना, मोरी करना, ठण्डा २ काटना, ३ मृच्छ करना।

मोला [मृ+म+टाप्] मोरी, मृदः।

मोहः [मृ+मृ] १. केला की हडि, मूकित हाना, निःशक्ता, बेहोशी—मोहोदयवर्गमृगिष मध्वते मृच्छ-माता—विष्णु० १।८, कु० ३।७३ २ चक्राहुट, आभोह, उद्विगता, अन्धबन्धना—अज्ञातान पुनर्मोह-मेव वास्तविक पाण्डव—अथ० ४।३५ ३ मूर्खता, मज्जन, दीवानापन—तिर्गोर्ध्वस्तर मोहोदयेनाग्नि-शायकम्—रघु० १।२, अ० ७।२५ ४ मृद, मृग जसुदि ५ आचर्य, अचम्पना ६ कण्ट, पीडा ७ बाहु की कला जो मनु की पराम्पन करने में प्रयत्न की जाय ८. (हर्ष० में) आभोह जो मृग की पशुवाक्य में अचरोचक है, (इसके अनुसार) मनुष्य को मानसिक चढावों की मानसिकता में विश्राम होता है, और बहू विषय सुझा में लुप्त करने का अभ्यस्त हो जाता है। सम० कलिका मोटा और आभोहक जाल, निहा अन्धविषयान, अन्धः आभोहक बाहु,—प्राति० (अ०) प्रसन्न की गल जब कि लम्पत विषय मृच्छ हो जायता

आभोहम् विष्णु विष्णु विष्णु वा पुत्र।

मोह्य (वि०) (वि०-जी) [मृ+मृ+तन्+डीप्] १ बड़ीमृत करने वाला २ व्याकुल करने वाला उद्विग्न करने वाला, विह्वल करने वाला ३ आभोहक, लज्जाक ४ आकर्षक, अः १ शिव का विशेषण २. काम के पांच भागों में से एक चतुरा, मनु १. बड़ीमृत करना २ कुल करना, चक्रा देना, विह्वल

करना, ३. जड़ता, बेहोशी ४. दीवानापन, आभोह, उद्विगता ५. कुलकाना प्रलोभन करने के विषे बाहु-टोला। सम० अन्धम् एक ऐसा बाहुच-अन्ध जो उस व्यक्ति को जिस पर कि चलाया जाय, मृच्छ कर ले।

मोह्यकः [मोह्य+क+क] मृग का महीना।

मोह्यित (पू० क० क०) [मृ+मृ+क] १. बड़ीमृत किया हुआ २ चक्राया हुआ, विह्वल ३ व्याकुल, बाहुल्य, मृच्छ किया हुआ, पुनर्माया हुआ।

मोह्यिनी [मृ+मृ+मिनी] १. एक अम्परा का नाम २. मनोहारिणी स्त्री (अम्पन बाटने समय राजसों को उगने में विष्णु ने बड़ी रूप धारण किया था) ३ एक प्रकार का चमकी का फूल।

मोह्य (कु) लि० (५०) मोहा ३५०० ४२९।

मोह्यिकम् [मृ+मृ+मृ+क] माली मोह्यिक न मने गजे सुभा०। सम०—आभोही धर्मियों की लड़ी मृच्छका मोरी की मालाएँ गुलने वाला स्त्री—अन्धम् (नपु०) मोहियों की लड़ी प्रसन्नता मोह्यिक को मृच्छ देने वाली मोरी—मृच्छित (स्त्री०) मोहियों की मोरी, लरः मोहियों की लड़ी या हार।

मोह्यक [मृ+मृ] गुणान, मृच्छता मोल।

मोह्यिकः [मृ+मृ+क] एक कुल का नाम परे परे मोह्यिकि कृपाचर्म का०।

मोह्यकम् [मृ+मृ+क] १. बाहुलीपना बहु मोह्यिता २. लाली, मानहारिणी, मृच्छा आरोप।

मोह्यक [मृ+मृ+क] पूर्ववर्तिता, मोह्यिता।

मोह्यक [मृ+मृ+क] १. मूर्खता मृच्छता २. कृपाहीनता सरलता, मोह्यकान ३. आचर्य, मोह्यक।

मोह्यक [मृ+मृ+क] केम का कुल।

मोह्य (वि०) (स्त्री०) बी) [मृ+मृ+क] मृग की पाय का बना हुआ, अ मृग की पाय का गला।

मोह्यी [मोह्य+डीप्] मृग की पाय की नीन लड़की बनी, बाहुल्य की लड़की कु० ५।१० मृग० २।६५।

मम०—मृच्छकान्तम्,—अन्धम् मृग की पाय का बना कटिमुन प्रमथन, उपमथन सम्कार-मृग० १।७५ १९९।

मोह्यक [मृ+मृ+क] १. प्रज्ञान ब्रह्मा मूर्खता २. मृच्छकान्त।

मोह्यक [मृ+मृ+क] मृग की पाय।

मोह्यक [मृ+मृ+क] मृग की पाय।

मोह्यक [मृ+मृ+क] मृग की पाय।

मोह्यक [मृ+मृ+क] मृग की पाय।

मोह्यक [मृ+मृ+क] मृग की पाय।

मोह्यक [मृ+मृ+क] मृग की पाय।

मोह्यक [मृ+मृ+क] मृग की पाय।

मोह्यक [मृ+मृ+क] मृग की पाय।

मोह्यक [मृ+मृ+क] मृग की पाय।

मोह्यक [मृ+मृ+क] मृग की पाय।

मोह्यक [मृ+मृ+क] मृग की पाय।

मोह्यक [मृ+मृ+क] मृग की पाय।

मोह्यक [मृ+मृ+क] मृग की पाय।

मोह्यक [मृ+मृ+क] मृग की पाय।

का रोग, अथवा २ रोगधारी। सम० अथवा अथवा
का आक्रमण, अथवा (वि०) अथवा, जी
अथवा।

परिकल्पम् (वि०) [यक्ष्य । इति] ओ क्षयराज से वस्तु
या पीठित है मन्० २।१५४।

यस्य (म्वा० उभ० गबनित-न ह्यट्, कर्मयो० इत्यन, इच्छा०
यित्वाकृत-ते) १ यत्र करना, ध्याना पूर्वक पूजा करना
(प्रायः गार्थायक) यज्जा क करण० न सवद०
-यज्जेन गार्थायकम् -यत्न० गि० १५३, ६१६, १११
६०, मट्टि० १५१५ - इसो पकार अश्वमेधेनेने, गार्थयज्ज
नजे - बादि २ आर्तुति रना । इचनापरक कर्म० तथा
यज्जाय सायन या आर्तुतिपरक करण० के माषा)
यसुना क० वि० ता० गार्थमेने एतत् पितृनु
मह्य०, मनु० ११४०५, १११११८ ३ पूजा करना
मुनीषा करना सम्मान करना, गार्थ करना यज्ज
(गार्थयज्ज-१) १ यत्र करवाना २ यत्र म सम्पत्ता
रना । अ, वधि, प्र यज्ज करना आर्तुति रना
सम् अश्वमेध करना पूजा करना नमस्योत्सवम्
पठलम् मट्टि० १५१५६

यजति [यज् + तिप्] । उन यज्ञीय अनुष्ठानों का
गति-भाषिक नाम जिनके साथ 'यजति' क्रिया का
प्रयोग होता है। जैसे क. विवरण के लिए 'ब्रह्मोति'
शब्द इत्यादि ।

पञ्चमः । यत् । अथ । १ वह गृहस्थ जो यज्ञीय अग्नि को स्थिर रखना है, अग्निहासों, अथ अथिभन्वित अग्नि को स्थायित्व रखना ।

यज्ञमय [यज्ञ - स्मृत] 1 यज्ञ करने की क्रिया 2 यज्ञ, देश, यजन मन्त्र, दधि मीते उत्तर० ४ 3 यज्ञ करने का स्थान ।

यथाचारः। यज्ञः, ज्ञानम् । वह व्यक्ति जो नियमित रूप से यज्ञ करता है और उसका व्यवहार स्वयं बहान करता है 2 वह व्यक्ति जो अपने लिए यज्ञ करवाने के लिए पुरोहित या पुरोहितो को नियुक्त करता है 3. भ्रातृभेदो सरसक, धनी व्यक्ति 4 कुल का प्रधान पुत्र। गमः निष्ठाः स्वयं यज्ञ करने वाले ब्राह्मण का विध्य श ० ४।

यदि: [यज् + इत्] 1 यज्ञकर्ता 2 यज्ञ करने की क्रिया
3 यज्ञ—दानमध्ययन याज्ञ मन० १०।७९।

यजुस् (यजु०) । यजु० + अंति । यज्ञीय प्राचैना वा यजुस्,
2 यजुर्वेद का पाठ, यजुर्वेद के मन्त्रात्मक मन्त्रों का
संग्रह जो यज्ञ के अवसर पर पढ़े जाते हैं—तु० मन्त्र
3. यजुर्वेद का नाम । मय० विष् (वि०) यज्ञीय
विधि का ज्ञान, वेदः नीन (अथर्व वेद को सम्मिलित
करके) वा बार प्रधान वेदों में द्वितीय (यह वह
सम्बन्धी पवित्र पाठ का मन्त्रात्मक संग्रह है, इसकी

दो मुख्य शाखाएँ हैं - सौमरीय या कृष्णधनुर्बेद, तथा
वाजपयनेय या शुकलधनुर्बेद ।

पञ्चः [यज् + (भावे) नङ्] । याग या मस, यज्ञ सम्बन्धी
कृत्य—यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवा, तस्माच्च ज्ञात्सर्वं ब्रुव.

-- जाति 2 पूजा का कार्य, कोई भी पवित्र या अशुचि सम्बन्धी क्रिया (प्रत्येक गृहस्थ, विधेयतः) ब्राह्मण को प्रति पात्र ऐसे अधिकारक कृत्य प्रतिदिन करके पड़ते हैं, मृतपञ्च, भग्नपञ्च, विग्नपञ्च, देवयज्ञ और ब्रह्मयज्ञ, यही पात्राः समष्टिकाः २ 'पञ्च महा यज्ञ' कहलाते हैं, द० 'महायज्ञ' और 'पात्र' सन्दर्भ पृष्ठ-पृष्ठक)

१ अग्नि का नाम । विष्णु का नाम । सय० अंशः
नक्ष का एक भाग । भुज् (प०) देवता-देव-कु०
११४ अ(आ)गार, -रश्मि एक यज्ञीय भूमि, -अग्न्य
१ यज्ञ का एक भाग । २ कोई भी यज्ञीय आवश्यकता,
यज्ञ का भाग । यज्ञाङ्ग्यानिर्वाहमेवम् यस्य -कु०
११५, (ग) १ नक्षत्र का षष्ठ २ विष्णु का नाम,
अरि. गिव का विशेषण, अक्षयः देव, अक्षय्य
(प०) ईश्वरः विष्णु का नाम, उपकरणम् यज्ञपात्र
या यज्ञ का कोई आवश्यक उपकरण, -उपवीत्य द्विजो
द्वारा पहना जाने वाला यज्ञोपवीत (जब आज्ञा कल
को निर्माण जातिवा भी पहनती हैं) जो बायं कन
के ऊपर तथा दाहिनी नखा के नीचे पहना जाता है

३० मनु० २।१३ (मूल रूप से 'यज्ञोपवीत' उप-
नयन लस्कार का ही नाप है जिसमें जनेक पहना
जाय), कर्मा० (वि०) गणकार्य में व्यस्त (मनु०)
यज्ञीय कृत्य, - यज्य (वि०), यज्ञ की प्रकृति का, वा
य के नयान, कौत्सकः बहु ब्रूता जिसके साथ यज्ञीय
वर्जित्यसु भीथा जाता है) कुम्भक हवनकुम्भ, अग्नि-
कुम्भ, कृत् (वि०) यज्ञानुष्ठान करने वाला, (पु०)
१ विष्णु का नाम २ यज्ञ कराने वाला पुरोहित, - यजुः
१ यज्ञीय कृत्य २ पूर्णकृत्य वा मुख्य अनुष्ठान
३ विष्णु का विशेषण, - यजः बहु राक्षस जो यज्ञों में
विजय डालता है, इक्षिका यज्ञीय उपहार, यज्ञानुष्ठान
कराने वाले पुरोहित को दो जाने वाली इक्षिका,
दीक्षा १ किसी यज्ञीय कृत्य में प्रवेश वा उपक्रम
२ यज्ञ का अनुष्ठान मनु० ५।१६९, - इज्यन् यज्ञ के
लिए प्रयुक्त होने वाली कोई वस्तु (उदा० यज्ञ पात्र
आदि), कताः १ जो किसी यज्ञ की स्थापना वा
प्रति करता है २ 'यजमान' ३ शिष्णु का नाम,
- यजुः १ यज्ञ के लिए धनु, यज्ञीय हवि २ घोड़ा,
पुष्कः, कलसः विष्णु के विशेषण, यज्यः १. यज्ञ
का एक अंग, यज्ञ के उपहाराँ में हिस्ता २ देव, देवता,
भुजु (पु०) देव, देवता, भुविः (स्त्री०) यज्ञ के
लिए स्थान, यज्ञीय भूमि, भुजु (पु०) विष्णु का
विशेषण, योक्त (पु०) विष्णु वा कृत्य का विशेषण,

रत्नः - रत्नम् (नपु०) सोम, वराहः सूकरावतार
में विष्णु, वसिष्ठः, स्त्री (स्त्री०) सोम की बेल
या पीठा, वरः यज्ञ के लिए तैयार की गई या बेरी
यई भूमि - ब्राह्म विष्णु का विशेषण, - वृक्षः वट
वृक्ष, वेदिः - वी (स्त्री०) यज्ञ की वेदी, जलधम्
यज्ञकक्ष या अस्थायी छप्पर जिसके नीचे बैठकर यज्ञ
किया जाय, ज्ञाता यज्ञ का कर्मज्ञ, क्षेत्रः, यन्
यज्ञ का लक्ष्यस्थल - यज्ञशेष तत्त्वामृतम् मनु० ३१२/५,
- क्षेत्रा सोम का पीठा - क्षेत्रम् (नपु०) यज्ञ में
उपस्थित जनसम्बन्धी, संसारः यज्ञ के लिए बाध्यक
सामग्री, सारः विष्णु का विशेषण, - सिद्धिः (स्त्री०)
यज्ञ की पूर्ति, सुखम् दे० यज्ञोत्पत्ति, सैनः राजा
मुपद का विशेषण, - स्वायम्बुः यज्ञ का अन्तः, ह्यु० (पु०)
- ह्युः शिव का विशेषण ।

यज्ञिकः [यज्ञ + ठन्] ढाक का पेड़ ।

यज्ञिक (वि०) [यज्ञाय हित - य] १ यज्ञसम्बन्धी, यज्ञो-
पयस्कर, या यज्ञपरक २ पुनीत, पवित्र, दिव्य ३ अर्ध
वीर्य, पुजनीय ४ अस्त, पुज्यशील, वः १. देव, देवता
२ तीक्ष्ण युग द्वार । सम० वेत्तः यज्ञो का देव
- छप्परधारस्तु धरति युगो यथ स्वभावतः, स तेया
यज्ञिभो देवाः श्लेषच्छेदेनस्ततः परः मनु० ११/३,
- ज्ञाता यज्ञसम्बन्ध ।

यज्ञीय (वि०) [यज्ञ + छ] यज्ञ सबधी - यः गुरु का
पेड़ । सम० - ब्रह्मसाधकः विकल्प नामक पेड़ ।

यज्ञम् (वि०) (स्त्री० - यज्वरी) [यज्ञ + क्त्वन्ति] यज्ञ
करने वाला, पूजा करने वाला, बर्चाना करने वाला
आदि, (पु०) १ जो वेदविहितविधि के अनुसार यज्ञो-
त्पन्न करता है, यज्ञो का अनुष्ठाता - गोपाम्बयः
पाणिष एष यज्ञा रघु० ६१४६, ११४६, ३१३९,
१८१११, कु० २१४६ २ विष्णु का नाम ।

यज् (म्ब० वा० यत्ते, यतित) १ यत्न करना, कोशिश
करना, प्रयास करना, उद्योग करना (बहुधा सप्र०
वा मुमुक्षुत्व के साथ) सबी कल्पे ययति यतते लब्धु-
मर्षम् कुमुद्वी विक्रम० ३१२ २ प्रयास करना,
उत्सुक वा आतुर होना, उत्कण्ठित होना - या न
यवी श्रियमन्वबन्धुः सागतराशयना ययमायम् शि०
४१४५, रघु० ११७ ३ हाथ पैर मारना, विग्नार
उद्योग करना, मग्न करना ४ नावधानी बरतना,
बबरदारी रहना - यय० २१४० - प्रेर० (यातयति ते)
१. कीटना वापिस करना, बदला देना, हुरबाजा
देना, केर देना २ धुना करना, विन्ना करना ३ बोल्साहून
देना, धान फूला, लजीब बनाना ४ मनावा,
धुकी करना, परेधान करना ५ तैयार करना,
विस्तार से फावें करना, ज्ञा - १. प्रवाह करना
कोशिश करना २ बरोके पर रहना, निर्भर रहना,

(बाँध के साथ) - यय त्वद्यावतामहे महावी०
११४९, मित्र० प्रेर० १ कीटना, केर देना निर्या-
नय हस्तन्यामम् - विक्रम० ५ मनु० ११११६४
२ बदला देना, वापिस करना प्रतिनिष्ठा करना
राजसूययागोर्ध्व स्वयं निर्यातयामि वै रामा०,
प्र वेष्टा करमा प्रयत्न करना प्रयास करना,
प्रति , वेष्टा करना (प्रेर०) केर देना, वापिस
करना दे० निम् पूर्वक यत् सन् , मर्षय करना,
नर्क बितर्क करना देवाभुता वा एषु लाकेषु
मदेतिरे ।

यत् (भू० क० कृ०) [यत् + क्त] १ प्रतिबद्ध, दमन
किया हुआ, नियमित, परामुन २ लोभित मयम
मर्यादित तत् महान्नं द्वागं ब्रावी को एह लगाना ।
मय० अस्तम्बम् (वि०) रथय भयने को अनुमानित
करने वाला स्वसयान श्रिग्निद्वय, (नगरे) यत्नान्न
रावयितुं यत्नम् कु० ३११६, ११०५ आशान
(वि०) मित्राहान् मयमी हस्तिव (वि०) श्रित
निय पाँचव, चर्चाया, श्रित, मयम, मानस
(वि०) मन को वज में रखने वाला बाध् (वि०)
मित्रभाषा, धीनी मोताबलबी दे० आशयम् बल
(वि०) १ प्रतिज्ञा का पालन करने वाला अयम
हन को पूरा करने वाला दृष्ट प्रतिज्ञ ।

यत्नम् [यत् + क्तुट] वेष्टा, प्रयत्न ।

यत्न (वि०) (नपु० मत्) [यत् + इतमच्] जो या
जोन ता (बहुता में से) ।

यत्त (वि०) (नपु० रत्) [यत् + इतम्] जो (दो
में से) ।

यत्तम् (जम्ब०) [यत् + तमित्] (बहुधा मयमबोधक
सर्वनाम यद् के अपा० के रूप में प्रयुक्त) १ जहाँ
से (अथवा या वस्तु का उत्प्रेक्ष्य करते हुए) जिस
जगह से, जिस स्थान से या जिस दिशा से यत्तस्त्वया
ज्ञानमशेषमायन् रघु० ५१४ (यत् - यम्भत् जिस
से) - यत्तस्य प्रयमाशङ्कतेषां नां कल्पयेद्विद्म
मनु० ७१८८९ २ जिस कारण, जिस लिए
३ क्योंकि, पूर्ण, के कारण से, इस लिए कि उवाच
चैन परदार्या हर न वेत्ति नून यत् एवमावत् नाम
कु० ५१७५, रघु० ८१७६, प्रायः सहस्रती 'तत्'
के साथ, रघु० १६१७४ ४ जिस समय से लेकर,
जब से कि ५ नाक, जिससे कि (अतस्ततः १ जिस
किसी जगह से, किसी भी दिशा से २ बाहे किसी
व्यक्ति से ३ बाहे जहाँ, बाही ओर, किसी भी दिशा
में, मनु० ६११५, ज्ञो वत्त १, बाहे जिस जगह से
२ बाहे जिस से, किसी भी व्यक्ति से ३ बाहे जहाँ,
बाहे जिस दिशा में यत्तस्य बद्धरन्धोऽभिधत्तत
- स० ११२४, जय० ६१२६; यत्तः प्रयुक्ति विद्वत्त

से लेकर)। सय० ब्रह्म (वि०) जिससे उत्पन्न,
ब्रह्म (वि०) जिसमें ब्रह्म सेना बाका, या ब्रह्मम
उद्भूत।

यति (सर्वं वि०) [यद् परमात्म अति] (रूप केवल
बहुवचन में, कर्त० और कर्म० यानि) अतिन
अतिनी बार, अतिने कि ।

वक्तिः (स्त्री०) [यम् + क्तित्] 1 प्रविष्ट, राक नियंत्रण
2 रोकना, ठहरना आराम 3 विरहसंत 4 मगीत
में विराम 5 (ऊन० में) विश्राम दमनविद्रुष्ट-
विश्रामस्थान कविभिरुच्यते मा विच्छेदविश्रामाद्यं
पदेवस्थ्या विच्छेदया छ० १, अन्विता नयन
त्रिमनिर्यातयुना सखरा कीर्तयम् 6 विषया,
- ति स ७००० जिनसे सदाश का त्याग दिया है
और अपनी इन्द्रिया का वश में कर लिया है यथा
बाद बिना हल्की तथा जान बिना जान भाग्य०
११११११

प्रशिक्षण (दि०) [यन - कन] खेड़ा की गई प्रयत्न किया गया कोशिश की गई, प्रयास किया गया।

यस्मिन् (१८) [यत् + इति] सम्प्रसारः ।

पतिनी [गतिम - डोप] विधवा ।

कल्पः । यतः (मात्रे) नञ् १ प्रथमं चेष्टा प्रथमं
कोशिन उद्योगं यत्ने कृते यदि न मिष्टयति कोश
दोष हि ० प्र ३१ २ मेहनत, यमीर यनायोप
अथययताय ३ देवदत्त उत्साह, सावधानता
मात्रकृता—यशुति यत्नस्तत्र देवदत्त रघु ० १५६,
प्रतिपाद्यमासीयता यत्न—अं १ ४ पीडा, कष्ट
यम, कठिनाई सेवा, श्रुतिपाद्यमासीय विद्यातुल्यकथ
उत्साह स्वयं यत्नः कु ० १३५ ३६६, रघु ०
७१४५ ।

अथ (अथ०) [यत् + जल] १ जहाँ जिस स्थान में
जिबर सब सा (ही) शक्ति यत् हि सितम् १०
५१५७, कु० १७, १० २ अब, जैसा कि यह काल
में ३ शक्ति वयोकि जब से जहाँ (अथवा) जहाँ
कहीं यत् यत् धूमस्तम् तत् बहिः तर्क० यत् यत्
बाहे जिस स्थान में, तर्क०, यत् यत् यत् यत् यत्
कहाँ १ जहाँ कहीं, बाहे जिस जगह २ अब कहीं
यत् यत् (वि०) [यत् + यत्] जिस स्थान का, जिस स्थान
पर रहता हुआ ।

कथा (अर्थ) [यद् प्रकारे बाल्] । स्थूल रूप से प्रयुक्त होने पर इसके निम्नांकित अर्थ हैं (क) कथितवर्ती के अनुसार। यथाश्रावणीय बहुवारि। 'बैला कि महा राब बाजा करते हैं' (ख) नाम्य, 'जैसा कि कामे बैला है' तत्त्वानुसूते (ग) १, उत्तर २१४ (घ) 'जैसा कि, जो' भाति (गुणनाद्योक्त तथा सम्बन्ध के चिह्न का लयक) जोशीय। यद्यप्युक्त मते यथा की

[illegible]

(अव्य०) ठीक-ठीक अनुपातमूलक में, अधिकारम् (अव्य०) अधिकार या प्रमाण के अनुसार, अक्षीत (वि०) जैसा पड़ा हुआ या अध्ययन किया हुआ है, मूलपाठ के समन्वय, -अनुपुष्पम्-अनुपुष्पम्, अनुपुष्पा (अव्य०) नियमित रूप या परम्परा में, क्रमशः, यथाक्रम, अनुपुष्पम् (अव्य०) 1 अनुभव के अनुसार 2. पूर्वानुभव के अनुरूप, -अनुपुष्पम् (अव्य०) यथार्थ समन्वयता में, उचित रूप से, अधिप्रेत अधिप्रेत, अधिलक्षित, अधीष्ट (वि०) जैसा कि पाहा था, जैसा कि इरादा था या इच्छा की थी, इच्छा के अनुकूल अर्थ (वि०) 1 सचाई के अनुरूप, सत्य, साम्यविशेष, महा साम्योक्त चाभाव्य यथार्थभावी रघु० १६।४८ इसी प्रकार यथार्थ नुभव (मही या सुष्ठु प्रत्यक्ष ज्ञान) और 'यथार्थ वस्तु' 2 मध्य अर्थ ३. समन्वय, अर्थ के अनुसार, गरी ठीक, उपयुक्त साधक करिगन्निव नामात् (अर्थान् सन्नुत्) यथार्थमग्निब्रह्मन् रघु० १६।१६ यथि मद्य सिद्धिपाल तां यथार्था नि० १६।८५, वि० ८।२५, कु० १।१६ 3 योग्य, उपयुक्त (अर्थ अर्थ) सम्यतापूर्वक, मही, उचित प्रकार से, अक्षर (वि०), साधक, अक्षरस स्वर वि० १।१, 'नामन (वि०) अधिकार नाम अर्थ की दृष्टि से मही है या पूर्ण साधक है (जिसके कार्य नाम के अनुसार है) भूय सिद्धेगपि यथार्थनाम्न सिद्धि न मयः मायवि० ४, परस्मैपदा नाम यथार्थनामा रघु० ६।०१, अर्थ मूलचर (यथार्थवर्ण के स्थान पर), अर्थ (वि०) 3. गुणों के अनुसार अधिकारी 2 सम्बन्ध, उपयुक्त व्यापकित, अर्थः मूलचर, ब्रह्म अर्थः, अर्थः (अव्य०) मूल या योग्यता के अनुरूप -रघु० १६।००, अर्थम् (अव्य०) 1 औचित्य के अनुरूप 2. मूल या योग्यता के अनुरूप, -अवकाशम् (अव्य०) 1 कर्म या स्थान के अनुसार 2 जैसा कि अवसर हो, अवसरानुकूल, अवकाशानुकूल, औचित्यानुकूल 3 ठीक स्थान पर आलम्बनमूलक यथावकाश निवार -रघु० ६।१४, अवस्थम् (अव्य०) दया या परिस्थिति के अनुकूल, आकाशम् (वि०) जैसा कि गठने उत्प्रेक्ष्य किया गया है, पूर्वोत्प्रेक्षित, -आकाशम् (अव्य०) जैसा कि पहले बतलाया गया है, आगत (वि०) पूर्व, अर्थ, (अव्य०) मय) जैसा कि कोई जाना, उसी रीति से जैसे कि कोई जाना यथागत मानलिमाग्नयर्थी रघु० १।६३, -आचारम् अर्थः प्रथा के अनुसार, जैसा कि प्रचलन है, साम्यम्, आचारम् (अव्य०) जैसा कि देश में चरित है आचरणम् (अव्य०) आचरण के अनुसार, निर्दिष्ट क्रम या अनुक्रम में, -आचरणम् (अव्य०) अपने गरी

के अनुसार, प्रत्येक अपने अपने विचार के अनुसार, -आचारम् (अव्य०) ' इच्छा या आशय के अनुसार 2 करार के अनुसार, आचरणम् (अव्य०) आशय या किसी व्यक्ति के दार्मिक जीवन के विशेष के अनुसार, इच्छा, इष्ट, ईप्सित (वि०) इच्छा या कामना के अनुसार, अपनी इच्छा के अनुकूल, यथेष्ट, जैसा कि चाहा गया हो या कामना की गई हो, (अव्य०) अक्षम्, -ष्टम्, सन्) 1 इच्छा या कामना के अनुसार, इच्छा या मन के अनुकूल रघु० ४।५१ 2 जिनकी आवश्यकता हो, मन भर कर यथेष्ट पुष्टि धामम् बीर० ३ ईप्सितम् (अव्य०) जैसा कि स्वयं देखा हो जैसा कि वस्तु प्रत्यक्ष किया हो, उत्कल उचित (वि०) जैसा कि आज कहा गया है, पूर्वोक्त उपदिष्टिनाम्न यथाकाम मयूतम् १४०१ यथाकाम्यापार शं १ १४० -१४० ज्ञान (वि०) यथाकाम तावत् तावत् यथाकाम (अव्य०) तम) ईव ताव उपयुक्त कर से, उचित रूप से उत्पन्न (अव्य०) अधिप्रेत क्रम या प्रथा में प्रमाण यथार्थता यथावत् मा० ६० ३-३ उत्पन्नम् (अव्य०) 1 अपनी शक्ति या ताकत के अनुसार 2 आसी प्रशस्तितान् उद्दिष्ट (वि०) जैसा कि उक्त किया गया है 3 सर्वकार है, (ष्टम्) या उद्देश्यम् (अव्य०) सन्निधौ गीति में, उपलोचनम् (अव्य०) मन या इच्छा के अनुसार उपदेशम् (अव्य०) जैसा कि परामर्श या अनुदेश दिया गया है उपशानम् (अव्य०) आवश्यकता या कार्य की दृष्टि से परिश्रम के अनुसार, काम (वि०) उच्छा के अनुसार (अर्थः अर्थ) अर्थ के अनुकूल उच्छा के अनुसार मन भर कर यथाकाम चिन्तादानम् रघु० १।६, १५१, काचित् (वि०) मूलचर प्रशस्तित, काचित् ठीक या मही समय उचित समय रघु० १।६ (अव्य०-अर्थ) ठीक समय पर समयानुकूल, योग्य के अनुसार -मान्यवैजगामार यथाकाल प्रशस्तपि रघु० १०।११, कृत (वि०) जैसा कि मान किया गया है किमि नाम या प्रथा के अनुसार किया गया, प्रयानुकूल मनु० ८।१८३ कर्म, कर्म (अव्य०) ठीक क्रम या परम्परा से निर्दिष्ट क्रम, मही रूप में, उचित रीति में -रघु० २।१०, १।२६, कर्मम् (अव्य०) अपनी शक्ति के अनुसार जिनका समर्थ हो, अर्थ (वि०) पूर्व अर्थानी अर्थ, कामम् (अव्य०) अर्थ है अधिक से अधिक कामना या वृद्धि के अनुसार, कथेष्टम् (अव्य०) वृद्ध के अनुसार, वृद्धि के अनुसार, -सन् (वि०) 1 मय, मही 2 परिशुद्ध सग, (-सन्) विनी वस्तु के विवरण या

विशेषताओं का आस्वादन, विवरण मूलक या सूत्रम
कथन, (अव्य० क्त्वं) १. यथावतः, सुसुतया २. सही
रीत पर, उचित रूप से, जैसा कि वस्तुतः बात हो,
—विष्, —विश्वम् (अव्य०) स्व विद्याओं में, — निर्विघ्न
(वि०) जैसा कि पहले उल्लेख हो चुका है, जैसा
कि ऊपर विशेषता बना दी गई है—यथानिर्विघ्न-
व्यापारा सखी—आदि, —व्यासम् (अव्य०) व्यासन,
सही रूप से, उचित रीति से— मनु० १११, पुण्य
(अव्य०) जैसा कि पहले था, जैसा कि पूर्व अवसरो
पर था, —पूर्व (वि०), पूर्वक (वि०) जैसा कि
पहले था, पूर्ववर्ती— रघु० १२।४८, (—वत्)—पूर्वकम्
(अव्य०) १ जैसा कि पहले था—मनु० १११।८७
२. कम या परंपरा में, कम— एवं याथा यथापूर्वम्
याज्ञ० १।३५, प्रवेक्षम् (अव्य०) १ उचित या
उपयुक्त स्थान में—याथाप्रदेश विनिवेशितेन—कु०
१।४९, आलम्बयामास यथाप्रवेश कठे गुणम्—रघु०
६।८३, ७।३४ २ विधि या विदेश के अनुसार,
—प्रशान्तम्, प्रशस्तः (अव्य०) पर या स्थिति के
अनुकूल, पूर्ववर्तित के अनुसार—आनोकमानेन मुरा-
नसंबान् संभावयामास यथाप्रशान्तम् कु० ७।४६,
—प्राक्षम् (अव्य०) सामर्थ्य के अनुसार, अपनी पूरी
शक्ति से, प्राप्त (वि०) परिस्थितियों के अनुसार,
—प्राप्तम् (अव्य०) प्राप्तता के अनुसार, —कलम्
(अव्य०) अपनी अधिकतम शक्ति के साथ, अपनी
शक्ति से, —कालम्, कालज्ञः (अव्य०) १ प्रत्येक
के भाग के अनुसार, ठीक अनुसार से २. प्रत्येक अपने
अधिक स्थान पर—यथाभावावस्थितता यज्ञ० १।११
३ ठीक स्थान पर यथाभावावस्थिततेषु रघु०
६।१९, —भूतम् (अव्य०) जो कुछ हो चुका उसके
अनुसार, सचाई के अनुसार, सत्यतः, यथावत, —भूवीय
(वि०) ठीक साधने देखने वाला (सब० के साथ)
(मृगः) यथामुक्तीन सीताया पुत्रं बहु लोभयन्
भट्टि० ५।४८, यत्नम् (अव्य०) १. यथा शोध्य,
जैसा कि शोध्य है, यथावत कि० ८।२ २ नियमित
क्रम में, पृथक् पृथक् एक एक करते बीचवन्तो
मुक्ताक्षरी विप्रकीर्णा यथापथम् सां० व० ३३७
—मुक्तम्, —वीक्षम् (अव्य०) परिस्थितियों के अनु-
कूल, यथाशोध्य, उपयुक्त रूप से, शोध्य (वि०)
उपयुक्त, शोध्य, उचित, सही—वचनम्, उचित (अव्य०)
आपनी पसन्द या इच्छा के अनुसार, कथन (अव्य०)
१ रूप या दशन के अनुसार २ ठीक-ठीक, यथावत,
यथादीर्घ, वस्तु (अव्य०) वैसे कि तथ्य है,
यथावतः, विशुद्ध रूप से, सचमुच, विशि (अव्य०)
निश्चय या विशिष्ट के अनुसार, ठीक ठीक, यथावत
यथाविधिहस्तामीनाम् रघु० १।६, सचकारोय-

प्रीत्या मंचिकेयो यथाविधि—१५।३१, ३।७०,—विष्-
कम् (अव्य०) अपनी आय के अनुसार से, अपने
साधनों के अनुसार, —वृत्त (वि०) जैसा कि हो
चुका है, किया गया है, (—तम्) वास्तविक तथ्य,
किसी घटना की परिस्थितियों या विवरण,—कथित,
—कथना (अव्य०) अपनी अधिकतम शक्ति के
अनुसार, वहाँ तक संभव हो,—कालम् (अव्य०)
धर्मशास्त्रों के अनुसार जैसा कि धर्मशास्त्रों में
वर्हित है मनु० ६।८८, भुजम् (अव्य०)
१ जैसा कि सुना है, या बताया गया है
२ (यथावृत्ति) वैदिक विशिष्ट अनुसार, संवत्सर
अलंकार शास्त्र में एक अलंकार यथासक्य क्रमबद्ध
कर्मिकारणो सम्भव—काव्य० १० उदा० सन्निभ
विपत्ति च इय रज्ज्वय भज्जय यन्ता० ५।१०७,
(—कथम्), संक्षेपेन (अव्य०) संक्षेप के अनुसार,
क्रमशः, संक्षेप के संक्षेप याज्ञ० १।२१,—समयम्
(अव्य०) १ उचित समय पर कारण के अनुसार,
संवत्सरम् चलन के अनुसार, संवत् (वि०) संवत्,
जो हो सके, सुखम् (अव्य०) १. मन या इच्छा के
अनुसार २. आगम से, सुखपूर्वक, इच्छानुकूल, जिससे
सुख हो,—वक्तुं निधाय करवाय यथावृत्तं तं यथावृत्ति
यथावृत्तं प्रकटाग्री—सं० ३।२२, रघु० ८।४८,
४।१३, स्थानं सही और उचित स्थान, (अव्य०)
यत्न उचित स्थान पर, ठीक ठीक, स्थित (वि०)
१. वास्तविक तथ्य या परिस्थिति के अनुसार, जैसी
कि स्थिति हो भट्टि० ८।८ २ यत्नम्, उचित रूप
से,—सम् (अव्य०) १. अपने अपने क्रम से, क्रमशः
अध्यासते वीरकुलो यद्यत्नम् रघु० १।३२२,
कि० १।४३ २ संवत्सिक रूप से रघु० १७।६५,
३ ठीक ठीक, यथावत, सही रूप से।

यथावत् (अव्य०) [यथा+वत्] १. ठीक ठीक, ज्यों का
त्यों, यथावत, सही रूप से, प्रायः विशेषण के बल
के साथ अध्यापित या विस्तृत यथावत्—भट्टि०
२।२१, निषेधवाच्यवृत्तये—रघु० ३।२८ २. विशि
या नियम के अनुसार, जैसा कि नियमों द्वारा वर्हित
है,—उत्तो यथावत् विहिताध्याय—रघु० ५।१९, मनु०
६।१, ८।२१४।

यत् (सर्व० वि०) [यत्+अदि. हित] (कर्म ए० व०,
पु० व०, —० या, मनु० यत् ६) सर्वव्यपक
सर्वनाम जो जिन सा, जो कुछ (क) इसका उपयुक्त
सहसंबन्धो 'तद्' है, —सत्य बुद्धिबल तथ्य, परन्तु कभी-
कभी 'तद्' के स्थान पर इदम्, अदम् या एतद् को भी
प्रयुक्त किया जाता है, कभी कभी 'यद्' सर्वव्यपक
ही प्रयुक्त होता है, तथा उसके सहसंबन्धो सर्वनाम का
ज्ञान प्रकरण से ही कर लिया जाता है, दोनों सब-

बोधक सर्वनाम बहुधा एक ही वाक्य में प्रयुक्त किये जाते हैं। यदेव रोषते यस्यैव भवेत्तत्तस्य सुखम् (स) जब इस गन्ध की आवृत्ति कर दी जाती है तो इसका अर्थ होता है 'ममस्मि' तथा इस शब्द का अनुवाच होता है 'जो कोई' 'जो कुछ', इस अवस्था में तद्वत्सर्वी सर्वनाम तत् की भी आवृत्ति की जाती है—यो य सर्वं विनष्टि त्वमुज्ज्वलन् पाण्डवीनां धर्मनाम् शोभायस्तस्य तस्य स्वयमिह जगतामन्कस्यान्तकोऽहम्—वेणी० ३१३० (य) जब यद् का किसी प्रश्न वाचक सर्वनाम या उससे व्युत्पन्न किसी और शब्द के साथ जोड़ दिया जाता है, साथ में निपात 'चिद् वन वा या अपि' लगे हो या न लगे हो तो इसका अर्थ होता है कुछ भी चाहे जो कोई कांश्चि' येन केन प्रकारेण जिस किसी प्रकार से, किसी न किसी प्रकार से, यह कुत्रापि यो वा का वा य कश्चन आदि धर्मिकविषयेषु यह ना केवल मुख्य वाचक है। यानि कानि च मित्रानि आदि (अर्थ०) अर्थय के रूप में 'यद्' वाचा प्रकार से प्रयुक्त होता है १ किसी प्रत्यक्ष या आश्रित वाक्य को आरम्भ करने में अन्य में चाहे 'वति हो या न हो मया य वनप्रवादी वस्तुस्थितिपदमनुबध्नातीति ३० ७३—तस्य कदा किञ्चिन्ना समुत्पन्ना वदन्तीत्युपायाविचलनीया कर्त्तव्याश्च—पञ्च० १ २ कथोक्तिं चिन् विद्यमानरित कते त्वया मे यदिय पुनरुत्पन्नाङ्गनेषा परि-वृत्ताश्चमन्त्री मयाच दृष्टा विक्रम० १११७ या कि लोच्य अस्म्यका न वपुषि क्मां न क्षिपयेव वत्—मृदा० २११८ रघु० ११२७, ८७ इस अर्थ में यद के पश्चात् इसका सहसम्बन्धी तत् या नन जाता है, दे० नै० २२१४६। लय० अपि (अर्थ०) यद्यपि, अथर्वे वक् पञ्चा यदपि भवन—मेघ० २७—अर्थम्—अर्थे (अर्थ०) १ जिस लिए, जिस कारण, जिस बावने, जिस हेतु अथवा यत्सर्वमस्ति इतिवा अवतलकात् प्रेषित ३० ९, कु० ५५७ २ चकि, कथोक्तिं—मूल देव न कथ्य मि पुण्येभानिपतितम्, यवर्षे यत्नवानेव न लभे विप्रतां किमो—महा०, आरम्भम्,—कारणम् (अर्थ०) १ जिस लिए, जिस कारण २ चकि, कथोक्तिं—कृते (अर्थ०) जिस लिए, जिस बावने, जिस वृत्त वा वस्तु के लिए,—अभिप्रायः न-अवकाशी (जो कहता है 'जो होता है वह होता')—पञ्च० ११३१८, का (अर्थ०) अथवा, वा,—नैवद्विच-कनारी मरीचो यदा जयेन परि वा नो जयेत्—मय० २१६ (भाष-कार कहता इस अर्थ की किस्मियाँ बतलाते समय प्रयुक्त करते हैं),—मृत्यु काह्निकता,—लघुम् (अर्थ०) निश्चय ही, कदाही ही वह है कि, कस्य

तत्त्वम्—अयङ्गावसदा बो वचनस्य वास्तव्यम् कचित्-मिष मे हृदयम्—वेणी० १, मृदा० १, पृच्छ० ४। यदा (अर्थ०) [यदाकाले वाच] १ जब, उस समय जब कि बचाया जब कभी, कभीकालीन उसी समय, यद्यपि, यदाप्रभृति तदाप्रभृति जब से लेकर तब से लेकर २ यदि पञ्च नैव यदा करीरविदरे दोषो वस्तुस्य किम्—भर्तृ० २१२३ ३ जब कि, चकि, यत् ४ यदि (अर्थ०) [यद् + निच् + इन्, निलोप] १ अगर, जो (यथामुच्य, और इस अर्थ में प्राय विधिक्रम के साथ प्रयोग, परन्तु कभी-कभी अधिक्यकाल अथवा वर्तमानकाल के साथ भी, प्राय इसके पश्चात् तर्हि और कभी कभी तत् तदा, तत् वा अथ का प्रयोग किया जाता है। धार्मिकप्राप्तिस्थितमित्यवधीय कृत्य चटनं मनुष्यो यदि तद्वत्क स्यात्—मा० ११९, वदमि यदि विचिदमि इत्युक्तिमोक्षी इति रतिमिरममि बोधम् नीत० १०, गने कृते यदि न सिध्यति कोऽय (कस्तत्रि) दोष हि० पञ्च ३१ २ चाहे अगर वद प्रयोग स्फुटचन्द्रशारका विभावरी यक्षक्याय कल्पने कु० ५१६० ३ वार्ता कि जब कि ४ चाहे कदाचित् शायद यदि तत्तदव चिन्ना शायद अथ एसा का सके पुत्र स्पृष्ट यदि किल भवेदङ्गुलिस्त होत मेघ० १०३ याज्ञ० ३११०६ (अर्थ०) हायाकि, अथर्वे—सि० १५१/२ भय० ११३/ ग० ११३७ इति वा या यदा जयेन यदि वा नो जयेत् मय० २१६ भर्तृ० २१२६ या शायद, कदा चिन्, कते ही प्राय निजवाचक सर्वनाम से भी आजस्यकानाम्नाय वाचाय अभिव्यक्त कर दिया जाता है उत्तर० ११२७, ६५६।

यद् [यद् + उ पुरो० अर्थ व] एक प्राचीन राजा का नाम यद्यपि और देवगामी का ज्येष्ठ पुत्र यादवो का वक् प्रवर्तक। तम०—कुलीङ्गक,—अथवा,—ज्येष्ठ-कुल का विशेषण। यद्गच्छा [यद् + गच्छ + गच्छ + टाप्] १ मनपत्न्य करना, स्वेच्छा, (कार्य करने की) स्वतन्त्रता २ यद्यो, यदना, इस अर्थ में प्राय कारण एक व० में प्रयोग होता है और 'यद्गच्छा', 'यदोच्यते' लक्ष्यो से अनु-वच किया जाता है—किमर्पितुम् यद्गच्छायाऽत्रा-जीम्—का०, 'देवने का सर्वोप-हृदा', आदि—यदि-कथेनृच यद्गच्छायाऽनता भुवनेनावा वृत्तेव लक्ष्मी रघु० ११५२, विक्रम० ११९०, कु० १११५। अथ० अथिज ऐच्छिक अथवा स्वरूपकृत काजी,—अथवा १ अकस्मात् वास्तविक २ स्वतस्पूर्त अथवा संयोगवत् भिन्न, यदभावित् निपात। यद्गच्छावत् (अर्थ०) [यद्गच्छा + इतिच्] अकस्मात्, यदभावित्, संयोग से।

कम्पु (पु०) [यम् + कम्प] 1. निवेद्यक, राज्यपाल, शासक
2. बालक (जैसे कि हाथी का, गायी का), कोच-
वाला सारथि—यन्त्रा यन्त्रस्याभ्यस्तयुगबन्धम् रघु०
७।३७, अथ यन्त्रारवायिष्य युवान् विद्यामयेति स
१।५४ 3. महावत, हस्त बालक, हस्त्यारोही ।

यन्त्र (भ्या० घृ०) उभ० यन्त्रति - ते) नियन्त्रण में
करना, दमन करना, रोकना, बाधना, कसना, बाध्य
करना शापयन्त्रितपील्यम्यबलात्कारकचपहं० रघु०
१०।४७, वि० 1 दमन करना, नियन्त्रण में
करना वैदियां शास्त्रा 2 कसना; बाधना, लम्प ,
रोकना, नियन्त्रण में करना, टहराना मर्यान्त्रितो मया
रघु श० १ ।

यन्त्रम् [यन्त्र + अच्] 1 जो नियन्त्रण करता है, या कसता
है, कुली, क्षमा, महाग टेक रैमा कि मुद्रयन्त्र में
(इस लब्ध के नीचे उद्धरण देखिये) 2 अंडी, पट्टी
कसना, कटवच या घबि, चमड़े का तन्ना 3 सम्भो-
रयोगी उपकरण विस्त्रय कर दूडा उपकरण (विष
शब्द) 4 कोई भी उपकरण या मशीन, यन्त्र,
माशन, सामान्य उपकरण -कूपयन्त्रम्-मुच्छ० १०।५९,
'कूप' से पानी निकालने वाली मशीन इसी प्रकार
'मैल' 'जल' आदि 5 घटकनी, कुटी, ताला
6. नियन्त्रण, बल 7 ताबीज, एक रहस्यमय ज्योतिष
का रोगान्त्रण जो ताबीज की शक्ति प्रयुक्त किया
जाय । सम० उक्तः चक्की, का पाट, करण्डिका
एक प्रकार का जादू का पिटारा, कर्मकुल (पु०)
कलाकार, शिल्पकार, यन्त्र 1. लेखी का कोल्ट
2. निर्माणााला, शिल्पगृह, -वेधितम् जादू का कर-
नव, जादू-टाला, बुद्ध (वि०) (हार) कुटी या घट-
खनी जिसमें लकी हुई है, बालम् यन्त्रमूलक कोई
मली, -युष्मकः, युष्मिका यन्त्रचालित गुडिया, या
पुष्पकी जिसमें डोरी या तार आदि कोई ऐसी कल
लगी हो जिससे कि पुतली नाचे, अन्धः पानी की
एक झुलिन छरिता रघु० १५।४९, -मार्कः एक मली
या पतलाका, - सरः कोई तीर या अस्त्र जो किसी
वेध द्वारा छोड़ा जाय ।

यन्त्रकः [यन्त्र + कृत्] 1 जो कल-युद्धों से सुपरिचित हो
2. कुशल मानिक, -कम् 1. कट्टी (बाधु० में)
2. खैराद

यन्त्रकम्.—का [यन्त्र + कृत्, रिचवां टाप् च] 1 नियन्त्रण,
दमन, रोक-बाध - करयन्त्रकदधुरास्तरं ज्योतिष्यचम्पु-
पुटेन पक्षति, नै० २।२३ 2. निष्पन्न, इतिवच, रोक
-होयन्त्रनां तत्त्वमम्यन्त्रयन्त्रम्योन्त्राभौगति विनीच-
यति कु० ७।७५, रघु० ७।२३ 3. कसना, बाधना,
-विधिविनीचकुचदयन्त्रना तमपरायनमात् प्रसिद्धयो
-नै० ५।१० 4. बल, क्षमता, निबद्ध, कष्ट, पीडा

या वेदना (जो विवक्षता से उत्पन्न हो) - अलम्-
मुपचारयन्त्रयया मालवि० ४ 5. अभिगृह-
6. पट्टी ।

यन्त्रवी, यन्त्रिणी [यन्त्र + वीप्, यन्त्र + विनि + वीप्]
पत्नी की छोटी बहन, छोटी माती ।

यन्त्रिणम् (वि०) [यन्त्र + इनि, यन्त्र + विनि वा] 1. (बोर
आदि) जो जीन व नाच से सुपरिचित हो 2 पीढ़-
मगने वाला, 3 जमने लावीच बाधा हुआ हो ।

यन्त्र (भ्या० घृ०) यन्त्रयन्त्र यत्, इच्छा० पियमति) 1
रोकना दमन करना नियन्त्रण करना, दस में करना
दवाना, टहराना, बन्द करना—यच्छेद्वाक्रमनसी प्रथ
वृ०, यत्तविनागमन्—भय० ४।२१, दे० ४

2 प्रदान करना, देना, अर्थ करना—अर्थ० (यद्यपि) नै०
नियन्त्रण करना रोकना आदि, या 1 विना-
हरना, मज्जा करना फैकाना, -वन्त्रम् गतिमायकः
- सिद्धा०, भा० ज्ञानावच्छिन्नान् प्र० ४ (पाठान्तर)

2 ऊपर कीचला कापित कीचला अयच्छति कूपय
जम् सिद्धा०, बाणाभ्युद्यतमाधमोऽ मट्टि० ५।१११

3 नियन्त्रित करना बाधना दवाना, (स्वास आदि)
रोकना—यन्त्र० ३।२१३, १।१००, बा० १।२४

अथवाई लेना, (आ०) लम्बा बढ़ जाना 5 बहुर
करना अधिकार करना, रखना—शिवमायच्छमान

अक्षतमाधिननुत्तमात् - मट्टि० ८।१६ 6 ले जाना

नेत्रय करना, उच् , (पाय आ०) 1 उठाना, ऊपर
करना, उन्नत करना गृह उच्छ्रम्—स० १, परस्व

वृद्ध नोचच्छेत् यन्त्र० १०४, रघु० ११।१७, १५।
२३, मट्टि० ४।३१ 2 तैयार होना, प्रस्थान करना,

आरम करना, (स० या सुमुन्नत के साथ) उच्छ्र
माना गवनाय भूय - रघु० १५।२९, मट्टि० ८।४७

3 प्रवान करना, बोर प्रयत्न करना उच्छ्रति
वेदम्—सिद्धा० ४ शासन करना, प्रबन्ध करना,

हकूमत करना, उच् (आ०) 1 विवाह करना
- यन्त्राभिषेच समवादिनामुपायन्त स० ५,

(मेना) आगमान्कृता विविनोपवेमे कु० १।१८
रघु० १५।८७, सि० १५।२७ 2 पकड़ना, बाधना,

लेना, स्वीकार करना अधिकार करना सन्नाम्न-
पायसत विवरापि - मट्टि० १।१६, १५।२१, ८।३३

3. प्रकट करना, सकेन करना—मट्टि० ७।१०१,
- 1 नियमित करना, दमन करना, रोकना, दस
में करना, शासन करना—इच्छा० निकला स्वमा

—भय० ७।२०, (कुता) कलाक मेना न विवन्नु-
चमत्—कु० ५।५, 'उत्ते हटा नहीं सका' आदि

2. दवाना, निम्नित करना, रोकना, (स्वास आदि)
यन्त्र० २।१९२ न कचंचन युयोनिः प्रकृति स्वा

विच्छति यन्त्र० १०।५९, न दवाना है न कुपारा

हूँ' जादि ३ दान करना, देना—कोन कुले निवपनानि
निषण्णति ति श० ६१२४ & सत्ता देना, दण्ड देना
नियमव्यवहार राजसि मनु० ११२१३ ५ विनिम-
यित करना या निर्दिष्टित करना ६. प्राप्त करना,
अवान करना—तात्कालकाप्रयासेन मोक्षमार्गं निष-
ण्णति याज्ञ० ३१११५, मनु० २१२२ ७ बाधन
करना (धेर०) १ निषचित करना, बध में करना,
विनिर्गमित करना, रोकना, दण्ड देना नियमवसति
विमार्गप्रस्थितानात्तदण्ड श० ५१८ २ बाधना,
कटना शि० ७५०, रघु० ५१३३ ३. मर्यादित
करना, हलका करना, स्थिरा देना कु० ११९१,
विधि , दमन करना, नियमन रखना, भग० ११२४,
सम् १ निषचित करना दमन करना, रोकना
नियमन में रखना (भा०)—अथ० ६११६, मनु०
२११०० २ बाधना, कैद करना, बधना, बधी बताना
—बाधन या न सयसी भट्टि० ११५०, मातृवि० ११७,
रघु० ३३२०, ४२३ एकन करना (भा) श्रीहोम्स-
त—सिद्धा० ४. बन्ध करना बंधना भग०
८११२।

शब्दः [यम् + क्त्वा] १ सयत करना, नियमित करना, दमन करना २ नियन्त्रण, सयम् ३ आत्मनियन्त्रण ४ कोई यद्वा नैतिक कर्तव्य वा धर्मसाधना (विप० निवर्धन) —तप्त यवेन नियमेन तपोऽग्न्यूवै० — नै० १३११, यम और नियम की निम्न प्रकार से भिन्नता बतायी गई है — शरीरमाचरणोपेक्ष निस्पृह यत्कर्म तपसः, नियमस्तु स वरकर्म निस्पृहायस्तु साधनम् अमर०, २० कि० १०१० पर मन्त्रि० भो, यमो की लक्ष्या बहुधा दस बतलाई जाती है, परन्तु भिन्न भिन्न लेखकों ने उनके भिन्न भिन्न नाम दिये हैं — उदा० ब्रह्मचर्य दया क्षान्तिर्दमनं साधनकल्पाता, अहिंसाऽस्ते-यचार्यो दमयजति यमा, स्मृता यात्रा १३१२, या आनुसंस्वं दया साधयहिंसा क्षान्तिगार्हवम्, शान्ति प्रसादो मायुर्व मार्यव च यमा उच्य० कवी-कवी दम केवल पाप ही कनाये जाते हैं — अहिंसा साधनकल्पा ब्रह्मचर्यमकल्पा, अस्तेयमिति पचैव यथाध्यायि ज्ञप्तायि च ५ यमो ज्ञाप्ति के नाठ अर्थात् या क्षान्ति में यद्वा साधन० । आठ अम यह हैं — दमयिष्यमासमप्राकप्यावप्रव्याहृत्स्वराचरमाध्यासमाध-कोऽष्टाकनायि ६ क्षुत्प का देवता, क्षुत्प का मृत रूप, वह क्षुत्प का पुत्र यामा जाता है — दनाग्रजे त्वयि वसामयि दम्पत्यारे उत्तर० १३११ ७ तमसः-धर्मा-रमर्षं प्रति यवी च (अर्थात् मनुस्मृत्युद्धेयी) कर्षव मासिन् — देवी० १३२५, यमयोऽग्नौ च यमो जमतातो अग्नेष्टया कता मनु० १३२५ ८ वीर्यं नै० एक — कम् जोड़ा, जीरी । अम० अनुक्तः अनुत्तरः

यम का सेवक या टहलूआ, अमलक । शिव का विशेषक २ यम का विशेषण किङ्करी यम का सेवक, मृत्यु का हुन, कौलः जल्पु, - ज (वि०) अन्य से जुड़वा, यमस भातरी जावा यमजी उत्तर १, हुनः १ मृत्यु का हुन २ कौवा, द्वितीया कानिक क्षुब्धा दूज जब बहने अपने भाइया का मल्लाह काली है, भाइय, ३० आतद्वितीया, जानी यम का निशम स्थान नर सनातन विज्ञान यमधानीजब निकाल मृत्यु ३११२२, जगिनी यमना नदी, बनला नरकोपरात पापियों को यम से डाग दी जाने वाली पीडा (कभी-कभी इस शब्द का प्रयोग भीषण धातनाए या चार पीडा प्रक करने क किए भी किया जाता है) राव (१०) यम मृत्यु का देवता, सवा यमगन का स्वायसभा, सुयंस एक अवन विमय केरल द बमरे ५, एक का मृद पश्चिम को तथा दूसरे का उत्तर को हो ।

वचकः [यम+स्वास्ते कन्] । प्रनिबध रात्र २ यमल
या दुहवा ३ एक महान् नैतिक वा धार्मिक कृतव्य
हे० यम.—कम् १ बाहरी पट्टी २ (अ०० मे)
एक ही वस्त्र मे (कमी की स्थिति पर सज्जो वा अज्जो
की पुनरावृत्ति वस्तु अथ की चित्रणा के साथ एक
प्रकार की मय (इसके कई भेदों का वर्णन कथा०
३१२/५२ में किया है) आवृत्ति वर्णनवाचोपयोग्य अथ
विशु काव्या० ११६१, ३१२, मा० द० ६५० ।
यमन (वि०) (स्त्री०—नी) [यम्+न्यट्] । सयमी
यमन करने वाला, वास्तक आदि,—वन् १ लयम
करना, यमन करना, बाँटना २ उन्नयना, यमना
३ विराम, विधाम, मः मृत्यु का क्षण यम ।
यमनिका [यमन+कन्+टाप्, ह्रस्वम्] । पश्वा, ओट, तु०
वचनिका ।

ममल (वि०) [यम + ल + क] जोड़ना, जोड़ी में से एक,
 ल दो की मक्या, ली (वि० व०) जोड़ी, सम
 ली मिथन, जोड़ी ।

कनकसूत (वि०) [यम + कनृप्, कन्धम्] जिसने अपनी
 वामनाओं पर यम का बिछा है, आरम्भ विशिष्टि
 —सयकलावला व बुरि स्थित - एणु २।१।
 यमसूत (अव्य०) [यम + सूति] यम के हाथों में लपकी
 शक्ति में, कनकसूत क मन्त्र का सौधना।

धनुना [दम् + डनम् + टाप्] एक प्रसिद्ध नदी का नाम
(या यम् की बहुत नानी जाती है)। मन्० धनु
(५०) मत्स्य का देवता यम् ।

व्याप्तिः [वक्ष्य बाधोर्विधं याति तत्तत्रैव सम्पत्तिर्बोधः] एक
प्रसिद्ध कण्ठवशी राजा का नाय, बहुत का पुत्र,
[वयाति ने सुखकार्य की पूर्ण व्यवस्था के विवाह
किया । ऐसी के राजा वक्ष्यवशी की पुत्री सम्पत्तिः]

बलकपी होल,—खेव (वि०) जिसकी केवल स्वाति होय हो, सिवाय कीति के जिसका और कुछ न बचा हो,—अर्थात् मृत्यवन्ति, पु० कीतिखेव, (क) मृत्यु ।
यसस्य (वि०) [यससे हित—यत्] 1 सम्मान वा कीति की ओर से जाने वाला—मनु० २।५२ 2 विजय, प्रसिद्ध, विख्यात ।

यसस्विन् (वि०) [यसस् + विनि] प्रसिद्ध, विख्यात, विजय ।

यष्टिः,—यष्टी (स्त्री०) [यच् + क्तिन् नि० न सम्प्रसारणम्] ।

1 लकड़ी, लाठी 2 लाठी मढ़का मड़ा 3 लकड़ा, लतून, स्तम्भ 4 बड़ा—जैसा कि 'वासवयष्टि' में 5 वृत्त महारा 6 छड़े का डंडा जैसा कि ध्वजवष्टि में 7 डंडन, वृत्त 8 लकड़ा, इहनी 'कदम्बवष्टि' लफुट-कारकेव—उत्तर० ३।४१ इसी प्रकार 'वृत्तवष्टि' कु० ६।२ सहकारवष्टि वाहि 9 डारी लड़ी (जैसे मोतियों की) शर,—विमृष्य मा हास्यहास्यनिषण्णया बिलोल-यष्टि प्रविलुप्तचन्दनम् कु० ५।८ ग्नु० १३।५४ 10 कोई लता 11 कोई भी पत्तों या सुकुमार वस्तु ('शरीर' वर्ष को पकट कर वापे शब्दों के 'परवाना' समाप्त के अनन्तर प्रयोग) न वाश्य वपश्चमयी सरसा वृष्टि कु० ५।८५ पलावे न नर सुकुमार भगा वाली । सम० यहूः नराधारा, लाठी म्पने वाला—निबालः मार आदि पक्षियों के बँडन का बड़ा—वृक्षया यष्टिनिवासमज्ञानम् ग्नु० १६।१४ 2 बड़े हुए बड़ों पर म्बर वस्तुओं का घर या सनरी प्राण (वि०) 1 निदम सकिन्तो 2 प्राणहीन ।

यष्टिकः [यष्टि + क्त] टोटीहरी मी ।

यष्टिका [यष्टि + का] 1 लाठी रन् मोटा, गववा 2 (एक लकड़ा) मोतियों का शर ।

यष्टी दे० यष्टि ।

यष्टु (पु०) [यच् + य् + पुञ्] पूजा करने वाला यजमान ।

यत् (वि०) हिवा० पर० यत्नि यस्वति यस्त) प्रयास करना, कोशिश करना, परिश्रम करना । प्रेर० याम यनि—ने कष्ट देना आ 1 प्रयास करना कष्ट देना चेष्टा करना मुहा० २।१६ 2 यत् देना बक जाना—नायक्यमि नयन्यन्ती भट्ट० ६९० १५।५५, (प्रेर०) कष्ट देना मताना, पीडा देना प्र , प्रयास करना, कोशिश करना ।

या (अदा० पर० यानि, यान) 1 जाना निकलना—जाना चलना, जाने बटना,—यद्यो तदीयावबलमय वाङ्मयमि ग्नु० १।२५, अन्वययो मध्यमलीकाल ५।१२५ 2 छोड़ा करना आक्रमण करना मनु० ७।१२५ 3 जाना प्रयास करना, कुछ करना । कष्ट० या यत्० के साथ अथवा 'प्रति' के साथ 4 बुझ जाना, वापिस होना, बिना होना 5 नष्ट होना, क्षोभ

होना—यातस्तवापि च विवेक भासि० १।६८, आन्यकमेव हि वनापि भवन्ति यानि मुष्क० १।११ 6 बुझ जाना, होना (समय का)—वीथवन्ति-यति यात तु काव्य० १० 7 ठिकना 8 होना, बहिन होना 9 जाना, पटना, होना (प्राय वाच-वाचक लंका के कर्म० के साथ) 10 उत्तरवापिस सम्पत्कना न त्वस्य सिद्धी वास्वामि सर्वस्वापार-मायना कु० २।५४ 11 मनुसंबंध स्थापित करना 12 प्रार्थना करना, याचना करना 13 होना, जाचना (गम् की भांति 'या' के वर्ष भी बयक्त सज्ञा शब्द के अनुसार नाना प्रकार से बदलते रहते हैं उदा० खड़े या काय आग चलना, ननुत्य करना, याग दिवाना, अथो या डबना अस्त वा छिपना, अन्त होना क्षीय होना उद्यय वा उद्यय होना काज का नष्ट होना, मिठा वा सा जाना वष वा पत्र प्राप्ति करना, पार वा पार जाना, स्वामी होना, पार कर जाना, आगे बढ़ जाना, प्रवृत्ति वा फिर स्थापनिक प्रवस्था का प्राप्ति करना लज्जता वा हुक्का होना बड़ा वा बस में होना अंशकार में जाना, बाधना वा कर्माङ्कन वा निन्दन होना, विपत्ति वा पोरबति होना अथ बदलना छिपना यष्टी वा भूमि पर लिर झुकना आदि) प्र० (वापयति—न) 1 चलना भाव बढ़ाना 2 हटाना पूर हाथना ग्नु० १।३१ 3 ध्याय करना (समय) बिलाना—लासकीकल विराममायाय विपत्तान् भासि० १।७ मेघ० ८९ ४ सहाय देना पाश्चनपोषण करना इच्छा० (यियासति) जाने की इच्छा करना, जाने का होना, अस्ति 1 पार जाना अनिश्चय करना, उन्मथन करना 2 आगे बढ़ना, अस्ति—, चले जाना आग बढ़ना म्च निकलना कृतोपिवास्वामि कृ निह नस्वम पत्रिनि यष्टि० ८।९०, अन्व० 1 अनुसरण करना पासे जाना (आल० से भी) अनुपायम्यमिति नदरा श० १।२० कु० ५।१ यष्टि० २।३७ २ (यन् करना वरावर करना स किन्तुयवन्त्य राजावा गिजनुयंभ० य्नु० १।२५ १।६, सि० २।१३ ३ साथ चलना अनुसन्ध—, क्रमात् चलना, जब चले जाना, बिना होना वापिस होना प्रति पहुँचना जाना, नश्वर होना अभिययी स हिमाचलमुष्करम् कि० ५।१, ग्नु० १।३७ २ प्रयास करना, आक्रमण करना—ग्नु० ५।३० ३ चलन करना आ—, 1 जाना, पहुँचना, निवृत्त होना 2 पहुँचना, प्राप्ति करना, मताना, किसी की अवस्था में होना, भय मुक्त, नाशक भाति, जब १ पहुँचना निकट जाना कि० ६।१६ २ (किसी विशेष अवस्था को) प्राप्त होना—यत्, अनुमान

रुक्म आदि, निम्न , 1 निवृत्तना, बाहर जाना - रघु० १२।८३ 2 गुजरना, (समय) बीतना, बरि- , चारों ओर घूमना चक्कर काटना, प्रदर्शना करना, व , 1 चलना, जाना-मन्त्राङ्गमुन मन्त्रदेवत-वत्प्रयासि मूच्छ० १।२७ 2 प्रयाण करना, कूच करना, प्रति , वापिस जाना लौटना रघु० १।७५, १५।१८, ८।१०, प्रत्यु- , (आधर स्वरूप) उठकर मिलना, अभिवादन करना, सत्कार करना -तानध्या मध्यमादाय दूरस्थासुखी गिरि कु० ६।५०, मेघ० २२, रघु० १।४९ चिनित् , बाहर जाना, निवृत्त जाना में मे चलने जाना प्राणास्तस्या चिनित्यं सत् 1 अन्ते जाना, बिदा होना, मार्ग पर क लना पग- 1, 2 आना प्रविष्ट होना तथा आरोग्य विहाय बीजाग्न्यानि सयाति नवानि देही भग० २।२० 3 गृह्यना ।

यागः [यज्ञ + यञ् + कृ + य] 1 उपहार यज्ञ आहुति 2 कोई भी अनुष्ठान जिसमें आहुतियों की जाय रघु० ८।३० ।

याच (धा० आ० याचने द्वित्व परा०-पार्थना याचित) मागना, याचना करना, निवेदन करना प्राचना करना, अनुरोध करना अनुनय विनय करना (प्रियम्० के साथ) अग्नि याचने वसुधाम् मिद्धा०, पितर प्रणिपत्य पादयोः परितः पादप्रयाचतात्मन -रघु० ८।१२, मटि० १३।१०५ (उपमग कर्गन पर इस वाक्य के अर्थ में कोई धनान् रक्विकर्तन नहीं हुआ) ।

याचकः (स्त्री०-त्री) [याच् + क्तु] विभुक्त, भिक्षारी, अथ इव-नृप-रूपि लघु-मूलस्तुलादपि च याचक-मुखा० । याचकम्, वा [याच् + क्तु + हिमा टाप् च] 1 मागना याचना करना, निवेदन करना 2 पार्थना अनुरोध आवेदन याचना माननाकाय, कथ्यतामनययाचना-भ्यलिः रघु० १।७८ ।

याचकः [याचन् + क्तु] भिक्षारी अभिषोक्ता, आवेदक । याचकम् [वि०] [याच् + क्तु] भीख मागने पर उताऊ याचनाशील मागने के स्वभाव वाला ।

याचित (भू० क० क०) [याच् + क्तु] भंगा गया, निवेदन किया गया, याचना किया गया अनुरोध किया गया प्रार्थना की गई ।

याचिकाम् [याचिन् + क्तु] मित्रा में पात वस्तु उधार ली हुई कोई वस्तु ।

याचना [याच् + क्तु + टाप्] 1 मागना, याचना करना 2 भिक्षारीपन 3 पार्थना, निवेदन अनुरोध-याचना मोक्ष बरमभिवृत्त नाथने लब्धकाया-मेघ० ६ ।

याचः [यच् + गिच् + क्तु] 1 यज्ञ कराने वाला, यज्ञ कराने वाला पुरोहित 2 राजकीय हाथी 3 भवो-न्वत हाथी ।

याचकम् [यच् + गिच् + क्तु] यज्ञ का संचालन वा अनु-ष्ठान कराने की क्रिया मनु० ३।६५, १।८८ ।

याचनेत्री [यचनेन + अच् + क्रीप्] हीपदी का पितृपरक नाम ।

याचिक (वि०) (स्त्री०-त्री) [यज्ञाय हित यज्ञ प्रबोधन-मत्स्य वा ऋक्] यज्ञसंबन्धी, कः यज्ञ कराने वाला, वा यज्ञ करने वाला, वा यज्ञ कराने वाला पुरोहित ।

याच्य (वि०) [यच् + क्तु] 1 ग्याय करने के योग्य 2 यज्ञ मन्त्रों ३ क्रिमिके लिये यज्ञ किया जाय 4 याच्य द्वारा जो यज्ञ करने का अधिकारी माना है वह यज्ञकर्ता यज्ञसम्पादक, ऋक् उपहार वा दक्षिणा जो यज्ञ कराने के उपलक्ष्य में प्राप्त हो ।

यात (भू० क० क०) [या- + क्तु] 1 गया हुआ, प्रयात, चला हुआ 2 गुजरा हुआ विरजित, दूर गया हुआ (दे० या) । सत् 1 वाक्य, गति 2 प्रवाह 3 कृत-काम । सम० वाक्, वाचम् (वि०) 1 वाची, हस्तमान किया हुआ विकृत, परित्यक्त, जो निरर्थक हो गया है अयानयाम वयं दज० 2 कक्षा, अव-पका (अर्थन आदि) यातयाव गतरम वृत्ति स्वरचित य वा-भग० १।७० 3 जीर्ण, चका हुआ, चित्ता हुआ ।

वाचनम् [यन् + गिच् + क्तु] 1 प्रतिकार बहला, प्रति-कोष प्रतिहिंसा जैसा कि 'वैरयानम्' में 2 प्रतिहिंसा, वैरघावन, वा 1. प्रतिकोष क्षतिपूर्ति, बहला 2 कल्प सपीदन, देहना ३ यम के द्वारा पापियों का दो गद्द पातना, तत्क ही पन्थना (ब०-म०) ।

वाचुः वा वचुः 1 वाची बटोढ़ा 2 हावा 3 समय, वृत्, नृ० वृत्तन, पिशाच राक्षस । सम० वाच्य भूत प्रे पिशाच मटि० २।११, रघु० १२।४५ ।

वाच् (स्त्री०) [यच् + क्तु, कृद्विच] जिठानी वा देवरानी ।

वाचा [या च् + टाप्] 1 जाना, गति लकर, रहानी० ६।१ रघु० १।८१६ 2 लेना का प्रयाण चढ़ाई, आक्रमण मार्गशीर्षे शुभे मास दाय्यावात्र महीपति मनु० ७।१८१, पञ्च ३।३० रघु० १।७५६

3 मीथार्तन यथा नीर्ययात्र 4 तीर्थ यात्रियों का समूह 5 उत्सव, पर्व किसी उत्सव वा सत्कार का अवसर कालप्रियानाचस्य वाचापः ज्ञेन १, उर 6 जुलूम, उत्सववाचा, प्रवृत्ता ज्ञेन वाचापि-मूर्धं माकली मा० ६ ६।२ 7 सबक 8 जीवन का सहारा जीविका निर्वाह, वाचापान प्रतिद्वन्द्व-मनु० ४।३, अरीयावापि च ते न प्रतिषेधकर्तव्य मनु० ३।८ ९ (समय का) बीतना 10 सज्जबहार वाचा पंच हि लोकीकी -मनु० ११।१८५, लोक-वाचा वेची० १, मनु० १२।२७ 11 रीति, उपाय,

तरकीब 12. प्रचा, प्रचलन, दस्तूर, रीति एषोदित।
लोकवाचा निव्व स्वीयुसयोः परा मन् १।२५,
(लोकवाचा—कुल्लु०) 13. बाहल, तबारी।
वाचिक (वि०) (स्त्री०—की) [याचा + ठक्] 1 याचा
करता हुआ 2 किसी याचा या जन्मोत्पत्ति से सम्बद्ध
3. जीवन-चारण की आवश्यक सामग्री 4. प्रचलित,
प्रचालक, कः यात्री, कम् 1. प्रयाण, अभियान या
याही 2 बाह्य सामग्री, (याचा के लिए) रमद,
सम्बरण।

वाचस्तम्भम् [याचा + स्तम्भम्] 1 वास्तविकता सचार्थ
2. न्यायता, शीघ्रत्व।

वाचाव्ययम् [वाचा + व्ययम्] 1 वास्तविक या सही प्रकृति,
सचार्थ, सच्चा चरित्र न सति याचाव्ययिदि पिना
किन्—कु० ५।७३, रघु० १०।२४ 2 न्याय्यता,
उपपत्तता 3. उद्देश्य की पूर्ति या निष्पत्तता।

वाचकः [वाचोपपत्त्यम्] वाच् यदु की सतान, यदुवशी।

वाच्यम् (नपु०) [यान्ति वेनेन - या। अमुन्, हुवागम्]
कोई भी विद्यालयाय जलजन्तु, समुद्री जन्तु—याचासि
जलजन्तु—अमर०, बरको यादनामहम्—अम०,
१०।२९, कि० ५।२९, रघु० १।१६। सम०, वसि,
—वाचः (वादनां पति, यादनां नाथ श्री) 1 समुद्र,
2 वन का नाम—रघु० १७।२१।

वाच्य (वि०) (स्त्री०—की), वाच्य, वाच्य (वि०)
(स्त्री०—की) [यच् + वच् + क्त, कित्, कच्, वा,
वाचयम्] जिस प्रकार का, जिसके सधान, जिस प्रकृति
का, जैसा।

वाच्यिक (वि०) (स्त्री०—की) [यच् + ठक्]
1. ऐच्छिक, स्वत स्फूर्त, स्वतंत्र 2 आकस्मिक,
अप्रत्याशित।

वाच्यम् [या चावे म्युद्] 1 जाना, हिलना-धुलना, चलना
टहलना, तबारी करना जैसा कि वचयानम्, उद्
रन् जादि 2 जलवाचा, याचा समुद्रयानकुल्ला
—मनु० ८।१५७, याज्ञ० १।१४ 3. अभिरान करना,
आक्रमण करना (राजनीति के छ गुणों में से एक)
अहिंसा प्रयत्नीतत्त्व रत्ने जानव—अमर०, मनु०
७।१६० 4. बहल, परितन 5 तबारी, बाहल, यात्री,
रथवान् सन्तार कीदरम् रघु० १५।४५, १३।५९,
कु० ६।७६, मनु० १।१२०। सम० वाच्य जहाज,
नौका, —वाच्यः जहाज का दूत जाना,—वाच्यः मादो का
चलना नाव, यात्री का वह नाव जहाँ हुआ या
जहाज है।

वाचकम्—वा [या + चिच् + म्युद्, पुकागम्, मित्र टप्
व] 1 जाने देना, ठोक कर बाहर निकालना,
निष्कासन, हटाना 2 (किसी रोग की) चिकित्सा या
प्रत्ययन 3. समक किल्ला जैसा कि 'कालवाचन' में

4 बिलम्ब, दीर्घसूचना 5 सहारा, निर्वाह 6. प्रचलन,
चलना।

वाच्य (वि०) [या + चिच् + म्युद्, पुकागम्] 1 हटाने
जाने के योग्य, निकाले जाने के योग्य अथवा
अस्वीकार किय जाने के योग्य 2 नीच, तिरस्करणीय,
नामकी, अपावचक। मन् ० वाच्य शिष्टिका या
पालकी, होली।

वाचः [यच् + वच्] 1 निरोध, बरें, निरासन 2. पहर,
दिन का आठवां भाग, तीन घंटे का समय—पश्चि-
माष्टादिनीधामान्नादसिच केचना—रघु० १७।१,
इसी प्रकार याचवनी, चिवासा आदि। मन् ० जोकः
1. मुर्गा 2. चट्टा या चट्टियान जिससे रात के पहरों
की टनटन होती है मन् ० अन्त्याजिन-याचयुग्—रघु०
६।५६। सम प्रत्येक घण्टे के लिए निर्दिष्ट कार्य
वर्ण (स्त्री०) पहरा देना, चौकीदारी करना।

वाचकम् [यच् + वच्] बाड़ी, मियुन।

वाचकनी [याम् + मन् + वच् + कीर + रात कि० ८।५६

वाचि,—की (स्त्री०) राति कृत्वा कुला-नाम्—वा० मि,
कीर च] 1 बहन (दे० वाचि)—वि० १।५।३
2 रात।

वाचिकः [यामे नियुक्त याम् + ठक्] पहरदार, रात को
पहरे पर नियुक्त, चौकीदार मन् ० ५।११०।

वाचिका, वाचिकी [यामिक + टप्, याम् + इवि + कीप्]
रात—सविता विषवति विषुरपि सविनरति दिनस्त
यामिन्, यामिनवनि दिनानि च कुबजुलचकीकृतं
मदसि काच्य० १०। मन् ० वसिः 1 बन्धन
2. कपूर।

वाच्य (वि०) (स्त्री०—की) [यमुना + वच्] यमुना से
सबद्ध, या निकला हुआ, या यमुना में उत्पन्न, वच्
एक प्रकार का अन्न, मुर्गा।

वाच्येच्छयम् [यमुना + इच्छयम्] सीना गेय।

वाच्य (वि०) [यच् + व्यञ्] 1 दक्षिणी—हार ररचनुर्वा-
म्यम् महु० १।१।५ 2 यम से मन्वच रमने वाला
या यम से मिलता जुलता। मन् ०—आकम्ब दक्षिणायन,
मकस्यर्थति, उत्तर (वि०) दक्षिण से उत्तर को
जाने वाला।

वाच्य [याम्य + टप्] 1 दक्षिणदिश 2 राति।

वाचकः [यच् + यच् + ठक्] वार २ वज्र का अनुमान
करने वाला, जो लगातार वज्र करना रहता है,
इशवाशील न याचक यह विशुद्धम्—महु०
२।२०।

वाचाव्यय (वि०) [युन पुन हानि देनामन् वच्यति या
+ वच् + वच्] परिग्रहणीय वाच्य, सत्,—वागावरा
पुष्पकलेन वाच्य प्राप्तम्—अमरवर्णीयम् महु०
२।२०, महाभारतपरिभाषावचनि वाचाव्ययम्

--बाधना० १।१३ (यहाँ 'याधावर' एक कुल का नाम है) ।

बाध-**याधकः**, **अन्** [यु + अन् + अन् याध + कन्] १. बी से नया किया हुआ आहार २ साज, साल रंग, महानर-अभ्यन् रंग परिरक्षकयाथा याधकेन वियतापि यवया सि० १०१९, १५।१३, कि० ५।४० ।

याधत् (वि०) (स्त्री०-त्ती) [यु + धत्, याध् + क्त्वा] ('तावत्' का महसूबकी) १ जितना, जितने ('जितने' के लिए याधत् तथा उत्तरे' के लिए तावत् का प्रयोग होता है) पुरे तावन्मवास्थ मन्वात् रक्षितानपय् । दीधकःकमलो-मयो याधन्मात्रेण माध्यन्-कु० २।३३ ने तु याधन्त एवाजी तावात्प्र ददत्ते मने रघु० १०।४५, १।११०२ जितना बड़ा जितना विन्तुन, जितना बड़ा या जितना विन्तुन यावानर्थे उपपाने सर्वत सम्पन्नादके, नाशमन्वयु वेदेयु बाधनस्य विज्ञानत मम० २।४५, १।८५५ ३ सब, ममन्त (यहाँ दोनों दिक्ष कर समष्टि या ताकस्य वा अर्थ प्रकट करते हैं)

--याधद्वन् तावद्भूतम् मज० अ०५०, याधत् अकेला प्रयुक्त होकर निम्नांकित अर्थ प्रकट करता है (क) जहाँ तक, तक, पर्यन्त, जब तक कि, (कर्म० के साथ) --मन्वत्पान याधत् वृषयोरवेक्षस्य उत्तर० ७, किञ्चनयवधि याधद्वन्मन्वरित चित्रकारेणानिहितम् उत्तर० १, सर्वकोट याधत् पंच० १ (ख) तभी, ठीक उसी समय, इसी बीच में (गुरुत्त किये जाने वाले कार्य का दर्शाने वाला), --तद्वायत् वृद्धिमीमाहूय मनीषाकम्पुलिच्छामि स० १, याधरिमा क्षयामा-जिष्य प्रतिपाकयामि स० ३ २ यदि याधत् और तावत् मिलकर प्रयुक्त हो ता निम्नांकित अर्थ प्रकट होता है (क) इसकी देर कि, इनने समय तक कि

--याधहिमोपात्रेनवाकनन्वाविजिअपरिहारो रत्न-बाह० ८ (ख) ज्योंही, अभी-अभी, इसी समय --एकस्य दुःखस्य न याधद्वन् मच्छामि --तावदिदुताव सन्-परिचित म हि० १।२०४ मय० १०५, कु० १।७० (ग) जबकि, उसी समय तब आश्रमवासिनी याधद्वेष्टाहयपावर्त्ते तावदादपन्ठा क्रियन्ता वाजिन स० १, प्राय 'त' के साथ भी प्रयोग जब कि 'याध' का अर्थ होता है इससे पूर्व कि' याधदेने मरता नोम्यतान तावदेनेम्य प्रवृत्तिरवमवसितम्या विद्वन् ४ (घ) जब, जिस समय याधद्वन्वाय विरीक्षत तावद् हताम्यमोजिन हि० ३। सच०

अमयम्, अन्त्या (अ००) अन्य नक आधीर तक, --अर्थ (वि०) प्रावश्यकता के अनुसार, उत्तरे जितने कि अर्थ प्रकट करने के लिए आवश्यक है (मध्य) --शब्दभागा याधद्वन्मादाय माधव विरराम सि० २।१३, (अ००) अर्थम्] १ उतना जितना

उपयोभी हो २ तभी जबी में--यववपि च विप्रासीयहे याधद्वन्म-भत्त० ३।३० (पाठान्तर), --इत्यन्तु, --ईकित्तु (अ००) पर्यन्त, इच्छा के अनुसार, --इत्यन्तु (अ००) आवश्यकता के अनुसार, जितना आवश्यक हो, --अन्त, --कीधन्, --कीधेन (अ००) जीधन भर, जीधनपर्यन्त, बावीधन, --अन्तु (अ००) अपनी शक्ति के अनुसार, जितना अधिक से अधिक बल हो, --आक्षित उक्त (वि०) उतना जितना कहा जा चुका है, याध (वि०) १ इतना बड़ा, इतना विन्तुन, जहाँ तक आपक हो--कु० २।३३ २ मय्य, तुच्छ, मायूसी, --अक्षयम्, --क्षित (अ००) जहाँ तक समय हो, अपनी शक्ति के अनुसार इसी प्रकार याधद्वन्वाय ।

याधन् (वि०) (स्त्री०-त्ती) [यधन् + अन्, यु + धिच् + क्त्वा] यकनो ने सब्ब रखने वाला, न बड़े-छावनी भाषा भाषी कच्छनेरपि--मुवा०, --नः लोभान ।

याधन्- [यवत् + अन्] १. वाय का डेर २. चारा, साध-गमही ।

याध्नीक (वि०) (स्त्री०-त्ती) [यध्नीक प्रहरमय्य -- ईकम्] साठी या सोठे से सुसज्जित, --क साठी से सुसज्जित बोझ ।

यधकः [यधन्वापरायम् यध + अन्] निष्कर्तकार का नाथ ।

यु । (अथा० पर० यीति दत्त, डेर० यावन्वति, इच्छा० विवर्णित या द्यूवर्ति १. सम्मिलित होना, मिलना २. मिलना, बहुवचन क०० ।

॥ (युहा० पर० युयाति) यवन्-यवन् करना ।

॥ (कथा० उ०० युयाति, युयीते) बाँधना, जकड़ना, सम्मिलित होना, मिलना ।

प्र , बाधना, अनुष्ठान करना, ध्वस्त , विध्वय करना अन्त्योय स्य व्यतिवृत्त, कथाम् कथीत्यु पीपयान्-मट्टि० ८।९ ।

युक्त (भू० क० क०) [युज् + क्त] १. सम्मिलित, मिला हुआ २. जकड़ा हुआ, जुग में बँधा हुआ, साध-सामान से मन्त्र ३. युक्त किया हुआ, युग्मबन्धित ४. छलित ५. सुसज्जित, यज्ज, चरा हुआ, छलित (समाप्त में वा कर्म० के साथ) ६ स्थिर, तुला हुआ, लीन, व्यस्त (अधि० के साथ) ७ कर्मपरायण, परिधारी ८. कुशल [यकी, चतुर ९ बोध, उचित, ठीक, उपयुक्त (सर्व० या अधि० के साथ) १० आदिकामीन, मौलिक (अ००), क्तः यहात्पा जो परब्रह्म वरचरता से साधुज्य प्राप्त कर चुका है, --सायु जोड़ी, युवा वा युव । सव०--अर्थ (वि०) समझदार, किसीकी, तावत्क, कर्मन् (वि०) जिसने किसी कर्मन् कर्म पर

कवाचा कवा है,—कव्य (वि०) व्याप्योचित रस देने वाला—रघु० ५८८, कव्य (वि०) साधवान, कव्य (वि०) बोध, उचित, जायक, उपयुक्त (संब० या बहि० के साथ) —कव्य कव्य पुरोहीसे युक्तक्याये तब
- श० ११०, अनुकारित पुष्पा युक्तक्याये तब
२११६।

कुम्भिकः (स्त्री०) [कुम्भ + कृत्] १ मिलाप, सम, सम्यक् २ प्रदोष, दस्तेमाल, काम में लाना ३ जुए में बोलना ४ व्यवहार, प्रचलन ५ उपाय, तरकीब, योजना, कुतू ६ कपटबोधिना, कूटयुक्ति, दात्र-यंत्र ७ बोधिव, बोध्यता, सामयत्व, सयौत, उपयुक्तता ८ कीलक, कला ९ तर्कना, युक्ति, वहील १० अनुमान, निगमन ११ हेतु, कारण १२ कथबद्धता, रचना - वच कथिवं बोधोयुक्ति मा० ११३ (विचि ने) रत्नाकला, परिस्थिति की गणना या विशेषता (समय, स्थान आदि की दृष्टि में) —मुक्तिप्राप्तिकियाधिल्लतव बाबोलहेतुमि पात्र० २१९२, २१२१४ (नाटको में) बट्याओं की निमित्तित बसला, तु० सा० ३० १४३ १५ (अम० में) किसी के प्रयाजन या अभि-कल्प की प्रकृत्य कवा प्रतीकायक अभिव्यक्ति १६ कुल राशि, योग १७ बातु में झोट मिलाना । मय० कथनम् हेतुओं का बर्णन, कर (वि०) १ उपयुक्त, बोध्य २ सिद्ध, ज (वि०) तरकीब या उपायों में कुशल, आवांकार कुशल, कुशल (वि०) १. उपयुक्त, बोध्य २ विशुद्ध, कुशल ३ स्थापित, सिद्ध ४ गर्ववृत्त ।

कुम्भ [कुम्भ + कृत्, कुम्भाय] १ कुम्भा (१० की इस अर्थ में) —सुध्यायत बाहु रघु० ३१३६ १०१९७, सि० ३१६८ २. बोझा, इन्धनी, युगल - कुम्भयोर्धुनेन तरका कलित सि० ९७७२, स्मृत-यम सा० ११२९ ३ स्लोकार्थ जिसमें दो धारण होते हैं, युग्म ४ सृष्टि का युग (युग बार है कृत या उत्प, नेता, डायर और कर्म प्रत्येक की अवधि क्रमशः १७२८०००, १२९६०००, ८६४००० और ४३२००० वर्ष हैं, चारों को मिलाकर ४३२०००० वर्ष का एक महायुग होता है) ऐसा माना जाता है कि युगों की उत्तरीतर घटती हुई अवधि के अनुराग सांख्यिक और नैतिक लक्षण भी मनुष्यों में बराबर निरती गई हैं, संभवत इन्धलिए कृतयुग की स्वर्न युग और कलियुग की नीलयुग कहते हैं चर्यसंथा-क्यायन तमबादि युगे युगे मय० ४१० युगसंग-रिक्तार्थ—श० ७३३४ ५ पीढ़ी, जीवन, - ता सत्यमा सुपाय - मनु० १०१४, बासयुक्तों युगे जेव वरुचमे कथयैधि वा पात्र० ११९९ (युगे = कथमि मिता०) ६. 'चार' की संख्या की अभिव्यक्ति, 'चार' की

संख्या के लिए विरलप्रयोग । तब० अन्तः १ जुए का किनारा २ युग का अन्त, सृष्टि का अन्त या विनाश युवास्तकाप्रतिस्तुतामनो जयमि यस्यां त्रिकालमासता सि० ११२३, रघु० १३१६ ३ मध्याह्न, दोपहर, अर्धरात्रि: सृष्टि का अन्त या विनाश सि० १७१० कीलक: युग की कीली याकथेय (वि०) जुए के पाथ जान वाला, जुए में जुतने वाला बैल, बाहु (वि०) लम्बी भुजाओं वाला—कु० २११८।

कुम्भारः—रघु [युग + कृत् + कृत् युग] गाड़ी की जोड़ी जिसके साथ कुम्भा कस दिया जाता है ।

कुम्भम् (अव्य०) [युग + पठ् + क्विप्] एक ही समय सब एक साथ सब मिलकर उन्नी समय कु० ३१२ प्राय सनाम में श० ४१२ ।

कुम्भम्, युग : कथम्, कुम्भम् । बाड़ा दगपती बाहु हस्त० बरम् बादि ।

कुम्भकम् [युग + कृत्] १ जोड़ी २ श्लोकार्थ 'व' व' मिलकर पूरा श्लोक या वाक्य बनाना दे० युग ।

कुम्भ (वि०) [युग + मय, कुम्भम्] मय० युग्माहु युवा तायने स्थितोयुग्माहु गात्रिषु, तस्यायुग्माहु युवासीं मयिसेतामैवे स्थितम् मनु० ३१४४ पात्र० १७९१ १ जोड़ी इम्पती, दे० कथमा २ मयम, मिलाप ३. (निर्याय) तमय ४ युद्ध ५ श्लोकार्थ दिन दो में मिलकर पूरा एक वाक्य देने हास्यायुग्मार्थ प्रोक्तम् ६. निगुन राशि ।

कुम्भ (वि०) [युगाय हिन यन] १ जोतने क वाक्य २ युवा कुम्भा, मात्र सामग्री से मरुद्ध ३ बोधा गया जैसा कि 'अवयवयो एव' में, एव: युवा कुम्भा या बोधने वाला जानवर, विशेषत रव का बोधा कृति युग्य रव उसने प्रविषाय पुरम्बर—रघु० ११८८ ।

कुम्भ । (व्या० उ०) युगनि, युग्मने, युक्त) १ समिलित होता, मिलना, अनुगत होना, मरुद्ध होना, जुड़ना तमयमिव भारत्या तुनया योक्तुमर्हसि—कु० ६१७९ दे० कर्मका० नीचे २ जोतना, जीन रसकर मरुद्ध करना, लगाना मानु मकुमुकतुनरु एव श० ५१४ मय० १११६ ३ समिलित करना, से युक्त करना जैसा कि युगयुक्त में ४ प्रयुक्त करना, काम में लगाना, इन्धमाल करना प्रसाम्ने कर्मणि तथा मन्त्रकथ पावै पुञ्जत मय० १३१-६, मनु० ७३००४ ५ नियुक्त करना, स्थापित करना (अवि० के साथ) ६ निवेदित करना, (अनू आदि) शिखर करना जवाना ७ अपना ज्ञान तर्केन्द्रित करना मय मयाम अविष्मन्तो युक्त आसीत अन्तर -अम० ९११४, युग्मार्थक सदाचार्य १५ ८ रचना, शिखर करना, बनाना (अवि० के साथ)

१ तैयार करना, मुख्यस्थित करना, उचित करना, युक्त करना 10 देना, प्रदान करना, सावर सवर्षित करना—आदिष्ट युज्ये, कर्मवा० (युज्यते) 1 सोम मित होने के बाप्य रविनीतवका तथाप्ये पुनराचन हि युज्यते नदी कु० ४।४४, रघु० ८।१७ 2 प्राप्त करना, स्वामी होना—इष्टेन युज्यन्ते—श० ५, महावी० ७ रघु० २।६५ 3 योग्य या सही होना समुचित हाग उपयुक्त होना (अधि० या मध्य के साथ) या पन्ना युज्यते भूमिका ना लम्ब भावेन तत्रैव नर्भे वर्या पाणिना भा० १ शैलकप्यापि प्रमथ्य त्वयि युज्यते हि० १ 4 तैयार होना—तत्ता युद्धाय युज्यन्ते भग० १।१८ ५० 5 लुप्त जाना लीन होना निर्दिष्ट होना मनु० २ १६।३० कि० ७।१३। प्रेर० ७ ४ यति—नी 1 सोम्याग्र होन (मनना एकत्र क ता रघु० ७।१४ 2 उद्धार देना समपण करना प्रदान करना रघु० १०।१६ ३ प्रयत्न करना काम पर लगाना इत्येव क करना कर्मभिर्याज्यन्ते चम्पू—पृष्ठ० ४।१७ 4 मङ्गल रश्मी आर निर्दिष्ट करना पापान्निवारयन्ति वाजयन्ते हिताय मन्त्र० १।२० 5 उत्पन्न करना प्ररित करना मङ्गलाना 6 सम्पन्न करना, निष्पन्न करना 7 तैयार करना मुख्यवोधय करना युगोच्छत करना इच्छा० (युज्यति) सन्निहित होने की इच्छा करना जानने की इच्छा करना देन की कामना करना मनु०—(आ०) 1 पुनरा प्रश्न करना प्रत्यक्षता गुणधरर सिने रघु० ११।२४ १।१८ सि० १०६/२ परीक्षण करना आज करना मनु० ७।३० अग्नि (आ०) चेष्टा करना, काम में मिल जाना ८ अग्रगण्य करना धावा करना भवन्तमवियास्तुमुद्धरण—य० १ वायाराण करना दोषी उद्धारना मनु० ८।१३ ३ 4 अग्रकार जानना माय प्रस्ता करना (ईमे वि किसी बात की अभिरोग म) विमर्शितैकदेशा देय वर्तमान्युत्तरे विक्रम० ४।१७ वाज० २। ५ करना बलना उद्ग

उत्पन्न करना सन्निधत्ता तज्ज्वल करन 2 कोष करना पणाल करना भवन्तमवियास्तुमुद्धरण ३ 3 तैयार करना उप (आ०) 1 उत्पन्न करना काम में लगाना या इच्छायाय ४ प्रोच सि० ५ ५ पणालमवियास्तुमुद्धरण ६ युद्धायुक्त ममाप्य नष्ट मय रघु० ८।११ पाणिनि० ८।१२ 2 कथन करना उद्गार करना (आल० से भी) रघु० १८।२६ अष्टि० ८।३० 4 उपभोग करना आना मनु० १।३० नि (आ०) 1 निष्पन्न करना प्रतिनयन करना भाग देना (अधि० के साथ) यन्मा विधेवावधय स भरा विद्युक्ते भा० १।२ प्रमादवती तथ भवान कावय य द्वाभामाश्रयार्थं निवृत्तन ज० १ कु० ३।१३ रघु०

५।२९ 2 सन्निधत्ता होना, मिलना 3 निवृत्त करना आदिष्ट करना। (प्रेर०) 1 सन्निधत्ता करना, मिलाना, से युक्त करना, प्रदान करना—कु० ४।४२ 2 जोड़ना, सज्ज करना, 3 उद्धारना, उद्धार करना—अम० ३।१ ३—(आ०) 1 इस्तेमात्र करना, काम में लगाना—अथर्ववि च मिर नस्तन्त्रद्वीप्रयुक्तान्—रघु० ५।७५, मङ्गलैः साधुमाये च सदित्थेनप्रयुज्यन्ते—मग० १७।२६ 2 निवृत्त करना काम में लगाना निर्दिष्ट करना वादना देना या न प्रयुक्तता कुलकर्तिलोये भव० ३।५४ प्रायुक्तन १।५ वल दुष्करे त्वाव—३।५१, कु० ७।५ 3 देना पणन करना अभिदान करना पणन प्रयुज्ये च आहिताय रघु० ११।६ २।३०, ५।३० १।१८ 4 मिलना जुलना, मिला देना मध्ययुक्ता बाललन १ रघु० २।१० 5 उत्पन्नित करना प्ररित करना प्रश्ना देना होकरना कु० १।२१, भग० ३ ३६ 6 मय्य करना करना—रघु० ५ ८६ १०।१० 7 रणप्रच पर प्रतिनिधित्व करना अभिनय करना नश्यत करना उत्तर गमचरित तत्प्रीति प्रयुज्यते मन्त्र० १।२ परिर्वर्त प्रयुज्यन्तस्य मय कु० १ 8 इस्तेमात्र करने के लिए उच्चार देना (चन आदि) व्यास पर देना मनु० ८।१४६ वि (आ०) 1 छाडना परित्याग करना कि० २।१९, रघु० १३।६३ 2 लक्ष्य-आगत करना वृत्ता विद्युक्ते निचने कृपावती कु० ५।२६ 3 वीर्य करना शक्ति करना शक्ति 1 इस्तेमात्र करना व्यव करना 2 निवृत्त करना काम में लगाना वादना अनुभाजन करना किरण करना प्रत्येक विनियुक्तात्मा कथन वास्तुवि प्रभा—कु० ५।३१ 4 विवृत्त करना अवल करना लय, सन्निधत्ता; ना (कर्मवा० में) मन्त्रक्यते स्वेन अपर्महिन्ना रघु० ५।२४ (प्र०) मिलाना सन्निधत्तित करना। (म्या० करना पण० पाणिनि योजयति) जोड़ना मिलाता जोड़ना दे० ऊपर सूत्र। 1 विदा० वा यज्य मन्त्र को सन्निधत्तित करना 1 युज के कर्मवा० रूप के मयक्य। 1 युज (वि०) युज स्वना समाम क अन् में 1 जुडा हुआ मय्य युज्य जुडा हुआ लोका जात्रा हुआ 2 मय अविषय पु० 1 सम्पन्न जो जोड़ देता है मया देता है ३ अपि न ४ अन् अपको भाव आदि में मायन रहता है 3 जाडा करनी (इस अर्थ म नप० भा०) युज्यमान (युज+मान) 1 जाकन वाला रघुवात् 2 वह बाह्य जो प्रमा मा मे सायुज्य प्राप्त करने के लिए म गच्छास म अथत है। युज (अ० क० कु०) [यु+ज] 1 जुडा हुआ सन्निधत्तित,

मिका हुआ 2. से युक्त वा लक्षित —जैसा कि 'युक्त्व-युतो कर' में ।

युक्तम् [यु + क्त] 1 जोड़ी 2 मिलाप, मिश्रता, मेली 3. विवाहोपहार 4 स्थितियों की एक प्रकार की वेश-भूषा 5. स्थितियों के मेल की किनारी या सालार ।

युति (स्त्री०) [यु + क्तित्] 1 मिश्रण, संलयन 2 युक्त-जित होना, 3 स्वाभिमुख प्राप्त करना 4 जोड़, योग 5 (य्योति० में) सम्यक्ति, दो वस्तु का स्पष्ट योग ।

युद्धम् [यु + क्त] 1 सन्ध्या, समय, लड़ाई, मिश्रण, युद्ध-मेघ, समर्थ, इन्द्र वस्तु केन्द्र वार्ता युद्ध युद्धमिति उत्तर० ६ 2 (य्योति० में) वृद्धों का युद्ध या विरोध । सन्ध्या —अन्धकारम् युद्ध की समाप्ति, युद्ध-—आचार्य, सैन्यशिक्षा का युद्ध, उन्मूलन (वि०) युद्ध के लिए पालन, रणोन्मूलन, —कर्मिन् (वि०) लड़ने वाला, सन्ध्या-सैन्य, —युद्ध, युद्धि (स्त्री०) रणक्षेत्र, जंगल, सैनिक कूटनीति या कलकल, युद्ध-मित्रता तिकटपदायी, रक्तः रणक्षेत्र, लड़ाई का अन्तर्गत, बीरः 1 योद्धा, यूरवीर, मन्त्र 2 (अल० में) सैन्यविक्रम से उत्पन्न होना का मनोभाव, बीर-रत्न ३० सा० ६० २३६ युद्धवीर के नीचे रत्न०, —आर्य घोड़ा ।

युष् [विधा०] भा० युष्मते, युद्ध लड़ना, सन्ध्या करना, विचार करना, युद्ध करना—यन्० ११२३, मटि० ५१०८, वेद० (बोधवति-ते) 1 लड़ना 2 युद्ध में साधना करना या विरोध करना—रघु० १२१५० —इच्छा (युक्तल्लो) कड़ने की इच्छा करना, नि-मल्लयुद्ध करना, विरोध करना, प्रति-युद्ध में साधना करना, विरोध करना ।

युष् (स्त्री०) [युष् + क्तित्] सन्ध्या, जंग, लड़ाई, युद्धमेघ —मिश्रणविध्यम् युष् युष्मत्तान्—मटि० २१२१, मरुति वाक् युष्मत्तान् युष्मत्तान्—रत्न० २१५३ ।

युष्मत्तान् [युष् + क्तान्, सन्ध्या क्तित्] योद्धा, सन्ध्या जाति का युष्मत् ।

युष् (विधा०) पर० युष्मति 1 मिटा देना, विलुप्त करना 2 कष्ट देना ।

युष् [य + क्त + टा] योद्धा ।

युष्मत्तान् [युष् + क्तान् + क्त + टा] कड़ने की इच्छा, विरोधी दायता ।

युष्मत्तान् (वि०) (युष् + क्त + टा) लड़ने की इच्छा वाला युष्मत्तान्—ली (स्त्री०) (युष्मत् + ति, डीप् वा) लड़ने की, लड़ने की मारा (बाहे) युष्मत्तान् की हो या किसी युष्मत् की हो) युष्मत्तान् किम् युष्मत्तान्—उ० २१८, इती प्रकार 'युष्मत्तान्' ।

युष्मत् (वि०) (स्त्री०—युष्मत्, ली, युष्मत्—य० व०

—युष्मत्तान् वा कनीयस्, उ० व०—युष्मत्तान् वा कनीयस् [यौतीति युष्मत्, यु + क्तित्] 1 तृष्ण, ज्ञान, वयस्क, परिपक्वत्वका को प्राप्त 2 हृष्ट-मुष्ट, स्वस्थ 3 श्रेष्ठ, उत्तम । प० (कर्म०) युष्मत्, युष्मत्तान्, युष्मत्तान्, कर्म० व० व० युष्मत्, कर्म० व० व० युष्मत् आदि 1 ज्ञान आरम्भ, तृष्ण, —आ युष्मत्तान् स्मिन्मिन् कायस्थ सन्ध्या शालीनतया न वक्तुम् रघु० ६१८१ 2 छोटा सम्मान (बड़ी सम्मान जीवित रहने हुए) —जीवित तु वरुण युष्मत् पा० ४११११३ (दे० इत पर विद्या०) । मम० —युष्मत्तान् (वि०) (स्त्री०—ति ली) ज्ञानी में ही मारा, जरत (स्त्री० ली) ज्ञानी में ही बड़ा दिव्याई देन वाला समय से पूरा बड़ा हो जाने वाला, राज् (प०) राज पत्यका जगत्पिकाटी राज्याधिकारी राजकुमार राजा का इत्याधिकारी पुत्र, (अतो) नृप चक्र युष्मत्तान्मन्त्राक रघु० ३३५ ।

युष्मत् [युष् + मदिक्] मध्यमपुत्र्य के युष्मत्तान् सन्ध्या का प्रातिपदिक रूप (कर्म०) वयस्, युष्मत्तान् युष्मत्, तु, तुम् (कर्म०) ममात्तों के आरम्भ में प्रयुक्त ।

युष्मत्तान्, स (वि०) [युष्मत् + टा] युष्मत्तान् आरम्भ] तुम्हारी तरह ।

युष्, का [यु + क्त, दीप्, स्थित टा] युष्मत्तान् ११२५ ।

युष्ति (स्त्री०) [यु + क्तित्, ति० दीप्] मिश्रण, मिलाप संलयन, मेलन, करोति जो बहिर्बर्तनी पितृव्य पालिभिर्दत्त —मटि० ७३६५ ।

युष्मत् [यु + क्त, युष्मत् दीप्] रक्षक, लड़का, योद्धा, रानी युष्मत् (जैसे वयस् युष्मत्तान् का) —स्त्रीरत्नेषु धर्माधिकारी नियतमा कृते लक्ष्य दत्ता विष्णु० ४१२५, व० ५१५ । सन्ध्या, का, वतिः 1. किसी ठोस या दल का नेता 2. किसी रेखा या कील (प्रायः हाथियों की) का युष्मत्तान्, विष्णुकाय हाथी —युष्मत्तान् युष्मत्तान्मन्त्राक विष्णु० ५१२४ ।

युष्मत्तान्, युष्मत् [युष् युष्मत्तान्मन्त्राक अन्ध्या —युष् + क्त + टा] युष्मत्तान् + क्त + टा] एक प्रकार की चलेगी जड़ी, बला या इसका युष्मत्तान् युष्मत्तान्मन्त्राक —विष्णु० ५१२४, वेद० २६ ।

युष्मत् [यु + क्त, युष्मत् दीप्] 1. वयस् की लक्ष्या (यह प्रायः वयस् वा करिण युष्मत्तान् की लक्ष्या से बनाई जाती है) जिसके साथ वयस् दिया जाई वाला वयस्, वयस् के समय वयस् दिया जाता है वयस्मते मायुवनेन वैदिकी रविकान्-युष्मत्तान् न युष्मत्तान्मन्त्राक युष्मत् ५१७३ 2 विष्णु-स्मारक, विष्णुकाय ।

युष्मत्, —युष्मत्, युष्मत् (यु०, वय०) [युष् + क, कर्मिन् वा] रत्न, योद्धा, योद्धा, योद्धा का रत्न (युष्मत्) वयस् के

पहले पाँच वचनों में कोई कर्म नहीं होते कर्मों हि० व० के पश्चात् यों के स्थान में विस्मय से यवन हा जाता है ।

येन (अर्थ०) । उद गच्छ का करण० का गत वचनाः रूप या क्रियाविशेषण की भाँति प्रयुक्त होता है ।
1 जिससे जिसके द्वारा जिस लिए जिस कारण म जिसके साधन से कि तब उन मना इतमल स्थान न भूषणमय रघु० १५।१६ १४।३ २ जिसम कि दर्शय १ चौरमर या ध्यापानागमि पुनः ।
3 चकि वयाकि ।

येनञ्च [रज + यन्] 1 हारी रमा रमा रज
2 तल के ली १ वह रमा जिसके द्वारा
जिसी पक्ष का गाड़ी क जाह ग बीर निय जाना है

येन 'यत्त भावयो यत्त कुर्यात्' आहना मिनात्
2 तिलाप, ताम्र मिश्रण उपायान् शनिन समुः
गता गौहणा यामय स० ३०० नृपमहता धन
गुणः योग हि० १०।५ (वा) योग्यतायो
यद्यपिवाक्य रघु० १६१ 3 मय कृष्ण सवध
ममकृष्णमोह शरीरमयै मुर्धनियिच्छन्तमिवा
मृत चरि रघु० १०६ इम मेलाना प्रयोग
इनेमान् लोभ्यायमास्तु शक्यान्ता परितोभय
मनु० १।१० रघु० १०।६ १ इति रीति, कम
साधन कथासाधन दुर्गम-हि० १ वाच्यो के कम
में 6 कम परमाणु (अधिकतर समास के अन्त में
या अा० के साथ) रज योगादयमपि तप प्रयत्न
मन्त्रिनि-श० २।१४ कु० ३५५ ७ अथा 8 वाहन
सवारी गाड़ी विरहवन्त कवच 11 वायता
जीविग उपयवन्ता 11 व्यवसाय काय ध्यापार
12 हाययैव जालसाजी कृत् बाल 13 तरकीव
बीजना उपाय 14 काशिश उन्मा परश्रम
अवयवमाय मनु० ३४६ 1 उपचार चिकित्सा
16 इत्ताल अभिचार मन्त्रयोग जाह जाह-
दीवा 1 कवच अशानि अविग्रहण 18 धन
हीनन, हवन 19 निगम रिधि 20 पराधाय दण्ड
निर्दिष्ट आदेश या मयाम एक स० की दूसरे शब्द
पर निर्भरता 21 निर्धन या अर्थ की दृष्टि से
गहः ध्यापि 22 रघु० के निर्धनमूलक अर्थ
(विप० कटि) 23 गभीर भावचिन्तन मन का
सकृदीकरण परमावचिन्तन, जिसे योगदर्शन में
चित्तवृत्तिनिरोध' कहा है सती सती योगविमुक्त-
वेदा-कु० १।२१ राजवाले तनुकायम रघु० १।१८
११ पक्षप्रति हारा स्थापित दान पदार्थ जो माध्य
दर्शन का ही दूसरा भाग गणना जाता है परन्तु
अवधारण यह एक पक्षक रक्षा 2 (शोधदान का
मुख्य सिद्धांत उन उपायों की सिखा देना है जिनके

द्वारा माध्य कारण पूर्ण रूप से परमात्मा में मिल
जाय और इस प्रकार मोक्ष की प्राप्ति हो जाय । इस
उद्देश्य की प्राप्ति के लिए गभीर भावचिन्तन ही
मुख्य साधन बताया गया है इस प्रकार के योग या
मन के सकृदीकरण के सम्बन्धित अर्थों के लिए
विस्तार के साथ नियम का प्रतिपादन किया गया
है) 2० (अक में) जाह मकलन 26 (अर्थ० में)
मयुक्ति हो वहाँ का योग 2० तारापुत्र 28 विशेष
प्रकार का अत्यन्तवीर्य समय-विभाग इस प्रकार के
बहुधा २३ योग विनाय गय है) 29 किसी नक्षत्र
पुत्र का मध्य तारा 30 भक्ति परमात्मा की पवित्र
मार्ग 31 भविष्य गुणचर 3२ इष्टी विरहास
वाणी । तम० अथवा योग की प्राप्ति के साधन
(यह विनती में आट है नामों के लिए दे० यम ५)

आचार 1 योग का अन्तगम य पालन 2 बुद्ध
क उस सहाय का अनुयायी या केवल विज्ञान वा

प्राज्ञ के साधन जलित्य को ही मानता है आचार्य

1 जाह का सिद्ध 2 योग दर्शन का अन्तगम
आचमन आलसाजी से भरी इच्छाकामना-मनु०

४।१५ आकट (वि०) (पुरुषमार्गचिन्तन में निमित्त
—आत्मनः सूक्ष्मभावचिन्तन के अनुकूल अवस्थिति

इष्टा—ईश्वर, ईश्वर 3 भाग में विभज्यमान या
निष्ठहस्त 2 जिससे अर्थवैदिक शक्ति सम्पन्न कर

ली है १ जाहूर 4 देवता ५ सिद्ध का विराज
6 याज्ञवल्क्य का विशेषण श्रेष्ठ 7 सामान की

सुरक्षा संपत्ति को देवभाल 2 दुर्घटनाका से
संपत्ति को सुरक्षित रखने के लिए शुद्ध, बीमा

3 कम्पास कुशलस्थ सुरक्षा समुद्रि नेत्रा
नित्याभिवृत्तानां योगयोग महामहम्-अन० १।२२

मुखाया से अनन्ता योगयोग बहन्व वालिन ४
४ संपत्ति, भाग कायदा (पु०, नपु० हि० व०

औ से नपु० ए० व० अन्व) (संपत्ति का)
विग्रहण और प्ररक्षण, उप० अन्व और सुरक्षा पुराने

का प्ररक्षण तथा पूतन का विनिग्रहण (जो पहले से
प्राप्त हो) अलम्बलाजी योग स्वात श्रेष्ठ लक्ष्य

पालनम दे० बाह्य १।१०० और उपर पित०,
पुष्पं जाह का पुष्प जाह की सज्जत कला ब्रा-

कित्तननेन योगपूर्णमिच्छितयोग्य ५-इत्युताय-मुद्रा०
२ तारका, तारा यज्ञपुत्र का मुख्य तारा-अनन्व

१ भाग के सिद्धांतों का संचारण 2 आलसाजी से
मुक्त उपहार कारण सतत भक्ति अनवरतमन्त्र

माध्य गिव का विशेषण - निष्ठा अर्थचिन्तन और
अर्थनिष्ठित अवस्था जाकरन और निष्ठा के मध्य की

मिथि अर्थनिष्ठ लक्ष्मिदा यार्थनिष्ठा कर्म्य बध-पक्ष०
१ हि० ३।३५, मनु० ३।४१ 2 युग के अन्त में

विष्णु की निहा रघु० १०।१४, ११।९, -वन्द्य
भारतभाषि के अक्षर पर सम्प्रतिषा द्वारा पहना
जाने वाला वस्त्र जो पीठ से लेकर बुटों तक खरीर
को ढक लेता है, वस्त्र: विष्णु का विशेषण, कल्प
1 शक्ति की शक्ति, भावचिन्ता की शक्ति, अलौकिक
शक्ति 2 जानू की शक्ति, -बला 1 योग की बाहु
जैसी शक्ति 2 ईश्वर की सर्वत्र शक्ति जिससे कि
देवता के रूप में मूर्त बरग की रचना की जाती है
(भगवत सर्वनामा शक्ति) 3 दुर्गा का नाम 'रङ्ग'
नारसी, रङ्ग (वि०) वह शब्द जिसके निर्वचनमूलक
वर्ष भी है, साथ ही उसका विशेष परंपरागत अर्थ
है, उदा० 'शकज' इसका व्युत्पत्तिजन्य अर्थ है
'कीचड़ से उत्पन्न होने वाला कोई भी पदार्थ'
परन्तु प्रचलन या परंपरा के प्रयोगानुसार इसका
अर्थ कीचड़ में 'उपस्थित किसी वस्तु' अर्थात् 'कमल'
में प्रतिबद्ध हो जाना है तु० आनन्द' खारी
- रौचना एक प्रकार का जादू का लेप जिसके लगाने
से मनुष्य अबुध्य और अचेत हो जाता है नन व
परितुष्टि या यारोचना से दत्ता मूच्छ० ३, इतिहास
जादू का लेप या बन्ना, बाहिन् (पु०, नपु०)
बोधधियाँ को मिलाने का माध्यम - उदा० शब्द

नागाव्रज्यात्मकत्वाच्च योगबाहि पर मनु मुष्ण
बहो 1. रेह, सज्ज 2 मर्ष 3 पाग विष्णु
बोले की बिकी, बिन् (वि०) योग का ज्ञानकार
(पु०) 1 शिव का विशेषण 2 योगाभ्यासी 3 योग
सिद्धांतों का अनुयायी 4 जादूगर 5 दबाइये के बनाने
वाला, विचार: बहुधा एक स्थान पर जुड़े हुओं को
अलग-अलग करना, विशेषत: मृत के जन्मों का अलग
अलग करना, एक ही नियम के दो चीजें टुकड़े करना
(ब्रह्माचार्य में पतञ्जलि ने इसका बहुत प्रयोग किया
है—उदा० अदत्ता मातु पा० १।१।१२), आत्मन्
योगदर्शन, -कथावि: आत्मा का गूढ़ भावचिन्ता में
लीन होना -तमस परमापदव्यय पुष्ट योगसमाधिना
रघु—रघु० ८।२४, योगविधि ८।२२, बार सब
बोर्षों की एक दवा, रामबाण, सर्वव्याधिहर, सेवा
भावचिन्ता का अभ्यास करना।

योगिन् (वि०) [यु + चिन्, योग + इति वा] 1 ये
युक्त, या सहित 2 जानू की शक्ति से युक्त, पु०
1 चिन्तनशील महात्मा, अस्त, सम्पत्ती—सेवाय
परमेश्वर को योगिनात्मकत्वः—पंच० १।२८५, वन्य
योगी किन्तु कार्तवीर्य—रघु० १।३८ 2 जादूगर,
बीजा, बन्धीकर 3 योगदर्शन के सिद्धांतों का अनुयायी,
—की 1 जादूगरनी, निमित्तादिना, बीजाइन, योगाधिनी
2 शक्तिनी 3 शिव या दुर्गा की शक्तिकार्यों की
टोली (यह निमटी में जाट जाने वाले हैं)।

योगेश्वन् (नपु०) सीमा, राग।

योग्य (वि०) [योगमहेति यत्, युज् + श्चुत् वा] 1 लायक,
उचित, उपयुक्त, योग्यता प्राप्त योग्यो 5३ बुद्धयते
नर 2 योग्य, उपयुक्त, योग्यताप्राप्त, लक्ष्य, अर्थ
(बहि० सप्र०, सब० के साथ तथा समास में प्रयुक्त)
3 उपयुगी, सेवा करने के योग्य 4 योग या भाव-
चिन्ता के योग्य, व्या: युक्ति या तर्कीयों का कल-
पित्वा, व्या 1 अभ्यास व्यवहार अपर प्रतिष्ठान-
योग्यता महत्त्व पञ्चशरोर्योचरान् रघु० ८।१० इसी
प्रकार 'मनयोग्या' काव्या० २।२६३, अनुयोग्या
अप्ययोग्या आदि 2 नैतिक क्वायद अभ्यास -अथ
1 सशरीर गाढो बाहन 2 चन्दन की लकड़ी 3 गटी
4 दूध।

योग्यता [योग्य + ता] 1 सामान्य लक्ष्यता न
युद्धयायताम्य पर्याप्त रघु २।१० रामा०
2 अनुकूलता, प्रीति 3 समुद्रकृतता 4 (व्या० में)
ज्ञान की अनुकूलता या समर्पण शब्दों द्वारा भवेत्तिन
वस्तुओं के पारस्परिक संबंध की अवगति का अभाव
उदा० ज्ञानता निश्चिन् में योग्यता नहीं है इसकी
परिभाषा यह है एकद्वार्थपारदावसमयों योग्यता
न० की०।

योग्यम् [युज् म.वादी श्चुत्] 1 हाडना मिलाना योना
2 प्रयोग करना, स्थिर करना 3 तैयारी व्यवस्था
4 व्याकरणमार्ग रचना शब्दान्वय 5 अर्थ गानो
मील अथवा बार कोय की दूरी की माप न योवन-
नन दूर बाध्यमानस्य पूनया हि० १।१६६
6 उत्पत्ति करना मकाना 7 मन का संकेन्द्रिकरण
मात्र (-योग), भा 1 सज्ज, मिताप, संबंध
2 व्याकरणसमत शब्दान्वय। तम० मन्दा
1. कस्तूरी 2. व्यास की माता सत्यवती।

योग्य दे० योग्यम्।

योग [यु + यज्] 1 योडा, सैनिक, लडाकू, सहाय्यही-
योग्य योग्यमन्त्र महा० 2 सहाय, लड़ाई। तम०
- अवाट, रण सैनिकों का निवास, सैन्यावास,
बारक, बर्ग: सैनिकों का कानून, सैन्यविधि या
नियम, संराक: लडाकू निपाहिणों की पारस्परिक
ललकार, बाह्याप।

योग्यम् [यु माये श्चुत्] सहाय, लड़ाई, युद्धवेद।

योगिन् (पु०) [यु + चिन्] योडा, निपाही, लडाकू।

योगि: (पु०, स्त्री०) [यु + चि] 1 बन्धीकर, बन्धेदानी,
मन, निषों की अनेकविध है, जन्मस्थान, युक्तत्वाय,
उत्पन्न, युक्त, जन्मसाधक कारण, निष्ठार, निपाटा
या योगि सर्ववैराग्य का हि लोकाय विमुक्ति:
उत्तर० ५।१०, पु० २।९, ३।६३, उत्पन्न या उचित
के अर्थ में प्रयोग प्रायः जन्म के अर्थ में भव०

५।२२ ३. ज्ञान ४. जाकास, स्वान, बाजन या पाज, जाकन, बाचार ५. बर, बरि ६. कुक, मोम, बंस, कण, कस्तुरि का कण - बैसा कि 'मनुष्ययोनि, पक्षि', पक्षि बादि ७. जक । मन्- - मन्- जन्मस्थान या नमोयस का मन्, - ज (वि०) नमोयस से जन्म लेने वाला, जरापुत्र, - बैसा पूर्वाश्रमिणी नमन, जरा: नमोयसानी का अपने स्थान से हट जाना, रज्ज्वन् रज:काय, शिखन् प्रमांशुर, बिहु, - संकर: जवैय मन्मथतीय विवाहों से उत्पन्न वर्ण सकर जाति ।

योनी दे० योनि ।

योनिम् [यु + स्तुट्] १ मिताना, विलुप्त करना २ कोई वस्तु जिससे मितया जाय ३ विकलता, ध्वराहट ४. उत्पीडा - अ. ५।१०, १२, १३, १४, १५ ।

योनि, योनि (स्त्री०), योनिता [योनि मिथीभवति य + टाप् योनिता पुमांसम् यु + इति, योनि + टाप्] स्त्री, लड़की लड़की जवान स्त्री-गच्छन्तीनां रमयवति योनिता लभ नक्त - मेघ० ३७ शि० ४४२ ८।२५ ।

योनिज (वि०) (स्त्री०-की) [युक्तिन ज्ञान ठक्] १ उपयुक्त, योग्य, उचित २ तर्क मंगल, नक वा हेतु पर आधारित ३ तर्क, अनुमेय ४. प्रचलित प्रचानुकूल, कः राजा का आमोदपिय साथी तु० 'नर्मदाचर' ।

योनि [यौग + जन्] यौगदर्शन के सिद्धान्तों का अनुयायी । योनिचक्रम् [युगपद् + ध्यञ्] समकालिकता, समसम-विकता ।

योनिज (वि०) (स्त्री०-की) [यौग + ठक्] १ उद्योगी, मेधा के योग्य, उचित २ प्रचलित ३ व्युत्पन्न निर्वाचनमूलक, कव्यव्युत्पत्ति के अनुरूप (विप० ऊड या परम्परागत) ४ उपचार परक ५ योग सखी, योग से व्युत्पन्न ।

योनिज (वि०) (स्त्री०-की) [युते विवाहकाके अचिगत बुद्] किसी एक व्यक्ति की सम्पत्ति जिसे पर उसका एकमात्र: अपना ही अधिकार हो, ऐसी सम्पत्ति जिस पर बन्धनहीन: उसका ही एकमात्र अधिकार हो -- 'विश्वामित्राया ज्ञेया नृक्षेत्रैव योतके' याज्ञ०

२।२४९ कम् १. निजी सम्पत्ति २ स्त्री का वहेक, स्त्रीवह (विवाह के अवसर पर कन्या को उपहार में दिया गया धन) मानुस्म योतक यन् स्थान् कुमारी भाग एव म यन् १।२३९ ।

योनिचक्रम् [यु + तु- - योतु + जन्] एक प्रकार की नाप ।

योनि (वि०) (स्त्री०-की) [यौग + जन्] लड़ाई, लड़ने-बाका ।

योनि (वि०) (स्त्री०-की) [योनिता योनि सम्पत्ति वा प्रागतम् अण्] १. १।२२ २ वैवाहिक, विवाह मन्थी मन् २।१० - मन् विवाह, वैवाहिक सम्बन्ध - मन् ११।२८० ।

योनिचक्रम् [युक्तीना मन् अण्] नक्षत्रियों या जवान स्थियों का समूह अथवा विद्योत्पि योनिर्न सहा- योनितामिमामहम् नेव० २।११ २ नक्षत्री स्त्री का गुण (मौन्ये अदि) नक्षत्री स्त्री होने की अवस्था जहाँ बिब्रवीवत बहुमि लन्ति पृथ्वीगता मीत० १०, १।२३९ (कम्) ।

योनिचक्रम् [युक्तीना मन् अण्] १ जवानी (आत्म० से भी) तादृश्य नक्षत्र, ब्रह्मन्ता मन्थनस्य योनिचक्रम् च सत्ते मध्ये मन्थी स्थिता - विक्रम० २।७, योनिचक्रमिच्छानाम् दृष्टु० १।८, १।५० दिन- योनिचक्रान्- १।३२० २. जवान व्यक्तियों का विद्युत कर नक्षत्रियों का समूह । तम० - अन्त (वि०) जवानी में समाप्त होने वाला लंबी जवानी होना कु० १।४४, - आरम्भ: जवानी का उभार, जिलनी हुई जवानी, - अर्थ: १ जवानी परा धर्मिमान २ जवानी में सहजमुक्त अधिकार, - लक्ष्यम् १. जवानी का चिह्न २ आकर्षण, लावण्य ३. स्त्रियों के कुच ।

योनिचक्रम् [योनि + जन्] जवानी ।

योनिचक्रम् [युक्तीना मन् अण्] युक्तीना का पुत्र मायाता । योनिचक्रम् [युक्तीना मन् अण्] युक्तीना का पुत्र या अधिकार, योनिचक्रमधिकार, (युक्तीना पद का मुकुट धारण किये हुए) ।

योनिचक्र (वि०) (स्त्री०-की), योनिचक्र (वि०) [युक्तीना मन् अण्, लक्ष् वा, युक्तीना आदेशः] युक्तीना, आपका ।

र

र [रा + ह] १. रजि २. रजी ३. रज, रज्जा ४. राज, रजि ।

र [र + ह] १. रजि २. रजी ३. रज, रज्जा ४. राज, रजि ।

१।२८, प्रेर० (रहति ते-कुट के अनुसार चरा० उच०) १. जखी से चलाया, प्रेरणा देना २. बहाना ३. बाना ४. होना ।

रहति (स्त्री०) [रह् + तिप्] बाक, देन ।

एवम् (५०) [रह + कृष्ण, हृष्ण] 1. बाल, बेल, रघु० २१२४ सि० १२१७, कि० २१४० 2. मानुरता, बचप्यता, उलटता उलटता ।

रक्त (यू० क० क०) [रञ्ज् करणे स्तः] 1 रबीन, रया हुआ, हल्के रंग वाला, रज रजित- भाषाणि वाक्यत- परकृतसाम् रघु० ६१६० 2 लाल, महारा लाल रज, लोहितवर्ण, साध्य नेत्र प्रतियजवापुष्यरक्त दधान मेघ० १६, इसीप्रकार रक्ताशोक, रक्ताशुक आदि 3 मृग्य, क्षानुराज, अनुरक्त, प्रेमानक्त- जयमेरू- मृग्य पश्य रक्तमृग्यमिति चन्द्रमा चम्पा० ५१५८ (यहाँ यह द्वितीयाक्ष भी रक्ता है) 4 प्रिय वस्त्रम् 5 सुहावना, आकर्षक, मधुर, मुग्ध शोभेय ममूर्छति रक्तमासां वीरानुज वारिषदङ्गवाचम्-रघु० १६१५ 6 लेख का लोकीन, बिलारी, कीडाग्रिय, रक्त 1 लाल रंग 2 कुसुम्य, रक्ता 1 लाल 2 गुदा का पीचा, रक्तम् 1 रक्तिर 2 तावा 3 वाक्यतः 4 सिन्धूर । तय० अक्ष (वि०) 1 लाल जोखो वाया 2 उरावना (-क्षः) 1 रक्ता 2 कर्तुर, -अक्षः मूला, -अक्षः 1 अटमल 2 मृग्यमृग्य 3 सुवैमल्य वा चन्द्रमण्डल, -अधिमंशः राशो की मृग्य मंशरम् लाल वस्त्र (-रः) रेखा वस्त्राणि परिष्कारक, -अक्षुवः रसीली, -अशोकः लाल फुला वाला अशोक वृक्ष-मासवि० ११५, -आशरी चवरी, माण, -आश (वि०) लाल बिलाई देने वाला, आशयः एक प्रकार का आशय जिसमें रक्तिर रहता है तथा जिससे निकलता रहता है (हृदय, निम्नी और त्रिधर आदि), -अक्षम् लालकमल -अक्षम् नेत्र, लाल मिट्टी, -अक्ष, अक्षिन् (वि०) मधुरकण्ठयाना (यू०) कीयल कंठ, कंठलः मूला, कलकम् लाल कमल कलकम् 1 लाल कलम, वाकरान, कतर, -कृष्ण सिन्धूर, -अक्षिः (स्त्री०) रक्तिर की में भरना, अक्षिः मिह, -कुष्णः तोता, वृष्ण (यू०) कर्तुर, -अक्षुः 1 नेत्र या हस्ता 2 तावा व पित्राय, मृत-प्रेम, -अक्षुवः अशोकवृक्ष, वा अशोक -अक्षः मरुत्वा, वाष्प (वि०) लाल पैरो वाला, (-क्षः) 1 लालपैरो का पत्ती, तोता 2 मृदुग्य 3 हावा, वाष्पिन् (यू०) अटमल, वाष्पिनी शोक -अक्षम् 1 लाल रंग की फुली 2 नाक और मूत्र, -अक्षुवः होना, अक्षुवः मृग्य के साथ रक्त का मिलना अक्षम् वास, -अक्षुवः अक्षुवम् अक्षुवः निकलना, अक्षुवः, अक्षुवः अक्षुवः, अक्षुवः 1 लाल रंग का पैर 3 कुसुम्य, अक्षुवः (वि०) लाल रंग का (क्षः) 1 लाल रंग 2 बीजकृटी नायक कीडा (-अक्षुवः) तोता, कलम, वाष्प (वि०) लाल रंग की बल लूना वाष्प डिदे हुए,

सारतः, -अक्षुवम् सिन्धूर, अक्षुवः एक प्रकार का सारतः, लक्ष्म्यम् लाल कमल, -अक्षुवः लाल कलम । रक्तक (वि०) [रक्त + कृ] 1 लाल, 2 क्षानुराज, अनुरक्त, स्नेहशोक 3 सुहावना, विनोदप्रिय 4 रक्त-रञ्जित -क्ष 1 लाल रंग की वेरावना 2 क्षानुराज अक्षि, मृदुलार-प्रिय पुष्प 3 बिलारी । रक्तिः (स्त्री०) [रञ्ज्, रितुन्] 1 सुहावनापन, प्रियता, आकर्षण, लालम् 2 आसक्ति, स्नेह, मिष्टा, मक्ति । रक्तिका [रक्ति + कृ + टाप्] गुहा का पीचा वा इसका बीज वा मोलने (एक रन्ती) के काम जाता है । रक्तिचम् (यू०) रक्त + इमान् [रक्षाई ।

रक्ष् (उवा० पर० रक्षति, रक्षित्) 1 रक्षा करना, चौकदारो करना, देखभाल करना पहर देना (पक्ष आदि) पालना राज्य करना, (पक्षी पर) शासन करना भवतिमा प्रसिद्धि रक्षन्-श० ६ ब्राह्मणि कियद्भुजो मे रक्षति मोर्षीरिषाक इति - श० ११३ 2 सुरक्षित रक्षना, (मेघ) म खोसना - हृम्य रक्षति 3 मन्वायन करना, बचावना, बचा कर रक्षना (बहुधा अपा० के साथ) अक्षय्य वैद्य निक्षेप लब्ध रक्षोदवदार्-वि० २१८, आरक्ष्य धन रक्षेन् वि० ११४ रघु० २१० ११७७ 4 आत्मभद्र करना-भृश० ११२ (अभि परि मन् आदि उपाय मानने पर इस बात के अर्थों में कोई विशेष परिचय नहीं होता) ।

रक्षक (वि०) [स्त्री अक्षा] [रक्ष् + कृन्] चौकसी रखने वाला रक्षा करने वाला क रक्षकाना, अधि-वाक्य, चौकदार, पहरदार ।

रक्षकम् [रक्ष् + कृन्] रक्षा करना बचाव, बचाव, चौकसी, देखभाल आदि ('रक्षम्' की) की रक्ष, लक्षण ।

रक्षन् (यू०) [रक्षन्हेतिरसमात्, रक्ष + कृन्] मृत-प्रेत रिक्ताय, मृतता, वैनाक कर्तव्य सहकामि रक्षतां भीमकर्मणाम्, यद्यप्य हृष्यकारिभ्युपनि तो रक्षे हता - उत्तर० २१५ । तय० रक्ष, नायः राक्षस का विशेषण अक्षनी राक्षि, - अक्षन् रक्षतो की लता ।

रक्षा [रक्ष् भावे अ + टाप्] 1. बचाव, बचाव, चौकसी प्रिय मरिहति लोकाना रक्षा श्रेया स्वर्गारब्धता - यु० २१२८, सि० १८११, श० ११४, रघु० २१४, मेघ० ४३ 2 देखभाल सुरक्षा 3 चौकसी, पहरा 4 तावीज वा वृक्षा, परिच्छी, जैसे कि नीचे 'रक्षाकरण' में अधि-वाक्य देता 6. प्रत्य, रक्ष् 7 रक्षाकरण, चौकसी (विशेषकर आरक्ष्य वृष्टिमा के दिन कलाई में चौकी जाने वाली श्रेय वा वृक्ष की डोरी) तावीज वा वृक्ष के रूप में (इस अर्थ में 'रक्षी' अक्ष भी समुदा है) । तय०-अक्षिः अक्षिः अक्षिः अक्षिः अक्षिः अक्षिः

मुद्रित किया गया है, अधीक्षक या साक्षक अथवा राज्यपाल 2 दण्डनायक, मैजिस्ट्रेट 3 मुख्य बारखाधिकारी अधीक्षक 1 कुली, हारपाल 2 अन्य गुर का पहरेदार 3 गांध, लौटा नाटक का पात्र अभिनेता, कण्ठ गायक, तबीख की इरिबिया, गंध जातु की इरिबिया अष्टा ग्वाकण्डकमरय मजिबन्धे न दृश्यत ॥ ७ ॥ गृह्य पत्रिका का गृह ग्वागृहया दीपा प्रत्यादिष्टा इवाभन्तु ॥ १०५१ ॥ वाच. एक प्रकार का भाषण साम, पुष्प पहरेदार बीका टार प्रश्रो अश्वीष वह वापर भु भूत प्र म नवान के लिये जनता हुआ रखा जाता है भुषणम मलि — एलम एफ प्रकार का अभुषण है ताजत्र की भाषा भुत प्रादि की भाषा ग अवाचक के लिए एहना जाता है ।

रक्षित प्रश्न। (१०) । एक दूध लाने वाला बचपन
वाला जोड़ी की कतल वाला जोड़ा करने जाता है
११ वं १ प्रश्ना करने वाला मंगलक वसने वाला
२ बीकादार मगरी प्रायश्चा और जादुई दुवम
नाम रक्षित मन्त्र ३ ।

[illegible]

१५५ (वि०) रमण कुपयि - म. ४, १ अथम दंडित
मगना प्रभावा दंडय २ मय्या - का भिक्वरी भन्त
अथम भूया धर्वा भूयमग ५२३ मा ५१५
वभक्ति या भूयमरी अथि ५२४ ११-५६१

५१८३।

[illegible]

यथा नृत्यान् पुरुषस्य तथात्मानं प्रकाशयति विनिबन्धे
प्रकृतिः शब्दः ० ८ रणक्षेत्र 6 नाचना, गाना,
अभिनय 7 व्यासादि मनादिना 8 मुद्राणां 9 स्वर का
अनुनासिक उच्चारण मरयम कथ्येयकथम रसीति
निर्दण्डनम शिक्षा ० ३०, इसी प्रकार २६ १३२८

१ मन्त्र शान्तिः । मन्त्र० अङ्गुष्ठात् अक्षरात्,
 नाक्षरः । अव्ययस्य १ रङ्गस्य च प्रथम २ अक्षरं
 नञाया नाट्यपात्र का व्यवसाय-अव्ययारक-अव्ययारिन्
 १ पु० श्रीनारायण, नाटक का पात्र, -शास्त्रीय १ अभिनेता
 २ विशदार्थ इत्यो प्रचार उपर्युक्तिः (पु०) -कार
 शीतक चित्रकः रङ्गकाल खुर १ अभिनेता,
 नाटक १ पात्र २ रङ्गमय अव्यय मित्र देवता
 का नाट्य पात्र १ नाट्यक कामाद प्रमाद की ब्रह्मिष्ठारी
 'व' इत्यस्य १ रङ्गशाला का द्वार २ किसी नाटक
 का भगनाचरण या प्रस्तावना -भूमि (स्त्री०) नाटिक
 माया की भूमि की नाट्य-भूमि (स्त्री०) १ रङ्गमय
 नाट्यशाला २ अक्षरात् रङ्गमय अव्यय रङ्गशाला
 शान्ति (स्त्री०) १ नाट्य नाट्यरङ्ग महात्वर इमे
 रंदा रंजनाद कीरा २ कृतनी धूरी बस्तु (नपु०)
 रंजनाद काट अक्षरात् शब्दा ज्ञान नाट्य नाट्य ब्रह्म
 देव ही शाला नाट्य १ रङ्गपात्र नाट्यक

रख (रख + उभ० रख + चि०) १ जाना २ छोड़ जाना
 खना करना - दायम् रम्यतुपायम् - भा० १४१५
 रख (रख् + उभ० रख + चि०) १ व्यवस्थित
 करना माँ १ करना तैयार करना, बना देना रखना
 करना - गुणायो प्रकर म्मिनेन रचितो ना कुन्दबाह्यो
 १२५ - अथवा ४ - रखयौ - यत् सर्वाङ्गनयनम् - मीत०
 ५ २ बनाना कप देना ३ जित करना रखना करना
 पैसा करना - मायायित्तरागचने ग्यदर्ने - रञ् ० १३७५
 माययं मयपिबुना रजयितु शागवधोरीहते - भर्तृ०
 - १६ भोजन वा रचयार्जितम् वेणी० ३१६०
 १ रखना रखना करना (विशेष कृत आदि को)
 पकव करना - अजपाटी अग्न्याय विवहहृष्टामोररचय-
 अ३० - ६ ग० २१५ ४ रखना स्थिर करना
 बमान रखयनि बिबुरे कुरवकइमुमम - मीत० ३ कु०
 ४१७/ ३० ग० ६१७ ५ अकृत करता सजाना
 मय० ६६ ६ (मन को) लगाना आ व्यवस्थित
 करना नि १ व्यवस्थित करना २ रखना करना
 ३ कार्योपनि करना पैदा करना बनाना मेघ० ९५
 मयि० १३० ।

रखना ना रख पन रचना रूप । व्यवस्था,
 तैयारी बिनाम अभिपक्ष सयोग आदि 2 ब्रह्मना
 सर्वत्र करता उपद्रव करना अर्थात् बापि रखना
 ब्रह्मनाशनीना भगिम् १।६ इमी प्रकार भुक्ति
 रखना म० ५, ३ सम्पन्नता प्रति, निर्मात,

रविः [व + इ] सूर्यं सहस्रगुणमूलखट्वायते हि रस रवि
रघु० ११८। सम०—आत्स रघुंकालमणि, ज,
—समयः, पुत्रः, पुनः १ सूर्यग्रह २ कर्म के
विशेषण ३ आत्स के विशेषण ४ वैभवत मन के
विशेषण ५ यम के विशेषण ६ सुग्रीव के विशेषण,
—धर्म, —भारः, भारतः, भारतम् ग्विहार, आदित्य
भार, —संकल्पितः (रघो०) सूर्य का एक राशि से
दूसरी राशि में प्रवेश।

रसना रसना [अच् + युच्, रसादेश] १ रसना दाँतों
२ रास, लगाम ३ कटिबन्ध, बमरबन्ध, शिखा की
कटिपत्ती रघु० रसनापि तत्र घनघनमण्ड ३ पापयत्
मन्मथनिदेशम् गीत० १०, रघु० ७११०, ८१५३,
मेघ० ३५ ४ जिह्वा भासि० १११११। सम०
उपमा उपमा अलंकार का एक भेद, वस्तु उपमाओं
की एक भूषणा है जिसमें पूर्व उपमेय, आगे चलकर
उपमान बनना जाता है ६० मा० ६० ६६४।

रश्मिः [अच् + मि वाताब्द रश् + मि वा] १ झर, डारी,
रस्मी २ लगाम, रास मुक्तपु रश्मिपु निरायतपूर्व-
काया श० ११८, रश्मिसयमनात् श० १
३ लोटा, ढटर ४ किरण, प्रकाश किरण—श० ७१६,
नै० २२१५९, इसी प्रकार 'हियरश्मि' आदि। सम०
—कल्पितः कल्पित लक्ष्यों की योगियों की माला।

रश्मिन् (यु०) [रश्मि + मत्पु] सूर्य।

रम् [र्मा० पर० रमति रमित] १ इहाङ्गना, हुह
करना, चिन्तना, बीजना — करीब कथ्य पक्ष रास
—रघु० १६७८, शि० ३१४८ २ नाच करना,
कोलाहल करना, टनटन करना, घनघन करना
राज्योपनिमन्त्रणाय रसति स्फोट यक्षोदुन्नि
वेणी० ११२५, रघु० रमनापि तत्र घनघनमण्ड ३
गीत० १० ३ प्रतिस्पर्धन करना, गुजना।

११ (चुरा०) उभ० रमयति-रमित) चरना, स्वार लेना
—मुद्रिका रमिता भासि० १११३ शि० १०१२०।

रसः [रच् + अच्] १ मार, (वृक्षों का) दूध, रस, रसुम
कुसुमरस आदि २ तरंग, द्रव कु० ११७ ३ पानी
—सहस्रगुणमूलखट्वायते हि रस रवि रघु० १११९
भासि० २११४४ ४ मदिरा, मारब —यन्तु० २११७७
५ घूट एक माता, लूराक ६ चरना, रस, स्वाद
(आन्० से भी) (वैज्ञानिक दृष्टिकोण के २४ गुणों में
से एक रस छ है कटु, अम्ल, मधुर, लवण
तिक्त, और कषाय) —परायस प्रीतिः कषयिष्ठ रस
वेत्तु पुरुष मुद्रा० ३१४, उत्तर० २१२ ७ चटनी,
मिर्च मसाला ८ कोई स्वादिष्ट पदार्थ—रघु० ३१४
९ किसी वस्तु के लिए स्वाद या शक्ति, पसन्दगी,
इच्छा इष्टे वस्तुस्पर्धनरसा प्रेमराशीभवन्ति
—मेघ० ११२ १० प्रेम, स्नेह अस्मा वसिष्ठहावो

रस—उत्तर० ११३९, प्रसरति रसो निर्मुक्तिचन ६१११,
'प्रेम की अनुभूति'—कु० ३१३७ ११ आनन्द, प्रसन्नता,
सुखी—रघु० ३१२६ १२ लाज्य, अतिरक्ति, सौन्दर्य
लाज्य १३ कचपारस, भाव-भावना १४ (काव्य
रचनाओं में) रस नवरसचरित्रां निमित्तिमादरणी
भारती कवेर्ययति काव्य० १, (रस प्रायः जाठ
है—भृङ्गभारहास्यकचपरीद्वीरमयानकाः। बीजस्ता-
दभुतद्वयो कथयन्ती न च रसा स्मृता ॥ परन्तु कभी
कभी 'जात' रस का बोध कर नी रस बना दिने
माने है—निबेदरस्य विभावोऽस्ति शान्तोऽपि नवमो रस
काव्य० ४, कभी कभी दमबा रस 'वासत्य' और
मिला दिया जाता है। प्रत्येक काव्यरचना के रस
भावयक घटक है, परन्तु विश्वनाथ के मतानुसार
रस काव्य की आत्मा है भाव्य रसात्मक काव्यम्
—मा० ६० ३) १ मनु, मार, तरंग, सबोत्तम
भाग १६ शरीर के सघटक द्रव १७ बीज १८ पारा
१९ विष, जहरीला पेश, जैसा कि 'तीक्ष्णरसदायिन्'
धं २० कोई भी जनिज या जानुसंबन्धी भवण।

सम०—अमलजन रसोत्, एक प्रकार का

—आत्मः अमलबल, अमलम् १ अमृत, काँह
बोध को सुगन्ध को रोक कर जीवन की कल्प
करे,—निखिलरसायनमहितो मन्वेनोदेन लघुन
इव—रस० २ (आत्म०) अमृत का काम देने
वाला अर्थात् जो मन को सुख की करे बाध ही
हृषित भी करे, आनन्दानि हृषिकरसायनानि
मा० ११८, मनसश्च रसायनानि—उत्तर० ११३६, बोध
कर्ण' आदि ३ रश्मिदि रसायन 'लेखः पारा,
—आत्मक (वि०) १ रसीला, रसदार २ तरंग,
द्रव, आभासः किसी रस का बाह्यरूप या केवल
प्रतीति २ किसी रस का अनुपपन्न स्थान पर वर्णन,
—आस्वादः १ सत् या रस आदि चरना २ काव्य-
रस की अनुभूति, काव्य सौन्दर्य का प्रत्यक्षीकरण
जैसा कि 'काव्यामृतसास्वाद' में,—मुद्राः १ पारा
२ पारसमणि, चिन्तामणि (कहते हैं कि इसके स्पर्श
से सोहा सोना बन जाता है), उज्ज्वल,—उज्ज्वल
मोती,—कर्मन् (तनु०) उन वस्तुओं का तैयार करना
जिनमें पारा इस्तेमाल किया जाता है, केसरण कपूर,
'लज्ज', कम्पु सोबान की तरह का लुसकदार गीब,

रसमन्त्र, —चह (वि०) १ रसों का ज्ञाता २ आनन्द
मानने वाला, कः राव, सीरा, कम्पु धिर,—क
(वि०) १ जो रस की उत्तमता को परखता है, जो
स्वाद जानता है, सासारिकेषु च मुनेषु यव रसज्ञा
उत्तर० २१२७ २ वस्तुओं के सौन्दर्य को सुखाने
में लगान —कः १ स्वाद का वाक्यकार, वाक्क, विवे-
चक, काव्यमयज्ञ, कवि २ रसविद्धि का ज्ञाता ३ पारे

के बीच से अपने बाकी बीचियों के ठीकर करने
वाला पैर, (-का) बिज्जा, -भावि० २।५९, लेख
(नपुं०) छिर-कः पैर, -बहु (नपुं०) पारा,
-ककः कोई भी कायरपना, विशेष कर नाटक,
-ककः नाटिक का पैर, बहुः रस का टूट जाना
का बहरोर, कक्य छिर, -रायः पारा, विज्जः
भरिा की थिनी, -काल्य रसिदि का विज्ञान,
-सिद्धि (वि०) १ काय-सम्पन्न, रसवेता -अवन्ति से
कुछदिन रसविद्या कभीकरा -मर्तु० २।२४ २ रस-
सिद्धि न कुछक, -सिद्धिः (स्त्री०) रससिद्धि में
कुछकटा।

रसम् [रत् + स्तुट्] १. कन्दन करना चित्ताना,
चिक्कना, बोर नचाना, टनटन करना, कोलाहल
करना २. बारहों की बरबकाहट, बारहों की बरब
३ स्वाद, रस ४ स्वाद के की इन्द्रिय, बिज्जा
-इन्द्रिय रसवाहक रसम् बिज्जावर्धन-तर्क०, मम०
१।५९ ५ प्रत्यक्षीकरण, गुणानुमतिवेचन, ज्ञान - सर्व-
प्रिय रसमात्रता -सा० ६० २४४।

रसक दे० रसना। तम० -रसक पत्नी, सिद्ध (पुं०)
कुटा।

रसक्य (वि०) [रत् + क्यु] १ रसेदार, रसीला
२ स्वादिष्ट, मजादेदार, मजेदार, मुरख संसारमुक्त-
मुक्तत्व है एव रसक्यते, कामानुगतलास्वा- सम्पर्क
सम्पर्क- बहु ३ तर, सीला, पानी से भाई ४ मनो-
हर, कामदार, शोचक, परिष्कृत ५ भावों से मग
हुआ, बोधीका ६ स्नेहमिस्त, प्रेमपूरित ७ साहसी
रसिक, -सी रसोई।

रसा [रत् + मच् = डान्] १ मिमतर मारपीन प्रवेश,
मरक २ पुष्पी, मूवि, मिट्टी -भावि० १।५९, स्वरस्य
मुद्ररज्ज्वा रसासारकारता -मनो० २।१० ३ बिज्जा।
तम० -डकम् १ पुष्पी के नीचे छत पातालों में से
एक, दे० पाताल २ नीचे की बुनिया, मरक, - राय्य
बहु रसासं गुणरिच न भाविर्तु कामवे भावि०
२।६१ वातिवर्तु रसातलम् -मर्तु० २।१९।

रसका [रत् + का + क, व० ट०] १ काम
का पैर, -मुक्ता रसकमुकुवावि वदामवन्ते -भावि०
१।१० २ मजा, ईक, -क १ बिज्जा २ बहु वही
विचरने बकर तथा मजाके मिठा दिए मये हों
३. पूर्वा पाद, दूध ४ मंयूरी की बेक या मंयूर,
-कम् कोवान।

रसिक (वि०) [रसोपसव उन्] १ मजादेदार, मजे-
दार, स्वादिष्ट २ कामदार, लसित, कुन्दर ३ बोधीका
४ उत्तमता का रस की पहुचाने वाला, स्वादपूरक,
मुनबाही, विशेषक -उन् नृत्य प्रवर्धित कामरसिका
कामरसिकीकृतम् -मर्तु० ४० ५. काम्य केने वाला,

बुधी ममान वाला, प्रवचता अनुभव करने वाला,
कस (शायः समास में) -इय मालती मयवता लघु
लघोपरसिद्धि देवता सम्पन्न मया च तुभ्य दीयते
-भा० ६, इसी प्रकार 'कामरसिक' -मर्तु० २।११२,
परिष्काररसिकस्य -मुच्छ० ६।१९, - कः १ रसिया,
मुनबाही, लघुद्वय पुरुष तु० अरसिक २ लोकाधारी
३ हाथी ४ बोका, का १ ईक का रस, राय, मीमा
२ बिज्जा ३ रियो की करवनी - दे० रमाला' मी।
रसित (मू० क० क०) [रत् + क्त] १ चला हुआ
२. रस वा मनोभाव से मुक्त ३ मुलम्मा चढ़ा हुआ
तम् १ सराव या मरिदा २ अदन, बहाक, परज,
चिदाड कोलाहल बोर -हेम्बकथरसितप्रतिमानमर्नि
मा० १।३।

रसोक्त [रसेनेकेन उन्] लहनुन तु० लहनु।

रस्य (वि०) [रत् + यत्] रसवाला, मजेदार मुक्तादु,
इकिर रस्य स्मिता स्मिता हुआ माहारा
सात्त्विकप्रिया मम० १।७८।

रस्य (म्भा० पर०, गुण० उम०) रसित, रस्यति से,
रहित छोड़ देना, त्याग देना, परित्याग करना
मिठावक्ति देना, छोड़कर कक्य हो जाना रहनर्या
पहुनेतमायति -कि० २।१४।

रस्यन् [रत् + स्तुट्] छोड़ कर नाम जाना, परित्याग
का देना, कक्य हो जाना लहकारपूते कक्ये लह
का रस्यन केन सत्यार पदम् मनो० २।१४।

रस्य (नपुं०) [रत् + क्यु] १ एकात्मता, एकात्मबाह,
मकेकापन, एकाकीपन, निर्बलता रस्य ३।३ १५।
९२ पंच० १।११८ २ उचका हुआ या मुनवान स्थान
छिपने की जगह ३ मेद की बात, रस्य ४ नैयम,
हमोन ५ गुप्त इन्द्रिय - (अव्य०) गुपचाप, कोक
बना कर, गुप्त रूप से, एकात् में, निर्बलनमान में,
अत परीक्ष्य कर्तव्य विशेषतात्पूत रस्य - का०
५।२४, प्रायः समास में - नृत्य रस्य प्रवचप्रतिपक्षवाने
५।३१।

रस्य (वि०) [रसि मच् = क्त] १ गुप्त, निजी,
प्रच्छन्न २ मेदवरा, क्य ३, मेद (शाम० से मी),
-त्यव रस्यमेद क्त -विज्ज० २ २ रस्य से
मरा जाइ, मच, (अवसर्गवची) मेद, गुप्त बात-सरस्य-
स्यापि मुक्कफारवावि - उत्तर० १ ३ माचरय का
मेद वा रस्य, गुप्त बात - रस्य साधुनामनुपवि
विमुद्र विचरते उत्तर० २।४ ४ मुक्त वा गोपनीय
सिक्का, एक रस्यमम सिक्का - मरतोभि से सजा
वेति रस्यं होतुतमम् -मम० ४।१, मपु० २।१५०,
(अव्य० - क्यम्) गुपचाप, गुप्तक्य से -वाच० ३।
३०१ (वही बहु विशेषण के क्य में भी उचका का
क्यता है)। तम० -अवसाविन् (वि०) मेद की बात

—नामायोषसमाकीर्णो नीराजितहृषदिषः काम० ४।६६
प्रति होता — 1. चमकाना, - भाषि० १।८८ 2. दिखाई देना,
प्रतीत होना - रघु० २।२०।

राज् (पुं०) [राज् + क्तिप्] राजा, सरदार, युवराज।
राज्यः [राज् + क्त] छोटा राजा, मामूली राजा, - कम्
राजा या राजाओं का समूह, प्रमुखता प्राप्त राजाओं
का समूह — सहते न जनोऽप्यथः किं किम् लोका-
धिक्रियाम् राज्यकम् — कि० २।४७, सि० १।४।४३।

राजत (वि०) (स्त्री० - स्त्री) [राजत + क्त] चांदी का,
चांदी का बना हुआ, सि० ४।१३, - तम् चांदी।

राजन् (पुं०) [राज् + क्तिन्, रज्यति रज्य + क्तिन् नि०
वा] 1. राजा, शासक, युवराज, सरदार या मुखिया
(समुच्चय समास के अन्त में 'राजन्' का बदल कर
'राज' बन जाता है) बंगराजः, महाराज आदि
— तच्चैव सोऽभूदन्वयो राजा प्रकृतिरञ्जनात् - रघु०
४।१२ 2. तैलिक जाति का पुरुष, दण्डिय सि०
१।४।४ 3. बुधपिंडर का नाम 4. इन्द्र का नाम
5. चन्द्रमा — भाषि० १।१२६ 6. यज्ञ। मम०

—अङ्गणम् राजकीय कचहरी या दरबार, महल का
बाग़, - अधिकारिन्, अधिकृतः 1. राजकीय अधि-
कारी या कर्त्तृकर 2. न्यायाधीश, - अधिकृतः - इन्द्रः
राजाओं का राजा, सर्वोपरि राजा, प्रमुख प्रभु,
सत्ताधर, - अक्षयः 1. पटिया राजा, छोटा राजा,
2. एक प्रकार की उपधि जो पहले पूजनीय विद्वानों
और कवियों की दी जाती थी, - अक्षयः अयोध्या या
पतित राजा, - अधिकृतः राजा का राजतिलक, - अङ्गम्
बग़र की लकड़ी, एक प्रकार की चन्दन की लकड़ी,

—अङ्गणम् राजकीय सम्मानसूचक उपहार, - राजा
राजा का अनुशासन, अध्यादेश, अथवा आदेश।

—आश्रयम् राजा का आश्रयण - आश्रयः - ली
राजकीय वसतिगृह, राजवासाली, उपकरणम् (ब०
ब०) राजकीय साज सामान, राजविहङ्ग, श्चि-
(राज्य श्चिः या राजविः) राजकीय कवि, मन्त्र-
समान राजा अधिकृत जालि का पुरुष जिसने अपना
पवित्र जीवन तथा सामन्तालय भक्ति से श्चि का पद
प्राप्त किया हो। जैसे पुरुषम्, जनक और विद्यानाथ,

—करः राजा को दिया जाने वाला न्यून - कार्यम्
राज्य का कार्य, - कुमारः युवराज, - कुल 1. राजकीय
परिवार, राजा का कुटुम्ब 2. राजा का दरबार
3. न्यायालय (राजकुले कक्ष, या त्रिभिः (त्रे०)
न्यायालय में किसी के विरुद्ध अभियोग चलाना,
या मालिक करना) 4. राजा का महल 5. राज,
महाराज (बोलने की सम्मानसूचक रीति), राजिन्
(वि०) राज्यधीन या राजाधिकार में होने वाला
सम्पत्ति आदि (दिन सम्पत्ति का कोई उन्वर्गपितृपरी

न हो), - बृहत् 1. राजकीय निवास, राजा का महल
2. मलय के मुख्य नगर या राजधानी का नाम (जो
पाटलिपुत्र से लगभग ७५ या १० मील की दूरी पर
स्थित है) - विहङ्गम् राजविहङ्ग, राजाधिकार
या राजाधिकार, - तत्त्वः, शास्त्री सुपारी का पेड़, - बन्धः
1. राजा के हाथ का डंडा 2. राज शासन या राजा-
धिकार 3. राजाद्वारा दिया गया दण्ड, - बन्धन,
(बन्ताना राजा) आगे का दांत नै० ७।४६, - ब्रूतः
राजब्रूत, राजा का प्रतिनिधि, - ब्रूतः राजा के
विरुद्ध विषयामधान, राजसभा के विरुद्ध आन्दोलन,
राजविद्रोह, - द्वार (स्त्री०), - द्वारम् राजा के महल
का मुख्य द्वार या फाटक, - द्वारिकः राजमहल का
द्वारोद्घाटन, - बन्धः 1. राजा का कर्त्तव्य 2. राजाओं में
सम्बन्ध रखने वाला नियम या विधि (प्रायः ब० ब० में)

—बालम्, - बालिका, - बाली राजा का निवास
स्थान, मुख्य नगर, राजधानी, शासन के कार्यालय का
स्थान, - रघु० २।२०, - बुर (स्त्री०), - बुरा शासन का
उत्तर दायित्व या भ्रष्ट, - बुरः, नीतिः (स्त्री०)
राज्य का प्रशासन, सरकार का प्रशासन, राजनय
राजनीतिज्ञता, नीलम् पत्थर, भरतन मणि, - ब्रूतः
पटिया हीरा, - बन्धः, - पद्धतिः (स्त्री०), - राज-भार
दे०, - बुरः 1. राजकुमार, युवराज 2. शौर्य, मोनः
शक्ति का पुरुष 3. बुधपञ्च, - पुत्री राजकुमारी, - पुत्रः
1. राजा का सेवक 2. मन्त्री, - प्रेष्यः राजा का सेवक
(-पक्ष्) राजा की सेवा (अधिक बृद्ध 'राजप्रेम')।

—बौद्धिन्, - बन्ध (वि०) राजा की मन्त्रालय, राज
वशाज, भूतः राजा का मित्राही, बन्धः 1. राजा
का सेवक या मन्त्री 2. कोई सरकारी अधिकारी,

भोगः राजा का भोग, आना भोग राजा का
विदूषण या हँसीकटा, भाष्यकारः बौद्धिन् (पुं०)
राजा का मन्त्रकार, - भार्गवः 1. भूगर्भ में मूल महल,
राजद्वार या मुख्य पथ मुख्य राजा या प्रधान मंत्री
2. राजा की कार्य-विधि प्रशासन, या शासन, राजा
का मन्त्र, - ब्रूतम् (पुं०) शत्रुपक्ष, कृष्णकुल
समूह, तैलिक, - राजव्यवस्था, राजा-भोग बालयान-
नयकव्यया तुनाम् रघु० १२।२५, - राजव्यवस्था
राजापना समूहः समूहभूताम्, - सि० २।६ (इस
शब्द की व्याख्या के लिए देखें मन्त्रि० इस पर और
सि० १३।२९ पृ०), - बालम् राजा की मन्त्राली,
राजकी भोगः 1. क्रम के समूह यहाँ और नभयः
का गया सम्पत्ति जिससे उस व्यक्ति के राजा होने
का मकदद मिले 2. धार्मिक विष्णु का एक शत्रु
योग (राजाओं द्वारा अभ्यास करने योग्य) की हुई
योग (दे०) जैसे और कठोर बलों में भिन्न है, - ब्रूतम्
चांदी, - राजः 1. पक्ष राजा, मन्त्रीपि ब्रूत, सत्ता

2 कुबेर का नाम जन्तवाध्याधिरमनुचर। राज
राजस्य दध्यौ मध० 3 3 बन्द्या रेलि
(स्त्री०) कसा कुल लखन्यू 1 मनुष्य क गारार
पर काष्ठ गमा बिजु जो उसकी भावा राजकोयता
का प्रकट करे 2 राजकोय बिजु, राजबिजु राज
शर्मा लखनी, श्री (स्त्री०) राजा का मोदायय मा
मनुष्य (देवा का यतन) राजा की कीर्ति या
महिमा- रथ० ५१३ बज गजायो का वज

[illegible][illegible][illegible]

राजस्थान १७ (२) [३७] १३ ५१ ३४
४१५ २४

[illegible]

वाक्य (१) २ व म १ व १ व म १ व
 २ व १ व १ व १ व १ व १ व १ व १ व
 १ व १ व १ व १ व १ व १ व १ व १ व
 म १ १ १ १ १ १ १ १

राजस्थान (अ १) १९९१ सांख्यिकीय वार्षिक प्रतिवेदन
पृष्ठ १२५

राशि—श्री (श्री०) [गङ्गा-इन वा कोय] बारी, देहा,
पकिन कलार सबे पण्डितगङ्गा राजिनिमेलनाकारि
लोकान्तगम भाषि० ६६४ दानराशि—रघु०
११३, वि० ६१५।

गणिका [गणि + कन् + टाप्] १ रक्षा पक्षि कत्तार
२ स्वेन ३ काली मृगसा ४ सरसो (एक परिभाषा
तोल) ।

राजिब [राज + इल्ल] मराठी की एक सरल ज्ञान जिसमें
विषय नहीं होता कि यह राजिबमपिचिकमो राजिबम
मराठी प्रयत्न मराठी ३ ७ १० इल्ल'।

[illegible]

गङ्गा । वरुणा का पुत्र । गङ्गा की पत्नी ।

गन्धम ५१ २१ इम वा राशिन यत् मलाप ।

1 राजकीय प्रमुख राजकीय अधिकार सम्पन्न
कि अंगुष्ठावत अथ २१५ ॥ 2 राजधानी
उत्तर माथा ३ अथ १५० 3 हनुमन् राज्य
शान्तन राजका अक्षान्त । सम ४ अथ १५०
का अथ ३ मध्य राजधानी की आवश्यक
सामग्री यह अनुपात । अन्तर्गत राजा है स्वाम्य
मा अनुष्ठित राजधानी व अन्तर्गत अधिकार
। राज २ अथ ३ प्रमत्ता का अधिकार

अपहरण के द्वारा १२ ग्रहण करना शक्ति
 एक राजा का राजात्वं, राजात्वं राजात्वं कर
 त्तु शक्ति का एक अलग-अलग राजा द्वारा दिया जाता
 है। (१) इस राजा द्वारा मिहान्त
 २) राजा का राजात्वं राजात्वं राजात्वं राजात्वं राजात्वं
 ३) राजा का राजात्वं राजात्वं राजात्वं राजात्वं राजात्वं
 ४) राजा का राजात्वं राजात्वं राजात्वं राजात्वं राजात्वं
 ५) राजा का राजात्वं राजात्वं राजात्वं राजात्वं राजात्वं
 ६) राजा का राजात्वं राजात्वं राजात्वं राजात्वं राजात्वं
 ७) राजा का राजात्वं राजात्वं राजात्वं राजात्वं राजात्वं
 ८) राजा का राजात्वं राजात्वं राजात्वं राजात्वं राजात्वं
 ९) राजा का राजात्वं राजात्वं राजात्वं राजात्वं राजात्वं
 १०) राजा का राजात्वं राजात्वं राजात्वं राजात्वं राजात्वं

[illegible]

शक्ति श्री (को०) श्री भय भय क रा त्रिप वा
 गो। गरा इय 'मिता वर भू न ज्ययाम
 मय ५१ १ रा राशरशद्धीता रात्री ररति
 नय मः मय० अट १ वतान १, गाव भूत भेत
 २ रा अय्य (वि) १ मिग राव को दिहाई न
 ६ कर न दया कर (राशर रा श्री) (को०)
 रो) १ मिगावर वर वर २ यहराव प्रायसी

का निर्वासन तथा दूसरे से अपने प्रिय पुत्र भरत का युवराज के रूप में राज्याभिषेक मंगा। राजा को इस बात से भयानक डरका लगा, उसने ईकैयों को उस दुष्ट भाँयो से हटाने का भरसक प्रयत्न किया परन्तु अन्त में उसे झुकना पड़ा। मुरन्त ही बाजाकारी पुत्र राम अपनी मुन्दर तख्त पत्नी सीता तथा भक्त भ्राता लक्ष्मण के साथ निर्वासन होय का तैयार हो गये। उसका निर्वासन काल बड़ी-बड़ी घटनाओं से भरा हुआ है, दोनों भाइयों ने कई पक्षिप्राणी गलसा का काम समाप्त कर दिया, फलतः राक्षस की द्वेषाग्नि भड़क उठी। दुष्ट राक्षस ने मागीच को मरवायना से राक्षस की शक्ति का देखने के लिए उसकी प्रिय पत्नी सीता का बलात् आहरण किया। सीता का पला लगान के लिए अनेक निष्कन्त पुच्छाओं के पशवान् हनुमान् ने यह निश्चय किया कि सीता उसका में है और फिर उसने राक्षस की शेरन किया कि उसका के ऊपर भड़ाई की जाय तथा दुष्ट राक्षस को मौत के घाट उतारा जाय। बातों ने समुद्र को पार करने के लिए एक पुल बनाया जिसके ऊपर में अपनी असह्य मना के साथ पार होकर राम उसका में प्रविष्ट हुए तथा उसे जीव कर सब राक्षसों समेत राक्षस का वध किया। उसके पश्चात् राम अपनी पत्नी सीता, तथा अन्य युद्ध विधियों के साथ विजयपराका फहराने हुए वापिस अयोध्या श्रायें जहाँ बसिष्ठ द्वारा उनका राज्याभिषेक किया गया। राम ने बहुत वर्षों तक स्यावर्तक राज्य किया उसके पश्चात् कुछ युवराज बनाया गया। राम, विष्णु भगवान् का मान्सी अवतार माना जाता है १० वरदेव-द्वितीय विष्णु रणे विकर्षित कमनीय रघुमयमोर्निर्वाण रमणीय, केशव चरणभू-वर्णिकय वय जगदीश हरे--गीत० १। मम०--अनुक्त एक प्रसिद्ध सुधारक, वैशाखी सप्रसाय क प्रवर्तक तथा कई पुस्तकों के प्रणेता वैष्णव, जयमज्ज (जय) १ राम के साहित्यिक कार्य २ वास्तवीक प्रणीत एक प्रसिद्ध महाकाव्य जिसमें सत्ता काण्ड तथा २१००० श्लोक हैं। निर्गः एक महाकाव्य का नाम,--(चके) निगधकाव्यायतकम् बसति राममयीययम् शेष० १ --कण, यह दशरथ के पुत्र राम का नाम ब्रह्म, हनुमान् का नाम नववी वैष्णवका तृतीय राम की अयनी, सेतु, राम का पुल भारत और लका को जोड़ने वाला रेत का पुल जिसे ब्राह्मण 'एकमत्र विद्म' कहते हैं।

राक्षस, कम् [रम् + अठ धातोर्द्ध] हीन।

रामचरित (वि०) (स्त्री० को) [रमणीय + चर]

प्रिय, मुन्दर मुन्दर, कम् प्रियता, मोक्षार्थ सा राम-वीरकविचरितदेवता वा भा० १११ ११७७.

तत्पत्नीम्त एव मजिह्वागवसिगमनीयकम् --न० २।
४८, कि० ११३३ ४४।

राधा [रमनेज्या रम करने में] १ मुन्दरी स्त्री, मनोहारिणी तत्पत्नी--अथ राधा विकल्पयुगी वयस्य मासि० २।१६, ३।६ २ प्रिया, पत्नी, मुहस्तामिनी रघु० १२।२३ १४।३३ ३ स्त्री,--राधा हस्ति हृदय प्रथम नराधाम्--अनु० १२।२५ ४ नीच जाति की स्त्री ५ सिद्ध ६ हीन।

राक्षस [रम्भा + अण्] बाम की लाठी जिसे ब्रह्मचारी वा सन्यासी रखते हैं।

राक्ष [र + अण्] १ बदर चीत्कार, चीख, बहाद, किसी शत्रुवर की चिपटा २ शब्द, शक्ति--मरक-वाधराव--वाल्कि० १।२१ मधुरिपुरावध--गीत० ११।

राक्ष (वि०) [राक्षयति शीघ्रयति सर्वान्-र + क्षिप् + ल्युट]

राक्ष (वि०) [राक्षयति शीघ्रयति सर्वान्-र + क्षिप् + ल्युट] क्रन्दन करने वाला, चीखने वाला, बहादने वाला शत्रु के कारण रोने वाले वाला--अथ एक प्रसिद्ध राक्षस लका का राजा, राजाओं का मुखिया (राक्षस के पिता का नाम विश्वा तथा भाला का केसरी या केकरी का इसी लिए वह कुदरे का नीलवा भाई था। पुनस्त्य श्रुति का पीव होने के कारण वह पीलस्य कहलाता है। युद्ध रूप से लका पर पहुँचे कुदरे का अधिकार था, परन्तु राक्षस ने उसे वहाँ से निकाल दिया और लका को अपनी राजधानी बनाया। उसके दस सिर (हस्तीस्य बहु दशवीर दशवदन, आदि कहलाता है) और बीस नृजाएँ थीं, कुछ के अनुसार उसकी टाँई थी चार की (नु० रघु० १२।८८ और उस पर मल्लि०) ऐसा बलवत मिलता है कि राक्षस ने ब्रह्मा की प्रसन्न करने के लिए इस प्रकार वर्ष तक कठोर तपस्वर्षा की, और प्रति हजार वर्ष के पश्चात् अपना सिर ब्रह्मा के जाने प्रस्तुत किया। इस प्रकार उसने भी सिर प्रस्तुत किए और स्वर्षा सिर प्रस्तुत करने लगा ही था कि ब्रह्मा ने प्रसन्न होकर ब्रह्मान दिया कि उसकी वायु में वनस्पति द्वारा होगी और न वेवता द्वारा। इस शक्ति से तपस्व होकर वह ब्रह्मा अत्याचार करने लगा, उसने लोगों को सब प्रकार से मारना शरम्भ किया। उनकी शक्ति अपनी अधिक हो गई कि देवता भी उसके चरने नीकरी की भाँति उसकी देवता काय मने। उसने जाने समय के साथ अपनी राजधानी को जीत लिया परन्तु कार्यवीर्य ने उसे काराधार में डाल दिया जब कि राक्षस ने उसके देव पर आक्रमण किया। एक बार उसने देवता सर्वत उठाने का प्रवर्त किया, परन्तु शिव ने देवता बचाए

कि उसकी अगुनियाँ कुचल गई। फलतः उसने शिव की एक हजार बच तक इनन डूबे स्वर से स्तुति की कि उसका नाम राम रड गया और उस शिव ने उस पीडा से मुक्त कर दिया। परन्तु यद्यपि वह इनना बलवान और अश्वेत था भी उसका अन्तिम दिन निकट आ गया। राम त्रिहीने इस गजस का बंध करने के लिए ही विष्णु का अवतार गारुड बिना था, अपना निवासित जीवन ब्रह्म में रहकर बिना रहा। एक दिन रावण ने उसकी पत्नी सीता का अपहरण किया और उसमें अपनी पत्नी बन जाने का अनुरोध करा गया परन्तु उसने रावण की प्रार्थना का उत्तरा। और वह उसने पहले रक्षा हुई भा पतिव्रता की सखी बना रहा। अन्त में राम ने अपनी बाल्यमग्न की सदागता में लडा पर बड़ाई की और रावण तथा उसकी सेना का नाश तमास किया। वह राम का तायक शत्रु था और इसकारण यह कलावन पसिद्ध हुई। रामायणवाचक रामगणेशवारि।

रावण। रावणस्यापत्यम्—इज। 1 इन्द्रजित का नाम रावणियाध्यक्ष) योद्धाभ्यम् २ पहीयन भटि-
१५।७८ ८० २ रावण का बाल पुत्र भटि-
१५।७९ ८०।

राशि। अमृत व्यानाति—अमृ इत्य धातुः कथम्—न 1 इन्द्र अकार सप्रह, परिमाण म्पुत्राय पनर्गति तायगाति यशाराति अति 2 अक या सम्पत्ति या अकपणित की किसी विषय प्रक्रिया के लिए प्रयत्न की जाये (जैसे बहना गुणा करना आदि) 3 धर्मि चक्र, बाह्य राशिगायी। सम० अधिष कुण्डली में किसी विशेष घर का स्वामी चक्रम लागमण्डल बाह्य राशिगायी प्रथम् वैरागिक गणित आज किसी राशि का भाग या अक्ष भोज मय चन्द्रमा आदि वही का राशिचक्र में से होकर भागे अथवा किसी वृत्त का किसी राशि पर रहन का बाल।

राशुक्। [राशु + कु] 1 राज्य देश साम्राज्य—राष्ट्र दुर्गविकानि च—अमर० मनु० ७।१०० १०।६१ 2 क्रिया, प्रदेह, देश, मण्डल वैया कि महाराष्ट्र मं—मनु० ७।३२ 3 अधिकासी, जनता, प्रजा मनु० १।२५४, कु कुक् कोई राष्ट्रीय या सार्वजनिक सफट।

राशुक्। [राशु + कु] 1 किसी राज्य या देश का नाम मनु० १०।६१ 2 किसी राज्य का शासक राज्यपाल।

राशुक्, **राशुक्** (वि०) [राशु + कु] राज्य से सम्बन्ध रखने वाला, व 1 राज्य का शासक राजा—वैया कि 'राशुक्'शब्द में कुक् ० २ राजा

का साला (रानी का भाई) श्रुत राशुक्शब्दवाचक यावदकुली कवर्गनम शां ६।

राशु। [राशु + कु] कदन करना बिलम्बना किल किलाना साध्य करना हूह कला।

राश। [राश + कु] 1 होहम्मा कालाह्न सारगुल 2 शब्द, शक्ति 3 एक प्रकार का नाच शिसका अभ्यास कृष्ण और गोविण्ड करनी की विषयन बुद्धावन की गोपियाँ उनमय रासे मम सक्तुर्नाम वेणी० १० रासे हरिमात्र विहायविनाम मय० 1 मरो मम कृत परिश्रमम लीप० १ भी। सम०

श्रीडा शब्दसम चीडमुलक नाच इत्यादि बुद्धावन की गोपिकाओं का बालावन नाच रासकम् [रास + कु] एक प्रकार का छाना नाच भा० ६० ५६८।

रासक। रासे प्रभाव। तथा सम०

राशुमय गति मयडा। बिना किसी वस्तु के रहता वभाव किसे बना कर जाता।

राशु। १२ राश एक राशु का नाम बिनाम और शिष्टता का पुत्र इत्यादि कई बातें यह भी २२ वंशगा १ (अब मनु० १० के परिचय १२ मयुद्ध निबन्धा अमन देवताओं के राशिगत नाम तो राशु ने बग बलकर उनके साथ मय में मय राशु राहा। २२ मय और बलका को हर मय। ३ का राशु मय तो अमन विष्णु की इस बालाकी के जान कराया। फलतः विष्णु ने राशु का मिर का जाना राशु की बाला का अमर बल बल पुका था तो उसका मिर अमर हो गया परन्तु कहने है कि गुजिया या ब्रह्मस्य का बाला का और मय का अब भी सारा रहने है मनु० अमर १३४। मयविष म राशु भी के कु को मयि समझा जाता है यह जाठवां बह है या चन्द्रमा का जारोही शिरोविष्णु है 2 बल या बल होने का बल। सम० बलम,— रास, बालम, लम्पली (बाँह या लुई का) बलम सुतकम राशु का जन्म अर्थात् (बाँह या लुई का) प्रथम पात्र० १।१६६ तु० मनु० ६।११०।

रि। (गुदा० पर० निर्धार लीज) जाना विमना कुलना।

1 (कपा० मम० २० 'रा')।

रिक्त। [रि + कु] [रि + कु] 1 शाली किया गया शक किया गया रिताया गया 2 शाली क्षय 3 म रहित वरिष्ठन के बिना 4 शोभना किया गया (जैसे हाथ की अर्धांश) 5 लीड 6 विषयन विषय (२० रिक्त) कलम 1 शाली स्थान शून्यक निर्वात 2 जगम उजाह विवादान। सम०—रिक्त, कलम (वि०) शाली हाथ शाली (कलम आदि के) उपहार

से रहित अहमपि वेणी प्रेक्षितुमरिक्तपाणिर्बेवायि
माकथि० ६।

रिक्तम् (वि०) [रिक्त + कन्] दे० 'रिक्त'।

रिक्ता [रिक्त + टाप्] बाइबाम के पक्ष की अनुधा
नवमी या अनुवर्षी का दिन।

रिक्तम् [रिक् + क्] १ दाबमाण, उत्तराधिकार में प्राप्त
सम्पत्ति, घरने के पश्चात् विरासत में सोड़ी हुई
सम्पत्ति बिजबरन मुता पिशोरुय रिक्तमून
ममम् यात्र० २११३, मनु० ११३०६, नन गमं
पिश्य रिक्तमर्हति ३० ६ २ सम्पत्ति छनवौनन
मामान् मनु० १२३ ३ सोना। मनु० आब,
ग्राह, आगिन् (१०), हर., -तारिन् (१०)
उत्तराधिकारी।

रिक्तम्, रिक्तम् (तुदा० पर० रिक्तान् रिक्तान्) १ गन
इव गीव -लना - भ उत्तान मे नलना।

रिक्तम, रिक्तम् [रिक्त + (म) + यट] १ गन
गेट के बल नलना (गुह्यवदा चलना) २ (मदाव
म) विवक्ति होना, समावधाना होना।

रिक् (३४०० उभ० गिजकि गिन रिक्त) १ आली
कम्पा गिगना, माप करना निर्मेक करना गिज
कम्पा अलवेसोयम् भाटु० ६१३६ आकर्मते जायान
नमगा रिक्त्यानेक गणि। विक्रम० ११२ २ बन्धित
करना, बर्गित करना (प्राय मू० क० इ०) दे०
रिक्त, अति, आमे बडना, प्रगति करना पीछे छाड
देना (किस बा० में और अपा० के माध) नृद नृ
गृहणीहीन कालाशानिरिक्त्यने पच० ६१८१ हि०
४१३३, भव० २१३६ वाचः कर्मनिर्वाच्यते "उपदेश
मे निदर्शन उत्तम है एखापल इव बेटर देन पिष्ट
(Example is better than Precept)
अथ, १ जाने बडना पीछे छोड देना, प्रगति करना
२ बढ़ाना, बिलार करना, अति बड जाना पीछ
छोडना लुपतिभ्यो व्यतिरिक्त्यने बुराणि बरिगानि मे
मनु० १०१३०।

१) (भा० ब्रा० पर० रेवति, रेवयति, रंयति १ बिभक्त
करना, बिभुक्त करना, अलग-अलग करना २ परि-
त्याग करना, छोडना ३ सम्मिलित होना, मिलना,
जा - , विघोडना, लोक-लोक में चलना आरोग्य
अकुरं कटाक्ष -- कु० ३१५।

रिति [रि + टिन्] १ एक प्रकार का वाक्य २ जिस के
एक लेखक (नम) का नाम-मु० भूज (मे) रिति'।

रिपुः [रप् + उन्, पृषो० इत्थम्] अथ, दुस्मन, शत्रुपक्षी।

रिप् (तुदा० पर० रिपति, रिपित) १ कटकटाने का लय
करना २ बुरा बला कहना, कमजु कहना।

रिप् (भा० पर० रेपति, रिप्य) १ अति पहुँचाना, चोट
पहुँचाना, डेल पहुँचाना लसनेहाथी न रिप्यते-बहा०,

तेन यावाभ्युता ग्रामेभ्येन नृप्यन् न रिप्यते मनु०
४१३८ २ मार डालना, लट करना मट्टि०
१३११।

रिप्य (मू० व० क०) [रिप् + क्त] १ अतिवस्त चोट
पहुँचाना हुआ, २ प्रभासा अथ १ उत्पात, अति,
डेम २ बदकिस्मय, दुर्भाग्य ३ बिलाख, हासि ४ पाप
५ सीमाव्य, समुद्र।

रिप्य (रुकी०) [रिप् + क्लिन्] दे० ऊ० 'रिप्यम्', १०
उत्पार।

री। (रिबा० आ० रीयन्) टपकना, बुद-बुद बिरना,
रिमना पसीबना, बलना।

१ (कषा० उभ० रिगानि रिगाने रीच-अर० रेपयति-ने)
१ जना हिलना-बुलना २ बाट पहुँचाना, अतिप्रल
करना मार डालना ३ हट करना।

रीयवा (रुकी०) १ निन्दा लिडकी कलक २ प्रमं हुवा
रीयवा (प०) मेव शब्द रीड की हडकी।

रीहा [रिह् + क्त + टाप्] अनादर, निरम्भार अपमान।

रीय (मू० क० क०) [री + क्त] टपक हुआ बहा हुआ,
बुद बुद करक भिरा हुआ।

रीति (रुकी०) [री + क्लिन्] १ हिलना-बुलना, बहना
२ गति अथ १ चारा, तरी ४ रेखा, सीमा
५ प्रणाला इव, तरीका, मार्ग सोकी, बिचा, प्रक्रिया-
रीति गिराममृतपटिकरी तदीयां भाषि० ३११९,
मर्वेवेषा विहिता रीति माह० २, उपनरीया, अम-
वेक रीत्या त्रिषि ६ रिहाज, प्रभा प्रचलन ७ सोकी
बाक्यविन्यास -यदस्मिन् रीतिरङ्गस्त्वा विधेयवत्।
उप० रीं रसादीनां सा पु० म्याच्यनुविधा। बंदर्षी
बाब मोडी व पाञ्चाली भाटिका ठवा भा० ६०
१२०-५ ८ रीतल, कासा (इव अर्थ में 'रीनी' जी)
९ लोहे का जंज, मु० ६ १० वायु के तल पर लया
जाये।

४ (अदा० पर० रीति रीति क्त) करने करना, हुज
करना चिल्लाना, बोलना और से बोलना, दहाड़ना
(मकियाँ का) प्रनयमाना, लब्ध करना कर्म कल
कियापि रीति लनेविचिचम-वि० ११११, मट्टि० ३११३,
१२१३२ १४१२१, वि १ कृतन करना बिकाप करना
भाक में रोना -मनु सहचरी हरे मत्वा विरीति लनु-
लुक् विक्रम० २१०० मट्टि० १५५४, मनु० ३१२३,
२ कोमाहन करना, खोर बचाना न ल बिरीति न
बापि त छोडने पच० ११७५, जीर्णत्वाद् गृह्य
वि० 'कपा' मू० ३, एत न एव विरवी
बिबम्भयत उत्तर० २१२३।

रय (वि०) [रप् + य, न० कृयम्] उज्ज्वल, बरक-
दार कः मोने का मोनुचन-वि० १५१७८-कय
१ सोना, २ मोहा। इव० कारक कुनार, -नुक

(वि०) सोने के मुल्यसे पुस्त, सोना बढ़ा हुआ,

—बाहुन डोषाचार्य का नामान्तर ।

हविष्यी (पु०) [हव + इति] भीष्मक के उपेक्ष पुत्र तथा हविष्यी के भाई का नाम ।

हविष्यी [हविष्य + क्रीप्] विषय के राजा भीष्मक की पुत्री का नाम (हविष्यी की सवाई हविष्यी के पिता ने मिथुपाल से कर ही गी, परन्तु हविष्यी गुप्त रूप से कृष्ण से प्रेम करती थी । उसने कृष्ण को एक पत्र बेज कर प्रार्थना की कि उसका आग्रह कर लिया जाय बलराम सहित कृष्ण आया और हविष्यी के भाई को युद्ध में परास्त कर हविष्यी को उठा कर ले गया । हविष्यी ने कृष्ण के पुत्र प्रद्युम्न का जन्म हुआ) ।

हव्य (वि०) = हव्य, दे० ।

हव्य (भू० क० ह०) [हव् + क्त] 1 टूटा हुआ नष्ट भ्रष्ट 2 व्यर्थीकृत 3 झुका हुआ, बन्धोक्त 4 क्षति झन, चोट पहुँचाया हुआ 5 रागी, बीमार (दे० हव्) । सम०— हव्य (वि०) जिसका आक्रमण रोष दिया गया हो, जिसका धावा बिकल कर दिया गया हो ।

हव्य (म्वा० आ० रोचते, हवित) 1 चमकता सुन्दर या शानदार दिखलाई देना जगमगाना हवितरे हविरे क्षणविभ्रमा—सि० १५४६, मनु० ३१६२ 2 पमन्द करना, (अन्य व्यक्तियों से) प्रसन्न होना, (बन्धुआ से) प्रसन्न होना, हविकर होना, (प्रसन्न व्यक्ति के लिए सज्ज) नया बन्धु के लिए कलें— न यत्रा हविकरे रमणीय—कि० १३५ यदह रोचते यद्वै भवेत् नन् नस्य सुन्दरम् हि० २५५३, कई बार व्यक्ति के लिए सब—दाग्निद्वयाम्बरणाश्र मरण मम रोचते न दाग्निद्वयम्—मुञ्च० ११११ प्रे०—(रा बयान १) पमन्द करना, हविकर या मुहूर्तना करना ३० ३११६, इच्छा० (हव—रोचितसे) पमन्द करने का इच्छा करना, अथि, पमन्द करना हविकर होना यदभिरोचते भवत विक्रम २, प १ बहुत चमकना 2 पमन्द किया जाना, वि० बमरना जगमगाना—रघु० ६५६, १३११६ भोट० ८१६५ ।

हव्य, हवा (स्त्री०) [हव् + किय, हव + टाप्] 1 प्रकाश, कान्ति, उज्ज्वलता, अलङ्कार, पत्र न हवका गना—सि० १३५३ ११२३, २५ पाश्चात्योक्त वि० ५५४३, मेघ० ६४ 2 रज्जु छवि (समान व जल में) बलबन्धुमहमन्त्रालकान रघु० ८५५३, क० ३१६० कि० ५५४५ ३ अविर्भात इच्छा ।

हव्यक (वि०) [हव् + कृत] 1 अविर्भात भूय 2 अविर्भात का मय बढ़ाने वाली (जीववि) 3 नाशय करी, कः १ नाश 2 कृत्य, कम् ३ रति 2 मने का कामचल विचलन हर ३. पीटिक या पायनशक्ति हवक 4 माता, हर ५ काला नमक ।

हवा दे० 'हव' ।

हवि (स्त्री०) [हव् + क्ति] 1 प्रकाश, कान्ति, शान्ति, उज्ज्वलता, अविर्भात करोत्यह परिपूर्णहविवर्ही-पति—सि० १६१७१, रघु० ५५६७, मेघ० १५ 2 प्रकाश किरण जैसा कि 'हविकर्त' में ३ छवि, रज्जु, सीम्यं बहुधा समान के जल में—पटन हविवर्हीलपयकहवि सि० १११९ ४ स्वाद, हवा—जैसा कि 'हविकर' में 5 सुप्ताव मूल लुपा 6 कामना, इच्छा, लुप्ति, स्वच्छा स्वेच्छा से, लुप्ति से 7 अविर्भात स्वाद—विमर्षनावाहक हवि स्वकान्ते माभि० १११२५, 'अविर्भात या प्रेम'—न स मिमोहो हवये बभूव, भिन्नहविर्ही लीक रघु० ६५३०, नाटय भिन्नहवैर्जनस्य बहुधाप्येकं समाराधनम् मालवि० १५४ समान व्यस्त या अनुरक्त के अर्थ में प्रयोग बहुधा समान के अर्थ में हिताहवे मा० ५१२ ४ पञ्चानामाह किसी की बात में लब्धोक्ता । सम०—कर (वि०) १ स्वादिष्ट, चटपटा मजदार 2 इच्छा का उत्प्रेक ३ गन्धनस्तिवधेन पीठक—अर्जु० (पु०) ३ मृगे सि० १११३ ५ गति ।

हविर (वि०) [हवि गति ददाति—हव् + क्तिरव्] 1 उज्ज्वल चमकदार प्रकाशमान जगमगाना हेम हविराम्बर बीर० १४ बन्धुहविर्गम रमहविरय आदि 2 स्वादिष्ट मजदार ३ मृदु, लज्जित ४ भूषा बधक भूष बढ़ाने का ५ पुच्छिदायक बलवधेन रा १ एक प्रकार का पीला रंग २ वृक्षविशेष ३० परिगष्ट १ रघु १ केसर २ लीम ।

हव्य (वि०) [हव् + क्यप्] उज्ज्वल त्रिय आदि :- हविर् ।

हव्य (मुदा० र०) हवर्ति हव्य १ नाश कर टुकड़-टुकड़ करना नाश करना रघु० ६३१५७३ भोट० ४५४२ २ पीडा देना क्षति पहुँचाया अस्वस्थ करना, रोगवस्त करना रावणस्यैव हव्ययति कपया भीम विक्रमा भट्ट० ८१२०० ३ झुका ।

हव्य, हवा (स्त्री०) [हव् + किय, हव + टाप्] १ भव, अविर्भात २ पीडा, मारा, घानना, बेचना अविज-मार्ग मन्त्रकेर्तृमत्ता नवमात्राप्रविभयना मे ज० ३५४, हव हवा हृदयप्रभाविनी मालवि० ३१२, हव्य कत्रणरतिव ४१३ ३ बीमारी व्याधि रोग रघु० ६५५० ४ वकाश, श्रम, प्रयत्न, बष्ट । मय० प्रतिक्रिया प्रतिकार या रोग की चिकित्सा इलाज चिकित्सा का व्यवसाय, ५ वेचकम् बीधक, लक्ष्म (मप०) विद्या बल ।

हव्यक—हव्य [हव + क्त] हव्य वा। भिर रहित शरीर, पदमात्र, कवच—बन्धुमन्त्रहव्यकानिकरवीरो विपत्ते भूषक उत्प० ५५६, मा० ३११७ ।

हव्य [ह + क्त] हव्य किकर्षकाना बढ़ाहवा, हव्य

हृन्व-मृष्टि० १७४०, मामुहो मा ह्वोऽमुना
—१५११, १५२० ।

—(स्वा० पर० रोहति) 1. चोट पहुँचाना, अति पहुँचाना, मार डालना 2. नाराज करना, सताना ।
ह्व, ह्वा (स्त्री०) [ह्व् + क्तिप्, ह्व् + टाप्] क्रीड, रोष, मुखा, —निर्वन्धसज्जताया रघु० ५१२१, प्रह्वेह्व-
निर्वन्धया हि सन्ता —१९१८०, १९१२० ।

ह्व (स्वा० पर० रोहति, ह्व) 1. उगना, फूटना, अंकुरित होना, उपजना—रुद्राक्षप्रबालः—मासवि० ४११, केसरैरर्चयद्—मेघ० २३, छिन्नोऽपि रोहति तद —वर्त० २१८७ 2. उपजना, विकसित होना, बढ़ना 3. उठना, ऊपर चढ़ना, उन्नत होना 4. पकना, (बन जाति को) स्वस्थ होना—प्रेर० (रोपयति—ने, रोहयति—ते) 1. उमाना, पोषा लगाना, भूमि में (बीज) बखोला 2. उठाना, उन्नत करना 3. सोपना, सुपुर्ग करना, देखरेख में देना,—गुणवन्मूत्ररोपिनाथिय —रघु० ८१११ 4. त्वर करना, निर्देशित करना, जमाना—रघु० ११२२, इच्छा० (इच्छति) उमाने की इच्छा करना, अवि, चढ़ना, सवार होना, सवारी करना—रघु० ७३७, कु० ७५२ (प्रेर०) उन्नत होना, ऊपर उठाना, बिठाना—रघु० १९४४, अन्व—, नीचे जाना, उतरना—शं० ७३८, भा—, चढ़ना, सवार होना, सवार् लेना, सवारी करना, (भा पूर्वक ह्व् वातु के अर्थ प्रयुक्त सत्रा के अनुसार विभिन्न प्रकार के होते हैं—उदा० प्रतिज्ञाया आह्व्, वचन देना, प्रतिज्ञा करना, मुखाया आह्व्, समानता के स्तर पर होना, संसय आह्व्, जोतिम उठाना, लम्बिगावस्था में होना आदि), (प्रेर०) 1 उन्नत होना, उठाना 2. रखना, जमाना, निर्देशित करना 3. चढ़ना, सोपना, आरोपित करना 4. (धनुष पर) प्रत्यंचा चढ़ाना 5. नियुक्त करना, कार्य भार सौंपना, प्र—, उगना, अंकुरित होना—न पर्वताये तस्मिनी प्ररोहति—मृच्छ० ४११७, वि—, उगना, अकुर फूटना रघु० २१२६, मृच्छ० ११९ (प्रेर०) (बन जाति का) स्वस्थ होना, ह्व्, उगना, रघु० १५४७ ।

ह्व, ह्व (वि०) (समास के अन्त में) [ह्व् + क्तिप्, क वा] उमा हुआ या उत्पन्न, जैसा कि 'महीह्व' और 'पद्मेह्व' में ।

ह्व् [ह्व् + टाप्] ह्वर्वा वास, हुक्का ।

ह्व् (वि०) [ह्व् + अण्] 1. क्षुरवरा, कठोर, (स्पर्श या हृदय आदि) जो मृदु न हो, कक्षा—कक्षस्वरं वाञ्छति वायव्योऽयम्—मृच्छ० १११०, कु० ७१७ 2 कर्कश (स्पर्श) 3. ऊबड़-भाबड़, असम, कठिन, कर्कश 4. क्षुब्ध, प्रलिन, रौला रघु० ७३७०, मृदा० ६५

5. कुर, निर्दय, कठोर नितान्तकृपाविनिवेशपीतम्
रघु० १४४३, शं० ७३२, पंच० ४१११

6. नीरस, मृदा हुआ, सूखा, क्षीरान् स्निग्धयमाना, क्वचिदपरतो भीषणाभीयकृताः—उत्तर० २११४, (कृच्छ्र—, ऊबड़-भाबड़ करना, मेला करना, मिट्टी लपेटना) ।

ह्व् [ह्व् + ह्यट्] 1 मुखाणा, पतला करना 2. (आयु० में) (शरीर की) भेद को चटाने की चिकित्सा ।

ह्व (भू० क० ह्र०) [ह्व् + क्त] 1 उगा हुआ, प्रकुरित, फूटा हुआ, उपजा हुआ 2 जन्मा हुआ, उत्पन्न 3 बड़ा हुआ, बृद्धि को प्राप्त, विकसित 4 उठा हुआ, बढ़ा हुआ 5 विस्तृत बड़ा, स्पष्टकाय 6 विकीर्ण, इधर उधर फैला हुआ 7 निर्दिष्ट, ज्ञात, ध्यायक—अर्थात् ज्ञान प्राप्त इत्यदप सधरय शब्दो भूवनेषु ह्रद १० २१५३, (यहाँ लघु का अर्थ योग्य है) 8 सचबनस्वीकृत, परम्परागत, प्रचलित, सर्वविध (शब्द या अर्थ, विषय दौगिक या निर्वचनमूलक अर्थ) —अपुनितरहिता शब्दा ह्रदा आलम्बकादयः, नाम ह्रदमपि न स्युदपायि—जि० १०१३ 9 निर्वचन निर्वचन किया हुआ ।

ह्विः (स्त्री०) [ह्व् + क्तिप्] 1. उगना, उपजना, 2 जन्म, पंदायस 3 बृद्धि, विकास, वर्धन, प्रवृद्धता 4 ऊपर उठना, बढ़ना 5 प्रसिद्धि, क्वालि, बढ़नामी—जि० १५१६ 6. परम्परा, प्रथा, परंपरागत रिवाज—गाम्भाय्य ह्रिबंलीयमी, विधि मे प्रथा अधिक बल कती हैं 7 सामान्य प्रचार, साधारण ध्यायकता या प्रचलन 8 सर्वधाम्य अर्थ, शब्द का प्रचलित अर्थ मूल्यार्थवाचे तद्योमे ह्रिनीत्य प्रयोक्तव्य—काश० २ ।

ह्व् (चुरा० उम० क्वयति—ने, क्वयि) 1 क्व बनाना, गड़ना 2. क्व बर कर रामाय पर जाना, अश्रिय करना, हाबयाय प्रदणित करना—रचनेन निष्कृय—शं० १३ 3. चिह्न लगाना, ध्यान पूर्वक पालन करना, देखना, नजर डालना 4. मास्य करना, हड़ना 5 ब्यापक करना, विचार कर ग 6. तय करना, नियन्त्र करना 7 परीक्षा करना, अन्वेषण करना 8. नियुक्त करना, वि—, विरूपित करना, क्व विभाजना ।

ह्वम् [ह्व् + क, भावे क्व् वा] 1 सफल, आकृति, सूरत विक्रम क्ववन्तं वा गुमानियेव भूज्जने—पंच० ११४३, इसी प्रकार 'युक्त्वा' 'युक्त्वा' 2 क्व या रंग का प्रकार (वैशेषिकों के शैवीय गुणों में एव)—अधुनाय पात्रमानिमान् गुणो क्वम्—तर्क० (यह क्व प्रकार का है) क्वल, क्वण, वीन, रक्क, ह्रित और क्वल, यदि 'विष' को जोड़ दिया जाय तो सान हो जाये

३ कोई भी वृक्ष पदाथं वा वस्तु 4 मनोहर रूप या आकृति, सुन्दर सूरत, सौन्दर्य, लावण्य, लाभित्य—मानवीय कथ वा म्यादस्य रूपस्य नमः स० १। २६. विद्या नाम नरस्य रूपमधिकम्—यन् ० २।२०, रूप अत्र हस्ति आदि 5 स्थावराधिक स्थिति वा दशा, प्रकृति, गुण, लक्षण, मूलतत्त्व 6 दम, रीति 7 चिह्न, बेहुरा-माहुरा 8 प्रकार, येर, जाति 9 प्रतिबिम्ब, प्रतिच्छाया 10 मायस्य, समरूपता, 11. तपूना, प्रकार, बनन 12 किसी क्रिया वा मन्त्रा का व्युत्पन्न रूप, विभक्ति या लकार के चिह्न से युक्त रूप, 13 'एक' की संख्या, यजित की एक इकाई 14 पुष्पक 15. नाटक, खेल, दे० रूपक 16 किसी व्रथ की बार बार पड़ कर १७ कठस्थ करके पारयत होने की क्रिया 17 वनेशा 18 ध्वनि, सव्य, (रूप का प्रयोग बहुधा मनास के अर्थ में होता है यदि निम्नां कित्त अर्थ हो—'बना हुआ' 'मे पुष्प' 'के रूप में' 'मासत' सूरत शक्य में' तत्प्राप्त्य बन वर्मरूप मन्त्र)। सम० अधिबोधः शार्नेन्दियों द्वारा किसी पदार्थ के रंग रूप का प्रत्यक्ष करना, अधिबोधित (वि०) काम करते हुए एकठा गया, मोके पर एकठा गया,—आलीबा बेरया, रही गजिका,—आध्यात्मः अत्यंत सुन्दर ध्वनि, इन्द्रियम् अत्रि, रमक को प्रत्यक्ष करने वाली इन्द्रिय. -उल्कः ललित रूपों का समूह स० २।९, -कार, -कम् (पुं०) मूर्तिकार, शिल्पी, -सर्व्व अन्तर्हित गुण, मूलतत्त्व, बार (वि०) रूप बरे हुए, छपनेवा, नामः उल्क, लावण्यम् रूप की उत्कृष्टता, वास्ता, विपर्ययः विरूपण, शारीरिक रूप में बिकृत परिवर्तन, शालिम् (वि०) सुन्दर, संवत्, संवत्तिः (स्त्री०) रूप की उत्कृष्टता, सौन्दर्य की वृद्धि, सौन्दर्यातिरेक।

रूपकः [रूप + क्तृ, रूप + क्तृ वा] विशेष सिकका, रूपवा -कम् 1 सफल, आकृति, सूरत, (समास के अन्त में) 2 कोई वर्णन या प्रकटीकरण 3 चिह्न, बेहुरा-माहुरा 4 प्रकार, जाति 5 नाटक, खेल नाट्य-कृति (नाट्य रचनाओं के प्रमुख दो भेदों में से एक, वृक्ष, इसके फिर जाने वल जैव हैं। इसके अतिरिक्त इसके और अन्तर्गत जैव हैं जो मीनरी में अटारह हैं तथा 'उपक्रमक' नाम से विख्यात हैं)।—वृक्ष तन्नात्रि-नेव नृपपारोवात् रूपकम्- सा० द० २७२, २७३ 6 (अन्त में) अनेकी के मेटाफर (metaphor) के अनुकूल एक अलंकार जिसमें उपमेय की उपमान के ठीक समानुपाय वर्णन किया जाता है—तत्पुष्पममेयी व उपमा उपमेययो-काथ० १० (विवरण के लिये देखो यही स्थान) 7 एक प्रकार का तोम। सम०-सत्ताः मनीन में विशेष समय, -सत्ताः आलंकारिक या रूपकीर्ति।

रूपकम् [रूप + क्तृ] 1 शारीर वर्णन या आलंकारिक वर्णन 2 अवेषण, परीक्षा।

रूपकत् (वि०) [रूप + क्तृ, रूपकम्] 1 रमक्य वाला 2 शारीरिक, दैहिक 3 सज्जरी 4 मनोहर, सुन्दर, ती सुन्दरी वस्ती।

रूपिन् (वि०) [रूप + इति] 1 के बहुत दिखाई देने वाला 2 सज्जरी, मूर्तिमान् 3 सुन्दर।

रूप्य (वि०) [रूप + यत्] सुन्दर ललित, रूप्य 1 चांदी 2 चांदी (या सोने) का मिक्का, मुद्रांकित सिक्का, रुपया 3. मुद्रा किंवा हु०, मोना।

रूप्यः (स्त्री० पर० रूप्यति, रूप्यन्) 1 अलंकृत करना, सजाना 2 पोतना, चुपटना, मन्थित करना, लीपना (मिट्टी आदि से)।

॥ (चूरा० उभ० रूप्यति-ने) 1 कपना 2 कट जाना।

रूप्यति (पुं० क० क०) [रूप्य + क्त] 1 अलंकृत 2 पोता हुआ, ढका हुआ, बिछाया हुआ 3 मिट्टी में लपेटा हुआ 4 चुपटा, ऊबड़ लावड़ 5 कटा हुआ, चूर्न किया हुआ।

रे (अव्य०) [रा + के] संबोधनात्मक अव्यय—रे रे अन्तर-गुहाधिवासिनी वानपदा—वा० १।

रेखा [लिख् + भू + टाप्, लस्य र] 1 लकीर, बारी, महरेशा, बानरेखा, रामरेखा आदि 2 लकीर की माप, व्यंशार्ध, लकीर इत्यादि—न रेखाभाषयति व्यतीतः रत्न० १।१७ 3 वंशिन परास, लकीर, खेरी

4. बालबन, कपरेखा, पितामह लावण्य रेखाया किंचिदधित—स० १।१४ : भारतीय ज्योतिषियों की प्रथम दाय्योत्तर रेखा जो लंका से उज्जैन होते हुए वेद पर्वत तक बिछी हुई है 6. पुर्वता, सम्योच 7 बोझा, आलसाजी। सम० अक्षः रेखाक्ष, द्वाधियाक्ष के बात, देशाभ्यन्तरीय बात, - अक्षरम् प्रथम दाय्योत्तर रेखा से पूर्व या पश्चिम की दूरी, किसी स्थान का देशान्तर,—आकार (वि०) परम्परा प्राप्त, रेखावय, बारीबार, - वक्षितम् अध्यामिति।

रेख दे० 'रेखक'।

रेखन (वि०) (स्त्री०—खिका) [रेखयति रिप् + भिच् + भ्युल्] 1 रिक्त करने वाला, निर्मूल करने वाला 2 हस्ताक्षर, मुलम्यन (मूल को ढीला करने वाला) 3. केकड़ों को खाली करने वाला 'बास को बाहर फेंक' वाला,—कः 1 हवात का बाहर निकालना बहिरवसन, निरवसन विशेष कर एक मचने से (विप० बुरक खानी अन्तः अवसन, सोन अन्तर के जाना और कुम्हक, अन्तः को अहां का तहां की रोकना) 2 बहिर्गमन या पिचकारी 3 अवास्तार, शोरा, कम् दस्तावर, विरेचन।

अवली, इः 1 इह का उपासक 2 गर्मी, उत्कृष्टा, सरगर्मी, आस, मनु या भीषणता का मनोभाव दे० सा० द० २३२ वा काव्य० ४, इन् 1 जोष, काप 2 उषता, भीषणता, बर्बरता 3 गर्मी, उत्कृष्टा सुयताप ।

रीष्य (वि०) [रूप्य + अण्] चाँदी का बना हुआ, चाँदी, चाँदी जैसा प्यूस चाँदी ।

रीरथ (वि०) (रनी०-री) [रह + अण्] 1 रह' मृग को लाल का बना हुआ रथ० ३।३१ 2 डरावना

भयानक 3 आलसाही से भरा हुआ, बेईमान, इः 1 बर्बर 2 एक नरक का नाम-मनु० ४।८८ ।

रीहिष् [रीहिण + अण्] 1 चन्दन का वृक्ष 2 वटवृक्ष ।

रीहिषेव [रीहिषा + इण्] 1 बछड़ा 2 बलराम का नामानर 3 बुधव्रत वन् पञ्चा, भरतमणि ।

रीहिष् (प०) एक प्रकार का हरिण ।

रीहिष [रह + टिप्पण् वाताऽथ वृद्धि] दे० रोहिष, -वन् एक प्रकार का घास ।

छ

कः [की + इ] 1 इन्द्र का विशेषण 2 (छन्द० में) लघु, ह्रस्व मात्रा 3 वाणिनि द्वारा प्रयुक्त (दस लकारों के लिए) परिभाषिक शब्द, जो दस काम तथा अवस्थाओं को प्रकट करते हैं ।

कच् (पूरा० उभ० लाङ्गयति से) 1 स्वाद लेना 2 प्राप्त करना ।

कक् [कच् + अण्] 1 मस्तक 2 अवली पावलों की बाल ।

कक्क, कक्कुः [कच् + अण्, उभन्-वा] बड़हर का पेड़, -वन् बड़हर का फल ।

कक्कुः [कच् + उटन्] मृग्वर, सोटा ।

कक्कतः [कक् + क्त + कन्, रक्त + क्त + क रस्य लब्ध वा] 1 काक, महावर 2 पिचड़ा जीर्ण कपड़ा ।

कक्कितक [कक्कत + टाप्, इत्थम्] छिपकली ।

कक् 1 (स्वा० वा०) कलन, कलित) प्रत्यक्ष करना समझना, अवलोकन करना देखना ।

॥ (पूरा० उभ० लङ्गयति से लाक्षण) 1 देखना अवलोकन करना, निरूपण ज्ञात करना प्रत्यक्ष करना आर्यपुत्र सुव्यहृदय इव लक्षणे विद्यते ।

२, रघु० १।७० १।७० 2 बिह्व लगाना प्रकट करना, परित्रिचित्रण करना सकेत करना मन्मन-प्रसूतिहि दीजलक्षणलक्षिता मनु० १।३५ 3 परिभाषा करना इदानी कारण लक्षयति - आदि

4 गौण रूप से सकेत करना गौण अर्थ में भाष्य करना यथा गया शब्द कोनसि सबाध इति न्न

कक्षप्रणि न्वन यदि तटेती सबाध स्यात्तत्प्रयोजन लक्षणय काव्य० २ अत्र गाथाओं बाहोकार्य लक्षणयि

-सा० द० २ ५ लक्षय करना 6 लयाल करना आदर करना मानना आदि अकिन करना देखना

आ—, देखना, प्रत्यक्ष करना, अवलोकन करना—आन्वक्ष्य दन्त्यकुलान-स० ७।१७ नातिवर्धमानान्वक्ष्य

मत्कुसोरस आजनय -रघु० १५।१८ उभ—

1 देखना, अवलोकन करना निगाह डालना अकित करना मन्मन्युपलक्षितं मन्वत्वा—स० ३ 2 अकिन करना बिह्व लगाना—याज्ञ० १।३० २।१५१

3 प्रकट करना, मनोनीत करना 4 अतिरिक्त उपलक्षित होना, वस्तुतः अभिव्यक्त की अपेक्षा अधिक सम्मिलित करना—मन्त्रसंख्येन उभोति-चास्त्रमुप-

लक्षयते मनु० ३।१५२ पर कुस्तु० 5 मनन करना, विचारकाटि में लाना 6 अयास करना, मानना

वि, 1. अवलोकन करना, ध्यान देना देखना 2. परित्रिचित्रण करना अन्तर प्रकट करना 3 आकुल होना अकिन होना बहुरा जाना निर्व्यपारविल

अज्ञान मानक्य बलानि—उत्तर० ९ कक् 1 अवलोकन करना प्रत्यक्ष करना देखना ध्यान देना

आश्चर्यदर्शन मलक्षयते मनुष्यलोक, स० ७, मलक्षयत म छिदुरासि हार रघु० १५।९२, 'ध्यान नहीं दिया जाता या ज्ञात नहीं होता' ८।४२

2 परीक्षण करना सिद्ध करना निर्धारित करना होन मलक्षयते ज्ञानी विशुद्धि दयानिकासिप वा

रघु० १।१० 3 सुनना जानना समझना 4 परित्रिचित्रण करना भेद बताना ।

लक्षय [कश् + अण्] 1 लो ह्वार (इस अर्थ में पू० जी) इक्षयति तथा लक्षय महती अक्षमोक्षे मुना० तथा

अक्षयन् विज्ञेय याज्ञ ३।१०२ 2 बिह्व, बिषमारी लक्षय निदाना-प्रत्यक्षवाकाक्षे लक्ष बन्धा—मुद्रा० १

3 निदान, निदाना, बिह्व 4 शिवावा बहाना जाल साक्षी उपदेश, देना कि लक्षयुक्त में लुप्तवृत्त साया

हृत् । मय० अक्षोक्ष मायी की सर्गात्ता का स्मारो । लक्षय (वि०) [कश् + अण्] अत्रप्रत्यक्षय से सुविन वर्य

साक्षा गौण रूप से अभिव्यक्त करने वाला, कक् को ह्वार, गह लाय ।

लक्षणम् । कथ्यतेऽनेन-सङ्ग करणे ल्यट् । १ चित्त, निधानी, निधान, संकेत, विशेषता, वेद बोधक चित्त, -बबुदुकुल कलहलक्षणम्--कु० ५।०७, अनारथो हि कार्यानां प्रथम बुद्धिलक्षणम् सुभा० अन्वयलोपो भविष्यत्या कार्यसिद्धेहि लक्षणम्-रघु० १०।१, ११।१७ मर्मलक्षण-वा० ५, पुरुषलक्षणम्, वीर्यवता का चित्त वा पुस्त्य-द्योतक इन्द्रिय २ (रोष का) लक्षण ३ विशेषण, लुब्ध ४ परिभाषा, यथार्थ वर्णन ५ शरीर पर भाग्य-सूचक चित्त (यह गिनती में ३० है) -द्वित्रिणाल्लक्षणो-पेत ६ (शुभाशुभ भाग्य का सूचक) शरीर पर बना कोई चित्त, स्व तद्विषयस्व स्व व पुण्यलक्षणा कु० ५।१३, क्लेशावहा भर्तृलक्षणम्-रघु० १।१५ ७ नाम, पद, अर्थान्तर (यस समागं के अन्त में) -विदितलक्षणं राजधानीम्--मेघ २५, नै० २०।४१ ८ श्रेष्ठता उत्कर्ष, अच्छाई जैसा कि 'आहितलक्षण-रघु० १।७१ में (यहाँ मल्लि० इस शब्द का अनुवाद करता है 'प्रख्यातगुण और अमर० का उद्धारण-गुण प्रतीते नु कृतलक्षणहितलक्षणी-वेता है) ९ उद्घम, क्रियाशेष या लक्ष्य, ध्येय १० (कर आदि का) विधित भाव-अनु० ८।४०५ ११ रूप, प्रकार प्रकृति १२ कर्त-व्यनिर्वाह, कार्यप्रणाली १३ कारण, हेतु १४ सित, वीर्यक, विषय १५ बहुता, छपनेस (=लक्ष) प्रयुक्तलक्षण-मा० ७, -वाः मारस, -वा १ उद्देश्य, ध्येय २ (जल० में) शब्द का परोक्षप्रयोग या नौन मार्गकता, शब्द की एक शक्ति, इसकी परिभाषा इस प्रकार है--'मूल्याय वाच्ये तद्योगे कथितोऽप्रयोजनमात, अन्योऽपि कथ्यते यस्मा लक्षणारोपितक्रिया काव्य० २, दे० सा० द० १३ मी ३ हंस। सम० अम्बित (वि०) शुभलक्षणो से युक्त, -अ (वि०) (शरीर पर विद्यमान) चित्तों की व्याख्या करने में मक्षम, -अच्छ (वि०) अभागा, दुर्भाग्यवस्त, लक्षणा -अहलक्षण, दे०, -संनिपातः दाग लगाना कलंकित करना ।

लक्षण्य (वि०) [लक्षण + यत्] १ चित्त का काम देने वाला २ अच्छे लक्षणों से युक्त ।

लक्षण्य (अव्य०) [लक्ष + शन्] लाव-लाय करके अर्थात् बड़ी संख्या में ।

लक्षित (भू० क० इ०) [लक्ष् + क्त] १ दुष्ट अवशोक्त चित्तलक्ष, निग्राह वाली गई २ एकत्र किया गया, संकेतित ३ चरित्रचित्रित, चित्तलक्ष, अन्तर बताया गया ४ परिभाषित ५ उद्दिष्ट ६ परोक्ष रूप से अभिलेखन संकेतित, इत्याग किया गया ७ पूछताछ की गई, परीक्षित ।

लक्षण्य (वि०) [लक्षन् + क्त] १ चित्तों से युक्त २ सुबलक्षणों से युक्त, सौभाग्यशाली, अच्छी किस्मत वाला ३ समुद्रिणां, फलता-फलता - जः

१ सारस २ मुद्रिणा नामक पत्नी के उत्पन्न दत्तारथ का एक पुत्र (वचन से ही लक्ष्मण राम में इतना अधिक अनुरक्त था कि वह उसकी वनवास में जाने को नैवार हो गया । राग के पीछे वर्षों के विचलित काम में घटित बदलावों में लक्ष्मण का बड़ा हाथ था । लक्ष्मा के युद्ध में उसने कई बलवान् राजाओं की, विशेष कर रावण के पुत्रों में अत्यंत क्षतिहासी मेघनाद को मार डाला । सबसे पहले तो स्वयं लक्ष्मण ही मेघनाद की शक्ति का शिकार हुआ, परन्तु हनुमान् द्वारा लाई गई मन्जीवन वृद्धि के उपयोग से सुचेन देव ने उसे फिर जीवित कर दिया । एक दिन कास ताप के वैद्य में राम के पास जाया और कहा कि "जो कोई उनको एकान्त में वार्तालाप करते हुए कभी देखे के तो तुरन्त उसका परित्याग किया जाता चाहिए" यह बात बाव की गई । एक बार लक्ष्मण ने राम व सीता की एकान्ता में भग डाल दिया, फलतः लक्ष्मण ने अपने भाई राम के बचन को 'स्वयं सारथू में छलास लगा कर सत्य मित्र करके दिखा दिया (दे० रघु० १५।१२-५, उस का विवाह ऊर्मिका से हुआ, तथा अंबर और कप केतु नामक दो पुत्र हुए), -वा इतिनी, -कम् १ नाम अभिधान २ चित्त, संकेत, निधानी । सम०--अनुः लक्ष्मण की माता सुमित्रा ।

लक्ष्मन् (पु०) [लक्ष् + मनिन्] १ चित्त, निधान, निधानी, विशेषता--सि० ११।१०, कि० १।१२८, १४।४, रघु० १०।१३, कु० ७।४१ २ चित्ती, कक्षा -मलिनमपि हिमाक्षोऽस्य लक्ष्मी ततोति--वा० १।२०, मा० १।२५ ३ परिभाषा -पु० १. सारस पत्नी, २ लक्ष्मण का नामान्तर ।

लक्ष्मीः (स्त्री०) [लक्ष् + ई, नृट् + ण] १ सौभाग्य, समृद्धि, वशीकृत वा लक्ष्मीरूपकृते यया परिभाषा-कि० ८।१८, तुषनिव लक्ष्मणीर्न तान् सफलति अनु० २।१७ २ सौभाग्य, अच्छी किस्मत ३ सफलता, सम्पत्तता उत्तर० २।१८ ४ सौख्य, प्रियता, अनुग्रह, लावण्य, आभा, कान्त--मलिनमपि हिमाक्षो-ऽस्य लक्ष्मी ततोति--वा० १।२० मा० १।२५, ५।३९, ५.२, १।२, कु० १।४५ ५ सौभाग्यश्रेणी समृद्धि, सौन्दर्य, लक्ष्मी विष्णु की पत्नी माती जाती है (देवासुरों द्वारा अमृत प्राप्त के लिए समुद्रमंथन कि, पाने पर अन्य भूस्थवान् राजा के हाथ लक्ष्मी भी समुद्र से निकली)--इय मेहे लक्ष्मी उत्तर० १।१८ रावकीय वा प्रबुद्धि, उपनिषेध, राज्य (यह बहुधा रानी की सपत्नी के रूप में मानी जाती है, और राजा की रानी के रूप में इसका सर्ववर्षन किया जाता है)--तामेकमायां परिवाचनीयः साध्वीवपि त्यक्तवती गुपत्य, बहल्लक्ष्मणदुःखं वदन्ती देवे लक्ष्मी-

बीज्या, पूर्वी ६. सनेय, सजिपता ७ सुययता, सुयिषा ८. मासमही, निरर्थकता ९ स्वेच्छाधारिता ।
 लक्ष्मी [कङ् + जीव्] १. कीमतामिनी स्त्री २. हल्की
 बाड़ी—वि० १२१२४ ।

लक्ष्म [कङ् + लप्, मुन् व] १. राखन का निवास और
 राखवाणी, वर्तमान सीलोन टापू या तबूली राजधानी
 उस समय की लका है, परन्तु कुछ विद्वानों के मतानुसार वह
 लंका सीलोन के वर्तमान टापू में कहीं अधिक बड़ी थी । मूलरूप में यह मात्यवान के लिए
 बनाई गई थी २. व्यक्तिधारिणी स्त्री, रही, बेरया
 ३. छाया ४. एक प्रकार का बनाय । सम०—अधिपः,
 —अधिपति, —ईकः, —ईकारः, —नायः, पति लंका
 का स्थायी वासी राख या निरीक्षण, —अरि राम
 का विशेषण, —वर्द्धि (पु०) हनुमान् का विशेषण ।

लक्ष्मी [कङ् + स्पृ + जीव्] लभ्य की बत्ती (कोड़े का
 बना वह भाग जो मुँह में रहता है), मुखरी ।

लक्ष्म [कङ् + लप्] १ लक्षणपत्र २ सच समाज ३ प्रेमी,
 वार (उत्पत्ति) ।

लक्ष्मन् [कङ् + लक्ष् पुनो] जानवर की पूँछ, तु०
 'लोपुत्रम्' से ।

लक्ष् (आ० उ०) लक्ष्यति-ते, लक्षित, इच्छा० मिल-
 लक्ष्यति-ते) १. उल्लङ्घना कृत्वा, छलांग लगाता
 २. छद्मी करना, षड्मा—जन्मे बालकविषु सीलान्
 —वर्षि० १५११२ ३. परे चले जाना, अतिक्रमण
 करना—लक्ष्यते स्व भूमिरेव विनाशिनः—ने० ५१४
 उपवास करना, जनजन करना ५ बुझना, बूझ जाना
 (पर०) ६. अपट्टा मारना, आक्रमण करना, का
 जाना, कति पहुँचाना—यल्लवान् हरिषो लक्ष्मिमुपाय-
 च्छति—माकवि० ४, प्रेर० या चुरा० उ०० (लक्ष्ययति
 —ते) १. ऊपर से दूर जाना, छलांग लगा देना, परे
 जाना—हायर. प्लसवेनोए क्लेमेकेन लक्षित—महा०,
 मनु० ५१८ २ तय कर लेना, चल कर पार कर
 लेना (हूरी बाधि) रघु० ११४७ ३ मबारी करना,
 षड्मा—रघु० ४१५२ ४ उल्लंघन करना, अतिक्रमण
 करना, बबझा करना रघु० ११९ याज्ञ० २११८७
 ५. बन्ध करना, अपमान करना, निरादर करना,
 उपेक्षा करना—हस्त इव भूमिधजिनो यथा यथा लक्षय-
 ति लक्ष् बुबनम्, वर्षमिव १, कुले तथा-तथा नियम-
 लक्षयम्—वास० ६ टोकना, विरोध करना, उहाराता,
 टालना, हटाना भाग्य न लक्षयति कोऽपि विधि-
 प्रवीणम्—बुवा०, मूञ्च० ११२ ७ आक्रमण करना,
 लक्ष्मा मारना, कतिघन करना, चोट पहुँचाना—रघु०
 १११५२ ८. आगे बढ़ जाना, पीछे छोड़ देना, अपेक्षा-
 कृत अधिक पैसकना, बहवस्त करना, —(बन्ध) जम-
 टकाई लक्ष्येयिष्यथा बन्धवृक्षलक्ष्मिदु मयोवत

रघु० ३१४८ ९ उपवास करवाना १० बमकना
 ११ बोझना, अधि, १ परे चले जाना, ऊपर से
 छलांग लगा देना २ उल्लंघन करना, अतिक्रमण
 करना, बबझा करना, उन्—, १ पार जाना, पार कर
 लेना, परे चले जाना—शि० ७१७४ २ मबारी करना
 षड्मा ३. उल्लंघन करना, अतिक्रमण करना—बुवा०
 १११०, शि० १२१५७ वि० १ पार जाना, उल्लंकर
 पार करना यात्रा करना—निवेद्यामास विलक्ष्णिधा
 —रघु० ५१४२, १११३२, शि० १२१२४ २ उल्लंघन
 करना, अतिक्रमण करना बाहर कदम रखना जबहेलना
 करना, उपेक्षा करना—मान् प्रवृत्ते समय विलक्ष्ण्य कु०
 ५१२५, रघु० ५१४८ ३ अविद्य की माया का उल्लंघन
 करना रघु० ११७४ ४ उठाना, षड्मा, ऊपर जाना
 कि० ५१२, ने० ५१२ ५ छोड़ देना, पीछेछाना करना
 एक और उँक देना—मनोबन्धनान्तरसान् विलक्ष्ण्य सा
 —रघु० ३१४ ६ आगे बढ़ जाना, पीछे छोड़ देना इति
 कर्त्तव्यल पाउसाव दुष्टथा विलक्ष्यते वाक्या०
 २१२२४ ७ उपवास कराना ।

लक्ष्यन् [लक्ष् + स्पृट्] १ छलांग लगाना कृत्वा २. उल्लंघन
 कर चलना, यात्रा करना, पार जाना, बमकना, गतिशील
 होना यूपमेव यथि सीधलक्ष्णाः—वट० / ३ मबारी
 करना, षड्मा उठाना (आर्ष० मे भी) नमोलक्ष्ण
 —रघु० १११३, जनोप्यमृष्ये पदलक्ष्णोत्पुङ्गः—बु०
 ५११४, उच्छपव प्राप्त करने को इच्छुक ४ छाया
 बालना, एकाएक आक्रमण द्वारा दुर्गादि हथिया लेना,
 अधिकार में कर लेना—जैसा कि दुर्गलक्ष्णम् मे ५. आगे
 बढ़ना, परे चले जाना, बाहर कदम रखना, उल्लंघन,
 अतिक्रमण 'आज्ञालक्ष्ण' नियमलक्ष्णम् आदि ६ जब-
 हेलना करना, घुणा करना, निरस्कार पूर्वक व्यवहार
 करना, अपमान करना प्रणिपातलक्ष्ण प्रवाच्यकामा
 वि० ३, मालवि० ३१२२ ७ अत्याचारण, मान-
 हानि, अपमान ८ अनित्य, कति, जैसा कि क्षातपल-
 क्ष्णम् में दे० ९ उपवास करना मयम शि० १२१२५
 (यहाँ हमका अर्थ छलांग भी होता है) १० कोड़े का
 एक कदम ।

लक्षित (पु० क० क०) [लक्ष् + क्त] १ ऊपर से दूहा
 हुआ पार गया हुआ २ यात्रा द्वारा पार किया हुआ
 ३. अनिकान्त, उल्लंघन किया हुआ ४. बबझात, अपमा-
 नित अनावृत्त (दे० लक्ष्) ।

लक्ष् (आ० पर० लक्ष्यति) विद्धु लगाना, दबाना, तु०
 'लक्ष्' ।

लक्ष् १ (तुदा० आ० लज्जते) लज्जित होना ।

१॥ (आ० पर० लजति) कलङ्कित करना आदि, दे०
 'लक्ष्' आ० ।

१॥ (चुरा० पर० लजयति) १. दिखाई देना, प्रतीत

होना, चमकना 2. डकना, छिपाना (बुद्ध विद्वानों के मतानुसार इसी अर्थ में 'काञ्चयति' रूप भी बनता है) ।
लज्ज् (पुं०) भा० लज्जते लज्जित् लज्जित होना, शर्मित होना ।

लज्जका [लज्ज् + कच् + क् + टाप्] अंगुली कपात का पोषा ।

लज्जा [लज्ज् + य + टाप्] 1 लज्ज-कामादुराणा न भय न लज्जा - सुभा०, विहाय लज्जाम् रघु० २।४०, कु० १।४८ 2 शर्मीलापन, विनय भुङ्गारलज्जा निकषयति-स० १, कु० ३।७, रघु० ७।२५ 3 झुईमुई का पोषा । लज्ज-अविषत (वि०) विनयशील, शर्मीला, -आच्छा, -कर (वि०) (स्त्री०)-रा, -री) लज्जाविभक्त, शर्मनाय, लकीनिकर, कलकी, लीन (वि०) शर्मीला शालीन, -रहित-कृष्ण, -हीन (वि०) मिलेज्ज, डीठ, बेहया ।

लज्जाम् (वि०) [लज्जा + आलुच्] विनयशील, शर्मीला पुं०, स्त्री० झुईमुई का पोषा ।

लज्जित (पुं० क० कृ०) [लज्ज् + क्त] 1 विनयशील, शर्मीला 2. लज्जाया हुआ, शर्मित ।

लज्ज् 1 (भ्वा० पर० लज्जति) 1. कलक लयाना, निम्बा करना, बदनाम करना 2 नृपना, तलना ।

(१) चुरा० उज्ज० लज्जयति-ते) 1 अतिवस्त करना, प्रहार करना, मार बालना 2 देना 3. कोलना 4 लबाव या शक्तिशाली होना 5. निवास करना, 6. चमकना ।

लज्जा [लज्ज् + कच्] 1 पर 2 बोली की लाय या किनारा जो पीछे कमर में टांग लिया जाता है-तु० कला 3. पृष्ठ ।

लज्जा [लज्ज् + टाप्] 1 धार 2 व्यक्तिचारिणी स्त्री 3 लज्जी का नामान्तर 4 निद्रा ।

लज्जिका [लज्ज् + कच् + टाप्, ह्रस्वम्] रज्जी, वेस्वा ।

लज्ज् (भ्वा० पर० लज्जति) 1 बालक बनना 2 बालकों की लज्ज व्यवहार करना 3 लज्जों की भाँति तोतली बातें करना, तुलना 4 लज्जन करना, रोना ।

लज्ज् [लज् + कच्] 1 मुल्ल, बुद्ध 2 बुद्धि, बोध 3 लुटेरा ।

लज्जक [लज् + कच्] छग, बरमान, गाजी, दुष्ट ।

लज्ज (वि०) [प्राकृत 'लज्ज' सम्बन्ध से लज्ज, स्वयं 'लज्ज' सम्बन्ध भी इस 'लज्ज' से ही बना प्रतीत होता है] लावण्यमय, मनोहर, सुन्दर, आकर्षक. प्रिय, -अति-कायता काको लज्जललनाभोगसुखम् -भट्ट० १।१२, (यहाँ भाष्यकार 'लज्ज' का अर्थ 'लावण्य' करते हैं), -तस्मात् पादमकाशेति लोकोत्ते लज्जप्रभुच -विष्णुशोक० ८।९, विष्णु ने इस सम्बन्ध को इसी पुस्तक में और तीन स्थानों पर प्रयुक्त किया है यहाँ इसका अर्थ 'लज्जी स्त्री' या 'सुन्दरी स्त्री' प्रतीत

होता है-उवा० कि वा वर्णनया सनस्तकटप्राक-स्कारतामेवति-८।८९, जनार्णवाव्यन्धियानभुविर्न कस्य कोप लज्जा लज्जति ९।९८ केचनान्विप्रवर्त-माना विषयविषय कथाम लज्जन्तु १।१८ ।

लज्ज् (पुं०) दुष्ट, बदमाश, दे० 'लज्ज' ।

लज्ज् [लज्ज् + कच्] 1 बोझा 2 नाचने वाला लज्जा 3 एक काँति का नाम, -लज्जा 1 एक प्रकार का पत्ती 2 मस्तक पर बालों का घूँघर, अलक 3. चिड़िया, गोरैया 4 एक प्रकार का बाघयन्त्र 5 एक कल 6 पाछरान, केसर 7 व्यक्तिचारिणी स्त्री ।

लज्ज् 1 (भ्वा० पर० लज्जति) लेकना, झीड़ा करना, हाव-भाव दिखाना ।

i (भ्वा० पर०, चुरा० पर० लज्जति, लज्जयति) 1. लेकना, उछालना 2. कलक लयाना 3. बीच लज्जलाना 4 मंच करना, खताना ।

iii (चुरा० उज्ज० लज्जयति-ते) 1 लाठ प्यार करना, पुष्कारना, तुलना 2 खताना ।

लज्ज (वि०) [प्राकृत लज्ज] सुन्दर, मनोहर ।

लज्ज्-लज्जक दे० ।

लज्ज्, लज्जक (पुं०) एक प्रकार की मिठाई, लज्ज, मोक्ष (पीली, बाटा, पी बाँधि पदावों को मिठाकर बनाये हुए मोक्ष मोक्ष पिठ) ।

लज्ज् (भ्वा० पर०, चुरा० उज्ज० लज्जति, लज्जयति-ते) 1. ऊपर को उछालना, ऊपर की ओर लेकना 2. लेकना ।

लज्जम् [लज्ज् + कच्] पिष्ट, लक ।

लज्ज् [लज्जयतिः कृष्ण भाषा के लीटिज् (Lo. dres) कज्ज का भाष्यिक रूप] लज्ज ।

लज्जा [लज्ज् + कच् + टाप्] 1 बेक, लेकने वाला पीसा लताभावेन परिवर्तयन्त्या क्यम् विष्णु० ४, लज्जेव सनद्धमनोऽप्यलज्जा रघु० ३।७, (विशेष रूप से 'मूत्रा' 'मौ' 'विज्जी' भावि अर्थों को प्रकट करने वाले लज्जों के साथ समास के अन्त में, लीटिज्, कोमलता तथा पतलेपन को प्रकट करने के लिए प्रयोग भुङ्गलता बहुलता, झूलता, बिज्जलता, इसी प्रकार लज्ज्, अलक-बाँधि, तु०, कु० २।१४, मेघ० ४७, ल० ३।१५, रघु० १।१५) 2 लाजा 3 मियम् लता 4 माचवी लता 5 कस्तूरी लता 6. हुंटर या कोई लताका 7 मोतियों की कड़ी 8. सुकुमार स्त्री ।

लज्ज-अलक कृष्ण, लज्जक एक प्रकार की ककड़ी, -लज्जः हरा प्याज, अलकः हाथी, -लावणः लावते समय हाथों की विशेष धुआँ, -लज्जः लता का ऊपर को चढ़ना, -करः नाचते समय हाथों की विशेष धुआँ, कस्तुरिका, कस्तूरी कस्तूरी की बेक, -लज्जः -लज्ज लतामू, लताकुंज-कु० ४।४१, -विष्णुः

होना,—पादेनकेन वचने द्वितीयेन च भूतके, सिध्दाम्बु-
लम्बितस्तावदावस्थितिर्मास्कर मुच्छ० २।१०
वि- 1 लटकाना, लटकना, स्थिति होना रघु०
१०।१२ 2 अस्त होना, क्षीण होना (सूर्यादि को)
3 ठहरना, स्थिरना, रह जाना—कु० ७।१३,
4 डेर करना, मध्यवर्ति होना—विलम्बितकाले कालं
निवास त मनोरथे—रघु० १।३३, कि विलम्बते स्वरित
त श्रवेण—उत्तर० १।

कम्ब (वि०) [कम्ब+कम्] 1 नीचे की ओर लटकता
हुआ, झुका हुआ, लम्बमान, दीर्घायमान—पाण्डयो-
ज्यमसापितलम्बहार—रघु० १।१०, ८१, देव०
८४ 2 लटकता हुआ, अनुचल 3 बढ़ा, विस्तृत
4 विस्तीर्ण 5 लंबा, ऊँचा, कः 1 लम्बमापक
2 सह-अक्षरेखा, किसी स्थान के ऊर्ध्वबिन्दु और ध्रुव-
बिन्दु का मध्यवर्ती चाप, अक्षरेखा का पूरक। तम०
—उत्तर (वि०) बड़े पेट वाला, घोंघवाला, स्थूलकाय
भारीभरकम (रु) 1 मधेय का नामांतर 2 मोजन
मट्ट, —बौद्धः (लम्बो-बी-पट्टः) डेट, कर्णः 1 गधा,
2 बकरा 3 हाथी 4 बाज, शिकरा 5 पिशाच,
राक्षस,—उत्तर (वि०) बड़े पेट वाला, भारीभरकम,
—पयोधरा बहु स्त्री जिसके स्तन भारी हों और
नीचे को लटकते हों,—जिह्व (वि०) जिसके नितंब
भारी और उभरे हुए हों।

कम्बकः [कम्ब+कम्] (क्या० में) 1 अक्षरेखा 2 अक्षरेखा
का पूरक, (अर्थ० में) सह-अक्षरेखा।

कम्बकः [कम्ब+कम्] 1 शिव का विशेषण 2 कप-प्रधान
प्रकृति, कम् 1 नीचे लटकना, निर्भर रहना, उतरना
आदि 2 साकर 3 (चन्द्रमा के) देशान्तर में स्थान-
ग्रह 4 एक प्रकार का कंबा हार।

कम्बा [कम्ब+टाप्] 1. दुर्गा का विशेषण 2 लक्ष्मी का
विशेषण।

कम्बिका [कम्ब+कम्+टाप्, टाप्] कोयल तालुका
लटकता हुआ बसिले भाग, उपजिह्वा, कण्ठ के अन्तर
का कीवा।

कम्बिक (कू० क० ड०) [कम्ब+कम्] 1 नीचे लटकता
हुआ, झुका हुआ 2 स्थिति 3 घुमा हुआ, नीचे गया
हुआ 4 सहारा लिये हुए, अनुचल (दे० लम्ब)।

कम्बुका (स्त्री०) सात लड़ियों का हार।

कम्बा [कम्+कम्+कम्] 1. त्रिदि, बवाप्ति 2. मिलन
3. पुनः प्राप्ति 4. लम्ब।

कम्बकम् [कम्+कम्+कम्] 1. तिदि, बवाप्ति 2. पुनः
प्राप्ति।

कम्बिक (कू० क० ड०) [कम्+कम्, कम्] 1 उपाधित,
हासिक, नट्य 2 दला, 3 घुमाया हुआ 4 निचुला,
अनुचल 5. संघीया 6. बढ़ा गया, संघोषित।

कम् (म्बा० बा० लयते) जाना, हिलना-झुलना।

कम्बः [सी+कम्] 1 चिपकना मिलाप, लगाव 2 प्रच्छन्न,
छिपा हुआ 3 समलन, पिचलना, बोल 4 अर्धन,
विघटन, कुलना, विनाश, कर्ष वा विघटित होना,
नष्ट होना 5 मन की सीपता, गहन एकाग्रता जगमग
भक्ति (किसी भी पदार्थ के प्रति)—नश्यन्ती शिवकर्मिणं
लघवसाधारानमभ्यासता—मा० ५।२, ७, ध्यानलयेन
गीत० ४ 6 मगीत की लय (तीन प्रकार की
हुन, मध्य और विलम्बित) जिसमें लययोरिव
पाणिभिः रघु० १।३५, पादन्वासी लयमनुगत
मालवि० २।१ 7 संगीत में विश्राम 8 आराम
9 विश्राम स्थान आवास, निवास जलया—वि०
४।५७, 'कोई स्थिर निवास न रखते हुए, घूमते हुए'
10 मन की स्थिरता, मानसिक अकर्मण्यता
11 आश्रयन। तम० आरम्भः, आरम्भ, पाम,
अग्निनेता, नर्तक, कालः (सृष्टि का) प्रथमकाल, लत
(वि०) विघटित, पिचला हुआ,—घुमी नटी, अग्निनेत्री,
नर्तकी।

कम्बम् [सी+कम्] 1. अनुचल होना, झुलना, चिपकना
2 विश्राम, आराम 3 विश्रामस्थल, घर।

कम्ब (म्बा० पर० कर्षति) जाना, हिलना-झुलना।

कम्बः [म्बा० उव० लयति—ते] खेलना, झीझ करना,
हलना, किलोना करना—पनसफलागीव बानरा
लकन्ति मुच्छ० ८।८, कम्बकम्बा इव बन्धुका लज्जाम्
५।२८।

11 (चुरा० उव० या प्रेर० लालयति—ते, कालिन)
खेलने की प्रेरणा देना, पुचकारना, काह-प्यार करना,
हलार करना, प्रेमालिप्त करना लालने बहुव्री
दोषास्तावने बहुव्री भुषा, तस्मात्पुत्रं च क्षिप्य च
तादर्थ्येन तु लालयेत् भुषा—कु० ५।१५ 2 इच्छा
करना।

111 (चुरा० उव० लालयति—ते) 1 लाहप्यार
करना, मुच्छ० ४।२८ 2 जीव लपकमाना 3 इच्छा
करना।

कम्ब (वि०) [कम्+कम्] 1. जीवातल, विनोद प्रिय
2 लपकमाने वाला 3 अजिजाती, इच्छुक। तम०
विह्वल=ललविह्वल, जीव से लपकप करने वाला।

लकम् (वि०) [कम्+कम्] 1. खेलने वाला, विहार करने
वाला 2 लपकवाला हुआ। तम०—विह्वल (वि०)
(ललविह्वल) 1 जीव से लपकमाने वाला 2 कर्ष-
नीचक (ह्र) 1 चुरा 2 डेट।

लकन्तम् [कम्+कम्] 1 जीवा, खेल, वायोध, रंजनेली
2 जीव बाहुर निकालना।

लकना [कम्+विप्+कम्+टाप्] स्त्री.—बड़ नाकनोक-
लकनाबिरावरतं रिरंके—वि० १५।८८

2 स्वेच्छाचारिणी स्त्री 3 जिह्वा । सम० प्रिय.
कदंब का पेड़ ।

सलमिका [सलना + कन् + टाप् इत्थम्] छोटी स्त्री, अमायी
स्त्री काव्या० ३।५० ।

सलमिका [सल् + सल् + डीप् + कन् + टाप् इत्थम्]
1 लंबी माला 2 छिपकली ।

सलसक [सल् + आकन्] पुरुष का लिंग जननेन्द्रिय ।

सलसादम् [सल् + अच् इत्थम् ल, ललसटति अट + अच् वा]
मस्तक लिखितमणि ललाटे प्राग्जिह्वा व समर्थ
— हि० १।२१, मै० १।१५ । सम०—अल शिव का
विशेषण, तद्वत् मस्तक का उद्गम माथा— पद्म,
पद्मिका 1 मस्तक का सटाट नल 2 (तेहरा) गिरा
वेष्टन, निमुकुट, सिर की चाटी केराबब, लेखा
मस्तक की रेखा ।

सलसादकम् [सलाट + कन्] 1 मस्तक 2 सुन्दर माथा ।

सलसादलस्य (वि०) [सलाट + लप् + अच् भुम्] 1 (मस्तक)
को अकाने या तथाने बाला सलसादलस्यस्तपति तपन
मा० १ उत्तर० ६, सूर्य ऊपर ठीक सिर पर चमक
रहा है—सलसादलस्यस्तपति—रघु० १३।४।२ (अन्)
बहुत पीडाकर निरालसादलस्यनिष्ठराजरा मै०
१।१३८ व सूर्य ।

सलसादिका [सलाट—कन् + टाप्, इत्थम्] 1 मस्तक पर
पहना जाने वाला आभूषण, टीका 2 मस्तक पर
चन्दन का या अन्य किसी सुगन्धित चूर्ण का तिलक
—कु० ५।५५ ।

सलसादूल (वि०) उत्तम और सुन्दर मस्तकवाला ।

सलसम् (वि०) (स्त्री०—जी) [सल् + क्विप् इत्थम् लत्थम्,
तम् अकति अम् + अच्] सुन्दर प्रिय, मनोहर
—अयं मस्तक का आभूषण, टीका, सामान्य अलंकार
(इस अर्थ में पु० जी)—अह तु तामाभयललामभूतां
शकुन्तलामभिविहृत्य इषीमि म० २ जि० ४।२८
2 कोई भी श्रेष्ठ वस्तु 3 मस्तक का तिलक 4 चिह्न
प्रतीक, तिलक ५ लम्बा, पताका 6 पंक्ति, माला,
रेखा 7 पृष्ठ 8 अवाल, गर्दन के बाल 9 प्राधान्य
अर्थात्, सौन्दर्य 10 लीन,—अः घोडा ।

सलसामकम् [सलाम + कन्] भूलों का नजरा जो मस्तक पर
धारण किया जाता है ।

सलसाम्बन्ध (नपु०) [सल् + इयन्] 1 अलंकार, आभूषण
2 (अत) कोई भी अपने प्रकार की श्रेष्ठवस्तु
—अयं ललाम कवनीयमवस्य लिप्ता—रघु० ५।६४
'कव्याओं में श्रेष्ठ या अलंकारमूल' 3 लंबा पताका
4 साम्प्रदायिक चिह्न, तिलक, संकेत, प्रतीक
6 पृष्ठ ।

सलसि (वि०) [सल् + सि] 1 कीड़ाकट, खेलने वाला,
हलकाने वाला 2 भुगारप्रिय, श्रीशायि, स्वेच्छा-

चारी विचयासक्त 3 प्रिय, सुन्दर मनोहर, प्रीतिक,

मलीकालसितकलिनैर्ज्योत्स्नाप्रारैरकुप्रिमविभ्रमै
(अर्थ) उत्तर० १।२०, विवाय सुष्टि कलितो
विधातु—रघु० ६।३७, १९।३९, ८।१, मा० १।१५,
कु० ३।७५, ६।४५ लेख० ३२, ६४ 4 मुहावना,
लाभप्रिय, सचिकर इतिहास प्रियसिद्धा ललिते
कलाविधौ—रघु० ८।६७ सदाशिवेव कलिनाभिनयस्य
मिता—मालवि० ४।९, विक्रम० २।१८ 5 अवीष्ट
6 मृदु, कोमल सि० ७।६४ 7 वरचराता हुजा,
कम्पायमान तम् 1 कीड़ा, रंगरेली, खेल 2 भुगार
परक विनोद, गणिलावध्य, सिद्धी में प्रीति विचयक
हासभाव जि० ९।७९, कि० १०।५२ 3 सौन्दर्य,
लावण्य, आकर्षण 4 कोई भी प्राकृतिक वा स्वाभा-
विक क्रिया 5 सरलता, मोक्षोपम । सम०—अर्थ
(वि०) सुन्दर या प्रीतिविचयक अर्थ वाला विक्रम०
२।१४, वर (वि०) श्रमिकरचनायुक्त ल० १,
ब्रह्मा मृदु या कोमल भाषात ।

सलसि [सलित + टाप्] 1 स्त्री 2 स्वेच्छाचारिणी
स्त्री 3 कस्तूरी 4 दुर्गा का एक रूप 5 विविध
छन्दों के नाम सम, पञ्चमी आधिनयनस्य का चौथी
दिन तत्समी आश्वय के शुक्लपक्ष का सातवाँ दिन ।

सलः [स + अच्] 1 उत्साहन, उत्सुचन 2 कटाई,
(पके अनाज की) लावनी 3 अमृताम, टुकड़ा, लच्छ,
कलम या दात 4 कम रूँ, अल्पमात्रा घोडा (इस
अर्थ में प्राय समास के अन्त में—अलसचमूच—लेख०
२० ७०, आशामति स्वेदलवान् मुखे ते—रघु० १।१२०,
६।५७ ६।६६, अय० १५।९७ अमृत—कि० ५।४४,
भूषणपल्लीकवरीते दास इव नील० ११, इषी
प्रकार तुल०, अपराध० जान०, सुख० चम० आदि
5 ऊन, पशम ० कीड़ा 7 सम का सुख विचार
(एक निमेष का छटा मान) 8 किसी विषय राशि
अर् 9 (उद्योगि० में) बाट 10 हासि, मिलाव
11 राम का एक पुत्र, बयल (बोझी) में से एक—
इसरे का नाम कुल वा, अर का अपने आई
कुल के साथ बाल्यक मुनि के द्वारा पाकमनोवच
हुआ, समस्तल आदि स्थानों में पाठ करने के लिए
बोनों को महा कवि द्वारा राजावन की शिक्षा दी गई,
(इस नाम की व्युत्पत्ति के सिद्धे हे० रघु० १५।३२),
अय० 1 लीन, 2 बावकल—अय० (अय०) कुल,
बोडा ता—अयमपि लवङ्गे ४ रस्ते—अरस्वती० १ ।

सलस्यः [स + अच्] लीन का पीडा शीघ्रांतरापीड-
नकथमुप्यु—रघु० ६।५७, कलित लवङ्गकला परि-
लीन कोमल अलसपीरे नील० १,—अय० लीन ।
सम० कलिका लीन ।

सलस्यकम् [सलस्य + कन्] लीन ।

लहर, झाल करेणांकिज्यान्ते अनन्त विवयना
लहरय गंगा० ४०, इमा गीयुप म्हुरी त्रग्नयन
विनिताम्—५३ इसी प्रकार आनन्त, लहर, गृध्र
आदि ।

ला (अदा० पर० लाति) लना १ करना बहना करना
समालना-ललू लल्लान् मरि० १६१४ १०१५
लापुटिक (वि०) (स्त्री०-की) लपुट २६१० मरि० १६१५
लाठी या लोटे से सुम्राजित क मन्त्रो १६१५
पच० ४ ।

लाक्षकी (स्त्री०) लीना का नाम ।

लाक्षणिक (वि०) (स्त्री०-की) [लक्षणया बोधयति
ठक्] १ वह वा चिह्न या निशाना से परिचित
२ [विशेष मन्त्र] ३ गीण बर २५५५ बन्ना गीण
अर्थ में प्रयुक्त (शब्द आदि लक्षक जो वाक्य और
व्यञ्जक से भिन्न हों) व्याख्याके लाक्षणिक गद्यो-
५ पारिभाषिक --क पारिभाषिक शब्द ।

लाक्षण्य (वि०) [लक्षण वेति अय] १ चिह्न सबकी
सकेतबोधक २ लक्षणों का ज्ञान, लक्षण या सकेतों
की व्याख्या करने के योग्य ।

लाक्षा [लक्ष्यतेज्या लक्ष् + लप् प्रबो० वृद्धि] एक
प्रकार का काल रंग महाबल, लाख (प्रचीनकाल में
यह चिन्नों की एक प्रमाण सामग्री थी वे हमसे
अपने रंग के लक्ष्य तथा बोध रगती थी नु० अल
कलक । कहते हैं कि बीरबहूदी नामक कीड़े से लक्ष्वा
किन्नी विशेष वृक्ष की राल से यह रंग तैयार किया
जाना था) - निष्ठूतपचराणोभोभुजुभो लाक्षारस
केनचित् (उदगा) सा० ४१५, ऋतु० ६११३ वि०
५१२३ २ 'बीरबहूदी जिससे यह रंग बनता है ।
तम० तब वृक्ष एक वृक्ष का नाम पलामु का
अलक्ष्वा-अलक्ष्वा काल लाक्षवृक्ष, रक्त (वि०)
लाक्ष से रंगा हुआ ।

लाजिक (वि०) (स्त्री०-की) [लाजा + ठक्] १ लाज
से सर्वत्र रगने वाला, लाज से बना हुआ या रंगा
हुआ २ एक लाज (मन्त्र) से लवङ्ग ।

लम्ब (भ्वा० पर० लाति) १ लम्बा जाना नीरस होना
२ अलम्बन करना ३ पर्याप्त होना, लक्ष्य होना
४ प्रदान करना ५ रोकना ।

लामुटिक (वि०) [लपुट + ठक्] दे० लापुटिक ।

लाम् (भ्वा० आ० लाते) बराबर होना, पर्याप्त होना,
सम होना ।

लाभक [लभोर्भाव अण्] १ अलपता, सुदृढता २ लभुता,
हलकापन ३ अविचार, निष्कलता ४ नगम्यता
५ अनादर, बुरा अपमान, अप्रतिष्ठा—दीर्घा लाभक
कारिणी कुतश्चिन्त्याने लब्धति (बि०-मुद्रा० ३१४

भग० २१५ ६ पूर्वी बुस्ती, वेग ७ क्रियाशीलता
दक्षता नगरता हम्नलाभकम् ८ संबलाभकी प्राग्भा
वृद्धिनाभकम् ९ लक्ष्य, (लब्धकनी की लक्ष्य-भना)

१० (कविता में) भाषा की कमी ।

लाङ्गलम् [लङ्ग + लप् प्रबो० वृद्धि] १ हल २ हल की
जक ३ गहरी ३ ताड़ का वृक्ष ४ शिखर, लिंग,
५ एक प्रकार का फल । तम०—वृक्ष हल्ली, किमान
वृक्ष ६३ का लट्टा हलम्, पञ्च बल्लभ का
नगान्तर पद्धति (स्त्री०) लूड, हल म बनी रेखा
मैत्र लाङ्गलम् गन्ती ।

लाङ्गलिन (पु०) [लाङ्गल + इति] १ बल्लभ का नाम
—वर्षा या सम्यक्मित्र लाङ्गली या मित्रे वेध०
५० २ नाट्यम् का पेठ ३ साप

लाङ्गली [लाङ्गल अन् + डीप्] नाट्यम् का पेठ ।

लाङ्गलीला [लाङ्गल + ईला] हलम् हल का लट्टा ।

लाङ्गलम् [लङ्गल अण् + वृद्धि] १ पृष्ठ २ सिद्ध
लिङ्ग ।

लाङ्गलम् [लङ्गल + ठक् प्रबो०] १ पृष्ठ —लाङ्गलम्
तम० बल्लभवापणम् इवा पिडित्य कुरुते—अर्जु०
२३१ कुना पृष्ठ हिलाता है २ सिद्ध लिङ्ग ।

लाङ्गलम् (पु०) [लाङ्गल + इति] बल्लभ लङ्गल ।
लाङ्गलम् (भ्वा० पर० लाति लाङ्गल) १ कलक
लगाना निन्दा करना २ भ्रमना तमना ।

लाङ्ग [लाङ्ग अण्] गीला घान —आ (ब० व०) नुना
हुवा या तला हल घान (स्त्री०-गी) (त)
अवाकिम्बालमता प्रमु० बालाजिरेब पीरकल
—पु० २११०, ४१२७ ७१५ कु० ७११९, ८० ।

लाङ्ग (भ्वा० पर० लाति) १ भेद करना, चिह्नित
करना विशेष बनना २ सजाना, अलङ्कृत करना ।

लाङ्गलम् [लाङ्गल कर्मणि ल्यट्] १ चिह्न, निशान, निशानी,
विशिष्टताबोधक चिह्न नभाम्बुनानीकनभाम्बुनानीकने
(बन्धि) रण० ३१५३, प्राय समास के अन्त में
चिह्नित 'विशिष्टीकृत' अर्थ बतलाने के लिए—जाते5
व देवस्य तथा विवाहहोसरे साहसलाङ्गलस्य
विक्रमांक० १०१२, रण० ६१२८, १११४, इसी
प्रकार श्रीकण्ठपदलाङ्गल मा० १, श्रीकण्ठ विशेषण
को धारण करते हुए २ नाम लज्जितान ३ दात,
वज्रा, अपकीर्ति का चिह्न ४ लक्ष्मा का कलक
(न वज्रा) कु० ७१५५ ५ सोमान्त ।

लाङ्गल (वि०) [लाङ्गल + क] १ चिह्नित, अन्तरपुस्त,
विशिष्ट २ नाभी नामक ३ विभूषित ४ सुसज्जित ।

लाङ्ग (पु० ब० व०) एक देश और उसके अधिवासीयो
का नाम एव च (माटानुमास) प्रायेण लाङ्गल-
प्रियावालादानुमास सा० व० १०, इ० १. लाङ्ग
देश का राजा २ पुरान जीनेसीम बन् ३ कपडे

4 बच्चो जैसी भाषा। सम०— अनुप्रास अनुपास
अलंकार के पाँच में से एक, शब्द या शब्दों की
पुनरावृत्ति उसी अर्थ में परन्तु भिन्न प्रयोग के साथ
सम्मत ने उसका सोदाहरण निरूपण किया है
—शब्दस्तु लाटानुप्रासो जेदे तात्पर्यमात्रत उदा०
बदन बरबलिन्यान्तस्या, मय सुधाकर सुधाकर बन
न पुन कलङ्कविकलो भवेत्—या यस्य न सतिचे
दयिता दबदहनस्तुहिनदीधितस्तस्य, यस्य च सतिचे
दयिता दबदहनस्तुहिनदीधितस्तस्य काव्य० ९।

लाटक (वि०) (स्त्री०—टिका) [लाट् + टुन्] लाट दग
से तबड़।

लाटिका, लाटी [लाट् + ध्वल् + टाप् इत्यम्, लाट् अन
+ ङीष्] रचना, की एक विशेषज्ञी स्त्री ६० सा० ३०
६२९ 2 एक प्राकृतिक बोली का नाम ६०
काव्या० १३५।

लाट् (पु०) उभ० लाटयति ते) 1 लाटप्यार करना
पुष्कारना, दुलारना 2 कञ्जित करना, निन्द्य करना
3 केंकना, उछालना नु० लट्।

लाटणी (स्त्री०) कुलटा स्त्री, व्यभिचारिणी।
लाट (भू० क० क०) [ला + क्] लिया, ग्रहण किया।
लावः [लप् + वञ्] 1 बोलना, बार्ने करना 2 बिल
किलाना, तुलना कर बोलना।

लावः, लावकः [लृ + वञ्, लृ०] एक प्रकार का
लबा पक्षी, बटर।

लावुः (बु०) (प०) एक प्रकार की लोकी, तुमड़ी।

लावुकी (स्त्री०) एक प्रकार की सारसी।

लावः [लप् + वञ्] 1 उपलब्धि, प्राप्ति, अवाप्ति,
अधिग्रहण—हारीत्यागमात्रेण शुद्धिस्त्राभममन्यत—रघु०
१२।१०, स्त्रीरत्नलाभम्—७।३४, ११।९२, क्षणमाप्य-
वतिष्ठते स्वमन् यदि जन्तुर्नू लाभवानसी -रघु०
८।८७ 2 नफा, मुनाफा कायदा मुकदमों से समे कृत्वा
लामालानी जयाबदी अग० २।३८, याज्ञ० २।२५९
3 मुक्षोपयोग 4 लट का माल, भिक्षित प्रदेण
5 प्रत्यक्षज्ञान, जानकारी, सबोध। सम० कर, कृत्
(वि०) लाभकारी, कायदेयद—किष्का लाभ की
इच्छा, लोभता, लाभच।

लावकः [लाभ + क्] कायदा, मुनाफा।
लावकत्वम् [ला + क्तिप्, ला बाधीयमाना मर्या सारो
यस्य ब० स०, कप्] एक मुगधयुक्त वाम विसंग की
जड़, लस, वीरजमूल।

लावकत्वम् [लावट् + व्यञ्] लम्पटता, कामुकता,
भोगासक्ति।

लालम् [लप् + ल्यट्] 1 दुलारना, लाट प्यार करना
पुष्कारना लुलालम् आदि 2 लुष्ट करना
आवश्यकता से अधिक स्नेह करना आभरणन,

अत्यधिक लाटप्यार—लालने बहुवो दोषास्ताडने बहुवो
गुणा दे० लल।

लालस (वि०) [लस + ण्, लुक इत्यम्, अच्]
1 अत्यत लालायित बहुव इच्छुक, आतुर प्रणाम-
लालसा का० १४ ईशानसदृशलालसाना कृ०
७।५६ सि० ४।६ 2 आनन्द लेन वाला, मक्क, अनु-
रागी लीन विलासलालसम् गी० १ शोक,
मृगया आदि।

लालसा [लम स्पृहाया यद् लुक् भावे अ 1 प्रबल इच्छा
उत्कण्ठा, बड़ी अभिलाषा 3 पु० 2 याचना
निवेदन, अभ्यर्थना 3 खेद दा १ दादः गमिणी
स्त्री की इच्छा।

लालसीकम् (पु०) चटनी।

लाला [लल् + णिच्, अच्, गण] लार धक् भू०
५।९। सम०—अब भक्कड आब 1 लार डगना
2 मक्कड।

लालाटिक (वि०) (स्त्री०) ली, [लाला परोक्ष
पर्याय ठञ्] 1 मस्तक पर स्थित या मस्तकसंबन्धी
2 भाग्य से मिलना या भाग्य पर निर्भर रहने वाला
प्राप्तिस्तु लालाटिकी उद्धृत 3 निवन्मा नोच,
कमीना कः 1 गावधान मेषक (शा०) जो अपने
स्वामी की मूलमूला से समझेंगे हैं कि अब क्या
क्या करना आवश्यक है 2 निष्ठल, लापरवाह
निरर्थक व्यक्ति 1 एक प्रकार का आलसगन।

लालाटी [ललाट् + अण + ङीप्] मस्तक, माथा।

लालिक [लाला + ठञ्] मैना।

लालित (भू० क० क०) [लप् + णिच् + क्त] 1 दुलार
किया गया, लाटप्यार किया गया, लालन किया गया,
अप्यत स्नेह किया गया 2 सत्यपथ से डिगाया गया
3 प्रेम किया गया, अभिलषित,—लम् आनन्द, प्रेम, हर्ष।

लालितक [लालित + क्त] लाडला, दुलारा, प्रिय, स्नेह-
प्राजन।

लालित्वम् [ललित + व्यञ्] 1 प्रियता, लावण्य, लौक्यं,
आकर्षण, माधुर्य, दण्डिन पदलालित्यम् उद्धृत
2 प्रीति विषयक हाव भाव।

लालित् (प०) [लल् + णिच् + णिनि] उहकानेवाला,
कसलाने वाला।

लालनी [लालित् + ङीप्] स्नेच्छाधारिणी स्त्री।

लालुका (स्त्री०) एक प्रकार की बाला, हार।

लाल (वि०) (स्त्री०—नी) [लृ कर्त्तरि घञ्] 1 काटने
वाला, लुनाई करने वाला, उखाड़नेवाला—कुशमुक्षिना-
वम् रघु० १३।४३ 2 उत्पटन करने वाला, एकत्र
करने वाला 3 काट कर गिराने वाला, मारने वाला,
मष्ट करने वाला अष्टि० १।८७, बः 1 काटना
2 लबा नामक पक्षी।

इस नाम का उल्लेख मिलता है) तम् १ जेभ
दस्तावेज २ कार्य पुस्तक या रचना ।

लिङ्गः [लिङ्ग + कु] १ शीर्षण २ मुख, बुद्धि नपुं ३ शय ।

लिङ्ग (ध्या० पर० लिखित) ज्ञाना हिल्ना बुजना ।

लिङ्ग १ (ध्या० पर० लिङ्गित, लिङ्गित) जाना लिङ्गना
बुजना भा आलिङ्गन करना, परिश्रमण करना
११ (सुशो० उभ० लिङ्गयन्त्र) रङ्ग भरना ध्वनि
करना २ किसी मन्त्राशब्द की उसके लिङ्ग के अनुसार
रूपरचना करना ।

लिङ्गम् [लिङ्ग + अच्] ३ निशान चिह्न निशानों प्रकृप
बिल्दा, प्रतीक, विभेदक चिह्न, लक्षण दर्शनाथ
लिङ्गाग्रिणी रूप० ८।१६ मृगशिरादि लिङ्गार्थी
१४।३१, मनु० १।३० ८।१५ २ अर्धमूर्ति
या मिथ्या चिह्न, वेश, छापवेष, घोष में डालने वाला
बिल्दा लिङ्गोर्मद सवृत्तविधियान्ते रूप० ७।३०
अपवर्णलिङ्गधारी मदा० १ न लिङ्ग धर्मकाण्य
—हि० ४।८५ ३० नी० लिङ्गित् ३ लक्षण राग क चिह्न
४ प्रमाण के साधन, प्रमाण मदन साध्य ५ (१०
में) किसी प्रतिज्ञा का विधेय ६ लिङ्गचिह्न ७ यानि
मुष्ठा पूजाम्बान गुणित् न च लिङ्गम् न च वय
उत्तर० ४।११ ८ पुरुष की जननेन्द्रिय, शिशु
९ (ध्या० में) स्त्री या पुरुषवाची शब्द पहचानने का
चिह्न, लिङ्ग १० शिवालङ्ग ११ देवमृत्ति, प्रतिमा
१२ एक प्रकार का सवय या अभिसूचक (जैसे कि
सवय, विमोघ और माहर्षद आदि) जो किसी शब्द
के किसी विशेष मदान में अर्ध निश्चिन करने का काम
देता है उदा० कुपितो मकरध्वज में कुपित शब्द
मकरध्वज शब्द के अर्थ का 'राम' के अर्थ में बधेज
कर देता है काव्य० २, तथा नरत्नानीय भाष्य
१३. (वेदान्त में) सूक्ष्म शरीर, दृश्यमान स्थूल शरीर
का अभिव्यक्ति मूल शरीर, गुण पञ्चकोष । सम०
—अथर्व लिङ्ग की मणि, सुपाणि, —अथर्वसूक्तम् व्याकरण
विषयक लिङ्ग ज्ञान के नियम जिनसे शब्द के लिङ्गों
का ज्ञान मिलता है, अथर्वसूक्त शिव की लिङ्ग के
रूप में पूजा, —देहः—शरीरम् सूक्ष्म शरीर २० लिङ्ग
(११) ऊपर, —चारित् (वि०) बिल्लाधारी, लालः
१. विशिष्ट चिह्नों का लोप २ शिखर का न रहना
३. दृष्टिशास्त्र का अभाव, एक प्रकार का लालो का
रोग, पराधर्कः (नर्क० में) विविक्त को बुझना या
विचारना (उदा० अग्नि' का सूचक चिह्न 'धुआ' है)
—पुराणम् अठारह पुराणों में से एक पुराण, प्रतिष्ठा
'लिङ्ग' अर्थात् शिवजी की पिण्डों का स्थापना, बधेज
(वि०) पुण्य की जननेन्द्रिय में उनेजना पैदा करने
वाला, —विषयार्थ लिङ्गाग्रिणी—बलि (वि०) पावन
न भयं २४ बलि यम न भयं मे पावनं ३३

वाला, बेबी वह आधार जिस पर शिवालङ्ग स्थापित
किया जाता है ।

लिङ्गक [लिङ्ग + क] १ लिङ्ग वध केय का पद ।

लिङ्गनम् [लिङ्ग + न्] १ लिङ्ग वध करना ।

लिङ्गित् (वि०) [लिङ्गित् + क] १ लिङ्ग या निशान
रूपने वाला २ विषयशायक ३ बिल्दा या निशान
रूपने वाला, लिङ्गित ४ वाला छापवेषी पाखंडी,
सुश्रुति ३।३० १५ (मन्त्र के अन्त में) स
मिति ३।३० विदित मन्त्रायो यथिष्ठर द्वैतक वनच
कि० १।१ इसी प्रकार लिङ्गित् ४ लिङ्ग से युक्त
५ सूक्ष्म शरीरधारः १ पुं बद्धचारी ब्राह्मण
मन्त्रायो पञ्च० ४।१९ २ शिवालङ्ग की पूजा करने
वाला ३ पाखण्डो, बना हुआ भक्त ध्यायी ४ शायी
५ (नर्क० में) प्रतिज्ञा का विधेय ।

लिपि, पी [लिपि + इक शीप र] १ शीपना पोतना
२ लिपना, लिखावट ३ लिखन अक्षर सम रूप
मात्रा परना लिप्याम् बा० लिप्यध्याय ब्रह्मण
वाङ्मय नदीमुखनेब समुद्रमाविशत् रूप० ३।२८
६६ ४ लिखन की कला ५ (अक्षर दस्तावेज, या
हस्तलेख आदि) लिखना अथ लिखो भवितोति
बैचसी लिपि कलाटोऽपिचनस्य ५।११५
१३८ ६ लिपिकला, रेखांकन । सम० ३।१ १ पल्लव
करने वाला, सफेदी करने वाला, गम २ लेखक,
लिपिक ३ लिपिक (उभरा हुआ लिखने वाला,
नक्काशी करने वाला) ('लिपिकर' भी), —कार.
लेखक लिपिक, अ (वि०) जो लिख सकता है,
व्यास. लिखने या नकल करने की कला, —कलम
लिखने का पट्ट या तन्ना साला वह स्कूल जहाँ
लिखना सिखाया जाय, सञ्ज्ञा लिखने का सामान या
उपकरण ।

लिपिका [लिपि + कन् + टाप्] दे० 'लिपी' ।
लिप्य (भू० क० क०) [लिपि + क] १ लिप्या हुआ पाता
हुआ, साना हुआ, रवा हुआ २ दाग लगा, बिगड़ा
हुआ, धूँसित, भिल्ल ३ विषयुक्त, (बाण आदि) जहर
में बुझाया हुआ ४ साया हुआ ५ बुझा हुआ, भिला
हुआ ।
लिप्यकः [लिपि + कन्] जहर में बुझा क्षीर ।
लिप्या [लिपि + कन्] १ लिप्य करने की इच्छा,
भाव० १।२२५ २ लिप्यावा ।
लिप्यु (वि०) [लिपि + कन् + उ] लिप्य करने का इच्छुक ।
लिपि, बी (स्त्री०) [लिपि + इन्] बा० पयज [दे०
'लिपि']
लिपिकरः [लिपि + कर् + क्] १ लिपि लिप्याया अयुक्त
लिपिक लक्षक लिपिकार ।
लिप्य (नदा० उभ०) लिप्या १६ लिप्या १ शीपना पोतना

मानना लिप्यलीखनमोऽङ्गानि-मृच्छ० १।०८२ इह देना विद्या देना शि० ३।८८ ३ दाग लगाना, दूधिन करना, मलिन करना, कलकित करना, कृत्रियन करना य करोति स लिप्यने पद्य० ४।६४ न मा कर्मणि लिप्यन्ति भग० ४।१४, १८।१३ यन् १०।१०६ ४ प्रवृत्तिलिपि करना मूलमाना-नस्यापिपन पाकागिनि स्वान्त काष्ठमिह अवलन् मटि० ६।४०, अमु-लीपना पोतना वपुरम्बलिपि न वपु-शि० ५।५१ ११ २. इक देना, फेलाता खेर लेना रघु० १०।१० य० ७।७ अह-लीपना पोतना, कर्मबा०, फ-जाना घमडी बनना उन्नत होना, आ - १ लीपना पातना उत्तर० ३।३९, अमु० ६।१२ २ दुधिन करना दाग लगाना, उप, पञ्चा लगाना मलिन करना भग० १३।३२, वि लीपना पातना मन्ना तु० ५।७९ मटि० ३।२०, १५।६ शि० १६।९० ।

लिप्यः [लिप् + श भुम्] लेप पातना मातित ।

लिप्यह (वि०) [लिप्यट, पृथो०] कामासकन, विषया, -हः व्यभिचारी, दुर्बलश्च ।

लिप्याकः [लिप् + आनन् पृथो०] १ नीधु या चकोतर का वृक्ष २ गधा, कम् चकोतरा, नीधु ।

लिप् १ (तुदा० पर० लिप्यति) १ जाना, हिलना-बुलना २ बाट पट्टेबाना दे० रिम् ।

॥ (दिवा० उ०) लिप्यति ते छाटा होना घटना ।

लिप्ट (भु० क० ह०) [लिप् + क्त] जो छाटा हो गया हो, घट गया हो या झूट हो गया हो ।

लिप्यः [लिप् + वन्] अभिनता, लर्क ।

लिप् (अदा० उ०) लेटि, लीडे लीड, इच्छा० लिलिपति ते) १ बाटना कपाडे मारबैर पय डिन

करालिहि धातिन-काव्य० १९ भागि० १।१९, कि० ५।३८, छि० १।४० २ बाट जाना, चबना, घूट-घूट से पीना, लपलप करके पीना न० २।१९ १००

अह, १ बाटना, लपलप करके पीना पोडा घोरा करके चबना भवव्यालावलीशायन भग० ५०

बेनी० ३।५, भागि० १।१११ २ चबाना, खाना बर्बरधारीकीडे श० १।७, मृच्छ० १।९, आ-

१ बाटना, लपलप करके पीना २ घायल करना बाधात पट्टेबाना-सेनान्यमालीडमिवाभुरासै -रघु०

२।३७ ३ (आँखो से) बहण करना, देखना, न माग्या-मालीडा परमरमणीया तव तनु भग० ३२, उब्

चमकाना, धर्षण द्वारा चिकना बनाना, रगड़ना मणि शापोल्लीड अन् २।४४, परि, लम्-बाटना-

मटि० १३।२२ ।

ली १ (अदा० प०) लयति । पिचलना विपिन होना ।

॥ (दिवा० उ०) लीयति ।

॥ (दिवा० आ०) लीयते, लीन) १ चिपकना, दूडना पूर्वक जमे रहना, घूट जाना मालवि० २५

२ मूकपाश में बाधना आनिगन करना ३ लटना, विश्राम करना टेक लेना उठरना, रहना, दुबकना,

छिपना, लूकना (भूला हुआ) लीयन्ते मूलकामरेषु शनके सज्जानन्त्रा इव रत्न० १।२९, रघु० ३।९,

श० ६।१६, कु० १।१५, उ० २ मटि० १८।१३, कि० ५।२६ ४ विघटित होना पिचलना ५ चिप-

चिपा लमलमा ६ लीन हो जाना, भक्त या अनुरक्त ।

७ माधवमनसा विविशमभयदिह भावनया -अ० लीना लीन० ६ ७ नष्ट होना मण होना प्रे० (नारयति न)

नारयति-ने लीनयति-न नारयति-न) पिचलना, विपिन करना नन्व बनाना गुलाना (लापयने)

कण सम्मान या सम्मानित करने के अर्थ में प्रयुक्त होना है उदाहरितापयने पूजायधिगच्छति तु०

पा० १।३।७०, अवि १ जुडना, चिपकना-रघु० ३।८ २ डक लेना, ऊपर फेंकना देना-पञ्चातुल्यैर्न-

अनखन घण्टेलेनामिलीन मेघ० ३।८ आ १ बल जाना, छिपना, दुबकना, विक्रम० २।२३, २ जुडना

चिपकना-रघु० ५।५१, नि १ चिपकना, जमे रहना, लट जाना, आगम करना, बल जाना,

उत्तर पडना निलिखे मूझि मूधोज्य मटि० १४।७९, २।५ २ दुबकना, छिपना, अपने आपको छिपा लेना तु० नन्वे न्यलेवत मटि० १५।३२

निश रहसि निर- गीत० २ ३ अपने आपको छिपा लेना (अपा० कं साथ) -मातुनिलोबते कृष्ण

सिद्धा० ४ मरना नष्ट होना, अ १ लीन होना, विघटित होना, गल जाना आत्मना कृतिना च

स्वग्रन्थेव प्रलीयते-कु० २।१० राश्यायमे प्रलीयन्ते तत्रैवाव्यक्तमज्ञके भग० ८।१८, मनु० १।५४ २ नष्ट होना, लोप होना ३ नाश को प्राप्त होना, नष्ट

होना वि १ जुडना, चिकना, जमे रहना २ विश्राम करना दा जाना, उत्तर पडना पुरोज्य

याबन्त भुवि व्यलीयत शि० १।१२ ३ विगलित होना, पिचल जाना लीन होना महावीर० १।६०,

उ० १४ ४ लोप होना, जोखल होना ५ नष्ट होना, लम् १ चिपकना जुडना २ लट जाना, बल

जाना लगना ३ दुबकना छिपना ४ पिचलना ।

लीकका (स्त्री०) लाप यूकाड, दे० लिखा ।

लीड (भु० क० ह०) [लिप् + क्त] बाटा गया, चुसकी ली गई चया गया खाय गया आदि०, दे० 'लिह' ।

लीन (भु० क० क०) [ली क्त] १ जुडा हुआ, चिपका हुआ गया २ दुबकाया हुआ, छिपाया हुआ,

4 पिबला हुआ, विगलित मा० पा० 5 पूर्णरूप से बिलीन, या निगलित, गहरा जुड़ा हुआ नद्य सागरे लीना भवन्ति 6 अस्त, छोटा हुआ 7 आसन्न लुप्त (दे० ली) ।

कीला [ली + कृष्ण् किय गति ला + क वा] 1 खेल
कीड़ा, विनोद लिलहलावा, आनन्द मनोरंजन
कलय ययो कन्दुकनीलययि या कु० ५।१९
(प्राय समाप्त के प्रथमखण्ड क रूप में प्रयुक्त) लीला
कमल, लीलायुक्त आदि 2 प्रीतिविषयक मनोरंजक
स्वेच्छावाता, प्रीतीड़ा कोलकीड़ा-उमराटी
गति रघु० ७।७ ४।२२ ५।७०, श्रुत्यभिनि प्रयाग
यहो विनायिप ह्यामीलाभि किम् सी का लणे रमण्य
-शि० ८।-४, मेघ० ३५, (उज्ज्वलनीलमणि ने इस
अर्थ में 'लीला' शब्द की व्याख्या इस प्रकार की है
अप्राप्तबल्लभमयमानवायिकाया मर्या पुरोडा
निर्बचितविनादबुद्ध्या । आलापकशयनिहास्य
विकारकनारी प्राणदेवगानुकृतिपाकलयनि लीलाम ॥)
3 आमाणी मे, सुविधा, कीडामात्र, बच्चों का खेल
लीलया जघान 'आमाणी से मांग डाला 4 दर्शन
आमाम, हावभाव, छवि य सर्गा प्राप्ति
नाकिनीक रघु० ६।३० 'पनाकी की भाति
दिखलाई देने वाला 5 मोन्दर्य, लावण्य लाजिब
—मुद्रावकाशिका मण्डनाला गीत० ६ रघु० ५।
१६।७१ 6 बहाम छत्रकेश शिग 'बनावा' यथा
लीलायमनुष्य लीलातट । मन० अ (आ) गान्ध-
रघु- गृहम् गृहम्, वेष्टम् (नय०) मन्द-
भवन रघु० ८।०५, अङ्ग (वि०) अन्तर्जग
वाला अग्रजम् अम्बुजम्, अर्धवस्त्रम्, कमलम
तामरसम्, पद्मम् कमल विनीता कमल का
फूल वा विहीन को नाति हाथ में दिया हुआ 7
रघु० ६।१५ पद्य० ३५ क० ६।८ अवतार
(रघु० का) पुरा हर मत्तारवन के शिग उरना,
उद्यानम 1 प्रमोदन 2 इवन इद का रमण
लल्लः किं कामरकलः ३० प्रणय करुण, खतुर
(वि०) सिद्ध मत्तार वन्य कथा मन्य उद्य
वेशी मात्रम् कीडामात्र, इवत् खल बच्चा का
रोक, अनायाम, रनि. (स्त्री०) मनाविनाद कीडा
बासी आनन्दवायडी शुक. आनन्द के लिए पाना
हुआ पाना ।

लीलाखितम् , या ना + यत् + का } त्वत् कीडा मना
रजन, आनन्द ।

लीलाङ्ग (वि०) [लीला + मनुष्य मय्य व । कीलामय
विष्ठाहो ली । मनाह्य वा शतशब्दो म्ना
2 शृणुमप्रिय वा स्वेच्छावाङ्गी म्ना ३ दुःखं वा
नाम ।

लुक् (अव्य०) पाणिनि द्वारा प्रयुक्त पारिभाषिक शब्द जो प्रत्ययों का लोप करने के लिए काम में आता है।
लुङ् (भ्वा० पर० लुङ् वति लुङ् वत) 1 ताड़ना, खींचना, छीलना काटना 2 फाड़ देना, उखाड़ देना, नीच डालना।

लुब्ध, -बन्धम् । लुब्ध + घटा ल्युट् वा । छीलना
उच्चारणम् ।

सुविधा (मू० १० रु०) | पृष्ठ १ + १ | 1 छोटा हुआ
2 बड़ा हुआ, उल्टा हुआ, नाटा हुआ ।

॥ (३) आठ लायने ॥ मुकाबला करणा पीछे
 घेकेलना विराध करणा २ समकरी ३ पट्ट उडाना ।
 ॥ (४) उभो कोययिनी ॥ १ बोलना २ असकरना
 ॥ (५) विवाह १०० लायने, लुण्णने ॥ १ लायना
 जमीन पर उडवना १० मुठ्ठ २ सवद्ध होना
 ३ अपहरण करणा लुण्णना स्वयंरा (समकरी लुण्ण
 या लुण्ण) ।

सू. १ (अ. ० प. ० को. ०) प्रसार करना पक्का करना ।

॥ (स्वा० आ० गा०) १ भूमि पर लाटना हथर
उपर फरस्टे बरतना गृहमयी लावा। लुट्टना हथर
उपर धमा। - मजिन्तैति गादेय काच भिमि भामेने
टि० - १६। लुट्टने न मा मिकरकिथिय रीप०
५ द्वारा प शिमाओणा लुट्टि भनमवड० प्रमर
१००, अट्ट० १५०६ भामि० - १, १५६ ३ बि-
लाटना हथरना प्रादि, अर् ५११०८।

सुठनम । उठ । पट] ल'टना मुकुटना इधर उधर
धमना ।

सुठित (भ० व० ३०।। लुई १ का, गेटा हुआ, मोटना
हुआ या समान पर लुटने का हुआ।

सू (इशः पञ्च तर्हि) अथवा इना श्रव्य करना
बिलोना आलापित करना प० (ता'यति के)
अन्त करमा बिलाया बिनापित क० (इसी अर्थ में
वि उपमयै के साथ प्रयुक्त)-शं० ११- १०।६० ।
। (नुदा० पञ्च तर्हि) । अथवा इना श्रव्य करना ।

मृष्ट (श्वा० ११० मृष्टति) १ जना २ पुराता, मृष्टता, खमाटना ३ पैपण या पैपणग होता ४ आलसी या मुस्त होता ।

॥ (स्वा० पर० बृग० उम० लुब्ध्यानि-१) । लूना
लसाटना बृगना २ प्रवशा करमा, धुषा करमा ।

लघुष्टाक (वि०) (स्त्री०) की | लघु + ष्टाकम् | चोरी
करने वाला (आल० में भी) लघु, ष्टाक-चकणाना
हृदयलघुष्टाकी पार्श्वकभाषा विवाहस्थि काव्य०
१० अ० मित्राक्षर ११ लघुष्टाका वाला ५।

कृष्ण (१) वा ३ (२) लीला १) १ मिला २ हरकान देना,
धारा करना या ३ रूपा ४ सुखा होना ५ जंगल
होना ६ नटना ७ घाटना ८ मकाबला करना ।

लुलाय, मुलाय । लल घञर्थे क, नमाप्नोति व्रण । भैसा
स्वरविधुर्धरित्री सिञ्चकायो लुलाय ।

लुलित (गुं. कं. कुं.) । लट् क्तः । हिलाया हुआ
 कबट बदला हुआ, घघर् उपर लड़ा हुआ वायाय
 मान लहराता हुआ—मुरालयप्रतिनिधिमामभरत्रै
 स्रोतस नीललित वनन्दे गू० १६५४ ४०२ अंगान्
 किया हुआ दुविन लुलितमकरन्दे गू० १६५०
 १११३ ३ अत्यन्त गिर (बाल) छित गये हुए, लूण०
 ४११३ : दबाया हुआ कुचला हुआ सविष्मन्त शं०
 ३१२७ ५ दबने वाला भस्मस्पर्श अमर्तिगुप्तग्या
 धाताक (रुनकवलयम्)—ग० ३११४० यथा हुआ
 सूका हुआ—अलमलुलितमध्यायवस मागये ३११
 (अगकानि) उत्तर० ११२३, पा० १११५ ३१६
 ७ प्राजल मुन्दर घन लुलितगलवम् मीट०
 ११५६१

लृप् (म्बा० पर० लाघनि) दे० 'लृप्' ।
 लृप्भः [क्ये अभच् नित लृप् च] मदोन्मत्त जायी ।

कृह्, (ध्वा० पर० लोहति) जालन करना उत्सुक होना,
लालायित होना । तु० 'लुभ्' ।

सू० (क्या० उभ०) सुनाति कुनीते, जन प्रेर० लवयति
- ते, इच्छा० मलुषति ते) १ काटना, कतरना
चूटकी ते पकड़ना, रिम्कल करना, बिम्कल करना,
तोड़ना, लुनाई करना (फूल) चूटना शरासनया-
मलुनाइ बिडोडस रघु० ३५९ ७४५, १२४३
—पूरीषम्कन्द लनीति नन्दनम्—गि० ११५१, कीडन्ति
काकिवि लवपत्नी पञ्च० ११८७, कु० ३६१,
मम० १८० २ काटना पूर्णत नष्ट कर देना,
विध्वंस करना—लोकानलाशी दुष्टविनाशक तस्य—मट्टि०
२५३ जा , अहिंसा म उभाडना—कु० २४१
विघ्न , काटना छाटना, उभाड देना—उत्तर० ३५।

मूला [लू + तक् + टाप्] 1 मरही 2 चीटी । सम०
 सन्नु: मरही का जाज मकंठक: 1 लगूर 2 एक
 प्रकार का बमली का दन्त ।

सूतिका । लृता । कन् + श्वा, इन्धम् । मकड़ी ।

कृम (५० वं कृ०) । लृ. क्त. । काटा गया छाटा
गया, वियक्त किया गया, काट दिया गया 2 नोखा
गया, (फूल आदि) खुले मये 3 नष्ट किया हुआ
4 कर्तन किया गया, कु 7 गया 5 घायल किया
गया - चमक पड़ा ।

सूत्रम् [लृ + प्रक्] पृष्ठ । मम० विवः जहरी की पृष्ठ
वाला वह जानवर जो अपनी पृष्ठ से एक मारता है ।

कृष् (म्ना० पर० कर्मान) 1 चाटे गहुवाना, क्षाश्वन्
करना 2 लटना टकंती डालना, चराना ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

प्रभाषी मेनेरमिद मुद्रा मदीया यत् मुद्रा० ५१८,
निर्भाषी तत्र लेखेत् समुद्रका खलु वाचिबम् शि०
५१९ अत्रालेख कु० ११७, मध्यमलेख १०. ३।
४. २ २४ म०। मम० ब्रह्मकारिन् (पु०) पत्र
त्रिपदे वा कायं भयवत्क (रात्रा वा) सविष्य,
अहं एक प्रसार का तात्र वा वृक्ष श्रुतयः इन्द्र
का तामात्र पत्रम्, पत्रिका १ पत्र मे मिन्दी
त्रिपदे पत्र लेख वा तामात्र ३ पत्राय वा पदु
२० मयेव (विधि) अवेश मया हुआ मदेमा, -हार-
-हारिन् (पु०) पत्रवत्

सेवक 16 र, पञ्चम र मिश्रित रंग मिश्रित रंग
वा 2 मिश्रित, 4 मम रंग, प्रभाव, 11 रंग
को भ- एक मिश्रित रंग को बट्टि।

मिथुन (वि०) (स्त्री०) मी० १५५ - चतुर्थ राशि
 जिनका प्रारम्भ राशि आदि न पच ५४, २५, ४४
 का प्रारम्भ का प्रारम्भ है मेष० मिथुन प्रारम्भ
 मेषा २ मेषा, धीमता ३ मेषा ४ मेषा
 ५ मेषा मेषा, मेषा या मेषा मेषा ६ मेषा
 (मिथुन के लिए) - मी० १ कलम मिथुन के लिए
 मेषा, मेषा का कलम २ मेषा ३ मेषा
 मेषा मिथुन की मेषा या उपकरण। मेषा

लेखनिका: लेखन - ४५५ पत्रवाहक ।

लेखिका : मैला - म्युट - डीप । 1 बल्लम 2. चम्मच ।

निम्ना [निम्ना + + टाए] 1 देखा धारी लकौर-का-1-1
 बागमनलेखपोर्वा कुं १०३ कुं ७१६ ८
 किं १६२ मेघं ५५ बिहृ-म्मा देनम्मा
 मचम्मा आदि २ लकार सीता या मृद, पकि
 पीडी बारी - निम्नावट म्मावन आलेखन विषय
 पाणिनेयाविधिषु नितरा वनं कि करोमि मां
 ४३५ २. दूज का पौद, बदि को देख लम्मावारी
 बाहमसीव देखा कुं १२५ - १३६, किं ५१६
 5 जाकृति, ममाना, छाप, निगान उपाय मयाव
 मन्मपदलेखा किं ५१० 6 माट सिनारी प्रखल,
 झालर 7 बारी।

लेख्य (वि०) { लिख्य, व्यन } अक्षित विषय जाने के योग्य,
 लिखे गये योग्य गत भये जान योग्य, मुख्य ज्ञाने
 योग्य कथम् । लिखने की रक्षा । लिखना पनि
 लिपि करना ३ रूप पत्र दस्तावेज हस्तलिख ४ विष्ठा
 गत ५ निष्पन्न गत ६ लिखित आक्षिप्त । मध्य
आश्रय कृत (वि०) किंग लिखा गया लिख
 रत गया गया, गत (वि०) विधि । लिखित वि०
 कृषिका कबी सुदिन पत्रम्, पत्रकम् ।
 १ दस्तावेज २ गत । गता प्रत्यक्ष दस्तावेज
 हस्तलिख लिखने का गत ।

लोक तीन हैं स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल लोक।
अधिक विस्तृत वर्गीकरण के अनुसार लोक चौरह हैं।
सात तो पृथ्वी से आरम्भ करके ऊपर क्रमशः एक
दूसरे के ऊपर अर्थात् भूलोक भूवलोक स्वर्लोक
महर्लोक अनलोक तपोलोक और सत्य या ब्रह्मलोक
तथा अन्य सात पृथ्वी से नीचे की ओर एक दूसरे के
नीचे अर्थात् अतल विनल सतल रसातल तलातल
महातल और पाताल। 2 भूलोक पृथ्वी इहलोक
'इस समार में' (विप० पर०) 3 मानव जाति
मनुष्य जाति मनुष्य लोकांतग लोकान्त इत्यादि
4 प्रजा राज्य के व्यक्ति (विप० राज) स्वमुख
निरभिलाष स्वियम लोकहेतो म० ११७ रघु०
४८ 5 समुदाय समूह समिति आकृष्टलोकान्
नरलोकपालान् रघु० ६११ शशम तन सिनिपाल
लोक ७३ 6 क्षेत्र इलाका जिला प्रान्त
7 सामान्य जीवन, (समार १३) सामान्य व्यवहार

लोकवत् लोकाकृत्यम् ब्रह्म० ११३३ यथा
लोक कस्यादिदानवणस्य राज्ञः शारी० (इसी पद्य
के और अन्य स्थल) 8 सामान्य लोक प्रचलन (वि०
वैदिक प्रचलन या वाग्धारा वेदोक्ता वैदिका शब्दा
सिद्धा लोकाच्च लोकावा प्रियवद्विता राशिभात्या
यथा लोके वेदं चेति प्रयोक्तव्यं यथा लोकाववेदि
केष्विति प्रयुज्यते मद्रा० (और अत्र अन० स्थानी
पर) -अतोऽस्मि लोके वेदे च प्रयित्तिं पुरुषाः -अम०
१५१८ 9 इष्टि, दर्शन 10 सत्य या चौदह की
संख्या। सम० अस्ति (वि०) असाधारण अति
प्राकृतिक अतिशय (वि०) समार के लिए श्रेष्ठ
असाधारण, अधिक (वि०) असाधारण सामान्य
सर्व पंडितराजराजित श्रेतेनाकारि लावाधिकम्
-भाषि० ४४४, कि० २४७ अधिप 1 राजा
2. सुर देव अधिकृति समार का स्वामी -अनुराग
'मनुष्य जाति से प्रेम' विश्वप्रिय साधारण स्निग्धता
परायकार, अन्तरम् परलोक दूसरी दुनिया भावी
जीवन रघु० १६९ ६४५ लोकांतर गन्, प्राय
मरणा अन्तर्गत सब लोगों में बदनामी नावर्जनिक
निष्ठा लोकापवादो बलवाग्यम० म रघु० १४६०

अभ्युदयः लोककल्याण - अयन नारायण का
सामान्य अलोक एक काल्पनिक पहाड़ जो इस
पृथ्वी का घेरे हुए है और निम्न लोक के उम समुद्र
से घेरे स्थित है जिसने सात महाद्वारों में से अन्तिम
द्वार को घेरे रक्खा है इस लोकालोक से परे चार
अन्धकार हैं और इस ओर प्रकाश है उम प्रकार
यह पहाड़ इस दृश्यमान समार का अन्धकार
के प्रदेश से विभक्त करता है प्रकाशप्रवाहप्रवाहच
लोकालोक इवाचल रघु० १६८ (आगे की

व्याख्या के लिए दे० मा० १०१७ पर डा०
भाण्डारकर का नाट) (कौ०) २६०मान और अदृष्ट
लोक आचार सामान्य प्रचलन सावर्जनिक या
साधारण प्रथा लोकव्यवहार आत्मन् (पु०) विश्व
की आत्मा आदि 1 समार का आरम्भ 2 समार
का रचयिता आयत (वि०) नास्तिकतासंबंधी
अनन्तवाद संबंधी (त) भौतिकवादी नास्तिक
बाबोंक दशन का अनुयायी (मधु० भौतिकवाद
नास्तिकता (इसके दशन का सर्वप्रधानमध्य के प्रथम
अध्याय में देखिय) आध्यात्मिक नास्तिक अनारम्भ
शब्दी ईश 1 राजा (समार का मधु) 2 ब्रह्मा
3 पारा उक्ति (रा०) 1 कहाँ 2 शक्ति
2 सामान्य चर्चा लोकमर उत्तर (वि०) असाधा
रण असामान्य प्रचलित लोकमर च कुनि
भाषि० ११२० ३८ रत्न० ४३ (१)
राजा एवमा स्वयं की इच्छा कष्टक कर दे
बाला या दुर पृथ्वी सावर्जनिक का अभिप्राय दे०
कष्टक कष्टा सर्वप्रिय कहानी कन्त कृत (पु०)
समार का रचयिता साक्षात् २२२२ में २२२२ में गारा
जान राधा गान, कलस (न०) मय चारित्र्यम्
लोकव्यवहार जननी लक्ष्मी का विशासन क्षि
(पु०) 1 बुद्ध का शिक्षण 2 समार का विहारा
म (वि०) समार का ज्ञान का ज्ञेय बुद्ध
का विशासन तत्त्वम मनव्यजर्जित का ज्ञान तत्त्वम
जननन तुषार कपूर प्रथम चर्ची सामाहिक
रूप में तीनो लोक अन्तर्गत प्रत्येक के लिए
रघु० १४३३ द्वारम स्वयं का दरवाजा आत्मा
समार का विशय प्रकार का विभाजन आत्मा (पु०)
निव का विशयण नाच 1 ब्रह्मा 2 विष्णु 3 शिव
4 गंगा प्र० ५ बुद्ध मन् (पु०) शिव का विशयण
५ पाल दिक्पाल अतिशय प्रथम प्रता
मरुता मरुतमना मरुतपात्र दिक्म० ११६ रघु०
२४३ - १ १३३३ (नाट) पाल गिनती में आठ
हैं दे० अष्ट दिक्पाल 2 राजा प्रभ पाल
(स्त्री०) मनव्यजर्जित का आरम्भ साधारण अदरणी
या पति 1 ब्रह्मा का विशयण 2 विष्णु का
विशयण 3 राजा प्रभ एव पद्धति (स्त्री०)
साधारण व्यवहार दिन्या का नगीका पितामह
ब्रह्मा का विशयण प्रकाशन सूर्य प्रकाश किंवदन्ती
अलंकार मन्मथकरण म पञ्चक वात प्रसिद्ध
(वि०) मुद्रात विशयविषयगत कन्त वाक्चर
सूर्य बाह्य बाह्य (वि०) 1 समार में बर्हिर्कृत
विचार से चारित्र्य 2 दायी से भिन्न सनकी
अकता (हृ०) आधिभूत व्यक्ति मन्मथ मानी
हृई या प्रचलित प्रथा, आत्मा (स्त्री०) लक्ष्मी का

और राजाओं के पास, इस प्रकार वह अल्पन बनाउष
राजस इत्थल के पास गया और उसे परास्त कर
उसकी विपुलघनराशि से अपनी पत्नी को सन्तुष्ट
किया ।

लोषाकः, लोषापकः [लोप् + आदर्शनमाप्नोति लाप्, आप्
+ ष्वल्] एक प्रकार का गोदड़, शृगाल ।

लोषासः, लोषासकः [लोषया हृलीभाक् चकितमस्तानि
लोप् + अच्, अण्, लोप् + अच् + ष्वल्] गोदड़,
लोमह ।

लोपिन् (वि०) [लृ + णिनि] १ क्षतिपूर्त् करने वाला,
नुकसान पहुँचाने वाला २ मृत होने वाला ।

लोप्यम् [लृप् + यन्] दे० 'लोप्यम्' ।

लोभः [लृप् + घञ्] १ लोलपता, लालसा, लालच,
अतिपुण्या—लोभश्चेदयुणेन किम् भवं० २।५५
२ इच्छा, उत्कण्ठा (सब० के साथ या समास में)
—कङ्कणस्य तु लोभेन—हि० १।५, आननस्पशं लोभात्
—मेघ० १०।५। सम०—अन्वित (वि०) लालूप,
लालची, लोभी,—बिरह, लालपता का अभाव
—हि० १ ।

लोभयन् [लृप् + ष्यट्] १ प्रलोभन, ललचाना, बहकाना,
फुसलाना २ लोना ।

लोभनीय (वि०) [लृप् + ङनीयर्] फुसलाने वाला
प्रलोभन देने वाला, आकर्षक, इसी प्रकार 'लोभ्य' ।

लोभः (पुं०) पुंछ ।

लोभकिन् (पुं०) [लोभक + इनि] एक पक्षी ।

लोभन् (पुं०) [लृ + भिन्] मत्स्य और जानवरों
के शरीर पर उगने वाले बाल दे० रामन् । सम०
—कचः—'रोमाच' दे०, आलिः,—ली, आबलिः,
—ली,—राशिः (स्त्री०) छाती से लेकर नाभि तक
बालों की पंक्ति—दे० रोमावली आदि,—कण्ठः लग्नोश,
—कीटः, जू, युका,—कृषः,—कृत्,—रंभन्, बिच-
रन् साल में छिड़,—जम्बू द्विषित गज,—कनिः बालों

से बनाया हुआ तावीज, बालिन् (वि०) पलघारो,
—लुहवन् (वि०) पुलकित करने वाला, रोमाच पैदा
करने वाला,—सारः पत्रा, हृषं, हृषन्, हृषिन्
—दे० रोमहर्षं, हृत् (पुं०) हस्ताल ।

लोभस (वि०) [लोभानि मन्त्रि वस्य लोभम् + ङ]
१ बालों वाला, ऊनी, रोपेदार २ ऊनी ३ बालों
वाला,—कः भेद, भेदा, शा १ लोमदी २ गोदरी
३ लपूर ४ कामीय । सम० बाजार्जः गृध्रबिलास ।

लोभासः [लोभन् + अच् + अण्] गोदड़, शृगाल ।

लोह (वि०) [लोह् + अच्, ड्यल्] लोह, धातु, लोहा ।

१ हिलना हुआ, लटटना हुआ, कापता हुआ वाद्यय-
मान, चम्परावा हुआ, चढ़ता हुआ, लड़कता हुआ, जैसे
कि बाल, बलकें) परिष्कृत्य लोहं शिवाग्रजिह्वं जग

ज्जिपरसनामिवान्तर्बहिष्म—कि० ३।२० लोलाक्षस्य
पवनकुलिनाक्षकान्तम्—वेणी० ५।२० लालाया हृ
लोचनं मेघ० २७, रघु० १।४२ २ विशाल
वशात्, बैरौन, परेशात ३ बचल, बपल, परिवर्ती,
अस्थिर येन श्रियं स्यादायकहृदं स्वभावलाभ्य
यस प्रमुदम् रघु० ६।६१, इसी प्रकार कु० १।६२
४ अस्पायी, नक्षत्र—शं० १।२० ५ आनुर उन्मुक्त,
उत्कण्ठित, प्रथम समास में—अथ लाल, कानिकलभका
य पुत्रा पणितोभूय—उत्तर० ३।८, कर्णं लाल
कथयिन्मभदाननस्योलाभाय मध० १० : शि०
१।६१, १।८६ २०।५५, हि० ५।२०, मेघ० ६१,
रघु० ५।२० १।२० १।५५, ५१, ला १ लोभी
का नाम २ बिज्जनी ३ जिह्वा । सम० अलि
(नपुं०) चचाट नय अक्षिका चचाट मेघा बालों
स्त्री, जिह्वा (वि०) चचाट जिह्वा में एक लालावती
—लोह (वि०) अथवा गजधराने वाला गजध
बैरौन ।

लोहप (वि०) [लृ + पङ् प्रत्य, लृप् + भञ्] बहुत
उत्सुक, अत्यन्त इच्छुक लालापित, लालची अभिनव-
मधुलोहपक तथा परिचया चतुर्वजरीम् चमलवस-
निमाग्नित्वो ययुकर विमतायेता कथम् शं०
५।१, मितस्वरदाभाणलाला मनः शि० १।६०,
रघु० १।२४, वा लालसा, उत्कण्ठा, उत्सुकता ।

लोभ्य (वि०) [लृप् + यङ्] अच्, अण् लाललाभयक,
लालची दे० 'लोभ्य' ।

लोष्ट (पुं० आ० लोटने) डेर लगाना, अवार लगाना ।

लोष्टः ष्ट्य [लृप् + तन्] डेरा, मिट्टी का लौटा—पर-
द्व्येय लाष्टवन् पदार्थान् स पश्यति, ममलोष्टकाञ्चन
रघु० ८।२१, ष्ट्य लोहे का मोर्चा, डग । सम०
डन्—अवदान, लम् डेली की फोड़ने का उपकरण,
पेटला, हेंगा ।

लोष्टः [लृप् + तन्] डेला मिट्टी का लौटा ।

लोह (वि०) [लृप् + लोह्] १ लाल, लाल रंग का

२ लोहे का बना हुआ, ताश्मय ३ लोहे का बना
हुआ, हः हम् १ ताबा २ कांश ३ इत्यादि ४ कोई
धातु ५ मोना ६ कथिर ७ हृषियार मनु० १।३२ १
४ मरती पकड़ने का कीटा, हः लाल बकरा, हम्
अगर की लकड़ी । सम० अज, लाल बकरा, अथि-
सारः, अभिहारः 'लोहजत' से मिलना बूझना एवं
मौनिक-साधारण उपायम् मोना, कान्तः लोहमणि,
चाचक कारः लोहार, किट्टम् लोहे का जग—धातक
लोहार चुम्बन करने से निकला हुआ लोहे का धरा
लोह का जग अम् १ कागा २ काहें का चुम्बक,
आलस कवच, जिन (पुं०) होरा, हाथिन
(पुं०) गजगाय मातः लोहे का बाण, वृष्टः एक

वः [वा + ड] 1 वायु हवा 2 भुजा 3 वरुण 4 समाधान 5 हबोषित करता 6 मागलिकता 7 निवास, आवास 8 समुद्र 9 व्याघ्र 10 कपड़ा 11 राहु, बम्बू वरुण (हिन्दी) अथवा की भाति, के समान 'जैसा कि' मणी बोधुस्य लम्बने प्रियी व सतीरी सम-सिदां (यहाँ लब्ध 'व' अथवा वा' हो सकता है) ।

वंशः [वमनि उवगिरानि वम् + घा यस्य ने-वम्] 1 वास-घनबंदविशुद्धोऽपि निर्गुण कि कश्चिन्नि-हिं० प्र० २३, वंशमयी गुणवाभावि समविदोषेण पुन्यः पुण्य भाभि० १।८० (यहाँ 'वंश' का अर्थ 'कुटु या परिवार' भी है) मेघ० ७९ 2. जाति, परिवार, कुटुम्ब, परंपरा-स जातो येन जातेन यानि वंश समन्त-निम् हिं० २, क्व भूयंप्रभवो वंश रघु० १।२, दे० वंशकम्, वंशस्थिति जादि 3 लाठी 4 बमूरी मूरली, अलगोष्ठा या विषकोनाह कुञ्जिकापादित-वंशकुर्य रघु० २।१२ 5. सव्रत, सधात, समुच्चय (प्राय एक समान वस्तुओं का)- सम्प्रीकृतं स्यन्दन-वंशचक्रे रघु० ७।३९ 6 आर-पार गहनीर 7 (वास में) जोड़ 8 एक प्रकार का ईल 9 गीड़ की हड्डी 10 साल का वृक्ष 11 लम्बाई नापने का एक विशेष माप (दस हाथ के बराबर) । सम०

अकुल, अकुलः 1 वाम का बिनाग 2 वाम का अन्वय, अनुकोलनम् वशावली-अनुकम् वशावली, -अनुवर्तितम् एक परिवार या कुल का परिवार -आवली, वशावलीका, वशावलीकरण, -आवृत्तः वान्ना-वन -कलिनः वासो का सुरमट, कर (वि०) 1 कुट-प्रवर्तक 2 वंशस्थाक रघु० १८।३१ (-र) ग०-पुरुष, कर्पूरकोचना रोचना, लोचना वसलोचन, लबावोर, - कुल (प०) कुल सम्पापक, वा वप्रवर्तक, -कम्बः वंशपरंपरा, लौरी वसलोचन, -चरितम् कुलार्थिक्य, -विलसः वशावली जानने वाला छेसु (वि०) किसी कुल का अंतिम पुरुष, -ज (वि०)

1. कुल में उत्पन्न रघु० १।३१ 2. सन्कुलाद्भव (-जः) 1 प्रजा, मतान, औलाद 2 वाम का बीज (-कम्ब) वसलोचन, वल्लि (प०) नट, ममलगा, -माडि (नी) का वाम की बनाई सोमुरी, -माघः किसी वंश का प्रधान पुरुष, नेत्रम् ईल की जड़, वज्रम् वाम का पत्ता (त्रः) न कुल, पञ्चक 1 नरकुल 2 पीड़ा, गले का रवेन प्रकार, (-कम्ब) हनुमान, -परंशदा वंशानुक्रम, कुलपरंपरा, -पुत्रकम् गण की जड़, शोष्य (वि०) आनुवंशिक (-कम्ब) आनुवंशिक मूलप्रति, -लक्ष्मीः (स्त्री०) कुल का मोभाग्य, विलसिः (स्त्री०) 1 परिवार, सन्तान 2 वामो का सुरमट, शर्करा वसलोचन, अल्लाका दीणा में लगी बीम

को लूटा, रिपति (स्त्री०) कुट की अविच्छिन्नता रघु० १८।३१ ।

वशकः [वश + वन्] 1 एक प्रकार का गधा 2 वास का जोड़ 3 एक प्रकार की मछली, कम्ब नगर की लकड़ी ।

वशिका [वश + उन् + टाप्] 1 एक प्रकार की बासुरी अगर की लकड़ी ।

वशी वश + वी + क्ताप् 1 बागरी मुरली न वशी-मशामोदमूवि का मरोआदिगोलाकाम्-हम० १०८, कश्चिन्निव्येगो नु मा वाश्वेगामि वशीरव मोत० ९ 2. शिवा या वमनी 3 वसलोचन 4 एक विशेष लोक 5 वम० वर, -वशिनि (पु०) 1 वृण का विशेषण 2 वंश वंशाने वाला ।

वंश, वि० [वशे भव यत्] 1 मुख्य वंशीय से वंशव रूपने वाला 2 महारथ में गडग करने वाला 3 परिवार में गडग करने वाला 4 अन्धे कुल में वंशव, उनम हुन का 5 वंशव, वंशवर्तक - वश 1 समान पार-वर्ती (व० व०) 2 वंशवर्ती स्पष्टता रघु० १०।३१ 2 पूर्वज पूर्वजुप नून मन 1 वंशव पिण्ड विच्छेदार्थिन रघु० १६५ 3 परिवार का कोई महारथ आचार्य गहनीर - भुजा या टांग की गहनीर 4 शिष्य ।

वंह, दे० व० ।

वक् २० रू० ।

वकु ३० रू० ।

वचक (वदा० आ० १।१८) जाग, हिला हुआ ।

वचपथ (ग० कु०) [वच + प०] 1 वह जाने या जात जाने के साथ वचन विषये जान ता प्रवचन के साथ 2 तर्हि वचनार्थ न वचनपर्य (महा० में वने के थार) 3 किसी विषय में कहे जाने के योग्य 3 महर्-गाय दूषणीय, निन्दनीय 4 नोच दूष्ट, कपोता 5 स्पष्टार्थ उत्तरदायी 6 आश्रित, ध्याम् 1 बोधना, माधण 2 श्रिष्ट, नियम सिद्धान्त वाक्य 3 कलक, निन्दा प्रत्यय ।

वक्तु (वि०, या प०) [वच वृत्] 1 बोलने वाला, बार्द करने वाला, वक्ता 2 वाक्पटु, प्रवक्ता कि कश्चिन्नि यक्तार श्रोता यत्र न विद्यते तदुं यत्र वक्तारव्यक्त मोन हि शोभस्य -मुभा० 3 अध्यापक, व्याख्याता 4 विद्वान् पुरुष, वृद्धिमान् अर्थिक ।

वक्तव्य [वक्ति जनेन वच्-कन्वै द्युत्] 1 मूत्र 2 चेहरा -गदगम मरुतीधने न पानिका जनेन वादनाया भवे० ३।१६३ 3 वृत्तन, प्रोष चौब 4 आश्रय 5 (शोध की) नाक किसी पात्र की टाटी 6 एक प्रकार का वस्त्र 7 अन्तर्ग से निष्का-मुलना एक छन्द, दे०

सा० ६० ५९७, काव्या० १२९। सम० आसन्न-
कार धुरः दातुं ज्ञातुं - तालम् मूह
से बजाया जाने वाला आद्यध्वज, बलम् तालम्
बद्ध गारदा रक्षणम् गन्धर्विवर वरिषण्य
भाषण, मेदिन् (वि०) वरपरा, तीक्ष्ण - दास-
सन्तारा, शोचनम् । मूह साक करना 2 नाद,
वकातरा, वाधिन् (तपु०) वकातरा (पु०) वकातर
का वृक्ष ।

वक्त्र (वि०) [वक्त्र रत्न पया० मन्त्रेण] 1 कुटिल
(आल० मे भी) झुका हुआ चेहरा - नक्करदार घुमा
वदार - वक्त्र पन्था यद्यपि भवत प्रीतिमन्त्रात्मकतायाम्
मेघ० २७, कु० ३१२९ ? गालमाल पराजित टा-
मटल, मन्त्रात्मक घमा फिरा कर बान बनना
दृष्टिक या मन्त्रिण (भाषण) किमनैव वक्त्रमिति
रत्न० २ वक्त्राकारचन्द्रामर्षण मुखनार प्रव
वृत्ते परिहास सि० १०१२ ४० वक्त्राक्षि भी
3 छन्देश्वर, लहरीयेश्वर, वृक्षराल (बाल) 4 प्रति-
गामी (गति आदि) 5 बेईमान आलमार्ह कुटिल
स्वभाव का 6 वर पानक (वृक्ष आदि) 7 छन्द
शास्त्र की वृत्ति से गुष्ठ (शीघ्र) - वक्त्र मगलवृक्ष
2 शनिवृक्ष 3 शिव त्रिपुर राक्षस कम् 1 नदी
का मोड़ 2 (वृक्ष का) प्रतिगमन । सम० अक्षम
देहा, अवयव म 1 हस्त 2 वक्त्रा 3 तपि उचित
(स्त्री०) एक अलंकार का नाम जिसमें टालमटाल
करने वाली बात या ना स्मृतिपूर्ण हृदय से कही जानी
है या स्वर बदल कर । मन्त्रट इसको परिभाषा इस
प्रकार देता है यदुक्तमन्यथा वक्यमन्यथाप्येन
योग्यते श्लेषेण काव्या वा अदा सा प्रकीर्तिततया
द्विधा शब्द० ९ उदाहरण के लिए मृदा० १
आरम्भिक कलाक (चन्द्रा केय मिरा) दक्षिण
2 वाक्छन्द कटाल अर्था मुखचुम्बनमद्वय का
रत्न इति तत्र वक्त्राक्षिभारिनिपुणः वक्तुं यो विद्या
व वा 3 कर्तुं न ता कष्ट वर का पेठ
कष्टक वर का वर - वक्त्र, वक्त्रक कटा-
देहा तलवार गति, वाधिन् (वि०) देहा ना
बाला, वक्त्रदार 2 वक्त्रमान वक्त्रान जीव रत्न
- वक्त्रम् ताला मुष्ट । मन्त्रेण ११ श्लेषः 2 तेन
वक्त्रम् मूह वृद्धि (वि०) 1 नेता और ताला
ऐसा ताला 2 विद्वत्पूर्ण दृष्टि रत्ने धारा 3 बाह
काने बाना, (स्त्री०) १२ ती निपात त्रिपुट्टि
मक 1 ताला 2 नीच पुष्ट वासिक तन्त्र
- वृष्ट, वृष्टिक हुता पुष्ट गाय मन्त्र
वाल्मीकि लावण पुता भाव
? धारा वृष्ट गकर ।

वक्ष्य (१०) मन्त्र कायन (प्रत्यय क वृत्त) ।

वक्षिन् (वि०) [वक्षः इति] 1 कुटिल 2 प्रतिगामी
(पु०) जैन या वृद्ध ।

वक्षिन् (पु०) [वक्षः इति] 1 कुटिलता वक्रता,
2 वाक्छन्द टालमटाल मन्त्रिणता, वक्त्र, वृषाव,
(वापी की) पराजिता तन्त्रात्मक वक्त्रोत्तर मन्त्र
मुखास्पन्दी गिरा वक्षिमा नीतः, 3 3. पूर्वता
धातुका मकारो ।

वक्षोष्ठि, वक्षोष्ठिका (स्त्री०) [वक्षः बाष्ठा यस्या
व० म० कप टाप इत्यम्] मूह मुखकान ।

वक्ष् (स्था० १२२ वक्षः) 1 वृद्धि को प्राप्त होना
बढ़ना 2 वक्षि-गाली होना 3 कुष्ठ होना 4 वक्षिन्
होना ।

वक्ष् (तपु०) [वक्षः - अमुन्, सुट् व] छाती हृदय
मीना वपायवल् गिरावृक्षवक्षः रत्न० ३१३४ ।

वक्ष् (व०) वक्ष् (वक्षः) वक्षोष्ठः
(वक्षोष्ठः) स्त्रा का छाती भागि० २१३, १४८
(वक्षः या वक्षः स्थलम्) जानो या हृदय ।

वक्ष्, वक्ष् (वक्षिन् वक्षिन्) जाना हिलना झुलना ।

वक्षाह् [भाग्यमन्त्र अवगाह इत्यम् अवगाहोप] १०
अवगाह ।

वक्ष् [वक्ष् + अक्ष मदी का मोड़ ।

वक्ष् [वक्ष् + अक्ष] वक्ष् की जीम की अगली बेंदी ।

वक्ष् [वक्ष् + इत्यम्] कटा ।

वक्ष् [वक्षि + क्ति इतिच्चात् धातोर्मुम्] 1 (किसी
जानवर या भवन की पसली) (वृद्ध कोम इस शब्द
की स्त्रीलिंग बनाने है) 2 छल का सहजीर 3 एक
प्रकार का बाद्य यन्त्र (इस हो कभी में तपु० भी) ।

वक्ष् [वक्ष् + कुन् मुम्] गगा नदी की एक शाखा ।

वक्ष् (स्था० १२० वक्ष्मति) 1 जाना 2 लगवाना, लगवा
कर चलना ।

वक्ष्मा (व० व०) [वक्ष् + अक्ष] वक्ष्मा प्रवेश तथा
उत्ते अधिवासियों का नाम वक्ष्मानुत्साव तरसा
नेता नीमावनायुतान - रत्न० ३१३६, गन्धकार समा
रत्न ब्रह्मपुत्रात्मन प्रिये वक्ष्महेति श्लोक - व
1 कपास बैसन का पीया - वक्ष्मा 1 पीसा 2 रागा ।
सम० अक्षि वरताम्, वक्ष्मा 1 पीतल 2 विद्वत्,
जीवनम् पीतल । मन्त्रवक्ष्मा कामा ।

वक्ष् (स्था० १२० वक्ष्मा) 1 जाना 2 तेजी से चलना,
3 आरम्भ करना 4 निष्ठा करना वृद्धि
ना ।

वक्ष् (स्था० १२०) (आध्यात्मिक लकारों में जा० भी,
वृद्ध योग मन्त्रा धातु है नि मार्वधातुक लकारों में
अ-पुण्य बहुवचन व वक्ष्म वक्ष्मा होना है तथा कुछ
व प्रथमा ममान बहुवचन में वक्ष्म उक्तम्)
1 मन्त्रा धातुना मन्त्रायादि वक्ष्मा काव्य० १०

(प्रायः दो कर्मों के साथ) —तामबनुस्ते प्रिममप्यप्रिध्या
रघु० १६६, कभी कभी 'भाषण' शब्द को वतलाने
वाले शब्दों के साथ दूसरी विधियों में — उवाच
पाश्या प्रथमादिन वच० २५०, २५२, क पन
वच्यते वाक्यम् २५० २ वर्णन करना, बयान
करना रघूनामन्यव वधे २५० ११९ ३ कहना,
समाचार देना, घाण्णा करना, प्रकथन करना

उच्यता मदचनात् सारिधः— श० २. मध० १८
४ नाम लेना, पुकारना — तदेकमन्तिगुण मन्वन्तर-
मिहोच्यते मनु० ११७९, प्रेर०— (वाचयति ते)
१. बोलना २. निगाह डालना, पढ़ना, खचलोफन
करना ३ कहना, बोलना, प्रकथन करना ४ प्रतिज्ञा
करना, इच्छा० (ववर्धति) बोलने की इच्छा करना,
(कुष्ठ) कहने का इरादा करना, अन्—बाद में कहना,
आवृत्ति करना, पाठ करना, (प्रेर०) मन में पढ़ना
—नाममुद्राक्षराण्यनुवाच्य— श० १, निष् १ अर्थ करना,
व्याख्या करना वेदा निर्बन्धमक्षमा २ वर्णन करना,
बोलना, प्रकथन करना घोषणा करना ३ नाम लेना,
पुकारना, प्रति, उत्तर में बोलना, जबाब देना,
प्रतिवाद करना न वेदहस्य प्रतिवस्तुमर्हसि—कु०
५४२, रघु० ३४८, वि०, व्याख्या करना,
अन्—कहना, बोलना ।

वचः [वच् + अच्] १. ताता २. मुरं, चा १ मैना
पक्षी २. एक मुचिबिन जड़, अन् बोलना, बाने
करना ।

वचनम् [वच् + ल्यट्] १. बोलने, उच्चारण करने या कहने
की क्रिया २. भाषण, उच्चार, उक्ति, वाक्य— ननु
वक्तृविशेषविस्तृष्टा गुणगुह्या वचने विप्रचित
—कु० २५५, प्रीतिः प्रीतिप्रमुखवचन स्वागतं व्याजहार
मेघ० ४ ३. बोहाना, पाठ करना ४. मूल,
वाक्य विन्यास, नियम, विधि, धार्मिक ग्रन्थ का सत्यम्
—वास्तववचनं, धृतिवचनं, स्मृतिवचनम् आदि
५. आदेश, हुक्म, निदेश, 'मदचनात्' मेरे नाम से अवधि
मेरे आदेश से ६ उपदेश, परामर्श, अनुदेश ७. घोषणा,
प्रकथन ८. (व्या० में) (वर्ण) का उच्चारण ९. शब्द
की यथार्थता—अथ पयोधर शब्दः मेघवचनः १०. (व्या०
में) वचन, (एकवचन, द्विवचन और बहुवचन इस
प्रकार वचन तीन होते हैं) ११. सूझा बदरक ।
सम० उच्यताः प्रस्तावना, आमुख, कर (वि०)
राजाकारी, आदेश का पालन करने वाला, — कारिण
(वि०) राजा पालन करने वाला, राजाकारी, अन्तः
प्रवचन, बाह्य (वि०) राजाकारी, अनुवर्ती,
विनीत, — शब्द (वि०) बोलने में शत्रु, बिरोधः
विधियों की अज्ञाति, विरोध, पाठ की अनुरक्ति,
—अन्तर् ही वाचन, अवधि बार बार घोषणा, पुनरुक्त

उक्ति, स्थित (वि०) ('वचने स्थित' भी) आज्ञा-
कारी, अनुवर्ती ।

वचनीय (वि०) [वच्, अनोपर । १. कहे जाने, बोले
जाने या वर्णन किये जाने के योग्य २. निश्चयी,
दृढ़णीय, यथ बलक निन्दा, निश्रेयसा न काम-
वृत्तिवचनीयमोक्षते कु० ५४२, वचनीयमिदं व्य-
वस्थितं रमण स्वामनुयामि यद्यपि—६१७१ भवति
योऽत्रिभुवनेचनीयाः पञ्च० १७५ वि० १३९, ६९,
मूल्ठ० ४११ ।

वचरः (प०) १. मर्गा २. बदमाश, नीच, शठ, दुष्ट ।

वचस् (नपु०) [वच् + अस्] १. भाषण, वचन वाक्य,
—उवाच पाश्या प्रथमादिन वच० २५० ३५५, ६७,
इत्यव्याप्तवाचि लट् कु० ५४३१ वचस्वन् प्रयोगस्त
व्य यकोक्तं लभते फलम् सूमा० २. हुक्म, आदेश,
विधि निदेशाज्ञा ३. आदेश परामर्श ४. (व्या० में)
वचन । सम० कर (वि०) । राजाकारी, अनुवर्ती
२. हुक्म की आज्ञा पालन करने वाला, —अन्तः प्रवचन,
वहः कान, प्रवृत्तिः (स्त्री०) भाषण करने का
प्रयत्न श० ७१३ ।

वचसास्पतिः [वचसा वाचा पति पठ्यसा अलङ्] बहुस्पति
का विशेषण, गृह गृह ।

वच् (धा० पर० वजति) जाना, हिलना-जुलना, इधर-
उधर घूमना । १. (चुरा०) उम० वाजयति-ने)
काटछाटकर ठीक करना, तैयार करना २. बाज की
नोक में पर लगाना ३. जाना, हिलना-जुलना ।

वज्रः—जम् [वच् + रज्] १. वज्र, बिजली, इन्द्र का दस्त
(कहते हैं कि इन्द्र का वज्र दण्डि की हड्डियों से
बना था) —आशामने ममिनिप मृगः मक्तबेरा हि
देयैरस्माधिचये धनुवि विजय पीकहते च वज्रे—श०
२११५ २. इन्द्र के वज्र जैसा कोई भी धातक या
निनासकारी हथियार ३. हारे की अग्नि, मणि मानिक्यों
की रोषने का उपकरण—मणी वज्रसमुत्कीर्णं सूत्रस्ये-
वाग्नि मे गतिः रघु० ११६ ४. होरा, यज्ञ बजा-
एपि कठोगणि मूर्धनि कुमुदादपि उत्तर० २१७,
रघु० ६१९ ५. कौजी, छः १. एक प्रकार का
सैनिकव्यूह २. एक प्रकार का कुल नामक वाम ३. अनेक
गोयों के नाम, अन् १ हस्त २. अक्ष ३. वज्र
जैसी या कटार भावा ४. बालक, बच्चा ५. आँख १
सम०—अङ्गः मणि, —अव्यासः अमुप्रयगुणम्, अवागिः
इन्द्र का वज्र, आकरः शीर्ष की मान, रघु०
१८११, आख्यः एक बहुमुख परस्पर, मणि, —आव्यतः
१ बिजली का प्रहार २. (अन आल० से) आक-
स्मिक धक्का या मकट, —आयुषः इन्द्र का हथियार,
—अष्टुटः हनुमान् का विशेषण, कीलः वज्र, बिजली,
वज्र की कील वीथित वज्रकीलम् श० ११३७,

बघुटी अल्पवयस्क बघु बघु टि + कीन् । १ तरुणा
स्त्री नवयुवनी - रघु गप्टीभारगय वाप क्वापय
गच्छति महावीर ० ५।१० गोरबघुटीदुक्तलबीगय
(कुणाय) माया ० १, पुनवपु ।
बघु (डि०) [बघमठनि बघु + यन्] १ मारे जान क
योग्य, हला किये जाने के योग्य २ जिस प्राण दण्ड
की आज्ञा मिल चुकी है ३ शारीरिक दण्ड दिये जाने
के योग्य, शारीरिक रूप से दण्ड्य, बघु १ शिवार
मृत्यु की तलाश में मृद ० १।९ १ गपु ० । सम०
एदह बह दाल हो किसी को फाँसी पर लट्काने
समय रवाना जाय । मू, भूमि (स्त्री०)
बघलम्, ग्वानम् पक्षी पक्ष माता फूला की
माता जो दाम्नी ०, गपु के अन्तर्गत शक्ति
का पहनाई जाय ।

बघना [बघ गप] बघ इत्या वत्
बघम् [बघ धृन्] १ बघने वा बघना शि० ० १।५०
२ सीमा, जो बघने की पट्टी ।
बघ्नः [बघ + यत्] जुना ।

बघ् (आ० पर० वनति) १ समाप्त करना पूरा करना
२ सहायता करना ३ शब्द करना ४ व्यापन या
व्यस्त होना ।
॥ (तना० उभ० वनोति, वनुते) १ याचना करना,
कहना, प्रार्थना करना (डि०) बाहु मानी जाती है)
—तौयदावितर नैव चातको वनुते जलम् २ खोज
करना, प्राप्त करने की चेष्टा करना ३ जीतना,
स्वामित्व प्राप्त करना ।

। (आ० पर० वृग० उभ० वनति, वानयति-ते)
१ अनुबह करना, सहायता करना २ चोट पहुँचाना,
क्षतिवस्त करना ३ ध्वनि करना ४ विचलन करना ।

बगम् [बघ + अन्] अरथ्य जंगल, वृक्षों का समूह
—एकी दाम पलने बा बने वा अर्थ० ३।२० वनेजप
दोपा प्रमदन्ति रागिणाम् २ गुप्त बगुह मयन क्यारो
में उबै हुए पनल या जंग पीछा वा समूहवार-विच-
द्विगा वषणदापनीर्षा रघु० १६।१६ १।८५
३ आवासस्थल निवासस्थल, घर ४ फौजारा (रानी
को) सरदा पानी—शि० ६।३३ ६ लकड़ी पाउ
(समाप्त) में प्रथमपद के रूप में इसका प्रयोग ईमका
'बनेका' अर्थों में होता है उदा० बनबराह, वनक
दली वनपुष्प्य आदि । सम० अर्थः दावानल
बगु जंगली पशु वा अन्न, किसी जंगल की
सोमा या दामन रघु० ३।५८ २ वनप्रदेश जंगल
—उत्तर० १।२५ अन्नरघु १ दुर्गा वा २ जंगल
का भीखी प्रदेश शि० ५।२६, अरिष्टा जंगली
हन्त्री,—अन्नरघु लाल मिट्टी गेह या जाल मड़िया
—अन्नरघु बुरजमुली, अन्नरघु बरगोस, —आन्नरघु

५६ प्रवार का आधिया आधिया जंगली नदी अ-
धर्मागिता आधिका जंगली अदरक आधक, जंगल
५ आवास, वासप्रस्थ-जीवन ५ तीसरा आश्रम
आध्यात्मि (५०) वासप्रस्थी सन्ध्या में तपस्वी
आध्या १ वनवासो २ एक प्रकार का पहाड़ी
कीवा उष्णत, गैडा—उज्जुवा जंगली कपास वा
पीया उपप्लव दावानल ओकम् (५०) १ वन-
आसी जंगल में रहने वाला २ मन्थारी तपस्वी
३ जंगली मानवर जैसे कि बन्दर सुभ्र कच्चा वन
गिर, बहलो जंगली बल्ल, करिन् १५०

कुञ्जर गज जंगल शायी कुक्कुट जंगली
मुग बघलम् जंगल वा एक भाग सब जंगली
जंगल गजवर जंगल हासयन जंगल गुल
मन्दिर जंगल गुप्त जंगल अडी—घोषार डि०
बार-बार जंगल में जाने वाला १२ । शिकारी
२ वनवासी (रघु) ५१ जंगल बघ्नम् १ देवदार
वा वृक्ष २ अगर की लकड़ी, चमड़ा, ज्योत्स्ना
एक प्रकार की बसेली बघ्नका जंगली चम्पा का
पीछा घर डि०) वनवासी वन में बिचरने वाला
वन देवता (रु) १ वनवासी, वन में रहने वाला
जंगली शरदो उपतम्बुराश्विपविषादार्थि शतय-
स्वना वनचरा वसतिम् डि० ६।३९, मेघ० १२
२ वनपक्ष ३ आठ पैरों वाला घरन नाक का एक
काल्पनिक जन्तु, कर्षा प्रगम में बुझना या निवास,
छान १ जंगली बघरा २ बघर, ज १ हाथी
२ एक प्रकार का मुलम्बिन घास १ जंगली नीबू का
पेठ १—अन् । नीलकण्ठ, ज १ जंगली बघरक
२ जंगली कागस का पीछा जीविक वनवासी जंगली
आदमी,—ब बादल बाहू-दावानल, देवता वनदेवी,

बगल-गरी रघु० ३।१० १२ हा० १।४, कु० ३।
५० ६।३०, बृह जंगली पेठ चारा वृक्षार्थि,
छायादार पाँव बनु (रानी०) मा १ जंगली वृक्ष
की मादा पाँसुल शिकारी वाग्ध्व जंगल के आस
पास का क्षेत्र वनप्रदेश, पुष्पज जंगली फूल - बुरक
जंगली नीबू ५ पेठ प्रवेशः तपस्विजीवन का
आश्रम, प्रथम आश्रम आश्रम में स्थित जंगल
—प्रिय कायक, (बघ्) दानवी का पेठ बहिन,
—बहिन जंगली मोर - भू, जंगल की भू-बलिका
गोमन्त्रा १५ बहली जंगली वनेमी, बाला
जंगली फलो का माता जंगल १५ कुण्ड पहनने
के रघु० १।५१ इमर वर्जन २ आजातस्थिनी
माता सबर्त्त कुममाउवता ३ वन्य वन्यवृक्षवाद्या
वनमांसी कीर्तिता ४ घर शिकुण कृषि-
वृक्ष मार्गिन् (५०) कुण्ड का एक विशेषण
वीरसमीरे वसुमातीरे वसति बने वनमांसी शीम०

बन्ध (म्भा० पर० बधति) जाना, हिलना-जुलना ।

बन्धु (म्भा० पर० बधति, बन्ध, प्रेर० बधयति) बन्धयति । परन्तु उपसर्गयुक्त होने पर केवल 'बधयति' । 1 बन्धन करना, बंध देना, बंध से बाहर निकालना—रक्त चावभिषुर्बन्ध—भट्टि० १५।१२. १।१०. १४।३० 2 बाहर भेजना, उधेलना, बाहर करना, उद्गोचरण करना, बाहर निकालना, उत्सर्जन करना (बाल) से श्री) कियाम्नेयघावा विकृत इव नेत्राणि बधति—उत्तर० ६।१४, ग० २।७, रघु० १६।६६, मेघ० २०, अविदिनगुणाग्रिप सत्कविभजिनि कण्ठं बधति मधुषाराम्—वात्स० 3 बाहर फेंकना, नीचे डाल देना—वातभास्व—रघु० ७।६ 4 अस्वीकृत करना, उब्—1. बंध देना, उद्धमन करना 2 कैं करना, भेज देना, उधेल देना—उद्गामेन्द्रसिक्ता भूविलम्बनाविबोम्भा—रघु० १२।५, मुद्रा० ६।१३ ।

बन्धः [बन् + ङप्] कैं करना, बधन करना बाहर निकालना ।

बन्धुः [बन् + ऋप्] 1 कैं करना, उद्धमन, बंधना 2 हाथी के द्वारा अपनी सूंड से फेंका गया पानी ।

बन्धुवत् [बन् + ल्युट्] 1 कैं करना, उलटी 2 बाहर खींचना, बाहर निकालना, जैसा कि 'स्वर्गाभिधन्त-बन्धुवत्' ने, रघु० १५।२९, कु० ६।३७ 3 उलटी सानेवाली 4 बाहुति देना न गात्रा—श्री जोक ।

बन्धुनीवा [बन् + ङनीयर् + टाप्] मन्त्री ।

बन्धि [बन् + ङ्] 1 बाध 2 ठग, धैरमाश—नि (स्त्री०) 1. बीमारी, जी मिचकाना 2. उलटी लान वाली (बीधधि) ।

बन्धि [बन् + ङीष्] उलटी करना ।

बन्धारकः [बन् + त०] पशुओं के रोमने की आवाज ।

बन्धु-जी [बन् + रक्, बन्धि + ङीष्] बिउँटी । सम्०—बूटम् बन्धि ।

बन्धु (म्भा० भा०—बधते) जाना, हिलना-जुलना ।

बन्धुवत् [बि + ल्युट्] बन्धना ।

बन्धु (बन्धु०) [बन् + ङमुन्, बीमावः] 1 आयु, जीवन का कोई काल या समय,—गुणा पुत्रास्थान गुणिवु न च लिङ्गं न च वयः उत्तर० ४।११, नव वयः—रघु० २।४७, पक्षिमये वयसि—१९।१, न वल वयस्ते जसो हेतुः—मत्त० २।३८, तेजसां हि न वय समीक्यते—रघु० ११।१, कु० ५।१६ 2 जवानी, जीवन का प्रमुख अंश—वयोगते ऽहं बनिताबिलाम मुभा० इसी प्रकार 'अतिकालवयः' 3. पक्षी—रमणीया समये वयं वयः—नै० २।६२, मृगयोषधोपचित्रं वनम् रघु० ९।५३, २।९, लि० ३।५५, ११।४७ 4 कोबा—पञ्च० १।२३ (यहाँ इसका अर्थ 'पक्षी' भी हो सकता है) । सम्०—अस्तिव—अस्तिव (वि०) (वयोपि

आदि) बड़ी आय का, बूढ़ा, जीर्ण, शक्तिहीन,—अधिक (वि०) (वयोधिक) आयु में अधिक, बयोबूढ़, वरिष्ठ अवस्था (वयोऽवस्था) जीवन की एक अवस्था, आयु की माप,—मा० १।२९,—वर (वि०) म्बाध्य वेनेवाला जीवन को पुष्ट करनेवाला, आयु बढ़ानेवाला मत (वि०) 1 बयस्क 2 बयोबूढ़ परिणतिः, परिणामः आयु की परिपक्वतावस्था, बयोबूढ़ता—प्रजापत्य 1 जीवन का माप या लम्बाई 2 जीवन की अवधिः—बूढ़ (वि०) (वयोबूढ़) बूढ़ा, बड़ी आय का,—सन्धिः 1 जीवन के एक काल में दूसरे काल में संक्रमण—त्रया वयः सन्ध्य 2 वयस्कता, परिपक्वतावस्था (वयस्क होने का काल),—वय (वि०) (वयस्क-या-वयस्क) 1 जवान 2 वय प्राप्त, बालिम 3 बलवान्, शक्तिशाली (—स्था) 'सखी, सहेली,—हानिः (वयोहानि) 1 जवानी का ह्रास 2 जीवन का ह्रास ।

वयस्य (वि०) [वयसा तुल्यः यन्] 1 समान आयु का 2 सममामयिक,—स्थः मित्र, सखा, साथी (प्रायः समान ही आयु का)—स्या सखी, सहेली ।

वयुषम् [वय + उत्तन्] 1 ज्ञान, बौद्धिमत्ता, प्रत्यक्षज्ञान की शक्ति 2 मन्दिर (उणादिसूत्रों में इस शब्द को इसी अर्थ में पुल्लिङ्ग भी आलापा गया है) ।

वयोषत् (पु०) [वयो जीवन दायित्व—वयस् + षा + णि] युवा या प्रौढ व्यक्ति ।

वयोर्गम् [वयसा रगमिव] सीसा

वर (पु०) उन्न० वरयति ने, वृ या वृ का प्रेर० रूप) माँगना, चुनना, छोटना, खोज करना,—दे० 'वृ' ।

वर (त्रि०) [वृ कर्मणि अप्] 1 श्रेष्ठ, उत्तम, सुन्दरतम, या अत्यन्त मूल्यवान्, छोटा हुआ, बड़िया (संब० या अर्थ० के साथ अवस्था समास के अन्त में) वरता वरः—रघु० १।५९, वेदविश्व वरेण—५।२३, ११। ५४, कु० ६।१८, नृवरः, तक्षरा, तरिहरा आदि 2 अपेक्षाकृत अच्छा, दूसरे से अच्छा, अधिकारी बारिणी वराः मन्त्र० १२।१०३, याज्ञ० १।३५१.—रः 1 चुनने और छोड़ने की क्रिया 2 छोट, चुनार 3 वरदान, आशीर्वाद, अनुग्रह, वरं वृ या वरं वर प्राप्ति, प्रीतिरिति ते पुत्र वर वृणीष्व—रघु० २।६३, भवत्कल्यवरोदीर्घ—कु० २।३७, ('वर' और 'आशित्' का अन्तर जानने के लिए दे० 'आशित्') 4 भेट, उपहार, पारितोषिक, पुरस्कार 5 कामना, इच्छा 6 याचना, अनुरोध 7 इच्छा, पति—वर वरयते कन्या, दे० वय (२) के नीचे भी 8. पालितवृत्तार्थी, विवाहार्थी 9. स्वीचन, वहेज 10. कामता 11. कावुक, कामातक 12 चिह्निया,—रघु शक्रान्, केसर, (वरम्) की पृथक् देखिये) । सम्०—अण (वि०) उत्तम रूप

वाला (गः) हाथी (- गी) हस्ती, (- गाय)
1 निर 2. उनम नाम 3 पात्ररूपन पाति,
5 हरी वायवो, अगना कमनीय स्त्री-अहं वि०)

वर जाने के योग्य, आजीवन (पू०) स्थावरी
- आरोह (वि०) सुन्दर कलहा वाला (- हः) उनम
सवार (- हा) सुन्दर स्त्री आलिः चाद, आमवम
1 उनम चौका 2 मय्य आमन मयमान का कुर्मी
3. चीना ग्लाव, - टक, कः (१५१०) सुन्दर स्त्री
(गी०) नन्दर अथवा न पका स्त्री, कमुः ३-४ का
विशेषण चन्दन 1 एक प्रकार का चन्दन की
दण्ड 2 ईशान कोश का पद, तनु (३०) सुन्दर
स्त्रीवा वाया मरा नु, मन्दर स्त्री वरदान
मय्यामी नेत्र दण्डा स्त्रीवा म विषम ३०-४०, तनुः
१० पातल मोत का नाम मय्य ३०-४०, - स्त्रवाः नाम
का पद ३ (३०) 1 वर दत्त वाया वरदान प्रदान
करने वाला 2 मय्यप्रद (वः) 1 उपाका
2. त्रिपुण (हा) 1 तारा का नाम मय्यवि०
५४ २. कुमार कथा, बलिवा दुर्गाका क पिता-
दाता दुष्ट को दिया गया उपहार, दान्य वर प्रदान
करना दूमः जगत् का दुष्ट, - निःशयः दुष्ट का चनात्र

पलः (वि०) में दुष्ट के दन के नाम मय्य
६०८८, प्रस्थानम्, पात्रा विवाह मस्तर के लिए
• दुष्टों का दान क रूप म दुर्लभ के धर की ओर
कुल कला, कलः नारियल का पेड़, बाह्यिकम्
बाफरान, केसर, युक्ति, ती (१५१०) सुन्दर
तर्कणी स्त्री, बलिः एक कवि और ब्रह्माकण का नाम
(विश्वमायित्य राजा के दरबार के नवरत्नों में से एक,
दे० नवरत्नः) कुल लाभ पाणिनि के मुद्रा पर प्रसिद्ध
शानिकार कात्यायन ने इसकी अभिज्ञा सिद्ध कृत
है, - लब्ध (वि०) विमने वरदान प्राप्त कर लिया
है (वः) चक्रक वृत्त, - वसला नाम, दक्ष, वर्णम्
साना, बलिनी 1. उनम और सुन्दर स्वरूप वाली
स्त्री 2 स्त्री 3 शत्रु 4 - लब्ध 5 लक्ष्मी का नामान्तर
6 दुर्गा का नामान्तर - मय्यवता का नाम ८. विषम
नाम की लता, लब्ध दुष्ट की भावा वर माया को
कुलहित, दुष्ट ६ मय्य में डालनी है ।

वरकः (वृ० वः) 1. दम्पती, शर्वना वर 2 चाना
लायने को एक प्रकार, कम् 1 नाव का दहन के
बादर 2 नीलिया, ज्योतिष ।

वरद, (वृ० अटन) 1. हस्त 2 एक प्रकार का अलाव 3 एक
प्रकार का वर, भिड, - टा, - टो 1 हस्तान नवप्रसूति-
वरादा तामिनी-ने० १५१२५ 2 भिड वर या उसक
प्रकार भा वरमय पल लब्ध दाता पुत्रा वरकल्पना
वरादा भाता दत्त मायानदाता आर्या वरवरा न
लायन नव-नव गच्छता-मय्य० १, - टक ३० १५१२५

वरकम् (वृ० अटन) 1 छाटना, चूना 2 मायना, पायना
करना, प्राथना करना 3 वरना, वरा डालना
4 वरना, पण्डा कालना, प्रवक्षा करना 5 दुर्लभ
का चनाव कः 1 परकोटा, फसील 2 पुल
3 वरम नामक वृक्ष 4 वृक्ष इह मियवद्वय वरदा-
वर्णा, कर्मणा मृदे मननदानलटा कि० ५१२५
5 ऊँट । मय्य० माळा, - लब्ध दे० वरकम् ।

वरकसी (अधिक प्रचलित रूप - वाराकसी) - दे० ।

वरक, (वृ० अटन) 1 मय्यदाय, वय 2 मूह पर निकली
पसी 3 वरमदा 4 ग्राम का डेर 5 आला (भिड-
अभिषद वरकः) अधिक डेर दूरमक्षिण पाति, - मय्य०
म वरकः एक शब्द का अर्थ मन्दिरय है, इसका अर्थ
प्रदान दाता है ऊपर लटकनी हुई या उभरी हुई
अथवा ' वा उदि और ऊपर उठाई गई तो उसका
लुप्तता जाना जाताचन है, एही बात सुनकार के
विषय म है जिसकी आलाप मय्यन उन्नी उठी परन्तु
कबल निराशा में परिणत होने के लिए) ।

वरकः (वरद - वः) 1 मिट्टी का टीला 2 हाथी का
पात्र पर बना होडा 3 रोवा 4. मूह पर मुद्रासा ।

वरदा (वरद टाण) 1. वर्री, छुरी 2 एक पत्नी
- मायिका 3. दीपक की बत्ती ।

वरदा (वृ० अटन टाण) काना, (चमड़े का) तस्मा या
पदा, वि० १११४४ 2 चाड़े या हाथी का तब ।

वरम् (अक्ष) (वृ० अटन) अपेक्षाकृत, भेदभर, धेवम्कर,
अथवा अक्षः कभी कभी यह अणः के साथ प्रयुक्त
होता है-मय्यअण् मय्यभनायकमयाद्वर विरोधीपि
सम महात्मभि वि० ४८, परन्तु इस शब्द का
प्रयोग बहुधा बिना किसी शर्त के होता है, ' वरम् '
प्रायः उन वाक्य सह के साथ प्रयुक्त होता है जिसमें
अपेक्षित वस्तु विद्यमान है, तथा ' न च ' ' नतु ' और
' न पुन ' उन वाक्यसह के साथ जिनमें वह वस्तु
विद्यमान है जिसकी अपेक्षा पूर्ववर्ती का प्रयुक्तता की
गड़ है । (दाता कः० में वरम् वाते हैं) , वर मीन
काय न च वचनमय्य वदन्त ... वर भिक्षाप्रिय न
च परवनास्वादनमय्य वि० १, वर प्राप्तायासी न
पुनर्यभानामय्यमय्य - नदेव०, कभी कभी ' न ' का प्रयोग
' न पु और पुन ' के बिना भी होता है-यच्छा
माया वरमय्यिणी नाम लब्धकामा-मय्य० ६ ।

वरल, (वृ० अटन) एक प्रकार की वर, भिड, ला
1 होमनी 2 एक प्रकार का भिड, वर ।

वरा (वृ० अटन टाण) 1 त्रिकला 2 एक प्रकार का
मुग्य दण्ड ३. हन्दा 4 चावेली का नाम ।

वराक (वि०) (मरा० की) 1 वाकन्ती बेराया, दण-
नीय अथ नव-नवय दण्नी अनाया (बहुधा दया
दिमान वी०) परकन) तमया न पदर हुन यल्ल

बराकोऽपमानित पञ्च० १, तत्किमुज्जिह्वानजीविता
बराकीं नानुकपसे मा० १०.-क० १ शिव २ सपाम,
पुष्ट ।

बराटः [बराट् + कन्] अट् + अण्] १ कौडी २ रम्मी,
डोरी ।

बराटकः [बराट् + कन्] १ कौडी-प्राप्त काणबराटका, वि
न मया नृणोऽपुना मूच माप्-भर्तु० २।४ २ कमल
फल का बीजकाय ३ डोरी, रम्मी (इम अर्थ में नपु०
भी) । सम० रजस् (पु०) जाग कसर नामक वृक्ष ।

बराटिका [बराट् + कन् + टाप्, स्वप्] कौडी- अर्गम०
२।४२ ।

बराणः [बृ + घानच्] इन्द्र का विशेषण ।

बराणसी दे० बाराणसी ।

बरारकम् [बर + क्त् + ण्यन्] हीरा ।

बराळः, बराळकः [बृ + आलच् स्वायं क्त च] लीग ।

बराणि-सिः [बरम् आवरणमन्वते बर + अण् + इत्, वरं
श्रेष्ठं अन्त्ये सिप्यते बर + अम् + इत्] माया
कपडा ।

बराहः [बराय अग्नीष्टाय मुन्तादिलाभाय आहर्त्तु
भूमिन्-आ + हन् + इ] सृजर, वरिष्ठा किया गया
सृजर, -विशेष क्रियायां बराहर्त्तुनिर्भूतनाक्षत्रि पल्लवे
-श० २।६ २ मेंढा ३ बेल ४ बादल ५ मगरमच्छ
६, शूकराकृति में बना मेनिक भृष्ट ७ विष्णु का
तीसरा बराह-अवतार- तु० वर्मान दशनाक्षरे
घरणी तब लगना शशिनि कलङ्क कलैव निम्नता ।
कैदाव वतशूकरका जय जगदीश हरे-गीत० १

८. एक विशेष माप ९ बराहमहिर का नामान्तर
१० अठारह पुराणों में से एक । सम०--अवतारः विष्णु
का तीसरा अवतार, बराहवतार, -कंदः बागहीकद,
एक खाद्य पदार्थ, -कर्वः एक प्रकार का बाण,
-कृषिका एक प्रकार का अस्त्र, -कल्पः बराहवतार

का समय, वह काल जब विष्णु का बराह का अवतार
धारण किया, सिहिरः एक विख्यात ग्रोनिर्वेना,
बृहत्संहिता का प्रणेता (राजा विक्रमादित्य की राज-
ममा के तवरत्नों में से एक), - शृंगः शिव का नाम ।

बरिचम् (पु०) [बर + इमनिच्] श्रेष्ठता, गर्वोपमाना,
प्रमुखता ।

बरिचसि (सि) न [बरिचम् (स्या) + इतच्] पूजा गया,
सम्मानित, आर्चित, मस्तक ।

बरिचस्या [वरिचस पूजाया कारणम् बरिचस + क्यच्
+ ज् + टाप्] पूजा, सम्मान, अर्चना, भक्ति ।

बरीष्ठ (वि०) [अथमेवार्त्तनाथेन वर उन्मार् उरु
+ इष्टन् बरादेशः उरु की उ० अ०] १ सर्वोत्तम,
अत्यंत श्रेष्ठ, अत्यन्त पूज्य, प्रमुख २ अत्यन्त विशाल
उत्पन्न ३. अत्यन्त विस्तृत ४. गुरुतम, षष्ठः १. तितिर

पत्नी, गीतर २ मनरे का पेट, षष्ठम् १. तावत्
२।मर्च ।

बरी [बृ + अच् + डीप्] १ सूर्य की पत्नी छाया
२ जलावरी नाम का पौधा ।

बरीयस् (वि०) [अथमनयार्त्तनाथेन वर उन्मार् उरु
+ इष्टन्, बरादेशः उरु की उ० अ०] १ अपेक्षात
पन्था अधिक धेर, अधिमान्य २ अत्युत्तम, बहुत
पक्का मा० १।१६ ३ अपेक्षाकृत बड़ा, बौढ़ा पः
विस्तृत ।

बरी (ली) बरैः [व + विष्णु + वर, ई वरन् विरो ली
इति न दा + क् ईदं वरं वामो ईवदंश्च कर्म०
त०] बेल मीन ।

बरीयुः [वर श्रेष्ठ इयु यम्प, पु०] कामदेव का नाम ।

बरटः (पु०) इलेन्द्र जाति का नाम ।

बरडः (पु०) एक मोघ जाति का नाम ।

बरणः [व + उतन्] १ आदि पञ्च नाम (ब्रह्मा) मित्र के
माथ पृथक् दाकर २ पञ्चवी पीराणिकता के
अनुसार) समूह की अष्टाष्टाश्री देवता पश्चिम दिशा
का देवता (हाथ में पाश लिए हुए) यामा राजा
वरुणा वाणि मध्ये सन्धाने अव पश्यञ्चनानाम्,
वरुणा पादगामहम्- अग० १०।२९, प्रतीची वरुण
पति महार्त्त अतिमन्त्रिमेव स्वर्णमय दिशा भयान्त्र
स्वयन्दुषाकरः शि० १।७ ३ समूह ४ अन्यास ।
सम० अंगरहः अवान्य का विशेषण, -आत्मजा
महिरा (समूह में निकलने के कारण इसका एह नाम
पड़ा), -आलयः, -आवासः समूह --वासः पहियाल
लोकः १ वरुण का संगार २ जल ।

बरणामी [वरुणः डीप् आनुक्] वरुण की पत्नी ।

बरचम् [बृ + उञ्] उन्मोय वस्त्र, दुग्ध ।

बरचम् [बृ + ऊवन्] १ एक प्रकार का लकड़ी का बना,
आवरण जो च की लकड़ी हो जाने पर च की
रक्षा कर (इम अर्थ में पु० भी) बरुचो गणपुत्रिया
निगद्यते रम्यिवातिम् २ वरुच वस्त्र ३ हाल ४
पां, समुच्चय, समवाय च. १ कीचन २. काल ।

बरचिन् (वि०) [रच् + इत्] १. इन्द्रपारी, बरुचयुक्ता
२ अनागतता या वनाः दसने में गमयितव्य - अव-
निमकरथेन बरुचिना बितवन् किञ्च तस्य घनुर्भूतः
र्यू० १।११ ३ बचने वाला, आश्रय देने वाला
४ गाली में बैठे हुआ, पु० १ रूप २ अभिरक्षक,
प्रतिरक्षक, -भी मेना स्वयसिपसिलामुसस्त्वौ
त्रयाम बरुचिनी शि० १।३३, यू० १।१५० ।

बरेष् (वि०) [बृ + ण्य] १ अभिरक्षणीय, बाधनीय,
पात्र दर्शाय अनेन चेदिकस्मि गृह्यमाणं पाणि
बरेष्येन र्यू० ६।२४ २ (अन) सर्वोत्तम, श्रेष्ठ-
तम, प्रमुख, पूज्यतम, मुख्य-वेदा विधाय पुनरुक्त-

मिथेभुजिब दूरीकरोति न कथं विदुषा बरेष्य-आमि०
२।१५८, नन्मिश्रतुषरंभ्य भगो दवस्य धीमहि ऋक्
३।३२।१०. रघु० ६।८७, अट्टि० १।६, कु० ३।१०
पञ्चमः शोकान्, तेषां ।

बरोहः । बराणि श्लेष्टानि उदानि दलानि यस्य ब० म० ।
मरुतं का पीषा,-- हम् मरुतं का फल ।

बरोलः [बृ + लो + लृ] बरं भिड ।

बर्करः [बृक् + अर्क्] । भेड या बकरा का बच्चा येनना
२. बकरा ३. काह पालतु जानवर का बच्चा ४.
आमोद, कीटावृक्षा सतावन । मय० बर्कर
बमडे की रमया या नम्रा जिसमे बकरा या भेड
बापी जाय ।

बर्कराः । बर्करं परिश्रमस्य अर्थात् मरुतानि बर्कर + अर्क्
+ अण् । निरुद्धी नगर कटाक्ष २. स्त्री के कुत्ते
पर उमरें प्रेम के लक्षणा के चिह्न ।

बर्हुतः (गु०) काल अर्थात्, लटपना ।

बर्ष, [बृश् + घञ्] । १. अर्थात् प्रभाव समूह दत्त समाज
जति, मण्डल (एक समान वस्तुओं का, ज्योतिष
मण्डलानुसारिणम् - रघु० ५।११. ११.३ इसी प्रकार
पौरवस्य लक्षणायां अ. २ २ दायां, पञ्च कु० ३।३३
३ प्रवर्ष ४ एक स्थान पर वर्णित प्रत्ययसमूह यथा
मनुष्याणां वनस्पतयाम् आदि ५. वर्णमाला में व्यवहारा
का समूह ६ अनुभाव, अस्वाप, या पुष्पक का परि-
च्छेद ७ विरोधक के लक्षणे ८ प्रत्यादानयोग्य अव-
भाव, मुक्त ९ घात दा भगवान् प्रकीर्ण मानकल
१० मासधर्म ११ मनु० अण्वयम्, उत्तमम् पाषाण्योमे
मे प्रवर्ष का अर्थात् यण बयान अन्तर्गतिक अन्तर
छाया यम का मानकल परम मुलम् वर्गमुल,
यह प्रकृति के मान के ही वर्गीकृत, वर्ण, वर्ण, यो
का वर्ण ।

बर्षणा (स्त्री०) मान, धार ।

बर्षणस्य (अध्य०) । वर्णः पाव, समूह म श्लेषाशर ।

बर्षीय (वि०) । वर्णः कृष्णः भोगो वा प्रवर्ग म समूह
यः मर्यादा ।

बर्ष्ये (वि०) । पञ्च भव यन् । एक ही धर्मो कः स्य
या हा धर्मो वा । १ म मन्त्र, मरुताना, मरुतगरी
महाभारती (मिश्रा मा) गायत्र सुमने भूमिका वा
सम्बन्धवान् तथैव सर्वे वर्णा । शि० मा० १ शि०
५।१५ ।

बर्ष्य (प्रा० आ० बर्ष्य) नमस्कृता उद्विग्न वा आभा
युक्त स्थाना ।

बर्ष्य (नपु०) । बर्ष्यः पञ्च । बर्ष्यः पञ्च, जीव
२ प्रकार ३. विचार ४. भगवान् ५. कप ६. अर्थात्
प्रकाश ७. विचार ८. मय ९. बर्षः काल बर्ष्यः
वर्ष्य ।

बर्ष्यकः [बर्ष्य + कन्] । १ उज्जाला, कालि २ जीव
क विष्टा ।

बर्ष्यस्मिन् (वि०) [बर्ष्य + स्मिन्] । १ शक्तिशाली,
आजराही, मरिय २ देशीयमान, उज्ज्वल, मेजस्वी ।

बर्ष्य [बृश् + घञ्] छोट देना, परिष्कार ।

बर्ष्यन् [बृश् + ल्युट्] । १ छोड़ना, त्याग, निर्वाजित
२ बरागा ३. अन्नाद बहिष्करण ४. छोड़, छति,
हत्या ।

बर्ष्यन् (अध्य०) । निकाल कर बाहर करके, सिवाय
(समास के अन्त में) यौनसौवर्ष्यगिता निष्काना
मा. ४ कु० ३।१५ ।

बर्षित (पु० क० इ०) [बृश् + क्त] । १ छोटा हुआ,
अन्नाया हुआ २ पापयुक्त, उन्मूढ ३ बहिष्कृत
बर्षित विहित होने अर्थात् गुणवर्षित में ।

बर्ष्ये (वि०) [बृश् + घञ्] । १ टाके जाने के योग्य, बिद-
काये जाने के योग्य २ वर्णयुक्त किये जाने के योग्य
या छोड़े जाने के योग्य ३ छोड़कर, मित्राय के ।

बर्ष्ये (पु० उभ०) वर्णयति-ने बर्षित) । १ रम कराना
रमन करना, रमना दया हि भरना वर्णवर्णयन्त्या-
मनमनुस मुखा० २ बयान करना, वर्णन करना,
व्याख्या करना विवक्षा विवित करना, अकित
करना, निष्पन्न करना दक्षिण जयदेवन हुरिद
प्रमाणे वी० ३. कि० ५।१० ३ प्रस्ता करना,
स्तुति करना ४ फैलाना, बिम्बुन करना ५ रोशनी
करना, उप बयान करना, वर्णन करना लिप् -
१ बयान में देखना, मावधानता पूर्वक अकित करना
२ देखना, निहारना

बर्ष्ये [वर्ण + घञ्] । १ भगवान् --अन् श्रुतस्त्वमपि
अर्चना वर्णभाषण कृण्व - मेघ० ४९ २ रोजन, रव,
३० वर्ण्य (१), ३. रव, कप, लौन्वर्ष,
मर्यादायु जन्मवर्ष आदिगुणो वर्णवर्ष -- मेघ० ४९,
रघु० ५।१० ४ मनुष्य धर्मो, जनजाति या कबीला,
जाति (मन्त्र कप म हाद्वय लौन्वर्ष तेषां तथा बृह
रण के नाम) वर्णानामानुष्यवर्ण वर्णि० न कश्चि-
द्व्यजातामन्धनकृष्टाऽपि मज्जे -- मा० ५।१०, रघु०
५।१० धर्मो, बजा, जनजाति प्रकार, जाति जैसा
कि मरणम् अध्याम् मे ६ (४) अक्षर, वर्ण, वर्णि
में वर्णिकालाध्यात्मिक विषय ५ (४) शब्द,
मात्रा -- मा० १० १ ७ कर्षादि, कोति, प्रमिडि,
विष्णुदि राजा प्रजापत्यम वर्ण्य रघु० ६।२१
९ प्रजाया ९ वर्णमय, बजाय १० राशरी छवि,
का आकृति ११ बाह्य दृष्टा १२ धर्म के लिए
हवन करानी १३ विद्या विषय का कर्मयोग में,
गोशब्द उपायवर्ण वर्ण्य पिनाकिन कु० ५।५६,
लौन्वर्षात् वर्ण्य मान का विषय बना हुआ

14. हाथी की कुल 15 गुण, धर्म 16 धर्मापेक्षा
17 अज्ञात गति नमः 1 कैसर जाफरान 2 र
दार उदयन या सुगन्धद्वयः मयः अक्षा लक्ष्मी
—अवस्था: जातिध्यान अपेक्ष (वि०) जातिधन
जातिधन, पतिन अहः एक प्रकार का लोभ
—आयन: किसी अक्षर का जातिन मन्त्रद्वयमात्र
सिद्धा०, आयन (प०) शब्द, उच्चम रगीन

पाणी म्म० १६१३० कृषिका दशात -- क्रम.
 1. वर्णं व्यवस्था. रगा का क्रम २ वर्णंमाला- चारक-
 चित्तेरा, व्येष्टः ब्राह्मण, पुलि, तुलिका तुली
 (स्त्री०) हूयो विनेरे का बुध, व वि०) रगमानि
 (-वय) दाहस्त्री-भात्री हस्त्री-पूत पत्र-बन्ध. प्रत्येक
 जाति के विशिष्ट कर्तव्य -- बातः किंसा अक्षर का त्याग
 हो जाना, पुण्य परित्रात का फल, पुण्यक परित्रात
 --कर्म्यः रग की श्रेष्ठता, प्रसादनम् अन्न का
 लक्ष्मी, वानु (स्त्री०) सेवनी, पैसिल कृषी, मातृका
 सगदनी, चक्रा, राक्षि (स्त्री०) अक्षरी का
 यथाक्रमतुली वर्णमाला, -बतिः, बलिका (स्त्री०)
 रग भरने की तुलिका विषयबोधः वर्ण का उलट कर-
 (बनेर) सिद्धो वर्ण विपर्ययात्-सिद्धा० चिन्तासिन्तो
 हस्त्य, सिलोक्तः 1 संघ न्याकर घर में पामने
 बाला 2 साहित्य बोर (मा०) सन्दर्भो- -द्वयम्
 वर्णों की गणना के आधार पर ब्रिन्तार्थम सन्ध्या
 दूरा (विप० मायावृत्ता), व्यष्टिस्थिति (स्त्री०)
 वर्णव्यवस्था, वर्णविभाग, शिक्षा वर्णमाला सिल-
 लाता, --व्येष्टः ब्राह्मण, --संघोषः एक ही वर्ण के नामा
 में विचारसवध होना, लक्षरः 1 अन्तर्जातीय विवाह
 के कारण वर्णों का मिश्रण 2 रगा का मिश्रण
 -विपर्यय वर्णवत्कर -- का० (पहा, दोनो अर्थ अत्येन
 हैं) शि० १६१३०, संघताः, सत्ताभावाः वर्णमाला

वर्षक: [वर्षयति-वर्ष + च्युत्] 1 मृगवारेण, नकाव
अभिनेता की वेशभूषा 2 चित्रकारी चित्रकारी के
लिए रम्य चि० १९६२ 3 रमसेप या कोई उबटन
के रूप में प्रयुक्त होने वाली वस्तु एत० पिपटमान
वर्षकनिर्मितरक्षितप्रयोगे पृष्ठ० ५६६, भा०
१९११ 4 भाट, बारण, स्तुतिगायक 5 चन्नन
(पृष्ठ)।—का 1 कानूरी 2 रमसेप, चित्रकारी
के लिए रम्य 3 उत्तरीय वस्त्र, ट्रापेटा कप०
रमसेप, रम, वर्ष ० ६१५ 2 जग्दन 3 परिच्छद
अध्याय, प्रभाग ॥

वर्णनम् ना [वर्णं । त्यट्] १ चित्रकारी २ वर्णन
 ब्रह्मिष्ठान्, चित्रण स्वभावोक्तिम् । द्वाभेदे स्त्रीक्या-
 रूपवर्णनम् काव्य० १० ३ चित्रना ४ वर्णनाथ,
 उक्ति ५ प्रशंसा, ममताय (ना केवल उमी
 वर्ण यै) ।

वर्धसिः [वृडा, वसि, नुक] जल ।

वर्णित [वर्ण + अट् + अं + व] १ चित्रकार २ मायक ३
जा अपना प्राजीवता अपनी पत्नी के द्वारा करता है,
स्वीकृतार्थे ।

बहिष्का (३वां) अश्व गाँधि लेख्यस्त्रेन सत्यस्या (६८) ।
अभिनवा की काभूया या नकाव २ रग, रस ५५
३ मारी भसा लेखनी पक्षि । सम० परिपत्र
स्वाग भगना या नकाव धारण कृता तत् प्रकल्प
नायक्य मकनीव २५५ माघ ३५ निष्कापिदिष्ट
कथम सा ११

बणिम : भू० व० क०) वण का) : विचिन 2 वणन
किदा म्या वणन 'व' न') वणन का गट
प्रशभा का गट ।

वर्णिन (वि०) वर्णाश्रमार्थ इति । समाज के प्रारंभ में प्रयुक्त । १ दण्ड रूप शास्त्र २ शक्ति सम्बन्ध रखने वाला पं० १ विचकार २ निर्णयकार, अध्यक्ष ३ ब्रह्मचारी, वै० ब्रह्मचारिण अवस्था वर्णी कु० ॥६६५०॥, वर्णाश्रमाणा मुखे स वर्णी विचक्षण प्रशस्त मानवश्चे यश्च० ५॥११॥ ४ इन तार मध्य वर्णी में से किसी एक वर्ण का ध्यानि । सम० लिङ्गम् (वि०) ब्रह्मचारी की वधूमा धारण किए हुए, या उसके बिछोड़े का धारण करने वाला स वर्णाश्रमही विदित समायायी पुष्टिष्टिर द्वन्द्वने अनेचर कि० १११।

वर्णमाला [वर्णन : क्रम] 1 हकी 2 खारी वर्णों में से
किसी एक वर्ण को मन्त्रो 3 हल्ली ।

वर्णः [वृ + ण् नित] सूर्यं ।

शब्द (वि०) वर्णों, व्यंजनों, वर्णन करने के योग्य (प्रकृत और प्रयुक्त शब्दों की भाँति यह शब्दों, शब्दों, भाषा, व्याख्या में प्रायः प्रयुक्त होता है) शब्दों, कथन, वाक्य, वाक्य ।

वर्तनः [वृत्त + घट्]। (प्रायः सध्याय कञ् अनन्तं) जीविका,
वृत्ति 'वेसा कि कस्याकृतं' र्थः। मय० जन्मक
वर्तन (वि०)। [वृत्त + घट्]। जीवित विद्यमान, वर्तमान
क 1 अर्थ, मन्त्र 2 घट्टे का मय कम् एक
प्रकार का र्थान्वया कामा।

बतंका, की { बनक } टाप, हीप् बा) बटेर लवा ।

वर्तमान वि०। वृत्त, चर । टिकाक रखने वाला
 रहने वाला विद्यमान २ स्थिति न टिकना, बीना
 भी १ माया, मडक २ रीति, जीवन ३ सीमा,
 बग बनाना ४ तनुवा जय १ ... विद्यमान
 रहना २ रहना इट रहना ३ काम करना ४ कर्म,
 गान हीन का हथ ५ ... स्वर्णमि थ तनुवा
 नेत्रबाधायाम् उत्तर १९८० १९८१ (१९९) सत्य का
 अर्थ प्राप्ति या निष्पत्ति भा है) ६ जीवन रहना

जीवनयापन करना (समान के अन्त में) 5 आजीरिका, जीवन निर्वाह 6 जीवन निर्वाह का साधन, वृत्ति, व्यवसाय 7 बालचलन उपहार आचरण 8 मजदूरी वेतन, भाड़ा 9 व्यापार लन देन 10 तकवा 11 बोलक, गैर ।

वर्तनिः [वर्तन्तेऽप्या वना वृत् + नि] 1 भाग्य का पूर्वी भाग, पूर्ववर्ती प्रदेश 2 मूल्य प्रशस्ता रत्नार्थ निः (स्त्री०) भाग मटक ।

वर्तमान (वि०) [वृत् + मान + मृक्] 1 मौजूद इति मान 2 जीना हुआ जीवित रहने वाला समस्तार्थिक प्रवृत्तियुक्तता नामकवर्तमानकालविधादता प्रवृत्तानातिक्रम्य वर्तमानकाले कालदसम्यक् क्रियाया कथं परिणतिं यदुक्तं मालावि० १ 3 मृत्ना चक्कर काटना, घुस जाना व. (व्या० म) वर्तमान काल—वर्तमानसामर्थ्ये वर्तमानवृद्धा—पा० ३३१/३२ ।

वर्तकः [वर्त् + क् + ठक्] 1 पावर जोहड़ 2 बैर बखर, जलावर्त 3 कौबे का बालका 4 डाम्पाल 5 नदी का नाव ।

वर्तः, —ती (स्त्री०) [वृत् + इन वा डीप] 1 कोई भी लिपटी हुई मील वस्तु पेशानी, नदी 2 उबटन मन्त्रम, जीवा का लेप काजल, अक्षराग (शाली या टिकिया के रूप में) —सा पुनर्मम प्रथमवर्तनात्प्रभृत्यमृत-वर्तिनश्च वक्ष्योरातन्मृत्योरावृत्तौ मा० १, इयम मृतवर्तिनश्चनयो उत्प० ११३८, कर्तव्यवर्तिनश्च जीवननापद्वर्षा—भाषि० ३११६ वि० १ 3 दीपक की बत्ती मा० १०१६ (कपड़े की) झालर फलचे, किनारी 5 जाड़ का डैग 6 वर्तन के चारो ओर का उभार 7 बरीही उपकरण (रम्भनाल आदि) 8. घागे, रेखा ।

वर्तक [वृत् + लिक्] बटेर, लवा ।

वर्तिका [वृत् + लिक् + टाप्] 1 चिन्ने की सूँची नटप नय विचित्रकक्ष विचवर्तिकावच मा० १, अमुलि-क्षराममवर्तिका रच० १११११ 2 दीपक की बत्ती 3 रंग, रंगलेप 4 बटेर, लवा ।

वर्तिलम् (वि०) (स्त्री०—नी) [वृत् + गति] बहुधा समास के अन्त में 1 टटा गटने वाला, होने वाला, सहारा लेने वाला, टिकने वाला स्थान 2 जाने वाला, सर्गशील मुहने वाला 3 अभिनय करने वाला, व्यवहार कर ने वाला 4 अनुष्ठाना, अभ्यास करने वाला ।

वर्तिल (नी) रः [वृत् + डरच्, पठे पूर्वो दीर्घ] बटेर नवा वर्तिलम् [वृत् + डरच्] 1 चक्कर काटने वाला

2. वर्तमान, वटा गटने वाला 3 वर्तिकाकार ।

वर्तुल (वि०) [वृत् + उलच्] गाल कुण्डलाकार मध्य काकार - लः 1. एक प्रकार की दाल मटर 2 गैर —लच् वृत् ।

वर्तुल (नपु०) [वृत् + मतिन्] 1 रास्ता, भटक, पथ, मार्ग पगडहटा वर्तुल भाग्यमाला मा० ३९, पागरी कागरी वर्तुल प्रत्यक्ष स्थलवर्तुल, स्थलमार्ग से आकाशवर्तुल आकाश के मार्ग में 2. (आल०) रीति मार्ग, सर्वसम्मत तथा निर्धारित प्रचलन, प्रचलित रीति या आचरण कम - मय वर्तुलप्रवृत्ति मन्युष्या गणं सर्वेषां अयं ३१२३, रेखाभाष्यार्थ नियुनमिवन्त्य रच० १११५ (यहाँ पर आधिक्य अथवा अधीनधन है), अहमम् एतदवस्थान पुनरका धर्मिणी भवामि त कु० ६१२० परवान के द्वय से 3 स्थान, कम के लिए क्षेत्र नगरं कर्मविददि प्रदीयताम् कि० १६१६ 4 पलक 5 धार, किनारा । मय० पाव माग म व्यतिक्रम, - बच, बचक पलका का एक राग

वर्तुलिन, —ती (स्त्री०) मटक रास्ता ।

वर्त् [वृत् + उभ० वधयति—ने, वर्धयति नी] 1. काटना बट्ना बट्ना 2 पूरा करना ।

वर्त् [वर्ध् + अच् बट्ना वा] 1. काटना, बटटना 2 बटाना बट्ट या मज्जि करना 3. वृद्धि, बढोत्तरी, बंध 1 तीसरा 2 सिधुर ।

वर्त्तक, वर्त्तकी, वर्त्तकिन (पु०) [वर्ध् + लिच् + मृक्, वर्ध् + कच् + डि, वर्ध् + अच् + कल् + इति] बट्टई ।

वर्त्तन (वि०) [वर्ध् + लिच् + ल्युट्] 1 बटने वाला, उगने वाला 2 बढाने वाला, विसृत करने वाला, आकर्षण करने वाला १ 1 नमूद्विहाता 2 बह दौन जा दौन के ऊपर उमरा है 3 सिध का नाथ—नी 1 बहारो, जाड़ 2 विधेय आकार का जलघट, बज 1 उमना फम्फा फूलना 2 विकास, वृद्धि, वृद्धि, आवरण विस्तार 3 उन्नति 4 उल्लास, लजीबता 5 शिक्षा देना पालनपोषण करना 6. काटना, बटाना जैसा कि नाभिवर्त्तनम् में ।

वर्त्तनाल (वि०) [वर्ध् + मानच्] विकसित होने वाला, बढने वाला वः 1 एरड का पीठा 2 एक प्रकार की पहेली 3 चिन्म का नाव 4 एक जिले का नाव (इसी का नाम वर्त्तमान वर्त्तमान मानने है) वः लम् 1 एक विशेष धूरत की-तखरी, उबटन 2 एक रहस्यमय रेखाचित्र ३ बह भवन जिसका - लण की ओर कोई द्वार न हो, वा एक जिले का नाम (वर्त्तमान बंदबान) । मय० धुरम् बंदबान नायक नगर ।

वर्त्तनालक वयमान वन [पठ प्रकार का पाव, तखरी, उबटन बन्दनी ।

वर्त्तयामच् [वर्ध् छड करानि वर्ध् + लिच् + आप नदी भावे ल्युट्] 1 काटना बटाना 2 नालज्जदव पा

तत्सबर्षी कोई संस्कार ३ जन्मदिन का उत्सव ४ कोई सामान्य उत्सव जब समझि की भयलकामनाएं तथा बचावियों की अभिलषित को जानी है ।

वसित (भू० क० क०) [वृ० + णिच् + क्त] १ विफसित बड़ा हुआ २ विस्तृत किया हुआ विशाल बन-पट्टा आ ।
वसिष्णु (वि०) [वृ० + णिच्] विवसित होने वाला बहने वाला, फलन फूलने वाला ।

वसन्त [वृ० + ण्] १ चमड़े का तस्मा या पट्टो २ चमड़ा ३ सीसा ।

वसिका, **वधी** [वध्] कीच, **वधी** [कृ० + टाप् + लृट्] चमड़े का तस्मा या पट्टो ।

वसन्त (नपु०) [आवृत्ति जगम्-वृ० + मतिन्] १ वसव जिरहकृत्स्न स्वहृत्पममणि जम करानि सजल-नक्षिरीदलजालम् पीत ४ गृ० ४१५६ मुद्रा २८ २ छाल बल्क ३, पु० क्षत्रियों के नामों के मास लगने वाला एक प्रत्यय यथा चन्द्रवर्मे प्रहारवर्मे तु० दास । सम० हर (वि०) १ कवचधारो २ इतना बड़ा जो कवच धारण कर सके (अर्थात् युद्ध में भाग लेने के योग्य) गम्भीरवर्मेतमथ वर्मेहर कुमारम् - गृ० ८१४४ ।

वसन्त (पु०) नारङ्गी का पेड़ ।

वसि (पु०) मात्स्य विशेष बामी मछली ।

वसित (वि०) [वसन् + इत्थच्] जिरहकृत्स्न पहन हुआ कवच से सुसज्जित ।

वस्ये (वि०) [वृ० + यन्] १ चुने जाने या छाने जाने के योग्य पात्र २ सर्वात्म, सर्वश्रेष्ठ मुख्य, प्रधान (बहुधा समाज के अन्त में) अन्वीर स कनिष्ठ किरातवर्षे कि० १२१५४, यं कामदेव-र्षी १ वर कन्या जो स्वयं अपना पति वरण करे २ कन्या ।

वसंत दे० 'वसंत' ।

वसन्ता दे० 'वसन्ता' ।

वसन्त (वि०) [वृ० + ऋच् + क्त] १ फलाने वाला २ बल लाता हुआ, र १ वर देन का दासी २ बुद्ध, प्रलापी मुख्य ३ आतिथ्य ४ पृथारणे बाल ५ हथियारों की इनकार ६ नृत्य की एक आवृत्ति आ, री १ एक प्रकार की मल्ली २ वनतुल्यमा --रघु १ पीला चन्दन २ मिल्नर ३ लावान ।

वसन्तम् [वसन् + क्त] एक प्रकार की चन्दन की लकड़ी ।

वसन्ती [वृ० + ईकृन्, इकृन् + क्त] १ पृथारणे बाल २ एक प्रकार की मल्ली ३ एक शाही विशेष ।

वसं (वृ०) र [वृ० + णिच्] एक वृक्ष विशेष वसुन् कीकर ।

वसं, **वसु** [वृ० भावे चन्त वर्तन् + क्त] १ वर्षा, बारिश, वृष्टि की बीछार विद्युत्सन्निवर्तवत् नपु० ४१६३ मैथ० १५ २ छिड़कना, उत्पन्न करने

बीछार मृष्टि मृष्टिमुक्तम् मुख्यवर्षे पपात गृ० १२११०२, इसी प्रकार गरवर्षे मिलावर्षे, पचा लाजवर्षे वर्षा ३ वीर्यपान ४ वर्षे माल (प्राय नपु०) इत्यादि वर्षाणि तथा सहोष्णमध्ययनीव वतमा मिघागम् गृ० १३१६७ न वसर्षे वर्षाणि दादश दक्षिणाक्ष इण०, वर्षेभाषण शापन मैथ० १ ५ सृष्टि का प्रभाग, महाद्वीप (इस प्रकार के प्राय नौ महाद्वीप गिनाये गये हैं १ कुष २ हिरण्य ३ रम्य ४ दलावत ५ हरि ६ कंतुमाला ७ भद्राव ४ कश्मिर और ९ भारत) एतद्गुहगुरभारभारत वर्षमथ मम वतन वस जि० १४१५ ६ भाग्यवर्षे

हिन्दुस्तान ७ बादल/ह्रस्ववन्त के अनुसार केवल पु० ।

सम० अक्ष, अक्षक, अक्ष महीना मास, अक्ष (नपु०) बारिश का पानी अमुक्तम् इस हजार वर्षे

अक्षिप्त (पु०) भगवत्पुत्र अक्षतानम् शरद ऋतु अक्षोष मंडन, प्रामव मण - उपर्य ओला कर बादल । री) शीतल कोश, च १ मास महीना २ उपाधियों मिरि, पयंत एवं पहाड अर्थात् वह पर्वतशृङ्खला जो सृष्टि के भिन्न भिन्न प्रभागों का एक दूसरे से पृथक करती है च (वि०) (वर्षत्र) भी) वस्मान से उत्पन्न कर १ बादल २ छिड़का वनतुल्य का रम्य कोश मानवि० ४ (इसी वर्ष में वर्षावर्षे शब्द भी है) पुन वर्षों का समुच्चय प्रतिबन्ध मूला अनावृत्ति प्रिय चानक पत्नी कर छिड़का वनतुल्य का रम्य कोश वृद्ध (प्रा०) जन्मदिन जन्म शताब्दी भी वर्षे -सहस्रम् एक हजार वर्ष ।

वसक (वि०) [वृ० + ण्यल्] वस्मान वाला ।

वसन्तम् [वृ० + ण्] १ वृष्टि वर्षा २ छिड़कना बीछार, (आप० ५ भी) दृश्यवर्णन घन की बीछार या घन बसेरना ।

वसति (स्त्री०) [वृ० + णिच्] १ वृष्टि २ यज्ञ यज्ञ सम्बन्धी कृत्य ३ किया काम ४ टिकना रहना, इटे रहना जतन ।

वर्षा [वृ० + ऋच् + टाप्] (प्राय स्त्री०, व० व०) १ वर-मात यथाऋतु, वर्षावायु धीमे पचाग्निसम्यगर्थो वर्षासु स्थितिलेण - याज्ञ० ३१५२, अष्टि० ७१ २ बारिश, वृष्टि (इस अर्थ में एक वचन) । सम०

काक: वरसात, वर्षाऋतु, इसी प्रकार 'वर्षासयप',

कालीन (वि०) वर्षा से उत्पन्न या संबंध रखने वाला नृ (पु०) १ मेंढक २ एक छुनि विशेष, इन्द्रमाय, भू, स्त्री (स्त्री०) मेंढकी या छोटो

मेंढक राक्ष १ वरसात की रीत २ वरसात ।
वसिक (वि०) [वृ० + णिच्] वरमाने वाला, बीछार करने वाला कम् अगर की लकड़ी ।

वर्षितम् [वृष : क्त] बहिष् वरी ।

वर्षिष्ठ (वि०) । अर्धशतक बद्ध + इष्टन् वर्षादि
पद का उ० अ० । अत्यन्त बड़ा बहुत बड़ा ।
अथ बलवान् ३ विज्ञाततम अत्यन्त विस्तृत ।

वर्षीयम् (वि०) - शा० - मा० । अधमनयार्गीर्येण बद्ध
बद्ध + ईयम्बुन् वर्षादेश बद्ध का भ० अ० । वर्षाभा
ग पड़ा बहुत बड़ा २ प्रोक्षाकृत बलवान् ।

वर्षक (वि०) - शा० - क० । वर्ष + कृञ् बरसन डाल
अलमय पानी डालने वाला वर्षकस्व विभक्त कृता
अष्टवदश दशमपरम पि १।६१ नटि
। १। मम अक्षर - अक्षर वर्षा १२२ वाता
शोदक ।

वर्ष्यम् [वृष + ण्य] - द० - न०

वर्ष्यन् वर्ष मानसः । गगार दृष्टः भाग उ० इ
राम इति ईश्वर इति ईश्वर इति ईश्वरमात्र
वर्ष्यन् पि० १०५१ रघु १।३६ ३ मुनि ग
भनेत्रः ३२

वह वह वहन बहिष् } द० - न० वह बड़ा, वर्षा
बहिष् बहिष् } बहिष् बहिष्

बल (वि०) - शा० - न० - रात् कर्त्तृ कर्त्तृ बलवि
वर्त्तते । शान्ता बहुबला मन्दा करन अथ -
मा १०५१ क० न० मन्दा १०५१ प्रवर्त्तित वि
रामयामाया बहिष्कर्त्तृ वर्त्तितवर्त्तयम्, पि०
- १०५१ १०५१ बहिष्कर्त्तृवर्त्तयम् बहिष्
वर्त्तित वि० कविमान बहिष्कर्त्तृ गान् ३२ इति
नृत्त मन्दा एन जाना बहिष्कर्त्तृ म
११० ३ मन्दा बहिष्कर्त्तृ मन्दा अन्तर जान
हृदयमन्दा नमस्ते पुनः कर्त्तृ बल न गोत्र
नकां ३१० ४ बहिष्कर्त्तृ बलवर्त्तयम् मां ३
११२ मन्दा बहिष्कर्त्तृ बहिष्कर्त्तृ ३१
३१ गगार मन्दा मन्दा मन्दा - गगार ३१
३१ गगार मन्दा मन्दा जाना गोत्र जाना गोत्र
जाना वि दृष्ट उपर मन्दा मन्दा उपर मन्दा
कना विद्वान् कर्त्तृ बलि विद्वान् विद्वान्
विद्वान् विद्वान् विद्वान् १० मन्दा ३
मिलना, मन्दा कर्त्तृ २ मन्दा कर्त्तृ जान
बहुधा कर्त्तृ मन्दा ३ मन्दा कर्त्तृ ।

बल दे० बल ।

बलक, द० बलक ।

बलान्, बलम् [बल + अन्त्य] - अन्त्य भाग्यमन् अकारः ।
काम

बलमन् [बल + मन्] - मन्तना मन्तना २ बहिष्कर्त्तृ
धुमना ३ (वि०) - मन्तना बहिष्कर्त्तृ ।

बलान्, - भी बलान् नाम्नाद्यन् बल बल वा दाम् ।
(बहिष्, भी का प्रयोग भी अनेक बार होता है)

११४

१ बलान् छन लकड़ी का बना छपर का दूध

- धूपे बलिबिनि मन्तना मन्तना सन्तना सन्तना - बलिम् ३

३। बलिबि १।३ २ (बल का) सवम ऊँचा

भाग दृष्टका दृष्टका मन्तना मन्तना मन्तना

— मां १।११ मन्तना ३८ पि० ३।२३ ३ मन्तना

प्रदन्त का अन्त्यन्त गगार तगर का नाम — बलि

मन्तना मन्तना नाम तगरा दान् ३।२३ २।३५ ३

बलक अन्त्यन्त दृष्टका मन्तना मन्तना द०

अन्त्यन्त ।

बलान् बल शान्ता कर्त्तृ बलवर्त्तय विद्वान् बलद

विद्वान् बलिबिनि मन्तना मन्तना मन्तना मन्तना

मान ६ मन्तना १० मन्तना १० मन्तना १३।

११ ३० २ छन बलिबि ३० १।३६ ३।१

३ बलिबि मन्तना कर्त्तृ मन्तना ३ बलिबि मन्तना

मन्तना कर्त्तृ मन्तना मन्तना मन्तना मन्तना

मन्तना (बलिबि) - मन्तना १।३० बलिबि मन्तना

३ बलिबि मन्तना मन्तना मन्तना मन्तना मन्तना

३ १ बलिबि मन्तना मन्तना मन्तना मन्तना मन्तना

३ १ बलिबि मन्तना मन्तना मन्तना मन्तना मन्तना

३ १ बलिबि मन्तना मन्तना मन्तना मन्तना मन्तना

३ १ बलिबि मन्तना मन्तना मन्तना मन्तना मन्तना

३ १ बलिबि मन्तना मन्तना मन्तना मन्तना मन्तना

३ १ बलिबि मन्तना मन्तना मन्तना मन्तना मन्तना

३ १ बलिबि मन्तना मन्तना मन्तना मन्तना मन्तना

३ १ बलिबि मन्तना मन्तना मन्तना मन्तना मन्तना

३ १ बलिबि मन्तना मन्तना मन्तना मन्तना मन्तना

३ १ बलिबि मन्तना मन्तना मन्तना मन्तना मन्तना

३ १ बलिबि मन्तना मन्तना मन्तना मन्तना मन्तना

३ १ बलिबि मन्तना मन्तना मन्तना मन्तना मन्तना

३ १ बलिबि मन्तना मन्तना मन्तना मन्तना मन्तना

३ १ बलिबि मन्तना मन्तना मन्तना मन्तना मन्तना

३ १ बलिबि मन्तना मन्तना मन्तना मन्तना मन्तना

३ १ बलिबि मन्तना मन्तना मन्तना मन्तना मन्तना

३ १ बलिबि मन्तना मन्तना मन्तना मन्तना मन्तना

३ १ बलिबि मन्तना मन्तना मन्तना मन्तना मन्तना

३ १ बलिबि मन्तना मन्तना मन्तना मन्तना मन्तना

३ १ बलिबि मन्तना मन्तना मन्तना मन्तना मन्तना

३ १ बलिबि मन्तना मन्तना मन्तना मन्तना मन्तना

३ १ बलिबि मन्तना मन्तना मन्तना मन्तना मन्तना

३ १ बलिबि मन्तना मन्तना मन्तना मन्तना मन्तना

३ १ बलिबि मन्तना मन्तना मन्तना मन्तना मन्तना

३ १ बलिबि मन्तना मन्तना मन्तना मन्तना मन्तना

३ १ बलिबि मन्तना मन्तना मन्तना मन्तना मन्तना

३ १ बलिबि मन्तना मन्तना मन्तना मन्तना मन्तना

३ १ बलिबि मन्तना मन्तना मन्तना मन्तना मन्तना

३ १ बलिबि मन्तना मन्तना मन्तना मन्तना मन्तना

३ १ बलिबि मन्तना मन्तना मन्तना मन्तना मन्तना

३ १ बलिबि मन्तना मन्तना मन्तना मन्तना मन्तना

३ १ बलिबि मन्तना मन्तना मन्तना मन्तना मन्तना

३ १ बलिबि मन्तना मन्तना मन्तना मन्तना मन्तना

बलिर (वि) [बल् + किरच्] जैसी आँख वाला, एवा-
ताना, कनली से देखने वाला ।

बलिमन्त्र, -धी [बलि + धी + क, बलिज + डीच्] मछली
पकड़ने का काँटा ।

बलीकम् [बल् + कीकन्] छप्पर की छत का किनारा,
ओलती शि० ३।५३ ।

बल्लकः [बल् + ऊक] एक पक्षाविलेख, -कम् कमल की
जड़, बिल ।

बल्लू (वि०) [बल् + लन् ऊ] बलवान् हृष्टपुष्ट,
खिलहाली ।

बल्ल (बुरा० उभ० बल्लयनिने) बोलना ।

बल्लकः, कम् [बल् + क कम्प नेबम्] 1 बृक्ष की
छाल स बल्लकामाभि तवापुना हनन् करोति मन्थु न
कच धनंभवः—कि० १।३५, रघु० ८।११, मट्टि०
१०।१ 2 मछली की खाल की परत या पपड़ी
3 भाव, लण्ड । मम०—तच्च बृक्षबीजेष, लोभ
लोभ बृक्ष का एक भेद ।

बल्लकम्, -लम् [बल् + कलच्, कम्प नेबम्] 1 बृक्ष की
छाल 2 बल्लक से बनाई गई पोशाक छाल से बने
वस्त्र—इयमधिकमनोज्ञा बल्ललेनापि तस्मी शो०
१।२०, १९, रघु० १।२८, कु० ५।८, हैनबल्लका
—६।५, 'मुनहरी छालवस्त्र धारी' (तु० बीरपरि-
ग्रहा कु० ६।२२) । मम० लंबीत (वि०)
छालवस्त्रधारि ।

बल्लकम् (वि०) [बल् + भन्] गच्छती (जिमके शरीर
पर पपड़ी हो) ।

बल्लिकः [बल् + इलच्] काँटा ।

बल्लुडम् (नपु०) छाल, बल्लक ।

बल्ल (धा० उभ० बल्लति ने, बल्लित) हिलना-झुलना,
जाना, हजर उबर जाना—शि० १२।२० 2 कूना
उछलना, चौकड़ी भगना, छलांग मार कर चलना,
सरपट दौड़ना (आम० में भी) -पच० १।६२
3 नाचना—वर्त० ३।१२५ शि० १८।५३ 4 प्रसन्न
होना—मट्टि० ११।२८ 5 जाना, शि० १।५।२०
6 अकड़ कर चलना, डींग मारना—मामि० १।३२ ।

बल्लवम् [बल् + वल्] उछलना, कूटना, सरपट दौड़ना ।
रघु० १।५११ ।

बल्ला [बल् + बल् + टाप्] लगान, रान आलाने गूढ़ने
हमनी वाली बल्लामु गूढ़ने मूच्छ० १।५० ।

बल्लित (पु० क० छ०) [बल् + ल] 1 कूटा हुआ
छलांग लगाई हुई, उछला हुआ 2 निलजिल किया
गया, लबाधा गया—हाव्या० २।७३, तम् वगण्ट
दीड, बोड की एक प्रकार की दीड 2 अकड़ हर
चलना, खेड़ी बहारना, डींग मारना—निर्मित-
परादेवीचौमूकम्येक बल्लितम्—शि० २।७३ ।

बल्लु (वि०) [बल् सबरणे उ मुक च] 1 'य, मुन्दर,
मनोहर आकषक रघु० ५।६८, शि० ५।२९ कि०
१८।११ 2 मपर भासि० २।१३६ 3 मुल्लवान्,
—स्त्रुः बकरा । मम०—वचः एक प्रकार की जंगली
दाग ।

बल्लुक् [बल् + कन्] मनोहर, प्रिय, मुन्दर—कम् 1 बन्दन
2 मूल्य 3 लकड़ी ।

बल्लुलः [बल् + उल] गीदड़ ।

बल्लुलिका [बल्लुल + कन् + टाप् इल्लम्] 1 तेलबोर
2 पेटी, डब्बा ।

बल्ल (धा० आ०) जाना, निगलना ।

बल्लिकः—बल्लिक (पु० नपु०) १० बल्लाक ।

बल्लो [बल् + अल्, मम् नि० डीच्] बिछेटी । मम०
कूड् बामी दीमकी द्वारा बनाया मिट्टी का
टीला ।

बल्लीकः—कम् [बल् + ईक, मुट् च] बामी दीमकी से
बनाया गया मिट्टी का टीला, धर्म शाने मन्थिनुया-
हमनीकमिय पुस्तिका मुभा०, मेघ० १५ श०
अ।११—क. 1 शरीर के कुछ भागों का सूत्र जाना
हाथी पाँव / बाल्मीकि कवि । मम०—कीर्ति एक
प्रकार का मुरमा (जो अजल की भाँति प्रयुक्त किया
जाता है) ।

बल्लु (स्त्रु) ल (बुरा० पर० बल्लयनिने) 1 काट
हालना / निगल करना ।

बल्ल (धा० आ० ब + ल्) 1 दकना 2 दक जाना
3 जाना हिलना झुलना ।

बल्लः [बल् + अल्] 1 बाहर 2 नी गुआओ के बराबर
भार (बचन) 3 दूसरा बाट जो डेढ़ या दो गुआ
के बराबर होता है (आय० में) 4 प्रतिपेक्ष ।

बल्लकी [बल् + वल् + डीच्] बीणा ब्रजसाम्पाकि-
तबल्लकीगुणधनोऽगलानुत्तमजागृभिन्नया—शि० १।९,
हा० ३ तु० १।८, रघु० ८।४१, १९।१३ ।

बल्लव (वि०) [बल् + अवल्] 1 प्यारा, बलिखित,
प्रिय 2 मर्यापि—व. 1 प्रेमी, पनि धा० ३।८
शि० ११।३३ 2 कृपावश, पच० १।५३ 3. अभी-
अक, अधिवेशक 4 मुख्य गोप 5 उनम घोड़ा (सुभ
वज्रागो मे मुक्त) । मम०—आवाहीः वेणव मद्रदाय
के प्रतिष्ठ प्रार्थक का नाम, बाकः मार्ग ।

बल्लवामितम् [बल्लव + वज + क्री] मुनानन्द का
भागन किया, रनिवध, तु० 'कुलवामित' ।

बल्लवम् 'न च प्रत्य' 1 जग की लकड़ी 2 निकट
1 मूरम् ।

बल्लरी—री (स्त्री०) [बल् + री + टाप्] 1 डेल,
लना-जनापतिन मयपदमे गजभने पननाय बल्लरी—
कु० ६।३१ नवीबल्लरी धा० ५।२ 2 मजरी ।

बल्लवः (स्त्री०-बी) [बल्ल + वा + क] दे० 'बल्लव'
शि० १२।३१।

बल्लिः (स्त्री०) [बल्ल् + इत्] १ लता, बेल - पुनर्नाम्य
मुनगवलिमल्लयल्लकनदृष्टा बटा मा० ११०

२. पृथ्वी। सम० बूझा एक प्रकार का धाम।

बल्ली (स्त्री०) [बल्लि + डोर्] दे० पुमाबदार लोधा,
लता। सम० अम् मिर्च, बूझा मात का वृक्ष।

बल्लुम्बु [बल्ल् + उम्बु] १ निकुञ्ज वर्षाशाला, वन
स्थली, भुरमुट ३ मजरा ४ अन्तना खेत - रसि
म्यान, जंगल, उज्जर ६, मुला पाय।

बल्लुम्बु [बल्ल् + उम्बु] १ भुयः सम २ (भयल)
सूत्र का मास - रम् १ भुरमुट २ उज्जर वाता
३ अन्तना खेत।

बल्लु [(स्त्री०) प्रा० बल्लु] १ प्रभुत्व हाता नवीनम
हीना २ बकना ३ भार बालना, चोट पड़ाना
४ बोलना ५ देना।

ii (पुरा० उभ० बल्लुमनिने) १ बोलना - वचन
करना।

बल्लिक, बल्लिक दे० बल्लिक, बल्लिक।

बल्ल (अवा० पर० वाष्ट, उधित) १ बालना, डालना
करना, आलस्य करना निम्न बल्लिगल्ल दन्ता
गतम् - शालि० २११, जमी हि धीर्यप्रभव भयम्
जयाय सेनायपुर्वादि देवा कु० ३११५, शा० ३१०
२ अनुग्रह करना ३ भयकरना।

बल्ल (वि०) [बल्ल कर्त्तरि अच् भावे अण् वा] : अधीन
प्रभावित, प्रभावगत, नियन्त्रणगत (प्राप्त समाम से)।
शोकवश, मृत्युवश आदि २ आज्ञाकारी, विनीत,
अनुवर्ती ३ विनम्र, वशीकृत ४ मृग्य, आकृष्ट
५ जादू द्वारा बल में किया हुआ, शा, शम्
१ अभिलाषा, चाह, इच्छा २ पक्ति, प्रभाव, नियन्त्रण,
स्वामित्व, अधिकार, अधीनता, दीनता, स्वयम्
'अपने अधीन' स्वतन्त्र, परबल : दूसरों के प्रभाव से -
अन्यत् प्रभुत्वविमर्शदा वशमेको नृपवीनतगत
- रम् ० ८११९, बल्ल नी, आमी अधीन करना, वल
में करना जीत लेना, बल्ल शम्, - इ, - या, अधीन होना,
मर्त में हट जाना, वल जाना विनीत होना न लूचो
बल्ल विनीतमूलम गन्तुमर्हसि रम् ० ८११९, बल्ले कृत्यः
बलीकृत्य बल में करना, हावी होना, जीत लेना, मृग्य
करना, जादू से बल में करना, बल्लाल् (आवा०)
किया विशेषण के रूप में प्रयुक्त होकर 'पक्ति के
द्वारा' 'प्रभाव के द्वारा' के कारण 'प्रयोजन में' अर्प
प्रकट करना है, देवबलान्, पायुबलान्, कार्यबलान्
आदि ३ पाकतु, रहने वाला ४ जन्म, शाः बन्ध्याओ
का वासस्थान, बकला। सम० - अनुबल, बलितु
(इसी प्रकार 'बल्लगत) (वि०) आज्ञाकारी, दूसरे की

इच्छा का अनुवर्ती, विनीत, अधीन (पु०) मेवक,
आह्वयक-मम किया जानना, अधीन करना न
(वि०) अधीन आज्ञाकारी भर्तृ० ३१२६ (-गा)
आज्ञाकारिणी पत्नी।

बल्लव (वि०) [वल्ल + वद् + लच्, भूम] आज्ञाकारी,
अनुवर्ती, विनीत, अधीन प्रभावित (शा० तथा
आक०) कापय कि न कर्मनो वल्लवदन्तु भर्तृ०
३१०, ३१२६ ३५५ दे० १।३३, मा ददशे मुहूर्त्तव-
शः प्रत्यक्षनर्गनायाम मास० ११।

बल्लका वल्ल + कै + क टाप् : आज्ञाकारिणी पत्नी।

बल्ल वल्ल् + अल् + ताड् : १ स्त्री, अन्तना २ पत्नी
३ भयः अनन्त ५ मृग्य ६ बल्ल स्त्रीः ७ बल्ल
मातृ० स्त्रीः श्वरस्त्रेय जन्मवेसा प्रियवता यथ
नयय इगः श्विकम० ४१२५।

बल्लि [वल्ल + इत्] अधीनता २ सम्मर्शन, अन्त-
मर्शन (नपु०) वल्लता।

बल्लिक (वि०) [वल्ल + इत्] मृग्य, रहित, - का अन्त
की लकड़ी।

बल्लित (वि०) (स्त्री०-बी) [वल्ल बल्लय्य इत्]
१ शक्तिशाली २ नियन्त्रण में, वशीभूत, अधीन,
विनीत : प्रियमे आनी विपदबालनाओं पर विजय
प्राप्त करती है, विनेन्द्रिय (सम्रा शब्द की भाँति
भो प्रयुक्त) रम् ० ३१००, ८१०० ११११, शा०
५१०८।

बल्लिनी [वल्लिन् + डोर्] शायंश जैदी का पेड़।

बल्लिर [वल्ल् + किरच्] एक प्रकार की मिर्च, - रम् समुद्रो-
नगर।

बल्लिष्ट दे० बल्लिष्ठ।

बल्ल (वि०) [वल्ल् + वत्] १ वल्ल में होने के योग्य,
नियन्त्रणीय, शासित होने के योग्य - आरम्भवेदवि-
धेयाम्ना प्रयादमघिगच्छति-भग० २१६४ २ वशीभूत,
विनीत, मत्ता हुआ, विनीत - भग० ६१२६ ३ प्रभाव
या नियन्त्रण में, अधीन, आधित, आज्ञाकारी - नयय
पुत्रा भवेद्वय सम्पदो धार्मिक सुधी, हि० प्र० १८,
(पार सपास में) (मन) हुई अङ्गयाध्य समधि-
वरम् कु० ३१५०, - इयः सबह आधित, - इया
जिनसा वा आज्ञाकारिणी पत्नी य वल्लयामिष देवी
वाक्यवेदान्तवर्तने उत्तर० ११० (जिसका आषा पर
पुरा पाठ्याय है), इयम् लीग।

बल्लका [वल्ल + कन्, टाप्] दे० 'बल्लका'।

बल्ल (स्त्री० पर० बल्लि) शांत पहुँचाना, चोट मारना,
बल्ल करना।

बल्लद् (अवा०) [बल्ल, टपटि] किसी देवता की आहुति
देने समय उच्चारण किया जाने वाला मन्त्र (देवता
के लिए मन्त्र के साथ) इन्द्राय बल्लद् पूर्यो नयद्

बेष ३८ ३ उपयोग करना, ले जाना भट्टि०
१४२३, इच्छा० (विवाहति से) ले जाने की इच्छा
करना, बति, गुजारना, (समय) बिताना, मुख्य
कम से प्रेर०, मा० ६।१३, रघु० १।३०, अथ०, १ हाक
कर दूर भगा देना ठठाना, दूर ले जाना रघु० १।३।
२२, १६।६ २ छोड़ना, त्यागना, तिलांजलि देना
रघु० १।१२५ ३ वताना, व्यवकलन करना, आ-

१ पूरा तरह समझा देना २ जन्म देना पंदा करना
प्रयत्न होना या मुकना द्रोणमावहति य म मप्रति
रघु० १।१३३, श० ३।६ ३ बहन करना, कन्य में
करना रखना चौर० १८ ४ बहना ५ प्रयाग
करना उपयोग करना (प्र०) (देवता का) आवाहन
करना उद् । विवाह करना पाणिनीयमुद्रबहु
द्रष्टव्य रघु० १।१० वनु० ३।८ भट्टि० २।०८
२ ऊपर उठाना उन्नत होना ३ ममालना जीवित
रखना, द्रव्य उठाना, महारा देना -रघु० १६।६०
४ भूगतना अनुभव करना ५ बोधकार में करना,
रखना, पहनना, धारण करना, कु० १।१९, विक्रम०
४।४२ ६ समाप्त करना, पूरा करना, उप
१ निकट लाना २ उपक्रम करना आरम्भ करना
भि—, सभाके रखना, जीवित रखना, महारा देना
बेदानुद्धरे जयप्रियवहते गीत० १, निष्—, १ समाप्त
होना २ अवलंबित होना, की महात्मा से निबोध
करना (प्रे०) समाप्ति तक ले जाना, पूरा करना,
समाप्त करना प्रबोध करना श० ३ परि, छल
करना, प्र, बहुत बाना ले जाना लीचने रत्ना
२ बह, ले जाना, ले जाना बहुत करने जाया—भट्टि०
८।५२ ३ महारा देना (भार) बहन बाना
४ बहना ५ ललना ६ रखना अधिकार में करना
संशे करना या महसूस करना, दि विग्रह करना
सम्, १ ले जाना धारण किये प्रा० २ सम्पत्ता
रखना दे० प्रेर० ३ विवाह करना डिल्ला प्रदर्शित
करना प्रस्तुत करना (प्रे०) ममालना, या मालिश
करना श० ३।२१।

बहः [बह् + कर्त्तृि अच्] १ बहन करने वाला, ले जाने
वाला, महारा देने वाला २ बेल के फरे ३ सवारा
वाल ४ विशेष करके बोझा हुआ, वायु ६ मार्ग
सड़क ७ नद, नाला ८ चार दोण की माप ।

बहलः [बह् + अतच्] १ यात्री २ बेल ।

बहलीः [बह् + बलिः] १ बेल २ हवा, वायु ३ मित्र,
पराजयदाता, सहायकार ।

बहली, बहा [बहात + ऊप्, बह + टाप्] नदी, सरिता ।

बहलुः [बह् + लृप्] बेल ।

बहलुच् [बह् + लृट्] १ ले जाना, धारण करना होना
२ सहारा देना ३ बहना ४ गाड़ी, यान ५ नाव, गोली ।

बहुतः [बह् + अच्] १ वायु २ शिष्ट ।

बहुल (वि०) दे० बहुल' ।

बहिवन्, बहिवक्त्र बहिवी [बह् + इन्, बहिव् + कन्
वह् + इति + डाप्] गोली बेहा, नाव किस्ती, -प्रत्य
वन्धवयत किमपि बहिवक्त्र-दण०, प्रलय पयोधिवजे
धृतवान्ति वेद बिहिनबहिवक्त्रविरिमल्लेवम्—गीत० १ ।

बहिस् दे० बहिस् ।

बहिष्क (वि०) [बहिम् + कन्] बाहरी, बाह्यपत्रसंबधी ।

बहेदक (पु०) बहेदे का पद, विभीनक का वृक्ष ।

बह्ति [बह् - नि १ अग्नि] आग्ने पतितो बह्ति स्वयमे-
वोपशान्ति मुभा० २ पाचनशक्ति, आमास्य का
रस ३ हाडमा भ्रम लगना १. यान् । सम० क
(वि०) अल्लसहक २ पाचनशक्ति को उद्दीप्त
करने वाला सुचारुवर्क,—काष्ठम् एक प्रकार की
अमर को चढी गाव चुर, लोहान, गर्भ १ बाम
२ दायी या जैदी का वृक्ष, नु० अग्निमथ, वीपका
कुसुम का पेठ वीप्यम् बी -विच हवा, वायु
रेतस् (पु०) शिव का विसर्पण,—लोहम्, लोहम्
नाव बह्यम् काल रग का कुमुद, रक्तोत्पल
बल्लभ गाल वीर्यम् १ सोता २ चना—विश्वम्
१ कंसर २ कुसुम, सख हवा सखकः विश्वम् ।

बाह्यम् [बह् + यत्] १ गाड़ी २ यान, सवारी—हृत् एक
मुनि की पत्नी ।

बह्लिक, बह्लिक दे० बह्लिक, बह्लिक' ।

बा (अव्य०) [बा + विधत्] १ विकल्प बोधक अव्यय, या
परतु सन्तुन में इसकी 'बति निष्ठ है, या तो यह
प्रत्येक शब्द या उक्ति के साथ प्रयुक्त होता है, अथवा
अन्तिम के साथ परन्तु यह वाक्य के आरम्भ में तथा
प्रयुक्त नहीं जाता तु 'बा २ इसके निम्नांकित अर्थ
हैं (क) और भा गायुर्वा दहने वा-गण०, अन्ति
ले भाना स्मरति वा तानम् उत्तर० ४, (ख) के
समान जैसा जाना मन्वे तुहिनमयिता पथिनी
वाग्यरूपाम्—मथ० ८३ मयी बोधस्य लभते
मिह० कूटा गवैत वातिरपितबलो दुर्घोषतो वा
शिला मुच्छ० ५।६ मालवि० ५।१२, शि० ३।६३,
४।३५ ३।६५ कि० ३।१३ (ग) विकल्प

से (इस अर्थ में बहुधा इसका प्रयोग व्याकरण
के नियमों में जैसा कि पाणिनि के सूत्र—होता है)
बोको बी वा बिलविरामे ५० ६।५।१० ९१
(१), समाववा (इस अर्थ में वा बहुधा प्रत्ययवाक
सर्वनाम और उसपर व्युत्पन्न ह्व नाम' जैसे शब्दों
के नाम जोड़ दिया जाता है तथा 'सम्बन्ध वा
'कदाचित्' वाक्यों में उसे अनुरित किया जाता है
कस्य वामन्स्य बहति यया स्वातन्त्र्यम् का०,
परिवर्तित्वि सत्तारे मृत की वा न जावते—पथ०

१।२७, (८) कभी कभी केवल पादपूर्ति के लिए ही प्रयुक्त होता है ३ जब वा की पुनर्लब्धि की जाती है तो इसका अर्थ होता है या-या मा वा शमोस्त वीया वा मुनिर्मलमपी मम कु० २।६० तत्र परिश्रमानुरोधाद्वा उदात्तकयावन्मुनीरवाहा नवतन्त्रक दर्शनकुसुमह्लाद्वा भवतिरुच्यमान रीयमान प्राथम्य विकन० १, (अवस्था या कुछ-कुछ अवस्था दे० 'अव' के नीचे न वा नत्री, न तो न यदि वा अगर अवस्था, कि वा कि क्या, आया कि आदि।

धा (धा० अदा० पर० धानि वात यं वान्) १ हवा का चलना वाता वाता दिशि दिशि न वा सन्तथा सदाभिन्ना - वेणी० ३।६ विषा प्रसदुर्भवा वव् मुवा - रघु० ३।१४, मेघ० ४२, अट्टि० ७।१ ८।६१ २ वाना, हिलना-चलना ३ प्रहार करना खाट पकवाना, सतिष्ठन्त करना प्रेर० (वापयति - त) १ हवा चलवाना २ वाजयति से चलना आ, हवा का चलना - बड़ा बड़ा भित्तिवाकाममुष्मिन्नावा नावाभाताग्विवा निहन्ति - कि० ५।३९, अट्टि० १४।१७, निम् - १ खिलना २ ठहा होना, साम्प होना, (वाक० त्वे जी) वपुर्वलाशीवर्तने निर्बो - सि० १।६५ त्वयि वृष्ट एव तस्या निर्वाति मना यनोभवव्यलिते सुभा० ३ फूट मारना, वृक्षना, निप्रम होना - निर्वाणदीपे रिम् न न दानम्, निर्वाणमृष्टि-मवास्थ वीर्यं नपुंसकतीव यपुर्गुणेन कु० ३।५२, सि० १४।८५, (प्रेर०) १ फूट मारना, वृक्षना २ घात करना, घसीं डूर करना, सौत्र करना - रत्न० ३।११ रघु० ११।५६ ३ गिहाना, सामन्तना वेना, आगम पहुँचाना रघु० १२।६३, च वि हवा का चलना - वायुविशति हृदसि त्ररप्रगणाम् - रघु० ६।२३।

वाक (वि०) (स्त्री० ली०) 'वस - अच्' वास का बना हुआ, की वसलाचन।

वाक्किन् [वाक् + ठक्] १ वास काटने वाला २ वायु की बजाने वाला, वायुगिरि।

वाक्क् [वाक् + वच्] सारसों का समूह या उडान।

वाक्कु दे० 'वाकुट'।

वाक्क [वाक् + कच्, वत्स्य क] १. वक्ता वचन, वक्तव्य, उक्ति वचन मूल्य से वाक्क 'मेरे वचन सुनीं, वाक्क ने सतिष्ठते 'वाक्का वाक्क नहीं करना है' - सि० २।२४ २ वात, उपवाक्य (किसी विचार का पूर्वावधारण) - वाक्य स्वाद्योग्यनाकांक्षाप्रतिपक्षक शीघ्रवाच - वा० व० १, वीर्यादीं च भवेदापये क्षमासे सतिष्ठे तथा - काश्य १० ३ तर्क, अनुमान (तर्क में) ४ विधि, नियम, मूल। तब० - अर्कः कल्प का तर्क, 'उक्तवा दन्ती के अनुसार उपमा का

एक भेद दे० काव्या० २।४३ आकाश-वातालाप, वातवीत प्रवचन 'अवचन' किसी उक्ति या तर्क का निराकरण प्रतीक्य भूतार्थ द्वारा रचिन एक पुस्तक का नाम - पद्धति (स्त्री०) वाक्य बनाने की रीति, वाक्यविन्यास, अन्वयशैली - प्रबंध १ पुस्तक सबड रचना २ वाक्य प्रवाह, प्रयोग वक्ता का काम में लाना भाषा का उपयोग, भेद भिन्न उक्ति विधि वक्तव्य मूला० ७ रचना, विन्यास वाक्य में शब्दों का क्रम राज्य योजना, वाक्यरचनाविचार, शेष १ किसी वात का अवशिष्ट भाग पूरा न किया गया या अपूर्ण वाक्य सदाशब्दका इव त वाक्य शेष विक्रय० ३ २ न्यून पद वाक्य।

वाग्वर [वाक्का इयति गच्छति वाक् + ऋ - अच्] १ ऋषि मुनि पुण्यात्मा २ विद्वान् वाक्का विद्याधी ३ क्षत्र वीर मूरमा ४ मान मिर्ली ५ वाक्का वक्ताव ६ निर्विचि ७ वक्ताव ८ भेदिया।

वागा (स्त्री०) नगम।

वागुरा [वा हिमने उरच् गन् च] बटकेदार पित्रहा, जाल, पाश, फन्दा, जालीदार फन्दा की वा दुर्जन-वागुराम् 'नित शोभेय यान पुमान्' - रघु० १।१५६। मय० वृत्ति-अगली जानने को पकड़ कर प्राप्त हान वाणी भावीशिका (- ति) बहुलिया, गिकारी। वागुरिक [व गुरा - ठक्] बहुलिया, गिकारी, हरिज पकड़ने वाला रघु० १।५३।

वागिमन् (वि०) [वाक् अस्म्यर्थे गिमि वत्स्य क] १ वाक्पटु, वाक्चतुर २ वागुरी ३ वाक्कास्त्रपूर्ण शस्त्रधारण पु० १ प्रवक्ता सुवक्ता - अतिशोध्य कार्यस्य वाक्जाल वागिमनो वृथा सि० २।७७, १०९ कि० १।६९, पञ्च० ६।८९ २ वृत्त्यर्थ का नाम।

वाक्च (वि०) [वाक् यच्छति - यच् - ड] १ वक्ता बोल्ने वाला, वित्तवापी २ सत्य बोलने वाला, स्व. विनय, वक्ता।

वाक्क (पु०) समुद्र।

वाक्क (धा० पर० वाक्कति) अभिवादा करना, इच्छा करना।

वाक्क्य (वि०) (स्त्री०-पी०) [वाक् + यच्] १ वाक्को से युक्त रघु० ३।७८ २ वाक्की वा वक्ता से मन्त्र्य राजने वाला - मनु० १२।९, वज्र० १७।१५ ३ वाक्की से युक्त ४ वाक्पटु अन्वयार्थपूर्ण, वाक्चिदम्ब - वक् १ वाक्की भाषा - म्वास्तत्रप्रवृत्तिरेतिप्रवृत्तिरक्षरै मयस्य वाक्क्यस्य ध्यात्वा व्रीकोक्तविष विवक्षुना - ऊन० १ कु० ७।० सि० २।७३ ५ वाक्किना ३ वाक्क-कारिण, जी मन्त्रवी देवी।

वाक् (स्त्री०) [वक् + किवच् वीर्यामप्रकाश च] १ वक्ता, सज्ज, पदावली (विप० अर्थ) वाक्चार्थि

लघुवर्ती बाधर्षप्रतिपत्तये - रघु० १।१ २ वचन, बात, भाषा, बाणी-बाधि पुण्यापुण्यहेतव मा० ६, लोचि कानां हि साधुनायर्ष बाधनुवर्तते, कथीया पुनरा-
क्षानां बाधमर्षज्जिबाधति उत्तर० १।१०, विनिर्दिष्ट-
नाशीमिति बाधमादे कि० १।१०, 'यह वचन कहै',
निर्माकित कहा' १।४०, रघु० १।५९, वि० २।१३,
२३, कु० २।३ ३ बाधी, शब्द अक्षरीरणी बाध-
धरम्-उत्तर० २, मनुष्यवाचा - रघु० ३।५३ ३ उक्ति,
वक्तव्य ५ भरावा, प्रतिज्ञा ६ पदोपपन्न, कथावत,
लोकोक्ति ७ विद्या की दृष्टी सम्बन्धी। मय० अर्थः
(बाधर्ष) शब्द और उसका अर्थ - रघु० १।१, ३०
६०, - बाधम्बरः (बाधाढम्बर) दण्डाढम्बर, बाधशाल,
-बाधस्थ (बाध-स्थ) (वि०) दण्डो से युक्त
उत्तर० २, ईश. (बाधाध) १ सुवक्ता बाधरुट्
२ देवनाओं के लक्ष बुद्धयुक्ति का विशेषण ३ दण्डा
का विशेषण कु० २।३, (-क्षा) मन्त्रवक्ता का नाम,
-ईश्वरः (बाधीश्वर) १ सुवक्ता, बाधरुट् २ दण्डा
का विशेषण, (-यी) बाधी की देवता सम्बन्धी देवी,
-शब्दकः (बाधुपध) बोलने में प्रयुक्त, बाधपट्ट वा
विज्ञान पुष्प, कलः (बाधकलह) लड़ावा, उत्पात,
-कीरः (बाधकीर) कर्त्ता का भाई, -बुधः
(बाधुध) एक प्रकार का पक्षी, -बुद्धिः, -बुद्धिकः
(बाधुद्धि बाधि) राजा का पाददान-बाधक-नु०
'तामुक्ककर बाधिन्', -बुद्धि (वि०) (बाधकपाल)
बुद्ध्यात् करने वाला, निरर्थक और अवलोक्य वाले करने
वाला, बाधकम् (बाधकाल्पयम्) निर्बन्धक वाला,
बधवास, बधवा, बलम् (बाधकलम्) बलों के द्वारा
बेईशानी, टालवट्ट उत्तर, बाधमाल-यद्वा० १, -बालम्
(बाधबालम्) दण्डाढम्बरपूर्व अमार वाले वि०
२।२७, बंधक (बाधक) १ निस्तार उक्ति
२ बंधे बोल, बंध (बाधक) १ भर्त्सनापूर्ण वचन,
घट-घटकार, जिह्वी २ बोलने पर निबन्धन, बन्धों
वा बन्धों पर राक -नु० बिहड, बन्ध (बाधत्त)
(वि०) प्रतिज्ञात, लब्ध, जिह्वी मवाई हा बंधी
हो, (सा) बंधक वा बंधाई हुई कथा, दंडि
(बाधगि) (वि०) बन्धों में दंडि बर्त्सित कथ
बोलने वाला, बलम् (बाधकम्) बन्ध-बलम्
(बाधानु) मवाई, बुद्ध (बाधुद्धि) (वि०) १ वाली
देने वाला, बधजवा, अक्षरीरवादी २ व्याकरण
की दृष्टि से जटुड भाषा बोलने वाला, (कः)
१. विवक्ष २. बहु बाधुध चितका उपलव्यलक्षकार
ठीक मकर पर न हुआ हो, -बेवत्ता, -देवी (बाधेवता,
बाधेदी) बाधी की देवता सम्बन्धी देवी बाधेवता-
२।० तांमुक्कवाधते - वा० ६० १, -बोधः (बाधोप)
१. (अक्षरकर) शब्द का उच्चारण बाधोपवा

मदभा हन हि० ३ २ अक्षरार्थ, मानहानि
३ व्याकरण की दृष्टि से जटुड भाषण, -निबन्धन
(बाधिवचन) (वि०) वचनों पर आश्रित रहने
वाला, निबन्धनः (बाधिवचन) मूह के वचन से
मयनी, विवाह-सन्धिवा, निबन्ध (बाधिवन्ध) (बपने
वचनो या प्रतिज्ञा) के प्रति भक्ति वा धडा, ऋ
(वि०) (बाधपट्ट) बोलने में कुशल, बाधधरुट्,
वति (वि०) (बाधरति) बाधधरुट्, अक्षर-
युक्त, (तिः) बुद्धयुक्ति का नाम (इस अर्थ में 'बाधता
पति का भी प्रयोग होता है) -बाधकम् (बाधक-
मयम्) १ भाषा की कर्त्तृता २ शब्दों द्वारा
अपमान आशङ्कयुक्त भाषा, बाधहानि, प्रबोधकम्
(बाधप्रबोधकम्) वचनों में अतिव्यक्त विद्या तथा
बाधन, प्रबोधः (बाधप्रबोध) वचनों द्वारा उकसाना,
भडकाने वाली या उपलक्ष्ययुक्त भाषा, -प्रबोधकः
(बाधप्रबोध) बाधिता, -बलम् (बाधबलम्)
भाषण बंद करना, धूप करना मय० १३, -बन्ध
(हि० व०-बाधबन्धो-बैदिक भाषा में) बाधी और
मन, -बाधम् (बाधभाषम्) केवल वचन, -बुद्धम्
(बाधबुद्धम्) किसी वस्तुता का कारण वा प्रस्तावना,
बाधुध, बुधिका, -कल (वि०) (बाधकल) जिसने
अपनी बाधी को निबन्धित कर लिया है वा दमन
कर लिया है, बोनी, -कलः (बाधकलः) जिसने अपनी
बाली का निबन्धित कर लिया है, बुनि, बुधि, -कलः
(बाधकल) मूक पुत्र, बुद्ध (बाधुद्ध) बलों
की लड़ाई, बरमाधरव बाधिविवाद वा चर्चा, विवादा-
ल्लव विषय, बलः (बाधकल) १. कठोर (बल
की भाँति) सभ्य बहूँ बाधको बाधक-उत्तर० १
२. कठोर भाषा, -विषय (बाधिविषयः) (वि०)
बोलने में कुशल (या) मधुभाषिणी और बनेह-
निष्ठी, विषयः (बाधिविषय) बलों का बहार,
बन्धनशक्ति, भाषा पर आधिपत्य-वा० १।२९,
रघु० १।१२, -विषयः (बाधिविषयः) ललित वा
शोचक भाषा, -बन्धुहारः (बाधबन्धुहार) मौखिक
विचारविमर्श - प्रबोधप्रधान हि माधुष्यात् विषय
बाधबन्धुहारेण भाषवि० १, बलः (बाधकल)
बलों का ह्रास, बन्धुहारः (बाधुभाषार) १ बोलने
की रीति २ बाधकदेवी वा कल्यात, बन्धनः (बाध-
लवन्) भाषण वा बोलने पर निबन्धन

बाधः [बन् + बाध + अच्] १. एक प्रकार की मछली
२. बदन नाम का पौधा।

बाधकम् (वि०) [बाधो बाधयाम् बन्धति विरचति-बाध्
+ बन् + लृच् वि० बन्] जिह्वा की रोकने वाला,
पूर्व निस्तम्बता रखने वाला, धूप रहने वाला, बोनी,
म्यल्यवादी - उपलक्षिता देवी लडावबनो बन्-विषय०

बातकिन् (वि०) (स्त्री०-नी) [बातोऽतिवायिनीऽस्ति
कस्य वात + इति, कृष्] गठिया रोग में दस्त ।

बातपक्वः [बातमभिपक्षीकृत्य २ अनि गच्छति—वात + क्त्वा
+ पक्व, भृग्] तेज बीजों के बाह्य क्षरण ।

बातर (वि०) [वात + र + क] 1 लूकानी संज्ञाय 2
तेज, धृक् । मय०—प्रवक्तः 1 बाण 2 बाण की
उड़ान, तीर के लक्ष्य तक पहुँचने की दूरी, गणराय
3. बोनी, शिखर 4 प्राण 5 पाण्ड्य या नसे में
उत्पन्न पुत्र 6 मिठला 7 मरल वृक्ष, बीज का
वेड ।

बातल (वि०) (स्त्री०-ली) [वान् रागवेदं कति ला
+ क] 1 लूकानी संज्ञाय 2 हवा से कूला हुआ
—कः 1 बावू 2 बला ।

बातकिः (पुं०) एक राक्षस का नाम जिसको अगस्त्य ने
काट कर पचा लिया । मय० हिं० (पुं०),—सूचक,
—हन् (पुं०) अगस्त्य के विशेषक ।

बातिः [वा + भिच्] 1 बुरै 2 बावू, हवा 3 चन्दमा ।
मय०—मः,—वक्तः ईश्वर 'बातिपण' सङ्ग भी इती
मयें में प्रवृत्त होता है ।

बातिक (वि०) (स्त्री०-की) [वातावाक्य + ठक्]
1 लूकानी, हवाई, संज्ञाय 2 गठिवाय, लक्ष्मिवात
के पीड़ित 3. पायल,—कः बावू की चिह्नक वस्तुवा में
उत्पन्न वर ।

बातीव (वि०) [वात + उ] हवादार,—कः वात का
वाह ।

बावुल (वि०) [वात + उल्लप्] 1 बावू रोग से दस्त,
गठिया पीड़ित 2 पायल, वायुकोन के कारण
जिह्वी वृद्ध ठिकाने नहीं—हिं० २१२६,—कः
वैद्य ।

बावुलिः [वा + उलि, मुद्] बड़ा चमकीला ।

बावुल (वि०) [वात + उल्लप्] दे० 'बावुल' ।

बावू (पुं०) [वा + नृप्] हवा, बावू ।

बावुल [वातावा नृद् वन्] लूकान, अण्ड, रैवर,
लूकान या संज्ञाय बावू 'बावुलि' पक्षीकृता वत
विषयभङ्गादयो दुग्ध भाति ११२१, ग्नु० १११
१६, हिं० ५१३९, बेनी० २१२१ ।

बावुलम् [वात + वृज्] बड़ों का समूह ।

बावुलम् [वातकस्य भावः पञ्च] 1: (अपने वक्त्रों
के प्रति) स्नेह, वक्तव्य भुक्त्यारण्य—न पुत्रवास्तव्य-
व्यापकित्वा—कु० ५१३९, पतिवास्तव्यान्—ग्नु०
१५१८, इसी प्रकार 'बावुलि' प्रजां गण्वावन् प्राति
३ वायुवार का धारावा ।

बातिक—ली (स्त्री०) बृह स्त्री की बाह्य द्वारा उत्पन्न
पुत्री ।

बावुलम् [वक्तव्य को वात + वृज् + वृज् + कक]

1 कामधूय (रतिवाक्य पर लिखा गया एक वक्त्र) के
प्रयोग 2 व्यापक्य पर किये गये भाव्य के प्रयोग ।

बावू [वद् + वृज्] 1 वान् कर्मा बोधना 3 वायु,
वक्त्र, वात सामवादा मर्कपस्य मय प्रत्युत दीपका

— हिं० २१५५, इसी प्रकार 'दीपवधा' गीत० ८,
माव्यवाद आदि 3 वक्तव्य, उक्ति आदि—अवाक्य-

वादीवध गृह्य ब्रह्मणि नव विना—मय० २१२९

4 वर्णन, वृत्त—वाकुलवादीनां गणवादान् मा०

३१३ 5 विचार विमर्श विचार, वादविवाद नर्क

विमर्श वाद वादे जायते तत्त्वबाध मु० १०, मोमा

मय० ८१२५ 6 उत्तर 7 विपत्ति, व्याख्या

९ प्रवृत्ति उपसहार, विद्यालय रूप इत्यादी पर

गान्धारवाह विगणानि गारी० (नवा पुष्पक

के अन्य विभिन्न स्थलों पर) ५ ध्वनन, ध्वनि

10 विवाह, अकवाह 11 (विप में) अभिवाद्य

नामिका । मय०—अनुवादी (पुं० हिं० व०)

1 उक्ति और उत्तर, अभिवाद्य तथा उक्ता उत्तर,

वादीपय तथा उक्ता वधाव 2 वादविवाद,

वात्सर्वा,—कः,—कुत्त (वि०) विवाद करने वाला,

—वक्त (वि०) विवादालाद विवादवस्तु—वाद-

वस्तुविवाद विवाद, वक्त (वि०) वक्तव्यविगत उत्तर

देने में निपुण, वादविवाद, प्रविवाह वात्सर्वा,

—मुक्त विवाद, नर्कविमर्श, विवादः नर्कविमर्श,

विचारविमर्श, वाक्प्रतिपत्ति ।

बावक [वद् + वृज् + वृज्] बजाने वाला ।

बावकम् [वद् + वृज् + वृज्] 1 ध्वनि कर्मा 2 वाता

वायव्यम् ।

बावर (वि०) (स्त्री०-री) [वधरावा कार्यम्वा विचार

वाधरा + वृज्] कपाल में वृत्त या कपाल में विधित,

— वा कपाल का पीसा, रत्न मूर्ती कपडा ।

बावरकः [बावर + गम् + वृज्] वृत्त का वेड,

वृत्त का वृत्त ।

बावरकम् दे० 'बावरकम्' ।

बावत्तः वात—का [क, वृत्ता] अर्थन वक्तव्य ।

बावि (वि०) [वादवि विवक्तमुक्तावायव्य + वद् + वृज्

+ वृज्] विद्वान् विद्वान्, कृतम् ।

बावित (पुं० व० क०) [वद् + वृज् + वृज्] 1 उच्छ्रित

कर्मा वधा, वृत्तवादा तथा 2 वजाया वधा ध्वनि

किया गया ।

बाविचम् [वद् + वृज्] 1 वाक्त्र नै० २०२२ 2 कर्त्तव्य ।

बाविन् (वि०) [वद् + वृज्] 1 वक्तव्य वाला, वार्त्त

कर्मा वाक्त्र प्रवक्तव्य कर्मा 2 वृत्तवादेक कर्त्तव्य

वाक्त्र 3 नर्क विवक्त करने वाला, विवक्त मूढा०

५१३०, ग्नु० १०१० 3 वाधारावा करने वाला

विवाधना 4 वाधारावा वाधाराव ।

बाधित. (१०) विद्वान् पुण्य, आदि विद्याधरनी ।

बाधित [बध + णिच् + यत्] १ बाधा २ बाधे की धारि
रम् ० ११६४, (बाधयन्ति मन्त्रिन्) । मय० बरः
समीपतः बाधयन् १ बाधा का मयूह बाध यत्रो का
देर २ मयन आदि बाध ।

बाध्, बाध, बाधक, बाधन-ना, बाधा रे० 'बाध् बाध,
बाधना-ना, बाधा ।

बाधु (बु) वयम् [बध् (ध) + डन् कृक] विनाश ।

बाधोक्तः [बाधोक्तम् पृष्ठा०] वैदा ।

बाध (बि०) [बन् + अण्] १ विनाश, २ (हवा से)
मूला हुआ, शूक ३ जगता मय ३ मूला फल
(५० भी) ४ (हवा का) चलना ३ बीना
४ मुकुता, हिलना-चलना ५ मय इत्या, कृदाबु
६ बुधा का ७ इत्या मयूट ७ बुना ५ तिनको म
बनी बाधा ९ बर की दीवार में छिद्र ।

बाधप्रश्नः [बन् वनमय प्रतिष्ठान स्था + क] १ अपने
प्राथम्य जीवन के माले प्राथम्य में प्रविष्ट बाधुण
२ वैराग्य, मयू ३ मयूक वृक्ष ४ पलाश वृक्ष बाध ।

बाधर [बाध वनमय प्रतिष्ठान स्था + क] १ अपने
प्राथम्य जीवन के माले प्राथम्य में प्रविष्ट बाधुण
२ वैराग्य, मयू ३ मयूक वृक्ष ४ पलाश वृक्ष बाध ।

बाधल. [बाध वनमय प्रतिष्ठान स्था + क] तुलसी
का पोथा (काशी मुसली) ।

बाधलक्यः [बन् वनमय प्रतिष्ठान स्था + क] वन वृक्ष जिसका मय
उसकी मयरी से उत्पन्न होता है, उदा० आन का पंथ ।

बाधा [बाध + टाप्] बटेर, बधा ।

बाधावु [बन् वनमय प्रतिष्ठान स्था + क] भारत के उत्तर-पश्चिम में
स्थित देश । मय० —कः बन्धा घोडा अर्थात् बन्धा
देश में उत्पन्न घोडा ।

बाधीर [बन् + ईरन् + अण्] एक प्रकार का वेन-स्वराम
बाधीरमयूह मय ० १३३५, मय० ६१ मा०
११२५ मय० १६३०, १६४१ ।

बाधीरक [बाधीर + कन्] मय नामक बाध, एक प्रकार
का नह ।

बाधेय [बन् + इडा] एक मुगधित घाम, घोधा ।

बाधेय [बन् + क० क०] [बध् + कन्] १ के की मई, बुका
मया २ उवला गया, प्रविष्ट, उडला हुआ । मय०
—अडः कुला ।

बाधित (स्त्री०) [बध् + क्तिन्] १ वन २ प्रक्षेप, उपाय ।
मय० कृन् व वन करने वाला ।

बाध्या [बन् + यन् + टाप्] उवला या उवला वा समूह ।

बाध [बन् + चञ्] १ बाध बाधा २ बुना ३ क्षौरक
करना, बाल मड़ना मय० १११०८ । मय० —इच्छा
बनाई का करपा ।

बाधय [बध् + णिच् + यत्] १ बुना २ मयन, क्षीर ।

बाधित (म० क० क०) [बध् + णिच् + कन्] १. बुना हुआ
२ मड़ा हुआ ।

बाधि, —पी (स्त्री०) [बध् + इडा वा डीप्] कुआँ नाबरी
पानी का विस्तृत आगनाकार जलाशय बापी
बाधिमयकनशिलावृद्धमय मयणी मेघ ० १६ ।
मय० ह. बाधक पक्ष ।

बाध (वि०) [बन् + क० क०] १. बाधा (वि.
राम) विनाशक शक्तिमयनेन मयात्र तद्विनाशक-
नेत्रा-रम् ० ३१/ मय ० १६ २ बाई आर म्बित
या विद्वान्-बाध ० ७ नतीत मयूर वामकम्मे यथा
—मय ० 'बाधेय किय प्रियेयण के रूप में इमी अर्थ
का प्रयत्न करता है' यत् बाधनम् नमस्वरम्
मयनः मयतिना सेवने काव्य० १० ३ (क)
रमटा, विरुद्ध विरोधी विपरीत, प्रतिकूल तद्वत्
कामस्य बाधा गति नील० १० मा० ११८, अदि०
१११७ (ख) विरुद्ध-कार्य करने वाला, विपरीत प्रकृति
का म० १११८ (ग) कुटिल, बकस्युति दुर्गबही,
हठी, म० १६ ४. दुष्ट दुर्जन अथवा नीच कर्मात्मा
१० १११२५ ५ त्रिद मुष्टर नावकमय जेता कि
'बामलाचना', क १ मयोज प्राणी, जन्म २ विरु
३ प्रेम का रचना कायवेद ४ मय ५ जोड़ी, ऐन
राम की क्षणी, —बन् वनमय, बाधराम । मय०
—बाधार, —बाधः ताविक मय में प्रतिपादित बन्-
प्राप्तपद्धति, बाधः सब जिसका बुनाय दाई मोर है
बाई मोर का मया हो. —उध, ऊध (स्त्री०) कुष्ट
अथवा वाली स्त्री, वृक्ष (स्त्री) (मनीहर जोड़ी से
यक) स्त्री, —वेकः १. मय का बाध २. विरु का
नाम, —लोचना मनेहर जोड़ीवाली स्त्री-विष्णुप्राप्त
जयिनीस्ता मये गमलोचनाः —काव्य० १०, रम् ०
१११३, जील (वि०) कुटिल या बक प्रकृति का
(क) कामवेद का विषय ।

बाधक (वि०) [बाध + कन्] १ बाधा २ विपरीत,
विरुद्ध मा० ११८ (वही दोनो बाधे अतिवृत्त है) ।

बाधक्य (वि०) [बन् + णिच् + यत्] १ (क) कद में
छाटा, ठिपना, बीना कलामय मय ० १३१२
(ख) (जन्) स्वरूप हृत्त घोडा, लवाई में कय —
बाधमयवरिष वीरभावनम् मय० ११५१ कय कय
तामि (विनामि) क बाधमान-म० ०२५७ २ विनाम,
मय —लि० ३३१२ ३. दुष्ट नीच, जोडा. —क
बीना, ठिपना —प्राप्तमय कमे लोभाद्वत्तावृत्ति
काम रम् ० १३, १०६० २ विष्णु का पाँचवा
अवतार जब उन्होंने बलि राजा का विनाम करने के
लिए बीने के रूप में जन्म लिया, (दे० बलि) —कलमति
विषयमे बलिमय वनमय वनमयवीरमयिजयमयमय

केशव भूतबामनरूप जय जगदीश हरे गीत० १
 3 दक्षिण दिशा का दिकपाल हाथी 4 पाणिनि के
 मूत्रो पर वाणिकावृत्ति नामक भाष्य के प्रणेत
 5 अकोट नामक वृक्ष । सम० आकृति (वि०)
 ठिंगना, पुराणम् अठारह पुराणों में से एक पुराण ।
 धामनिका धामनी + कन् + टाप् ह्रस्व । ठिंगनी स्त्री
 धामनी [धामन - डोप] 1 बीना स्त्री 2 धाड़ो 3 एक
 स्त्रीविशेष ।
 धामनूर [धाम + नू + रक्] बाबो बीमका डार बहाया
 गया मिट्टी का डेर ।
 धाया [धामति लोट् + यम् + अण + टाप्] 1 स्त्री
 2 मनाहारिणी स्त्री - नामि० ४१३९ ६० 3 गौरी
 4 लक्ष्मी 5 मरुत्पती ।
 धामिल (वि०) [धाम - इलच्] 1 सुन्दर मनःहर
 2 चमडी, अहंकारी 3 बालक कपटपूज ।
 धाली [धाम + डीष्] 1 बोरी - अथोद्दुवामीमतवाहृपायं
 रघु० ५१३२ 2 गधी 3 हथिनी 4 मीरहा ।
 धाव [धे + घञ्] बुनना सीना । सम० - बड़ जुलाहे का
 करवा ।
 धावक [धे + घञ्] 1 जुलाहा 2 दर समुच्चय सवह ।
 धावनम्, धावनकम् [धे + णिच् + न्यृच् धावन + कन्]
 नैवेद्य, उत्सव के अवसर पर किसी देवता या इन्द्राय
 को दिया गया मिष्टान्न उपवास रचना आदि ।
 धाव्य (वि०) (स्त्री - बी) [धावु + ञच्] धावु से
 सबड का प्राप्त 2 हवाई ।
 धाव्यहीन, धाव्यहीन (वि०) [धावु + छ यत् वा] हवा से
 सम्बन्ध रखने वाला हवाई । सम० पुराणम् एक
 पुराण का नाम ।
 धाव्यः [धाव + ञच्] 1 कौवा बलिमित्र परिशोक
 धामपालकं दन्ति मृच्छ० १०१३ 2 सुगन्धित अगर
 की लकड़ी अमृतकाष्ठ 3 तर्पणीन । सम० - अरारति
 अरि उल्फ, जाह्ला एक प्रकार मध्य गाक - इल
 एक प्रकार का लम्बा धास ।
 धायु [धा उच् एक च] 1 हवा पवन - वायुविद्युत्पन्य
 चमकपुष्पजनन कति० (इसका उत्पत्ति के लिए
 दे० मनु० ११७६ मान पवनभाग है आवह प्रवह
 सर्वत्र मवहवचःइहमनवा विवहाव्य परिवह पवावह
 इति कमान) 2 वायुदेवता पवनदेवता 3 आवन
 के लिए महुत्सवपूर्व पाक का का वायु गिताया गया
 है प्राण अपान समान ग्यात और उदान 4 वान
 प्रकोप, वापरीय में घलना । सम० आम्बवम्
 अकाश, अम्बरिष केमु १३ कोण पश्चिमाक्षरा
 कोना, - मण्डः अफारा (जो अनपव के कारण हुआ
 हो), - मुष्क 1 बाधी नूकान 2 भवर गीष्म
 पवन का परास, - उत्स (वि०) 1 वातरोग म धन

जिसे अफारा हो गया हो 2 गठिया रोग से ग्रस्त
 जात तनय, मन्त्र पुत्र, पुन, पुन, पुन
 हनुमान या भोम के विशेषण, हाथ बादल - निधन
 (वि०) वात प्रकोप से पीड़ित मनकी पगल, उन्मत्त
 - पुराणम् अठारह पुराणों में से एक कलम् 1 ओला
 2 इन्द्रधनुष बल, अलग भुज (प०) 1 जा
 केवल वायु पीकर गये, मन्मासी 2 मण - नू पवन
 गन रोना रात्रि, कण्य (वि०) वायुप्रकोप के
 कारण अम्बव्य रघु० ११६३ - धामन पु० नपु०
 वाकाश अन्तर्गत वाह ग्या बाहिनी गिरा
 धमरी, शरीर को नाकी बेग, सम (व०) उग्न
 की भाति तत्र सक्त लक्षि (तु०) आग ।

धार (नपु०) [धृ णिच् कियत्] ३३ धर्मः १३ ।
 सम० - आत्मन्म जलाशय किति (या कि)
 सम जह सितो वा हुम इ बल्ल वरम् । जल
 2 देशम् 3 भाषण 4 आग का बीज 5 बाँडे के
 गरदन के भीरो 6 ताव वि समूह भवम् एक
 प्रकार का मयक पुष्प (वा पुष्पम्) लीम - अठ
 मगरमच्छ पहियाल मृच्छ (तु०) बादल रात्रि
 समूह बट बिन्दो नाव मदनम् (वा सदनम्)
 जलाशय टकी स्थ (वि०) (या स्थान) जल में
 बिद्यमान ।

धार [धृ घञ्] 1 धनान्न वादर 2 समुदाय बी
 मन्मा जैमा 'क वायुवृत्ति में 3 डर परिमाण
 4 रेवह लहरा णि० ११५६ ५ अनाह का एक
 दिन यथा बुधवार रविवार 6 समय भारी दास
 कम्प वा समायान पञ्च १ मृच्छ ११११/
 अर्वाही के 'ताइम्ब' तिमा शब्द की भाति बहुधा
 इ० व० में प्रयुक्त बहुवारान बहुत बार कतिवारान
 कितनी बार) ७ अवसर मोहा ८ दरवाजा फाटक
 ९ नदी का सामने का तट १० अिव रम् १ मदिरा
 पात्र २ जलीय जन्तु का डेर । सम० जगना - भारी,
 युक्ति (व०) धारित (स्त्री०) धर्मता,
 विचारिता मृच्छयी - स्त्री गणिका काजोर
 स्त्री वरदा गुहारा रण्डा रज० ११२६
 धारा० १६ कोर १ पत्नी का भाई सामा
 (त्रि०) के अनवार) २ वडवाक्य ३ वर्षी ४ जे
 ५ युद्ध का बाधा (यह अर्थ मेदिनीकोश में दिय हुए
 है) ६ धृ (धृ) वा कंठ वड वृक्ष मुष्का प्रथम वरय
 वा (का) न जन्म केवच विरह वल्गर रघु०
 ६१४६ धारि १ वायुगिरा मृच्छी वज्राने वाला
 २ वाहित कुशल ३ वर्ष ४ म्पराकीडा (- कि)
 वेध्या, धारी वड्या जैमा १ वरयावृत्ति, रदी का
 व्यवसाय २ वरयाधी का समुदाय ।

धारक (वि०) [धृ णिच् + क्त] ६काश्म धामने

बाधा, विरोध करने वाला, -कः 1 एक प्रकार का बाधा 2 सामान्य बाधा 3 बाधे का कदम, कम् 1 पीडा होने का स्वात 2 एक प्रकार का सुगम द्रव्य, ह्रीवर ।

बारकिन् (पु०) [बारक + इति] 1 विराधी, शत्रु 2 समुद्र 3 शुभ लक्षणों से युक्त एक बाधा 4 वह संघर्षी जो कबल पले छाकर रहता है ।

बारकः (पु०) पक्षी ।

बारणः [वृ + अण् + णिन्] किसी जाति का दम्त या नक्षत्र की मृद ।

बारटम् [वृ + णिच् + षट्] 1 खेल 2 खेला का समूह, -रा हमिनी ।

बारण (वि०) (स्त्री०) [वृ + णिच् + षट्] हटाने वाला, मुकायदा करने वाला विराध करने वाला, कम् हटाना, राहना अडबन डालना । भवति विमननुर्वरण बारणनाम भवेत् २११३ 2 हटाने, हटाने मुकायदा विराध 4 प्रतिपक्षा, सरणा, प्रस्ता, -कः 1 हाथी -न भवति विमननुर्वरण बारणनाम भवेत् २११३, कृ० ५१३०, रघु० १२१३, शि० १८१६ 2 कवच, विरचस्वर । सम० बुधा, -सा, बल्लभा कते का वृत्त, -साह्वय्य हस्तिनापुर का नाम ।

बारणसी दे० 'बाराणसी' ।

बारणावत (पु०, भ०) एक नगर का नाम ।

बारवम् [वरा + अण्] वरों का समूह ।

बारंबारम् (अण्व०) [वृ + गणन् प्रत्यय] प्रायः बहुधा, बार बार, फिर फिर बारबार निरवधि दूसोस्वयम् बारपूर मा० १३५ ।

बारका [बार + का + क + टाप्] 1 वर, भिड 2 हमिनी, पु० 'बरटा' ।

बारकसी [वरणा व प्रमो व नयी नखोरदुने भवा इत्यर्थे अण् + झप्, पूर्वा० सापु] वनारस का प्रायः नगर ।

बारविधिः [बारी जलाना विधि, पष्ट्यलकू सं०] समुद्र ।

बारह (वि०) (स्त्री०) [बराह + अण्] शूकर से सम्बद्ध, मुद्रा० ८११९, माझ० ११५९, -ह. 1. शूकर 2 एक प्रकार का वृक्ष । सम० कम्ब. वत-मान कम्ब (जिसमें हम रह रहे हैं) का नाम, पुराणम् अठारह पुराणों में से एक ।

बारहो [बारह + हो] 1. शूकरी 2 पम्बो 3. 'बराह' के कम्ब में बिल्लु अवनान की शक्ति 4. बार । सम० कम्बः महाकर, गैटो ।

बारि (गु०) [वृ + इङ्] 1 जल धरा जनन् बनि-भेज नरो नार्यविश्वज्जति मुमा० 2 तरल पदार्थ

3 एक प्रकार का सुगन्ध द्रव्य, ह्रीवर, रि, री (स्त्री०) 1. हाथी का बाधने का नस्मा बारी बारी. समरं वाणाताम् शि० १८१६ रघु० ५१६, 2 हाथों का बाधने का सम्रा 3 जलियों का एकड़ने का गहरा या पिजरा । बरी, कैंदा 5 जलराश 6 मरुवती का नाम । सम० -ईसा, समुद्र, उड्डवम् कम्ब, ओकः जोकः, कर्पूरः एक प्रकार की मज्जली, दलीज, कुल्लकः निषाडा शृगालक का पीपा-फिमोः शोक बल्लभः प्रत्याश बर (वि०) जलवर (-रः) 1 माधुर्य 2 कां. जलजन्तु बर (वि०) जल में स्नान, (ज) 1 समर शि० १५१३ 2 कोई भी दिनापार (जम्ब) 1 कम्ब शि० ५१६६ 2 एक प्रकार का तमक 3 एक प्रकार का पीपा, गोरमुपल 4 लीज, लकड़ः बादर, प्रा. जलरी, बः बादर -प्रियर वादिद वादि दवापुरे -मुमा० भासि० १३३० (हम्) एक प्रकार का सुगन्धद्रव्य, -हः बाधक पक्षी

बरः बादर-नववारिधरः रघुपादहोमिर्मयिन्धम् व निरानपत्वरम्ये -विष्म० ४३३ बारा ब्रिट की बीछार, -धिः समुद्र-वारिधिसुतामन्ध्या दिदुम् जने -गीत० १५, नावः 1. समुद्र 2 वरुण का विशेषण 3 बारल, -निधिः समुद्र, -वराः-वम् 'समुद्र वारा' जलयात्रा, -प्रवाहः सरना, जलप्रताप, बलिः-मुष्, रः बादर, धनम् जलचटिका, रूट । मालवि० २११३, -वराः होगी, नाव, घड़नई, -रासिः 1. समुद्र सरोवर, कम्ब कम्ब, -वातः कलान, शराव बेचने वाला, -बाहः-बाह्रः बारल, ज. बिल्लु का नाम लभः 1. लीज 2 अन्तर्विशेष 3. बस की सुगन्धित जड़, उशीर ।

बारित (पु० क० क०) [वृ + णिच् + क्त] 1. हटाया हुआ, मना किया हुआ, रोका हुआ 2 परिश्रित प्ररलित ।

बारी दे० (स्त्री०-बारि) ।

बारीटः [बारी + इट् + क] हाथी ।

बारः [बाग्मनि रिपून् वृ + णिच् + ण्] विजयकुजर, जसों हाथी ।

बारुः (पु०) अरबी. (वह टिकटो शिम पर गव रख कर समानानुमि में ल गया जाना है) ।

बारण (वि०) (स्त्री०-णी) [बरणण्डम्-अण्] 1 वरुण-मंथनी 2 वरुण को मादर मर्षण 3. वरुण की दिया हुआ, वः अन्तर्वयं के नी प्रभावों या लक्ष्यों में से एक, कम्ब पानी ।

बारिधिः [वरुण + इङ्] 1 अगस्त्य मुनि 2 भृगु ।

बारणी [वारुण + णी] 1 पश्चिम दिशा (वरुण के द्वारा अधिष्ठित दिशा) 2. कोई महिला-यवोर्ध्व बौद्धिकीहस्ते बारणीयावधोयने हि० ३१११, पञ्च० १११०

(यहाँ दोनो बर्य अभिप्रेत हैं) कु० ४।१२
3 शतभिषज् नामक नक्षत्र 4 एक प्रकार का धान
ब्रह्म । सम० ब्रह्म बरुण का विशेषण ।

बाबक [बु + बिन् + उँह] नाम आति का प्रधान क
बन् 1 भाल का मेल या डोह 2 कान का मेल
3 नाव में से पानी उलीच कर बाहर निकालने का
वर्तन ।

बाबेन्को बगल के एक भाग का नाम वर्तमान राजगद्दी ।
बाबें (वि०) (स्त्री०-ईर्षी) [बुध + अण्] बुद्धि से युक्त
अंश जगल ।

बाबिकः [बर्ष + ठञ्] लिपिकार शब्दक ।

बाबिक, बाबिकि स्त्री०) बाबिकिन (पु०) } [बुत्
बाबिकी (स्त्री०) बाबिकु (पु० स्त्री०) } + कान्ठ
अथ बुद्धिच बातक इन् इति वा बु + कान्ठ
इत्थं बुद्धिच बत - कान्ठ बुद्धि, बैरन का शीषा ।

बाबिका (स्त्री०) बतर लबा ।

बाबि (वि०) [बुत्ति + अण्] 1 स्वल्प नाशक मन्दुग्ध
2 हलका, कमजोर सारहीन 3 व्यथामय संम्
1. कल्याण, अच्छा स्वरूप सब नो बातमर्हि
राजन् रघु० ५।१३, १।३१ म पृष्ठ सबनो बार्न
माक्यबाजे न मनतिम- १।५।१ गिः ३।६८ 2
कुसलता, दक्षता-अनुमत्त इव स्वभावमुन्व-कि०
१।३।२४ 3 भुमी बुरा ।

बाबि [बार्न + गण] 1 ठहरना, हटे रहना 2 समाचार
सबर, गुप्त बात मासिकरूप का बानी-रत्न०
१३ अर्थाविकर वृत्ति 3 खेती, बैद्य का व्यवसाय
रघु० १।६।२, मनु० १०।१०, याज्ञ० १।३।१० 5
बैरन का पीषा, मम०-आरंभ व्यापारिक उपक्रम
या व्यवसाय-बहु, -हुर 1 दूत 2 अग्राग योम-
बस्ती आदि पदार्थ बेचने वाला, -बुत्ति जो खेती के
व्यवसाय में निवृत्ति करे, -व्यतिकर मामान्य
विबरण ।

बाबिकः [बाबिनायनयनेन] समाचारवाहक, दूत,
भेदिया, बाधुष ।

बाबिक (वि०) (स्त्री०-की) [बुत्ति + ठञ्] 1 समा
चार सन्धरी 2 समाचार माने वाला 3 व्याख्यात्मक,
कोष सम्बन्धी, -कः 1 दूत, भेदिया 2 किमान
(वैयर्थ्य का व्यक्ति) -कम् एक व्याख्यापरक
अभिहित नियम जो उक्त, अनुक्त, या किसी बहुरी
बात की व्याख्या करता है जबवा किसी छूटी हुई
बात को जोड़ देता है-उक्तानुक्तनाथध्वित
(चित्ता) कारि तु बाबिकम् (यह शब्द पाणिनि के
बुद्धों पर काव्यायन द्वारा निमित्त व्याख्यापरक नियमों
के लिए विशेषरूप से प्रयुक्त होता है) ।

बाबिकः [बुधहृन् + अण्] बर्षन का माघ-कु० १।५।१ ।

बाबिकम् [बुधाना समूह तस्य भाव कर्मे वा बुद्धि]
1 बुद्ध्या-हिमवत्यपःस्थानि यौवने वृत्त स्वया
बाबिकशशि बन्धकम्-कु० ५।६४ रघु०, १।८ नै०
१।३७ 2 बुद्ध्या की बुलन्ता 3 बुद्धी का समूहाय ।

बाबिकयम् [बाबिक] ध्यञ्] 1 बुद्ध्या 2 बुद्धये की
बुलन्ता ।

बाबुवि बाबुविक, बाबुविन् (पु०) [बाबुविन्
[पु०] कलाप बुद्धयश्च इत्य बुद्धि वा प्रत्ययान्ति
बुद्धिक बुद्धि आदेश कान्ठय इति] सुदन्तोर
आश २२ रूपया देन बालः

बाबुवियम् [बाबुवि + ध्यञ्] सूत्र, ग्रन्थ अर्था मुद्र
रूप से उद्गृह्य व्याज ।

बाधय, बाधो बाध, अण् द्विप वा] अमय का रम्भा ।

बाधयित [बाधयि नर्तकः अन्त्य ब० म नार्तकय
म्मा देन गन्तव्य गीषा दे वार्धयित्वा गो ।

बाधयित नर्त० अण् कवच मे मुमन्त्रित्वा पशो वा
ममृह

बाधय [बु + अण्] अतोर्वाद् वृद्धा ३० व०) सम्प्राप्त
वर्षादय ।

बाबेका [बुधगा + अण्] १००, नीक राग की मन्त्रि ।

बाब (वि०) (स्त्री०-मी) [बध + अण्] 1 बर्षा में
सकय रम्भ बाबा 2 बाबिक ।

बाबिक (वि०) (स्त्री०-की) [बध + ठञ्] 1 बर्षा
सकयी बाबिक सञ्ज्ञायेष्टो भनर्जैव रघुर्वशी- रघु०
४।१६ 2 मासिक प्रतिकर्ष बटिन होय बाबा 3
एक वर्ष तक रहन वाला-मान्वाणा प्रमाण स्यादम्
कितव दशबाबिकी इमी प्रकार बाबिकमन्त्रम-याज्ञ०
१।३।२४, -कम् बडा इती ।

बाबिका [बाबिना किना पुनो] शस्य व] ओला ।

बाबिके [बुद्धि, इक] 1 बुद्धि की सम्पन्न 2 विशेष
रूप से कृष्ण 3 नल के मासिक का नाम ।

बाहू, बाहुव्य, बाहुव्यि, } २० बाहू बाहुव्य बाहुव्यि,
बाहुव्यत, बाहुव्यप्य } बाहुव्यत बाहुव्यप्य बाहुव्य
बाहुव्य, बाल बालक } बाल, बालक ।

बाहुव्यप्य द० बाहुव्यप्य ।

बाहि [बा + क्त बाह + इञ्] प्रसिद्ध बाहरराज
बाहि जो उसके छोटे भाई सुधीष की इच्छानुसार
राम के द्वारा मारा गया ।

(वर्णन ऐसा मिलता है कि बाहरराज बाहि बलवान
बलवान वा कहने हैं कि इनसे रावण को जब वह
उमसे लड़ने गया पकड़ कर अपनी कास में रख
लिया । जब बाहि बुद्धि के भाई को बारने के
लिए किष्किपावुरी में बहिर गया तो उसके भाई
सुधीष ने बाहि को युद्ध में बरा जान, उसका किष्कि-
पन इतिहास दिया । जिस समय बाहि बाहित बाधा

तो सुग्रीव को राम कर ऋष्यभूक पर्वत पर लक्षण लेनी पड़ी। सुग्रीव की पत्नी तारा को बालि ने छीन लिया, परन्तु राम के द्वारा बालि का वध होने पर वह फिर सुग्रीव को मिल गई।

बाभूका [बभू + उन् + कन् + टाप्] १ रे, बजरी—अकृतमन्त्रोपकृत बाभूकास्त्रिभुवित्तम् २ वर्ष ३ कपूर, — का, की एक प्रकार की ककड़ी। सम०—आत्मिका शर्करा।

बालेय दे० बालेय।

बालक (वि०) (स्त्री०—की) [बल्क + जन] वृक्षा की छाल से बना हुआ।

बालकल (वि०) (स्त्री०—ली) [बल्कल + जन] वृक्षा की छाल से बना हुआ लम्ब बकल की पाशाक, ली मदिगा, धाराब।

बाल्मीकि, **बाल्मीकि**: [बल्माके भव भूज इज्ज वा, एक विख्यात मुनि तथा रामायण के प्रणेता का नाम (जन्म से यह ब्राह्मण था परन्तु बचपन में मामागिता द्वारा परित्यक्त होने पर यह कुछ वर्ष पहाड़ियों को मिल गया जिन्होंने इसे चोरा करना सिखाया। यह वीर्य ही चौर्यक्रमा में प्रबोध हो गया और कुछ वर्षों तक बटाईहोयों का मारने और लूटने का कार्य करता रहा। एक दिन उस एक महायुनि मिला जिसकी इसने राग जानने का भय दिखा कर कहा कि जो कुछ पास है सब निकाल कर रख दो। परन्तु मुनि ने इसे कहा कि पहले घर जाकर अपनी पत्नी और बच्चा को कुछो कि क्या वह लोग तुम्हारे इस अनन्य अरथाचार व लुटमार के जो गुम अब तक करते रहे हो साक्षीदार हैं। वह तुरन्त घर गया परन्तु उनकी अनिच्छा को जानकर बड़ा उद्विग्न हुआ। तब मुनि ने उसे 'मरा' मरा (या 'राम प्रतीप है) उच्चारण करने के लिए कहा और अन्न बर्नि हो गया। यह लूटेरा इस शब्द का वर्षों जप करता रहा, यहाँ तक कि उसका गारर दीमकी हाग छाई गई मिट्टी से ढक गया। वही मुनि फिर आया और उसने इसे बाबी से निकाला बल्मीक (बाबी) से निकलने के कारण इसका नाम बाल्मीकि पड़ गया। वही बाद में बड़ा प्रसिद्ध मुनि हुआ। एक दिन जब कि वह स्नान कर रहा था, उसने पीछ पड़ी के कोने में से एक की बहेलिये द्वारा मरते हुए बैक, इस पर इन ऋषि के मूल से उस दृष्ट बहेलिये के लिए अनन्तान में कुछ अभिशाप के शब्द निकल गये जिन्होंने अनुष्टुप् छन्द में श्लोक का रूप धारण किया। रचना की यह नई शैली थी। बह्म के आदेश से इसने 'रामायण' नामक प्रथम काव्य की रचना की। जब राम ने सीता का परि-

न्यास कर दिया तो इस ऋषि ने सीता को अपने आश्रम में लक्षण दी, उसके दोनों पुत्रों का पालन पोषण किया, उन्हें शिक्षा दी। बाद में इसने इनको राम के सुपुत्र कर दिया।

बाल्लभ्यन् [बल्लभ + ध्यन्] प्रिय होने का भाव, बल्लभता।

बाबूक (वि०) [पुन पुनरतिशयेन वा वदति—बद् + यङ्, लृक्, द्विचम = बाबद् + ऊकञ्] १ बागूनी, मूखर २ बाकपट्ट।

बाबय [बय्—यङ्, लृक् चिचम, अच्] एक प्रकार की तुलसी।

बाबट (पु०) नाव, डोंगी।

बाबू [दिवा० आ० बाबूथते] १ छाटना, पसन्द करना, चुनना, प्रेम करना तथा बाबूथप्रमत्तासी रामसाक्षात् व्यवस्थित भट्टि० ४।२८२ सेवा करना।

बाबू (वि०) [बाबू + क्त] छाटा गया, चुना गया, पसन्द किया गया।

बाबू १ [दिवा० आ० बाबूथते] १ दहाड़ना, ज़हन करना, चौंकार करना बिस्मयना, हू हू करना, (पक्षियों का) गुनगुनाना, ध्वनि करना (सिंघा) या श्रित प्रतिभय वराशिरे—रघु० ११।११. शि० १८।७५, ७६, भट्टि० १४।१५, ७६२ बुलाना।

बासक, **बास** + **युज्**] दहाड़ने वाला, मूखर, निवादी। **बासकम्** [बाश् + ह्यङ्] १ दहाड़ना, बिबाड़ना, मुरीना, आक्रीडा करना २ पक्षियों का बहूचहाना, कुकना, (पक्षियों का) श्रितभय।

बासि [बाश् + इज्ज] अस्ति भवता, जाग।

बासितम् [बाश् + क्त] पक्षियों का ककरव।

बासिता **बासिता** [बासिन् + टाप् बस् + जिङ् + क्त + टाप्] १ हृषिनी अम्यपद्यत स बासितासक. पुण्यिता कज्जिनीरिच द्विप रघु० ११।११ २ स्त्री।

बाध [बाश् + र्क] दिन अन्त १ आवात न्याय, घर २ बौराहा ३ मोहर।

बाध, **बध्य** दे० बाध।

बास् १ [धरा० उभ० बासयति - ते] १ मुगधित करना. मुगधित करना धरा देना धनी देना, खूबसूरत करना बासितानवविधेयितगवा कि० १।८०, अकृष्टि पटवासैर्बासयन् काननानि गीत० १, उपर० ३।५५ रघु० ४।७५, मेघ० २० रघु० ५।५२ मिथन करना, धिगोना ३ प्रमाला हाकना, मसाले-दार बनाना।

॥ [दिवा० आ०] दे० 'बाष्'।

बास्त [बास् + चञ्] १ मुगध २ निवास, आवास - बासी वस्य हुने करे—भाषि० १।६१, रघु० ११।२,

अण० १।४४ ३ आवाय, रहना, घर ४ जगद, स्थित
 ५. कपड़े, पोशाक। सम० अ(आ) वार, -रम्,
 -गृह्य, वैश्वम् (नपु०) घर का आन्तरिक कक्ष
 विशेषतः शयनागार धर्ममिनाद्विषाति वासगृह नरेश
 - उत्तर० १।३, दिकम० १, कर्त्तृ वत्त कमरा जहाँ
 सार्वजनिक प्रदर्शन (नाच, कुत्ती तथा अन्य प्रवि-
 योगिताएँ) होते हैं ताद्वलम् अन्य मुगन्धित
 मसालों से युक्त पान, भजनम्, बन्धिरम्, सबलम्
 निवासस्थान, घर गटि (म्हा०) पक्षियों के बैठने
 का डबा, छतरी, अड्डा, वणी० २।१, मेघ० ७९,
 -योगः एक प्रकार का मुगन्धित पूर्ण लज्जा-
 वासक सज्जा दे० ।

**वासक (वि०) (स्त्री० का -सिका) [वास् + णिच्
 ण्यन्]** १ मुगन्धित करने वाला सुवासित करने
 वाला, धुपाने वाला, धूप देने वाला २ बसाने वाला
 आवास करने वाला, कम् वस्त्र, कपड़े। सम०
 -सज्जा लज्जिका वह स्त्री जो अपने प्रेमी का
 स्वागत, उत्कार करने के लिए अपन आपकी वस्त्रा-
 लकार से युक्त करती तथा घर का माफ, सुधरा
 रखती है, विशेषतः उस समय जब वि प्रेमी का मित्र
 मिलन किया हुआ हो; मावी नागिका नागिका का
 भेद साहित्यपरंपराकार परिभाषा देता है कृष्ण मदन
 यस्था (या तु) मज्जिते वासवस्य मा १ वायव
 लज्जा स्याद्विदितप्रियमगमा १३० भवति निल
 विनि विगन्धितलज्जा त्रिलपति रादिनि वायक्यलज्जा
 नीत० ६ ।

वासल [वास् - अन्ध] गधा ।

**वासतेष (वि०) (स्त्री० - वी) [वसन्ते हित माधुवा
 ह्य]** निवास करने के योग्य, घी रात ।

वासन्त [वास् - ण्यट्] १ मुगन्धित करना सुवासित
 करना २ धुपाना ३ निवास करना, टिकना ४
 आवासनदान, निवासस्थान ५ कोई पात्र आधार,
 टोकरी, लज्जक बर्तन आदि प्राञ्ज० २।६५
 (वासन निशोपाधारणम् लपुटाविक समुद्र धर्मादि-
 यन्त्र) ६ ज्ञान ७ वस्त्र, परिधान ८ गिलाफ,
 लिफाफा ।

वासना 'वास् + निच् + यच् + टाप्] इमंति से प्राप्त
 ज्ञान, तु० भावना २ निष्पन्न अपने पद ३ अनुभासून
 कर्मों का अनुशाने में लग कर पड़ा हुआ मरकार
 जिससे मूल य' दुष् की उत्पत्ति होती है ३ उद्देश'
 कल्पना, दिक्कार ४ मिथ्या विचार, अज्ञान, अभि-
 मता इच्छा इति मयारवाचनाय उद्भूतता-गीत०
 ३६ भास् इति भास् मावना तथा (प्रतिष्ठा)
 मयं मय तु मयरी वासना वासकेयु-भाषि० ६।१० ।
वासन (वि०) (स्त्री० वी) [वसन्त - अण] १ वसन्त

कालीन, माघवी, बहार के लायक वसन्तर्तु में उत्पन्न
 २ जीवन का वसन्त जवान ३ परिश्रमी, साधवान
 (कर्त्तव्यपालन में)।-सः १ ठैठ २ जवान हावी
 ३ कोई भी जवान जन्म ४ कोयल ५ दक्षिणी धवन,
 मलय पहाड़ में चलने वाली हवा तु० मलय सजीर
 ६ एक प्रकार का लोबिया ७ लपट, दुर्गन्धारी, नी
 १ एक प्रकार की खेलेली (मुगन्धित फूलों से लरी
 हुई) वसन्ते वासन्तीकुसुमकुमारगवयः - गीत० १
 २ बन्दी पीपल ३ जूही का फूल ४ कामदेव के
 मगमान में मनाया जाने वाला उत्सव -तु०
 वसन्तात्मव ।

वासनिक (वि०) (स्त्री० वी) [वसन्त + ठक्] वसन्त
 ऋतु से मयद क १ नाटक का विरूपक या
 इसाव डा २ अभिनय ।

**वासरः रम् [मूल वामरान् ज्ञान वास + वर] (सच्चाह
 न) एक दिन। सम० मय प्रातः काल ।**

**वासव (वि०) (स्त्री० वी) [वसुव स्वार्थे अण वसुनि
 गन्धन् अण वा]** इन्द्र सम्बन्धी पादुता वासवी
 दिव्यास्त्री ३० वासवीना वसुनाम् मेघ० ४३

ब इन्द्र का नाम इन्द्र ३।२, रघु० ५।५ । सम०

इत्ता १ मयन्तु की एक रचना २ कई बहानिया
 में वर्णित नायिका (हस्त स्त्री) वा वलन भिन्न भिन्न
 कवि विविध प्रसार में कही है। 'क्यामरत्नावली'
 के अनुसार यह उत्तराखण्ड के महाराजा चण्डमराधन
 की पुत्री थी जिसका अग्रहण राज्य के राजा उद्यन ने
 किया था। अर्थात् उमे प्रद्यन राजा की पुत्री बसलाने
 है (६० गन० १।१०) और मल्लि० की टीका के
 अनुसार प्रद्यनस्य प्रियदुहितर बन्धाराजोऽयं बह्वं
 वर उत्तराखण्ड के राजा प्रद्यन की पुत्री थी।
 भवभूति कहते हैं कि उसके पिता ने उसकी सगाई
 राजा सत्य के साथ की थी, परन्तु उसने अपने
 आपको उद्यन की सेवा में अर्पित किया (वे० मा०
 २)। परन्तु मुद्ररूप की वासवदत्ता की वल की
 कहानी में कोई समाप्ता नहीं। हाँ, उसका नाम
 अदस्य एक ही था। भवभूति के अनुसार उसके पिता
 ने उसकी सगाई पुष्पकेतु के साथ की थी, परन्तु
 कदरकेतु उमे अपहृत कर के गया। यह सत्य है कि
 वासवदत्ता नाम की कई नायिकाएँ हैं) ।

वासवी [वास्व + वीप्] आश की माता का नाम ।

वासव (नपु०) [वस् + वाञ्छादन्ते अस्ति निष्ठा] वस्त्र,
 परिधान कपड़े वानासि जीर्णसि यथा विद्या
 नवार्ति नृक्षानि मरोऽपराधि अण० २।२२, कु०
 ३।२, मेघ० ५९ ।

वासि. (पु०, स्त्री०) [वस् + इच्] बसूना, छोटी कुल्हारी,
 छेनी, सिः निवास, आवास ।

से एक-अक्ष १ रेखांकित, खीचना, अलग-अलग खीचना २ तिरछा फेंकना ।

विकल (वि०) [विगत. कलो यत्र प्रा० ब०] १. किसी भाग या अंग से वञ्चित, संबोध, अपूर्ण, अपाहत विकलांग कूटकुटिकलेन्द्रियाः—याज्ञ० २।७०, मनु० ८।६९, उत्तर० ४।२४ २ इरा हुआ, जलन ३ शून्य, विरहित आरामाधिपतिविवेकविकला भासि० १। ३१, मुष्क० ५।४१ ४. विक्षुब्ध, कमजोर, उत्साह शून्य, हताशाह, म्लान, अवमग्न, स्फुटिहीन—किमिति विधीदसि रोविपि विकला विहसति युवांसमा तव सकला—गीत० ९, विरहेण विकलहृदया—भासि० २।७१, १६०, श्यामले विकलविकले—गीत० १२, उत्तर ३।३१, मा० ७।१, १।१२ ५ मूर्छाया हुआ, क्षीण । सम० अंग (वि०) अधिक या कम अंगों वाला, इन्द्रिय (वि०) जिसको ज्ञानेन्द्रियां दूषित या विकृत हैं, बाष्पिकः जला-मग्नः ।

विकला [विगतः कलो यस्याः—प्रा० ब०] कला का साठवां भाग ।

विकल्पः [वि+कृप्+कच्] १. सन्देह, अनिश्चय, अनिश्चय, संकोच—तत् सिधे निमोगेन स विकल्पपरा-कृष्णः—रघु० १७।४९ २. शका, मुद्रा० १ ३. कूट-मुक्ति, कला मायाविकल्परचितः रघु० १३।७५ ४. वरचस्वतला, (ध्या० में) वैकल्पिक ५. प्रकार, वेद ६. मधुखि, भूल, भ्रान्त । सम०—उपहारः वैकल्पिक पुरस्कार, —आत्मन् जाल की तरह का अनिश्चय, दुविधा ।

विकल्पन् [वि+कृप्+स्यट्] १. सन्देह में पड़ना २. इच्छा की कूट अनिश्चय ।

विकल्पय (वि०) [विगत. कल्पयो यस्य प्रा० ब०] निष्पाप, कर्षकरीहित, निर्दोष ।

विकला (ता) [वि+कृप् (ल्) +अच्+टाप्] बगाली मणी ।

विकला [वि+कृप्+अच्] चन्दमा ।

विकलित (यू० क० ड०) [वि+कृप्+ल] सिला हुआ, घुरा हुआ या फूला हुआ—भासि० १।१०० ।

विकल (कृ०) र (वि०) [विकल्+वरप्] १. कुला हुआ, फूला हुआ—कुशेखरैश्च बलाशोभिता मृश रमन्ते कलमा विकल्परैः सि० ४।३३ २. ऊँचे स्वर वाला, (व्यभि आदि) जो लम्बे सुनाई दे, उच्चोपम वेङ्कटा-करचक्रवाकस्य विकल्परवर्त्तः—नै० २।५ ।

विकारः [वि+हृ+कच्] १. रूप या प्रकृति का परिवर्तन, क्षान्तांतरण, प्राकृतिक बदला से व्यत्यय, दुः-वृद्धि २. परिवर्तन, अवल-अल, सुचार-वच १।४४ ३. बीमारी, रोग, व्याधि—विकार जल परमार्षतोऽज्ञात्वाज्जारम्भः प्रतीकाय मा० ४, कु०

२।३८ ४. मन या अभिप्राय का बदलना—मूर्च्छयसी विकारा गयेष्वैवयंमनेयुः—मा० ५।१९ ५. भावना, संवेग—उत्तर० १।३५, ३।२५, ३६ ६. विमोह, उत्तेजना, उद्वेग कि० १।७२४ ७ विकृत रूप, आ-कुचन (मृगमुद्रा, हावभाव आदि) प्रथममूर्खविकारः-हमियामास गृहम् कु० ७।९५ ८. (साध्य० में) जो पूर्वोक्त या प्रकृति से विकसित हो । सम० हेतुः प्रलोभन, क्रम गता, उद्वेग का कारण—विकारहेतो गति विविक्त्यन्ते येका न वेपसि न एव बीरा—कु० १।५१ ।

विकारित (वि०) [वि+हृ+णिच्+कच्] परिवर्तित पयध्रुत, छत्राचारपन्त ।

विकारिन् (वि०) [वि+हृ+णिनि] परिवर्तनशील, संवेग तथा अन्य संस्कारों को ग्रहण करने वाला, भ्रमवि-भूयने कदप्रीति विकारि च योवनम्—मा० १।१७ ।

विकालः, **विकालकः** [विहृत् काल प्रा० ल०] सध्या, साध्यकालीन मृदुपुटा, दिन की समाप्ति ।

विकालिका [विज्ञात. कालो यथा—प्रा० ब०] पानी में रक्ता हुआ छिद्रयुक्त ताककालस जो फमस पानी भरने के द्वारा समय का अंकन करता है—पु० मानरत्ना ।

विकालः [वि+कृप्+कच्] १. प्रकटीकरण, प्रदर्शन, दिसावा २. खिलना, फूलना (इस वर्ष में भावः विकास लिया जाता है) —कु० ३।२९ ३. कुला क्षीण मार्ग—कि० १५।५२ ४. रंदा मार्ग—कि० १५।५२ ५. हृष्य, जानम—कि० १५।५२ ६. उत्सुकता, प्रबल उत्कठा—सि० ९।४२ (यही इसका वर्ष खिलना, बी है) ७. एकाभास, एकाकीपन, सुनायन ।

विकालक (वि०) (स्था०—खिला) [वि+काष्+कृन्] १. प्रदर्शन करने वाला २. खोलने वाला ।

विकासनम् [वि+काष्+स्यट्] १. प्रकटीकरण, प्रदर्शन, दिसावा २. खिलना, (फूलों का) फूलना ।

विकालि (सि) व (वि०) (स्थी०—जो) [वि+काष् (ल्) +णिनि] १. दिखाई देने वाला, बमकने वाला २. फूलने वाला, खुलने वाला, खिलने वाला ।

विकलः [वि+कृप्+कच्] खिलना फूलना—दे० ऊ० विकास ।

विकासनम् [वि+कृप्+स्यट्] फूलना, खुलना, खिलना ।

विकिरः [वि+कृ+अच्] १. विकारा हुआ भाग या विरा हुआ मन्दा टुकड़ा २. जो फावता या बखेरता है पत्नी—कोकीफलवर्षिधमुषधिविकिरव्याहारिणस्तत्पुत्रो भावाः मा० १।१९ ३. कुर्वा ४. वृक्ष ।

विकिरन् [वि+कृ+स्यट्] १. बखेरना, हथर उभर खैकना छितारना २. दूर-दूर तक फैलाना ३. फाड़ डालना ४. हिला करना ५. ज्ञान ।

विकीर्ण (भू० क० कू०) [वि + कृ + क्त] 1 बखेरा हुआ छितराया हुआ 2 प्रसृत 3 विख्यात । सम० केश, कूर्चव (वि०) बालों को नोचने वाला, बालों को बिखेरने या उलझ-पुलझ करने वाला, —अर्थात् एक प्रकार की सुगन्ध ।

विकुण्ठ [विगता कुंठा यस्य प्रा० ब०] [विष्णु का स्वर्ग ।

विकुण्ठि (वि०) [वि + कृ + क्त] 1 परिवर्तित होने वाला, या परिवर्तन करने वाला 2 प्रसन्न, खुश, हृष्ट ।

विकुल [वि + कृ + क्त] 1 चन्द्रमा ।

विकृजन्तु [वि + कृ + क्त] 1 गुरुरगु करना, कलरव करना 2 (आँखों या नलों में) गुब्बुड़गुब्बुड़ ।

विकृजन्तु [वि + कृ + क्त] 1 निरन्धी चितवन कटाक्ष ।

विकृषिका [वि + कृ + क्त] 1 टायर, टायर, टायर । नाक ।

विकृष्ट (भू० क० कू०) 1 परिवर्तित, बदला हुआ, मुघारा हुआ 2 रोगी बीमार 3 क्षात्रिजन विकृष्टिन् अमकी घुरन बिगड़ गइ हो 4 अगुन अगुन 5 आवेशयस्त 6 पराङ्मुख अगुन हुआ 7 होअस्त 8 अनायास आसायाण (२० वि पूर्वक कू०) —नम् 1 परिवर्तन, मुघार 2 और भी बिगड़ जाना, बीमारी 3 अशोच अगुना ।

विकृति (स्त्री०) [वि + कृ + क्त] (अभिप्राय मन, रूप आदि का) बदलना चित्तविकृतिः, अगुलीयक कुपयस्य विकृति 2 अस्वामिक, अस्वामिक वटिन होने वाली परिस्थिति, दुर्घटना मरण प्रकृति शरीरों में विकृतिर्विचित्रमुच्यते दुर्घ २५० ८८७ 3. बीमारी 4 उन्मत्तता, उन्मत्त, कोष, राय १० १३५६, वि० १५११ ४०, दे० 'विकार' और 'विक्रिया' भी ।

विकृष्ट (भू० क० कू०) [वि + कृ + क्त] 1 अलग-अलग बसीटा हुआ, इधर उधर बीका हुआ 2 आकृष्ट, लीका हुआ, किसी की ओर आकृष्ट 3 विस्तारित फैलाया हुआ 4 शब्दापमान (२० वि पूर्वक कू०) ।

विकेश (वि०) (स्त्री०) [विकीर्णः केशास्त्य प्रा० ब०] 1 बिखरे बालों वाला 2 बिना बालों का नखा (सिर), धो 1. डोले बालों वाली स्त्री 2 बालों के झुग (गर्ज) २५३ 3 पीछी, या बालों की छाटी छाटी छटा का मिला कर बनाई हुई पीछी, वेणी ।

विकीर्ण व (वि०) [विगत कोशो यस्य प्रा० ब०] 1 बिना भुनों का 2 बिना म्यान का, बिना रवा हुआ १० १३५५ २५० ७३८८ ।

विक [वि + कृ + क्त] 1 कदम, डग

विक्रम [वि + क्रम + क्त] 1 कदम, डग पग २० ७३६, नु० विक्रम 2 कदम रखना, चलना 3. पकड़ना प्रभाव डाल देना 4 औरना

घोष, नायक की बहादुरी, अनुत्सुक शत्रु विक्रमालकार विक्रम० १ २५० १२८७ १३ 5 उज्जयिनी के एक प्रसिद्ध राजा का नाम दे० परि० २ 6 विष्णु का नाम । सम० अर्क आदित्य दे० विक्रम कर्मन् (नपु०) शूरवीरता का कार्य पराक्रम के बराबर ।

विक्रमणम् [वि + क्रम + क्त] (विष्णु का) एक डग छत्तीस विक्रमण बालमन्त्रनबामन गीत० १ ।

विक्रमिन् (वि०) [वि + क्रम + क्त] पराक्रमी शूरवीर ५० 1 सिंह 2 नायक 3 विष्णु का विसर्ग ।

विक्रम [वि + क्रम + क्त] विकीर्ण बखला २५० ३५४ ।

सम० अनुशय 'श्री वा' उपपन्न करग - नमस्त्रि की का पत्र बैनामा ।

विक्रमिक, **विक्रमिन्** (पु०) [विक्रम डवन, पानि व] व्यापारी विक्रमा बेचने वाला ।

विक्रम [वि + क्रम + क्त] 1 विक्रमण ।

विक्रम (भू० क० कू०) [वि + क्रम + क्त] 1 परे तक पग हुआ, डग 2 शक्तिशाली शूरवीर, बहादुर, पराक्रमी 3 शिखरी, (अपने शत्रुओं को) परास्त करने वाला, स. 1 शूरवीर योद्धा 2 सिंह, तम् 1 पद डग 2 चोड़े की सरपट चाल 4. शूरवीरता, बहादुरी पराक्रम ।

विक्रमिन् (स्त्री०) [वि + क्रम + क्त] 1 कदम रखना, डग भरना 2 चोड़े की सरपट चाल 3. शूरवीरता बहादुरी, पराक्रम ।

विक्रम (वि०) [वि + क्रम + क्त] बहादुर, शिखरी, ५० सिंह ।

विक्रिया [वि + कृ + क्त] 1. परिवर्तन, मुघार बदलना —अमशुभ्विचित्रिताननविक्रियान् - २५० १३१ ७१, १०१७ 2 बिनाम उत्तेजना उन्मत्त, जोश जाना अथ तेन निगुष्ट विचित्रमभिधान कलमेतद-त्वभूत कु० ६४१, ३३४३ 3 कोष मन्त्रा, अप्रमन्त्रा माया प्रकीर्णमभापि मनो नायाति विक्रियाम्

मुना०, निर्गम्य गच्छविक्रियाप्ते - २५० ७३० 4 उज्जयिनी, अजयिनी कु० १२२१ (विक्रियायै वी-स्योपानादाय 'वो' मन्त्रि) 5. (मोक्ष इरावति) नूनना, आकुंचन वा (श्रीर्षी की) विकृष्टम अर्थिक

याया विरतप्रसवैः कु० ३५७ 6 आक्रमक आदोलन जैना कि 'रीक्षविक्रिया' में विक्रम० १ ।

१२ 'गामांशु होना' 7. अकस्मात् रोषयस्तता, बीमारी 8 उल्लङ्घन (उचिन्त कर्तव्य का) बिगड़ देना २५० १५४८ । सम० उच्यते दण्डी द्वारा वयित उच्यते

का एक बेर दे० काव्य० २४६१ ।

विकृष्ट (भू० क० कू०) [वि + कृ + क्त] 1 बिना-बिना विक्रिया 2 कठोर, क्रूर, निर्दय, डग

१५४८ । सम० उच्यते दण्डी द्वारा वयित उच्यते

का एक बेर दे० काव्य० २४६१ ।

विकृष्ट (भू० क० कू०) [वि + कृ + क्त] 1 बिना-बिना विक्रिया 2 कठोर, क्रूर, निर्दय, डग

१५४८ । सम० उच्यते दण्डी द्वारा वयित उच्यते

का एक बेर दे० काव्य० २४६१ ।

हानि, बदनामी २ परस्पर शिरोधी उक्ति. विरोध ।

असर्गति (शाकम्भ्राध्य मे पीन पुन्येन प्रसाग) ।

विगाहः [वि + गृह् + घञ्] डुकरी लगाना स्नान
गाना ।

विनीत (भू० क० क०) [वि + नी + क्त] १ निन्ति,
बुराभला कहा गया, डाटा फटकारा गया २ विरोधी,
असगत ।

विनीतिः (स्त्री०) [वि + नी + क्तान्] १ निन्दा, बुराभला
कहना, डाइकना २ परस्पर विरोधी उक्ति, विगृह्य ।
बिगुण (वि०) विगुण विपरीतो वा गुणो यस्य व० म०
१ गुणो मे शून्य, निकम्मा बुरा भग० १३३५, शि०
१३२२, मुद्रा० ६१११ २ गुणां से होन ३ बिना रस्मो
का मुद्रा० ७३११ ।

विगृह (भू० क० क०) [वि + गृह् + क्त] १ भेद, गुप्त,
छिपा हुआ २ निर्भयित, निन्दित ।

विगृहीत (भू० क० क०) [वि + गृह् + क्त] १ विभक्त,
भन्ना किया हुआ, बिचलित किया हुआ, (समाम क
क्य में) बिचटित-विग्रह किया हुआ २ पकड़ा हुआ
३ पकड़ाला किया गया, विरोध किया गया (दे०
वि पूर्वक ग्रह.) ।

विगृह्यः [वि + गृह् + अप्] १ फैलाव, बिस्तार, प्रसार
२ रूप, आकृति, शक्ल ३ शरीर ४ यी विग्रहवर्धक
समस्तधामविधिया—मालवि० १११६, गृह विग्रह
रघु० ३३३९, ९५२२, कि० ६१११, १२३६३
४ पृथक्करण, विघटन, विच्छेदन, विघाटन (यथा
समात् के घटक पदों को पृथक् पृथक् करना) व्यर्थ
समासात्) बोधक शक्य विग्रह ५ कलत्र, झगडा,
(बहुधा प्रणयकलत्र) बिग्रहाच्च जयने पगडमन्वी-
नान्निनयवलाः स मन्वरे—रघु० १३३८, ९५३, शि०
१३३५ ६ मयाम, जानना, लडाई, युद्ध, (विप०
मवि) नीति के छ गुणों में से एक दे० गुण
७ अननुग्रह ८ भाग, भग, प्रभाग ।

विघटनम् [वि + घट् + क्यट्] अलग-अलग करना, बर्बादी,
बिनाश ।

विघटिका [विभक्ता घटिका यथा—ब० स०] समय की
माप, एक घड़ी का साठवाँ भाग, पल (या लगभग
पौबीस सेकेण्ड के बराबर समय) ।

विघटित (भू० क० क०) [वि + घट् + क्त] १ विघुक्त,
अलग-अलग किया हुआ २ विभक्त ।

विघृह्यन्, --ना [वि + घृह् + क्यट्] १ प्रहार करना,
टक्कर मारना २ घिसना, रगड़ना ३ विघोषन, बिगा-
ड़ना, झोलना ४ डेर पहुँचाना, घोट पहुँचाना ।

विघृष्ट (भू० क० क०) [वि + घृह् + क्त] १ विभक्त
किया हुआ, विघुक्त किया हुआ, अलग-अलग किया
हुआ, तितर-बितर किया हुआ—भर्ग० ३५५ २ झोला

हुआ, झोला किया हुआ, बिगुन किया हुआ ३ गग
हुआ गगों ४ गग हुआ ४ झिगाया हुआ, बिग
हुआ ५ नाट पहुँचाना हुआ आघात किया हुआ ।

विघ्नः [वि + घ्न + अप् घनादेशः] मागरी, हथौडा ।

विघ्नः [वि + घ्न + अप् घनादेशः] १ बाधा बर्बन्ध किया
हुआ घास, भाजन पदार्थ का अवशेष या जूठन—विघ्नो
भुक्तोप नृ-मन० ३१८५, उत्तर० ५५१, मा० ५११६
२ भाजन, सम् मोम। सम० भासः, बाधित
(प०) भुक्तोप या बहावे के जूठन का खाने वाला ।

विघ्यातः [वि + घ्न + घञ्] १ बिनाश, हटाना, दूर करना—
किया इमाना मयना विघ्यातम्—कि० ३५२ २ हाथा-
वज ३ बाधा, रकाबट, बिघ्न किया विघ्याताय क्य
प्रवर्तने रघु० ३५६, अष्टाविघ्यानज्ञानये—११११

४ धपवह, प्रहार ५ परिधाय करना छाबना । सम०
सिद्धि (स्त्री०) बाधाओं का दूर करना ।

विघृणित (भू० क० क०) [वि + घृण् + क्त] लड़काया हुआ,
दालागित, (आपने आदि) चारा ओर घुमाई हुई ।

विघृष्ट (भू० क० क०) [वि + घृष्ट + क्त] १ अलग
रगड़ा हुआ, घिसा हुआ २ पीछित ।

विघ्नः (विभक्तः नपु०) [वि + घ्न + क्त] १ बाधा, हन्त-
न, रकाबट, अड़खन—मुना धर्मकियाविघ्न तथा
रहितरि ग्ययि वा० १३१६, १३३३, कु० ३५०
२ कठिनाई, कष्ट । सम०—हृत्, —हृत्तातः, —हृत्तः
गणेश का विशेषण, बाहुल्य बृह, —कर, —कृत्,
कारिन् (वि०) विरोध करने वाला, अवरोध करने
वाला बलसः, —विघ्यातः बाधाओं का दूर करना,
—बाधक, —बाधकः, नाशकः गणेश के विशेषण,
—प्रतिक्रिया बाधाओं का दूर करना रघु० १५३,
—राजः, विनायकः, —हृत्तिन् (प०) गणेश के
विशेषण, —सिद्धिः (स्त्री०) बाधाओं को दूर करना ।

विघ्नित (वि०) [विघ्न + हन्] बाधाघुक्त, अड़खनो से
भगा हुआ, अवहट्ट, रकाबटहित ।

विह्वल (प०) चोरे का घुर ।

विघ्न (उ०) कथा० उ० देवेकिन्, देविकते, विभक्ति,
विक्ते, विक्ते) १ विवक्त करना, विभक्त करना,
अलग-अलग करना २ विवेचन करना, विवेक करना,
अनर पहचानना ३ बहिष्कृत करना, हटाना (करण०
के माप) भट्टि १६१३, वि- १, विघुक्त करना,
दूर करना विविमन्वि विघ्न मुरान्—भट्टि ९३६
२ अनर पहचानना, विवेचन करना ३ निर्णय करना,
निश्चय कर, निर्दोश करना—दे बाल तब लम्
चरित विदुषामये विविष्य बह्यामि—भावि० ११०८
४ वचन करना, बर्नाइ करना ५ काह देना ।

विघ्निकः [विघ्न + क, किल् + क, क० स०] एक प्रकार
केसी, अलग नामक पुल ।

विशेषण (वि०) [वि + च् + ल्यट्] 1 स्पष्टदर्शी, दीर्घदर्शी, साधवान् 2 बुद्धिमान्, चतुर, विद्वान् रघु० ५।१९३ विशेषण, कुशल, योग्य—रघु० १३।१९, नः विद्वान् पुण्य, बुद्धिमान् आरम्भी- न दत्वा कस्याचित्कस्या पुनर्विचारविषयक मनु० ९।७१।

विशेषण (वि०) [विगत विनष्ट वा कर्मयस्य] अथा, बुद्धिहीन 2 व्याकुल, उदम।

विचयः [वि + चि + जप्] 1. जोख बूझ, मलास उत्तर० १।२३ 2 छानबीन, तहकीकात।

विचयनम् [वि० + चि + क्यट्] सोझना, छानबीन करना।

विचारिका [विशेषण कर्मन्ते पाणिपादस्य स्वक विदायंतः नवा वि + चर् + क्युल + टाप्, इत्थम्] कुजली, विचारिका, जात्र।

विचारित (वि०) [वि + चर् + क्त] लेप किया हुआ, मला हुआ, मासित किया हुआ।

विचार (वि०) [वि + चर् + क्त] 1 इधर उधर घूमन वाला हिलने वाला, चरचरणे वाला, लडखडाने वाला, चंचल 2 अभिप्रायी, चमड़ी।

विचक्षणम् [वि + चक्ष् + ल्यट्] 1 स्पन्दन 2 व्यक्तिक 3 अस्थिरता, चंचलता 4 अभिमान।

विचारः [वि + चर् + क्त] 1 विमर्श, विनियम, चिन्तन, सोच—विचारमार्गप्रहितेन चेतसा—कु० ५।४०

2 परीक्षा, विचारविमर्श, मतेषणा, तत्प्राविचार 3 (चिन्ती बात की) नीच-मरताल मुञ्च० १।४३

4. निर्णय, विवेचन विवेक, तर्कना-विचारमूढ प्रतिभाति मे त्वम्—रघु० २।४७ 5. निश्चय, निर्धारण 6. चयन 7 सदेह, सकोष 8 दूरदृष्टि, समर्पता।

सम०—अ (वि०) निश्चय करने के योग्य, निर्धारक, -कृ० (स्त्री०) 1. न्यायाधिकरण, न्यायासन 2 विशेष कर बम की न्यायासन, लौल (वि०) विचारपूर्व, सचेत, दूरदर्शी, - स्वस्वम् 1 न्यायाधिकरण 2 तर्कसंगत चर्चा।

विचारकः [वि + चर् + क्त] छानबीन या तहकीकात करने वाला, न्यायाधीश।

विचारणम् [वि + चर् + क्त] 1 चर्चा, चिन्तन, परीक्षा, पर्यालोचन, मन्वेचन 2 सदेह, सकोष।

विचारणा [वि + चर् + क्त] 1 परीक्षण विचारविमर्श, मतेषणा 2 पुनर्विचार, सोच-विचार चिन्तन 3 सदेह 4 दर्शनशास्त्र की सीमासापेक्षति।

विचारित (यू० क० इ०) [वि + चर् + क्त] 1 सोचा गया, पूछनाछ की गई, परीक्षा की गई, विचारविमर्श किया गया 2 निश्चित, निर्धारित।

विधि (यू० स्त्री०) विधीः (स्त्री०) [विच् + इन् अ च कित्, विधि + डीच्] सहर, तरय।

विधिनिष्ठा [वि + कित् + लृत् + क्त + टाप्] 1. कमेष्ट, शक 2 भूल, चूक।

विधित (यू० क० इ०) [वि + चि + क्त] जोषा, नमाजी ली गई।

विधितिः (स्त्री०) [वि + चि + कित्] दूधना, जोष, नमाज करना।

विधिष (वि०) [विशेषण विधम, प्रा० ल०] 1 रत्न-विदमा, चितकबरा, चित्तीशार, चम्बेदार 2 नामाविध, बहुविध 3 रम्यलिप्त 4. मुन्दर, मनोहर स्वचिद्विचित्र जलयन्त्रमदिरम् श्रुत० १।२ 5 आश्चर्ययुक्त, अर्थमे

वाला, अजीब-हूत इतिविधिताना ही विधिषो विपक्षः—वि १।१६५ अन्—1 बहुदृष्टी रङ्ग 2 आश्चर्य। स्व०

—अप (वि०) जिनकबरे क्षीर बाजा, (—कः) 1 मोर 2 व्याघ्र, देह (वि०) मनोहर क्षीर बाजा (इ) बादल, क्य (वि०) विविध प्रकार का, - बीधैः एक चन्द्रवती राजा का नाम, (यह सत्यवती नामक पत्नी

से उत्पन्न राजा सम्यन्तु का एक पुत्र तथा नील का मोलेला भाई था। जब निस्तन्तानाकस्या में इसकी मृत्यु हो गई तो इसकी माता सत्यवती ने अपने पुत्र

(विवाह होने से पहले ही उत्पन्न) व्यास की बुझना और नियोग की विधि से विधिषवीर्य के नाम पर

सन्तानोत्पादन के लिए प्रार्थना की। व्यास ने माता की आज्ञा का पालन किया और फलतः अश्विका

तथा अम्बालिका (उसके भाई की विधवा पत्नी) में कर्मश. घृतराष्ट्र और पांडु का जन्म हुआ।

विधिषः [विधि + क्य] जोषण का वेद, -कम् आश्चर्य, राग्युच, अचम्भा।

विधिषकः [वि + चि + क्त] 1 जोष 2 मनेषणा 3 दूरबीन।

विधीर्क (वि०) [वि + च् + क्त] 1 अविज्ञत, अज्ञात 2 प्रविष्ट।

विधेयम् (वि०) [विधता चेतना यस्य प्रा० ल०] 1. चेतना-गर्हित, निर्जीव, अचेतन, मृतक 2 प्राणहीन।

विधेयत् (वि०) [विगत चेतो यस्य—प्रा० ल०] 1 लज्जा-हीन, मूढ, अज्ञानी 2 व्याकुल, बढावा हुआ, उदास।

विधेयः [विनिष्ठा चेष्टा प्रा० ल०] प्रवस, उद्यम, कोशित।

विधेयित (यू० क० इ०) [वि + च् + क्त] 1 उद्योग किया गया, कोशित की गई, लटके किया गया

2 परीक्षण किया गया, मतेषणा की गई 3 मुकुट, मुकुंतापूर्वक किया गया, - लम् । कर्म, कार्य 2. बसल, गम्भीर, उद्योग, साहसिक कार्य 3. आश्चर्य

4. कार्यकरण, सवेदना, सेल—विष्म० २।९ 5. घूट प्रवच, बध्यन् ।

विष्मः (युदा० पर० विष्मति—विष्मति-से की—) जाना, हिम्मा-मुक्ता।

ii (पूरा० उ०० विच्छयति०) 1 बमकना 2 बोकना ।
विच्छन्ः, विच्छन्कः । [विशिष्ट छन्दोऽभिप्रायो यस्मिन्

—ब० स० पले कन् च] महल, विशालमनवन जिसमें कई बाग़ या मञ्जिर हो ।

विच्छन्कः [वि + छ् + क्त्वं] महल, प्रासाद, दे० ऊ० 'विच्छन्' ।

विच्छन्कम् [वि + छ् + क्त्वं] कै करना, उलटी करना, उमलना ।

विच्छन्ति (यू० क० क०) [वि० + छ् + क्त्वं] 1 कै किया हुआ, उमला हुआ 2 जिसकी अवज्ञा की गई हो, जिसकी उपेक्षा की गई हो 3 टूटा-फूटा, न्यूनीकृत ।

विच्छन्त्य (वि०) [विपता छाया यस्य - प्रा० ब०] निष्पन्न, वृक्षला, --रत्न० १:२६, --ब. मणि, रत्न ।

विच्छित्तिः (स्त्री०) [वि + छिद् + क्तिन्] 1 काट डालना फाड़ देना मर्नु० ३:११ 2 काटना, बलग-अलग करना 3 अन्तर्धान, अनुपस्थिति, लाप 4 विराम 5 शरीर को उबटन या रङ्गलेप से रङ्गना रङ्ग-विषम, महावर—श० ७:५, मि० १६:८४ 6 सोना (बर आदि की) हद 7 कविता में विराम, यति 8. विशेष प्रकार की भृङ्गाश्रयि आबनमिया, जिसमें व्यक्तियों के प्रति उपेक्षा भी सम्मिलित हो (अपने व्यक्तिगत सौन्दर्य के आभियान के कारण)—स्तोकाप्या-कल्परचना विच्छित्ति कातिपोषकत्वं सा० द० १३८ ।

विच्छिन्न (यू० क० क०) [वि + छिद् + क्त्वं] 1 फाड़ा हुआ, काटा हुआ 2 तोड़ा हुआ, पृथक् किया हुआ, विभक्त, विभक्त अर्थ विच्छिन्नम् श० १:१९ ३ हस्तक्षेप किया गया, रोक गया ४ जस्त किया गया, बन्द किया गया, समाप्त किया गया ५ जितकरा ६ गुप्त ७ उबटन आदि रंगलेप से पना गया (दे० वि पूर्वक छिद्) ।

विच्छ्रित (यू० क० क०) [विच्छ्र + क्त्वं] 1 हका गया ऊपर से फैलाया गया पोता गया २ बजा गया ३ लीया गया, पोता गया ।

विच्छेदः [वि + छिद् + क्त्वं] 1 काट हाथना काटना, विभक्त करना, विभाग मा० ६:११ २ हाथना—श० ६:५१ ३ रोक, हस्तक्षेप विराम बन्द कर देना विच्छेदमाग भुवि यन्तु कथाप्रबन्ध का०, वि-विच्छेददर्शिन रघु० १:६६ ४ हटाना, प्रतिषेध ५ फूट बनवन ६ पुस्तक ७ अनुभाग या परिच्छेद ७. अन्तराल, अवकाश ।

विच्छ्रित (यू० क० क०) [वि + छ् + क्त्वं] 1 अथ पतित नीचे गिरा हुआ २ विस्फारित, पतित ३ व्यतिक्रान्त, पथविचलित ।

विच्छ्रितः (स्त्री०) [वि + छ् + क्तिन्] 1 अथ पतन,

पृथक् होना विभोज २ ह्रास, क्षय, पतन ३ विचलन ४ गर्भलाघ, असफलता वैया कि 'गर्भविच्छ्रित' हैं ।

विष् [(बृहो० उ०० वेवेकित, वेवेकिते, विक्त) १ विभुक्त करना, विभक्त करना २ मेव करना, अन्तर पहुँचाना, विवेचन करना (प्राय वि पूर्वक, तथा विपूर्वक विष् के समान) ।

ii (पूरा० आ०, द्वा० पर० विजित, विनक्ति, विप्न) १ हिकना कापना २ विमुक्त होना, नय से कापना ३ हरना, मयभीत होना—चक्रद विष्मा कुरीत भूय रघु० १:६८ ३ दुखी होना कष्टग्रस्त होना घेर० (वेजयति ने) भास देना हराना, भा ३, हरना, उद् मयभीत होना, हरना (प्राय अग० के साथ, कभी कभी सब० के साथ) नोदणाद् द्विजने यदा० ३:५ यस्मान्नाद्विजने लोको लाकान्-लोद्विजने च य मय० १:२५ भाट्ट० ७:१२२ विप्न ग कष्टग्रस्त होना दुखी होना न प्रहृष्यतिष्य प्राप्य नोद्विजने प्राप्य बाधियम् भग० ५:२० ३ ऊबना (अप० के साथ) जीवितानुद्विजमाने मा० ३, मनो नोद्विजने तस्य दह्नोर्जमहर्निशम् उद्विग्लिन्तु समागदमाराधत्स्वेदित कवि० ४ हराना, कष्ट देना, (घेर०) १ टट देना, लग करना कु० १:५ १:१२ हराना ।

विष्म (वि०) [विपतो जना यस्मान् ब० स०] अकेला, सेवानिवृत्त, एकाकी मय एकान्त स्थान, सुनमान स्थान (विष्मने निजी रूप से) ।

विष्मन्म [वि + जन् + क्त्वं] जन्म प्रसूति, प्रसव ।
विष्मन्त्य (वि० वा प०) [विष्म जन्म यस्य प्रा० ब०] हरामी, जो अर्थचक्र से उत्पन्न हुआ है ।

विष्मिन्म [विद् + क्त्वं पिल + क, कर्ग० स] गारा, कीषट ।

विषय [वि + ष्य] १ जीतना हराना पराग्न करना २ ज्ञान पट, ज्ञयवाचा—वि० १:०३५ रघु० १:२:४४, क० ३:११ श० २:१४ ३ देवराज्ञा का न्य, विषय ४ अर्जुन का नाम महा० नाम की व्याख्या बनना ५—अभिप्रायमि मशामे कदह युद्धुर्वैदान, राजिन्वा विनिवर्तमान तेन मा विषय विदुः यम का विशेषण ६ बहर्गना की दशा का प्रथम वर्ष ७ विष्म क सेवक का नाम । सम०—अभ्युपाधः विषय का साधन या उपाय कुचरः लडाई का हाथी, —छवः पथभी लडी का हार, विच्छिन्ने सेना का विघात डोक, बगरवृ एक नगर का नाम, बर्लः एक विद्यालय मैत्रिक डोक, —सिद्धिः (स्त्री०) सफलता, जीत कमह ।

विषयः (पु०) इन्द्र का नाम ।

विषया [विषय + टाप्] १ दुर्गा का नाम २ उसकी सेवि-

कारों में से एक मुद्रा १११ 3. एक विशेष विद्या जो विश्वामित्र ने राम को सिखाई थी मट्टि० २१२१
1 भाग 5 एक उत्सव का नाम -विश्वयोत्सव, दे० नी०
6 हरीनकी। सम० उत्सवः दुर्गादेवी के सम्मान में उत्सव जो आश्विन शुक्ला दशमी के दिन मनाया जाता है, इसकी आश्विनशुक्ला दशमी।

विजयिन् (यु०) [वि + जि + इति] विजेता, जीतने वाला।
विजयम् [विजता जग म्मात् पा० व०] वृक्ष का नम।
विजयः [वि०] जय + घञ् 1 वास कलश उन्मेषाग या मूर्ध्तापूर्ण बात 2 समान्य वार्ता 3 दुर्गावतापूर्ण या विद्वेषपूर्ण भाषण।

विजयित (भू० क० कृ०) [वि + जय् + क्त] 1 कहा गया, जिससे बातें की गई 2 मोक्षी भाभी बात, वास मुक्त नुनकाष्ट।

विजयत (भू० क० कृ०) [विजयत इत्यमर पा० व०] 1 नीच कुलात्मक, वर्णमकर 2 उपग्रह जगता हुआ 3 कृपानरित, ता माना, यातुका बहु स्त्री जिसके सभी सम्मान हुई हो।

विजातिः (स्त्री०) [विभिन्ना जातिः प्रा० म०] 1 भिन्न मूल या जाति 2 भिन्न प्रकार, जाति, या कुटुम्ब।

विजातीय (वि०) [विजाति + छ] 1 भिन्न प्रकार या जाति का, असमान, विषम 2 भिन्न वर्ण या जाति का 3 मिली जुली जाति का।

विजयीया [वि + जि + लृत् + ज + टाप्] 1 जीतने की या विजय प्राप्त करने की इच्छा 2 जाने बढ़ने की इच्छा, प्रतिस्पर्धा, प्रतियोगिता मत्प्रकाशा।

विजयीयु (वि०) [वि + जि + मत् + उ] 1 जीत का इच्छुक, विजय करने की इच्छा वाला यशस्वि विजयीयुः -रघु० ११३ 2 प्रतिस्पर्धी, मत्प्रकाशनी, -बु 1. योद्धा, शूरवीर 2 प्रतियोगी, समता प्रतिपक्षी।

विजयानाम् [वि + ज्ञा मत् + आ] राज्य जानने की इच्छा।

विजित (भू० क० कृ०) [वि + जि + क्त] प्राप्त किया हुआ, जाता हुआ, जिसके ऊपर विजय प्राप्त की गई हो, हराया हुआ। सम० आत्मन् (वि०) विजित अपनी कामनाओं का दमन कर दिया है, विजित, हस्तिय (वि०) जिसने हृदया का दमन कर दिया है, या नियंत्रण कर लिया है।

विजितः (स्त्री०) [वि जि + क्लिन्] जीत, कर्तृ, विजय काभ्यां ११५।

विजितः लम् (ल, लम्) [विज् इतच्, इतच् वा] बटनी (काशी मिथिन)।

विजित (वि०) [विजयण विद्वा -पा० म०] 1 कुटिल मुद्रा हुआ, मुद्रा हुआ कि० ११२१, रघु० १११३५ 2 बेईमान।

विजुक्तः [विज् + उक्तच्] शास्त्रिक या सेवक का पैर।

विजुक्तम् [वि + जुम् + क्त] 1 मुह काटना, जम्माई लेना 2 और जाना, कमी जाना, बिलना, उन्मुक्त होना, केषु सायननमस्त्रिकाना विजुक्तमोद्गायिषु कुहमनेषु रघु० १११३ 3 दिक्काला, प्रवर्धन करना, खोलना 4 फैलाना 5 मनोरंजन, आनन्द-प्रमोद, रमरन्ध्रिया।

विजुम्भित (भू० क० कृ०) [वि० + जुम्भ् + क्त] 1. मुह काटना, जम्माई लो-पृच्छ० ५१५ 2 उद्धाटित, तिरस्मित कलाया हुआ 3. प्रदर्शित, दिखाया गया, प्रकट किया गया -बु० ७३२ 4 दर्शन दिये गये 5. खेता गया, सम् 1 कीड़ा, मनोरंजन 2 अभि-मता इच्छा 3 प्रदर्शन, प्रदर्शनी ब्रह्मानविजु चित-मन्त्र 4 कृप, कर्म, वाचरण-मा० १०१२१।

विजुक्तम्, लम् [विज् + जन् (बहु इत्योरवेदः) + जन्] 1 गफ प्रकार का बटनी, दे० 'विजुल' 2 नीर, बाज।

विजुक्तम् (नपु०) दाहनीनी।

विज्ञ (वि०) [वि + ज्ञा + क्त] 1 जानने वाला, प्रतिभा-वार, बुद्धिमान, विद्वान् 2. चतुर, कुशल, प्रवीण, -ज्ञः बुद्धिमान या विद्वान् पुरुष।

विज्ञप्ता (भू० क० कृ०) [वि + ज्ञप् + क्त] सादर कहा गया, पाठित।

विज्ञप्तिः [वि + ज्ञा + क्लिन्] 1. सादर उक्ति या सभा-चार, प्रार्थना अनुरोध 2. घोषणा।

विज्ञात (भू० क० कृ०) [वि + ज्ञा + क्त] 1 विदित, जाना हुआ, प्रत्यक्ष ज्ञा किया हुआ 2 विज्ञान, विध्यन्, प्रमिद।

विज्ञातम् [वि + ज्ञा + क्त] 1 ज्ञान, बुद्धिमत्ता, प्रज्ञा, समझ - विज्ञानमय कोश, प्रज्ञा का स्थान (आत्मा के पक्ष काया में रहता) 2 विवेक, अन्तर रहवानता 3 कुशलता प्रवीणता प्रयोगविज्ञानम् -पा० ११- 4. मानसिक या लौकिक ज्ञान, सामाजिक अनुभव ने प्राप्त ज्ञान (वि० ज्ञानम् बहु या परमात्मविषय ज्ञान-वि०) -भग० ३११ ७३२, 1 भग० का समस्त ज्ञानों अर्थात् ज्ञान और विज्ञान का व्याख्या करता है 5 व्यवसाय, निषेधन 6 मगीत। सम० ईश्वर याज्ञवल्क्य स्मृति की मिताक्षरा नामक टीका या प्रणे वाकः व्यास का ज्ञान बृह का विशेष वाकः ज्ञान का सिद्धांत बृह द्वारा सिद्धाया गया सिद्धान्त।

विज्ञानिक (वि०) 1 विज्ञान - उन् बुद्धिमान, विद्वान् दे० 'विज्ञ'।

विज्ञापकः [वि + ज्ञा + जिच् + क्त, पुकायम्] 1 सूचना देने वाला 2 अभ्यापक, शिक्षक।

विज्ञापकम्, -मा [वि + ज्ञा + णिच् + ल्यट्, पुकायम्]
1 शिष्ट उक्ति वा सबाध, प्रार्थना, अनुरोध—काल-
प्रयुक्ता छद्म कार्यविद्विनिर्वापना मर्त्येषु सिद्धिमेति
—कु० ७१३, रघु० १७१४० 2 सूचना, वर्णन
3 सिक्कन ।

विज्ञापित (मू० क० क०) [वि + ज्ञा + णिच् + क्त,
पुकायम्] 1 शिष्टतापूर्वक कहा हुआ वा सबाध दिया
हुआ 2 प्रार्थित 3 सूचित 4 शिक्षित ।

विज्ञापितः [वि + ज्ञा + णिच् + क्तिन्, पुकायम्] दे०
'विज्ञपित' ।

विज्ञापकम् [वि + ज्ञा + णिच् + यन्, पुकायम्] प्रार्थना
—उत्तर० १ ।

विजयर (वि०) [विजतो ज्यरो यस्य—ब० स०] जय से
मुक्त, चिन्ता वा दुःख से मुक्त ।

विजयारम् (मनु०) जोशों की सफेदी, नेत्रों का स्वेत
भाव ।

विजोति, -जी (स्त्री०) [विज् + उज, पृषो० साध्]
रेखा, पंक्ति ।

विज् (भ्वा० पर० डेटि) 1 ध्याने करना 2 अभिधाप
देना, धुँधल कहना ।

विज् [विट् + क] 1 जार, धार, उपपत्ति—मा० ८१८,
वि० १४४८ 2 लपट, कामुक 3 (नाटकों में)

किरी राखा वा पुष्परिच युक्त का साथी, किसी
ऐसी वेश्या का साथी, जिसको मायन, समीत तथा
कामिनी विनाय की कला में कुशलता प्राप्त हो,
मायक पर कामिनी पराजयवीर्य की विद्रुपक का कार्य
करे—दे० मुष्क० अंक -१, ५ व ८ परिभाषा के
विट् दे० सा० व० ७८ 4 धूर्त, ठग 5 मांडू, हलकती
6 चूहा 7 और या क्षरि का पेड़ 8 मारवी का
पेड़ 9 वस्त्रव्युक्त धागा । सम० वाक्पिकम् एक
प्रकार का खनिजपदार्थ, सोनामाली, लज्जक रोग-
नाटक नामक ।

विज्जुः [विज्येव टंक्यते वज्यते इति—वि + टज् + घञ्]
1 पिडिया-भर, कमतर का दरवा 2 सबसे ऊँचा
छिद्र, कलश वा कपूर, ऊँचाई—जयमेव महीचर
विटक—मा० १०, विक्रम० ५१७७ ।

विज्जुकः [विट्क + कन्] दे० विटक ।

विज्जित (वि०) [वि + टज् + क्त] विजित, मूढाकित ।

विज्वः [विट् विस्तार का पाति विजनि—पा + क] 1
साक्षा, (मत्ता या बुझ की) टहनी कोमलविटपातु-
कारिणी बाहु स० १२१, ३१, यदनेन तर्कं पालिन-
कारिणा लडिटपामिता मत्ता रघु० १४७, मि०
५१४८, कु० ६१४१ 2 माही 3 मत्ता अकुर या
किसलय—मि० ७१५३ 4 गुप्त मृष्ट मृष्ट
5 विस्मय 6 अश्रुजल पटल ।

विज्विन् (पु०) [विट् + इनि] 1 वृक्ष परितो वृष्टावप
विटपिन सर्वे भाषि० १२१, २९२ वटपुल,
मूलर । सम०—वृक्षः वनार, लंगूर ।

विज्व (वृक्ष) कः (पु०) विष्णु या कृष्ण का रूप (बर्बा
प्राप्त में स्थित पडरपुर में इस रूप की पूजा
होती है) ।

विज्व (वि०) दुरा, दुष्ट, अधम, नीच ।

विज्वरः (पु०) बृहस्पति का नाम ।

विज् (भ्वा० पर० डेटि) 1 अभिधाप देना, धुँधल
कहना, दुरा प्रका कहना 2 जोर से चिन्तना ।

विज्व [विट् + क] एक प्रकार का कुत्रिम नमक ।

विज्व, -वन् [विट् + वज् + क्त] एक प्रकार का साक,
वायविज्व (कुमिनालक औषधि के रूप में बहुधा
प्रयुक्त) ।

विज्वम् [विज्व् + णच्] 1 नकल 2 दुखी करना, तय
करना, कष्ट देना ।

विज्वन्वन्, मा [विज्व् + ल्यट्] 1 नकल 2 छद्मवेक,
छलमूढा 3 मोखबाजी, जालसाजी 4 नकेल, छताप
5 पीडित करना, दुःख देना 6 निराश करना 7.
मजाक, उपहास, परिहासविषय इव च तेज्ज्वा
पुरतो विज्वना कु० ५१७०, अस्ति त्वमि वाक्पिकम्
प्रमदानावपुन विज्वना ५१२२ ।

विज्वन्ति (मू० क० क०) [विज्व् + क्त] 1 अनुकरण
किया गया, नकल किया गया, परिहास किया गया,
मजाक बनाया गया 3 ठगा गया 4 नकेल पकचाया
गया, सतप्त किया गया 5 हतास दिया गया 6
नीच, कमीना, दीन ।

विज्वारकः [विज्वार + कन्, लस्य र] विज्वार ।

विज्वारः, विज्वारकः (पु०) दे० विज्वार, विज्वारक ।

विज्वीन् [वि + जी + क्त] पक्षियों की एक उडानविशेष ।
दे० जीन ।

विज्वुः [विट् + कुलन्] एक प्रकार की बेन ।

विज्वरकम् [विज्व् + वज् + क्त] वैदूर्य, नीलम् ।

विजी (वी) वत् (पु०) [विट् व्यापकम् जोषो यस्य
ब० स०] हन्त का नाम, दे० 'विजीवत्' ।

विजितः [वि + तज् + घञ्] 1 पक्षियों का विजरा
2 रस्सी, भुजका, जाल या खंजीर आदि जिनसे
बनने पशु पक्षी बँद किये जाय ।

विजितः [वि + तज् + णच्] 1 हाथी 2 एक प्रकार का
नाला या बटलनी ।

विज्वडा [विज्व + टाप्] 1 मद्य आशेष, निराधार विज्व-
वेषण, मोक्ष नकं निर्वर्क लकीलक—स (वज्)
प्रतिपक्षव्यापनहीन विज्वडा वीन 2 लूट-लीन ।

विज्वर्ण आनाचना 3 जगन्म स्वदा 3 लूट, चुर ।

विज्वन (पु० क० क०) [वि + वज् + क्त] 1 मजा

दुष्प्र, विस्तृत किया हुआ, बिछाया हुआ 2 आयन, विणाल, विस्तीर्ण 3 सम्पन्न, निष्पन्न बायोन्वित
—जिततयज्ञ शं० ७३३६ 4 दका हुआ 5 प्रसृत
—दे० वि पूर्वक तन्, तन् कोई भी ऐसा उपकरण जिसमें तार लगे हों बीजा आदि। मम धन्वम् (वि०) जिसने अपने धनुष की पूरी तरह तान लिया है।

विततिः (स्त्री०) [वि + तन् + क्तिन्] 1 विस्तर प्रसार 2 परिमाण समग्र गुण्य भूषण 3 देखा गिरा मा० १३७३।

वितथ (वि०) [वि + तन् + क्थन्] 1 शत मिथ्या—आय मना न भवता विषय विज्ञानस्य तन्मा २ ५१४१, रघु० १८ 2 व्यर्थ विचारों से गता विनय प्रयत्न में।

वितथ्य (वि०) [वितथ + क्त] मिथ्या २० ४२१।

वितथु (स्त्री०) [वि + तन् + क्थन्] पत्राव को एक नदी का नाम, वितथ्ना या सेलम नदी।

वितथु (पुं०) अञ्जा बोटा स्त्री० विषया।

वितरयन् [वि + त् + ल्युट्] 1 पार जाना 2 उपहार दान 3 छोड़ देना, त्याग करना, निराजलि देना।

वितर्कः [वि + तर्क + क्त] 1. व्यक्ति, दलोल अनुमान 2 अन्दाज अटकल, कल्पना, विश्वास विरोधपुष्पा धिक्कलकृपायौ बाहु तदीयाविति ये वितर्क कु० १३१३ 3 उद्भावन, चिन्तन अन्० ३१४५ ४ सन्देह, कि० ४५५, १३१२ 5 विचारविनिमय, विचारविमर्श।

वितर्कयन् [वि + तर्क + ल्युट्] 1. तर्क करना 2 अटकल करना, अन्दाज लगाना 3 सम्येह 4 तर्क वितर्क।

वितर्हि, -ही वितर्हिका, (स्त्री०) [वि + तर्ह + क्त] वितर्हि + कीच्, वितर्हि + क्त + टाप्] 1 आयन में बना हुआ चौकोर चक्रा 2 छज्जा, बरामदा।

वितर्हिका, -ही, वितर्हिका (स्त्री०) दे० वितर्हि आदि।

वितरन् [वि + तर्ह + क्त] 1. तर्क करना 2 अटकल करना, अन्दाज लगाना 3 सम्येह 4 तर्क वितर्क।

वितरन्ता (स्त्री०) पत्राव की एक नदी जिसको यूनानी विदरन्ता कहते हैं तथा जो आजकल सेलम या वितरन्ता के नाम से विख्यात है।

वितरिणः [वि + तर्ह + क्त] बारह अंगुली की लम्बाई की माप (हाथ की पूरा फैला कर अंगुली से कन्धो अंगुली तक की दूरी)।

वितरण (वि०) [वि + तन् + क्त] 1 खाली, रीता 2 सार- 3 हुतोत्साह, उदास रघु० ४८८१ ४ बुद्ध, जड 5 दुष्ट, परिष्कृत मन्, मन् 1 कलना प्रसार करना वितार करना—शि० ११२८ 2 शक्तिमाना, बरोदा विष्णुलैलाकनकचरित्रश्रीविमान मयाधन् विक्रम० ४१३३, रघु० १९३९ कि० ३१४२, वि०

३१५० 3 गहो 4 सधह, परिमाण समबाय कि० १३६३, मा० ६१५ 5 यज्ञ, ज्ञाद्विदि—विनायेक्येव त्वं मय व माय विधिगन्तु देवी० ६३०, ३१६६, शि० १९१० 6 यज्ञ की वस्त्र 7 हनु, मोतम, कम् अवकाश विगम।

विनायक, कम विगम ११ 1 प्रसार 2 डेर, परिमाण मन् ११ २६ 3 शक्तिमाना, ४१३३ ४ ५१३९ ५ ६१५०

विनीय [वि + नी + क्त] 1 पार किया हुआ तन्मय गन्तव्य हुआ 2 दिया हुआ ज्ञान प्रदत्त शि० १९३९ 3 नीचे गया हुआ शि० १९३९ ४ दिया गया 5 दान दिया मा० ६१५०, शि० १९३९ ६ वि पूर्वक न्]।

विनुष्य [वि + नु + क्त] 1 मृतिपण्य नामक एक मुद्रा 2 नु + नाम प्राप्ति से वर।

विनुष्यक [वि + नु + क्त] 1 मृतिपण्य नामक एक मुद्रा 2 नु + नाम प्राप्ति से वर।

विनुष्य (पुं० क० ह०) [वि + नु + क्त] अमनुष्य, अममम मन्ताव से मृत्त्यु

विनुष्य (वि०) [वि + नु + क्त] अमनुष्य, अममम मन्ताव से मृत्त्यु

विनुष्य (वि०) [वि + नु + क्त] अमनुष्य, अममम मन्ताव से मृत्त्यु

विनुष्य (वि०) [वि + नु + क्त] अमनुष्य, अममम मन्ताव से मृत्त्यु

विनुष्य (वि०) [वि + नु + क्त] अमनुष्य, अममम मन्ताव से मृत्त्यु

विनुष्य (वि०) [वि + नु + क्त] अमनुष्य, अममम मन्ताव से मृत्त्यु

विनुष्य (वि०) [वि + नु + क्त] अमनुष्य, अममम मन्ताव से मृत्त्यु

विनुष्य (वि०) [वि + नु + क्त] अमनुष्य, अममम मन्ताव से मृत्त्यु

विनुष्य (वि०) [वि + नु + क्त] अमनुष्य, अममम मन्ताव से मृत्त्यु

विनुष्य (वि०) [वि + नु + क्त] अमनुष्य, अममम मन्ताव से मृत्त्यु

विनुष्य (वि०) [वि + नु + क्त] अमनुष्य, अममम मन्ताव से मृत्त्यु

विनुष्य (वि०) [वि + नु + क्त] अमनुष्य, अममम मन्ताव से मृत्त्यु

विनुष्य (वि०) [वि + नु + क्त] अमनुष्य, अममम मन्ताव से मृत्त्यु

विनुष्य (वि०) [वि + नु + क्त] अमनुष्य, अममम मन्ताव से मृत्त्यु

विनुष्य (वि०) [वि + नु + क्त] अमनुष्य, अममम मन्ताव से मृत्त्यु

२।१७, रघु० ३।३९, मनु० १।३३, कु० ६।३०, प्रेर०
—(वेदवर्ति ते) 1 जतलाना, सुचाना देना, सूचित

करना, अवगत कराना, बताना 2 अध्यापन करना, व्याख्या करना,—वेदार्थस्त्वानवेदयत् सिद्धा० 3 महसूस करना, अनुभव करना मनु० १।१।३३ आ, (प्रेर०) 1 बोधना करना कहना, प्रकचन करना—किमिति नावेदयति अथवा किमावेदिनेन वेदी० १, रघु० १।२।५५, कु० ६।२१ अट्टि० ३।४९ 2 प्रदर्शन करना, दिखाना इतिग करना आवेदयति प्रस्थापयमानदमयजातानि युमानि निमित्तानि का० 3 प्रस्तुत करना, देना वि-- (प्रेर०) 1 बताना समाचार देना, सूचित करना (सप्र० के साथ)—रघु० २।६८ 2 अपनी उपस्थिति की बोधना करना—कथ मात्मान निवेदयामि—स० १ 3 इतिग करना, दिखाना दिगवरत्वेन निवेदित वसु—कु० ५।७२ 4 प्रस्तुत करना, उपस्थित होना भेंट बढाना—मनु० २।५१, याज्ञ० १।२७ 5 देख देख में सौपना, दे देना, प्रति—(प्रेर०) समाचार देना सूचित करना, तस्य— (आ०) जानना, मावधान होना अट्टि० ५।३७ ८।१७ 2 पहचानना, (प्रेर०) जतलाना, पर्यवक्ष ज्ञान कराना अट्टि० १७।६३।

ii (विधा० आ० विधत्ते, वित्) होना, विद्यमान होना—अपराधना कृते जाते मयि नाप न विद्यते मुच्छ० १।३७, माधवो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः मय० २।१६ (हु० 'वन्')।

iii (पुदा० जन० विदति—ते, वित्) 1 हासिल करना प्राप्त करना, अर्थात् करना, उपलब्ध करना—एकय-प्यास्वित मय्यमुभयोविद्यते फलम्—मन० ५।४ याज्ञ० ३।१९२ 2 मालूम करना, खोजना पहचानना, पचा चेनुमहर्षेण कर्मो विदति मानरम्—सुभा० कु० १।६ मनु० ८।१०९ 3 महसूस करना, अनुभव करना—रघु० १।४।५६, मग० ५।२१ १।१२४ १।४ ४. विवाह करना—मनु० १।६९, अन्—1 हासिल करना, प्राप्त करना 2 भुगतना, अनुभव करना महसूस करना पाप मद्यमे वि वा मनापमनु विदति—धर्मि० २।११२, गी० ४।

iv (हवा० आ० विने विन या विन्न) 1 जानना खगलना 2 मानना, लिहाज करना, मयलना—न तुनेक्ष्मिन् भोकोऽप्य विने वा निष्पराकमम्—अट्टि० ६।३९ 3 मालूम करना भेंट होना 4 नर्क करना विमर्श करना 5 परीक्षण करना, पूछताछ करना।

v (पुदा० आ० वेदयते) 1 कहना, प्रकचन करना, बोधना करना, समाचार देना 2 महसूस करना अनु-भव करना 3 रहना निम्नादिन क्लोक् में जानु के

वर्षस्त्वय न विद्यते, वित्ते वर्षं तवा धन्रिस्तेषु पुत्रां न विदति ।।

विद् [वि०] [विद् + विक्प्] (समास के अन्त में) जानने वाला, जानकार, वेदविद् आदि, (पु०) 1 बुधबुद्ध 2 विद्वान् पुण्य बुद्धिमान मनुष्य (स्त्री०) 1 ज्ञान 2 समझ, बुद्धि।

विद् [विद् + क] 1 विद्वान् पुण्य, बुद्धिमान मनुष्य, पंडितजन 2 बुधबुद्ध, वा 1 ज्ञान अधिगम्य 2 समझदारी।

विद्वद् [वि + व् + व्] चटपटा भोजन जिनके कानों से प्यास अधिक लगे।

विद्वद् [वि + व् + क] [वि + व् + क] 1. ज्ञान हुआ, जग से प्रसूत हुआ 2 पका हुआ 3 पचा हुआ 4 नष्ट किया हुआ, गला-सड़ा 5 बतुर, कुशाघबुद्धि, निपुण, सूक्ष्मदर्शी 6 पूर्ण कलाभिज्ञ, वक्ष्यप्रकारी 7 जनश्ला या जनपचा, -ज्व, 1 बुद्धिमान या विद्वान् पुण्य, विद्याभ्यसनी 2 स्नेहसाधारि, स्वा चालाक, बतुर स्त्री, कलाविद् स्त्री।

विद्वद् [विद् + कश्] 1 विद्वान् पुण्य, विद्याभ्यसनी 2 मत्वासी, मुनि।

विद्वद् [वि + व् + म्] तोड़ना फटना विदीर्ण होना रत्न काटदारी नागपाती, ककारी बुद्ध।

विद्वद् [वि + व् + म्] [विगत वर्म] गुणा यत् 1 एक विले का नाम, आधुनिक बगर—अस्ति विद्वद् नाम जनपदः—दस० अस्ति विद्वन्मु पपपुर नाम नगरम् या० १, रघु० ५।४०, ६०, नै० १।५० 2 विद्वद् के निवासी, श्री 1 विद्वद् देश का राजा 2 सूखी या मरभूमि। सम० आ, तज्जा, राजतज्जा, बुद्ध विद्वद्- राज की पुत्री दमयन्ती के विशेषण।

विद्वद् [वि०] [विपट्टितानि दानानि मय्य वि + दन् क] 1 टुकड़े टुकड़े हुए आर्याग बीरा हुआ 2 लुना हुआ (फल आदि) बिना हुआ सः 1 विभक्त करना अलग अलग करना 2 काटना टुकड़े टुकड़े करना 3 रोटी 4 पहाड़ी आबजुल, कच्चा 1 बीस की अपविधिया की बनी टोकरी या लचीली डालियों की बनी बस्तुर 2 अनार की छाल 3 दहली 4 किसी द्रव्य की रीक।

विद्वलम् [वि + दल् + म्] लण्ड लण्ड करना, फाड़ का अलग अलग करना काटना विभक्त करना।

विद्वद् [वि + व् + म्] 1 फाड़ना, बीरना अथ लण्ड करना 2 लघाम पड़ 3 (किसी नदी याक ताकाब का) ऊपर से बहना जलप्लावन।

विद्वद् [वि + व् + म्] 1 फाड़ने वाला काटने वाला 2 नदी की बाग के मध्य में स्थित बुद्ध या चट्टान

(जो नदी के मार्ग को विभक्त कर दे)

3 किसी शुष्क नदी के पाट में पानी के लिए बनाया गया छिद्र ।

विशारदा : [वि + दृ + शिच् + ल्यट्] 1 नदी के मध्य में स्थित घटान या बूझ (जिससे नाव बाँध दी जाय)

2 संधाम युद्ध 3 कर्णिकार या कर्नर का बूझ, या संधाम, युद्ध जग 1 फाटना लण्ड लण्ड करना चीरना, छिन्न करना, मोड़ना—यून मध्ये

श्रवणविशरण वच मूढां ५१६ युवजनहृदयविदारणमनसिजनलक्षरिचिक्कजान मो० १ कि० १४।

५४ (१४) विदारण विगणन का कार्य करना है ।

2 क० ६८ न म रण देना 3 वच ११४ ।

विशार : [वि + दृ + शिच् + उ] छिपकली ।

विशित (यू० क० क०) { विदृ - क्त } 1 जार समझा हुआ सोझा हुआ 2 सूचित ३ विभूत विकृतान प्रसिद्ध सूचनविशित वज्ञो—मम० ६५ प्रतिज्ञान इकार किया हुआ, —स विज्ञान पुष्प, विशाब्धसनी

—सम्मान, सूचना ।

विशिष्ट (स्त्री०) [विख्या विगता] दो विशाब्धों के मध्यवर्ती विशु ।

विशिष्टा (स्त्री०) दशार्ज नामक प्रवस की राजधानी (वर्तमान मलसा नगर) नवा (दशगर्जना) विशु

प्रतिविशिष्टालक्षण राजधानीम्—मेष० २४ 2 मासवा प्रदेश की एक नदी का नाम 3 —विश्वि

दे० ।

विश्वी (यू० क० क०) [वि + दृ + क्त] 1 काबा हुआ, लण्ड लण्ड किया हुआ विदारण किया हुआ, काह कर मोला हुआ 2 मोला हुआ फैलाया हुआ (दे० विश्वक दृ) ।

विश्व : [विदृ - क्त] हाथी के गड्ढल का मध्य भाग, हाथी का ललाट (हस्तिकुलमग्रभाग) ।

विश्वर (वि०) [विदृ + कृत्] बुद्धिमान् मनीषी १ बुद्धिमान् या विद्वान् पुष्ट 2 धन आदमी वद्वन्-कारी 3 पाण्डु के छोटे भाई का नाम (जब सत्य-वती को जान हुआ कि व्यास द्वारा उसकी दोनो पुत्रवधओं से उत्पन्न दोनो पुत्र शारीरिक रूप से सिद्धामन के अवोग्य हैं क्योंकि वृत्तराष्ट्र अथा वा मथा पीछे वाला एवं अस्वरक्ष वा—तो उसने उन्हें एक बार फिर व्यास की महायज्ञा योगने के लिए कहा । वस्तु व्यास मनि को तपोमय उग्र बुद्धि से भयभीत होकर बड़ी विषयाने अपनी एक दासी को ज्ञाने वच पहना कर उनके पास भजा और यही दासी विश्वर की मना बनी । व अपनी बड़ी बुद्धि-मत्ता सचाई और योग निष्ठाता के कारण प्रसिद्ध हैं वह पादकों से प्रमाण स्वर रखने व, तथा कई

बार उन्हें अनेक मुकटवस्तु विपत्तियां से बचाया) ।

विश्वरु : [वि + दृ + क्त] 1 एक प्रकार का काष्ठा वन 2 लोचन की तरह का एक भुविधन गधरन ।

विश्वर (यू० क० क०) [वि + दृ + क्त] कष्टवस्तु, सतपु कुली (दे० विश्वरुक्तु) ।

विश्वर (वि०) [विशेषण दूर प्रा० म०] जो बहुत दूर हो दूरस्थित—मरिचिद्वारानरभावतन्वी रघु० १३।४८,

१ पहाड़ का नाम जहाँ से वैदूर्यमणि निकली है—विश्वरभूमिपद्मभद्राभ्यार्दुम्भ्रवा रत्नशलाकयव—कु०

१।०४ द० हम पर नया शि० ३।६५ पर मल्लि०

विश्वरुष विश्वरेण, विश्वरुतः, विश्वरुत् शब्द क्रिय विशेषण के क्रम प्रयुक्त होकर दूर से दूरा पर दूर अर्थ को प्रकट करते हैं । मम० म (वि०)

दूर दूर तक फैला हुआ—जम् वैदूर्य मणि ।

विश्वरुष (वि०) (स्त्री०—की) विश्वरुषति स्व पर वा—वि + दृ + क्त + शिच् + क्त 1 वृषित करने वाला मलिन करने वाला छुन फैलाने वाला भष्ट करने वाला

2 बदनाम करने वाला शाली-गलीज बकने वाला

3 शिक मसबरा ठिठोमिया —कः 1 हसोड, भाड, परिहासक 2 विशेषण नाटक में नायक का दिल्ली-बाज साथी और कत्तरग मित्र जो अपनी खनाली

बेगमूचा बातचीत हावभाव, मुचम्रा आदि से तथा अपने आपकी परिहास का पात्र बना कर उल्लास में

बुद्धि करता है, ल० १० ७९ पर दो गई परिमथा कुमुदवस्तुतापि कनकपुष्पमागच्छ, हास्यकर

कण्टकविश्वरुषक तास्त्वकमज 3 स्वच्छाकारी, लपट ।

विश्वरुषम् [वि + दृ + ल्यट्] 1 मलिनकरण, भ्रष्टाचार 2 दुर्वचन, मित्रकी परिवाद ।

विश्वरुतः [वि + दृ + क्त] सोवन, मन्त्रि ।

विश्वरुतः [विप्रकृष्टो देश प्रा० स०] दूसरा देश प्रदेश भजते विश्वरुषमिक्तेन जिनमन्दनप्रवेसमपवा दुगल

—शि० १४।८। मम० ज (वि०) विश्वरुत परदशी ।

विश्वरुषी (वि०) [विशेष—स] परदेशी विदेशी ।

विश्वरुतः (यू० क० क०) [विगनो देहा देहसवधो मय्य—प्रा० ब०] एक देश का नाम, प्राचीन मघिया

(दे० परि० ३)—रघु० ११।३६ १२।३६ २ इस देश के निवासी,—ह विश्वरु क ज्ञान हा विदेह ।

विश्वरु (यू० क० क०) [व्यष + क्त] 1 बोधा हुआ बुधा हुआ धावत, छरा भोका हुआ 2 पीटा हुआ कसाहुत, वशाहत 3 फेंका गया निर्देशित, प्रविन

1 विशीर किया गया २ मिलाया चुनना ३ खूब खाव । मम० कर्ष (वि०) जिकके कान सिद्ध हा ।

विश्वरु [विदृ + कृत् + ल्यट्] 1 ज्ञान, अवगम, शिक्षा, विज्ञान (ता) विधामम्यसनेनेव प्रसादियुमर्षेधि

—रघु० १।८८ विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्न
मुक्त धनम् मर्त्यं २।१० (कुछ विद्वानों के बता
नुसार विद्या धार है आन्वीक्षिकी नवी वाता
वहनीनिरुप शास्त्रों का) कि० २।६ इन चारों
में मनु० ७।४२ पाषाण की विद्या—आत्मविद्या को
और जोड़ देता है। परन्तु विद्या साधारणतः चौदह
मानी जाती है—अर्थात् चार वेद छ वेदांग चर्म
मीमांसा तर्क या न्याय और पुराण दे० चतुर
के नीचे चतुर्विध विद्या तथा नै० १।४ २ मन्त्रार्थ
ज्ञान अध्यात्म ज्ञान—उत्तर० ६।६ पु० अविद्या
३ आधु मन्त्र ४ युगविधी ५ ऐन्द्रजालिक कुछकला।
सम०—अनुपालिन्—अनुलेपिन् (वि०) ज्ञानोपाधीन करने
वाला, आत्मन्—अर्थतन्—अध्यात्म, ज्ञान प्राप्त करना
विद्या ब्रह्म करना, अध्ययन अर्थ ज्ञान की छात्र
—अधिष् (वि०) ज्ञान विद्याध्यक्षी, शिष्य—आत्मन्
विद्याध्य, महाविद्यालय, विद्यामन्दिर उपार्जनम्
= विद्याधनम्—कर विद्यान् पुष्प, चक्ष, चक्षु
(वि०) अपने ज्ञान एवं विद्या के लिए प्रसिद्ध, देवी
सरस्वती देवी,—अन्त्य विद्यास्त्री लोकत, कर (स्त्री०
री) एक देवयौनि विशेष, अर्चदेवता,—प्राप्ति
= विद्याधन,—अन्त्यः १ ज्ञान की प्राप्ति २ ज्ञान के
द्वारा प्राप्त किया गया धन आदि, सिद्धीन (वि०)
निराकर, कदाही,—बुद्ध (वि०) ज्ञान में बढ़ा हुआ
विद्या में प्रगतिशील—अन्त्यतन्, अन्त्यतः ज्ञान
की ओर।

विद्युत् (स्त्री०) [विशेषण सोनते—वि + वृत् + विप्]
विद्युत्—वाताय कपिला विद्युत्—महा०, मेघ०
१८, ११५ २ बल। सम० उन्मेष विद्युत् की
बीज,—विद्युः एक प्रकार का राजत—अन्त्या,—सोत
विद्युत् की बीज या कांति वाक् (नपु०) बल
यदि ते बुक्त विद्युत् की बीज या बलक,—वातः
विद्युत् का विरता या प्रहार, विद्युत् कांता,—कला,
कला (विद्युत्कला, विद्युत्कला) १ विद्युत् की बीज
या कला २ बलमालिनीक या कुटिल विद्युत्।

विद्युत् (वि०) [विद्युत् + वृत्] विद्युत् ने बुक्त
—मेघ० ६४, (पु०) वाक् कु० ६।२७।

विद्युत् (वि०) स्त्री० गी [वि + वृत् + विप् + स्पृट्]
१ प्रकाश करने वाला, चमकाते वाला २ लोहाहरण
निकालने करने वाला आकाश करने वाला।

विद्युः [अध् + रट्, वात्तादेक, सम्प्रसारणम्] १ काटना
बलक अन्त्य करना, छेद करना २ द्वारा छिन्न
विद्युत्।

विद्युः [वि + वृत् + कि वृत्] १ वीरदार कोटा।

विद्युः [वि + वृत् + वृत्] १ ज्ञान जाना, उद्घाटन प्रकाशन
२ काटना ३ प्रहार ४ पिचकना लम्पना।

विद्या (वि०) [वि + दा + क्त] नीद से जागा हुआ
उत्पुट।

विद्याधनम् [वि + धृ + णिप्] १ भगवान्, लखेडना
हुक कर दूक करना परास्त करना २ लम्पना
पिचकना।

विद्युत् [विशिष्टो वृत्] १ मृगे का बुद्ध (जान गग के मृत्य
बान मृगा (मृगयो) का पैदा करने वाला) २ मृगा
प्रवाह तथाधर्माध्व विद्युत् २ मृगा
कु० १।४४ ३ कोपल वा किमलयः सम० कला
१ मृगे की तात्मा २ एक प्रकार का गणद्वय—कलिका
नलिका नामक एक गण द्वय।

विद्युत् (वि०) [वि + वृत्] (कर्त्त० ए० व० पु०)
विद्यान् स्त्री० विद्युत्, नपु० विद्युत् १ जानने
वाला (कर्म के साथ) अनन्त ब्रह्मार्थ विद्यान्
न विभिन्न कदाचन तब विद्यामपि नापकारणम् २
८।७६ कि० १।१३ २ बुद्धिमान् विद्यान् (पु०)
विद्यान् मनुष्य या बुद्धिमान् व्यक्ति, विद्याध्यक्षी
कि वन्तु विद्यान् गुरु प्रवेयम् रघु० ५।१८। सम०
कल्प, देवीय—देव्य (वि०) विद्यार्कल्य, वि-
देवीय विद्यदेवता) बोधा ग्ना लिखा कम विद्यान्
धन (विद्यधन) विद्यान् या बुद्धिमान् पुष्प,
मुनि।

विद्युत् (पु०) विद्युः [वि + वृत् + विप् क वा] धातु
गुरमन्—विद्युत्पुष्पमनुष्य मर्त्यं २।७७ रघु० ३।६
वाक् १।१६२।

विद्युत् (पु० क० कु०) [वि + वृत् + क्त] वृत्ति,
अनीलिन कुलित।

विद्युत् [वि + वृत् + वृत्] १ अनुता, पुना कुला
वन्तु ८।१४६ २ तिरस्करणीय बलवत् मर्हा (मान-
हानि)—विद्युत्प्रभितप्रान्तायपि मर्हावाह—वारट्।

विद्युत् [वि + वृत् + स्पृट्] १ पुना करने वाला,
तनु, बी रोचपूर्ण स्वभाव की स्त्री,—अध् पुना
और अन्ता पैदा करना २ अनुवा, पुना।

विद्युत्, विद्युत् (वि०) [विद्युत् + विप्, तनु वा]
पुना करने वाला सम्प्रत्यय (पु०) वृत्त, तनु।

विद्युत् (पु० वर० विपत्ति) १ बुद्धिमान्, काटना
२ सम्मान करना, पुना करना ३ राज्य करना,
शासन करना प्रमान्य करना।

विद्युत् [वि + क] १ प्रकार, किन्तु तथा बहुविध,
नामाविष में २ डग, रीति कृत् ३ तह (समाज के
अन्त में विशेष कर अर्थ के वपचात्) विविध,
अर्थविष आदि ४ हाथियों का बाह्य ५ समृद्धि
६ छेद करना।

विद्युत् [वि + वृत् + स्पृट्] १ क्लृप्ता, विद्युत् करना
२ बरबाहट् कपकपी।

विधवा [विगतो बन्धो यस्या सा] रात्र, देवा मा नानो
विधवा जाना गृहे रोदिनि तन्यनि मुमा० । सम०
—आवेवन्तु देवा स्त्री से विवाह करना, याविन्
त्रो विधवा स्त्री से सहवास करता हूँ ।

विषयम् [वि + धृ + धृत्] वरचराहट, विक्षोभ ।

विषत् (पु०) सर्व मृष्टि का उत्पादक ब्रह्मा ।

विषा [वि + धा + क्तिप्] 1 दग रीति रूप 2 प्रकार
किस्म 3 समृद्धि, सम्पन्नता 4 हाथी बोटो का चारग
आव पदार्थ 5 छेद करना 6 किराया, मजदूरी ।

विषात् (पु०) [वि + धा + लृप्] 1 निर्माता, अष्टा
—कु० ७।३६ 2 अष्टा, ब्रह्मा—विषाता भद्र नो
वितरन्तु सन्तोष्य भये—मा० ६।७ रघु० १।३२
६।११, ७।१५ 3 अनुदाता, दाना प्रदाना—कु०
१।१७ 4 माय, देव—हि० १।४० 5. विषयकर्मा
6. कामदेव 7 मरिचा । सम० अयुक्त् (पु०)
1 सुद की चमक, रूप 2. मूरजमुकी फूल, —मू
नारद का विशेषण ।

विषानम् [वि + धा + लृट्] 1 क्रम से रचना, व्यवस्था
करना 2 अनुष्ठान, निर्माण, करण, —कार्यान्विजनपथ-
विषानम् क० १, बाका" य" भाषि 3 सुष्टि,
रचना—रघु० ६।११, ७।१५, कु० ७।६५ 4 नियो-
जन, उपयोग, प्रयोग प्रतिकारविषानम् रघु०
८।४० 5 नियत करना, विहित करना, आदेश देना
6. नियम, उपदेश, आदेश, धार्मिक नियम या
विधि, निषेध—मनु० १।१४८, मम० ११।२४,
१७।२४ 7 डंग, टीस 8 शायन वा तरीय
9. हाथियों का बाहुर (जो उन्हें खोजवत करने के
लिए बिचा जाता है) विषानसपावितशानसोवित
—का० (बहु) 'विषान' का सर्व 'नियम' भी है)
हि० ५।५१ 10. धन दीकृत 11 पीड़ा, वेदना,
कष्टान, दुःख 12 शत्रुता का कार्य । सम० क, —कः
बुद्धिमान् या विद्वान् पुण्य, —पुण्य (वि०) वेदविधि
के अनुकूल, या अनुकूल ।

विषानम् [विषान + कम्] दुःख, कष्ट, पीड़ा ।

विषाण (वि०) (स्त्री०—विषा) [वि + धा + ण्यन्]

1. कलबट करने वाला, व्यवस्थित करने वाला
2. दगाने वाला, निर्माण करने वाला, सम्पन्न करने
वाला, कार्यान्वित करने वाला 3 रचना करने वाला
4. व्यवस्थित करने वाला, विहित करने वाला,
निर्धारित करने वाला 5 अर्पण करने वाला, दीपने
वाला, (किछी की देव देव में) हुवाये करने वाला ।

विषिः [वि + धा + क्ति] 1. करना, अनुष्ठान, अग्रदान
हवन, कर्म — ब्रह्मधामात्मन्यविषिना बोधविदा कतस्थ
—चरु० १।४१, शेषविधि—रघु० ८।२२, मेला-
विधि—मा० १।१५ 2 बचायी, टीस, पड़वि, बावन,

दग पञ्च० १।३७१ 3 नियम, समादेश, कोई विधि
जो सबसे किसी बात का लागू करती है (यह 'विधि'
शब्द नियम और परिमत्या से मिल्य है) विधिरण-
तमप्राप्ती ' वेद विधि या नियम, अध्यादेश, निषेध,
कानून बंदाजा धार्मिक समादेश (विप० 'अर्थवाद'
अर्थात् व्याख्यापरक उक्ति जिसमें आस्थान और
पुष्टान्तों का चित्रण हो दे० अर्थवाद) अष्टा विम
विधिरथेति चितय तत्समागतम् मा० ७।२९, रघु०
२।१६ 5 कोई वर्णन' हन्य या सत्कार, धार्मिक
रम्भ, सत्कार—स वेन् स्वय कर्मसु वर्णचारिणो
रवमतरायो भवसि च्युनो विधि—रघु० ३।४५,
१।३४ 6 व्यवहार, आचरण 7 दशा विक्रम० ४
8 रचना, बनावट सामग्र्यविधी कु० ३।२८,
कल्याणी विधिषु विविधता विषातु कि० ७।७
9 सुष्टा 10. भाग्य, देव, किस्मत विधी बामारवे
मम समुचितैषा परिचरति मा० ४।४ 11. हाथियों
का आव पदार्थ 12 काल 13 डाक्टर, वैद्य 14.
विष्णु । सम० क (वि०) कर्मकाण्ड का हाता
(क) कर्मकाण्ड में निष्पात बाह्यण, कर्मकाण्डी,
पुण्य, विहित (वि०) नियत, विहित, हीन
नियमों की विविधता, विधि या समादेश की विनि-
म्यता, पुण्यकम् (बन्ध०) नियमानुक्रम, अर्थः
नियम का व्यवहार, शेषः भाव का कक वा ब्रह्मण,
कम् (स्त्री०) उत्तररती का विशेषण, हीन
(वि०) नियम सूत्र, वर्णकण्ड, अनिश्चित ।

विषिषा [वि + धा + क्त् + च + टप्] 1. सम्पन्न
करने की इच्छा 2. आजीवन, प्रबोधन, इच्छा ।

विषिषिक्त (वि०) [वि + धा + क्त् + क्त] किसे काने
के शिरे अधिष्ठेत्, —कम् इराधा, अधिष्ठान, आवा-
जन ।

विष्णुः [व्यञ् + कु] 1 वर्णना, कविता विषयति
विष्णुपि उचितरति विवति धामिनः कण्व० १०
2. कपूर 3 पिशाच, दानव 4. प्राणिकपानपरक आकृति
5. विष्णु का नाम 6. ब्रह्मा । सम० कण्वः कण्वना
की कलाओं का हाव, कण्व पक्ष का समन, कण्वर
(विषट् भी) कङ्क, कटार, शिवा रोहिणी
नक्षत्र ।

विष्णु दे० 'विष्णु' ।

विष्णुति (स्त्री०) [वि + धृ + क्तिप्] हिलना, खंडीय,
वरचराहट वनायकधारिण को खनविष्णुतः पातु
पीकारावयः मा० १।१ ।

विष्णुक्त्व [वि + धृ + क्तिप् + लृट्, मुट्, पु०० ह्रस्वः]
1. हिलना, खनना, विष्णुत्वा होता 2 कपडकी, वर-
चराहट ।

विष्णुमुक्तः [विष्णु तुवति पीकथति—विष्णु + मुट् + कम्,

मू] राहु विषमिष विषममू दसवलनसक्तिनामून-
 धारम मीन० ४, नै० ४।७१, शि० २।६१।
 विचुर (वि०) [विगता धू कार्यभारा यम्मान प्रा०
 ४०] 1 दुष्टो विरहस्त, कष्टस्त, शोकादुल
 ह्यनोय मा० २।३, १।११, उत्तर० ३।१८ ६।११
 कि० १।१२६ 2 जिससे प्रेम करने वाला कोई न
 रहा हा शोकस्त पत्नी या पति की विरहवस्था से
 व्याकुल मयि न विचुरे भाव काना प्रवृत्तपगक
 मूय विक्रम० ४।२० विचुरा ज्वलनानिसर्जना-ननु
 मा प्रपय पथरन्तिकम् कु० ४।३२, शि० ६।२९ १।१
 ८ 3 अन्य वञ्चित विरहित मुक्त सा बं कल
 विचुरा मधुरानन्धी -मामि० २।५ 4 विराघो
 बंदी मनु पच० २।८१, -र रडवा, -रम् 1 लटका
 मय, चिन्ता 2 पति या पत्नी से विरोग प्रेमी या
 प्रेमिका द्वारा शाकाकुलता।

विचुरा [विचुर + टाप्] दही जिसमें चीनी न मसाले वाले
 हुए हों।

विचुरमन् [वि + च् + ल्युट्, कुटाहित्वात् साध्] हिलना,
 बरबारी, कपकपी।

विचुर (भू० क० क०) [वि + च् + क्त] 1 हिला हुआ,
 उलकचुल हुआ, तरंगित 2 बरबारा हुआ 3 उलका
 हुआ, मट्टाया हुआ, हटाया हुआ 4 अन्धिर 5 परि-
 त्यक्त, -तम् विरहित, अर्ध।

विचुरिः (स्त्री०) विचुरमन् [वि + च् + क्त, वि + च्
 + निच् + ल्युट्, नृच्] हिलना, बरबारी, कपकपी
 विक्रोम।

विचुर (भू० क० क०) [वि + च् + क्त] 1 पकड़ा हुआ,
 बाधा हुआ, बहल किया हुआ 2 विपुक्त, अन्त-अन्त
 रकमा गया 3 चारज किया गया, कब्जे में किया
 गया 4 रोका गया, निवन्धित किया गया 5. सहारा
 दिया गया, प्ररहित, समर्थित (इ० वि पूर्वक च्) -तम्
 1 आदेश की अवहेलना 2 असन्तोष।

विचेष (त० क०) [वि + च् + ल्युट्] 1 किये जाने के
 योग्य, अनन्त्य 2 विहित या नियम किये जाने के
 योग्य 3 (क) आश्रित, निर्भर अप विधिविधेय
 परिचय मा० २।१३ (अ) अधीन, प्रभावित, निव-
 न्धित, दमन किया गया परान्त किया गया (प्राय
 सभास में) निराविश्व नरदेवसेन्यम् रच० ७।६२
 मभाध्यामन्त्रसेनाधिसिन्हा विधेयोल्लोसि। प्रा०
 १ अग० २।६६, मूला० ३।१, शि० ३।२०, रच०
 ११।६ 1 आश्राकरी, शासनीय, अनुवर्ती बध
 अविवेच्येति पुला पीरिवेति विधेयताम् -वि० ११।
 ३३ 5. (व्या०) विधेय - (कर्ता के लक्ष्य में बड़ी
 गई बात) होने के योग्य-अथ विधेयमहिमन्
 नानुवाह अपि नु विधेयम् काव्य 3 यम् 1 जो

किया जाना चाहिए, कर्तव्य, -कि० १६।६२ 2. प्रतिज्ञा
 या प्रस्थापना की उक्ति, अ. सेवक, मूय। सम०
 अविमृष्ट रचनासदृश दोष विमसे विधेय आश्रित
 स्थिति का ही जाय या उसका अचूरा कथन किया
 जाय अविमृष्ट प्राधान्येनानिर्विष्टो विधेयवाशो वय
 का० ७० ७, उदा० उस स्थान पर देखो आत्मन्
 (तु०) विष्णु, अ (वि०) जो अपना कर्तव्य जानता
 है पच० १।३३७, वच० 1. मापन किया जाने
 वाला उद्देश्य 2. कर्ता के लक्ष्य में कहीं गई उक्ति
 विधेय।

विच्यस्त [वि + च् + ल्युट्, चञ्] 1 बरबारी विनाश
 2 शयुता अरुचि नाशमन्दी 3 अपमान अपराध।
 विच्यस्ति (वि०) वि + च् + ल्युट् गिति] बरबाद होने
 वाला टुकड़े टुकड़े हो जाने वाला।

विच्यस्त (भू० क० क०) वि - च् + क्त] 1 बरबाद
 हुआ विनष्ट 2. इतर उतर विच्यो हुआ, छिनटाया
 हुआ 3 अस्पष्ट ब्यला 4 वृणप्रप्त।

विच्यत (भू० क० क०) [वि + च् + क्त] 1 झुका हुआ,
 नंबर हुआ 2 अवनत हुआ, लटका हुआ मुड़ा हुआ
 मा० ३।११ 3 झुका हुआ अवनत 4 झुका हुआ,
 कुटिल बक 5 विनीत, शिष्ट (दे० वि पूर्वक नम्)।

विच्यता [विच्य + टाप्] 1 अरुण और लक्ष्य की माता जो
 कथप की एक पत्नी की दे० गङ्गा 2 एक प्रकार
 की टाकरी। सम० मंथन, कुला, कुण्ड गवद वा
 अरुण के विशेषण।

विच्यतिः (स्त्री०) [वि + च् + क्त] 1 नमता, झुकना,
 नीचे की होना 2 विनय, विनम्रता 3 प्रार्थना।

विच्य [वि - नृ + अच्] 1 अग्नि, कोलाहल 2 एक
 वृक्ष का नाम।

विच्यमन् [वि - नृ + ल्युट्] झुकना, नमना, सिर और
 कंधे झुका कर चलना।

विच्य (वि०) [वि + च् + ल्युट्] 1 झुका हुआ, झुक कर
 चलता हुआ कि० ४।३ 2 अवनत, झुका हुआ
 3 विनयशील विनीत।

विच्यमन् [विच्य + क्त] 'तम' वृक्ष का फूल।

विच्य (वि०) [वि + ली + अच्] 1 वाला हुआ, कँका
 हुआ 2 गुप्त 3 प्रतिष्ठापारी, अः 1 निर्धन अनु-
 शासन अनुदेस (अने कर्तव्यकोष में) वैतक प्रतिक्षण
 -रच० १।-४, मा० १०५, 2. जीवित, शिष्टाचार,
 सुजीवना मा० १।२९ 3 शिष्ट आचरण, सज्जनो-
 चित व्यवहार मन्वर्ति, अकला कलम-रच० ६।७९,
 मा० १।१७ 4 सामीप्य, विनम्रता लुप्त जोमने
 आश्रित मनेन विनम्राक्षयने उत्तर० १, विद्या
 ददानि विनयम्, तथापि नीचविनयावद्वयम् रच०
 ३।३६, १०।७१, (यहाँ अन्तिम 'विनय' शब्द का

अर्थ इन्द्रियत्रय बनलाना है जो हमारे मनानुसार अनावश्यक है) ० अथवा शिष्टता सौभाग्य 6 महा-
पण - लीजियेना, दूर करना हुताना शि० १०।
४० ४ त्रिभुज अर्थात् इन्द्रिया को वश में करना इसका है

त्रिभुज 9 व्यापारी, सौभाग्य । सम० अक्षयत
(वि०) मुक्ता हुआ विनम्र साहित्य (वि०) शास्त्र
नीय आशाकारी अनुवर्ती बाष्प (वि०) सुवृथाधी
विलसमा, —स्थ (वि०) विनयशील शास्त्री ।

विनयमन्त्र (वि०) नी - स्थिति । हुता दूर करना - येष०
४० 2 गिता शिष्टता प्रशिक्षण अनुशसन ।

विनयमन्त्र (वि०) नम्र स्वरूप मान ज्ञान विनय
साध - य उम स्थान का नाम जहाँ मास्वनी नदी
रेन म लुप्त हो गई है सु० मत - ४० ।

विनय (सु० क० कु०) । ४ - नम्र रूप 1 नम्र
उच्छिन्न बर्बाद 2 आश्रय लुप्त 3 बर्बाद हुआ अर्थ

विनय (वि०) (स्त्री० - या, - ली) विनया नामिका इत्य
नामिकाशब्दस्य समावेश, विना नाक का नाकग्रहण
—मट्टि० ५।८ ।

विना (अर्थ०) (वि० ना) वर्गे सिवाय । यम० करण०
या अवा० के साथ) यथा तत्र विना रागा यथा मान
विना रूप यथा वान विना हस्तो नवा ज्ञान विना
यति भावि० ११११९, परकीर्तिना मरा भाति सद
बन्धनविना । कटुवर्णविना काष्ठ मानस विषय
विना ११११६ विना बाह्यहस्तिभ्य क्रियता
मर्षमात्र मुहा०३ शि० ५।१ । विना कु छात्रना
परिष्ठापन करना विरहित करना वञ्चन करना—मह
नेन विनाकुना रति कु० ६।१ कर्म मे
विरहित । सम० उचित (स्त्री०) एक अलंकार
त्रिकर्म विना काष्ठ की दृष्टि से सुन्दर इग मे प्रयुक्त
होता है—विनायमम्बन्ध गद्य विनाशित—यम०
के० काव्य० १० भा० ।

विनाशिक, विनाशिका [विनाश नाशिक नाशिका वा यया]
छन्द की एक भाष या यद्यो के साठव भाग के बराबर
होती है एक पल या बीसोस सेंकड़ ।

विनाशक [विनाशो नायक प्रा० सं०] 1 (बाबाजी के)
हुताने वाला गर्भेय 3 इष्ट धर्म का दंष्टक अध्यापक
4 गद्दह 5 सकावट अञ्जन ।

विनाशक [वि० नम्र + यञ्] 1 ध्वंस बर्बादी भारी
हानि, क्षय 2 हुताना । सम० उपमृष (वि०) नष्ट
होने वाला मरने के लिए तैयार बर्बन्ध, क्षयिन्
(वि०) क्षीण होने वाला, नष्ट होने वाला क्षयभङ्ग
विषयेषु विनाशधर्मेषु विदितस्थेभ्योपि निस्तुहाऽ
अवत् रघु० ८।१० ।

विनाशकम् [वि० नम्र + निष् + ल्युट्] विनाश बर्बादी
उन्मूलन वा विनाशक विनाशकर्ता ।

विनाह [वि० नम्र + यञ्] कुरों के मृत का उक्ता ।
सु० बोनाह ।

विनिक्षेप वि० नि क्षिप यञ् एक देना भज देना

विनिक्षेप वि० नि + यञ् अप 1 नियन्त्रण करना
वसन करना वश में करना अम० १.१३ १३१९
मनु० १।२६५ 2 पत्राङ्गीक (वराह या) अर्थात्
न्याम ।

विनिह [वि०] [विनय + लट् यञ् प्रा० व०] 1 निह
रहित जाना हुता (आल० म मी) रघु० ५६
2 मुकुलित कुल्ल हुआ विना हुआ फूला हुआ
विनयमन्त्राङ्गीक मुक्ता कु० ५।१० ।

विनिघात वि० नि + घट यञ् 1 अघ पल्ल गिराव
— भा० अक्षयान सङ्घ वरदे हर्षन बर्बादी विनाश
'वदकध्वजान् अर्थात् विनिघात घातमुख —अम०
५१ (यथा पर प्रथम अथ मा प्रकट करना
है) । १० ५।६ १ अथ भाष्य 4 नरक नाशकीय
यन्त्रणा—सं० ५५ करना घटित होना 6 पीडा
हुन 7 अनादर ।

विनिवय वि० नि मो + अप 1 अदला-बदली वस्तु
क बदल वस्तु का लन देन काय विनिवयेन—आश्वि०
१ सर्गइतिमयनामो दक्षयुर्वैवन्धवयम रघु० १।०६
2 न्याम धराह्वर अमानस ।

विनिवेष्ट [वि० नि मिय यञ्] (आश्वी का)
अपचना ।

विनिघत (सु० क० कु०) [वि० नि + यम + क्त] निय
त्रि राका गया प्रतिबद्ध विनियमित—यथा विनि
यताहार तथा विनियन्त्राक आदि म ।

विनिघ्न [वि० नि + यञ् + अञ्] निघ्नघ्न प्रतिबन्ध
राक ।

विनिवजल (सु० क० कु०) [वि० नि + यञ् + क्त] 1 जलन
किया हुआ डोला विच्छिन्न 2 जनकल, निघ्नत
3 व्यञ्जित 4 समाविष्ट विहित ।

विनिघोल [वि० नि + यञ् + यञ्] 1 जलन होना
जुदा होना विच्छिन्न होना 2 छोड़ना त्यागना
निष्ठाञ्जित देना 3 काम मे लगाना उपयोग,
प्रयोग नियन्त्रण बभूव विनिघोलन साधनीयेषु वस्तुषु
रघु० १३।२५, प्रजापति विनिघान किसी
काम्य पर लगाना कार्यधिकार कायभार—विनिघोल-
प्रसाह द्विकरा प्रभक्षिणषु ५० १६२३ वका-
ह भञ्जन ।

विनिघ्नं वि० निर + जि + अञ् पूर्ण विघ्न ।

विनिघ्नं वि० निर नी - अञ् 1 पूर्ण रूप से निर-
हारा या निर्णय पूरा जैसना 2 निश्चय 3 निविघ्नत
नियम ।

विनिर्घ [वि० नि + र + ण् + यञ्] प्राचह बुधना ।

विषय (वि० पृ० ५०) १ पूर्णरूप से पचा हुआ परि-
पक्व २ विकसित, पूर्ण अवस्था का प्राप्त कि०
१।१६ ३ पकाया हुआ ।

विषय (वि०) [वि० पृ० ५०] १ पूर्णरूप से पचा हुआ परि-
पक्व २ विकसित, पूर्ण अवस्था का प्राप्त कि०
१।१६ ३ पकाया हुआ ।

विषयिका विषयी विषयों का अर्थ १ उदा-
२ स्वेन काडा मनावन ।

विषय, विषयमय [वि० पृ० ५०] १ विषय-
मय २ विषय ३ विषय का अर्थ ।

विषय, विषय (वि० पृ० ५०) [वि० पृ० ५०] १ विषय-
मय २ विषय ३ विषय का अर्थ ।

विषय (वि० पृ० ५०) [वि० पृ० ५०] १ विषय-
मय २ विषय ३ विषय का अर्थ ।

विषय (वि० पृ० ५०) [वि० पृ० ५०] १ विषय-
मय २ विषय ३ विषय का अर्थ ।

विषय [वि० पृ० ५०] १ विषय-
मय २ विषय ३ विषय का अर्थ ।

विषय (वि० पृ० ५०) [वि० पृ० ५०] १ विषय-
मय २ विषय ३ विषय का अर्थ ।

विषय (वि० पृ० ५०) [वि० पृ० ५०] १ विषय-
मय २ विषय ३ विषय का अर्थ ।

विषय (वि० पृ० ५०) [वि० पृ० ५०] १ विषय-
मय २ विषय ३ विषय का अर्थ ।

विषयमय विषयमय [वि० पृ० ५०] १ विषय-
मय २ विषय ३ विषय का अर्थ ।

विषयमय विषयमय [वि० पृ० ५०] १ विषय-
मय २ विषय ३ विषय का अर्थ ।

विषयमय विषयमय [वि० पृ० ५०] १ विषय-
मय २ विषय ३ विषय का अर्थ ।

विषयमय विषयमय [वि० पृ० ५०] १ विषय-
मय २ विषय ३ विषय का अर्थ ।

विषयमय विषयमय [वि० पृ० ५०] १ विषय-
मय २ विषय ३ विषय का अर्थ ।

विषयमय विषयमय [वि० पृ० ५०] १ विषय-
मय २ विषय ३ विषय का अर्थ ।

विषयमय विषयमय [वि० पृ० ५०] १ विषय-
मय २ विषय ३ विषय का अर्थ ।

विषयमय विषयमय [वि० पृ० ५०] १ विषय-
मय २ विषय ३ विषय का अर्थ ।

विपक्वम् [विपक्व पल येन—प्रा० व०] क्षय, समय का
अन्त होना प्रमाण (जो पल का साठवां या छठा
भाग समझा जाता है) ।

विपक्वावन्तम् [विपक्व पलायनम् प्रा० सं०] दौड़ जाना
विभिन्न दिशाओं को भाग जाना ।

विपश्चिन्तम् (वि०) [विपश्चिन्तं चिन्तति चिन्तयति
वा वि + प्र + चिन् + चिन्तय प्रया०] विद्वान्
वृद्धिमान विपश्चिन्ता विनि-युन गुम्वा गुणप्रियम्
रघु० ३।१९ पृ० एक विद्वान् वा वृद्धिमान
पुरुष मुनि भवति ते मध्यमः विपश्चिन्ता मनागत
वाचि निवेशयति ये—कि० १६।६ ।

विपाक [वि + पक् + घञ] १ खाना खाना भोजन
खाना २ पाचनशक्ति ३ पकना पक्वना परिपक्वता
विकास (आल० भी)—अभी पक्वस्तब्धः पिशङ्गता
मता विपाकेन फलस्य शालय कि० ६।१६ वाचा
विपाका मय भाषि० ६।४० मेरे परिपक्व पूर्ण
विकसित अथवा गौरवान्वित शब्द परिणाम फल
नतीया प्रवृत्तम् अथवा इस जन्म के कर्मों का फल
अहो मे शत्रुघ्नतर कर्मणा विपाक का० ३५४
मयैव अन्तातरपालकाणा विपाकविष्कृर्बुधप्रमदा
रघु० १४६२ मनु० २।१९ महावी० ७।१६
३ (क) अवस्थापरिवर्तन उत्तर० ६।६ (ख)
अस्तबोधित शान्ति वा घटनाव्यतिथिश्च भाष्य का पलटा
खाना हुल, सकट उत्तर० ३।३ ६।१२ ६ कठि
नाई उत्तमान ७ रसास्वास्वा स्वाद ।

विपादनम् वि पद - निष् + ल्यट् १ लच्छ लच्छ
करना फाड़ कर खालना २ उखाड़ना ३ अहरण ।

विपाठ (पु०) एक प्रकार का लक्ष्य नाट्य ।

विपाटु, विपाटुर (वि०) [विषयेण पाटु, पाटुर
प्रा० सं०] विषयों कीला कि० ५।१६ शि० ९।३
इसी प्रकार विपाटुर शि० ६।५ रत्न० २।४ ।

विपाटिका (स्त्री०) १ पैर का एक रोग विबाई २ प्रह
लिका पहली ।

विपात्, विपात्ता (स्त्री०) [पात् विपाद्यति वि + पठ
निष् + किरट् वि पत् + निष् अच् टाप्]
पहाड़ का एक नदी, बनमान ध्यान नदी ।

विपिकम्, वपन्त वन अक् वेप् + इतन् ह्रस्व । वपन्त
वन बटिक, झुग्गट व-रावट विपिन लान्तिन विन
मान् गुवाति वपन्तम् पाप० १ विपिनानि प्रका
शानि शक्तिप्रभव अकार स रघु० ४३१ ।

विपुल (वि०) [विशेषतः पल्लवि वि - पुल + क]
१ विपक्ष (वपन्त २ उत्त विप्लीर्षी, चौड़ा प्रसन्न
विपुल निरन्तर ३ रत्निक ३।३ निरन्तर ननु
विपुलम् अत्र ३ - अत्र ३ - इला प्र विपु
लम् पृ० ५ विपु कुपि २ उरु पु क १३ ।

—कि० १८।१४ ३ गहरा, अगाध—महावी० १।२,
रोमाञ्चिन, पुलकित शि० १९।३ (यहाँ प्रथम
अर्थ भी घटता है) ल १ मठ पर्वत २ हिमालय
पर्वत ३ समानवीथ पुरुष । सम०—आध (वि०)
आधाधार आधाय अथवा विशाल कुन्दा वाली
स्त्री मति (वि०) यकीपी प्रजावान् रस गन्ता
इय ।

विपुला [विपुल टाप्] पृथ्वी ।

विपुय [वि + पू + क्यप्] पूर नामक घम ।

विप्र [व् + प्र + क्यप्] अथ इत्थम् । आश्रय पद
रण सं आश्रय के अन्तर्गत में बँधे न पद
३ पाल का पद । सम० आशि बद्ध प दे०
काष्ठम् कई का दीप प्रियः १०१ वा वन
हृक सवाणम् आश्रय का समाधि या अन्तर्गत
स्वम् आश्रय का मरणा ।

विप्रकर्ष [वि प्र कृष घञ] दूर फालना

विप्रकार [वि प्र + कृ घञ] १ अमान कृष्ण
हृत् दुश्चल निरन्तरयुक्त व्यवहार कि० १०१
२ काल अगाध ३ दुष्टता ४ विरोध प्रतिपद्या
५ प्रतिहिता ।

विप्रकीर्ण (वि०) [वि + प्र कृ घञ] १ दूर उच्च
फलावा हुआ निरन्तर विपरीत हुआ विपत्त हुआ
२ डीला (बाप आदि) विप्र हृत् ३ प्रसारित
विख्याता हुआ चौड़ा विस्तृत ।

विप्रकृत (पु० क० क०) [वि + प्र कृ + क्त] १ आहत
विने गत नुबवाई गई है चायल २ अपमानित जिस
गाला दो गई है जिसके साथ कृष्ण दहान किया गया
है ३ जिसमें विरोध किया गया है प्रतिक्रिया
जिसमें बदला ले लिया गया है (६०) विप्र पूष कृ ।

विप्रकृति (स्त्री०) १ मति आघात २ अपमान अपशब्द
कटुव्यवहार ३ प्रतिहिता बदला ।

विप्रकृष्ट (पु० क० क०) [वि प्र कृष + क्त]
१ खींच दिया गया दगा हुआ २ फालने पर
दूर का दूरवर्ती ३ सुदोष लम्बा किया गया
विस्तारित ।

विप्रकृष्टम् (वि०) [विप्रकृष्ट - कृ] दूरवर्ती फालने
पर ।

विप्रतिकार [वि प्रो + कृ घञ] १ प्रतिधिया
विरोध वचनविरोध २ प्रतिहिता ।

विप्रतिपत्ति (स्त्री०) [वि + प्रति + पत्ति क्त]
१ पारस्परिक अमर्षा प्रतिपत्तिना मध्य आश्रय
विरोध (मनो वा या हिता वा) अमर्षमति
आश्रय १ हैराना चक्राश्रय ४ पारस्परिक मर्षा
परिचय आश्रयमान ।

विप्रतिपक्ष (वि० क० क०) [वि + प्रति + पत्ति क्त]

1. परस्परविषय, विरोधी, असहमान 2 बहाया हुआ, व्याकुल, हैरान 3 मुकाबले का, विवादस्थ 4 परस्परसमुक्त या सम्भव ।

विप्रतिषेधः [वि + प्रति + सिप् + घञ्] 1 नियन्त्रण में रक्षणा, वश में रक्षणा 2 समान रूप से महत्वपूर्ण दो बातों का विरोध, दो समान हितों का मन्थन —हरिप्रतिषेध तयाचक्षो विचक्षण सि० २।६ (मुष्कलविरोधी विप्रतिषेध मल्लि०) 3 (व्या० में) दो नियमों का (जिनमें दो भिन्न नियमों के अनुसार व्याकरण की दो भिन्न प्रक्रियाएँ सम्भव हो) सचय, समानरूप से महत्वपूर्ण दो नियमों की टक्कर विप्रतिषेध पर कार्यम् पा० १।६।२, डम पर ६० काविका या महाभाष्य 1. राक, बर्चन ।

विप्रति (सी) [वि + प्रति + लृ + घञ्, एषो दीर्घ] 1 पक्षपात सि० १०।२० 2 काय राय मृत्यु 3 बुद्धता, अनिष्ट ।

विप्रमुष् (यू० क० क०) [वि + प्र + मुष् + क्त] 1 हुगिन बिहून मलिन 2 अष्ट ।

विप्रवृत्त (यू० क० क०) [वि + प्र + वृत् + क्त] 1 बोया हुआ, लुप्त 2 व्यर्थ, निरर्थक ।

विप्रमुक्त (यू० क० क०) [वि + प्र + मुक् + क्त] 1 स्वतन्त्र छोड़ा हुआ, आजाद किया हुआ, मुक्त छोड़ा हुआ 2 बाजी का निशाना बनाया गया, बन्धक से दाया गया 3 कुटकारा पाया हुआ ।

विप्रमुक्त (यू० क० क०) [वि + प्र + मुक् + क्त] 1 पुनर्कृत किया हुआ, विमुक्त, रिच्छित 2 अलग हुआ अनुपरित्यक्त मन्० २ 3 मुक्त किया हुआ, रिहा किया हुआ शञ्चित, विरहित, बिना (समाप्त में) ।

विप्रवीकः [वि + प्र + वृक् + घञ्] 1 अनेक्य पार्थक्य, विभाग, अलगाव, जैसा कि प्रिय में 2 विभेदकर प्रेमियों का विछोह- या भेद सचयपि यत् न विदुः विप्रवीक मेघ० ११५, १०, रघु० १३।२९, १४।६६ 3. कलह, असहमति ।

विप्रकल्प (यू० क० क०) [वि + प्र + कल् + क्त] 1 बोला दिया गया, ठगवाया गया 2 निरास किया गया 3 बोट पहुँचाया गया क्षतिग्रस्त, व्यावहारीक रूप से अपने प्रियत्व को नियत स्थान पर न पाकर निरास हो गई हो (काव्यकालों में कथित एक काविका) सा० व० ११८ पर दी गई परिभाषा प्रिय कल्पानि सकेन यस्या नायाति समिधिय । विप्रकल्पेति सा शेषा निमान्तवचमानिता ॥

विप्रकल्पः [वि + प्र + कल् + घञ्] 1 बोला, छल, धागाही- कि० ११।२७ 2 विभेदकर लिखा उक्तिपदों या झूठी प्रतिज्ञा से तो कल्पना 3 कलह, असहमति

4 अनेक्य, पार्थक्य अलगाव 5 प्रमिया का विछोह शब्द प्रियजनस्य कालः विप्रकल्पमिति किं वच. रघु० १०।१८ वेणी० २।१२० (अल० में) विप्रकल्प भूगण (इसमें ग्राहक नायिका के विरक्त-अप्य सत्ताप आदि का वर्णन किया जाना ?) भूगण के दा मुख्य भेदा में से एक (विप० मधो०) अत्र (विप्रकल्प) अनिलाय दि० हृदयो प्रथमग्राहक इति पर्वविषय काव्य० १ यन्मयवर्णनाप्रसक्तो पुनः पार्थक्यया दि० १ अत्र ग्राहिकाङ्गानामनवाची प्रकृतयेति । विप्रकल्प म विज्ञेः उच्छेदनमालमणि तु० सा० २० २१२ १६ अग ।

विप्रलम्ब [वि + प्र + लम्ब + क्त] 1 व्यथ या निर्वैर वान अन्धकार अनापत्ति 2 नास्परिक वचनीयताय विरोधी उत्तर ? मगध० १११ में 4 अपमो प्रविश नयना नन तुग न कृता ।

विप्रलम्ब विशेषण प्रत्यय सा० म० पूर्व दिन जया विषटन सर्वनाश विद्याकल्पन माना मयाना भूप सामयि ब्रह्मणाव विवर्तना करुणि वप्रलम्ब कृत उतर० १।६ ।

विप्रलप्य (यू० क० क०) [वि + प्र + लप् + क्त] 1 अप-हुत, छोटी हुआ 2 बाधापूर्ण, हस्तक्षेप किया गया ।

विप्रलोभित (यू०) [वि + लभ् + गिच् + क्त] 1 दो बूझा के नाश, अनाक और क्षिण ।

विप्रवस्त [वि + प्र + वस् + घञ्] परदेश में रहना, विदेश में निवास करना (आनी जन्मभूमि से दूर रहना) ।

विप्रसिक्ता [विशेषण प्रज्ञी कस्या वि प्रवत्त कप् टाप् इत्यमर] 1 अनापत्ति, जो माय्य की बातें बतलाय ।

विप्रसीध (वि०) [वि + प्र + हा + क्] शञ्चित विरहित ।

विप्रिध (वि०) [वि + प्र + क् + इट्, अकश्चित्, जो पतन न हो जा सुख न हो, जो स्वादिष्ट न हो, बन्ध अपराध अनिष्ट, अवशिष्ट कार्य मनसापि न विप्रिय मया कृतपूर्वं नव कि वहासि माम् रघु० ८।५२, कु० ८।३, कि० ९।३९, सि० १५।११ ।

विप्रु (रघु०) [वि + प्रु + क्त] 1 (गानों वा किसी अन्य हथ की) दूर सताप नवप्रमविप्रुको गृहीत्वा - सि० ८।४० स्वेदविप्रु २।१८ 2 चिह्न, चिन्नु, चम्पा ।

विप्रोक्षित (यू० क० क०) [वि + प्र + क् + क्त] 1 पर-देश में रहना, जन्मभूमि से दूर होना, अनुपस्थित 2 निराश्रित, देशनिकालाश्रय रघु० १२।११ । म० कल्पका वह स्त्री जिमका पति परदेश गया हुआ है ।

विप्रक्ष [वि + प्र + क् + क्त] 1 बहना, इधर-उधर टहलना, विप्रक्ष दिसाओ में बहना 2 विरोध, वैपरीय

3. हेरानी. व्याकुलता 4. हुलस, हुंसा, हुला-मुल्ला
मालवि १ 5. निर्बन्धनकरण, वह सयाम जिसमें
लूटपाट लूब हो. शत्रु से भय 6. बलात् लूटपाट
7. हानि, विनाश—सम्बन्धितवात् रघु० ८।४१
8. अपदा, आपत्काल जबवा मम भाग्यविलबात्
—रघु० ८।७ 9. संपन पर जमी हुई पल या जग
—अपवर्जितविलंबे शत्रो मलिरादयो इवाभिदश्यते
—कि० २।२६, (यही 'विलंब' का प्रमाणवाच्य)
अर्थात् तर्कभाव भी हो 10. अनिकमण, उल्लस्य कि०
१।१३ 11. अनिष्ट, सकट 12. पाप दुष्टता पापमयता।

विप्लवः [वि + प्ल + क्त] 1. अलालावन, बाढ़ 2. उप-
द्रव 3. घोड़े को मरपट दोड़।

विप्लव (भू० क० कृ०) [वि + प्ल + क्त] 1. जो इधर
उधर बह गया हो 2. दबा हुआ, निमग्न, बाढ़मग्न,
किनारों से बाहर हाकर बहा हुआ 3. हेरान, परेशान
4. विप्लवस्त, उखाड़ा हुआ 5. लुप्त ओझल 6. अप-
मानित, अन्याय 7. बर्बाद 8. निरोहित, विक्षिप्त
9. दुश्चरित्र, लभ्यत दुर्गाकारी, लुब्धा 10. विपरीत,
उलटा 11. मिथ्या, झूठा उत्तर १।१८।

विप्लव दे० 'विप्लव'।

विफल (वि०) [विगत पल यस्य प्रा० व०] 1. फल-
रहित, अनुपयोगी, व्यर्थ, प्रभावशून्य, अकारक—मम
विकल्पमदनुकल्पमपि योवन गीत० ७. जगता का
विकलेन कि फलम् रस०, शि० १।६, कु० ७।६६,
मेघ० ६८ 2. बंकार, निरर्थक।

विशेषः [वि + वृध् + घञ] 1. कोष्ठ बट्टना 2. भ्रान्त 3.

विवाहा [विशिष्टा बाधा—प्रा० म०] 1. पीडा वेदना, माना,
मानसिक कष्ट।

विबुध (भू० क० कृ०) [वि + वृध् + क्त] 1. उड़ाया हुआ,
जगाया हुआ, जागक ग० २ 2. कुलाया हुआ,
मजदूरयुक्त पूरा विप्ला हुआ 3. बतुर कुशल।

विबुधः [विशेषेण बध्यते वृध् + क्त] 1. बुद्धिमान् या
विद्वान् पुरुष, श्रेष्ठ, सुनि सत्वर साक्षात्परीन भी
इत्यादिबिबुधा जनाः पञ्च० २।४३ 2. सुर, देवता,
अमुष्मन् विबुधस्य परतप भट्टि० १।१. गीतार
न तिचीना महयन्ति महेश्वर विबुधा गुमा०
3. बर्बाद, सम० अविचलित, इन्द्र, ईश्वर इन्द्र
का विशेषण,— विष्णु, ब्रह्म, राक्षस विक्रम १।३।

विबुधानः [वि + वृध् + क्त] 1. विद्वान् पुरुष
2. अक्षयक।

विबोधः [विबुध + घञ] 1. जागरण, जागते रहता
2. प्रत्यभज्ञान, बोधना 3. बुद्धि, प्रतिभा 4. जाग
जाना, मग्न होना, अल० से ३३ या ३४ अविचारी
भाषा में से एक, विद्वानाद्योन्नत जायमानो बोधो
विबोधः—रघु०।

विभोष दे० 'विभोष'।

विभक्त (भू० क० कृ०) [वि + भज् + क्त] 1. बांटा हुआ,
विभाजित की हुई मण्डल आदि 2. बटा हुआ, स्वाध
की दृष्टि से अलग अलग किया हुआ, विभक्ता 'भरतः'
में 3. जुदा किया हुआ, अलग किया हुआ, भिन्न
किया हुआ—शि० १।३ 4. विभिन्न, विविध 5. सेवा-
निकम, एकाग्रतासी 6. नियमित, मर्मित 7. विभू-
पित (दे० विपुर्बक मन्), क्तः कान्तिकेय।

विभक्तिः (स्त्री०) [वि + भज् + क्त] 1. बांटना,
प्रभाग, विभाजन, बटवारा 2. पाथंक्षय, स्वाध में अल-
गाव 3. हिम्सा दासभाग 4. (श्या० में) सत्ता गधों
के साथ लगा कारक या कारक विज्ञ।

विभंगः [वि + भज् + घञ] 1. टूटना, अभिभंग 2. टूट-
रागा, अवरोध, पड़ाव भाग० ७।२६ 3. झुकना,
(भीहो आदि का) विकोठना भूविभंगकुटिल न
रोधित—रघु० १५।७ 4. शिकन, झुरी 5. पग, मोड़ी
रघु० ६।३ 6. फर पड़ना प्रकटीकरण विविध-
विकार विभंगम् गीत० ११।

विभवा [वि + भू + अच्] 1. दीनता, बदन, मर्त्यता—अतनुषु
विभवेयु जालय मन्त्र नाम शं० ५।८, रघु० ८।६९,
2. माकन, शक्ति, पराक्रम बह्मण एतावाभ्यम्
मतिविभव विक्रम०२, वाग्विभव मा० १।२०,
रघु० १।९, कि० ५।२१ 3. उन्नत अवस्था पद,
प्रतिष्ठा 4. महत्ता 5. बोज, मूलन।

विभा [वि + भा + क्तिप्] 1. प्रकाश, आभा 2. प्रकाश,
किरण 3. सौन्दर्य, मय० कर, सूर्य—बन बन लभ
तेजपुत्रो विभाति कर काश० १० 2. भदार
का पीछा 3. चन्द्रमा, बन्नु 1 सूर्य 2 अग्नि रक्तवि-
पराभि तनु विभावसो—कु० ४।३६, रघु० ३।३७,
१०।८३, भग० ७।९ 3. चन्द्रमा 4. एक प्रकार का हार।

विभागः [वि + भज् + घञ] 1. प्रभाग, विभाजन, अंश
(दासभाग आदि का)—ममस्वक विभाग व्याख्
मन० १।१०० २।० राज० २।११४ 2. दास
भाग 3. भाग या हिस्सा 4. बांटना, अलग-अलग
करना, पाथंक्षय (श्या० में यह एक गुण माना जाता
है)—कु० २६, भग० ३।२९ 5. अंश 6. अनुभाग।
सम०—कल्पना हिस्सा का नियत करना—पाञ्च० २।१६९

बन्धः दासभाग की विधि, बटवारे का काम,—पञ्चिका
विभाजन की दस्तावेज, भाव् (पु०) पहले से बटी
हुई मर्त्यता का हिस्सेदार पाञ्च० १।१२२।

विभाजयस्व [वि + भज् + क्तिप् + ह्यट्] बटावा, वि-
भज करना।

विभाज्य (वि०) [वि + भज् + क्त] 1. अंशों में
विभक्त किये जाने के योग्य, बांटे जाने के योग्य
2. विभाजनीय।

विभासन् [वि + भा + क्त] प्रभास वी फटना ।

विभावः [वि + भू + घञ्] मन या शरीर को किसी विशेष स्थिति में विकसित करने वाली दशा रम्य भाव की उद्बोधक स्थिति, तीन मुख्य भावों में से एक । दूसरे दो हैं अनुभाव तथा व्यभिचारीभाव रम्या उद्बोधका लोके विभावः काव्यमादृतयो मा० व० ६१ (इसके मुख्य अवान्तर भेद हैं—आलम्बन और उद्दीपक—दे० आलम्बन) 2 मित्र परिचयन

विभावयन्, —मा [वि + भू + णिच् + क्त] 1 स्पष्ट प्रत्यक्षज्ञान, या निश्चय बिबेक निष्ठा 2 विचार विमर्श गवेषण परीक्षा 3 प्रत्यय कल्पना या झाल में एक अलंकार जिसमें बिना कारण के कारणों का होना लक्षण होता है—क्रियायः प्रतिपद्यति फलव्यापारविवरण काव्य० १० ।

विभाबरी [वि + भा + क्त] 1 रत्न-अपवर्णन प्रहङ्गबद्धमहत्ता विभाबरी वधय वध अविश्वान् मार्कण्डेय ६।१५ ५।७ कु० ५।४४ 2 हन्ता 3 कुटनी 4 वंशता कामाक्ष्याग्नि रत्नी ७ मुखग स्त्री व भूतो ।

विभाविता (भू० क० कृ०) [वि + भू + णिच् + क्त] 1 प्रकटीकृत स्पष्ट रूप से दर्शनीय किया हुआ 2 ज्ञात जाना हुआ निश्चिन किया हुआ 3 देखा हुआ सोचा हुआ 4 निर्णीत बिबेकन किया हुआ 5 अनुमिन भवेति 6 सिद्ध भवसम्पन्न । मय० एकवेश (वि०) जिसके भाष एक भाग का रत्न लगाया गया अर्थात् ३ (विभादात्म्य विधायक) एक भाग के लक्षण में अपगन्धी पाया गया विभाविनैकदशन इय यदभियुज्यत विभ्रम० ६।१३ ।

विभाषा [वि + भाष् + अ + टाप्] 1 इप्सिन वस्तु विकल्प 2 नियम का वैकल्पिकता ।

विभासा [वि + भास अ + टाप्] प्रकाश कान्ति भासा ।

विभिन्न (भू० क० कृ०) [वि + भिद् + क्त] 1 तोड़ा हुआ, बिभक्त किया हुआ लवण लवण किया हुआ बीधा हुआ, बायल 3 डूर हटाया हुआ भगाया हुआ तितर बिस्तर किया । हैरान परेशान व्याकुल 5 डूबर उबर डोला हुआ 6 निराश किया हुआ 7 बिबिध, नामाप्रकार के 8 मिश्रित, मिश्राया हुआ कितकबरा, रगबिरगा विभिन्नवर्णा गवडाप्रभेन सूर्यस्य रम्या परित स्फुरत्या शि० ५।१४ (दे० वि पूर्वक भिद्), का शिष का नाम ।

विभीतः, तन्, विभीतक, कम्, [विशेषण भीत विभीता विभीता] विभीत + कम् विभीतक + क्ती, विभीत + टाप्] एक वृक्ष का नाम बहेड़ा, (पिफला में से एक) बहेड़े का पेड़ ।

विभीषक (वि०) [विशेषण भीषयन - वि + भी + णि + क्त] 1 धुल बुद्ध आगम] डरावना, भास या भय का भासा ।

विभीषिका [वि + भी + णिच् + क्त] 1 टाप, बुकागम इत्येव । 1 नाम 2 डराने के साधन, हौरा (चिडिया का डरान के लिए फूस का तुतला बुद्ध) यदि न यति सत्वेव केयमग्या विभीषिका—उत्तर० ५।२१ ।

विभू (वि०) (स्त्री० भू, —स्त्री) [वि + भू + क्त] 1 ताकतवर इक्षिण 2 पमुख, सर्वोपरि 3 योग्य, समर्थ (तुम्हन्त के माता) (वन्) पूरयितु अवति विभव तिमरमरिहृदय—क० ५।१३ 4 आलस्यवर्मी, धीर जनिहृदय कमपरमवश न विप्रकुर्वन्ति यति न यदमी स्पृशति भावा—कु० १।१५ 5 (ना० में, नित्य० सर्वव्यापक, सर्वगत—भू 1 अन्तरिक्ष 2 आकाश 3 बाल 4 आत्मा 5 स्वामी शाक्य पद्म राजा 6 सर्वोपरि शाक्य भव० ५।१४ १०।१८ 7 सेवक 8 बह्मा 9 शिव—कु० ७।११ 10 विष्णु ।

विभूय (वि०) [वि + भू + क्त] बल मुका हुआ, टेढ़ा कुटिल ।

विभूति (स्त्री०) [वि + भू + क्त] 1 ताकत, शक्ति बह्मपन्न शि० १।१५ कु० २।६१ 2 समृद्धि, कल्प 3 पवित्रता उच्च पद 4 वन, प्राच्य महिमा कान्ति अहो राजविजयमविनो विभूति—भृश २ रघु० ८।३६ ५ भव वन—रघु० ६।१९ ६।७६ ७।३।४ 6 अभिभव शक्ति (इसने बाट शाक्यता सम्मिलित है अजिमन्, कश्चिमन्, प्राप्ति, प्राकाम्यम्, महिमन् दक्षिता, वसिता और कामावसायिता) कु० २।११ 7 कडो की राख ।

विभूयन् [वि + भू + क्त] अलंकार, लजावट, विशेषतः मन्त्रोदा समाज विभूयन मीनमण्डितानाम् अर्जु० १७ रघु० १६।८० ।

विभूषा [वि + भूष + अ + टाप्] अलंकार, लजावट, —सपेदे अममल्लोद्गमो विभूषा—वि० ७।५, रघु० ४।५४ 2 प्रकाश कान्ति 3 सौन्दर्य, भासा ।

विभूषित (भू० क० कृ०) [वि + भूष + णिच् + क्त] अलङ्कृत सुश्रुत सुभूषित ।

विभूष (भू० क० कृ०) [वि + भू + क्त] लजाया गया, सजाया गया लजावट या लपोषित ।

विभ्रंश [वि + भ्रञ्ज + क्त] 1 गिरना, टूट पड़ना 2 ह्लास, भय भवदी 3 चटान ।

विभ्रंशित (भू० क० कृ०) [वि + भ्रञ्ज + क्त] 1 बहकाया गया कुसलाया गया 2 बधित, विरहित ।

विभ्रज [वि + भ्रञ्ज + क्त] 1 डूबर उबर टहलना

धूमना 2 अमय, घेरा, हचर उचर लड़कना 3. नुटि, भूल, गलती 4 उतावली, अस्थवस्था, हड़बड़ी, गड़बड़ी विशेषतः प्रेम के कारण उत्पन्न मन की अस्थिरता - चित्तवृत्त्यनवस्थान शृङ्गारविग्रहो मयेत् 5 (अतः) हड़बड़ी के कारण अलकारादिक का उलटा सीमा पहनना विग्रहवस्थायाऽकारे भूवस्थान विपर्ययः, दे० कु० १४ तनुपरि मल्लि० 6 रमरिलिपी, कामकेलि, आमोद-प्रमोद मा० ११२६, ११३८ 7 लीन्यर्थ, लालित्य, लाचर्य नं० १५१२५, उत्तर० ११२०, ११४, ६४, जि० ६४६, ७११५, १६१६४ 8 सन्नेह, आशंका 9. सनक, बहम ।

विधाना [वि + धम् + क् + टाप्] बुझाया ।

विधाय (धू० क० कृ०) [वि + धम् + क्त] 1 गिरा हुआ, पड़ा हुआ अलग किया हुआ 2 जीन, लुप्त, पतित, खोईर 3 बीजक, अन्तर्हित ।

विधाव (वि०) [वि + धाव् + विधप्] बसकीला, दीप्तिमान्, प्रकाशमान ।

विधात (धू० क० कृ०) [वि + धम् + क्त] 1 चक्कर काया हुआ 2 विलुप्त, व्याकुल, अस्थवस्थित, हड़-बड़ाया हुआ 3 अम में पड़ा हुआ, भूल करने वाला । सम० नयन (वि०) विलोलवृद्धि, चक्कल आँखों वाला, -लोल (वि०) 1 चित्तका चित्त अव्यवस्थित हो 2 नखों में पुर, मतवाला, कः 1. बन्दर 2. सूर्य-मंडल या चन्द्रमंडल ।

विधातिर (स्त्री०) [वि + धम् + क्तिन्] 1 चक्कर, केम 2 हड़बड़ी, नुटि गड़बड़ी 3 उतावली, अस्थवस्थि ।

विधत् (धू० क० कृ०) [वि + धम् + क्त] 1 असहमत, असम्मत्, विमल मत रखने वाला 2 विषम, असमत 3 अनामत, अपमानित, उपेक्षित, त मन् ।

विधति (वि०) [विधत्ता विधता वा धतिर्भव्य - प्रा० ब०] मूर्ख, प्रज्ञाशून्य, मूढ़, -तिः (स्त्री०) 1 असम्मति, असहमति, मतविभिन्नता 2 अक्षि 3. बहना ।

विधत्तारम् (वि०) [विधत्त मत्सरो यस्य - प्रा० ब०] ईर्ष्या से मुक्त, ईर्ष्यारहित - मय० ४१२२ ।

विधत् (वि०) [विधत्तः मतो यस्य - प्रा० ब०] 1. नखों से मुक्त 2. हर्षशून्य, ईर्ष्या ।

विधमत्, विधमत्क (वि०) [विधत्त मतो यस्य, पक्षे कप्, प्रा० ब०] 1. उदास, विषम, अचञ्चल, रिक्त, शून्य - उत्तर० ११७ 2. अनमता 3. हिराण, परेशान 4. अचञ्चल 5. विसका मन वा भावना बचती हुई हो ।

विधन्तु (वि०) [विधत्त मन्तुर्भव्य - प्रा० ब०] 1 जोध से मुक्त 2. जोध से मुक्त ।

विधक् [वि + धी + क् + च्] विनिमय, बदला-बदली ।

विधर् [वि + धृ + क् + च्] 1. चुरा करना, कुचलना, चकना चूर करना 2. अमलना, रगड़ना - विमर्ष-

सुरभिर्बकुलावलिका लब्धहम् मालवि० ३, रघु० ५१६५ 3 स्पशं 4 उबटन आदि शरीर पर मलना 5 सघाम, मुट्ठा, लड़ाई, मिहन्त विमर्षभावो भूमि-मवतराव - उत्तर० ५ 6 विनाश, उजाड़, -रघु० ६१६२ 7 सूर्य और चन्द्रमा का मेल 8. ग्रहण ।

विधर्षक [वि + धृ + क् + च्] 1 पीसने वाला, चुरा करने वाला, चकनाचूर करने वाला 2 गन्ध इन्धनों की पिसाई 3 ग्रहण 4 सूर्य और चन्द्र का मेल ।

विधर्षनम्, -ना [वि - धृ - म् + च्] 1 चुरा करना, कुचलना, रौंदना 2 आपस में ममलना, रगड़ना 3 निनाश हुया 4 गन्ध इन्धनों की पिसाई 5 ग्रहण ।

विधर्षी [वि - धृ - क् + च्] 1 विचार विनिमय, मोच विचार परीक्षण चर्चा 2 नर्कना 3 विपरीत निर्णय 4 सकोच मदेर 5 पिछड़े शुभाशुभ कर्मों की मन के ऊपर बनी छाप, दे० बामना ।

विधर्ष [वि धृ + क् + च्] 1 विचार, विचारविनिमय 2 अजीरणा, असहिष्णुता 3 अमन्तोव असमन्ता 4 (नाटका में) नाटकीय कथा वस्तु की सफल प्रगति में परिवर्तन, किसी प्रमाख्यान के सफल प्रथम में किसी अपुष्ट दुष्टता के कारण परिवर्तन मा० ६० ३३६ पर इसकी परिभाषा यह है - यच्च मुख्यकलोपाय उद्भिद्धो गर्वतोऽधिकः, आगार्हीः सागरावयव स विमर्ष इति रमृतः दे० मूढा० ४१३, (इन सब अर्थों के लिए बहुधा विमर्ष मिला जाता है) ।

विधम (वि०) [विधतो मतो यस्मात् - प्रा० ब०] 1 पवित्र, निर्मल, मनोहित, स्वच्छ (आल० से श्री) 2. नाक, शुभ्र स्फटिक जैसा, पारदर्शी (जैसे जल) विधम जनम् 3. ध्वन, उज्ज्वल, -अन् 1 चांदी की कलई 2 नाक सेजबड़ी । सम० हालम् देवता के किए बड़ावा, अग्नि स्फटिक ।

विधासः, सन् [विधत्त मांसम् प्रा० न०] अस्वच्छ मांस (जैसे कुत्ता का) ।

विधातु (स्त्री०) [विधत्ता माता - प्रा० ब०] सीतेली माँ । मम० - कः सीतेली माँ का बेटा ।

विधानः, न्व [वि + धम् + क्त, वि + धा + क् + च्] 1 अनादर, अपमान 2 माप 3. गुञ्जारा, व्योमवाय (आकाश में धूमने वाला) पर विधानेन विधाह-मान रघु० १३११, ७१६१, १२११०४, कु० २४५५, ७१७०, विक्रम० ४१४३, कि० ७१११ 4. बाण, मवारी रघु० १६१८ 5 कयरा, कामदार कयरा या मन्त्रमन्त्रन - रघु० १७१९ 6 (गात बंजियों का) बहम - नेमा नीला सततवृत्तिना वद्विधानाधुमयी - देव० ६९ 7 बोका । सम० - चारिण, बाण (वि०) गुञ्जारे में बैठ कर धूमने वाला, - राकः 1 केप व्योमवाय उत्तर० ३ 2 व्योमवाय का संघातक ।

विमानना [वि + मन् + णिच् + युच् + टाप्] अनादर, निरादर, अपमान, प्रतिष्ठा भंग विमानना गृभ्र कुन पिनुगुह कु० ५।४३, अयवप्राप्त्य विमानना क्वचित् —रघु० ८।८ ।

विमानित (भू० क० कृ०) [वि + मन् + णिच् + क्त] अनादृत, निरादृत ।

विमार्गः [विच्छेदा मार्गः— प्रा० म०] 1 बराब मडक 2 कुपय, दुराचरण, अनैतिकता 3 ब्राह्म. सम० भा अमनी स्त्री विमार्गगायाश्च रचि स्वकाने भामि० १।१७५, गार्भिन्, प्रविशत (वि०) अस-राचारी—श० ५।८ ।

विमार्गणम् [वि + मार्ग + ल्युट्] दृष्टना, खोजना, तलाश करना ।

विमिथ्, विमिथिल (वि०) [वि + मिथ् + अच्, क्त वा] मिला हुआ, सम्पर्क, गाइडमैड किया हुआ (करण० के साथ या समास में) —पृथिवीमिथ्या नायक—महा०, इन्द्रयोरिह को न की न तर्मास प्रीडाविमिथ्यो रस गीत० ५ ।

विमुक्त (भू० क० कृ०) [वि + मुच् + क्त] 1 आजाद किया हुआ, रिहा किया हुआ, स्वतन्त्र किया हुआ, 2 परिश्रम, छोड़ा हुआ, त्यागा हुआ, पीछे रहा हुआ 3 स्वतन्त्र 4 जोर से जेंका गया, (बन्धु के) दगा गया 5 अभिव्यक्त । सम० कठ (वि०) कथन करने वाला, फूट फूट कर राने वाला ।

विमुक्ति (स्त्री०) [वि + मुच् + क्तिन्] 1 रिहाई, छुट-कारा 2 वियोग 3 मोक्ष, उद्धार ।

विमुक्त (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [विहृतमनस्कम् मय यन्म प्रा० ब०] 1. मुह्र मोहे हुए 2 पराङ्मुख, अनिच्छुक, विहृत न बुद्धीर्षि प्रथममुक्तानोक्तया सभयप, प्राप्ते मित्रे प्रवर्ति विमुक्त कि पुनर्यस्तबाज्ये संघ० १७, २७, (रघुणा) मन परम्बाविमुक्तप्रवर्ति रघु० १६।८, १९।४७ 3 सन् + हि० १।१३० 4 रहित, धुरा (समास में) कर्णविमुक्तेन मरुपुत्रा हरता त्वा वद कि न मे ह्यत् रघु० ८।६७ ।

विमुक्त (वि०) [वि + मुह्र + क्त] अव्यवस्थित अव्यवस्था हुआ, व्याकुल ।

विमुह्र (वि०) [विगतो मुद्रा यय प्रा० ब०] 1 बिना मोहर लगा 2 खला हुआ, मुकुटित, लिखा हुआ ।

विमुह्र (भू० क० कृ०) [वि + मुह्र + क्त] 1 धबराया हुआ, व्याकुल 2 बहकाया हुआ, लुभाया हुआ, फुस-साया हुआ 3 जह ।

विमुह्र (भू० क० कृ०) [वि + मुह्र + क्त] 1 मला हुआ, पोछा गया, साफ किया गया 2 मोसा हुआ, बिचार किया हुआ, किन्नन किया हुआ ।

विमोक्षः [वि + मोक्ष + घञ्] 1 रिहाई, मुक्ति, छुटकारा 2 मोक्षी दागना, निशाना लगाना 3 मुक्ति ।

विमोक्षणम्, वा [वि + मोक्ष + ल्युट्] 1 छुटकारा, रिहाई मुक्त करना 2 मोक्षी दागना 3 त्यागना, छोड़ना, परिश्रम करना 4 (अर्थ) देना ।

विमोक्षणम् [वि + मुह्र + ल्युट्] 1 मोल देना, बूझा हुआ देना 2 रिहाई, स्वतन्त्रता 3 छुटकारा, मोक्ष ।

विमोहण (वि०) (स्त्री०—ना, नी) [वि + मुह्र + णिच् + ल्युट्] 1 रिशाना, प्रलोभन देना, बाहुल्य करना, —नः, मय् नरक का एक प्रधान, मय् फुसलाना, लुभाना, आकृष्ट करना ।

विभः, वभ् दे० 'विभ' ।

विभक्तः दे० 'विभक्त' ।

विभटः [विभ् + षट् + अच्, शक० परकपय] राई का पीछा ।

विभिका दे० 'विभिक' ।

विभा, बी (स्त्री०) [विभ् + अच् + टाप्, डीष् वा] एक बेत का नाम ।

विभित दे० 'विभित' ।

विभुः (पु०) मुपारी का पेड़ ।

विभृत् (ना०) [विभृच्छति न विभ्रमति वि + भृच् + णिच्, म लोप, नृकागम] बाकाब, अन्तरिक्ष, निरभ्रमोत्पन्न पद्मोदयज्जन्तुत्वाद्ययति बहुतर स्तोत्र-मुष्णी प्रयाति श० १।७, रघु० १३।४० । सय० यथा 1 स्वर्गीय बना 2 बाकाबयथा, —चारिन् (विमृच्छारिन्) (पु०) नील, —भूतिः (स्त्री०) अयकार, भणिः (विभ्रम्यभिः) सुबं ।

विभ्रतिः (पु०) यक्ष ।

विभ्रतः [विभ्र + यच् + षट्] 1 प्रतिवध, रोक, निवन्धन 2 दुःख, पीडा, कष्ट 3 विराग, पड़ाव ।

विघात (वि०) [विहृत निरा घातः—प्रा० स०] 1 वृष्ट 2 माहसी, निर्लज्ज, डोढ ।

विघात दे० 'विघात' ।

विघुक्त (भू० क० कृ०) [वि + घृच् + क्त] 1 विच्छिन्न, पृथक्कृत, बलम किया हुआ 2 जुदा किया हुआ, परि-त्यक्त 3 भूक्त, वधित (करण० के साथ या समास में) ।

विघुत (भू० क० कृ०) [वि + घृ + क्त] विघुक्त, विरहित, वञ्चित विक्रम० ५।८ ।

वियोगः [वि + यज् + घञ्] 1 जुदाई, विच्छेद, —अयनेक-पदे तथा वियोगः सहसा चोपनतं सुदु सहो मे—विक्रम० ५।३, तयोपस्थितविद्योऽप्य तपोवनस्यापि समवस्था दुश्यते श० ४, सधने भूतमरति हि सविद्योः कि० ५।६१, रघु० १२।१०, सि० १२।६३ 2 अभाव, हानि 3 व्यवकलन ।

विघोगिन् (वि०) [वियोग + इनि] विघुक्त—(पु०) एक-बाक ।

विघोगिनी [विघोगिन् + ङीष्] 1 अपने वति या प्रेमी

वियुक्त स्त्री,—गृहनिःश्वमितं कविर्भोगीषी विरलौषीवच
ता विभोगिनीति भासि० ४।३५ २ एक छन्द या
वृत्त का नाम (दे० परि० १) ।

विबोधित (भू० क० क०) [वि+युञ्+णिच्+क्त] १. अलगया हुआ २. जुदा किया हुआ, वञ्चित ।

विबोधि,—नी [विबिधा विबद्धा वा योति प्रा० सं०] १. नामा जन्म २. पशुओं का गर्भाशय (मनु० १२।७७ पर कुल्लू०) ३. हीन या कलकपूर्ण जन्म ।

विरक्त (भू० क० क०) [वि+रज्+क्त] १. बहुत लाल, लालिमा से युक्त -रघु० १३।६४ २. बदरीय ३. अनु-
रागहीन, स्नेहशून्य, अप्रसन्न—मनु० २।२ ४ सामारिक
राम या कालसा से युक्त, उदासीन ५ आवेश पूर्ण ।

विरक्तिः (स्त्री०) [वि+रज्+क्तिन्] १ चित्तवृत्ति में
परिवर्तन, अस्तित्व, अस्त्युत्ति, स्नेहशून्यता २ अलगाव
३. उदासीनता, इच्छा का अभाव, सामारिक लालसा
या आसक्तियो से मुक्त ।

विरक्तम्—ना [वि+रज्+ल्यट्] १. क्रम व्यवस्थापन
—सि० ५।२१ २. रचना करना सम्बन्ध ३. निर्माण
करना, सृजन करना ४. साहित्य-रचना करना, सकलन
करना ।

विरक्ति (भू० क० क०) [वि+रज्+क्त] १ क्रम में
रचना गया, बनाया गया, निर्मित, तैयार किया गया
२. ऋतित किया हुआ, सरचना किया हुआ ३. ठिक्का
हुआ, साहित्य-सृजन किया हुआ ४ काट-छाट किया
गया, सफाया गया, परिष्कृत किया गया, बनाव-सिपार
किया गया ५. कारण किया गया, पहनाया गया
६. ऋका गया, बैठाया गया ।

विरक्त (वि०) [विगत रजो यस्मात्—प्रा० व०] १
जिस पर धूल या गर्द न हो, जिसमें राग न हो, —अ-
विष्णु का विशेषण ।

विरक्त, विरक्तक (वि०) [विगत रजो यस्मात् यस्य
का प्रा० व०] १. जिस पर धूल न पड़ी हो, राग
रहित सि० २०।८० २ जिसका रजोधर्म आना बन्द
हो गया हो ।

विरक्तक [विरज्+क+टाप्] वह स्त्री जिसको
रजोधर्म आना बन्द हो गया हो ।

विरक्त, विः [वि+रज्+अच्, इन् वा, मुम्] बहुधा ।
विरक्तः (पुं०) एक प्रकार का कल्पा अमृत. अगर का
बुझा ।

विरक्तम् [विजिघ्रो रजो मूलं यस्य—प्रा० व०] एक
प्रकार का सुगन्धित घास, गु० वीरल ।

विरत्त [वि+रज्+क्त] १. बन्द किया हुआ, फटा
हुआ (अपा० के साथ) २. विश्रान्त, थका हुआ,
ठहरा हुआ ३. समाप्त, उपसंहृत, समाप्ति पर विरत
नेयमनुविशेषः रघु० ८।६६ ।

विरतिः (स्त्री०) [वि०+रम्+क्तिन्] १ बन्द करना,
ठहरना, रोकना २. विश्राम, अवसान, पति ३. सांसा-
रिक बाधनाओं के प्रति उदासीनता भू० ३।७९ ।

विरतः [वि+रज्+अच्] १ रोक घाम २. सुष का
छिपना ।

विरल (वि०) [वि+रा+कलन्] १ छिड़ो से युक्त,
जिसके बीच में अन्तराल हो, पतला, जो सघन न हो,
मटा हुआ न हो विपरीत यातो चतुर्विधभाष
क्षितिक्का—उत्तर० २।२३, प्रवति विरलमक्ति-
म्लान पुष्पोपहार रघु० ५।३४ २. पतला, कोमल
३. होला, विस्मृत ४ निराशा, दुर्लभ, अनूठा.—पञ्च०
१।२९ ५. कम, थोड़ा (सक्या या परिमाण सङ्घो)
—तन्त्र किमपि काव्याना जानानि विरला भूवि—भासि०
१।११७—विला नपच्छवि—शि० १।३ ६ दूरवर्ती,
दूरपर, लम्बा (समय या दूरी आदि), —लक्ष्मी, दही,
जमाया हुआ दूध, लम्ब (अव्य०) कठिनाई से,
कभी कभी जो बहुतायत में न हो, नहीं के बराबर ।
सम० जानूक (वि०) मनु पक्षी, जिसके बूटो
में अधिक दूरी हो, —इचा, एक प्रकार की लपसी ।

विरत (वि०) [विगत रजो यस्य प्रा० व०] १ स्वाद-
रहित, फीका, नीरम २. अक्षि, अरक्षिक, पीछाकर—
माधवकीर्ति विरतान् याय दिवसान् बान्धन्ते निव-
सन् भासि० १।७ ३ कर, निर्देय,—लः पीडा ।

विरहः [वि+रह्+अच्] १. विछोह, वियोग २ विसे-
पन प्रेमियों की जुदाई—सा विरहे नव दीना गीत०
४, लगनमपि विरह पुरा न सेरे तदेव, मेघ० ८,
१२, ५१, ८५, ८७ ३ अनुपस्थिति ४ अभाव ५ उज-
बना, पश्र्याय, छोड़ देना । सम० अमरः वियो-
गार्तिन, —अवस्था वियोगवशा, आर्त, उत्कण्ठ,
उत्सुक (वि०) वियोग का कष्ट भोगने वाला,
विछोह के कारण दुःखी,—उत्कण्ठिता बहु स्त्री को
अपने पति या प्रेमी के वियोग से दुःखी है, काव्यप्रयोगों
में अगणित एक नायिका दे० सा० व० १२१,
अन्य वियोग की वेदना या उद्वेग ।

विरहिणी [विरह्+नीप्] १ अपने पति या प्रेमी से
वियुक्त स्त्री २ मजदूरी, भाडा ।

विरहित (भू० क० क०) [वि+रह्+क्त] १. छोड़ा
हुआ, पीछेछोड़ा, त्यागा हुआ २. वियुक्त ३. अकेला,
एकाकी ४. हीन, शून्य, मुक्त (बहुधा सवाय में) ।

विरहिन् (वि०) (स्त्री०) विरहिणी [विरह्+इति]
अनुरक्ति, अपनी प्रेयसी या प्रेमी से वियुक्त होने
वाला, —गुणति युवतिजनेन त्वं सति विरहिजनस्य
दुस्ते गीत० १ ।

विरामः [वि+रज्+चञ्] १ रम क बरलगा
२ वर्तपरिवर्तन, स्नेहाभाव, अस्त्युत्ति अस्त्योच,—

विरामकारणेषु परिहृतेषु मुद्रां १ ३ अक्षि
इच्छा न होना ४ भासाधिक बासनाञ्जो क प्रति
उदासीनता, राग से भ्रुति ।

विराज् (पु०) [वि + राज् + क्तिप्] १ मोन्दयं आभा
२ क्षयिष्य जानि का पुरुष ३ इन्द्रा की प्रथम सन्तान
मु० धनु० ११३० तस्मान् विराजन्नायत ऋग १०।
१०।५ (यहाँ विराज् का पुरुष से उत्पन्न बन गया
है) ४ शरीर रङ्गी० एक वैदिक वृत्त या
छन्द का नाम ।

विराज दे० 'विराज्' ।

विराजित (पु० क० कृ०) [वि + रज् + क्त] १ ददा
प्यमान प्रकाशित २ प्रदर्शित प्रकटीकृत ।

विराट् [विराट्] राट् यच्च । १ भास्वरत्वं के एक त्रिके
का नाम २ अन्य वृक्ष के एक राजा का नाम
(वाण्डव लायो ने एक वृक्ष का इस राजा की सेवा
में छत्रवृक्ष में रहकर अपने अज्ञान वाम का समय
बिताया) यह उनके निर्वाचन का महर्षी वृक्ष था ।
विराटराज का कन्या उत्तमा का विवाह अग्निभ्यु
से हुआ । उत्तरा पराजित की माता थी । परीक्षित ने
हरितनाभपुर में बुधिष्ठिर के बाद राज्य की वाण्डव
सम्पत्ती । सम० ३ एक प्रकार का घटिया हीरा
पर्व० (नपु०) महाभारत का चौथा पर्व ।

विराट्क [विराट् + क्त] घटिया प्रकार का हारा, हीरे
की घटिया प्रकार ।

विराजिन् (पु०) [वि + रज् + गिति] हाथी ।

विराड् (पु० क० कृ०) [वि + राध + क्त] १ विरुद्ध
प्रतिष्ठित २ कुपित क्षिप्रगन्त धृष्टपुत्रक व्यवहृत
उद्धरण दीर्घवि वि युक्त राष्ट्र के नाच ।

विराघ [वि + राघ + घञ्] १ विराघ २ सपान
सन्तान करना छड़छाड़ ३ राग के द्वारा मारा गया
एक बलवान् राक्षस ।

विराधन्तम् [वि + राध + क्त] १ विरोध करना
२ चोर पट्टनाना क्षीर लूटना प्रतुपन करना
३ पीडा बढ़ना ।

विराध [वि + रध + घञ्] १ रोचना अन्ध करना
२ अत्र समाहित इमहाय रजानिन्धनमिषमयि
याति विरामस मीन० ५ उत्तर० ३।१६ म०
१।३६ ३ यदि ठहरता आराध का रक्षण या
धमना मच्छ० २।५ एक छाटा निराली लकौर
को ध्वज के नीचे लगाई जाता है प्राय शक्य के
अन्त में हजिबिद्ध ६ 'वृष्णु रा नाम ।

विराड् दे० 'विराज्' ।

विराज् [वि + रज् + क्त] का-गहल जोर चरित
आमोक्तमन्ध वयसा विराज् रघु० २।१ १६।११ ।

विराजिन् (पु०) [विराज् + क्त] १ राने वाला

चिल्लाने वाला खोर मचाने वाला २ विलाप करने
वाला, — जो १ राने या चिल्लाने वाली २ छाक ।

विरिच, विरिचन् [वि + रिच् अच्, ल्युट् वा मुम्]
बढ़ा ।

विरिचि [वि + रिच् + इन् मुम्] १ बढ़ा विक्रम०
१।६६ नै० ३।४६, सि० १।९ २ विष्णु ३ शिव ।

विरिण् (पु० क० कृ०) [वि + रन् + क्त] १ टुकड़े
टुकड़े हुआ २ विनष्ट ३ झुका हुआ ४ टूटा ।

विरित् (पु० क० कृ०) [वि + र् + क्त] १ चोला हुआ,
चिल्लाया हुआ २ नृजायमान चोलाग्रभूषण लम्ब
१ चिल्लाना बावना, इन्द्रावन, आदि २ चिल्लाहट
३ चित्त धार कलाहल, घोष ३ गाना भिनभिनाना,
कजना गुहारना परभूर्भवन कल यथा प्रतिबन्ध-
नाह्नमोभराद्वसम श० १।१ ।

विरिच, — वच् (पु० नपु०) १ घोषना करना २ खोर
म चिल्लाना ३ मृत्तिपरक कविता लघुपद्यमयी
गद्यमृत्तिवहदमुच्यते मा० ६० ५३० नवनि
मददन्ति पालिमन्ति वाजिबद्धा पठन्ति विरिच-
वन्तो महिन्मन्दिरे बन्दिन रम० ।

विरिचितम् [विरिच + इत्] जाग्रद्वोर से राना चोला,
विलाप करना उत्तर० ३।१० (पठान्तर) ।

विरिड् (पु० क० कृ०) [वि र् + क्त] १ बाधित,
राका गया विरोध किया गया ककावट डाली गई
२ घरा हुआ कंद में बन्द किया हुआ ३ विपरीत,
बेरा डाला हुआ ताकेबन्दा की गई ४ विपरीत,
असंगत बेवेल, अल बद्ध प्रतिकूल, विराधी, युधो
में विगरीत ६ वर० ११ विरोधी वैपरीय को निद्र
करने वाला (वेमा कि तर्क० में हनु) ७ उदा० शब्दो
नित्य कृत्कचान तर्क० ७ विरोधी, उलटा,
विराधपूज ८ अननुकूल अनुपयुक्त ९ प्रतिविद्ध,
विराध (भाजन आदि) १० अशुद्ध अनुचिन द्रव्य
१ विराध वीरराय शत्रुता २ वैतत्य जसह-
मति

विरिञ्चनम् [वि + रञ् + ल्युट्] १ रचना करना
२ रक्तलाइ का रोकने का कार्य करने वाली
(औषधि) ३ कलक निन्दा ४ ओषधाय का भिन्न ।

विरि (पु० क० कृ०) [वि + र् + क्त] १ उगाया हुआ
अकृति फूटा हुआ मच्छ० १।१२ २ उत्पादित,
उपजाया हुआ उत्पन्न किया हुआ ३ उगा हुआ,
अभिवर्धित ४ मुकुलित बिना हुआ ५ चड़ा हुआ
सवारा की हुई ।

विरिच (वि० रङ्गी० वा, यो) विरिच रूप वय्य
पा० २०, १ विरुपित कुम्प बदशब्द०,
बदभूत पञ्च० १।१४३ २ अप्राकृतिक विकटा-
कार ३ विरिचकप, विरिचकपो जाया पञ्च १ स्तुत

रूप, कुरूपता 2 रूप, स्वभाव या चरित्र की विभिन्नता। सम० कृष्ण (वि०) भरी आँखों वाला वपुर्विरूपात्मम् कु० ५।७२, (कः) शिव (विषम सत्त्वा की ओर होने के कारण) दुष्टा इव मनमित्र जीवयन्ति दूषेय या, विरूपात्म्य अपिनीत्ता स्तुते वामलोचना विद्व० १।२ कु० ६।२१, -करणम् 1 बहमूरत बनाना 2 क्षति पहुँचाना, - चक्षुः (पु) शिव का विशेषण रूप (वि०) भद्रा, बड़ौल।

विरुक्त्वि (वि०) (स्त्री० गो) [विरुद्ध रूपमस्ति अस्य विरूप + इति] भद्रा, कुरूप बहमूरत।

विरोकः [वि + रिप् + बञ्ज्] 1 मलाशय को रिक्त करना साफ करना 2 विरोधक, बुराब को दबा।

विरोचयम् दे० विरेक'।

विरोक्षित (वि०) [वि + रिप् + जिप् + क्त] पट साफ किया गया, पेट निर्दल और रिक्त किया गया।

विरोकः [विशिष्टा] रेफो यम्ब वि + रिप् + बञ्ज्] 1 नदी सरिता 2 'र' अक्षर का अभाव।

विरोकः, कम् [वि + बप् + बञ्ज् बप् वा] छिः, मूराल दरार, कः प्रकाश की किरण।

विरोचनः [विशेषण रोचते वि + बप् + स्यट्] 1 सुवर्ण 2 चन्द्रमा 3 बाल 4 प्रह्लाद के पुत्र और बाणिक के पिता का नाम। मम० कुल, बाल का विशेषण।

विरोधः [वि० बप् + बञ्ज्] 1, प्रतिरोध इकावट विघ्न 2 नाकेबंदी, बंरा, आवरण 3 प्रतिबन्ध, राक 4 अक्षयति, असह्यता, परस्परविरोध 5 अर्थ विरोध वैषम्य 6 सञ्ज्ञा, दुश्मनी विरोधो विश्रान्त—उत्तर० १।११, पञ्च० १।३३२, रघु० १०।१३७ कनक असह्यति 8 सकट, दुर्भाग्य 9 (अ० में) प्रतीयमान असमति जो केवल साविक ही, तथा सर्वम का ठीक से अन्वित करने पर स्पष्ट हो जाय, इसमें परस्पर विरोधी प्रतीत होने वाले शब्द (जो वच्) बने न न हो) मर्ममिल रहते हैं, वस्तुओं का ऐसा वर्णन करना जो किसी हुई प्रतीत हो, परन्तु वस्तुतः हो विभिन्न भिन्न, (इस अन्वकार का वाण और सुबधु न बहुत उपयोग किया है) पुनःकरणीय पवित्रा कृष्णोः प्यबुद्धर्जन, बरतोऽपि सञ्ज्ञम् आदि उदाहरण प्रसिद्ध है) मध्यत ने इसकी परिभाषा दी है—विरोध तोऽपि विरोधेऽपि विरुद्धत्वेन यदृक् काश्च० १०, इस अन्वकार का नाम विरोधाभास भी है। सर्व०—उत्तिः (स्त्री०), कश्चम् परस्परविरोध, विराय, कारिण (वि०) अग्रदा करने वाला, क्लृ० (पु०) विरोधी (पु०) सञ्ज्ञ।

विरोचयम् [वि + बप् + स्यट्] 1 बाधा हाल-ता, विघ्न हालना, इकावट हालना 2 बंरा हालना, नाकेबंदी

करना 3 प्रतिरोध करना, मुकाबला करना 4 पर-स्परविरोध असमति।

विरोधित्व (वि०) (स्त्री० गो) [वि + बप् + जिनि]

1 मुकाबला करने वाला, प्रतिरोध करने वाला, अवरोध करने वाला 2 बंरा हालने वाला 3 परस्पर विरोधी, प्रतिद्वन्द्वी असमति तपावन वा० १ 4 बिदेयी शत्रुतापूर्ण, अनिच्छ विरोधिसत्त्वाभिज्ञत प्रथमतस्तरम् कु० ५।१७ 5 अग्रहाल पु० शब्द शि० १२।५४।

विरोध (ह) कम् [वि + बप् + स्यट्] (बाब बाबि का) भगना प्रणविश्रापण तेलम् अ० ४।१४।

विलः (पु०) पर० विलात) 1 ढकना, छिपाना 2 ताँडना, बँटना ॥ (चुरा० उभ० वैषयनि—ने) कँकना, धकेलना।

विलम् दे० विल'।

विलम्ब (वि०) [विलम्ब + बप्] 1 जिसके कोई विशेष लक्षण या चिह्न न हो 2 व्याकुल विलम्ब 3 आचम यन्त्रिन अवधे म पडा हुआ ० नम्रितन, शमिदा अध्यात्म मानेयु स्थलिनस्तदा भवति य इष्टाविक्रम विचरम् वा० ६।५ अनोखा, अनूठा।

विलम्बन (वि०) [विगत लक्षण यम्ब—वा० ब०] 1 जिसके कोई विशेष लक्षण या चिह्न न हो 2 विन्म इनर 3 अनोखा अमाधारण, अनूठा 4 अक्षुभ लक्षणों से युक्त कम् ध्येय या निरर्थक स्थिति।

विलम्बित (पु० क० क०) [वि + लम् + क्त] 1 विधुत, प्रयत्नीकृत दृष्ट आधिक्यन 2 विशेषणीय 3 उद्धिन्न, बहगया हुआ विलम्ब, व्याकुल ' प्रदुषित, नाराज।

विलम्ब (वि०) [वि + लम् + क्त] 1 छिपटा हुआ, छिपका हुआ, अवलंबित, बचा हुआ वा० ७।२५, शि० १।२० 2 डाला हुआ, स्थिर किया हुआ, निश्चित कु० ७।० 3 धिगत, बोझा हुआ (समय आदि) 4 पतला, छरहरा, मुकुमार मध्येन सा वेदिविलम्ब-मध्या कु० १।३५, विक्रम० ४।३७, कम्ब कम्ब 2 कन्हा 3 ताराचन्दल का उलट होना।

विलम्बयम् [वि + लप् + स्यट्] 1 अतिक्रमण करना, लीज जाना 2 अपराध, अतिक्रमण, छति।

विलम्बित (पु० क० क०) [वि + लप् + क्त] 1 पार या परे गया हुआ दुर्गम्य हुआ 2 अनिकल 3 आगे नया हुआ, आगे बढ़ा हुआ 4 परास्त, पराजित।

विलम्बन (वि०) [विमता लम्बा यम्ब प्रा० ब०] निर्लम्ब वैषम्य।

विलम्बयम् [वि + लप् + स्यट्] 1 जाने करना 2 विक्रमी जाने करना, बह्वृद्धावा, बह्वृद्धा 3 विलाप करना, रोना-बोना, -विलम्बनविरोधोऽप्युक्तः—उत्तर० १।३० 4 चीकट, ताम्रकट।

विलसितम् [वि + लप् क्त] 1 विभाप करना क्रय्दन्
2 रोदन ।

विलम्ब - (वि । लम्ब - पञ् । १ अङ्कना दालायमान्ता
२ धीमायम दरो दासमृज्जा ।

विलम्बनम् [वि]लम्बेत्यम् । लम्बना निभर्या
 २ द्वेरी, टालयत्तल न कुम् नितभिनित गयनविलम्ब
 नम् गीतः ५ या तन्मृग्य विगत विलम्बनयसौ
 रय्य'भिलासलण नदेव

विलोपिका [वि + लभ् शब्दार्थः । अत्र लोपः कृतः ।
कोशबद्धः ।]

विनिष्पन्न (म० क० ५०) वि० १२४ + ५५ । १२४
 फ० वि० १२४ २ १२४ ५५ १२४ ५५ १२४ ५५ १२४ ५५
 मुमुक्षु १२४ ५५ १२४ ५५ १२४ ५५ १२४ ५५ १२४ ५५
 मंगल म १२४ ५५ १२४ ५५ १२४ ५५ १२४ ५५ १२४ ५५
 दश १

विश्लिष्ट (वि०) (२५० नी) विश्लिष्ट निधि
 १ नीच मटका दुहा निरर गठबन नवाग्रहि
 नीचिलिगिता घना ग० ११२ अलबुविल्लै
 पयावरागठ्या नि ४०० ०० क० ११६ कि०
 ०६ रघु० १६१६ १००० यच्छ० ११३ २ हो
 काले शशी गालमणन फन वाला मन्त्र रहने
 वाला नर्तन विभिनी विगलिनल्लु अ विगलित
 रोदिनि बासकमत्रा गीत १

बिनाश्व [वि कभ - घ-। मम] 1 उदारता 2 भेद
दान ।

बिलय [वि ला अच] १ विरान विषयना २ विनाश
 मय्य अन्त उन्त ३ मसा का विषयना या
 विनाश (बिलय मय उन्त वाता अन्त हा जाता
 मयाण हा ज हा विनाश नमिषयण नमुनयम शि
 १।३३।

विलक्षण, वि + लो भूट। १ पत्र जाना रिफ्त जाना
खोल या बिच्यन २ जग लग जाना मुची या जान
३ हटाया, दूर करना ४ रक्का करना ५ पत्र
करन वाली श्रीपि।

विष्णुसूक्तं (दाक्ष्य वि०) (मन्त्रः १।) । त्रि-मयः शान्तिः
१ यमकाले बाला प्रकाशमान रजश्चन्द्र २ यमबला
बाला मनुष्या कौशल वाक् ३ सहारणे बाला ४ श्रीडा
प्रिय विनीतप्रेम्णा ।

विश्लेषण वि. नस. ५५४ १ दमकना अमरमान
अमरमान जगमगाना २ फादा अरना इत्यादि
कीचले करवा ।

विलसित (भू० १० १०) वि नम कः । दमक
 हुवा समक हुवा जगमगना हुवा २ प्रन ह्य
 प्रकटोक्त ३ कोडाविद स्वेष्टः शरा तव । रम
 कना जगमगना २ समक दमक राषोभवा मय

मृषा हिरण्ययाना भासस्मडिद्विलसितानि विद्युन्वयानि
किं न भवेत् संघर्षः । १ विक्रमः ८३ दशत
प्रकटीकरण जैभा कि अत्र निष्पत्तिरिति आदि ये
१ ताला खल रंगरेखा मान्याग हाक्काया ।

विष्णु । विष्णु ध्यात्वा कन्दनं शोकं कृत्वा गन्धनं
करात्तनां लङ्काम्ब्रोणा पुनश्च विष्णुपाचार्यकं शरैः
गच्छ १५७ ।

बिलास वि + ल + षञ । 1 बिलास 2 उपकरण
यन्त्र ।

[illegible]

विलासनाम् [विलास + णिङ् -पठ्। १ आडा श्लेष मनो-
रजन २ कामकला रमणेको ।

बिलासवली [बिलास + मनुष्य उप मन्थ व] स्वेच्छा
चारिणी या कामुक स्त्री १५० १४१ अक्षु०
११३१

विलासिका [वि - लस] खूब राग - वल्लभ इच्छा
 मे पूर्ण एकाकुल = इमबा - निरासा मा २०
 ५५२ पर इस प्र - रा हो है गूँझावटनेवाला
 इमलास्यासमयन बिभूतकविधायी व रागमदेन
 भुविता। मीना रागमसिद्ध मरिगा मेनतायका
 स्वल्पवृत्ता माध्य 'वरागा' मा विलासिका

विभाषित (१०) (२५०) नी विजय इन कीदा
युक्त लीलावर रगसो में अरु कामर खाबने
करन वाला रगो ६१४ वी १ विषया भागा
मरुन रसिकजन ५ य मम अहंतामना कण ययव
कायमवाय कृ- ११० २ अहं ३ अहंदा ४ माय
५ कण य विषय क विषय ६ शिव का विषय
७ कामर का विषय

बिलासिनी [विश्वामित्र - शीष 1 रमणी 2 हृदयमात्र
कनक बाला तथा - शीष 1 मणवधूनिकर बिला
मिरो बिलमणि की रमणी गीत 1 कुं 31-19
शि 1130 रघु 1193 3 स्थेलावागिना
दशरथ ।

निमित्तान् । वि शिव + क्त क्तृत्वाना कृतेभ्यः
शिवना ।

निर्माण (भ० क० क०) वि० १२५ क० लीप हुआ
पता हुआ चरवा हुआ

विशील (भू० क० क०) [वि + ली + क्त] 1 विपकने वाला, विपटा हुआ, अनुपगत 2 अङ्के पर बैठा हुआ बसा हुआ उतरा हुआ 3 ससक्त, ससर्था 4 पिचला हुआ, चुला हुआ, गलाया हुआ 5 अन्तहित ओझल 6 मृत, नष्ट।

विलुप्तम् [वि + लुप् + क्त] फाट डालना, डोलना।
विलुप्तम् [वि + लुट् + क्त] लुट्ना हाका डालना।
विलुप्त (भू० क० क०) [वि + लुप् + क्त] 1 तोड़ा हुआ, फाड़ा हुआ-पच० २२२ 2 पकड़ा हुआ, छीना हुआ, अपहरण किया हुआ 3 लुटा हुआ, हाका डाला हुआ 4 विनष्ट बर्बाद 5 विपटा हुआ ताड़ा-फोड़ा हुआ।
विलुप्तः [वि + लुप् + क्त] मृत, लुटा, अपहरण।
विलुप्त (भू० क० क०) [वि + लुट् + क्त] 1 हथर उधर धूमने वाला, अस्थिर, हिला हुआ लुब्धक हुआ धरचराना हुआ 2 कमरतड़ित, कमजोर गतिन कुसुमदलविलसितकोश-गीत० ७।

विलुप्त (भू० क० क०) [वि + लु + क्त] कटा हुआ काट डाला हुआ, चोरा हुआ काट कर टुकड़े टुकड़े किया हुआ।

विलोकनम् [वि + लोक् + क्त] 1 मूरचना घुरेदना, घुरना 2 लोचना 3 उन्मादना।

विलोकः [वि + लोप् + क्त] 1 उबटन, मन्त्र 2 घना 3 विपरी-मुतादि।

विलोकनम् [वि + लोप् + क्त] 1 लीपना पोतना 2 मल्लय, उबटन, कोई भी शरीर पर लप काने के बौद्ध भुगन्धित पदार्थ (केसर व चन्दन आदि) --वाग्भट मुरभिकुमुमवृषविलेपनादीनि का०।

विलेपनी [विलेपन + क्त] 1 भुगन्धित द्रव्या स भुवर्गसित स्त्री 2 लुपेता 3 चावल का मांड।

विलेपिका, विलेपी, विलेप्य [विलेपी + क्त] १ गप् लृभ्यः विलेपि-लीप्, वि + लिप् + क्त] चावल का मांड।

विलोकनम् [वि + लोक् + क्त] 1 लेखना निहारना, दृष्टि डालना कि० ५१६ 2 दृष्टि निरीक्षण --वि० १२९।

विलोकिता (भू० क० क०) [वि + लोक् + क्त] 1 देखा गया, निरीक्षण किया गया, समीक्षित, निहारा गया 2 परीक्षित, ध्यान किया गया --सम् दृष्टि नञ् --स० २३३।

विलोचनम् [वि + लोच् + क्त] जीव रघु० ७८ कु० ४१, ३६७। लघ० अच् (नपु०) लोच्।

विलोचनम् [वि + लोच् + क्त] विलुब्ध होना, डोलायमान होना, हिल-चल मगधन करना सि० १६८३।

विलोहित (भू० क० क०) [वि + लोह + क्त] दुकाया हुआ, डिलाया हुआ, हिलाया हुआ, विभुज्य, तम् विलोया हुआ ह्व।

विलोप- [वि + लुप् + क्त] 1 लोपना, अपहरण करना पकड़ना लुटना 2 लोप, हासि, नाश अवर्धन।

विलोपनम् [वि + लुप् + क्त] 1 काट डालना 2 अपहरण 3 मष्ट करना विनाश।

विलोभः [वि + लुप् + क्त] आकर्षण, फुसलाहट, प्रलोभन।

विलोभनम् [वि + लुप् + क्त] 1 मोह लेना, ललचाना 2 रिझाना प्रलोभन फुसलाना 3 प्रलसा गुणामय।

विलोभ (वि) (स्त्री०-भो) [विगत लाम यश्-प्रा० व०] 1 व्युत्क्रान्त प्रतिकूल प्रतिक्रम विपरीत विरुद्ध 2 प्रतिकूल क्रम में उत्पन्न 3 पिछड़ा हुआ 4 विपरीत क्रम प्रतिक्रम 2 कुल 3 मोप 4 बल्ल 5 मृग 6 कुप में पानी निकालने का यन्त्र 7 मय 8 उत्पन्न 9 जान, बर्ज (वि०) प्रतिकूल क्रम में उत्पन्न अर्थात् ऐसी माना में क्रम केन ३ पित्त की अपेक्षा उत्पन्न वर्ण की हो तु० प्रतिक्रमिक भी क्रिया विधि 1 प्रतिकूल क्रम 2 प्रतिक्रम नियम (गणि० में) विरुद्ध हाथी।

विलोकी [विलोभ + क्त] अविना।

विलोक (वि०) [विलोभेण लो-प्रा० म०] 1 दालायमान कापना हुआ बन्ध करने वाला अस्थिर होकरने वाला बचन हथर उधर लुटकरने वाला पृथ्वीय विलोक्योक्षितम् रघु० १५१ सि० १८ १५६२ २०६४ वेणी० २१८ रघु० ७६१ १६६८ 2 डोला विनयस्य विचरे ह्य (वाग्भटि)

उत्तर० ३१६।

विलोहित [विलोभेण लोहित प्रा० म०] वट का नाम।

विल्ल ८० विल्ल।

विल्ल ८० विल्ल।

विल्ल ८० विल्ल।

विल्ल ८० विल्ल।

विल्ल ८० विल्ल।

विल्ल ८० विल्ल।

विल्ल ८० विल्ल।

विल्ल ८० विल्ल।

विल्ल ८० विल्ल।

विल्ल ८० विल्ल।

विल्ल ८० विल्ल।

विल्ल ८० विल्ल।

विल्ल ८० विल्ल।

विचयिक: [विचय + क्त] 1 बोझा डोने वाला, कुली
2 डेरी वाला, आबाज लगा कर बेचने वाला।

विचरन् [वि + च् + क्] 1. बरार, छिड़, रगड़, मोहलापन, रिक्तता यन्त्रकार विचर शिलाघने साबकोरसि स रामसायक रघु० १११८, ११११, १११७
2. अन्त स्थान, अन्तराल, बीच की जगह श० ७३७
3 एकान्त स्थान कि० १२३७ 4 बीच, वृत्ति, ऐव, कमी 5 विच्छेद, बाव 6 'नौ' की छक्या।
सम०—नालिका बमरी, बसी, मुरली।

विचरन् [वि + च् + क्त] 1 प्रदर्शन, अभिव्यजन, उद्घाटन, कोलना 2 अनावृत करना, खुला छोड़ना
3 विवर्ति, व्याख्या, वृत्ति, टीका, भाष्य।

विचरन् [वि + च् + क्त] 1 छोड़ना, निकाल देना, परित्याग २. १११८ ११११ १११७

विचरित (भू० क० कृ०) [वि + च् + क्त] 1 छोड़ा हुआ, परित्यक्त 2 परिहृत 3 वञ्चित, विवर्तित, के बिना (प्रायः समास में) 4 प्रदत्त, वितरित।

विचर्य (वि०) [विगत वचो यस्य प्रा० व०] 1 विचारण का, निष्पन्न, पाण्डु, फीका—नरेन्द्रमार्गट्ट
द्वार प्रवेशे विचर्यमात्र सप्त मृगिपाल—रघु० ११५७
2 जिस पर कोई रग न चड़ा हो, निर्जल, श० १११४,
3 बीच, वृष्ट 4 अज्ञानी, मूढ़, निरक्षर, कः जाति-
वहिष्कृत, बीच जाति से सबंध रखने वाला।

विचर्य [वि + च् + क्त] 1 शील चक्कर खाना, चारों ओर घूमना, मबर 2 जाने को लड़कना 3 पीछे को लड़कना, कोटना 4 नृत्य 5 बदलना, सुधारना, रूप में परिवर्तन, बदली हुई रसा या अवस्था—लब्धवहा-
जस्ताद्वारा विचर्यमितास रामायण प्रणिमाय उत्तर०
२, एको रस कथन एव निमित्तवेदाङ्गिन् पृथक्
पृथगिवाच्यते विचरन् उत्तर० ११५७, महावी०
५१५७ 6 (वेदान्त० में) एक पतीयमान भ्रान्तिजनक
कल्प, अविद्या या मानव की भाँति से उत्पन्न मिथ्या
रूप, (यह वेदान्तियों का एक प्रिय सिद्धांत है जिनके
अनुसार यह समस्त संसार एक माया है मिथ्या
और भ्रान्तिजनक रूप जब कि ब्रह्म या परमात्मा
ही वास्तविक रूप है, जैसे कि ताप, रस्सी का विचर
है, वही प्रकार यह संसार उस पर ब्रह्म का विचर
है, यह भ्रान्ति या माया सत्य ज्ञान अथवा विद्या से
ही दूर होती है, तु० मबरमृति विद्याकल्पेन अस्ता
वेदानां मूलसाधयि, ब्रह्मणीय विचरन्तां क्वापि
विप्रलय कृत—उत्तर० ११५७ 7 डेर, समुच्चय,
संग्रह, समवाय। सम० बाकः वेदान्तियों का सिद्धांत
कि यह ब्रह्ममान संसार माया है केवल ब्रह्म ही एक
वास्तविकता है।

विचरन् [वि + च् + क्त] 1. चक्कर खाना, कान्ति,

मबर 2 डेर उपर लड़कना, करवटें बदलना श०
५१६ 3 पीछे लड़कना, कोटना 4 नीचे की लड़कना,
उत्तरना 5 विद्यमान रहना, दृढ़ रहना 6 सम्यमान
अभिवादन 7 नामा प्रकार की सलाखों व स्थितियों में से
गुजरना 8 परिवर्तित होना—उत्तर० ५११५, मा० ५३७।

विचरन् [वि + च् + क्त] 1 बढ़ना 2 वृद्धि,
बर्धन, बढ़ती 3 विस्तार, अभ्युदय।

विचरित (भू० क० कृ०) [वि + च् + क्त] 1 बढ़ा
हुआ, वृद्धि को प्राप्त 2 प्रगत, प्रान्तिन, आने बढ़ाया
हुवा 3 सत्पन्न, अभ्युदय।

विचरित (वि०) [वि + च् + क्त] 1 अनियमित, जो
बस में न किया गया हो 2 लाचार, आभित, अजीब,
दूसरे के नियन्त्रण में, असहाय—परीता रक्षोभि
अपि विचरित कामपि दशाम् भाषि० ११८३, मुद्रा०
११८, सि० २०१५८ हि० ११८२, महावी० ११३२,
११३३ बेहोश, जो अपने आपको काबू में न रख सके
विचरित कामपि विचरित—भू० ५११ ४. मृत,
मृष्ट—उपलब्धवनी विचरित्य विचरित कानिचित्
कारणम् रघु० ८१८२ ५ मृत्युकामी, मृत्यु की
आसक्ति करने वाला।

विचरित (वि०) [विगत वचन यस्य प्रा० व०] नगा,
विचरन्, -कः बौन छाबू।

विचरित (पु०) [विच्छेद वन्ने आच्छादयति—वि + च् + क्त
+ क्तिप् + क्त] 1 सूर्य—अष्टा विचरितविद्यो-
स्तिलेख कि० ११ ४८, ५१४८, रघु० १०३३०, १३१
४८ 2 प्रथम का नाम ३ वर्तमान मनुका नाम ४ देव
५ अर्क का पोषा, म० ५१४८

विचरित [वि + च् + क्त] आग की सात विद्युतों में
से एक।

विचरित [विशिष्टो वाको यस्य प्रा० व०] न्यायाधीश,
तु० प्राहविवाक।

विचारः [वि + च् + क्त] (क) कलह, प्रतियोगिता,
सर्वत्र विषय शास्त्रार्थ, विचारविमर्श, वाद-विवाद,
अग्रहा, झगड़—अल विचारदेन, -भू० ५१८३ एतयोर्विवाद
एव मे न रोचते भाषि० १ एकाक्षर प्रवृत्ति-
योविचारः - रघु० ७१५३ (ग) तर्क, तर्कना, चर्चा
2 वचन विरोध एव विचार एव प्रत्याययति—भा०
७ ३ मुकन्ददेवाजी कानूनी नालिश, कानूनी सर्वत्र,
सीमाविवाद, विवादपदम् भादि, परिभाषा इस
प्रकार की गई है 'वादाविवादकलह' द्वयोर्बहुतरस्य
वा विचारो व्यवहारस्य, दे० 'व्यवहार' मी ' उच्च-
कदन, ध्वनन : आवेश, आक्रा- रघु० १८१४१।
सम०—अविवृत् (पु०) 1 मुकन्ददेवाजी २ वादी
अभियोगता, प्रतियोगिता, - वस्तु कलह का बीचक,
-वस्तु (मपु०) कलह का विषय, विचारणीय विषय।

विवादिन् (वि०) [विवाद + इति] 1. कलह करने वाला, तर्क-वितर्क करने वाला, तर्कप्रिय, कलहशील 2 (कानूनी पहलू पर) विवाद करने वाला—पु० मुकदमेबाज, कानूनी अभियोग में भाग लेने वाला ।

विचारः [वि + च् + घञ्] 1 मूँह, विस्तार 2 अश्वरो का उच्चारण करने समय कण्ठ का विस्तार (एक अम्पतर प्रयत्न, वि० सवार. वे० पा० १।१।९ पर मित्रा०) ।

विचासः, **विचासनम्** [वि + वच् + शिच् + घञ्, ल्युट् वा] देश निर्वासन, देशनिकास, निष्कासन, रामेश्वर-मंसि दुर्बहगभंसिप्रसोताविचासनपटो करुणा कुतस्ते—उत्तर० २।१० ।

विचासित (भू० क० कृ०) [वि + वच् + शिच् + क्त] देश से निर्वासित किया गया, देश निकास दिया गया, निष्कासित ।

विवाहः [वि + बह् + घञ्]। गादी व्याह (हिन्दू स्मृति-कारों ने भाट प्रकार के विवाह बताया है) ब्राह्मी देवस्तनवादी: प्राजापत्यस्तयामुर, गायत्री गससदेव पञ्चाचव्याष्टमोऽयम मनु० ३।२१, टे० याज्ञ० १: ५८, ६१ मी, इन कपों की व्याख्या के लिए उम शब्द को देखो। सम० चतुष्टयम् चार गणितों में विवाह करना, बीजा विवाह सम्कार या कर्म ।

विवाहित (भू० क० कृ०) [वि + बह् + शिच् + क्त] व्याह हुआ ।

विवाहः [वि + बह् + घञ्] 1. जामाता 2 दुल्हा ।

विचिन्त (भू० क० कृ०) [वि + चिच् + घञ्] 1 विचिन्त, पृथक्कृत, अलगया हुआ, संयुक्त 2 अंकेता, एकांकी, निवृत्त, विलान 3 एकल एकी 4 प्रभिन्न, विवेचन किया हुआ 5 विवेकशील 6 पत्रिच, निर्दिष्ट मन्त्र० १।०१, —कतम् 1. एकान्त स्थान, निर्जन स्थान जि० ८।१० 2 अकेलापन, नित्रता, एकान्तस्थान—कना भाष्यहीन या अभागी मन्त्र, वा प्रवर्तन नि का व्याखी न हो, दुर्भगा ।

विचिन्त्य (वि०) [विचिन्तेण चिन्त, वि + चिच् + क्त] अत्यन्त श्रद्धा, या इरा हुआ मन्त्र० ८।१।१३ ।

विचित्र (वि) [विभिन्ना विधा यन्त्र—प्रा० व०] नाना प्रकार का, विभिन्न प्रकार का, बहुकपी, दिग्दर्शनी, प्रकीर्ण मनु० १।८, ३९

विचोद [विचिद्ये वीर्ण गवादिप्रचारमयानं यच्च प्रा० व०] चिरा हुआ स्थान बाहर, जैसे चरणार ।

विचुल (भू० क० कृ०) [वि + च् + क्त] छोटा हुआ, परित्यक्त, मरुत्यक्त ।

विचुलता [विचुल + टाप्] बहु स्त्री त्रिमको उमका गति प्यार नहीं करना, मु० 'विचिन्ता' ।

विचुल (भू० क० कृ०) [वि + च् + क्त] 1 प्रदर्शन,

प्रकटीकृत, अभिव्यक्त 2 स्पष्ट, सामने खुला हुआ 3 खुला हुआ, अनावृत, नया पड़ा हुआ 4 खोला, प्रकट किया हुआ, नान, उद्घाटित 5 उद्घोषित 6 भाष्य किया गया, व्याख्या की गई, टीका की गई 7 विमार्गित, फैलाया गया 8 विस्तृत, विद्याल, प्रशस्त । सम० अक्ष (वि०) बड़ी बड़ी ओखो वाला, (अः) मुर्गा, द्वार (वि०) खुले दरवाजे वाला कु० ४।३६ ।

विचुतिः (स्त्री०) [वि + च् + क्त] 1 प्रदर्शन, प्रकटीकरण 2 विस्तार 3 अनावरण, व्यक्तीकरण 4 भाष्य, टीका, दत्ति, व्याख्यान ।

विचुल (भू० क० कृ०) [वि + च् + क्त] 1 मुड़ कर आया हुआ 2 मुड़ना, चक्कर काटना, मुड़कना, भ्रम ।

विचुतिः (स्त्री०) [वि + च् + क्त] 1 मुड़ना, भ्रम, चक्कर 2 (व्या०) उच्चारण भग ।

विचुल (भू० क० कृ०) [वि + च् + क्त] 1 चिक्कित 2 अड़ा हुआ, आर्षित, ऊँचा किया हुआ, बढ़ाया हुआ, मोड़ (शोक इत्यादि) 3 विचुल विद्याल, प्रचुर ।

विचुद्धिः (स्त्री०) [वि + च् + क्त] 1 बहना, बर्धन, बढ़नी, विकास ययः शरीरावयवा विचुद्धिम् मन्त्र० १।५।९, विचुद्धिमन्त्रावन्तते वसति १।१४, इसी प्रकार शोक 'हर्ष' आदि २. समृद्धि ।

विवेकः [वि + विच् + घञ्] 1 विवेचन, निर्धारण, विचारणा, विज्ञप्ता, काययि यातस्तवापि च विवेकः भाषि० १।९८, ९६, ज्ञानोऽयं अलक्षर तावको विवेक —९९ 2 विचार, विचारविमर्श, गवेषणा यल्लगाद्विवेकनरुमपि यास्काख्ये लीलायितम् मी० १२, इसी प्रकार द्वैत० यमे ३. भेद, अन्तर, (दा वन्त्रो मे) प्रभेद मोक्षीर विवेके हृदालस्य मन्त्रे ननु मे चेत् भाषि० १।५३, मट्टि० १।७।६ 4 (वेदान्त० में) इष्टमान जगत् तथा अनुस्य आत्मा में भेद करने का शक्ति, माया या केवल बाह्य का मे शान्तविकता की पृथक् करना 5 सत्य ज्ञान 6 जलाशय, पात्र, जलाशय । सम०—अ (वि०) विवेकशील, विवेकक,—ज्ञानम् विवेचन करने की शक्ति, इष्टम् (पु०) मूढमूर्खी पुरुष, —पक्षी पुनर्विचर, विचार, चिन्तन ।

विवेकिन् (वि०) [विवेक + इति] विवेकक, विचारवान्, विवेकशील, पु० 1 न्यायकर्ता, गुणदोषविवेकक 2 दार्शनिक ।

विवेक्य (पु०) [वि + विच् + क्त] 1 न्यायकारी 2 दत्ति, दार्शनिक ।

विवेचनम्—ना [वि + विच् + क्त] 1 गुणदोषविचारणा 2 विचारविमर्श, विचार 3 फैला, निरूप ।

विशेष (पु) [वि + वह + लृप्] वृत्ता. पति ।

विश्वोक्त ३० विश्वोक्त विश्वोक्तसे मूर्तिविग्रहिनो वर्तमानो
वयम्- उ० म० ४३ ।

विश्व (पु) पर० विनिनि, विष्ट) 1 प्रविष्ट होना,
जाना, जानिल होना विशेष कश्चित्कृतिकल्पनायाम्
कु० ५१३० रघु० ५११०, १२, मेघ० १०२,
भग० ११२९ 2 जाना या पहुँचना अधिकार में जाना
किसी के हिस्से में पड़ना—उपहा विविश्व शयनभास्तेका
कोशलेष्वरम् रघु० ६१३० 3 बैठ जाना, बस जाना
4 घुस जाना व्याप्य हो जाना 5 स्वीकार करना,
उत्तरदायित्व लेना प्र० (वेशार्थान्ते) घुसाना
प्रविष्ट करना इच्छा० (विनिनि) प्रविष्ट होना
की इच्छा ३ लम्ब अन्तु, 1 सम्मिलित होना
2 किसी का अनुसरण करना बाद में प्रविष्ट होना
अनुसर सम्मिलित होना (जाल० से) दूसरे की
इच्छानुसार अपने आप का डालना, यम्प यस्य हि
यो भावस्तस्य तस्य हिन नर, अनुविश्व मेवासी
क्षिप्रमायमवश गयेत् प० ११६८, अविनि
(आ०) 1 सम्मिलित होना अधिकार करना

2 सहारा लेना अधिकार कर लेना अविनिविनि
सम्प्राप्त सिद्धा०, भय तावत्सेव्यादविनिविनि
—मुद्रा० ५११२, मटि० ८१८०, आ 1 प्रविष्ट होना
रघु० २१२६ 2 अधिकार करना, कर्म में ले लेना
काढ़ कर लेना 3 पहुँचना 4. किसी विशेष स्थिति
पर पहुँचना, उच 1 बैठ जाना, आसन ग्रहण करना
भग० ११४६ 2 डेटा डालना 3 स्वीकार करना
अभ्यास करना प्राप्तप्राप्तविनि 4 उपवास करना

मटि० ७१७५, नि (आ०) 1 बैठ जाना, आसन
ग्रहण करना—नवावुदस्यामपुर्वविनि (आलेने)
सि० १११९ 2 पहाड़ डालना, डरा लगाना
रघु० १२१६८ 3 प्रविष्ट होना, रामसाक्षात् स्वीकृत

मटि० ४१२८, ६१४३, ८१७, रघु० ९१००
4 स्थिर किया जाना, निर्दिष्ट किया जाना सुपे-
निविष्टविष्ट -रघु० १४१६५ 5 व्यस्त होना, अनु-
सरण होना, गुल जाना, अभ्यास करना अतिप्रमा-
थनो विद्वान्बधर्मे निविष्टो न भूः अनु० २१८७ विवाह
करना (निविष्ट) के स्थान पर, (प्रेर०) 3 अमाना,
निविष्ट करना, (मन बिल) लवाना, भग० १२१८
2 स्थिर करना, धरना, रखना रघु० ६११९ ६१३९
७१६३ 3 बिडामा, स्थापित करना रघु० १५१७
4 जीवन में स्थिर करना विवाह करना—पा०
४११९ 5. (लेना आदि का) डेटा डालना रघु०
५११२, १११३० 6 रेखांकन करना चित्रित करना,
चित्र बनाना - चित्रे निवेद्य परिकल्पितसम्बन्धोपा
—स० २१९, मालवि० ३१११ 7 स्थिर लेना, उत्कीर्ण

करना—विष्म० २११४ 8, सुपुर्ब करना, लीपना
रघु० १११६, निष्, 1 सुखोपभोग करना
—अयोत्सनायतो निविष्टति प्रदावान् रघु० ६१३६,
निविष्टविषयस्मेह स दद्यान्मुपविशन् रघु० १२११,
४१५१, ६१५०, ९१३५, १३१६०, १४१८०, १८१३,
१९१६७, मेघ० ११० 2 अलङ्कृत करना, आभूषित
करना 3 विवाह करना, प्र 1 प्रविष्ट होना
2 आरम्भ करना, शुरू करना, (प्रेर०) प्रस्तुत
करना प्रवेष्टा के रूप में आगे आगे चलना,
चित्र रक्सा जाया बिडाय जाना, (प्रेर०)
1 स्थिर करना, रखना कु० ११४९, रघु० ६१६३,
भुवराक्षि कुचकला विनिवेश—मीठ० १२ 2 बसाया,
नई बस्ती बनाना—कु० ६१३७, सप—, 1 प्रविष्ट
होना 2 जाना लटना आगम्य करना—सविष्ट.
कुशाशयने निशा निनाय रघु० ११९५ मनु० ४१५५,
७१२२५ 3 सहवास करना, मेलन करना पौष्टमत्-
निशा स्वीणा गमिन् युग्मानु मविशेन् पात्र०
११३९ मनु० ३१४८ 4 मुक्तोपभोग करना, लवा—
1 प्रविष्ट होना मटि० ८१७३ 2 पहुँचना 3 लव
जाना गुल जाना सवि (प्रेर०) 1 रखना बनना
2 स्थापित करना, ऊपर करना रघु० १२१५८ ।

विश्व (पु) विश्व-विश्व) 1 तीसरे वर्ष का मनुष्य
वैश्व 2 मनुष्य 3 राष्ट्र, स्त्री० 1 राष्ट्र, प्रजा
2 पुरी । सम०—व्यवसाय भाषा व्यापारिक मान
पतिः विश्वापति' न' राजा, प्रजा का स्वामी ।
विश्व [विश्वः क] कयल की बड़ी के समुद्र रेणु—मु०
विप । सम० आकर एक प्रकार का पोषा, यज्ञ-
पूज कहा लागत ।

विश्वकूट (वि०) (स्त्री०—टा—टी) [वि—कूट + कूट] 1 बड़ा विशाल, बृहत्—विश्वकूटो वक्षसि बाणपाणि
मटि० २१५०, सि० १३१३४ 2 मजबूत प्रबल
शक्तिशाली ।

विश्वकूट [विशिष्टा] विजता वा शङ्का पा० म०] डर,
आशङ्का ।

विश्व (वि०) [वि + स्व + अच्] 1 स्वच्छ, पवित्र,
निर्मल, विमल विशुद्ध—योगनिदात्मविशेष पावन-
रत्नोक्तं रघु० १०१४५, १९१३९, रत्न० ३१९
कि० ५११२ 2 मजबूत, विशुद्धस्वः रत्न का—निशी-
नरगुणिकाविशद हिमाम रघु० ५१७०, कु०
११०० ६१२५, सि० ९१२६, कि० ४१२३ 3 उज्ज्वल
चमकीला, सुन्दर—कु० ३१३३, सि० ८१७० ४ साफ,
स्पष्ट प्रकट 5 शान्त, निष्कल आराम सहित—आतो
मयाय विशव प्रकाम (अन्तरात्मा)—स० ४१२२ ।
विश्व [वि + सो + अच्] 1 समूह, अनिश्चयता, अवि-
करण के पाँच अंगों में से दूसरा 2 शरण, सहारा ।

विचारः [वि + च् + अच्] 1 टुकड़े-टुकड़े करना फाड़
खालना 2 बच, हत्या, बिनाश ।

विचल्य (वि०) [विगत लस्य यस्मात् प्रा० व०] कष्ट
और बिना से मुक्त, सुरक्षित ।

विचलनम् [वि + च् + ल्यट्] 1 बच, हत्या पशुमेघ
—उत्तर० ४५ 2 बर्बादी, —कः 1 कटार टेढ़े फल की
तलवार 2 तलवार ।

विचलत् (भू० क० ह०) [वि + च् + क्त] 1 काटा हुआ
बीरा हुआ 2 उजड़, क्षिप्त 3 प्रसन्न, विचार ।

विचल्य (पू०) [वि + च् + ल्य] 1 हत्या करने वाला
या बलि के लिए बच करने वाला व्यक्ति 2 बाण्डाल ।

विचल्य (वि०) [विगत लस्य यस्य] बिना हथियारों के,
सस्त्ररहित जिसके पास बचाव के लिए कुछ न हो ।

विचारः [विचारणधने भव -विचार्या + अच्] 1 कानि
केव का नाम महावी० २३८ 2 मनुष्य से नीर
छोबते समय की स्थिति (इसमें अनुवर्ती एक पग
पीछे तथा एक बरा भारी करके मड़ा होता है)
3 प्रियुक्त, आवेदक 4 तनुवा 5 शिव का नाम ।
सम०—कः नारंगी का पेड़ ।

विचारल दे० विचार (2) ।

विचारल [विचिन्ता काला प्रकारो यस्य -प्रा० व०] (प्राय
हिवचनात्) होलहूरी नलज जिसमें दो तारे मर्मि-
मित होने हैं - किमच चिन्तयति विचारले लक्षकलेखा-
मनुवर्तते - प्रा० ३ ।

विचारः [वि + ची + च् + क्त] बारी-बारी से लोना, घेव
पूर-बारी का बारी-बारी से पहरा देना ।

विचारण्य [वि + च् + चिच् + ल्यट्] 1 टुकड़े-टुकड़े करना
फाड़ना 2 हत्या, बच ।

विचारद (वि०) [विचार + दा + क, लस्य ७] 1 चतुर,
कुशल, प्रवीण विद्व, बानकार (प्राय समास में)
—अचूदान विचारदा रघु० ११२९ ८११०

2 विद्वान्, बुद्धिमान् 3 मसहूर, प्रसिद्ध 4 साहसी,
बरोसे का, —कः बहुलवृत्त, मोक्षसिरी का पेड़ ।

विचार (वि०) [वि० + चालच्] 1 विस्तृत, बड़ा, दूर
तक फैला हुआ, प्रचलत्, व्यापक, चौड़ा, —पूर्वविधा-
करिचि चिन्ताल—मि० ३५०, १११२३, रघु०
२१२१, ११३२, मय० ११२१ 2 समृद्ध, भरपूर

—ओविशाला विचारान्—मेघ० १० 3 प्रमुख, बीजान्
महान्, उत्तम, प्रशस्त, कः 1 एक प्रकार का हरिण

2 एक प्रकार का पक्षी, का 1 उज्जयिनी नगर का
नाम पूर्वोद्दिष्टमनुवर पुरी ओविशालान्—मेघ०
१० 2 एक नदी का नाम । सम०—कः १

बड़ी-बड़ी ओखी वाला, (—कः) शिव का विशेषण
(ओ) पारंगी का विशेषण ।

विचिद्ध (वि०) [विचिता विज्ञा यस्य प्रा० व०] मुकुट

रहित, बिना चौटी का, बिना लोक का, —कः 1
बाण, माधव मनसिजविशिष्टमयाविच भावमया स्वयि

नीना—गीत० ४, रघु० ५५०, महावी० २१३८
2 एक प्रकार का मनुकुल ३ एक लोहे का कीवा

विचिन्ता [विचिन्त + टाच्] 1 फावड़ा 2 मनुवा 3 नुई
या पिन 4 बारीक बाण ५ राजमार्ग 6 नाई की
पत्नी ।

विचिन्त (वि०) [वि + च् + क्त] नीर, नीरव्य ।

विचिन्तय [विशे कान्] 1 मन्त्रि 2 आशास्त्रान चर ।

विचिन्त (भू० क० ह०) [वि + चिच् + क्त] 1 विचलन,
स्वतन्त्र 2 विशेष, असाधारण, असाधारण, प्रथेदक

3 विशेषगुणसम्पन्न, लक्षणयुक्त, विशेषतायुक्त,
नविशेष 4 श्रेष्ठ सर्वोत्तम, प्रमुख, उत्कृष्ट, बहिष्ठा ।

सम०—अज्ञेयबा रामानुज का एक मित्रान्, जिसके
अनुसार ब्रह्म और प्रकृति समरूप तथा वास्तविक

सत्ता बानी जाती है अर्थात् मूलतः दोनों एक ही हैं,
—बुद्धि (स्वी०) प्रमेयक ज्ञान, प्रमेयीकरण, —कः

(वि०) प्रमुख या श्रेष्ठ रम का ।

विचिन्त (भू० क० ह०) [वि + च् + क्त] 1 छिन्न-विन्न
किया हुआ, तोड़कर टुकड़े टुकड़े किया हुआ 2

मूर्खाया हुआ, बुद्धिभाव हुआ 3 गिरा हुआ, —कु०
५१२८ 4 विकुटा हुआ, मनुचित, या नृणां विचर्त्त

पव गई हो । सम०—कः नीम का पेड़, मूर्ति
(वि०) जिसका भारी नष्ट हो गया हो, अनन्य कु०

५१५४ (स्ति) काम देव का विशेषण ।

विचुद्ध (वि०) [वि + च् + क्त] 1 चूड़ा किया हुआ,
स्वच्छ 2 पवित्र निर्वलन, निष्पाप 3 बेबाध,

निष्कलंक 4 लही, यवाच 5 तनुवृत्ति, पुष्पात्वा,
ईमानदार चरा मा० ७११ 6 पवित्र ।

विचुद्धिः (स्वी०) [वि + च् + क्त] 1 पवित्रीकरण,
बुद्धिकर्म तद्वनसर्गमवाप्य कल्पते इव चित्तान-

स्मरजो विचुद्धये कु० ५१७९, मय० ११२२, मनु०
११५९, ११५३ 2 पवित्रता, पूर्वपवित्रता, —रघु०

११२०, १२५८ 3 याचनात्म्य, यवाचता 4 परिष्कार,
मूलमूल ५ समानता, समता ।

विचुल (वि०) [विगत च् + यस्य प्रा० व०] विभावली,
जिसके पास कहीं न हो—रघु० १५५१

विचुल (वि०) [विगत च् + क्त] 1 विभावली,
जिसके पास कहीं न हो (सा०) 2 विचुलचित्त,

अनिवृत्त, अग्रचित्त, निरन्तर, बेरोक—वि० १२१०-
वार्ति २१७७ 3 लक्ष्य प्रकार के वैदिक बंधनों से

मुक्त, समष्टि वर्तु० १५५१ ।

विचोच (वि०) [विगत चोचो क्स्मात्—प्रा० व०]
1 लचील 2 मुक्त, अपूर-रघु० २१५४, कः 1

विचोच, विचोचकरण 2 प्रवेद, अन्तर विचोचो

विशेषः-अर्जु० ३।५० 3. विशिष्टतायुक्त अन्तर, अनोखा चिह्न, विशेष गुण, विशेष वृत्ता, वैशिष्ट्य प्राय समास में प्रयुक्त तथा 'विशिष्ट' और अजीब शब्दों के अनुरोध स० १।१५ 4 अच्छा मोड़, रांग में मोड़ अर्थात् अपेक्षाकृत अच्छा परिवर्तन - अन्ति में विशेष - स० १, 'अब अपेक्षाकृत अच्छा हूँ' 5 अवयव अथ पुरीष सावध्यमान विशेषान् कु० १।२५ 6. वाति, प्रकार प्रभेद, भेद, डग (शाय समास के अंत में) - अतविशेष उत्तर० ४, परिमलविशेषान् पंच० १, कवलीविशेषा कु० १।११ 7 विविध उद्देश्य, नामा प्रकार के विवरण (इ० व०) - येष० ५८, १४ 8 उत्पन्नः - उत्पन्ना, अद, प्राय समास के अंत में, उत्तम, पूज्य, प्रयुक्त, उत्कृष्ट अनुमाच-विशेषान् रघु० १।१३, अनुविशेषेण कु० १।३१, रघु० १।१५, कि० १।५८, इसी प्रकार वाक्यति विशेषा 'उत्तम रूप' अतिविशेष 'पूज्य अनिभि' भाषि 9. अनोखा विशेषण, नौ इष्यों में से प्रत्येक की सावधत विशेषक प्रकृति 10. (तर्क० में) वैयक्तिकता (वि० छात्राण्य) अनुठापन 11. प्रवर्ण, वर्ण 12. अस्तक पर चम्पन या केसर का तिलक 13. बहु शब्द की किसी अन्य शब्द के अर्थ को सीमित कर देना ही, इ० विशेषण 14. इच्छा का नाम 15 (अल० में) एक अक्षरकार का नाम जिसके नीचे भेद बताये गये हैं, अन्वट ने इसकी परिभाषा बहु ही है - बिना प्रतिष्ठानाभावेनस्य व्यवस्थिति, एकारना गुणपद् धुतिरेकस्यानैकयोचरा। अन्वटपूर्वत कार्यवत्तथा-न्यस्य वस्तुन, तथैव करणं पति विशेषस्विचि-स्मृतः काव्य० १०। सन० अतिविशेषः विशेषे अतिरिक्त नियम, विशेष विस्तारित प्रयोग, - उक्तिः (स्त्री०) एक अक्षरकार जिसने कारण के विद्यमान रहते हुए भी कार्य का होना नहीं पाया जाता - विशेषोत्तराख्येय कारणेषु कलावच काव्य० १०, उदा० इति लोहजलो नामस्वरूपी व्यवस्थिति, - अत, वि० (वि०) 1. जेदी को जानने वाला, गुणवैयविषेयक, वारही 2. विद्वान्, बुद्धिमान् अर्जु० १।११ - अलक्ष्य, - अलक्ष्य विशेष या अलक्ष्यवर्ती चित्त, अलक्ष्य वि वात वा विधि, - विधिः, सा स्वम् विशेष विधयः।

विशेषक (वि०) [वि + शिप् + क्त] प्रभेदक, कः, कम् 1. एक प्रभेदक विशिष्टता या लक्षण विशेषक 2. कल्पन वा केसर का नाच पर लगा तिलक - मोक्षवि० ३।५३ ३ रंगीन उवदन तथा अन्य सुनपित पदार्थों के मूक वा शरीर पर रेखांकन करना - स्वेदीयन किमुक्यामिनामो यन्ने पद्म पदविशेषकेन-कु० ३।१३, रघु० १।२६, कि० ३।१३, १०।१४, कम् तीन

रङ्गों का समूह जो व्याकरण की दृष्टि से एक ही वाक्य बनता है दाह्य युग्ममिति प्रोक्त भिभि क्लोकीविशेषकम् कल्पक चतुर्भि स्यान्मूर्ध्व क्लृप्त स्मृन् ।

विशेषण (वि०) [वि + शिप् + क्त] गुणवाचक अन् 1 विशेषण, विशेषण / प्रभेदन, अन्तर 3 बहु शब्द जो किसी दूसरे शब्द की विशेषणा प्रकट करता है, गुणवाचक शब्द, गुण, विशेषता, (वि० विशेष्य), (विशेषण तीन प्रकार क याया जाता है अव्ययिक, विशेष्य और हेतुगर्भ) 4 प्रभेदक लक्षण या चिह्न 5 अर्त प्रकार।

विशेषतम् (अव्य०) [विशेष + तम्] विशेष रूप से, सात तीर से।

विशेषित (यु० क० कृ०) [वि + शिप् + क्त] 1 विशेषण 2 परिभाषित जिसके विवरण बता दिये गए हों 3. विशेषण के द्वारा जिसकी भिन्नता दर्शा दी गई हो 4 अर्थ बढ़िया।

विशेष्य (वि०) [वि + शिप् + क्त] 1. विशेषण होने के योग्य 2. मुख्य, बढ़िया अर्थ वह शब्द जिसे विशेषण के द्वारा सीमित कर दिया गया हो, बहु पदार्थ की किसी दूसरे शब्द द्वारा परिभाषित, वा विशिष्ट कर दिया गया हो, समासक, विशेष्य भाषिषा गच्छेत्कीचरतिविशेषणे काव्य० २।

विशोक (वि०) [विगतः शोकः पत्य प्रा० व०] शोक से मुक्त, प्रसन्न, कः अकः कृत्, - का शोक से मुक्तकार।

विशोचनम् [वि + चुप् + क्त] 1 बुद्ध करना स्वच्छ करना (आल० से) - रात्रिकटक विशोचनोद्यतः चित्रम् ५।१२ पवित्रीकरण निष्ठाप या दोषरहित होना 3 शक्यचित, परिच्छेदन।

विशोच्य (वि०) [वि + चुप् + क्त] पवित्र किये जाने के योग्य, निर्मल वा शुद्ध किये जाने के योग्य।

विशोचयन् [वि + चुप् + क्त] दुःखाना, दुष्कीकरण।

विशोचयन्, विशोचयन् [वि + चुप् + क्त, प्ले विप्] प्रदान करना समर्पण करना, अनुदान, उद्गार, दान - विशोचयान्प्राप्त्यपयविनोनाम् रघु० २।५४।

विशोच्य (यु० क० कृ०) (विशोच्य वी) [वि + चुप् + क्त] 1 शब्द किया गया, विश्वास किया गया, सीना गया 2 विश्वस्त, निश्चय, भरोसा करने वाला मुद्रा० ३।३ 3 विश्वसनीय, भरोसे का 4 विश्वस्त, सौम्य, साम्य, निश्चित 5 बुद्ध, स्मरण 6 मन्त्र, विनीत 7 अत्यधिक, बहुत ज्यादा, अल्प (अव्य०) विश्वाच-पूर्वक, निर्भीकता के साथ, बिना डर व संकोच के विशिष्ट चिन्ता बराहृतरिति मुस्ताकति पत्यने स० २।१५।

विश्रामः [वि + श्रम् + भृच्] १ आराम, विश्रान्ति २
बिराम, विश्राम ।

विश्रम्भः [वि + श्रम् + भृच्] १ विश्रवास, भरोमा
अन्तरंग विश्रवास, पूर्ण चनिष्ठता या अन्तरंगता
विश्रम्भादुरसि निपत्य लभ्यति ॥—उत्तर० १।४९, मा०
३।१ २ गुप्त बात, रहस्य विश्रम्भेऽव्यवहारीकणीया
—का० ७ आराम, विश्राम ४ स्नेहसिक्ता परिपुच्छा

५ प्रेम-कलह, प्रीतिविषयक झगडा ६ हत्या । छम०

आकाशः, आकाशम् गुप्त वातालाप वातालाप,
पात्रम्, भूभिः, स्वम् विश्रवाम करने के योग्य
पदार्थ या व्यक्ति, विश्रवस्त विश्रवसनीय व्यक्ति ।

विश्रयः [वि + श्रि + अच्] छात्र आश्रयस्थल ।

विश्रवस् (पु०) पुलस्त्य के एक पुत्र का नाम, जो कैकसी
से उत्पन्न रावण, कुम्भकर्ण, विभीषण और दारुणका
का पिता था, कुम्भ के एक पुत्र का नाम जो उसकी
पत्नी इशविद्या से उत्पन्न हुआ था ।

विश्रान्तिः (भू० क० कृ०) [वि + श्रम् + शिच् + क्त]
प्रदान किया गया, अपित किया गया निःशेषविधा
णितकोणजातम् रघु० ५।१ ।

विश्रास्त (भू० क० कृ०) [वि + श्रम् + क्त] १ रुद
किया हुआ, रोका गया २ आराम किया हुआ, विश्राम
किया हुआ ३ सोम्य, क्षान्त, स्वस्थ ।

विश्रान्तिः (स्त्री०) [वि + श्रम् + क्त] १ आराम,
विश्राम २ रोक, थाम ।

विश्रान्तः [वि + श्रम् + क्त] १ रोक, थाम २ आराम,
थाम विश्रामो हृदयस्य यत्र उत्तर० १।३९ ३
क्षान्ति, सीमन्ता, स्वस्थता ।

विश्रावः [वि + श्रु + क्त] १ पुत्रा, टपकना, बहना
(‘विश्राव’ के स्थान में) २ व्याप्ति, कीर्ति ।

विश्रुत (भू० क० कृ०) [वि + श्रु + क्त] प्रख्यात, उच्च-
प्रतिष्ठ, यशस्वी, प्रसिद्ध २ प्रमत्त, आनन्दित, लुब्ध
३ बहता हुआ ।

विश्रुतिः (स्त्री०) [वि + श्रु + क्त] प्रसिद्धि, व्याप्ति ।

विश्रुत (वि०) [विश्रुत एकत्र मा० स०] १ डीला,
बिखिल, लुला हुआ, —रघु० १।७३ २ स्मृतिहीन
निश्चेत ।

विश्रुत (भू० क० कृ०) [वि + श्रु + क्त] विद्युत्,
पृथक्पृथक्, अलग अलग किया हुआ रघु० १।७६ ।

विश्रुत (वि०) [वि + श्रु + क्त] १ अलगाव, विद्याजन
२ विशेषण प्रमियो अवस्था पतिव्रत्तो का बिछोह
३ विद्यान तनयाविश्रुतभुक् स० ४।५, चरणा-
रविदिविशेष—रघु० १।३।३ ४ अवधान, ध्यान,
साक्षात्कथा ५ दगर, छिद्र ।

विश्रुत (भू० क० कृ०) [वि + श्रु + क्त] अलग
अलग किया हुआ, अलग अलग किया हुआ ।

विश्रु (सा० वि०) [विश्रु + व] १ सार सारा, समस्त,
सारसौकिक २ प्रत्येक, हरेक, (पुं० व० व०) दस
इको का समूह (यह विद्या के पुत्र समझे जाते हैं,
इनके नाम हैं) यमु मरु चतुर्विध काल कायो वृत्ति
कृष, पृथ्वी मातृकाय विश्रुदेवा प्रकीर्तिता -

वृषम् १ सम्पूर्ण सृष्टि, समस्त समस्त इदं विश्रु
पात्यम्—उत्तर० ३।३०, विश्रुस्मिन्पुनास्य कुलवत
पालयिष्यति क भाषि० १।१३ २ सुखा अवरक,
सोठ । मम० आत्मन (पु०) १ परमात्मा (विश्रु
की आत्मा) २ ब्रह्मा का विशेषण ३ मित्र का
विशेषण—अथ विश्रुत्तमने गौरी सद्विदेश मित्र
सखां कु० ६।१ ४ विश्रु का विशेषण, ईश्वर,
ईश्वर १ परमात्मा, विश्रु का स्वामी २ शिव का
विशेषण कद्रु (वि०) दुष्ट नीच, दुर्वृत, (द्रुः)

१. शिकार। कुना, मृगयाकुक्कुर २ स्वस्थ, कर्मन्
(पु०) १ देवो का शिष्य, पु० त्वष्ट २ सूर्य का
विशेषण, आ, मुक्ता, सूर्य की पत्नी सखा का
विशेषण, कद्रु (पु०) १ मम प्राणिमो का श्रष्टा
२ विश्रुवर्मा का विशेषण—केतुः अनिरुद्ध का
विशेषण, गंधः प्यात्र, (अच्) लाहान, मृगमूल, -
गवा पुष्पी, जम्बू मानवजाति, क्षत्रीय, —अथ
(वि०) मानवमान के लिए हितकर, मनुष्य जाति के
उपयुक्त, सब मनुष्यों के लिए लाभकर—मट्टि० २।४८,
२।१।७, शिष्ट (पु०) १ यज्ञ विशेष का नाम
रघु० ५।१२ ब्रह्म का पाश देव विश्रु (पु०) के
नीचे दे०, वारिणी पुष्पी, वारिन् (पु०) देव
नामः विश्रु का स्वामी, शिव का विशेषण, वा
(पु०) १ सब का रक्षक २ सूर्य ३ ब्रह्मा ४ अग्नि,
पावर्णी, बुद्धिवा तुलसी का पोषा, प्लव (पु०)

१ देव २ सूर्य ३ ब्रह्मा ४ अग्नि का विशेषण
भृक् (वि०) सर्वोपभोक्ता, सब कुछ खाने वाला
(पु०) इन्द्र का विशेषण, भेषजस्य सुखा अवरक,
सोठ, वृत्ति (वि०) सब रूपों में विद्यमान, सर्व-
व्यापक, विश्रुव्यापो, —मा० १।३, —दोहिः १ ब्रह्मा
का विशेषण २ विश्रु का विशेषण, —राज्, राजः
विश्रुवर्मा, क्व (वि०) सर्व व्यापक, सर्वत्र विद्यमान
(वि०) विश्रु का विशेषण, (क्व) अवर की लकड़ी,
—रेतस् (पु०) ब्रह्मा का विशेषण, बाहू (वि०)
(स्त्री० विश्रुवर्मा) श्वर कुछ होने वाला, सब का
भरण पोषण करने वाला, सखा पुष्पी, लृप् (पु०)
ब्रह्मा का विशेषण, श्रष्टा प्रायेण सामभ्यविषी
गुणाना पराक्रमुकी विश्रुवर्मा प्रवृत्ति—कु० ३।२८,
१।४९ ।

विश्रुवर्मा [विश्रु सर्व करोति प्रकाशयति हृ + ट,
द्वितीयाया अङ्क आञ, (कुछ के अनुसार—अपु०) ।

विश्वस्तम् (अव्य०) [विश्व + तमसील] सब और, सर्वत्र, सब जगह भावि० १।३०। सम० मुख (वि०)

सब और मुख किये हुए - भग० १।११।

विश्वधा (अव्य०) [विश्व + धा] सर्वत्र, सब जगह।

विश्वधर (वि०) [विश्व विभक्ति विश्व + धृ + लृट्] सब का भक्षणपेषण करने वाला, १: 1 सर्व व्यापक प्राणी, परमात्मा 2 विष्णु का विशेषण 3 इन्द्र का विशेषण, ४ पृथ्वी विश्वभरा भगवता भवतीमूल उत्पन्न० १।१९ विश्वभगवत्पतितलघ्वर्णनाय नवार्तिके नियमम् - काव्य० १०।

विश्वसनीय सं० कृ० [वि + श्वस् - अनोर] 1 विश्वास किये जाने के योग्य, विश्वासास्प, जिस पर भरोसा किया जा सके 2 विश्वास उत्पन्न करने के योग्य श० २ भाषावि० १००।

विश्वस्त (सं० क० कृ०) [वि + श्वस् + क्त] 1 जिस पर विश्वास किया गया है, निष्ठ, जिस पर भरोसा किया गया है 2 विश्वास करने वाला, भरोसा करने वाला 3 निष्ठ, विश्रब्ध 4 विश्वास के योग्य जिस पर भरोसा किया जा सके।

विश्वामास्य (पु०) [विश्वं दधाति पालयति विश्व + धा शिच् - अस्तु, पूर्वदीर्घ] देव, मुर।

विश्वामरः [विश्व + मर पूर्वपददीर्घ] माँवता का विशेषण।

विश्वामित्रः [विश्व + मित्र, विश्वमित्र मित्र पदम् व० म०, पूर्वपदस्याकारस्य दीर्घ] एक विश्वामित्र क्षत्रिय का नाम। यह काश्यपकुत्र का राजा होने के कारण क्षत्रिय था, इसकी पिता का नाम गांधि था। एक बार यह मुग्धा के लिए घूमना-घूमता बसिष्ठ ऋषि के आश्रम में पहुँचा, वहाँ अनेक गोत्रीयों को देख कर उसने अत्यंत घबराहट से उनका भी उनका देना बाधा और न मिलने पर बलात् उनको छीनने का प्रयत्न किया। इस बात पर एक महान् सघर्ष हुआ, और राजा विश्वामित्र हर्ष रूप से परास्त हो गया। इस पराजय पर विश्वामित्र अत्यंत क्रोध हुआ और गांधि ही बसिष्ठ के आश्रम की शक्ति से इतना अधिक प्रभावित हुआ कि वह बाह्यप्रणय प्राप्त करने के लिए घोर तपस्या करना लगा। यहाँ तक कि बाद में उसे कमजोर राजर्षि ऋषि, महर्षि और ब्रह्मर्षि की उपधि मिली, परन्तु उसे सन्तोष न हुआ क्योंकि बसिष्ठ ने अपने मृग में उसे बाधायि नहीं कहा। विश्वामित्र हजारों वर्ष तपस्या करता रहा, जब वही जाकर बसिष्ठ ने उसे ब्रह्मर्षि कहा। विश्वामित्र ने कई बार बसिष्ठ की उपश्रित करने का प्रयत्न किया परंतु प्रणय के लोभपूर्वक विश्वामित्रने मीन के घाट उतार दिया, परन्तु बसिष्ठ तब भी नहीं चबराया। अन्तिमकर मे ब्रह्मर्षि बनने के पहले विश्वामित्र की शक्ति बहुत

अधिक था, उदाहरण उसने विष्णु को स्वयं भोजने, इन्द्र के हाथ से शून्य को रक्षा करने तथा शत्रुओं की भाँति पुनर्गृहीत की रचना करने में अत्यधिक बल का प्रदर्शन किया। यह बालक राम का नाया और परामर्श दाता था इसने राम का अनेक आश्चर्यजनक वचन प्रदान किये।

विश्वामयुः [विश्व + यु पूर्वपदस्य आताम्य दीर्घ] एक गन्धर्व का नाम।

विश्वस्त [वि + श्वस् - क्त] 1 भरोसा, प्रमाण, निष्ठा विश्रम्भ दुर्वैत प्रियवादीति नैतद्विश्रम्भकारणम् पा० १।१२२ रघु० १।५१ हि० १।१०३ 2 भेद रहस्य गान्धीय समाचार। सम० धान, सप्त विश्वान् को तब देना घोला देहो, डोहर, बालिष् (पु०) घोला देने का वाग मनुष्य डोहरा पात्रम्, भूमि, स्थानम् भरोसा की वस्तु विश्वमनीय पर भरोसे का मनुष्य, विश्वामयी पुरुष।

विष् (रू०) उभ० वैशिष्ट्य वैशिष्ट्य, विष्णु 1 घेरना 2 फैलाना, विस्तार करना, व्यापक होना 3 सामने जाना मुकाबला करना (परिनिष्ठित सम्मुख में इसका प्रयोग बहुधा नहीं होता)

कृष्ण० पर० विष्णुति, विष्णुत करना, अलग-अलग करना।

111 (व्या० पर० वैपति) छिड़कना, उड़ेलना।

विष् (रू०) [विष् - कृष्] 1 यक, विष्ठा, मोद 2 फैलाना, प्रसारण 3 लड़की जैसा कि 'विट्पति' में। सम० कारिका (विट्कारिका) एक प्रकार का पत्थी, चतुः (विट्चर, कोष्ठबद्धता, कच्छ, चर बराहः (विट्चर 'बड़बराह') पालतू या गौ व सुभर, लघणम् (विट्चरणम्) एक प्रकार का श्रेष्ठियो में प्रयुक्त होने वाला नमक, सङ्गः (विट्मङ्ग 'बण्टवद्धता, कच्छ, कारिका (विट् कारिका) एक प्रकार का पत्थी जैसा

विष्म [विष् + क्त] 1 बहर उदाहरण (इस में 'विष्' भी कहा जाता है) विश्व भरण भा भूषण अथवा भवकृत् पञ्च० १।००४ 2 जल, विश्व जलार्णवीन मुक्तिता पयवाङ्मन चर० ५।१८२, (रुद्र) होने लगे अभिजेत हैं) 3 कमजोरपणी के तन्तु में रेखे 4 लोचन, एक मुगलिकः इक्ष्वाका गोद, रस मय 1 सम० अक्षत, -विष्म वि० खेला, जहरीला, अस्तुः 1 बर्षी 2 विष्म में घुसा तोर अनेक शिव का विशेषण अष्ट, धन वि०) विष्मः एक विश्वनाथक जीर्णाय भवान् आमुष, आस्थ, लोच, -आवध (वि०) जहर लपने वाला, कुम्भ जहर से भरा हुआ चटा, कुम्भ, जहर में पला हुआ कीड़ा, व्याध दे० व्याध के अन्तर्गत, -जहर भेला

—वः बाबल (बम्) तुतिया, बल्लकः लोप, —बल्लक-
मुमुकः,— मृग्यः एक पक्षी (इसे बकौर कहते हैं),
—बलः लोप—भावि० ११७४, भिन्नः भिन्नतर
प्रवेश, लोपों का मिल, पुष्पम् मील कमल, प्रयोगः
जहर का इस्तेमाल, जहर देना,—विषम्,—बैद्य
विषनामक औषधियों का विज्ञान, लोपों के काटने
की चिकित्सा करने वाला सत्रणि विषवेद्यानां कर्म-
भारवि० ४, —अन्मः १ लोप के काटे का विष
उतारने का मन्त्र २ लपेरा, बाजीर, —बुद्धः जहरीला
पेड़, विषबुद्धोऽपि सबर्ध स्वयं छत्तुमसाग्रतम्
—कु० २१५९, प्लाव ल्याय के नीचे देखो,—वेतः
जहर का संचार या प्रभाव,—सायकः कमल की जड़,
—युक्तः,—युक्तिम्, युक्तम् (यु०) भिन्न, बरं,
—हृदय (वि०) विद्यानां विलम्बात् जघात् बुद्धिद्वय,
भस्मिनाम् ।

विषयत् (यु० क० ड०) [वि + तम् + क्त] १ बुद्धता-
पूर्वक जमा हुआ, सटा हुआ २ बिपटा हुआ, बिपका
हुआ ।

विषयम् [विशेष्ये बन्धम्—प्रा० स०] कमलबन्धी के तन्म
या रेखे ।

विषय (यु० क० ड०) [वि + तम् + क्त] विषय, मूह
लटकाय हुए, उदास, दुःखी, निरस्तार, हताश । सम०
—युक्त, बल्ल (वि०) उदास बिकारी होने वाला,
—कर्म (वि०) उदासी की अवस्था में पड़ा हुआ ।

विषय (वि०) [विगतो विरहोऽन्वा सम—प्रा० स०] १ जो
सब या समान न हो, सुरबरा, ऊबड़-खाबड़ पविषु
विषयेष्वप्यव्यक्तता मुद्रा० ३१३, पञ्च० १९४, मेघ०
१९२ अनियमित, असमान—मा० ११४३ ३ उच्चा-
वच, असम ४ कठिन, समझने में बुझार, आश्चर्य-
जनक कि० २१३ ५ अगम्य, दुर्गम—कि० २१३
६ मोटा, स्तब्ध ७ तिरछा मा० ४१२ ८ पीड़ाकर,
कष्टदायक—अर्जु० ३१८५ ९ बहुत मजबूत, उत्कट
—मा० ३१९ १० सतरनाक, अनाक मुष्ण०
८१२, २७ मुद्रा० ११८८, २१२ ११ बुरा, प्रतिद्वन्द्व,
विपरीत—पञ्च० ४१११ १२ अजीब, अनोखा, अनु-
पम १३ बेईमान, कलापूर्व, —कल्प १. कल्पना
२. अनोखापन ३ दुर्गम स्थान, चट्टान, मूढ़ता आदि
४. कठिन या असरनाक स्थिति, कठिनाई, दुर्भाव्य,
दुर्लभ प्रभृत विषयस्थितं वा रज्जति पुण्यानि पुरा-
कृतानि मर्त्ये० २१९७, मग० २१२ ५ एक अलंकार
का नाम जिसमें कार्य कारण के बीच में कोई अनोखा
या अचटनीय संबंध बर्णित जाता है यह चार
प्रकार का बना जाता है—के० काव्य०, का० १२१
व १२७, का० विष्णु का नाम । सम० अन्मः,
—ईश्वरः,—मन्मः, मेघः,—शेषः विषय के

विशेषण, अन्मन् अनोखा या अनियमित आहार
आयुः,—इषुः, शरः कामदेव के विशेषण,
काव्यः अमनुष्क ऋतु, अमुरजः, अमुरुजः
विषय कोण वाला अनुकोण, छत्रः सत्पत्य नाम
का पेड़, छत्रः कभी कम तथा कभी अधिक होने
वाला बुझार, कल्पीः दुर्भाव्य, विद्यानाः सत्यनि
का असमान वितरण, स्व (वि०) १. दुर्गम स्थिति
में होने वाला २ कठिनाई में रहने वाला, प्लवा ।
विषयित (वि०) [विषय + क्त] १ ऊबड़-खाबड़ किया
हुआ, असम, कुटिल २ सिक्कड़न वाला, लथीरीदार
३ कठिन या दुर्गम बनाया गया ।

विषयः [विषयिभ्यो स्थावकतया विषयिभ्यः सञ्जनित
— वि + सि + क्त, क्तम्] शान्तिविद्यो द्वारा प्राप्त
पदार्थ (यह पाँचों शान्तिविद्यो के अनुकूल मिलती में
पाँच हैं कम, रस, मंत्र, मन्त्र और शब्द विषयका
सबब कमल बाँध, विज्ञा, माक, त्वचा और काम
से हैं), —श्रुतिविषयगुणा या स्थिता व्याप्य विषयम्
मा० १११ २ लौकिक पदार्थ, या वस्तु, मानका,
केन-वेन ३ शान्तिविद्यो द्वारा प्राप्त आनन्द, लौकिक
या मैथुनसम्बन्धी उपभोग, वास्तविक पदार्थ (प्रायः
ब० ब० में), यौन विषयविषयम्—रघु० १८८,
निबिड विषयस्नेह—१२११, ३१७०, ८११०, १९१४९,
विष्णु० ११९, मग० २१५९ ४ पदार्थ, वस्तु, आनका,
वात—मावो न जगुविषयान्तराणि—रघु० ७१२,
८१८९ ५ उचित पदार्थ या वस्तु, विज्ञा, विद्याना
भूयिष्ठमप्यविषयान् न तु बुद्धिस्तथा का० ११११,
शि० ९१४ ६ कार्यक्षेत्र, पराम, पहुँच, परिधि
—मीमिनेरपि पविषयामविषये तत्र विषये स्वः—पो
—उत्तर० ३१४५, मल्लवचनामविषय—मा०
१११०, ३९, उत्तर० ५११९, कु० ११७७ ७ विद्याना,
क्षेत्र, शान्ति, भूमि, तत्त्व सर्ववैश्विकव्याप्यव्याप्यविषय
विषय विष्णु० ११८ विषयवस्तु, आलोच्य विषय,
प्रत्यय,—भावि० १११०, इसी प्रकार 'भुङ्क्षारविषयिको
शब्द' ऐसी पुस्तक जिसमें प्रीतिविषयक शायों का
उल्लेख हो ९ व्याख्येय प्रश्न वा विषय, शीर्षक,
अधिकरण के दोनों जनों के पक्षका १०. स्थान,
अवयव—परिस्तरविषयैः कीदृशकृतः कि० ५११५
११. देश, राज्य, राज्य, प्रदेश, मंडल, साम्राज्य १२
सरण, आश्रय १३. शान्ति का समूह १४ वैनी, पति
१५. शीर्ष, शुक १६. भाविक अनुष्ठान (विषय की
बाबत, के विषय में; के संबंध में, इस मामले में के
बारे में, शासन—या तथास्ते बुद्धिस्थिते बुद्धिरा-
लेश वायुः—मेघ० ८२, लयीना विषये, कनविषये
कारि) । सम० अविश्रुतिः १. साक्षात्कार विषय
वास्तवार्थों में आश्रित कि० ११४४, इसी प्रकार

अभिषेकः—कि० ३।१३, आत्मक (वि०) माता
रिक्त पदार्थों से यन्त्र, आत्मक,— निरत (वि०)
विषयवामनाओं में लिप्त, विषयी, विलासी, इन्द्रिया-
मग्न, आलसित उपलेशा निरति (स्त्री०)

असंय भोगविलास कामासक्ति, चाय उन पदार्थों
का समूह जो ज्ञानेन्द्रियो द्वारा जाने जाते हैं,—सुखम्
इन्द्रियमक्ति, विषयोपभोग ।

विषयान्त्रि (पु०) [विषयान् अन्त्रे प्राप्नोति विषय-
अन् + त्रि] 1 इन्द्रियसुखों में लिप्त, भोगविलासी
2 सत्कार के कार्यों में लिप्त मनुष्य 3 कामदेव 4 राजा
5 ज्ञानेन्द्रिय 6 भौतिकवादी ।

विषयिन् (वि०) [विषय + इति] इन्द्रियसुखसम्बन्धी,
शारीरिक, पु० 1 सामाजिक पुरुष, विषयी, दुनिया-
वार बादरी 2 राजा 3 कामदेव 4 भोगविलासी,
कंपट पक्ष० १।१६६, श० ५. नपु० 1 ज्ञानेन्द्रिय
2 ज्ञान ।

विषयः (पु०) जहर, हकाहल ।

विषयु (वि०) [वि + कृ + यत्] 1 सहन करने के
योग्य, जो बर्दाश्त किया जा सके अविषयसम्बन्धनेन
वृत्तिमान् कु० ४।३०, ७पु० १।१७० 2 जो बसाया जा
सके जो निर्धारित किया जा सके मनु० ८।२६५,
सम्ब, मध्य ।

विषा [वि + अ + टाप्] 1 विष्टा, मल 2 इतिहा,
समझ ।

विषाभिन् (पु०) [विष + कानच्, त्रिधा कीच्]
1 सींग साहित्यसंगीतकलाविहीनः नासात्यधु पुष्प-
विषाभिहीनः मनु० २।१२, कदाचिदपि पयटन्
प्रसाविषाभमाभारयन्—२।५ 2 हाथी या सूअर के
दात—तप्तानामुपदायिरे विषाभिजिन्ना प्रह्लाद मुरक-
रिणा धनाः क्षरन्त कि० ७।१३, जि० १।६० ।

विषाभिन् (वि०) [विषाभि + इति] सींग वाला या दाँतो
वाला, पु० 1 वह जानवर जिसके सींग हो या दात
बाहर निकले हो 2 हाथी जि० ४।६३, १२।३०
3 सीढ़ ।

विषादः [वि + कृ + घञ्] 1 भिन्नता, उदासी
उत्साहहीनता, रज, शोक मङ्गलि या कुष्ठ विषादम्
भाषि० ४।४१ विषादे कर्तव्ये विदधति जडा
प्रत्युन मुदम् मनु० ३।३५ ७पु० ८।५० 2 निराशा,
हताशा, निराश्रय, विषादमृतप्रतिपत्तिसेव्यम्—७पु०
२।६० (विषादरश्मेतसो भग उपायाभावनाशयो)
3 वकान, म्लान अवस्था मनु० २।५ ४ मन्त्रता
जडता मङ्गलीनता ।

विषादभिन् (वि०) [विषाद + इति] 1 भिन्न उद्दिष्ट
2 उदास, विषण्ण ।

विषादः [विष + क + अच्] सींग ।

विषादु (वि०) [विष + आलम्] विषला, गहरीला ।

विषु (अव्य०) [विष् + कृ] 1 दो समान भागों में,
समान रूप से 2 भिन्नतापूर्वक, विविध प्रकार से
3 समान, समुच्च ।

विषुष्य [विष् + पा + क] दो स्थलबिन्दु जहाँ पर सूर्य
विषुवत् रेखा को पार करता है ।

विषुष्य [विष् + वा + क] मेघराशि या तुलाराशि का
प्रथम बिन्दु जिसमें सूर्य सारदीय या गार्हस्तिक विषुव
में प्रविष्ट होता है, विष्वीय बिन्दु । सम०—छाया
मध्याह्नकाल में वृषवर्षी के शत्रु की छाया, विष्व
विष्वीय दिन रेग विषुवतीय रेखा, संक्रान्ति-
(स्त्री०) सूर्य का विष्वीय मार्ग ।

विष्विका [वि + मूच् + कृ + टाप्, वचम्, इत्यम्]
हैजा ।

विष्व (पु०) उभ० विष्वयति ते 1 बघ करना चोट
पहुँचाना क्षतिग्रस्त करना (इस अर्थ में केवल ज्ञान-
नेपथी) 2 देखना, प्रत्यक्ष करना ।

विष्वम्भः [वि + कृन् + कच्, वचम्] 1 तितरबितर
होना 2 जाना गमन ।

विष्वम्भः [वि + कृन् + कच्] 1 ज्वरघोर, रकावट,
हाथा 2 वरबाजे की साकल, घटकनी 3 घर में
लगा गहरी 4 घुनी, खंभ 5 वृक्ष 6 (नाटकों में)
नाटकों के बकों के मध्य में मध्यरेन का दृश्य जो दो
मध्यम या भिन्नदर्ज के पात्रों द्वारा प्रदर्शित किया
जाता है, तथा जिसमें दोनों बकों के सामने बकों के
अन्तराल में तथा वार में होने वाली घटनाओं की
संक्षेप में कह कर नाटक की कथाकस्तु के अवान्तर
भागों का नाटक की रूप कथा से सम्बन्ध स्थापित
कर दिया जाता है । साहित्यदर्पण में इसकी विन्मा-
क्ति परिभाषा की गई है वृत्तवर्तिष्वभाषानां कथां
जानां निदर्शकः । सजिप्तावस्तु विष्कथ बादावकस्य
दर्शित । मध्येन मध्यभाष्या वा पात्राभ्यां संप्रबोधित ।
सूत्र स्यात् स तु सूचीको नीचमध्यवर्तिनः—१०८
7. वृत्त का अन्त 8. योचियों की विशेष मुद्रा
9 विस्तार, लम्बाई ।

विष्कम्भक रे० विष्कम्भ ।

विष्कम्भित (वि०) [विष्कम्भ + इतच्] बाधायुक्त,
जबरदस्त ।

विष्कम्भिन् (पु०) [विष्कम्भ + इति] द्वार की अर्धका
साकल या घटकनी ।

विष्कम्भ [वि + कृ + क, कृत्, वचम्] 1 द्वार उभर
बोहरना, फाड़ डालना 2 मुर्गा 3 पत्नी, लीटर की
जात का पत्नी—छायापमरुतानविष्कम्भकृष्ट-
कीटवच उत्तर०—१२ ।

विष्कम्भ—वच 'विष् + कान् नृ' मत्ता नृचन—कु०

३।२०, तु० शिवाष्ट्य । सम० हारिन् (वि०) को
समार को प्रमत्त करता है । अर्त० २।२५ ।

विषय (भू० क० कु०) [वि + स्तम् + क्त] १ पक्का जमाया हुआ अर्थात् भाति बाजित २ टेक लगा हुआ, सहारा दिया हुआ ३ अवलंब, सहाय ४ लकवा के रोग में घस्त, गतिहीन ।

विषयः [वि + ल्यप् + क्तम्] 1 पक्की तरह से जानना
2. अवरोध, रुकावट, बाधा 3 भ्रूयावरोध, मलावरोध
कोष्ठबद्धना 4 लकवा 5. ठहरना, टिकाव ।

विष्णु । जि + लृ + क्त्वा, क्त्वाम् । 1. आसन, (सदल,
कुर्सी आदि) रम् ० ८।१८ 2 तह, परत, विस्तार
(कुश आदि पास का) 3. बूटीयर कुशापास 4. यम
में बढ़ा का आसन 5. बूत । तम० आम् (वि०)
आसन पर बैठे हुआ, आसन पर विराजमान—कु०
७।७२, —अम् (पु०) विष्णु का कृष्ण का चितवन
—वि० १४।१२ ।

विधिः (स्त्री०) [विष् + क्तिन्] १ व्याप्ति २ कर्म,
अपराध ३. नाडा, यकहूरी ४ बेवार ५. प्रेषण
६ नरकवास ।

विष्णुसम् [विष्णु स्वयम् प्रा० स०] दूरवर्ती स्वान,
काष्ठले पर स्थित ।

शिकार [वि+क्त्वा+क+टाप्, क्त्वाप्] १ मल, मीद,
पाकाला, मल० ३११८०, १०११२ पेट ।

विष्णु: [विष् + ण्] देवताओं में दूसरा, जिसको सारा
का पालनपोषण सीधा तथा है, (इस कर्तव्य को ग्रिप
मित्र बंधुताद्वारा करके संपन्न किया जाता है)
अवतारों के विवरण के लिए देखें अवतार। इस सार
की स्थिति इस प्रकार की गई है यस्माद्विष्णुमि
सर्वं नमस् शक्त्या भूतात्मन, तस्मादेवोच्यते विष्णु
विष्णुवाचो प्रवेक्षान् - 2 अथि 3 पृथ्वाभा 4 विष्णु
स्मृति के प्रवेक्ष। नमः काशी एक नगर का
नाम, कर्म: विष्णु के पद, मुक्त: आत्मन्य का नाम
सैकम् एक प्रकार जीवजिओं से बनाया गया तेल
— ईश्वरा प्रत्येक पक्ष (आत्मन्य के) की एकादशी
और द्वादशी वषट् 1 बाकाश, बन्धुगि 2 कीर-
काश 3 कमल, वही तथा का विशेष, पुराण-
काश 4 पुराणों में से एक पुराण, प्रीति. (स्त्री०)
विष्णुपूजा को स्थापित रखने के लिये ब्राह्मण का
अनुदान के रूप में दी गई धन्य है मुक्त भूमि
रथ: वरह का विशेषण, रिणी बटेर लवा,
लोक: विष्णु का मन्त्र, - वत्सना 1 लक्ष्मी का
विशेष 2 मुनसा का पीसा, बाह्म., बाह्म
गर्भ के विशेषण।

विष्णुः । शिवः । कालः । ब्रह्मा । ब्रह्मकर्म, ब्रह्मदत्त, ब्रह्म धर्म
होना।

विष्कारः [वि + स्फुर + णिच्, उकारस्य आत्मन्] १ वनूष
कौ टकार २ वन्धराहट ।

विष्य (वि०) [विशेषण वध्य- विष + घत्] विष देकर
मारे जाने योग्य, जितनी जहर देकर मार
दिया जाय ।

विज्जन्तः [वि + स्यन्द् + ञ्] बहुमा, टपकमा ।

विषय (वि०) पीडाकर, कठिणकर, उत्पातकारी ।

विष्ण्वः, विष्ण्वक्षः (वि०) [विष्णु मन्त्रमिति विष्+अन्त्र
सिक्त्वा] (कत०, ए० व० पु० विष्ण्वः, एतौ विष्ण्वौ
नपु० विष्ण्वक्) 1 सर्वत्र जाने वाला, सर्वव्यापक,
विष्ण्वर्कोहः स्वर्गमयि कश्च मन्त्रमाद्यः करोमि
उत्तर० ३।३८, मा० १।२० 2 भावों में अलग
अलग करने वाला 3 मित्र, (विष्ण्वः सख्यं क्रिया
विशेषण के रूप में प्रयुक्त होता है तो वृत्त का अर्थ
है 'सर्वत्र' 'मन्त्रको' 'चारों तरफ' वि० १५।५९.
पञ्च० २।२, मा० ५।४, १।२५) 1 सब० सैन
(विष्ण्वक्षेन, या विष्ण्वक्षेण) विष्णु का विशेषण
साम्यमात्र
कमलासक्तविष्ण्वक्षेननेवित्तुमुत्तान्त-
पयोधे वि० १०।५५ विष्ण्वक्षेन स्वतन्त्रपवित्रासत्वं
लोकप्रतिष्ठायां रघु० १५।१०३, त्रिका लक्ष्मी
का माय।

विष्णुपदम् विष्णुः [वि + ष्वन् + ल्युट्, षण् वा
वत्पठ्यते] भोजन करना, खाना ।

विष्णुश्च (इय) च (वि०) (स्त्री० विष्णुश्रीबी)
 [विष्णुश्च + अङ् + क्तिन् अत्रि आदेशः] सर्वत्र,
 सर्वव्यापक, विष्णुश्रीबीविष्णुश्च सर्वव्यापी जि०
 १.१.५ विष्णुश्रीच्या मूकनमस्सितो आसते यम्य
 भामा भायि० ४१८८।

३) (ष्वा० पर० वेमति) जाना हिलना-बलना ।

बिल दे० 'बिल' ।

विशेषण (म० क० क०) [वि + भम् । पुञ् + क्त]
अर्थ प्रलम्ब किया हुआ पृथक् पृथक् किया हुआ ।

विसर्गो वि + सन् + यञ् + क्तोः अणस्य-अणस्य होना,
विष्ठाः विष्ठायाः ।

विशेषार्थः । [व + कम् + क्त्वं + क्त] १ बोका, प्रतिज्ञा
 मय कृता निराका २ असंगति, अयमव्युत्पत्ता, असह-
 मति ३ वचनविरोध ।

विस्तारविधि (वि०) विस्तारार्थ 1 निराश करने
वाला, बोला देने वाला 2 असंगत विरोधार्थक
3 भिन्न मत रखने वाला असहमत रघु० १२।६७
4 आलस्यार्थ पूर्ण प्रकाश।

बिलपुत्र (वि०) [वि, मय १५५, १५६] । अस्थिर,
विपन्न २ अमय ।

विस्तार (६०) [विशिष्ट शकटो यन्मात प्रा० व०]

नवानक, बराबरा—भा० ५।१३-गु० विर्वाक,
उः १ विह २ इन्धो का वृत्त ।

विस्तार (वि०) [वि + मृ + गम् + क्त] अयोध,
असम्बद्ध, बेमेल ।

विस्तारि [वि + क्त सन्धि, प्रा० सं०] जनविमल सन्धि
या सन्धि का अभाव (यह साहित्यरचना में एक
दोष माना जाता है) दे० काव्य० ७ ।

विस्तार [वि + मृ + क्त] १ जाना २ फैलाना, विस्तार
करना ३ ओढ़, समुच्चय, रेखड, लक्ष्मण ४ बड़ी
राशि देर भा० १।३७ ।

विस्तार [वि + मृ + क्त] १ भोज देना उद्धार
२ गिराना उड़लाना, बूझ-बूझ करके गिराना रघु०
१६।१८ ३ डालना फैलाना ४ प्रदान करना, भेंट दान
—आहार 'हृ' उल्लङ्घन सत्ता कारिमुखाभिर्—रघु० ४।८६
(यहाँ शब्द का अर्थ उड़लाना भी है) ५ भोज देना,
विमर्जन ६ परित्याग छोड़ देना ७ उत्सर्जन मलम्बाय
देना कि पुरीष विमर्ग में ८ प्रदाई दियाग ९ ओढ़
१० प्रकाश, श्वोनि ११ लज्जने में एक प्रतीक जो
स्पष्ट रूप से महाप्राय है तथा दो बिन्दु () लगा
कर प्रकट किया जाता है १२ मृग का दक्षिणावन
१३ निज्ज विमर्ग ।

विस्तारि [वि + मृ + क्त] १ उद्धार, प्रेषण, उड़े
करना —समस्तया समुच्चयविस्तारि—रघु० १।६
२ प्रदान करना भेंट दान रघु० १।६ ३ मलम्बाय
मृग० ४।८६ ४ डाल देना त्याग देना, परित्याग
करना—रघु० ८।२५ ५ ओढ़ देना बिदा करना
६ (देवता को) बिदा करना (विप० आवाहन)
७ किसी विषय अवसर पर मोड़ को छोड़
देना ।

विस्तारिणी (वि०) [वि + मृ + क्त + नी + र] परित्यक्त किं
जाने के योग्य या विमर्ग () दे० ।

विस्तारित (भू० क० कृ०) [वि + क्त + क्त] १ उद्दीर्घ
उप-गया २ प्रदत्त ३ छोड़ा गया
त्याग दिया गया परित्यक्त ४ भेजा गया प्रेषित
५ बिदा किया गया निरंतर विस्तार किया गया ।

विस्तार [वि + मृ + क्त] १ फैलाना २ डालना ३ फैलाना
या उधार देना और जाना ३ फैलाना संचार —रघु०
१।३५ ४ किसी कर्म का अवस्थापित या अनपेक्षित
फल ५ एक प्रकार का रोम सूखी मृगजी, सम०
—अथर्व श्रौत ।

विस्तारि [वि + मृ + क्त] १ फैलाना संचारना अर्थात्
सर्व भवन २ प्रसारण प्रचार विस्तार ।

विस्तारि, विस्तारि दे० उ० उ० (वि०) ।

विस्तार दे० विमर्ग ।

विस्तार [वि + मृ + क्त] १ फैलाना विस्तार ।

२ रेंवना, सरकना ३ मछली,—रघु १ मछली
२ गहरी ।

विस्तारि (वि०) (स्त्री०—नी) [वि + मृ + क्त] १ फैलाने वाला प्रसार करने वाला २ रेंवने वाला,
सरकने वाला, पू० मछली ।

विस्तारि दे० विमर्ग ।

विस्तार दे० विमर्ग ।

विस्तारि [वि + मृ + क्त] १ फैलाना २ डालना ३ फैलाना ४ प्रदान करना ५ भेंट दान

विस्तारि [वि + मृ + क्त] १ फैलाना २ डालना ३ फैलाना ४ प्रदान करना ५ भेंट दान

विस्तारि [वि + मृ + क्त] १ फैलाना २ डालना ३ फैलाना ४ प्रदान करना ५ भेंट दान

विस्तारि [वि + मृ + क्त] १ फैलाना २ डालना ३ फैलाना ४ प्रदान करना ५ भेंट दान

विस्तारि [वि + मृ + क्त] १ फैलाना २ डालना ३ फैलाना ४ प्रदान करना ५ भेंट दान

विस्तारि [वि + मृ + क्त] १ फैलाना २ डालना ३ फैलाना ४ प्रदान करना ५ भेंट दान

विस्तारि [वि + मृ + क्त] १ फैलाना २ डालना ३ फैलाना ४ प्रदान करना ५ भेंट दान

विस्तारि [वि + मृ + क्त] १ फैलाना २ डालना ३ फैलाना ४ प्रदान करना ५ भेंट दान

विस्तारि [वि + मृ + क्त] १ फैलाना २ डालना ३ फैलाना ४ प्रदान करना ५ भेंट दान

विस्तारि [वि + मृ + क्त] १ फैलाना २ डालना ३ फैलाना ४ प्रदान करना ५ भेंट दान

विस्तारि [वि + मृ + क्त] १ फैलाना २ डालना ३ फैलाना ४ प्रदान करना ५ भेंट दान

विस्तारि [वि + मृ + क्त] १ फैलाना २ डालना ३ फैलाना ४ प्रदान करना ५ भेंट दान

विस्तारि [वि + मृ + क्त] १ फैलाना २ डालना ३ फैलाना ४ प्रदान करना ५ भेंट दान

विस्तारि [वि + मृ + क्त] १ फैलाना २ डालना ३ फैलाना ४ प्रदान करना ५ भेंट दान

विस्तारि [वि + मृ + क्त] १ फैलाना २ डालना ३ फैलाना ४ प्रदान करना ५ भेंट दान

तावच्छ्रुतिविस्तारः कियताम्—श० ७ 5. वृत्त का व्यास 6. छाड़ी 7. नूतन पल्लवो से युक्त पेड़ की शाखा ।

विस्तृतीय (भू० क० क०) [वि + स्तृ + क्त] 1. विछाया गया, फैलाया गया, विस्तार किया गया 2. चौड़ा, विस्तृत 3. विमान, बड़ा, विस्तारयुक्त । अम०—अर्धेण एक प्रकार की जड़, मानक ।

विस्तृत (भू० क० क०) [वि + स्तृ + क्त] 1. प्रसारित, फैलाया गया, विस्तारयुक्त 2. चौड़ा, फैला हुआ 3. विपुल 4. सुविस्तृत, लंबा-चौड़ा ।

विस्तृतिः (स्त्री०) [वि + स्तृ + क्तिन्] 1. विस्तार फैलाव 2. चौड़ाई, फासला, विस्मालता 3. वृत्त का व्यास ।

विस्मृत् (वि०) [विस्मृ + क्त]—प्रा० श० 1. सोचा, साँझ, सुबोच 2. प्रकट, स्पष्ट, सुस्पष्ट, बुला, प्रत्यक्ष ।

विस्मृत् (वि०) [वि + स्मृ + क्त]—उकारस्य आकारः 1. बर-बराहट, कम्पन, बड़कन 2. धनुष की टकार ।

विस्मृतिः (भू० क० क०) [विस्मृ + क्तिन्] 1. बरबरी पैदा की गई 2. कम्पमान, बरबराता हुआ 3. टकार-बुल 4. विस्तृत किया हुआ, फैलाया हुआ 5. प्रकटित प्रवृत्ति ।

विस्मृतिः (भू० क० क०) [वि + स्मृ + क्त] 1. बर-बराने वाला, कापने वाला 2. हुआ हुआ, विस्तारित ।

विस्मृतिः [वि + स्मृ + क्त]—विस्मृ तावच्छ्रुतिविस्तारः 1. बान की बिजहारी अर्धेणैकतो विस्मृ-किया विप्रतिष्ठेयम्—छाड़ी 2. एक प्रकार का बिज ।

विस्मृतिः [वि + स्मृ + क्त] 1. बड़ावना, गर-जना, कड़कना 2. बाल की गरब, बिजली की कड़क 3. बिजली जली कड़क, अकस्मात् आघात वा आघात-अर्धेण अन्तर्गतपातकानां विपाकविस्मृतिप्रसङ्गः—रघु० १४।१२ 4. (लहुरों का) आघातित होना, लहुरों का उठना—महोदधिविस्मृतिप्रतिष्ठेयम्—रघु० १३।१२ ।

विस्मृतिः [वि + स्मृ + क्त] 1. बड़ाव, बीकार 2. कड़कना 3. फल, परिणाम अर्त० २।१२५, ३।१४८ ।

विस्मृतिः—वा [वि + स्मृ + क्त] 1. फाड़ा, अर्ध, रसीली 2. बीतला, बेचक ।

विस्मृतिः [वि + स्मृ + क्त] 1. आश्चर्य, तात्पद, अचम्भा, अचर्य—पुष्प-प्रसङ्गः अर्धेणैकतो महोदधिविस्तारः—रघु० १०।५१ 2. आश्चर्य वा अचम्भे की भावना, जिससे अच्युत रह की निष्पत्ति होती है, ना० ६० २०७ पर इसकी परिभाषा दी गई है : विविधेषु पदार्थेषु लोक-कीर्त्यातिवर्तिषु, विस्मर्यतेतलो वस्तु स विमय उदा-हृतः 3. चर्च, चर्चामय, - तप शरणि विमयान

—मनु० ४।२३७ 4. अनिपद्य, सन्देह । सम०—आकुल, आचिष्ट (वि) आश्चर्ययुक्त, अचर्य मे भरा हुआ ।

विस्मयण (वि०) [विमय गच्छति -विस्मय + क्त] : आत्, युम् । अचर्य मे भरा हुआ, आश्चर्यजनक । विस्मरणम् [वि + स्मृ + क्त] भूल जाना, विस्मृति, स्मृति का न रहना, विस्मर जाना श० ५।२३ ।

विस्मरण (वि०) (स्त्री० -नी) [वि + स्मि + णिच् + क्त] युकायम, आत्मम् आश्चर्यजनक, अः 1. काम-देव 2. बाल, बोला, अम,--नम् 1 आश्चर्य पैदा करना 2 कोई भी आश्चर्यजनक वस्तु 3. गधवों का नगर (पु० भी कहा जाता है) ।

विस्मृत (भू० क० क०) [वि + स्मि + क्त] 1. आश्च-र्यान्वित, चकित, मोचकता, हक्काबक्का 2. उलटपुलट किया गया 3. चमड़ी ।

विस्मृत (भू० क० क०) [वि + स्मृ + क्त] भूला हुआ । विस्मृतिः (स्त्री०) [वि + स्मृ + क्तिन्] भूल जाना, विस्मर देना, अस्मरण ।

विस्मर (वि०) [वि + स्मि + क्त] मोचकता, आश्चर्या-न्वित, चकित ।

विस्मृ [वि + क्त] कच्चे मांस की गंध के समान गंध । सम०—बैचिः हुरताल ।

विस्मृत्, -वा [वि + क्त + क्त] 1. तीब्रे गिरना 2. अय, सँचिष्य, कमजोरी, निर्बलता ।

विस्मृत (वि०) [वि + क्त + क्त] 1. पतनशील वा किन्तुपाती - अन्तर्गतमौलिचूर्णनलमन्दारविस्मृतन—नीत० ३ 2. मोलने वाला, डोला करने वाला मोतीविस्मृतनः करः काव्य० ७ --अम् 1 अच पतन 2. बहना, टपकना 3. लोलना, डोला करना 4. रेषक, हस्ताक्षर ।

विस्मृत्, विस्मृत् दे० विमय, विमयम् ।

विस्मृत् [वि + क्त + क + टाप्] अय, निर्बलता, अर्ध-रता ।

विस्मृत (भू० क० क०) [वि + क्त + क्त] 1. डोला किया हुआ 2. दुर्बल, बन्धन ।

विस्मृत्, विस्मृत् [वि + क्त + क्त] अय, अय, वा] बहना, बँद बँद टपकना, घुना, रिसना ।

विस्मृत् [वि + क्त + क्त] रक्त बहना ।

विस्मृतिः (स्त्री०) [वि + क्त + क्तिन्] बह जाना, घुना, रिसना ।

विस्मृत् (वि०) [वि + क्त + क्त] वा स्त्री दस्य प्रा० व०] बेमुरा ।

विहृत् [विहृ + क्त] गच्छति गच्छ + क्त, वि०] 1 फकी मेष० ७८, मनु० १।२३ 2 बाल 3. बाल 4. कुं-चोद 6 नक्षत्र ।

विह्वलः [विहायसा गच्छति यम् + लप्, युम्] 1 पत्नी रघु० १।५१, यम् ० १।५५ 2 बाह्व 3 बाण 4. सूर्य 5 चन्द्रमा । सम० - इन्द्रः- ईश्वरः- राजः गच्छ के विशेषण ।

विह्वल्यः [विहायसा गच्छति - यम् + लप्, युम्, विहा- देक] पत्नी - (गृह दीपिकाः) मरकतोत्कलविह्वल्यः रघु० १।१७, यम् ० १।३९, हि० १।३७ ।

विह्वल्यमा, विह्वलिका [विह्वल्य + टाप्, विह्वल + कन् + टाप्, इत्यम्] विह्वली, वह बाल जिसके दोनों सिरों पर बोल बोल कर लटका दिया जाता है ।

विह्वल (यू० क० क०) [वि + ह्व + ल] 1. पूरी तरह बाहर, वध किया गया 2 चोट पहुँचाई गई 3. अच- कट, बिरोध किया गया, मुकाबला किया गया ।

विह्वलितः [वि + ह्व + क्तित्] विच, लगी, - (स्त्री०) 1 हत्या करना, प्रहार करना 2 मरकतलता 3 परा- जय, हार ।

विह्वलनम् [वि + ह्व + ल्युट्] 1 हत्या करना, प्रहार करना 2 चोट, लत 3. अचरोध, सकाट, अक्षय 4 यह बुझने की बुझकी ।

विह्वरः [वि + ह्व + लप्] 1. अचहरण करना, हटना 2. विशेष, विशेष ।

विह्वरम् [वि + ह्व + ल्युट्] 1. दूर करना, अचहरण करना 2. लैर करना, हवाबोरी, हार उबार टहलना 3. बायोध-अयोध, मनोरञ्जन ।

विह्वल (यू०) [वि + ह्व + लप्] 1. अचयनील 2. लुटेरा ।

विह्वलः [विह्वल्यो ह्वं प्रा० ल०] बहुत अधिक प्रसन्नता, उत्साह ।

विह्वल्यम् विह्वलितम् विह्वल्यः [वि + ह्व + ल्युट्, लप् वज् वा] मग्न हँसी, मुस्कार ।

विह्वल्य (वि०) [विह्वल्यः हस्तो यस्य प्रा० व०]

1. हस्तारहित 2. बचरावा हुआ, आशुल, पराजित, क्षतिहीन किया हुआ, या० १, रघु० ५।५९
3. अक्षय (अपेक्षित कार्य करने के लिए) अक्षय, क्या विह्वल्यचरम् मालवि० ४ 4 विज्ञान, बुद्धिमान् ।

विहा (अय०) [वि + हा + वा, वि०] स्वर्ण, वैकुण्ठ ।

विहालित (यू० क० क०) [वि + हा + लित् + क्त, पुकायः] 1 परिवर्तन कराया गया 2 तोड़ मरोड़ कर निकाला गया, छड़ाया गया, लम्पेट, बाण ।

विहायस् (यू० नपु०) [वि + ह्व + ल्युट्, नि० वृद्धि] बाकाय, अन्तरिक्ष कि० १।५३, (यु०) पर्व० - १० ३।९९ ।

विहायस् १० 'विहायस्' ।

विहारः [वि + ह्व + लप्] 1. हटना, दूर करना 2. लैर लगाया, हवाबोरी, अचय, लैर करना 3. लौटा,

लेक, मनोविनोय, मनोरञ्जन, बायोध-अयोध, विकास विहारलैकानुसरेण नवीः रघु० १।१२६, ७६, ५।५१, ९।६८, १३।३८, १९।३७ 4. मन रजना, कथम बहुला, - हरमन्वरचरमविहारम् - वी० ११, कि० ४।१५ 5. वाटिका, उद्यान, विशेषतः प्रमोदवन 6. कन्वा 7. नैनप्रविह्वर या दीपप्रविह्वर, गठ, आशय या लघाराय 8. नन्दिर 9. वाणिज्य का गृह विस्तार । सम० - बुद्ध प्रमोदवन, लाली सम्पादनी, विष्णुनी ।

विहारिका [विहार + कन् + टाप्, इत्यम्] वीजपट ।

विहारिन् (वि०) [विहार + इनि] मनोविनोयी वा लिलवहुला करने वाला मृगयाविहारिन् - व० १ ।

विहित (यू० क० क०) [वि + वा + क्त] 1. किया हुआ, अनुष्ठित, हुन, कनाया हुआ 2. कनकत किया हुआ, स्मिर किया हुआ, सुव्यवस्थित, निर्दिष्ट, निर्धारित 3. वाणिज्य, विवाह किया हुआ, उपाधिष्ट 4. निमित्त, वरणिष्ट 5. रक्ता हुआ, बना किया हुआ, 6. मुद्रास्थित, सम्पन्न 7. किने जाने के लिये 8. विस्तार, बांटा गया (१० वि पूर्वक वा), - लम्पेट, बांटा ।

विहितः (स्त्री०) [वि + वा + क्तित्] 1. अनुष्ठान, किया २० 2. व्यवसाय ।

विहीन (यू० क० क०) [वि + हा + क्त] 1. लौका गया, परिवर्तन, लाना गया 2. बुद्ध, रहित, वनिष्ट (भावः लालन में) - विहाविहीनः नवः - वरु० ३।२० 3. अचय, नीच, कमीना । सम० - लालि - लैलि (वि०) नीच वर में उत्पन्न, नीच कुल में पैदा हुआ ।

विहित (यू० क० क०) [वि + ह्व + क्त] 1. लौका की, लेला हुआ 2. पुकाया हुआ, लम्पेटियों द्वारा प्रेम प्रयत्न करने की वल रीतियों में के एक १० वा० २० १२५, १५६, (इस कर्म में 'विह्वल' भी किया जाता है) ।

विहितः (स्त्री०) [वि + ह्व + क्तित्] 1. हटना, दूर करना 2. लौटा, मनो विनोय, विहार 3. प्रहार,

विह्वल्यः [वि + ह्व + ल्युट्] लत पहुँचाने वाला ।

विह्वल्यम् [वि + ह्व + ल्युट्] 1. लत पहुँचाना, वाक्य करना 2. मरकतता, लैलता 3. कष्ट देना 4. लौटा, हुन, लाना ।

विह्वल्य (वि०) [वि + ह्व + ल्युट् + लप्] 1. विह्वल्य, बहाला, आशुल, बचरावा हुआ रघु० ८।३७ 2. हरा हुआ, लम्पेट 3. उन्नत, जाने के बाहर 4. कष्टप्रस्त, दुःखी-दुः ५।५ 5. विहायपूर्व 6. लका हुआ, निकाला हुआ ।

वी (अवा० वर० देति - वातनीय वाहित्व में विरक्त प्रयोग) 1. लाना, हिलाना-मुक्ता 2. लुप्टता 3. अक्षय होना

4. जाना, पहुँचाना 5. फेंक देना, डालना 6. खाना उपभोग करना 7. प्राप्त करना 8. गर्वधारण करना उत्पन्न करना 9. पैदा होना जन्म लेना 10. बचकला सुचारु होना ।

बीजः [बृज् + कन्, वा आदेशः] 1 वायु 2 पक्षी 3. वृक्ष ।

बीजकः दे 'विकार्य' ।

बीजकम् [वि + ईज् + क्त्वं] 1 द्रव्य पदार्थ 2 अजन्मा आपश्चर्य, ज्ञः, ज्ञा, वेदना, ताकना ।

बीजकम्, -वा [वि + ईज् + क्त्वं] देवता निरागन्ता दृष्टि डालना ।

बीजितम् [वि + ईज् + क्त] दृष्टि झलक ।

बीज्य (वि०) [वि + ईज् + क्त] 1 देखे जाने के योग्य 2 द्रव्य, दृष्टिगोचर, ज्ञः 1 नरक लट, अभिनेता पात्र 2 बीजा, कृष्ण 3 देखे जाने के योग्य कोई भी वस्तु, द्रव्यमान पदार्थ 2 आश्चर्य अथवा ।

बीज्य [वि + ईज् + क्त + टाप्] 1 जाना, जिनना बुलना, प्रवृत्ति 2 बोधे का कदम 3. नाथ 4 सगम मिलन ।

बीजिकः (पुं०, स्त्री०) बीजी [बृ + ईजि, बिज्, वाचि - क्तृ] 1 लहर-समुद्रबीजीय चलस्वभावा -पत्र० १११४, पृ० ६५६, १२१००, मेष० २८ 2 जल-वृत्ति, विचारानुबन्धा 3 आनन्द, प्रसन्नता 4 विद्याम, अक्षरका 5 प्रकाश की किरण 6 स्वयत्ता । सम० वासिकम् (पुं०) समुद्र ।

बीजी दे० 'बीज' ।

बीजः [बी० वा० बीजते] जाना ।

11 (चुरा० उप० बीजयति न) पक्का करना, पक्का करके ठंडा करना स बीज्यते मणिमयैव तासमूर्तं -मुच्छ० ५११३, कु० २१४२ अथि उप वरि, पक्का करना -तु० ३१६ ग० ३ ।

बीज बीजक, बीजक, } दे० बीज बीजक, बीजक, बीजिक बीजित्, बीज्य } बीजिक बीजित् बीज बीज्य ।

बीजवः [बीज् + क्त्वं] 1 बचकला 2 एक प्रकार का प्रकोर, कम् 1 पक्का करना कु० ३१२६ 2 पक्का ।

बीजा [वि + ईज् + क्त + टाप्] 1 लकड़ी का एक छोटा टुकड़ा, मूल्यो (लगभग एक बालकृत) जिसे लकड़ हडा मार कर निकते हैं गुल्ला हडा ।

बीजिः, बीजिका, बीजी [वि - ई - इन भ च किर बीजि + क्त + टाप्, बीजि + क्त वा] 1 पान का वृ 2 पान कमाला 3 बचन, बीज वधि (पहुँचे जाने वाले वृक्ष की) 4 बोली की नली अक्ष० २३ ।

बीजा [वेदि वृद्धिमात्रमप्यच्छति - + व, नि० नावय] 1 बारानी, बीजा मूकीमूलाया बीजावाम् का०, मेष० ८६ 2 बिजकी । सम० आरवः नारव का

विजयण -बृज् बीजा की गर्दन-भाषि० ११८०, -बाव, बावक बीजा बजाने वाला ।

बीत (पुं० क० कृ०) [वि + वृ + क्त] 1 गया हुआ, अतर्हित 2 जो चला गया बिता हुआ गया 3 जिसका जाने दिया गया, होना उन्मुक्त 4 जलनाया हुआ विमुक्त किया हुआ 5 अनुमोदित 7 सह किया गया 6 बृद्ध के अयोग्य 7 पालन जान 8 मृक, क्षम्य (बहुधा समास में) बीतीत वानस्पृह बीतभी, बीतशक आदि -स. हावी वा बाह्य वा बृद्ध के अयोग्य हो या सहाया न गया हो, तम् (हाया का) अकुण से गोदना तथा वेग से प्रहार करना, - बीतवीतभया नाया कु० ६१२९ (पाठार-द० इम पर मल्लि०) सि० ५१७३ । सम० हृज् (वि०) बित्त, बिना, अथ (वि०) निर्भय निरदः य) बिण् का विशेष पण सप्त (३०) पावन नियंत्रण सप्त (वि०) 1 हृत्पारहित कु० ६६३ 2 निरक्षय सौम्य पात्र 3 बिबधं बिना रस क (स) एक यणि जिसमें अपन रागा का दमन कर दिया वा -शोक (अथाक) अशोक वृक्ष ।

बीतल [बिग्रेने बहिरव तन्मन मृग्यन वि + तन् + क्त उपसर्गस्य होष] 1 बीजरा या ज्ञान जिसमें पक्षी या जन्तु गय पक्ष कमाय बात है 2 बिहयि, चर शिकार के पशुओं को पालन का स्थान ।

बीतनी (पुं०, स्त्री० क०) [बिहयट् ननीति वि + न - क्तृ पृथो दीप] गये के अवलक्षण के पात्रव ।

बीति [बी - क्तन 'बाह' वि (स्त्री०)] 1 गति, बाल 2 पैदावार उपज 3 मुखापयोग 4 आजन करना 5 प्रकाश कान्त । सम० होत्र 1 बीन 2 मूर्ध ।

बीषि, बी (स्त्री०) [बिष + इत होष वा, पृथो० 1 मृदक, भाग वि० ७११३ 1 पीसत, कना 3 हाट आगमन 4 मृ मृदकान वि० ११३० 4 नरक का एक भेद एक परिभाषा सा० ६० निम्नांकित है वाध्य मय भद्र ५ वधिबद्धकाः कल्पयते, आकाशभाषिनेः शैल्यथा प्रमुक्तिमाश्रित । मुचपदुधोर् भृङ्गा कश्चिद्व्याप्यमानयि । मुच-निर्गन्ध मन्थो अथप्रकृतयोः लिङ्गा, ५०० ।

बीषिका [वायि + क्त - टाप्] 1 मृदक आदि 2 बिष-साधन बिषासारी (द्रव्य पर बिष बिजित किए जाय है बिषागार बिषाकली-आयस्य बरिजनाय बीषि + गायामि निमित्त उत्तर० १ ।

बीष [वि०] [बिषय इत्यन वि + क्त + क्त, उप-सर्गस्य होष] 1 निषक स्वच्छ, प्रक्ष 2 आकाश 2 वायु हवा 3 अग्नि ।

भीमाह [वि + भृ + क्त्वा उपसर्गः २३३] कुतः वा
दकन या मणि ।

भीषा (स्त्री०) बिभृत्, बिबला ।

भीष्मा [वि + भाष् + घञ् + भृ + टाप् ईधनम् १ परि
व्याप्ति २ (नैरन्तर एकट करन के लिए) शब्द
द्विवक्ति यथा वृद्ध वृद्ध 'मरणे' इति इत्याद्या
द्विवक्ति ३ सामान्य पुनर्वक्ति

भीष्म (म्हा० आ०) कीयते। अथो मारता हीय मारता

भीर (वि) [भृ + क्त्वा कीभावश्च] १ भृ + भीर २ नाचन
कर क्षितिजाली ३ मुरवीर यादा प्रजना
कोशयेय मप्रति नव पुरुषवन्ता? तारो न यम्य
भगवान् भृगुनम्होऽपि उत्तर० ५३३ २ (पाल०
में) कीरभावना कीरम्य इसक बार भेद (नानवीर
समवीर, दयावीर श्री युद्ध ७) विधयय है स्पष्टी
करके के लिए ६० २ न वंश का ३ अग्निना ४ जग
५ यज्ञ की अग्नि ६ पुत्र ७ पति ८ अर्जुन वृद्ध
९ विष्णु का नाम रम् १ नरकुल २ मित्रं
३ बाबल का माह ४ उगीर का ब्रह्म, असः । मय०
आत्मनम् १ निगरानी रचना २ युद्ध में अग्निम
से भरा वद ३ छात्री हुई रागाः आत्मनम् १ वाता-
व्याप्त करने समय एक विशेष मृदा, पश्चिमापा के लिए
दे० पर्यंक (३) २ एक घुटना माह कर बैठना
४ सनरी को भीकी ईश, -ईश्वर १ शिव के विशेष
पत्र २ महान् भीर, उल्लेख बहु हाहाल या यज्ञाग्नि
में आहुति नहीं डालना अग्निहोत्र न करने वाला
हाहाल, -कीट, तुच्छ सैनिक अत्यन्त १ रत्नपुत्र
२ सहाय, युद्ध तक अत्रनवृत्त अन्तम् (पु०)
कामदेव, -वायम् (वम्) एक उत्तमक या धमापहारक
तेज जो नैतिक लोग यद्ध के आरम्भ या अचमान पर
पीते हैं, अष्टः १ एक अस्तिपाली दूरवीर जिसे शिव
न अपनी बटाओं से निकाला था ६० टल २ भावा
हुआ बोड़ा ३ अचमोच यज्ञ के उपयुक्त बोड़ा
४ एक प्रकार का सुप्रसिद्ध बाल बुझिका पैर की
बन्धना बन्नी में पहना जाने वाला छस्ता, रम्ब
(वम्) लिम्बूर, रस १ भीरमा का भाव २ साथ
रिक्त भावना, -रेम् भीमसेन का नाम, विष्णुवक्त्र
वृद्ध के वन लेकर हवन करने वाला, वृद्ध १ अर्जुन
वृद्ध २ शिकारों का वृद्ध, वृ (स्त्री०) दूरवीर
पुत्र की नाता (इसी प्रकार भीरवत्तवा, मनु,
अचमोच, अन्तम् बहुभुज, -कामः नेता हम्
(पु०) १ बहु हाहाल जितने दैनिक अग्निहोत्र करना
कोई दिया है २ विष्णु ।

भीरवम् [वि + ई + क्त्वा] एक सुप्रसिद्ध नाम उगीर
(विष्णुकी उर्ध्व-अस-क्षीरकला प्रदान करने के लिए
अनुमता होती है) ।

भीरवी नागः, डीवः । १ तिरछी बितवन कष्ट
२ गहरा स्थान ।

भीरवर, वर + तत्प, १ महान् भीर २ बाण, रम् एक
प्रकार का सुप्रसिद्ध घास उगीर ।

भीरवर् [भीर + वृ + क्त्वा मुम्] १ मार २ वन्द्य पशुओं
के साथ लड़ाई ३ बम्बे को जालेट ।

भीरवत् [वि०] भीर + मनुष्य, शरवीरों से भरा हुआ
नौ वह स्त्री दिववा रति और पुत्र जीवन हो ।

भीरा [वं + टाप्] १ शरवीर पुरुष की स्त्री २ पत्नी
३ नाता मूर्खता ४ मरा नामक एक गन्धध
५ मराह ६ अंग की लकड़ी ७ केल के पत्र ।

भीरिचम् ६० ईरण ।

भीरव - वा (स्त्री०) विवायेय कर्षि ज्ञान् ब्रह्मान्
वि दध + क्तिप यज्ञ टाप् उपसर्गस्य दीर्घः ।
१ लक्ष्मणने वाली लता मना प्रतामिनी बोरुन्
-मर्दि० आहर्षित्वप्रसवा ममापचरितेविष्टमिलो
भीरवन् स० ५१९ कु० ४३४ रम् ० ८३९
२ हाका बहुर ३ काटने पर ही बढ़ने वाला
पौधा ४ वेन, लता, लाठी—कि० ४१९ ।

भीरव् [भीर + वत्] १ मुरवीरना पराक्रम, बहादुरी
—भीरवद्वातेय इत्यादि—कि० ३४३, रम् ०
२४, ३१६० ११७८, वेणी० ३१३ २ बल, सामर्थ्य
३ पुष्प ४ ऊर्ध्व, बुद्धि, सहाय ५ अस्ति, अमता
५० ३१२ ६ (भीरवद्वा की) अचकता, अतिदीर्घ-
वर्णीय वेवने बहुरन्वीर्यं वृषते वृत्त कि० २१२४,
कु० २१८८ ७ वृद्ध, वीर -कु० ३११५, पच० ४१५
८ आभा, कालि ९ गौरव, प्रतिभा । स० अ
पुत्र -अचतः वीर्य का शत्रु या स्वजन ।

भीरवन् (वि०) [वीर्य + मनुष्य] १ मज्जत हृष्टपुष्ट, वल-
वान् २ अचक, अमोच ।

भीरवः [वि + वृ + वत् + वृद्धभावा दीर्घश्च] १ बोका
होने के लिए जुड़ा बहनी २ बोका ३ अनाज का
भंडार बना ४ धान्य, हाटक ।

भीरवः [भीरव + टम्] बहनी होने वाला ।

भीरार [वि + हृ + वत्, उपसर्गस्य दीर्घः] १ जंग विहार
वा बीरवत् २ देवालय ।

भृक् (म्हा० वर०) भृक्कति छोड़ना परित्याग करना ।
भृक्, 'भृता' उन्० भृक्कति-ते । १ चोट पहुँचाना बंध
करना २ मष्ट करना ।

भृक् (वि०) [वृ + तन् + उ] पत्तन करने का इच्छुक ।
भृक् ६० दम् ।

भृक् (वि०) [वृ + क्त्वा] छाटा हुआ बना हुआ ।

वृ (म्हा० स्वा०, कथा० उभ०) वृत्ति-ते, वृत्ति-वृत्ते,
वृत्ति-वृत्ते, वृत्, कर्षना० विवृते । १ छाटना, घुसना,
पत्तन करना—वृत् तेनेवनेय प्राक्-कु० २१५९, बवार

राजस्व वनप्रवाचन—मट्टि० ३१६ २ अपने लिए चुनना (भा०) चुनते हैं विमुचयकारिण मुचयन्त्या स्वयमेव सम्पन्न—कि० २१३०, रघु० ३१६ ३ विवाह के लिए बरच करना, प्रणय-श्रावना करना, प्रणयवाचना करना—महावी० ११२८, अनर्थ० ३१४२ ४ प्रार्थना करना, निवेदन करना, याचना करना ५ इकना, छिपाना गुप्त रखना, परदा डालना, लपेटना—मेवैर्यतस्वभ्रमा—मृच्छ० ५११४ ६ बेरना, लपेटना मट्टि० ५१ १०, रघु० १२११ ७ परे हटना, दूर करना, निवर्णन करना, रोकना ८ विघ्न डालना, विरोध करना, बहुधन डालना, प्रेर०—(वारयति ते) १ इकना छिपाना २ (किसी वस्तु में) जोष डेर डेना (अपा० के साथ) ३ रोकना, हटाना, निवर्णन करना, रवाना जोष वृक्षाल करना, विघ्न डालना—अव्यो वारयितुं यजेत वृक्षमुचु—मनु० २१११, इच्छा० वृक्षयति-ने, विधिरयति-ने, विधिरयति-ने, चुनने की इच्छा करना, अन्न , खोलना (प्रेर०) इकना, छिपाना अन्न- , खोलना भा०—, १ इकना, छिपाना, गुप्त रखना आनुवीयातमनो रण्ड रण्डेषु बहुरूप रिपुन् रघु० १३१ ११, मट्टि० ११२४ २. पूरना, व्याप्त होना जन० ११३१, मनु० २१४४ ३ चुनना, इच्छा करना ४ निवेदन करना, प्रार्थना करना ५ बेरना, नाके बंदी करना, रोकना—रघु० ७३११ ६ दूर रखना मट्टि० १५१०९, वि०—, बेरना डालना, बेरना मट्टि० १५१ १९, (प्रेर०)—परे हटना दूर करना, जोष डेरना (अपा० के साथ) - पापाक्षिरायति बोधयते हिताय—मनु० २१७२, निष्—, (बहुधा क्तात् रूप) प्रसन्न होना, संतुष्ट या सतुष्ट होना निर्वन्धर मधुवीरिय-कर्म—वि० १०१३, दे० निर्बुध, वरि—, बेरना, प्र-
१. डालना, लपेटना प्रावारिपुरिद जोषीं छिपाना बुद्धाः सकलतः मट्टि० ११२५ २ पहनना, धारण करना ३. चुनना, छानना, प्रा—, पहनना, धारण करना, वि०—, १ डक डेना, ठहरना २ खोलना—कु० ४१२५ ३. तह खोलना, महाकोट करना, वेद खोलना, प्रकट करना, प्रदर्शन करना नै० १११, कु० ३११५, रघु० १८५, मट्टि० ७१३३ ४ छिपाना, व्याख्या करना, स्पष्ट करना—महावी० २४४३ ५. खोलना, भाषि० ११५ ६ चुनना विधि—, (प्रेर०) रोकना, दूर हटाना, रवाना विनय विनिवाच भा० १११८ लघु—, १ छिपाना, इकना, प्रच्छन्न करना—मनु०-रघु० निर्वाणताबरोद्धम्—अ० ३११५, २११०, रघु० ११२०, ७३१० २ रवाना, निवर्णन करना, विरोध करना मट्टि० ११२७ ३ बन्ध करना।
ii (चुरा० उभ० वरयति-ते) १ वरच करना, चुनना—वर वरयते कम्पा माता वितम् पिता धुवन्—नेच०

३१६७ २ विवाह के लिए पसंद करना ३ वाचन करना, प्रार्थना करना, निवेदन करना।
बृह्, बृहति दे० 'बृह' बृहति।
बृह् (अभा० भा० बर्त्ते) पकड़ना, लेना, ग्रहण करना।
बृहः [बृ + कृ +] १ मेथिया २ लकड़बग्घा ३ तीरथ ४ जोषा ५ उल्क ६ लूटेरा ७ क्षत्रिय ८ तारपीन ९ मन्त्रद्वयो का मिश्रण १० एक राजस का नाम ११ एक बृक्ष का नाम, बकबुल १२ जठराग्नि। लघु० अरातिः, अरि दुष्टा,—अन्नः १ ब्रह्मा का चिह्न-वच २ द्वितीय पांडव राजकुमार भीम का शिलेखन मग० १११५, कि० २११—ब्रह्म दुष्टा, बृह १ तारपीन २ मिश्रण,—चूर्तः तीरथ।
बृहकः,—कृत्वा १ हृय २ बुरा (इस अर्थ में हि० ब०)।
बृहन् (भू० क० कृ०) [बृह् + क्त] १ कटा हुआ, भारा हुआ २ कृत्वा हुआ ३ लोड़ा हुआ।
बृहत् (भू० क० कृ०) [बृह् + क्त] स्वच्छ किया गया, साफ किया गया, निर्मल किया गया।
बृह् (अभा० भा० चुनने) १ स्वीकार करना, चुनना २ इकना।
बृहः [बृह् + क्त] १ पेठ—आरामपरायणबुद्धाणां फलान्मेता नि वेष्टिनाम्। लघु० अन्नः १ बर्द्ध की बीरसी २ कुल्हाड़ी ३ बड़ का पेठ ४ पियाल बृहः, अन्नः आमड़ा, अन्नः एक पत्नी, —आवासः १ एक पत्नी २ तन्पासी, आन्ध्रियम् (पू०) एक प्रकार का छोटा उल्क, कुक्कुटः जंगली मुर्गा खंड निम्बुज, बुरों का समूह,— अरः कन्दर, छाया वृक्ष की छाया (यच्) लचन छाया, बहुत से बुरों की (माङ्गो) छाया,— बृहः तारपीन, भावः बड़ का पेठ—निर्वातः गौर राल भावः बड़ का पेठ,—विद् (स्त्री०) कुल्हाड़ी, बर्द्धिका गिलहरी, बाघिका, बाघी उद्यान, उपवन, अः छिपकली,—बाघिका गिलहरी।
बृहकः [बृह + क्त] १. छोटा पेठ कु० ५११४ २ पेठ।
बृह् (अभा० पर० वृणक्ति) छोटना, चुनना।
बृह्। (अभा० भा० वृणते) टाल जाना, कतराना, परि-त्याग करना।
ii (अभा० पर० वृणक्ति) १. डालना जाना, कतराना, छोड़ देना, परित्याग करना २. चुनना—आतायेकामां वृषिं सर्वनां स्वयंमृषन्नाम् भाष० ३ प्रादक्षिण्य करना, पाँछ डालना, निर्दल करना नन्ने रेत पिला बुक्तामिन्पर्वतमिदमर्धनम्—मनु० ११२० ४ मुड़ना, जोष डेरना।
iii (अभा० पर०, चुरा० उभ० वर्यति, वर्ययति-ने, वर्यति) १ कतराना, टाल जाना २ छोड़ना, परित्याग करना ३ निकाल देना, एक ओर रख देना ४ अन्न रखना ५ टुकड़े टुकड़े कर देना (अधिराहस्य मे उद्भूत

निम्नांकित पद्य धानु के विभिन्न रूपों का चित्रण करता है। वृक्षानि वृक्षिने, भय वृक्षे च वृक्षे सह, वर्जयान्नाजेषापिरे स वक्ष्यति दुर्जने, अथ 1. मृष्ट करना 2. समाप्त करना 3. छोड़ना, त्याग देना रघु० १७।१९, कि० १।२९ 4 उल्लेखना, फेंकना शि० १३।३७ आ 1 मुकुना, मुकुना, आबज्यं शाका सदय च यामा - रघु० १६।१९, १३।१७, आबज्यं दृष्टी मेघ० ४६ 2 प्रस्तुत करना, देना रघु० १।६२, ६७, ८।२६, कु० ५।३४ 3 पराम्य करना, जीना, परि, टाल जाना कतराना, शि - 3 कतराना, टाल जाना 2 बिरहित करना वक्षित करना ।

वृक्षः [वृक्षं वृक्ष] 1 बाल 2 वृक्षाले बाल,— वक्ष 1 पाप 2 सकट 3 आकाश 4 घेर, बाढा, विक्षेपत एक गोचरभूमि ।

वृक्षिन् [वृक्षे इत्यन् किन् च] 1 कुटिल, मुका हुआ, बक 2 दुष्ट, पापी, न 1 बाल, वृक्षाले बाल 2 दुष्ट पुष्प— वृक्षानि वृक्षिने समम्—कथि०,— नक्ष 1 पाप,— सर्वे ज्ञानपत्तेनैव वृक्षिन् ततर्गिष्यति भग० ४।३६, रघु० १।५५ 2 पीडा, दुःख (इत जय में पु० श्री माना जाता है) ।

वृष् (तमा० उभ० वृष्ति, वृक्षते) जाना, उपभोग करना वृष् ? (विवा० आ० वृक्षते) 1 चुनना, पसंद करना— तु० बाकु 2 वितरण करना, बाँटना ।

i. (पूरा० उभ० वर्तयति ते) चमकना ।

ii. (व्या० आ० वर्तते, परम्पु लुङ्, लृट्, लृट् तथा लृट् लकार में एव वर्तते में पर० श्री, वृत्) 1 होना, विद्यमान होना, बटे रहना, बौद्ध होना, जीते रहना, टिके रहना इव में मनसि वर्तते,— व० १, भय विषयेऽप्याहं बहुलुप्तुह्य वर्तते पंच० १, मरालकुलमावकः कथय रे कथ वर्तनाम्— बाणि० १।३, केवल हलोचक के रूप में बहुधा प्रयुक्त, कतिपय हुरिहो हुरीष वर्तते बाणि०— व० १ 2 किसी विशेष दशा वा परिस्थिति में होना— वरिषते कथसि वर्तमानस्य— का०, इसी प्रकार दुःखे, दुर्घे, विषादे— वर्तते 3 होना, घटित होना, आ बङ्गना, साधने जाना— जीता देखा कि वृक्षमिवर्तित काचित्प्रवृत्ति— उत्तर० २, साथ संवति वर्तते वषिक रे स्वामाप्तरं नम्बताम् बुधा०, 'अथ साधकस्य हो गया है'— मुद्गार० ९, भय० ५।२६ 4 चलते रहना, प्रवृत्तिशील रहना— सर्वथा वर्तते वक्ष— मयू० २।१५, जिम्बाब्वेजिम्बा वृक्षे— मद्रि० २।३७, रघु० १२।५६ ५ संचारित वा संघोषित होना, जीधिन रहना, जीते रहना (वाय० ते श्री) — कथमुक्ताविबिर्बतमाया— का० १७२, मयू० १।७७ 6 मुकुना, कुचकते रहना, कचकर जाना— वाचरिच

लोकायावा वर्तने— बेबी० ३ 7 अपने आप की काय में समाना, काम में लगना, आरम्भ करना (अभि० के साथ) भगवान् काश्यप आश्वते बहुविध वर्तते व० १, इतरो दहने स्वकर्मणा वृक्षे ज्ञानमयेन वक्षिणा रघु० ८।२०, मयू० ८।३४६, भय० ३।२२ 8 कर्मण्य विमाना, व्यावहार करना, आचरण करना, अनुष्ठान करना, अभ्यास करना (शायः अभि० के साथ वा स्वतन्त्र रूप से) — मार्योस्मिन् विनयेन कर्त० ताम् उत्तर० १, कविनिर्बलीकृत्येन भरतेषु वर्तमान मा० १, औपलीक्येन वतिपुम्— रघु० १०।२५, मयू० ७।१०४, ८।१७६, ११।३० 9 कार्य करना, विशेष प्रकार का आचरण करना— साध्वी वृत्ति वर्तने 'बहु मन्कायें में प्रयुक्त होता है' 10 कार्य रखना, कविप्राय बतलाना, कार्य में प्रयुक्त होना— दुष्यन्तीपस्ये चममति पुष्पसङ्घो वर्तते— पा० श्री २।३ पर महाभाष्य (शाय कोर्को में इसी कार्य में प्रयुक्त होता है) 11 प्रवृत्त करना, वेदित करना (सत्र० के साथ)— वृक्षे कि कर्म यो वै विपुलुकाय वर्तते 12 सहारा देना, आश्रित होना— डेर० (कट० वति ते 1 रवृत्त कराना 2 चुनना, कचकर विमाना व० ७।६ ३. (वक्ष-वक्ष) बुझना, लेहरे दहलना, बुझा कर फेंकना— मद्रि० १५।३७ 4 कार्य करना, अभ्यास करना, प्रवृत्ति करना— ना० ९। ३३ 5. सपन करना निवृत्ताना, व्यास देना, कचर हालना लोअधिकारमधिकः कुलोक्तिं काश्यप स्वधर्ततेऽस्तमा— रघु० ११।४, महावी० ३।२३ 6 बिताना, (सक्य बाशि) बुझारना 7 वीक्ष्य निवृद्धि करना जीते रहना कि० २।१८, रघु० १२।२० 8 वर्धन करना, बढ़ाना करना— इच्छा० (विपुलुति, विरिजिते); अति—, 1 परे जाना, जाने का जाना, ना० १।२२ 2 जाने निकल जाना, लक्ष्येक्य होना कि० १।४०, शि० १।४५९ ३. कर्मण्य करण, बाहर कदम रखना, अतिरिक्त करना— शि० १।१९ 4 उद्देश्य करना, बख्शेलना करना— मयू० ५।१६ 5 घोट पहुँचाना, अतिवृत्त करना, मारना करना 6 पराजित करना, वशीकृत करना 7. (जय्य का) विजाना 8 विजय करण, हरी करना— मयू० २।३८, मयू० १. 1 अनुसरण करना अनुकूल होना, अनुकूल कार्य करना— प्रवृत्तयेव हि जनेऽनुकूलते— शि० १५।४१, ना० ३।२ 2 अनुसरण करना, लुहरे की इच्छा के अनुसार अपने आपकी समाना, लुहरे के द्वारा पत्रप्रवर्धन प्राप्त किया जाना ३. जाना जानना 4 मिलना— मुकुना, कचक कराना 5. इच्छा करना, लुह करना 6. (व्या० में) किसी पूर्ववर्ती वृक्ष के आवृत्ति प्राप्त करना (डेर०) 1. मुकुना 2. अनुकूल

करना, आत्मा मानना, जप—, 1 मूढ़ जाना, पीठ मोड़ना—तत्प्राप्त्यवर्तत दूरकृष्टा नीचेब लक्ष्मी प्रतिफलवैवात्—रघु० १५८, ७३३ 2. व्यस्त या व्युत्थाना होना, उल्टा हो जाना—कि० १२४५ 3. मुँह नीचे कर लेना मा० ३१७, (प्रेर०) एक ओर हो जाना, झुकना मा० १४०, कि० ४१५, अति, 1. पहुँचाना, जाना, निकट होना, समीप होना, मुड़ना—इत एवाभिचर्तते—श० १, रघु० २१२ 2 आकषण करना, बाबा बोलना टूट पड़ना—कि० १३३ 3. आरम्भ करना, (दिने), निकलना 4. सँघोंपरि होना, सबसे ऊपर होना 5 होना, मोड़ना होना, घटित होना, आ—, 1 चक्कर लगाना 2. बापिस जाना—रघु० १८९, २१९ 3. पास जाना, 4. सेवक होना, चक्कर खाना—मा० १४१, जप—, 1 चक्का 2 उचित होना, कड़ना 3. बमड़ी या अविमर्शी होना 4 उमड़ना, बहु निकलना—उद्भूतः क इव मुखावह परेषाम्—वि० ८१८, मुद्रा० ३१८, रघु० ७५६, जप, 1. पहुँचाना 2 लौटना वि, 1. बापिस जाना, लौटना—न च निष्प्रापि सलिल निवर्तने मे तना हृदयम्—श० ३११, कु० ४३०, रघु० २१३, अ० ८११, १५४ 2. मान जाना, पलायन करना अटि० ५१२ 3. मुड़ जाना, बाजें घेर लेना—रघु० ५१३, ७६१ 4. जलम रहना प्रतीक्ष्य निवर्तन सर्वथास्व मज्जनात् मनु० ४१४९, १५३, अटि० ११८, निवृत्तमांसस्तु जनकः—उत्तर० ६ 5 मुकुर होना, बंध निकलना—अ० १३९ 6. होटना उमड़ कर देना, रुक जाना, टहर जाना 7 हट जाना जल होना, बन्ध हो जाना, जलघाना होना—अ० २५९, १४२२, मनु० १११८५, १८६ 8 रुकवाना, निकलवाना, (प्रेर०) 1. लौटाना, बापिस भेजना रघु० २३, ३४७, ७४४ 2. बापिस लेना, दूर रहना, मुड़ जाना, मन घेर लेना रघु० २२८, कु० ५११, निष्, 1. समाप्त होना, बन्ध होना, अटि० ८१९ २ मंगल होना—रघु० १७६८, मनु० ७१६१, 3. रुक जाना, न होना,—अटि० १६६, (प्रेर०) 1. सम्पन्न करना, निष्पन्न करना, समाप्त करना, पूरा करना—रघु० २४५, ३३३, ११३०, करा—, लौटाना, बापिस जाना, करि—, 1. घूमना, चक्कर खाना—कु० १११ 2. इधर-उधर भ्रमण करना, इधर-उधर जाना जाना 3 बदलना, विनिमय करना, बदला-बदली करना 4. पीठ मोड़ना रघु० ४७२, विक्रम० ११७ 5. होना, आ पड़ना—मा० ९१८ 6. लीप होना, कूट होना, फूट होना—मा० १०६, अ—, 1. बाजे चलना, चक्कर खाना, प्रगति करना, पंच० १८१ 2. उचित होना, उत्पन्न होना, फूट

निकलना 3 होना, घटित होना, आ पड़ना 4 आरम्भ करना, शुरू करना, (प्राय तुमुप्रत्यय)—हस्त प्रवृत्त सगोत्रकं मालवि० १, कु० ३१२५ 5 प्रवृत्त करना, और लगाना प्रवर्तता प्रवृत्तिहाय पाणिब. श० ७३५ 6 जमल करना, अनुसरण करना पंच० १११६, 7 कार्य म लगाना, व्यस्त होना, श० १, कु० ५१३ 8 करना, कार्य में लगना—श० ६, 9. व्यवहार करना 10 व्याप्त होना, विद्यमान होना राजन् प्रजाम् मे कश्चिदप्यार प्रवर्तते रघु० १५४७ 11 ठीक उतरना 12 जिना रुकावट के प्रगति करना, फटना-फूलना, अ० १७२४, मनु० ३१६१ (प्रेर०) 1 प्रगति करना आरी रखना मुद्रा० १ 2 सूचाना करना 3 खरी करना, स्थापित करना, सुविधा रहना 4 हाकना, प्रेरित करना, उकसाना उहीन करना 5 उन्नति करना प्रगति करना, प्रतिनिधि, 1 पीठ मोड़ना, लौटना—गणेश पुन. प्रतिनिवृत्त श० १२९, विक्रम० १ 2 चक्कर काटना, वि, 1 मुड़ना, लड़कना, चक्कर काटना, घूमना मा० १४० 2 एक ओर हो जाना, झुकना—रघु० ६१६, श० २११ 3 होना, घटित होना विनि—, 1 लौटना 2 रुक जाना बन्ध होना म० २५९, मनु० ५७३ 3 हाथ लीपना, मुड़ जाना, अलग रहना देवनात मुद्रान् आदि, बिचरि चक्कर काटना (आम० मे भी) अ० ११०, व्यप, 1 लौटना, बापिस मुड़ना—बेत कय कयमपि व्यपवर्तने—मा० ११८ 2 हाथ लीपना छोड़ देना उत्तर० ५१८, व्या. 1 बापिस जाना, मुड़ना महभूषा ध्यावर्तमाना हिवा—रघु० ११२ 2 पड़ना, हटना, उलट होना—विपयव्यावृत्तकीतुहल विक्रम० ११९, (प्रेर०) प्रतिबन्ध लगाना, मीथिल करना निकाल देना, गिरफ्तार करना—तु शब्द पूर्वार्ध आधर्मेयनि आरी० अपवाद हबोत्कर्ण आधर्मेयिनुवीचर रघु० १५७, सम्, 1 होना, घटित होना—ने यद्योस्त सधृता पंच० १ 2 पैदा होना, उदय होना, फूटना, निकलना 3 घटित होना, आ पड़ना 4. सम्पन्न होना ।

वृत्त (मू० क० ह०) [वृ+वृ] १. छंदा गया, घुना गया 2 रुका गया, पड़ा डाला गया 3 छिपाया गया 4 घेरा गया, लपेटा गया 5 सहमत या सम्मत 6 किराये पर लिया गया 7 बिगाड़ा गया, बिधास्त किया गया 8 सेवित, सेवा किया गया ।
वृत्तिः (स्त्री०) [वृ+कृन्] 1. छंदा, घुना 2 छिपाना डकना, गुप्त रखना 3. वारम्भ करना, निवेदन करना 4. अनुरोध, प्रार्थना 5. बोलना, लपेटना 6 आह्वयदी, बाह, बाह—अ० ७८ ।

वृत्तिकर (वि०) [वृत्ति वृत्त, धर्म धर्मन वाता
लपनेन वाता —र विद्वान् नाम का पद ।

वृत्त (धू० क० वृ०) [वृत् + क्त] १ व्रीचिन विद्यमान
२ चरित मन्त्र ३ सम्पूरित मयान ४ अनुचित
कृत किया गया न गुत्ररुद्रा बीना हुआ ६ गाल
वर्तुलाकार रघु० ११३२ ७ मृत स्वर्गगत ८ दृढ
स्थिर ९ गठित अधोल १० वृत्तराज ११ प्रसिद्ध (दे०
वृत्त) ल कछुवा लस १ बात घटना २ इति
हाम वर्णन रघु १५१६ ३ ममाधार अक्षर
४ प्रवर्तन पेशा होइनवृत्ति व्यवसाय मन्त्र
५ मन्त्राङ्गिका मन्त्र १० १०३ (गणपति) १
१०० अन्त ३ १ आचार्य गुरुवार गति
वर्तन कृत प्रसा कि मन्त्राल या दुर्गल में ६ मन्त्र
मय आचरण पञ्च १ ८ ७ मान हुआ निम्न
प्रचलन या वादुन अथ हय प्रकार के निचय या
प्रचलन वा वादन करना वर्तुल मन्त्र ११३
८ गाल चरा वल की गति ९ छन्द 'गणेश
मात्रा' की कण्ठा क लाघा १० 'वर्तु' गति (विद्व-
वर्ति) दे० गति १ मम० अनुपुष वि
गोल मानवार कु० १२१ अनुसार १ 'कहल
गति' की प्रत्युत्पन्न २ कृत का अनुत्पन्न अन्त
३ प्रवर्तन घटन बात अनारम्भकान्तर
पयाकना सम ग० १ घ० ५ उत्तर० १३
२ समाचार लक्ष गुरुवर्तन को न खलु बलान्
विक्रम० १ रघु० १४८३ ३ वर्णन इतिहास
कथा आध्यान कहानी विषय प्रकरण प्रकार
विष्म ६ दल रति न अवस्था दगा ९ कुलवाग
मर्माष्ट ९ विश्वास अवस्था १० गुण प्रवृत्ति—इर्वाक
कर्मकी लक्ष्म मन्त्रा गति (न०) एक प्रकार
का गद्य अथर्व में पद्य जैसा अन्त वृत्त—वीर
(वि०) मृष्टिन जिसका घटन सत्कार हो चुका हो
—उत्तर० १ वृत्त १ दे० वागी २ मित का पद
३ कदम्ब का पद कल १ दे० उत्तरा का पद
२ वनार का पद लक्ष्म (वि०) जिनने शस्त्र
विज्ञान में पाश्चिप्य ज्ञान कर लिया है—अष्टो० ११११
वृत्ति वृत्त कितन १ अन्वित सत्ता २ टिकना
रहना, कब किसी विशेष स्थिति में होना जैसा कि
विद्वत्काल ग विद्वत्काल में ३ अवस्था दला
४ कार्य गति कृत्य कार्यवाही शस्त्रमन्त्रा
विषयवृत्ति रघु० ३१४३ कु० ३७३ स० ४११५
क्रम, प्रणाली स० २११८ आचार्य व्यवहार
बालकाल 'गणपति'—कुल प्रियसमीवृत्ति लपनीजने
स० ४११८ स० १ वृत्तमीवृत्ति वृत्तवृत्ति
आदि ७ पेशा व्यवसाय काम पेशा, रोजगार जीवन
वर्षा (प्राय मयाम के वर्ष में)—वर्षा के वृत्तवृत्तिनाम्

—रघु० ११८, स० ५१६, पञ्च० ३१२५ ४ जीविका,
समाधाय जीविका के उपाय (बहुधा समाधाय) —रघु०
११२८ स० ७१२ कु० ५१२८, (जीविका के विभिन्न
तथा के लिए दे० मनु० ६१६-६ ९ मजदूरी, बाड़ा
१० क्रियाशीलता का कारण ११ सम्मानपूर्वक वृत्ति
१२ भाष्य टीका, विद्वत्—सद्वृत्ति सविबन्धना
सि० २११२ काविकावृत्ति आदि १३ बन्धन
काटना मुद्रा १४ किसी वृत्त या पक्ष के की परिधि
१५ (व्या०) जटिल रचना जिसकी व्याख्या करने
का आवश्यकता पड़ १६ शब्द की वह शक्ति जिसके
द्वारा किसी अर्थ का अभिधान, सकेत अथवा व्यञ्जना
का तय (य०) शक्ति या अभिधा लक्षणा और
व्यञ्जना के नाम से विख्यात १७ रचना की शैली
(र०) चर है कौनको भारती मावली औ
आरम्भ ११ मम० अनुपुष एक प्रकार
अन्त स० दे० काव्य० १ उपाय जीविका ४
उप १—कवित (वि०) जीविका के अभाव में अन्त
हुल मन्त्र १४११, बन्धन राव बन्ध पञ्च०
१११ छेद जीविका के माधन से बन्धन, बन्ध
वैकल्पिक जीविका का अभाव पञ्च० १११५
वृत्त (वि०) १ किसी भी स्थिति या नियुक्ति में
रहने वाला २ सहाचरी अच्छा वर्तन करने वाला,
(र०) छिपकली गिरगिट

वृत्त 'वृत्त' रक] १ एक श्रम का नाम जिसे इन्द्र ने
मार गिराया था (वह अक्षर का मूर्त रूप माना
जाता है) दे० इन्द्र २ अक्षर ३ बन्धनकार ४ लक्ष्म
बान ६ पर्वत । सम० अरि—विष् (पू०)
सम्पु हृष (पू०) इन्द्र के विद्येपन—द्विर्वापि
पश्चिच्छिद वृत्तवृत्ति कु० ११२०, बाबा हरि
वृत्तवृत्ति स्मरण—७१५६ ।

वृत्ता (अव्य०) [वृ + क्त कित्] १ बिना किसी
अभिप्राय के अर्थ निरर्थक बिना किसी काम के
(बहुधा विशेषण की शक्ति से युक्त) —अर्थ वच
कपीन्द्रसम्प्रदाय में वीर्य हरीया वृत्ता—उत्तर०
३१५५ विद्वत् प्रार्थनासे वृत्ता वच—कु० ५१५५
२ अनावश्यक रूप में ३ मूर्खता से आलस्य पूर्वक,
बेज्याम ४ गहन तरीके से, अनुचित रूप से
(अन्त के कारण से वृत्ता लक्ष्म की अनुवाद 'वृत्त'
निरर्थक अनुचित विषया वा आलसी, फिमा या
सकना है । सम०—वृत्ता बलरत्ता के साथ दृष्टाना,
सामोद ध्यान करना आकार: विषया रूप, बाली
तथावा—कथा बेहूरी बात,—कल्प (मनु०)
अलापर या अर्थ बन्ध,—कल्प वह उपहार जो
प्रतिज्ञा होने पर भी न दिया गया हो,—वृत्ति
(वि०) दुर्बल वृत्त बालक वह बात जो वेत्ताओं

वा पितरों के लिए अमित्रेन न ह्य। वाविन् (वि०)
मिथ्या वाची, - अन्तः स्वयं चेष्टा या कष्ट उठाना ।

वृद्ध (वि०) [वृष् + क्त] (म० अ०) ज्यायस् या वर्षी
यच्, उ० अ० श्रेष्ठ या वृषिष्ठ । 1 बड़ा हुआ, वृद्धि
की प्राप्ति 2 पूर्वविकसित बड़ी उम्र का 3 बड़ा
वयोवृद्ध, बहुत वर्षों का वृद्धास्ते न विचारणीय
कविताः- उत्तर० ५।२५ 4 प्रगत या विकसित
(समाप्त के अन्त में), नु० वयोवृद्ध, धर्मवृद्ध ज्ञान
वृद्ध, आगमवृद्ध 5 बड़ा विनाश 6 एकत्रित साधन
7 बुद्धिमान्, विद्वान्, उ० 1 बड़ा व्यक्ति हेयज्ञ
कीनमाशाय बोधवृद्धानुपस्थितान् रघु० १।६५
१।८, मेघ० ३० 2 योग्य या आदरणीय पुरुष
3 बुद्धि, सत्ता 4 वृषाक्ष, उच्च गुणगुल। सम०-अङ्गुलि
(स्त्री०) पैर का अंगुठा अथवा बड़ाया आकार.
प्राचीन पद्या, उक्त बड़ा बेल, -काकः पहाड़ी कीवा
-माषि (वि०) स्थूलकाय मोटे गेट वाला -प्राय
बड़ाया, -अन्तः प्राचीन ऋषियों का उपदेश बाहुन
आम का वेड, अक्व (पु०) इन्द्र का विशेषण -सप्त
वृद्धजनों की सभा, वृषकम् रुई का गस्तरा कपाम
का गाला, इन्द्रगुल ।

वृद्धा [वृद्ध + टाप्] 1 बूढ़ी स्त्री 2 वज्रजा (स्त्री) ।

वृद्धिः [वृष् + क्तित्] 1 विकास, बड़ोत्तरी, वर्धन
सम्बन्धन पुष्य वृद्धि हरिद्वयदीक्षितेनप्रवेशादिव
बालचन्द्रमाः रघु० ३।२०, तपोवृद्धि ज्ञानवृद्धि बार्ह
2 (चन्द्रमा का) वर्धित होना, चन्द्रमा की कलाओं
का बढ़ना, पर्यायीतस्य सुरहिमाशोः कलाक्षय
स्लाप्यतरो हि वृद्धे रघु० ५।१६ कु० ३।१ 3 वन
की वृद्धि समृद्धि, वनाद्धता - पञ्च० २।११२
4 सकलता, बड़ावन, उल्लसि, प्रगति परिबृद्धि-
त्तरि यतो हि मानिना - शि० १५।१ 5 दीलत
जायदाह 6 डेर, परिमाण, समृद्धय 7 वृष,
व्याज, सरला वृद्धि, चक्रवृद्धि 8 सुवज्रोरी 9 लाभ
कायदा 10 अङ्कोष की वृद्धि 11 शक्ति या राजस्व
का विस्तार 12 (व्या० में) स्वरो का लया करना
या वृद्धि, व, इ, उ, ऋ (बाह्ये लृत्वं ह्यौ या दीर्घं)
और लृ को कमय वा, ऐ ओ, आ और आन् में
बदलना 13 परिवार में (श्रवण के कारण) उपपन्न
बच्ची, वनमाञ्चीक । सम० आजीव - आजीविन्
(पु०) वृषजोर, साहूकार, व्याज पर बसाया उधार
देनेवाला, -जीवलय, -जीविका मृदजोरी, साहूकारी
-व (वि०) समृद्धि की उन्नत करने वाला, वज्रन्
एक प्रकार का उत्तरा, आङ्गुल पुत्रजन्म की उत्पत्ति
पर पितरों का आश, नाभीमुख आश ।

वृक्षः (व्या० भा०-पठन्तु लृट्, लृट्, लृङ् लृङ् और
लृङ् लृङ् में पठ० वर्धते, वृद्ध, इच्छा० चित्तलति या

विशोधयते) 1 विकसित होना बढ़ना विस्तृत होना,
मज्जुन या बलवान् होना फलना समृद्ध होना-अन्या
न्यजस्ररभा वृक्ष वादिनाग्नि न्यु० १२।१२,
१०।७८, धनक्षयं वर्धति जाठराग्नि मुभा० भट्टि०
१६।१३ ११।२६ 2 जारी रखना टिकाऊ रहना
3 उठना, चढ़ना । बघाई का कारण होना - (प्राय
दिष्ट्या के साथ) दिष्ट्या धर्मपत्नीसमागमेन पुत्र
मुखसन्तान वामुष्मान् वर्धा शं० ३ धर्मपत्नी के
मिलने के उपलक्ष्य में प्रायश्चित्त बघाई ही, प्रेर० (वक्ष
यति-ते, वर्धापयति-न मा) 1 विकसित कराना
बढ़ाना, वृद्धिपुष्प करना ऊँचा उठाना ऊँचा करना
उन्नत करना वर्धयन्निव वृक्षानुद्गून्धानुगुणानि
रघु० ६।३१ 2 समृद्ध कराना यजस्वी बनाना
विस्तीर्ण करना बड़ाई करना हि० २।३ 3 बघाई
देना अभिनन्दन करना (इम अथ म वर्धापयति ।
अभि, विकसित होना बढ़ना क्षोण साक्षात्पि
प्राची भूया भूयाऽभिवर्धते नित्यम काव्य० १०
वर्ध प्र वि, विकसित होना बढ़ना, समृद्ध
होना सम्- बढ़ना रघु० ५।६ ।

॥ (प्रा० उ०) वर्धयति-ते) 1 बोलना चमकना ।

वृषक्षान् [वृषे छन्दसि जमानत् किन्] मनुष्य ।

वृषक्षानु [वृष + अक्षानुच्] 1 मनुष्य 2 पना 3 कम,
कार्य ।

वृषत् [वृ + क्त नि० मुम्] 1 किसी फल या पत्ते का
डल, हड्डी -वृन्ताच्छलय हरणि पुष्पमनाकहानाम
रघु० ५।६९ 2 बड़ीपी 3 स्तन की बौड़ी या
अग्रभाग ।

वृन्ताक, की [वृन्त + अक + अण्] बैंगन का पोवा ।

वृन्तिका [वृन्त + कन् + टाप् इत्थम्] छोटा डल ।

वृषव [वृ + दन्, नृम्, गुणाभावः] 1 समृद्धय समृद्ध
बड़ी सख्या, इस अनुगतमलित्वैर्गण्डमिसीविहाय
रघु० १२।१०२, मेघ० ९९ इसी प्रकार अर्ध
2 डेर, परिमाण ।

वृषा [वृष् + टाप्] 1 पवित्र तुलसी 2 गाकुल के निकट
एक वन । सम० अर्धवृष, वज्र गाकुल के निकट
एक जगत् -वृन्दारब्ध वसतिगृधना केवल दुःखहेतु
पदा० ३।८।१ रघु० ६।५० - वृषी तुलसी का
पोवा ।

वृषार (वि०) [वृष् + ऋ + अण्] 1 अधिक, बड़ा,
विनाश 2 प्रयत्न, उत्तम, श्रेष्ठ 3 सुहावना, आकर्षक,
सुन्दर ।

वृषारक (वि०) (स्त्री०-का, -रिका) [वृष् + आरकन्,
पठे टाप्, इत्थम् क।] 1 अधिक, बड़ा, बहुत 2 प्रयत्न,
उत्तम, श्रेष्ठ 3 सुहावना, आकर्षक, सुन्दर, धनीहर
4 आदरणीय, सम्माननीय क। 1 देव, सुर

भिनी बृहस्पतिमतिशिलबृहदारकवृत्त मासि० ४।५
2 विसी मी बीज का मुख्य (समास के अन्त में)
२० (२) ऊपर ।

वृषिष्ठ (वि) [अयमेधामतिशयेन बृन्दारकः इष्टन्,
बृन्दादेश] 1 अत्यन्त बड़ा या विशालनम 2 अत्यन्त
मनोहर, सुन्दरतम ।

वृन्दीयत् (वि०) [‘बृन्दारक’ की म० द० अयमनयोरनिशा-
येन बृन्दारकः - ईयमुन्, बृन्दादेश] 1 अपेक्षाकृत बड़ा
विशालतर 2 अपेक्षाकृत मनोहर सुन्दरतर ।

वृश् (विबा० पर० वृष्यति) छोटना चुनना ।

वृषः [वृष् + क] वृष्टा, -सा एक औषधि अथवा शब्द
अदरक ।

वृषिक [३५५ + ११३] 1 वृषिक 2 वृषिक राजि
3 कंकड़ा 4 कानसबूरा 5 अमृता गीबर का कीड़ा
6 एक रोएदार कीड़ा ।

वृष् (स्त्रा० पर० वर्षन् वृष्ट) 1 बरसना (बहुधा
‘हर’ ‘पर्वन्’ या बादल आदि सार्वभौम शब्दों के साथ
कर्ता के रूप में, या कर्मोक्थी भावात्मक रूप में)
डादशवर्षाणि न वर्षन् दशसताश दश०, काले वर्षन्तु
मेघाः, गर्वा वा वर्ष वा शब्द मूच्छ० ५।३१, मेघा
वर्षन्तु गर्जन्तु मूच्छन्तवर्षानियेव वा - ५।१६ 2 बारिश
करना, उछेलना, बौछार करना - वर्षतीवाञ्जन नम
- मूच्छ० १।३६ इसी प्रकार - वरवृष्टिम् कुसुमवृष्टिं
वर्षति आदि 3 बरमाना डलकाना 4 अनुदान
दना, अर्पण करना 5 तर करना 6 पेड़ा करना,
उत्पन्न करना 7 सर्वोपरि शक्ति रखना 8 प्रहार
करना, चोट मारना, अञ्जि- 1 बौछार करना बर-
साना, उछेलना छिड़कना रघु० १।८४ १०।८८
2 प्रदान करना अर्पण करना, प्र- 1 बरमाना बौछार
करना यस्यायमभित पुण्यं प्रवृष्ट इव केसर - राम०
(उत्तर० ६।३६) ।

11 (वृत्ता० आ० वर्षयन्) 1 शक्तिशाली या प्रमुख होना,
2 उत्पन्न करने की शक्ति रखना ।

वृषः [वृष् + क] 1 साँझ असपदस्तस्य वृषेण गच्छत
- कु० ५।८० मेघ० ५२, रघु० २।३५, मनु० १।१२३
2 वृष राजि 3 किसी वर्ग का मुख्य या उत्तम,
अपने दल का सर्वश्रेष्ठ (समास के अन्त में) अग्नि-
वृषः, कपिवृष आदि 4 कामदेव 5 मज्जबुल या
म्यायास शील व्यक्ति 6 कामातुर, रतिघबो में बर्लिन
चार प्रकार के पुरुषों में से एक वे० रति० ३७
7 शम्भु विषज्जी 8 वृष्टा 9 शिव का नदी बँल
10 नैतिकता भ्याय 11 गुण सत्कर्म या पुण्यकार्य - न
सद्वर्गति स्याद् वृषाजिनानाम् श्रौति० १।६२, (यहाँ
‘वृष’ का अर्थ साँझ ही है) 12 कर्ण का नामान्तर
13 विष्णु का नाम 14 एक विशेष औषधि का नाम

- वृष् शेर का पंख । सम० अक्षय शिव का विशेष-
ण - रघु० ३।२३ 2 पुष्पात्मा, सद्गुणी 3 मिलावी
4 बंद, -कः छोटा डाल, अञ्जनः शिव का विशेषण
- अन्तकः विष्णु का विशेषण, - बाहुरार विमान,
- उत्सर्गः मृत पुरुष के नाम पर दान कर साँझ
छोड़ना, वृषः - बँलकः विलास, वृषः 1 शिव का
विशेषण रघु० १।१४ 2 गणेश का विशेषण
3 सद्गुणी, पुष्पात्मा, वृषिः शिव का विशेषण,
वर्षन् (पु०) 1 शिव का विशेषण 2 एक राक्षस
का नाम जिसने अशुराचार्य बृक्ष की महायज्ञ से बहुत
दिनों तक देवताओं से सचर्य किया, इनकी पुत्री
शमिष्ठा का विवाह ययानि के साथ हुआ - वे०
ययानि और देवयानी 3 बरें, मिररि भस्मा इन्द्र
और देवताओं का आवास - अर्वात् अमरवती,
- कोष्ठाः विलास बाहुन शिव का विशेषण ।

वृषवः [वृष् + वृष्, अञ्कोष, अथवा कोते ।

वृषव् (पु०) [वृष् = कनिष्ठ] 1 साँझ 2 वृषराशि
3 किसी वर्ग का मुखिया - महावीर० १।७ 4 बीजस्थ,
साँझ, घोड़ा 5 पीड़ा, शोक 6 पीड़ा के प्रति अक्षय्यता
7 इन्द्र का नाम - वृषेव सीतां तदवधहजताम् - कु०
५।६१, ८०, रघु० १०।५२, १७।७७ 8 कर्ण का
नाम 9 अथवा का साथ ।

वृषवः [वृष् + वृष् किञ्च] 1 साँझ 2 कोई भी नर
जानवर 3 अपने वर्ग का मुखिया (समास के अन्त
में) द्विवृषवः - रघु० १।५, ४।२१ ४ वृषराशि,
5 एक प्रकार की औषधि - तु० वृषवः 6 हाथी का
तान 7 कान का बिबर । सम० - वृषिः - वृषः
शिव के विशेषण - रघु० २।३६, कु० ३।६२ ।

वृषवी (स्त्री०) [वृषव + व्रीष्] 1 विवाह 2 कवच ।
वृषवः [वृष् = कवच] 1 वृष्ट 2 बोझ 3 लहसुन 4 पानी,
दुष्ट, अर्धमी 5 जाति से बहुलकृत 6 वृषगुप्त
का नाम (विशेषतः वाणव्य द्वारा प्रयुक्त - वे०
मृदा० अक्ष १, ३) ।

वृषलकः [वृषल + कन्] तिरस्करणीय वृद्ध ।

वृषलो [वृषल + व्रीष्] 1 बारह वर्ष की अविवाहित
कन्या राजकुल होने पर भी विवाह न होने के
कारण पिता के घर रहने वाली कन्या - पितृवैह्ये च
मा नारी रथ पश्यन्मनस्कृता भूषहत्या पितृवस्तस्या
या कन्या वृषली स्मृता 2 राजकुल 3 बाल
स्त्री 4 सद्योजान वृष्ये की माता 5 वृष्ट की पत्नी
या वृष्टा स्त्री । सम० - वृषिः वृष्ट स्त्री का पति,
सेवक वृष्टा स्त्री के साथ मयोग ।

वृषसूक्ती (स्त्री०) बरें, मिररि ।

वृषस्यन्ती [वृष् + वृषव्, वृष् शत + व्रीष् नम] 1 मयोग
करने की इच्छा वाली स्त्री (पुरुष में कर्म० के साथ,

रघुनन्दन बुधमन्त्री कुर्णलता प्राप्ता—सहावी० ५
मृष्टि० ५१३० रघु० १२१३४ २ कामाक्षिका या
कामातुरा स्त्री ३ गर्भायी हुई गाय ।

वृषाक्षपात्री [वृषाक्षे पत्नी वृषाक्षि + क्षीय ते
आवेश] १ इसी का विशेषण २ मीने का विज
यण ३ शशी का विशेषण ४ अग्नि की पत्नी स्वाहा
का विशेषण ५ सूर्य की पत्नी उषा का विशेषण ।

वृषाक्षि [वृष. क्षि भस्म—ब० स० पूर्वपदार्थ]
१ सूर्य का विशेषण २ विष्णु का विशेषण ३ शिव
का विशेषण ४ इन्द्र का विशेषण अग्नि का
विशेषण ।

वृषाक्ष (पु०) १ शिव का विशेषण २ गारिया नरिय ।

वृषिन् (पु०) [वृष - इति] मार ।

वृषी (स्त्री०) सन्यासी या ब्रह्मचारी का आसन (वृष
घास से बना हुआ) ।

वृष्ट (भू० क० क०) [वृष क्त] १ बरसा हुआ २ बरसा
हुआ ३ बीछार करना हुआ उड़ेलना हुआ ।

वृष्टि (स्त्री०) [वृष + क्तित] १ बारिश बारिश की
बीछार आदिमात्रावयने वृष्टिकृष्टेरन्त उत प्रजा
मनु० ३१७६ २ (किसी भी वस्तु की) बीछार
अत्रवृष्टि रघु० ३५८ पुष्यवृष्टि २१६० इसी
प्रकार गर० बन उपल० आदि । मम० काल
ब्रह्मन्त का समय बीषण (वि०) बारिश द्वारा
मिचित (प्रवेस), पुष्य देवमातृक भू भंडक ।

वृष्टिपत्न (वि०) [वृष्टि मत्तुप्] बरसने वाला बर
सायी (पु०) बादल ।

वृष्णि (वि०) [वृष् नि कृष्ण] १ वर्षाप्रष्ट पासरी
२ क्रुद्ध कोषाविष्ट (पु०) १ बारल २ भंडा
३ प्रकाश की किरण ४ कृष्ण के किसी पूर्वज का नाम
५ कृष्ण का नाम ६ इन्द्र ७ अग्नि । मम० वर्ष
कृष्ण का विशेषण ।

वृष्य (वि०) [वृष + क्यप्] १ जिसके ऊपर बारिश सब
बीछार की या सक २ कामाक्षीयक बाजीकर पुष्प
बढ़ाने वाला ध्य माघ उडद ।

वृह, वृहत, वृहत्तिका दे० वृह, वृहत् वृहत्तिका ।

वृहती (वृह + अति + क्षीप्) १ माघ की बीजा २ छमीम
की सख्या ३ दुपट्टा योगा आचरण । भाषण
आसय (जैसे ब्रह्मासय) दे० वृहती भी । मम०
—वृत्ति वृहत्पति का विशारण ।

वृहत्पति दे० वृहत्पति ।

वृ (कषा० उभ० वृणानि वृणोत वर्ष कर्मवा० वृषो
इच्छा० वृषीति विरिणगतिने) छात्रना वृनना
(दे० वृ १) ।

वे (प्रा० उभ० वर्यन्ति उत प्रेर० वायव्यनिने)
१ वृनना विनाशकर्मवर्गनि मय पदमौ दे० ३१२

२ बाल वृषना, पीछे लगाना ३ सीता ४ बनाना
वृषना नत्वी करना प्र - १ वृनना २ बोधना,
कसा ३ जमाना स्थिर करना ४ परस्पर वृनना
संघर्ष करना दे० प्रो० ।

वेकट (पु०) १ हगोत्रका २ गौहरी ३ युवा पुत्र ।

वेग [विच् + धञ्] १ आवेग मवेग २ गति प्रवेग
वीथना ३ विक्षोभ ४ अविवेगशीलता प्रचण्डता
बल ५ प्रवाह धारा जैसा कि अम्बुवेग से ६ तेज
विजयीलता सक्त्य ७ शक्ति सम्पद-भदनज्वरस्य
वेगान् ८ ८ मन्वर क्रिया (विष आदि का)
प्रभाव तत्र १० १२२ विक्रम० १११८ ९ शीघ्रता
३ दबावी ४ ११११११११ ११११११ ११११११
१० बाण की गति ११ ११११११ ११ प्रेम प्रणयो
ममद १२ अन्तर्गति नाव का बन्ध प्रकट होना
१३ जानने प्रवृत्ति १४ अन्तर्गति १५ मुक्त वीथ
मम० अग्रिम १ आधो वा अग्र विक्रम० ११३
२ प्रचण्ड वाद आघात १ अकस्मात् वेग १
अवराध गति को रोकना २ मलाबरोध को
वृद्धता नाशन इलेगमा कफ बाहिन (वि०)
स्कूय नेत्र विचारणम् गति का रोकना सर
सम्पन्न ।

वेगान (वि०) (स्त्री० भी) वेग डान। वेड नुर
दुनगामी प्रचण्ड फूँटी १ (पु०) १ हथकारा २ बात्र
भी नदी ।

वेकट (पु०) एक पहाड़ का नाम वेकटाचल ।

वेष्ठा [विच् + अच् + णप्] भाडा मजदूरी ।

वेष्टम् [विच्, अच्] एक प्रकार का चयन ।

वेष्टा [वेष्ट + णप्] विष्ठा नाव ।

वेष्ट, वेन् (प्रा० उभ० वेष्टन्ति वेनन्तिने) १ जाना
हिलना जूलना २ जानना, पहुँचाना प्रत्यक्ष करना
३ विचारविमर्श करना साधना ४ जेना ५ बात्रा
वजाना ।

वेष्ट [वेष् अच्] १ नाएक जाति का पुत्र पु० मनु०
१०११०, वणाना भाइशानन १०१६९ २ एक
राजा का नाम बज्ज का पुत्र और स्वायम्भुव मनु
का सद्यः (अब वह राजा बना तो उसने सब प्रकार
की पूजा व यज्ञादि को बन्द करने का बोधना कर
दी । अगियों ने इसका बड़ा शिरोष किया परन्तु
अब उसने उनकी एक न सुनी तो उन्होंने अभिमन्त्रित
कुशान्त की पत्नी से उसकी हत्या कर दी । अब
देज में कोई शासक न रहा । अत उन्होंने उस
मृतक शरीर की जपा की बसभा तब उसमें से एक
निपाद निबला ही शरीर का मिट्टा तथा चौड़े मुख
वाला बा । उसके पदवान् उन्नीम उसकी दक्षिण
भुजा का ममना तथा न अन्त्य पद (दे० पृष्ठ) का

जन्म हुआ। पद्मपुराण के अनुसार यह बली प्राणि-
शासन करने लगा, परन्तु बाद में यह जैन-नास्तिकता
में पस गया। यह भी कहा जाता है कि उसने
वर्णव्यवस्था में गड़बड़ी फैलाई, तु० मनु० ७।४१,
१।६६-६७)।

बेणा [बेण+टाप्] एक नदी का नाम (जो कृष्णा नदी
में जाकर मिलती है)।

बेणिः—भी (स्त्री०) [बेण् + इन्, डीप् वा] 1 गुंथे हुए
बाल, बालों की मीठी, —नरसिंही बेणिखायना भुव
—सि० १२।७५, मेघ० १८ 2 बालों की एक
अनलकृत छोटी जो पीठ पर लटकती रहती है (कहा
जाता है कि बही स्त्रियाँ ऐसी छोटी करती हैं जिनके
पति घर पर न हों) बतायिबन्तन रघुनमेन मुक्ता
म्वय बेणिः ४.२भासे—रघु० १४।१२, अबलाबेणि
प्रबोह, घारा, सरिता बलबेणिरम्या रेवां यदि
प्रेक्षितुमस्ति कामः—रघु० ६।४३ मेघ० २९, तु०
'त्रिवेणी' शब्द की भी 4 हो या अधिक नदियों का
संगम 5, घाग, यमुना और सरस्वती का संगम 6 एक
नदी का नाम। सध०—अन्धः गुंथे हुए बाल, मीठी
रघु० १०।६७,—बेचनी जोक,—बेचनी कधी,
—संसारः 1. बालों को गुंथ कर मीठी बनाया बेणी०
६ 2 भट्टनारायणकृत एक नाटक का नाम।

बेणुः [बेण् + उण्] 1 बौत, मन्त्रेण्डि स्थितो वेणुर्वेणुरेव
न वेदनम् सुभा०, रघु० १२।६१ 2. नरकुल
3 बमरी, मुरली —नामसमेन कुतमकेन वादयते मृदु
वेणुम पीत० ५। सम० अः बौम का बीज,
पद्म बौमुरो बजाने वाला, मुरलीवाला, निरुतिः
इव—घण्टि बौम की लकड़ी, बाबाः, बाबकः
मुरली वाला बौमुरो बजाने वाला बीजम् बौम का
बीज।

बेणुकम् [बेण् कन्] बौम की मूठ शला अकृषा।

बेणुमम् [बेण्] जनन [काली मिर्च]।

बेत (द) डः (पु०) हाथी भासि० १।६२।

बेतनम् [अच् + तन् वीभावः] 1 किराया, मजदूरी,
भति, नतकवाद, इति—रघु० १७।६६ 2 आजीविका,
जीवननिर्वाह का माध्यम। सम०—अवामम्,—अवामाकम्
(नपु०), अन्तपक्रिया 1. पार्थिविक या मजदूरी न
देना 2 मजदूरी न मिलने के कारण किया गया
प्रयत्न। औचित्य (पु०) बताने वाला, वैतनिक।

बेतसः अच् + तन् व, वीभावः] 1 नरसल नरकुल,
बेत शीतलज्वरमार्ग बेतमन्त्रकन्माषव मा स्म
अजययाः सि०—१६।५३ रघु० १७।७५ 2 नीच,
बिजौरी।

बेतली [बेतस् + डीप्] नरसल,—बेतसीतस्ते—काव्य० १।

बेतस्वम् (वि०) (स्त्री०—ली) [बेतस् + इमनुप्, मय्य
व] जहाँ नरकुल बहुनायन से पाये जायें।

बेतालः [अच् + बिच्, वी आदेशः, तल् + बच् कर्म०
सं०] 1. एक प्रकार की मृत्योनि, पिशाच, प्रेत,
विशेषकर रात पर अधिकार रखने वाला मृत—मा०
५।२३, सि० २०।६० 2 द्वारपाल।

बेणु (पु०) [बिद् + तुच्] 1. जाना 2. ऋषि, मृनि
3 पति, पाणिग्रहीता।

बेजः [अच् + जल्, वी भावः] 1. बेत, नरसल 2. काठी,
छड़ी, विशेषकर द्वारपाल की छड़ी,—वामप्रकोष्ठार्थि-
हेमवेत्त—कु० १४।११। सम०—आसन्नम् बेंत की
बनी गयी,—बजः—बारकः 1 द्वारपाल 2 आसपाशी,
छड़ीबगदर।

बेजकीय (वि०) [बेज + क्, कुक्] बेजबहुल जहाँ नरकुल
बहुन पाये जायें।

बेजबली [बेज + मनुप् + डीप्] 1. स्त्री द्वारपाल 2. एक
नदी का नाम मेघ० २४।

बेजिन् (पु०) [बेज + इनि] 1 द्वारपाल, बरबान
2. बोबदार।

बेच् (प्रा० वा० बेचस्ते) प्रार्थना, निवेदन करना, कहना।

बेचः [बिद् + बच्, अच् वा] 1 ज्ञान 2 आध्यात्मिक
या धार्मिक ज्ञान, हिन्दुओं के धर्मग्रन्थ (मूलरूप से
केवल तीन वेद थे, ऋग्वेद, यजुर्वेद, और सामवेद विभिन्न
मर्मदृष्टि से 'त्रयी' कहते थे परन्तु बाद में 'अथर्ववेद'
उनके साथ जाड़ दिया गया। प्रत्येक वेद के दो
भाग हैं—मन्त्र यः स्मृति पाठ तथा बाह्य भाग।
हिन्दुओं की निरं, धर्मनिष्ठता के अनुसार वेद
अपीरवेय (जो पृथक् द्वारा की गई रचना न हो)
हैं, क्योंकि वह परमात्मा से प्रकट हुए या सुने गये हैं,
इसीलिए उन्हें 'स्मृति' कहते हैं, इसके विपरीत 'स्मृति'
अर्थात् जो बाद रक्थे जाय या जो पुरुषों की कृति हो,
दे० 'स्मृति' तथा 'स्मृति' भी, इसीलिए बहुत से ऋषि
त्रिनका नाम वेद के मूलों से मजदूर हैं 'प्रष्टारः देवने
वाले कहलाते हैं, उन्हें 'कवीर' या 'अष्टार' अर्थात्
रचयिता नहीं कहा जाता) 3. कुशा घाम का गुच्छा
मनु० ४।३६, 3 विष्णु का नाम। सम०—अकृषम्
'वेद का अंग' एक प्रकार के पन्थ जो मन्त्रोच्चारण,
व्याख्या और मन्त्रारो में उच-उच सही श्रितियोग में
मद्वाबता देने के लिए प्रयत्न होते हैं ज्ञान वेदाध्ययन
में मयायक है। (वेदांग विषयो मे वः हैं 1 शिक्षा
अर्थात् उच्चारण-विज्ञान 2 छन्दः सन्ध शास्त्र,
3 मन्त्राकरण 4 निरुक्त अर्थात् वेद के कठिन शब्दों
की निर्वचनपरक व्याख्या 5. उपोनिष अर्थात् तत्त्व-
विद्या या गणितउपोतिथ और 6. कल्प अर्थात् कर्म-
काण्ड या अनुष्ठानपद्धति), अधिवक्, अथर्ववेदम्

धार्मिक अध्ययन, वेदाध्ययन, अध्यापकः वेद का पढ़ाने वाला, बर्तमान, —अन्तः १ 'वेद का अन्त' (वेद के अन्त में बाने वाली) उपनिषद् २ हिन्दुओं के छ मुख्य दर्शनों में अन्तिम दर्शन 'वेदान्त' इसलिए कहलाता है कि यह वेद के अन्तिम ध्येय और कार्य-क्षेत्र की शिक्षा देता है, या इसलिए कि यह उन उपनिषदों पर आधारित है जो वेद का अन्तिम भाग हैं), (दर्शन की इस पद्धति को कभी-कभी 'उत्तरमीमांसा' के नाम से पुकारते हैं, यही मैमिनि की पूर्वमीमांसा का उत्तरार्थ, या अन्तिम भाग है, परन्तु व्यवहार में यह एक स्वतंत्र शास्त्र है, दे० मीमांसा, यह हिन्दुओं के 'सर्व अन्तिम ब्रह्म' के सर्वोत्तरवाद का प्रवर्तक है, इसके अनुसार सत्यतः विषय एक ही अर्थात् शक्ति अर्थात् ब्रह्म या परमात्मा का तत्त्विलक रूप है, दे०

'ब्रह्मन्' भी) 'व', 'जः', वेदान्त दर्शन का अनुयायी —अन्तिम् (पु०) वेदान्त दर्शन का अनुयायी —अर्थः वेदों का अर्थ, अन्तस्तः वेदों का प्रकटीकरण, अर्थात् ईश्वरीय मन्त्र —आवि (नपु०) —आविर्भावः —आविर्भावः 'बोम्' की पुनीत ध्वनि, उक्त (वि०) शास्त्रमन्त्र, वेदविहित, औपनिषदः शिव का विशेषण, अर्थः १ ब्रह्म का विशेषण २ वेदों का आदा ब्राह्मण अः वेदों को जानने वाला ब्राह्मण, —अयम्, प्रथी मामूहिक रूप में तीनों वेद, —निष्कः नास्तिक पाश्चात्त्य, अज्ञाहीन (जो वेद के स्वरूप तथा उसके अर्थोपदेश्य पर विश्वास नहीं करता है), निष्ठा अविज्ञान, पाश्चात्त्य, पाश्चात्त्य वेदों में पाश्चात्त्य ब्राह्मण अन्तः (स्त्री०) वैदिक पुनीत मन्त्र, पाश्चात्त्य अयम् अयम् वेद का मूलपाठ, अयम् व्याकरण अन्तः ब्राह्मण ब्राह्मण (वि०) वेद के विषय, जो वेद में उपलब्ध न हो

विद् (पु०) वेदविद्यार्थ ब्राह्मण, विहित (वि०) वेदों में अयम् विद्या पाशा ज्ञाय, व्यासः व्यास का विशेषण अयम् वेदों को वर्तमान रूप दिया है, दे० व्यास, संव्यास वेदों के कर्मकाण्ड का व्यास।

वेदम्, वेदम् [विद् + ल्यट्] १ ज्ञान, प्रत्यक्षज्ञान २ ज्ञान, अवेदन ३ पीडा समाप, स्वेच्छा, अ वि अवेदना कुलितज्ञानान् कु० ११० २५० ८५० ४ अविज्ञान, लीलित ज्ञायदा ५ विवाह - अन्तः ३१४४, ९१५५, याज्ञ० ११६२।

वेदः [वेद + ल्यट् + अण्] निरुद्ध।

वेदिः [विद् + इत्] विद्वान् पुरुष, अग्नि, पंडित, वि, —वी (स्त्री०) १ यज्ञार्थ के लिए तैयार की हुई अग्नि वेदी, २ वेदी विशेष जिसके मध्यवर्ती किनारे परस्पर मिले हुए हों—अयम् या वेदिविलम्बयम्— कु० ११३७

(कुछ लोग इस शब्द का अर्थ इस स्थान पर 'गोहर' की बन्दी' समझते हैं ३ किसी मन्दिर या महुल का चौकोर सहन ४ मुद्रा—अन्तः ५ सरस्वती ६ मूलशब्द, प्रवेश। अन्तः—आ गोपदी का विशेषण, क्योंकि यह राजा रूप की यज्ञवेदी के मध्य से उत्पन्न हुई थी।

वेदिका [वेदी + कन् + टाप्, ल्यप्] १ यज्ञभूमि या वेदी ३ यज्ञतारा उच्चममलक्ष्मि (जो प्रायः अग्निहोत्रों के लिये ठीक की गई हो) —सप्तपदीवेदिका - श० १, कु० ३१४४ ३ आसन ४ वेदी, वेप, टीला, मन्दाकिनीसंकलवेदिका वि० कु० ११२९, 'वेदो या रेत के टोके बना कर' ५ आसन में बीच में बना चौकोर यज्ञतारा ६ लतामहप, निकुञ्ज।

वेदिन् (वि०) [विद् + चिन्] १ ज्ञाना जैसा कि 'कृत-वेदिन्' में २ विवाह करने वाला (पु०) १ जानकार २ अध्यापक ३ विद्वान् पुरुष ४ ब्राह्मण का विशेषण।

वेदी दे० वेदि (स्त्री०)।

वेद्य (वि०) [विद् + ध्यत्] १ ज्ञान होने के योग्य २ व्याख्येय या शिक्षणीय ३ विवाहित होने के योग्य।

वेद्य [विद् + क्यत्] १ छेद करना बीजना, छिन्न युक्त करना २ बाधन करना, बाध ३ छिन्न, बुराई या मर्त ४. (बुराई की) गहराई ५ समय की माप विशेष।

वेद्यकः [विद् + क्यत्] १ नरक के एक प्रभाग का नाम २ कपूर, कम्बु बाल में विद्यमान बाधक।

वेद्यमय [विद् + ल्यट्] १ छेदने या बीजने की क्रिया २ प्रवेशन, छेदन ३ क्षुब्धीकरण, वेद्यन ४ बुद्धिमान पाठन करना ५ (बुराई की) गहराई।

वेद्यिका [वेद्यनी + कन् टाप् ल्यप्] एक तेज नाव वाला उपकरण जिसमें गणि या मीप आदि में छिद्र किये जाते हैं, अर्थात्।

वेद्यनी [वेद्यन - डीप्] १ हाथी का कान बीजने वाला उपकरण २ एक तेज नोक का मीप व गणि आदि को बीजने वाला उपकरण अर्थात्।

वेद्यत् (पु०) [विद्या + अन्तु गृण्] १ श्रष्टा या० ११२ २ ब्रह्मा विद्याता त वेद्या विद्यते नूनं महा भूतमायिना रच० ११२९, कु० २११६, ५१६१ ३ गीण मृष्टिकर्ता (जैसे कि ब्रह्मा से उत्पन्न दस प्रजागणि) कु० २११६ १ शिव २ विष्णु ६ सूर्य ७ महार का पीठा ८ विद्वान् पुरुष।

वेद्यसम् [वेद्यम + अन्] अग्रे की अद के नीचे का हथेली का भाग।

वेद्यत (अ० व० क०) [वेप + इतप्] बीजा हुआ छिद्रित।

वेन् (अ० उ० वेननि ने) दे० वेन्।

वेन्ना दे० वेना।

वेष् (म्भा० ऋ० वेपते, वेपित) कापना, हिलना, चर-
बराना, लरबना—कुटाञ्चलिकर्षमाण किरीटी,—अम०
१११५, रघु० १११५, प्र० चरचराना, बड़कना,
कापना—कु० ५१२७, ७४।

वेष्णुः [वेष्+अणुष्] चरचरी, कंपकपी, (स्तनों का)
हिलना अर्थात् स्तनवेपणम् अयति श्वास प्रमाणा-
धिक श्वा० ११३०, शि० ११२२, ७३, रघु० १११
२३, कु० ४११७, ५१८५।

वेष्णम् [वेष्+ल्यट्] चरचरी, कंपकपी।

वेष्, वेष्ण (पु०, नपु०) [वे+मन्, मनिन् वा] कर्षा
सदृशी महासिध्दन् सहस्रचरी बहुम्—ने० १११२,
तुरीयेमाधिकम् तर्क०।

वेष्ट, एष्ट [अच्+रन्, बीमाव] 1 शरीर 2 केसर
काफरान 3 वेगन।

वेष्टः (पु०) नीचे कुछ छोटी जाति का पुष्प टम्
वेष्ट का फल।

वेष्टः 1 (म्भा० पर० वेल्ति) 1 जाना, हिलना झुलना
2 हिलना, इधर उधर घूमना, कापना।

11 (चुरा० उम० वेल्मति ते) समय की गणना
करना।

वेल्म् [वेल्+अच्] उछान, हाटिका।

वेला [वेल्+टाप्] 1 समय—वेलापलक्षणार्थमादिटोऽन्मि
—श० ४ 2 शत्रु, अवसर 3 विश्राम का अन्तराल
अवकाश 4 लहर, प्रवाह धारा 5 समुद्र तट,
समुद्री किनारा वेल्नालिप्य प्रस्ता भूजङ्गा रघु०
१३१२, १५, १३०, ८१८०, १७३३, शि० ३१७०
१३८ 6 सीमा हदबन्दी 7 भाषण 8 बीमारी
9 सहज मृत्यु 10 मसूदे। सम० कुलम् नाप्रलिप्त
नायक त्रिला,—ब्रूल्म समुद्र-तट, बन्म समुद्रीकिनारे
का अंगल।

वेल् (म्भा० पर० वेल्ति) 1 जाना, हिलना-झुलना
2 हिलाना, कापना, इधर उधर फिरना भागम
११५५ शि० ७१७२।

वेल्कः, वेल्कणम् [वेल्+अच्, ल्यट् श] 1 हिलना
गतिशील होता 2 (भूमि पर) लोटना।

वेल्कल्ल [वेल्+हवल्+अच् पुषो] सम्पट
दुराचारी।

वेल्कि (स्त्री०) [वेल्+इन्] लता, वेल् नु० बलि।

वेल्किल्ल (पु०+क०+कु०) [वेल्+कन्] 1 कपायमान
चरचराने वाला, हिलाना हुआ 2 देहा-मेढ्रा तम्
1. जाना, चलना—फिरना 2 हिलना।

वेष्टी (अदा० ऋ० वेष्टीते) 1 जाना 2 प्राप्त करना
3. गर्भधारण करना, गर्भवती होना 4 व्याप्त करना
5 हास देना, फँकना 6 जाना 7 कामना करना,
चाहना (शास्त्रीय साहित्य में चिरल प्रयोग)।

वेष्टः [विष्+अच्] 1. प्रवेशद्वार 2 अन्त प्रवेश,
पैठना 3 घर, आवासस्थल 4 वेष्टाओं का घर,
बकला,—तत्पञ्चमसहायविषमपना वेष्टावास मूच्छ०
११३१ 5 पोशाक, वस्त्र, कपड़े (इस अर्थ में 'वेष्ट'
भी लिखा जाता है) मृगयावेष्टाचारी,—विनीतवेष्ट
—श० १, कुनवेष्टे केष्टवे गीन०११। सम०
—वानम् मूरवमुक्षी फल,—चारिन् (वि०) छप-
वेष्टी, कपटकपचारी—नारी, वनिता वेष्ट्या—मुद्रा०
३११०—वातः वेष्ट्याओ का घर, बकला।

वेष्टक [वेष्ट+कन्] घर।

वेष्टणम् [विष्+ल्यट्] 1 प्रवेश करना, प्रवेशद्वार
2 घर।

वेष्टान् [विष्+ल्यप्] 1 छोटा तालाब, पोखर 2 आग।

वेष्टरः [वेष्ट+रा+क अञ्चर]।

वेष्टम् (नपु०) [विष्+मनिन्] घर निवासस्थान
आवास भवन, महल—रघु० १४१५ वेष्ट० २५,
मनु० ४१७३ ११८५। सम० कब्जम् (नपु०) घर
बनाना कलिङ्ग एक प्रकार की चिड़िया,—लकुलः
छकुन्दर भू (स्त्री०) बहु स्थान जहाँ घर बनाना
है अवनतिमार्ग के लिए मूखण्ड।

वेष्टम् विग व्यत वेष्टाय हित वा यत् वेष्ट्याओ
का घर बकला।

वेष्ट्या वेष्टो पश्ययोगेन जीवति वेष्ट+यत्—टाप्]
बाज्रक स्त्री रडो गणिका, रमैल मूच्छ० १३२,
मध० ३५ यात्र० ११४१। सम०—आचार्य 1 बहु
पुत्र जो वेष्ट्याओ का स्वामी हो उन्हें रमता हो
2 अड्डा 3 लौंडा गँड़ आभय वेष्ट्याओं का
वासस्थान बकला तन्मम् व्यभिचार रडोबाजी
गृहम् बकला, ५५ रडो, पण भोग के लिए
रडो को दो जाने वाली मजदूरी।

वेष्टवर (पु०) लञ्चर।

वेष्ट १० वेष्ट।

वेष्टणम् [विष्+ल्यट्] अधिकृत वस्तु स्वामित्व कब्जा।

वेष्ट (म्भा० ऋ० वेष्टते) 1 घेरना, अहाता बनाना घेरा
डालना लपेटना 2 बाजी देना सरोडना 3 वस्त्र
पहनना। घेर० (देष्टयति ते) 1. घेरना 2 घेरा-
बन्दी डालना आ० तह करना परि० सव्—पर-
स्पर तह करना लपेटना, सरोडना उठेठना।

वेष्ट [वेष्ट+अच्] 1 घेरा घिराव 2 बाड़ा बाड़
3 पगड़ी 4 मोद रात रम 5 तारपीन। सम०
—वस्त्र एक प्रकार का बाँस सातः तारपीन।

वेष्टः [वेष्ट+अणुल्] 1 बाधा बाड 2 लौकी—कम्
1 पगड़ी 2 बादर, लबादा 3 मोद, रत
4 तारपीन।

वेष्टणम् [वेष्ट+ल्यट्] 1 लपेटना, चारो ओर से घेरना,

बेराबन्दी करना, —अशुलिवेष्टनम्, 1. अगुठी
2 कुंडलित होना, बोल बरोड़ी लेना, रघु० ४।१८
3 लिकाका, लपेटन 4 ओढ़नी, बकना, सड़क 5 पगड़ी,
विशुद्ध —अस्पृष्टालकवेष्टनी रघु० १।४२, शिरसा
वेष्टनछोभिना - ८।१२ 6 बाडा, घेर - कीडाघोल
कनकवलीवेष्टनप्रेतपीय - वेष्ट० ७७ 7 तगड़ी, कमर
बन्द 8 पट्टी 9 बाहरी कान 10. गुगुल 11 नृत्य
की विशेष मूत्रा ।

वेष्टनकः [वेष्टन + कन्] समोच के अवसर की विशेष
अवस्थिति ।

वेष्टित (भू० क० क०) [वेष्ट् + क्त्वा] 1 घिरा हुआ,
बेरा हुआ, चारों ओर से लपेटा हुआ बन्द किया
हुआ 2 लिपटा हुआ, बस्त्रों से सुसज्जित किया हुआ
3 ठहराया हुआ, रोका हुआ विघ्न डाला हुआ
4 बेराबन्दी किया हुआ ।

वेष्टः, वेष्ट्यः [विष्टे प] जल, पानी ।

वेष्ट्याः दे० 'वेष्ट्या' ।

वेष्टरः [वेष्ट् + अरन्] सफर - शि० १२।१० ।

वेष्ट (छ) बाहः [वेष्ट् + भू + अण्] यम मसाला, (गीरा
राई, मिर्च, अदरक आदि के योग से तैयार किए
गये मसाला) ।

वेष्ट्, (स्त्री० जा० वेष्टेन्) दे० वेष्ट ।

वेष्ट् (स्त्री०) [विशेषण द्विजि यममं - बि + हन् +
अति] बाध गौ ।

वेष्टारः [= बिहार, पृथा० । एक देश का नाम, बिहार ।

वेष्ट्, (स्त्री० पर० वेष्टने) जाना - हिलना - गुलना ।

वे (स्त्री० पर० बायति) 1 मूलना, गुच्छ हाता
2 स्थान, निशान, अवस्थान ।

वे (अव्य०) [वा । है] स्वीकृति या निश्चयवाचक
अव्यय (निमन्हेह, मयमूव, वस्तुन) पान्थ कवच
पूरक के रूप में प्रयुक्त आपः वे तन्मनव मनु०
१।१०, २।२३१ १।४० ११.७७ यत्र कभी कभी
सम्बोधन के रूप में भी प्रयुक्त होता है तथा कभी कभी
अनुनय को प्रकट करता है ।

वेष्टिक (बि०) (स्त्री० की) [वेष्टिक + अण्]
बीम में मोल लिया हुआ ।

वेष्टकम् [विशेषण कर्मान् व्याप्तीनां अण्] 1 एक
मात्रा या यशोपवीत की भांति एक वस्त्र के ऊपर से
तथा दूसरे कपड़े के नीचे से चारण की जाती है
2 उत्तरीय बन्द, बोगा ओढ़नी ।

वेष्टकम्, वेष्टकम् [वेष्टक + कन्, ठन् वा] यशोपवीत
की भांति बायें कंधे के ऊपर तथा दायें कंधे के नीचे
से पहनी जाने वाली मात्रा ।

वेष्टिकः (पु०) बाहरी ।

वेष्टनः [वेष्टनस्वापत्यम् - अण्] कर्म का नाम ।

वेष्टनम् [वेष्टन + अण्] 1. ऐच्छिकता 2 सत्त्व,
सविनयता 3 अनिश्चय, असमय ।

वेष्टिक (बि०) (स्त्री० की) [वेष्टिक + ठक्]
1 ऐच्छिक 2 सदिग्ध, ससमय, अनिश्चित, अनिर्णीत ।

वेष्टनम् [वेष्टन + व्यञ्] 1 वृद्धि, कमी, अच्युतपन
2 अज्ञान, विकलाङ्ग या पगु होना 3. बलमत्ता
4 विज्ञान, हृदबली, उत्तेजना, 5 अनस्तित्व ।

वेष्टारिक (बि०) (स्त्री०-की) [वेष्टार + ठक्] 1. वेष्टार-
विषयक 2 वेष्टारशील 3 विकृत ।

वेष्टाल [वेष्टाल + अण्] तीसरा पहार, मध्याह्नोत्तर काल,
मायकाल ।

वेष्टालिक (बि०) (स्त्री०-की) वेष्टालीन (बि०)
[वेष्टाल + ठक्, ल वा] सायकालसम्बन्धी या साय-
काल के समय घटित होने वाला ।

वेष्टुष्टः [वेष्टुष्टया भाषाया भव अण्] 1 विष्णु का
विशेषण 2 हृद का विशेषण 3 तुलसी का पोषा,
ठक् 1 विष्णु का स्वयं 2 अव्यक्त । सम० चतु-
र्वेदी कारिकाशुभला कीदृश - स्त्रीकः विष्णु की दुर्नया ।

वेष्टु (बि०) (स्त्री० की) [वेष्टु + अण्] 1. परि-
वर्तित 2 बदला हुआ - सम 1 परिवर्तन, बदल-बदल,
हैरान 2 अर्थ अगुप्या, घिनोपायन 3 अवस्था
या सूरत शकल में परिवर्तन. विकल्पता आदि नै०
हा० 4 अपशकुन, कोई भी अनिष्टप्रसूचक घटना
तत्परीपणवनादि वेष्टुन प्रेक्ष्य रघु० १।१६२ ।
सम० चिह्नी. दुर्घटा दयनीय दशा, कष्टवस्तु-वेष्टुन
विवर्तराशेण मा० १।३११ ।

वेष्टुनिक (बि०) (स्त्री०-की) [वेष्टुन + ठक्] 1 परि-
वर्तित सहायित 2 वृद्धित सम्बन्धी (साक्ष्य० में) ।

वेष्टुनम् [वेष्टुन + व्यञ्] 1 परिवर्तन, बदल-बदल
2 तुल्य (गति दयनीय दशा 3 अगुप्या ।

वेष्टालम् [वेष्टाल्या दीप्त्यति वेष्टाल् + अण्] एक
प्रकार का रत्न ।

वेष्टलम्, वेष्टलम् [वेष्टल + अण्, व्यञ् वा] 1 गडबडी,
विज्ञान बलगाहट 2 दुस्सह हलचल 3. कष्ट, दुःख,
शोक, रज श० १।६, वणी० ५, मृच्छ० ३ ।

वेष्टरी [विशेषण ल गति-रा० क० अण् + ठीप्] 1 स्पष्ट-
उन्माद्यण ध्वनि-उन्मादन दे० कु० २।१७ पर मल्लि०
2 वाक्यशक्ति 3 वाणी, भाषण ।

वेष्टानस (बि०) (स्त्री०-की) [वेष्टानसस्य इदम्-अण्]
किमा बानरस्य, मग्गासी, या मिधु आदि से सम्बद्ध,
वेष्टानस किमनया वतमाप्रदानाद् व्यापारदोषि
मदनस्य नियमितव्ययं स० १।२७, लः वीरानी,
बानरस्य, नीसरे ब्राह्मण में बात करने वाला ब्राह्मण
- रघु० १।४२८, मद्रि० १।४१ ।

वेष्टनम् [वेष्टन + व्यञ्] 1. वृत्त वा विशेषण का अभाव

वैकुण्ठ (स्त्री०) वैकुण्ठम् [विहृत् + कृष् + क्रीप्, विहृत् + कृष्] ज्ञान, अविद्यम, बुद्धिमत्ता ।

वैकुण्ठ (वि०) (स्त्री०-की) [विहृत् + कृष्] विहृत् से उत्पन्न या लाया गया, संयुक्त वैकुण्ठ मणि, नीलम — कु० ७।१०, छि० ३।४५ ।

वैदेहिक (वि०) (स्त्री०-की) [विदेश + ठक्] दूसरे देश से लब्ध रखने वाला, अन्य देश का, और देशों से लाया हुआ, —कः अन्य देश का स्थिति विदेशी ।

वैदेहिक [विहृत् + कृष्] विदेहीपन, विदेही होना ।

वैदेहः [विहृत् + कृष्] 1 विदेह देश का राजा 2 विदेह का रहने वाला 3 व्यापारी वैश्य 4 ब्राह्मण स्त्री में वैश्य पुत्र से उत्पन्न सन्तान मनु० १०।११, हा।पु० २०।२० विदेह देश के राष्ट्रजन — ही सेना — वैदेहिगणोद्भव विदेह रघु० १४।३३ (यहाँ 'वैदेही' शब्द का अन्तिम स्वर ह्रस्व कर दिया गया है) ।

वैदेहकः [वैदेह + कन्] 1 व्यापारी 2 वैदेह (४) ।

वैदेहिक [विहृत् + ठक्] मौदाग ।

वैद्य (वि०) (स्त्री०-की) [वेद + यत्] 1 वेद सम्बन्धी आध्यात्मिक 2 आयुर्वेद सम्बन्धी आयुर्वेद विषयक कः [विद्या अन्ति अस्म्य विद्या + कृष्] 1 विद्वान् पुत्र, विद्यावान्, पण्डित 2 आयुर्वेदशास्त्र, चिकित्सक वैद्ययन्त्रविभाषिन गद न प्रवीण इव वायुमन्त्रयाग रघु० ११।५३, वैद्यानामातुरं वैद्यान् — मुभा० 2 वैद्य जाति का पुत्र, जो अक्षयकुर समझा जाता है (वैश्य स्त्री में ब्राह्मण द्वारा उत्पन्न सन्तान) । मम० किञ्च वैद्य का व्यवसाय चिकित्सक के रूप में अग्राह्य, नाश 1 चन्त्यारि 2 मित्र ।

वैद्यक [वैद्य + कन्] वैद्य चिकित्सक, कृष् चिकित्सा विज्ञान ।

वैद्युत (वि०) (स्त्री०-की) [विद्युत् + कृष्] बिजली अ सम्बद्ध या उत्पन्न बिजली वृक्षस्य वैद्युत इवाग्नि मन्त्रिन्त्यायम विक्रम० ६।१०, उत्तर० ५।१३, मम० अग्नि, अनल बल्ल बिजली की आग ।

वैद्य (वि०) (स्त्री०-की), वैद्यिक (वि०) (स्त्री०-की) [विधि + कृष्, ठक् वा] 1 नियम के अनुरूप, व्यवस्थित, विधिवत्, कर्मकारणव्यवहक 2 कानूनी विधि या कानून सम्बन्ध ।

वैद्यम्य [विद्यम + कृष्] 1 असमानता, भिन्नता 2 लक्षण गुणों का अन्तर 3 कर्तव्य या आभार का अन्तर 4 वैपरीत्य 5 अवैधता शरीरस्थि, अग्राह्य 6 पाषाण ।

वैद्यकः [विद्या + ठक्] विद्या का पुत्र ।

वैद्यक्य [विद्या + कृष्] विद्यवापन, कु० ६।१, मालवि० ५ ।

वैद्यक्य [विद्युत् + कृष्] 1 शोकावस्था 2 बिजली घरघरी, मिहृत् ।

वैद्येय (वि०) (स्त्री०-की) [विधि + ठक्] 1 नियमानुकूल, विहित 2 मूर्ख, बुद्ध, जड, कः मूढ़, जडमति — प्रक-पारथेय वैद्येय श० २ विक्रम० २ ।

वैद्येयः [विन्ता + ठक्] 1 गण्ड — वैन्देय इव विन्ता-नन्दन — का० रघु० ११।५९, १६।८८, अम० १०।३० 2 अरण्य ।

वैद्यिक (वि०) (स्त्री०-की) [विनय + ठक्] 1 सिष्टता सौजस्य सदाचारण या अनुशासनसम्बन्धी 2 सिष्टा चार का व्यवहार करने वाला क सामरिक रव ।

वैद्यायक (वि०) (स्त्री०-की) [विनायक + कृष्] गणेशसम्बन्धी मा० १।१ ।

वैद्यायिक [विनाय स्वप्नमधिकृत्य कृतो ग्रन्थ विनाय ठक्] 1 शौड मन्त्रदाय के दर्शन-सिद्धान्त 2 उत्त मन्त्रदाय का अनुयायी ।

वैद्यायिक [विनाय + ठक्] 1 दाम 2 मन्त्री 3 उद्योतिषी 4 शौड के सिद्धान्त 5 उत सिद्धान्त का अनुयायी ।

वैद्योक्त द० विनीतक ।

वैपरीत्यम् [विपरीत + कृष्] 1 विराविना विरोध 2 असमानता ।

वैपुम्यम् [विपुल + कृष्] 1 विस्तार, विशालता 2 पुष्पलता, बहुतायत ।

वैपुम्यम् [विकल + कृष्] निर्गन्धकता विकलता ।

वैद्योषिक [विद्या + ठक्] 1 बीकीदार 2 विशेषकर वह जो रात में सोने वाला को पहला देने समय समय का घोषणा करके जगाना रहता है कि० २।७४

वैधवम् विम अग 1 बहापन यश महिमा, धर्मक दमक ठाठ-जाट दोलन 2 शक्ति नाकत कि० १२३ ।

वैद्यविक (वि०) (स्त्री०-की) [विद्या + ठक्] ऐच्छिक, वैकल्पिक ।

वैद्यम् (तप०) विष्णु का वैकुण्ठ ।

वैद्यवम् [विद्या + कृष्] स्वर्गीय उपवन या उद्यान ।

वैद्यम्य [विनय + कृष्] 1 मनभेद अनन्य 2 नाप मर्दाग अन्ध ।

वैद्यनस्वम् [विनय + कृष्] 1 मन का उच्छ्वास, मानसिक अवसाद शोक उदासी — श० ६ 2 रोष ।

वैद्याय, वैद्याय्येय [विद्या + कृष्, ठक् वा] सीतेजी माँ का बेटा ।

वैद्याय, वैद्याय्येय [विद्या + ठक्, ठीप् वा, वैद्याय्येय, ठीप्] सीतेजी माँ की बेटा ।

वैद्यायिक (वि०) (स्त्री०-की) [विद्या + ठक्] वैद्याय में आधीन, —कः यमविहारी ।

वैभक्त्यम् [विभुस + ध्यञ्] 1. मुह मोहना, पलायन, प्रत्यावर्तन 2 अरुचि, जुगुप्सा।

वैवेकः [विवेक + अञ्] ब्रह्मा, विनिमय।

वैभक्त्यम् [व्यय + ध्यञ्] वा 1 व्यसता, वैषी, चक्राहुट 2 अनन्य भक्ति, तत्कीनता महावी० ७।३८।

वैभक्त्यम् [व्यय + ध्यञ्] व्यसता, अनुत्पादकता।

वैभक्तिरूपम् [व्यधिकरण + ध्यञ्] भिन्न स्थानों में होने का भाव, दे० व्यधिकरण।

वैभक्तिरूप (वि०) (स्त्री० जी) [व्याकरणमयीते वेति वा अञ्] व्याकरणविषयक व्याकरणसद्विधि, - वाः व्याकरण जानने वाला व्याकरणकितानावपराध-मुखा स्व यांयु सवस्ता सुधा०। सम०—वासा। जिसे व्याकरण का अच्छा ज्ञान न हो भावें धिक्की पत्नी व्याकर० को जानने वाली हो।

वैभक्ति (वि०) (स्त्री० जी) [व्याघ्र + अञ्] 1 चीते की तरह का 2 चीते की आल से बका हुआ 3 चीते की आल से डकी हुई गायी।

वैभक्त्यम् [विधात + ध्यञ्] 1 साहस, अभिनय, निर्भ-ज्जता अन्वहामूषण पुना क्षमा मज्जव याविनाम् पराक्रम परिमव वैशाय मुरतेध्वि—शि० २।४४ 2 उबहुवपन, अन्वहवपन।

वैभक्तिरूप [व्याप्त्य अपत्यम्, व्याप्त + ध्यञ्, अकञ् भादेश, यकारात् पूर्व ऐच्] व्याप्त का पुत्र।

वैरम् [वीरस्य भाव.—अञ्] 1 विरोध, शत्रुता, दुश्मनी वैयनस्य श्रोह, प्रतिपक्ष, कलह शानेन वैराध्यपि याप्ति नाशयम् सुधा०, अज्ञातदुष्टवेष्ये वैरीभवति नौहुवम् श० ५।२३, 'वैरभाव में परिजन हो जाता है', विद्याय वैर भावसे नरादरोप उदासते प्रजिप्योदधिष कसे शेरते तेऽभिमाकृतम् शि० २। ४२ 2 भुना, प्रतिहिता 3 शूरवीरता पराक्रम। सम०—अनुवक्त्य, सधना का आरम्भ, अनुवन्धितम् (वि०) शत्रुता की ओर से जाने वाला—अन्वहक अर्जुनवृक्ष—आनुवन्धम्, उद्धार, - विधातितम्, -प्रति-क्षिप्ता—प्रतीकार—यासना, -मुद्धि (स्त्री०)—साधनम् शत्रुता का बदला बदला देना, प्रतिहिता कर कार, हुम् (पु०) शत्रु—भाष्य शत्रुतापूर्ण रवैया रक्षित् (वि०) शत्रुता का निवारण करने वाला।

वैरक्त्यम्, वक्त्यम् [विरक्त + अञ्, व्यञ् वा] 1 सासा-रिक आसक्तिता के प्रति उदासीनता, इच्छा का अभाव 2 अप्रमत्तता, नापसन्दगी, अरुचि।

वैरक्षिणः [विरक्त्य विराग भिद्यमर्हति ठक] जिसने अपनी सब इच्छाओं एवं वासनाओं का दमन कर दिया है, सम्प्राप्ति, वैरागी।

वैरक्त्यम् [विरक्त + ध्यञ्] 1 न्यवृत्ता, विरक्तता 2 शीका-पन 3 मुक्तता।

वैराग्यम् दे० 'वैराग्यम्'।

वैरागिकः, वैरागिन् (पु०) [विराग + ठक, विराग + अञ् + इति] वह सम्प्राप्ति विरक्तने अपनी सब इच्छाओं और वासनाओं का दमन कर लिया है।

वैराग्यम् [विरागस्य भाव ध्यञ्] 1 सांसारिक वास-नाओं व इच्छाओं का अभाव, सांसारिक वृत्तों से उदासीनता, विरक्ति भय० ६।३५, १३।८ 2 अस-तृप्ति, अप्रसन्नता असतोष काम प्रकृतिवैराग्य सद्य शययितु भय रघु० १७।५५ 3 अरुचि, नापसन्दगी 4 रज, शोक, बकलाश।

वैराग (वि०) (स्त्री०—जी) [विराग + अञ्] बह्मा-सवची—उत्तर० २।

वैराग्य (वि०) (स्त्री० जी) [विराट् + अञ्] विराट् सवची—ए एक प्रकार का मिट्टी का कीड़ा, दम्बनीप।

वैरिन् (वि०) [वैर + इति] विरापी, शत्रुतापूर्ण (पु०) शत्रु—वीर्य वैरिणि वज्रपाशु निपतत्वर्षाऽन्तु न केवलम् भय० २।३९, भय० ३।२७, रघु० १२।१०४।

वैरक्त्यम् [विरक्त + ध्यञ्] 1 विरक्तता, कुपपता रघु० १२।४० कृपा की विविधता या वैविध्य।

वैरोचनः, वैरोचनिः, वैरोचि [विराचनस्यापत्यम् अञ्, इञ् वा, विराच + ध्यञ्] विरोचन के पुत्र बलि राक्षस के विशेषण।

वैरक्त्यम् [विलक्ष + ध्यञ्] 1 आक्षेप 2 वैपरीत्य, विरोध 3 अन्तर, भेद।

वैरक्त्यम् [विलक्ष + ध्यञ्] 1 उल्लेखन, मडबडी 2 अस्वाभाविकता, कृत्रिमता वैरक्त्यस्मिन् कृत्रिम या बलपूर्वक की गई मुक्तान 3 अज्ञा 4 वैपरीत्य, व्युत्क्रम।

वैरक्त्यम् [विलोम + ध्यञ्] विरोध व्युत्क्रम, वैपरीत्य।

वैरक्त्य (वि०) दे० वैरक्त्य'।

वैरक्तिकः [विरक्त + ठक] 1 फेरी वाला भावाव लता कर बचने वाला 2 (बहुता में रक्त कर) भार होने वाला।

वैरक्त्यम् [विरक्तस्य भाव—ध्यञ्] 1 रग या चेहरे की आभा का परिवर्तन, फीकापन, निप्रमत्तता 2 विभि-न्नता, विविधता 3 जाति से विचलना।

वैरक्त्यम् [विरक्त्यस्यापत्यम् अञ् - 1 मानकी मनु०, जो कर्मान्त यग का अविच्छेदता है मनु के नीचे दे० वैरक्त्यता मनुनाम मानवीया मनोविशाम् रघु० ११।१९ उतर० ६।१८ 2 यम रघु० १५।४५ 3 शनिग्रह - लक्ष विरक्त्यम् के पुत्र सातवें मनु द्वारा अधिष्ठित कर्तमान युग या मन्वन्तर।

वैरक्त्यम् [वैरक्त्य + जीप्] 1 दक्षिण दिशा 2 मनुना नदी।

विवाहिक (वि०) (स्त्री० की) [विवाह + ठक्] विवाहसम्बन्धी, विवाहविषयक, विवाह के कारण होने वाला कु० ७।२, -क, -कम्, विवाह, शादी, -क पुत्र बन् का स्वरूप, या दामाद का स्वरूप ।

वैशङ्क्य [विशङ् + ष्यञ्] 1 स्वच्छता, निर्मलता (आल०) 2 स्पष्टता 3 सफेदी 4 शान्ति, (मन की) स्वस्थता ।

वैशसम् [विशस + षञ्] 1 विनाश, हत्या, वध कु० ४।३१, उत्तर० ४।२४, ६।४० 2 दुःख सन्नाप, पीडा, कष्ट, कठिनाई -उपरोषवैशसम्—मृदा० २ मा० १।३५ ।

वैशसन् [विशस + षञ्] 1 अमुरसा 2 राजकीय शासन ।

वैशाखः [विशाख + षञ्] 1 चान्द्रवर्ष का दूसरा महीना (अग्रैश-मई) 2 रई का रङ्ग। हुततरकरवशात् क्रियावैशाखशौले कलभिमृदधिगुर्वी वल्कवा लोहयन्ति -श्ल० १।१८, कम् वाच चलाते समय की एक मृदा, ऐ० 'विशाख' -की वैशाख मास की पूज्यमा ।

वैशिक (वि०) [वैशेन ग्रीक्लि वेश + ठक्] वैद्याओ द्वारा अभ्यस्त—वैशिकी कलाय् मूच्छ० १।३, वैद्याओ द्वारा अभ्यस्त कलाएँ, -क यो वैद्याओ के बाहुल्य में रहता है, भृङ्गार-साहित्य में पाया जाने वाला एक नायक, कम् वैद्यावृत्ति, वैद्याओं की कलाएँ ।

वैशिष्ट्यक [विशिष्ट + ष्यञ्] 1 श्रेष्ठ, अन्तर 2 विशिष्टता, विशेषता, अनुष्ठान—वैशिष्ट्याद्यन्यस्य या शोषदत्तावैशम्यका मा० ६० २७ ३ श्रेष्ठता— मा० ६० ७८ 4 विशिष्टकलायमप्रभता ।

वैशेषिक (वि०) (स्त्री०—की) [विशेष पदार्थभेदमभि कृत्य कृतो घन्त-विशेष + ठक्] 1 विशेषता युक्त 2 वैशेषिक दर्शन के मिद्वाली में मशहूर रहने वाला कम् छ. हिन्दूदर्शनशास्त्रों में से एक दर्शन जिसके प्रणेता कणाद थे, गौतम के व्यायदर्शन से इसकी भिन्नता इस बात में है कि इसमें मान्य क ब्रह्म केवल मात मन्त्रों का विशेषण है नचा 'विशेष' पर विशेष बल दिया गया है ।

वैशेष्यम् [विशेष + ष्यञ्] श्रेष्ठता, प्रमुखता, सर्वोत्तमता ।

वैश्यः [विश + ष्यञ्] [तृतीय वर्ण का पुरुष, इसका व्यवसाय व्यापार और कृषि है] विशाल्यान् पशुभ्यश्च कृष्याद्यावदधि सुवि, वेदाध्ययनमप्यत्र न वैश्य इति कश्चिन् पद्य० । मय० कर्मन् (नपु०) सुवि (स्त्री०) वैश्य का व्यवसाय या पेशा, व्यापार, भेती आदि ।

वैश्वजः [विश्वजस्यस्यस्यञ्] 1 वन का स्वामी कुबेर,—विश्वानि यस्यां जगत्सामकायां मनोहरा वैश्व-

जस्य कस्मीः माय० २।१० 2 रावण का नाम । मय० आत्मन्,—आवासः 1 कुबेर का आवासस्थल 2 वन का वृक्ष,—उदयः वन का पेड़ ।

वैश्वदेव (वि०) (स्त्री०—की) [विश्वदेव + षञ्] विश्वदेवों से सम्बन्ध रखने वाला, कम् 1 विश्वदेवों को प्रस्तुत किया गया उपहार 2 मन्त्री देवताओं को भेंट (भोजन करने से पूर्व विश्वदेव यज्ञ में आहुति देकर) ।

वैश्वानर [विश्वान + षञ्] 1 अग्नि का विशेषण,—स्वस्त आग्नेयवृक्षाण्यवनटी दूरेऽस्तु वैश्वानर मायि० १।५७ 2 अतराग्नि अह वैश्वानरो मूर्त्वा प्राणिना देहमाश्रित । प्राणापानमप्रायुक्ता पचाम्यन्नं वतु-विषम् (वैशान्) 3 परमात्मा ।

वैश्वानिक (वि०) (स्त्री०—की) [विश्वास + ठक्] विश्वसनीय, गोपनीय ।

वैश्वम्य [विश्व + ष्यञ्] 1 असमता 2 अन्तरापना, कठोरता 3 असमानता 4 अत्याय 5 कठिनाई, किराँत, सकट 6 एकाकीपन ।

वैश्विक (वि०) (स्त्री०—की) [विश्व + ठक्] 1 किसी पदार्थ-सम्बन्धी 2 विश्वों से सम्बन्ध रखने वाला, वास्तविक, शारीरिक कः कामी, लभ्य ।

वैश्वतम् [विश्व + ष्यञ्] [विश्व + ष्यञ्] 1 भस्मीकृत आहुतियों की राख ।

वैश्वः [विश + ष्यञ्, वृद्धि] 1 अन्तरिक्ष आकाश 2 हवा वायु 3 लोक, विश्व का एक प्रधान ।

वैश्वज (वि०) (स्त्री०—की) [विश्व + षञ्] 1 विश्व सम्बन्धी, रघु० १।१।५ 2 विश्व की पूजा करने वाला, ब. तीन महत्त्वपूर्ण आधुनिक हिन्दू संप्रदायों में से एक, दूसरे दो हैं शैव और शाक्त, कम् भस्मीकृत आहुतियों की राख । मय० पुराणम् अटारह पुराणों में से एक पुराण ।

वैश्वरिजः [विश्वेण स्मरति विश्वो मयस्य म एव विमा रित् अञ्] मरुतो ।

वैश्वसत (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [विश्वस + षञ्] हवा में विश्वमान, हवाई ।

वैश्वस्य (वि०) [विश्वेण स्मरते-वि + हृ + ष्यञ् + षञ्] जिससे शरीर दल्लगी की जाय, जिसे उपहास का शब्द बनाया जाय । जैसे पत्नी का भाई या ससुरारू का कोई रिश्तेदार ।

वैश्वसिक [विश्वस करोति-विश्वस + ठक्] हसोका, विद्रुषक ।

वोड्ड [वा + उङ्] 1 एक प्रकार का लीप 2 एक तरह की मछली ।

वोड्डी [वोड् + डीप्] पक्ष की चौथा भाग ।

वोड्डी (पु०) [वह + वृच्] 1 डोने वाला, कुली 2 नेता

3. पनि 4 सांघ 5 रचवान् 6 लीचने वाला बोडा ।
बोडः (पुं०) डठल, दल ।

बोष (वि०) [अवसिक्तमुदक यत्र-प्रा० ब०, उदकस्य उदा
देश, भागुरिमते अकार लोप- । तर, गीला आइ ।

बोबालः [बोद आइ मन् अलति बोद-अल, अच्]
अर्जन मछली ।

बोर (ल) क [अवनत ऐसन कास उरो यस्य-प्रा० ब०,
कप्, अवस्य अकारलोप, पुषा० मन्त्राय पक्षे रलवोर
येद] लिपिकार, लवक ।

बोरड [बो इति रटन्ति मुङ्गा यत्र-बो रट + क] बुदका
एक नैद ।

बोसः [बुल + अच्] गुगुल रसगध
बोस्लाह (पुं०) का घाघा

बोड (वि०) दे० 'बोड' ।

बोषद् (अर्थ०) [उद्यते-नेन हवि ११ औषद् गारा
या देवो को आहुति ते समय प्रयुक्त कया जान
वाला चदवार या मार्केडि शब्द

बोषक [विशिष्ट, अवा यस्य २० ब०, का पठाड ।

बोशुक (वि०) [विगतम् अशुक स्य-प्रा० ब०, वयत्र
हीन विवस्त्र, नगा-कि० १०४

बोसक [वि + अस + ब्युल] पुन, ठग जैम 'ब मयः
असक' बचन मोर घठमयूर ।

बोसमभ [वि + अस + स्युट, उभता, घोषा देना ।

बोसत (भू० क० क०) [वि + अञ्ज + क्त] 1 प्रकटीकृत
प्रदर्शित 2 विकसित रहित कु० २।११ 3 स्पष्ट
प्रकट साफ मरल मिश्र विवाद रूप से विद्यमान
4 विशिष्ट, विविक्त, विस्थान 5 अकेला मनुष्य
6 बुद्धिमान विद्वान् कर्म (बध्य०) स्पष्ट स्पष्ट
रूप से साक्षरी पर निश्चित रूप से । सम०
- बसितम् अकमलिन बुद्ध्यां बहु साधी प्रसने
बटना अपनी ओरों से देखो है गवाह राशि जान
प्रक, रूप विष्णु का विशेषण-विक्रम वि० शक्ति
प्रदर्शित करने वाला

बोसित (स्त्री०) [वि + अञ्ज + क्तित्] 1 प्रकटीकरण
पुनर्वागता, विवाद प्रत्यक्षान्-रात्र समस्येवाधरा
तराव्यक्तिसौवर्ष्यति-आलवि० । स्नेहव्यक्ति यथ०
१२ पुनर्वाग धूरत, स्पष्टता, विवादता बा० ७।८
3 प्रेर, विशेषण, न सन्त श्रोतुमर्हन्ति सदस्यव्यक्ति-
हेतव-रत्न० १।१० 4 वास्तविक रूप या प्रकृति,
सम्पत्ति, न हि ते भगवान् व्यक्तित्वं विदुर्वा न दानवा
-भम० १०।१४ 5 वैयक्तिकता (विप० जानि) भम०
८।१८ 6 अकेला मनुष्य, पुरुष 7 (व्या० में) मित्र
8 विवक्षित में प्रयुक्त प्रत्यय ।

बोस (वि०) [विक्रम्य अमति वि + अन् + क्त]
1 व्याकुल, विस्मित, उषाट 2 वास्तविक, प्रवर्धित

3 किमी कार्य में साधित्राय व्यस्त (अधि० या करण०
के साथ अथवा समाल में) रत्न० १।१२३, महावी०
१।१३, ४।२८, कु० ७।१, उभय० १।२३, चावि०
१।२३ शि० २।७९ ।

बोझ (वि०) [विगतं वा अञ्ज यस्य प्रा० ब०] 1 बेह-
हीन 2 अञ्जहीन, विक्रम, विकलाङ्ग, अपाह्व,
लुञ्जा -य 1 लुञ्जा 2 बेंबक 3 माल पर पड़े
काठ घबड़े ।

बोझगुलम् (नपुं०) लम्बाई का अत्यन्त छोटा भाग, अमूल
का १० वां अंश ।

बोझप (वि०) [वि + अञ्ज + क्त] 1 व्यञ्जना शक्ति
द्वारा ध्वनिन परोक्षम कृत द्वारा सूचित 2 व्यक्तित्व
(अर्थ) स्पष्ट उपाधिनि अर्थ व्यञ्जकोक्ति, परोक्ष
म कृत (वि०) 'बोझ' मुद्रायाँ और लक्ष्य नीच या
मनुष्यनित अर्थ) -इदमनुमयमनिसाधित व्यञ्जको बोझ्या
अर्थार्थके कश्चिन् बाध्य० १ ।

बोझ (पुं०) पर० विचारित, कर्मका० विध्यने) ठवना,
घोषा देना बाल चलना ।

बोझ. [वि + अञ्ज + क्त] पक्षा ।

बोझम [वि + अञ्ज + क्त] पक्षा निवर्तितव्यजनम्-हि०
२।१०, रत्न० ८।४०, १०।१९ नु० बालव्यजन ।

बोझक (वि०) [स्त्री०] बिकार [वि + अञ्ज + क्त]
1 स्पष्ट करने वाला सङ्केतक, बतलाने वाला, प्रकट
करने वाला 2 अर्थ को उपलब्धित या ध्वनित करने
वाला (शब्द) (वि०) बाधक और लाक्षणिक),
कः 1 नाटकीय हास्य, वास्तविक भावों को उप-
युक्त हास्यभाव द्वारा प्रकट करने वाला शब्द सङ्केत
2 सङ्केत, प्रतीक ।

बोझनम् [वि + अञ्ज + क्त] 1 स्पष्ट करना, सङ्केत
करना प्रकट करना 2 बिल्लू, निशान सङ्केत
3 स्मारक या० ९ 4 उपावेश, परिधान-शि०
२।१६, तपस्विबोझनेपेता आदि 5 व्यञ्जन
अक्षर 6 सिङ्घोतक चिह्न अर्थात् स्त्री या पुरुष का
परिचायक अङ्क 7 अविचार-चिह्न, विल्ला 8 वय-
स्कता का चिह्न 9 दाढ़ी 10 अङ्क सस्य 11 निर्ध
मसाला बटनी सिगाई हुई वस्तु -ने० १९।१०४
12 तीनों उद्बोधकियों में अन्तिम जिसमें अर्थ उप-
लब्धित या ध्वनित होता है, दे० अञ्जन का (४)
(अर्थ में यह 'व्यञ्जना' भी भ्रमा जाता है) ।
सम० उवच (वि०) वह जिसके पश्चात् व्यञ्जन
अक्षर आता हो, लब्धि व्यञ्जन कर्ता का लोच्य
या सत्त्वेष ।

बोझना दे० ऊ० 'व्यञ्जन' (12) ।

बोझित (भू० क० क०) [वि + अञ्ज + क्त] 1 साफ
किया गया, प्रकट किया गया, सङ्केत किया गया

2 चिह्नित, भिन्न, विहित 3 सुझाव दिया गया, ध्वनित ।

अव्ययः [उन् + क्त, क्तुट् वा, विशेषेण न हम्बक] अव्यय का पद ।

व्यतिकरः [वि + क्त + क्त + क्त] 1 विषय, अन्त विषय, एकट्ठा मिला देना तीर्थ तोयव्यतिकरभवे अहं मुक्त्यासरथो -- रघु० ८।१५, व्यतिकर इव भीमस्तामसो मेषुतपच -- उत्तर० ५।१२, मा० १।५२ 2 सम्पर्क, मिलाप, सम्मिलन माकवि० १।४, वि० ४।५३, ७।२८ 3 रचना कु० ५।८५ 5 घटना सम्पत्ति, वृत्तान्त, वस्तु, मामला एवविधे व्यतिकरे -- ऐसी बात होने पर 6 अवसर 7 मुसीबत, सकट 8 पारस्परिक सम्बन्ध पारस्परिकता 9 विनिमय, बदलावदली ।

व्यतिक्रमः (भू० क० क०) [वि + क्त + क्त + क्त] 1 क्रिया हुआ, मिश्रित 2 मयुक्त ।

व्यतिक्रमः [वि + क्त + क्त + क्त] 1 व्यतिक्रमण, विचलन घटकना 2 उल्लंघन, भंग, अननुष्ठान -- यथा 'सविद् व्यतिक्रम' - रघु० १।७९ 3 अवहेलना उपेक्षा, मूल 4 बेपरीय, उलट व्यवसाय 5 पाप दुर्गमन घुम 6 आपत्काल दुर्भाग्य ।

व्यतिक्रमः (भू० क० क०) [वि + क्त + क्त + क्त] 1 पार किया गया, व्यतिक्रमण किया गया, उल्लंघन किया गया, उपेक्षित 2 ओंका, विपर्यस्त 3 बीना हुआ, गुंजरा हुआ (समय) ।

व्यतिक्रमः (भू० क० क०) [वि + क्त + रिक् + क्त] 1 विद्युत्, विद्युत् अव्यतिक्रम्यते यमस्मच्छरीरात् -- का०, कु० १।३१, ५।२२ 2 जाने बढने वाला, सर्वोत्कृष्ट होने वाला, जाने निकल जाने वाला 3 प्रायाहुत, टोका हुआ 4 अलगाव हुआ ।

व्यतिरेकः [वि + क्त + रिक् + क्त] 1 भेद, अन्तर 2 विद्यो 3 निष्कासन अपवर्जन 4 श्रेष्ठता, जाने बढ़ जाना, जाने निकल जाना 5 वैषम्य, असमानता 6 (तर्क में) अनन्य (विषय) उदा० 'यत्र बहिर्नास्ति न च वृत्तो नास्ति' यत्र व्यतिरेक व्याप्ति का उदाहरण है 7. (अल० में) एक अवलोकन जिसमें किन्हीं विशेष वस्तुओं में उपमान की अपेक्षा उपमेय को श्रेष्ठतर बतलाया जाता है -- उपमानाख्यान्यस्य व्यतिरेक स एव सः काव्य० १० ।

व्यतिरेकि (वि०) [व्यतिरेक + इति] 1 विषय 2 जाने बढ़ जाने वाला जाने निकल जाने वाला 3 बाहर निकालने वाला, अपवर्जन करने वाला 4 अनाद्य या अनन्तित्व दर्शने वाला जैसे कि 'व्यतिरेकि किङ्कम्' में ।

व्यतिरेकः (भू० क० क०) [वि + क्त + क्त + क्त]

1 आपस में मिला हुआ, पारस्परिक सम्बन्ध, मूललावह या एकत्र जुड़ा हुआ 2 अन्त मिश्रित 3 अन्तर्गत विवाह करने वाला ।

व्यतिरेकः [वि + क्त + क्त + क्त] 1 पारस्परिक सम्बन्ध, अन्तर्गत विवाह 2 अन्त मिश्रण 3 संयोग, या मिलाप ।

व्यति (ती) हार [वि + क्त + क्त], पक्षे उपसर्गस्य हकारस्य दीर्घः 1 अवल-बदल, विविध 2 पारस्परिकता, अन्त परिवर्तन रघु० १०।१३ ।

व्यतीत (भू० क० क०) [वि + क्त + इ + क्त] 1 गुजरा हुआ, गया हुआ बीता हुआ पार किया हुआ रघु० १५।१४ 2 मृत 3 छोटा हुआ परित्यक्त, विसर्जित 4 अवज्ञान ।

व्यतीपातः [वि + क्त + पत् + क्त], उपसर्गस्य दीर्घः 1 समूचा प्रयाण, सम्पूर्णविचलन 2 भारी उत्पात, भारी सकट को सुचित करने वाला प्रपञ्चक 3 अनादर तिरस्कार ।

व्यत्यसः [वि + क्त + इ + क्त] 1 पार करना 2 विरोध, बेपरीय 3 व्यत्यस्त कम व्यत्यस्त 4 अन्त परिवर्तन कृपान्तरण 5 अवरोध अलंघन ।

व्यत्यस्त (भू० क० क०) [वि + क्त + क्त + क्त] 1 व्यत्यस्त, विपर्यस्त 2 विपरीत, विरोधी 3 असंगत व्यत्यस्त संपत्ति धामि० २।८४ 4 विरेहित, इन प्रकार रखी हुई (दो वस्तुएँ) जिसमें एक दूसरी को काटती हो व्यत्यस्त पाव, व्यत्यस्त भुज जदि ।

व्यत्यस्तः [वि + क्त + क्त + क्त] 1 व्यत्यस्त स्थिति या कम 2 विरोध, बेपरीय ।

व्यच् (इमा० आ०) व्यचने, व्यधित 1 जोकान्वित होना, पोषित होना, कष्टघस्त होना, विवृण्व या अज्ञात होना -- विषयवरादि नाम व्यचते इति जितप्रवर-स्तेनो उत्तर० ७, न विच्यते तस्य मन किं १।२ २४ 2 आलोचन होना, दोषायमान होना -- किं ५।११ 3 कापना 4 भयभीत होना 5 सुखना, सुख होना, प्रेर० (व्यचयति-ते) पीडा देना, कष्ट देना, नागज करना दुखी करना उत्तर० १।२८, अ अत्यन्त कष्ट होना -- भग० १।१२० ।

व्यचक (वि०) (घी०) व्यचक [व्यच् + क्त + क्त] पीडाघस्त, दुःख, कष्टकर किं० २।४ ।

व्यचकम् [व्यच् + क्त + क्त] पीडा देना, सताना ।

व्यचा [व्यच् + क्त + टाप्] 1 पीडा, वेचना, आधि -- ता च व्यचा प्रयवकलकुलीयमाय -- उत्तर० ५।२३ १।१२ 2 भय, जातक, बिना -- स्वल्पनित्यव्यथात् तद्व्यचाम् रघु० ११।१२ 3 विजोष, अज्ञाति 4 रोग ।

अव्ययि (भू० क० क०) [व्यच् + क्त] 1 कष्टघ्नस्य, दूषी, पीडित 2 जातकृत 3 विमृश्य, अशान्त, बर्चन ।

अव्य (विबा० पर० विध्यति, विद्य) 1 बीधना, चोट पहुँचाना, प्रहार करना छुग जीकना, मार डालना अतिशयाराम् निव्याध दिष्ट. स मनुष्येण शि० १९१९, विद्यमान रघु० ५।५१ ९।६०, १५।३०, मट्टि० ५।५२, ९।६६, १।६९ 2 मृगाल करना, छिद्र करना, आरपार बीधना 3 लावना गड़वा करना, अनु- , 1 बीधना, चोट पहुँचाना चायल करना 2 मृगना, घेरना 3 मृगना अटित करना-वे० अनुविद्य अव्य- , 1 कंकना डालना, उछालना -महावी० २।२१, रघु० १०।४४ 2 बीधना हृदयम- शरण मे परमलाक्ष्या कदाचैरपहृतमपविष्ट पीनमृन्म लिन च मा० १।२८ 3 मृगना, परित्यक्त करना आ , 1 बीधना 2 कंकना, डालना, दे० आविष्ट, परि , सम् , बीधना, चायल करना ।

अव्यः [व्यच् + अव्य] 1 बीधना, टुकड़े टुकड़े करना, प्रहार करना शि० ५।२४ 2 आघात करना घायल करना, प्रहार 3 छिद्र करना ।

अव्यधिकरणम् [वि + अव्य - ह् + ल्यट्] मित्र आचार या स्तर पर बीधित रहना (जैसा कि 'अव्यधिकरण बहु- बीधि' में अर्थात् वह बहुवीरि ममास जहाँ पृष्ठा पद दूसरे पद मे निगलित मित्र कारक का है, यदि उनका विग्रह करक शब्दा जाय उ०।३ चक्रपाणि चन्द्रमौलि आदि ।

अव्यधः [व्यच् + व्यन्] चौदनारी के पीछे का टीला, निशाना, लक्ष्य ।

अव्यधः [विवृद्ध अव्यधः प्रा० स०] कुमारों बुरी सबक ।

अव्युदासः [विसिष्ट अनुदास प्रा० म०] प्रतिध्वनि ऊँची गूँह ।

अव्यसः [विसिष्ट अन्यायस्य -प्रा० ब०] 1 पिशाच यक्ष आदि एक प्रकार का अनिपाकृतिक प्राणी ।

अव्य (चुरा० उभ० व्यपयति-ते) 1 कंकना 2 चटाना, बरबाद करना, कम करना ।

अव्यकुल्य (भू० क० क०) [वि + व्यच् + कृ + क्त] एक ओर बीधना हुआ, दूर किया हुआ हटाया हुआ ।

अव्यक्त (य० क० क०) [वि + व्यच् + क्त] 1 गया हुआ, विलजित, अनाहित मरने मे व्यपयतः अमृ० २।८, मेघ० ७६ ' हटाया हुआ 1 गिराया हुआ ।

अव्यक्तः [वि + व्य + यत्] अव्यक्त, अनाहित ।

अव्यक्त्य (वि०) [विना अव्यक्त्य यस्य -प्रा० ब०] निरलक्ष्य, कीट ।

अव्यविष्ट (भू० क० क०) [वि + व्य + विष् + क्त] 1 नामांकित 2 बतलाया गया, प्रस्तुत किया गया

घोषित 3 बहाने या छल के रूप में प्रतिपादित किया गया ।

अव्यदेशः [वि + व्य + दिष् + वच्] 1 निरूपण, लक्ष्य, सूचना 2 नामकरण नाम रखना 3 नाम, अभिधान, उपाधि एवं व्यपदेशमात्र-उत्तर० ६।४, परिवार, वध-अथ कोत्र्य व्यपदेश - क० ७, व्यपदेशमात्रवि- यत् किमीहने अनिमित्त च पाठयितुम् क० ५।२० 5 कीर्ति यथा प्रसिद्धि 6 बाल, बहाना, दाँव, उपाय 7 जालमाजी, लालाजी ।

अव्यदेश् (पु०) [वि + व्य + दिष् + वच्] छनिया, घोसबाज ।

अव्यरोपणम् [वि - व्य + षह् + जिच् + ल्यट्, ह्रस्व प०] 1 उन्मूलन उखाड़ना 2 भगाना, हटाना, दूर करना 3 काट डालना फाड़ डालना, डोढ़ लेना - बुकोप तस्मै स भृश मुर्गस्थ प्रमद्य केशव्यरोपवादिब रघु० ३।५६ ।

अव्याकृतिः (स्त्री०) [वि + व्य + क् + क्त + क्तित्] 1 निष्कासन दूरीकरण, निकाल देना 2 मुकुरना ।

अव्याधः [वि + व्य + ह् + वच्] अन्त, लोप, समाप्ति, -कु० ३।३३, रघु० ३।३७ ।

अव्याधयः [वि + व्य + आ + धि + व्यच्] 1 उत्तराधि- कारिना 2 गण लेना, सहारा लेना, भरोसा करना भग० ३।१८ 3 निर्मर होना धर्मो रामव्याधय - राम० ।

अव्येक्षा [वि + व्य + ईध् + व्यच् + टाप्] 1 प्रत्याक्षा, आशा 2 लिहाड विचार रघु० ८।२४ 3 पारस्परिक सम्बन्ध अम्योव्याधय 4 पारस्परिक लिहाड 5 व्यवहार 6 (व्या० में) दो नियमों का पारस्परिक प्रयोग ।

अव्येत (भू० क० क०) [वि + व्य + ह् + क्त] 1 विबुध अलगया हुआ 2 गया हुआ विलजित, (प्रायः समस्त में व्यपेक्षकस्मय, व्यपेतभी व्यपेतहर्ष आदि) ।

अव्योद्ध (भू० क० क०) [वि - व्यच् + बह् + क्त] 1 निकाला गया, हटाया गया 2 विपरीत, विरोधी कि० ५।१२ 3 प्रकटीकृत, प्रवर्तित, बतलाया गया ।

अव्योहः [वि + व्य + ऊह् + वच्] निकालना, दूर करना, अलग रखना ।

वि (भी) चारः [वि + अभि + चर् + वच्] 1 दूर चल जाना विचलन, लगभग छोड़ देना, कुमाई का अनुमरण करना, मगलमव्यसनिनं व्यभिचारविध- जितम् हि० ३।१६ अम० १५।२६ 2 अतिशय, उत्तमवन मनु० १०।२४ 3 अनुद्धि, धर्म, पाप 4 बिच्छेडना, अलग होने की सामर्थ्य 5 अव्यक्त, अनाम्ना पति-पत्नी में अविविवास, पवित्रत वा पत्नी-

कत का अभाव—अभिचारानु मर्तु स्त्री लोके प्राप्नोति । गह्मातम्—मनु० ५।१६५, बाहुमन कर्मणि परयो । अभिचारो यवान् न रे—रघु० १५।८१, याज्ञ० १।७१ 6 अस्मयति, अनियमितता, अपवाद 7 (तक० में) आभासी हेतु, हेत्वाभास साध्य के न होने पर भी हेतु की विद्यमानता ।

अभिचारिणी [अभिचारिन् + क्रीप्] अमती स्त्री परपुरुषवामिनी स्त्री ।

अभिचारिन् (वि०) [अभिचार + इति] 1 भटका हुआ मुला हुआ पक्षप्रष्ट, भ्रान्त निगम भग करन बाला 2 अनियमित पसगन 3 अमय मिथ्या दे० अध्यभिचारिन् 4 छद्माहीन वा ब्रह्मचारी न हो परस्त्रीवासी, (पु० अभिचारिन्नाथ सत्वाभिचार सहकारी भाव (विप० स्थायी भाव) पक्षप म्यायो भावो की भाँति यह सहकारी भाव रम का कोई आशङ्कित रूप नहीं बनाये फिर भी यह अवब्रान्त रम के पोषक हैं, अन प्रत्यक्ष या पराक्ष रूप में यह रम की पुष्टि करते हैं। इनकी सख्या नैमीस या चौतीस है इनकी पणना क गिर ६० काव्य० ५ कारिका ३१-३४, मा० द० १५० या रस० प्रथम खानन, नु० विभाव और म्याधिभाव की ।

अभ्य० 1 (कुरा० उभ० व्यययति-ते) 1 जाना हिलना जलना 2 व्यय करना प्रदान करना अपाय करना ।
 11 (आ० उभ० व्ययति ते) जाना हिलना-जलना ।
 111 (कुरा० उभ० व्यययति ते व्यापयति ते भो) 1 फैलना डालना 2 होकना ।

अभ्य (वि०) [वि + इ + अभ्] परिवर्तनीय परिणाम शीघ्र, विकारवान्—रघु० अथर्व, य 1 (क) हानि कोप, विनाश—आपाद्यते न व्ययमन्तराय कश्चिन्म हर्षेतिविषय तपस्तप्—रघु० ५।५, १२।३३ (क) कायत कलाता, स्थान—प्राणव्यवर्णाप मया विधेय—मा० ४।४ कु० ३।२३ 2 नकाबड, अचचन—रघु० १५।३७, ३ अय ह्रास, पराजय, अथ पतन 4 अर्थ वृद्ध, परिचय, विनिर्माण प्रयोग, (विप० जाय) ।
 आये दुःख व्यये दुःख विगर्षा कल्पसमया पक्ष० १।१६३, आयाविकं व्यय करानि अपनी आय से अधिक व्यय करता है—रघु० ५।१२, १५।३ मनु० १।११ 5 अव्यय विमूलकत्वं । सम०—वर (वि०) मुक्तहस्त से अर्थ करने वाला—वराहमुच (वि०) कृपण, कंदूच, मकलीचूम शीघ्र (वि०) अतिशय्यी विमूलकत्वं—बुद्धि (स्त्री०) हिसार चुकाना ।

अवकम् [व्यप् + क्त्वा] 1 अर्थ करना 2 बर्बाद करना विनष्ट करना ।

अवति (क० क० क०) [व्यप् + क्तु] 1 व्यय किया

गया लब्ध किया गया 2 बर्बाद किया गया, क्षयप्रसन्न ।

अवर्ध (वि०) [विगर्षाभ्यो यस्मान्—मा० ब०] 1 अनु-पमाणी निरर्थक विफल अवाप्तकर अवर्ध यत्र कपीन्दसम्पत्तिर्भाष म उत्तर० ३।४५ 2 अवर्धहीन निरर्थक बेकारी ।

अवलीक (वि०) [विशेषेण अलति ति + अल + कृत्] 1 मिथ्या झूठा 2 कुसित अनभिमत असुखद 3 डा मिथ्या न हो शि० ५।१ क 1 स्वेच्छावागी 2 गाव् लौकटा—कम्प काई भो आप्रय या अमृषद वस्तु आप्रयता—रथ गिर त्रयतमा इव सो अलीक। गुप्ताथ सुतननवस्य तदा व्यत्याका शन० ५।२ अवलीक का कारण पीडा दाह १ रस का कारण मृग २ हृद यात्रायां शिखर ३ पत ४ ५ क 3 १० कु० ५।१ म्प ५ ७ ३ दीप अलाभ अर्थकमण, अनुनित काय शब्दालोकमवर्धन पवि ३ प्रमित मर्षाद का रदन शि० ६।१ ५।१ ५ रत्न० ३।१ ४ आत्मसात्री न क्त्वा पक्षा पक्ष १। १०० ५४ 5 मिथ्यापन 6 अक्षम बेचरीया ।

अवकलनम् [वि + अव + कल + क्त] 1 विवाह 2 (गण० म) बगना एक गति म म दूसरी गति काम करना ।

अवकालितम् [वि + अव + कृत् + क्त] 1 मृग्य में से आपम म गन्त-मालोच ।

अवर्धक (म० क० क०) [वि अव + कृत् + क्त] 1 कष्ट डालना गया न रागया भडा गया 2 विवक्षित विवक्षन 3 विविष्ट किया गया विविष्ट 4 अर्थक्य विवक्षण शरीर मार्ग शब्दार्थव्यवच्छिन्ना पक्षावली काव्य० १।१० 5 अवर्धक बाधित ।

अवकलने [वि अव + कृत् + क्त] 1 कष्ट डालना पाह दना 2 विभाजन विद्योत्रन 3 बौर फाड़ करना 4 विविष्टाकरण विवक्षक विविष्ट 6 वैषम्य विविष्टय 7 विचारण 8 बन्दूक दासता शीर छाड़ना 9 किसी पुनरुत्पत्ति अथवा या अनुभाग ।

अवकषा [वि अव + क्त्वा + क्त] 1 व्यवसायक 2 आठ परी अगहन 3 छिपाव दुराव ।

अवकालम् [वि अव + क्त्वा + क्त] 1 हस्तश्रेण अन्य श्रेण विवाह 2 अवकाश दृष्टि में गुप्त रखना दृष्टि विमानव्यवधानमुक्ता पुन महस्राविक विनिचने रघु० ३३।४६ 1 छिपाता अन्तर्धनि ६ पदा व्ययन 6 कलना आदर्श कु० ३।४६ 7 कलनाव अवकाश 8 (का० म) किसी अवकाश या भाषा का बीच में आ पड़ना ।

अवकालक (वि०) (स्त्री०) बिका [वि + अव + क्त] 1 बीच में आ पड़ने वाला, आवरण, इकने

वाला 2 अवरोध करने वाला, छिपाने वाला
3 मध्यवर्ती ।

अवधि: [वि + अव + धा + क्ति] आवरण, हस्तक्षेप
आदि, दे० व्यवधान ।

अवसाय: [वि + अव + सो + घट्] 1 प्रयत्न, चेष्टा
ऊनी, उद्योग, बर्ब—करोतु नाम नीतिज्ञा अवसाय-
मितस्तदु: हि० २:१४ 2 सकल्प, प्रस्ताव, निर्धारण
—अन्वीचकार मरणव्यवसायबुद्धिम्—कु० ६:४५,
'मरण के सकल्प का विचार' मग० २:१४ १०:३६
3 कृत्य, कर्म, क्रिया—अवसाय प्रार्थनानिष्ठुर
रघु० ८:१५ 4 व्यापार लोचरी, बाणिज्य 5 आच-
रण व्यवहार 6 उपाय, कूटयुक्त, दूतन 7 दाया
बचाना 8 विज्ज ।

अवसायिन् (वि०) [अवसाय + इनि] 1 उर्वर्यो
उद्योगी, पटिषधी 2 दृढ़ सवस्त्री बर्बवान् ।

अवसात (भू० क० क०) [वि + अव + सा + क्त]
1 प्रयास किया गया कर्मकाण्ड की गई म० ६९
2 विस्मयकारी ली गई 3 सकल्प किया गया निर्धारित
निश्चित 4 प्रकाशित ध्यापित 5 परमशील दृढ़
निश्चयी 6 बचवान् ऊर्जस्वी 7 उगा गया, छाया
गया, —तन्नि निश्चयन, निर्धारण ।

अवस्था [वि + अव + स्था + क्त] 1 समजन
क्रमस्थापन, नियतता यथा वर्णाश्रम व्यवस्था
2 स्थिरता निश्चिन्ता, रघु० ७:१५ 3 दृढ़ता दृढ़
आचार —आज्ञादुस्तुत्तरणी गृहिण्या न्यायारविदं
यमव्यवस्थाम्—कु० १:३३ 4 मज्ज स्थिति
5 निश्चित नियम कानून सविध आदेश, नियम
कानूनी सलाह, कानून की स्थिति घोषणा विशेष
कर सदित्थ स्थली पर या जहाँ बिगडो पाठा का
समजन करना हो 6 सहमति सविदा 7 अवस्था
स्था ।

अवस्थानम्, अवस्थिति (स्त्री०) [वि + अव + स्था
+ क्तृ क्तृत्वा] 1 क्रमबन्धन, समाधान निर्धार
ण, अज्ञता 2 नियम, विधान, निश्चय 3 स्थिरता,
अचलता 4 दृढ़ता, बर्ब 5 विरोध ।

अवस्थापक (वि०) (स्त्री०—पिका) [वि + अव + स्था
पिच् + क्तृत्वा, पुक्] 1 क्रमस्थापन करने वाला, उप-
युक्त क्रम में रखने वाला समजन करने वाला, स्थिर
करने वाला, व्यवस्था करने वाला, फैसला करने
वाला 2 वह जो कानूनी सलाह देता है 3 प्रबन्धक
(कर्तृमान प्रयोग) ।

अवस्थापनम् [वि + अव + स्था + पिच् + क्तृत्वा, पुक्]
1 क्रमस्थापन, उपयुक्त समजन 2 स्थिर करना,
निर्धारण, निश्चय करना फैसला करना ।

अवस्थापित (भू० क० क०) [वि + अव + स्था + पिच्

कृत पुक्] क्रमबद्ध, निश्चित आदि, 'वाच्—कु०
५:६८ ।

अवस्थित (भू० क० क०) [वि + अव + स्था + क्त] 1 क्रम
में रक्ता हुआ, समजित, क्रमबन्धन 2 निश्चित,
स्थिर—कि अवस्थितविषया आश्रयार्थ—उत्तर० ५
3 फैसला किया गया, निर्धारित, कानून द्वारा घोषित
4 एक और रक्ता हुआ विषय 5 निकाला हुआ
(रम आदि) 6 आधारित, अवलम्बित । सम०
—विभाषा निश्चित इच्छा ।

अवस्थिति दे० व्यवस्थापन ।

अवस्थान् (पु०) [वि + अव + ह् + क्तृत्वा] 1 किसी व्यवसाय
का प्रबंधकर्ता 2 नाश करने वाला, अविधेयता,
बारी या मुद्दई 3 न्यायाधीश 4 माफी, सगी ।

अवहार [वि + अव + ह् + घञ] 1 आचरण, बर्तव्य,
कर्म 2 मामला, व्यवसाय काम 3 पेशा, धंधा
4 जेनदेन काम काज 5 बाणिज्य, निवारण, मोहा-
गरी 6 रुपये पैसे का लेनदेन, मुचसारी 7 प्रचलन
प्रवा दारुण, रिवाज 8 सबन्ध मेलजोल—पञ्च०
१७९ 9 न्यायानवी या अदालती कार्यविधि, किसी
आभोग या मामले को छान-बीन न्याय प्रकाशन,
—अवहारानमाह्वयित अल लब्धया व्यवहारस्था
पृच्छति मृच्छ० ९ 10 कानूनी दुराग्र, अविधेय,
नालिष कानूनी मुकदमा मुकदमेबाजी, व्यवहारोप-
पादलम्बनदलम्बने इति लिख्यता व्यवहारस्थ प्रथम
पाद केन सह सम अवहारः मृच्छ० ९, रघु० १७।
१० 11 कानूनी शर्तों का शीर्षक, मुकदमेबाजी
का अवसर । सम० १७९ दीवानी और फौजदारी
४ नुमा का समूह, आदालत (वि०) अविधेयित
दावारपित—आसनम् न्यायाधिकरण न्यायासन—रघु०
८:१८ अ 1 जो व्यवसाय को समझता है
2 बटुक युवा, बालिग, 3 जो न्यायाधीश कार्य-
विधि से परिचित हो, —सम्बन्ध आचरणक्रम, मा० ६,
बर्बान् आच, न्यायिक आचरणदाल, —बह्व
अवहार विषय, बाब: 1 कानूनी कार्यवाही की बार
अवस्थाओं में से कोई सी एक 2 चौकी अवस्था
अर्थात् निर्णयपार जिसमें व्यवस्था या फैसला बतलाया
गया है बाबुका 1 कानूनी प्रक्रिया 2 न्यायप्रकाशन
या न्यायालयों के निर्माण से सम्बन्ध रखने वाला कोई
भी कर्म या विषय, (इसके टी० शीर्षक निर्णय गये
६) —विधि: कानून का नियम, वास्तविकता, विचार:
(इसी प्रकार—बह्व—मार्ग,—स्थान) कानूनी कार्य-
विधि का शीर्षक या विषय, ऐसी बात जिसमें कानूनी
कार्यवाही करनी चाहिए, आवश्यक विषय (यह
विषय अठारह है, इनके नामों की जानकारी के लिए
दे० मनु० ८:४—७) ।

अव्ययसूचकः [वि + भव + ह + ण्वल्] विभेता, व्यापारी,
संशयकर ।

आवहारिक (वि०) (स्त्री० - का, - की) [व्यवहार + ठन्]

1. व्यवसाय सम्बन्धी 2. व्यवसाय में लगा हुआ, सम्पादनात् 3. व्यापारसम्बन्धी, कानूनी 4. मुख्य-
वाह 5. प्रचलित, बड़े या प्रचानुसार ।

अव्ययह्रिका [वि + वज + ह + ण्यल् + टाप्, इत्यम्]
 १ रिवाज, प्रथा २ साहू ३ हनुमन्त का वृक्ष ।

अव्ययहारिण (वि०) [अव्ययहार + हरिणि] 1 अव्ययसाधी,
कर्मक्षील, अभ्यासपरायण 2 अभियोग में व्यस्त,
मुकदमेबाज 3 शिरप्रचलित, प्रचानुसार ।

अव्ययसि (पू० क० कु०) [वि + अव्य + था + क्त] 1 अलग
अलग रखना हुआ 2 किसी अलग स्थित वस्तु के
कारण विद्युत् किया गया - पृ० २१८५ 3 बाधित,
रोका गया, अवरुद्ध, अवरुधन से युक्त 4 दृष्टि से
अशुद्ध, छिपाया हुआ, गुप्त 5 जिसका निरन्तर
सम्बन्ध न हो 6 किया गया, सम्पन्न 7 भूला हुआ
छोड़ा गया 8 आगे बढ़ा हुआ, आगे निकला हुआ
9. विपक्षी, विरोधी ।

अव्ययः (स्त्री०) [वि + अव + ह + क्तिन्] १ अभ्यास,
प्रक्रिया २. कार्य, सम्पादन ।

अव्ययः [वि + भव + भव् + भव] 1 विद्योपन, विद्योपन
(अव्ययों का) पृथक्करण 2. विद्यन 3 आवरण
विप्राय 4 हस्तोप, अन्तराल बटकुम्भाकनुपम्यवा
वेष्टि 5 अक्षयन, कदाचि 6 मैदुन, नम्याल 7 पवित्रता,
—कन् रीति, आया ।

अवधि (५०) [अवधि + इति] १ बिलासी, स्वेच्छा-
चारी २. कामोद्दीपक, वाञ्छीकरण ।

अविष्ट (यु० क० कृ०) [वि + अव + इ + क्त] । विद्या
विस्त, विविक्षष्ट 2. भिन्न ।

सप्तष्टि (स्त्री०) [सि + अच् + श्तिन्] १ वैयक्तिकता, एकाकीपन २ विचरणाधीन पीडा ३ (वेदान्त० में) सप्तष्टि को उसके पूर्वक-पुर्वक अवयवों के रूप में देखना, एक अक्ष (विष० सप्तष्टि) ।

अथान्व [वि + अन् + स्पृष्ट] १ जेक देना, दूर कर देना,
विनाशजन, विनाशजन ३ उत्सर्जन, व्यतिक्रमण ४ हानि
विनाश, पराजय, पतन, होश, दुर्लभपक्ष अनाश-
अथान्व-पक्ष. ३, स्वबलव्यसने-किं १३११५
५ (क) विपत्ति, दुर्भाग्य, दुःख, अनिष्ट, लकट,
अनाश्व-अनाश्वसन्व्यसना भुवर्त लोकोपादेव रतिर्विपुल
कु. ३१०३, ४३०, ४५० १२५५७ (ग) आप-
त्याज, आपवसकता-त भुवर्त व्यसने यः स्वात्-पक्ष
११२७ 'आवसकता पक्षे पर जो भिन्न रति बही
किं ३' (दूर) भावि (ग) अस्त होना तेजा-
वस्य कलपय अथान्विदाम्नाय स. ४११ (गही)

‘व्यसन’ का अर्थ ‘पतन’ भी है। ७ बुध्नसन, दूरी
कृत, दूरी आहत मिथ्यव्यस्यन इति मूलवाचीबुध्न
विनीत कृत स० ४/५, रघु० १८/१४, भाष०
१/३०१ (इस प्रकार के बुध्नसन दस बताये गये हैं
मनु० ७/४७-८) समानश्रीतव्यसनैषु सव्यस्य — जुभा०

८. सलमता, जूट जाना, परिजमपूरक बासकित
— बिजाया ब्यसन भर्तुं २।६२-३ १ हुनुत ज्यादा
बारि होना १० जुम, पाप ११. दष १२. अयोग्यता.
असमता १३ निष्कल प्रयत्न १४ हुवा, वायु । सम०
अतिभारः भारो अनर्थ या सकट रजु० १४।६८,
अजित, - जातं पीकित (वि०) सकटघस्त, दुःख
में फता हुआ ।
व्यसनिन् (वि०) [व्यसन + इनि] १ किसी दुष्कृत्य में
पस्त, दुष्चरित्र २ अभागा भाग्यहीन ३ किसी कार्य
में अत्यन्त सलग्न (प्राय ममास में) ।

अध्यास (वि०) [विगतः वसवः प्राणा यस्य प्रा० व०]
निर्जोष, मृतक शि० २०।३।

भ्यस्त (मू० क० इ०) [वि + भृ + क्त] 1 डाला हुआ,
 फेंका हुआ, उठाला हुआ मा० ५।२३ 2 तितर
 बितर किया हुआ, बिखेरा हुआ उत्तर० ५।१४
 3 हटाया हुआ दूर कटा हुआ 4 विद्युत् विद्युत्
 बलगाया हुआ विक्रम० ५।२३ 5 पुनः पुनः से
 विचारित, एक एक करके प्रहल-कि पुनश्च-उत्तर०
 ५, तद्वति कि भ्यस्तमपि शिलायने-सू० ५।७२
 6 मरल, मरामरहित (सम्भ्रमार्ति) 7 बहुविध,
 8 हटाया गया, निकाला गया 9 विभुज्ज, कष्टमय
 अभ्यवस्थित 10 कमरहित, प्रमत्त, विभुल्लिप्त
 11 उठगाया हुआ, उलट-पुलट किया हुआ 12 विप
 रास (अनुप्रास आदि) ।

जवाब: (१०) हाथी के गडस्यलो से घद का निकलना ।

व्याकरणम् [व्याधिराते व्युत्पाद्यते सत्त्वा येन-वि + आ ।
 + कृ + स्युट्] १ विग्रह, विश्लेषण २ व्याकरण
 सम्बन्धी सत्यपुष्पककण प्रक्रिया, छ वेदांगों में से
 एक, व्याकरण --सिद्धो व्याकरणस्य कर्तुरहरश्चाजान्
 प्रियायु पाणिने पं० २।३।३।

व्याकारः [वि + आ + कृ + क्त] १ कृपान्तरण, कृप-
परिवर्तन २ विकृपता ।

अप्यकीर्त्त (बु० क० कु०) [वि + आ + कृ + क्त]
 1. विशेष हुमा, इतर उपाय फेका हुमा 2. अस्ताव्यस्त
 किया हुआ ।

व्याकुल (वि०) [विशेषण व्याकुल -प्रा० सं०] 1. विवश,
 विरिजित, परागता हुआ, किरमिज्य विवश, शोक-
 व्याकुल, शब्द० 2 आतंकित, उद्विग्न, परवर्षित
 दुष्टव्याकुलोगोदुल गीत० ४३ परागता, विराग-
 हुआ 4 मलिन, व्यसन आलीके में निपतति दुरा सा

विक्रियाहुता वा वेध० ८५ 5 वनकने वाका, इचर
उचर हिलयुक्त करने वाला—उत्तर० ३।१३।
व्याकुलित (वि०) [वि + कृ + क्त + क्त] विभुत्व,
दुःखद्वि, चबराया हुआ, उद्विग्न बादि ।
व्याकुलितः (स्त्री०) [विविष्टा वाकुति—आ० ल०] जाल-
सायी, दुःखप्रेत, मोहा ।
व्याकुल (यू० क० कृ०) [वि + कृ + क्त]
1. विविष्ट, विभुत्व 2. व्याकुल, स्पष्ट किया गया
3. विकृत, व्याकुल, विगाड़ा हुआ, विकृति ।
व्याकुलितः (स्त्री०) [वि + कृ + क्त + क्त] 1. विवृ-
2. विवलेषण, व्याख्या 3. कृत् परित्यक्त, विकास
4. व्याकरण ।
व्याकुल (य) (वि०) [वि + कृ + क्त (य) + क्त]
1. पुनराया हुआ, प्रकुलित, पुनित मुकुलित—व्या-
कुलकोकनदत्ता दत्ते मलिन्य वि० ४।२६ 2. विकलित
—मनु० ३।१३ ।
व्याकुलः [वि + कृ + क्त + क्त] 1. इचर उचर
उकालना 2. चबराय, उकावट 3. विवृण्व—व्या-
कुलो अविध्यमयाः कार्यमिदं हि कलजम्—रघु०
१०।१५ 4. उत्पन्न ।
व्याकुल [वि + कृ + क्त + क्त] 1. वृत्तान्त,
वर्णन 2. स्पष्टीकरण, विवृति, टीका, भाष्य ।
व्याकुल [वि + कृ + क्त + क्त] 1. कथित, कथित
2. स्पष्टीकृत, विवृत्, टीकायुक्त ।
व्याकुल (यु०) [वि + कृ + क्त + क्त] व्याकुलकार,
भाष्यकार ।
व्याकुलम् [वि + कृ + क्त + क्त] 1. ससूचन, वर्णन
2. भाषण, वक्तृता 3. स्पष्टीकरण, विवृति अर्थकरण
टीका ।
व्याकुलम् [वि + कृ + क्त + क्त] 1. विज्ञान, मचना
2. रणदना, वर्णन ।
व्याकुलः [वि + कृ + क्त + क्त] 1. रणदना 2. वण्ड,
ग्रहण 3. विज्, उकावट 4. वचन विरोध 5. एक
अक्षरकार जिसमें परस्पर विरोधी फल एक ही कारण
से उत्पन्न दिखाये जाते हैं, ममत्त वस्तुकी परिभाषा
निष्पादित करता है तदुपरा साहित्य केनाप्यपरेण
तदुपरा । तबैव मन्त्रिणीयैत स व्याधान इति स्मृत ॥
काव्य० १०, उदा० ६० विद्व० १।२, वा विरुपाक्ष
के नीचे दिया गया उद्धरण ।
व्याकुलः [व्याकुलित—वि + कृ + क्त + क्त] 1. वाच,
वीता 2 (समान के अन्त में) सर्वोत्तम, प्रमुख, मुख्य
—जैसा कि मर्यादा या पुरुषार्थार्थ में 3 सात्त्विक
का एरड का पीका श्री मादा वीता— व्याकुली
तिष्ठति बरा परित्यज्यन्ती मनु० ३।१०९। सम०
— अष्ट भातक पथी, —आत्मः विनाश, मल, कृष्ण

1. वाच का रंजा 2. एक प्रकार का मन्त्रद्वय
3. मरीच, मलकत, —आत्मः वीर्य ।
व्याकुलः [व्याकुलित मन्त्राव्यवहारात् अपवर्णयति अनेन—वि
+ कृ + क्त] 1. वीता, वाच, कृष्ण, वात्सल्यवी
2. कला कौशल बन्धाव मनोहर वज्रः व० १।१८,
'स्वाभाविक रूप से प्रिय' 3. वहाता, अपवर्ण, वाचात
व्याकुलव्यवस्थेय—आत्म० १।१, रघु० ४।२५, ५८,
१०।१५ १।१५ ४ वृत्ति, वाच, वृत्तवृत्ति व्या-
कुलव्यवस्थितमेकानि—रघु० १।३।२। सम०—व्याकुलः
(स्त्री०) एक अक्षरकार जिसमें किसी कारण से
स्पष्ट फल का जानबूझ कर कोई दूसरा कारण बताया
जाना है, वहाँ वास्तविक भावना को कोई दूसरा
कारण बताकर छिपा दिया जाता है—दे० काव्य०
१० व्याकुलित के नीचे 2. परोक्ष सङ्कृत, व्याकुलित,
—निष्ठा कृत या कपट से की गई निष्ठा, कृत
(वि०) वृत्तवृत्त मोदा हुआ, स्तुतिः (स्त्री०) बर्षा
के बाहरनी (I. १) से विकृता मुक्ता एक
अक्षरकार जिसमें व्यक्त की गई प्रकृति से निष्ठा
तथा प्रत्यक्ष निष्ठा से स्तुति उपलब्धि होती है—व्या-
स्तुतिर्व्यक्त निष्ठा स्तुतिर्वा अक्षरव्या—काव्य० १० ।
व्याकुलः [वि + कृ + क्त + क्त] 1. मात मली वानवट,
जैसे कि बीटा खेर आदि 2. वदमात्र, पुष्पा 3. जीव
4. इन्द्र यु० व्याकुल ।
व्याकुलः (यु०) १५ प्रसिद्ध वैयाकरण ।
व्याकुल (यू० क० कृ०) [वि + कृ + क्त + क्त] विवृत्,
कलनाया गया, दुखाया गया ।
व्याकुली [वि + कृ + क्त + क्त] निष् + कृ + क्त + क्त
बलविहार वलकीरा ।
व्याकुलम् [वि + कृ + क्त + क्त] सोलना, उच्चादन ।
व्याकुल [वि + कृ + क्त + क्त] निष् + कृ + क्त + क्त
विष्णु का विशेषण ।
व्याकुल [व्याकुल + क्त] 1. शिकारी, बर्षा (वाति से वा
वेसे के कारण) 2. वृत्त अनुप, अचन पुरुष । सम०
मौतः हरिण ।
व्याकुलः [व्याकुल + क्त + क्त + क्त] इन्द्र
का बल ।
व्याकुल [वि + कृ + क्त + क्त] 1. बीमारी, रोग, क्वा,
अस्वस्थता (शाय शारीरिक—वि०) 'वाति' अर्थात्
वास्तविक रोग हुआ, चिन्ता बादि—रिपुवधतवीर्यवैद्यः
सततव्याधिरनीतिरस्तु ते वि० १५।११ (यहाँ
'व्याधि' का अर्थ 'वाति' से युक्त भी है) यु० वाति
2. कोढ़। तब० कर (वि०) अस्वास्थ्यकर, —अल
(वि०) रोगाकल, बीमार ।
व्याकुल (वि०) [व्याधि सञ्जातोऽय इवम्] रोग-
कल, बीमार ।

कैलाशे हो तो हाथों की अनुमति को कोरी के बीच की हुरी ।

व्याप्ति (वि०) [वि + भा + भिष् + भञ्] [मिला हुआ] भिषित, मड़द-मड़द किया हुआ ।

व्यामोह [वि + भा + मूह + घञ्] 1 प्रलयान्माद 2 व्याकुलता, परेशानी बेचैनी कमस्थालमूर्च्छित जितमिति व्यामाहकोलाहल गीत० १०, काव्या० ३।१०।१ ।

व्यापत (भू० क० कृ०) [वि + आ + यत् + क्त] 1 लम्बा, विस्तृत 2 वायुव्यायवाहुरसल - रघु० ३।३६ 2 कुलाया हुआ खूना हुआ 3 जिसने व्यापाम किया है अनुशिट् 4 व्यस्त, काम में भगा हुआ मथुरा 1 कठार दुष्ट 1 मजबूत गहन अ-रिचक 7 ताकतवर, धार्मिकवालो 8 महारा ६० ५।५६ ।

व्यापतन्त्रम् [व्याप + तन्त्र] पुराणा का विभाग १० २।४ ।

व्यापान [वि + भा + यत् + घञ्] 1 बिस्तार करना कैलाश 2 कमरत, शारीरिक व्यायामों का अभ्यास - सि० २।१६ 3 बकान, श्रम 4 प्रयत्न, चेष्टा 5 बाण्ड, मधुर्य 6 हुरी की माप विशेष (अभ्यास ६०) ।

व्यापारविक (वि०) (स्त्री० की) [व्यापाम + टक् मस्तकविद्या-विषयक शारीरिक कसरत सबधी ।

व्यापल [वि + भा + यत् + घञ्] नाट्यसाहित्य में एक प्रकार का एकाकी नाटक मा० ६० ११४ पर इत्यर्क निम्न परिभाषा दी गई है - व्ययन्त्रिकता व्यापाम स्वलास्वीजनमयुग । हीनो गर्भविमर्षाभ्या नरेवंदु-भिराश्रित । एकांतस्थ भवेदलोनिमिषममरादय , कैशिकीर्वाणरहित प्रख्यातस्तत्र नायक । रात्रिपरिच दिव्या वा भवेद्भारोदयवयव ग हास्यमृदुगान्धान्तेभ्य इतरेऽप्याङ्गीगता यसा ।

व्यापल (वि०) [वि + आ + डल् + घञ्] 1 दृष्ट दृष्ट्यन्ता - व्यापलद्वारा गन्तुभिर्गम्यदिग्विधि सि० १०।२८ यथा गज व्यापलविशरणस्य कि० १।३।२५ 2 बुरा पापिष्ठ 3 क्रूर शीघ्र जबर कि० १।३।४ ल 1 बुरी हाथी व्याल बालमृगालतन्त्रभिर्गता रोदधु समुद्रमयने भर्तु० २।१ 2 शिबरा का जानवर 3 सौर-हि० ३।२९५ बाघ, मा० ३।५ 5 बीना 6 राजा 7 ठस बदमाश 8 विष्णु । सम० कङ्क नक्षः एक प्रकार की कुटी, बाह, पाहिन् (पु०) सपेरा, बुधः 1 जगती जानवर 2 सिकारी बीला, कनः शिव का विशेषण ।

व्यापलः [व्याप + क्त] दृष्ट या बुरी हाथी ।

व्यापलम् [विशेषण नामधेयते वि + भा + लप् + भञ्] एक प्रकार का एरु का बीला ।

व्यालोक (वि०) [वि + भा + लाह् + भञ् इत्यल] 1 कापने वाला चरचराने वाला 2 अव्यवस्थित, अस्त-व्यस्त व्यालोक केसपाश गीत० ११ ।

व्याचकलम् [वि + भा + च + कल् + ल्युट्] बटाना ।

व्याचकोषी, **व्याचक्रासी** [वि + भा + च + कृश् (भाष) + भिष् + अञ् + कीप्] परस्पर दुर्बोधन कहना आपस की भाषीमलीव ।

व्याचर्तः [वि + भा + च्त् + घञ्] 1 घेरना, लपेटना 2 क्रान्ति अग्रण, चक्कर खाना 3 फटी हुई अर्धान् जाने को रोकली हुई मात्रि ।

व्याचर्तक (वि०) (स्त्री०) निक्का [वि - आ + च्त् + भिष् + अञ्] 1 लपेटने वाला घेरा डालने वाला 2 निकालने वाला अपवर्जन करने वाला, विमुक्त करने वाला 3 मूढ़ने वाला 4 गाढ़ खाने वाला ।

व्याचर्तन्त्रम् [वि - आ + च्त् + ल्युट्] 1 घेरना लपेटना 2 घूमना मूढ़ना चक्करखाना कि० ५।३० 3 रम्यो ब्राह्म का गाल लपेट पट्टी ।

व्याचस्मित (भू० क० कृ०) [वि + भा + च्त् + क्त] पसींवा हुआ द्रवित, रिशुब्ध ।

व्याचहारिक (वि०) (स्त्री०-की) [व्यवहार + टक्] 1 व्यवसाय सबधी प्रयोगात्मक 2 कानूनी बंध 3 प्रथागत प्रचलित 4 धर्मात्मक-नु० श्रान्तिवर्गिक, -कः परामर्शदाता, यमी ।

व्याचहारी [वि + भा + च + ह् + भिष् + अञ् + कीप्] परस्परवि चरण केन देव ।

व्याचहासी [वि + भा + च + ह् + भिष् + अञ् + कीप्] परस्परक अवज्ञा, एक दूसरे की हसी उड़ाना ।

व्यावृत्ति (स्त्री०) [वि + भा + च्त् + क्त] 1 आवरण पुरदा डालना 2 निवार देना निष्कासन ।

व्यावृत्त (भू० क० कृ०) [वि + भा + च्त् + क्त] 1 हटाया हुआ क्षणिक निवार व्यावृत्त यन्त्र-स्वेभ्य भूतो लक्ष्यता विधाय रघु० १०१ विक्रम० १।१ 2 विमुक्त विजाय अलस हटाया हुआ 3 निकाला हुआ, एक ओर रक्सा हुआ 4 चक्कर लगना हुआ मूढ़ा हुआ 5 लपेटा हुआ धिगा हुआ 6 रुका हुआ उपरत - भू० २।६५ 7 फाड़कर टुकड़े टुकड़े किए हुआ ।

व्यावृत्तः [वि + प्रस + घञ्] 1 वितरण विभाजन 2 समाप्त का विघ्न या विरोध 3 अवगाव, पृथक्ता 4 प्रसार, फैलाव 5 अर्ध चौड़ाई 6 बूल का व्यास 7 उत्सारकदोष 8 व्यवस्था लक्षण 9 व्यवस्थापक, संकलविता 10 एक प्रसिद्ध शक्ति का नाम (यह परा-कर का बुध था, सत्यवती इसकी माता थी) (सत्य-वती का कल्पवृक्ष के साथ विवाह होने से पूर्व इसका

जन्म हुआ था) और जन्म होते ही यह मन में बसा गया। यहाँ यह मानप्रत्य होकर और तत्पराधना में लीन रहा जब तक कि इसकी माता कल्पवती ने अपने पुत्र विचित्रवीर्य की विधवा पत्नियों में लगान उत्पन्न करने के लिए इसे नहीं चुना था। इस प्रकार यह पाण्डु, वृत्राशु और विभुर का पिता था। पहले पहले यह रंग का काला होने तथा एक द्वीप पर कल्पवती से जन्म लेने के कारण 'कुलहूपामन' कहलाया, परन्तु बाद में इसका नाम व्यास पड़ा क्योंकि इसने ही वेदों के मन्त्रों को क्रमबद्ध कर वर्तमान रूप दिया। "विश्वास वेदान्तज्ञास तस्माद्व्यास इति स्मृतः"। ऐसा विश्वास किया जाता है कि इसी ने महाभारत की रचना कर उसे वनपति द्वारा लेखबद्ध कराया। बठारह पुराणों तथा ब्रह्मसूत्रों का रचयिता भी इसी को माना जाता है, यह बात 'चिरजीवियों' में से एक है (पु० 'चिरजीविन्') 11 यह ब्राह्मण जो सार्वजनिक रूप से पुराणों की कथा करता है।

व्यासस्त (पु० क० ड०) [वि + वा + तञ्ज् + क्त] 1. जो बुद्धता पूर्वक उठा रहे 2. नृणा हुआ, लना हुआ, चुना हुआ व्यस्त, (अधि० के साथ) 3. निपुण, पुष्क किया हुआ, व्यस्य किया हुआ 4. परेधान, व्याकुल, बचड़ाया हुआ।

व्यासकृत् [वि + आ + सञ्ज् + कृत्] 1. सटा होना, डट रहना, चुका रहना 2. एकनिष्ठय, अस्ति-नामि० १।७९ 3. अपरिधम अश्वजन 4. व्यास 5. पुनस्ता, संयोग।

व्यासिद्ध (पु० क० ड०) [वि + आ + सिच् + क्त] 1. प्रमिषिद्ध, वसित 2. निषिद्धपथ, चोरी का मार्ग।

व्यावृत्त (पु० क० ड०) [वि + वा + हृ + क्त] 1. अवच्छेद, रोका हुआ 2. हटावा हुआ, पीछे धकेला हुआ 3. विपन्न किया हुआ, निराश सि० ३।४० 4. व्याकुल, बचड़ाया हुआ, व्यथित। तम० अर्थात् रचना का एक बोध - हे० काव्य० ७।

व्यावृत्त [वि + वा + हृ + स्मृत्] 1. बोलना, उच्चारण करना 2. भाषण, वर्णन।

व्यावृत्त [वि + वा + हृ + वञ्ज्] 1. भाषण, बोलना, ५. न - उत्तर० ४।१८, ५।२९ 2. व्यावृत्त, स्वर, अति माधुर्य ५।११।

व्यावृत्त (पु० क० ड०) [वि + वा + हृ + क्त] कहा हुआ, बोला हुआ, उच्चारण किया हुआ।

व्यावृत्ति (स्त्री०) [वि + वा + हृ + क्त] 1. उच्चारण, भाषण, वचन न हीनरव्यावृत्त करविष्यु व्याप्ति कोके विपरीतवर्षम् - कु० ३।१० 2. वक्तव्य, अभिव्यक्ति - व्यावृत्त्यावृत्तिः स हि न स्तुति वरमेष्टिनः

—रघु० १०।३३ 3. तन्मया करते समय प्रतिविम्ब प्रत्येक ब्राह्मण द्वारा उच्चारित ईश्वर वरक सख्य विद्येय (यह व्यावृत्तिवा गीत है—मूर, मुक्क, तथा स्वर जिनका 'ओ३म्' के पश्चात् उच्चारण किया जाता है, कुछ अन्य विद्वानों के मतानुसार व्यावृत्तिवा गीतों में सात है)।

व्यावृत्तिः (स्त्री०), व्यावृत्तेः [वि + उत् + क्त्वि + क्त] नञ् वा] काट डालना, उन्मूलन, पूर्ण विनाश।

व्यावृत्तः [वि + उत् + क्त्वि + क्त] 1. अतिक्रमण, विचक्षण 2. उकटा क्रम, बेपरीत्य 3. अव्यवस्था, गड़बड़ी।

व्यावृत्त (पु० क० ड०) [वि + उत् + क्त्वि + क्त] 1. अतिक्रमण, उल्लंघन किया गया 2. जो बिना हो गया हो, छोड़कर चला गया हो, कीत गया हो।

व्यावृत्तम् व्यावृत्तिः (स्त्री०) [वि + उत् + स्त्वा + स्मृत् क्त] 1. महान् क्रियाकलाप 2. किसी के विरुद्ध लगे होना, विरोध, ककावट 3. स्वतन्त्र कर्म, मनोज्ञ-कूल कार्य 4. (बोण० में) वार्षिक मनोयोग की प्रति या आवातक मनन 5. एक प्रकार का नृत्य 6. (हावी को) उठाना - सि० १८।२९

व्यावृत्तिः (स्त्री०) [वि + उत् + पद् + क्त] 1. मुक्त, उत्पत्ति 2. व्यापार, निर्वचन 3. पुरी प्रवीक्षता, पुरी जानकारी 4. विद्वत्ता, ज्ञान - व्यावृत्तिरव्यवस्थित-कोविदाय न रञ्जनाय कमरे ब्रह्मानाम् विद्वान् १।१५, १८।१०८।

व्यावृत्त (पु० क० ड०) [वि + उत् + पद् + क्त] 1. उत्पत्ति, पैदा किया गया 2. निर्वचन द्वारा निर्मित 3. व्याकरण द्वारा निष्पन्न, निकल, (अर्थ) जिसके निर्वचन का पना कम गया हो (विद्य० अन्वृत्त या मूल) 4. पूरा किया गया, सम्पन्न किया गया महावी० ४।५७ 5. पुरी तरह प्रवीण, विद्वान्, पथित।

व्यावृत्त (पु० क० ड०) [वि + उत् + क्त] विचय, भार, विमोघा हुआ।

व्यावृत्त (पु० क० ड०) [वि + उत् + क्त + क्त] एक और फेंका हुआ, बखीझा, डूर किया हुआ।

व्यावृत्तः [वि + उत् + क्त + क्त] 1. एक और फेंकना, बखीझना 2. (आ० में) विकास देना 3. प्रतिषेध 4. उपेक्षा, उदासीनता 5. झुका, विनाश सि० १५।३७

व्यावृत्तः [वि + उत् + क्त + क्त] व्याज, बहाना।

व्यावृत्तः [वि + उत् + क्त + क्त] विराम, वधि, समाप्ति।

व्यावृत्तः [वि + उत् + क्त + क्त] 1. विराय का अभाव 2. समाप्ति 3. पूर्ण विराम (यहाँ 'वि' का अर्थ 'तीकना' है)।

परन्तु उनकी सखा निश्चित नहीं हो सकी क्योंकि बराबर नये नये बतों की रचना प्रतिदिन होती रहती है तथा सत्यनारायण व्रत 2. सकल्प, प्रतिज्ञा, वृद्ध निश्चय—सोऽभूत् भगवतः सन्नुद्वय प्रतिरोपयन् रघु० १७।४२, इसी प्रकार 'सत्यवन, वृद्धवन इत्यादि 3 भक्ति या आस्था का पदार्थ भक्ति जैसा कि पतिव्रता (पतिव्रत यस्या सः) याति देवव्रता देवान् पितॄन् याति पितृव्रता—भग० १।२५ 4 सम्कार अनुष्ठान, अभ्यास जैसा कि अर्कव्रत में 5 जीवन वर्षा आचरण चालचलन श० ५। ६ 6 अर्घ्या देवा विधि नियम 7 यज्ञ 8 कर्म करतब बाप ।

सम० आचरणम् किसी प्रतिज्ञा का पालन करना आदेश (किसी छिन्न के) बालक का यज्ञागवीन सत्कार, उपवास किसी प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिए अनशन करना ब्रह्मन् किमो धार्मिक अनुष्ठान को पूरा करने के लिए सकल्प लेना—चर्च ब्रह्मचारी वेदविद्यार्थी दे० ब्रह्मचारिन्, चर्चा ब्रह्मचर्य का पालन करना, चारणम्, या उपवास सोलना या प्रतिज्ञा की सफल समाप्ति—ब्रह्म 1 सकल्प नाडना 2 प्रतिज्ञा तोडना मित्रा उपनयन सम्कार के अवसर पर मित्रा मायना लोचनम् प्रतिज्ञा को तोडना,—बैकल्पम् किमो धार्मिक सकल्प का अधूरा रह जाना,—संशङ्कः व्रत की दीक्षा लेना,—स्नातक बह्म ब्राह्मण विष्णवे ब्रह्मचर्य आश्रम को अवस्था का पूरा कर लिया है अर्थात् ब्रह्मचर्य नामक प्रथम आश्रम—दे० स्नातक ।

व्रतति, व्री (व्री०) [व्र + तन + क्ति च पूर्वा०] पम्प व व्रतति + व्री०] 1 बेल लना पादाङ्गुष्ठव्रतनिवन्धया लगसज्जालपाश श० १।३३ रघु० १०।१ 2 पंजाब विस्तार ।

व्रतित् (वि०) [व्रत + इति] प्रतिज्ञा पालन करने वाला अन्न पुण्यात्मा, (पु०) 1 ब्रह्मचारी 2 सत्यासी भक्त—श० ५।९ 3 जो यज्ञ का उपक्रम करता है—दे० यजमान ।

व्रज्ज दे० 'व्रज्ज' ।

व्रह्मन् दे० 'ब्रह्मन्' ।

वृक्ष (तुरा० पर० वृक्षति, वृक्षन्, व्रे० वृक्षयति—ते इच्छन्० विप्रविषयति या विप्रलसति) 1 काटना काट डालना, फाड़ना, चीरना 2 बाधन करना ।

वृक्षन् [वृक्ष + क्त्वाट्] ' छोटी बारी 2 दारीक लेनी व्रिसे सुनार काम में आते हैं—सम् काटना, फाड़ना बाँधन करना ।

वृक्षिः (व्री०) [वृक्ष + इत्] हका का लोका, तुकानी हुवा, झंझावात ।

वृक्षः [वृ + व्रत् + क्त० नाट्] सन्नुदाय, देवद, समुच्चय—स्वपाकाशो व्रतै—वंगा० २९, रघु० १२।१४, वि०

४।३५, सङ् 1 शारीरिक श्रम मजदूरी 2 दैनिक मजदूरी 3 यथा-कथा कार्य में नियुक्ति ।

व्रातीय (वि०) [वातेन जीवति—वात + क्] दैनिक-मजदूरी से जीविका चलाने वाला किगये का मजदूर बेलदार, झेली वाला ।

व्रात्य [वातान् समुद्धान् प्ययति यत्] 1 प्रथम तीन वर्षों में से किसी एक वर्ष का पुरुष जो मुख्य सम्कार या शोधक कृत्यों का अनुष्ठान न करने के कारण पतित हो गया है (त्रिवका उपनयन सरकार नहीं हुआ) वाग्बिहिरकृत भवत्या हि व्रात्याद्यवर्षान्तमावच्छ परिषत्परिव्राणस्मिन् गमा० ३० 2 नीच पुरुष अधम पुरुष 3 विषय नाच गर्जित (गुह्यपिना और अविद्य माता की शरान १। गुह्य। सम०—बुध इ' अर्धन अपको व्रात्य रहता है—स्नात उपयुक्त सम्कारों का अनुष्ठान न करने के कारण छीन गये अधिकारी को फिर से प्राप्त करने के लिए किया गया यज्ञ ।

व्री (कथा० पर० विणायि व्रीणारि) छाटना चुनना नु० वृ० ।

11 (दिवा० प्रा० शोयत वीण) 1 जाना हिलना-झुलना 2 चुना जाना ।

वीड (वि०) पर० व्रीडयति) 1 अजिज्ज होना शर्मिन्दा होता 2 छेकना डालना भेज देना ।

वीड्ड हा (वीड + घडा - वीड्ड अ + टाप्) 1 लकड़ा फोड़विदाभ्यासगर्भविस्मये शि० ३।४० वीड्डया वरति य स (गन्ध) सप्रति म्पु० ११।३ 2 विना लज्जापाकना शि० १०।११ ।

वीड्डिन (भू० क० क०) [वीड् + क्त] लज्जित किया गया शर्मिन्दा अलज्जाशील ।

वीम (व्या० पर० वृमा० उम० वीमति वीसयति—ते) अति पतुचाना हुया करना ।

वीहि [वी + हि क्त्वा] वाक्य जैसा कि बहुवीहि में 2 वाक्य का दाना। सम० अगारम् धाम्यामार, पत्नी काश्चनम् मसूर की दाल राक्षस्य चना, कम् या कागनी बाबल ।

वृह् (तुरा० पर० वृक्षति) 1 डबना 2 इकट्ठा होना 2 एकत्र करना मध्य करना 4 हुज्जा, नीचे जाना ।

वृत् (व्या० पर० उम०) दे० 'वीत्' ।

व्रीह्य (वि०) (व्री०—वी) [व्रीहि + क्त] 1 बाबलों के योग्य 2 बाबल के साथ बोया हुआ वृक्ष बाबल का भेत बहु जैन ग्रिममें बाबल बोये जाने चाहिए ।

व्री (कथा० पर० विडनाति—व्रीनाति विरम प्रयोग—व्रे० अवेयति) 1 जाना हिलना-झुलना 2 मग्ध पोषण करना, धामे रकना, निर्वीह करना 3 काटना, चुनना । अवेय (वृमा० पर० अवेयति—ते) देखना ।

घा: [शो + ड] 1. काटन वाला बिनाशकर्ता बि० १-५
४५ 2. शम्भ 3 शिव - शम्भ आनन्द-भक्त ० २।१६।

शम्भु (वि०) [शम्भुम् अन्त्यस्थ शम् + युम्] प्रमत्त
सम्पत् अष्टि० १।१८।

शम्भु [शम्भु + व] 1 प्रसन्न भगवन्नाली (पु०) 1 ठोकर
दिशा में हल चलाना 2 हन्त्र का वध 3 मसल क-
सिर जो ओढ़ वा बना डोना है।

शम्भु (स्वा० पर०) शम्भु शम्भु कर्मका० शम्भु

1 प्रशमा करना, शान्ति करना अनुमोदन करना

साधु मार्गदर्शन भूषान शम्भुमाहतामजम-राम०

भग० ५।१ 2 करना बधान करना अभिषेक

क ॥ ५५५० ३ करना समुचित करना साधना

करना विवरण देना मय ० २ अमी मय० के साथ

अथवा स्वयं का है। शम्भु मोना पर्वदेवनन्दन

गिठ शम्भुमयनाय रघु० १६।८, नमो ह्यया

शम्भु शिवदायिन् ३५-६६ ४७०, १।७७

११।४ ५० ३।६० ५०३ 3 मय करना कह

रखना त्राना य ॥ अथा ॥ मावजो मावबधो

नियोतो पुण्ये समस्यादर त्वप्रदाने माला ० ५।८

कि० ५।७३ ५० २।५५ ४ धार्ष्ट्य करना पाठ

करना ५ बाट मागना क्षति पहुँचाना ६ बुग बन

करना बहना करना अभि- 1 अनिपाप देना

2 दाधारोपण करना निन्दा करना बदनाम करना

यात्रा ० ३।७८६ 3 प्रशंसा करना, आ (प्रार सा)

1 आशा करना प्रत्याशा करना इच्छा करना अभि

लाषा करना रवकारिमाद पुनरापणमे कु- ४।

७७ मयाम कशजमिह अष्टि० १।७३ १० मना

शा ॥ तामसि हि बाह्याम्यदा वया य ३१३

-११० २ प्राणापौर देना म' क्छा पञ्च करना

म' साना करना ३ व' देना पारमन् मूच्छ०

१ राज शिव साधनम् अशान्तिप्राप्तम वरुणै

रवाधो ॥ १५५० ३ करना वनी करना

आजमरा शान्ति ११० ३१३ ३१३ प्रणिप्र

क-राम ४०-१० १० १० १० १० १० १० १०

प्र- १० १० १० १० १० १० १० १० १० १०

प्र- १० १० १० १० १० १० १० १० १० १०

प्र- १० १० १० १० १० १० १० १० १० १०

प्र- १० १० १० १० १० १० १० १० १० १०

प्र- १० १० १० १० १० १० १० १० १० १०

प्र- १० १० १० १० १० १० १० १० १० १०

प्र- १० १० १० १० १० १० १० १० १० १०

प्र- १० १० १० १० १० १० १० १० १० १०

प्र- १० १० १० १० १० १० १० १० १० १०

की गई हो, स्तुति की गई हो 2 बोला गया, कहा
गया, उक्त, घोषित 3 अभिलषित इच्छित 4 निश्चय
किया गया स्थापित, निर्धारित 5 जिस पर मिथ्या
दाधारोपण किया गया हो कल्पित।

शक्ति (वि०) [शम्भु + हति] [प्राय मयाम के अन्त

में] 1 स्थापन करने वाला 2 कहने वाला बोधना

करना वाला समुचित करने वाला, प्रभावनी दोहव-

गमिता ० रघु० १६।४५ 3 मकेत करने वाला,

पञ्चम ३४ रखने वाला मूषान क्षुब्धकारक्षित

हु० ५५६, प्रार्थनामिदधित रघु० १।६७

जि० १।७७ 4 शक्ति करने वाला अभिषेक करने

करने वाला रघु० ३।१४ १२।९०।

शक्त (स्वा० पर०) शक्तानि शक्त 1 योग्य होना,

सक्षम होना, सफल होना, अमल में लाता (प्राय

नुमुन्न के साथ, प्रयुक्त होकर 'शक्त' अर्थ प्रकट

करना 1-अवस्थान वक्तुमशक्नुवत्य शास्त्राभिराक्षित-

पल्लवाभि रघु० १३।५, अष्टि० ३।६ वष० २०

कमी कमी कर्म० वा मय० के साथ-मनु० ११।१५

2 सहन करना, बर्दाश्त करना 3 शक्तिशाली होना

कर्मका० समर्थ होना, सम्भव होना, व्यवहार के

योग्य होना (निम्नादि नुमुन्न का कर्मका० का

अर्थ देना) शक्तुं शक्यते यह किया जा सकता

है इच्छा० (क्षिति) 1 समर्थ होने की इच्छा करना

2 सीखना।

1 (दिवा० उ०) -सक्यति-ते, शक्त 1 समर्थ

होना अमल में लाने की शक्ति रखना 2 सहन

करना बर्दाश्त करना।

शक्त [शक्त + अक्ष] 1 एक राजा (विशेषतः 'शालि-

वृहत् परन्तु इस शब्द के सही अर्थ तथा क्षेत्र के

विषय में अभी तक विद्वानों में मतभेद नहीं हो सका)

2 काल सम्बन्ध (यह शब्द विशेष रूप से शालिवाहन

सम्बन्ध के लिए जो ख्रीष्टपूर्व से ७८ वर्ष के पञ्चानु

चारम्भ दुर्वा प्रयुक्त होना है) का (पु० ब० ब०)

1 एक देश का नाम 2 एक विशेष जन-जाति या

गण्ट का नाम (मनु० १०।४४ में पौण्ड्र के साथ

इस शब्द का नाम प्रयोग मिलता है) सम० अन्तक,

अरि राजा विक्रमादित्य के विशेषतः जिसने शत्रु

का उन्मूलन किया अथवा शत्रुत्व का वर्ण, कर्त्तुं

हुत् (पु०) शत्रु का प्रवर्तक।

शकट, -टम् [शक् + अटम्] गाड़ी, छकड़ा, चार डोने की

गाड़ी रोहिणी शकटम् पञ्च० १।२१३, २११, यात्रा०

३।४२ ४ 1 सैनिक व्यूहविशेष मनु० ७।१८७

2 एक विशेष प्रकार की तोल जो एक गाड़ी-चर

बोला या २००० पल के बराबर है 3 एक राजस का

शसम शम्भु १ पशना करना 2 कहना वर्णन

करना ३ पाठ करना।

शला [शल + श + ण] 1 शलाघा 2 अभिलाषा

इच्छा आशा 3 दाहारा, वर्णन करना।

शस्ति (पु० क० क०) [शम्भु + हति] 1 जिसकी शलाघा

नाम जिसे कृष्ण ने अपने बचपन में ही, मार डाला था ४. तिनिस नामक पेड़। सम० अरि,--हृन् (पु०) कृष्ण के विशेषण, बाबूरा रोहिणी नामक नगर (इसका आकार 'शकट' जैसा होता है), जिस: जञ्जकुक्कुट।

शकटिका [शकट + शीष् + कन् + टाप्, ह्रस्व] छोटी गाड़ी, खिलौना-गाड़ी जैसा कि 'मृच्छकटिका' में।

शकम् (मपु०) मल, बिच्छा, विशेषकर ज्ञानवरों का मल, लीद गोबर आदि (इस शब्द के पहले पाँच बचनों में कोई रूप नहीं होता, कर्म० द्वि० व० में जाने विकल्प से 'शकृत्' आदेश हो जाता है)।

शकलः [शक् + कलक्] १ भाग, जंघा, हिस्सा, टुकड़ा लच्छ (इस अर्थ में मपु० भी) उपलक्ष्यमेतद्भेदक गोमयाना मुद्रा० ३११५ रघु० २।४६ ५।७० २. शकल, शिलका ३ (मछली की) साल, परत।

शकलित (वि०) [शकल + इतच्] लच्छ-लच्छ किया हुआ, टुकड़े-टुकड़े किया हुआ।

शकलित् (वि०) [शकल + इति] मछली।

शकारः (पु०) राजा की रजल का भाई, राजा की उम पत्नी का भाई जिससे विधिपूर्वक विवाह न किया गया हो, जगूडा भ्राता (इसका वर्णन बहुधा मिश्रित मिलता है, नीच कुल में जन्म लेने के कारण मुहंता, बर्मा, आदि जगन्मूर्खों के विधवाए रहते हुए भी राजा का साका होने के कारण इसे उच्छयद मिल जाता है, बृहत्कथित मृच्छकटिक नाटक में यह प्रमुख भाग लेता है, मिथ्या वज, हलकापन तथा बोझापन इसके चरित्र की विशेषता है बार-बार उसके उच्छयाम्बु का उल्लेख, उसकी उपहासास्पद मुहंता, एवं प्रवाद तथा अपनी इच्छा की पूर्ति न होने पर मायिका का गला घोटने की कुरता इसकी बोधवता के परिचायक है सा० व० ८१ में इसकी परिभाषा दी गई है सदमूर्खनायिमायी दुष्कुलनव-र्मसमुक्ता। सोऽयमनुभात्राता राज्ञ इत्यान् शकार इत्युक्ता ॥

शकुनः [शक् + उतन्] १ पक्षी शकुनोच्छिष्टम् - याज्ञ० १।१६८ २ पक्षिविशेष, बिल, गिड़, बम् १ मग्न, कलान, बुभुक्षुम वतलाने वाला चित्तु सि० १।८३ २ साकामुषक समुन। मग्न० - ज्ञ (वि०) मग्नो का जानने वाला, ज्ञातृ मग्नो का ज्ञान, भविष्यता, होमहार, - ज्ञातृ मग्न वह ज्ञान्य जिनमें समुनमग्नधी विचार किये गये हैं, समुन ज्ञातृ।

शकुनिः [शक् + उनि] १ पक्षी - उत्तर० २।२५, मनु० १२.६३ २ गिड़, बिल, बाज ३ मूर्ख गांधारः, ४ बुधक का एक पुत्र, बुधराष्ट्र की पत्नी गांधारी का भाई, इस प्रकार यह दुर्बोधन का बोधात्ता। इती

ने पांडवों को उजाड़ने के लिए दुर्बोधन की अनेक दुरभियोजनाओं में सहायता दी। बाब्रकल इस नाम का प्रयोग उस दुर्बल चिन्तेदार के लिए होता है जिसका परामर्श बर्बादी का कारण बने। सम०

ईश्वर गहड, प्रया पक्षियों को पानी पिलाने की दूर बाब १ पक्षी को कृष्ण २ मूर्ख की बात।

शकुनी [शकुन + शीष्] १ विधिया गोरैया २ एक पक्षिविशेष।

शकुन्त [शक् + उन्त] १ एक पक्षी पञ्चमार्गपञ्चकुन्तनी इतिचन विश्वः श्रुतामण्डलम् सा० ३।११ २ नीलकण्ठ पक्षी ३ पक्षिविशेष।

शकुन्तकः [शकुन्त + कन्] पक्षी।

शकुन्तला, शकुन्त लावने-ला बडार्थ क, राप्] विधवा मिश्र शृष्टि की तपस्या भग्न कर्मों के निरा इन्द्र द्वारा भेजी गई मेनका अप्सरा ने उत्पन्न विश्वामित्र को पुत्री (एक मेनका स्वर्ग गई तो वह हुआ बल्की की एकान्त जगल में छाड़ गई वहाँ पक्षिया न इसका पालन पोषण किया इसा गिरा इसका ता। शकुन्तला पक्षा। बाद में वह मर्त्य कथ को मिली। कथ ने उसे अपनी पुत्री की भाँति पाया। जब अश्वत्थ करता हुआ दुष्पन्ता कथ नरिष क आश्रम को प्रार आया तो वह शकुन्तला के लावण्य में आकृष्ट हो गया। उन्ने शकुन्तला को अपनी पत्नी बनाने के लिए उसे राजी कर उसमें माधव विवाह कर लिया (२० दुष्पन्ता)। शकुन्तला में एक पुत्र पैदा हुआ, इसका नाम भरत था पर चक्रेती राजा बना इसी के नाम से इस दण का नाम आश्वत्थ पक्षा।

शकुन्ति [शक् + उन्ति] पक्षी कलमदिरण मपु कटा कथयन्तु शकुन्ताप उत्तर० ३।२८।

शकुन्तिका [शकुन्ति + म् + टाप्] १ पत्नी-उत्तर० १।६५ २ शिवविशेष ३ टिड्डी, भीमूर।

शकुलः, ली [शक् + उलच्] एक प्रकार की मछली। सम० जबकी एक बड़ीबुटी, कटवी या हुटकी अर्थक एक प्रकार की मछली।

शकुत् (मपु०) [शक् + टतन्] मल, बिच्छा, विशेषकर ज्ञानवरों का लीद गांधार आदि। सम० अरि. (पु०, म्जी०)-करी बछड़ा - शकुत्तरिर्वस-मिद्रा०, शरत् मुद्रा, मरुद्धार, सिद्ध, . शकुत्तः गोबर का बोधा शरत्पक्षि प्रदिग्नि शकुत्तविषकाभास प्राधान उत्तर० ८।३३।

शक्कर, शक्करा [शक् + कर्, क् + प्रथ कर्म० सा०] डेल, मोर।

शक्करी [शक्क + री] १ नदी चरखनी, पल्ला ३ मंच शक्ति की मूर्ति।

शक्ता [शक् + क्] [शक् + क्] १ योग, पञ्चम, नयन

(सम्ब०, अधि० वा अनुष्ठान के साथ) - बहुवीज्य
कर्मण शक्ता वेणी० २, सम्बोधकान् शक्तस्त्व कि
जीवन् किमुताभ्या - न० २ मज्झिम, ताज्जिनवर,
शक्तिशाली ३ चनादय, समुद्रिशाली मनु० १११,
४ सार्वक, प्रविष्यज्जक (सम्ब०) ५ अतुर प्रह्वान्
६ प्रियवादी

शक्तिः (स्त्री०) [शक् + क्तिन्] 1 बल, शायना, शारिता, सामर्थ्य ऊर्जा पराक्रम देव हितव्य कुल पीडयमातृशक्त्या पञ्च० १३६१ माने मोन समा शक्ती रायि १५२० इसी प्रकार यथाशक्ति, स्व शक्ति अर्थात् गजयशस्त्र (हम के तीन तन्त्र है 1 प्रभुशक्ति या प्रभावशक्ति 'राजा की अपनी प्रमुख पदवी' 2 अर्थात्कन 'सत्पराशक्त' की शक्ति तथा 3 उत्साह शक्ति 'धैर्यशक्ति') राज्य नाम शक्ति श्रवायसम दश०, विमाधना शक्तिरार्षासमञ्जसम् रघु० ३१३ ५१३३ १३६३ मि० ५२६ 2. राजशाक्ति, काव्य शक्ति या प्रतिभा - शक्तिनि-पुष्पा लोकास्तत्राकाव्यप्रबलान् काव्य० १ दे० लक्ष्मीय व्याख्या 3 देव की शक्ति शक्ति, यह शक्ति देवपत्नी मानी जाती है, देवी दिव्यता (इनकी गिनती शिवप्रकार से की जाती है कहीं बाठे कहीं भी और कहीं प्रकाश तक) स जयति परिणत शक्तिभि शक्तिनाथ -मा० ५१, श० ७३३५ 4. एक प्रकार का ज्ञान - शक्तिजगदाश्रितेन गांधीजीनोकम् वेणी० ३, नली बिन्दु पीडयत शक्त्या बलमि सक्रमन् रघु० १२१७ 5 बर्ही नेत्रा, मूल आला 6 (ग्या० में) किसी पदार्थ का उससे बोधक शब्द से सम्बन्ध 7 काल की अनाहिन शक्ति प्रसने काय की उत्पत्ति होती है 8 (काव्य० में) शब्दशक्ति या पात्र की अर्थशक्ति (पह मरगा में तीन हैं अभिमा-ल्लभा, व्यञ्जना) मा० ६० ११ 9 शक्तिशालि ज्ञानमहेन (विप० ल्लभा और गञ्जना), 10 स्त्री की जननेन्द्रिय भ्रम, शासनप्रदाय के अनुयाइयों द्वारा पूजित निर्विकल्प की मूर्ति। सम० अर्थः उद्योग तथा अथ के फलस्वरूप हापना तथा शरीर का पसीने से तर होना अथवा, अस्मिन् (वि०) सामर्थ्य का व्यापन रखने वाला, -कुष्ठमन् शक्ति की कुष्ठित करना, -बहु (वि०) 1 बच या अर्थ की भारल करने वाला 2 बर्हीबारी, (-ह) बल या शक्त का बोध अथवा शब्दशक्ति का ज्ञान 3 बर्हीबारी, भाषाचारी 4 शिव का विशेषण 5 शक्तिर का विशेषण -बहुक (वि०) शब्द के अर्थ की स्थापना वा विचारण करने वाला, (-कः) कस्तिकेय का विशेषण, अथवा राज्यशक्ति के सरटक नील गन्ध ६ शक्ति (2) ऊपर, शर (वि०) 1 प्रवृत्त विष्णुमणाली (-र) 2 बर्हीबारी

2. कातिकेय का विशेषण, पश्चि, भूत (पु०)
1 बर्हीचारी 2 कातिकेय का विशेषण, पश्चि शक्ति
लय, परादय, भुक्त, शाक्त, पूजा शक्ति की पूजा,
- ब्रह्मचर्य शाक्तलय, दुर्लभता अक्षमता, हीन वि०)
शक्तिहीन, निर्बल, बलरहित, नपुंसक हेतिका बाला
चारी, बर्हीचारी।

अविततः (अव्य०), अकिन् + तमिन्] अकिन् के अनुस्वार
यथायोग्य, यथाशक्ति ।

कण, कण (वि०) [शक् - न कण वा ' दिष्टभाषी,
प्रियवादी ।

शक्य (मं. कु.) [शक्य-यत्] 1 यमव क्रियायमव
 किये जाने के योग्य (शाय मुमुक्षु के साथ) शक्या
 वाग्यित् जलेन हुनमुक् भर्त् ० १११ रघु. २।४।
 ५६ ३ कार्यार्थक के योग्य ३ कार्यार्थक में सरल
 ४ प्रत्यय कता वया, अभिहित (शक्यार्थ आदि)
 शक्योऽर्थाभिप्राया ज्ञेय सां. ६० ११ = यमार्थ
 (कमी-कमी-सक्यम्) शक्य कर्मवा. में मुमुक्षु के साथ
 विभेय के रूप में प्रयुक्त किया जाता है, उदा यमव
 मुमुक्षु का शान्तिव्य अभिप्राय कर्म. में होता है
 एवं हि प्रणयवती सा शक्यमयोजित् कुपिता
 —मात्रहि. १।२२, शक्य अभिरत्नमार्त्तिङ्गु पवज
 शं. ३।६ बिम्बव शक्यमवाप्तमुत्तिता —मुवां.
 यत्. १८।११ 1 यमव अर्थः प्रत्यय अभिहित।

अन्तः [यक् + रक्] १ इन्द्र - एक कृती यमुनेषु योज्य
 शक्यन् वाचते कुण्ड ० २ अर्जुन का वृक्ष ३ कुट्ट
 का पेठ ४ उल्लू - चेट्टा नक्षत्र ५ चौदह की
 मन्त्राः । सम० - अक्षतः कुट्ट का वृक्ष, वाच्यः उल्लू,
 वाच्यः १ इन्द्र का पुत्र जयन्त २ अर्जुन, - उत्तम-
 नम्, उत्तम भाग्यवधुला ह्यदोषी का इन्द्र के
 सम्मान में मनाया जाने वाला उत्तम एवं, शेष-
 एक प्रकार का लकड़ कीड़ा, तु० इन्द्रभोज - वा,
 वात कीड़ा - वित्तु, विष् (पु०) रावण के
 पुत्र देवनाद के विशेषण, इक्षु देवदास का वृक्ष,
 धनुर्व, अरातनम् इन्द्रधनुष पञ्च इन्द्र के
 सम्मान में स्थापित अस्त्र, पर्याय कुट्ट का वृक्ष,
 वाच्य १ कुट्ट का पेठ २ देवदास वृक्ष, अक्षत
 इन्द्रप्रस्थ जयन्तम्, - मुचनम्, वात स्वर्ग, वैकुण्ठ,
 नूतन (न०) शिरस् (न०) दावी, वयोविक
 लोक इन्द्र का समार, - वाह्यम् वादः, वाचिस्
 (पु०) कुट्ट का वृक्ष, वाचिस् इन्द्र का रचवान्,
 वाचिस् का विशेषण, कुतः १ जयन्त का विशेषण
 २ अर्जुन का विशेषण, ३ शक्ति का विशेषण ।

सकायी (अक - डीय, जानक) इन्ड की कमी, कमी ।
अक: (अक - फिन) 1 बादे- 2 इन्ड क बाध 3 पहाड
4 हाथी ।

शक्कर : [शक् + कृ, २] सीध, बिल, तु० लक्कर ।

शक्कु (म्भा० आ० शक्कुते, शक्कुते) १ सदेह करना, अनिश्चित होना, सकीर्ण करना, सदिग्ध होना शक्कु जीवित वा न वा राध० २ डरना, भय होना वस्तु होना (अपा० के साथ) -नाशाकुष्ट बिबिक्कत -भट्टि० १५१९ अशक्कुतेम्य शक्कुते लक्कुतेम्यश्च सर्वत्र -मुभा० ३ शक्का करना, अविश्वास करना भरोसा न करना स्वर्दोर्विभवति हि शक्कुतो मनुष्य मूच्छ० ४१२ ४ शक्चना, विश्वास करना उत्प्रेक्षा करना कल्पना करना सभव समझना शक्का करना डरना स्वयमान्ते नयनमुपरिस्पन्दि शक्कु मृगाक्षया -मेष० ९५ ताह पुनक्कता रयि यथा हि मा शक्कुते भीरु विक्कमा ३१२४, भट्टि० ३१२६ नै० २०४८ ५ आक्षेप करना अप १ शक्का या तेनरात्र उठाना -अक्षेप शक्कयते (बहु०) विवादास्तद भाषा म प्रयुक्त -न च बहुपण प्रमाण स्तरागम्यन्व शक्कुत्तु शक्यम् सर्व० अत्रि १ शक्का करना २ सदिग्ध या अनिश्चयी होना -मनु० ९१६६ आ शक्का करना भरोसा न करना सदेह रखना भट्टि० २११२ ३ सदेह करना विश्वास करना साधना -अक्कुसम यद्विद सदिद स्थण्डिलम् गम्यन्-श० ११८८ शि० ३१३० भट्टि० ९१६ मनु० ७११/९ ३ डरना आशङ्कना करना भ्रान्तागमन पुन आशङ्क्य-रघु० १०१०४, यश० ११३ ९२ ४ आक्षेप करना सदेह करना अत एव न बहुशब्दस्य आयायवतिरमाशङ्कितव्यम् शार्ङ्गि० (तथा कुल अन्य म्भाना पर) परि १ शक्का करना विश्वास करना उत्प्रेक्षा करना पञ्चैणि मञ्चारिणि प्राय त्वा परिगठकते गीत० ९ २ सदेह करना सदेहशील होना ३ डरना, भयभीत होना रघु० ८१७/ बि १ शक्का करना, डरना, सदेहशील या शङ्कालु होना विशङ्कमे भीरु यताः वयोऽगाम श० ३११६ मतीमार्गि जतिकुलैकमप्रया जनीत्यथा भर्तृमती विशङ्कते ५११३ २ सता का चिन्तन करना, उपेक्षा करना कल्पना करना विशङ्कयता रमिन कपाडि जनादेन दुष्टवदेनदाह गीत० ७ ।

शक्क [शक्क + अच्] कर्षक बिल (गार्ह) भीजन वाला बिल ।

शक्कर (वि०) (स्त्री० या री) [ग मुल कराति कृ + अच्] जानन्व या समृद्धि देन वाला, गुण भङ्गलभय शः । शिब २ विव्यान आचाय और श्रम्यप्रतीता शकराचार्य दै० परि० २ री १ शिब की पत्नी पार्वती २ अजिष्ठा, मनीष ३ गमीवृक्ष ।

शक्का [शक्क + कृ + टाप्] १ सदेह अनिश्चितता २ सकल्प-विकल्प, इविषा ३ आशङ्का अविश्वास अनिष्टशङ्का, अपायशङ्का अनिष्टशङ्का आदि ४ डर

आशङ्का, श्वास, आशङ्क -आशङ्ककदेवैर्मनका नाया-प्सरा प्रेषिता श० १, कैकेयोशकवेवाह-रघु० १२१० १३१४२ मेष० ६० ५ भाषा प्रत्यावा ६ (आन्त) विश्वास आशङ्का (निष्ठा) चारणा-सजसपि शिरस्यन्व शिप्या ज्ञानोपनिषत्सुया श० ७१०४ कुबन वधूजनयनम् शशाङ्कलङ्ककाम् क्रि० ५१४८ शङ्गनृणादगमशङ्कया ५१३८ ।

शक्कुत [मू० क० क०] [शक्क + कृ] १ सदिग्ध आशङ्का युक्त वस्तु २ शङ्कालु, आशङ्का करने वाला अत्रि वशासपूर्ण ३ अविश्चित सदिग्ध ४ भयपूर्ण, सशङ्क आशङ्कित (द० शङ्क) । सम० चित्त -मनम् (वि०) भीरु वाग्वहृदय २ शङ्काकुल अविश्वासानुपुण ३ सदिग्ध ।

शक्कु (वि०) शक्कु - शि० । सदेह करने वाला शङ्का करने वाला डरने वाला विश्वास करने वाला (ममान के अंत में) शक्कुप्राप्तन-शक्कु मे मन रघु० ८१०८ अशक्कुत पण्यशुद्धी श० १ ।

शक्कु [शक्क उणा० १ नञा बद्ध] मुक्षीकी कील शक्तिन बटार (पय सभास के अंत में) शक्कादक शक्क की बटार मेष० नीलम एव हृदयतिरायक शि० नर० २५ रघु० ८१०३ २ बटार मेष० मरुत शून्य नोदरा लक्ष ३ शक्कु मल कृषि रघु० ८१०७ १ बाण की नीली नोक क्षीण या श्रिकटा ५ (वृत्त गुण वृक्ष का) रता, पेड का रं मदा पेड ६ शक्की की मूह ७ बारह अंगुल की माप ८ गज मापन का डहा ९ (म्या० में) लबरका या ऊँचाई १० सौ बारह या एक मात की सज्जा ११ पत्नी क रण १२ बन्मीक बमी १३ पुरुष की ज्ञानश्रिय १४ एक प्रकार की मछली ननुवा १५ राक्षस १६ विष १७ पाप १८ जलधर विदग्ध क कठहन १९ शिव २० साल का रं । सम० कण (वि०) त्रिसके कान शक्कु व समान लव और नकाल ह' (ज) गधा तब वृक्ष साल का रं ।

शक्कुल शक्क + लव] १ एक प्रकार का जल या २ धार वाला श्वर २ मरी (।) मम० लव मरी में हाज हुषा टकहा ।

शक्कु -मन शय । श १ शय चाया न स्वेतमात्र मुञ्जा शक्कु शिबिभूकनमुनागि पञ्च० ४१११ शक्कुन शम्भ पयक पयव भग० १११८ २ मन्त्रक को हजरा कु० आ१३ ३ कनारी की हड्डी ४ हाथी के दाँता दाँतों के बाध का भाग ५ हम नील के सख्या ६ गैरिक इ य या मारुकाज ७ एक प्रकार का मण्डपय मल्ली ८ कुबरा की नवनिधियों में एक ९ एक राक्षस जिसको विष्णु न मार डाला था १० एक स्मृतिहार (निश्चित) के साथ

मयूकत नाम का उल्लेख)। सम० उडकम् शब्द में डाला हुआ पानी, कारः, कारकः शब्दकार नाम की एक वर्णसंकर जाति, कपरी, कप्री (मस्तक पर लगाया गया) बन्दन का तिलक पूर्णम् गल को पीस कर बनाया गया चूरा, श्रावः, श्रावकः एक प्रकार का चोल जिसमें गल भी घुल जाता है, ज्वः - ज्वा (पु०) गल बजाने वाला, ज्वनिः शब्द की आवाज (कभी-कभी, परन्तु प्रायः आतक या निरादा की श्रोतक ज्वनि) प्रस्थ चन्द्रमा का कलक - भूम् (पु०) विष्णु का विशेषण सुख, चाँदियाल मगर स्वतः शाल्यधनि।

शङ्खकः - कम् शब्द + कम् । 1 शब्द 2 कनकटा की छह छेक (शङ्ख क - ग - वटा शि० ११६४)।

शङ्खनकः, (-क) एक छोटा शब्द या वाचा।

शङ्खिन् (पु०) [शङ्ख + इन्] । ममट 2 बिण् 3 शब्द बजाने वाला।

शङ्खिनी [शङ्खिन् + द्वीप्] श्याम शङ्ख के मलको के अनुसार स्थितो के किये गये चार भवा में से एक, रति मञ्जरी में लिखा है दीर्घादिदीर्घपदाना वरमुन्दरी या कामाग्रमोगात्मिका गुणशीलयुक्ता। रेखात्रयत्रय विभुविचकण्डदेशा मभोगकैलि रसिका कल शङ्खिनी मा- ६, तु० चित्रिनी हस्तिका और पाँचवीं मा 2 प्रेतामा, आसरा परी।

शब् (ज्वा० आ० शब्दते) डोलना, कहना, बतलाना।

शब्, -बी (स्त्री०) [शब् + इन शब् + द्वीप्] इन्द्र की पत्नी रघु० ३१३, २३। सम० - वसिः, अर्ध (पु०) इन्द्र के विशेषण।

शब्ज (ज्वा० आ० शब्दते) जाना, दिलना-बुलना।

शब् (इवा० पर० गटति) 1 बीमार होता 2 बारम्बार विमुक्त करता।

शब् (वि०) [शब् + अच्] शब्दा, अल्प कसेला।

शब्दा [शब् + टाप्] सन्ध्यासो के उल्लेख बाल-तु० जटा।

शब्दि (स्त्री०) [शब् + इन्] कपूर का पीसा, आधा हल्दी।

शब् (इवा० पर० गटति) 1 पोशा देना ठगना, जाल-साजी करना 2 चोट मारना, मार डालना 3 कष्ट उठाना।

1) (चुरा० पर० गाठयति) 1 समाप्त करना 2 अन्याय छान देना 3 जाना, दिलना-बुलना 4 आलसी या मुस्त होना 5 बोधा देना, ठगना (इन अर्थ में 'गठयति')।

शब् (वि०) [शब् + अच्] 1 बालक घोड़ेबाज, जाल-साज, बद्धमान नगरी 2 दुष्ट, दुर्जन, डा०। बह-मास, ठग, धूर्त भस्कार मनु० ११३०, अग० १८२८ 2 झूठा या धोखेबाज प्रेमी (जो एक स्त्री

के प्रति प्रेम प्रदर्शित करता है परन्तु मन किसी दूसरी स्त्री में रमाया रहता है) - धृष्टमस्मि सठ क्षुचिस्मिने विदिन कैनबल्लत्तल्लनव - रघु० ८१६९, १९३१ मालवि० ३११९, सा० द० शब् की इस प्रकार परिभाषा देता है - शठोऽयमेकश्च बद्धमावा य दजिनबद्ध रनुरागा विप्रियमन्यत्र गूढमाचरति - ७८ 3. मुड बुद्ध 4 मध्यम्य विबाचक 5 चतुरे का पीसा ७ आत्मी पुष्प, मुस्त व्यक्ति, ठग 1 माड 2 कमर, जफगन।

शब्ज, शब् - अच् | सन, टनन। सम० - शृङ्गम् 1 मन की बनी डोरी या रस्सी 2 मन का बना बाल 3 रस्मिणी धारिणी।

शब्ज, शब्ज - अच् । 1 नामक द्विवहा 2 माँह 3 छाडा हुआ माँह, डब माँह, मयुष्मय तु० नद या मखर की।

शब्ज [शब्जयति शब्जयति-लम् + ट] 1 द्विवहा, मयुक्त 2 बन्दन गुर में लूने वाला टहुमशा पुस्तक (द्विवहा या बंधिया किये गये पुष्पा में से चुना हुआ, 3. माँह 4 छोडा हुआ माँह 5 पालक बादरी।

शब्ज [इस शब्द पर परिमाणव्य - दशन + न, श आदेश मि० साधु] ली की मख्या-- निम्नो बन्ट जन - शालि० २१६, सतमकां प्रि सचम प्रकाशयो चतुर्ध्व - प० ११२९१ शब् लब्ध किसी भी लिंग के बहु बचनान सज्ञा शब्दो के साथ एक बचन में ही प्रयुक्त होता है - सत नरा, सत नरव, या सत गृहणि इस दशा में यह लब्धावाचक विशेषण माना जाता है परन्तु कभी कभी द्विवचन तथा बहुवचन में भी प्रयुक्त होता है - हे गते, वज जनानि आदि। लब्ध के सज्ञा-शब्द के साथ भी प्रयुक्त होता है - गवां सतम्, समाप्त के अन्त में यह अपरिवर्तित रूप में रह सकता है भव भर्ता शरच्छतम या बदल कर 'सनी हो जाता है यथा मोक्षयन्ताचार्य की कृति 'आयोत्तियानी) 2 कोई भी बड़ी मख्या। सम० अजी 1. रति, 2. दुरदिशो, अज्जः गाड़ी, छकडा विशेषण बुद्धर अजीकः बूडा आदमी, - अजम्, अजम् इन का कच्चा, आलस्य उमसान कबिरिस्तान, अलम् 1 बड़ा 2 बिण्णु कृष्ण 3 बिण्णु का बाहन 4. गीतम और कहिल्या का पुष्प, जनकराज का कुल पुरो०। उमर० १११६, शालि० (वि०) ली एवं तक जीवित रहने वाला या टिकने वाला, अजर्कः, -आचरिन् (पु०) बिण्णु, ईश। 1 ली के ऊपर शासन करने वाला, 2 ली शय का शासक मनु० ७१११५, - कुम्भः एक पहाड का नाम (कहते हैं कि वहाँ पर मोना पाषा जाता है), जम् सोना - कुम्भः (अन्ध०) ली बुधा, जोडि (वि०) ली बार वाला,

ठेकना 2 शातर्पित ने (क) गिराना नीचे फेंक देना
काट डालना जि० १६८० १५२४ (ख) बघ
करना, नष्ट करना ।

॥ (ध्वा० प०० वादन) शाना (शाय 'आ' पूर्वक) ।
अब् [अद् + अच्] शाय शाकबाजी (फल मूल आदि) ।
शत्रि. [अद् + क्तिन्] १ हाथी २ बादल ३ अर्जुन, वि
(स्त्री०) बिजली ।

2. पतनशील नक्षत्र क्षय होने वाला ।

शानके (अध्य०) [शने + अकच] शने शने ट० शने ।

शनि: [शो, खनि किञ्च] १ शनिग्रह (सूर्य का पुत्र, वा काले रंग का या काले वस्त्रो से सज्जित बतलाया गया है) २ शनिवार ३ शिव। मयः जन्म काली मित्रं, प्रबोधः शिव की (माध्यमस्थीन) पूजा जो शूलकण्ठ की चन्द्रादशी का शनिवार आ पहन पार की जाती है - प्रियम् नीलममणि वार वासर शनिवार का दिन।

धर्मसू (अध०) । अणु + हेम एवा० नृ० । १ आहिस्ता
 से, धीमे सपुकार २ वषाक्रम क्रमशः बाँहा बाँहा
 काँके धर्म-अभिधन्याच्छन्—कु० १५९, मनु० ३१६१३
 ३ उत्तरांतर, उपयुक्त क्रम में मनु० १११५
 ४ मुद्रुता से, नरमी से ५ मुस्ती के साथ बालमय
 पूर्णक ध्वने ध्वने आहिस्ता से, आहिस्ता आहिस्ता ।
 तस्य० चर (वि०) धर्मे, धर्मैः ध्वने वाक्वा यः
 चलने वाक्वा धर्मेध्वराभ्या पादाभ्या गेजे ग्रहमयीव
 ना मनु० ११७, (यहाँ इसका अर्थ जनि भो
 है) (५) धनिवह ।

कालवतुः { स मंगलामका तनुर्वय्य व० स० } एक
चन्द्रवती राजा जितने गया व मत्स्यवती से बना
किया। गया का पुत्र भीष्म था तथा मत्स्यवती
के चित्रांगद और बिचित्रवर्ष नामक दो पुत्र हुए।
भीष्म आजन्म ब्रह्मचारी रहा तथा इसके छत्रे भरत
निस्यन्तान् स्वयं विधारे २० 'भीष्म'।

अथ (अर्थात्, दिवा) उभयं शयति ते, शयन्ति ने शयन्) १ अभिज्ञाप देना कोमल अगपद्भ्य मन्वृषीति ताम्—रघु० ८।० सोऽभूत् परामुष्य नृमिषिति शयाप (वृद्ध) ११७८ ११७९ २ शयष केना, कसम उठाना, शयषपूर्वक प्रसिद्धा करना, सौ- गंध लावना (श्राय, प्रसिद्धाते मे श्रय० तथा प्रसिद्धाता के लिए कश० ययुक्त दोता है) -भरतेनामना बाहू क्षये ते मनुजार्वाय। यथा नाग्येन लुप्येयसते राम- विदसनात् गम० कर्मरहित प्रयास होने पर शयषवस्तु मे कथन तथा जिसके द्वारा शयष को शय उभये मय० प्रयुक्त होता है मय शयाति ते शयष कथयन्ते १०८ व० २ अथान निवृत्तायोगे

मीनार्ये स्वर्गमोहित- भट्टि० ८१७, ३३, कमी कमी
 शप क मन्त्रातीय कर्म के अनुसार प्रयोग होना
 है सर्वशक्तिशाली शपमाननस्पत्य- भट्टि० ३१२ उ
 कलिकत करना धमकाना दुरा-धना कहना, शाली
 देना (सप० के साथ सा स्वर्गमोहित- विषयम्भवा-
 शपस्त्रवा भट्टि० १३७, प्रतिवाचमयस केवा
 शपमानाया न वेदिमृपुत्रे सि० ४०५, प्रे०
 (शापयति ते) शपयद्वाग्रां वाच केना, शपयद्वाचं प्रतिज्ञा
 करना शापितोऽसि गोवाग्राजकाव्यया मृच्छ० ३,
 मा० ८।

अथ [शत + कथ] : अभिज्ञान, मगपना कोसना
2 शपथ मोगन्ध :

शपथ [गप + जषन्] 1 कालना 2 अभिप्राय आक्रोश
फटकारा 3 सौमन्त्र इसम त्वाना शपथ सेना या
दिल्लवाना शपथोक्ति आदेशो न इ कसूर्या
शपथेनान्म्राव्यन - मर्मो ११२० धनो ११००
4 शपथपत्रक अनुरोध सौमन्त्र मै बावना - धनो ३०

अपनय । प्रायः मयट ६० शपथ ।

शब्द [मू० क० कृ०] [वाप्-कृ०] 1 अभिमान 2 जिससे सौगन्ध माली है 3 बुरा भला कहा गया 4 ईर्ष्या कहा गया (दे० गण)

2 वक्ष की ऋद्ध ।

प्रकार की छोटी बमकीली मछली - मोचीकत
बटुलगाफ टोटुननप्रेक्षि गमि मेच ४० डि० ८१२०
क० ६१२१। मय० अक्षिप हलीश नामक मछली

अथ (ब, र) शिख जलम् । 1 पहाडी, जलमय नील
जलानी गजन्त गुञ्जाफलात्ता लज्ज इति शब्दा नैव
ह्यार इति न काव्य० १० 2 शिख 3 हाथ 4 जल
5 एक पात्र विशेष या कामिक पुस्तक 6 भीमाना
के पवित्र भाष्यकार ही 1 भीलोनी 2 राम की
अन्य भवन एक भीलोनी । मय० बाल्य जगली
लोहाइया और भीला का निवासस्थान लोह जगली
ही का वस्त्र ।

अथ (ब) स (वि०) [जू-जल बरस] 1 चम्बेदार
रंग बिरंगा, चितकबरा रंग ११४४, १३१६
महानर ० ७०६ 2 मानाक्ष्य अनेक भागो मे
विभक्त स मानाक्षर का रंग, जा - जी
1 चम्बेदार या चितकबरो गाय 2 कामधेनु, लम्ब
पाणी

सन्ध्या (बुध) उभय गन्धर्वयति-ने सन्ध्या १ ध्वनि करना
गोर मयाना २ बान्ना वृक्षाना जावाड देना
बिनमदक्षराय गन्धर्व ३ रथभि पक्षिपति
दिवा, हे देवता नागा ४ १ नाम

लेना, पुकारना अत एव सागरिकेत शब्दो रत्न०
४, अवि- , नाम रखना, प्र , व्याख्या करना, सम्
बुलना ।

शब्दः [शब्द + घञ्] १ ध्वनि (श्रोत्रेन्द्रिय का विषय भाकाशपुण, रघु० १३।१ २ आवाज, कलरव (पक्षियों का या मनुष्यादिकों का), कोलाहल, विष्वासोपसमादभिमतयः शब्द सहस्रे मृगा. श० १।१४, भग० १।१३, श० ३।१, मनु० ४।११३, कु० १।४५, ३ बाजे की आवाज बाधशब्द. पत्र० २।२४, कु० १।४५ ४ वचन. ध्वनि, सार्वक ध्वनि. शब्द (परिभाषा के लिए दे० महाभाष्य की प्रस्तावना) एक शब्द. सम्प्रदायीत समाक प्रयुक्त. स्वर्ग लोके कामधुम्भवति, इसी प्रकार शब्दाद्यो ५ विकारीशब्द, सज्ञा. प्रातिपदिक ६ उपाधि, विशेषण यस्यायंयुक्त मिनि राजशब्द कुर्वति वास्तव्यप्रनेरवमयं - कु० १।१३, श० २।१५, नृपेण चके युवराजशब्दपरि. रघु० ३।३५, २।५३, ६४ ३।४२, भा० १.८।४१ विक्रम० १।१ ७ नाम, केवल नाम त्रेमा कि 'शब्दार्थ' में ८ शाब्दिक प्रामाणिकता (नेमायिकों के द्वारा 'शब्द प्रमाण' माना जाता है) । यम० अतोत (वि०) शब्दों की शक्ति में परे, अमिर्बन्धीय, अधिष्ठानम् कान, अम्प्राहारः (शब्दप्रत्ययना का पुनः करने के लिए) शब्दपूति, -अनुशासनम् शब्दा का शास्त्र अर्थात् व्याकरण, अर्थः शब्द के अर्थ (सौ-वि० व०) शब्द और उसका अर्थ अर्थात् शब्दार्थ काव्य० १. अलङ्कारः वह अलङ्कार जो अपने शब्द सौन्दर्य पर निर्भर करता है. तथा जब उसी अर्थ को प्रकट करने वाला दूसरा शब्द रख दिया जाता है तब उसका सौन्दर्य क्षुप्त हो जाता है (विष्० अर्थालङ्कार) पत्र० दे० काव्य० ९, आत्मवेद्य (वि०) शब्दों में भेदा जाने वाला सपाचार मेध० १०३ (यम्) मौलिक या शाब्दिक सन्देह, आशम्भारः वाग्वान्, वाक्प्रचन शब्दाधिक्य, अनियोजितपुर्ण शब्द, आवि (वि०) 'शब्द' से आगम्य होने वाले (ज्ञान के विषय) रघु० १०।२५, कौशः अभिमान, शब्दसङ्ग्रह, घट (वि०) शब्द के अन्दर रहने वाला, प्रह १ शब्द पकटना २. कान, वातुर्वयं श्रोत्रो की निपुणता, वातपटना, चित्रम् कविता की अन्तिम श्रेणी के दो उपभेदों में से एक (अक्षर या अक्षर) (इस प्रकार के काव्य में सौन्दर्य उन शब्दों के प्रयोग में है जो कर्मसम्पूर होते हैं. 'चित्र' के अलगवर्ग दिया हुआ उदाहरण देखो), शौरः 'शब्दशौर' साहित्यशौर, सम्प्राञ्च ध्वनि का मृदय नक्ष, वतिः नाममात्र स्वामी, नाम का प्रभु-ननु शब्दार्थ अन्तर स्वयं से भावविचरना रतिः-रघु० ८।५२, वारितम् (वि०) शब्द मुन कर

ही अद्वय निशागा लगाने वाला, शब्दवेपी. निशागा लगाने वाला रघु० ९।७३ प्रमाणम् शाब्दिक या मौलिक प्रमाण, बोधः मौलिक साक्ष्य से प्राप्त ज्ञान बालम् (नपु०) १ वेद २. शब्दों में निहित आध्यात्मिक ज्ञान, ब्राह्म या परमात्ममग्नवी ज्ञान उत्तर० २।३ २० ३ शब्द का गुण, 'स्फोट', भेदित् (वि०) शब्दवेदों निशान लगाने वाला (पु०) १ अन्तर् का विशेषण २ मुद्रा ३ एक प्रकार का बाण योनि. (स्त्री०) वातु, मूल शब्द. -विज्ञा, शास्त्रम्, शास्त्रम् शब्दशास्त्र अर्थात् व्याकरण -अनन्तवार विन शब्दशास्त्रम्-पत्र० १, मि० २।११२, १४।४५, विरोधः (शब्द में) शब्दा का विरोध, विरोध ध्वनि का एक भेद, -वतिः (स्त्री०) साहित्य शास्त्र में शब्द का प्रयोग, वेधित् (वि०) ध्वनि मुनकर ही शब्दों की निशागा लगाने वाला दे० शब्दार्थितम् (पु०) १ अन्तर् का विशेषण २ एक प्रकार का बाण, शक्तिः (स्त्री०) शब्द की अभिव्यञ्जक शक्ति, शब्द की सार्थकता- दे० शक्ति शक्तिः (स्त्री०) १ शब्द की पवित्रता २ शब्दों का शब्द प्रयोग, -वत्येव शब्दा में वनेकार्यता, वधयंकरता (एत अलङ्कार 'अर्थलेख' से इत्यादि भिन्न है कि इसक सघटन शब्दों का टुकड़ा समानार्थक शब्दों को पर ऐसे मात्र से परिवर्तना नष्ट हो जाती है, जबकि अर्थलेख आग्रियन ही रहता है शब्द-परिवर्तित सङ्ख्यायंशेय १. -सङ्ग्रहः शब्दकोश, शब्दावली, सौष्टवम् शब्दा का आकृति, भाजन और प्राञ्जल से ही मौल्यम् अभिव्यक्ति की सम्मता ।

शब्दज (वि०) [शब्द + घट्] १ शब्द करनेवाला, ध्वननशील नम् ध्वनन, कोलाहल करना, शब्द करता २ आवाज, कोलाहल ३ पुकारना, बुलाना ४. नाम लेना ।

शब्दायते (नामघातु भा०) १ कोलाहल करना, शोर करना शब्दायन्ते मधुरमतिर्मे कीचका पूर्वभाषा मेध० ५६ २ कन्दन करना, दहाडना, चिल्लाना, ची ची करना भट्टि० ९।५०, १७।११ ३ बुलाना, पुकारना एते हस्तिनापुराणमिन् ज्ञेयम् शब्दायन्ते श० ४, मुद्रा० १. मृच्छ० १, वेणी० ३ ।

शब्दित (भु० क० क०) [शब्द + क्त] १ ध्वनित, आवाज निकाली गई. (बाधयथाधिक) बजाया गया २. कहा गया, उच्चारण किया गया ३. बुलाया गया, पुकारा गया नाम रक्ता गन्धा, अभिहित ।

शब्द (अव०) [शब् + चिञ्] कव्यान्त, आत्मन्. नयुद्धि, रत्नाय्य को धोतन करने वाला अथवा, प्राचीनार्थ या मंगल कामना प्रकट करने के लिए प्रयुक्त (मंत्र० या मन्त्र० के साथ) शं देवदत्ताय देवदत्तस्य वा

(आधुनिक पत्रों में शुभ समाप्तिपत्रक प्रयोग इति सम्) । समय - कर दे० धातु के नीचे, तात्ति (वि०) आश्विन प्रदान करने वाला भगवत्पुत्र, शुभ वाक्यः 1 लास, महावर, लाल रंग 2 पकाना परिपक्व करना, भू द० धातु के नीचे ।

सम् (वि०) पर० शास्त्रान्ति, शान्ति) 1 शान्त होना रूप होना, सन्पुष्ट होना, प्रसन्न होना शास्त्रान्तिपत्र कारणेन तोषकारेण दुःखं कु० १६० रघु० ७३३ शान्ति लब्ध - उत्तर० ६१३ 2 वसना ठहरना समाप्त होना शिस्ता शास्त्र समकालादि भरावहाणाम - भाषि० १३०, न शान्ति काम कामाशामुपभोगन शास्त्रान्ति मनु० २१९४, 'सन्पुष्ट नही होना 3 शान्त होना, शुभम् । शास्त्रान्ति वादुर्वापि विना दशानि रघु० २१४ उत्तर० ५१३ 3 शान्त होना करना नष्ट करना मार डालना (इसी अर्थ में कर्त्त० भी) - प्र० (अभयनि-ने परन्तु देखना अर्थ में शास्त्रान्ति ते दे० सम्) 1 प्रसन्न करना, उद्देश्यन करना शान्त करना धीरज देना सावधान देना शास्त्रान्ति बचाना क क्षीयते शास्त्रान्ति बचनेत्यत्रापिम् ।

भाषि० ३११, श० ११३ 2 वसना राकना - कु० २१५९ 3 हुटना गेरे करना प्रतिकूल देव शास्त्रान्तिम् श० ? 'दमन करना गालनु बचाना हुटना क्षीयता परास्त करना अभयनि गजानन्याय गन्धर्वपि कलमोर्षि सन्-विक्रम० ५११८ रघु० १११० १११९ ५ मार डालना, नष्ट करना बच करना-देणी० ५१५ 6 शान्त करना बुझाना

मेघ० ५३ हि० ११८८ 7 रयाग देना रुकना धमना, उष 1 शान्त करना भट्टि० ००१५ 2 वसना ठहरना बुझना 3 हुटना वसना ठहरना ठहरना गेरे रहना बस जाना प्रशान्त १ रुक्मम् उत्तर० ५०० मुञ्जना कुटनाना (प्र०) 1 मात्तना देना प्रसन्न करना शान्त करना - मनु० ८१३९१ दूर करना बुझाना क्षीयल करना देना देना - स्वाभावामाश्रयिष्यन्तोपश्रवन् मेघ० १३ 3 हुटना अन्त करना मम अपभार) उजिय प्रशमये-रघु० १५१४५ - जोतना परास्त करना पशीमुन करना - मञ्ज० १०१६० प्रविशित

होना, समझ करना स्वरसक्ति होना प्रशमनाय विवाद बहसे रक्षणाय श० ०१ सम् 1 शान्त करना 2 निराकृत होना बुझना क्षीय होना-सन्ध सशाम्यवीर्य मे भट्टि० १८१८ 3 ठहरना ।

॥ (चु०) ३५० शास्त्रान्ति-ने) 1 देखना निगाह बालना निग्राहण करना 2 बुझाना प्रशान्त करना 3 देखना प्रबलकोन करना 2 मृत्तना कान देना निशामय प्रियमणि मा० ७३ ।

सम् [सम् + चञ्] 1 मृकता, शान्ति, वेद 2 विश्वास, ठहराव, आश्रय, निश्चित 3 वासनाओं पर प्रतिकूल या अभाव मानसिक शान्ति, विरक्ति शमस्तेऽभर-तन्त्रमि पाणिनि रघु० ११४, कि० १०१०, १६१८, शि० २१९४ श० २१३, भग० १०१४ 4 निराकरण, लघूकरण, उन्मथन सन्नादीकरण (शोक, व्यास भूष आदि का) प्रशमन सममुपायान् मयापि चित्त-दाह उत्तर० ६१८ शममेव्यति मम शक. कथ न्वम श० ४०५ शान्ति, अंश कि समोप-धाय देणी० ००० (मम की ममसन् शान्तिबो व आश्रयतो मे) माक्ष 7 हाथ । मम० अन्तकः शमदेव (मानसिक शान्ति का नष्ट करने वाला), पर (वि०) शान्त मूक विषयविराग ।

शमश्च गम अथक् 1 शान्ति, स्थिरता, विशयन मानसिक शान्ति आकाशाभाव 2 परामर्शदाना, मन्त्रा ।

शमश्च (वि०) (स्त्री० भी) [शम निच - ह्यट्] शमन करने वाला दमन करने वाला अशमन करने वाला आदि, सम् 1 प्रसन्न करना निराकरण करना डाँटने बचाना क्षीयना उन्मथन करना 2 श्मथ शान्ति 3 वसना ठहराव समान्ति विनाश 4 चोट पहुँचाना घायल करना ५ यज्ञ के लिए पशुबध करना, पशुबध ० निगल जाना बचाना न 1 एक प्रकार का हस्ति बन्धुविना 2 मृत् का टुकना ५म । सम्० श्मथु (स्त्री०) पशुबधना उमना नदी का विशयण ।

शमनी [शमन + नी] २०० । सम्० लव (वह) शास्त्रान्ति पिताव भू प्रेत ।

प्रमत्तव गम कथक् 1 मल नीद बिष्टा 2 अप-विशता गम लक्ष्मि 3 पाप नैतिक मरिचनता ।

शमिन् (मू० क० क०) [शम् + णिच् + क्त] 1 प्रसन्न शिवा गया निराकृत डाँटने बचाया गया शान्त 2 घोषा किया गया विरक्ति की गई आश्रयिकता किया गया 3 विश्वास दिया गया 4 शान्त, सौम्य परिमित किया गया मृत् किया गया

शमिन् (वि०) [शम् + णिच्] 1 मीट्ट शान्त प्रशान्त 2 शिवा गेरे अपभार 3 उमन कर ४ मृत् ५ ममभियन्ति भट्टि० ०००

शमी, शमि । सम् द० देना श० १११४ वर १४४ शाश है कि दमन अपन रहती है) अशमन्ता शमी-मिव श० ०१० भन० ००४५ राज० १३३० ।

2 रुकी छोटी मेष सम्० मन्थे 1 अन्ति क १६० रण 2 काशा अमिर्वाको डाँटने शास्त्रान्ति कलियो म मन्थन या शान्त आदि हुटलीय वन् ।

शम्या [शम् + या + णि] बिडनी ।

सम्बु (वि०) [सम् + पर + सम्बति] जाना, हिलना-झुलना ।

॥ (चुरा० पर० सम्बयति) संचय करना, डेर लगाना ।

सम्ब (व) [सम् + जम्] १ प्रसन्न, भाग्यशाली २ बेचारा, अभाग्य, - वः ३ इन्द्र का वज्र २ मूसली का लोहे का बना सिर ३ जोड़े की इन्जीर जो कमर के चारों ओर पहनी जाय ४ नियमित रूप से हल चलाना ५ जुते हुए क्षेत्र में हल चलाना (शबाहु दोबारा हल चलाना) ।

सम्बरः [सम् + वरम्] १ एक राजस का नाम जिसे प्रद्युम्न ने मार गिराया था २ पहाड़ ३ एक प्रकार का हरिण ४ एक प्रकार की घड़नी - मृदु रम् १ प्रल २ बादल ३ दौलत ४ सम्कार या कोट कायिक अनुष्ठान । सम० - अरि, सुवन्न प्रद्युम्न या कायदेव के विशेषण, अशुर-शबर नामक राजस ।

सम्बरी [सम्बर + डीव] १ पाया, हाड़ २ रखा जादू करनी ।

सम्बलः, - सम् [सम् + कलम्] १ नट किनारा २ पाशेय, मार्गव्यय, राहुवर्च ३ स्पर्ष, दीर्घा ।

सम्बली [सम्बल + डीव] कुटनी ।

सम्बु, सम्बुकः, सम्बुक्क [सम् + उम्, सम् + क्त्] त्रिकोणीय घोषा ।

सम्बुकः [सम् + उक्] १ त्रिकोणीय बाँधा २ शस्त्र ३ बाँधा ४ हाथी की मूँह की शोक ५ एक सूट (इसे राम ने उसकी शक्ति के लिए वज्रित साधना का अभ्यास करने के कारण मार डाला था, दे० उमर० २, तथा रघु० १५) ।

सम्बः [सम् + भ] १ प्रसन्न मनुष्य २ इन्द्र का वज्र ।

सम्बली [सम्बल + डीव] हुरी, कुटनी ।

सम्बु (वि०) [सम् + भू + वृ] आनन्द देने वाला, समृद्धि प्रदान करने वाला भुः १ शिव २ ब्रह्मा ३ अग्नि, यज्ञेय पुरुष ४ एक प्रकार का मिष्ट । सम० - सम्बः सम्बलः, सुतः कान्तिक्य या गणेश के विशेषण, शिवा १ दुर्गा २ जामल की, - बल्लभम् वनेत कमल ।

सम्बा [सम् + यत् + टाप्] १ लकड़ी की छड़ी या बूजी २ डंडा ३ जूए की काल, सिलस ४ एक प्रकार की शाल ५ यज्ञीय पात्र ।

सय (वि०) [स्वी० - वा, वी] [सी - जम्] लेटने वाला, सोने वाला, (प्रायः समाम के वन्न में) - रात्रिजागरणो दिवागम - रघु० ११/३४ इसी प्रकार उन्मादसाय, पाश्वरसाय, वृक्षसाय विदेशय आदि य- १ नीध २ बिस्तरा, शय्या ३ हाथ ४ मीन विशेषण अश्वार ५ दुर्बल, कोमला, अभिदाय ।

सयम्ब (वि०) [सी + सम्बन्] मित्रान सयन शय्या ।

सयम्ब (वि०) [सी + सम्बन्] मित्रान, सीमा हुआ, - य

१ मनुष्य २ ए- प्रकार का सीप, अश्वार ३ लकड़ी ।

सयम्ब [सी + स्युट] १ सीना, मित्रा, लेटना २ बिस्तरा,

शय्या शयनस्थान भूखीन मनु० ५/७४, रघु०

रघु० ११/५ बिस्म० ३१/३ मीचन, संशोभ । सम०

व (वा) गार, रघु, मृदुम् शयनकक्ष, सोने

का कमरा, एकलक्षी आवाह बुक्का एकलक्षी (इस

दिन विष्णु भगवान् चार मास तक विश्राम के लिए

लेट जाते हैं), सभी एक शय्या पर साथ सोने वाली

सहेली स्थानम् सोने का कमरा शयनकक्ष ।

सयनीयम् [सी + नीयर्] विस्तरा शय्या, पर्यटन

शयनीयमक्ष मे रघु० ८/१५ कान्तमक्षस्य शयनीय

शिलालत त उतर० ३०१ (इसी अर्थ में सयनीय-

कम्) ।

सयानकः [सी + सान् + कन्] १ गिरगिट २ एक

सीप, अश्वार ।

सयान् (वि०) [सी + आलम्] निद्रालु, तन्द्रालु

शालसी शि० २/८० क. १ ए- प्रकार का

सीप अश्वार २ कुत्ता ३ मोहर ।

सयित (भू० क० क०) [सी + कर्त्तरि क्त] १ सोने वाला

विश्रान्त, मृत २ लेटा हुआ ।

सयुः [सी + य] बड़ा सीप अश्वार ।

शय्या [सी आचारे क्यप् + टाप्] १ बिस्तरा, बिछौना

शय्या भूतितकम् शान्ति० ६/९, मही रघ्या

शय्या भर्तु० ३१/९, रघु० ५/६९ २ बाँधना लक्ष्मी

करना । सम० अभ्यक्ष, शाल राजा के शयन

कक्ष का अर्थीकक्ष, अलङ्कार-पल्लव का एक पार्ष्व,

वन्न (वि०) १ पल्लव पर लेटा हुआ २ रोगी,

मृदुम् शयन-कक्ष, रघु० १६/४ ।

शर [शु + जम्] १ बाण, तीर श्व च निजनिनिपाता

अश्वमारा शरास्ते श० ११/० २ एक प्रकार का

सफ़द सरकड़ा या बांस शरकाशपाण्डुगम्बस्तला

शालवि० ३८, कुक्षेन सीता शरपाण्डुरेण रघु०

५/१०६, शि० ११/३० ३ कुछ बने हुए दूध की

मलाई, मलाई ४ चोट, छान, शार ५ पाँच की

मख्या, रत्न पानी । सम० अश्वः बहिषा तीर

अभ्यासः तीरदात्री - अल्लम्, आलम् वसुध,

कमान रघु० ३१/२, कु० ३१/४, आलोकः तीरो

की वर्षा, आरोध, शारदाः धनुष, - आश्वः शरकम्

- आहूत (वि०) जिसके तीर लगा हो, - इक्षिका बाण,

इष्टः आम का पक्ष, जीवः बाणों का समूह

बाणवर्षा कण्ठः १ शरकुल की बड़ी २ बाण की

लकड़ी, बाण बाण से लक्ष्यवेष करना तीरदात्री,

जम् माता मन्थन - अल्लम् (प०) कान्तिकेय का

विशेषण - रघु० ३१/८ - आलम् बाणों का समूह या डेर

- धि: तरकस, पाल: बाण का छोड़ना स्थानम्
बाण का निशाना, पुष्पः, पुष्पा बाण का पक्षपात
किनारा, - फलम् बाण का फल भङ्ग एक क्षति
प्रसक्त इति राज ने दण्डकारण्य में लिखा है २५०
१३१५, - भू: कान्तिकेय, - बल्ल: धनुष, नीरदाड
- बलम् (बलम्) नरकुली का धूम्रमुट मेघ ० ४५
उज्ज्वल: - भव: कान्तिकेय के विवाह, - बन् बाणों
की बंधो या बौछार, बाणि: १ बाण का निशान
२ धनुष ३ बाणनिर्माता ४ पदार्थ, क्षति (स्त्री०)
बाणों की बौछार - क्षान: बाणों का समूह संधानम्
बाण का निशाना लगाना धर्मशास्त्रकारों ने १०१
संभाष (वि०) बाणों से ठीक हुआ मतम्:
नरकुली का मुकुलः ।

शरतः [शु + अट] १. गिरगिट २ कुमुद ।

शरणम् [शु + गृह] १ प्रस्था सहारा या साधन और
रक्षा २५० १४६४, विक्रम १५५० २५२० ४१३
२ आश्रय शरणस्थान ३० ३, एक १००
३ बोट सहारा, निष्ठा, शरण (स्त्री०) के लिए
भी प्रयुक्त) शरणस्थान बाल शरणम् - वि० १५००,
गोपाना स्वयं शरणम् २५० ३ शरणम् ई
या शरण में जाना, आश्रय देना सहारा देना
प्राप्त है कर्मिह शरणम् गीत ० ३ ४ दण्डाय,
गोबागार, कक्ष आश्रयशरणमर्थादिना ३० ५
५ आवास, घर निवासस्थान मुद्रा ० ३१९, भट्टि०
६१९ ६ अट, बिल, मोट ७ अति, हृष्या, मम ३
आश्रित (वि०) एषिन् (वि०) शरण या रक्षा
होने वाला - मनु० ३१५ आगत, आपन्न (वि०)
प्रस्था या शरण में गया हुआ आश्रय लेने वाला
आश्रयाधी, उज्ज्वल (वि०) शरण या प्रस्था जोवन
बाला - २५० ६११ ।

शरणः [शु + अर्ह] १ पक्षी २ गिरगिट ३ उग, पुन
४ जंगल, स्वेच्छाचारी ५ एक प्रकार का अनुपल ।

शरण्य (वि०) शरण साधु, मनु० १५० १५० १५० १५०
शरण देने वाला, परस्पर, बाध्या अतो शरण्यः
शरणोन्मुखताम् - २५० १५१ शरण्यो लक्षणम्
महावी० ४११, २५० १५३०, १५६६, १५८०, कु०
१५७६ २ जिसे रक्षा की आवश्यकता है, दीन दयनीय,
व्यः शिब का विशेषण, व्यम् १ आश्रयस्थल
शरणगृह २ प्रक्षक, जो शरणार्थी की रक्षा करता
है ३ प्रस्था, प्रतिष्ठा ४ क्षति, बाट ।

शरण्यः [शु + अर्ह] १ प्रक्षक २ बाटल : रक्षा ।

शरत् (स्त्री०) [शु + अर्ह] १ पक्षध शरदु (आश्विन
तथा कार्तिक मास में होने वाली ऋतु), बाधा
चौथा मास न शरत्: प्रथम शरदु २५० ४१२६
२ वर्ष, - व्य जीव शरत्: मासम् २५० १०११, उन्म ०

१११५, मासिका १११५, मम - अन्तः शरदु का
अन्त सर्दी का सीमा अर्धशरदु का अन्त,
उदाहरणः शरत्कालीन मरार, कर्मिन् (पु०)
मुनी, काव शरत् काल, पक्षध का प्रथम घनः,
मेघः शरदु का बादल, वनः (शरत्काल)
शरत्कालीन वनमा, त्रियाणा शरत्कालीन मास,
पक्षः - धाम श्वेत कमल, पर्वन् (नय०) की,
त्रिगिर नाम का उत्सव मुखम् शरदु का आरम्भ ।

शरत् [शरदु + शरत्] १ शरद २ वर्ष ।

शरद्विज (वि०) [शरद्विज + अर्ह] - उ मन्त्र्या अलुक्,
पक्षध या शरदु से सम्बन्ध रखने वाला ।

शरभः [शु + अर्ह] १ शरभों का वक्त्र २ प्राकृतिक
शरभ वक्त्र ३ शरभों का वक्त्र जो मित्र से
उत्पन्न होता है शरभशरद्विज प्रोद्भववक्त्रम्
- कर्म ० १५३ शरभशरद्विज मित्रशरी मम ०
३ शरभ शरद्विज शरद्विज ।

शरम् [शु + अर्ह] १ शरम् पक्ष उह, पक्ष मदी,
शरम्, टा शरम् [शु] ।

शरत् (वि०) [शु + अर्ह] दे शरत् ।

शरत्कर्म [शरत्कर्म] बन् [शरी] ।

शरत्कर्म [शरत्कर्म] शरत्कर्म शरत्कर्म शरत्कर्म
का, विधाना, लब्ध [शरत्कर्म] शरत्कर्म
शरत्कर्म शरत्कर्म शरत्कर्म शरत्कर्म
शरत्कर्म शरत्कर्म शरत्कर्म शरत्कर्म
शरत्कर्म शरत्कर्म शरत्कर्म शरत्कर्म

शरद्विज (वि०) [शरद्विज + अर्ह] - उन् एक शरद्विज का
पक्षी ।

शरद्विज (वि०) [शु + अर्ह] शरद्विज शरद्विज शरद्विज
कारक ।

शरद्विज [शु + अर्ह] शरद्विज शरद्विज शरद्विज
१ शरद्विज शरद्विज शरद्विज शरद्विज
शरद्विज शरद्विज शरद्विज शरद्विज
शरद्विज शरद्विज शरद्विज शरद्विज

शरद्विज [शु + अर्ह] शरद्विज शरद्विज शरद्विज
शरद्विज शरद्विज शरद्विज शरद्विज
शरद्विज शरद्विज शरद्विज शरद्विज

शरद्विज (पु०) [शरद्विज शरद्विज शरद्विज] शरद्विज
शरद्विज शरद्विज शरद्विज शरद्विज

शरद्विज [शु + अर्ह] (शरद्विज शरद्विज शरद्विज) शरद्विज
शरद्विज शरद्विज शरद्विज शरद्विज
शरद्विज शरद्विज शरद्विज शरद्विज
शरद्विज शरद्विज शरद्विज शरद्विज

कृशता, रजः 1. रोग 2 काम, प्रययोगमात्र 3. काम-
देव 4. पुत्र, सन्तान—कि० ४:३१,—दुष्य (वि०)
समान अर्थात् उतना प्रिय जितना अपना शरीर,—बन्धः

1. शारीरिक बन्ध 2 कार्य-साधना (जैसा की तपस्या
में),—बुध् (वि०) शरीरधारी, पतनम्, पातः
मृत्यु, भीत,—पातः (शरीर की) कृशता,—बद्ध
(वि०) शरीर से युक्त, शरीरधारी, शरीरी—कु०
५:३०,—बन्धः 1 शारीरिक बाँधा रघु० ११:२३
2. शरीर से युक्त होना अर्थात् शरीरधारी प्राणी का
जन्म—रघु० १३:५८,—बन्धकः सशरीर प्रतिभू,—भाव्
(वि०) शरीरधारी, शरीरी (पु०) जन्तु, शरीरधारी
प्राणी,—वेदः (आत्मा से) शरीर का विभाग, मृत्यु,
—शब्दः (स्त्री०) पतला शरीर, मुकुमार, दुबला-
पतला,—वाक्मा आजीविका,—विमोक्षणम् आत्मा का
शरीर से छुटकारा, मुक्ति, वृत्तिः (स्त्री०) शरीर
का पालनपोषण—रघु० २:४५,—वैकल्यम् शारीरिक
रोग, बीमारी, व्याधि,—बुध्वा शक्तिमान सेवा,
—संस्कारः 1. व्यक्ति की सजावट 2. नामा प्रकार
के वृत्तिसंस्कारों के अनुष्ठान द्वारा शरीर को निर्मल
करना,—संघतिः (स्त्री०) शरीर की समृद्धि, (अच्छा)
स्वास्थ्य,—पातः शरीर की दुर्बलता, हानता—रघु०
३:१२,—स्थितिः (स्त्री०) 1. शरीर का पालन-पोषण
—रघु० ५:१२ 2 भोजन करने, पाना (क० में बहुधा
प्रयुक्त) ।

शरीरकम् [शरीर + कन्] 1 देह 2 छोटा शरीर,—क
आत्मा ।

शरीरिन् (वि०) (स्त्री०—की) [शरीर + इनि] शरीर-
धारी, शरीरयुक्त, शरीरी—कषणस्य मूर्तिरवना
शरीरिणी विरहवायेव वनमेति जानकी—उत्तर०
३:४, मालवि० १:१० 2 जीवित (पु०) 1 कोई भी
शरीरधारो वस्तु (चाहे जड़ हो चाहे जेतन) शरी-
रिणा स्वाधरत्नंगमानी सुखाय तज्जन्मदिवं बभूव—कु०
१:२३, रघु० ८:४३ 2 मन्त्रीव प्राणी 3 मनुष्य
आत्मा (शरीर से युक्त)—रघु० ८:८९, भग०
९:१८ ।

शर्करा [शु + करन् + जन् + ड + टाप्] कषयुक्त चीनी,
मिथी ।

शर्करा [शु + कर्त् + टाप्] 1 कंदयुक्त चीनी 2 कंकड़ी,
रोड़ी, बजरी मुख्य० ५ 3 कंकरीला कप 4 बालू
से युक्त भूमि, रेग 5 टुकड़ा, अण्ड 6 ठीकरा,
7. कोई भी कड़ा कण जसा कि 'जलशर्करा' पानी
का कण अर्थात् ओला 8 पथरी का रोग । सम०
उत्पत्त्यं खादमिधित जल, चीनी हाल कर पीठा
किया हुआ पानी, लक्ष्मी बैसाख शुक्ला मन्मदी के
दिन मनाया जाने वाला अनुष्ठान ।

शर्करिक (वि०) (स्त्री०—की) शर्करिक (वि०) [शर्करा
+ ठक्, इलच् ता] कंकरीला, बजरीदार, किरकिरा ।

शर्करी (स्त्री०) 1 नदी 2. करघनी, मेसला ।
शर्कः [शुच् + चञ्] 1 अपानवायु का त्याग, अकारा
(इस अर्थ में नपु० भी होता है) 2. दल, समूह
3. सामर्थ्य, शक्ति ।

शर्ज्जह् (वि०) [शर्क + हा + लृच्, मुम्] अफारा उत्पन्न
करने वाला,—हुः उबड़ या माछ की ढाल ।

शर्चन्म् [शुच् + स्पृट्] अपानवायु को छोड़ने की क्रिया ।
शर्च् (स्त्री० पर० शर्वति) 1. जाना, हिलना-डुलना
2. क्षतिग्रस्त करना, मार डालना ।

शर्मन् (पु०) [शु + मनिन्] शास्त्रार्थ के नाम के आगे
जाड़ी जाने वाली उपाधि यथा विष्णुशर्मन्, सु०
वर्मन्, दास, गुण (नपु०) 1 प्रसन्नता, आनन्द, खुशी
—त्यजन्त्युच्चार्य च मानिनो बरं त्यजन्ति न त्वैकम-
याचिन इतम्—नै० १:१०, रघु० १:१५, मैत्री
३:१७ 2 आशीर्वाद 3 घर, आश्रय (इस अर्थ में
बहुधा वैदिक) । सम० च (वि०) आनन्दवाचक
(—) विष्णु का विशेषण ।

शर्मरः [शर्मन् + रा + क] एक प्रकार का परिधान,
बस्त्र ।

शर्मा [शु + पत् + टाप्] 1. रात्रि 2. जंगली ।

शर्म् (स्त्री० पर० शर्वति) 1. जाना 2. पीटें पहुँचाना,
क्षति पहुँचाना, मार डालना ।

शर्भः [शु + ब] 1. शिव—रघु० १:१९३, कु० ९:१४
2 विष्णु ।

शर्भरः [शु + ध्वरच्] कामदेव, रम् अन्धकार ।

शर्भरी [शु + बनिच्, डीप्, वनोर व] 1 रात्रि शर्मन्
पुनरेति शर्वरी रघु० ८:५३, ३:२, १:१९३, मि०
१:१५ 2 हल्की 3. स्त्री । सम०—ईशः चर्ममा ।

शर्भाजी [शर्भ + डीप्, जानृक्] शिव की पत्नी पार्वती ।

शर्भरीक (वि०) [शु + ईकन्, इतिवादि] उपद्रवी, क्रूर,
—कः पूर्ण, पात्री, दुश्मन ।

शर्भः (स्त्री० आ० शलने) 1. हिलाना, हलक होना,
लुब्ध करना 2. कीरना ।

i) (स्त्री० पर० शलति) 1 जाना 2. तेज बीड़ना ।
ii) (चुरा० आ० शल्यसे) प्रशंसा करना ।

शर्भः [शर्भ + चञ्] 1. लींग, बर्छी 2. मेस 3. भुंगी नाम
का शिव का एक गण 4 बड़ा, लम्ब साही का कांटा
(कुछ के अनुसार पुं० भी) ।

शलकः [शल + कन्] मक्कड़, मकुड़ा ।

शलङ्गः [शल + अङ्गच्] राजा, प्रभु ।

शलथः [शल + अथच्] 1. टिठ्ठा, टिठ्ठी—श० १:३२
2 पतंगा कीरव्यवहारवेज्जिम्न क एष शलभायते
—वेणी० १:१९, मि० २:११७, कु० ४:४० ।

मलसम् [मल + अलम्] साही का काटा, ली 1 साही का काटा 2 छोटी साही ।

मल्लाका [मल + भाक, टाप्] 1 छाटी छड़ी, लूटी, डण्डा, कील, टुकड़ा, पतला सोनपा- अयस्कान्तमणि शलाका- मा० १ 2 पेन्सिल (आल में मुर्दा बाँजने की) मलाई-अन्नानाम्बस कोकम्ब ज्ञानात्रजनशलाकाय । बल्लुम्भीमिन येन नम्रे पाणिनय नम ॥ शिखा० ४८ कु० १४३ रघु० ३८ 3 बाण 1 माँग नेंडा 5 एक लोकदार शल्योपकरण (घात की गहराई नापने के लिए) 6 छतरी की तीली 7 (अथ पैर की अंगुठियों को बड़ की) हड्डी-पात्र० ३१/५ 8 अकुर, कनगी, कोपल-कु० १२६ 9 रग भरत की हथोड़ी 10 लय साक करने को कवा दोल-नुरेना 11 साही 12 हाथी की दाँत या हड्डी का बना नृवा अन्त्रने का आयनाहार (पामा) टुकड़ा । मम० धून (मल्लाकाधूनः) उष्णका, ठण परि (अम्ब०) जूए में अनहुत पासा पड़ना, तु० परि अक्षपरि ।

मल्लाव (वि०) [मल् + मादु] अनपका हुआ बन्द विशेष ।

मल्लाभोमिः (पु०) ऊँट ।

मल्लम्, मल्लकम् [मल् + कन्, कल्च् बा] 1 मछली का बल्कल या छिलका मनु० ५११५, पात्र० १ । १७८ 2 बल्कल, छाल (बूझो की) 3 भाग, अंश, अण्ड ।

मल्लकिन्, मल्लिन् (पु०) [मल्लक (मल्ल) + इन] मछली ।

मल्लम् (प्रा० वा०) मल्लभे प्रसन्न करना ।

मल्लमिः, -मी (स्त्री०) [मल् + मलम् + इत पले होप्] ऐतनी कई का बूझ, समल ।

मल्लम् [मल् + यल्] 1. छड़ी नेंडा साग 2 बाण की शल्य निशानमुद्राग्रयतामुरस्त रघु० १७८ शल्य-प्रोत् १७५ श० ११९ 3 काँटा लपची 4 मल्ल कुटी, बूणी (उपयुक्त चारो अर्थों में पु० भी जाना है) 5 शरीर में धमा हुआ कोई पीड़ा कारक काँटा बाँध अलातशल्यम् उत्तर० ३१३५ 6 (बल०) हृदयविदारक शोक या किसी नाकण पोड़ा का कारण—उद्धृत्तविषादशल्य कथयिष्यामि- श० ७ 7 हृदयी 8 कठिनार्द्र, कष्ट 9 पाप, दुर्म 10 निग, लब्धः 1 साही, साऊ चूहा 2 काँटेदार साही 3 (बायु० में) शल्यविकल्पा में लपचियों का उखेड़ना 4 बाँड तीमा 5 एक प्रकार की मछली 6 मद्रदेश का राजा पाँव की छिनीय पत्नी साही का भाई नकुल और सहदेव का धामा (महाभाग के युद्ध में उनमें पाँडवों की ओर से लड़ने का विचार किया परन्तु सुयोधन ने शालाकी से उस पर प्रभाव डाल कर उसे अपनी

ओर कर लिया, अन्ततः बहु कौरवों की ओर से लड़ा । कर्ण के सेनापति बनने पर बहु उसका सारथि बना, और कर्ण की मृत्यु हो जाने पर उसे कीरव सेना का सेनापतिम्ब दिया । एक दिन तक उसने सेनापतिम्ब का भार सम्भाला परन्तु दूसरे दिन युधिष्ठिर ने उसे भीम के पास उतार दिया । मम० अरि, युधिष्ठिर का विशेषण, आहुरणम्, उद्धरणम्, उद्धार, किया, शल्यम् काटा या काम आदि निकालन शल्यशल्य का बहु भाग जो शरीर में असमल सामग्री को उखाड़ फेंकने से सबब रखता है-कण्ड साऊ चूहा, लोबन् (नपु०) साही का काँटा हतुं (पु०) निरया निराने वाला ।

मल्लक [मल् + कन्] 1 माँग नेंडा मल्लाव 2 खरबी काम काटा 3 साऊ चूहा, साही ।

मल्लः [मल् + अज] मेटा-मल्लक बल्कल छाल ।

मल्लक [मल्ल कन्] बूझ साँण बूझ-कम् बल्कल छाल ।

मल्लकी [मल्लक + कीप्] 1 साही 2 एक बूझ विशेष जो हाथियों को बहुत प्रिय है—तु० उत्तर० २०१ ३१६, मा० ११६ विक्रम० ५१२३ । मम० --इष्ट धूप, लोभान ।

मल्लः [मल् + बन्] एक देश का नाम, वे० 'शाल्व' ।

मल् (प्रा० पर०) शक्ति 1 जाना, पहुँचना 2 बदलना परिवर्तन करना रूपान्तर करना ।

मल्ल, मल् [मल् + अज लाञ्, मुर्दा शरीर मनु० १०५५, मल् अ' आच्छाद्यमन् मूलक शरीर का आवरण, दण्ड,--आश (वि०) मुर्दा लाकर जीने वाला-भट्टि० १२७५ काश्म. कुता घानम्, रथः मुर्दा होने की गाड़ी अरथी एक प्रकार की पालकी जिसमें मृतक शरीर रख कर दमशान भूमि में ले जाते हैं ।

मल्लर, मल्ल दे० मल्लर मल्ल ।

मल्लसान [मल् + असानच्] 1 पाकी 2 मार्ग, सड़क मल् कबिस्तान शब्दप्रियवान् ।

मल्ल [मल् + अल्] 1 लरगोश, लण्डा—मनु० ३१७७ ५१८ 2 ल-अ' का कल्क (जो लरगोश की आहूति का समझा जाता है) 3 कामशास्त्र में वर्णित चार प्रकार के पुरुषों में से एक मंड । ऐसे मनुष्य के अणु ये हैं मृदुबलमृशील कोमलांग सुकेश, मकलपुणनिधान मत्पबादी अशोऽम्ब-शब्द० दे० रति० ३५ भी 1 लाघ बूझ 5 बोल नामक लघुबुद्धार शीघ्र । मम० अहू 1 चांद 2 कपूर अर्धवृक्ष (वि०) अर्धचन्द्राकार मिर वाला (बाण आदि) भूतिः चन्द्रमा का विशेषण 'लेखा चाँद की कला चन्द्रकला, -अक्षः 1 बाँड, इनेन 2 पुरुष के पिता इत्याहु का एक

पुत्र, अवनः बाह, श्येन, ऊर्ध्वम्, लोभम् सरगोश के शान्, सन्ने की लघा, धरः 1 चन्द्रमा-पसरति शशधरविने गीत० ७ 2 कपूर शैलिः शिव का विशेषण, सप्तकम् नक्षत्रात्, नाग्न का धाव, भृत् (पु०) चोद भृत् (पु०) शिव का विशेषण, -लक्ष्मणः चोद का विशेषण, -लक्ष्मणः 1 चन्द्रमा कु० ७।६, 2 कपूर-वि(वि) कुः 1. चोद 2 विष्णु का विशेषण -विषाणम् भृगुम् सरगोश का सीन (असभय बात का सकेत करने के लिए प्रयुक्त, नितास्त (अस-भावना) कदाचिदपि पर्यटन् शशविषाणमासादयेत् - मर्त्य० २।५, शशभृत् भृगुचतुर्वर्ग हे० 'लघुण', स्वस्ती गया यमुना के बीच की भूमि, दोआबा। शकः [शश + कन्] 1 सरगोश सरहा 2 शश (३)।

शशिन (पु०) [शशोऽस्त्यस्य शनि] 1 चोद शशिन पुनरिति शर्वरी रघु० ८।५६, ६।८५, मेघ० ५१ 2 कपूर। सम० इति शिव का विशेषण, -कला चन्द्रमा की एर रेखा मुदा० १।१, कालः चन्द्र कानमणि (-सम्) कमल, कोटिः चन्द्रभृत्, ब्रह्मः चन्द्रमा का ग्रहण, प्रः बुध का विशेषण (चन्द्रमा का पुत्र), -प्रोत्र (वि०) चन्द्रमा की काटि वाला, चोद जसा उज्ज्वल और श्वेत रघु० ३।१६, (-मय) कुम्भद्वी, -प्रभा चोद वा प्रकाश, -भूषण, भृत्, (पु०) शैलिः, शेषरः शिव के विशेषण रेखा चन्द्रमा की कला।

शश्वत् (अप्य०) [शस् + वत्, वा] 1 लगानार, अनाधि काल से, सदा के लिए 2 सतत बार-बार, मरे-बहुत, पुनः पुनः-रघु० २।४५, ४।३०, मेघ० ५५ 3 समास में प्रयुक्त होने पर 'शश्वत्' का अर्थ है टिकाऊ नित्य यथा शश्वच्छानि अर्थात् नित्य शान्ति।

शश्वु (श्वु) लो [शस् (म) + कृन् + श्वु] कान का दिवर, श्रवण मार्ग प्रवर्जस्त्रिकर्णगण्डुलीकक्षीक रचयन्तवोक्त ने० २।८, राज० ३।१६ 2 एक प्रकार की पक्षी हुई राटी राज० १।१०३ 3 शालक की काजी 4 कान का एक रोग।

शश्वः (श्वः) [शस् + वक्] प्रतिभास्य, औषध का प्रभाव, -स्वम् नया घास जनर० ६।२७, रघु० २।२५।

शस् (श्वः) [शस् + कृन्] काटना मारडालना, नष्ट करना, बि-काट डालना, मार डालना उत्तर० ४। 11 (अदा० पर० शस्त्रि) साजा, तु० 'शस्' से भी।

शस्तम् [शस् + कृन्] 1 घायल करना, मार डालना 2 बिल, मेघ, (यज्ञ में पाय का)।

शस्त (भू० क० कृ०) [शस् + कृन्] 1 प्रशसा किया गया, स्तुति किया गया 2 भूम आत्मन् प्रद 3 यथायं, यथायत्न 4 अतिशय, घायल 5 बच किया हुआ

स्तम् 1 आत्मन्, कल्याण 2 श्रेष्ठता, मांगलिकता 3 गरीर 4 अनुलिखाण (इसी अर्थ में 'शस्तकम्' भी)।

शस्तिः (स्त्री०) [शस् + कृन्] प्रशसा, स्तुति।

शस्त्रम् [शस् + कृन्] 1 हथियार, आयुध अमाशस्त्र करे अस्त्र दुर्जन कि करिष्यति बुधा०--रघु० २।४०, ३।५१, ६२, ५।२८ 2 उपकरण, औजार 3 लोहा 4 इस्पात, 5 स्तोत्र। सम० शस्त्रास्त्रः शस्त्रास्त्रों के चलाने का अभ्यास, सैनिक अभ्यास, अभयम् 1 इस्पात 2 लोहा--अस्त्रम् प्रहार करने और छेक कर मारने वाले हथियार, आयुध और अस्त्र 3 आयुध या शस्त्र आशोषः उपशीघ्रम् (पु०) शेषर सिपाही, उच्चरः (प्रहार करने के लिए) शस्त्र उठाना, उपकरणम् युद्ध के उपकरण या शस्त्रास्त्र, सैनिक छात्रवी, -कारः शस्त्रनिर्माता कोषः किसी हथियार का स्थान, आवरण, --प्राहिम् (वि०) (युद्ध के लिए) शस्त्रास्त्र धारण करने वाला उत्तर० ५।१३, --शीघ्रम्, कृति (पु०) शस्त्रप्रयोग के द्वारा जीवित बाधन करने वाला, व्यावसायिक सैनिक, -वैद्य 1. आयुधों की अधिष्ठात्री देवता 2 देवकपुत्र हथियार, वरः शस्त्रभृत्, -व्यासः हथियार डाक देहा, इसी प्रकार धरन (परि) त्याग, वशि (वि०) शस्त्र धारण करने वाला, शस्त्रों से मुक्तिकृत (पु०) मरण्य योद्धा -कृत (वि०) 'शस्त्रों द्वारा परिकीकृत' युद्धसेन में मारे जाने से मुक्त -अस्त्रपूत निर्व्याध (महामास)--मा० ५।१३ (६० शस्त्र की जगद्वरुण व्याख्या) अहमपि तस्य शिष्याप्रतिज्ञावैक्यस्यपाटितमशस्त्रपूत मरणमुपदिशामि मेवी० ७, प्रहार. हथियार से किया गया आघात

शस्त्र (पु०) सैनिक योद्धा रघु० २।४०--बाणैः हथियार साफ करने वाला, शस्त्रनिर्माता, शिकारी, विद्या शस्त्रम् शस्त्र विज्ञान, संहतिः (स्त्री०) 1 शस्त्रमण्ड 2 आयुधालय, संपातः हथियारों का प्रकटमान गिरना, हत (वि०) हथियार से मारा गया हस्त (वि०) शस्त्रधर (स्तः) शस्त्रधारी मन्थ्य।

शस्त्रकम् [शस्त्र + कृन्] 1 इस्पात 2 लोहा।

शस्त्रिका [शस्त्रक + टप्, इरवम्] बाक।

शस्त्रिन् (वि०) [शस्त्र + इन्] शस्त्रधारी, हथियारबंद, शस्त्रास्त्र से मुक्तिकृत।

शस्त्री [शस्त्र + श्वु] श्वकू-पश्यान्श्वु विवेककल्पलताका शस्त्रोन्मू रघ्येन क सुभा० वि० ६।४०।

शस्त्र्यम् [शस् + कृन्] 1 अश, शस्त्र्य बुद्धि गा स यज्ञाय शस्त्राय नृचया विवम् रघु० १।२५ 2 किसी वृक्ष या पौधे का फल या उपज--अस्त्र्य क्षेत्र

सरीर के हाथ, कन्धा आदि छोरों व सूजन, - मृत् (पु०) मूल, वेधः (वेध की) शाखाओं का जलार, - मृत् 1 बन्दर, लघुर 2 गिलहरी, रच्छः अपनी शाखा के प्रति झोझ करने वाला, बहु बाह्य जिसने अपनी वैदिक शाखा को बचल दिया है, रच्छा गली, पीथिका ।

शाखाकः [शाखा + क] एक प्रकार का रेत वाली ।
शाखिन् (वि०) [शाखा + इनि] 1 शाखाधारी आल० से श्री 2 शाखाओं से युक्त, शाखामय 3 (वेध के) किसी सम्प्रदाय विशेष से सम्बन्ध रखने वाला - (पु०) 1 मूल स० १११५ 2 वेध 3 वेध की किसी भी शाखा का अनुयायी ।

शाखोटकः [शाख + ओटन्, शाखोट + कन्] एक मूल, वेध - कस्त्र भी कथयामि देवहनुक मा विद्धि शाखोटकम् - काव्य० १० ।

शाखुर [शाखुर + अण्] बेल ।

शाखुरिः [शाखुर + इञ्] 1 कातिकेय 2 गणेश 3 अर्जुन ।
शाखुकः [शाख + ठक्] 1 शाखुकार, शाखु को काट कर उसकी पीलें बनाने वाला 2 एक वर्षसकुर जालि 3 शाखु बजाने वाला - सि० १५१३२ ।

शाखः, शाखी [सद + घञ्, शाट + ङीप्] 1 वस्त्र, कपड़ा 2 अचोवस्त्र, छाड़ी ।

शाखकः, -मन् [शाट + कन्] 1 वस्त्र, कपड़ा अचोवस्त्र, छाड़ी - पञ्च० १११४४ ।

शाखकम् [शाट + घञ्] बेईमानी, छल, कपट, बालाही, बाकशाही, बुद्धि - भाव्यधन शाटघमणिशिनो य स० ५१२५, मुद्रा० १११ ।

शाख (वि०) (स्त्री० स्त्री) [क्षणेन निर्मेतम अण्] सन का बना हुआ, प० १० का बना हुआ - भाः 1 कछोटी - भासि० ११३३, भर्तृ० ११४४, 2 मान रखने वाला पत्थर 3 भारा 4 बार भाषे की तीन, अण् 1 मोटा कपड़ा, बोरे या बैसे आदि बनाने का कपड़ा 2 सन का बना वस्त्र - मनु० ११४१ १०८७ । सम० - शाखीकः सम्प्रतिमर्ता, सिरुपागर ।

शाकि [अण् + इण्] एक पीथा त्रिकके रेखा में वस्त्र बनता है, पदुका ।

शाखिल (पु० क० क०) [अण् + णिप् + क्त] सान पर रक्खा हुआ, पीना हुआ, (साण पर रक्त कर) पैनाया हुआ ।

शाखी [अण् + ङीप्] 1 कछोटी 2 सान 3 आग 4 सन का बना वस्त्र 5 फटा कपड़ा, चिबड़ा 6 छोटा पर्दा या रङ्ग 7 अंधविशेष, हाथ या आँसू आदि से सकेन करना ।

शाखीरम् [अण् + ईरन्] खोच नदी का तट, खोच नदी का मुखा ।

शाखिष्णः [शाखिल + यञ्] 1 एक ऋषि जिसने विश्व-शास्त्र पर ग्रन्थ लिखा 2 बिल्बुल, बेल का पेड़ 3 अग्नि का रूप । सम० शौचम् शाखिष्ण का परिवार ।

शात (पु० क० क०) [शो + क्त] 1 तीक्ष्ण किया हुआ, पैनाया हुआ 2 पतला, दुबला 3 दुर्बल, कमजोर 4 मुन्दर मनोहर 5 प्रसन्न फलता फूलता, - स धनुरे का पीथा, तम् आनन्द प्रसन्नता लुशी मानिनी जननितशातम् - गीत० १० । सम० - उबरी क्योदरी, पतली कमर वाली स्त्री शि० ५१२३ रघु० १० । ६९, - शिख (वि०) नेत्र नोक वाला, तीक्ष्ण नोकदार ।

शातकुम्भम् [शात + कुम्भ + अण्] 1 माना - शि० ११९, नै० १६१३६ २ धनुष ।

शातकीरम् [शात + क् + अण्] मुक्कण माना ।

शातनम् [शो + णिप् + क्त] 1 पैनाया तंत्र करना 2 काटने वाला बिनाशक १ रघु० ३१६० 3 गिराना या नष्ट करना 4 कुम्हनाष्ट पैदा करना 5 पतला या छोटा होना पतलापन 6 मुक्कण कुम्हलाना ।

शातचक्रः, -की [शात + चक्र + क्त] 1 पैनाया तंत्र 2 शातनम् ।

शातभीषः [शाता कुन पात्मा भीषा यया - भ० स०] एक प्रकार की यंत्रिका ।

शातधाम् (वि०) (स्त्री० स्त्री) [शात + धाम] 1 शातमानेन क्रोतम अण् । एक सी में आल लिया हुआ ।

शातव (वि०) (स्त्री० - स्त्री) [शतु + अण्] 1 शतुसवधी रघु० ५१४२ 2 बिरोधी शतुसपुष्प के दुधमन शि० १६१४ १०१२०, बनी० ५११, भर्तृ० ५१ ८१ कि० १५१२ मुद्रा० २१५, अण् 1 शतुनी का समूह २ शतुना दुधमनी श्वीशातवसावसे रघु० ।

शातवीथ (वि०) [शतु + थ] 1 शतुसवधी 2 बिरोधी, शतुसपुष्प ।

शाव [सद + घञ्] 1 छोटी बान २ कीचड़ । सम०

हरितः तम् नये शाव के कारण हरियाली भूमि, बहु भूमि जिस पर हरियाली छा गई है ।

शावल् (वि०) [शावा सन्वय घञ्] 1 नृचकुल 2 जहाँ नई बास, या हरी हरी बास उस आई हो 3 हरा मरा, सम्बद्ध हरियाली से युक्त, ज, अण्

बास से युक्त भूमि, हरियाली, बराबाह शय्या शावल्म शासि० ।

शाव् [शाव + अण्] 1 कछोटी 2 सान का पत्थर ।

सम० - शावः 1 वन्दन पीठने का पत्थर 2 पारि-वाय पर्वत ।

शावः [शाव् + अण्] 1 कछोटी 2 सान का पत्थर ।

सम० - शावः 1 वन्दन पीठने का पत्थर 2 पारि-वाय पर्वत ।

शान्त (भू० क० कु०) [भस् + क्त] 1 प्रसन्न किया हुआ, समन किया हुआ, बोरज दिलाया हुआ, समुष्ट किया हुआ, प्रशान्त-रघु० १२।२० 2 विकसित, शान्तवना दिया हुआ शान्तरोज 3 घटाया हुआ, कम किया हुआ, समाप्त किया हुआ, हटाया हुआ, दुहाया हुआ शान्तवक्षसामपरिग्रहम् रघु० १।५८, ५।४७, शान्ताक्षि दीर्घाक्ष प्रकाश कि० १।७।१६ 4 विरन ठहराया हुआ कु० ३।४२ 5 मृत्, उपरन 6 शान्त किया हुआ, दबाया हुआ 7 शीघ्र, बुध्द, बाधार्ह न निस्तब्ध, मूक, मोन शान्तमिदमाश्रयम् द० १।१९ ८।१९ 8. सबाधा हुआ पाता हुआ रघु० १।७।७ 9 आवेशरहित, आराम में, समुष्ट 10 छाया दार 11 पवित्रीकृत 12 भूम (भकुन) (शान्त वान्म ५६) यही यह कैसे हो सकना है भगवान् को ऐसी भक्ष्य या दुर्गन्धपूर्ण घटना न घटे श० ५. मृदा० १), त 1 बैरागी, मन्यानी 2 शान्त, निस्तब्धता, मोनभाव, सामागिक विषय शसनाओ के प्रति तटस्थता की प्रभावना दे० निर्वद और रस-भम् (अन्व०) बल, और नहीं, ऐसा नहीं, शम् की बात है, बुध्द रहो, भगवान् न करे शान्त कच दुर्ज्ञातः पीर-जामपराः-उत्तर० १, तावेव शान्तमपवा किमिहोत्तर-देव ३।२६। मय० शान्तम्, -केतम् (वि०) शीघ्र, शान्तवना पीर स्वत्वमना, -शोध (वि०) जिसका पानी स्थिर हो, -रसः मोनभाव दे० ऊ० शान्तम् ।

शान्तवचः [शान्त + वच्] शान्त का पुत्र भीष्म ।

शान्ता [शान्त + टाप्] दसरथ की पुत्री जिसे सोमपाद ऋषि ने गौतम लिया था तथा जो ऋष्यशृङ्ग को ध्याही गई थी । दे० उत्तर० १।४ ऋष्यशृङ्ग भी ।

शान्तिः (स्त्री०) [शम् + क्तित्] 1 प्रसन्न निराकरण शान्तवना, हुताव-अश्वविधानशान्तये रघु० १।१। ६२ 2 धैर्य, प्रशान्तता निःशब्दता अमन-विश्राम कु० ६।१७, भा० ६।१ 3 वैजिरोध भाषि० १।२५ 4 विराम निवृत्ति 5 आवेश का अभाव, मोनभाव मना सामागिक भागों के प्रति पूर्ण उदासीनता-रघु० ७।७ ६ शान्तवना डाहस 7 साम् अश्वविधान, बिगोयोगदान 8 मूक की मृत्ति 9 प्रागविद्यमान अनुष्ठान पाप को दूर करने के लिए मुष्टिपर अनुष्ठान 10 शीघ्राय बधाई आशीर्वाद माङ्गलिकता 11 शोधमार्जन, कलक से मुक्ति, परिष्कार । मय०-उबक्, -उबक्, -अक्क शान्त-कर तथा प्रसादपूर्ण त्र ३ श० ३ कर, कारित (वि०) शान्तक, प्रशामक, मूह् विद्यामकर, -होव पाप का निस्तारण करने के लिए यज्ञ करना मनु० ५।१५० ।

शान्तिक (वि०) (स्त्री०-की) [शान्ति + क्त] शान्तिक-शान्तक, शान्तकाप्रद, मुष्टिकर, -कम् बकट को दूर करने के लिए किया गया अनुष्ठान ।

शान्त्य दे० 'शान्त्य' ।

शाप [शप् + षञ्] 1 अभिशाप, अवकाश, फटकार-आपेनास्त शान्तमहिमा वर्षायोगेन मनु मेघ० १, १२, रघु० १।७८, ५।५६, ५९, ११।१४ 2 शीघ्र, शपथान्ति 3 दुर्बलन शिष्या आरोप । मय०-अन्तः-अवसानम्, निवृत्तिः (स्त्री०) अभिशाप की समाप्ति, मेघ० ११०, रघु० ८।८२, अन्तः 'अभि-शाप को ही जिसने अपना आयुष्य बनाया है' ऋषि, महान्ता रघु० १।५३-अन्तः अभिशाप का उत्पत्ति-रम्, उद्धारः, -मृत्ति, -मोक्षः अभिशाप से छुट-कारा, प्रसन्न (वि०) अभिशाप से दबकर परिचय करने वाला, मुक्त (वि०) अभिशाप से बिलने छुटकारा पा लिया है, -अन्ति (वि०) अभिशाप के कारण नियन्त्रणपूर्ण ।

शान्ति (भू० क० कु०) [शप् + शिप् + क्त] 1 शीघ्रत्व में बना हुआ, शपथपूर्वक उक्त 2 गृहीतवच, जिसने शपथ ले ली है ।

शास्त्रिक [शक्रान् हन्ति-शक्र + ठक्] मसुआ, मछली पकड़ने वाला ।

शब् (ब) र (वि०) (स्त्री०-री) [शब (ब) र + ञ्] 1 असम्ब, जलकी 2 नीच, कमौना, अवयव रः 1 अपराध, दोष 2 पाप, दुष्टता 3 लोभ नायक वृक्ष री प्राकृत बोली का एक निम्नरूप (पहाड़ी लोगों से बोले जाने वाला) । मय० अशोकम् (अशोकम् भी) ठापा ।

शब्द (वि०) (स्त्री०-ब्दी) [शब् + ञ्] 1 शब्द सबकी या शब्द से व्युत्पन्न 2 ध्वनि पर निर्भर या ध्वनि सम्बन्धी (वि०) शब्दों 3 साधिक, मौखिक 4 ध्वनित-शीन मूलर, -ब्दः वैयाकरण । मय० शब्दः शब्दों के अर्थ का अवबोध या प्रत्यक्षीकरण, -ध्वनना शब्दों पर आधारित व्यापकित ।

शाब्दिक (वि०) (स्त्री० की) [शब्द + ठक्] 1 उदासी, मौखिक 2 निरादर, -कः वैयाकरण ।

शामन [शमन + ञ्] शम मनु 1 हत्या, बध 2 शान्ति, अमन-बैत 3 अन्त की दक्षिण दिशा ।

शान्तिम् [शम् + शिप् + ण्] 1 यज्ञ करना 2 मेघ, यज्ञ में पशुवध करना 3 यज्ञ के लिए अभिपक्ष वाचना 4 यज्ञीय पात्र ।

शान्तिम् [शमी + षञ्] भयम्, राक्ष ।

शान्ति [शान्ति + शीप्] यज्ञीय बुद्धा, बुध् ।

शान्तिरी [शान्ति + ञ् + शीप्] 1 शान्तिरी, अशुभरी 2 शान्तिरी ।

सायबिकः [शम्भु + उक्] शम्भो का व्यापारी ।

शम्भु (बु) क. [शम्भुक + अण्] द्विकोषीय घोषा ।

शम्भव (वि०) (स्त्री० कौ) [शम्भु + अण्] शिव सम्पन्नो अन्व वाञ्छति सामर्थ्यो गणयते गन्तुं श्रुतार्तं फणी पञ्च० १।१५९, व १ शिवोपासक २ शिव जी का पुत्र ३ कपूर ४ एक प्रकार का विष वम् देवदाह वृक्ष

शम्भवी [शम्भव + ङीप्] १ पावनी २ एक घोषा नीलवर्णा ।

शम्भ [सो + भुल] १ बाण २ तलवार पु० सायक ।

शार (बुग०) उम० शारयति ने) १ दुर्बल करना २ कमजोर होना ।

शार (वि०) [शार + अण् शु + घञ वा] चितकदार बन्धेदार चित्तीदार रंग १ रंगबिम्बा रंग २ हरा रंग ३ हवा वायु ४ शतरंज का मोहरा घोट भर्तु० ३।३९ ५ सर्पिं पट्टनाने वाला आधान करने वाला ।

शारङ्ग [शारम अङ्गम यस्य व० म०] १ शानक पक्षी २ मोर ३ और ४ हरिण ५ हाथी पु० शारंग ।

शारङ्गी [शारङ्ग + ङीप्] एक संगीत वाद्य विशेष जो गज से बजाया जाता है पु० शारंगी ।

शारव (वि०) [शरदि भवम् अण्] १ पतझड़ में मयब रक्तने वाला शरत्कालीन (इस वर्ष में स्त्री०-शारवी है) वियलशारदशब्दिगुणिका भाषि० १।११२ यमु० १०।९ २ वार्षिक ३ नया नूतन ४ अनुभव हीन नौमिलग ५ विनीत शमील अन्तर ५ सकाम माहमहान व १ वर्ष २ शरत्कालीन बीमारी ३ शरत्कालीन धप ४ एक प्रकार का लोबिया या उड़द ५ बहुत बड़ा वन मोलाभरा — दी कार्तिक मास को गुणित वम् १ अनात्र घ २ २ स्वेन कमल वा १ एक प्रकार की बीणा १ शारंगी २ दुर्गा ३ शरद्वनी ।

शारविक [शरद् रक्] १ शरत्कालीन रंग २ शरत्कालीन धप या गर्मा कम्प शरत्कालीन गा वारिक आदि ।

शारविक (वि०) [शरद् छ] शरत्कालीन पतझड़ मयबवी ।

शारि [शु + इज्] १ शतरंज का मोहरा मोर २ छरी बाल गेंद ३ एक प्रकार का पामा रि (स्त्री०) १ शरिका पक्षी मैना २ बालमाखी बाल ३ ज्ञाया की मूल । मम०-बट्ट, कल्प कल्पक, कम्प शतरंज खेलने की विज्ञान, ।

शारिक [शारि + कन् + टाप्] १ एक पक्षी मैना २ शम्भुपुत्र वाद्ययन्त्रों को बजाने वाला गज ३ शतरंज खेलना ४ शतरंज का मोहरा मोटी ।

शारी [शारि + ङीप्] एक पक्षी मैना ।

शारीर (वि०) (स्त्री०-री) [शरीर + अण्] १ शरीर से संबद्ध शारीरिक दैहिक २ शरीरचारी मूर्तिमान् शरीरचारी जीवात्मा मानवात्मा, वैयक्तिक आत्मा २ मोह ३ एक प्रकार की जीववि ।

शारीरक (वि०) (स्त्री०-कौ) [शरीर + कन् + अण्] शरीर मयबवी कम्प १ मूर्तिमान् जीव जीन के स्वरूप की पुच्छा (बहुभूतो पर शङ्कराचार्य द्वारा किया गया भाष्य) । मम० सुबम् वैवात्म दर्शन के सूत्र ।

शारीरिक (वि०) (स्त्री०-कौ) [शरीर + उक्] दैहिक शरीर मयबवी जीविक

शारक (वि०) (स्त्री०-कौ) 'गु' उक्ता । प्रमिटकर चाट पट्टनाने वाला उपदवा ।

शारक [शक + अण् कन्] दानदार चपकाली मोह मिसरी ।

शारकर (वि०) (स्त्री०-री) शरंज अण् १ शरीर का बना हुआ, शरीरमिश्र २ शरीरमा ककाला ३ ककाला स्थान २ हृष का भाग पक्षी ३ मनाई ।

शार्ङ्ग (वि०) [शृङ्ग + अण्] १ शिंग का बना हुआ साग बाण २ उपशारी धनुष में मुसलमान भर्तु १०.३ शृङ्ग-झुम १ धनक २ विष्णु का धनुष । मम०-चम्पन (पु०), धर वाणि धृत विष्णु के वसण ।

शार्ङ्गन [शृङ्ग शर्ङ्ग] १ शरद्वज धनुर्वीर २ विष्णु का वसण धममरक्षणार्थ प्रवृत्तिमवि शाङ्गन मम० १०.१६ १ १० मम० १६

शार्ङ्गल [शृङ्ग शृङ्ग] १ शरद्वज धनुर्वीर २ विष्णु का वसण धममरक्षणार्थ प्रवृत्तिमवि शाङ्गल मम० १०.१६ १ १० मम० १६

शारव (वि०) (स्त्री०-री) शरीर अण् १ शरीर वालन गु २ उपदवा प्राणहर रम्प अण् कर पू अण् १ शरीर

शारव (वि०) (स्त्री०-री) १ प्राण करना लुणामद करना २ चपराग ३ गुं व, गा वि० १।१६ पर धाव्ल १ कहना ।

शार [शल मज्] १ शृङ्ग वृषावद लबा और शानदार -रम्प १०.१३/ वि० ३ ६० २ वृक्ष पद -रम्प १।१३ केनी ५।३ ३ शारव, शार ४ एक प्रकार की मछली ५ शरा शानिवाहन । मम० शार विष्णु भगवान्

की जायस प्रमत्तर्तुति जैसा कि शिवायित, "गिरि पर्वत का नाम, "शिला शालग्राम पत्थर, -कः, -निर्यातः शालग्राम का प्रभाव, राव रघु० ११३१, अश्विजका १ गीह्या, पुनलिका, मति -विद्व० १, नै० २८३ २ वेष्टा, रडी, -अश्वी गीह्या, पुनलिका -वेष्टः माल के पेड़ से निकली राव, तु० 'माल' -सारः १ उच्छ्रुत-वृक्ष २ हीम ।

शालग्रः [शाल + ग्रन् -ड] लोध वृक्ष ।

शाला [शाल् + अच् + टाप्] १ कक्ष, प्रकोष्ठ, बेंटक कमरा -गृहेऽशालैरपि भूरिगामे सि० ३१५० इसी प्रकार मनीषाला, रमाला आदि २ घर आलगम -रघु० १६११ ३ वृक्ष की मुख्य शाखा ४ वृक्ष का तना । सम० -अश्विजकः, रघु मित्वा का कमीरा, रघु गीह्य वृक्षः १ कुला -भार्गव ११३२ २ भंडिया हरिण ४ बिल्ली ५ गीह्य ६ वस्त्र ।

शालाकः (पु०) पाणिनि ।

शालाकिन् (पु०) [शालाक -इन्] १ भाला रखने वाला बड़ीचारी २ जर्जर ३ नाई ।

शालापुरीयः [शालापुर -इय] पाणिनि का विशेषण (जन्म स्थान 'शालापुर' होने के कारण 'शालोत्परीय' भी लिखा जाना है) ।

शालासु [शाला + सु -अच्] १ बीजा, मोड़ी २ पित्ररा ।

शालिः [शाल् + शिनि] बाबल न शालि स्तम्भकारका कर्तुर्गुणमाश्रिते मुद्रा० ११३३, यत्र प्रकीर्ण न भवति नालयः मुच्यते ६११९ २ गणबिलावः । सम० औषधः, नम्र भाव (उच्छ्रुततर प्रकार का) ।

—गोरी बाबाइ के संज्ञ की रखवासी करने वाली स्त्री रघु० ६१० वृषः, नम्र नाउल का आटा पिष्टम्भ स्फटिक भक्षणम बाबाइ का संज्ञ -बाबाइः भारत का एक उद्विग्न राजा जिसके नाम से विद्वान् ७३८ में एक सत्यवर आरम्भ हुआ होय १ पशुचिकित्सा न पदपणो २ पांडा ह्रीमिज (पु०) घोडा ।

शालिकः [शालि + क -अच्] १ हृक्का २ पायक -मुक्त ।

शालिन् (वि०) (स्त्री०-नी) [शाला + इनि] (बहुधा समस के अन्त में) १ सहित युद्ध, सशस्त्र बमहीला समकदाय-कि० ८११३ ५५, अष्टि० ५५ २ गजेक । शालिनी [शालिन् + इय] १ घर की स्थापना गृहणी २ छन्द का नाम नै० पौ० ११ ।

शालीन (वि०) [शाला लुङ्] १ बिनीत नरकशील शमीला, लज्जालु, निमग्नशक्तन रक्षावन -मालिक० ४, रघु० ६१११ १११३० सि० १६१२ २ यदुज, नमान, नः गृहस्थ (शालीनी कृ विनयी बनाना, विनय करना) ।

शालुः [शाल् + उल्] १ मंडक २ एक प्रकार का मन्थ द्रव्य, लु (नपु०) कुम्दिनी की जड़ ।

शालु (लु) कम् [शल् + ऊकच्] १ कुम्दिनी की जड़ २ जयफल, का मंडक ।

शालु (लु) कः [शाल् + ऊर्] मंडक ।

शालेयम् [शालि + इल्] बाबलो का जैन ।

शालोत्परीयः [शालोत्परीय भव -छ] पाणिनि का विशेषण -दे० शालापुरीय ।

शालमलः [शाल् + मलच्] १ मेमल का पेड़ २ भू-मण्डल के सात बड़े खण्डों में से एक ।

शालमलिः [शाल् + मलिच्] १ मेमल का पेड़ -भार्गवः १११५, मनु० ८१२६ २ भू-मण्डल के सात बड़े खण्डों में से एक ३ नरक का एक भेदः । सम० लम्बः गहक का विशेषण ।

शालम्बी [शालमल -म्बी] १ मेमल का पेड़ २ शालम लोक की एक नदी ३ नरक का एक भेदः । मन्त्र० वेष्टः, वेष्टकः मेमल के पेड़ का गौद ।

शालम्बः [शाल् + ब] १ एक देश का नाम २ शालम्ब देश का राजा ।

शाल (वि०) (स्त्री०-नी) [शल् + अच्] लक्ष्मण्यनी, (किसी) रियेदार की) शब्द से उत्पन्न -दशाह साव-माशौच सपिण्डेषु विधीयते -मनु० ५१५१, ६१ २ घूरे रज्ज का, गहरे पीले रज्ज का, 'ब' किसी जानवर का छोटा बच्चा, कुरङ्गक भूगोलना, कल्पवृक्षशब्द स्व रूप रूपा परात्मन्यस्यो मृगशावै समोपेक्षी इत -श० १११८, मृगशब्दाव रघु० ६१३, १८३७ ।

शालक [शाल + क्] किसी भी अन्य पशु का बच्चा ।

शालर दी 'शालर' ।

शालवत (वि०) (स्त्री०-नी) [शालव भव अच्] नित्य, मनोज्ञ चिरम्बायी शालवती सम्रा राधा० (उल्ल० १५) अश्विजक वर्षों के लिए, सदा के लिए समस्त जगत्सो समय के लिए उल्ल० ५१३ रघु० १५१३ तः १ शिव २ अश्व ३ सूर्य तम् अश्व० निः निरन्तर, सदा के लिए ।

शालवतिक (वि०) (स्त्री०-नी) शालवत - ठकी निग स्थायी मनोज्ञ समत-शालवतिकी विशेष नैसर्गिक विदाय ।

शालवती [शालवत + इत्ये] स्त्री ।

शालुकुल (वि०) (स्त्री०-नी) [शालुकुल + अच्] वास (या मन्थ नाल)

शालुकुलिकम् शालुकुल -कृ, गुरियों का डेर ।

शालु [अश्व० ११० शालिब लिट्] १ अश्वपन करना, 'मशम प्रवान करना प्रसिद्धि (इस अर्थ में शालु द्विकर्म) है। शालुक धर्म शालिब -लिट् ०, अष्टि० ५११० लिख्येच्छे शालि वा स्वा प्रपञ्च -अश्व०

२।७ २ राज्य करना, शासन करना, जनन्यासा-
मूर्वी महासैकपुरीमिष-रघु० १।३०, १०१, १४।८५,
११५७, ल० १।१४, भट्टि० ३।५३ ३ आज्ञा देना,
समाधिष्ट करना, निदेश देना, हुक्म देना रघु०
१२।३४, कु० ६।२४, भट्टि० १।६४ ४ कहना
सन्नाद देना, सूचित करना, (सम० के साथ)

तस्मिन्नायोधन वृत्त लक्ष्मणायाशिष्यमहत् भट्टि०
६।२७, मनु० ११।८० ५ उपदेश देना स किसका
साधु न सास्ति योर्ध्वपम् कि० १।५ ६ आदेश
देना, राजाज्ञा लागू करना ७ दण्ड देना सजा देना
निर्दोष बनाना, मनु० ६।१३५ ८।२२ ८ सपना
बशीभूत करना महावी० ६।२०, अनु० १ (क)
उपदेश देना, प्रेरित करना-कु० ५।५, (ख) अध्यापन
करना, शिक्षण प्रदान करना, आज्ञा देना आदेश
करना-रघु० ६।५९, १३।७५ भट्टि० २०।१०
२ राज्य करना, शासन करना ३ सजा देना दण्ड
देना वैशी० २ ४ प्रसन्न करना, स्तुति करना
आ—, (बहुधा आ०) १ आशीर्वाद देना, आशीर्वाद
उच्चारण करना, ऋकृष्णसा आशास्ते श० ४,
उत्तर० १ २ आज्ञा देना, आदेश देना, निदेश देना
(इस अर्थ में पर०) भट्टि० ६।४ ३ इच्छा करना,
कोषणा, आज्ञा करना, प्रत्याज्ञा करना—सर्वमस्मि
न्यवसाधासम्पदे ल० ७ आधासत तत सास्तिमस्तु
रत्नीनहासत्—भट्टि० १७।१, ५।१९, मनु० १।८०
४ प्रशंसा करना, प्र० १, अध्यापन करना, शिक्षण
देना, उपदेश करना, भट्टि० ११।१९ २ आदेश
देना, समाधिष्ट करना प्रशान्ति पन्नया कार्यम्
माकंभ्ये० ३ राज्य करना, शासन करना, प्रमु
बनना—आ प्रशान्ति मलितावधिकालम् कु० ५।२४
रघु० ६।७६, ९।१४ दण्ड देना, सजा देना ५ प्रार्थना
करना, याचना करना, ललास करना, (आ०) ५६
कविष्य पूर्वम्यो नमोवाक प्रणास्यहे उत्तर० १।९
(आशुर्वक सास के अर्थ में प्रयुक्त) ।

शासनम् [शास् + श्यट्] १ शिक्षण, अध्यापन अनु
शासन २ राज्य, प्रमुख, सरकार अनन्यशासना
पूर्वम् रघु० १।३०, इमी प्रका 'अप्रतिशयनम्
३ आज्ञा, आदेश, निदेश—तर्कभरिण दक्ष्य शासन
प्रभाषीकृतम् श० ६, रघु० ३।६९, १४।८३, १८।
१८।४ रात्रिजगति, क्षितिनिधय राजाज्ञा ५ विधि
नियम ६ अवहट्टर, राजा द्वारा दान की हुई भूमि
अधिकतरयत्र अह न्या शासनमनेन यात्रियध्यायि
—पद्य० १, याज्ञ० २।२४०, २९७ पट्टा, वल्गावेड
मिथित लघ्वीना ८ आदेशों का नियन्त्रण (सत्य के
अन में प्रयुक्त 'शासन' का अर्थ है, दण्ड देने वाला,
विनायक, वा मारक तथा स्मरशासन, पाकशासन) ।

सम० वक्ष्यम् १ बहु साम्रपत्र जिस पर भवान की
राजाज्ञा लोदी गई हो २ बहु कागज जिस पर कोई
राजाज्ञा अंकित हो, हारिन् (पु०) राजभूत, सर्वेश
वाक्य रघु० ३।५८ ।

शासित (भू० क० क०) [शास + क्त] १ राज्य किया
गया शासन किया गया २ दाण्डित ।

शासित् (पु०) [शास + लृच्] १ राज्य करने वाला,
शासक २ दण्ड देने वाला श० १।-५ ।

शास्त् (पु०) [शास् + लृच्, इडभाच्] १ अध्यापक,
शिक्षक २ शासक राजा प्रभु ३ विना ४ बुद्ध या
ज्ञान धर्म का गुह्य आधार ।

शास्त्रम् [शास्त्रेण्यन-शास् + घट्] १ आज्ञा, समावेश
नियम विधि २ वेदाविधि, धर्मशास्त्र का आज्ञा
३ धार्मिक ग्रन्थ वेद त्रयंशास्त्र द० नी० समस्तपद
४ त्रिधाविभाग विज्ञान इति मुष्कनस शास्त्रम्
भग० १५।० शास्त्रावकुशिता बुद्धि-रघु०
१।१९ प्राय समास के अन्त में विषयशुद्धक शब्द
के परवान् या उक्त विषय पर समर्पित-अध्ययन का
सहित अष्टार वेदान्त शास्त्र न्यायशास्त्र, तर्कशास्त्र
अलंकार शास्त्र आदि ५ पुस्तक, ग्रन्थ तर्क पत्र
भियेनच्छकार मुम्नोहर शास्त्रम् पद्य० १६ सद्बाल्य
(वि०) प्रयोग या अध्ययन—मालवि० १। सम०
वैतिथ्यम् अनुष्ठानम् वैदिक विधियों का
उल्लेख धार्मिक प्राप्राणिकता की अवहेलना, अनु
ष्ठानम् वेदाविधि का पालन या तदनुकूलता अभिज्ञ
(वि०) शास्त्रों में निष्पन्न अर्थः १ वेदविधि का
अर्थ २ वैदिक विधि या शास्त्रीय वक्तव्य, आचारक्रम
वेदविधि का पालन, उक्त (वि०) शास्त्रविधि से
विहित, शास्त्रों की आज्ञा, वैय, कानूनी, कार्य, कुल
(पु०) १. किसी धर्मशास्त्र का रचयिता २ ग्रन्थ
प्रणेतृ कोविद (वि०) शास्त्रों में निष्पन्न मन्त्र
दियाऊ गठक हजका अध्ययन करने वाला (यद्यपि
गम्लवसाहो चक्षुस (नयः) व्याकरण (शास्त्रों का
ममअने के लिए अर्थ) अ, विद (वि०) शास्त्रों
का ज्ञान, ज्ञानम् ३ शास्त्र का ज्ञान, वेद की
ज्ञानकारी तत्त्वम् शास्त्रों में विहित सवाई, वैदिक
नस्व दक्षिण (१४०) धर्मशास्त्रों का ज्ञान बुद्ध
(वि०) धर्मशास्त्रों में विहित या उक्त, बुद्धि
(श्री०) शास्त्रीय बुद्धिकोण कोवि, शास्त्रों का
मान या उदगमस्थान विद्यालय, विधिः शास्त्रीय
विधि, वेदाज्ञा विद्वत्तत्त्व, विरोक १ शास्त्रीय
विधियों का पारम्परिक विराज, विधि विधान की
अवगति २ वेद विधि व विद्वत् आचारण विमुक्त
(वि०) अध्ययन से पराक्रम पद्य० १, विद्वत्
(वि०) शास्त्रों के विपरीत अर्थ, वैराजान्नी,

शूच्यसि: (स्त्री०) धर्मशास्त्रों का अन्तरण ज्ञान, शास्त्रों में प्रवीणता, श्रितिसूत्र (पु०) काश्मीरदेश, सिद्ध (वि०) धर्मशास्त्रों के प्रमाणानुसार स्थापित ।

शास्त्रिण (वि०) (स्त्री०-बी) [शास्त्र इति] शास्त्रों में अभिज्ञ, कुशल (पु०) शास्त्रों में परगण, विद्वान्, पुरुष, महान् रहित ।

शास्त्रीय (वि०) [शास्त्रेण चरित स] 1 वेद-वर्हित शास्त्रानुसारी 2 वैज्ञानिक ।

शास्त्र (वि०) [शास्त्र धन] 1 व्यवसाय जाने याग्य, उपदेश दिये जाने योग्य 2 विनियमित या निर्भय किये जान के योग्य 3 दृक्कर्म, दृष्टाव्य ।

शि (स्त्री, "श" शिर्वाति (जितने) 1 नष्ट करना पैनापना 2 कृषा करना, पटना करना 3. उर्ध्वजित करना 4 मारवाना होना 5 नाशना होना ।

शि: 1 शि - शिवम् 1 मातृश्रित्तना, स्वरसाधन 2 स्वरचयना, मोक्षना शक्ति अवन-चैन 3 शिव का विशेषण ।

शिक्षा [शिब पाति-शिब - पा - क पु० माधु 1 शीघ्रता का पेश 2 अनाक वृक्ष ।

शिक्षु (वि०) [शिब - क पु०] गुप्त, आलसी अकर्मण्य ।

शिक्षक [शिब - क पु०] पाठ तु० शिक्ष ।

शिक्षण, शिक्षा [शिब मय दृगागम शि आशु - शिब - टाग] 1 (स्त्री) में बुना हुआ, सीका, सीका 2 बहुरी पर पटक कर म जोड़ जान वाला बोज ।

शिक्षित (वि०) [शिब - शिब - क] लोक में लट-काया हुआ ।

शिख (स्त्री० आ०) शिखर शिखर, सीमाना, अरयन करना, ज्ञानार्जन करना अतिशयश्रमितुल्य मन्त्र-वत् १० ३१३१

शिक्षक (स्त्री०) शिक्षका, शिक्षिका । [शिब - शिब - टाग] 1 सीमाने वाला 2 आचार्य, सिखाने वाला, -मन्त्रोपदेश (प्रवर्तन किया और सक्तानि) माधु 1 शिक्षकाणा धुरि प्रविष्टापसितस्य एव—मालवि० ११११ ।

शिक्षक [शिब - टाग] 1 सीखना, अधिगम, ज्ञानार्जन 2 आचार्य, सिखाना ।

शिक्षणः [शिब - शानम्] शिष्य, विद्यार्थी, विद्या-भ्यासी ।

शिखा [शिब भाव अ टाग] 1 अधिगम, अध्ययन ज्ञानाधिपद १० ११३ 2 किसी कार्य को करने के योग्य होने की इच्छा, निष्ठा होने की इच्छा 3 अध्यापन, शिक्षण, प्रशिक्षण काव्यप्रशिक्षण-

भ्यास काव्य १, अधुष्य नम्र प्रणिपानशिव १० ३१२५, मालवि० ४११, रणशिरा 'युद्ध-विज्ञान' 4. छ बदासी में से एक जिसके द्वारा शस्त्रों का सही उच्चारण तथा मन्त्र के नियम सिखाये जाते हैं 5 विनय विनम्रता 1 मम० कः 1 अध्यापक, शिक्षक 2 श्याम नरः इन्द्र का विशेष-यण, शक्तिः (स्त्री०) कुशलता ।

शिक्षित (पु० क० क०) [शिब - क, शिखा ज्ञानाध्य-नाग इतम्] 1 अधिगत अधीन 2 अध्यापित सिखाया १—प्रशिक्षितदुःखम् १० ५१२१ 3 प्रशिक्षण अनुशासन 4. मन्त्राया दुःखा, विनय-शील 5 कुशल वतुर 6 विनीत भजतापीनः 1 मम० अक्षर शिष्य आयुष्य (वि०) हविष्यारो के मन्त्रालन म अभिज्ञ ।

शिक्षणः [शिष्याधर्म-अम ट म० शकाम्] 1 मुद्रित सम्भार के अवसर पर रखा गई शिब बाँटी या दाने पत्र में छंटे गये बाल काव्य 2 शीर की पूँछ ।

शिक्षणकः [शिब ११ इव - कन्] 1 वृद्धकर्म सम्भार के अवसर पर सिर पर रखी गई बाँटी 2 सिर के तन्त्रबालों में छंटे गये बाल (शिवों के लिए बड़े बाँट) तीन या पाँच होनी हैं) उन्म० ४११, 3 कर्मगो बाल का गुच्छा, बूझा या लेखन 4 मयूर पुच्छ ।

शिक्षणिकः [शिब - कन्] कर्मा ।

शिक्षणिका दे० शिक्षण (१) ।

शिक्षणिक (वि०) [शिब ११ इव - कन्] कर्मगोदार, शिखाधारो (पु०) 1 शीर नदति म गुण बहुमुखः शिक्षणी उन्म० ३११८ १० ११३५ 2 मुर्त 3 बाल 4 शीर की पूँछ 5 एक प्रकार की बसेली 6 विष्णु 7. दुपद के एक पुत्र का नाम (शिक्षण) मूलरूप से स्त्री था, क्योंकि अना ने भीष्म से बला बुरावने के लिए दुपद के घर जन्म लिया (दे० अना) । परन्तु जन्म से ही उस कन्या की पुत्ररूप में घोषणा की गई और पुत्र की भाँति ही उसकी शिक्षा-दीक्षा हुई । समय पाकर उसका विवाह दुपदवर्मा की पुत्री से हुआ, परन्तु जब द्विरुपदवर्मा को ज्ञात हुआ कि मेरा आमाता ने सचमुच स्त्री हैं तो उस बड़ा दुःख हुआ इसलिये उसने इस कोला दिये जाने के कारण दुपद की राज-धानी पर बड़ाई करने की सोची । परन्तु शिक्षणी ने एक बंगला में रह कर शीर नाम्नी की और किसी उपाय से उसने अपना स्थाव्य यज्ञ को देकर उसका पुत्ररूप बहने में प्राप्त किया और इस प्रकार दुपद के ऊपर बाएँ हुए संकट को टाका । बाद में बहा-

भारत के युद्ध में भीष्म पितामह की मारन का एक साधन बना। जब अर्जुन ने शिखंडी को अपने पांडवों के रूप में जाग्य कर दिया तो भीष्म पितामह न स्त्री के साथ युद्ध करने से हाथ मीच लिया। बाद में अश्वत्थामा ने शिखंडी को मार डाला।

शिलाजिन्नी [शिलाजिन्नी + जीन्नी] 1 मोरनी 2 एक प्रकार की चमेली 3 दुपद की पुत्री दे० ३० शिलाजिन्नी । शिलाजिन्नी, रज्जु [शिलाजिन्नी + रज्जु आवाज] । बोनी पहलू का सिरा या शृंग अगम गोरु [अगम शिल शिज्जम्नु कु० ५१३, ११४ मध० १८ २ दक्ष का मित्र या चोटी ३ कलगा बुवा ४ मलबार की नोक या बार ५ चोटी ६ मय शीशबिन्दु ६ काय बगल ७ बालों का कड़ा होना ८ अरबी चमेलों की बली ९ एक भाग की भूमि मणि । मय०—बासिनी दाम्ना का विशेषण ।

शिकारिणी [शिकारिन् - डी १ नारीयन् २ जीना
मिश्रित वही जिनमें मसाले पड़ हो श्रीवाह ३
रोमावली जो वक्ष ग्यान से बन्द कर नाभि हो पाग कर
जाती है ४ एक छन्द का नाम द० पार० १ ।

शिक्षारिषि (वि०) (एन०-सी) । शास्त्रमध्यस्थ इति ।
 १ षोटी काला शिक्षाधारा २ नृकाता शिक्षारयुक्ता
 शिक्षारिषमा मेघ ० (१०) १ पहाड
 हतचक्र शरणाभिन्न गम्भीरा गभा गरत भव ।
 २०६ दण्ड २३, दण्ड २११, २२ २ पहाडी दुगा
 ३ वल ४ टिटिकुरी ३ अपागाम का पीछा ।

निम्न [सि + लङ्, तस्य नेत्रम् पृष्ठा०] 1 'सर्ग की बाजी
 पर बालों का गुच्छा मुद्रा० ३३० गि० ४१०
 मा० १०१६ 2 चोटी गिन्नाश्र्वि 3 चूहा
 कलमी 4 चाटी, शिखर शायरिन्दु बि०
 ६१९ 5 तेज शिरा गर गङ्गा या मित्रा ग०
 ११४, भावि० १० 6 वस्त्र का छत्र ग० ११४
 7 अग्नि उज्ज्वला प्रभामहत्या गिन्नाश्र्व दीप कु०
 ११२८, रघु० १०३३४ 8 प्रकाश की किरण कु०
 ११३८ 9 मोर की कलमी 10 उडायुक्त गड
 11 शाला (शिखरे रूप से उड़ पकड़नी हुई) 12
 प्रधान या मुखिया 13 कामग्वर। मम० तव
 दीपाधार, दीपट — बर मोर ० बर मोर का पक्ष
 बार: मोर, चरि: बुद्धायिनि, मूल्य 1 माग्वर
 2 मूली, बर कटहल का पद, बल (वि०) मुकीला
 कलमीदार, (—) बार बर दीपाधार दीप
 —बारि (स्त्री०) प्रसिद्ध बने वाला स्याज

प्रियावत्: [प्रिया + आवत्] मोर की कलगी ।
प्रियावत् (वि०) [प्रिया + मतुप्] 1 कलगीदार
2 श्वालामय, (प०) 1. दीपक 2 आग ।

2 बलगीदार शिलाचारी 3 बमडी (पुं)
1 मोर पक्ष ११५५ विक्रम २१२३ शि ११०
2 अग्नि सिपुग्नि सखीसबासा य शिलाच हिम
निल गो ७ पक्ष १११० म्बु ११५६
शि ११३ 3 मुर्गा 4 बाग 5 वृक्ष 6 दोपक्ष
7 मोक्ष 8 बाह्य 9 वहाड 10 बाह्य 11 सप्त
12 कनु 13 इन का सम्पत्ति 14 विक्रम वृक्ष।
सम० कम्बु - योवस पुत्रा नील बाधा
वज्र 2 आनिक का विद्यान 2 पुत्री विष्णु
पुष्पम मा १३ ३० दम पुष्प भाग्यमग
वर्षक मोक्ष स्त्री का बाह्य तारा का विष्णु
शिला 1 उवाला 2 मोर की कलम।

मिथु [नि एक गुरु व] । सागभाज २ मन्त्रित
का पेड ।

शिव (स्वा १ ३ निम्नति) कृता विद्या मन्त्र

सिद्ध, (ग्या० पर) मूषन ।

सिद्धान्त । सिद्ध + आणव पणोऽ कलाप । 1 पदको
भाग 2 अनाम रूप अथ 1 भाग को मंग मियज
2 भाग का भाग 3 भाग का अर्ध ।

शिक्षाणक कम् [शिक्ष + अणञ्] नास्मिन्माल मणक
क कक वल्गम ।

सिद्ध (२५) रश भाग बुग ०५५० - सिद्ध (२५) रश
सिद्ध (२५) रश (सिद्ध (२५) रश) टनटनाना हारहाना
खदखद रश सि० १०१५।

सिद्धि मिलेगी। ५३४। प्रकार जनसमाज में मनन या
मनन को ध्वनि विगलक भाषा आदि नहीं
की जाय।

शिशुवर्धिका (स्त्री०) कटिबध करधनी ।

शिक्षा । 'शब्द' + 'प्र' + 'कार' । 1 टकार सकार आदि
2 धनुष की चाली ।

सिञ्जितम् (भू. १०. ६०)। सिञ्ज कर्त्तृ कृत् अकृत
तम् त्वात् (आद्य आदि मन्त्रो की) अकार
तज्जन् राजहमसा नेद नृपुरसिञ्जितम् विक्रम०
६।१६।

सिद्धिजीवी [शिख् + जिनि डीप्] : वनस्पति की डोरी
2 साधारण रूप (पैरो में पहना जाने वाला गहना) ।

शिद् (स्वा० पर० शक्ति) मुख्य मयसना ध्या करना
निष्कार करना ।

शिव (भू० क० कु०) । धो-न कन । 1 तेज किया हुआ
पैनाया हुआ 2 पनला हुआ 3 छीका हुआ जीक
दुर्बल बलहीन । सध० अन्न कीटा चारा(वि०)
तेज धार वाला एक 1 जी 2 गेहूँ ।

शिलाह (पत्री०) मल्लुव नाम की मरी दे० सतह ।

निति (वि०) [नि + क्त] १ एवेत २ कामा वि०
१५४८ - ति भर्जयति । तम० - कथं १ निव

रघु० ३५९ ५६, अपनीतशिरस्पात्रा - ५६४
 2 शिर की टोपी पगड़ी, - चरा - चि बीबा गरदन,
 शि० ४१२ ५१५ - लोहा शिर हर्द कल नारियल
 का पेठ भूषणम् शिर पर पहनने का आभूषण
 मणि । मस्तक पर धारण करने का रत्न 2 बुझा-
 मणि 3 विद्वान् पुरुषों के लिए सम्मानयोग्य उपाधि
 मर्मम् (पु०) सुभर, - मालिन् (पु०, शिर का
 विशेषण रत्नम् शिरोमणि बजा शिरवर्द, बह्
 (पु०) चर (शिरसिबह्-बह् मी) शिर के बाल
 - कनु० ११४ कु० ५१९, रघु० १५१६, बलिम्
 (वि०) मुलिया (पु०) मुख्य, प्रधान के रूप में रहने
 वाला वृत्तम् शिरम्, वेष्टः, - वेष्टनम् शिर पर
 पहनने का वस्त्र पगड़ी कूलम् शिरवर्द हारिन्
 (पु०) शिर का विशेषण ।

शिरसिका [शिरसि जन + इ सप्तम्या अलुट्] शिर के
 बाल, - शि० ७३६२ ।

शिरस्कम् [शिरस् + कन्] 1 लोहे का टाप 2 पगड़ी
 टोपी ।

शिरस्का [शिरस्क + टाप] पाककी ।

शिरस्तम् (मध्य०) [शिरस् + तम्] शिर से कु० ३०९,
 मनु० २११० ।

शिरस्थ (वि०) [शिरसि मव यत्] शिर सवधी या शिर
 पर स्थित, स्थ स्वच्छ केश ।

शिरा (शु + क + टाप्) नलिका के आकार की शरीर की
 काहिका नाडी, जून की नाडी रक्तवाहिनी नाडी ।
 सप्त० - बह् कर्पत्य कैचवृक्ष, वृत्तम् सीमा ।

शिराल (वि०) [शिरा - ल्] स्नारवी शिरायुक्त शिर
 बहल ।

शिरिः (शु + क) 1 तलवार 2 बघ करने वाला कत्तल
 करने वाला 3 बाण 4 टिड्डी ।

शिरिष [शु + ईप् + क्] शिरस का पेठ, - बह् शिरम
 का कूल (यह भुक्तमात्रा का नमूना समझा जाता है)
 - शिरोपपुष्पाधिकसीकुमार्यो बाह् नदीयात्रिण मे निवर्त
 - कु० ११६१, ५१६, रघु० १६१८, मेघ० ९५ ।

शिर (तुदा० पर० निवर्त) शिरोछत्र, मिला चूना
 बालें इकट्ठा करना ।

शिरः, सन् [शिर + क] शिरोछत्र, बालें चुना, - दे० मनु०
 १०११२ पर कुल्ल० । सप्त० उच्छ 1 शिरावृन्
 2 अनियमित वृत्ति ।

शिरा [शिर + टाप्] 1 पत्थर चट्टान 2 चक्की 3 बीज
 की नीचे की लकड़ी 4 जर्बे की चाटी 5 कबरा,
 रक्तवाहिका 6 मन शिला, वैतनिल 7 कपूर ।
 सप्त० अश्वकः 1 छिद्र 2 बाह्, बाड़ा 3 बीबारा,
 मटारी, अल्पजम् लोहा, - आसिका कुठाली, बगिया,
 बारम्बा काष्ठकल्ली, जंजीरी केला, आसजम्

1 पत्थर का आसन, चौकी आदि 2 लोहेय गन्धद्वय,
 गुग्गुलु, - आसजम् शिराजनु - उच्छवः पहाड़ शिराल
 चट्टान - रघु० २१२४, - उरवम् लोहेयगन्धद्वय, गुग्गुलु,

उरुवम् १ लोहेयगन्धद्वय 2 बड़िया किरम की
 बन्दन की लकड़ी, ओकस् (पु०) गहड़ का विशेषण
 - कुट्टक पत्थर तोड़ने की छेनी, टांकी, - कुट्टनम्,
 पुष्पम्, लोहेय गन्धद्वय, ज (वि०) शिराजीत,
 अनिजद्रव्य (- जम्) 1 शिराजीत 2 लोहेयगन्धद्वय
 १ पेटील १ लोहा - कोर्द या शिरोभूत पदार्थ

जनु (नपु०) 1 शिराजीत 2 गेह जित् (स्त्री०) ।

बहु शिराजीत धातु 1 बरिया मिट्टी 2 गेह
 १ मरुद शिरोभूत पदार्थ, बट्ट, पत्थर की शिरा,

१ ग २ र ३ गय शिराजन पुत्र, - पुत्रक मशाला
 पीसने का छट्टी शिरा मिल, प्रतिकृति (स्त्री०) ।

प्रमग् मृत्ति फलकम् पत्थर की मिम, बहम्
 लोहेयगन्धद्वय - भेद सगनगाश का छेनी टांकी - बहम्

1 लोहेयगन्धद्वय 2 धूप, बह्कलम् एक प्रकार की
 काई जो पत्थर पर ब्रम जाती है वृष्टि (स्त्री०) ।

1 पत्थरों की बर्षा 1 ओलो की बोरिया - बहम्
 (नपु०) गुला पत्थर की दगर व्याधि शिराजीत

शिरि [शिर - रि] रूखवज (स्त्री०) बीजट की नीचे
 की लकड़ी ।

शिरिम् [शिरि + दा + क पृथो० मय] एक प्रकार की
 मछली ।

शिरि [निमि डोप । 1 दरगाहे की बीजट की नीचे
 की लकड़ी 2 एक प्रकार का भुंकी कैचवा 3 जर्बे

की चाटी 4 भाजा 5 बाण 6 गन्धवान् १ मँहकी ।
 मम० मुख भोग मिलनशिलीमुखपाटालाटलकून

स्मरतुपाविकासे-सीत० १ रघु० ४१५० 2 बाण-सा
 कुमुपपटितशिलीमुखमनोहरागममबापायि प्रभव

वानान् चर्यामिन् - का० २२५, या बृषाहिका
 शमूदयावृषाविव शिरा शिरोमन्मन्थनीज्वलत शि०

१४१ (दोना मदभ) में मध्य (१) तथा (२) जर्बे
 में प्रयत्न हुआ है ३ मूर्ध् ।

शिरोग्र [शिरि वरति शु + क पृथो० मय] 1 एक
 प्रकार की मछली 2 एक वृक्ष, अश्व १ कुट्टनम्

मपि की छनरी, जैसा कि 'उच्छिन्नीग्र में 2 कैले के
 वृक्ष का कूल - अश्विपुर्ग-ग्र शिरोमन्मन्थनीज्वलत शि०

११३ - या, अश्विनारमगतिना शिरोमन्ने - १०
 1 बाजा ।

शिरोग्रग्रम् [शिरि-ग्र + वन्] कुट्टनम्, लव शपि
 की छनरी ।

शिरोग्री [शिरि-ग्र + डीप्] 1 मृत्तिका, मिट्टी
 2 कैचवा ।

शिरवम् [शिर + वक्] 1 कला ललितकला, यागिक

कला, (इस प्रकार की कलाएँ चौमठ गिवाई गई हैं)

2 (किसी भी कला में) दुसल्ला, कारीगरी ।

मालवीय १।६, मुष्क ३।१। 3 विद्यावता, पटना 4 कार्य, शारीरिक श्रम या कार्य 5 कृत्य, अनुष्ठान 6 यज्ञीय वचना, ज्ञाता । सम० कर्मन् (नपु०) किया कोई भी शारीरिक श्रम, दस्तकारी - कार, कारक, -कारिन् दस्तकार, कारीगर, -सात्मन्, -शाला कारखाना, निर्मापी, शिल्पाविद्यालय शिल्पगृह सात्मन् 1 कला विषय पर (बाहेर) लिखन हो या पान्त्रिक) लिखा गया वृत्त 2 शिल्पविज्ञान ।

शिल्पिन् (वि०) [शिल्प + इति] 1 मालिन या पान्त्रिक कला संबंधी 2 पान्त्रिक, यज्ञवत् (पु०) 1 दस्तकार कलाकार कारीगर 2 जो किसी भी कला में प्रवीण हो ।

शिव (वि०) [इयति पापम्-ओ-+ वन् पृषा०] 1 शुभ भागलिक लीलायशाली-इय शिवाय नियतिरिवायति कि० ४।२१ १।१८, रघु० ११।३३ 2 स्वस्थ प्रसन्न, समृद्ध लीलायशाली शिवाय बन्धीयत्रालान् कश्चिन् रघु० ५।८, (अनुपलब्धानि ज्ञान) शिवाय सन् पञ्चान 'सगवान् आगती यात्रा सफल करे' -कः शिन्दुषो के नीन प्रधान देवताओ (चिमुनि) में से लीला देव त्रिमूर्ति का मूर्ति का संहार करना है त्रिम प्रकार ब्रह्मा का कार्य उत्पादन तथा विष्णु का मूर्तिपालन है एक देव केशवो वा शिवा वा -भर्गु० २।११५ 2 पुरुष की जननिन्द्य गिरन 3 शुभ वशों का योग 4 वंश 5 मोक्ष 6 पञ्चा का बौध्ने का मूर्ति 7 मुर देवता 8 पात्रा 9 गुग्गु 10 काला वनूरा, बी (पु० टि०) शिव और पार्वती कि० १।४०, -चम् 1 समृद्धि कल्याण मंगल भानन्द नर वर्मनि वर्मना शिवम ने० २।६२, गत० १।० ग० १.१० 2 प्रमानन्द पार्यायिका 3 मोक्ष 4 ब्रह्म 5 समुद्रो नमक 6 मोक्ष नमक 7 मुद्ध साहादा । सम० -बलम् कटाक्ष दे० -आत्मकम् संधः नमक -आवेक्षकः 1 शुभ सभावार लाने वाला 2 अविध्यवचना आत्म्य । शिव हा भावस 2 काल नमः (पु०) 1 शिव यन्त्र 2 हस्तान्-हस्त (वि०) अश्व, दुर्भाग्यपूर्ण-शिवर क्षतये काश० १ कर (शिवकर) भी (वि०) आनन्दप्रदायक, मंगलप्रद, कीर्तनः भूमी का नाम वसि (वि०) समृद्ध, आनन्दित, कर्मजः मंगलवृद्ध, सति (वि०) जिसका अन्त कल्याणकारी हो आनन्ददायक, मंगलप्रद प्रयत्न कल्याण प्रयत्न शिवरात्रिपञ्च वसन्त मा० १।७ 2 मृदु आ राजमी न हो मा पुनरावृत्तयमा शिवरात्रिरेषि -१।४९, (सिः) मानलिकता, आनन्द इत्यम्

विष्णु का चक्र, हाथ (नपु०) देवदास का पैर

ब्रुवः बल का पैर, -विष्ठा कनकी का पैर, -बालुः पात्रा, वृक्ष, -पूरी बनारस, बाराणसी, -बुराणम् अठारह पुराणों में से एक, शिवः 1 स्फटिक 2 वक्र नाम का पैर 3 चतुरा, मल्लकः अर्जुनवृक्ष, -राज-चामी बाराणसी, -राशिः (स्त्री०) काल्युनकृष्ण चतुर्वेदी जब शिव के सम्मान में कठोरव्रत का पालन किया जाता है, शिङ्गुन् शिव जिसकी पिंडी या किम के रूप में पूजा होती है, लोकः शिव का पसार -बल्लभः भाव का वृक्ष, (-भा) पार्वती, -बालुः मोक्ष बीजम् पात्रा, लोकः 1 चक्र 2 चतुरा, मुन्वरी दुर्गा का विशेषण ।

शिवकः [शिव + कन्] 1 वह मूर्ति जिसके माथ प्राय ली आदि पशु बाघ आते हैं 2 वह मन्त्र जिससे पशु अपना शरीर रक्षता है, पशुओं के शरीर को बच-लाने के लिए कृता ।

शिवः [शिव + टाप्] 1 पार्वती 2 गीदडी जहासि निद्रा-मार्गसे शिवार्चन कि० १।३८, हरेरक्ष द्वारे शिव-शिव शिवान् कलकल -मामि० १।२० रघु० ७।५०, १।६१ १२, ३९ 3 मोक्ष 4 लम्बी (जैदी) का वृक्ष 5 आबला 6 दूधपास वृक्ष 7 पीला रंग 8 हुन्दी सम० अराशि, कुला -शिवः बकरा, कल गरी (जैदी) का वृक्ष कल गीदडी का राना कि० १।३८ ।

शिवामी [शिव + लीप् आनुक्, शिव की पत्नी पार्वती ।

शिवालुः [शिव + आलुर् गोशब्द ।

शिशिर (वि०) [शिशि किरच्-नि] ठंडा, शीतल महं ब्रमा हुआ कुछ यदुनन्दनचन्दनशिशिरतरेण करेण पयावर् गोम १२, रघु १।५९, १।६३, १।६४९ -२, -चम् 1 ओम तुषार या पान्मा-पद्याना शिशिरा-क्याम जाता मन्त्र शिशिरावचना पश्चिमी बाल्यरूपाम -मेष० ८३ 2 आरे का शीतल (माघ और काल्युन की) सर्दी कष्टेयु स्थलिन गनेऽपि शिशिरे पुष्कोकि-लाना इत्यम् ग० १।३ 3 ठंडक शीतलता । सम०

जम् -कर, -किरण, -शीबिलि, -रश्मि बन्दमा -बुध इव शिशिरासो -विक्रम० ५।२१, शिशिरकिरणः काला बालाग्ने-प्रियाय शि० १।२१, शिशिरदीधि-निद्रा रज्ज्व चतु० ३।२, अश्वज अश्वज, आरे का अन्न वस्तु चतु, स्वहस्तान् शिशिराव-यग्य (पुष्पेच्छय) -कु ३।६१ उपरहित शिशिराव-गर्भविद्या अश्व० १।३१ -कालः सप्तमः आरे की चतु-वस्तु अन्न का विशेषण ।

शिशुः [शि + कृ सम्बन्धक, शिष्यम्] 1 बालक, बच्चा, शिशुवा शिष्या वा -उत्तर० ४।११ 2 किसी भी जानवर का बच्चा (बछड़ा पिल्ला, छौना आदि)

सं० १११४, ७१४ १८ ३ आठ या सोलह वर्ष से कम आयु का बालक । सम०—कन्या—कन्यासू बच्चे का नाम, कन्या एक प्रकार की मल्लिका, पाल दम घोष का पुत्र तथा वेदि देश का राजा (विष्णुपुराण के अनुसार) १४ राजा पूर्वजन्म में राक्षसों का राजा पापी हिरण्यकशिपु का चित्ते नरसिंह का रूप धारण कर विष्णु ने मार गिराया था । उसके पश्चात् इसने दम सिर वाले गरुड़ के रूप में जन्म लिया और राम ने इसको मार डाला । फिर इसी ने दमघोष के घर जन्म लिया और विष्णु के रूप में अवतार ग्रहण भगवान् में और श्री अर्जुन निष्ठुरता के साथ निरन्तर द्वेष करता रहा (२० शि १) इस विधि के राजसूय यज्ञ में यह कृष्ण गे मिलता था यह राज भला कहने लगा, ज्ञान करने मुझने चक म इसका सिर काट डाला । इसकी मृत्यु हो पापकवच प्रसिद्धकाव्य का विषय है) हनु, (१०) इष्ट ११ विशेषण मार मृम नाम का जलजन्म बाहक —बाहक बगली बकरा ।

सिमुक. [सिन् + कन्] १ बालक तथा २ किसी का जानवर का बच्चा ३ बल ४ सम ।

सिम्बन्ध. [सिन् + भन् + क्त] इत्थम् १३० की अन्तर्गत लिङ्ग याज्ञ० ११३, मनु० १११००६ ।

सिम्बिदास. [सिन् + दा + क्त] अन्तर्गत सप्त उक्त द्विवचम् रकारस्य दकार १, तर्जित आचरण कालः सवृक्षो, पुण्यान्मा २ दुष्ट पापी ।

सिन्धु. [सिन् + घञ्] घाट गढ़वाना मार डालना ।

ii) द्वा० ५२० चुरा० उभ० शायति शेषयति-ने, अवशिष्ट छोड़ देना, बना देना ।

iii) द्वा० ५२० शिनाष्टि शिष्ट १ बाची छोड़ना तथा रखना, अवशिष्ट छोड़ना २ दूसरा में भिन्नता करना—प्रेर० (शेषयति-ने) छोड़ना अथ बाकी छोड़ना, पीछे छोड़ना (प्रा० कर्मका० म) स्मृत्वन नोवा इवावशिष्ट स्य० ११५ कियद्वीपात् रज्ज्वा ज० ६, निश्चयमयीयन स्थिरवशिष्टम् महावी० ६, म० ३१ उव बाका छोड़ना ।

—दे० 'उच्छिष्ट', परि, अवशिष्ट छोड़ना (प्रा० मी -- अविना कर्णपूर्वागतायना मया नामि० ११५३, सि—, १ शिष्ट कर्मा विनाशना इना विशेष रूप में कहना शिष्टाग कर्मा २ भूद करना, विवेचन करना ३ बहाना ऊँचा करना बद्धि रज्ज्वा गह्वरा कर्मा पुनरुक्तविवर्तनदायकः शिनिनिष्ट मनाहजम-मा० ४१६, उता० ४१५ (कर्मका०) १ भिन्न होना स्य० १३६० २ अपेक्षाहीन अच्छा या ठीक नहीं का होना आग बड़

माना भान होना, (प्रा० के साथ) अपेक्षाहीन बहिया और दूसरों में अच्छा होना मनु० २१/३ ३१००३ (प्रेर०) रागे बड़ जाना भेद होना-मूक० ४१४, भाषि० ३१५ ।

शिष्ट. [श्रु० १०००] 'शाय + क्त, शिष्य + क्त बा] १ छात्र हुआ तथा हुआ, अवशिष्ट छात्रों २ आदिष्ट, समादिष्ट ३ प्रशिक्षण, शिक्षित, अवशिष्ट ४ सभाया हुआ पालन समय ५ बहिर्मान निष्ठान् शि० २११० ६ मद्गणमनना माननीय ७ शिष्य नख ८ मुख्य प्रधान शिष्य उत्तम पृथक् प्रमुख, छट प्रमुख या पृथक् शक्ति ९ तद्विमान पुरुष ३ राभदीदाता । सम० आचार १ बहिर्मान मरणा का अवशेष शिष्टाचार मरणात्—समा० विज्ञान या शिष्ट पुरुष ही है 'शायन' ।

शिष्टि. [श्रु० १००] १ म विज्ञान २ राज्य सामन्य ३ अज्ञात ४ सज्ज ५ दृष्ट ।

शिष्य. [श्रु० १००] १ छात्र बला विशिष्ट शिष्यावृत्त ज्ञान या शिष्यान्म म० २१० २ कथ्य आचरण । सम० परस्पर के दो का अनुक्रम किसी गुरु-संप्रदाय, की परस्पर शिष्यामही शिष्टि (श्रु०) छात्र का बोधन, भर्त्सना ।

शिष्टि. [श्रु० १००] शिष्ट लक नि० मय्य शि० शीलेय गणपत्य ।

शी. [अदा० ५००] दोन शयि कर्मका० शय्ये, इच्छा० शिर्षायम्) १ भेदना के जाना विश्राम करना शय्य करना इत्यत्र शय्यायन शिर्षायणे तथा शयने म० २१३६ २ साता (बाप० से मी) —कि नि प्रकृते शेषे दोष इयम समागतो मृत्यु । अथवा मय्य शयिषा निरुक्त शायति जाह्नवी अननी भासि० ४१३० अर्जु० ३१७७ कु० ५१२५, प्रे० (शाययति-ने मुनामा किमना अति— १ माने में पक्ष ल रज्ज्वा २ बाह में सोना अपेक्षाहीन देर तक सोना ३ गतीयागिष्ये महा० ३ भेद होना आग बड़ जाना पूर्वान्तराभाय तथापिदाये स्य० ५११० चरित्तन नातिगता मय्य कि० ६१२० भट्टि० ७१४६ ५२०) आग बड़ने का कारण बनना-पापना निदायशान पाप महत्त्वान् मृ० ३१३७ अथि— (शयन म कर्म के साथ) छटना, माना बाराम करना अवशेषयत्त शयम भट्टि० १५११६, अमृ० यान्ताविषयोमिह महाय मय्यान् पुष्कोर्धशोने स्य० १३६१ १३१५ १३१२ कि० १३१८, २ बसना रहना भट्टि० १०१३५, उव माना निरुक्त करना, सज्ज, मदह में होना सहाय्य कर्ता दिपु निरुक्तम कि० ३११४, ४२, भाषि० २१११५ । शी [शी + शिष्य] १ शिष्टा विश्राम २ शान्ति ।

कुम्हलाया हुआ पत्ता (इसी प्रकार शीर्षपत्रम् (क-)
नौम का पेड़, बुलान् तरबूज।

शीर्ष (वि०) [शू - किवन्] विनाशकारी, आघातयुक्त
अनिष्टकर क्षतिकर।

शीर्षक [शिरस् पृष्ठो० शीर्षादेशे गु० १ सुक् च ता ।
1 शिरशीर्षं मर्षो देशान्तरे वैश कर्ण० मर्षा०
१।२ 2 बाला भ्रमर। सम० अवशेष केवल
मिर ही बचा हुआ, -आमय' सिर का कोई भी रोग
-छे' सिर काट डालना छे (वि०) जिसका
सिर काट डालना चाहिए सिर काट कर भागे जाने के
योग्य उत्तर० २।८ रघ० १५।५१ रक्षकम् लोहे
का टोप।

शीर्षक [शीर्षं कन्] गृह का विशेषण कम् 1 मिर
2 शीपको 3 लोहे का टोप 4 मिर का वस्त्र / रंगी
टोप आदि। 5 स्वयम्भू निर्णय -प्रायास्य का
निर्णय।

शीर्षक्यः [शीर्षन् + पत्] साक तथा मूलसे हुए सिर के
बाल व्यक् 1 लोहे का टोप 2 टोप गोपी।

शीर्षन् (नपु०) [शिरस् शब्दस्य पृष्ठो० शीर्षन् आदेशः]
निर, (इस शब्द के पहले पाँच वक्त्रों में काई रूप
नहीं होने कर्म० डि० व० के पञ्चान शिरम् या
शीर्ष का विकल्प से आदेश हो जाता है)।

शील् (स्वा० पर० शीलति) 1 मध्यस्थता करना, भली
भाँति सोचना 2 सेवा करना, सम्मान करना पूजा
करना 3 सम्मान करना अभ्यास करना।

11 (ब्रा० उभ० शीलयति-ने) 1 सम्मान करना
पूजा करना 2 बार बार अभ्यास करना प्रयोग
करना अभ्यास करना, चिन्तन करना ध्यान करना
मृतिप्रतमपि भूय शीलित भारत वा भाषि०
२।२१ शाल्ययनि मूनय मुशोलनाम् कि० १२।५
3 राग्य करना पहनना-वर्ग मयि कुञ्ज सर्पिमर
पुञ्ज पेल्लय नीलनिचालम्-नाम० ५ 1 ज्ञाना दर्शन
करना बार बार जाना-यदनुगमनाय निशि गहन
मयि शीलितम् गीत० ७ स्मेरानना मपदि शाल्य
मोक्षमोक्षिम्-भाषि० २।४ अनु० परि० बार
बार अभ्यास करना, मुखाग्रा चिन्तन करना शब्द-
च्छतापि मनसा परीक्षितापि-गान०।

शील् [शील् + प्रक्] अत्रण कम् 1 स्वभाव, प्रकृति
चरित्र, प्रकृति शक्ति आदित प्रथा समानशीलव्य-
यनेषु सकार्य सुभा० अनुसक्त दुर्धन्य प्रवण
लीन अस्माय आदि अर्थ प्रकट करने के लिए
बहुधा समान के शब्द में प्रयुक्त कलहशील बल्लह
करने के स्वभाव काया अपराध भाष्यशील चिन्तन
शील, इसी प्रकार दाम्, युगा, दया पुण्य,
आश्वासन आदि 2 आचरण, व्यवहार 3 अक्षय

स्वभाव, अच्छी प्रकृति शील पर भूषणम् भर्तु०
२।८२ पञ्च० ५।२ ३ मदगण, नैतिकता मदाचरण,
सज्जीवन शुचिता, ईमानदारी- दौमन्याभूपतिवि-
नश्यात शीलं शलोपासनान् भर्तु० २४२, २९,
तथा हि ते शीलमुदारदर्शने तपस्विनामप्युपदगना
मतम्-बु० १।३६ वि० ११।१ तपु० १०।७०
5 सोढ्य, सुन्दर रूप। सम० स्वच्छन्द शीलता
या नैतिकता का उल्लेख-पञ्च० ५ कारिन् (पु०)
शिव का विशेषण-बचना शक्ति का उल्लेखन
शाल्ये गीलबचना-मृष्ट० १४६।

शीलम् [शीलं पठ्] 1 बार बार अभ्यास प्रयास
अध्ययन मन्थन 2 निरन्तर प्रयास 3 सम्मान करना
सेवा करना 4 वस्त्र पहनना।

शीलिन (म० क० क०) [शील + क्त] 1 अन्तर
प्रयुक्त 2 राग्य किया हुआ 3 बार बार किया
हुआ देखा हुआ 4 इत्यादि 5 मुक्त गीतन
सम्पन्न।

शीलन (पु०) [शीड क्वानि, अत्रण]

शुशुभार [शिशुभार वा अष्ट ३५] मूँन १ म
जल प्रन्तु।

शुक (म० पर० शाकनि) ज्ञाना शिखा जलना।

शुक 'शुक क 1 तोता आ मना मन्दपण कथने
शुक्रमात्र-मुभा०। शुकशालप्रकुटिने पशुगिनवा
मने। शिवरात्रिनि शुकशाल प्रकुटिने शुक
काव्या० १।० 2 सिम का पेड़ 3 आग का एक
पत्र (कहा जाता है कि शुक आग के बीजों में
पत्र हुआ था जब पूनाजी नाम का अमरा शुक
के का भ इस पृथ्वी पर भम रही था तो उसकी
दम कर आग का बीजपान हो गया था। शुक
अम में ही दार्शनिक था उसने अपनी नैतिक वाक्
पन्ता से स्वर्गीय अमरा १२वा १ नाम मार्ग पर
प्रतिन करने के प्रत्यक्ष प्रवर्तन का सुफलना पूर्व
मुखाग्र किया। कहते हैं कि उसी ने राजा
पराक्षित का भाग्यवत पुराण सुना। अत्यन्त कठोर
भाषक के रूप में उसका नाम शिवनी की तरह
प्रसिद्ध हो गया -कम् 1 कपडा वस्त्र 2 लोहे का
टोप 3 पगड़ी 4 दम्ब की किनारी या पगड़ी।
सम० अक्षत अनार का पेड़ तब, शुकः सिरस का
पेड़ भास (वि०) गान जैसा नाक वाला, नासिका
तोने की नाक जैसी नाक पुच्छ गन्धक शुष्क,
-प्रिय सिम का पेड़-शुष्का नाम्ना का पेड़-बल्लह
अनार का पेड़ बाहु कायदेव का विशेषण।

शुक्ल (पु० क० क०) [शुक् + क्त] 1 उज्ज्वल, बिम्ब
स्वच्छ 2 अमल बट्टा 3 कर्कस सखरा, कड़ा,
कठोर 4 मृदुल हुआ हुआ 5 परिशुद्ध, सफाई,

करके अपने आपकी मृत्यु से बचा लिया। उसके पश्चात् विश्वामित्र ने उस लड़के को अपने कुल में गाय के लिया और उसका नाम रक्ता देवगर्त।

सुनकः [सुन् + क सुन् + कन्] 1 भृगुवश में उत्पन्न एक क्षत्रिय का नाम 2 कुशा।

सुनासी (सी) रः [सुनासीने वायुसूय अत्य रत्न इति शब्] 1 इन्द्र का विशेषण 2 उल्लू।

सुनि [सुन् + इन्] कुला।

सुनी (स्त्री०) [इवन् + ङीप्] कृतिया कृष्कुरी।

सुनीर [सुनी + र] कृतिया का समर।

सुन्ध [स्या० चुरा० उभ० भञ्जनि न सुन्धर्मा न।

1 पवित्र या विमल होना 2 निर्मेत वंश पवित्र होना।

सुन्धुः [सुन् + धृ] हवा बाप।

सुधु (स्त्री० आ० शोधन) 1 भयकता दानद्वारा दान सुन्दर या मनोहर देखाइ देना—सुधु दासने गगन विषयनाशनेन उत्तर० १ १७०/१६ 2 लाभकर प्रतीक होता सुधु नि दुःख-यन्त्रुय पातन मुच्छ० १११० शरद्वर होता बाधा देना शोध होना (स० ३० के साथ) —राजभद्र इत्येवोपचारः शास्त्रे तान् पतिवश्य उत्तर० १ प्रेर० (शोधनार्थं न।) सञ्ज्ञा नवावतना प्रलङ्घन करना फिर विषमकता पादादर दिलाई देना।

सुधु (वि०) [सुन् + क] 1 बमकीला उज्ज्वल 2 सुन्दर मनोहर जड़के धुमे सुन्दरनस्तीय ह० ११३५ 3 सागलिक, सीमायुक्ताली प्रसन्न समृद्धि वाली 4 प्रथम भद्र सद्गुणी पत्र० १३५८—बन्ध भाग्यिकता कल्याण बल्ला भाग्य परमप्रता समृद्धि या ११३३ 2 अलंकार 3 जा० १ एक प्रकार की सुगन्धित लकड़ी। सम० अक्ष शिव का विशेषण—अक्ष (वि०) सुन्दर (सी) 1 सुन्दर स्त्री 2 कामदेव की स्त्री रति अयोध्या सुन्दर स्त्री अशुभम् सुल सुल प्रभा बुरा आचार (वि०) विषय आचरण बाला, सदाकारी—आलम्बा मर्यादा स्त्री—इतर (वि०, (वि०) 1 बुरा मर्यादा 2 अधर्म रामायणिक उल्लेख (वि०) विरक्त अन्त भगवत्पद न वं—कर (वि०) क-यणकर गगनप्रद करम् (नपु०) पुष्पकार्य लोचकम् एक गणप्रदका बाल—यद्वा अनुकूल पशु, व अटपटा बनी सुन्दर शर्मा वाली, आलम्बम् शुभ मुहूर्त मंगल घड़ी—वार्ता शुभ समाचार—आलम्ब पशु को सुगन्धित करने वाला मण्डप—शक्तिम् (वि०) शुभमूषक मंगल की सूचना देने वाला—रघु० १११ स्त्री 1 वह भवन जहाँ बसों का अनुष्ठान होता हो, पञ्चमूषि 2 मंगलमूर्ति। सुधुम् (वि०) [सुमन्वयान्ति—तुल] 1 मंगलमय, सीमाय-

मूषक, भाग्यशाली, मंगलान्वित—अधिक सुधुमें सुमन्वना द्वितयेन द्वयमेव समतम रघु० ११६, मटि० ११००।

सुधुहूर (वि०) [सुधु + हृ + भव भुम्] 1 कल्याणकारी 2 आनन्दबन्धक।

सुधुभासुक (वि०) [सुधुम् + भू + गिष् + उक्कम्] सजाया हुआ, सुमूर्धिन, अलंकृत, उज्ज्वल।

सुधा [सुधु + टाप्] 1 वार्ता प्रकाश 2 सौन्दर्य 3 इच्छा 4 पोलारव, गोरोचन 5 धामी बुद्ध 6. दबसभा 7 दूध 8 प्रियम लता।

सुधु (वि०) [सुन् + क] 1 बमकीला उज्ज्वल, दीर्घमान 2 स्वच्छ पर्याप्त पिनापट्टन शक्तिशुद्ध शब्दमयि गीत काव्य० १० रघु० २१६९, अक्षः १ उदर रण 2 चन्दन (नपु०) शब्द 1 सौदी 2 अध्व 3 सेंधा नमक 4 कलास। सम० अन्वु, कर 1 बडमा 2 कपूर रश्मि चन्दमा।

सुधा [सुधु + टाप्] 1 गया 2 स्फटिक 3 बसलोचन। सुधु [सुधु + भिन्] बड्डा का विशेषण, सुधुम् (स्त्री० पर० सुधुमिनि) 1 चमकना 2 बोलना 3 आवाज पहुँचाना, क्षति पहुँचाना।

सुधुम् [सुधुम् + अच्] एक राक्षस का नाम जिस दुर्गा न मार जाता था। सम०—बासिली, बसिली दुर्गा का विशेषण।

सु (सु) रू (दिवा० आ० सुर्वते) 1 चोट पहुँचाना, मार डालना 2 बूझ करना स्थिर करना ठहराना।

सुम् (चुरा० उभ० सुम्कयति से) 1 लाभ उठाना 2 बचा करना, रक्षा 3 रचना करना 4 कहना 5 बर्णन करना 6 हठाना त्यागना परित्यक्त करना।

सुम्क कम् [सुम्क + क्ता] 1 चुगी, का महसूल, सीमासूचक गिनैयन बहु कर जो राज्य द्वारा बाट या भारी बाँव पर लिया जाता है—क सुधी सत्येष्टासुधु गम्करयन्त्रितिसाधकम्—हि० ३, १२५ मनु० ८११५९ राज० २१७७ 2 किसी सोरे को पकका करने के लिये दिया गया अगाध जल 3 (कम्पा व) विषय मृत्यु कन्या के पिता को कन्या के बहने दिया गया जल पीड़ितों इतिगुल्कसम्पदा रघु० १११७७ न कयाया विरा विज्ञान गुल्कीयकृष्णमणाय मनु० १११०० ११३३ ९८ विवाहोपहार १ विवाह निविधन करने के लिए दिया गया जल, वहेर 6 बर पक्ष की ओर स हल्हिन को दिया गया उपहार सम० धाहक, धाह्नि (वि०) गुल्कसम्पद-कर्ता व 1 विवाहोपहार देने वाला 2 वायव्य विवाहाधीन बाला, स्वामन् गुल्क प्रमा करने की वगह चुगीवर।

सुल्कम् [सुल् + अच् पृ०] 1 सुतलो, रस्सी, डोरी 2 नाबा।

सुम् (स्व) [सु+उ] उभ० सुम्-स्व-वति, -ते) देना, प्रदान करना 2 नेचना, छितर छितर करना, 3 बापना ।

सुम्न् (स्वम्) [सुम्+ञ्] 1 रखी, बोरी 2 तांबा 3 बड़ीय कर्म 4 बस का सादीय, बस का निकट-वर्ती स्थान 5 निबस, जानून, विविस्तार, -ल्ला, -ल्ली रे० ऊपर ।

सुम् (स्वी०) [सु+बृ+सुम्, हित्वादि+विप्] माता । सुम्बक (वि०) [सु+सन्, हित्वादि+ञ्] सावधान, बाझाकारी, कः शेषक, टहलजा ।

सुम्बक, -वा [सु+सन्+हत्वादि+सुट्] 1 सुनने की इच्छा 2 सेवा, टहल 3 बाझाकारिता, कर्तव्य परायणता ।

सुम्बक [सु+सन्, हित्वादि+ञ+टाप्] 1 सुनने की इच्छा—कठपुत्र सुम्बका मां सुम्बकति मुद्रा० ३ 2 सेवा, टहल 3 कर्तव्यपरायणता, बाझाकारिता 4 सम्मान 5 बोलना, कहना ।

सुम्बु (वि०) [सु+सन्, हित्वादि+उ] 1 सुनने का इच्छुक 2 सेवा या टहल करने की इच्छा वाला 3 बाझाकारी, सावधान ।

सुम् (वि०) पर० सुम्पति, सुम्क 1 सुखना, सुम्क होना, सुम्क होना—मुद्रा सुम्पत्वास्ते पिबति सलिलं स्वाद् सुम्पि—पर्य० १।१२ 2 सुना जाना, घेर० (घोब-वति-ते) 1 सुखाना, सुम्नाना, सुम्क होना 2 कल करना, कल—, करि—, 1 सुखाया जाना, सुखाना—वट्टि० १०।४१, वन० १।२९ 2 स्नान होना सुम्नाना, सुम्नाना, वि—, कम्, सुखाया जाना ।

सुम्, सुमी [सु+क, सु+जीव्] 1 सुखना, सुखाना 2 पिक, मुरझ ।

सुम्कि [सु+कि] 1 सुखाना 2 रण्य, छिन्न 3 लीप के विविध बाँध का पोखा भाग ।

सुम्किर (वि०) [सु+किरिप्] छिन्नयुक्त, रण्यमय,—रः 1 जान 2 पूहा,—रम् 1 छिन्न 2 अन्तरिक्ष 3 हुवा या सूक हो सकने वाला बाबा ।

सुम्किरा [सुकिर+टाप्] 1 नदी 2 एक प्रकार का कपडावस्त्र ।

सुम्कि [सु+इक्, स व किम्] हुवा, बान् ।

सुम्क (मु० क० छ०) [सु+क] 1 सूखा, सुखाया हुवा—बाबावा सुम्क करिवादि—मुम्क० ८३ मुना हुआ स्नान 3 सुम्कार, निकुञ्ज वाला, कल 4 झट झट, व्यावयुक्त, मजली काश्मिर स्य कुम्मे करमो—कदरि सुम्कपति च सुम्पेपि वि० १०।९ 5 रिक्त, खर्ब, अनुपबोधी, अनुत्पादक बालिहि० २ 6 निराधार, निष्कारण 7 बुरा करने वाला, कठोर—उर्बं ननुकुलं ह्वाय सुम्का निरवीरवेत्—मन्०

१।१३५। तम०—अङ्क (वि०) कृमकाय, (वी) छिपकली, अङ्क यह अनाज जिसमें से मुद्रा अङ्क नहीं किया गया कलहः 1 व्यर्थ वा निराधार अमरा 2 कमावटी अमरा—मुद्रा० १, वीरम् निराधार वीर, अङ्क यह बाव जो अच्छा हो गया है, बाव का चिह्न ।

सुम्कलः—कम् [सु+क+क] 1 सुखा नाव 2 नाव । सुम्कः [सु+कम्, किप्] 1 सुय 2 जान 3 बाव, हुवा 4 पत्नी,—कम् 1 पराक्रम, सामर्थ्य 2 प्रकाश, कान्ति ।

सुम्कम् (पुं०) [सु+क मनिप्] अग्नि शि० १४।२२ —(मपु०) 1 सामर्थ्य, पराक्रम 2 प्रकाश, कान्ति ।

सुम्क—कम् [वि० कः, मपसारणम्] 1 जी की बाव दाड़ी 2 पीछे के कटे रोएँ, वृत्त च सन्तु गूने—भावि० १।२४ 3 नोक निरा, तेष किनारा 4 मुकोमलता, कहना 5 एक प्रकार का बीड़ा कीड़ा। तम०—कीटा—कीटकः एक प्रकार का कीड़ा जिसके शरीर पर रोएँ लगे हों, बावम् कोई भी ऐसा अज जो बालों टूटो में से निकलता है (जी आदि), विष्क—वी, -विष्का, -विष्मिका, -विष्मि केवीच, कपिकम् ।

सुम्क [सु+कन्] 1 एकार का अज 2 सुकोमलता करना ।

सुम्करः [सु इत्यव्यक्त बाव् करोति सु+क+अन्] सुम्कर—गच्छ सुम्कर भद्र ते वद सिंहो मया हन पविता एव बालमि सिंहसुम्करवीरकम्—मुद्रा० । तम० इच्छ एक प्रकार का बास, मोबा ।

सुम्कलः [सुक्कल् क्लेत् वदाति—सु+क+क] अविशक बोका ।

सुम्कः [सु+क, पु०] वस्त्र र, पीपे 1 पीपे वस्त्र का पुष्प, हिन्दुओं के बार मुख्य बलों में से अन्तिम वर्ष का पुष्प (कहा जाता है कि वह 'पुष्प वा हृद्वा' के पीपे से उत्पन्न हुआ—पञ्चपां सुमी अजायत पद्म० १०।९०।१२, मनु० १।८७, उसका मुख्य कर्तव्य तीनों उज्ज्वलनों की सेवा करना है—पु० मनु० १।९१) । तम०—आतिथिकम् सुम्क का दैनिक अनुष्ठान,—उज्ज्वलम् सुम्क के स्थान से इष्टि वज्र,—उज्ज्वलम्—वर्षः सुम्क का कर्तव्य,—विश्वः व्याज,—श्रेष्ठः तीनों उज्ज्वलनों में से किसी एक वर्ष का पुष्प या सुम्क का सेवक हा—मुष्कल (वि०) वही अविशक सुम्क रहते हैं,—वाक्कः जो सुम्क के लिए वज्र का संचालन करता है,—वर्षः सुम्कवोनी या सेवकवर्ष,—वैषम्यम् सुम्क की सेवा करना, सुम्क का सेवक बनना ।

सुम्कः [सु+कन्] एक रावा, मुष्ककटिक का प्रधान प्रभेदा ।

सूत्रा [सु + टाप्] सूत्र वर्ण की स्त्री । तब०—श्राव्यः जिसकी पत्नी सूत्रवर्ण की हो, —बेधनम् सूत्रस्त्री से विवाह करना,—सुतः (किसी भी श्राति के पिता द्वारा) सूत्र माता का पुत्र ।

सूत्रास्त्री, सूत्री [सु + स्त्रीप् पत्ने भानुक्] सूत्र की पत्नी । सूत्र (पु० क० ड०) [शिव + क्त] १ सूत्रा हुआ २ गठित उभा हुआ, समुद्र ।

सूत्रा [शिव अधिकारने का, तब० दीर्घश्च] १ मनु तासु, बटी, उपनिषद्दिक् २ सूत्रइमाना ३ कोई भी वस्तु (जैसे कि पर सूत्रस्त्री का कुछ सामान) जिससे जीव हिता होती हो (यह गिनती में पाँच है—बुद्धा, बकरी, गुराही, बोकली और श्लपात्र) —अथ सूत्रा गृहायस्य सूत्रो येषभूपत्कर । कश्यपी बोरकुम्भवर्ष बन्धने वास्तु वाह्यन् —मनु० ३।१८ ।

सूत्र (वि०) [सूत्रार्थ प्राणिषयाय हितं एतद्व्यवस्थानाम्नायम्] १ रिक्त, खाली २ सूत्रा (बुरब, तथा चितवन बाँह के लिए भी प्रयुक्त) यवनमल्ल सूत्रा वृष्टि मा० १।१० २० नी० सूत्रसूत्र ३ अधिष्ठान ४ एकान्त, निर्वन, विविक्त, वीरान—सूत्रेण सूत्रा न के काष्ठ० ७, महि० १।९, उत्तर० ३।३८, मा० १।२० ३ शिव, उदात्त, उन्माहहीन सूत्रा अनाम वनमायिबुकी कचचिन्—कु० ३।७५, कि० १७।३९ ६ गितात् गति, वन्धित, विहीन, अनावयुक्त (काच० के लाच वा समाप्त में) अनुवीक्यसूत्रा से अनुति स० ५, दया० हान० बाँह ७ तटस्थ ८ मित्रोप ९ अर्धहीन, निरर्थक वि० १।१४ १० विषय, नन्वा,—सूत्र १ विवर्तता, रिक्त, कोक-आपन २ आकाश, अन्तरिक्ष ३ शिकर, किन्तु ४ अति-त्वहीनता (पूर्ण, असीम) अधिष्ठानता—हृष्य सूत्र शिखर स० १।२१ १ तब० अन्धः कोकला मरकुल,—अनन्त—अनन्त (वि०) अन्धमनस्क, अनवेता —अनन्त, अन्त (वि०) हृषका-अन्त, उदात्त किरतव्य शिखर, वायः बहु शारीरिक मित्रोप जो (जीव ईश्वर भाँह) किसी भी पदार्थ की सत्ता स्वीकार नहीं करता, वीट दर्शन, वादिन् (पु०) १ नास्तिक २ वीट,—हृष्य (वि०) १ अन्धमनस्क विक्रम० २, स० ४ २ मूल शिव भासा, मां सूत्रों पर किसी प्रकार का संदेह न करें ।

सूत्रा [सूत्र + टाप्] १ नाथला मरकुल २ बाँह स्त्री । सूत्र (सूत्रा० उभ० सूत्रमिने) १ शीघ्र के कार्य करना, शक्तिमाना होना २ प्रबल उदात्त करना ।

सूत्र (वि०) [सु + ष्व] बहादुर, वीर, पराक्रमी, ताक-तब—सूत्रेण सूत्रा न के काष्ठ० ७, स० १। सूत्रा, बोझा, पराक्रमी २ मित्र ३ सूत्र ४ सूत्र ५ नाथ का नेट ६ कृष्ण का दावा, एक बारच । तब०—जीवः

तिरस्करणीय बोझा, महावीर० १।३२,—वायम् अविमान, अहंकार, तेज (पु० व० व०) मयुरा के निकट एक देश या उम देश के अधिवासी रघु० ६।४५ ।

सूत्रः [सु + ल्यट्] सूत्र नामक एक साधुपुत्र, कव । सूत्रम्य (वि०) [आत्मानं सूत्र मन्त्रे—सू + मन् + क्, युप्] या व्यक्त अपने आपको पराक्रमी समझता है ।

सूत्रे, सूत्र [सु + प उभय विन्] छात्र,—यः सो होन का तोल । तब०—सूत्रेः हाथी,—सूत्रा, की (नन्वा के स्थान पर, जिसके नन्वा छात्र जैसे जैसे पीते हों, रागण की बहन का नाम (बहू राम के शीघ्र पर सूत्र होकर उमसे विवाह करने की प्रार्थना करने लगी । परन्तु राम ने कहा कि मेरे माँच तो मेरी पत्नी हैं, अन्धका हो कि तुव लक्ष्मण के पास जाओ । परन्तु जब लक्ष्मण ने जो उसकी प्रार्थना न मानी तो बहू वापिस राम के पास आई । इस बात पर सीता को हसी आ गई । फलतः सूत्रेण मां ने अपने आपको अवधिक अवमानित समझकर बदला लेने की इच्छा से जीवण रूप बाध किया और सीता को खाने के लिए वीही । परन्तु उसी समय लक्ष्मण ने उसके कान और नाक काटकी और उसका रूप बिगाड़ दिया —रघु० १२।३२ ४०),—अन्तः छात्र की हिलाने से उत्पन्न होता—वृत्ति, हाथी ।

सूत्री [सूत्र + स्त्रीप्] १ छोटा छात्र वा पत्नी २ सूत्रिका । सूत्री,—वृत्ति (पु०, स्त्री०) सूत्रिका, सूत्री [सुप् अति-वर्धित अन्तः, पक्षे अन्, वृत्ति + क्त + टाप्, वृत्ति स्त्रीप्] १ जोड़े की बनी प्रतिभा २ चम, मिहारी । सूत्र (प्रा० पर० सूत्रति) १ वीरार होता २ कोकाह्न करना ३ मड़बू करना, बिगाड़ना ।

सूत्रः—सूत्र [सु + क्त] १ पैना का नोकदार हथियार, मुकीला बोझा, नेडा, बछी, बाजा २ शिव का चिह्न ३ जोड़े की सजाव (जिस पर दाँत धुना जाता है) सूत्रे संस्कृतं सूत्रम्—सु० जब सूत्र ४ एक सूत्र जिसके सहारे अवरानिकों की सूती वी जाती वी—(विभ्रत्) लक्ष्मणेन सूत्रं हृषयेन साकम् सूत्रम् १०।२१, कु० ५।७३ ५ तीक्ष्ण वीटा ६ उदरसूत्र ७ गठिया, जोड़ों में दर्द ८ मृत्यु ९ अन्धता, अन्ध (सूत्राङ्ग जोड़े की सजाव पर रत्न कर भुम्मा) । तब०—अन्धः सजाव की नोक, वन्धितः (स्त्री०) एक प्रकार का दाँत, सूत्र, चालन्य जोड़े का बुरादा, जोड़े का पूरा जो नाथे को रंगने से निकलता है, अन्ध (वि०) बायक जोषधि, देवताहर, कण्ठ, बर, कारिन्,—कुल, पाणि, मृत्यु (पु०) शिव के विशेषण,—अविषय-वर्धितम् सूत्रपाशरभिमानम्—वि० ४।३५, रघु० २।३८, अन्धः एरण्य का पीठा, —अन्ध (वि०) सूत्री-

पर बड़ाया गया, हल्दी एक प्रकार का बी, हस्त
मालाधारी ।

सूक्तः [सू + क्] जड़ियल घोड़ा ।

सूक्त [सू + टाप्] 1 अवरधिमा को सूली देने की स्तूपा
2 वेद्या ।

सूक्तान् [सू + क् + क्त] भूना हुआ मांस ।

सूक्तिक (वि०) [सू + क्त] 1 सूक्तधारी 2 मत्तत्व पर
भूना हुआ कः करगोश कम् भूना हुआ मांस ।

सूक्तिन् (वि०) [सू + क्त + क्त] 1 बर्छीधारी कुर्वन्
लवण सूली - रघु० १५।५ उदरसूत्र स पौडित
(पु०) 1 बर्छीधारी 2 करगोश 3 जिब कुर्वन्
सम्पादिकपद्मता सूक्तिन् उन्नाचनोद्यम मेष० २६,
कु० ३।५७ ।

सूक्तिन् [सू + क्त] बरस का पेड़ ।

सूक्त्य (वि०) [सू + क्त] 1 मत्तत्व पर भूना हुआ
म० २ 2 सूली पाने के योग्य स्थान भूना हुआ
मांस ।

सूक् (स्वा० पर० सूक्ति) 1 पैदा करना, उत्पन्न करना
2 ब्रम्भ देना ।

सूक्तः [= भूना] गीदव ६० भूनात् ।

सूक्तः [सू + क्त] 1 गीदव २ ग
दूत उष्णका 3 गीद 4 दुष्ट प्रकृति कटुभाषी
5 कृष्ण । सम० केसि एक प्रकार का बर - चम्पू -
-वुः (स्वी०) एक प्रकार की ककड़ी, बीरा - बीसि
गीदव की भाँति में ब्रम्भ लेना क्वः गिब का
विशेषण ।

सूक्तिका, सूक्ती [सू + क्त] 1 गीदव 2 गीदव 3 पलायन प्रयासलेन ।

सूक्तिक, -का, -क्त [सू + क्त] 1 गीदव 2 गीदव 3 पलायन प्रयासलेन ।
सूक्तिकी [सू + क्त] 1 गीदव की बर्छी, बेड़ी 2 बर्छी
लवण सूली (आल० बी) - भट्टि० ११०, सीलाकटाका
माकासूक्तिकाभिः - यक्ष०, सत्तावासनाबद्ध सूक्तिकाम
गीत० ३ 3 हाथी के पैरों को बाँधने की बर्छी
-स्तम्भेमा सूक्तिकसूक्तिकविगन्ते - रघु० १।३ कि०
७।३ 4 कमर की पेटी करघनी 5 नागन की
बर्छी 6 बर्छी, बीरी, परम्परा । सम० - यक्षकम्
यक्षक बर्छी का एक भेद ३० कि० १५।४ ।

सूक्तिक [सू + क्त] 1 बर्छी 2 उट ।

सूक्तिक (वि०) [सू + क्त] बर्छी में जकड़ा
हुआ, बेड़ी पका हुआ, रंधा हुआ ।

सूक्त [सू + क्त] 1 गीदव - बर्छी
रिधानी गीदवसूक्त सूक्तिकी बीसि गीदवसूक्त
- रघु० १५।३, साह्या गीदव निपाससूक्ति सूक्त
सूक्तिकविगन्ते - यक्ष० २।३ 2 पहाड़ की चोटी अर्ध
सूक्त हरि पक्ष कि स्थितिपुष्पसूक्ति - यक्ष० १६,

५२, कि० १।४२, रघु० १३।२६ 3 मयन की
बाटी बर्छी 4 उत्तुगता ऊँचाई 5 प्रभुता, स्वायत्त
गर्भोत्पत्ति प्रसूतता सूक्त स दूतविनवाधिकृत पर
पामपुष्पसूक्त न मयन न तु दीर्घमाय रघु० १।६२,
(पही गन्ध का अर्थ गीद बी है) 6 पदचक्र, चरि
ना नाक 7 चोटी नाक अग्रभाग 8 (मैत्र आदि
का) गीद जो एक मात्र कर बड़ाया जाता है
9 गिबरी बर्छी के हाथचन सूक्तमयने रघु०
१५।३० 10 कामपद अमिन पादम 11 निपात
सूक्त 12 कम्प । सम० अमिन गी आदि
गिबरी का मयनवर्ग स्थान उष्णक ऊँची
चोटी ज बाण (अम) अग का एकरी, प्रहारीन
(य०) माता म मायन वाला प्रिय गिब का पक्ष
वत सौमिन् (पु०) कामपद - बेरघु 1 वयमान
मिर्जापुर क मिर्जा गमा के बिना वय हुआ एक
नगर उत्तर० १।२ 2 भद्रक ।

सूक्त, कम् [सू + क्त] 1 गीद 2 चन्द्रमा क
नेक पदचक्र 3 काई या नाकीला मय 1 पिन
कागो रत्न० १ ।

सूक्त (वि०) [सू + क्त] 1 चोटीवाला (पु०)
पहाड़ ।

सूक्ता, सूक्ताक [सू + क्त] 1 चोटीवाला (पु०)
पहाड़ । 2 एक पहाड़ 2 एक गीद का कम् कम्
चोटीवाला ।

सूक्ता, सूक्त कामपदमयसूक्तमयन ३ अणु प्रचयस,
कामपदमय, रत्नरत्न (कावारचनाश्री म विगिन लाउ
या नी प्रकार के रत्नों में सबसे पट्टा रत्न, पट्ट हो
प्रकार का है - मयय सूक्ता और विगिन सूक्ता)
सूक्ता सति सुतिमयिब मयो मयवी हरि कीदवि
- गीन० १, (मयो पमिमा पट्ट हो पुन मियवी
मिया पुमि मयवी मिया या मयवी । म सूक्ता इति
स्थान कीदवपदमयकारक । ३० मा० व० २१०
मी) 2 प्रेम प्रययमय मयोमयका विगिन० १।९
3 सूक्ताक मयमय के उपपक्ष वेस, लवित
वेसमया 4 मयमय मयोमय गीद के शरीर पर
बनप नए मियूर के निशान 6 विगिन, रघु 1 गीद
2 मियूर 3 अररक 4 गीद या बर्छी के मिय
मयमिन पुने 5 कला मय । सम० वेसका कामर-
नुरमि का सकेन रघु० १।२, मयमिन् मैना
माप प्रययका, - यक्षक मियूर, - बीसि कामवेव का
विशेषण रत्न साहित्यपात्रक में दक्षित सूक्ताक
प्रययक विगिन, - वेस मैनामयों के उपपक्ष वेस
मया (मिये मयमय कर मयो मयने मिय के विगिन है)
- सूक्ताक मयमयापर में सूक्ताक मयमिन्, मयो-
मयिब ।

शय्या के रूप में, या समस्त तमारा को अपने सिर पर सम्भाले हुए मिलता है कि शेषस्य शय्याया न वयुषि क्मा न क्षिपयस्व यत्—मुद्रा० २।१८, कु० ३।१३, ६।६८ मेघ० १।१० रघु० १०।१३५ बलराम (जो शेष का अवतार माना जाता है) का फूल तथा अन्य वस्त्रावा जो भूमि व साधने प्रस्तुत किया जाता है) और उसके पुष्य अवलोक के रूप में पूजा करने वाला म बाँट दिया जाता है—श० ३ कु० ३।२२ वय उच्छिष्टम् अन्न पत्रावे का अवशेष (सेवे किया विधावन के रूप में प्रयुक्त होता है, इसका अर्थ है १ अन्न में, आहारकार २ अन्य विधायी में)। सम० अन्नम् मूठन अवस्था बुझाया, —आमः शेष, बाक्री ओजसम् जूठनखाना —रात्रि रात का चौथा पहर—अवयव, आबिम् (पु०) विष्णु के विशेषण।

शेषः [शिला वेत्यधीते अण् वा] १ शिला अर्थात् उच्छासन शास्त्र को पढ़ने वाला विद्यार्थी जिसने वेदाध्ययन अभी अभी आरम्भ किया है २ नोसिधिया, नव-सिध्या।

शैलिकः [शिला + ठक्] शिलाशास्त्र में निष्णात।

शैल्यम् [शिला + यन्] अधिगम प्रवीणता।

शैल्यम् [शीघ्र + ध्यञ्] फुर्ती, तत्परता।

शैल्यम् [शीत + ध्यञ्] ठंडक, शीतलता, जमाव शैत्य हि यत्ना प्रकृतिर्वलम्—रघु० ५।६४, कु० १।३४।

शैल्यम् [शिथिल + ध्यञ्] १ शीलापन तरसी २ मन्त्राता ३ शीघ्रमूत्रता, अनवधानता ४ कमठारी, शीला।

शैलेयः [शिनि + इङ्] सार्याक का नाम।

शैल्याः (पु०, य० य०) [शिनि + यडा] शिनि की सन्तान, शिनि के वंशज।

शैल्य दे० 'शैल्य'।

शैलः [शिला + अण्] १ पर्वत, पहाड़ शैले शैल न माणिक्य शैलिक न एवे मये पाण० ५५ शैली मलयदुर्गरी—रघु० ६।५१ २ चट्टान, बड़ा भारी पत्थर,—सम् १ मुहावा धूप, मुग्धाल २ शिलाजीन ३ एक प्रकार का अन्न। सम०—अन्न एक देश का नाम,—अन्न पहाड़ की चोटी—अह १ पहाड़ी अन्नम् २ किता देवमूर्ति का पुजारी ३ सिंह ४ स्फटिक, अधिष्ठ,—अधिराष्ट्र, इन्द्र,—वसिष्ठ,—राक्षः हिमालय पर्वत के विशेषण, अन्नम् शैलेय-न्नम् इन्द्र, धूप,—अन्नक पहाड़ की इलाज, अन्नम् एक प्रकार का अन्न,—अन्न १ शैल्यन्नम् इन्द्र, धूप २ शिलाजीन,—आ, लला,—बुली,—कुता पार्वती के विशेषण—अन्नम् प्राक्तरय परिभाषक शैल्यन्ने—काव्य० १०, कु० ३।१८—अन्नम् (पु०)

शिव का विशेषण—शर कृष्ण का विशेषण,—निर्वाण शैलेयगन्धर्व, धूप,—वय. वेल् का पेड़,—विश्वि (स्त्री०) पत्थर काटने का उपकरण, टाकी रत्नम् मृका कन्दरा, शिविरम् ममुद्र, शार (वि०) पत्थर को तरह मसल चट्टान की तरह दुड़ कि० १०।१६। शैल्यम् [शैल + यन्] १ शैलेयगन्धर्व इन्द्र धूप २ शिला जीत।

शैलाविः [शिलावस्थापत्यम्—शिगाद + इङ्] शिव का गण, नन्दी।

शैलाक्षम् [पु०] [शिलाशिला भूमिना प्राक्त नटमृगमधीयते] शालाल, शिनि] अभिनेता नर्तक।

शैलिकः [गतिन शैल्यम्—अन शैलिक + ध्यञ्] पाक्ष्मी दक्षी ठग।

शैली [शैल्येय स्वाधे ध्यञ् कोपि यलोग] १ व्यकरण सूत्र की साक्ष्य वृत्ति २ अभिहित या व्यकरण का एक प्रकार प्रायेणाचार्याचार्य शैली यस्मादि प्रायश्चित् परोपदेशमिह वर्णयन्ति मनु० १।४ पर कुम्भ० ३ व्यहृत्तर काम करने का इग आचरण काम।

शैल्यः [शैल्यस्थापत्यम्—शिल्व + अण्] १ अभिगता नर्तक आ शैल्यपसद—अन्नी० १, एने पुत्रा सर्व-मेव शैल्यजन व्याहरन्ति—नदेव अन्नम् शैल्य इवच भूमिकाम् शि० १।१९ २ शारिक-पुत्राल—अच्छात्रों का नायक संगीत पच्छली का प्रधान ३ मवीत सभा में मालधारक ४ वृत्त ५ बल का पद। शैल्यिकः [शैल्य तद्बुद्धिम् अन्धत्वा—ठक्] जो अभिनेता का व्यवसाय करना हो।

शैलेय (वि०) (स्त्री०) शैली [शिलायां भव, शिला + इङ्] १ पहाड़ी २ चट्टानों से उत्पन्न ३ पत्थर की तरह कड़ा पथरीला, य १ सिंह २ भ्रमर,—अन् १ पर्वत गन्धर्व धूप शैलेयगन्धीन शिलालम्बान रघु० ६।५१ कु० १।५२ सुवर्णित राज ३ शैला नमक।

शैल्य (वि०) (स्त्री०—स्त्री) [शिला + ध्यञ्] पथरीला अन्न चट्टान जैसी कठोरता कड़ापन।

शैल्य (वि०) (स्त्री०) शैली [शिला देवतास्य अण्] शिवमन्त्री व १ शैल्यो के तीन मुख्य सप्रदायों में से एक २ शैल्य सप्रदाय का पुष्य, अण् कठारह पुष्या में से एक पुष्या का नाम।

शैल्य [शी + यलम्] एक प्रकार का बलीय वीचा, पदा-काष्ठ मचार काई, मोचा—अश्विजन्मभूति शैलेयानि रघु० ५० १।२०,—अण् एक प्रकार की बुधविन लकड़ी।

शैल्यिनी [शैल्य + इनि + शीप्] मनी।

शैल्य दे० 'शैल्य'।

लोक्य [शिबि + ल्य] 1 कृष्ण के चार घोड़ा में से एक
2 पांडव सेना का एक यादव, एक राजा का नाम
3 घोड़ा ।

लोक्यम् [मिथोपधि अण] बचान, बान्पादस्वा (सोलह
वर्ष में नीच का समय) शीशवातप्रभृति पाणिना श्रियाम
उत्तर ० ११५५ लोक्यस्मयन्विद्यानाम्—रघु० ११८ ।

लोकिर (वि०) (रघु० १०) [शिबिर + अण] बाढ़ के
मौसम में मजबूत रखने वाला १ काले रंग का
बाग़कपड़ी ।

लोक्योपाध्यायिका [मिथोपाध्याय वृद्धा] 'अश्व'राध्याय
के छात्रों का रहना ।

लो (दिवा० पर०) द्यति शान या ज्ञा कमबा० शायने
प्र ० 'न' : 'शान' शिवाग्नि । 1 रेंवाना
नष्ट करना 2 धनला करना हुआ करना नि
नष्ट करना ।

लोक [लुक् + क्त] अकमाल राज दम कष्ट विलाप
कदन केना इवाकस्वभाषण दम्य शाक रघु०
११७० मय० ११६ । सम० अस्मि, अमल
शाक करी पाय —अवनाष्ट रज बो दूर करना —अधि
भूत, आकुल, —आविष्ट, उपहत, विह्वल (वि०)
बाटप्रसन्न हैदनाप्रसन्न चर्चा शाक में जान बाज
अनाकुल प्रराधन, लासक (वि०) शाक से
प्रसन्न पडाभिभूत —विकस 'दो' शाकाकुल —स्वात्म
लोक का कारण ।

लोचनम् [लृ + ल्युट] रज अकमाल विलाप ।

लोचनीय (वि०) [लृ + अनवर, विलाप करने योग्य
चिन्त्य लोच्य हुआ ।

लोच्य (वि०) [लृ + ल्युट] 1 शासनना विलाप
करने योग्य चिन्तनीय दयनीय — १० । १०
2 कमीना दुपचरित ।

लोचिष्ठ (नपु०) [लृ + इति] 1 प्रकाश आग्नि
चमक 2 आला । सम० केज (लोचिष्ठेष्ट)
आग्नि का विशेषण ।

लोचिष्य [लृटि + ध्यञ्, 'लौटीयम' इति साधु] परा
क्रम, क्षीय, क्षुरवीरता ।

लोड (वि०) [लृट् + लृप्] 1 मूर्ख 2 कमीना, अधम
3 आकली, कुल, —ड 1 मूर्ख 2 निकम्मा आकली
3 अधम या कमीना पुरुष 4 धूर्त ठग ।

लोम् (म्या० पर० लोपति) 1 जाना हिलना झुलना
2 लाल होना ।

लोम (वि०) (रघु० १०, लौ) [लोम् + लृप्]
1 लाल, गहरा लाल रंग हल लालका रंग —स्वा
वाचनकचनलोहितलोपनिहसमाऽरुपति कर्षास्व
देवि लोम देवी० ११२१ मृदा० ११८, कु० ११७
2 लाल के रंग का, कामिमायुक्त धूरा — १ लोहित

वर्ण, लाल रंग 2 आन 3 एक प्रकार का लाल रंग
का वस्त्र, ईल 4 कुम्भन बाढ़ा 5 एक दरिया का
नाम जो मोड़वाना से निकलकर पटना के निकट बहा
में गिरती है प्रत्यङ्गहीन पाणिबहाहिनी ता भारीरपी
शाम इवांतराङ्ग —रघु० ७:३१ 6 ममलग्रह पु०
लोहित लम् 1 हथिर 2 सिहूर । सम० लम्
एक प्रकार का बाकल या प्रलय के समय उठता है,
अस्मन् (पु०) —उपल 1 लाल पत्थर 2 लाल
एक प्राणिक वस्त्र लाल रंग का कमल —रत्नम्
लाल नामक म' लम्प पधारामणि ।

लोहित (वि०) [लोक् + इतच्] 1 लाल लोहित, रक्त
वर्ण का लम् 1 हथिर उपस्थिता लोहितपारवा
म—रघु० ७:३१ देवी० ११२१ मृदा० ११८ 2 केसर
आफरान । सम० —आल्लुक् केसर, आफरान, —उल्लि
(वि०) रक्तलजित, उपल पधारामणि लम्पम्
लाल चदन — ४ (वि०) हथिर पीने वाला —दुर्ल
बाधामुर का मगर ।

लोहितम् (पु०) [लोक् + इतम्बि] लालिमा लाली ।
लोच [लृ + लृट्] लूचन, स्मृति । सम० लम्, लम्
(वि०) लूचन को दूर करने वाला, लूचन वा स्मृति
को हटाने वाली लोचवि लम्प पुनर्नवा रोच
हाथ पीठ आदि में लूचन होने का रोग बलादर
—हृत् (वि०) लूचन हटाने वाली दवा (पु०)
मिलावी ।

लोच [लृ + लृट्] 1 लूचनकर 2 लूचन समान
3 लूचमुमान । ४) परिच्छेद ' प्रतिहिंसा
पतिदान, बदला ।

लोचक (वि०) स्त्री०—का, बिकार । [लृ + लृप् + लृट्]
1 लूच करने वाला 2 रोचक 3 लूचोचन करने वाला

लोचन (वि०) (रघु०—लो) [लृ + लृप् + लृट्] लूच
करने वाला स्वच्छ करने वाला —लम् 1 लूच करना,
स्वच्छ करना 2 लूचोचन, (लूच) परिच्छेदन करना
3 लूचार्थ निर्धारण 4 लूचार्थी लूचार्थी लूच लूचार्थी
5 लूचार्थित परिच्छेदन 6 लूचार्थी को लूच करना
7 प्रतिहिंसा प्रतिदान दण्ड 8 (गणि० में) लूच-
काल 9 लूचिया 10 लूच पिछा ।

लोचनक [लोचन + क्त] दण्ड-न्यायालय का एक अधिकारी,
मुच्य १ फौजदारी अदालत का जजमर ।

लोचनी [लोचन + लोच] लूच, लूचारी ।

लोचिष्ठ (मू० क० इ०) [लृट् + लृप् + लृट्] 1 लूच
किया हुआ, स्वच्छ किया हुआ 2 लूचक 3 लूच
हुआ 4 लूचोचित समालिप्त 5 लूच परिच्छेद किया
हुआ लूचार्थी हुआ 6 बदला लिया हुआ, प्रतिहिंसा
की हुई ।

लोच्य (वि०) [लृ + लृप् + लृट्] लूच किये जाने के

योग्य, संस्कृत किये जाने के योग्य 'अन पञ्चकोष किये जाने के योग्य, अथः अभिप्रेक्ष्यशक्ति, बहु पुष्प मिलने लगाये हुए आरोंप से अपने आप को मुक्त करना है ।

शोकः [शु + क्त] भूजन, अर्चन, रसोली, पोष । सम० - शिष्ट, हृत् (पु०) भिक्षावे का पोषा ।

शोभन (वि०) (स्त्री०-नी) [शोभते-शुभ् + क्त] 1 चमकीला, शानदार 2 मनोहर, सुन्दर, लावण्यमय 3 भद्र, शुभ, शोभाय जाली 4 मूब सजाया हुआ 4 मदाचारी पुण्यात्मा, न-1 शिव 2 शत्रु 3 अशुभ परिणामों की प्राप्ति के लिए यज्ञाग्नि में दी गई आहुति, —ना 1 हल्दी 2 सुन्दर या सती स्त्री कु० ४४४ 3 एक प्रकार का पीला रंग गोरोबना, -नञ् 1 सौन्दर्य, कान्ति, दीप्ति 2 कमल ।

शोभा [शुभ् + अ + टाप्] 1 प्रकाश कान्ति दीप्ति वमक 2 (क) वैभव, सौन्दर्य, गण्डि चान्दा, लावण्य -अपुनितवमस्या पुष्यन् त्वान् शोभाय- श० १११९, मेघ० ५२, ५९ (ख) नैसर्गिक मोन्दर्य (पर्वत आदि की) गरिमा, —अशोभा यष्टु० २१२० 3 अलङ्कार ललित अभिव्यक्ति शोभेत् मन्दरायुष्मभिताम्भोवि वर्णना सि० २११०७ 4 हल्दी 5 एक प्रकार का रस, गोरोबना । सम० अञ्जन एक अथवा उपयामी वृक्ष, लीहजना ।

शोभित (भू० क० क०) [शुभ् + णिच् + क्त] 1 अलङ्कृत, चार, सजाया हुआ 2 सुन्दर, प्रिय ।

शोषः [शुष् + बञ्] 1 सूखना, सूखान कुटशोषविकल्पाय—कु० ४३९ इसी प्रकार अग्न्यशोष, कटशोष 2 कुञ्जता, कुम्हलान—शरीरशोष, कुसुमशोष आदि 3 फुट्फुलीय जल, या अथर्वेय यज्ञोपनिषद् रसादीनां शोष इत्यभिधीयते सुबु० । सम०—शोषणम् कियला-युल ।

शोषण (वि०) (स्त्री०-नी) [शुष् + क्त, श्विया कीप्] 1 सूखना, सूख करना 2 सूखाना, कुस करना, —अ कामदेव का एक भाण, अन् 1 सूखना, सूख होना 2 सूखना, रसाकर्षण, अवशोषण 3 नि शोषण, क्षान्ति 4 कुसता, कुम्हलाइट 5 मोठ ।

शोषित (भू० क० क०) [शुष् + णिच् + क्त] 1 सूखाया गया 2 कुस हुआ, कुम्हलाया हुआ 3 परिश्रान्त ।

शोषित् (वि०) (स्त्री०-नी) [शुष् + णिच् + णिनि] 1 सूखाने वाला, कुम्हलाता हुआ, शोष होने वाला ।

शोषन् [शुष् + ण्] तोतो की मार, तोतो का मूँड ।

शोषता (वि०) (स्त्री०-स्त्री) [शुष् + ण्] अम्य, सिरके का ।

शोषितक (वि०) (स्त्री०-नी) [शुष् + क्त] 1 मोती से मण्डन्य रखने वाली 2 अट्टा, सिरके का, देहारी ।

शोषितकेयम्, शोषितेयम् [शुष् + क्त + डक्, शुष् + डक्] मोती ।

शोषितकेय [शुष् + क्त + डक्] एक प्रकार का विष ।

शोषित्यम् [शुष् + ण्] स्वैरता, मर्कटी, स्वच्छता ।

शोषणम् [शुष् + ण्] 1 पवित्रता, स्वच्छता -पञ्च० ११४५ 2 मलत्याग के कारण वृणित व्यक्तित्व का शुद्धीकरण विषयन किसी निकट मन्त्राग्नी की मृत्यु होने पर लोक व्यवहार के अनुसार निश्चित समय पर अक्षरम आदि करा कर) शुद्ध होना 3 स्वच्छ होना निमग्न होना 4 मलत्याग करना 5 लगापन ईमानदारी । सम० आचार-कर्मन (नपु०) कल्प शुद्धि निषयक मरकार कृष् सप्राप्त लीबालय ।

शोषेय [शुष् + ण्] बोरी ।

शोष्ठ (स्त्री०-पु०) शोष्ठ (शुष्ठ) चमकीला या बहारा हुआ ।

शोष्ठोर (वि०) 1 शोष्ठ देवन् । चमकीला अलङ्कार 2 शोष्ठोर मन्त्र याचा 2 चमकीली मनु० ३ सन्गावो ।

शोष्ठोयम्, शोष्ठोयम् [शोष्ठोर (शोष्ठोय)] व्यन्, चमक अभिमान दर्श ।

शोष्ठि (स्त्री०-पु०) शोष्ठि दं 'शोष्ठि' ।

शोष्ठि (वि०) (पु०-नी) [शुष् + ण्] 1 शोष्ठि मुरागमभिरा अन् 1 शोष्ठि शोष्ठि शोष्ठि का शोष्ठि मभय 2 उत्तम, मरवाला नल में चर (आल०) 3 निर्द्वान्नपुन न चिन्तित मान्यशोष्ठि शोष्ठि० ५११ अभिमान में चर चमकीले 3 कुशन दल (अभि० के साथ या मयाम म) अलक्षोष्ठि दानशोष्ठि आदि ।

शोष्ठिकः, शोष्ठिन् (पु०) [शुष् + ण्] 1 शोष्ठि मुरागमभिरा ठक् इनि वा] शराब पीने के बाद बाला, शराब पिना मुरागोपी की,—नी काली, शराब पिने की यशोपि शोष्ठिकीहस्त वाक्योपनिषोयत द्वि० ३१११ ।

शोष्ठिकेय [शुष्ठिका + डक्] रासम ।

शोष्ठि [शुष् + ण्] शराब पीने के बाद बाला, शराब पिना मुरागोपी की,—नी काली, शराब पिने की यशोपि शोष्ठिकीहस्त वाक्योपनिषोयत द्वि० ३१११ ।

शोष्ठि [शुष् + ण्] शराब पीने के बाद बाला, शराब पिना मुरागोपी की,—नी काली, शराब पिने की यशोपि शोष्ठिकीहस्त वाक्योपनिषोयत द्वि० ३१११ ।

शोष्ठि [शुष् + ण्] शराब पीने के बाद बाला, शराब पिना मुरागोपी की,—नी काली, शराब पिने की यशोपि शोष्ठिकीहस्त वाक्योपनिषोयत द्वि० ३१११ ।

शोष्ठि [शुष् + ण्] शराब पीने के बाद बाला, शराब पिना मुरागोपी की,—नी काली, शराब पिने की यशोपि शोष्ठिकीहस्त वाक्योपनिषोयत द्वि० ३१११ ।

शोष्ठि [शुष् + ण्] शराब पीने के बाद बाला, शराब पिना मुरागोपी की,—नी काली, शराब पिने की यशोपि शोष्ठिकीहस्त वाक्योपनिषोयत द्वि० ३१११ ।

शोष्ठि [शुष् + ण्] शराब पीने के बाद बाला, शराब पिना मुरागोपी की,—नी काली, शराब पिने की यशोपि शोष्ठिकीहस्त वाक्योपनिषोयत द्वि० ३१११ ।

भात्, - दधि (वि०) चमकीला काला, सुन्दर-
कृष्ण का विशेषण ।

श्यामक (वि०) [श्याम + कन्, ला + क बा] काला,
महुरानीला, सविका, निक्षिप्तश्यामस्तनस्पन्धी
शक्तिः श्रेणी० ४, सि० १८३६, उत्तर० २१२५,
-क १ काला रंग २ काली दिव्य ३ गौरा
४ बटवृक्ष ।

श्यामलिका [श्यामल + कन् + टाप्, इत्थम्] नील का
पीचा ।

श्यामलिमन् (पु०) [श्यामल + इमनिन्] कालिमा
कालापन श्यामा श्यामलिमानमानयन भो सान्द्रं
मयीकूर्चकं विद्व० ३११ ।

श्यामा [श्याम + टाप्] रात, विशेषतः काली रात
—श्यामा श्यामलिमानमानयन भो सान्द्रंमयीकूर्चकं
विद्व० ३११ २ छाँह छाया ३ काली स्त्री

४ स्त्री विशेष (नं० ३१८ पर मल्लि० के अनुसार
'शीघ्रनमस्यस्या' सि० ८१३६, येष० ८२, या शीते
सुक्षोण्णसर्वांगो शीघ्ये या सुखशीतला । तत्पञ्चान्न
वर्णाभा ता स्त्री श्यामेति कथ्यते भट्टि० ५११८
तथा ८१०० पर एक टीकाकार + अनुसार)
५ निम्नस्तान स्त्री ६ गाय ७ हन्दी ८ मादा कोबल
९ प्रियमूलता —मालवि० २१७, मेघ० १०४
१० नील का पोषा ११ तुलसी का पोषा १२ कमल
का बीज १३ यमुना नदी १४ कई पोषों का नाम ।

श्यामकः [श्याम + कन्, अच्] एक प्रकार का अन्न धान्य
सादा बाकल—(न) श्यामाकमृष्टिपरिर्वक्षिती अहानि
—न० ४११३, ('श्यामक' भी) ।

श्यामिका [श्याम + कन् भावे] १ कालिमा श्यामता
कु० ५१२१ २ मलिनता, झोटापन (धान्य गारिको
का) —हेम्व. सलकयते श्यामी विसुद्धि श्यामिकापि वा
—रघु० १११० ।

श्यामिक (वि०) [श्याम + इमन्] काला किया हुआ, कृष्ण
रंग का किया हुआ कलुटा ।

श्यामकः [श्याम + कन्] १ पत्नी का भाई, साला ।
श्यामलः [श्यामल + कन्] १ साला का भाई २ साला ।

श्यामली, श्यामिका, श्यामी [श्यामल + क्रीप् + टाप्] इतर
वा, श्यामल + क्रीप्] पत्नी की बहुल, साली ।

श्याम (वि०) (स्त्री० का—स्त्री) [श्याम + वन्] कपिल, महुरा
बुरे रंग का, काला, सुन्दर, सुवैला २ साल के रंग का,
बूरा, बः बुरा रंग । सय०—तैलः बाम का वृक्ष ।

श्वेत (वि०) (स्त्री०—ता, ना) [श्वै + वत् + क्] सफेद,
—सः श्वेत रंग ।

श्वेतः [श्वै + इमन्] १ सफेद रंग २ सफेदी ३ बाज,
चिकरा ४ हिवा, प्रकण्डता । सय०—करकम्,
—करविका १ अलग पिता पर बाह्य करना २ बाज

का भाति सपट कर वीधता से किसी काम में लगना,
चिन्तु, वीधिम् (पु०) बाज का पकड़ कर तथा
उसे बेच कर जीवन निर्वाह करने वाला ।

श्वै [श्या० जा० श्यामे, श्यान, शीत वा शीत] १. श्याना,
त्रिलना-युक्ता २ जम श्यामा ३ सूख श्याना, कुम्ह-
श्याना, वा सूख श्याना रघु० १०३७, दे०
'आश्यान' भी ।

श्वेनघता [श्वेनस्य पातोऽत्र अण. मुमु च] बाज की भाति
सपटना, सिकार आनेट ।

श्वोवाकः, श्वोवाकः [श्वै + आवा (ना) क] एक वृक्ष का
नाम, मोना पात्र ।

श्वक् (श्या० भा० श्वङ्गुन) जाना, रगना ।

श्वङ्ग (श्या० भा० श्वङ्गनि) जाना, त्रिलना युक्ता रगना ।

श्वप् (श्या० पर० चुरा० उभ० श्वयति, श्रावयति—न)
रना प्रदान करना अपण करना (प्राय वि पूवक)
रघु० ५११ ।

श्वत् (श्वत्०) [श्वी + वति] एक प्रकार का उपसर्ग वा
'वा श्वत् के पूर्व में लगता है, दे० वा के अन्तर्गत ।

श्व १ (श्या० पर०, श्या० पर० श्वयति श्रावयति) बाट
पहुँचाना कति पहुँचाना मार डालना ।

॥ (श्या० पर० पर चुरा० उभ० श्वयति श्रावयति—ने)
१ बाट पहुँचाना, मार डालना २ डोलना, डीला
करना, स्वतन्त्र करना मूकन करना ।

॥ (चुरा० उभ० श्वयति—ने) १ प्रयत्न करना, व्यस्त
रहना २ निर्बल होना कमजोर होना ३ प्रसन्न होना ।
श्वयन् [श्व + स्पृट्] १ मारना, बिगान करना २ डालना,
डीला करना, मूकन करना ३ प्रयत्न, श्रद्धा ४ बाँचना
बगन में डालना ।

श्वडा [श्वत् + वा + षट् + टाप्] १ आस्था, निष्ठा,
विश्वास, भ्रमगा २ दैवीसन्देशों में विश्वास, वास्तिक

निष्ठा श्वडा वित्तं विविधेष्वेति वित्तय तत्तत्तामसत्
—श० ३१७९, रघु० २११६, भग० ६३७, १७३३

३ धार्मिक मन की स्वस्थता ४. निष्पटता, परिश्रम
५ आदर, सम्मान ६ प्रबल वा उत्कट इच्छा—तथापि
वैचित्र्यरहस्यमूल्याः श्वडा विश्वास्थानि सत्तेतसोऽत्र

विक्रम० ११३३, मालवि० ६११८ ७ बोहद, गर्भवती
स्त्री की इच्छा ।

श्वडान् (वि०) [श्वडा + आलच्] १ विश्वास करने वाला
निष्ठावान् २ इच्छुक, (किसी वस्तु का) अनिवासी,
श्व (स्त्री०) दैविकवती, गर्भवती स्त्री को किसी
वस्तु की कामना करे ।

श्वन् (श्या० भा० श्वयते) १ कुर्बल होना २ निहास
या विधायन होना ३ डीला करना विश्वास करना ।

• (श्या० पर० श्वयति) १ डीला करना, स्वतन्त्र करना
मूकन करना २ सूख प्रसन्न होना ।

अन्धः [अन्ध + वज्ज] 1 डीला करना, स्वतन्त्र करना
2 डीलापन, 3 विष्णु ।

अन्धकण्ड [अन्ध + कण्ड] 1 डीला करना, डालना 2 चोट
पड़वाना, मार डालना, बिलाल करना 3 बाँधना,
बन्धन में डालना ।

अन्धकण्ड [आ + अन्ध + कण्ड] उबलवाना, गरम करना ।
अपित (यू० क० क०) [आ + पि + क] गरम किया
गया या उबलाया गया, ता मोह, काजी ।

अन्ध (दिवा० पर० आम्पति, आन्ध) 1 चेष्टा करना,
उद्योग करना, मेहनत करना, परिश्रम करना 2 नप
वर्षा करना, (तपस्या के द्वारा) इन्द्रियदमन करना

-कियाकिबर आम्पति गौरि कु० ५१५० 3 आन्ध
होना बकना, नीरवान होना रतिआन्धा शेर

रतिरमणी यादगुनि काव्य० १०, शि० १४३८,
भट्टि० १४११० ५ कष्टग्रस्त होना, दुःखी होना

-ओ बुन्दानि त्वरयति पक्ष आम्पत्या प्रचितानाम्
--मेघ० १९, शेर० (ध-आ-मयति-ने) बकाना,

वरि, अन्धन बक जाना, -अ० १, बि- 1 विश्वास
करना, शराम करना ठहरना कु० ३१९, 2 बचना,

अन्ध होना, द० 'विआन्ध' भी रघु० ११५६,
उत्तरवाना, बचाना ।

अन्धः [अन्ध + वज्ज, न वृद्धि] 1 मेहनत परिश्रम चेष्टा,
प्रयत्न अल पहुँचाना तब अमय रघु० ११३४,
जानाति हि पुन मध्यक कबिरव बवे अमय-मुभा०

-रघु० १६१५, मनु० ११२०८ 2 पकाव
बकाना, परिचालित, बिनयन्त स्म तपोधा मयि विविध्यधमम्

--रघु० ६१३५, ६७, मेघ० १७५२ कि० ५१२८
3 कष्ट, दुःख 4 तपस्या, साधना, इन्द्रियदमन, -दिब

यदि प्रायश्चित्त ब्रह्म धम कु० ५१४५ 5 व्यायाम
विशेषतः सैनिक व्यायाम, क शायद 6 शेर अध्ययन ।

मम० अन्ध (नपु०) -अन्धम् पमोना कश्चित
(वि०) बका-मोहा, काव्य (वि०) परिश्रम द्वारा

सम्पन्न होने योग्य, कष्टसाध्य ।

अन्ध (वि०) (स्त्री० आ जी) [अन्ध + अन्ध] 1 पाँच
पयो, मेहनती 2 नीच, अल्प कमीना, -न 1 लयामी,
भक्त, सपुत्र आ, जी 1 अकिनी,

बिजुजी 2 लाबन्धमी स्त्री 3 नीच जाति की स्त्री
4 बहाली मकीठ 5 जटायमी, बालछत्र ।

अन्ध (दिवा० आ० अन्धते, अन्ध) 1 उपेक्षक होना,
बलाबलाना होना, नापसन्द होना 2 मलती करना,
बि- , बिबास करना, मराना करना -द० विश० ५

अन्धः, अन्धकण्ड [अन्ध + कण्ड] गरम पनाह बचाव
आशय ।

अन्धः [अन्ध + अन्ध] 1 सुनना, जैसा कि 'मुखआय में' इन
3 किसी विक्रोप का कर्म ।

अन्धकण्ड [अन्ध + कण्ड] 1 कान -अन्धनित मधुप सपुत्रे
अन्धकण्डि इति गीत० ५ 2 किसी विक्रोप का
कर्म, कर्म, आ इम नाम का नक्षत्र (जिसमें नील तारे

सम्मिलित ह), कण्ड 1 सुनने की क्रिया, -अन्धक-

मुमगम् मेघ० ११ 2 अध्ययन 3 क्याति, कीति
4 जो सुना गया या प्रकट हुआ, वेद, इति अन्धकण्ड

'वेदिक पाठ ऐसा होने के कारण' 5 दीक्षा । सम०

इन्द्रियम् ओर्ध्वदि, कान, - उन्नरम् कान का बाह्य-

विबर, गोचर वि०) अन्धकण्ड के अन्तर्गत (२)
मुनाई देने की सीमा तक, यथा अन्धकण्डारे तिष्ठ,

अथ जहाँ तक मुनाई देना रहा वहीं तक रहो, -अन्धः,
विषय कान की पहुँच, अन्धकण्ड वृत्तान्तेन

धनविषयप्रापिणा रघु० १४८७ वाक्कि-:ली
(स्त्री०) कान का मिरा, -बुद्धि (वि०) कर्म-

मृच्छ ।

अन्ध (नपु०) [अन्ध + अन्ध] 1. कान 2. क्याति कीति,
3 दीक्षा : मुक्त ।

अन्धकण्ड [अन्ध + कण्ड] क्याति, कीति विभूति ।

अन्धकण्ड [अन्ध + कण्ड] यज्ञ में इति दिये जाने के
योग्य पशु ।

अन्धकण्ड [अन्ध क्याति अन्धि अन्धाः अन्ध - अनुप, इष्टानि
मनुष्या लुक्] 1 धनित्वा नाम का नक्षत्र 2 अन्धका

नाम का नक्षत्र । सम० कः बुधवद् ।

आ (अदा० पर० आनि आण या भूत, शेर० अपयति-ने)
पकाना, उबालना, पोखन बनाना परिपक्व करना,

पकना ।

आध (वि०) [आ + ध] 1 पकाया हुआ, भोजन बनाना
हुआ उबाला हुआ 2 आर्द्र, गोला, तर ।

आधा [आण + टाण] काजी, यवायु ।

आध (वि०) [आधा हेतुत्वेनास्यम् अन्ध] निष्ठावान्,
विश्वास करने वाला अन्ध 1 मृतक सम्बन्धियों की

विप्लव आत्माओं के सम्मान में अनुज्ज्वल सम्कार,
अन्येति सम्कार अन्धया रीतिसे धरमानसम्मानाद्ध

निवेदने, यह नील प्रकार का है नित्य, नैमित्तिक
और काय्य 2 ओर्ध्वद्वैहिक आहुति आध के अवसर

पर उपहार या भेंट । सम० कर्मन् (नपु०) -किया
अन्येति सम्कार कृन् (पु०) अन्येति सम्कार

करने वाला कः अन्येति आहुति या आठ भेंट
करने वाला विष्णु, मय उम स्वर्गीय सम्बन्धों की

बरसों जिसके सम्मान में आध किया जाय, देवः,
देवता 1 अन्येति सम्कार की अविष्टाही देवना

2 यम का विमेषण 3 विश्वदेव दे० 4 पिता,
प्रबन्ध भुज, भोक्त (पु०) दिवङ्गत, पूर्व कुरुष ।

आधिक (वि०) (स्त्री०-कौ०) [आधेय, आध तदुभय
अन्धत्वेनास्यम् वा ठन्] आध सम्बन्धी औषध वैहिक

मेंट को स्वीकार करने वाला, - कम्प्ट खाट के अवतर पर दिया गया उपहार ।

खाट्टीय (वि०) [खाट्ट + छ] खाट सम्बन्धी ।

खाल (धू० क० क०) [खम् + ख] 1 बका हुआ, बका-मादा, खाली, परिश्रान्त 2 गान्ध, सौम्य, तः सन्वासी ।

खालिः (स्त्री०) [खम् + क्लित्] खालि, परिश्रान्त, बकाबट ।

खानः [खम् + खन्] 1 मास 2 समय 3 अभ्यायी छाजन ।

खायः [खि + खञ्] आश्रय, बचाव, जरण, महारा ।

खायः [धु + खञ्] मुनता, कान देना ।

खायकः [धु + खञ्] 1 श्रीता 2 छात्र, आश्रय-प्राप्तवान् स्थायाम् मा० १०, अवर्ति छात्रावस्था में ३ बोट-भिन्नु, बोट मन्त्र, महारथा 4 बोट भक्त 5 पातण्डा 6 कौरा ।

खावण (वि०) (स्त्री०-णी) [खवण + अण्] 1 कान सम्बन्धी 2 खवण लक्षण में उत्पन्न, - जः सावन का महीना, (बुलाई-अगस्त में जाने वाला) 2 पातण्डो 3 छत्रवेष्टा 4 एक वंश सन्वासी जिसको दशरथ ने जन जाने मार डाला, बाद में उसके भान्ना-पिता ने दशरथ को गाप दिया कि वह अपने पुत्रों के वियोग से दुःखी हुय होकर मरेगा ।

खावणिक (वि०) [खावण + ईठक्] खावण मास सम्बन्धी, -कः सावन का महीना ।

खावणी [खवणेन नक्षत्रेण युक्ता पौर्णमासी] -खवण + अण् + डीप्] 1. खावण मास की पूर्णिमा 2 एक वार्षिक पर्व जिस दिन यज्ञोपवीत बदले जायें, सखीनों, रक्षाबन्धन ।

खावस्तिः-- स्त्री (स्त्री०) गंगा नदी के उत्तर में राजा खावस्त द्वारा स्थापित एक नगर ।

खावित (वि०) [धु + खिच् + क्त] कहा हुआ, मुनाया बचा, बर्धन किया गया ।

खाव्य (वि०) [धु + खिच् + यत्] 1 मुने जाने के बोध्य (विप० बुध्य) 2 जो मुना जा सके, लपट ।

खि (म्हा० उ०) अयति- ते, खितः, खेर० आश्रयति-ते, दृष्ट्वा० निखीयति-ते, निश्रयिष्यति-ते) जाना, पहुँचना, महारा लेना, बोट होना, अवाव के लिए पहुँच होना, -यं देशं अयते समेव कुठने बाटुप्रता-पाजितम्-हि० १११३१, रघु० ३१३०, १११२ 2. जाना, पहुँचना, भ्रमना, (अवस्था) धारण करना पनीता ग्हाभिं अयति विवशा कामात् दमाय् भाभि० ११८३, द्विपेन्द्रमाव कल्प अयतिव-रघु० ३१३२ 3. बिपकना, झुजना, आश्रित होना, निर्भर रहना-उत्तर० ११३२ 4 निवास करना,

बसना 5 सम्मान करना, सेवा करना, पूजा करना 6 सेवन करना काय पर लगाना, 7 संलग्न करना, अनुपगत होना। अर्थ - 1 निवास करना 2 सवारी करना, चढ़ना, आ - 1. महारा लेना, आश्रय लेना, अवलम्ब होना विक्रम० ५११७, मट्टि० १५१११ 2 अनुगमन करना रघु० ४१३५ 3 धारण लेना, निवास करना, बसना रघु० १३१७, पञ्च० १५११ 4 आश्रित होना, मनु० ४१७७ 5. धार जाना, अनुभव प्राप्त करना भ्रमना, धारण करना एका-यम कथन एव निमित्तभर्ताद्विप्र पृथक् पृथग्विवा-श्रयते विवर्तिनः उत्तर० ३१३७ 6 जम रहना, रहे पटना 7 जुनना, छाटना, पसन्द करना 8 महारथ लेना, महारथ करना, उद् - उपर उठाना, उधत करना, ऊँचा करना, उपा- पहुँच या अवलम्ब होना, भग० १६१-उत्तर० ११७७, रघु० - 1 पहुँच होना, महारा होना धारण में जाना, सरावना क-लिङ्ग पहुँचना 2 अवलम्बित होना, आश्रित होना-उत्तर० १११२, मा० ११२४ 3 आश्रित करना आश्रित करना 4 अभिगमन करना सम्मान क-लिङ्ग पहुँचना 5 सेवा करना ।

खित (धू० क० क०) [खि + क्त] 1 गया हुआ, पहुँचा हुआ, भरण में पहुँचना हुआ 2 बिपका हुआ महारा लिया हुआ, बैठे हुआ 3 मयुक्त, लभित, मबड 4 बचाया हुआ 5 सम्मानित, सेविम 6 अनुसरी, सहकारी 7 आच्छादित, विवशा हुआ 8 युक्त, पूरित ९. मयवेन, एकदिन 10 सहित, मयप ।

खितः (स्त्री०) [खि + क्लित्] अवलम्ब, महारा, पहुँच ।

खिचवण्य (वि०) 1 अपने आप को योग्य मानन वाला 2 घमडी ।

खिचवर्तिः (पु०) गिब का विशेषण ।

खिच् (म्हा० पर०) अयति) उलाना ।

खी (क्या० उ०) श्रीगानि, श्रीजीने) पकाना, भ्रातृम बनाना, उबालना, नैयार करना ।

खी (स्त्री०) [खि + बिक्प, नि०] 1 घन, होलन, प्राध्वं, मयुटि, भूकलता अनिवार्य भियां मूलम-रामा०, माहरी धीः प्रविचयति-मच्छ० ६, 'सौभाग्य बोरो पर अनुग्रह करना है'-मय० ११३०० 2. रात्रसता, ऐक्यं, रात्रकीय बनवोलन-कि० १११ 3. गौरव महिमा; प्रतिष्ठा- श्रीवक्ष्य क० ७१८६, अर्थात् महिमा या गौरव का बिज्ज 4. सौख्य, आनन्द, काविर्य, कानि (मय) कमलधिय दधी क० ५१२१, ७७३२, पञ्च० ३०८, कि० ११७५ ५. राग, मय, क० २१२ 6 बिज्ज की पत्नी लक्ष्मी जो धन की देवी है -आनन्दित दारवक्ष्य गृह तथा धीः-उत्तर०

लिए प्रतिज्ञा की जाय - तस्य प्रतिभूत्य रघुप्रवीरस्त
दीप्तिस्तम् - रघु० १४।२९, २।५६, ३।६७ १५।४,
वि, सुनना (शाय क्तात रूप प्रयुक्त), तस्य सुनना,
ध्यान लगा कर सुनना - समुपगति न चोक्तानि
- मट्टि० ५।१९, ६।५, (परन्तु अकर्मक प्रयोग में
आ०) हिताश्रय समुपगते स कि पम् कि० १।५।

मुष्मिका (स्त्री०) शोरा सज्जी, सार।

मुत्त (धू० क० क०) [धू + क्त] १ सुना हुआ, ध्यान लगा
कर श्रवण किया हुआ २ कथित कर्मचोर ३ अवि-
गत, निर्धारित, समझा गया ४ मुज्ञात, प्रतिज्ञा,
विख्यात, विश्रुत रघु० ३।४०, १४।११ ५ नामक,
पुकारा हुआ, तस्य १ सुनने का विषय २ आ देवी
मदेस से सुना गया अर्थात् वेद, पवित्र अधिगम,
पुनीत ज्ञान - भूतप्रकाशम् रघु० ५।२ ३ साधान्य
अधिगम, विद्या, आश्रयनेत्र न कुण्डलेन (विमानि)
भर्तुं० २।७१, रघु० ३।२१, ५।२२, पञ्च० २।१४७,
४।६१। सम० अध्ययनम् वेदो का पढ़ना अन्वित
(वि०) वेदो का ज्ञाता जर्ज मौखिक रूप से या
उक्तानो कहा गया तथ्य, कौलि (वि०) प्रसिद्ध,
विश्रुत (पु०) १ उदार व्यक्ति २ दिव्य श्रुति
(स्त्री०) शत्रुघ्न की पत्नी, देवी सत्यवती, चर
(वि०) सुनो हुई बात को याद रखने वाला, मेवाची।
मुत्तकम् (वि०) [मुत्त + क्त] वेदज्ञाता, वेदवेत्ता वेदज्ञ
रघु० ९।७४।

मुत्तिः (स्त्री०) [मु + क्तिन्] १ सुनना चन्द्रस्य ग्रहण-
मिति भूमे - मुत्ति० १।७, रघु० १।२७ २ कान - भूति
मुत्तकमस्मनगीतय - रघु० ९।३५, स० १।१, वेणी०
३।२३ ३ विवरण, समझा, समझाकर, मौखिक
संवाद। ध्वनि ५ वेद (विषय संदेश होने के कारण-
वि०) स्मृति - दे० वेद के अन्तर्गत। ६ वैदिकपाठ
वेदमंत्र, इतिभूते या इति भूति 'ऐसा वेद कहता है'
७ वेदज्ञान, पुनीतज्ञान, पुत्र्य अधिगम ८. (नगीन में)
मृत्तक का अभाग स्वर का अनुवाचन या अन्तराल
- ति० १।१०, १।११ (दे० नत्वानीय मल्लि०)
९. श्रवण नक्षत्र। सम० अनुप्रासः अनुप्रास का एक
प्रकार - दे० काव्य० ९ उक्त, - उक्ति (वि०) वच-
नविहित, - कथ० १ तथ्य २ तत्पर्याय, प्रायश्चित्त साधना,
- कथ० (वि०) सुनने में कटवा (टु) कर्णक, अम-
यूर ध्वनि, (यह रचना का एक हाथ माना जाता है),
कोवचम्, - मा शास्त्रीय निधि, वेदविधि, - औषधिका
समंशारत्र, विधिमंत्रगा, ईश्वर्य वेदविधियों का परम्परा
विरास या निरूपण - चर (वि०) सुनन बाजा,
निबन्धनम वदो का साक्ष्य वच रण-नगराज
धार्मिक० ६।७ प्रसादक (वि०) पूर्णप्रिय - प्राचा-
व्यस वदो की प्रामाणिकता या स्वीकृति अचलमय

कान का बाहरी भाग, ध्वनम् १ कान की जर, - स्मृति
किमपि श्रुतिमूले नीत० १ २ वेद का सहितापाठ,
- मूलक (वि०) वेद पर आधारित, - विषयः १ सुनने
का विषय, अर्थात् ध्वनि स० १।१ २ कर्ण परास
एतत्प्रायेण श्रुतिविषयमार्पणतमव - का० ३ वेद
का विषय ४ वार्षिक अध्यादेश वेदः कान वीधना,
- स्मृति (स्त्री०) (दि० व०) वेद और कर्मसारम्।

मुत्त [मु + क] १ यत्न २ यज्ञीय सुवा।

मुत्ता [मुत् + टाप्] १ यज्ञीय समय तु० सुवा। सम०
- मुत्ता विकटक मुत्ता।

मुत्ती [मुत्ते रासीकरणाय डोकने - मुत्ती + डोक + व,
पुषो०] (गणि० में) भिन्न आनीय इच्छो को मिलाने
के लिए गणनाय संद। सम० कल मुत्ती का योग
जोड़।

मुत्ति (पु०, स्त्री०) मुत्ती (स्त्री०) [भि + गि, वा जीव]
१ रेखा, झुलझा, पक्ति, तरङ्गभूषण लुभितवहन
श्लेषकता - वेणी० ४।२८, नवपत्रश्रीजिनेश गङ्गुज
समीकृतसङ्गमपि प्रकाशते कु० ५।९ मेघ० २/ ३५
२ दल, सचय, समूह उत्तर० ४ ३ व्यापारग्या का
मय, गिल्पियों का सघटन, निरमय ४ बोकका बालटो।
सम० कर्मा. (पु०, व० व०) व्यापारिकता या
शिथिलकर-सबो के नियम, गीतिया आदि।

मुत्तिका [मुत्ति + क्त, टाप्] तन्त्रु मेवा।

मुत्तस्य (वि०) [अतिशयेन प्रशस्त्य - ईदमुत्त, आदेश]
१ अपेक्षाकृत अच्छा बतीयत् श्रेष्ठतर, वर्धनाद्वय
श्रेय - हि० ३।३, मय० ३।३५, २।५ २ सर्वोत्तम
श्रेष्ठतम ३ अधिक मुत्ती या लोभायशास्त्री ४ अधिक
मानव्यवायक, प्रियतर (पु०) १ सङ्गुण, पुष्पकर्म,
नैतिक गुण, धार्मिक गुण २ जानबू, लोभाय, धनक,
शुभ, कल्याण, आशीर्वाद शुभ परिणाम - पूर्वाचकी-
रित श्रेयो मुत्त हि परिवर्तते स० ७।११, प्रति-
ध्वनाति हि यय पुत्रपुत्राव्ययिकम् रघु० १।७९,
उत्तर० ५।२७, ७।२० रघु० ५।३४ ३ कुत्र अवसर
स० ७ ४ मोक्ष मक्ति। सम० अविष्णु (वि०)
१ आत्मका अन्वटक, आत्मन वा इच्छुक २ हितैषी,
- कर १ आत्मद्वय अनुकूल २ मनसमय, शुभ,
परिष्कार मक्ति प्राप्त करने की चेष्टा।

मुत्त (वि०) [अतिशयेन प्रशस्त्य, इच्छन्, आदेश]
१ सर्वोत्तम श्रेष्ठतम श्रेष्ठ, प्रयुक्ततम (मय० वा
अवि० व मास) २ प्रशस्त प्रशय या समृद्ध ३ प्रिय-
तम, श्रेष्ठतम प्रिय, यत्न अधिक पुराना वृद्धतम
४ १ वाद्यन १ रागा ३ कुचों का नाम ४ शिल्प
का नाम, छेत्तु याय का दूध। सम० - काव्यम्.
१ मन्त्रक के धार्मिक जीवन का सर्वोत्तम आश्रय अर्थात्
मन्त्रशास्त्रम् २ वृत्तम्, वाच्य (वि०) वाची।

इलायित (भू० क० ७०) [इलाय् क्त] प्रशंसा किया गया + गीत किया गया सराहा गया।

इलाय्य (वि०) [इलाय् व्यत्] १ प्रधानगय गाय - उत्तर० ६१९ १३२ आरुणाय अद्वय।

इलकु [इल्य् कु पा०] १ कामुक लपट २ दास आश्रित (नप०) मदाय विद्या फलित उपायन।

इलकपु [इल्य् कप पु०] १ शर २ मेखर।

इलव् [इला० पर० इलेवति] जलना।

॥ (इला० पर० इलव्यति [इलट] आश्रयत करने, इलव्यति चन्द्रा० चलचरकस्य हास्यगत इति निमित्तमालम्ब्य गीत० ६ २ तम रहना चिपके रहना, इटे रहना ३ समस्त जाना सम्मिलित होना ४ गहन करना केना समझा ने० १६० आ उच आलितान करना परिग्रहण करना वि १ विद्युत् होना दूर होना २ क्त जाना फट कर उड़ जाना नट्टि० १६६७ (प्र०) अलग अलग करना मध० ७ तस्य १ इटे रहना चिपके रहना २ सम्मिलित होना मिलना।

॥ (चुरा० उभ० इलेवति-न) जोड़ना सम्मिलित करना, मिलाना।

इलवा [इल्य् + अ + टाप्, १ आलितान २ चिपके जाना।

इलवट (भू० क० क०) [इल्य् क्त] १ आलितान २ चिपका हुआ हुआ हुआ ३ टिका हुआ हुआ हुआ ४ इलेव से युक्त, दो स्थानों की सम्भावना से युक्त अथ विग्रहादय शब्दा इलवटा - काव्य० १०।

इलवटि (इ०) [इल्य् - कित्] १ आलितान २ परिग्रहण।

इलीपवम् [ओ यक् कृतियुक्त पदम् अस्मान् पु०] मुझो हुई टाग या कुला हुआ पैर कीलागी। सम० प्रथम भाग का पैर।

इलील (वि०) [ओ अस्मि अय - ल्व पु०] १ भाग्य जालो समूह दे० धील २ शिष्ट तु० अस्मीन।

इलेव् [इल्य् वत्] १ आलितान २ चिपकाना जुड़ना ३ मिलान संगम सरक निरन्तरचलेष्वपवा का० (यहाँ इसमें अगल अर्थ भी घटित होता है) ४ अनेकार्थ गद्य प्रयोग एक से अधिक अर्थ प्रकट करने शब्द शब्दा का प्रयोग द्व्यर्थक किसी शब्द या वाक्य की दो या दो से अधिक अर्थों की सम्भावना (यह एक अलंकार समझा जाता है, कि इसका बहुत प्रयोग करने हैं परिभाषा के लिए दे० काव्य० कारिका ८६ तथा ९९) - आश्रयेति न इलेवकैर्बन्धया इलोकद्वयार्थं भूषिता मया किम् - शी० ३१९, दे० शब्दशेखर भी। सम० - अर्थ अनेकार्थ शब्द प्रयोग,

द्व्यर्थक शब्द प्रयोग धिलिक (वि०) इलेव पर टिका हुआ (शा० आधारित)।

इलेव्यक इ एभन १११ कफ बलगत।

इलेव्यव (वि०) [इलेवन् + अ + ट, कफ से उत्पन्न, कम्पन।

इलेव्यन् [पु०] [इल्य् + मान्] कफ बलगत, कफ की प्रहरि मन अतिमगर कफविकार से उत्पन्न परिवार मगड ओजस (नपु० कफ की प्रकृति, इसा इलो १ मर्मिक। एक प्रकार का मातिया २ केचकी कक्षा।

इलेव्यल (वि०) [इलेवन् + ल] कफ प्रकृति वा, बलगत।

इलेव्यात इलेव्यातक [इलेवन् प्र + अ + ट] रोग वा ग १ वृष वक्षस जिमाड वा पेट

इलीक (इला० अ०) १ प्रशंसा करना पछ म्भना करना छन्दोबद्ध करना २ अक्षय्य करना ३ व्यापना छाड़ना।

इलीक [इल्य् अ + ट] १ कोबा मय प्रशमन, स्त्री वत् २ लाज मनु० ७१२ ३ व्यापि पसि ४ तपशील दश या पुष्पात्मा न ४ प्रयास का विषय ५ किवदन्तो का प्रारंभ ६ राय वक्षिण मधु० १६७० ७ अनुष्ठान छन्दार्थ वादपदा ८ वक्षिण ९ इलाय् १० ग १० उलार्गिण ११ व कर्मा इवहु कर्मा की गता पु० म्भो।

इलीक [इला० अ + ट] लवहा पुरुष, तिलकाय।

इलक् [इला० आ० इलक्ते] जाना हिलना-जुलना।

इलक्, इलक् [इला० आ० इलक्ते इलक्ते] १ जाना हिलना-जुलना २ जुला होना, मुँह जाना करना बगार हो जाना।

इलक् [इला० आ० इलक्ते जाना हिलना-जुलना।

इल्व् [चुरा० उभ० इल्वति ने] १ चुरा करना (बुध के मन्त्रानुसार इल्वति २ (इल्वति ने) (क) जाना हिलना-जुलना (ख) अलंकृत करना (ग) समझा करना मगड कर्मा (इल्व के मन्त्रानुसार इन अर्थों के लिये इल्वति)।

इल्वट (च० १० उभ० इल्वति ने) निन्दा करना।

इल्वन् [पु०] इल्व - कृतिन् मि० (कर्म) इला इलानी इलान वम० ३० ३० दान इला० इली) मुला इला यीर किन्ती राजा स कि माध्याम्यपामहुम् मु० १० मनु० २१३१ मनु० २१०१। सम० कीद्विम् (पु०) किन्ती कीद्विम् कीद्विम् कीद्विम् गण कुतो वा बुद्ध गणिक १ शिकारी २ कुलो की विधान वाला कुल गीरह, सर कमीना यावसी नीच धनिक, निशान्, निशा वह रात जिसमें कुलो मीकने १ वक् (पु०) वक् १ प्रतिनीच नीच

पतित जाति का पुरुष जानिबहिष्कृत, बाह्यल, -मासि०
५।२३ २ कुनो को झिलाने वाला, पवक कुते का
पैर पक जाति से बहिष्कृत, बाह्यल गया०
२९, कलम् अट्टा नीबू या चकोतरा, कक
अक के पिता का नाम जीव शोदर मुख्य
कुनो का मुँह, कृति (स्त्री०) कुते का जीवन
(बहुधा नीकरी की समता इससे की जाती है) -सया
लावककारिणी कृतविय स्थान बवति विद मुद्रा०
१।१६ यनू० ६।६ २ सेवावृत्ति सेवा मन० ६।६

अश्व १ शिकारी आन्तर २ अश्व ३ जीरा
श्व (पु०) शिकारा ।

अश्व (बुरा० उभ० ६२५५५५ १) १ माना श्वित
अश्व २ श्वित श्वित श्वित श्वित ३ श्वित
इना म श्वित ।

अश्व (श्वित० अश्व० अश्व० अश्व० अश्व० अश्व०
कि० १५३३ ।

अश्व [श्वित० अश्व० अश्व० अश्व० अश्व०]

अश्व [श्वित० अश्व० अश्व० अश्व० अश्व०]

अश्व [श्वित० अश्व० अश्व० अश्व० अश्व०]

अश्व (श्वित० अश्व० अश्व० अश्व० अश्व०) कर्ता अश्व

अश्व (बुरा० उभ० अश्व० अश्व० अश्व० अश्व०) कर्ता अश्व

अश्व (श्वित० अश्व० अश्व० अश्व० अश्व०) कर्ता अश्व

अश्व [श्वित० अश्व० अश्व० अश्व० अश्व०] कर्ता अश्व

अश्व [श्वित० अश्व० अश्व० अश्व० अश्व०] कर्ता अश्व

अश्व [श्वित० अश्व० अश्व० अश्व० अश्व०] कर्ता अश्व

अश्व (स्त्री०) [श्वित० अश्व० अश्व० अश्व० अश्व०] कर्ता अश्व

अश्व (श्वित० अश्व० अश्व० अश्व० अश्व०) कर्ता अश्व

अश्व (श्वित० अश्व० अश्व० अश्व० अश्व०) कर्ता अश्व

अश्व (श्वित० अश्व० अश्व० अश्व० अश्व०) कर्ता अश्व

(श्वित० अश्व० अश्व० अश्व० अश्व०) कर्ता अश्व

अश्व (श्वित० अश्व० अश्व० अश्व० अश्व०) कर्ता अश्व

अश्व (श्वित० अश्व० अश्व० अश्व० अश्व०) कर्ता अश्व

अश्व (श्वित० अश्व० अश्व० अश्व० अश्व०) कर्ता अश्व

अश्व (श्वित० अश्व० अश्व० अश्व० अश्व०) कर्ता अश्व

अश्व (श्वित० अश्व० अश्व० अश्व० अश्व०) कर्ता अश्व

अश्व (श्वित० अश्व० अश्व० अश्व० अश्व०) कर्ता अश्व

अश्व (श्वित० अश्व० अश्व० अश्व० अश्व०) कर्ता अश्व

अश्व (श्वित० अश्व० अश्व० अश्व० अश्व०) कर्ता अश्व

ब० स, दबन् + आपद् + अच् | बबेर, हिल, बः
1 सिकारो जानवर, जगली जानवर 2 बाघ ।

इवापुच्छः (पु०) [इन् पुच्छम् प० त०, नि० दीर्घ]
कुत्त की पूछ, दुम ।

इवाधिष् (पु०) [इना आविध्थे - इवन् + आ + धिष्
+ क्तिप्] साही, सत्पक ।

इवाकः [इवत् + क्त्वा] सोम सेना, सोस, इवासप्रवास
क्रिया, उँवा सोम अवापि मन्त्रवेपथु जनयति इवाम,
प्रमाणाधिक ग० १।२९, कु० २।४० 2 आह,
हापना 3 हवा, वायु 4 वमा । सभ० काका दमा
रोकः सोस का रोकना, हिक्का एक प्रकार की
हिचकी हेले (स्त्री०) नींद ।

इवासिन् (वि०) [इवास + इनि] सोस देने वाला—(पु०)
1. हवा, वायु 2 इवास देने वाला जानवर, जीवम
प्राणी 3 आ फुकार की ध्वनि के साथ (वर्ण)
उच्चारण करता है ।

इवि (म्भा० पर० इवयति, धुन) 1 विकसित होना,
बढ़ना (आल० से भी) सूजना (जैसे आँस का)
—इदोऽर्थाश्चिक्कच्छुरास्य हेतोस्तवाश्चोत् भट्टि०
६।१९ ३१, १४।७९, १५।३० 2 कलना फूलना,
समृद्ध होना 3 जाना, पहुँचना, अचिमुक्क चलना,
जम्, सूजना, बढ़ना विकसित होना प्रबलरहितो
अनुनेज (मुखम्) मेघ० ८४ 2 चमण्डो होना
चमण्ड से फूल जाना ।

इवित् (म्भा० आ० इवेने) इवेत होना मरुद होना
—अधिकारिदिगन्ता इवेतमानेयशोभि मा० २।९ ।

इवित् (वि०) [इवित् + क्] सफ़द ।

इवित् (स्त्री०) [इवित् + इन्] सफ़दो ।

इवित् (वि०) [इवित् + यत्] मरुद ।

इवित् [इवन् + रक्] 1 मरुद कोड़ 2 फुलबहरी कोड़
का टाय (त्ववा पर) नन्द्यमार्ग नोपेय काये ष्ट
कथन । म्याद्रपु मुन्दरमपि इवित्केन दुमंगम्
काव्या० १।० ।

इवित् (वि०) (स्त्री०—जी) [इवित् इनि] कोड़ के
राग से ग्रन् (पु०) कोड़ी ।

इवित् (म्भा० आ० इवेने) मरुद होना ।

इवेत (वि०) (स्त्री०—मा, ती) [इव + यत्, अच् वा]
सफ़ेद, नन इवेनेहंयुंके मरिनि स्पन्दने स्विनी—अ०

१।१४ तः 1 सफ़ेद रङ्ग 2 बाहु 3 कोड़ी 4. रति
कूट पीवा 5. धुक ग्रह, धुक ग्रह की अविच्छादी देवता
6. सफ़ेद बादल 7 जीरा 8 परेतयेनी दे० कुलापल
या कुलपवंत 9 ब्रह्माण्ड का एक प्रमाण,—तम् वि० ।

सभ० अम्बार,—वास्तु (पु०) जैन सन्नाहिर्वा का
एक सम्प्रदाय, इवः एक प्रकार का ईश, वसा,—वसरः
कुबेर का विशेषण, कलम्, कम् सफ़ेद कमल

कुम्बारः इन् के हाथी ऐरावत का विशेषण,—कुम्भम्
सफ़ेद कोड़, केतुः बौद्ध धम्म या जैनसाधु, कोल
एक प्रकार की मछली, सफ़र, वक् वि० 1 सफ़ेद
हाथी 2 इन् का हाथी, कम् (पु०) मरुत, हल,

कम् 1 हल 2 एक प्रकार की तुलसी, सफ़ेद
तुलसी, द्विः इस महादीप के अठारह सभु प्रमाणों
में से एक,—वास्तुः 1 सफ़ेद मणि पदार्थ 2 अरिया
मिट्टी, 3 अरिया पत्थर, कम् (पु०) 1 वरिद

2. कपूर 3 मरुदकेन नीलः बाबल,—वक् हल, 'वक्'
ब्रह्मा का विशेषण, वास्तु गुरुकुली का फूल
—विष्णु सिंह,—विष्णुः 1 सिंह 2 विष्णु का विशेषण,

वरिचम् सफ़ेद मिर्च, वाक्कः 1 बादल 2 बुझी,
रक्तः गुलाबी रङ्ग, रक्कम् सीसा, रक्कः धुक-
ग्रह, रोहिण् (पु०) चन्द्रमा, रोहित मरुद का
विशेषण, कलकः मूलर का पेड़ वाक्कम् (पु०)

1 चन्द्रमा 2 अर्जुन का विशेषण, वाह् (पु०) इन्
का विशेषण, वाह् 1 अर्जुन का विशेषण 2 इन् का
विशेषण, वाह् 1 अर्जुन का विशेषण 2 चन्द्रमा

3 समुद्री दानव, मरुदग्रह, वाह्वाण, वाह् (पु०)
अर्जुन का विशेषण,—वाह्—मरुदः जी, हलः 1 इन्
का घोड़ा 2 अर्जुन का विशेषण,—हस्तिन् (पु०) इन्
का हाथी ऐरावत ।

इवेतकः [इवेत + कन्] कोड़ी, कम् पाँदी ।

इवेता [इवित् + अच् + टाप्] 1 कोड़ी 2 पुनर्वा 3 सफ़ेद
दूब 4 मृष्टिक 5 रवेदार बीवी 6 बंसलोचन
7 जनेक पीवा के नाम (इवेत कम्पकारी, इवेत मुहनी
वादि) ।

इवेतीही (स्त्री०) [इवेतवाह + कीच्] इन् की पत्नी, पत्नी ।

इवेत् (पु०) सफ़ेद कोड़ ।

इवेत्तम् [इवेत + य्वाच्] 1 सफ़ेदी 2 सफ़ेद कोड़ ।

इवेत्तम्, इवेत्तम् [इवेत्त + अच्, य्वाच्, वा] सफ़ेद कोड़ ।

वि०—इदुन सी वाहुरे मा स से आरभ जाती है, वायु
पाठ में 'व्' पुस्क जिन्नी जानी है जिसमें कि यह
प्रकट हो सके कि कुछ उपसर्गों के पश्चात् 'व्' बदल

कर 'व्' हो जाता है । इस प्रकार की वाहुरे 'व्' के
अन्तर्गत ही अपने उचित स्थान पर मिलेंगी ।

व (वि०) [वी + क, वृषी० कम्पम्] लवणाय, लवो-

लुप्ट, वः 1 हानि, विनाश 2 अन्त 3 शेष, अवशिष्ट 4 मोक्ष ।

वट्क (वि०) [वट् + क्रीत् + क्त् + कन्] छ गुना, क्त् छ की समष्टि भविष्यट्क, उत्तर वट्क आदि ।

वट्का दे० घोडा ।

वट्कः [वत् + क्त्, पृषो० परबम्] 1 सौष्ठव 2 नपुंसक (भिन्न-भिन्न लैङ्गिकों ने नपुंसकों के १८ में २० तक अनेक भेद लिये हैं) 3 समूह, समुच्चय, सङ्ग्रह, ३१, राशि, (इस अर्थ में नपु० भी) कलत्रव्ययगोत्रे वट्-परीक्षेन वत्त कुमुदकमलपण्डे नृत्यरूपामवस्थां-गि० १११५, तु० 'वट्' भी ।

वट्ककः [वट् + कन्] नपुंसक, हिजड़ा ।

वट्काला, वट् + अल् + अल् + क्रीत्] 1 तालाब, बाह्रद 2 आम्बकारीची या अमली स्त्री ।

वट्कः [वत् + क्त्, पृषो० परबम्] 1 नपुंसक, हिजड़ा, गात्र ११२१५ 2 नपुंसकजिन निवेश शिखर वट्के अमर० । तम० तिलः वट्प तिल, बहु निम जो तम न मके ।

वत् (तत्त्वा० वि०) [तो + क्तिप्, पृषो०] (केवल व० व० में प्रयुक्त कर्त० वट्, सब० वत्ताम्) छः-वत्० १११६, ८१६०३ । तम०-अक्षीच-वट्खीच) मछली, —अक्षवत् समष्टि रूप में प्रहण किये गये शरीर के छ भाग जब बाह्य शिरामाय वट्प्रविष्टमुच्यते 2 वेद के छः अंग महायक भाग, शिक्षा कल्या व्याकरण निरुक्त छन्दसा ब्रति । ज्योतिषायय चैव वट्प्रो वेद उच्यते दे० वेदांग भी 3 छ शुभ वस्तुएँ अर्थात् सोमासा में प्राप्त छ परार्ध-गोमूत्र सोमय क्षीर मर्दिषि च रावना । गहनमपठ-मार्ग-य पठित सर्वदा गवाम् अहर्नि (वट्प्रतिः) भीरा ।

अधिक (वि०) (वर्धयिष्) वह जिसमें छ अधिक हो, मा० ५११, अधिक (वर्धयिष्) देवस्य षोड महात्मा, —अक्षीत (वि०) (वट्क्षीत) छपासीवाँ अक्षीतिः (स्त्री०) (वट्क्षीति) छपासी अह ।

(वट्कः) छ दिन का समय या अतपि आनन-वचन, वचन (वट्कामन, वट्कवच, वट्कवचन) कालिकेय के विशेषण गहानन-पीतपयोऽगामु नेना वयुनामिव कृत्तिकाम् २५० ११०२६, आत्म्याः (वट्काम्याः) छ तम, अक्षवत् (वट्कवचम्) समष्टि रूप में प्रहण किये हुए छ वसाले पक्षकाल स परि वट्कवचमुराहृतम्, कर्त्त० (वि०) (वट्कवच) छ कामों से मुना गया, अर्थात् वक्ता और श्रोता के अतिरिक्त किसी तीसरे व्यक्ति द्वारा भी मुना गया, एक से अधिक श्रोताओं को सुनाया गया (परामर्श, भेद आदि) —वट्कर्णो मिथते सत्य गच० ११२९, (जी)

एक प्रकार की बोधा, कर्मन् (नपु०) (वट्कर्मन्) 1 साम्राज्ञी के लिए विहित छ कर्तव्य-अध्यापन-सम्पन्न यजन याजन तथा । दान प्रतिग्रहपुत्रव वट्कर्मार्थप्रव्रजनम् मन० १०१७५ 2 स कर्म जो साम्राज्ञी की बीविका के लिए विहित हैं उच्छ प्रतिग्रहो भिक्षा वाणिज्य पशुपालनम् । कृषिकर्म तथा वेति वट्कर्मार्थप्रव्रजनम् 3 जादू के छ करतब जालि वतीकरण, मन्त्रमन, विद्वेष, उच्चाटन तथा मार्ग 4 योगाभ्यासमवधी छ क्रियार्थ धीनिर्वस्ती तथा नेनी (नौतिकी) वाटकनया । कपालभाती वनानि वट्कर्माणि समाचरेत् ॥ (पु०) साम्राज्ञ, कोण (वि०) (वट्कोण) 1 छ कोणा से युक्त (वत्) 1 परबुज, छ कोनिया 2 इन्द्र का वय, वयम् (वट्कवम्) 1 छ बेलों की झाड़ी 2 वह जवा जिसमें छ बेल जोते जाय (कभी कभी अन्य जानवरों के नाम पर) उदा० हस्ति, अक्षव छ हाथी छ घोड़े आदि, —वत् (वि०) (वट्कवत्) 1 छः गुना 2 छ विशेषणा से युक्त (वत्) 1 छ गुणों का समुदाय 2 किसी राजा की विदेशनीति में प्रयोक्तव्य छ उपाय दे० 'वत्' के अन्तर्गत (२१), तु० 'वाङ्मय' के माध भी वत्ति (वि०) (वट्कवत्ति) स्त्रियामुन इन्विका (वट्कवत्तिका) हठी, आमाहृष्टी, वक्त् (वट्कवक्त्) शरीर के छ रहस्यमय बन्ध (मुखाधार, अधिष्ठान मणिगुर, जनाहत, विशुद्ध और आका) —वत्कारिण (वट्कवकारिण) ७५, ७५, वरकाः (वट्कवकाः) 1 मधुयक्ती 2 टिड्डी 3 इ-जः (वट्कजः) भारतीय स्मरशास्त्र के मान प्राधानिक स्वरो में से चौथा स्वर (कुछ के अनुसार पहला) क्योंकि यह स्वर छ अक्षों से व्युत्पन्न है नामाकठमुग्गान् विह्वा इत्यादि सस्पृशन् । गट्ज मरायने (वट्ज्य सजायने) यस्मात् तस्मात् परत्र इति स्मृतं कर्तृते हैं कि मोर के स्वर से यह स्वर मिलता-जुलता है, वट्ज रौत मपरान् नार० वट्जमरवादिनी वेका द्विधा भिन्ना शितस्विति २५० ११३९ वट्जस्त् (स्त्री०) (वट्जवत्तस्) इतना (वट्जवत्तस्) (वि०) छलोमरी, —वत्तवत् (वट्कवत्तवत्) हिन्दू दर्शन के छ मुख्य शास्त्र साम्य, योग, न्याय, वैशेषिक मोमासा और वेदान्त, —वट्पुष्प (वट्कवत्पुष्प) छ प्रकार के गुदा की समष्टि चन्ददुर्ग महीदुर्ग गिरिदुर्ग तथैव च । मनुचदुर्ग मृदुचं वनदुर्गमितिकम्नात् नवति । (वट्कवत्ति) छपायने, पञ्चासत् (स्त्री०) (वट्कवत्तसत्) छपाय, —वट् (वट्कवट्) 1 भीरा-न पट्कव नवदलीनपट्पट न वट्पटोत्तौ न जुवञ्च व कलम् भट्टि० १११९, कु० ५१९, २५० ६१९९ 2 जू

अतिथिः आम का दूध, आत्मवचनः असोक या किकिरात दूध, अण्व (वि०) जिस की थोड़ी थोड़ी से घनी है (जैसे कि कामदेव का वनस्प) — प्रायः एषां न बहुनि मयामन्मयः वटपदव्यम् पृथ० ७३, अण्वः नामकेशर नाम का दूध, वही (वटपरी)

1 छ पक्षियों का श्लोक 2 प्रभरी 3 वृद्धः (वटप्रभः) जो छ विषयों में सुपरिचित है अर्थात् बार पुत्रवार्त्त (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) या मानव-जीवन के उद्देश्य और लोकप्रकृति, बहुप्रकृति -- धर्मार्थ-काममोक्ष लोकतत्त्वार्थयोगि । वटपु प्रज्ञा तु मय्यासौ वटप्रज्ञ परीकीर्ति ॥ 2 बिलामी, कामामस्त पुरुष विष्णु (वटविष्णु) विष्णु का विशेषण, आम (वटवाम) छटा भाग, ३ भाग स० ११३१, मनु० ७१३१, ८१३३, भुज (वि०) (वटभुज) 1 स है लहायक जिसके, स कोनो वाला, (अ) वटकाण (अ) 1 दुर्गा का विशेषण 2 तर्बुज, वास (वत्सलः) छ महीने का समय, वासिक (वि०) (वाष्पासिक) छमाही, वर्षवार्षिक, मूख (वत्सुखः) कार्तिकेय का विशेषण रघु० १७१७, (-आ) तर्-दूध, -रसम्-रसाः (पृ० व० व०) (वटसम् आदि) छ रसों की समष्टि दे० 'रस' के अन्तर्गत, राजन् (वटराजन्) छ रातों का समय या अवधि, वर्ष (वटवर्षः) 1 छ वस्तुओं की समष्टि 2 विशेष रूप से मनुष्य के छ लक्ष्, ('वटिपु' भी कहते हैं) काम मोक्षलगा लोभो मदमाही च मत्सर । कुलारिवद्वर्ग वर्धन-वि० ११९, अष्टोत्त वटवर्गम् अष्टि० ११२, --विहसिः (स्त्री०) (वटविहसि) छम्बीय (वट-विहसि छम्बीसवीं), विह (वटविह) (वि०) छ प्रकार का, छ गुना रघु० ४१२६ वटि (स्त्री०) (वटवटि) छासट, -सप्ततिः (वट-सप्तति) छिहत्तर ।

वटिः (स्त्री०) [वटगुणा दगति नि०] माठ मनु० ३१७७, यात्र ३१८६, तत्र साठवीं । मम० भाग शिव का विशेषण, -वत् साठ वर्ष की आयु का हाथी जिसके मम्मक में मद गुना है, योजनी (स्त्री०) साठ योजन का विस्तार या यात्रा, संवत्सर माठ वर्ष की अवधि या समय, हास्य 1 (साठवर्ष की आयु का) हाथी 2 एक प्रकार का वायल ।

वट (वि०) (स्त्री० छी) [वत्ना पूरण वट + इट्, वृत्] छटा, छटा भाग -वट तु लोचजस्याव वटद्या-त्येकादशमात् मनु० १११६६, ७३०, वट्टे भागं विहस्य० २११, रघु० ७७७८ । मम० जस 1 सामान्य छटा भाग -वाह० ३११५ 2 विशेष रूप उपत्र का छटा भाग जिसको कि राजा अपनी प्रजा से मुक्ति के रूप में दान करता है अथवा विष्णु

तपोपमोक्त वट्टासमुद्धा इव रजिताया -रघु० २१ १९, (उपज के मित्र मित्र भेद जिनके छटे भाग का अधिकारी राजा है मनु० ७१३१-२ में बताया गया है) वृत्तिः उपज के छटे भाग का अधिकारी राजा, वट्टासवसेरपि धर्म एव -म० ५१६, अमल छटा योजन, काक तीन दिन में केवल एक बार योजन करने वाला, जैसा कि प्रायश्चित्तस्वकप किया जाता है ।

वट्टी [वट्ट + डीप्] 1 चान्द्रमास के किसी एक की छठ 2 (व्या० में) छठी विभक्ति या सम्बन्ध कारक 3 काव्यावली के रूप में दुर्गा का विशेषण जो गाल्गु विषय मानकाओं में से एक है । मम० -स्तुष्टुव्य छठी विभक्ति के रूप वाला तत्पुरुष ममाम ऐसे समास में विग्रह करने पर पहला पद सर्वे छठी विभक्ति का होता है पूज्यम्, पूजा बालक उत्पन्न होने के छठे दिन छठी देवी की पूजा करना ।

वह्नातु [सह - आत्, अनुक्, पृथो० वत्वम्] 1 घोर 2 यज्ञ ।

वाह् (वध्य०) [मङ् + णि पृथो० वत्वम् सम्बोधक अव्यय ।

वाह्कौलिक (वि०) (स्त्री० की) [वट्कोश + टक्] छः तहों में लिपटा हुआ ।

वाह्वः [वट् + वृत् + अच् तत्. स्वार्थे अच्] 1 रात्र, मनोवेस 2 शाना, समीत 3 (समीत में) एक रात्र जिस में समीत के सात स्वरों में से छ स्वर प्रयुक्त होते हैं पंचम एवम्वि प्रोक्त स्वर वट्भिन्न वाह्वः ।

वाह्वुष्यम् [वट्गुण + ध्यङ्] 1 छ गुणों की समष्टि 2 राजा के द्वारा प्रयुक्त छ युक्तियाँ, राजनीति दे छ उपाय, -सि० २१९३, दे० 'गुण' के अन्तर्गत 3 छ में किसी सत्त्वा का गुणन । मम० प्रयोक्त गजनीति के छ उपाय, या छ युक्तियों का प्रयोग ।

वाष्मानुर [पश्चां मातृभाय् अपत्यम् पश्मात् + अच् उप + ग्य] छ माताओं वाला कार्तिकेय का विशेषण ।

वाष्मान्विक (वि०) (स्त्री० की) [वष्मान् + ठक्] 1 छमाही, वर्षवार्षिक 2 छ महीने का, मोक्षितकाना वाष्मान्विकानाम् - विह० १११७ ।

वाष्ट (वि०) (स्त्री० छी) [वट्ट + अच् स्वार्थे] छटा ।

विह्व [सिट् + मन्, पृथो० वत्वम्] 1 बिलासी, ऐराज, कामुक, कामासक्त 2 प्रेमभिपुन, असक्त प्रेमी विट विह्वैरमल्लत सनभ्रममेव काचित् -वि० ५१३४ ।

बुः [सु + ड, वृषो० वत्सम्] प्रसूति, प्रजनन ।

बोडस (वि०) (स्त्री० स्त्री) [बोडस + डट्]

मालहवी - यद् ० २१६५, ६५१ ।

बोडसम (सम्प्र० वि०) ब० व०, बोलह । सम० - अंशुः

बुद्धमहः - अक्ष (वि०) एक प्रकार का लघुवृक्ष,

अक्षयलक (वि०) प्र वृक्ष की बीड़ाई का, - अक्षयि

केवडा, अक्षि (पु०) वृक्ष वृक्ष - आबर्न, वृक्ष

उपचारः (पु०, ब० व०) किसी दस्त को

अच्छा होल अर्पित करने की मालह रीतियों जिनकी

गिनती यह है - आसन स्वासन पादमर्चननाथपनी

यकम् । मधुपर्कभस्मान्न वसनाभस्मान्न व ।

मधुपर्क भस्मोपवेश कन्दन तथा, कन्दन

का साकह कलारी जिनके नाम यह १ अमृत

मानदा वृषा लुप्त पुष्टि गतिर्धूमः । अश्विनी

धर्मिका कान्तिस्पर्धना श्री. प्रतिनिधि व । बङ्गदा

व तथा पूर्णान्न पाददा के कन्दा बुद्धा दुर्गा की

एक मूर्ति, - बालुका (स्त्री०) ब० व०, मालह दिव्य

भाताएँ जिनके नाम निम्नलिखित हैं गौरी पद्मा

शरी मेधा सावित्री विजया जया । देवसेना स्वधा

स्वाहा मानरा लोकमानरा । जालि पुष्टिर्धूमि-

नृष्टि कुलदकामदेवता ॥

बोडसम (अव्य०) [बोडसन् + वाच्] मालह प्रकार से ।

बोडसिक (वि०) (स्त्री० स्त्री) [बोडसन् + ठक्]

मालह भाषी से युक्त, मालह गुना बोडसिकी

देवतापचार ।

बोडसिन् (पु०) [बोडसन् + इति] अग्निष्टोम यज्ञ

का क्पांतरः ।

बोडा (अव्य०) । वृष - वाच्, वृष लघुवृक्ष, वृष लघुवृक्ष

छ प्रकार से । सम० स्वासन. मधु पर्वते हुए शरीर

स्पर्श के छ. प्रकार, बुद्धः छ मूह वाला, बानिकेय,

ब्राह्म बनीर्धूमिष्टोदामुख मर्मिनि बाबा मा

शटकमिने बरब० ७ ।

बिड (अव्य०) दिवा० ५२० लीर्धान् लीर्धान्, लुप्त

1 बुक्ता मूह से सवार निकालना, 2 गल टपकना,

-मट्टि० १२११, नि, 1 प्रलेप करना, निकालना,

बकेलन १० ४४ रगु० २१५ मट्टि० १४१००,

१४१० १८१४, काव्या० ११५ 2 मूह से सवार

निकालना मन् ४१३० वाक् ३१२३ ।

बोडसन् बकेलन् [लुप्त + ल्यट्, लुप्त + ल्यट्]

1 बुक्ता 2 लार, बुक् बकार ।

बोडस (पु० व० क०) [लुप्त + क्त ऊ] बुक्ता हुआ

बकारा हुआ ।

बोडस बकेल (अव्य० वा०) बकेलने बकेलने जाना,

हिलना-बुलना ।

म

म (अव्य०) मद्र समय लघु या मद्रु, और एक अवस्था

समान गन्धों के स्थान पर आदेश होने वाला उपसर्ग

जा विशेषण अवस्था कियौवस्थान बनाने के लिए

गङ्गा गङ्गा के साथ समान म म म म म म म म म म

अथ ५२२ करता है । १ । म म म म म म म म म म

म म

म म

म म

म म

म म

म म

म म

म म

म म

म म

म म

म म

म म

म म

म म

म म

हुवा दबाया हुआ, बस में बिना हुआ 2 जकडा

हुवा एक स्थान पर बोधा हुआ 3 बंधियों से जकडा

जका 4 बन्दी बंधी कारावासी - रगु० ३१२०

५ उच्छा तैयार ६ अवस्थित २० भग्न लुप्त यम् ।

मम० अक्षयल (वि०) जिसने दिवा० आबर्न के

लिए लघु होने लगे हैं आबर्न वि० जिसने मन

को बस में कर लिया है निपत्रितमना आभिनविही ।

आहार (वि०) मिताहार उवम्पर (वि०)

जिसका वस्तुस्थिति है जिसके घर का सामान

सब कमपुर्वक रक्ता या खेतम् ममल (वि०)

मन को नियन्त्रण ५ अवन वाला प्राण (वि०)

जिसका वस्तुस्थिति किंदा हुआ है प्राणायाम का

अवग्राम करने वाला वाच् (वि०) मूक, मोन रहने

वाला, मितभाषी ।

संपत्त (वि०) [सम् + यत् + क्त] 1 सत्त्व, तत्पर,

तैयार महावीर २ १५१ 2 मावधान, सत्क ।

संभवः [सम् + भव + अव्य] 1 प्रतिबन्ध, रोकथाम, निव-

न्धन-शोकादीनीन्द्रियाण्यन्ते मयमानिबु बुद्धि-बल०

४।२६, २७ २. मन की एकाग्रता, योग की अंतिम तीन अवस्थाओं की प्रकट करने वाला शब्द—धारणा-ध्यानसमाधिप्रथमस्तरं सयमपवबाधम् सर्वं०, कु० २।५९ ३ धार्मिक कृत ४ धार्मिक भक्ति, तपस्साधना, —स० ४।१९ ५. दयाभाव, करुणा की भावना ।

संयमनम् [सम् + यम् + ल्युट्] १ प्रसन्नत्व, रोकना २ अतःकरण श० १ ३ बाधना उत्तर० १, विक्रम० ३।६ ४ कैद ५. बाधोत्सर्ग, नियन्त्रण ६ धार्मिक कृत या आभार ७ चार धरो का बन्ध, —स० नियामक, शासक, —नौ धर्म की नगरी का नाम ।

संयमित (यू० क० क०) [सयम् + णिच् + क्त] १. नियमित २. बद्ध, बंदी से जकड़ा हुआ ३. निबद्ध, रोका हुआ ।

संयमिन् (वि०) [सम् + यम् + णिनि] रमन करने वाला, रोकने वाला, नियमित करने वाला —(यू०) जिसने अपने भावों को रोक लिया या नियमन में कर लिया, श्रुति, दयासी रघु० ८।११, भग० २।६९ ।

संयमः [सम् + या + ल्युट्] सांघा, यम् १ नाच-साधना, मिलाकर चलना २. नाचा करना, प्रसन्न करना ३. शब्द हो उठ कर के जाना ।

संयमः [सम् + यम् + षञ्] दे० 'समय' ।

संयमः [सम् + य् + षञ्] नेह के आटे का मिष्टान्न, हस्ता मनु० ५।७ ।

संयुक्त (यू० क० क०) [यम् + युज् + क्त] १ मिला हुआ, जुड़ा हुआ, सम्मिलित २ सम्मिश्रित, मिला हुआ, संयुक्त ३ सहित ४ संपन्न, से युक्त ५ अमिश्रित, बना हुआ ।

संयुजः [सम् + युज् + क, जश्च न] १. संयोजन, मिलाप, मिश्रण २ लड़ाई, सङ्ग्राम, युद्ध, सङ्घर्ष —संयुगे सांयु-नील तनुकृतं प्रसहेत क कु० २।५७, रघु० ९।१९ । सम० शौक्यवन् मिश्रत, नान्य या युष्मद् भगवा-माम्नी हात पर कमल ।

संयुज् (वि०) [यम् + युज् + क्तिन्] मबद्ध, मबध रखने वाला सि० १५।५५ ।

संयुक्त (यू० क० क०) [सम् + यु + क्त] १ मिला हुआ, एकत्र जोड़ा हुआ, सवद्ध २ संपन्न, सहित, दे० सम् पूर्वक 'यु' ।

संयोजः [सम् + युज् + षञ्] १ संयोजन, मिलाप, मिश्रण, समय, मिलना-जुलना, घमिष्टना संयोगो हि विवि-धस्य स्वेक्यमनि सप्रथम् सूत्रा० २ जोड़ना (वेद्येति के चौबीस गुणों में से एक) ३ जोड़ मिलाना ४ संघय आभरणसंयोगा—मा० ६ ५ दो राजाओं में किसी एक से समान उद्देश्य के लिए मिलना ६. (ज्या० में) सङ्कुल ध्यान ७ (उद्यो० में)

दो तारिकाओं का मिलन ८. शिख का विशेषण । सम० - युष्मत्स्य अनित्य संबंधों का पारंब्य, —विच्छिन्न साध-साध मिलाकर जानने से रोग उत्पन्न करने वाला बाधपदार्थ ।

संयोगिन् (वि०) [सयोग + णिनि] १ मिलाया हुआ, सम्मिलित २ मिलने वाला ।

संयोग्यम् [सम् + युज् + ल्युट्] १. मिलाप, एक साथ जोड़ना २ संयुज, संयोग ।

संयुक्त (यू० क० क०) [सम् + रज् + क्त] १ रवीन्द्र, काल २ अनेकपूर्व, प्रणयानि में दग्ध ३ क्रुद्ध, चिद्विद्या, क्रोधानि से जकटा हुआ ४ मोहित, मूढ़ ५ लावण्यमय, सुन्दर ।

संयुजः [सम् + रज् + षञ्] प्ररक्षण, देख-भाल, सधारण ।

संयुज्यम् [सम् + रज् + ल्युट्] १ प्ररक्षण, सधारण २ उत्तराधिकार विरागी ।

संयुज् (यू० क० क०) [सम् + रज् + क्त] १ उन्नेत्रित विभुज् २ प्रज्वालन, सकुम्ब, क्रुद्ध, प्रीचन ३ वधित ४ मृदा हुआ ५ अनिमृत् ।

संयुज् [सम् + रज् + षञ्, यम्] १ बारम्ब २ हुल्कड़, क्षमबली, उग्रता, प्रवण्डता श० ७ ३ विक्षोभ, उत्तेजना, हुडबुडी —कु० ३।४८ ४ ऊर्जा, उत्साह उत्कण्ठ रघु० १०.१६ ५ कोष, रोष, कोप —प्रति पातप्रतीकार सर्वतो हि बहुधननाम् रघु० ४।६४, १२।३६, विक्रम० २।२१, ४।२८ ६ चमद, महकार ७ कोष और जलन (कोड़े फुंसी की) । सम० - यक्ष (वि०) जो गुस्से के कारण कठोर हो गया हो, रत (वि०) अत्यंत क्रुद्ध, केव. कोष की उग्रता ।

संयुज् (वि०) (स्त्री० औ) [संयुज् + णिनि] १ उन्ने-जित, विभुज्, हुडबुडी से युक्त सि० २।६७ २ क्रुद्ध, प्रकुपित, रोषाविष्ट ३ चपटी, जहकारी ।

संयुजः [सम् + रज् + षञ्] १ रवत २ प्रणयोन्माद, अनुरक्ति ३ रोष कोष ।

संयुज्यम् [सम् + रज् + ल्युट्] १ प्रसन्न करना, सेल करना, प्रजा आदि के द्वारा मुष्ट करना २ मत्पन्न करना ३ प्रकृष्ट या पहर मनन ।

संयुजः [यम् + र + षञ्] १ युल्लगपादा, हस्तायुक्ता, शौरयुल २ कोलाहल ।

संयुज् (यू० क० क०) [सम् + रज् + क्त] या टुकड़ टुकड़े हो गया हो, चूर-चूर, छिन्नविन्न ।

संयुज् (यू० क० क०) [सम् + रज् + क्त] १ रोका गया, बाधित, अवरोध २ कैदा हुआ, धरा हुआ ३ बेरा डाला हुआ, बेधित, डेपकड़ा ४ डका हुआ, छिपाया हुआ ५ अरधीकृत, अटकाया हुआ, दे० सम् पूर्वक 'यु' ।

संयुज् (यू० क० क०) [यम् + रज् + क्त] १ नाच नाच

उगा हुआ 2 किसानिन, बाब भरा हुआ, जैसा कि
सकलेश्वर में 3 फूटा हुआ, अकुर निकला हुआ,
मुकुलित, उज्जा हुआ रघु० ६।४७ 4 पक्का जमा
हुआ, जिसकी जड़ दब हो गई हो 5 साहसी,
भरोसे का ।

संरोधः [सम् + र्ध + क्त] 1 पूरी रकाबट या विष्म,
अवचन, रोक, राक बाध 2 घेराबंदी, घेरा 3. बधन,
बेबी 4 फँसना, डालना ।

संरोधम् [सम् + र्ध + क्त] रकाबट, उहराना,
रोकना ।

संलक्षणम् [सम् + ल् + क्त] निशान लगाना, पहना-
ना चिह्न करना ।

संलक्ष (भू० क० क०) [सम् + ल् + क्त] 1 घनिष्ठ,
मटा हुआ, सड़न, जुड़ा हुआ 2. मुत्तमयुक्ता होना,
भिड़ जाना ।

संलघः [सम् + ली + क्त] 1 भेटना, सोना 2 घुल
जाना 3 प्रलय ।

संलघम् [सम् + ली + क्त] 1 जुड़ जाना, चिपक
जाना 2 घुल जाना ।

संलक्षित (भू० क० क०) [सम् + ल् + क्त] लाइ
लगाया हुआ, प्यार किया हुआ ।

संलपः [सम् + लप् + क्त] 1 सम लप, बातचीत,
प्रवचन 2. घोषनीय या गुप्त बातें, अंतरंग बातलाप,
3 (नाटकीय) एक प्रकार का सवाद, सम्भाषण ।

संलपकः [संलप + क्त] एक प्रकार का उपरूपक, सवा-
दारक प्रकार का, द० सा० द० ५४९ ।

संलीन (भू० क० क०) [सम् + लि + क्त] बाटा
हुआ, उपयुक्त ।

संलीन (भू० क० क०) [सम् + ली + क्त] 1 बिपटा
हुआ, जुड़ा हुआ 2 साप साध मिलाया हुआ
3 छिपाया हुआ, गुप्त रक्खा हुआ 4 सड़ना हुआ
5 मिश्रित हुआ जिकन पड़ा हुआ । नन कण
(वि०) जिसमें नान नीन लटके हों, घातक (वि०)
विनयना, उदास

संलोडनम् [सम् + लोड् + क्त] बाधा डालना गड़बड़
करना ।

संलप (अव्य०) [सम् + लप् + क्त] 1 लप 2 बिबाध क
विमोदित करे, (सागीन्ता
से ५९ वर्ष पूर्व आरम्भ हुआ था ।

संलपः [संलप + क्त] 1 लप 2 बिबाध क
विमोदित करे, (सागीन्ता
से ५९ वर्ष पूर्व आरम्भ हुआ था ।

संलपः [सम् + लप् + क्त] 1 लप 2 बिबाध क
विमोदित करे, (सागीन्ता
से ५९ वर्ष पूर्व आरम्भ हुआ था ।

कर बाँटें करना 2 समाचार देना 3 परीक्षण, सवाल
करना 4 जासू मंत्र के द्वारा वन में करना 5 मन्त्र,
ताबीज ।

संवरः [सम् + वृ + क्त वा अच्] 1 दक्कन 2 समस्त
3 सरीसन, सफोचन 4 बाँध, सेतु, पुल 5. एक प्रकार
का हरिण 6 एक राक्षस का नाम- द० सवर, रघु
1 छिपाव 2 महुतशीलता, आत्मनियन्त्रण 3. जल
4 बोझो का एक विशेष धार्मिक अनुष्ठान ।

संवरणम् [सम् + वृ + क्त] 1 आवरण, आच्छादन
2 छिपाव, ढाँच-माँ ३ बहाना, छपदेस
द० सवर भी ।

संवरणम् [सम् + वृ + क्त] 1 आत्मसात्करण 2 उप-
माग करना लप जाना ।

संवरतं [सम् + वृ + क्त] 1 मुहना 2 घुलना, बिनाश
3 सवार का नियतकालिक प्रत्यय महावीर० ६।७६
4 बादल ५ (जल से भरा हुआ) बादल 6 समार
में प्रलय होने पर उठने वाले सान बादलों में से एक
7 वर्ष 8 सड़न समुच्चय ।

संवरतः [सम् + वृ + क्त] 1 एक प्रकार का
बादल 2 प्रलयार्थि, विनयप्रत्यय के समय सवार का
प्रसन्न करने वाली आय-वृत्तिप्रिय बहवानसः मह
समस्तसंवरतं-वर्तु-२।७६ ३ बहवानस 4. दक्क-
गम का नाम ।

संवरतकिन् (पु०) [संवरत + क्त] बलराम का नाम ।

संवरितः [संवर + क्त] 1 कनक का नया
पत्ता 2 परगल केसर के पास की पम्बड़ी 3 दीप
जिखा जादि (दीपादे जिखा-तारा०) ।

संवरण (वि०) (स्त्री०) जिखा [सम् + वृ + क्त]
1 वृत्त 2 पूर्ण विकसित करने वाला बढ़ाने वाला
2 सवार करने वग्न स्थापन करने वाला (अध्या-
यता का) प्रातिपदिकार्थ ।

संवरित (भू० क० क०) [सम् + वृ + क्त] ५
1 पाता-पाता हुआ, पातन उपपन्न किया हुआ
2 बढ़ाया हुआ ।

संवरित (भू० क० क०) [सम् + वृ + क्त] 1 साध
मिला हुआ, मिश्रित हुआ, मिश्रित मा० ६।५
2 पर किया हुआ ना० ४।२ 3 सबद्ध, समुक्त
4 पूरा हुआ उदात्तः सखलनसंवरितः (अव्यय)
कि० ६।४ ।

संवरित (वि०) [सम् + वृ + क्त] 1 ददन्ति विग
हुआ, लप बर्बाद मा० ५।२९ ।

संवरणः [सम् + वृ + क्त] 1 विकर रहने का व्याप,
ग्राम, बर्ता ।

संवरः [सम् + वृ + क्त] 1 लप के सान भागों में से
तोसरा भाग ।

संवाहः [सम् + वह् + घञ्] 1 मिलकर बोलना, बात चीन, बातलाप, कथोपकथन, महावीर० १।१२
2 चर्चा, वादविवाद 3 समाचार देना 4 सूचना, समाचार 5 स्वीकृति, सहमति 6 समनुरूपता, मेल-जोल, समानता, सादृश्य रूपसमादायक मध्याह्नया पुष्ट दश०, (नाद) शिवाकर्षी परिचित इव श्रोत-नवादेनेति भा० ५।२०।

संवादिन् (वि०) [संवाद + इति] 1 बोलने वाला, बातचीत करने वाला 2 सदन, समान मिलन-जुलता अनुकूल षड्व्रत्सबादिनी केका—रघु० १। ३९, अस्मद्वृत्सबादिन्याकृति उत्तर० ६।

संवारः [सम् + वृ + घञ्] 1 आवरण प्राञ्जलरन 2 वर्णोच्चारण के समय कव्यादिको का सकोचन मन्त्र उच्चारण (विष० विचार) 3 युनना 4 परम्परा, सरक्षण 5 मुख्यवस्थापन।

संवाताः [सम् + वृ + घञ्] 1 मिलकर रहना 2 समाज, मण्डली वक्ता १।५० 3 घेरल व्यवहार 4 घर, आवास स्थान 5 मनोरंजन के या नभा आदि के लिए मूला मंदान।

संवाहः [सम् + वह् + घञ्] 1 ले जाना देना 2 मिलकर दबाला 3 मालिश करना मूट्टी भरना 4 बहु नीकर जो मालिश करने या मूट्टी भरने के लिए रक्का गया हो।

संवाहकः [सम् + वह् + क्तृन्] 1 मालिश करने वाला, हे० ऊपर संवाह (4)।

संवाहनम्, -ना [सम् + वह् + घिञ् + ल्युट्] 1 बाधा होना, उठाकर ले जाना 2 मालिश करना मूट्टी भरना, --उत्तर० १।२४, भा० १।२५।

संविधानम् [सम् + वि + क्त] जलम किया हुआ, विशिष्ट।

संविद्य [सम् + वि + क्त] 1 विलुब्ध, उन्मजित, अस्थाय, उद्भिन्न, हृदयवाया हुआ बीसा कि 'संविद्य मानस' में 2 वस्तु, चीन।

संविज्ञात (भू० क० क०) [सम् + वि + ज्ञा + क्त] विषयविहित, सबके द्वारा माना हुआ, सर्वसम्मत।

संविज्ञितः (स्त्री०) [सम् + वि + क्त + क्तिन्] 1 ज्ञान, प्रत्यक्षज्ञान वेदना, जाबना स्वस्वव्या मुक्तविज्ञित स्वमचीवाञ्जुलतनी--कि० ११।३४, ११।३२ 2 मयज, बुद्धि 3 पहचान, प्रत्यास्मरण 4 (भावना का) बोधनस्य, मानसिक समझीता।

संविद्य (स्त्री०) [सम् + वि + क्त + क्तिन्] 1 ज्ञा समझ, बुद्धि - कि० १८।४२ 2 वेदना, प्रत्यक्षज्ञान भा० १।१३ 3 इकरार, बचन, मविद्या, वसुध्व, प्रतिज्ञा रघु० ७।३१ 4 स्वीकृति, सहमति 5 माना हुआ प्रचलन, सिद्धि प्रथा 6 विज्ञान, बुद्ध, लकाई 7 बुद्ध

की ललकार, प्रहरी सहन 8 नाम, अभिधान 9 विद्वत् सकत 10 प्रमत्त करना, लुप्त करना, तुष्टीकरण सि० १६।३० 11 सन्तानुमति, माध देना 12 मनन 13 बातलाप, मलाप 14 भाव। सम्० --अनिकम् प्रविज्ञा भग करना, मविद्या का उत्पन्न।

संविद्या [संवि + टाप्] करार, प्रतिज्ञा ठेका।

संविदात (वि०) जानन वाला प्रतिभशाली 2 सामनस्य पूर्ण।

संविदित (भू० क० क०) [सम् + विद + क्त] 1 जाना हुआ समझा हुआ 2 परचाहा हुआ 3 सुविदात विभूत 4 बोझा हुआ 5 सम्पत् 6 आश्रित मगक्षाया वृत्ताया हुआ ६० गम ७।१३ 32 सम करार प्रतिज्ञा।

संविधा [सम् + वि + धा + क्त] 1 व्यवस्था उपक्रमण धाराधन रस आ० १० १४ २ 3 जीवन गानन का दण जाननवयो क साधन रघु० १।५३।

संविधानम् [सम् + वि + धा + क्त] 1 व्यवस्था प्रकथन २ ३ व्यवस्था 3 सामाजिक रीति 4 कान ५ विधायन म] धारणा का क्रम भा० ६।

संविधानकम् [संविधान + क्त] 1 (व्यवस्था म] धारणा का क्रम विधाना २ 3 व्यवस्था जहा मविधान बम् उत्तर० २ 2 प्रद्वन कम प्रसाधारण धरना।

संविभाग [सम् + वि + भज + क्त] 1 विभाजन वाचना 2 भाग भज विभा।

संविभागिन् (भू०) [संविभाग + इति] सविभाग हिस्सदार साम्राज्य।

संविष्ट (भू० क० क०) [सम् + वि + क्त] 1 सोना हुआ लेना हुआ रघु० १।१५ 2 माध-नाम लुप्त हुआ 3 मिलकर बैठना हुआ 4 वस्त्र पहने हुए कपडे धारण किये हुए।

संवीक्षणम् [सम् + वि + ईक्ष + ल्युट्] मय दिशाओ म देखना लोख लोई हुई वस्तु की तलाश।

सवीत (भू० क० क०) [सम् + वी + क्त] 1 वस्त्रों से मजिन्न कपडे पहन हुए 2 ठका हुआ, लियटा हुआ, अविच्छादिन 3 अलक्ष्ण 4 लपटा हुआ, घेरा हुआ, बन्द बिना हुआ, परिपोषित 5 अभिभूत।

संवृत्त (भू० क० क०) [सम् + वृ + क्त] 1 लारया हुआ, उपभूत 2 मष्ट।

संवृत (भू० क० क०) [सम् + वृ + क्त] 1 ठका हुआ आच्छादिन मुहुरक्युल्लिखताचरोष्ठ (मूलम)--भा० 3।२५ 2 प्रच्छन्न, मूल भा० २।११ 3 रहस्य 4 समाप्त बन्ध, सुरक्षित 5 अवकाश प्राप्त, एकाल-मेवी 6 मकुचित भीका हुआ 7 बन्धुबंध छोड़ा हुआ जका किया हुआ 8 बरा हुआ, पूर्ण 9 सहित, दे० सम् पूर्वक व् सम् 1 मूल स्थान, एकाल स्थान

गोपनीयता 2 उच्चारण का एक प्रकार । सम०
आकार (वि०) आ अपनी आन्तरिक भावनाओं
को बाहर प्रकट नहीं होने देना है जो अपने मन के
विचारों का जग पता नहीं देना, मन्त्र (वि०) आ
आपनी योजनाओं को गुप्त रखना है रघु० १।२० ।
सकृति (स्त्री०) । सम - वृत्ति । 1 आवरण आच्छा
दा 2 छिपाए जाना गुप्त रखना कि० १०।६०
3 पुनः प्रयाजन अविमर्श ।
सकृत् (अ० ४० क०) । सम ३५ क्त । 1 दृष्टा घटा
पातित हुआ 2 भगा गया भाग्य 3 संविद गकरवान
पर शक्ति 4 बान हुआ गया हुआ 5 इका हुआ
6 मुसन्विद क इराफ का नाम ।
सकृति (स्त्री०) । सम + क्त । 1 इना पटना
वर्तित हुआ 2 निराशा 3 अरण ।
सकृदि (पुं० क० १०) । सम + क्त । 1 पूर्ण
विकसित, बढ़ा हुआ पूर्ण वृद्धि का प्राप्त 2 उड़ा ग
आका बड़ा हुआ 3 विना 3 समद्विधा 4 विना
हुआ 5 इना पुनः हुआ
सकृत् । सम विद् वडा 1 विज्ञान इन्द्रको 2
अना महावीर 3 2 अष्ट गति आध्यात्मिका
प्रचक्षण उपाय 4 मा 5 3 अन्ती
वर्ण 4 इन्द्रान वास पाहा बड़ा 1 इन्द्रमा ।
सकृत् । सम विद् वडा 1 प्रत्यक्षान आनकारो
जाना, भावना ।
सकृत् । सम विद् वडा 1 प्रत्यक्षान
आनकारी 2 तब अनुमति भावना अनुमति
भोगना 3 अस्वभाविक गम वेत-अध्यात्म उलार
१।१७ 1 देना आभयमर्पण करना मुद्रा-
१।२३ ।
सकृत् । सम विद् वडा 1 निद्रा विश्राम रघु०
१।१३ 2 स्वान 3 अमन (कुर्सी आदि) 4 मंदन
समीप या संगम विशेष ।
सकृत् । सम + क्त + क्त । मंदन मगान ।
सकृत् । सम + क्त + क्त । 1 आचरण परिचयन
2 बन्ध, कपडा पहनान 3 उपाय दस्त्र कि०
१८।६१ ।
सकृत् । सम क्त + क्त + क्त । 1 बह याडा
जिसने बह से न भागने की गण्य भावी हो और आ
दूसरे कीड़ाको का भागने से रोकने के लिए रखा
गया हो 2 उड़ा हुआ घोड़ा 3 सहयोगी घोड़ा 4 वह
वहन्विकारी जिसके किसी का भार डालने का बीडा
उठाया हो ।
सकृत् । सम + क्त + क्त । 1 मदेह, अनिश्चिति चप-
ला, संकोच मनसु में मगयमेव पाहने कु० ५।
४६, स्वयम् सत्यस्यास्य ज्ञेयान न हि उपपद्यते

मग० ६।३९ 2 अका, अक 3 मदेह, या अनिश्चय
(मग० में) म्यायवर्तन में बधित सालह भवा में से एक
-एक अमिकविषयवाक्यप्रकारक ज्ञान सद्य 4 बर,
सतरा आनिम न मगयमनाहृष्ट नरो । भद्राणि
वर्षान हि० २।७, याता पुन सद्यमस्यवेच-मा०
१०।१३ कि० १३।१६ केषी० ६।१ 5 समाधना ।
मग० आत्मन् (वि०) मदेह करने वाला, लकाहीक,
आपन्न, उबेल, - स्व (वि०) मदेहपूर्ण, अवि-
श्विचर अश्विचर मत (वि०) सत्य में पडा हुआ
गु० १ छेद मदेह का निवारण, निर्बन्ध,
छेदिन (वि०) सभी सबैहो को मिटाने वाला,
निर्गन्धमय- श० ३ ।
समाधान, समाधा, (वि०) । सम + धा + क्त, संक्षेप
आशुच । सन्धपूर्ण अश्विचर अनिश्चित,
जबन ।
समाचरण । सम - गृ + क्त + क्त । पुष्ट का आरम्भ आक-
मण बड़ाई धावा ।
समाधत् । पु० क० क०, [सम + धा + क्त] 1 तब
1 वृष्ट हुआ आनिश्चय किया हुआ 2 तब तीव्र
3 मन्त्रा पुरा किता हुआ क्षमास्वित, निष्पन्न
4 विज्ञान मुक्तिजन निर्धारित निश्चित । सम०
आत्मन् (वि०) जिसका मन मन्त्रा परिचय का
अनित्य है छत (वि०) जिसने अपनी प्रतिष्ठा
गुनी कर ली है ।
समुद्र (पुं० क० क०) । सम + शृ + क्त । 1 पुरी
नरद हुआ गया हुआ पवित्र 2 पालित किया हुआ,
मस्कृत 3 1 श्विन के द्वारा विषुद किया हुआ ।
समुद्रि (स्त्री०) । सम + शृ + क्त । 1 निरास
रविनी रच मग० १५।१ 2 स्वच्छ करना, धिसल
करना 3 समाधन, समाधान परिशोधन 4 स्वच्छता,
मस्कृत 5 (कण का) मयतान ।
समाचरण । सम + गृ + क्त + क्त । पवित्रीकरण, स्वच्छता
आदि ।
समृद्ध । सम + क्त + क्त । दाह-यैष, वात-
नरा, इन्द्राज, मरीचिका पु० जाहूर ।
समाधान । पु० क० क० । [सम + धा + क्त] 1 समु-
चित । सिकुटा हुआ 2 जमा हुआ, ठिठुरा हुआ
3 लोटा हुआ 4 रमलमा ।
सम्यक् । सम + वि + क्त । विश्रामस्वत, आराम स्थान,
निवासरथान, वासस्थान-परस्पर विरोधित्वोक्तसम्यक्-
दुर्बन्ध विषय० ५।२४ रघु० १५।१, इस अर्थ में
प्राय समास के अन्त में, 'साध रहने वाला' 'सम्यक् वा
विषय' 'निर्देशानुसार'—आदि कुल्लेसम्यक्—अ०
५।१७ नोसभय रघु० १६।१७, अनोरोप्यवा
सामिनीलसम्यक् कु० ५।६०, द्विसंख्या प्रीतिमया

लक्ष्मी - १।४३ एकार्थसम्प्रयुक्तयो प्रयोगम्
मालिङ्ग १ २ प्ररक्षण या शरण की शोच, शरण
के लिए दीहना, मित्रता करना पारस्परिक प्ररक्षण
के लिए स्रष्टि होना, राजनीति में वर्णित छ उपायो
में से एक, वे 'युग्म' के अन्तर्गत भी, मनु० ७।१६०
३ आश्रय, शरण, आश्रय, प्ररक्षण बनाह अनपायिनि
मन्त्रयुक्ते नक्षत्रे पतना बल्करी कु० ४।३१
वेध० १७, पञ्च० १।२२।

संक्षेप [सम् + धृ + क्त्वा] १ ध्यानपूर्वक मुनना २ प्रान्तज्ञा,
करार, वादा।

संक्षेपम् [सम् + धृ + क्त्वा] १ मुनना २ कान।

संक्षिप्त (यु० क० क०) [सम् + धृ + क्त] १ शरण में
गया हुआ २ सहारा दिया हुआ आश्रय दिया हुआ।

संक्षुत्त (यु० क० क०) [सम् + धृ + क्त] १ प्रतिज्ञात
करा किया हुआ २ भली भाँति मुना हुआ।

संक्षिप्त (यु० क० क०) [सम् + धृ + क्त] १ बाँधा
हुआ, साथ साथ मिला हुआ जुड़ा हुआ, संयुक्त
२ आक्षिप्त ३ सबद्ध, साथ साथ जुड़ा ४ सटा हुआ
सम्बन्धी, संसक्त ५ सुसंयोजन युक्त, सहित।

संक्षेपः [सम् + धृ + क्त] १ आक्षिप्त, परिस्मरण
२ झिझक, संक्षेप, संक्षेप।

संक्षेपम् - वा [सम् + धृ + क्त] १ झिझक
कीकना २ साथ साथ बांधने का साधन।

संक्षेप (यु० क० क०) [सम् + धृ + क्त] १ साथ
जुड़ा हुआ, चिपका हुआ २ जमा हुआ मलय
बाधक, सटा हुआ ३ साथ मिलाया हुआ, ध्रुवला
बद्ध, पास पास मिला हुआ मनु० ७।२६ ४ निकट,
आसन्न, सटा हुआ ५ अव्यवस्थित मिश्र हुआ
मिश्रित, गूँथगूँथ किया हुआ मदमूलमयुगे
मुक्तसलकदपेक पा० १।५, बलिन्दबन्धा मयुरा गता
प्रिय बद्धोमिसमकजलेव वाति मनु० १।६० मा०
५।११ ६ सटा हुआ जुला हुआ ७ साथ रहित
है, अकड़ा हुआ, प्रतिबद्ध। सम० वनम् (वि०)
विशका मन किमो विषय पर जमा हुआ हा युग
(वि०) जुए में जुला हुआ, जीन क्या गया कि०
३।६३।

संक्षेपिकः [सम् + धृ + क्त] १ सटे रहना घनिष्ट
बिम्बन या समय कि० - ७ २ घनिष्ट संपक
साम्यीय ३ आपका मजजा, घनिष्टता घनिष्ट री
अथ सि० १।६० ३ बाँटना, झिझक कर अकड़ना
३ अधिक (विशेष दाय) दस्युस्तना।

संक्षेप (वि०) [सम् + धृ + क्त] १ सटा सतिग्न
गन्ध मयमूत्राने युष्मायिहार कि० १।२६ ३४
संसदि लब्धकीर्ति - पञ्च० १ मनु० १६।२४ २ साग
मनु० ८।५२।

संक्षेपम् [सम् + धृ + क्त] १ जाना, प्रगति करना,
चक्कर काटना २ ससार, सांसारिक जीवन, लौकिक
मत्ता धीम्यचक्ष्मकरमध्यस्थलीध्वजालसंरक्षतापित
मृते मासि० ४।६ ३ जन्म और पुनर्जन्म ४ सना
का निर्वाण कृत् ५ युद्ध का कारण ६ राजमार्ग
७ नगर के दरवाजों के समीप की चर्मशाला।

संक्षेप [सम् + धृ + क्त] १ सम्मिश्रण, सम्मेलन, मिलाप
२ सम्पर्क, सन्धि, साहचर्य, समाज सत्सर्गमुक्ति
लक्ष्ये भूत० २।६२, स० २।३ ३ सामीप्य, सम्बन्ध
४ मेल-जोल परिचय ५ मैथुन, सम्भोग मनु०
६।७२ ६ सह-अस्तित्व घनिष्ट सम्बन्ध। सम०

अभाव अभाव क दो मुख्य वेदा में से एक, सापेक्ष
अभाव आ तीन प्रकार का है (प्रागभाव पूर्ववर्ती
अभाव प्रत्यक्षाभाव आपत्ती अभाव और अत्यन्ता-
भाव निरपेक्ष अस्तित्व-व), दोष साहचर्य या
संगति के विशेषकर कुसंगति के कलस्वरूप उत्पन्न होने
वाली बुराई या दोष।

संक्षेप (वि०) [सम् + धृ + क्त] संयुक्त झिझा हुआ
(यु०) सहचर साथी।

संक्षेपम् [सम् + धृ + क्त] १ सम्मिश्रण २ छोटना
परिष्कार करना ३ बाली करना, धुन्व करना।

संक्षेप [सम् + धृ + क्त] १ मरकना रंगना २ बल-
मास नीः का महीना जो अथमास वाले वर्ष में
होता है।

संक्षेपम् [सम् + धृ + क्त] १ मरकना २ अधानक
आक्रमण सहना वाला।

संक्षेप (वि०) [सम् + धृ + क्त] मरकने वाला रंगने
वाला कु० ७।८१।

संक्षेप [सम् + धृ + क्त] [सम् + धृ + क्त]।

संक्षेप [सम् + धृ + क्त] १ मार्ग रास्ता २ सांसारिक
आरतक धर्मनिगम बोधन लौकिक जिवनी,
दुनिया असार संसार मनु० १ मा० ५।३०,
सांसारिकधर्म [सं] सांसारिकधर्मसाधना धुवधते
अथ० १० या परिश्रमिनि समारे मृत को वा न
जा १।५० १।५३ ३ आवागमन, प्रमात्तर, प्रम-
गर्पना ४ सांसारिक धर्म सम० - मन्त्रमन्त्रावामन
मृष कामदेव का विषयण मार्ग १ मनु० ४
बानो वा कम सांसारिक जीवन २ योगमार्ग
अमार्ग बोध - बोधमन्त्र एहिक जीवन म मार्ग।

संक्षेप (वि०) (वि० - ली) [संक्षेप + इति] लौकिक
दुनिया का दशावस्थाया यु० १ सजीव प्राणी
मनु० २ बोधधर्म, बोधधर्म।

संक्षेप (यु० क० क०) [सम् + धृ + क्त] १ मरकना
निष्पन्न पूरा किया हुआ २ जिने बाध की सिद्धि
प्राप्त हो गई है, मुक्त।

संक्षिप्तः (स्त्री०) [सम् + सिष् + क्तिन्] १ पूर्णता, पूर्ण निष्पन्नता स्वसृष्टिजन्य वस्तुस्य ससिद्धिर्गुणोप-
पन्नं भावः ॥ २१६३ २ कैवल्य, मोक्ष - संक्षिप्तं
परमा गता - भा० ८१२५ ३२० ३ प्रकृति नैसर्गिक
वृत्ति, अवस्था या गुण ४ प्रपञ्चान्तर या नखे में
चूर स्त्री ।

समुच्चयम् [सम् + सूच + क्त] १ प्रकट करना मित्र
करना २ सूचित करना, कहना ३ मनेन करना भद्र
आशयना अर्थस्य समुच्चयम् ४ सम्मति सिद्धयन्ता ।

संस्तुति (स्त्री०) [सम् + स्तु + क्तिन्] १ सागं धारा
प्रवाह २ लौकिक जीवन समारम्भ ३ दहन-रगमन
आवागमन - किं वा निपातयामि समस्तगर्भमध्ये भाषि०
६३२ स्ति० १६६२, तु० भगवत् ।

समृद्धिः (सु० क० कृ०) [सम् + सूज् + क्त] १ मिश्रित
मिश्रा हुआ भाव भाव मिश्राया हुआ सम्मिश्रित
किया हुआ २ मासीदारी की शक्ति वायु भाव मरुद
३ प्रसार ४ पुनर्वृत्ति ५ पोषा हुआ ६ निमित्त
७ स्वयं वस्तु से समृद्धिजन्य ।

समुत्पत्ता-न्वयः [सम् + सूज् + क्त + ता (त्वम्) १ समाज
मध्य २ (विधि में) आधिक जिन की दृष्टि से बहु
बाह्यता का ऐच्छिक पुनर्मिलन (जैसे कि पिता और
पुत्र का अथवा मर्त्या के विभाजन के पश्चात
माइया का) ।

संस्तुति (स्त्री०) [सम् + सूज् + क्तिन्] १ मन्त्र,
मिथ्या २ माहवर्ष मेघ शूल सन्तानिता, सासीदारी
३ एक ही परिवार में मिश्रण करना २० समुत्पत्ता
(२) ४ मन्त्र - मन्त्र करना जानना ६ (सा०
में) एक ही मन्त्र में दो या दो से अधिक अक्षरों
का अक्षर रूप से सन्न परिवर्तन 'मन्त्रान्तेसन्नेष'
(सन्तानित श्रुतिगम्य) शिष्टोः समस्त-सन्ताने सा०
२० ५५६ ।

संस्तुति [सम् + सूज् + क्त] सिद्धयन्ता जल से उत्पन्न
करता ।

संस्तुति (पु०) [सम् + सूज् + क्त] १ आ सम्मिलन करना
है, जाना जाना है या किया पार की निरूपण
करना है मनु० ५११२ २ आ अभिप्राय करना है
पहल करना है उत्तर० ११२ ।

संस्तुति [सम् + सूज् + क्त] १ पुनर् करना सम्मिलन
करना, पालना करना (भाषा) पुनर्करणकार द्वारा
विकसित शब्द २५० ३१२ २ संस्तुति - संस्तुति, अक्षर
करण की दृष्टि से (अक्षर की) निरूपण २५०
३२० (यही प्रसिद्ध - व्याकरण-या 'सिद्धि' विज्ञाना
:) २५० १५३६ ३ शिक्षा, अनुसंधान (मानसिक)
शिक्षण - निगमनकारी शक्ति इत्येतो गुण एक
द्वारा ज्ञान-भाव २५० ३३२५ कु० ३१२५

४ तैयार करना, आसम्भवा ५ जाना जाना, योग्य
पदार्थ तैयार करना ६ श्रुति, सवावट, अक्षरकार
स्वभावमुत्तर वस्तु न सम्कारमपेक्षित दृष्टान्त
६९, सा० ३१२३, मुद्रा० २११० ७ अभिप्राय, ज्ञान -
शक्ति, पारमौकिक ८ छाप, रूप, मांस, कार्यवाही,
प्रभाव यक्ष के भावने जल सत्कारो मायिका भवन्
- हि० प्र० ८, मनु० ३१८४ ९ विचार भाव, प्रत्यय
१० मन शक्ति या शक्ति ११ कार्य का प्रभाव,
विधि कर्म का गुण २५० ११०० १२ अपनी पूर्व-
जन्म की व शक्ति को पुनर्जीवित करने का गुण,
आर शक्ति की शक्ति वैशेषिकों द्वारा माने हुए
शक्ति गुण य न एक (यह गुण तीन प्रकार का
है भावना के और स्थिति-स्वापकता) १३ प्रत्या-
गमनशक्ति सम्पन्न सम्पन्नमात्र-य ज्ञान स्मृति

क० १४ दृष्टिसम्भवा, पुनित कृत्य पुन्यसम्भवा
सम्पन्नय शरीरस्य मनु० २१६६ २५० १०३०

मनु शब्द सहायों का उल्लेख करता है - दे०
मनु २०३ कुछ लेखक इस मन्त्र का सोलह तक
जानते हैं। १५ आधिक कृत्य या अनुष्ठान १६ उप-
नयन सम्पन्न १७ अन्वेषित सम्पन्न १८ माहवर्ष
वस्तु के काम जाने वाला पञ्चर, शब्दों का
६५ (यही सम्पन्न का अर्थ 'भावना' भी है) ।
सम० पुन (२०) १ पुन्यकृत्य द्वारा बुद्ध किया
हुआ २ भिन्ना या अन्य सम्पन्नों द्वारा पवित्र किया
हुआ, रहित बलिष्ठ, शूल (वि०) वह द्विज जो
सम्पन्न हीन है अथवा जिसका उपनयन सम्पन्न
न हुआ हो, और २५ लिए जो छात्र (पति, शक्ति-
बहिष्कृत) हो गया हो तु० वा य ।

संस्तुति (पु० क० कृ०) [सम् + सूज् + क्त] १ पुनर्
किया गया संस्तुति मात्र कर सम्पन्न हुआ,
आशयः - सम्पन्न सम्पन्नरूपि पक्ष या सम्पन्नता
धारणे मनु० ५११२ २ कृत्रिम रूप से बनाया गया
मूर्तिरूप सम्पन्न भुसम्पन्न ३ तैयार किया गया,
मनाया गया सम्पन्न किया गया पकाया गया
(भाषा) ४ अभिप्राय - पुनित किया गया
५ सामाजिक जीवन में दीक्षित विचारित ६ स्वच्छ
किया गया पवित्र किया गया ७ अन्वेषित किया गया,
सजाया गया ८ श्रेष्ठ सर्वोत्तम त १ २५ रण
के निमित्त के अन्वेषित २५० किया गया अन्वेषित
अपुनित शब्द २५० ३३३२ ३ २५० ३३३२ अन्वेषित
पुनित शब्दों की बुद्धा हो ३ ३३३२ पुनित, सम्पन्न
१ परिष्कृत या वस्तु पारमार्थिक भाषा, सम्पन्न भाषा
२ भाषा प्रत्यय ३ बड़ाया शक्ति (बहुधा
बोला) ।

संस्तुति [सम् + सूज् + क्त] १ दृष्टिसम्पन्न

2 अग्रिमन्त्रण 3 अधिर्धर्देहिकविद्या अन्वयान्तर
संस्कार ।

संस्कार [सम् + स्तम् + क्त] । सहाय टिक 2 इह
करना मबल बनाना जमाना 3 विगम यनि
4 अहता लकवा ।

संस्कार [सम् + स्तु + अप] । अग्र्या पठन धिस्वर
नवपञ्चमस्वरपरिने १५०/१५३ नवपञ्चम
स्तरे यथा स्वयिप्याम तन् विमलसौ १० ६१५
2 यज्ञ ।

संस्कार [सम् + स्तु + अप] । प्रसंग स्तुति 2 ज्ञान
पहचान, प्रतिष्ठता परिचय गणा प्रियतयिक ग
न सत्यक वि० ६१५ नवैर्गुणैः सम्प्रति सत्यव
स्विर निराहित प्रेम घनालमश्रिय १५२ ७३०
७३११ ।

संस्कार [सम् + स्तु + क्त] । प्रसादा स्थापना 2 मग्नि
मिन् स्तुतिपाठ 3 यज्ञ म स्तुति पाठक बाह्यानी ६
वेठने का स्थान ।

संस्तुत [सम् + क्त] । [सम् + स्तु + क्त] । प्रसंग
विमकी स्तुति की गई हो 2 मिलकर प्रसंगा किया
गया 3 सम्मन, सबादी 4 बनिष्ठ परिचित ।

संस्तुति [स्त्री०] [सम् + स्तु + क्तिन्] प्रसंगा स्तुति ।

संस्तुतः [सम् + स्तु + क्त] । मन्त्र, गति सघात
2 सामीप्य 3 कैलाश, प्रसार, विस्तर 4 घर
निवासस्थान, आवास मन्त्रायमेव गच्छाव मा०
११९ 5 परिचय, मित्रो या परिचितो की बातचीत ।

संस्तु [वि०] [सम् + स्तु + क्त] । ठहरने वाला, इतर
रहने वाला टिकाऊ 2 रहने वाला विद्यमान मौजूद,
स्थित (मांस के अन्त में) शिष्टा किया कस्य विदात्म
संस्था मालवि० १५६ कु० ६६० मा० ५१२६
3 पालतु, घरेलू बनाया हुआ, सघाया हुआ 4 स्थिर
अचल 5 समाप्त, मष्ट, मृत, स्व 1 निवासी
वास्तव्य 2 पट्टीसी स्वदेशवासी, 3 गुप्तचर ।

संस्तु [सम् + स्तु + क्त] । [सम् + स्तु + क्त] । 1 सघात सभा
2 स्थिति, प्राणी की अवस्था या दशा 3 क्व प्रकृति
रूप० ११३० 4 घषा, व्यवसाय, रहन-सहन का
बधा हुआ तरीका युक्त संस्थापन निर्ममे मन्०
११०१ 5 शूद्र और उचित आचरण 6 अन्न पति
7 विगम, परिः 8 हाति विनाश 9 प्रलय 10 अनु
रूपता 11 गदकीय आज्ञा 12 मोम यज्ञ का गद
क्य ।

संस्तुतः [सम् + स्तु + क्त] । 1 मन्त्र गति माया
2 प्राथमिक अज्ञा की समष्टि 3 सम्पण विभाग
आकृतिरवयवमन्त्रान्विता 4 मय भाषति
वर्णन, मृत, मल स्त्री सम्मान धाममन्त्रार्थमाणा
बुद्धिपूर्वक स्थानिके ज्ञाय श० ७१० मन्०

११२६१ ५ मरचना, निर्माण 6 पट्टीस 7 आवास
का सामान्य स्थल सावजनिक स्थान 8 स्थिति
अवस्था 9 कोई स्थान या अवस्थ 10 चौराहा
11 निशान निह्न विषयक चिह्न 13 मन्त्र ।

संस्थापन [सम् + स्था + क्त] । 1 एक स्थान
पर स्थापन मन्त्र करना 2 जमाना निर्माण करना,
[निर्माणित] बना। दूसरी वेदा प्रत्यक्षमयसंस्थापन
तु मन्० ११०२ 3 स्थापित करना पुष्ट करना
4 नियोजन करना यमन करण या 1 नियन्त्रण,
दमन 2 शासन करने के उपाय संस्थापना पियतरा
गिरहापुगणाय मन्त्र० ३१३ ।

संस्थित [सं + क्त] । [सम् + स्था + क्त] । 1 साध
गाय यज्ञा ज्ञान वाला 2 विद्यमान रहने वाला
निर्माणसंस्थित पक्ष० ११०२ 3 मरा हुआ मिला
हुआ 4 मिलाया जुलुषा, समान 5 मजिन गलीकल
6 स्थिर जमा हुआ स्थापित 7 चन्त्र या ऊपर
रक्ता दृशा चन्त्रवर्ती 8 अवल 9 राका हुआ पूरा
किया हुआ अन्त तक निर्माण समाप्त श० ३
10 मन उगता द० गम पूर्वक स्था ।

संस्थिति [स्त्री०] [सम् + स्था + क्तिन्] । 1 साध-साध
होना, मिल क रहना 2 सटा होना, निकटता
सामीप्य 3 निवासस्थान आवासस्थल विभावगृह
यथा नदीनदा सर्वं मागरे यानि संस्थितम् मन्०
६१० 4 मन्त्र डेर ५ अवधि कालावधि हि०
१५४ 6 अवस्थान स्थिति जीवन की दशा 7 प्रति
बध 8 मन्त्र ।

संस्थान [सम् + स्तु + क्त] । 1 सपक छूना, सम्मिलन
मिश्रण 2 ज्ञा ज्ञाना प्रसारित होना 3 प्रत्यक्षज्ञान
मवेदन ।

संस्थान [सम् + स्तु + क्त] । 1 सपक छूना, सम्मिलन
मिश्रण 2 ज्ञा ज्ञाना प्रसारित होना 3 प्रत्यक्षज्ञान
मवेदन ।

संस्थान [सम् + स्तु + क्त] । 1 सपक छूना, सम्मिलन
मिश्रण 2 ज्ञा ज्ञाना प्रसारित होना 3 प्रत्यक्षज्ञान
मवेदन ।

संस्थान [सम् + स्तु + क्त] । 1 सपक छूना, सम्मिलन
मिश्रण 2 ज्ञा ज्ञाना प्रसारित होना 3 प्रत्यक्षज्ञान
मवेदन ।

संस्थान [सम् + स्तु + क्त] । 1 सपक छूना, सम्मिलन
मिश्रण 2 ज्ञा ज्ञाना प्रसारित होना 3 प्रत्यक्षज्ञान
मवेदन ।

संस्थान [सम् + स्तु + क्त] । 1 सपक छूना, सम्मिलन
मिश्रण 2 ज्ञा ज्ञाना प्रसारित होना 3 प्रत्यक्षज्ञान
मवेदन ।

संस्थान [सम् + स्तु + क्त] । 1 सपक छूना, सम्मिलन
मिश्रण 2 ज्ञा ज्ञाना प्रसारित होना 3 प्रत्यक्षज्ञान
मवेदन ।

दृष्ट, होम 6 सबद्ध, युक्त, मिलाकर रक्खा हुआ
शरीर का अंग बना हुआ, मटा हुआ जालसादाय
गुच्छित सहता पक्षिणीयमी पव २१०, ५१०१
हि० ११३७ 7 एकमत 8 मघान मघित । सम०
जानु (वि०) त्रिमके धर्मने आपस में टकरात हा,
लनजानुक, भू (वि०) मघन भीहा मे पुन
स्तीही बहु स्त्री त्रिमके दोनो स्त्री गते हुए हो ।

संहतता, त्वम् [सहन + तल् + टप् + ट्व] 1 घना
मपर्क, सघाजन 2 सङ्गृह्यता 3 सहमति एकता
4 सामन्य, समेकता ।

संहतिः (स्त्री०) [सम् + हन् + क्तिन्] 1 दृष्ट या घना
सपर्क, घनाट मेट कु० ५१८ 2 मघ, सम्मिलन,
सहति सम्मिलिता सहति धेयमां पमा ११० १,
नु० मघे गतिन 3 सङ्गृह्यता दृष्टा सामन्य
4 पुन, गति-युक्ता नयति हि गृणा न सहति
कि० १२१२ ५ सहमति, सामन्य 6 मन्य
दर, सघात, समुच्चय वनाज्याश्चाव चकार सहति
कि० ११३४, २७, ३१००, ५१८, मटा० ३१२
7. सामन्य 8 विष्ट, समवाय ।

संहतम् [सम् + हन् + क्तिन्] 1 सघना हुआ 2 देह,
व्यक्ति-अन्ताध्मातृजीमन्तिन्यसहजन्यने उत्तर०
६१२, महावीर० २१८६ 3 सामन्य, दे० सहति
भी ।

संहरणम् [सम् + हृ + क्तिन्] 1 एकत्र करना, साथ-साथ
मिलाना, मचय करना 2 लेना, ग्रहण करना
3 निकोडना 4 नियमित करना 5 नष्ट करना,
बर्बाद करना ।

संहर्तुं (पु०) [सम् + हृ + क्तिन्] विनाशक, नष्ट करने
वाला ।

संहर्तुः [सम् + हृ + क्तिन्] 1 रोमांच होना, अथ या हर्ष
से पुलकित होना 2 जानक, हर्ष, मृशी 3 प्रति-
योगिता, होड, प्रतिवर्द्धता 4 बाय 5 साथ-साथ
रगड़ना ।

संहस्तः [सम् + हन् + क्तिन्] वा० कुम्भाभाव, सघात का
पाठांतर] हक्कीम नरको में से एक मनु० ५१८९ ।

संहारः [सम् + हृ + क्तिन्] 1 मिलाकर लीचना, या
साथ-साथ लाना, मचय करना अनुभवतु बेणीसहार-
महोत्सवम्—बेणी० ६ 2 संकोचन, भीचना, संक्षेपण
3 रोकडना, पीछे लीच लेना, बाधित लेना (विप०
प्रयोग या विशेष) प्रयोगसहारविभक्तमन्त्रम् -रष०
५१५७, ४५ 4 प्रतिवध लगाना, रोक लेना
5 विनाश, विशेषकर मृष्टि का, प्रत्य, विरचना
6 समाप्ति, अन्त, उपसहार 7 सघात, समुह
8 उच्चारण दोष 9 जादू के शरणास्त्रो को बाधित
हटाने के लिए मच या जादू 10 व्यवसाय, कुशला

11 नरक का एक प्रभाग । सम० - जेरबः भेरव का एक
छा, धृवा नन्ध-युजा में विशेष प्रकार की युद्ध,
उमकी परिभाषा अध्यात्म वेदमन्त्रे ऊर्ध्वाम्य दक्ष
इत्युक्तम् । अत्रादृशगुणैरुत्तमैर्वापि समुह परिचर्यन्ते ॥

संहित (भू० व० क०) [सम् + धा + क्त, हि आदेश] 1 साथ-साथ रक्खा हुआ, मिला हुआ, मयुक्त
2 सहमत समनका अतकल 3 सम्बन्धी 4 मघित
5 भविष्य, सुवर्जित, मघित, युक्त 6 उत्पन्न दे० सम
पूर्वक या ।

संहिता [मघित + क्त] 1 सम्मिश्रण, मघ, सयोजन
2 मचय सकलन संग्रह 3 कांड पत्र या गद्यमसह
त्रिमका क्रम मयुर्विस्थित हा 4 विधि या कानूनों का
संग्रह या सङ्ग्रह (किसी विषय के) नियम,
नियमावली, मारसंग्रह, मनुसंहिता 5 वेद का क्रमबद्ध
संग्रह, या विभिन्न गान्धर्वों के अनुसार उच्चारण-
समन्वयः त्रिवर्तनों में युक्त पदपाठ - पदप्रकृति
महिता नि० 6 (व्या० में) सन्धि के नियमों के
अनुसार वर्णों का मेल पा० ११६१०९, वर्णानामनि-
शानि सनिधि महितामत्र स्यात् मिट्ठा०, या
वर्णानामकप्रमाणयोग महिता 7 विषय को संघटित
रखने वाली शक्ति, परमात्मा ।

संहति (स्त्री०) [सम् + हृ + क्तिन्] बीभना, चित्ताना,
भारी हृगाभा, अत्यन्त शोरमल ।

संहत (भू० क० क०) [सम् + हृ + क्त] 1 मिलाकर
लीचा हुआ 2 निकोडा हुआ, मघित किया हुआ
3 बाधित लिया हुआ, पीछे लीचा हुआ 4 संचित,
मगुहीत 5 पकडा हुआ, हाथ डाला हुआ 6 दबावा
हुआ, नियन्त्रण में रक्खा हुआ 7 नष्ट किया हुआ ।

संहति (स्त्री०) [सम् + हृ + क्तिन्] 1 निकुडन,
भीचना 2 विनाश, हाति 3 लेना, पकडना
4 प्रतिवध 5 मचय ।

संहृष्ट (भू० क० क०) [सम् + हृ + क्त] 1 पुलकित,
या हर्ष से रोमांचित, प्रसन्न 2 जिसके रोगट कटे हैं
या जो कांप रहा है 3 स्पर्श के भाव में उदीय ।

संहारः [सम् + हृ + क्त] 1 शोरमल, बीकार,
होहल्लाहल 2 कोनाहल ।

संहोष (वि०) [सम् + हो + क्त] 1 विनयशील,
गमोला 2 संबंध लज्जित ।

नष्ट (वि०) [कटेन अक्षुभ्, शकादिना सह वर्तमानः]
बुरा कुतिसत, दुष्ट ।

सकष्टक (वि०) [कटेन सह क्, व० स०] 1 काटदार,
चभन वाला 2 कष्टप्रद, अमानक, कः जलीय पीवा,
सर्वस दे० ।

सकम्प, सकम्प्य (वि०) [कम्पेन, कम्पनेन सह वा, व० स०]
कापना हुआ धरधराता हुआ ।

—भवन्तस्त्वय्योने—मालवि० -४, कु० ३१२४, —कृष्ण (वि०) 1. ऐच्छिक 2. इच्छा के अनुकूल ।

सङ्कुच (वि०) [सम् + कृ + क्त] 1. अग्रिष्ठ, चबल, परिवर्तनशील, अनियमित 2. प्रनिश्चय, सदिग्ध 3. बुरा, दुष्ट 4. निबल, बलहीन, कमजोर ।

सङ्कारः [सम् + कृ + क्त] 1. धूल, बुझान, कुड़ाकरकट 2. ज्वालाओं के धटखन का शब्द ।

सङ्कारो [सकार + क्रीप्] वह लड़की जिमका कौमायं अभी अभी भग हुआ हो, नई दुल्हन ।

सङ्काश (वि०) [सम् + काश् + अच्] 1. मयून समान मिलना-बुलता (समास के अन्त में) अन्ति, हिरण्य 2. निकट, पास, नजदीक, छाः 1 दर्शन, उपस्थिति 2 उद्योग ।

सङ्कितः [सम् + किल् + क] बलहीन हुई लकड़ी, लज्जा हुई मशाल ।

सङ्कीर्ण (भू० क० कृ०) [सम् + कृ + क्त] 1. साथ साथ मिलाया हुआ, अन्तर्निश्चित 2. अश्वत्थिपत्र, विमिश्र 3. बिखरा हुआ, फैला हुआ, लबावाच भरा हुआ 4. अस्पष्ट 5. दान बहारा हुआ, मन में चुर हि० ४।१३ 6. वर्णमकर, जानि का अपविष्टकृत या सकलजाति में अन्धा हुआ 7. इरामी, दोगला 8. तगर, सङ्कुचित, क. 1 सकार जाति का अक्षर 2. मिश्रस्वर 3. वह हाथी जिसके मस्तक में मद बहता हो, मस्तहायी, —सम् टठिनाई । सम्० जाति, योनि (वि०) वर्णमकर, दोगरी तगर का, (जैसे कि लवण), पुष्टम् अश्वत्थिपत्र लड़ाई रणभूमि ।

सङ्कीर्णम्, —ना [सम् + कृ + क्त] 1. प्रणाम करना, सरागना, स्तुति करना 2. (किसी देवता का) पुराणान करना 3. अन्न के छप में किसी देवता के नाम का जप करना ।

सङ्कुलित (भू० क० कृ०) [सम् + कुल् + क्त] 1. मिक्का हुआ, मिश्रित किया हुआ लङ्कान नङ्कुलित तथा यत् विक्रमा० १।२३ 2. मिक्कृत बनाया, मूँगी पड़ा हुआ 3. इका हुआ, बद किया हुआ 4. आगम्य ।

सङ्कुल (वि०) [सम् + कुल् + क] 1. अनावस्थित 2. आकर्षण, लबावाच भरा हुआ, पूर्ण-नश्वरताग्रपट-पङ्कुकारि उद्योगिनी बन्धनमेव रात्रि —भू० १।२३, मा० १।२ 3. विकृत 4. अमगत सम् । भोज, जमपट, मीडमा, मरह, सत्ता, सूत्र, महान शिखरतय सङ्कुलेन विपटितया तस्यामागताग्निम् —मा० १ 2 अश्वत्थिपत्र लड़ाई, रणभूमि 3. प्रसगत या परस्पर-विरोधी भाषण —उदा०—वाक्प्रतीतिमहू मोरी ब्रह्मचारी ने मिला । माता तु मम कर्पण पुत्रहीन पितामहः ।

सङ्कुलः [सम् + किल् + क्त] 1. इशारा, इंगित

2 निदान, अगच्छेष्टा, मुग्धाव—महा० १ 3. इमिलपरक विह्वल, निदानो प्रतीक 4. सहस्रित, अमिलन सङ्कुतो गृहान ज्ञानी गुणद्वयार्थक्यामु च सा० २० १२ 5. प्रेमी प्रेमिका का पारम्परिक लहराव, नियमित, (प्रेमी या प्रेमिका के मिलने का) निदिष्ट स्थान नामभयेन कृतमङ्कुरा वाद्यने मृदु वेणुम् गीत० ५ 6. प्रेमिया का, मिश्रन-स्थान, समासम-स्थान अन्तर्निष्ठी तु या पाति मकेन साभिसारिका अमर० 7 प्रतिवच, पार्श्व 8 (आ० में) सक्षिप्त विवर्ति, गृह । सम्० मुग्धम्, विकेतनम्, —स्वा-मम् निदिष्ट स्थान, प्रेमी और प्रेमिका का मिश्रन-स्थान ।

सङ्कुलक [सङ्कुल + क्त] 1. सहस्रित ममिलन 2. नियमित, निदिष्ट 3. प्रेमी और प्रेमिका का मिलन-स्थान 4. वह प्रेमी या प्रेमिका जो मिलने के लिए यमव या स्थान का सकेन कर सङ्कुलक जिनपति प्रवरो विनाद मय्य० ३।३ ।

सङ्कुलित (वि०) [सम् + कुल् + क्त] 1. लहराया हुआ, मिल-कर नियमानुसार मिश्रित, साक्षात्सकलित योद्धे मिश्रित म वाचक कथा० 2. अमिश्रित, बुलगाया हुआ ।

सङ्कुल (वि०) [सम् + कुल् + क्त] 1. मिक्कृत, शिथिल पड़ना 2. सङ्कुल, स्थीकरण, अनात्म 3. आग भय 4. बद करना मुदना 5. लज्जा 6. एक प्रकार की मछली, सम् कमर, हाफरान ।

सङ्कुलनः [सम् + कृ + क्त] 1. कुल का नाम ।

सङ्कुलः [सम् + कृ + क्त] 1. सङ्कुलित, मममन, माय जना 2. सङ्कुलित, माय, स्थानान्तरण, प्रगति 3. किसी वह का एक साक्षिक में दूसरी राशि म जाना 4. समन करना, जाया करना, क. सम् 1 बहिन या सखी मां 2 मेनु, पूज, नदीमांसे न तथा सकमानवमाद्येत् —महा० 3 किसी लक्ष्य की प्राप्ति हा साधन नामक सङ्कुलीकृत्य दश०, मो-र्तिनि स्वर्गमङ्कम् —पञ्च० ४।२ ।

सङ्कुलमय [सम् + कृ + क्त] 1. मममन, सहस्रित 2. साक्षिक प्रगति एक बिन्दु में दूसरे बिन्दु पर जाना 3. सूर्य का एक राशि में दूसरी राशि में जाना 4. सूर्य के उत्तरायण में प्रवेश करने का दिन 5. मार्ग ।

सङ्कुल (भू० क० कृ०) [सम् + कृ + क्त] 1. ... में मे गया हुआ प्रविष्ट हुआ 2. स्थानान्तरित, स्थान, मममन उत्तर० १।२२ 3. पकड़ा, घस 4. प्रवि-ष्टित, प्रतिबिम्बित 5. बिम्बित ।

सङ्कुलित (स्त्री०) [सम् + कृ + क्त] 1. मममन, वेल् 2. एक बिन्दु में दूसरे बिन्दु तक का मार्ग, अवस्थान 3. सूर्य या किसी और बहपुत्र का एक राशि में

दूसरी राशि में जाने का मार्ग ४ स्थानान्तरण । क्रिया दूसरे को) सीधे-साथानि पदसी गण्यपदकान्त्य उन्म० ३।१६ ५ (कथना ज्ञान दूसरा नक) हस्तान्तरण करना, (दूसरे को) विधादान को हासिल - विवाहे दसोपस्थान क्रियामङ्करीतमाग्न - मातृशे० १।१८/ विष्टा क्रिया कल्पविदाग्नस्य मङ्करीतस्य स्थ विषोययुक्ता -१।१६ ७ प्रतिपद प्रतिक्रिय ७ विनय।

सङ्काय हे० 'मन्त्रम' ।

सङ्कीर्णम् [सम् + क्रीड् + ल्युट्] मिल कर खेलना ।

सङ्कलित. [सम् + किल् + घञ्] । १ तरो नमी २ गर्मा
धान के पत्राण्य प्रथम मास में खावत होन वाला रस
जिससे भोजन के आरम्भिक रूप का निर्माण होता है

उपवास 3 ज्ञानि, बर्बादी 4 अन्न 5 प्रलय ।

मङ्गलिन (श्री०) [सम - क्षय - विन - १] माय माय
फैकना २ भीनना मलयण ३ फैकना भजन ४ वा
म रचना ।

मन्त्रोपदेशः । सप्त + शिप् + चडा । १ माथ माथ एकना
२ भीषना, छाटा करना ३ लायक सहति ४ तिराज,
सायाथ ५ एकना भेजना ६ अपहरण करना ७ किमो
अर्थ उपलब्धि क काय में सहायता देना (सत्सेवेण,
सत्सेवतः (किं दि०) योऽहं अजरो मे सद्गुरुण करं
सत्सेव मे)

सङ्ख्येयम् [मम् + क्षप् + ल्युट्] 1 डेर लगाना 2 छाटा
करना लब्धकरण 3 धेजना ।

तद्भोज्य [सम + भुज् + क्त] 1 आन्दोलन कमरूप।
2 बापा, हलबल मूच्छ० १ 3 उषल पुषल ५८
पुलट 4 बमड प्रहकार ।

संख्याम् । सम् । भ्या । क । मधाम रुद्र लढार्द मद्रुप
द्विधा वोरस नकार रिक्तम् १।५७ ५५ वीणा
२।५५ जि० १/१७० ।

सङ्ख्या । सम् + क्त्वा + क् + टाप् । १ गणना गिनती
हिमाद्रि लगाना सङ्ख्यामिवैव श्रमस्वचकार रथ०
१६।४७ २ अक ३ अकबाधक ४ जोड़ ५ हेतु समस
प्रज्ञा ६ विचार विमर्श ७ गति । सम० कर्त्तव्य,

अतीत (वि०) प्रसङ्ग, अनागत गणनासेत
वाचक (वि०) सत्त्वा बोधक (कः) अक ।

तद्भ्याम् (म० क० वृ०) [सम् + क्त्वा ! क्त] 1 गिना
गया 2 हिमाय क्त्वाया गया गिना हुआ तम् ५५

सा एक प्रकार की पहेली ।
सङ्ख्यासूचक (वि०) [सङ्ख्या । मत्स्य] १ सङ्ख्या वाङ्मा

सम्पद ४ मर्गान्, माहृषयं, मेत्री, शत्रुनाथ सना
 मीन्द्र मङ्ग कथयति हि पुष्पेन मयति—उत्तर २१८,
 सत्यशत्रुहृष्य मयति यं रहना मयसी में रहना,—मुनाः
 पुर्णं मङ्गमनुहृष्यन्ति—मुनाः ५ अक्षरानि, प्रीति,
 अभिराकाषा ध्यायतो विषयान्मुह मङ्गस्तेष्वपचायते
 मग २१६२ ६ मायारिक्त विषयो में क्षासक्ति,
 मनुष्यो कं वाथ साहृष्यं दोर्मय्यान्पुर्णतिमयति
 यति सङ्गान् भर्तुं—२१६२ ७ मतेनेह, लडाई ।

तद्वर्णिका [मम् + गप् + भुल् + टाप्, इत्वम्] श्रुतं वा
अनुपमं प्रवक्ष्य

सङ्कलन { १००० कुं } { सम् + यम् = क्त } १ मिला, हुवा बूहा हुवा, साथ साथ आया हुवा, साहचर्य से युक्त २ एकचित्त सङ्कित मनोजित, सम्मिलित ३ प्रलयशब्द से बाह्य, विवाहित ४ मैथुन द्वारा मिला हुवा ५ साथ साथ बरा हुवा, समुचित, सङ्कतयुक्त सवादा शब् ६ ७ से युक्त (जैसे कि फला में) ७ शासनदाला निकुटा हुवा, दे० सम् पूर्वक सम् तम् १ मिलाप, सम्मिलन, योनी, -सङ्कथ० ५१६४ य० ५१२३ २ समाज, मण्डली ३ परिचय, मित्रता वगैरह —कु० ६३९९ ४ सामयजस्यपूर्व वा युगगत वाणी, यक्षिययक्त टिप्पण ।

लक्ष्मिनिः (मनो) । सम + गन् + क्तिन् । १ मेरु मिलना,
 समन २ असमं, सहयोगिता साहचर्यं, पारस्परिक
 सम्बन्ध मनो हि तन्मात्मनश्च लक्ष्मिनिश्च रघु० ७।१५
 ३ मेघेन ४ दर्शन करना बार बार जाना-जाना
 ५ योग्यता उपयुक्तता प्रयोगा यकता, यजन, सम्बन्ध
 ६ दुर्घटना, भयाङ्क, आकस्मिक घटना ७ ज्ञान
 ८ अर्थिन जानपरी के लिए प्रयत्न ।

सङ्क्रम [सम् - गम - अच्] १ मिलना मेल विक्रम०
०१२३ रूप० १०१६६ १० २ साहचर्य सर्गाति सह
यागता राप्ताम्भिक मेलोलाय - बेमा कि सङ्क्रि सगम
म ३ सङ्क्रम्य स्थान रूप० ८१४४ ४ येनून या रति-
क्या अय स ने गच्छति सङ्क्रमाभुक् स० ३११४,
रूप० १०१३४ ५ नाययो काः मिच्छन् सव्य
स्थान गङ्गासङ्क्रान्ति सङ्क्रम ६ योग्यता अनुकूलन
७ मलय न्याइ ८ (धर्मा का) योग्य।

सङ्गमः 'सम्' गम + ल्यप् । मिलना, मेल दे० 'सङ्गम' ।
सङ्करः 'सभ' + क - ल्यप् । १ प्रमिला । २ कलरार — मधेति

तस्याभिषेध प्रतापः स्वर्गहीनः प्रमथयन्मा रघु०
 ५।१६ ११।४० १३।०४ २ स्वीकृति हास्य मे लेना
 १ मीदा १ मयाम, मुद्र, लडाई - अतरस्त्वमुजीजसा
 मुद्रमंहत सङ्गरसागरान्तर, शि० १६।६७ ५. काम
 ६ निगन बाना ७ दमस्य ८ विष ।

सङ्कषः { समयना गावो बौहनाय बच-नि० } प्रातस्मान के
तीन महर्त बाह का समय जो दिन के पाँच भागों में

से बुरा है, और जब बावें बूढ़ने के बाव करने के लिए के बावें जाती हैं।

कनकम् [सम् + कम् + कम्] प्रचन, समाकाय, दातपीत।

कनकम् (वि०) [सम् + कम्] 1 सवस्त, मिला हुआ 2 कनक, सवस्त, स्नेहीक—भा० ५।११, १५० १९।१६, वाक्यि० ५।२, अम० ३।२९, १५।५।

कनकम् (सू० क० क०) [सम् + कम् + कम्] मिलकर गाया हुआ, सहभाग, सम्मिलित कण्ठों से गाया हुआ 1 सामूहिक गान, बहुत से कण्ठों से मिलकर गाया जाने वाला गान,—अथ मुकण्ठयो मन्त्रव्यं सज्जीन मह-वर्तुका—भा० 2 गायन, मधुर गायन, विशेषतः बहु गायन को मूल्य तथा बाधक्यों के साथ गाया हुआ, मिलाकर युक्त गान गीत बाध नर्तन च त्रय सज्जीनमन्त्रव्यते, किमन्वयवत्या परिचय वृत्तिप्रसादनत सज्जीनम् अ० १, मूच्छ० १ 3 सगीत गोष्ठी, सहसंगीत 4 मूल्य बाध के साथ गान की कला—वर्तु० २।१२। सव० अर्थः 1 सगीत प्रदर्शन का विषय 2 सगीतकला के लिए आवश्यक सामग्री या उपकरण—वेद्य० ५९,—साक्षा गायनात्म्य, भा० २,—आत्मन्य गायिका।

कनकम् [सज्जीत + कम्] 1 सगीतगोष्ठी, सुरताल से युक्त गान 2 सार्वजनिक मनोरंजन जिसमें गान-गाता हो।

कनकम् (सू० क० क०) [सम् + कम् + कम्] 1 मन्त्रत स्वीकृत 2 प्रतिज्ञात।

कनकम् [सम् + कम् + कम्] 1. पकड़ना ग्रहण करना 2. मुट्ठी बाँधना, बन्धन पकड़ 3 स्वागत, प्रवेश। सर-काय, प्रवेशन—तथा आमंत्रणना च कुर्वादाप्यय मन्त्रम् अनु० ७।११४ 5 अनुग्रहण, प्रसादन आदर-सकार करना, पालन-पोषण करना अनु० ३।१२८ ८।३११ 6 बनना, सज्ज करना, एकत्र करना सबय करना—तै० कृतप्रकृतिसङ्ग्रह १५० १९।५५ १०५० 7 आसन करना, प्रतिषेध लगाना, निषेधन करना 8. राक्षीकरण 9 सयोजन 10 सघटीकरण (एक प्रकार का 'सयोज') 11 सम्मेलन करना अवधारणा 12. सकल 13. साराध, सार, सज्जपण साराधन सङ्ग्रहण प्रवचने अम० ८।११, इसी प्रकार तर्क सङ्ग्रह 14. बौद्ध, रामि, समष्टि करण कर्म कर्तित विविध कर्मसङ्ग्रह अम० १८।१८ 15 ताजिका, सूची 16. मङ्गल-गुह 17 प्रयत्न, चेष्टा 18 उन्मेषण हुआ 19. सङ्गमन, ऊँचापन 20 वेग 21 शिव का नाम।

कनकम् [सम् + कम् + कम्] 1 पकड़ना, ले लेना 2. सहाय देना, प्रोत्साहित करना 3 सकलन करना, संघट्ट करना 4 सङ्घट्ट-सङ्घट्ट करना 5. मदना, मदना—कनकमूषसङ्घट्टोपिठ (मणि)—वैद्य० १।७५

6 मैत्रुन, स्त्रीसमान 7 सम्बिचार अनु० ८।९, ७२, पाठ० २।७२ 8 बासा करना 9. स्वीकार करना, प्राप्त करना, भी वैश्वि।

कनकम् (सू०) [स + कम् + कम्] सारथि।

कनकम् [सम् + कम्] रग, पुष्ट, लहारी—सम् + कम् + मासतेन यवना बापे समारापिते काव्य० १०। मन्त्र०—वि० (वि०) पुष्ट में जीतने वाला,—वहः पुष्ट में बढ़ाया जाने वाला एक बड़ा भारी डोहा।

कनकम् [सम् + कम् + कम्] 1 हाथ डालना, ले लेना 2 बलात् छान लेना 3 मुट्ठी बाँधना 4 लसवार की मुठ।

कनकम् [सम् + कम् + कम्] 1 समूह सहस्र समुच्चय, सुबुद्ध जैसा कि महविसङ्ग, मन्त्रमन्त्र 2 एक साथ रहने वाले लोगों का समूह। सभ० काव्यि० (पु०) मछली, जीबिन् (पु०) किशोर का मजहूर, कुली, बुरा (पु०) मजहूरान्।

कनकम् [सम् + कम् + कम्] 1 लाम भाग मिलना मेला सम्मेलन—रत्न० ६।२०।

कनकम् [सम् + कम् + कम्] 1 लक्ष्यं के एक साथ बिसना, रमणना सरलकल्पसङ्गट्टजन्मा (इवालि) मेच० ५३, भा० ५।३ 2 टक्कर बटपट, मुठमेच वि० २०।२६ 3 मङ्गल, सवर्ष 4 मिलना सम्मिलन, टक्कर या स्पर्धा (जैसे कि पल्लवों की) १५० १५।८५ ५ जालियन हुआ एक बड़ी लम्बा, वेग।

कनकम् [सम् + कम् + कम्] 1 मिला कर रगड़ना, मजबूत 2 टक्कर बटपट 3 बलित लपकें लगाव 4 सपर्क, घट चिपकाव 5 पहलवानों का पायम्पाक लिपटना 6 मिलना मूठमड।

कनकम् [सम् + कम् + कम्] 1 मिला मूठमड।

कनकम् [सम् + कम् + कम्] 1 हाथी की राख, बाल 2 पीम डालना चुग करना 3 टक्कर बटपट 4 प्रतिनिधित्व प्रतिष्ठा की श्रेष्ठता के लिए हाथ—सम् + कम् मम च वरिधिविचलकृत्यं दश०, लाट्याया पयाम्हात् ज्ञानसङ्घर्षी ज्ञात् मावधि० १५ इन्द्रा हात 6 मरकमा मन्त्र मन्त्र बहना।

कनकम् [सम् + कम् + कम्] 1 मिला मूठमड।

कनकम् [सम् + कम् + कम्] 1 मिला मूठमड।

कनकम् (वि०) विविध, मयनीत, लम् (अम०) काँपते हुए, चीक कर, चीकना होकर, विविध होकर।

सम्भारिण (वि०) (स्त्री०-जी) [सम् + चर + णिनि]

1 गतिहीन, नवनीय—सम्भारिणी नगर देवसेव—भा० १, कु० ३१५४, ६१६७ 2 पर्यटन, भ्रमण 3 परिवर्तन—लोक, अक्षिण, चक्षु 4 दुर्गम, अगम्य 5 अजन-नुर जैसे कि माघ, हे० नी० ६. प्रभावशाली 7 आनुवंशिक, वंशपरम्पराप्राप्त (रोग आदि) 8 कृत का रोग 9 प्रचोदन, पु० 1 बाध, हवा 2 मृग 3 वह अजननुर भाव जो स्वामी को शक्ति-सम्पन्न करता है दे० अविचारित ।

सम्भारणी [सम् + चर + ण + ङीप्] नृजा की साड़ी ।

सम्भित (पू० क० कु०) [सम् + चि + क्त] 1 डेर लगाया हुआ, लपेटा हुआ, जोड़ा गया, इकट्ठा किया गया 2 रक्का गया, जमा किया गया 3 गिना गया, गणना की गई 4 भरा हुआ, सुसम्पन्न, युक्त 5 बाधित, अवरोध 6 सचन, भिन्ना (जैसे कि जंगल) ।

सम्भितः (स्त्री०) [सम् + चि + क्त] सद्यः, सम्यक् ।

सम्भितानम् [सम् + चिन् + क्त] बिचार, विमर्श ।

सम्भुजम् [सम् + भृज् + क्त] बुर बुर करना ।

सम्भुज (पू० क० कु०) [सम् + भृज् + क्त] 1 लिपटा हुआ, ढका हुआ, छिपा हुआ 2 वस्त्र पहने हुए ।

सम्भुजम् [सम् + भृज् + क्त + क्त] ढकना, छिपाना ।

सम्भु (प्रा० पर० मयति, सक्त, इकारान्त या उकारान्त उपसर्ग के लगाने पर बाहु का 'भू' बल कर वृ हो जाता है) 1. सकम्प होना, जुड़े रहना, चिपके रहना, —मुन्यमन्विषु मत्तत्रकटेषु फलरजव (समञ्ज) —रघु० ४।१७ 2 ढकना कर्मवा० (सम्भुजते) सकम्प होना, चिपटना जुड़े रहना प्रेर० (सम्भुजति) ।

इच्छा० (सिसृक्षति), अम्—, 1 चिपकना चिप-

टना 2 जुड़ना, साथ होना मृत्युञ्जयः च आधिपत्यं दुक्त बानेककारणम् । अनुचक्षन् सदा दिदे मद्भा०, उत्तर० ४।२, (कर्मवा०) चिपटना, जुड़ जाना (जाल० से भी)—वर्मपूने च मनसि तन्महीनं बाहु रजोऽनुव-
प्यते दश०, अग० ६।४, १८।१०, अथ—, निलम्बित करना, संलग्न करना, चिपटना, फँकना, रक्का—दि० ५।१६, ७।१६, १।७, कु० ७।२३ 2 लीपना लुपुदे करना, निदिष्ट करना, (कर्मवा०) 1 लपक में होना, बिलसे रहना—मृच्छ० १।५८ 2 अल्प होना तुल जाना, उल्लुप होना, जा—, 1 अकटना प्रमाना, जोड़ना, मिलाता, रक्का—वापसामय्य कथं कु० २।५४, स० ३।२६ (मुजे) मृग स भूमेर्धराप्रसन्न-
रघु० २।७४ 2 अविधान करना, प्रेरित करना कि० १३।४४ 3 लिपुदे करना, निदिष्ट करना 4 चिपटना, लगे रहना नि—, 1 जुड़े रहना, चिपटना, ढाक दिया जाना, रक्का जाना—कथं म्बवद्वाहनिचक-
बाहु कु० ३।७, रघु० १।५०, ११।७०, ११।४५

2 प्रतिबिम्बित होना—कु० १।१०, ७।३६ 3 सकम्प होना अ—, 1 चिपटना, जुड़ना 2 प्रयत्न होना, अनु-
करण करना, प्रयुक्त किया जाना, लड़ी उतरना, ठीक बैठना इतरेतरास्य प्रसज्यते, वैधर्म्यपूर्वक नेवहारस्य प्रसज्यते शारी० 3 सकम्प होना, तस्यामसी प्राप्त-
वत् दत्त० अस्ति, मिलाता, साथ-साथ जोड़ना, अविचरिण पदार्थानाम्तर कोर्य हेतु उत्तर० ६।१० ।

सम्भु [सम् + भृज् + क्त] 1 बह्ना का नाम 2 शिब का नाम ।

सम्भुज [सम् + जि + भृज्] भुतराष्ट्र के सावित्र का नाम, (सत्रय ने कीर्तन और पाण्डवों के अग्रे में साम्नि-
पूर्णे समसीपा करने का बहुत प्रयत्न किया, परन्तु निष्फल रहा। इसी ने अश्वे राजा भुतराष्ट्र को महा-
भारत के युद्ध का विवरण सुनाया—मु० भग० १।११) ।

सम्भुजः [सम् + जन् + क्त] 1 अर्धलाय 2 अर्धवर्षित बाणवीन, बकवाद करना गडबड 3 बारमुल हुआमा ।

सम्भुजम् [सम् + भृज् + क्त] बाहु शाल, आमने सामने के बार धरों का समूह जिनके बीच में आगन बन गया हो ।

सम्भु [सम्भृज् + टाप्] बकरी ।

सम्भुजिचम् [सम् + जीव् + क्त] 1 साथ साथ रहना 2 जीवित करना, जीवित देना, पुनर्जीवन, पुन ली-
वता 3 इक्षीम नगको में से एक नगक दे० मनु० ६।८९ 4 बार धरों का समूह, बहुत शाल की एक प्रकार का अमृत (कहते हैं कि इसके सेवन से युवक भी पुनर्जीवित हो जाता है) ।

सम्भु (वि०) [सम् + भृज् + क्त] 1 जिसके घुटन चपड़ सम्य आस में टकराने हों 2 दश में आया हुआ 3 नामवाला, नामक दे० नी० मत्ता, सम् एक प्रकार का पीसा सुगन्धित काष्ठ ।

सम्भुजम् [सम् + भृज् + क्त + क्त] पुकागमः हृज् [हृज्या, वध ।

सम्भु [सम् + भृज् + क्त + टाप्] 1 धेतता, दास सम्भुज लम् आचक्ष मा प्रतिषध् पिर चैनन्य प्राण करना होज में आना 2 बानकारी, मयस 3 बुद्धि, मन 4 मकेन इगित, निमान, हाव-भाव—मुक्तापितेका-
गुलिकम्पन्नेषु मा चागलायेति गणाम् अनेपीन—कु० ३।११ 5 नाम यह अचिधान, इस अर्थ में प्रायः समान के अन्त में द्वन्द्वविभक्तता मुक्कुलसक्त-
मग० १५।५ 6 (व्या० में) 1 विजय अर्थ रक्का का नाम या मत्ता अर्थात् शायक सत्ता 2 'प्रत्यय' का परिभाषिक भाष 8 गायत्री मन्त्र दे० गायत्री 9 चिपकवा की पुत्री और सूर्य की पत्नी, वम, यमी और दोनों त्रिविकी कुमारों की माता, (इत विषय में

एक उपाख्यान प्रसिद्ध है कहते हैं एक बार सन्ना
अपने पितृवृद्ध जाने की इच्छा करने लगी, उसने अपने
पति सूर्य से अनुमति मांगी परन्तु वह न मिला सकी ।
सन्ना ने अपनी इच्छापूर्ति का दृढ़ निश्चय कर लिया
अतः अपनी विधवाभासक द्वारा उसन ठीक अपने
जैसी एक स्त्री का निर्माण किया जो धानो उसकी
छाया थी (और इसी लिए उसका नाम छाया पड़ा) ।
उस निर्मित स्त्री का अग्न स्वान पर रख कर वह
सूर्य की बिना बनाय अपने पितृवृद्ध पत्नी गई । बाह
में सूर्य के छाया में तीन बालक उत्पन्न हुए (दे०
छाया) छाया सुख पूर्वक सूर्य के साथ रहती जब
सन्ना वापस आई तो सूर्य ने उसे परम मङ्गी रखना ।
अपमानित और निरास होकर सन्ना ने छोटी का कप
धारण कर लिया और पृथ्वी पर घूमने लगी । समय
पाकर सूर्य की बन्धुस्थिति का पता लगा उसने जाना
कि उसकी पत्नी छोटी के रूप में घूमती है । फलतः
उसने भी छोटी के रूप धारण कर अपनी पत्नी में
महागम किया । उससे उसके अस्थिना कुमार नामक
दो पुत्र उत्पन्न हुए । मम० अविचार एक प्रधान
नियम जिसके अनुसार तदन्तर्गत नियमों का विचार
नाम रक्खा जाना है और वे सब नियम उसने
प्रकारित होने हैं विषय विशेषण - पुत्र स्ति का
विशेषण ।

- सम्मानम् [मम् + आ + मृत्] आमकारी सम्मान ।
सम्मानयम् [मम् + आ + मृत् + मृत् + पुक्] 1 सूचित
करना 2 सम्मानन 3 बच, हुन्या ।
सम्मान्यम् [वि०] [सम्मान - मत्तु] 1 सचेतन होश में आया
हुआ अनुजीवित 2 नाम वाला ।
सम्मानत [वि०] [सम्मान + इतच्] नाम वाला नामक नाम
धारी ।
सम्मान्य [वि०] [सम्मान - इति] 1 शमवाला 2 जिसका
नाम रक्खा जाय ।
सम्मान्य [वि०] सहने जानुनी पस्य-दे० म० जानुस्थाने जु ।
जिसके चूम्ने चलन समय टकराने हो ।
सम्मान्य [मम् + उर + अप्] 1 अतिताप दूखार 2 गर्मी
1 बोध ।
सद् [स्था० पर मर्त्य] शास्त्रना भाग बनाना ।
11 [चुग० उम० साटयति - ने] प्रकट करना पदार्थन
करना स्पष्ट करना ।
सद् [मृत् + मृत् + टाप् वा] 1 सत्य की
जटाएँ 2 (सह) की। अयास मुद्रा० ७।१, १४०
१।४७ 3 सूक्ष्म के लिये बाल विद्यन्तमुद्रासटा
प्रातःहनुमीन् - मृ० १।६० 1 शिखा, चोटी । मम०
- अङ्गुलि ।
सद् [चुग० उम० मर्त्यति - ने] 1 कति पहुँचाना

- बार शालमा 2 कलवान् होना 3 देना 4 सेना,
5 रहना ।
सद् [मृत् + मृत्] शास्त्र भाषा का एक उपकरण,
उदा० कर्पूरमयी - दे० ला० व० ५४२ ।
सद् [स्त्री०] [मृत् + व, पु०] 1 एक पक्षिविषय
2 एक वाद्ययन्त्र ।
सद् [चुग० उम० साटयति - ने] 1 समझना करना, पूरा
करना 2 अक्षरा छाड़ देना 3 जाला, हिलना-डुलना
4 अलङ्कृत करना सजाना ।
सद् [मृत् + मृत्, पु०] 1 सन की बनी डोरी
या स्त्री ।
सद् दे० सद् ।
सद् [मृत् + मृत्] चिपटा वा सदासी ।
सद् [मम् + मृत् + मृत्] पक्षियों की विभिन्न उड़ानों
में से एक दे० 'डोन' ।
सद् [वि०] [स्त्री०] [मृत् + मृत्, अकारकोप] 1
वर्तमान विद्यमान मौजूद-कल्पः स्वतः प्रकाशने
मुक्ता न परता मुक्ताम् नाम० १।१२० व० ७।१२
2 वास्तविक, असली, सत्य 3 अन्तः, अन्तःपुत्र, अन्तः
धर्मिता या स्त्री-सती बोधविशेष्येण दे०
१।१२, स० ५।१७ 4 कुलीन, योग्य, उच्च, बड़ा
कि 'अन्तःपुत्र' में 5 ठीक, उचित 6 सर्वोत्तम, श्रेष्ठ
7 सम्माननीय, भावनीय 8 बुद्धिमान्, विद्वान्
9 मनोहर, सुन्दर 10 दृढ़, स्थिर, - (पु०) मनुष्य,
अन्तःपुत्री स्थिति, स्थि-बाधन हि विद्यमान स्त्री
कारिपुत्रादि रपु० ४।८६, अक्षित परमावृष्टा
जाना यहाँ वास्तविक बनावृत्तम् भावि० १।१११,
रपु० २।८, रपु० १।१०, (मृ०) 1 जो कस्तुर
विद्यमान हो, सता, अस्तित्व, सर्वविरहेक सता,
2 कस्तुर विद्यमान, सचाई, वास्तविकता 3 यह,
जैसा कि 'अक्षित' में 4 दृढ़ या परमावृष्ट, (अक्षित
बाधन करना, सम्मान करना, उत्कार करना) ।
मम० अक्षित (अक्षित) [वि०] 1 विद्यमान और
अविद्यमान, मौजूद, जो मौजूद न हो 2 कलकी और
नकली 3 मध्य और मिथ्या 4 बला और बुरा
ठीक और गलत 5 पुण्यात्मा और दुष्ट (मृ० १।१०
व०) 1 अस्तित्व और अस्तित्व 2 बलाई और
बुराई ठीक और गलत, विवेकः बलाई और बुराई
में अक्षय सच जो दृढ़ वे विवेक, अक्षितः बलाई
और बुराई 4 विवेक का कारण-त सत्य
योनुमानित सत्यवृत्तिहेतु - रपु० १।१०,
- आचार (सचाचारः) 1 अक्षयद्वार, शिष्ट
आचार्य 2 बानी हुई रस्य, परपरायास पूर्व,
स्वरभासित प्रभा मृ० २।१८, अक्षय [वि०]
गुनी, यह, अक्षय उचित वा अच्छा अक्षय, अक्षय

(ननु०) १ पुनर्वृत्त वा पुन्यकार्यं २ तत्पुनः, पाचयता ३ भातिष्य, काण्डः वाय, पीन, कार. १ कृपा तथा भातिष्यपूर्वं व्यवहार, सत्कारयुक्त स्वागत २ सम्मान, भावर ३ देशकाल, ध्यान ४ पीनन ५ वर्ष, वार्षिक त्योहार, कुलम् मत्कुल, उत्तम कुल, कुलोप (वि०) उत्तम कुल में उत्पन्न उष्णकुलोद्भूत, कुल (वि०) १ मनीभाति वा उचित क्षेत्र में किया गया २ सत्कार पूर्वक स्वागत किया गया ३ पुत्र्य, प्रतिष्ठित, सम्मानित ४ पुत्रिन कलंकुत ५ स्वागत किया गया (त) सत्त का विशेषण, (सत्त) १ भातिष्य २ सद्पुन्य सत्विता—हस्ति, (स्त्री०) १ सादर व्यवहार, भातिष्य भातिष्यपूर्वं स्वागत २ सद्पुन्य महाभार,—विष्णु १. सद्पुन्य, भलाई सद्गुणान्ता मूर्तिमती च सत्किया-स्त० ५११५ २ वर्मांशता, सत्कर्म, पुण्याय ३ भातिष्य, भातिष्यपूर्वं स्वागत ४ शिष्टाचार, सत्विताय ५ सुद्विस्तसत्कार ६ अर्थोष्ठ सत्कार जीवोद्विष्ट किया, नतिः (स्त्री०) (सत्पुनति) उत्तम विधि, मानव्य, स्वर्गमुक्त, पुन्य (वि०) अष्टे पुनो से युक्त, पुण्यान्ता (न) पुन्यकार्यं उपायता भलाई, मेरी—परित,—परित (वि०) (सत्परित—न) महापारी, ईमानदार पुण्यान्ता वर्मतिमा मुनू सत्परित—ननु० २१७५, (ननु०) १ महापार पुण्यान्ता २ महापुनो का इतिहास—वा० १, कारा (सत्पारता) हस्ती,—विन् (ननु०) (सत्पिन्) पर भाष्या, 'अंक सत् पीर कित् का भाव' 'आत्मन् (पु०) सत् पीर कित् ने युक्त भाष्या 'आत्मन्' 'सत् वा अस्तित्य, भाव पीर हर्ष परभाष्या का विशेषण,—जगः (सत्जगन्) महा पुन्य पुण्यान्ता—वस्तु कमल का गया पता वच १ अच्छा भागं २ कर्मव्य का सम्मान बुद्धाचरण पुण्याचरण ३ शास्त्र विहित मित्रात परिहृ योग्य व्यक्ति से (एन) बहम करना, वस्तु जग म ही जाने वांछी 'अंक के लिए उपयुक्त वस्तु, मुचात दर्शित बलि, वाचन् योग्य व्यक्ति, पुण्यान्ता 'वर्षः योग्य आदाता के प्रति अनुबह की वर्षा विषयव्यक्ति के प्रति उदारता वा बर्षा, 'अचिन्' (वि०) पाचना का विचार कर दान भाति देने वाला,—पुनः १ यत्ता पुन, पाप्य पुन २ वह पुन जो पितरों के सम्मान में सभी विहित कर्मों का अनुष्ठान करे—प्रतिपक्ष (तर्क० में) पाप प्रकार के हेतुबामात्रों में से एक, प्रति अनुमित हेतु, वह हेतु जिसके विपक्ष में अन्य सत्यकल हेतु भी ही, उदा० 'अन्न मित्र है क्यों कि वह अन्न है'—अन्न अन्नित है क्योंकि वह उपन्य हुआ है'—अन्नकार का वेद, जगः (सद्गुणः) १ सत्ता, विष्ट

मानता, अस्तित्व २ वस्तुस्थिति, वास्तविकता
 ३ सद्बुद्धि, अच्छा स्वभाव, लोचन्य ४ चरता,
 साधुता, साधुर (सन्धासुर) धर्मपरायण माता का
 पुत्र भाग (सन्धासु विप्रका नेत्रक अस्तित्व माना
 आय जीव आभा भाग (सन्धासु) अष्टपुष्को का
 सम्मान, मित्रम् (सन्धिप्रभु) विद्यावासपात्र मित्र
 वृष्टि (स्त्री०) सती साध्वी स्त्री वध (वि०)
 जन्ते कुल का कुलोन वधस (पु०) शिकार
 तथा सुख भाषण - वस्तु १पु० १ अच्छी वस्तु
 २ अच्छी कथावस्तु विक्रम ११२ विष्णु
 (वि०) सुनिर्माण बहुधन वृक्षा (वि०) १ अच्छे
 व्यवहार का, सदाचारी, पुण्याचार्य करने वाला
 सदा २ विसकुल नाम वस्तुनाम सद्बुद्ध स्तन
 मण्डलस्थ वध प्राणयक कौशिल गीत० ३ (सर्ग)
 दोनो अथ अव्ययत है (सम्) १ सदाचार पुण्याचार्य
 २ अच्छा स्वभाव रोचक प्रवृत्ति सत्सर्ग - सन्धि
 धामम् सद्गु - सद्बुद्धि सत्तामय भले मनुष्यों
 का समाज या मण्डली भले मनुष्यों की समिति तथा सत्सत्सिद्धान्त
 मूर्खी यानि प्रवीणताम् हि० १ सत्प्रयोग सही
 प्रयोग - सहाय (वि०) अच्छे मित्र प्रियके सहायक
 है, (य) अच्छा सारी, - सार (वि०) अच्छे गत
 वाला (र) १ एक प्रकार का वृक्ष २ कवि
 ३ चित्रकार, हेतु (सत्केतु) निर्दोष अथवा वैध
 कारण ।

सतत (वि०) । सम + तन् । सत् सम अन्त्योऽन्त्ये निरुत् ।
 निरुत् सदा रहने वाला शाश्वत तन् (अन्त्य०)
 लगातार अविच्छिन्न रूप में निरुत्, सदा हृदय
 सुकृपा सुकृपा राजन सतत प्रियवाहित राम० ।
 सम० । स सति शब्द सति सत्यमे सततगतीन स
 सकारिण सतिमुद्रा शाय्य काया दण० अनन्यथा
 तणागंशराजिनि नि० १५ अथा नीन सतत
 सतिना योद्धमानावसी मेघ० १० कावित्
 (वि०) १ सदैव सतिस्ती २ सदाशक्त ।
 सतर्क (वि०) । तर्कण मह ब० त० १ तर्क करने में
 निपुण २ सत्य भावधान ।
 सति (स्त्री०) । सम् + क्तिप् प्रत्यय । उपहार दान
 २ अन्न, भोजन ।
 सती (स्त्री०) । सत् + क्तिप् साध्वी स्त्री (या पत्नी)
 कु० १।२१ २ सत्यामित्री । दुर्गादेवी कु० १।२१ ।
 सतीपत्य [सती + पत्य] सती होने का भाव सतीपत्य ।
 सतीपः [सती + पी + ण] । एक प्रकार की दान
 मटर २ बीज ।
 सतीर्थ, सतीर्थ [सवान् तीर्थं सुषट्पत्य- ब० म०
 तीर्थं मृती यजति इत्यर्थं वत् प्रत्यय सवानस्य

त] महाध्यायी, साध अध्ययन करने वाले
छात्रावली ।

कालीकः [सता + कल + कृ । १ बोल २ हुवा बाध
३ मन्त्र दास (स्त्री० यी) ।

कलेरः [सन् + एर ता-नाहस्र । समी चोरक ।

कला [सन् + ल + टाप् । १ अस्ति-व विद्यादानना
होने का भाव २ बन्धुमित्रिन् बान्धविकता ३ उच्च
तम ज्ञान या मन्त्रादाना ४ उन्नयना आश्रय ।

कलम् [बहुधा सन् + कल जाना है मद् + ण् ।

१ यज्ञीय अक्षि का प्रार २३ से १०० दिन तक
होने वाले यज्ञों में पाई जाने वाली २ यज्ञभात ३ अहुति
बहावा उत्तरा ४ उत्तरा वद-ना ५ मद्गुण

६ ५४ निवासस्थान ७ अत्राण ८ पदवीपत्र

५ अत्रन इन कि० ११२ १० तालाब पान्थर

११ बालम ३ अना ७ शरणार्थ आश्रम आश्रय

स्थान । सम० अध्ययन (णम्) भक्षा का चलने

वाला दीक्ष कार्यकाल

कला (अप०) [सद् + कः] क म स मिल कर गठित

सम० हनु (पु०) इन्द्र का विशाख ।

कलिः [सद् + लि । १ बाधक २ प्रक्षेप ।

कलिकम् (पु०) [कल् + इति । १ अत्रिन्तर उन्नत न

करना रचना है उदार महान्त्रि जि १ ३०

कलम् (प्रथम इस अर्थ में पू० भी होता है) [मना

भक्त सन् + कः । १ होने का भाव अस्ति य

सत्ता २ प्रहृष्टि मूलतत्त्व ३ आभाषिक चरित्र ४

स्वभाव ५ जीवन जीव ६ अणु जीवोदकित ७

शक्ति का सिद्धान्त ज० ८ ९ ३ केना, १

ज्ञान ६ भूय ७ तत्त्वार्थ बन्धु सम्पत्ति ८ पूजन १,

जैसे कि पूर्वोक्त वायु अग्नि आदि ९ प्राणवारी बीच

ज्ञानदार बन्धु-व-गन् विवेकनिबल्लस्य बन्धु-गु०

२१८ १५१५ ज० ८ ३ ११ भूत पत्र मिश्रा

११ भद्रता मद्गुण श्रेष्ठता १२ सवाई बन्धुविकता

विशेष १३ सामाज्य ऊर्जा सार्वत्र्य वन शक्ति,

अभक्ति शक्ति बहुलत्व विसम पुत्र बन्ता है

पुत्रार्थ विद्यामिष्टि गन्ध अर्चन भद्रता तोषकरण

मुखा० गु० ५१३१ मुद्रा० १०० १४ बुद्धि

धना अश्वि मयज १० भद्रता और शक्ति का

सर्वोत्तम गुण मन्त्रिक (देखो तथा स्वर्गार प्राणियों

में यह बहुभाषन से पाया जाता है) १६ स्का-विक

गुण या लक्षण १७ गजा नाम । सम० अनुकूल

(वि०) मनुष्य के मांस स्तन्य या कर्तृहिन वारिष

के अनुसार भ० ० ३० २ अने मद्य या मर्ग

के अनुसार ल० ७३३ १२३ मन्त्रि० व्याख्या

प्रकरणानुक्रम उपायन पदान्त नहीं जानो)।—उद्देशक

१ भद्रता के गुण का आधिक्य २ माहस या सामर्थ्य

में प्रयुक्तता, कलकम् गर्भ के कलक--व० ५,

—कलक-केना की हानि, विविक्त (वि०)

१ प्राकृतिक २ मद्गुणी, पुष्पावका, कर, अक्षुष्टि

(स्त्री०) प्रकृति की पवित्रता वा बराबर, केन

(वि०) सद्गुणों में वस्तु, पुष्पावका,—कलकः

१ वन या मासर्ष्य की हानि २ विश्वविनाश, प्रलय,

—सार १ सामर्थ्य का सार, बहावाराण बाहुल

२ अर्थन कतिहासी पुत्र,—ल० (वि०) १ अपनी

प्रहान में स्थित २ पक्षों में अन्तर्हित ३ स्त्री

४ मन्त्र विविष्ट उन्नत, श्रेष्ठ ।

कलकदेव्य (वि०) [कल + ए + कल् + कल्, कल्]

पक्षों या बीचवारी प्राणियों को डराने वाला ।

कल (वि०) [मने क्लम सत + यत्] १ कल्पा,

वास्तविक अथवा प्रमा कि कल्पयत, कल्पयत में

२ ईमानदार निष्कपट सच्चा, निष्ठावान् ३ लक्ष्-

गुणमय्य कर लक्ष्मलोक, लक्ष्मलोक, लक्ष्म

के ऊपर मान लीक में सबसे ऊपर का लोक—दे० लोक

२ पीयूष का पेड़ ३ राम का नाम ४ विष्णु का नाम

५ नाबोमुख बाह्य को अविष्ठाकी देवता,—कल्

१ सवाई—वीनालक्ष्य विविष्टये—मनु० २१८१, लक्ष

५ १ मय बोलना २ निष्कपटता ३ भद्रता, सन्धु,

शुचिता ४ मय प्रतिष्ठा बहीर इकोति—कल्पा

मुमलोपयन्—ल० १२१९, मनु० ८१११ ३ सवाई,

प्रवृत्ति सत्यता या कृति ६ चारों युगों में एकमात्र,

स्वर्गमय सत्ययुग ७ पानी—ल० (अप०) क-

मुष, कल्पा निस्सदेह, निषय ही कल्पुस्तु—साध

शायि से वा कल्पुस्तु—का०, कु० ६१९१ ल०

—अनुत (वि०) १ लक्ष और मिथ्या सत्यानुता व

पक्षता वि० २१८८ २ लक्ष प्रवृत्ति होने वाला परम्पु

मिथ्या (—लक्ष,—ले) १ सवाई और लूट २ लूट और

मय का अभ्यास अर्थात् व्यापार, वाणिज्य—मनु०

४१४ ६ अक्षितलक्षि (वि०) अक्षी प्रसिद्धा वृत्ति

करने वाला निष्कपट,—उद्देशक १ सवाई में प्रयुक्तता

३ सच्चे श्रेष्ठता,—उद्देश (वि०) सत्यवादी,—उद्-

वाचक (वि०) प्राचीन वृत्ति करने वाला,—वाच सत्य

का प्रेमी लक्ष्य एक शक्ति का नाम,—लक्ष्मि (अप०)

सवाई को देखने वाला, सत्यता को मापने वाला,

वन (वि०) लक्ष के गुण से समृद्ध सत्यता सच्चा

वृत्ति (वि०), लक्ष सत्यवादी—बुरख विष्णुलोक,

—लूट (वि०) सत्यता से पवित्र किया हुआ (जैसे

कि बचन) सत्यपूजा ब्रह्माणी—मनु०—६४६,—अक्षि

(वि०) बाध का पक्षा, करने बचन का पालन

करन वाला, भाषा सचाजित् की पुत्री तथा कृष्ण

की प्रिय पत्नी का नाम, (इसी सत्यवादी के लिए

कृष्ण ने इन्द्र से युद्ध किया, तथा मन्दतन से पारि-

जात बूझ लाकर उसके उद्योग में लगाया), युष्मत् स्वर्णम्, दे० ऊ० सत्य (२) चक्षत् (वि०) सत्य बाबो, सत्यनिष्ठ, (पु०) 1 सत्त 'धवि 2 महारमा (नपु०) सवाई ईमानदारी बच्च (वि०) सत्यभाषी (अन्) सवाई, ईमानदारी, बाब् (वि) सत्यवादा सत्यनिष्ठ, खरा (पु०) 1 सत्त महारमा, चवि कीबा, बाब्बत् सत्यभाषण बरापन बाबिन् (वि०)

1. सत्यभाषी 2. निष्कपट, स्पष्टभाषी खरा बत्त, खर, सत्य (वि०) 1 बन्दे का पक्का अपनी प्रतिज्ञा का पालन करने वाला सत्यनिष्ठ, ईमानदार, निष्कपट, बाब्बत् शपथग्रहण, सत्तास (वि०) प्रकृत, मुबारक बाला देवने में ठीक जयता हुआ, सत्यम् ।

सत्यकारः [सत्य + कृ + क्त, मुम्] सत्य करना बादा पूरा करना, सोदे वा साबदा की बातें पूरी करना 2. ब्याने की रकम जमाऊ दिया गया धन, ठेके का काम पूरा करने के लिए खजानत के रूप में दी गई अक्षिप राशि - कि० १११५० ।

सत्यवत् (वि०) [सत्य + भवृ] सत्यभाषी, सत्यनिष्ठ, पु० एक राजा का नाम, सावित्री का पति - सी एक मछु की लड़की जो पराक्षर मणि के सहवास से ब्यास की माता बनी, 'भूतः स्यात् ।

सत्वा [सत्यवत्ति अस्या - सत्यं जच् + टाप्] 1 सवाई ईमानदारी 2 सीता का नाम 3 दीपदी का नाम - कि० १११५० 4 ब्यास की माता सत्यवती का नाम 5. दुर्गा का नाम 6 कृष्ण की पत्नी सत्यभामा का नाम ।

सत्यवत्सवत् [सत्य + भिच् + स्पृट् पुकागम्] 1 सत्यभाषण करना, सत्य का पालन करना 2 (किमी सविदा या सोदे बाबि की) बातें पूरी करना ।

सत्य दे० 'सत्य' ।

सत्य (वि०) [सह जपदा-अ० म०] सज्जासोल, बिनयी ।

सत्यवत्ति (पु०) निष्प का पुत्र तथा सत्यभामा का पिता (सत्यवत्ति को पूर्व में स्पन्दनक नाम की मणि प्राप्त हुई थी, और उसने उसको अपने कण्ठ में रहन लिया था। बाद में सत्यवत्ति ने इस मणि को अपने भाई प्रसेन को दे दिया प्रसेन ने यह मणि क्षात्रराज जांबवान् के हाथ लयी, जब कि उसने प्रसेन का वध किया। फिर कृष्ण ने जांबवान् से युद्ध किया और उसे परास्त कर दिया। अतः जांबवान् ने अपनी पुत्री के हाथ यह मणि कृष्ण को दे दी। दे० जाम्बवत् । कृष्ण ने इस मणि को इसके मूल अधिकारी सत्यवत्ति को दे दिया। सत्यवत्ति ने ही कृष्णभा के कारण यह मणि, अपनी पुत्री सत्यभामा प्रसेन कृष्ण को ही अर्पित कर दी। उसके पश्चात् एक बार जब इस

मणि के साथ सत्यभामा अपने पिता के घर विद्यमान थी तब अक्रूर नामक यादव के मदकाने पर, जो स्वयं इस मणि को लेना चाहता था सत्यभामा ने सत्यवत्ति को मार डाला और वह मणि लेकर अक्रूर को दे दी। उसके बाद कृष्ण ने सत्यभामा की मार डाली। परन्तु जब उन्होंने पता लगा कि वह मणि तो अक्रूर के पास है तो उन्होंने कहा कि एक बार वह मणि सब लोगों को दिखा दो जय नभः फिर अक्रूर मर ही उस मणि का अपने पास रखने) ।

सत्यर (वि०) [सह सत्या अ० म०] पूर्णतया दृढ़ गामी वृत्त रम् (अर्थ०) शीघ्र जल्दी में ।

सत्यकार (वि०) [सह सत्यकारेण] बह मनस्य जिसके मुँह से बालते समय बूक निकले २० बाल के साथ मुँह से बूक निकलना ।

सत् (धा० पर०) कुछ व अनुसार मुदा० पर०-सीदति पात्र प्रति को छोड़कर अन्य इकारान्त तथा उकारान्त उपसर्ग के स्थान पर मद् के सू की वृत्ता आता है। 1 बैठना बैठ जाना, आगम करना, बैठना बैठ जाना, विश्राम करना बस जाना, अवका सधुरक स्थित नितम्बे निश्चिन्ता गिरे भट्टि० ११५८ 2 हुजना, मोने मगाना तेन एव विदुषा मध्यं पक्षे गौरिष सीदति हि० प्र० २४ (यहाँ इस अर्थ का अर्थ - सीदती है) 3 जीना, हुना खमना बाम करना 4 खिन्न होना हृष्टोत्साह होना, निराश होना, हताश होना, अग्राज्ञा में डूब जाना नाथ हरे बय नाथ हरे सीदति राधा बामगुहे वीत० ६ 5 प्याज होना नष्ट होना बर्बाद होना, छोड़ना, नष्ट होना - बिपत्तया नीनी सकलमवश सीदति जगत - हि० २१७३, रघु० ३६४, हि० २१३० 6 हुकी होना पीछित होना, कष्टग्रस्त होना अवहाय होना कि० ११६० मनु० ८१२ 7 बाधित होना, बिध्न युक्त होना, मनु० ११२४ 8 प्याज होना, खान्द होना, बका हुआ होना, निडाज होना, अवसन्न होना - सीदति से हृदय का०, सीदति मम गात्राणि म० ११८ 9 जाना, घेर० (मादर्यति ने) 1 बिडाना आराम कराना इच्छा० (सिन्धु-सवि) बैठने की इच्छा करना, जब 1 निडाज होना मुँछिन होना, बिफल होना, रास्ते से हट जाना काशी पक्षुपिशाचसीदति कि० २१६ ५००, भट्टि० ६१२ २ अगतना उपलित होना 3 हतो न्याह होना माल्य होना 4 नष्ट होना क्षीण होना यमान होना भास्वदुःखमयमा बन्धु कृतवाय भावयो दनि - (वे०१) 1 अवमन करना हताशाह करना बर्बाद करना - अ० ६१५ २ दूर करना, हटाना - औपुष्यमात्रमवमावर्षति प्रनिष्ठा शा० ५१३ ३ नष्ट

करना मात्र जाना जा- 1 नीचे बैठना निकट बैठना
2 पास में रहना 3 पहुँचना उपगमन करना राम
जाना हिमालययात्रायात्रासाद कु० 31६० शि० ११-
रघु० ६१४ 4 अकरमात मिलना प्राप्त करना निर्माण
करना रघु० ११६० १४०५ 5 भूग तना-घट्टि०
११२६ 6 मूठमूठ होना आक्रमण करना 7 रमना
(परना) 1 दृष्टगता द्वारा जाना हर्मिल करना
प्रमाण करना-अवगमनना स्थायमासा-रघु० ११९५
2 उपगमन करना, राम जाना पहुँचना आधिकार
में करना 3 स्वस्थानमासास गजन्मर्मा कर्षादि
पद्य० ११६५ पद्य० ३४ मेट्टि० १५३ 3 पहर
सेना-अर्धन रावर्धनेन पूर्वप्रस्थान वेतवेरमप्यागाद
पद्यम वि० ४ मूठमूठ होना आक्रमण करना
मट्टि० ६१९५, उब् - 1 हुबना (आ० म न०)
बर्बाद होना धीज होना-उन्मीर्युगम लोका मय०
११२४ 2 काड़ होना, त्याग देना 3 बिदाह क लोका
उठना (प्रे०) 1 अष्ट करना उपगमन करना
उत्साहान्ति आतिथ्यार्थ मय० ११६० मन०

११२६३ 2 उलटना 3 मलना पालिश करना उब्-
1 निकट बैठना पहुँचना पास जाना उपसदृश
भावन् मट्टि० ११०२, ६१३५ 2 सेवा में प्रसन्न
रहना सेवा करना आक्रमणमाधनेस्त्रीस्त्रीसदृश
प्रसाधका रघु० १३१२२ शि० १३१३६ 3 बड़ाई
करना, नि 1 नीचे बैठ जाना करना बिश्राम
करना उष्णालु शिशिर निषीदति तन्नामलालनाम्
शिकी विक्रम० २०२३ 4 बुबना, बिफल होना
निराश होना प्र 1 प्रसन्न होना कृपालु होना
ममलपद होना प्राय तुमुन्नता क साध १५५
पथास्तरणामु रन्तु प्रसाद शवकमकममलीय रघु०
६१६६ 2 बाधस्त होना परिपुष्ट होना, सन्तुष्ट
होना निमित्तमुद्दिश्य हि य प्रकृतिः भुव स तस्या
पश्यते प्रसीदति पद्य० ११०२३ 3 निमल होना
स्वच्छ होना, सफ्ट होना धमकना (शा० और आ०)
दिश प्रसेधुर्धनो बद्ध मुक्ता रघु० ३११४ प्रमसा
बोधवाच्यम् कुम्भयोगमदीयम् ४१२१ 4 फल
जाना, सकल होना कामयाव होना क्रिया हि वस्तु-
पतिना प्रसीदति -रघु० ३१०९ ३० प्रसन्न, (प्रे०)
1 शोको करना अनुग्रह प्राप्त करना प्रायोजन करना
निवेदन करना तत्सामान्य प्रणिचार काय प्रस य
त्यामहमाशमीधम मय० १११४६ रघु० १
पात्र० ११२ ३ 2 व्यर्थ करना चेत प्रसादयति
मय० २०२३ शि० हुबना, बक जाना 2 हराणा
होना निहाल होना कल्पवृक्ष होना, बिन्न होना,
निराश होना, माउमोद होना बिमलपति होना
बिबीधति राशिनि अउर्वा मू० बनि पापम नी० ४६

मय० ११ नट्टि० ३८ रघु० १३५ प्रे०
1 निराग करना उगा करना - कल्पवृक्ष का
पीड़ित करना

मह [मद अत्र उल्लेख का न]

सबसाक [दखन स० ४५ ३० म० कचड़ा]

महमहम [मिथ्या तनन ४५ ३० म०] बगल का एक
मद ३४ पक्षी]

सबस्य मद + मूट 1 घर महल भवन 2 स्थान होना
अत्र होना म० ३ ३ अवसाद आनि कलानि
4 हानि ५ एक ११६ यम का आवास स्थान]

सबस्य (वि०) मह म० ३० म०] कृपालु मुकुमार
दयापूज यम (अ०) कृपा करके दया करके]

सबस्य मय० [साध पस्याम-सध + अति 1 अत्यंत
प्रकार पर, निवासस्थान 2 मन्त्र पद्धिबना मन्त्र
नानि मट मन्त्रवर्द्धिना भाषि० १११६, मट्टि०
२१६३] मय० -मत्त (वि०) मन्त्र में बँटा हुआ
रघु० ११६६ नृहम मन्त्रा भवन, परिचय-कक्षा
रघु० ११६५

सबस्य मदसि मयु बसति वा यन] 1 मन्त्र का मन्त्राद्य
या मन्त्र में उपस्थित व्यक्तित्व मन्त्र का मेम्बर (पक्ष
जुरी का सदस्य) 2 यात्रक यज्ञ में बह्मा या सहायक
अतिथि म०

सबा (अ०) [सर्वात्मन काल सबा दाय हादेश]
हमसा मवदा नि य मदेव। मय० आनन्द (वि०)
उदा प्रमन्न रहना - गा (वि०) मिव का विशेषण
पति 1 बाय 2 - १ ३ शाश्वत आनन्द माध,
लोबा, नीचा 1 क नया नदी का नाम 2 वह
नदी जिसमें सबै पाना रहता है बहती हुई नदी
-बाय (वि०) मदेव उग्रहर देव बाबा (वह हाथी)
हिमके मदेव मदेव बहता है-पद्य० २०३० (अ०)
1 मन्त्र बहान वाला हाथी 2 मन्त्रविप 3 हाथ के
हाथी का नाम 4 पञ्च मत्त एक पक्षा मयन
काल (वि०) हमसा फलने वाला (म०) 1 बेल
का पेड़ 2 कटहल का पेड़ 3 गलर का पेड़
4 नारियल का पेड़ योक्वि (प०) कृष्ण का
विशेषण शिखर गिब का नाम]

सबस्य (स्त्री०-औ०) सबस्य सबस्य (स्त्री० औ०) (वि०)
ममान दर्शनमय दान क विन्द कज वा
गमानस्य मादेश 1 समान धनता बुद्धता नृप्य,
अनुकूल (म०) या अति० क साथ अथवा समाप्त
में प्रयुक्त] १ योग्य समचित उपयुक्त समानरूप
जैसा कि प्रभावमदक वाच्यम हि० २५१
3 योग्य शक साधारण भुनक्त कि तत्सबस्य
कुम्भ रघु० ११५१ ११६५
सबस्य (वि०) [मन्त्र देशन ३० म०] 1 किसी देश का

हामी 2 एक ही स्थान में सम्बन्ध रखने वाला
3 आसन्नार्थी, पड़ोसी ।

सद्यः (न०) [सिद्धयस्मिन् सद् + अतिन्] 1 घर,
मकान भावाम्बान चक्रितननताही सद्य सद्यो
विशेष भाषि० २।३२ ? स्थान, जगह 3 अतिर
4 बेसी 'जग' ।

सद्यः (अध०) [सिद्धयस्मिन् नि०] 1 आज, उसी दिन
मकानीया पयोज्येयु सद्यो वा जाने इति, पायस्य
हि फल सद्य मुभा० 2 तुम्हें सम्मान फौरन
अकम्मान् चक्रितननताही सद्य सद्यो विशेष
भाषि० २।३२ कु० ३।२९, मेघ० १९ 'हाल
ही में, कुछ ही समय के अंदर' जैसा कि सद्यो भूनामोन्
--स० ४ में । सद्यः कालः वर्तमान काल
कालीन (वि०) हाल ही का --ज्ञान (वि०)
(सद्योज्ञान) अभी पैदा हुआ, (स०) 1 बछड़ा
2 विश्व का विशेषण, सद्यिन् (वि०) शीघ्र नष्ट
होने वाला, सद्यः मेघ० १० धुड़िले, शीघ्र
लकाल की हुई धुड़िले ।

सद्यस्त (वि०) [सद्य + क्त] 1 नृपत अतिवश
2 नास्तिकिक ।

सद्यु (वि०) [सद् + क्त] 1 विश्रान करने वाला, ठहरने
वाला 2 अने प्रकार ।

सद्यु (वि०) सद्यु इति स० म०] अगस्त्य, कल्हणिय
विवाहपूर्ण ।

सद्युस्य [सद् + स्य प्रत्यय] सन ।

सद्यस्य (वि०) [सद्य + स्य प्रत्यय] अतिवश, स०
म०] 1 समान गुणों के गुण 2 एक जैसा वर्ण्यो
वाला 3 उसी भाति 'स सम्प्रदाय का 4 समान
मिलना-जुटना । सद्यः आरिष्ठी वैद्य स्यो ५ स्याय-
नेति से विवाहस्य में दूध स्त्री ।

सद्यस्यी दे० ऊ० सद्यस्यस्यिणी ।

सद्यस्यिन् (वि०) (स्त्री० जी) [सद्यस्य + इति अत्य
सद्यस्य इति, १० म०] दे० सद्यस्येन ।

सद्यिन् (पु०) [सद्य + इति दृग्व्य] वैद्य, पाद ।

सद्योष्ठी [सद्युश्च + ङीप्, अल्प, दीर्घ] सद्यी, सद्येष्ठी,
अल्प सद्येष्ठी अट्टि० ६।७ ।

सद्योष्ठी (वि०) [सद्युश्च + ङीप् अलोप, दीर्घ] साध
रहने वाला, सद्युश्च ।

सद्युश्च (वि०) (स्त्री० सद्योष्ठी) [सद्युश्च इति सद्य
+ ङीप् + चिचच्, सद्य आदेश] साध चलने वाला,
सद्यश्च, सद्यी, पु०--सद्यश्च (पति) सि० ८।४६ ।

सद्यु (पदा०) म० सदा० उ० सद्यः सद्यिन्, सद्यिनि सद्ये
मन कर्मका० सद्यने, सायने, दृष्टका० सियनिपिन,
सियनिपि 1 प्रेय करना, पसन्द करना 2 पूजा
करना, सम्मान करना 3 श्राद्ध करना, अतिवश

करना 4 अनुग्रह के साथ प्राप्त करना 5 उपहारों
से सम्मान करना, देना, प्रदान करना, बितरण
करना ।

सद्यः [सद् + अच्] हाथी के कानों की फड़फड़ाहट ।

सद्यन् (पु०) [सद्, अति] बड़ा का विशेषण--(अध०)
मदा, नित्य । सद्यः कुम्हार बड़ा के चार पुत्री
में से एक ।

सद्यन्त दे० सद्यन्त ।

सदा (अध०) [सदा, नि० दम्य न । ह्येषा, नित्य ।

सदात् (अध०) [सदा + क्त + क्तिच्] सदा, ह्येषा ।

सदातन (वि०) (स्त्री० सौ) [सदा + टधुल् मुद्
नि० दम्य न] 1 नित्य निरन्तर शाश्वत स्थायी
एव धर्म सनातन 2 बृहत् स्थिर निश्चिन
उत्तर० ५।२२ 3 पुष्पकापीन शायीन न पुता-
न पुष्प शिष्य सनातन पित्रमुपासकम् स्वयम्
अट्टि० १।१ 2 सित का नाम 3 बड़ा का नाम,
सौ 1 लक्ष्मी का नाम 2 दुर्गा या पार्वती का
नाम 3 मरुस्थली का नाम ।

सदात्त (वि०) [सदा नाथेन - स० स०] 1 स्थायी
वाला प्रभु या पति वाला स्वया नाथेन वैदेही
मनया सदा वतन रामा० 2 जिसका कोई धर्म
भावका या प्रसक्त हो मनाया इसनी धर्मधारिण
म० १ 3 कच्छा किया हुआ, अधिकार किया
हुआ 4 सम्पन्न, सहित, एक समेय, पूर्ण प्राय
समाप्त में सनातनाय इव प्रतिभाति स० १,
शामान्यसनातना सनातनस्य विक्रम० १, मेघ० १८,
कु० ३।१६ म० १।२२ विक्रम० ४।१० ।

सदाधि (वि०) [समाना आधिक्ये स० स०] 1 एक
ही वेत का सहोदर 2 स्थितेष्टा बच्चा 3 समान,
मिलना-जुटना-सद्भावमनाभिनिर्मात्र सदा 4 स्नेह
शित धि 1 सदा भाई, गहरीकी स्थितेष्टा
2 स्थितेष्टा वपु वि० १।३।११ 3 स्थितेष्टा ओ
मान पीठी के अन्तर्गत हो ।

सदास्य [सनायि + यत्] मान पीठियों के पीछर एक ही
पण का स्थितेष्टा ।

सद्यि [सद् इत्] 1 पूजा, सेवा 2 उपहार, दान
3 अनुग्रह सादर निवेदन (स्त्री०) सी इस अर्थ में ।

सद्यिष्ठीक्ये, सद्यिष्ठीक्ये [सद्यिष्ठी (छे) वेत स० म०]
यह भाषण विमर्षे बृहत् से बृहत् निकले, मेरी बोली
विमर्षे बृहत् उभये ।

सद्यी [सति, ङीप्] 1 सादर अनुग्रह 2 विद्या 3 हाथी
के कानों की फड़फड़ाहट ।

सद्यि (स०) (वि०) [समान शीघ्रस्यस्य --स० स०]
1 एक ही चीज के से रहने वाला, साथ-साथ रहने
वाला 2 निकटस्थ, सधीयवर्ती ।

सम्बाहः [सम् + दु + बञ्] समदह, प्रत्यावर्तन ।

सम्बाहः [सम् + दह् + बञ्] जलन, उपभोग ।

सम्बाध् (भू० क० ह०) [सम् + दिह् + क्त] 1. सत्ता हुआ, डका हुआ 2. भ्रातृक, सम्बन्धायक, अनिश्चित जैसा कि 'सविध मति-बुद्धि' में 3 भ्रान्त, विभ्रान्त मा० ११२ 4 सशक, प्रशान्तस्व 5. अव्य-वस्थित, अव्यष्ट दुःकृत (जैसे कि वाक्य) 6 उत्तरनाक, जोखिम में मारा हुआ, अशुभसित 7 विषाक्त ।

सविध (भू० क० ह०) [सम् + दिह् + क्त] 1 अकेलित, इगित किया हुआ 2 निर्दिष्ट 3 उक्त, बतित, सूचित 4 बाधा किया हुआ, प्रतिज्ञात, -इः जिसे सदेश पूर्वकाने का कार्य मीमा गया हो, सदेशबाहक, दूत, हलकार, मरिष्टार्थ, दम् सूचना, समाचार, खबर ।

सन्धित (वि०) [सम् + धी + क्त] बद्ध, प्रयोजित, बँधी में जकड़ा हुआ ।

सन्धी [सम् + धी + उ + क्त] अगोला, छोटी जात, शय्याकुशा ।

सन्धीपण (वि०) (सन्धी-पण) [सम् + दीप् + णिप् + क्त] 1. सुलगने वाला, प्रज्वलित करने वाला, भस्करने वाला उत्तर० २ 2 उद्दीपक उत्तर० ४, -जः 1. कामदेव के पाश बाणों में से एक, -जम् 1 मुग्धमान, प्रज्वलित करना 2 भस्करना, उद्दीपन करना जनन-सन्धीपनभासु कुर्वने ऋतु० १११२ ।

सन्धीपण (भू० क० ह०) [सम् + दीप् + क्त] 1. सुलगना हुआ, प्रज्वलित किया हुआ 2. उत्तेजित, उद्दीपित 3. भस्कराया हुआ, उकसाया हुआ, प्रज्वलित ।

सन्धुष्ट (भू० क० ह०) [सम् + दुष्ट + क्त] 1. कलुषित किया हुआ, मलित किया हुआ 2. दुष्ट, कमीना ।

सन्धुषणम् [सम् + धूप् + णिप् + क्त] मलित करना, धाष्ट करना, विषाक्त करना, बराब करना ।

सन्धेजः [सम् + दिह् + बञ्] 1 सूचना, समाचार, खबर 2 सदेश, सवाद सदेश में हर जनपतिकोषविशेषित-तय मेघ० ७, १३, १४० १२१३, कु० ११२ 3. आज्ञा, आज्ञेय -अनुष्टिपो गुरोः सदेशः श० ५ । सम० अर्थः सदेश का विषय, वाक् सदेश, -हूरः 1. सदेशबाहक, दूत 2 दूत, राजदूत ।

सन्धेहः [सम् + दिह् + बञ्] 1 सशय, अनिश्चिन्ता, शंका, -कम् क सन्धेहः 2 जोखिम, सतता, हर -जीविन-सन्धेहोलामारणित का० अर्थात् जने प्रवृत्तिः समन्वेह-हि० १ 3 (बल० शा० में) इस नाम का एक अलंकार जिसमें दो पदार्थों की धमिल समानता के कारण भ्रान्ति से एक वस्तु को अन्य वस्तु समझ लिया जाय । इस अलंकार को सम्मट तथा कथ्य कुछ विद्वान् 'समदेह' नाम से भी पुकारते हैं । सन्धेहस्तु यथोक्ता नन्दनुरो च संशय -काव्य० १०, गद्य० १० मा०

११२, (पाठांतर), विक्रम० ३१२ । सम० -होला अनिश्चिति का शंका, शंका की स्थिति, दुविधा, अमयप्रस ।

सन्धेहः [सम् + दिह् + बञ्] 1. दूध बूझना 2. किसी वस्तु की समष्टि, समुच्चय, ढेर, राशि, सघात कुम्भार-कन्दमर्बुदु सन्धेहवादिना भास्तेनोलाभ्यति मा० ३ भाषि० ४१९ ।

सन्धावः [सम् + धु + बञ्] सगवह, प्रत्यावर्तन ।

सन्धा [सम् + धा + अञ् + टाप्] 1. घिलाप, माहृषय 2. बनिष्ट मेघ, प्रगाढ सघन 3 स्थिति, वधा 4. बाधा प्रतिज्ञा अनुबन्ध सन्धिरा ततार सन्धामिह मय-सगव १४५२, महावीर० ७८६ 5. सीमा, दर 6 स्थिरता स्थय 7 सन्धा 8 मद्यमचान ।

सन्धानम् [सम् + धा + क्त] 1 घिलाना, ढोहना 2 मेल, साथ, सम्बन्ध-यदर्थं विविधं यवति कृतमन्धानमिह नन-श० ११०, कु० ५२७, १४० १२१०१ 3. मिश्रण, (जीविक-आदि का) सम्मिश्रण 4 पुनरुद्धार, जीर्णोद्धार 5. ठीक बैठाना, प्रमाना (जैसे कि मनुष्य की बोरी पर बाण का साधना) तत्प्राप्तकृतसन्धानं प्रतिभदुर सायकम् श० ११११, शि० २०१८ 6 मंत्री, मेल, दोस्ती, मेल-मिलाप सूक्ष्मद्वयसुखबन्धो ह-सन्धानमेष दुर्बो नो यवति हि० ११२ (यहाँ इसका अर्थ 'मिलावा या ढोहना' भी है) 7 जोड़, ग्रन्थ पाठ्यकुशो-मन्धाने गुरुक-मृधु० 8 अवधान 9. निवेदन 10. समा-लना 11 (मदिरा का) वासवन 12. मदिरा या उसका कोई भेद 13 पीने की इच्छा उत्पन्न करने वाली चटपटी चीजें 14 अन्धार आदि काना 15. रक्त-आवरोधक औषधियों के द्वारा रक्ता की सिकुड़न 16 काँड़ी ।

सन्धानित (वि०) [सन्धान + इतप्] 1. मिलावा हुआ, साथ साथ मन्धी किया हुआ 2 बांधा हुआ, कसा हुआ ।

सन्धिः [सम् + धा + क्त] 1 मेल, सम, सम्मिश्रण, सम्मन्ध-सन्धये सरला सुधी कथा ज्ञेयाय काँड़ी मुमा०, मेघ० ५८ 2 संधिदा, करार 3. मिश्रता, मधुद्रम, मेरी, मेल-मिलाप, सन्धिपत्र सुलहनामा (विवेशनीति में प्रयोज्य छ' उपार्थों में से एक) कति प्रकारः सन्धीनां यवन्ति-हि० (हि० ४१०९-१२५ तक कई प्रकारों का वर्णन किया है), मनुष्या न हि मध्याह्नमुपलभ्येतापि सन्धिना शि० ११८८ 4. जीव, (धारी का) सम्बन्ध -तुरगानु-धावनकाश्चित्तसन्धी-श० २ 5. (वक्ष्य की) गह 6 छेद, बिदार, दरार 7. विशेषतया मुरंग, या तेंब की चोर किसी यकान में बूझने के लिए बनाते हैं -वृषावाटिका परिसरे सन्धि कुरवा प्रविष्टीरस्ति मध्यम-

कम्-मूच्छ० ३ मू० १२७६ ४ पार्श्वक, प्रभाग
९ (आ० में) सहिता, उच्चारण की सुगमता के
लिए व्यभिपरिवर्तन की प्रवृत्ति, कर्णविकार
१० अन्तराल, विश्राम ११ लकट काल १२ उरवृत्त
अक्षर १३ यमाल-काल १४ (ना० से) प्रभाग या
शब्द (यह लोचनो गिनती में पक्ष है भा० ६०
३३०-३३२) कु० ७११ १५ प्रग म्नी की श्रुत
निरूपण । सम० अक्षरम् मयुक्त स्वर सभिन्ना
(ए, ऐ, ओ औ) औरः परम मयुक्त लगाने वाला
वह शब्द जो हर में पाठ लगाता है, - छः (दायाँ
बाहि में) छिद्र या मूलक करना, अक्ष मारक सदिरा
औरक जो प्रथम को कलाई में जीबन-निर्वाह

४ है (१) ध्वनय शब्द कि एकाक्षर अक्षर श्रित्या
को पुष्पा से मिला कर जीबिका अर्जन करने वाला
दूधकम् मयि या मुलह का नम्र वर दत्त औरक
हि विश्रामिध अर्थात् विवर्तन या पक्ष मयि-
दूधनामि कि० ३१४० अक्ष शब्द का अक्ष
६०० अक्षमयन २ अक्षर शब्द भङ्ग
पुष्पा (स्त्री०) स्त्री शब्द का मयुक्त दृष्ट जाना
विष्णु (पु० ६० व०) शास्त्र और मूढ अर्थ
कारण विरोध विनाश का पन्नाभय, विषयक मयि
की वातकीन काल में मिल्पा - विष्णु (पु०) मयि की
वातकीन करने वाला, वेला १ मध्याह्न-काल २ कोई
ही सचिकाल - हारक, घर में संच लगाने वाला ।

सचिकाल (सचि + कल्) एक प्रकार का अक्षर ।

सचिकाल (सचिक + टाप्) सदिरा का आसवन ।

सचिकाल (वि०) [सचा इत्यच्] १ मिलाया हुआ जोड़ा
हुआ २ बढ़ा हुआ ३ समाहित पुनर्मिलित
मिश्रता में आबद्ध ४ स्थिर किया हुआ ठोक बैठाय
हुआ ५ आगस में मिलाया हुआ ६ अक्षर अक्षर
हुआ प्रसृत तत् १ अक्षर २ सदिरा ।

सचिकाली (सच्चा + इति + कल्प) गमर्ष हुई गाय (या गो)
साह से मयुक्त या उसके द्वारा वाधित गाय ।
२ अक्षमय हुयी जाने वाली गाय ।

सचिकाला (सचि + ला + क० टाप्) १ नील में किया हुआ
छिद्र गहवा विवर २ नदी ३ सदिरा ।

सचिकालम् (सच् + कल् + ल्यट्) १ सुलगना, प्रज्वलित होना
२ उत्तेजित करना, उद्दीप्त ।

सचिकालित (सू० क० क०) (सच् + कल् + क्त) सुलगना हुआ
प्रज्वलित, मजकाया हुआ ।

सचिकाल (वि०) (सच् + चा + यत्) १ मिलाये जाने या जोड़े
जाने के योग्य २ पुनर्मिलित होने के योग्य - मूलनस्तु
कालकटवद् रूपेण वासुसन्धेय वि० ११२२
३ जिसके साथ सचिकी की जा सक ४ जिस पर निसाना
लगाया जा सक ।

सचिकाल (सचि + यत् + टाप् सच् + च्ये + अच् + टाप् वा)

१ मिल्पा २ जोड़ प्रभाग ३ श्राव या मायकाल का
सचिकाल, सुटपुटा अनुगच्छती सन्ध्या दिवसस्तु-
स्वर । अक्ष दैवमन्त्रिषिक नृपाय न मयागम

काष्ठ० ३४ प्रभात काल ५ मायकाल साह का
मयय ६ युग का पूर्ववर्ती समय दा युग का मध्यवर्ती
काल मय० १६ ७ प्रात काल मध्याह्न काल
मया मायकाल की वादय द्वारा प्रार्थना - मय० ६९

४ र ४ प्रोत्तवा वादा ९ हृद बीमा १० ध्वनित
मनन ११ मय प्रयोग का पूर्य १२ एव तदा का
नय १३ ब्रह्मा की ती वा नाम सम० अक्षम्

१ मायकाल का वादा, युग की सुनहली आय से
मुक्त) मय० अक्षर मुद्रावाग मय० ११०६

२ एक प्रकार का मय विष्णु मय - काल १ मय
का समय २ पात्र वादिम् (पु०) मय का विवर्तन

पुष्पी । एक प्रकार की वस्ती २ वादय - अक्ष
नाम मय मय मयूर राक्ष क विवर्तन तदा

आराम मय के मय २ ब्रह्म का विवर्तन
वचमय प्रात काल और मय काल की प्राचीन

मय (पु० क० क०) सब काल १ बड़ा हुआ अक्षम
लेटा हुआ २ लक्ष दूरी उदाम ३ स्थान विधान

४ दुर्बल विवर्तन कमजोर ५ क्षीण छोड़ा हुआ
६ नष्ट, लुप्त ७ स्थिर गतिहीन ८ मिथुना हुआ

९ मटा हुआ, निरुत्थ - स मयल नामक वृक्ष
चिरोजी का पत्र १० छोड़ा मय अक्षमावा ।

सचिक (वि०) सचि वा नाटा लटक रहा । मय०
- दू. पियालवृक्ष ।

सचिक (सू० क० क०) मय - नम - का । १ मुका हुआ
नयाग या प्रथम २ नदस ३ मिथुना हुआ ।

सचिक (वि०) सचि + नय् अपस क्त धीमा विवर्तन
(जैसे कि स्वर) ।

सचिक (स्त्री०) मय नम - कितन १ अभिवर्तन
सादर प्रणाम ममान २ विनयन ३ एक प्रकार
का यज्ञ ४ शनि नैलाग्र

सचिक (सू० क० क०) (मय - नम - क्त) १ एक सच
मिलाकर कटवद्ध २ कर्तव्य सुमिश्रित वस्त्रवद्ध

३ अक्षवृत्त तैयार युद्धके लिए उद्यत मयकाल से
पुनर्त मुमजित नवजन्म सचिक मय न दूतनिशा

का विक्रम ४१ ५०० ४ नगर उद्यत
निमित्त, सुमयस्थान कुमुदिक मयनीय वीरन

मयुक्त मयुक्त मय १० ११ ६ किसी भी वस्तु से
युक्त ७ वादक ८ निधान सलत मयवर्ती मय

टारक ।

सचिक (सच् + नी + अच्) १ मयय मय-वर विवर्तन
सच्चा २ पुष्टभाग (किसी सेना का) पुष्ट्य ।

सज्जनम् [सम् + नह् + क्त्वं] 1 तैयार होना, सज्ज होना, सज्जास्थ से सुसज्जित होना 2 तैयारी 3 कस कर बांधना 4 उद्योग, प्रयत्न ।

सज्जाह् [सम् + नह् + क्त्वं] 1 आपने आपको सज्जास्थ से सुसज्जित करना युद्ध के लिए तैयार होना कवच पहनना 2 युद्ध जैसी तैयारी सुसज्जा 3 कवच, बस्तर सस्मिन्कली सलाखें युद्धबाद्यवाद्यकरण । कव जीवेज्जगत् स्म सज्जाह सज्जना यदि कीर्ति ११३६, कि० १९१२१ ।

सज्जाह् [सम् + नह् + क्त्वं] युद्ध का हाथी । सज्जिक् [सम् + नि + क्त्वं + क्त] 1 निकट बीचना, समीप जाना 2 पड़ोस सामीप्य उपस्थित उत्कृष्टते च युष्मत्सज्जिक्पत्य—उत्तर० १ ३१७६, रघु० ७।८, ११।० 3 मज्ज, रिस्तेहारी 4 (स्याम० यै) इन्द्रिय का विषय से सज्ज (बहु ल प्रसार का है) ।

सज्जिक् [सम् + नि + क्त्वं + क्त] 1 निकट लाना 2 पहुँचना, समीप जाना 3 सामीप्य पड़ोस ।

सज्जिक् (यु० क० क०) [सम् + नि + क्त्वं + क्त] 1 समीप आया हुआ 2 समीपवर्ती, सटा हुआ, बिकटस्थ, ऋण सामीप्य, पड़ोस ।

सज्जिक् [सम् + नि + क्त्वं + क्त] संग्रह, संघय । सज्जिक् (यु०) [सम् + नि + क्त्वं + क्त] 1 निकट लाने वाला 2 जमा करने वाला 3 बोरी का माल लेने वाला मनु० ११२७८ 4 म्यायाक्य में लोगों का परिचय कराने वाला सज्जिकारी ।

सज्जिक्, सज्जिक् [सम् + नि + क्त्वं + क्त, कि वा] 1 मिलाकर रखना साथ साथ रखना 2 सामीप्य, पड़ोस, उपस्थिति—नै० २१५३ 3 दृष्टिबोधरता दर्शन 4 बाधार 5 ग्रहण करना, कार्य मार लेना 6 सम्मिश्रण, समष्टि ।

सज्जिक् [सम् + नि + क्त्वं + क्त] 1 नीचे गिरना, उतरना, नीचे जाना 2 एक साथ गिरना, मिलना,—कि० १३१५८ 3 टककर, सपई । देव, सगम सम्मिश्रण, मिश्रण, मिश्रित सज्ज युग्मव्यति सलिल-मकता सज्जिपात क्व मेघ—वेव० ५५ सत्तात, सज्जह, समुच्चय, सज्जा—नागारत्नज्योतिषां सज्जिपातं यु० ११३ 6 जाना, पहुँचना 7 (बाग, पित्त कक) तीनों दोषों का एक साथ बिलगना बिलगने कि विषय उग्र हो जाता है 8 सगीत में एक प्रकार का समय, नाच । जय०—ज्वरः तीनों दोषों के विषय जाने पर उत्पन्न होने वाला बीजन उग्र ।

सज्जिक् [सम् + नि + क्त्वं + क्त] 1 कस कर बांधना 2 सज्ज, आसक्ति 3 प्रभावकारिता ।

सज्जिक् (वि०) [सम् + नि + क्त्वं + क्त] सज्ज, सज्ज, (समाप्त के जन्म में प्रयुक्त) मनु० ११११ ।

सज्जिक् [सम् + नि + क्त्वं + क्त] 1 देव, समुराग 2 नियुक्ति ।

सज्जिक् [सम् + नि + क्त्वं + क्त] सज्ज, सज्ज ।

सज्जिक् (स्त्री) [सम् + नि + क्त्वं + क्त] 1 बापनी—श० १११० रघु० ८।४९, १०।२७ 2 हुकना ककना 3 निजह, सज्जिक्ता ।

सज्जिक् [सम् + नि + क्त्वं + क्त] 1 गहरी पैठ, उत्कट मक्ति या समुराग संकल्पता 2 सज्ज, समुच्चय, सज्ज 3 देव, मिताय, व्यवस्था रमणीय एक व सुमनसा सज्जिक् श० ११९४ स्वाय, जयह, स्थिति, व्यवस्था यु० ७२५, रघु० १११९ 5 पड़ोस सामीप्य 6 कव, बाहुति ज्ञानमयी सज्जिक् श० १, विद्यासज्जिक्—श० 7 शोषपी, रहने की जगह—रघु० ११७४ 8 उपपन्नत्वानां पर आसन देना विद्याना—विद्यानां महासज्जिक्—उत्तर० ७ 9 बीच में रखना १० मर के निकट लाना मरण यहाँ लोग मनोरंजन, व्यायाम आदि के लिए एकत्र होते हैं ।

सज्जिक् (यु० क० क०) [सम् + नि + क्त्वं + क्त] 1 निकट रक्का गया, पास पड़ा हुआ, निकटस्थ, सटा हुआ, पड़ोस का श० ४२२ निजह, समीप, मज्जवी 3 सज्जिक्—विधि सज्जिक्ताय कृष्णति—श० १, हुदवसज्जिक्—श० ११२० 4 बजाना हुआ, रक्का हुआ, जमा किया हुआ 5 उत्कट, उत्तर मूला० १६ जूरा हुआ, ज्वरशीत । जय०—जयजय (वि०) विजय विजय निजह ही ही, जयजय मर मर मर मर मर सज्जिक्ताय—वेव० २१७७ ।

सज्जिक् [सम् + नि + क्त्वं + क्त] 1 त्याग, (हविषार) हाक देना 2 पूर्णवैराग्य, विरक्ति म व सज्जिक्ताय निजि सज्जिक्ताय जय० ११४ ३ तीव्र, सुपुर्न करता ।

सज्जिक् (यु० क० क०) [सम् + नि + क्त्वं + क्त] 1 जाना हुआ, नीचे रक्का हुआ 2 जमा किया हुआ 3 बोधा हुआ, सुपुर्न किया हुआ 4 एक ओर जाना, छोड़ा हुआ, त्यागा हुआ ।

सज्जिक् [सम् + नि + क्त्वं + क्त] 1 छोड़ना, त्याग करना 2 सांसारिक विषयों तथा समुरागों के पूर्ण वैराग्य, सांसारिक बातनाओं का परिहाय, जय० ११२, १८१२, मनु० ११११४, ५१२०८ ३ बरीहुर, विषय 4 जेब में लाने लगना 5 शरीर त्यागना, मृत्यु 6 बटायायी, बालक ।

सज्जिक् (यु०) [सम् + नि + क्त्वं + क्त] 1 जो त्याग देता ओर जमा कर देता है 2 जो संसार ओर इसकी आसक्तियों का पूर्ण त्याग कर देता है, ।

वीरपी, पीये बाजन में स्थित शास्त्रान् देव न
नित्यस्थायी वो न हेष्टि न कांक्षति नव० ५१३

3. मोक्षन का स्थान करने बाजा, स्वस्ताहार,
-महि० ७१७६।

कृ० (आ० पर० सपति) 1 सम्मान करना, पूजा करना
2 संवत् बोझना।

कृष्ण (वि०) [सह पक्षेण - व० स०] 1 पक्षों वाला,
दोनों वाला 2 पक्षवाला, वस्त्रवाला 3 एक ही पक्ष
वा राज का 4 कन्यु, ममान, सवृक्ष - (बाल०) दलम्
शास्त्रान्वितभरसपक्षा प्रणितय भाषि० २१७७
5 जिसमें अनुमान का पक्ष या साध्य विषय विद्यमान
हो, कः 1 समर्थक, अनुमायी, पक्षवादी द्विपार्थी
2 स्वामी, रिफोर्मार - भाषि० ४ 3 (तर्क०
में) सम्भवक कर्तृव्यता, समान उदाहरण - निरिक्त-
साध्यवान् सपक्ष तर्क०।

कृष्णः [सह एकावै पति पृ० + न, सहस्य स] कन्यु
विरोधी, प्रतिद्वन्द्वी - रघु० १९८।

कृष्णः [समानः पतिः स्वता. व० स० जीव, न बादेव]
1. प्रतिद्वन्द्वी या सहपत्नी, प्रतिद्वन्द्वी वृद्धि, लोग
(एक ही पति की दूसरी पत्नी) - विज सपत्नी प्रथ
वर्णनस्याः रघु० १९११, १९८६।

कृष्णक (वि०) [कृष्ण + कृ] पत्नी सहित।

कृष्णकण्ठः [सह पक्षेण कृष्ण + कण्ठ + कृ + कृ] 1
इस प्रकार काय शरीर निकले कि काय का मुख-
धार काय शरीर में मुख कण्ठ 2 अत्यंत पीडाकारक
- रघु० निरुपकारक।

कृष्णकण्ठीः (स्त्री०) [कृष्ण + कण्ठ + कृ + कृ] 1
वेदना, पीडा, अत्यंत कष्ट या शस्त्रार।

कृष्णः (अव्य०) [कृष्ण + कृ + कृ, सहस्य सः] दुरात्,
काय कर में, शरीर, कष्टक सचि मन्वानको
वृद्धि वन मानक्य वीर० १०, सु० ३१७६, ११४।

कृष्णः [कृष्ण + कृ + कृ + कृ] 1. पुत्रा, अर्चना,
समान - कोष्ठ सपत्तिविपिकायनेन - रघु० ५१२२,
२१२२, १११३५, १११४६, वि० ११४२ देवा,
परिचर्या।

कृष्णः (वि०) [सहादेन - व० स०] 1. पैरों वाला
2 एक पीवाई कड़ा हुआ।

कृष्णः [समानः पतिः पुनपुनः निवासी वा स्वय - व०
स०] समान पितरों को पित्राय देने वाला, एक
समान पितरों को पित्राय देने के कारण संबंधी,
कन्यु बाज० ११२४, कन्यु २१२४७, ५१५९।

कृष्णकण्ठः [कृष्ण + कण्ठ + कृ + कृ] समान पितरों
के सम्मान में किया जाने वाला विशेष बाज का
अनुमान, (सह बाज किसी अनुवाचक की मृत्यु के
एक वर्ष वर्षात् किया जाता है, परन्तु बाजक

बहुधा मृत्यु व बारहवें दिन ही किया जाने लगा
है)।

कृष्णः (स्त्री०) [सह एकवै वीरि वानम् - वा + कृत्] 1
साध साथ पीना, मिलकर पीना, सहपान।

कृष्णः (वि०) (स्त्री० का, की) [मनाना मनुह
मनान् + कृ] 1. जिसमें मात सम्मिलित हो 2 मात
3 सानवा, - कन्यु मात वस्तुको का मग्रह (विना
आदि वा)।

कृष्णः [मनानिः स्वरं इव कायति सञ्जायते सपत्न्य
+ कृ + कृ - कृ] स्त्री की करचनी या मगदी।

कृष्णः (स्त्री०) [सपत्न्यिना इवति नि०] सतर,
'सम्' (वि०) सतरवा।

कृष्णः (अव्य०) [सपत्न्य + कृ] मात मृग, सात
प्रकार से।

कृष्णः (म० वि०) [सर्वे बहुवचनात् - कर्त्त० व कर्म० मृग
[सपत्न्य - तनि] सात। सम० कृष्ण (वि०) दे०
नी० सपत्न्यकृति, अर्चि (वि०) 1 मान जिज्ञा का
की वाला 2 दूरी कीज वाला, अनुम दृष्टि वाला,
(पु०) 1 अग्नि 2 अग्नि, कृष्णः (स्त्री०) सतासी,
- कन्यु सतकोन, अन्वः पूर्व, 'बाह्यः पूर्व, - अन्वः
मात दिन कर्त्तृ एक हुला, कन्यु (पु०) कृष्ण
का विशेषण अर्चि (सपत्नि) (पु० व० व०)
1 सात अग्नि, अर्चि वरीधि, अग्नि, अग्नि, पुनस्य,
पुनह, कन्यु कीर वसिष्ठ 2. सपत्नि नामक मन्त्रपुत्र
(सात ठारों का कन्यु को उत्पन्न सात 'अग्नि कहे
जाते हैं), कन्यु (स्त्री०) सैतालिक, विज्ञः,
कन्युः नाम - कन्युः पत्र वि० १४१६ विज्ञः
(स्त्री०) सैतालिक, - कन्यु (वि०) सवह - वीरिपतिः अग्नि
हीना पुष्पी का विशेषण, वातु (पु० व० व०)

कृष्णः के सपत्न्य सात मूलतत्त्व अर्थात् अन्नारस,
अधिर, मांस चर्बी, हृद्दी, मज्जा वीर्य कर्त्तृः
(स्त्री०) सनामदे, मशीककन्यु अर्थात् का एक
देवाधिपति जिसके द्वारा कर्त्तृदेवक अभिषेककन
किया जाता है, - 'कृष्णः' (इसी प्रकार सपत्न्यकृद,
सपत्न्य) एक वृक्ष का नाम, वही विवाह में सात
वर्ष चलता (इन्हा वीर कुलहिन विवाह उत्सवार के
अवधर पर सात वर्ष मिलकर करते हैं - इन्हे बाज
विवाहसम्बन्ध अर्द्ध हो जाना है), अर्चिः (स्त्री०
व० व०) राज्य के सात सपत्न्यक वन - स्वात्मपान्य-
पुन्यकोशरपुन्यकानि च अन्नर०, दे० 'प्रकृति' नी,
अन्वः विरस का पेड, मृगिक, नील (वि०)
सतवर्षिक देवा (जैसे कि महल), - रात्र्यु वात
रात का समय, कृष्णः (स्त्री०) सताष्टक, विज
(वि०) सतपुत्रा, सात प्रकार का, - कन्यु 1 सात
की 2 एक ही सात, (की) सात ही कर्त्तृको का संवह,

सक्तिः सूर्य का विशेषण सर्वस्व समर्पणमिव
नृपसर्पदीपिते सप्तसति मालवि० २।१३।

सप्तस (वि०) (स्त्री०-जी) [सप्तासा पूरुष सप्तस
+ इट्, मट्] सातवा, जी (स्त्री०) 1 सातवी
विभक्ति (ध्या० में) अधिकरण कारक 2 चान्द्रवर्ष
के किसी पक्ष का सातवा दिन।

सप्तसा (स्त्री०) एक प्रकार की चमेली।

सक्तिः [सप् + ति] 1 जूना 2 बोझ—ज्यों हि सत्ते
परम विभूषणम् सुभा०—२० सप्तसक्ति भी।

सप्तस्य (वि०) [सह प्रत्ययेन व० म०] स्त्रीही मित्रतापूर्ण।

सप्तस्य (वि०) [प्रत्ययेन सह व० म०] 1 विश्वास
रत्न वाता 2 निर्गुण विश्वस्त।

सप्तस-री [सप् + अरन् पूर्वो पत्य फ] छोटी चमकीली
मछली १० मफ०।

सप्तस (वि०) [मन्त्रकलेन व० म०] 1 फलों से पूर्व,
फल देने वाला, उपजाऊ (आल० से भी) 2 सम्यक्,
पूरा किया गया, कामयाब।

सप्तस्य (वि०) [सह वन्दना—व० म०] 1 जिसके साथ
निकट सम्बन्ध हो 2 भिन्नबुद्धि मित्रता के मूल में
बसा हुआ, च्च रिश्तेदार वन्धु-बाह्य।

सप्तसिः [सहवसिता व० म०] साम्यकालीन मृदुपुत्र
गोचुरिवेला।

सप्तस्य (वि०) [सह भावना व० म०] 1 आधानपूर्ण
2 पीडादायक।

सप्तस्यस्य [समान बहुवचन सहस्य स] सहपाठीता
(एक ही गृह के सिन्धु होने के कारण)।

सप्तस्यारिन् (पु०) 'समान बहु वेदघण्टाकालीन वर
चारिन्' जिनि समानस्यम् 1 सहपाठी (समान
अध्ययन या समान साधना करने वाला) 2 सहनशी
सहानुभूति रखने वाला व्यक्ति 3 समसप्तस्यारिणी
सर्गिका वर गता का०, ह व्यसनसप्तस्यारिन्
वरिन् गृह्यत तन् प्रातुमिच्छारिन्—मुद्रा० ६।

सप्ता [सह भागिनी अमीटिगिषयापमेवय यय गृह]
1 जलमा परिषद्, गुप्तसभा गणितसभा कारि
वान्—पञ्च० १, न सा सप्ता यय न मल्लि बुद्धा
हि० १ 2 समिति समाज सम्मेलन बड़ी
संख्या 3 परिषद्-कक्ष, या तथा जवन 4 स्वाध्याय
5 सार्वजनिक जलसा 6 जूना माना 7 कोई भी
स्थान बड़ी शीघ्र प्राय जाने जाने हो। सप्त०
आलसार 1 सभा में सहायक 2 समाम, वरित
सभा का अध्यक्ष समार्षी 2 अग का अहदा करने
वाला जूना दर्जनों के प्रति सम्मान प्रदर्शन सब
(पु०) 1 किसी सभा या जलमे र्म सहायक 2 सभा
नद् वेम्बर 3 अवाकन की पचायत का गवन्ध, जूरी
का सदस्य।

सप्ताम् (पु०) उव० सप्तस्यसि—ते) 1 अविद्यान
कल्प प्रभाव करना, व्यवहार करना, अज्ञानवि
निष्ठ करना, बर्बाद देना—स्नेहाचक्रवर्तिनियुतेय,
उत्तर० १।३, सि० १३।१५, व० ५ 2 सम्मान
करना, पूजा करना आदर करना 3 प्रसन्न करना,
मृत करना 4 सुन्दर बनाना, अच्छा कटना, लगाना
—उत्तर० ४।१२ 5 प्रदर्शन करना।

सप्ताम् [सप्ताम् + स्युट] 1 (क) प्रभाव करना,
अभिवादन करना, सम्मानित करना, पूजा करना
—सि० १३।१५ (ख) स्वागत करना, बर्बाद देना
—रघु० १३।१३, १४।१८ 2 सिष्टता, सिष्टाचार
—विनम्रता 3 सेवा।

सप्ताम् [सह भावन व० म०] [सह का नाम]।

सप्त (जी) कः [सप्ता कृत प्रबोधनमस्त—वैक] 1 जग
का अहदा चलाने वाला, जूना बनेकाने वाला,—अवम
स्माक पूर्वसप्तिको दाम्प इत पचासकाद पृच्छ०
३ याज० २।१३९।

सप्त (वि०) [सप्तमा घाष्—यत्] 1 सप्ता से सब
रखने वाला 2 सप्ताज के दाय्य 3 सप्तकट, परिष्कृत
मिनीट 4 कुलीन विनम्र, सिष्ट—रघु० १।५५, कु०
३।२९ ५ विवदस्त विवदसनीय, विमानदार, छद्म
1 मूखनिर्णयक 2 सप्तासद् 3 सप्तासद् छद्म में
अपम्र 4 जूना-खाने का सप्तासक ५ सुतगृह के
सप्तासक का सेवक।

सप्तता लम् [सम्प + तत् + टाप्, ख वा] विनम्रता
सुधीनता, कुलीनता।

सप् (म्भा० पर० मयि) 1 विभुषण या अलङ्कारिय
हाना 2 विभुष्य या अभ्यवस्थित न होना।
॥ पु० उव० समयति ते) विभुष्य हाना।

सप् (वच्य०) [सो-न वत्] वात् वा कृत्य सप्ता से पूर्व
उपसर्ग के रूप में लग कर इसका निनाकित अर्थ है
(क) के साथ मिल कर साथ साथ—सप्ता सप्तक,
सप्तासक, सप्ता सप्तक आदि में (ख) कभी कभी यह
वात् के अर्थ को प्रकट कर देता है, और इसका अर्थ
होता है 1 बहुत, बिल्कुल, खूब पूर्णतः, सम्पूर्ण
—महा धनुष्य, सप्तोव, सप्तस्य सम्मान सप्ताय आदि
2 सामान में इसा सप्ता के पूर्व प्रयुक्त होकर इसका
अर्थ है की अति, समान, एक जैसा यथा 'सप्तस्य' में
3 कभी कभी इसका अर्थ होता है निकट, पूर्व, वैसा
कि सम्यक्' में।

सप्त (वि०) [सप् + जन्] 1 बड़ी, समरूप 2 समान
जैसा कि समलोपकायन' में रघु० ८।२१, वच०
२।१३ 3 के समान, वैसा ही, विनम्रता कुलता, करण०
या मर्ब० के साथ अथवा समान में,—मूखबुक्तो हरि
होति नेवरेदुप्ये सम—सुभा०—कु० ३।१३, २३

भोषण 2 मंद के कारण मस्त 3 प्रणयोल्लस, -उत्तर० २१२० ।

समधिक (वि०) [सम्पक् अधिक - प्रा० सं०] 1 अतिशय 2 अत्यंत अधिक पुष्कल, बहुत अधिक उत्तर० ४ कम् (अल्प०) अत्यंत अधिकता के साथ ।

समधिगमनम् [सम् + अधि + गम् + ल्यट्] आग बढ़ जाना पार कर लेना, जीतटना ।

समध्य (वि०) [समान अथवा मध्य ३० सं०] माय यात्रा करने वाला ।

समनुज्ञानम् [सम् + अनु + ज्ञा + ल्यट्] 1 हमी ने ना स्वीकृति देना 2 पूर्ण अनुमति पूरा सहमति ।

मयन्त (वि०) [सम्पक् अन्तो यन् ३० सं०] 1 हर रिशा में भोजन दिव्यव्यापी 2 पूर्ण समस्त त माभा हृद मयीदा (समन्तम् समन्तत, समस्तान् क्रिया विशेषण के रूप में प्रयुक्त हारर निम्नांकित अथ प्रकट करते हैं सब ओर से बहुश्रुति सब प्राग पूर्णरूप से, पूरी तरह से । मम० दुष्पा वृद्ध स्त्री - पञ्चकम् कुक्षेत्र या उसके निकट का प्रदेश - वेण० १, बहः बृद्ध भगवान् भुञ्ज (पु०) आग ।

समन्व (वि०) [सह मन्वता ३० सं०] 1 सम्पत्कुल 2 रोषपूर्ण, घट्ट ।

समन्वयः [सम् + अनु + व + ल्यप्] 1 नियमित पररा या कम 2 मबद्ध अनुक्रम गारम्यार्थिक सम्बन्ध तात्पर्य, तन्तु समन्वयीन् बह्य० १११६ न च तदुपानामो पदानां बह्यस्वरूपविषय निश्चिन्त समन्वय अन्तरिकरूपता युक्ता शारी० ३ मगय ।

समन्वित (भू० क० कृ०) [सम् + अन्वि + ल्यप् + क्त] 1 मबद्ध, प्राकृतिक कम में आवद्ध 2 अनुगत 3 सहित, युक्त, भरा हुआ प्रस्त ।

समन्वित (भू० क० कृ०) [सम् + अन्वि + ल्यप् + क्त] 1 बाधवस्तु 2 घटन प्रस्त ।

समन्वित्वाहारः [सम् + अन्वि + वि + आ + क्त + क्त] 1 मित्राकर उल्लेख करना 2 साहचर्य साथ 3 शब्द का साहचर्य या सामोपग, अब कि उस (शब्द) का अर्थ स्पष्ट रूप से निश्चित कर लिया गया हो ।

समन्वितरन्ध्रम् [सम् + अन्वि + म् + ल्यट्] 1 पहुँचना 2 लाज करना, कामना करना ।

समन्वित्वाहारः [सम् + अन्वि + क्त + क्त] 1 माय-माय के जाना 2 आकृति 3 अनिरिक्त, फालतू ।

समन्वयंनम् [सम् + अन्वि + अर्थ + ल्यट्] पूजा करना, अर्चना करना ।

समन्वित्वाहारः [सम् + अन्वि + क्त + क्त] साथ रहना, साहचर्य ।

समन्व (भू० क० कृ०) [सम् + अनु + व + ल्यप्] 1 काल 2 अवसर, मौका 3 योग्य काल, उपयुक्त काल, वाक्य, ठीक वक्त

कु० ३१२५ ४ बरार, समझौता, सविदा, पहले से किया गया ठहराव मिथ समधानु - सं० ५ १ रुद्रि, प्रया 6 बालचलन का सम्भावित नियम, सम्भार, लोकप्रचलन कि० ११२८ उत्तर० १ 7 कविता का अभिमतमय (उदा० बादलों के दर्शन व प्रदी और प्रसिका का विषय हो जाता है) ५ निगुक्त निगोक्षण ९ अनुब्रध कर्तृ - विष्क० ५ 10 रात्रि नियम विनियम यात्रा० ३११९ 11 नट्य आदेश निर्देश विधि 12 आपराधाल मस्तक 13 गाय 14 मदन हगित, इशारा 15 माया हर 16 प्रसंगित यमहार मिट्टी, भस्मर जीव वैशाचिक 1 अन्त, उपहार ममा० 18 सफलता समुद्र 19 कर्ण का अन्त । मम० अभ्युचितम् गम्य भयत्र त्र कि न मूर्ध दिक्वाई दग दे न रागे अनुबन्धित (वि०) मानो हुई प्रया का पानन कम वाला, अनुसारेण, उचितम् मय० 1 प्रसार क अनुकूल जैसा मौका हो - आचारः लक्षप्रतिन वचन मानो हुई प्रया चिया करार करण - पारिरक्षणम् किसी समझौते का पालन करना, निष्ठा 11 करार न समयपरिरक्षण कम तै - कि० ११ अविभाज्य, दीक्षा गहना ठेके का उल्लेखन 11 अग व्यभिचारिण (वि०) प्रणिज्ञा या वचन भग करने वाला ।

समया (अल्प०) [सम् + र + आ] 1 ठीक, अनु के अनुरूप ठीक समय पर 2 निश्चित समय पर 3 बीच में चन्दर, (दी के) बीच में 4 निकट (कम) के भाग । समया मोघभिन्तिम् दश० सि० ६७३, ३५१ नन्० ६१८ ।

समर, रम [सम् + क + अ + ल्यप्] सधाम, वृद्ध, लवाई, शौचयोगीन समरगाराह्यमीमस्त केवी० ३१

मम० उद्देश - भूमि रणक्षेत्र, पूर्वम् (पु०) शिरस (नपु०) यद्ध का अवसान ।

समर्चनम् [सम् + अर्च + ल्यट्] पूजा, अर्चना, आराधना ।

समर्च (वि०) [सम् + अर्च + क्त] 1 कष्टवस्तु, पीडित, घायल 2 घट्ट निवेदित ।

समर्च (वि०) [सम् + अर्च + अर्थ] 1 मजबूत, शक्ति-दाता 2 मसज, अभ्युन्नत, पात्र, योग्यताप्रत्य पतिग्रहमन्त्रिणि - मन्० ४१८९, वाह्य० ११२११ 3 योग्य, उपयुक्त, उचित - तदनुर्द्धव्येव राघव प्रत्यपगत समर्थसुतरम् रघु० ११७९ ४ योग्य या समर्थन बनाया हुआ नैयाय किया हुआ 5 सवा-नार्थी 6 सार्थक 7 समर्थित उद्देश्य या वक्त रहने वाला, प्रियवस्तुश्री 8 गम-यास विज्ञान ९ अर्चतः मबद्ध, सं० 1, (व्या० में) सार्थक वाक्य 2 सार्थक वाक्य में मित्रा कर रख्य हुए सन्धों की संज्ञा ।

समर्चकम् [सम् + अर्च + क्तृन्] अर्चन की लकड़ी ।

समर्चनम् [सम् + अर्च + क्तृन्] 1 सम्प्रापन, पुष्टि करना, लाईव करना 2 रक्षा करना, महारा देना, गौरवमान निष्ठ करना -स्थितिवेदन समर्चनम् -का. ४७० ३ 3 वकालत करना, हिदायत करना 4 अनुमान लगाना, विचार करना चिन्तन करना 5 विचार विमर्श, निष्कर्ष, किसी वस्तु के औचित्यातीतिय का निर्णय करना 6 पर्याप्तता, अवकता, प्रत्युत्पत्ति 7 ऊँची धरने 8 भेदभाव दूर कर फिर समझौता करना, समझ दूर करना 9 आशेष ।

समर्चक (वि०) [सम् + अर्च + क्तृन्] 1 अर्चक 2 समृद्ध करने वाला ।

समर्चक्य [सम् + अर्च + क्तृन्] देना, हस्तान्तरण करना, सोपना, हवाले करना ।

समर्थाव (वि०) [सह सर्वादेवा वं स०] 1 सीमित, बड़ा हुआ 2 निकटवर्ती, समीपवर्ती 3 शूद्राधारी, औचित्य की मोटा के अन्दर रहने वाला 4 समान-पूर्ण, शिष्ट ।

समस्त (वि०) [मलेन सह वं स०] 1 मंला, भन्दा, क्षयित, अश्वित 2 पापपूर्ण, कर्म पुरीष, मल, शिष्टा ।

समस्तकारः [सम् + अर्च + क्तृन् + क्तृन्] नाटक का एक भेद (सा० द० ५१५ में निम्नांकित परिभाषा दी गई है) वृत्त समस्तकारे तु व्याप्त देवामुराश्रयम् । संक्षयी त्रिविधस्तु त्रयोऽङ्काः ॥

समस्तनारः [सम् + अर्च + क्तृन् + क्तृन्] 1 उत्तर 2 घाट-जहाँ से किसी नदी या पुष्पस्नानतीर्थ में उतरा जाय --समस्तनारसमस्तनारः --कि० ५१० ।

समस्तस्था [समा तुण्या अवस्था वा सम् + अर्च + क्तृन् + क्तृन्] 1 निश्चित अवस्था 2 समान दशा या स्थिति सा० ४ 3 अवस्था या दशा -रघु० ११/५०, माकवि० ४१० ।

समस्तस्थित (भू० क० कृ०) [सम् + अर्च + क्तृन् + क्तृन्] 1 स्थिर रहना हुआ 2 स्थिर ।

समस्तस्थि (स्थी०) [सम् + अर्च + क्तृन् + क्तृन्] स्थिति, अविच्छिन्न ।

समर्थाव [सम् + अर्च + क्तृन् + क्तृन्] 1 समिप्य, मिलाप, समीप, समष्टि, सह-सर्वादिनवानामेककम्पेधामा-यन किन्तु समर्थाव --का०, बहुनामप्यसंज्ञा समर्थाव हि दुर्ज्ञेय-मुभा० 2 मक्या, समुच्चय, २१/३ 3 अनिष्टत सबध, मसक्ति 4 (वैश० में) प्रगाढ़ मित्राप, अविच्छिन्न तथा अनिच्छेद सयोग, अनेक सलज्जता या एक वस्तु का दूसरी में अस्तित्व (जैसे पदार्थ और गूण, अग्नी और अम), वैशेषिकों के मात पदार्थों में से एक ।

समर्थाव (वि०) [समर्थाव + इति] 1 अनिष्ट रूप से मक्य 2 समुच्चयवाचक, बहुसंख्यक । मम० कारकम् अर्थ कारण, उपादान कारण (वैशेषिक दर्शन में वर्णित तीन कारणों में से एक) ।

समर्थाव (भू० क० कृ०) [सम् + अर्च + क्तृन् + क्तृन्] 1 एकत्र आये हुए, मिले हुए, बड़े हुए, सम्मिलित 2 अनिष्टता के साथ सबध, अनर्भन, अनेक रूप से मयुक्त 3 बड़ी मक्या में समाविष्ट या सम्मिलित ।

समर्थाव (स्थी०) [सम् + अर्च + क्तृन्] समस्तस्थायक व्याप्ति वह जेसे भगो का समूह, अवयवों को सम-नन्वना में युक्त अवयवों का एक है (विप० व्यष्टि) समर्थाव सवधा स्वात्मतादात्म्यवेदनात् । तद-भावात्तदन्वये तु प्रायने व्यष्टिमत्रया ॥ पञ्च० ।

समस्तनम् [सम् + अर्च + क्तृन्] 1 एक साथ मिलाना, सम्मिश्रण 2 मयुक्त करना समन (समान युक्त) शब्दों का निर्माण 3 संकुचित करना ।

समस्त (भू० क० कृ०) [सम् + अर्च + क्तृन्] 1 एक जगह डाला हुआ, सम्मिश्रित 2 मयुक्त 3 किसी पदार्थ में पूर्णतः व्याप्त 4 सक्षिप्त, संकुचित, संक्षेपित 5 मारा, पूर्ण पुरा ।

समस्त्या [सम् + अर्च + क्तृन् + क्तृन्] 1 पूर्ण करने के लिए दिया जाने वाला छुट का चरण, कविता का वह भाग जो प्रति के लिए प्रस्तुत किया जाय-कः श्लोपित का विषया समस्त्या --मुभा० । इस प्रकार 'वागर्थाविव मयुक्तो' 'शतकोटिप्रविस्तरम्' 'तुरामाह पुरोधाव' 'वसिष्ठा' 'सर्व मुराः शिवो मे पूर्ण हो जाती है' 2 (अतः) भवने को पूरा करना-गीरीव पत्न्या मुक्ता कदाचित्कर्त्रीयमप्यर्थतम् समस्त्या --नै० ७/८२, (समस्त्या -समस्तनम्) ।

समा [सम् + अर्च + क्तृन्] (प्रायः वं वं में प्रयोग, परन्तु पाणिनि द्वारा एक बचन में भी प्रयुक्त-उदा० समा ममाम्-गा० ५/२/१२) वचन, --नेनाष्टी परिमितताः समा कथयिन् रघु० ८/१२, तयोश्चतुर्दशैकेन रायं प्राशङ्क्यतः १२/६, १९/४, महावीर० ४/४१, अम्य०-में, साथ मिला कर ।

समर्थाव [सम् + अर्च + क्तृन् + क्तृन्] समा समा विज्ञापने प्रयुक्त --स प्रत्ययेन वि०] वह भाव जो प्रतिवर्ष आती है और बछड़ा देती है ।

समाकथिन् (वि०) (स्थी० की) [सम् + आ + क्तृन् + क्तृन्] 1 आकर्षक 2 दूर तक गंध फैलाने वाला, वा प्रसार करने वाला, पु० प्रसृत सध, दूर तक फैली गंध ।

समाकुल (वि०) [सम्पृक्त आकुलः प्रा० म०] 1 भरा हुआ आर्पित, ओढ़-भाड़ से युक्त 2 संयुक्त, चबराया हुआ उड्डित, हड़बड़ाया हुआ ।

समाख्या [सम् + आ + क्तृन् + अर्च + क्तृन्] 1 वच, कीर्ति, व्याप्ति 2 नाम, अधिष्ठान ।

पीड़ी तक जाता है) समानोदकभावस्तु निवर्तेता ।
 अनुसंधान् दे० मनु० १।१० श्री उक्ती एक वर
 से उत्पन्न, महावर भाई जयना एक प्रकार की
 उपमा दे० काव्या० २।२९ काव्य कालीन वि०।
 एककाधिक समवाचीन गोत्र = समवाचन एवं श्री
 गोत्र का वृत्त (वि०) महानुक्ति रखन वाना
 वर्णन (वि०) एक ही प्रकार के गुणों से एक महानु
 मुनिद्वयक गुण का समान वाना मनु० १९
 वन स्वर का वही उच्चयाम उक्ति वि०। एवं
 ती उक्ति वाचा ।

समावर्तनम् [सम + आ + लृट् + क्त] समान सट्ट
 करने समालन

समाप [समा आपा दगमन व + मन् + इङ् + श् + क प्रति
 ण्ठ करना या आहुति देना ।

समापति (प्र०) [सम + आ + पट् + क्त] १ मिलन
 मूढमेक २ वृत्तना ३ कामिक धरना अवगमन
 मूढमेक समापतिवृत्तन कराने देवकन प्रथम ।
 क्रियासमापतिविशेषकानि मनु० ३० ३५
 ३५५ ।

समापक (वि०) [समीच-विष्ठा] सम + आप वृत्त
 समापन करने वाला सम्पन्न करने वाला पूरा करने
 वाला ।

समापनम् [सम + आप + लृट् + क्त] १ प्रति उपसहार समापन
 करना मनु० ४० २ अभिग्रहण ३ मास डालना
 मष्ट करना ४ अनुभवा अभ्यास ५ महल मनन

समापक (पु० क० ह०) [सम + आ + पट् + क्त] १ प्राण
 , अवान २ कटित हुआ ३ प्रगल्भ पहुँचा
 ४ समापन पूर्ण समापन प्रथम ५ समापन देना
 कष्टवस्तु वृत्त किया हुआ ।

समापकवम् [सम + आ + लृट् + क्त] १ समापन
 करने वाला मनु० ३०

समापन (पु० क० ह०) [सम + आ + पट् + क्त] १ समापन
 हुआ उपसहार हुआ किया हुआ २ समापन

समापकाल समानाद्य अर्थात् समानार्थ भाग्य + अन्
 + धृक् + प्रभु शब्द ।

समापि (प्र०) [सम + आप + क्तिभ] १ वान
 महापुत्रि समापन करना २ अनुभवा पूरा करना
 पूर्णता ३ पुनर्वसन मनुष्य वृत्त करना (वर्णन का
 समापन करना) ।

समापिका (वि०) [समापि + टा] १ अन्तिम समापक
 २ समापिका ३ वसने काई काम पूरा किया है
 ४ समापक ५ विसम वेदाध्ययन का पूर्ण पाठ्यक्रम
 समापन कर लिया है ।

समापकृत (पु० क० ह०) [सम् + आ + क्त + क्त] १ समापकृत, बाढ़ से हुआ हुआ २ भरा हुआ ।

समापकवम् [सम् + आ + आप + लृट् + क्त] समापक, वादी-
 काय मनु० ६।१६

समापनम् [सम् + आ + आप + लृट् + क्त] १ आहुति, उत्प्रेष
 २ गगना ३ उपन्यास प्राप्त पाठ ।

समापनम् [सम + आ + आप + लृट् + क्त] १ परम्परागत पाठ
 अनुसंधान २ परम्परागत (सष्ट) सट्ट अर्थात्
 परम्परागत रूपसे उत्पन्न ३ भाषित पर-
 मपरा, अनुसंधान ४ पाठ, सम्पन्न पाठ विद्वान ५ जोड़,
 समष्टि सट्ट अभ्यस्यमान यम शिष्टा ५७
 अर्थात् ५५ हस्त की वज्रमात्रा ३ शिव की कृपा
 से उत्पन्न ४ प्रगल्भ हुई

समाप [सम + आ + लृट् + क्त] १ पहुँचना आना २ दृष्टान्त
 करना

समापन [सम + आ + लृट् + क्त] १ पहुँचना आना २ दृष्टान्त
 करना ३ दृष्टान्त हुआ ४ कहा किया हुआ

समापक (पु० क० ह०) [सम + आ + पट् + क्त] १ पाप
 महा हुआ मनुष्य सम्पन्न २ पुनर्वसन
 मनुष्य ३ नेत्रों किया गया उत्पन्न ४ पुनर्वसन
 महा हुआ महान् अन्तिम ५ जिसको कोई कार्यकार
 म से देना गया है निष्पन्न किया हुआ ।

समापन (पु० क० ह०) [सम + आ + पट् + क्त] १ सम्पन्न
 सम्पन्न समापक हुआ २ समापन मनुष्य किया
 हुआ ३ महान् पुनर्वसन अन्तिम

समापि [सम + आ + पट् + क्त] १ मनुष्य सम्पन्न
 सम्पन्न २ सम्पन्न ३ सम्पन्न पर (बाण) समापन
 ४ सम्पन्न देर सम्पन्न ५ समापन प्रबोधन
 उत्पन्न

समापनम् [सम + आ + लृट् + क्त] १ समापन
 मनुष्य २ समापन कार्य उत्पन्न किया हुआ कार्य काम
 कष्ट भव्यमन्त्रा समापनम् नगर गृह विवेचि
 मनु० १० ११ अगु १।११ १ समापन ।

समापनम् [सम् + आ + आप + लृट् + क्त] १ सम्पन्न करने
 का माध्यम प्रसन्न करना सुखी नगर भित्तवृत्त-
 मनु० १० ११ समापनम् समापनम् १० २ समापन
 मनु० १० ११ ११ ११

समापनम् [सम + आ + लृट् + क्त] १ समापन
 १ समापन करने रखना २ समापन देना देना

समापि [सम + आ + लृट् + क्त] १ समापन
 १ समापन करने रखना २ समापन देना देना
 ३ समापन देना देना ४ समापन देना देना
 ५ समापन देना देना ६ समापन देना देना
 ७ समापन देना देना ८ समापन देना देना
 ९ समापन देना देना १० समापन देना देना

समापि [सम + आ + लृट् + क्त] १ समापन
 आना २ समापन करना ३ समापन होना ।

समासम्बन्धम् [सम् + आ + सम् + स्मृट्] टेक समाप्ता,
सहारा लेना, चिपटे रहना ।

समासम्बन्धम् [सम् + आ + सम् + जिनि] लटकने
वाला, सहारा लेने वाला - जो एक प्रकार का वास ।

समासम्बन्धम् [सम् + आ + सम् + चञ्, स्मृट्
वा, भृम्] १ एकदना छीनना २ यज्ञ में बलि-यज्ञ
का अपहरण करना ३ शरीर पर अमराम ब उबटन
आदि का लेप करना मङ्गलसमासम्बन्धन विरचयाव
- स० १ ।

समासम्बन्धम् [सम् + आ + वृत् + स्मृट्] १ बापमों
२ विशेष कर वेदाध्ययन समाप्त करके ब्रह्मचारी का
घर वापिस आना ।

समासम्बन्धम् [सम् + आ + अव + इ + अच्] १ माहृषयं,
मन्त्र २ अविविधेय सबब दे० समवाय ३ समष्टि
४ समन्वय सम्बन्ध दे० ।

समासम्बन्धम् [सम् + आ + वृत् + चञ्] निवास स्थान,
घर रहने का स्थान ।

समासम्बन्धम् [सम् + आ + विष् + क्त]
१ पूर्णतः प्रविष्ट, पूर्णतः अधिकृत, व्याप्त २ छीना
हुआ, पराभूत, एकाधिकृत ३ प्रेतविष्ट ४ सहित
५ निविष्ट, बिबर किया हुआ, बिठाया हुआ
६ कुनिविष्ट ।

समासम्बन्धम् [सम् + आ + वृत् + क्त]
१ परिवर्तित, बेरा डाटा हुआ, चिरा हुआ, लपेटा
हुआ २ पदा पडा हुआ, चूटने का भावनादित ३ गुप्त,
छिपाया हुआ ४ प्ररक्षित ५ बंद किया हुआ ६ रोका
हुआ ।

समासम्बन्धम् [सम् + आ + वृत् + क्त] कले कन्
व । बहु ब्रह्मचारी जो अपना वेदाध्ययन समाप्त
करके घर लौट आया है ।

समासम्बन्धम् [सम् + आ + विष् + चञ्] १ प्रविष्ट-होना,
साथ रहना २ निजना, माहृषयं ३ सम्मिलित करना,
समझ ४ चुनना ५ प्रेतावेश ६ प्रयोगमात्र, भावो
दे० ।

समासम्बन्धम् [सम् + आ + वि + अच्] १ प्ररक्षण या
पनाह देना २ रक्षण, पनाह, प्ररक्षण ३ रक्षकगृह,
आश्रयस्थान, घर ४ आवासस्थान, निवास ।

समासम्बन्धम् [सम् + आ + वि + चञ्] प्रयाद भालि-
नन ।

समासम्बन्धम् [सम् + आ + वृत् + चञ्] १ जी में जी
जाना, आराम की बात लेना २ राहत, प्रोत्साहन,
मनमोही ३ आस्था, विश्वास, भरोसा ।

समासम्बन्धम् [सम् + आ + वृत् + विष् + स्मृट्] १ पुन-
र्जीविता करना, प्रोत्साहन, आराम देना २ डाहल
गयाना विराम० २ ।

समासम्बन्धम् [सम् + वृत् + चञ्] १ समष्टि, मिलाप,
सम्मिश्रण २ सम्बरचना, समाहार, मिलाप (समास
के मुख्य चार भेद हैं इन्द्र, तत्पुरुष, बहुव्रीहि और
अधायीभाव) ३ पुनर्मिलन, मतभेद दूर करना
४ सवह सघात ५ पूर्णता समष्टि ६ सिद्धिजन,
सहान, समिपता, (समासेन, समासम्बन्ध) बोधे में, सलोप
में, लघुता के साथ एषा समस्य वा योनि समयेन
प्रकीर्तिता मन्० २।२५ ३।४०, मन्० १३।१८
समासन धृत्याम् विराम० २) । सम० - -उचितः
(स्त्री०) एक प्रलङ्कार जिसको परिभाषा भ्रमन् ने
निम्नाक्षिप्त दी है - पराङ्मार्गदेक स्मिष्टे समासास्ति
काव्य० १० ।

समासम्बन्धम् [सम् + आ + वृत् + चञ्] १ मिलाप,
मिलाप, साथ-साथ रहना, अनुरक्ति,
आशक्ति ।

समासम्बन्धम् [सम् + आ + वृत् + स्मृट्] १ निजाना
मनुष्य करना २ जमाना च्चनना ३ संपर्क, सम्मिश्रण
मन्त्र ।

समासम्बन्धम् [सम् + आ + वृत् + स्मृट्] १ पूर्णतः त्याग
देना २ मुक्त्युपेक्षा ।

समासम्बन्धम् [सम् + आ + वृत् + विष् + स्मृट्] १ पूर्णतः
२ ज्ञान करना, निजाना, व्याप्त करना ३ निजाना
करना, कार्यस्थित करना ।

समासम्बन्धम् [सम् + आ + वृत् + स्मृट्] सम्मिलन करना, संघट्ट
करना सम्मिश्रण, मन्त्र करना ।

समासम्बन्धम् [सम् + आ + वृत् + वृत्] १ जो सबह
करने में अभ्यस्त हो २ (कर बाहि का) संवाहक,
ज्या करने वाला ।

समासम्बन्धम् [सम् + आ + वृत् + चञ्] १ सवह, सवष्टि, सघात
-मन्० १२ सम्बरचना ३ सम्मो वा बापों का संघो-
जन ४ हिम् और इन्द्र समास का समष्टिविधायक
एक उपभेद ५ सलोपन, सलोचन, सहान ।

समासम्बन्धम् [सम् + आ + वृत् + क्त] १ मिलाप
गया, साथ जोडा गया २ सम्मिलित, लय किया गया
३ इकरटा किया गया, सम्मिलित, (मन् बाहि) प्रघात
४ एकनिष्ठ, क्षीन, सलोचनित ५ समाप्त ६ सहकृत ।

समासम्बन्धम् [सम् + आ + वृत् + क्त] [सम् + आ + वृत् + क्त]
१ मिलाप गया, सम्मिलित, सघात २ पुष्कल, अत्यधिक,
बहुत ३ ब्रह्म किया गया, स्वीकृत, लिया गया
सलोप किया गया, कम किया गया ।

समासम्बन्धम् [स्त्री०] [सम् + आ + वृत् + विष् + स्मृट्] सलक्षण,
सलोपन ।

समासम्बन्धम् [सम् + आ + वृत् + च] चुनौती, मलकार ।

समासम्बन्धम् [सम् + आ + वृत् + च] १ पुकारना, मलकारना
२ सवाध वृद्ध ३ मलमृद्ध, दो व्यक्तिओं में होने

समुद्र (वि०) [सह + गृह्ण + क्त] १ मुहूर्त बंद मुहूर्त
 लया हुआ मुद्रांकित समुद्रा लेख है [सम
 उद् + ग + क] १ भागर महाभागर २ गिर का
 विक्षेपण ३ चार की मकर मय प्रलय
 १ समुद्रतट २ बाण्डल अन्ता ३ काय का ग
 अन्तरा पृथ्वी अक्ष-आध १ सम-अक्ष २ व
 बरी विशाल पछला ३ गज का ल कक्ष-अक्ष
 समुद्रगत ४ वि समुद्र प-भूतन वाला ५
 ६ समुद्री व्यापार करने वाला ७ समुद्र काय करने
 वाला समुद्र में बहने वाला इसी प्रकार समुद्र
 शक्तिम् शक्तिम् शक्ति या बरी गृहम् गरमी के
 यिनी के लिए जल में बना हुआ भवन चुम्बक
 शक्ति का विक्षेपण भवनीयम् १ पट्टा
 २ अमूल्य मृदा बेखला रसना-असता पुरा
 धामम् १ समुद्री २ गज अक्ष-अक्ष
 धावा समुद्र के गच्छे गज शक्तिम् ३ व
 समुद्रा योचित (स्त्री०) ४ वीं बर्ण्य बहवानाम
 सुमना मना गरी

समुद्रह [सम + उद् + वह् + क्त] १ होना २ उगाने
 वाला ।

समुद्रह [सम + उद् + वह् + क्त] १ होना २ उगाने
 वाला ।

समुद्रह [सम + उद् + वह् + क्त] १ होना २ उगाने
 वाला ।

समुद्रह [सम + उद् + वह् + क्त] १ होना २ उगाने
 वाला ।

समुद्रह [सम + उद् + वह् + क्त] १ होना २ उगाने
 वाला ।

समुद्रह [सम + उद् + वह् + क्त] १ होना २ उगाने
 वाला ।

समुद्रह [सम + उद् + वह् + क्त] १ होना २ उगाने
 वाला ।

समुद्रह [सम + उद् + वह् + क्त] १ होना २ उगाने
 वाला ।

समुद्रह [सम + उद् + वह् + क्त] १ होना २ उगाने
 वाला ।

समुद्रह [सम + उद् + वह् + क्त] १ होना २ उगाने
 वाला ।

समुद्रह [सम + उद् + वह् + क्त] १ होना २ उगाने
 वाला ।

समुद्रह [सम + उद् + वह् + क्त] १ होना २ उगाने
 वाला ।

समुद्रह [सम + उद् + वह् + क्त] १ होना २ उगाने
 वाला ।

समुद्रह [सम + उद् + वह् + क्त] १ होना २ उगाने
 वाला ।

समुद्रह [सम + उद् + वह् + क्त] १ होना २ उगाने
 वाला ।

समुद्रह [सम + उद् + वह् + क्त] १ होना २ उगाने
 वाला ।

समुद्रह [सम + उद् + वह् + क्त] १ होना २ उगाने
 वाला ।

समुद्रह [सम + उद् + वह् + क्त] १ होना २ उगाने
 वाला ।

समुद्रह [सम + उद् + वह् + क्त] १ होना २ उगाने
 वाला ।

समुद्रह [सम + उद् + वह् + क्त] १ होना २ उगाने
 वाला ।

समुद्रह [सम + उद् + वह् + क्त] १ होना २ उगाने
 वाला ।

समुद्रह [सम + उद् + वह् + क्त] १ होना २ उगाने
 वाला ।

समुद्रह [सम + उद् + वह् + क्त] १ होना २ उगाने
 वाला ।

समुद्रह [सम + उद् + वह् + क्त] १ होना २ उगाने
 वाला ।

समुद्रह [सम + उद् + वह् + क्त] १ होना २ उगाने
 वाला ।

समुद्रह [सम + उद् + वह् + क्त] १ होना २ उगाने
 वाला ।

समुद्रह [सम + उद् + वह् + क्त] १ होना २ उगाने
 वाला ।

समुद्रह [सम + उद् + वह् + क्त] १ होना २ उगाने
 वाला ।

समुद्रह [सम + उद् + वह् + क्त] १ होना २ उगाने
 वाला ।

समुद्रह [सम + उद् + वह् + क्त] १ होना २ उगाने
 वाला ।

समुद्रह [सम + उद् + वह् + क्त] १ होना २ उगाने
 वाला ।

समुद्रह [सम + उद् + वह् + क्त] १ होना २ उगाने
 वाला ।

समुद्रह [सम + उद् + वह् + क्त] १ होना २ उगाने
 वाला ।

समुद्रह [सम + उद् + वह् + क्त] १ होना २ उगाने
 वाला ।

समुद्रह [सम + उद् + वह् + क्त] १ होना २ उगाने
 वाला ।

ऐश्वर्य 3. धन, दौलत 4. बाहुल्य, पुष्कलता, प्राचुर्य
यथा 'धनधान्यममृद्धिरस्तु' मं ५. शक्ति,
सर्वोपरिता ।

समेत (भू० क० कु०) [सम् + आ + क्त] 1. साथ
आया हुआ या मिला हुआ, एकजिन 2. संयुक्त
सम्पन्नित 3. निकट आया हुआ, पहुँचा हुआ 4. से
युक्त 5. सहित, यज्जिन, रक्त के साथ ० एककर
खाया हुआ, भिड़ा हुआ 7. सहमत ।

सम्पत्ति (स्त्री०) [सम् + पद् + क्तित] 1. सम्पत्ति धन
की बढ़ती, संपत्ति व वित्तोत्पत्ति न महत्त्वपूर्णता
—मुभा० 2. सफलता, पूर्ति, विफलता 3. पूर्णता,
श्रेष्ठता—जैसा कि 'रूपसम्पत्ति' मं 4. प्राचुर्य, पुष्कलता,
बाहुल्य ।

सम्पत् (स्त्री०) [सम् + पद् + क्तित] 1. धन, दौलत
—नीता विवासाहपुणेन सम्पद्—कु० ११२२, आपन्नति
प्रधानफल। सम्पदा ह्यनमानाम् मेघ० ५२
2. सम्पत्ति, ऐश्वर्य, फलना-फलना (वि०) विपद् या
आपद्—ते भूत्या नृपते कलत्रमितरे सम्पत्सु बापस्तु
ब—मुभा० ११२५ 3. सौभाग्य, आनन्द, किम्पन
4. सफलता, पूर्ति, अभीष्ट उद्देश्य की पूर्ति—ता०
७३० 5. पूर्णता, श्रेष्ठता, जैसा कि 'रूपसम्पद्' मं
—वि० ११३५ 6. सनादपता, पुष्कलता, बाहुल्य, प्राचुर्य,
बाधिका—मुषारद्विद्विषयसम्पदाम् कु० ५१२३,
रघु० १०५५ 7. क्षेत्र 8. लाभ, हित, दग्दान
9. सद्गुणों की वृद्धि 10. सजावट 11. सही ढंग
12. मोतियों का हार । सम्प—बर, राजा, विनि-
कः हितों या सेवाओं का आदान-प्रदान—रघु० ११२६ ।

सम्पन्न (भू० क० कु०) [सम् + पद् + क्त] 1. सम्पत्तिशाली,
फलदा-फलदा, सनादप 2. भाग्यशाली, सफल, प्रसन्न
3. कार्यान्विता, साधित, निष्पन्न 4. पूरा किया गया,
पूर्ण कर दिया गया 5. पूर्ण 6. पूर्णविकसित, परिपक्व
7. प्राप्त किया गया, हासिल किया गया 8. सज्ज,
सही 9. सहित, युक्त 10. हुआ हुआ, घटित । सम्-
पन्न का विशेषण, सम्प 1. धन, दौलत 2. स्वादिष्ट
भोजन, मधुर और मजेदार भोजन ।

सम्पन्नः [सम् + पद् + क्त + क्त] 1. सम्पन्न, सज्ज,
संभाव, सज्ज 2. सकट, दुर्भाग्य 3. भावी स्थिति,
अभियन्त 4. पुत्र ।

सम्पन्न (वि०) सम् [सम्पन्न + क्त, ठन् वा] सज्ज,
संभाव, सज्ज ।

सम्पत्तिः [सम् + पद् + क्त] 1. सम्पत्ति 2. विलास, मेला-
जोश, त्योहार, पादेन नर्तन मुग्धरीणा सम्पत्तिमाति-
जितानुरोधि कु० ३१२६, मेघ० २५, विष्णु० १।
१३ 3. सम्पत्ति, सभाव, साथ न सम्पन्ननम्यकः
नुरोधिमातिजितानुरोधि—अर्त०—२११४ 4. सम्पन्न, सभाव ।

सम्पत्ति [सम्पत् अतिविध पतति—सम् + पद् + क्त + टाप्]
विजयो ।

सम्पत्ति (वि०) [सम्पत्ति शक्ति सम्पत्तिमाति—प्रा० ब०]
1. गुणाधिक, खूब प्रहस करने वाला 2. बालाक,
बलता पुरखा 3. सम्पत्ति, विलासो 4. बोझा, अल्प,
—क. 1 परीक्षाका होता 2 आरम्भक वक्ष ।

सम्पत्तिः [सम् + पद् + क्त] 1. सम्पत्ति की बढ़ती
हुई भूतों से किसी ऐश्वर्य का मिलना 2. सकुचा ।

सम्पत्ति [सम् + पद् + क्त] 1. मिल कर मिलना, सह-
गमन 2. आपस में मिश्रण, मूठभेद होता 3. टक्कर,
भिड़न 4. अपवर्जन उन्नतता भय० ११२०
5 (पक्षी आदि का) उन्नतता 6 (पीर की) उन्नत
7 ज्ञाना हिलना-झुलना 8 हटाया जाना, हटाना
मन० ६१५९ 9 पक्षियों की उन्नत विशेष तु०
डोन 10 (चढावे का) अवशिष्ट भाग, उच्छिन्न ।

सम्पत्तिः [सम् + पद् + क्त] एक, वीरगिक रली,
गहक का पुत्र, अटाय का बड़ा भाई ।

सम्पत्ति [सम् + पद् + क्त] 1. पूर्ति, निष्पन्नता
2. अभिप्रेक्षण ।

सम्पत्तिमय [सम् + पद् + क्त + क्त] 1. निष्पादन, कार्या-
न्वयन, पूरा करना 2. उपार्जन करना, प्राप्त करना,
अर्पण करना 3. सम्पन्न करना, साफ करना, (भूति
आदि) नेवार करना, मन० ३१२२५ ।

सम्पत्ति (भू० क० कु०) [सम् + पद् + क्त] 1. राखीकृत
2. सकुचा हुआ ।

सम्पत्तिः [सम् + पद् + क्त] 1. निचोड़ना, भीषणता
2. पीडा, दानता 3. विज्ञान, बाधा 4. श्रेयता, निवेदन,
आगे आगे होकर, प्रशोधन—सम्पत्तिमयित्तलेव
नोयदेव—कि० ७१२२ ।

सम्पत्तिमय [सम् + पद् + क्त] 1. निचोड़ना, निचोड़कर
दाबना 2. प्रेषण 3. दण्ड, कसाघात 4. सकोलना,
अव्यव होता ।

सम्पत्तिः (स्त्री०) [सम् + पा + क्तित] मिल कर पीना,
महपान ।

सम्पत्तिः [सम् + पद् + क्त] 1. गह्वर—स्वाया सागरचुम्बि-
सम्पत्तिगत् (पयः) सम्पत्तिगत् आवर्ते अर्त० २१६७,
(पाठान्तर) काष्ठा० २१२८८, अर्त० ११२१ 2. रत्न-
पेटी, डिब्बा 3. छुरक कुल ।

सम्पत्तिः, सम्पत्ति [सम्पत् + क्त, सम्पत् + टाप्, इत्यम्]
सहक, रत्नपेटी ।

सम्पत्ति (वि०) [सम् + पद् + क्त] 1. भरा हुआ 2. तारे,
माता, दे० पूर्ण, — सम्पत्तिमाति ।

सम्पत्ति (भू० क० कु०) [सम् + पद् + क्त] 1. एकीकृत,
मिश्रित 2. संयुक्त, संघट्ट, समिष्ट, संघट्ट से युक्त
—बागवतिव सम्पत्ति—रघु० ११५ 3. सम्पन्न करना ।

मिलाकर बाँधा हुआ 2 अनुसक्त 3 सयुक्त जुड़ा हुआ, संबंध रखने वाला 4 सहित ।

सम्बन्धः [सम् + बन्ध् + क्त] 1 सयोग मिलाप, माहबर्च 2 रिस्ता रिस्तेदारी 3 कटी विभक्ति या संबंध कारक के सर्वस्वरूप संबंध 4 वैवाहिक संपर्क कु० ६।२९, १० 5 मित्रता का संबंध मैत्री सम्बन्धमा भाषणपूर्वमाहु रघु० २।५८ 6 योग्यता औचित्य 7 समुद्धि, सफलता ।

सम्बन्धक (वि०) [सम् + बन्ध् + क्त] 1 रिस्ता रखने वाला संबंध रखने वाला 2 योग्य उपयुक्त -क 1 मित्र जन्म या विवाह के कारण बना संबंध एक प्रकार की शान्ति

सम्बन्धिन् (वि०) [सम्बन्ध + णिन्] 1 संबंध रखने वाला 2 सयुक्त जुड़ा हुआ प्रसन्न 3 अशुभ गुणा म युक्त पु० 1 विवाह के कल लालच बंधनगुता - उत्तर० ५।२ 2 रिस्तेदार बंधु ।

सम्बन्धः [सम् + बन्ध् + क्त] 1 बीच पुष्ट 2 एक ही रंग विषय 3 प्रद्युम्न के द्वारा मारा गया रणमल दे० सम्बन्ध और प्रद्युम्न 4 पहाड़ का नाम रघु 1 परिचय 2 एक । मय० बरि, -रिपु कामदेव ।

जन्म, जन्म [सम् + जन् + क्त] गांधेय याथा के निता मातृही, भार्गव्यय कम्पनी ।

सम्बन्ध (वि०) [सम् + बन्ध् + क्त] 1 मयुक्त बीच से दकल अवच्छेद सक्ती 2 सम्बन्ध कृतवर्ष नदबन्ध बर्त्स - छि० ८।२, व्योमिन महाबन्धवर्षि - रघु० १२।९० - ब 1 बीच का हाथा 2 इबाध चिमर कोट, स्तनसम्बाधमरो जधान च कु० ८।०९ 3 इकावट कटिनाई भय विघ्न कि० ३।५३ 4 बरक का मार्ग 5 हर मय 6 भय धर्मि ।

सम्बाधनम् [स + बाध् + क्त] 1 राक्षस अवरोध 2 भीषणा 3 सुम्कडार फटक ४ धार्मिक मन 5 सुनी या सुनी की नाक 6 डारपाक ।

समुद्धिः (स्त्री०) [सम् + बध् + क्त] 1 पूर्ण ज्ञान या प्रत्यक्षज्ञान 2 पूर्ण चेतना 3 प्रकारना बुझाना 4 (आ० में) सम्बोधन कारक एक हस्तान समुद्धि - पा० ६।१।९९ ।

सम्बोधनम् [सम् + बध् + क्त] 1 व्याख्या करना निदेश देना सूचित करना 2 पूर्ण या अंश प्रत्यक्षज्ञान 3 भेदना जैसे देना 4 हानि विनाश ।

सम्बोधनम् [स + बध् + क्त] 1 व्याख्या करना 2 सूचित करना 3 सम्बोधन कारक 1 किन २ बुझाने के लिए प्रयुक्त शब्द, विचारण भाषि० १।१९ ।

सम्बोधित (स्त्री०) [सम् + बध् + क्त] 1 हस्ता जना अधिकार करना 2 विचारण करना ।

सम्बन्ध (य० क० ह०) [सम् + बन्ध् + क्त] छिन्न भिन्न, विनिरविनिर न्न शिब का विशेषण ।

सम्बन्धी [सम् + बन्ध् + क्त] 1 इतो कृत्नी दे० सम्बन्धमा ।

सम्बन्ध [सम् + बन्ध् + क्त] 1 जन्म उत्पत्ति फूलना उगना भरणान पिपाय मुहूर्त 2 यत्र मम सर्वत्र ममयो भूमान या ० मानवीय कर्म का साधन रूपम् मयमय य० १।०९ भग० ३।१५ (इस अर्थ म पाप समाप्त के अन्त म प्रयत्न) 4 धर्म सम्बन्धी 5 १ 2 ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १०० १०१ १०२ १०३ १०४ १०५ १०६ १०७ १०८ १०९ ११० १११ ११२ ११३ ११४ ११५ ११६ ११७ ११८ ११९ १२० १२१ १२२ १२३ १२४ १२५ १२६ १२७ १२८ १२९ १३० १३१ १३२ १३३ १३४ १३५ १३६ १३७ १३८ १३९ १४० १४१ १४२ १४३ १४४ १४५ १४६ १४७ १४८ १४९ १५० १५१ १५२ १५३ १५४ १५५ १५६ १५७ १५८ १५९ १६० १६१ १६२ १६३ १६४ १६५ १६६ १६७ १६८ १६९ १७० १७१ १७२ १७३ १७४ १७५ १७६ १७७ १७८ १७९ १८० १८१ १८२ १८३ १८४ १८५ १८६ १८७ १८८ १८९ १९० १९१ १९२ १९३ १९४ १९५ १९६ १९७ १९८ १९९ २०० २०१ २०२ २०३ २०४ २०५ २०६ २०७ २०८ २०९ २१० २११ २१२ २१३ २१४ २१५ २१६ २१७ २१८ २१९ २२० २२१ २२२ २२३ २२४ २२५ २२६ २२७ २२८ २२९ २३० २३१ २३२ २३३ २३४ २३५ २३६ २३७ २३८ २३९ २४० २४१ २४२ २४३ २४४ २४५ २४६ २४७ २४८ २४९ २५० २५१ २५२ २५३ २५४ २५५ २५६ २५७ २५८ २५९ २६० २६१ २६२ २६३ २६४ २६५ २६६ २६७ २६८ २६९ २७० २७१ २७२ २७३ २७४ २७५ २७६ २७७ २७८ २७९ २८० २८१ २८२ २८३ २८४ २८५ २८६ २८७ २८८ २८९ २९० २९१ २९२ २९३ २९४ २९५ २९६ २९७ २९८ २९९ ३०० ३०१ ३०२ ३०३ ३०४ ३०५ ३०६ ३०७ ३०८ ३०९ ३१० ३११ ३१२ ३१३ ३१४ ३१५ ३१६ ३१७ ३१८ ३१९ ३२० ३२१ ३२२ ३२३ ३२४ ३२५ ३२६ ३२७ ३२८ ३२९ ३३० ३३१ ३३२ ३३३ ३३४ ३३५ ३३६ ३३७ ३३८ ३३९ ३४० ३४१ ३४२ ३४३ ३४४ ३४५ ३४६ ३४७ ३४८ ३४९ ३५० ३५१ ३५२ ३५३ ३५४ ३५५ ३५६ ३५७ ३५८ ३५९ ३६० ३६१ ३६२ ३६३ ३६४ ३६५ ३६६ ३६७ ३६८ ३६९ ३७० ३७१ ३७२ ३७३ ३७४ ३७५ ३७६ ३७७ ३७८ ३७९ ३८० ३८१ ३८२ ३८३ ३८४ ३८५ ३८६ ३८७ ३८८ ३८९ ३९० ३९१ ३९२ ३९३ ३९४ ३९५ ३९६ ३९७ ३९८ ३९९ ४०० ४०१ ४०२ ४०३ ४०४ ४०५ ४०६ ४०७ ४०८ ४०९ ४१० ४११ ४१२ ४१३ ४१४ ४१५ ४१६ ४१७ ४१८ ४१९ ४२० ४२१ ४२२ ४२३ ४२४ ४२५ ४२६ ४२७ ४२८ ४२९ ४३० ४३१ ४३२ ४३३ ४३४ ४३५ ४३६ ४३७ ४३८ ४३९ ४४० ४४१ ४४२ ४४३ ४४४ ४४५ ४४६ ४४७ ४४८ ४४९ ४५० ४५१ ४५२ ४५३ ४५४ ४५५ ४५६ ४५७ ४५८ ४५९ ४६० ४६१ ४६२ ४६३ ४६४ ४६५ ४६६ ४६७ ४६८ ४६९ ४७० ४७१ ४७२ ४७३ ४७४ ४७५ ४७६ ४७७ ४७८ ४७९ ४८० ४८१ ४८२ ४८३ ४८४ ४८५ ४८६ ४८७ ४८८ ४८९ ४९० ४९१ ४९२ ४९३ ४९४ ४९५ ४९६ ४९७ ४९८ ४९९ ५०० ५०१ ५०२ ५०३ ५०४ ५०५ ५०६ ५०७ ५०८ ५०९ ५१० ५११ ५१२ ५१३ ५१४ ५१५ ५१६ ५१७ ५१८ ५१९ ५२० ५२१ ५२२ ५२३ ५२४ ५२५ ५२६ ५२७ ५२८ ५२९ ५३० ५३१ ५३२ ५३३ ५३४ ५३५ ५३६ ५३७ ५३८ ५३९ ५४० ५४१ ५४२ ५४३ ५४४ ५४५ ५४६ ५४७ ५४८ ५४९ ५५० ५५१ ५५२ ५५३ ५५४ ५५५ ५५६ ५५७ ५५८ ५५९ ५६० ५६१ ५६२ ५६३ ५६४ ५६५ ५६६ ५६७ ५६८ ५६९ ५७० ५७१ ५७२ ५७३ ५७४ ५७५ ५७६ ५७७ ५७८ ५७९ ५८० ५८१ ५८२ ५८३ ५८४ ५८५ ५८६ ५८७ ५८८ ५८९ ५९० ५९१ ५९२ ५९३ ५९४ ५९५ ५९६ ५९७ ५९८ ५९९ ६०० ६०१ ६०२ ६०३ ६०४ ६०५ ६०६ ६०७ ६०८ ६०९ ६१० ६११ ६१२ ६१३ ६१४ ६१५ ६१६ ६१७ ६१८ ६१९ ६२० ६२१ ६२२ ६२३ ६२४ ६२५ ६२६ ६२७ ६२८ ६२९ ६३० ६३१ ६३२ ६३३ ६३४ ६३५ ६३६ ६३७ ६३८ ६३९ ६४० ६४१ ६४२ ६४३ ६४४ ६४५ ६४६ ६४७ ६४८ ६४९ ६५० ६५१ ६५२ ६५३ ६५४ ६५५ ६५६ ६५७ ६५८ ६५९ ६६० ६६१ ६६२ ६६३ ६६४ ६६५ ६६६ ६६७ ६६८ ६६९ ६७० ६७१ ६७२ ६७३ ६७४ ६७५ ६७६ ६७७ ६७८ ६७९ ६८० ६८१ ६८२ ६८३ ६८४ ६८५ ६८६ ६८७ ६८८ ६८९ ६९० ६९१ ६९२ ६९३ ६९४ ६९५ ६९६ ६९७ ६९८ ६९९ ७०० ७०१ ७०२ ७०३ ७०४ ७०५ ७०६ ७०७ ७०८ ७०९ ७१० ७११ ७१२ ७१३ ७१४ ७१५ ७१६ ७१७ ७१८ ७१९ ७२० ७२१ ७२२ ७२३ ७२४ ७२५ ७२६ ७२७ ७२८ ७२९ ७३० ७३१ ७३२ ७३३ ७३४ ७३५ ७३६ ७३७ ७३८ ७३९ ७४० ७४१ ७४२ ७४३ ७४४ ७४५ ७४६ ७४७ ७४८ ७४९ ७५० ७५१ ७५२ ७५३ ७५४ ७५५ ७५६ ७५७ ७५८ ७५९ ७६० ७६१ ७६२ ७६३ ७६४ ७६५ ७६६ ७६७ ७६८ ७६९ ७७० ७७१ ७७२ ७७३ ७७४ ७७५ ७७६ ७७७ ७७८ ७७९ ७८० ७८१ ७८२ ७८३ ७८४ ७८५ ७८६ ७८७ ७८८ ७८९ ७९० ७९१ ७९२ ७९३ ७९४ ७९५ ७९६ ७९७ ७९८ ७९९ ८०० ८०१ ८०२ ८०३ ८०४ ८०५ ८०६ ८०७ ८०८ ८०९ ८१० ८११ ८१२ ८१३ ८१४ ८१५ ८१६ ८१७ ८१८ ८१९ ८२० ८२१ ८२२ ८२३ ८२४ ८२५ ८२६ ८२७ ८२८ ८२९ ८३० ८३१ ८३२ ८३३ ८३४ ८३५ ८३६ ८३७ ८३८ ८३९ ८४० ८४१ ८४२ ८४३ ८४४ ८४५ ८४६ ८४७ ८४८ ८४९ ८५० ८५१ ८५२ ८५३ ८५४ ८५५ ८५६ ८५७ ८५८ ८५९ ८६० ८६१ ८६२ ८६३ ८६४ ८६५ ८६६ ८६७ ८६८ ८६९ ८७० ८७१ ८७२ ८७३ ८७४ ८७५ ८७६ ८७७ ८७८ ८७९ ८८० ८८१ ८८२ ८८३ ८८४ ८८५ ८८६ ८८७ ८८८ ८८९ ८९० ८९१ ८९२ ८९३ ८९४ ८९५ ८९६ ८९७ ८९८ ८९९ ९०० ९०१ ९०२ ९०३ ९०४ ९०५ ९०६ ९०७ ९०८ ९०९ ९१० ९११ ९१२ ९१३ ९१४ ९१५ ९१६ ९१७ ९१८ ९१९ ९२० ९२१ ९२२ ९२३ ९२४ ९२५ ९२६ ९२७ ९२८ ९२९ ९३० ९३१ ९३२ ९३३ ९३४ ९३५ ९३६ ९३७ ९३८ ९३९ ९४० ९४१ ९४२ ९४३ ९४४ ९४५ ९४६ ९४७ ९४८ ९४९ ९५० ९५१ ९५२ ९५३ ९५४ ९५५ ९५६ ९५७ ९५८ ९५९ ९६० ९६१ ९६२ ९६३ ९६४ ९६५ ९६६ ९६७ ९६८ ९६९ ९७० ९७१ ९७२ ९७३ ९७४ ९७५ ९७६ ९७७ ९७८ ९७९ ९८० ९८१ ९८२ ९८३ ९८४ ९८५ ९८६ ९८७ ९८८ ९८९ ९९० ९९१ ९९२ ९९३ ९९४ ९९५ ९९६ ९९७ ९९८ ९९९ १००० १००१ १००२ १००३ १००४ १००५ १००६ १००७ १००८ १००९ १०१० १०११ १०१२ १०१३ १०१४ १०१५ १०१६ १०१७ १०१८ १०१९ १०२० १०२१ १०२२ १०२३ १०२४ १०२५ १०२६ १०२७ १०२८ १०२९ १०३० १०३१ १०३२ १०३३ १०३४ १०३५ १०३६ १०३७ १०३८ १०३९ १०४० १०४१ १०४२ १०४३ १०४४ १०४५ १०४६ १०४७ १०४८ १०४९ १०५० १०५१ १०५२ १०५३ १०५४ १०५५ १०५६ १०५७ १०५८ १०५९ १०६० १०६१ १०६२ १०६३ १०६४ १०६५ १०६६ १०६७ १०६८ १०६९ १०७० १०७१ १०७२ १०७३ १०७४ १०७५ १०७६ १०७७ १०७८ १०७९ १०८० १०८१ १०८२ १०८३ १०८४ १०८५ १०८६ १०८७ १०८८ १०८९ १०९० १०९१ १०९२ १०९३ १०९४ १०९५ १०९६ १०९७ १०९८ १०९९ ११०० ११०१ ११०२ ११०३ ११०४ ११०५ ११०६ ११०७ ११०८ ११०९ १११० ११११ १११२ १११३ १११४ १११५ १११६ १११७ १११८ १११९ ११२० ११२१ ११२२ ११२३ ११२४ ११२५ ११२६ ११२७ ११२८ ११२९ ११३० ११३१ ११३२ ११३३ ११३४ ११३५ ११३६ ११३७ ११३८ ११३९ ११४० ११४१ ११४२ ११४३ ११४४ ११४५ ११४६ ११४७ ११४८ ११४९ ११५० ११५१ ११५२ ११५३ ११५४ ११५५ ११५६ ११५७ ११५८ ११५९ ११६० ११६१ ११६२ ११६३ ११६४ ११६५ ११६६ ११६७ ११६८ ११६९ ११७० ११७१ ११७२ ११७३ ११७४ ११७५ ११७६ ११७७ ११७८ ११७९ ११८० ११८१ ११८२ ११८३ ११८४ ११८५ ११८६ ११८७ ११८८ ११८९ ११९० ११९१ ११९२ ११९३ ११९४ ११९५ ११९६ ११९७ ११९८ ११९९ १२०० १२०१ १२०२ १२०३ १२०४ १२०५ १२०६ १२०७ १२०८ १२०९ १२१० १२११ १२१२ १२१३ १२१४ १२१५ १२१६ १२१७ १२१८ १२१९ १२२० १२२१ १२२२ १२२३ १२२४ १२२५ १२२६ १२२७ १२२८ १२२९ १२३० १२३१ १२३२ १२३३ १२३४ १२३५ १२३६ १२३७ १२३८ १२३९ १२४० १२४१ १२४२ १२४३ १२४४ १२४५ १२४६ १२४७ १२४८ १२४९ १२५० १२५१ १२५२ १२५३ १२५४ १२५५ १२५६ १२५७ १२५८ १२५९ १२६० १२६१ १२६२ १२६३ १२६४ १२६५ १२६६ १२६७ १२६८ १२६९ १२७० १२७१ १२७२ १२७३ १२७४ १२७५ १२७६ १२७७ १२७८ १२७९ १२८० १२८१ १२८२ १२८३ १२८४ १२८५ १२८६ १२८७ १२८८ १२८९ १२९० १२९१ १२९२ १२९३ १२९४ १२९५ १२९६ १२९७ १२९८ १२९९ १३०० १३०१ १३०२ १३०३ १३०४ १३०५ १३०६ १३०७ १३०८ १३०९ १३१० १३११ १३१२ १३१३ १३१४ १३१५ १३१६ १३१७ १३१८ १३१९ १३२० १३२१ १३२२ १३२३ १३२४ १३२५ १३२६ १३२७ १३२८ १३२९ १३३० १३३१ १३३२ १३३३ १३३४ १३३५ १३३६ १३३७ १३३८ १३३९ १३४० १३४१ १३४२ १३४३ १३४४ १३४५ १३४६ १३४७ १३४८ १३४९ १३५० १३५१ १३५२ १३५३ १३५४ १३५५ १३५६ १३५७ १३५८ १३५९ १३६० १३६१ १३६२ १३६३ १३६४ १३६५ १३६६ १३६७ १३६८ १३६९ १३७० १३७१ १३७२ १३७३ १३७४ १३७५ १३७६ १३७७ १३७८ १३७९ १३८० १३८१ १३८२ १३८३ १३८४ १३८५ १३८६ १३८७ १३८८ १३८९ १३९० १३९१ १३९२ १३९३ १३९४ १३९५ १३९६ १३९७ १३९८ १३९९ १४०० १४०१ १४०२ १४०३ १४०४ १४०५ १४०६ १४०७ १४०८ १४०९ १४१० १४११ १४१२ १४१३ १४१४ १४१५ १४१६ १४१७ १४१८ १४१९ १४२० १४२१ १४२२ १४२३ १४२४ १४२

सम्पत् (मू० क० क०) [सम् + प् + क्त] १ एकचित्त, सन्तुष्ट, सन्तुष्ट २ उद्यत, तैयार, बन्धित, सन्धित ३ सुसज्जित, उपन्या, युक्त, सहित ४ रक्ता हुआ, बना किया हुआ ५ पूर्ण, पूरा, प्रसन्न ६ लब्ध, अवाप्त ७ ले जाया गया, बहान किया गया ८ पोषित ९ उत्पादित पैदा किया गया।

सम्पत्तिः (स्त्री०) [सम् + प् + क्त] १ सग्रह २ नौयारी, नाव-सामान, सामग्री ३ पूर्णता ४ सहारा, सहायण पोषण।

सम्प्रेष [सम् + भिष् + क्त] १ गटना, टुकड़-टुकड़े करना २ मिलाप मिश्रण सम्मिश्रण आलोचनविमर्शमन्त्रेण - मा० १.१११ हृषीकेशमन्त्रेण उक्तः मा० १ ३ धिक्ता (जैसे निगाहों का) ४ समग्र (यौ नदियाँ का) मिलन नवुत्पिष्ठ पागामिन्मध्यमदमरागात्रा नगरीमेव प्रविधानं अथारो महीनच्छा मन्त्र - मा० ४ मधुपतीमिषुसम्प्रेषायन ५।

सम्प्रेषः [सम् + भिष् + क्त] १ आतन्त्र देना मछे करना सम्प्रेषोवफला क्षियं सुभा० २ रुक्ता उपवाग, अविज्ञान मनु० ८.१०० ३ रीति न मधुन, मह-बाध-सम्प्रेषाण्ये प्रथम समुचितो हस्तमग्नानाम् - मेघ० १५ ४ सम्प्रेष गाह ५ शुभारम्भ का एक उपदेश है० 'शुभारं के अन्तर्गत।

सम्प्रेष [सम् + भिष् + क्त] १ मूढना आवर्तन, चक्कर काटना २ जलदाजी उतावली ३ अथर्वस्था विज्ञान, हृदयदी कु० ३.४८ ४ डर, बातक मय - मा० १ कि० १५० ५ कुटि मूत्र अज्ञान ६ उत्पाह किया शीलता ७ बादर अज्ञा मृहमुपगते मध्यमविधि भर्तु० २.१६३ नव शीयवत काश्चछस्ति मयि सम्प्रेष-रामा०। मम० सम्प्रेषित (वि०) विज्ञान से उत्पन्न - कौ० (वि०) चक्रदाया हुआ हृदयदाया हुआ।

सम्प्रेषण (मू० क० क०) [सम् + भिष् + क्त] १ आबन्धित २ हृदयदाया हुआ, विज्ञान, विज्ञान आह्वान।

सम्प्रेषण (मू० क० क०) [सम् + भिष् + क्त] १ सहमन, स्वीकृत माना हुआ २ पसन्द किया हुआ प्रिय प्रियतम ३ समान मिलना-बुलना ४ हलान किया गया, बोधो गया विचारा गया ५ अत्यंत आदुन, सम्मानित प्रतिष्ठित तम् महामति, दे० सम्पत्ति।

सम्पत्ति (स्त्री०) [सम् + भिष् + क्त] १ सहमति २ मम नुकलता मायता अनुमोदन समर्थन ३ अभिलाषा इच्छा ४ आत्मज्ञान आत्मा की जानकारी मत्प्राप्त ५ लयाज आदर प्रतिष्ठा कथामिव नव सम्पत्ति-विन्नी ममननुमिर्मुनिनामधीनस्तस्य कि० १०.१६ ६ प्रेम, स्नेह।

सम्प्रेषण [सम् + भिष् + क्त] आतिहृष भुषी, प्रमदना शि० १५.७७।

सम्प्रेषण [सम् + भिष् + क्त] १ आपस में मिलना, चर्चा २ अमर्ष, मोक्ष अभाव यदुपपन्नरक्तोन्मत्तस्य-ईस्तन मध्यमात् - रघु० १५.१०१, मा० १०.३ कुच-लता वीरों से रीझना ४ सज्जन, युद्ध।

सम्प्रापूर - सम्प्रापूर दे० मत्' के अन्तर्गत।
सम्प्राप [सम्प्रा + क्त] भव नशा, पातकघन।
सम्प्राप [सम् + भिष् + क्त] आदर, प्रतिष्ठा, - कम् १ आप २ तुलना।

सम्प्रापक [सम् + भिष् + क्त] साधने वाला बुहारी देने वाला मणी।

सम्प्रापक [सम् + भिष् + क्त] १ बुहारीना मांजना २ निर्देश करना, माप करना साधना।

सम्प्रापक [सम् + भिष् + क्त] १ साधना २ बुहारी।

सम्प्रेष (मू० क० क०) [सम् + भिष् + क्त] १ मापना हुआ माप हुआ २ समान माप विचारना माप का मय बैसा ही बराबर मितना बुलना काला-मामि-ततयोपदेशयुक्ते का० १ रघु० ३.१६ ३ इतना बड़ा जितना कि, पहुँचता हुआ ४ समकक्ष समनुकूल, समानुपातिक ५ से युक्त सुसज्जित।

सम्प्रेष सम्प्रेषित (वि०) [सम् + भिष् + क्त] १ परस्पर मिलाया हुआ अन्तर्निमित्त।

सम्प्रेषण [सम्प्रेषण] रक्त] इतना विशेषण।
सम्प्रेषण [सम् + भिष् + क्त] (कूल आदि का) दन्त हुना इकना मपेटना।

सम्प्रेषण (वि०) [स्त्री०-का, जी] समुत्पन्न (वि०) [सप्त मुख से - मा० ३०, सर्वस्य मुखस्य दर्शन-ममयुक्त + अ सम पश्य अन्तर्लोप नि०] १ सामने का, सम्मुख स्थि आधने सामने आधमुखी, सामना करने वाला काम न तिष्ठति अदाननसमुत्पत्ति ता - मा० १.१३१ रघु० १५.१६ मि० १०.८६ २ मूठभेद करने वाला मुकाबला करने वाला ३ स्पर्श।

सम्प्रेषण (प०) [सम्प्रेषण] अस्ति सम्प्रेषण + इति] दर्शन कीक्षा आर्तिना।

सम्प्रेषण [सम् + भिष् + क्त] १ मूर्छा बहुधी २ अमन गाढ़ होना ३ गाढ़ा करना बढ़ना ४ अज्ञा ५ विषयव्याप्ति महर्षिस्मार पूर्ण व्याप्ति।

सम्प्रेषण (मू० क० क०) [सम् + भिष् + क्त] १ मूर्छा भाति बुहारी मय मांजना-बोधो तथा २ छना हुआ, छाना हुआ।

सम्प्रेषण [सम् + भिष् + क्त] १ परस्पर मिलना मिलाप २ मिश्रण ३ एकत्र करना मयज्ञ करना।

सम्प्रेषण [सम् + भिष् + क्त] १ चक्राहट अथर्वस्था प्रेमोन्माद २ मूर्छा वैहारी ३ अज्ञान मूर्खता ४ आकर्षण।

सम्प्रेषण [सम् + भिष् + क्त] मय + भिष् + क्त] मयमय करना

वशीकरण, मः कामदेव के पाँच हाथों में से एक
कु० ३१६९ ।

सम्यक् सम्यक् (वि०) (स्त्री०-समीची) [सम् + अन् + चिन्त् + क्त] समि आदेशः पक्षे नलोपः । 1. साथ जाने वाला, साथ रहने वाला 2. सहो, युक्त, उचित, यथोचित 3. युक्त, साथ, यथायथं 4. सुहाबना, सबिकर कि च कुलानि कवीना भित्तये-सम्यक्चि रम्ययतु-रस० 5. वही, एकरूप 6. सब, पूर्ण, समस्त- (अव्य०-सम्यक्) 1. के साथ, साथ-साथ 2. अच्छा, उचित रूप से, सही ढंग से, शुद्धतापूर्वक, सचमुच सम्य-मियमाहृ. श० १, मनु० २१५, १४ 3. बहाबत्, यथोचित ढंग से, ठीक-ठीक, सचमुच 4. सम्मान पूर्वक 5. पूरी तरह से, पूर्णतः 6. स्पष्ट रूप से ।

सत्ताम् (पु०) [सम्यक् राजने-सम् + राज् + क्तिप्] 1. सत्तापति प्रभु, बिम्बराट्, विसेषत बहु ओ अन्य राजाओ पर शासन करता हो तथा जिसने राजसूय यज्ञ का अनुष्ठान कर लिया है-येनेष्ट राजसूयन मन्त्रकर्म्येस्वररच यः । शास्ति यवकाक्षभा राजः स सत्ताट् अमरा, -रघु० २१५ ।

सत् (भा० बी० सवते) जाना, हिलना-जुलना ।

सत्पूजः [सत्पूज + यत्] एक ही वगैरे या जति का ।

सत्प्रीति (वि०) [समाना योनिर्विषय्य ब० म०, समानस्य सत्प्रेतः] एक ही कोश का, एक ही गर्भ से उत्पन्न, सहोदर, -किः 1. सगा या सहोदर भाई 2. मरोता 3. इन्द्र का नाम ।

सर (वि०) [स् + अच्] 1. जाने वाला, गतिशील 2. रेखक, उल्लाखर-रः 1. जाना, गति 2. बाज 3. जातक, दही का चक्का, सलाई 4. नमक 5. लड़ी, हार-अयं कष्टे बाहु शिशिरममूषो बोक्किदसर ।

उत्तर० ११३९ २९ 6 जलप्रपात, -रम् 1. जल 2. झील, मरोवर । मय०-उल्लाखाः सारस, जम् नामा मयलन, लवनीत, मु० शरज ।

सरकः, कम् [स् + वृत्] 1. सरक राजमार्ग की जनकरत पविन, 2. मदिरा, उच्च मुरा-चक्रवर्ज नर पुरगिजजनैरयचार्षसिद्धि सरक महीभूतः-शिव० १५। ८०, १०१२ ४. पीने का बर्तन, शराब पीने का प्याला, कटारा-शिव० १०१२ ५. तेज शराब का वितरण, -कम् 1. जाना, गति 2. ताजाब, शराब 3. स्वर्ग ।

सरका [सर मधुविशेषं श्लि-सर + हृन् + क्तिप्] मधु-मकली, -नम्भार सरकास्थानि म श्रोतपटर्मेतिव -रघु० ४६३, शिव० १५१२३ ।

सरङ्गः [स् + अङ्ग] 1. वनस्पति, बीयावा, 2. पत्नी । सरङ्गम्, सी (स्त्री०), सरङ्गम् [महुरजसा ब० म०, पक्ष कप् + टाप्] रङ्गबला स्त्री ।

सरह (पु०) [स् + अटि] 1. हवा, वायु 2. बादल 3. छिपकली ४. मधुमक्खी ।

सरहः [स् + अट्] 1. वायु 2. छिपकली-लूता हि सर-टाना च तिलपां चाम्बुवारिषाम्-मनु० १२१५० ।

सरटिः [स् + अटिन्] 1. वायु 2. बादल ।

सरटुः [स् + अट्] छिपकली गिरगिट ।

सरथ (वि०) [स्, स्मृट्] 1. जाने वाला, गतिशील 2. बहने वाला-यम् 1 प्रगतिशील, जाने वाला, बहनेवाला 2. सीढ़ि का त्रय मूनी ।

सरणिः, नी (स्त्री०) [स् + नि] 1. पथ, मार्ग, सड़क रास्ता-आनन्द० १८ 2 क्रम विधि-सांखी अनवगन पक्षि 4 कष्टरोध ।

सरणः [स् + अणच्] 1. पक्षी 2. लम्पट, दुष्टचरित्र व्यक्ति 3. छिपकली ४. वृत्त ५. एक प्रकार का अलंकार ।

सरण्यः [स् + अणच्] 1. वायु, हवा 2. बादल 3. जल ४. बमत श्रुतः अणि 6 दम का नाम ।

सरत्तिः (पु०, स्त्री०) [मह रत्तिना ब० म०] एक हाथ का माप, मु० रत्ति या अरत्ति ।

सरथ (वि०) [समाना रथा यस्य रथेन सह वा-ब० म०] एक ही रथ पर सवार, -यः रथ पर भवार बाँडा ।

सरभल (वि०) [सह रभसेत ब० म०] 1. बेगवान्, पूर्वीका 2 प्रचक्र, उच्च 3. कोषपूष ४ प्रसन्न, -सम् (अव्य०) अत्यंत बेग से ।

सरवा [स् + अय + टाप्] 1. देवों की कुनिया 2. दक्ष की पुत्री का नाम 3. रावण के भाई विभीषण की पत्नी का नाम ।

सरवः [स् + अच्] वायु, हवा, वायुः (स्त्री०) एक नदी का नाम जिसके तट पर अयोध्यानगरी स्थित है रघु० ८१९५, १३१६१, ६३, १६३० ।

सरल (वि०) [स् + अल्] 1. मोटा, अंक 2. ईमानदार, सारा, निष्कपट, निष्छल ३. सीधामादा, धोला भाजा, स्वाभाविक सरले साहमयाग पण्डित-वा० ६१०, अयि सरले किमय मया भवक्या अव्यम्-२, -कः 1 पीछ का वृक्ष विश्विताना सरलदुषाम्बु कु० ११९, मेघ० ४३, रघु० ४७५, 2 धाम । मय० अङ्कः सरल वृक्ष का रम, विरोधा, तारपीन, इवः सुपक्षित विरोधा ।

सरल्य दे० सरल्य ।

सरम् (नपु०) [स् + अर्धुन्] 1. सरोवर, तालाब, पोखर, पानी का विशाल वृक्षा मरसाभिय सागर-मय० १०१२ 2 जल । मय० अङ्क-अव्यम् (नपु०)-वह्नु, (सरोजम्, सरोजव्यम्, सरोजवृक्ष) सरसिजम्, सरसिजवृक्ष कमल-मयसजयमन्त्रिद्धि श्रीकलेनायि रम्यम् स० ११००, सरोजवृक्षमिधु पादास्तवासिधुम् २२० ११३०, -जिनी, -वह्निनी 1. कमल का पौधा

अमर कथ बा सरोजिनी त्यजति-भामि० १।१००
 2 कमलो मे भग हुआ सरोवर, - रजः (सरोरजः)
 तालाब का मरकत, यह (सरोरजः) (नयु०) कमल
 वरः (सरोरजः) झील ।
 सरस (वि०) [रसेन मह व० म०] 1 रमोला, मत्रल
 2 स्वादु, मधुर 3 आटे सि० १।१५४ 4 पसोने
 से तर कु० ५।८५ 5 प्रेमपूर्ण, प्रणयोजन - भामि०
 १।१०० (यहाँ इसका अर्थ 'मधुपूर्ण' भी है) 6 लावण्य-
 मय, प्रिय, कचिकर, सुन्दर - सरसवन्त गीत० १
 7 ताजा, नया, सम 1 झील, तालाब 2 रमायन
 विधा ।
 सरसी [सरस् - झीप] झील, पोखर, सरोवर - भामि०
 २।१४४। सम० चहलू कमल ।
 सरस्वत् (वि०) [सरस् + मत्पु०] 1 सजल जलधन
 2 रमोला, मखेदार 3 ललित 4 बाबुक, पु० 1 समुद्र
 2 सरोवर 3 नद 4 प्रेम 5 भाव का नाम ।
 सरस्वती [सरस्वत् - झीप] 1 बाणी और ज्ञान की
 बलिष्ठाओं देवता जिसका वर्णन ब्रह्मा को यमों के
 रूप में किया गया है 2 बोली, स्वर, वचन कु०
 ५।१९, ४३, रघु० १५।४६ 3 एक नदी का नाम
 (जो कि मरुस्थल के रेग में लपट हो गई है) 4 नदी
 5 नाव 6 श्रेष्ठ स्त्री 7 दुर्गा का नाम 8 बौद्धों का
 एक देवी 9 सोयमता 10 ज्योतिष्मती नामक
 पोवा ।
 सरग (वि०) [सह रागेण - व० म०] 1 रगीत, हुलके
 रग वाला, रगदार - (बकागि) सगममसा रमनागुहा-
 स्पदम् - कु० ५।१० 2 लाल रग की लाज मे रगा
 हुआ - रघु० १६।१० 3 प्रणयोजन, प्रेमाविष्ट, मृग
 - मनेरपि मनोऽवश्य मराग कुहेऽङ्गना - सुभा० ।
 सराव (वि०) [सह रागेण - व० म०] 1 शब्द करने
 वाला, कालाहल करने वाला, बः 1 डक्कन, आबरम
 2 कसोरा, बाय की तपनरी, तु० शराव ।
 सरिः (स्त्री०) [सृ + इत्] भरना, कौबारा ।
 सरित् (स्त्री०) [सृ + इति] 1 नदी जन्मा माँदा
 सतानि हि समुद्रा प्रायन्त्यध्वम् - माकवि० ५।१९
 2 बाधा, होरी सम० बाधः, -तिः (सरितापति
 नी), सत् (पु०) भुव, बरा (सरितावरा) गगा
 का नाम, सुतः शीघ्र का विशेषण ।
 सरि(री)वत् (पु०) [सृ + ईमिन्] 1 गति, सरकना
 2 बाध ।
 सरिकम् [सृ + इलच्] बल ।
 सरिकृत् [कृटिल सपति - सृ + कृ (कृ) + क्तिवादि
 + खच्] साथ ।
 सरक [सृ + कृ] सरकार की मूठ ।
 सरक्य (वि०) [सवान रूपमस्य - व० म०] 1 समान

रूप वाला 2 समान, मिलना-जुलना, बसे ही - रघु०
 ६।५९ ।
 सकयता, स्वयम् [सृ + टाप् + टाप् + टाप्] 1 समानता
 2 बहाम्य हो जाना, मुक्ति के लार प्रकारों में
 से एक ।
 सनेच (वि०) [सह रागेण व० म०] 1 कूट, रोषपूर्ण
 2 क्षुणित ।
 सनः [सृ + क] 1 बाध, हवा 2 मन ।
 सर्गः [सृ + चञ्] 1 छाटना, परिव्याग 2 सृष्टि
 अर्थाः भवेद्विषी प्रकापनिरभूच्चन्द्रो नु कान्तिवदः
 विक्रम० १।९३ सृष्टिरचना कु० २।९, रघु०
 ३।७३ 4 पङ्क्ति, विन्द 5 नैमित्तिक गुण, प्रकृति
 6 निर्वाण, सकल गृहण यत्न यदि सग एव है
 रघु० ३।५९, १८।६० सि० १।१३८ 7 स्वीकृति,
 सहमति 8 अनुनाग, अध्याय, (काव्य आदि का)
 सर्ग 9 बाधा दृष्टा, (मेना का) प्रयमन 10 मल-
 त्याग 11 शिव का नाम, मम० कनः सृष्टि का क्रम,
 बन्धः महाकाव्य, -सर्गबन्धो महाकाव्यम् - मा० द० ।
 सख् (स्त्री० पर० सखति) 1 अवाप्त करना, उपलब्ध
 करना 2 उपार्जन करना ।
 सखः [सृ + खच्] 1 साल का पेड़ 2 साथ वृक्ष का
 चुने वाला रस । सम० निर्वाहक, -सखि, -रसः
 बिरोधा, लाज ।
 सखकः [सृ + खच्] साल का वृक्ष ।
 सखमम् [सृ + खट्] 1 परिव्याग, छोड़ना 2 झील
 करना 3 रचना करना 4 मकल्याण 5 सेना का
 पिछला भाग
 सखिः, सखिका, सखी (स्त्री०) [सृ + इत्, सखि + कृ
 + टाप् + खच् + झीप्] सखीसार ।
 सखुः, सखुः [सृ + ऊ] व्यापारों - स्त्री० 1 बिजली
 2 हार 3 गमन, अनुसरण ।
 सखः [सृ + चञ्] 1 सर्पों की गति घुमावदार बाल,
 निमकना 2 अनुसरण, यमन 3 नाय, साथ । सम०
 अरति, -अरिः 1 तेवला 2 मोर 3 गवड़ का
 विशेषण, अजनः मोर, -आवालय - इच्छन् चन्दन
 का वृक्ष, सखम् कुकुरमुता, साथ की छतरी, कुब,
 -सुख-वेकल, -इच्छुः साथ का बिबला दौल, -आरकः
 मपेरा, -सुख (पु०) 1 मोर 2 सारस 3 अजगर,
 -सखिः साथ के फल को यमि, -रसः वायुकि ।
 सखेयम् [सृ + खट्] 1 रेंवला, सरकना 2 चकलित
 3 बाण की भूमि के समानावर उठान ।
 सखिणी [सृ + जिनि + झीप्] 1 साथी 2 एक प्रकार
 की जड़ी बूटी ।
 सखिन् (वि०) [सृ + जिनि] 1 रेंवने वाला, सरकने
 वाला, घुमावदार, टेढ़ी बाल चलने वाला 2 बाले

बाला, हिलने-डुलने वाला—यूका मन्वदिसपिणी
—पृ० ११२५२।

सन्धि (नपु०) [सु + इति] पिचलाया हुआ बूत, बी
बूत और सन्धि के अन्तर को जानने के लिए दे०
वाक्य। सम०—सन्धिः बूतसागर मात समुद्रो
र्म से एक।

सन्धिम् (वि०) [सन्धि + मत्पु] बी (से प्रसाधित)
बूत।

सन्धि (धा० पर० सर्वानि) जाना हिलना-डुलना।

सन्धिः [सु + मत्] १ बाल, बलि २ आकाश।

सन्धि (धा० पर० सर्वानि) बोट पहुँचाना, क्षतिग्रस्त
करना, बच करना।

सन्धि (वि० वि०) [सन्धनेन विध्वंसित सर्वम् कर्त्त० व०
व० पु०, सर्वे] १ सब, प्रत्येक—उपपत्तिगमन, सर्व
एव दितिप्रति,—हि० २१२, शिखर सर्वो मर्वारि हि नधु
पूर्णता गौरवाय मेघ० २०।१३ २ पूर्ण समयन,
पूरा,—कै० १ विष्णु का नाम २ शिव का नाम।

सन्धि—अङ्गुल समयन शरीर, अङ्गीकृत (वि०) समयन
शरीर से व्याप्त या रोमांचकारी मर्वाङ्गीकृत स्थान
सुतस्म किल विष्णु० ५।११ अधिकांशम् (पु०)

—अव्ययः अधीश्वर,—अज्ञान सब प्रकार के ज्ञान
को जाने वाला मर्यादामोक्षिन् आदि, आकारम्
(समान में) सर्वथा, पूर्ण रूप से, पूरी तरह से

आत्मन् (पु०) पूर्ण आत्मा, सर्वव्यापना सर्वथा
पूरी तरह से, पूर्ण रूप से ईश्वरः सबका स्वामी

—न, सन्धिन् (वि०) विश्वव्यापी, सर्वव्यापक
किन्तु (वि०) सर्वज्ञेता, अव्यय, ज्ञ-विद्य (वि०)

सब कुछ जानने वाला सर्वज्ञ (पु०) १ शिव का
विशेषण २ ब्रह्म का विशेषण, ब्रह्मन् (वि०) सब

का समान जाने वाला दुर्निशङ्क भाषन् (नपु०)
मन्त्र के स्थान में प्रयुक्त होने वाले मन्त्रों का समूह

मन्त्राणां पार्वती का विशेषण, सब मन्त्रों द्वारा जा
सन्धिन् (पु०) पाण्डवी, अश्वमेधी श्राद्धों, व्याधिन्

(वि०) सर्वत्र व्यापक रहने वाला, वेदन् (पु०)
सर्वत्र दक्षिणा में देकर यजमानोष्ठान करने वाला,

—सहा (सर्वसहा बी) पुष्पी, स्वप्न, १ प्रत्येक
बन्तु, २ किसी व्यक्ति की ममता सपनि, जैसा कि

'सर्वस्पर्श' में, 'हा-सन्'। सारी सपनि का अपहरण
या हज्जी २ किसी बन्तु का मर्वाङ्गीकृत दे० व० ११२४,

११२, मा० ८।६, भाषि० १।६३।

सर्वव्यापः (वि०) [सर्व + व्या + क्, धा०] 'सब कुछ
मध्य करने वाला', सर्वव्यापिमान् सर्वव्यापना प्रगल्भी

व्यतिरिक्तव मा० ११२३, भाषि० ११२, वः पुष्ट,
वदनाथ।

सर्वत्रः (अव्य०) [सर्व + त्रिभिन्] १ प्रत्येक दिशा से,

सब ओर से २ सब ओर, सर्वत्र, चारों ओर ३ पूर्णतः
सर्वथा। सम०—त्रिभिन् (वि०) १ सर्वत्र पहुँच

रहने वाला—कु० ३।१२, अत्र १ विष्णु का रव
२ बीस ३ एक प्रकार का चिकनाभ्य उवा० कि०

१५।२५ ४ मन्दिर या महल जिसके चारों ओर द्वार
हो (इस अर्थ में नपु० बी) (आ) नर्मदी नदी

—वृक्ष (वि०) सब प्रकार का, पूर्ण, असीमित—वा०
५।२५, (क) १ शिव का विशेषण २ ब्रह्मा का

विशेषण कु० २।३, (चारों ओर मुख किय हुए)
३ परमात्मा ४ आत्मा ५ आश्रय ६ बाण

७ स्वर्ग।

सर्वत्र (अव्य०) [सर्व + त्रिभिन्] १ प्रत्येक स्थान पर,
सब जगहा पर २ हर समय।

सर्वथा (अव्य०) [सर्व + धा०] १ हर प्रकार से सब
तरह से उवा० १।५ १ बिल्कुल पूर्णतः (प्रायः

नका/परक) ३ पूर्णतः बिल्कुल नितान्त ४ सब
समय।

सर्वथा (अव्य०) [सर्व + धा०] सब समय सबत्र,
हमेशा।

सर्वथी दे० 'सर्वथी'।

सर्वत्रः (अव्य०) [सर्व + त्रिभिन्] १ पूर्णतः सर्वथा पूरी
तरह से २ सर्वत्र ३ सब ओर।

सर्वथी दे० 'सर्वथी'।

सर्वत्रः [सु + अण, मुक्] १ मरम्मे मल सर्वव्यापक
परमिष्ठशक्ति परमार्थ सुभा० भा०—१०।९

२ एक छोटा बाल ३ एक प्रकार का विय।

सन्धि (धा० पर० मत्पति) जाना, हिलना डुलना।

सन्धि [सन्धि + क्] जल, जल।

सन्धि (वि०) [सन्धि + क्] नज्जया लह व० म० [विनीत,
लज्जामीन]।

सन्धिम् [सन्धि + क्] नज्जया लह व० म० [विनीत,
लज्जामीन]।

सन्धिम् [सन्धि + क्] नज्जया लह व० म० [विनीत,
लज्जामीन]।

सन्धिम् [सन्धि + क्] नज्जया लह व० म० [विनीत,
लज्जामीन]।

सन्धिम् [सन्धि + क्] नज्जया लह व० म० [विनीत,
लज्जामीन]।

सन्धिम् [सन्धि + क्] नज्जया लह व० म० [विनीत,
लज्जामीन]।

सन्धिम् [सन्धि + क्] नज्जया लह व० म० [विनीत,
लज्जामीन]।

सन्धिम् [सन्धि + क्] नज्जया लह व० म० [विनीत,
लज्जामीन]।

सहित (वि०) [सह + तृच्] सहन करने वाला, सहनशील सहिष्णु ।

सहिष्णु (वि०) [सह + इष्णुच्] १ सहन करने के योग्य, झेलने में समर्थ—रबिकरणसहिष्णु क्लेशशैरभिलम्पु—श० २।४ २ अमाशील, नितिलु, सहनशील मुक्तस्तवसहिष्णुना रिपुक्ममूलयितु महानागि—कि० २।५० ।

सहिष्णुता, -त्वम् [सहिष्णु + तल + टाप् स्व वा] १ वक्रन करने की शक्ति सहारा देने की शक्ति २ समा शोचना निविदा ।

सहृदि [सह - उरिन्, धृयं, स्त्री० पृथ्वी ।

सहृदय (वि०) [सह हृदयेन—ब० म०] १ अच्छे हृदय वाला कृपालु, करुणाशील २ निष्कपट, स १ विद्वान् पुरुष २ (गुणो की) मारहना करने वाला रक्तिक विवेकशील हृदयवेदना से सहृदयस्य व करीनि काव्य० १ परिश्रुतं हृदये सहृदयधुरीणा कतिपये त्म० ।

सहृद्वेन (वि०) [हृदयस्य लेख काल्प्यकरणम्, सह हृद्वेनेन—ब० स०] प्रष्टव्य सदृश सन् दूषित आहार ।

सहेक (वि०) [सह हेनेन—ब० स०] कीड़ाणील केज परक, बनोदप्रिय ।

सहोद [सह उदेन—ब० म०] बुराव गत सामान के साथ पकड़ा गया चोर ।

सहोर (वि) [सह + ओर] अच्छा खेछ, र सन, महाभा ।

सह्य (वि०) [सह + यत्] १ बहन करने के योग्य, सहारा दिये जान के योग्य सहन करने योग्य अथ मध्य मे क्षिरोवेदना मदा० ५ मातृवि० ३।४ २ सहन किये जाने योग्य झेलने योग्य कथ नृमी राखी निरक्षरिणी १ चिरत्न—श० ३।४४ ३ सहन करने योग्य ४ सहन करने में समर्थ सहन करने के योग्य ५ समर्थ राकागाता छ भाग हो सात प्रधान गर्ववर्णयों मे १ व मयद मे उलट्टा पर पतिवरी पाट का कुछ भाग सह्य नामा—१ भा ध्यासागिनेप्यासा मध्यगत नामा—शु० १।२० ५२ कि० १८।५ छम्प १ स्वस्थ आश्रयस्थ २ सहायता ३ युक्तता ४ धर्म ।

सा [सो + तृ + टाप्] १ लक्ष्मी का नाम २ शर्वीनी का नाम ।

सांसारिक [सायात्रा + कञ्] मयद-व्यापारी पानवर्णिक, समुद्री व्यापार करने वाला पञ्च० १।३१६ ।

सांयुक्ती (वि०) [सयुगे मायु ल्] युद्धबन्धी, रण कुशल मयु० १।१३० विक्रम० ५ व भारी बोझा, युद्धकुशल सैनिक—कु० २।५० ।

सांसारिण्यम् [सम् + तृ + णिनि सराविन् + णच्] अंभी आमात्र, भारी बोलाहल—उलाला कटपुतनाप्रभृतय सांसारिण कुर्वन्ते—मा० ५।११, मटि० ७।४३ ।

सांस्तर (स्त्री० स्त्री) सांस्तरिक (स्त्री०—की) (वि०) [संस्तर + णच् उच्चा वा] वार्षिक मासना का उपयोगी संवत् ।

सांसारिक (वि०) (स्त्री० की) [संसा + कञ्] १ (बोलचाल में) प्रचलित २ विशादप्रमत्त का नाकिक नैर्वायक ।

सांसारिक (वि०) (स्त्री०—की) [संसा + कञ्] आमन अलौकिक चिन्ता या तत्त्वविषयक ।

सांसारिक (वि०) (स्त्री० की) ससा + क १ सांसारिक २ अस्तिविषय आश्चर्यार्थक ।

सांसारिक (वि०) (स्त्री०—की) [ससा + क] दुर्ग यादी, लौकिक सामाजिक व भुवत् वय रमहा—उलाला २०४ ।

सांसारिक (वि०) [संसा + क] १ दार्शनिक स्वा विद्यमान सत्त्व अन्तर्गत २ स्वभाव प्रवृत्त स्वत स्फूर्त ३ स्वयंभूत ४ अविश्वकालिक मासना मे प्रभ विन । सम० इवः सांसारिक तत्त्वना (विप० नैमित्तिक अर्थात्) ब्रह्म अमयब्रह्म ।

सांसारिक [संसा + क] समानदेशीय एक ही देश के निवासी ।

सांसारिण्यम् [सम् + तृ + णिनि + णच्] सांसारिक वक्रा या सरिता ।

सांसारिक (वि०) (स्त्री० की) [सहन + क] दार्शनिक कर्तिक ।

साकम् (अव्य०) [सह अक्षर प्रथ अयु सादृश] १ व साग माय प्रसन्न क० १० व मय, ग नो मुद्वन्ते साक मयमाशाना वक्रा भासि० १।३० १ व २ २ मः मय प्रमाण एक ही समर ।

साकल्यम् [साक + ल्यट] समस्त सम्पूर्ण किसी वस्तु का भाग या समस्त भाग वास्तविक अथवा १० [साकल्य] १० व ११ मे पूर्ण कथ व मय १० व ११ ।

साकन (वि०) [सह अक्षर व० म०] १ सांसारिक व अक्षर माय विमय गीत० ० साकन तत्त्व आदि २ सद्योजन ३ भुवार्थ प्रिय स्वेच्छा वागे तम् (अव्य०) १ अर्थ साधकतापूर्वक जैसा कि साकन या निर्बन्ध में २ सानुराग ३ भाव का क माय भाविकतापूर्वक ।

साकेतम् [सह अक्षर व० म०] अयोध्या कनरी का नाम साकेतनाथोऽञ्जलिधि प्रथम् मयु० १।५।११ १३।७९, १८।३५, अरण्यवन साकेतम् महा० साः (पु०, व० व०) अयोध्या निवासी ।

साक्षेत्तव [साकत + क्त] अयोध्या का निवासी ।

साक्षुक्क [सकृत्ना समाहार सकृत् + क्त] मुने हुए
अथ वा सत्तु का डेर क जी ।

साक्षात् (अव्य०) [सह + भूत + क्त] 1 के मायने
आँसों के मायम दृश्य रूप से हुबहु स्पष्ट रूप से
2 व्यक्तिगत वस्तुतः मूलरूप में साक्षात्द्वयामुप-
गतामपहाय प्रथम श० ६११५ ११६ 3 प्रत्यक्ष
। समास में प्रायः तारीरी साक्षादयम वा सुखा
सोपा तत्साक्षात्प्रतिषेध बाधाय मा० ११११
(साक्षात्कृत् तपनी आँसों से देखना स्वयं जान लेना) ।
सम०—करकृत् 1 दृष्टिगोचर करना 2 इन्द्रियग्राह
बनाना । कल्पनात्मक प्रत्यक्षज्ञान कार प्रत्यक्ष
ज्ञान सम० आपकारी ।

साक्षिन् (वि०) (स्त्री० जी) [सह अक्षि अन्त सभात्
इष्ट साक्षा वा सह + अन् इति 1 देखने वाला
अवलोकन करने वाला सबूत बन वाला पु० गवाह
अवेक्षक चन्द्रमदीन गवाह, आँसू देखा बात बनाने
वाला फल तप साक्षिन् दृष्टमात्रवि कु० ५१६० ।

साक्षयम [साक्षिन + घञ] 1 गवाही गवाहन तमत्र
आशय विवाहमाक्षय रचु० ३१० 2 अभिप्रमाण,
सत्यापन

साक्षेय (वि०) [सह आक्षेपेय व० म०] जिसमें आक्षेप
या अर्थ भरा हो दूखनेपुस्त ।

साक्षेय (वि०) स्त्री० या) [साक्ष + क्त] 1 मित्र
मवचो 2 मैत्राण्यं सोहादयुग ।

साक्ष्यम् [सहि + घञ] मित्रता सोहाद ।

सागर [समर्थन निबल अण्] 1 समुद्र उल्लिख सागर
सागराण्य (अ० म० म०) दरभंगा विद्याभार
नदि १५ मगर २ वर २ मान की सख्या ३ एक
द्वारा ३१ म० । मम० अनुकूल (वि०) समुद्र
क विचार करने अन्त (वि०) समुद्र के नदी में
जल जिसके नदी पर समुद्र जाता है अम्बरा
बाँध सेवता १५१ अक्षय वर्ग का नाम
उत्तम समुद्र नाम या गंगा गामिनी नदी ।

सालिन् (वि०) [सह अग्निना व० म०] 1 अग्नि सहित
2 यज्ञाग्नि रखन वाला ।

सालिक (वि०) [सह अग्निरा व० म० कण्] 1 यज्ञाग्नि
रखन वाला 2 अग्नि से संबंध का यज्ञाग्नि रखन
वाला गृहस्थ ।

साध (वि०) [सह अधण व० म०] 1 समस्त 2 अनि-
राज्य समन अपेक्षाकृत अधिक रखने वाला ।

साक्षुष्यम् [सक्षु + घञ] मिथुन मर्मिमथन, गडगडगड
किया हुआ या मिलाया हुआ शोक ।

साक्षुष (वि०) (स्त्री० जी) [सक्षु + घञ] जोर या
सकल्य से उत्पन्न ।

साक्षुष्यम्, इसा बचक के भ्राता कुम्भध्व की राक्षसानी
का नाम ।

साक्षुषिक (वि०) (स्त्री० जी) [सकत + क्त] 1 पत्नी-
कायक सकनपरक 2 व्यवहार सिद्ध राक्षस्युमा ।

साक्षुषिक (वि०) (स्त्री० जी) [सक्षु + क्त] बलिष्ठ,
सकुचिन, छाटा किया हुआ ।

साक्षुष्य (वि०) [सह अधा + अण्] 1 मर्या मवचो 2 वाकलन
कती मणक 3 विवेचन 4 विचारक नाकिक, लुके
कती—स्व लनि सबमाहक्यानां योगिना स्व परायणम्

महा० अन्व—अन्व ल हिन्दु दशनों में से एक
त्रिमके प्रणता कणिल मुनि माने जाने हैं (इस शास्त्र
का नाम साक्षुष दर्शन इसलिए पड़ा कि इसमें

पञ्चीम तत्त्व या सत्य सिद्धान्त का वर्णन किया गया
है इस शास्त्र का मुख्य उद्देश्य पञ्चीमसे तत्त्व बचाने
पुख्त या आत्मा—का अन्त चौबीस तत्त्वों के स्पष्ट

ज्ञान द्वारा तथा आत्मा को उनसे समुचित मिलना
दशान्तर उस साक्षात्कार बचनी से मुक्त करना है ।

साक्षुष शास्त्र समस्त विश्व को निर्बीज प्रधात वा
अकृति का विकास मानता है, जब कि पुख्त (आत्मा)
मवचा निर्लिप्त एक निर्लक्ष्य द्रव्य है । सर्वलोकधारक

होने के कारण वेदान्त में इसका समानता तथा
विश्वरूपपरक न्याय और वैशिष्ट्य से भिन्नता कही
जानी है । परन्तु वेदान्त में भिन्नताको सब से बड़ी

बाध युक्त है कि साक्षुष शास्त्र का (हैत) सिद्धान्तों
का समर्थक है । इसी वेदान्त नहीं मानता । इसके
अतिरिक्त साक्षुष्य च परमात्मा का विश्व के अष्टा

और नियन्त्रक रूप में नहीं मानता बलकी कि
वेदान्त उचित करता है) अन्व साक्षुष शास्त्र का
अनुयायी भग० ३१५, ५१११ । सम० प्रसन्न,
मुख्य शिष के विचारण ।

साक्षु (वि०) [सह अक्षु व० म०] 1 अगो सहित
2 प्रत्यक्ष भाग में पूज 3 सहायक अगो में युक्त ।

साक्षुतिक (वि०) (स्त्री० जी) [सक्षुति + क्त] समाज
या सभ में सबसे रखने वाला साक्षुष्यकील का
दर्शन अतिवि नवानुक्त ।

साक्षुत्त [सक्षु + अण्] मित्राण्य मिलन तु० समम् ।

साक्षुषात्मिक (वि०) (स्त्री० जी) [सक्षुष + क्त] बृद्ध
मवचो याज्ञा जगज्ज, नैतिक सामरिक—उत्तर०

५११२ क सेनाध्यक्ष सेनापति ।

साक्षि (अव्य०) [सक्षु + क्त] टेढ़ेपन से, तिरछेपन से,
तिर्यक् बहजति से, टेढ़े-टेढ़े—साक्षि लोचनयुग नमवचो

कि० ११४४ १०१५७ (साक्षीक मोड़ना, एक ओर
सुनाना, टेढ़ा करना निनाय साक्षीकृतवाक्यकः
रचु० १११५, कु० ३ ८, साक्षीकरोत्वानम्
तत्कि० ५११४ ।

साधिवन् [सधि + ध्वञ्] 1 मन्त्रालय, मन्त्रि 2 मन्त्रि-मंडल, प्रशासन 3 मैत्री ।

साध्यावन् [साधति + ध्वञ्] 1 जाति की समानता, वर्ण, खेपी वा प्रकार की समानता 2 जाति का समुदाय, समजातीयता ।

साध्वन् [सह अञ्जनं व० स०] क्षिपकली ।

साध् [ध्रा० उभ० साटयति-ते] बसलगा, प्रकट करना ।

साध्वे (वि०) [सह आटोपेन- व० स०] 1. बमब में भरा या फूला हुआ, बहकूरी 2 गोरबहाली शानदार 3 उमरा हुआ, बढ़ा हुआ (जैसे पानी से) पत्र १, वन् बमब के साथ ठेकड़ी के साथ, बकड़ कर इठला कर, रोब से ।

सात् (बन्ध०) तद्धित का एक प्रत्यय जो किसी शब्द के साथ इसलिए जोड़ा जाता है कि शब्द से अर्थाहित वस्तु के साथ किसी वस्तु का पूर्ण परिवर्तन हो जाता है, या वह वस्तु पूर्ण रूप से तबचीन या उसके नियन्त्रण में हो जाती है, जससात् वन् विल्कुल राख बन जाना, अनिमात् कुरबा मालिक ५, जससात्कुल-वत पितृद्विषः पात्रमाश्च वन्धुा सभागराम् - रघु० ११।८६, विनश्य मरुतं बधिसात्कृत् नै० १।१६ इसी प्रकार ब्राह्मणमात्, राजसात् आदि० लि० १।४।३६ ।

सात्त्वन् [सतत + ध्वञ्] निरन्तरता, स्थाविर ।

सातिः (स्त्री०) [सत् + क्तिन्] 1 अंत, उपहार, दान 2 प्राप्ति करना, हासिल करना 3 सहायता 4 विनाश 5 अन्त, उपसहार 6 तेज या तीव्र देहना ।

सातीनः, सातीनकः [सतीन + अन्, सातीन + कन्] मटर ।

सात्त्विक (वि०) (स्त्री०-की) [सात्त्व + क्त्वा] 1 बाल्म-विक, आचम्य 2 सत्य असली, प्राकृतिक 3 ईमानदार निष्पट अच्छा 4 सद्गुणी, मिलनसार 5 बलशाली 6 सम्बन्ध में युक्त 7 सम्बन्ध में सबद्ध या उत्पन्न-ये च सात्त्विका आवा - भग० ३।१०, १।१६ 8 आन्तरिक भावनाओं से उत्पन्न (जैसे प्रेम आदि से) आन्तरिक तत्पूरिमात्त्विकविकारम पास्तत्रैयमाचार्यक विविध भास्मभमाधिरामीत् मा० १।२६, क. (आन्तरिक) भावनाओं या सेवा का बाह्य सूक्ष्म काष्ठ में भावों का एक प्रकार (भाव आठ हैं : स्नम्न स्वेदीय शमाञ्च स्वर्गज्ञाः च वेपथु । वेवर्ग्ययुप्रलम्प इत्यष्टौ सात्त्विका स्मृता ॥ -सा० व० ११६ 2 बाह्य 3 बह्य ।

सात्त्विकः [सात्त्व + क्त्वा] यदुवणी बोद्धा ओ वृण का सात्त्विक या तथा विमनं भद्राभापन के बुद्ध में पाइया का पक्ष लिया ।

सात्त्विकतः, सात्त्विकतयः [सात्त्विकी + अन्, इक् वा] व्याप मृनि का भातृपरक नाम ।

सात्त्वत् (पु०) [सातयति युजयति-सात् + क्तिवत्, सात् परमेश्वर, स उपास्यत्वेन अस्ति जस्य-सात् + क्तिवत्, मय्य व] (कृष्ण आदि का) अनुयायी, उपालम् ।

सात्त्वत्तः (पु०) 1 विष्णु का नाम 2 बलशाली का नाम 3 जाति से बहिष्कृत वैश्य का पुत्र, साः (पु०, व० व०) एक जाति का नाम लि० १६।१४ ।

सात्त्वती (स्त्री०) 1 चार प्रकार की नाट्यशैलियों में से एक द० सा० व० ४१६ 2 शिशुपाल की माता का नाम लि० २।११ ।

सात्त्वः [सद् + क्त्वा] 1 बैठना बसना 2 कलान्त, यकाबट उद्दिवाहमादमतिवेषयन् लि० १।७३ 3 क्षीणता दुबला पतलापन कृमना-शरीरसादा दसमप्रभुषणा रघु० ३।२ 4 स्वस क्षय मोन विनाश, विश्रान्त गतिविश्रमसादनीरवा - रघु० ८।५६, नलोद० ३।२४ 5 पीडा सताप 6 स्खलना, पाँचपना ।

सात्त्वन् [सद् + जिच् ल्यप्] 1 यकाना कलान्त करना 2 नष्ट करना 3 यकाबट, कलान्त 4 चर, निवास स्थान ।

सात्वि [सद् इच्] 1 सारवि रथवात् 2 बोद्धा ।

सात्विन् (वि०) [सद् + जिच् + क्तिन्] 1 बैठता हुआ 2 चकाने वाला, नष्ट करने वाला, -पु० 1 बृहत्सार 2 हाथी पर सवार या रथ में बैठता हुआ ।

सात्त्विक [सत्त्व + ध्वञ्] 1 समानता मिलना-बुलना-पन समरूपता मति पुनर्वास्यवेयमाधुषयानि श० ७ तवाधमाद्वयमिच प्रवृत्तने कु० ५।३५, ३।१६ रघु० १।४० १५।६३ 2 प्रतिलिपि आलाकक्षि प्रतिया मन्माद्वय विरहनुय वा भावमय लिखनी मेव ० ८४ ।

सात्त्वन्त (वि०) [सह आशान्ताभ्याम व० म०] पूरा, समस्त ।

सात्त्विक (वि०) (स्त्री०-स्की) [सात्त्व + क्त्वा] जो ध्र होने वाला प्रिममें विरल न हो ।

सात्त्व 1 (स्वा० १० साध्यानि) 1 पूरा करना, समाप्त करना मपन्न करना 2 शीतना ।

11 (दिवा० ५० साध्यानि) पूरा किया जाना, निष्पन्न किया जाना प्रेर० 1 निष्पन्न करना कार्यस्थित करना घटित करना सम्पन्न करना अपि आचम्य माधयानि नै० २।६२, कु० २।३३, रघु० ५।२५ 2 पूरा करना, समाप्त करना, उपसहार करना 3 उपलब्ध करना, प्राप्त करना, पाना रघु० १।३।८, मनु० ६।७५ 4 आधिन करना, निष्ठ करना 5 दमन करना, बराजिन करना, जीतना (जन्म आदि का), बरा व करना -न हि साम्ना न दासेन न मेदेन च पाच्छवा शक्या मार्गायतुषु यहा० ६ मार

हालना, नष्ट करना सुघोबालकदासह, साधयिष्यम्
इयोरम् भट्टि० ३११ 7 समझना, जानना
8 चिकित्सा करना स्वस्थ करना 9 जाना, बल होना
आने वाले स्थाना साधयिष्यमविधमस्तु त-रम् ०
११०६, श० ११०-प्रायण प्यन्नक साधिनंवर्यं प्रयु
उपय-म० ६० ११० 10 [चण्ण की भाति, उगाहना
11 पूषण कर देना व- (प्रेर०) 1 आगे बढ़ना
उन्नति करना 2 निष्पन्न करना कार्यान्वित करना
3 उपलब्ध करना प्राप्त करना 4 पराभूत करना
दबाना 5 दण्ड चरण करना मजाना सख
1 मफल होना (आ०) 2 निष्पन्न करना पूरा करना
- मनु० २११०० 3 मृगशित करना प्राप्त करना
4 बल जाना 5 पुन प्राप्त करना मनु० ११०
6 लय विषया जाना या नुकता किया जाना मनु०
११२१३ 7 नष्ट करना भार डालना 8 बुझाना

साधक (वि०) (स्त्री०)-बका बिका [माध + ध्वज,
मिध् + णिच् + क्तुल् साधादेश वा] 1 मध्य करने
वाला, पूरा करने वाला कार्यान्वित करने वाला पूर्ण
करने वाला 2 दण्ड, प्रभावशाली-कु० ३११०
3 कुशल, निपुण 4 जाहू से कर्म में परिणत करने
वाला, ऐहजालिक 5 महायक मददगार।

साधन (वि०) (स्त्री०-औ०) [मिध् + णिच् - ल्युट, साधा-
देश] निष्पन्न करने वाला कार्यान्वित करने वाला,
-बन्ध 1 निष्पन्न करना कार्यान्वित करना अनुष्ठान
करना जैसा कि 'स्वाध्यायसाधनम्' में 2 पूरा करना,
सम्पन्नता किसी पदार्थ की पूर्ण अवस्थिति प्रकाश
साधने नौ हि पर्यायवाचकार्थकी रहु० २११६
3 उपाय तरीक़ी विसी बाय को सम्पन्न करने की
तरीक़ी अगोरमाध लब्ध समसाधनम् - कु० ५१३३
५२ रहु० १११ ३११० ४३६ ६२ 4 उपकरण
अधिकारी, कुठार छिदिक्रियामाधनम् 5 निमित्त
कारण, श्रोत सामान्य हुनु 6 कारण कारक 7 उप
करण, जीडा 8 यन्त्र, सामग्री 9 मूल पदार्थ सब
टक सब 10 सेना या उसका अंग मनु० ५११०
11 महायुधता मदद महारा 12 प्रमाण सिद्ध करना
प्रदर्शन करना 13 अनुमान की प्रकिया में हेतु कारण
वा हुये किसी परिणाम पर पहुँचाये-साध्य निविधन-
मन्वयेन घटित विज्ञप् सपणे स्थिति व्यावृत्त च विप्रश्रुती
प्रधान मनसाधन मिदये मृदा० ५११० 14 इमान
करना जीत देना 15 आक्रमण में बल में करना
16 जाहू 71 मय में किसी कार्य की निष्पन्न करना
17 स्वस्थ करना चिकित्सा करना 18 बल करना
विनाश करना 19 नष्ट प्रसन्नता प्रसन्नता 20 बाहर
जाना, कूच करना, पथ्या 21 अनुमान दोस्ते करना

22 साधना, तपस्या 23 मोक्ष प्राप्त करना 24 बीषधि
निर्माण, भयन बही-बूटी 25 (विधि में) चण्ड आदि
की प्राप्ति के लिए आदेश, बुझाना करना 26 जरीर
का कोई अवयव 27 शिष्टन किन 28 जीडी ऐन
29 दोहन 30 दैवी 31 माध, फायदा 32 दण्ड की
दाह किम 33 मृतकमस्कार 34 मातृको का माधन
या जारण। सम० किम समापिका क्रिया, वधम्
लिखित प्रमाण।

साधनता, रवम् [साधन + नल् + टाप्, र्व वा] उपायवत्ता,
हेतुयुक्ति का जरिया होना-प्रतिकूलतामुपपत्ते हि
विषी विफलत्वार्थ बहुसाधनता सि० ११६।

साधना [मिध् + णिच् + क्तुल् + टाप् साधादेश] 1 निष्प
न्नता पूरा करना प्राप्ति 2 पूजा अर्चा 3 सरासन,
प्रसादन।

साधन [माध + णिच्, अनादेश] भिक्षु मिलायी।

साधर्म्य [माधर्म + ध्यञ] 1 समानता कर्म्य की एकता
समानवर्तता-पञ्चम लोकपालानाम् साधर्म्ययोगिन
रहु० ११०८ 2 प्रकृति की समानता, समान
चरित्र, समता, गुणों की समानता-साधर्म्यमुपमा भेदे
काव्य० १०, भव० १४१२, भाषा० १२।

साधारण (वि०) (स्त्री०-बा, औ०) [सह चारणवा-व०
स० सधारण + वच्] 1 (दो वा दो से अधिक बकों में)
समान, समुक्त साधारणोन्म प्रवर्त-व० ३, साधा-
रणो मुखमधुष्यमाक-कु० ११४३, रहु० ११५, विष्णु०
२११६ 2 सामुची सामान्य साधारणी न खलु बाका
मवर्य-वच० १, 3 साध्वनिक विषयवापी 4 नि-
धित, मिला-बुल समान उत्कृष्टसाधारण परितो-
मनुष्यवर्ग-स० १, दीन्यते स हि संकुप्त स्वात्मसाधा-
रणाभिसे-कु० २१४२ 5 तुल्य समुक्त, समान
6 (नर्क० में) एक से अधिक निदर्शनों से लब्ध
होवाभास के नान प्रमाणों में से एक, अनेकानिक
-बन्ध 1 सामान्य या साध्वनिक नियम, साध्वनिक
विधि या नियम 2 जातिगत या निर्विशेष गुण।
सम० वचम् मयुक्त सपति - स्त्री सामान्य स्त्री,
केषया रही।

साधारणता, रवम् [साधारण - नल् + टाप् र्व वा]
1 सामुदायिकता विषयवाक्यता 2 समुक्त हित।

साधारण्यम् [साधारण + ध्यञ] समानता-व० साधा-
रणता।

साधिका [मिध् निध् + ध्वल्, टाप् इत्वम्, साधा
देश] 1 कुशल या निपुण स्त्री 2 गहरी बीड।

साधित [पू० क० कु०] [साध + क्त] 1 निष्पन्न
कार्यान्वित अवस्था 2 पूरा किया हुआ समस्त
3 सिद्ध प्रशान्त 4 प्राप्त उपलब्ध 5 उन्मुक्त
6 बल में किया हुआ दमन किया हुआ 7 पूरा किया

हुवा, पुन प्राप्त 8 दण्डित 9 दापित 10 (दह या मुर्खता) दिया हुआ ।

साधिवन् (पु०) [साधु + इमनिष्] भद्रता, श्रेष्ठता, उत्तमता ।

साधिष्ठ (वि०) [साधु या बाध की उत्पत्तिवत्त्वा अति ध्येन साधु - इष्टन्] 1 श्रेष्ठ, सर्वोत्तम, उच्चतम 2 अत्यंत मज्जबूत, कठोर या दृढ़ ।

साधीयस् (वि०) [साधु + ईयमुन्, उकारलोप, साधु या बाध की मध्यमावस्था] 1 अधिक अच्छा, अधिक श्रेष्ठ भूमि १८८ 2 कठोरतर, अपेक्षाकृत मज्जबूत ।

साधु (वि०) (स्त्री० - धु, - ध्वी) [साधु + उत मध्य० अ० साधीयस्, उत्त० अ० साधिष्ठ] 1 उत्तम, श्रेष्ठ, पूर्ण मध्यसाधु न चित्रं स्वाधिक्येन तत्तदवस्थाया श० ६।३, आपरिताषाद्विदुषा न साधु मन्ये प्रयोगविज्ञानम् १।२ 2 योग्य, उचित, सहो ज्ञेय कि साधु-बुद्धि, साधुसमाचार में ३ सुनी, पुण्यात्मा, सम्माननीय, पवित्रात्मा 4. (क) कृपानु, दयानु रघु० २।२८, पञ्च० १।०४७ (ख) शिष्टाचारी (ग्रंथ० के साधु) साधुः साधुः मिद्धा० 5 शुद्ध चित्त, योग्य युक्त वा श्रेष्ठ (जैसे कि भाषा) 6 सुखकर, हृदयकर, सुहाबना - अनाज्जंमि सन्नुयमाधु साधु हा-कि० १।४ 7 भद्र, कुलीन मत्कुलोद्भव, - धु. 1 मद्रपुरुष पुण्यत्वा ग्ध० १३।५५ २।६२, मेघ० ८० 2 अग्नि, मूर्ति मन- साधो प्रकल्पितस्यापि मनः नायति विक्रियम् सुभा० 3 सौभाग्य वि० - ७३ 4 जैनसाधु 5 सुदक्ष, महाजन (अन्य०) 1 अच्छा बहुत अच्छा, शाबाश बढ़िया साधु मोनम् श० १, साधुः दिगम्बरान् साधु भाववि० ८ 2 काफी, बस । सध० धो (वि०) अच्छ स्वभाव का, - बाधः शाबास की भाँति धन की धनि मि० १८।१९ बुद्ध (वि०) 1 अच्छे बाजबलन का, अग, सदृश-प्रापण साधुवृत्तानाम-स्थायिन्यो विरलव्य भूय० २।८५, (यही दूसरा अर्थ भी प्रसिद्ध है) 2 बुद्ध गोक गोत्र किया हुआ (ख) मद्गुण (मद्गुणी) (नमो अच्छा आनन्द मद्गुण, रावन्ना मर्षाई देवानराधे उमी प्रकार साधु वृत्ति ।

साधुवन् [मद्र आधुनेन श० म०] 1 रात्र, दुकान 2 छतरी 3 मारा का झण्ड ।

साध्य (वि०) [साधु, जित + यात्] 1 कार्या-कर होने योग्य नियमन करने योग्य किया जान योग्य मन्त्रे (मद्विधिविधाय मि० २।१० 2 जो हो सके जो किया जा सक आन 3 सिद्ध किया जाने योग्य अर्थनीति या गणनागुणानाम्नां साध्य रा मति का तथा ग्ध० १०।१८ ४ स्थापित करने

योग्य, पूरा किये जाने योग्य 5 अनुमय, उपसहाय, -अनुमान तनुक्त यसाध्यमाश्रययोगेन-काव्य० १०, जीने जाने के योग्य वय, जेय कु० ३।१५ 7 जिसकी वित्तिता हो मके 8 यथ किय जाने योग्य, बिनाट किये जान योग्य, ध्यः दिव्य प्राणिना का एक विशेष वर्ग तु० मनु० १।२०, ३।१५ 2 श्वता 3 एक मन्त्र का नाम, ध्यम् 1 निष्पन्नता पूर्णता 2 वह बात जो अभी भिन्न की जानी है प्रमाणित की जान वाली इत्यु ३ (न्य० म) प्रस्ताव का विषय अनुमानप्रक्रिया का उक्त बात साध्य निश्चितमन्त्रयन प्रमाण साध्य मन्त्रध्व तन्मयप्रयोग पक्षी १।४६ व ननु मुद्रा ५१० असाध्य मन्त्र जाने या ब्रह्म की भाँति, - सिद्धि (स्त्री०) 1 निष्पन्नता 2 उपसहार ।

साध्यता [साध्य + तत् + क्त] 1 सम्भवना शक्यता 2 (राग इ०) अच्छा विय करने की योग्यता । सम० - सवच्छेदकम् त्रिमय १।२५ ३ गुणा का गुण से लक्षण की अनन्तता का या मुख्य शब्द का गुण चतुः

साध्यवत् [साधु + वत्] 1 इस प्रकार नम, बारा कुमुदन्तामाद्यमात्र कु० २।१० २।११ 2 नरवत् ३ श्लाघा प्रशंस्यवत् ।

साध्वी [साधु + क्त्वा] 1 मनी श्वता 2 शास्त्रता स्त्री 3 एक प्रकार की वृक्ष ।

साध्वन् (वि०) [सत् आनन्देन श० म०] प्रथम गुण ।

साध्वि [सत् । इय अस्त्व] सती गुण ।

साधिका साधैयिका, साधेयो मनः १५४ म्प इत्यम मानयो - कन + टाप् ह्रस्व मानय, डोष पापनी क्षमिरे ।

सानु (पु० लप०) [सन् + लुण] 1 योग्य शिष्ट-श्रेष्ठजिन, सानुनि मन्त्र मुक्तोपहारि १।१ मय० २, कु० १।६, वि० १।८५ 2 प्रकाश का भाग पर समस्त भूमि, पटार 3 अक्षुषा अक्षु 4 रात्र अक्षय 5 भस्म 6 मारा इति, हिनाग 7 नरपति 8 हुआ वा सोका 9 विद्वान् पञ्च 10 सुख ।

सानुमत् (पु०) [सानु + मत्] 1 मन्त्र । गदाह ली मक, बामरा का नाम श० ६ ।

सानुकोश (वि०) [अनुकानेन सह श० म०] दयालु अनापराध ।

सानुवय (वि०) [सह अनुकानेन श० म०] शीघ्र शिष्ट ।

सानुवन् (वि०) [सह आनन्देन श० म०] १।१४ २।१४ ३।१४ ४।१४ ५।१४ ६।१४ ७।१४ ८।१४ ९।१४ १०।१४ ११।१४ १२।१४ १३।१४ १४।१४ १५।१४ १६।१४ १७।१४ १८।१४ १९।१४ २०।१४ २१।१४ २२।१४ २३।१४ २४।१४ २५।१४ २६।१४ २७।१४ २८।१४ २९।१४ ३०।१४ ३१।१४ ३२।१४ ३३।१४ ३४।१४ ३५।१४ ३६।१४ ३७।१४ ३८।१४ ३९।१४ ४०।१४ ४१।१४ ४२।१४ ४३।१४ ४४।१४ ४५।१४ ४६।१४ ४७।१४ ४८।१४ ४९।१४ ५०।१४ ५१।१४ ५२।१४ ५३।१४ ५४।१४ ५५।१४ ५६।१४ ५७।१४ ५८।१४ ५९।१४ ६०।१४ ६१।१४ ६२।१४ ६३।१४ ६४।१४ ६५।१४ ६६।१४ ६७।१४ ६८।१४ ६९।१४ ७०।१४ ७१।१४ ७२।१४ ७३।१४ ७४।१४ ७५।१४ ७६।१४ ७७।१४ ७८।१४ ७९।१४ ८०।१४ ८१।१४ ८२।१४ ८३।१४ ८४।१४ ८५।१४ ८६।१४ ८७।१४ ८८।१४ ८९।१४ ९०।१४ ९१।१४ ९२।१४ ९३।१४ ९४।१४ ९५।१४ ९६।१४ ९७।१४ ९८।१४ ९९।१४ १००।१४ १०१।१४ १०२।१४ १०३।१४ १०४।१४ १०५।१४ १०६।१४ १०७।१४ १०८।१४ १०९।१४ ११०।१४ १११।१४ ११२।१४ ११३।१४ ११४।१४ ११५।१४ ११६।१४ ११७।१४ ११८।१४ ११९।१४ १२०।१४ १२१।१४ १२२।१४ १२३।१४ १२४।१४ १२५।१४ १२६।१४ १२७।१४ १२८।१४ १२९।१४ १३०।१४ १३१।१४ १३२।१४ १३३।१४ १३४।१४ १३५।१४ १३६।१४ १३७।१४ १३८।१४ १३९।१४ १४०।१४ १४१।१४ १४२।१४ १४३।१४ १४४।१४ १४५।१४ १४६।१४ १४७।१४ १४८।१४ १४९।१४ १५०।१४ १५१।१४ १५२।१४ १५३।१४ १५४।१४ १५५।१४ १५६।१४ १५७।१४ १५८।१४ १५९।१४ १६०।१४ १६१।१४ १६२।१४ १६३।१४ १६४।१४ १६५।१४ १६६।१४ १६७।१४ १६८।१४ १६९।१४ १७०।१४ १७१।१४ १७२।१४ १७३।१४ १७४।१४ १७५।१४ १७६।१४ १७७।१४ १७८।१४ १७९।१४ १८०।१४ १८१।१४ १८२।१४ १८३।१४ १८४।१४ १८५।१४ १८६।१४ १८७।१४ १८८।१४ १८९।१४ १९०।१४ १९१।१४ १९२।१४ १९३।१४ १९४।१४ १९५।१४ १९६।१४ १९७।१४ १९८।१४ १९९।१४ २००।१४ २०१।१४ २०२।१४ २०३।१४ २०४।१४ २०५।१४ २०६।१४ २०७।१४ २०८।१४ २०९।१४ २१०।१४ २११।१४ २१२।१४ २१३।१४ २१४।१४ २१५।१४ २१६।१४ २१७।१४ २१८।१४ २१९।१४ २२०।१४ २२१।१४ २२२।१४ २२३।१४ २२४।१४ २२५।१४ २२६।१४ २२७।१४ २२८।१४ २२९।१४ २३०।१४ २३१।१४ २३२।१४ २३३।१४ २३४।१४ २३५।१४ २३६।१४ २३७।१४ २३८।१४ २३९।१४ २४०।१४ २४१।१४ २४२।१४ २४३।१४ २४४।१४ २४५।१४ २४६।१४ २४७।१४ २४८।१४ २४९।१४ २५०।१४ २५१।१४ २५२।१४ २५३।१४ २५४।१४ २५५।१४ २५६।१४ २५७।१४ २५८।१४ २५९।१४ २६०।१४ २६१।१४ २६२।१४ २६३।१४ २६४।१४ २६५।१४ २६६।१४ २६७।१४ २६८।१४ २६९।१४ २७०।१४ २७१।१४ २७२।१४ २७३।१४ २७४।१४ २७५।१४ २७६।१४ २७७।१४ २७८।१४ २७९।१४ २८०।१४ २८१।१४ २८२।१४ २८३।१४ २८४।१४ २८५।१४ २८६।१४ २८७।१४ २८८।१४ २८९।१४ २९०।१४ २९१।१४ २९२।१४ २९३।१४ २९४।१४ २९५।१४ २९६।१४ २९७।१४ २९८।१४ २९९।१४ ३००।१४ ३०१।१४ ३०२।१४ ३०३।१४ ३०४।१४ ३०५।१४ ३०६।१४ ३०७।१४ ३०८।१४ ३०९।१४ ३१०।१४ ३११।१४ ३१२।१४ ३१३।१४ ३१४।१४ ३१५।१४ ३१६।१४ ३१७।१४ ३१८।१४ ३१९।१४ ३२०।१४ ३२१।१४ ३२२।१४ ३२३।१४ ३२४।१४ ३२५।१४ ३२६।१४ ३२७।१४ ३२८।१४ ३२९।१४ ३३०।१४ ३३१।१४ ३३२।१४ ३३३।१४ ३३४।१४ ३३५।१४ ३३६।१४ ३३७।१४ ३३८।१४ ३३९।१४ ३४०।१४ ३४१।१४ ३४२।१४ ३४३।१४ ३४४।१४ ३४५।१४ ३४६।१४ ३४७।१४ ३४८।१४ ३४९।१४ ३५०।१४ ३५१।१४ ३५२।१४ ३५३।१४ ३५४।१४ ३५५।१४ ३५६।१४ ३५७।१४ ३५८।१४ ३५९।१४ ३६०।१४ ३६१।१४ ३६२।१४ ३६३।१४ ३६४।१४ ३६५।१४ ३६६।१४ ३६७।१४ ३६८।१४ ३६९।१४ ३७०।१४ ३७१।१४ ३७२।१४ ३७३।१४ ३७४।१४ ३७५।१४ ३७६।१४ ३७७।१४ ३७८।१४ ३७९।१४ ३८०।१४ ३८१।१४ ३८२।१४ ३८३।१४ ३८४।१४ ३८५।१४ ३८६।१४ ३८७।१४ ३८८।१४ ३८९।१४ ३९०।१४ ३९१।१४ ३९२।१४ ३९३।१४ ३९४।१४ ३९५।१४ ३९६।१४ ३९७।१४ ३९८।१४ ३९९।१४ ४००।१४ ४०१।१४ ४०२।१४ ४०३।१४ ४०४।१४ ४०५।१४ ४०६।१४ ४०७।१४ ४०८।१४ ४०९।१४ ४१०।१४ ४११।१४ ४१२।१४ ४१३।१४ ४१४।१४ ४१५।१४ ४१६।१४ ४१७।१४ ४१८।१४ ४१९।१४ ४२०।१४ ४२१।१४ ४२२।१४ ४२३।१४ ४२४।१४ ४२५।१४ ४२६।१४ ४२७।१४ ४२८।१४ ४२९।१४ ४३०।१४ ४३१।१४ ४३२।१४ ४३३।१४ ४३४।१४ ४३५।१४ ४३६।१४ ४३७।१४ ४३८।१४ ४३९।१४ ४४०।१४ ४४१।१४ ४४२।१४ ४४३।१४ ४४४।१४ ४४५।१४ ४४६।१४ ४४७।१४ ४४८।१४ ४४९।१४ ४५०।१४ ४५१।१४ ४५२।१४ ४५३।१४ ४५४।१४ ४५५।१४ ४५६।१४ ४५७।१४ ४५८।१४ ४५९।१४ ४६०।१४ ४६१।१४ ४६२।१४ ४६३।१४ ४६४।१४ ४६५।१४ ४६६।१४ ४६७।१४ ४६८।१४ ४६९।१४ ४७०।१४ ४७१।१४ ४७२।१४ ४७३।१४ ४७४।१४ ४७५।१४ ४७६।१४ ४७७।१४ ४७८।१४ ४७९।१४ ४८०।१४ ४८१।१४ ४८२।१४ ४८३।१४ ४८४।१४ ४८५।१४ ४८६।१४ ४८७।१४ ४८८।१४ ४८९।१४ ४९०।१४ ४९१।१४ ४९२।१४ ४९३।१४ ४९४।१४ ४९५।१४ ४९६।१४ ४९७।१४ ४९८।१४ ४९९।१४ ५००।१४ ५०१।१४ ५०२।१४ ५०३।१४ ५०४।१४ ५०५।१४ ५०६।१४ ५०७।१४ ५०८।१४ ५०९।१४ ५१०।१४ ५११।१४ ५१२।१४ ५१३।१४ ५१४।१४ ५१५।१४ ५१६।१४ ५१७।१४ ५१८।१४ ५१९।१४ ५२०।१४ ५२१।१४ ५२२।१४ ५२३।१४ ५२४।१४ ५२५।१४ ५२६।१४ ५२७।१४ ५२८।१४ ५२९।१४ ५३०।१४ ५३१।१४ ५३२।१४ ५३३।१४ ५३४।१४ ५३५।१४ ५३६।१४ ५३७।१४ ५३८।१४ ५३९।१४ ५४०।१४ ५४१।१४ ५४२।१४ ५४३।१४ ५४४।१४ ५४५।१४ ५४६।१४ ५४७।१४ ५४८।१४ ५४९।१४ ५५०।१४ ५५१।१४ ५५२।१४ ५५३।१४ ५५४।१४ ५५५।१४ ५५६।१४ ५५७।१४ ५५८।१४ ५५९।१४ ५६०।१४ ५६१।१४ ५६२।१४ ५६३।१४ ५६४।१४ ५६५।१४ ५६६।१४ ५६७।१४ ५६८।१४ ५६९।१४ ५७०।१४ ५७१।१४ ५७२।१४ ५७३।१४ ५७४।१४ ५७५।१४ ५७६।१४ ५७७।१४ ५७८।१४ ५७९।१४ ५८०।१४ ५८१।१४ ५८२।१४ ५८३।१४ ५८४।१४ ५८५।१४ ५८६।१४ ५८७।१४ ५८८।१४ ५८९।१४ ५९०।१४ ५९१।१४ ५९२।१४ ५९३।१४ ५९४।१४ ५९५।१४ ५९६।१४ ५९७।१४ ५९८।१४ ५९९।१४ ६००।१४ ६०१।१४ ६०२।१४ ६०३।१४ ६०४।१४ ६०५।१४ ६०६।१४ ६०७।१४ ६०८।१४ ६०९।१४ ६१०।१४ ६११।१४ ६१२।१४ ६१३।१४ ६१४।१४ ६१५।१४ ६१६।१४ ६१७।१४ ६१८।१४ ६१९।१४ ६२०।१४ ६२१।१४ ६२२।१४ ६२३।१४ ६२४।१४ ६२५।१४ ६२६।१४ ६२७।१४ ६२८।१४ ६२९।१४ ६३०।१४ ६३१।१४ ६३२।१४ ६३३।१४ ६३४।१४ ६३५।१४ ६३६।१४ ६३७।१४ ६३८।१४ ६३९।१४ ६४०।१४ ६४१।१४ ६४२।१४ ६४३।१४ ६४४।१४ ६४५।१४ ६४६।१४ ६४७।१४ ६४८।१४ ६४९।१४ ६५०।१४ ६५१।१४ ६५२।१४ ६५३।१४ ६५४।१४ ६५५।१४ ६५६।१४ ६५७।१४ ६५८।१४ ६५९।१४ ६६०।१४ ६६१।१४ ६६२।१४ ६६३।१४ ६६४।१४ ६६५।१४ ६६६।१४ ६६७।१४ ६६८।१४ ६६९।१४ ६७०।१४ ६७१।१४ ६७२।१४ ६७३।१४ ६७४।१४ ६७५।१४ ६७६।१४ ६७७।१४ ६७८।१४ ६७९।१४ ६८०।१४ ६८१।१४ ६८२।१४ ६८३।१४ ६८४।१४ ६८५।१४ ६८६।१४ ६८७।१४ ६८८।१४ ६८९।१४ ६९०।१४ ६९१।१४ ६९२।१४ ६९३।१४ ६९४।१४ ६९५।१४ ६९६।१४ ६९७।१४ ६९८।१४ ६९९।१४ ७००।१४ ७०१।१४ ७०२।१४ ७०३।१४ ७०४।१४ ७०५।१४ ७०६।१४ ७०७।१४ ७०८।१४ ७०९।१४ ७१०।१४ ७११।१४ ७१२।१४ ७१३।१४ ७१४।१४ ७१५।१४ ७१६।१४ ७१७।१४ ७१८।१४ ७१९।१४ ७२०।१४ ७२१।१४ ७२२।१४ ७२३।१४ ७२४।१४ ७२५।१४ ७२६।१४ ७२७।१४ ७२८।१४ ७२९।१४ ७३०।१४ ७३१।१४ ७३२।१४ ७३३।१४ ७३४।१४ ७३५।१४ ७३६।१४ ७३७।१४ ७३८।१४ ७३९।१४ ७४०।१४ ७४१।१४ ७४२।१४ ७४३।१४ ७४४।१४ ७४५।१४ ७४६।१४ ७४७।१४ ७४८।१४ ७४९।१४ ७५०।१४ ७५१।१४ ७५२।१४ ७५३।१४ ७५४।१४ ७५५।१४ ७५६।१४ ७५७।१४ ७५८।१४ ७५९।१४ ७६०।१४ ७६१।१४ ७६२।१४ ७६३।१४ ७६४।१४ ७६५।१४ ७६६।१४ ७६७।१४ ७६८।१४ ७६९।१४ ७७०।१४ ७७१।१४ ७७२।१४ ७७३।१४ ७७४।१४ ७७५।१४ ७७६।१४ ७७७।१४ ७७८।१४ ७७९।१४ ७८०।१४ ७८१।१४ ७८२।१४ ७८३।१४ ७८४।१४ ७८५।१४ ७८६।१४ ७८७।१४ ७८८।१४ ७८९।१४ ७९०।१४ ७९१।१४ ७९२।१४ ७९३।१४ ७९४।१४ ७९५।१४ ७९६।१४ ७९७।१४ ७९८।१४ ७९९।१४ ८००।१४ ८०१।१४ ८०२।१४ ८०३।१४ ८०४।१४ ८०५।१४ ८०६।१४ ८०७।१४ ८०८।१४ ८०९।१४ ८१०।१४ ८११।१४ ८१२।१४ ८१३।१४ ८१४।१४ ८१५।१४ ८१६।१४ ८१७।१४ ८१८।१४ ८१९।१४ ८२०।१४ ८२१।१४ ८२२।१

साधु (पूरा० उभ० सामयान्त) खुश करना, डाइस बचाना तमल्ली देना ।

साधकम् [समक + अण] मूल कण क साधन (नष्ट पत्थर जिस पर औजार तेज किय जाते हैं) ।

साधवी [समग्रस्य भाव एवञ्च स्त्री वपसे डीपि यणोप] 1 भगवान का सग्रह या संपाद उपकरण घर का सामान अनु० ३।१५५ 2 गोमान मांस अमहाब ।

साधव्यम् [समग्र + व्यञ्ज] 1 समग्रता पूर्णता समवायन समष्टि प्रायेण सामयपर्यन्तो गुणानां पराह्मण्य । विश्वसूत्र प्रवृत्ति कु० ३०८८ अनुश्रवणं नौकर धाकर 3 उपकरणों का सग्रह औजारों का भण्डार 4 सफाई, सामान ।

साधव्यस्यम् [समञ्जस + व्यञ्ज] 1 योग्यता योग्यि जीवित्य, तु० असमञ्जस 2 यथार्थता शुद्धता ।

साध्वन् (नपु०) [सो + मनिन] 1 खुश करना शास्त्र करना, आराम पहुँचाना तमल्ली देना 2 मुद्रा करना शास्त्र के उपाय समशीला-वार्ता करना (राजा के द्वारा अपने साधु के प्रति किये जाने वाले भार साधनों में सबसे पहला) सामदण्डी प्रक्षमलित नित्य गृह्यादि बृद्धये—मनु० ३।१०९ 3 शास्त्रिदायक या मृदु उपाय शास्त्र या डाइस बचाने वाला आचरण मृदुवचन —यजु० ४।२६, ४८४ मृदुता, कोमलता ५ छन्दोबद्ध सूक्त या प्रशंसात्मक गान सत्समायोपगीत स्वाप —रघु० १०।२१ अण० १०।३५ ६ सामवेद का मन्त्र 7 सामवेद (सूर्य से उत्पन्न कहा जाना है तु० अनु० १।२३) । सम० —उज्ज्वल हाथी उपचार

उपाय मृदु और शास्त्र देने वाले उपाय कामल या शास्त्र युक्तियाँ, या सामवेद के मन्त्रों का गायन करने वाला ब्राह्मण अ, आत (वि०) 1 सामवेद से उत्पन्न 2 शास्त्र के उपायों से उद्भूत (—अ —त) हाथी—वि० १२।११, १४।३३ योगि 1 शास्त्र 2 हाथी, बाबा कृपावचन, मधुरवाच्य —वि० १०० —वेद, वारों में से तीसरा वेद ।

साधव्य (वि०) [समन् + अण] 1 सीमावर्ती मरहदो पड़ोसी 2 विश्वव्यापक त 1 पड़ोसी 2 पड़ोस का राजा 3 साधकिक कर देने वाला राजा सामन्त सीधिमणिरञ्जितपादसीटम विक्रम० ३।१९ रघु० ५।२८, ६।३० 4 नेता नायक तत्त्व पड़ोस ।

साधविक (वि०) (स्त्री०—की) [समय + ठञ] 1 प्रथा नुवारी, परम्परागत 2 सम्मत प्रतिज्ञान 3 करार के अनुकूल नियत समय का पालन करने वाला देवि सामयिका मकाम मालवि० १ 4 समय पाकक वस्त्र का पाकवस्त्र ५ कण्ट के अनुकूल समय पर होने वाला कि० २।१० ६ नियत समय पर होने वाला 7 अस्थायी । सम० अस्थाय, अस्थायी अस्तित्व ।

साधव्यम् [समय + व्यञ्ज] 1 शक्ति, बल क्षारिता शक्ति 2 उद्गम की समानता 3 अर्थ की एकता 4 योग्यता योग्यता 5 योग्य शक्ति शब्द की अवयवगत शक्ति 6 दिन लग्न 7 दीर्घता ।

साधव्यविक (वि०) (स्त्री०—की) [समवाये प्रसूत ठञ] 1 किसी सग्रह या मद्रात में मद्राद 2 अर्थ सम्बन्ध म युक्त क मन्त्रों पावद ।

साधव्यविक (वि०) (स्त्री०—की) [समात्र-समावेशन प्रया नपमठञ] 1 समा समान सम्बद्ध का किसी समा का मद्रात समा म रजक केन हि त प्रयोगा देवावचन साधव्यविक-नृपमह मा० १ ।

सामानाधिकरण्यात् [समासाधिकरण + व्यञ्ज] 1 उभो दशा या स्थिति में योग्य 2 सामान्य पद काय या प्रणामन समान सम्बन्ध (जैसे कि फायर का) 3 एक हो पदाद में सम्बन्ध होने का स्थिति ।

सामान्य (वि०) [समास्य भाव एवञ्च] 1 समान साधारण सामान्यमेव प्रथमावस्थाम कु० ३।६६ आहारनिद्रा मयमेव च सामान्यमस्तपशुमिनराणाम भमा० रघु० १६।६३ कु० ५८ 2 मद्रात नृप्य समान 3 सामान्य जीवतदर्थ का शीघ्रता अनु० २।१६ 4 तुच्छ साधवी नमस्य-समस्त सपुत्र-स्यम् 1 समुदाय साधारणता विश्वव्यापकता 2 सामान्य या मध्यक गुण साधारणत्व 3 सामान्य समस्तता 4 मद्रात प्रकार 5 अनुकरता 6 समानता समता 7 साधव्यविक कार्य 8 साधारण उक्ति उक्तिरर्था न्तरन्यास समाधान विवक्षया अज्ञा० ५।१० 9 (अण० में) एक अज्ञात जिसका परिभाषा मद्रात न निश्चालित है —प्रस्तुतस्य याद, गणमात्रविश्लेषण एकाग्र्य अर्थाने योग्यतासादा । मिति समस्त काव्य० १० । सम० सामान्य लोकव्यापक व्यापकता का ज्ञान—यस्य मद्रातसादा मद्रातस्य व्यापक परिभाषा इति दध्यसादा-लक्षणानि तर्क० बहिष्ता सामान्य स्त्री भेद ।

साधव्य साधारण नियम ।

सामयिक (वि०) (स्त्री०—की) [समय + ठञ] 1 सामयिक समय का समग्रत वाता समुच्चय मद्रा 2 मद्रात मद्रात 3 समासमयता कस्य मद्रा प्रकार 4 समासों का वग इन्द्र सामयिकमय ५ अण० १०।३६ ।

सामि (अव्य०) [साम + इन] 1 साक्षा अर्थान् अनुप्रा अनिरीक्ष्य सामिकमद्रात यरी करमद्रात 2 शक्यता स्थित शि० १३।३१ रघु० १०।१२ 2 कलकतीय शीघ्र निर्णीय ।

साधिवि० [सम + इण + व्यञ्ज] 1 एक प्रकार २ प्राचीनमयत्र जिसका पाठ यजुर्गायन प्रचलित करा

समय या समिधातें हवन में डालने समय क्रिय
जाना है ।

सामोशी (स्त्री०) प्रशन्ना स्त्री ।

प्राचीनयम । समाप्तः १२] पृष्ठ-निर्देशः अन्तर्गतः
पृष्ठ-संख्या ।

पायुक्त (अं०) अ०० द्रव्य। मरुत अंग। यमः
 अत्यन्त सन्निवृत्तः अत्यन्त सन्निवृत्तः
 २ समस्तमंग २ अं० ३ अं०

मासुक्तम् । नमः ११ । नमः १० ।

[illegible]

भाष्यदाय (14) रक्षा दी। 1 या मय 2
1 गहनद्वय म 1 2 रक्षे - 1 म 2 य
यस 1 मय 2 2 मय 2 म 2 य
3 परमक म 1 2 म 2 3 म 2 य
रक्षा 5 म 2 मय 2 6 म 2 य

सांख्यिक वि०। १५० की। [समाप्त] ३६
 १ सांख्यिक २ मोनो सामाजिक मन्त्र-व-
 ३ विद्वान्मार्ग। ४७७ कर्मकाण्ड कथयुक्त
 सद्यः दि० ९० । क. लक्ष्मी का. य। मन्त्र
 कथ्य सामाजिक मन्त्र-व-३८

मासगत (वि. १) पाठ्य उद्देश्य (१००) वृत्त २१०
 २ मसत तस १०० १ मस तस २००
 ३ मस तस ३०० ४ मस तस ४००
 ५ मस तस ५०० ६ मस तस ६००
 ७ मस तस ७०० ८ मस तस ८००
 ९ मस तस ९०० १० मस तस १०००

साप्ताहिक (वि०) (१ वा क। [२] १५ ३४
 १ इन्वेंशन का नमूना २ १५ १६ ३४
 ३५ ३६

आभारप्रदर्शिका ('क' , २५ को) [मद्रास २५]
 परमप्रभु ३३ नं० २५ मद्रास २५ नं० २५ मद्रास २५

[illegible]

१२३४५६७८९१०१११२१३१४१५१६१७१८१९२०२१२२२३२४२५२६२७२८२९३०३१३२३३३४३५३६३७३८३९४०४१४२४३४४४५४६४७४८४९५०५१५२५३५४५५५६५७५८५९६०६१६२६३६४६५६६६७६८६९७०७१७२७३७४७५७६७७७८७९८०८१८२८३८४८५८६८७८८८९९०९१९२९३९४९५९६९७९८९९

2. संस्कृत।

साध्यम् । नमः । १ । ३ । ४ । ५ । ६ । ७ । ८ । ९ । १० । ११ । १२ । १३ । १४ । १५ । १६ । १७ । १८ । १९ । २० । २१ । २२ । २३ । २४ । २५ । २६ । २७ । २८ । २९ । ३० । ३१ । ३२ । ३३ । ३४ । ३५ । ३६ । ३७ । ३८ । ३९ । ४० । ४१ । ४२ । ४३ । ४४ । ४५ । ४६ । ४७ । ४८ । ४९ । ५० । ५१ । ५२ । ५३ । ५४ । ५५ । ५६ । ५७ । ५८ । ५९ । ६० । ६१ । ६२ । ६३ । ६४ । ६५ । ६६ । ६७ । ६८ । ६९ । ७० । ७१ । ७२ । ७३ । ७४ । ७५ । ७६ । ७७ । ७८ । ७९ । ८० । ८१ । ८२ । ८३ । ८४ । ८५ । ८६ । ८७ । ८८ । ८९ । ९० । ९१ । ९२ । ९३ । ९४ । ९५ । ९६ । ९७ । ९८ । ९९ । १०० ।

2. 1977 2. 47 5

८ प्रत्यक्षज्ञान निष्ठाश्रयिता तद्विषय यथा
समाप्त इत्यस्य सप्त अङ्क ७ १५

मात्रास्यम, गमात् । गुणाः । १ 'यद्वत् प्रत्यया एव लोप-
यन्ते' इति सूत्रेण 'यद्वा' कश्चिन्नान्तरं भवेत्तु यत्प्रत्ययान्त
प्रत्ययान्तः । २ गुणादिभ्यश्च प्रत्ययः ।

मात्र 10 घंटे 11 मिनट में अवसान 2 दिन
 का नाम का अर्थ 3 वंश का अवसान 7।
 मायाज्ञान) माया का अर्थ 6 मिनट 21/20।

साथ ही ३ लाख ५० हजार ५०० प्रशिक्षण
प्राप्त हुए। १९९२ में ५० लाख ५० हजार
लाख ५० हजार ५०० प्रशिक्षण प्राप्त हुए।
१९९०-९१

साधनम य प्र, द्वितीय का अर्थ उ द्गातक
यः प्र । द्वितीय द्वितीय म माया
२ प्र ३

साधन (१) (२) जो (३) (४) (५) (६) (७) (८) (९) (१०)

सायम ३ ।। अ म् । अ य का क म् अ म् अ म्
अ म् अ म् अ म् अ म् अ म् अ म् अ म् अ म्
काल ५ अ म् अ म् अ म् अ म् अ म् अ म् अ म् अ म्

2 नुस साया 1 मायकान साया 2 सायकान

सायिन । ७ । १९५३ इति प्रथमः ।
मासिक्यम् । ८ । १९५४] १ दत्तिल्ले मेल मनकाभा
न नरु । २ । १९५५ मे । सायिन की क र उव

साथ (वि [म + व + मास] १ आदेशानुसार

२ नवंबर - बरम साहू-...
 ३ नवंबर - ...
 ४ नवंबर - ...

मन्त्र १ । मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र
मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र
मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र मन्त्र

[illegible]

॥ १ ॥ अथ श्रीगणेशोत्सवः ।
श्रीगणेशाय नमः ।
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

[illegible]

1. 2. 3. 4. 5. 6. 7. 8. 9. 10. 11. 12. 13. 14. 15. 16. 17. 18. 19. 20. 21. 22. 23. 24. 25. 26. 27. 28. 29. 30. 31. 32. 33. 34. 35. 36. 37. 38. 39. 40. 41. 42. 43. 44. 45. 46. 47. 48. 49. 50. 51. 52. 53. 54. 55. 56. 57. 58. 59. 60. 61. 62. 63. 64. 65. 66. 67. 68. 69. 70. 71. 72. 73. 74. 75. 76. 77. 78. 79. 80. 81. 82. 83. 84. 85. 86. 87. 88. 89. 90. 91. 92. 93. 94. 95. 96. 97. 98. 99. 100. 101. 102. 103. 104. 105. 106. 107. 108. 109. 110. 111. 112. 113. 114. 115. 116. 117. 118. 119. 120. 121. 122. 123. 124. 125. 126. 127. 128. 129. 130. 131. 132. 133. 134. 135. 136. 137. 138. 139. 140. 141. 142. 143. 144. 145. 146. 147. 148. 149. 150. 151. 152. 153. 154. 155. 156. 157. 158. 159. 160. 161. 162. 163. 164. 165. 166. 167. 168. 169. 170. 171. 172. 173. 174. 175. 176. 177. 178. 179. 180. 181. 182. 183. 184. 185. 186. 187. 188. 189. 190. 191. 192. 193. 194. 195. 196. 197. 198. 199. 200. 201. 202. 203. 204. 205. 206. 207. 208. 209. 210. 211. 212. 213. 214. 215. 216. 217. 218. 219. 220. 221. 222. 223. 224. 225. 226. 227. 228. 229. 230. 231. 232. 233. 234. 235. 236. 237. 238. 239. 240. 241. 242. 243. 244. 245. 246. 247. 248. 249. 250. 251. 252. 253. 254. 255. 256. 257. 258. 259. 260. 261. 262. 263. 264. 265. 266. 267. 268. 269. 270. 271. 272. 273. 274. 275. 276. 277. 278. 279. 280. 281. 282. 283. 284. 285. 286. 287. 288. 289. 290. 291. 292. 293. 294. 295. 296. 297. 298. 299. 300. 301. 302. 303. 304. 305. 306. 307. 308. 309. 310. 311. 312. 313. 314. 315. 316. 317. 318. 319. 320. 321. 322. 323. 324. 325. 326. 327. 328. 329. 330. 331. 332. 333. 334. 335. 336. 337. 338. 339. 340. 341. 342. 343. 344. 345. 346. 347. 348. 349. 350. 351. 352. 353. 354. 355. 356. 357. 358. 359. 360. 361. 362. 363. 364. 365. 366. 367. 368. 369. 370. 371. 372. 373. 374. 375. 376. 377. 378. 379. 380. 381. 382. 383. 384. 385. 386. 387. 388. 389. 390. 391. 392. 393. 394. 395. 396. 397. 398. 399. 400. 401. 402. 403. 404. 405. 406. 407. 408. 409. 410. 411. 412. 413. 414. 415. 416. 417. 418. 419. 420. 421. 422. 423. 424. 425. 426. 427. 428. 429. 430. 431. 432. 433. 434. 435. 436. 437. 438. 439. 440. 441. 442. 443. 444. 445. 446. 447. 448. 449. 450. 451. 452. 453. 454. 455. 456. 457. 458. 459. 460. 461. 462. 463. 464. 465. 466. 467. 468. 469. 470. 471. 472. 473. 474. 475. 476. 477. 478. 479. 480. 481. 482. 483. 484. 485. 486. 487. 488. 489. 490. 491. 492. 493. 494. 495. 496. 497. 498. 499. 500. 501. 502. 503. 504. 505. 506. 507. 508. 509. 510. 511. 512. 513. 514. 515. 516. 517. 518. 519. 520. 521. 522. 523. 524. 525. 526. 527. 528. 529. 530. 531. 532. 533. 534. 535. 536. 537. 538. 539. 540. 541. 542. 543. 544. 545. 546. 547. 548. 549. 550. 551. 552. 553. 554. 555. 556. 557. 558. 559. 560. 561. 562. 563. 564. 565. 566. 567. 568. 569. 570. 571. 572. 573. 574. 575. 576. 577. 578. 579. 580. 581. 582. 583. 584. 585. 586. 587. 588. 589. 590. 591. 592. 593. 594. 595. 596. 597. 598. 599. 600. 601. 602. 603. 604. 605. 606. 607. 608. 609. 610. 611. 612. 613. 614. 615. 616. 617. 618. 619. 620. 621. 622. 623. 624. 625. 626. 627. 628. 629. 630. 631. 632. 633. 634. 635. 636. 637. 638. 639. 640. 641. 642. 643. 644. 645. 646. 647. 648. 649. 650. 651. 652. 653. 654. 655. 656. 657. 658. 659. 660. 661. 662. 663. 664. 665. 666. 667. 668. 669. 670. 671. 672. 673. 674. 675. 676. 677. 678. 679. 680. 681. 682. 683. 684. 685. 686. 687. 688. 689. 690. 691. 692. 693. 694. 695. 696. 697. 698. 699. 700. 701. 702. 703. 704. 705. 706. 707. 708. 709. 710. 711. 712. 713. 714. 715. 716. 717. 718. 719. 720. 721. 722. 723. 724. 725. 726. 727. 728. 729. 730. 731. 732. 733. 734. 735. 736. 737. 738. 739. 740. 741. 742. 743. 744. 745. 746. 747. 748. 749. 750. 751. 752. 753. 754. 755. 756. 757. 758. 759. 760. 761. 762. 763. 764. 765. 766. 767. 768. 769. 770. 771. 772. 773. 774. 775. 776. 777. 778. 779. 780. 781. 782. 783. 784. 785. 786. 787. 788. 789. 790. 791. 792. 793. 794. 795. 796. 797. 798. 799. 800. 801. 802. 803. 804. 805. 806. 807. 808. 809. 810. 811. 812. 813. 814. 815. 816. 817. 818. 819. 820. 821. 822. 823. 824. 825. 826. 827. 828. 829. 830. 831. 832. 833. 834. 835. 836. 837. 838. 839. 840. 84

मैक्स (Linux) नाम अल्लगर से मिलता जुलता एक अलकार - उत्तरोत्तरमुक्तर्पा भवेत्सार. परावर्धि काग्र १०. रम् १. जल २ योग्यता, औचित्य ३. जगल, साह-सखाड ४ इस्पात, लोहा। सम० --असार (वि०) मूल्यवान् और निर्मूल्य, मजबूत और दुर्बल, (-रम्) १. मूल्य और निर्मूल्यता २. मूल-पदार्थ और रिक्तता ३ सामर्थ्य और कमजोर, -गन्धः चन्दन की लकड़ी, घोषः शिव जी का नाम, जम् ताजा मक्खन, -सखः केले का पेड़, हा १. मस्वनी का नाम २ दुर्गा का नाम, -दुषः खैर का पेड़, भङ्गः बल की हानि. -भाष्णः १. एक प्राकृतिक ज्वन २ ममान का गट्टा, पण्यसापथी ३ उपकरण, -लोहम् इस्पात।

सारथम् [सरपाथिः निर्वन्तम् अण्] मधु, शहद।

सारङ्ग (वि०) (स्त्री०-सी) [सृ + अङ्ग + अण्] चित-कबरा, रगबिरंगा, सः १ रगबिरंगा रग २ चित-मृग, कुरंग-एष राजेव दुष्यन्त. सारङ्गेयानिरहमा-गं० १५ ३. हरिण सारङ्गास्ते जलजम्बूः नृचयिग्यन्ति सारंग्यं मेघ० २० (यहाँ 'हाथी' या 'भ्रमर' के बजाय यही जम्बू लेना ठीक है) ४ सिंह ५ हाथी ६ भीरु ७ कोयल ८ सारस ९ राजहंस १० मीर ११ छतरी १२. बादल १३. परिधान १४. बाल १५ शल १६. शिव का नाम १७ कामदेव १८. कमल, १९ कपूर २० बन्धु २१. चन्दन २२. एक प्रकार का वाद्ययंत्र २३ जाभूषण २४ मोना २५ पृथ्वी २६ रात १७. प्रकाश।

सारङ्गकः [सारङ्ग हन्ति - ठक्] बहेलिया, बिड़ोमार।

सारङ्गी [सारङ्ग + ङीप्] १. एक प्रकार का वाद्ययंत्र, नितार, वायलिन २. चित्तोदार हरिण।

सारथ (वि०) (स्त्री०-सी) [सृ + णिच् + स्यट्] भेजना, बहाना, लः १. पेशित २. पेंबडी बेग जम् एक प्रकार का गन्धद्रव्य।

सारथा [सृ + णिच् + युच् + टाप्] धातुओं की विशेष कर पारों की एक प्रकार की प्रक्रिया।

सारथि, जी (स्त्री०) [सृ + णिच् + अनि पक्षे हांप्] १ नहर, नाला, पतनाला, जलमार्ग २ एक छोटी नदी।

सारथः [सृ + णिच् + अठ्] मणि का अडा।

सारथिः (अर्थ०) [सार + णिच् + अठ्] भन के अनुसार १ वटपूजेक।

सारथिः [सृ + णिच् + मत्त रथेन मय्य घाटय नत्र निषेकाः इत्येवाः] १. यवान् स शतान् यया गजने नथ मार्गिना अत्र रथ० १५३८. नारिक-मार्गिपथी ३५३३ २. मार्थी महापथ रथ० ३। ३०३ समद।

सारथ्यम् [सारथि + ध्यच्] रथवान् का पद, मारीवान् का पद।

सारथ्यः [सरमा + ठक्] कुता. धी [सारथ्य - ङीप्] कुतिया।

सारथ्यम् [सरल + ध्यच्] सरलता (आल० से भी) मोथापन, ईमानदारी, लगान।

सारवत् (वि०) [सार + मतृप्] १ तरबूत २. उप-आऊ ३ रसीला।

सारस (वि०) (स्त्री०-सी) [सरस इदम् अण्] मरीचर मय्थी. काव्या० ३१४६, तर्कोट० २१६०. सः १ सारस, (कुछ विद्वानों के अनुसार 'हंस') -विभि-रुमाना विससार सारसानुदम्य तीरेषु तरङ्गमहति कि० ८१३१, जि० ६५५, १२१६६, मेघ० २१, रघु० १५११ २ पक्षी ३ चन्द्रमा -सम १ कमल २ स्त्री की तगड़ी।

सारस (स) नम् [सार + सन् + अच्] १. तगड़ी करघनी -सायन महाहाट् कि० १८३२ २ सैनिक देवी।

सारस्वत (वि०) (स्त्री०-सी) [सारस्वती देवताय्य. सारस्वती इदं वा अण्] १ सारस्वती देवी से संबद्ध २. सारस्वती नदी से संबद्ध रत्ने वाला -कुत्वा नासामभिमममपाम् सौर्य सारस्वतीनाम् मेघ० ४९३ वाक्प०, तः १ सारस्वती नदी के आम पान का प्रदेश २ वाहन जाति का एक प्रेक्ष ३. विन्मदड -ताः (पुं० व० व०) सारस्वत देश के निवासी, -तम् भाषण. वाक्प०तुना, -शृङ्गारमसारस्वतम् गीत० १२।

सारसः [सार + आ + ला + क] तिल का पौधा।

सारि, -री (स्त्री०) [सृ + इण्] १ शनर का मोहरा, गाट २ एक प्रकार का पक्षी। गम० - फलकः शन-रत्र मयने की विमान।

सारिका [सरति पच्छी सृ + णिच् + टाप्, इयम्] एक प्रकार का पक्षी, यैना अंग्रेजी मन्थायण वयन्ने शुक्रमार्गिका मभा०, सारिका पञ्चजन्याम् -मेघ० ८५।

सारिन् (वि०) (स्त्री०-णी) [सृ + णिच्] १. जने वाला, महाहा लेने वाला २ तरबूत, सारथान्।

सारथ्यम् [सारथ + ध्यच्] १ रूप का मयता, मया तथा, मादृश्य मरुपय, सिल्ला-हजना मा० ५ २ द्रव में कान्ता (मृष्टि की व) प्रकाशों ने एक) [सारथ्यं सृ] सारथ्यदृश्य अध मे किट जान वाला (श्रीधरि) दृश्यमा मा० ६० ८६ ३ विगा पदार्थ का वा. उभय मिलने के बाद की मृष्टि का दृश्य कर अर्थवयं।

सारोद्यकः [सार + ध्यच् + उद्यो गण साराद्य द्यमाने नत्र अत्र सारोद्य - ठक्] एक प्रकार का गि।

साधनः [सन् + णिच् + ल्युट्] साल वृक्ष की गल ।

सालः [साल प्राकारादिभ्यः अच् + ल्युट्] १ दावार, फमील २ घर, मकान दे० साला ।

सम० - करी १. घर, में कार्य करने वाला २ बन्दा (विशेष कर वह जो युद्ध में पकड़ लिया गया हो) ।
वृक्. दे० 'सालवृक्' ।

सालारम् [साला + अण्] दावार में गहरी छूटो, बिकेट ।

सालरः [सन् + उरन्, णिन्, क्तिङ्] भेड़ दे० 'सालरः' ।

सालिष्य [साला + णिच्] गात्रा मिथा दे० 'आलर' ।

सालोष्यम् [सालो + णिच्] ब० ग० लज्जा, शर्म ।
१ उसी लोक या समाज में दूसरों के साथ रहना २ उसी स्वयं में किया रहना के साथ रहना ।

सालरः [सन् + अण्] १ एक देश का नाम उसका निवासी को का नाम (इस अर्थ में व० ल०) २ एक राजसूय का नाम जिसका कारण न जाना गया था । सम० हम् (पृ०) विष्णु का विग्रहण ।

साल्विकः [साल्व- ठक्] मायिका नामक पत्नी भेना ।

सालः [सु + षच्] तपण ।

सालक (वि०) [साल- ठिका] [सु + कृत्] १ गहक, जन्म देने वाला २ व्यवसायिक का अतिवृत्त का व० ल० दे० 'सायक' ।

सायकाश (वि०) [सह, अवकाशेन ब० ग०] जिसको अवकाश हो, अवकाश वाला लाली, शम् (अर्थ०) अवकाश पाकर, अपनी सुविधानुकूल ।

सायकह (वि०) [अवयवस्य सह- ब० ग०] अवयव चिह्न में युक्त ।

सायक (वि०) [सह अवयवस्य ब० ग०] पूर्णा करने वाला निरन्तरागुण अवयव अवयव करने वाला ।

सायकम् [अवयवस्य सह- ब० ग०] गन्धार्मी कक्षा का प्रत्यय ।

सायधान (वि०) [अवधानस्य सह ब० ग०] १ 'यान देने वाला, दलाने वाला' २ 'सवयव' ३ परिश्रमी, शम (अर्थ०) सायधानता में प्रयत्न पूर्वक, चोकर हाकर ।

सायधि (वि०) [सह अवयवस्य ब० ग०] सीमापक्व, सीमित, समापिका, समापित, सीमाबद्ध सायधिसाधयराशिस्तु यथागोचरेषु नास्ति सुप्र० ।

सायध (वि०) [सही० जी] १ सतत अपा, नीता सबनो में युक्त या सबद्ध, वः १ यजमान का यज्ञ में पुण्ड्रितो का वस्त्र कहता है २ यज्ञ का उपसर्ग, यज्ञसंस्कार विषय होता यज्ञ ही पुण्ड्रित दा जाता है ३ यज्ञ का नाम ४ काम सीराश्रय का भाग ५ मुदीयन में मृत्ताना लक का पत्र ६ विशेष अर्थ ।

सायध (वि०) [सह अवयवस्य ब० ग०] भाग या

अंशों से बना हुआ—सायधवाले पानित्यप्रयुक्तः न हाविष्कालित्येन रूपभेदेन सायधव वस्तु संपद्यते भावी० ।

सायधः [सवयव निवृत्त अण्] १ शेष, अपराध २ पाप, दुष्टता, भ्रम ३ लाघव वृक्ष ।

सायध (वि०) [सह अवयवस्य ब० ग०] १ गृह, गुप्त रहस्य २ उकाहुका, भय ।

सायध (वि०) [सही० जी] [सवयव + अण्] एक ही रग का, एक ही भाति का, एक ही रग या जाति से संबद्ध - यः आठवे मनु का मातृपक्ष नाम, दे० 'सायध' । सम० लक्ष्यम् १ एक ही रग या जाति का रङ्ग २ खना, साल ।

सायधः [सवयव + अण्] आठवे मनु का मातृपक्ष नाम (सुयं का पत्नी सवयव से उत्पन्न) ।

सायधस्य [सवयव + यञ्] १ रग को एकता २ किसी रग या जाति को एकता ३ आठवे मनु द्वारा अधिष्ठित मातृपक्ष ।

सायधेय (वि०) [सह अवयवस्य + अधिमानपूर्व, वमही, देवद्वयस्य पम् (अर्थ०) वमस से, हेतुकी के साथ, अङ्कप्रयुक्त ।

सायधेय (वि०) [सह अवयवस्य ब० ग०] १ अवयवस्य से युक्त, विगमे कुछ बाकी बचे २ अपूर्ण, अधूरा, अस्मत् ।

सायधेय (वि०) [सह अवयवस्य ब० ग०] १ वमही, प्रविष्टान, उत्कृष्ट आनंद २ मातृमी, दुर्निवर्ण्य ३ दुष्टता से युक्त, अम् (अर्थ०) दुर्निवर्ण्य के साथ, दुष्टतापूर्वक सायध के साथ ।

सायधेय (वि०) [सह अवयवस्य ब० ग०] निरन्तरागुणस्य विगमे करने वाला, पूर्णा करने वाला, लक्ष्य (अर्थ०) निरन्तर के साथ, पूर्णापूर्वक ।

सायधिका [सु + कृत्, टा, इधम्] दाई, प्रमथ के समय प्रयुक्त की, देनामा कल बाजी ।

सायध (वि०) [सही० जी] [सवयव + अण्] १ सुयं सवयव २ सुय के सतत सुवयव से सबद्ध (सायधो के) - एसा वैदीयिन् भूषणाले उत्तर० ११४० १ सायधा यज्ञ से युक्त, अर्थः १. सुयं २. भूषण, गर्भ ३ सायध ४ शिव का विग्रहण ५ कर्म का विशेषण, - यम् यज्ञायता संस्कार (सवयव 'सायधम्' नाम इसी विशेषण का इस संस्कार में प्रयुक्त से सायधी यज्ञ का जाय कहना कहता है उसी समय यज्ञायतीत सायध किया जाता है ।

सायधो [सायध + कृत्] १ अकाश को किरण २ फलदे का एक प्रसिद्ध शिः इसका नाम 'सायध' सुयं का सवयव करने के कारण पड़ा इस सायधी भी कहते हैं । अधिक जानकारी के लिए दे० 'सायधा' ३ यज्ञायतीत

(जैसे कि कोई कानूनी अभियोग) 9 दिया गया, गुणताया गया. (ऋण आदि) मुकता किया गया 10. पकाया गया. (भोजन) बनाया गया 11. परिपक्व. पका हुआ 12. सर्वथा तैयार किया गया मिश्रित, (वनस्पति आदि) एकत्र गकाई गई 13 (वपया आदि) तैयार 14 बरा में किया गया जीता गया. (जादू के द्वारा) अधीन किया गया 15 बशीभूत किया गया मगलप्रद बना हुआ 16 पूर्णतः बिजय दश, प्रयोग जैसा कि 'मसिद्धम्' 17. सम्पादन, (साधना आदि के द्वारा) पवित्रीकरण 18. मुक्त किया हुआ 19 अलौकिक शक्ति से मुक्त 20 पावन, पवित्र, पुण्यात्मा 21 दिव्य, श्रेष्ठतम, नित्य 22. विख्यात, विभूत, प्रसिद्ध 23 उपराल जाल-दार. -इ. 1 अर्थादित्य प्राणी जो अन्तर्गत पवित्र और पुण्यात्मा माना जाता है। अवश्य रूप से इन्द्रजीत विरोध जिसमें आठ सिद्धियाँ हैं— उद्देजित वृत्तिमित्राश्रयने श्रुत्वाणि प्रस्तावयन्ति मित्राः—कुं० १।५. 2. अन्तर्दृष्टि प्राप्त मन्त्र ऋषि या महत्तमा (जैसे कि श्वाय 3 कोई भी मन्त्र, ऋषि या महत्तमा मित्रादश रत्नाः १ 4 जादूगर, ऐन्द्रजातिक 5 कानूनी मुकदमा, बदाली जीव 6 एह, इक्षु ममूशे मन्त्र, सम० अन्तः 1 सर्वसंगम फल 2 किसी वर के का प्रदक्षित उपसहार, किसी प्रदान का सर्वसंगम रूप, सही तथा तर्कमय उपसहार (पुनर्पत के निराकरण के पश्चात्) 3. प्रमाणित तथा भारी हुई सकार गद्दान्त, मत 4 नियोजक राज्य के आधार पर अकलबित कोई माना हुआ मुकदमा का राज्य कोटि (स्त्री०) युक्तिगत बिन्दु जो तर्कमय प्रमाण माना जाता है. पक्षः किसी पक्ष या तर्कमय पक्ष, अक्षम् पकाया हुआ भोजन, अथ (वि०) जिसने अपना अभीष्ट सम्पन्न कर लिया है. सकल (—सं०) 1 सदैव सत्ता 2 जिव का नाम 3 महत्तमा बड़ का नाम, आत्मन् धर्मसाधना में विशेष प्रकार की बैठने की स्थिति,—सङ्गा, नदी. सित्युः सन्तः आकाशगंगा, पृष्ठः विशेष प्रकार का वायुमयन मनाविधिपत्र, अलम् कारी, धातु तारा पत्र. किसी प्रविष्टा का सर्वसम्पन्न तथा तर्कमय पदार्थ.—प्रयोजनः सकेद सर्मो, योगिन् (पुं०) शिव का विशेषण,—रत्न (वि०) अनिज, पातुमय (सं०) 1 पारा 2 रसायनज्ञाता सङ्कल्प (वि०) त्रयने अपना अभीष्ट सिद्ध कर लिया है. मेतः कार्तिकेय का नाम. इशाली ऋषि की बैठकोई या पात्र (पं०) समझा जाता है कि हम बर्तन से इच्छानुसार भोजन प्राप्त किया जा सकता है और फिर भी यह भोजन से भरपूर रहता है।

सिद्धता,—स्वम् [सिद्धिः] तत् + टाप् स्व वा । सम्पन्नता, पूर्णता पुरा करना ।

सिद्धिः (स्त्री०) [सिष् + क्तिन्] 1 निष्पन्नता पूर्णता, पूर्णतः पुरा होना. (किसी पदार्थ की) पूर्ण अवस्थिति—किपासिद्धि मन्त्रे अर्वाच महता योगकरणे - मुभा० 2 साधनता, समृद्धि. कल्याण कुशल-क्षेम 3 स्थापना प्रतिष्ठा 4 प्रमाणन, प्रदर्शन, प्रमाण, निर्विवाद परिणाम 5 (किसी नियम या विधि की) वैधता 6 कैयला निर्णय, व्यवस्था (किसी कानूनी मुकदमे की) 7 निर्विनि सचार्थ पदार्थता शुद्धता 8 अदा-यसी (ऋण का) परिग्रह 9 तैयार करना शीघ्रि धाई का) गहरता 10 सम्यगा वा सम्यक्ता 11 सम्पत्ता 12 निवर्तन पवित्रता वा विद्वज्ज्ञाता 13 अविनाशक शक्ति—इह विनश्यत् शब्द है—अपिमा अपिमा प्राणित प्राकाम्य महिमा तथा देविशिव च जीवितव तथा कामदेवसावित्रा 14 सादृ के द्वारा अभिमान प्रदर्शना का प्रयत्न करना 15 विपक्ष कुशलता वा शपथ 16 अन्तरा श्रमण या हठ 17 पवित्र मोक्ष 18 समग्र, बद्धि 19 शिवाय अन्तर्धान होना आने याको अन्तर्ग करना 20 जादू की शक्त 21 एक पक्ष वा भाग 22 गुणों वा लक्ष्म. गण० इ (वि०) सम्यक्ता या सर्वार्थ प्राप्त्याधिक देन वादा (—सं०) शिव का विशेषण शक्ति दुर्गा का विशेषण, योग. ऋषी का विशेष प्रकार का शेष सहाय ।

सिष् + क्तिन् + टाप् सिध्यति, सिद्धिः वेत् + टाप् साधारण या श्रेष्ठता (पुं०) सिध्यति 1 सम्पन्न होना, पुरा करना, पूर्ण होना 2 सिध्यति कोटि दण्ड सि + ण ३१ अलम् त्रि सिध्यति कार्याणि न मनस्ये ३५ 2 सम्पन्न होना सकलता प्राप्त करना सिध्यति शर्मसु महत्तमा परिग्रहा 3 ग० आदृ ३ तर्कना अर्थान् करना म० पक्षता ग० ३५ ४ अशेषन पदार्थ प्राप्त करना ५ सिद्ध होना, प्रमाणित होना वैध होना यदि वनतमाशेनवाधि-तन्व मयर्वा हि० ३ 6 अवस्थित या अभिनिर्णित होना 7 सर्वथा तैयार किया हुआ या पकाया हुआ होता 8 विजित या जीता हुआ होता—यश्च० २।३६ प्र १ सम्पन्न होना, कार्यान्वित होना, सकल होना शरीरवाज्राणि च तेन पमिष्येदकर्मणः—अम० ३।८ तपमेव प्रमिष्यति कुत० १।१२३१ 2 उपलब्ध वा अवाप्त होना 3 विष्णीय होना. दे० 'प्रसिद्ध', स्व- 1 पुरा किया जाता 2 सर्वथा सत्य या कियान्वित होना, पूरी तरह अनुष्ठित होना 3 आनन्दानिरेक प्राप्त करना, प्रसन्न होना—अथर्ववेद सु समिष्यद् बाह्योपा नात्र सहाय—मनु० २।८७ ।

1) (स्वा०) पर + णेयति, सिद्ध, इकारान्त उकारान्त

सीकृ : (आ० जा० सीकते) 1 छिड़कना, छोटी छोटी बूँदें करके बखेरना 2 आना, हिलना-जुलना ।

॥ (आ० पर०, चुरा० उभ सीकति, सीककति-ते) 1 उतावला होना 2 सहिष्णु होना 3 स्पर्श करना ।

सीकरः [सीकधने निष्पत्तेऽनेन + सीकृ + अन्] 1 कुहार बर्बाद, जलकण पड़ना, फूँटी पड़ना 2 छोट पानी की छोटी छोटी बूँदें, दे० सीकर ।

सीता [सि + त पुषो० दीर्घ] 1 हल के चलाने से खेत में बनी हुई रेखा, खूँ, हल की फाल से खूँदी हुई रेखा 2 जूती हुई या खूँडवाली भूमि, हल से आती हुई भूमि-बुँदों से सीता तववप्रसूताम्, कृ० ५।६।३ कृषि, खेती जैसा कि सीताद्वय में १ मिथिला के राजा जनक की पुत्री का नाम, राम की पत्नी का नाम [इसका यह नाम इसलिए पड़ा कि राजा जनक ने इसे हल की फाल द्वारा बने खूँ से प्राप्त किया] बात यह थी कि मत्स्यन प्राप्ति की इच्छा में राजा ने एक यज्ञ का आरम्भ किया था, उसकी तैयारी के समय उसे हल चलाने समय सीता खूँ में से मिली। इसीलिए 'अयोनिजा या 'वरापुत्री' इसके विशेषण हैं। राम के साथ सीता का विवाह हुआ, उनके साथ बहु बन् में गईं। जब रावण उमे बन् में से उठा कर ले गया और उसका सतीत्व बच करने की चेष्टा करने लगा तो सीता ने उसके इस दुष्ट प्रस्ताव को चुना के साथ ठुकरा दिया। जब राम को हम बन्धु का पता लगा कि सीता लंका में है, तो उसने लंका पर चढ़ाई की रावण और उसकी सेना को मार कर सीता का उद्धार किया। राम के द्वारा पत्नी के रूप में फिर से स्वीकृत किये जान म पूर्व सीता को भीषण अग्नि-परीक्षा में से गुजरना पड़ा। यद्यपि राम को उसके मनीष्य पर पूरा विश्वास था फिर भी लोकापवाद के कारण उन्होंने सीता का परित्याग कर दिया। सीता इस समय गर्भवती थी। बाल्मीकि कृषि के रूप में अपने प्ररक्षक को या सीता उन्हीं के आश्रम में रहने लगी बड़ी कुश और लव नाम के दो पुत्रों को जन्म दिया बाल्मीकि मुनि ने वन्धु का पालन पोषण किया। अन्त में बाल्मीकि के द्वारा सीता राम को सौंप दी गई। 5 एक देवी का नाम, इन्द्र की पत्नी 6 उमा का नाम 7 लक्ष्मी का नाम 8 गंगा की चार चाराओं में से एक (पूर्वी चारा) 9 यविरा। मम०-इच्छन् सीते उ-करण, कृषि के औजार मनु० १।२९३, —वतिः रामश्च का नाम —कलः कुम्हड़े की बेल, (—कम्) कुम्हड़ा।

सीतामकः (पु०) मटर ।

सीकरः, सीकृति (स्त्री०) [सीत + कृ + क्त] किन्त

बा] सीस ऊपर सीचने का शब्द, सिसकारी, (बाहु भरने या सरदी से ठिठुरने के समय सी-सी करना या धर्मर ध्वनि) —मया दृष्ट्या तस्या सतीकार-मिवाननम् विराम० ४।२१।

सीत्य (वि०) [सीता + यत्] जोने गये या हल की फाल में बने खूँ से मापा गया, त्यम् चावल, धान्य, अन्न ।

सीधम् (नपु०) ब्रालम्ब जियिलता मुस्नी ।

सीधु [पु०] [सिधु + उ [पु०]] राव या गड ने बनाई हुई शरारत, ईस की मदिरा स्फुरदधरसीधवे नव वदन-चन्द्रमा रोषयति ल्वावनचकोम् गीत० १० शि० १।८७ रघु० २६।५२। मम० मन्थः बहुलवन्, मौलमिरी का पेड़ कुष्प 1 मन्थ का वृक्ष 2 मौल-मौरी का पेड़ रस आम का पेड़ संज्ञ मौलमौरी का पत्र ।

सीधम् (नपु०) गुदा मन्थार ।

सीष (पु०) नाव की शकल का यज्ञ-यात्र ।

सीमन् (स्त्री०) [सि - मनिन्, नि० दीर्घ] 1 सीमा हद, दे० सीमा सीमानाम यायन्त्योऽप्यजन्त शि० ३।५७, दे० नि सीमन् मी 2 अण्डकोष सीमन् पुष्कलको हत सिद्धा० ।

सीमन्तः [सीम्नोऽन गक० परकपम] 1 सीमा रेखा, सीमान्त 2 सिर के बालों की विभाजक रेखा सिर की मांग जिसके दोनो आग बाल विभक्त हों-सीमन्ते च त्वदुत्तमज यत्र तोष वक्ष्णाम् मेघ० ६५ शि० १।६९ महावीर० ५।४४। मम० उल्लसन् बालों का विभाजन जात्र मस्कार में से एक जिसको स्थिरी गर्भाधान के चौथे छठे या आठवें महीने में मनायी है ।

सीमन्तक [मामन् + कन्] विशेष प्रकार के नरक का अश्विनामी कम् मिन्तूर ।

सीमन्तयति (ना० घा०, पर०) 1 बालों का अलग अलग करना 2 माग निकालना येना सीमन्तयन्ते -कति० ५।४८ ।

सीमन्तित (वि०) [सीमन्न् णिच् + क्त] 1 (बाल बादि) विभाजन 2 माग निकाल कर अलग किये हुए समान्यमानितकैतवीका (प्रदेश) शि० ३।८० रघाङ्गसीमन्तितवान्कदंबान् (पथ) कि० ६।१८ ।

सीमन्तिनी [सीमन्त + इतिभे-डीप्] स्त्री, महिला या हम सीमन्तिनी बाधितजनतेषुपुत्रीषुधम् हि० २।७, मेघ० ११०, अट्टि० ५।२२ ।

सीमा [सीमन् + डप्] 1. हद, मर्यादा, किनारा, छोर मरुदद 2 भेग गोडू आदि की सीमा पर सीमा यात्रा गेला या मेघ सीमा प्रति मम गन्ने निवादे

—मनु० ८।२४५, याज्ञ० २।१५२ ३. चिह्न, सीमाना ४ किमारा, लीर, समुद्रतट ५ क्षितिज ६ सीबनी, माग (जैसे लोपड़ी की) ७. छिछाकार या नीति की सीमा अधिव्य की धर्याया ८ उच्चतम या अधिकतम नीचा, उच्चतम बिन्दु, चरमसीमा सीमाव पद्यासन कीधालस्य मट्टि० १।६ ९ संत १० बोबा का पृष्ठ भाग ११ अण्डकोष। सम० अधिवः पड़ोसी राजा,

—अन्तः १ सीमारेखा, छोर, मरहद २ अधिकतम सीमा, पुष्पमन् १ गाँव की सीमा का पूजन २ बरात के आने पर गाँव की सीमा पर हूल्हे का मकार

—उत्सवकुलम् अतिश्रमण करना, सामा पार करना मरहद कापना, निश्चयः सीमान्त या सीमारेखाओं विषय में कानूनी नियम —लिङ्गम् सीमा चिह्न, भू चिह्न, —बाहः सीमा सबधी लगडा, बिनियमः सीमारेखाओं के लगडा का फैसला बिबाहः सामासबधी लगडा या मुकदमबाजी, बन् सीमावियक लगडा में सबध रखन वाला कानून बूझ वह पड़ जो सीमा रेखा का काम दे रहा है, सन्धि. दा सीमाओं का मिलन।

सीमिक { म्यम, किनन्, सम्प्रसारण दाधंश्च } १ एक वृक्षविशेष २ बायो : चिह्नैटी या ऐसा ही छोटा काई जन्तु।

सीरः { सि + रङ् पृ० } १ हल मध. सीरङ्कण-धुरीम अश्वम/हस्त मालय मध० २ रूप ३ आक या बहार का पीसा। सम० म्बज जनक का विशेषण —साणि, मनु० १०० बलराम ने विशेषण जोष हल में पशु को जानना या हल में जूनी पशु की जोड़ी।

सीरकः { सीर + कन् } द० सीर।

सीरिन् { पृ० } { सीर हानि } बलराम का विशेषण शि० २।२।

सीरम्बः { सि + रङ् पृ० } एक प्रकार की मछली।

सीरमन् { सिव + म्यट् ति० दीधं } १ सीमा, तुरपना ठाका लगाना २ जोड़, सम्भरणा (जैसे लपड़ो की)।

सीबनी { सीरन् + डीष } १ मुई २ लिंगमणि वा मन्धि बाध।

सीसम् सीसकम्, सीसपत्रकम् { सि + सिष्प पृ० दीध सी, सा क म, मो - म कर्म० म०; सीम - कन् सीस + पत्रक } सीमा मालवि० ५।१४४ याज्ञ० १।१९०।

सीरुष्कः { = सिरुष पृ० } मरुद (बाइ लगाने का एक काटेदार पीसा)।

सु. { स्वा० उभ० सुवति-ने } जाना, मिलना-जुटना।

१। { स्वा० अदा० पर० सर्वाति, नीति } क्षति या सर्वा-परि सत्ता धारण करना।

{ स्वा० उभ० सुनोति, सुनुते, सुन, इकारान्त या उकारान्त उपसर्ग के पश्चात् धातु के स को सुन्त्य वृ हो जाता है } १ सीबना, दबा कर रम निकालना २ अकं सीबना ३ उद्वलना छिड़कना, तर्पण करना ४ यज्ञानुष्ठान करना, सोमयज्ञ करना ५ स्नान करना, इच्छा० (सुपुनति-ने)। अधि- १ सोमरम निवालना २ मिलाना मिश्रण करना यद्वयमद्वय करना यानि चैवाभिपुयन पुष्यमूलफलं धर्म-मन्त्र० ५।१० ३ छिड़कना मट्टि० १।९०, उद् - उत्पन्न करना विक्षुब्ध करना प्र- , पैदा करना, जन्म देना।

सु { अय्य० } { सु + ह् } एक निरात जो कर्मधारय और बहुव्रीहि समास बनाने के लिए सत्रा शब्दों में पूर्ण जाडा जाता है, (विशेषण और क्रियाविशेषणों में भी जुड़ता है)। निनाकिन् इसके अर्थ है १ अच्छा, भला श्रेष्ठ यथा 'सुगन्धि' में २ सुन्दर, मनोहर-यथा सुमध्यमा सुकेशी आदि में ३ बूझ, मर्बसा, पुरी तरह ठीक प्रकार से सुजीर्णमक्ष सुविचक्षण मून सुशासिता म्नी नृपति, सुसेविन। सुदीर्घकाले- ज्ञानं यानि विक्रियाम् हि० १।२२ ४ आसानी से, तुरन्त यथा सुकर और सुग्ध में ५ अधिक, अत्यधिक, बहुत अधिक-यथा सुदायण और सुदीर्घ आदि। सम० अक्ष { वि० } १ अच्छी आँखा बाव २ उब और तेज द्यो वाला, —अक्ष { वि० } सुदीर्घ मनोहर, प्रिय अक्षक { वि० } दे० शब्द के नीचे, अन्त { वि० } जिसका वत भला हो, अच्छी समाप्ति यथा, अस्त्य, अस्त्यक { वि० } दे० शब्द के नीचे अस्ति, —अस्तिक् दे० शब्द के नीचे, आकार, आकृति { वि० } सुनिर्मित, मनोहर, सुन्दर, आगत दे० शब्द के नीचे आगत्य { वि० }

बडा जानदार व प्रसिद्ध कि० १५।२२, —इच्छ { वि० } अभी प्राप्ति किया गया यज्ञ इत् १०० अर्जन का एक रूप उत्सव { वि० } अच्छा वाला हुआ सुब कहा हुआ-अथवा मुक्त श्लु केनापि-जेनी० ३ { लक्ष्म } अच्छी या समझदारी की उत्ति नेनु वाञ्छति य अनान् पति सः। सुकं सुचाय्य- निधिभ मन्त्र० २।६ म्पु० १५।१५ २ वैदिक भजन या भूजन यथा तुल्यभुवन आदि इतिम् { प० } म्रष्टा, वैदिक ऋषि याच् { म्नी० } १ भजन २ स्तुति का शब्द, उत्तिः { म्नी० } १ अच्छा या सीहादेयुषं भाषण २ अच्छा या चामुयुषुषं कथन ३ शब्द वाक्य, उत्तर { वि० } १ अनिष्ट २ उत्तर दिशा की ओर, उत्पन्न { वि० } लूब प्रपन्न करने वाला बनसाफो, कुर्तीना, (- बन्) प्रबल प्रबल या उद्योग, —उत्पन्न, उत्पन्न { वि० } बिल्कुल पागल, दीवाना उत्पत्तय { वि० } जिसके पास पहुँचना

आमान हो, उपस्कार (वि०) अच्छे उपकरणों से युक्त, कच्छ, लुजली, -कच्छ १ प्याज २ आलू, कबाब, सकरकद बादि कद ३ एक प्रकार का बांस, -कच्छकः प्याज, कर (वि०) (स्त्री० रा री) १ जो आसानी से किया जा सके क्रियात्मक काय -वक्त्र सुकर कर्तुं (अभ्यवर्तितुम्) दुष्कर-वैशी० २ करन की अपेक्षा कहना आसान है ३ जिसका प्रबंध आसानी से किया जा सके (रा) सुशील गी (रम्) दान, परोपकार, - कच्छन् (वि०) १ जो अच्छे कार्य करता है, पुण्यात्मा भला २ सक्रिय परिश्रमी (पु०) विश्वकर्मा का नाम कच्छ (वि०) (वि०) (धन का) उदारता पूर्वक देने तथा मदुपयोग करने में जिसमें कोई अजित कर ली हो, काश्चित् (वि०) १ सुन्दर वृत्ता में युक्त २ सुदरता के साथ जुड़ा हुआ (पु०) भीरा कृष्णक प्याज कुम्हार (वि०) १ मृदु सुकुमार कोमल २ मीठवयुक्त पुरुष (र) १ सुन्दर युवक २ एक प्रकार का मन्ना, कुम्हारकः १ सुन्दर पुरुष २ शक्ति बाल (कच्छ) तमालपत्र, कुत्त (वि०) १ भला करन वाला, उपकारी २ परिव्राज्या, गुणसंपन्न धर्मात्मा ३ बुद्धिमान विद्वान् ४ भाग्यशाली किम्बत बाबा ५ अच्छे वस्त्र करने वाला (पु०) १ कुशल कमकर २ त्रिष्टा का नाम, कुत्त (वि०) भली भाँति किया हुआ २ सर्वथा किया हुआ ३ लुब्ध किया हुआ या मूर्खित ४ जिसके मध्य कृपपूर्वक व्यवहार किया गया है, सहृदयता दिया गया मित्रता के सूत्र में आबद्ध ५ सदगुणी ब्रह्मात्मा परिव्राज्या ६ भाग्यशाली किम्बत वाला, (तत्) कोई भी जग या अच्छा काम, कृपा अनुग्रह, सेवा-नादल कर्मचिन्तापन चैव सकृन् विभु भग० १।१५, मध० १३ २ मदगुण नैतिक या धार्मिक गुण स्वर्गाभिमान-सुकृत वचनार्थिब्रह्मिणे कु० ६।४३ तत्त्वव्ययम न सकृन् तवति-रघु० १६।१६ ३ भीभाग्य, भार्याकता ४ प्रीति, पुष्करा कृति (स्त्री०) १ कृपा मदगुण २ उपस्था करना कृतिव (वि०) १ भार्गव करने वाला, हृत्पापक व्यवहार करने वाला २ मदगुणसंपन्न, परिव्राज्या, भला धर्मात्मा मन्त्र मन्त्र निरापद सुकृतिना कीर्तिविश्वर वर्धनाम् हि० ६। १३० भग० ७।१६ ३ अस्मिन् विद्वान् ४ पराजकारि ५ भाग्यशाली किम्बत बाबा -केस (स) १ गल्लक का रस २ कृत्तु १ अग्नि का नाम २ जिव का नाम ३ उदर का भाग ४ मित्र और वरुण का नाम ५ मूत्र का नाम म (वि०) १ मूर्खानी बाल बल्ले मार २ आनन लटिन ३ मृगय पशु० ३।१/१ ४ बागमय भावार्थी म मयज्ञ जागे योग्य (वि०)

दुर्ग) (-मन्) १ विष्ठा, मल २ प्रमथना, मत्त (वि०) १ भली भाँति किया हुआ २ भली-भाँति प्रदान किया हुआ (त) बुद्ध का विशेषण, कच्छः १ अणु अणु गंध गन्धद्रव्य २ गन्ध ३ आभासी, (-धन्) १ चन्दन २ जौंग ३ मील कमल ४ एक प्रकार का सुगन्धित धातु (-धा) पवित्र तुलसी, गन्धकः १ गन्धक २ काल तुलसी ३ मन्त्र ४ एक प्रकार की लोकी, गन्ध (वि०) १ मन्त्र गन्ध वाला, लुब्धकः मुरभित २ मदगुण म युक्त पवित्रात्मा (-धि) १ मधव्य मुरभ २ परमात्मा ३ एक प्रकार का मधुगन्ध वाला आम (-नपु०-धि) १ गिप्परामल २ एक प्रकार का सुगन्धित धातु ३ धनियाँ त्रिकला ४ जायफल २ भाग गन्धक १ मृद २ गन्धक ३ एक प्रकार का (शामनी) दाबल (-कम्) मन्द कथन गम (वि०) १ तहरी श्रामनी म तहरी जाग मयम् २ श्रामन ३ सरल बाधगम्य गहना यजमान ४ अस्पृश्यार्थ के मयक से बचाने का जग बनाया गया घड़ा वृत्ति द० उपर क मन्द गृह (वि०) १ म० १ ही। मन्दर ४ वाला भला भाँति करने वाला सुगहा निर्माही इना पत्र० १।३१० गृहीत (वि०) १ भली भाँति पकड़ा हुआ अच्छा तरह समझा हुआ २ मनुष्य का ये या शुभ रीति में प्रयुक्त वाक्य (वि०) १ वह जिसका नाम मार्गिक रूप में लिखा जाय या जिसका नाम लेना (बलि पृथिवीर आदि) शत्रु समझा अथ प्राप्त स्मरणीय सम्मानपूर्वक नाम लेने की रीति का खाने करने वाला शब्द सुगृहीत नाम भद्रगोपालक्य पौत्र पा० १ शास्त्र प्यादष्ट कोर या निशाना घोष (वि०) अच्छी गदत वाला, (-बन्) १ नायक २ हम ३ एक प्रकार का शस्त्र ४ सुधीव जो बाल का भाई या (कबय की बाल मन कर राम सुधीव के पास गया। सुधीव ने बतलाया कि किस प्रकार उसका भाई बाँध ने उसका माथ धुंधलकर किया। माथ ही अपनी पत्नी का उद्धार करवाने के लिए राम में सहायता माँगी। स्वयं सुधीव ने यह प्रतिज्ञा की कि मैं भी जायकी पत्नी वाला का उद्धार करवाने में आपकी सहायता करूँगा। फलतः राम ने बाँध को मार बिगाया, सुधीव का शस्त्रहीन पर बैठाया। तब सुधीव ने अपना बानर मना माथ लेकर राम का माथ दिया जिससे कि राम ने शस्त्र की मार कर सीता का उद्धार किया। ईश्वर रक्षक का नाम, -कच्छ (वि०) बहुत बड़ा हुआ आत्म चक्षुस् (वि०) अच्छी भावना वाला भली भाँति देखने वाला, (पु०) १ विवेक-शील या विमान व्यक्ति विद्वान् पुरुष २ गुरु

का पेड़, चरित, चरित्र (वि०) अच्छे साधन
 वाला, शिष्टाचारयुक्त (-तन्त्र- ब्रम्) 1 मदाचार,
 अच्छा बालचलन 2 गुण तब सुचरित्रमङ्गलीय नून
 प्रतनु-ज० ११११, (-सा, -जा) मदाचारिणी,
 पतिव्रता, और सती साध्वी स्त्री, - चित्रकः 1 राम-
 चित्रा, एक पत्नी 2 चीतल साग, चित्रा एक प्रकार
 की लकी, चित्रता गहनविमल, सम्भार, - चिर
 (अव्य०) दोष काल तक, बहुत देर तक, चिरायु-
 (पुं०) मर देवता, जलः 1 मला पुष्य, सद्गुणों
 परोपकारी 2 मज्जन, - जलता 1 भलाई, नकी
 परोपकार, सद्गुण-ऐश्वर्यस्य विभूषणं मुजना- -मन्०
 २०८२ 2 भले पुष्पों का समूह, जलम् (वि०)
 सत्कुलोत्पन्न, कुलीन, -या कौमुदी नवनयोर्भवतः मुज्या
 म० ११४, - जलः अच्छी बाणो, - जल (वि०)
 1 उष्णकुलोत्पन्न 2 सुन्दर, प्रिय मा० ११६
 रघु० ३१८, -तनु (वि०) 1 सुन्दर शरीर वाला
 2 अत्यन्त सुकुमार, सुबला-पतला 3 हजकाय, दुर्बल-
 शरीर (स्त्री० नु - नू) कोमलाङ्गी, सुन्दरशरीर
 -एना सुतनु मुल ते सख्य पयलती हेमकूटगना
 -विषय० १११, -तत्त्व (वि०) 1 जो और तत्त्व
 करना हो 2 अतिमात्र नापयुक्त (पुं०) 1 सत्यासो-
 भक्त, नाथ, वैरागी 2 सूर्य, (नपुं०) कठोर भावना
 - तत्त्व (अव्य०) 1 अपेक्षाकृत अच्छा, अधिक
 छेष्ट इन में 2 अत्यन्त, अधिक, अत्यधिक, बहुत
 ज्यादा-नया दुहिता सुतरां सवित्री स्मृतप्रभामहला
 चकाले कु० ११२४, सुतरां दयालु रघु० २१५
 ४१९, १८१४ 3 और अधिक, और भी ज्यादा
 तत्त्वबद्धा न ते चेतसि मम सुतरां राजन्
 यतोऽस्मि - मन्० ३१३०, तर्जनः कोयल, -तत्त्व
 1 'अत्यन्त गहराई' भूमि के नीचे मान लोको में से
 एक, दे० 'पाताल' 2 किसी बड़े भवन की इमारत
 - तित्तकः मूने का पेड़, तीक्ष्ण (वि०) 1 बहुत
 तेज 2 अत्यन्त तीखा 3 बहुत पीडाकारक, (स्वः)
 1 सहिष्णु का पेड़ 2 एक ऋषि का नाम नाम्ना
 सुवीक्ष्यधर्तिते दानः रघु० १३४१, 'हस्तः शिव
 का विशेषण, - तीर्थः 1 अच्छा गुरु, 2 शिव का नाम,
 - तुल्य (वि०) बहुत ऊँचा या नदी, (-तः) नारियल
 का पेड़, हलिक (वि०) 1 अत्यन्त निष्कण्ट बकरा
 2 बहुत उदार यज्ञ में ब्रह्म दक्षिणा देने वाला-पञ्च०
 १३०, (-जा) दिनीप राजा की पत्नी का नाम
 तस्य दामिष्यरूपेन नाम्ना मणवत्तया । पत्नी सुद-
 क्षिणेन्यासीत् रघु० ११११, ३११ बन्धः बँध, हल
 (वि०) (स्त्री० ती) अच्छे दातो वाला, हलः
 1, अच्छा दात 2 अभिनेता, नर्तक, नट, (ली)
 पश्चिमोत्तर दिशा की दिक्करिणी, बालं (वि०)

(स्त्री०-जा, -जी) 1 प्रियदर्शन, सुंदर, मनोहर 2 आ-
 मामानी से दिखाई दे (कः) 1 विष्णु का बन्ध,
 जैसा कि 'कृत्योप्यमुदसिन' का० 2 शिव का नाम
 3. गिद्ध, (- बन्ध) उव द्वीप का नाम, बालं
 1 सुन्दर स्त्री 2 स्त्री 3 आदेश, आज्ञा 4. एक
 प्रकार की बूटी, हा (वि०) यथेष्ट, हानम् (वि०)
 जो उदारता पूर्वक देता है (पुं०) 1. बादल 2 पहाड़
 3 समूह 4 इन्द्र के हाथी का नाम 5 एक डाँड
 ब्राह्मण का नाम जो अपने मित्र कृष्ण से मिलने के
 लिए अपने बाबलों की भेंट लेकर, द्वारकापुरी गया
 था तथा 6 जमे श्रीकृष्ण ने फिर बनबान्य और ईनि
 ने सम्मिल किया, - बाधः 1. धार्मिक उपहार
 2 विनिष्ट अवसरों पर दिया जाने वाला विशेष
 उपहार, - बिलम् 1 आनन्दप्रद क्षम दिवस 2 अच्छा
 दिन, अच्छा मौसम (विप० दुर्दिन), इसी प्रकार
 'मुत्ताहम्' इसी अर्थ में बोध (वि०) बहुत लम्बा
 या, स्मृन् (जी) एक प्रकार की लकड़ी तुल्य
 (वि०) अत्यन्त दुःप्राप्य या विरल, दूर (वि०)
 बहुत दूर स्थित या दूरवर्ती (सुदूरम् 1 बहुत दूर
 2 बहुत ऊँचाई तक, अत्यधिक, सुदूरत दूर में,
 कामसे में), दूर (वि०) सुन्दर आँखों वाला,
 (स्त्री०) सुन्दर स्त्री, - बन्धम् (वि०) बड़िया वन्य
 की बाग्य करने वाला, (पुं०) 1 अच्छी तीरदाज
 या धनुर्धारी 2 विश्वकर्मा का नाम बन्धम् (लि०)
 कर्तव्यपरायण (स्त्री०) देव परिवर्द्ध, देवभ्रा, बर्मा,
 बर्मी देवभ्रा ययाकुरिनालोकः मृधमानभ्रमा
 सभाम्-रघुः १३२८, बी (वि०) अच्छी समझ
 वाला, बुद्धिमान, धनुर प्रतिभाशाली, (-बीः)
 बुद्धिमान् या प्रतिभाशाली पुष्य, बिद्वान् पुष्प या
 पंडित, (स्त्री०) अच्छी समझ, भला ज्ञान, प्रज्ञा,
 उपास्यः 1 एक विशेष प्रकार का महल 2 कृष्ण
 के सेवक का नाम, (स्था) बलराम का सुदूर
 उपास्य 1 स्त्री 2 उमा या उसकी कोई सखी
 3 एक प्रकार का रजक, नन्दा स्त्री नवः 1. अच्छा
 बालचलन 2 अच्छी नीति, नव्य (वि०) सुन्दर
 आँखों वाला, (कः) हरिम्, (-ना) 1. सुन्दर
 आँखों वाली स्त्री 2 सामान्य स्त्री, नाथ (वि०)
 सुन्दर नाभि वाला 2. अच्छे नाह या केन्द्र वाला,
 (-नः) 1 पहाड़ 2 केनाक पहाड़, विमल (वि०)
 विमल अकेला निजी (अव्य० तम्) धूपबाप,
 छिपे-छिपे, सट का निजी रूप में, निषकलः शिव
 का विशेषण, नील (वि०) अच्छे आचरण वाला,
 शिष्टाचार युक्त 2 नम्र विनयी (तम्) 1 अच्छा
 बालचलन, शिष्ट आचरण 2 अच्छी नीति, दूरदर्शिता
 नीति (स्त्री०) 1 अच्छा आचरण, शिष्टाचार,

भीषित्य 2 अण्ठी नीति 3 भुव की माता का नाम,
—भीष (वि०) अण्ठे स्वभाव, लाला, लड़ाचारी, बगारवा,
सद्वर्णी, भला, (-वः) 1 बाह्य 2. शिखपाक का नाम,
—भीष (वि०) बिल्कुल काला, या नीला, (-रः)
अनार का पेड़, (-लः) सामान्य सन का पीला, भैर
(वि०) सुन्दर भाँकों वाला, —अण्ठ (वि०) 1. अण्ठा
पका हुआ 2 सर्वथा परिपक्व या पका हुआ (-अः)
एक प्रकार का सुगन्धित आम, कली यह स्त्री
विरुद्धा पति मनुष्य हो, अण्ठः 1. अण्ठी सड़क
2. सुमार्य 3. अण्ठा चालचलन, —अण्ठि (पु०)
(कत० ए० व०—अण्ठ्याः) अण्ठी सड़क, -अण्ठ
(वि०) (स्त्री०—अण्ठि, —अण्ठि) 1. अण्ठे पछी वाला
2 सुन्दर पत्तों वाला, (-अः) 1 सुय की किरण
2 अर्धचन्द्र चरित्र के चक्षियों जैसे प्राची, देवमन्त्र
3 अर्धचक्र पत्थी 4. वरुण का चिह्नचक्र 5. गुर्गा,
—अण्ठि, —अण्ठी (स्त्री०) 1. कमलों का समूह
2. कमलों से बरा ताल 3. वरुण की माता का नाम,
—अण्ठि (वि०) 1. बहुत विस्तार युक्त 2. सुयोग्य

—अण्ठि (वि०) अण्ठे जोड़ों वा सचियों वाला,
जिसमें बहुत से जोड़ या सचियाँ हों, (पु०) 1. नीति
2. वाक् 3. गुर, देवता 4. विद्येय चान्द्र दिवस
(प्रत्येक मास की पूर्णिमा, अष्टमि, अष्टमी और
चतुर्थी) 5. गुर्गा, —अण्ठि 1 अण्ठा वा उपयुक्त
काम, बोध्य भावन 2 बोध्य वा सज्जन व्यक्ति, किसी
पद के अनुपयुक्त व्यक्ति, सम्पूर्ण व्यक्ति, वाक् (स्त्री०
वाक्—अण्ठी) अण्ठे वा सुन्दर पैरों वाली, चारुः
पाक का पेड़, अण्ठ, भीतम् पाजर, (-तः) पाँचवीं
मुहूर्त, (-अण्ठी) वह स्त्री जिसका पति भला व्यक्ति
हो, अण्ठ (वि०) (स्त्री०—अण्ठा, अण्ठी) अण्ठे
कुल वाला, (अः) मूने का पेड़ (अण्ठ)
1 नीति 2. स्त्रीरज, —अण्ठः स्वस्व विचार, —अण्ठि
अविरा, अण्ठि (वि०) 1. मली-नाति बड़ा हुआ
2. बहुत प्रसिद्ध, विभूत, कीर्तिशाली, विख्यात,
(अः) 1 अण्ठी स्थिति 2. अण्ठ नाम, प्रतिष्ठि,
क्यासि 3 स्थापना, निर्वाण 4. मुनि बाबि की
स्थापना, अभिषेक, —अण्ठि (वि०) 1 मली-नाति
स्थापित, 2 अभिषिक्त 3 विख्यात, (-तः) मूलर
का पेड़, अण्ठि (वि०) 1 सर्वथा परिशीकृत
2 किसी विषय का अण्ठ नामकार, अण्ठी (वि०)
1. सुन्दर आकृति वाला, प्रिय, मनोहर 2. सुन्दर
स्वभाव वाला, (अः) 1 कामदेव का चिह्नचक्र
2. शिव का चिह्नचक्र 3. पश्चिमोत्तर दिशा का
दिग्बन्ध, —अण्ठि अण्ठ ताल, अण्ठ (वि०) बड़ा
प्रतिभाशाली, मजबूती, (अः) अग्नि की ताल
शिखरों में से एक, —अण्ठ 1. अण्ठ प्रकाश, अण्ठ-

मय प्राप्त. अण्ठ दिष्टया सुप्रभातमण्ड वदय देवो
दुष्टः उत्तर० १ 2. प्रात कालीन अण्ठा, अण्ठः
1. अण्ठा प्रबन्ध, अण्ठी-नाति काम में माया जाना
2. दसता, —अण्ठा (वि०) अति कल्याण, कुपा-
निधि, (अः) शिव का नाम, अण्ठि (वि०) अत्यन्त
प्रिय, अधिकार, (अः) 1 मनोहारिणी स्त्री 2. देवकी,
अण्ठ (वि०) 1. अत्यन्त फल देने वाला, बहुत
उत्पादक 2 बहुत उपजाऊ, (अः) 1 अनार का
पेड़ 2 बेरी का पेड़ 3. एक प्रकार का लोबिया,
(—अः) 1 कद्दु, लोकी 2. केले का पेड़ 3. भूरे
रंग का कुसुम, —अण्ठा तिल, —अण्ठ (वि०) अत्यन्त
सक्तिशाली, (-अः) शिव का नाम, भीष (वि०)
जो बासावी से सज्जा जाय, (-अः) मका मकाधार
वा उपवेश, —अण्ठ्याः 1 कातिकेय का चिह्नचक्र 2 यज्ञ
में वरुण किसे यज्ञे लोगह पुरोहितों में एक, —अण्ठ
(वि०) 1 अत्यन्त भाग्यवान् वा समृद्धिवादी, प्रसन्न,
सौभाग्यशाली, अत्यन्त अनुग्रहीत 2 प्रिय, मनोहर,
सुन्दर, मनोरम न तु भीष्मस्वयं सुमनसपराट
मुच्यति—अ० ३१९, कु० ४१४, रघु० ११८० मा० ९
3 सुहायता, कुतार्थ, अधिकार, मयूर—अण्ठसुमन
—अण्ठि ३१४, अ० ११३ 4 प्रियमय, इष्ट,
स्नेही, प्रिय—अण्ठि सुमनः परमन् स त्याग्यते
कुतार्थताम् नीत० ५ 5. श्रीमान्, (-अः) 1. सुहावा
2. अक्षो क नृप 3 चम्पक नृप 4. मात कटहरवा,
सदाबहार, (-अण्ठ) अण्ठा भाग्य 'अण्ठि, अण्ठि (वि०)
(वि०) अपने भाषको लोभायशाली मानने वाला,
कुशील हितकर—अण्ठा मां न अण्ठ सुमनस्यजन
करोति चैव० ९४, अण्ठा 1 पति की श्रित्यमा,
प्रेमसी 2 सम्मानित मां 3 वनमन्त्रिका 4. हस्ती
5 तुलसी का पीला, 'अण्ठः पतिप्रिया पत्नी का पुत्र
अण्ठः मारियल का पेड़, अण्ठ (वि०) अत्यन्त
या सौभाग्यशाली, (अः) अण्ठि का नाम (अः)
हरराम और कुण्ड की बहन का नाम जिसका विवाह
अर्जुन के साथ हुआ था। उससे अजिन्मन् नाम का
पुत्र पैदा हुआ, —अण्ठि (वि०) 1. अण्ठी नाति कहा
गया, सुन्दर रूप से कहा गया 2. सुन्दर भाषण
करने वाला, वाणी, (अण्ठ) 1. सुन्दर भाषण,
वाग्मिता, अण्ठि—अण्ठि सुभाषितम्—अण्ठ० ३१२
2 नीतिवाक्य, सुक्ति, समुपयुक्त कथन सुभाषितेन
नीतेन युवतीनां च लीलया। मनो न विद्यते यस्य
स नै मुक्तोऽयथा वयः—अण्ठा ३. अण्ठी उल्टी
—अण्ठि सुभाषित (अण्ठि) —अण्ठि 1. अण्ठी
मित्रा, अण्ठि भाषण 2. अण्ठ की बहुतायत, अण्ठ
वाग्मधिक की प्रचुर राशि, अण्ठि—अण्ठि (वि०)
सुन्दर जीह वाला (स्त्री०—अण्ठ) अण्ठी स्त्री (अण्ठ)

शब्द का मन्त्रोक्त-ए० व०-सुभू बनता है, परन्तु
भट्टि, कालिदास और भवभूति जैसे लेखकों ने सुभू
का प्रयोग किया है नू० भट्टि० ६।११, कु० ५।४३,
मा० ३।८, भस्ति (वि०) बहुत बुद्धिमान् (स्त्री०
लि) 1 अच्छा मन वा स्वभाव, कृपा, परोपकार
मोहार्थ 2 देवा का अनुग्रह 3 उपहार, बाजीबाँध
4 प्रायश्चा, मुक्त 5 कामना, इच्छा 6 सगर की
पत्नी का नाम जो साठ हजार पुत्रों की माता थी
मयन आम का वृक्ष, मध्य, मध्यम (वि०)
पत्नी कमर वाला, मज्जा, मज्जना मनोरम स्त्री,
मन (वि०) बहुत आकर्षक, प्रिय, सुन्दर (नः)
1 गेहूँ 2 बनूरा (ना) फूलों से लड़ी चलेली
मल्लू (वि०) 1 अच्छे मन वाला, अच्छे स्वभाव
का, उ०- 2 खूब प्रसन्न, सतुष्ट, (पु०) 1 देव
देवता 2 विद्वान् पुरुष 3 वेद का विद्यार्थी 4 गेहूँ
5 नीम का वृक्ष (स्त्री०, नपु०)- कुछ विद्वानों के
अनुसार केवल व० व० में प्रयोग फूल रमणीय
मन व सुमनसा समिपेक्ष-मा० १, (यहाँ लम्बा ?
म दिया गया विशेषणपरक जहाँ भी अभिप्रेत है),-कि
मेवमेव सुमनसा मनसापि मन्त्र कस्तूरिकाजननमस्तिभूता
मृगेन रत्न० लि० १।१६ अन्तः केश, कलम्
जायफल, बिना दशरथ की एक पत्नी और लक्ष्मण
तथा लक्ष्मण की माता का नाम, मूख (वि०) (स्त्री०
जा, ली) 1 सुन्दर चेहरे वाला, प्रिय 2 गुहा
बना 3 निर्बलित, आतुर कि० १।४८, (क)
1 विद्वान् पुरुष 2 गवह का विशेषण 3 गणेश का
विशेषण 4 शिव का विशेषण (लम्) नासून की
लटोच (जा ली) 1 सुन्दर स्त्री 2 दर्पण
- मूलकम् गात्र मेखल (वि०) अच्छी समझ रखने
वाला बुद्धिमान, प्रतिभाशाली (पु०) बुद्धिमान् पुरुष
मेख 1 सुयं नाम का पवित्र पर्वत 2 शिव का
नाम, कवचम सुन्दर नाम, अच्छी चरागाह, बोधन
सुयोग्य का विशेषण रत्नक- 1 गेह 2 एक प्रकार
का जाम का पेड़, रङ्गः 1 अच्छा रंग 2 सतरा
पद्म गेह, -रत्नकम सुपारी का पेड़, रत्न (वि०)
1 अति प्रमोदी 2 कीडाशील 3 अत्यधिक अनुरक्त
4 कवचामय, मुकुमार (लम्) 1 बड़ी प्रसन्नता
अपमानन्द 2 सभाय मेव रतिरिच्छा सुरतमृदिता
शाल्वनिता भर्तु० २।१४ ताकी 1 हूनी, कुटुंबी
2 शिरोमूषण, शिर की माता प्रसन्न कामकेल में
मयन कु० १।१० - (लः) (स्त्री०) भोग
बिलास आनन्द, मज्ज, रत्न (वि०) 1 अच्छे रत्न
वाला, रत्नाला, मज्जदार 2 मधुर 3 ललित
(रचना) (ल, ला) मिथुनार पीठा (ला)
कुर्वा का नाम, कृप (वि०) 1 अच्छा बना

हुआ, सुन्दर, मनोहर-सुकपा कन्या 2 बुद्धिमान्,
विद्वान् (व) शिव का विशेषण, -रेख (वि०)
अच्छी आवाज वाला-कि० १५।१६, (- लम्) टीन,
जस्त, -कलम (वि०) 1 खूब व सुन्दर लक्ष्मणों से
युक्त 2 मायशास्त्री, (लम्) 1 निरीक्षण, सुपरी-
क्षण निर्धारण, निश्चयन 2 अच्छा वा खूब चिह्न,
लम् (वि०) 1 जो बासानी से मिल सके, सुप्राप्त,
प्राप्त, सुकर-न सुलभा सकलैकमुखा वा ता विक्रम०
२।९, इदमसुकमवस्तु प्रायना हुनिवारम्-२।९
2 तत्पर, अनुकूल बना हुआ, योग्य, उपयुक्त-विष्-
वृत्तचरणोपयोग्यसुकमो साधारणः केनचित्-व०
४।५ 3 स्वाभाविक, सम्पन्न-वानुपगतसुकलो
लक्ष्या-का० कोष (वि०) जो कीड़े कुड़ हो
जाय, जो बासानी से बड़काया जा सके, कोषण
(वि०) सुन्दर जाँकों वाला, (-नः) हरिण, (-मा)
सुन्दर स्त्री, -कोषण् पीतल, -कोषित (वि०)
बहुरा लाल, (- ला) अग्नि की शक्त बिस्त्रावों में
से एक-कवचम् 1 सुन्दर चेहरा वा मुख 2 बुद्ध
उपचारण, कवचम्, -कवच (नपु०) बाधित,
-बाधक, का लक्ष्मी, कार, -कर्व दे० कवच के
नीचे, -कव (वि०) 1 सहनशील, सहिष्णु 2 सर्व-
ज्ञान्, सेकने वाला 3 जो बासानी से से जाया जा सके,
-बाधित 1 विवाहित का एकान्ति स्त्री जो अपने
पिता के घर रहती है 2 विवाहिता स्त्री जिसका पति
जीवित है, विव्रत (वि०) बहादुर, छाहूरी, बुर
(- लम्) बीर्य, -विष् (पु०) विद्वान् पुरुष, बुद्धि-
मान् व्यक्ति (स्त्री०) बुद्धिगती वा चतुर स्त्री, -विषः
अन्त पुर का देवक, -विष्णु (पु०) राजा, -विष्णुः
अन्त पुर का देवक ('वीरवत्सल' का मज्ज रूप)
(-लम्) अन्त पुर, रतिवास, -विष्णुका विवाहित
स्त्री, -विष् (वि०) नाम का पवित्र पर्वत का, -विष्णु
(अध्य०) बासानी से, विनीत (वि०) बली-गति
प्रसिद्धित, विनयी, (ला) सुधील नाव, -विहित
(वि०) 1 बली गति रखता हुआ, अच्छी तरह जमा
किया हुआ 2 सुव्यवस्थित, सुसज्ज, साधसामग्री से
युक्त, गती-गति कवचद सुविक्रियोपयोग्य मायसं
न किमपि पश्चात्त्यते-ह० १, कवचसमकल्पप्रदे-
वावसरे तत् सुविक्रियम् मा० १, ली (ली) व
(वि०) अच्छे बीजों वाला (- लः) 1 शिव का
नाम 2 लसलस (लम्) अच्छा बीज, बीरसम्पत्
काशी, -बीर्य (वि०) 1 अति बलशाली 2 बीर्यवान्
युक्त, बुराबीर, पराक्रमी, (लम्) 1 अतिबीर्य
2 बुराबीरों की बहुतायत 3 बेर का फल, (- बी)
जबली कपास, -बुल (वि०) 1 शिखाधार युक्त,
सम्बुधी नेक, भला, -मयि तस्य सुवृत्तवर्धने लम्-

सन्देशपदा सस्वती —रघु० ८।७७ 2. अच्छा गोल.
मुन्दर बर्तुकाकार या गोल मुमुनाति मुमुनेन मुमुष्टे-
नातिहारिणा । मोदकेनापि कि तेन निष्पत्तियस्य
केवला, —या मुमुनाति मुमुनेनापि सम्प्राप्तपतितोऽपि च ।
महतां पातकमोऽपि व्यपरायेव कष्टक (यहाँ
सभी विशेषण दोहरे अर्थों में प्रयुक्त किए गए हैं)
—केल (वि०) 1 शाल, निश्चल 2 बिलस, निस्तब्ध
(—कः) निष्कृत पर्वत का नाम, —कृत (वि०) वारिक
धर्मों के पालन में दृढ़, सर्वथा धार्मिक तथा मद्गुणी,
(—तः) बहुचारी (—ता) 1. मुन्दर बल वाली साध्वी
रानी 2 मुञ्जोल नाव, सीधी गाय जिसका हृष आसानी
से निकाला जा सके, —कृत (वि०) प्रख्यात, प्रसिद्ध, यशस्वी,
श्लासनीय, शक (वि०) मुसाध्य, आसान, सरल
—कृतः खदिर वृक्ष, —कृतम् अवरक, —कालित (वि०)
बली-भाति नियन्त्रण ४, मुनियमित, —सिक्त (वि०)
मुनिआप्राप्त, प्रसिद्ध, अच्छी तरह सहाय्य हुआ,
—सिक्तः अग्नि (—जा) 1 मोर की सिला 2 मूर्त की
कलमी, —झीक (वि०) अच्छे स्वभाव वाला, मिलनसार
(—का) 1 दम की पत्नी का नाम 2 कृष्ण की जाट
प्रेयसियों में से एक, —कृत (वि०) 1 अच्छी तरह
मुना हुआ 2 वैद्वज, (—तः) एक आवृत्त पद्धति का
प्रस्ता, जिसकी कृति, चरक की कृति के साथ-साथ
आज भी भारतवर्ष में प्राचीनतम आवृत्त का प्रामा-
णिक ग्रन्थ माना जाता है, —सिक्त (वि०) 1 भली-
भाँति कमबख्त, समुक्त 2 भली-भाँति उपयुक्त मा०
१, —कृतः आभिमान या अनिष्ट मिलाप, —समुक्त
(वि०) देखने में रुचिकर, —संतत (वि०) मुनिदेसित
(ईसा कि बाप), —सह (वि०) 1 जो आसानी से
सहन किया जा सके 2 सहनशील सन्निध्य (—ह)
सिद्ध का विशेषण, —सार (वि०) अच्छे रम वाला,
रसीला (—रः) 1 अच्छा रस सन या जक 2 मक्ष
मत्ता 3 काल फूल का खदिरवृक्ष, स्व (वि०)
1 समुपयुक्त, अच्छे अर्थ में प्रयुक्त 2 अच्छे स्वास्थ्य
में स्वस्थ, सुखी 3 अच्छी या समुद्र परिस्थितियों में
समद्विधाली 4 प्रसन्न, भाग्यशाली, (—स्वः) मुख
की स्थिति, कल्याण स्वस्थ को बान पश्चित —वि०
३।२१ (इसी अर्थ में सुस्थित) —स्वता, स्थिति
(स्वी०) : अच्छी दगा, कुशल सेम, कल्याण,
आनन्द 2 स्वास्थ्य योग्यप्राप्त, स्थित (वि०)
प्रसन्नता पूर्वक मुस्कराने वाला, (—ता) प्रसन्नवदना,
हँसमुख स्त्री, —स्वर (वि०) 1. तुरीला, समुद्र स्वर
बला 2 उष्ण स्वर, हित (वि०) 1 गीतान्त्र योग्य,
या उपयुक्त, समुचित 2 हितकर, श्रेयस्कर 3 सीधा-
सुपूर्ण, स्नेही 4. समुष्ट (—ता) अग्नि को मान
जिह्वाओं में एक, हृष (वि०) कृतापुणं हृदय कल्याण

हारिक, वैकीर्ण, प्रिय, स्नेही (वि०) 1 मित्र सुहृद
पश्य वस्तुना कि स्थितम्—कु० ४।२७, अभ्यापन्ते न
कलुः सहृदामभ्युपेतार्थकत्वा मेघ० ४० 2 मित्र,
‘मेघः मित्रो का वियोग’ वाक्यम् सङ्ग्रहपूर्वम् सम्मति,
—हृषः मित्र, —हृषय (वि०) 1 मुन्दर हृषय बाला
2 प्रिय, स्नेही, प्रेमी ।

सुख (वि०) [सुख + अच्] 1 प्रसन्न, आनन्दित हर्ष
पूर्ण, सुख 2 रुचिकर, मधुर, मनोहर, मुहावना
दिग प्रसेदुर्गन्तो वयु सुखा रघु० ३।१४ इसी
प्रकार—सुखस्य निस्वना—३।१९ 3 समुष्टी
पुष्पारमा 4 आनन्द लेने वाला, अनुकूल स० ७।१८
5 आसान, मुकर—कु० ५।१९ 6 योग्य, उपयुक्त,
—अच् 1 आनन्द, हर्ष, सुखी, प्रसन्नता, आराम
—यदेषोपनत दुःखात्सु तद्वत्तत्परम् विक्रम०
३।२१ 2 समुष्टि अर्थात् सुखदुःखयोरनुगुण मन्दांरव
वत्साम्यु यत् उत्तर० १।३९ 3 कुशल सेम कल्याण
स्वास्थ्य देवी मुख प्रष्टु गता मालवि० ४
4 चैन, आराम, (सुखादिको का) प्रशमन (प्राय
समाप्त में प्रयुक्त—यथा सुखसायन, सुखोपविष्ट
मुखाभय आदि) 5 सुविधा, आसानी, मुहलियत
6. स्वांग, वैकुण्ठ 7 जल, शब्द (अध्य०) 1 प्रस-
न्नता पूर्वक, हर्ष पूर्वक 2 सकुशल स्वस्थ—सुख
मास्ता भवान् (भगवान् आपको स्वस्थ तथा सकुशल
रक्ते) 3 आसानी से, आराम से असम्प्राप्तनिग-
मक्य मुख स्वस्थिति योगिनि—काव्य० १० 4 अमा
यास, आराम अन्न सुखमाराध्य सुखतरमाराध्यन
विशेषण प्रत्य० २।३ 5 वस्तुतः इच्छा पूर्वक
6 चुराया, शान्ति पूर्वक । सम०—आधारः स्वतः
आपक्य (वि०) स्नान के लिए उपयुक्त, आराम
—आयः सुख मयाया हुआ या मोक्ष योडा, आरोह
(वि०) त्रिष पर चढ़ना आसान हो—आलोक (वि०)
सुदर्शन, प्रिय, मनोहर, —आलुह (वि०) आनन्द को
ओर से जाने वाला मुहावना सुखकर, —आलुः वरुण
का नाम, —आलुः कचडी, —आलुः (वि०) 1 मधुर
स्वादयुक्त, मधुर रसयुक्त 2 रुचिकर, आनन्ददायी
(—ब) 1 मुकर स्वर 2 (मुख का) उपयोग—उल्लस
1 आनन्द मनाना, सुखी उज्ज्वल, आनन्दोत्सव 2 पति
—उल्लस गम्य पादौ उल्लसः आनन्द की अनुभूति
या मुख का उदय, उल्लस (वि०) कज में सुखदायी
उल्ल (वि०) जिसका उच्चारण दक्षि के साथ या
मुख में हो सके, उल्लसिष्ठ (वि०) आराम से बैठा
हुआ मुख से बैठा हुआ उल्लिख (वि०) आनन्द
चाहने वाला, मुख की अभिव्यक्ति करने वाला, कर,
कार, हास्यक (वि०) आनन्द देने वाला, मुख
कर मुहावना—ब (वि०) मुख देने वाला, (—बा)

इन्द्र के स्वर्ग की वाराणसा, (इन्) विष्णु का आसन
—बोधः 1. मुख सवेदना 2 आलानी से प्राप्त ज्ञान
भाषित, भाष् (वि०) प्रसन्न,—अब, भूति (वि०)
कानो को सीठा, कर्णमधुर,—कि० १६३, सङ्गिन्
मुख का साथी स्वर्ण (वि०) कुन में मुखकर।

मुत् (भू० क० ह०) [मु + क्त] 1 उड़ला गया 2 निकाला
गया, या निचोड़ा गया (जैसे कि सोमरस) 3 जन्म
दिया गया उत्पादित, पैदा किया गया, सः 1 पुत्र
2 राजा। मम०—आत्मन पोता, (—आ) पानी
उत्पत्ति (स्त्री०) पुत्र का जन्म, निश्चिन्नेष्व्
(अव्य०) 'जो सीधे पुत्र से प्राप्त न हो' पुत्र की
मानि रघु० ११—बल्करा सात पुत्रों की माता
स्नेह पितृप्रेम, वात्सल्य।

मुत्तवत् (वि०) [मुत् + मत्] पुत्रों वाला पु० पुत्र का
पिता।

मुत्ता [मुत् + टाप्] पुत्री, नमस्त्वित भारत्या मुत्ताया
योक्तुमर्हसि कु० ६।७९।

मुत्ति [मु + क्तित्] सामरस का निकालना।

मुत्तिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [मुत् + इति] बच्चे वाला
या बच्चों वाला, (पु०) पिता।

मुत्तिनी [मुत्तिन् + ङीप्] माता तेनाम्बा यदि मुत्तिनी
स्याद्वद वन्द्या कीदृशी भवति—मुत्ता०।

मुत्तु (वि०) अच्छी आवाज वाला।

मुत्ता [मु + क्यप् टाप् तुक्] 1 सामरस निकालना, या
नैगर करना 2 यज्ञीय आहुति 3 प्रसव।

मुत्तामन् (पु०) [मुत् + मन्ते मु + भू + मन्ति पु००]
इन्द्र का नाम।

मुत्तम् (पु०) [मु + क्तित्, तुक्] 1 सोमरस को उपहार
में देन वाला या पीने वाला 2 वह ब्रह्मचारी जिसने
(यज्ञ के आरम्भ में या पूर्वाहुति पर) आचमन और
भार्येन का अनुष्ठान कर लिया है।

मुत्ति (अव्य०) [मुत्तु दोष्यति मु + दिव् + हि] चान्द्र
भास के शुक्लपक्ष में तु० अर्ध।

मुत्तन्वाचावः (पु०) पतितवैश्य का मवर्णा स्त्री में उत्पन्न
पुत्र—तु० मनु० १०।२३।

मुत्ता [मुत्तु पीयते पीयते घे (वा) + क + टाप्] 1 इवो
का पेय, पीयूष अमृत निपीय घम्य भित्तिरक्षिण
कषा तषादियन्ते न दृष्टा मुत्तामपि नै० १।१
2 कुलों का रस या मधु 3 रस 4 जल 5 गया का
नाम 6 सफेदी, पलस्त्र, चूना—सैन्धासमिरेष्वेव
मुत्तामितेन प्राकारेण पण्डिता—का०, रघु० १६।१८
7 ईट 8 बिजली 9 सेहूड़ा। सम० अंशु 1 चाँद
2 कपूर, रत्नम् माती अज्ज, आकार, आचारः
बाध, जीविन् (पु०) पलस्त्र करने वाला, ईट की
बिनाई करने वाला राज इव अमृत के समान

नग्नद्रव्य, अधालित (वि०) पलस्त्र किया हुआ,
सफेदी किया हुआ, निधि 1 चाँद कपूर मखमल
चूने लगायुता मलान भित्तिः (स्त्री०) 1 पलस्त्र
को हुई दीवार 2 ईटों की दीवार 3 पाँचवाँ मुहूर्त
या दापहरावद—भुक् (पु०) मुर, देव भूतिः 1 चाँद
2 तज आहुति—अव्यम् ईट या पत्थरों का बना
मकान 2 राजकीय माल, कर्ष अमृतवर्षा,—अविन्
(पु०) बढ़ा या विशेषण, वासः 1 चाँद 2 कपूर,
बत्ता एक प्रकार की ककड़ी,—सित (वि०) 1 चूने
जैसा सफेद 2 अमृत जैसा उज्ज्वल 3 अमृत में भरा
हुआ जगतामय द्रव्य हरिकान्त मुत्तामित कि०
१५।१५, (यहाँ पर इस शब्द का प्रथम और द्वितीय
अर्थ भी पड़ता है), भूतिः 1 चाँद 2 यज्ञ 3 कमल
स्वामिन् (वि०) अमृतप्रय, अमृत बहाने वाला
—भर्तु० २।६ अवा नाम्निज्ज्ञा, कामन तालु का
लटकना हुआ मांसल भाव हरः पदः का विशेषण,
दे० गरुड।

मुत्ति (पु०, स्त्री०) [मु + वा + क्तित्] कुल्हाड़ा।

मुत्तार [मुत्तु नामस्य—पा० ब०, लस्य र] 1 कुनिया
की औरी 2 साँप का बच्चा 3 बिबिया, पोरिया।

मुत्तालो (स्त्री) र. [मुत्ती नासी (सी) र्त् अक्षरस्य यस्य
प्रा० ब०] इन्द्र का विशेषण।

मुत्त (पु०) एक राक्षस उत्तुद का भाई, यह दोन
भाई निकुम्भ राक्षस के पुत्र थे (उन्हें बढ़ा में एक
वर मिला था—कि वे जब तक स्वयं अपना वध न
करें मृत्यु को उपात नहीं होंगे। इस वरदान के
कारण वे बड़ा जगत्कार करने लगे। अन्त में इन्द्र
को निलोत्तमा नाम की जामरा भेजनी पड़ी जिसके
लिए सगडा करने हुए दोनों ने एक दूसरे को मार
डाला)।

मुत्तरी (वि०) (स्त्री०—री) [मुत् + री] 1 प्रिय
मनोज मनोहर, आकर्षक 2 यक्षा, र. कामदेव
का नाम, री मनोरम स्त्री, एका भार्या मुत्तरी वा
दरी वा—भर्तु० २।११५ बिष्वाक्षरमुत्तरीनाम् कु०
१।३।

मुत्ता (भू० क० ह०) [स्वप् + क्त] 1 लाया हुआ, सोता
हुआ निद्रावस्त न हि मुत्तस्य मिहस्य प्रविशन्ति
मुत्ते नृणा हि० प्र० २६ 2 लकड़ा भारी हुआ,
स्नग्धिन मुत्त, बेशा १० स्वप्, —स्वप् निद्रा,
गहरी निद्रा। मम० अवः 1 सोना हुआ व्यक्त
2 मध्यरात्रि जागृत्य स्वप्न, स्वप् (वि०) अर्धनि-
दरन्, लकड़ा भारी हुआ।

मुत्ति (स्त्री०) [स्वप् + क्तित्] 1 निद्रा मुत्ती, ऊब
2 बेहोशी लकड़ा स्नग्ध, जाह्नव 3 बिबिस्त
भरोमा।

प्रकार—का, कार, कृत् (५०) सुना, गमितम्
गमित में हिलाव लगाने की एक विशेष रीति,
—गुप्त (वि०) सोने में भरा-पूरा उदा० सुवर्ण-
पुष्पिता पूर्वा विधिन्मिति यो जना । सुवर्ण कृत-
विशेष वस्त्र आनाति सेविनुष वच० ११४५, मुष्ट
(वि०) सोना बड़ा हुआ, सोने का मुक्कमा बड़ा
हुआ, शालिकम् लज्जित पदार्थ विशेष, सोनामासी
—सूची पीसी जूही, —कप्यक (वि०) सोने और
चांदी से भरपूर, ऐतम् (५०) शिव का विशेषण
वर्णा हल्दी, सिद्धा त्रिमने प्राहु म मोना प्राज
कर लिया है, स्तेवम् सोने का चोरो (पौष महापातक
में से एक) ।

सुवर्णकम् [सुवर्ण + कम्] १ पीतल कासा २ मीसा ।
सुवर्णकम् (वि०) [सुवर्ण + कम्] १ मुनहरा २ मुनहर
रंग का, मुनहर, मनोहर ।

सुवर्ण (वि०) [सुवर्ण मम सर्वं यस्मात् प्रा० व०
अवत प्रिय या सुवर्ण बहुत मुनकर या परम
सौन्दर्य अत्यधिक आभा या कान्ति सुवर्णमुम
बालासुवर्ण पीत० ३ सुवर्णवर्ण परीक्षण निमित्त
पथमवाजि मन्मथम् न० २३७ भाषि० १।
२६, २१२२ ।

सुवर्ण [सु + सु + अ + इष] १ एक प्रकार की लौकी
२ बाला बीर ३ जीरा ।

सुवर्ण (५०) शिव का विशेषण ।

सुवर्ण (स्त्री०) [सु + इ + न् + प्रा० गाय १] छिद्र
सूराज, सु० सुवि ।

सुवर्ण (बी) म (वि०) [सु + अ + क + मप्रसारण
पुन०] १ पीतल, उडा २ मुनकर स्थिक म
१ पीतलता २ एक प्रकार का सौण ३ वन्दकान्त
मणि ।

सुवर्ण (वि०) [सु + किर + पुन० + इत्य स] १ छिद्रो
में पूर्ण, कोषला सरभ २ उच्चरण में मन्त्र रण
१ छिद्र, रण सूराज २ कोई भी बाजा जो दवा
में बजे ।

सुवर्ण (स्त्री०) [सु + स्व + क्तिन्] १ गहरी या
प्रगाढ़ निहा, प्रगाढ़ निहा २ भारी बेहोशी आदिभक्त
अज्ञान अविद्यादिभक्त हि बीजगणितरव्यक्तशब्द
निर्वन्ना परमेष्ठिन्याया मायामयी महासुषुप्तिर्पस्या
स्वकप्रतिबोधरहिता सोने समारिणी जीवा—बहुभूत
पर शारी० भाष्य ११४३ ।

सुवर्ण [सु + स्ना + क] सूय की प्रधान किण्वों में से
एक, स्ना शरीर की एक विशेष नाड़ी जो इडा
तथा पित्ता नाम की बाहिकाओं के मध्य में
स्थित है ।

मुष्ट (अव्य०) [मु + म्वा + कृ] १ अणु अणुना ने

माघ मुन्दराने ने २ अत्यंत, बहुत ज्यादा मुष्ट
घोमने आर्धपुत्र एतेन विमयमाहात्म्येन उत्तर० १
३ सचमुच ठीक,—शब्द मुष्ट प्रयुक्त—सर्व०,
अथवा मुष्ट अतिरूप्यते ।

मुष्टम् [सु + म्, मुक्] रस्सी, डोरी, रज्जु ।

मुष्टा (५०, व० व०) एक राष्ट्र का नाम—आरमा
मरजित मुष्टीर्लमाधिय बेंतलीम्—रघु० ४१३५ ।

सु । (अदा० दिवा० आ०—मृते, मृयते, मृत) उत्पन्न करना,
पैदा करना अन्न देना (आल० से भी) अन्न का
नाम्नपुष्पयम् कु० ११५० कीमि सुते दुष्कृत
या हिनमि उत्तर० ५१११, प्र —, उत्पन्न करना
पैदा करना जन्म देना ।

॥ (पुन० पर० मुचि) १ उत्तेजित करना उकसाना
प्रेरित करना २ (ऋण का) परिखाष करना ।

सु । (वि०) 'सु - विषय' (ममाम के अन्त में प्रयुक्त)
उत्पन्न करने वाला पैदा करने वाला फल देने वाला
(स्त्री०) १ जन्म २ मना ।

सुक्त [सु + कृ] १ बाण २ हवा वायु ३ कमल ।

सुकर [सु + करन् क्तिन्] १ बगार, सुकर—दे० सुकर
२ एक प्रकार का हरिण ३ कुम्हार - री १ सुजरी
२ एक प्रकार की काई, गेंदाबा ।

सुक्क [सुक्त + मन्, सुक्क नेट्] १ बारीक, महीन,
आर्णविक—जालतरन्मयुषी यन् सूक्ष्म इत्यने रज
२ बोहा छोटो—इवमुपहितसूक्ष्ममनित्वा मन्मदेसे
श० १११/१० १८१४९ ३ बारीक, पतला,
कोमल, बड़िया ४ उत्तम ५ तेज मीक्षण, बेची
६ कलाभिज्ञ, चा-बाज, सुर्न प्रवीण ७ पचाय, पचा-
रथ्य त्रिक्क मही ठीक—स्व १ अणु २ केतक
का रोषा ३ शिव का विशेषण स्वयं १ सर्वव्यापक
सूक्ष्म रज परमात्मा २ बारीकी ३ गन्धार्ति द्वारा
प्राप्त नैन प्रकार की शक्तियों में से एक सु० माधव
४ कलाभिज्ञता प्रवीणता ५ आत्मज्ञा जी घोषा
६ बारीक धागा ७ एक अलंकार का नाम त्रिमकी
परिभाषा परम्प ने इस प्रकार दी है कुनोपि
लज्जित सूक्ष्मोपयोग्योऽन्यस्मै प्रकाशयते । ब्रह्मण ब्रह्म-
ह्व तन्मूक्ष्म परिमलने ॥ काव्य० १० । सप्त०

एषा छोटो इलायको तन्मूक्ष्म पेष्ये तन्मूक्ष्म
१ पीपल, पीपली २ एक प्रकार का घास—बल्लित
सूक्ष्मवृष्टि होने का मन्त्र, तीक्ष्णता अपवृष्टि बुद्धि-
मानी—बल्लित, बुद्धि (वि०) १ तेज सुजर वाला
इनें जैसी वृष्टि वाला २ बारीक विवेचनकर्ता
३ तीक्ष्ण, तेज मन वाला—बाह (मपु०) लकड़ी का
पतला तन्मा फलक,—बहु, शरीरम् लिग शरीर
जो सूक्ष्म पक्ष महाभूतों में एक है पक्ष १ धनिया
२ एक प्रकार का जंगली जीव ३ एक राणा का

माल गन्ना 4. बबूल का पेड़ 5 एक प्रकार की सरसो, - कर्णों एक प्रकार की तुलसी, - विष्णुकी बनपीपली - बुद्धि (वि०) तेज बुद्धि वाला, प्रखर, बुद्धिमान, प्रतिभाशाली, (स्त्री०-बुद्धि) तेज बुद्धि, सूक्ष्म प्रतिभा, मानसिक प्रयत्नता, बलिकम्, का मच्छर, बास, मानस्य मयस्य माय, सही से गणना (वि०) स्थूल-मान - जिनका अर्थ है-बुली माय, मोटी माय) - अक्षरों बारीक बजरी, रेत, बालुका, - शास्त्रि: एक प्रकार का बारीक बाबल, बद्धचरण: एक प्रकार की जू, जमजू ।

सूच (पु०) उ० सूचयति-ते, सूचित) 1 बीघना 2 निवेश करना, इगित करना, बतलाना, प्रकट करना, साबित करना - स्वा सूचयिष्यति तु मात्यसमु-द्रबोध्य (गुण) मूच्छ ० १३५, मेघ ० २१, श० ११४ 3 भेद खोलना, प्रकट करना, मञ्जाफोड़ करना - स जातु सेव्यमानोऽपि गुप्तद्वारो न सूच्यते रघु० १७५ ४ हावभाव व्यक्त करना, अभिनय करना, इशारों से सूचित करना वामाक्षिस्थन्वन सूचयति, रश्मेश सूचयति-आदि 5 पता लगाना, गुप्त भेद जानना, निश्चय करना । बलि, बिल्लाना, सकेत करना अनन्यत नल प्राप्त कर्मचेष्टासि सूचित-महा०, प्र- - सज्, सकेत करना, सूचित करना मयोनो हि विभोगस्य न सूचयति समवत् सुमा० ।

सूचः [सूच + अच्] कुशा का नुकीला अक्षुर या पता ।

सूचक (वि०) (स्त्री०-चिका) [सूच + क्तृ] 1 सकेत परक, सकेत करने वाला, सिद्ध करने वाला, बिल्लाने वाला 2 प्रकट करने वाला, सूचित करने वाला, - कः 1 वेषक 2 सूई, छिद्र करने या चीने के लिए कोई उपकरण 3 सूचना देने वाला, कहानी बतलाने वाला, बतनाम करने वाला, भेदिया 4 वर्णन करने वाला, पढ़ाने वाला, सिखाने वाला 5 किसी मण्डली का प्रबन्धक या प्रधान अभिनेता 6 बुद्ध 7 सिद्ध 8 दृष्ट, बदमाश 9 राक्षस, पिशाच 10 कुत्ता 11 कौवा 12 बिलाव 13. एक प्रकार का महीन बाबल । सम० बाण्डक्य किसी सूचना देने वाले द्वारा दी गई सूचना ।

सूचनम्, -ना [सूच + भावे ल्युट्] 1 बीघना या छिद्र करने की क्रिया, श्रुगल्य करना, छेदना 2 इशारे से बताना, सकेत करना, सूचित करना 3 विषय सूचित करना, भेद खोलना, कलक लगाना, बदनाम करना 4 हाव-भाव प्रकट करना, उचित चेष्टाओं या चिह्नों से सकेत करना 5 इशारा करना, इगित 6 सूचना 7 पढ़ाना, बिल्लाना, वर्णन करना 8 गुप्त भेद जानना, रहस्य का पता लगाना, देलना निश्चय करना 9 दृष्टना ४:मागी ।

सूच [सूच + अ + टाप्] 1 बीघना 2 हावभाव 3 भेद जानना, देलना, दृष्टि ।

सूचि, - ची (स्त्री) [सूच + इत् वा कीट्] 1. बीघना, छेद करना 2 सूई 3. तेज नोक, या नुकीली पत्ती (कुशा आदि की) अभिनयकुसुमाद्या परिजात मे चरचम्-श० १, इसी प्रकार 'मूल कुसुमसूचिदे-श० ४१४ 4 तेज नोक या किसी वस्तु का सिरा-क कर प्रसारयत् पद्मगरलसूचये कु० ५५३ 5. कलिका की नोक 6 एक प्रकार का सैनिकम्यूह, स्तम्भ या पकित - सध्व्यूहेन तन्मात्रं यायात् शकटेन वा । बराहमक-राम्या वा सूच्या वा गृहणेन वा यन् ० ७१८७ 7 समलवक के पाखों से निर्मित त्रिकोण 8 संकु, स्तूप 9 अणुचेष्टाओं से सकेत करना, सकेतों द्वारा बतलाना, हावभाव 10 नृत्यविशेष 11 नाटकीय कर्म 12 विद्यानृत्तमणिका विषयसूची, 13 पद्धतिस्त, विवरणिका 14. (ज्याति० में) ग्रहण की गणना के लिए सूची का गोला । तय० अण (वि०) सूई की भाँति नोक वाला, सूई के समान तेज नाक रखने वाला, पेना किया हुआ, (अण) सूई की नोक, -आस्थः ब्रूहा, कटाक्ष्वाय्य दे० 'न्याय' के नीचे, आतः स्तूप की सुवाई, संकु, चक्रम् अनुक्रमणिका, विषयसूची (-कः) एक प्रकार का झाक, सितारन कुम्भः केतक मूल भिक्ष (वि०) कुली के किनारों का किलना - गण्डुष्ठाद्योपवनवृत्तय केतकं सूचिभिर्भे मेघ० २८, मेघ (वि०) 1 जो सूई के द्वारा बीघा वा सके 2 मोटा, सघन, घोर, गाढ़ा, बिल्कुल, -बड़ाको के नर-पतिपथे सूचिर्भेस्तमोभि 3 स्पष्टभेद, सहजसाध, सूच (वि०) 1 सूई जैसे मूल वाला, नुकीली चोप वाला 2 नुकीला, (-ञः) 1 पक्षी 2 सफ़ेद कुशा 3 हाथों की विशेष स्थिति (-अञ्) हीरा, - रौप्य (पु०) सूजर, बबल (वि०) सूई जैसे मूल वाला, नुकीली चोप वाला, (-नः) 1. हाँस, मच्छर 2 नेबला - शास्त्रि: एक प्रकार का बारीक बाबल ।

सूचिक. [सूचि + इन्] वही ।

सूचिका [सूचि + क + टाप्] 1 सूई 2 हाथी की सूट । सम० -चरः हाथी, - सूच (वि०) नुकीले मूह वाला, नुकीले मिर वाला, (-अञ्) खोस, तीपरी, कल ।

सूचित (भू० क० कृ०) [सूच + क्तृ] 1 बीघा हुआ, सूत्राल किया हुआ, छिद्रित 2 इशारे से बताया हुआ, दिखाया हुआ, सूचना दिया हुआ, सकेतित, इगित किया हुआ 3 बतलाया गया या हावभावों से सकेतित 4 समा-चार दिया गया, उक्त, प्रकट किया गया 5 निश्चय किया गया बात ।

सूचिन् (वि०) (स्त्री० ची) [सूच + णिजि] 1 मेघन वाला, छिद्र करने वाला 2 इशारा करने वाला ।

पुष्पा देने वाला, संकेत करने वाला 3. विद्वत् प्रसिद्ध करने वाला 4. रहस्य का पता लगाने वाला (पुं०)
देखिए, पुष्पा देने वाला ।

पुष्पिके [पुष्प+क] 1. झई 2. रात ।

पुष्पी दे० 'पुष्प' ।

पुष्प (वि०) [पुष्प+पु] प्रसिद्ध किसे जाने योग्य, वरादा जाने योग्य ।

पुष् (अन्) अनुकरणात्मक ध्वनि (बैते शरटि का आवाज) ।

पुष् (पुं० क० ङ०) [पु+पु] 1. जन्मा हुआ, उत्पन्न, जन्म विधा हुआ, पैदा किया हुआ 2. प्रेरित, उन्मीलन, -कः रचनात् कारयि—पुष्त चोदवाधान् पुष्पाजय-सर्वेभ्यः तावदात्मानं पुनीयते—अ० १ 2. शास्त्रप्रवर्ण की स्त्री में अथिब द्वारा उत्पन्न पुष् (इसका कार्य रथ हाथने का होता है)।—अथिवाधिराज्यायां पुतो भवति काचित्—अनु० १०१११, पुतो वां पुषुपुषो वा वो वा की वा भवाभ्यहृत्—वेची० २१३३ 3. बंदीजन 4 रव-कार 5. सुर्ष 6. ज्ञात के एक धिष्ण का नाम तः—अनु० पा० । इय०—अन्तः कर्ष का विशेषण, —रान् (पुं०) पा० ।

पुष्कम् [पु+कम्] 1. कम, पैदावज—अनु० ४११२ 2. प्रसव (वा गर्भाशय) के कारण उत्पन्न अर्थात् (जन्माजय)।—कः—अनु० पा० ।

पुष्का [पु+कम्+दा] उक्तः प्रकृता, वह स्त्री जिसने हाल ही में बच्चे को जन्म दिया हो, जन्मा,—अनु० ११८९ ।

पुष्ता [पु+दा] जन्मा स्त्री ।

पुष्तिः (स्त्री०) [पु+पुति] 1. जन्म, पैदावज, प्रसव, जन्म, जन्मा पैदा करना 2. उत्पन्न, प्रजा 3. जोत, प्रकरोत, आधिकारण तथा सुतिरसुतिरपदान्—कि० २१५१ 4. वह स्थान जहाँ जोरस निकाला जाता है । तन०—अर्थात् परिवार में बच्चे के जन्म के कारण अस्थिरता (जो इस विषय तक रहती है)।—अनु० जन्मा घर, प्रसुति-मृदु—अन्तः (स्त्री-मातः जी) प्रसव का जहाना, गर्भाधान के पश्चात् बच्चा जहाना ।

पुष्पिका [पु+कम्+दा, इत्यम्] वह स्त्री जिसने हाल ही में जन्मा हुआ हो, जन्मा । तन०—अन्तरम्,—अनु०—अन्तः—अन्तः जन्माजन्मा, होरी,—रोग प्रसव के पश्चात् होने वाला रोग, प्रसवजन रोग,—अन्तः प्रसव के पश्चात् छटे दिन पुत्री जाने वाली देवी शिवेय का नाम ।

पुष्पारम् [पु+पु+पु+कम्] गरिमा का लीजना वा प्रमाण ।

पुष्का [पु+पु+दा, पु] दे० 'पुष्पा' ।

पुष् (पु०) उन्- पुनवति-दे, प्रसिद्ध 1. क्षयना, क्षयना नामा हाकना, नखी करना 2. पुन के रूप में वा लक्ष्य के रचना करना—तथा च पुष्पते हि जयवता पिबुजेन, वैधिमिरपि इदमपि भवेत्क्षयनपुष्पम्, आदि 3. योजना बनाना, अभिव्यक्त करना, ठीक पड़ति में रचना—तन्मिपुंनं यथा निवृष्टावैदुतीकः पुन-वितम्बः—भा० १ 4. स्थित करना, ठीका करना ।

पुष्पम् [पु+पु] 1. धावा, होरी, रेखा, रस्ती—पुष्पना-जानुपज्ञेय पुष्प धिरति धावते—पुष्पा०, यन्त्री वज्र-सन्तुलीयं पुष्पस्त्रेवास्ति ते मतिः—रनु० ११४ 2. रेखा, तन्तु—पुष्पवनां कर्षति अथिवाशास्त्रम् पुष्पा-कारिण राजह्वी—विष्णु० १११९, कु० ११४०, ४९ 3. तार 4. धावों की बाँटी 5. यज्ञोपवीत, जनेऊ (जो पहले तीन वर्ष धारण करते हैं)।—विद्यापुष्पान् शास्त्रम्ः तर्क० 6. पुस्तिका का तार या होरी 7. लक्षित विधि, नुर पुन 8. परिभाषा परक लक्षित भाष्य—परिभाषा—स्वत्पात्ररससिम्भं तारवक्षिष्यती मुक्षम् । अस्तोममनवच च पुनं पुषविदो विदु ॥

9. पुष्पजन्म—उदा० नामकजन्म पुष्प, आपस्तम्बपुष्प 10. विधि, वर्ण-पुष्प, भावति (विधि में) । तन०—

—अन्तः (वि०) होरी वा धावे के स्वाभाव वाला, (पुं०) धावा,—अन्तः 1. धावा, (जो कन्ठ में पहुँची जावे, पा०,—अन्तः 1. शास्त्र 2. कन्ठर, पेंदुकी

3. लज्ज पक्षी,—अन्तः (नपुं०) बड़ई का काम—आरः,—अनु० (पुं०) पुन रखने वाला, कोकः,—कोकः इयं पुनद्वी,—अथिक्का एक प्रकार की

वष्टिका जिसका उपयोग मुकाहे धावे खेदने में करते हैं,—अथिक्क वैदिक विशाखन्दिर जिनके द्वारा अनेक पुनप्रवों का निर्माण हुआ,—अथिक्क (वि०) कम धावों वाला वह कपडा जिसमें बोड़े धावे लगे हों, लीना

—अथ पटः पुनरिहतां यतः—अनु० २१९,—अरः,—आरः 1. 'होरी पकड़ने वाला' रथवच का प्रबंधक, वह प्रधान नट जो धावों को एकत्र कर उन्हें प्रक्षिप्त करता है, तथा जो प्रस्तावना में प्रमुख कार्य करता है—परिभाषा यह है—नादवच वदनुष्ठान

तत्पुंनं स्वात् सवीजकम् । रङ्गवैकल्यपुष्पाङ्गं पुनवार इति स्मृत ॥ 2. बड़ई, हस्तकार 3. पुनकार 4. इय का विशेषण,—विद्वत्ः पुनसंख्यी शिपिटक का प्रथम बंध,—अन्तः कपाल का पीचा,—अन्तः (पुं०) धावों

—अनु० (पुं०) पुनचार,—अन्तः 1. 'धावा वर्ण' डरकी 2. मुकाहे की बड़ई,—कीना एक प्रकार की बाधुरी

—अन्तः पुनहरी की डरकी ।

पुष्पम् [पु+पु] 1. मिला कर, नखी करना, कम में रचना, कम बड़ करना 2. पुष्पों के अनुसार कम-पर्वक रचना ।

सुखला [सु+ला+क+टाप्] तक्षला, तक्षली ।

सुखामन्=सुखामन्—दे०

सुखिका [सु+खुल्+टाप्, इत्थम्] खेवई, खीमी ।

सुखित (सू० क० क०) [सु+ख+त] 1. तखी किया हुआ, कम्बबद्ध, प्रणालीबद्ध, पद्धतिकृत 2. सुखविहित, सुखों के रूप में व्यवहित ।

सुखिन् (वि०) (स्त्री०—की) [सु+ख+इनि] 1. बालों वाला 2. निखनों वाला,—(पु०) कौवा ।

सुख् [(स्वा० आ० सूखते) 1. प्रहार करना, चोट पहुँचाना, बायल करना, मार डालना, नष्ट करना 2. डालना, उडेलना 3. जमा करना 4. प्रक्षेपण, फेंक देना ।

ii (बुरा० उभ० सूखति—ते) 1. उकसाना, प्रवृत्ति करना, उत्तेजित करना, उमाड़ना, प्राण कुंकना 2. बाधात करना, चोट पहुँचाना, मार डालना 3. खाना पकाना, रोंचना, सिझाना, तैयार करना 4. उडेलना डालना 5. हामी भरना, सहमत होना, प्रतिज्ञा करना 6. डालना, फेंकना, नि—, (निबुखयति—ते) मारना ।

सुखः [सु+खन्, खप्, वा] 1. नष्ट करना, विनाश, जनसंहार 2. उडेलना, खाना 3. कुआँ, झरना 4. रतोइया, 5. चटनी, रसा, झोल 6. कोई भी वस्तु सिझाती हुई, तैयार होना 7. हली हुई घटर 8. कीचड़, इलख 9. पाप, दोष 10. कोष्ठ मूल । सम०—कर्मन् रतोइये का काम, —खाला रतोई ।

सुखम् (वि०) (स्त्री०—की) [सु+ख्युट्] 1. नास करने वाला, बच करने वाला, विनाशक—दानवमुहन, करिषणसूदन आदि 2. प्यारा, प्रियतम,—बम् 1. नष्ट करना, विनाश, जनसंहार 2. हामी भरना, प्रतिज्ञा करना 3. डाल देना, फेंक देना ।

सुख (सू० क० क०) [सु+ख, क्तव्य नः] 1. जन्मा हुआ, उत्पन्न 2. फूला हुआ, मुकुलित, खूला हुआ, कलिकायुक्त 3. रिक्त, खाली (बचवनः इत अर्थ में धुन या सुख समझ कर),—बम् 1. जन्म लेना, प्रसव होना 2. कली, मंजरी 3. फूल ।

सुखी (स्त्री०) सुखर स्त्री ।

सुखा [सुखः नः वीर्यवच] 1. कसाई घर, कुचखाना, —महागति सुखा परिचर इव मूत्र आमिषलीलुपो वीर्यवच—मा० २ 2. मांस की बिम्बी 3. चोट पहुँचाना, मार डालना, नष्ट करना 4. मुकुलान्, काकल 5. करकरी, तमड़ी 6. कलमलियों की सुख, हापू 7. प्रकाश की किरण 8. गद्दी 9. पुत्री,—माः (स्त्री०, व० व०) घर में होने वाली पाँच वस्तु जिनसे जीव तिला होने की संभावना होती है, वे० 'जुना' वा 'पंच-पुना' के अन्वर्गन ।

सुखिन् (पु०) [सुखा+इनि] 1. कसाई, मांस-विक्रेता 2. शिकारी ।

सुख् [सु+ख्] 1. पुत्र—विपुलवैकः सुखरवन्—का० 2. बाल, बच्चा 3. पोता (वीहिम्) 4. छोटा भाई 5. सुयं 6. मदार का पीवा ।

सुख् (स्त्री०) [सु+ख्+ऊञ्] पुत्री ।

सुखत् (वि०) [सु+ख्+क- उपसर्गस्य वीर्यः] 2. सत्य और सुखद, कृपालु और निष्कपट—तन्मूलतमिरस्य सूरयः पुष्पमयसुखमध्यगीयत मि० १४।२१, रघु० १।१३ 2. कृपाल, सुशील, सख्यन, शिष्ट—तां बान्धवैर्मातरं मङ्गलार्थां वेत्तुं वीराः सुखतां बाधमाहुः—उत्तर० ५।३१, तुगाणि सुखिष्यन्तं वाक् चतुर्वी च सुखता । एतास्थिपि सतां वेहै नोष्किष्ठान्ते कदाचन—मनु० ३।११, रघु० ६।२९ 3. सुख, लीलायसुखक 4. वियतव, प्यारा,—सम् 1. सत्य तथा रोचक वाचन 2. कृपापूर्ण एवं सुखकर प्रवचन, शिष्ट भाषा—रघु० ८।२३ 3. मांगलिकता ।

सुखः [सुखेन पीयते—मु+पा+बञ्जर्ष क, पुषी०] १. पुष रसा—न स ज्ञानाति भास्वार्थं दवी सुपरसागिष—सुभा०, मनु० ३।२२९ 2. चटनी, मिर्च, मसाला 3. रतोइया 4. कड़ाही, जलन 5. बाण । सम०—काः रतोइया, सुखन्,—सुखम् हीन ।

सुखः [सु+मक्] 1. पानी 2. पुत्र 3. जाकाम, वचन ।

सुख् (वि०) आ० सूखते 1. चोट पहुँचाना, मार डालना 2. बूढ़ करना या बूढ़ होना ।

सुखे (वि०) [सु+ख, क्तव्य नः] चोट पहुँचाया हुआ, क्षतिग्रस्त ।

सुखः [सुखिन् प्रेरयति कर्मणि लोकावबोधेन—सु+कम्] 1. सुयं 2. मदार का पीवा 3. लोभ 4. बुद्धिमान् या विद्वान् पुत्रक 5. मायक, राजा । सम०—बखुम् (वि०) सुयं की भाँति चमकीला, सुतः कनि का विशेषण,—सुतः सुयं का पारथि, अर्थात् बचन ।

सुखः [सु+ख्युट्] सुखन, उमीकद ।

सुखत् (वि०) [सु+ख्+क, पुषी० वीर्यः] 1. कृपाल, बखाल, कौमन 2. भास्व, वीर ।

सुखिः [सु+खिन्] 1. सुयं 2. विद्वान्, वा बुद्धिमान् पुत्रक, ऋषि—अथवा इत्याद्यादरे संवेदितसुखसुखिभिः—रघु० १।४, मि० १४।२१ 3. पुरोहित 4. पुत्रा करने वाला, जैन मत के आचार्यों की विद्या तथा सम्मान-सुखक पत्र, उवा०—बलिमाचसुरि 6. सुख का नाम ।

सुखिन् (वि०) (स्त्री०—की) [सु+खिनि] बुद्धिमान्, विद्वान् (पु०) बुद्धिमान् वा विद्वान् पुत्रक, पतिव्रत ।

सुखी [सुखि+कीप्] १. सुयं की पत्नी का नाम 2. कुन्ती का नाम ।

सुखं (स्वा० वि०) पर०—सुखं, सुखं (वि०) 1. बन्धन

करना, भावर करना 2. अनादर करना, अपमान करना, तिरस्कार करना ।

सूर्य (सूर्य) चम् [सूर्य (सूर्य)+स्युट्] अनादर, अपमान ।

सूर्यः [सूर्य + घञ्] माय, उदय ।

सूर्यं दे० सूर्यं ।

सूर्यः—भी (स्त्री०) । —सूर्य, पृथ० शस्य सः, पक्षे जीव] 1 लोहे या अन्य किसी धातु की बनी मृत्ति —मनु० ११।३ 2 घर का स्वामि 3 आमा, कान्ति 4 उजाला ।

सूर्यः [सरति आकाशे सूर्यं, यद्वा सुवति कर्मणि लोभे प्रत्ययि- म् + क्यप्, नि०] 1 सूरज सूर्य तपस्या बरण्या दृष्टेः । अत्येत लोकस्य कथं तमिषा -रघु० ५।१३, (पुष्पा) के अनुसार सूर्य की कथय और अदिति का पुत्र माना जाता है तु० श० ७ उसका वर्णन किया जाता है कि वह अपने मात घोड़ी के रथ में बैठ कर घूमना है, अरुण इस रथ का सारथि है । सूर्य भगवान् रथ में बैठा हुआ सब लोगों की, तथा उनके सुभाग्य कर्मों की देखता है । मंजु (छाया या अश्विनी) उसकी प्रधान पत्नी का नाम है, इससे यम और यमुना पैदा हुए दो अश्विनीकुमारों तथा गनि का जन्म भी इसी से हुआ । गुहाओं के सूर्यबस का प्रवर्तक विवस्वान् मनु भी सूर्य का ही पुत्र था 2 सवार का पीछा 3. बारहू की मरुवा (सूर्य के बारह रूपों से व्युत्पन्न) । सम० अथायः सूर्य का छिपना मेघ० ८०, —अर्घ्यं सूर्य की देवः में उपहार प्रस्तुत करना, —अर्घ्यं (पु०) सूर्यकान्तमणि, अश्चः सूर्य का घाटा, अस्तम् सूर्य का छिपना, आस्त्य सूर्य की गरमी या चमक, धूप, —आलोकः धूप, आभूतः एक प्रकार का मृज्यमुखी फूल, हुलहुल, आहू (वि०) सूर्य के नाम पर जिसका नाम है, (हूः) मदार का भारी पीछा (हूः) ताबा, हनुमन् हनुमः (सूर्यचन्द्रमा का मिलन) अमावस्या —एक सूर्यचन्द्रमस अमर०, उत्थानम्, उदयः सूर्य का निकलना ऋह 1 सूर्य, द्वारा लाया गया, सायकाल के समय जाने वाला अतिथि—चच० १, सूर्य छिपने का समय कान्तः आतसीसीता, एक एकटिक मणि —स० २।७, कान्तः (स्त्री०) 1 सूर्य की दीप्ति 2 एक पुष्प विशेष 3. निज का फूल, —काल दिन का समय, दिन, —अनलचक्षुः योतिः सारथ में शुभाशुभ फल जानने का एक चक्र, ग्रहः 1 सूर्य 2 सूर्यग्रहण 3 राहू और केतु का विशेषण 4 चरे का पैदा, ग्रहणम् सूर्यग्रहण (चन्द्रमा की छाया पड़ने से सूर्यविज का छिप जाना पौराणिक मत से राहू या केतु द्वारा सूर्य का बाध), —चन्द्रा

(इसी प्रकार —सूर्याचक्षुःस्त्री) (पु०, वि० व०) सूर्य और चाँद, —आः तपक, बुधः 1. मृगीय के विशेषण 2 कर्म के विशेषण 3. सन्निग्रह के विशेषण 4. वम के विशेषण, —आ, तपका यमुना नदी, —तेजम् (मपु०) सूर्य की चमक या गर्मी, —नक्षत्रम् वह नक्षत्रपुत्र जिसमें सूर्य हो, —चर्यम् (मपु०) (सूर्य के गई राशि में प्रवेश या सूर्यग्रहण आदि का) पुण्यकाल, सूर्यवर्ष, —ग्रहण (वि०) सूर्य से उत्पन्न—रघु० १।७, —कवि-चक्षुः=सूर्यकालानलचक्षुः, दे० ऊ०, —अस्त (वि०) सूर्य का उपानक, (स्तः) बन्धुकवुल या गुलपुष्पहरिद्रा या इसका फूल, —अभिः सूर्यकान्तमणि, अश्चक्षुः सूर्य का बेरा, परिधेय, —यन्त्रम् 1 (सूर्योपासना में व्यवहृत) सूर्य का चित्र या प्रतिमा 2 सूर्य के चर में काम जाने वाला एक उपकरण, रश्मिः सूर्य की किरण, सूर्य-मयल या सविता, —लोकः सूर्य का लोक, ब्रह्म-राजाओं का सूर्यबस (जो अश्विनी में राज्य करने के) इच्छाकुबंश, —चर्यम् (वि०) सूर्य के समान वेष्ट-मण्डित, —चिलोकमन् ग्रहण की चार महीने का होने पर, बाहर के जाकर सूर्यदर्शन कराने का अस्त्र—तु० उपनिषद्मणम्, —सहस्रम्, सहस्रकान्तः (स्त्री०) सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश, सङ्कम् कसर, जाकान्त, —सारथिः अश्च का विशेषण—स्तुतिः (स्त्री०)—स्तोत्रम् सूर्य के प्रति की गई स्तुति, —हृदयम् सूर्य का एक स्तोत्र ।

सूर्या [सूर्य + टाप्] सूर्य की पत्नी ।

सूर्य (स्वा० पर०) सुवति फल प्रस्तुत करना, उत्पन्न करना, पैदा करना, जन्म देना ।

सूरचना [सूर + युच् + टाप्] माता ।

सूर्यवती (स्त्री०) प्रसवोन्मुखी, आसन्न प्रसवा ।

सु (स्वा० जुहो० पर० सरति, सिस्रति, —आवर्ति भी, सूत) 1 आना हिलना-भुलना, प्रगति करना मुगा-प्रदक्षिण सत्तु - बटि० १४।१४ 2 पास आना, पहुँचना—निष्पाद्य हरयः सेत प्रतीताः सत्तुर्चयम् —गम० 3 बाधा बोलना, चढ़ाई करना (तं) सप्तागमिमुख सूरः सार्द्ध इव कुम्हारम् बहा० 4 दोहना, तेज चलना, जिसका जाना सरति सहसा बाह्योर्ध्व गताप्यबला मनी मालवि० ५।११ 5. (हवा की भाँति) तेज चलना, —त वेदाद्यौ सरति सरलस्कन्धसङ्कुट्टयन्ता —मेघ० ५३ 6. बहना— प्रेर० (सारयति ते) 1 चलना या घूमना 2 विस्तार करना 3. चलना, (अभुलियो से) लाने लाने सूना —तन्मीमात्रो नयनसिन्धो सारयित्वा कश्चित् —मेघ० ८६ 4 पीछे बकेलना, हटाना सारयन्ती कच्छाभीया कठिनविजनामेकैवैवी करेण मेघ० ९२, इच्छा० (सितीर्यति) जाने की इच्छा करना, अनु—, 1. अनु-

यमन करना (सभी वर्षों में), पीछे जाना, ध्यान देना, पैरवी करना 2. पहुँचना, (अपने को) पहुँचाना—पूर्व-
 हिष्ट्यामनुसर पुरीम् मेघ० ३०, तेनोदीची विसमनु-
 सरः—५७ 3 अनुशीलन करना, पार करना (घेर०)
 1. बचनी होना बामुनसारयतीव माम् राम०
 2. पीछे चलना, जघ्, 1 जलन होना,
 निवृत्त होना, बापिस लेना यवसरति मेघः
 कारणं तत्पहर्तुम्—पंच० ११४३ 2 जोखन होना
 जलचलन होना (घेर०) मिजबाना, पहुँचाना, हटाना,
 बापिस हटाना, दूर हाँक देना जवसारय चलसार
 —काव्य० ९, मनु० ७।१४९, जमि 1 जाना,
 पहुँचना—कि० ८।४ 2 मिलने के लिए जाना या
 जाने बढ़ना (किसी नियत स्थान पर), नियत करके
 मिलना—सुन्दरीरमिससार—का० ५८, शि० १।२९
 3. आक्रमण करना, हमला करना, (घेर०) नियत
 करके मिलना, मिलने के लिए जाने बढ़ना वल्लभा-
 नमिससारविष्णुनाम्—शि० १०।२०, कि० १।३८,
 सा० ९० ११५, उब्—, (घेर०) दूर भगाना, निकाल
 देना, जघ्—, 1. पास जाना, पहुँचना,—रघु० १९।१९
 2. लचक रहना, बर्छन देना—कैलासनाथमुपसत्य निब-
 र्तमाना—विष्णु० १।३ 3 बढ़ाई करना, आक्रमण
 करना 4. बापसी लेल-बोल करना, मिष्—, 1 चले
 जाना, बाहर निकलना, बिसक जाना, निकलना
 —बानी स्वरकार्मुकनि सुते—यम०, इसी प्रकार
 —अनुषाप्तानि सुतमिवाहिते—शि० १।२५ 2 बिदा
 होना, कूच करना—मनु० १।४ 3. बहना, पसीजना,
 रिसना—यो हेमकुम्भस्तननि सताना स्कन्दस्य मातु
 पयसा रसम्—रघु० २।३६ (घेर०) हाक कर दूर
 करना, निष्कासित करना, बाहर निकाल देना, बरि-
 चारों ओर बहना—वन सरस्वती परितसार—ऐन०,
 परिहृष्टावप—महा० 2 चक्कर काटना, घूमना
 प्रवर्धितं त परितुल्य—माम०, (परिपतनि—के स्थान
 पर परितरति—पाठान्तर) शिखी प्रान्तिमहाराज्यन्म
 —मासिभ० २।१३, ब्र—, 1 बह जाना, सरना, उदय
 होना, प्रोक्षित होना—कोटिलाचा महानघ प्रसज्जस्तत्र
 वाचकम्—महा० 2 जाने जाना, जाने बढ़ना कैला-
 निमाव प्रवृत्ता मुचक्याः—रघु० १३।१२, जन्मेवज-
 प्रवृत्ते च मिषममे—दश० 3 कैलना, चारों ओर
 कैलना—कृष्णं कि साक्षात्परति विद्यो नैव नियतम्
 —काव्य० १०, प्रसरति त्वमज्ये नज्जवृद्धि जनेन
 (व्याप्ति)—अनु० १।२५ 4. कैलना, छा जाना,
 व्याप्त होना—प्रसरति परिभाषी कौश्र्यय देहाह
 —मा० १।४१, विस्वा विस्वा प्रसरति वलात्कोऽपि
 वेतोविष्कार—उत्तर० ३।३६ 5 बिछाना जाना, बिस्तार
 करना—य मे हस्ती प्रसरत—श० २ 6 (किनी)

कार्य को करने के लिए) उन्मुख होना, दृष्टुक होना,
 न मे उचितेषु करणीषु हस्तपात्र प्रसरति—श० ४
 प्रसरति मन कार्वाण्ये 7 छा जाना, बारम्ब करना
 उपक्रम करना प्रसार चोत्सव कथा० १९।८५
 8 लम्बा होना, हीर्ष होना विष्णु० १।२२ 9 मज
 वृत्त होना, प्रचल होना—प्रसुततरं सव्यम् दश०
 10 (समय) बिताना, (घेर०) 1 कैलना, बिछाना
 —अष्टि० २०।४४ 2 बिछाना, बिस्तार करना
 (हाथ बाँध) कैलना—काल सर्वजनान् प्रसारितकरे
 नृक्षति पुरावपि पच० २।२० 3 कैलना, बिछी के
 लिए बिछाना—केदार कीर्तीवृत्ति वृद्धपापने
 प्रसारितं क्यम् सिद्धा०, मनु० ५।१२९ 4 पीड़ा
 करना, (अशौं की पुतली को) कैलना 5. प्रकाशित
 करना, डिहोर पीटना, प्रचारित करना, प्रति ,
 1 बापिस जाना, जोटना 2 बाधा बोलना, बढ़
 जाना, आक्रमण करना हमला करना—दैत्य प्रवृत्तर-
 हैव मतो मत्तमिष द्विपम् हरि० (घेर०) पीछे की
 ओर बढेकना, बचल देना कमकवल्यं अस्तं अस्त
 मया प्रतिनार्यते श० ३।१३, वि , कैलना, बिस्तृत
 होना, प्रसृत होना—चकीववृद्धवृद्धवृद्धी विसृज-
 —शि० ५।८, १।१९, ३७, कि० १०।५३ (घेर०)
 1 कैलना, बिछाना 2 व्याप्त होना, सन्—1 कैलना
 2 हिलना—युक्ता 3 मिलकर जाना या उड़ना
 4 जाना, पहुँचना—पापात् संवृत्त ससारम् श्रेष्ठ्यतां
 याति सन्नु—मनु० १२।७०, (घेर०) 1 ऊपर कैलना
 2 घुमाना, चक्कर देना—जम्बवृद्धिर्बैमिष ससार-
 यति चकम्—मनु० १२।१२४।

सुकः [सु + कृत्] 1. हवा, वायु 2 बाध 3 बध
 4 कमल, कैवय ।

सुकब्ध (स्त्री०) [सु + कृत्, पुनो० मुक् न, सु + कृत्
 क० स०] सुखी ।

सुकात् [सु + कालन्] दे० 'सुवाल' ।

सुकम्, सुकपी, सुकम् (नपु०) [सु + कृत्, कर्मि,
 सुकपी, सुकम् (नपु०), सुकम्, { कर्मि वा } नृह का
 सुकपी, सुकम् (नपु०), सुकपी, { मिनारा सुकपी
 सुकम् (नपु०) } परितेहिहन्—पंच०
 १ ।

सुकः [सु + कृत्] एक प्रकार का बाध वा नेडा, विधि-
 पाल ।

सुवालः [सु + वालन्] दे० 'सुवाल' ।

सुकटा (स्त्री०) रत्नों का लपियों से बना हार, लपियों की
 जलजवाली लड़ी ।

सुखः [सुधा० पर० मृजति, मृष्ट] 1 म्बना करना,
 सेवा करना, जलना, जलज करना, जल देना सर्व

नारी मन्त्रां स विराजससुजत् प्रभुः मनु० ११२, १३, १४, १५, तन्पुनत्र स्वत एव तन्पुन सुजति —गारी २ २ पलना, रचना, प्रयोग ये जाना ३ जाने देना, डीला छोड़ना, मुक्त करना ४ उत्खनन करना, छितराना, प्रभुत करना, बिखेरना, डालना —बलाशुरुज कथन इवन्त —भट्टि० ३११७, आनन्द-दीपामिष बाण्यपुष्टि हिमवृत्ति हैमवती समर्थ—रघु० १६१४, ८१५ ५ कल्ला मेजना, उच्चारण करना, कु० २१५३ ७४७ ६ फेंकना, डाल देना ७ छोड़ना, छोड़ कर चले जाना, त्यागना, हटा देना ।
॥ (विबा० आ० सुज्यते) डीला होना, इच्छा० (सिद्धकृति) रचना करने की इच्छा करना । अति—, १ देना, धारण करना—विष्णु० १११५, रघु० ११४८ २ त्यागना, पदच्युत करना ३ उलटना ४ अनुज्ञा देना, अनुमति देना, अति, देना, प्रदान करना, अथ, १ डालना, फेंकना, बोना (बीज) बल्लेरना, अथ एव ससर्षदी नासु बीजप्रभासुजत् —मनु० ११८ २ डालना, बूर-बूर टपकाना—उत्तर० ११२३ ३ डीला छोड़ना, उच्—, १ उखेलना, उलटना, निकाल देना,—अलीकवि स्वागिबोससर्ष कु० ३१२५, सहस्रगुणमुत्सृष्टमावसे हिर रस रवि—रघु० ११८८ उखेल देना, बापित देना वा पीटाना २ (क) छोड़ कर चले जाना, छोड़ देना, परित्याग करना, —रघु० ५१५१, ६१५६, कु० २१३६, (क) एक ओर फेंकना, स्थगित करना—स बापमुत्सृज्य विवृट-मन्त्र—रघु० ३१५०, ४१५४ ३ डीला छोड़ना, स्वेच्छया भुजने देना नुरङ्गमुत्सृष्टमनगल पुन—रघु० ३१३९ ४ दागना, फेंकना, बोली मारना—भट्टि० १४१५ ५ बोना, (बीज) बल्लेरना ६ उपहार देना, प्रदान करना ७ बिछाना, बिस्तार करना ८ हटाना ९ बूर करना १० बिटाना, प्रतिबन्ध लगाना, उप, १ उखेलना, (अथ अति) प्रभुत करना २ बोलना, मिलाना, सयुक्त करना, ससक्त करना, मबड करना --मुक्त पुत्तापुष्टम् ३ व्याकुल करना, अत्याचार करना, लगाना—रोगोपमुष्टतन्पूर्वर्त्तति मुमुक्षु—रघु० ८१५४ ४ ब्रह्म लगाना, बल्लत करना, मनु० ४१३७ पात्र० ११७२ ५ पैदा करना, क्रियान्वित करना ६ मष्ट करना, मि, १ स्वतन्त्र करना, बरी करना —न स्वागिना निस्पृहोपि सुदो दास्याहिमुष्मते —मनु० ८१६१४ २ हथाने करना, सीपना, मुमुक्षु करना—नु० निस्पृह, अ, १ छोड़ना, त्यागना २ डीला छोड़ना ३ बोना, बल्लेरना ४ अतिप्रसन्न करना, चोट पहुँचाना, मि, १ त्यागना, छोड़ना, तिकाबलि देना—विमुञ्च मुञ्चरि सङ्गमसाधनम् —वाकवि० ४६३, पुनर्विनिष्कृतस्य रघु० १६१६,

आमि० ११७८ २ जाने देना, डीला छोड़ना ३ डालना, उखेलना—रघु० १३१२६ ४ मेजना, प्रेषित करना भोजन हुतो रचने विमुष्ट—रघु० ५१३९ ५ पदच्युत करना, जाने की अनुमति देना, मेजना—रघु० ८१९१, १४१९९ ६ देना—रघु० १३१६७, १८७३ ७ मेज देना, डाल देना, बिस्तार देना, फेंकना—विमुक्त हिम-गर्भैरनिमित्तमुपयुक्तः—अ० ३१२ ८ डालना, गिरने देना, प्रहार करना—विमुञ्च सुद्रुमनी कृपाणम्—उत्तर० २११० ९ उच्चारण करना—मि० १५१६२ १० उतार फेंकना, मबड-बिच्छेद करना,—सम्—, १ मिलना, मिश्रण करना, सयुक्त करना, सयुक्त करना—तन्-उपमे सरमिर्गङ्गाधुमिन्ने—रघु० ५१६९, अन्ना रस ससृजम्—मे० २ मिलना,—नौमिषिणा तदनु ससृज—रघु० १३१७३, कु० ७३७४ ३ रचना करना ।

सुविकाकारः [व० त०] सखी का चार, योग, रेह ।

सुवधाः (प० व० व०) एक राष्ट्र या जनपद का नाम ।

सुविः (स्त्री०) [सु-विक्] अकुल, हाथी को हाकने का बाकडा—मदान्यकणिना हनोपवास्ये सुवि—हि० ३। १६५ मि० ५१५, —विः १ मनु २ कम्पना ।

सुवि (स्त्री) का [सुवि+कन् (ईकन्)+टाप्] लार, चुक ।

सुतिः (स्त्री०) [सु+तिन्] १ जाना, सरकना,—मनु० ६१६३ २ रास्ता, मार्ग, पथ (आत्म० वे जी—नते सुति मार्गं जानम् बोधी मुह्यति कचचन—अथ० ८१२७ ३ चोट पहुँचाना अतिप्रसन्न करना ।

सुत्वर (वि०) (स्त्री०) री [सु+स्वरप्, तुक्] जाने वाला, सरगधील, री १ नदी, दरिया २ जाना ।

सुहरः [सु+हरक्, हुक्] सीप ।

सुहासः [सु+हास, हुक्च] १ हवा, वायु २ अग्नि ३ हरिष ४ इन्द्र का वज्र ५ सूर्यमण्डल, स्त्री० नदी, सरिता ।

सुप् (स्वा० पर० मर्षति, सृज, इच्छा० तिलम्पति) १ रेंपना, पेट के बल चलना, खाने सने सरकना २ जाना, मिलना-बुलना, अनु—, १ पस जाना, पहुँचना हितम्बस्यप्राप्तम्—भट्टि० ६१२७ २ पीछा करना भट्टि० १५१५९, अन्—, १ चले जाना, पीछे जाना, सीट पडना—तरुर्गमनेन तस्यहृदयेनाप-भर्षत—उत्तर० ४ २ सक् जाना, मन्त्र मन्त्र चलना ३ (भेदिये की भाति) छिप कर देखना—उत्तर० १ ४ अलग होना, छाड़ना उच्—, १ ऊपर को उठना २ ऊपर जाना, पहुँचना—सरिगवाहस्तदमुत्सवर्ष—रघु० ५१५९, उच, १ पहुँचना, निकट जाना वासवि० ११२२ २ हरकल करना, जाना अथ० २१२३ ३ पहुँचना, प्राप्त करना, भुजना हुसम् सुसम्... ४ आरभ करना मनु० १०११०५ ५ आक्रमण

करना, परि- 1 चारो ओर घूमना, छा जाना
2 इधर उधर घूमना, घ- 1 आगे जाना, बाहर
निकलना, बागे जाना, प्रगति करना—महि० १४
२० 2 फैलाना, प्रचारित करना, (बाल० से भी)
दक्षिण प्रसर्पता—महा०, बालक विषमिष सर्वत
प्रसृतम्—उत्तर० ११४०, वि- 1 जाना, प्रयाण
करना, अवसि करना य सुबाहुरिति रासोऽपरस्तथ
नत्र विसर्प मायया रघु० १११२, ४५२ 2 इधर
उधर उड़ना या घूमना 3 फैलाना मनोरामस्त्री
विषमिष विसर्पयविरतम् मा० ११२ 4 साथ साथ
बहना नोचे गिरना—(बाष्पीय) विमर्पन् चाराभिर्न
ठति घर्गणी अवैरकण उत्तर० ११२६ 5 लेकर
चम्पत होना, बच निकलना 6 छा जाना 7 मड़ना
घूमना 8 मित्र मित्र दिशाओ में जाना लम्—
1 हिलना-चलना मसपत्या मपदि भवा ओतसि
च्छाययामो मेघ० ५१२ 2 साथ साथ चलना बहना
—मेघ० २९।

सुपातः [सुप् + काटन्] एक प्रकार की साप।

सुपाटिका [सुपाट + ङीप् + क्त् + टाप्, ह्रस्व] पत्ती की
बोख।

सुपाटी [सुपाट + ङीप्] एक प्रकार की साप।

सुप्रः [सुप् + क्त्] चन्द्रमा।

सुम्, सुम्भ (म्भा० पर०) समंति सुम्भति) बाट पहुँचाना,
आविष्टन करना, बच बरवा।

सुम्बर (वि०) (स्त्री० स्त्री) [सु + क्म्बरच्] गमन करने
वाला, जाने वाला—ए एक प्रकार का हरिण।

सुष्ट (सू० क० ह०) [सुष्ठु + क्त्] 1 रचित उत्पादित
2 उबला हुआ, उगला हुआ 3 डीला छोडा हुआ
4 छोडा हुआ, परित्यक्त 5 हटाया गया दूर भेजा
गया 6 निश्चय किग गया निर्धारित 7 समुक्त,
मबद्ध 8 अधिक, प्रचुर अमन्य 9 अलङ्कृत है०
'सु'।

सुष्टिः (स्त्री०) [सुष्ठु + क्त्] 1 रचना कोई भी रचित
वस्तु—कि मानसी सृष्टि श० ६ या सृष्टि लक्ष्मणा
श० ११, सृष्टिगच्छे घानु—मेघ० ८० 2 संसार
की रचना 3 प्रकृति, प्राकृतिक सृष्टि 4 डीला
छोडना, उच्चार 5 प्रदान करना, भेंट 6 गुणों की
विद्यमानता 7 पदार्थ का बनाव। मय०—गर्ग (पु०)
अष्टा, रचयिता।

सु (कथा० पर०) सुजानि) बाट पहुँचाना, आविष्टन
करना, भार डालना।

सेम् (म्भा० आ०) मकते) जाना, हिलना-चलना।

सेकः [सिच् + क्त्] छिडकना, (बुलों को) पानी देना,
—एक सीकरिया करने विहित कामम्—उत्तर० ३११९,
रघु० ११५१, ८१५, १६१३०, १७१९ 2 उद्गार,

प्रसार 3 वीर्यपात 4 तर्पण, चढ़ावा। मय०—वाचम्
1 पानी छिडकने का पात्र, जल-पात्र 2 डोलची,
बोका।

सेकिचम् [सेक् + चिम्] मूली।

सेक्त् (वि०) (स्त्री०-कम्) [सिच् + क्त्] सींचने वाला
(पु०) 1 छिडकाव करने वाला 2 पति।

सेक्त्रम् [सिच् + क्त्] डोलची, सींचने का पात्र।

सेक्क (वि०) (स्त्री०-चिका) [सिच् + क्त्] सींचने
वाला, क बादल।

सेक्चनम् [सिच् + क्त्] सींचना (बुलों को) पानी देना
—बृहत्सत्ते द्वे चारयसि मे श० १२ आब छिडकाव
3 मन्द मन्द रिसना टपकना 4 डोलची। मय०
छट सींचने का बर्तन।

सेचनी [सेचन + ङीप्] डोलची।

सेट्ट [सिच् + उन्] 1 तरबूज 2 एक प्रकार की बगड़ी।

सेतिका (स्त्री०) अयोध्या का नाम।

सेतु [सि + तुन्] 1. मिट्टी का टीला, मंड किनारा,
ऊँचा मार्ग, बाघ—नलिनी अतसेतुबन्धनो जलसंधान
इवासि विद्वत् कु० ४१९, रघु० १६१२ पुल
—वैदेहि पद्मामलयाद्विभक्त मत्सेतुना फेनिलमभू-
राशिम् रघु० १३१२, सेन्यैर्बद्धिदसेतुभि ४१३८
१२७०, कु० ७५२ ३ सीमाचिह्न, मंड मनु० ८।
२४५ ४ सकुचिन मार्ग, दर्रा मकीर्ण गिरिपथ ५ हृद
सीमा ६ जंगला, परिसीमा, किसी प्रकार का अवरोध
—मध्य सर्ववर्षादिष विसेरन् सर्वसतन मुन०
7 निश्चित नियम या विधि सर्वसम्मत प्रथा ८ 'ओम'
पुनीत अक्षर मन्त्राणां प्रणव सेतुमन्त्रेण प्रणव
मृत 1 सत्त्वबोद्धन पूर्व परम्पराच्य विधीयते।

कालिका०। मय० अन्ध. 1 पुन का निर्माण
नबारा की रचना बयोगते वि बनिनाबिनासो ब्रहे
गते कि बलु सेतुबन्ध मुमा० कु० ४१९ २ सीप
भुसला जो कारोमण्डल समुद्रतट की दक्षिणी सीमा
मे सका तक फैली हुई है (कहते हैं कि यही वह पुल
है जिसे नवनील ने राम के लिए बनाया था) ३ कोई
भी पुल या नवाग, - सेविण् (वि०) 1 बन्धनों को
तोड़ने वाला 2 क्काबटों को हटाने वाला (पु०)
एक वृक्ष का नाम क्षेपी।

सेतुकः [सेतु + क] 1 समुद्रतट, नबारा, पुल 2 दर्रा।

सेचम् [सि + क्त्] बन्धन, हथकड़ी, बेड़ी।

सेविचम् (वि०) (स्त्री०-सेविणी) [सि + क्त् + क्त्] ,
बैठा हुआ।

सेव (वि०) [सह इनेन व० स०] प्रभु बाला, जिसका
कोई स्वामी हो, नेता हो।

सेना [सि + न + टाप्, सह इनेन प्रभुणा वा] 1 फौज
—सेनापरिच्छदस्तस्य हृदयेवापैतावयम्—रघु० १११९

2. संधान के देवता कार्तिकेय की मूर्त पत्नी सेना, श्री-सु० देवसेवा। सम०—अथ सेना का अर्थभाग, सेना का नायक या सेनापति, अज्ञान सेना का संघटक भाग (यह गिनती में बार है—हस्तधर-पादांत सेनाज्ञं स्याच्छतुष्टयम्),—अर्थः 1. दैनिक 2. अनुचरवर्ग, निवेष्टः सेना का सिबिर रघु० ५। ४९, नी (५०) 1 सेना का नायक, सेनापति, सेनाध्यक्ष सेनानीनामहं स्वल्प भग० १०।२४, कु० २।५१ 2 कार्तिकेय का नाम अर्चनमदेस्तनया सुशोभ सेनामसाजीवमिषासुरास्वै रघु० २।३३, पतिः 1. सेना का नायक 2. कार्तिकेय का नाम हरिश्चन्द्र (वि०) सेना से चिरा हुआ (रघु० १।१९ में 'सेना परिच्छेद' कभी कभी एक ही शब्द समझा गया और तबसे एक ही अर्थ किया गया, परन्तु इनकी अलग-अलग ही शब्द समझना ज्यादा अच्छा है), पृष्ठम् सेना का पिछला भाग, अज्ञः सेना का अर्थ हो जाना सर्वथा तितर-बितर होना, अध्यवस्थित रूप से इधर उधर भागना, मुच्यन् 1 सेना का एक हस्ता या भाग 2 विशेषतः बहु हस्ता जिसमें तीन हाथी, तीन रथ, नी घोड़े और पन्ध्र घोडानि हो 3 नगर फाटक के बाहर बना मिट्टी का टीका, चौका सेना की बुलन्दी, रक्षाः पट्टेदार, लम्बी।

सेनः [सि + क] पुनः का स्मि तु० 'सेन'।

सेनापति [सिन् + पि + डीप्] सकृद्वृत्तात्, सेवती।

सेरः (पु०) एक विशेष माप, सेर का बड़ा, (सीकावती इसकी परिभाषा की है पारोपमहालकमुन्मत्तद्विहितत्वं मूल्यं कथितोऽयं सेर)।

सेराह (पु०) दूध के मगान स्वेत रस का बोझ।

सेच (वि०) [सि + च] बौचने वाला, कसने वाला।

सेत् (आ० पर०) सेलति जाना, मिलना-जुलना।

सेत् (आ० आ०) सेवने, सेवित, प्रेर० सेचयति ने, इच्छा० सिलेविषते नि परि, वि आदि इकारात् उपसर्गों के पश्चात् सेत् का लृट् बहल कर प्रायः भूमेत्यर्थ हो जाता है। 1. सेवा करना, सेवा में उपस्थित रहना, सम्मान करना, पूजा करना, आज्ञा मानना—प्रायो भुत्वास्तजनि प्रचलितविभवं स्वाधिन सेवमाना मुद्रा० ४।२१, या, ऐरवर्षादमपेतवीरवरव्य कोकोऽ क्तः सेवते—१।४ 2 अनुमन करना, पीछा करना, अनुसरण करना 3 उपयोग में लाना, उपयोग करना कि सेवते सुममतां ममतापि यन्त्रं कस्तूरिकाय - अक्षितभूता ममन - रस० 4 शारीरिक सुशोपभोग करना—आमि० १।११८ 5 अनुसरण करना, अनुष्ठान करना मनु० २।१, कु० ५।१८, रघु० १।७।५ 6. सहारा देना, आश्रित होना, रहना, बार-बार जाना जाना, बचना,—तत्तु वारि विहास तीरपत्नी

कारण्य सेवते—विष्णु० २।२३, पच० १।९ 7 पहरा देना, रक्षावाजी करना, रक्षा करना, आ—, उपभोग करना बहामुरान्धिष्टमूर्ति किरातैरासेव्यते विशिष्यविषयः कु० १।१५, प्रवातमासेवमाना तिष्ठति—मालवि० १ 2 अन्धाम करना, अनुष्ठान करना 3 सहारा लेना, उच—, 1 सेवा करना, पूजा करना, सम्मान करना, मनु० ४।१३३ 2 अग्रास करना, अनुमन्य करना, ध्यान देना, पीछा करना 3 ध्यान होना, उपभोग करना—भग० १।५।९ 4 (किन्ही स्थान पर) स्थित जाना, बचना 5 मलना, भागिना करना, नि— पीछा करना, अनुमन्य करना, सलग्न करना अग्रास करना आ० १।७ 2 उपभोग करना निवेदने ध्यात्मना विविक्तम्—आ० ५।५, कु० १।६ 3 शारीरिक सुशोपभोग करना—यथा यदा नागरसेनाना मया पुन माराग निना निषेधित भाषि० २।१५५ 4. सहारा देना, बचना, निष्प आना—जाना—कु० ५। ७६ 5. उपयोग में लाना, काम में लाना विचना निर्देवितमपिक्रिया समुर्वति सर्वमिति सत्यम्—शि० १।६८ 6 सेवा में उपस्थित रहना, हाजरी देना 7 नजदीक जाना, पहुँचना 8 नमनना, अनुमन्य करना, ली—, 1 सहारा देना 2 उपभोग करना, सेवा।

सेव दे० 'सेवन'।

सेवक (वि०) [सेव + क्तृल्] 1 सेवा करने वाला, पूजा करने वाला, सम्मान करने वाला 2 व्यवसाय करने वाला, अनुगामी 3 आश्रित, दास,—क 1 टहलवा,—आश्रित सेवा धर्माच्छिद्रि सेवकं पय कि कृतम्। स्वातन्त्र्य यच्छरीरस्य मुदंस्तदपि हारितम्—हि० २।८ 2 भजन, पूजक 3 सोने वाला, रत्नी 4 बोरा बंसा।

सेवधि (अध्य०) दे० 'सेव' के अन्तर्गत 'सेवधि'।

सेवनम् [सेव + क्तृल्] 1 सेवा करना, सेवा हाजरी में आइ रहना, पूजा करना—पात्रीकृतान्ना मुनेसेवेन—रघु० १।८।३० 2 अनुमन्य करना, अग्रास करना, काम में लाना मनु० १।५।२ 3 उपयोग करना, उपभोग करना 4 शारीरिक सुशोपभोग करना यत्कारोत्येकारात्रेव वृषली मेवनाद्विज—मनु० १।१ १।७ 5 सीना, टीका लगाना 6 बोरा, बंसा।

सेवणी [सेवन + डीप्] 1. सुई 2. सीपन, सँवरेला 3 नधि या सीपन की भाँति शरीर के अणों का संधान।

सेवा [सेत् + अच् + टाप्] 1 परिचर्या, निदयप, दासता, टहल सेवा कावककारिणी कृतयिद स्वाने स्ववृत्ति विदु—मुद्रा० १।१४, हीनसेवा न कर्तव्या हि० ३।११ 2 पूजा, यज्ञार्चन, सम्मान 3 सत्कृता,

भक्ति, बाव 4. उपयोग, अभ्यास, काम में लगना, प्रयोग 5 बार बार जाना—जाना, आशय लेना 6 बापलसी, बहुकाना, बिकने चुपने सख्त अर्थ सेवा मध्यस्थता गृहीता भय—(मालवि० ३। सम० आकार (वि०) बालना के रूप में—विश्व० ३११, कण्डु सेवा में जाबाब में परितेज (यह विश्व० ३११ में 'सेवाकारा' शब्द का रूपांतर है), धन 1 सेवा करने का कर्तव्य सेवाधर्म परमगहनो योगिनामव्ययम्—पंच० ११८५ 2 सेवा का दायित्व,—अवधारः सेवा की विधि या प्रथा।

सेवि (नपु०) [सेव् + इन्] 1 बेर 2 सेव।

सेवित (भू० क० ह०) [सेव् + क्त] 1 सेवा किया गया, जिसकी टहल की गई है, पूजा किया गया 2 अनुमत, अभ्यस्त, पीछा किया गया 3 जहाँ निय-प्रति जाया जाय, सहारा लिया गया, जहाँ (मोव) बसे हुए हों, जहाँ संघी-साथी हों 4 उपयुक्त, उप-युक्त,—तन् 1 सेव 2 बेर।

सेविन् (पु०) [सेव् + गुप्] सेवक, दास।

सेविन् (वि०) [सेव् + णिनि] 1 सेवा करने वाला, पूजा करने वाला 2 अनुवन्ता, अभ्यासी, उपयोग 3 बचने वाला, रहने वाला, (पु०) सेवक।

सेव्य (वि०) [सेव् + ण्यत्] 1 सेवा किए जाने के योग्य, टहल किए जाने के योग्य 2 उपयोग में जाने के योग्य, काम में लाने के योग्य 3 उपयोग किए जाने के योग्य 4 देख-भाल किए जाने के योग्य, पहारा दिए जाने के योग्य,—अव 1. स्वामी (विप० सेवक),—अथ तावत्से-व्यापिनिभिकते सेवकजनम्—मुद्रा० ५१२, पंच० ११८८ 2 अवस्थाप्य, अथ एक प्रकार की अव। सम०-सेवकी (पु०, हि० व०) स्वामी और नौकर।

सै (म्भा० पर०—सायनि) बर्बाद होना, क्षीन होना, नष्ट होना।

सैह (वि०) (स्त्री० ही) [सिंह + अच्] सिंह से लड़, सिंह सम्बन्धी—युति सैही कि वषा वृत्तकन-कालोऽपि लयते हि० १११७५।

सैह्य (वि०) [सिंह + अच्] लका सम्बन्धी, लका में उत्पन्न, या लका में होने वाला।

सैहिक, -सैहिकः [सिंह + अच्, सिंह + इक्] राहु का नाम परक नाम।

सैकत (वि०) (स्त्री० सी) [सिकता मन्थन अच्] 1 नेल चुन या नेल से बना हुआ, रेतिला, कंकरीला—सोपम्येवाप्रतिहतस्य सैकतं सेतुधोव—उत्तर० ३१३१ 2 ग्रेनीजी भूमि वाला, तन् रेतिला तट—मुरगज इव गांव सैकतं मुजनीक रपु० ५१७५, ५१८, १०१६९, १३११७, १२, १३१७६, १३१२१,

मु० ११२९, स० ११७ 2 रेतिले तटों वाला द्वीप 3 किनारा या द्वीप। सम० इच्छन् अवसरक।

सैकसिक (वि०) (स्त्री०—की) [सैकत + क्त] 1 रेतिले तट से सम्बन्ध रखने वाला 2 घट-बढ़ होने वाला, तरमित, सन्देश की अवस्था में रहने वाला, सन्देशवाही, --कः 1 साधु 2 मन्दाही, कन् मंगलपूज को सीमाप्यलसी बनने के लिए कलाई में बांधा जाता है या कठ में पहना जाता है।

सैकसिक (वि०) (स्त्री० की) [सिद्धान्त + ठक्] किसी राशान या प्रदर्शित सत्य से सम्बन्ध रखने वाला 2 जो वास्तविक सचार्थ को जानता है।

सेनापत्यन् [सेनापति + पत्यन्] किसी सेना का सेना-पति, सेनाध्यक्षता—कु० २१६१।

सैनिक (वि०) (स्त्री०—की) [सेनायां समर्थति ठक्] 1 सेनासम्बन्धी 2 सौदा, कः 1 सिपाही—पपात मूनी सद् सैनिकाधुमि - रपु० ३१६१ 2 पहरेदार, सतरी 3 सामरिक भूद में व्यवस्थित सैन्यसमूह—रपु० ३१५७।

सैन्य (वि०) (स्त्री०—की) [सिन्धुवीसवीये देवे भव अच्] 1 सिन्धु प्रदेश में उत्पन्न या पैदा हुआ 2 सिन्धु नदी सख्खी 3 नदी में उत्पन्न 4 समूह सम्बन्धी, सागर सम्बन्धी, सामुद्रिक,—कः 1. शोरा, पिछेबाग वह जो सिन्धु देश में पैदा हो—न० ११७१ 2 एक च्चि का नाम, कः,—कन् एक प्रकार का सेवा नमक,—वाः (पु०, व० व०) सिन्धु प्रदेश के अधिवासी। सम०—कन् नमक का डेगा,—सिला एक प्रकार का पहाड़ से निकलने वाला नमक।

सैन्यक (वि०) (स्त्री०—की) [सैन्य + कुञ्ज] सैन्य सम्बन्धी, कः सिन्धु देश का कोई आपवृत्त व्यक्ति जिसकी वसा दलीब हो।

सैन्धी (स्त्री०) एक प्रकार की मदिरा (सम्भवतः वह जो ताड़ के रस से तैयार की गई हो) ताड़ी।

सेन्धः [सेनायां समर्थति अच्] 1 सैनिक, सिपाही—हि० ५१२८ 2 पहरेदार, सतरी, अन्ध सेवा, सेवा की टुकड़ी—स प्रनसेऽप्रीनायाव हरितैर्नैर्गुप्तुत—रपु० १२१७७।

सैन्धलिकन् [सीमन्त + ठक्] सिन्धु।

सैरग्नः, सैरग्नः [सीर हुल वरणि—सीर + गु + क, गुम् = सीरग्न कृष्ण कृष्ण शिल्पकनं सीरग्न + अच् वसे इवम्] 1 बरेल्लू नीकर, फिर 2 एक विश्व जाति, दम्प्य जाति के पुरुष तथा अवशेष जाति की स्त्री से उत्पन्न सम्बन्धी—सैरग्नं क्षामुरावृत्ति कृते दम्प्यवशये सम० १०१३२।

सैरग्नः, सैरग्नः [सैर (वि) अ + क्] 1 दासी या मेविका की प्रजापुत्र में काम करे (सैरग्न 2 में

वर्धित विषय जाति की स्त्री) 2. स्वतन्त्र स्त्री जो शिल्पकारिणी के रूप में दूसरे के घर बाहर काम करे 3. दीपदी की विशेषण (अज्ञात वास में विराट की पत्नी सुपेष्णा की सेवा करने समय दीपदी ने यह नाम रख लिया था) ।

सौरिक (वि०) (स्त्री० कौ) [सौर + ठक्] 1 हल-सम्बन्धी 2 झूठो से युक्त, —कः 1 हल में बचने वाला बेल 2. हालां, हलवाहा ।

सौरिजः [सौरि हले तद्वहने इम इव शूरवान्, गक० पर०, सौर + इम् - अण्] 1 भैसा—अवमानित इव कुर्त्तानो दीर्घ निवसतिन सौरिज—मृच्छ० ४ 2 इन्द्र का स्वर्ग ।

सैलक दे० 'सोवान' ।

सैलक (वि०) (स्त्री कौ) [सैलक + अण्] सीसे का बना हुआ, सीसा सम्बन्धी ।

सो (विबा० पर० स्यति, सित, प्रेर० साययति ते, इच्छा० सिवामति, कर्मबा० मीयते—इकारान्त उकारान्त उपमर्गों के पश्चात् 'सो' के 'म्' को पूर्वव्य 'व्' हो जाता है) 1 वध करना, नष्ट करना 2 समान करना, पूरा करना, अन्त तक पहुँचाना, ब्रह्म—, 1 समान करना, पूरा करना—प्रययत्यवसिते किया-विधी रघु० ११३७, अवसितमप्यनासि—श० ४ 2 नष्ट करना 3 जानना, अष्टि० ११२९ 4 निष्क होना, किनारे पर होना (अक०)—सक्ति-ममावस्थति हीमसुद्धे—कि० १११७, अघ्यञ्च, 1. सकल्प करना, निर्धारित करना, मन पक्का करना—कर्मविधानी दुर्जनवचनादध्यवसित देवेन—उत्तर० १, अभिधानुमध्यवसतो न विरा—जि० १७७६, 2 प्रवास करना, दायित्व लेना, सम्पन्न करना मा साहसमध्यवस्यः—दश०, वन्धु मुकरमध्यवसात् दुष्करम् बेधी० ३, 'करने की अपेक्षा कहना आसान है' 3 दबोच लेना 4 सोचना, विचार करना, पबंध 1 पूरा करना, समाप्त करना 2 निर्धारित करना, सकल्प करना 3 परिणाम होना, बट जाना, समाप्त हो जाना—एग एव समुच्चय लघोनेऽज्जोने सदस-छोने च पूर्ववस्यतीति न पृथक् लक्ष्यते काव्य० १० 4 नष्ट होना, लो जाना, लीन होना 5. प्रपन्न करना, ब्रह्म—1. जोर लगाना, हाथ-पैर मारना, कोलिस करना, बेष्टा करना, प्रयास करना, बारम्ब करना—ध्रुव स मीलोत्पलपत्रचारवा तामीलना छेत्तुं—व्यंज्यस्यति—श० ११८८ 2 चिन्तन करना, कायना करना, बाहना—पातु न प्रथम व्यवस्थति जलं युष्मा-स्वपीनेषु वा—श० ४१९३ लगातार बेष्टा करना, परिश्रमी या उद्योगी होना 4 सकल्प करना, निर्धारित करना, निश्चित करना, फैसला करना—श०

५१८८ 5. स्वीकार करना, दायित्व लेना कच्चि-न्मोम्य व्यवसितमिदं वन्धुकृत्य त्वया मे मेघ० १४४ 6. करना, सम्पन्न करना 7 विस्वास करना, विश्वस्त होना, प्रमीन होना 8 विचार-विमर्श करना, लब्ध, निर्णय करना, आदेश देना मनु० ७११३ ।

सोढ (भू० क० कृ०) [सह् + ण] सहन किया गया, भुगता गया, बर्दास किया गया, झेला गया—आदि दे० 'सह' ।

सोद् (वि०) (स्त्री०—द्वी) [सह् + तुच्] 1. सहनशील, बर्दाश्त करने वाला, सहिष्णु 2 सक्तिसाली, समर्थ ।

सोत्क, सोत्कष्ट (वि०) [सह् उत्केन, उत्कष्टया वा व० स०] 1. अत्यन्त उत्सुक, असीब आतुर, आकुल, यथा—सोत्कष्टमानिगमम् 2 बिच 3. जोकाकुल, बिचमान, —ठम् (अव्य०) 1 अत्यत उत्सुकता के साथ, बड़ी उत्कटा के साथ, प्राग्दोषेव बलाकया परमस मोत्कष्टमानिज्ज्ञान मृच्छ० ५१२३ 2 सेदपूर्वक, दुःखपूर्वक ।

सोत्प्राप्त (वि०) [सह उत्प्राप्तेन—व०स०] 1 अत्यधिक 2 अतिशयोक्तिपूर्ण 3. अत्यन्त, अव्ययपूर्ण, —सः—सम्, व्यंग्यारम्भक अतिशयोक्ति, व्यंग्योक्ति, व्यंग्यवाच्य, तु० व्याजस्तुति ।

सोत्सव (वि०) [उत्सवेन सह—व०स०] उत्सवयुक्त, उत्साह भर, हर्षपूर्ण ।

सोत्साह (वि०) [सह उत्साहेन—व०स०] प्रबल, सक्रिय, उत्साही, बीर,—हृच् (अव्य०) पूर्वी से, उत्साह पूर्वक, सावधानी से ।

सोत्सुक (वि०) 1. बिच, सल्लाने वाला, आतुर, शोका-न्वित 2. उत्कण्ठित, आकांक्षित ।

सोत्सेध (वि०) [सह उत्सेधेन व०स०] उज्जीत, उज्जत, ऊँचा, उत्तुंग सोत्सेधः स्कन्धदेशः मुद्रा० ४७७ ।

सोदर (वि०) [समानमूढर वस्य, समानस्य सः] एक ही पेट से उत्पन्न, सहोदर, ८: स्या भार्ग, ९: सती रहत ।

सोदर्यः [सोदर + यत्] सहोदर भार्ग, स्या भार्ग (आल० से भी)—भ्रातृ, सोदर्यमास्थानमिन्द्रजिह्वसोमिनः—रघु० ५१२६, अवज्ञासोदर्यं दारिद्र्यम्—दश० ।

सोद्योग (वि०) [सह उद्योगेन व०स०] प्रबल उद्योग करने वाला, परिश्रमी सक्रिय, बीर, मेहनती ।

सोद्येन (वि०) [सह उद्येनेन—व०स०] 1. आतुर, जार्ज-काल 2 लोकांशित,—व्यं (अव्य०) आतुरता के साथ, उतावलेपन से, उत्सुकतापूर्वक ।

सोमहः [सु + विच् + सो, नह् + क = सह] लहसुन ।

सोन्माद (वि०) [सह उन्मादेन—व०स०] पागल, दीवाना, आपे से बाहर, मदबिभ्रित ।

सोत्पकरण (वि०) [सह उपकरणेन—व०स०] सब प्रकार

के आवश्यक सामान या उपकरणों से युक्त, समुचित रूप से सुसज्जित, इसी प्रकार 'सोपकार' ।

सोपकव (वि०) [सह उपकवेय—ब०स०] सकट और उप-
द्रवों से युक्त ।

सोपव (वि०) [सह उपकवा ब०स०] जालसाजी और
बोझ से भरा हुआ, कपटपूर्ण ।

सोपवि (वि०) [सह उपविना—ब०स०] जालसाज,
अप्य० कपट के साथ जालसाजी करके अरिषु हि
विजयाचिन किसीका विवचति सोपवि सन्निवृत्तमानि
—कि० १।४५ ।

सोपकव (वि०) [सह उपकवेय—ब०स०] 1 सकटवस्त
2 धन्यों द्वारा आक्रान्त 3 ग्रहणवस्त (जैसे कि चन्द्र
व सूर्य) ।

सोपरोव (वि०) [सह उपरोवेन—ब०स०] 1 अवकट,
बाधायुक्त 2 अनुगृहीत,—अप्य० (अप्य०) सानुग्रह
सादर ।

सोपसर्ग (वि०) [सह उपसर्गेण—ब०स०] 1 सकटवस्त,
दुर्भाग्यवन्त 2 अनिष्टसूचक 3 किसी भूत प्रेत से
आविष्ट 4 उपसर्ग से युक्त (अप्य० में) ।

सोपहस्त (वि०) [सह उपहासेन ब०स०] अग्रपूर्ण हसी
से युक्त उपालम्बपूर्ण अव्ययय सम् (अप्य०)
उपाकम्पपूर्णक उल्लाहे के भाव ।

**सोपाक [=वपाक (पवा०) पतित ज्ञान का पुरुष
चांडाल, दे० मनु० १०।३८ ।**

सोपावि (वि०) **सोपाधिक (वि०)** (स्त्री०—की) [सह
उपाधिना—ब०स० पठे रूप] 1 किसी जन या मोमा
म प्रतिबद्ध, विशिष्ट लक्षणा से युक्त सीमित मर्या-
दित निशिष्ट (दर्शन० में) 2 विशिष्ट विशेषण से
युक्त ।

सोपात्म (उप + अम) **अम** = उपान उपरिगति सह
विद्यमान उपान येन—ब०स०] पीसी, सीसी का
डडा बीना सीसी—अरोहणाई नव गीवनेन कामस्य
सापानमिव प्रयुक्तम् कु० १।३९। सप०—वक्षसि
(स्त्री०) वक्ष, वक्षसि (स्त्री०), वरम्बरा,
आयं सोडी, बीना बापा बाकिमन मरकतशिला
वद्वमोपानमाला मेघ० ७६ समावधुदिवभापय क्षये
तलान सोपानपरम्परायिब—रघु० ३।९ ६।३ १६।५५ ।

सोप [सु + मन्] 1 एक पीछे का नाम, प्राचीन काल के
यहाँ में आहुति देने के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण औषधि
2 साम नामक पीछे का रस—जैसा कि सामया
नया सोमपीचिन् शब्दा में 3 अमृत देवताओं का पेय
पदार्थ 4 चन्द्रमा (पुराणों में चन्द्रमा को अवि क्षधि
की ओर से उत्पन्न होने वाला वर्णन किया गया है
(गु० रघु० २।७५), ऐसा भी वर्णन मिलता है कि
समूद्रमन्थन के अवसर पर चन्द्रमा भी समुद्र से

निकला । पुराणों में वर्णित असाहसिक नक्षत्र भी इस
की कल्पाएँ बतलाई गई हैं, चन्द्रमा की पत्नियाँ कहीं
जाती हैं । चन्द्रमा की कक्षाओं के पश्चिम क्षय की
वटना का भी समाधान यह किया गया है कि चन्द्रमा
की अमृतमयी कक्षाओं को विषिष देवताओं ने बारी
बारी से पी लिया इसी प्रसंग में एक और कथा का भी
आधिकार किया गया है जिसमें बतलाया गया है कि
चन्द्र १ रोहिणी (इस की २७ कम्पाओं में से एक)
पर विशेष रूप से अनुरक्त था, अतः उसके स्वसुर
वस ने इसे अवरोध से वस्तु होने का शाप दे दिया,
बाद में चन्द्रमा की अन्य पत्नियों के बीच में पड़ने
पर यह शाप सीमित कालावधि (प्राज्ञिक) में बदल
दिया गया । यह भी वर्णन मिलता है कि चन्द्रमा
ने बृहस्पति की पत्नी नारा का अपहरण किया उससे
चन्द्रमा का बुध नामक एक पुत्र पैदा हुआ । यही
बुध बाद में राजाओं के चन्द्रवत्ता का प्रतीक हुआ,

(दे० तारा (ख) भी) 5 प्रकाश की किरण 6 कपूर
7 जल 8 वायु हुआ 9 कुबेर 10 शिव 11 यम
12 (ममम के अन्तिम पद के रूप में प्रयुक्त) मुख्य
प्रधान, उत्तम जैसा कि नृसिंह में—अप्य० 1 बावलो
की काजी 2 आकाश गगन । मम० अविषय
सामरस का सीचना,—अह सोमवार,—आत्म्य काल
कमल, ईश्वर शिव की प्रसिद्ध प्रतिमा सोमनाथ
—जुहूना नर्मदा नदी—रघु० ५।५९ (यहाँ मणिक०
न अमर० वा उद्धरण दिया है) रेवानु नर्मदा सोमो-
द्भवा । काल चन्द्रकाल माण—अप्य० चन्द्रमा
की कक्षाओं का ह्राम, यह सामरस रखने का पात्र

अ (वि०) चन्द्रमा से उत्पन्न—(अ.) बुधग्रह का
विशेषण—(अम्) बुध द्वारा आक्रान्त, गगन,—नाथ
प्रसिद्ध शिव 'अंग' या बहु स्थान वहाँ यह प्रतिमा
स्थापित की गई है (इसी प्रतिमा) की अतुल धन
राशि व वैभव ने गङ्गा की मोहम्मद गौरी को आकृष्ट
किया जिसने १०२४ ई० में सोमनाथ का मन्दिर
तोड़ा और उसके खजाने को उठा कर ले गया)—ऐसा
मात्र परिचयवशाद्विज्ञित गुर्जरणा व नानाव स्थित-
वकरोर सोमनाथ विज्ञोक्त्यः । विष्णुस० १८।८७,
—य,—वा (पु०) 1 सोमपायी 2 सोमयात्री 3 मित्रों
का विभाग समूह—वर्त इन्द्र का नाम,—वक्षस्य सोम-
रम का पीना वक्षसि, पीचिन् (पु०) सोमरस
को पीने वाला तन्व केचित् । सोमपीचिन् उज्ज्व-
न्नामालो इन्द्रपाचिन् प्रसिद्धसति स्म आ० १,

बुध — बुध कुक्षे बुध के विशेषण—अप्य०
सोमयय क पुरोहितों को वरन करवाँ बाकर,—अप्य०
कुम्ब—वक्षः, वक्षः सामयय,—बोधिः एक प्रकार
का पीना और सुपज्जित चन्द्रमा—दीक्षः, सिध्दी का

एक विशेष रोग,—कृता—कलरी १ सोम का पीना
२ गोदावरी नदी,—बंजः बृहद् द्वारा स्थापित राजाओं
का चन्द्रवध,—वारः,—वत्सरा खोपार, विष्णुविष्णु
(५०) मोमरस विकेता,—बुद्धः,—सारः सफेद और
का बूझ,—कलका एक प्रकार की ककरी,—सोमम्
कपूर, लवु (५०) पितरों का विशेषवर्ग मनु०
३।११५,—विष्णुः विष्णु का विशेषण, सुनु (५०)
सोमरस बीजने वाला,—सुता नर्मदा नदी तु० सोमो-
द्वय, सुवम् शिव लिंग के स्नान का जल निकलने
की नाकी, प्रवर्तिना शिवलिंग की इस तरह परिक्रमा
करना कि नाकी लांघनी न पड़े ।

सोमम् (५०) [सु+मनिन्] चन्द्रमा ।

सोम्यः (वि०) (स्त्री०—त्री) [सोम+इनि] सोमयज्ञ का
अनुष्ठान करने वाला,—(५०) सोमयज्ञ का अनुष्ठान ।

सोम्य (वि०) [सोम+यत्] १ सोम के योग्य २ सोम
की आहुति देने वाला ३ आहुति में सोम से मिलता-
जुलता ४ मृदु, सुशील, मिलनसार ।

सोम्युच्छः, सोम्युच्छन्म् [उन्मृच्छते उन्मृच्छनेन वा मद्, ब०
सं०] व्यर्थ, ताना, बूटकी, ठग, लवु (अव्य०)
व्यायपूर्वक ताने के साथ—उत्तर० ५ ।

सोम्यम् (वि०) [मह उन्मया ब० म०] १ गरम तप्त
२, (व्या० में, ऊष्मा युक्त (५०) ऊष्मवर्ण ।

सोमर (वि०) (स्त्री०—त्री) [सूकर+अण्] सूकरमदवा
सूकर का वि० १-५३ ।

सोमर्यम् [सू (सू) कर+घञ्] १ सूकरपना २ आसना
मुषिवा सोमर्य व कार्यस्यामाश्रिते सिद्धया साध-
सिद्धया व बोध्यम् ३ क्रियात्मकता, सुकरता ४ निपु-
णता, कुशलता ५ किसी भाउपदार्थ या औषधि को
सरल तैयारी ।

सोमर्यम् [सुकुमार+घञ्] १ मुकुता सुकुमारता
कोमलता—शरीरपुष्पाधिकसुकुमारी बाह्य नदीया
विलि में वितर्क—कु० १।४१. २ जवानी ।

सोम्यम् [सूय+घञ्] बारी की महीनपना, सूयता ।

सोम्यवायविकः, सोम्यवायविकः [सुभवायन पुच्छति सुभवाय
(न)+ठक्] वह पुरुष जो किसी पुरुष से उसके
सुलपूर्वक सोने की बात पूछे—भृशवायविकमुच्छन्त
सोम्यवायविकानपीन रवु० १०।१४ ।

सोम्युच्छः [सुसुप्ति सुसुप्त वयन पुच्छति—ठक्] १ किसी
व्यक्त पुरुष से सुसुप्तपूर्वक सोने का हाल पूछने वाला
२ चारन, भूट, बन्धी (इसका कार्य रात्रि पर अवत
समुद्रिजाली व्यक्त को स्तुतिपाठ द्वारा अगाने का
होता है) ।

सोम्यिक (वि०) (स्त्री०—त्री), सोम्यीय (वि०) (स्त्री०—
त्री) [सुक्+ठक्, अण् वा] सुकसम्बन्धी, आनन्द-
दायक, हृदयप्रद ।

सोम्यम् [सुक्+घञ्] सुक, प्रसन्नता, सन्तोष, सुविधा,
आनन्द ।

सोम्यः [सुगन्+अण्] बौद्ध (बृह या सुगन् का अनुयायी)
(बौद्धों के चार बड़े मन्त्राय हैं—माध्यमिक, मोना-
स्तिक, योगाचार और वैशेषिक)—सोम्यजगत्परिवार-
कायास्तु कामन्वया प्रथमा भूमिका भाव एवाभीते
—मा० १ ।

सोम्यिकः [सुगन्+ठक्] १ बौद्ध २ बौद्धभिक्षु ३ नास्तिक,
पाकडी अविश्वासी, कम् अविश्वास, पाकडवर्ग,
नास्तिकता, अनिश्चरवाद ।

सोम्यम् (वि०) (स्त्री०—त्री) [सुगन्+अण्] मधुरगन्ध-
युक्त, सुगन्धित चम् १ मधुरगन्धना, सुवास २ एक
प्रकार का सुगन्धित तृण, कण्ठ ।

सोम्यम् (वि०) (स्त्री०—त्री) [सुगन्+ठक्] १
मधुरगन्ध वाला, सुगन्धित, कः १ गन्ध द्रव्यों का
विकेता, गन्धो २ गन्धक कम् १ मफेद कुमुद
२ नील कमल ३ एक प्रकार का सुगन्धित घास,
कण्ठ ४ लाल ।

सोम्यम् [सुगन्+घञ्] गन्धमाधुर्ग, सुगन्ध सुवास ।

सोम्यः, सोम्यिकः [सुचि+घञ्, ठक्] दूर्वा मन ४।२१९
पर कुमुद ।

सोम्यम् [सुजन+घञ्] १ नेकी कुपालता, बलाई
उत्तर० ३।१३, मृच्छ० ८।३८ २ महिमा, उधारता
३ कृपा, कृपा, अनुकम्पा ४ मित्रता, मोहार्थ, प्रेम ।

सोम्यी [सुगन् नदाकारोऽस्ति अस्या सुगन्दा+अण्+कीप्,
पूर्वो०] ५०।५१ ।

सोम्यः [सुत+घञ्] कर्ण का नामान्तर ।

सोम्यम् [सुत+घञ्] मारुति का पद नल० ४।९ ।

सोम्य (वि०) (स्त्री०—त्री) [सुत+अण्] १ बागे या
रोगी से सबब रहन वाला २ सूत्रमन्त्री, सूत्र में
उल्लिखित सूत्र में निर्दिष्ट, व १ बाह्य २ कुत्रिम
घात जो केवल सूत्रों में वर्णित है नियमित धातुओं
की भांति उसकी कपरचना नहीं होनी योगिक शब्दों
के निर्माण में ही उसका उपयोग होता है ।

सोम्यविकारः (५० ब० व०) बौद्धों के चार मन्त्रवायों में
से एक तु० सोम्य ।

सोम्यविकारः [सुभवायन इन्द्रो वेधता अस्या—सुभामन्+अण्
+कीप्] पूर्वविकार चकोरनवनास्या भवति दिक्
व सोम्यविकारः विद्व० ५।१ ।

सोम्यम् [सु०] [सोमर+घञ्] आनन्द आर्पण ।

सोम्यविकारः [सुदामा पर्वतभेद तेन एका दिक्, सुदामन्
सोम्यविकारः+अण्+कीप् पक्ष पूर्वो० साम्] विषयी,
सोम्यविकारः—सोम्यविकारः कनकनिकरिगन्धया दस्योर्भीम्
वेध० ३९, सोम्यविकारः जलबोद्धर सचिनीया
मृच्छ० १।३५ ।

सौभाग्यिक (वि०) (स्त्री०-की) [सुभाग + अङ्] स्त्रीधन, कन्या के विवाह के अवसर पर जा बन उसके माता पिता या संबंधियों द्वारा उसे दिया जाना है और जो उसकी निजी संपत्ति हो जाता है, कच्चा दाज या बहुजसम्बन्धी।

सौच (वि०) (स्त्री०-की) [सुपया निमित्त रक्त वा अण्] 1 अमृतमय अमृतसम्बन्धी 2 पलस्तर से युक्त, या घूने से पुता हुआ, धनु 1 वह भवन जिसमें सफेदी की हुई है, सुघालित, पलस्तरदार 2 विशालभवन, महल, बड़ी हवेली 3 शवासमृदजेन विस्मृत सचि-काय फलनि स्पृहस्तप रघु० ११२, ७५, ११४० 3 बाँधी 4 सुषया प पर। सम०—कार 1 पलस्तर करने वाला 2 मकान बनाने वाला, बाँस: महल जैसा भवन।

सौच (वि०) (स्त्री०-नी) [सुना + अण्] कसाईपने या कसाईस्थान से सम्बन्ध रखने वाला—नक्ष कसाई के घर का भाग। सम० चर्मन् चोर शत्रुता की अवस्था।

सौचक्यम् [सुनन्द् + अण्] बलराम का मूल।

सौमित्रिन् (पु०) [सौमित्र + इनि] बलराम का विशेषण।

सौमिकः [सुना + टण्] कसाई मु० सौमिक।

सौम्यम् [सुम्वर + व्यञ्ज] सुन्दरता, मनावृत्ता, काव्य, साहित्य—सौम्यसारसमुदायनिकेतन वा—भा० ११२१, कु० १४२, ५४१।

सौम्यम् [सुपय + अण्] 1 सुखा अवरक, सौ० 2 मरकत।

सौम्यैः [सुपयः विनताया अपत्यम् सुपयी + डक्] गवड का विशेषण।

सौम्यिक (वि०) (स्त्री० की) [मुष्टि + ठक्] 1 निद्रा-सम्बन्धी 2 निद्राजनक कच्चा रात का आचमण सोने हुए पर हुमला। सम०—चर्मन् (नपु०) महाभारत का दसवाँ पर्व जिसमें वर्णन किया गया है कि अश्वत्थामा, कृतवर्मा, कृप और कौरवसेना के बीच हुए घोड़ाबोने रात को पांडवसिंहि पर आक्रमण कर हजारों सोने हुए मैमिकों को मोन के बाट उतार दिया,—बध. (उपमंथन) पांडवसिंहि के मैमिका का रान में महार मागीं होय नरेन्द्रसौम्यिकवचने पूर्व कृतो दीपिना मुच्छ० ३१११।

सौम्यः [सुम्वर + अण्] अशुभ का नामान्तर।

सौम्यी, सौम्येयी [सौम्य डीप्, सुमला + डक् + डीप्] वृत्तराष्ट्र की पत्नी शम्भारी।

सौम्य [मुष्टि सर्वत्र लोके भाति सु + भा + क + अण्] हरिश्चन्द्र का नगर (कहते हैं कि यह नगर अस्तित्व में लटक रहा है)।

सौम्यम् [सुमय + अण्] 1 अच्छा भाव्य, सौभाग्य 2 समृद्धि, धन, दीप्ति।

सौम्यः, सौम्येयः [सुमया + अण्, डक् वा] सुमया के पुत्र अभिमान्य का विशेषण।

सौभाग्यिकः [सुभगा + इक्, इनक्, द्विपरवृत्ति] सबसे प्रिय पत्नी का पुत्र।

सौभाग्यम् [सुभगाया सुभगस्य वा भावः—व्यञ्ज, द्विपद-वृत्तिः] 1 अच्छा भाव्य, अच्छी किस्मत, सौभाग्य-हासिता (सुक्यत इसमें पति-पत्नी का पारस्परिक अनुग्रह प्राप्त करना, तथा एक दूसरे के प्रति हृदय भक्ति का होना पाया जाता है) —मित्रेभ्यु सौभाग्यकला हि वाकता कु० ५११, सौभाग्य से सुभय विरहा-वस्थया व्यञ्जयन्ती—मेघ० २९, (दोनों स्वार्थों में सौभाग्य शब्द पर मल्लिक के टिप्पण देखें) 2 स्वर्णीय सुख, मातृलिकता 3 सौम्य काव्य, साहित्य, —(यस्य) हिम न सौभाग्यविकोपि जातम्—कु० ११२, २५२, ५४९, रघु० १८१९, उतार० ६१२७ 4 सोमा, उवातता 5 अहिवात (विप० वेद्यम्) 6 बचाई, मंगलकामना 7 सिद्ध 8 सुहावा। सम०—चिह्नम् 1 अच्छे भाव्य का चिह्न, अच्छी किस्मत का चिह्न 2 अहिवात का चिह्न (जैसे कि बलक पर सिद्ध का तिलक), तन्तु (वह सुन जो विवाह में वा द्वारा कन्या के गले में बांधा जाता है और जिसे स्त्री विधवा होने तक पहनती है) विवाह-सूत्र, मंगलसूत्र,—सुतीया भाद्रपुक्क-सुतीया हरि-तालिका, सौम्य देवता सुमदेवता, या अभिभाषक देवता, वाचकम् मिष्टान्न का शुभ उपहार वा चढ़ावा।

सौभाग्यक्य (वि०) [सौभाग्य + क्यप्] भाग्यशाली, शुभ, — सौ विवाहित स्त्री जिसका पति जीवित है, विवाहित सचवा स्त्री।

सौमिक [सौम्य कामचारिपुर सत्रिर्मान् सौम्यस्य—सौम + ठक्] जादूगर, ऐन्द्रजालिक।

सौभाग्यम् [सुभगा + अण्] अच्छा भावभाव, भाईबारा, बहुत सौभाग्यमेवा हि कुलानुसार रघु० १९११, १०८१।

सौमनस (वि०) (स्त्री० ला, की) [सुमनस + अण्] 1 भावनामूलक, सुख 2 सुलसंबंधी, पुष्पीय, सन् 1 कुपामृता, उदारता, कृपा 2 मानन्द, सन्तोष।

सौमनसा [सौमनस + टाप्] जायकल का छिन्का।

सौमनस्यम् [सुमनस + व्यञ्ज] 1 मन का सतोष, आनन्द, प्रसन्नता रघु० १५१४, १७४० 2 छाड़ के अव-सर पर शीघ्रण को दिया गया फूलों का उपहार।

सौमनस्यवाची [सौमनस्य + अथ + ह्युट् + डीप्] मातृती कला की मन्त्री।

सौमायन [सौम + कण्] सुड का पितृपरक नाम।

सौमिक (वि०) (स्त्री०-की) [सौम + ठक्] 1 सोमरस-संबंधी, सोमरस से अनुष्ठित यज्ञ 2 चन्द्रमासम्बन्धी।

सीमिन्, सीमिन्ः [सुमिन् + अच्, इच् वा] लक्ष्मण का विशेषण सीमिनेरपि पत्रियामविषये तत्र प्रिये स्वाति भो उत्तर० ३।४५।

सीमिन्कः (पुं०) कालिदास का पूर्ववर्ती एक नाटककार मातकमिसीमितलक्षमिधारीनाम् मालवि० १।

सीमिन्कम् (नपुं०) मोना, स्वर्ण।

सीमिन्कः [सुमेधा + ठक्] मृत्ति, ऋषि, जलौकिक बुद्धि-मयम्।

सीमिन्क (वि०) (स्त्री०-की) [सुमेध + कञ्] सुमेध सबही, सुमेध से आया हुआ, या प्राप्त, -कम् मोना, स्वर्ण।

सीम्य (वि०) (स्त्री०-म्या, -म्यी) [सीमो देवनाम्प तस्येव वा अच्] 1 चद्र सबही, चन्द्रमा के लिए पावन 2 आँख के गुणी से युक्त 3 सुन्दर, सुख, उत्तिकर 4 प्रिय, मृदुल, कोमल, स्निग्ध-सरस्वती मैथिलीहास सज-मोम्यां निनाय ताम् रघु० १२।३६, (इसके सबोधन का रूप 'सीम्य' शब्द 'श्रीमान्' की 'सम्मान्य' 'मला मानस' अर्थों की प्रकट करता है - प्रीतास्मि ते सीम्य चिराय जीव-रघु० १४।५९, सीम्येति बाधाम्य दशार्थवादी -१४।४४, मेघ० ४९ कु० ४।३५, मा० १।२५ ५ सुम-म्यः 1 बुधपट्ट 2 बाह्यण को सम्बोधित करने का मधुचित विशेषण आयुष्मान् भव सीम्येति बाध्यो विप्राजिमाने मनु० २।१२५ ३ बाह्यण 4 कुलर का पेड़ 5 माल होने से पूर्व की दशा में शंकर लसीका, रक्तोदक 6 ज्वररस जो पेट में आकर जीर्ण होकर बनता है 7 पृथ्वी के नौ कण्ठों में से एक - (पुं० ब० ब०) 1 मृगशिरा के पाँच नखों का पुंज 2 पितृवर्ष विशेष - मनु० ३।१९९। स० उप-चार काय उपाय, युधु विकित्ता, -कण्डः, कण् एक प्रकार की बर्ष साधना तु० याज्ञ० ३।३२२, कन्वी सफेद मूलाव, ब्रह्म शास्त्र और सुष बह, -कण्डः कण्ड, रत्नेष्वा, माकम् (वि०) जिसका नाम क्षुत्तिमधुर हो, सुखाव हो - मनु० ३।१०, बार, बालरः बुधवार।

सीर (वि०) (स्त्री०-ती) [सीर + अच्] 1 सीरज-सम्बन्धी, सीर्य 2 सूर्य को क्षीयता या पावन 3 स्व-र्य, दिव्य 4 मदिरासम्बन्धी, रः 1 सूर्योपासक 2 क्षमिबहु 3 सीर्य मास 4 सीर्य दिन 5 तुम्बुव नाम का पीना, -रम् (अग्नेय के उद्धृत) सूर्यसम्बन्धी सम्बन्धी का समूह। स० मत्स्य एक विशेष वत जो रविचार को किया जाय, मातः सीर्य मास (जिसमें तीस बार सूर्य उदय हो और तीस ही बार अस्त हो), लोकः सूर्य लोक।

सीरकः [सीर + अच्] सीरसीर, बोझ।
सीरक (वि०) (स्त्री०-की) [सीर + अच्] सुयन्त्रित,

अन् 1 सुगन्ध बासि० १।१८, १२१ 2 केसर, बाकरान।

सीरजेय (वि०) (स्त्री०-जी) [सीरज + अच्] सीरज से सम्बद्ध, बः बेल।

सीरजी, सीरजेवी [सीरज + जीप्, सीरजेय + जीप्] 1 गाय 2 'सीरज' नामक गाय की पुत्री—सा सीर-जेवी मुरभिर्योमि - रघु० २।३।

सीरज्यम् [सीरज + अच्] 1 सुगन्ध, सुख, नृत्त-गन्ध-सीरज्य भुवनत्रयेऽपि विदितम् बासि० १।१८, पुनाना मोम्यं गणा० ४३, रघु० ५।६९ 2 रोष-कता, सीरज्य 3 सदाचरण, प्रसिद्धि, कीर्ति, स्वाति।

सीरजेना (पुं०, ब० ब०) एक प्रदेश सीर उसके अधि-वासियों का नाम, भी दे० सीरजेवी।

सीरजेय [सीरज + अच्] स्कन्ध का विशेषण।

सीरजेय (वि०) (स्त्री०-जी) [सीरज + अच्] आकाशगता सम्बन्धी शि० १।३२०, बः सूर्य का बाँका।

सीराज्यम् [सीराज्य + अच्] अच्छा प्रशासन या राज्य एको यही चैत्रचक्रप्रदेशान् सीराज्यरम्यामपरो विदमन् - रघु० ५।६०।

सीराष्ट्र (वि०) (स्त्री०-ष्ट्रा, ष्ट्री) [सीराष्ट्र + अच्] सीराष्ट्र (सूरत) नामक प्रदेश सम्बन्धी या वहाँ से प्राप्त ष्टः सीराष्ट्र प्रदेश, (पुं० ब० ब०) सीराष्ट्र प्रदेश के अधिवासी, क्षुब्ध पीतल, कांसा।

सीराष्ट्रकः [सीराष्ट्र + कन्] एक प्रकार का कांसा, फूल।

सीराष्ट्रकम् [सीराष्ट्र + ठक्] 1 एक प्रकार का उद्धर।

सीरिः [सीरस्यापत्य पुमान् इच्] 1 क्षमिबहु का दाह 2 जस्त नामक वृक्ष। स० एलम् एक प्रकार का रत्न, नामम।

सीरिक् (वि०) (स्त्री०-की) [सीर (रा) (सीर) + ठक्]

1 स्वर्णीय, दिव्य 2 मदिरासम्बन्धी, बाजरीय 3 मदिरा पर लगा कर, चुल्क, -कः 1 क्षमि 2 स्वर्ण, वैकुण्ठ 3 कलाक, अधिरा सेपने वाला।

सीरी [सीर + जीप्] सूर्य की पत्नी।

सीरीय (वि०) (स्त्री०-जी) [सीर + अच्] 1 सूर्य सम्बन्धी 2 सूर्य के योग्य, सूर्य के उपयुक्त।

सीर्य (वि०) (स्त्री०-जी) [सूर्य + अच्] सूर्य से सम्बन्ध रखने वाला, सूर्य का।

सीरज्यम् [सीरज अच्] 1 प्राप्ति की सुविधा 2 सुक-रता, सुखमता, सुयमता।

सीरिक्कः [सीर + ठक्] तात्रकार, कसेरा।

सीव (वि०) (स्त्री०-वी) [स्व (स्वर) + अच्] 1 क्षमनी, मित्र सम्पत्ति से सम्बन्ध रखने वाला 2 स्वर्णीय या स्वर्ण सम्बन्धी, -अच् बाधेय, राजकाजम्।

सौवर्णिक (वि०) (स्त्री०-की) [स्वधाम+ठक्] अपने जिजी गोश से सम्बन्ध रखने वाला ।

सौवर (वि०) (स्त्री०-री) [स्वर+अण्] 1. किसी ध्वनि या सगीत के स्वर से संबंध रखने वाला 2. स्वरसम्बन्धी ।

सौवर्चल (वि०) (स्त्री०-ली) [सुवर्चल+अण्] सुवर्चल नामक देश से प्राप्त,—कम् 1. सौवर नमक 2. सज्जी का बार, रेह ।

सौवर्च (वि०) (स्त्री०-वी) [सुवर्च+अण्] 1. सुनहरी 2. ठोस में एक स्वर्णमुद्रा के बराबर ।

सौवस्तिक (वि०) (स्त्री०-की) [स्वस्तिक+ठक्] आधी-बाँधायक, कः कुलपुरोहित, या ब्राह्मण ।

सौवाध्यायिक (वि०) (स्त्री०-की) [स्वाध्याय+ठक्] स्वाध्यायसम्बन्धी, स्वाध्यायी ।

सौवस्त्य (वि०) (स्त्री०-वी) [सुवास्तु+अण्] अच्छे स्थान पर निर्मित, अच्छी वास्तुशिल्प से युक्त ।

सौविचः, सौविचस्कः [सु+विच्+क+अण्] सुपुत्र विद्वन्मूयः त काति—मा+क+अण्] अस्तपुर की रखवाली पर नियुक्त व्यक्ति—हि० ५१७ ।

सौवीर्य [सुवीर+अण्] 1. वीर का कल 2. अंजन, मुरमा 3. कांजी,—रः सुवीर देश या वहाँ का अधिवासी ('अधिवासी' के अर्थ में व० व०) । तम०—अञ्जनम् एक प्रकार का अंजन या मुरमा ।

सौवीरकः [सौवीर+कण्] 1. वीर, वीर का वेद 2. सुवीर देश का अधिवासी 3. अवद्वय का नाव,—कम् जी की कांजी ।

सौवीर्य [सुवीर+ध्वज्] बड़ी सुरवीरता या विक्रम ।

सौवीर्य [सुवीर+ध्वज्] स्वभाव की श्रेष्ठता, अच्छा नैतिक आचरण, उदाचरण ।

सौवचस् [सुवचस्+अण्] व्यापि, प्रसिद्धि ।

सौवचस् [सुवचस्+अण्] 1. श्रेष्ठता, बकाई, सौन्दर्य, लालित्य, सुनोपारि सौन्दर्य—अर्वाङ्गसौष्ठवार्थव्यक्तयते विल-नेपथ्यवोः वाच्योः प्रवेष्टोऽनु भासवि० १. शरीर-सौष्ठवम् मा० ११७, "जिसे शरीर की काटकाट वा दीपटाप अच्छी न हो" 2. परमकीर्ति, वाचुर्व 3. बलिकता 4. लयक, हुस्कायन ।

सौवसातिकः [सुसात+ठक्] स्नान ममलकारी होने के सम्बन्ध में पूछने वाला—सौवसातिको व्यय अवत्य-वत्यः—रघु० ६६१ ।

सौवर्धः [सुवर्ध+अण्] मित्र का पुत्र, संयुक्त हृदय की सरलता, स्नेह, सद्भाव, मैत्री (वैरमानि) विधाष्य सौवर्धमित्र सुवर्धयः—रघु० १४१५, सौवर्धहृदयानि विवेष्टितानि—मा० १४, मेघ० ११५ ।

सौवर्ध, सौवर्ध—कम् [सुवर्ध+ध्वज्, अण् वा, पठ् वा] मित्रता, स्नेह परस्परहृदयानि जनाः मित्रिणीभवन्ति

—मुच्य० ११३, सखीजनस्ते किम् कलसीहवः विक्रम० ११०, मा० १ ।

सौहित्यम् [सुहित+ध्वज्] 1. तृप्ति, सतुष्टि—हि० ५१६२ 2. पूर्णता, पूर्ति 3. कृपासुता, सद्भावना ।

स्कम् (धा० आ० स्कन्दते) 1. कूटना 2. उठाना 3. उठे-लना, उगलना ।

स्कम् 1. (धा० पर० स्कन्दति, स्कन्ध) 1. उठलना, कूटना 2. उठाना, ऊपर की ओर उठाना, ऊपर की उठलना 3. गिरना, टपकना अट्टि० २२११ 4. फट जाना, छलकना 5. नष्ट होना, समाप्त होना—वस्कन्दे ताप ऐश्वर्यम् 6. बिखर जाना, रिसना 7. उगलना, डगलना, प्रेर० (स्कन्दयति—ते) 1. उठलना, फँसना, डगलना, उगलना (जैसे कीर्यस्कलन)—एकः सवीत सर्वत्र न देत स्कन्दयेत् स्वचित्—मनु० २१८०, ९५० 2. छोड़ देना, बर्हलना करना, पास से निकल जाना, अज—आक्रमण करना, बाधा डोलना बांधी की नाति नरलना पुरीमवस्कन्द लनीहि नमनम् हि० १५१, आ—आक्रमण करना, बाधा डोलना—आस्कन्दस्कन्दय बाधैरत्यक्रमय त इतम्—अट्टि० १७८२, वरि, इधर उधर उठलना—मेघमातः परिस्कन्दम् परिस्कन्दमाधवरिम् । अजमाधपरिस्कन्दं ब्रह्मपासेन विस्फुर्य अट्टि० १७५, इ— 1. जाने की उठलना 2. अष्टा बारों, आक्रमण करना । ii (पूरा० उभ० स्कन्दयति—ते) एकत्र करना ।

स्कन्धः [स्कन्ध+अण्] 1. उठलना 2. पारा 3. कात्तिकेय का नाम—हेमानीमार्ह स्कन्ध—वच० १०२४, रघु० २१३५, ७११, मेघ० ४३ 4. छिब का नाम 5. शरीर 6. राजा 7. महीत 8. बसुर पुत्र । तम० पुराणम् अठारह पुराणों में से एक,—अच्छी (स्त्री०) पैर मात के छठे दिन कात्तिकेय के सम्मान में पर्व ।

स्कन्धकः [स्कन्ध+अण्] 1. उठलने वाला 2. उँगिक ।

स्कन्धम् [स्कन्ध+अण्] 1. सरल, बहुता 2. रेचन, रेट का चलना, (बाँतों की या नलों की) क्षिप्रता 3. जाना, हिलना—जलना 4. मुकना 5. ठंडक पहुँचा कर रक्त का जमाना ।

स्कन्ध (पूरा० उभ० स्कन्दयति—ते) एकत्र करना ।

स्कन्धः [स्कन्धते आङ्ग्रेजोऽपि पुनर्न साक्षया वा कर्मणि चञ्, पठो०] १ कंठा 2. शरीर 3. वृक्ष का तना —सौवसातिकप्रतिष्ठितस्कन्धतमैकदन्तः—मा० ११४, रघु० ४५७, मेघ० ५३ 4. शाखा या बड़ी शाखी 5. मातृ-जान की कोई शाखा वा विभाग 6. (किसी पुस्तक का) परिच्छेद, अध्याय, अष्ट 7. किसी सेना की टकड़ी 8. उँगिक समुच्चय, समूह 9. जाने-मियाँ के पाँच दिग्ग 10 (बौद्ध दर्शन में) जीवन के पाँच तरङ्ग—अर्वाकार्यशरीरेषु मुक्ताञ्जल्यवयवकम्

शि० २।२८ 11 सबाय, लवाई 12. ताजा 13 करार 14 मार्ग, रास्ता 15. बुद्धिमान या बिडान् पुरुष 16 ककपक्षी, बगला । ख० आहारः 1 मेना या सेना की टुकड़ी 2 राजा का निवास, राजधानी 3 शिविर, उपानेव (वि०) जो कचे पर डोया जाय, शान्ति बनाये रखने के लिए की जाने वाली सधि जिसमें अधीनता के बिना स्वयं कोई कल या धार्य उपहार में दिया जाय, बापः बहुमी, तु० शिष्य ।

तथः नारियल का पेड़, - देशः कच, इदमुपहित-सूक्ष्मप्रश्रियना स्कन्धदेशे— श० १।१८, परिनिर्वाणम् शरीर के स्कंधो (पाषो तन्वो) का पूर्ण कोप या नाश (बीड०), --कलः 1 नारियल का पेड़ 2. बेल का वृक्ष 3. गुलर का पेड़, बंधना एक प्रकार का सोला बेसी, -स्कन्धः ककपक्षी, बगला, -बहुः बटवृक्ष, बाहुः - बाहुकः बोझा होने के लिए सजाया हुआ बैल, लघुबैल, - लाक्षा पेड़ की मुख्य शाखा जो वृक्ष के तने से निकले, -बहुकः नैस, -स्कन्धः प्रत्येक कथा ।

स्कन्धश्च (नपु०) [स्कन्ध + अमुन्, पु०] 1 कथा 2 वृक्ष का तना ।

स्कन्धिकः [स्कन्ध + ठन्] बोझा होने के लिए सजाया हुआ बैल, तु० 'स्कन्धवाह' ।

स्कन्धिन् (वि०) (स्त्री०-मी०) [स्कन्ध + इनि] 1 कचो वाला 2. डालियों वाला, तने वाला, (पु०) बल ।

स्कन्ध (भु० क० क०) [स्कन्ध + स्त] 1 पतित, नीचे गिरा हुआ, उतरा हुआ 2 रिखा हुआ, बुर बुर टपका हुआ 3. उगला हुआ, फैलाया हुआ, छिड़का हुआ 4 गया हुआ 5. सूजा हुआ ।

स्कम्भ् (भ्वा० जा०, स्वा० कथा० स्कम्भते, स्कम्भोति, स्कम्भाति) 1. रचना 2 रोकना, रोकबट डालना, बाधा डालना, अवरोध करना, दबाना, नियन्त्रित करना—प्रेर० (स्कम्भयति—ते या स्कम्भयति—ते, बि— बाधा डालना, अवरोध करना ।

स्कम्भ. [स्कन्ध + भञ्ज] 1 सहारा, धुरी, टेक 2 आलस्य आहार 3. परमेस्वर ।

स्कम्भमन् [स्कन्ध + स्मृट्] सहारा देने की क्रिया, सहारा, धुरी, टेक ।

स्कम्भ (वि०) (स्त्री०-ही०) [स्कम्भ + भञ्ज] 1. स्कन्ध-सम्बन्धी 2. शिवसम्बन्धी, बन्धू स्कन्ध पुराण ।

स्तु (स्वा० कथा० उभ० स्तुनोति, स्तुनते, स्तुनाति, स्तुनीते) 1 कूद कर चलना, उछलना, चौकड़ी मारना 2. उठाना, उठहन करना 3. डकना, ऊपर बिछा देना भट्टि० १७।३२ 1 पहुँचाना, प्रति, दापना भट्टि० १८।७३ ।

स्तुन्श्च (भ्वा० जा० स्तुनते) 1. कूदना 2. उठहन करना, उठाना ।

स्तोहिष्ठा (स्त्री०) पक्षीविशेष ।

स्वप् (भ्वा० जा० स्वदते) 1. काटना, काट कर टुकड़े टुकड़े करना 2 नष्ट करना 3. चोट पहुँचाना, क्षतिग्रस्त करना, मार डालना 4. परास्त करना, सर्वथा हरा देना 5 बकाना, आत करना कष्ट देना 6. बुढ़ करना ।

स्वदधम् [स्वप् + स्मृट्] 1. काटना, काटकर टुकड़े-टुकड़े करना 2 चोट पहुँचाना, क्षतिग्रस्त करना, मार डालना 3 कष्ट देना, डुबी करना ।

स्वल् (भ्वा० पर० स्वलति) 1. लड़खड़ाना, जीध बूझ गिरना, नाँव गिरना, फिसलना, डगमगाना—स्वल्ति चरण भूमौ न्यस्त न चार्द्रतया गृही—मृच्छ० १।१३, ५।२४ 2 डगमगाना, लहराना, बरबराता, डगमग होना 3 बाधा भग किया जाना, उत्कर्षित होना (किसी आदेश का)—मृच्छ० ३।२५, रघु० १८।४३ 4. सम्भार से व्युत्त होना—कि० १.३७ 5 व्रस्त होना, उत्तेजित होना कि० ३।५३, १३।५ 6. घुटि करना, बड़ी भूल करना, बल्लूनी करना स्वल्तो हि करालम्भः सुपुलाचिवशेषितम् हिं ३।१३४, (यहाँ यह 'अचम' शब्द की भी प्रकट करता है)

7 हुकलाना, गुतलाना, स्क-स्क कर शोकना—बन्ध-कमलक शिष्टो स्मरायि स्वल्दसमम्भ्रसमम्भ्रमलित ते—उत्तर० ४।४, रघु० १।७६, कु० ५।१६ 8. विकल होना, कोई प्रभाव न होना—रघु० ११।८३ 9. बुर बुर गिरना, टपकना, सूना 10. जाना, हिलना-डुलना 11. झोझल होना 12. एकच करना, इकट्ठा करना—प्रेर० (स्वल्भयति—ते) 1. लड़खड़ाने का कारण बनना, 2. घुटि या भूल कराना, डगमगाने या बाधाशोक होने का कारण बनना—वचनाति स्वल्भन् उभे पदे—कु० ४।१८, स्वल्भयति वचनं ते सत्यवत्यङ्गमङ्गम्—मा० ३।८, प्र— बकमचक्का होना—रघु० प्रचस्वल्भन्-वचावा भट्टि० १४।९८, बि—, बल्लूनी करना, बड़ी भूल करना रघु० ११।२४ ।

स्वल्भम् [स्वल् + स्मृट्] 1 लड़खड़ाना, फिसलना, डगमगाना, नीचे गिर पड़ना 2. डगमगाने हुए चलना 3. सम्भार से विचलन 4 भारी भूल, घुटि, बल्लूनी 5. विकलता, गिरावा, बल्लूनी 6. हुकलाना, झोझने में भूल या उच्चारण में अशुद्धि, एक एक कर शोकना 7 सूना, टपकना 8. टकराना, उछलना—उत्तर० २।२०, महाभोर० ५।४० 9. आपस में फिसलना, रगड़ना ।

स्वल्भित (भु० क० क०) [स्वल् + स्त] 1. लड़खड़ाना, फिसलना, डगमगाना 2 गिरा, पड़ा 3. बरबराते बाधा, लहराने वाला, बटबट होने वाला, अस्थिर 4. बन्धे में बुर, पिथकड 5 हुकलाने वाला, एक एक कर

बोलने वाला 6. विभुष्य, बाधित 7. नुटि करने वाला, बड़ी भूल करने वाला 8. गिरा हुआ, उद्वीग्न 9. टपकने वाला, धू कर नीचे गिरने वाला 10. हस्तक्षेप किया गया, रोका हुआ 11. व्याकुल 12. बीता हुआ, तप 1. लड़खड़ाता, डगमगाना, गिरना 2. सम्मार्ग से बिजलन 3. नुटि, भूल, गलती, मोहस्फलित कु० ४।८ 4. दोष, पाप, अतिक्रमण 5. बोला, विरवासपात 6. हाँसा, कूटपात। सम० - सुखम् (अव्य०) ; आकर्षक रीति से चले चलना - मेघ० २८।

स्वदृष्ट (धृ० पर० स्वरुडति) डकना।

स्ताब्ध (स्था० पर० स्तकति) 1. मुकाबला करना 2. टक्कर लेना, प्रतिरोध करना, पीछे ढकेलना।

स्तन (स्था० पर०, चुरा० उभ० स्तनति, स्तनयति-ने, स्तनित) 1. आबाध करना, शब्द करना, गूजना, प्रतिध्वनि करना 2. कराहना, कठिनाई से सास लेना, ऊँचा सास लेना 3. गरजना, दहाड़ना तस्मन्मंडव-कुर्मस्पर्जस्मल्लुठिरे अता मटि० १४।३०, वि 1. शब्द करना 2. आह भरना 3. विलाप करना, बि, दहाड़ना।

स्तनः [स्तन् + अच्] 1. स्त्री की छाती - स्तनो मास-इन्धी कनककलशावित्यपमिता - भर्तृ० ३।२०, (दरि-द्राणां मनोरथा) हृदयेष्वेव लीयते विषवास्त्रीस्त-नादिव पंच० २।११ 2. छाती, जिम्मी भी मादा की बीड़ी या चुचुक - अर्धपीनस्तन मातुरामर्दविलुष्टकेगम् सं० ७।१४। सम० अक्षुक्लम् स्तन डकने का कपडा, -अवः चुची, -अक्षुरागः स्त्री के स्तनो पर लगाया जाने वाला रंग, अन्तरम् 1 हृदय 2 दोनों स्तनो के बीच का स्थान - (न) मृणाल सूत्रं रचित स्तनान्तरं श० १।१७, रघु० १०।६२ 3 स्तन का एक चिह्न (जो भाभी वैषम्य का सूचक कहा जाता है), -आभोगः 1. स्तनों की पूर्णता या फैलाव 2. चुचियों की गोलाई 3 बहु पुरा जिसके स्त्रियों जैसे बड़े स्तन हों, ततः, -दम्ब चुचियों का डलान, च, -पा, पायक, -पायिक् स्तन पान करने वाला, दुग्धमूहा, -पायम् स्तनपान करना, भरः 1. स्तनों की स्तूलता, -पादा-प्रस्थितया मुहुः स्तनमरोजानीतया नम्रताम् - रत्न० १।१ 2. स्त्री जैसे स्तनों वाला पुरुष, अवः एक प्रकार का रतिकण, -नुक्कम्, कुत्तम्, -सिखा चुचुक, चुची।

स्तनम् [स्तन् + स्यट्] 1. ध्वनन, आवाज, कोलाहल 2. दहाड़ना, गरजना, (बादलों का) गड़गड़ाना 3. कराहना 4. कठिनाई से साँस लेना।

स्तन्यव (वि०) [स्तन् ध्वति -वे + कच्, मृच् च] स्तन्यपान करने वाला - यदि दुग्धसे हृदिभिन् स्तन-न्ययो भविना करेत्परिचितता मही भाषि० १।५३,

तथाकुरासी परिवृत्तभाव्या मया न दुष्टस्तनयः स्तन-न्यय मा० १०।६, वः शिशु, दुग्धमूहा वक्ष्यारघु० १।७।८, सि० १२।४०।

स्तन्यवित् [स्तन् + इत्] 1. गरजना, गड़गड़ाना, बादलों का कड़कड़ाना 2. बादल उत्तर० ३।७, ५।८ 3 बिजली १ रोम, बीमारी 5 मृग्य 6. एक प्रकार का बास।

स्तनित (मृ० क० कृ०) [स्तन् कर्तरि क्त] 1. ध्वनित, शब्दायमान, कोलाहलमय मेघ० २८ 2. गरजने वाला, दहाड़ने वाला, तम् 1 बिजली की कड़कड़ा-हट, बादलों की गरज नोयोःसर्गस्तनितमूक्षरो माम्भ भूविकलवास्ता मेघ० ३७ 2 गरज, सौर 3 ताली बजाने की आवाज।

स्तन्य [स्तने भव यत्] मा का दूध, क्षीर - पिब स्तन्य पात भाषि० १।६०। सम० स्थावः मा का दूध छुड़ाना, मान्यमोचन स्तन्यपानाग्रभृति मुमुक्षो दन्तपाउचालिकेव मा० १०।५, स्तन्यपान यावत्पुत्र-योर्वेक्षरव उत्तर० ७।

स्तावकः [स्तु + वृन् या म्यान् अवक्, पुषो० बबयोरभेदः] गुच्छा, मुषड कुसुमस्तवकरयेव वं गती स्ता मनवि-नाम् - भर्तृ० २।१०४, रघु० १३।३२, मेघ० ७५, कु० ३।३९।

स्ताव्य (मृ० क० कृ०) [स्तम् कर्मणि कर्तरि वा ण] 1. रोका हुआ, घेराबन्दी किया हुआ, अवदड 2 लकवे से घसना, सजाहीन मुन, बड़ीकृत 3 गतिहीन, स्था-वर, अचल 4 स्थिर दृढ वडा, धीर, कठोर 5 दृढ, अडिग, कठारहृदय, निष्ठुर 6 उजड़, माटा। सम० कर्ज (वि०) जिम्मे के कान सरे रो, रोक्क (पु०) मृत्र, वराह, लोचन (वि०) जिसकी पलकें न झपकती हैं। (जैसे देवता)।

स्ताव्यता, स्ताव्य [स्तव्य + तल्] टापू, ख बा । अनम्यता, दुड़ना, कड़ाई 2 जादू, अववेचना।

स्ताविः (स्त्री०) [स्तव्य + क्तिन्] 1 स्थिरता, कडा-पन, मक्ती, अनम्यता 2 दुड़ना, अचलता 3 जादू, अववेचना, व्रतना । घुटना।

स्ताव्य दे० 'स्ताव्य'।

स्तावः (पु०) वकर, वैदा।

स्तावु (नपु०) - स्तावुक।

स्ताव्य (स्था० पर० स्तकति) बरग जाना, व्याकुल होना।

स्ताव्यः [स्था + अट्ठक् क्तिन्, पुषो०] 1. बास का पृथ - रघु० १।१५, अनाज के पीसों की पुली बैसा कि स्तव्यकृतिता मे 3 मृग, पुत्र, गुच्छ उत्तर० २।२९, रघु० १५।१९ 4 साड़ी, मृग्य 5 मृग्य, प्रकार रहित झाड़ी 6 हाथी बीचने का मूटा 7. संभा 8 बड़ना, अववेचना (इन २। अथो मे 'स्ताव्य')

१ पहाड़। सम०—करि (वि०) बुनिया बाने वाला, भरोटा बनाने वाला, (रिः) बनाव, बांध, करिवा पूजा या मुट्ठा बनाना, प्रचुर या पुष्कल भावा में विकास—न हाके स्तम्भकरिता वस्तुव्ययने-अते—प्रा० ११३, बनः १ पूर्वा (जिससे बाध के पुच्छे निराने जाय) २ (बाध काटने के लिए) दगाही ३ तिथी बान एकत्र करने की टाकरी, ज्म-वराती, तुरी।

स्तम्भेरनः [स्तम्ब वृक्षादीना काष्ठे गुल्मे पुच्छे वा रमते रम् +ञच्, अलुक् स०] हाथी स्तम्भेरना मुखरमुल्ल-लकषितले—रघु० ५।८२, सि० ५।३४।

स्तम्भ (ग्रा० आ० स्वा० कथा० पर० स्तम्भते स्तरपेति स्तम्भाति, स्तम्भिन, स्तम्ब इकारान्त उकारान्त उपसर्गा के पश्चात् तथा अब के पश्चात् धातु के स् को व् हो जाता है) १ रोकना, बाधा डालना, पकड़ना दबाना—कथः स्तम्भितवाध्यवृत्ति-कलुष—स० ४।१५ २ दृढ़ करना, कडा करना अबल बनाना ३ जड़ बनाना शक्तिहीन करना अनम्य बनाना प्राणा दम्भसिरे गात्र तन्मन्त्रे च हते प्रिये मट्टि० १६।५५ ४ टेक लगाना सहारा देना बामना सभाले रखना ५ कडा होना, सक्त होना, मटल होना ६ धमकी होना, डन्त होना सीधी गर्दन वाला होना (विन्माकिट श्लोक में धातु के विभिन्न रूप दर्शाये गए हैं स्तम्भत पुष्व प्रायो योषवेन वनन च । न स्तम्भाति क्षितोऽर्थापि न स्तम्भाति युष्वायसौ ॥) —प्रेर० (स्तम्भवति ते) १ रोकना पकड़ना २ दृढ़ या कडा करना ३ गति हीन करना ४ टेक लगाना सहारा देना। सम० अब १ झुकना निर्धर होना प्रकृति स्वाभच-ष्टम्य भग० १।८ २ अवरुद्ध करना ३ सहारा देना टेक लगाना ४ बामना कौली भरना आश्रित करना ५ लपेटना निष्फात्रे में रखना ६ बाधा डालना रोकना पकड़ना प्रतिबद्ध करना उद् १ रोकना रुकावट डालना पकड़ना २ मज्जार देना टेक लगाना बाम रखना उद्, नि रोकन विरस्तार करना, पथं बेरना पथवष्टम्यतामन त्करालावतनम्—मा० ५ बि १ ७८५। २ जमाना, पीछा लगाना आश्रित होना—अर्युन्मिने मन्मिणि पाथिबे च विष्टम्य पादावपतिष्ठने श्री—प्रा० ४।१३, लम्, (प्रेर० भी) १ रोकना प्रतिबद्ध करना, नियंत्रण करना—प्रयत्नस्तम्भित-दिक्षिधाया कथयिषीता मनसां बभूवुः—कु० ३।३४ २ गतिहीन करना अनम्य करना कु० ३।७३ ३ विन्मल बाधना, साहस करना, प्रसन्न होना, स्वस्थानित करना, लपेट होना—देवि लस्तम्भवात्मा-

नम्—उत्तर० ४ ४ दृढ़ या मटक करना, भव० ३।४३, लम्ब १, १ सहारा देना, टेक लगाना २ साधना देना, प्रोत्साहित करना।

स्तम्भ. [स्तम्भ +ञच्] १ स्थिरता, कडापन, सक्ती, अटकता रम्भा स्तम्भ भवति—विष्णु० १८।२९, मात्रलम्भ स्तनमुकुलसौन्दर्यवत् प्रकम्प—मा० २।५ तत्ककरोपहितजडिमस्तम्भमभ्येति नाभम्—१।३५, ४।२ २ अवरोधता, जडता, बाध, अनम्यता, लम्बा ३ रोक अवरोध रुकावट—सोऽपश्यत्प्रविधानेन सन्तते अभ्यकारणम्—रघु० १।७९, वाक्स्तम्भ मादयति मा० ८ ४ नियमित करना, दबन करना, दबाना—कनविषयस्तम्भ प्रतिहृतविषयामञ्जलिरेपि—भव० ३।६ ५ टेक सहारा, आश्रय ६ लुप्त करना, पाल ७ प्रकाश (पुष्प का) तना ८ मुद्रता, जडता ९ आबधुष्यता, अनुसंजनीयता १० किसी अलौकिक शक्ति या आहुति के भावना वा धुक्ति का इतन करना। सम०—उत्कीर्ण किसी लकड़ी में बोद कर बनाई गई (मूर्ति), वर (वि०) १ गतिहीन करने वाला जडता लाने वाला २ रोकने वाला, (रु) बाध, कारणम् अवरोध वा रुकावट का कारण,—पूजा विवाह आदि के अवसर पर बनाए गए अस्थायी मंडपों के स्तम्भों की पूजा।

स्तम्भकिन् (पु०) धर्ममयिन् एक वाद्ययंत्र।

स्तम्भकम् [स्तम्भ + कृत्] १ रोकना, अवरोध करना, रुकावट डालना विरस्तार करना, दबाना, नियमित करना लोललोलमुभितकरणीयम्भुम्भस्तम्भनार्थम्—उत्तर० ३।३६ २ गतिहीन होना, अकडावट, जडता ३ गाला होना स्वर्यचितता पञ्च० १।३६ ४ दृढ़ या कडा होना, दृढ़ता पूर्वक जमाना ५, टेक देना, सहारा देना ६ रुधिर प्रवाह को रोकना ७ कोई भी चीज जो रक्तप्रवाहरोधक हो ८ (मयादि के द्वारा) किसी की शक्ति कुण्ठित करना—दे० स्तम्भ (१०),—न कामदेव के पाँच भागों में से एक।

स्तर (वि०) [स्तु +ञच्] फैलाने वाला विस्तार करने वाला, डन्त वाला रु० १ कोई भी बिछाई हुई चीज रहा तद्, परत २ शय्या पलक।

स्तरणम् [स्तु (स्तु) + ल्यट] फैलाने की क्रिया बिहोरना, छितारना आदि।

स्तरी (री) मन् (पु०) [पु +इ (ई) मयिच्] शय्या, पलक।

स्तरी [स्तु कर्मणि ई] १ पूर्वा, बाध २ दक्षिणा ३ बाध बाध।

स्तवः [स्तु +ञच्] १ प्रशंसा करना, विख्यात करना, स्तुति करना २ प्रशंसा, स्तुति, स्तोत्र।

स्तवक (वि०) (स्त्री०—विष्णु) [स्तु + कृत्] प्रशंसक,

स्तोता,—कः 1 स्तुति कर्ता, प्रशंसा, स्तुति 3. यजुरियो का मुष्का 4 फूलों का मुष्का, गुलबस्ता, गजरा, कुसुम-स्तवक 5 किसी पुस्तक का परिच्छेद, या अनुभाग 6 समुच्चय—तु० 'स्तवक' की ।

स्तवकम् [स्तु+कृत्] 1 प्रशंसा करना, सराहना 2 सूक्त । स्तव [स्तु+कृत्] प्रशंसा, स्तुति ।

स्तवकः [स्तु+कृत्] प्रशंसक, स्तोता, वाचस्पति ।

स्तित् [स्था० आ० स्तिभूते] 1 बहना 2 बाबा बोलना 3 रिसना ।

स्तित् [स्था० आ० स्तेपते] रिसना, बूढ़-बूढ़ टपकना करना ।

स्तित्तिः [स्तम्+इत्, इत्यम्] 1 स्काइट, अवरोध 2 समूह, 3 मूल्य, मुष्का, पुत्र ।

स्तित्, स्तीन् [दिवा० पर० स्तिभ्यति स्तीभ्यति] 1 नीला या तर होना 2 स्थिर वा अटल होना, कड़ा होना ।

स्तित्ति (वि०) [स्तित् कर्तरि क्त] 1 गीला, तर 2 (क)

निश्चय, निश्चय, शास्त्र क्षुब्धितमूलकिकातरण मन पय इव स्तिमितस्य महोदये—मा० ३११०, (स)

जवाया हुआ, कठोर बटल, गतिहीन, स्थिर—वाच स्पति सप्तमि सोऽष्टमूर्तो त्वाद्याप्यभिलास्तिभिरा

बसुव कु० ७८७२ २५९, मा० ११७७, रघु० २१२, ३११७, १३४८, ७९, उलर० ६१२५ ३ मुदा हुआ, बर—रघु० १७३३ ४ अकड़ा हुआ, अकड़ावस्त

5 मृदु, कोमल 6 तुल्य, समानुष्ट । सम० बायु सान्ना पथन—स्वाधि स्थिर संचलन ।

स्तित्तिभक्तम् [स्तित्तिभक्त+इत्] स्थिरता स्थितेय, स्थानि ।

स्तोत्रि [स्तु+त्रि] 1 यज्ञ में स्थानागम ऋत्विक् 2 घास 3 आकाश, अलरिख 4 जल 5 तथैव 6 इन्द्र का विशेषण ।

स्तु (अथ० उभ० स्तोति-स्तवर्हि स्तुते स्तुकीते स्तुता इच्छा० तुष्टुपति-ने इकारान्त या उकारान्त उपसर्ग के पश्चात् स्तु के सू को प हा जाता है) 1 प्रशंसा करना, सराहना, स्तुति करना स्तुतिगान करना—कीर्तिगान करना श्रवण करना—श्रवण ११६१

मुद्रा० ३११६ मट्टि० ८१२२ १५१० २२१३ 2 प्रशंसागान करना मञ्ज गाना स्तोत्रों द्वारा पूजा करना, अभि—, प्रशंसा करना, स्तुति करना, प्र—, 1 प्रशंसा करना 2-श्रावण करना उपसर्ग करना प्रस्तुताय विवाहस्तु—मातृवि० १ 3 कारण बनना पैदा करना मा० ५५९ लम्, 1 प्रशंसा करना

—रघु० १३१६ 2 परिचित होना जानकारी या चर्चित मन्त्र वाला होना इस अर्थ में प्रत्येक 'कला' प्रयोग) अनेकदा मस्तुनमप्यनत्वा नव नव प्रीतिरहो करोति वि० ३१३१, वि० ३१२, दे० मस्तुन की ।

स्तु (अथ० उभ० स्तोति-स्तवर्हि स्तुते स्तुकीते स्तुता इच्छा० तुष्टुपति-ने इकारान्त या उकारान्त उपसर्ग के पश्चात् स्तु के सू को प हा जाता है) 1 प्रशंसा करना, सराहना, स्तुति करना स्तुतिगान करना—कीर्तिगान करना श्रवण करना—श्रवण ११६१

मुद्रा० ३११६ मट्टि० ८१२२ १५१० २२१३ 2 प्रशंसागान करना मञ्ज गाना स्तोत्रों द्वारा पूजा करना, अभि—, प्रशंसा करना, स्तुति करना, प्र—, 1 प्रशंसा करना 2-श्रावण करना उपसर्ग करना प्रस्तुताय विवाहस्तु—मातृवि० १ 3 कारण बनना पैदा करना मा० ५५९ लम्, 1 प्रशंसा करना

—रघु० १३१६ 2 परिचित होना जानकारी या चर्चित मन्त्र वाला होना इस अर्थ में प्रत्येक 'कला' प्रयोग) अनेकदा मस्तुनमप्यनत्वा नव नव प्रीतिरहो करोति वि० ३१३१, वि० ३१२, दे० मस्तुन की ।

स्तु (अथ० उभ० स्तोति-स्तवर्हि स्तुते स्तुकीते स्तुता इच्छा० तुष्टुपति-ने इकारान्त या उकारान्त उपसर्ग के पश्चात् स्तु के सू को प हा जाता है) 1 प्रशंसा करना, सराहना, स्तुति करना स्तुतिगान करना—कीर्तिगान करना श्रवण करना—श्रवण ११६१

मुद्रा० ३११६ मट्टि० ८१२२ १५१० २२१३ 2 प्रशंसागान करना मञ्ज गाना स्तोत्रों द्वारा पूजा करना, अभि—, प्रशंसा करना, स्तुति करना, प्र—, 1 प्रशंसा करना 2-श्रावण करना उपसर्ग करना प्रस्तुताय विवाहस्तु—मातृवि० १ 3 कारण बनना पैदा करना मा० ५५९ लम्, 1 प्रशंसा करना

—रघु० १३१६ 2 परिचित होना जानकारी या चर्चित मन्त्र वाला होना इस अर्थ में प्रत्येक 'कला' प्रयोग) अनेकदा मस्तुनमप्यनत्वा नव नव प्रीतिरहो करोति वि० ३१३१, वि० ३१२, दे० मस्तुन की ।

स्तुक (पु०) बालों की चोटी ब्रिचि या मीठी ।

स्तुका [स्तु+कृत्] 1 बालों की ब्रिचि या मीठी 2 सार्ब के दोनों तीनों के बीच के चूचराले बालों का मुष्का 3 कुल्हा, जवा ।

स्तुक् [स्था० आ० स्तोचते] 1 उज्ज्वल होना, चमकना, निर्मल स्वच्छ होना 2 मंगलप्रद या शुभ या सुखद होना ।

स्तुत (मू० क० कृ०) [स्तु+क्त] 1 प्रशंसा किया गया, प्रशस्त स्तुति किया गया 2 क्षुशामद किया गया ।

स्तुति (स्त्री०) [स्तु+क्तिन्] 1 प्रशंसा, गुणकीर्तन सराहना इलाखा स्तुतिभ्यो व्यनिरिच्छन्ते दुराधि चरिताति ने रघु० १०३० 2 प्रशंसाकारक सूक्त, स्तोत्र रघु० ४१६ 3 वाचस्पती क्षुशामद, जुड़ी प्रशंसा—मृतायंभ्याहूति सा हि न स्तुति परमैष्ठिन

—रघु० १०३३ 4 दुर्गा का नाम । मय०—कीर्तय स्तुतिगान सूक्त कीर्तिगान पञ्च प्रशंसा की वस्तु

—पाठक कीर्तिगायक प्रशस्तिवाचक भाट, चारण मदेशावाक बाद प्रशंसायुक्त मातृण स्तोत्र इत

मात्र ।

स्तुत्य (वि०) [स्तु+कृत्] इलाख्य प्रशंसनीय सराहनीय रघु० ४१६ ।

स्तुतक [स्तु+कृत्] बकरा ।

स्तुत्र [स्था० पर० स्तोभति] 1 प्रशंसा करना 2 प्रसिद्ध करना स्तुतिगान करना पूजा करना ।

॥ (स्था० आ० स्तोभते) 1 रोकना दबाना 2 छप करना, मूल करना जड़ीभूत करना ।

स्तुत्र [स्तु+कृत्] बकरा ।

स्तुम्भ [स्था० कथा० पर० स्तुभोति स्तुम्भात्] 1 रोकना 2 मूल करना जड़ीभूत करना 3 निकाल देना ।

स्तुप (दिवा० पर० स्तुता उभ० स्तुपति, स्तुपयति—ते) 1 इर लगाना मञ्ज करना चढ़ा गगना, एकत्र करना 2 लड़ा करना उठाना ।

स्तुप [स्तु+पथ] 1 इर चढ़ा देना (भिदी का) 2 शोड स्मारकचिह्न पावन अवशेषों का (जैसे कि बूढ़ के) रखने के लिए एक प्रकार का स्तम्भवृक्ष स्तुतिचिह्न 3 चिता ।

स्तु [स्था० उत्तर० स्तुनाति, स्तुपुन स्तुत, कर्म० स्तुते] 1 कैलाश क्षितराना, डकना, क्षिणा (मही) नत्वा इर मरधायाते न क्षीप्रपटैरिच

रघु० ४१६३ ४१५८ 2 कैलाश, प्रशंसा करना, विधीयें करना 3 चम्पेना क्षितराना 4 कपड़े पर गाना डायना, क्षिणा कपेटना 5 मात्र डायना

मैर० (स्तुपयति—ते) क्षिणा, डायना, क्षितराना

स्तु [स्था० उत्तर० स्तुनाति, स्तुपुन स्तुत, कर्म० स्तुते] 1 कैलाश क्षितराना, डकना, क्षिणा (मही) नत्वा इर मरधायाते न क्षीप्रपटैरिच

रघु० ४१६३ ४१५८ 2 कैलाश, प्रशंसा करना, विधीयें करना 3 चम्पेना क्षितराना 4 कपड़े पर गाना डायना, क्षिणा कपेटना 5 मात्र डायना

मैर० (स्तुपयति—ते) क्षिणा, डायना, क्षितराना

स्त्री [स्त्र्याच्चेत् बुद्धोपहिते यस्याम् स्त्र्ये + कृ + क्रीप्]

1. नारी, औरत 2. किसी भी जातिवर्ग की माता

—बह स्त्री, दुरिष स्त्री बादि, ङ० ५।२२ 3. पत्नी

—स्त्रीयां क्तां वर्गवाराण्यं युञ्जान्—मा० ५।१८, ये०

२८ 4. स्त्रीकिञ्च, वा स्त्रीकिञ्च का कोई शब्द बापः

स्त्रीभूमि—अवर०। ङ०—अवारः—रघु बलपुर, बला-

गवाणा, —अज्ज्वाः कंयुकी, अविज्जन्तम् समोय,

—मासीकः 1 अपनी स्त्री के सहारे रहने वाला

2 स्त्रियों से वैश्वावृत्ति कराकर जीवनयापन करने

वाला,—काय 1 स्त्रीसमोय का इच्छुक, स्त्रियों के

प्रति भाव 2 पत्नी की इच्छा,—कार्यम् 1 स्त्रियों का

अवसाय 2 स्त्रियों की टहल, बलपुर की सेवा,

—कुमारम् एक स्त्री और बच्चा,—कुलम् रज.साव,

स्त्रियों म मनु-भाव, क्षीरम् माँ का दूध—मनु० ५।९,

—ब (वि०) स्त्रियों से संबंध करने वाला, बही

दूध देने वाली माँ,—बुधः दीक्षा या मन्त्र देने वाली या

पुरोहितानी,—गृहम्—स्वयंगारम्, दे०,—घोषः पौ

अटना, प्रमाद, लड़का, ङ० स्त्रीघाती,—अदितम्,

—अम् स्त्री के कर्म,—अिहम् 1 स्त्रीत्व की विशि-

ष्टता का कोई निश्चय 2 स्त्रीवर्ति, मन,—और

स्त्री की फुलकाने वाला, लम्पट,—अस्त्री केवल

कर्मियों को उन्नत देने वाली स्त्री,—काली (स्त्री०)

स्त्रीवर्ग, माता,—कित स्त्री के बच में रहने वाला,

बोक का मुलाय—स्त्रीवित्तस्पर्धामात्रेण सर्वं पुण्य विन-

श्यति—साय०, मनु० ५।२१७, कणम् स्त्री की

निजी सम्पत्ति बिछ पर उसका स्वतन्त्र अधिकार हो,

—कर्मः 1 स्त्री या पत्नी का कर्तव्य 2 स्त्रीसम्बन्धी

नियम 3 रज.साव,—कमिणी रजस्वला स्त्री,—अज्जः

किसी भी जातिवर्ग की माता या स्त्रीत्वनिग, भाव

(वि०) स्त्री जिसकी स्वामिनी हो,—निजम्बन्तम्

स्त्री का विशेष कार्य क्षेत्र, गृहकर्म, गृहिणी का कार्य

—अज्जोषीकिम् (पु०) दे० ऊपर 'स्त्र्याजीव', परः

स्त्रियों से प्रेम करने वाला, कामी, लम्पट, चित्ताची

राखती जैसी पत्नी,—कुंती (पु०, हि० ब०) 1 पति

और पत्नी 2 स्त्री और पुत्र—हु० २।७,—कुंतलजना

पुत्र के लक्षणों से वृत्त उत्पन्न, गर्वानी स्त्री,—अत्यः

(आ० में) स्त्रीकिञ्च शब्द बनाने के लिए शब्द के

अन्त में जुड़ने वाला अत्यः,—अज्जः (अत्यधिक)

समोय,—अज्जः (स्त्री०) पुरुषों को अन्न देने वाली

स्त्री—आज० १।७३—विजः (वि०) जिसकी स्त्रियाँ प्यार

करें—(क) काम का देश,—कायः स्त्री द्वारा परेशान

होना जाने वाला,—कृतिः (स्त्री०) 1 स्त्री की लय

2 स्त्री का परामर्श, स्त्री द्वारा दिया गया उपदेश,

—जीव संबंध,—कयः स्त्रीकीलान्, स्त्री की ललाह,

—कुलः कर्षोक्तम्,—कणम् कर्म की शक्ति स्त्री,

स्त्री के रूप में मर्दान वा मन्त्र—स्त्रीवन्त्र केम लोके

विचमन्तमव वमनाद्याव सुष्टम्—पंच० १।१११,

—रज्ज्वन्त्र पान, ताम्बूल,—रज्ज्वन्त्र वीर्य स्त्री-

रत्नेषु मर्मावर्षी प्रियतमा युष्मे तवैव दत्ता—विज्जम्

५।२५,—राज्यम् स्त्रियों द्वारा शासित राज्य वा प्रदेश,

—किञ्च 1 (आ० में) स्त्रीवाचकता 2 स्त्रीवर्ति,

—वसः पत्नी के बच में होना, स्त्री की अमीरता,

विशेष (वि०) पत्नी द्वारा शासित, बोक-वसत

अपनी स्त्री को बेटा चाहने वाला,—रघु० १९।४,

—विवाहः स्त्री के साथ विवाह, संसर्गः स्त्रियों का

साथ,—संस्थान (वि०) स्त्री की भाङ्गति वाला—स०

५।३९, संघहृष्यम् 1 किसी स्त्री का बलात् आक्रमण

2 व्यभिचार, सतीत्वहरण, सक्म् स्त्रियों की सभा,

—सम्बन्धः 1 किसी स्त्री के साथ साम्यत्व सम्बन्ध

2 वैवाहिक सम्बन्ध 3 स्त्री के साथ सम्बन्ध,

—स्वभावः 1 स्त्रियों की प्रकृति 2 हीनता,—लूयः

स्त्री का बच वा कृतक,—हरणम् 1 स्त्रियों का बलात्

अपहरण 2 बलात् सम्भोग, अवराजिमाह ।

स्त्रीतला, स्त्रीतरा (स्त्री०) कुलीन स्त्री, उत्तम जाति की

मुलस्कृत स्त्री ।

स्त्रीतरा,—स्वम् [स्त्री + तर + टाप्, स्व वा] 1 नारीत्व

2 पत्नीत्व 3 स्त्री होने का भाव, स्त्रीपता ।

स्त्रेय (वि०) (स्त्री०—औ) [स्त्रिया इदम् मन्त्र]

1. माता, स्त्रीवाचक 2 स्त्रियोगित वा स्त्री सम्बन्धी

3 स्त्रियों में विद्यमान, किम् 1 स्त्रीत्व, स्त्रियों की

प्रकृति, स्त्रीवाचकता—उत्तर० ५।११ 2 पादा का

चिह्न, स्त्रीपता—युष्मे वा स्त्रेये वा मम समवृक्षी

यानु दिवसा—मत्तु० ३।११३, इदं तत्परात्पुन्यमिति

स्त्रेयमिति यदुच्यते—ङ० ५, तस्य तुममिव लुब्धुवृत्ति

स्त्रेयमाकलयत—का० 3 स्त्रियों का समूह ।

स्त्रेयता, स्त्रम् [स्त्रेय + तल् + टाप्, स्व वा] 1 स्त्री

वाचकता, स्त्रीपता 2 स्त्रियों के प्रति अत्यधिक

वधि ।

स्व (ब०) [स्वा + क] (समास के अन्त में प्रयुक्त)

बड़ा होने वाला, ठहरने वाला, डटा रहने वाला,

विद्यमान, मौजूर, वर्तमान बादि तटस्थ, अकस्म,

प्रकृतिस्व, तटस्थ ।

स्वकारम् [—स्वकार, पूर्वो०] कुपारी ।

स्वम् (आ०) वर० वा प्र० स्वयति, स्वययति

1 डोपना, छिपाना, गुप्त रखना, परदा डालना

—पराम्बुहस्वावृत्ति संकुलग्नि स्वययति—मा०

१।१४ 2 डोपना, व्याप्त होना, भरना रजः कण्ठ-

हरणः स्वग्निरौषधीकण्ठः—काण्व० ७ ।

स्वम् (वि०) [स्वप् + क्] 1 बाजपाह, बेईमान

2 परित्यक्त, निर्जन, अवरणमाह, कः पूर्ण, कर्म ।

स्वयम् [स्वम् + स्वद्] छिपाया, गुप्त रहना ।

स्वान्तम् [स्वम् + अन्] सुपारी ।

स्वभिका [स्वम् + भृत् + टाप्] १. देवता २. पान की दुकान ३ एक प्रकार की पृथ्वी ।

स्वभित्ति (वि०) [स्वम् + भू + क्त] छका हुआ, छिपा हुआ, गुप्त रहना हुआ ।

स्वकी [स्वम् + क + कीप्] पान की विविधा ।

स्वम् [स्वम् + उन्] स्वयं, स्वयम् ।

स्वस्तिस्त्वम् [स्वस् + इत्स्वम्, नृक्, तस्य इ] १ नमस् (यज्ञ के लिए बीरत व बीरोर किया हुआ), देवी-निवेदुषी स्वस्ति एव केमले—कु० ५।१२ २ बजर भूमि ५ हेलों का ढेर ४ सीमा, हृद ५ सीमा बिहू । सम० सामिन् (पु०) ('स्वस्तिस्त्वम्' भी) यह हत्याहो भी बिना विस्तर के बलभूमि पर होता है, —स्तिस्त्वम् देवी ।

स्वपतिः [स्वा + क, तस्य पति] १ राजा, प्रभु २ वास्तुकार ३ रचकार, कढ़ई ४ सारथि ५ बृहस्पति के प्रति शक्ति देने वाला, बृहस्पति-यज्ञ करने वाला ६ जन्ता पुर रत्नक ७ कुंभरे ।

स्वपुट (वि०) [तिष्ठति स्वा + क, स्व पुटं यथ] १ मकटघस्त, विप्लव २ ऊबड़-काबड़, ठोका-नीचा । सम० तस्य (वि०) विषय स्थानों में रहने वाला, कठिनाइयों में श्रम बहुस्वास्वस्त्वस्व स्वपुटयत-मयि कथमवस्थावति मा० ५।११ ।

स्वप्न (आ० ५१० स्वप्नति) दुष्टता पूर्वक स्थिर रहना, भवित रहना ।

स्वप्नम् [स्वप् + अप्] १ कठोर वा शुष्क भूमि, सूखी जमीन, दुष्ट मृ (वि०) जल) —मो दुरात्मन (समुद्र) दीपतां टिटिभाष्यानि मो वेत्स्वत्तता स्वां नपार्थि पच० १, इसी प्रकार स्वप्नकर्मिणी या स्वप्नमर्त्यम् २ समुद्रतट, समुद्रबेला, बालू-तट ३ पृथ्वी, भूमि, जमीन ४ जनह, स्थान ५ लेट, भूखंड, डिगा ६ पड़ाव ७ उमरा हुआ भूखंड, टीला ८ प्रस्ताव, प्रसन, विषय, बिचारणीय बात बिबाद, बिचार^{१०} मावि ९ लड़ या भाग (जैसे किसी पुस्तक का) १० तन्म । सम०—अन्तरम् कोई दूसरी जगह—आकाश (वि०) बरा पर उतरा हुआ, अरविस्वम्, —कमलम्, —कम-लिनी पृथ्वी पर उतने वाला कमल देव० ९०, कु० १।१३, —चर (वि०) चूचर, (जो चूचर न हो), —च्युत (वि०) स्वायं से पतित, अपनी पदवी से हटाया हुआ, —देवता स्थानीय वा शास्त्रवेदी, —पत्नी की नृ-कर्मिणी, —साम्यं, —साम्यं (पु०) भूमि पर बनी हुई सड़क-स्वयंकरमा (मृगाल से), ए० ५।१०, —विहङ्ग बीरत भूमि पर लड़ा जाने वाला वृद्ध-कुटिः (स्वी०) किसी भी स्वयं की कुटि भूमि की लड़ाई ।

स्वप्न [स्वप् + टाप्] जेबी की हुई सूखी जमीन जहाँ जल के निकास का अच्छा प्रबंध हो (वि०) स्थानी, दे० नी०) ।

स्वकी [स्वप् + कीप्] १. सूखी जमीन, दुष्ट भूमि २ भूमि का प्राकृतिक स्वयं, भूमि वा मूलक (जैसे कि वनस्पति) —विहङ्गप विहीनभूमि वा समुद्र-सामिन् भूमि की स्वकीय—कु० ५।४ । सम०—देवता पृथ्वी की देवी, भूमि की अविच्छिन्नी देवी—देव० १०६ ।

स्वस्तेन (वि०) [स्वस्ते सेते वी + अप्, कर्मन् व०] सूखी जमीन पर होने वाला, —यः कोई भी वन-स्वप्न-पारी मानवर ।

स्वस्तिः [स्वा + ति] १ मुकाम २ स्वयं ।

स्वस्तिर (वि०) [स्वा + किरप्, स्वस्तिर] १ दुष्ट, पक्का, स्थिर २ दूरा, वृद्ध, पुराना, —रः १. दूरा पुनश्च २ भिन्न ३. शास्त्र का नाम, —रा वृद्ध स्त्री —स्वस्तिर का स्वम् अयमर्थक कस्य नयनान्तरकर दस० ।

स्वस्तिस्त्वम् (वि०) [अतिशयेन स्वप्न स्वप्न + इत्स्वम् तस्य कोप] सबसे बड़ा, बहुत हृष्टपुष्ट, सबसे अधिक विस्तृत ('स्वप्न' की उत्तमावस्था) ।

स्वकीयम् [स्वप् + ईवस्वम्, स्वप्नस्य स्वस्तिर] सबसे बड़ा, अपेक्षाकृत विस्तृत (स्वप्न की अन्तर्मावस्था) ।

स्वा (आ० ५१० पर०) कुछ जलों में आत्मनेपद में भी —तिष्ठति मे, स्थित, कर्मणा स्वीयते, दस वातु के पूर्व इकारान्त उकारान्त उपसर्ग जाने पर वातु के 'स्' को व् हो जाता है) १ बड़ा होना—वसतवेकेन पादेन तिष्ठतवेकेन बुद्धिमान्—सुधा० २ ठहरना, बटे रहना, बचना, रहना—बापे गृहे वा तिष्ठति ३ सोच बचना, बाकी रह जाना—एकी नृजगदतिष्ठति —वच० ४ ४ विलम्ब करना, वृत्तीका करना—किमिति स्वीयते स० २ ५ ठहरना, उपरत होना रुकना, निश्चेष्ट होना—तिष्ठत्येव जलमधिपतिर्योतिर्मां व्योममध्ये विक्रम० २।१ ६ एक बीर रह जाना —तिष्ठतु तादृशकलेसाधनवृत्तात्—का० (इत वृत्तान्त का ध्यान न कीजिए) ७ होना, विह्वल होना किसी भी स्थिति या अवस्था में होना, (आय-वृद्धत् के रूप में प्रवेश)—येरी स्थिते योग्यरि बोद्धव्ये —कु० १।२, स० १।१, विक्रम० १।१, कर्मन् नवमाता तिष्ठति—वच० १, मनु ७।८ ८ बटे रहना, बचक्य होना, बाका बचना, (अधि० के साथ)—आत्मने तिष्ठतुं—विक्रम० ५।१७, रघु०, ११।१५ ९ प्रसिद्ध होना—यति ते तु न तिष्ठेन्मृगस्यै प्रचरैस्तिग्नि—मनु० ७।१०८ १० निकट होना—न वित्र स्वेन तिष्ठतु नृपं वृत्तेन नावदेत्—मनु० ५।१०४ ११. कीर्तित रहना, सोच लेना—यः क एव यति तिष्ठते कश्चनृत्त-

नविषयितुमिच्छति—मुद्रा० १ 12. ताप देना, जलपान करना, उलझे व्यक्ति के वृद्धि के अनुष्ठाने ।
 राख्खारे स्वकाले च वसितुच्छति च वाच्यः—वि० ११७ 13. काचित् होना, निर्धार होना 14. करना, अनुष्ठान करना, अपने आपको व्यस्त करना 15. (भा०) उद्घाटन करना, (अव्यय्य मान कर उलझे पाठ) जाना, कार्यवर्धन जाना—संक्षेप कर्त्तव्य सिध्यते च—कि० १११ 16. (भा०) (पुरतास्मिन् के लिए) प्रस्तुत करना, वेधना के रूप में उपस्थित होना (हस्त) के साथ) —पौरी स्वरत्तु उच्चार्य सिध्यते —पा० ११११४ पर सिद्धा०,—त्रे० (स्वापयति —ते) 1. बड़ा करना 2. समाना, बढना, स्थापित करना, रखना, प्रस्थापित करना 4. रोकना 5. बकना रोकना—इच्छा० (सिध्यति) बड़े होने की इच्छा करना । वरि—, अधिक होना, बढ़ जाना—अत्य-
 सिध्यत् दक्षाद्वृत्तम्—अधि—, 1. विचार होना, अधिकार करना (कर्म) के साथ) —अधोक्ष्णं नीचविशोभितस्वी —रघु० ११७१, नहि० १५११ 2. अज्ञात करना (ज्ञाना का)—कि० १०११ 3. बन्द होना, रहना, बसना निवास करना,—वातालयमितिच्छति —रघु० ११८०, बीजबदेवमणितमितिच्छन्तु कच्छ-
 टीमामिच्छन्—नीत० ११ 4. अधिकार करना, जीतना, पराजय करना, पक्षाड़ना—अवामे ताम-
 विच्छास्वन्—नहि० ११७२, ११४० 5. प्राप्त करना —कि० २११ 6. नेतृत्व करना, संवहन् करना, शासन करना, निदेश देना, प्रभावित करना बहुरथ-
 धारमितिच्छा—उत्तर० ४ 7. राज्य करना, शासन करना, निर्वाण करना—अन० ४११ 8. उपयोग करना, काम में लाना 9. बकना, स्थापित होना, गद्दी पर बैठना—अधिराधिराधिराज्यं, अन्—मासवि० ११८, अनु०, 1. करना, बपन करना, कार्यभारित करना, ध्यान देना—अनुसिध्यस्वात्मनो नियोगम् —मासवि० १ 2. पीछा करना, अन्वेषण करना, पालन करना—अन० १११ 3. देना, अनुदान देना, सिद्धि के लिए कुछ करना—(दत्त) दीक्षाधित्यं स्वयमन्वसिध्यत्—कु० ११७ 4. निकट बड़े होना, —अनु० १११११ 5. राज्य करना, शासन करना 6. कलक करना 7. अपने आपको प्रस्तुत करना, भेष—, (भावः भा०) 1. रहना, टिकना, उठे रहना —शेषं शेषं कार्यमेवाकास्ते—वाचि० २१७ अनीला वकुला वृत्तिमूर्धनं नासिध्यते—वि० २१४, रघु० १११ 2. छहरना, प्रतीक्षा करना—नहि० ८११ 3. उठे रहना, अनुष्ठान रहना—नहि० ११४ 4. दीक्षित रहना—रघु० ८१८७ 5. निषेध रहना, बचना, छहरना—अन० ११३ ७. ना बकना, निजना, निर्धार होना—अधि

वृद्धि होना रक्षा वृत्त्यास्वयमिति—कु० २१८ 7. बकन बड़े होना, बल्य रखना 8. निषिद्ध वा निषीत होना (त्रे०) 1०. बड़ा करना, रोकना, पक्षाड डालना 2. प्रस्थापित करना, नीध डालना 3. स्वस्व होना, उल्लेख होना, आ—, 1. अधिकार करना 2. बकना, छवार होना—अना एकस्वस्वम-
 वासिधत्—रघु० १११ में 3 उपयोग करना, अव-
 लय लेना, सहारा लेना, अनुसरन करना, अन्वेषण करना, लेना, बारन करना अवाधि तद्वृत्तमासिध्य-
 नुसुयक—अनु० १०१२८, २१११, १०१०१ (यह अर्थ माना प्रकार से—सत्ता सम्बन्धों के अनुसार जिनके साथ कि शब्द का प्रयोग होता है, बदलता रहता है —दे० कु० ५१२, ८४, मुद्रा० ७११, रघु० ११७२, १५७९, कु० ११७२, ७२९, पञ्च० ११२१ आदि) 4 करना, सम्पादन करना, पालन करना 5 अपनाना 6 लक्ष्य बाँधना 7 दायित्व लेना 8 विसिध्य इन से आचरण करना, व्यवहार करना 9 निकट बड़े होना, अनु०— 1 बड़े होना, उठना, उठ कर बड़े होना —उत्तिष्ठन् प्रथम चास्य अनु० २११४, अथो निसम्बोत्तिष्ठन्मुञ्चति सन् रघु० २११ 2 त्याग देना, छोड़ना 3 पक्षर कर जाना—रघु० ११८३ 4 जाने जाना, उड़ब होना, जाने बकना, फूटना, निकलना—अनुसिध्यति कर्मस्यो नृपाणां क्षति तत्तत्कम् —अ० २११ 5 उड़ब होना, उड़ना, क्षति में बकना—वि० २११ 6 क्षीय होना, उठना, नतिक्षीत होना—अत्र हृदयदीर्घस्य स्वस्वोत्तिष्ठ परतय—अन० २११, १७ 7 चेष्टा करना, कीचिड करना, (भा०) कि० ११११, वि० १५१७ (त्रे०) 1. उठना, उन्नत करना 2. काम करने के लिए उकसाना, उरो-
 चित्त करना, उद्य—, 1. निकट बड़े होना, हिस्से में मिलना,—नासतमुपसिध्यति पञ्च० २१२१ 2 निकट जाना, पहुँचना—कु० २१४, रघु० १५७९ 3 प्रतीक्षा करना, सेवा में उपस्थित रहना, सेवा करना अनु० २१४८ 4 पूजा करना, श्रावणा के साथ उपस्थित होना, सेवा करना, प्रभाव करना (भा०)—न अन्व-
 कास्वमुपसिधतासी—नहि० १११, उत्तिमुपिध्य एष नववांस्वपनस्तमुपसिध्यते—भा० १, रघु० ४११, १०१ ११, १७१०, १८१२ 5 निकट बड़े होना 6 नेतृत्व के लिए पहुँचना 7. मिलना, संयुक्त होना—अनु० अनुमानुपसिध्यते—सिद्धा० 8. नेतृत्व करना (भा०) 9. निच बताना (अ०) 10 पहुँचना, निकट क्षिपना, नासतपत्नी होना 11. हेतुवाक्य से पहुँचना 12. उपस्थित होना (भा०) 13. वरिष्ठ होना, उत्तर होना, वरि—, वैरना, पारी मोर बड़े होना, पक्ष—, (त्रे०) स्वस्वस्थित होना, उल्लेख होना—अव्यय्य-

प्राप्तवानम् विष्णु० १, प्र०, (आ०) 1. कूच करना, बिदा होना पारकीकांस्तो चेतु प्रतस्ते स्वस्ववर्त्मना -रघु० ४।६० 2. दुडता पूर्वक लड़े रहना 3. प्रस्थापित होना 4 पहुँचना, निकट जाना (प्रेर०) 1 पीछे हटना 2. मेजना, तिनर-बितर करना ती बपती स्वा प्रति गजधानी प्रस्थापयामास वसी वक्षिष्ट -रघु० २।३०, अति - , 1 दुडता पूर्वक लड़े रहना, प्रस्थापित होना 2. सहायता किया जाना 3 आश्रित या निर्भर रहना 4 ठहरना, डटे रहना, स्थित रहना, प्रस्थ, (आ०) विरोध करना, शत्रुवत व्यवहार करना आक्षेप करना (किसी ठक का। अत्र केचित् प्रत्यय-लिच्छन्ते कारी०, भाषि० १।३०. (प्र०) अपने आपका, अपने या स्वस्य करना, बि, (आ०) 1 अलग लड़े होना 2 स्थिर रहना, डटे रहना, बस जाना, अचल रहना 3 फैलना, विकीर्ण होना, चित्र, (आ०) 1 कूच करना 2 फैलना, व्यस, (आ०) 1 अलग-अलग रहना जाना 2 कमबल किया जाना 3. निरिच्छत होना, स्थिर होना, स्थायी होना अच-नीयमिद व्यसस्थितम् कु० ६।३१ 4 आश्रित होना, निर्भर होना, (प्रेर०) 1 कमबल करना, प्रवच करना, समजित करना 2 निरिच्छत करना स्थापित करना 3 पृथक् करना, अलग-अलग रहना, ब्रम्, (आ०) 1 बचना, रहना, परस्पर निकटबर्ती होना -रीक्यादुडिते मदी परिब्रजानाम् सतिष्ठते मुद्रा० ३।५ 2 लड़े होना 3 होना, विद्यमान होना, अवस्थित होना 4 डटे रहना, जाना मानना, मिथान का निर्बाह करना-शरिद्रघातुपुस्य बान्धव-जनो बाधये न सतिष्ठते मुष्ण० १।३६ 5 पूरा होना सद्य सतिष्ठते यज्ञस्तथा सौचमिति स्थिति -मनु० ५।१८ (यज्ञपुष्येन युज्यते-कुम्भ०) 6 समाप्त हो जाना, विष्ण पड़ जाना-अद्रि० ८।११ 7 निश्चेष्ट लड़े रहना, स्थिर हो जाना (पर०) लण न सतिष्ठति जीवलोक शयोदयाभ्या परिबर्तमान-भूरि० 8. मरना, मष्ट होना (प्रेर०) 1 स्थापित करना, बसना 2 रहना 3 व्यवस्थित होना, लुपेत होना देव स्थापयामासाम् -उत्तर० ४ 4 बचीत करना, निवृत्त में रहना-मनु० १।२ 5 रोकना, प्रतिबद्ध करना 6 मार डालना, लक्ष्मि—, प्रचालना करना, क्षासन करना, प्रक्षालन करना, अधीक्षण करना, लक्ष्म, (आ०) 1. स्थिर रहना, अचल रहना 2. निश्चेष्ट रहना 3 तत्पर रहना (प्रेर०) 1 नीब डालना 2 रोकना, - लक्ष्मा, 1. सहना, अग्रास करना-उपो महत्तमास्त्राय 2 व्यस्त करना, सम्पा-दन करना 3. प्रवेश में जाना, काम में लगाना 4. अनुसरण करना, शासन करना मनु० ४।२,

७।४४, लघु, 1. लड़ा होना, उठना 2. बिक कर लड़े होना 3 मृत्यु से उठना, फिर जीवित होना, होल में जाना 4 उदय होना, फटना, कल्प-1. निकट जाना, पास जाना, पहुँचना 2. आक्रमण करना 3 आ पड़ना, चटित होना 4. लट कर लड़े होना, लंग, (आ०) कूच करना, बिदा होना, लक्ष्मि—, 1 लटकना, आश्रित होना, निर्भर होना 2 दुड होना, स्थिर होना।

स्वाप् (वि०) [स्वा + नृ. प्र०० वाच्यम्] 1. दुड, जटल, स्थिर, (रकाऊ, अचल, गतिहीन, कुः 2. शिव का विलेपन मम्याप् स्थिरप्रस्थितयोगबुलजी निःशे-यमयास्तु व विष्णु० १।१ 2 टंक, पोल, स्थान कि स्वाप्पयमान पुरुष 3 कुटी, कील 4 गुपचड़ी का लक 5 बर्ती नेडा 6 दोमको का पोतला, बानी 7 ओषधि या मुगन्ध द्रव्य, जीवक (पु०, मनु०) शाखा रहित तना, नगा डठल, मुद्रा पेड़, दुड। मय० छेक वह जो बुजों के तने काटता है, जो तने को छील कर माड करता है-स्वाप्पुच्छेदस्य केदारमाह सत्यवती मृगम्-मनु० १।४४, -कच्छ किसी बुजी या पोल को कुछ और ही समझ लेना।

स्वाधिकः [स्वाधिक + अच्] 1 वह सत्याधी जो बिना अधिक के मृत्ति पर या जमीन मुल पर चला है 2 साधु या धार्मिक विष्णु।

स्वाप्तम् [स्वा + स्तुट्] 1 लड़ा होना, रहना, ठहरना, नैरन्तर्य, निरास स्थान-उत्तर० ३।३२ 2 स्थिर वा जटल होना 3 स्थिति, दृष्टा 4. अवह, स्वक, (पवन आदि के लिए) मृत्ति, सत्स्थिति अज्ञाता-मदस्ताम्नास्थानात्पदात्पदमपि न गन्तव्यम्-का० 5 मरवान, स्थिति, अवस्था 6 लक्षण, हंसित पितृस्थाने (पिता के स्थान में वा पिता की हंसियन से) 7 आवास, घर निवासस्थान स एष (नक) प्रभूतः स्थानाच्छ्रुतापि परिपूर्यते-पंच० ३।४६ 8 देश, क्षेत्र, जिला, नगर 9 वय, दर्जा, प्रतिष्ठा-अस्मादस्थाने नियोजित 10 पदार्थ-मुद्रा पूजास्थान मृत्पितृ न च मित्र न च वय-उत्तर० ४।११ 11 अवसर, बात, स्थिति, कारण पराम्भुहस्थाना-न्यपि तदनुत्ति स्वयमिति-मा० १।१४, स्वायं अरापरिचयस्य तदेव पुनाम्-सुभा०, इसी प्रकार कलह, कोप, विवाद आदि 12. उचित वा उपयुक्त अवह स्थानेनैव नियोज्यते मृत्वास्थाभरणानि च पंच० १।७२ 13. उचित या बोध पदार्थ-स्थाने लक्ष्मि लक्ष्मि दृष्टि मालि० १, दे० स्थाने जी 14. अवसर का उच्चारणस्थान (यह बात है -अष्टी स्थानानि वचनानामुरः कच्छः चिरस्थाना विष्णुनामं च दस्तास्य नाविकोष्ठी च तावु च-जिज्ञा० १३

15. पावन स्थान 16. बेबी 17. नवरत्न प्रांगण
18. मृत्यु के बाद कर्मानुसार प्राप्त होने वाला लोक
19. (नीति या दृढ़ भाव में) दृढ़ता, आक्रमण का
मुकाबला करने के लिए दृढ़ता, यन्त्र ७।१९०
20. पडाव, डेरा 21. निरुपेक्ष दत्ता, उदासीनता,
22. राज्य के मुख्य अंग, किसी राज्य का स्वयं
- अर्थात् सेना, कोष, नगर और प्रदेश—यन्त्र ७।
५६ (यहाँ कुल्लू 'स्थान' का अर्थ करता है "बंद-
कोषपुरास्वात्मक चतुर्विधम्") 23. साधु, सज्जनता
24 किसी श्रेष्ठ का शत्रु या शत्रु, परिच्छेद या अध्याय
अदि 25. अभिनेता का चरित्र 26 अन्तराल, अवसर,
अवकाश 27. (सपीत ० में) गीत, सुर, स्वर के स्पंदन
की मात्रा। सम० अर्थः स्थानीय राज्यपाल,
स्थान का अधिकारी, जलान (नपु०, डि० व०)
बैठा हुआ,—अर्थः किसी स्थान पर कैद, कारा
वास—यन्त्र ७। आसेष,—अर्थः सेना के शिविर के लिए
स्थान की व्यवस्था करने वाला अधिकारी,—अर्थः
दे० 'स्थानाध्यक्ष'—आल रत्नबाला, पहरेदार, आरक्षी,
—अर्थ (वि०) किसी पद से हटाया हुआ, विस्थापित,
पदभूत बेकार, माहल्लयम् 1. किसी स्थान का
गौरव या महत्त्व 2 किसी स्थान में मानी जाने वाली
असाधारण पवित्रता या दिव्य गुण, शेष उपयुक्त
स्थान का निवेदन इत्यादि स्थानयोगाच्च अर्थ-
विश्रयमेव च—यन्त्र ९।३३२,—स्थ (वि०) एक ही
स्थान पर स्थित, अचल।

स्थानकम् [स्थान + स्थाने क] 1. अवस्था, स्थिति
2. नाटकीय व्यापार का एक विशेष स्थल उदा०
पताकास्थानक 3. गृह, नगर 4. आलबाल 5. शराब
की सतह पर उठा हुआ फेन 6. सस्वर पाठ की एक
रीति 7. यज्ञवेद की तैत्तिरीय शाखा का अनुवाक
या प्रमाण।

स्थानतः (अर्थ०) [स्थान + तसिन्] 1. अपनी स्थिति
या अवस्था के अनुसार 2. अपने उपयुक्त स्थान से
3 उच्चारण करने के अंग के अनुरूप।

स्थानिक (वि०) [स्थान + क] [स्थान + ठक्] 1. किसी
स्थान विशेष में सबंध रखने वाला, स्थानीय
2 (आ० में) जो किसी अन्य वस्तु के बदले प्रयुक्त
हो, या उसका स्थानापन्न हो,—क 1 कोई पदाधिकारी,
स्थानविशेष का रक्षक 2 किसी स्थान का शासक।

स्थानिन् (वि०) [स्थान + स्थानिन्] 1. स्थानवाला 2. स्वयंस्मय, स्वाधीन 3 वह जिसका
कोई स्थानापन्न हो (प०) 1 मूलक या मौलिक
उत्पत्ति, जिसके लिए कोई दूसरा स्थानापन्न न हो—स्था-
निकवादीशक्तिविधौ—पा० १।१५५ 2. जिसका
अपना स्थान हो, अभिहित।

स्थानीय (वि०) [स्थान + य] 1 स्थानविशेष से संबंध,
किसी स्थान का 2. किसी स्थान के लिए उपयुक्त,
बन्धु नगर, गृह।

स्थाने (अर्थ०) [स्थान + क] 1. ठीक
या उपयुक्त स्थान पर, सही ढंग से, उपयुक्त रूप से,
ठीक समय, समुचित रीति से स्थाने दत्ता
भूपतिभि परीक्षे रत्न ७।१३, स्थाने प्राणा
कामिना दृष्टयन्तीना मालवि० ३।१४, कु० ६।६७,
७।६५ 2 के स्थान में, की बजाय, के बदले, स्थाना-
पन्न के रूप में—धानी स्थाने इवादेन सुधीन सत्यवेगयत्
रत्न १२।५८ 3 के कारण, के लिए 4. इसी
प्रकार, भाति।

स्थापक (वि०) [स्थापयति—स्था + णिच् + क्त] लडा
करने वाला, जमाने वाला, नींव डालने वाला, स्थापित
करने वाला, विनियमित करने वाला,—क 1 मंच
के कार्य का निदेशक, रंगमंच प्रबंधक, रंगधार
2 किसी देवालय का प्रतिष्ठाता मूर्ति की स्थापना
करने वाला।

स्थापकः [स्थापयति + क्त] अन्तपुर का रक्षक, स्थान
वास्तु विद्या, भवननिर्माण कला।

स्थापनम् [स्था + णिच् + ल्यप्, पुकागम] 1 लडा करने
की क्रिया, जमाना, नींव डालना निदेश देना, स्थापित
करना, सज्जा बनाना 2 विचारों की जमाना मन का
संकेन्द्रित करना, ध्यान, धारणा 3 निवास, आवास
4. पुण्यवन संस्कार (जब गर्भवती स्त्री को गर्भस्थ
पिण्ड में जीवमन्त्र का प्रथम लक्षण ज्ञान हो, उस
समय यह संस्कार किया जाता है), दे० पुनवन।

स्थापना [स्था + णिच् + यञ् + टाप्, पुक्] 1. रखना,
जमाना, नींव रखना, स्थापित करना 2. व्यवस्था
करना, विनियमन (नाटक में) रंगमंच का प्रबंध।

स्थापित (य० क० क०) [स्था + णिच् + क्त पुक्] 1
रखना हुआ, जमाया हुआ, अवस्थित, धरा हुआ
2 नींव डाली हुई, निश्चित 3 बड़ा हुआ, उठाया
हुआ, खड़ा किया हुआ 4 निर्धारित विनियमित,
आदिष्ट, अभिलिखित 5 निर्धारित, नय किया हुआ
निश्चित किया हुआ 6 नियम जिसको कोई पद या
कार्य सौंपा गया हो 7 विवाहित, जिसका विवाह
हो चुका हो—मा० १०।५ 8 दृढ़, स्थिर।

स्थाप्य (वि०) [स्था + णिच् + क्त पुकागम] 1 रखने
जाने या जमाने के योग्य 2 नींव डालने योग्य,
बरोहर, जमाना 3 सम०—अन्तपुरम् बरोहर की
वस्तु दृष्ट कर जाना, जमाना में स्थापित।
स्थाप्य (नपु०) [स्था + यनिन्] 1 शासक, शक्ति,
स्वयं, जैसा कि 'अवस्थापयन्' में, दे० 'अवस्था-

यन्' के अन्तर्गत महा० का उद्धरण 2 स्थिरता, स्थायित्व।

स्थायिन् (वि०) [स्था+णिनि युक्] 1 सड़ा रहने वाला, टिकने वाला, स्थित रहने वाला (समाप्त के अंत में) 2 सहन करने वाला, निरन्तर चलने वाला, टिकाऊ, टिके रहने वाला शरीर क्षयविषयि कस्यांतस्थायिनी मुषा—मुषा०, कतिपय दिवसस्थायिनी योवनवीं भर्तुं २।८२, महावीर ७।१५ 3 जीने वाला, निवास करने वाला, रहने वाला भेष० २३ 4 स्थिर, दृढ़, पक्का, अपरिवर्ती, जो न बदले-स्थावी भवति (पक्का हो जाता है) (पु०) 1 नित्य या आवश्यक भावना, (वे० नी० 'स्थायिभाव') वि० २।८७, (नपु०) 1 कोई भी टिकाऊ वस्तु, दृढ़ स्थिति या दसा। सम० भावः मन की स्थिर दशा, टिकाऊ या सदा रहने वाली भावना, (कहने है इन 'स्थायिभावो मे ही काव्यगत विभिन्न रसों की निष्पत्ति होती है, प्रत्येक रस का अपना स्थायिभाव अलग है) स्थायिभाव गिनती में आठ या नौ है—निर्हसिद्वय साकश्य कोमोत्साही भय नया। जुवन्ता विस्मयश्चेत्यमष्टौ प्रोक्ता शमाद्रिष च सा० द० ००६, नृ० व्यभिचारिभाव भाव या विभाव भी।

स्थायुक (वि०) (स्त्री० का कौ) [स्था+उक्] युक्] 1 जो टहरने वाला हो या जिसमें टहरने की प्रवृत्ति हो 2 दृढ़, स्थिर, अचल—क दाँव का मुखिया या अधीक्षक।

स्थायुक् [स्थलनि तिष्ठति अश्राव्य आधारे घञ्] 1 धातु वाली, तन्मयी 2 कार्य भोजनपात्र पाकयोग्य वर्तन। सम० रूपम् पाकपात्र की आकृति।

स्थाली [स्थाल ङीप्] 1 मिट्टी का चड़ा या हाँडी, राखने का बर्तन, न छोटी बटमोई—नहि मिक्षुका समीपि स्वास्या नाभिधायन्ते सर्वे० स्वास्या वैद्वयं-मय्या पक्षि निलसलीमिन्वर्नैवधन्वात भर्तुं २। १०० 2 सोम तैयार करने के काम जाने वाला विशेष पात्र, पाटमायुध तुरागे के सद्गुल फूल। सम० बाक एक धार्मिक कृत्य जिसका अनुष्ठान गृहस्थ करते हैं पुरीष पात्र पात्र में जमा हुआ मेल या तराई फुलाक पाकपात्र में पकाया हुआ चावल, 'स्थाव दे० न्याय के अन्तर्गत धिक्क पाकपात्र का भीतरी हिस्सा।

स्थार (वि०) [स्था+वर्च्] 1 एक स्थान पर—हुआ, अचल, अविद्य, अचर, जड (वि०) अंगय) —सुरीराणां स्थावरजङ्गमाना सुगमा तज्जन्मदिन बभूव कु० १।२३, ६।६७ ७ 2 निश्चेष्ट, निश्चित, अचल 3 निश्चित, स्थापित, रः पहाड़—स्थारानां हिमालय भय० १०।२५, रज् कोई भी स्थिर

या जड पदार्थ (जैसे कि मिट्टी, पत्थर, वृक्ष आदि जो कि सड़ा की जातवीं सृष्टि हैं नृ० मनु० ४१) —माय्य म मे स्थावरजङ्गमानां सर्वस्मिन्निप्रत्यक्षारोनु रपु० २।४४, कु० ६।५८ 2 अचल की बोरी 3 अचल संपत्ति, माल अलबाव 4 द्रव्य या वी-कवी प्राप्त सम्पत्ति। सम० अस्वावरज्, जङ्गल्य 1 चल और अचल संपत्ति 2 चेतन और जड पदार्थ। स्थारि (वि०) (स्त्री०—रा, री) [स्थारि+अच्] मोटा, दृढ़, रज् दुकापा।

स्थारक [स्था+स+स्थावर्धो क] 1 सुवासित करना, शरीर पर सुगन्धित लेप करना 2 पानी का बुलबुला या कोई तरल पदार्थ—वि० १८।५। स्थारु (नपु०) [स्था+सु] शारीरिक बल।

स्थालु (वि०) [स्था+लु] 1 स्थिर, दृढ़, अचल 2 स्थायी, नित्य टिकाऊ, पावदार—वि० २।१३, कि० २।११।

स्थित (भू० क० ङ०) [स्था+क्] 1 सड़ाहुवा, रड़ा हुआ, ठहरा हुआ 2 सड़ा होने वाला 3 उठकर सड़ा होने वाला, उठा हुआ—स्थित स्थितामुष्मन्ति प्रवाता—कावेय तां भूपतिरन्ध्रच्छत—रपु० २।६ 4 टिकने वाला, सहारा देने वाला, जीवित, विद्यमान, मौजूद स्थित—धन्या केव स्थिता ते शिरि महा० १।१, मेघ० ७ (प्रायः स्थान के साथ विधेयक के रूप में) विक्रम० १।१, व० १।१, कु० १।१ 5 बसित, हुआ हुआ—कु० ४।१७ 6 पड़ाव डाला हुआ, अधिकार किया हुआ, नियुक्त किया हुआ व० ४।१८ 7 स्थितान्ध्र करने वाला सड़ा रहने वाला, सकम्प्य रपु० ५।३३ 8 निश्चेष्ट सड़ा हुआ, बका हुआ, ठहरा हुआ 9 जमा हुआ, दुइतापूर्वक लगा हुआ कु० ५।८२ 10 स्थिर, दृढ़ जैसा कि 'स्थितवी' और 'स्थितवज्र' में 11 निर्धारित, दृढ़ निश्चय किया हुआ कु० ४।३१ 12 स्थापित, समाधिष्ट 13 आचरण में दृढ़, दृढ़मना 14 ईमानदार, बर्तिया 15 प्रतिज्ञा या करार का पक्का 16 सहमत, व्यवस्त, सहिदावस्त 17 तैयार, निकटस्थ, समीप, तन् स्वयं सड़ा हुआ (जैसे कि सख्)। सम० अवस्थित (वि०) 'रति' सख् से युक्त या रहित (जैसे कि सख्), की (वि०) बुद्धमनस्क, स्थिरमना, धान्त,—वाचकम् सखी हुई स्वीपात्र द्वारा प्राप्त में पाठ,—अव (वि०) निश्चय या समझदारी में दृढ़, सब प्रकार के प्रयोग से मुक्त, समुष्ट—प्रवृत्ति परा कामासुखी पात्रं मनोवसता। बारम्भस्यात्मना तुष्ट स्थितप्रज्ञस्तदोप्यते भय० २।५५, ज्ञेयम् (पु०) पक्का या विश्वासपात्र मित्र।

स्थिति (स्त्री०) [स्था+तिन्] 1 सड़े होना, रहना, टिकना, बटे रहना, जीवित होना, ठहरना, निवास-

स्वान्—स्थिति नो रे दध्या. क्षणमपि यवान्क्षेपण
सत्वे भाषि० १५२, रजोगृहे स्थितिर्युल्लसति-
कुटी त्वनिवचय-उत्तर० ११६ २ कक्षा, वृष
होकर लहे होना, एक ही अवस्था में रहना प्रस्थि-
ताया प्रविष्टेया स्थिताया स्थितिमाचरे- रघु०
११८९ ३. अस्थिर रहना, जम जाना, स्थिरता, दृढ़ता,
रुमे रहना, अस्थि मम भूयात् परमास्थिनि स्थिति
भाषि० ४।२३ ४ हालत, अवस्था, परिस्थिति, दशा
५. प्राकृतिक हालत, प्रकृति, स्वभाव—अथवा स्थिति-
रिक्ते मन्वयतीनाम् हि० ४ ६ स्थिरता, स्वास्थि,
चिरस्थायिस्थ, निरन्तरता—अथस्थितेरस्थिमाम्प्रहति
प्रमोदे विक्रम० ५।१५, कम्पा कुलस्थ स्थितये
स्थितिञ्ज कु० ११८, रघु० ३२७ ७ आचरण
की बुद्धता, कर्तव्यपालन में दृढ़ता, शिष्टता, कर्तव्य,
नैतिक सदाचार, औचित्य रघु० ३२७, १११५५,
१२३१, कु० ११८ ८ अनुसासन का पालन,
(क्षिप्र राज्य में) कुम्भवस्था की स्थापना—रघु० १२५,
९. दर्जा, पद, ऊँचा पद या दर्जा १० निर्वाह, जीवन
का बने रहना—भा० १।३२, रघु० ५।९ ११. जीवन में
नैरन्तर्य, अक्षिप्तवस्था (मानव की तीन अवस्थाओं में
से एक)—सर्गस्थितिप्रत्यक्षहारहेतुः—रघु० २।४४, कु०
२।९ १२. वृत्ति, विरास, वृत्ति १३ कुशलार्थ,
कल्याण १४. समति १५ निश्चित नियम, अध्यादेश,
आज्ञापित, निर्द्देशवाक्य, नीतिवाक्य १६ निश्चित
निर्धारण १७ अवधि, दूरी, दूर १८ जड़ता, गति-
हीनता १९ ग्रहण की अवधि। सम०—स्वास्थ्य
(वि०) कुल अवस्था में जमाने वाला, पूर्वावस्था को
प्राप्त करने की क्षमति रखने वाला, लघीलेपन को
आरम्भ करने वाला, अः लघीलापन, पूर्वावस्था को
पुनः प्राप्त करने की सामर्थ्य।

स्थिर (वि०) [स्था + किरच्, म० अ० स्वेवच्, उ० अ०
स्वेष्ट] १. दृढ़, स्थिरमति, जमा हुआ आबस्थितमति
अन्यथातरावहीहृदयानि—स० ५।२, न स्थापु स्थिरमति-
बोधयुक्तो निश्चयसायास्तु व—विक्रम० ११२, कु०
११३०, रघु० १११९ २ अचल, शान्त, गतिहीन—कु०
२।३८ ३. दृढ़तापूर्वक जमा उत्तर० १४०
४. स्थायी, निरन्तर, शास्वत मेघ० ५५, भा० १।७५,
५. शान्त, लक्ष्म, स्वस्थचित वीर, यमीन ६ यौन,
अवस्थ ७. आचरण में पक्का, दृढ़ ८ सतत, अटायु,
दृढ़-संकल्प ९ निश्चित, विश्वास योग्य १० कठोर, ठोस
११. मजबूत, अन्तर्दृढ़ १२ कड़ा, निष्कल कठोर-
द्वय—कु० ५।४७ —रः देव, मुर २ वृज, ३ पहाड़
४ साढ़ ५ शिव का नाम ६. कान्तिकेय का नाम
७. माध या निर्वाण ८ गतिवृद्ध (स्थिरदृढ़ १ पुष्ट
करना, मजबूत करना, समर्थन करना २ कक्षा, दृढ़

करना ३ प्रसन्न करना, तसस्की देना, आराम पहुँचाना
—स० ४, स्थिराभू— १ स्थिर या दृढ़ होना २. शान्त
या वीर होना। सम० अनुप्रास दृढ़ आसक्ति वाला,
स्थैर्यमति.— आसक्त्यु—विभत्, वेतस् वी— बुद्धि,
मति (वि०) १ दृढ़मना, विचार या संकल्प का
पक्का, दृढ़ संकल्प, रघु० ८।२२, शान्त, वीर, अवस्थ,
आयुस्, औचित्य (वि०) दीर्घजीवी, चिरजीवी,
आरम्भ (वि०) दायित्व निर्वाह में दृढ़, धैर्यवाली,
कुटुम्बः १ लगानार पीसने वाला २. (जीवन० में)
समान भाजक, मन्त्र चपक फूल, छद्मः भोजन का
वृज,—छाया १ पात्रियों का छाया देने वाला २ वृज,
—विज्ञान मछली, औचित्य सेमल (शास्त्री) का
पेड़,—अष्टः साप, पुष्पः १ चपक वृज २ बहुल वृज,
मौलिकी, प्रतिज्ञा (वि०) दृढ़प्रतिज्ञा, हठी, आग्रही
२ वचन का पालन करने वाला, प्रतिज्ञा (वि०)
विरोध करने में दृढ़, हठी स० २, कला कुम्भायी,
—योगिः बड़ा भारी वृज जो छाया और गरण दे,
—औषध (वि०) सदा जवान रहने वाला (न)
१ विद्याचर, परी २ चिरस्थायी तात्पर्य, श्री (वि०)
सदा रहने वाली समृद्धि वाला, संवर (वि०) प्रतिज्ञा
का पालन करने वाला, सन्ध्या, वात का घनी, लोहद्व
(वि०) मित्रता में दृढ़, स्वाध्विन् (वि०) दृढ़ या
जटल रहने वाला, पूर्वतः शान्त रहने वाला (देता कि
समाधि में)।

स्थिरता, स्थ्व [स्थिर + तन् + टाप्, स्व वा] १ दृढ़ता,
स्थैर्य, टिकाऊपन २ दृढ़ और बलशाली प्रयत्न, पौरुष
ज० ५।१४ ३ सातत्य, मन की दृढ़ता
४ अचलता।

स्थिरा [स्थिर + टाप्] पृथ्वी।

स्थुद् (तुदा० पर०) स्थुर्नति ठकना।

स्थुलम् [स्थुद् + लच्, पृ०] डम्प न [एक प्रकार का लंबा
तण्]।

स्थूना [स्था + नच्, उदनादेश, पृ०] १ बर का लंबा
समूह, स्तम्भ २ पील या लंबा स्थूनामिलननयादेश
— गारी ३ लोहमूर्ति या प्रतिमा ४ धन। सम०
—मिलनमन्त्रावस्था 'स्थाव' के मीचे देखो।

स्थूयः (पृ०) १ प्रकार २ चरना।

स्थूरः [स्था + ऊरृत्] १. मीठ २ मनुष्य।

स्थूल (वि०) [स्थूल + लच्, म० अ० स्थवीयस्, उ० अ०
स्थविट] १ विस्तृत, बड़ा बृहत्, विशाल, महान्
बहुप्राणित स्थूल स्थोपते अतिरम्यम् पि०
२।७८ (यदी छायायं मी घटता है)। स्थूलहस्तावके-
यान् मच० १८, १०६ रघु० १२८ २ मोटा
मामल, हटपट्ट ३ मजबूत, अतिशयानी—रघु०
स्थूल स्थितिनि—का० 'कठिनाई' से सास लेता है

4 बेडोल, भट्टा 5 समुप, साधारण, बनाही (बाल० से भी) जैसा कि 'स्वल्पमानम्' में 6 मुनं, मुड, बुड, नासम 7 बालसी, मुस्त, ठा 8 अयचार्य, कः कटहन, लम् 1. डेर, राशि 2 तबू 3. पहाड़ की चोटी। सम०—अन्वय बड़ी बात जो मुवा के पास तक जाती है,—आत्मः सोप, उच्यतः 1. परंतु लख जो गिर कर ऊबड़-साबड़ टीले जैसा बन गया हो 2 अपूर्णता, कमी, वृद्धि 3. हाथी की मध्यम गति 4 मुहाला 5 हाथी के दात का रछ, —काय (वि०) मोटा, मांसल,—जेडः—जेडः बाण चापः घूमकी,—तालः हिताल,—भी,—यति (वि०) मूर्ख, बुद्ध, —नालः लम्बी जाति का सरकड़ा —नाल,—नालिक (वि०) मोटी नाक वाला, —कः,—कः) सुजर, बराह, बडः—कडम् मोटा कपड़ा,—कड कपाल, बाण (वि०) मोटे पर वाला, सूखे पर वाला, (—कः) 1 हाथी 2 स्त्रीपद रोज से वस्तु व्यक्ति, छलः सेमल (बात्मली) का वृक्ष, जलम् मोटा हिनाल, मोटा जन्ताव, लख, लय (वि०) 1 दानवीन, बहाय, उदार 2 सम-जदार, विद्वान् 3. लाभ-हानि दोनों का ध्यान रखने वाला, कल्ला बड़ी योनि वाली स्त्री,—जरीरम् नीतिक और नजर जरीर (वि०) सूख (सिन्) खरीर), —काटकः, साहिः मोटा कपड़ा,—झीरिका बुड-निपीनिका, छोटी बिऊटी जिसका खिर, खरीर के अनुपात में बड़ा हो, कडकः 1. बीरा 2 बिड,—लकुच लकुच वृक्ष, बडहन का पेड हल्लम् हाथी की बूँड।

स्फुलक (वि०) [स्फुल + कन्] विस्तृत, बड़ा, महान्, विशाल, कः एक प्रकार की घास या नरकुल (सरकड़ा)।

स्फुलता, स्फुल [स्फुल + तल् + टाप्, स्फ वा] 1. विस्तार, विशालता, बडप्पन 2 सुस्ती, बहाता।

स्फुल्यति (ना० वा० पर०) बड़ा होना, हूष्ट-मुष्ट होना, मोटा होना।

स्फुल्लि (पु०) [स्फुल + इनि] छंट।

स्वेम् (पु०) [स्वा + इमनिष्] दृढ़ता, स्थिरता, अचलता, अविनयन हाथीयास सहता स्वेमशायः—वि० १८१३३, न यत्र स्वेमान् दधुरतिमयमान्-नवनाः—मादि० ११३२।

स्वेड (वि०) [स्वा + यन्] अघाते जाने योग्य, रक्ते जाने योग्य, निश्चित या निर्धारित किये जाने योग्य—कः (शे दलों के बीच वर्तमान) 1 समझे का फैसला करने के लिए छाटा गया व्यक्ति विवाचक, पच, निर्णायक 2 चुरोहित।

स्वेन् (वि०) (स्त्री० ली) [गिर + इयन्, स्वादेज म० अ० 'स्थिर' की] दृढ़तर, अपेक्षाकृत बलवान्।

स्वेष्ट (वि०) [स्थिर + इष्टन्, स्वादेज, उ० अ० 'स्थिर की'] अत्यन्त दृढ़, बलवत्तर।

स्वेयम् [स्थिर + ध्यञ्] 1 दृढ़ता, स्थिरता, अचलता, निश्चलता 2 निश्चरता 3 मन की दृढ़ता, संकल्प, स्वायत्त बल० १११७ 4 सहनशीलता 5 कड़ा-पन, ठोसपना।

स्वीयेकः, स्वीयेकः [स्विना + डक्, डकम् वा] एक प्रकार का मधुमक्ख।

स्वीरम् [स्वर + जन्] 1. दृढ़ता, सामर्थ्य, शक्ति 2 गधे या घोड़े पर लाहने का पूरा बोज।

स्वीरिन् (नपु०) [स्वीर + इनि] 1 पीठ पर बोझ डोने वाला घोड़ा, लव्धु घोड़ा 2 मजदूर घोड़ा।

स्वीत्स्वम् [स्वल + ध्यञ्] बडप्पन, विशालता, हूष्ट-मुष्टता।

स्वप्नम् [स्वा + निष् + स्प्, पुक्] 1. छिड़कना, गह-लाना 2 स्नान करना, पानी में डुबकी लगाना रेवे जनेः स्वप्नसोदतराईमृति—वि० ५१५७।

स्वः [स्त् + जन्] घुमा, रिलमा, टपकना।

स्वम् [स्वा + रिवा० पर० लडति स्वस्यति] 1. बहना 2. उमलना (जैसे मुँह से), परित्याग करना।

स्वा (बवा० पर० स्नाति, स्वात) 1. स्नान करना, नहाना, पानी में डुबकी लगाना—मृत्पुष्पावति स्वातः 2. मुकुल छोड़ते समय स्नान करने के लक्ष्य का अनुष्ठान करना, प्रेर० (स्वावति - ठे, स्वपयति—ठे) मुहाला, बीला करना, ठर करना, छिड़कना—(नोर्वे) कर्तव्येना स्वस्वामिभ्युः कु० अ० १०, स्थितस्वसिताचरा—वीर० १२, उत्तर० ११२३, वि० ५१४४, ४६, वि० २१७, ८१३, वेच० ४३, इच्छा० (सिस्नाति) स्नान करने की इच्छा करता, अय्—मृत्पु के कारण छोके बनाने के पक्षपात स्नान करावा, वि०—बहरी डुबकी लगाना अर्थात् पारंगत होना, दे० 'निष्ठा'।

स्वास्तकः [स्वा + क्त + क] 1. बडप्पन बाधन में अथवा नवात कर अनुष्ठेय स्नान की विधि पूरा करने वाला ब्राह्मण 2 वह ब्राह्मण जो वैशाख्यय नवात कर अभी मुकुल से लौटा है और नृहृत्स्व वर्ण में दीक्षित हुआ है 3. वह ब्राह्मण जो किसी धार्मिक विधि को पूरा करने के लिए विजु बना हो अनु० ११११ 4 पहले तीन वर्षों का कोई पुत्र जो नृहृत्स्ववर्ण में दीक्षित हो चुका है।

स्नानम् [स्वा भावे स्प्] 1. घोना, मार्जन करना, पानी में डुबकी लगाना तत प्रविशति स्नानोत्तीर्णः काश्यप श्र० ४ 2. स्नान द्वारा बुद्धि, कोई धार्मिक या सांस्कृतिक मार्जन 3. बुद्धि का स्नान करना 4 कोई वस्तु जो स्नान या मार्जन में काम आये। सम० अवारम् स्नानबृह, होनी स्नान करने की

नाथ, — बाधा ज्येष्ठपुत्रिया को मनाया जाने वाला पूर्व, — बन्धन स्नान का बन्ध — छद्म कि पीठित स्नानस्थ मूत्रेण हत पय — हि० २।१०९, विधि: 1 स्नान करने की विद्या 2 स्नान करने के उचित नियम या रीति ।

स्नानीय (वि०) [स्नानाय हितं क] स्नान के लिए योग्य, मार्ग के लिए उपयुक्त, स्नान के समय पहना हुआ वस्त्र, — स्नानीयवस्त्रक्रिया वधोर्ण बोधयुज्यते — बालवि० ५।१२, बन् बल वा बीर कोई पदार्थ (जैसे कि उबटना, या सुवासित चूर्ण आदि) जो स्नान के उपयुक्त हो — रघु० १६।२१ ।

स्नानक: [स्ना + शिप् + क्तु, पुक्] अपने स्वामी को स्नान कराने वाला या स्नान के लिए साधवी माने वाला नौकर ।

स्नानकम् [स्ना + शिप् + क्तु, पुक्] स्नान कराना, या स्नानकर्ता की टहल करना — मनु० २।२०९ ।

स्नान्: [स्नाति धृष्यति बोधोऽन्या-स्ना + उच्] 1 कडरा, पेसी, नल — स्वल्प स्नायुवसावसेवमस्ति निमीममप्य-त्वि गो — बर्द० २।३० 2 वनूच की डोरी । सम० — अर्धम् बाँधी का एक विशेष रोग ।

स्नानकु: [स्नाय + क्तु] ३० 'स्नायु' ।

स्नाय, स्नायन् (पुं०) [स्ना + क्तु, क्तिप् वा] कडरा पेसी ।

स्निग्ध (वि०) [स्निह् + क्त] 1 मिय, स्नेही, द्वितीय, अनुरक्त, प्रेमी मा० ५।२० 2 चिकना, तैलाक्त, मनुष्य, तेज में धोना हुआ उत्पद्मानि स्निग्ध नटयने स्निग्धविद्याभ्यासनामे — मेघ० ५९ स्निग्धवैणीमवर्ण — १८, वि० १२।६३, मा० १०।४ 3 चिपचिपा, कलकला, लेखदार, निबलिता 4 प्रवासित, चमकीला उज्ज्वल, चमकदार — कनकनिकलस्निग्धा विद्युन प्रिया न मनोवर्द्धी — विक्रम० ४।१, मेघ० ३७, उत्तर० १।३३, ६।२१ 5 चिकना, स्निग्धकारी 6 गोला, तर 7 वात 8 कुपालु, मुपु, सौम्य, मिकनसार — प्रीतिस्निग्धैर्जनपदवधुकीर्ण पीवमान मेघ० १६ 9 मिय, लचिकर, मोहक, रघु० १।३६, उत्तर० २।१४, ३।२२ 10 मोटा, सघन, सटा हुआ — स्निग्ध-च्छायातक् नवति रामयिष्येभ्य (चक्रे) — मेघ० १ 11 तुला हुआ, जमाया हुआ, (गुटि की भाँति) टकटकी लगाये हुए, लम्ब 1 मिय, स्नेही, मिय-सदृश, द्वितीय — विज्ञे स्निग्धैर्युक्तमपि हेम्यतां वाति किपित् हि० २।१९०, या, स स्निग्धोऽनुकला-मिवावति य सुभा०, वं० २।१६६ 2 घाल प्ररब्ध का पीया 3 एक प्रकार का बीज का दूध — लघु० 1 तेज 2 नीम 3 प्रकाश, भाषा 4 मोटा-पन, बुरादुराण । सम० — कनः स्नेही व्यसित, द्वितीय

मिय — स्निग्धजनसमिपत हि दुःख सह्यवेदन भवति श० ३, लघुः एक प्रकार का चावल जो जल्दी उफटा है, — गुटि (वि०) टकटकी लगाकर सेकने वाला ।

स्निग्धता, स्निग् [स्निग्ध + तल् + टप्, ल्य बा] 1 चिकना पन 2 सौम्यता 3 सुकुमारता, स्नेह, प्रेम ।

स्निग्धा [स्निग्ध + टाप्] मज्जा, बसा ।

स्निह् (विबा० पर० स्निहति, स्निग्ध) 1 स्नेह रजना, स्नेहानुभूति होना, प्रेम करना, मिय होना (बन्ध० के साथ — जिससे प्रेम किया जाय) — किं नु कलु वास्येऽस्मिन् शीरस्त इव पुने स्निहति मे धन — श० ७, स च स्निह्य-त्यावयो — उत्तर० ९ (वहाँ 'आवयो' सम्बन्ध कारक की हो सकता है) 2 मनायास ही अनुरक्त होना 3 किसी पर प्रसन्न होना, कुपालु होना 4 चिपचिपा होना, कलकला या निबलिता होना 5 चिकना या सौम्य होना, प्रेर० (स्नेहयति ते) 1 चिकनी-चूपटी बातें बनाना, चिकनाना, चिकने पदार्थ से लेप करना चिकना करना, सेल लगाना 2 प्रेम करना 3 विव-दित करना, नष्ट करना, मार डालना ।

स्नु (मवा० पर० स्नोति, स्नुत्) 1 टपकना, लघव करना दूध दूध गिरना, बसित होना, पडना, रिसना, बूना 2 बहना, कवर बहना, ब — बह निकलना, उडेल देना — प्रस्तुतजनी उत्तर० ३ ।

स्नु (पुं०, नपुं०) [स्ना + क्तु] 1 पहाड़ का समतल भूबद्ध 2 चोटी, सतह (पहले पाँच बचनों में इस शब्द का कोई रूप नहीं होता वर्ग० हि० ब० के पदचान् विकल्प से यह साम् शब्द के स्थान में प्रयुक्त होता है) ।

स्नु (स्त्री०) [स्नु + क्तिप्] स्नायु, कण्डरा, पेसी ।

स्नु (वि०) [स्नु + क्त] रिसा हुआ दूध-दूध करके मिरा हुआ, बहा हुआ आदि ।

स्नुबा [स्नु + सक् + टाप्] पुष्यवृ, समुपास्यत पुष्यो-गया स्नुष्यवाविकृतेन्द्रिय भिया रघु० ८।१४, १५।७२ ।

स्नुह् (विबा० पर० स्नुहति, स्नुग्ध या स्नुह्) उलटी करना, रँ करना ।

स्नेह [स्निह् + क्त] 1 अनुराग, प्रेम, कुपालुता, सुकुमारता — स्नेहवाञ्छितयोर्वासात् कामीक प्रतिबानि मे विक्रम० ५।४ (वहाँ इसमें छठा अर्थ भी बदता है), बसित मे बीबरस्नेहोभ्येतेषु श० १ 2 तैला-कता, मनुष्यता, चिकनापन, चिकनाहट (वैद्यक के अनुसार २४ वर्णों में से एक) 3 दूनी 4 चर्बी, बसा, कोई भी चिकना पदार्थ 5 तेज निविध्यस्थित-स्नेह स बहान्मुनेष्विषान् रघु० १२।१ वं० १। ८७, (वहाँ अर्थ अर्थ भी बदता है) रघु० ५।७५

6. शरीरगत कोई भी तरल पदार्थ जैसे कि वीर्य ।
 तम० - अस्त तेल में मिश्रीया हुआ, चिकनाया हुआ,
 चर्बी में लिप्त, अनुवृत्तिः (स्त्री०) स्निग्ध या मिश्री
 जैसा घोल जौल, -आशः दीपक, -छेदः, भङ्गः
 मिश्रता का टूट जाना, पूर्वम् (अर्थ०) अनुराग
 पूर्वक प्रवृत्तिः (स्त्री०) प्रेम प्रवाह -सं० ४।१६,
 -प्रिय (वि०) जिसे तेल अधिक प्यारा हो, (-यः)
 दीपक, भूः श्लेष्मा, रङ्गः तिल, वस्तिः (स्त्री०)
 तेल की सुई लगाना, तेल का जनीमा करना, गुदा के
 मार्ग से पिचकारी द्वारा तेल डालना, -विवर्तित
 (वि०) तेल से मालिश किया गया, व्यक्तिः
 (स्त्री०) प्रेम का प्रकटीकरण, मिश्रता का प्रदर्शन,
 (अवर्ति) स्नेहव्यतिरिचरविवर्तन मूच्छना बाण्य-
 मृषम् शेष० १२।

स्नेहम् (पु०) [स्निह् + कनिन्, वि०] 1 मित्र
 2. नन्दता 3 एक प्रकार का रोम ।

स्नेहम् (वि०) [स्निह् + णिच् + ल्यट्] 1 मालिश
 करने वाला, चिकनाने वाला 2 नष्ट करने वाला
 -नम् 1. तेल मालिश चिकनाना, तेल या उबटना
 मलना 2 चिकनाहट 3 उबटन, स्निग्धकारी ।

स्नेहित (पु० क० ह०) [स्निह् + णिच् + क्त] 1. प्रेम-
 पात्र 2 कृपालु, स्नेही 3 लिपा हुआ, चिकनाया हुआ
 -सः मित्र, प्यारा ।

स्नेहिन् (वि०) (स्त्री० - नी) [स्निह् + णिनि]
 1 अनुकूल, स्नेह करने वाला, मित्र मद्ग 2 ललाक्त,
 चिकना, चर्बी युक्त (पु०) 1. मित्र 2 मालिश करने
 वाला, लेप करने वाला 3 चिकनार ।

स्नेहः [स्निह् + डच्] 1 चन्दमा 2 एक प्रकार का राग ।
 स्ने (स्त्री० पर० स्तार्यान्) पट्टी बाधना, लपेटना, मुहौन
 करना, बाधन करना, परिबेष्टित करना ।

स्नेह्यम् [स्निग्ध + ण्यञ्] 1 चिकनाहट, स्निग्धता,
 क्लिप्तता, चिकनता 2 मुकुमारता, प्रियता 3 चिक-
 नापन, मुहुता ।

स्नग् (स्त्री० आ० स्पर्धने, स्पर्धित) 1 चकता, चकचक
 करना अस्पर्धितालि वाम च - भट्टि० १५।२७,
 १५।८३ 2 हिलना, कांपना, ठिठुरना 3 जाना, गति-
 शील होना, परि- -चकता, कांपना, चि , इधर-
 उधर घूमना, लचक करना ।

स्नग् [स्पर्ध् + घञ्] 1 चकन, चकचक 2 कंपकंपी,
 चकचकाहट, गति -मनो मन्दगन्ध बहिरपि चिरस्यापि
 विमृशन् -मर्त० ३।५।१ ।

स्पर्धन् [स्पर्ध् + ल्यट्] 1 चकनता, नाड़ी का फड़कना,
 चकचकाहट, कंपकंपी -बाधालिस्पर्धन् सुचयित्वा
 मा० १, इसी प्रकार अचरं, बाहुं, शरीरं आदि
 2 चकचकी, चकन 3 अर्धक में जीव का स्फुरण ।

स्पर्धित (पु० क० ह०) [स्पर्ध् + क्त] 1. चकचकीयुक्त,
 ठिठुरा हुआ 2 गया हुआ, -सम् नाड़ी का स्फुरण,
 चकन, चकचक ।

स्पर्धे (स्त्री० आ० स्पर्धने) 1 स्पर्हा करना, होड़ लगाना,
 मुकाबला करना, प्रतिद्वन्द्विता करना, प्रतियोगिता
 करना अस्पर्धित च रामेण -भट्टि० १५।६५
 कर्मस्पर्हा स्पर्धने भर्त० २।१६ 2 मलकारना,
 चुनौती देना, उपेक्षा करना, प्रति , बि- , चुनौती
 देना, ललकारना ।

स्पर्धा [स्पर्ध् + टाप्] प्रतियोगिता, प्रतिद्वन्द्विता,
 होड़ -आ भनन्तु चूर्ण स्पर्धा गृहणीयं ह्यमन्यत 2 ईर्ष्या,
 हाड़ 3 चुनौती 4 समानता ।

स्पर्धिन् (वि०) (स्त्री० - नी) [स्पर्धा + इनि] 1 प्रति-
 द्वन्द्विता करने वाला, होड़ करने वाला, प्रति-
 योगिता करने वाला, प्रतिस्पर्धाधीन तवाचस्पर्धिषु
 विदुमेषु रघु० १३।१३, १६।६२ 2 प्रतिस्पर्धी,
 ईर्ष्यान् 3 घमडी, (पु०) प्रतियोगी, सयकल
 व्यक्ति ।

स्पर्श (बुग० आ० स्पर्शयते) 1 लेना, पकड़ना, छूना
 2 मिलना, सयुक्त होना 3 आच्छिन्न करना,
 आच्छेदण ।

स्पर्शः [स्पर्श + घञ्] 1 छूना, संपर्क
 (मनो अर्थ० में - नदिद स्पर्शसम रत्नम् -शा० १।२८,
 २।७ 2 सयोग (स्त्री० में) 3. सपर्श, मृदवेष्ट
 4 भावना, सङ्ग- छूने से होने वाला ज्ञान 5 स्पर्श
 का विषय, स्पर्श-युता, स्पर्शयुग स्पर्शयुगो वायुः
 -नकं० 6 प्रमाद, रोग, बीमारी का दौरा 7 रोग,
 व्याधि, विकृति आदि या मनोव्यथा 8 (क से म्
 तक) पाँचों भागों में कोई सा व्यञ्जन कादयो मान्ता
 स्पर्श 9 उपहार, दान, भेंट 10. हवा, वायु
 11 आकाश 12 एक रतिचक्र, -शर्मा कुलटा, पृथ्वी ।
 सम० अक्ष (वि०) स्पर्शज्ञान से रहित, सवेदनव्युत्प
 इन्द्रियम् स्पर्श का ज्ञान, वा स्पर्शज्ञान प्राप्त करने
 वाली इन्द्रिय, -उत्प (वि०) जिसके पीछे व्यञ्जन
 वर्ण हो, उत्पन्न, -वर्तिः पारल पत्वार तत्पारम्भ
 वह तत्प जिसका छूने से ज्ञान हो, -छन्ना कुर्वन्
 का पीछा वेष्ट (वि०) स्पर्श के द्वारा जिसका ज्ञान
 हो -संघर्षिन् (वि०) संकथक, छूत का, -स्पर्शम्
 सूर्यग्रहण वा चन्द्रग्रहण आरम्भ होने पर स्नान, -स्पर्शः,
 - स्पर्शः मंडक ।

स्पर्शन् (वि०) (स्त्री० - नी) [स्पर्श + ल्यट्]
 + ल्यट्] 1 छूने वाला, हाथ लगाने वाला 2. घटत
 करने वाला, प्रभाव डालने वाला, -नः हवा, वायु,
 नम 1. छूना, स्पर्श, संपर्क 2. सवेदन, भावना
 3 स्पर्शमित्र या स्पर्शजन्य ज्ञान 4. भेंट, दान ।

सर्वगतम् [सर्वगत + कम्] सांख्यदर्शन में प्रयुक्त 'सर्व' का प्रयोगवाची शब्द ।

सर्वगत (वि०) [सर्व + गत] 1. सर्व किसे जाने के योग्य 2. गुरु, कुने में अधिक या कामक—हु० १५५ ।

सर्व (म्भा० मा०) सर्वगते) नीला या तार होना ।

सर्व (पु०) [सर्व + त्व] समोच्चता, शरीर में विकार, रोग ।

सर्व (म्भा० उभ०) स्पष्टति 1 अवबद्ध करना 2. दायित्व ग्रहण करना, सपन्न करना 3. गन्धी करना 4. कृता, देखना, निहारना, स्पष्ट दृष्टिगोचर होना, जानूसी करना, आपना, भेद पाना ।

सर्व [सर्व + अत्] 1. भेदिया, गुप्तचर,—स्वसे शनैर्वत-यति तत्र विद्विषाम् शि० १७१०. २. 'आपस्व' श्री 2 लडाई, सधाम, युद्ध 3. (पुरस्कार पाने के लिए) अवली जानवरों से लड़ने वाला, या ऐसी लडाई ।

सर्व (वि०) [सर्व + तत्] जो साक साक देखा जा सके, व्यक्त, साक दृष्टिगोचर, साक, सरल, प्रकट—स्पष्ट जाते प्रत्यक्ष—का० 'जब रूप सिल गई थी' सप्तशतिका—रघु० १८१०, सप्तशतिका—आदि 2. वास्त-कि, कच्चा 3. पूरा बिना हुआ, फूला हुआ 4. साक साक देखने वाला, व्यक्त (अर्थ) 1 स्पष्ट रूप से, साक तौर पर, साक-साक 2. मुक्तमकुला, साहस पूर्वक (स्वकीय साक करना, प्रकट करना, व्याख्या को कर कहना) । तब० बर्ग वह स्त्री जिसके बर्ग के बिना साक देख पड़े,—प्रतिपति. (स्त्री०) स्पष्ट ज्ञान, बृद्ध प्रत्यक्षज्ञान,—आदि, —वक्तु (वि०) साक-साक कहने वाला, मुंहफट, सरा, सरल ।

सर्व (म्भा० पर०) सुधीति 1. मुक्त करना, उद्धार करना 2. पुरस्कार देना, अनुदान देना, प्रदान करना 3. रत्ना करना 4. जीवित रहना ।

सर्वका [सर्व + कत् पृथो० अस् क] एक जंगली घोड़ा ।

सर्व [सुधा० पर०) सुधीति स्पष्ट] 1. कृता—सुधात्मिक बर्ग इति—दि० १११४, कर्मे परं सुधीति इति परं अनुक्तम्—अर्थ० ११३४ 2. हाथ रखना, बचपाना, कृता—हु० ११२२ 3. गुरु जाना, पिपक जाना, अनुक्त होना 4. पानी से धोना या छिड़काव करना अनु० २१६ 5. जाना, पहुँचना—अ० २१४, रघु० १४१ 6. प्राप्त करना, हासिल करना, विशेष स्थिति पर पहुँचना—अद्वैतवादा वस्तुतः सुधात्मिक—रघु० ११३२ 7. कार्य में परिणत करना, प्रभावित करना, वस्तु करना, पत्नीपना, प्रवीण होना मुद्रा० ७११६, हु० ११५५ 8. लोकेत करना, उत्तेजित करना—दे०

(सर्वगति—ते) 1. कृता 2. देना, प्रस्तुत करना

—या: कोटिक. सर्वगता बटोष्ठी:—रघु० २१४९, अर्थ—उपसृष्ट, अति, कृता, उच,—1. कृता 2. शरीर पर पानी के छीटे देना या स्नान करना—अनु० ७१ १४३ 3. आचमन करना, पानी देना, छुस्का करना स नक्षत्रसम्बन्धमासुधत्तम्—अनु० २१११, अनु० २१५३, ५१६३, अर्थ उपसृष्ट 4. स्नान करना—रघु० ५१५९, १८१३१, चरि, कृता, सत्, 1. कृता 2. पानी से छिड़काव करना अनु० २१५३ 3. सम्पर्क स्थापित करना ।

सर्व (वि०) [सर्व + विवत्] (समाप्त के अन्त में प्रयुक्त) जो कृता है, कुने वाला, वस्तु करने वाला, बेचने वाला, मर्मसर्व, हृदिसर्व आदि ।

सर्व (पु० क० क०) [सर्व + तत्] 1. कृता हुआ, हाथ लगाया हुआ 2. सम्पर्क में आया हुआ, स्पर्शी 3. पहुँचने वाला, उपयोग करने वाला, विस्तार पाने वाला—अस्पष्टपुरुषान्तरम् हु० ६७५ 4. वस्तु, पकड़ा हुआ अर्थ० ६९, अनवस्पष्टम्—रघु० १०१९ 5. गन्ता, गतिव—अनु० ८१२०५ 6. बिज्जा के पुर्ष स्पर्श से बना हुआ (पाषाण बर्गों में से कोई या बर्ग) अथोऽप्युक्त यवस्त्रीचनेमस्पष्टा शल स्मृता । बोधा स्पष्टा इव प्रोक्ता निबोधानुप्रधानत—विशा० ३८ । स्पष्टि:—स्पष्टिका (स्त्री०) [सर्व + पितृत्, स्पष्टि + कम् + टाप्] कृता, सम्पर्क तद्वत् अस्मच्छरीर-स्पष्टिका सापितृति—मुक्त० ३ ।

सर्व (पु० उभ०) सुधीति—ते) कामना करना, लाका-यित होना, इच्छा करना, उत्तुक होना, चाहना (अर्थ के साथ) सुधीति वक्तु दुर्मलितावास्व० अ० ७, तपश्चेशावापि सुधीयन्ती का० न वैचित्तेव सुधीया-बन्धु अर्थ विदो नायककेशवराव रघु० १६४२, अर्थ० २१४५ ।

सर्वहत् [सर्व + हृत्] इच्छा वा कामना करने की क्रिया, लाकायित होना ।

सर्वधी (वि०) [सर्व + धीवर] चाहने के योग्य, अधिकारी, सुधा के योग्य, वाञ्छनीय अर्थात् स्पर्धीधी—हु० ११२०, वक्ता तमेव अन्त सुधीधीति मा० १०१२१, परस्परैव सुधीधीयोर्यो न वैविद्वद्द्वययोगविष्णु रघु० ७११४, हु० ७१६०, उत्तर० ६४४० ।

सर्वहात् (वि०) [सर्व + हृत् + भावत्] इच्छा करने वाला, लाकायित, उत्तुक, उत्कण्ठित (अर्थ वा अधि० के साथ) औचित्यः सर्वहात्को न हि वक्तु—अर्थ० ११६४, इत्येवमेव सर्वहात्तरेव—रघु० १४४५ ।

सर्व [सर्व + अत् + टाप्] इच्छा, उत्तुकता, प्रवक्तु

कायना, कायना, ईश्वरी, अनिकावा—कथमन्ने करि-
 प्यन्ति पुण्येभ्यः पुण्यैः स्मृताम्—वेणी० ३।२९,
 २५० ८।३४।

नृप (वि०) [नृ + पृ + क्त] बाणजीव, स्वर्ण के
 योग्य, — ह्यः विभीरु नीव ।

सु (क्या० पर० सृजति) बाधात करना, मार डालना ।
सज्ज (पु०) वे० 'सज्ज' ।

स्फट् (म्बा० पर० स्फटति) फट पड़ना, फूलना ।

सङ्घः [सङ्घ+अण्] सङ्घ का कैलाया हुआ कथ तु०
कट-टा ।

1. साप का फैलाया हुआ कम
2. फिलिपिनी ।

स्फटिकः [स्फटि + क + क] बिलोर, काचमणि -अपमनयते
हि मनसि स्फटिकमणाधि रत्नकरमयस्तयः मुख
प्रविशाम्यपदेष्टुमाः-का० । सम०-अच्छाः मेरु पर्वत,
-वशिः कैलास पहाड, निम्ब (५०) कपूर अमल,
-अमल, -वशि (५०) शिला विलोर पत्थर ।

लघुविकारि, लघुविकारिका (स्त्री०) पिटाफिरी ।

लवटिकी [फटिक + डीप्] फिटकिरी ।

स्थान् । (ग्या० पर० स्पष्टति) फूट पड़ना, सिसना,
पुसना ।

ii (पुरा० उक्त० स्पष्टयति-ते) मशीन करना, मर्याद करना, हुंसी उदामा ।

सकल दे. सकल ।

स्फुरणम् [स्फुट् + स्फुट्] क्रीडना, बरबराता, बड़कना ।

लब्ध (आ० पर० स्फुटति) कौशला, वारधता, वरुणा,
करुणा, (पुत्र० उभ० वा प्रेर० स्फुटयति-ते)
कला देना, हिला देना, ना १. कलाता, कल्पनाता,
हिकाना, हुकाना २. नाचात कराना, प्रवीणित कराना,
रुचक कराना आस्फुटित वचनदाकारार्थ रघु०
१५/१११, उत्तर० ५/११ ३. नाचात कराना, अनुकूलित
काम उठाना—वि० १/१५ ४. (मनुष्य को) दंकारना ।

स्फटिक (वि०) (स्त्री०-की) [स्फटिक + क्त] बिल्लीर
पत्थर वा. कम बिल्लीर पत्थर ।

लघावित्त (भू० क० इ०) [लघ् + विष् + क्त] काका
हवा, पका हवा, फका हवा, बिदीर्ष किया हुआ ।

लघाति (लघी०) [लघात् + तिङ्, वल्लोपः] 1. लूयन, लोप 2. वृद्धि, वृद्धी ।

स्वाध्याय (ध्या०) का० स्वाध्याये, स्वीत) 1. मोटा होना, बड़ा होना, विस्तारमुख होना, विष्कार होना 2. बुझना, कड़ना, कूटना अनुमुख से तबो: जीय: पस्वाये कल्प-साधयव जति० १५१०९-३१० (स्वाध्यायि-ठै) कड़ना, विष्कार करना, विस्तारमुख करना, बड़ा करना-दायस्तकपवती बालीनीर्वाप्यादितां पुष्टः-अभि० १५१३३, ४१३३, १२१७९, १५१९१।

स्कार (वि०) [स्कार् + रन्] 1. विसृज्, वध्, कृष्ण हुना, पुष्पाभा हुना—स्कारपुष्कलकनपरीतिर्निर्वृत्त-मादि-भा० ५।२३, महावीर० ६।३२ 2. अधिक, पुष्कल महा-
वीर० ५।२, भर्तृ० ३।४२ 3. कृष्ण (स्वर), -र
1. लूजन्, बुद्धि, विस्तार, विकास 2. (जोने में पड़ी हुई) कुट्टी 3. उमार, विस्ती 4. बढकना, बढरी-
मुक्त सम्पन्न, बढक 5. टंकार,—रन् प्रयुक्ता,
माधिचक्षु, पुष्कलता (स्कारीय) लूज जाना, पुष्पना,
कंजना, कंजा, बुद्धि होना सुस्तिमा विजयीबर्षति
लुहः स्कारीयमन्वापदः लूजन् १।३६ ।

स्कारण [स्फुर + णिच् + ल्यट्, स्कारादेशः] नरनराहट,
स्फुरण, कपकपी ।

स्फालः [स्फाल् + घञ्] बरबराहट, बकबक, बहकन,
कंपकपी ।

सकात्मनम् [स्वाम् + स्मृत्] 1. स्पन्दन, बकबक 2. हिलाना-
इलाना 3. रगड़ना, चिलना 4. बपबपाना, सहस्राना
(धोडे बादि को), धीरे-धीरे हाथ करना ।

स्किब् (स्त्री०) [स्फाद् + शिब्] चूतव, कूहा, —अस-
स्किब्पुष्पिष्ठाश्चयवस्तुमान्युत्पूतानि अग्ना—भा०
५।१६।

स्फिग्द (बुरा० उभ० स्फोटयति—ते) 1. चोट पहुँचाना, क्षतिग्रस्त करना, मार डालना 2. बुझा करना 3. प्रेम करना 4. डकना ।

सिद्ध (चुरा० तत्र० सिद्धयति--से) चोट पहुँचाना
बाधि, दे० अन्तर सिद्ध ।

स्फिटर (वि०) [स्फाद् + किरिष्, प्र० अ० स्फेम्, उ०
अ० स्फेष्ठ] 1. प्रचुर. प्रभूत, बहुल 2. बहुत से,
असंख्य 3. विस्तृत, नायत ।

स्मृत (मू. क. कु.) [स्वयं + क्त, स्त्री भावेः] 1. सुजा हुआ, बड़ा हुआ—वेणी ५।४० 2. मोटा, पीन, बड़ा—विस्तृत, विभाव 3. बहुत से, अनेक, अधिक—वर्षात, पुष्कल, प्रचुर 4. पवित्र—मात्रि ५।१३. लफल, समृद्ध, फलता—फलता 6. पैरुक रोम से दस्त (स्त्रीहीन) बड़ा करना, विस्तृत करना।

स्फीतिः [स्फाम् + क्तिन्, स्फी आदेशः] १. वृद्धि, वक्री, विस्तार २. प्राचुर्य, यथेष्टता, पुष्कलता—अमृतामृतस्य च स्फीतिः सदा मे वर्तता यद्मे ३. समृद्धि ।

स्फुरः । (पुनः) परं, प्राग् जगं स्फुरति, स्फोटति - वे,
 स्फुटित) १. फट् जाना, नक्त्वात् फट् जाना, दृढ
 जाना, नक्त्वात् विदीर्षं होना. इतर पक्षः, मय होना
 - हा हा । शेष स्फुटति ह्यर्थं कर्त्तव्यं देवदत्तः - जलः
 ११८, स्फुटति न हा मनसि विदिष्यते नील ७, ७
 पङ्क्तिः ११५९ १५१७ २. फूला, शिखरा, फूल
 होना, कुमुदित होना - स्फुटति कुमुदितो विरहितः
 देवदत्तः नील ७, ५. पं. १११९ काव्यः

३।१६७ ३. बाग बाग, उलान लगाया, तितर-
तितर करना, - दुरङ्गः पुस्तुदुर्भीताः—मट्टि० १४१६,
१०।८ ४. दृष्टिगोचर होना, निगाह में पड़ना, प्रकट
होना, स्पष्ट होना ।

ii (चुरा० उभ० स्फुटयति—ते) १. फटना, तरेड़
जाना, टूट जाना २. निगाह में पड़ना,—वेर० स्फोट-
यति—ते, १. फट कर टुकड़े टुकड़े होना, संवसः
होना, झोल कर फाड़ना, तरेड़ डालना, बांटना
२. प्रकट करना, बतलाना, स्पष्ट करना ३. लोलना,
मंटाफोड़ करना ४. चोट पहुँचाना, मच करना, मार
डालना ५. पछोड़ना ।

स्फुट (वि०) [स्फुट् + क] १. फट पड़ा, टूट कर टुकड़े
हुआ, टूटा हुआ, क्षणित २. लिका हुआ, फूला हुआ,
प्रफुल्लित स्फुटपरागपरागतपञ्चदन्—सि० १।२५
३ प्रकटीकृत, प्रवर्णित, स्पष्ट किया हुआ
४. फटा, स्पष्ट, साफ दिखाई देने वाला वा व्यक्त
—अन स्फुटो न कश्चिदलङ्कार—काव्य० १, कु०
५।४४, मेघ० ७०, कि० ११।४४ ५ प्रत्यक्ष—उत्तर०
३।४२ ६. झेल, उज्ज्वल, शुभ्र—मुक्ताफल वा
स्फुटविद्रुमस्फुट—कु० १।४४ ७ क्षुब्धित, प्रसिद्ध,
—स्फुटनृत्यलीलमभवत्सुतनोः सि० १।७९ (प्रसिद्ध)
८. प्रसारित, विकीर्ण ९ उज्ज्व १० दृश्यमान, मल्य,
—दम् (अव्य०) स्पष्ट रूप से, विवक्षितया, साक्षु तौर
पर, निश्चय ही, प्रकट रूप से । सम० अर्थ (वि०)
१. बोधमय, स्पष्ट २ साधक,—तार (वि०) जिसमें
छारे कभी रत्न जड़े हुए हों, उज्ज्वल,—कलम् (उया०
में) १. किसी विकीर्ण का बर्णार्थ लोचकल २. किसी
निमित्त का मूलफल,—तारः किसी बह या तारे का
वास्तविक आधार,—सूर्ययतिः (स्त्री०) सूर्य की दृश्य-
मान वा वास्तविक गति ।

स्फुटयन् [स्फुट् + स्फुट्] १. तोड़ कर छोलना, फाड़
देना, फूट जाना, फट कर झुक जाना २. प्रसार होना,
झुलना, प्रफुल्लित होना ।

स्फुटिः—डी (स्त्री०) [स्फुट् + इन्, पक्षे डीन्] पैरों की
झाक का फट जाना, बर्बाद, पैरों का दुःखना वा
झुलना ।

स्फुटिका [स्फुटि + कन् + टाप्] टूटा हुआ छोटा टुकड़ा,
जड़, फलक ।

स्फुटित (वृ० क० ड०) [स्फुट् + क्त] १. फटा हुआ,
टूट कर झुका हुआ, जड़-जड़ हुआ, तरेड़ जाया हुआ
२. मुकुलित, लिका हुआ, प्रफुल्लित (बैसा कि
कल) ३. स्पष्ट किया गया, प्रकट किया गया,
विवक्षितया गया ४. फटा हुआ, मच ५. हँसी उड़ाया
हुआ । सम०—वरण (वि०) विच्छेदे पैर पैर हों,
बाहर की निकले हुए पीढ़े चट्टे पैर बाका ।

स्फुट् (चुरा० उभ० स्फुटयति—ते) तितरकार करना,
अपमान करना, निरादर करना ।

स्फुट् (तुदा० पर० स्फुटति) डकना ।

स्फुट् i (भ्वा० पर० स्फुटति) लोलना, झुलाना ।

ii (चुरा० उभ० स्फुटयति—ते) मलाक करना,
मलाक करना, उपहास करना ।

स्फुट् (भ्वा० भा०, चुरा० उभ० स्फुटते, स्फुटयति—ते)
दे० 'स्फुट्' ।

स्फुट् (अव्य०) एक अनुकरण परक ध्वनि । करः मान,
—कारः 'स्फुट्' ध्वनि, चटपटाने की आवाज ।

स्फुर (तुदा० पर० स्फुरति, स्फुरति) १. (क) बरबराता,
करकना (जैसे बाज का) शान्तिमिदमाधमपदं
स्फुरति च बाहुः कुत फलमिहास्य म० १।१५,
स्फुरता बाभकेनापि दाक्षिण्यमवलम्ब्यते मा० १।८
(ख) हिलना, कापना, सरबना, बरबराता स्फुरद-
वरनावापुटया—उत्तर० १।२९, १।३३ २. ललोटना,
संचर्ष करना, विक्षुब्ध होना हत पविष्या कथं
स्फुरन्तम् राम० ३ कृच करना, फेंकना, झाने उछ-
लना—पुस्तुस्वंधमा परम्—मट्टि० १४।६ ४ पीछे की
ओर उछलना, पलट कर जाना ५ उछलना, फूट
निकलना, उद्गत होना, उठना—चर्मत स्फुरति निर्बलं
यस्य ६. दृष्टिगोचर होने लगना, दिखाई देने लगना,
प्रकट होने लगना, स्पष्ट दिखाई देना, प्रवर्णित होना
मुक्तास्फुरन्ती को हर्तुमिच्छति हरेः परिवृष्य बंधुम्
—महा० १।८, रचितरुचिरमृगा दृष्टिगोचरे प्रदीपे
स्फुरति निरवसादा कापि राणा जगाम नीत० १।१
७. दमक उठना, अवगमना, चिन्तारी उठना, धनकना,
लककना, टिमटिमाना—स्फुरति कुचकुम्भयोस्परि
मणिसम्पदो रज्ज्वस्तु तव हृदयेक्षम् नीत० १०,
(तया) स्फुरत्तयामन्धलाया चकले कु० १।२४,
रत्न० ३।६०, ५।५१, मेघ० १५।२७ ८. धनकना,
तिमिष्यता विचलना, प्रमुल होना वच० १।२७
९. अवाप्तक मग में घुरना, अकस्मात् स्फुटि में जाना
१०. बरबराते हुए चलना ११. बरौबना, मच करना
—वेर० (स्फुरयति—ते, स्फुरयति—ते) १. बरबराता
२. चककना, अवगमना ३. फेंकना, डाल देना, झाने—
चनक उठना, अर्थ—१. बँसना, प्रदीप होना, झुलना
२. झलत होना, धीरे, बड़कना, करकना, चकचक
करना—तस्याः स्फुरतिरधर्षवत्पल्लवाः—उत्तर०
१।२८, व—, १. करकना, कापना २. फैलना, झुक
होना—वास्तुल्लोकात्—का० ३. घुर-घुर कर
फैलना, विचलना होना—विषयतस्व युषोक्तोः अयः
अस्फुरति स्फुटम्—तुदा०, वि—, १. करकना,
कापना २. चकचक, उठना ३. चककना, चककना
उत्तर० ४ ४, (कथं की) ललना, बँसना

(इसी अर्थ में प्रेर० रूप प्रयुक्त होता है) -प्रकीर्ण
विस्तारितमण्डलवाचकं कः सिन्धुप्रायमधिक्यमित्यु
समर्थ-वेणी० २१२५, कि० १५१३ ।

स्फुर [स्फुट् भावे वज्] १. बड़कना, बरबराना, फर-
कना २. सुबन ३ डाल ।

स्फुरन् [स्फुर + स्फुट्] १. बड़कना, फरकना, बरब-
राना २ शरीर के अंगों का (धुमाधुमधुवच) फरकना
३. फूट निकलना, उड़ित होना, बिखार देने लगना
४. चमकना, दमकना, जलमगना, झलकना, टिमटिमाना
५ मन में फुरना, अचानक स्मरण हो जाना ।

स्फुरत् (वि०) [स्फुट् + वज्] बड़कने वाला. चमकने
वाला । सम० उत्का उत्कापिड, टूटा तारा ।

स्फुरित (गु० क० ड०) [स्फुट् + वज्] १ कपायमान,
बड़कता हुआ २. हिला-डोला ३. चमकीला, दमकने
वाला ४ अस्मिर ५ सुना हुआ, तम् १. बड़कना,
फरकना, बरबरारहट २ विमोह या मन का संवेग ।

स्फूर्त् (धा० पर० स्फूर्च्छति) १ फैलना, विस्तृत होना
२ मूल जाना ।

स्फूर्त् (धा० पर० स्फूर्वति) १ गरजना, गरजनध्वनि,
धमाधम होना, विस्फोट होना, -मनु० १५३ २ दम-
कना, चमकना ३ फट पड़ना, फूटना, स्फूर्जत्वेव स
एव सप्रति मम न्यकारमिन्स्थिते -महावीर०
३१४०, वि १ दहाड़ना, गरजना २. गुजना
३ बड़ना - चमकना, प्रतीत होना अस्त्वेव बड़वा-
मता तु मयतो यद् व्योमिन् विस्फूर्जते काव्य० १००

स्फूर्त् (धुता० पर० स्फुलति) १. कापना, बड़कना, बर-
बक करना २ लपकना, अचानक या पड़ना ३ स्वस्व
बिल होना १. मार डालना, नष्ट करना ।

स्फुलत् [स्फुल् + क] तद्, सेना ।

स्फुल्लम् [स्फुल् + स्फुट्] कापना, बरबराना, फरकना ।

स्फुल्लिकः, गम्, स्फुल्लिका [स्फुल् + इङ्] जाग की
चिगारी, - स्फुल्लिकावस्था बहिरुपदेश इव स्थित
-स० ७१५, वेणी० १६८ ।

स्फूर्जः [स्फूर्ज + वज्] १ बादलों की गरजवाहट २. दम
का बज ३. अकस्मात् फूट निकलना या उड़ब होना
-जैसा कि 'नर्मस्फूर्ज' में ४ नायक-नायिका का
प्रथम मिलन जिसके आरंभ में आनन्द और अन्त में
मय की भांशका रहती है ।

स्फूर्जन् [स्फूर्ज + वज्] विजली की गरजवाहट, बर-
स्फूर्जित (स्त्री०) [स्फुट् (स्फूर्ज) + क्तिन्] १. बड़कन,
स्फुरन, बरबरारहट २. छमांग, चौकड़ी ३ कुसुमित,
स्फुरित ४. प्रकीर्ण, प्रदर्शन ५. मन में फुरना
६ काव्य की उन्मादना ।

स्फूर्जित् (वि०) [स्फुट् + वज्] १. बड़कने वाला,
बरबराने वाला, विबुल्य २. जोमल हुरब ।

स्फेयस् (वि०) बतितमेन स्फिरः, द्रिचुम्, स्फादेत्. 'स्फिर
की म० य०] प्रचुर तर, अपेक्षाकृत विस्तारयुक्त ।

स्फेज (वि०) [स्फिर + इच्छन्, स्फादेत्, 'स्फिर' की
उ० य०] प्रचुरतम, अत्यंत विस्तारयुक्त ।

स्फेजः [स्फुट् करने वज्] १. फूट निकलना, फट कर
बुलना, फट पड़ना २. बर बुलना जैसा कि 'नर्मस्फोट
में ३. सुबन, फोड़ा, रसीली ४. सज्ज के मुनने पर मन
में जाने वाला भाव, सज्ज सुन कर मन में उत्पन्न होने
वाला विचार-दुर्वैय्याकर्म- प्रधानमूलस्फोटकस्य-
अकस्म्य शब्दस्य ध्वनिरिति व्यवहार. कुतः -काव्य०
१, सर्व० भी दे० (पाणिनीयदर्शन) ५. भीमसकों
द्वारा माना हुआ नित्य शब्द । सम०-बीजकः तिलावा ।

स्फोटन (वि०) (स्त्री० भी) [स्फुट् + स्फुट्] फाटकर
बलग्न-बलग्न करना, प्रकट करना, नद खोलना, स्पष्ट
करना, नः परस्पर मिले हुए व्यंजनों का बलग्न-बलग्न
उच्चारण, मधु काड़ना, अचानक फट पड़ना, टुकड़े
टुकड़े होना, बटकना २. बनाव फटकना ३ अंगुलियों
की प्रविष्टि बटकाना, अंगुलियां बटकना ४. हो मिले
हुए व्यंजनों का बलग्न करना ।

स्फोटनी [स्फोटन + ङीप्] सूराल करने का औजार, बनीन
का दरमा, बरमा ।

स्फोडा [स्फोट + टाप्] वीष का फैलना हुआ फल ।

स्फोटिका [स्फुट् + क्तिन् + टाप्, इच्छन्] एक पत्थीविधि ।

स्फोरणम् (दे० स्फुरणम्) ।

स्ववज् [स्वाच् + वज्, नि० वाचः] यज्ञों में प्रयुक्त होने
वाला तलवार के आकार का एक उपकरण-मनु०
५११७, मात्र० ११८४ । सम०-वर्तिका इत उप-
करण द्वारा बनाया गया चिह्न (चूड) ।

स्व दे० स्व ।

स्व (अव्य०) [स्मि + इ] एक प्रकार का निपात जो
वर्तमान काल की क्रियाओं के साथ (या वर्तमान
कालिक कृत्य शब्दों के साथ) जुड़कर मूलकाल का
अर्थ देता है भासुरको नाम सिंह प्रतिवक्षति स्व
पञ्च० कीर्तिस्व स्व प्राणमूर्त्त्यैवस्ति-हि० १७१५
२ शब्दाधिक्य निपात (बहुधा निषेधात्मक निपात के
साथ जोड़ा जाता है अतुविप्रकृतापि रोषतया मा
स्व प्रतीय यमः स० ५१७, मा स्म नीमस्तित्नी
काचिज्जनयेत्पुत्रमीदृक् हि० २१७ ।

स्ववः [स्मि + वज्] १ आरथ्य, अर्चना, ताज्ज्व २. अवि-
मान, यमव, हेकड़पना, बर्ष तस्मै स्वमावेक्षितविक्रि-
ताय -रघु० ५११९, मनु० ३१३, ६९ ।

स्ववः [स्म भावे वज्] १. प्रस्तास्वरन, भाव २. प्रेय
३. कामदेव, प्रेय का देवता, स्वरपर्यंतुक एव नायकः
-कु० ५१२८, ४२, ४३, सम०-अकृष्णः १. अंगुली
का नाचन २. प्रेयी, कामापुर अवस्थित, -अनार्य

— कृषक, — गृह्यन् नमिष्वरन् स्त्री की योगि, नम,
— कृष्य (वि०) कार्याय, प्रेममृष्य, — क्षात्रुर — क्षात्रं
— क्षत्रुक (वि०) क्षात्र से पीडित, कामतप्त, काम-
वश्य — क्षात्रकः क्षात्र, — कर्मन् (नृ०) कोई भी काम-
क्षतापूर्ण व्यवहार, स्वरूप, — नृकः विष्णु का विशेषण
— कर्मन् प्रथमिलिका, वक्ता शरीर को कामवश्य
व्यवस्था (यह वक्ष है), श्वकः 1. पुष्पेष्टि 2. पीरा
निक मल्ली 3 एक वाद्ययन्त्र, (नृन्) मन, — (जा)
बहिनी रात, शिवा रति का विशेषण, — कर्मिल (वि०)
कामोद्दीप्त, — नोष्टः कामवश्य संज्ञाहीनता, प्रथमोद्भाव,
— केकली शारिका पक्षी, — कर्मलः 1. बसंत ऋतु का
विशेषण 2. कर्मिल का विशेषण, — कर्मिलका देवता,
रती, — कर्मलः शिव का विशेषण, कर्मः कर्ममा,
— कर्मलः शिव, पुष्प का शिव, श्वकः रासन, पञ्चा
— हृदः शिव का विशेषण ।

स्मरणम् [स्मृ+स्मृट्] 1. स्मृति, याद, प्रत्यास्मरण केवल
स्मरणार्थ पुनाति पुष्पं यतः—रघु० १०।३०
2. चिन्तन करना—बहि हृस्मरणे सरत मनः—गीत० १
3. स्मृति, स्मरणवर्धित 4 परस्पर, परंपरायत
विधि इति नृस्मरणाय (वि०) स्मृति 5. किसी
देवता के नाम का मन में जाप करना 6. शब्द से वाद
करना, शब्द करना 7. कर्मव्यवस्था स्मरणाय जो एक
कर्मकर नामा वाता है, इसकी परिभाषा है—यवानुव-
नर्त्तव्यं नृपते तत्तत्तुये स्मृतिः स्मरणम्—काव्य० १०।
कर्म—अनुष्ठान 1. कृतापूर्वक स्मरण करना, 2. स्मरण
करने की कृपा—भृ० १।१५, —कर्मव्यवस्था कर्मण,
कर्मणा, — कर्मव्यवस्था प्रत्यास्मरणों की समझानविकला
का समाप, कर्मवी मृत् ।

स्मार (वि०) [स्मृ+हृन्] काव्यदेववर्धनी — स्मार
पुष्पमयं वापः क्षात्राः पुष्पमया क्षति । तवाप्यनृत्तस्मै-
कोप्यं करोति वज्रनाशनः — रत्न [स्मृ+हृन्] प्रत्यास्मरण,
स्मरणवर्धित ।

स्मारक (वि०) (स्त्री—रिका) [स्मृ+विच्+प्पुन्,
स्मिषां टाप् इत्यच्] ध्याम दिक्षाने वाला, फिर याद
कराने वाला, —कम् किसी की स्मृति-रक्षा के अधिकार
के सम्पादित कोई वंश (आधुनिक प्रयोग) ।

स्मरणम् [स्मृ+विच्+हृन्] यममें जाना, याद
दिकाना, स्मरण कराना ।

स्मरत् (वि०) [स्मृती विहितः, स्मृति वैद्यकीय वा जन्] 1
स्मृतिवर्धनी, याद किया हुआ, स्मारक 2. स्मृति
के अन्तर 3 स्मृति पर आधारित, वा स्मृति में
अतिवर्धित, वर्धकात्म्य में विहित — कर्मस्मारविधा-
हामी मुनीति प्रत्यक्षं मुनी—वात० १।५०, जन् १।
१०८ 4. वैद्य 5. वर्धकात्म्य को मानने वाला 6. गृह्य
(वैद्ये कि क्षिति), — कः परंपरागत वर्ध का विशेषण

बाह्याय 2. परंपरागत वर्ध का अनुयायी 3. (स्मृतिवर्ध
के अनुसार चलने वाला एक) संस्थापक ।

स्मि (स्वा०) वा० स्वयते, स्मित) 1. मुस्कुरावा, हँसना
(यं यं) काकुत्स्थ ईषत्स्वयनाय नास्त—अहि०
२।११, १।५८, स्वयनाय वचनाम्भ्यं स्मराणि—जाति०
२।२७ 2. स्मितता, कृष्णता यं० १।१३५, —वेर०
(स्मावयति हे) 1. मुस्कान पैदा करना, मुस्कुराहट
को कर्म देना 2. हँसना, अपहास करना 3. भाव-
वर्धित करना (इत वर्ध में—स्मावयते) इच्छा०
(विस्मयिषते) 1. मुस्कुराने की इच्छा करना ।
जन्, मुस्कुरावा, हँसना, स्मि— 1. भाववर्ध करना,
वर्धने में जाना—उपयोगें तथा लोक प्राचीन्येन
विशिष्टिये—रघु० १।५१५, अहि० ५।५१२ 2. बराहना
3. वर्धनी, बहुमन्य होना—न विस्मयेत उपमा—जन्०
५।२३६, (वेर०) मुस्कान पैदा करना, भाववर्धित
कराना, भाववर्ध या वर्धने से जाना—विस्मायकम्
विस्मितमात्यवृत्ती—रघु० २।१३, अहि० ५।५८,
८।४२ ।

स्मिद् (धुरा०) उभ० स्मेदयति हे) 1. अपवाहित
करना, घुसा करना, नष्ट करना 2. प्रेम करना
3. जाना ।

स्मित (नृ० क० क०) [स्मि+यत्] 1. मुस्कानमुक्त,
मुस्कुराता हुआ 2. कृष्णता हुआ, शिवा हुआ, कृ-
षित, तन् मुस्कान, यं हँसी, कर्मिलम् मुस्कुराहट
के साथ, शक्तिवर्धितम् वाहि । जन्०—नृन् (वि०)
मुस्कानमुक्त इष्टि रखने वाला (स्त्री०) कुम्भर स्त्री,
—वृषन् (वज्र०) मुस्कुराहट के साथ, मुस्कान से
मुक्त, —अवधिर्मितान् स्मितपूर्वमाह—भृ० ७।४७ ।
स्त्रीन् (स्वा० पर० स्त्रीकृति) जयकमा, वाज से उल्लेख
करना ।

स्मृ i (स्वा० पर० स्मृकीर्ति) 1. प्रथम होना, संयुक्त
होना 2. प्रकाश करना, प्रखरता करना 3. जीवित
रहना ।

ii (स्वा० पर०—प्रकाशकों में वा० जी—स्म-
रति, स्मृत—कर्मका० स्वयते) 1. (क) वाद करना,
मन में रचना, प्रत्यास्मरण करना, मन में जाना,
विहित होना स्मरति धुरधरीयं तव पोषावरी
वा स्मरति च उपपाकेष्वावर्धयति—उत्तर०
१।२५, (क) मन में पुकारना, मन से वाद करना,
शोचना—स्मारास्मृतीजीवितवैद्यताम्—यं० १, रघु०
१।५४५ 2. किसी देवता के नाम का मन में ध्याम
करना वा मन में जाप करना, - यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं
त बाह्याभ्यन्तराभ्यां 3. स्मृति में वर्धित करना वा
अतिवर्ध करना तथा च स्मरति 4. प्रकथन करना,
जवाब करना, जीवना, यं० १।३० 5. शब्द के

साथ याद करना, जातुर होना, उत्कण्ठित होना अभिलाषा करना (बहुधा मन्त्र के साथ) स्मृतुं विधानि न विदुः मुरमुन्मदीभ्यः कि० ५।२८, कण्वि-
कृतं स्मरति रसिके त्वं हि तस्य प्रियेति मेघ०
८५, मुद्रा० ५।१४, प्रेर० (स्मारयति-ते, परन्तु अनिम
जब को प्रकट करने के लिए स्मारयति-ते) 1 याद
कराना, फिर ध्यान दिलाना, मन में लाना, सोचना

अनेन मन्त्रियाभियोषेन स्मारयति मे पूर्वशिक्ष्या
सौदामिनीम् भा० १, कर्मा कर्मा द्विकर्मक के रूप में
प्रयुक्त अपि चन्द्रगुणदोषा अनिकान्तपार्ष्ववगुणान्
स्मारयन्ति प्रकृती मुद्रा० १, य एव दुस्मर काल
तमेव स्मार्गिना वयम् उत्तर० ६।३४ 2 सूचना
लेना 3 छेद के साथ स्मरण कराना, लालायित
करना, अभिलाषा पैदा करना सि० ६।५६, श०
६४, इच्छा० (मुमुक्षुंते) प्रत्यास्मरण करने की
इच्छा करना, अनु , याद करना, प्रत्यास्मरण करना
मन में ध्यान करना, जप —, भूल जाना, प्र , भूल
जाना, वि , भूल जाना —मनुकर विस्मृतास्वना
कश्चम् श० ५।११, (प्रेर०) भूलाना उत्तर० १
सम् , याद करना, चिन्तन करना —मन० १८।७६,
मनु० ६।१४९, (प्रेर०) ध्यान दिलाना, मन में रखना
(पाताल) मामद्य स्मरयतीव भुजगलोक - रत्न०
१।१३।

स्मृतिः (स्त्री०) [स्मृ + क्तित्] 1 याद, प्रत्यास्मरण,
स्मरणशक्ति अथवा स्मरण कर्तृत्वधनु किं याद
स्मृति ते वेणी० १।२१, सत्कारमात्रजन्य ज्ञान स्मृति
—तर्क०, स्मृयुपस्थितौ इमौ द्वौ श्लोको—उत्तर० १
2 चिन्तन करना, मन में ध्यान करना 3 मानव-
धर्मशास्त्र, परम्पराप्राप्त धर्मशास्त्र स्मृतिग्रन्थ (नीति
ओर धर्म से सबद्ध) (विप० धृति) 4 धर्मसंहिता,
स्मृतिग्रन्थ 5 स्मृति का मूलपाठ, धर्मसूत्र, धर्म के
नियम—इति स्मृते 6 इच्छा, कामना 7 समझ।
सम० अन्तरम् दूसरा स्मृतिग्रन्थ,—अक्षेत् (वि०)
1 भूला हुआ 2 शास्त्रविषय 3 (वत) अवयव
अव्यायपूर्ण,—उक्त (वि०) धर्मशास्त्र में विहित
धर्मसूत्र में प्रतिपादित, वक्त,—विषयः स्मरणशक्ति
का पदार्थ, स्मृतिग्रन्थ,—विषयं गम् भरना,—अर्जु० ३।३७

३८ प्रत्यक्षधर्मः स्मृति की धारणाशक्ति, प्रत्यास्मरण
की वधार्यता, प्रबन्ध धर्मशास्त्र की कृति,—
स्मृति का मूठ ही जाना, याद न रहना, रोच.
औपिक विस्मरण, स्मृति का नाश—श० ७।३२

—विषय स्मृति की गढ़बद्ध, स्पष्ट याद न रहना
स्मृति (वि०) अवयव, विरोधः 1 धर्म का वैप-
रीत्य, अवैधता 2 दो या दो से अधिक स्मृतियाँ का
पारस्परिक विरोध—स्मृतिविरोध परिहरति—शारी०,

—शास्त्रम् 1 धर्मशास्त्र, धर्मसंहिता, धर्मः
2 धार्मिक विज्ञान, शेष (वि०) उपरत, मृत (क-
व्यक्ति) श्रोत्रियस्य स्मरणशक्ति की दुर्बलता,—आर०
(वि०) धर्मशास्त्र से सिद्ध होने वाले,—हेतु प्रत्या
स्मरण का कारण मन पर पड़ी हुई छाप, विचार
साहचर्य।

स्मर (वि०) [स्मि + रन्] 1 मुसकराने वाला बिलोभ
वृद्धोभयविधिष्ठित त्वया महाजनः स्मरमुखो मयिष्।

क० ५।७०, नाभि० २।४, ३।२, मा० १०६

2 वि०, हुआ, फूला हुआ, फैलाया हुआ, प्रफुल्लित
अधिकारिकसदस्यविस्मयस्मेरतारै मा० १।२८,
3 चमड़ी 4 व्यक्त 1 सम० विष्किरः मोर।

स्मरः [स्मृ + क] बाल, तीक्ष्णमति, तेजी से चलना, वेग।

स्मर्य (स्त्री०) जा० स्मर्यते, स्मर्य, इच्छा०—सित्यन्विषते,
सित्यन्विषते, इकारान्त उकारान्त उपसर्गों के पश्चात्
स्मर्य के ल को व हो जाता है। 1 रिसना, बुना, टपकना,
बूँद बूँद पिरना, क्षति होना, बर्क निकलना, बहना
—अभि दलहरवित्य स्वस्वमान् बरन्त तव किमपि लिहन्तो
मरुन्नु गुच्छन्तु नृज्जा नाभि० १।५ 2 डालना,
उठेलना 3 बाधना, रोधना, बन्—बहना, क्षि—
1 रिसना, बहना 2 बारिश होना, पानी पिरना
अभिस्यन्दमानमेवैवदुरितमीक्षिता विरि उत्तर० २
3 पिचलना—उत्तर० ६, नि—, बरि, बह निकलना,
प्र , बह जाना वि , बहना—मट्टि० १।७४।

स्मर्यः [स्मृ + गे चञ्] 1 बहना टपकना 2 तेजी से
जाना, चलना 3 गाड़ी रथ।

स्मर्यन् (वि०) (स्त्री०—ना नौ) [स्मृ + लृट्] 1 बस्ती
मे जाने वाला, दुनगायो, बहने वाला 2 बूँद,
फुर्गीला, शीघ्रगामी—स्मर्यन्ता नौ च नुराः—कि० १५।
१६—न युद्ध-रथ, गाड़ी या रथ—धर्माग्न्य प्रविशति
गत्र स्मर्यन्तालोकाभीत—श० १।३३ 2 वायु, हवा
3 एक प्रकार का वृक्ष तिनिस, नम् 1 बहना,
टपकना, रिसना 2 तेजी से जाना, बहना 3 पानी।
सम० आर० १५ रथ में बैठ कर युद्ध करने वाला।

स्मर्यनिका [स्मर्यन्—कीप् + कन् + टाप्, ह्रस्व] बूँक की
कुट्टक।

स्मर्यन् (वि०) (स्त्री०—नौ) [स्मृ + जिणि] 1 रिसने
वाला बहने वाला, पकने वाला 2 वेग से जाने
वाला 3 गतिशील।

स्मर्यन्नी [स्मर्यन् + ङीप्] 1 लार, बूँक 2 वह माय जो
दो बच्चों को एक साथ जन्म दे।

स्मर्य (भू० क० कृ०) [स्मृ + क्त] रिसा हुआ, टपका
हुआ, गिरा हुआ।

स्मर्य (स्त्री० पर०, बुरा० उभ०) स्मरति, स्मरयति-ते।
1 शब्द करना, जोर से चिल्लाना, चीखना 2 जाना

3 विचार करना, विवर्ष करना, चिंतन करना
(केवल इस अर्थ में आ०) ।

स्वभावात् [स्वम् + भव् + क्त] एक मूल्यवान् मणि (कहते हैं कि यह मणि प्रतिदिन बाठ स्वर्ण भार दिया करती थी, तथा सब प्रकार के सकट और अपयशुनों से रक्षा करती थी), अधिक वृत्तांत जानने के लिए दे० 'सभा-जित्' ।

स्वभि (भी) क [स्वम् + इकृ ईकृ] 1 बादल 2 बामी
3 एक प्रकार का वृक्ष 4 समय ।

स्वमिका [स्वमिक + टाप्] नील ।

स्वात् (अभ्य०) [अस् वातु का विधिलिङ् में, प्र० पु०
ए० व०] ऐसा ही सकता है, शायद कदाचित् । मम०
बावः सभावना की उक्ति सभावबाव (दर्शन० में)
बाविन (पु०) मशयवाही, म्याहाद का अनुयायी ।
स्वाल् दे० ब्याल ।

स्वृत (भू० क० छ) [स्वि + क्त] 1 मुई से सीया हुआ
नखी किया हुआ, चुना हुआ (आल० से भी) चिन्ता
सन्ततितन्तुआलनिबिडस्वृतये लाना प्रिया—मा०
५।१० 2 बीधा हुआ त बोरा ।

स्वृतिः [स्वि भावे क्तिन्] 1 सीना, टाका लगाना 2 मुई
का काम 3 बैला 4 बसावली कुल 5 सतत ।

स्वृन्ः [स्वि + नक्] 1 प्रकाश की किरण 2 सूर्य 3 बैला
बोरा ।

स्वृषः [स्वि + मक्] प्रकाश-किरण ।

स्वृष्ठा [= स्वृत, पृषो०] बोरा, बैला ।

स्वोन् (वि०) [= स्पृन्, पृषो०] सुन्दर, सुखद 2 नय
मन्त्रप्रद, —नः 1 प्रकाश की किरण 2 सूर्य 3 बोरा
नक् प्रसन्नता, आनन्द ।

अस् (आ० आ० असने, अस्त) 1 गिरना नाथ गिर
पडना—नाअसन् करिणा देव त्रिपदीच्छेदिनामपि—रघु०
४।४८ माण्डीव असते हस्तात्—भग० १० भा०
१४।७२, १५।६१ 2 डबना, घटना गिर कर पडने
दुकरे होना हाहा दीव स्पृष्टिं हृदय समगं दृष्टवान्
—उत्तर० ३।३८, मा० १।२० 3 नीचे लटपना
4 आना—प्रेर० (अवयति-ते) 1 गिराना खिसकना
लुढ़कना, बाधा डालना वानेर्जि नाअसयदुर्कार्कान्
—रघु० ६।७५ 2 सिधिल करना डाल देना कि
खिसकना, डीला होना, (प्रेर०) । गिराना, गिरने
वेना, —विजयपदी नवकर्णकारम् कु० ३।६०
2 डीला करना, सिधिल करना ।

असः [अस् + क्त] गिरना, खिसकना ।

असमम् [अस् + मिच् स्पृट्] 1 गिरना 2 गिराना, नीचे
पटखाना ।

असिन् (वि०) (स्त्री०—सी) [अस् + णिन्] 1 गिरने
वाला, खिसकने वाला, लटकने वाला, डीला होने

वाला, मार्ग देने वाला बड़े सन्धि बँबहस्तयमिता
पर्याकुला मूर्धजा—अ० १।२९ 2 निर्भर, लक्ष्मान,
डीला लटकने वाला ।

अह् (आ० आ० अहते) विस्वास करना, भरोसा
करना ।

अजिबम् (वि०) (स्त्री० भी) [अज् + णिन् म० अ०
अजीयस् उ० अ० अजिष्ट] हार या गजरा पहने
हुए—आमुक्ताभरण नखी हस्तचिह्नदुल्लवान् रघु०
१।३२५ ।

अज् (स्त्री०) [मृयत सज्, क्तिन् नि] गजरा,
पुष्पमाला (विशेषण बहु जा मस्तक पर धारण की
जाय) सजमपि शिरस्थ य क्षिप्तां चुना-यहिमकुया
मा० ७।२४ 2 माला हार । मम० बावन
(अग्दान्) (नपु०) माला की प्रिय या गाठ धर
(वि०) मालाधारो गीत० १० (रा) एक छंद
का नाम ।

अज्वा [अज् + वा नि०] रस्सी हारी सूत्र ।

अज्बु (स्त्री०) अमान बायु ।

अजम् (आ० आ० अजते अज्य) विस्वास करना दे०
अम वि 1 विश्वस्त होना 2 आश्चर्य होना ।

अज [अ + अप्] 1 चुना रिमज बहना 2 बूँद प्रवाह
सर्तिता बिपुली स्मपयन्ती सा स्तनी नयजलसर्वं
—राम० 3 कौबारा निरंतर ।

अजवम् [अ + स्पृट्] 1 बहना, चुना, रिसना 2 पसीना
2 मूत्र ।

अजवत् (वि०) (स्त्री० अजवन्ती) [अ + शत्] बहने
वाला रिसने वाला चुने वाला । मम० अर्धा बहु
स्त्रं त्रिसका गम गिर गया हो 2 दुखटना के कारण
गिर हुए गर्भ वाली माय ।

अजवन्ती [अजव् + णिप्] नदी दरिया बार्पाखिब अज
लायु रघु० १।७।६३ ।

अज्ज (पु०) [अज् + क्त] 1 बनाने वाला 2 रखने
वाला 3 मूर्तिरूपयिता बह्मा का विशेषण—या
मृत्ति अज्जराष्ट्रा अ० १।१, तत्तज्जदुरेकान्तरय
—७।२७ ४ शिव का नाम ।

अस्त (भू० क० क्त) [अस् + क्त] 1 गिरा हुआ,
खिसका हुआ नीचे पड़ा हुआ अस्त सार चापमरि
स्वहन्ता—कु० १।५१ कनकजम्ब अस्त धया
प्रतिपायन अ० ३।१३, कि० ५।३३, मेघ० ६३
2 लुढ़का हुआ नीचे लटकता हुआ विषादभरतस-
र्वाङ्गी मृच्छ० ४।८, अस्तासावतिमाज्जोहित्तनी
बाह् घटायोपयान् मा० १।३० 3 डीला किया
हुआ 4 ध्युन, डीला पड़ा हुआ 5 अज्, नीचे लटकता
हुआ 6 अकग किया हुआ । सक० अज्ज (वि०)
डीले अजी वाला 2 मूर्तित, बेहोश ।

अस्तरः [अन् + तरच्, कित्वाभलोप] परलया या सोका, (विश्राम करने के लिए) बिछौना शिकातले अस्तर-
रक्षामन्त्रे निपसाव का०, मनु० २।२०४।

आक् (अय०) [अ + आक्] कुतै से, तेजी से।

आव [मू + घञ्] प्रवाह, बहाव, रिसना, बँद बँद टपकना।

आवक (वि०) (स्त्री० बिका) [अ + वृत्] बहाने वाला, उडेलने वाला, रिस कर बहने वाला कच्चा काँसा मिचं।

खिम् (म्वा० पर० खेमति) चोट पहुँचाना, मार डालना।

खिम् (म्वा० पर० खिमति) चोट पहुँचाना, मार डालना।

खिम् (स्त्री० पर० खीयति, खून) 1 जाना 2 मूक जाना।

खू (म्वा० पर० खवति, खून) 1 बहना, धारा निकलना, चना रिसना, बँद बँद करके गिरना, टपकना न हि निम्बाछद्विओरम् ताम् 2 उडेलना डालना, बरने देना अलोडिट च भूपट्टे शाणित वाप्यसुसुबन् भट्टि० १५।३६, १७।१८ 3 जाना हिलना-डुलना 4 घूना, बिभक जाना, खोजना, नष्ट होना कुछ दल न विखलना-सबको बड़ा नस्यापि भिप्रमाणालया यथा भाग० भट्टि० ६।१८, मनु० २।७४ 5 इधर उधर फैलाना, मज दिशाओ में पहुँचाना, प्रकट हो जाना (भेद आदि) घेर० (आवयति-ने) बहाना, उडेलना, डालना, बखेरना (रक्त आदि) न गाथा म्वावयेदयक मनु० ४।१६९ (उपमार्ग से युक्त हो जाने पर धातु के लगभग बड़ी अवस्था में है)।

खून (प०) पर ननपद या जिने का नाम पन्था मरनमपनिपट्टे सिद्धा० [यह स्थान पायलिपुत्र से कुछ दूरी पर कम म कम एक दिन यात्रा पर-स्थित था] न० न० दिवदत खूने सतिधीयमानस्मदग्ध पाठोक्तुत्रे मने रितं युगपदनेत्र वृत्तावन इवप्रसङ्गात् जगती०।

खूनी, खून + वृ + ङाँ] मज्जा दे।

खूब (म्वा०) [खू + क्तिच् भागम्] लकड़ो का बना एक प्रकार का उभरा तिसके द्वारा यज्ञानि म घोरी प्राकृति हो जाती है खूबा (प्राय एक या दो बार के बूझा का इना हुआ)-रघु० १।१०५ म ५।११७ याज्ञ० १।१८३। सम० प्रजापिका समये की पताकी।

खूत (वि०) [खू + क्तिच्, तुक्] (प्राय ममाम के अन्त में प्रयुक्त) बरने वाला, गिरने वाला उलटने वाला -अथैव मया मनुमन्त्रेव-कु० १।६, ५, मि० १।९८।

खूतिः (स्त्री०) [खू + क्तिच्] 1 बहना, रिसना, बर्क निकलना, टपकना, घूना-कीटखतिखुतिभिरजमि-बोद्धमन्त मुहा० ६।१३, एवं तुकारखुतिबोतरस्तम् -कु० १।५, रघु० १।१४४, कि० ५।४४, १।१२, खीरखुतिमुग्धय (वाता) - मेघ० १०७ 'रसप्रबहण या साव' 2 रमजबण, राल 3 बारा।

खूब...का [खू + क, क्तिच् टाप् च] 1 यज्ञ का कथना 2 निशंर करना या प्रयातिका।

खेक् (म्वा० आ०) जाना, गतिशील होना।

खे (म्वा० पर० खायति) 1 उबालना 2 पसीना जाना -दे० ५५।

खोतम् [खू + तन्] घारा, मरिना। दे० खोतम्।

खोतम् (नपु०) [खू + तन्] 1 (क) सरिता, धारा प्रवाह, जलप्रवाह-पुण्य यथा खान पुलिनयधुना तत्र सरिताम्-उत्तर० २।२७, मनु० ३।१६३ (ख) धार, प्रवाहिणी, -नदयाकासगङ्गाया खोतस्यहामदिषन्वे रघु० १।७८, खानमेवाद्यमानस्य प्रतीपतरण हि नन्-बिक्रम० २।५ 2 सरिता, नदी, खोतसानसिम जाह्नवी-मय० १०।३१ 3 लहर 4 जल 5 खोतरस्य पोषण-नजिका 6 ज्ञानेन्द्रिय निपुण्य सर्वखोतामि राम० 7 हाथी की मूड। सम०-जम्बवन् (खोताञ्जनम्) मुग्धा, -इजः सागर, -रघुञ्ज हाथी की सूँच का छिद्र नयना-खोतोरन्ध्रध्वनितमुधनं दन्तिभिः पीयमान-मेघ० ६२, (दे० इस पर मल्लि०) ('खोतोरन्ध्र' को पाठानर) बहान नदी-खोतोबहा पयि निरुपय मयनीत्य जात मन्त्रे प्रणयवान् मृग-तर्णिशायाम् -० ६।१५, कार्या संकतलीनहसमिधुना खानोवता मागिनी ६।१६, रघु० ६।५२।

खोतस्थः [खानम् + यन्] 1 जब का नाम 2 खोर।

खोतस्थतो, खोतस्थनी [खोतम्-नपु० + (विनि) हाप् + वच्] नदी।

खू (माव० वि०) [खू + क्तिच्] 1 अपना, निजी, (आ-मापर सर्वनाम के रूप में प्रयुक्त)-स्वनिशोम-पुण्य कुह ज० २ पत्रा प्रजा स्वा इव नन्पयिवा ५।५, (उम इवें में प्राय ममाम में प्रयुक्त-स्वपुत्र, स्वलक्ष स्वदत्त) 2 अन्तर्गत प्राकृतिक, अन्तर्हित, शिरोध च परम्मा मृदापाये न ललु कमल पुष्यति स्वर्गमिस्थाम मेघ० ८० ज० १।१८, स तस्य स्वा भाव प्रवर्तिन-नवाहृदक उत्तर० ६।१४ 3 अपनी जानि में मज्ज रखने वाला, अपनी जाति का-युद्धे भाया शुद्धस सा च स्वा च विम स्मृते -मनु० ३।१३ १।१०४, -स्वा 1 रिसेदार, बाँधव पच० २।९५, मनु० २।१०९ 2 बाला, -स्वा, स्वन् दोलत सम्पत्ति -जैना कि 'नि स्व' में। मम० अक्षपावः न्यायदर्शन पद्धति का अनुवादी,

अकारम् अपना निजी हस्तलेख, अधिकारः अपना निजी कर्तव्य या राज्य स्वाधिकाराश्रयतमेव ॥ १, स्वाधिकारभूमी - ख० ७, अधिकारम् हृदयोग में माने हुए छ चको में से एक, अधीन (वि०) 1. अपने पर अधिकार, आरम्भनिर्भर 2 स्वतन्त्र 3. अपने वक्ष में 4 अपनी निजी कर्तव्य में—स्वाधीनता वचनीयतापि हि वर बड़ो न सेवाञ्जलि मुच्छ० ३१११ कुशल (वि०) अपनी निजी कर्तव्य के आधार पर समृद्धिप्राप्ति स्वाधीनकुशल सिद्धिमान्त—ख० ४, फलिका, भर्तृका बहु पत्नी जिसका अपने पति पर पूरा नियन्त्रण हो, बहु स्त्री जिसका पति पत्नी के वक्ष में हो—अथ सा विगता बाधा राधा स्वाधीनभर्तृका निजवाह रतिकलान्त भ्रान्त मन्थनवाञ्छया—गीत० १२, दे० सा० ख० ११२, तथा बाने,—अध्यायः 1. मन में पाठ करना, मन मन में इसके अप करना 2 बेहो का पढ़ना, वैदिक पाठ, अनु-भूतिः (स्त्री०) आत्म अनुभव 2 आत्मज्ञान स्वानु-भूत्येककारण नमः शोभाय तेजसे—भर्तृ० २११, अन्तम् 1. मन,—नामि० ४५, महावीर ७१७ 2 कन्दरा,—अर्थः अपना निजी हित, स्वार्थ सर्व स्वार्थ धनीहोते—वि० २१६५ 2 अपना अर्थ भाषि० १७९ (यहाँ दोनों अर्थ—अभिप्रेत है) अनुमानम् किसी अटकल, आनुमानिक ठरक, अनुमानके दो मुख्य भेदों में से एक, (दूसरा है परावर्तमान) अधिकार (वि०) 1 अपने निजी कार्यों में चतुर 2 अपना हितसाधन करने में विशेषज्ञ, वर, परावर्त (वि०) अपनी स्वार्थ सिद्धि करने पर मुका हुआ, स्वार्थी, विहासः अपने उद्देश्य की अभ्यासा, सिद्धिः (स्त्री०) अपना निजी लक्ष्य पूरा करना, आच्छा (वि०) अपने कर्षीन, अपने पर अधिकार भर्तृ० २१७—इच्छा अपनी अधिकारता, अपनी शक्ति, वृत्तः शीघ्र का विशेषण,—उपवः, किसी विशेष स्थान पर किसी स्वर्णम पिष्ट या दिव्य चिह्न का उवय होना, उपविः अचल यह, कल्पनः वायु, हवा, —अर्चिन् (वि०) स्वार्थी, कार्यम् अपना निजी कार्य वा स्वार्थ, —अन्तम् (अध्य०) मन में अपने भावकी, एक जोर (माध्यमाभा में), छम् (वि०) 1. अपनी इच्छा रखने वाला, अनियमित, स्वेच्छाकारी 2. अक्षी (- हः) अपनी निजी इच्छा, अष्ट कल्पना वा कर्षी, स्वतन्त्रता, (वृत्त) (अध्य०) अपनी इच्छा वा मर्जी के अनुसार, स्वेच्छाकारिता के साथ, स्वेच्छा से—स्वच्छाद दण्डरहित ते मरत्य विन्दन्ती विन्दन्तु पुत्रिभ्यः मिलिदाः—नामि० १५, अ (वि०) आत्मजात, (- कः) 1. पुत्र, बाल 2. स्वेद, पसीना, (-कम्) धिर, —कम् 1. वंश, रिशेदार—दत्तः प्रत्य-

देशात् स्वजनमनुगत्य व्यवसिता ख० ६१८, पंच० १५ 2 अपने निजी पुत्र, वधुवाचक, अपनी गृहस्थी, तन्त्र (वि०) आत्माश्रित, अनियमित, आरम्भनिर्भर, स्वेच्छायुक्त, (अः) अन्धा पुत्र, देशः अपना देश, जन्मभूमि, अः वन्तु अपने देश का आदमी, धर्मः 1 अपना धर्म 2 अपना निजी कर्तव्य मनु० १८८—९१ 3 विशेषता, अपनी निजी सति, —वक्षः अपना निजी दल, परवक्षस्तम् अपना और शत्रु का देश, प्रकाश (वि०) 1 स्वत स्पष्ट 2 स्वत चम-कदार, —प्रबोधात् (अध्य०) अपने प्रयत्नों के द्वारा, —बहुः 1 अपना निजी दोहा 2 शरीर रमक, भावः 1 अपनी स्थिति 2 अन्तर्हित या मूलगुण, प्राकृतिक सविधान, अन्तर्जात या विशिष्ट स्वभाव, प्रकृति या स्तराव, जैसा कि स्वभावो दुरतिक्रम में, इसी प्रकार कुटिल, दृष्ट, वृष्ट-चपल कठोर जाति, उचित. (स्त्री०) 1 स्वत स्फूर्त प्रकटन 2 (अल० में) एक अलंकार जिसमें किसी वस्तु का यथावत् या बिस्तुल मिलता-जुलता वर्णन होता है स्वभावोचितस्तु हिम्मावे स्वकिष्काक्षवर्णनम् काव्य० १०, या, मानः-वक्षं पदाभां रूप साक्षाद्भिषुज्यो—काव्या० २१८ एक सिद्धान्त (यह विश्व, मूलतत्त्वों की अपने अन्त-र्गत वर्णों के अनुसार, प्राकृतिक तथा आचक्ष्यक क्रिया का परिणाम है और उसी के द्वारा इसकी स्थिति है, इसमें परमात्मा की कोई निमित्तकारणता नहीं), सिद्धः (वि०) प्राकृतिक, स्वत स्फूर्त अन्तर्जात,—बुः 1 बह्ना का विशेषण 2 सिद्ध का विशेषण 3. विष्णु का विशेषण, योनि (वि०) मातृपक्ष का सबंधी (पु०, स्त्री०) उत्पत्तिस्थान, जो स्वयं अपना उत्पत्तिस्थान हो, (स्त्री०) कोई बहन या निकटवर्धक वाली कोई स्त्री, रत्न. 1 प्राकृतिक स्वाद 2 किसी का अपना (अभिप्रेत) रस या काभ्यगत रस, आरम्भानव, राक्ष (पु०) परमात्मा, —अक्ष (वि०) 1 समान, समकक्ष 2 सुस्तर, सुहावना, प्रिय 3 विद्वान्, मन्मत्कार, (वन्) 1 अपनी शक्ति या सूरत, प्राकृतिक स्थिति या दशा 2 स्वाभाविक चरित्र या रूप, यथार्थ विधान 3 प्रकृति 4 विशिष्ट उद्देश्य 5 प्रकार, किरम, जाति, अस्तिद्धिः (स्त्री०) तीन प्रकार के हेत्वाभासों में से एक, वक्ष (वि०) 1 स्थानियमित 2 स्वतन्त्र, बाह्यिकी विवाहित या अविवाहित स्त्री जो बयस्क होने पर भी अपने पिता के घर ही रहती रहे, —वृत्ति (वि०) स्वात्मकम्, अपने प्रयत्नों से ही जीवनयापन करने वाला, संकल आत्मरहित, स्वरक्षित,—संस्था अपने विचारों पर बदे रहना 2 अलग-स्वतन्त्रता 3 आत्मकीनता,—स्व (वि०) 1 अपने पर बदे रहना 2 स्वाधिकार, स्वात्मकमी, विन्यस्त, दृष्ट,

पक्का 3 स्वतन्त्र 4 अच्छा करने वाला, स्वस्थ, मीराना, आराम देना, मुन्द स्वस्थ एवास्मि—मा० ४, स्वस्थ का वा न पश्चित—पञ० ११२७, दे० 'अस्वस्थ' भी 5 समुप्ट, प्रमत्त, (—स्वम्) (अव्य०) आराम से, मुन् पूर्वक, शान्ति से, स्वस्थम् अपनी पश्यमूमि, अपना निजी आवास स्वस्थ—नक स्वस्थान-यासाध मनेन्द्रमपि कर्पति पञ० ३१५६,—हस्त अपना निजी हाथ या लिखाई आरमलेख दे० 'हस्त के बलवर्त, हस्तिका कुल्हाड़ी—हित (वि०) अपने लिए हितकर, (—तम्) अपना निजी लाभ, अपना कल्याण ।

स्वक (वि०) [स्व+कच्] अपना निजी, अपना ।

स्वकीय (वि०) [स्वस्व कृन्+स्व । छ, कुक् आगम] 1 अपना निजी, अपना 2 अपने परिवार का ।

स्वकृत् (प्रा० पर० स्वकृति) जाना, हिलना-जुलना ।

स्वकृत् [स्वकृन्+कृन्] आत्मिय ।

स्वच्छ (वि०) [सुच्छ अच्छ—प्रा० सं०] 1 अत्यन्त साफ, पारदर्शी, बिबुद्ध, उज्ज्वल, अत्युपारवासी स्वच्छमफटिक, स्वच्छ मुक्ताफलम्—आदि 2 सफेद 3 सुन्दर 4 स्वस्थ, पक्का स्पष्टिक,—च्छम् होती । सम०—चञ्चु तालक, सेलमडी,—चञ्चुकु बिबुद्ध छविषा,—चञ्चि मफटिक ।

स्वच्छ (प्रा०) आ० स्वच्छने इकारान्त उकारान्त उपसर्गों के पश्चात् स्वञ्च् के म् का प् हो जाता है 1 आत्मिय करना कौली भरना—क्याचिवाचुम्ब चिराय लस्वने—धामि० २१७८, पर्यचुरस्वचत भूजि चोप-जड़ी—रघु० ११७० 2 चरना मरोडना, बरि—आत्मिय करना बस्ते परिष्वज्ज्व मां सजीजन व म० ४, धामि० २१७८ ।

स्वच् (चुरा० उभ० स्व (स्वा) ध्वनि—ते) 1 जाना 2 मजान करना ।

स्वच् (अव्य०) [स्व+तस्मिन्] अपने आप स्वयम् (निजवाचक के अर्थ में प्रयुक्त) ।

स्वस्वम् [स्व+स्व] 1 अपनी विश्वमानना 2 स्वाभिरव, स्वाभिरव के अधिकार ।

स्वच् 1 (प्रा०) आ० स्वच्छने स्वदित 1 पसन्द किया जाना, मचुर होना, स्वाद में रुचिकर होना (सप्र० के साथ)—यज्ञदत्ताय स्वदतेऽग्रुप काशिका, अपा हि सुतावान् चारिधारा स्वादु मुयन्धि स्वदते सुपात्रा—मै० ११६३, लस्वद मुसमुर प्रमदास्य शि० १८ २३ 2 स्वाद लेना, रस लेना, जाना 3 प्रसन्न करना ४ मचुर करना ।

५ (चुरा० उभ० या प्रेर० स्वादयति—ते) 1 चखाना, जाना 2 रस मना 3 मचुर करना, जा 1 चखना, जाना (जल० से भी)—परावनास्वादितपूर्ववा-

मुच - रघु० ३१५४ 2 उपभोग करना—वेच० ८७ ।

स्वचनम् [स्वच्+चवृत्] चखना, जाना ।

स्वचित (भू० क० कृ०) [स्वच्+क्त] चखा गया, खाया गया, तम् उद्गार बिलोष का आहट में पितरों की पित्रदान करने के पश्चात् उच्चारित होता है और जिसका अर्थ है अचान् करे, यह पदार्थ आपका अच्छा लगे, स्वादित लगे—मनु० ३१२५१, २५४ ।

स्वचा [स्वच्+आ, पुषो० दस्य व] 1 अपना निजी स्वभाव या निश्चय, स्वत स्मृतेना 2 मृत पूर्वपुरुषों—पितरों—का प्रस्तुत की गई हवि की आहुति—स्वचासहजतरंगः रघु० ११६६, मनु० ९११४७, याज्ञ० ११०२ 3 मृत पितरों का प्रस्तुत किया भोजन ४ अन्न या आहुति 5 माया या सामारिक भय अव्य० पितरों के सम्मुख आहुति प्रस्तुत करते समय उच्चारित उद्गार, (सप्र० क साथ) पितृभ्य स्वचा सिद्धा० । सम० कर (वि०) पितरों के निमित्त आहुति देने वाला, कार 1 'स्वचा' नाम का शब्द—पुत्र हि तदनुह यत्र स्वचाकारः प्रवर्तते, श्रिकः जग्मि, आय,—मुच (पु०) 1 मृत या देवत्व को प्राप्त पूर्वपुरुष 2 देवता, देव ।

स्वचितिः (पु०, स्त्री०) स्वचितो [स्वचा+क्तिच्, स्विचा क्तिच्] कुल्हाड़ी ।

स्वच् (प्रा० पर० स्वचति) 1 शब्द करना कोलाहल करना,—पूर्वा वेगाश्च लस्वन्—भट्टि० १४३, वेजव कीचकास्ते स्मृते स्वतन्त्रनिकाहता अमर० 2 जाना, प्रेर० (स्वचयति—ते) 1 मुजाना 2 शब्द करना 3 अलङ्कृत करना (इस अर्थ में स्वचयति) ।

स्वच [स्वच्+अच्] शब्द, कोलाहल शिवाचोरस्वना परचाद् वदु रे विकृतेति ताम्—रघु० १२१३९ अन्न स्वन आदि । मम० अन्नाहः मंडा ।

स्वचिः [स्वच्+इन्] ध्वनि कोलाहल ।

स्वचिक (वि०) [स्वच+ठक्] ध्वनि करने वाला—जैसा कि 'पानिस्वचिक (जो अपने हाथों से तालियाँ बजाना है) में ।

स्वचित (भू० क० कृ०) [स्वच्+क्त] स्वचिन, मन्दाय मान, कोलाहल करने वाला, तम् विजली का बोर, बिजली की गड़गड़ाहट, तु० स्तनित ।

स्वच् (अदा० पर० स्वचिति, पुन भाववा० मुप्यते, इच्छा० मुपुप्यति) (कभी-कभी) प्रा० उभ० स्वचिति—ते) मोना, नींद आ जाना, माने जाना—असजातकिच-स्वच्य मुच स्वचिति गोमंथि—काव्य० १०, इत स्वचिति वेजव भर्तु० २७७६ 2 तकिचे का सहारा लेना, बिबाध करना, स्टटना, आराम करना 3 मस्ती होना—धामि० ४११९, प्रेर० (स्वाचयति—ते) मुलाना

सोने के लिए बपबपाणा, जय—वि,—अ,—सम्
सोना, केटना—प्रसुप्तलक्षणः मा० ७, कु० २।४२,
रघु० १।१४।

स्वप्न [स्वप् + नञ्] 1. सोना, नींद अकाले बोधितो
प्राप्ता प्रियस्वप्नो ब्रवा भवान्—रघु० १२।८१,
७।११, १२।७० 2. स्वप्न, स्वाव, सुपना आना
—स्वप्नेन्द्रजालसदृशः सख्य जीवलोकः—साहित्य २।३,
स्वप्नो नू माया नू यतिभयो नू—आ० १।१९, रघु० १०।१०
3. शिथिलता, आलस्य, तन्हा। मम०—अवस्था
सुपने की दशा, उषव (वि०) 1. सुपने से मिलता
जुलता 2. अवास्तविक या (अभारमक स्वप्न की भांति)
—कर,—कुत् (वि०) निद्रा सने बाळा, निद्राजनक,
आराधक, गृह्ण,—विशेषणम् सोने का कमरा,
अपनक, —दोषः स्वप्नावस्था में होने वाला शुरुवात,
—धीनत्व (वि०) निद्रा जैसी अवस्था में केवल बुद्धि
द्वारा अनुभूत होने वाला—मनु० १२।१२२, प्रपञ्चः
निद्रावस्था में भ्रम, स्वप्न में प्रकट होने वाला संसार,
—विचारः स्वप्नों की व्याख्या, शील (वि०) जिसे
नींद आ रही हो, निद्रालु, ऊंनेने वाला, —लुब्धः
(स्त्री०) स्वप्नों की रचना, निद्रावस्था में भ्रम।

स्वप्नञ्ज (वि०) [स्वप् + नञिङ्] निद्रालु, सोने वाला,
ऊंनेने वाला।

स्वप्नम् (अव्य०) [सु + अप् + मम्] 1. आप, अपने आप
(निजवाचकता के रूप में प्रयुक्त तथा प्रत्येक पुरुष में
व्यवहार्य यथा मैं स्वयं, हम स्वयं, वह स्वयं—आदि,
कभी कभी बल देने के लिए और सर्वनामों के साथ प्रयुक्त)
विषयबोधोपि तत्रार्थं स्वयं भेतुमसांश्रतम्—कु० २।५५
यस्य नास्ति स्वयं प्रज्ञा शास्त्रं तस्य करोति किम्—मुग्धा०,
रघु० १।१७, २।५६, यनु० ५।३९ 2. आत्मस्फूर्त
अपने आप, अनायास, बिना किसी कष्ट या चेष्टा के,
स्वयमेवोत्पद्यन्त एवंप्रियाः कुलपागवो निःस्नेहाः पशव
—का०। सैम०—अस्मिन् (वि०) आत्मजित, उचितः
(स्त्री०) 1. ऐच्छिक प्रकथन 2. सूचना, अभिसाध्य
(विधि में),—ग्रहः बलान् ग्रहण कर लेना, ग्राह
(वि०) ऐच्छिक, स्वयं चुन लेने वाला, (—हः) स्वयं
चुन लेना, आत्मचुनाव—कु० २।७, गा० ६।७, जात
(वि०) जो आप से आप उत्पन्न हुआ हो, बल
(वि०) अपने आप दिया हुआ, (—तः) वह लड़का
जिसने अपने आपको दमक पुत्र बनने के लिए दमक-
बाही माता पिता को दे दिया, हिन्दू धर्म शास्त्र में
कथित बाह्य पुत्रों में से एक,—शूद्र ब्रह्मा का नाम
—शूद्रस्वयम्भूहुरयो हरिश्चन्द्राचार्या वेदाधिकार्य सततं
गृहकर्मशास्त्राः भर्तु० १।१,—शूद्राः 1. प्रथम यनु
2. ब्रह्मा का नाम 3. शिव का नाम,—शू (वि०)
आप ही आप उत्पन्न होने वाला, (—शूः) 1. ब्रह्मा का

नाम 2. विष्णु का नाम 3. शिव का नाम 4. सूर्य 'काल'
का नाम 5. कामदेव का नाम, बरः अपनी छांट,
(हुल्लिह द्वारा अपने घर का) अपने आप चुनाव,
इच्छानुसृत विवाह,—बरा वह कन्या जो अपने पति
का आप चुनाव करती है।

स्वर् (चुरा० उभ० स्वरयतिने) दोष निकालना, कर्मक
सगाना, बुरा भला कहना, निंदा करना।

स्वर् (अव्य०) [स्व + विच्] 1. स्वर्ग, वैकुण्ठ जैसा कि
'स्वलोक', स्वर्लोक में 2. इन्द्र का स्वर्ग और मरु के
पश्चात् पुण्यान्धार्जों का अस्थायी आवास 3. आकाश,
अन्तरिक्ष 4. सूर्य और ध्रुवतारे के बीच का रिक्त
स्थान 5. तीनों व्याहृतियों में तीसरी जिसका उच्चारण
प्रत्येक ब्राह्मण अपनी दैनिक प्रार्थना में करता है,
दे० 'व्याहृति'। मम० आपणा गंगा 1. गंगा की
स्वर्ग में बहने वाली धारा, मदाकिनो 2. आकाशगंगा,
छायापथ, गतिः (स्त्री०) गन्धम 1. स्वर्ग में
जाना, भावी आनंद 2. मध्य, तबः (स्वस्वरः) स्वर्ग
का एक वृक्ष, पुष्प (पु०) 1. इन्द्र का विशेषण
2. अग्नि का विशेषण 3. सोम का विशेषण, नदी
(स्वर्गदी) आकाशगंगा, आनन्दः एक प्रकार का
मूल्यवान् पदार्थ, भानुः राहु का नाम नुमेयस्वरधि
स्वर्गमनुमानुमान् चिरेण वत्। हिमाशुमान् वसने
तन्मन्त्रिन् स्फुट फलम् शि० २।४९, 'सुखक' सूर्य,
—अव्यय आकाश का मध्य बिन्दु, ऊर्ध्वबिन्दु,—लोकः दिव्य
जगत्, स्वर्गलोक, वयुः (स्त्री०) दिव्य कन्या, अन्तरा,
बाही गंगा, —वेद्यः स्वर्ग की गणिका, दिव्य पत्नी,
अन्तरा, वेष (पु०, द्वि० व०) दो अधिपनीकुमारों
का विशेषण, वा 1. सोम का विशेषण 2. इन्द्र के
वज्र का विशेषण, सिम्बु = स्वर्गगा।

स्वरः [स्वर् + अच्, स्व + अप् वा] 1. मध्द, कोलाहल
2. आवाज स्वरें तन्मासमृतसूतेव प्रजल्पितायाम-
भिजातवाचि कु० १।४५ 3. गीतों के सुर, ध्वनि,
लय (सुर सात हैं निगादपञ्चगायाराष्ट्रमध्यम-
पंचना। पञ्चमरावेयमी सप्त गन्त्रीकण्ठोस्थिताः स्वरः।
—अमर०) 4. सात की संख्या 5. स्वर अक्षर
6. स्वरावात (बहु गिनती में सोम है) उदात्त, अनु-
दात्त और स्वर्द्धि 7. वसन्तकाल 8. लुट्टित करना।
मम० अंशः कीया या चौथाई स्वर (संज्ञा० में),
अन्तरम् दो स्वरों के उच्चारण के बीच का अव-
काश, कर्मभग, —उच्च (वि०) जिसके वाच स्वर हो,
—उच्च (वि०) जिसके पूर्व स्वर हो, श्रावः सरणम्,
स्वरसप्तक, स्वरोः का सङ्घ, —बद्ध (वि०) ताल
स्वर में बंधा हुआ गाना, वसिः (स्त्री०) १ और
२ के उच्चारण में अन्तर्निविष्ट स्वर की ध्वनि जब
इन अक्षरों के पश्चात् कोई ऊर्ध्ववर्ध वा कोई अवकाश

बन्ध, -मुक्तः १ बन्ध २ बाध्वा ३ बन्धी, स्तुति पाठक, -वाचकम्, -वाचनकम्, वाचनिकम् । यज्ञ वा कोई आधिकार्य कार्य वाचक करते समय किया जाने वाला एक वाचक कृत्य २ कुर्को द्वारा आधीर्वाह वा बर्चाई देने का विशेष कर्म, वाचकम् बर्चाई, आधीर्वाह ।

स्वलीकः [स्वलिङ्ग धृवाव हितं क] १ एक मयक चिह्न जो किसी शरीर वा पदार्थ पर बनाया जाता है (५५) २ कोई मंगलद्वय ३ चार भागों का चिह्न ४ मुन्वाओं को व्यवस्थित रूप से छाती पर रखना जिससे कि एक व्यवस्थित (X) चिह्न बने स्तन-विनिर्मुक्तस्वस्थिकागिर्बन्धन भा० ४११०, धि० १०४१ ५ एक विशेष कर्म का महुक ६ चौराहे से बना हुआ एक चिह्नवाकार चिह्न ७ एक तरह का चिह्न ८ विपरी, व्यभिचारी ९ कहुसुन, कः, -कम् १० एक विशेष रूप का चरित्र या मयन जिसके सामने चरुतर बना हो २. एक बोधालन ।

स्वलीकः, स्वलेवः [स्वल् + ल, डल् वा] मानवा, बहन का पुत्र ।

स्वलीमा, स्वलेयी [स्वलीम + टाप्, स्वलेव + डीप्] मातली, बहन की पुत्री ।

स्वात्मनः [सु + मा + मन् + क्] बुद्धावयन, मुख्य जनवानी (युक्तत तत्र० में स्वल् हुप् व्यक्तित्व को अभिवादन करने में प्रयुक्त) स्वागत देव्यं -माकवि० १, (तत्त्वे) शीत श्रीप्रियमन्त्रचन स्वागत आवाहार -लेव० ४, स्वागत स्वावलीकारान् प्रभावैरवकाश्य ब० । युनपु युनवाहुज्य प्राप्तेभ्यः प्राक्यविक्रमाः -कु० २।१८ ।

स्वलीकः [स्वाङ्ग + ठल्] डोक बजाने वाला ।

स्वाच्छातः [स्वच्छातस्व वाच ध्वज्] अपनी इच्छा के अनुसार कार्य करने की क्षमिता, स्वच्छता, स्वतन्त्रता -कन्याप्रदान स्वाच्छातदातुरो बर्मे उच्यते मनु० १।११ (स्वाच्छातलेव, स्वाच्छातकः मानवृक्ष कर, स्वेच्छा से) ।

स्वात्मनः [स्वतन्त्र + ध्वज्] इच्छाक्षमिता की स्वतन्त्रता, स्वाधीनता, -न स्त्री स्वात्मनःवर्हिति मनु० १।१३, न स्वात्मनः स्वक्षित् स्त्रिया वाङ् १।८५ ।

स्वातिः, -ती (स्त्री०) [स्व + क्त् + इन्, पञ्चे डीप्] १. कुर्को की एक पत्नी २. तनकार ३. कुत्र नक्षत्रपुत्र ४. पन्हुवा नक्षत्र जो बुध नामा गया है स्वात्या शानरूपिण्डमृदमत्त बन्धनित्तक कायते-अर्ध० २।१७। ५०० -बीकः स्वाती का (बन्धना के लाक) बीक ।

स्वात् दे० 'स्वप्' ।

स्वातः, स्वात्मन् [स्वप् (स्वाप्) + चम्, स्मृद्, वा] १ मका, रत २ कन्या, जाना, पीना ३ पक्ष्य करना, मत्ते लेना, उपजीव्य करना ४ मचुर करना ।

स्वाविकम् (पु०) [स्वाव + इमभिप्] सुस्वावता, आप्यम् । स्वाविक (पि०) [स्वावु + इच्छन्, 'स्वावु' की उ० म०] आप्यता मचुर, सबके पीना कि स्वाविक बगलस्थित् तथा लङ्ग उपायन ।

स्वाविकम् (पि०) [स्वावु + ईयमुन्, 'स्वावु' की न० म०] बनेकाकृत अधिक पीना, बहुत मचुर-काव्यावृत्तरसा-स्वाव स्वाधीयानमुतावपि ।

स्वावु (पि०) (स्त्री०-डु-डी) [स्वप् + उन्, न० म० स्वाधीयस्, उ० म० स्वाविक] १ मचुर, सुहायना, बलने में अच्छा, जायकेदार, मजेदार, सचिकर, पीना -तृषा सुव्यावासे पिबति तलितं स्वावु मुरपि -अर्ध० ३।१२, मेव० २४ २ मचुर, सचिकर, सुन्दर, प्रिय, मनोहर (पु०) मचुररत, स्वाव की पीना, मका २ पीना, राव, (नपु०) मावर्न, मका, रत -अर्थ करोति काव्याभि स्वावु जावति पश्चिन्त सुमा०, -डुः (स्त्री०) मचुर । तम० अलम् पीना या चुना हुआ मोहन स्वाविक काव, पक्काव, -कन्यः अनार का पेड़ -कन्यः १ किसी पीना पीक का टुकड़ा २ गुब्, राव, -कन्यः डेर, बवर, मूलम् गाजर, रता १ झाडा २ सतावरी पीना ३ काकोली पुक ४ मचिरा ५ अंगूर, सुडम् १ लेंबा नयक २ समुद्री नयक ।

स्वावी [स्वावु + डीप्] झाडा, मचुर । स्वाव [स्वन् + चम्] ध्वनि, कोलाहल । स्वावः [स्वप् + चम्] १ विहा, पीना उत्तर० १।३७ २ सुपना जाना, स्वप्न ३ निद्रामुता, ऊबना, बलस्थ ४ लकवा, कन्यावायु, सुन हो जाना ५ किसी एक माड़ी पर दबाव से अस्थायी वा आधिक बलधरिता, जकना ।

स्वाविकेयम् [स्वपेतरावत डम्] धन, बीसत, सम्पत्ति-स्वा-

पेतेयकते मर्या कि कि नाम न कुर्वने क्व० २।१५६,

मि० १४५१ । स्वावः दे० 'स्वापद' ।

स्वाविक (पि०) (स्त्री०-डी) [स्वावावावामत -ठञ्] अपनी मीठी प्रकृति से सच, अन्तर्जात, अन्तर्हित, विशेष, प्राकृतिक स्वाभाविक विनीतत्वं तथा नियम-कर्मणा । मनुष्य के लिये तेजी हृदिके हृदिकेयान्

रपु० १०।७९, ५।९९, कु० ६।७१, काः (पु०,

ब० म०) बीड़ों का एक सम्प्रदाय जो तभी वस्तुओं को प्रकृति के नियमोंसार बनी मानते हैं ।

स्वाविका, स्वम् [स्वाभि-हितम् + टाप्, स्व वा] १ आधिक-पना, प्रयत्न, निष्पत्ति के अधिकार २ एकाग्रता, प्रभुता ।

स्वाभिन् (पि०) (स्त्री०-डी) [स्व-अल्लवर्धेविनि, दीर्घः] एकाग्रता अधिकारी से बहुत - (पु०) १. स्वावी,

मालिक, 2. प्रभु, स्वत्वाधिकारी - रत्नस्वामिनः सम्भ-
रिषः—विष्णुमाकं० १८।१०७ 3. प्रभु, राजा, नरेश
4. पति 5. गुरु 6. विद्वान् ब्राह्मण, अत्यन्त ऊँचे दर्जे
का धार्मिक पुरुष या सत्प्राणी (इस अर्थ में यह शब्द
श्रावः नाम के साथ जुड़ता है) 7. कार्तिकेय का
विशेषण 8. विष्णु का विशेषण 9. शिव का विशेषण
10. वात्स्यायन मुनि का विशेषण 11. नरक का
विशेषण। सम० उपकारकः चोड़ा, कार्यन् किसी
राजा या प्रभु का कार्य, शाल (पु०, हि० व०)
(पशुओं का) मालिक और रखवाला—मन० ८।५,
—भाषः मालिक या प्रभु की अवस्था, मालिकपना,
—वत्सल्यम् पति या स्वामी के लिए स्नेह,—ब्राह्मण
1. मालिक या प्रभु की सत्ता 2. मालिक या प्रभु
की अज्ञाई, सेवा 1. स्वामी या मालिक की सेवा,
टहक 2. पति का आदर, सम्मान।

स्वास्थ्यम् [स्वाभिन् + ध्यञ्] 1. स्वास्थ्य, प्रभुता, मालिक-
पना 2. संपत्ति का अधिकार या हक 3. राज्य, सर्वो-
परिता, शासन।

स्वाध्याय (वि०) (स्त्री०—की) [स्वयं + ज्ञ्] 1. ब्रह्मा
से सम्बन्ध रखने वाला—कु० २।१ 2. ब्रह्मा से
उत्पन्न, वः प्रथम मनु का विशेषण (क्योंकि वह
ब्रह्मा का पुत्र था)।

स्वार्थिक (वि०) (स्त्री०—की) [स्वर्त्त + ठक्] अन्तर्गत
रत या माधुर्य से जोतजोत (काव्यरत्न)।

स्वाराज्यम् [स्वर्त्त + ध्यञ्] 1. स्वाभाविक रत या मेधता
का रखने वाला 2. मालिक, योग्यता।

स्वाराज् (पुं०) [स्व + राज् + क्तिप्] इन्द्र का विशेषण।
स्वाराज्यम् [स्वाराज् + ध्यञ्] 1. स्वर्ग का राज्य, इन्द्र
का स्वर्ग 2. स्वप्रकाशमान ब्रह्मा से तादात्म्य।

स्वारोचिषः, स्वारोचिष् (पुं०) [स्वारोचिष अपत्यम् + जन्]
द्वितीय मन का मान—दे० 'मनु' के अन्तर्गत।

स्वाध्यायम् [स्वत्तय + ध्यञ्] विशेष कथन, स्वाभा-
विक अवस्था, क्षासित, मनु ९।१९।

स्वाध (वि०) (स्त्री०—की) [स्वत्त + जन्] 1. जोड़ा,
जोड़ा 2. कुछ, कम, स्वम् 1. कोकपन, छुटपन
2. संका का छोटापन।

स्वाध्याय [स्वत्त + ध्यञ्] 1. आत्मनिर्भरता, स्वाध्यायता
2. शास्त्र, कृतसंस्कृता, विवेकी, दृढ़ता 3. तन्त्रुस्ती,
नीरोगता 4. समृद्धि, कुशलमेव, सुखमैव 5. आराम,
संवेक, हिम्मत—कण्वं वया स्वाध्यायम् श० ४।

स्वाहा [स्व + हा + ह्ये + हा] 1. सभी देवताओं को बिना
किसी विचार के ही जाने वाली आहुति 2. अग्नि
की कनी का नाम (अव्य०) देवताओं के उद्देश्य
से आहुति देते समय उच्चारण किया जाने वाला
शब्द—इन्द्राव स्वाहा अग्नये स्वाहा। सम०—कारः

स्वाहा शब्द का उच्चारण करना—स्वाहास्वहाकार-
विश्विस्ताभिः इन्द्राननुत्वाभिः नृद्विभिः तानि,—वसिः,
—शिवः वाम,—भृश (पु०) गुर, देव।

स्विच् (अव्य०) [स्विच् + क्तिप्] प्रत्यवाचक या पुच्छ-
परक निपात, श्राव 'सन्नेह' 'आश्चर्य' को प्रकट करता
है, इसका अर्थ है 'क्या' 'हे' 'ए' 'हा, जो, हो' की
ध्वनि 'क्या ऐसा हो सकता है' आदि; इस अर्थ में
तथा अनिश्चयार्थ प्रकट करने के लिए ऐसे प्रत्यवाचक
संबन्धों के साथ जोड़ दिया जाता है काश्चिदव-
युच्छनवती निपरिस्फुटशरीरसावध्या श० ५।१३,
मेष० १४, कभी कभी यह पुच्छ रूप से 'या' और
'अथवा' अर्थ को प्रकट करता है, कभी कभी 'यु' 'उत्त'
और 'वा' के साथ जुड़कर; दे० कि० ८।३५, १२।
१५, १३।८, १४।६०, 'आहो' के साथ भी।

स्विच्। (विधा० पर० स्विच्छति, स्विच्छति या स्विच्यते)
स्वेद आना, पसीना आना स्विच्छति कृच्छति वेस्सति
—काव्य० १०, उत्तर० ३।४१, कु० ७।७७, मा०
१।३५, सत्वां पश्यति कपते पुलकयत्यानन्दति स्विच्छति
गीत० ११।

i) (म्भा० आ० स्वेदते, स्विच या स्वेदित) 1. मालिक
किया जाना 2. चिकनाया जाना 3. विधुल्य होना
—द्वे० (स्वेदयति से) 1. पसीना लाना 3. बरस
करना।

स्वीकरणम्, स्वीकारः, स्वीकृतिः [स्व + क्तिप् + कृ + ल्यट्
(कृन्, कृत्त या)] 1. लेना, ब्रह्म करना 2. हामी
बरना, सहमत होना, प्रतिज्ञा करना, हामी, प्रतिज्ञा
1. आधान, पाणिग्रहण, विवाह।

स्वीच (वि०) [स्व + छ] अपना, अपना निजी—लोकालो-
चितारितेन गिरिहं स्वीय विधुल्य यत्—शा० ६० ९७।

स्व (म्भा० पर० स्वरति, इच्छा० सिञ्चरति, मुस्वर्चति)
1. लम्ब करना, लम्बर पाठ करना 2. प्रशंसा करना
3. पीडा देना या पीडित होना 4. जाना, जानि—
ब्र—, लम्ब करना लम्ब, पीडा देना (भा०)
भट्टि० १।२८।

स्व (कृपा० प० स्वाप्ति) कोट पहुँचाना, मार शालना।
स्वेच् (म्भा० आ० स्वेकते) जाना।

स्वेकः [स्विच् भावे चञ्] 1. पीडा, पसेउ, कमबिहु
—अङ्गुलिस्वेदेन दुष्येवजसराणि—विष्णु० २। सम०
उचम्, उचकम्, कलम् पसीना, कमकन, पुच्छकः
शीतल मय पवन, ठंडी हवा (पसीना सुखाना),—अ
(वि०) ताप या माप से उत्पन्न होने वाला, पसीने
से उत्पन्न होने वाला (जुं, लटवल आदि जीव)।

स्वीर (वि०) [स्वस्व ईरम् ईर + जन् वृद्धिः] 1. मनमाना
आचरण करने वाला, स्वच्छंद, स्वैच्छाकारी, अनि-
र्दिष्ट, निरकुश—बद्धमिह स्वीरवतिर्जनमिह सुखसमि-

नमस्वि- स० ५।११, अग्राह्यं स्वरगतं स तस्या
- रघु० २।५ २ स्वतन, अलकोष, विषवस्त, जैसा
कि 'वेरालाप' मुद्रा० ४।८ ३ मन्त्र, मृदु नम्र
मुद्रा० १।२ ४ सुस्त, मध ५. अपनी मर्मी बलाने
बाका, ऐच्छिक, यथाकाम, - रघु स्वच्छदता, स्वेच्छा-
चारिता, रघु (अव्य०) १ इच्छा के अनुसार,
मनपसन्द, आराम से सार्धा स्वर स्वकीयेषु वेच्येवम
स्विबादिषु-रघु० १७।६४ २ अपने आप, स्वत
३ शनै शनै, नम्रता पूर्वक, मृदुता के साथ उत्तर०
३।२ ४ आहिस्ता से, धीमी आवाज में, अस्पष्ट
(विप० स्पष्ट)-पश्चात्तर्बेर गज इति किल व्याहृत
सत्यवाचा-वेणी० ३।९।

स्वरता, स्वम् [स्वर+तल्+टाप्, त्व वा] स्वेच्छा-
चारिता, स्वच्छन्दता, स्वतन्त्रता ।

स्वरिणी [स्वरिन्+ङीप्] अलती, कुसटा, व्याधिचारिणी
यात्रा० १।६७।

स्वरिन् (वि०) [स्वेन ईति शीलयम्-रघु । ई
+गिति] मनमानी करने वाला, स्वेच्छाचारी,
अभियन्त, निरंकुश ।

स्वरिणी दे० 'संरिणी' ।

स्वरसः (पु०) तैलीय पदार्थ तिल पर पीसने के बाद उस
में लपा हुआ (उस पदार्थ का) अणु या तलछट ।

स्वोच्छासीकम् (नपु०) आनन्द समृद्धि (विशेषकर भावी
जीवन के विषय में) ।

४

(अव्य०) [हा+ह] वनबोधक निपात जो पूर्ववर्ती
शब्द पर चल देता है, इसका अर्थ है 'मन्त्रबोध' यथा
में निषेध ही आदि, परन्तु कभी कभी इसका उपयोग
बिना किसी विशेष अर्थ की प्रकट किये केवल पाद
पुति के निमित्त भी किया जाता है, विशेष कर वैदिक
साहित्य में-तस्य ह जन जया बभूवुः, तस्य ह पर्वत-
नारदी बभू उपबुः आदि-ऐन०, यह कभी कभी संबोधन
के लिए भी प्रयुक्त होती है निगम्कार या उपहास के
लिए चिरक प्रयोग- (पु०) १ शिव का एक रूप
२ जल ३ आकाश ४ तश्च ।

हुंकः [हुक्+अप्, पुषो० वर्णगम, भवेद्वर्णगमः इति
-सिद्धा०] १ गवहण, मराल, मुगारी, कारडव-हुमाः
सद्यति पाण्डवा इव वनावज्ञानचर्या यता मृच्छ० ५।६
न शोभते सज्जामध्ये हुंसमध्ये वकी यथा-मुना०, रघु०
३।१०, ५।१२, १७।२५ (इस पंक्ति का वर्णन जैसा
कि संस्कृत के कवियों ने किया है, अधिकतर काव्या-
त्मक है, उमे वज्रा का बाहुन बनाया जाता है, बर-
सात के आरम्भ में उसे मानसरोवर की ओर उड़ता
हुवा बताया जाता है तु० 'नामस' । एक नामान्य
कविसमय के अनुसार हुंक को हुक और पानी को
पुषक्-पुषक् करने वाला विशेष शक्ति सज्ज पक्षी
माना जाता है उदा० सार नतो बाधमपास्य कम्प
हुमी यथा क्षीरान्धाम्बुमब्जान् पंच० १, हुंको हि
क्षीरमावने तस्मिन्ना वनेत्ययम् स० १।२७, नीर-
क्षीरविशेषे हुंमालम्ब त्वमेव तनुये वेनु । विश्वस्मि-
न्मनुष्याः कुलवत् पाकविध्यंति क नामि० १।१३,
दे० अर्तु० २।१८ श्री २ परमात्मा, वज्र ३ आराम,
जीवार्ता ४ प्राण वायुओं में से एक ५ पूर्व ६ विष

७ विष्णु ८ कामदेव ९ राजा जो महत्वाकांक्षी न
हो १० विशेष सपनाय का सम्बन्धी ११ दीक्षामुद्र
१२ ईर्ष्या, द्वेष में हीन व्यक्ति १३ पूर्वत । सम०
-अर्द्धाद्रि, मिदुर अधिकांश सम्बन्धी का विशेषण,
अभिषेकम शब्दी काता इति, शीलक एक
प्रकार का रजिब, -गति (वि०) इस शब्द का
चलने वाला, रात्रसी इव से हुनार कर चलने वाला
सङ्गता मयुग्माविणी स्त्री, गाविणी १ हस्त की
सो मुत्वर गति वाली स्त्री मयु० ३।१० २ हट्टाणी
-हुकः, सम हम् के मुजायम पर बाहुनम् अवर
की लकड़ी, -मशः हुक का कलरव, गाविणी मयुर-
भाविणी स्त्रियों का श्रेष्ठ (पतली कमर, बड़े नितंब,
गम की चाल और कोयल के स्वर वाली) सुंदर स्त्री
गजेन्द्रवमना तम्बी कोकिलात्तापस्यता, सितके
मुविणी या स्यात्ता स्मृता हुसनादिनी, -बाष्पा हुकों
की पत्ति - हु० १।१०, हुक्नु (पु०) अथान हुंक,
रघुः, बाहुनः इत्या के विशेषण, -रावः हुकों का
राजा, बड़ा हुक्, -लीकलकम्, कासीस, -लीहकम्
पीतल, अथी हुकों की पत्ति ।

हुंसकः [हुं+कन्, हुं+क+क वा] १ कारडव, मराल
२ वेरो का जाबुबन, नूपुर, शबजैव भरित इव
सविजयपताप्रकृतहुंसकभूषणा विरेचुः-धि० ७।
२३, (यहाँ यज्ञ शब्द 'प्रथम अर्थ' में की प्रयुक्त हुआ
है, दूसरे अर्थों के लिए देखो ऊ० 'हुंक' ।

हुंलिका, हुली [हु+ङीप्+टाप्, हलप्, हुं+ङीप्]
हमनी, माया श्रेष्ठ ।

हुंको (अव्य०) [हुम् होयव्यात् अहाति-हुं+हा+ङी]
संबोधनात्मक अव्यय की आवाज देने में प्रयुक्त होता

है जैसे अंग्रेजी का 'हल्लो' (Hallo) शब्द
हट्टो चिन्मयचित्तममयः सवर्चयश्च रसान्
—चण्डा० ११२ २. तिरस्कार एवं अभिमानसूचक अण्वय

१) शब्द वाचक अण्वय (शब्दों में इस शब्द का
प्रयोग मध्यम पात्रों द्वारा प्रायः संबोधन के रूप में
किया जाता है। हट्टो काट्टान् पा कुप्य मुहा० १)।

हृक्कः [हृक् इति अण्वयत कायति—हृक् + क + क] हाथियों
को बुलाना ।

हृन्ना हृन्ने [हृन् इति अण्वयत अण्वयतेऽन् हृन् + अण् + दा
(हृन्)] संबोधनात्मक अण्वय जो किसी दासी या नीरु-
गनी को बुलाने में प्रयुक्त होता है। हृन्ने कचनमाके
अहम् इति कइमासिणी रत्न० ३ ।

हृत् (अभा० पर० हृत्ति, हृत्ति) चक्कना, उज्ज्वल होना ।

हृत्तः [हृत् + ट टस्य नेत्वम्] बाजार, हाट, मेला । सम०

—चौरसः बहु चोर जो बाजार से चीजें चुराये
—गंठकटा, —चिल्लाती १ बाराजना, बेध्या, रबी
२ एक प्रकार का मद्यव्यय ।

हृत्कः [हृत् + अण्] १ प्रचण्डता, बल २ अत्याचार, नृ-
कलोट, [हृत्क, हृत्क] (किन्ना विशेषण के रूप में
प्रयुक्त) बलपूर्वक, प्रचण्डता से, अत्याचार, दुराग्रहपूर्वक
अन्धकारिका च चण्डवर्माणा हृत्क परितेनुनासच-
मनोहीन दस०, वानरात् वारावाहक हृत्क मन्त्रेण
च राय० । सम० बोलक बोल की एक विशेष-
रीति वा भावचिन्तन व मनस का अन्व्यास ('राजयोग'
से विज्ञाता विज्ञान के लिए हृत्क नाम 'हृत्योग'
पक्ष; हृत्क अन्व्यास भी कुछ कठिन है, इसके अनु-
पासन की अनेक रीतियाँ हैं, उदा० एक पैर के बल
जड़ा होना, हाथों का ऊपर किचे रहना, तिर ऊपर
करके चूत्रपान करना आदि),—विज्ञा बलपूर्वक मनन
करने का विज्ञान ।

हृत्किः [हृत् + हन्, पू०] काठ की बेड़ी ।

हृत्कि (हि) का, हृत्किः [हृत् + हक्, पू०], हृत् + हन्,
पू०], कन् वाचि] अत्यन्त नीच जाति का पुत्र, अंगी
आदि ।

हृत्कम् [हृत् + व पू०] हृद्दी । सम० कन् अन्ना ।

हृत्का (अण्व०) [हृन् + का] संबोधनात्मक अण्व० जो निम्न
श्रेणी की स्त्रियों को बुलाने में, वा निम्नतम जाति
(अंगी आदि) के व्यक्तियों द्वारा मायस में एक दूसरे
को संबोधित करने में प्रयुक्त होता है। हृत्ते हृत्ते
हृत्ताहृत्ताने नीचां बेटी सखी प्रति अमर०, स्त्री० ६-
बड़ा मिट्टी का बर्तन ।

हृत्किता, हृत्की [हृत्का + कन् + टाप्, इत्त्वम्, हृत् + कीच्]
हाथी, मिट्टी का एक बर्तन ।

हृत्ते (अण्व०) [हृन् + ते] दे० 'हृत्ता (अण्व०)' ।

हृत्त (अ० क० क०) [हृन् + त्त] १. गारा गया, बच

किया गया २. चोट पहुँचाई गई, प्रहार किया गया,
क्षतिग्रस्त ३. नष्ट, बर्बाद ४. बहिष्कृत, हीन, रहित
५. निराश मनाश ६. मुनित—दे० हृन्, 'निकम्भा'
'अभिवाचन' 'दयनीय' 'अवय' जहाँ को प्रकट करने के
लिए यह समस्त शब्द के प्रथम पर के रूप में प्रयुक्त
होता है अनुवायनु कायव हृत्तहृत्तव तत्रति विमुक्तम्
ग० ६१६, कुर्मापुण्या हृत्तबीजितेऽपिचम्—रघु०

१४१५, हृत्तचिन्मिताता ही चिन्मि विपाक—चि०

११६४ । सम० आका (चि०) १ आका से रहित,

निराश ध्वन्नाश २ दुर्बल, अक्षय ३ पूर, निर्दय,

४ बांझ — नीच, दुष्ट, पापी, बहिष्कृत, दुर्बल,

कच्छक (चि०) कांटो से मुक्त, कपुजों से रहित,

—चित्त (चि०) व्याकुल, चढ़ाया हुआ,—सिक्क

(चि०) चुपचा रघु० ३१५,—हृत्त (चि०) हृत्त-

भाव, भावहीन, दुर्भावग्रस्त,—प्रवाच (चि०) नीरव

(चि०) क्षमिहीन, निर्भीय, बलहीन,—मुक्ति (चि०)

ज्ञान से बहिष्कृत, बेहोश, भाव, भाव (चि०)

भावाहीन, बदकिस्मत, मूर्ख, बड़ा मूर्ख, दुष्ट, लज्ज

(चि०) कुललज्जों से विरहित, अवाया, शेष

(चि०) आश्रित बचा हुआ,—भी,—संयुक्त (चि०)

जिसका वैभव नष्ट हो गया हो, बल के न रहने पर

को बरिष्ठ हो गया हो, क्षाम्य (चि०) विक्षक मद्य

नष्ट हो गया हो, अवयुक्त, निर्भव ।

हृत्क (चि०) [हृत् + कन्] दुःखी, दुःखी, दुर्बल नीच,

दुष्ट (भाव, समास के अन्त में प्रयुक्त)—न हृत्क

विदितारसे तब निवृत्तप्राप्तमन्यहृत्कम् मुहा० २,

हृत्कितः त्व परितुः त्व रामहृत्कितं उत्तर० १,—क

नीच पुत्र, कायर ।

हृत्किः (स्त्री०) [हृन् + कितम्] १. हृत्ता, विनाश २. प्रहार

करना, बाधक करना ३. आघात, प्रहार ४. नाश,

अलक्षता ५. मुक्ति, दोष ६. मृत्ता ।

हृन्तुः [हृन् + कन्] १. कलन २. रीन वा बीजारी ।

हृत्ता [हृन् भावे क्यप्] बच करना, मार बालना, बंहरा,

ऊतन, बचप्य बच जैसे भूचहृत्ता, मोहृत्ता, आदि ।

हृत् (अभा० का० हृत्ते, हृत्त) पुरीषोत्तमं, मलत्वाय

करना, हृत्का० (विहृत्ते) ।

हृत्तम् [हृत् + क्त्वर] पुरीषोत्तमं, मलत्वाय ।

हृन् (अभा० पर० हृन्ति, हृत्त, कर्मभा० हृत्तते, श्रेर० वात्त-

यति—ते, हृत्का० विवांशति) १. मार बालना, बच

करना, नाश करना, प्रहार कर देना —वचप्य भूच-

हरिचिन्मिताता ग० उत्तर० २१५, हृत्तमपि च

हृत्तेव वदन ११८ २. आघात करना

पीटना—चण्डी अनुमन्त्रिता वा विमुक्तप्राप्ता

मेघराजीव वि० नू —आलचि० ११२०, ति० ७५५

३ चोट पहुँचाना, क्षति पहुँचाना, कष्ट देना, क्षतप

देना वैसा कि 'कामहूत' में 4. डाल देना, छोड़ देना, —मर्तुं २१७७ 5. हटाना, दूर करना, नष्ट करना, —अमोविनीवनमिवासविलासस्य हसस्य हृत्ति नितरां कुपितो विधाता—मर्तुं २१४८ 6. जीतना, पछाड़ देना, पराजित करना, परास्त करना—विज्जं सहस्र-मुक्तिरैरि हृत्तमानाः प्रारब्धमूलमजना न परित्यजन्ति सुभा 7. विष्णु डालना, बाधा डालना 8 नष्ट करना, बिगाड़ना—किं २१३७ 9 उठाना नुरग-कुरहस्तका हि रेणुः शं ११३२ 10 गुना करना (गमित में) 11 जाना (काथ्य में इसका इम अर्थ में प्रयोग विरल है, और जब कभी प्रयुक्त होता है तो बहु काव्य का एक दोष माना जाता है) उदा० - कुञ्ज हृत्ति हृष्टोदरी—सां २०७, या, नीधन्तिरेषु स्नानेन सम्पाजितसत्कृतिः। नुरगोत्तमिनीमेष हृत्ति प्रति साधरम्—काव्यं ७, (असमर्थम्) दोष का उदाहरण, प्रति—, अत्यन्त क्षतिग्रस्त करना, अन्तर बीच में प्रहार करना, अथ 1 हटाना, पीछे धकेलना, नष्ट करना, बन करना 2 दूर करना, हटाना —न तु कतु तयोक्तानि शक्ति करोत्यपहन्ति वा — उत्तर २१४, शं ४१३ 3 अक्रमण करना बलात् बहण करना, अभि— 1 प्रहार करना, आघात करना (डालं से जी) पीटना—भां ११३९, मालवि ५१३ 2 घोट पहुँचाना, क्षतिग्रस्त करना हुत्वा करना, नष्ट करना 3 प्रहार करना, पीटना (डोल आदि) मगं—११३३ आक्रान्त करना, घम कर देना, परास्त करना, अथ—, 1 प्रहार करना मारना, बध करना 2 नष्ट करना हटाना 3 (अनात्र की भांति) कूटना, आ—, 1 आघात पहुँचाना, प्रहार, करना, पीटना—कुट्टिममाजधान कां, किं ७१७ (आं माना जाता है जब पीटा जाने वाला अपना ही कोई अंग हो—आहुते धार—मिठां, पण्य भारवि कहता है 'आजघ्ने विषम-विशोचनस्य वत्त—किं १७६३, भट्टि ८१५, ५१०२) रयुं ४१२३, १२७७, कुं ५१२५, ३०, 2 प्रहार करना, (घटी आदि) बजाना, (डोल आदि) पीटना, —भट्टि ११७७ १७७, मेघ ६६, रयुं १७११, उब् 1 उठाना, उल्लत करना, ऊँचा करना 2. कूलना, घमंडी होना, दे० उद्धत, उप 1. प्रहार करना, आघात करना 2. बरबाद करना क्षतिग्रस्त करना, नष्ट करना, बध करना लङ्का चोप-हृत्तिर्यते—भट्टि १६१२, ५१२२, भगं ३१२४ 3 पीठित करना, वस्तु करना, परास्त करना, टप-कना दारिद्र्योपहत, मूलोपहन, कामोपहत आदि कुं ५१७६, भर्तुं २१२६, नि , मार डालना, नष्ट करना भट्टि २१३४, ६१०, रयुं ११७११,

यात्र ३१२६२ 2. प्रहार करना, आघात करना, तामेव सामर्पतया विजघ्नु रयुं ७१४४, मेघ ७१२७ 3. जीतना, हराना—देव निहृय कुञ्ज पीरुवमा-रमशक्या—वध ११३६१ पीटना, (डोल आदि) बजाना, भट्टि १४२ 5 प्रतीकार करना, निष्फल करना, भगनाश करना रयुं १२१२२ 6 (रोग आदि की) चिकित्सा करना 7 अवहेलना करना, 8 हटाना, दूर करना, किं ५१३६ वरा- 1. जवाबी वार करना, प्रत्याघात करना, पछाड़ देना, पीछे धकेलना, विचारण करना, परास्त कर देना, सदेव देना—देव यत्पीरुपराहृत राम 2 अक्रमण करना, धावा बोलना कटाक्षपराहन वदनपङ्क-जम् मां ७ 3 टक्कर मारना, प्रहार करना, प्र 1 बध करना, कतल करना, प्राधानित रक्षासि योनापानि बने मम । न प्रहृष्य. कब पाप बध पूर्वापकारिणम्—भाट्ट १११०२ 2 प्रहार करना, पीटना आघात करना मदाग्रहतनु 3 प्रहार करना, पीटना, (डोल आदि) रयुं १११५, मेघ ६४ प्रति—वध करना भट्टि २१३५, प्रति—, जवाबी वार करना बदले में प्रहार करना (न) विष्णुनमुद्ध्यतसटा प्रतिहन्मदीयः—रयुं ९१६ ३ हटाना, परे कटका, रोकना विराय करना, मका-वला करना तायम्बेवाप्रतिहतनय मैकन सेनुमोयः उत्तर २१३६ प्रतिहतविधना क्रियाः सयवलोकेय गं ११३३, मेघ ५० कुं २१४८, विक्रम २१ १ 3 हटाना, खदेड़ना, डकेलना 4 दूर करना, नष्ट करना यद्यत् पाप प्रतिग्रहि जगन्नाथ नम्रस्य तन्मे — मां ११३ ५ प्रतीकार करना, उपचार करना, बि 1 वध करना कतल करना, नष्ट करना विजघ्नु वग्ना, मदाग्र वग्ना (जल) सह्या महनि-महमा विजघ्नुम् किं ५११७ 2 प्रहार करना, जोर से आघात करना 3 अवराध करना, इकावट डालना विराय करना मकावला करना विधन्ति रक्षासि बने कृत्स्न भट्टि ११७० रयुं ५१७३ 4 अश्ली-कार करना इनाश करना क्षय होना रयुं २१५८ १११० - निगमा करना, इताश करना, लम् 1 मटा कर गिलाना आयम मे जाइना हस्ती मरुय -मनु २०३१ दूत गव हि मथने भिनश्येव व सहान् ७१६६ दे० सहन 2 हेर लगाना सयह करना, मथय करना 3 मकुचित करना, मिफोडना 4 मथय राना १ प्रहार करना मार डालना, नष्ट करना, लम् 1, प्रहार करना आघात करना, क्षति-ग्रस्त करना। हनु (वि०) [हनु चिपय] बध करने वाला, हुत्वा करने वाला, नष्ट करने वाला (समाय के अन्य में प्रयुक्त)

बैसा कि बूबहन्, पितृहन्, मातृहन्, ब्रह्महन् आदि ।

हन् [हन् + भञ्] बन्, हत्या ।

हन्मन् [हन् + मन्] १. बन् करना, हत्या करना, आघात करना २. बोट पहुँचाना, बसिष्ठ करना ३. युष्मा ।

हन्-न् (पुं, स्त्री०) [हन् + उन्, स्त्रीत्वे वा ऊन्] ठोड़ी, नु (स्त्री०) १. जीवन पर आघात करने वाली चीज २. शस्त्र ३. रोव, बीमारी ४. मृत्यु ५. एक प्रकार की औषधि ६. स्वेच्छावारिणी स्त्री, बेव्या । सम० ब्रह्मः बन्ध जबड़ा, -मूलम् जबड़े की जड़ ।

हन् (न्) मत् (पुं०) [हन्(न्) + मन्] एक अत्यन्त शक्तिशाली वाक्चर का नाम (यह अजना का पुत्र था, इन्होंने पिता पवन या मरुत् से, इसी कारण इसे पारुति कहते हैं) । ऐसा बर्णन मिलता है कि उसमें आसारण शक्ति और पराक्रम था जो उसने अपने बृहदारण्य राम की ओर से कई अवसरों पर प्रकट किया । जब रावण सीता को अपहरण करके लका में ले गया तो हन्मान् ने समुद्र पार करके उसका पता लगाया तथा अपने स्वामी राम को सूचित किया । लंका के महायुद्ध में उसने महत्त्वपूर्ण कार्य किया ।

हन्त (अभ्य०) [हन् + त] प्रसन्नता, हर्ष, और आकस्मिक हलचल की प्रकट करने वाला अभ्यय, हन्त हो लब्ध मया स्वास्थ्यम् शं० ४, हन्त प्रवृत्त सगीतकम् —मालवि० १, २. कण्ठा, दया—पुनक हन्त ते जानका—गण० ३ शोक, अफसोस—हन्त विद्ध मागधन्यम्—उत्तर० १४३, स्मरामि हन्त स्मरामि—उत्तर० १, काचमूल्याने विभीतो हन्त चिन्तामणि-र्मया—घा० ११२, मेघ० १०४ ४ सीमाय, आसी-र्वति ५ यह बहुधा आरम्भसूचक अभ्यय के रूप में भी प्रयुक्त है—हन्त ते कथयिष्यामि—राम० । सम०

उत्तिलः (स्त्री०), कण्ठा, मुहुता आदि श्लोक शोक, श्रेय आदि शब्दों का कथन, कारणः १. 'हन्त' हिंसमादिश्लोक अभ्य० २. किसी वस्तुति की ही जाने वाली भेंट-निबीती हन्तकारेण मनुष्यास्तर्पयेदथ ।

हन्तु (वि०) (स्त्री० जी) [हन् + तु] १ प्रहारकर्ता, बधकर्ता, मनु० ५१३४, कु० २१२० २ जो हटाता है, नष्ट करता है, प्रतीकार करता है,—पुं० १ हत्यारा कपिल २ चोर, लुटेरा ।

हन् (अभ्य०) [हन् + भञ्] १. कोष तथा २. शिष्टाचार या आचार की प्रकट करने वाला उद्गार ।

हन्ता (भा) [हन् + ता + भञ् + टाप्, पहले पुषो०] नाय, बैल आदि पशुओं के बोलने का शब्द, रोमना । सम० -रथः रोमना ।

हन् (घ्या० पर०) हयति, हवति १. जाना २. पूजा करना ३. लब्ध करना ४. बक जाना ।

हवः [हव् (हि) + भञ्] १. बोड़ा, मय० ११४, मनु० ८१२२६ रघु० १११० २. एक विशेष भेरी का अनुष्य —दे० 'अवर्ष' के अन्वये ३ 'सात' की संख्या ४. हन्त का नाम । सम०—अव्ययः घोड़ों का अवीजक अनुष्येव अव्यधिकिस्ताविज्ञान, शासिहोत्रविद्या, आरुह्य अवचारीही, बुधसवार, —आरोह १. बुध-सवार २. बुधसवारी, हवः जी, —उत्सवः बड़िया बोड़ा, जोषिह बोड़ों के प्रबन्ध, प्रशिक्षण तथा चिकित्साविज्ञान से परिचित, ज. घोड़ों का व्यापारी, साधन, ऐसंबार बुधसवार,—हिष्णु (पुं०) बैठा ग्रिथ जी, शिवा खजूर का वृक्ष, —मारः, —मारकः गद्ययुक्त करवीर, कनेर, —मारणः पावन कनेर,—नेत्रः अवयव यज्ञ—याज्ञ० ११८१, —बाह्य कुनेर का विभेवन, —शाला अलबल,—साधन्य बोड़ों को सभान या उनका प्रबन्ध करने की कला, संघहण्य बोड़ों का लगान बीच कर रोकना ।

हवःकृचः [हव + कृच + कृच + मन्] बालक, रवमान् ।

हवी [हव + वीप्] बोड़ी ।

हर (वि०) (स्त्री० रा, —री) [ह + भञ्] १. ले जाने वाला, हटाने वाला, वञ्चित करने वाला छेदहर, शोकहर २. लाने वाला, ले जाने वाला, ब्रह्म करने वाला अपहरा—कि० ५१५०, रघु० १२१५१ ३ पकड़ने वाला, ब्रह्म करने वाला ४. नाकर्षक, मनोहर ५. अभ्यर्षी, दावेदार, अधिकारी—मनु० २११९ ६. अधिकार करने वाला,—कु० ११५०, ७ बाँटने वाला—रः १ शिव, कु० ११५०, ३१४०, ६७, मेघ० ७ ४ अग्नि ३ गया ५. भाङ्क ५. निष्ठ की नीचे की सख्या । सम० गौरी शिव और पार्वती का एक सयुक्त रूप (अर्धनारीनटेश्वर), च्छात्राभिः शिव की शिष्यामणि, चन्द्रमा, तेजस् (मनु०) पारा, नेत्रम् १ शिव की आँख २ तीन की सख्या, बीजम् शिव का बीज, पारा,—सोमरा शिव की मिला, गगा, क्षुण्ः स्तन्य रघु० १११८३ ।

हरकः [हर + कृ] १ चोरी करने वाला, चोर २. दुष्ट, ३ बाङ्क ।

हरणम् [ह + ह्युट्] १. पकड़ना, ब्रह्म करना २. ले जाना, दूर करना, हटाना, चुराना कल्पाहरणम्—मनु० ३१३३, रघु० १११७४ ३. वञ्चित करना, नष्ट करना, बैसा कि 'आणहरणम्' में ४. भाग देना ५. विचारों की उपहार ६. नृजा ७. वीर्य, लूक ८. लोना ।

हरि (वि०) [ह + ह्युट्] १ हरा, हरा-पीला २. साफ़, काफ़ के रव का, कालीयुक्त मूरा, कपिल—हरिदुग्धं रव तस्मै प्राणिनाय पुरन्धरः रघु० १२१४, ३१४३ ३. पीला,—रिः १ विष्णु का नाम—हरिवर्षक बुध-

बोरामः स्मृतः—रघु० ३।४९ २. इन्द्र का नाम
—रघु० ३।५५, १८, ८।७९ ३. शिव का नाम
४. ब्रह्मा का नाम ५. यम का नाम ६. पूर्व ७. बन्धमा
८. मनुष्य ९. प्रकाश की किरण १०. अग्नि ११. पवन
१२. सिंह—भामि० १।५०, ५१ १३. घोड़ा १४. इन्द्र
का घोड़ा सत्यमतीत्य हरितो हरीश्वर वर्तमाने वाजिन
—स० १, ७।७ १५. मयूर, कम्बर उत्तर० ३।४८,
रघु० १२।५७ १६. कोयल १७. मेंढक १८. तोता
१९. साँप २०. बाकी या पीला रंग २१. मोर २२. भृ-
हरि कवि का नाम । सम०—अक्षः १ सिंह
२. कुबेर का नाम ३. शिव का नाम, अक्षः १ इन्द्र
२. शिव, काल (वि०) १ इन्द्र को प्रिय २ सिंह के
समान सुन्दर, कैलीशः वन देव, कम्बः एक प्रकार
का वस्त्र,—कम्बः मन् १ एक प्रकार का पीला
वस्त्र (लकड़ी या वृक्ष) रघु० ३।५९, ६।९०, स०
७।२, कु० ५।१९ २. स्वर्ग के पाँच वृक्षों में से एक
वृक्ष पृथ्वीसे देवतरको नन्दार पारिजातक । सन्तान
कल्पवृक्ष पुंसि वा हरिषन्मन्—अक्ष०, (—मन्)
१. उवात्सा २. केसर, जात्राराम ३. कमल का पराग,

सालः (कुछ विद्वान् इसे 'हरित' से व्युत्पन्न मानते
हैं) पीले रंग का कपूर, (कम्ब) हराहाट इन्द्र०
१. शि० ५।२१, कु० ७।२१, ११, (की) पूर्वा
वाश, दृष्ट, सतीश्या मादसुसुता जलुषी २. पूर्वा वाश,
—कुदल्लका इन्द्र का नाम,—वाकः विष्णु का उपासक,
—विष्णु विष्णु पूजा का विशेष दिन,— देवः अथवा
मन्त्र,—इन्द्र हरा रंग,—हाराय् एक पुष्पतीर्थस्थान,—मेघम्
१. विष्णु की आज्ञा २. सकेव कलक, (म) उल्ल,
— कम्ब कलक विष्णु, शिवः १. कर्ष का वृक्ष
२. संक्ष ३. पूर्व ४. पवन मनुष्य ५. शिव, (—मन्)
एक प्रकार का वस्त्र, शिवः १. कलपी २. तुलसी
का पीला ३. वृक्षी ४. हाथकी,—मन् (पु०) साँप,
कम्बः, कम्बः मटर, कम्बः,—कैलीशः १. केकडा
२. उल्ल,—कलका १. कलपी २. तुलसी,—वाकः विष्णु-
दिव्य, एकाग्रही, कलकः १. वक्र २. इन्द्र, 'विष्णु'
(स्त्री०) पूर्वविद्या,—वाकः शिव का विशेषतः विष्णु राक्षस
के तीनों गहरों को भस्म करने के लिए शिव ने विष्णु को
जलसे वरकछे की माँति प्रवृत्त किया),—अक्षः एक
संघर्ष,—संकीर्तनम् विष्णु के नाम का कीर्तन करना,
—कुलः—कुलः सर्वान का मोक्ष,—इन्द्रः १ इन्द्र रघु०
१।१८, २. पूर्व,—हरः विष्णु और शिव की एक वयल
देवमूर्ति, हेमिः (स्त्री०) १. इन्द्रवज्र कम्बवर्णीक-
वैद्यवधुना हरितोत्तमनी (कजुम.)—वा० १।१८
२. विष्णु का वक्र, हेमिः वक्रवाक शि० १।१५ ।

हरिकः [हरि वक्रावा कन्] १ बाकी वा भूरे रंग का घोड़ा
२. मोर ३. कुमारी ।

हरिष (वि०) (स्त्री० जी) [हृ + इन्] १. पीका,
पीला हा २. काल या पीला संकेत,—वाः १. मृग, बाह्य-
शिवा (यह पाँच प्रकार का बताया गया है)—हरिष-
व्यापि विशेष पञ्चभेदोऽयं मंत्रः । २. मृग बाहु
सकचैव पुष्यतश्च मृगस्तथा कालिका०)—अपि प्रसक्तं
हरिषेयं ते मन—कु० ५।२५ २ संकेत रंग ३. हंस
४. पूर्व ५. विष्णु ६. शिव । सम०—अक्ष (वि०)
मृगमयन, हरिष जैसी आँखा वाला, (—जी) मृगमयनी
सुन्दर आँखों वाली स्त्री अक्षक १ पन्द्रमा २. कपूर,
कलकः,—वाकम् (पु०) पन्द्रमा मयन, मंत्र
लोचन (वि०) हरिषाक्ष, मृग जैसी आँखों वाला
—हृष्य (वि०) हरिष जैसा दिख वाला, भोद ।

हरिषकः [हरिष + कन्] छाटा हरिष—भव न हरिषवाला
जीविन चानिलोत्तम म० १।१० ।

हरिषी [हरिष, शीप] १. भृगा, मादा शृगिण,—चकित-
हरिषीयेत्या मेघ० ८२, रघु० १।५५ १।१९
२. क्रिया के चार भेदों में से एक (विचित्रिणी जी
कहते हैं) ३. पीले फूल की चमेली : सुन्दर स्वर्णमूर्ति
५. एक छन्द का नाम । सम० कृष् (वि०) हरिष
जैसी बाँझो वाला (स्त्री०), मृगमयनी—किमवशि-
ष्टे हरिषीवृग—उल्ल० ३।२७ ।

हरित (वि०) [हृ + इति] १. हरा, हरियाला २. पीला,
पीला हा ३. हरियाली लिये पीला,—(पु०) १. हरा वा
पीलारंग २. पूर्व का घोड़ा, नाम के रंग का बाड़ा—मन्व-
मतीत्य हरितो हरीश्वर वर्तमाने वाजिन—स० १, पिता
हरिद्विहृतिरतिविक्रमः—रघु० ३।१०, कु० २।४३
३. तेज घोड़ा ४. सिंह ५. पूर्व ६. विष्णु (पु०, म०)
१. वाश २. पिता—रघु० ३।१० । मन्व—अक्ष दिवावा
का मन्त्र, विपश्य,—भामि० १।१०, अक्षरम् शिव
मन्त्र, विविध विद्वान् भामि० १।१५, अक्षः
१. पूर्व, पि० २।४९, रघु० ३।२२, २।२३, पि०
१।१५९ २. मदार का पीला, अर्ध, वर्षः पीछे पत्तों
की हरी हरी कुशा, अक्षिः (हरिगमिषि) नरक
मणि, पंचा शि० ३।४९, वर्ष (वि०) हरिगमि,
हरे रंग का ।

हरित (वि०) (स्त्री०—सह, हरिषी) [हृ + इन्] हरा, हरे
रंग का, हरा-हरा-रक्ताक्षरः कलमिनीश्रृंगिः सरोविः
—स० ५।२०, कु० ७।१४, मेघ० २१, पि० ५।१८
२. बाकी,—सः १. हरी रंग २. सिंह ३. एक प्रकार का
वात । सम० अक्षम् (पु०) १. नरक मणि, पंचा
२. मृगिवा, पीला बोकी,—अक्ष (वि०) हरे हरे पत्तों का ।
हरितकम् [हरि + क + क] १. माय-माही २. हरा वाश
शि० ५।५८ ।

हरिता [हरित + टाप्] १. पूर्वा वाय २. हरिडा ३. भूरे
रंग का अक्षर ।

हरिताल दे० हरि के नीचे ।

हरिषा [हरि + इ + ड] टापू] 1 हल्दी 2 पिसी हुई हल्दी दे० नै० २२।५९ पर मल्लि० । सम०—आम (वि०) पीले रंग का, मधुसूतः क्लेशः गणेश देव का विशेष रूप, राग, रागक (वि०) 1 हल्दी के रंग का 2 अनुराग में अन्धिर, (प्रेम में) चकन्दनः हलायुध में इसकी परिभाषा लघुमात्रानुरागवच हरिद्वाराग उच्यते ।

हरिष्य [हरि + या + क] पीले रंग का चोड़ा ।

हरिश्चन्द्रः [हरि चन्द्र इव, सुहाय्यम् आभावेव] सूर्यवश का एक राजा (यह विश्वस्यु का पुत्र था, अपनी दान क्षीलता, अविच्छेदता तथा सबार्थों के लिए अत्यंत प्रसिद्ध था । एक बार इसके कुल-पूरोहित वसिष्ठ ने इसकी प्रशंसा विश्वामित्र की उपस्थिति में की विश्वामित्र ने विश्वास नहीं किया । इस पर विवाद बढ़ा हो गया, अंत में यह निर्णय किया गया कि विश्वामित्र स्वयं इसके सत्य की परीक्षा लें । तदनुसार विश्वामित्र ने इसे अत्यंत कठिन परीक्षण में डाला जिससे कि यह पता लग सके कि क्या अब भी यह अपने वचनों पर दृढ़ रहना है । इतना होने पर भी राजा ने उस परीक्षण में उदाहरणीय साहस का परिचय दिया । यद्यपि इसे इस परीक्षा में अपने राज्य से हाथ धोना पड़ा अपने पत्नी और पुत्र को बेचना पड़ा यहाँ तक कि अंत में अपने आपको भी एक बाजार के घर बेचना पड़ा । अपने अग्रज माह्व और सबार्थों के लिए हरिश्चन्द्र को अपनी पत्नी को मागविनी । न कर मारने के लिए भी तैयार होना पड़ा तब वही विश्वामित्र ने अपनी हार मानी और य ग्य राजा का प्रजा भोजन स्वर्ग में ऊँचा आसन दिया गया ।

हरीतकी [हरि पीतवर्णं पराङ्गारा इत्या प्राप्या हरि + इ क्त + क्तु + क्तिप्] हरे का पेड़ ।

हर्ष (वि०) (स्त्री०) भी [हृ + शृप्] उठा कर के जान वाला, छीनने वाला लूटने वाला ब्रह्म करने वाला भावि (पु०) कोर, कटोरा मर्त्य २।१६२ मृत्युं ।

हर्षन् (मृ०) [हृ + मतिन्] मुँह फाड़ना जमाई लेना ।

हर्षित (मृ०) क० क०, [हर्षन् + इतच्] 1 जिसने मुँह फाड़ा है, जिसने जम्हाई ली है 2 डाल दिया गया कैदा गया 3 जलाया गया ।

हर्षन् [हृ + यत्, मुट् च] 1 प्रसाद महल, कोई भी शिवाल अथवा यात्री इमारत हर्षवृष्ट समारोहः काप, अपि मङ्गलमते—मुना०, बाह्योद्यानस्थितहरसितरचमिङ्गका-पीठहर्षा—मेघ०७, अष्टपु० १।२८, चरि० ८।१९, रघु० ६।४७, कु० १।४२ ? तद्वर, नगीटी पुलहा 3 आग का बुझ, बचना-बचना, नरक । सम० अङ्गुलम्—अङ्गुल्यु का आसन,— अङ्गुल्यु महल का कक्षर ।

हर्ष [हृ + घञ्] 1 आनन्द, खुशी, प्रसन्नता, सहाय, एक सुकारणक भाव, आनन्दान्तरिक, उल्लास, आह्लास, प्रमोद हर्षो हर्षो हृदयवसति पञ्चबाधस्तु गाय —प्रसन्न० १।२० सहोचितः सैनिकठर्बनि स्वर्गः—रघु० ३।६१ 2 पुलक, रोमांच रोंगटे खड़े होना—जैसा कि रोमहर्ष में 3 हर्ष ३३ या ३४ सचानिमाओं में से एक हर्षस्त्रिषष्टाबाधेयन प्रसवोऽव्यग्रादादिकर्मा १० ८० १९५ या इष्टप्राप्त्यादिजन्मा मुक्तविशेषो हर्ष रस० । सम० अन्वित (वि०) आनन्दयुक्त, प्रसन्न इसी प्रकार 'हर्षाविष्ट', अन्वितः प्रसन्नता का अविच्छेद आनन्दान्तरिक उदय आनन्द का होना, कर (वि०) तुल्य करने वाला प्रसन्न करने वाला, अह (वि०) मत्त्व मारे खुशी के जड़बन् हो जाने वाला रघु० ३।६८—विचरन् (वि०) आनन्द की बढ़ाने वाला, स्वयं आनन्द की प्राप्ति ।

हर्षक (वि०) (स्त्री०—बंका, चिका) [हृ + शृप् + क्तु] लूट करने वाला, प्रसन्न करने वाला, आनन्दयुक्त, मुक्तकर ।

हर्षन् (वि०) (स्त्री०—बा, नौ) [हृ + शृप् + ल्युट्] लुट्टी पैदा करने वाला प्रसन्न करने वाला आनन्द से भरा हुआ, सुखद च 1 कामदेव के पाँच बाणों में से एक 2 आम का एक रोग 3 आठ की एक अधिष्ठात्री देवता—अङ्गु प्रहर्षं लुट्टी प्रमथना, आनन्द, उल्लास दुर्हृदामप्रहर्षाय सुहृदा हर्षणाय च—महा० । हर्षयितु (वि०) [हृ + शृप् + इत्] आनन्ददायक मुक्तकर लूट करने वाला प्रसन्नता देने वाला ।

हर्षुल [हृ + च] 1 हर्षण 2 प्रेमी । हल् (म्वा०) २२० हलन्ति हलन्ति हल चलाना ।

हलम् [ह घञायं कणे क] आगल छेन जोनने का एक प्रधान उपकरण बहमि वपुषि विशादे वसन जल-वन्धन । हलहनिमीतिमित्यमुनाम या—हल कल्पने मीन० १ । सम० आयुध बलराम का विशेषण चर,—भूत् (पु०) 1 हलनी हलचलाने वाला ? बलराम का नाम केदावधनहलचरक्य जय जगदीश हरे—मीन० असन्त्यन्ते मति हलभूतो मेघके वाससीय मेघ० ५९ भूति, भूतिः हल च शाना हलिकर्म किसानी, हल्लि (स्त्री०) 1 हल के द्वारा प्रहार करना या लूट निकालना 2 जुताई या हल चलाना

हलहला जहो बाह रे आदि आश्चर्यसूचक अशब्द ।

हला [हृ इति लीयते हृ + ला + क + टापू] 1 लक्ष्मी, लहेली 2 पुष्पी 3 जल 4 मदिरा (अन्वय०) नाटकीय भाषा में किसी लक्ष्मी या लहेली को संबोधित करना हला सकुन्तले बचैव तावन्मुहूर्तं तिष्ठ—अ० १, पु० 'हला' भी ।

हृत्प्राप्तम्—सम्पन्न वेदो 'ह्रात् (ला) ह्रत्' ।

हृत्ति [हृत्+इत्] 1. बढ़ा हृत् 2. बृत् 3. कृत् ।

हृत्तिन् (पुं०) [हृत्+इत्ति] 1. हामी, हलबाहा, किसान 2. मकराम । सम्० श्रितः कर्त्तव्य का वृत्त (-या) मधिरा ।

हृत्तिनी [हृत्तिन्+नीप्] हृत्तो का सम्बन्ध ।

हृत्तीक [हृत्ताव ह्रितः हृत्+क] साम्री का पेठ ।

हृत्तीका [हृत्स्य ईषा-य० त०, सक० परस्मैपु] हृत् का दण्ड, हृत्स ।

हृत्स्य (वि०) [हृत्+यत्] 1. जोतने योग्य, हृत् बलाये जाने योग्य 2. कुम्प विकृताकृति ।

हृत्सा [हृत्स्य+टाप्] हृत्ती का सम्बन्ध ।

हृत्सकम् [हृत्स्य+कम्] काल कमल ।

हृत्सलम् [हृत्स्य+लम्] कोटना, इधर-उधर करबट बदलना—(घोते समय) ।

हृत्सीकम् (बम्) [हृत्+विषप् कम् (स्)+कम्, पूर्वो० ईषन्, कर्म० स०] 1. गठारह उपकरणों में से एक (एक प्रकार का एककी नाटक जिसमें प्रधानतः गायन और नृत्य होता है, तथा इसमें एक पुरुष और सात या आठ नर्तकियाँ भाग लेती हैं—सा० २० ५५५) 2. एक प्रकार का वर्तुलाकार नृत्य ।

हृत्सीकम् [हृत्सीक+कम्] घंटा बनावार नाचना ।

हृत् [हृ+अ, ह्र्+अप्, सम्प्र०, पूर्वो० वा] 1. आहुति, यज्ञ 2. आवाहन, प्रार्थना 3. आह्वान, आमन्त्रण 4. आदेश, समादेश 5. बुलावा, बुला भेजना 6. चुनौती, ललकार ।

हृत्तम् [हृ+भावे ल्युट्] 1. जनि में सामग्री की आहुति देना 2. यज्ञ, आहुति 3. आवाहन 4. बुलावा, आमन्त्रण 5. युद्ध के लिए ललकार । सम्प्र० आह्वन् (पुं०) जनि ।

हृत्तीयम् [हृ+तृतीयर्] 1. कोई भी वस्तु जो आहुति देने के योग्य हो 2. गरम किया हुआ भक्षण या ची ।

हृत्तिषी [हृ+इत्तन्+शीप्] हृत्तकृष्य जो भूमि में बोध कर बनाया गया हो, (इसमें आहुतियाँ दी जाती हैं) ।

हृत्तिष्मन् (वि०) [हृत्स्य+अतृप्] आहुतिवाला ।

हृत्तिष्मन् [हृत्तिष् ह्रितम् कर्मणि यत्] 1. कोई वस्तु जो आहुति के लिए उपयुक्त हो मनु० ३।२५६, १।१७७, १०६, याज्ञ० २।२३९ 2. गर्म किया हुआ भक्षण । सम्प्र०—अह्वन् व्रत के तथा अन्य पर्वों के अवसर पर जाने योग्य भोज्य पदार्थ, आहिन्—भुज् (पुं०) जनि ।

हृत्तिष् (नपुं०) [हृत्ते हृ कर्मणि अतृप्] 1. आहुति या हवनीय द्रव्य—वहति निश्चित या हृत्ति—स० १।१, मनु० ३।८७, १।२, ५।७, १।२२ 2. गर्म किया हुआ भक्षण 3. यज्ञ । सम्प्र०—अह्वन् (हृत्तिष्मन्)

ची या हवनीय द्रव्यो का जाया जाना, (यः) जनि, —जन्मा (हृत्तिष्मन्) हवनीय, यैव का पेठ,—वैकुण्ठ (हृत्तिष्मन्) यज्ञग्रह जहाँ जनि में आहुति दी जाती, भुज् (हृत्तिष्मन्) जनि अन्वाश्रितमन्त्रवा स्वाहवे हृत्तिष्मन्—रघु० १।५६, १०।८०, १३। ४१, कु० ५।२०, सि० १।२, काण्व० २।१६८, यज्ञः (हृत्तिष्मन्) एक प्रकार का यज्ञ, आहिन् (हृत्तिष्मन्) —(पुं०) पुरोहित ।

हृत् (वि०) [हृ कर्मणि+यत्] आहुति के रूप में दिया जाने वाला पदार्थ,—जन्म 1 जो 2 देवों को दी जाने वाली आहुति (विप० कथ्य) 3 आहुति । सम्प्र०—आहः जनि, अह्वन् देवों तथा पितरों को आहुतियाँ—मनु० १।१४, ३।९७ १२८ आगे पीछे,—आह, आह आह्वन् (पुं०) आहुतियों को ले जाने वाला, जनि ।

हृत् (धा० पर० हृत्ति, हृत्ति) 1. मुक्तकरण, मन्त्र हृत्ती हृत्ता,—हृत्ति यदि किंचिदपि इत्यादिचिन्तितो हृत्ति दत्तमित्यतिथोरम्—मीट० १०, महि० ७।६३, १४।१३ 2. हृत्ती उड़ाना, मल्लोत्तर करना, उपहास करना (कर्म० के साथ)—यमवाच्य विवर्तनः प्रभु हृत्ति धामपि सकम्पितवान् नै० २।१६ 3. (गतः) आगे बढ़ जाना, अष्ट होना, दूसरे को पीछे छोड़ देना—यो जहासि वायुदेवम्—का०, सि० १।७१ 4. भिल्लना—भुलना—भिया हृत्ति कम्पानि क्षिप्तः—कि० ८।४४ 5. मल्लोत्तर उड़ाना, भिल्लनी करना 6. भुलना, भिल्लना, भुलना—हृत्तवन्मन्त्रोत्तरान् 7. चमकाया, चमक कर साफ करना—वाचामुदेव्यति हृत्तिष्पति पञ्चजाती सुधा०, श्रेर० (हासयति—ते) मंत्र हृत्ती हृत्ता कु० ७।९५, जन्म—, हृत्ती उड़ाना, तिरस्कार करना, उपहास करना, जन्म—, 1 तिरस्कार करना, बेइच्छता करना 2. आगे बढ़ जाना, अष्ट होना—स्थितामहृत्तेषु पुर मन्त्रा महि० १।९, उप—उपहास करना, तिरस्कार करना, दुरा मन्त्रा कहना, तथा प्रयत्नेषु तथा नोपहृत्तेषु जन्म का०, बट० १७, परि—, 1 मल्लोत्तर करना, हृत्ती उड़ाना 2 उपहास करना, दुरा-मन्त्रा कहना, (जन्म) आगे बढ़ जाना, अष्ट होना, जन्मामानन्दः परिहृत्ति निर्वाणपदवीम् गमा० ५, प्र 1 उपहास करना, तिरस्कार करना, दुरा-मन्त्रा कहना, मल्लोत्तर उड़ाना—हृत्ता प्रहृत्येत्या इत्यन्तं प्रचक्षति च—मुद्रा० 4 चमकाया, चमक कर दिखाई देना, सि—, 1 तिरस्कारना, मन्त्र मन्त्र हृत्ता— किंचिद्विद्वत्पार्थपति भाषाये—रघु० २।५६ 2 उपहास करना, दुरा मन्त्रा कहना, चमकाया करना—किंचिद्वि विचिरीति रीतिरिति विचका

विहसि युवतिसभा तव विकला—वीर्यं ९, गौरी-
बलपुत्रकुटिरचनां या विहस्येव फेनै—मेघ० ५० ।

हृष [हृ + षप्] 1 हरी, ठाका 2 उरहास 3 आनंद,
प्रमोद, लुब्ध, प्रसन्नता ।

हृत्तम् [हृ + षप्] हसना ठाका अट्टहास ।

हृत्तनी [हृत्त + ङीप्] उठाऊ चूल्हा, कागरी ।

हृत्तली [हृत्त + लीप्] 1 उठाऊ अगोठा 2 एक प्रकार
की मलिका ।

हृत्तिका [हृत्त + भृक् + टाप् इत्यम्] अट्टहास उपहास ।

हृत्ति (भू० क० क०) [हृत्त + क्त] 1 प्रेमकी प्रती की
यई हा हसरा 2 विक्रमिन् फुला हुआ तम् 1 अट्ट
हास 2 मछोड मजक 3 कामदेव का धनुष ।

हृत्त [हृत्त + तन न इट्] हाथ, हृत्त तन हाथ में

पडा हुआ या अधिकार में आया हुआ गौनमोहम्ने

विमज्जिष्णामि ण० ३ (मैं गौनमी क हाथ

(हाग) इसे भेज दूंगा) इसी प्रकार 'हृत्ते पतिता

'हृत्ते सनिष्ठा कु' आदि धनुना दलहस्ता मघ०

६० (धनु का सहारा लिए हुए), हृत्ते हृ (हृत्ते हृत्त

हृत्त) हाथ से पकड़ना ले लेना हाथ से ले लेना

हाथ में पकड़ लेना अधिकार कर लेना लाकोक्ति—

हृत्तकद्वय कि दण्डे प्रेक्ष्यते (हाथ काण को आगवा

क्या) अर्थात् हाथ पर रखी वस्तु को देखने के लिए

बीछ कर आकषयकता नहीं होती 2 हाथी को मूँड-कु०

१।३९ ३ तेरहवा नक्षत्र विमर्षे पाँच तारे सम्मिलित हैं

हाथभर, एक हस्ताग्रिभाण (२४ अंगुल या नगभग

१८ इंच की लंबाई, जो कोहनी से मध्य अंगुला की

नोक तक होती है) 5 हाथ की लम्बाई हस्ताक्षर

घनीबोधयत दद्यात् स्वहस्तपरिचिह्नानम याज०

१।१३, स्वहस्तकालमपय शासनम्-१।३०० (गौरीश

और हस्ताक्षर सहित) धायनामय प्रियाया स्वहस्त

--विक्रम० २ (भेगे प्रिया का आत्मलेख) ०।०

(अत आल० से) प्रमाण मकी मुद्रा ० ७ सहा

यना भदद महाग-वात्याम्बे २ कुशाङ्गदा सुबिम्भ

ययईलहस्ता कर्गान वणी० २। १४ राशि परि

माण, (हाथों का) गुण रा रचना में 'जेश कच के म'व

—यास पञ्चदह हस्तपत्र कलापार्वा कथापरे १म०

सति विमलितवर्णं केसहस्ते सुकेष्या सति कुसुममनाथ

कि करोऽपेय बहो, विक्रम० ४।१० — हस्त्य धीरये ।

सम० अक्षरव अपने निजी अक्षर, दम्भवन, —अधुन

अगुकी (क्योंकि हाथ का निरा यही हाती है)

—अनुक्तिः हाथ की कोई भी अंगुलि अम्यस्त हाथ मे

का सहारा दनहस्तावलम्बे प्रारम्भे रत्न० (सहारा

दिये जाने पर), —आत्मलक्ष्म् 'हाथ में रखी आँखों

का कल' यह एक वाग्धारा है, और उस समय प्रयुक्त

होती है जब करी ऐसी बात का निर्देश करना हो ।

विस्तुल स्पष्ट और अनायास ही बोधवन्म हो, —आव्य

दस्ताम हस्तत्राण (ज्यादातराण)—विक० ५, ६०

—कलकम् 1 हाथ में लिया हुआ कमल 2 क,

जैसा हाथ कोलकम् हाथ की दलता —किष्वा ह

का काम दनकागी गत बाणिन् (वि०) हाथ

आया हुआ जरिकार में आया हुआ, प्राप्त, गृहीत

य प्राप्यंस् हस्तगता मयैमि रघु० ७।६३

८।१ घात हाथ मे पकड़ना आपत्यम् हस्तकोशल

—तलव 1 ग्य की टेंग 2 हाथी के मूँड की नाक

—नाक हरेली बजाना नालियाँ बजाना, दोब

हाथ मे जान वाप्ती वृत्ति मूँड बारवन्—बारवन्

(हाथ में) आयात का निवारण करना बारव् हाथ

और पे- न मे हस्तपाद प्रमर्गि स० ४, पुच्छम

कलाई मे नीचे का भाग, —पुच्छम् हथेको का पुष्टमय

प्राप्य (वि०) 1 हस्तगन 2 उपलब्ध सुरक्षित

प्राप्य (वि०) 'वह' आसानी से हाथ पहुँच सके

जो हाथ का पहुँच में हो —हस्तप्राप्यमवकर्मितो

वाल्मन्दावृक्ष—मघ० ३५ — विष्णु शरीर में उबटन

आदि गद्य द्रव्यो का लय, बलि कलाई पर पहना

जाने वाला रत्नामूषण—काचवन् 1 हाथ की छपरता

या कुलटना 2 हाथ की मफाई, काजीपरी, —सकाह्वन्

हाथ में मलना या मांजिण करना—मेघ० ९६—सिद्धि

(स्त्री०) 1 हाथ का थम, हाथ से किया जाने वाला

काम 2 ३४ पारिधमिक, मजदूरी लूचम् कलाई

में बाण्य 'क्या हुआ मगलमूल या बलय, कड़ा

—कु० ७।२५ ।

हस्तक हस्तगत [हस्त + कन्] 1 हाथ की अवस्थिति ।

हस्ताव्रस्ति (वि०) [हस्त + मत्तुप्] दस कुशल, चतुर ।

हस्तिकम [अ० ०] । हस्तेव हस्तव्य प्रहृत्य इव युद्ध

पवन्त व० स०, दोष, अम्यव्य व] हाथा

पाइ, हस्ताभिन जयमज्जति दश० ।

हस्तिकम परिचय समूह वन] हाथियों का समूह ।

हस्तिन् (वि०) (स्त्री०—नी) [हस्त शूरादशब्दात्त्यस्य इति]

1 कपटन 2 मूँडवाला (पु०) हाथी मनु०

७।५ (२।४३) (हाथी चार प्रकार के बताये जाते

हैं भद्र मद्र मय और मिथ) 1 सव० अम्यव्य

हाथियों का प्रयोग आयुर्वेद हाथियों के रोगों की

चिकित्सा में मजबूत इति रचना आरोह महावत, या

हाथी की सवारी करने वाला, कच 1 सिंह 2 बाघ

—कच एगड का पीछा—कच 1 हाथी को मारने वाला,

—चारिन् (पु०) पीलवान—वन्तः 1 हाथी का दाँत

2 दोषार में गड़ो हुई इट्टी (—सम्प) 1 हाथीदाँत

2 मूली, —वन्तकम् मूली, मन्म पुरदार वर बना

हुआ मिट्टी का डहा, —वन्तः पीलवान, हाथी की

सचारी करने वाला—इति बोधयतीव विविधः करिषो
हस्तिपकाहतः क्वणन्—हि० २१८९, अथः मस्त हाथी
के मस्तक से बूने वाला मदारसः—अस्तः १ ऐरावत
२ गणेश ३ राक्षस का डेर ४ बृह की बौछार
५ कुहरा, - दूध—अन् हाथियों का समूह, बर्चसन्
हाथी की शान, कान्ति, बाहः १ पीलवान २ हाथियों
को हाकने का अङ्कुर, बहवन् हाथियों का समूह,
स्नानम् गजस्नान, हाथी का स्नान अवबोध्य-
चित्तानां हस्तिस्नानमिव क्रिया हि० ११९८ हस्तः
हाथी की सूड ।

हस्तिन (भा) पुरम् [अलक समस्त हस्तिना तदाक्यन्पेण
चिह्नित तत्कृतत्वात्] राजा हस्तिन् द्वारा बसाया
गया नगर, (वर्तमान दिल्ली से लगभग ५० मील
उत्तरपूर्व दिशा में, वही वह नगर है जहाँ महाभारत
के कुरव का केन्द्रीय दृश्य था, इसके अन्य नाम यह
है—गजाक्षय, नागसाक्षय, नागाक्ष और हस्तिन) ।

हस्तिनी [हस्तिन् + ङीप्] १. हथिनी २ एक प्रकार की
औषध और नग्नद्रव्य ३ कामशास्त्र में बर्णित नार
प्रकार की स्त्रियों में से एक (इस स्त्री के होठ,
अगुलियाँ और कूड़े छोटे, तथा स्नान भारी होत हैं,
इसका रंग काला और कामलिप्ता अधिक होती है
रक्षितबरी में इसका वर्णन इस प्रकार है स्थूलाघरा
स्थूलनिष्पद्यिन्वा स्थूलाङ्गुलि स्थूलकुचा सुर्माणा ।
कामोत्सुका गाढरतिप्रिया च नितान्तभोजिका—निनयमवो
—अन् हस्तिनी स्थान्— (करिणी मता सा) ।

हस्त्य (वि०) [हस्त + यत्] १ हाथ में सबध रम्भा
वाला २ हाथ से किया गया ३ हाथ में दिया हुआ ।
हस्त्यम् [ह + हन् + क्] एक प्रकार का शानक विष ।
हस्त्य (पु०) [ह + हा + क्तिप्] एक गन्धर्वविशेष तु०
हाहा ।

हा (अव्य०) [हा + का] १ शोक, उदासी, निरुद्धा वा
प्रकट करने वाला अव्यय, आह, हाय, अरे—हा प्रिये
जानकि—उत्तर० ३, हा हा देवि स्पृष्टति हृदय—उत्तर०
३१३८, हा पितः क्वापि, हे मुञ्च—भट्टि० ११११, हा
कसै मालति क्वापि—मा० १० भाषि (इस अर्थ में
'हा' प्रायः कर्म० के साथ प्रयुक्त होता है हा
कुष्माण्डकम्—सिद्धा०) २. आश्चर्य—हा कथं महाराज-
वचनस्य बर्चसा—प्रियसखी मे कोसल्या—उत्तर० ४
३. ओष वा शिङ्गी ।

हा (बुद्धि०) भा० जिहीवे, हान, कर्मवा० हायने, दृष्ट्वा०
जिहायसे १. जाना, हिलना-बुलना—जिहीषा
विश्रान्ता स्पृष्टमिह अवदुःखान्तरसम्—हृष० २८,
कि० १३१३, नवी० ११९८ २. प्राप्त करना, हासिल
करना, कृ—, १. ऊपर की ओर जाना, (सभी अर्थों
में) उठना—वही रचः पारिवर्तुम्बिहीते—रघु०

१३१४, आभिर्भूतामुरागाः क्षणमुद्यगिरेरब्जिह्वानस्य
मानो मुद्रा० ४१२१, नौ० २२१४५, ५५, उज्जिहीषे
महाराज त्व प्रधातो न कि पुनः भट्टि० १८१७,
'तुम क्यों नहीं उठने हो अबर्त्तु जीवित होते हो'
कोलाहली लोकस्योदजिहीत दश० 'लोगों से एक
शोर उठा' २. उड़ा होना, चले जाना उज्जिह्वान-
जीविता कराकी नानुकम्पे भा० १० ३ उठाना
—गिरसा गुपमज्जिहीने—कात्या० ४ चठाना, (भीने)
उठाना, मिहोडना—भट्टि० ३१४७, उप—, नीचे आना,
उतरना—निजोडमोउजासयितु जगद्गुहाम्पाजिहीषा न
महीतल यदि शि० ११२१, सभ्, जाना, पहुँचना,
उपभोग करना—जनता समहास्त मुद्रम् नवी०
११५४ ।

११ (अदा० पर० जहानि हीन) १ छाड़ना त्यागना
परिहार करना,—छोड़ देना तजना तिलाजलि देना,
पदत्याग करना मूढ जहोहि धनगमत्पणा कुडनुबुद्धे
मनसि वित्त्याम् मा० १ सा स्त्रीधर्मभावाद्दसहा
मरस्य त्योर्द्वयोरेकतर जहानि मुद्रा० ४११३ रघु०
५१३२, ८१५२, १२१४ १४६१, ८७, १५१५,
श० ४११३, भग० २१५० भट्टि० ३१५२, ५१५२,
१०१७१, ४०१०, मेघ० ४९, ६०, भाषि० २११२९,
श्रुतु० ११३८ २ पदत्याग करना जन्मे दना ३ गिरने
देना ४ भुल जाना, उलेश करना, अवहेलना करना
५ बचना बिकरना कम० (हीयने) १ छोड़ दिया
जाना, कि० १-१२२ २ निकाल दिया जाना
विन्या किया जाना लुप्त होना (रघु०) या अपा०
मे भाष्य) विष्णुाक्षा जह प्राप्ते भट्टि० १४१५,
जनयित्वा मुन तस्य बाणधारा पावन मनु० ३१७
५१६१ ११२११ ३ बम लाना धार हो जाना
प्राय परि० के साथ ४ करना, बम होना, मुर्झना
छाण होना आल० मे भी) क्षय का प्राप्त होना
प्रबुद्धो हीयत अन् समुद्रोपि तथाविध—रघु०
१३१७, हि० प्र० ४२ ५ (जैसे मुकदमे में) हार
जाना भगवन्पुष्पस्त हीयते व्यवहारत—याज्ञ०
२१९६ छूट जाना, भुल जाना ७ कमजोर होना
प्रेर० (हायवति ने) १. छुड़वाना, परित्यक्त
कराना २ अवहेलना करना, बूझना, अनुष्ठान में डेर
करना शि० १३१३, मनु० ३१७१, ४२१, याज्ञ०
११२२१, इच्छा० (जिहायति) छोड़ने की इच्छा
करना, अथ, छोड़ना, त्यागना, तज देना बिलालप
स बाणधारा सहस्रामप्यहाय बीरताम—रघु० ८१६३
अप—, छोड़ना, त्यागना, अथ, छोड़ना विन्यत
होना, परि, १, छोड़ना, त्यागना, छोड़ कर चल
देना २. भूल जाना, अवहेलना करना—यथोक्तायमि
कर्मणि परिहाय—मनु० १२१९२, (कर्मवा०) १. अस्त

होना, कम होना—आर्यस्य बुधित्वप्रयोगतया न किमपि परिहास्यते—श० १२. बाटया होना प्रोज-
नितयना न परिहीयते शब्दा विष्क० ३, मालवि०
२, प्र० १. छोडना, त्यागना, परित्यक्त करना, तिला-
जलि देना प्रजहाति यदा कामान्—भग० २।५५
३९, मोहमेनो प्रहास्यते—राम० २ जाई देना चेंबना,
डाल देना—प्रजह् शुलपट्टिधान्—भट्टि० १४।२३, वि-
छोडना, परित्यक्त करना, त्यागना, छाड देना विहाय
लक्ष्मीपतिलक्ष्म कामुकं जटाघर मन मुहुषोह पावकम्
कि० १।४८, मेघ० ६१, रघु० २।६० ५।६३ ७०
६।३, १२।१०२, १५।८८, ६९, कु० २१, (प्रे०)
पुरस्कार देना।

हाकर [वि०] विधाया पीडाया वा अग राति हा + अङ्
रा + क एव बडा मछली।

हाटक (वि०) (स्त्री०) (नौ) [हाटक + अण्] सुनहरा
—कम् माना। सम० गिरि सुमेरु पर्वत।

हावम् [हा करने वल्] गतिभ्रमिक, मजदूरी, माडा।

हावम् [हा + वल्] १ छाड़ना, त्यागना, हानि, असफलता
२ बच निकलना ३ पराक्रम, बल।

हाति (स्त्री०) [हा + क्तिन्, तस्य ति] १ परिचाय,
तिलाजलि २ हानि, असफलता, अनुपस्थिति, अस्मिन्व
भवचित् स्थलान्धकारविरहेर्ज्ञान काञ्चनबहानि
—वाच्य० १, इसमें काव्य की हानि नहीं ३ हानि,
नुकसान, क्षति—वासादगलितमिषयेन का हानि
करिष्या भवन् सुभा० का ना हानि मध०
४ न्यूनता, कमी यथा हानि त्रयप्राप्ता तथा
वृद्धि त्रयमाणा हरि०, याज्ञ० २।००३, ५६४
५ अवहनना, मूलना भग प्रोक्षा कर्त्य
६ नष्ट होना बर्बाद होना हानि आहानि रघु०
१३।१५।

हाफिका (स्त्री०) अमृदाई ज्वा।

हावकः नम् [हा + वल्] वयं न. १ एक प्रकार का
बावल २ दाया, जवाला।

हारः [हृ + घञ्] १ लोहाना, हजाना, पकडना २ पहुँ-
चाना ३ अपकषण, अलगव ४ बाहक, हुकामरा
५ मानियों की माला और हारोय हाणिशांतिना
मुठनि स्तनमण्डले अम० १००, पाण्डुराज्यसमापि-
तलम्बहार रघु० ६।६० ५।५२, ६।१६, मेघ० ६३
७।५० १।४, २।१८ ६ सप्राप्त, यद्ध ७ (गणि० में)
किसी भिन्न का नीचे का अंश ८ भाजक। सम०

आवलिः ली (स्त्री०) मोतियों की लड़ी—तरुणी-
स्तन एव शोभते मणिहारवलिारामणीयकम् न०
२।४४, हारावलीतरलकाञ्चितकाञ्चिदाम—गीत० ११,
—मुष्टि (मि) का माला का दाया या हार का मोती
रघु० ५।१०, वल्लिः हार, मोतियों की लड़ी—वचति-

पुष्पकुशवंशवर्तहारिवादिन्—अनु० २।२५, १।८,
—हारा एक प्रकार का लालचूरी रत्न का चमू।

हारकः [हृ + क्त] १. चोर, लुटेरा—वाङ्म० ३।२१५

२ ठग, धूर्त ३ मोतियों की लड़ी ४ (गणि० में)

भाजक ५ एक प्रकार की गद्य रचना।

हारि (वि०) [हृ + णिच् + इन्] आकषक, मोहक, मुच-
कर, मनोहर, रिः (स्त्री०) १ पगजय २ केश
में हार ३ यात्रियों का समूह, शार्पवाह। सम०—कण्डः
कायल।

हारिणिकः [हृ + णिच् + ठक्] हरिणों को पकड़ने वाला,
शिकारी।

हारिण (भू० क० क०) [हृ + णिच् + क्त] १ हरण कराया
हुआ, पकड़ाया हुआ २ उपहार स्वकप दिया गया,
प्रस्तुत किया गया ३ भाकुष्ट, तः १ हरा रत्न
२ एक प्रकार का कबूतर।

हारिण (वि०) (स्त्री०) नौ) [हारा अन्त्यम् इति,
हृ + णिन् वा] १ के जाने वाला, पहुँचाने वाला,
दाने वाला २ लूटने वाला हरण करने वाला—वाजि-
कुजराणा च हारिण वाङ्म० २।२३३, ३।२०८
३ पकड लेने वाला बाधा पहुँचाने वाला, अनु०
१०।२८ ४ प्राप्त करने वाला, उपलब्ध करने वाला
५ आकषक मोहक, मुचकर, आह्लादकर, आनन्दप्रद
तत्त्वामि प्रतीरागेण हारिणा प्रमत्त हतः—श० १।५,
शि० १०।१३, ६९, विष्टपहारिणि हरी—भर्तृ०
२।२९ ६ जाने बचने वाला, अवगम्य होने वाला
७ हार पारण करने वाला।

हारिण [हारिण + क्त] १ पीना रत्न २ कदम का बूझ।

हारिण [हृ + णिच् + इन्] १ एक प्रकार का कबूतर
रघु० ४६ २ धर्म ठग ३ एक स्मृतिकार का
नाम—वाङ्म० १।४।

हारव [हृ + ण्यन्] १ स्नेह, प्रेम
अमरगुण्येन जनस्य जन्तूना न जातहारदेन न विविधा-
दर कि० १।३३ शि० १।६९, विष्क० ५।१०
२ कृपा, मुकुमारता ३ इच्छासक्ति ४ अविप्राय,
अपे।

हार्य (वि०) [हृ + ण्यन्] १ हरण किये जाने योग्य, बोधे
जाने योग्य ? महन किये जाने योग्य, के जाये जाने
योग्य—यद्वया वारणावहारिया कु० ५।७० ३ अप-
हरण किये जाने योग्य छाने जाने योग्य—रघु०
३।६३ ४ विस्थापित होने योग्य, (हुवा बादि के
द्वारा) के जाये जाने योग्य रघु० १६।४३ ५ (अपने
सकप से) बलायमान होने योग्य कु० ५।८ ६ उप-
लब्ध किये जाने योग्य, जीते जाने योग्य, भाकुष्ट
किये जाने योग्य, विवित वा अवापित किये जाने
योग्य बहसि हि वनहार्य पुष्पधूर्त वरीरव—मृच०

१।३१, वृ० ५।५३, मनु० ७।२१७ 7. पकड़े जाने
 दोष्य, कटे जाने दोष्य - मनु० ८।४१७, -कैः 1. सपि
 2. निरीतक वा बड़ेही का वृक्ष 3. (पचि० में)
 भाव्य ।

हालः [हृत् + अल्पस्य अण्, हल एव वा अण्] 1 हाल
 2. बकराम का नाम 3. शास्त्रिणाह्न का नाम । तम०
 -अण् (५०) बकराम का विशेषण ।

हालकः [हाल + कन्] पीले भूरे रंग का पीड़ा ।

हाल (का) हालम् [=हालाहल, पूषो०] एक प्रकार का
 वातक विष जो समुद्रमयन के परिणाम स्वल्प मिला
 था । (अत्यन्त विषाक्त होने के कारण यह प्रत्येक
 वस्तु को मरम करने लगा, इसलिये इसे विष जी ने
 पी लिया) अहमेव युव सुधावसानामिति हाहाहल
 मास्म तात इत्य्; 1 ननु सन्ति मन्वावसानि भूयो
 भवन्तेऽस्मिन् बचनानि कुर्वन्नामम्—सुभा० 2 (अतः
 वातक विष, या जहूर, दे० भाषि० १।१५, २।७३,
 पञ्च० १।१८३, ('हाहाहल' और 'हालहाल' भी लिखा
 जाता है) ।

हालहली, हालहा [हालाहल + लीप्, हल् + अण् + टाप्]
 सारा, -मरिटा-ह्रस्वा हाहाममिमतरसा रेवतीलोचना-
 न्नाम् - मेघ० ४९, पञ्च० १।५८, शि० १०।२१ ।

हालिकः [हलेन वनति हलः प्रहृणमस्य तत्संबं वा ठक्
 ठञ् वा] 1. हलबाजा, किसान 2 जो हल चलाये
 (जैसे कि हल में जुता बैल) 3 जो हल के द्वारा
 मृदा करता है ।

हालिकी [हल् + चित् + लीप्] एक प्रकार की बड़ी
 छिन्नकली ।

हाली [हल् + अण् + लीप्] छोटी वाली ।

हालुः [हल् + उण्] दति ।

हावः [ह्वे भावे अण् नि० तम्र०, हुकरणे अण् वा]
 1. बुलावा, आमन्त्रण 2. विद्यो की मन्त्रेबाजी जो
 पुष्पा की रसात्मक भावनाओं को उत्तेजित करती
 है (मेघ की) रमरेली, मधुरभाषण हावहार हसित
 वचनामा कीचल दुषि विकारविशेषा—शि० १०।१३,
 अनु सपय ननुपु सहावर्ष—मट्टि० ३।४३, (उज्ज-
 लमयि ने हाव की परिभाषा निम्नांकित की है
 —दीवारेवकसंयुक्ती भूनेवादिविकासकृद् । भाषा-
 दीप्त् प्रकाशो यः स हाव इति कथ्यते ॥ दे० सा०
 ६० १२७ भी ।

हावः [ह्व + अण्] 1. ठहाका, हंसी, मुस्काराहट भावो
 हावः-अणम् १।२२ 2. हृष्य, सुखी, आनंद 3. हास्य-
 भन्ति, हास्यरस, -दे० सा० ६० २०७ 4. व्यत्यपूर्ण
 हंसी रणु० १२।३६ 5. लज्जा, विकसित होना,
 फूलना (कवच भादि का)—कुलानि सामर्थ्यवेव तेन
 शरीरवर्धनी त्यक्तपद्मावः—मट्टि० २।३ ।

हासिका [ह्व + अण् + टाप्, हत्वम्] 1. जड़हाव 2. सुखी,
 आनंद ।

हास्य (वि०) [ह्व + अण्] हसने के योग्य, हास्यास्पद,
 रणु० २।४३, -स्वम् 1. हसी बाज० १।८५ 2. सुखी,
 मनोरंजन, क्रीडा मनु० १।२२७ 3 मजाक, प्रमोद
 4 व्यंग्य, धृष्टिलगी. ठट्ठा, -स्वः काव्य में दक्षित
 हास्यास, परिभाषा-विभूताकाराव्येष्टैष्टेदे कुहुका-
 जुवेत् । हास्यो हासस्याविभाव ('हासो हास्यस्या-
 विभाव' के स्थान पर) इवेन प्रथमदेवन भा० ६०
 २२८ । तम० आस्यव्य हसी की पीडा, हसी उठाने
 की वस्तु, -पद्यी, भागे. लिखनी, हिलगी—कुड्ड-
 नीतिस्त्रिभुवनजयो हास्यमार्गं दशाम्य विक्म० १८।
 १०७, रसः हमो या आमोदायक रस दे० ऊपर
 'हास्य' ।

हास्तिः [हस्तिन् + ठक्] महाबल, या गजारोही, कम्
 हाथियों का समूह शि० ५।३० ।

हास्तिनम् [हस्तिना नृपेण निर्बुधम् नगरम्-हस्तिन् + अण्]
 हस्तिनापुर नगर का नाम ।

हाहा (प०) [हा इति शब्द जहाति-हा + हा + क्विप्]
 एक गन्धर्व का नाम—(अथ०) पीडा, शाक या
 आयुधों का प्रकट करने वाला उद्गार (यह क्वचल
 'हा' शब्द है, केवल बल देने के लिए इसकी 'द्वि'व
 कर दिया गया है) । मध० -कावः 1 शाक, बिलाप,
 रोना-धोना 2 मृदा का क्षोर, रकः 'हा हा' की ध्वनि ।

हि (अथ०) (इसका प्रयोग वाक्य के आरम्भ में कभी
 नहीं होता) इसके अर्थ निम्नांकित हैंः 1 इसलिये
 कि, क्योंकि (तर्कसंगत युक्ति का निर्देश करना)
 -अग्निनिहास्ति घृमा हि दूषयते गण०, रणु० ५।१०
 2 निस्तन्देह, निश्चय ही देवप्रयागप्रधान हि
 नाटयशास्त्रम्—मालवि० १, न हि कर्माली दृष्टवा
 प्राहमयेने मरुज्ज्व मालवि० ३ 3 उदाहरणस्व-
 रूप, जैसा कि सुविदिन है प्रजानामेव भूयर्थ स ताम्यो
 बलिमग्रहीन् । सहस्रगुणमन्त्रप्रदाने हि रस रवि
 रणु० १।१८ 4 केवल, अकेला (किसी बिचार पर
 बल देने के लिए) मूढो हि मन्त्रेनायास्यने का०
 १५५ 5 कमी कमी यह केवल पूरक की भाँति ही
 प्रयुक्त होता है ।

हि (स्वा० पर० द्वितीया, क्त-प्रेर० हाययति, इच्छा०
 विधीयति) 1. भेजना, उकसाना 2. हाज देना,
 फेंकना, (तीर), चलाना, (बन्दूक) शायना गदा
 शक्तिता विधेय - मट्टि० १५।३६ 3 उन्मेषित करना,
 भटकाना, उकसाना, 4. उन्मत्त करना, भागे बढ़ाना
 5 तृप्त करना, प्रसन्न करना, उल्लसित करना
 6. वामा, प्रवर्तित करना, प्र , 1. भेज देना, डकेलना
 2. फेंकना, (तीर) चलाना, (बन्दूक) शाय देना

—विनाशासत्य वृक्षस्य रजस्तस्यं यदोपक । प्रविचाय
—रघु० १५।२१, भट्टि० १५।१२१ ३ अंजना प्रेषित
करना, मा० १, रघु० ८।७९ ११। ४९, १२।८६,
भट्टि० १५।१०४ ।

हिम् (स्वा० वृषा० पर० चुरा० उभ०) हिंसति हिन्ति,
हिंसयति ते, हिंसि १ प्रहार करना आघात
करना २ बीट पहुँचाना क्षति पहुँचाना नुकसान
पहुँचाना ३ कष्ट देना मत्ताप देना—मा० २।१
४ मार डालना हत्या करना बिल्कुल नष्ट कर देना
क्षति पहुँचाना या हिन्ति उत्त० ५।२१
रघु० ८।४५ भय० १३।१८ भट्टि० ६।३८ १६।७
१५।३८ ।

हिंसक (वि०) [हिम् + क्तृ] हानिकर अनिष्टकर
क्षति- १ लखार जानवर शिकारी जानवर
२ शत्रु ३ अवयवेद में निपुण बाह्यज ।

हिंसनम्, ना [हिम् + न्युट] प्रहार करना चाट मारना
घष करना भन्० २।१७७, १०।४८ याज्ञ०
१।२३ ।

हिंसा [हिम् + अ + टाप्] १ क्षति उत्पात बुराई, नुक
सान, बीट (यह तीन प्रकार की मानी जाती है
—कायिक, वाचिक और मानसिक) अहिंसा
परमो धर्म २ घष करना हत्या करना, विध्वंस
—रघु० ५।५७, याज्ञ० ३।११३ भन्० १०।६३
३ लुटना, डाका डालना । सम० आत्मक (वि०)
हानिकर, विनाशकारी, कर्मन् (नपु०) १ कोई भी
हानिकर या क्षति पहुँचाने वाला कृप्य २ शत्रु व
नाश करने में प्रयुक्त जात्रु, अभिचार प्राणिन्
अनिष्टकर जन् रत (वि०) उत्पात में समान
क्षति उत्पात करने पर तुल्य हुआ समुद्रुच
(वि०) क्षति से उत्पन्न ।

हिंसाक [हिंसा + आक] १ बाघ, चीता २ कोई भी
अनिष्टकर जन्तु ।

हिंसाकृ (वि०) [हिंसा + कृ] १ हानिकर उत्पातो
चाट पहुँचाने वाला २ घातक (पु०) उत्पातो या
जंगली कुत्ता ।

हिंसाकृ (वि०) [हिंसा + कृ] उपद्रवी या जंगली
कुत्ता ।

हिंसोः [हिम् + ईर्न्] १ बाघ २ पक्षी ३ उपद्रवी
व्यक्ति ।

हिंस्य (वि०) [हिम् + ण्यत्] जो क्षतिग्रस्त किया जा
सके या मारा जा सके रघु० २।५७, भन्०
५।४१ ।

हिंस [हिम् + र्] १ हानिकर अनिष्टकर,
उपद्रवी, पीडाकर, घातक भन्० १।८०, १२।५६
२ घषकर ३ क्रूर, भीषण बर्बर क्षः १ भीषण

जन्तु, शिकारी जानवर, —रघु० २।२७ २ विनाशक
३ शिव ४ भीम । सम०—कृष्णः शिकारी जानवर,
—कर्मन् १. पित्रार २ दुर्गविनाशपूर्ण अभिप्रायो के
लिए प्रयुक्त होने वाला अभिचारमन् ।

हिंसकृ १ (स्वा० उभ०) हिंसकनि ते हिंसिन् १ अस्पष्ट
उच्चारण करना २ हिंसकी सेना ।

१। (चुरा० वा०) हिंसयते चाट पहुँचाना क्षतिग्रस्त
करना, घष करना ।

हिंसका [हिंसकृ + अ + टाप्] १ अस्पष्ट ध्वनि
२ हिंसकी ।

हिंसकार [हिम् इत्यस्य कार] १ हिम् की मन्त ध्वनि
करना, हुकार करना २ बाघ ।

हिंसन् (पु०, नपु०) [हिम् गच्छति - गम् + ण् नि०]
१ हीन का पीषा २ इस पीषे में तैयार किया गया
पदार्थ जो घर में साधपदार्थों में छीक के लिए
प्रयुक्त होता है । सम०—विद्युत् १ हीन के वृक्ष का
गोद के रूप में रम २ नीम का पेड़, वृक्ष इन्द्री का
वृक्ष ।

हिंसगुल. } [हिंसन् + गु + क (कि हु वा)]
हिंसगुलि } ईगुर, निगुर ।

हिंसगुल (पु०, नपु०)
हिंसगीर (पु०) हाथी के पैरों को बाँधने की बेड़ी या
रस्सी ।

हिंसिष्णु (पु०) वह राक्षस जिसे भीम ने मारा था, था
हिंसिष्णु की बहुत जितने भीम से विवाह कर लिय
॥ सम०—विन्द, विन्दुवन्, विन्द, —रिपु (पु०)
भीम के विशेषण ।

हिंस्य (स्वा० वा०) हिंसते, हिंसित) जाना, घूमना, इधर
उधर फिरना, भा घूमना, या इधर-उधर फिरना
—म० २ ।

हिंसनम् [हिंस + न्युट] १ घूमना इधर-उधर फिरना
२ सभाम ३ लम्पन ।

हिंसिक [हिंस + इन् हिंस + कन्] ज्योतिषी ।

हिंसि (बी) व [हिंस + ईर्न् (इर्न्)] १ समुद्रका
२ पुरुष, मद ३ बैगन ।

हिंसि [हिम् इन् + डीप्] दगो ।

हिंस [हिम् + र्] ना [हि] क्षत १ रखा हुआ डाला
हुआ पड़ा हुआ २ घामा हुआ लिय हुआ ३ उप-
युक्त याग्य समुचिन अच्छा (न० के साथ) —मोक्षो
नित वाहितम् ४ उपयगी साधनायक ५ हितकारी,
लाभप्रद संपूर्ण, स्वास्थ्यवर्धक (सब्ज या भोजन
आदि) हित मनोहारि व दुलभ वस्त्र—कि० १।४,
१६।६३ ६ मिश्रवत्, कृपावत् स्नेही, सहृदय (शाय
अभि० के साथ) त मित्र, परोपकारी, मित्र वैसा
परायणवर्ता—हिंसात्र व समुद्रुते व किमम्

—कि० ११५, हि० ११३०.—तम् १. उपकार, लाभ, फायदा २. कोई भी उपयुक्त या समुचित बात ३. कल्याण, कुशल, भोम ४. सम०—अनुभवविष्णु (वि०) कल्याणप्रद, —अन्वेषिन्, —अविन् कुशलाभिलाषी, —इच्छा सविच्छा, भगलकामया, —अस्तिः भारोन्व-
वर्षक निदेश, सत्परायण, नेक सलाह, —उपदेशः हितकर उपदेश, सत्परायण, नेक सलाह, —एविन् हितेषु, भला चाहने वाला, परोपकारी, —अर (वि०) सदा या कृपापूर्ण कार्य करने वाला, मित्र-सा व्यवहार करने वाला, अनुकूल, —काय (वि०) हितेषु, भगलाकाक्षी, —काय्या दूसरे की भगलकामना, सविच्छा, कारिन्
—कृत (प०) परोपकारी, —अनी (प०) गुणधर
—वृद्धि (वि०) मित्र-से भग वाला, सद्भावनापूर्ण
—वाक्यम् मैत्रीपूर्ण परामर्श, —वाविन् (प०) सत्परायण देने वाला ।

हितकः [हित + क] १ बच्चा २ किसी पक्ष का शावक ।
हिताकः [हीनस्त्वो ब्रह्मात् - पूर्वा०] एक प्रकार का अजूर ।

हिन्दोलः [हिन्दोल + चञ्चु पूर्व०] १ हिंदोल, झूला २ आबण के शकल पक्ष में दोमोन्मय के अवसर पर कृष्ण भगवान् की मूर्तियों को ल आने वाला हिंदोल, या दोलोत्सव ।

हिन्दोलकः, हिन्दोला [हिन्दोल + कन् टाप् वा] झूला, हिंदोला ।

हित (वि०) [हि + मक्] ठहा, जोनल, सदा, नुसारयुक्त कोसीला, —मः १ जाड़े की मौसम, सदा ऋतु २ चंद्रमा ३ हिमालय पर्वत ४ चन्दन का पेड़ ५ कपूर, मम् कुहरा, पाला रघु० ११४६, ११०५, कु० ५११९
२. बर्फ, पाला—कु० ११३, ११, रघु० ११०८, १५१
६६, १६१४४, कि० ५११२ ३ सर्दी, ठहर ४ कमल ५ ताजा मक्कन, ६ मोती ७ रात ८ चन्दन की लकड़ी । सम० अजुः १ चन्द्रमा, —मेघ० ८९, रघु० ५११५, ६१४७, १४१८०, हि० २१४९ २ कपूर
—अविषयम् चांदी, अचलः—अग्नि हिमालय पहाड़
—कु० ११५४ रघु० ४१३०, १४१३३, १४, तमबा १ पार्वती २. गंगा, अजम्बु—अजम्बु (नप०)
१ चीनल जल २ भोम रघु० ५१७०, —अजिल-
छीनल वायु, —अजम्बु कमल, —अरातिः १ आग २. सूर्य, —आगवः जाड़े का मौसम या मर्द ऋतु
—अर्तिः (वि०) पाले में ठिठुरा हुआ, ठह में जमा हुआ, —आगवः हिमालय पहाड़—कु० १११, कुला पार्वती का विशेषण - आहुः—आहुयः कपूर, उज्ज-
वल्गमा, —अरः १. बाँध—मूर्ति न वाः हितकरकरनेन
—नील० ७ २. कपूर, कुदः १ जाड़े की ऋतु २ हिमालय पहाड़, —अर्तिः हिमालय पहाड़, —अः बाँध,

—अः मैनाक पर्वत, —आ १. खिरली का पेड़ २. पार्वती, —सैलम् एक प्रकार की कपूर की महतुन, वीरचितः चन्द्रमा—कि० ११२९—कुविषम् अति ठह से कष्ट-
दायक दिन, ठह और बुरा मौसम, —कुतिः चन्द्रमा, —बृह (प०) सूर्य, —अजस्त (वि०) पाले से मारा हुआ, कुतरा हुआ वा नष्ट हुआ, प्रस्थः हिमालय पहाड़,
—रश्मि (प०) बाँध, —आलका कपूर, —अर्ति (वि०) बर्फ की भाँति ठहा, अलः हिमालय पहाड़, —सहति (स्त्री०) बर्फ का ढेर, अरम्बु बर्फ की झील, ठहा पानी मा० ११३१. हासक दलदल में होने वाला लज्ज का पेड़ ।

हिमवत् (वि०) [हिम + मनुप्] हिममय, बर्फीला, कुहरा से युक्त (प०) हिमालय पहाड़—रघु० ५१७९, विक्रम० ५१२२ । सम० कुलि हिमालय पर्वत की बाटो, —पुरम्ब हिमालय की राजधानी आर्षाप्रस्थ का नाम, कु० ६१३३ मुल मैनाक पर्वत, —कुला १ पार्वती २ गंगा ।

हिमाली [महद् हिमम् निम + छीप् ज्ञान्क्] बर्फ का ढेर, हिम का समूह हिममहति भगमुपरि हिमालीनीरमा-
साय जिष्णु कि० ४१३८, भाषि० ११२५ ।

हिरण्य [हृ + झ्युर् नि०] १ सोना २ बीज ३ बीड़ी ।
हिरण्य (वि०) (स्त्री०) बी [हिरण्य + मयट् नि०]
सोने का बना हुआ मुनहरी—हिरण्यवी सोनाया
प्रतिकृति उत्तर० २ रघु० १५१६९, —म बड़ा देवता ।

हिरण्यम् [हिरण्यमेव स्वार्थे यन्] १ सोना, —मनु० २१०४६
११८० २ सोने का पात्र मनु० २१२९ ३ बीड़ा
४. बाँध भी मूल्यवान् पानु ५. झील, सगति ६ बीज,
शुक ७ बीड़ी ८ एक विशेष माप ९ मागस
१० चतुरा १ सम०—कल (वि०) मुनहरी कर्मचारी
पहनने वाला, कलियुः राक्षसों के एक प्रसिद्ध राखा
का नाम (यह वश्यप और दिति का पुत्र था । यह
इतना शक्तिशाली हो गया था कि इसने इन्द्र का
राज्य छीन लिया और तीनों लोकों का पीड़ित करने
लगा । इसने बड़े-बड़े देवताओं की निन्दा की, और
अपने पुत्र प्रह्लाद को, विष्णु का ही परमात्मा भानने
के कारण माना प्रकार के कष्ट दिये, परन्तु बाद में
उस विष्णु ने नरसिंह का अवतार धारण कर रामपुर
में रिया—दे० प्रह्लाद), कोलः सोना और चांदी
(बाह्य आभूषण देने ही या बिना गढ़ा माना चाँदी)

गर्भः १ बड़ा (क्योंकि यह सोने के अने से पैदा
हुआ) २ विष्णु का नाभ ३ सूर्यमहारी धारण करने
वाली आँखा, व (वि०) पुष्पों देने वाला—अनु०
५१२३०, (रः) समृद्ध, (वा) पुष्पी, —नाभः मैनाक
पहाड़, —आहुः १ शिव का विशेषण २ सोन नदी,
—रैतम्ब १. आग—रघु० १८१२५ २ सूर्य ३ शिव

4. चिनक या मवार का पीचा,—चर्मा नदी,—बाहू
सोन बरिया ।

हिरण्यव (वि०) (स्त्री० -धी) [हिरण्य + मयट्, नि०
मलोप] मुनहरी ।

हिष्क (अव्य०) [हि० + उकिक्, षट्] 1 के बिना, के
सिवाय 2. में, बीच में 3 निकट 4 नीचे ।

हिष् (तृदा० पर० मिलति) केलिक्रीड़ा करना, स्वेच्छा से
रमण करना, प्रेमालिखन करना, कामेच्छा प्रकट
करना ।

हिस्तल [हिस् + लक्] एक प्रकार का पक्षी ।

हिस्तोल. [हिस्ताल् + अल्] 1 लहर, झाल 2 हिंडोल
राम 3. धुन, सनक 4 एक रतिबंध ।

हिस्तलाः (स्त्री० व० व०) [इस्तला ण्यो०] मृगशिरा
मक्षक के शिर के पास के पीच छाटे तारे ।

ही (अव्य०) [हि + डी] 1 आश्चर्य प्रकट करने वाला
अव्यय हृतादिचलनिताना ही विचित्रो विपक्ष—सि०
११६४, या ही विषय लक्ष्यमेनोये—यटि० १८।
३९ (इस अर्थ में प्रायः नाटकीय भाषा में इसकी
आवृत्ति होती है) 2 बकावट, उदासी, किञ्चता
तर्क ।

हीन (भू० क० क०) [हा + क्त, नस्य न ईत्स्वम्] 1 छोटा
हुआ, परित्यक्त, त्यागा हुआ 2 रहित, वञ्चित
विपुल, के बिना (कारण० या सहाय में)—गुर्गहीना न
सोमन्ते निर्गन्धा इव किञ्चुका—सुभा०, इसी प्रकार
इव्यं, मति० और उत्साह आदि 3 मुझांसा हुआ,
बर्बाद 4 घुटियून, मदीय, हीनातिगिक्लवायो का
तन्मध्यमवेतत मनु० ३१२४२ 5 बटाया हुआ
6 कम, निम्नतर मनु० २११९४ 7 नीच, अधम,
कमीना, दुष्ट, मः 1 मदीय बवाहू 2 अपराधी
प्रतिवादी (भारद पीच प्रकार के बताता है) अन्य-
वादी किवाहेकी नोपस्वादी निवृत्तर । आहृतप्रणाली
य हीनः पंचविच ल्यूत ॥ । सम० बङ्ग (वि०)
वर्गहीन, विकलान, अपाहृत, लघोच मनु० ४११४१,
वाच० ११२२२, कुल, य (वि०) बाँटे कुल में
कमल, नीच परिवार का,—अहृत (वि०) जो अपने
प्राप्तपुष्टान में अचक्षुष्मा करता है,—जाति (वि०)
1. नीच जाति का 2. जाति से वञ्चित, बिरादरी
के बाहरी, पतित,—वोमिः (स्त्री०) नीची कोटि का
कम्पवायन,— बर्ष (वि०) 1 नीच जाति का 2 बटिया
दरें का,—वादिम् (वि०) 1 मदीय बयान देने वाला
2 अपराधी 3 मृगा, मृग लक्ष्यम् नीच व्यक्तियों से
मेकाग्रता, केला नीच व्यक्तियों की टहल करना ।

हीमालः [हीमस्मान् यो यस्मान्—पूयो०] दमदम में होने वाला
सूत्र का बुल ।

हीरः [हृ + क, वि०] 1 नीप 2 हार 3 तिह 4. नैपथ्य-

चरित' काव्य के रचयिता श्री हर्ष के पिता का नाम,
र, रत्न 1 इन्द्र का बन्ध 2 हीरा, (नैपथ्यचरित
के प्रत्येक सर्ग के अन्तिम श्लोक में जाने वाला) । सम०
—बङ्ग इन्द्र का बन्ध ।

हीरकः [हीर + कन्] हीरा ।

हीरा [हीर + टाप्] 1 लक्ष्मी का विशेषण 2 चिह्नी ।

हीरलम् [ही विस्मय लाति ला + क्] पीकवेय बाण ।

हीही (अव्य०) [ही + ही] आश्चर्य और प्रशोध को प्रकट
करने वाला अव्यय ।

हु (भू०) पर० जुहोति हुम्— कर्मणा० हुयते, प्रेर० हाव-
यतिने इच्छा० जुहुयति 1 (हवनकुंड में वाहुति
के रूप में) प्रभुन करना, किसी देवता के सम्मान में
भेंट दना (कर्म० के साथ), बज्र करना यो मन्त्रपूता
तनुप्यदीधोत् रत्न० १३,४५, अटाघर सन् जुहुवीह
पावकम्—कि० ११४४ हविर्जुहुवि पावके—भट्टि०
२०११, मनु० ३१८७, वाच० ११९९ 2 बज्र का
अनुष्ठान करना 3 जाना ।

हु 1 (स्वा० पर० होति) जाना ।

॥ (तृदा० पर० हुति) लचब करना ।

हुह [हुह + क] 1 भेडा 2 चोरों की दूर रखने के लिए
साँह का कांटा 3. एक प्रकार की बाड़ 4 लोहे का
मुहर ।

हुहः [हुह + कु०] भेडा—अम्बुको हुहकुडेन—पंच० १११६२ ।

हुहुकः [हुह + उक्] बाण की बड़ी के आकार का बग
एक छोटा डोल में—१५११७ 2. एक प्रकार का
पक्षी, दास्यह 3 रवाले की कुडी 4. गले में धर
पुष्प ।

हुहुत् (गु०) [हुह + उति] 1 लौह का रंगना 2. बकरी
का लह ।

हुहु [हुह् + क] 1 व्याध 2 भेडा 3. दुह 4. बाल्यकुर
5 राजल ।

हुत (भू० क० क०) [हु + क्त] 1. आहुति के रूप में
आग में डाला हुआ, कधी भेंट के रूप में होय किया
हुता 2 जिसे आहुति दी जाय—स० ४, रत्न० २७१,
११३१,—तः शिव का नाम,—तन् आहुति, चक्रावा ।
मय०—अग्नि (वि०) जिसने अग्नि में आहुति डाली
है—रत्न० ११६, अक्षयः 1 अग्नि—समीरणी नोदयिता
अवेति आदिस्मते केन हुताग्नस्य—कु० ३१२१,
रत्न० ४१ 2 शिव का नाम 'सहस्रः शिव का
विलक्षण अक्षणी कालान् मास की पूजिया, होलिका,
आक्ष आग—प्रवर्तिनीहृत हुत हुताग्न—रत्न०
२७१—जातवेदत् (वि०) जिसने अग्नि में आहुति
दी है भुक् (प०) आग— नैसर्ग्याचिह्नंभुज इव
चिह्नभूमिपठभुमा चिह्नम् ११९, उत्तर० ५१९,
'शिव अग्नि की पत्नी स्वाहा,—अहः आग—जनाकीर्ण

अथे हुतवहपरीत गृहमिव—स० ५१०, सीतास्त-
पनो हिम हुतवह गीत० ९, मेघ० ४३, ऋतु०
११७, —होमः बहु आह्वय मिलने काय में आहुति
दीर्घ, (नम्) जन्मा हुवा साकम् ।
हुम् (अब्ध०) [हु+इति] (मूल रूप से एक अनुकरणा-
त्मक ध्वनि) निम्नांकित अर्थों को व्यञ्जित करने
वाला अक्षर १ वाद, प्रत्याम्बरण हुं वातम्,
वा—रामो नाम बन्धु हु तद्वत्ता सीतेति हुम्
२ सन्देश—बैरो हु मैरो हुम् ३ स्वीकृति—उत्तर०
५१३५ ४ रोष ५ अवधि ६ अर्चना ७ प्रधानवाचकता
(आहुत ब मन्त्रों में 'हुम्' का सप्र० के साथ प्रयोग
—उदा० ओं कवचाय हुम्,) (हुं हुम् की ध्वनि
करना, बहावना, बिबावना, रोमना तथा अनुहुं
'बहने में 'हुम्' की ध्वनि करना अनुहुकुते जन-
ध्वनि न हि गोमायुस्तानि केसरी—सि० १६१५)
सप्र० कारः—हृतिः (स्त्री०) १ 'हुम्' की ध्वनि
करना—पृष्ठा पुन पुन काला हुंकारेव भाषते
२ वर्षना, ललकार कतहुंकारसिनि—कु० २१०६,
हुंकारेव बन्धुः स हि विष्णानयोहनि स० ३११,
रघु० ७५८, कु० ५१५४ ३ बहावना, रामना ४ सुख
का सुपूरणा ५ बन्धु की टकार ।
हुर्ध्वं (ध्वा० पर० हूर्ध्वति) टेढ़ा होना ।
हुक् (ध्वा० पर० हूर्ध्वसि) १ जाना २ डोपना, छिपाना ।
हुम्बुकी [हुक्+क, हित्त्वन्, डीप् क] हुं के अवसरों पर
महिकाओं द्वारा उच्चारण की जाने वाली एक अस्पष्ट
हर्षध्वनि ।
हुह (हु) (पुं०) [ह्वे+ह, नि०] एक गन्धर्व विशेष ।
हुव् (ध्वा० जा० ह्वते) जाना ।
हुयः (य) [ह्वे+नक्, सम्प्र०, पठे प्यो० मत्वम्]
१ असम्भ, जगली, विदेही—सद्योमुष्णितमलह्व-
चिबकप्रसाध नारयकम् २ एक सोने का सिक्का,
(सम्भवत यह हुओं के देश में प्रचलित था),—वाः
(पुं०, व० व०) एक देश या उसके अधिवासियों
का नाम—ह्वावरौवागो—रघु० ४१५८ ।
हुत (हु० क० कु०) [ह्वे+क्त सप्रसारणम्] आमग्नित,
बुझाया गया, निमग्नित दे० 'ह्वे' ।
हृतिः (स्त्री०) [ह्वे+हित्, सप्र०] १ बुझावा, निमग्न
२ चुनौती ३ नाम—जैसा कि 'हर्हिहृनुहृतिः' में ।
हुम् दे० हुम् ।
हुरक [हु इति रवो यस्व व० स०] गीदह ।
ह्व (पुं०) [=हुह पुं०] गन्धर्व विशेष ।
ह्वा (ध्वा० उ०) हर्ति-मे, हुत, कर्वाह (ह्वये) लेना,
डोना, पहुँचाना, जाने जाने चलना (इस अर्थ में बहुधा
हिचकन प्रयोग)—जवां जाम हुरति सिद्धा०, सर्वशं
के हुर वनप्रतिप्रीतिविलेपितस्य—मेघ० ७, वनु०

५७४ २ उठार के जाना, अपहरण करना, हुरी
पर ले जाना, अट्टि० ५१४७ ३ अपहृत करना, लूटना,
डाका डालना, चुराना—दुर्वाता जारवन्मनो हरिष्य-
नीति वायुया भामि० ४४५५, रघु० १११९, कु०
२१४७, अट्टि० २१३९, मनु० ७४३ ४ विचरन करना,
वञ्चित करना, छीन लेना, अपहरण करना—नुत्तामुक्त्व
हरति पुष्पमनोकहानाम् रघु० ५१६९, ३१५४,
अट्टि० १५११९, मनु० १३३४ ५ ले जाना, प्रती-
कार करना, नष्ट करना तथापि हरते ताप लोका-
नामृगतो यत्र भामि० ११६९ रघु० १५१७४, मेघ०
३१६ आकृष्ट करना मुग्ध करना, जीत लेना, प्रभाव
डालना अधीन करना बलीभूत करना बैनो न कस्य
हरते गतिरङ्गनाया भामि० २११५७ वे भावा हृदय
हर्गति ११०३, तथास्मि गीतरागेन हृदिषा प्रसन्न
हृत य० ११५, मुग्या जहार चतुर्वेध कामिनी
—रघु० ९१६९, १०८३ विक्रम० ४११०, ऋतु०
६१२०, जम० ६१४४, २१९ मनु० ६१५९ ७ उपलब्ध
करना, बहण करना, लेना प्राप्ति करना ततो विस
नृपो हरेत् मनु० ८१३९१ १५३ न हस्तु मुनय-
ताकाम्—दस० ८ रत्नना, अधिकार में करना
भामि० २११६३ ९ परामृत करना, प्रस्त करना
अट्टि० ५१७१, सि० ५१६३ १० बिबाह करना
—मनु० ११९३ ११ बांटना—मेर० (हारयति—ते)
१ उडवा देना, बुझाना, पहुँचाना (कोई चीज किसी
के हाथ निजवाना (करना) के कर्म के साथ)—भूय
भूयेन वा मार हारयति—सिद्धा०, जीमूतेन स्वकुच-
कमयी हारयिष्यन् प्रवृत्तिम्—मेघ० ४, मनु० ८११४
कु० २१३९ २ अपहृत करवाना, नष्ट करवाना,
वञ्चित होना ३ पुरस्कार देना, इच्छा० (जिहीर्षति
—ते) लेने की इच्छा करना । अथ्वा—, ग्लानपद की
पुति करना, अनु , १ नकल करना, मिलना-जुलना
देहलक्षणेन स्मरेण च रामभद्रमनुहरति उत्तर० ४,
इसी प्रकार कि० ११७७ २ (अपने माता पिता के)
मिलना जुलना (इस अर्थ में जा०) दे० वा० ११३
२१ वातिक, अथ—, १ छीन लेना, उड़ा लेना—पद्मा-
सुपीरसहृत्तवर कल्पते विधवाय निष्कम् १११
२ पराक्रम होना, मुझना— बहनमपहरती (गीरीय)
कु० ७१५ ३, लूटना, डाका डालना, चुराना
४ (किसी को) वञ्चित करना, बुर करना, नष्ट
करना एवं च कीर्तिमपहर्तुमुक्त—रघु० ११७४
५ आकृष्ट करके, प्रभावित करना, बोर डालना,
जीत लेना, बलीभूत करना (य) विधवा वतमान-
मपाहारत् रघु० ११७, इसी प्रकार 'अपीह्वे वर
परिभ्रमजगतिवा निद्रया उत्तर० १. (मेर०)
(हुवरों से) अपहरण करवाना—कि० ११३१, अति—

उठार के जाना, हटाना, अन्वय—, जाना (प्रेर०)
 खिलाना, भोजन कराना, जा—, 1 (क) जाना, ले
 जाना पदेष वने तदवस्थवाहृतम् रघु० ११९, १४।
 ७७ (ख) होना, पहुँचाना मनु० १५४ 2 निकट
 जाना, देना अयाचितानुनम्—वाङ्म० ११२५
 3 प्राप्त करना, लेना, हासिल करना मनु० २।
 १८३, ७८०, ८१५१ 4 रखना, धारण करना
 आजहनुस्तम्भग्नौ पृथिव्या स्थलागविन्दश्चियम-
 न्यवस्थाम् कु० ११३ 6 (यज्ञ का) अनुष्ठान
 करना स विश्वजिगमाजह्ने यज्ञ सर्वस्वदक्षिणम्
 रघु० ४८६, १४।३७ 7 बसूल करना बापिस
 लेना 8 कारण बनना, पैदा करना जन्म देना
 9 पहनना, धारण करना 10 आकृष्ट करना
 11 हटाना दूर करना—(प्रेर०) 1 भगवाना 2 विल-
 बाना 3 एकत्र करना, परस्पर मिलाना, उन्—
 1 बचाना, मुक्त करना, उठार करना, छुड़ाना—मा
 तावबुद्धर सुबो दयिताप्रवृत्त्या विक्रम० ४१५
 2 बीचना, बाहर निकालना (शरय) उद्धर्तुमैच्छ-
 त्सलभोद्धतारि रघु० २।३०, ३।६४ 3 उच्छ्वसन
 करना, जड़ से उखाड़ना, उड़ा करना नमयामास
 नृपाननुद्धरन् रघु० ८।९ ४।६६ त्रिदिग्बद्धतदानव-
 कष्टकम् श० ७।३ 4 उठाना, ऊपर को करना, उन्नत
 करना, (हाथ आदि) फैलाना मनु० ४।६२, ५५०
 १।३६३ 5 (फल आदि) तोड़ना 6 अवलोकण करना
 —शि० ३।७५ 7 छटाना व्यवकलन करना 8 छटाना,
 धनना, उद्धृत करना—इव पद्य रायामापादुद्धृतम्
 —(प्रेर०) बाहर निकलवाना रघु० ९।७४,
 उवा 1 बर्षन करना, बयान करना प्रकचन करना
 कहना बोलना, उच्चारण करना उदाजहार ह्यवा-
 त्यजा विर—कि० १।२७, मूच्छ० १।४ वित्तिका
 शेषमुदाहरन्ति—मालवि० २, मा० १ 2 पुकारना
 नाम लेना त्या काविनो मदनपूजिकामुदाहरन्ति
 —विष्णु० ४।११, श्रुतान्वितो बहिरण इत्युदाहृत
 —मट्टि० १।१ 3 सचित्र बटाना, सोबाहरण निक-
 षण करना, उदाहरण वा चित्र उद्धृत करना, त्वम-
 बाह्यमय कथमन्यथा जने शि० १५।२९, उच
 1 के जाना, निकट जाना श० १ 2 प्रस्तुत करना
 प्रदान करना, उपहार देना—नीकारधायकैवमप्याक-
 न्यपहरन्तु—श० २, मानुष्यो बलिमुपहर—मूच्छ० १,
 महावीर० ६।२२, रघु० १४।१९, १६।८०, १९।१२,
 श० ३ 3. (बलि के रूप में) प्रस्तुत करना, उवा—,
 जाना, के जाना, भिक्षु—, 1 बाहर निकालना,
 बीचना, उद्धृत करना—रघु० १४।४२ 2 सब को
 बाहर निकालना मनु० ५।९१, वाङ्म० ३।१५
 3 (शेष की भाँति) दूर करना, करि —, 1 बचाना,

दूर रहना— स्त्रीसैनिकैः परिहर्तुमिच्छन्मग्नदंवे
 नूनपति स मृत कु० ३।७४, मनु० ८।४००, कु०
 ३।४३ 2 त्यागना, परित्यक्त करना, छोड़ना, तिला-
 न्जलि देना—कति न कवितमिदमनुपदमचिर मा परि-
 हर हरिमतिषवचचिरम्—गीत० ९ 3 हटाना, नष्ट
 करना, उठार देना, प्रत्याख्यान करना (आलोप व
 आराप आदि का) ब्रह्मास्य जगतो निमित्त कारण
 प्रकृतिवैयर्थ्यस्य पक्षस्यालोप स्मृतिनिमित्त परिहृत ।
 तर्कनिमित्त इदानीमालोप परिहृत्यते—शा० भा०,
 मेघ० १४, प्र , 1 प्रहार करना, आघात करना,
 पीटना कृतया प्रहरति 'सात भारता ह' रघु० ५।
 ६८, कु० ३।७०, मट्टि० ९।७ 2 बीट पहुँचाना,
 क्षतिग्रस्त करना, बाधक करना (अवि० के साथ)
 —आर्तनामाय व सत्यं न प्रहर्तुमनामसि कु० १।
 ११, रघु० २।६२, ३।५९ ११।८४, १५।३ 3 जाक-
 मच करना, हमला करना 4 फेंकना, डालना, प्रक्षेप
 करना (अवि० या सत्य० के साथ) 5 छाप मारना,
 चि— 1 से जाना पकड़ कर दूर करना 2 हटाना,
 नष्ट करना, 3 गिरने देना (आँख आदि) डालना
 4 (समय) खिलाना 5 मनोरञ्जन करना कामोद-
 प्रमोद में व्यस्त होना, खेलना विहरति हरिश्चि
 सरसवत्सले गीत० १ अन्व , 1 व्यवहार करना,
 व्यवसाय करना 2 करना, आचरण करना, व्यापार
 करना 3 कानून की शरण जाना, कचहरी में नालिश
 करना अर्थपतिव्यवहर्तृयन्त्रीरावादमिषोक्तते—दश०
 अवा , बोधना, कहना, बनलाना, बर्षन करना,
 प्रकचन करना कु० १।१०, ६।२, रघु० ११।८३,
 सन् , 1 जाना, मिला कर बीचना 2 (क)
 खिकोडना सक्षिप्त करना, बीचना रघु० १०।३२,
 (ख) गिरा देना सक्षिप्तमियम्—का० 3 साथ
 साथ लाना, एकत्र करना, सचय करना 4 नष्ट
 करना सहार करना (विप० 'सन्') जम् ममान्तो-
 चितकालान्न सहृदय लोकान् पुत्रोऽपिजिहते रघु०
 १३।६ 5 बापिस लेना, रोकना, पीछे बीचना
 —अभिमुखे मयि सहृतमीक्षितम् श० २।११,
 ६।४ न हि सहृते ज्योत्स्ना चन्द्रश्चाष्टालवेवम
 —हि० १।६१ रघु० ४।१६ १२।१०३, मय० २।
 २८ 6 बमन करना, नियन्त्रण करना, दबाना ओष
 प्रभो सहृतेति यावच्चरि से मन्ना चरन्ति कु०
 ३। 7 बन्ध करना, समाप्त करना—समा—,
 1 लाना, पहुँचाना, होना सर्व एव समाहृति तथा
 छीक सद्दीर्घचि मट्टि० १५।१०७ 2 सहह करना,
 साथ मिलाना, जोड़ना तत्र स्वयंवर समाहृताराजकी-
 कम्—रघु० ५।६२ मट्टि० ८।६३ 3 बीचना, आकृष्ट
 करना 4 नष्ट करना, सहार करना मय० ११।

३२ 5 पूरा करना (यज्ञ आदि) 6 बापिस आना, अपने उचित स्थान को फिर से प्राप्त करना - मनु० ८।३।१९ 7. दमन करना, नियमित करना ।

हृ (हि) जीयते (ना० वा० आ०) 1 कूट होना, 2. लज्जित होना (करण० या सब० के साथ) —न्यायशास्त्रादि विद्वत्प्राप्ति कथन पर्याय धरणी हृणीयते नै० १।१३३, दिवाङ्गि वस्ययुधमूषका या हृणीयते वीरवनी न भूमि मट्टि० २।३८ ।

हृणी (नि) वा [हृणी + यक् + अ + टाप्] 1 निन्दा, भर्त्सना 2 लज्जा 3 कषणा ।

हृन् (वि०) [हृ + विभ्, तुक्] (केवल सधाम के अन्त में) ले, जाने वाला, अपहरण करने वाला, हटाने वाला, उठाकर ले जाने वाला, आकर्षक ।

हृत (भू० क० कृ०) [हृ + क्त] 1. ले जाया गया 2 अपहरण किया गया 3 मुच किया गया 4 स्वीकृत 5. विषक्त, दे० 'हृ' । लभ० - अधिकार (वि०) 'जि न अधिकार छीन लिया गया है, बाहर निकाला हुआ 2. अपने उचित अधिकारों के वित्त किया गया, —उत्तरीय (वि०) जिसका उत्तरीय वस्त्र (बाहर बपटा आदि) छीन लिया गया हो ह्रब्ध, —अन्ध (वि०) वन दौलत से वधित, —सर्वस्व (वि०) जिसका सब कुछ छीन लिया गया हो, बिल्कुल बर्बाद हो गया हो ।

हृतिः (स्त्री०) [हृ + क्तिन्] 1. छीन लेना 2. लूटना, लूटोटना 3. विनाश ।

हृत् (नपु०) [= हृत्, पूर्व० तस्य व, हृदयम् हृदावेषो वा] (इस शब्द के सर्वनामस्वांग के कोई रूप नहीं होते, कर्म० हि० व० के पश्चात् 'हृदय के स्थान में वह रूप आदेश हो जाता है) 1 मन, दिल 2 छाती, दिल, सीना —इनां हृदि व्यावसपातमजितोत् कु० ५।५४ । लभ० आत्मनः कोड़े की छाती के बाल, —अन्धः दिल की अंधता, अन्धता, —अन्ध (वि०) 1. मन में आसीन, लोका हुआ, अधिकल्पित 2. वाला-पीछा गया, —(लभ्) अधिकल्पना, अर्थ, आशय, —वेकः हृदयतल्ल -विक्त, -अन्, दिल, रोग 1. दिल का रोग, दिल की अन्धता 2. जोक, मन, बेवना 3. प्रेम 4. कुमरादि, ललकः (हृत्कलः) 1. हृत्की 2. अक्षयि, जोक, —लेकः (हृत्लेकः) 1. आन, लर्कना 2. दिल की पीड़ा, —लेका (हृत्लेका) जोक, चिन्ता, —लोकः पेट, —लोकः हृदय की अन्धता, बेवना ।

हृत्कम् [हृ + कम्, तुक् आगमः] 1. दिल, आत्मा, मन —हृदये विषयपरिवाहः —कु० ४।२५, इनी प्रकार 'अबोधद्वयः—रघु० १।९, पाषाणहृदय आदि 2. वसः स्थल, सीमा, छाती बाधविग्रहहृदया निपेयूरी—रघु० १।१२९ 3. प्रेम, अनुराग 4. किसी चीज का रस

या आन्तरिक भाग 5. रहस्य विज्ञान, अद्वय, अक्ष० । लभ० —आत्मन् (पु०) शरत्त, —आविष् (वि०) हृदयविदारक, दिल को बीधने वाला . मट्टि० १।७३, —ईशः ईश्वरः पति, (मा, री) 1 पत्नी 2 गृहिणी, कल्पः दिल का कापना, घडकन, घाहिन् (वि०) मनमोहक, खोरः जो दिल को या प्रेम को बुराता है छिद् (वि०) हृदय-विदारक, हृदय को, बीधने वाला, —विष्, —वेहिन् (वि०) हृदय को बीधने वाला —वसिः (स्त्री०) मन का स्वभाव, —स्व (वि०) हृदय स्थित, मन में विराजमान, —स्वानन् छाती, वसःस्थल ।

हृदयकमल (वि०) [हृदय + कम् + लक्, मुप्] 1 हृदय को दहलाने वाला, चर्मस्पर्शी, रोमांचकारी 2 प्रिय, सुन्दर, — मा० १ 3 मन्त्र, आकर्षक, सुखद, शक्तिर —अहो हृदयकमल परिहास—मा० ३, बल्लकी व हृदयकमलम्बना रघु० १९।१३, कु० २।१९ 4. योग्य, सम्बन्धित 5 प्यारा, बल्लभ, जिस का तारा माना गया वचनूते हृदयकमलः सखा कु० ४।२४ ।

हृदयान्, हृदयिक हृदयिन् (वि०) [हृदय + आत्मुप्, ठन्, डीन वा] कामजहृदय वाला, अच्छे दिल वाला, स्नेही ।

हृदि (स्त्री०) क. (पु०) एक यादव राजकुमार ।

हृदित्वम् (वि०) [हृदि + त्वप् + क्तिन्, अक् ल०]

1. हृदय को कूने वाला 2. प्रिय, प्यारा 3. शक्तिर, मनोहर, सुन्दर ।

हृत् (वि०) [हृदि ल्यप्ते नवोक्तत्वात् हृत् + वत्]

1. हासिक, विली, पीतरी 2. जो हृदय को प्रिय लवे, स्निग्ध, प्रिय, मनोहृष्ट, बल्लभ आदि १।१९ 3. शक्तिर, सुखकर, मनोहर मा० ५, रघु० ११। ५८ । लभ० —अन्धः वेक का वेक, —अन्धः कूर्त्त के लब्ध कदा हुआ मोतिवा ।

हृत् (प्रा० दिवा० पर० हृत्ति, हृत्ति, हृत् वा हृत्ति)

1 लुप्त होना, मानवित होना, प्रसन्न होना, हृत्ति होना, वाग वाग होना, हृत्तिमान होना—अक्षितीव स्वात्मानं मत्वा कि कम्प हृत्तिमान—आदि० २।१०५, मट्टि० १।१०५, मय० २।५४ 2 रोमांचित होना, रौनटे मटे होना—हृत्तिस्तनूवहा—दश०, हृत्तिस्त रोमकुंनि —महा० 3 लुप्त होना (कोई अन्य वस्तु—उदा० मित्र का) प्रे० (हृत्ति-स्त्री) प्रसन्न करना, लुप्त करना, प्रसन्नहृत्ते नर जाना, प्र—, 1 प्रसन्न होना, हृत्तिमान होना—न हृत्तिमेत् प्रियं प्राप्य—मय० ५। २०, ११।३५ ३ रौनटे करने होना, (मरीर के बाल) लुप्त होना, वि - , हृत्तिमान करना, प्रसन्न होना, लुप्त होना ।

हृत्ति (भू० क० कृ०) [हृत् + क्त] 1. प्रसन्न, लुप्त,

मान्दित, उल्लसित, आह्लादि, हर्षोन्मत्त 2 पुल-
कित, रोमांचित 3. आश्चर्यान्वित 4. झुका हुआ, चिन्तन
5. निरास 6 ताजा ।

हृषीकण् [हृष् + ईकण्] मान्दित्य । सम० ईक्षः विष्णु
या कृष्ण का विसाधन—भग० १।१५ तथा आगे पीछे
(हृषीकापीन्रियाभ्याहृम्नेषामीशो यतो भवान् । हृषीक-
सस्ततो विष्णोः स्थाना देवेषु केशव—महा०)

हृष्ट (पू० क० कृ०) [हृष् + क्त] प्रसन्न, हर्षयुक्त
(=हृषित) । सम० चित्त चान्त (वि०) मन मे
प्रसन्न, हृदय में खुश, आनन्दित, रोषण (१४०)
(हृष के कारण) रोमांचित, पुलकित, खल (वि०)
प्रसन्नमुख, —संकल्प (वि०) सन्तुष्ट, मुखी हृदय
(वि०) प्रसन्नमना, प्रकृत्य, उल्लसित ।

हृष्टिः (स्त्री०) [हृष् + क्त] 1 आनन्द, उल्लास
हृष, लक्षो 2 चमत् ।

हे (अव्य०) [हा + डे] 1 संबोधनपरक अव्यय (भा,
अरे)—हे कृष्ण, हे यादव हे ममेति भग० ११।४१
हे राजानस्यजत सुकविप्रेमबन्धे विरोधम्—विजय०
१८।१०७ 2 ईर्ष्या, द्वेष, डाह प्रकट करने वाला
अव्यय ।

हेका [=हिक्का, पुषो] हिक्की ।

हेठः [हेठ् + घञ्] 1 प्रकाशन 2 बाधा, अवरोध विरोध
रुकावट 3 क्षति, चोट ।

हेड् [(भ्वा० आ० हेडते) अवज्ञा करना, अपमान करना
तिरस्कार करना ।

ii (भ्वा० पर० हेडति) 1 धरता 2 वाय पहनता ।

हेडः [हेड् + घञ्] अवज्ञा, तिरस्कार । सम० जः
कोष, अप्रसन्नता ।

हेडायुक्कः (पू०) कोढ़ों का व्यापारी ।

हेतिः (पू०, स्त्री०) [हेतु कारणे विनान्त] 1 जन्त्र, ग्रन्थ
—समय विषयो हेतुर्वाचनः—भट्ट० २।४४, रघु० १०।१०
कि० ३।५१, १४।३० 2 आधान, क्षति 3 सूय की
क्रियण 4. प्रकाश, आभा 5. ज्याला ।

हेतुः [हि + तुन्] 1 निमित्त, कारण, उद्देश्य, प्रयोजन
—इति हेतुस्तदुपपत्तेः काव्य० १, मा० १।२३, रघु०
१।१०, केच० २५, श० ३।११ 2 सोत, मूल —स
पिता पितरस्तासा केवल अगमहेतव—रघु० १।१४,
अपने प्राप्तिर्वां को रक्षा करने वाले 3 साधन, उपकरण
4. तर्कयुक्त कारण, अनुमान का कारण, तर्क (पाँच
अर्थों हे युक्त अनुमानप्रक्रिया में द्वितीय अंग) 5 तर्क,
तर्कसाधन 6. कोई भी तर्कयुक्त प्रमाण, या युक्ति
7. साहित्यिक कारण (कुछ विद्वान् इसी को एक अर्थ-
कार भी मानते हैं) हेतुहेतुमता सार्वभौमहेतु-
व्यवस्थे (हेतुमन्, हेतोः कभी कभी हेतो भी किया-
विशेषक के रूप में प्रयुक्त होकर निष्पादित अर्थ

प्रकट करते हैं—'के कारण' 'के निमित्त' 'कार्यिक'।
(मब० के साथ या सामान में प्रयोग शास्त्रविज्ञान-
हेतुना, अव्यय हेतोर्बहु हानुमिच्छन् रघु० २।४७,
विस्मृत कथ्य हेतो—मुद्रा० १।१ आदि) । सम०
—अपेक्षाः हेतु का उल्लेख (पचाशी अनुमान के
रूप में), आभास, वह हेतु या किसी कार्य का
कारण ना न हो, परन्तु हेतु या आभासिक हा, कुतर्क,
(यह पाँच प्रकार का होता है सम्बन्धितार या
अनैकान्तिक, विरुद्ध, असिद्ध, मन्त्रनिषेध और बाधित),
उपलेशः, उपलेशासः कारण देना, तर्क उपस्थित
करना, बाधः तर्कविनाश, शास्त्रार्थः—शास्त्रम् तर्क-
साधन तर्कयुक्त रचना, स्मृति या स्मृति की प्रामाणि-
कता पर प्रदर्शनरूप में कुति मनु० २।११
हेतुमत् (पू०, दि० ब०) कारण और कार्य, आशः
कार्य और कारण में विद्यमान संबंध ।

हेतुक (वि०) [हेतु + क्त] (समास के अन्त में प्रयुक्त
कः 1 कारण, तर्क 2 उपकरण 3 तात्त्विक ।

हेतुता, —स्त्वम् [हेतु + तल् + टाप्, २४ वा] कार्यमता, कारण
की विद्यमानता ।

हेतुमत् (वि०) [हेतु + मत्पु] 1 सकारण 2 कारणयुक्त,
तर्कयुक्त पू० कार्य ।

हेमम् [हि + मन्] साना, म. 1 काले या भूरे रंग का
घोडा 2 सोने का विशेष श्लोक 3 वृक्ष वृह ।

हेमन् (नपु०) [हि + मन्ति] 1 सोना 2 जल 3 बर्फ
4 धनुष 5 कम्पा का फूल । सम०—अङ्ग (वि०)
मुनहरी (म) 1 गरुड 2 सिंह 3 सुमेध पर्वत
3 ब्रह्मा का नाम ४ विष्णु का नाम 6. चम्पक वृक्ष
अङ्गहम् माने का नावृन्द, अहिः सुमेध पर्वत,
अम्भोजम् मुहुरी कमल, —हेमाग्भाजप्रसवि लाल
मानमस्याददान—मेघ० ६२, अम्भोजहम् सुमहरी
कमल—कु० २।४४, —आहुः 1 जगन्नी चम्पक का
पीठा 2 धनुरे का पीठा, —कम्पकः प्रवाल, बूला, —करः,
कर्तुः—कारः कारकः सुमार मनु० १२।६१,
याज्ञ० ३।१६७—किञ्चलकम् नागकेसर का फूल, —कुम्भः
मुनहरी घडा कूटः एक पहाड का नाम श० ७,
केतकी केवड का पीठा जिसके पीले फूल आते
हो, स्वर्ण-केतकी,—लम्बिनी रेणका नामक मन्त्रवृक्ष,
—विहिः सुमेध पर्वत, गौरः अम्भोजवृक्ष,—ऊल
(वि०) सोने से महा हुआ, (अम्) सोने का वक्त्र,
—ज्वालः अग्नि, तारम् तृप्तिया,—गुणः, गुणकः
गुलर, पर्वतः सुमेध पर्वत,—गुणः, गुणकः 1 अम्भोज-
वृक्ष 2 लोधवृक्ष 3 चम्पक वृक्ष, (नपु०) 1. अम्भोज
का फूल 2 सोनी गुलाब का फूल,—ब (ब) लम्,
मोती, माकिम् (पू०) सूय,—पृथ्विका सोनमुहरी,
स्वर्णपृथ्विका,—राशिनी (स्त्री०) हस्ती,—संक्षः विष्णु

का नाम,—**सुहृन्** १. एक सुनहरी चींग २. सुनहरी
कोटी, सारङ्ग तृतीया,—**सुहृन्**—**सुहृन्** एक प्रकार
का हार ।

हेमन्तः—**सम्** [हि + स, मृद आगमः] छः ऋतुओं में से
एक, जाड़े का मौसम (जो मार्गशीर्ष और पौषमास
में आता है) नवप्रवालोद्गमसत्स्वरम्: प्रफुल्ललोध्र
परिपक्वशालिः । विलीनपथः प्रपतत्पुवारो हेमन्तकालः
सम्पागतः प्रिये—**हेतु** ० ४।१ ।

हेमकः [हेम + का + क] १. सुनार २. कसौटी ३ गिरगिट ।
हेम (वि०) [हा + यत्] त्याग करने योग्य ।

हेरम् [हि + रन्] १. एक प्रकार का मुकुट या ताज
२. हल्दी ।

हेरम्भः [हि शिबे रम्भति रम्भ + भञ्, अलुक् स०] १ गणेश
२ भैंसा ३ बीरोद्धत नायक । सन्०—जन्मो पार्वती
(गणेश की माता जी) ।

हेरिक् [हि + रक्, बद् आगमः] भेदिया, गुप्तचर ।

हेम्बन्—ना [हिम् + ह्युद्] अवज्ञा करना, निरादर करना,
तिरस्कार करना, अपमान करना ।

हेमा [हेम् माने डस्य सः] १. तिरस्कार, अन्याय, अपमान
शि० ११।७२ २. कैल, कीडा, प्रेमालिप्त, दे० सा०
६० १२८, दस० २।३२ ३. बुरत की बलबती
इच्छा—**प्रीतिच्छयाप्रतिच्छायां** भारीकां सुरतोत्सवे ।
भुङ्गा रासास्वत्स्वर्गहेमां या परिकीर्तिता ॥ ४. आराम,
सुविधा—**शि० १।१४**, **हेम्बा** आसानी से, बिना किसी
कष्ट या असुविधा के ५. पत्रिका ।

हेमापुष्पः (पुं०) चोंचों का व्यापारी ।

हेमिः [हिम् + इन्] सुर्ष, स्त्री०, कैलिक्रीडा, सुरतक्रीडा,
प्रेमाश्रित्य ।

हेमाक्षः (पुं०) [यह शब्द कदाचित् फ़ारसी या अरबी से
मिला गया है, 'कटभ' शब्द की भाँति इसका प्रयोग
भी कस्तूर, बिस्मूह आदि पषवर्तों आदित्यकारों द्वारा
ही हुआ है] उत्कट इच्छा, तीव्र स्मृति, उत्कण्ठा
—**समिप्रासीनम्** निबिडास्तेयहेमाक्षकोलावेलेच्छाद्-
कानितकम्वा सत्यत राजलक्ष्मीः—**विष्कम् १८।१०१**,
कु० 'हेमाक्षिन्' ।

हेमाक्षक (वि०) [संभवतः इस शब्द का 'हेमाक्ष' से कोई
संबंध नहीं] अत्यंत, तीव्र, उत्कट, प्रबल हेमाक्षस्तु
भुङ्गा रो हाथीभिर्भुविचारकृत—**दश० २।११** ।

हेमाक्षिन् (वि०) [हेमाक्ष + इनि] अत्यंत इच्छुक, उत्कण्ठित
(समान में प्रवीण)—**वाक्ये महतामहो निरुपमप्रदान-**
हेमाक्षिना निःशामास्यमहत्प्रयोगपिबुना वातां विपत्ता-
वधि—कहलूच ।

हेम् (प्रा० आ०) **हेमते**, **हेमित** जोड़े के भाँति हिमहि-
मात्मा, रेंकमा, बहोका ।

हेम्, **हेम्** **हेमिन्** [हि + पञ्, हे + व + दाप्, हे +

+क्त] हिमहिमाहट, रेंक, रवाङ्गसंकीर्तितमन्त्रहेम्:
कि० १६।८ ।

हेमिन् (पुं०) [हेम् + जिनि] घोडा ।

हेहे (अव्य०) [हा हे च - इ० स०] संबोधन परक अव्यय
जिसका उपयोग जोर से आवाज देने या बुलाने में
किया जाता है ।

हे (अव्य०) [हा + हे] संबोधनात्मक अव्यय ।

हेतुक (वि०) (स्त्री० कौ) [हेतु + ठप्] १. कारण
परक, कारण मूलक २ तर्क सबबी, विवेक परक,—**कः**
१. तर्कमूलक हेतुवादी, तार्किक २ भीमासक ३. तर्क
वादी, अनिश्चरवादी, नास्तिक ।

हेम (वि०) (स्त्री० कौ) [हिम (हेम्) + भञ्]
१. शीतल, जाड़े का, जाड़े में होने वाला, ठंडा २. हिम
से उत्पन्न—**भूगालिनीं हेममिषोपरागम्** रघु० १६।
७ ३. सुनहरी, सोने का बना हुआ—**पावेन हेमं विलि-**
लेख पीठम्—रघु० ६।१५, भट्टि० ५।८९, कु० ६।६,
—**भम्** पाला, बोल, **कः** शिब का विशेषण । सय०
— **भुङ्गा**,—**भुङ्गिका** सुनहरी सिक्का ।

हेम्बन् (वि०) (स्त्री०—नी) [हेमन्त एव हेमन्ते भवो वा,
प्रण, तलोपः] १. जाड़े में होने वाला, ठंडा शि०
६।५५, किञ्च १७।१२ २. जाड़े से संबंध रखने वाला
अर्थात् कम्बा (जैसे जाड़े की रातें) शि० ६।७७
३. सर्पों में उष्णता या जाड़े के उपयुक्त—**हेमन्-**
निवसनेः सुलम्बयाः—रघु० १९।४१ ४. सुनहरी,
सोने का बना हुआ,—**कः**। **वाग्वीर्य** का महीना २. जाड़े
की ऋतु (= **हेमन्त**) ।

हेमन्तिक (वि०) [हेमन्ते काले भवः ठप्] १. जाड़े का,
ठंडा २. सर्पों में उत्पन्न होने वाला,—**कम्** एक प्रकार
का चावल ।

हेमक दे० 'हेमन्त' ।

हेमवत (वि०) (स्त्री०—ती) [हिमवतो अदूरमयी वेतः
तस्यैव वा कम्] १. बर्जिना २. हिमाक्ष पर्वत से
निकल कर बहने वाला रघु० १६।४४ ३. हिमाक्ष
पर्वत पर उत्पन्न, पक्का-नोका, स्थिर विश्राम या संबंध
रखने वाला । कु० ६।२३, २।६७, —**सम्** मारतवर्ष,
हिन्दुस्तान इत्यादि ।

हेमवती [हेमवत + वीप्] १. पार्वती का नाम २. मंदा
का नाम ३. एक प्रकार की 'हरद', हरीतकी ४. एक
प्रकार की अर्धवि ५. लन का पीला, अम्ली ६. पूरे
रंग की किल्लियाँ ।

हेमङ्गलीयम् [हो पीयोहात् भवं ह्यङ्गो + च, मि०]
१. पिछले दिन के दूध से बनाया गया ची, तावा
की—**हेमङ्गलीयकाया** बोधवद्भानुपलितताम्—रघु० १।
४५, भट्टि० ५।१२ २. पिछले दिन का मक्कन; तावा

हैरिषः [हिर + ऋ] चोर ।

हैय (पु० व० व०) एक देश और उसके अधिवासियों का नाम, यः 1 ययु के प्रपौत्र का नाम 2 अर्जुन कान्तवीर्य (जिसके एक हथार भुजाएँ थी, और जिसे परशुराम ने मार गिराया था) - बभ्रुवत्सहरणाञ्च हैहयस्त्व च कीर्तिमपहर्नुमुद्यत - रघु० ११।७४ ।

हो (अभ्य०) [हवे + हो, नि] किसी व्यक्ति को बुलाने के लिए प्रयुक्त होने वाला संबोधनात्मक अभ्यय (है, अरे) ।

होहो 1 (स्वा० आ० होहने) उपेक्षा करना, अनादर करना ।

11 (स्वा० पर० होहने) जाना ।

होहः [होह + अण्] बड़ा, ताव ।

होतु (वि०) (स्त्री० श्री) [हु + तृ] यज्ञमान, हवन करने वाला, - वहनि विशिष्टतया हवियाँ च होत्री य० १।१, - (पु०) 1 अतिबद्ध विशेषकर बहु जो यज्ञ में अग्नेय के मन्त्रों का पाठ करना है 2 यज्ञकर्ता रघु० १।६२ ८४, मनु० ११।३६ ।

होत्रम् [हु + ट्] 1 (पी आदि) कोई भी वस्तु जिसकी हवन में आहुति दी जावे 2 हवन में जली हुई सामग्री 3 यज्ञ ।

होत्रा [होत्र + टाप्] 1 यज्ञ 2 स्तुति ।

होत्रोयः [होत्राय हिन होत्रिद वा छ] देवों को उद्देश्य करके आहुति देने वाला ऋत्विक्, - यम् यज्ञमवय ।

होत्रः [हु + मन्] यज्ञानि में पी की आहुति देना, (बाहुणो द्वारा किए जाने वाले दैनिक पंच यज्ञों में से एक त्रिते देवयज्ञ कहते हैं) 2 हवन यज्ञ । सम० अग्निः होम की जाग, - कुम्भम् हवनकुड, - घुरङ्गः यज्ञ का घोड़ा रघु० ३।३८, - धाम्यम् तिल, धूयः होम की अग्नि का घुआ, - भस्मन् (मनु०) हवन की राख, वेला हवन करने का समय य० ४, - शाला यज्ञशाला, यज्ञगृह ।

होत्रक दे० 'होत्र' ।

होत्रिकः [हु + कृन्, मृच् च] 1 ताम्रा हुआ मक्कन पी 2 जल 3 अग्नि ।

होत्रिन् (पु०) [होत्रोऽप्यस्य इति] होम करने वाला, यज्ञमान, यज्ञकर्ता ।

होत्रोच, होत्र्य (वि०) [होम + छ, यत् वा] होम के संबद्ध, आहुति दिए जाने के योग्य, हवन सम्बन्धी, - च्यम् पी ।

होरा [हु + रन् + टाप्] 1 राशि का उदय 2 राशि की अक्षांश का अंश 3 एक घंटा 4 चिह्न, रेखा ।

होराका [हु + बिच्, म लानि -- ला + क - कन् + टाप्] बसन्त ऋतु के आने पर मनाया गया बसन्तोत्सव, फाल्गुन मास की पूर्णिमा से पूर्व के दस दिन, बिचो-

पन तीन या चार दिन (इसी पंच को हम 'होली' कहते हैं) 2 फाल्गुन मास की पूर्णिमा ।

होलिका, होली (स्त्री०) हल्दी का त्योहार, दे० 'हाराका' ।

हो, होहो (अभ्य०) [हवे + डा, नि०] संबोधनात्मक अभ्यय, हो, अरे ओ ।

होत्रम् [होत्रिदम्, अण्] हुता नामक ऋत्विक् का पद ।

होत्र्यम् [होम ध्यञ्] ताम्रा हुआ मक्कन, पी ।

हुन् (अवा० अ० हुन्ते, हुन्त) 1 ले जाना, लूटना, छिपा देना, बहिष्कृत करना अध्वनीष्टाभि आम्नायि यमस्याह्वीष्ट विक्रमम् अट्टि० १५।८८ 2 छिपाना, दबना रोकना - मा० १ ३ किसी से छिपाव करना (मन्त्र० के साथ) - ताम्रा कृष्णाय ऋते - मिष्टा० । अण् - 1 छिपाना, दुराना मनु० ८।५३, रत्न० २ 2 मुकरना, स्वाभाव का इकार करना, किसी से कोई चीज छिपाना गुणाश्रयापह्नुषऽमाकम् अट्टि० ५।६४ अपह्नुवानस्य जनाय यन्नित्राय (अधीरानाम) न० १।८९, नि० १ छिपाना, गुप्त कर देना - अट्टि० १०।३६ 2 किसी से छिपाना, किसी के सामने मुकर जाना (मन्त्र० के साथ) अट्टि० ८।७४ ।

ह्वय् (अभ्य०) [गते अहनि नि०] बीना हुआ कल । सम० - चण् (वि०) जो बल हुआ था ।

ह्वयस्तन (वि०) (स्त्री० नो) [ह्वम् + द्यल्, नुद्] बीते कल से संबद्ध रखने वाला - यथा ह्वयस्तनी वृत्ति । सम० विह्वम् बीना कल, पिछला दिन ।

ह्वयस्त्व (वि०) [ह्वम् + यप्] कल से संबद्ध (बीने हुए) कल का ।

ह्वः [ह्वाय् - अण्, नि०] 1 गहरा मरावर, जल का विस्तृत और गहरा नालाब न० ३।५३ 2 गहरा छिद्र या बिबर नि० ५।२९ 3 प्रकाश की किरण । सम० घृहः मगरसच्छ ।

ह्विनी [ह्व + इन् + डीप्] 1 नदी 2 बिजली ।

ह्वोहो [पीकसन्त स भ्युत्पन्न] कुम्भराशि ।

ह्वत् (स्वा० पर० ह्वति, ह्वसित) 1 शब्द करना 2 छाटा हुआ ।

ह्वत्विक् (पु०) [ह्वत् + इमनिच्, ह्वमादेश] हलकापन, छोटापन, लघुता ।

ह्वत्स्व (वि०) [ह्वत् + क्त् म० अ० ह्वमोयम्, उ० अ० ह्वत्स्वि] 1 लघु अभ्य, घाटा 2 डिगना, कद में छाटा 3 लघु (विप० दोष छन्द नाम्न में), स्वः बीना । सम० अह्व (वि०) डिगना गिट्टा (क) बीना, यन्त्री कुश नामक घाम बंधे छाटा या बनेन कुशनामक घास, - बाहुक (वि०) छाटी भूआआ वाला वृत्ति (वि०) कद में छाटा, डिगना, बीना ।

ह्राप् (स्वा० आ० ह्रावते) 1 शब्द करना 2 दहाड़ना ।
ह्रावः [ह्राप् + घञ्] शोर, आवाज- बुन्धुभीना ह्राव
—कि० १६।८, इसी प्रकार 'बन्धुह्राव' आदि ।

ह्राविष् (वि०) [ह्राप् + णिनि] शब्दावधान, वहाड़ने
वाला ।

ह्राविनी [ह्राविन् + क्त्वा] 1 इन्द्र का बख 2 बिजली
3 नदी 4 शल्लकी नामक वृक्ष ।

ह्रावः [ह्रम् + घञ्] 1 शब्द, कोलाहल 2 घटी, कमी,
क्षय, अवनति, पतन मनु० १।८५, याज्ञ० २।२४९
3 छोटी मस्या ।

ह्रिष्यते दे० 'ह्रिष्यते' महावीर० १।५१ ।

ह्रिषीषा [ह्रिषी + यक् + अ + टाप्] 1 भस्त्रना, निन्दा
2 गर्म, लज्जा 3 दया तु० ह्रिषीषा ।

ह्री (बृहो० पर० जिह्मेति, ह्रीष, ह्रीत) 1 शमीना,
बिनीत होना 2 लज्जित होना (स्वतन्त्र प्रयाग अथवा
अप्रादान म० के साथ) — जिह्मेभ्यश्चुनेषु मरु गुप्तमीप
गन्तुम् श० ७, अन्योन्यस्यापि जिह्मो कि पुन
मह्वामितान्—कि० ११।५८, रघु० १५।४५, १७।३३,
महि० ३।५३, ५।१०२, ५।१३२ — प्रेर० (ह्रिष्यति
ते) शमीना करना, (जाल० से भी) मकीस्तुभ
ह्रिष्यतीव कृष्णम् रघु० ६।४९ ह्रिषिता वि बहवा
नरद्वया — ११।४०, कि वा जात्या स्वाभिने ह्रिषयति
—वि० १८।२३ कि० ११।६६, १३।४१, वेणी०
१।१७ ।

ह्री (स्त्री०) [ह्री + क्त्वा] 1 लज्जा—रतेरपि ह्रीपद-
मादधाना—कु० ३।५७, दारिद्र्याद्भ्रियमेति ह्रीपरि-
यत् प्रभ्रम्यते तेजस मृच्छ० १।१४, रघु० ४।८०
2 शमीनापन, विनय— ह्रीमश्रकण्ठी कथमप्युवाच
कु० ७।८५ । सम० जित, बड (वि०) लज्जा
से अभिभूत या व्याकुल ह्रीमूढाना भवति विफल-
प्रेरणा चूर्णमुष्टि मेघ० ६८, यन्त्रणा लज्जा का
बधन—रघु० ७।६३ ।

ह्रीका [ह्री + क् + टाप्] 1 शमीनापन लज्जाखोला,
मकाच 2 भीकता, डर ।

ह्रीकु (वि०) [ह्री + क् + टाप्] 1 शमीला, विनीत,
सकोचशील 2 भीरु, कुः 1. गमा 2. लाक ।

ह्रीक, ह्रीत (भू० क० क०) [ह्री + क्त, पठे तस्य न.]
1. लज्जित—वेणी० २।११ 2 शमीला, विनीत—ने०
३।५३ ।

ह्रीवेरम्—लम् [ह्रिये लज्जामे वेरम् अङ्गम् अस्य भूदत्वात्,
पयो० वा तस्य ल.] एक प्रकार का गन्ध द्रव्य ।

ह्रैष (स्वा० आ० ह्रैषते) 1 बोधे भी भानि) हिनहिनाना,
रेकना 2 जाना, सरकना ।

ह्रैषा [ह्रैष + अ + टाप्] हिनहिनाहट ।

ह्रम् (स्वा० पर० ह्रमति) बापना ।

ह्रस्तिः (स्त्री०) [ह्राप् + क्तिन्, ह्रस्वता] हर्ष,
प्रसन्नता ।

ह्रम् (स्वा० पर० ह्रमति) शब्द करना ।

ह्राप् (स्वा० आ० ह्रावते, ह्राव, ह्रावति) 1 प्रमत्त
होना, लय होना, शीघ्र होना 2 शब्द करना, आ
प्र , ह्रावित होना, प्रमत्त होना, लय होना ।

ह्राव, ह्रावक. [ह्राप् + घञ्, ष्वल् वा] प्रमत्तता, हर्ष,
उत्साह ।

ह्रावणम् [ह्राप् + ण्युट्] ह्रावित होने की क्रिया, हर्ष, लयी,
प्रमत्तता ।

ह्राविन (वि०) [ह्राप् + णिनि] प्रमत्त होने वाला, लय
होने वाला ।

ह्राविनी दे० 'ह्रादिनी' ।

ह्रस्व (स्वा० पर० ह्रस्वति) 1 जाना, हिलना—बुलना
2 सरसराना, आपना—प्र० (ह्रस्वति—ने, ह्रास्वति
—ने, परन्तु पहला रूप उपसर्गवृत्त) हिलाना, कपकपी
पेदा करना (विशेषत 'वि पूर्वक') ।

ह्रावम् [ह्रै + ण्युट्] 1 आमन्त्रण 2 कन्वय, शब्द करना ।

हृष (स्वा० पर० ह्रमति) 1 कुटिल होना 2 आचरण
में टेढ़ा होना, टगना, खोला खाना 3 कष्टग्रस्त,
लज्जित ।

ह्रै (स्वा० उभ० ह्रमति—ने; हृत, कर्मवा० हृतते, प्रेर०
ह्रापयति—ने, इच्छा० जुहपति—ते) 1 बुलाना—तां
पार्थिवीत्यादिजनने नाम्ना मन्त्रप्रिया मन्त्रजनो जुहाव
—कु० १।२६ 2. नाम लेकर पुकारना, आवाहन करना,
आवाज देना 3. नाम लेना, बुलाना 4. ललकारना
5. प्रतियोग्य करना, होराहोरी करना 6 पार्थना
करना, याचना करना, आ—, 1. बुलाना, निमन्त्रित
करना—वत्स! इव एवाह्वयेनम्—उत्तर० ६ 2 कल-
कारना (आ०)—वतपीराहृत वेदिष्ठण्युत्तरिम्—वि०
२०।१, कृष्णशार्ङ्गमाह्वयते—विद्वा०, महि० ८।१८,
१५।८९, उष—, उषा , बुलाना, महि० ८।१७,
लम्—, लम्ना . मिलकर बुलाना ।

सम्पूर्णक

अक्षरः [न क्रूर-न० त०] एक यादव का नाम जो कृष्ण का मित्र और चाचा था। (यही वह यादव था जिसने बलराम और कृष्ण को मथुरा में जाकर कम को मारने की प्रेरणा दी थी।) उसने इन दोनों को अपने जाने का आशय बतलाया और कहा कि किस प्रकार अधर्मी कस ने इनके पिता आनन्दबुद्धि, राज-कुमारी देवकी तथा स्वयं अपने पिता उग्रसेन का अपमानित किया। कृष्ण ने अपने जाने की स्वीकृति दी और प्रतिज्ञा की कि मैं उस राक्षस का तान गल के अन्दर मार डालूँगा। कृष्ण अपनी प्रतिज्ञा को पूर्ण में सफल हुआ। द० 'सत्रात्रि' भी।

अक्षरः [विष्णुसाम्यम् अगम अस्मिन्, जस । स्तिष् च०, या जय विष्णुसाम्यम् अगमिन् गन् म्यानि, स्वयं - क, या अक्षरं कुम्भ त्र म्यानि महत् इत्यगम्य] एक प्रसिद्ध शिव या मुनि का नाम। श्रुत्वेद में अगम्य और वशिष्ठ मुनि मित्र और वरुण की सन्तान बाने जाते हैं। कहते हैं कि सावधम्यया आसुरा उर्वशी को देखकर इनका शीर्ष ग्वनित हो गया। उसका कुछ भाग एक चट्टे में गिर गया तथा कुछ भाग जल में। चट्टे में अगम्य का जन्म हुआ इसीलिए इसे कुम्भयोनि कुम्भजम्मा, पटोद्भव कल्पा-यानि आदि भी कहते हैं। वर्णन मिलता है कि इसने विष्णुसाम्य पर्वत को जा बगैर उठना जा रहा था तथा सूर्यमण्डल पर अधिकार करने ही वाला था और जिनने इसके राज्य का रत्न रत्न वा नीचे डाला जाने के लिए कहा। द० विष्णु० (यह आख्यायिका कई विद्वानों के मतानुसार अर्घ्य जाति की दक्षिण देश में विजय और भारत को सम्मत्ता के प्रति प्रगति का पूर्वाभ्यास देती है। इसके नाम एक अन्य आख्यायिका के अनुसार समुद्र को पा जाने के कारण पोताश्व और समुद्रबुलक आदि भी थे क्योंकि समुद्र ने अगम्य को हट कर दिया था, और क्योंकि अगम्य युद्ध में इन्द्र और देवों का महायत्न करना चाहता था जब कि देवों का युद्ध कान्य नामक राक्षस के म होने लगा था और राक्षस समुद्र में जाकर छिप गये थे और तीन लाखों का वध देने थे। उसकी पत्नी का नाम लोपामुद्रा था। वह विष्णु के दक्षिण में कुञ्जर पर्वत पर एक तपोवन में रहता था। उस दक्षिण में रहने वाले सभी राक्षसों को नियन्त्रण में रखता। एक उपाख्यान में वर्णन मिलता है कि किस प्रकार इसने वाचापि नामक राक्षस को बंधा लिया जिसने मेंडे का रूप धारण कर लिया था, और किस प्रकार उसके भाई को जो अपने भाई का बला लेने आया था, अपनी एक वृष्टि से भस्म कर दिया।

अपने वनवास के समय अपने हुए भगवान् राम वीना और लक्ष्मण सहित उसके आश्रम में गये। वही अगम्य ने इनका बहुत आदर-सत्कार किया और राम का मित्र सदाशिव और अभिरक्षक बन गया। उसने राम को बिष्णु का धनुष तथा कुछ और वस्तुएँ दी (द० रघु० १५।५५) उपाधिप म इसे नाराज भी माना जाता है। तु० रघु० ४।२१ भी।

अग्निः [अङ्गनि उर्ध्वं गच्छति अङ्ग + नि न लापठच] अग्नि का इन्द्रा। बह्मा का उग्रष्ठ पुत्र। इसकी पत्नी का नाम स्काहा है। उसमें इसके तीन सन्तान हुईं 'गवक' 'ववमान' और 'ज्वि'। हरिवंश में इसका वर्णन मिलता है कि इसके वस्त्र काले हैं। इसकी टांगों में तथा शिखाएँ इसका भाला हैं। इसका रथ में लाल घाद बने हैं। यह मनुष्य का साथ या कभी भूँ पर सवारों बरना हुआ वर्णन किया गया है। महाभारत में वर्णन मिलता है कि अग्नि का शीघ्र और विक्रम समान हो गया और वह मन्द हो गया क्योंकि उसने रात्रा स्वतन्त्रता द्वारा यज्ञ में दो बई आहुतियाँ खा ली। परन्तु उसने अर्जुन की सहायता से साहबबन का निगलकर अपनी शक्ति फिर प्राप्त कर ली। इस सेवा के उपलक्ष्य में ही अर्जुन को गांधीय धनुष दिया गया।

अक्ष [अक्षं वतोरि अक्ष] एक राक्षस का नाम। यह बक और पुतना का भाई था तथा कम का मनापति। एक बार कम ने कृष्ण और बलराम का मारने के लिए मङ्गल किया। उसने वहाँ एक विद्यालय का अग्रसर का रूप धारण कर लिया जो चार राजन लड़ा था। इस रूप में वह खाली के माग में लेट गया तथा अपना मूत्र पूरा खाने लिया। खाली ने इसे एक पहाड़ी गुफा समझा के समवे घग गये सब गौरों भी इसी में बली गई। परन्तु कृष्ण ने इसे समझ लिया। फलत उसने अन्दर घसकर अपना शरीर इतना फुलाया कि वह अजगररूपी राक्षस टुकड़-टुकड़े हो गया तब वही इस प्रकार कृष्ण ने अपने सचियों को रक्षा की।

अग्रद [अङ्ग तस्यी सोधयति भययति अङ्ग सति वा है मा दो + क] नाराज नाम की पत्नी से उत्पन्न कानि का एक पुत्र। जब उसने समस्त सना के साथ लका को कृष किया तो अग्रद को रात्रण के पाम शक्ति के हर्ष के रूप में भेजा गया जिससे कि समय रहने रात्रण अपनी जान बचा सके। परन्तु रात्रण ने धृष्टापूर्वक उसमें प्रस्ताव का ठुकरा दिया, फलत काल का धाम बना। सुदीय के पश्चात् विजिगन्था का राज्य अग्रद को मिला। सामान्य दोषबाल में

वह व्यक्ति जो दो पत्नों के बीच अचकल मध्यस्थता करता है, अथवा नाम से पुकारा जाता है।

अजना (स्त्री०) मावति या हनुमान् की माता का नाम। वह कुंजर नामक जानवर की कन्या तथा केसरी की पत्नी थी, एक दिन वह एक पहाड़ की चोटी पर बैठी थी, कि उसका ध्वज अरा क्षीर से हट गया। बायुदेवता उसके सौम्यते पर मूग्ध हो गया, उसने दूध क्षीर धारण कर अजना से अपनी इच्छापूर्ति की माचना की। अजना ने उससे प्रार्थना की कि आप मेरा सतीत्व नष्ट न करें। बायु ने इस बात को स्वीकार कर लिया, परन्तु कहा कि तुम्हारे शक्ति और कान्ति में अरे जैसा पुत्र उत्पन्न होगा क्योंकि मैंने तुम्हारी ओर कामवासना की दृष्टि से देखा है। यह कहकर बायु अन्तर्धान हो गया। यह पुत्र ही मावति या हनुमान् था।

अभिः [अ + भिन् = अभि] एक महर्षि का नाम। यह ब्रह्मा की आज्ञा से उत्पन्न होने के कारण ब्रह्मा के दस मानस पुत्रों या प्रजापतियों में से एक है। इसकी पत्नी का नाम अनसूया था। उससे तीन पुत्र हुए बत, दुर्बता और सोम। रामायण में वर्णन मिलता है कि राम और सीता, अभि तथा अनसूया के आश्रम में गये। वहाँ उन्होंने उनका लूब बादर सत्कार किया (दे० अनसूया)। ऋषि के रूप में वह सप्त-ऋषियों में से एक हैं, ज्योतिष की दृष्टि से वह सप्त-ऋषियों में एक तारा है। १० कहते हैं कि चन्द्रमा इस की आज्ञा से पैदा हुआ - तु० २५० २७५।

अदितिः [न दीयते अददयते अदयते बहुव्रीह्या-अ + भिन्] बल की एक कन्या का नाम जो कश्यप को व्याही गई। जिस समय विष्णु ने कामनाचतार ग्रहण किया तो उस समय वह विष्णु की माता थी। वह इन्द्र की भी माता थी। इसके कारण वह उन अन्य देवताओं की भी माता कहलाती हैं जो अदितिनन्दन कहलाते हैं।

अनिबद्ध [न निबद्ध इति व० सं०] प्रद्युम्न के एक पुत्र का नाम। अनिबद्ध काम का पुत्र और कृष्ण का पोता था। शानालुर की पुत्री उषा उससे प्रेम करने लगी थी। उसने बाहु की शक्ति से अनिबद्ध को अपने पिता की नगरी शोणितपुर के अपने भवन में मंगवा लिया। (दे० उषा या चित्रकेता)। बाण ने कुछ रसक उसे पकड़ने के लिए भेजे परन्तु पराक्रमी अनिबद्ध ने उन्हें लोहे की गदा से पीट के बाट उतार दिया। अंततः वह बाहु की शक्ति के द्वारा पकड़ लिया गया। जब कृष्ण, बलराम और काम को उसका पता लगा तो वे उसे लेने गये। वहाँ भारी युद्ध हुआ। बाण की उच्छिष्ट शिव और स्कन्द सहायता करते थे, तो भी वह पराजित हो गया, परन्तु शिव के बीच में पड़ने

से उसके प्राण बच गये। अनिबद्ध को उसकी पत्नी उषा सहित द्वारका में अपने घर लाया गया।

अचकः [अच + कृन्] एक राजस का नाम जो कश्यप और शिति का पुत्र था। इसकी शिव ने हत्या कर दी थी। इसके वर्णन मिलता है कि एक दुखार मृगार्थ और शिर थे, २००० जोड़ें और पैर थे। वह अर्धों की भाँति चलता था इस लिए लोग उसे अचक कहते थे, चाहे वह पूर्णतः ठीक ठीक देख सकता था। जब उसने स्वर्ण से पारिजात मृग उठा कर के जाने का प्रयत्न किया तो शिव ने उसकी हत्या कर दी।

अभिमन्यु (पु०) अर्जुन के एक पुत्र का नाम। इसकी माता सुमित्रा थी जो भीष्म तथा बलराम की बहन थी। जब शोध की सलाह के अनुसार कौरवों ने 'चक्रव्यूह' नाम की विशिष्ट संन्यस्थिति बनाई, और वह भी इस आशा से कि आज अर्जुन मुर है, उसने अतिरिक्त और कोई पोंडव इस व्यूह को तोड़ नहीं सकेगा, तो अभिमन्यु अपने बापा ताउमो को विश्वास दिलाया कि यदि आप लोग मेरी सहायता करें तो मैं अवश्य ही इस व्यूह को तोड़ डालूँगा। मनुष्यार वह व्यूह में प्रविष्ट हुआ, कौरवपक्ष के अनेक योद्धाओं को उसने मीत के बाट उतारा। एक बार तो उनमें गेहा क्षोर पराक्रम दिलाया कि शोध, कर्ण दुर्योधन आदि बड़े बड़े गुराहवी भी उसका मुकाबला न कर सके। परन्तु वह बहुत देर तक इस भीषण युद्ध का सामना न कर सका, अन्त में परास्त हुआ और मारा गया। वह बहुत सुन्दर था। उसकी दो पत्नियाँ थी बलराम की पुत्री बल्ला, तथा रामा चिराट की पुत्री उलारा। जिस समय वह मारा गया उस समय उलारा गर्भवती थी। उससे परीक्षित का जन्म हुआ। परीक्षित ही बाद में हस्तिनापुर की राजगद्दी पर बैठा।

अजनाः [अ + जनन्] विनता में कश्यप से उत्पन्न एक पुत्र मरुत था। मरुत का ज्येष्ठ भ्राता ही अथव बलकाया जाता है। विनता ने समय से पूर्व ही बड़े से बच्चा निकाला, उसकी जन्मी अर्धांग नदी बनी थी, इस लिए उसका नाम 'अर्ध' (अर्धरहित) या 'विपार' (पैरों से हीन) पड़ गया। अब अथव सूर्य का सारथि है। उसकी पत्नी श्वेती थी जिससे 'सपारि' और 'जटाव' नामक दो पुत्र पैदा हुए।

अचकस्यामन् दे० 'शोध' की।

अभिमन्युमार दे० 'संज्ञ'।

अजनाचक [अजनाचक अजन्म भागेयु वा चक] कहीव के एक पुत्र का नाम। कहीव ऋषि इनने अधिक अध्ययन कील से कि उन्होंने अपनी पत्नी की उपेक्षा की। इस अवहेलना से लून्वा हीकर उसके अज्ञात पुत्र ने भी

अभी गर्म में ही था, अपने पिता की मर्लना की। इस बात से कुछ होकर पिता ने साप दिया कि तुम बाठ अर्गों से देव-देवै पैदा होवें। एक बार कहींव ने एक बीड़ से सतई कमाई और सिर उसमें हार जाने पर कहींव की नदी में डूबा दिया गया। यथा ब्रह्मावक ने उस बीड़ की परास्व किया और अपने पिता की मुक्त कराया। इस बात से प्रसन्न होकर पिता ने सधमा नदी में स्नान करने के लिए कहा। ऐसा कर वह विष्णुक सरल अर्गों वाला हो गया।

व्याख

1. विषकृमिवाच - विष में पड़े कीड़ों का नीतिवाक्य। वह उस स्थिति को प्रकट करने के लिए प्रयुक्त किया जाता है जो बुराई के लिए बाधक होते हुए भी उनके लिए ऐसी नहीं होती जो इसमें अपने और पले है, क्योंकि वह स्थिति तो उनका स्वभाव बन गया है जैसे कि विषकृमि जो विष से ही जन्मा है। विष चाहे दूसरों के लिए बाधक हो परन्तु उनके लिए बाधक नहीं होता जो उसी विषैली स्थिति में पले हैं।
2. विषबुझाव - विषबुझ का नीतिवाक्य। वह उस स्थिति को प्रकट करने के लिए प्रयुक्त किया जाता जो यद्यपि उत्पातभव या आघातपूर्ण है तो भी उस स्थिति के द्वारा किसीने उसे बनाया है, गष्ट किये जाने के बोध नहीं। जैसे कि एक बूझ चाहे वह विष का हो क्यों न हो वह भी लगाने वाले के द्वारा काटा नहीं जाता।
3. प्यासीपुकाव्याख - पकते हुए बर्तन में से एक बाबल देखने का नीतिवाक्य। देवकी में पड़े हुए सभी बाबलों पर गर्म पानी का समान प्रभाव पड़ता है। अब एक बाबल पका हुआ होता है तो वह अनुमान लगा लिया जाता है कि अन्य सब बाबल भी पक गए हैं। अतः यह नीतिवाक्य उस दशा में प्रयुक्त होता है जब समस्त व्यंजी का अनुमान उसके एक भाग को देख कर लगाया जाय। मराठी में इसे ही कहते हैं "छितावकन आताची परीक्षा"।

पञ्चावत् (वि०) [पञ्चा + वत्] बुद्धिमान्—अवय० ९।
प्रकीर्णः [प्रा० स०] क्रोध, उत्तेजना, आवेष्ट।

आकारः (पुं०) 1. चहारदीवारी, दाड़ा, बाड़ 2. चारों ओर बरा डालने वाली दीवार, कसील—कतमेकोअपि सचते प्राकारस्थो वनूबंर.—पंच० ११२२९।
बाली (स्त्री०) एक प्रकार का कान का आभूषण—अवय० २४।

वृषिष्ठिः [वृषि स्थिरः—अवय० स०, वत्सन्] 'बृद्ध में अस्ति' पांडवों में ज्येष्ठ राजकुमार। इसे 'वर्मे' 'वर्मराज' और 'जवातक्षत्रु' आदि भी कहते हैं। यह वर्म द्वारा कुली से उत्पन्न हुआ था। संवत्सारी की जेली यह अपनी सचाई और ईमानदारी के लिए अत्यन्त प्रसिद्ध था। अठारह दिन के महानारत के पश्चात् इसे हस्तिनापुर की राजनदी पर सञ्जाट के रूप में अभिषिक्त किया गया था। उसके पश्चात् इसने बहुत दिनों तक वर्मपूर्वक राज्य किया। इसका अधिक विवरण जानने के लिए दे० 'दुर्वाचन'।

वैशम्पायनः (पुं०) व्यास के एक प्रसिद्ध शिष्य का नाम। इसने अपने शिष्य याज्ञवल्क्य की कहा कि वह समस्त यजुर्वेद जो तुमने मुझसे पढ़ा है उपाक हो। तदनन्तर उपाक देने पर वैशम्पायन के अन्य शिष्यों ने तीतर बन कर वह सम्पत्त यजुर्वेद पाठ किया। इसी लिए यजुर्वेद की उस शाखा का नाम 'तीतिरीय' पड़ गया। पुराणों का पाठ करने में वैशम्पायन अत्यन्त दक्ष और प्रसिद्ध था। कहते हैं कि उसने समस्त महा-भारत का पाठ जन्मेवम राजा को सुनाया।

हिरण्यकः (पुं०) एक प्रसिद्ध राजस का नाम। हिरण्य-कशिपु का जुड़वा भाई। ब्रह्मा से बरवान पाकर वह डीठ और अ-राधारी हो गया, उसने पृथ्वी को समेट लिया और उसे लेकर समुद्र की बहुराई में चला गया। अत एव विष्णु ने बराह का अवतार धारण किया, राजस को यमलोक बर्हुँपाया और पृथ्वी का उद्धार किया।

परिशिष्ट १

संस्कृत छन्दःशास्त्र

परिचय - संस्कृत छन्द शास्त्र का सबसे पहला और अत्यन्त महत्वपूर्ण ग्रन्थ पिंगलविरचित छन्द शास्त्र है। यह आठ अध्यायों का एक सूत्रग्रन्थ है। जमिपुराण में भी पिंगलपद्धति पर आधारित छन्द शास्त्र का पूर्ण विवरण है। और अनेक ग्रन्थ इसी विषय पर मिश्र-मिश्र विद्वानों द्वारा रचे गये हैं—उदा० बृहत्सोम बाष्पीभूषण, बृहत्सर्वण, बृहत्तरलाकर, बृहत्कीमुदी और छन्दोमञ्जरी आदि। आगे के पृष्ठों में मुख्यतः छन्दो मञ्जरी और बृहत्तरलाकर के आधार पर ही कुछ लिखा गया है। इस परिशिष्ट में वैदिक तथा प्राकृत छन्दो को नहीं रखा गया है।

संस्कृत की रचना या तो गण में होती है या पद्य में। काव्यरचना प्रायः श्लोको में होती है। श्लोक या पद्य में चार चरण होते हैं जिन्हें या तो अक्षरों की गणना से विनियमित किया जाता है अथवा मात्राओं की गिनती से।

पद्य या तो बृहत् होता है अथवा जाति। बृहत् एक ऐसा श्लोक होता है जिसका छन्द प्रत्येक चरण में अक्षरों की गिनती और स्थिति के अनुसार निर्धारित किया जाता है। जाति एक ऐसा श्लोक होता है जिसका छन्द प्रत्येक चरण में मात्राओं की गिनती के अनुसार निश्चित किया जाता है।

बृहत् तीन प्रकारके होते हैं—(१) समबृहत्—जिसमें श्लोक के चारों चरण समान हो। (२) अर्धसमबृहत्—जिसमें प्रथम तृतीय और द्वितीय तथा चतुर्थ चरण समान हो। (३) और विषमबृहत् जिसके चारों चरण असमान हो।

अक्षर (वर्ण) एक ऐसा शब्द है जो एक मात्रा में बोला जाय, अर्थात् एक स्वर इसके साथ चाहे एक व्यंजन हो, चाहे एक से अधिक और चाहे केवल स्वर ही हो।

अक्षर (वर्ण) कच्ची भी होता है, गुद भी जैसा कि उसका स्वर हो ह्रस्व या दीर्घ। अ इ उ ऋ और ए ऌ ह्रस्व हैं, आ ई ऊ ऋ ए ऐ ओ और औ दीर्घ हैं। परन्तु छन्दशास्त्र में ह्रस्व स्वर दीर्घ माना जाता है जबकि उसके आगे अनुस्वार या विसर्ग हो, अथवा कोई संयुक्त व्यंजन हो, जैसे कि 'गव्य' का 'अ' या 'ग'। (अ, इ और उ के इसके अपवाद हैं। इनके पूर्व का स्वर जबकि एक प्रकार की

काव्यात्मक छूट के कारण ह्रस्व रह सकता है, उदा० कु० ७।११ या सि० १०।१०, तथापि यहाँ पर समालोचको ने छन्द को छन्द शास्त्र के सामान्य नियमों के अनुरूप बनाने के लिए सवोधन भी प्रस्तुत किये हैं। इसी प्रकार पाद का अन्तिम अक्षर भी छन्द की अपेक्षा के अनुरूप लघु या गुद माना जा सकता है, वह स्वयं चाहे कुछ ही हो।

सानुस्वारश्च दीर्घश्च विसर्गश्च गुदमन्वेत्।

वर्ण सयोज्यपूर्वश्च तथा पादान्तोऽपि वा॥

मात्राओं की गणना से निर्धारित होने वाले बृत्तों में ह्रस्व स्वर की एक मात्रा होती है, और दीर्घस्वर की दो मात्राएँ।

अक्षरों की गणना से विनियमित बृत्तों की माप-तोल के लिए छन्द शास्त्र के लेखकों ने आठ 'गणों' (अक्षरपाद) की एक युक्ति निकाली है। प्रत्येक गण में तीन अक्षर होते हैं, वे तीनों लघु या गुद होय के कारण एक दूसरे से भिन्न होते हैं। वे गण नीचे लिखे श्लोक में बतलाये गये हैं।

अद्विगुदस्त्रिलघुश्च अक्षरः।

आदिमगुद पुनरादिलघुर्बुध्।

जो गुदमध्यगतो रलमध्य

सोऽन्तगुद कथितोऽन्तलघुस्त॥

आदिमप्यावसानेषु अक्षरा यान्ति माधवम्।

अक्षरा गौरव यान्ति अन्ती तु गुदमाधवम्॥

प्रतीकाक्षरों में अभिव्यक्त (गुद ५, लघु १) विन्य-
मित गण निम्न प्रकार से दर्शाये जा सकते हैं

५५५ गण

१५५ गण

५१५ गण

११५ गण

५५१ गण

१५१ गण

५११ गण

इसी प्रकार 'अ' लघु तथा 'ग' गुद को प्रकट करता है।

विशेष प्रत्येक चरण के अक्षरों (वर्णों) की गिनती के अनुसार संस्कृत के छन्द शास्त्रियों ने बृत्तों का वर्गीकरण किया है। इस प्रकार के 'समबृत्तों' की छन्दो

अनुभाग (क)

शेषियों में रखते हैं जैसे कि समवृत्तों के प्रत्येक चरण में अक्षरों की संख्या एक से लेकर छब्बीस तक पुनः-पुनः हो सकती है। इनमें से प्रत्येक श्रेणी में सप्त और कुछ की पुनः-पुनः मिल-जुल स्थिति होने के कारण असंख्य वृत्तों की संभावना हो जाती है। उदाहरणतः छः अक्षरों के प्रत्येक चरण वाली श्रेणी में, (अक्षर चाहे सप्त हों या गुरु) संभावित संख्या $2 \times 2 \times 2 \times 2 \times 2 \times 2$ या $2^6 = 64$ होती है, परन्तु प्रयोग में छः वृत्त भी नहीं आते। यही बात छब्बीस अक्षर वाली श्रेणी की है। वहाँ भी वृत्तों की संभावित संख्या 2^{26} या $2^{26} = 67,108,864$ होती है। परन्तु यदि हम अर्धसमवृत्त या विषमवृत्तों की बात देखें तो वहाँ तो संभावित वृत्तों की विविधता अनन्त है। पिंगल, लोलावती और वृत्तरत्नाकर के अंतिम अध्याय में संभावित विविधताओं की संख्या, उनका स्थान, या उनकी निश्चित गणना में किसी एक छद्म विषय की निश्चित जानकारी प्राप्त करने के लिए निर्बंध रिये गए हैं। संभावित वृत्तों के इस विशाल समुदाय की गुरुता में कवियों द्वारा प्रयुक्त किये जाने वाले वृत्तों की विविधता नगण्य है। परन्तु यह नगण्य संख्या भी इतनी अधिक है कि इस परिधिष्ट में नहीं रक्खी जा सकती। अतः हम यहाँ निम्न कम में केवल जल्दी वृत्तों का वर्णन करेंगे या बहुत प्रयुक्त किये जाते हैं अथवा जिनका उल्लेख करना आवश्यक है।

- अनुभाग (क) समवृत्त
अनुभाग (ख) अर्धसमवृत्त
अनुभाग (ग) विषमवृत्त
अनुभाग (घ) जालि आदि

मोक्ष — निम्नांकित परिभाषाओं में गणों का प्रतिनिधित्व करने वाले म म स और ल ष आदि वर्णों के स्वर का बहुधा वृत्त की अपेक्षा के कारण लोप कर दिया जाता है — उदा० 'अमन प्रकट करता है म र म न को, इसी प्रकार 'मना' दशांता है म त को। पहली पंक्ति में हमने वृत्त की परिभाषा दी है, दूसरी पंक्ति में वृत्तम और पठित — विराम अर्थात् ष क या चरण का स्वर पर पठ करने में अहाँ रुकना होता है, और जो कि परिभाषा में चरणकारक द्वारा संकेतित किया गया है — (प्रकोष्ठ में अथवा अक्षरों द्वारा) प्रकट की जाती है, फिर तीसरी पंक्ति में उदाहरण (इनमें से अधिकार्ध भाष, भारवि, कालिदास और बंदी की रचनाओं से लिए गए हैं)।

चार वर्णों के चरण वाले वृत्त
(प्रतिष्ठा)

कम्पा

परि० गी चेतन्या ।

मप० ग, म

उदा० मास्त्वन्त्या सैका दन्त्या ।

यस्या कूले कृष्णोज्ज्वलम् ॥

पाँच वर्णों के चरण वाले वृत्त
(सुप्रतिष्ठा)

वन्ति

परि० भूपी गिति पक्ति

मप० म, न, ग

उदा० कृष्ण सनाथा तर्पकवन्ति ।

यामूनकच्छे चाव चचार ॥

छः वर्णों के चरण वाले वृत्त
नामची

(1) अनुपम्यन्ता

परि० ल्वी चेतनमम्यन्ता ।

मप० ल, य ।

उदा० मृतिर्मुराधोरत्यमृतकृपा ।

मास्तां मम चित्ते नित्य तनुमम्या ॥

(2) निष्कृष्टेका ('नाची' भी कहते हैं)

परि० विदुरेका भो मः ।

मप० म, म (३, ३) ।

उदा० श्रीदीप्ती लीकीर्ती चीनीती गी प्रीती ।

एवेते हे हे ते ये नेमे देवेसे ॥ काव्य० ३।८६ ।

(3) क्षतिवन्ता

परि० क्षतिवन्ता न्यी ।

मप० न, य ।

उदा० क्षतिवन्ताना व्रजतस्वीनाम् ।

अथरुधोमि भव्यरुधरेच्छम्]

(4) लोचराशी

परि० विवा लोमराशी ।

मप० य, व (2, 4) ।

उदा० हरे लोमराशी-समा ते मयः की ।

अवमप्यलस्य क्षित्यम्यकारम् ॥

सात वर्णों के चरण वाले वृत्त
(अपिन्)

(1) कुमारकलिता

परि० कुमारकलिता वृत्ताः ।

मप० व, ल, व (3, 4) ।

राज्यपदे ह्यमीकित्वारा
कल्पकाली विष्णुः सन् तत्त्व ॥

म्यारह वर्षों के चरम बाढे वृत्त
(विष्णुम्)

(1) इन्द्रवज्रा

परि० स्वामिन्द्रवज्रा यदि ही वर्षी नः ।

वच० त, त, न, न, न (5. 6)

उदा० गोधं गिरि ह्यमकरेण वृत्ता
क्येन्द्रवज्राहतिमुक्तमृष्टी ।
यो गोत्रुक्तं योयुक्तं न तुल्यम्
नके स नो रक्तम् नक्षत्राणि ॥

(2) उषेन्द्रवज्रा

परि० उषेन्द्रवज्रा प्रथमे कधी सा ।

वच० न, त, न, न, न (5. 6)

उदा० उषेन्द्रवज्रायिमिच्छामि-
विष्णुवज्रां कुरितं वपुस्ते ।
स्वराणि गोपीमित्रास्वभावात्
सुरदुर्गते यमिष्यन्त्यस्यम् ॥

(3) उष्यजालि

परि० अमरतोदीरितकमभाजी
पावी यदीयावृत्तायस्ताः ।
इत्थं किमाम्यास्वपि मिथितादु
नदन्ति जातिष्विदमेव नाम ॥

वच० जब इन्द्रवज्रा और उषेन्द्रवज्रा को एक ही स्लोक
में मिला देते हैं तो उसे उष्यजालि वृत्त कहते हैं ।
इसके पीछे जोर होते हैं ।

उदा० अस्तमृतारस्यां विधि देवतस्या
हिमालयो नाम नवाधिराजः ।
पूर्वापरी तोयनिधी वयाह
स्वितः पृथिव्या इव मानवः ॥ कु० १११ ।

हे० रघु० २, ५, ९, ७, १३, १४, १५, १८; कु० १,
कु० १७ आदि । जब अथ वृत्त की एक ही स्लोक
में मिला दिखे जाते हैं तो को उष्यजालि ही वृत्त
होता है । उदा० वाच कवि के निम्नस्लोक में
वक्षस्य और इन्द्रवज्रा मिला दिए गए हैं ।

इत्थं रवास्वमेविवादिनां प्रमे
नयो नृपामास्य तोरणाहहिः ।
अस्थानकालममवेककल्पमा-
कृतजनलोपमूर्ध्वताम्युत्तम् ॥ छि० १२११ ।

(4) वीकक

परि० वीककमिच्छति भवितव्याद्वी ।

वच० न, न, न, न, न, (6. 5.)

उदा० वा न यवी श्रियमन्वयवृम्भः
वा रत्नावयवा कलमान्ध ।

तेन सहैव विवर्ति रघुः स्त्री
नार तरामयनाकलमान् ॥ छि० ४१५५ ।

(5) अमरविष्णुमिच्छन्

परि० मनी मनी नःस्वायं अमरविष्णुमिच्छन् ।

वच० न, न, न, न, न (4. 7)

उदा० श्रीत्यै युनां व्यमृष्टितपनाः
अमिष्णान्तं दिनमिह कलनाः ।
दोषामन्व विदधति सुरत-
कीडाबाह्वमममपटवः ॥ छि० ४१९२ ।

(6) रघोद्धता

परि० रत्नरंवरकर्म रघोद्धता ।

वच० र, न, र, न, न (3. 8 वा 4. 7)

उदा० कौस्तिकेन स किल छिटीषवरो
राजमम्बरविधातवास्तवे ।
काकपक्षधरयेत्य वाधित-
स्तेवसां हि न वनः उनीयते ॥ रघु० ११११ ।
रे० कु० ८ बी ।

(7) बालोनी

परि० बालोनीव नहिता म्यो तपो नः ।

वच० न, न, त, न, न (4. 7)

उदा० म्याता मृतिः क्षममन्वयुत्सव
येनी नाम्ना नहिता हेमकाग्रि ।
संसारप्रसिन्धु कुरितं ह्मिष्ट वृत्ताम्
बालोनी पीतमिवाभोविष्ये ॥

(8) क्षास्मिनी

परि० माती नी केष्कास्मिनी केष्काकेः ।

वच० न, त, त, न, न (4. 7.)

उदा० मही ह्मिष्ट ज्ञानवृद्धि विषते
नर्म दत्ते काममर्षे न सूते ।
मुक्ति दत्ते सर्ववीपास्वभावा
पुंसां यदा क्षास्मिनी किन्मुनक्तिः ॥

(9) स्वास्त्या

परि० स्वास्त्या रजयर्मरुवा न ।

वच० र, न, न, न, न (3. 8)

उदा० बावकामयतेऽथ नरेभ्यः स स्वर्वरजस्य महीनाः ।
तावदेव अधिरिन्द्रिदुष्टः नारदस्त्रिदशनाम वनाथ ॥
नै० ५१११ ॥
रे० कि० ९, छि० १०.

बारह वर्षों के चरम वाले वृत्त

(कल्पी)

(1) इन्द्रवज्रा

परि० तन्मेन्द्रवज्रा प्रथमाहरे वृत्ती ॥

वच० इन्द्रवज्रा विष्णुक वक्षस्यविक वा वक्षस्य (रे० नी०
१३वीं) के समान है, जिसका इसके कि वक्षस्य
प्रथमाहरे मुक्त होता है । त, त, न, न ।

उवा० ईत्येवमन्तानिबन्धीर्बोधिपतिः
पीताम्बरोज्जी वपतां तमोपहः ।
यस्मिन् वसन्तुः कलसा इह स्वयम्
ते कलसापूरयुक्ता भवन्ति ॥

(2) कल्लवत्तं

परि० कल्लवत्तं भिदवन्ति रत्नमयीः ।

वच० २, न, य, र (4, 8)

उवा० कल्लवत्तं पिहित वनतिभिरे
राजवत्तं रहित जगन्मयीः ।
इष्टवत्तं तदलक्षुष वरते
कुञ्जवत्तं हि हरित्तव कुतुकी ॥

(3) कल्लवत्तं

परि० कल्लवत्तं त्याज्यकल्लवत्तं त्वी ।

वच० य, य, स, य (4, 8)

उवा० या भक्तानां कल्लवत्तं तत्पानां
तापच्छेदे कल्लवत्तं मय्या ।
मय्याकारा विनकरकुतुकी
केलीकोला हरित्तवत्तं सा व ॥
दे० कि० ५१२३ ॥

(4) कल्लवत्तं

परि० रत्नैर्बलवत्ता कल्लवत्तं त्वी ।

वच० य, स, य, स (6, 6)

उवा० कलीरत्नवत्तं विरस्तु वसताम्
कलां वनिका निकान्तुत्तनाम् ।
विनति जगन्मयी नृपमया-
मयावत्तं वला वलाहकतटी ॥ शि० ४१५४ ॥

(5) तावत्तं

परि० इह वर तावत्तं नज्जा यः ।

वच० न, य, य, य (5, 7)

उवा० स्फुटतुषमानकरवत्तं त्वी
वत्तं त्वीरत्नवत्तं त्वीरत्नवत्तं ।
तव मूलवत्तं त्वीरत्नवत्तं
हृदयतटावत्तं त्वीरत्नवत्तं ॥

(6) लोटक

परि० वर लोटकवत्तं त्वीरत्नवत्तं ।

वच० स, स, स, स (4, 4, 4)

उवा० स तपेति विनैरुत्तारवत्तं ।
प्रतिमूला वत्तं विनैरत्नं त्वीरत्नं ।
तवत्तं त्वीरत्नं त्वीरत्नं
प्रतिमूलावत्तं त्वीरत्नं त्वीरत्नं ॥ रघु० ८१९१ ॥
दे० शि० ९१७१ ॥

(7) वृत्तवत्तं

परि० वृत्तवत्तं त्वीरत्नवत्तं त्वीरत्नवत्तं ।

वच० न, य, य, र (4, 8 या 4, 4, 4)

उवा० वृत्तवत्तं त्वीरत्नवत्तं त्वीरत्नवत्तं ।
तव वृत्तवत्तं त्वीरत्नवत्तं त्वीरत्नवत्तं ।
तव वृत्तवत्तं त्वीरत्नवत्तं त्वीरत्नवत्तं ॥ शि० ९१७१ ॥
दे० रघु० ९, शि० ९, यी ।

(8) वृत्ता

परि० वृत्तवत्तं त्वीरत्नवत्तं त्वीरत्नवत्तं ।

वच० न, य, र, र (7, 5)

उवा० वृत्तवत्तं त्वीरत्नवत्तं त्वीरत्नवत्तं ।
तव वृत्तवत्तं त्वीरत्नवत्तं त्वीरत्नवत्तं ।
तव वृत्तवत्तं त्वीरत्नवत्तं त्वीरत्नवत्तं ॥ शि० ९१७७ ॥
कि० ५१२१ यी ।

(9) वृत्तवत्तं

परि० वृत्तवत्तं त्वीरत्नवत्तं त्वीरत्नवत्तं ।

वच० स, य, स, स (5, 7)

उवा० वृत्तवत्तं त्वीरत्नवत्तं त्वीरत्नवत्तं ।
तव वृत्तवत्तं त्वीरत्नवत्तं त्वीरत्नवत्तं ।
तव वृत्तवत्तं त्वीरत्नवत्तं त्वीरत्नवत्तं ॥ शि० ४१२६ ॥
कि० ९, शि० ९ ।

(10) वृत्तवत्तं

परि० वृत्तवत्तं त्वीरत्नवत्तं त्वीरत्नवत्तं ।

वच० य, य, य, य (6, 6)

उवा० वृत्तवत्तं त्वीरत्नवत्तं त्वीरत्नवत्तं ।
तव वृत्तवत्तं त्वीरत्नवत्तं त्वीरत्नवत्तं ।
तव वृत्तवत्तं त्वीरत्नवत्तं त्वीरत्नवत्तं ॥

(11) वृत्तवत्तं

परि० वृत्तवत्तं त्वीरत्नवत्तं त्वीरत्नवत्तं ।

वच० स, य, स, य (6, 6)

उवा० वृत्तवत्तं त्वीरत्नवत्तं त्वीरत्नवत्तं ।
तव वृत्तवत्तं त्वीरत्नवत्तं त्वीरत्नवत्तं ।
तव वृत्तवत्तं त्वीरत्नवत्तं त्वीरत्नवत्तं ॥

(12) वृत्तवत्तं (वृत्तवत्तं) यी कहते हैं

परि० वृत्तवत्तं त्वीरत्नवत्तं त्वीरत्नवत्तं ।

वच० न, य, य, र (8, 7)

उवा० वृत्तवत्तं त्वीरत्नवत्तं त्वीरत्नवत्तं ।
तव वृत्तवत्तं त्वीरत्नवत्तं त्वीरत्नवत्तं ।
तव वृत्तवत्तं त्वीरत्नवत्तं त्वीरत्नवत्तं ॥

(13) वृत्तवत्तं (वृत्तवत्तं) यी कहते हैं

परि० वृत्तवत्तं त्वीरत्नवत्तं त्वीरत्नवत्तं ।

वच० य, स, य, र (8, 7)

उदा० तथा समस्तं बहुता मनोमयम्
पिनाकिना भग्नमनोरेखा सती ।
निदिग्धं रूपं हृदयेन पार्वती
प्रियेषु सीमावकला हि वाक्ता ॥ कु० ५।१ ।
दे० रघु० ३ बी ।

(14) वैश्वदेवी

परि० वाणाश्वैषिकला वैश्वदेवी मयी यी ।

मन्त्र० म, म, य, य (5.7)

उदा० अर्चामिन्धेवां त्वं विहायामराणा-
महूतेनैकं विष्णुमन्मथं भक्त्या ।
तवाशेषागम्यचित्ते भाविनी ते
प्रातः सप्ताराधना वैश्वदेवी ॥

(15) जगिन्नी

परि० कीर्तसेवा चतुर्दशिका जगिन्नी ।

मन्त्र० र, र, र, र (6.6)

उदा० इन्द्रवीलोपनेनेव या निमिता
धातकुम्भहवालककुना सोमने ।
नम्बमेषच्छात्रि पीनवामा हरे-
रूतिरास्ता जयाद्योरसि जगिन्नी ॥

तेरह वर्षों के चरण वाले वृत्त

(अतिजगती)

(1) कल्होस (सिहनाव या कुट्या)

परि० सजसा सगी च कथित कलहम् ।

मन्त्र० स, ज, स, स, ग (7.6)

उदा० यमुना विहारकुतुके कल्होसो
वज्रकाशिनिकर्माश्रीकुलकेलि ।
अनघिसहायिकमकष्टनिनाद
प्रमद मनोगु लव नन्दननुज ॥ दे० सि० १।७३ ।

(2) जम्बा (चन्द्रिका और उत्पलिनो)

परि० नुग्मरसपलिनो सगी ग जम्बा ।

मन्त्र० न, न, न, स, य (7.6)

उदा० इह बुरखिषये किषिदेवाजये
सततमवतुरं वनयमयन्तरम् ।
अमुमक्षिष्यति वेद दिग्भ्यापिनम्
पुरुषमिव परं पश्येयिनि परम् ॥ कि० ५।१८ ।

(3) ग्रहविणी

परि० आशाविमोचरणा ग्रहविणीम् ।

मन्त्र० म, म, ज, र, य (3.10)

उदा० ते रक्षाध्वजकुलिसातपत्रिह
महाधरचरचवम् प्रसादलम्बम् ।
प्रस्थामत्रतिरिधिरद्रुमीय चक्र
मौक्तिकसुव्युत्पन्नमन्दरेयुगीरम् ॥
रघु० ४।८८, दे० कि० ७, सि० ८ ।

(4) मञ्जुवाविणी (मृगशिरा, और प्रबोधिना)

परि० सजसा जमी च हरि मञ्जुवाविणी ।

मन्त्र० स, ज, स, ज, ग (6.7)

उदा० यमुनामतीतमयं क्षुब्धवानुवम्
नपसन्नुज इति नाबुनोभ्यते ।
स यदाऽचलन्निजपुरावर्हनिजम्
नृपनेस्तदावि ममचारि वार्मया ॥ सि० १३।१ ।

(5) जलजवरी

परि० वेरगंधोऽन्तो यस्मा जलजवरीम् ।

मन्त्र० म, त, य, म, ग (4.9)

उदा० दृष्ट्वा दशान्वावरणीयानि विधाय
प्रेक्षाकारो यानि पद मुक्तव्याव ।
सम्पददृष्टिस्तस्य पर पश्यति यस्मात्
यस्मात्पान्ने साधु विधेयं स विधत्ते ॥ कि० १८।
२८, सि० ४।४४, ६।७६, रघु० १।७५ ।

(6) चरित्रा (प्रभायनी)

परि० जमी सगी यिति चरित्रा चतुर्दह ।

मन्त्र० म, म, स, ज, ग (4.9)

उदा० कदा मुक्त वारतनु कारणावृत्ते
नवागत क्षयमपि कोपपात्रनाम् ।
अपर्वणि प्रहृल्लुचेन्दुमच्छला
विभावरी कथय कथं प्रविष्यति ॥ ग्राहवि० ४।१३ ।
दे० मट्टि० १।१, सि० १७ ।

चौदह वर्षों के चरण वाले वृत्त

(जलवरी)

(1) जलराशिता

परि० ननरसलधुने स्वरपरराशिता ।

मन्त्र० न, न, र, स, ल, ग (7.7)

उदा० यदनवधि भूजप्रतापकृतास्पदा
यदुनिच उचम् परैरपरराशिता ।
अ्यजयत मयरेतवस्तारिपुत्रजम्
स जयति जयता गतिर्गुरुध्वज ॥

(2) जलकावा

परि० म्नी म्नी गावजग्रहिरतिरसंवाचा ।

मन्त्र० म, त, न, स, म, ग (5.9)

उदा० वीर्यान्वो यन जलति रचवमात् अिप्रे
देव्येने जाला वरगिरियमसंवाचा ।
वर्धयिष्यत्यर्थं प्रकटिततनुस्तम्बम्
साधूनां वाचा प्रसाधयतु स कसारि ॥

(3) कष्ठा (मवरी)

परि० सजसा वली च सह येन पष्ठा मता ।

मन्त्र० म, ज, स, य, ल, ग (5.9)

उदा० स्वगयन्मयं शमितचानकानंस्वरा
जलदास्तदित्तुलिनकामकानंस्वरा ।
जगनीरह स्फुटितवाव वागीकराः
मवितु, कथिन् कथिमयिनि वागीकराः ॥
सि० ४।२४

(4) प्रमदा (गुरीकता)

- परि० नमनमला गुरुच प्रमदा ।
 मन्० न, न, न, न, न (6.8)
 उदा० मनसिचिरोज्जितस्य जलमेव चिर-
 स्थितवद्गुरुचप्रमदा फलश्रुतिम् ।
 चिरकविकीर्णवज्रकका सकला-
 मिह विप्रसति चोतकलचोतमही ॥ सि० ४१४१ ।

(5) प्रहृष्टकलिका

- परि० नमनमलमिति प्रहृष्टकलिका ।
 मन्० न, न, न, न, न (7.7)
 उदा० अचयति कुसुमप्रहृष्टकलिका
 प्रमदवनमदा तव वनूषि तवा ।
 चिरहृषिपदि मे कल्पमिह ततो
 मधुमवनमधुस्मरमवविरतम् ॥

(6) मन्थलाभा (हंसध्वनी या कुटिल)

- परि० मन्थलाभायुपवहविरमा म्नी म्नी नी ।
 मन्० न, न, न, न, न (4.10)
 उदा० नीतोन्मथं मुहुरीक्षिररसमेकै-
 रानीलायैचिरात्परमाया रली ।
 ज्योत्स्नासङ्गमिह वितरति हंसध्वनी
 मध्वेज्यह्नः स्फटिकरत्नवितरिकाया ॥
 कि० ५१११ ।

(7) वल्लभकलिका

(वस्तुविक्रय, उदाचिनी या विहोत्रता)

- परि० उक्ता वल्लभकलिका तमवा चनी न ।
 मन्० व, न, न, न, न (8.6)
 उदा० वार्येकतोऽस्तसिद्धं पतिरोचनीमा-
 भाविष्कृतास्वपुटसर एकलोचः ।
 लेखोदयस्य युवपद्म आवनोदयाम्नां
 लोको नियम्यत इकारमदकाण्डरेषु ॥ स० ४१११ ।

(8) वासन्ती

- परि० मातो गो गो गो यदि नदिता वासन्तीयम् ।
 मन्० म, त, न, म, न, न (4.6.4)
 उदा० आम्बदुम्ब्री निर्जरकचुरालोपुष्पी-
 श्रीलक्ष्मीरदुम्बकमनैमन्थाली ।
 श्रीमालीला वल्लभविक्रमद्वेष्टीलाभाः
 कंठाराती मृत्पति मधुवी वासन्तीयम् ॥

पद्मह वणी के चरण बाके वृत्

(अतिवचनी)

(1) तुल्य

- परि० तुल्यं समानिका पदार्थं विनामिदम् ।
 मन्० र, न, र, न, र (4.4.4 या 7.8)
 उदा० का तुल्यविक्रयं विक्रयि मृत्पुत्रितम्
 पद्मवागवागवागमृत्पुत्रितम् ;

राधिका वितर्कं माधवाय माधि माधवे
 मोहमेति निर्जरं त्वया विना कलामिने ॥

(2) वासिनी

- परि० नमनमधुपुदेय वासिनी भोमिलोर्क ।
 मन्० न, न, न, न, न (8.7)
 उदा० सधिमधुपुदेयं कीमुदी वेषमुत्तम्
 जलनिधिमधुपुद अह नृकम्पातीर्णा ।
 इति समनमधुपुद्रीतयस्तप पीरा
 अवगकट नृपाभावेकवाच विप्रवृ ॥ रघु० ११८५ ।

(3) लीलाशोक

- परि० एकम्बुनी विद्युत्वाकापादी केम्बुलीलाशोक ।
 मन्० म, म, म, म, म
 उदा० मा कान्ते पल्लवास्ते पयिकाशे देवे त्वाप्ती-
 कान्त वन्य वृत्तं पूर्ण वज्र मत्वा राशी केतु ।
 कुलाम प्राटव्येतरवेतो राहु कूर भावात्
 तत्वाद्भ्यान्ते हर्म्यस्यान्ते शर्म्यकति कर्तव्या ॥
 सरस्वती०

(4) क्षतिकला

- परि० मुनिनमनमधुपुद्वि क्षतिकला ।
 मन्० न, न, न, न, न (क्षतिक को जोड़ कर सब लम्बु)
 उदा० मलयवतिकलाधुवितक्षतिकला
 वज्रवृक्षतिकसरलिक नमनमता ।
 सरसिजनमनहृदयक्षतिकलित
 व्यतनुल वितरवज्रपरिरक्तम् ॥

सोकर वणी के चरण बाके वृत्

(अति)

(1) पित

- परि० पितस्रमोरित रवी रवी रवी व वृत्तम् ।
 मन्० र, न, र, न, र, न (8.8 या 4.4.4.4)
 उदा० विद्युत्वाकापादीपुद्विपुत्वाहृष्ट-
 वल्लवीजनमृत्तमजातमृत्तमृत्तकाङ्ग ।
 त्वां सर्वै वानुदेक पुष्पकमपाव देव
 वन्यपुष्पविक्रय संस्वराणि गोपयेत् ॥

(2) वन्यवाग्वर

- परि० प्रमाधिका पदार्थं वसति वन्यवाग्वरम् ।
 (जरी जरी लोको जनी व वन्यवाग्वरं वने)
 मन्० व, र, न, र, न, न (8.8 या 4.4.4.4)
 उदा० मुरातमलमधुपुद्वि वन्यवाग्वरमिति
 कलाहितानमृत्पुद्वि वनीकविप्रमाकम् ।
 मुरातमलमलनीकरवर्षवाग्वर—
 स्फुरतपीरवीक्षित कलावृत्तं मवाधि तम् ॥

(3) वासिनी

- परि० नमनमधुपुद्वि वासिनी मधुवी ।
 मन्० न, न, न, न, न, न ।

उषा० स्मरतु ममानेऽहं ननु बाधि नीतिरम्यम्
तत्र चरयप्रसाधपरिणामतः कथितम् ।
मन्त्रजलाशिरापरकरनमम् मुकुन्दम्
सततमहं स्तवैः स्वरचितैः स्तवानि नित्यम् ॥

सत्रह वर्णों के चरण बाड़े हुए

(अचष्टि)

(1) चिचलेका (अतिशयिनी)

परि० सचसा मजया यु विस्वरदेव्यति चिचलेका ।

मन्त्र० स, स, म, म, ज, ज, न, न (10. 7)

उषा० इति वीतपुरधिमत्सरात् सरसि मन्त्रजनेन
जियमाप्तवतोऽस्तिशान्तिनीमपमलागवाम ।
मन्त्रलोका तत्रैव वाद्यवानपरवारिरासे
शिधिरत्तरोचिवाप्यपां ततिम् मन्त्रमीमे ॥

सि० ८७१ ।

(2) मर्वडक (कोकिलक)

परि० यदि मवतो नवी मजजका नुव नर्वडकम् ।

मन्त्र० म, ज, म, ज, ज, ज, क, य (8. 9)

उषा० तवममालनीक्यहुतोममदम्भराः
शिधिरत्तमीरपावतुतनवारिकमा ।
कचमचलोकेयमभुवा हृदिस्तिमती-
मंढकाजीककठकहृदराः ककुम्भः ॥

मा० ११२८; दे० ५१३१ ।

(3) पुष्पी

परि० मसी मजयका वसुधृष्टतिव पुष्पी युव ।

मन्त्र० म, स, म, स, य, म, न (8. 9)

उषा० इतः स्वपिति केतवः कुलमितस्तदीयहिवा-
मितव्य चरणाधिनः शिखरिणा मया सेरते ।
हृजोऽपि वरवामकः महं समस्तसवर्तके-

रहो विततमूर्जितं मरतहं च तिग्वोवपुः ॥

मत्तु० २१७६ ।

(4) मन्त्राकान्ता

परि० मन्त्राकान्ताम्विरासमनैर्नो मनी तो मयुग्मम् ।

मन्त्र० म, म, न, न, स, स, य, य (4. 6. 7)

उषा० नोपी नर्तुविरहविभुरा काचिविन्दीवरासी
उन्मत्तोय स्थानिकवरी निवसन्ती विद्याकम् ।
मन्त्रोक्ते नृपरिपुरिति धामिनीवृत्तिहाया
त्वक्का मेहं कटिनि मयुग्ममञ्जुज्ज्वलं जवाय ॥

पद्योक्तः १ ।

[अमस्त मेघवृत्त इती वृत्त यं लिखा गया है]

(5) वंजकवर्जित

परि० विष्णुमिदलपञ्चपतिं मरमन्त्रमनैः ।

मन्त्र० म, र, म, न, न, म, य (10. 7)

उषा० हर्षवर्जितकायु वसिते वसतिमिरन्धि
ज्योतिषि रीत्यामितिषु पुर प्रसिद्धमति मुहुः ।

१५०

श्रीवसन्तुलोपि रमचैरपुह्वनवसनाः

काञ्चनकम्बरायु तन्वीर्हि नयति रविः ॥

सि० ४६७३

(6) शिखरिणी

परि० रविं वद्विषिका यमनसमका नः शिखरिणी ।

मन्त्र० य, म, न, स, म, क, य (6. 11)

उषा० दिगन्ते धूमन्ते मयमलिनमण्डाः कटिन्मः

करिष्यः कावध्याम्भयमलमद्योकाः कुरु मयाः ।

इदानीं लोकेऽस्मिन्नुपमशिक्षानां पुनरयम्

नञ्जाना पाण्डित्य प्रकटयन् कस्मिन् भुवपतिः ॥

भाषि० ११२ ।

(7) हरिणी

परि० नममरसलामः वद्वेदेहैहैरिणी मया ।

मन्त्र० न, स, म, र, न, क, य (6. 4. 7)

उषा० मूनन् ह्रदयात्रयादेशम्यलीकमपेनु ते

किमपि मनसः संमोहो मे तदा वनवानमून ।

प्रकलतममायेवमयाः क्षुपेषु हि वृत्तयः

सजमपि शिरस्थान्यः क्षिप्तां पुनोत्पहियाकृया ॥

सि० ७१२४ ।

अठारह वर्णों के चरण बाड़े हुए

(वृत्ति)

(1) कुमुदितकस्तयेलिक्ता

परि० स्नाद्वृत्तवर्षः कुमुदितकस्तयेलिक्ता मनी नवी वी ।

मन्त्र० म, स, न, य, य, य, य (5. 6. 7)

उषा० श्रीवत्कान्दीककितलहरीवारिनिर्वालिवायैः

वार्तः सेकाङ्गः कुमुदितकस्तयेलिक्ता मन्त्रमन्त्रम् ।

मुक्ताकीपीतैः कितल्यकरोत्कासित्वैकद्विद्विनीम्

तन्वाता वैतो रमसतरलं वक्ष्यामिद्वकार ॥

(2) चिचलेका

परि० मन्त्राकान्ता नपरकवृत्ता कीतिता चिचलेका ।

मन्त्र० म, म, न, य, य, य, य (4. 7. 7)

उषा० सङ्केतमिदम् जगति मुक्ताकां सारक्यं यदासी-

दाकृष्येव वज्रवति सभा वेषका सा म्यवाधि ।

नैतावुक्तेषु कचमूतचितुतामन्त्रेणाभ्युत्पद्य

प्रीत तस्या मयनवममृज्जिकल्लेकास्तुतावायम् ।

(3) नमन

परि० मन्त्रचरस्तु रेफताः शिवहृदयैर्नन्दनम् ।

मन्त्र० न, ज, म, ज, र, र (11. 7)

उषा० तरणिमुतामरज्जपवनः सलीकमान्दीनितम्

मधुरिपुपादकचरजः सुपुतपृष्ठीतलम् ।

मृहुरावचवेष्टितकलाकलापसत्कारम्,

क्षितिललनमन्यं वज्र सङ्गे मुखाय द्वाद्यानम् ॥

(4) वाराय

परि० वद्वे मन्त्रचरस्तु सङ्गे मारायवायजने ।

मन्त्र० न, न, र, र, र, र, (8. 5. 5)

उवा० रघुपतिरपि जातवेदो विभुः प्रभुः प्रियाम्
प्रियमुद्विदि विभीषणे सममम्य म्रिय वैरिभः ।
रविमुत्तलहितेन तेनानुयातः सतीपिबिना
भुजविजितविमानरत्नाधिष्ठः प्रतस्ये पुरीम् ॥
रघु० १२।१०४।

(5) शार्ङ्गललितम्

परि० न सो ज सतसा दिनेशश्चतुभि शार्ङ्गललितम् ।
मण० म, स, ज, स, त, स, (12 6)
उवा० कृत्वाकसमने पराक्रमविभि शार्ङ्गललितम्
यवचके क्षितिभारकारिषु दर वैद्यप्रभृतिषु ।
संतोष परम तु देविबह्वै बेलोक्यशास्त्रम्,
श्रेयो न स तनोत्तवारमहिमा लक्ष्मीप्रियतम ॥

कलीस बणों के चरण बाड़े हुए

(व्यक्ति)

(1) वैद्यविष्णुजिता

परि० रत्नसर्वैर्द्विजैः सौ रघुपतिरपि मेघविष्णुजिता स्वाम् ।
मण० म, म, न, स, र, र, ग (6 6 7)
उवा० कदम्बामोदादया विपिनपवन केकन कान्तकेका
विनिद्रा कन्दल्या दिशि दिशि मृदा वर्तुग दुष्पनादा ।
निद्या नृत्यद्विबुद्धिलसितलसन्नेयविष्णुजिता येन्
प्रिय स्वाधीनोऽसौ दनुबदलनो
राज्यमस्मान् किमन्यन् ॥

(2) शार्ङ्ग विभीषितम्

परि० सूर्यसर्वैर्द्विजैः सौ सौ सानया शार्ङ्गविभीषितम् ।
मण० म, स, ज, स, त, स, ग (12 7)
उवा० वेदान्तैर्ब्रह्मादुरेकपुत्रव्य व्याप्य स्थित रोदसी
वस्तिप्रोत्तर इत्यनन्तविषयः शब्दो यथाचारः ।
अन्तर्विषयः समुच्चयनिमित्तप्रकाशादिभिर्मण्यते
स स्वाध्यायः स्थिरप्रमितयोगमुक्त्या नि श्रेयसायान्नु च ॥
वि० १।१।

(3) सुमधुरा

परि० ओ मी मो मो मुसुकेन्दु हृदयनुरसैकला सुमधुरा ॥
मण० म, र, म, न, म, न, म (7 6 6)
उवा० वेदान्तिनः प्राकृतस्य वदति न च ते जिह्वा निपतिता
मध्याह्ने वीक्षतेऽर्कं न तव सहसा दृष्टिर्विचलिता ।
दीप्ताग्नी पाणिमया विपति स च ते
दरयो वसति मो
वारिष्ठाष्वावदन्तं यत्नसि न ते देह हरति नृ ॥
मुक्त० १।२१।

(4) सुरता

परि० ओ मी मो मो मुसुकेन्दु स्वरानुकरवैराह सुरताम् ।
मण० म, र, म, न, म, न, म (7 7 5)
उवा० कामकीर्तनात्मनो मधुसूयवधवारम्बरमत्तान्
कालिन्दीकुलकुन्दै विह्वलकुमुदाकण्ठद्वय ।

मोहिनी बलवीनामचरसमुपां प्राप्य सुरताम्
शङ्के दीप्यमाने प्रचुरकृतमुक्तं व्यस्वरती ॥

वीस बणों के चरण बाड़े हुए

(कृति)

(1) नीतिका

परि० सजजा भरी सलगा यदा कथिता तदा ननु नीतिका ।
मण० स ज ज म, र, स, ल, ग (5 7 8)
उवा० करतालचञ्चलकङ्कणरत्नमिश्रणेन मनोरमा
रमणीयवैभूतिनादरीङ्गमसंगमेन सुखावहा ।
बहलानुरागनिवासराससमुद्भवा भवरागिणम्
विदधौ हरि नमः वल्लवीजनबाह चामरगीतिका ॥

(2) सुवदना

परि० जेया सत्तमवधविम्वरभनययता म्मी न सुवदना ।
मण० म, र म न, य म ल ग (7 7 6)
उवा० उगाङ्गास्तङ्गकूल वृत्तभदसलिला प्रत्यन्दिमलिकम्
यथाया ययामोपकण्ठद्वयमनिमुक्ता कलोलमुत्तरम् ।
स्रोतः क्षातावसीदतटमुवदशर्न कलादितटटा
शोणं सिन्दूरशोणा मम राजपतय पास्यन्ति सान्द्र ॥
मुद्रा० ४।१६।

इस्क्रीस बणों के चरण बाड़े हुए

(प्रकृति)

(१) वज्रकायसी (सरसी, वृत्तभी)

परि० नजमनजा जगे नरपते कथिता भुवि पञ्चकावली ।
मण० न ज म, ज ज ज र (7 7 7)
उवा० नुरगताकुलस्य परितः पञ्चकेनुरङ्गजम्बन
प्रमथितमूधून प्रतिपन्नं यन्निनस्य मूल महीभूता ।
परिवहन्तो यमगुञ्जलस्य पुर सतन वनधिय-
विचरगन्तिश्रियो जलनिषेधेन तदाऽभवदन्तरं महन् ॥
शि० १।८२ ॥

(2) जम्बरा

परि० जम्बराजो नयेन विमुनियतियता जम्बरा
कीर्तितेयम् ।

मण० म, र, म न य, य, य (7 7 7)

उवा० या सृष्टिः सन्दराका बहुति विचिहृत

वा इविद्यां च इहो

ये हे कालं विषयः श्रुतिविषयमुपा

या स्थिता व्याप्य विषयम् ।

यामाहु सर्वमृतकृतिरिति क्या प्राणिन प्राणवत्ता
प्रायश्चित्ताभिः प्रपन्नस्तानुभिरवपुः कस्ताभिरष्टाभिरिति ॥

म० १।१।

वाइस बणों के चरण बाड़े हुए

(प्रकृति)

(हंसी)

परि० मो मो नाचत्वादी पो मो
कमुमुवमवतिरिति वसति हंसी ।

मृगमृगतिमयीः तमं विवता
मृगमृगतिः मृगमृगतिमृगः ॥

(2) उपस्थित

परि० विषये यदि ही लला हने
भी मुनिनाम् मुक्तामुनिविषयम् ।
मन्त्र० स, स, स, न, न (विषय चरण)
म, म, म, न, न (सम चरण)

उदा० मुरवैरिवमुत्तमतां मृग
हेमनिभायुक्तमृगमृगतिम् ।
मममं मृगमृगतिम् उदा
सारदमीरवरैकमृगतिम् ॥

(3) मुक्तासाध्या (बीजमृगमृगति)

परि० मृगमृगति मृगमृगति मृगमृगति
मृगि तु मृगी मृगमृगति मुक्तासाध्या ।

मन्त्र० म, न, र, य (विषय चरण)
म, ज, ज, र, य (सम चरण)

उदा० मृग मृगमृगतिमृगमृगति
मृगमृगतिमृगमृगतिमृगमृगति ।
मृगमृगतिमृगमृगतिमृगमृगति
मृगमृगतिमृगमृगतिमृगमृगति ॥ कु० ४।४५ ।

(4) विद्योमिनी (वैतालीय या मुक्ता)

परि० विषये लला मृग मृग
लला लला मृग विद्योमिनी ।

मन्त्र० स, स, स, न (विषय चरण)
स, म, र, न, न (सम चरण)

उदा० लला विद्योमिनी न विद्या-
मृगमृगति परमापदा पदम् ।

मुक्ता हि विद्युत्कारिणम्
मुक्तामृगः स्वयमेव संपदः ॥ कि० २।१० ।

(5) केनचली

परि० लला मृग मृग विषये वेद
मृगमृगति केनचली मृगि मृगमृगति ।

मन्त्र० स, स, स, न (विषय चरण)
म, म, म, न, न (सम चरण)

उदा० स्वरकेनचली मृगमृगति
केनचलीमृगमृगतिमृगमृगति ।
मृगमृगति मृगमृगति मृगमृगति
केनचलीमृगमृगतिमृगमृगति ॥

(6) हरिमृगमृगति

परि० लला मृगमृगति विषये मृग-
मृगि मृगी मृगमृगति हरिमृगमृगति ।

मन्त्र० स, स, स, न, न (विषय चरण)
म, म, म, र (सम चरण)

उदा० स्वरकेनचली हरिमृगमृगति
मृगमृगतिमृगमृगति मृगमृगति ।
मृगमृगतिमृगमृगति मृगमृगति
मृगमृगतिमृगमृगति मृगमृगति ॥

विशेष० अपरमृगमृगति बीजमृगमृगति और वैतालीय या
विद्योमिनी प्रायः ज्ञाति समये पाते हैं (२० मृग-
मृग मृग) । परन्तु कभी कभी मृगमृगमृगति में उनकी
परिभाषा ही जाती है, इसी लिए वे वही मृगमृगति के
अन्तर्गत दे दिये गये हैं ।

मृगमृगति (५)

विषयमृगति (मृगमृगति)

हस मृगी के अन्तर्गत मृगमृगति मृगमृगति

मृगमृगति मृगमृगति ॥

परि० मृगमृगति मृगि मृगी मृग
मृगमृगतिमृगमृगतिमृगमृगति ।
मृगमृगतिमृगमृगतिमृगमृगति
मृगमृगतिमृगमृगतिमृगमृगति ॥

मन्त्र० स, स, स, न (विषय चरण)
म, स, स, न (द्वितीय चरण)
म, न, स, न (तृतीय चरण)
स, स, स, न (चतुर्थ चरण)

उदा० मृग मृगमृगति मृगमृगति
मृगमृगतिमृगमृगतिमृगमृगति ।

मृगमृगतिमृगमृगतिमृगमृगति
मृगमृगतिमृगमृगतिमृगमृगति ॥ कि० २।११ ।
दे० कि० १५ मृग ।

मृगमृगति का एक और जोर बताया जाता
है जिसके तृतीय चरण में म, न, स, स, न के
स्थान में म, न, स, न होते हैं । मृगमृगति के
अन्तर्गत मृगमृगति मृगमृगति के मृगी की संख्या
मृग-मृग होती है, 'मृग' के सामान्यजीविक के
अन्तर्गत मृगमृगति है । मृग के मृग मृगमृगति की
संख्या मृग मृगमृगति के लिए ही मृगी नाम व्यवहृत
होता है । मृगमृगति 'मृगमृगति' का संघर्ष है वे
किसी भी निश्चित मृग के दो या दो के अधिक
मृगमृगति की मृगमृगति मृगमृगति या मृगमृगति
मृगमृगति मृगमृगति ॥

अनुभाग (ब)

आति

(यह ऊन्य भाषाओं की संख्या से विनिश्चित किये जाते हैं) ।

(ब) इस प्रकार के वृत्तों की अत्यन्त सामान्य प्रकार 'आर्वा' हैं। इसके नीचे अन्तर भेद बताये जाते हैं:

पद्मा विपुला चपला मुक्तचपला प्रथमचपला च ।
गीत्युपगीत्युपगीतय आर्यागीतिर्नवैव आर्याया ॥
इन तीनों में से अन्तिम चार प्रकार ही प्रायः प्रयुक्त होते हैं, इसीलिए इनका उल्लेख किया जाता है ।

(1) आर्वा

हरि० यस्या पादे प्रथमे द्विव्यमाभास्तथा तृतीयेऽपि ।
अष्टादश द्वितीये चतुर्थे पञ्चदश तार्या ॥ ध्रु० ४ ।
इसके प्रथम तथा तृतीय चरण में बारह मात्राएँ होती हैं (ह्रस्व स्वर की एक मात्रा तथा दीर्घ की दो मात्राएँ गिनी जाती हैं) । दूसरे चरण में अठारह तथा चौथे चरण में पन्द्रह मात्राएँ होती हैं ।

उदा० प्रतिपक्षेणापि पति सेवन्ते भर्तृवत्सला साध्यम् ।
अन्यस्तरिता अतापि हि समुद्राः प्रापयन्त्यग्निम् ॥
मालवि० ५।१९ ।

गोचरं नो समस्त 'आर्वास्तपस्तपस्ती' इसी ऊन्य में लिखी गई है ।

(2) वीति

हरि० आर्वापूर्वार्धसम द्वितीयमपि भवति यत्र ह्रस्वते ।
ऊर्ध्वाध्वस्तदानीं वीति ताम्रमृतवाणि भावन्ते ॥
इसके प्रथम तथा तृतीय चरण में बारह मात्राएँ, और दूसरे तथा चौथे चरण में अठारह मात्राएँ होती हैं ।

उदा० पाटीर तव पटीयान् क. परिपाटीमिमाद्रीकुरुन्तु ।
यत्पिचतामपि मुना पिष्टोऽपि तनोषि परिचले
पुष्टिम् ॥ भावि० १।१२ ।

(3) उपवीति

हरि० आर्वात्तरार्धतुल्य प्रथमार्धमपि प्रयुक्तं वेत् ।
कामिनि ताम्रकपीति प्रतिभाषन्ते महाकवयः ॥
ध्रु० ५ ।

इस ऊन्य के प्रथम तथा तृतीय चरण में बारह मात्राएँ, और द्वितीय तथा चतुर्थ चरण में पन्द्रह मात्राएँ होती हैं ।

उदा० नवनीचकुम्भीराणां राक्षसास्ते मुरारादिम् ।
नस्यारयकुम्भीरिणः स्वर्गपुराङ्गीदृशां वीते ॥

(4) उन्वीति

हरि० आर्वात्तरार्धतुल्य विपरीते पुनः प्रोद्गीतिः ।

इसके प्रथम तथा तृतीय चरण में बारह मात्राएँ होती हैं, द्वितीय चरण में पन्द्रह तथा चतुर्थ चरण में अठारह मात्राएँ होती हैं ।

उदा० नारायणस्य सन्ततमुद्गीतिः सन्ततिर्नव्या ।
अर्वाभाषास्तित्स्तरससारसगरे तरणिः ॥

(5) आर्वावीति

हरि० आर्वा प्राग्वक्तमन्त्रे चकनूय तादृक् परार्धमार्वावीतिः ।
इसके प्रथम तथा तृतीय चरण में बारह मात्राएँ और द्वितीय तथा चतुर्थ चरण में बीस मात्राएँ होती हैं ।

उदा० मधुमुका सुखिनीऽस्मिन्नवरतममन्दारामतामरसदृशः ।
नासेवन्ते रसमन्त्रतममन्दारामतामरसदृशः ॥

चि० ४।५१ ।

नोट यह पाँचा भेद कभी कभी मध्ययोगना में भी परिभाषित किये जाते हैं ।

(आ) वैयालीय

हरि० वद्विचयेऽपि तमे कलास्तारव धमे स्युर्नो
निरन्तराः ।

न समाप्त्य पराभिता कला वैयालीयेऽपि

रकी मुद्र. ॥

बहु चार चरण का श्लोक है । इसके प्रथम तथा तृतीय चरण में बीस मात्राओं का भवक समता है, और द्वितीय तथा तृतीय चरण में छह मात्राओं का । पुनः प्रथम तथा तृतीय चरण में छ माँत्राएँ होती चाहिए । द्वितीय तथा चतुर्थ चरण में आठ मात्राएँ और उसके परचात् रचय (AS) तथा कय मुद्र (IS) होने चाहिए । आगे नियम इस बात की अपेक्षा करते हैं कि इन चरणों में छ माँत्राएँ ह्रस्व या दीर्घ नहीं होनी चाहिए, इसके अतिरिक्त प्रत्येक चरण चरण की (अर्वात् द्वितीय, चतुर्थ तथा छठा चरण) मात्राएँ अपने चरणों (अर्वात् तृतीय, चतुर्थ और छतम) के समुक्त नहीं होनी चाहिए ।

उदा० कुसलं कलु तुच्छमेव तत्
यस्यै कलु यदव्ययमहम् ।

उपदेशपराः परेष्वपि

स्वविभाषाभिमुखेषु साधवः ॥ चि० १९।४१ ।

(६) वीत्युत्पत्ति

हरि० पर्यन्ते नो तस्यै वीत्युत्पत्तिः सुवीचिकतम् ।
यह वैयालीय के स्थान ही है । इसमें प्रत्येक चरण के अन्त में रचय और क. ग के स्थान में रचय और यवक होने चाहिए । दूसरे शब्दों में यह वैयालीय ही है, इसमें केवल प्रत्येक चरण के अन्त में मुद्र बीड़ा हुआ है ।

उदा० कपुटा परमेव भूषणामय संभाम्यपराकर्म विभेदे ।
भूषणाम् किलोकयाचकार स्थिरबन्धोद्यमम्

महेन्द्रसूनुः ॥

क्रि० १३।१।

इसी प्रकार इसी वर्ण के अनेक वाचन श्लोकों में । हे० वि० २० भी ।

यह बात ध्यान में रखने की है कि विद्योमिनी या सुंदरी तथा अपरचरण, बैतासीव की ही विशेषताएँ हैं, और पुष्पिताया तथा मालमरिची, औप-
पञ्चसिक की । छन्दःशास्त्री वृत्तों की इन दोनों श्रेणियों का प्रतिपादन गणबोधना तथा मात्रा-
बोधना दोनों स्थानों पर करते हैं । इसीलिए यह
यहाँ भी दबाने गये हैं और अनुमात्र (ग) में भी ।

(ई) मात्रासमक

मात्रासमक वृत्त में चार चरण होते हैं, और प्रत्येक चरण में सोलह मात्राएँ । इसके अत्यन्त सामान्य प्रकार में नवाँ वर्ण लघु और अन्तिम वर्ण दीर्घ होता है । इसकी परिभाषा की है:- मात्रा-
समक नवमी स्थानवः ।

परन्तु मात्राओं के ह्रस्व वा दीर्घ होने के कारण इस वृत्त के अनेक भेद हो जाते हैं । उदा-

हरण के रूप में, यदि नवाँ तथा बारहवाँ वर्ण लघु हैं, और पन्द्रहवाँ तथा सोलहवाँ दीर्घ हैं, छेच वर्ण ऐच्छिक है, तो यह वृत्त बालवास्तिका कहलाता है । यदि पाँचवाँ, आठवाँ तथा नवाँ ह्रस्व हैं, और पन्द्रहवाँ तथा सोलहवाँ दीर्घ हैं तो यह वृत्त चित्रा कहलाता है । यदि पाँचवाँ और आठवाँ वर्ण ह्रस्व हैं, नवाँ, दसवाँ, पन्द्रहवाँ और सोलहवाँ दीर्घ हैं तो यह उषश्चित्रा कहलाता है । यदि पाँचवाँ, आठवाँ और बारहवाँ ह्रस्व हैं, पन्द्रहवाँ तथा सोलहवाँ दीर्घ हैं, तथा साव अनिश्चित हैं, तो यह विश्लोक कहलाता है । कभी कभी एक ही श्लोक में इन वृत्तों के दो या दो से अधिक भेद मिला दिये जाते हैं, उस अवस्था में हम उसे बाला-
कुलक वृत्त कहते हैं, उसमें कोई विशेष प्रतिबन्ध भी नहीं रहता है, केवल प्रत्येक चरण में सोलह मात्राओं का होना आवश्यक है ।

उदा० मूढ नहीहि बलायमत्तुणां

कुव तन्मुढे मनसि वितुष्णाम् ॥

यस्त्ववसे निजकर्मोपासं

चितं तेन विनोदय चित्तम् ॥

मोह० १

परिशिष्ट २

संस्कृत के प्रसिद्ध लेखकों का काल आदि

आर्यभट्ट—एक प्रसिद्ध ज्योतिषि, जन्मकाल ४७६ ई०।
उज्ज्वल—अनंकारशास्त्र का एक प्राचीन लेखक। यह
 काश्मीर के राजा जयापीड की राज्यसभा का मुख्य
 पंडित था। इसका काल ७७९ से ८१३ ई० तक है।
कण्वद—पतञ्जलि के महामाध्य पर भाष्यप्रदीप नामक
 टीका का रचयिता। डाक्टर बुद्धर के मतानुसार
 यह तेरहवीं शताब्दी से पूर्व नहीं हुआ था।

रत्नरविगोपी नामक राजाओं के इतिहास की
 प्रसिद्ध पुस्तक का रचयिता। यह काश्मीर के राजा
 जयसिंह का, जिसने ११२९ से ११५० ई० तक राज्य
 किया, समकालीन था।

कालिदास—अभिज्ञान शाकुन्तल, विक्रमोर्वशीय, माण्डवि-
 कार्पणमित्र, रघुवश, कुमारसंभव, मेघदूत और शतु-
 संहार का रचयिता। इसके अनिश्चित 'मल्लोदय'
 तथा अन्य कई छोटे-छोटे काव्यों के रचयिता।
 कालिदास का सबसे पहला अधिकृत उल्लेख हमें
 ६३४ ई० (तदनुसार ५५६ शके) के शिलालेख में
 मिलता है। इसमें कालिदास और भारवि दोनों
 को प्रसिद्ध कवि बतलाया गया है। श्लोक यह है—

येनायोवि न वेवम,
 त्विरमर्षयिषी विवेकना जिनवेवम।

स विजयतां रविकोति
 कविताश्रितकालिदासभारविकोति ॥

हर्षचरित के आरम्भ में बाण ने कालिदास का
 उल्लेख किया है। इससे प्रतीत होता है कि कालि-
 दास बाण से पहले अर्थात् मानवी शताब्दी के पूर्वार्ध
 से पहले हुआ था। परन्तु सातवीं शताब्दी से किन्ना
 पूर्व इस बात का अभी तक पता नहीं लग सका।
 मेघदूत के चौदहवें श्लोक की व्याख्या करते हुए
 मल्लिनाथ ने निबुल और विज्जनाम को कालिदास
 का समकालीन बताया है। यदि मल्लिनाथ के इस
 सुझाव को जिसकी सत्यता में पूरा-पूरा सन्देह है,
 सही मान लिया जाय तो हमारा कवि कालिदास
 अवश्य ही छठी शताब्दी के मध्य में रहा होगा
 वही काल विज्जनाम का माना जाता है।

एक बात और है, यदि इसका ठीक निर्णय हो
 जाय तो कवि के जन्मकाल का सही ज्ञान हो जाय।
 यह बात है कालिदास द्वारा अपने अभिज्ञान के रूप
 में विष्णु का उल्लेख। यह कौन सा विष्णु है, इस

बात का अभी पूरी तरह निर्णय नहीं हो पाया है।
 प्रचलित परंपरा के अनुसार वह विष्णु संवत् का जो
 ईसा से ५६ वर्ष पूर्व आरम्भ हुआ, प्रथमक था।
 यदि इस विचार को सही समझा जाय तो कालिदास
 निश्चय ही ईसा से पूर्व पहली शताब्दी में हुआ होगा।
 परन्तु कुछ विद्वान् अभी इस परिणाम पर पहुँचे हैं
 कि जिसमें हम विष्णु संवत् (ईसा से ५६ वर्ष पूर्व)
 कहते हैं वह कौटिल्य के महायुद्ध के काल के आधारे
 पर बना है। इस युद्ध में विष्णु ने ५४४ ई० में
 प्लेच्छों को पराजित किया था। और उस समय
 ६०० वर्ष पीछे ले जाकर (अर्थात् ईसा से ५६ वर्ष
 पूर्व) इसका नामकरण किया। यदि यह मत यथार्थ
 मान लिया जाय—विद्वान् लोग अभी इस बात पर
 एकमत विचार नहीं देते—तो कालिदास छठी
 शताब्दी में हुए हैं। अभी इस प्रश्न का पूरा समा-
 धान नहीं हो सका है।

जमेन्द्र—काश्मीर का एक प्रसिद्ध कवि, समवसातका
 तथा कई अन्य पुस्तकों का रचयिता। वह ग्यारहवीं
 शताब्दी के पूर्वार्ध में हुआ।

अच्युत एक प्रसिद्ध टीकाकार। इसने मालतीमाधव
 और मेघीसहस्र पर टीकाएँ लिखीं। वह चौदहवीं
 शताब्दी के बाद हुआ।

अनन्नाथ चरित एक प्रसिद्ध आधुनिक लेखक। उसका
 प्रसिद्ध ग्रन्थ रसगंगाधर है जिसमें 'काव्य' विषय का
 विवेचन है। उसकी अन्य कृतियाँ हैं—आमिनी-
 विलास, पाँच लहरियाँ (संघा, वीरघ्न, सुधा, अमृत,
 और कल्या) तथा कुछ अन्य छोटी रचनाएँ। ऐसा
 माना जाता है कि वह दिल्ली के सम्राट् शाहजहाँ के
 काल में हुआ। इसने जहांगीर के राज्य के अन्तिम
 दिन तथा १६५८ ई० में शराफ का अस्वामी राज्य-
 सिंहासनारोहण देखा होगा। बात इसका अन्त—और
 कुछ नहीं तो कार्य काल तो अवश्य—१६२० तथा
 १६६० ई० के बीच में रहा होगा।

गीतगोविन्द नामक ललित गीतिकाव्य का प्रणेता।
 यह बंगाल के बीरभूमि जिले के किदुविन्द नामक
 गाँव का निवासी था। कहा जाता है कि वह राजा
 लक्ष्मणसेन के काल में हुआ जिसकी एकामता
 डाक्टर बुद्धर ने बंगाल के बीच राजा से की है। इसका
 शिलालेख विष्णु संवत् ११७३ अर्थात् ११९६ ई०

का मिलता है। अतः यह कवि बारहवीं शताब्दी में हुआ होगा।

वर्णिम—यह वणकुमारचरित और काव्यावर्ण का रचयिता है छठी शताब्दी के उत्तरार्ध में हुआ। माधवाचार्य के मतानुसार वह बाण का समकालीन था।

वर्तवर्णि—महाकाव्य का प्रसिद्ध लेखक। कहते हैं कि यह ईसा के लगभग १५० वर्ष पूर्व हुआ।

वारम्बण—(बहुवारम्बण) वेणीमहार का रचयिता। यह नवीं शताब्दी से पूर्व ही हुआ होगा, क्योंकि इसकी रचना का उल्लेख आगम्यवर्चन ने अपने ध्वन्यालोक में बहुत बार किया है। यह कवि अवन्तिवर्मा के राज्यकाल ८५५-८८४ ई० (राजतरंगिणी ५।३४) में हुआ।

बाण—हर्षचरित, कादंबरी और चरित्रावतार का विख्यात प्रणेता। पार्श्वतीपरिचय और रत्नावली भी इसी की रचना मानी जाती है। इसका काल निर्विवाद रूप से इसके अभिभावक काव्यकुब्ज के राजा श्री हर्षवर्धन द्वारा निश्चित किया गया है। जिस समय ह्युन त्सांग ने समस्त भारत में भ्रमण किया उस समय हर्षवर्धन ने ६२९ से ६४५ ई० तक राज्य किया। इसलिए बाण या तो छठी शताब्दी के उत्तरार्ध में हुआ या सातवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में। बाण का काल कई और लेखकों के काल का म्यूनातिप्यून उसका जिनका कि बाण ने हर्षचरित की प्रस्तावना में उल्लेख किया है परिचायक है।

विजय—महाकाव्य विक्रमांकदेवचरित तथा योग्यशासिका का रचयिता। यह ग्यारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में हुआ।

अट्टि—यह श्रीरामाजी का पुत्र था। राजा श्रीचरमेन या उसके पुत्र नरेन्द्र के राज्यकाल में श्रीरामाजी बलभी में रहा। सैनिक के मतानुसार श्रीधर का राज्यकाल ५३० से ५४५ ई० तक था।

भर्तृहरि—शतकत्रय और वाचस्पदीय का रचयिता। तेलग महाकाव्य के मतानुसार यह ईस्वी मनु की प्रथम शताब्दी के अन्तिम काल में अथवा दूसरी शताब्दी के आरम्भ में हुआ। परंपरा के अनुसार भर्तृहरि विक्रमादित्य का भाई था। और यदि हम इस विक्रम को सही मानें जितने ५४४ ई० में स्पेलेच्छा को पराजित किया था, तो हमें समझ लेना चाहिए कि भर्तृहरि छठी शताब्दी के उत्तरार्ध में हुआ।

अम्बुन—महावीरचरित, धालतीमाधव और उत्तररामचरित का रचयिता। यह विदर्भ का मूल निवासी था, और काव्यकुब्ज के राजा यशोधर्म के दरबार में रहता था। कादंबरी के राजा अमितादित्य (९९३ से ७२९ ई०) ने इसे परास्त किया था।

अतः अम्बुन सातवीं शताब्दी के अन्त में हुआ। बाण ने इसके नाम का उल्लेख नहीं किया, अतः वह काल मूलगत है। कालिदास और अम्बुन की समकालीनता के उपाख्यान निर उपाख्यान होने के कारण स्वीकार्य नहीं है।

भारवि—किरातावर्णीय काव्य का रचयिता। ६३४ ई० के एक शिलालेख में इसका उल्लेख कालिदास के साथ किया गया है। देखो कालिदास।

भास—बाण और कालिदास ने इसे अपना पूर्ववर्णी बताया है अतः यह सातवीं शताब्दी से पूर्व ही हुआ।

बम्मह—काव्य प्रकाश का रचयिता। यह १२९४ ई० से पूर्व ही हुआ है क्योंकि १२९४ ई० में तो अय्यल ने काव्यप्रकाश पर 'अय्यली' नामक टीका लिखी है।

बसूर—यह बाण का हस्तुर था। इसने अपने कुछ से मुक्ति पाने के लिए सुषंशत की रचना की। यह बाण का समकालीन था।

बुरारि—अनर्थायव नाटक का रचयिता। रत्नाकर कवि ने (जो नवी शताब्दी में हुआ) अपने हरविजय ३।८।६७ में इसका उल्लेख किया है। अतः इसे नवी शताब्दी से पूर्व का ही ममाना चाहिए।

रत्नाकर—हरविजय नामक महाकाव्य का रचयिता। अवन्तिवर्मा (८५५-८८४ ई० तक) इस कवि के आश्रयदाता थे।

राजशेखर—बालरामायण, बालभारत और बिज्जाल-भजिका का रचयिता। यह प्रबभूति के परचात् इसवी शताब्दी के अन्त से पूर्व हुआ, अर्थात् यह सातवीं शताब्दी के अन्त और दसवीं शताब्दी के मध्य में हुआ।

बरहमिहिर—एक प्रसिद्ध ज्योतिषिद्, बृहत्संहितानामक पुस्तक का रचयिता।

बिक्रम—देखो कालिदास।

बिष्णुसहस्र—मुद्राराक्षस का रचयिता। इस नाटक की रचना का बाल तेलग महाकाव्य के अनुसार सातवीं या आठवीं शताब्दी माना जाता है।

झकर—वेदान्त दर्शन का प्रसिद्ध भाष्य, तथा शारीरक भाष्य का प्रणेता। इसके अनिश्चित वेदान्त विषय पर इसकी अनेक रचनाएँ हैं। कहते हैं कि यह ७८८ ई० में उत्पन्न हुआ और १२ वर्ष की बोड़ी आयु में ही ८२० ई० में परमाकयाली हुआ। परन्तु कुछ विद्वान् लोगों (नैलग महाकाव्य तथा डाक्टर भट्टाकर आदि) ने यह द्वाज का प्रयत्न किया है कि यह छठी या सातवीं शताब्दी में हुआ होगा। मुद्राराक्षस की प्रस्तावना देखिये।

जीह्व—यह नैयमचरित का प्रसिद्ध रचयिता है। इसने अनिरुक्त इसकी अन्य आठ इस रचनाएँ की मिलनी

हैं। इसे प्रायः बारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में हुआ मानते हैं। विस्मय कहना है कि १२१३ ई० में अपने पिता कलस के पदचाल श्रीहृयं राजगद्दी पर बैठे। अतः रत्नावली नाटिका जो इस राजा द्वारा लिखित मानी जाती है अवश्य अपने राज्य काल के अन्त में ११११ से ११२५ के मध्य लिखी गई होगी। परन्तु 'रत्नावली' को इसके पूर्व का ही मानना पड़ेगा क्योंकि दशरूपमें इसके अनेक उद्धरण उपलब्ध हैं। और दशरूप दसवीं शताब्दी के अन्तिम भाग में रचा गया।

मुख्य वासवदत्ता का रचयिता। इसका उल्लेख बाण ने किया है। अब यह मानवी शताब्दी के बाद का नहीं। इसने समेकानि द्वारा लिखित बौद्धसंगति नामक एक रचना का उल्लेख किया है। यह पुस्तक छठी शताब्दी में लिखी गई थी।

हर्ष बाण का अभिभावक। ऐसा समझा जाता है कि रत्नावली नाटक बाण ने लिखा और अपने अभिभावक के नाम से प्रकाशित कराया।

प्राचीन भारतवर्ष

त्वपूर्ण भौगोलिक नाम

अंधा—अंधा के दक्षिणी तट पर स्थित एक महत्त्वपूर्ण राज्य। इसकी राजधानी अंधा की, जो अंगपुरी भी कहलाता था। यह नगर ब्रिजमाल के पश्चिम में अजमेर २५ मील की दूरी पर विद्यमान था। इसी किन्तु यह था तो वर्तमान भावकपुर था, अथवा उसके कहीं निकट स्थित था।

अंध्र—एक देश और उसके अधिवासियों का नाम। यह वर्तमान तेलंगन ही नामा जाता है। योदावरी का महाना अंध्रों के अधिकांश हैं था। परन्तु इसकी सीमाएँ समस्त पश्चिम में पडत, उत्तर में योदावरी, तथा दक्षिण में कृष्णा नदी थी। कर्नाटक देश इसकी एक सीमा था (देखो पृष्ठ ७ वाँ उत्पन्न)। इसकी राजधानी अजमेर समस्त प्राचीन जैनी या वैनी थी।

अवन्ति—नर्मदा नदी के उत्तर में स्थित एक देश। इसकी राजधानी उज्जयिनी थी जिसे अवन्तिपुरी या अवन्ति और विजापुर (पृष्ठ १०) भी कहते थे। यह सिन्धु नदी के तट पर स्थित थी। मालवा देश का पश्चिमी भाग है। महाभारत काल में यह देश दक्षिण में नर्मदाछट तक तथा पश्चिम में यही के तटों तक फैला हुआ था। अवन्ति के उत्तर में एक दूसरा राज्य था जिसकी राजधानी चर्मन्वती नदी के तट पर स्थित वल्लपुर थी, यह ही वर्तमान बोलपुर प्रतीत होता है। यह रत्नदेव की राजधानी थी।

अजमेर—आजमेर की पुराना नाम।

अजमेर—देखो वीरपट्ट।

अजमेर—(हर्मिस्व या अजमेर भी कहलाता है) इसी नगर की वर्तमान दिल्ली से एककम्पता मानी जाती है। यह नगर मनुष्य के बाईं ओर बना हुआ था, जब कि वर्तमान दिल्ली बाईं ओर स्थित है।

अजमेर या अजमेर—एक देश का नाम। वर्तमान उड़ीसा जो ताजमाल के दक्षिण में स्थित है और कपिला नदी तक फैला हुआ है—पृष्ठ २५ वाँ उत्पन्न। इस प्रांत के मुख्य नगर कटक और पुरी हैं जहाँ कि जनजात का प्रसिद्ध स्थिर है।

अजमेर—हजार के निकट एक नाम का नाम है। यह ईसाविक पहाड़ी के दक्षिणी भाग पर नर्मदा के किनारे फैला हुआ है। यहाँ के मातृपात्र का पहाड़ भी कम-कम कहलाता है।

अजमेर दे० 'अजमेर' के अन्वयार्थ।

अजमेर—एक देश का नाम जो उड़ीसा के दक्षिण में स्थित है और योदावरी के मुहाने तक फैला हुआ है। विट-सकाल की उत्तरी छोरकार से इसकी एककम्पता स्थापित की जाती है। इसकी राजधानी अजमेर नगर प्राचीन काल में उज्जयिनी से (पृष्ठ २५ वाँ उत्पन्न) कुछ दूरी पर अजमेर राजमहेश्वरी में थी। दे० 'अजमेर' की।

अजमेर—दे० 'अजमेर' के अन्वयार्थ।

अजमेर—एक महत्त्वपूर्ण राज्य जो करतोया या सदाभीरा के तट से लेकर ब्राह्मण की सीमा तक फैला हुआ है। यह उत्तर में हिमालय पर्वत तक तथा पूर्व में चीन की सीमा तक फैला हुआ होगा, क्योंकि यहाँ के राजा ने किरात और चीन की सेना के साथ युद्धों का सहायता की थी। इस राज्य की प्राचीन राजधानी लोहिय या बह्मपुत्र नदी के दूसरी ओर प्राग्ज्योतिष थी। पृष्ठ २५ वाँ उत्पन्न।

अजमेर—एक देश और उसके अधिवासियों का नाम।

यह हिन्दु कुल पहाड़ के उस प्रदेश पर रहते होने लही यह बल्लभ से निकलित को पुष्प करता है, तथा सिन्धु और कृष्णा तक फैला हुआ है। यह प्रदेश बौद्धों के कारण प्रसिद्ध है। यहाँ पर बकरी बादि जानवरों की ऊन से शाल भी बनाये जाते थे। इसके अतिरिक्त यहाँ अजमेर के कुछ बहुत पाये जाते हैं। पृष्ठ २५ वाँ उत्पन्न।

अजमेर—बोल देश के उत्तर में स्थित एक देश। ऐसा प्रतीत होता है कि कुम्भरे के दक्षिण में अजमेर या कोलियन दुर्ग इस प्रदेश की राजधानी थी। यह देश ईदराबाद के दक्षिण-पश्चिमी भाग का प्रतिनिधित्व करता है।

अजमेर—दिल्ली के निकट एक विस्तृत प्रदेश। यहीं औरव और पांडवों के मध्य महासंग्राम हुआ था। यह बानेस्वर के दक्षिण में इसी नाम के पवित्र शरीर के निकट एक प्रदेश है जो सरस्वती के दक्षिण से लेकर पृथ्वी के उत्तर तक फैला हुआ है। कभी कभी इस स्थान को 'कुम्भतपक' नाम से पुकारते हैं जिसका अर्थ है परब्रह्मण द्वारा धन किये गए जलियों के रक्त के बीच पोकरे।

अजमेर—एक देश का नाम—वर्तमान कुम्भ प्रदेश। यह प्रदेश अजमेर योदावरी के उत्तरपूर्व की ओर कटु (अजमेर) नदी के बाईं ओर स्थित है।

कुशावती या कुशवती—यह दक्षिणकोशल प्रदेश की राजधानी है और विष्णुपर्वत की तटीय घाटी में स्थित है। यह नर्मदा के उत्तर में परम्पु विष्णुपर्वत के दक्षिण में होगा। संभवतः यह वही स्थान है जिसे बुधेलखंड में हम रामनगर कहते हैं। राजसेनार इस कुशावती के स्वामी को मध्यदेशनरेन्द्र अर्थात् मध्यभूमि या बुधेलखंड का राजा कहते हैं।

केकय—सिन्धुदेश की सीमा बनाने वाला केकय एक देश का नाम है।

केरल—कावेरी के उत्तरी समुद्र तथा पश्चिमी घाट की मध्यवर्ती भूमि की लंबी पट्टी। इस प्रदेश की मुख्य नदियाँ हैं नैन्मबती, सरावती तथा कालीनदी। यह काली नदी ही मुरला नदी समझी जाती है। इसका उल्लेख रघु० ४।५५ तथा उत्तर० ३ में किया गया है, यही केरलप्रदेश की मुख्य नदी है। केरल प्रदेश वर्तमान कानड़ा प्रदेश है जिसके साथ संभवतः मलाबार भी जुड़ा हुआ है और कावेरी से पड़े तक फैला हुआ है।

कोशल एक प्रदेश का नाम जो रामायण के अनुसार सरयू नदी के तटों के साथ साथ बसा हुआ है। इसके दो भाग हैं—उत्तर कोशल और दक्षिण कोशल। उत्तर कोशल का नाम 'मन्व' है और यह अवधोष्वा के उत्तरी प्रदेश को प्रकट करता है जिसमें मन्व तथा बहुलायन सम्मिलित हैं। मन्व, तथा दशरथ आदि राजाओं ने इसी प्रान्त पर राज्य किया। राम की मृत्यु के पश्चात् उसके पुत्र कुश ने जो विष्णुपर्वत की तटीय घाटी में स्थित दक्षिणी कोशल की कुशावती राजधानी में राज्य किया, और लव ने उत्तरी कोशल में स्थित श्रावस्ती में रहकर राज्य किया।

कीर्लोबी बस्त देश की राजधानी का नाम है। यह नगर इलाहाबाद से लगभग तीस मील की दूरी पर वर्तमान कोशल के निकट स्थित था।

कीर्लिकी—एक नदी (कुली) का नाम जो उत्तरी भागल पुर तथा पश्चिमी पूर्णिया से होती हुई दरभंगा के पूर्व में बहती है। इस नदी के तटों के निकट ऋष्यभूम ऋषि का आश्रम था।

कीड वा पुंड्र—उत्तरी बंगाल। (पुंड्र मूलरूप से 'पुटी' के वंशज प्रदेश को कहते हैं)।

केरि एक देश और उसके अधिवासियों का नाम। केरियो को दाहल और कैपुर भी कहते हैं। यह लोग नर्मदा के उत्तरी तट पर बसे हुए थे, वह वही लोग थे जिन्हें हम दशार्थ कहते हैं। एक मय इनकी राजधानी त्रिपुरी थी। कुछ लोग ऐसा मानते हैं कि यह लोग मध्यभारत के वर्तमान बुधेल खण्ड में रहते थे, कुछ लोग यह समझते हैं कि इनका देश वर्तमान कर्नाटक था। कुशलपुर से नीचे मेरा नर

के बासपास विष्णु और रिश पर्वतों के मध्य में नर्मदा के किनारे पर स्थित माहिष्मती नदी में हैय वा कलचुरी लोग राज्य करते थे।

कोल एक देश का नाम जो कावेरी के तट पर बसा हुआ है यह मैसूर प्रदेश का दक्षिणी भाग है। यह प्रदेश कावेरी के परे है। पुलकेशिन् द्वितीय ने इस नदी को पार करके इस देश पर आक्रमण किया था। यही देश बाह में कर्णाटक कहलाने लगा।

कलस्थान—(मानव वसति) यह दण्डक के महावन का एक भाग है। और प्रसवण नामक पर्वत के निकट स्थित है। अश्विद वंशवती (स्वामीन परम्परा के अनुसार इसी नाम का एक स्थान जो वर्तमान नासिक से लगभग दो मील दूर है) का स्थान इसी प्रदेश में विद्यमान है।

कालम्बर—वर्तमान कलम्बर दोबाब। कलुव और विनासा (सतलुव और व्यास) से सिन्धु प्रदेश।

काश्यावती—मलय पर्वत से निकलने वाली एक नदी का नाम। यह वही नदी प्रतीत होती है जिसे बायकल तांडवारी कहते हैं, जो पश्चिमी घाट के पूर्वी ढलान से निकलकर तिन्नेवली जिले में से होती हुई नगर की साड़ी में गिर जाती है, सु० रघु० ४।५१-५०, और बा० रा० १०।५१।

काश्यावती—दे० 'सुसु' के अन्तर्गत।

कल्ल प्राचीन काल का एक अत्यन्त लम्बीन मय प्रदेश। यह सतलुव का पूर्ववर्ती मल्लक था। डारवली और सतलुव का मध्यवर्ती भाग भी इसमें सम्मिलित था। उत्तर में लुधाना और पटियाला है तथा बकस्थल का कुछ भाग दक्षिण में है।

किपुर-री—बेदि देश की राजधानी 'कम्पुद्रुहिता कर्वात् नर्मदा' की तरफों से 'कम्पुद्रुहिता' अतएव इस नदी के किनारे स्थित। कलकपुर से ६ मील की दूरी पर स्थित वर्तमान त्रिपुर को ही किपुर माना जाता है।

कलकपुर—दे० 'अवर्णि' के अन्तर्गत।

कल्ल—एक देश का नाम जिसमें से दशार्थ (दहन) नाम की नदी बहती है। यह मालवा का पूर्वी भाग था। इसकी राजधानी विदिशा नगरी थी जिसे वर्तमान जिज्जा माना जाता है। यह नैन्मबती या केतवा नदी के तट पर स्थित है, सु० मेघ० २।१२५, और कादवरी। कालिदास ने भी विदिशा नाम की एक नदी का उल्लेख किया है जो संभवतः वही है जिसे हम बायकल व्यास कहते हैं तथा जो वेतवा में मिल जाती है।

कल्लि—कुष्मा और पोन्नर नदियों के मध्यवर्ती बंधकी भाग के दक्षिण में स्थित कोरोमंडल का समस्त समुद्रोत्त इसमें सम्मिलित है। परम्पु यदि कीर्लिक

रूप से देखें तो यह प्रदेश कावेरी से परे नहीं फैला है। इसकी राजधानी कोंबी थी जिसे आजकल कांचीवरम कहते हैं और जो मद्रास के ४२ मील दक्षिण-पश्चिम में वेनवती नदी के किनारे स्थित है।

हाराका—दे० 'सौराष्ट्र' के अन्तर्गत।

हिमच एक देश का नाम जहाँ नल का राज्य था। इस की राजधानी जलका थी जो जलकनन्दा नदी के तट पर स्थित है। ऐसा प्रतीत होता है कि उसी भारत का वर्तमान कुमायूँ प्रदेश इसका एक भाग था। यह एक वर्षापूर्व का नाम भी है।

चम्बवती—दे० 'अनस्थान' के अन्तर्गत।

पञ्चाल एक प्रसिद्ध प्रदेश का नाम। राजसेनर के अनुसार (बा० रा० १०।८६) यह प्रदेश मगधा यमुना का मध्यवर्ती भाग था, इसलिए यह मगधा दाजब कहलाता था। द्रुपद के काल में यह प्रदेश चम्बवती (चबल) के तट से लेकर उत्तर में गंगाढार तक फैला हुआ था। भागीरथी का उत्तरीभाग उत्तर पञ्चाल कहलाता था। और इसकी राजधानी अत्रि-पञ्चम थी। इस प्रदेश का दक्षिणीभाग 'दक्षिणपञ्चाल' कहलाता था जो द्रुपद की मृत्यु के पश्चात् हस्तिनापुर की राजधानी में विलीन हो गया।

मन्वपुर—मन्वभूमि कवि की जन्मभूमि। यह नगर नागपुर जिले में चन्द्रपुर (वर्तमान बाँदा) के निकट कही पर बसा हुआ था।

पञ्चावती मालवाप्रदेश में सिन्धु नदी के तट पर स्थित वर्तमान नरवाड से इसकी एककृपा मानी जाती है। इसके आस-पास और दूर की नदियाँ पाग या पावती, लख, और मन्वर हैं जिनका मन्वभूमि ने पाग लावणी और मन्वभूमि के नाम से उल्लेख किया है यह नगर के आसपास बहने वाली नदियाँ हैं। मन्वभूमि के मालतीमाधव का वर्णित स्थान यह नगर है।

पया एक प्रसिद्ध सरोवर का नाम जो आजकल पत्रगिर कहलाता है। इसके निकट ही ऋष्यभूक पर्वत विद्यमान है। इस नाम की नदी सरोवर से निकली है; विशेषकर इसका उत्तरीभाग चन्द्रपुर के मध्यवर्ती थालासरोवर से निकला है। यही मन्वभूमि मूल पया था, और चन्द्रपुर ही ऋष्यभूक पर्वत। बाद में यह नाम इस सरोवर से नदी से परिवर्तित हो गया जो इससे निकली।

पारसिपुर गंगा और खोण नदी के संगम पर स्थित उत्तरी बिहार या मगध में एक महत्त्वपूर्ण नगर। यह 'कुम्भपुर' वा 'पुणपुर' भी कहलाता था। संस्कृत के लौकिक साहित्य में इस नाम का उल्लेख मिलता है। कहते हैं कि लगभग अठारहवीं शताब्दी के मध्य में यह नगर एक नदी की बाढ़ की शपेट में अँकुर मट्ट हो गया।

पांड्य भारत के विष्णुकुल दक्षिण में स्थित एक देश जो बोलदेश के दक्षिणपश्चिम में विद्यमान है। मलयपर्वत और ताम्रपर्णी नदी का स्थान निर्विवाद रूप से निश्चित हो चुका है, तु० बा० रा० २।३१। इस प्रदेश की वर्तमान तिरोबकी ने एककृपा स्थापित की जा सकती है। रामेश्वर का पावनद्वीप इसी राज्य के अन्तर्गत है। कालिदास ने पांड्यदेश की राजधानी का नाम नाग-नगर बताया है जो सम्भवतः मद्रास से १६० मील दक्षिण में वर्तमान नागपत्तन ही है, तु० रघु० ६।१९६६।

पारसीक पश्चिमा देश के रहने वाले लोग। समस्त १४ राज्य उन जातियों के लिए भी व्यवहार में आता था जो भारत की उत्तरपश्चिमी सीमा में समावर्ती जिनको वे रहते हैं। इनके देश से बनावदेश, नाम से पादा के आने का उल्लेख मिलता है।

पारियात्र—भारत की एक मुख्य पर्वतश्रृंखला। समस्त यह बड़ी है जिस हम विचार्यक गढ़ाज बहते हैं और जो हिमालय के समानान्तर उत्तर पूर्व में मगधा के दाजब की रक्षा करता है।

प्रतिष्ठान पुष्करवर्म की राजधानी। पुष्करवा एक प्राचीन काल का चन्द्रवंश का राजा था। यह स्थान प्रयाग या इलाहाबाद के समान स्थित था। हरिवंश पुराण में बताया गया है कि यह स्थान प्रयाग के जिल्ह में गंगा नदी के उत्तरी तट पर बसा हुआ था। कालिदास ने इस मगधा यमुना के संगम पर स्थित बनलाया है। तु० विक्रम० २।

मगध दक्षिणी बिहार या मगध का देश। इसकी पुगना राजधानी गिरिघट (या राजगृह) थी। इसमें पाँच पर्वत सिपुलगिर, रन्गगिर, उदयगिरि, या 'गिरि और बैमार (व्यङ्गा) गिरि सम्मिश्रित थे। उसकी नृगरी राजधानी पारसिपुर थी। परवर्ती साहित्य में मगध का नाम कोट भी आया है।

मत्स्य या बिराट—यत्पुर के पश्चिम में स्थित देश। कहा जाता है कि पांडव लोग दण्डन के उत्तर में द्यौम्येन तथा राहितक के नाम से जाने हुए यमुना के तट इस प्रदेश में आये थे। बिराट देश की राजधानी सम्भवतः बैराट ही थी जो आजकल जयपुर से ४० मील उत्तर में वैद्यनाथ के नाम से विख्यात है।

मल्ल भारत का पाँच मुख्य पर्वत श्रृंखलाओं में से एक। इसकी एककृपा सम्भवतः मैसूर के दक्षिण में फैले हुए घाट के दक्षिणी भाग से की जाती है जो द्वावन कर की पूर्वी सीमा बनाता है। मन्वभूमि के कथनानुसार यह प्रदेश कावेरी से बिगड़ा हुआ है (महावीर० ५।३ तथा रघु० ४।४९)। कहते हैं कि यही इलायची, लकी मिर्च, चंदन और सुतारी के

बुद्ध बह्म पाये जाने हैं। २५० ४१५१ में कालिदास ने बतलाया है कि मलय और दूर्य यह दो पर्वत दक्षिणी प्रदेश के दो बड़ा स्थल हैं। उन दोहर घाट का वह भाग है जो मैसूर का दक्षिणपूर्वी सीमा बनाता है।

महेन्द्र भारत की मान्य पर्वतश्रृंखलाओं में से एक। वर्तमान महेंद्रगढ़ से इसका एककृत्य स्थापित का ज्ञान है जो कि मैसूरियों का घाट से गङ्गा का विभक्त करना है। मन्वन्त इसमें महानदी और गार्गाओं का अन्तर्वर्ती तमस्य पूर्वो घाट सम्मिलित था।

महोदध (कण्यदुग्ध या गाविनतर) या बड़ी प्रवाह है जो गंगा के किनारे वर्तमान बङ्गाल नाम से विख्यात है। सातवा शताब्दी में यह मलय जल का अन्तर्ग्रामित स्थान था। २५० ४०० १०१८८-८९

मानस एक नरोवर का नाम है जो हाटक में स्थित था जिसे आज कल लहान कहते हैं। हाटक के उत्तर में उत्तरी कुर्मा र देश है जिसका नाम हीर्वा है। पर्वतमाल में यह महावर रिप्रा का आवास के रूप में विख्यात था। कश्मिर का गङ्गा अनुसार यही तुल्य गङ्गा में इस प्रांतवर्ष घड़ी आकर प्रवेश पाये।

मार्जित्यतो १० बंदी के अन्तर्गत।

मिथिला १० विदेश के अन्तर्गत।

मुरल १० कल के अन्तर्गत।

मेकल अन्तर्गत एक नाम का एक बड़ा नदी नर्मदा की निक्षेप है।

मोट एक देश का नाम जो मन्वन्त पश्चिम में फैला हुआ था। इसमें मन्वन्त उत्तर बड़ी और अन्तर्ग्रामित स्थिति थी। कुछ ही मन्वन्तमा में भी इसी में सम्मिलित था।

मन (मन्वन्त पूर्वी गङ्गा) एक नाम। मन्वन्त गङ्गा या गङ्गा की विस्तृत मन्वन्त। इसमें मन्वन्त का मन्वन्त का सम्मिलित है। इसका प्रमाण है कि इसी मन्वन्त निक्षेप की मन्वन्त का इसमें सम्मिलित है।

मन्वन्त १० मन्वन्त के अन्तर्गत।

बाह्यीक, बाह्यीक मन्वन्त का नाम जानिया का नाम। नाम। इसका देश वर्तमान काल है। कहते हैं कि वे पञ्चवर्ष के अन्तर्गत मन्वन्त के निक्षेप नदी तथा पञ्चवर्ष की अन्तर्गत नदी मोक्षता है मन्वन्त मन्वन्त का पूर्ण भूमि से यह बाहर था। यह देश पश्चिमी गङ्गा का बाह्य प्रसिद्ध है।

विश्वं वर्तमान काल देश। प्राचीन काल में तुल्य के उत्तर में स्थित यह देश नाम था जो कुल्या के

तट से लेकर लगभग नर्मदा के तट तक फैला हुआ था। बिलासकाय होने के कारण इसका नाम महा-गण्ड भी था २५० ४०० १०१८९। कुण्डलपुर जिस विदेश था कहते हैं इस देश की प्राचीन राजधानी थी। इसीका मन्वन्त आजकल बीरर कहते हैं। विदेश देश का बड़ा नदी ने दो भागों में विभक्त कर दिया है, उत्तरी भाग की राजधानी अमरावती है तथा दक्षिणी भाग की प्रतिष्ठान।

विश्वं - १० देशों के अन्तर्गत।

विदेश मन्वन्त के पूर्वोत्तर में विद्यमान एक देश। इसकी राजधानी मिथिला थी जो अब मन्वन्त की उत्तर में नेपाल का जनकपुर नाम से विख्यात है। प्राचीनकाल में विदेश के अन्तर्गत नेपाल के एक भाग के अन्तर्गत वह मन्वन्त था। अब सीतामढ़ी सीताकुंड अथवा विहृन्त के पुराने बिन्दु का उत्तरी भाग और बम्भारन का उत्तर पश्चिम भाग कहलाता है, इसमें सम्मिलित थे।

विश्व १० मन्वन्त।

बन्धान गंगा का बने आज कल मन्वन्त से कुछ मील उत्तर में एक नगर के रूप में बना हुआ स्थान। यह मन्वन्त के बायें किनारे स्थित है।

अक एक जनजाति का नाम जो भारत के उत्तर-पश्चिमी सीमान्त पर बसी हुई थी। मन्वन्त के क्षेत्र गङ्गा में इसका उल्लेख मिलता है। मिथिल में इसकी एक-रूपता मानी जाती है।

दक्षिण भारत की मान्य पर्वतश्रृंखलाओं में से एक। इसकी मही स्थिति का अभी कुछ निर्णय नहीं है। परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि नेपाल के दक्षिण में यह हिमालय पर्वत की एक श्रृंखला है।

प्राक्की वर्तमान काल में स्थित एक नगर का नाम जो है कि लहान मन्वन्त निक्षेप का नाम दिया है। २५० ४०० १०१८९। इसीके दक्षिणी का नाम दिया है। अथवा यह उत्तर में वर्तमान मन्वन्त माहेंत में इसकी एककृत्य मान्य ज्ञाते हैं। यह नगर वर्तमान या मन्वन्त का कहलाता था।

साह भारत का मान्य पर्वतश्रृंखलाओं में से एक। आज बड़ा देश का नाम लक्षादि है। पश्चिमी घाट का मन्वन्त के उत्तर में नीलमणि के लगभग तक फैला है जो मन्वन्त है।

सिधु १० पर्वतों के अन्तर्गत।

सिधुबेस वर्तमान मिथ प्रदेश जो सिधु नदी का उत्तरी भाग है।

सुद्ध - एक देश का नाम जो वर्तमान में स्थित है। इसका राजधानी ताम्रलिप्ता (जिसे ताम्रलिप्ता, दाम-लिप्ता ताम्रलिप्ता तथा ताम्रलिप्ती भी कहते हैं) की

एककम्पता वर्तमान तमकूक से की जाती है। तमकूक कोसी नदी के दक्षिणी किनारे पर स्थित है। इस कोसी का नाम ही कालिदास ने 'कपिष्ठा' लिखा है। प्राचीन काल में यह नगर समूह के अधिक निकट बना हुआ था। यहाँ पर ही अधिकार समूहों व्यापार किया जाता था। कुछ लोगों को ही कभी कभी राक्ष के नाम से पुकारते थे, (अर्थात् पश्चिमी बंगाल के लोग)।

सीराङ्ग—(मानस) कर्दियाबाद का वर्तमान प्रायद्वीप। डारका आन्तर्जनमरी या अम्बिनमरी कहलाती थी। पुरानी डारका वर्तमान डारका से दक्षिण पूर्व में १५ मील स्थित मधुपुर नामक नगर के निकट बनी हुई थी। यह स्थान रैबलक पर्वत के निकट था। ऐसा ज्ञात होता है कि वही यह स्थान है जिसे बुनामद का निकटवर्ती विरिमार पर्वत कहते हैं। इस देश की दूसरी राजधानी बलभी प्रतीत होती है। इस नगर के लहर आवनगर से उत्तर पश्चिम में १० मील की दूरी पर बिल्ही नामक स्थान पर पाये गये हैं। प्रभास नामक प्रसिद्ध लरोवर इसी देश में समुद्रतट पर स्थित था।

जम्ब—पाटलिपुत्र से बोधी दूरी पर यह एक नगर तथा बिला था। यम्ना के पुराने तल के तट पर स्थित वर्तमान 'सुग' से इसकी एककम्पता मानी जाती है।

हस्तिनपुर—'हस्तिन' नाम का भरतवंश में एक प्रतापी राजा था। उसने ही इस प्रसिद्ध नगर की बसाया था। वर्तमान बिल्ही के उत्तरपूर्व में ५६ मील की दूरी पर यह नगर यमा की एक पुरानी नहर के किनारे बसा हुआ है।

हेमकुंड 'स्वर्णशिखर' पर्वत। यह पर्वत उस पर्वत श्रृङ्खला में से एक है जो इस महाद्वीप को सात बर्षों (बर्ष पर्वत) में बाँटती है। बहुधा ऐसा माना जाता है कि यह पर्वत हिमालय के उत्तर में—या हिमालय और मेद के बीच में स्थित है तथा किन्नरों के प्रदेश (किपुस्वर्ग) की सीमा बनाता है। तु० का० ११६। कालिदास इसके विषय में कहता है "यह पूर्वी और पश्चिमी समुद्रों में बूझा हुआ है और मुमहरी पानी का स्रोत है" वे० श० ७।

परिशिष्ट

अंशः [अन् + अन्] विनिष्ट मणीन-ध्वनि ।
 अंशकम् [अन् + अन्] मूर्ध को दृष्टि से ग्रहो की स्थिति,
 विवाह या उपयुक्त लग्न—अशक नैवाहिक लग्न
 —नं० १५।८ पर नारायण ।
 अंशुकम् [अन् + अन् स्वार्थे] नेता, दूध बिन्दुने की क्रिया
 से प्रयुक्त रसो ।
 अंशुकम् (नपु०) ओस का पानी ।
 अकर्मन् [न० त०] १. कार्य का अभाव, अकर्म प्रति-
 पचादकर्म मी० सू० १०।८।१० २ वर कार्य वा
 विधि से स्वीकृत न हो—अकर्म च दारिक्रिया या
 आधानोत्तरकाले—मं० म० ६।८।१० पर शा० भा०
 ३ कार्य करने की उपेक्षा करना—मं० स० ६।३।३ पर
 शा० भा० ।
 अकर्मन् (वि०) कलकरहित, निष्कलक ।
 अकर्मन् [न० त०] अनारोग्य ।
 अकर्मन्: जीव्य मनु के पुत्र का नाम ।
 अकर्मन्: अवाधित प्रत्यामत्ता (पादित्य के निरर्थक
 प्रदर्शन के लिए में अवाधित) ।
 अकालम् (वि०) अनुपयुक्त समय पर करने वाला
 अवाधितो हि नारायणकादयो मनोभव रघु०
 १२।३३ ।
 अकालिकम् (अ०) अचानक अकालिक कुत्रो नामविध्यन्
 —महा० ५।३२।३० ।
 अकालिक (वि०) [न० व०] निष्पाप, न० अकालिकस्त्रिय
 जिसने कोई पाप नहीं किया है ।
 अकालिक (वि०) [कृ + क्त, न० त०] स्वार्थ कन् जो
 बनाया हुआ न हो, स्वाभाविक- न तन्मन्वा भाव
 प्रकृतमित्यन्वादकृतक—उत्तर० ।
 अकालिक (वि०) [न० त०] प्राकृतिक, जो मनुष्यकृत
 न हो ।
 अकालिक [अक + कन्] भडार-गृह अकालिक: केन्मन् विन्देन
 किमर्थं पर्वतं वनेन ।
 अकालिक (वि०) [अक + कन्] (वेद०) रात ।
 अकालिक (वि०) [न० त०] जो बका न हो ।
 अकालिक (अ०) पूर्णत, सचाई के साथ ।
 अकालिक [अक + कन्] जिज्ञेने या पापकी की नि १
 २. नृपा खेलना । सम०—वृद्ध: नृह लक्ष्मी जितमें
 धुरी लक्ष्मी रहती है,—वृद्धकम् अक्षान् ज्ञान करने
 के लिए गणित की प्रक्रिया,—रिद्ध नृपा खेलने में
 निपुण,—लक्ष्माका गोमा,—लक्ष्मिन्,—लक्ष्मिन् नृपा-
 चर का अधीश्वर ।

अक्षयनीकी (स्त्री०) स्वायी धर्मार्थ दान-निधि (बु०) ।
 अक्षय्यभुक् (पु०) [क्षि + यन्, न० त०, + भुज् + क्त]
 अक्षि प्रदेहेच हिन राजन् कक्षमक्षय्यभुक्—महा०
 १३।१२१ ।
 अक्षि (नपु०) [अन् + क्त] अक्षि । सम०—अक्षयः
 अक्षि अक्षय, अक्षि दुःखना, अक्षय (नपु०) क्षीप,
 न० नयनध्वन्, अक्षि चक्षुष सञ्ज्ञान, प्रवक्ष
 ज्ञान, भुज्य अक्षि का रेखाज्ञानस्तर (प्रतिमाविद्या
 विषयक), स्वप्नम् अक्षि का फरकना ।
 अक्षयिभुक् [न० त०] वह दिन या नक्षत्र जिसे च्छादकं
 सत्कार या मृदुन के लिए अक्षय माना गया है ।
 अक्षय (वेद० अ०) टेढ़े-मेढ़े ढग से । सम०—रक्षुः
 (स्त्री०) कर्मेला, बु०,—स्त्रीलोका इष्टका नामक
 यत्र, तं० स०, क्ष० ।
 अक्षयः [न० त०] उत्तम वैद्य, निष्ठ ।
 अक्षयिका (वन०) कार्त्तवी नामक वनस्पति ।
 अक्षय [न० गच्छति इति अक्षः, तस्मात् जायते—अक्ष + अन्
 + क्त] पर्वत की पुत्री, पार्वती ब्रह्मज्ञाननपपाई
 गजाननमहानिधि, अनेकदं त भक्तानामेकदन्तमुपास्महे ।
 सम०—अक्षि: शिव ।
 अक्षयः [न० व०] कृत्य जिसमें हाथ धर न हों—अक्षय-
 भूतो विद्वन् दावदग्ध इव द्रुम रा० ६।९।८५ ।
 अक्षयः [न० त०] बुद्ध मार्ग, न० अपयः ।
 अक्षयः [न० त०] यदाभावः] औषधि । सम०—राक्षः
 उत्तम औषधि ।
 अक्षयः [न० त०] अक्षय ।
 अक्षयस्तव (वि०) [न० व०] प्रबल आत्मशक्ति रखने
 वाला अक्षयस्तवो मगधप्रतिष्ठ—रघु० ६।२१ ।
 अक्षयकम् [अक्षयिभुज्—न० त०] अक्षयस्त, विष्णुललित
 सेना] गुन्दीभुज्मन्मन्मन् शुक० ५।८७० ।
 अक्षय (वि०) जिसका कोई क्षोत या उद्गम स्थान न
 हो—यनद्वैतव्यमहाभारतयोग्यम्—मृद० १।१।६ ।
 अक्षयः [अक्षति ऊर्ध्वं गच्छति अक्ष् + नि, इलोपच]
 १. आग २. पिपला नाडी—यत्र मोमः सहाग्निना
 महा० १५।२०।२० ३. आकाश अग्निपूर्णा—मृद०
 २।१।४ । सम०—कृतः काज्,—कृतः काल मिला
 वाला एक जलकी पत्ती, कृत्य बास्त्र,—द्वारम्
 चर का दग्वाजा जो आग्नेय दिशा की ओर है,—कृत्य
 हवाई जहाज अध्ययन विमानं स्यादग्निमानं तदेव
 हि—अ० म०, वैष्णवः १. एक अध्यापक महा०
 २. बाह्यतया मूर्त,—साक्षि: एक मनु का नाम,

—सुप्तः स्वप्न, तु० अग्निम् सेवानीरग्निमर्गह
—अम०,—होमी (स्त्री०) अग्निहोत्र के लिए उप-
युक्त गाय—ताम्रिहोत्रीययो जगद्ब्रह्मादिन
—आम० ८।८।२ ।

अम्बा तिमिर नाम का पक्षी ।

अम्बः [अम्ब + रक्, कर्त्तरि] पहाड़ की नीच या अगला
भाग अथवा समुद्र नितस्तगिर्गर्भ कि० १।३ अम्ब
समय का पूर्ववर्ती भाग नैवेह किचनाम आमीन्
ब० १।२।१ । सम० आसन्नम् सम्मान का प्रथम

पद,—उत्सर्ग वस्तु का पहला अंश छोड़ कर उसे
ग्रहण करना,—बैबी पटरानी, अग्रमहिषी, धाम्यम
अनाज, गल्ला, मिष्ठानम्, भविष्य कथन अत्रिज
बाजी करना, पूर्ण निर्णय, प्रवाधिन् जो सबसे पहले
देता है—तेजामधप्रदायी स्या कल्याणायो प्रियजद
—महा० ५।१३५।३५,—भाषाः पूर्ववर्तिता, अथवा
शस्त्रोपयोगी उपकरण, हारः बाहुषां की बन्नी
जिसके एक ओर शिथ का तथा दूसरी ओर शिथ का
मन्दिर हो, हरे अथ हार, हरम्याय हार, हारवज
हारवज हारी—यन्त्र स ।

अम्बा [अमे मात, अम् + मत + टाप्] आँखों का पत्र ।
अम्ब [वि०] [न० + ट] जो बना या ठोस न हो ।

अम्बु + अम्बुम् [अम्बु + क्त] [अम्बु कर्त्तरि कण्ठे वा
अम्, अम्बे मध्य अम्बुः शतपत्रादि चित्तानि यय
—ता०] पानी, जल ।

अम्बुकारः [अम्बु + कारः] सर्वोत्तम योद्धा,—रत्न । कार-
विजये तब राज कच्छु वा० रा० आठवीं अ
मौरवर्षेन्द्रकतिमुला वर्षाच्छुकारे न० १०।१४ ।

अम्बुत (वि०) [अम्बु + क्त] चित्तित, छाग लगा हुआ,
मचमा किया हुआ, क्रमांकित राखनमराद्धितकेतु-
गष्टि रप्० १२ ।

अम्बुम् [अम् + गम्] दीन वमविलवियों का प्रधान धार्मिक
पदम् । सम०—अम्बः बहु कम् या नियमित व्यवस्था
जिसके अनुसार कर्मकाण्ड की नाना प्रकार की
प्रक्रियायें अपने-अपने महत्त्व के अनुसार सम्पन्न की
जाती हैं,—न० स० ५।१।१४, कम् वचिर्,—अम्बुः
शरीर का बहु भाग को मुदा और अङ्गकोषों का
पथ्यवर्ती है,—कृतिः बाक या तलवार का फलका
—पञ्चमूली अम्बु,—न० १६।२२, अम्बोत्पा
युका, अम्बु—संज्ञिता अम्ब के अन्तर्गत स्वर और
अम्बोत्पा का उच्चारणविषयक सम्बन्ध,—त० प्रा०,
—कृतिः शरीर के अङ्गों का तो जाभा ।

अम्बुता [अम्बु + त + टाप्] प्रियम् नायक पौधा जिनसे
सुगन्धित इन्ध्र या अथवा तैलार किए जाते हैं ।

अम्बुतरः—रम् [अम्बु + तार] अलता हुआ कोयला । सम०
—अम्बोवपय कोयलों की बुझाने या इधर से उधर

हटाने वाला बेलवा,—कर्करि (री) अलते हुए कायकों
पर पकी मोटी राठी, थोड़ा धारिका अगीठी,
—कक्ष. रत्नकरजवदा, करोटा ।

अम्बुकराणिकः [व० त०] नभयन् अभिप्रेत्याधिकारी,
(आजवन्द के Oath Commissioner) जैना पद)
पञ्जीकार ।

अम्बुका [अम्बु + क्त] [व० टाप्] चार्मी, जमिया ।

अम्बुलोकेट [अम्बुलि केट + घञ] अम्बु ।

अम्बु (अ०) कथ या लोकस्थानक अम्बा ।

अम्बुरि [व०] [अट् + क्त] १ पैर २ त्रिमी भी वस्तु
ना चतुर्धा । सम० कथजना अः पद,—वाल्
(१०) पैर का अगला चमने वाला अम्बु, अम्बि-
रम्बा, गिट्टी की टहड़ा ।

अम्बुप्रिकवारि (न०) दीपक के मध्य वा उभरा हुआ भाग,
दीप टण्ड ।

अम्बुव्यः [न० त० चित्त + क्त] पाग पायद ।

अम्बोवम [न० न० नर शिथ यम्, अम्बादेन निदेश-
भाव—दणका गन्धाम्बादन प्रधाने नित्यममवापा—मि०
मू० १।२।२० ।

अम्बु (अ०) प्राप्ति के भाव वा स्तान करने वाला अम्बा,
अम्बुवरादि आप्त।अम्बयं वनेते म० स० १०।१।९
पर ग० १०० ।

अम्बुतजस्वकिम् (प०) अमरका के एक टीकाकार का
नाम ।

अम्बुवि [पत्रा मीडा ग्ने मिश्रा यय त०] सुगन्ध के एक
पुत्र का नाम, यह अम्बु १।४३ सूक्त का विरुद्धा है ।

अम्बुविजः रक्ष प्रजापति—आम० ५।३०।४८ ।

अम्बुनाथः भागवत के प्राचीन नाम आम० १।१।२।२४ ।

अम्बरक—कम् [न० व०] अमोघ, अपच ।

अम्बुस्वार्थवृत्ति [न अम्बुस्वा/र्थो यय, हा + वत्, न० व०]
यह पद को अपने भाव को सुगन्धित करता हुआ
समस्त पद के अर्थ में कुछ बुद्धि करता है ।

अम्बुवि. पाणिनि का एक पण ।

अम्बुविशेषकः पाण्डवी वा विचरिणी अम्बापक जिसका
चौदशवर्षों में उल्लेख मिलता है ।

अम्बुतजस्वजस्वम् पाण्डव प्रतिपक्षि कास्व ।

अम्बुजः विप्रचिति के पुत्र का नाम—वि० पृ० ।

अम्बुजिका [अम्बुजिकरि कायते; क + क, टाप्] मकड़ी
मे मिलता—मुलता एक कीड़ा । सम० वैशः एक प्रकार
का मुट्ठीसल—आनन्दमलिकावैश नापाकामन पाण्डवः
—महा० ७।२९।२३ ।

अम्बुजः यहु के एक पुत्र का नाम ।

अम्बुजिका [अम्बु का सम्बन्ध कम् अम्बु + कम् + टाप्]
नाम की इच्छा अम्बु ।

अम्बुत (वि०) [अम्बु + अम् + क्त] अम्बा, वस्तु ।

अविवात (वि०) [अच् + विच् + क्त + क्त] तीन वर्षों में से किसी एक वर्ष का अनुष्ठान, हिन्दू ।

अवी अवि की पत्नी । सम०—अविरः एक बड़ा का नाम ।

—अवतः १. चन्द्रमा २. हस्ताक्षेप ३. कुर्वाणा, आरुह्य-
विहा अवि वंशियो का आरुह्यविहायो के साथ वैवाहिक सम्बन्ध ।

अवचक (वि०) [अ० व०] स्पर्शारहित, जिस पर छाल न हो ।

अव (अ०) [अच् + उ, पृषो० रतोः] मज्जक सूचक अवयव जो प्रायः रचनाओं के आरम्भ में प्रयुक्त होता है । सम० अतः (अवतः), - अवन्तरम् (अवानन्तरम्) इसलिये, अव, इसके पश्चात् अवातो वर्मवि-
हाता मनु० १।१।१, किमु और कितना, और इतना,—तु परन्तु, इसके विरुद्ध ।

अवर्चकम् [अच् + स्पृष्ट, न० त०] प्रम, माया, अव्यवस्था - अवचनारोपितारः पुनश्चावर्चनं मता—महा० ११।

२।१३।

अवलीच (वि०) [अवल् + छ] इससे या उससे सम्बन्ध रखने वाला ।

अवृष (वि०) [अच् + उपष न० व०] वह शब्द जिसकी उच्चारण (अभिप्राय से पूर्ववर्ती) में 'अ' हो ।

अवृष्यकम् किसी अज्ञात पदार्थ या विचार की कल्पना करना ।

अवृष्य (वि०) [अच् + वृ + इत् + क्त] १. अवचनं युक्त २. ऊँचाई की माप के बीच अंशों में से एक अंश कि ऊँचाई, चौड़ाई से पुनीती हो हीनं तु इव तद् द्विगुण चावृष्य कथितम्—जाम० ११।२०।२३। सम०—राम-
कम् वास्वीकि द्वारा रचित एक इन्द्र, - शास्त्रि (स्त्री०) १. अवर्चके का ६० वाँ परिशिष्ट २. पुत्रापो में रचित एक व्रत का नाम ।

अविकलकम् [अच् + किल् + कट् + क्त] पर्वतपेठी ।

अवोच (वि०) की विचारों न थे, अनुपय ।

अवराजकः [न० त०] दरवाजे पर कब्ज करने वालों की वंशिका का न होना—कार्याधिनान्द्राष्टक कारवेत्—की० अ० १।१९।२१।

अवीच (वि०) [न० व०] अविनक्त, अवज्ञानारहित ।

अवच (वि०) [अच् + अज; अवते अज; वस्व पते व] की धूँक नहीं मारता, सेवी नहीं बघारता अथवा क्रुशिते स्थाने अवस्थाप्यमानवोरपि भवता० ।

अवचकः एक काटेदार पीचा, वसाका ।

अवच्येः (अवीचेः) एक पत्नी के रहते हुएरा विवाह करना ।

अविकरकम् [अवि + क + स्पृष्ट] १. वह स्थान जहाँ बहुत लोग एकत्र हों, महा० १२।५९, ६८ २. विभाग महा० १२।६९।५५। सम०—अविक (वि०) अवि-

केशाधिकारी जो कर्मपत्र तथा अन्य हस्ताक्षर अपनी वेकरीय में तैयार कराता है, नाडिर ।

अविचकः [अवि + गम् + क्त] जानकारी का समाचार अपनेप्राप्ति सन्तोष तथाभिगमसहान्—राय० ५।३५।७७ ।

अविच्युत्तिका कदिर का मूल, लैर ।

अविचयः [अवि + मच् + क्त] यज्ञ की अधिष्ठासी देवता ।

अविच्युत्तकः [अवि + मच् + क्त] मालती का एक प्रकार, चमेली ।

अविच्युत्तिका [अवि + मच् + क्त, स्वार्थे कन्] वह भीषी जिसमें मोती रहता है ।

अविरोचः [अवि + रुच् + क्त] दोषारोपण करना ।

अविकलित (वि०) [अवि + कल् + क्त] भूगणवर्धक लेप से अन्यक्त मूलमनिकपिनपाण्डुगण्डलेभम्—कि० १०।४६ ।

अविवातः [अवि + वस् + क्त] जन्मभूमि, जन्मस्थान महा० १२।३६।१९ ।

अविच्छान्त् [अवि + च्छा + क्त] १. अवस्था, आचार

२. नाम अमिषाणामविच्छान्त्वाद् दुर्घोषनस्व च महा० १।६१।१४ । सम० अविकरकम् नवर-
नियम, नवगणालिका का कार्यालय ।

अवीचिचकः हाथी के कामान्नाद की श्रुतु में नीमरी अवस्था मात० १।९।१४ ।

अव्ययम् [अवि + इ + क्त] निष्ठा देना, अव्ययपन करना कृत्वा चाध्यायनं लेपा शिष्याणां श्रुतमुच्यम् महा० १२।३१।१७ ।

अव्ययचित्ति (वि०) [अव्यय + चि + क्त] अवि, तन इति] किसी व्रत के पालनहेतु किसी एक ही स्थान पर अव-
च्छा हो जाने वाला महा० १२।६।६ ।

अव्यासित (वि०) [अवि + आम् + क्त] बैठा हुआ, बसा हुआ ।

अव्युत्तित (वि०) [अवि + वृ + क्त] ठहरा हुआ, रूढ़ा हुआ, अविकार किया हुआ ।

अव्युत्तः [अवि + वृ + क्त] विवाह से पूर्व गर्भिणी स्त्री का पुत्र अव्युत्तत् तथाग्र—महा० १२।४९।६ ।

अव्युत्तकम् अव्युत्त नामक अस्थियों के लिए अविश्रुत गर्भों का मरुह ।

अव्युत्त (वि०) (वि०) अस्थि ।

अव्युत्त (वि०) [न० व०] अव्यक्त, बिना बका हुआ—जाम० २।७।३२ । सम०—अव्युत्ती एक व्रत का नाम अ० पु० ५५ ।

अव्युत्तः [न० व०] १. भाव २. भूत, पिशाच ३. परछाई, पु० अव्युत्तं समर्थं वासी पिशाचक्याव्यापि ।

अव्युत्त (वि०) [नास्ति अव्युत्त अव्ययानं, मध्य, अव्ययार्थ

यस्य । सीषा, साक्षात् अथवा अनन्तरकृत् किञ्चिदेव
निदर्शनम् महा० १०।३०५।१।

अथ (वि०) [नास्ति अन्य विषया यस्य] वा किमा
और के साथ भाग न ले : हा हा, निश्चयः अनन्या
पृथिवी भूयते सर्वमृतहित एत को० अ० ।

अनपन्न (वि०) [न० व०] स्थिर दन्त ।

अनपवृत्त (वि०) जा त्यागा इत्यादि नष्ट अवस्थेत न
हयुक्त अनपवृत्त सच्छब्दामुपेनुम्-नं० ५० १२।१।१२
पर शा० भा० ।

अनपार्थ (वि०) [न० ख०] यथा हि न, ग स पुन
न्याय्य, उचित ।

अन्यथाप्यन् [न० त०] १ अर्थाभिन्न अथ वा अप्रकाशम्
२ व्याकरणसम्यक् शब्द जी प्रयाग मे न जाता हा ।

अभिलाषादकः [न० तं] निराशु कर्मे वाया, प्रनिवादी
- अथ भवान्भक्तकल्याणभिलाषादकः अवि० १ ।

अनभ्यन्तर (वि०) [न० व०] अपवित्र, अनजान
अनभ्यन्तर—अनभ्यन्तरे तत्त्वाद्या मदनगतस्य कुलान्तराय
—शु० ३।

अनुराग (वि०) [न० व०] श्रीया अवक यन्त्रहादन-
गलनालनर्लनोपवातवच वनभ उन० ३१६ ।

अथवा : [नास्ति अथ पर्यायसंज्ञा, अनानु प्राधान्य नास्ति
आत्मत्वे वा] काष्ठ, १३ शिवा मुदे मनलक्षणलब्धा
कि० ५२५ । समय- आत्मवत् : २३८ ।

अन्यकर्मिकाः [१० व०] एक पैर से चला हुआ स्टोम
तपस्या करने वाला गात्रशय्या प्रयोग करने वाला
इकाविका - रा० ३६३ ।

अथवाचस्पतिः (मृ०) [अथवाचस्पतिः] अथ
भाष्याभाष्यमर्थात्ता ।

अनवधीत (वि०) [न० व०] निगम १, निदाग-प्रकृत्य
कल्याणी परिवर्तमान लीट २२ १९६०-६१

अथवा (स्त्री०) [न० ४०] या स्त्री, जिसके शरीर के अङ्गों में कोई क्षय न पाये जाय, या इसी का विशेषण ।

अनुसूचकः [अ० सं०] गुरु प्रभा मारन सी-व
२१३।

अनवर (वि०) । न० थ । जो अवर नही, आ दृष्टि

अनङ्गवाचिन् (वि०) [अन + अङ्ग + वाचिन्] अनङ्गवाचिन्
मानो, जो मर्त्य न समझता।

अनायास (वि०) पीडा से पागल हो जायान क्याक
हानि लाकधनाकर नहना ह. - उतर म.
१८१३११२५।

अनायास (वि०) [अन् आ घा व] न भ्रं
 अना, आ हाथ मे - उभा गडा हा अनाघात पु
 किमल्लसलन टरः श० ११

अनाधर (वि०) [न० ३०] नगे सिर वाला, जिसके सिर पर पगड़ी या टापी कुछ भी न हो ।

अनाश्रय. [न० त०] शुरु न करना, आश्रय न होना ।

अनार्यता [न० न०] अप्रयत्नता, अयाच्यता ।

अमावास्या (140) जो किमी नई वस्तु का अधिग्रहण नहीं करता है।

अनाश्रयान् (वि०) [न० व०] जिस पर निर्भर न किया
जा सके अमोक्षस्थित्यनाश्रयासे धूमधूआत्मना भवान्
भग० १।६।८।१-१

अनाजबाजार (अ०) जिना साम लिफ्ट, जिना बाजारम किये ।
अनास्था (अ०) जत जा स्था, क टाँ । बस-
टिफ्फुता २ बराम का न हाना, धैर्य का अभाव - नै०
१८८५० न० भा० ।

अनिद (वि०) जा क्ष्वा या मममा न जा सके इत्यभि-
ष्टय पुरुष यदुपनिद यथा भाग० १०।२।४२।

अनिमित्तम् (वि० वि०) जो ज्ञान का बंध मायन न हो,
अनिमित्त विद्यमानापलम्भनाय - मं० स० १।१।४।

अनिवेश- [अ + नि + मिथ् + क्त] रनि क्रिया का विलिष्ट
पञ्चात् संभार का निर्विघ्न भाग्य :

अतिरिक्त (वि०) [अन - २ - इनन, हम्ब] जहाँ किसी प्रकार की उच्च-गुण या ऊँच-नीच न हो — तस्मिन्
 दत्त स्वतिरिक्त से तु यद्दत्तरोचयन महा० २५५१८८

अनिर्दिष्टम् [न० म०] वा रहना, बांर से न बांरना
मी० म० १०८५२ पर प्रा० भा० ।

अनित्यभङ्गः एक प्रकार का त्व (आहार की दृष्टि से रस-
जन प्रकार - अभ्रवत्, प्रभञ्जन निवान, पवन, धरि-
पद् इन्द्रक और अनिल के मिश्राये त्व है। ज्ञान-

अनि-अभसमानि- ३५३ का एक विशेष प्रकार ३७ ।

अनिष्ट (वि०) [अ नि विन् + क्त] आवर्त्तित

कश्चिद्विद्वान्मन्त्रिः ॥ १ ॥

अभिष्टर (१५०) जा कडा १ हा, या कडा न हा ।

अनिष्ट (३०) जी निरुद्ध न हो, कुशल न हो ।
अनिष्टां (३१) अपाकानि ।

अधीकृत्यमान [पृ० न०] मैत्रिक चौकी को० अ० १११५

अनीकसित (१४०) [अन् + आप् + यन् + क्त] अनीकसित

अन्वयः (विशेष) जन्म दिवस - उषः कालः] जो इच्छति
न हो, जा चाह न करे भूतपुत्रा भूतामात्या भूतव
पुत्रानायादयः पृष्ठः ३-१३-३१

अमीह (वि०) [प्र० ईह - ५५] का प्रयत्नशील न ह

अनकलाम् [या म०] कलाम् या इन्द्रा। ममि के सा
माय अविभं १५ ममकुल। कन्दलाः खान्कल

अनुवचनम् [अनु+वच्] १ षट्पदा स्थानापत्ति
—प्राग्भिर्यत्तु कल्पेनादायत्—नै० १७।१० २ समान,
एक अंसा यत्तु अममम्बुकोन् क्षणादनुकल्पाश्चिन
वण्डपयाधकम् याद० ।

अनुकृतिः (वि०) [अनु+कृ+इतच्] जिसरा स्वामन
सत्कार हाता है सत्ता निम्न—मन्त्रिणा जैगमा—वैद्य रया
ईमनुकृतिता १० ५३४।६ ।

अनुक्रम [अनु+क्रम घञ्] ईनिक क्रियायम अस्वान्
रहन्ति मन्त्र ३१।१० ३३ ।

अनुकूलम् (अ०) इत्यत्र प्रविर्गण ।

अनुनीता (स्त्री०) महभा-त के बीरहक पर्व का एक
पद्य ।

अनुषङ्ग (अ०) अर्थात् आश्रय का अन्तर्गत ।

अनुजन [अनु+जन् घञ्] जनक जनधर ।

अनुज्ञात (वि०) [अनु+ज्ञा घञ्] शिक्षित, शिक्षाप्राप्त
—शिक्षाणांमाल कृत्स्नानुज्ञात नमस्तस्मै मन्त्र १०
१०।३२/५८ ।

अनुकट (दि०) [अनु+उट घञ्] अट्टा वट्टा ।

अनुसाह [अनु+साह घञ्] मधुर—मन्त्र १०।१०।

अनुविज्ञम् (अ०) [अनु+विज्ञ घञ्] उपेक्ष दिनाम ।

अनुवच [वि०] [अनु+वच्] जिसरा अनुवचन
इत्या सत्कार तदुदाहरण १० ५०० २२

अनुवृत्ति (वि०) [अनु+वृत्ति घञ्] अनुवृत्ति
पाठ ३१।१०१ नि० ।

अनुवृत्ति (वि०) [अनु+वृत्ति घञ्] अनुवृत्ति
उदाहरण ।

अनुवाचक [अनु+वाच्] पाठका नामना अनु
वच यथास्यामन्त्रे मन्त्र १० १६।१०

अनुमितीयम् (अ०) आश्रय के नाम ।

अनुमेय (वि०) अन्तर्गत के अनुमन्त्र, अनुमन्त्र
नाम ।

अनुवृत्त (वि०) [अनु+वृत्ति घञ्] अनुवृत्ति
जिसकी अनुवृत्ति । कट मन्त्र १० १६।१०

अनुवृत्त (वि०) [अनु+वृत्ति घञ्] अनुवृत्ति
जिसकी अनुवृत्ति । कट मन्त्र १० १६।१०

अनुवृत्त (वि०) [अनु+वृत्ति घञ्] अनुवृत्ति
जिसकी अनुवृत्ति । कट मन्त्र १० १६।१०

अनुवृत्त (वि०) [अनु+वृत्ति घञ्] अनुवृत्ति
जिसकी अनुवृत्ति । कट मन्त्र १० १६।१०

अनुवृत्त (वि०) [अनु+वृत्ति घञ्] अनुवृत्ति
जिसकी अनुवृत्ति । कट मन्त्र १० १६।१०

अनुवृत्त (वि०) [अनु+वृत्ति घञ्] अनुवृत्ति
जिसकी अनुवृत्ति । कट मन्त्र १० १६।१०

अनुवृत्त (वि०) [अनु+वृत्ति घञ्] अनुवृत्ति
जिसकी अनुवृत्ति । कट मन्त्र १० १६।१०

अनुवचन [अनु+वच्] ज्ञान-मन्त्र का वच ।

अनुवचन (वि०) [अनु+वच्] अनुवचन
—कोनम् अनुवचनम् जनयन्ती मन्त्र १० १०।३३।

अनुवृत्ति (वि०) [अनु+वृत्ति घञ्] अनुवृत्ति
जिसकी अनुवृत्ति । कट मन्त्र १० १६।१०

अनुभाषित (वि०) [अनु+भाषि घञ्] अनुभाषित
गया ।

अनुभू (वि०) [अनु+भू घञ्] अनुभूति
गया ।

अनुभाषित (वि०) [अनु+भाषि घञ्] अनुभाषित
गया ।

अनुभू (वि०) [अनु+भू घञ्] अनुभूति
गया ।

अनुमन्त्रित (वि०) [अनु+मन्त्रि घञ्] अनुमन्त्रित
गया ।

अनुभाषा (स्त्री०) अनुभाषा
गया ।

अनुवृत्त (वि०) [अनु+वृत्ति घञ्] अनुवृत्ति
गया ।

अनुवृत्त (वि०) [अनु+वृत्ति घञ्] अनुवृत्ति
गया ।

अनुवृत्त (वि०) [अनु+वृत्ति घञ्] अनुवृत्ति
गया ।

अनुवृत्त (वि०) [अनु+वृत्ति घञ्] अनुवृत्ति
गया ।

अनुवृत्त (वि०) [अनु+वृत्ति घञ्] अनुवृत्ति
गया ।

अनुवृत्त (वि०) [अनु+वृत्ति घञ्] अनुवृत्ति
गया ।

अनुवृत्त (वि०) [अनु+वृत्ति घञ्] अनुवृत्ति
गया ।

अनुवृत्त (वि०) [अनु+वृत्ति घञ्] अनुवृत्ति
गया ।

अनुवृत्त (वि०) [अनु+वृत्ति घञ्] अनुवृत्ति
गया ।

अनुवृत्त (वि०) [अनु+वृत्ति घञ्] अनुवृत्ति
गया ।

अनुवृत्त (वि०) [अनु+वृत्ति घञ्] अनुवृत्ति
गया ।

अनुवृत्त (वि०) [अनु+वृत्ति घञ्] अनुवृत्ति
गया ।

अनुवृत्त (वि०) [अनु+वृत्ति घञ्] अनुवृत्ति
गया ।

अनुवृत्त (वि०) [अनु+वृत्ति घञ्] अनुवृत्ति
गया ।

अनुवृत्त (वि०) [अनु+वृत्ति घञ्] अनुवृत्ति
गया ।

अनुवृत्त (वि०) [अनु+वृत्ति घञ्] अनुवृत्ति
गया ।

ठिकता, दुष्टाचरण, -मरण: अन्त्याय, अनुचित व्यवहार-
शुच्य राखन स्थिर भूत्वा तथापनयनो महान्- महा-
६।४१।२२, नी (स्त्री०) दुष्प्रवृत्ति कराना- शक्ती
हि साहस यत्किमिवापनीयते रा० ६।६४।१०,
- नील (वि०) गुप्त, छिपा हुआ औपसातमयाद
पक्षीवत्-कि० १।११.- कल (वि०) विना बछड़े
का, कलम् (ना० घा०) ऐसा व्यवहार करना जैसा
कि विना बछड़े बाले के साथ किया जाता है, (न
बहुत प्यार, न निर्दयता), - बर अन्तर का कमरा,
सुरजित कल नै० १।८।२८, महा० १२।१३९-४०,
- बर्ग: अवसान, अन्त, बलिष्ठ (वि०) निमित्तित,
कटकाया हुआ सूत: जो सूत न हो, हिम, - बट्ट
(वि०) [अप+स्था+कु] गलत, वृद्धिपूर्व अपठ
पठ पाठयमधिपठिष्ठ छठस्य ते नै० १७।१६,
- बूध (पुंसा०) छोटपटा, त्यागना, - स्थान: सत्तावत,
भाँती, - हार: संग्रह, जवापि ।

अवरज्जु (अ०) 1 के सामने 2 पवित्र की ओर ।
अवरज्जु: [न० व०] हीन वाली ।
अवरज्जु (अ०) [अवर+अवर] जाने की ओर जाने, फिर ।
अवराज्जु (वि०) [न० व०] जो गंदा न हो सके ।
अवराज्जु (अ०) [न० व०] अवराज्जु ।
अवराज्जु [अ+अ+अ+अ+अ] जोत, कारण नै०
२२।१४४ ।
अवराज्जु (वि०) [न० व०] अजीव, अवराज्जुमन्त्रोन्म
वाज्जुमन्त्रोन्मन्त्रोन्मन्त्र रा० ५।१८।४० ।
अवराज्जु (वि०) [अपि नहु+अ] अन्त, अन्त हुआ, वृत्त ।
अवराज्जु (वि०) [अपि परि+अ] अन्त, अन्त हुआ ।
अवराज्जु (अ०) अवराज्जु अन्त ।
अवराज्जु (वि०) [अपि+अ+अ] 1 किसी, अनन्त
- अजीवमन्त्रोन्मन्त्रोन्मन्त्रोन्मन्त्र-भा० ३।८।२२ 2 मृत ।
अवराज्जु: (स्त्री०) [अ+अ+अ] कार्य का पूरा न
करना ।
अवराज्जु (वि०) (पुं०) जिसने विवाहित जीवन का
अपनी पत्नी के साथ इससे पहले उपयोग न किया हो
- अवराज्जु भावना चार्जी बदल - रा० ३।१८।४ ।
अवराज्जु (वि०) जो पुरुष और प्रकृति के भेद को नहीं
समझता 'पुरुषत्वं पुरुषयोर्विभेदं, तदस्यास्तीति
पुरुषास्ती, तदस्यास्ती' नील०, अर्थात् पुरुषत्व के व
दृष्टावस्थापकत्वित्वा महा० १२।३०।८।७७ ।
अवराज्जु (अप+अ+अ/८ अन्त, न० ए०) दूर हो जाना
- अवराज्जुमन्त्रोन्मन्त्रोन्मन्त्रोन्मन्त्र - नाग० ।
अवराज्जु (वि०) [अप+अ+अ+अ] 1. दूर
हुआ, दूर किया हुआ - न व सामर्थ्यमपरीक्षितं अविश्व
- कि० २।२७ 2 बाधविना में निराकृत ।

अवराज्जु (वि०) [न० व०] जो अकट या अकट न हो,
जो स्थिर या प्रदीप्त न हो ।
अवराज्जु [न० व०] अवनवी, अपकीर्ति-महा० १२।
१५।८।५ ।
अवराज्जु (वि०) [अ+अ+अ+अ+अ] अवि
अविश्वना या प्रोत्साहन न मिला हो, अविश्व ।
अवराज्जु (वि०) [अ+अ+अ+अ] अविश्व, जो अविश्व
में न आया हो अविश्व तमोन्मन्त्रोन्मन्त्रोन्मन्त्र
- मनु० १।५ ।
अवराज्जु (वि०) [न० व०] अनपयक्त, - तत्सात्त्वया
समारम्भ कर्म ह्यप्रतिम परे रा० ६।१२।३५ ।
अवराज्जु (वि०) [न० व०] वह आलोचन जो विद्यातोत्पादक न
हो, अवश निराकरण ।
अवराज्जु: वेदार्थों का एक प्रकार अपराजित-अवराज्जु-
जयन्त-वैद्यन्त कोष्ठकान् पुराण्ये कारयेत्- की०
अ० २।४ ।
अवराज्जु (वि०) [अ+अ+अ+अ] 1 जो किसी कार्य
में व्यस्त न हो 2 जो संरिक्त या प्रतिष्ठापित न हो
3 अनपयक्त ।
अवराज्जु (वि०) [अ+अ+अ+अ] जो अविश्व न
किया जा सके, जिसका मुकाबला न किया जा सके
अवराज्जुमन्त्रोन्मन्त्रोन्मन्त्रोन्मन्त्र (अ०) - कु०
१।५ ।
अवराज्जु (वि०) [न० व०] जो जानकार न हो अज्ञानी ।
अवराज्जु (वि०) [न० व०] 1 जो कोई तुल्य न हो
सके 2 किसी प्रदेष्टव्य के सम्बन्ध न रखता हो ।
अवराज्जु (वि०) [न० व०] जिसका कोई अर्थ न
हो, नील ।
अवराज्जु (वि०) [न० व०] वही जिसका न हुआ हो,
जो पवित्र न किया गया हो ।
अवराज्जु: एक पञ्चविशेष, कुम्भकुम्भा ।
अवराज्जु: [अवराज्जु] जो केवल में पैदा हुआ हो,
बोधा ।
अवराज्जु (वि०) [अ+अ+अ+अ] अविश्व, जो
अकारणकर्मक न हो- अविश्वमन्त्रोन्मन्त्रोन्मन्त्रोन्मन्त्र
भा० १।५।११ ।
अवराज्जु (स्त्री०) किसी विक्रय की आवार रेखा का किन
अन्त या अन्त ।
अवराज्जु (वि०) [न० व०] बाधविना, निर्वाह, अवि-
श्वित, अविश्वित ।
अवराज्जु (वि०) [न० व०] 1. नपुंसक, निर्वाह 2. अका-
रण, अ: [न० व०] अन्त दूर नियन्त्रण, जो एक
प्रकार के अन्त, - अन्त अन्तारक नील ।
अवराज्जु (वि०) [न० व०] अविश्व के द्वारा की मुद्रा जो
अन्त की रेखा अविश्व करती है । अन्त करत:

रक्षा और घर के देने वाला—स्वल्प पाणिमयवरसो
देवतगणः—सी० ।

अवयव (वि०) [अ + वृ + शतृ] अव्ययमान । नम०
—अवयवः—संयोगः, (काव्य) रचना का दोष
—इसके अनुसार अवयव और अर्थ का अनिवार्य संबंध
अपेक्षित रहता है जैसे इससे यत्कटाक्षेण तदा धन्वी
मनोजव मे 'यत्' और 'तदा' का संबंध । अन्य
उदाहरणों के लिए दे० सा० ८० ५३५ पृष्ठ ।

अवयवः जन्म का वृत्तान्त—हरि० ३ ।
अवयविन् (वि०) [न० व०] १ अवयवस्थ—सहने यातना
येतामनयातामवयविनो रा० ५।१६।०१ २ जिसका
कोई भाग न हो ।

अविकल्प्यम् [अवि + कृ + क्यट्] कृषि का एक
उपकरण ।

अविगुह्य (वि०) प्रबल लालसा से युक्त इच्छुक ।

अविहित् (पु०) [अवि + जि + किर + पुनश्च + क्त] पुत्र
हरि०, पुनश्च के पिता का नाम वि० पु० ।

अविज्ञात (वि०) [अवि + ज्ञा + क्त] जानकार ज्ञाता
जानने वाला ।

अविज्ञातः [अवि + ज्ञ + क्त] ज्ञान, क्त । दूत,
सदेशहर ।

अविज्ञेयम् [अवि + ज्ञ + क्यट्] पाछे से देखने की
विज्ञान महा० ।

अविज्ञेय (वि०) [अविज्ञ + क्त] अज्ञात मताया हुआ ।
अविज्ञेयम् [अवि + ज्ञा + क्यट्] गीत गायन—वर्णन
मन्त्रीमधुराभिधानम् रा० ८।१८।३६ । मम०

—विप्रतिपत्तिः शब्द और अर्थ का बतकपन असंगति
—मी० सू० १।३।१३ पर गा० भा० ।

अविज्ञातः (पु०) १ अमरकोश के एक टाबोकार का नाम
२ यागवामन्युद्धार के रचयिता का नाम ।

अविज्ञातकालिदास आधुनिक कालिदास, यह १८ वीं
उत्तम बौद्ध को दिया जाता है, माधवीय शक
विजय का नाम ।

अविज्ञातः नाट्यशास्त्र और रचनाशाला का प्रसिद्ध
भाष्यकार ।

अविज्ञातः [अवि + जि + क्यट् + क्त] टाबोकार, क्त ।
अविज्ञात (वि०) [अवि + ज्ञ + क्त] अज्ञात, अज्ञ ।

—सिद्धदण्डकाठानिन्नाज्ञी महा० १४।५८।२१ ।
अविज्ञात (वि०) [अवि + ज्ञ + क्त] १ स्व-
स्वीकार किया हुआ (अथवा उपपन्न) २ प्ररक्षित

महा० १।५।१२० ।

अविज्ञातः [अविज्ञा + क्त] १ उपन होना
छलना विषद्विपत्तिलाभवेन २ पन्न, विनाश ।

अविज्ञातः [अवि + ज्ञ + क्त] जो पूर्णतः सम्पन्न हो चुका
है—अम० १।५।१३ ।

अविज्ञात (वि०) [अवि + ज्ञ + क्त] १. (भावनामय
मे) अभिन्न, व्याकुल २. स्वीकृत ।

अविज्ञातः (वि०) [अविज्ञा + क्त] किसी वस्तु
पर अवैध अधिकार का इच्छुक—आज्ञापकामविज्ञा-
न्यमानः—को० अ० १।६ ।

अविज्ञातः (पु०) आलस्य मनु के एक पुत्र का नाम ।

अविज्ञातः (वि०) [अविज्ञा + क्त] पकड़ा हुआ, अकड़ा
हुआ—कर्मल महदभिरम्भित भाग० ५।८।१५ ।

अविज्ञातः [अविज्ञा + क्यट्] प्रसन्न करना, अनुकूल
करना—महा० ३।३०३।१४ ।

अविज्ञातः [अविज्ञा + क्यट्] अविज्ञात करना
—प्रायः पित्रे तत्सर्वं व्योक्त्याभिलम्बनम्—आश०
१।३।२३ ।

अविज्ञातः (वि०) [अविज्ञा + क्त] जो अविज्ञातपूर्वक
या हेतुही के साथ बोलता है—महा० १२।१८०।४८ ।

अविज्ञातः (वि०) [अवि + ज्ञ + क्त]—आ०
६।१।२६] शीतल, ठण्डा ।

अविज्ञातः (वि०) [अविज्ञा + क्त] प्रख्यात, प्रसिद्ध ।

अविज्ञातः (वि०) [अविज्ञा + क्त] अविज्ञात पूर्वक
न० व०] विज्ञात चरित्र वाला, सदाचारी ।

अविज्ञातः (वि०) [अवि + ज्ञा + क्त] १ भूत श्रेयादि
से अविष्ट २ अपमानित, पराभूत ३ विरक्त, विरक्त ।

अविज्ञातः [अविज्ञा + क्त] मानसिक क्षेम की स्थिति
—उच्छेदित मे मनसोऽविज्ञातः—महा० ५।३०।१ ।

अविज्ञातः (वि०) [अविज्ञा + क्त] राजसिंहासन पर
बिठाया हुआ अविज्ञात जलो से स्नान, राजबंदी
पर आमान कराया गया ।

अविज्ञातः [अविज्ञा + क्यट्] राजतिलक करने की
नेवारी रा० २।१८।३६ ।

अविज्ञातः [अवि + ज्ञा + क्त] स्तुति—रामाविष्टव
मृत्कता रा० २।६।१६ ।

अविज्ञातः (वि०) [अवि + क्त + क्त] १ जिसकी स्तुति
की गई हो, जिसका कीर्तिगान किया गया हो २ जिसका
राज्याभिषेक कर दिया गया हो—ओङ्कारविज्ञातं
मोमसामिन् पावन पिबेत् आश० ३।३०६ ।

अविज्ञातः [अवि + मृ + क्त + क्यट्] कतिपय—को०
अ० ५ ।

अविज्ञातः (वि०) [अवि + मृ + क्त + क्त] सम्मिलित,
सम्बद्ध रा० ७।८०।११ ।

अविज्ञातः (वि०) [अविज्ञा + क्त + क्त] आमाने
मानने होने वाला, मानने होकर मुकाबला करने
वाला—तुदत्यभिज्ञातमानमन्त्रमुत्पद्येन लीक्य—रा०
३।१।३१ ।

अविज्ञातः (वि०) (स्त्री०) १. पीछा करना—अनुपुरवणे

—यसिः वरुण, वेगः पानीका बहाव, बाढ़ यथा
नदीनां बहुबोधवशा—मम० ११२८।
अमृत्विकी (स्त्री०) [अमृत्व + गिति + क्रीय] कमल की
बेल। सम० कुरुक्षेत्र (पु०) मूर्य।
अमय (अपु० + मय) (दि०) अलम्बित, अलम्ब
—न ह्यमयानि शीघ्रानि न देवा मृच्छलामयाः
—माग०।
अमय (वि०) [अयः ल्यट्] जाने वाला, (प्रयोग प्रायः
यमस्त पदों में)। सम०—कलाः प्रवृत्तिययक
विचलन के लिए (मिनटों में) शोधन—मू० मि०
ग्रहः किसी ग्रह की दैर्घ्यान्तररेखा जब कि वह
ग्रहय विषयक विचलन के लिए मयुक्त की गई है,
—मू० मि०, परिचयिः अयन का बदलना अयन-
परिवृत्तिव्यस्तजन्मेनोच्यते—मी० मू० ६।५।३३ पर
श्री० भा०।
अमयसाध (वि०) जो बिना किसी कठिनाई के सम्पन्न
हो जाय।
अमरनोपास (वि०) [अमल + उपास] जो दिव्या यत्न-से
प्राप्त हो जाय।
अमयप्रतिपाद्यान् (नपु०) बुरे समाचार झूठे स्वर
से उच्चारण करना या अच्छे समाचार का अमयस्वर
में कहना अमयप्रतिपाद्यान् नामाप्रियस्त्री, प्रियम्ब
व नीचेः कथनम् ति०।
अमय (वि०) [इ-अमृन्] जाने वाला, स्पन्दनशील।
सम० कणवय एक प्रकार का अम्र जो लोहे की
बनी गोलीयों की बीछार करता है अयःकणव-
कारण भूगर्भपुच्छतबाहव—महा० १।२२।५।५।
—विष्कः लोप का मोला।
अमोघः [न + युज् + घञ्] योगाभ्यास में विचलन,
दलस्पृष्टागादय योगनाथ भाग० ६।८।१६।
अमोघि (वि०) [न० व०] अज्ञान मारता-पिता का मन्त्रान
—अमोघि व वियोनि व न गच्छेत् विनश्यत महा०
१३।१०३।३३।
अमरः [इयति गच्छत्यनेन अ-अच् रवायं वन]
पहिए का अमर।
अमरा (स्त्री०) एक देवी का नाम मी०।
अमरवर्धन (नपु०) महाभारत में एक अमराय का पुत्र।
अमरध (वि०) [न० व०] जिसमें तिष्ठ न हो—मयन १३।
मृच इवारधः—ति० १५।४०।
अमर (वि०) [न० व०] समरहीन, जिसमें से कोई
आवाज न निकल।
अमर (वि०) [न० व०] १ अमिक, जा ललित कला
को न सराह सकें—किमस्या नाम स्यादमरपुरुषाणा-
—विश्वस्यै नै० २ जिसमें कोई सरह न हो, तेज न हो
—अमरा अमरवरादिनामधेय मू० व० ५।१२।

अमरात् (अ०) मुरन्त, तत्काल वर्तन्ति वदन्तीत्या दे तेन
साक पतन्त्यरात् शुक्र० ४।१२।१६।
अमरान (वि०) [न० व०] अरुचिकर, दुःखद।
अमरिकेति [अ-न + केल + इन्] अमृतीला, स्त्रीरमण
—अमरिकेतिः अमृतीला स्त्रीरमणादवापि कीर्तितः
—नामा०।
अमरिज [अ-इन् + अरि + त्र, वा] कवच, जो शत्रुओं से
रक्षा करे (अग्निम्-नायते) नै० १२।७१।
अरीण (दि०) पूर्ण, भग हुआ—स्वरमचरीणतत्कण्ठः
—नै० ६.६.१।
अरुण (वि०) [न० व०] १. जो रोग को नष्ट करे, रोग
नाशक विषम्य सल सर्वम्य, कणिकामरुजा स्थिराम्
—मू० २. नीरोग, पीडा रहित।
अरुणकेतुबाह्वानम् (नपु०) अरुण और केतुओं के बाह्वान
का नाम।
अरुणपराजरा (पु०) एक वैदिक शास्त्र के अनुयायी
—अरुणपराजरा नाम पाणिन—मै० स० ७।१।८
पर शा० भा०।
अरुण (वि०) [न + रु + क्त] निर्बाध, जिसे राका न
गया हो, निर्बन्ध।
अरुणतीक्ष्णनय (नपु०) बिबाह संस्कार के अवसर पर
की जाने वाली एक प्रक्रिया जिसके अनुसार दुल्हन
को अरुणवी तारा दिखलाया जाता है।
अरुणतीक्ष्णनय्यायः यह एक व्याय है, इसके अनुसार ज्ञात
में अज्ञान को, भाति क्रमिक शिक्षा बहुत की और सकेत
किया गया है जैसे अरुणतीक्ष्ण को दिखलाने के लिए पहले
किसी और ज्ञान सारे की और सकेत किया जाय।
अरुण (वि०) (न० व०) वह यज्ञ जिसमें रुप (इय और
देवता) का अभाव हो।
अरुणि (वि०) [न + रु + गिति] आकाररहित, बिना
दिनों रूप का—बाधायामुर्मन्यानामप्रमेयानरुणिः
म० १।२१।१६।
अरोगरुग् [न० व०] रोग से मुक्त होने की स्थिति।
अरुः [अ-वृ + क्त, कुटुम्ब] १. सूर्य २. सूर्यकांत मणि
अर्कोरुपण स्फटिके—नै०। सम०—ग्रहः सूर्य-
ग्रहण—श्रीव इस नाम का एक 'साम'—पुष्कोरुग्
इस नाम का एक 'साम',—देवीजः सूर्य का पुत्र देवत,
—लवणम् यवक्षार।
अरुः [अ-वृ + क्त] मृत्यु, कीमल। सम०—अरुणयः
मृत्यु कर्म हो जाना, कीमल मार जाना, —ईश्वरः शिव,
—निर्णयः मुख्य निर्धारण।
अरुणान (पु०) अरुणतुल्य से सबब रचने वाला एक कवि।
अरुणि (वि०) [अ-वृ + क्त] अवाप्त, उपाजित—म मे पिना-
जित किञ्चिन्न मया किञ्चिदजितम्। अस्ति मे
हस्तिगोलाय अस्तु पीतामह वनम्—वे० दे०।

अर्धवस्त्रः अर्धवस्त्राय पीये का देसा, उम्पु ।

अर्धवस्त्रः [२० स०] कृष्ण ।

अर्धवस्त्रः [२० स०] कृष्ण । १. पानी, जल २. रम
—भीतिविभूत्यामयदम्भुताम्यम्—मान० २११४४ ।

सम०—अः (अर्धवस्त्र) कमल—न्यषीर्योपजनाभ,
—अम्पु कमल, पद्य—वरनिरमुपकम्यविमर्णाह्लासी
—उत्ता० ७१९२ ।

अर्थः [२० स०] विषय, पदार्थ, उद्देश्य, इच्छा, अभिप्राय ।

सम०—अतिदेश (शब्दों के मुकाबले में) पदार्थों के
विषय में लिङ्ग, वचन आदि का विस्तार अर्थात् एक
विषय को ऐसा समझना मानो वे सख्या में बहुत हो,
स्त्री को ऐसा समझना मानो वह पुरुष हो—त० वा०,

—अनुवर्णितः (स्त्री०) किसी विशेष अर्थ का निका-
रने या समझाने में कठिनाई,—अनुवर्णित भौतिक

कुशलयोग से युक्त तत्त्विकालहितवाक्य धर्म्यमर्था-

वर्णित व—रा० ५१५११२१,—अभिधानम् अमीष्ट

अर्थ का प्रकट करता त० वा० ३११२१५,—अभि-

धानम् (वि०) जिसका नाम प्रयुक्त अर्थ से संबद्ध हो

—अर्थाभिधान प्रयोजनसम्बद्धमभिधान यस्य, यथा

पुरोडाशकपालमिति—यै० म० ४११२२६ पर शा०

भा०,—आधुरः जो सोयी होने के कारण सदैव

अन एकन करने के लिए चुकी रहता हो—अर्थात्-

प्राणा न नश्ये अर्धुः,—कौशिल्य (वि०) जो उपादेय

विचारों से (परन्तु बल्लुन वैसा न हो),—कारणम्

अनसम्बन्धी कठिनाई निर्बन्धनज्ञानस्वायंकार्यमपिन्-

यित्वा—रघु० ५१२१,—किल्बिषिन् (वि०) स्पष्ट

वैज्ञे के विषय में वैदिकमान व्यक्ति,—कौबिष (वि०)

जो राजनीति के विषय में विशेषज्ञ हो, अनुभवों

—उत्ताव रामा धर्मात्मा पुनरप्यर्थकाविद—रा० ६१४८,

—किम्वा १. सार्वक कार्य, अर्थात् जो कार्य सचमुच

किया ही जाना है (वि०) शब्दोक्त किया) —अमनि

शब्दोक्ते अर्थकिया भवति यै० म० १०१११२ पर

शा० भा० २ साभिप्राय किया अर्थात् मुख्य कार्य,

—अर्थः अर्थ या प्रयोजन को समझ लेना, अर्थवगम,

—नृषाः किसी उक्ति के अभिप्राय की क्षमता,

—नृषु कोश, कजाना—हरि०, चित्रम् अर्थात् पर

आधारित एक अर्थविकार,—हस्तकः अभिनिर्णायक,

—वृक्ष (स्त्री०) मन्थना तथा तथ्यों का ध्यान गाना

—वीर्य शिकोकमुदग्येदुषा व वच्छन् भाग० १०८६।

२१,—हृषविद्यालय, ऐसी विधि जिसके दो अर्थ निक-
लते हैं विधाने कार्यद्वयविधाने दोष—यै० म०

१०८७ पर शा० भा० वदन् वाणिनि पर एक

वार्षिक सनुषवृष्यवर्षवर्ष मगधम्—रा० ७१११४५,

—आध्वन्य किसी-किसी पर विचारविमर्श,—कलम

(वि०) जैसा कि आवश्यकता या प्रयोजन के अनुसार

निर्धारित हो (वि०) शब्दकलम), —विद्या सांसारिक

पदार्थों का ज्ञान,—विपत्ति उद्देश्य की विफलता

—समीक्ष्यतामर्थविपत्तिमार्गकाम्—रा० ११११४०,

—विश्वकर्माः अभिप्रेत अर्थ को समझने में कठिनाई,

—विश्वकर्मा (वि०) बन का देने वाला—विश्वकर्मा-
विभाषक—महा० ३१३३८४,—कालिन् (वि०)

अनी पुरुष, बनवान्, संघर्षः कौर्पाजभास्कर कुल

मीमांसा के एक प्रकार का नाम,—स्तनचम्पु सघर्ष,

कि पुनरार्थसत्त्वम्—पा० ७१३७२ पर म० भा०,

अन का उपार्जन करना २ उद्देश्य में सफलता,—हानिः

(स्त्री०) अन का नाश, हानिन् (वि०) अन के

चुराने वाला, जो अन चुरता है ।

अर्थात् (अ०) [अर्थ का अपादान में ए० अ०] सच ठो यह

है कि, तथ्यन । सम०—अधिगतम् (अर्थाद्विगतम्)

सकेत हाग समझा हुआ, कुलम् सचमुच किया हुआ

—न चापान्कृत बोधक प्रापयति मी० पू० ५१२८

पर शा० भा० ।

अर्थ (वि०) [अर्थ + धातु] १ सच्चा, वास्तविक अर्थ

विज्ञापयमेव रा० ६१२७२५ २ अन प्राप्त करने

में चतुर—तथ्यमर्थसास्त्रज्ञा प्रादुरर्था नुलक्ष्य

—रा० ३१४३३३ ।

अर्थ (वि०) [अर्थ + निष् + अच्] आधार ।

अर्थः [अर्थ + पञ्च] १ वृद्धि २ भाग, अंश, पक्ष । सम०

—अर्थः एक बार की तुल्यता, छोटी तुल्यता

—अर्थाभिनिस्त्या कात्रे—महा० ७१३७१५,—अर्थः

अर्थक्याम्, आधी बोझाई, निष् (वि०) अर्थपारदर्शी,

एक प्रकार का अशन पारदर्शी पन्थर, औषधिका,

अथा, बाप को एक मित्र से दूसरे मित्र तक पिनावे

वाली लम्बरेखा—एकलम्ब (वि०) साईं बार,

—प्राणम् दो भागों का ऐसा समान करना जैसा कि हृष

के दो टुकड़ों का—मृषा कौलक एवमर्थप्राणमिति

स्मृतम् मान० १७१९०,—आमनी प्राधान जैन हर्षों

में प्रथम प्राकृत बोली,—आमः आशिक पक्षाघात,

एकामी लक्ष्मा,—वृद्धि किसी राशि पर देव आन

का आधा भाग,—दत्तम् १ पचास २ डेढ़ सौ वै०

स० ८१२६७, समस्या लोको जिसका पूर्वाध एक

व्यक्ति बोले, तबही उत्तरार्ध दूसरे व्यक्ति द्वारा पूरा

किया गया—यै० ८१२०१, सहः उत्सृज् ।

अर्थ (वि०) [अर्थ + अच्] अधूरा, जो अभी पूरा किया

जाना है—अथा है किन्तो विदुषा चिन्त्यः—हृ०

११२५६१ ।

अर्थ (वि०) [अर्थ + निष् + क्त] १ अभावना नवा, नवा

गया—प्राणा विनिर्वाः पुष्पः वरिष्ठोमविनिर्वायम्

—रा० ४११८८, रघु० ८८८ २ अर्थकी गई हस्ता-

विनियमनकारिनिर्देश (अज्ञाप)—रघु० ९१७८ ३. परि-

अव्यु (स्त्री० पर०) पार करना—स्वयम्भवीर्षाञ्जं उता-
प्राकाम—भाग० ३।२४।३४।

अवतारवज्रकम् (नपुं०) हादिक स्वागत ।

अवतारविका (स्त्री०) मक्षिण विवरण ।

अवतारद्वयम् (नपुं०) अवतार लेने का प्रेद ।

अवतारीहिकः (अवतार + उद्देश) अवतार लेने का प्रयोजन ।

अवतारव्यु [अव + तु + विन् + क्त्वा] उतार, अवतार
वीथ्य पीलीमथास्तोकमादिरसावतारणम्—महा०
१।२।४२ ।

अवधत् (वि०) [अवधो + क्त] तोड़ने वाला, शतघो विजि-
हानवधते कि० १५।४८ ।

अवधि [अव + धा + कि] शासनादेश, अधिदेश, वय तु
भरतदेशाज्जिह्वा कृत्वा हरीश्वर - रा० ४।८।२५ । सम०
— ज्ञानम् जैन शब्दावली में ज्ञान की तीसरी अवस्था
जिसमें ब्रह्मातीत्य विषयों का ज्ञान भी प्रमुख हो की
जता है ।

अवधि (वि०) [वेद] [अव + धा + क्त] मन्त्र, पणित,
—पित कृषेज्जिह्वा वेदान् हवत—महा० १।२०।५।१७ ।

अवधारणम् [अव + धृ + विन् + क्त्वा] (नाम का) उच्चा-
रण करना—न त्वा देवीमहं मन्ये राज सन्नाधारणात्
रा० ५।३३।१२ ।

अवकाश (वि०) [अव + धृ + क्त] १ समझा हुआ, जाना
हुआ २. (व० व०) इच्छा (साधन) में ।

अवकाश (स्त्री० पर०) तिरस्कार करना—सोऽवध्यात
सुदरेवम्—भाग० ३।२०।६ ।

अवकाशम् [अव + क्त्वा + क्त्वा] तिरस्कार—यथा तरेम-
वकाशमहं—भाग० ५।१०।२४ ।

अवधि (स्त्री०) [अव + अनि] १ भूमि पृथ्वी २ नदी ।
सम० अः मंगल ग्रह आ सीता, भूत् राजा,
पहाड़,—सार केने का पीषा ।

अवनिच्छिन् (वि० पर०) किसी पर दृकना अवनिच्छो
कतो वर्णात् डाकोच्छो छदयेव मनु० ८।२८२ ।

अवनेष (वि०) [अव + नी + ण्यत्] अनुमरण कराये जाने
योग्य अरण्यमृनिर्मुष्टे अवनेषा प्रविष्यसि—रा०
७।४६।९ ।

अवनिच्छिन्नीकणा (स्त्री०) एक रचना जो दण्डी काव्य की
कृति बताई जाती है ।

अवनिष्ठा (स्त्री०) १. वर्तमान उज्जैन नगर २ उज्जैन
वासिनी की बोली ।

अवन्त्यकोष (वि०) [न० व०] जिसका कोष प्रभाव रखने
वाला है—अवन्त्यकोषस्य विहन्तुरावधाम् कि० १ ।

अवन्तिष्ठ (वि०) [अवपत् + क्त] नीचे गिरा हुआ फली-
पुष्पावतिर्ति रा० १।२८।१२ ।

अवपत् (वेद०) [अवपा + क्त्वा] पीना मापस्वान महि-
षेवावपाताम्—महा० १०।१०।१२ ।

अवपत् (स्त्री०) (पत्थर आदि कोई) वस्तु को नगर
की बीमार से नगर पर आक्रमण करने वाले क्षत्रियों
पर फेंकी जाय महा० ।

अवपत् (ग्रा० आ०) नीचे छलांग लगानी—स्वनिमयमप-
हाय मत्त्रातश्चा नृत्तमधिकर्तुमवपत्तो रवश्च भाग०
१।९।३७ ।

अवबोधित (वि०) [अवबुध् + विन् + क्त] बताया हुआ
—रामो रामावबोधित २म् १२।२३ ।

अवबुध् (वि०) [अवबुध् + क्त] दूटा हुआ
जिसकी हठी टूट गयी हो, बुद्धि १ तीव्र देना
२ (माक या कान का) बोधना ।

अवबुध् (वि०) [अव + बुध् + क्त] १ सच, हलचल न स्वा
समासाध्य ग्वाधमदे रा० ५।४८।६ २ एक प्रकार
का प्रहण ।

अवबुध् (वि०) [अवबुध् + विन्] हठारा, महाराम-
नस्तस्व ग्वाधमदिन रा० ५।३७।६५ ।

अवबुध् (वि०) [अवबुध् + विन्] क्त १ विपदा
हुआ, नष्ट किया हुआ इति दश कवियस्य भद्रवशा-
वसितम्—भाग० ४।३।४८ ।

अवबुध् (वि०) [अवबुध् + क्त] मूत्र कण्डे मूत्र
को गन्दा करने वाला अवबुध्पतो मेहुम् मनु०
८।२८२ ।

अवबुध् (वि०) [अवबुध् + क्त] विपदा, यत् काम प्रयाति
अहि विजयसोऽवबुध्—भाग० १।१०।१५ ।

अवबुध्प्रतिष्ठिः (स्त्री०) (शब्द के) लक्षों का निर्देशन,
अव्युत्पत्तिपरक सार्थकता न चावबुध्प्रतिष्ठया समु-
दायप्रतिष्ठिर्वायते—मी० सू० ६।८।४१ पर शा० भा० ।

अवबुध्प्रतिष्ठि (पुं०) किसी वस्तु का अंश में उत्प्रेष
करना एक वृत्ति इत्यवबुध्प्रतिष्ठिः प्रकाशयैव
मं ग० ६।१।४३ पर शा० भा० ।

अवबुध्प्रतिष्ठि (वि०) [अवबुध् + क्त] बोध को बाधने की
रस्मी—हिंग० ।

अवबुध् (अवबुध् + क्त) क्त—ता० उ०) निकट जाना
जवावगीकृतपुत्रदृकण मं १६।२६ ।

अवबुध् (वि०) [अवबुध् + क्त] जो जीवों के गिरने
से अपवित्र हो गया हो अवबुध्प्रतिष्ठि तथा आठे
व वर्जयेत् महा० १३।९।१६ ।

अवबुध् (वि०) [अवबुध् + क्त] अवबुध् व्याकुल—प्रहर्ष-
जावबुध् सा रा० ६।१३।१६ ।

अवबुध् (वि०) [अवबुध् + क्त] बाध्य करने वाली शक्ति
—प्रधानव्यावरोधेन गृहेषु लोक निषयवत् भाग०
५।४।१४ । सम०—गृह अन्तपुर,—कनः अन्तपुर
की महिलाएँ ।

अवबुध् (वि०) [अवबुध् + क्त] १. विह्वलन से
उत्पन्न हुआ, किन्नाशित—पुराणं काविका राज

राज्यात्प्रादुरोपित-रा० ५।८।३२ २ वटाया हुआ,
ऊनीकृत इतरेज्यापमादर्थ-पादस्तबबरोपित-मनु०
१।८२।

अवर्णसंयोगः [न० स०] १. वो भिन्न ध्वनियों का मेल
२ किसी भी वर्ण से मंत्र का अभाव ।

अवर्तचाल (वि०) [न० व०] जा चालू समय से कोई
सम्बन्ध न रखने ।

अवसन्निहित (वि०) [अवसन् + क्त] विपत्ति हुआ,
पकड़ा हुआ, आश्रित-समभिमर्श ग्राहवसन्निहित
-सि० ६।१० ।

अवसिद्ध (वि०) [अवसिद्ध + क्त] चान्ते के साथ ।
अवसिद्धा [अवसिद्ध + क्त, म्रियता टाप्] रखा खींचना,
रेखांकित करना रेखांकित ।

अवसोक्तवः [न० म०] दृष्टि, कटाक्ष ।

अवसक्त (वि०) [अवसक्त + क्त] अभिमान-महा० १३ ।

अवसृज्य (कृपा० प०) १ टूटना २ चारों ओर बिखर
जाना - न तस्या महिमा कृत्वा समन्तादवकीर्तय
रा० १।३७।१३ ।

अवसीर्षे (वि०) [अव + श् + क्त] टूटा हुआ चूर-चूर
किया हुआ ।

अवसृङ्कार (वि०) जिसमें 'काट' शब्द का उच्चारण न
हो, जिसमें शब्द के सामान्यिक मन्त्र का उच्चारण हो
प्रक्रिया न हो ।

अवसृज्य (वि०) [अवसृज्य + क्त] बसा हुआ उपरान्त
मन तत्प्रेक्ष्यवसरेण मेवागन्तु पञ्चबु रा०
५।४५।३८ ।

अवसरप्रतीति (वि०) [न० स०] जा किसी अवसर
की प्रतीक्षा कर रहा हो ।

अवसरप्रतीति (वि०) [न० स०] जा किसी अवसर की
ताक से हो ।

अवसायः [अव + या + क्त] जा सदापन कृता है अव
सायों अविश्यामि दु गत्याय कदा न्यत्रम् अट्टि० ६।८१ ।

अवसायक (वि०) [अव + या + क्त] विनाशायक अव-
सायक सन्ध्या साहसिकमाय -सि० १५।३६ ।

अवसक्तः [अव + क्त + क्त] [विधि में] वापरागण
हुनडास ।

अवसक्त (वि०) [अव + क्त + क्त] १ बिखरा हुआ,
फोटा हुआ २ आकान्त ।

अवसक्तः [अव + क्त + क्त] हावी के बेहरे का आगे
की ओर उभरा हुआ भाग मान० ५।८।१२ ।

अवसक्तम् [अव + क्त + क्त] १ महारा बीजम्बा-
मन्त्रद्वारा भाग० ३।८।१६ २ स्वर्ग सिद्धता
अवसक्तम्पानः परिकामि भाग० ५।२६।१७ ।

अवसक्त (वि०) [अव + क्त + क्त] जिसमें किसी ने
स्वाभिकार किया है, (अन) ।

अवसक्तम् (म्भा० प०) सुरटि मरना, 'सुरटि' करना
-महा० ६।७ ।

अवहारः [अव + हृ + क्त] जा उठा कर ले जाता है न
जीव्यायवहारो मा करोति मुनिन यमः अट्टि०
६।८१ ।

अवहृते (म्भा० प०) (वेद०) गुफाग्रा, यूलाना विष्टो
अव मरुतामहृते अ० ५।५६।१ ।

अवार्च्छ्य (कृपा० प०) काट देना छिन्न-भिन्न कर देना ।
अवार्च्छ्य (वि०) [अवार्च्छ्य + क्त] मीचे की ओर
झुका हुआ ।

अवार्च्छ्य (वि०) [अवार्च्छ्य + क्त] १ जो नाकी निगाह से
देखना है दूरीवनमार्च्छ्य गजवबायुकुमागुरम्
महा० ८।८।१३ २ नीच, पापी-बुद्धि लक्ष्यावक-
धर्म माज्यावीनानि पद्वनि महा० ५।३५।८१ ।

अवार्च्छ्य (वि०) जा वाग्व्यन न टा -मु० ।

अवार्च्छ्यव्यवस्थ (नपु०) मत कथन के कुछ अर्थों को
स्थापन कर, चयन की हुई उक्ति न च महाराष्ट्र
अवार्च्छ्यव्यवस्थ प्रमाण अवति में स० ६।४।२५ पर
मा० भा० ।

अवार्च्छ्य (वि०) [अवार्च्छ्य + क्त] जिसे रोका न
गया हो -तम् (अ०) जिना किसी रुकावट के ।
सम० -रुकावटवार (वि०) नहीं पारा हुआ अवार्च्छ्य
मुका हुआ है द्वार जिसके गिर ।

अवार्च्छ्य (वि०) [अवार्च्छ्य + क्त] जो ले जाये
जाने के साथ : २ ।

अवार्च्छ्य (वि०) [अवार्च्छ्य + क्त] जा जिसका न हो, अवार्च्छ्य बन्द
(कट) ।

अवार्च्छ्य (वि०) [अवार्च्छ्य + क्त] १ जिसमें कोई
परिचयन न हो २ रक्षाप्रदान -स्वाने युद्धे च कुमला-
नमोक्तविकारिण मनु० ७।११० ।

अवार्च्छ्य (वि०) [न० स०] अवार्च्छ्य अवार्च्छ्यव्यवस्थ-
कने भाग० ५।८० ।

अवार्च्छ्यव्यवस्थ (वि०) [न० स०] जिसका रक्षाप्रदान अवार्च्छ्य-
कने हो, जिसका रक्षण न हो ।

अवार्च्छ्य (वि०) [न० स०] १ जिसमें कोई हस्तचल न
हो २ जा जीत व हा न हो अवार्च्छ्यव्यवस्थ रक्षावि
रा० ६।५।१३ ।

अवार्च्छ्य (वि०) [न० स०] अवार्च्छ्य अवार्च्छ्य ।
अवार्च्छ्य (वि०) [न० स०] अवार्च्छ्य भाग० ५।८० ।

अवार्च्छ्य (वि०) [न० स०] विनाश करने वाले स्वर जिस
में न हो ।

अवार्च्छ्य (वि०) [न० स०] १ अकुशल, जो चतुर न
हो, २ अनजान, अज्ञानी ।

अवार्च्छ्य (वि०) [अवार्च्छ्य + क्त] जो समझा
न जा सके, जो समझ से बाहर हो ।

अविच्छिन्न (ब०) [न० त०] साधारण, सामान्य न विच्छे-
देन गम्यमानविच्छिन्नेन वा पुनः—बहु० १२।१५।२२।
अविच्छिन्नता (वि०) [न० त०] अप्रवाहित, जिसके लिए
पहले कभी तर्जना न की हो।
अविच्छिन्न (वि०) [न० त०] जिसका अनुमान न लगाया
जा सके।
अविच्छिन्न (वि०) [अव् + विच् + तुच्] प्रसक्त, —वातावरि-
मन्मथितारमिन्द्रम् य० ना० २०।३।
अविच्छिन्न (अ०) विस्मयादिद्योतक अव्यय — अर्थ हैं हुन, ओह
—मुच्छ० १।
अविच्छिन्न (वि०) [न + विच् + क्विप्] अनजान, अज्ञानी
—अविचो भूरितमसो वा० ३१।०।२०।
अविच्छिन्न (वि०) [न० त०] निरीह, मोलाभावा — अहित
चापि पुरुष न हिस्वगुर्विक्रम्य — रा० १।७।११।
अविच्छिन्नम् (नपु०) [अवि + हून् वा० ३।२।३६ वा०] भेद
का दूष।
अविच्छिन्नम् — पाप्म (वि०) [न० ब०] (बहु वेल) जिसके
नाक में नकेल न डाली गई हो।
अविच्छिन्न (वि०) [न + विच् + क्विप्] जिसमें विधि वा
आदेश की शक्ति न हो — नहि विधायकाविधायकयो-
रेकवाक्यत्वं भवति — मी० सू० १०।८।२० पर
वा० वा०।
अविच्छिन्न (वि०) [न० त०] १ जो नियन्त्रण में न आ सके
२ जो शिष्य न बन सके।
अविच्छिन्न (वि०) [न० त०] जिसका कभी नाश न हो,
बायदा।
अविच्छिन्नः [न + विन् + नी + अच्] अनिर्णय, निर्णय का
अभाव।
अविच्छिन्न (वि०) निष्कपट, निर्बाध।
अविच्छिन्नः [न० त०] विरोध का अभाव सत्य का अभाव,
असन्निध्य स्थिति अविचर्यपादिसूत्रम् — ना० का०
६५।
अविच्छिन्नता (स्त्री०) [न० त०] मतभिन्नता का अभाव
— सत्यसत्योक्तपरसत्यव्यवधिप्रपत्ति इन्द्रियवत् — की०
ब० १।६।
अविच्छिन्न [न० त०] एकत्र रहना, बनिष्ठ मिलन।
अविच्छिन्न (वि०) [न० त०] (बहु अन्तर् या मार्ग) जहाँ
किसी के पैर न पड़े हो।
अविच्छिन्न (वि०) [न० त०] अनुमीकृत, अविज्ञात।
अविच्छिन्नता (वि०) [न० त०] जो हिसाब किताब में न
लिखा गया हो।
अविच्छिन्न (वि०) [न० त०] विशाल, स्तुलकाय — अविच्छि-
न्नपुं नूरेन्द्रपतिः कि० १०।२७।
अविच्छिन्नता (वि०) आकरण का एक भाव जिसके
कारण वर 'अवि' को 'अविच्छि' हो जाता है।

अविच्छिन्न (वि०) [न० त०] अविच्छिन्न, जो कभी पृथक् न
किया गया हो — अविच्छिन्नमनोकाङ्क्षाभावा कतेन
कि० ५।५२।
अविच्छिन्न (वि०) [न० त०] मुक्त, जिसका मुक्तमत्ता न
किया जा सके, जिसको रोक न जा सके — अविच्छिन्न-
मत्तमपरात् कि० ९।४०।
अविच्छिन्नता (स्त्री०) उन वस्तुओं की स्थिति जो
अपना साम्यिक अर्थ प्रकट करने के लिए अभिप्रेत
नहीं होते।
अविच्छिन्नता (वि०) [न० ब०] ध्वनि काव्य का एक
भेद जिसमें साम्यिक अर्थ अभिप्रेत नहीं हैं।
अविच्छिन्न (वि०) [न० त०] जो किसी वस्तु के विशेषण
की दृष्टि नहीं रखता।
अविच्छिन्नता [नवि + विच् + मृच् + टाप्] विवेक बुद्धि का
अभाव।
अविच्छिन्न [अव् + धी + अच्] तदेह का अभाव यदि का
अविसर्ग नियम मी० सू० ८।३।३१।
अविच्छिन्नता (वि०) वह कथन जिसमें कोई विशेष विव-
रण न दिया गया हो अविच्छिन्नविचयन कथो न
विश्लेष्यवस्थापितो भविष्यति — मी० सू० ४।३।१५।
अविच्छिन्नः [न० त०] विश्वास का अभाव, अविश्वास,
अप्रत्यय।
अविच्छिन्न (वि०) [न० ब०] निरवबाध, अभियन्त्रित, जिस
पर कोई प्रतिबन्ध न हो मुख्य नमस्तेन्यविवक्षावृ-
द्धये भाग० १०।४०।१२, अविच्छिन्नयेव — कि०
१३।२४।
अविच्छिन्न (वि०) [न० ब०] १ जिसका निर्णय करना
कठिन हो — सीमायामविच्छिन्नताम् मन्० ८।२।१५
२ जो सहा न जा सके अविच्छिन्नमन्त्रेण वृत्तिताम्
कि० ४।३० ३ जहाँ पर पहुँचना कठिन हो
— वृत्तयामविच्छिन्नम् महा० १४।२०।१३।
अविच्छिन्न [न० त०] विरोध न प्रकट करना, अपनी
प्रतिष्ठा का उल्लंघन करना।
अविच्छिन्न (वि०) [न० ब०] अनुद्दिष्ट साक्ष्यो अथ नृश-
अविच्छिन्नस्तत्र कात्यायनम् — वि० ३६।
अविच्छिन्न (अ०) हक 'बहो'।
अविच्छिन्न (वि०) [न + वि + क् + क्त] जो नियत न किया
गया हो, जिसका विधान न किया गया हो।
अवी (स्त्री०) [अवीत्यात्मान लङ्वावा अच् + ई] रत्नसूत्र
स्त्री — उणादि० ३।१५८।
अवीर्ण्यसौम्यः [अवीर्ण्य + सम् + मृच् + विच् + क्विप्]
समाधि का विशेष प्रकार।
अवीर्ण्यसौम्य (वि०) [न० ब०] बारिष्ठ के ठीकरी किने
जिना बारिष्ठ करने वाला — अवीर्ण्यसौम्यविद्यावृत्त-
हृन् — कु०।

अवेक्षमात्र (वि०) [अवे + ई + शानच्] सध्यान देखने वाला - अवेक्षमात्रवच मही तबीनाम-वर्ष-७०५।

अवेष्टविद् (नि०) [अवेष्ट + विद् + क्तिप्] वेदों का न जानने वाला।

अवेष्टविहित (वि०) [अवेष्ट + वि + वा + क्त] त्रिमका वेद में विधान न हो।

अवेष्टवान् [न + विद् + यञ्] पीडा का अभाव।

अवेष्टवन् (नपु०) लजला, लज्जा का अभाव रहना।

अवेष्टेयिक (वि०) [न + विष्टेय + ठक्] जो किसी विशेष परिणाम को दहाने वाला न हो, जिसका कोई फल न निकले—अवेष्टेयिकोऽयं हेतु मी० सू० ११११ पर शा० भा०।

अव्यञ्ज्य (वि०) [न० व०] १. निरपराध २. जिसमें अभि वा व्यञ्जना का अभाव हो (काव्य में)।

अव्यतिरेकः [व० त०] अपारम्भ्य, निरपराध, (वि०) [न० व०] जो भूलने वाला न हो, जो कोई गूटि न करे।

अव्ययैव (वि०) [अव्ययिन् + य्यच्] जिसकी परिभाषा न की जा सके।

अव्ययिन् (वि०) [अव्यय + वङ् + य्यच्] जिसकी अव्ययता न जा सके, जिससे इकार न किया जा सके।

अव्ययम् [न० त०] कुलमज्ज, हिन, कस्याच—वृषिधिर-मन्वायुष्मत्तपविष सुहृदीज्जवन्—आय० १०८१।

अव्ययिकता (वि०) [अव्यय + क्तिप् + क्त] न दूरा हुआ, जिसमें कोई विघ्न न पड़ा हो, निर्विघ्न।

अव्ययसक्तः [अव्यय + लो + क्त] निर्विघ्न शक्ति वा संकेत का अभाव।

अव्ययव्यभिक् (वि०) [अव्ययता + व्यभि] अव्ययी, जो निर्विघ्न वृद्धि से रहित है बहुवचन आबन्तावच वृद्धयोऽव्ययव्यभिनाम् अय० २।४१।

अव्ययिकभावः (पु०) पु० 'अव्ययिकभावः', यद्यपि 'अवि' का ही 'अधिक' बनता है, परन्तु 'अधिक' से 'अवि' (अद्वयी का भाव) अत्र कोई दूसरा अर्थ 'अवि' से नहीं बनता।

अव्ययार्थः [न + दि + वा + शिप् + यञ्] अनिवारिता या आरम्भिक नदिगाई का अभाव—अव्ययार्थो नदि-व्ययार्थः कार्यनिष्ठेति लघुत्वम् - रघु० १०।६।

अव्ययवचनम् (स्त्री०) निरपराध दत्ता स्वाभाविक तद्भाव-भूति अव्ययवचनानि लङि०।

अव्ययवृत्तम् (नपु०) [अव्यय वृ + क्त] बुरा रहना, न सोचना—अव्ययवृत्तं व्याहृत्याप्येव आहु महा० ५।११।१२।

अव्ययवृत्तः (नपु०) [अव्यय + क्त] १. जो तारा बाध, तारा प्रारम्भकाल विघ्नान्निरासित भासित च तत्—अव्य० १५४

१।५।४० २. बहु, स्थान नहीं पर कोई बाधा बाधा है—अव्ययवृत्तवर्णनम् - पा० २।३।६८।

अव्ययवृत्तः—अव्यय [न० त०] अयुक्त अकुल, बुरा अकुल कल्पयन्ति सव्यवांशतन्म्यअकुलेन स्वास्ति किमिदंरूपि—शि० १।८३।

अव्यय (वि०) [न + वाङ् + अच्] जो ठोठ न हो, आभा-कारी—अव्ययस्याव्ययस्य च दासवर्गस्य भावव्ययम्—अन० ३।२४६, इदं ते मातृपत्न्या मातृजन-मन०।

अव्ययार्थः (अव्यय + अर्थ) १. उक्त द्वारा अनविशेष अर्थ २. वह अर्थ जो प्रत्यक्ष रूप से वाक्य से प्रतीय (अवि-हित) न होता हो अव्ययार्थोऽपि हि प्रतीयते नै० त० ५।१।१४ पर शा० भा०।

अव्यय (वि०) [न + व्यय + यञ्] जो शब्दों के प्रतीय न होता हो—नै० त० ५।१।१५।

अव्ययिक (वि०) [न० व०] १. जो ठीका न हो, कला-भूति २. अभाववाली।

अव्ययिन् (वि०) [न० व०] सर्वः। अय०—कल्प-विनय, -रक्ति सर्व—नीलोत्पलं सुहृदीज्जविर-व्येक्यो—कि० ५।३१।

अव्ययिन् (वि०) [न० व०] सर्व—अव्ययिन्मन्वर्णवर्ण-मन्—वि० १८६।

अव्ययिन्मन् (नपु०) बराती अन्न जो अन्नमन्वर्ण के अन्न कावर्ण में विभक्त है।

अव्ययव्ययम् [अव्यय + व्यय + य्यच्] बुरा अभावकारि वेत्ता।

अव्ययव्ययः (अव्यय + व्यय) [अव्यय + व्यय + द + क्य] अयुक्त अकुल अकुल।

अव्ययव्ययः (स्त्री०) एक प्रकार का वाक्य।

अव्ययव्ययः (वि०) जो हुन का बोध देता, न होता हो, एवं या सुखी से उत्पन्न—अव्ययव्ययः—व्ययिन्मन्वि-—रा० १।१२५।४२।

अव्ययव्ययः [न + व्यय + य्यच्] अयुक्त, वृद्धि, दोष—अव्यय-य्यते ते वापि विज्जिज्जव्ययव्ययम्—पा० २।१८।७।

अव्ययव्ययः [व० त०] १. अनेक वचना २. (अयु) पर) अन्तर-वेकता।

अव्ययव्ययः [न + व्यय + क्त] अयुक्त का एक प्रकार जो अभाव होता न हो—मी० अ० २।११।

अव्यय [न० त०] दुर्भाव, बुरी किम्वत्।

अव्ययकरम् (नपु०) [अव्यय + क्त + यञ्] अयुक्त।

अ० [अव्ययते अव्ययं व्याप्नोति + अह्वयते वा अयति-अव्यय + क्त] पीडा। अय०—अव्ययव्ययम् (पु०) दोहों के लिए वाक्य का संश्लेष करने वाला सविदाकार, अर्थों को दो-दो के बीच-बीच करने वाला तस्यावचनो काव्युक्त्य वृद्धयन्ता महा-रथः (अव्ययानकरम्)—रा० १।११।१५५,—अव्ययः

चना, - कपुरा कस्तुरक, रिपुः मैत्रा-भा० प्र०,
— कर्षकं चोर्धो की भांति बाधरण करने वाला
अवतलचमानी हि मण्ड्या-बी० अ० २१९, सुक्म्
‘चोर्धो को पालने’ के विषय पर एक पुस्तक ।

अव्यक्तरीत्यः [रस्यतेजने रत्न+कम्प] सत्त्वरी द्वारा
जीवा जाने वाला रत्न ।

अव्यक्तः [न क्व तिष्ठति इति अव्यक्त+स्वा+क] पीपल का
पेड़ । नम० वाराणस्यः मगधान् विष्णु विमकी पीपल
के वृक्ष के रूप में पूजा की जाती है, - पूजा ‘सभी
देवता पीपल में रहते हैं’ ऐसा समझ उसकी पूजा
करता-मूलतो बहुकृपाय अव्यक्तो विष्णुरपिने, अवत
विष्णुरपाय बुद्धराजान् से नम, अव्यक्तान् धार्मिक
संरिक्ता के रूप में पीपल की परिक्रमा करना ।

अव्यक्त (वि०) [न+कृ+अधि] दे० ‘अव्यक्ती’ ।
‘ईन’ शब्द स्वार्थ को ही प्रकट करता है । अतः
‘अव्यक्त’ और ‘अव्यक्ती’ दोनों शब्दों का एक ही
अर्थ है ।

अव्यक्ती (वि०) [न+कृ+अधि+ईन] जो छः जातों
से न देखा गया, अव्यक्ति केवल दो ही व्यक्तियों के
द्वारा निर्धारित तथा उन दो को ही ज्ञात (जिसमें
वीररा व्यक्ति सम्मिलित न हो), - अणु (नपु०)
रहस्य, मुक्त वात ।

अव्यक्त (वि०) [अन् व्याप्ती कनिन् नृत् च] आठ
(सबसे शब्दों में ‘अव्यक्त’ के न का लोप हो जाता
है) । सन० अव्यक्त (अव्यक्त) 1 आयुर्वेद पद्धति
जिसमें निम्नांकित आठ अंग होते हैं इन्द्राग्निमान,
वदनिश्चय, कायलोच्य, शल्यकर्म, मृत्निग्रह, विष-
निग्रह, बालवैद्य और रसायन 2 बुद्धि की आठ
विधियाँ- धुनवा, धवन, ग्रहण, वारणा, चिन्तन,
अज्ञानोह, अव्यक्तज्ञान और नृत्त्वज्ञान 3 योगाभ्यास
के आठ अंग-यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार,
धारणा, ध्यान और समाधि, - अक्षिकाराः सामाजिक
अव्यक्त्या में क्षत्रिय की आठ स्थितियाँ- जल, स्थल,
शान, कुल, सैन्य, ब्रह्मसैन्य, दण्डविधिविधाय और
पीरोहिय, अन्ध्यायी (अष्टाध्यायी) 1 पाणिनि
की व्याकरण 2 कतपच शास्त्र, अक्षानि जोड़ने के
आठ प्रकार- भोग्य, वेद्य, चोप्य, लेख्य, वाद्य, चर्य,
निषेद्य, और मध्य, - अष्टाक्ष (वि०) आठमूला
अष्टापाद्यु सुदृश्य स्तेय अक्षति किरियम् सन०
८।३३७, - अष्टाक्षानि छोटे-छोटे आठ द्वीप- स्वर्ण-
श्रेष्ठ, कन्धामुल, आकर्षन, रम्भक, अष्टरङ्गण,
पाण्ड्यकण्य, सिंहक और लङ्का, - कुलाक्षताः आठ
मुख्य पर्वत- नील, शिष्य, मान्यक, मन्द्य, विप्य,
कम्भमादन, हेमकूट और हिमालय, अक्षिकारिणः
आठ मुख्य पहाड़, ई० ऊपर, - अक्षताः अक्षिनी में

प्रस्तर भूति की स्थापना के लिए कोई या चारा जगाने
में प्रयुक्त आठ सुगन्धित द्रव्य-अण्ड, अण्ड, देवदार,
कोरिजन, कुमुद, सैलज, अदामाक्षी और मोरोचन,
साक्ष्य मूलकला में प्रयुक्त होने वाला गज जिसकी
लम्बाई उस भूति के समान होती है जो अक्षमें वृक्ष से
आठ गुना होती है, - देहाः स्थल और सुक्ष्म क्षीर
या मित्रती में आठ होते हैं स्थल, सुक्ष्म, कारक,
महाकारण, विरसु, हिरण्य, अन्ध्याकुन और मूलवृद्धि,
- भाषाः 1 आठ साप-अनन्त, वासुकि, तक्षक,
कर्कोटक, कल, कुलिक, पक्ष और महापक्ष 2 आठ
दिग्गज-ऐरावत, पुंडरीक, वायव्य, कुमुद, अजय,
पुण्डरत, सार्वभौम और सुप्रतीक, कल (वि०)
(ऐसा कमरा या घर जिसमें) एक ही और आठ
स्तम्भ लगे हुए हों, प्रकृत्यः पाँच महावृत्त (अग्नि
जल, पृथ्वी, आकाश वायु), वन, बुद्धि और बहुकार
- प्रजापाः राज्य के आठ प्रधान अधिकारी- वैद्य
उपाध्याय, सचिव मन्त्री, प्रधानिधि, राजाध्यक्ष
प्रधान और अमात्य, औरतः मित्र के आठ न
अग्निनाम्न, सहार लठ, काल क्रोध, ताक्षत्रुद्ध
अष्ट्रुद्ध, और महाभयंरज, भोषा, मुलमय जीवन् के
आठ नरक, - अक्ष, उदक, ताम्बूल, पुष्प, अण्डन, वसन,
शय्या और अलंकार, अक्षुलक्षत्तम् आयुर्वेद की
आठ औषधियाँ भिन्ना कर तैयार हुआ जो- अक्षः
उपाधि में प्रदत्त विचार प्रणाली के लिए अपनाया
गया एक ङग, - अक्ष आठ प्रकार का अक्षर-मात्रिक,
धामर, शीघ्र, पीतिका, छात्रक, अक्षय, औदार्य और
शाल, अक्षररत्नाः आयुर्वेद पद्धति के आठ रस
वैशान्त्यमणि, हिंगुल पारा, हलाहल, कालान्धोद
अक्षक स्वर्णमाक्षी और रोप्यमाक्षी, रोमाः आयुर्वेद
में वर्णित आठ प्रधान रोग- वातव्याधि, अक्षमरी,
कुष्ठ मह, उदक, मग्नर, अक्ष और मक्षणी,
मातृकाः पराक्षति के आठ प्रकार- बाह्यी,
माहेश्वरी कोमारी, वैष्णवी, वाराही, इन्द्राणी,
कोदेरी और चामुण्डा, अक्ष आठ प्रकार की
मृत्तियाँ-सौखी दाक्षिणी लोहरी, लेया, केव्या, मैरुनी,
नमोवयी और मणिमयी, औषधिविः आठ धीनिधियाँ
जो पार्वती की सहोदर्या थी-मन्त्रा, रिङ्गला, कम्पा,
भाषरी, बक्षिका, उरका, मिद्धा और मङ्कुरा, कर्ष
एक प्रकार का रेखाचित्र जो किसी विशेष समय पर
ग्रहों की स्थिति स्थिति दर्शाता है, सिद्धयः दे०
अष्टमहासिद्धय अग्निमा, ब्रह्मिमा, लक्षिमा, प्रप्ति,
प्राकाश्य, ईक्षिता, ब्रह्मिता और प्राकाश्य ।

अष्टमराशिः [८ व०] किसी वर्णन के लक्षण की राशि
न आठवीं राशि या प्रायः अक्षुध मानी जाती है ।

अष्टमय (वि०) [८ व०] (गोत्री) जिसमें आठ ईन

कृते हों, - अष्टयः कपाले हविषि, नवि च युक्ते - पा० १।३।४६ बा० ।

अष्टावक्र (वि०) [अष्ट + वक्र +] अठारह । सम् -

-तत्त्वार्थि अठारह प्रधान तत्त्व जिनमें महत्, बहुल्य, मन, पञ्च त-भावा, पञ्च कर्मेन्द्रिया तथा पञ्च ज्ञानेन्द्रिया गिनी जाती हैं, चाण्ड्य अठारह प्रकार का अन्न है—यद्यप्यष्टमवाक्यानि निता. कन्मुकुल्यका, माया मुद्रा मसूराश्च निष्पादा. स्वायत्तर्था । गवेयुकाक्षीवारा ओडकयोऽथ सतीनका, चणकाक्षीन काश्चैव चात्याव्यष्टावर्षेण तु, पश्चिं महाभारत के अष्टारह ऋषि आदि, सभा, वन, विराट्, उद्योग, भीष्म, द्रुप, कर्ण, धर्म्य, वीर्यिक, स्त्री, क्षान्ति, अनुशासन, अश्वमेध, आश्वमेधाग्नि, योद्धा, महा-प्रस्थानक और स्वर्गरोहण ।

अस् (विवा० पर०) मुद्र करना यद्यपि बलिस्त्रियेण तारकेण मुद्रोऽप्यत - भाग० ८।१०।२८ ।

अस्तः [अम् आपारे स्त, अस्त्यन्ते सूर्यं किरणा यत्र]

१ छिपना, पश्चिमादि २ सूर्य का छिपना । सम् -

निष्पन्न (वि०) अस्तावत् के पीछे छिपा हुआ

-विश्वव्यायस्तनिमामसूर्यम् - रूप० ११।११, - अस्तक-

- विहारः, अस्तावत् की चोटों, तबवः सूर्य छिपने

का समय, मृत्यु का समय—कराजामस्तसमयेऽपि

सताम् - शि० १५ ।

अस्तिवीर (वि०) [अस्ति वीर यस्य पा० २।२।२५ बा०]

जिसके पास दूध हो, दूध रखने वाला ।

असङ्कल्पः [न + सम् + कम् + क्त] अधिमात, यलमात,

लौह का महीना ।

असंघाज्य (वि०) [न - स + ज् + ण्यत्] जिसके साथ

मिलकर किसी को यज्ञ करने की अनुमति न हो

—यनु० ।

असंशयः [न + सम् + यज् + क्त] १. तबब का अभाव

२. जो मयुक्त ध्येयजन न हो पा० १।२।१५ ।

असंस्मरः [न + सम् + स्मृ + क्त] निर्भयता, निडरता

—महा० १५।३।८२ ।

असंशयः [न + सम् + यज् + क्त] अनाथात ।

असंवर (वि०) [न + व०] जो रोक न जा सके, दुनिवार

असंवेद सारवैगिबिकये न० १।५३ ।

असंहार्य (वि०) [न + सम् + हृ + ण्यत्] १ अजेय, जिसका

मुकाबला न किया जा सके विभिन्नमसहार्य शक्तिनां

पुन्यकोतम रा० ५।३०।४ २ जिसे मार्गज्य न

किया जा सके ।

असङ्कल्पकम् [असङ्क + कम् + क्त] आशुनि, बोहगाना ।

असङ्कल्पः [असङ्क + कम् + क्त] शत ६० स० ।

असली (अली) [असत् + लु. पा० ५।३।७१, कावेयः]

१. यह या यह २. वह दुष्ट—आर्षेण तपवनाय तस्य

सोमिषवेऽङ्गी—मटि० ४।१५ ।

असक्तिः (स्त्री०) [न + सम् + क्त] सामान्य अकारण

कारणोंकी ओर मन का लगाव न होना असहितरन्-

धिसङ्कल्पः पुनवारनृहारिन् मन० १३।१ ।

असङ्कल्पः [न + सम् + क्त + क्त] मिलावट (विशेषकर

जातिवी में) का अनुभव ।

असङ्कल्पिता (वि०) [न + सम् + क्त + क्त] जो कभी

कल्पना न किया हो असङ्कल्पितमेवेह यदकल्पत्

प्रकटीते रा० २।२।२५ ।

असङ्कल्पत (वि०) [न + सम् + क्त + क्त] निर्वाच, अनवकट

--सक्ति लिप्तामसङ्कल्पनाम्—रा० ६।७०।१५ ।

असहाय्यः [असत् + आ + यि + क्त] असौख्य व्यक्ति ने

सम्भलन ।

असह्युत् (नपु०) [क० स०] अविद्यमान बीज ।

असहायिन् (वि०) [असत् + आ + यि] जो व्यक्ति

किसी वस्तु या बान की अस्मिता को स्थापित करना

चाहता है ।

असह्युत् (वि०) [न + सम् + क्त + क्त] अनुत्त, अप्रसन्न

असह्युत्तो द्विवो नष्ट—नीति० ।

असह्युत्तः [न + सम् + क्त + क्त] अनुत्ति, अप्रसन्नता ।

असह्युत्तम् [न + सम् + क्त + क्त] १. निरुद्धवता २. विल-

गता, पार्श्वव ।

असह्युत्तः [क० स०] जो समान रूप से नहीं बँटा

हुआ है ।

असह्युत्तः (वि०) [भञ्ज + क्त + आ + क्त + क्त] जो

भलीभांति प्रशिक्षित न किया गया हो ।

असह्युत्तः (अ०) [न + सम् + क्त + क्त] न बका कर ।

असह्युत्तः (वि०) [न + सम् + क्त + क्त] जो

सही न हो, नुटिपूर्ण ।

असह्युत्तः (स्त्री०) [न + सम् + क्त + क्त] सकलता का

अभाव, किसी भी वस्तु की कमी होना—मात्वावय-

वमन्येत् पूर्वाभिरसह्युत्तिम्—यनु० ४।१३७ ।

असह्युत्तः (वि०) [न + सम् + क्त + क्त] जो कभी

पहुँचा न हो, अभावत, अनुपरिचित—कविचरिते-

परिच्छद -यनु० १।७० ।

असह्युत्तः (वि०) [न० व०] अनुपस्थित, जो निकट न हो ।

असह्युत्तः [न + सम् + क्त + क्त] निष्कियता, निष्ठकायन,

कार्य का एक जाना असह्युत्तः करिष्यामि ह्यह

नैलीक्यधारिणाम्—रा० ३।६।५९ ।

असह्युत्तः [न + सम् + क्त + क्त] जिसने सर्वगत बात को बीच

में आकर रोक दिया है—तरमाजसह्युत्तः [न + सम् + क्त + क्त]

बाक्यता—मी० सू० ३।१।२।२ पर बा० भा० ।

असह्युत्तः [न + सम् + क्त + क्त] तबब का अभाव ।

अस्यार्थः (वि०) [न + तम् + नृ + सत्] अतन्मात्र, अष्ट-
मीय ।

प्रत्ययान्तानां [न + सम् + भू + शिच् + युष् + टाप्] सम्मान
का अन्तात् ।

सप्तम्याणि (वि०) [न + सम् + भू + णिच् + क्त]
 कर्तव्यम् । सम् - सम्भवा ऐसी सघनता क्तकाना जो
 कर्तव्यम् हो ।

सहजोव वें सम्मिलित होने के योग्य न हो - मनु०
९।२३८।

मन्त्रार्थः [न + तम् + मुह् + षण्] 1. वाया या भ्रम से मुक्ति 2. वातसंवरण 3. सत्य ज्ञान ।

अस्यार्थः प्रतीयः [अस्यार्थः + प्र + वृत् + क्त] अस्य
व्यवहारः, वृत्त परिपाटी ।

अन्त्य (वि०) [न० त०] दक्षिण पार्श्व ।
अन्त्योदयः [न०+अन्ति+उदयः] अन्त्योदयः । अन्त्योदयः ।

परिचयः—कदाचित् कश्चिद् कुप्य तयाकीदृशमभिनन्दन
करतः ३१४५।

सप्तम्यस्य [न+सप्तम्यस्य+स्यम्] 1. वसुति
2. वसुतिपति।

कर्मण्येवाङ्मयः (कर्म०) [क + कर्मणि + क् + टा] अनुपित
कर्मण्येवाङ्मयः की उपस्था ।

कर्मण्येवाङ्मयः (वि०) [य+कर्मण्य+ङ] को लोप-
कर्मण्येवाङ्मयः को परम्परा के विरुद्ध हो।

संज्ञासूत्र (वि०) : [न + क्त + क्त + वा + ल्युट्] लप्ता
कर्मणि क्तात्, क्तादी, क्तापर्याय ।

साहित्यिक (वि०) : [न + साहस + क्त] जो साहस के साथ
काम न कर सके या जो बिना विचारे न करे—त

सहायित्व कार्यक्रमसहायिका - वि० १/५९।

कानून ।

विषयविद्या:—वि = १।५१।

करता हो. महा. ११६.०१४ पर नील. १

अक्रिय (वि०) [अ + क्रि + क्त] (अवा० नें) अक्रियार्थक

६२११ ।

अष्टमः (वि०) [८० व०] जिसने अपने छोटे से सफ-

अणु (वि०) [अणु + अणु + कियन्] जो अपने ही मुखोप-

भोग में अस्त हो, सांसारिक विषय वासनाओं में बन्ना
-- इति ह्यसुखो लब्धः भाग० १०।१।६७।

अनुगत्य (वि०) [न० व०] जिसमें कुछ न आती हो ।
अनुत्तर (वि०) [न० त०] जो आसानी से पार न किया

जाय, जिसमें अनायास तापस्व प्राप्त न हो ।
अधुनार (वि०) [न० त०] जो अधुनारत न हो ।

असुरः [असु + र, असुरतां स्वार्थे न सुप्ठुरतां, अपका
इत्यर्थं] राक्षसः । सम०—असुर राक्षसों का शक्तिर

1 सुकाशायं 2 सुक नाम का ग्रह,—बृह, राक्षसो का

सम्बन्धान् देव पुर विनाशनाति सोम हि संहिकेयो-
ऽमुरगुहाय - शि० २।३५ ।

कपुडिर (वि०) [न + गुप् + किरिप्, कस्य क.] जिसमें कोई छिन्न न हो, जो बोली या कपटी न हो।

अमृतजरती [अमृत + जरती पा० १।२।४२] यह स्त्री जो
बिना किसी बच्चे को जन्म दिये ही बुढ़ी हो गई है।

अक्षरार्थ (वि०) [प० प०] 1. अन्वयकारयुक्त 2. अज्ञात, दूर-
वर्ती। तत्प०—रजसः के लोग को सर्वथा अज्ञान-अज्ञान

एहते हैं अक्षतरणसो नाम चर्मारणं महावतिः रा०
११३२।

मनुष्य (मनु०) [म + मृत् + क्तिन्] १. बहिर २. मनुष्यसदृह
३. आकराल । उच०. उच०. मनुष्यसदृह.—विष्णु (वि०)

अथवा [म० त०] अम्बास का अभाव—न तर्कतानि अथवा

समिधानुमतेष्वपि—अनु० २।११।
अस्तस्य (वि०) [न० त०] १. अस्त २. यो वर्मणी न हो.

हरी न हो—कहा० ५।१२।
कलसोक (वि०) [न० व०] जो बोका न हो, बहुत कणिक।

अस्तीत्य (वि०) [न + स्तुञ् + घञ्] बिना किसी अर्था-
विना शब्द के अस्तीत्यमन्त्रान्न च सर्वं अन्वयिषी विद्.

बिना किसी रोक टोक के ।

करने वाला इधिवार २ ठीर, लखवार ३. कपूर ।
 मूल—सफ़ेद (दि.) दोरी मर्यादी मूल—सफ़ेद

पाणिनिशब्दप्रयोगः—शुक्रः ४१०३७,—शुक्रं चोत्तर
के शब्दः १. उत्तर शब्दः १. उत्तर शब्दः १. उत्तर शब्दः १.

एक प्रकार का संघनन जिसके द्वारा धीरों की मार की

अस्थानम् [न+त] असाधारण स्थान वा प्रवेश-अस्थान-

अस्वास्व (वि०) [अ + स्वा + स्व] अस्वास्व, अस्वीर ।

किसी फल की निरी । अणु० शुष्कतम एक नरक

जो हृदी को जीव है, सायना कछोर बायसीकनारि-

अविनः—महा० ३।३।२।३, वक्रः और्ध्वद्वैष्टिक क्रिया का एक नाम,—विलय किसी पवित्र नदी में किसी मृतक की अस्थियों को प्रवाहित करना,—सारः, स्नेहः बला, मज्जा ।
 अस्नात (वि०) [न० त०] जिसने स्नान न किया हो ।
 अस्पृष्ट (वि०) [न० त०] जो (किसी वस्तु से) आवृत्त न हो, (उसके) अन्तर्गत न हो । अस्पृष्टपुरुषात्तर (नन्दम्)—कु० ६।७५ ।
 अस्पृष्टवर्षना (वि०) [न० व०] कुमारी अन्नयानि ।
 अस्पृह (वि०) [न० व०] निरः निःस्पृह जिस इच्छा न हो ।
 अस्तुड (वि०) [न० त०] जो पूर्ण विकसित न हो—अस्फुटान्तराधैवमुन्मरम् भाग० ।
 अस्मिन्मासः [न० म०] स्वस्मिन्मास अहर्कार ।
 अस्तुत (वि०) [न० त०] १ पात्र न किंवा हुआ २ जिसका प्रामाणिक वस्तु में उल्लेख न हो ।
 अस्वाधीन (वि०) [न० त०] जो स्वतन्त्र न हो अस्वा-

धीन नराधिप धर्मवर्तिन मरा बुरात—रा० ३।३।३।५ ।
 अस्थिष्व (वि०) [न० त०] जिसमें अस्थी आदि उष्णान्न न गया हो ।
 अस्थैष्ट (वि०) [न० त०] [न० त०] [न० त०] जिससे पत्नीना लाने के उपरान्त न ममता जाय ।
 अस्त (वि०) [न० त०] जो बकाया न गया हो—अहताया प्रयागधेयम्—का० ।
 अहम् (तत्त्वं) [अस्मद् का कर्मकारक एक वचन] मैं ।
 मम० मम० [२०] अहंकारी, जो केवल, अपना ही चिन्तन करे स्वस्व अहङ्कार, धर्मह ।
 अहिषकम् [प० न०] नाशिकों का एक आरम्भ ।
 अहिषिषावहा (स्त्री०) [अहिषिप + अ + हा + अङ्ग + टाप्] एष पीधे का नाम जिसके सेवन से विष बुर हो जाता है ।
 अहोलाभकर (वि०) [अपेक्षित, अहोलाभो ज्ञान इति विमय कुर्वाण] बाँटे लाभ से ही मनुष्य होने वाला व्यक्ति ।

आ

आहृत्स्व (वि०) [अहृत्स्वि + यञ्] मलमास सवर्षी ।
 आकम्प्य (अव्य०) गले तक । सम० त्वत् (वि०) स्वादिष्ट भोजनों से गले तक छिना हुआ ।
 आकलना [आ + कल् + यप् टाप्] गिनना, समझ, अनुमान, मूल्य आदिना ।
 आकलनम् [अ०] बार मुँह के चक्की अर्ध तक, आकलनम् [अ०] जब तक समझ है तब तक ।
 आकाशना [आ + काश् + अ + टाप्] अनेका, आशा—अनखायाकाशनाय मन्त्रिधानमकारणम्—मै० त० ६।४।२३ पर शा० भा० ।
 आकाशः—कम् [आकाशते सूर्यादयोऽत्र—आकाश + घञ्] १ आकाश २ अन्तर्गता ३ मुक्त स्थान । सम०—वर्षिकः सूर्य, बह्वर्षिकः—बहलस, जो बिना उद्देश्य से दहर-उदर देखता है, बुद्धिः (व० व०) शेष सम्प्रदाय के लोग, जो अपना मुँह आकाश की ओर रखते हैं,—बुद्धिहिनम् पूर्णता का कार्य जैसे आकाश की ओर पूँसा उठाया, वर्षा कार्य,—अवगम्बु की हवा में लोभा ।
 आकुल्यम् [आ + कुल्य + यट्] एक प्रकार का बुद्ध-कीलम्—शुक्० १।१२०० ।
 आकुल्य [आ + कु + क्त] (आव० लयाम के अन्त में प्रयुक्त) अस्तुतिकारण—कु० चमत्कृतम् ।

आकृतिः (स्त्री०) [आ + कृ + क्तित्] उत्पत्त्या और अनु की एक कथा का नाम ।
 आकृष्टारम् (नपु०) कुछ नाम-मन्त्रों के नाम ।
 आकरकर्म (नपु०) [व० त०] धनिकार्य—मै० त० २ ।
 आकरकर्म [व० त०] मूलकर्म, आदिगन्ध ।
 आकरकर्म [व० त०] रत्न, बड़ाक गहना ।
 आकारकर्म (वि०) [न० व०] रत्न और आकार में कर्मवीर ।
 आकुल (वि०) [आ + कु + क्त] निमित्त, बना हुआ यहाँ समझे अन्धकारिते गृहे—मै० ८।१०।१ ।
 आकृतिः (स्त्री०) [आ + क + क्तित्] १ कर्म २ (वर्षित) धाईल की कथा ।
 आकृतितोषः [व० त०] मज्जपुत्र ।
 आकर्मः [आ + कृ + यञ्] १ वपुष आकर्ष कारि-फल के द्युनेत्रों का कार्य जैसे व—हैम० २. विवाकन पीधा—महा० ५।६०।१९ ।
 आकृष्ट (वि०) [आ + कृ + क्त] लोभा हुआ, आकर्षित किया हुआ, ऐसा हुआ ।
 आकीर्षः [आ + कृ + यञ्] विचित्राचान, मृदुकोष ।
 आकीर्षणम् (नपु०) [आ + कृ + यञ्] विवेकता का ब्रह्मव, नैतुय की कमी विबरोनुपचायनो मुनाम् भ्रामाकीर्षणमायैवेतनाम्—मै० १।१।३० ।
 आकर्म [आ + कृ + यञ्] पीठी, सीढ़ी का उड़ा—केना-कर्मण यजमान स्वर्ग लोकमाकर्मते वृ० ३।१।१९ ।

आकाश (वि०) [आ + कम् + क्त] १ अलकृत, सजा हुआ, — न सज्ज नरके द्वाराकाश घनस्तनमण्डलम् भव० ११६७ २ आकाश, चड़ा हुआ — निर्व्यस्तु-रवाकाश रा० ६१२७७१३१। सम० — अक्षि (वि०) मन से पराजित, अत्यन्त प्रभावित।

आकाशिक (स्त्री०) [आ + कम् + क्तित्] आकाश, कूटकसोट यो भूतानि बनावत्कथा बनावत्कथाञ्च रजति — महा० १२१७७८८।

आकाशगिरि, (पर्वत) [त० स०] आमोद गिरि, आमोद प्रमोद के लिए पहाड़ — आकाशपर्वताम्नेन कल्पिता स्वेषु देवमनु — कु० २१४१।

आकाशिक (वि०) [आ + क्तिच् + क्त] १ स्थिर २ दया से परीखा हुआ।

आकाशिकः [त० स०] १ पुरातन और अभिलेखाधिकारी २ लेखाधिकारी कौ० अ० २।

आकाश [अक्षर + अण्] वर्णमाला सवर्ण।

आकाश [आ + क्षिप् + क्त] प्रक्षिप्त ठूँसा हुआ।

आकाशे [आ + क्षिप् + क्त] परास (तीर की) पहुँच — सोऽयं प्राप्तस्तथाक्षेपम् — महा० ७१०२१६। सम० — क्वचम् उपमा अलकार का वह रूप जिसमें केवल उपमान ही संकेतित हो।

आकाशयति [आकाशयति अक्षयति पर्वतान् — कण्ठ् + डलच्] दग्ध। सम० — आकाश — कण्ठ्, दग्धकण्ठ, कुण्ठ, इत्येक का पुंश्च अर्चन् अर्चुन — अनुस्मृताकण्ठकण्ठानुचिक्रम — कि० ११२४।

आकाशिकाला [व० त०] दलकार या शिल्पी का कारखाना।

आकाशानुः [व० त०] गणेश का नाम।

आकाशविक्रम [त० स०] सिकार वा मृगया के लिए शरणाधीन अवस्था।

आकाश (स्त्री०) [आकाशमतेजसा, आ + क्था + बह् + टाप्] १. सुरत, कलक — न हि तस्य विकल्पाकथा वा च मही-कथा हता — भाग० १११८८३७२ सौन्दर्य, मनाजता — मृतीवु कथिराक्यानु — रा० ७१६०१२२।

आकाशत [वि०] [आ + क्था + क्त] पुकारा गया — तेवा वक्त्रुतिराक्याता मनु० ४१६।

आकाशतम् [आ + क्था + क्त] आरम्भ करने का अभि-लक्षण।

आकाशतम् (नपु०) [आगत + क्त] उद्गम मूल जन्मस्थान।

आकाशमन्त्र (वि०) [न० म०] दग्ग हुआ भीन।

आकाश [आ० + गम् + क्त] १ जो कार से आने वाला है आगमनमण्डलीय स्यात् — मी० ध्रु० १०१५११ २ पुष्पा की एक रीति — लब्धानुपन्न आकाशलेन सन्दिग्धानां च — भाग० ११३१८८ ३ यात्रा - आग

मास्ते विद्यास्तनु रा० २१२५१२१। सम० — अवाधि (वि०) जिसका स्वभाव उत्पन्न होने और फिर नाप हो जान का है। जिसका जन्ममरण होता है — आन-मायायिनोऽनित्या भग० २१२४, — आत्मन् (नपु०) १ आगम' से सबब रखने वाला शास्त्र २ माध्वस्य का परिशिष्ट, धृति (स्त्री०) परम्परा।

आगमित (वि०) [आगम + गिष् + क्त] १ सीखा हुआ, (किसी से) शिक्षा प्राप्त प्रकृतिस्थमेव निपुणा-गमितम् सि० ११७९ २ पठित, जिसने पढ़ लिया है ३ निश्चय किया हुआ।

आगुल्कम् (नपु०) जूना — हर्ष०।

अग्निहोत्रिक [अग्निहोत्र + ठक्] अग्निहोत्र से सम्बन्ध रखने वाला।

आद्यवर्णमिष्ट (स्त्री०) [व० १०] ऋतु के प्रथम फल की आहुति

आङ्गिक [अङ्ग + ठक्] धुटना से नीचे तक पहुँचने वाला काट।

आङ्गारिक [अङ्गार + ठक्] कोयले को जलाने वाला महा० १२७११२०।

आङ्गिरस (वि०) [अङ्गिरस + अण्] मि शब्दता से युक्त वष का नाम आङ्गिरस ऋषभदे मुनिदेवे तथीरितम् नाना०।

आकाशनागरकम् (अ०) जब तक सप्तर में चौब और तारे हैं, अर्थात् मरने के लिए।

आकाशराज (वि०) [आ + अक्ष् + क्तिच् + परापूर्वक + अण्] इधर उधर घूमने वाला।

आकाशमहाहिन् (पु०) [आकाशम — बाह् जिमि] पानी निकालने वाला पानी खींच कर निकालने वाला, पणि-हारा।

आकाशित (स्त्री०) [आ + कम् + क्तित्] मुक्तबुद्धि के लिए आचमन करना।

आचरित (वि०) [आचर् + क्त] बसाया हुआ, बना हुआ देशमन्सावस्थेयमगत्याचरितं मुमम् रा० ११२५१ १४।

आचारवर्णिक [अक्षार वर्ण + इति] ईश्वर, मन्त्रदाय के सदस्य।

आचारपुष्पाञ्जलि (स्त्री०) [प्रवेश करने समय घर के द्वार पर ही] धार्मिक प्रथा के रूप में पुष्पी का उपहार भेंट करना।

आचारपदेशीय (वि०) [आचारपदेश + छ] आचार्य के कुछ नियम पर का [आचार्यनामा] से सम्बन्धित का उन विद्वानों के नामों के साथ जोड़ा है जिसकी उक्ति मर्य के एक अंग का ही प्रकट करनी है।

आचार्यकः [आचार्य + कु + क] एकह—अर्थात् एक दिन तक रहने वाला यज्ञ का नाम ।

आचार्यकम् [आचार्य + क] १ आचार्य का पद— आचार्य-चार्यकं पूर्वलिख श्रीवाचस्पतिविरचितम्—भा० १११०६

२. आचार्य का सम्मान करना अकाराचार्यकं तत्र कुन्तीपुरी चन्द्रजय महा० ७।१४७।६ ३ आचार्य-कर्ता या व्याख्याकार का कर्तव्य अत्यन्तलाचार्यकम्—विष्णु० २८९ ।

आचोष्ठित (वि०) [आ + वेष्ट् + क्त] उपकान्त, बचन दिया हुआ, तत् कार्य, कृत्य, कार्यकलाप ।

आचोष्ठ्य (वि०) [आ + छ् + क्त] आवृत, ढका हुआ ।

आच्छाद्यम् [आ + छ् + णिच् + क्त] बिस्तरे की चादर ।

आक्षातः (वि०) [आ + क्ष् + क्त] उच्छ कुल से उत्पन्न, यो मे कचिदिहाजात क्षत्रिय अक्षकर्मवित्—महा० ५।१३४।३८ ।

आक्षान्त (वि०) [आ + क्षाया (आनि) स्वार्थे कन्] अन्तर्गत, नैमित्तिक आज्ञानिकरायमुमिता—नं० १५।५४, अ० स० ५ ।

आक्षायक (नपु०) पूर्वाभाद्रपदा नक्षत्र ।

आक्षिप्यम् [व० त०] बूझ का अवसाग ।

आक्षिप्यमानम् (अ०) मारने तक मृत्युपयंत ।

आक्षयः [व० त०] बी का कटोरा ।

आक्षयः [व० त०] बी की जाहति का हिम्सा ।

आक्षय्यमानम् (नपु० कर्त्त० द्वि० व०) औखों का अजन और पैरों का उबटन ।

आक्षय्यकः [अक्षयि + क्त] अक्षय्य के आकार का एक तीर ।

आक्षयिक [अक्षयि भरति अक्षय वा ठक्] जननी जनजाति का चौबटो—की० अ० १।१० ।

आक्षय्योः [आ + ध्ये क पृथ० + क् + पञ्] गठिया लम्बिता ।

आक्षय्योः [अक्ष + अन् + कोश] अक्षे का श्लोक ।

आक्षय्यम् [आ + तञ्च् + पञ्, कुञ्च्] भरणी नक्षत्र ।

आक्षय्य (वि०) [आ + तप् + क्त] गम किया हुआ, जाग में तपाया हुआ ।

आक्षय्यिक (वि०) [अक्षयि + क्त] अनिमग्न, बहुत अधिक ।

आक्षय्यम् (अ०) [तिष्ठति नाव अक्षिन्कासे दोहाय] उस समय तक अब तक कि नीचे बूढ़े जाने के लिए ठहरती हैं (सायकाक के बाद एक डेढ़ बटा तक)

—आक्षय्यम् अपन् सध्याम् अक्षि० ४।१४ ।

आक्षय्य (पु०) [अप् + मणिच्] मानसिक गुण—आक्षय्यि-रैवा सत्य सदमन्त्रात्मकम्—महा० १२।१९७।५ ।

(नमस्त सब्जों में आक्षय्य के 'न' का लोप हो जाता है) । अन्तः—आक्षय्यः आत्मा की प्राप्ति होने वाला

परम सुख परमानन्द,—अक्षिन्कासे स्वच्छादुष्य, अपनी लज्जामा—आक्षय्यमय्य सर्वम् अक्ष० ६।३२,—अक्षिन् (नपु०) अपना करनेवा, ज्योतिः (नपु०) आत्मा की प्रभा नेत्र सुख (वि०) अपने में समुत्—आक्ष-नृत्तव्य मानव—अक्ष० ३।१७, अक्षयिक (वि०) अपने अनुभव से जानकारी प्राप्त करने वाला—आक्ष-प्रथमिक आक्षय्य महा० १२।२४६।१३, अक्षय्यकामदेव,—अक्षय्य (वि०) अपने दक्ष या समुदाय से संबंध रखने वाला, उद्वाहना मुहुविरे मुहुरात्मवर्षी—मि० ५।१५ अक्षय्य (वि०) अपने पर ही दृष्टि जमाये हुए—आक्षय्यमय्य मन कृत्वा—अक्ष० ६।२५, सत्तत्त्वम् दे० आक्षय्यमय्य,—अक्ष (वि०) जो अपने अधिकार में ही—आक्षय्यम् कुत्र भासनम्—रा० २।२१।८ ।

आक्षयिक (वि०) [अक्षय + क्त] चिलम्विल, चिलमें पहले ही डेर हो गई हो—अक्षयमायिक स्मरन्—रा० ५।५८।४६ ।

आक्षय्यिकम् [अक्षय + क्त] १ कठिनाई तकट २ अनिवार्य कर्तव्य ।

आक्षेपी [अक्षेपय ठक्, क्षिप्वा क्षेप] गच्छिणी स्त्री महा० १२।१६५।५४, आक्षेपीमापन्नमर्माह—की० सू० ९। १।७ पर हा० भा० ।

आक्षेप्यम् [अक्षेप + अन्] बारम्बार दोहरा, जादू ।

आक्षेप्य (वि०) [आ + दश् + क्त] कुतरा हुआ, चींच मारा हुआ, टूटा हुआ ।

आक्षय्यम् [आ + दश् + क्त] घुटाघूत करना, पराजित करना—अक्षय्यमन्त्रस्य द्यूरात्माक्षयान् द्यूकृतम्—महा० १२।२१२ ।

आक्षय्यमिति (स्त्री०) जैनियों के पाँच सिद्धान्तों में से एक जिसमें अन्तु को इन प्रकार बहक किया जाता है जिससे कि कोई जीवस्थान न हो ।

आक्षय्यम् निर्भवता महा० १२।१२०।५ ।

आक्षिः [आ + दा + क्] १ प्रथम, आरम्भिक २ साम के सात भेदों में से एक—अक्ष सातविधस्य आक्षि कृत्वाक्षि मायोपासीत... यदेति त आक्षि—अक्ष० २।८।१ ।

सम्—दीपकम् दीपकाकार का एक भेद (बहु) किया वाच्य के आरम्भ में हो),—विष्णुस्य भावों छन्द का एक भेद, कुक्षः एक प्रकार का पौधा ।

आक्षिप्यसंज्ञम् [व० त०] एक मन्त्रकार जिसमें बार बात के बच्चे को घूर्व रचन कराय जाता है ।

आक्षिप्यपुराणम् एक उपपुराण का नाम ।

आक्षिप्यवर्णम् (वि०) [आ + वी + क्त + वा + क, वृष् + वञ्] फासे के लोच में अपने लाठी शिकारी के प्रति चुपचाप रखने वाला ।

आक्षेपः [आ + णिच् + वञ्] किसी कार्य को करने का सकल्प, धत—उप्युक्त से स्वयं तीव्र प्रतापैव करिष्यति

—रा० २।२२।२८। तब—कुत्तों का बाजा का पावन करता है तथादेवाकुतोऽभियान् रा० ५।५९।

आदेशिकः [अदेश + ठङ्] अविष्यत्कृत्, व्योतिषी-पुष्प
अत्रादिषीरादेशिकीरादिष्टा स्वप्न० १५

वाचकालिका (वि०) [आदी मन् यत् - काल + ठक्]
केवल वर्तमान को देखने वाला - वाचकालिका

बुद्ध्या हरे स्व इति निर्गयाः—महा० १२।३२१।१४ ।

वाचस्पतिकः [वचन + शक्तिः] कवेदार, मूलात् द्विगुणा
वृद्धिर्न होता वाचस्पतिकात् शकः ४८८० ।

मायामन् [मा+वा+मन्] मैत्रुन—तवापि मृत्पराधा-
नादकुतश्च दक्षितः-- ज्ञान० १/१५६ ।

भाषिः [भा + भा + णि] वध, एनभाषि हापरिष्येवस्मा-
तेन मयं ववधित—अन० ४।६४१ ।

अभिजातिका (वि०) [अभिजात + ठक] अभिजात या मल-
मास से संबंध रखने वाला —करणाभिहितमभिजाति-
कम्— की० म० २।७।

अभिरुचिः [अभिरुच + इङ्] अभिरुच का पुन, कर्म—हृत
जीव्यमभिरुचिर्विदित्वा—महा० ७।३।१।

भाष्य (वि०) [भा+प्र+कृत] हिंसायां भुजा, कुम्भ
—वचनाप्रकृत्या विज्ञप्तः—रघ० ६।

अनाथः [मा + भू + क्त] किरणः—आचार आत्माले-
 ऽनुसन्धेय च किरणेषु च—माता० । तन्म०—अक्षय
 एतन्मय वा भौतिक वस्तु जो क्षीर के पत्रवर्ती
 प्रायः पैर स्थित है—अन्धमाधारवले तत्त्वमयस्वभाव
 धारणात्म्यं किमेव—मयेव० ।

जानिकिए: [वा + म् + क्त + क + म्] उपहार, पारि-
लोधिक ।

अन्वयः [वा + गृह् + क्त] डोष वा यपकी—अमानमानद-
भिरावापकीति -- वी० १५।१५।

मन्त्रकर्म मन्त्रः नाम० १०२।१८।

सत्यमेव जयते : तैत्तिरीयसंहिता का संस्थापक श्री माधवाचार्य ।

आत्मन्यर्पणी संन्यास का एक भेद ।

भाषाई:—सम् [भा + भृ + णञ्] भाव ।

आधुनिकीकरण [आधुनिकी + आधुन] सेवक के प्रति नम्रता का
 व्यवहार—पद्मपुराणमित्रासाधुजीआनमित्रः—दूत०
 ११५१।

बालकृष्ण (वि०) [अनृत+अनृत] लड़क के साथ-साथ
बसने वाला ।

कान्तपूर्य्यम् (वि०) [कान्तपूर्य्य + कान्त, + कान्त] निमित्त,
विषय कान्त की रक्षणे वाला ।

अनुवाचम् [अनुवाचा + अच्] दे० अनुवाचिक ।

अनुवाचिकः [अनुवाचा + ठक्] अनुवाच, सेवक ।

जानुवन्तु (वि०) [जानुवन्तु + क्त] 1. गीत काव्य
2. विद्या ।

आनन्द (विद्या. पर.) नाथना, उद्भाषना—आनन्दयतः
सिलसिलानो—अथ ४।३७।

मानुसंस्मृ [अनुशास + ध्यञ् प्रत्यय की आधुरता - स्त्री]
प्रपाठ्येति कारुण्यादाभितेत्यानवास्यत - रा० ५।१५।५०।

आन्तःपुरिक (वि०) [अन्तःपुर + ठक्] अन्तःपुर से संबंध रखने वाला ।

बालापुरी [अम्लापुरे भव अणु, स्थियां झीप्] बल्लपुर
की सेबिका, नौकरानी - नै० १९/६५ पर नारायण ।

मान्तरागारिकः [अन्तरागार + ठक्] कञ्चुकी ।

आन्तर्बेदिक (वि०) [आन्तर्बेद + इकम्] पञ्चवेदी के अन्तर
वर्तमान ।

ब्रह्मसूत्रार्थे (वि०) [अन्यतरा + डक्] किसी अन्य विचार-
धारा या सम्प्रदाय से संबंध रखने वाला ।

ब्राह्मणिक (वि०) कठिनाइयों को पार करने वाला ।

पिहितान्नोदया - रा० २।४।३७। तम०-वैदिक
वाजार, वैदिक विक्रयक ।

भाष्यार्थः बहज का नाम, एक शीघ्राक्षक का नाम ।

आवरणपीथ (बि०) [अपरपक्ष + उ] कुम्भपक्ष के
सबन्ध रखने वाला ।

ब्राह्मणनाथ (वि०) जयस्थायी, अजयनाथ रहने वाला ।

आत्मत्व (वि०) आक्रमण की इच्छा से आने बढ़ता हुआ।
(किसी जगह पर) दृढ़ पकड़ने वाला आवागमनविहिन।
गिराकर आक्रमण वि० ५११५।

भाष्य (वि०) [भा वृष् + क्त] १. उत्कृष्ट २. पुष्ट
यथा भाष्यं कल्याणवृक्षात् ।

भाषीकान: [व० त०] एक प्रकार के प्रार्थना यन्त्र जो भोजन से पूर्व और भोजन के पश्चात् आश्रमन करते समय बोले जाते हैं नै० १९।२८।

जायत (वि०) [जाय + क्त] लाभप्रद, उपयोगी - अवि-
हित वृत्त्यर्थे सतेजायतोपदेशिना - रा० ६।१०।१०।

सम० अधीन (आप्ताधीन) (वि०) विषयसमीप
कालि पर विपुल करने कावा - कालि (आप्ताधीन)

विश्वसनीय वैदिक साक्ष्य परोक्षमाप्तावभात् सिद्धम्
सा. भा. १ :- इति (इति) (माप्तावभात्)

1 आगम 2 अनुबंधी 3 सामान्य कथन जो प्रयोगित
मान लिया गया है प्रयोग: (अनुयोग): किरी

विश्वतन्त्रीय ध्वनित द्वारा ही गई नसीहत,—आत्मीयानि
एक प्रकार का संघः

आप (वि०) [आपा एवं अण्, स्वार्थे ष्यञ्] पञ्चमीनाम् ।
एक प्रकार का वस्त्र ।

आप्यन् (तप०) (वि०) अल, पानी -- पृथिव्याप्यन्तो-
निलम्बानि श्लोक० ३१३१।

आप्वाचः [आर्प्य + घञ्,] पूरा होना, पूजना, मोटा होना ।

आरजुनः (पु०) अनुपपत्नी (वेद०) -- आरजुनदेव मन्वेर-
ये च ॥ १०१०६१० ।

आरम्भकालम् (तपु०) शरमदेव का एक कृत ।

आरम्भः [आ + रम् + भञ्, भृञ्] १. शुरु २. प्रारम्भ अङ्क ।
सम० - आरम्भकालम् क्रियाशीलता के द्वारा ही उत्पादन
की स्थिति -- यी० सू० ११११२०, - बहिः किसी
उत्तरदायित्वपूर्व कार्य को शुरू करने में बहिः, शुरु
को व्यक्ति शुरू शुरू में बहुत अधिक उत्साह
दिखाता है ।

आरम्भविधिः [व० त०] एक प्रकार का ढील -- बहि-
रतिरक्षनारम्भविधिमभिसर सरसमलज्जम् - गीत०
११६ ।

आराधः [आ + रात् + धञ्] चोर शब्द ।

आरीय (वि०) [आ + री + क्त] विष्कुल सूत्रा हुआ
- आरीय लक्षणजल भट्टि० १३१४ ।

आरुतम् [आ + रु + क्त] क्रन्दन, विलाप, रोना-धोना
- मिथुं शतशतत्र दारुणा दाक्याल्ला रा० ५ ।
१०६१३१ ।

आरुक्तेः [आरुणि + डक्] आरुणि का पुत्र स्वेनकेतु ।

आरोग्यम् [आरोगस्य भावः - ध्यञ्] रोग से मुक्ति, अच्छा
स्वास्थ्य । सम० - अरुण (तपु०) स्वास्थ्यप्रद जल,
- किन्तामहिः आयुर्वेद के एक ग्रन्थ का नाम
प्रतिपक्षतत्त्व स्वास्थ्य प्राप्ति के लिए एक कृत ।

आरोग्यवित् (वि०) [आ + रू + विच् + वृच्] धारण
करने वाला ।

आर्यम् (अ०) [आ + अर्यम्] सूर्य तक आकरूपमाकर्महन्
भगवत्प्रमत्ते -- भाग० १०१६१०६० ।

आर्यभट्ट (वि०) [न० ब०] आर्यभट्टों में विद्यमान ।

आर्यभट्ट [अर्य अस्थस्य अण्, स्वाचं कन्] अर्यभट्ट के मनो
से युक्त, सामवेद ।

आर्यवत् [अर्योभावे अण्] सम्मुख भाग, (अधि० आर्यवे
= सम्मुख भाग में सीधा) दबदतस्यार्यवे -- मै० म०
१११११५ पर भा० भा० ।

आर्य (वि०) [आ + र्य + क्त] अनुविधानकृत आनी
यस्मिन् काले भवन्ति स आर्य काल में म० ६१५।
३७ पर भा० भा० । सम० - आर्य या कठिनाइयों
में शस्त है उनको बचाना ।

आर्यवत् [अनुपपत्त्य श्रुति इति अण्] मानिक श्रुतुवाव.
- गिरिकाया प्रयच्छाशु ह्यस्या जीवनवमक्ष है यद्वा०
११६३१५५ ।

आर्य (वि०) [आ + अर्य + रङ्, दीर्घश्च] नीला, नर ।
सम० - एवाभिः आर्य जो पीली लकड़ियों द्वारा
सुरक्षित रखी जाती है -- यर्वाहार्थान् पुष्पयुगा
निस्सरति शत०, कर्षीकः उन्माद काल की
हमरी अवस्था में हामी जब कि उसका वृद्धत्व अपने

बद से नीला हो जाता है, - एककः वास, - भावः
१ नीलापन २ कृपा, मुहुता वन्युनीत्यस्य दयार्थ-
भावम् -- रघु० २।११ ।

आर्यिका (स्त्री०) हरा या नीला अवरक ।

आर्यम् [र्य + अण्] प्रचुरता, बाहुल्य ।

आर्यनारीश्वरम् [अर्यनारीश्वर + अण्] भगवान् शिव के
अर्यनारीश्वर रूप से सम्बद्ध ।

आर्य (वि०) [र्य + व्यत्] १. आर्यवर्त का निवासी
२ योग, आदरणीय, सम्मानयोग्य । सम० - आ-
र्यः (आर्या + आर्यम्) आर्य जाति की महिला के
पास सभोग की इच्छा से पड़नेवाला अन्यस्वार्थान्ने
वच यात्रा २।२९४, कुष्ट (वि०) आर्यवर्तों के
द्वारा अनुमानित तथा जनन, बहिः जिसकी दृष्टि
बहुत अच्छी है, वाक् (वि०) आर्य जाति की
भाषा वाचन वाला, ज्ञान उन्मत्त शक्ति से युक्त,
अच्छे शीत वाता, सिद्धान्तः आर्यभट्टकृत ग्रन्थ,
स्त्री आर्यमित्राल ।

आर्यवत् [र्य + व्यत्] अण, आर्य + उक्, नान व्यञ्ज ।
आर्यवर्त, वह धर्म जिसकी कृषिदो ने भाषना की
है ।

आर्यवत्तम् (तपु०) एक प्रकार का रूंगा, प्रवाल -- की०
अ० २।११ ।

आर्यवत् (वि०) [आर्य + क्त] पालन करना हुआ,
बिपका हुआ, अनुपकृत ।

आर्यवत्तम् [आर्यवत् + व्यट्] मन के अनुकूल धर्म ।

आर्यवत् [आर्यवत् + व्यट्] आर्य + व्यट्] लयाव या
स्थिरता का विन्दु, (पोल, मूला या रस्सी आदि)
- उल्लसत वा रमिता मनो वा गोपाङ्गनानां कुच-
कुङ्कुम वा मूर्तिनाम्न कलत्रम् वृन्मालावयासीत्
नयमेव भूमौ - कृष्ण० ।

आर्याया [आर्य - घञ्, टाप्] समीप की एक मधुर
ध्वनि ।

आर्यापनम् [आ + र्य + णिच् + रुट्] समीप जास
के किसी एक राव की विशेषताओं का वर्णन ।

आर्यवत् [आ + अर्य + इन्, अण् + घञ्] एक प्रकार
की समीपगता, समीपनिवृत्त ।

आर्यजनः [आर्य जन] दृष्टान्तः ।

आर्यवत्तम् [अर्यवत्तम्] (वि०) [आर्यवत्तम्] -- म० त०।
चित्र में निश्चित, चित्रित निश्चितरीति। सहसा
हृत्तिका वृद्धरक्षिकममरिणा इव रघु० ३।१५ ॥

आर्यवत्तम् (वि०) [आर्यवत्तम् + व्यट्] आर्यवत्तम् करने
के योग्य मै० ७।६५ ।

आर्यवत् [आर्यवत् + व्यट्] आर्य, आर्या,
मन्दराय च के कोटि मन्त्रिनः कोषदाक्या -- रा०
५।४०१५ ।

आलीन (वि०) [आली + क्त] बन्द, मुत्त—अमराली-
नय कुम्भम् ।

आलीडा [आ + लिह + क्त + टाप्] शत्रुमती स्त्री—नाली-
द्वया परिहृत भक्षयोन कदाचन महा० १८।१०४।१०।

आलुस्ति (वि०) [आलुन् + क्त] भुज्य, ईषकुडिग्न,
जरा सा घबराया हुआ ।

आलेपनम् [आलिप् + लिप् + ल्यट्] १ पानी मिला
हुआ आटा जिससे घर का द्वार सजाया जाता है,
विशेषतः दक्षिण भारत में—विद्युमालेपनपाण्डुरम्
—मै० २।२६ २ रचना या सफेदी नीपना आलेप-
नवानपण्डिता नै० १५।१२ ।

आलोकः [आलोक + घञ्] १ केवल दर्शन आलोकमपि
रामस्त न पश्यन्ति स्म दुःखिता—रा० २।४३।२ ।

आलोककः [आलोक + क्त] दत्तक, देखन वाला ।

आवपनम् [आवप् + ल्यट्] १ उद्यमग्रधान—यस्य छन्दा-
मय ब्रह्म दत्त आवपन विभा भाग १०।८०।४५
२, पटमन म निर्मित कागडा ।

आवापः [आवप् + घञ्] तान्त्रिकों के मतानुसार मन्त्र
की बार-बार आवृत्ति जिससे जनेक कार्यों में सिद्धि
प्राप्त होती है यन्मु आवाप उपकरणित स आवाप,
मै० म० ११।१ पर शा० आ० ।

आवपणम् [आव + ल्यट्] १ कवच वि० १३।५९
२ अम भालि ।

आवरीकल् (वि०) [आव् गङ् वल्] छादन, बादर,
ढकना—अनन्द० ४३ ।

आवर्क (वि०) [आवृन् + क्त] आवर्णक ।

आवर्तनम् [आवृन् + ल्यट्] वर, आवर्तनानि चत्वारि
—महा० १३।१०३।२० ।

आवास्थ (वि०) [आवस गिच घञ् वया हुआ
स्थान पूर्ण, भग हुआ देशावास्थ मित्र देश० १ ।

आवाल् (बु० पर०) [आ पूर्वक वाम] मण्डप करना
वाम युक्त करना—आशामपला गन्धेन रा०
२।१०३।४१ ।

आविः (स्त्री०) [अवीरेव स्यात् अण्] पीडा, कष्ट,
प्रमथवेदना ।

आविस्तम् (नान० आ०) व्याप्त होना, बीत्ताकानावि-
तम्भाना भाग० ३।१०।३७ ।

आवित (वि०) [आविर क्त] विद्यमान ।

आविद्ध (वि०) [आ व्यध + क्त] पास-पास रख,
हुआ, छिन्नराया हुआ स पाण्डुराविद्धविमानमालिनीम्
रा० ५।२।५३ ।

आविल (वि०) [आविलति दृष्टि स्तुथाति विल स्तुतीक
ध्वज्वा, अस्पष्ट, जा देख न सके ।

आविर्भूत् (वि०) [आविर्भू + क्त] प्रकट हुआ हुआ,
आविर्भूतप्रथममुक्ता कन्दलीपदानुकम्भम्—अथ० ।

आविर्भवत् (वि०) [भ० व०] जो वृत्त के रूप में
दिलवाई दे—विष्णुवति चतुराविर्भवत्क पाण्डुसूनी—कि०
१।६५ ।

आविहित (वि०) [आविष् + वा + क्त] जो द्रव्य बना
दिया गया हो ।

आवृत्तम् [आवृत् + क्त] बार-बार प्रार्थना या गीत से
देवा को सम्बोधित करना ।

आवृद्धतवालकम् (ब०) बूढ़ा से लेकर बच्चों तक ।

आव्यक्त (वि०) [आवि + क्त + क्त] स्पष्ट सुबोध,
नृदाक्यमाव्यक्तपदं निजम्भ—रा० ७।८८।१० ।

आवात् (वेद०) (अदा० आ०) दमन करना—श्रु०
२।२८।१ ।

आवावात्स (वि०) [त० व०] तगा, तग्न ।

आविष्ठा [आविष् + क्त टाप्] सीसने की इच्छा,
वाज० ३०।१० ।

आवृक्क [क० स०] जो नुरन्त हो (बिना पहले से
सोचें) काव्य रचना कर सके ।

आवृत्तपरिग्रहः [प० त०] सन्यास (चोषा आश्रय)
ग्रहण करना ।

आवृत्तवासिपर्वम् [प० त०] महाभारत के पन्द्रहवें पर्व
का प्रथम अनुभाग ।

आध्वः [आध् + अच्] मासागिक कष्ट,—मविनक-
विचारमवाता आध्व प्रथम न्यानमनाध्वप्रकारम् इ०
ब० ५।१० ।

आवृत्तवत् [आवृत् + ल्यट्] आवृत्ति, अनुवृत्ति ।

आवृत्तवत् (वि०) [आवृत् + क्त] विषयमनीय,
विश्वासपात्र ।

आविर्भवतिष्ठतम् (नप०) शारदीय विपुल ।

आत् (आ) (अ०) उदासीनता छोड़कर अवश्य ननु
आत्ने इष्टमवेदने भवति । नाप्यनुमोदने एव,
श्रीदामीत्येति दृश्यते । भौ० म० ३।६२।४ पर
शा० भा० ।

आसक्त (वि०) [आसक्तः क०] अवहट्, बन्द—कार्त-
वीर्यभूजसक्तः अञ्जल प्राप्य निर्मलम्—रा० ७।३०।५ ।

आसक्ति (वि०) [आसक्ता + इत् + क्त] जिसके साथ कोई
समझौता हो गया है, सम्मिलित ।

आसद् (प्रेर०) धारणा करना, पढ़ना आसाद कवचं
दिव्य रा० ७।६।६५ ।

आसतिः (स्त्री०) [आसद् + क्तित्] उलझन, बबराहट
न च ते क्वचिदासतिर्बुद्धे प्रादुर्भविष्यति—महा०
१२।५२।१७ ।

आसन्तम् [आस् + ल्यट्] १ हीरा, हाथी की हीरा और
पीठ का मध्यवर्ती भाग जहाँ हस्त्यारोही बैठता है
२ तटस्थता—कौ० ब० ७।१३ पासे के जल में
प्रयुक्त मोहरा । तम० - कण्वकम् वीर्य ।

जीवन (वि०) [वास्य + क्त] अवाप्त, प्राप्त—बाह्यो-
राज्यां शोचिमांश्च मनन्—रा० ५।११।१३। तन्म०
—चर (वि०) आलस्य ही होने वाला ।

आलस्यवत् (अ०) समुद्र के किनारे तक ।

आलुरवकः [आलुरि + क्व] १ आलुरि की सन्तान
२ एक वैदिक सन्तान ।

आलोक्य (वि०) [आसिप् + ल्युट् + क्] अत्यंत
मनोहर जो असीम सलोह के देने वाला हो (उपहार-
वतः नैपालेयनकम्) दे० नैषध० (हिन्दी का
वस्करण) पृष्ठ ५५९ ।

आलसारकः [आ + ल् + क्त] विस्तर बिछाने वाला
—की० अ० १।१२ ।

आलसारकः [आल्य + क्त, स्वार्थे क्] अनीठी में लगने
वाली चाकी, बमका ।

आलसीय (वि०) [आलस्य + क्त] १ बिचरा हुआ, फैला
हुआ २ उका हुआ ।

आलस्यवत्—अलुम् [आलस्य + वत् + क्त] सिंहासन राज-
वही—दे० १०।५७ ।

आलस्येव (वि०) [आलस्य + क्त] १. अलस्ये, जिसके
पाद पशुप की बाध, जिससे मार्यना की बाध
२ आरणीय ।

आलस्युद् (आ० चर०) आलोक्य करना, हिलाना ।

आलोक्यवित्तम् [आलस्युद् + क्त] तात्परी बचाना, संस्कारन
के प्रहार करना—आलोक्यवित्तमिनाद्यधिच—रा० ५।
४३।१२, तस्यालोक्यवित्तमिनाद्यधिच—रा० ५।४।७ ।

आलस्युत् (वि०) [आ + सिप् + क्त] धिक्का कर सीमा
हुआ ।

आलु (वि०) [आलु + क्त] खूब बहने वाला, धारा
प्रवाह से रिसने वाला ।

आलुचकम् (वि०) [न० अ०] खूब बूझ देने वाली भाव
—अगाधमहतीरालुचकया जवेन—आन० १०।१३।३० ।

आलुचकित (वि०) [आ + ल्युट् + क्त] जिसने
स्वाद ले लिया हो, अनुभवी—अनुभवनालुचकित-
रसम् रा० ।

आलुच्य (अ०) [आलु + क्त] प्रहार करके, मार कर,
पीट कर। अ० अ० अलुच्यम् मलकारने वाला वस्तुत्व ।

आलुच्यवत् (अ०) [न० अ०] धारा, पारद ।

आलुच्यवत् (अ०) [न० अ०] धारा, पारद ।

आलुच्यवत् (अ०) [न० अ०] धारा, पारद ।

आलुच्यवत् (अ०) [न० अ०] धारा, पारद ।

आलुच्यवत् (अ०) [न० अ०] धारा, पारद ।

५

इलु [इल् + क्त] एक प्रकार का शीत—वीरिणिरिलु-
जिन्—नै० २०।२१ (पारा० भाष्य० इलुर्विशिष्टे) ।

इलुली (स्त्री०) [इल् + लुप् + क्त] कुक्कुट प्रदेस
में बहने वाली एक नदी ।

इलुली (वि०) [इल् + लुप् + क्त] नरकुल, तरकहा ।

इलुली [इल् + लुप् + क्त] नरकुल, तरकहा ।

इलुली [इल् + लुप् + क्त] नरकुल, तरकहा ।

इलुली [इल् + लुप् + क्त] नरकुल, तरकहा ।

इलुली [इल् + लुप् + क्त] नरकुल, तरकहा ।

इलुली [इल् + लुप् + क्त] नरकुल, तरकहा ।

इलुली [इल् + लुप् + क्त] नरकुल, तरकहा ।

इलुली [इल् + लुप् + क्त] नरकुल, तरकहा ।

इलुली [इल् + लुप् + क्त] नरकुल, तरकहा ।

इलुली (अ०) [इल् + लुप् + क्त] नरकुल, तरकहा ।

इलुली (अ०) [इल् + लुप् + क्त] नरकुल, तरकहा ।

इलुली [इल् + लुप् + क्त] नरकुल, तरकहा ।

इलुली [इल् + लुप् + क्त] नरकुल, तरकहा ।

इलुली [इल् + लुप् + क्त] नरकुल, तरकहा ।

इलुली [इल् + लुप् + क्त] नरकुल, तरकहा ।

इलुली [इल् + लुप् + क्त] नरकुल, तरकहा ।

इलुली [इल् + लुप् + क्त] नरकुल, तरकहा ।

इलुली [इल् + लुप् + क्त] नरकुल, तरकहा ।

इलुली [इल् + लुप् + क्त] नरकुल, तरकहा ।

इलुली [इल् + लुप् + क्त] नरकुल, तरकहा ।

इलुली [इल् + लुप् + क्त] नरकुल, तरकहा ।

इमाक बोधस्वोचित इन्द्रयज्ञो नामोत्पन्नं भविष्यति
— बाल० १, — बालकम् हीरे का एक प्रकार, की० अ०
२१११, — तावन्तिः बोधहृत्वा मनु० ।

इन्द्रियः [इन्द्र + य — इय] १ शक्ति २ ज्ञानेन्द्रिय । मम०
— बालका ज्ञानेन्द्रियो का नियन्त्रण, अस्त्युः विषया-
तन्त्रि, तन्त्रयोः विषयो से मज्जत ज्ञानेन्द्रियो की
क्रिया ।

इन्द्रधनुः [इन्द्र + धनु + स्युट्] इन्द्रधनुषः, बासना ये तु
इन्द्रधनुसा काके पुष्पपापविमोचिता महा० १२।
३४८।२ ।

इन्द्रधनुः (पु०) १ एक पीठा, तावद्वा एव २ गजेश ।

इन्द्रियम् (वेद०) [इन्द्र + इन्द्रियम्] चौरस क्षेत्र के की
विमल प्रकाशिता इन्द्रिये वर्तमाना — अ० १०।३४।१।

इन्द्राश्वोत्थः (पु०) कण्ठकुल के एक श्वेति का नाम जो
श्वेत्वं के कई सुक्तों का इन्द्रा है ।

इन्द्रिणी (स्त्री०) यथातिथि की पुत्री ।

इन्द्रः (पु०) परलोक में होने वाला एक काव्यनिक दृष्ट
— म बाग्यनिकीत्य वृत्तम् की० १।५ ।

इन्द्रोक्ता उपमा व्यलकार जहाँ रहना में 'इ' लब्ध का
प्रयोग हुआ हो ।

इक्षीका हाथी की आँख की एक पुतली ।

इक्षु (मुद्रा० पर०) किसी काम को बहुधा करते रहना,
बार-बार सम्प्र करना ।

इक्ष्वाक्यान्वम् (अ०) केवल इक्ष्वा द्वारा रचित — इक्ष्वाक्या
प्रभो कृष्टि ।

इक्ष्वाक्यम् (नप०) १ मानवीकृत इक्ष्वा २ इक्ष्वाक्य
माना हुआ शरीर ३ दिव्य शक्ति की प्रथम अभि-
व्यक्ति ।

इष्टभागिन् (वि०) [इष्ट + भाग + चानि] जिसकी महत्वा-
कांक्षा भूरी हो गई है — अपूर्वयन्त्राद्यभिमिष्टभागिन्
रा० १।६७।१७५ ।

इष्टिः (स्त्री०) [इष्ट + चानिन्] कविता के रूप में एक
परिमवाद, मधुहस्ताक अ० १।१६६।१४ पर
भाष्य । तम० — आद्ये गक विमोच जीर्णदेहिक क्रिया ।

इक्षिका, इक्षीका [इष्ट गत्यादी क्त्वा, अत इत्यम्] एक
काटेदार पीप — मनिक्वादीक्षीकामिर्मोचिता परवाङ्क-
यात् रा० २।८।३० ।

इक्षुवृक्षा नाल का पीप ।

इक्षुवर्ति (वेद०) प्रयत्न करना ।

इक्ष्वाक्याना इटो का आकार प्रकार ।

३

ईक्ष्वाक्यम् (पु०) [अ० त०] क्षीप एवा नो नैष्टिकी
वृद्धि सर्वशोभायाम् — महा० १।३७।२९ ।

ईरः [ईर + अच्] बाव, हवा । तम० अ०, कुचः हनुमान् ।

ईरिनिः (पु०) तनु के पुत्र और दुष्यन्त के पिता का नाम ।

ईरः [ईर + क] परमेस्वर, परमात्मा । तम० — आवास्थम्
(ईराशम्यम्) ईशोपनिषद् (अपने प्रकाशर के
आधार पर) — नीला (स्त्री०) कर्मपुराण का एक
अनुभाग ब्रह्मः रथ के चारे की लकड़ी ।

ईरानिकरथः चार घणों का एक चक्र ।

ईक्षितम् (वि०) [ईक्षु + तय] शासन किये जाने के योग्य
नियन्त्रण में रखने के योग्य — ईक्षितव्यं विमर्माभि
भाग० १०।२१।४ ।

ईश्वरकालम् (नप०) एक भुलब्ध जिसका समस्त क्षेत्रफल
९६१ वर्ग म। स्थित होता है — मान० ७।४६।४८ ।

ईश्वरकृष्णः (पु०) माध्यमाग्निका का कर्ता ।

ईश्वरार्थ (वि०) [ईश्वर + कृ + प्यत] जा बोधे से प्रयत्न
म मय्यः हा मक ईश्वरार्थो वधमन्त्र — महा०
१।३४।६६ ।

ईश्वरान्न (अ०) [ईश्वर + अन्न + अच्] आमांसी से उपलब्ध
होने वाला नै० १०।१३ ।

ईश्वरीयं [न० अ०] वराम का वृक्ष ।

ईश्वराक (पु०) पलितज्यातिव से पीया योग ।

ईह (वेद०) [ईह + अच्] स्तुति ।

३

उका (स्त्री०) अङ्गण, बगाना ।

उक्चम् (नप०) [उक् + चक्] १ जीवन, प्राण - उक्चन
रहितो क्षेत्र मृतक शोष्यते यथा — भाग० १।१५।६

२ उपादान कारण — एतदेवाम्बुजमथो हि हवर्ति
नामान्मुनिपुत्राणि — अ० १।९।१ ।

उक्चः (पु०) [उक् + चक्] अग्नि उक्चो नाम महामात्र
त्रिभिर्गन्धर्वभिष्टुत महा० १।२१९।२५ ।

उक्ताश्वरकम् (नप०) शतपथब्राह्मण का उक्ता अम्बा ।

उक्चः (पु०) [उक्ताश्व सम्भूत] एक द्वैवाकरथ का
नाम ।

उत्तरम् (पृ०) खारी झील से निकला हुआ नमक,
साबर नमक ।

उज (वि०) [उज्+रन्, गर्शनात्प्रोत्सा०] 1. नीवज, क्रूर, दास्य जोर, प्रचण्ड। सम० काली दुर्गा का एक रूप, - नृतिहः नृतिह का एक रूप, - वीरम् एक भूषकरिक्तनाम जिसमें क्षेत्रफल ३६ सम भागों में विभक्त होता है—मान० ७७३, -वीरः हीर, -सबत् रोमहर्षज के पुत्र का नाम।

उचित (वि०) [उच + क्त] अन्तर्भाव, नैसर्गिक उचित
 व महाबाहु न जही हृषीमातवमान्—(उचित - स्वभाव
 सिद्धम्)—ग० २।१९।३७। सम० म (वि०) जो
 औचित्य की समझता है।

उष्ण+जल (उष्णजल) (वि०) [उत्कृष्ट व अपकृष्ट
व] ठंडा-शीला, छोटा-बड़ा ।

उत्पन्नः साक्यमुनि का नाम ।

उज्ज्वलम् (नपु०) टीन, रागा, कलई ।

उत्पत्ति (भा० पर०) टकटकी लगा कर देखना, निहार
होकर देखना—भाग० ६।१६।४८।

उत्पत्त्यापत्तौ [उत्पत्त्य अपत्त्यर्थ, द्व० सं०] समृद्धि और क्षय, उत्थान और पतन ।

उच्चाटित (वि०) [उच् + चट् + मिच् + क्त] उच्चाटा
मया, दूर फेंक दिया गया दणकन्वरो उच्चाटित
— भाग० ५।२४।२७।

संस्काराणां वस्तुतस्तम् (नपु०) श्रीबाल्य, सचडाम ।

उत्पत्त्यमान (वि०) [उद् + च् + जिप्, कर्मणि शानच्]
 जो बोला जा रहा है ।

उष्णम् (श्वा० पर०) मूत्र ऊपर उठाकर बुझान
करना ।

उपनिषद् (वि०) [ब० स०] (मोर की भाँति) अपन
परों को ऊँचा किये हुए ।

उच्छिष्ट (वि०) [उत् + शिष् + क्त] मूठा, अपवित्र, वशुद उच्छिष्टमपि चामेध्यम् आहार तामसाश्रयम् — भाग० ।

उच्छिष्टमोहनम् (नपु०) मोम ।

उपकृत (वि०) [उद् + भृञ् + क्त] जिसने अपने
सींग ऊपर को सीधे लटके हुए हैं।

उपसङ्गः [उद् + भि + क्] एक प्रकार का कलात्मक स्तम्भ (सद्वामन क. जूनागढस्थित शिलालेख एष. इंडि. तृतीय. भाग) ।

उच्छ्वासः [उद् + श्वास् + क्त] 1. प्राण (जैसे कि समुद्र में) - सिन्धोदच्छ्वासे पतयन्तमृगणम् श्र० ९। ८६।४३ 2. बड़ना, उभार होना ।

उज्ज्वलादिन् (वि०) [उज् + स्वास + भिनि] विद्युत्, विभक्त ।

उत्पन्नः [उद् + वाण् + क्त] उत्पन्ना, उत्पन्नः ।

उज्ज्वलित (वि०) [उद् + जृद् + क्त] जिसने अपने सिर के बाल जटा के रूप में शिखा बाँधकर रखे हुए हैं।

उज्जसटा (स्त्री०) एक प्रकार की शाड़ी ।

उज्जित (वि०) [उज्ज् + क्त] १ परित्यक्त—चिरो-
ज्जितालक्तकपाटलेन ते—कु० ५ २ निष्कासित,
उडोला हुमा—अविरतो ज्जितवारि—कि० ५।६।

उद्बुधम् [उत् + बुद् + ल्युट्] 1 छाप लगाना, या
जलर सोदना 2 आधुनिक टाइप करने की क्रिया ।

उद्गुणशायिः [त० स०] चन्द्रमा ।

उदुपणाधिम् (नपु०) मृगशीर्षं नक्षत्रपु. ।

जङ्गलारिन् (बि०) [उद् + डामर + णिनि] अ। अस्त्र-
धारण रूप से बहुत कोलाहल करता हूँ ।

उद्दिष्टानाम् (नपु०) अंगुलिया की विशिष्ट मूद्रा ।

उद्गम (नपु०) 1 जपा, मुहल 2 पानो ।

उत्त (वि०) [व - क्त] बुना हुआ, सीया हुआ ।

उत्कथयति (ना० घा० पर०) बेचैन या भातुर बना देता है मलम्बिनीरुक्मियतु गटीयमा शि० १।५९।

उत्कृष्ट (वि०) [उत् + कृष्] जिसके बाल लीले ऊपर को लहे हो ।

उत्कृष्टक (वि०) [प्रा० म०] जो कृत्री अपने हाथ में लेकर ऊपर को उड़ा रहा है ।

उत्कलनिकल (वि०) [उत्कलन निर्गमन कलान्]
 किनारे से कभी नीचे बर्भी ऊपर होकर बहने वाला ।

उत्कर्षणम् । उद् + कृ + ल्यप् । १ ऊपर का खींचना
२ छील देना, उखाड़ देना ।

उत्कार्षणी [उत्कार्ष + णीप्] एक 'शक्ति' का नाम ।

उत्कृष्ट (वि०) [उद् + कृष् + क्त] १ लुब्धा हुआ-एरा-
वतविपापार्थक्यकृष्टकिलवहामम रा० ६१६०१५

2 तोडा हुआ उत्कृष्टगणकमला - रा० ५।१९।१५
(उत्कृष्टानि—वदितानि) 3 लीजा हुआ—महा०

उत्कोच [उ० + कु० + अच्] १ ग्दिवत्, घूम-उत्कोच-
बंङ्गनाभिद्वय कार्याख्यानविदिति च महा० १२/५६।

५१२ दण्ड ।
उत्कोचिन (वि०) [उत्कोच + गिनि] जिसे सिक्कन की

जा सके, भ्रष्टाचार में प्रसन्न ऊकोचिना मृषोक्तीना
वृद्धकाना न या गति महा० ७/३३/३३ ।

गणकोठ (पु०) [उत्कृष्ट + णञ्] कोष्ठ, कुठ का एक प्रकार ।
गणकोठ (महा० पर०) उजाल कर माथ निकालना कार्य०

उवाणा जाना, (प्रेम से) उपभुक्त किया जाना ।

हुवा । मम० - अर्थ (वि०) ऊमरी निम्सार उचला,
मम० कर्मी मम० जोला मम० (मम० निम्सार)

इति = एटी० भाग १), हृषिक (वि०) उत्तम
हृषिक भाग १ :

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

कसकनः [उद् + कृ + क्युट्] देवीपूजान् भाव ।

उत्तम (वि०) [उद् + उत्तम] बढ़िया, श्रेष्ठ, —कः (बु०)

ध्रुव का सौतेला भाई । सम०—इक्ष्वाकुन मूर्तिपला का लब्ध जो मूर्ति की पूर्ण ऊँचाई के १२० सम प्रभागों को हगित करने के लिए प्रयुक्त होता है — कसकन जीवन की अन्तिम अवस्था शन० १२। १।१८, कसा पतिवता स्त्री हृदयस्थैव शोकानि संतपस्योत्तमव्रताम् अष्टि० १।८७, —कृत उत्तमतम विद्या प्राप ।

उत्तर (वि) शब्द ।

उत्तमः [उद् + म् + क् + क्] आवनाकार सरचना —गद्य ७७।२१ ।

उत्तर (वि०) [उद् + तर] १ उत्तर दिशा २ ऊपर का, अपवाहक ऊँचा ३ बाद का ४ आवताकर सींचा मान० १३।६७ ५ भावों की कार्यवाही, अगनी प्रक्रिया उत्तर कर्म यत्कार्य रा० ५।३ ६ बाष्पादन, आवरण - महा० ६।६०।१ । सम०—अवारम् । (उत्तरागारम्) ऊपर का कमरा, अविभक्त (वि०) उत्तर दिशा की ओर मुड़ा है मूढ जिसका, —तात्परीकम् मूढिहतापनीय उपनिषद् का उत्तर नाम, माराधनः पुष्पयुक्त का उत्तर शब्द, —वीचिः (स्त्री०) उत्तरीय बडल ।

उत्तावत (वि०) उतावला, भातुर ।

उत्तम (वि०) [उद् + त्व + क्त] डरा हुआ, भयभीत ।

उत्तमम् [उद् + त्वा + क्युट्] १ घठ, बिहार २ घुड़ कर्म के लिए तैयार सेना की स्थिति युद्धानुद्ध-आधार उत्तानमिति कीर्तितम् (बृ० १।३२५ । सम० वीरः कर्मशील व्यक्ति, शीलिम् (वि०) सक्रिय, परिश्रमी ।

उत्तमविषया (स्त्री०) कोई भी कार्य जिसमें 'उत्पन्न + निपन्न' (अर्थात् पूरी तरह से और भलीभाँति पकाओ) कहा जाय ।

उत्पादयोगः [त० स०] कलित ज्योतिष का एक योग ।

उत्पत्तिपता (स्त्री०) कोई भी कार्य जिसमें 'उत्पत्ति (ऊपर को उठो) + निपत्ति (नीचे उठो)' सम्झा को बार-बार कहा जाय ।

उत्पत्तिप्रतीकारः (शान्ति) [व० त०] अशुभ शक्तियों से बचने के लिए शान्ति के उपायों का अवलम्बन, —की० अ० २।७ ।

उत्पत्तिः (स्त्री०) (वि०) [उद् + पद् + क्तिन्] १. यज्ञ —उत्पत्तिरिति यज्ञं ब्रुमि मी० मू० ७।१३—७ पर सा० भा० २ मूल विधि, वेद में आधारभूत अध्यादेश, इसे उत्पत्तिभूति और उत्पत्तिविधि भी कहते हैं मनु० ५।३ ।

उत्पादिका [उद् + पद् + विच् + क्युट्] एक बड़ी बूटी का नाम ।

उत्पादित (वि०) [उद् + पद् + विच् + क्त] पैदा किया गया ।

उत्पाद्य (वि०) [उद् + पद् + विच् + क्युट्] जो अभी पैदा किया जाना है—लाभ्य उत्पाद्य इवाम यत्न—कु० १।३५ ।

उत्पत्तिमी [उत्पन्न + गिति, विद्यां डीच्] एक लब्धकोश का नाम ।

उत्प्रेक्षावचकः [व० त०] एक प्रकार की उपमा ।

उत्प्रेक्षावचकः एक कवि का नाम ।

उत्प्रेक्षित (वि०) तुलना की गई (जैसा कि उपमा में की जाती है) ।

उत्प्रेक्षितोपमा उपमा अलङ्कार का एक भेद ।

उत्प्लुत (वि०) [उद् + प्लु + क्त] कूटा हुआ, ऊपर को उछाला हुआ ।

उत्प्लुत (वि०) [उद् + फल + क्त] उड़त हीठ, मुस्ताज ।

उत्प्लुतिङ्ग (वि०) [उद् + प्लुतिङ्ग + णङ्ग] जिसमें स्फुल्लिङ्ग मिले, चिमारियाँ उबलने वाला ।

उत्प्लुतः [उद् + प्लु + क्त, स्वार्थे क्] हाथ की विशेष मुद्रा ।

उत्प्लुत (वि०) [उद् + प्लु + क्त] संबंधमान—उत्प्लुता पाण्डवा नित्यम् महा० १।१४।३ ।

उत्पत्तिः (स्त्री०) [उद् + मज्ज + क्तिन्] नाच, विनास, क्षय ।

उत्प्लुतकुलवर्धन (वि०) [व० त०] जिसकी कुल परम्पराएँ छिन्न-विध्न हो गई हों उत्प्लुतकुलवर्धनों मनुष्याणां जनार्दन, नरके निवर्त दास—भव० १।४६ ।

उत्प्लुतवचनम् (नपु०) मूर्तिकला का लब्ध जो मूर्ति की ऊँचाई के अनुसार उनके शान को इङ्गित करे—मान० ६।१११-१३ ।

उत्प्लुतविशुद्धः [त० स०] अलस के रूप में निकाली जाने वाली प्रतिमा, मूर्ति (वि०) शुद्धिब्रह्म ।

उत्प्लावः [उद् + प्लु + क्त] अतिश्रुता, उबड़पुन ।

उत्प्लावयोगः [त० स०] अपनी सामर्थ्य या शक्ति का उपयोग करना चारेपोलाहयोगेन मनु० १।२८ ।

उत्प्लवः [उद् + प्लु + क्त] उत्प्लाव, मोमकत्वात्वं मंत्रस्य हुतोत्प्लवस्य मज्जय—महा० ८।७।१ ।

उत्प्लवजातिम् (वि०) [उद् + पूर्वकी + विच् + इति] जो सुवे निकल जाने पर भी सीता रहता है, महा० १।२२८।६४ ।

उत्पत्तिः (उच्छ्वासी) (स्त्री०) [उद् + म् (ञ्) + क्तिन्] उत्पन्नता जाति मनु० ५।४० ।

उत्प्लु (गुवा० पर०) व्यवस्थित करना, जमाना, विधिवत करना—आमानं ययमुस्म्य न वज्रो अमदक्षिण—महा० १।२।७।१० ।

उत्सर्गः [उच् + तृच् + घञ्] १ राशि, डेर—अवस्थ
मुचकुन् राजन् उत्सर्गान् पर्वतोपमान् महा० १४।८५
१२८ २. (पुरोहितो की) सेवारं उपलब्ध करमा
उत्सर्गं तु प्रधानत्वात् भी० सू० ३।७।१९ (उत्सर्गं
परिचय—आ० भा०) ।

उत्सर्गवृत्तिरिति (स्त्री०) जनमत का एक सिद्धान्त जिसके
अनुसार मलमूत्रोत्सर्ग करते समय ऐसी सावधानी
बरतना, जिससे कि किसी जीव अन्तु की हत्या न हो ।
उत्सर्गधूमनः (मवा) (वि०) [उत्सृज् + पुम्
+ काम मनो वा] उत्सर्ग करने की (जाने भी हो,
रहने भी दो) इच्छा वाला ।

उत्सर्पिन् (वि०) [उत् + सर्प + णिनि] १ किनारों के
बाहर होकर बहने वाला; उत्सर्पिणी न किल तस्य
तरङ्गिणी वा—नै० ११।७७ २. बढ़ाने वाला, उठाने
वाला ।

उत्सर्पात् (वि०) [उच् + स्ना + क्त] जो स्नान करके बाहर
निकल आया है ।

उत्सर्पणम् [उच् + स्निह् + णिच् + ल्यट्] विशारदा,
छिन्नकला, विशिष्टता ।

उत्सर्पणम् [उच् + स्नि + क्त] मुक्कुराहत ।

उत्सर्पणम् (वि०) [उच् + कृ + णिनि] (जीवन में) ऊपर
की ओर उन्नत रखने वाला ।

उत्सर्पाभिरः (ब० ब०) नींद में बोले गये शब्द—नै०
१२।२५ ।

उत्सृज् [उच् + जृच्, नलोप] पानी, जल ।

उत्सृज्य [उच् + जृच्, नलोप] पानी, जल । सम०
—अज्जसिः १. मुक्कुर पानी २. तपन करने के
निमित्त जल,—अवेष्टिका जलक्रीडा जिसमें परस्पर एक
दूसरे पर एक छिड़का जाता है,—अवेष्टाः जलसमाधि,
जलप्रवाह,—मृगः जलपुष्प या मीली भूमि, अज्जरी
(स्त्री०) कामुर्ध्व का एक शब्द, बाधम् अन्तरंग
नायक एक बाधयत्र जिसमें जल में भरे हुए प्याले
छड़ी से छेदे जाते हैं ।

उत्सृज्यमानम् [उत्सृज्यमानं यस्मिन् + क्त, तस्य भावः]
तेज बलित के कारण छलाने लगाना पद्योद्यमकृतत्वात्
विवर्ति बहुतरं स्तोत्रमर्थी प्रयाति म० १।७ ।

उत्सृज्य (वि०) [न० ब०] हुस्ताञ्जलि बर्षे हुए कायेन
निगोषिता मूर्धोदयनकोन च—महा० ७।५।५६ ।

उत्सृज्यत् (वि०) [उच् + जृच् + णिच् + क्त] उठाना
हुआ, सद्विज्यतमुद्विज्यतनिकुञ्चिनपदम्—पं० ता०
सु० १ ।

उत्सृज्य (वि०) [उच् + अजृच् + जृच्] बहुत से जठे देने वाला ।

उत्सृज्य (नपु०) [उच् + कृमिन्] पानी, जल । सम०
—अज्जस्यः मील, सरोवर—सरदुदाद्यये साधुमान-
जलरसिजोदरवीमुवा इत्या—भा० १०।३।१२

—कोष्ठः जलपात्र, जल कलश,—जम् कमल—सर्वा-
दयोऽहृदयद्वयमन्युतासव से—भा० १०।१४।१३,
—कम्पः पानी की बाढ़ ।

उत्सृज्य [उच् + जृच् + क्त]—दिवा० पर०) फेंक देना,
परित्याग कर देना ज्ञाने प्रयासमुपपात्त नमस्त एव
—भा० १०।१४।३ ।

उत्सृज्य [ब० उ०] अठारणि, पाचक अग्नि ।

उत्सृज्य [उत्सृ + जृच् + क्त] ब० स०) एक प्रकार का
कीड़ा जो पेट के बल रेंवता है ।

उत्सृज्य [उच् + जृच् + घञ्] बुद्धि—सर्वार्थपथमोदकम्
—भा० ३।२३।१३ ।

उत्सृज्य (वि०) [उच् + जृच् + सो + जृच्] अन्तिम,
आखिरी भाग० ४।७।५।६ ।

उत्सृज्य [उच् + जृच् + क्त]—स्यट् कलाना ।

उत्सृज्य (वि०) [उच् + जृच् + क्त] बाहर निकला हुआ
—परिभ्रमणाय उत्सृज्योचन—भा० ३।१९।२६ ।

उत्सृज्य (ब०) [उच् + जृच् + क्त] ऊपर—विभूतवस्त्रोऽयं
हरेदस्तास्यमाति चक नृप लैशुमारम्—भा० २।२।
२४ ।

उत्सृज्य (पु०) महाकाव्य के उपयुक्त नायक का एक
नेत्र चतुर्वर्गकोवेत चतुरोत्सृज्यनायकम्—काठ० १ ।

उत्सृज्य एक नाटक का नाम ।

उत्सृज्य (पु०) एक प्रकार का बल काक ।

उत्सृज्य (आ० भा०) उठाना, उन्नत करना ।

उत्सृज्य (वि०) विपुलवास्तितम्पत्र, महाजलशायी ।

उत्सृज्य (वि०) [ब० स०] जिस (रचना) में सत्य,
अर्थ और उच्च सती उत्तम हो ।

उत्सृज्य (वि०) [ब० स०] जिसका उत्तम कुल
में जन्म हो तथा जिसका चरित्र भी अत्युत्तम हो
उत्सृज्यविजयो हनुमान्—रा० ४।४७।१४ ।

उत्सृज्यः जलक का एक पुत्र ।

उत्सृज्य [उच् + जृच् + क्त] १ उठाना, उन्नत करना
२ आगम—अविनाशोदय तस्य कार्यस्य प्रत्यवेदयत्
महा० ३।२८।२।२२ ३ अचूकपना, अनोपना
पर्याप्त परकीर्यनयनस्यस्ते बलोदय म० ५।

५६।११ ४ आचूक्यकर्म, दीर्घजीवी होने का यज्ञ
हस्ते गृहीत्वा हस्त राममभ्युत नीत्वा स्वधार कृत-
वत्योदयम आन० १०।११।२० ५ पूर्वी ज्या
प्रथम आगमन, हस्तः हस्तप्रथम नगर पुरे कुक्का-
मुदनेनुनामि—महा० ७।२३।२९,—उत्सृज्य (वि०)
उन्नति के द्वारा पद, समृद्धि की देहली पर, भास्कर.
एक प्रकार का कर्म नै० १८।१०३,—राशिः नलाश-
पुत्र जिसमें कि एक ब्रह्म क्षितिज में उगता है ।

उत्सृज्य (वि०) [उच् + जृच् + क्त] १ विभूत, विख्यात
चित्रवीची लक्ष्मणातो अनुवातिरचोदितः—महा०

उद्धृष्ट (वि०) [उद् + हृ + क्त] १ बाँधा हुआ
२ बाधित ३ दृढ़, सहित, कसा हुआ ।

उद्धृष्ट (वि०) [उद् + हृ + क्त] बढाने वाला,
ससक्त करने वाला, सामर्थ्य देने वाला ।

उद्धृष्टः [उद् + हृ + क्त] तोड़ कर पृथक् कर देना,
विमुक्त कर देना ।

उद्धृष्ट (भा० पर०, प्रेर०) विचार करना, सोचना
विभक्त० १।१९ ।

उद्धृष्ट (वि०) [उद् + हृ + क्त] जिसने शस्त्र हाथ
में ले लिया है ।

उद्धृष्ट (स्त्री०) जंगल में या मूली लकड़ी में रहने वाली
एक काली चिड़ई, दसोड़ी ।

उद्धृष्ट (वि०) [उद् + यत् + क्त] काम करने
के लिए जिसे प्रेरित किया गया है आत्मनो मय-
मदोद्यमितानाम् - कि० १।६६ ।

उद्धृष्ट (वि०) [उद् + या + क्त] पुष्प + हृष्ट + क्त
+ टाप्] यात्रा के वाणिज्य कर आना ।

उद्धृष्ट (वि०) [उद् + यत् + क्त] उठाया हुआ, एक
चित्र (जैसे कि बादल) ।

उद्धृष्टः (पुं०) [उद् + हृ + क्त] १ चमक, उर्दीग्न,
उज्ज्वलता, २ इस नाम का भाष्य श्री रत्नावली,
काव्यप्रकाश और महाभाष्यप्रदीप पर उपलब्ध है ।

उद्धृष्टः (पुं०) महाभाष्यप्रदीप के भाष्यकार का
नाम ।

उद्धृष्टः [उद् + हृ + क्त] चमकने या प्रका-
शित होने की क्रिया ।

उद्धृष्टः [उद् + हृ + क्त] आधिक्य—सिक्कमहिम्न
स्तोत्र-३० ।

उद्धृष्ट (वि०) [उद् + हृ + क्त] बढाने वाला,
वृद्धि करने वाला ।

उद्धृष्ट (वि०) [उद् + हृ + क्त] उलटी करने
वाला ।

उद्धृष्टः [उद् + हृ + क्त] कुल वा वंश में प्रचलन व्यक्ति,
पुत्र (जैसे कि 'रघूद्वज' में) ।

उद्धृष्टः [उद् + हृ + क्त] विवाह के लिए
सुख नक्षत्र । उद्धृष्टः च विज्ञाय उभिमत्या मधु-
सूदनः—भाष० १०।५३ ।

उद्धृष्ट (वि०) [उद् + हृ + क्त] विनाशकारी या मलिनक बर-
साने वाला (जैसे कि आँसू)—उद्धृष्टलोचनम् सि०
१।२८ ।

उद्धृष्ट विनाश करते हुए नाम किया, लोकाधिक्य के कारण
रौने में माघ से केकर उल्टन करना उद्धृष्टवमान
पिंजरं ह्यारम्भ—महि० ३।३२ ।

उद्धृष्ट (पानी छिड़क कर) मनुष्य को होल में आना ।

उद्धृष्टः [उद् + हृ + क्त] सुपारी—वै० ७।५६ ।

उद्धृष्टः [उद् + हृ + क्त] प्रलयकाल—रा० ६।४४।१८ ।

उद्धृष्ट (वि०) [उद् + हृ + क्त] उलटा हुआ, उद्वा-
टित, प्रसारित ।

उद्धृष्टः (पुं०) नाचते समय हाथों की मुद्रा ।

उद्धृष्टनीच (वि०) [उद् + वेष्ट + क्त] खोलने के
बाग्य, बन्धनमुक्त करने के लिये—आद्ये बद्धा विरह
दिवसे या गितादाय हिंसा, धापस्याने विगलितधुवा
ता मयाऽप्यनीचम् मेघ० १३ ।

उद्धृष्टः [उद् + हृ + क्त] अद्, व्युत्, विभि
उद्धृष्टकारि } वा] चिन्ताजनक, क्षोभ करने वाला, कष्ट
उद्धृष्टकारि } कर या दुःखदायी ।

उद्धृष्टः [उद् + वि + हृ + क्त] बचाना, निका-
लना, उठाना रत्नां गताया मूवं उद्धृष्टः—भाष०
३।३।४३ ।

उद्धृष्टः [उद् + हृ + क्त] प्रलयकाल—रा० ६।४४।१८ ।

उद्धृष्ट (वि०) [उद् + हृ + क्त] उलटा हुआ, उद्वा-
टित, प्रसारित ।

उद्धृष्टः (पुं०) नाचते समय हाथों की मुद्रा ।

उद्धृष्टनीच (वि०) [उद् + वेष्ट + क्त] खोलने के
बाग्य, बन्धनमुक्त करने के लिये—आद्ये बद्धा विरह
दिवसे या गितादाय हिंसा, धापस्याने विगलितधुवा
ता मयाऽप्यनीचम् मेघ० १३ ।

उद्धृष्टः [उद् + वि + उद् + अत् भा० पर०] पूर्णतः
छोड़ देना, त्याग देना ।

उद्धृष्टः [उद् + नद् घञ्] कृष्ण के एक पुत्र का नाम ।

उद्धृष्ट (वि०) [उद् + नद् क्त] ओजस्वी, उत्साहपूर्ण,
समाधाय मनुष्यायै धर्ममिद्विभक्तता—रा० ५।
११।५ । सम० काल छाया को माप कर समय
निर्धारित करने की प्रणाली, कोकिका एक प्रकार
का वाद्ययंत्र ।

उद्धृष्टः [उद् + नद् क्त] दस की पुत्री जिसका
विवाह धर्म के साथ किया गया था ।

उद्धृष्ट (वि०) [उद् + नद् + क्त] अशुल, लुब्ध,
मुक्त, बन्धन रहित—मत्स्यवर्ण्य विमर्शोन्महन्त्य
नित्यम् भाष० ११।१।५ ।

उद्धृष्टः [उद् + नद् + क्त] वृष्टता, हेकड़ी, औदन्य,
बहकार ।

उद्धृष्ट (वि०) [उद्धृष्टा मित्रा यत्नम् व० स०]
१ तेजस्वी, दीप्यमान (जैसे कि चन्द्रमा) नीरवा
निर्मलमयोऽमरमैरुन्निहवन्ता क्षपा कलि०
२ (बालों की भाँति) सीधा कड़ा होने वाला, फैला
हुआ ।

उद्धृष्टः [उद् + मित्रा + क्त, ता वा] यागकता,
उद्धृष्टता] आगने रहना ।

उद्धृष्ट (वि०) [उद् + नी + क्त] साधु के आचार
पर जो अनुमान करने या निर्णय करने के योग्य हो,
—सि० व० १७ ।

उद्धृष्टः (पुं०) [उद्धृष्टो मणिम्—अथा० स०] सतह
पर पड़ा हुआ रत्न गिरयो विभक्तुमनीन् भाष०
१०।२।२६ ।

उद्धृष्टः [उद् + मद् + क्त] बिलो देना, कूँने बूँतो-
अधिमोक्षमने क्लृप्ते भाष० ११।४।८ ।

उद्धृष्ट (वि०) [उद् + मद् + क्त] १ बहुत बड़ा, असा-

भाष्य उन्मलवगा एल्लगा १० ५१६२१२,
लम् (नपु०) चतुरे का फल उन्मलमासाद्य हर
रमरम्ब नै० ३१०८ (भा०) ।

उन्मलीभू (म्भा० पर०) उन्मलित माना लुप्त होना ।

उन्मूलता [उन्मूल + ता] भाषाया या प्रत्याशा की
विधि ।

उन्मूल्य (वि०) [उद् + मूल् + क्त] १ उद्भिन् सप्रान्त
२ मूल मूल ।

उन्मूल्य (कृपा० पर०) मम उन्मा भाति करना ।

उपकर्मन् (नपु०) उपनयन मर्यादा का एक प्रक्रिया
विशेष बालक का निरूपण माना है ।

उपकल्प [उप + कृ + लप् + क्त] आभरण तप
वीर्यकल्पम नाम ० ११७१० ।

उपकीचक [उप कीच + क्त] आठ-विंशत्य [बाम
के बला की उपस्था विराट् रात्रि कौचका
दुपकीचकम् (यही विराट् में वि राट्' हलेय
भी हो सकता है) ।

उपक्रम [उप + क्रम + क्त] १ नी २ उदान ३ व्यव
हार प्रतिक्रिया ।

उपकान्त (वि०) [उप + क्रम + क्त] १ आरम्भ २ अवि
गत ३ व्यवहृत ।

उपक्षेपक (वि०) [उप क्षिप् + क्त] देने देने वाला
मुद्रा देन वाला ।

उपक्षिप्त (नपु०) परिशिष्ट का भी परिशिष्ट ।

उपगम् (म्भा० पर०) पूजा करना सहगम्य विद्याकाख्या
नारायणमुपागमत् रा० २६११ ।

उपगमनम् [उप गम् + क्त] योग्य स्वाहृति अत्र
नगर रि प्राणमुपागमनम् भी० म० १२११०१ पर
भा० भा० ।

उपनिगमि (वि०) [उप गम + क्त] पास जान
का उपद्रुक्त नारिकेली युक्तिगमिमा मप० ४४ ।

उपगृह (वि०) [उप + गृह + क्त] १ अत उपोदित
कथागृहा नपुंथा कृष्णा विषया मक भाग०

४१०१५ २ आच्छादित उहा दृष्टा क्ताभि
पुष्टितायाभक्ष्यगृहानि सत्रन रा० ४१११९ ।

उपगमन् [उपग + क्त] सगमो संगीत ।

उपगम्य [उपग + क्त] गत, गमन गीत ।

उपगम् (म्भा० पर०) निरालना, हडप करना घटनप्रस्त
होना ।

उपग्रा (म्भा० पर०) मूचना परंशु वजन मर्धनि चोप
नारी १५० १२१०० ।

उपचतुर (वि०) उपचतुर् नार के आभरण ।

उपचरन् [उप चर + क्त] निकट जाना पहुँचना ।

उपचरितम् (नपु०) संधि का विशेष नियम ।

उपचार [उप + चर् + क्त] १ सेवा पूजा २ शिष्टता

सीजम् । मम० उच्छलम् बालकारिक रूप से प्रयुक्त
किसी उचित के शब्दार्थ का उल्लेख करने एक प्रकार
का निराकरणोप भाषाणी अनुमान, पदम् शिष्टता
का शब्द औपचारिक उच्चारण ।

उपच्छल (वि०) [उप + छद् + क्त] गुप्त, छिपा हुआ ।

उपच्छल (पर०) क्षीय होना पकड़ केना ।

उपचान् (वि०) [उप + जन् + क्त] घुटने के
निकट ।

उपचल [उप + चल + क्त] १ उपर की घटित का कमरा
२ एक प्रकार की लकड़ी का बोरी या ढल ।

उपचोच [उप + चू + क्त] १ सरोवर या नदी का तट
२ निकटवर्ती प्रदेश महा० १११०-११३ ।

उपस्थका [उप + यन + क्त] पवन का लपट्टी का
निम्नदेश गिरफ्तारकारण नित सप्रान्त रा० ५ ।

उपरागतम् [उप + दृष्ट + क्त] प्रकरण पद्य भी० मू०
६१/३५ पर भा० भा० ।

उपराजितम् [उपदन् + क्त] प्रकरण बतान हुए उल्लेख
करना ।

उपरात् (वि०) [उप + दा + क्त] देने वाला ।

उपवेह [उप + वेह + क्त] अपेटना, लेप करना चिचित
करना - देहोपवेहाक्रियार्थमीनाम् नै० १०१९७ ।

उपवेहिका [उपवेह + क्त + टाप्] दीमक ।

उपवेह [उपवेह + क्त] १ सन्नाहक माम का छटा भाव ।

भा० २१८१२ २ हाति, छोजन अन्नस्योपवेह पश्य
मू० हि० विशिष्टविधि रा० २१०/१२६ ।

उपवेहान् [अव्य - क्त] पावर्द्धार ।

उपवा (बुद्धि० उ०) बोला देना ।

उपवालोप [वि० म०] अन्तिम से पूर्व का भाव ।

उपवात (वि०) [उपवा + क्त] तनाव बढ़ाने के लिए
बाधयत्र में के तारों के अहर एकसे हुए लकड़ी के
टुकड़ पाठागुथाना आत्मन्त्रिय महा० ४३५१२९ ।

उपवातीभू [उप वा + क्त] १ तविषा गह्वर
विद्यावन २ पायदान ।

उपवात् (म्भा० उ०) पूजा करना ।

उपवति [उप + नम् + क्त] १ मुकाब २ देव ।

उपवत्त (वि०) [उप + नम् + क्त] जानेवाला, उपस्थित
होने वाला ।

उपविद्ध (वि०) [उप + वि + क्त] १ पवित्र
२ विमृष्ट किष्टि, मरुद्ध उत्तर ७७ ।

उपविष्टे (म्भा० पर० आ०) प्रसन्न करना ।

उपविष्टम् [उप + वि + क्त] मुख्य सबक, प्रधान
मार्ग ।

उपविष्टमन्त्र [उप + वि + क्त + क्त] द्वार, दरवाजा ।

उपविहारी [उप + वि + क्त + क्त] आकण हम्पला
—नेहानीमुपविहारी रावणी वात्सल्येति रा० ६५५१२ ।

उपनिषिद्ध (वि०) [उप+नि+विष्+क्त] 1. घेरा डालने वाला रखने वाला, अधिकार करने वाला ।

उपनिवेशः [उप+नि+विष्+ञञ्] 1 देहात, उपनगर 2 स्थापना ।

उपनिषद् [उपनि+षद्+विष] सकेन्द्रण यथेव विद्या करोति श्रद्धावोपनिषदा—छा० १।१।१० ।

उपनिषेय (स्मा० ङा०) अपने आपको सत्कृत्य करना ।

उपनयः [उप+नी+यञ्] (किसी भी शास्त्र में) दीक्षा ।

उपनयनम् [उप+नी+यञ्] नियोजन, नियुक्ति, अनु प्रयोग ।

उपनीत (वि०) [उप+नी+क्त] 1 विवाहित 2 ब्रह्मचर्य आश्रम में दीक्षित ।

उपनुब्र [वि०] [उप+नुद्+क्त] उठा हुआ, लहरा में बहा हुआ—दुतयस्तुपुनर् वि० ४।१८ ।

उपनेयम् [उप+नी+यञ्] ऐनक, चरमा ।

उपनयस्तम् [उप+नि+यञ्+क्त] मलमुद्ग के समय हाथों की विधिष्ट मुद्रा ग० १।४।२६ ।

उपनीत (वि०) [उप+पत्+क्त] उपपानक या किसी सामान्य पाप का अपराधी, नगण्य पाप का दोषी ।

उपनीतः [उप+पत्+क्ति] 1 बुध्दमा, सपात—उप-पत्थोपलब्धेनु कोकेयु च समो भव महा० १२।२८८। १ 2 उपयुक्त, उपलब्ध—उपनीतमृद्विज्ञातव्य नृप-मुचे वचन वृकोदरः—कि० २।१ ।

उपनीतविरक्त (वि०) [उ० स०] अनिर्वाण, अग्रमाणित ।

उपनीतव्यः [उ० स०] स्वाध्यास्य में वंजित विरोध अर्थात् दोनों विषय उचितनी सिद्ध की जा सकती है ।

उपनय (वि०) [उप+पद्+क्त] इच्छानुकूल, चिकित्सक—उपनयेन करेनु पुनेषु च विधीयते—रा० २।१०।१।१८।

उपनय (वि०) [उप+पद्+क्त] 1 अनुपस्थित 2 प्रमाण-कारण 3 क्षता में आने वाला ।

उपनयन् (नपु०) [प्रा० स०] चन्द्रमा के परिवर्तन से पूर्व का दिन ।

उपनयः [उप+पद्+विष्+ञञ्] अतिरिक्त, स्तम्भ ।

उपनयः [उप+पद्+विष्] हासि, विकलता भावना विषय चिन्तन न केव स्मृत्युपलब्धत्वा—भाग० १०।८।१२५ ।

उपनयनम् (नपु०) मलवेद्य की रात्रिपानी का नाम ।

उपनयन (वि०) [उप+पद्+क्त] दवाया हुआ, भीषा हुआ—कि० ८।३९ ।

उपनु (बहु०) उप०) धारण करना, बहल करना ।

उपनुब्र (वि०) [उप+नु+क्त] संगृहीत, निकट लाया गया—सिन्धुवोपनुब्र तेजो—भाग० ८।१५।२९ ।

उपनेयः [उप+निष्+ञञ्] उप प्रमाण ।

उपनयनम् (वि०) (दे०) [ब० स०] प्रयास—यस क्वापितकवि कवीनामुपनयनस्तमम् शू० २।२३।१ ।

उपनयनम् (पुं०) [उपनयन+हनि] 1. अवरपरामर्श-दाता, या मन्त्री 2 संदेशवाहक स्वरूप उपनयनम् भव्यतामन्यवार्ता भाग० १०।७।१२९ ।

उपना [उप+मा+अङ्+टाप्] धर्मविषय सिद्धान्त—विषयं परधर्मस्य आभास उपना छल—भाष० ७।१५।२२ ।

उपनायतिरेक (पुं०) तुलना और संबन्ध का संयोग ।

उपनयनम् [उप+पद्+क्त] निग्रह निरोध ।

उपनेयकम् (ङ०) [प्रा० स०] (पर्वत के) डलान पर ।

उपनयनम् [उप+या निष्+प्युट्] 1 निकट पहुँचाना 2. विवाह

उपयुक्तः [प्रा० स०] अधीनस्थ अधिकारी—की० अ० २।५।

उपयोयकम् [उपयोग+मतुप्, मस्य इत्यम्] उपयोगी, काम का ।

उपयोयकम् (वि०) [उ० स०] व्यर्थ, निरर्थक ।

उपयोय (वि०) [उप+युज्+क्यत्] कार्य में लान के योग्य ।

उपरव्य (ङ०) [उप+रज्ज्+क्त (स्पर्)] काका कर के, मिटा कर ।

उपरज्जक (वि०) [उप+रज्ज्+क्यत्] 1 रखने वाला 2 प्रभावशाली ।

उपरतकोचिता (वि०) [ब० स०] बहु स्त्री त्रिमका मासिक चर्च बन्द हो चुका है ।

उपरम् (स्मा० पर०) प्रतिस्पर्धन कराना, युजाना ।

उपरि (ब०) [ऊर्ध्व+रिन्, उप आवेय] ऊपर, उपरांत-बाद । सम० कान्धन् मेनायणी संहिता का तीसरा अध्याय, तत्त्व सतह—बृहती बृहती उद का एक मेघ, छ (स्व) ऊपर रक्ता हुआ ।

उपवद [उप+वद्+क्त] कैदी, रोका हुआ ।

उपरीय [उप+पद्+ञञ्] उच्छेद, लोप, निकालदेना आनर्थक्यादि शङ्कतावरोध स्यात्—मी० सू० ८।४।१५ । सम० कारिन् (वि०) विष्णुकारी, दकावट डालने वाला ।

उपल [उप+ला+क्त] नकली बनेबुक द्वारा कैदी गई माली । सम०—अज्ञान (वि०) चक्की पर अनाज पीनने वाला—कुष्ठि जोलों की चक्की ।

उपलब्धतम् [उप+लभ्+क्ति] उपलब्धतम् [उप+लभ्+क्ति] स्वाय शासन का शब्द जो किसी शक्ति का कुतर्क पूर्ण निराकरण दर्शाता है—स्व० ४० ।

उपलम्भः [उप+लभ्+ञञ्, लुप् च] देखना, देखी करना ।

उपलेषः [उप+लिप्+ञञ्] मन्दता, कुम्भता ।

उपलेष [उप+लिप्+ञञ्] प्रतिस्पर्धियों से संबद्ध व्याकरण की एक रचना ।

उपलोद्गम् (नपु०) [प्रा० ङ०] गीण बाहु, जोड़ी बाहु ।

उपबन्धनम् [उप + बन्ध् + ल्युट्] बुधका, नीचे झुक कर बलना, बैठकर घिसरना ।

उपबन्धित (वि०) [उप + बन्ध् + क्त] बोझा दिया गया, ठगना गया, निराश

उपबन्धनम् [उप + बन्ध् + ल्युट्] देश स्वामीमतेदुपबन्धनमात्मनैव मै० ११।२८ ।

उपबन्धनम् [उप + बन्ध् + ल्युट्] उपवास करना ।

उपोषित (वि०) [उप + षज् + क्त] जिसने उपाहार रक्क लिया है ।

उपोषितम् (मर्त्य०) [उप + षज् + क्त] उपवास रचना ।

उपोषा [उप + षह् + क्त + टाप्] छोटी पत्नी जो पति को अधिक प्रिय हो ।

उपोषि (वि०) [उप + षिप् + क्तिप्] 1 काम उठाने वाला, प्रार्थन करने वाला 2 जानने वाला, (स्त्री०) 1 अधिग्रहण 2 पूछा ।

उपोषित (वि०) [उप + षिप् + क्त] आसीन, अधिकृत ।

उपोषितक (वि०) [उप + षिप् + क्त + कन्] जो अर्थात् पूर्ण होने पर भी अपने स्थान पर दुबला से जमा हुआ है (जैसे कि गर्भाशय में भ्रूण) ।

उपोषी (उप + षि + ईप्) (आ०) 1 देखना 2 उचित या उपयुक्त समझना ।

उपोषक (अ०) [प्रा० स०] बालों की बरनी के पाल ।

उपोषक (वि०) (उप०) 1 चल करना, सहायता करना 2 जानना, पूछताछ करना 3 (स्वा० पर०) मध्य या योग्य होना ।

उपोषक [उप + षज् + घञ्] उपोषि में बीसवीं मूर्त । सम०—अव० (जैन०) मक रहकर कर्म नाश, कर्म न करना ।

उपोषक (वि०) [उपोष + क्] घात में लगा हुआ ।

उपोषीकम् [उपोषी + कन्] 1 प्रमत्तिक रोम 2 मौतियों का हार ।

उपोषी (अ०) [प्रा० स०] मौतों की कमी से ।

उपोषी (वि०) [प्रा० स०] जिसमें मौतों की कमी हो ।

उपोषितः [उप + षज् + क्तिन्] 1 जनभूति, अकवाह —वीणाभूति कटुकम् महा० ५।३।५ 2 प्रान्तिन-विष्ट, समवेक्षण —यथा यथाणा वर्णाना गृह्यान्तः भूतिः पुरा महा० १२।६४।६ 3 एक देवी का नाम—महा० १२।६८।६८ ।

उपोषलोकः [उप + षलोक + अच्] दसवें मनु के पिता का नाम ।

उपोषक (वि०) [उप + षज् + क्तिन्] सामर्थ्य देने वाला, पुनर्जीव देने वाला ।

उपोषक (वि०) [उप + षज् + क्त] समग्र, पक्का जुड़ा हुआ ।

उपोषक (आ० पर०) अन्तर कदम रचना । घुसना, प्रविष्ट होना ।

उपोषक (वि०) [उप + षज् + क्त] 1. सुयुक्त सम्मिलित 2. कष्टप्रस्त, अभिज्ञप्त, निन्दित—ब्रह्म-शापोपसृष्टे स्वकुले—भाष० ११।३०।२ ।

उपोषक (वि०) [उप + षज् + क्त] 1. निष्पन्न, पक्व, तैयार किया हुआ 2. अलङ्कृत, भरा हुआ—अ-मृतापमतांशभिः शिवाभिरुपसंस्कृताः—रा० ५।१४।२५ ।

उपोषकः [उप + षज् + क्त] 1. उपसहार, अन्त 2 विपत्ति ।

उपोषक (वि०) [उप + षज् + क्त] उपर जमाया हुआ—भाष० ४।१।५५ ।

उपोषकः [उप + षज् + क्त] तर्किया ।

उपोषक (नृ० आ०) समस्त होना अर्थात् नोपसृज्ये स्त्रीपु स्त्रीषोप चार्थवित्—भाष० ११।२६।२० ।

उपोषक [उपोष + ल्युट्] आवास, स्थान (जैसा कि 'मृगापसदन' में) ।

उपोषकम् [उपोष + षज् + ल्युट्] नम्रता पूर्वक किसी के निकट जाना ।

उपोषक (अ०) [प्रा० स०] लघ्या के निकट—उप-सन्धयामस्तन् सानुव्रत—सि० १।५ ।

उपोष (अ० पर०) 1. दमन करना 2. संवारना, व्यवस्थित करना ।

उपोषः [उप + षज् + घञ्] बाधा से समाचारपत्रार्थ स्थाने सिद्धय योग्य० ३।३९ ।

उपोषोक्त (वि०) [उपोष + क्त] दमन किया हुआ, दबाया हुआ, नीच जमाया हुआ अर्थात्: शब्दों वा तत्पर्यमपमर्जनीकृतस्वाधो व्यङ्ग्यं। अख्या० ।

उपोषित (वि०) [उप + षज् + क्त] व्यस्त, नीच, विदा किया हुआ नजकदारमनो मृत्यु द्विजपुत्रो-पमजितात् भाष० ११।२।२७ ।

उपोषित (वि०) [उप + षज् + क्त] 1. छोड़ा हुआ—अवस्थानोपसृष्टेन ब्रह्मशोणोपसृष्टेन भाष० १।

१२।२ 2. बरकरार, ध्वस्त—कालोपसृष्टनिगमावन भाष० १०।८३।४ ।

उपोषः [उपोष + घञ्] नीच कर्ष का दायी ।

उपोषक (वि०) [उप + षज् + क्त] सगनिक, कष्ट-गन्, पसीजा हुआ शोषोपसृष्टहृदया—रा० ६। ११।८७ ।

उपोषकः [उप + षज् + घञ्] अचार, बटनी, मिर्च-ममाला ।

उपोषी [उप + षज् + क्त] 1. फैलाया हुआ, बिखेरा हुआ छिनराया हुआ 2. अकवाचित, आच्छादित, ढका हुआ 3. उठना हुआ ।

उपोष (वि०) [उप + षज् + क्त] 1. निकटवर्ती, क्वः

(बु०) आसन एवमुक्त्वाभून् सख्ये ग्योपस्व उपा
विशन्—भग० १।६७ 2 सतह- त सायान घरोपरवे
भाग० ७।१३।१२ 2

उपस्थानम् [उप + स्था + ल्युट्] व्यायालय का कक्ष
उपस्थानगत. कार्याचिन्तामद्वारासङ्ग कारयेत्—की०
ब० १।१४ ।

उपस्थानम् [उप + स्था + णिच्, युच् + टाप्] जैनसाधु
की बीक्षा से सबद्ध संस्कार ।

उपस्थितवन्तु (पु०) [उपस्थित + वच् + लृच्] आशुवन्ता ।

उपस्थित (वि०) [उप + स्तु + क्त] वही हुई प्रवृत्ति-
गोल स्वयं प्रवृत्तिय गुणैरुत्पन्ना कि० १।१४ ।

उपस्थानम् [उप + स्थु + ल्युट्] उपहार ।

उपहारकम् [उपहृत् + क्त] दिव्यो, शिष्यपुत्रं
उचित ।

उपहृतं (वि०) [उप + हृ + लृच्] उपहार प्रदान करने
वाला, आतिथयी ।

उपहार (बु०) आ०) उत्तरतः, नीचे आना उपाग्रहीया
न गृहीतस्य यदि—शि० १।३७ ।

उपहार्यम् [उप + हृ + ल्युट्] उपहार देने वाला ।

उपहारकः [उपहार + क्त] उपहार देने वाला ।

उपहृतिः (स्त्री०) [उप + हृ + क्तिन्] निष्ठा, अर्पण ।

उपहृत (वि०) [उप + हृ + क्त] आमन्त्रित, उपाग्रही
मया, आवाहन किया गया ।

उपास्य (ब०) [उपमता अग्राहक यत् १० म०] १ उप-
आवाह मे, कान में कहना । सम० अथ. एन. ।

अन में मन्त्रों का जप करना. वृद्धः एत मे निपाद
कर निकाले हुए सोमरस का परेषः इष्टः नित्रा
रूप से दिया गया इष्टः - बध. गुप्त ज्ञ्या ।

उपास्य (वि०) [उप + आ + क्त] १ अभिप्रेक्षित
२. उपयोग में लाया गया - यज्ञेनाहुन विनं महा०
१।२।६८।२२ ।

उपास्य (भा० पर०) दृष्ट पटना, हस्त्या योऽनता ।

उपास्य (भा० पर०) १ सूचना २ सूचना (जैसा कि
'सूच्य'प्राप्त्य में) ।

उपास्यः [प्रा० सं०] जैनियों के धार्मिक यथों का समूह ।

उपास्यविद्यः [ब० सं०] जिसने अपनी शिक्षा समाप्त
कर ली है—उपास्यविद्यो गुरुदक्षिणां यच्च ५।१ ।

उपास्यम् [उप + आ + दा + ल्युट्] साधारण शास्त्र में
किस प्रकार अन्तर्लक्ष्यों में से एक प्रवृत्त्युपादान-
कालमात्राख्याः—सा० का० ५० ।

उपास्य (बु०) उपा०) (किसी स्त्री को अतीत्यसमर्पण
के लिए) पुनर्लाना, परिचर्य कराना ।

उपास्य [उप + आ + दा + क्त] १ किसी विद्या का
नील उपादान, आनुवंशिक प्रयोजन २ स्वामिपति,

प्रतिपन्न उपास्यिनं मया कार्यो वनवासे जुगुप्सितः
ग० २।११।२९ ।

उपास्यः [प्रा० सं०] अवर्ण्य का सहायक ।

उपास्यः [उप + आ + रच् + ण्यच्] समाप्ति, अन्त ।

उपास्य (उदा० पर०) किसी बात के लिए रोना ।

उपास्य (वि०) [उप + अर्ज् + क्त] १ उपलब्ध किया
हुआ अवगत ।

उपास्य (भा० आ०) (बलि पशु के रूप में) मारने के
लिए एकदमा ।

उपास्य (वि०) [उप + आ + वृ + क्त] इका हुआ, गुप्त ।

उपास्य (वि०) [उप + आ + णिच् + क्त] जिसके
आलिङ्गन किया है, या जिसमें एकत्र लिया है ।

उपास्य (वि०) [उप + आ + गानच्, ईश्] १ निकट-
स्थ आसपास विद्यमान उपासना करने वाला ।

उपास्य (वि०) [उप + स्था + क्त] १ सवार, खड़ा
हुआ, २ घाटन, प्रस्तुत, आटपका जैसे कि 'अवमान
सम्प्राप्त्यत' में ।

उपास्य [उप + अर्ज् + ण्यच्] बीक्षा, यज्ञोपवीत संस्कार
—उपास्ये प्रवर्तन् उपनयनेन मय प्रवर्तन्—म०
म० पर जा० भा० । सम०—विश्वः सर्वभूतानां
नरकीड ।

उपास्य (वि०) [उप + इच् + ण्यच्—पा० १।२।१०९]
निरट जाने वाला शि० २।१।४ ।

उपास्य (वि०) [उप + ईश्] अनीयर् उपेक्षा करने
के योग्य, नष्टर अन्दाज करने के लायक, परवाह न
करने योग्य ।

उपास्य (वि०) [ना० वा० पर०] उप + एङ्क + ण्यच्—
ऐसा अवहार करना जैसा कि नेत्र के साथ किया
जाता है पा० १।१।१०६ पर काविका ।

उपास्य [अक्षय्य [प० सं०] कामदेव ।

उपास्य (वि०) [उप + आ + दा + क्त] उपास्य, अर्जित
—उपास्यविद्यो गुरुदक्षिणां यच्च ५।१ ।

उपास्य (वि०) [उप + अर्ज् + क्त] दोनो । सम० अक्षय्य
(वि०) या दोनो अवस्थाओं में लागू हो सके,
—अक्षय्यकारः एक अक्षय्य जिसमें अर्ज्य और अक्षय्य
दोनों घट सके, अक्षय्य दोनो प्रकार की प्रवृत्तियों
को दर्शाने वाला अक्षय्य, अक्षय्य (वि०) जिसने
परस्पर-आपने दोनो पद विद्यमान हो, किन्तु एक
छन्द का मात्र, अक्षय्य (वि०) जो न यही का
रहे न वही का, दोनो अक्षय्य से अक्षय्य, अक्षय्य-
ययिष्यपट्टिपिच्छाद्ययि नरयति—म० १।१।८,
स्वास्त्य (वि०) जिसने अपना अध्ययन और
वृद्धावस्था दोनो ही समाप्त कर लिये हैं मनु०
५।३१ पर कुल्लुक ।

उपास्य (ब०) [उप + अक्षय्य] दोनो और से । अक्ष०

पाश (वि०) जिसके दोनो ओर ताल बिछा हो,
 पुच्छ (वि०) जिसके दोनो ओर पैर हो प्रश्न
 (वि०) जो बाहर और भीतर दोनों ओर देख सके।
 उभाकहूअरबतम् (नपु०) शिव को प्रसन्न करने के लिए
 विशेष प्रकार का एक धार्मिक वन।
 उरगव्ययः [व० म०] शयनाग पर सोने वाला विष्णु।
 उरम् (नपु०) [उर + अमुन्, उर्य रपयञ्] छाती।
 सम० कपाटः चौड़ी सबल छाती क्षय, उपेक्षा
 छाती का रोग, —स्तम्भः दमा।
 उचराकम् (वि०) [व० म०] बड़ा शक्तिशाली।
 उषा (म०) [उष + षा] नाग प्रकार से पतन
 माययोरुषा भाग० १।१३।४७।
 उर्वशीशायः [व० म०] उर्वशी का अर्जुन को धार
 जिसके कल-स्वरूप वह हिम्मा बन गया और वह
 स्थिति अज्ञानवास में बहुत उपयुक्त रही। (वह
 उक्ति उस अवस्था में प्रयुक्त होती है जब प्रतीयमान
 हुनिकर घटना लाभदायक सिद्ध हो जाती है)।
 उसम् (चुरा० पर० उल्लङ्घति) बाहर फेंक देना
 प्रक्षेपण (धातुपाठ)।
 उल्लिः, उल्ली (स्त्री०) मरंद प्याज।
 उल्लूः [वल + ऊ, सप्रसारण] एक कवि जिसे वैशेषिक
 का कर्ता कणाद समझा जाता है।
 उल्लुकाब्ज (पु०) कौवा।
 उल्लूति (स्त्री०) [अल् + क्तिन्] ऊन करने वाला, काला
 उल्लू [विलोप्य] हलमय विवाहादि शुभ अवसरों पर मधुर संग
 बैठ बान, विशेषतः स्त्रियों का, —न० १४।५१, अनघ०
 ३।५५।

उल्लवण (वि०) [उल्ल व (व) ण अच् पृथो० नाप्]
 1 नगानक 2 पायमय। मय० —रस, शीघ्र।
 उल्लक [उल्ल लक् अच्] एक प्रकार की मराठ।
 उल्लम् (स्वा० पर० पर०) त्रिसूना लहुराना जिह्वा-
 शय-वर्त्ममय प्रत्यय कि० १६।३३।
 उल्लमन् (वि०) [उल्ल लम् + शन्] चमकता हुआ।
 उल्लाघ (वि०) [उल्ल ला + हन् + क्] वनुर, प्रसन्न,
 घ (पु०) काका मित्र।
 उल्लट (पु०) ११२ प्रसिद्ध तथा युद्धवेद का भाष्यकर्ता।
 उल्लत (वि०) [वल्ल शन्] 1 मुन्दर 2 प्रिय, प्यारा
 ३ पदार्थ ४ शिवा ५ अलीन वनेयुधनी वाक्य
 १।१००००१००।
 उल्लिख (वि०) [वल्लिख + क्] लिखना नाम।
 उल्लम् [व० म०] मृग।
 उल्लोषण (वि०) [उल्लो ण] अग्न्यन्तर्गते उलोषण
 शब्दस्य मतः ५।१००।
 उल्लम् [वल्लि + क्] प्रभात, भोर। सम०
 कर्कश कल मर्मा वलिः अनिष्ट,
 पूरा पर्याप्त म प्राप्त बात की जाने वाली उपा
 का विशेष पृथक्।
 उल्लनिषवन् (नपु०) दोष का एक आसन।
 उल्लप्रमाण (पु०) अष्टपैर का लक्षण नामक एक जन्तु।
 उल्लास [व० म०] कट जैसी जीवां वाला (बोडा),
 शक्ति०।
 उल्लोष [वल्लोप्य तन् हिनति इप + क्] 1 पगड़ी
 2 किसी भूत की बटी।
 उल्लार (पु०) बरतना।

ऊ

ऊल्लाराः (व० व०) शैव सम्प्रदाय।
 ऊल्लारवम् (नपु०) 1 लवणयुक्त भूमि से नैवार किया गया
 नमक 2 बरबार कलमशीरा।
 ऊल्लिः (स्त्री०) [अल् + क्तिन्] ऊनक तिल।
 ऊम् (चुरा० पर०) घटना घटना।
 ऊल्लारिक्त (वि०) अग्राधिक या अतिन्यून।
 ऊल्लारिक्तम् (नपु०) [ऊल्लार + क्] वर्ष में पूर्व हो
 मनाया जाने वाला श्राद्ध।
 ऊल्लारिक्त (वि०) [ऊल्लार + क्] नियमित मासि
 सत्रिया से के अतिरिक्त जो प्रनिमाम श्राद्ध क्रिये और
 जो दिनों की मर्यादा गिनकर एक वर्ष के भीतर
 ही भीतर बनाये जाय।
 ऊल्ल + अल्लम् (ऊर्ल्लम्) (नपु०) लब्ध लुटरी लुचक।
 ऊल्लाल (पु०) कालिका महीना।

ऊल्लिष (वि०) [व० म०] असाधारण बुद्धि में युक्त।
 ऊल्लि (वि०) [उल्ल हा + उ पृथो० ऊर् आदेश]
 मोक्ष उल्लय उल्लय ध्वम् (नपु०) ऊँचाई,
 ऊँच। मय० लब्ध (पु०) अग्नि — तिलकः
 मस्तक पर जातिमुचक मडा तिलक — सूर्यस्पर्धिकिरी-
 टमार्गतिष्णप्रोद्धामि फाल्गुन्यम् साराय० २।१।
 —इक्ष (पु०) बरत केकडा प्रमाणम् शीर्षलम्भ,
 उल्लारा, वाक्य मरगे हिनति की पृथक्, —लोचनः
 गेते हा बल।

ऊल्लिका [वल्लि अल्लय स्वाये क् टाण च] किल्ला।
 ऊल्लयम् (नपु०) अथवा भोजन।
 ऊल्लायम् [व० म०] शीघ्र जन्तु।
 ऊल्लानम् (नपु०) मादक के नैन परागों में से एक।
 ऊल्लालम् (स्त्री०) मादक के नैन परागों में से एक।

श्रु

श्रुत् (स्वा० पर०) जान से मार देना ।

श्रुत्तः [श्रुत् + सक्तिच्] एक प्रकार का हरिण रोहिद्यूता सोम्यवायुकाकी हृन्मय - भाग० ३।३।३६ ।

सम० इष्टिः (श्रुष्टेष्टि) ग्रहण, तारों के निमित्त यज्ञ, शिष्टम् एक प्रकार का कोठ, मास्य एक प्रकार की गोलाकार सरचना या निर्माण अ० तु० १०४, - प्रियः बेल, - विश्विन् (पु०) बोला देने वाला उद्योतिषी ।

श्रुत्तश्रुत्तम् (श्रुत् + श्राद्धम्) ऐतरेय श्राद्धम् ।

श्रुत्तकर्मः कथय मुनि ।

श्रुत्तलेका सरलेका, सीधी साधन ।

श्रुत् (स्वा० पर०) जाना ।

श्रुत्तच्छब्दः [श्रुत् + छिद् + चञ्] श्रुत का परिशोध ।

श्रुत्तनिर्णयचक्रम् (श्रुत्तचक्रम्) (नपु०) श्रुत का स्वीकृति सूचक पत्र, चक्रा ।

श्रुत्तप्रधानम् [श्रुत्त + प्र + दा + तु] साहूकार, वपया उधार देने वाला ।

श्रुत्तसामम् (नपु०) एक साम का नाम

श्रुत्तस्मरा [श्रुत् + स्त + नृ + अच्, मुमायम्] बुद्धि, प्रज्ञा योग० १।४७ ।

श्रुतुः [श्रु + तु क्तिच्] मीसम । सम० श्रुता (वीर-भारियों का) श्रुतु के अनुकूल व्यवहार - मुम् (स्त्री०) प्रजनन के उपयुक्त समय पर मैथुन में रत महिला वस्तुः श्रुतु के अनुकूल यज्ञ में दत्ति दिये जाने वाला पशु ।

श्रुद्धम् [श्रुद्ध - क्त] गाहने के पश्चात् अनाज का संवह करना ।

श्रुद्धित (वि०) [श्रुद्ध + इतच्] समृद्ध बनाया गया - राज-सूयजितस्त्रिकान् स्वयमेवासि श्रुद्धितान् - महा० १८। ३।२५ ।

श्रुद्धयमूकः एक पर्वत का नाम ।

श्रुद्धयामूकम् (पु०) संकराचार्य के जीवन से संबंध केरल में एक पर्वत पर स्थित मन्दिर ।

श्रुद्धिचक्रम् (नपु०) श्रुद्धियों के प्रति जनसाधारण का कर्तव्य, जन समाज पर श्रुद्धियों का श्रुद्ध ।

श्रुद्धिका (स्त्री०) श्रुद्धियों की इष्टी एक स्त्री ।

श्रुद्धिः (स्त्री०) [श्रुद्ध + क्तिन्] एक प्रकार का वाद्ययंत्र - सतालवीनामुरजिष्टिचक्रम् - भाग० ३। १५।२१ ।

ए

एकः [इ + क्त] प्रजापति एक इति च प्रजापतेरभिधान-मिति मै० स० १०।३।३३ पर गा० भा० कण् १ मन एक विनिये त्रुणोप सप्त अ० च० ७। ६१ २ एकता । सम० अक्षरम् (एकाक्षरम्) पुनीत प्रलय, 'ओम्' अग्नि (वि०) ओ केवल एक ही अग्नि को रचना है अक्षरम् बहु गटक जिसमें एक ही अक्षर हो, अक्षरी अपूर्ण अक्षरा, - रूपक (अक्षरा रूपक या उपमा), अक्षरचयः अक्षरा जिसमें एक अवयव कम हो, - आहार्य (वि०) एक छा भोजन करने वाला, जो प्रणिषिद्ध और अनुमत भोजन में विवेक न करे, एकशयम् अलग-अलग एक एक करके, - छात्रीय (वि०) एक ही गांव वा रहने वाला, - छात्रः तपस्वी, सत्यामी नागरज के जनपदे चतुर्येकचरो वशी रा० ७।६७।२३, - छात्र (वि०) ओ केवल एक ही छात्र से शासित हो, जहाँ एक ही राजा का राज्य हो - जीवधावः (इर्षन्) मै० केवल जीवाया का मिश्रण, - इष्टिम् (पु०) सप्तासियों की एक श्रेणी, वृत्ति (वि०) एक ही मात्र को उठाने वाला - तत्कालीनकपुरीमयीय - मै० ६।६५, - मय्यः मय्यह अमुरों का मुख मुखार्थ

- (कहते हैं कि वामन ने इनकी एक अर्द्ध में तिनका चमो दिया था), निवसत एक अवयव को अर्द्धता ही एक शब्द है वास्तिका एक ही पैर का सहारा लेकर खड़े होना - अक्षरचयः अक्षरचयः अक्षरचयः मै० १।१२१, - वाचिचः एकमात्र वाचक, सत्ताम् - न केवल तद् मुखरेकपाणि रम् ० ३।३१, - वाचकम् वाचकचयना की इष्टि से युक्तितनत वाचक, वाचक (वि०) पर्यायवाची, - वाचक (वि०) एक ही वक्ता से आच्छादित, - वाचक (वि०) इकीलवा, विचकः पूरी जीत की० अ० १२, वीरः १ प्रमुख योद्धा २ स्कन्ध के नी महावर्षों में से एक, वाच्यारिकाः वीरों की एक जाति, - जोकः एक ही अक्षर का वृक्ष ।

एकशतम् (नपु०) एक प्रतिशत ।

एकमय्यः (पु०) होनाकार्य के एक निष्पत्ति का नाम जिसमें अपनी मुखमिति है कारण बहुविधा में प्रकीर्णता प्राप्त की ।

एकाधका (स्त्री०) अग्नि यास का आठवीं दिन ।

एकाधकी (स्त्री०) कपास का बीज, बिनीला ।

एकम् (वि०) [एक + क्त] कपिता हुआ, विवसता हुआ ।

एकविंशः (—आवकः) [ब० त०] हरिण का बच्चा, छीना ।
 एकाङ्कः [ब० स०] धनका ।
 एकाङ्कशूकः [ब० स०] शिव की ।
 एकाक्षर (वि०) इस पर लुका हुआ, इसमें नीन ।
 एकाग्रः [बा + ह + टप्] 1. निश्वास, सीस 2. एक प्रकार की मछली ।
 एकाग्रव्यास (वि०) [एतद् + कृप् + भावच्] इस स्थान तक, इस माप का, इस अंस तक, ऐसा ।
 एकाग्रि (वि०) [ब० स०] कुछ आधुनिक औषधियों का पुञ्ज-जो इलायची से आरम्भ होती है ।

एकाङ्गुलि (वि०) इलायची की सुगन्ध से युक्त ।
 एव (ब०) [ह + वच्] पुनः, फिर—एवमव्यय पुनरित्यर्थे अधिक्यति—भी० सू० १०-८-३१ पर बा० ना० ।
 एव (म्बा० उभ०) मानना,—एवितुं देखितो बावी—अहि० ५।८२ ।
 एविका [एव् + व्युल् + टाप्] मोह का लहरीर जिसमें कोई छप्पा या टोपी न हो ।
 एव्यय (वि०) [एव् + तव्य] जिनके किच् प्रत्यय किया जाय, जिनकी लालसा हो, जिनके किच् लालावित हुआ जाय ।

ऐ

ऐककर्म्यम् [एककर्म + प्यञ्] 1. कार्य की एकता 2. एक ही फल में अंशभागी होने की स्थिति भी० सू० ११। १।१ पर बा० ना० ।
 ऐकमुच्यम् [एकमुच् + प्यञ्] एक इकाई का मूल्य ।
 ऐकमुच्यम् [एकमुच् + प्यञ्] 1. पूरा अधिकार 2. अभी-मता ।
 ऐकान्तम् [एकान्त + प्यञ्] 1. एकान्तता, निरपेक्षता, एकान्तवास 2. मित्रता ।
 ऐकारोपः [ब० स०] समीकरण ।
 ऐकप्रकाशः [ब० स०] अर्धवेद का एक अनुभाष जिसका इष्टा ऐतस ऋषि वा (यह भाग कुन्ताप सूक्तों के पश्चात् आता है ।

ऐन (वि०) [इन् सूयं, तस्य, इदम्—अच्] सूयं सबधी - निर्वर्त्य वर्णेन समानयेन -- रा० ब० १।२५ ।
 ऐन्ध्र (वि०) [इन्धु + अच्] बहि का उपत्यक - भी० ११।७१ । सम०—किन्नोरः इन्ध्र का बहि—ऐन्ध्र-किन्नोर सेनर ऐवम्यं चकास्ति निगमानाम्—मुस० ।
 ऐरम् [इरा + अच्] राजा, डेर ।
 ऐरम् [ईस् + प्यञ्] सर्वोपरिता, सर्वोच्यता ।
 ऐरम् (वि०) [ईस् + प्यञ्] इस संबंधी ।
 ऐरकारणिक [ऐर + अच् + करण + उञ्] एक नैवा-यिक का नाव ।
 ऐर्यम् [ईर + प्यञ्] सर्वसक्तिमत्ता, तथा सर्व-व्यापकता की शक्ति महा० १२।१८।४० ।

ओ

ओष्ठ (वि०) [उच् + क, वि० कस्य क, तस्मिन् आयेत—अच् + ह] बर में उत्पन्न या पके (पी खादि पशु) ।
 ओष्ठकी [ओ + कच् + अच् + कीप्] सीमावर्ती अंगल ।
 ओष्ठः [उच् + अच्, पुषो० ब०] तीन दाह विधियों में से एक—मागा० १०।१४ ।
 ओष्ठ [उच् + अच्, बलोप, मुच्] देन, वलि—एव ह्यतिवक्तः सैन्धवे रथेन पथनीवता - रा० ७।२१।१२ ।
 ओष्ठवित्तम् [ना० बा० ओष्ठ + व + क्त] साहसपूर्ण पय, हिम्मत से युक्त व्यवहार ।

ओषकः (वेद०) तकिया, लहारा, अवलम्बन ।
 ओष्ठम् (म्बा० पर०) कैंक देना, उछाल देना ।
 ओष्ठि [ओष्ठ + बा + कि] 1. सोम का पीना 2. कपूर ।
 ओष्ठः [उच् + अच्] होठ । सम०—अवलोम्ब (वि०) जो होठों से बाधा जा सके,—बन्धः करवी के कारण होठों का फटना ।
 ओष्ठ (वि०) [ओष्ठ + अच्] ओष्ठ संबंधी, जो होठों पर रहे । सम०—ओष्ठि (वि०) जो ओष्ठवर्ग से उत्पन्न हो, स्थान (वि०) जो होठों से उत्पन्न हो ।

जी

जीवसेनः [उजसेन + अण्] उजसेन का पुत्र कस ।
 जीवस्वम् [उज् + स्वञ्] देशान्तर, (बहु वी) बुरी ।
 जीवस्व (वि०) [उज् + अण्] उज्ज्व कुल से संबद्ध,
 उत्तम्य कुल में उत्पन्न ।
 जीवसर्विकम् [उज्ज + ठक्] कर्म, कृष्ण ।
 जीवसत्तात्मिक [उज्जसामन + ठक्] बैठने के लिए आसनो
 का प्रबंध करने वाला अधिकारी - वं० शि० १४९ ।
 जीवसत्तिकम् [उज्जसत् + ठक्] लक्षण, स्वभाव - जीवसत्तिके
 नेत्र सहजमेव लोत्सेता भाग० ५।२।२१ ।
 जीवीश्व (वि०) [उदीची + यत्] उत्तरी देश से संबंध
 रखने वाला ।
 जीवुस्वरायकः [उज्जुस्वर + कक्] एक वैयाकरण का नाम ।
 जीवुस्विकः [उज्जु + ठक्] 'उज्जु' अर्थात् कर का सप्ताहक
 - बोधाल० २१० ।
 जीवुकुर्वाणक (वि०) [उज्जुर्वाण + कक्] किसी विपत्त
 अवधि के बहाचारी 'उज्जुर्वाण' से संबद्ध ।
 जीवपतिः (पु०) उज्ज्व - भाग० ३।४।२७ ।
 जीवपत्तम् [उज्जपति + पत्तञ्] उज्जपति या जार से प्राप्त
 होने वाला हर्ष ।

जीवसम्ब (वि०) [उज्जसम्ब + अण्] म या आश्रय होने
 से उरा पूर्ववर्ती समय से संबद्ध रश्मिनिरोपसम्बन्ध
 - तै० २२।५६ ।
 जीवस्थितिक [उज्जस्थित + ठक्] वक्त्र एव भर्तृपादमूला-
 जीवस्थितिको हृग्य पतिभा० १ ।
 जीव (वि०) [उमा अण्] उमा यवनी ।
 जीवसत् (वि०) [उज्जसत् + अण्] १ शास्त्रीयिक म
 हास्यस्थोपस वज्जम् महा० १।२७ २ नैर्गमिक
 - शिष्टोत्सङ्गत बन्धु महा० ७।२७। १ ।
 जीवसत्त्वानिक [उज्जसत्त्वान् ठक्] ऊन विभाग वा ग्रंथ
 कारी ।
 जीवधम् [जीव + अण्] १ राजा मर २२ अर्थात्
 निषधमनोयज जन शि० १७। १ ।
 जीवधर्मातिनिधि (पु०) शि० १।१। १ स्थान में उपस्थ
 होने वाला जडा उपा ।
 जीवद्विक (वि०) [उज्ज + ठक्] उज्जसम्ब ।
 जीवद्विक [उज्ज + ठक्] १ ज् म पान (दुग्धादिक)
 २ तैत्ति महा० ८।६० १ ।

क

कम् [क + ठ] १ बाल केश २ महिला का रूप
 ३ बालों का मुष्ठा ४ दूध ५ विपत्ति ६ जहर
 ७ भय ।
 कम् [क जल लेने अण्] जलपात्र ।
 कम्कृषः [कम् + कृष् + अण्] श्रीकृष्ण का विशेषण
 - निषधिवान् कम्कृष म विष्टरे - शि० १।१६ ।
 कम्कृषिन् (वि०) [कम्कृष् + इति] नेता स्वामी आस्य
 विवृण्य कम्कृषी - महा० १२।२८०।१९ ।
 कम्कृष्य [कम् + यत्] मुझे पास की बरागाह प्रषट्पानि
 यथा कथ्य विवृण्यानुहिमात्यये - रा० २।०।४ ।
 कम्कृष्य [कम् + यत् + टाप्] १ सेना का घेरा २ प्रति-
 द्वितीया ३ प्रतिज्ञा ४ गेय, अवशिष्ट ।
 कम्कृष्यस्य (पु०) [कम् + ठ] बाय - अर्थात् कम्कृष्यस्य
 चरन् कम्कृष्यस्य - रा० ५।२।२१६ ।
 कम्कृष्ये (स्त्री) द्वितीया, द्वितीया ।
 कम्कृष्यारणम् [कम् + म०] किसी बड़े यज्ञ का उपक्रम
 सूचक मुख्य पुरोहित या अजमान की कलाई में सूत्र-
 कन्धन वा कड़ा पहनाना ।
 कम्कृष्ये (पु०) वृक्षविशेष जिसमें जम्बू में फूल आते हैं
 पशुनामीमान प्रमदवनकम्कृष्येनरथ - ली० ।

कम्कृष्यिका (स्त्री०) केवत्त मित्र भिषोना मित्र का स्थान ।
 कम्कृष्य [कम् + ठ] घना बसा हुई बस्ती ।
 कम्कृष्यिका (स्त्री०) पार का जना नग ।
 कम्कृष्यकोय [कम्कृष्य + क] कम्कृष्यो अत्र पुनः कम्कृष्य ।
 कम्कृष्यली [कम्कृष्य + ली + कण्] कम्कृष्य ।
 कम्कृष्य [कम् + अण्] १ घरा २ कम्कृष्य ३ वाण ४ कम्कृष्यो
 का लम्बा ५ कम्कृष्य की बरागाह । सम० कुटि
 (पु०) [कम् + म०] १ म की २ म कम्कृष्यी प्रापरी
 - कृत (पु०) १।१।१ की लम्बा ३ नन कम्कृष्यी
 हाथी की अर्धरी गम्भी या कम्कृष्यो ४ की पहली
 अवस्था में हो, ५ भू हाथी व. काराटी का प्रदेश
 स्वात्मम् शब्द लक्षण, अक (पु०) जनसमुदाय
 विशेष लाके गौणत्वकम्कृष्य कम्कृष्यमानानि पर्येषा
 यथा भवन्ति म आनीयो महा० १।१। कम्कृष्य
 पुत्र, गिबन कम्कृष्यो ६ कम्कृष्यी कम्कृष्यी ।
 कम्कृष्यिका (स्त्री०) एक छोटी कम्कृष्यी ।
 कम्कृष्यी (पु०) कम्कृष्यी ।
 कम्कृष्य [कम् + अण्] मूला अद्वैत मोक्ष ।
 कम्कृष्य [कम् + अण्] १ कम्कृष्य २ कम्कृष्यी
 कम्कृष्य (पु० + पर०) कम्कृष्य करना विष्टरी में कम्कृष्य ।

कदारिका (स्त्री०) कसाई की छुती ।

कटः [कट् + अच्] एक ऋषि का नाम जो वैद्यप्यायन के शिष्य थे । सम० — उपनिषद् एक उपनिषद् का नाम, कालापाः कट और कालाप की शाखाएँ — पा० २।४।३ पर महाभाष्य — ये ब थे कटकालापा रा० २।३२।१८, धृतिः यजुर्वेद की कट शाखा में प्रवीण ब्राह्मण ।

कठिम्ब [कठ इनच्] 1 कुदाल पल्लव कठिनकाज ब रा० २।५।१३ 2 मिट्टी का बर्तन — महा० ३।२९।३, 3 कंधे पर जमाया हुआ फोता या बाल जिससे शास्त्रा श्लोक जाय पा० ४।४।३२ ।

कठिन्मल (पु०) एक प्रकार का मेघ ।

कठुर (वि०) [कठ + उट्] कठोर, कुर ।

कठोत्ति (वि०) [कठोर + इन्च्] कड़ा किया गया, मजबूत बनाया गया ।

कहुली (स्त्री०) एक प्रकार का ढोल ।

कहर एक देश का नाम ।

कथ [कथ + अच्] मयूरमच्छ ।

कथवीरक (पु०) एक प्रकार का सन्धिया ।

कथक [कथ् + क्थल्] मनु बुलाने वाला साधन ।

कथकिलः [कथक + इल्च्] बौल ।

कथकालः [कथ् + कल् + अच्] सेमल का फल, सेमल का पत्र ।

कथ [कथ् + अच्] गला, कथ । सम० ब्रह्मर, धनुर्वेदपुरकथवा महा० ५।१८२।३९ — नासम् कथ की नासी, श्रीवाग्देव शास्त्रा एक रोग का नाम जो प्राय गले में होता है, रोषच् बाबाज का वाम रत्न ।

कथला (स्त्री०) बेन से निमित्त एक टोकरो ।

कथिल (वि०) [कथ् + इल्च्] 1 पीए हुए शगबी 2 लवक उच्छिन्न रश्मिजलदुका में परिणत परिणत ३ ।

कथोपनिषद् (स्त्री०) एक उपनिषद् का नाम ।

कलासम्ब (पु०) पासे पकने का गन्ध भरे कलासम्बे निर्माणकथ रश्मि हृदय मच्छ ० ५५ ।

कथ (वग० उभ०) राजानन करना ।

कथकरीका (स्त्री०) रामायण २ टीका ।

कथला [कथम् + ल्] अवर्णनीय बेवनी ।

कथलाय [कथ + ल्] ता रेखा कथा की रक्त गया हो मूल ।

कथम् [कथ् + अच्] 1 धूल 2 सुगन्धि कथम् यम नीचे स्थानितसे कथम् ५५ ५५ समूह कथं य नाना० सम० — बुद्ध ए। ए० भूगाररस का नाटक वाक्या० ।

कथनी [कथ + इल्च्] केला । सम० — कला 1 एक

प्रकार की ककड़ी 2. एक सुन्दर महिला, — कथः केले का मूला ।

कनकम् [कन + कन्] सोना, — कः (पु०) 1 पलाश वृक्ष 2 कनूरे का पोषा । सम० कदली एक प्रकार का केला जिस के पत्ते भूरे होते हैं श्रीवाग्देव कनक-कदलीवेष्टनप्रेक्षणाय मेघ० ३९, — कारः सुनार, कनूम् कपड़ा जिस पर सोने या जरी का काम हुआ हो पीत कनकपट्टाम अस्त तद्वन् कनूम् रा० ५।१५।४५, कथः मेघ पहाड़ ।

कनकः [कनो वीप्सिर्लि सोमा वा पानि स] एक प्रकार का अस्त्र महा० ३।२०।३६ ।

कनिष्कः एक राजा जो पहली शताब्दी में हुआ ।

कनिष्ठा [कनिष्ठत्वेन युवा युवन् + इष्टन् कनादेश] छोटी पत्नी ।

कनीनिकम् [कनीन + कन्, इन्च्] कुछ सामग्रियों का समूह ।

कनीनम् (पु०) [युवन् + ईयन् कनादेश] छोटा भाई — कनकवानह बाले कनीयास मज्जमे रे ४० १० 2 कामोन्मत्त, प्रेमी ।

कन्धु [कम् + तु] प्रेमी ।

कन्दराल [कन्दर + आल्च्] ज्वराट का वृक्ष ।

कन्दर्बः [क कुत्सिता दपो यस्मान् — व० स०] काम देव । सम० बयः कामदेव की नाक — बहिः कामासुता के कारण होने वाली गर्मी ।

कन्दाश [व० म०] जो बन्द अर्थात् जड़ें साकर जोहित रहता है ।

काबुकपालः [व० म०] बंद को उछालना — आराममीमिनि ब कन्दुकपालः नालीलायमानवयनाम् — नाग० ।

कन्यका [कन्या + कन्, ह्रस्वता] दुर्गा ।

कन्यका परवेश्वरो कन्या कुमारी की आधिपत्या देवता ।

कन्यास् (वि०) 1 छोटा 2 निम्नतर, नीचे का ।

कन्यस्त (पु०) सबसे छोटा भाई ला (स्त्री०) सबसे छोटी बंगुली, — ती सबसे छोटी बहन ।

कन्या [कन् + यक् + टाप्] 1 अविवाहित लड़की या पुत्री 2 कुमारी 3 दुर्गा । सम० — कन्यकः जो कुमारी कन्या से हठसमोह या ब्रह्मजिनाह करता है — प्रेक्ष्यम् लड़की को उपहार के रूप में मांगना, — वस्तुत्वा आसिकधर्म वाली स्त्री — मयि कन्याव्रतस्थाया — कथा० ।

कपाटबन्धनम् [व० त०] दरवाजा बन्द करना ।

कपाटिका (स्त्री०) दरवाजा ।

कपालमोक्षः [व० त०] निर्वाण होने पर मन्वासी की कपालमोक्ष जो उसके उन्नत जीवन का सूचक है ।

कपिमुष्टि (सी०) बन्दर की बेंधी मुट्टी, २५ नाम हुआ घूसा, (आल्) दुष्ट फल ।

करीष्यन् (कृ०) कपूर की विशेषता—कपित्थमनपत्ति-
स्य—रा० ५।

करीष्यन्तु उरु नगर का नाम वहाँ बुद्ध का जन्म हुआ था।
करीष्य (स्त्री०) एक नदी का नाम जो कावेरी में
मिलती है।

करीष्यन्ति (स्त्री०) [व० व०] अथवा स्त्रीत्व प्राप्त होना,
करीष्ये योग्य का कुछ भी प्रमाण न करना महा०
१।२९।५।

करीष्यन्तु (कृ०) अपनी वृत्ति की स्वीकार करने के
विष्णु-स्वरूप अपने पापों की क्षमापाना।

करीष्यन् (कृ०) पत्ते से निकला-मुल्ला एक चिह्न
पापों पर लोका करता।

करीष्यन्ति (—स्त्री) (स्त्री०) बाक का एक पार्श्व।

करीष्य [क+वृत् (वृत्)+अन्] दे० 'करीष्य'।

करीष्यन् (कृ०) हाथियों का एक प्रकार का प्राक-
ृतिक पाप।

करीष्य (वि०) [कृ+स्वट्] प्रेमी, पति—उपवासकम्पु
उत्पन्न करीष्या करीष्यन्तु करीष्यन्तु साहेब २।१०१।

करीष्य [करीष्य+अन्+टाप्] नारदी, उत्तर।

करीष्यन्तु [व० व०] १ करीष्य का बीज २ करीष्य बीज
बीजों बाका ३. विष्णु।

करीष्यन् (स्त्री०) छोटा करीष्य।

करीष्य [कृ+अन्+कृ] हाथी की मूल, वनप्रावरणे
वन्...माना०।

करीष्य (वि०) १. करीष्य २ प्रवृत्त।

करी [कृ+अन्, अन्+वा] १. हाथ २ टैल, कृष्ण। तन०
—करीष्यन्तु (स्त्री०) बीज की एक वृक्षा जिसमें
हाथ कपूर के निकले-मुल्ले हो पाते हैं—करीष्यन्तु
(वि०) उत्पन्न, जिसका कठिनाई से निर्वाह हो
—करीष्यन्तु (स्त्री०) रक्षणा, युद्ध की गति अथवा
में रक्षणा—तत् करतुमिच्छन्त्यापि हाताहतं विभन्
—वाय० ८।५५३, —स्त्री १ चपड़े का बना हुआ
प्लाका २. जो निगा अपने हाथ में ग्रहण करता है
—स्त्री, —स्त्री, —स्त्री: एक पीढ़े का नाम।

करीष्यन्ति [व० व०] बीजों का पानी— बी० अ० १।२०।

करीष्यन्तु (कृ०) हाथी की कनपटी पर एक चिह्न
जिसमें से हाथी की अवीम्यता के समय तरल पदार्थ
बहता है।

करीष्यन् (कृ०) [कृ+स्वट्] वहाँ की गति के विषय में
बराहमिहिर की एक कृति। अन्०—अन्तु स्त्रीत्व-
प्राप्त का एक ग्रन्थ, —विश्वस्तः सुतीया विद्युति—
सुतप्राप्तान् करणविद्युतिमहोपायं बी० अ० ३।
१।१२ पर का० भा०।

करीष्य [कृ+अन्+अन्] बीज, कृष्ण।

करीष्य (वि०) [कृ+अन्+अन्] बुद्धा हुआ, तला

हुआ—कामादित्यवि पविता न परमारोहन्ति ववा
करन्मवीषानि—भाष० १।१५।३९।

करीष्य (वि०) [कृ+अन्+अन्+कृ] जिसके दाँत
बाहर की निकले हुए हैं।

करीष्यन्ति (वि०) [करीष्य+अन्] १ लतावा हुआ
२ बाधित, अन्न किया हुआ।

करीष्य (कृ०) [कृ+अन्] १ हाथी २ 'बाड' की
संज्ञा। अन्०—मुल्ला मोती, —रत्न संयोग के
समय का विशेष नाम, रतिवन्त—वि० ५।२३ पर
टीका,—कुम्हिका पनसाक, पानी का चिह्न।

करीष्य (—क) (स्त्री०) १ बीज २ हाथी के दाँत
की मूल।

करीष्यन्तु [करीष्य+अन्+अन्] करीष्य, करीष्य करने
वाला।

करीष्य (कृ०) वहाँ, नरदी, नैक, पाप निर्मल निष्कल-
स्य बुद्ध इसी करीष्यन्तु रा० १।२५।२१।

करीष्य (व० व०) एक देश का नाम रा० १।२४।

करीष्य (वि०) [कृ+क] १ रत्न, मणि २ मारियल के
कोल से बनाया गया पाप ३ कपूत।

करीष्य (स्त्री०) लोहे की पौड़ी।

करीष्यन् (कृ०) (स्त्री०) [करीष्य कपटं दवाति-वा
+अन्] वह दिन का भूय—दवाहिन पु करीष्यन्
—भाष० ३।३१।२।

करीष्यन्तु (कृ०) बिना पानी का कुआँ उपाधि० १।२८
पर भाष्य।

करीष्यन्तु (कृ०) सर्वत्र से एकता।

करीष्य (वि०) [करीष्य+अन्] १ करीष्य, निष्ठुर २ कुम्ह-
तनी, —कृ (कृ०) काले रंग का करीष्य।

करीष्य [करीष्य+अन्] १ दूत की व्याह २ अन्तर्गत प्रवेश,
उपविष्ट। अन्०—अन्तु (कृ०) करीष्यन्ति,
—कृ (वि०), करीष्य (वि०), सुनने में कपटप्रद,

करीष्य: काल की मवाद—मारीष्यो करीष्यन्तु-
सोपान—भाष० २।१।४५, बुद्धिका कानों की बाधी,
बुद्ध कान का विवर, कर्ण कान की मूल,
बुद्ध, —विष्णुकर्णलोचनी दे० व०,—मुल्ला: कर्ण-
मूल, कर्ण (कृ०) कान बहने पर कान से
निकलने वाला रस,—कर्णन्तु पार्श्वस्थ कर्ण।

करीष्यन्तु (स्त्री०), कामाकुली, कान में कोई रहस्य की
बात कहना।

करीष्यन्तु: [करीष्य+अन्+अन् अन्तु-वाक] १ कामाकुली
करना २ बंधारकोल बन्धुनक तथापरी करीष्यन्तु-
वैद्युत्प्रेरिता स्त्री०।

करीष्य (स्त्री०) मूल का एक चंद्र।

करीष्यन्तु (कृ०) 'करीष्य' की दवाही वाला कर्ण।

करीष्यन्ति (वि०) 'करीष्य' करीष्य करने वाले से संबद्ध।

कर्मरी कर्मिका [कृत् + कर्त् + टाप्] कर्मिका कर्म + टाप्, हस्तपत्र] एक प्रकार का बंधन, बुराई।

कर्मरत्नमयी (स्त्री०) रावणसेवाकृत एक नाटक।

कर्मरत्नः [कर्म + रत्न + क्] कर्मरत्न में बंधित स्तुति-नाम।

कर्मन् (नपु०) [कृ + कर्मिन्] 1. कार्य करने की इच्छा-कर्मणि कर्मिन्: कर्मन्-भाष० ११।३।६ 2. प्रविलास, ब्रम्हा की० अ० २।२। सम०—अन्त (कर्मिन्:स्य) कार्यकर्ता कर्मिन्स्य सत्यं कर्मिन्स्य: रा० २।१००। ५२, अन्तरम् (कर्मिन्तरम्) दूसरा कार्य, अन्तर्यामि: कर्मिन्तर्यामि: (स्त्री) कर्म का नाभ,--अन्तर्यामि (कर्मिन्स्य) कर्म के आधार पर नामकरण, आत्मनः (कर्मिन्स्य) अच्छे बुरे कर्मों के फलों का सत्यस्थान,--कर्मि: पूर्वकृत कर्मों की रक्षा—मुखासुखी कर्मिन्तरि-प्रवृत्ति—मुखासु, अच्छे: कर्मिन्स्य पर उत्पन्नित न रहने के फलस्वरूप हानि—की० अ० २।३, देव: जितने अपने कर्मपूर्व कृत्यों के द्वारा देवत्व प्राप्त कर लिया है, नाभकेन्द्र कुछ कारणों के आधार पर नाम रखना बूढ़ी अपनी इच्छा से नहीं,--निश्चय: किसी कार्य का निर्णय,--कर्मिन्: कार्य का आस्थान करने वाली वैदिक उक्ति कर्मन्तु पराध्वान्--मं० अ० ११।२।६।

कर्मरक: (पुं०) अदरक जैसा एक सुगन्धित पदार्थ जो जीवितियों तथा सुगन्ध द्रव्यों के निर्माण में प्रयुक्त होता है, कंचांरा।

कर्म (वि०) [कृ + कर्त्] 1. प्रबल 2 (समाप्तान् में प्रयुक्त) पूर्ण, भरा हुआ—दीनम् तात्त्रात्कर्मन् रा०—रा० २।१३।२४। सम०—व्याघ्र: तेंदुजा और माहा भीमा से उत्पन्न शकर मत्स्य का जानवर, बाघ।

कर्मरु: (पुं०) [कर्म + र्मु, कर्म चामी अङ्गुष्ठ कर्म० स०] सम्प्रदायघोषक मत्स्य पर तिलक—कर्मरु:—सिलकेऽपि च नामा०।

कर्मरत्नमयी: (पुं०) ग्याय जिसके अनुसार किसी से सबद्ध नियोज उस कार्य को करने का प्रत्येक्ष करता है।

कर्मरत्नमयीयम् (स्त्री०) वादलों के जेत (—कोपी), (—पोषिका) की रखवाली के लिए नियुक्त स्त्री, -सि० ६।४९, बानकी० ११।

कर्मरत्नामयः एक पीथा, कर्मरत्न।

कर्म [कृ + कर्त् + टाप्] 1. हाथी की पूँछ के पान मांस्य बूढ़ी 2. स्वयम् कीलया दत्त कर्म—भाष० ११।१।३ 3. नाभकारी शक्ति संहृत्य कालकलया—भाष० ११। १।१६। सम०—कार: कर्मिकलाविद, कलाविद।

कर्मरत्नी (स्त्री०) [कर्म + रत्न + क्] एक प्रकार की पीथा।

कर्मिकारक: (पुं०) 1. करम्भ वृक्ष 2. पानविशेष।

कर्मिका [कर्म + कर्त् + टाप्] सर्वोत्तम कवि के किए सम्मानार्थक उपाधि।

कर्मिक (वि०) [कर्म + कर्त्] 1. विद्वत्, संवृत्त 2. उन्मि-म्भ, अनिश्चित—एतन्मात्कारमाच्छेय, कर्मिक प्रति-भाति मे—महा० १२।२८७।११।

कर्मन् (वि०) [कर्म + उच्यते] 1. नदी, देहा। सम० आत्मन (वि०) बहरीला, वृष्टि (वि०) दूरी वृष्टि से देखने वाला।

कर्मिकुराणम् (नपुं०) एक पुराण का नाम।

कर्म: [कर्म + कर्त्] आत्मा, विस्वाद्य—लौकिके मयवाचारे कृतकर्मो विचारतः रा० २।१।२२। सम०—कर्म,--तत्तः कोई व्यक्ति या पदार्थ जो प्रचुर नामा में प्रकाई करे—निश्चयकर्मरत्नमयी कर्म—भाष० ११। १।३,--स्थानम् 1. जीवितियों के निर्माण की कला 2. निवर्तमान, अवधिमान—मुमुक्षु।

कर्मक: [कर्म + कर्त्] 1. कर्मविशेष, कचोरा 2. (वि०) मायकर्मक, निश्चित निवर्तमानक—आवर्तित्वावमे-वैस्त निश्चितकर्मकर्मक: भाष० ११।२।६।

कर्मरत्नमयी: (स्त्री०) [प० त०] विचार बनाने की नामधर्म, विचारों की मौलिकता, नाममात्रकर्म।

कर्म (वि०) [कला + वत्] कर्मिक कलाओं में दक्ष। कर्म (वि०) [कर्म + कर्त् + कर्त्] कर्माच, प्रभावित, वृत्तिवृत्त—कर्म्याची वत् नाभेव लौकिकी प्रतिभाति मे ग० ५।३।४। सम०—कर्मक: वह बड़ा बिल्का मृग और पैर मफेट हो।

कर्मरु: (पुं०) रावतरणिषा का रक्षिता।

कर्म (वि०) [कृ + कर्त्] 1. सर्वत्र 2. वृद्धिमान—वि० (पुं०) 1. विचारक, कविता करने वाला 2. बान्मौकिक 3. बह्मा। सम०—कर्मिकम् कवि की कल्पना, कर्माच कवियों का अनुक्रम अनिर्वाच्यकर्मरत्नमयीरत्नमयी ससारे पद-या० १, कर्मरु कवि का वास्तविक भाष्य।

कर्मिकम् [कर्म + कर्त्] 1. (वेद) वृद्धिमान 2. कर्म कीलक।

कर्म: [कर्म + कर्त्] कर्म—कर्मरत्नमयी मेदमि प्रमिद मे० म० १।४।२२ पर सा० भा०।

कर्मरत्न: [कर्म + रत्न + कर्त्] मत्स्य, रत्न पैदा करने वाला निद्राक्षणीयप्रवर्तकपाणकर्म—भाष० २।३।१३।

कर्मरत्नमयी [वि० न०] कर्मरत्नमयी की पीने से झाकी रंग की वेदमयी।

कर्मरत्नमयी: (पुं०) नीलेला मां से उत्पन्न भाई।

कर्मरत्न: [कर्म + रत्न + कर्त्] लोनी। सम०—कर्मरत्न: (पुं०) एक पीथा बिलके रस के सेवन से जोती बुर हो जाती है।

का (स्त्री०) 1. पुष्पी, बरती 2. दुर्वा देवी।

कांस्यम् [कस+ङ (ईय)+ङञ् छलाप] कांसी का बना हुआ, पीतल का बना जल पीने का जलगान, गिलास ।
सम०—उपबोह (वि०) बर्तन भर कर दूध देने वाला
- बोह (वि०),—बोहन (वि०) दे० कान्धोपदात
नीलम्, नीली तुलसीजन, बासीस ।

ककः [कै+कन] १. कौवा २. पानो में केवल सिर दुबोकर नहाना । सम० अबनी गुञ्जा का पीषा,—उडम्बर. उडम्बरिका अजोर रा पेड़ ग्लर, अम्बु गुनव जामुन का पेड़ लडम् विशेष रूप से बनाई हुई बाण की नाव,—तिस्ता, तुष्टिका, माता,—मास्तिका गुप्तो के विभिन्न प्रकार, चर्षा (म्ना०) जो कुछ उपलब्ध हो उसी को पीकर रहने की कोबे की आदत का अनुसरण करना और केवल निरी आवश्यकता पूरी करना एवं गोमूत्रकाकचयया वज्रु भाग० ५।५।३४ मंथनम् कौर्जों की रति क्रिया जिसका देखने पर प्रायश्चित्त करना पड़ता है—स्नानम् कौब की भांति स्नान करना, स्वर्ण १ कौबे का मुना जिससे कि फिर स्नान करना पड़ता है २ मरु के पश्चात् दसवाँ दिन जब चावल का पिण्ड कौबो को दिया जाता है ।

काकिष्क (वि०) [काकिष्+ठक] कौडी के मूल्य का निकम्मा, अनुपयानी ।

काक्षीय (पु०) एक वृक्ष का नाम, बाभाम्जन, लोहजम्पा ।

काच [कच्+ङञ् कुत्वाभाव] वह भूकान जिसमें दक्षिण और उत्तर की ओर कपरे बने हो व० सं० ५३।४० । सम० कामलम् आब का एक रोग, काच बिन्दू ।

काचिक (पु०) एक पवित्र वृक्ष (जो मन्दिर के पास उगा हो) ।

काच्छप [कच्छप+ञ] कछुबे से सम्बन्ध रखने वाला ।

काच्छिक (वि०) मुक्तपूर्ण इव्या का निर्माता ।

काचम् (नपु०) लकड़ी की मांगरी ।

काञ्चीपुत्र [प० न०] १. तगढी की डोर २. काञ्ची नामक नगरी की समृद्धि काञ्चीपुत्र[काविनसार्यलाका दिग्दक्षिणा कर्कशयनभोग्या जानकी० १।१६ ।

काठक (वि०) [कठ+कुञ्] कृष्ण यजुर्वेद की कठ संहिता से संबंध रखने वाला ।

काण्डपुत्रम् (नपु०) 'कुण्ड' कुल ।

काण्डमायन (पु०) एक वेदाकरण का नाम ।

काण्डानुसन्धः (पु०) पहले एक वस्तु व्यक्ति या दैवत । मे सम्बद्ध समस्त प्रक्रिया पूरा करना, फिर दूसरे से संबद्ध फिर तीसरे से, इसी प्रकार चल्ती रहना ।

काण्ठेरी (स्त्री०) हल्दी का पीषा मज्जिष्ठा का पीषा ।

काण्ठायनपुत्रम् (नपु०) काण्ठायन का अतिपुत्र ।

काण्ठेरी बाण प्रणीत एव गद्य काव्य (उपन्यास) ।

काशिकालः [क शादि+ङ--अण] व्यञ्जन (क से

लेकर क्ष की समाप्ति तक जो अक्षर जाय) कादि क्षान्तक्षयस्तत्पर्यन्तमी अत्र० ।

कानिष्ठयम् [कनिष्ठ+ङञ्] सबसे छोटा होने की स्थिति ।

कान्तमावकम् (नपु०) चमड़े का एक भेद कौ० अ० २।११ ।

कान्ति [कम्+कित्त] लक्ष्मी—दही कान्ति सुना अजम् भाग० १०।६५।२९ ।

कान्तिष् (वि०) [काम दिग्म] अमाया गया, (मुद्रा-दिमें डर डर) भागने वाला दोड़ने वाला ।

कापुष्व [कुत्सित पुष्व को वृद्धादेश] नीच व्यक्ति, कायर छोटा आदमी ।

कापेयम् [कापेयि कर्म वा कपि, ङक्] बन्दर वा व्यवहार या आदत ।

कावल्थम् [कवल्थ+व्यञ्] बिना सिर के घड़ का हानाया ।

काव [कम्+घञ्] १ इच्छा, चाह २ स्नेह, प्रेम ३ जीवन का एक उद्देश्य (पुरुषार्थ) । सम०

आध्वं वह आध्वम जहां कामदेव ने तपस्या की थी ईश्वरी कामाक्षी जिनमें शिव में कामाक्षीजना जगत् के लिए कामदेव का रूप धारण किया, कार कार्य हरा वा स्वतंत्रता अपनी इच्छा के अनुसार काम करना—नात्मन कामकायं अस्ति पुरुषोऽयमनीवर-रा००।१०।१।१८, कोटिः (स्त्री०) १ इच्छाओं की चरम सीमा २ अभिलाषाओं की पराकाष्ठा ३ दक्षिण में काञ्चीपुरी में गङ्गा-चायं द्वारा स्थापित आध्यात्मिक मन्त्रा—तन्त्रम् एक रचना कृति बहुमूल्य काल्पन नाम में मनाया जाने वाला एक एवं जिसमें शिव के द्वारा काम को कुसला कर भस्म कर दिया जाता है, हल्पम् १ इच्छित पदार्थ का उपहार २ वेषधारियों द्वारा मनाया जाये वाला एक एवं—अर्धं क्षुभारक्षित केटा या व्यवहार भाव विषय भोगों में भाग लेने वाला कामार्ता तथा कामभाष—करोमि कठ १-२४ ।

कामठक [कमठ+ङञ्, स्वायेंकम्] १ बुलाष्टु का ताम २ गी पर्व का नाम जो 'सर्वमथ' में प्रथम हो गया था ।

कामन्दकि (पु०) काकु-दकीय नीति का प्रणेता ।

कामला [कम्+लिङ्+कल्प्+टाप्] केने का पीषा ।

कामिकागम् (पु०) अंगम सास्त्र का एक ग्रन्थ ।

कानिनी (स्त्री०) [कान्+इमि+ङीप्] नावक शराब ।

कापील (पु०) एक प्रकार का सुपारी का वृक्ष ।

काण्डलिक [कण्डल+ठक] दक्षिण, जो की लक्ष्मी ।

काञ्चीय [कञ्चीय+ङञ्] १ खड्ग २ बुधाय नामक वृक्ष ।

काष्ठा (स्त्री०) १. पीला रंग २. सारीरिक रूप या वृद्धा
—काष्ठी वनवती प्यावेत् —आम० ३१२८।१२।

कलसोपानिकी (व० त०) [कलसी या रंगे का नाव करने
वाली बीजधि का पीठा ।

कल्लु (नपु०) [क + कल्लु] बह्ना का एक दिन
(= १००० वृत्त) ।

कल्लारकः (पुं०) एक जाति का नाम जिसके लोग पाल-
कियो में सवारियों को रोते हैं ।

कि (जू०० पर०) चिकित्सा, जानना ।

किंकिरीति (स्त्री०) [किंकिरीति - कृ + क, स्थिवा - इ]
कीकल ।

किञ्चन्य [किञ्चन + प्यञ्च] सपति—किञ्चन्ये
नास्ति बन्धनम् महा० १२।३२०।५० ।

किङ्किण्य (नपु०) बैसा पानी ।

किन् [कु + विन् वा०] समासान्त शब्दों में प्राय 'कु'
के स्थान में प्रयुक्त होता है, और 'तुच्छता', 'वटिया-
वन' दोष या ह्रास का अर्थ प्रकट करता है । सम०
—कविका (स्त्री०) मदेह, सकोच, कुले (अ०)
किमकिट्, —अ (वि०) जो कहीं उत्पन्न हुआ हो,
जिसका बीजकुल में जन्म हुआ हो, तुच्छः 'करण'
नामक काल के स्यारु माषों में से एक, नु (अ०)
वरन्तु फिर भी, तो भी —किन् चितं प्रनुष्यामनि-
त्यमिति मे मतम् रा० २।४।२७, —वाक (वि०)
अपरिपक्व, अज्ञानी, —वाकः आर्यवंत शास्त्र में वर्णित
एक जड़ी भूटी, —तुच्छः १ अर्धदेव २ वटिया मनुष्य,
—राक्नु बुरा राजा, चिक्का निम्बा, बुराई ।

किन्नरः (पुं०) मगरमच्छ, चड़ियाक ।

किन्नीच (वि०) [किन् + च] किसका, किससे मद्य रसने
वाला ।

किन्तु (वि०) [किमिदं च बोधः] (पुं० - कियान्,
स्त्री० - कियती, नपुं० - कियत्) १. कितना अधिक,
कितना बड़ा, कितना २. कुछ, थोड़ा सा । सम०
एतद् किन्तु महत्त्व का, अर्थात् तुच्छ, अनिर्मायाम्,
—आहः नवम्, तुच्छ बात ।

किरारः (पुं०) बेईमान वीरवार, निर्लज्ज व्यापारी—आम०
१२।३।३५ ।

किराराकः [किंरं पवंतयूनि मतति वच्छनीति, स्वार्ये कन्]
किरार जाति का मनुष्य ।

किर्दारिद्र्यम् [व० छ०] अन्तरे का पेड़ ।

किर्किरितान् (नपुं०) हर्षतुल्य अवस्था ।

किरारः (पुं०) अना हुआ दूध ।

किराराः (पुं०) बीजा, ऊँच में छोटा ।

किर्किरितम् [किन् + टिप्, वृत्] १. लकट, पाप दिये
पुत्रे वनादि मातृवर्द्धि किर्किरितम्—रा० १।५२।७
२. बीजा, बालकादि ।

किरीटः [किन् + मृ + जोरन्, किमोन्मत्तोप, वातोन्म-
त्तोपः] किरी जानवर का शिखा, शिख, शावक ।

कीक (वि०) [की + कट् + अच्] १. निर्जन, बेचारा
कज्ज, लाकड़ी ।

कीकलान् (नपुं०) [की + कल् + अच् + व० त०] कच्चे-
रुका, मेरुदण्ड, रीढ़ की हड्डी ।

कीचकः [कीच् + कुन्, आक्षन्तविपर्ययच] बांस जो हवा
भर जाने पर लज्ज करता है—कीचका वेनवस्ते स्मः
मे स्वमन्थनिमोदता केवल 'बांस' के अर्थ में बहुधा
प्रयुक्त—स कीचकैर्वास्तपूर्यन्तर्ध्वः कु० १।८, रघु०
२।१२ ।

कीचकचः [व० त० कीचक + हन् + अच्, वधादेशः]
१ भीम के द्वारा कीचक की हत्या २ एक नाटक का
नाम ।

कीटः [कीट् + अच्] १ कीड़ा । सम० - जवचन (वि०)
कोई वस्तु जिसमें कीड़ा लग गया हो, कीड़े से लार्ड
हुई, —उत्तरः बगी, तत्र कीटोकराकीर्णे कषा०
१०।१२९०।११, माया, वायकां, —वादी, —वास्त
(स्त्री०) एक पीछे का नाम ।

कीनाल (वि०) [किलम् - कन्, ईत्, मस्य मोषो नामा-
नमच] १ धरती जोतने वाला २ निर्जन, दरिद्र
३ दुष्ट हत्या—उपांशुवातिनि—आमा० ४ पूर ।

कीरिबारा (स्त्री०) रू ।

कीर्तनीच, कीर्तन्य (वि०) [कर्त् + कनीच, ध्वन् वा] स्तुति
किये जाने के योग्य, जिसके यश वा कीर्ति का नाम
किया जाय

कीर्तिः (स्त्री०) [कर्त् + कित्] १ यश, ख्याति २ कृपा,
प्रसाद । सम० - वाचकोचः जो केवल ख्याति या यश
के सत्कार में ही जीवित है, मृत, —स्तम्भः यश वा
ख्याति के स्तम्भ का शिखा ।

कीर्तिलब्ध (वि०) [कृत् + लब्ध] जिसकी स्तुति की
जाती है ।

कीलः [कील् + वच्] १ जुआरी २ मूठ, हरता ।

कीलप्रतिकीलभावः (पुं०) एक न्याय जिसके अनुसार
किया एक में रहती है तो प्रतिक्रिया दूसरों में रहती
है पा० २।२।५ पर व० वा० ।

कीलान्तिम् [कीलान् + इति] छिपकिली, विरगिट ।

कीलकर्मन् (व० कर्मन्) [व० क०] अपावादा नाम का
पीठा ।

कु (अ०) [कु + ह] कुड़ाई, ह्रास, अचमूच, पाप, जोखन
और कमी को प्रकट करने वाला अव्यय । सम० - अरः
बुझने वाला, - के, -नुः बचक, -अचमूच बचक, -वाच्
(पुं०) गीढ़, —कीलक शरारत से बरा प्रसन्न, लजः
१. एक प्रकार का कर्मज जो बहुश्री कर्तारों के
शर्मों से बचता है २. दिन का आठवाँ मुहूर्त ३. बीहता

वा भागमा ४. पूर्व. - हावम् पिठला हरवावा, वक्षम्
पुरा मावन्, मोड़े वा मँडे नावन्, - नीति: वृद्ध राव
-वक्ष, वक्ष् पीवर, पिबहा, -वावन् अवोच्य
व्यक्ति, -वैच: दक्षिणी प्रवृत्तिम्, -लक्ष्य (वि०)
कोटे चिह्नों से युक्त, विष्णु: कस्मान्नयुक्त मूर-
वीरता, वैष्णु (पु०) बुरी भावत।
कुक्षालिन्: (पु०) मूली या मुरादे से निर्मित भाग, कवा०
११७१२२।
कुक्षुट: [कुक्ष् + विष्णु, केन कुटति कुट् + क] १. मूर्ता,
आम की चिमारी। सम० - क्वक्षम् मूर्ता का
मर्मा, - वाव: - वहि: एक प्रकार का लेप, आल-
नक्ष् बीज का एक आसन।
कुक्षित (वि०) [कुक्षि + क्त इति त० स०] वमंस्व,
-विच्छास्य से कुक्षित: पुमान् - वाव० १०।
कुष्क: [कुष् + क] स्तन, उरोज, वृक्षी। सम० - कुष्क:
उपम युवती के स्तन, - कुष्कलम् कली के आकार
का स्तन - गोपाङ्गुमाना कुष्ककुम्भक वा - कृष्ण०,
कुष्ककुम्भ स्तन पर रोकी या केसर का लेप।
कुष्काव्य [व० स०] बहो की विशेष स्थिति जब कि
मनस लज्ज से आठवें घर में हो।
कुष्कय: [कुष्कय + र] १. हाथी २. तिर ३. मानवच
४. बाट की लक्ष्मा। सम० - अरि: सिंह, आरोह:
महावत, - अक्षय: (मज्झिम:) व्योतिष का एक
योग जिसमें चन्द्रमा मघा नक्षत्र में और सूर्य हस्त
नक्षत्र में विराजमान होता है।
कुटिल (वि०) [कुट् + इलच्] कपटी, बक, देड़ा,
बेईमान। सम० - अलक्षम्, कुत्तलम् टेढ़ी अलखें,
टेढ़ी जूल्में कुटिलकुत्तल भीमन्त्र च ते जड उदीरता
- वाव० १०:१५, क्षितम् कपटपूर्णमन, टेड़ा मन
- कुक्षेवर्मविशेषिणी कुटिलचित्तविदेविमोक्ष - नव रत्न०।
कुटी (स्त्री०) [कुटि + ओच्] झोपड़ी।
कुटुम्बिनी [कुटुम्ब + इन् + ओच्] १. गृहिणी २. घर
की सेविका या मीकरानी।
कुटुम्बिता, स्वम् [कुटुम्बिन् + ता, स्व] १ गृहस्थ होने
की स्थिति २. पारिवारिक एकता या सम्बन्ध ३. एक
परिवार की भाँति रहना।
कुटुम्ब [कुटु + स्तुट्] १. काटना २. पीटना ३. मक्का
बंद करके बल्लक से दोनों और बंधवाना, बहु बन्धन
को बल्लक करने का चिह्न है।
कुटुम्बक: कुटुम्ब, जिह्वा बोधने की अंगी।
कुटुम्बकम् (वि०) [कुष्प + क् + स्तुट्] मुरों की
बाधे वाला।
कुटुम्बी [कुप् + कप् + क्रीच्] एक छोटा पक्षी।
कुटुम्बक (पु०) एक देश का नाम, - अर्ध कुटुम्बी बहुवार
जिसे विराजते वैदिकवातिनपत्र - वावकी० २०।

कुम्भ: [कुप् + व] पानी का बर्तन, पानी का कण्डा।
सम० - वाव: [कुम्भेन पीके जल मूर्ती] एक कण्ड
का नाम, वैष्ण (वि०) जवाड़ी, महरा, पुरह।
कुम्भक: [कुष् + कम्] बर्तन - कवा० ४१४७।
कुम्भिका (स्त्री०) कुम्भकी, वृत्त।
कुम्भिन् (वि०) [कुम्भ + इति] बोलकार, - की (पु०)
मुनहरा पहाड़।
कुम्भिनी (स्त्री०) [कुम्भिन् + नीच्] बोल बाल्य में
एक माड़ी का नाम।
कुम्भिका (स्त्री०) [कुष् + कम् + टाच्] एक छोटा
जोड़, पीछर नवा कम्बिका - वा० १११४४ पर
म० वा०।
कुम्भस्तम्ब [व० स०] बाट वस्तुओं को बाँट के अक्षर
पर वृत्त के सम्मानार्थ दान की कार्य - कवा मृत्त-
पात्र, ऊर्ध्वस्व, रोच्यपात्र, कुम्भवृत्त, कवचा वेनु,
अपराङ्गकाल, और कुम्भस्तम्ब।
कुम्भस्तम्ब [व० स०] बाट वस्तुओं को बाँट के सिन्धु
वृक्ष मानी जाती है कवा मृत्तपात्र, मृत्तपात्र,
ऊर्ध्वस्व, रोच्य, वर्त, लवणा वेनु, शिक और
दोहिय।
कुम्भित, (- किम्) (वि०) [कुम्भ + इलच्, इति वा]
उत्पुक्त, विजाड।
कुम्भन (पु०) पत्नीका बीबा।
कुम्भित (वि०) किञ्च कण्ठ वा हेतु की जिहे हुए
- कुम्भित: बोकले - रा० २१७१२०।
कुम्भला (स्त्री०) मीठ का बीबा।
कुम्भ: [कुप् + क्, स्वार्थे कम्] रंज-विरंजना कवा।
कुम्भि: (पु०) उम्भ।
कुम्भ (पु०) उम्भ।
कुम्भक (वि०) [व० स०] जिसके दाँत कुम्भ वृक्ष की
भाँति खेत तथा चमकीले हों।
कुम्भित (वि०) [कुप् + क्त] कोष विकारा हुआ, मृद,
माराड, कोषी।
कुम्भीयता [कुप् + क् + कुम्भ, कुम्भ] पीरी।
कुम्भेर (वि०) [कुम्भित वेरें खरीरें जल, व० स०]
१. महरा, महरा बहो वाला।
कुम्भा (वि०) प्रकाशपरास्ती की० व० २१११।
कुम्भार (पु०) वरा०) बाव के लेखना।
कुम्भार: [कम् + भारच्, उत उपवावा:] एक पर्वतव्य
का प्रवेता, रम् (पु०) विपुल बीबा। सम०
- वाव: 'वावकीहरव' का प्रवेता, एक कवि का
नाम, क्षिता (स्त्री०) १. खरेकी, मृदु कण्ठकी
२. एक देश का नाम जिसके एक घर में बाटें
मारारे होती हैं, - लक्षम् अक्षितवृत्त एक कण्ठ
का नाम।

कुमारिकापुरम् (नपु०) कन्याओं की व्यायामशाला महा० ४।११।१२, दश० २।

कुमालक (पु०) मालवेय के एक प्रदेश का नाम।

कुम्भरः—कम् [की मोदने इति कुम्भट्] १ सफेद कमल जो चन्द्रावय होने पर खिलना कहा जाता है २ साल कमल ३ विष्णु का विशेषण ४ कपूर। सम० —आनन्द (वि०) चन्द्रमा, चन्द्रमा कमल की सुगन्ध से युक्त महिला।

कुम्भः (पु०) लूना, जिसके हाव विकृत हों।

कुम्भपुरीरः (पु०) विषयों के लिए निर पर पहुँचने का यत्न।

कुम्भः [कु + उम् + अच्] बड़ा, जलपान। सम०—उदर शिव का एक भूतगण, सेवक—रघु० २।३५।

—कलकः उल्लू का एक भेद,—महा० १३।१११। १०१, बम्बरः बाला, नाक।

कुम्भिन (वि०) [कुम्भ + इति] बाठ की सख्या।

कुम्भिनी (स्त्री०) [कुम्भिन + ङीप्] १ पृथ्वी २ जमान मोटे का पीसा।

कुम्भीमती (स्त्री०) कन्यासुर की माता, रावण की बहन।

कुम्भीमुखम् (नपु०) एक प्रकार का बाघ, बज।

कुम्भसामन्तः [व० त०] चन्द्रमा।

कुम्भसालाः (व० व०) एक देश का नाम।

कुम्भिकः (पु०) सालमणि, पथरामणि।

कुम्भ [कुम् + क] १. बज, परिवार २ समूह ३ रेवड़।

सम० अनास्था देवी का विशेषण, —आस्था, पारिवारिक नाम, वंशघातक नाम,—आपीकः—संस्कारः परिवार की नीति या यज्ञ, करणः आनुवंशिक जलपास या अधिकारी,—कलकः परिवार के लिए अपयज्ञ,—कुम्भाख्या कोल वृष में स्विद, देवी का एक नाम, गरिका (पु०) कुल का गौरव या बर्खादा, अथवा उन्मकुल में उत्पन्न महिला,—बृषज (वि०) अपने परिवार की बदनाम करने वाला, शासन (वि०) परिवार को नष्ट करने वाला, शलकः जो अपने कुल की कलङ्कित करता है, शलकम् मन्तरा, मारुती, अरः (कुम्भघटः) परिवार का पालनपोषण करने वाला,—शैलः शिल्पी मंत्र का मुखिया,—जानः कौलों का विद्वान्त, सन्धिभिः (पु०) आवरणीय लाली की उपपत्ति—वी० सू० ८।१९।१२०१।

कुम्भिका (स्त्री०) एक प्रकार की दरिया—वी० सू० २।११।

कुम्भिक (पु०) [कुम् + क] १ एक कटिहार पोसा 'मणि' २ शिकारी—कुम्भिकसमिवासा कुम्भकप्यो

हृत्पत्नः भाग० १०।८०।१९।

कुम्भी (स्त्री०) परिवार का समूह।

कुम्भा (स्त्री०) लाल रंग का मणिपा, नर्मभिक्ष।

कुम्भः (पु०) एक प्रकार की मछली।

कुलालचक्रम् [व० त०] कुम्हार का चाक।

कुम्भिनः [कु + लिङ् + अच्] १ लोह मश० १२। १०।१३२ हाथी—कुम्भिनः भूमिगंगा—मन्त्र—भुजङ्गमा—भेदिनी।

कुम्भ (वेद०) टखना,—पृ० ३।५०।२। सम० दहन (वि०) टखने तक गहरा—सत० १२।

कुम्भायः [कुम् + विवप्, कुम् भाषोर्प्रस्मिन् व० त०]

१. लिखरी जिसमें आधे उसके बावण और दाव ही २ एक प्रकार का रोग।

कुम्भकः (पु०) मनुस्मृति का एक टीकाकार।

कुम्भी [कुम् + ङीप्] गुलर की लकड़ी का टुकड़ा जो स्तब्ध के अन्तर्गत साम प्रभों की सख्या गिनने के काम आता है छन्दोयस्तोत्रगणनामङ्गलम्—माना०।

कुम्भपुष्टिः [व० त०] मट्टी भर 'कुम्भ' नाम।

कुम्भिका (व० व०) कुम्भिक मृत्ति की मन्थन।

कुम्भेयनिवेशिनी (स्त्री०) लक्ष्मी देवी।

कुम्भ [कुम् + क] बल्हे में पड़ा गड्ढा।

कुम्भायः (पु०) किसी भी बड़े धार्मिक आयोजन से पूर्व किया जाने वाला हवन।

कुम्भक [कुम् + क] १ फूल २ फल। सम०—अम्भकलिः उदयनाचार्य की एक रचना,—इन्द्रः कुलों से अग्रपूर वृक्ष,—वक्षः (कुम्भकवक्षः) मधुमक्खी—उदलसहस्रककुम्भकवक्षः रा० व०।

कुम्भपति (कुम्भ—ना० पा०, लट्) फूल उत्पन्न करता है, वा कुलों से सजता है।

कुम्भधरो (स्त्री०) एक पीछे का नाम।

कुम्भपतिः (स्त्री०) पुर्नता, धातकी।

कुम्भः [कुम् + क] भीतरी लिखरी।

कुम्भकालः [व० त०] आनन्दमान का अन्तिम दिन अवधि चन्द्रमा अदृश्य होता है।

कुम्भक [व० त०] १ आरणीय कोवल् २. सवट।

कुम्भकम् [व० त०] नया चाँद।

कुम्भकम् [कु + क् + ह्युट्] अमंल ध्वनि।

कुम्भ [कुट् + अच्] भीता तिवका कुट्ट हि निशदाना-

यैव उपकारक नामांजाम् मी० सू० १।१।५२ पर शा० भा०। इम० रक्ता पाक, दाघ पंच, लेकः क्वावटी या क्वाली दस्तावेज,—सम्भकालिः आशीर्वात बीतने पर जब सूर्य एक राशि में दूसरी राशि पर लक्ष्मण करता है, हैलम् भीता लोना।

कुम्भः [कु + क, कर्त्तरिच] १ कुम्भी २ छिद्र तथा रोव-कूप, ३ उद-मयः—कारः, क्षयकः कुम्भी लोदने वाला, चक्रम् पानी का चक्र या पहिया,—कुम्भ मन्त्र—श्रीगणेशाय नमः इम० १।११ उवाचन ११, का २।११।

कूबरस्थानम् [त० स०] गाड़ी में बैठने का स्थान ।

कर्मः [की जाये ऊमिदेगाऽप्य—पुनो०] कछुवा । सम०

— ब्राह्मणम् याग की एक विशेष मुद्रा, हावली
पीनयाम के शुक्लपत्र का ग्यारहवाँ दिन, —पुराणम्
एक पुराण का नाम ।

कर्मक (वि०) कसुवे जैसा बना हुआ ।

कृमिका । कृमं [वा ग्निष्या टाप्, उपधादा इत्वम्,] एक
वाचयन् ।

कूलिका [कूय् + कन् + टाप् इवम्] बीणा का निचला भाग ।

क (नना० उभ०) गहव कना पना बादाने करानि
शर गी० म० दाना १

कुकुरकुट्ट | ख० स० | भाग ।

कृपणः (पुं०) 1 एक शत्रु का तीक्ष्ण 2 गंभीर प्राणों में से एक ।

कृष्ण (वि०) श्री 'ए. ए.' 1 वर्ष प्र. दुख-
दायी। म. अर्ध नेत्र ए दिन तक रहने वाली
नयनबाध - कृष्ण (वि०) ताम्बा - सन्तानमय एक
पुत्र का दायाँ निभन परव वत।

कृतम् [कृ. ११] पात्र, शिला। मय० अर्थ (वि०)
 इत्यर्थः। २० म०] निम्नने अपना प्रयाजन सिद्ध कर
 लिया है २१ प्रब और २२ करने में अवसर है
 — म० इत्युक्तं कृतं पात्र मा० सू० ११/२० पर
 मा० भा०, कर (वि०), — कारिण (वि०) कि
 शा कार्य को करने वाला, निर्गन्ध इत्युक्तो हि
 निर्गन्धः स्थान मा० म० २०/१५ पर मा०
 भा०, — तीर्थ (वि०) निम्नने सुगम या आमान बना
 या कार (वि०) विचारित — दूषणम् किने दूष
 का स्वराय गता — अन्ध (वि०) कुष्ठ, माराष्ट्र,
 भाव. निःशङ्का, आरक्षित, कुण्डलिनी, — निम्न
 (वि०) कुल, न्यायार्थशरत् तव पादभूत विम-
 र्धने कृतविदा भाव० ११/१८, कृतः निम्नने मूर्ख
 भी भाव करा की २ — संस्कारः १ निम्नने छीनना-
 र्थक नव प्रक्रियाएँ पूर्ण कर की हैं २ अधिकत,
 स्वकार।

कृतवत् (वि०) । कुत्र । यत्पु । जिसने कार्य कर लिया
३ - इत्यनानाम विप्रिय न मे - क० ४/७ ।

कृतिः (पौ०) [कृ + क्तिन्] १ वर्गज्ञोक्त सभा
२ किया ३ बाहू, ४ आधुनकी। सम० साध्यम्
प्रयत्न करके सफल होने की स्थिति।

अनुवच [कृ + कृत्] १ जो किया वाला बाहिर, कर्त्तव्य २ का ३ प्रयोग। सम = अङ्गान्तर कर्त्तव्य कर्त्तव्य में (विशेष करना),— विधि (धृ =) विधम, उपविष्ट,—सोव (वि =) विष्टवें अपना कार्य पूरा नहीं किया है।

कृत्तम् [कृत् + यत्] वास्तुकार का एक उपकरण—बहु०
१।१९४।६।

कुर्यन्त (वि०) [कुर्य + प्रत्युप्] 1 जिसके पास करने
के लिए कार्य है 2 जिससे कोई प्रार्थना की गई है
3 चाहने वाला, प्रबल इच्छुक रा० ७।१२।१५।

कृन्तनिका [कृन् + कृत् = कृन्तन, स्वार्थे कन्, इत्थम्]
एक छ'टा चाक ।

हृत्वा-विन्ता (लाकोवित) प्राकृत्यमापरक वात पर
विचारविषयं करना- मं० मं० १०१०। ४९ और
६८४२ पर आ० आ०।

कृपा + आकरः, सागरः, — सिन्धुः (पृ०) अत्यन्त कृपाम् ।

2 नगण्य 3 निर्यन् 4 तुच्छ । सम० अतिथिपति
(वि०) जो अपने अतिथियों को भूला रहता है।
महा० १२।१।२४ — सचः जिसकी पीठें मुखी रहती
हैं — अथ जिसके नौकर भले रहते हैं ।

कृष्णानुपम्यम् (न०) लोप ।

कृष्ण (तुदा० पर०) कुरचमा, बिरेन्दन करना ।

कृषिद्विष्टः एक प्रकार का पिडा ।

कृषियाराज्यः, तं ब्रह्मः (५०) कृषि शास्त्र पर एक सग्रह ग्रन्थ ।

शुष्क (वि०) [कुष् + नक्] 1 काला 2 दुष्ट 3 सूख
 4 मलाया (टीका) जिससे बोली कनरी पर लिख
 समाग्रा है महा० १२२१११० । तन्म०—कन्धुः
 कान्धे यन्ने ज्योतिः (स्त्री०) 1 वायुतिका की काल
 2 काला वाहर—कुम्भज्यवितमा कुम्भा महा०
 ११११९.—ताक एक प्रकार का बीज जिसका ताक
 काला होता है. इसकी बापाद के कुम्भयक्ष हैं
 बाह्यही दिन, बीचूय ताकूय, जन्मूय वाहर
 ज्योतिष,—मृत्तिका 1 काजी किटी 2 वाक्य ।

कुम्भा (स्त्री०) यमुना नदी ।

कल्लू (घेर०) महल करना, स्वीकार करना—जाटो
हान्यमकल्पमल—रा० २।९।१५।

केन्दुवाक, कम जम्ब द्वीप का पश्चिमी भाग ।

केदारः [केन जलेन शारोप्रथ द० स०] तवीत काश्य नें
एक राग का नाम ।

केदारकः [केदार + स्वार्थे कन्] चाबलों का लेठ ।

केन्द्रान् (नृ०) जम्ब कुण्डली में पहना, बीजा, साक्षर्या
एवं दसवीं स्थान ।

केरलमहात्म्य,) बाल्यो के नाम ।

केरलसङ्गमम्

केवल मन्त्र

केरल लिपि

केलितः (५० ली०) [केल् + हन्] हेलीयवाक, हिलानी,
रवरोली। तन्म० कल्कः हेली नवाक में जलका,
—सत्यकाम् खातोस शरोवर, —कम्पु प्रवीरकाम्।

केवलमतिरिक्त (पु०) श्याम विद्याय के अनुसार
अनुनास के केवल एक प्रकार से संबन्ध रखने
वाला।

केवलमन् (पु०) सर्वत्र शास्त्र की एक शाखा।

केवलम् (वि०) [केवल + हवि] (वै०) जिसने
उत्कृष्टतम ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

केवः [किम् + अन् की कोषरथ] १. वाक्य २. तिर के
वाक्य। सम०—आकर्षणम् बुद्धिवा पकड़ कर किसी
वहिला की कीचना एवं उसका अपमान करना,
—कारण एक प्रकार का बला, कारिन् (वि०)
की बालों की संवारण है, कविः बुद्धिवा बेबी,
—कारण वाक्य रचना,—कृष्णकः एक बौद्ध साधु
का नाम,—वक्त्रम् वाक्य कटवाना, मूढन कराना
—अपेक्षित अपमान के चिह्नस्वरूप किसी दूसरे
की बुद्धिवा पकड़ना—एव० ३।५९।

केवलमन्त्रिणम् (पु०) एक वैवाकरण का नाम।

केव (वि०) [केव + व] १. बालों की वृद्धि के अनुक्रम
२. बालों में कटाया हुआ, — अन् (पु०)
सांस्कृतिक निष्ठा, वदनायी, कीकापवाद।

केवराज (वि०) [केवर + राजन्] अथान से समृद्ध,
उत्तुवाहृत् से वृद्ध।

केवरी (वि०) [केवर + हवि, विष्वा कीप्] तिहिनी, खेरनी।
केवर्षकम् (पु०) [किम्बन्ध + ध्यन्] प्रयोजन का
— अनाद—केवर्षकान्धिवो मवति—पा० १।५।३ पर
व० वा०।

केवर्षकम् [किम्बन्ध + ध्यन्] कारण, प्रयोजन।

केवः (पु०) पार्थक्यजित महाबाह्य के टीकाकार वैवाकरण
का नाम।

केवलात् (पु०) एक प्रकार का छन्द, मराठ।

केवीरवन् (वि०) [व० व०] कुमार, किञ्चोरवत्वा
का वाक्य।

कीकः (पु०) भारतीय कीकड़।

कीकः (पु०) धनकपौड, धनकी कन्तर।

कीकमित्री [कीकमन् + हवि + मी] नाम कमल व केक
कीकमित्रीकिम्बन्धकास्वादकोविदः—कथा० १।५७८।

कीकिकः (पु०) एक कर्म का नाम।

कीकः, —काक (पु०) किके का संरक्षक, गडगायक।

कीकिः (स्त्री०) [कुट् + ह्यन्] अक्षय, अगणित,—कीट्य-
कलसे अनुनास्य बोधाः—ए० ५।५१। सम०—
—होके एक प्रकार का पक्षी अनुप्राण।

कीकम् (पु०) उत्तरपूर्व से केकर दक्षिण पश्चिम
तक फैला हुआ क्षेत्रवात वा इसके विपरीत।

कीकिकः (पु०) वह व्यक्ति जिसकी साहाय्य में कुछ ही
काँसे का काम हो गया है।

कीकिकम् (वि०) [व० व०] कीक से उत्पन्न।

कीकात् (वि०) [व० व०] कीक के कारण काल
कायक्य अनिरवारवदक्षिकीयम् नील०।

कीकल (वि०) [कु० + कल्प्, वृद्ध, मि० पुनः] मनु,
मुकायन नरम,— अन् (पु०) रसम।

कीकला (स्त्री०) एक प्रकार का कुआरा।

कीरकि (वि०) [कीरक + इत्थ] कलियों से बाण्डा-
रि नै० ३।१२१।

कीकम् [कुम्, अन्, स्वार्थे कन्] १ एक प्रकार का
नीच मान० १।४८६ २ एक प्रकार का गड्ढा मान०
१०।४१३ वे कलादिक जो नीच के गर्न में प्रवृत्त
होते हैं।

कीक [कुण्, वञ्, अन् वा] १ कमल का परिच्छद
२. मान का टुकड़ा ३ वह व्यासा जिसमें वृद्धविराम
के समीप का सत्यापित करने के चिह्न स्वरूप
पेय पदार्थ छोड़ा जाता है २वीं कीकमयायवद्—राज०
७।८। सम० केकम् काजावार—माण्ड व स्वाप-
यामास तदाथे कीकवेमनि कथा० २४।१३३।

कीकलकः [कीक + अन् + कन्] वाक्य।

कीकिक (नाना० उभ०) बेरना, बेरा वाकना—काष्ठी-
कृत्य व न वाग्म महा० १।१०।१३२।

कीकल (वि०) [की ह्यनि स्वप्न अन् पुनः] अण्ड
कोकनेवाला,— का (पु०) एक प्राकृत भाषा के वैवा-
करण का नाम।

कीकक (वि०) एक प्रकार की दरी—की० अ० २।११।

कीक (वि०) [कुम् + ठक्] कुम् अर्थात् मयल से लबध
रखने वाला।

कीकम् (कुट्टी) [ध्यन्] कुट्टी के द्वारा वक्तियों
की दुराचरण में प्रवृत्त कराना।

कीकिकः [कुट्टिन् + ध्यन्] एक शक्ति का नाम।

कीकिकम् (अ०) [कुट्टि + अन्, मन्] विद्याका के
कर्म में।

कीकः १ सामवेद की एक शाखा का नाम २. इस शाखा
का अनुवासी शास्त्र।

कीकार (वि०) [कुमार + अन्] १. युवक वृद्धि, युवक
अकार से एवं प्रथम देव कीकार सर्वव्यापित
मान० १।१।६। सम०—लम्बम् वायुर्वेद काक्य

का एक अनुज्ञाप जिसमें बच्चों के वाक्मनोषण का
वर्णन है,—अन् वृद्धापर्यं वस वारण करता।

कीकः (पु०) ३. राक्षस २ वायु ३. किम् ४ अग्नि
५ तपस्व में समान।

कीकिकः [कुम् + अन् । मन् + वञ्, व० ठ०] कीकों
का मिश्रण।

कीकलः [कुमार + अन् स्वार्थे कन्] कुआरा।

कीकिकी [कुट्टिन् + अन्, विष्वा कीप्] मुकादे की स्त्री।

कीकिकः [कुम् + ठक्] नीच युवक, बेरोना।

कीर्तितकी (स्त्री०) अगस्त्य मुनि की पत्नी ।
 कीर्तितकम् [(नपु०) एक ब्राह्मणव्रत का नाम ।
 कीर्तितिक]
 कील्लुषः [कुल्लुष + क्त] बोले की गवने पर बालों का
 गुच्छा, अयाक ।
 कलरुः (पु०) कला, बहल (पक्षी) ।
 कलथीः [त० स०] यज्ञ के प्रयोजन की पूरा करने के लिए
 साधनभूत सामग्री—यै० स० ४।१२ पर भा० भा० ।
 कलुषम् [व० त०] यज्ञ का फल ।
 कम् (स्त्री० आ०) 1. चबरा आना 2 पुच्छी हाना ।
 कम् (पु०) पर० कापयति स्पष्ट रूप से बालना ।
 कम् [कम् + क्त] 1 पग, कदम 2 पैर 3 गति
 (गल) । अथ— कर्मिन् (वि०) उत्तराधर कर्मिक
 — माका, रेखा— शिक्षा बंद पाठ करने को नाना
 प्रणालियाँ, बोधन (अ०) निर्धारण इग से ।
 कर्मिन् (वि०) कर्मिन् यत् + सामन्, स्वायं जन
 साहित्यिक निबन्ध व० स० १।५ ।
 कर्मिन् [क + त, रिक् आदेश इयङ्क सञ्चना कर्म ।
 तम० अर्थ (वि०) 1 वैदिक नियम जिसका द्वारा
 किसी कर्तव्य में लगने का निर्देश किया जाता है
 2. किसी कार्य के लिए उपयोगी अथि कर्मिन्
 मुख्य लक्ष्यकुम्भ कु० ५।३३ —आरम्भः एकाना
 लम्बम् बार तन्वी में से एक ।
 कर्मिन् (वि०) [कर्मिन् + इति] जो काम मुख्य
 पर बन्तु करीद कर अधिक मुख्य पर देख देता है
 सोचा करने वाला ।
 कील्लुषः (अ०) [कील्लु + क्त स्वायं कन्, तम्य भाव
 तम्] किसी बात को खोल को बन्तु की जीति पहन
 करना भाव० ५।६।३३ ।
 कील्लु [कील्लु + क्त + टाप्] 1 समीप में एक प्रकार की
 भाप 2. खोल का मैदान । तम०— परिच्छदः
 विहीना ।
 कील्लु [कील्लु + क्त] खन ।
 कील्लु [कुम् + क्त] 1 रहस्यपूर्ण अक्षर 'कुम्' का
 'कुम्' 2 संवत्सरक्रम में ५९ वाँ वर्ष (कोथन भी) ।
 कील्लु [कुम् + क्त] ४८ वर्ष का समय ।
 कूर (वि०) [कूर + क्त, बाली कू] 1 कठोर, कडा
 2. निर्दय 3. कर्मिन्—कूरकर्मकर्मिन्—व० की०
 १।३५ —रम् (नपु०) उल्लास के साथ । तम०
 —रम् (वि०) हाकन, भयाक ।
 कील्लु (स्त्री०) पुच्छी, बरती ।
 कील्लु [कील्लु + क्त + क्त] वके लगाना,
 कालिङ्ग करवा ।
 कील्लु (वि०) [कील्लु + क्त] 1. कुल्लु से संबंध रखने
 वाला 2. बरतु अक्षर के सम्बन्ध रखने वाला ।

कलामनवम् (वि०) [व० स०] निहाक, स्फुटिहीन ।
 कलेशित (वि०) [किल्लु + क्त] मलिन, दूषित ।
 कल्लुम् (वि०) [किल्लु + ना + क्त] हटाना हुआ,
 दूर करता हुआ —मुद्रा० ३।२० ।
 कल्लु (वि०) [किल्लु + क्त] दूषदायी, कष्टकर ।
 कल्लु (स्त्री०) पातञ्जल योगशास्त्र में बताया हुई चित्त-
 वृत्ति का एक भेद ।
 कल्लु [कल्लु + क्त] ध्वनि, स्वन ।
 कल्लु (वि०) [कल्लु + क्त] 1 उवाणा हुआ 2 नमं,
 तम् (नपु०) भादक कराव ।
 कल्लु, कल्लु [कल्लु + क्त] निर्णय सङ्कल्प गन्तु भूमि
 कृतज्ञता —मुद्रा० १।६।५१ —तम० अर्थम् आभा
 मित —अक्षरवाच बोद्धा का एक सिद्धान्त जिससे
 अनुसार प्रत्यक्ष बन्तु लगाना क्षान हावी रहती है
 बौद्धम् लभ समव ।
 कल्लुपाक [कल्लु + क्त] एव मित में पकी हुई बन्तु ।
 कल्लुपाक [व० त०] कल्लु, कोजिन ।
 कल्लु (स्त्री०) [कल्लु + क्त] मृदु निधन ।
 कल्लु (पु०) [कल्लु + क्त] रक्षक ।
 कल्लु (स्त्री०) [कल्लु + क्त] युद्धना, युद्धनाम्न ।
 कल्लुपाक [कल्लु + क्त] कल्लु + क्त] कल्लु
 मागना । तम०— कल्लुपाक कल्लु मागते समय स्मृति-
 मान ।
 कल्लु (वि०) [कल्लु + क्त] पुच्छी व जान वाला, भौमिक,
 पाचिक (वेद०) ।
 कल्लु (वि०) [व० स०] कल्लुपाक में दुष्प्रभाषित ।
 कल्लुपाक (नपु०) आधुनिक आठ इन्चो का बरतु ।
 इसी प्रकार (शारदिक तथा भाग्यवत्क) ।
 कल्लु (स्त्री०) 1 पुरी घरती 2 निहा, नीद ।
 कल्लु (नपु०) जलना जला हुआ स्थान ।
 कल्लुपाक (पु०) मोमाला का एक नियम जिससे
 अनुसार निर्मित की बरतु बाले हेतुकारण की रचना
 इस प्रकार की जाय जिससे कि इसमें किल्लु वा कल्लु-
 बायें परिष्कृत को दूर रक्खा जा सके—वी० कु०
 १।४।७-२१ पर भा० भा० ।
 कल्लुपाक, (अर्थ) नृपति से न आरम्भ होने वाला
 पात्र दिवस ।
 कल्लुपाक [व० स०] ('कल्लुपाक' भी) वह मास जिसमें
 दो सप्तमियाँ या पौर्ण, बीज को किसी वंशक का
 बाधक काल के लिए चुभ न माना जाता हो ।
 कल्लुपाक (पु०) [त० स०] कल्लुपाक होने का होने की
 इच्छा की सर्वथा नष्ट करने की नीतियों की सम्बन्धना ।
 कल्लुपाक [कल्लु + क्त] कल्लुपाक—कल्लुपाक प्रवृत्तिः कल्लु-
 वेच—मुद्रा० १।३।११० । तम०—कल्लुपाक की
 भाति कल्लुपाक—कल्लुपाक पुष्करतन्त्रिभाषी—२०

५.—स्वर्गः भरती बुना (जैसे कि लक्ष्मण-
बन्धने ने बन्ध केकर भरती हुई),—स्वर्ग बुन्नी २ः
भरती का बाड़ी, भूमि पर रहने काका ।

श्रीमता [सि + क्त + तन् स्विवां टाप्] अत्र, कृतता तथा
महतीमता की वहा ।

सिन् (पु० उभ०) 1. श्रीमता से चलना 2. मर जाना
3. (गणित०) जोड़ना ।

सिन्त (वि०) [सिन् + क्त] 1. फेंका गया, बखेरा गया
2. परित्यक्त 3 उल्लिखित । सम०—उत्तरन् ऐसा
मापण जो उत्तर के योग्य न हो,—श्रीमिः नीच जाति
में उत्पन्न ।

सिन्धिः [सिन् + धित्] रहस्य का बडाकोड़ (नाटक में) ।
सिन्धिरिचय (वि०) [व० त०] जो श्रीप्र ही निरचय
कर लेता है आयत्या गुणदोषस्तदास्थे सिन्धिरिचय
—मनु० ७।१७९ ।

सिन्धिरिचय (पु०) एक प्रकार की लवि जो दो सहवर्ती
स्वरों में से पहले को अवस्वर में बदल कर हो
सकती है ।

श्रीमन्ति [श्रीमन् + ण्] यन्त्राह, नाविक ।

श्रीरः,—(रन्) [र् + ङन्, उपधासोप. यन्त्र ककार.
यन्त्र व] 1. दूध 2. रस 3. पानी । सम०—उत्तरा
वर्गया हुआ दूध,—स्वन् ताका मक्कन,—कुम्भकम्
कुम्भकम्—कम्पा० ६३।१८८,—कस्तु प्रविष्टा के कल-
स्वकन केमल दूध पीकर निर्वाह करना ।

श्रीरस्वति (ना० वा० पर०) दूध की दृष्ट्य करनी
श्रीरस्वति नामकः पा० ७।१।५१ परम०भा० ।

रा० उभ०) कदना, उल्लसना (स्वा० पर० की)
—श्रीमति च श्रीमते च श्रीमोत्पाक्यनेपि च । कदने
सुन्दर वापि यदात्मनवाचिन इति बहुमलम् ।

शुद्ध (वि०) [शुद्ध + क्त] 1 छोटा 2 सामान्य 3. तुच्छ
4 कूर 5 बरीब । सम० तातः पिला का भाता,
चाहा,—यद्यपि लम्बाई नापने का एक मज, लम्बाई
नीता ।

शुद्धकः [शुद्ध + क्त] 1 जो तिरस्कार करना है 2 एक
प्रकार का बाण ।

श्रीरः [शुद्ध + चञ्] 1. दूध 2 लीला, दृक्का 3 गीता ।
श्रीमतातिः [श्रीमन् शान्त करना ।

श्रीमतातिः [श्रीमन् शान्त करना ।

श्रीमन् (स्वा० आ०) कदना (दे० 'ज' की) ।

श्रीमन्मन् (नपु०) जो श्रीरकर्म, या हजामत बनवाने के
लिए दाखलना हो ।

श्रीमन्मन् (स्त्री०) [व० त०] कान्तिवृत्त की कला ।

श्रीमन्मन् [व० त०] कान्तिवृत्त का अन्त वा बात ।

श्रीमन्मन् (पु०) मृदुकचामन्त्री का प्रमेता एक कम्भीरी
कवि ।

श्रीमन्मन् [शुद्ध + चञ्] शुद्धता ।

श्रीरचञ्चम् (नपु०) मजबूती से बनाया गया मक्कन ।

श्रीरचञ्चम् [व० त०] क्षितिज ।

श्री

श्रीमन्ति (पु०, स्त्री०) 1 तिरस्कारशुद्धक अभिप्राय
(बनातामन् में) जैसा कि 'श्रीमन्तिशुद्धिः' (दुरा
श्रीमन्ति—जो अपने ज्ञान को बूझ गया) ।

श्रीमन्ति (स्त्री०) बूझ बनाने वाली श्रीमन्ति ।

श्रीमन्ति (पु०) [श्रद्ध + अन्, स्वार्य क्त] श्राद्ध, शासन ।

श्रीमन्ति [श्रद्ध + अन्] तलवार । सम०—शारा तलवार
का फला,—शारास्तम् शालम् कठिन कार्य,—श्रीमन्ति
तलवार बनाने की कला ।

श्रीमन्ति (वि०) [श्रद्ध + चञ्] 1. दृढ़ हुआ. कटा हुआ
2. दृष्टि श्रद्ध,—श्रद्धा नष्टाशीय, महावेद । सम०
—श्रद्धा दूध का बाल—श्रद्धाश्रद्धाश्रद्धा (शिवम्)
—श्रद्धा०,—श्रद्धाः संकीर्ण शालम् में माप ।

श्रीमन्तिशुद्धकम् (नपु०) सर्वज्ञ एक श्रीमन्ति शालम्
का दृष्ट्य ।

श्रीमन्तिशुद्धकम् (पु०) शुद्ध श्रद्धाश्रद्धा, उल्लिखित श्रद्धाश्रद्धा
—श्रीमन्तिशुद्धकम्: श्रद्धाश्रद्धा श्रद्धाश्रद्धा श्रद्धाश्रद्धा . पा०
१।१।१ पर म० भा० ।

श्रीमन्तिशुद्धकम् (वि०) [व० त०] श्रद्धाश्रद्धा श्रद्धाश्रद्धा
तोड़ दी है ।

श्रीमन्ति (वि०) [श्रद्ध + इति] एक प्रकार की शाल,
पीके दूध ।

श्रीमन्ति (पु०) दे० 'श्रीमन्ति' ।

श्रीमन्ति (पु०) 1. बूझा 2. शाल ।

श्रीमन्ति [श्रद्ध + अन्, स्वार्य क्त, स्विवां टाप्] श्रीमन्ति, शाल ।

श्रीमन्ति [श्रद्ध + अन्] 1 गया, मक्कन 2. उत्तर, कड़ेर
3. तीव्र, तेज 4. लक्ष्म 5. कूर 6. १० वर्ष के तक
में पच्चीसवां वर्ष । सम०—श्रीमन्ति, दुराई की
श्रीमन्ति श्रद्धा, श्रद्धा तन्त्र,—श्रीमन्ति (वि०)

श्रीमन्ति, श्रीमन्ति (वि०) गया, मजबूती,—श्रीमन्ति
कोहा,—श्रीमन्ति (वि०) यन्त्र, मजबूती (श्रीमन्ति, लक्ष्मण)
—श्रीमन्तिशुद्धकम्: श्रद्धा १।१।१।१ ।

श्रीमन्ति (वि०) श्रीमन्ति कस्तु श्रीमन्ति हो देना (श्रीमन्ति)

—श्रीमन्ति १।१।१ ।

श्रीमन्ति (स्त्री०) एक प्रकार की श्रीमन्ति ।

अर्चिका (स्त्री०) एक प्रकार की मिठाई ।
 अर्चुरम् (नपु०) मारिबल की बिरी, मोला, सोना ।
 अर्चम् (नपु०) १. रेशम २. सोने ३. कठोरता ।
 अर्चः [अर्च + अट्] एक इस प्रकार की बस्ती जो पर्वत की लकड़ी या नदी के किनारे बसी हो और जिसके निवासियों का व्यवसाय श्राव. वणिज्यापार हो । यह नदी और नगर के बीच की बस्ती के लक्षणों से युक्त होती है ।
 अर्चट दे० 'अर्चट' भीमसेन प्रमथितादुर्गोचनवक्त्रिनी, विद्या अर्चटकस्त्रेव कर्णमूलमुपागता नाम० ।
 अर्चित (वि०) [अर्च + इत्] जो बीना बन गया हो ।
 अर्चन (वि०) [त० अ०] जो नमन्य न हो, जो छोटा न हो ।
 अर्चिन् (वि०) [अर्च + इति] अल से युक्त, ललकट वाला, जो (पु०) शिव ।
 अर्चिष्ठा (वि०) [अर्च + णि + कृ + क्त] अपमानित — शास्त्रमस्त्रया अर्चिष्ठाः — नाम० १ ।
 अर्चिकः } एक प्रकार की बछड़ी ।
 अर्चिकः }

अर्चः (पु०) कमी, बाल ।
 आ [अर्च + कृ + टाप्] १. पार्वती २. चरती ३. कन्या ४. चरुता — सोना क्या कनका व. वी. — एकार्चः ।
 आर्चानम् (नपु०) आना पीना ।
 आर्चिकः (पु०) मारिबल का पेड़ ।
 आर्चालः (पु०) आर्चाल देश में उत्पन्न एक उत्तम नरक का बोका — शक्ति० ११।७ ।
 ओर्चिकः (पु०) ओर्चिका गाँव ।
 ओर्चरी (स्त्री०) एक प्रकार की योगसिद्धि जिसके द्वारा योगी आकाश में उड़ सके — एवं सखीनिरुपताहं ओर्चरीसिद्धिलोभ्या कथा० २०।१०५ ।
 ओटः [छिट् + अच्, छे बटति अट् + अच्] आन, पाँव ।
 ओरकः (पु०) किसी आगवर के मुर में होने वाला विशेष रोग ।
 ओरतिः (स्त्री०) [व्या + णित्] बर्चनसाधन का एक विद्यान्त — विकल्पः व्यासिपादिमान् — भाष० ११।१२४ ।

३

अः [अ + क] १. शिव २. विष्णु — अः प्रीतोमः जीपति-वत्तयः — एकार्चः ।
 अर्चम् [अर्च + अट्, अ मादेश] १. आकाश, अर्चरिक्त २. व्यर्थ ३. स्वर्ग । नम० रोमण्यः अर्चजुति, अर्च पर्वार, शिव (वि०) आकाश तक पहुँचने वाला — दे० अर्चलिह ।
 अर्चस्तानी (स्त्री०) बैराग्य भास के सुल्ल पत्र का साठवाँ दिन ।
 अर्चः [अर्च + अच्] १. हाथी २. माट की लकड़ा ३. लकड़ा कापने का बच्चा ४. एक राजस जिते शिव जी ने मार दिया था । सम० अर्चिका हथिनी जिसका प्रयोग अर्चकी हाथी को पकड़ने के लिए किया जाता है — स्वतन्त्रिचरणेन तं प्रलोभ्य द्विपयिष अर्चमिहोपनिषुकाया तसि मज्जमिकेन वेदितासि — कामकी० ११।५२ ।
 — औरीक्षम् आर्चयन् मास में शिवजी द्वारा मनाया जाने वाला व्रत, जिसीक्षिका किसी वस्तु की ओर झूठ-झूठ देखना, जानबूझ कर न देखना, — तुम्ही एक लक्ष का नाम — अजयुमीतिमां कुरुमाकुपादय अर्च-लक्षाम् रा० ४।१२।३९, — अर्चः १. पुरी जिससे हाथी बाधा जाता है ३ एक प्रकार की संयोग युद्ध ३. अर्चकी हाथी को पकड़ने की प्रक्रिया नामा० ।

अर्चिन् (वि०) [अर्च + इति] नवारोही, हाथी की लवारी करने वाला ।
 अर्चुकः [= अर्च, पु०] १. लक्षिका २. एक प्रकार का बलपात्र ।
 अर्चः [अर्च + अच्] १. लपट, संवह, समुदाय, रेवड़, लपटा २. ओपी ३ शिव के अनुचर, शिवका अधीनस्थ कर्मचारी, उपदेव ४. समान ५. मन्थन ६. जाति । सम० — अर्चल्लो १. आकरवत्त वर्षों पर वर्षमान कृत एक वर्ष, — अर्चल्लः वेदावति — रा० २।८।११२ ।
 अर्चमणिका संयमक, जिसमें विशेष प्रकार के घोषित मज्जु की सारणी की हुई होती है — रा० ५।११ ।
 अर्चितम् [अर्च + क्त] व्यवहार वेतुमर्हति राजेन्द्र स्वा-व्यावर्तितं नष्टम् अर्चः १२।६२।१ ।
 अर्चालम् [अर्च + अट् + आगच्] किसी रचना का निर्माण की शायते ओर्चाल ।
 अर्चः [अर्च + अच्] १. मास २ हाथी की कमपटी ३. बुल-बुला ४. कोड़ा, रसीली ५. जोड़, नाँव । सम० — अर्चः पहाड़ की लतह, अर्चिकका, — ओर्चः ओर — अर्चनेद-वास्ताः श्रीं आर्चमणि — अर्चि० २ ।
 अर्चुकः [अर्च + अट्] एक प्रकार की सराय ।
 अर्च (वि०) [अर्च + क्त] १. अर्च दुःख, बीजा हुआ २. भूत,

3. ज्ञातः । सम० ज्ञानस्य (ज्ञानसत्त्व) [६० सं०]
 मूढ और अधिष्ठत् (का बर्णन) — संसृष्टस्य गणा-
 नतम् — रा० ७।५।१।२३, — सम्यक् (वि०) मन्त्र, मीन,
 ध्वज (वि०) जो अपनी वक्रावृत्त का ध्यान नहीं
 करता है ।
 नतिस्तत् (वि०) [नति + तत्] उपायक, तरकीब वा
 रीति का जानकारी महा० १२।२८।७।
 नत्वर (वि०) [नत् + वरत्, अनुनासिकलोप, तुक् व]
 तेज चलने वाला, — स्वरः (पु०) एक प्रकार का घोडा ।
 नवः [वद् + नव्] 1 कृष्ण के बाई का नाम 2 कुबेर,
 3. सत्कारन, दुधियार — आयुषे धनदे रोमे पुंसि कृष्णा
 नुज्येयि च नाम्ना ।
 नदिः (स्त्री०) [गद् + इ] व्याख्यान, वक्तृता — एव गदि
 कर्मगतिविसर्ग भाव० ११।१२।१९।
 नन्धः [नन्ध् + न्व्] 1 नुगों में समानता, सम्बन्ध, बन्धुता
 2 नवक 3 चन्दन बूरा 4 पखौरी । सम० — हुस्तिन्
 हाथी जिसकी मधुर गन्ध इधर-उधर फैलती है, वह
 नुगों में उत्तम हाथी माना जाता है ।
 नन्धकरोषिका (वि०) [व० त०] सेविका जो गन्ध इन्ध
 और चन्दन पीस कर तैयार करती है ।
 नन्धि (वि०) [गन्ध + इ] केवल नामधारी, बहाना करने
 वाला मादृषि स्वधा ह्यन्तात् रिपुना प्रातृगन्धिना
 — रा० ७।२५।२९।
 नन्धकरोषिकम् (नपु०) [ति० म०] एण्ड वा तेल ।
 न (का) न्धारः (पु०) 1 मनीष में नीसरा स्वर, एक
 विशेष प्रकार का राग ।
 नमनम् [नम् + न्यट्] जानना, समझना नात्र स्वरूप-
 नमने प्रभवन्ति भूत — भाव० ८।७।३४।
 नमसंक्षिता (स्त्री०) नम्र द्वारा प्रणीत एक उद्योगिक का
 इन्ध ।
 नमस् (नपु०) एक प्रकार का घास ।
 नमः [न् + नम्] 1 नमोदाय, वेद 2 भूत, कलस 3 अग्नि
 4 आहार । सम० — नान्धिका (स्त्री०) बाजी, दाई
 कपा० ३४, न्यासः नान्धार रसना, नीच हाकना
 नान्धकम् नीच का गड्ढा, — संज्ञकः नमोदाय से जन्म
 होता ।
 नन्धिका (स्त्री०) किसी प्रकार के मल वा स्रवणन
 जन्म प्रवेष्ट ।
 नमोदकाः { (वि०) [सत्यमी नमूक् नमोत्] कायर, नन्द-
 नमोदक { बुद्धि, बड़ ।
 नमः [नम् + नम्] 1 एक प्रकार की मछली 2 एक
 प्रकार की घास ।
 नमः (पु०) [नम् + उन्] एक प्रकार का रत्न ।
 नमामका (पु०) एक वर्ष तक रहने वाला नम्रवान ।
 नम्य (वि०) [मो + नम्] नाच के निम्न नामा वस्तु, नी

चूष जादि, — न्यम् (नपु०) नवाननयम् नाम का एक
 शीत पत्र — नवाननय नम्र — मै० सं० ८।१।१८ पर
 शा० भा० ।
 नम्य (वि०) [गह् + न्यट्] 1 गहूरा, सचन, चिमका
 2 समझने में कठिन 3 ऐसा स्थान जो धार न किया
 जा सके ।
 नम्यरी [गह्वर + कोष्] पृथ्वी ।
 नम्यरित (वि०) [गह्वर + इत्थ्] नीम, मन्त्र — नाम-
 लेखा बच भुत्वा कृष्णो गह्वरितोऽयमव् — महा० २।
 ९।४५।
 नम्योव (वि०) [नम्य + वक्] गह्वरा में, गह्वरा पर, वा
 गह्वरा से उत्पन्न होने वाला, — य नीम, नम्य
 1 सोना 2 मोथा घास ।
 नम्यतरम् (म०) 1 अधिक कस कर सटा कर 2 अयेजा-
 कृत अधिक गह्वरता मे ।
 नम्यवचम् (पु०) [व० सं०] मँदक ।
 नम्यवदी (स्त्री०) एक प्रकार की भारतीय जलरंज ।
 नम्यनिकम् [नम्यनिक + ध्यञ्] लेखाकार का कार्य
 — अक्षपटले नम्यनिक्याधिकार — की० अ० २।७ ।
 नम्यो (स्त्री०) गैर ।
 नम्यवेष्टनम् (नपु०) बाकरी मवेदन ।
 नम्यिका (स्त्री०) कोली ।
 नम्यवकला, — बिछा,] संगीत की ललित कला, शमीन का
 — वेद, — नात्रम्] सिद्धान्त, संगीतविज्ञान ।
 नम्यारी [नम्यारस्यापत्त इन्] 1 एक प्रकार का
 मारक इन्ध 2 बाई जीम की चिरा ।
 नम्यारीशम् (पु०) एक प्रकार का सरीसृप ।
 नम्योवम् [नम्योव + ध्यञ्] 1 नमोदा 2 उधारता
 3 संतुलन ।
 नम्यरः (पु०) नायर ।
 नम्यकरोषिकाः [नम्यकरोषिन् + इक्] नम्य के बने,
 नम्य के कर्तव्य ।
 निर (चिरा) (स्त्री०) [न् + निवन् टाप् वा] 1 बुद्धि
 २० गिर्वा एकावर् 2. बुना हुआ ज्ञान चिरा
 नात्रागमि तपस्व ज्ञानली — महा० १।१।५७ (टीका) ।
 निरा [न् + निवन् टाप् वा] स्तुति (वि०) ।
 निरिका [निरि + कर्] निव -- भाव० ८।१।१५ ।
 निरिकावः (पु०) नेक ।
 निरिक् (वि०) [निरि + क्व] निरिक्ने वाला — निरिक्ने
 इव नात्रागमि — भाव० १०।११।११ ।
 नीलनीलिकम् (नपु०) नमवेव निमित्त एक कीटिकाव्य ;
 नीलकम्पनम् (नपु०) नील के सम्पर्क वाद के सम्बन्धना
 एक महाकाव्य ।
 नीलनीलम् (पु०) किन्नर ।
 नीतिः [नी + निवन्] एक नेव ज्ञान ।

गुहिकालम्ब (नपु०) 'Y' के आकार की एक चट्टिका जिसके साथ एक छोटी बंदी होती है, इससे पत्थरों पर पत्थर के टुकड़े चिपे जाते हैं इसका नाम है "गोहिका"।

गुहिकालम्ब (नपु०) बन्धक, नलिका।

गुहः [गुह + बन्ध] गोपी, चट्टिका—आर्जु० १३।१।

गुहः [गुह + बन्ध] 1. किसी वस्तु की विशेषता बाहे बन्धी हो या दुरी 2. बाधा, दुरी 3. दुरी के (बाध, रज तथा तज) बन्ध। सम०—कल्पना किसी वाक्य का अर्थ करते समय भाषाकारिक भावना को छोड़ कराना,—कारः (गमित०) गुहक, गुहा करने वाला,—गोरी अपने उत्तम गुणों से देवीप्यमान महिला अनृतमिर गुणगौरि या कृपा मातु—वि०, भावः किसी अन्य वस्तु की तुलना में शीघ्र पद—परायता हि गुहभाव—मै० स० ४।३।१ पर सा० भा०,—बाधः 1 शीघ्र अर्थ की सूचित करने वाली उचित 2 अन्य वस्तु का विरोध करने वाली उचित,—विभाव (वि०) [व० स०] पदार्थ के अन्य पदार्थों में से किसी विशेषता को गुहक करके दर्शाने वाला, विशेषः विशेष लक्षण, भिन्न प्रकार की विशेषता, विशेषः बाहरी ज्ञानेन्द्रिया, मन और अहंकार गुहविशेषा बाह्येन्द्रियमनोऽहंकाराद्य—सं० का० ३६, संघट्टः अच्छे गुणों का एक-शोकरम।

गुहनिर्गमः [व० न०] अर्थादि रोग के कारण की बाहर निकल जाना।

गुप्तगुहम् (नपु०) धनकक्ष, धननागर।

गुप्तधनम् (नपु०) [कर्म० स०] छिपा हुआ धन।

गुप्तरी (स्त्री०) अवगुप्तनवती महिला, गुह वाली स्त्री।

गुह (वि०) [गु + हु, उत्पन्न] 1 भारी (विप० लघु) 2 बड़ा 3 अन्धा 4 कठिन 5 आश्चर्यीय 6 शक्ति-धाली,—कः (पुं०) 1 पिता, प्रपिता, पितामह, पूर्वज 2 सम्माननीय महापुरुष 3 शिक्षक, अध्यापक 4 स्वामी 5 बहुस्पति। सम०—अन्वेषकः 1 अध्यापक द्वारा बोधा 2 जिसको या बड़ी द्वारा ही यई नहीं होता, कथः मोर, कुलम् 1. गुह का वास्तव्यान लावात विद्यापीठ बड़ा अध्यापक और छात्र मिल कर रहे, कुलकाः गुहकुल में रहकर विद्याध्ययन करना,—गुहम् 1 शिक्षक का घर 2. बहुस्पति का घर (अन्ध-पत्निका में),—भावः महत्त्व, गुहत्त्व,—अर्थोपपत्तिः नीव, कल्पना—अर्थात् बड़ों के प्रति सम्मान भाव प्रकट करना भिन्ने नरवे गजध मजिधे गुहवर्तिता—रा० २।११।१९, भुक्तिः वायवीमन—अपमानो गुह-वर्तिन् महा० १३।१६।६,—स्वम् दिनाक का मन, संपत्ति।

गुहिकः (पुं०) 1 एक उपग्रह (अग्नि का गुह) की केरल देश में माना जाता है 2. विश्व के गुहा तीर 3. शिखर—गुहिको अन्धतन्त्रे रजसहासनेधरी, दिव्यान्वे—माता०। सम०—कथः प्रतिदिन का वह समय जो अन्धुन माना जाता है।

गुहिका (स्त्री०) गोपी—एकान्ति गुहिका तम नलिका यन्निर्गता—विम०।

गुहः [गुह + बन्ध, उत्पन्न कः] 1. गुहचिद्वि 2. उन्मि-लम्। सम०—गुहम् एक प्रकार का गुह।

गुह (वि०) [गुह + बन्ध] 1. छिपाने के योग्य 2. रहस्य,—कल्प (नपु०) गुह स्वान—दीपनं सप्ततं बन्धं गुहो र्ध्व सत्वाधेत्—महा० १२।१६।१७। सम०—विद्या गुह रूप से और लोगों से गुह रह कर—गुहमन की दीक्षा देना, बंधन बन्धन कराना।

गुह (वि०) [गुह + क्त] 1 गुह, छिपा हुआ 2. आच्छा-दित 3 अन्ध 4 रहस्य, क्त् (नपु०) एक सम्मान-लंकार। सम० अर्थ (वि०) आन्तर अर्थ रखने वाला, आन्तरिक कर्तव्य,—की० अ० १।१२।

गुहलवः (पुं०) एक वैदिक ऋषि का नाम (इसका पुराणों में भी उल्लेख है)।

गुह (वि०) [गुह + क्त] बन्धक, कालावित, उत्तुङ्ग, किसी वस्तु को अत्यन्त चाहने वाला—गुहो वाचवि संभ्रान्ता महा० १।७२।६।

गुहिन (वि०) [गुह + क्त] दे० 'गुह'।

गुह्य (वि०) [गुह + बन्ध] जिसे अत्युक्तता पूर्वक बहुत बाधा लग जिसके लिए प्रबल लालसा की जाय।

गुह (पुं०) (गु०) स्वीकार करना, प्रत्यक्ष करना, बह्य करना, ज्ञेय। मिलापना, मीन करना।

गुहम् [गुह + क्त] 1 घर, आवास, धन 2 पत्नी 3 दूर-व जीवन 4 अन्धकुली का घर 5. (सुतराव आदि खेल का) घर। सम० आरम्भः घर का निर्माण,—ईश्वरी घर की स्वामिनी, गुहिली,—केलम्,—सम्पत्ति (वि०) अपने घर की दार करने वाला, जिसका मन अपन घर की ओर ही लगा हो,—आक (नपु०) घर में लगा सम्पत्ति, सम्पत्ति—नरपतिवले पाश्चात्याते स्थित गुहदावन्त—महा० ४।३,—वर्तिः 1 घर का स्वामी 2 गुहम् 3 नौष का गुहिका—गुहकः २,—विन्दी गौरी, गुयर्,—वीरक बंधन बनाने के लिए संकेतित स्वान,—वीरकम् गुहम् का निवाह,—वाचनी 1 घर को आक से आक करने वाली 2 गुहारी की गुह,—वाचिन् (पुं०) कथारत्न०।

गुहकम् [गुह + क्त] घर का बनीया, वाचिक।

गुह (वि०) [गुह + क्त] 1 घर 2 पत्नी 3 उत्त-लव, अत्यन्त-वर्ध—वैरा० १।१ गुहम् (नपु०) घर का नाम, गुहम् का अर्थ अन्ध-अन्ध ४०

नक्षत्र (वि०) [र्क्ष + निष् + क्त, पुष्ट, ह्रस्वच]
१. नक्षत्र, नक्षत्रा हुआ, नक्षत्रावा हुआ—कि० १४

१४, रघु० १६।१८ २. हुक्मे हुक्मे किया हुआ
—संज्ञकनक्षत्रावा—रा० ७।७।४७।

व

वटः [वट् + अच्] १ गिर—नवाविंशे वा गिर वट-
कटेयु च—मेदिनी०, महा० १।१५।१८ २ मिट्टी
का जलपात्र ३ कुम्भराशि। सम० उबरः वनेस
का नाय, —कञ्चुकि (नपु०) तान्त्रिक और शास्त्रों
की एक रस्म (इसमें विभिन्न महिलाओं की बोलियाँ
एक वटे में डाल दी जाती हैं और फिर उपस्थित
महानुभावों में से प्रत्येक एक एक चाली निकालता है,
जिस दिन महिला की वह चाली होती है, उसके साथ
उस पुरुष को मंगीकरण करने की अनुमति है) —बोनि,
—अथः, जम्पा अवस्थ मणि।

वडा [वट् भाव अड, ग्नया टाप्] मोह की श्रेष्ठ द्रव्य
पर आघात करने समय की सूचना दी जाती है।

वटिकावल्गुम् (नपु०) बिभृवद्गुम्।

वटिकावल्गुम् (नपु०) वटा।

वटीचक्रम् (नपु०) १ राट, पानी निकालने का यन्त्र
२ अतिमार भाव० अ१६।१८।

वटित (वि०) [वट् + क्त] १ मरचकन, मरचदार
—पञ्च० ६।३ २ टकाया हुआ चीन्हा हुआ
पीसा हुआ।

वटिकर्त्तः (पु०) १ दाब या मच मच २ मच गोलन
का नाम।

वटारवः (पु०) [व० ग०] १ पत्र की आवाज का-
मरचयटारव—हनु० २ मण की एक प्राणि वटार-
व मणमुम घटानादे—नाना०।

वटिका (स्त्री०) [वट् + क्त, इयच्] वग काकल,
उपविष्टा।

वट्याकः [वट् + आलच्] हाथी मुक्ति० ५।१६।

वट्याकः [वट् + ठाच्] वट्याक, मयारयक।

वण (वि०) [हन् मूला अण्, वनादेशच] १ वन,
दुष्ट, दाग २ मोटा, बड़ा हुआ ३ पूर्ण विकसित
४ गहरा ५ निर्वाच ६ स्थायी ७ पूर्ण + वणः (पु०)
१ दाग २ मोह की गदा ३ खरीर ४ नमूनाय
५ वेद का सम्बन्ध पाठविशेष, वणम् (नपु०) १ बड़ा,
जग २ मोह ३ वान, वणकल। सम०—अर
मोटी बजाओ से युक्त महिला कुच वनाय पराजि
तर्ष तर्ष—वेणी० २।२०, —वणः (वि०) हुजीने
के आघात के उपरान्त—भाष० ६।२६।५३, —वानम्
किन्ही रचना का निर्माण का बाहरी भाग,—अनुक्तिः
करी नीचनीचता।

वणता, [वन + मन् + लृ] १. वणवता, बड़ा होना
वणवन् २ दुकटा, ठोसपना।

वर्षरः (पु०) [वृ + वृक्ष—वृक्ष + अच्] गन्धिर का एक
विशेष प्रकार का निर्माण।

वर्ष (वि०) [वृ + वृक्ष, नि० वृक्षः] वर्ष,—की (पु०)
१ वर्षी २ वीष्य वृत्त ३ पत्नी ४ प्रवर्ष संस्कार
५ एक देवता का नाम—वर्षः स्वावातरे वीष्ये
प्रवर्ष्ये देवतान्तरं। सम०—वाक्किः पत्नी से उत्पन्न
वीष, वे० 'स्वेदव'।

वर्षवालः [वर्षच + वालच्] पीसने वाला, बड़ा, मोटी।

वर्षवन् [वट् + निष् + वृट्] वटवन्, गुंडा।

वर्षतः [हन् + निष् + वृट्] हृष्टर लम्पाना कोडाधिष्ठि-
तस्य कोडावच्छेदे वात—की० व० २।५। वण०
—हृष्टम् (नपु०) एक प्रकार का मृत्परी, विष्णुः
अथवा विन, जगन्नाथ से सातवीं वर्षतः।

वृणस्त, [वृण् + क = वृण् + लृच (वृट्) (नृट्) + क्त]
वृणवत्, पीने से व्यापा हुआ, वृण ल्पना हुआ—वीर्णवित
वृणवन्तः प्राणवृणवन्तैकवर्णोपमावाच्यमर्थं मयार्थ—वि०
३।५।

वृणवृत्ति (वि०) [वृण्वृत् + इतच्] वृणवृत्ति, वृणवृत्ति,
वृणवृत्ति।

वृष्टावन् (नपु०) विडोरा पीट कर सबको मजबान
करना—वृण् ५।२०९।

वृत्त (वि०) [वृ + क्त] १ छिड़का हुआ २ वणकीला,
तम् (नपु०) १ बी २ मक्खन ३ बराब वणु-
व्यती वृणवृत्ता महा० १।१२।१५। वण०—वृत्त
(वि०) बी से चुपड़ा हुआ, बी से चुपड़ा,—वृत्तः
बोरो का एक भेद जिसमें बी की चुपक जाती है,
—वृत्तः, वृत्तवन् बी पीना वृत्त (वि०) बी से
चुपड़ा हुआ,—हैनु मक्खन।

वृत्ता [वृ + वृ] वृत्त की भावना।

वृत्तिन् [वृत् + इति] वृत्तान्त, वृत्तान्त।

वृत्ता [वृत् + अच् + टाप्] १ (उत्तु की) वृत्त २ (वृ
में) पहिले की नाभि।

वृत्तः [वृत् + वृत्] वृत्तर पाठ, वृत्तवृत्तवृत्त—वृत्ताव
वृत्तवृत्तवृत्त वृत्तवृत्तवृत्त ५।०५। वृत्त०
—वृत्ता सामूहिक रूप से वृत्तवृत्त के स्थान पर
वृत्ता, सामूहिक वृत्त वृत्ता, वृत्त वृत्त वृत्त वृत्त
वृत्त, वृत्त वृत्त वृत्त वृत्त वृत्त, वृत्त वृत्त वृत्त

बाधुव्य [बाधु + व्य] एक प्रकार का जोतों का अंजन ।

बाधुर [बाधु + एव, स्वार्थे अन्] एक छोटा नावयुग्म ठगिया ।

बाधुरता (वि०) [बाधुर + ता] चारों तरफों तक समस्त पृथ्वी को अधिकार में करने वाला ।

बाधुरीकः [बाधुरी + कृ] 1. हंस 2. एक प्रकार की वस्तु - कलहने व कागड़े बाधुरीकः पुषामयम् - नामा० ।

बार [बर एव, अन्] 1. नदि, बाल, भ्रमण 2. पैरक तर करना 3. कारबार 4. हमकड़ी बेड़ी 5. पीपली का बूझ, बिबाक का वेष्ट ।

बार्षा (स्त्री०) 1. पक्ष, मार्ग, छाट हाव चौड़ी नदक - की० अ० ११३ ।

बार्षिकः [बार. लोकसमत बाकोबास्यं यस्य - पु००] वर्षोपास्य की बार्षिक शाखा का अनुयायी ।

बिक्रिस्ता [क्रि + स्त + म, रिमया टाप्] दण्ड - प्रम - तस्य ते करोमि बिक्रिस्ता दण्डपालिरिव अनताया - भाष० ५११०७ ।

बिक्रिस्तु (वि०) [क्रि + स्त + उ] वृद्धिमान् बालाक - अथ० १०१११ ।

बिम्बाव्यञ्ज [ब० त०] इसली से तैयार किया गया मूष या कोक ।

बिस्तम् [बि + स्त] 1. हृदय, मन 2. ज्ञान - बिस्त बिस्तानुपायस्य मुनिरासीत सवत । यच्चित्तं तन्मयो बभूव मुह्येतस्तनातनम् महा० १४५१२७ । सम० - अस्ति (वि०) दिक् में प्ररक्षित बिस्तपितनेषवे - दवग - नैब० १३३१, भाषः हृदय का स्वायी - बिस्तनाथमभिज्ञाकृतवाया सि० १०१२८ ।

बिस्तिः (स्त्री०) [बि + स्तिन्] 1. मानसिक अवस्था - आकृतीनां व बिस्तीनां प्रवर्तक नताम्यि ते - महा०

३१२६३११० 2. ज्ञानेन्द्रिय वं वेष्टिनामनुविद्यत उन्मकति - भाष० ६११६१८ 3. संज्ञान, ज्ञान - बिस्तिः मूष बिस्तनाव्यञ्ज - की० अ० ३११ ।

बिस्ति (वि०) [बि + स्त] बिस्ति है सर्वत्र स्तने बाका - बिस्तनाव्याञ्जरावयव आवसावरणीअव्यञ्ज - रा० ६१५८१११ ।

बिस्त्रम् [बि + स्त्र, बि + स्त्रु वा] वनक का चूक - मन्त्रके तिकके हेमि एषे मन्त्रकम् - नामा० ।

बिस्तानकिः (पु०) एक प्रकार का बोझा बिस्तकी वर्णन पर बाकों का बड़ा चूवर हो ।

बीबीकुबी (स्त्री०) अनुकरणमूक्त लव्य जो पक्षियों के कलरव की प्रकट करता है ।

बीमबाध (पु०) दारपीनी ।

बीरसिः (पु०) एक प्रकार की बड़ी मछली ।

बीरी (स्त्री०) [बीरि + ङीप्] बीनुर, (बीरीबाधः) बी) इसी कर्ष में प्रयुक्त होता है ।

बीरना [बु + बु + टाप्] (पुर्वीनासा में) 'अपुर्व' नामक जेनी - बीरनेत्यपुर्वं पुन मी० पु० ७११७ पर सा० भा० ।

बुनचुनाव्यञ्ज (पु०) किसी जाव में मुचलाहट हीना मुचुत० १४२१११ ।

बुनुरिः (पु०) एक राजस का नाम ।

बेरिका बकाहों की एक उपनदी - तदेव बेरिका जोवा नायरी तन्मुवावयु - कर्मिकावय २०११५१६६, बाल० १०१८५ - ८८ ।

बीत्यामिः [ब० त०] पुनात बमि यजीव बमि - अथ० ११६ ।

बीबेव (वि०) [बी + व] केरल प्रदेश के बाल 'बी' नामक नदी में प्राप्त होती की० अ० २१११ ।

ब्यवनः (पु०) [व्य + नि + स्तुट] एक चवि का नाम ।

छबीड [छ + बि + तना० उ००] छबी की भाँति प्रयत्न करना ।

छवत् (पु००) [छव्यति - छव् + अनुन्] एक पर्व, त्योहार - वेदे बाव्ये वृतामैवे उत्सवेऽपि मन्त्रकम् - नामा० ।

छव्यद्वारम् (अ०) बिठल कराने के लिए, बिस्ते कि लकड़ता न मिले कथा० १२१४ ।

छव्यद्वर (वि०) [छव्यट + द्व + अन्] नव्य प्रष्ट ०१४ बाका, - छरी (स्त्री०) - एवा बीरनमा छव्या बाक - छव्य (स्त्री०) द्वरी प्रभो - भाष० ३१८१२९ ।

छव्यद्वारः [छव्यट + द्व + अन्] गाध, व्यष्ट, बिबाध ।

छव्य [छव्य + अन्] एक प्रकार का बड़का बिस्ते सर्व - तत लकी का प्रयोग किया जाय ।

छावा [छो + व + टाप्] प्ररक्षत मूष पाठ वं संलक्ष भाकास्तर ।

छिन्नम् [छि + रन्] 1. प्रमाण - भूभिन्नविचिन्नम् की० अ० २१२ 2. स्वाज - भाष० ६१२६१३४

3. बाकाध, वन्तरिज - भाष० १२१४३० ।

छेवनम् [छि + स्वट्] बाधुर्वेद में एक प्रकार की लव्य - प्रोक्ष्या ।

छुक्क (पु०) एक प्रकार का कन्व - पु० अ० ८६१७ ।

छुरितम् [छुर + क्त] कट, बरीक ।

छुरिका (स्त्री०) बाल बाय ।

छला (केल) बलक के बाधारण में बना पक्कलीक का लक्षणा - भाषिकावय० ११७४ ।

ज

जम्बुक [व० छ०] नी जंकपायों का मय ।
 जम्बुजिह्वा (स्त्री०) जह्वाँहिना पर बहुतेज्ज्ज् एक
 टीका ।
 जम्बुजम्बु (नपु०) विश्व का एक वास्तव्यं पक्ष्यानीं
 जम्बुजम्बु—रा० ७३२१९ ।
 जम्बुजिह्वा [व० छ०] जम्बुक, राजा निम्बज्ज्ज्ज्
 जम्बुजिह्वा—कि० ३१२८ ।
 जम्बुजम्बु (पु०) पक्षी ।
 जम्बुजम्बु [व० छ०] जम्बु रत्न कर जम्बु ।
 जम्बुजम्बु (पु०) जम्बु रत्न के जम्बुजम्बु को जम्बुजम्बु
 की एक रीति ।
 जम्बुजम्बु (पु०) 'जम्बुजम्बु' की प्रणाली में जम्बुजम्बु करने
 में जम्बुजम्बु पुष्प ।
 जम्बु [जम्बु + जम्बु] १. जम्बुजम्बु, जीव २. जम्बुज
 ३. एक जम्बु ४. राट्ट, जम्बु । जम्बु—जम्बुजम्बु
 जम्बुजम्बु जम्बु के राजा की उपाधि, जिसे जम्बुजम्बु
 जम्बुजम्बु का जम्बुजम्बु जाता है, — जम्बु
 जम्बुजम्बु, जम्बुजम्बु, जम्बुजम्बु । जम्बु जम्बुजम्बु ।
 जम्बुजम्बु (वि०) जम्बु का रत्न करने वाला—जम्बुजम्बु
 जम्बुजम्बु जम्बुजम्बु—जम्बु २३२१९ ।
 जम्बु (वि०) [जम्बु + जम्बु] जम्बुजी (वापारजम्बु 'जम्बु
 जम्बु' जम्बुजम्बु) ।
 जम्बुजम्बु (पु०) जम्बु की जम्बु के एक जम्बुजम्बु का
 नाम ।
 जम्बुजम्बु (वि०) जम्बुजम्बु का जम्बु जम्बुजम्बु—इति
 जम्बुजम्बु जम्बु जम्बुजम्बु जम्बुजम्बु—जम्बु ५।
 ६४२० ।
 जम्बुजम्बु [जम्बु + जम्बु, जम्बु] १. जम्बु, जम्बुजम्बु
 जम्बु जम्बुजम्बु जम्बु—जम्बु २. जम्बुजम्बुजम्बु
 —जम्बु ५।६४२० ।
 जम्बुजम्बु (स्त्री०) जम्बु की जम्बु ।
 जम्बुजम्बु (वि०) जम्बुजम्बु जम्बुजम्बु जम्बुजम्बु जम्बुजम्बु
 जम्बुजम्बु जम्बु १०१९०१९ ।
 जम्बु [जम्बु + जम्बु] १. जम्बु २. जम्बुजम्बु जम्बुजम्बु
 जम्बुजम्बु ३. जम्बु का जम्बु । जम्बु—जम्बुजम्बु जम्बुजम्बु
 —जम्बुजम्बु जम्बु, जम्बुजम्बु जम्बु, जम्बुजम्बु—जम्बु
 जम्बु का एक रीति ।
 जम्बुजम्बु (वि०) [व० छ०] जम्बुजम्बु जम्बुजम्बु
 जम्बुजम्बु—जम्बु जम्बुजम्बुजम्बु—जम्बु ११४१४ ।
 जम्बु (नपु०) [जम्बु + जम्बु] (जम्बु) जम्बु, जम्बु,
 जम्बुजम्बु, जम्बुजम्बु जम्बु जम्बुजम्बु—जम्बु ७३२१९ ।
 जम्बुजम्बु (नपु०) जम्बुजम्बु, जम्बुजम्बु ।
 जम्बुजम्बु [व० छ०] जम्बु का जम्बु, जम्बु के जम्बु
 —जम्बु ५० १३४ ।

जम्बुजम्बु (स्त्री०) [जम्बु + जम्बु + जम्बु] जम्बु जम्बु
 —जम्बुजम्बुजम्बुजम्बु—जम्बु ५१९०१९ ।
 जम्बुजम्बु (जम्बु) (वि०) जम्बु जम्बुजम्बु जम्बु—जम्बु
 जम्बुजम्बु जम्बुजम्बु जम्बु—जम्बु ११९०१९ ।
 जम्बुजम्बु [जम्बुजम्बु + जम्बु] जम्बुजम्बु—जम्बु ९१४० ।
 जम्बुजम्बु (पु०) जम्बुजम्बु जम्बुजम्बु जम्बु जम्बु जम्बु
 का नाम ।
 जम्बुजम्बु [जम्बुजम्बु + जम्बु] जम्बुजम्बु ।
 जम्बुजम्बुजम्बु (नपु०) जम्बुजम्बु, जम्बु ।
 जम्बुजम्बु [जम्बु + जम्बु + जम्बु] १. जम्बु जम्बु २. जम्बुजम्बु
 पर जम्बुजम्बु की जम्बु जम्बुजम्बु ।
 जम्बुजम्बु (वि०) १. जम्बुजम्बु के जम्बु जम्बुजम्बु जम्बुजम्बु
 जम्बुजम्बु २. जम्बुजम्बु जम्बु जम्बु जम्बुजम्बु
 जम्बु जम्बुजम्बु जम्बुजम्बु जम्बुजम्बु जम्बुजम्बु
 जम्बु ३१२९१३० जम्बु टीका ३. जम्बुजम्बुजम्बु
 में जम्बु ।
 जम्बुजम्बु (नपु०) एक प्रकार का जम्बु—जम्बु ८०१२९९ ।
 जम्बुजम्बु (पु०) जम्बुजम्बु में एक जम्बुजम्बु—जम्बुजम्बुजम्बु
 जम्बुजम्बु जम्बु जम्बुजम्बु जम्बु ११९८ ।
 जम्बु [जम्बु + जम्बु] १. जम्बुजम्बु का एक जम्बुजम्बु—जम्बु
 जम्बुजम्बु जम्बु जम्बु जम्बुजम्बु—जम्बु १११११
 २. जम्बुजम्बुजम्बु जम्बु जम्बु जम्बु जम्बुजम्बु जम्बु
 जम्बु ३१२३१३ । जम्बु—(जम्बु) जम्बुजम्बु
 (—जम्बुजम्बु) जम्बु जम्बु जम्बु, जम्बु (वि०) जम्बु
 जम्बु, जम्बुजम्बु जम्बुजम्बुजम्बुजम्बुजम्बु जम्बुजम्बु
 जम्बुजम्बु जम्बु ५० १०११० ।
 जम्बुजम्बु (वि०) [व० छ०] जम्बुजम्बु जम्बु जम्बु
 जम्बुजम्बु कर जम्बु जम्बु ।
 जम्बु [जम्बु + जम्बु] एक जम्बुजम्बु जम्बु जम्बु जम्बु
 जम्बु जम्बु जम्बु जम्बु जम्बु जम्बु जम्बु जम्बु जम्बु
 जम्बुजम्बु (व० व०) एक जम्बु का नाम—जम्बु ९१
 ११९९ ।
 जम्बुजम्बु (वि०) [व० छ०] जम्बुजम्बु जम्बु—जम्बु
 जम्बुजम्बु जम्बुजम्बु जम्बु ३१२३१३ ।
 जम्बुजम्बु (वि०) [जम्बु + जम्बु] १. जम्बुजम्बु - जम्बुजम्बु
 जम्बुजम्बुजम्बु—जम्बु १०११० २. जम्बुजम्बु जम्बु
 जम्बु जम्बु (जम्बु कि 'जम्बुजम्बु' में) ।
 जम्बुजम्बु [व० व०] एक प्रकार का जम्बु—जम्बु
 जम्बु २११११ ।
 जम्बुजम्बु (पु०) जम्बु जम्बु, जम्बुजम्बु जम्बु
 १०१२३१३० ।
 जम्बुजम्बु (स्त्री०) [जम्बु + जम्बु + जम्बु, जम्बु, जम्बुजम्बु]
 १. जम्बुजम्बु जम्बुजम्बु की जम्बुजम्बु करने वाली जम्बु
 २. एक जम्बु का नाम ।

बीजिका (स्त्री०) [जीव् + अङ्, अत इत्थम्] जिम्मी
कृपा कर्तृदिभ्याम् कच कृपयबीजिका - रा० २।

२०१६७।

बुद्धिमान् (नपु०) ब्रह्म वैश्व का पीषा।

बुद्धिमान् [बुद् + धृ + क्त] बुद्धि काई, अधिकार
कृत्य क्रमेणबुद्धितेन मान० १।७।२२।

बुद्ध (देव०) (वि०) [बु + दृ] पुराता शब्द ६।२।७।

जोषवाकः (पु०) निरर्थक बात करना जोषवाकं वदत
—शब्द० ६।५९।४।

भूतिः (स्त्री०) [भू + सिद्धन्] मन का लक्ष्मीकरण—तेत०
उ० ५।२।

भूमिनिः (पु०) एक प्रसिद्ध भूमि जो रहन शास्त्र की
पूर्वमीमांसा के प्रवर्तक थे। सम०—भाष्यतन् भाग-
वत का भाष्यनिक सत्करण, भारतम् महाभारत
का भाष्यनिक सत्करण, शास्त्रा मायवद का एक
शास्त्रा,—शब्दम् एक वचन का नाम।

भूमिनीय (वि०) [भूमिनि + छ] भूमिनी द्वारा रचित,
या उनसे लब्ध।

भैरवः (पु०) कैपट के पिता का नाम।

जीमाता (स्त्री०) जी।

जीवन् (अ०) [ज्यु + चञ्] अपराध जैसा कि (जोप-
मात्र्य रूप रही) में।

जीव्य (वि०) [ज्य + धृत्] प्रिय स्नेहाह।

जन्म (वि०) जपने आप का ब्रह्मान् समस्त वाता।

जाताम्बः (पु०) प्रसिद्ध कुल ५ उल्लेख होने वाला पुत्र।

जातिवेत्तन् (नपु०) जीव कुल में उत्पन्न व्यक्ति विभिन्न-
कर्मजयवाक कुले नो या जातिवेत्त भुवि कर्मवि-
भूत् भट्टि० १२।७८।

जातिभावः (पु०) सबन्धियों के लिए अहार, जानिभाजन
—प्रशास्त्र हस्तावतन्म जातिप्राय प्रकल्पयेत् मनु०
१।७५४।

ज्ञानम् [ज्ञा + क्युट्] जानकारी का साधन - मै० म०
१।१५२ २ मरगति बन्नेदेव्य वाक्य तु मय ज्ञाने न
पुञ्जत मज्ञा० १।१५१। मग० ज्ञान ज्ञान की
भाग ज्ञानाभि मज्ञाकीन न-मज्ञाकृतज्ञान
मग० ५।७७ ज्ञान (पु०) पुत्रज्ञान केवलज्ञान
निदिशयाय माग्नाय नमा ज्ञानयनाय न भाव०

८।१।१२.—ज्ञानं (वि०) ज्ञान बोधा हुआ, पढ़ने से
पुरी जानकारी प्राप्त किए हुए, पढ़ (वि०) ज्ञान
या जानकारी में बढ़ा-बूढ़ा।

ज्ञानिन् (वि०) [ज्ञान + इनि] बुद्धिमान्, समझदार,
—(पु०) बुद्ध बह—ज्ञानी सर्वज्ञात्मीयोः—नामा०।

ज्मन् (पु०) पृथ्वी पर, बरती पर (केवल अधि० में
प्रयोग) अविश्वत्सेन बुरखन्—शब्द० ७।२१।६।

ज्या [ज्या + बह + टाप्] १ एक प्रकार की लकड़ी की
मोटी २ सेवा का पृष्ठमान—ज्या भूमिनीयोः
छम्माया बाह्मिना पृष्ठमानके नामा०।

ज्येष्ठः [ज्यु (प्रथम्य) + इष्टन्, ज्यादेशः] १ सबसे
बड़ा २ सर्वोत्तम ३ उत्तमत्तम्,—(पु०) एक पांडव
नाम का नाम। सम० राज् (पु०) प्रमुत्तमा
सपत्न राजा—ज्येष्ठराज ब्रह्मणा ब्रह्मणस्पति—शब्द०
५।२३।१, ज्ञानम् एक विशेष शब्द।

ज्येष्ठा (स्त्री०) १ लक्ष्मी देवी की बड़ी बहन वाकनी
२ एक देवी का नाम।

ज्योत्स्न (अ०) (देव०) चिरकाल तक, दीर्घ समय तक
—ज्योत्स्नं पूर्व दुस् - शब्द० १।२३।२।

ज्योत्स्नीयम् (नपु०) दीर्घकाल तक जीना, लक्ष्मी जन्म
होना।

ज्योत्स्निन् (नपु०) [ज्यु इन्नु भावेर्ध्वय च] १. कफान,
गर्हित, जामा, चमक २ बिजली ३ नाव—मी० नू०
७०।३।४९ पर का० जा०।

ज्वरः [ज्वर + क्त] १. ताप, बुखार २ मानसिक ताप।
सम०—ज्वरकः ज्वर का विशेष रूप,—ज्वरिः ज्वर
नाशक रोचधि, हर (वि०) ज्वरप्रहायक, ज्वर
नाशक।

ज्वरमापन्नम् (पु०) सूत्रकाल मणि।

ज्याला [ज्यन् + ज + टाप्] १ जान की लपट, जम्बि-
मिना २ दग्धान्। सम०—जालिन् (पु०) ज्वर
देवता जालिनी (स्त्री०) दुर्गा का एक रूप
—ज्यालायाजिनिकाजिन्मिनाकारवचना—महिता०,
जुली (स्त्री०) दुर्गा का एक विशेष रूप
ज्यालायाजी तन्त्रज्ञान जनेछा सर्वज्ञानियु—
वागह पुगल में देवोपचर० रत्नकलायकः
रा० द्यु।

अ

अज्जानिकः (पु०) आमा की सेवाएँ आँधी के साथ
आँधी का पड़ना।

अज्ज, अज्जा [अज् + य निधदा टाप्] १ उल्लभ-द्वय
२ मछली। सम० अजिम् (पु०) अज्जाय, मछली

जाने वाला,—जाल एक प्रकार की मशीन की छाल,
जाल की माप, जालम् एक प्रकार का माप।

अज्जकालः (अज्जकालः) (पु०) (आज्जनों की) बीजि-
जाने वाली वचक।

अवराह् [व० त०] नवरत्नम् ।

आह्वारिन् (वि०) [आह्वार + इति] 'आह्वार' ध्वनि को करने वाला ।

श्रीः १. शम्भु की कला २. शम्भु ।

शिविकम् (पु०) एक शक्ति का नाम ।

श्रीः (पु०) शिवी ।

शुः १. शुभ शारा २. शुभ ३. शुकन देव ।

श्रीः कर्म का नाम ।

श्रीः स्वर्ग ।

श्रीलोकम् (मनु०) १. पान आदि रखने का बरत, पानखान २. शोका, रीता ।

श्व

श्वः (पु०) १. नावक २. 'शरवर' का शब्द ३. शीत ४. शुक ५. शिव की सत्त्वा ।

ट

टङ्क [टङ्क + वङ्, वा] १. टङ्कना - टङ्करोज्जी टङ्कने लुङ्गे - नला० २. (हवीत में) एक प्रकार का भाग, ३. टङ्कनाथ । तम०—वर्तिः टङ्कनाथपथ, —वाला टङ्कनाथ ।

टङ्कित (वि०) [टङ्क + क्त + क्त] बाधा हुआ नाट्य न च टङ्कित—हनु० ।

टङ्कितम् [टङ्क + क्त] टङ्कार, टङ्कन ।

टोवरः (पु०) छोटा बैला ।

ठ

ठकः (पु०) ठीकाणर, व्यापारी ।

ठिण्डा (स्त्री०) जूलावर—कुछ स मध्यस्थितायां कित-वान् स्थानमागत कथा० १२।१२१ ।

ड

डवरिन् (पु०) [डवर + इति] एक प्रकार का डोल ।

डम्बर [डम् + वरन्] उष्णस्वर का शेष ।

डिक्क (स्त्री०) एक बहुत छोटा पंखदार कीड़ा (जैसे कि पिक्क) ।

डिक्क [डिम् + वङ्] १. गुणधामान शिवर, कोलाहल

मय चोटी—नै० २२।५३ २. खरीर—कोष्टा डिम्ब

व्यथनम्—मि० १८।७७ ३. बुद्ध, जड राय० ७।१०७२ ।

डिम्बः [डिम् + वङ्] पोषे का अङ्कुर, जलुवा नै० ८।२ ।

डेरिका (स्त्री०) छद्मदर ।

ड

डङ्कनम् [डङ् + न्] डार डङ्क करना ।

डङ्करी (स्त्री०) डुआ की दृष्टि की तांत्रिक पूजा ।

डङ्कित (वि०) [डङ् + क्त] निकट भावा हुआ ।

तपस्व [तप + स्व] छात्र, मनु। सम०—हुँकारा रावरी, उलामी हुई छात्र, चिन्हः छात्र (को रूप में से जानने के लिये) रहा अवश्य, तपसी।

सहः [सह + अच्] 1. इमान, कथार, किनारा 2 क्षितिज। सम०—हुनः नदी किनारे का दूध, पलः किनारे का लोड़ कर गिराना, अः किनारे की परती।

सहिमीयतिः [व० त०] नवियों का स्वामी मनु।

तप्युरीयः [तप्युर + अच्] कीड़ा, कृमि, कीट।

तत्त्वबन्धनः (पु०) भीमांसा शास्त्र का एक नियम जिसके अनुसार किसी यज्ञ का नाम उसकी अधिव्यक्ति से मनुकृत रखा जाता है।

तत्त्वम् (पु०) शरीर महा० १२।२६।१२। सम० बन्धनः बालनिकता का बार बार अध्ययन एवं तत्त्वाम्नासात्—सा० का० ६४, हस्तिम् (वि०) अस्तित्व को जानने वाला, भाव, प्रकृति, वास्तविक सत्ता, -संस्कारम् साध्य सिद्धांत का विशेषण—भाष० ३।२४।१०।

तत्त्वार्थम् (वि०) [तत्वा + वाद + इति] बंसा हाने का वाद करने वाला

तप (सर्व० वि०) 1 किसी अनुपासित वस्तु या व्यक्ति का उल्लेख करने वाला सर्वनाम। सम० अन्ध (वि०) उसकी छोट कर कोई दूसरा, अनेक (वि०) कड़का बवाल करने वाला,—काशीय (वि०) उसी कास से सम्बन्ध रखने वाला,—देव्य (वि०) उसी देव से सम्बन्ध रखने वाला, बर्ष्य (वि०) उसी गृध्र में भाग लेने वाला, ज्व (वि०) उसी संस्कृत से जन्म लेने वाला, प्राकृत का एक भेद—तद्भवस्तत्त्वयो देवीत्वनेक प्राकृतकम्—काष्ठा० १, क्व (वि०) उसी प्रकार के रूप वाला,--तद्विधः उसका शास्त्र, किसी विशेष क्षेत्र में प्रामाणिकता रखने वाला,--संस्कार (वि०) उस धर्म के समान।

तत्त्वविवेकः (पु०) भीमांसा का एक नियम जिसके अनुसार उत्कर्ष की उक्ति में आरम्भ से लेकर वह सब विवरण सम्मिलित होता है जिसके लिए वह विद्या जाता है और साथ ही उपकर्ष की उक्ति आरंभ तक उस सभी विवरण पर लागू है जिसके लिए वह विद्या जाता है।

तत्त्वबन्धनः (पु०) ऊपर बताये गये 'तत्त्वबन्धन' के समान।

तत्त्वम् (पु०) सञ्ज्ञित में आवाज को मन्त्र करना, सञ्ज्ञित की गति धीमी करना।

तपु [तप + उच्] 1. पत्थर, दुबला, कुल 2. मुकुन्दार 3. बड़िया, नाजूक 4. पीड़ा, छोटा, स्वल्प,--(लौ०) 1 शरीर स्थिति 2 प्रकृति

3 त्वथा, जाल। सम० उन्मुख पंख,--करकम् (मनुकरणम्) पतला करना,--वी बोले कम बाला।

तप्युरीयम् (पु०) कातना, तार निकालना।

तप्युरीयम् (पु०) बाला।

तप्यम् [तप्य + अच्] 1 लघ्वी 2 धारा 3 सतत लेवी

4 रम्भ, व्यवस्था, मस्कार आदि धार्मिक कार्यों का नियमित आदेश 5 मुख्य बान 6 प्रधान सिद्धान्त, नियम ऐसे कृत्या का समूह जो अनेक प्रधान कार्यों में समान हो—यन्मकुत्कृत बहुनाम्यकरोति तत्त्वमिदमुच्यते—वे० म० ११।१।१ पर शा० जा० 2 विषय की व्यवस्था यन् प्रवर्तत तप्यम् महा० १४।२।१४, ज विमोचन—हुँकार किसी एक मधि का आवाहन की० अ० १५।

तत्त्वभाष्यम् (पु०) [व० त०] भारतीय भाषा।

तत्त्विल (वि०) [तत्त्व + इलच्] प्रशासनकार्य में कुशल त्व तत्त्विल सेनापती राज प्रत्यक्षित—पुष्प० ६।१६।१७।

तप्यु (तप + क्तु) वीष्म क्तु—तप्युर्गतावि विदशा भरा—नै० १।४१।

तपस् (पु०) [तप + अन्तु] 1 गर्मी, आग, प्रकाश 2 पीड़ा, कष्ट 3 तपस्या 4 दण्ड। सम० क्षीय (वि०) अपवर्ण के लिए अविश्रित—उपश्रुति बालापी बल गर्भम्—महा० ११।२९।५,--कुल (वि०) अपवर्ण के कारण दुर्बल,--कुल (वि०) उसका से उत्पन्न,--बृद्ध (वि०) कठोर तपस्या के फलस्वरूप बृद्ध।

तप्य (वि०) [तप + क्त] 1 गर्म किया हुआ, जला हुआ 2 पिघला हुआ 3 पीड़ित, कष्टग्रस्त 4 क्षय-स्त। सम०—कुम्भः,--कुल एक बरक का भाव,

तप्य (वि०) बार बार उवाला हुआ, बार बार गरम किया हुआ,--मृदा किसी गर्म वायु की छपर से छरीर पर किसी विषय छपर के रूप में अधिकार बिना अंकित करना,--कण्य, कण्यम् बृद्ध की हुई बाँधी,--बाल्यका शब्द के वर्ग कर्म।

तप्यु (वि०) [तप + इति] पीड़ा पहुँचाने वाला—कि० ०।६२।

तप्युर्गतावि (पु०) तप्यु।

तप्युर्गतावि नदी, दरिद्र।

तप्युर्गतावि (वि०) [व० व०] चम्पक तथा दुर्बल आनेमित्रों वाला।

तप्युर्गतावि (पु०) [व० व०] गृध्र की कोटर या लोडर।

तप्युर्गतावि चमपीठ।

तप्युर्गतावि

गुण्यः [गुण्य् + भव्] दबाव ।

गोत्रः [गुत्र् + वञ्] दबाव—मात० ११३१ ।

गुणितमिता (वि०) [गुणित् + इत् + मिति] जिसकी ठीक कूल नहीं है, मोटे पेट वाला ।

गुण्यारम् (गु०) गुण्या ।

गुण्यमन् (गु०) (कोनमापने का) पावयन् ।

गुणा [गुण् + अङ्] १. घर की छत के नीचे की ओर डगमगा जमा हुआ सहतीर २. तराजू की डंडी । सम०—अविरोहयन् मिलता-जुलता, अनुमानम् मायुष्य, सायुष्य पर आधारित अनुमान,—वारणम् तराजू पर रखना अर्थात् तोलना ।

गुण्य (वि०) [गुण्या संघित यत्] १. उसी प्रकार का, वैसा ही, मिलता-जुलता २. उपयुक्त ३. अनिम, बड़ी—गुण्य (अ०) १. एक साथ २. समान रूप से । सम०—कन्य (वि०) समान, बराबर,—नयनमिद (वि०) १. जब रात और दिन दोनों समान हों २. रात और दिन में कोई भेद न करने वाला,—निपात्युति (वि०) अपनी प्रवृत्ति या व्यवस्था—दोनों की ओर से उदासीन, मूल्य (वि०) समान मूल्य का, एक ही कीमत का,—बोधिः उसी वंश का, उसी कुल में उत्पन्न,—वयस् (वि०) समान आयु का, बराबर की उम्र का,—संख्य (वि०) समान संख्या का ।

गुण्यकः (अ०) समान भागों में, बराबर बराबर ।

गुण्यी दे० गुण्यी, (कविता में 'गुण्यी' को 'गुण्यति' भी लिख देते हैं) ।

गुण्य (गुहा० पर०) मोठे पहुँचाना, तंग करना, कष्ट देना, पीड़ित करना ।

गुणी (स्त्री०) नील का पीवा ।

गुण्यम् (गु०) नीला पीवा ।

गुण्यीकृत, गण्यिका (स्त्री०) ठगुवा, कातते समय जिस पर कपड़ा बाँटा है ।

गुण्यीकृतः (पुं०) गुण्य रूप से दिया गया दण्ड—की० अ० ११३१ ।

गुण्य, गुण्य [वि + भव्] अग्नेय के तीन गन्तों का समूह ।

गुण्य [गुण् + क्त, ह्योत्पत्त्य] १. घाव २. तिनका ३. तिनकों की कमी (कटौत जायि) कोई दण्ड । सम०—अकन्य तिनके की जाति गुण्य कनकना—गुण यस्या गुणराशिनां यदेव—विज्जाक० ११२, —गुणिकः नामही वर्णनाय—परक० ४४११, —गुण्य (वि०) घाव खाने वाला, गुण कमी, —कन्यः गुणारी का पैर, —अकन्यः एक प्रकार की चिर ।

गुण्यता [गुण् + क्त] १. तिनके का गुण, निम्नमान २. लघुत्व—वि० ११३११ ।

गुण्य (वि०) (वेद०) [गुण् + क्त] कटा हुआ, काटा हुआ ।

गुण्यता [गुण् + क्त] लघुत्व, दृष्टि ।

गुण्यति [व० उ०] तरणी या मार्गों का कमीलक ।

गुण्यितमना [व० उ०] समुद्रा नदी ।

गुण्यकम् [गु + भिष् + क्त] सारा—वाल्मीकिभट्टाचार्यम्—मात० १३१११ ।

गुण्य (गु०) [तिप् + भव्] १. कोय २. पूर्व । सम०—गुण्यः प्रमायुज्य, कर्म का बड़ा ।

गुण्य (वि०) [वेत् + क्त] राजस गुणों के गुण्य, —वैकारिकस्नेहसत्त्व तामसस्नेह विद्या भाव० ३५१३० ।

गुण्यम् (गु०) १. ज्ञानेन्द्रियों का समूह २. वेत्त दृष्टि ।

गुण्यम् (गु०) मन्त्रता, जादू, बड़वा ।

गुण्यमोच (वि०) [व० उ०] बीच बन्तुओं की दृष्टि से सम्मुख रखने वाला ।

गुण्य [तिक्त्वं उत्तर्द्धव्य वा विकारः भव्] १. ठेल २. कोझान । सम०—अभ्युक्त ठेलचट्टा नाक कीड़ा, —विद्वत्स्य बली, —बका, बालिकः ठेल पीने वाला कीड़ा, ठेलचट्टा, +गुण्य (वि०) जो ठेल से बरा हुआ हो अर्धकपूरः पुरतःप्रवीणाः—कु० ११३० ।

गुण्य (वि०) [वीट + क्त] समझाना, —कः (पुं०) संकर का शिष्य, —कम् (वीटकम्) गक कम्प का नाम ।

गुण्य [गु + क्त वि०] १. पानी २. पुनर्वासा नक्षत्रसूच । सम०—अग्निः सक्षयतीं भाव, वायवान्य, —अग्नीतिः देवों और पितरों को संतुष्ट करने के निमित्त अग्नीति अत्र उक्त से उर्ध्व करना ।

गुण्यम् [गुण् + गुण्य, भावारे लुप्] १. वीटसद हार २. बाहरी दरवाजा ३. कल्याणी अक्षरालय हार ४. तराजू को लटकाने के लिये एक पिकीनीय डोचा ।

गुण्यम् [गुण्य + भव्] गुण्यता, नम्रता ।

गुण्यम् (वि०) [गुण्य + क्त] गुण्यता ।

गुण्यम् (वि०) [गुण्य + क्त] गुण्यता ।

गुण्यम् (वि०) [व० उ०] निवर्तों का उत्तमगुण करने वाला ।

गुण्य (वर्ध० वि०) (वर्ध० ए० व०—एवः (पुं०) (वेद०) अद्वय सत्त्व तत्त्वभावत्—वी० उ० ।

गुण्यता (वि०) [गुण्य + भिष् + क्त] १. निम्नता —गुण्यता गुण्यतामनाम्—कु० ३४१४

२. निम्नचित्त ।

गुणी (स्त्री०) [गुण् + क्त] १. वेदवती (अथर्ववेदः)

२. त्रिपुना ३. विद्याविज्ञानी (वाल्मीकि) जिसका पति और कन्ये कीर्ति है । सम०—कन्य (वि०) जो

तीनों (बेदों) से युक्त एक है, विष्णु (वि०) जो तीनों बेदों में निष्णात है— वैद्य (वि०) जो तीनों बेदों के द्वारा जाना जा सकता है— यद्विषं ह्यद्य निपुणैरमाद्य त्रिवयम् आनन्द० २,—संवरणम् छिपाने या मृत रखने की तीन बातें (स्वरप्रणोपन, पररक्षाभ्येषणोपन और मन्त्रप्रणोपन) अर्थात् अपनी दुर्बलता, मन्त्र की दुर्बलता और अपनी नीति ।

त्रि (स० वि०) [त्रि + त्रि] तीन । सम०—अष्टगुलम् तीन अंगुल चौड़ाई की माप, आधेया (३० व०) 1 तीन पुरुष बहारा, गुगा और अवा 2. तीन ऋषियों से युक्त प्रवर कटु (कटुकम्) तोठ पीपर और मिर्च का समाहार - करणम् मन, बचन और कर्म से युक्त कायकलाप, करणी और से तिमूना जबा विसा वर्ग का पावसं काष्णम् अमर कोश नामक ग्रन्थ गुणाहुतम् तीन बार हल से कुट्ट, जिसमें तीन बार हल चल चुका है, आतम् तीन प्रशाला (आयकल इलायची दादबीनी) का मिश्रण, जेनि (वि०) जिसमें तीन पृष्ठियाँ लगी हो जाण० ३।८।२०,—नैत्रकल माण्डिल, -चिदकम् बौद्धों के तीन धार्मिक पुस्तकों के संग्रह अङ्गम् बौद्धों की ऐनी मुद्रा जिसमें तीन अङ्कान हो सब तिमूना अङ्कवार, -चलम् मन्त्र यज्ञ और कफ नीती बल—व्य (वि०) तीन में तीन जो के बराबर

—लोहकम् सोना, चाँदी और तीखा तीन भागपूर्व, -बली (स्त्री०) (किली महिला) के पेट की तीन बलिया, बली मुदा, कुति वज्र, वैश्य और अग्र्ययन के द्वारा जीविका,—अङ्करी तीन प्रकार की शक्कर, सचनम् (सचनम्) वैकालिक यज्ञ, सर मिला कर उबाले हुए, दूध, तिल और चावल साधन (वि०) तीन प्रकार के साधन विधे प्राप्त है साधन (वि०) ऊह, रहस्य और प्रकृति नाम के तीनों मामों को माने वाला, सुपर्ण, —सुपर्ण तीन ऋषाई ऋ० १०।११।३-५ ।

त्रिकणम् (नपु०) त्रिकला त्रिकटु और त्रिपद का मिश्रण ।

त्रैराशिक (वि०) [त्रिराशि + ठक्] तीन राशियों से सम्बन्ध रखने वाला ।

त्रैवेदिक (वि०) [त्रिवेद + ठक्] तीनों वेदों से सम्बन्ध रखने वाला ।

त्वक् (स्त्री० पर०) 1 जाना 2 त्विहुना ।

त्वस्ता [त्व + नक्] शीघ्रता ।

त्वयम् (अ०) [त्व + अच्] जल्दी मे शीघ्रतापूर्वक ।

त्वष्टि [त्वस्त + क्तिप्] बर्हीगरी ।

त्वष्टु (वि०) [त्वष्ट + प्रण] त्वष्टा से संबंध रखने वाला ।

त्वष्टो [त्वष्ट + डीप्] त्विष ' नक्षत्र पुत्र ।

य

युद् (मुदा० पर०) 1 दबना पर्दा टाकना 2 छिपाना मृत्न रखना ।

यौहवम् [यड + रुषट] 1 दबना 2. लपेटना ।

य

यक्षिन् (वि०) [यक्ष + क्त] जिगी विषय में शस्त
—यक्षिनी भव कर्मणि महा० १२।००।९ ।

यक्ष (चुरा० आ०) 1 एक मायमा 2. देवता ।

यक्ष (स्त्री० प्रेर०) 1. प्रसन्न करना 2 समकन बनाना
—इक्षवन्निबधनानपुयट—वि० १।८।३५ ।

यक्षता [यक्ष + यच्, भावे लक्] दुःखलता, नैपुण्य ।

यक्षिन् (वि०) [यक्ष + दत्त] अनुकूल ।
यक्षिन्नात्मकः (पु०) यक्षिन्कर्त से सम्बन्ध रखने वाली

सांनिक संस्था की पुनीत पीठ ।

यक्षिन्ना (अ०) [यक्षिन् + टाप्] 1. यक्षिन् की ओर,

आई ओर 2 यक्षिन्वेस से,—या (स्त्री०) (यक्षिन् विधिक कृत्यों की समाप्ति पर) ब्राह्मणवर्ग की दो जाने वाली जेड सम० यक्षिन् (वि०) यक्षिन्-कर्म य सम्बन्ध रखने वाला,—सतीची यक्षिन्-परिचय, ज्ञाप्य (वि०) यक्षिन्-परिचयी, कुतिः (पु०) त्विष का एक रूप ।

यक्षः [यक्ष + यच्] 1 दवा, लाठी, मुद्गर, वज्र 2. हाथी की घूँट 3 छतरी की घूँट 4 बुरमाणा 5. हुकम 6. रात्र्यर्णव—की० अ० १।५ 7. आवाज. पीठ
—य्वाची यक्ष्यत् कुतेपु—भाष० ७।१५।८ । यक्ष०

—आवाजतः हंसे की ओट,—असह्य एक प्रकार का भासन, भूमि पर लम्बा टेढ़ा बना, उच्चतः स्थित करने की बचकी देना,—कसितम् आपने के गज की भाँति बार-बार आवृत्ति करना - मी० सू० १०५।
 ८३ पर भा० भा०,—कस्य दण्डवत् करना, दण्ड देना मी० सू० ४,—निवृत्तता लाना करना, —कैलम् बीड़ा सा दण्ड मनु० ८१५१, बाष्पिक (वि०) वास्तविक या साध्यिक (प्रहार), धारित (वि०) स्थित होने के उर से कोई काम न करने वाला, दण्ड के उर से वका हुआ।

वपुः (वि०) ठीठ, साहसी, गुप्तज्ञ मृषीको निनदन्
वपुः--महि० ६।११७।

प्रमाण: (२५) यम का विशेषण ।

ध्वजः [दध् + धृ] 1. दाँत 2. हाथी का दाँत 3. बाण की शोक 4. पहाड़ की चोटी 5. बलील की मंडपा ।
 लय०—उपनिषद् दाँतों में लगा हुआ भोजन का जंदा, चक्रिका कोषी,— बीजः अनाद, (पन्नवीज की)
 व्याख्यारः हाथी के दाँत का कार्य ।

विद्यावर्धन (वि०) [इम् + वृद्ध् + शानच्] मित्र-विप्र
विद्यावर्धनं ये पश्यन्ति कदाचित् कठं १।२।५।

समस्यः (पुं०) एक राजा का नाम, सिद्धपाल का पिता।

वचनकः (प०) पञ्चमस्क की कथाओं में एक गीत का नाम ।

मन्त्रमाला (श्री०) [१०१०] श्रीमान् । इति मन्त्रमाला ।

वराय [वृ + अय] 1. विवर, कन्दरा 2. शस, (श०)
 वरा सा कुल । सम०—वसित (वि०) वरा सा
 वरा इत्या, वरा प्राचीन्या दशान्तलीलोत्पन्नाः ।

—सीमर्यं०,—अन्तर (वि०) ईश्वरान्त, अणु भीमा ।

वर्षाकाल (जून - सितंबर) जल काटने का वन ।

बर्तिका (एन्टी०) बीरों का अंजन ।

प्रज्ञान [सं० वि०) दत्त । तम०—जीर (वि०) जिसमें
दत्त प्रज्ञान प्राप्त हो,—यर्गः कष्ट, विगति, बोधनम्
दत्त बोधन की दूरी ।

बला (स्त्री०) [दल + बल, नि० टाप्] १. किसी वपड़े की बिमारी, मोट, मलकी २. लेण की बली ३. भाव ४. अवस्था ५. दाम्भ ६. बहों की स्थिति ।

मम० अंशः, भावः कुरा समय—रा० ३।७२।
 अक्षय्य जन्म पत्नी में निर्दिष्ट कितनी विशेष समय
 का एक ।

सम्बन्ध (वि०) [सम् + बन्] 1. जला हुआ 2. लोकवस्तु,
कुली 3. धर्मगत 4. युवा । सम्—समकक्ष जला
पेट, युवा पेट, यही से आया हुआ,—सम्बन्धः अत्र जाने
के होने वाला सम्बन्ध ।

वन (वि०) [वा + क्त] पिवा हुआ। सन०—वन
 (वि०) जिसे कोई जबरन पिवा गया है,—कुल्लि
 (वि०) जिसने ध्यान मगाना हुआ है, जो देख
 रहा है।

वसुधैकुट्ठिका (एभी०) धर्मशास्त्र का एक ग्रन्थ ।

व्याप्तिः (पुं०) स्वाध्याय का परिवर्तन—अथ व्याप्तिः
किलक्षणक इति—जी० पु० ४१२८ पर का० भा० ।

बहुमर्शम् (बहु + श्म) (नपुं०) कृत्तिका नक्षत्रपुत्रः ।

वाक्य [दा - स्मृत्] 1 बेना 2 सौपना 3. उपहार
4 दान 5. हाथी के गडस्थान से बहने वाला रक्त ।

सम०. चरित्रिता उदारता, क्षामशीलता की सीमा,
चरित्र (वि०) मदीनत हाथी ।

देव (वि०) [दा - यत्] समर्पण करने योग्य (वार्त्त)
पन्था देवो वरस्य भव० २।१३८।

राज्यिकम्बा (म्त्री०) वाङ्मयिक देश में स्थित एक स्थान का नाम ।

वाङ्मयः (५०) [व० त०] जनार का बीज ।

राष्ट्रपति (रक्षक) मन्त्रालय ।

शब्द: [दा + धञ्] 1 उपहार 2. वैवाहिक उपहार
3 भाग 4. बपौती, वरासत 5. सम्बन्धी, रिश्तेदार ।

सम० विभाग: संपत्ति का बटवारा ।

इति राधिकावन्दनम् । ग० त० । विवाहः ।

वाचस्पत्यसहितः (पु०) मोह

वाक्यान्तः (१०) लक्षणाः ।

वर्धमान् [३] निष् + उन् । १ कृता, धीवन्ता
२ कठोर, प्रतिकूल लक्षण मृग, पुष्प, ज्येष्ठा बीर
मूल ।

शरीर (वि०) जूए मे मबल, जला विषयक ।

वर्षिका (स्त्री०) एक प्रा० का मीमांसा का अर्थ ।

वासी (स्त्री०) [वास + जीप्] 1. वासवासी
2. हस्ती का पीसा ।

वाच्यं (वि०) (श्री स्त्री०) [दृश्य + क्त] १ पञ्च-
रीक्षा २ श्री पञ्चर पर पीसा जाय ।

वाप्यान्त (वि०) । दृष्टान्त-अर्थ । नादुष्य की सहायता
मे व्याख्या किया गया, उदाहरण देकर समझाया
गया ।

वार्त्तात्मिक (वि०) [दृष्टान्त + ठक] जो उपमा लेकर
किसी बात को समझाता है ।

उत्पत्ति: (५०) एक प्रकार का विष ।

वाक्यम्: (५०) एक वैयाकरण का नाम ।

वाजपेय (वि०) [दशरथ + ऋष] १. वन से सम्बन्ध
रखने वाला—महा० १२।८।३७ पर टीका ।

राजराज (वि०) [दशगणपतः - अम्] दत्त राजाजी के सम्बन्ध रखते वाला ।

वास्तवीकः (प०) । मासे पञ्चसुदं मिमसे आमयसि वीकुवा-

विषयताः शेषितः लक्षः] इत्यर्थ की स्त्री में ब्रह्म
पिता के द्वारा उत्पन्नित पुत्र ।

विषयताम् (नपुं०) [व० त०] नित्य का कार्यकर्म ।
विषयताम् (नपुं०) [विषयताम् + विषयम्] बाह्यविषय को
उत्पाद के तीन दिनों के साथ मेल जाता है ।

विषयताम् (नपुं०) सम्पादक ।

विषयताम् (नपुं०) उच० रात को दिन में परिवर्तन करना
—निशा विषयताम् नृप० ४३ ।

विषयताम् (नपुं०) [व० त०] दिन रात ।

विषयताम् (नपुं०) बौद्धधर्म का एक ग्रन्थ ।

विषयताम् (स्त्री०) यमा नदी ।

विषयताम् [विष् + वषट् + तान्] अपराध ।

विषयताम् [विष् + प्रत्यय] विषय की भांति होना ।

विषयताम् [विष् + प्रत्यय] विषयता, यामियों की किन्हीं
विशिष्ट दिनों में विषय दिनाओं में जाने का प्रति-
पेक्षक शब्द ।

विषयताम् (वि०) [विष् + तान्] 1. लक्षित, दृष्टा हुआ
2. विहित, उल्लिखित 3. निविष्ट, निवृत्त, —अः
(पुं०) समय, —अः (नपुं०) 1. विस्तृत 2. आगत ।

सम० वसतिः मृत्यु, वृत्त ग्यायकारी परमात्मा

—अः पुण्यति विष्टवृत्त भाग० ४२१।२३ ।

—अः (पुं०) परमात्मा, —अः (वि०) जो अपने
कर्मों का फल भोगता है ।

विषयताम् (स्त्री०) [व० त०] बर्बाद, अभिमान,
साधना ।

विषयताम् (स्त्री०) [विष् + प्रत्यय + टाप्] निवेश, अध्यादेश
—वैकुण्ठ विषयताम् प्राकृत धर्मशास्त्रमते—मी० नृ०
१०।१।१ पर शा० भा० ।

विषयताम् (स्त्री०) [विष् + तान्] दुर्बलता, बलहीनता ।

विषयताम् (नपुं०, स्त्री०, वा०) प्रेरित करना, प्रेरणाहित
करना—सायकमन्त्रविशेषात्तान् मं० १८।१२० ।

विषयताम् (नपुं०) उपनयन संस्कार से पूर्व अनुष्ठेय यज्ञ ।

विषयताम् (पुं०) शालग्रामयन्त्र ।

विषयताम् (पुं०) [व० त०] यज्ञ की स्तूपा ।

विषयताम् [विष् + प्रत्यय + तान्] शीघ्र, दीपक । सम०
—अः पुनः शीघ्र की ली, शीघ्र की ली, —अः शीघ्रताम्
शीघ्र की स्थायी, अः शीघ्र, शीघ्र रखने की
शक्ति ।

विषयताम् (वि०) [विष् + तान्] 1. यज्ञ हुआ, प्रकाशित, पुनः-
साया हुआ 2. उत्पन्नित, प्रदीप्त 3. उज्ज्वल, —अः
(पुं०) 1. विष् 2. शीघ्र का वेद, —अः (नपुं०) शीघ्र ।
सम० अतः शीघ्र, —अः शीघ्र निमित्त एवं वास्तविक
परिणाम, —अः (वि०) विषयताम् अपना यज्ञ
निर्वह कर दिया है ।

विषयताम् [विष् + प्रत्यय + तान्] 1. शीघ्र की विषयता

2. 'दीपक' नाम का एक यज्ञकार, यज्ञी का दूसरा
नाम ।

विषयताम् [व० + प्रत्यय + तान्] 1. सम्पाद, दुरागामी
2. वेद तक रहने वाला, टिकाऊ 3. गुरा 4. शेष ।
सम० अतः (वि०) बड़े कदाओं से युक्त (युन)
—अतः (वि०) निहाय करने वाला, शेषित, शेष-
वान, —अतः शेषित, —अतः (पुं०) एक शक्ति
का नाम, शेषित (वि०) जो वेद तक वेद-विरोध
रक्षता है, अतः 1. यज्ञा 2. एक प्रकार का
लक्ष्य, —अतः शेष, शेष (वि०) सभी युवाओं
वाला, शेषित, शेषित, मगरमच्छ ।

विषयताम् [वृत् + प्रत्यय] 1. अवसन्नता, कष्ट, पीडा 2. कठि-
नाई, अनुविधा । सम० अतः विपत्ति, कष्ट,
जीविताम् (वि०) कष्ट में जीवित व्यतीत करने
वाला—अतः तीन प्रकार का वृत्त भाविनीति
भाविदेविक और भाव्यात्मिक, —वृत्तम् (अ०)
बड़ी कठिनाई के साथ, —वृत्तम् (वि०) 1. जिसे
दुःख पर दुःख उठाने पड़े 2. जो दूसरों के दुःख
से दुःखी हो, लक्ष्य (वि०) जो कठिनाई में काटा
जा लगे ।

विषयताम् (वि०) [वृत् + प्रत्यय + तान्] आहत, दलित,
प्रेमान मं० २२।१८ ।

विषयताम् (पुं०) रेतामी पट्टा या जिर की पट्टी ।

विषयताम् (पुं० स्त्री०) [वृत् + प्रत्यय + तान्] 1. एक
प्रकार का बड़ा डोल 2. विष्णु 3. कृष्ण 4. एक
प्रकार का शिव 5. गवस्तर यज्ञ में ५१ वाँ वर्ष ।

विषयताम् (अ०) [वृत् + प्रत्यय + तान्] 1. वृत् + प्रत्यय
यह उपनयन 'वृत्' 'कटार' या 'कठिन' के वर्ष की
प्रकट करने के लिए नाम पर तथा किया पदों के पूर्व
गोष्ट जाता है । सम० अतः अतः अतः अतः
तान्, —अतः विष्णुताम्, लोकताम्, अतः
(वि०) जिसका गुप्त रहना कठिन है, —अतः
(वि०) शीघ्रताम्, अतः, जो मत्वा न जा सके,
—अतः (वि०) निर्जन, अतः, —अतः (पुं०)
1. कष्ट, नैतिक विद्या 2. जो, अतः (वि०)
जिसका वरदा कठिन हो, जिसकी समुद्र न किया
जा सके, —अतः दुर्बल, शीघ्र, —अतः (वि०)
जिसे विषयताम् न किया जा सके, जो किसी प्रकार
अपने मत्वा न किया जा सके, —अतः (वि०)
1. जिसे प्राप्त करना कठिन हो 2. अतः, जिसपर
आत्मन न किया जा सके 3. जिसका अतः करना
कठिन हो, —अतः (वि०) जो अतः के कष्ट
न हो सके, —अतः (वि०) जिसका गुप्त करीबान
हो, जिसका कोई फल न निकले, अतः (वि०)
जो अतः अतः पूर्वक शीघ्र रहें, जो अतः अतः

समीचीकृतानिम् (वि०) [दर्शनीयमान + इनि] जो अपने
सौन्दर्य का अभिमान करता है प्रमदी।

विपुला (स्त्री०) [वृष् + लप् + अ + टाप्] देखने की
शक्ति।

विपुल (वि०) [वृष् + लप् + उ] जो देखने का
शक्तिवान् है।

वृष् (स्त्री०) [वृष् + क्तिप्] १. वृष्टि २. आँख। सम०
—अवृष्टकः (वृगञ्चक) कटाक्ष, कमखी, —छत्रम्
(वृक्षत्रम्) पलक, —मिनीलम् (दुर्मिनीलम्)
आँख बिचाली, बच्चों का एक खेल, —प्रसादा (वृष्-
प्रसादा) एक नीला पत्थर जो अमन की भाँति प्रयुक्त
किया जाता है, लवणः वृष्टिमिलन, नखर मिलना।

वृष्टातुः (पुं०) [वृष् + आतुप्] वृष्टे।

वृष्टम् [वृष् + षप्] १. देखे जाने योग्य २. सुन्दर
३. काम का एक मंत्र जो देखने के उपयुक्त है (विप०
अर्थ)। सम०—इतर (वि०) जो दिखाई न दे
—स्वर्णित (वि०) आकर्षक रीति से रक्खा हुआ
जिससे सभी उसको देख सकें वृक्षस्थापितमृदुर्भ-
मिहानाश्वयुगाविनाम्—कथा० २४।१२।

वृष्टार (वि०) [वृ + त०] जिसका बल वा सामर्थ्य
प्रभावित हो चुका है—वृष्टारमय कप्रकान्ति रघु०
११।

वृष्टिः (स्त्री०) [वृष् + क्तिप्] १. नखर, देवता २. मान-
सिक रूप से देवता ३. जानना ४. आँख ५. सिद्धान्त
(दे० सर्वत्र)। सम०—वृष्टिः वृष्टि की कृपा, दर्शन
का अनुग्रह, —अवृष्टम् १ आँख की पुतली २ वृष्टि-
भोग, —रक्तः आँख द्वारा प्रेम/विश्वसित, —अवनामल-
रेण कीवृष्टोपवाः वृष्टिरात्र स० २।११-१२,
—संज्ञैः वारस्परिक अवलोकन-स्वभावि न निकृषिता
अवबोधितवर्धेन—महा० ७।

वृष्टवत् (पुं०) कवकी का ऊपर का पाद।

वृष्टारम् [वृ + त०] जोड़ा—वृष्टारस्तस्वामृतमपि
—स० वी० १।५२।

वै (वि०) [वि + षप्] १. दिव्य, स्वर्गीय २. उज्ज्वल
३. वृक्षनीय, मागनीय, कः (पुं०) १. देवता २. वर्षा
का देवता ३. दिव्य मनुष्य, शास्त्रम्—दे० भूदेव
४. देवर, पति का भाई, कम् (नपुं०) ज्ञानेन्द्रिय।
सम०—वैरवम् १ देवों के प्रति उपहार २. वैर—महा०
१३।८१।१७ परडीका, कुकुम्भ दशम्यपी,—आतम्,
आतम् १ वृक्ष की कन्दरा २. सर्वोदर ३. नखिर
का निकटवर्ती आकाश,—वाय्वारी क्षीतिलालम् में एक
रात्र का नाम, आतः मृत-श्रेष्ठों की भेषी जो उग्रमात्र
सिद्ध करती है,—वैरवम् बल के उपहार से देवों की
तृप्त करना,—वैरव (वि०) जो देवताओं का भवि-
ष्य ज्ञेय, उनके भाग्य से विज्ञा हो,—विश्वम् देवों

का रथ, विमान, नक्षत्रम् दक्षिणी विद्या में पशुके
भीरव नक्षत्रों का नाम,—विश्व नास्तिकता,—विश्व-
लम्ब देवताओं को उपहार देने में प्रयुक्त (वृक्ष, माता
आदि),—पुरोहितः १ देवों का अपना पुरोहित
२ वृक्षस्थित वृह—प्रवृत्तः (वि०) प्रकृति से उत्पन्न
(जल आदि), भोग, स्वर्गीय भाग, स्वर्गीय हर्ष,
माया दिव्य भ्रम तां देवमायाभिः वीरयोहिनीम्
भाग० १० मार्ग १ वायु, अन्तरिक्ष २ नृपा
देवमार्ग च रजितम् रा० ५।१२, इन्द्रः परी-
क्षिन् का विशेषण,—लम्बम् शास्त्रात्म्य का विद्वत्, यज्ञो
पवीत लम्बम् दिव्य सभाई,—वृ. वायु काय—भाग०
४।२५।५१।

वैरव (वि०) [वि + तभ्यत्] नृप में शीघ्र पर
लगान योग्य।

वैरवपुराणम् (नपुं०) एक उपपुराण का नाम।

वैरवानलम् (नपुं०) एक महापुराण का नाम।

वैरवाहात्म्यम् (नपुं०) मार्कण्डेय पुराण का एक भाग
जिसे सप्तशती कहते हैं।

वैरव [वि + षप्] १ स्वान २ प्रवेश ३. क्षेत्र ४. प्रालम्ब
५. विभाव ६ लम्बान ७ अन्धविज्ञ। सम०—अवृष्टम्
कहो, देख में भ्रमण करना,—कण्ठः सामाजिक
बुराई, देख की प्रगति में बाधक, काष्ठ (वि०)
जो व्यक्ति कार्य करने के लिये स्वान और समय को
जानता है, विद्वत् (वि०) ठीक तरह से विज्ञा हुआ
(मोती) बर्षक की सापेक्ष स्थिति के आधार पर
बना गोल बेरा।

वैरवः [वि + षप्] तक्षक, नायक, अनुबोधक।
सम० पटुम् (नपुं०) छत्रक, सुम्नी।

वैरवविष्णु (स्त्री०) अम्बापिका के रूप में देवी, कलिका
का विशेषण।

वैरव (वि०) [वि + तभ्यत्] इक्षित वा संकलित किसे
जानने के योग्य।

वैरव—वृष् [वि + षप्] १. काया, शरीर २. व्यक्ति
३. रूप। सम० अलकः मृत्,—कृष् १. पौष तरुण
२. मित्रा अमरमयस् देहकृष् भाग० १।७।४,
—लम्ब (वि०) शरीर भारी, मुर्तोरुप वारम् करने
वाला, वाक्ता मृत्यु,—मौक्त मृत्यु,—वृष्टवम् शरीर
का प्राक्कन पीनक करना,—विश्ववत् मृत्यु,—वृष्टवम्
मर्त्य,—वृष्टारः मर्त्या।

वैरिका (स्त्री०) एक प्रकार का कीड़ा।

वैर [वि + षप्] 'अजीवोम' वक्त्र की दोहा
केने काँटा।

वैर (वि०) [वि + षप्] शीघ्र से सम्बन्ध रखने
वाला।

वैर (वि०) [वैर + षप्] १. देवताओं के सम्बन्ध रखने

वाला 2 दिव्य, स्वर्गीय 3 माय्य पर निर्भर । सम०
—इण्य (वि०) बृहस्पति के लिए पुत्री, ऊँडा
‘देव’ विवाह की रीति के अनुसार विवाहित स्त्री,
विष्ठा माय्यवाह,—रक्षित (वि०) अन्तर्गत,
नैतिक, —रक्षित (वि०) देवों से जिसकी रक्षा की
गई है—अरक्षित लिखित देवरक्षित—भुवाच०, बिम्
(पु०) ग्योतिषी, —हृत (वि०) जिससे देव भूषा
करते हों, भाग्य का भारी ।

वैतसलरिम् (स्त्री०) गंगा नदी ।

वैरक्षिक (वि०) [विरक्ष + ठक्] एक दिन में दो
घटित हो ।

वैराक्षरि (पु०) 1 यनि ग्रह 2 यम 3 यमुना नदी ।

वैरिक्त (वि०) [देख + ठक्] गुरु के द्वारा राक्षा
प्राप्त ।

वैरिक्तम् (नपु०) एक छन्द का नाम जिसके प्रत्येक चरण
में तीन भगण और एक गुरु की मिला कर दस
वर्ण हों ।

वैराक्षलचित्सुलि (वि०) जिसका मन हिंसे की
भाँति इधर उधर झूल रहा है ।

वैराक्षलचयम् (नपु०) एक प्रकार का यन्त्र जिसके द्वारा
कुछ ओषधियाँ तैयार की जाती हैं ।

वैराक्षल (वि०) अनिश्चित ।

वैरु (पु०, नपु०) [दम्पतेऽनेन दम् वोरसि अर्धर्वा०]
[‘वैरु’ शब्द को विकल्प से द्वितीया विभक्ति के
विक्रान्त के पश्चात् ‘वैरु’ आदेश हो जाता है]
1 भुजा 2 किसी वय या त्रिकोण की भुजा 3 अठान्
हैच की माप मास० १०।१४ ।

वैरुदुःखलीलता (स्त्री०) गर्भावस्था का बोझा—उपेय
ता दोहदुःखलीलताम्—रघु० ३।६ ।

वैरुदरी (स्त्री०) बृहस्पति और शुक्र ग्रह का चन्द्रमा के
साथ सयोग—जातकी के लिए अत्यन्त मङ्गलमय-
समझा जाता है ।

वैरुज (वि०) [वृज + अण्] दुष्ट पुरुष से सम्बन्ध ।

वैरुजिक्तम् (नपु०) [वरिज + अण्] अकाल पड़ना,
भुजिक्त होना ।

वैरुजम् (नपु०) [वृज + अण्] आश्रय न मानना ।

वैरुजम् (नपु०) [वृज + अण्] दुःखद स्थिति ।

वैरुजिकः [वैरु + ठक्] प्राकृतिक वृषों का माली
नै० ६।६१ ।

वैरुजः [व० स०] इवाई मार्ग ।

वैरुजम् (नपु०) वृष ।

वैरुजम् (पु०) इन का बोझ, उर्ध्व अवा ।

वैरुजम् [विरु + क्त, अण् अर्धर्वा०] 1 भुजा लेटना,
पानी में लेटना 2 बुद्ध, सन्न्यास 3 जीता हुआ
पारितोषिक । सम० वर्षः भूजा लेटने के नियम,

—अण्डम् भुजावर, — वैरुजः जो बूँद के जोड़ के
प्राप्तोक्त लिखता है ।

वैरुज (पु०) स्वर्ग, वास्तुकार, तीर्थचिह्नी ।

वैरुजः,—वृज नगर, पुत्री राज० ।

वैरुज (वि०) [वृ + अण्] 1 बीड़ता हुआ, बहता हुआ
2 चूटा हुआ, टपकता हुआ, बूँद बूँद गिरता हुआ ।

वैरुजः (पु०) [वेद०] वातुजा को गलाने वाला ।

वैरुजिक्तम् (पु०) द्विदि देश का पुत्र, सैवर्धप्रदाय का
एक सन्त दयाकरया दान द्विदिशिशुरास्वाद्य तन
यत् सौम्यम्० ।

वैरुजोदः (पु०) अग्नि, भाग ।

वैरुजोदः [व० न०] वन की प्राप्ति ।

वैरुज [वृ + यत्] अन्वेद का मन्त्र जो शाम के रूप में
प्रयुक्त किया जाता है—द्रव्यशास्त्रसु छन्दोर्वैः अण्ड
आचमन में म० ७।१।१४ पर शा० वा० । सम०

वैरुजः वन कायं के लिए प्रयुक्त पदार्थ की
पवित्रता ।

वैरुजम् (वि०) दर्शनाभिलाषी, देखने का इच्छुक
(पाणिनि के अनुसार ‘काम और मनस्’ के पूर्व ‘युग्’
के ‘म’ का लोप हो जाता है) ।

वैरुजम् (वि०) दे० ‘वैरुजम्’ ।

वैरुजम् (नपु०) अपने अधिकतम वेग के बिन्दु से बह
की दूरी ।

वैरुजम् (पु०) काव्यशैली का एक प्रकार जिसमें रचना
सरल और मधुर हो (विप० नारिकेलपाक) ।

वैरुजम् (पु०) जगुरा की लराव जो पुष्टिवर्धक के रूप में प्रयुक्त
होती है ।

वैरुज (वि०) [दीर्घ + इच्छन्] सबसे लम्बा, अत्यन्त
लम्बा,—वृ० (पु०) रीक ।

वैरुजम् (वि०) लम्बे पैर वाला ।

वैरुज (वि०) [व० स०] दूत गति से जाने वाला ।

वैरुजम् (वि०) [व० स०] दूत गति से जाने वाला ।

वैरुजम् (वि०) [व० स०] दूत गति से जाने वाला ।

वैरुजः [वृ + अण्] 1 वृक्ष 2 कल्पवृक्ष 3 कुबेर
का विशेषण । सम० अण्डम् कर्मिकार वृक्ष, कर्मिकार
का शीघ्र शब्दः,— वृक्षः वृक्षों की बाटिका, वृक्ष,
— विर्यासः वृक्ष का रस, लोभान, वासिन् (पु०)
वृक्षः ।

वैरुजम् (वि०) [वृ + अण्] 1 वृक्ष 2 कल्पवृक्ष 3 कुबेर
का विशेषण । सम० अण्डम् कर्मिकार वृक्ष, कर्मिकार
का शीघ्र शब्दः,— वृक्षः वृक्षों की बाटिका, वृक्ष,
— विर्यासः वृक्ष का रस, लोभान, वासिन् (पु०)
वृक्षः ।

वैरुजम् (वि०) [वृ + अण्] 1 वृक्ष 2 कल्पवृक्ष 3 कुबेर
का विशेषण । सम० अण्डम् कर्मिकार वृक्ष, कर्मिकार
का शीघ्र शब्दः,— वृक्षः वृक्षों की बाटिका, वृक्ष,
— विर्यासः वृक्ष का रस, लोभान, वासिन् (पु०)
वृक्षः ।

वैरुजम् (वि०) [वृ + अण्] 1 वृक्ष 2 कल्पवृक्ष 3 कुबेर
का विशेषण । सम० अण्डम् कर्मिकार वृक्ष, कर्मिकार
का शीघ्र शब्दः,— वृक्षः वृक्षों की बाटिका, वृक्ष,
— विर्यासः वृक्ष का रस, लोभान, वासिन् (पु०)
वृक्षः ।

वैरुजम् (वि०) [वृ + अण्] 1 वृक्ष 2 कल्पवृक्ष 3 कुबेर
का विशेषण । सम० अण्डम् कर्मिकार वृक्ष, कर्मिकार
का शीघ्र शब्दः,— वृक्षः वृक्षों की बाटिका, वृक्ष,
— विर्यासः वृक्ष का रस, लोभान, वासिन् (पु०)
वृक्षः ।

शीर्षिक (वि०) [श्रीहृ+ठक्] सर्वत्र वृणा का पात्र ।

इण्डम् [डो डी सहाभिव्यक्ती-हिसव्यस्य हितं पूर्वपदस्य अन्वाय, उत्तरपदस्य मनुसकाय—वि०] एक और, एकान्त स्थान, इण्डे होतस् वक्तव्यम् रा० ७। १०३।१३, —आकाशः यो व्यक्तियो के मध्य बाटलाय, —सर्ग (वि०) बहुव्रीहि समास जिसके मध्य इन्द्र निहित हो, - कुञ्जम् हृष और शोक आवि की परस्पर विरोधी भावनाओं से उत्पन्न दुःख ।

द्वारे (वि०) [द्वार्+ग] दरवाजे पर लगा हुआ ।

द्वारम् [द्व+गिन्+अच्] १ दरवाजा २ प्रवेश द्वार ३ शरीर के नौ द्वार । सम०—बह्विः (पु०) चौकट, —अरविः किबाब का पद या एरला, बसाः सरदल ।

द्वि (स वि०) [द्व+डि] दो । सम० अन्तर (वि०) दो वटको द्वारा अन्तरित, अन्तर (वि०) म्यूनातिन्मून् दो,—आन्तर (वि०) दो बार वणित आहिक (वि०) हर तीसरे दिन होने वाला (बुधवार), —एकान्तरम् एक अश या दो अश से विद्युक्त द्वय काम्तरासु जाताता धर्म्य विद्यादिम विधिष—मनु० १०।७, —कर (वि०) दो प्रयोजन पूरा करने वाला, —कायवर्षिक (वि०) दो कायोग के मध्य वा —चन्द्रबीः बाल में खगली के कारण दो चन्द्रदर्शन

की भालि, ज बहुवारी, जातिः जिसके दो परित्या हैं, कालबद्धः १ वा और बँटे काल २ जिसमें अपने बालो को कंधी करके दो भागों में बाँट दिया है, बह्विः मनुष्य कथा० ५३।१४, —आतम् सध्या समय, —भुमि (ज०) दो मृनि पाणिनि और कात्यायन, बध्मः दो मृह बाला मीप, बर्ग प्रकृति और पुरुष का जाका, ब्याम (वि०) बारह फुट लम्बा (ब्याम ६ फुट), ब्य, —(ब्य) (वि०) दो अर्थ प्रकट करने वाला—प्रबन्धि व द्विष्टानि वाक्यानि मी० मू० ३।३।६ परवा० जा० । द्विक (वि०) [द्वि+क] १ दोहरा दो नह का २ दूसरा ३ दूसरा बार पठित होने वाला—कः १ कीबा २ चक्रवाक पक्षी । सम० पृष्ठ दो कूज वाला ऊँट । द्वितीयगामिन् (वि०) जा दूसरे पदार्थ पर घटना हा द्वितीयगामी न हि शब्द एव न मनु० ३।६९ ।

द्वेषस्व (वि०) वृणा करने वाला । द्वेषवासिन् (वि०) टापी पर रहने वाला, बाली (पु०) मरुजरीट पक्षी । द्वेषीकरणम् (मपु०) वा भाग करना । द्वैतकाम्यम् (वि०) सहाकालता एककाम्य) दो दिन तक अनुष्ठान चलने रहने की विशेषता ।

ध

धर्मिणि (ज०) एक क्षण में, अवस्थान ।

धनम् [धन्+अच्] १ सम्पत्ति, दौलत वाग कया पैसा २ कोई भी मूल्यवान् सामान, धियनम राय ३ लूट मार का धन ४ पारितोषिक ५ धनिष्ठा नक्षत्र ६ धमा का चिह्न (वि०) ऋण । सम० आदानधन धन ग्रहण करना, धान्ता (स्त्री०) धन की इच्छा धान्यम् रुपया पैसा तथा अनाज, धू (पु०) धिशाखी पूँछ वाला किरौला नामक पक्षी धू (स्त्री०) वह माता जिसके कन्याएँ ही हों ।

धनिम् (वि०) [धन+डि] वैश्य जाति ऊँडा धनिनी राजन्—महा० १२।२९।६ ।

धनुस्तनम् (मपु०) योगशास्त्र में बजित एक काविक मुद्रा ।

धनुर्बहम् (मपु०) एक माप, २७ अंगुल की माप एक हस्तपरिमाण की माप ।

धन्यम् [धन्+त्यट्] १ धन्य २ उन्नतम् ३ धन राशि ।

धन्यवान् (ना० वा०) धन्यमाना, निगल जाना ।

धर [धृ+अच्] तलवार । सम० धम् (मपु०) विष, चहर ।

धरणीतलम् [धृ० त०] धरती की सतह ।

धरणीबिडोज (पु०) [धृ० त०] राजा ।

धरा [ध अच् टाप्] पृथ्वी धरती । मत उपस्थ (पु०) पृथ्वीतल धरती की सतह ।

धरिणीम् (पु०) [धरिणी—धृ+विद्य] राजा ।

धर्म [धृ धन] १ किसी जाति के परम्परागत अनुष्ठान २ मित्र व्यवहार प्रथा ३ नैतिक गुण ४ गण सभाई वाग पुराणों में मे गक ६ कन्य ७ न्याय ।

सम० अलसर्ध पवित्र भद्र, आत्म्य का नियम, अपवेषः धर्मानुष्ठान का वहाना धर्मापेक्षात् राजतन्त्र राज्यम् रा० ५।१८ धर्मम् विधि का

क्रम अहम् (मपु०) काल जा बीत चुका, जाक-नध रामायणकी एक टीका का नाम—ईप्सु (वि०) बागलाभ प्रत्यर् करने का इच्छुक उपवासिन् (वि०) धर्म्युद्ध धार्मिक,—छल्ल धर्म का कष्टपूर्ण उल्ल-

क्षण, धर्मिका धर्मविज्ञा का जालक, धर्मिणाः हृदय में मयाकरण का उद्भावन, प्रसिद्धकः कपट-गर्भ छप कर्म,—धनान (वि०) धर्मिणाधर्म में

मूल्य प्रेष (वि०) धार्मिक, मृणी, कष्ट (वि०) धर्म से पराङ्मुख, धर्म विरोधी,—धुडिः आचरण की

पवित्रता, —सत्यः नैव दायिम्, —सुखम् अस्मिन्निष्ठ
 पूर्वकीर्त्या पर लिखा गया इत्यम् ।
 वषट्पञ्च [वृष् + ष्युट्] १ शास्त्र, पृष्टता २. हृत्पना, परा-
 ज्ञप् - वषण यम न प्राप्ती रावणो राजसेधवर - रा०
 ७।३।१।३ ।
 वासुः [वा + तुन्] १. पटक, वषट्पञ्च २ तत्त्व, प्राथमिक
 इत्यम् ३ रस, अर्कः । सम० गर्भः, — स्तुषः प्रत्य रत्नने
 का पात्र, —वृष्य पिसा हुआ सनिज पदार्थ, —प्रत्यस्त
 (वि०) रसायन कार्य में व्यस्त ।
 वासुकः, कम् धिलाजीत ।
 वासु (५०) [वा + तुन्] भाग्य, किस्मत ।
 वासीपुष्पिका (स्त्री०) एक वृक्ष का नाम ।
 वास्यन् [वास + यन्] अनाज, अन्न । सम० लाल-
 झान, चीरः अन्न चुराने वाला मुष्टिः मुट्टी भर
 जमाज ।
 वास्यन्मिन् (वि०) [वासन् + मान + इनि, नलोप]
 भौतिक सत्ता में विश्वास रखने वाला — नैवेदितु प्रम-
 भून् ईश्वरी धामधानिना भाष० ३।११।३८ ।
 वासयन् (वि०) [वास + यन्] अस्तिशान्ती, प्रवृत्त
 पुरस्सरा वासयना यशोयना कि० १।४३ ।
 वाय्वा (स्त्री०) [सामिबेनी ऋ या मयिदाधाने पठयन्]
 १ यज्ञाग्नि को सुनगते समय गाया जाने वाला
 प्रार्थना मन्त्र २ इत्यन् कोषाग्नी निजनातनिग्रहका-
 धाम्याममुरोपिते राम० २।६, नै० १।५६ ।
 वायव्य [वृ + गिन् + ष्युट्] पीडा को शांत करने के
 लिए मन्त्र । सम० वन्धव्य एक प्रकार का ताबीज ।
 वायवा [वृ + गिन् + यन् + टाप्] योग का एक अङ्ग ।
 सम० आत्मक (वि०) जो अपने आपको आत्मानो
 में स्वरचरित या प्रशान्त कर लेता है ।
 वायविष्णुता [वृ + गिन् + इष्णुन् + तल्] सहनशक्ति,
 सहिष्णुता ।
 वाया (स्त्री०) मालवा देश की एक नगरी ।
 वाया [वृ + गिन् + अङ् + टाप्] १ पानी की धार,
 गिरते हुए किसी तरह पदार्थ की पक्ति २ बौछार
 ३ लगातार पक्ति ४ धरे में छिद्र ५ किसी वस्तु का
 किनारा । सम० —आत्मतः अवर, फिरकी, —ईश्वरः
 राजा भोज, संवातः लगातार बौछार, —गीत (वि०)
 धारोष्ण दूध ठंडा किया हुआ ।
 वायिकः [वयं + ठक्] १ न्यायकर्ता २ वनविष, कट्टर-
 पक्षी ३. बाजीगर ।
 वायित् (५०) [वा + तुन्] दोड़ने वाला चौबोदार
 बाजितार चुरङ्गी — महा० ११।२६।५ ।
 वायि (वि०) [वा + क्त] १ रक्सा गया, अर्पण किया
 गया २. लघुपट, प्रत्यम् ।
 वायिवाः [वाय् + वप् + वञ्] अर्धनापूर्ण उचित, निष्ठा ।

विचिन्त (वि०) [वचि + स्वा + क्त, वे० पिधान]
 १ सुस्थापित २. चाई में सुरक्षित — चाखो वैहायर्ष
 वापि लघुपट्पुष्पिष्ठः — महा० ३।१५।३ ३. ठहरा
 हुआ, निश्चित ।
 वीः [वृ + माघे विष्पु सप्रसारण व] १. बुद्धि २. मन,
 ३ विचार ४ कल्पना ५. प्रार्थना ६. यज्ञ ७. (अन्ध-
 कुहरी में) लम्ब से पाँचवीं घर । सप्त० — विचित्रः
 वृष्टिप्रम ।
 वृन्धुक् (नपु०) १. लकड़ी में विशेष प्रकार का
 दोष २ वृक्ष के तने में छिद्र जो उसके लम्ब का
 चिह्न है ।
 वृन्धुः, रो (स्त्री०) एक प्रकार का वाद्ययंत्र, लवीत-
 उपकरण ।
 वृन्धवाहः (५०) बोझा होने वाला जानवर ।
 वृन्धता [वृन्ध वहति यन्, तस्य मावः, तच्छ] नेतृत्व ।
 वृन्धकः (५०) ओढान ।
 वृन्धुः जिसने तीनों गुणों को पार कर लिया है, जो अथ
 भौतिक सुखों से परे पहुँच गया है, सत्यासी ।
 वृषः [वृष् + जन्] १ मुगन्ध २ मुगन्धयुक्त बाण या वृक्षा ।
 सम० — नैवेद्य वृषानलिका, हुक्के की नली, बर्तितः
 एक प्रकार की सिरपेट ।
 वृषः [वृ + जन्] १ वृक्षा २ बाण ३ कुहरा, वृष । सम०
 यकृत (वि०) वृष के कारण अर्थात् हुआ,
 — निगमनम् चिमनी जिसमें से वृक्षा निकलता है,
 बहिष्ठी वृष, कुहरा, — धोनिः बादल ।
 वृषरी (स्त्री०) वृष, कुहरा ।
 वृष [वृष तद्वर्ण गति रा + क्त] १ वृष के रंग का २ मूत्र
 — ऋः ऊट ।
 वृषिचूलितः (वि०) मिट्टी में लोटेने से भूरा हुआ — गोधूलि-
 वृषारिणकोमलकुन्तलाग्रम् कृष्ण० ।
 वृ (भा०, मुद्रा० का०) इरादा करना, मन करना ।
 वृत् [वृ + क्त] सकस्य किया हुआ, बुद्ध, — रिपुनिबन्धे वृत्तः
 — रा० ४।२७।४७ । सम० — उत्तेज (वि०) बलवती,
 — एकवर्षि (वि०) एक चोटी घाटी — वि० ७।२१,
 यमं (वि०) गतिशील, — बालस पक्के इरादे वाला,
 बुद्धिमान ।
 वृत्तिः [वृ + क्त] १ एक छन्द का नाम २. बख्तरह की
 सख्या ।
 वृत्तकेतुः (५०) वृष्टवृत्त के पुत्र का नाम ।
 वृष्टवर्षिन् (वि०) निर्भीक होकर बोझने वाला ।
 वृन्धुः [वयाति वृत्तान् — वे + नृ, इण्] १. गाय २. दूध देने
 वाली गो ३ पृथ्वी ४ घोड़ी मी० सू० ७।५।७ पर
 ता० भा० ।
 वृन्धुका (स्त्री०) १. हथिनी २. दुग्धाक माव ३. उपहार
 ४ लव ५ पार्वती ।

वेध (वि०) [वे+ध्व] कार्य में धीमेपन, प्रबोध्य,
—अन्त्ययार्थ इत्युत्तरवेध कर्म— शि० ५:१० ।

वेधन् [वीरस्य नाभः— ध्वज] १. वृद्धता, क्षाण्ड्य, टिकाक-
पन २. स्तम्भितता, प्रक्षालित ३. तादृश । सम०
—कर्मण (वि०) वीर, मज्जन्, —वृत्तिः वीर्य से
पूर्ण आचरण ।

वेध (वि०) [वाध्+ध] १. बोधा हुआ, प्रक्षालित,
स्पर्श किया हुआ २. उन्मत्त किया हुआ, चमकाया
हुआ ३. उन्मत्त, चमकीला । सम०—अपाङ्ग (वि०)
चिह्नकी कमखिया चमकीली हो, आत्मान् (वि०)
पवित्र हुन बाता ।

वेधिन्यु [वीरि+उध] लैन्धन, पहाड़ी नमक, काहीरी
नमक ।

वेधकः (पुं०) एक ऋषि का नाम ।

व्यसनियन्त्र (वि०) ध्यान का सम्पादन करने के योग्य ।

व्यसनमुद्रा [व० उ०] ध्यान का चिन्तन करने की विशेष
विधि या मुद्रा ।

व्यूह (वि०) [व्यू+ह] विचार, अचक, स्वाधी, अनिवार्य,
—क (पुं०) १. बूटी—नाम २. व्योमिष का एक
बोध ३. युद्धविशु ४. व्यूह छारा,—व्यू (नपुं०)
निश्चित किया विन्तु, —का (स्त्री०) वन्य की डोरी ।

व्यूह—केवल एक प्रकार की उन्मत्त, दृढ़ता द्वारा छारा,
—व्योमिष निश्चित मार्ग,—अन्त्ययार्थ प्रवीर्य लैन्धन,—व्योमिषः
व्यूहों की छारा, व्योम (वि०) विहता आवाह
निश्चित है ।

व्यूहः [ध्वज्+ध्वज] १. अचःपतन, वृद्धता २. मुष्ट होना,
बोझक होना ३. नाच, विनाश, संहर । सम०
—अवाधः पदार्थ के विनाश से उत्पन्न अवाध या
सत्ताहीनता,—कारिन् (वि०) १. नाच करने वाला
२. उत्सलन करने वाला ।

व्यूहस्तम्भ (वि०) [व० उ०] विहारी व्योम दृष्ट नई हों
(वैसी कि मृत्यु के समय) प्रकीर्णकें व्यस्तान्
—वाय० ७:२:३० ।

व्यूहः [ध्वज्+ध्वज] १. व्यूह का एक भाग २. व्योम,
३. पुण्य व्यसित ४. व्योम की वृष्टि ५. चिह्न, प्रतीक ।
सम० आरीहृन्मन्त्रं कहराना, आरीहृः हरे पर
एक प्रकार की सजावट, उन्मत्तः मूर्तता, पाश्वर ।

व्यूहिन्यु (वि०) [ध्वज+इनि] मूर्त, पाश्वरी—नाम०
१:२:१५८:१८ ।

व्यूहिन्याना (स्त्री०) १. वीर्य २. एक प्रकार का लम्बोत्तर
डोक, ठाका ।

व्यूहिन्यानाम् राशि का आचरण, अचकार का समूह ।

ज

जंघ (वि०) [जंघ्+जंघ] हाथिकारक, विनाशक ।

जंघा [हस्तिक विकसित से हंसा—नयन्ती हंसा येना से
जंघाः] अपने बगलों पर डूबा करने वाला गृहा०
१:१७:११५ पर टीका ।

जङ्गलः [जाति कुल वन्य, समावे नमो नलोप प्रकृति-
आवाह] नीच कुल में उत्पन्न—मनुकः पाण्डुत्वमे
कर्मवृत्तमहीनमः—नामा० । सम०—ईकः तापिक
वृक्षा की एक रीति,—देवी लोप—मनुकदेवी तथा
किङ्कनः—नाम० ।

जङ्गल्य (वि०) [जङ्गल+तन] राशि से संबन्ध रखने
वाला राश का ।

जङ्गल्य (व० उ०) कामदेव ।

जङ्गल्यिका (स्त्री०) [व० उ०] जल की नमकी ।

जङ्गल्यु [जङ्गल्यि ध्वज्+ध्वज] १. छारा २. छारापुंघ,
३. मोटी ४. छारापुंघ मोटियों की बाका । सम०
—ह्विन् एक बल का नाम,—अन्त्ययार्थ (पुं०)
अन्त्ययार्थ,—मोक्ष जङ्गल की बाकावधि,—मोक्ष छारा
का प्रवेष्ट ।

जङ्गल्यु [व० उ०] नाचन अन्त्यय कराना, रंभा
कुलक रंभा ।

जङ्गल्यु (स्त्री०) पहाड़ी नदी ।

जङ्गल्यु

जङ्गल्यु (स्त्री०) वेरवा ।

जङ्गल्यु (पुं०) [जङ्गल+इनि] जङ्गल्यु ।

जङ्गल्यु (नपुं०) आसन तैयार करने के लिए उठाया गया
समीर, किष्कन ।

जङ्गल्यु (स्त्री०) नम्य रहने की प्रतिज्ञा ।

जङ्गल्यु (पुं०) चारण, भाट, स्मृति पाठक ।

जङ्गल्यु (पुं०) संगीत शास्त्र में वर्णित एक राग ।

जङ्गल्यु (वि०) [जङ्गल+तन] नाटक के पात्र की भांति
व्यवहार करने वाला ।

जङ्गल्यु (पुं०) एक प्रकार की मछली ।

जङ्गल्यु (वि०) [ज० उ०] मुकुटार, लम्बी—तस्याः
प्रविष्टा नतमानिरुपमं रराज तन्वी मयकोनराणि
—कु० १:३८ ।

जङ्गल्यु (पुं०) एक प्रकार का पत्नी—रा० २:५६:१५ ।

जङ्गल्यु (नपुं०) एक प्रकार का भाव ।

जङ्गल्यु [व० उ०] नदी का किनारा, नदी छट ।

जङ्गल्यु (वि०) [जङ्गल्यु+तन] नदी की
चार करने वाला ।

नदीधाम्नः [व० त०] नदी का जलधाम्नः ।

नदीनृक्षम् [व० त०] नदी का नृक्षाना, जहाँ से नदी निकलती है, नदी का उद्गम-स्थान ।

ननन्धपतिः [व० त०] ननदोई, पति की बहन का पति ।

नन्धकः [नन्ध + क्तृ] एक रत्न का नाम को०
अ० २।१११ ।

नन्धन (वि०) [नन्ध + क्तृ] धान्य देने वाला, प्रसन्न करने वाला, अः (पुं०) 1. पुत्र 2. येंदक, - ना (स्त्री) पुत्री, अन्ध इन्द्र का नन्दन बन् । सम० अन्ध पीली बन्दन की लकड़ी, - इन्द्रः नन्दन बन् का पुत्र, पारिजातवृक्ष, कल्पवृक्ष, - अन्धः दिव्य वाटिका, इन्द्र का उपबन्धन ।

नन्धिः (पुं०, स्त्री०) [नन्ध + इन्] तथै, प्रसन्नना, खुशी, दि (पुं०) 1. विष्णु 2. शिव 3. शिव का गण 4. (नाटक में) नान्दी का पाठ करने वाला । सम० देवी हिमालय का एक छोटी, - नागरी एक लिपि (लिखावट) का नाम पुराणम् एक उपपुराण, - वर्धन मित्र ।

नन्दिन्युत [नन्दिन् + न्त, नन्दीप] व्याधि मुनि ।

नन्दी (स्त्री०) [नन्दि + डीप्] दुर्गा देवी ।

नन्धि [नन्ध + इन्] पहिया ।

ननोक्ष्म (वि०) [नन्ध + अस्त्वं भश्चान्तादेश - व० स०] अन्धकारवृक्ष, काला ।

ननोवीची [नमस् + वीची] सूर्य का मातृ, इवाई मातृ ।

ननवचक (पुं०) [नमस् + चमस] 1. एक प्रकार का यन्त्रपाक 2. चन्द्रमा ।

नननासिक (वि०) [व० म०] चपटी और मोटी नाक वाला ।

नननम् [नी + क्तृ] 1. नेत्र करने 2. निकट ले जाना 3. आन । सम० अञ्चल 1. आन का कोना 2. कटाक्ष, कनकी, चरितम् 1. कटाक्ष, कनकी 2. दुर्कपात, दुष्टपात, अन्ध जायू, बुद्धबुद्ध आन का गोलक ।

नर [नृ + क्तृ] 1. मनुष्य 2. व्यक्ति । सम०—विष्णु मूर्ति, देव राजा ।

नरकचतुर्वर्ती दीपावली का दिन ।

नरकवासः (पुं०) नरक में रहना ।

नराक्षः (पुं०) एक छन्द का नाम ।

नरैकः (पुं०) एक छन्द का नाम ।

नरैकलोडः [नरैक + लोड, नरैक] 1. प्रेम के अः - चिह्न 2. मुहाला ।

नरैकालः [नरैक + आलाप, नराप] प्रेम बातें, प्रेमोद-प्रबोध की बातचीत ।

नरैकित (स्त्री०) [नरैक + उक्ति, नरैक] दृश्यपरक अभिव्यक्ति ।

नरैक (ना० वा०) रिक्ताना, दिल बहुलाना ।

नरैकितम् [नरैक + क्त] खेल, खेला ।

नरक (पुं०) [नर + क्तृ] 1. सबस्य 2. सम्बाई की माप या चार हाथ के बराबर होती है । सम०—सुखा एक प्रकार का जलीय जन्तु, बाक राजा नरक द्वारा तैयार किया गया स्वादिष्ट भोज्य पदार्थ ।

नरिका (स्त्री०) नन्दी ।

नरिनी (स्त्री०) [नर + निनि + डीप्] 1. कमल का पीवा 2. कमला में मुवागिन सरोवर 3. पुत्र 4. नवना 5. इन्द्र पुरा / गङ्गपुरी । सम०—अन्ध, -अन्ध कमल का पत्ता ।

नरहोषः (पुं०) एक टापू का नाम । यत्र वज्रा और जल हों के समान पर बगाल में एक स्थान है जिसे आत्रकल नदियाँ बहते हैं ।

नरवाद्यम् (नपुं०) मृत्यु के पश्चात् विषय दिनों में अनुष्ठित आद्य ।

नरीबाकः [नर + क्तृ + नृ + क्तृ] नवा होना ।

नरव (स० वि०) [नृ + कनिन्, वा० गृह] (व० व०) नौ नौ की सख्या । सम० कपालः नौ कपाल जैसे ठीकरों में पकाए हुए पिण्ड का उपहार, अन्ध (वि०) नौगुणा, नौ गह का, अन्धिका (स्त्री०) दुर्वादि की के नौ रूप (सैलपुत्री, इन्द्राचारिणी, चन्द्रवष्टा, कृष्णादा, स्कन्दमाता, कात्यायनी, महावीरी, कामराजि और सिद्धिदा), - वायुः (पुं०) नौ वायु (हेमचन्द्राचार्य तात्पर्यार्थ में टीकाकर्तृ) । कात्यक कान्तलोह व वालवो नर कीवितः), अन्धकम् विवाह के विषय में अन्धकृष्णों में एक अमगल योग जब कि दुल्हन की अन्धरायि हुई है की अन्धरायि से पौषर्षा नव हो ।

नरव (वि०) [नर + क्तृ] 1. खोवा हुआ, अन्धहित, ओझल 2. मृत, ध्वस्त 3. विह्वल, विगष्ट हुआ 4. अन्धित 5. अन्ध, -अन्ध (नपुं०) 1. नाश 2. अन्ध-पान । सम० अन्धः आश्रय मास की चतुर्विंशति जब कि चन्द्रमा का देवता निषिद्ध है, बुद्धि (वि०) अन्ध, जो (वि०) भूल जाने वाला, ध्यान न देने वाला, बीज (वि०) नपुंसक पुण्यहीन, अन्ध (वि०) अन्ध ।

नराक्षः (पुं०) एक प्रकार का कोवा ।

नराक्षः [न कम् अक्ष दक्षम तन्नास्ति यत्र] 1. स्वर्ग 2. अन्तरिक्ष 3. मृग । सम० नदी स्वर्गीय नदी, स्वर्गवा, भारी अमरा, -नोक्षः स्वर्गलोक, दिव्य-लोक ।

नराक्षः (पुं०) आध्यात्मिक मुनि ।

नराक्षः [न गच्छति इति अण, न अण इति नाव] 1. नीच 2. हाथी 3. बावल 4. विष्णु, -अन्ध 1. टीन 2. अन्ध 3. राजा 4. एक प्रकार का रतिवन्ध । सम०—आत्मा

(वि०) हाथी पर सवार, केषुः कर्ण का विशेषण,
—हीम्न नारत वर्ष का एक टापू, वास्तोर् (स्त्री०)
बहु स्त्री जिसकी सुन्दर बंधाई आकार प्रकार में हाथी
की लड़ से मिलती जुलती है, वर्षी वान का पीचा,
—कषः एक प्रकार का माय,— विष्णुः गङ्ग ।
नागरकः [नगर + क्त्वं, स्वार्थे क्त्वं] नगर पिता ।
नागरकाः परस्पर विरोधी ग्रह ।
नागरपुतिः [व० त०] नागरिकों की सिध्दता, सिध्दा-
चार, शालीनता ।
नागार्थिनः (पुं०) एक बौद्ध भिक्षक का नाम ।
नागोर्ध्वगः (पुं०) एक प्रसिद्ध वैद्याकरण का नाम ।
नाटकम् [नट + क्तृन्] 1. दृश्य काव्य 2. नाट्यरचना के
मुख्य दस भेदों में प्रथम भेद । सम० प्रबन्धः नाटक
करने की व्यवस्था, प्रबोधः नाटक का अभिनय
करना,—एङ्ग नाटक का रङ्गमञ्च, लक्षणम्, नाट्य-
रचना विषयक विविध नियम ।
नाट्यम् [नट + क्तृन्] 1. नाच 2. नाटक प्रस्तुत करना,
अभिनय करना 3. नृत्यकला 4. नाटक के पात्र की
वेषभूषा । सम० - अङ्गानि नृत्य के दस भाग
— अङ्गान् नृत्यकल, नाचघर,—रासकम् एक प्रकार
का एकाङ्की नाटक,—वेदः नाट्यशास्त्र या नाट्य-
कला का विज्ञान ।
नाडी [नट् + णिच् + इन् = नाडि + ङीप्] 1. पीच का
मलिकायस इष्टक 2. कमल का झोलला काण्ड
3. शरीर का मलिकायुक्त अंग (जैसे कि सिंग या
बमनी) । सम० कण्ठम् मूलाधार आदि शरीर के
स्नायुओं के तन्वी केन्द्रों का समूह, धाम्न् जलघडी,
—कषः ज्योतिष की नाडी धाम्ना पर एक पुस्तक ।
नाचकम् (नपु०) सिकका, मुद्राङ्कित कोई वस्तु । सम०
—परीक्षा सिकके को परखना, परीक्षिन् (वि०)
सिककों का पारखी, परीक्षक ।
नाचिस्तम् [नाच् + क्त] नाग, प्रार्थना ।
नाच्यस्वराज (वि०) [नट् + यञ् + क्तानच्] उच्च स्वर से
सज्ज करने वाला ।
नाच्य (म०) [न + नाच्] 1. मित्र-मित्र स्थानों पर,
मित्र-मित्र रीति से, विविध प्रकार से 2. स्पष्ट रूप
से, पुनर्क रूप से 3. बिना 4. (समस्त विशेषणों में
प्रयुक्त) बहुत से । सम० - आचार्य (वि०) जिसके
बहुत से आचार या घर हैं,—बोध (वि०) विविध
बोधों से सम्बन्ध रखने वाला, वर्णम् (वि०) मित्र
रीति-रिवाजों वाला,—चाय (वि०) मित्र प्रकृति
वाला ।
नाच्यकम् (नपु०) विविधता की स्थिति ।
नाच्यम् (वि०) [नचन + क्तृन्] सुख, हर्षप्रद — तैवा
विद्युत्निर्वाह हास्तवैद्यनाम्नम्— एङ् ० उप० ३।१२ ।

नाच्यकम् (वि०) [नचन + क्तृन्] वायु से संबन्ध
रखने वाला ।
नाचायः (पुं०) एक राजा का नाम, वैचक्षत मनु का
पुत्र, अम्बरवीर का पिता ।
नाचिः-धी (पुं० स्त्री०) [नट् + धीच्, धवचान्नाचिक्]
1. सुडी 2. सुडी के समान कोई भी वहराई—पुं०
1. पहिए की नाह 2. केन्द्र, मुख्य बिन्दु 3. सेत ।
सम० - नच्यः कस्तूरी की नू या नर्च,—वर्णम् अम्ब
हीर के नौ वर्णों में से एक ।
नाचोन्मः [न + आधोग] 1. देवता 2. सोप नाचोन्मोन्मो
हरिनाचिकट सोप्य मकरमानिब राजतीन्नु रा०
च० ६।८४ ।
नाचाचक्षेव (वि०) [व० म०] जिसका केवल नाम ही रह
गया है, मृतक ।
नाचकायसे (ना० धा० आ०) 1. नायक का अभिनय
करना 2. नाटियों के हार में केन्द्रीय रत्न या मणि का
काम देना ।
नाराच [नरान् आचारयि—आ + चम् + इ, स्वार्थे क्त्वं,
नारप् आचारमि वा] 1. पूर्वदिमा को जाने वाली
सड़क 2. मृत्ति को उसके स्थान पर जमाने के लिए
धातु की बनी चटखनी या कील ।
नारायणचक्रम् (नपु०) एक अम्ब का नाम ।
नारायणपुस्तकम् (नपु०) ऋग्वेद का पुनश्च सुक्त ।
नारीनाच (वि०) [व० म०] जिसके स्वामित्व अधिकार
किसी स्त्री के पास है ।
नारीचिः (स्त्री०) [म० न०] स्त्रीरत्न ।
नासायन्त्रम् 1. ताप 2. निगल, नाली ।
नासली (पुं०, द्वि० व०) [नासिन् अन्त्य यस्य, न० व०
नञ् प्रकृतिबद्धात्] दोनों अस्त्रिनीकुमार ।
नासात्मिक (वि०) [नासा + अत्मिक] नाक तक पहुँचने
वाला (लकड़ी आदि) ।
नासावेषः (पुं०) [व० न०] नाक का बीघना, नासिका-
वेष सस्कार ।
नासिक (पुं०) महराष्ट्र प्रान्त में स्थित एक पुण्यस्थान ।
नाहलः (पुं०) जातिच्युत समुदाय का व्यक्ति, जाति-
बहिष्कृत ।
नाहल्य (वि०) [व० म०] क्षत्रिय रहित ।
नाहल्य (वि०) [व० म०] निहड, निर्बल सकोशहीन ।
नाहल्य (वि०) [व० म०] सज्ज रहित, जहाँ कोलाहल
न हो ।
नाहल्य (वि०) [व० त०] सज्जहीन, जिसके पास कोई
हथियार नहीं ।
नाहल्य (नपु०) [निविचन धेव वि०] 1. मुषित, मोह
2. आनन्द 3. आह्ला, विस्माह ।
नाहल्य (वि०) [व० त०] निविचन, निविचन ।

निःसंग (वि०) [ब० म०] 1 अनासक्त 2 मुक्त 3 स्वा-
पराहित ।

निःसंख (वि०) [ब० म०] 1 असार 2 बलहीन 3 नगण्य ।

निःसीधम् (वि०) [ब० म०] सीमा रहित ।

निःस्नेह (वि०) [ब० म०] 1 कृता 2 भावशून्य ।

निःस्पर्श (वि०) [ब० म०] निश्चल, गतिहीन ।

निःस्पृह (वि०) [ब० म०] 1 इच्छारहित 2 सन्तुष्ट ।

निःस्व (वि०) [ब० म०] अर्थाहीन, निर्धन ।

निःस्वप्न (वि०) [ब० म०] निद्राशून्य राक्षस रहित ।

निःस्वप्न (पु०) [नि + स्वप् + अच्] शब्द, स्वप्न ।

निकटवर्तिन् (वि०) [निकट + वृत् + जिनि] निकटस्थ,
जो पास ही विद्यमान हो ।

निकषकः [नि + कृष् + क्यट्] द० 'निकष' कसीटी ।

निकषायित (वि०) [निकष + षयङ् + णिच् + क्त] जो
किसी बात के लिए प्रमाण या कबूतो मान लिया
गया हो (उदा०—बैदूष्यनिकषायितेय समा) ।

निकाशः [नि + काश् + घञ्] 1 प्रकाश 2 रहस्य- निका-
शस्तु प्रकाशे स्यात्प्रकाशे रहसि स्म्यन् नामा० ।

निकृष्टकर्मन् (वि०) [ब० म०] जो निष्ठ कार्यों के करने
में व्यस्त है ।

निकृष्टित (वि०) [नि + कृष्ट + क्त] क्रिये लब्ध कन्दन
किया हो शोर मचाया हो (द्रुपित स्वर से पाठ
किया हो) ।

निकृष्टित (वि०) [नि + क्षिप् + क्त] निरुक्त ।

निकृष्टितेन (अ०) पूर्णतः, सब मिलाकर ।

निपाद्य [नि + गद + घञ्] सम्बर पाठ ।

निपाद्य [नि + गद्य + अच्] 1 पतिज्ञा स्वनिगममहाय
माश्रितज्ञा कर्ममधिकर्ममवाक्यता भाग० १।१।३३
2 प्राप्ति—पन्था मधिगम स्मृत भाग० १।१।
१।१४२ ।

निपाद्यवृत्तम् (नपु०) वह सूत्र जो किसी अनुमान वाक्य
का उपसहार करता है ।

निपाद्यत् (अ०) सारांश में संक्षेप से भाग० १०।१०।३३ ।

निपाद्य (अ० पर०) टिप्पणा, गुण रचना ।

निर्गोपचारिन् (वि०) [न० म०] अज्ञात होकर घूमने
वाला ।

निर्गोपचारक. (पु०) शिष्य ।

निर्गृहः [नि + ग्रह् + अच्] अन्तःकर्मण-निर्गृहद्वयसांस्वाभा
महा० १।२।४।३३ ।

निर्गृह्यम् [नि + ग्रह् + क्यट्] गृह लड़ाई ।

निर्गृह्य (वि०) [नि + ग्रह् + क्त] भाष्यकर्ता जो नष्ट
करता है ।

निर्गृह्य [नि + ग्रह् + क्त] बहकावट मलावरण ।

निर्गृह्य [नि + ग्रह् + क्त] 1 कमल 2 कारिण्य का पेड़
—नामा० ।

निर्गृह्य (पु० उभ०) वक्ष में बन्द करना, डकना
निजा बोणा बाणी निर्गृह्यति बोलेन निर्गृह्यात्
—सीमर्थः ।

निर्गृह्य [निर्गृह्य तस्यते कामकै- नि + तस्य् + णच्]
1 कृता 2 बीणा का स्वनशील फलक 3 डकान
4 बट्टान ।

निर्गृह्यकर्मिन् (वि०) बहुत कठोर, अत्यन्त कड़ा ।

निर्गृह्य (वि०) [नियमेन अच् नि + तस्य्] 1 अनवरत,
लगानार, शास्त्रान् 2 अनवरत् 3 नियमित, स्थिर
4 आवश्यक 5 सामान्य (विप० नैवितिक) ।

म० अनुबद्ध (वि०) सदैव सबद्ध, —अनुबद्धः
तस्य की मन्त्रोक्ति—ये० सं० ४।१।४५, अविमुक्त
(वि०) लगानार किसी न किसी कार्य में लीन,

कालम् (अ०) सदैव, हर समय,—अन्तः (वि०)
लगानार उत्पन्न अच् चैन निरुद्धात् अच्० २।२६,
बुद्धि (वि०) सभी बातों को सतत या निरन्तर

मानने वाला, भाव सात्वतता, नैरन्तर्य, एक
एक विचार कि सभी वस्तुएँ सदैव एक स्थान
रहती हैं ।

निर्वाच [नि + वृह् + घञ् + क्त] आन्तरिक गर्मी ।
सं० धाम् (पु०) धूप निर्वाचमाननिर्वाचिनी-
धितम् जि० १।२४ ।

निर्वाचित (वि०) [नि + वृह् + णिच् + क्त] प्रदर्शित,
चिन्तित, प्रमाणित ।

निर्वाचित (वि०) [नि + वृह् + णिच् + जिनि] पक्षप्रदर्शक,
उदाहरण प्रस्तुत करने वाला सती बुद्धि पुरस्कृत्य
सर्वलाभनिर्वाचिनीम् रा० २।१०।८।८ ।

निर्वाचरि (वि०) [ब० सं०] 'अनिर्वा रोम से प्रस्त ।

निर्वाचन् (नपु०) [निर्वाच घत यस्यान् - वृधाञ् + क्त]
हस्तद्वयों में लगे से छटी गति ।

निर्वाचम् [नि + वा + क्यट्] बनीहर ।

निर्वाचोपमा (स्त्री०) तिन्दीपलजित उपमा, ऐसी तुलना
जिसमें तिन्दी प्रकट हो ।

निष्पन् (अ० पर०) विफल होना, अपरिपक्व अवस्था य
हो नष्ट हो जाना (जैसे गर्भपात) ।

निष्पाक [नि + पृ + घञ्] 1 पसीना 2 (कच्चे फल
को) पकाना ।

निष्पाक [नि + पृ + घञ्] मिलकर खाना, समाज
यासाथे निराने कलम नाम आपने—महा०
१।२।३०।१।१५ ।

निष्पन्नम् (नपु०) असीम ।

निष्पन्नित (वि०) [नि + वृह् + क्त] नष्ट किया गया, दूर
किया गया कृत कृताद्योऽस्मि निर्वाहनाहता—जि०
१।२९ ।

निष्पन्नित (वि०) [नि + वि (वि) वृ + क्त] 1. वृद्धित,

कारी बनाया हुआ, जीव से युक्त, मोटा. 2. बाबर सटायो हुआ, नीचा हुआ - लुकावतुनिविष्ट - बा० रा० ५१११।

निवृत्त (वि०) [नि + वृ + क्त] 1. बरा हुआ 2. युक्त 3. मुक्त 4. विनीत 5. बुद्ध 6. एकाकी 7. निष्काम, आसही। सम०—आधार (वि०) बुद्ध आधार का व्यक्ति,—विस्त (वि०) युक्त रूप से विद्यमान।

निम्न (प०) लकड़ी की कुटी, गैल।

निमित्त (वि०) [नि + मा + क्त] 1. दे० 'निमित्त' उत्पादित 2. माया गया।

निमित्तम् [नि + मि + क्त] 1. ज्ञान का साधन—तत्त्व निमित्तपरीष्टः—मी० सू० १११३ 2. कार्य, उत्पत्ति—एतामेव निमित्तानि भूमीनाम्भवेदेषां—महा० १२।६१६। सम० ज्ञः (प०) समुद्र के आधार पर भविष्यवाणी करने वाला ज्योतिषी,—नैमित्तिकम् कार्य और कारण, भावम् केवल उपकरण स्वरूप कारण—भा० ११।३३।

निमेषांतरम् [व० त०] एक क्षण का अन्तराल।

निम्न (वि०) [नि + म्ना + क] 1. गहरा, नीचा 2. अधम कार्य—निम्नोन्नीहो करिष्यन्ति महा० ३।१९०।२६। सम० निम्नमुख (वि०) निम्नतर स्तर की ओर बहने वाला कु० ५१५।

निमित्त (वि०) [निम्न + इत्यच्] गहरा, बूँदा हुआ।

निम्नवृक्षकम् (नपु०) नीम वृक्ष से उत्पन्न पाँच पदार्थ—पत्त, फूल, त्वचा, फल और जड़।

निम्नवृक्षकम् (नपु०) नीबू के पाँच भेद (मल्लरा, मुसम्बी, नारली, लट्टा या गलमल, कावजी नीबू)।

नियत (वि०) [नि + यत् + क्त] 1. रोका हुआ, बाँधा हुआ 2. आश्रित 3 (व्या० में) अनुदान सहित उच्चरित।

नियतः [नि + यत् + क्त] 1. गुप्त रखना—मन्त्रस्य नियतं कुर्वन् महा० ५।१४१।३० 2. प्रयत्न महा० २।६६।२०। सम० हेतुः विनियमन का कारण, नियमित रखने का कारण।

निमुक्ता (वि०) [नि + युज् + क्त] उपयोग में लाया गया, काम पर लगाया गया।

निमोक्षाय (वि०) [नि + युज् + गत्यच्] 1. जिसको कोई कार्य सौंपा जाय 2. नियुक्त किन्हे जाने योग्य 3. जिस पर लक्ष्मणाग कलायः जाय—मन० ८।१८१।

निमोक्षः [नि + युज् + क्त] 1. अपरिग्रह नियम—नैव निमोक्षो वृत्तिपथे नित्यं समाप्त इति मी० सू० १०।६१५ पर प्रा० भा० 2. लड़ी यथार्थ—कि० १०।१६।

निरपेक्ष (क) (वि०) [निर + अपेक्ष (क)] जो राशि बिना कुछ कुछ रहे, पूरी पूरी बँट सके।

निरपेक्षाय (वि०) [व० स०] 1. वसताय 2. स्वतंत्र निरनुग्रह (वि०) [व० स०] निर्दय, कृपाशून्य, अकपाय।

निरनुगतोक्त (वि०) जो वर्ष नाक से निरपेक्ष हो, जिसमें नाक की सहायता की आवश्यकता न हो।

निरनुगामिकम् (नपु०) नारायण चट्ट की एक रचना जिसमें कोई अनुशासिक वर्ण प्रयुक्त नहीं हुआ।

निरपेक्ष (वि०) [व० स०] भूला, निराधार।

निरपेक्ष (वि०) [व० स०] 1. कलचुरहित 2. जिसमें कोई अपवाद न हो।

निरलंकृतिः (स्त्री०) (काव्य में) अलंकार का अभाव, सरलता।

निरवसाय (वि०) [व० स०] प्रसन्न, खुश।

निरावर्तित (वि०) [व० स०] जिसका अन्त दूर नहीं है निरता लघुना निरावर्ते कि० २।१४।

निरारम्भ (वि०) [व० म०] सब प्रकार का कार्य करने से युक्त (अच्छी भावना से), निष्क्रिय।

निरावर्ण (वि०) [व० स०] स्फुट, स्पष्ट, प्रकट।

निष्कर्मोप (वि०) [व० स०] उपभोग शून्य।

निष्प्रापिक (वि०) [व० स०] जिसमें कोई छत न हो, निरपेक्ष।

निर्वाक्ष्य (वि०) [व० स०] जिसमें सिध्दता या शालीनता न हो, अव्यग्र।

निर्वैत (वि०) [निर + वा + क्त] बुला हुआ, स्पर्श किया हुआ—निर्वैतदानामसगणनिमित्तं - रघु० २।४३।

निर्वाचक (वि०) [व० स०] जिसका कोई नेता न हो।

निर्वीच (वि०) [व० स०] नपुंसक, नामदं, निश्चयत।

निर्मण्यु (वि०) [व० स०] निष्कर्मक, गिरीह,।

निर्माण (वि०) [व० स०] 1. आग्निविश्रुति से हीन 2. जिसमें स्वाभिमान न हो।

निर्लक्ष्य (वि०) [व० स०] अव्यय, जो दिखाई न दे।

निर्लभ (वि०) [व० स०] पूरी तरह कटा हुआ।

निर्लसत (वि०) [व० म०] स्नेहहीन, जिसमें वात्सल्य का अभाव हो।

निर्विचक्षण (वि०) [व० स०] अनासक्त, उदासीन।

निर्वैतः (स्त्री०) क्षिप्रप्रज्ञा, निष्पत्ति।

निर्वैलक्ष्य (वि०) [व० स०] निर्लेख, बेगम।

निर्व्यवधान (वि०) [व० स०] व्यवधानरहित, मुक्त, अनाच्छादित, शूला (स्थान)।

निर्व्यवस्थ (वि०) [व० म०] जिसमें कोई व्यवस्था न रहे, बिना उद्देश्य अटकने वाला, असंगत वसियुक्त।

निर्व्यावृत्ति (वि०) [व० स०] जिससे कुछ प्राप्त न हो।

निर्वीर्य (वि०) [व० स०] निर्लक्ष्य, बेधर्म।

निराका [निर + अ + क्त्वा] ३०. 'निराक' - बाबासुनिवा-
हीरो निरवादिन साजुनः—रा० पं० २। सम०
—वर्षान् (नपुं०) भौतिक अस्तित्व—वासां गृहे

निराकर्मनि कर्तता वः—भाष० १०।८२।३१।
निराकृतसंख्य (वि०) [व० स०] अनन्त, असंख्य, अन-
गिनत।

निराकृत (वि०) [व० स०] १. निराकरण किया गया
२. तिरस्कृत।

निराकृत (वि०) [नि + कृ + क्त] १. नवरुद्ध २. बरा
पूरा, पूर्ण। सम०—वृत्ति (वि०) कार्य करने में
असमकी गति अवकट हो गई है वाय्वनिरुद्धवृत्ति-
कथनम्।

निराकृत (वि०) [नि + कृ + क्त] लय, वृत्त बाना।

निराकृत (वि०) [नि + कृ + क्त] १. निरूपण करने
वाला, पर्यवेक्षक २. निरूपण करने वाला, घटक।

निराकृत (वि०) [नि + कृ + क्त] १. विहित, अकृत
२. नियुक्त ३. निशाना बनाया गया, दणित।

निराकृत (स्त्री०) [निर + कृ + क्त] १. मूक गलाप
२. आठ वसुको में से एक ३. ग्यारह रथों में से
एक।

निराकृत (वि०) [निर + कृ + क्त] १. बहा हुआ
२. घुमा हुआ, पिचका हुआ।

निराकृत (स्त्री०) अनुमान पर आधारित उपमा—काव्या०
२।२७।

निराकृत (वि०) [निर + कृ + क्त] १. घुमा हुआ, स्वच्छ
किया हुआ २. प्रायश्चित्त किया हुआ। सम०

—बाहुवचन (वि०) जिसके कहे या बुझी स्वच्छ
करके चमका दी गई हों,—अनन्त (वि०) स्वच्छहृदय,
निर्वल मन वाला।

निराकृत [निर + कृ + क्त] करार, प्रतिज्ञा—महा०
१३।२३।७०।

निराकृत (वि०) [निर + कृ + क्त] १. समेत किये जाने
के योग्य २. निरचित किये जाने योग्य ३. उद्योग्य
४. जिसमें पवित्रता होनी चाहिए सुरापान बहुरथा
.....अनिर्देशयानि मन्यन्ते महा० १२।१९५।३४।

निराकृत [निर + कृ + क्त] दीर्घ वि.श्वास, अहुरों
की भाँति उठना फिरना।

निराकृत (वि०) [व० स०] जिससे आग्रह पूर्वक कोई
बात पूछी गई है।

निराकृत (वि०) [निर्वच + इति] आग्रह करने वाला।

निराकृत [निर + भास + क्त] चमकी देना, अच-
कल कहानी, शिक्की देना।

निराकृत (वि०) [निर्वच + इति] कुचकने वाला,
जिसने बाका, पीस डालने वाला।

निराकृत [निर + वा + क्त] मूख, माध, बल।।
१९२

निराकृत [निर + वा + क्त] कनका, कण्य होना—पूर्व-
निराकृत हि काक्यव नक्षिर्गुहो—उ० ७।

१९०।२।

निराकृत (वि०) [निर + वा + क्त] बाहर बाहर हुआ,
निराकृत हुआ।

निराकृत [निर + वा + क्त] नगर के बाहर जाने
का मार्ग।

निराकृत (वि०) [निर्वच + क्त] मोक्ष की ओर के
जाने वाला।

निराकृत [निर + वृत् + क्त] उद्भावक।

निराकृत [निर + वृत् + क्त] १. घुमा करना, कण्य
करना, बनाम सुगार करना—निर्वचान् वृत्तान्नामवृत्तान्
सर्वेभ्योऽर्थं प्रदाय मे—प्रति० १।२९ २. नाच को
छूटने के कारण का रस्ता—भाष० १०।२१।१९।

निराकृत (व०) [निर + कृ + क्त] कोपविचार
कर।

निराकृत [निर + वृत् + क्त] स्तुति—महा० १।
१०९।२३।

निराकृत [निर + वृत् + क्त] प्रदान करना, अर्पण
करना।

निराकृत (वि०) [निर + वृत् + क्त] घुमाया
हुआ।

निराकृत (वि०) [निर + वृत् + क्त] बहिष्कृत,
निष्कासित।

निराकृत (वि०) [निर + वृत् + क्त] बहिष्कार्य,
देना मे निकालने के योग्य।

निराकृत (मुदा० पर०) १. घर में बस जाना २. प्रविष्ट
होना ३. जाने जाना ४. शब्द परिचोष करना—निर्व-
च्य मया तव महा० ५।१४६।१९ ५. किसी के
साथ रहना—सुबृचमे प्रावृषि निर्वचकताम्—भाष०
१।५।२३।

निराकृत (वि०) [निर + कृ + क्त] १. घुमा हुआ,
चिपका रहा, जुड़ा रहा २. घिबिर में कर्तव्य, डेरा
हाके हुए।

निराकृत [निर + कृ + क्त] १. प्रविष्ट होना—आत्म-
निर्वचमात्रेण तिस्रमन्तमुत्सुकम्—भाष० १०।१०।२९
२. बलका लेना भाष० १०।४७।३९।

निराकृत (वि०) [निर + वृत् + क्त] घुमाया
हुआ, रोका हुआ।

निराकृत (वि०) जो बली-बली कमान्य किया हो।

निराकृत (वि०) [निर + कृ + क्त] बंदि-
कता हुआ, निर्वचन कता हुआ—स्नेहस्त निर्वचकः
—महा० ५।१२।

निराकृत (वि०) [निर + कृ + क्त] १. आकृत
२. विद्युत।

निर्वेकः [निर + वृक् + क्त] 1. अन्तर मूल भाषा 2. अव्यक्ति ।

निर्व्यभिक्त (वि०) [निर + वि + क्त + क्त] व्यव निष्ठा नवा, शीत नवा, अतीत ।

निर्व्यूह (वि०) [निरि + वृह + क्त] 1. त्वरन्मूह में व्यवस्थित 2. सफल 3. बाहर बनेका नवा ।

निर्व्यूहः [निरि + वृह + क्त] उपपन्न विन्नु वा संज्ञा ।

निर्व्यूहः [निरि + वृह + क्त] छुटी-महा० ३।१९०।३९ ।

निर्व्यूहः [निर + वृह + क्त] विवह, विवहाद्यक ।

निर्व्यूहः [निर + वृह + क्त] चटाना ।

निर्व्यूहः (वि०) [निर्व्यूह + इति] 1. फैलाने वाला

2. एक प्रकार की सुगन्ध जो और सब सुगन्धों से बढ़िया हो ।

निर्व्यूहः [निर + वृह + क्त] छोटा करना, तनुचित करना ।

निर्व्यूहः [नि + वृह + क्त] घर, आवास, निवास ।

निर्व्यूहः [नि + वृह + क्त] औसमिचीनी का एक चूर्ण—भाष० १०।११।५९ ।

निर्व्यूहः [नि + वृह + क्त] हृष्टा, वध ।

निर्व्यूहः (वि०) [व० व०] एक जनजाति का नाम ।

निर्व्यूहः [नि + वृह + क्त] 1. वीर, वज्र के दाने

2. बाह्य के अवसर पर पितृत्वं 3. उपहार । सम०

—अव्यक्ति तर्पण के लिए दोनों हाथों की अव्यक्ति में किया हुआ पानी,—अव्यक्त वही उपहार ।

निर्व्यूहः [नि + वृह + क्त] प्रतिरक्षक ।

निर्व्यूहः [नि + वृह + क्त] 1. घर, नकल, आवास ।

सम०—वृद्धि रखने का स्थान, -रक्षणा भवन, मन्दिर,

—स्थान रखने की जगह ।

निर्व्यूहः (द्रवा० वा०) 1. फैलाना, वन्धुका का निखाना

कराना 2. (मन को) प्रभावित करना ।

निर्व्यूहः (वि०) [नि + वृह + क्त] कृष्ट, आविष्ट (वेष्ट) ।

निर्व्यूहः (द्रवा० वा०) 1. वारिष्ठ भाग 2. भाग वाला

3. वध निष्कलना 4. समाप्त होना 5. सम्पन्न होना,

मेर० वाक छोटे कराना ।

निर्व्यूहः (वि०) [नि + वृह + क्त] जमा हुआ, व्यवस्थित,

विनिवृत्त (जैसे कि पूर्व) । सम०—वीर्य (वि०)

जिसे फिर समाप्ती की गई हो, जिसकी अचाना लौट आई हो ।

निर्व्यूहः [व० व०] 1. चरमा 2. कटुर ।

निर्व्यूहः (कर्मव्यवहार संज्ञा) निर्व्यूह, उपरुक्त, निर्व्यूह ।

निर्व्यूहः [नि + वि + क्त] प्रवास, उत्पत्ति ।

निर्व्यूहः [नि + वृह + क्त] 1. पुत्रीपुत्रतर्पण

2. भाग, दूता 3. पुण्या, दुराग, दुरा ।

निर्व्यूहः (वि०) [व० व०] 1. विरक्त अपना मन

चला कर दिया है 2. व्याप्य त्याग करने वाला ।

निर्व्यूहः [नि + वि + क्त] सात, सिली, काच-प्रस्तार ।

निर्व्यूहः (वि०) [व० व०] एक विरक्त विरक्त आचार पर कर्मचार्य और तत्पुत्र दोनों समानों की प्राप्ति होने पर, पूर्ववर्ती अवधि कर्मचार्य ही बनीवान् होता है ।

निर्व्यूहः [नि + वि + क्त] आसुत, अव, अर्क ।

निर्व्यूहः (वि०) [नि + वि + क्त] पिता, जनक ।

निर्व्यूहः (वि०) [निर्व्यूह + इति] 1. प्रस्थापना करने

वाला, वर्धन करने वाला 2. आगे बढ़ने वाला ।

निर्व्यूहः [निर्व्यूह + क्त] विदाई, प्रस्थान, सानगी ।

निर्व्यूहः (वि०) [निर्व्यूह + क्त] (सगीत० में) अनु

स्वरित या अव्यक्त (वाणी) ।

निर्व्यूहः [निर्व्यूह + क्त] दूर भगाना, हटाना ।

निर्व्यूहः [नि + वृह + क्त] भस्ना सिद्धि की सिद्धा स्थापचारिण्या निर्व्यूह स्वाद्वृष्टिका—महा० १०। ३४।३० ।

निर्व्यूहः [नि + वृह + क्त] टंक लेने के लिए प्रज्ञा का उत्पीड़न ।

निर्व्यूहः (वि०) [नि + क्त + क्त] 1. बाहर निकला

हुका 2. आगे आया हुका—अव्यक्तिप्रवृत्त एवासी—दु०

म० ३।१४ ।

निर्व्यूहः [नि + वृह + क्त] कराहना, बाह भरना—रा०

७।२।१२ ।

निर्व्यूहः (वि०) [नि + स्था + क्त] सम्पन्न,

पूरा किया गया—भाष० ९ ।

निर्व्यूहः (वि०) [निर्व्यूह + क्त] निर्व्यूह नवासे के

छोके से दृष्ट, अचार चटनी आदि सहित ।

निर्व्यूहः (वि०) [नि + क्त + क्त] विरक्त उपर बुका

नका हो भाष० १।२२।५९ ।

निर्व्यूहः [नि + वृह + क्त] बद्धक, कर्मण ।

निर्व्यूहः (वि०) [नि + वृह + क्त] गतिहीन, अचल,

स्थिर, न्यः (पु०) निर्व्यूह का कर्मण—भाष० १०।

देवि निर्व्यूह—रा० ३।५।३५ ।

निर्व्यूहः [नि + वृह + क्त] बर्धका, बर्धनी बना

विद्याभवनः ।

निर्व्यूहः (वि०) [व० व०] विना स्थान का ।

निर्व्यूहः (वि०) [व० व०] विना किसी भाषाकी के,

ईमानदार, कृष्ण ।

निर्व्यूहः (वि०) [नि + वृह + क्त] बली-प्राप्ति बकावा

हुका ।

निर्व्यूहः (वि०) [व० व०] जिसे कोई उपदेश न

दिया हो, अज्ञान ।

निर्व्यूहः (वि०) [व० व०] अव्यक्त, नवा, पृथग ।

निष्कालिह (वि०) [व० स०] जो धान बहल नहीं करता है, उपहार नहीं देता है ।

निष्काला (वि०) [व० स०] निराश, हताश ।

निष्काली (वि०) [व० स०] जो लहरी से बजी जाता है, नया (कपड़ा) ।

निष्काली (वि०) [व० स०] जिसमें कंकड़ न हो, रोटे आदिनों से मुक्त ।

निःसह (वि०) [व० स०] १. क्लान्त २. असहिष्णु ।

निःसुप्त (वि०) [व० स०] असहाय, साहाय्यहीन ।

निःस्वप्न (वि०) [व० स०] शब्दहीन, जिसमें से कोई आवाज न निकले ।

निःस्वप्न (वि०) [व० स०] कठोर, कड़ा, कडा ।

निःसर्गनिधु (वि०) [व० स०] स्वभावात् चतुर ।

निःसुख (वि०) [नि + सुख + क्त] सुखमाया हुआ (जैसे आग) ।

निःसुखकम् [व० स०] सुखों का न होना, दोषराहित्य, दोषों का अभाव ।

निःस्रोतः [नि + मुद्र + चञ्] नृम जाना, चुम जाना, डंक मारना ।

निःश्रित (वि०) [नि + श्र + क्त] (सेना की शक्ति) क्षीय लगाए हुए, निरिरस्त । सम०—इच्छ (वि०) कोमल हृदय, कुपान्त ।

निःशुचः [नि + शुच + क्त] १. मुकर जाना २. वचन-विरोध, विरोधाविति ।

नीचचारिण्य (वि०) लज्जित मार्ग का अनुसरण करने वाला ।

नीचिकताकम् (नपु०) अर्थात् नीचताविवेकहीन नीचियों का संघट्ट ।

नीरस (वि०) [त० स०] जल में रहने वाला, जल में घुलने वाला ।

नीरस्य (स्त्री०) दुग्धी ।

नीरसित (वि०) [निरु + राय् + क्त] देवताओं के रूप तथा स्वरूप से मुक्तचित्त, प्रभावित ।

नीरसितः (पुं०) राजकीय प्रभावितियों तथा समाचारों का संघट्ट ।

नीरसितः (पुं०) अतिशय श्रेय ।

नीरस्य-नी (स्त्री०) [नि + श्वे + ह्यन्], व नीच, पूर्वस्य नीरसः] कारागार—नीची स्वाध्यायनमारे बने स्त्री-वस्त्रधारिणी नामाः ।

नीरस्यः [नृ + श्वे + क्त] हटाना, दूर करना ।

नीरस्यः (पुं०) सम्भाव्यता, भाविकता ।

नीरस्यः (व०) कदाचित्, सम्भवतः ।

नी [नी + श्वे + क्त] (पुं० सर्व० १० व० वा)

१. अनुप, अति (बाह्य दुःख ही वा स्त्री) २. अनुप काचित् ३. पुनित्व कथ्य ४. वेदा । सम०—अनपः अनुपचित् कार्य, शीघ्र,—कथ्य (वि०) अनुपकवी

—शायम् बड़ा भवन, बड़ी कमरा,—वाह्यम् पालकी ।

नृपम् [नपु०] [नृ + प, क्वप् वा] नाथ, अधिपति । नृपम् [व०]—हस्तः नाथो तस्य हस्तों की स्थिति ।

नृती (स्त्री०) योग की एक क्रिया—नाक में डोरी डाल कर मुँह में से निकालना ।

नृयम् [नी + पृन्] १. लटपट—नाना २. बचक, बूझ की छाल—नाना ३. जल । सम० कार्त्तव्यम्

जोनों के लिए एक जाहू, कपल (वि०) जिसकी ओरों अधिक संपकटी हो, ओरों संपकाने वाला,—नाकः ओरों की सुजन,—कथ्यः १. बाँस मिचीनी खेलमा

२. जोनों में घुल सोचना, क्वप् सोच ।

नृयम् (नपु०) जोनों के लिए उपयुक्त ।

नेत्रीशरण (वि०) [व० स०] जिसकी शाय् निकट ही है, शरणस्थान—राज्य ४।३१ ।

नेत्रिह (वि०) शब्दाद्यमान, कोमाहल करने वाला ।

नेत्र्यनुहम् (नपु०) शृंगार भवन, प्रसादनकक्ष ।

नेत्र्यनुहारम् (नपु०) पक्षि का घेरा और नाभि ।

नेत्र (वि०) [नी + पृन्] १. ने आगे जाने के बोध २. शिखा दिने कान्ते के बोध—अनेत्र शिखरितम्-बोध—महा० ५।७।४ पर टीका ।

नेत्रकोशितारः (पुं०) करोडपति, करोडपति ।

नेत्र्यः [निवय + क्वप्] नाककृन् निवय का एक काण्ड । सम०—कथ्यः १० 'नैवय' ।

नैव (वि०) [नि + क्वप्] १. बवाल, विद्वान् २. कथ्य (कुल जिसकी बसती बनी कथ्य ही) ।

नैविकित (वि०) [निवित + क्त] १. किसी कारण से लवङ्ग २. ललाचारण । सम०—कथ्यम् (नपु०) किसी विशेष कारण से होने वाला ललाचार (वि०) निवय-कथ्य) । कथ्यः बह्य में नीव हो वाला, काह्यकथ्य (कथ्य) लव्य पार हवार कथ्य के उपगन्त होता है ।

नैविकित (वि०) [निवित + क्वप्] राजि-विविध विचारों से संबंध रखने वाला ।

नैविकितम् [निविकित + क्वप्] विन्ता के मुक्त होना । नैविकितम् (वि०) [निविकित + क्त] लकड़ी काटने वाला ।

नैविकितम् [निविकित + क्वप्] नीविकित मुक्तों के प्रति उदासीनता (वृद्ध०) ।

नैविकित (वि०) [निवित + क्त] १. अतिशय, उपलब्ध पार २. निविकित ३. उपलब्ध, पूर्ण ४. वातावरण, अति-वायं—महा० १२।११।२३ । सम०—कथ्यकथ्यम्

(वि०) नीविकितकथ्य प्रभावपूर्ण राज्य करने वाला ।

नैविकितः [नीविकित + क्वप्] मुहूर्त वा पूर्ण से संबंध रखने वाला ।

नैविकितः [व० स०] निविकितों से बचाया गया पुनः ।

व्यक्त [नि+अत्] 1. लावीय, ललितकटा 2. परिचयी
पार्थक्य—रा० १।१८।१२।

व्यक्तः [नि+अत्+अत्+अत्] समस्त शब्द के
प्रत्यय अक्षर का अन्तिम स्वर जिस पर स्वराक्षर नहीं
किया गया है।

व्यक्त (वि०) [नि+अत्+अत्] 1. वारण किया
हुआ, वस्त्र पहने हुए 2. (स्वर की भाँति) मन्दस्वर
से युक्त। सम०—अस्तव्य (वि०) एक दिए जाने
के बोध्य, स्थिर किये जाने बोध्य,—विह्वल (वि०)
बाह्य विह्वल से युक्त।

व्यक्तः [नि+अत्+अत्] लिखित पाठ्य वा साहि-
त्यिक मूल पाठ।

व्यक्तः [नि+अत्+अत्] 1. प्रभावी, रीति, नियम,

व्यवस्था 2. बोधित्व 3. विधि 4. धर्म 5. व्यावृत्त
द्वारा उद्घोषित निर्णय 6. नीति 7. अक्षर प्रवासन
8. साधुय 9. विषयवाची निबन्ध। सम०—आवृत्त
(वि०) ईमानदारी से प्राप्त, अविश्वस्य। मिथ्यातर्क
जिसमें सत्य की शक्ति मारी हो, एक कृपता का
आभास, उल्लेख (वि०) व्याधानुगत, व्याप्य, अनु-
मति-प्राप्त, सही ढंग से माना हुआ,—निर्वचन (वि०)
यथार्थ व्याख्य करने वाला,—विज्ञा, आत्मज्ञ तर्कविज्ञा,
तर्कशास्त्र,—संबद्ध (वि०) युक्तियुक्त, तर्कसंगत।

व्युत्पन्नवाक्यः (पुं०) ऐसा मुक्त व्यक्ति जिसमें मान-
वता के गुण पचास प्रतिशत से भी कम हों।

व्युत्पत्ता (स्त्री०) 1. कमी, हीनता 2. पट्टिपान, अप्रसूत-
पन।

प

पक्ष-भू (प्रा० पुरा० पर०) पक्ष करना।

पक्षिः [पक्ष+पक्षिन्] पक्षिबीकरण,—छरीरपक्षिः
कर्मणि—महा० १।२।२०।१८।

पक्ष (वि०) [पक्ष+पक्ष, अर्थः वः] 1. पक्ष हुआ, मुना
हुआ, उदाका हुआ 2. पूर्वविकसित। सम०—कमाय
(वि०) जिसके मनोबोध और विषय वास्तव्य आत्म
हो गई हैं,—पक्ष (वि०) पक्षे वाद वाला, दुर्वल
छरीर, बीजकाय।

पक्षिणः [पक्ष+पक्षिन्] 1. एक छन्द का नाम 2. काहन,
जेपी। सम०—पक्षः आनुपूर्व्य, परम्परा, क्रमिक
अनुवर्तन।

पक्षिणः (ब०) पक्षिचार, काहनों में।

पक्षिप्राकारः (पुं०) पक्षिचार।

पक्षः [पक्ष+अत्] पूर्व, दे० १।५।१।१६ पर
कायप०। सम०—अव्यक्त तर्कशास्त्र,—निर्णयः एक
पक्ष का ही विचार करना, किसी का पक्षपात करना,
—पक्षः किसी तर्क के दोनों पक्षों में विवेक करना,
—पक्षः पक्षापात, छरीर के एक पक्ष में सकृद्व,
—पक्षः—पक्षापात, अर्थात् में क्रान्ति,
—पक्षः पक्षा।

पक्षिपक्षिन् (पुं०) पक्षिण तारा में एक मुख्य टीपें।

पक्षिणः [पक्ष+पक्षिन्] 1. पक्षिणः विह्वल पक्षिण
मुनोपलब्धि—महा० १।२।२।१६ 2. (हरिण के)
पक्षि—निर्णयविशेषकपक्षिणपक्षिण—वि० १।८।

पक्षिणः (स्त्री०) [पक्षिण+अत्+पक्षिन्] जिस
स्त्री की कर्मों सम्यक् हों।

पक्षिणः (वि०) [पक्ष+पक्षिन्, स्वार्थे कन्] अपना
आत्म स्वयं पक्षिण माना।

पक्षिका (स्त्री०) हल का एक आय।

पक्षिणः (स० वि०—सर्वत्र व० व०) [पक्षि+पक्षिन्]

(समास में 'पक्षिण' के अन्तिम 'न्' का कोप हो जाता
है) पक्षि। सम०—आत्मनः,—आत्मनः 1. मिह
2. किसी भी एक विषय में अत्यन्त जेसे कि 'वैद्य
पक्षिणम्', 'आत्मनम्', 'आत्मनो पक्षिण' देवताओं

(सूर्य, अम्बिका, विष्णु, गणपति और सङ्कर) का

समूह जो दैनिक पूजा में सम्मिलित हैं,—उपचारः

पूजा के पाँच पक्ष (पक्ष, पुष्प, धूप, दीप और

नैवेद्य),—पक्षिणः दिव्य शक्तिवर्षों के पाँच कार्य-मुष्टि,

स्थिति, संहार, शिरोधान और अनुग्रह,—पक्षिणः

एक छन्द का नाम,—पक्षिणः पाँचों तरफों की सहायता

से स्थिर या जीवित,—पक्षिणः संकर के ब्रह्म पुनर्प्राप्त

पर पक्षिप्राकारों रचित टीका,—पक्षिणः (पुं०)

1. मासकृत एक नाटक का नाम, दर्शन काल पर

नारद द्वारा रचित एक वेद,—पक्षिणः आत्मनः

आचरण के बीच नियम जिन का प्रचार ब्रह्म ने किया

था,—पक्षिणः उत्तरायण, वृषकण्ठ, विन, हरिवासर

और तिह्र शेष का संयोग,—पक्षिणः (स्त्री०)

व्योतिष के पाँच विद्यान्त।

पक्षिणः (वि०) [पक्षिण+अत्+अत्] परिचयः। सम०

—आत्मनः—पक्षिणः—स्वरन् पक्षिण के स्वर का

नाम।

पक्षिणः (स्त्री०) पक्षिणः वा अविश्वस्य युक्तिका।

पञ्चीकरणम् [पञ्च + णि + क्त + ल्युट्] पाँचो तत्त्वो का मेम जिससे फिर माना प्रकार के पदार्थों का निर्माण होता है ।

पञ्च-दम् [पट् + क] कपडा, वस्त्र । सम० अञ्चलः वस्त्र की मोट, सालर, - उत्तरीयम् चुड़ी, चादर, जोड़ने का वस्त्र, बाघम् मजोरा, करताल, साँझ, - बासकः सुगन्धित धूप ।

पञ्चकः, - कम् [पट् + कलच्, स्वाच् कन् च] 1 पर्दा, चूट 2 पेंकट ।

पटलिका (स्त्री०) राशि, समुच्चय जैसा कि 'बुलिपटलिका' में ।

पट्टिका [व० स०] वह समय जब कि डोल बजाया जाता है ।

पट्टकरण (वि०) [व० स०] जिसके अंग स्वल्प है - अन्वेषार्थं पञ्च पट्टकरणं प्राणिनि प्रापणीया - मेघ० ५ ।

पट्ट, - डून् [पट् + क्त, इडभाव] 1 (किसने के लिए) तल्ली 2 राजकीय प्रशस्ति 3 रेखम । सम० अञ्जकः रेखी वस्त्र, कण्ठ, कण्ठम् शिर पर पमड़ी बांधना, या मुकुट बांधना ।

पट्टिका [पट् + कन् + इलच्] एक नुखण्ड को किराये पर जोड़ने वाला, पट्टेदार ।

पञ्चः [पञ् + भृच्] 1 पासे से सेलना, दाँव लगाकर सेलना 2 दाँव लगा कर, या होठ बंद कर सेलना 3 दाँव पर लगाई हुई वस्तु 4. केत 5. पैसा । सम० जब काम बहुत करना, - किष्वा 1 दाँव पर रखना 2 संघर्ष करना, मुकाबला करना ।

पञ्च (वि०) [पञ् + यत्] 1 बैचने के योग्य, विक्रमार्थ परार्थ 2. व्यापार, बाणिज्य 3. नृत्त । सम० - क्वः व्यापारी, - वाही जाड़े की सेविका, - परिचीता रखी स्त्री, - संज्ञा वर्तनों की हुकाम ।

पञ्चकरणम् (पु०) अण्डजुंजी में कण्ठ से बूझा, जाठरी, पाँचवाँ और व्यापार स्थान ।

पञ्चिनी, (स्त्री) विहता, बुद्धिमता ।

पञ्च, - कः (पु०) हीजड़ा, क्लीव ।

पञ्चकः [पञ्च पञ्चदशीति नम् + क्त नि०] 1. चोड़ा 2. हुर्य 3 पैद 4. पारा 5 टिट्टा । सम० पाच पत्ती का वण्णा ।

पञ्चशिका [पञ्च + कन् + टाप्, इलच्] (स्त्री०) 1. चपुच की डोरी 2. छोटा पत्ती 3. मधुमक्षिका ।

पञ्चसर्व (वि०) 1. जो सर्वसयत न हो 2 काज्य सौम्य है रहित ।

पञ्चक [पञ् + काक्] पाच का निदान सवाते समय अनुचितों की विशेष गुहा ।

पताका [पत् + काक् + टाप्] प्रचार, प्रसार - रम्या इति प्राशस्त्यो पताका - शि० ३।५३ । सम०

- बन्धः ध्वजपटिका, झंडे का डंडा ।

पताकिन् (वि०) [पताक + इति] झंडाकारी, पु० रच ।

पतितवर्मा (स्त्री०) [व० स०] वह स्त्री जिसका धर्म-पात हो गया हो ।

पतितवृत्त (वि०) [व० म०] छम्पट्टा का जीवन बिताने वाला, अम्यास ।

पत्ताकिन् (पु०) बढाति, पैदल निपाही ।

पत्तप्यञ्च [पति + अण्यञ्च] पैदल सेना का दलनायक, त्रिवेदिकर, उपबन्धुपति ।

पञ्चम् [पत् + ष्टन्] 1. पत्ता (पुल का) 2. (पुल की) पत्ती 3 पच, पिट्टी 4. पत्ती का बाण्डू 5. तलवार या बाण्डू का फल । सम० - तण्डुला स्त्री, मक्षिका, - बारकः बार, लकड़ी भादि चीरने का वस्त्र, - न्यासः बाघ में तीर लगाया, - निक्षेपिका पत्ती की बनी टीपी ।

पञ्च (वि०) [पञ् + लच्] पत्ती से समुद्र ।

पञ्चिकः [पञ्चिन् + ष्कन्] मार्ग चलने वाला, बाधी । सम० - क्वः एक यानी, या यात्रियों का समूह ।

पञ्चिन् (पु०) [पञ् + इति] 1 मार्ग 2. यात्रा 3. पराज सम० अञ्चलम् मार्ग में जाने के लिए जोख्य परार्थ ।

पञ्च [पञ् + भृच्] 1. पैर 2 पच 3 पचिच्छ 4. त्रिकला अष्टापद परस्पराने दक्षमुद्रेव लक्ष्मणे - महा० १२।

२९।४० । सम० - कण्ठम् चरच कण्ठ, पैर कपी कण्ठ, - आलम् चञ्च समूह, - रचना 1 साहित्यिक कृति 2 छन्द विन्यास, श्लोकः कव्यों का सुष्ठु-मधुर वेक ।

पञ्चातिलव (वि०) अतिमज्ज, अत्यन्त विभीष ।

पञ्चिष्ठ (तना० उभ०) वर्गमूक निकालना ।

पञ्चम् [पञ् + भृच्] 1. कण्ठ 2. कठोर की विशेषस्थिति, पचासन लगा कर बैठना 3. इन्द्रबाह के संवत् काठ प्रकार के कोनों में से 'पचिनी' नामक कोण । सम० शिवा 1. कञ्जी का विशेषण 2. बरकाद की पत्ती बनना देवी, - गुहा तन्मसात्त्व का प्रतीक ।

पञ्चकः (म०) [पञ् + षट्] बरकों की संख्या में ।

पचिनीकण्ठकः (पु०) एक प्रकार का कोड़ ।

पञ्चः (पु०) [पञ् + रच्] पाच मार्ग ।

पञ्चस्य (वि०) प्रसंगा के योग्य बात प्रकट करते वाला, मधुस्त्री ।

पञ्ची (पु०) [पा + ई, त्रित्व किञ्च] 1. हुर्य 2. चण्डका ।

पञ्चोरकः [व० स०] गद्दी की चारा ।

पञ्च (वि०) [पञ् + भृच्, भृच् का] 1. बूझा 2. बुर का 3 इतके बाद का 4. उच्छ्वस चोट 5. उच्छ्वस,

प्रमुख 6. विवेकी 7. प्रसिद्ध 8. अतिशय, -रः
(पुं०) 1. दूसरा 2. छद्म 3. सर्वसाधारणम्, -रम्
(नपुं०) 1. उच्चतम विष्णु 2. परमात्मन् 3. मोक्ष
4. शब्द का गीत बर्ण 5. भारी शोक, इससे परे
की दुनिया। शब्द०—अवयव (परावयव)
1. उच्चतम पदार्थ 2. सारांश 3. बुद्ध प्रसिद्ध,
4. दार्शनिक वाक्य, -अर्थः 1. मुक्ति-मार्ग १२।२८८
१९ 2. दूसरों के लिए उपयोगी पदार्थ- सत्ता-
परार्थवान्—ज्ञा० का० १७, -अर्थ (वि०)
विश्व—असाधारण सत्त्व परार्थवान्—महि०
१।६४, -अवयववाक्य (वि०) दूसरे के घर मोने
वाला, आश्रित (वि०) दूसरों के द्वारा आश्रित
प्राप्त, दास, -अर्थः मोचन, -उत्तरार्थम् दूसरों
के निकट जाना, काल (वि०) भारी समय से
संबंध रखने वाला, -अर्थः भिकारी, मिथुन,
त्वन्वाक्य (वि०) दूसरे की पत्नी के साथ सोने
वाला, -परिच्छेदः दूसरों की अपति (जैसे कि 'पत्नी')
ज० ५, परिच्छेदः दूसरों से अपमान या तिरस्कार
प्राप्त करना, वाक्यविभक्त (वि०) जो दूसरों के
बहुत मोक्ष नहीं करता, -वाक्यरत (वि०) जो
अपने पावन वीचन के लिए दूसरों पर निर्भर करता
है, -वाक्यविभक्तः दूसरों के घर पड़े मोक्ष की चाह
करता।
परा (ब०) [पर+वाक्] जगत्वा, वरना शोक ५।५।
परा (वि०) [पर+परस्व] भाति-क 1. अत्यन्त दूर का,
अतिशय 2. उच्चतम, श्रेष्ठतम, महत्तम 3. मुख्य,
प्रमुख, प्रधान, -अर्थ (ब०) 1. अच्छा, बहुत अच्छा,
हो 2. अत्यन्त। शब्द० अक्षरम् पूर्णतः अक्षर
'अ', -वाक्यवत् एक वाक्य अर्थ—रा० १।५८।१२,
—वाक्यः अत्यन्तमव अव, -अर्थ (वि०) अत्यन्त
रहस्यपूर्ण, -पूर्व परमात्मा, परमपुरुष, -अर्थ (वि०)
अत्यन्त श्रेष्ठ, रासः सर्वपरि रास, -अर्थवत्
(वि०) अत्यन्त सकल, -अर्थवत् (वि०) परमादर-
योग, अत्यन्त मामनीय।
परम्परवत् (वि०) [त० स०] परम्परा प्राप्त, क्रमानु-
सार प्राप्त।
परम्परकल्पः (पुं०) अत्यन्त अल्पवत्।
परम्परित (वि०) [परम्परा+तत्] मुंजला के रूप
में, श्रेष्ठवत्।
परम्परा (स्त्री०) [त० स०] संवत्सर में अति
अल्पवति।
परम्परविज्ञान (वि०) आपस में एक दूसरे का विरोध
करने वाला।
परम्परवत्पुनः (स्त्री०) आंशिक विराट्करण, वास्तविक
व्यक्तिकरण।

परास्व दे० 'परास्व'।
परास्व (वि०) [परा+स्व+त] तिरस्कृत,
अप्रतिष्ठित, विराट्।
परास्वित (वि०) [परा+स्वित+त] उच्चपुनः,
अत्यन्त दूर किया गया।
परास्वः [परा+स्व+त] पुनःस्वित पूर्व, पुनःस्वित।
परास्व (वि०) [परा+अस्व+स्वित] अत्यन्त, जो
बोहराया न गया हो—अन्यथा परास्व अत्यन्त
नाश्वर्यवत् मै० सं० १०१।४५ पर गा० गा०।
सम०—दुष्ट (वि०) अतिशय, अत्यन्त अपनी भाव
बाहरी सत्ता की ओर लगाई हुई है।
पराधीन (वि०) [परास्व+त] 1. अत्यन्त
2. बाहरी।
पराधीनम् [परा+धी+स्वित] पीछे की ओर उठना
पराधीनम्, पराधीनम्—महा० ८।४१।२७।
पराधीनः (पुं०) [परा+धी+स्वित] १० वर्ष के सम्मत्तर
वर्ष में पालीसवाँ वर्ष।
परास्वित (वि०) [परा+स्वित+त] उठना हुआ, दूर
जाना हुआ।
परास्वितः (पुं०) अत्यन्त अत्यन्त, अत्यन्त में अत्यन्त।
परिच्छिन्न (वि०) [परि+च्छिन्+त] विच्छिन्न,
बंटा हुआ।
परिच्छिन्नः [परि+च्छिन्+त] नदी के प्रवाह का अनु-
सरण करना। शब्द०—सत्तः बहरी।
परिच्छिन्ना (स्त्री०) [परा+त] व्यापन करना।
परिच्छिन्न (वि०) [परि+च्छिन्+त] वाक्य, भाव।
परिच्छिन् (पुं०) [परा+त] दूर जका कहना—अर्थवत्प्राप्त-
वाक्यवत् परिच्छिन्न रासवत्—रा० २।३०।२।
परिच्छिन्न (वि०) [परि+च्छिन्+त] बहुत अधिक,
अत्यन्त।
परिच्छिन्न (वि०) [परि+च्छिन्+त] 1. जोड़ कर
या नष्ट करके परिच्छिन्न 2. पुनःस्वित, पुनःस्वित।
परिच्छिन्नः [परि+च्छिन्+त] 1. कठोर 2. प्रधान।
शब्द०—अतिशय की कड़ी संज्ञा—परिच्छिन्नवृत्ति
है प्रतिच्छेद—ज० ३।
परिच्छिन्न (वि०) [परि+च्छिन्+स्वित+त] अत्यन्त
तथा विच्छिन्ना पूर्वक अत्यन्त किसे जाने के
योग्य।
परिच्छिन्न (वि०) [क० स०] जोड़ने की शक्ति भारी।
परिच्छिन्नः (पुं०) शीघ्र, वरना की शक्ति।
परिच्छिन्न (पुं०) सर्वत्र पुनःस्वित करना।
परिच्छिन्नपुनः (पुं०) वाक्य के अनुष्ठान की विशेष
रीति।
परिच्छिन्न [परि+च्छिन्+स्वित+त] वैदिक
वाणी, देवा करने वाली शक्तिवत्।

परिचारितम् [परि + चर् + चिच् + क्त] आचार, प्रचार ।

परिचयनम् [परि + च् + ल्यट्] १ पतित होना, विर जाना २ विचारित होना, भटकना ।

परिचोर्ष (वि०) [परि + च् + क्त] १ चिता हुआ, पुरसाया हुआ २ पचाया हुआ ।

परिचय [परि + च् + चञ्] १ परिवर्तन, कृपास्तरण २ पचाना ३ फल ४ पकना, पूर्णतः विकसित होना ५ ज्ञान, समाप्ति ६ बुझाया । सम० अन् अपच के कारण उत्पन्न उदर पीडा, — भूत् (वि०) लगाव समाप्त होने को, — बाह विकसलबाह का साक्ष्य सिद्धान्त ।

परिचोषि (स्त्री०) [परि + नी + चित्] विबाह ।

परिचोष्य (वि०) [परि + नी + क्त] १ जिसका बनी विबाह होना है २ जिसका विनियम होना है ।

परिचोषिन् (वि०) [परि + च् + चिन्] तज्ज करने वाला, उत्पीडक कष्ट देने वाला ।

परिचुम्बित [परि + च् + चित्] पूर्ण सन्नाय ।

परिचुम्बित (वि०) [परि + च् + क्त] लालायित, उत्प्लुत, आसुरतापूर्वक प्रवल दृष्टि रखने वाला ।

परिचय्य (स्था० पर०) किसी से उतरना ।

परिचय्य (वि०) [परि + च् + चिच् + क्त] भुलाये जाने योग्य त्याग दिए जाने के योग्य ।

परिचिद्य (वि०) [परि + चिच् + क्त] बतलाया गया, ध्यान रिकाला गया ।

परिचिः [परि + चा + चि] १ दीवार बाह २ चन्द्र या सूर्य के चारों ओर बुझका आभास ३ मिलिज, दिया । सम० — उजाला (वि०) समुद्र ही जिसकी सीमा है ।

परिचारका (स्त्री०) सलोक कर्त्री ।

परिचीर (वि०) [आ० ल०] बहुत गहरा (जैसे स्वर या लम्ब) ।

परिच्युतः [परि + च्यु + चञ्] १ बर्ण सकरता २ प्रह्व ।

परिचिन्तित (वि०) [परि + चिन् + क्त] १ नितालन पूर्ण २ सम्पूर्ण परिनिष्ठितकार्यों हि महा० १२। २३८।११ ।

परिचिन्तम् (नपु०) मार का पक्ष, चन्दा, चन्दे को सजा-वट की दृष्टि से समाना — बुद्धावतमपरिचिन्तल सम्मुखाय — भाव० १०।१४।१ ।

परिचिन्तक (वि०) [परिच्यु + क्त] जिसे कोई ३ भाग्य पर ही निकली है ।

परिच्योः [परिच्यु + चञ्] आन्तरिक गर्वी ।

परिच्युः [परिच्यु + क्त] सजावट का सामान संबन्ध आदि राजचिह्न — भाव० ४।३१९ ।

परिच्युच [परिच्यु + चञ्] ठर्क, युक्ति, कारण ।

परिच्युच्यु [परिच्यु + च + चञ्] गृह्य की आवश्यक-कताएँ ।

परिच्यु (स्था० पर०) १ जाने बड़ जाना २ सुझा देना, सत्य करना — एवमेवेन्द्रियवानं सनी उपरिमावदेत् — महा० १२।१५।१९ ।

परिच्युचिच्युच्यु [व० ल०] बुधा का पदार्थ, बुधा का पात्र ।

परिच्युच्यु [परिच्यु + चिच् + क्त] १ बुधा २ (नाटक०) जिज्ञासा को बगाने वाले लम्ब ।

परिच्युत (वि०) [परिच्यु + क्त] १ परावित, हराया हुआ २ अपमानित ।

परिच्युत (वि०) [परि + च्यु + क्त] उला हुआ, बुना हुआ ।

परिच्युतित (वि०) [परि + च्यु + क्त] अलंकृत, मुकुटित सजाया हुआ ।

परिच्युतयत् (वि०) [व० म०] बाल्य अवस्था का, बच्चा, बोधी उम्र का ।

परिच्युतम् [परिच्यु + ल्यट्] बटकाना, फोड़ना, ठोड़ना ।

परिच्युतम् [परि + च्यु + क्त] प्रतिबन्ध, रोक ।

परिच्युत (वि०) [परि + च्यु + क्त] कालिङ्गित ।

परिच्युतम् (नपु०) [परि + च्यु + ल्यट्] १ छपर से फोड़ना २ कालिङ्ग करना ।

परिच्युत (वि०) [परि + च्यु + क्त] चारों ओर से घाटा हुआ ।

परिच्युतित (वि०) [परिच्यु + चिच् + क्त] उल्लास हुआ ।

परिच्युत (पु०) बड़का, माय का बच्चा ।

परि (री) बाधकता [व० ल०] निन्दनीय बात बीत, बदनामी की बाने ।

परि (री) बाधकर (पु०) [अपवाद, विध्वान्ति, कलक ।

परिच्युतित (वि०) [परि + च्यु + चिच् + क्त] लपेटा हुआ, कुचकित किया हुआ, लपेटा बनाया हुआ ।

सम० लम्ब (वि०) असत्य, अनिश्चित ।

परिच्युत (वि०) पूरे बीम कम स कम बीस ।

परिच्युत (वि०) [परि + चिच् + क्त] १ घेरा हुआ २ च्यु + क्त, बस्त्र पहने हुए ३ उपहृत (जैसे कि शोचन) ।

परि (री) बाध [परिच्यु + चञ्] अव्यवस्था, व्यतिक्रम ।

परिच्युतित (वि०) [परिच्यु + क्त] १ एक ओर किया हुआ । हटाया हुआ २ पूरी तरह लोब किया गया ।

परिच्युत (वि०) [परि + च्यु + क्त] विह्वल, कटा-कटा, लम्बित ।

परिच्यु (स्था० उभ०) १ अन्तर्भवित करना जोड़ना २ बोलना ।

परिचरित (वि०) [परिचर + क्त] चिरा हुआ
—भाषि० २।१८।

परिचरन् [परिचर + क्त + टाप्] १. संघय, आसका
२. आशा, प्रत्याशा।

परिचरित (वि०) [परिचर + क्त] सम्प्रेषित, वर्णित।
परिचरन् [परिचर + क्त + टाप्, द्विवचन्] बिना विचार
आज्ञापान।

परिचर (लृ०) लृः [परिचरन् + क्त] चीर्य, पराक्रम।
परितोष (अदा० आ०) १ पूषक करना, निकाल देना
मै० स० १।१११ पर छा० भा० २ गिनना।

परिचरन् (नपु०) सामयुक्त जिसकी बिरल आवृत्ति
होती है।

परितः [परि + क्त + क्त] चिरा, बमनो, बाहिनी।
परितोषः [परि + क्त + क्त] तण्डु, समुच्चय।

परितोषः [परि + क्त + क्त] १ रगोन कपड़ा जो
हाथी पर डाला जाता है २ यज्ञपात्र।

परितुल्य (वि०) [परि + तुल + क्त] बड़ा हुआ, बूढ़-बूढ़
करके टपका हुआ।

परितुल्य (वि०) [परि + तुल + क्त] आमिशित, मुकाया
हुआ।

परितुल्य (स्त्री० पर०) १ निराकरण करना २. आवृत्ति
करना ३. रोषण करना।

परितुल्य [परि + तुल + क्त] १ त्यागना, छोड़ना
२. इष्टाना, बुर करना ३. निराकरण करना ४. टाकना
५. बुरक से मुक्ति। सम०—विमुक्तिः (स्त्री०)
तत्परकरण द्वारा परितुल्यकरण (जैन०),—यु बहु नाम
को बहुत अधिक दिनों के पश्चात् बड़का सुती है।

परीच्छ [परि + दृश् + क्त] वाञ्छनीय, उत्तम,
दक्षिण—अन्ते परीच्छयते हारवे नवस्ते—मान०
५।१५५।

परिच्छेदः [क० व०] कठोर शब्दों में व्यक्त किया गया
मात्रोप, ऐतयाद।

परिच्छेदः (पु०) युवाय, नरे हुए के समान।

परिच्छेदः (पु०) युवा का समय।

परिच्छेदः (वि०) [परिच्छेद + क्त + क्त] की विषय
प्राप्त करता हुआ किसी से ऐसा नहीं जाता है, अनुच्छ-
विषयी।

परिच्छेदः (वि०) [क० व०] तटस्थ, उदासीन।

परिच्छेदः (पु०) पर्य के रूप में उठना।

पर्यवस्य [पर्य + वाच + क्त] १. किसी २. एकाकी उपर्य।

पर्यवस्य [क० व०] पर्यवस्यित प्राप्त।

पर्यवस्य [क० व०] वीरारुन पर विराजमान।

पर्यवस्य [क० व०] वीरारुन पर विराजमान।

पर्यवस्य [परि + दृश् + क्त] हानि, नाश—पर्यवस्यः—महा०
१।१५।१५।

पर्यवस्य (वि०) [परि + दृश् + क्त + क्त] १. पड़ाव
डाका हुआ २. अधिकृत ३. स्वस्थ, शांत।

पर्यवस्य [परि + दृश् + क्त + क्त] अन्त, समाप्ति।

पर्यवस्य (वि०) [क० व०] जिसकी इच्छा पूर्ण
हो गई हो।

पर्यवस्य (वि०) [परि + दृश् + क्त + क्त] वीरारुन
करता हुआ, तेजी के साथ बीढ़ता हुआ।

पर्यवस्य (वि०) [परि + दृश् + क्त + क्त] विख्यात,
प्रसिद्ध।

पर्यवस्य [परि + दृश् + क्त] १. अन्त—पर्यवस्ये पर्यवस्य
प्राप्ते कतिरवायत—महा० ५।७४।१२२. एक अक्ष-
कार का नाम काव्य० १०, बन्धा० ५।१०८, सा०
८० ७३३। सम० कनः परम्परा का सिकसित।

पर्यवस्य (वि०) [परि + दृश् + क्त + क्त] अत्यन्त कम्पा।

पर्यवस्य (वि०) [परि + दृश् + क्त + क्त] रही किया
गया, गष्ट किया गया—पर्यवस्यितवीरवस्यवाम्
—कि० १।४१।

पर्यवस्य [परि + दृश् + क्त + क्त] 'नमः' के प्रयोग
द्वारा निवेद्यार्थककृति—(अवाद्याचम् जानय) —वे०
मै० स० १०।८।१-४ पर छा० भा०।

पर्यवस्य (वि०) [परि + दृश् + क्त + क्त] १. वीर
हुआ २. चिरा हुआ।

पर्यवस्य (वि०) [परि + दृश् + क्त + क्त] जिसके
ऊपर के रात बीत गई हो, बाढ़ी, जो ठाका न हो
(बीते रात का रक्का जोवन)। सम०—पर्यवस्य
वह चयन जिसका पावन न किया गया हो, दृढ़ी
हुई प्रसिद्ध।

पर्यवस्य (वि०) [परि + दृश् + क्त + क्त] बाढ़ी।

पर्यवस्य [पर्य + वस + क्त] १. पहाड़ २. एक व्यक्ति का नाम।
सम०—कनका पहाड़ की समूहों में स्थित समस्त
वृषि,—रोष्य (नपु०) पहाड़ी कमान।

पर्यवस्य (नपु०) [पु + वस + क्त] १. पाँठ, चोड़ २. पीरी,
मंस ३. जंग ४. अनुपात। सम०—अन्तः

अनुपात पट्टाणा (अभिधान का चिह्न कनका बनाता
है),—किन्तु कनका।

पर्यवस्य [पु + वस + क्त] मूली, चिन्का,—कन १. पाँठ २. ४
कन का कट्टा ३. समय की मात्रा ४. एक छोटी दीक।

सम०—अन्तः पाँठ के दिके वाक्य।

पर्यवस्य [पु + वस + क्त] मूली, पुष्प, चिन्का। सम०
—आरक चिन्कों का बीज, मूली का भार।

पर्यवस्य (स्त्री०) [पु + वस + क्त] हाथी के मस्तक के ठीक
ऊपर का भाग।

पर्यवस्य (वि०) [क्त + क्त] मूल, जिसके बाक एक भवे
हो, जिसके बिर के बाक सदैव ही बने हों,—कन १.
१. अनेक भाग २. पैस पावः। सम०—अन्तः

बालों के बहाने- कंकेयी मङ्गयेबाह् पलितकन्या
जरा-रघु० १२।२- बहौनम् सप्रेत बालो का
दिखाई देता ।

पल्यजनः (पु०) विच्छ ।

पल्यः [पल् + पियन्, लृ + लृप्, पल् चातो ल्यबन्, क० स०] १ अङ्कुर, २ क्ली ३. विस्तार ४ क्षिति
५. धाम की पत्ती ६. कङ्कल ७. वस्त्र का किनारा
८ प्रेम ९ कामकेलि १०. कहानी, कथा ।

पल्यजनम् [पल् + पियन् लृ + लृट्, पल् चातो ल्यबन्, क० स०] निरर्थक वस्तुता ।

पवनम् [पृ + ह्यट्] १ पवित्र करना २ पिछाना
३. छलनी ४. पानी ५ कुम्हार का भाँसा । सम०

—पवनम् बवहर, भवृणा, —ववी आकाश का प्रदेश ।

पवनाभस्तकः [व० स०] अभि ।

पवित्र (वि०) [पृ + ह्य] १ पावन, निष्पाप २ मन को
बुद्ध करने का साधन ३. सोमरस को छानने का वस्त्र,
छलना या पोना ।

पवित्रोत्तरम् [पवित्र + प्वि + कृ + ह्यट्] १. पवित्र
करना २. पवित्र करने का साधन ।

पशु (म०) [पृश् + कृ, पश्यादेशः] देखो ! कितना
बच्चा !, —शु. (पु०) पालतु बालवर, मवेशी । सम०
—एकस्मिन्मन्त्री मीमांसा का निबन्ध जिसके आधार
पर ब्रह्म का मुखार्थ किया के द्वारा संकल्प होकर
अभिप्रेत चयन को अधिकृत करता है, म० सं०
५।११।११६ पर शा० भा०, —कम्प दिव्या पिडांश,
—सप्तमस्तकः प्राचिवाय के भागों का सङ्ग ।

पशवस्तुः (म०) [पश्यात् + वस्तुः] तीसरा पहर ।

पश्यानुमितिः (स्त्री०) [पश्यात् + उमिति.] जावृति,
दोहराना ।

पवित्रोत्तर (वि०) [व० स०] उत्तरपवित्री ।

पवित्रोत्तरा (स्त्री०) शासकाधीन कुटुम्ब ।

पश्व (वि०) [पृश् + कृ पश्यादेशः] जो केवल देखता
रहता है—दशमं पश्यामिव—पुत्रम्—म० १६।१२२ ।

पश्वी (स्त्री०) बछिया—मह० ११।१३।३२ ।

पशव्य (वि०) [पा + उभ्यत्] १. पीने के बोध, देख
२. रक्षा किये जाने के बोध ।

पशुः [पृश् + कृ, दीर्घ] पूर्ण, पूरक । सम०—श्रीकृष्ण
पूज में सोलना, मुष्किल (वि०) बूझ डे घरा
हुना, लब्धम् एक प्रकार का मयक ।

पशित (वि०) [पृश् + पियन् + लृट्] प्रष्ट करने
वाला, विचारने वाला ।

पशितः (पु०) विक्रमाव ।

पशः [पृश् + वञ्] डोब, सूचन । सम०—किया
पकने की किया ।

पशकम् (नपु०) १. बालवर का केश २. पार्श्व धाम ।

पाञ्चरात्रम् (नपु०) १. एक वैष्णव सम्प्रदाय तथा उसके
चिह्नान्त, अभिषेक २. पाञ्चरात्र सम्प्रदाय के
शास्त्र, आयुष ।

पाञ्चालिकः [पाञ्चाली + इकृ] पाञ्चाली का पुत्र ।

पादलकीटः (पु०) एक प्रकार का कीड़ा ।

पादपुष्करः [पाटी + उपकरः] मूत्र लेखाधिकारी । ∴

पाठकम् (पु०) [प० ठ०] मूकपाठ के अनुक्रम के
अनुसार निर्धारित पाठ ।

पाठभेदः [म० ठ०] मूलपाठ के उच्चारण, उच्चारण
५४ ।

पाठकपुस्तकम् (नपु०) किसी लेखी के लिए निर्धारित
पुस्तक ।

पाणिः [पृश् + ह्य, पायामाव.] हाथ । सम०—कण्ठ
पाणि (स्त्री०) एक प्रकार की मृदा, —का (वि०)
निकट ही, —वाक्यम् हाथ की सहाई, —कण्ठ
१. ताकिया बहाना २. डोल बहाना ३. केरक प्रदेश
के डोलकियों का सम्प्रदाय ।

पाण्डविकः [व० स०] कृष्ण का विशेषण ।

पाण्डव्य (पु०) [पाण्डु + इमनिप्] लड़की ।

पाण्डुलोहम् (नपु०) चाँदी ।

पातः [पृश् + वञ्] (मल्लम्, पाण्डु भावि का) प्रयोग ।

पातात्मकम् (नपु०) पाताक कोंक की निम्न लक्षण ।

पातम् (वि०) [पातात् पातते इति] पतों से कुलकर्ण
विकाने बाका—हर्षनाथेय पातपाया परपात
वृक्षकम्—भा० पा० ।

पातम् [पा + टुन्] १. प्यास, कटोप २. कर्षण
३. बाधन ४. बोध व्यति ५. मरुत में अधिकेता
६. राधा का मयी ७. दरिवा का पाट ८. बोधता
भीषण । सम०—उपकरणम् मङ्कुरार के
वर्तन, सवाकट के साथ जैसे चोरी बाधि,—अधिक
(पाट में) रत्नमंथ पर अविनेता का कायवन्,
—लेखम् विन-विन प्रकार का अधिकृत करने
के लिए, अधिकेताओं का एकवीकरण,—अधिकम्
किसी उपहार को बढ़ान करने के बोध व्यति
की बोधता की चोरी करना,—अधिकट किसी
पाय वा वर्तन की पवित्र करना ।

पातकरम् (नपु०) विषाह—वर्षेय पातकरमैत्रि-
साक्षिक—म० १।१८ ।

पातः [पृश् + वञ्] मल्ल की लकी में छिद्र—तेजाव
आति बड़ा पुतेः पाताविबोवकम्—म० २।१९ ।

सम०—कुल्लम् एक प्रकार का लट जिसमें हर
लकड़े के बिना उपचार रक्षना पड़ता है,—अधिक
पातरीट, बुद्ध, लूक,—अधिकः (स्त्री०) पवित्र,

—वीरवारकः परव लेक, पित्त लेक,—अधिक
पाति, रीक विपत्ति,—अधिक १२ में पित्त हुवा,

संज्ञिता कविता के चरणों का जोड़, हीनजलम
वह पानी जिसका कुछ बस उबाला हुआ हो ।

बादाकुलकम् (नपु०) एक कवर का नाम ।

बानीवपुच्छा (स्त्री०) मोटा नाम का बास जो पानी
के किनारे उमता है ।

बाणकुली (स्त्री०) [व० त०] भार्गव्यापिनी देवी
जालिङ्गय नीत्याकृत बाण कुली नै० २४।३७ ।

बाण (वि०) [पा+ण] 1 दुरा, दुष्ट 2 अविश्रुत,
विनाशकारी, धारात से भरा हुआ 3 नीच,
जबम । सम बंध (वि०) नीच कुल में उत्पन्न,
विनिग्रहः दुष्टता को रोकना,—अमन (वि०) पाप
कर्म को रोकने वाला ।

बाणविन्धारकः (पु०) बीर जाने वाला ।

बाणितम् (नपु०) उबकदान, उपहार में दिया गया जल ।

बाणः [प+घञ्] 1 नदी का दूसरा किनारा 2 पार
कर लेना 3 सम्पन्न करना 4 पारा 5 जल, किनारा
6 सरसक - तस्माद् अयाद् येन स नोऽस्तु पार
—मान० ६।९ २४२ जल महिम्न पारं ते
—म० त्त० । सम०—केवु (वि०) जो किसी
व्यक्ति को किसी कार्य में दख बना देता है ।

बारदासिकम् [वरदास+ठक्] व्यभिचार ।

बारदासिकवसा (स्त्री०) परम सत्य का वस्तिरव ।

बारहिता [वारम् इत् प्राप्—पारमित—अलृक् स०
—स्विता टाप्] संपूर्ण निष्पत्ति, पूर्णता ।

बारमेखर (वि०) [परमेखर+अञ्] परमेखर से संबद्ध ।

बारम्बर्षकः [वरम्परा+घञ्] परम्परा-प्राप्त अनुक्रम ।

बारबद्धम् (नपु०) मदस्वता, किसी सभा का सदस्य
बनना । मान० १।१६।७ ।

बारवस्तनी (स्त्री०) सरस्वती नदी ।

बारिचानिक (वि०) [वरिणाम्+ठक्] 1 पचने के
योग्य, जो हजम हो सके 2 जिसमें विकार हो सके,
परिवर्त्य ।

बारिचानिकः [वारिचाम्+ठक्] बलती मडक पर लटने
वाला, डाक ।

बारिचवदुष्टि (वि०) [व० स०] बचल आँखों वाला ।

बारिचवदुष्टि (वि०) [व० स०] बचल मन वाला ।

बारिचिक (वि०) [वरिच+ठक्] कठोर, दायम ।

बारिचसौमिक (वि०) [वरिचसौम+ठक्] समानि के
निकट जाने वाला ।

बारिकः (पु०) [वरु+अञ्] 1. एक ऋषि, जैनियों के
२३ वें तीर्थंकर का विशेषण 2. पार्ष्वमान । सम०

—अथवृत्त (वि०) एक ओर को झुका हुआ (हीने
का एक ढोख), आँखें शरीर के पार्ष्वभाग में
पीठा, अथर्वकम् (अ०) इतना हुंमना कि जिससे
पार्ष्वमान झुकने लगे,—अन्यः शिव का एक विशेषण ।

बारिचविक्रमः [व० त०] सेना के पिछली ओर आक्रमण
करना ।

बारजम् [पाल+स्युट्] (सत्त्वों को ताज पर रख कर)
तीक्ष्ण-तेज करना ।

बारिचविक्रिः [वमास+अञ् तस्य विधि] डाक की
लकड़ियों से मृतक का बाह्य सम्कार करना ।

बारिचविक्रः (पु०) एक प्रकार का बुझार ।

बारिचविक्रि (वि०) [वमन+ठक्] बिसारी, बिसरन-
लील, विध्वंस ।

बारकवणि (पु०) [व० त०] सूर्यकांत मणि ।

बारकवणि [व० त०] आकरान, अग्निशिल, केसर ।

बारकवणि (स्त्री०) [व० त०] अग्नि की ज्वाला ।

बारित (वि०) [वृ+णिच्+क] पवित्र किया हुआ
स्वच्छ किया हुआ ।

बारि (वि०) [वृ+णिच्+अच्] पवित्र किये जाने
योग्य ।

बारिन् (पु०) [वार+इति] रस्सी, बंदी पाशीकल्प-
मायतामाचकं सि० १८।५७ ।

बारिचवदुष्टम् (नपु०) पाशपत सिद्धांतों के लिए किया
गया उपवास, व्रत ।

बारिचवदुष्टम् (व० त०) कोयल की कूक ।

बारिचमूलः [व० स०] गाजर ।

बारिचमूलम् (नपु०) गाजर ।

बारिचमूलकः (पु०) विपश्चिपा वृक ।

बारिचविक्रम (नपु०) एक प्रकार का सर्गात-उपकरण ।

बारिचविक्रमः (पु०) एक प्रकार की छोटी मछली ।

बारिचविक्रमः (पु०) कार्यकारण का मेल ।

बारिचरी (स्त्री०) कडाही, जिसमें कुछ उबाला जाय ।

बारिच (वि०) [पिच+अच्] 1 ठास 2 मटा हुआ,
सबम । सम० अक्षर (वि०) समुच्च व्यञ्जनों से

युक्त सव्य, विवृति अविचल वञ्चता की समाप्ति,
विमुक्त, अभावस्था को सध्यासव्य वितरो के प्रति

आहुति देना, विचयः (पु०) अपहरण की रीति,
गहन का मरका— की० अ० २।८।२६ ।

विचयः (पु०) भोजन-प्रदत्ता (भोज का विशेषण) ।

विचयम् [व० त०] पिला, पितामह तथा प्रपितामह ।

विचयवत्पर्यम् (नपु०) वितरों की पूजा का शुभ समय ।

विचय [अघि+वर्+कत, अघि+अकाराधीः] एक तरल
पदार्थ जो शरीर के भीतर यकृत में बनता है ।

सम०—वर (वि०) पित वृक्षों का अक्षिप्त, वरा
(स्त्री०) वरिष्ठ में पितामह ।

विचयवत् (वि०) [अघि+वा+तञ्जन्, अघेः धनोप]
अव्य किए जाने के योग्य ।

विचय (अ०) पठन कर ।

विचयः (पु०) होष ।

विष्कः (पु०) 1. पिप्पल नाम का वृक्ष 2. कर्मजन्य फल, कर्म का फल—मृष० ३।१।१। सम० अर्ध 1 एक मूत्र का नाम 'पिप्पलाद' 2. पिप्पल के बरबटे खाने वाला 3 विषयवासना में लिप्त ।

विष (वि०) [पा + वच्, विबाधेत्] पीने वाला नष्ट-ज्वायविषादि द्रुष्टि—नै० ६।१४ ।

विषितम् [पिष् + क्त] 1. मांस 2 अस्पांस । सम० --विष्कः 1 मांस का टुकड़ा 2 तिरस्कारसूचक शब्द जो शरीर को हमित करे, शरीर-मांस का उच्चार, रसोली ।

विषुम्बित (वि०) [विषुम् + इतच्] प्रकट किया गया, प्रवर्धित ।

विष (वि०) [पिष् + क्त] 1 पीसा हुआ 2 गूदा हुआ । सम० अर्ध (वि०) बाटा खाने वाला,—वाक. पकवा हुआ बाटा (रोटी, पूरी आदि) ।

विषदासः [पिष् + दास् + अच्] कुम्भित पूर्ण, शरीर जो होली के अवसर पर एक दूसरे पर छिड़क दिया जाता है ।

विषुम्बु (वि०) [स्पृश् + क्त + उ] 1 छूने की इच्छा वाला 2 आचमन करने का इच्छुक ।

वीडिप्रकारः (पु०) [व० त०] किसी पद पर निवृत्ति । वीड (पु०) उभ०) दण्ड करना—मृत्तिसमविकम्पुष्पे पञ्चम वीडयन्त—सि० १।११ ।

वीडस्तानम् [व० त०] (क० उभ० में) वड की किसी अङ्गुल स्थान पर स्थिति ।

वीत (वि०) [पा + क्त] 1 पीया हुआ 2 मिगोया हुआ 3 बाण्योक्त 4. छिड़का हुआ । सम० --उबका बहु गाय जो पानी पी चुकी है पीठोवका जगत्पुत्रा कठ० -विश्व (वि०) पीठ में डूबा हुआ, बास्तः एक प्रकार का सर्प,—स्कोट. खूजली ।

वीयूचमायुः (बाधन) (पु०) [व० त०] कन्दमा ।

वृम् (पु०) [वा + वृमसुन] 1 जीवित प्राणी 2 एक प्रकार का नरक—अपराधमय्य ते पुस्तत्रायात् महा० १।४।१०।१३ । सम० -अलक्षम् मानवीकप, मानवी सूरत ।

वृम्बुकः (पु०) द्वितीय वर्ष में चल रहा हाथी—मान० ५।३ ।

वृम्बिक (का) स्वप्ना (स्त्री०) एक स्वर्णीय - नरा का नाम ।

वृम्, वृम् [वृ + क्त] 1. तह 2 अजकि 3 बोना । सम० -अज्जकिः दोनों हथेलियों को मिला कर चाले की भाँति बना लेना,—वेम्बुः सड़ने वाली पी चिकना अनी पूर्ण चिकना नहीं हुआ है ।

वृम्बन् [वृ + वृम्] बाष्पावित करना, डकना ।

वृम्बरीक्षम् [वृम् + ईक्ष्, रक् वि०] एक वन का नाम ।

वृम्ब (वि०) [वृ + वृम् गुणायक, हृत्स्व] 1 पवित्र पुनीत 2 अच्छा गुणवृत्त 3. अमलमय, सुख 4 सुन्दर मनोह, रोचक 5 मधुर—अम्बु (नपु०) 1. अमल से सातवाँ घर 2 मेघ, कर्क, तुला और मकर संयोग । सम०—विष्णु (वि०) गुणवृत्त, वा शास्त्रा वर्णार्थ जवन, शान-घर, संभव चार्ति-गुणों का समूह ।

वृम्बप्रवरः [व० त०] अष्टम वृम् ।

वृम्ब (पु०) [व० त०] वृम् की बी ।

वृम्बित (वि०) [वृम् + पिष् + क्त] बाधात पहुँचाया हुआ, नारा हुआ, नष्ट किया हुआ ।

वृम् (व०) [वृ + वृम्, उत्पद्य्] फिर, दोबारा, नये निरे से । सम० अलक्षः बाधकी, कटिवा कि वा नवीज्य वृम्बव्यवस्थकीकम्—वाच० ६।१।४।७ अलक्षः दोबारा चले वाला,—अलक्षम्बु फिर उपबाना, रँदा करना,—किवा बाधित करना, दोहराना,—नया एक प्रकार का बाध विरुद्धी पतिवर्षा वोल कास रम की होती है ।—स्वाम्यम् दोबारा नहाना ।

वृम्बा [वृ + वृ + अ, बातोदित्वम्] पवित्र करने की इच्छा ।

वृम्बारी (स्त्री०) [व० त०] नगरवेष्मा ।

वृम्बिका (स्त्री०) [वृ + वृ + कच्, स्वार्थे क्] पत्नी ।

वृम्बकारः [वृम् + क्त + कच्] 1. प्रस्तुत करना, परिचय देना 2 अपने आपको प्रकट करना—कर्महेतुपुरस्कार मूनेव परिगमते—महा० १२।१५।१९ ।

वृम्बस्व (व०, [वृम् + क्त + स्वच्] हुते, के विषय में उत्केश करके, के कारण ।

वृम्बस्तकः (स्त्री०) मातराक्ष, मास्ता ।

वृम्ब (वि०) [पुरा नवम्—नि०] 1 पुराना 2 बूढ़ा

3 पिशा पिटा,—अम्बु 1 बीटी हुई बटना 2 विख्यात

बाधिक पुस्तकें जो गिनती में १८ हैं, तथा व्यास

द्वारा रचित माने जाते हैं । सम०—अन्तरम् दूसरा

पुराण । शीतल (वि०) 1 पुराणों में कहा हुआ

2 प्राचीनों द्वारा बतलाया हुआ, विज्ञा, वेद

पुराणों का ज्ञान, पुराणों में वर्णित पाण्डित्य ।

वृम्बाद् (वेद०) अन्को का विजेता, बहुते को हरा देनेवाला ।

वृम्बमेकः [वृ + ईप्स् किम्ब, र-विद् + कच्] अतिसार दस्त लगना सड़हणी ।

वृम्बन्, **वृम्बन्** { (वि०) अचूक, प्रभावशाली ।

वृम्ब [वृ + वेहे सेते वी + उ पृको०] 1 नर, मनुष्य

(वि० स्त्री) 2 बाला । सम० अस्मिन् (वि०)

अपने आपको साहसी प्रकट करने वाला,—वीर्य

एक प्रकार का सत्य चित्ता प्रयोग और सँभलने

में करते हैं,—सारः श्रेष्ठतम नर ।

पुष्कः [पुष्+क] पुष्का, सूँड ।

पुलियः (पुं०) शिकारी, (ब० व०) एक बंकी जाति ।

पुलस्तः (पुं०) एक मिश्रित जाति का नाम माय० १।२।१।० ।

पुल (वि०) [पु+त] १ पाला पोसा २ फलता फलता ३ समृद्ध ४ पूर्ण । सम०—अङ्ग (वि०) मोटे अणों वाला, जिसे अच्छे पदार्थ भोजन में मिलते रहे हैं अर्ब (वि०) जो अर्ब की दृष्टि से पूर्णतः स्पष्ट हो ।

पुष्टिः [पु+पुष्टि] बहुत से अनुष्ठानों के नाम को कल्याण की दृष्टि से किये जाते हैं, पुष्टिकर्म । सम०—वर्त्मः वस्तुवाच्य द्वारा जाने गये विद्याओं का समुच्चय ।

पुष्करम् [पुष्क पुष्टि राशि-रा+क] १ नीला कमल २ हाथी के सूँड का किनारा—मात० २।२ । सम०—विष्करा बह्म, परमेश्वर, —विष्करा कर्म की देवी —पुष्टि कृषिक नम पुष्करविष्टरावाः—कनक० ।

पुष्पम् [पुष्+प] १ फूल २ पुष्पराशयि ३ कुबेर का रथ । सम०—अम्बू फूलों की सहृदय, —मात्सरक, फूलों से सजावट करने की कला, —पेखी कपाटिका, —अनकम् अनुप्रास अलंकार का एक ढंग ।

पुष्पेकः (पुं०) जाति से अधिकृत महिला में शास्त्र द्वारा उपायित संताप ।

पुष्पराजः [ब० त०] एक प्रकार की जल—की० ब० २।१।१२९ ।

पुस्तम् [पुस्त+प] १ कोई वस्तु जो मिट्टी, लकड़ी या चातु की बनी हो २ पुस्तक, हस्तलिखित, पाठ्य-लिपि । सम०—वाक् नू-अभिलेखों की सुरक्षा पूर्वक रखने वाला ।

पुस्तकः—कम् [पुस्त+क] १ पाण्डुलिपि २ एक उमरा हुआ मातृवच । सम०—आचारम् पुस्तकाकार, —आत्तरकम् वस्ता, वह कपडा जिसमें पुस्तकें बांधी जाती हैं,—कुत्रा एक प्रकार की ताँबिक मुद्रा ।

पुस्तकः [ब० त०] एक का विशेषण ।

पुत्री (स्त्री०) पुत्रादी का पद ।

पूजा [पू+ज] आदर, सम्मान, पूजा । सम०—अप-करणम् पूजा करने का सामान,—पूजम् भाई पूजा का स्थान ।

पूकः [पू+क] अपाव, किसी कोड़े या धुंसी से निकलने वाला, पीप । सम०—उदः, वहल, एक प्रकार का वस्त्र ।

पूक (वि०) [पू+क] १. भरने वाला, पूरा करने वाला,—क (पुं०) बाढ़, अकालवच—विष्वाङ्ग मत्स्यवराण्णपूकविष—वाच० १।२९।३९ ।

पूक (वि०) [पू+क] सर्वव्यापक, सर्वत्र उपस्थित । सम०—आविषकः एक प्रकार का जादिक स्थान जिसका कोलत्र में विधान निहित है । अक्षकृता (वि०) ऐसी गर्भवती जिसके बोड़े ही दिनों में बच्चा होने वाला है, आसन्नप्रसवा,—प्रसः (पुं०) १. जिसका मान पूर्णतः विकसित हो चुका हो २. हैत त्रयवाय के प्रसक्त मानव का विशेषण ।

पूर्व (वि०) [पूर्व+अ] १ पहला, प्रथम २ पूर्वी, पूर्वदेश ३. प्राचीन, पहला । सम०—अवसाविन् (वि०) जो बात पहले बटती है—पूर्वावसाविन्मय बलीयाँ जो जन्मावसाविन्मय—मै० त० १२।२।१४ पर वा० भा० । —विशितम् अनुप, विशिष्ट (वि०) जो पहले ही रचा हुआ है—मनु० १।२८।१, —अवसाव, अवसव (अ०) पूर्व से लेकर पश्चिम तक, आरिण (वि०) पति (या पत्नी) से पहले मरने वाला, विष् (वि०) जो कृतकाल की बात जानता है, विप्रसिद्धः पहली उमिर का विरोध करने वाला कथन,—विहित (वि०) जो पहले ही निर्णीत हो चुका हो ।

पूजानुकः [पूजन्+अनुज] दृष्टि का देवता—आत्मन् श्रोतृश्रोता वाचान् दृष्टि पूजानुको यथा महा० ८। २०।२९ ।

पूजान्ता (स्त्री०) किसी जानवर का बादा-बच्चा ।

पुनरावृत्तिः (पुं०) [ब० त०] सेनापति ।

पुनश्च (ब०) [अ+अ, चिन्, त्रसकारणम्] १. अकम् २. अकम्-अकम् ३. के बिना, के विचार । सम०—कार्यम् अकम् काम, अकम् (वि०) जो हैत विद्याओं को जामने वाला है,—वीचः विद्यावा, —वीच-करणम् एक व्याकरणनियम का दो भागों में बुरा बुरा करना ।

पुनश्चविधेयः (पुं०) बुराई पर उठे रहना संव्यापारप पुनश्चविधेय—की० वृ० १०।५।१० ।

पुनर्विभूत (पुं०) [पुनर्वि विभर्त्तति - न् + विभ] एक, पहाड़ ।

पुन (वि०) [अ+पु, त्रसकारणम्] १. विद्या, विस्तृत २. अत्र पुनश्च ३. वक्रा, ४. अवलम्ब । सम०—कीर्ति (वि०) दूर-दूर तक विख्यात,—अकम् (वि०) दूर-दूरी, दीर्घदृष्टि ।

पुन (वि०) [अ+पु, वि०] किञ्च पुनो० अकोपः] १. विना, २. पुनश्च ३. पितृवरा,—विना (स्त्री०) १. पितृवरी वाय २. पुनो ।

पुनश्च [पु+अवि—पुनश्च+कम्] १. नील कम्पा २. पाप की धारणा ।

पुनश्च [पु+अवि—पुनश्च+कम्] १. पीठ २. पुनश्च के पद का एक भाग ३. वीच । सम०—आलोके पीठ में

बड़ी ठीक पीड़ा, बाधित् (वि०) स्वाभिमन्य, बनधर,
—सत्यः मध्याह्न, बापहर, —मङ्गः बुद्ध में मज्जने की
एक रीति ।

पृष्ठपत्रम् [पृष्ठ + पत्र] १ मेरुपृष्ठ २ सामसपत्र ।

पथः [पथ् + धनु, इत्यम्] मार्ग में बना यात्रियों के लिए
संरक्षगृह मान० ।

पेदुलः, —कम् } टोकरी, पेटी ।

पेदुलकः, —कम् }

पेयः (पु०) मार्ग, रास्ता ।

पेयिणी [पेय + इनि, स्त्रिया ङीप्] गांठोधी, पात्रयोधी ।

पेयस् (नपु०) [पेय + ङितिच्] १ रूप २ माना ३ आमा
४ सजावट । सम० कारिन् १ भिरं २ मुनार,
—कम् (पु०) १ हाव २ भिरं प्राग० ७।१।२८ ।

पेयिः (स्त्री०) [पिच् + इन्] छाछ, तक ।

पेयिण (तना० उभ०) कुचलना, पाम देना ।

पेय्यकः [पिज्जल + अण्] पिज्जल का पुत्र या शिष्य ।

पेय्यकम् [पिज्जल + अण्] पिज्जल मनि कृत पुस्तिका ।

पितापुत्रीय (वि०) [पितापुत्र + छ] पिता और पुत्र से
संबंध रखने वाला ।

पेय्यलारः [पिप्यलार + अण्] अर्धबेद की एक जाला ।

पेय्युक्ति (वि०) [पिद्युन + ठक्] मिप्यानिन्दारमक, अपवाद
परक ।

पेय्यावित्तम् (नपु०) [पु + तन् = पोत + क्यच् + क्त]
१ धिम् की भांति आचरण करना २ होठ और ताल
की सहायता से उच्चारित हाथी की चिंता ।

पेय्यिष्यः [पु + ष = पोष + इनि = पोषिन्, तेषु प्रवर]
विष्णु भगवान् बाराहवतार हिरण्याक्षे पेय्यिष्यवर-
मपुत्रा देव मयता नारायणीय० ।

पेय्ययमान (वि०) [य् + यच् + घानच्, द्वित्वम्] बार
बार दौरता हुआ रुमातार नैरने वाला या बहने वाला ।

पेय्यवर्चनः (पु०) बिहार प्रदेश का नाम ।

पेय्यवीथिकम् (नपु०) पुर्ण जीव पोष के बीजों से बना
नाबीज ।

पेरुप्र (वि०) [पुरप्र + अण्] स्त्रीवाची, नारंगवाली ।
पीचः (पु०) उपवास का दिन ।

पेय्यम् (नपु०) त्रिकोण ।

पेय्य (वि०) [य० स०] जिसके बाल सीधे खड़े हों ।

पेय्यह्वा [प्र + काश् + अह्] मूल, बुभुक्षा ।

पेय्यलः [प्र + काश् + अण्] शान । सम० क प्रकट
करने वाला, व्यक्त करने वाला ।

पेय्य (तना० उभ०) विवेक करना, भेद करना — मोहात्
प्रकुपते भवान् — बहा० ५।१९।८।१८ ।

पेय्यः [प्र + कृ + अण्] बोना, मज्जना, साक करना
अभावप्रकरकरने करनेवाली निवृत्ति विरम०
१९४ ।

पेय्यपत्रम् [प्र + कृ + अण्] प्रसव । सम० — कथः समान
जीवित्य और समान बल के दो तर्क ।

पेय्यनं (नपु०) मनुष्य, ममोग (नैसा कि की० अ० में
कन्याप्रकर्म) ।

पेय्यति [प्र + कृ + क्तित्] परम पुरुष परमात्मा के बाठ
कप — मग० ७।४ । मम० अमिषः सामान्य क्षत्रु,

कन्याप (वि०) नैसर्गिक सौन्दर्य से युक्त,
स्वाभाविक सुन्दर, — भोजनम् यथागति आहार,
यथावत् भोजन ।

पेय्यतिष्ठ (वि०) [प्रकृति + मनुष्य] १ नैसर्गिक, सामान्य
२ सांख्यिक वृत्ति का महानुभाव ग० २।७।२१ ।

पेय्यिया [प्र + कृ + थ] (आपु० में) योग, नृत्ता ।

पेय्यम् (तुदा० पर०) वेग से खींचना ।

पेय्यः [प्र + कृ + अण्] विस्मयनीय ।

पेय्यति (वि०) [प्र + कृ + णिच् + क्त] ठेलाया हुआ,
बाहर निकाला हुआ ।

पेय्यन् [प्र + कृ + अण्] चला के विन्दु पर पहुँचना ।
सम० — निवृत्ति (वि०) कारण में ही रुका हुआ ।

पेय्यपत्रम् [प्र + णि + णिच् + अण्, प्रयागम्] विनाश,
— राज० ।

पेय्या [प्र + कृ + अण् + टाप्] उज्ज्वला, आभा, कान्ति ।
पेय्यीय (प्रमु० + णि + अण् + टाप्) अपने बापको
बोध्य बनाना, वाशता प्राप्त करना ।

पेय्यह् [प्र + अह् + अण्] १ राजसभासरो को उपहार
— की० अ० २।७।२५ २ जोड़ के रखना ३ वृष्टता ।

पेय्यति (वि०) [प्र + कृ + क्त] मय के कारण बर-बर
काँपता हुआ ।

पेय्यन् (वि०) [प्रा० स०] प्रवर, अत्यन्त तीव्र । सम०
— सत्यः सतिष्ठाकी तेज, — जैरथः एक नाटक का
नाम ।

पेय्यर्षा [प्र + अर् + अण् + टाप्] प्रक्रिया ।

पेय्यारः [प्र + अर् + अण्] सरकारी बोधना, सार्वजनिक
उद्बोध ।

पेय्यति (वि०) [प्र + कृ + क्त] चबराया हुआ । सम०
(नपु०) विदारि, विसर्जन ।

पेय्यला (स्त्री०) [प्र + कृ + अण् + टाप्] विरिधित ।

पेय्यपरिषयः [क० स०] भारी अवमान, बड़ा तिरस्कार ।

पेय्यलकीयः (पु०) वेदास्ती के वेत में छिपा हुआ
बीज ।

पेय्यलुक् (वि०) [प्र + कृ + उकञ्] अपमयूर, सहज में
टूट जाने वाला, निदुर ।

पेय्यलपुत्रक (वि०) प्रवृत्ति कार्य में रुका ।

पेय्या [प्र + अण् + टाप्] सवासर बुद्ध ।

पेय्यपत्रम् [प्र + कृ + अण्] जायते गन्ता ।

पेय्यम् (स्त्री० आ०) अम्हाई सेना ।

प्रत्यय (वि०) [प्र+ज्ञा+णिच्+क्त] 1. वाधिष्ठ, जाता दिया हुआ 2. व्यवस्थित—बुद्ध० ।

प्रज्ञा [प्र+ज्ञा+अङ्+टाप्] प्रकष्ट बुद्धि, बुद्ध० । तत्त्व-
अर्थान् 1 एक तत्त्व का नाम 2. बुद्धि कपी तत्त्व,
—अन् केवल बुद्धि (जैसे विष्णु), धारणा
पाठकी गुण बुद्ध०, —जाया जानेनिष्ठ ।

प्रवक्षित (वि०) [प्र+वन्+णिच्+क्त] सुकाया हुआ,
नमस्कार करने के लिए विलका छिर सुकाया गया है ।

प्रवाच्य (वि०) [प्र+वी+वाच्] योग्य, उपयुक्त (वेद०) ।

प्रविधिः [प्र+वि+धा+कि] हाथी की हाँकने की रीति
—भात० १२।६।८ ।

प्रविशेत् [प्र+वि+श+वल्] 1 मुत्तपर भेजना
2 काम पर लवाना, उपयोग में लाना ।

प्रव्यः [प्र+वी+अच्] 1 विवाह 2. मैत्री 3 अनुग्रह
4 विनयः । तत्त्व- भावः प्रेम के कारण ईर्ष्या,
विष्णु (वि०) 1 प्रेम के विपरीत 2. मैत्री करने
में अनुसुक ।

प्रवचनम् [प्र+वी+वच्] 1 (वच) देना 2 (सवचन)
स्थापित करना ।

प्रवैत (वि०) [प्र+वी+क्त] 1. प्रस्तुत किया हुआ
2. काव्यमित किया हुआ 3. लिखलाया हुआ 4. लिखा
हुआ, रचा हुआ । तत्त्व- अग्निः वह के निमित्त
अभिप्रेत की गई भाव, भावः (व० व०) पवित्र
वत् ।

प्रवृत्त (वि०) [प्र+वृत्, वृत्] पुराना, प्राचीन । तत्त्व-
—वृत्ति (नपु०) वाहति देने के लिए अभिप्रेत
पुराना की ।

प्रवृत्तः [प्र+वृत्+वञ्] प्रसार, विस्तार, फैलाव ।

प्रवृत्तः [प्र+वृत्+अच्] पूर्व की गनी, वृत् ।

प्रवृत्तः [प्र+वृत्+वञ्] अन्तिम चेतावनी देना की०
अ० १।१६ ।

प्रवृत्तम् (अ०) विशेष रूप से, खास तौर से ।

प्रति (अ०) [प्र+ति+ङि] 1 बातु के उत्तरष्ट होकर
इसका अर्थ है (क) की ओर, की दिशा में (ख)
बाधित, बदले में, फिर (ग) के विरुद्ध, के प्रतिकूल
(घ) ऊपर 2. घटकों के पूर्व लग कर इसका अर्थ
होता है (क) समलगा, (ख) विरुद्ध, विरोध में तथा
(ग) प्रतिहिता । तत्त्व- अनुग्रहः अनुदास का
एक भेद,—अरिः मुकाबले का प्रतिपक्षी,—अर्थः लूट-
भूट का पूर्व, बनावटी पूर्व,—आर्ष (वि०) विष्णु
ताका, आरुह्यः लभ्य, सर्वत्र, आरुह्यः भूज,
प्रतिपक्षि, कर्मन् (नपु०) अतः और उपवास,—आरः
मकल कला—रा० २।३।७।८ पर टीका कृष्ण
(वि०) विरोधी,—किन्ना व्यवहार, आचरण न हि
मुक्ता सर्वतत्त्व कर्मन् प्रतिपक्षि—रा० ७।१७।४

वक्त्रु तानु की सेवा,—भूतः बदले में सेवा गया तानु
या संवेदावाहक, विष्णु विचर, विष्णु को दूर करने
वाली शक्ति,—वृत्तः विरोधी शक्ति ।

प्रतिपक्ष (अ० व०) उत्तर देना ।

प्रतिपक्षः [प्रतिपक्ष+अच्] लक्षकार का उत्तर देना
—अतिव्यक्तम् प्रतिपक्ष प्रतिपक्षि—टी० उ०
१।८।१ ।

प्रतिपक्षः [प्रतिपक्ष+णिच्+अच्] 1 त्वत्त्व की० अ०
२।८।२६ 2 नाव, व्यवहार—भाग० ५।९।१ ।

प्रतिपक्षः [प्रतिपक्ष+वञ्] व्यक्तिगत बनाव भूवार ।

प्रतिपक्षः [प्रति+पक्ष+अङ्+टाप्] निश्चित समलगा,
कौन्तेय प्रतिपक्षीहि न मे वक्त प्रवचति भव०
१।३१ । तत्त्व- वरिपालम्,—वाक्कम् अपनी प्रतिपक्षी
को पूरा करना,—वारकम् अपनी प्रतिपक्षी को पूरा
करना ।

प्रतिपक्ष (नपु०) ताका वृत् ।

प्रतिपक्षित (वि०) [प्रतिपक्ष+णिच्+क्त] कलुषित,
प्रष्ट, मित्रावदी ।

प्रतिपक्षितः [प्रतिपक्ष+पद्+अच्] पृथक् निवर्तीकरण
—वा० का० १८ ।

प्रतिपक्षितः [प्रतिपक्ष+की+अच्] प्रतिपक्षित, बदला
देना ।

प्रतिपक्षित (वि०) [प्रतिपक्ष+पू+क्त] साक किया
हुआ, पड़ोका हुआ ।

प्रतिपक्षितः (स्त्री०) [प्रतिपक्ष+क्तिन्] 1 प्राप्ति, बनावित
2 प्रत्यक्षीकरण, अवज्ञा 3. वचार्थ ज्ञान 4 स्वीकृति
5. कारण 6. लक्ष्य 7 समाचार 8. उपाय 9. बुद्धि
10 उचित 11 प्रयोग 12 प्रतिदि 13 विधवासी
तत्त्व- परावृत्त (वि०) ठीक, न बदले वाला,
—प्रवृत्तम् उन्नत पद अर्थ करना ।

प्रतिपक्षितः (पु०) प्रतिपदा वाले अनव्याय विन के पढ़ना
—प्रतिपक्षितकीकर्म विशेष तन्ता गता—रा०
५ ।

प्रतिपक्षित (वि०) [प्रति+पक्ष+णिच्+क्त] प्रकट
किया गया ।

प्रतिपक्ष (वि०) [प्रतिपक्ष+णिच्+वञ्] चर्चा करने
के योग्य, व्यवहार में जाने के योग्य ।

प्रतिपक्षान्न (वि०) [प्रतिपक्ष+णिच्+अ+आन्] 1

1 दिया जाता हुआ, उपहृत किया जाता हुआ

2. व्यवहृत किया जाता हुआ 3. चर्चा के अवर्षत ।

प्रतिपक्षम् [प्रतिपक्ष+वृत्] शीघ्र का पानी ।

प्रतिपक्ष (वि०) [प्रति+पक्ष+क्त] वचार्थित, फैलाया हुआ,
व्याप्य ।

प्रतिपक्ष (स्त्री०) (स्त्री०) प्रसारण, प्रवृत्त हुआ निम्न
प्रतिपक्षितः—टी० १।१७ ।

प्रतिष्ठा (ब्रह्म० पर०) 1 उत्तर देना, 2 (आ०) मुकर जाना।

प्रतिष्ठा [प्रति + था + क + टाप्] उचाटपना, ध्याना-पकवण निद्रा व प्रतिभा सेव ज्ञानाध्यामेव तत्त्वविन्
—महा० १२।२७।७।

प्रतिपक्षकम् [प्रतिपक्ष + क्त्वा] विहित पक्ष, नियत किया हुआ आहार।

प्रतिपक्षकम् [व० त०] मूर्तियों का घर।

प्रतिपक्षकम् [(वि०) व० व०] बागा हुआ, बागकन।

प्रतिपक्षकम् [(वि०) [व० त०] जिसे (पिछली भूली बातें) याद या नई हों।

प्रतिपक्षकम् [प्रति पक्ष + क्त्वा] प्रत्युत्तर, प्रत्युक्तिवचन
—म० व० ४।४१।

प्रतिपक्षकम् [प्रति + पक्ष + क्त्वा] पक्ष में प्रतिपक्षी।

प्रतिपक्षकम् [(वि०) [प्रति + पक्ष + क्त] 1 प्रविष्ट अवि-
कृत 2 स्थापित—आम० १०।३०।३।

प्रतिपक्षकम् [(वि०) [प्रति + पक्ष + क्त] 1 उत्तर
दिये जाने के योग्य 2 कार्यविचार किये जाने के योग्य।

प्रतिपक्षकम् [(ब्रह्म० कि०) ध्यान (साधना) रखना
चाहिए।

प्रतिपक्षकम् [(ब्रह्म० व०) विशेषता, विलक्षणता।

प्रतिपक्षकम् [प्रति पक्ष + क्त्वा] उत्तर जवाब।

प्रतिपक्षकम् [(ब्रह्म० व०) निष्कृतिवचन, कर्मो मोचन धन।
रा० २।५५ पर अधिक०।

प्रतिपक्षकम् [प्रति + पक्ष + क्त्वा] आधन, मठ (जहाँ सबकुछ
रक्ता हुआ है)।

प्रतिपक्षकम् [प्रति + पक्ष + क्त्वा] 1 निवेद्यारमकता का ध्यान
दिकाना 2 बाधा।

प्रतिपक्षकम् [प्रति + स्वा + क्त्वा + टाप्] कृत की प्रति।

प्रतिपक्षकम् [प्रति + स्वा + क्त्वा + टाप्] समर्पण।

प्रतिपक्षकम् [(वि०) [प्रति + स्वा + क्त + उ] कहीं पर बस
जाने का हस्तक।

प्रतिपक्षकम् [(वि०) [प्रति + स्वा + क्त + क्त] पूरा किया
हुआ महा० ३।८५।१४।

प्रतिपक्षकम् [(वि०) [प्रतिपक्ष + क्त + क्त] आचमनकारी
हुआ करने वाला।

प्रतिपक्षकम् [(वि०) [प्रतिपक्ष + क्त + क्त] सकुचित किया
हुआ।

प्रतिपक्षकम् [प्रतिपक्ष + क्त + क्त] [विच्छेद विषयन।

प्रतिपक्षकम् [प्रतिपक्ष + क्त + क्त] 1 किसी बात का
आत्मपूरक विचार करना 2 साक्ष्य दर्शन।

प्रतिपक्षकम् [प्रतिपक्ष + क्त + क्त] 1 स्मृति, याद
2 उपचार, चिकित्सा।

प्रतिपक्षकम् [(वि०) [प्रतिपक्ष + क्त + क्त] समीकृत, बरा-
बर किया हुआ।

प्रतिपक्षकम् [(व० त०) किसी भी मंगलमय कार्य के आरम्भ
के अवसर पर हाथ की कलाई में राखी या पहुँची
(पुनीत कलावा) बाँधना।

प्रतिपक्षकम् [(व०) एक-एक करके, एक-एक।

प्रतिपक्षकम् [(वि०) [प्रति + क्त] 1 बीजियायी हुई
(अर्ध) 2 कुण्ठित दूध।

प्रतिपक्षकम् [प्रति + क्त + क्त] आगमन की सूचना देना
—रा० ७।१।७।

प्रती [प्रति + इ अदा० १२०] (शत्रु का) मुकाबला
करना नमस्तेपानह तत्त्व प्रतीया रणमुच्यते महा०
५।१०२।१३।

प्रतीतात्मन् [प्रति + इत + आत्मन्] विषयन्त, दृढ़।

प्रतीकम् [प्रति + क्त + नि० दीर्घ] 1 चिह्न 2 प्रतिलिपि।
सम० ब्रह्मण्य चिह्नारक सकल्पना।

प्रतीकम् [(वि०) [प्रत्यक्ष + क्त, अक्षय, नल्लय, दीर्घक]
अन्युक्तो अन्यर की ओर मुड़ा हुआ।

प्रतीकम् [(वि०) [प्रतीक + क्त] दीपक अलंकार का एक भेद।

प्रतीकम् [(स्त्री०) एक प्रकार की छया।

प्रतीकम् [(वि०) [अक्षय प्रति] 1 ओलों को जो दिखाई दे,
हसीनीय 2 नमस्तेपान, 3 स्पष्ट, माह। सम०—वर
(वि०) प्रत्यक्ष को ही उच्चतम प्रमाण मानने वाला,
—विद्यालय स्पष्ट विधि स्पष्ट आदेश, विद्यवीच
दृष्टिपरास के अन्तर्गत था।

प्रतीकम् [(व०) प्रत्येक अवसर पर प्रत्यक्षप्रत्यक्षमय-
प्रपञ्च बनना०।

प्रतीकम् [(प्रत्यक्ष + प्रवण) (वि०) आत्मानुभव एक
वाक्या का अन्त।

प्रतीकम् [(वि०) [प्रतीक + क्त] अज्ञान पर निम्ना मया एक
प्रत्यक्ष।

प्रतीकम् [(व्या० ब्रा० १२०) 1 बदले में नमस्कार
करना 2 स्वागत करना।

प्रतीकम् [(वि०) [प्रति + क्त] उद स्वा + क्त]
अभिप्राय का स्वागत करने के लिए अपने आसन से
उठना।

प्रतीकम् [प्रति + क्त] इन्द्रियो का कार्य—सर्वेन्द्रिय
गुणान् सर्वेन्द्रियादेवमेव आत्म० ८।३।१४।

प्रतीकम् [प्रति + क्त] अर्ध + क्त] बदले में नमस्कार करना।

प्रतीकम् [(वि०) [प्रति + क्त + क्त] बिफल
कर, महारकारी।

प्रतीकम् [प्रति + क्त + क्त] स्वा + क्त + क्त] सुखद,
विश्रान्तिदायक, स्फुटिवचन।

प्रतीकम् [(स्त्री०) [प्रति + क्त + क्त + क्त] पौष
प्रकार के श्रावो में से एक (बृ० में)।

प्रतीकम् [(वि०) [प्रति + क्त + क्त] जेका हुआ, छोड़ा
हुआ—प्रत्यक्षप्रत्यक्ष माल० १०।२३।

प्रत्यावर्तनात्मक (वि०) [प्रति + भा + क् + क्तान्, स्वायं कम्] निराकरण करने की इच्छा वाला, आखेप करने का इच्छुक।

प्रत्यापन्न (वि०) [प्रति + भा + प् + क्त] 1. वापिस आया हुआ, फिर से एकत्र किया हुआ 2. बहुकाया हुआ, बरसे हुए मन वाला, विपरीत वृत्तिकोष वाला। —महा० १२।२९।८।

प्रत्यासक्तिः (स्त्री०) [प्रति + भा + सप् + क्तित्] प्रसन्नता हृद्योत्प्लवता।

प्रत्याहारः [प्रति + भा + ह् + क्त] प्रस्तावना या आग्रह, का विशेष भाग (नाट्य०)।

प्रत्युपलक्ष्यः (स्त्री०) मुखादित्य समीकरण।

प्रत्युपलक्षित (वि०) [प्रति + उप + स्वा + क्त] 1. समुद्भवत 2. एकत्र होना, इकट्ठा होना (जैसे मृगोत्सर्ग का) 3. विमुख, विपरीत हुआ—जैसे प्रतिप्रत्युपलक्षित महा० १२।२८, ७।५७।

प्रत्युद्ध (वि०) [प्रति + बद्ध + क्त] 1. प्रत्यावृत्त, अस्वीकृत 2. उपेक्षित 3. मात दिया हुआ।

प्रत्यक्षकविः (पुं०) वात्सीकि का विद्यवाच।

प्रत्यक्षिण (वि०) [प्रा० स०] कपूर, दल, विपुल—छानुवाच विनीतारामा सुतपुत्र प्रत्यक्षिणः—रा० २।१५।५।

प्रवा (बुद्धी० उभ०) क्वण परिकीर्ण करना।

प्रवाक्यम् [प्र + वा + क् + क्त] कथन करना, निराकरण करना असंकेत हि वर्णन प्रधान वर्ग आधुनः—महा० १३।४५।८।

प्रवाक्यकथन (वि०) [प्र + वा + क् + क्त] प्रवाणे कथनः—त० स०] वरिष्ठ, उपहारादि समय पर न देने वाला।

प्रवेकः (पुं०) [प्र + दिक् + क्त] स्वातन्त्र्य के क्षेत्र में एक वाचा (जैन०)।

प्रवेक्ष्यम् [प्र + दिह् + क्त] लीपना, पोतना।

प्रवक्ष्यकथनम् [व० त०] वृद्ध का अग्रभाष।

प्रवाचनकारणत्वः (पुं०) शास्त्र का सिद्धान्त कि प्रधान ही मूल कारण है।

प्रवाचनवर्धित (वि०) जो व्यक्तित्व शास्त्र के प्रधानकारण को मानने वाला है।

प्रवाचनविज्ञा (स्त्री०) बच कर निकल भावने का कार्य।

प्रवक्ष्यः [प्र + पृथ् + क्त] हस्तवाच्य वाताचार्य (नाट्य०)।

प्रवक्ष्यम् [प्र + पृथ् + क्त] आग्रह, वाचा।

प्रवृत्त (वि०) [प्रा० स०] अत्यन्त पुरातन।

प्रवृत्तम् [प्र + पृथ् + क्त] कण की छोटी की सुकाना, और बाँध देना।

प्रवृत्तता [प्र + पृथ् + क्त + ता] प्रवा, वृद्धि।

प्रवृत्त (वि०) [प्र + क्त + क्त] दूर कर दृष्टि-दृष्टि हुआ, मुक्त हुआ, हराया हुआ।

प्रवृत्त (वि०) अत्यन्त सुन्दर।

प्रवृत्तः [प्र + पृथ् + क्त] समृद्धि, —प्रवाचाधीन मूलानां वर्गप्रवृत्तम् कृतम्—महा० १२।१०१।१०।

प्रवा [प्र + भा + बद्ध + क्त] पञ्चरात्रमणि। सम० —निष् (वि०) उज्ज्वल कि० १५।५८।

प्रवृत्तकरणीयम् [स० त०] प्रातः काक अनुच्छेद।

वाक्य (वि०) [प्र + पृथ् + क्त] 1. प्रमुख, प्रवाचकात्मी 2. सुखनात्मक वक्ति, 3. मूक 4. बोलने वाला तत्त्वत् तस्य बीरस्य स्वर्गमानेप्रवाचकम् रा० ४।७।८।

प्रवृत्ति (वि०) [प्र + भा + क्त] कथित, उद्घोषित।

प्रवृत्तमित्य (वि०) स्वामी के समान बहुवाचकसममितात् —सा० द०।

प्रवृत्तलोचः (पुं०) [व० त०] मायेश के वचन द्वारा उभया नवा आखेप का० २।१३८।

प्रवेकः [प्र + मिद् + क्त] उद्गम स्थान (जैसे नदी का)।

प्रवाचिन् (वि०) [प्र + वच् + क्त] नाचियों में के रखों का उत्पादक।

प्रवृत्तरा (स्त्री०) दल नामक मृत्ति की पत्नी।

प्रवृत्तम् (वि०) [व० स०] बड़ा कथितवाली, प्रवृत्ती, तेजस्वी।

प्रवाक्यम् [प्र + भा + क्त] एक प्रकार की वाच (समी०)। जैसे वृत्तप्रवाच।

प्रवाचनमुक्त (वि०) किसी व्यक्ति की कारीरिक कथित और तीक्ष्ण के अनुक्त।

प्रवाच्यः (म०) [प्रवाच + क्त] वाच या लोक के अनुसार।

प्रवाच्यम् (नपुं०) निश्चित्य प्रवाच्य ज्ञान की वचार्थता।

प्रवृत्तिः [प्र + वा + क्त] सकटीकरण, अनिश्चित।

प्रवृत्तिः [प्र + पृथ् + क्त] 1. मुक्ती मुक्त का हर्ष, उत्साह (जैन०) 2. एक वर्ष का नाम।

प्रवृत्तकीरणम् [व० त०] बलों की बहुलता, परिग्रह की महारत।

प्रवृत्तताम्, (वि०) मुक्ती मन वाला, विद्यमान अपने मन प्रवृत्तताम् को समेत कर लिया है। प्रव० १।२९।

प्रवृत्तवाचि (वि०) [व० स०] सम्मान में हाथ जोड़ी हुए।

प्रवृत्त (पुं०) आत्मक, उक्ताने वाला, बड़काने वाला श्रेयक।

प्रवा (बद्धा० पर०) वस्तु होना, अपने ऊपर देना, उभारना।

प्रवृत्त (वि०) [प्रवृत् + क्त] 1. प्रवृत्त, उभार द्वारा काय बंधना हुआ 2. चौकी हुई (जैसे तलवार)।

प्रवृत्तकार (वि०) [व० स०] विद्यका स्थापन साकार किया गया है प्रवृत्तकारादिबोधनसत्ता न वा परं संवत्तिमुपवृत्ति—पु० ५।

प्रयोक्तृ (पुं०) [प्र + युज् + क्तृ] प्रापक, समाहर्ता ।
 प्रयोगः [प्र + युज् + क्तृ] १ उपयोग में लाना, इस्ते-
 माक करना, काम २ यथावत रूप, सामान्य उपयोग
 ३ फेंकना, फेंक कर मार करना (विप० महार)
 ४ प्रदर्शन, अनुष्ठान ५ अभ्यास परीक्षणायक उप-
 योग ६ प्रक्रिया क्रम ७ कार्य ८ सत्वर पाठ ९ आरम्भ
 १० योजना, तरीका ११ साधन, उपाय । सम०
 —ग्रहणम् व्यावहारिक शिक्षण प्राप्त करना, चतुर
 (वि०), निपुण (वि०) व्यवहार में प्रयुक्त करने
 में दक्ष, स्वयं अभ्यास करने में होसियार, सामान्य
 कल्पसूत्र, विष् (वि०) जो किसी वस्तु के व्यवहार
 की जानता है ।

प्रत्यक्षबुद्धि (वि०) [व० त०] जिसकी बुद्धि
 प्रत्यक्षबुद्धि से समी है ।

प्रत्यक्षः [प्र + ली + क्तृ] १ आध्यात्मिक लय २ मुर्छा,
 बेहोशी ।

प्रत्यक्षिता [प्रत्यक्ष + इति + तत् + टाप्] प्रेम सबकी
 बाटपीत ।

प्रत्यक्ष (वि०) [प्र + लुप् + क्त] मूटा हुआ ।

प्रत्यक्ष (वि०) [प्र + लुप् + क्त] १ ठग, चञ्चल
 २ जोन में फँसाया हुआ ।

प्रत्यक्षः [प्र + लुप् + क्तृ] नाक, महार ।

प्रत्यक्ष [प्र + लुप् + क्तृ] पट्टा, पैठ ।

प्रत्यक्षिकृत [प्रत्यक्ष + कृत + क्त] इच्छा, मुकाब ।

प्रत्यक्षः [प्र + लुप् + क्तृ] लूटा आरोप हि० १।
 ४४ ।

प्रवर (वि०) [प्र + वृ + क्तृ] १ चुप, प्रधान, मोठ
 उत्तम २ सबसे बड़ा, ट (पुं०) १ बुद्धि २ अभि-
 होष के अवसर पर बाह्य द्वारा मणि का विशेष
 आवाहन ३ पूर्ववत् ४ कुल, बंस ५ जोन प्रत्यक्ष
 कवि ६ सम्यक् ७ बादर, —रा (स्त्री०) बोधवरी
 में मिलने वाली एक नदी, —रन् (नपुं०) प्रवर की
 लकड़ी, पदम । सम० —बाधुः मृत्युवात् पातु,
 लक्षित्व एक कृत्य का नाम ।

प्रवर्तन (वि०) परवेश में रहने का व्यवस्था ।

प्रवर्तन (वि०) [प्र + वृ + क्तृ + क्तृ] निश्चित
 किने जाने के बोध ।

प्रवर्तनकर्म (नपुं०) ऐसे स्वाम पर बोना बहुत सिद्धि की
 वा वातावरण के द्वारा हुआ बुद्धि वाली वाली हो ।

प्रवर्तन [प्र + वि + क्तृ + क्तृ] विवेक, प्रकाश, जाति,
 प्रकार ।

प्रवर्तन (वि०) [प्रवर्तन + क्तृ] परीक्षित, साव-
 धान्यपूर्वक विचार किया गया ।

प्रवर्तन (वि०) [प्र + वि + क्तृ + क्तृ] जो किसी बात
 के परामर्श ही गया हो, हुए रहने वाला ।

प्रवेशः [प्र + विष् + क्तृ] १ रीति, विन्यास २ रोजगार
 जैसा कि (मुसलमानों) में ।

प्रविष्टः (पुं०) धन, परास, पहुँच ।

प्रवृत्त (वि०) [प्र + वृ + क्तृ] १ बहने वाला —प्रवृत्तमूर्धक
 बायु महा० १४।४६।१२ २ आघात करने वाला,
 बाट पहुँचाने वाला ३ परिचारित, घुमाया हुआ ।
 सम० — चक्रता (स्त्री०) प्रमत्तता यात्रा ० १।२६६ ।

प्रवृत्ति [प्र + वृ + क्तृ] १ गुरुक (गणित०) २ उदय,
 उद्गम ३ प्रकट होना ४ आरम्भ ५ आचरण
 ६ का, रोजगार ७ प्रयोग ८ सार्यकता, जर्ब
 ९ सभाचार १० आग्य, किस्मत ११ प्रत्यक्ष ज्ञान ।
 सम० चुपकः नमाचारों का अधिकर्ता स्थितः
 बन्धादेश, चिन्तनम् बाहरी सत्ता का ज्ञान ।

प्रवृत्तकर्म [प्र + वि + क्तृ + क्तृ] बाधकित ।

प्रवृत्तबोधः [व० त०] व्योतिष का एक बोध जो संस्कार
 सेने का निर्देश करता है ।

प्रवृत्त (व्या० वा०) अधिकारवादी करना ।

प्रवृत्तता [व० त०] अभिनयन, व्यवहार ।

प्रवृत्तिः [प्र + वृ + क्तृ] प्रचार, विज्ञापन ।

प्रवृत्तनम् [प्र + वृ + क्तृ] कागि की स्थापना (किन्ती
 राजनीतिक सत्ता के पश्चात्) ।

प्रवृत्त (वि०) [प्र + वृ + क्तृ, तत्त्व तत्त्वम्] सुभा हुआ ।

प्रवृत्तः [प्रवृत्त + क्तृ] १ सत्ता, बुद्धि, पुष्टता २ व्यापक
 पुष्टता ३ विचारस्थिति विन्तु ४ सत्ता ५ किन्ती
 पुष्टता का छोटा सत्ता । सम० —कदा पुष्टता
 पर सत्ता होने वाली कदाही, —कविम् व्योतिषी,
 जाने होने वाली बात कहाने वाला, —विचार
 अधिकारक विषयक व्योतिष की एक शाखा ।

प्रवृत्त (वि०) [प्र + वृ + क्तृ] सत्ता सत्ता, किन्ती
 बात से विपका हुआ ।

प्रवृत्तः [प्र + वृ + क्तृ] १ कदा हुआ प्रयोग
 कर्म कदास्मात्कालिकः प्रवृत्तः — वी० वृ०
 १२।११ पर जा० वा० २ जोन बटना वा कदा-
 वस्तु । सम० —कदा सर्वकाल हेतुनामा कदा स्वयं
 'प्रकाश' की सिद्ध किया जाता है ।

प्रवृत्त (वि०) [प्र + वृ + क्तृ + क्तृ] सत्ता प्राप्त,
 कालिक में बाधा हुआ —प्रवृत्त कर्ता प्रवृ-
 त्तिते — वी० १।११ ।

प्रवृत्तः [प्र + वृ + क्तृ] जोन पक्ष के पश्चात् उत्तम
 पीक रत ।

प्रवृत्त (वि०) [प्र + वृ + क्तृ] जो प्रवृत्त हो चुका है ।

प्रवृत्तनम् [प्र + वृ + क्तृ + क्तृ] रम्भ, रस्ती, बेड़ी ।

प्रवृत्त (व०) [प्र + वृ + क्तृ] १ जीत कर २ कर्म
 ही, निश्चित रूप से । सम० कागि (वि०)
 जीत कर करने वाला प्रवृत्त रूप से विचारणीक ।

प्रसवकालः [ब० स०] प्रसवकाल, बच्चा जन्मने का समय ।
प्रसूति [प्र+सू+कृतिन्] उद्भव, उत्पत्ति, कारण-कि०
४३२ ।

प्रसू (स्वा० पर०) १ विषय्य होना (जैसा कि शरीर के
ठीनों दोनों का) २ अनुसरण करना ३ सप्रसारण
अर्थात् गर्भस्वरी को उसके संवादी स्वर में बदलना ।

प्रसारः [प्र+सू+प्रत्यय] प्रसार (जैसा कि 'दृष्टिप्रसार' में) ।

प्रसारः [प्र+सू+प्रत्यय] १ व्यापारी की दुकान २ (बूल)
उपाना ३ पैसाव ।

प्रसारितमात्र (वि०) [ब० स०] जिसके अंग बहुत फैले
हुए हों ।

प्रसूय (स्वा० पर०) छा जाना, फैल जाना (जैसे कि
अन्धकार) ।

प्रसक्त (वि०) [प्र+स्कृत्+कृत] आक्रान्त, जिसके
ऊपर बाधा बोधा गया हो ।

प्रस्तारप्रवृत्तमात्रः [ब० त०] मीमांसा का व्याख्याविषयक
एक सिद्धान्त जिसके अनुसार करण द्वारा प्रतिपादित
विषयवस्तु की अपेक्षा कर्म द्वारा विहित वर्णन अधिक
प्रबल होता है ।

प्रस्तावः [प्र+स्तु+प्रत्यय] १ व्याख्यान का विषय, शीर्षक
२. नाटक की प्रस्तावना ३ साम के परिचायक शब्द ।

प्रस्तोत्र (पुं०) [प्र+स्तु+तृप्] उच्चाता की सहायता
करने वाला शरीय पुरोहित, शरित्व ।

प्रस्तोत्रः [प्र+स्तु+प्रत्यय] सचमे, उत्प्रेक्ष्य-भाग०
१।१५।२१ ।

प्रस्थानम् [प्र+स्था+कृत्] १ दर्शनशास्त्र की एक शाखा
२ धार्मिक शिक्षावृत्ति, प्रवचना - सप्रस्थाना साधनार्थं
विधिष्टा, महा० १२।१५।२२ । संय० मन्त्रालय
वाला आदेश करने समय साङ्गिक प्रक्रियाएँ ।

प्रस्थः [प्र+स्तु+प्रत्यय] १ चार (जैसे कि दूध की)
२. [ब० ब०] बाँधू ३ मृत् ।

प्रस्थानम् (वि०) [प्र+स्थ+प्रत्यय] होव करने वाला,
बराबरी करने वाला ।

प्रस्थार (वि०) [प्र+स्थ+प्रत्यय] सूजा हुआ, फूला
हुआ ।

प्रस्थानुराग (वि०) [ब० स०] जहाँ पर होव करते हैं।
--संगीताय प्रस्थानुराग --मेघ० ।

प्रस्थिः [प्र+स्तु+कृतिन्] आधात, चोप, चपट ।

प्रस्था (बुध० पर०) छोड़ देना, हार जाना ।

प्रस्थि (स्वा० पर०) सूझना, उम्झना होना ।

प्रस्थितम् (वि०) प्रस्था लेकर जाने वाला ।

प्रस्थानिकता (स्त्री०) एक कण्ड का नाम ।

प्रहारः [प्र+हृ+प्रत्यय] १ मूड २. हार (जैसे में बहने के
का) ।

प्रोक्तः [ब० स०] कच्चे कद का व्यक्ति, कच्चावर प्रांशु-

लभ्ये रन् १।२ । सम०- आकार (वि०) जिसकी
ऊँची दीवारें हों ।

प्रोक्तारकी [स० त०] दीवार के ऊपर बना चतुर्तरा ।

प्रोक्तारकी (वि०) [स० त०] जो फलील पर लगा हो ।

प्रोक्तमानुष [क० स०] साधारण मनुष्य ।

प्रोक्तन (वि०) [प्रकृ+तन्] १ पुराणा, पिछका, भूत
बाल का २ अतीत समय का, पहला, पहले अन्ध का,

मन् भयय । सम० कर्मन् (नपुं०) पूर्वजन्म में
किया गया कार्य, भाग्य, --अन्धन् (नपुं०) पूर्व जन्म ।

प्रोक्तनी [प्रत्यय+तन्+प्रत्यय+कीप्] १ साहस २ वृद्धता ।

प्रोक्तम् (नपुं०) [प्रत्यय+प्रत्यय] प्रवृत्तता, वीरता
चतुरता । सम० बुद्धिः (स्त्री०) निर्णय करने का
साहस, न्याय साहस ।

प्रोक्तम् [प्रत्यय+प्रत्यय] सही स्थिति, वचार्थ दशा, विद्या,
अनुदेश ।

प्रोक्तिका (स्त्री०) अतिवि सन्धार पाठनो का स्वागत ।

प्रोक्त (वि०) [प्र+अन्+प्रत्यय] १ सामने का, जाने
का २ पूर्वी ३ पहला । सम० उत्पत्तिः (किन्ती रोग
का) पहला दर्शन, बन्धनम् प्राचीन उत्पत्ति, पहले का
कथन ।

प्रोक्त (वि०) सामान्य प्रवाओं के विरुद्ध, साधारण
अन्यथान और तत्त्वानों के विपरीत ।

प्रोक्त (पुं०) [प्रकृ+प्रत्यय] १ अध्यापक का अध्या-
पक २ सेवानिवृत्त अध्यापक ।

प्रोक्तम् (वि०) [ब० स०] जिसकी जड़ें पूर्व दिशा की
और मज्जी हुई हों ।

प्रोक्तवृत्तिः (स्त्री०) एक नियम जिसके अनुसार 'अ'
से पूर्व किन्ही विशेष अवस्थाओं में 'ए' अपरिचित
अवस्था में रहता है ।

प्रोक्तवृत्तिः (स्त्री०) एक प्रकार का कण्ड ।

प्रोक्तवृत्तिम् [प्रोक्त+प्रत्यय] १ प्रजननात्मक क्षति
२ एक पक्ष का नाम ।

प्रोक्त (वि०) [प्रकृ+प्रत्यय] १ बुद्धिमान् २ कथन-
हार, विद्वान्, ज्ञः (पुं०) १ बुद्धिमान् या विद्वान्
२ एक प्रकार का तोता ३ ध्वनिगत बुद्धिमत्ता
४ परमेस्वर ।

प्रोक्ता [प्राप्ति+तत्त्व, त्व, वा] बुद्धिमत्ता ।

प्रोक्तम् [प्र+अन्+प्रत्यय] १ जीवन, जान २ आहार,
अन्न । सम० कर्मन् (नपुं०) जीवन कार्य, हरिकीर्ण

(वि०) जिसके जीवन का अन्त निकट है, परित्राणम्
किन्ही के जीवन की रक्षा करना, बचाना, कथना
प्राप्तप्रिया, ३ विद्या प्राप्तायाव की विद्या ।

प्रोक्त (अ०) [प्र+अन्+प्रत्यय] १ पी कटने पर, प्रमात
बैला में, तड़के, सवेरे २ कल सवेरे । सम० अनुवाकः

वह सुकृष्ट जिससे प्रातः स्नान का उपक्रम होता है ।

कर्मः प्रभातकाल का चक्रमा ।

प्रतिकामिन् (पु०) संवत् या वृत् ।

प्रतिनिधिः [प्रतिनिधि + ठक्] 1 स्थानापन्न 2 प्रतिता-
धिकार, प्रतिनिधिरथ ।

प्रतीत्यन् [प्रतीप् + ध्यञ्] शत्रुता, विरोध ।

प्रत्यक्षिक (वि०) [प्रत्यक्ष + ठक्] ओलों की दिखाई देने
वाला ।

प्रवेशमात्र (वि०) [प्रवेशमात्र + अण्] जरा या, विचार
मात्र देने के (अण्, अण्) एक बालिस्त की माप
पूरी अंगुलियों को फैलाकर अंगुठ के किनारे से तबनी
अंगुली के किनारे तक की माप उपविषय द्वाविं
प्रवेशमात्रे प्रविशन्ति न तलेन कारिण्युद्गमः २।१।

प्राक् (वि०) [प्रकृष्टोऽन् अण् सयात्] 1 यात्रा पर गच्छ
हुआ 2 पूर्वोदाहरण निर्देशन 3 बन्धन ।

प्राप्तः [प्रकृष्टोऽन्] 1 किनारा, गोट 2 कोण (अण्
अष्ट आदि का) 3 सीमा 4 अन्तिम किनारा ।
सम० निवासिन् सीमान्त प्रवेश का करने वाला
-मयी (अ०) भ्रम में आखिर कार ।

प्रापकम् [प्र + आप् + कृट्] व्याख्या, विवरण चित्रण ।

प्रापिकम् (वि०) [प्र + आप् + णिच् - सन् + उ]
पहुँचान की इच्छा वाला ।

प्राप्त (वि०) [प्र + आप् + क्त] किसी पूर्वोदाहरण के
अनुसार या पूर्वतर्क का अनुगामी । सम० कर्म
(वि०) यात्रा उपवृत्त - जात्र (वि०) 1 बुद्धि-
मान् 2 सुन्दर ।

प्राप्तिः (स्त्री०) [प्र + आप् + क्तिन्] 1 किसी वस्तु का
निरीक्षण करने पर लगाया गया अनुमान 2 (अपानि०
में) ग्यारहवाँ चान्द्वर ।

प्राप्य (अ०) [प्र + आप् + ल्यप्] प्राप्य करके उपलब्ध
करके । सम० कारिण् (वि०) कार्य में निवृत्त
होकर ही प्रभावशाली कृप (वि०) अनायास हो
प्राप्त होने वाला ।

प्रापकम् [प्र + आप् + कृट्] द्रव में पंथार किया हुआ भोजन ।

प्रापकम् [प्रयत्न + ध्यञ्] पवित्रता, स्वच्छता ।

प्रापु (नपु०) बड़ी हुई जीवन शक्ति दोबतर जीवन ।

प्राप्य (वि०) [प्र + आप् + क्त] प्राप्त किया
हुआ, सुख किया हुआ । सम० -कर्मन् कार्य
(वि०) जिसने अपना कार्य आरम्भ कर दिया है

कर्मन् (नपु०) वह कार्य जो फल देने लगा है

प्रापयितु (वि०) [प्र + अर्ज् + णिच् + लृप्] जो अनुदान
देता है ।

प्राप्य (प्रा० आ०) आश्रय लेना, पहागा गना ।

प्राप्य (वि०) [प्र + अर्ज् + ण्यप्] 1 चाहने वाला
2 वाञ्छनीय ।

प्रापेयम् [प्रयत्न + अण्] प्रयत्न से सम्बन्ध रखने वाला ।

प्रापिक (वि०) [प्रयत्न + ठक्] वह कर्म जो किसी कार्य
पद्धति में सर्व प्रथम अपनाया जाकर बाद में पक्वपद्धति
सभी कार्यों में अपनाया जाय, जिससे कि कार्य में
पद्धति की एकता बनी रहे ।

प्रापयुक्तः [प्र + वद् + उक्तञ्] दान-विशेष में प्रति पक्षी ।

प्रासादः [प्र + सद् + घञ्] 1 महल, भवन 2 राज भवन
3 मन्दिर 4 शत्रुता 5 वेदिका । सम० - गर्जः
महल का आन्तरिक कमरा, - विचारः महल की
बाटी ।

प्राह्वनीय (वि०) [प्र + आ + ह्वे + अनीय] अतिथि की
अति स्वागत किये जाने के योग्य ।

प्राह्वय [प्र + आ + वृष् + क्] अतिथि, पाहुणा ।

प्रिय (वि०) [प्री + क] 1 प्यारा, अनुकूल 2 सुखद,
3 कमलचित्त 4 भक्त, अनुरक्त, -य (पु०)
1 प्रेमी, रति 2 हरिण 3 जामाता, भा (स्त्री)
1 पत्नी 2 महिला 3 छोटी इलायको - अण्
(नपु०) 1 प्रेम 2 गुणा प्रसाद 3 सुन्दर समाचार ।

सम० प्राप्तिम् (वि०) मिष्टमाषो मीठा दोलने
वाला आशु (वि०) जिसे अपनी जान बहुत प्यारी
हो जीवन को चाहने वाला, कलह (वि०) हन-
वाल् - जीविता प्राणा का प्रेम - संवहार (वि०)
मुकदमे बाजी को पसंद करने वाला ।

प्रियवद (वि०) [प्रिय वदति वा + क्] अनीय और
सुखद वस्तु का दाता ।

प्रीतिः [प्री + क्तिन्] 1 प्रबल इच्छा 2 स्नेही की बुद्धि ।
सम० संकोचः मैत्री सन्ध, लगतिः मित्रों का
सम्बन्धन ।

प्रेतः [प्र + इ + क्त] 1 नरक में रहने वाला 2 इस संसार
से गया हुआ, मृत 3 पितर । सम० - कथनः एक
विशेष नरक, शत्रुन् और्ध्वदृष्टि किया के अवसर
पर प्रयुक्त किया जाने वाला वर्तन ।

प्रेमालम्बम् (नपु०) (प्रियों की ओर) देखना या
(उन्हें) स्पर्श करना ।

प्रेमा [प्र + इष्ठ + क्त + टाप्] कान्ति, भावा प्रेमा शिपय
रहितोपस्थादे भावः ३।८।२४। सम० पूर्वम्
(अ) देखभाल कर, जान बूझ कर, प्रयत्नः रम-
मञ्च पर खेला जाने वाला नाटक ।

प्रेमाहं (वि०) [तु० त० य०] प्रेम से पसीका हुआ ।

प्रेमकम् (नपु०) एक प्रकार का चमड़ा की० अ०
२।११।२९ ।

प्रेमकर्मकम् (नपु०) सीन्ध, लावण्य ने० ५।६६ ।

प्रेमकल (प्रा० पर०) यात्रा पर प्रस्थान करने वाला ।

प्रेमकालमा [प्र + उत् + कृट् + णिच् + युच् + टाप्]
1 (भूतप्रेतादि की) भगना 2 विनाश ।

प्रोत्सव (वि०) [व० स०] बावलों में बुझा हुआ ।
 प्रोत्सव (वि०) [व० स०] सलाका पर रक्खा हुआ ।
 प्रोत्सव (वि०) [प्र + उत् + वृत्] फैलाया हुआ ।
 प्रोत्सव (वि०) [प्रकषोत्सवः - प्रा० स०] ऊँचे स्वर
 से बोलने वाला ।
 प्रोत्तर (वि०) [व० स०] बड़े पेट वाला ।
 प्रोत्थि (वि०) [प्रा० स०] लहराता हुआ, घटबट
 होता हुआ ।
 प्रोत्थित (वि०) [प्र + उत् + नम् + थिच् + क्त] उठाया
 हुआ, उभारा हुआ ।
 प्रोत्थ (अदा० उभ०) अच्छी तरह ढक लेना, चावर लपेट
 लेना ।
 प्रोत्थ (वि०) [प्र + उत् + वृत् + क्त] 1. विज्ञान, बढ़ा
 2. व्यस्त, चिरा हुआ । तय० - विथः साहसी और

विश्वास पात्र स्त्री, - शरीरका शिष्टांत कीमती पर
 एक टीका ।
 प्रोत्थिः [प्र + वृत् + थिच् + क्त] शीतुक्य, उत्कटता, (परिच
 की) गहराई ।
 प्रोत्थ (वि०) अर्थ सम्पन्न, अर्थ युक्त ।
 प्रोत्थ द्वारम् (नपु०) पार्श्वद्वार, नवन के पक्ष का द्वार ।
 - य० पु० २६५।१५ ।
 प्रोत्थः [प्र + वृत्] 1. एक चलचर 2. एक सबस्तर का
 नाम । तय० - कुम्भः तैराक की सहायता के लिए
 बड़े जैसा बर्तन ।
 प्रोत्थितु (वि०) [प्र + थिच् + क्त] मल्लाह,
 नाविक ।
 प्रोत्थनेकः (पु०) एक प्रकार का तथीन प्राप ।

क

कचवटः [कच विचरति - नृ + कच्] बाप ।
 कचिस्तम्भः (पु०) विष्णु का चिह्नचक्र ।
 कचिस्तम्भः (पु०) दुखड़ी का एक घेर, लपेटे मरवा ।
 कचवटः (पु०) हरी ध्याय ।
 कचम् [कच् + कच्] 1. कठिपुति, प्रतिपुति 2. कम्पासि,
 कचकच 3. उपव 4. कच 5. परिधाय 6. कच
 7. उद्वेग, प्रयोजन 8. उपयोज, काम 9. कम्पान,
 10 (लकवार का) कचक 11. तीर की गोक । तय०
 - कचिस्तम्भः परिधाय का बाबा, - कचिस्तम्भः वर का
 कचक परिधाय, - कचिस्तम्भः कच का काम्य लेना,
 - कचः 'कच' का काम्यकुल पर प्रयास' विचक
 कचिस्तम्भः का एक कच, - कचिस्तम्भः परिधाय का कचि-
 स्तम्भ, - कच (पु०) कचर, कचम् (नपु०) कच
 और कच, - कचिः (स्त्री०) कचड़े की बनी बत्ती
 जिसे पिना करके कचिना के लिए बुझा में रक्खा
 जाता है, - कचिस्तम्भः 'कीमतीयव' नामक संस्कार ।
 कचम् [कच् + कच्] 1. लता, कच 2. डिम्बा 3. कच
 4. हाथ की हथेली 5. काम 6. काम का मूह 7. कार्य,
 कचिस्तम्भ 8. कचकी का कच 9. (कचका बुझने के
 लिए) कच की लक सन बादि । तय० - परि-
 कचम् कचों के कच में कचकच कारण करना ।

कचिः (पु०) [कच् + कच्] एक प्रकार की कचकी ।
 कचिस्तम्भः मिथ्यात्वं, कृपणा ।
 कचिस्तम्भः (स्त्री०) कच, कचका - कचिस्तम्भः कचिस्तम्भः
 - य० १९।८२ ।
 कचिस्तम्भः [कचिस्तम्भः + कच] कचिस्तम्भ का पुत्र, कचिस्तम्भ ।
 कचिस्तम्भः व्याकरण का एक कच विचके रचिस्तम्भः
 कचिस्तम्भः ।
 कचिस्तम्भः (स्त्री०) एक प्रकार का कच हुआ कचका ।
 कचिस्तम्भः (स्त्री०) [कच + कचिस्तम्भः] कचिस्तम्भ, 'कीमती'
 कचिस्तम्भः ।
 कचिस्तम्भः (पु०) [प्रा० कचिस्तम्भः] कचिस्तम्भ, कचों का रोव ।
 कचिस्तम्भः (वि०) [व० स०] कचिस्तम्भ, कचिस्तम्भ
 देने वाला ।
 कचिस्तम्भः (पु०) एक प्रकार का कच ।
 कचिस्तम्भः (वि०) कचिस्तम्भ, कचिस्तम्भ, कचिस्तम्भ की कचि-
 स्तम्भ - कचिस्तम्भः १।९५।२ ।
 कचिस्तम्भः [कचिस्तम्भः + कचिस्तम्भः + कचिस्तम्भः] कचिस्तम्भ के
 कचिस्तम्भों का कचिस्तम्भ के कचिस्तम्भों की कचिस्तम्भ
 कचिस्तम्भः २।११ ।
 कचिस्तम्भः कचिस्तम्भ, कचिस्तम्भ ।

कम् [बद्ध + बन्, पुं०] स्नान से बाहुजी तथा अन्य अग्निय पदार्थों को निकालने का एक उपकरण ।

सम०—विष्णुका,—विष्णु की एक प्रकार की मछली ।

बकाची (स्त्री०) एक प्रकार की मछली ।

बहुक [बहु + कृन्] 1 लड़का बच्चा 2 मन्दबुद्धि बालक ।

सम०—बैरवः बैरव का एक रूप ।

बहिरम् (नपुं०) गस्त्योपयोगी उपकरण ।

बत (ब०) यथार्थत उक्त, ठीक कहा हुआ बस्याणी बत गार्थयम् रा० ५।३।६ ।

बह्वृ बही सख्या (सायन के मत में ती कराट की सख्या, भीरो के मत से एक हजार करोड) ।

बन्दिः [बन्ध + इ] 1 बन्धन कैद 2 बन्दी, कैदी । सम०

—बहुः बन्दी बनाना, बाहुः बंध लगाने वाला,

—बाहुम् (ब०) बन्दी के रूप में बहल करना,

—बाकः काराध्यक्ष, गुला बारायना, वेध्या ।

बद्ध (वि०) [बन्ध + क्त] 1 परिस्मित 2 बन्धा हुआ, 3 भुक्तमित 4 प्रसिद्ध 5 सहित 6 बद्ध 7 जडा हुआ 8 रक्षित 9 सङ्कुचित । सम०—अवस्थिति

(वि०) सतत, अनवरत, आचर (वि०) व्यवस-

प्रस्त—बद्धावरोधि परदारपरिहृत्वे लम् रा० ब० ५,

—अव्यक्त (वि०) बर्त्ताकार, मङ्गली में अवस्थित,

—बुध (वि०) जिसने बुध रोक लिया है ।

बन्धा [बन्ध + बन्] 1 बन्धन 2 केसकच, चोटिला 3 झुल्ला, बँड़ी । सम०—बन्धु (पुं०) बंधने वाला, —बुद्धा बेड़ी की छाप ।

बन्धनम् [बन्ध + क्तृ] सांसारिकबन्धन (वि०) मोक्ष) ।

सम०—बन्धु (वि०) काराध्यक्ष ।

बन्धनिकः [बन्धन + ठन्] काराध्यक्ष ।

बन्धुः [बन्ध + उ] 1 रिस्तेदार, सम्बन्धी 2 एक दूसरे से सम्बद्ध, भाई 3 मित्र • नियन्त्रक, सामक 5 ज्यातिष की बुद्धि से तीसरा घर । सम०—बाबादः रिस्तेदार, उत्तराधिकारी,—बिध (वि०) सम्बन्धियों का प्यारा ।

बन्धुरित (वि०) [बन्धुर + इत] बन्धु, पुत्रा हुआ ।

बन्धुः (तना० उभ०) मित्र बनाना ।

बन्धु (वि०) [बन्ध + ऊर] 1 तरक्षित, लहरिवादार 2 मुग्ध, प्रसन्नता देने वाला ।

बन्धुः [भू + हु, द्वित्व बन्धु + उ बा, स्वार्थे क्न् च] एक लक्षपञ्च ।

बन्धुः (पुं०) 1 वह हाथी जिसने पीछे बर्ष में दारपण कर लिया है वात० ५।५ 2 बुधराला । सम०

—बन्धुका (स्त्री) वह स्त्री जिसके मस्तक के पुत्र राके बाक है ।

बन्धुकीम् (नपुं०) 1 बुधराले बाल 2 सफेद बन्धन की लकड़ी ।

बह्—हम् [बह् + बन्] 1 मोर का चटा 2 पत्नी की पुठ 3 मार की पुठ 4 पत्ता 5 बन्द । सम०—अवस्थ

(वि०) जिसने सिर को पल लगाकर अलङ्कृत किया हुआ है,—नेत्रम् मोर की पुठ पर बना मोक्ष नेत्रा चिह्न ।

बहिर्याय (पुं०) बीमासा का व्याख्याविषयक एक निबन्ध जिसके आधार पर गौण बर्ष की अपेक्षा प्राथमिक बर्ष की प्रधानता दी जाती है—मी० सू० ३।२।१-२ । बहिर्यायसम् (नपुं०) पत्नी से बना बाण, वह भीर जिसमें र लगा है ।

बलम् [बल + बन्] 1 शक्ति, सामर्थ्य 2 सेना 3 मोटापा 4 सत्तर, जाकृति 5 वीर्य 6 बहिर 7 बहुर 8 शक्ति का देवता 9 हाव अन्ते विष्णुके शक

—महा० १।२।३९।८ 10 प्रबल । सम०—बलिक

(वि०) शक्ति वा सामर्थ्य का दण्डक—उपायानम्

सेना में मर्ती होना—की० ब०,—तत्पनः दण्ड का विशेषण,—बुद्धक कोषा, बुद्धकः हरिण विशेष,

—बुद्धक सेनापति,—बलित (वि०) बलहीन, दुर्बल,

—समुपायानम् सक्षम सेना की मर्ती करना ।

बलकः (पुं०) स्वल्प ।

बलकम् (वि०) [बल + क्तृ] 1 बलवान्, शक्ति वपत्र,

प्रबल 2 सज्जन, मोटा 3 अधिक महत्त्वपूर्ण 4 सर्वत्र

(पुं०) 1 आठवाँ मुहूर्त 2 स्तेव्या, कक, बलबन

ती (स्त्री०) छोटी इलाकची ।

बलात् (पुं०) 1 एक प्रकार का रोम 2 शय, सर्वविध ।

बलालकः [बल + आ + हा + क्तृ] 1 बालक 2 एक

पर्वत 3 विष्णु का एक चोड़ा 4 हाथ की एक प्रकार ।

बलिः [बल् + इन्] 1 यज्ञ में जाहुति, उपहार 2 मृत

५.३ 3 पुत्रा, बर्षना 4 उच्छिष्ट भोजन 5 देवता

पर चढ़ाया गया उपहार 6 बुद्धक, कर 7 बर्षर का

दस्ता 8 एक प्रसिद्ध राजस का नाम । सम०—बलि

मस्तक पर एक देखा,—बलकम् एक नाटक का नाम

जो पार्थिव हाथ रक्षित समझा जाता है,—बलकः

(पुं०) विष्णु का विशेषण, बिद्याकम् उपहार रूप

में बलि देना,—बलकम् जाय का छठा भाव जो राधा

को कर के रूप में दिया जाता है—बलितार राजान

बलिकम्प्रायहारिणम् मनु० ८।१०८,—होमः बलि

में जाहुति देना ।

बलीकः (पुं०) 1 बीबा 2 बालक, पुत्र, मक्कार ।

बल्लारम् (ब०) बकरे की हत्या के इश्वर ।

बल्लि [बल्ल + इ, वचनोरनेद] 1 बुधसद 2 सामर

भीम से उत्पन्न नमक ।

बल्लिकः (पुं०) एक प्रकार का बाण जिसकी नोक जरीर

से लीचते समय उसी में रह जाती है—महा० ७।

१८९।११ पर भाष्य ।

बहिर् (ब०) [बह् + इधुन्] 1. के बाहर, बाहर 2. घर के बाहर 3. बाह्यरूप से 4. पृथक् रूप से 5. सिवाय ।
सम०—अङ्ग (बि०) बाहरी, दूर से संबन्ध रखने वाला—अन्तरङ्गबहिर्ङ्गयोत्तरङ्ग बलौय में सं० १२५१२९ पर सा० भा०,—बृक्ष (बहिर्-वृक्ष) (अ०) अतिरिक्त या कालतु दिखाई देने वाला,—एकबान्धु लोचयाम में प्रयुक्त साम्यत्व, प्रसन्न (बि०) जिसकी योग्यता बाह्य पदार्थों की हो, मनस् (बि०) जो मन से बाहर हो,—अनन्त (बि०) जो मानस क्षेत्र की बात न हो,—वृत्ति (बि०) जो बाहर बँधा हुआ या रक्का हुआ हो,—वैलम् (बि०) बाहर रहने वाला,—अन्तर्निम् (बि०) लपट, कामुक, हृदयपरायण,—एवम्,—स्वित्त (बि०) बाहरी, बाहर का,—कार्य (बि०) निकाल बाहर केंद्रने के योग्य ।

बहु (बि०) [बह् + कु, लघोः] (हु—ह्री, भूयन्, भूयिष्) 1. बहुत, पुष्कल, पञ्चर 2. बहुत से, असंख्य 3. बड़ा, विहास । **सम०**—अप्युस्त (बि०) जो कई प्रकार से काम का हो,—आरम्भ मावन्,—सीरा अधिक बूझ देने वाली गाय, बुधः जिसने अध्ययन बहुत कुछ किया है परन्तु अभी प्रकार नहीं, बौहवा दे० बहुजीरा, बहुत बूझ देने वाली गाय, मर्लकः शरीर, काया,—अकुसि (बि०) जिसमें क्रियापरक तत्त्व बहुत हों (जैसे सगन्ध धान्य),—अस्र (बि०) बहुत बुद्धिमान्, बड़ा नम्रस्वार, अत्यधिक (बि०) जिसके प्रतिपक्षी और प्रतिद्वन्द्वी अनेक हों, अस्व-बाध (बि०) जिसके मार्ग में अनेक कठिनाइयाँ हों, एतत् (बि०) बहुत बल से भरा हुआ,—बाधिन् (बि०) बहुत बोलने वाला, शस्त (बि०) बहुत उत्तम, संस्कृतः (बि०) अनगिनत, सरस् (बि०) जिसके पास बहुत से पक्ष हो, साहस्य (बि०) हवाओं की सक्रियता ।

बहुक (बि०) [बह् + कुलच्, लघोः] (य०—बहीयन्, उ०—बहिष्ठ) 1. मोटा, मचन, सटा हुआ 2. चौड़ा, पुष्कल 3. प्रचुर, वषेष्ट 4. असंख्य, अनगिनत 5. समृद्ध 6. काला, कुण्ड । **सम०**—आध्वः एक राजा का नाम,—अध्वसिन्धु कुण्डपक्ष का अंधकार—कुवायुवा बहुलपक्षसिन्धु लोच्य—नं० २११२४ ।

बाध् (बन् + बन्) 1. तोड़ 2. निहाना 3. बाध की मोक 4. ऐन, ओड़ी (गाय की) 5. शरीर 6. एक राक्षस, बलि का पुत्र 7. एक कवि का भाव जिसने कादम्बरी और हर्षचरित मिले हैं 8. अग्नि 9. पौष की सप्ताह का प्रतीक 10. बाप की शरणा । **सम०**—निष्ठ (बि०) बाध से विधा हुआ,—अधः (पुं०) एक पक्षी,—लिङ्गन् नर्मदा नदी पर उपलब्ध एक श्वेत पत्थर जिसे निबलिङ्ग के रूप में पूजा जाता है ।

बाधरिः (पुं०) एक वार्षिक का नाम ।

बाधानिबृत्ति (स्त्री०) [प० त०] मूल प्रेत की पीडा के मुक्ति ।

बाधक (बि०) [बाध् + बन्] पीडादायक, छेदकाय करने वाला ।

बाधयिन् (पुं०) [बाध् + यिच् + लृच्] बाधा पहुँचाने वाला, हानि पहुँचाने वाला ।

बाधयबाधकता (स्त्री०) अत्याचारवस्तु और अत्याचारी की अन्धोन्धक्रिया, पीडित और पीडक का पारस्परिक प्रभाव ।

बाध्वः [बन् + अन्] हितेषी—पैतृत्वलेयप्रीत्यर्थं तद्व्योम-स्थातबाध्वः भाग० ११९१३५ ।

बाहुस्थत्वाः [बहुपति + यक्] राजनीति पर लिखने वालों की शाखा जिसका उत्प्रेक्ष कटित्व ने किया है—की० प्र० १११५ ।

बाल (बि०) [बल् + ण, बाल् + बच्] 1. बालक, बच्चा 2. अधिकमति (पुष्प या वस्तु) 3. नवोदित (जैसा कि सूर्य या उनकी किरणें) 4. अज्ञान, लः (पुं०) 1. बच्चा 2. अवयवक 3. मूल 4. भोलाभावा 5. पाँच वर्ष का हाथी 6. मारियल । **सम०**—अरिष्टः बच्चों की बीमारी निकालने का कष्ट,—आध्वः बच्चों की बीमारी, बालरोग, चिकित्सा बच्चों के रोगों का इलाज, बाल्यालः मछली, बलः माय का पौधा,—अमोरवा सिद्धाम्बुकीमूली पर लिखी गई टीका—अरज्य मूल की मृत्यु,—असिः बालसंयासी,—अतः मन्त्रुषोप (बौद्धधर्म) का विशेषण ।

बालकः [बाल् + कन्] 1. बालक, बच्चा 2. आचक्षयक 3. बुद्ध 4. कड़ा 5. हाथी या घोड़े की पूँठ 6. बाल 7. पाँच वर्ष का हाथी—बि० ५१४७ ।

बाला [बाल् + टाप्] दुर्गा का विशिष्ट रूप । **सम०**—अन्नः बालादेवी का पुरातन भव ।

बालिकवृत्ति (बि०) बच्चों जैसी छोटी बुद्धि वाला, बालबुद्धि ।

बालेयक्षाः एक प्रकार का शाक ।

बाष्कलः एक अध्यात्मक, वैजृह्वि का शिष्य, ऋग्वेदशाखा का सम्पादक ।

बाष्पविकलक (बि०) आगुओं से अभिजन्त ।

बास्तिकर्मा [बास्त् + क्] अकरियों का लुह—रा० २१७७१२ ।

बाहिरिकः विदेशी, दूसरे देश का न च बाहिरिकान् कुर्वात पुराण्युपासकान् की० अ० ९१५१२२ ।

बाहुः [बाध् + कु, कृत्वादेर्वा] 1. भुजा 2. वीर्य का बाहु 3. पुत्र अथवा पौत्र 4. (अर्वा के) समकोण त्रिकोण की आधार रेखा 5. रज का पौष 6. लूब पक्षी पर लक्ष्म की छाया 7. बारह अनुस की माप, एक हाथ की माप 8. वनस्प का अर्धवर्ग । **सम०**

—अनवरण छाती—बाह्यगारे मनुजित धितकीस्तुमे
या—कनक०, सरस्वत् भूषाओं से ढेर कर नदी
पार करना, —निःसृतम् युद्ध की एक विधा जिसके
अनुसार सन्धु के हाथ की तलवार नीचे भिरवा दी
जाती है, अचानकम् (अ०) भूजारे हिलाना
—क्रीडम् कपटी बनाने के काम करने वाला भातु,
—विषहृत्, विषहृत्सु मल्लयुद्ध की एक विशेष
मुद्रा ।

बाह्य (वि०) [बहिर्भवः—प्यञ्] 1 बाह्य का, बाहरी
2 बाहि बहिष्कृत 3 सार्वजनिक, ह्यः (पु०)
1 विदेशी 2 बिरादरी से निष्कासित 3 प्रतिलोक
संबन्ध से उत्पन्न सन्तान । मय० अर्थ शब्द का
अतिरिक्त, कास्तु अर्थ, कल बाहर की ओर का
कम्पन, अरस्वत् बाहरी ज्ञानेन्द्रिय — प्रत्यक्षः ध्वनियों
के उच्चारण के समय बाह्य प्रत्यक्ष ।

विषयम् (मपु०) आकाश नि० ६।३० ।

विहासप्रतिक (वि०) [ब० सं०] पालक्री कपटी, धूर्त ।

विष्णुः [विष् + उ] 1 बुद्ध, कल 2 गोल चिह्न 3 हाथों
के छतरी पर खेलित निशान 4 शृंग, निष्कर
5 (व्या० में) ऐसा चिह्न जिसकी लम्बाई चौड़ाई
मुक्त ही न हो 6 पानी की एक बूट 7 अक्षर के
ऊपर लम्बा चिह्न जो अनुस्वार का कार्य करता है
8 वाङ्मयियों में मिटाये गये शब्द के ऊपर शृंग
चिह्न (जो प्रकट करता है कि यह शब्द मिटाया नहीं
जाना चाहिये वा) 9 (नाट्य० में) विशिष्ट चिह्न
जो किसी गीत बटना वा आकस्मिक विकास प्रकट
करता है 10 (दार्शन० में) चिच्छिन्न का विनिर्णय
अवस्था । मय० ध्युक्तः एक प्रकार की शब्दक्रीडा
—मै० १।१०४,—प्रतिच्छादय (वि०) अनुस्वार पर
आधारित,—आधायः विष्णु वा रूप ।

विष्णुः [वी + वन्, नि०] 1 सूर्य या चन्द्र का मण्डल
2 कोई भी बाली की मणि माल तन्वीय वस्तु
3 प्रतिमा, छाया, अन्तः 4 दर्शन 5 मनवान 6 गुलिन
पराशर (वि० प्रतिविम्ब) 7 मूर्ति आकृति 8 मीमा,
उभरा हुआ चित्र ।

विशिकी [विष् + इन् + डीप्] जीव की पुनर्जी ।

विशिकसारः मगध के एक राजा का नाम जो गीतमबुद्ध का
समसामयिक था ।

विश्वः 1 एक पक्ष या उपाधि जो अष्टता का चौतह है
2 स्तुतिपात्र, प्रशस्ति ।

विश्वकर्म [ब० त०] अन्तर्भौतिक मृदा ।

विश्वम् [विस् + क] 1 कमलतन्तु 2 कमल का तन्तुमय
काण्ड 3 शंखल का पीचा । मय० ऊर्ध्व कमलतन्तु
की ऊन, मृदाः कमलतन्तुओं से बनी गस्ती, प्रक्षुब्ध
कमल कुल, धर्तिः कमलतन्तु से बनी बत्ती ।

वित्तिनीपत्रम् कमल का पत्रा ।

वीजम् [वि + वन् + उ, उपसर्गस्य वीर्षं] 1 बीज, बीज
का दाना 2 बीजान्, तन्त्र 3 मूल, स्तोत्र 4 बीज
5 कथाधनु का बीज 6 बीजमणि 7. सचाई
8 भाष्य 9 प्राथमिक जनमात्र का सकलक
10 विच्छेद 11 जन्म के समय शिशु के हाथों की
मुद्रा । मय० अंगिकः ऊँट,—अर्थ (वि०) प्रजननार्थी,
निर्वापनम् बीज बोना, प्ररोहिन् (वि०) बीज से
उगने वाला —आयः बीज बोना, स्नेह श्राक का
वृक्ष ।

वीजकृत (वि०) (अन) जिसमें बोने के पश्चात् हल
चला दिया जाय ।

बुद्ध (वि०) [बुध् वत्] 1 ज्ञान 2 त्रयमूर्ति 3 प्रकाशित
4 विज्जित, बुद्ध (पु०) 1 विद्वान् पुरुष 2 (बुद्ध
मानुसात्) बहु व्यक्ति जिसने 'मत्थ ज्ञान' जान लिया
है तथा जो स्वयं निर्वाण प्राप्त करने से पूर्व समार को
मात्स का मार्ग बनलाता है 3 परमात्मा ।

बुद्धिः (स्त्री०) [बुध् + क्तिन्] 1 प्रत्यक्षीकरण, समझ
2 प्रज्ञा, मति, मेधा 3 सुचना, जानकारी 4 विवेक
5 मन 6 मति, विश्वास विचार 7 इरादा, प्रयोजन,
अभिलष 8 होम में जाना, मुखबुध प्राप्त करना
9 लाय के २५ पदार्थों में सुधरा 10 प्रवृत्ति
11 उपाय 12 अतीति की दृष्टि से पवित्री चर ।
मय०—अधिक (वि०) अष्ट बुद्धि में युक्त, अष्टाष्ट
बुद्धि की भासा पर प्रतिवर्त किन्ना,—प्रागल्भी सवध
की स्वस्थाना,—बोद्धुः विचार बुद्धता, कावचबन्ध
निर्णयविषय हलकापन, न्यायलक्षिमा, नाममयी,
—बन्धित (वि०) निर्बुद्धि, बुद्धिहीन, बेमबन्ध बुद्धि
की सक्रि बुद्धि का ऐश्वर्य ।

बुध्बु (वि०) [बु + सन् + उ, धातोर्हित्वम्] 1 मग्द होने
का इच्छुक 2 कल्याण चाहने वाला ।

बुध्बुः (पु०) टोकरी बनाने वाला ।

बुसा (स्त्री०) [बुस् + अच् + टाप्] (नाट्य० में) छोटी
बहन ।

बुल्ल (वि०) (वेद०) प्रबल, बलशाली, बडा—बुल्लसम्बो
बुल्लच्छादय गमयति मी० सू० १०।१।३२ पर सा०
मा० ।

बुल्ल (वि०) [बुल् + बलि] 1 बडा, विशाल 2 बीमा,
प्रवास्त विस्तृत 3 पुष्कल 4 प्रबल, शक्तिशाली
5 लम्बा, ऊँचा 6 पूर्ण विकसित 7 तपुवन, सटा हुआ
8 प्राचीनतम, सबसे पुराना 9 उज्ज्वल 10 स्पष्ट,
(पु०) विष्णु,—ती (स्त्री०) 1 बड़ी बीजा 2 मारव
की बीजा 3 उत्तरीय की सख्या का प्रतीक 4 पीठ और
छाती के बीच का भाग 5 आक्षय 6 बानी 7 लज्ज
अंशकार वियन (मपु०) 1 वेद 2 बह्मा 3 मेष्ठिक

ब्रह्मचर्यं सावित्रं प्राजापत्यं च ब्राह्मं वायुं बृहस्पतिं
—वायु० ३।१२।४२। सम०—उत्तरसावित्री एक उप-
निषद् का नाम,—तेजस् (पुं०) बृहस्पति ब्रह्म,—देवता
वैदिक देवता विषयक एक ग्रन्थ,—मारीचिकम् एक उप-
निषद् का नाम,—संहिता ब्राह्मिहिर रचित ज्योतिष
का एक ग्रन्थ,—सामन् सामवेद का एक ग्रन्थ—मग०
१०।३५।

बृहस्पतिचक्रम् (पुं०) साठ वर्षों (संवत्सरों) का चक्र ।
ब्रह्म (वि०) [ब्रह्म + भू] ब्रह्मा में रहने वाला ।

ब्रह्मकायः (पुं०) ब्रह्म की शक्ति पर लटकता हुआ ब्रह्मा
जिसमें उसका स्वरूप प्रदर्शित रहता है ।

ब्रह्मचर्यः (पुं०) एक सूत्रकार का नाम ।

ब्रह्मिः (ब्रह्म + इन्) १. पूर्ण ज्ञान या प्रकाश २. ब्रह्म अमर
की उन्मूलक बुद्धि ३. पुनीत बटवृक्ष ४. मुर्गा ५. बृद्ध
का विशेषण । सम०—अज्ञान् पूर्ण ज्ञान प्राप्त
करने के लिए अपेक्षित वस्तु ।

ब्रह्मन्तारः (पुं०) बृद्ध के रूप में भवमान् का अवतार ।

ब्रह्मः (पुं०) १. सूर्य २. बृहस्पति ३. दिन ४. शोक या
मदार का बीजा ५. सीता ६. बौद्ध ७. शिव या
ब्रह्मा का विशेषण ८. तीर की शोक ९. एक रोग
का नाम । सम०—विष्णुम्,—अन्धकार, सूर्यमण्डल ।

ब्रह्मन् (पुं०) [ब्रह्म + भूम्, नकारात्मकार्क्यतोरत्वन्]
१. परमपुरुष, परमात्मा २. अर्धवारपरक वृक्ष
३. पुनीत पाठ ४. वेद ५. पुनीत अक्षर ६. एकालं
पर ब्रह्म मनु० २।८३ ७. ब्राह्मणजाति ८. ब्राह्मण
की शक्ति ९. शक्ति उपपन्न १०. ब्रह्मचर्य, ब्रह्मत्व
११. वेद का ब्राह्मणवाक्य १२. वन १३. बाह्यार
१४. उपाय १५. ब्राह्मण १६. ब्राह्मणत्व १७. आत्मा ।
सम०—विश्विकम् ब्राह्मणों के प्रति किया गया

अपराध,—ब्रह्म बड़ा विद्वान्,—वीर्य (स्त्री०) ब्रह्मा
का उपदेश जैसा कि महा० के अनुशासनार्थ में दिया
गया है,—विनाश परमात्मा को जानने की इच्छा,
तन्मन् वेद की शिक्षा,—ब्रह्म (वि०) वेद के
मूलपाठ को दूषित करने वाला, शत्रुः सब प्रकार
के पुनीत ज्ञान का अन्तिम उद्देश्य,—अज्ञान् ब्रह्म-
विषयक शक्ति,—किन्तुः वेदपाठ करते समय मुख से
निकली धूल की धूल, भूमिका एक प्रकार की
मिर्च,—ब्रह्मन्ः दिन का आरंभिक भाग, ब्राह्मणम्,
—रात्रि उषःकाल, शत्रुः परमात्मा से संबंध रखने
वाला व्याख्यान, भी एक सामर्थ्य का नाम ।

ब्रह्मन्त (पुं०) [ब्रह्मन् + मन्तु] अग्नि का विशेषण ।

ब्रह्मन्तः (पुं०) १. जिसने ब्रह्मा के साथ सामन्त प्राप्त
कर किया है (यह सम्पत्तियों के विषय में कहा गया
है जो इस तरीके की त्वाप देते हैं) २. ब्रह्मन्तार ।

ब्रह्मन्तिः (पुं०) ब्राह्मणों, पुरोहितों तथा वाक्मन्त्रों के
लिए बनाई गई मिथि ।

ब्रह्मन् (वि०) [ब्रह्म वेदपरीति वा ब्रह्म + भूम्] १. ब्राह्मण
विषयक २. ब्राह्मण के योग्य ३. ब्राह्मण द्वारा दिया
गया, ४. वर्ष पूजा विषयक ५. ब्रह्म की मानने वाला
—वा ३. चारों वर्षों में से पहले वर्षों के संवत्
२. (पुं० के मुख से उत्पन्न) ब्राह्मण ३. पुरोहित
४. अग्नि का विशेषण ५. ब्रह्मन्तारों नक्षत्र,—मन्
१. ब्राह्मणत्वभाव २. वेद का वह भाग जिसमें विशिष्ट
वर्णों के अक्षर पर वृक्षों के प्रयोग का विधान
विहित है, यह अक्षरवाक्य के किन्तु वृक्ष हैं । सम०
—अक्षरवाक्य ब्राह्मण भाग में विहित विशिष्ट का अभाव
—मनु० १०।४३,—अक्षरः 'ब्राह्मण' नाम,—अक्षर-
वेदकः परोक्षी ब्राह्मण,—अक्षर ब्राह्मण होने की स्थिति ।

अ

अक्षन् [अक्ष + क्त] १. पाय, अक्ष २. बाह्यार ३. शत्रु,
उत्पन्न हुए पाय ४. अक्षर ५. पानी में उड़का
हुआ अक्ष ६. पुष्पा, अक्ष ७. वेतन, पारिवर्तिक ८. एक
दिन का अक्षर—अक्ष अर्थात् अक्षर पर्वत भूव-
भूतत्वे—मनु० १।१०। सम०—अक्षः, अक्षन् उपा-
हारवाक्य, अक्षान्मन्त्र, अक्षन् अक्षर की उपासी
—अक्षन् दास की उत्पत्ति, अक्षन् शत्रु का
शत्रु ।

अक्षिः (स्त्री०) [अक्ष + क्त] १. विषाघ्न २. शीत
अक्ष, आरंभिक अक्ष ३. (किरीट रोग के प्रति)
शरीर की उन्मूलकता । सम०—अक्ष (वि०) जो
अक्षि के द्वारा प्राप्त किया जा सके, वहाँ बड़ा शीत

अक्षि के पहुँचा पाय,—अक्षि (वि०) जिसमें
अक्षि की नक्षत्रवाक्य हो अक्षि ब्रह्म अक्षि अक्ष
अक्षि—अक्ष (वि०) जो अक्षि के द्वारा
वक्ष में किया जा सके ।

अक्ष (वि०) [अक्ष + क्त] जाने के योग्य, शीतल के
लिए उपयुक्त,—अक्षन् (पुं०) १. जाने का पदार्थ,
बाह्यार,—अक्षरवाक्यः अक्षिवाक्येय कारकम्—वि०
१।५५ २. अक्ष । सम०—अक्षन् अक्षर और
अक्षि अक्षर,—अक्षन् सब प्रकार के अक्षर
के वृक्ष ।

अक्षः [अक्ष + क्त] १. सूर्य २. शीत ३. शिव का रूप
४. शीतल, अक्षरवा ५. अक्षर ६. शत्रु, शीत

7. जीवाण्वं 8. खेच्छता 9. श्रेय, प्यार 10. कायकेति,
11. वीरिण 12. वृष, वर्य 13. प्रव्रत 14. अवाधि,
किराय 15. मोक्ष 16. साधन्य 17. सर्वसाक्षितवता
18. श्रेय और विनाह की अभिवृद्धाशी देवता कादित्य
19. ज्ञान 20. इच्छा 21. अविद्या। सम० ईक्ष
नाम्य का देवता, काय (वि०) सयोग के मानव का
देवता, —वृत्ति: (स्त्री०) देवतावृत्ति, वृत्ति (वि०)
देवतावृत्ति से विनाह करने वाला। -

जनकदायाः आदि संकराचार्य की सम्मान सूचक उपाधि ।

मन्त्र (वि०) [मन्त्र + क्त] 1 टुटा हुआ 2. हवावा, विकल 3. अवकट, स्वामित 4. नष्ट 5. ध्वस्त 6. टाटा हुआ । सम० ज्यमि (वि०) जिमकी हथकियाँ दूध नहीं हैं,—ऊपर (वि०) जिमका ऊपर का भाग टुट गया है (बैले रब),—साकः (समीत०) एक प्रकार की माप,—वरिचाम (वि०) पूरा करने के दोहने वाला ।

वाङ्मयः [वङ्म + वङ्म] १ (बुद्ध०) विषय में निरन्तर होने वाला वङ्म २ (वैज०) 'स्यात्' से वारङ्म होने वाला वाङ्मय रूपः ।

मङ्गिः [मन्त्र + दन्, कुल्यन्; स्थिवां ङीप्] १. दृष्ट्वा
 २. क्षिप्त्वा ३. कुल्यता ४. उरयं ५. वाङ् ६. विविच्य
 मन्त्रा, ङीप् मानामन्त्राणां मन्त्राणां चोदितानामन्त्राणां
 -- मन्त्राणां । मन्त्रं -- मान्यन् कुटीरीति च कुल्य
 मान्यन्, -- क्षिप्त्वा मन्त्राणां मन्त्राणां चोदितानामन्त्राणां
 मङ्गिनीः [मङ्गिन् + ङीप्] मन्त्र, परित्रा -- मान्यनीति-
 मन्त्राणां मङ्गिनीः मन्त्रं, परित्रा -- मान्यनीति-
 मन्त्राणां मङ्गिनीः मन्त्रं, परित्रा -- मान्यनीति-
 मन्त्राणां मङ्गिनीः मन्त्रं, परित्रा -- मान्यनीति-

व्यञ्जनम् [वज् + युच् + टाच्] व्याख्या ।

जन्मस्थान: 'बेनीसहार' गाँव का जन्मेला ।

प्रश्न: 'बहु' का अर्थ क्या है ?

अक्षुब्धः एक वैयाकरण का नाम ।

समाधान: एक प्रकार की मछली ।

धन (वि०) [धन् + रन्, भोज्यः] 1. लक्ष्मी, प्रसन्न,
 समृद्ध 2. धन, वित्तवस्तु 3. लेख, प्रत्यक्ष 4. कृपा
 5. सुख 6. सुखर 7. वाञ्छनीय 8. मित्र 9. दत्त ।
 धनः—सकल धनों के समुदाय सर्वमान धन,—मित्रः
 उपहार के लिए दत्त धन, धन्य (स्त्री०) धन
 वस्तुवा, विरह एक धन का नाम ।

मन्त्र [मन् + क्तृ] 1. कुम्भर 2. कुम्भ 3. सन्मन—कम्
(मन्०) 1. मैत्रेय का विशिष्ट शास्त्र 2. अमृतपुर।

महाभारतम् नृपञ्चम, समस्त चिर नृपञ्चमः ।

अथवा वि०) [जय + जालुप्] भीरु कायर ।

अथ [बु+अप्] पराङ्म, ज्येष्ठता, श्रमकृता न ज्ञान
 कृता वास्तविकं स्वकार्यकरो अरः—वि० ५।१८।

संस्कृत-विभागः

अनीह (अनीह) [अनीह + अनीह] आभा, कान्ति, चमक ।

भर्तृह्य (वि०) [पृ०-तम्य] 1. सहन करने या डोलने योग्य
2 भाड़े के योग्य, पालन पोषण किये जाने के योग्य ।

जन्तु (पुं०) [जन् + तु] 1 पति, 2 स्त्रीया 3 नेता, सेनापति 4 पालक पोषक, रक्षक 5 सृष्टिकर्ता 6. विष्णु । सम० विस (वि०) पति के विषय में सोचनेवाला, देखाता पति को देखाता मानना, लोकः पति का सत्कार,—हार्थयन (वि०) विद्वान्नी सपति उसके स्त्रीया द्वारा जन्म की जा सके, इला पति द्वारा परित्यक्ता ।

मन्त्रः [मू + मृ] १ सत्ता, अस्तित्व २ अन्न, उपव
३ क्राव, उद्गम ४ साधारिक सत्ता, सांसारिक जीवन
५ स्वास्थ्य, समृद्धि ६ देवता ७ शिव ८ अधिकृत्य,
प्राप्ति ९ श्रेष्ठता । सम० अन्नम् सत्ता का सबसे
अधिक दूरवर्ती किंवा, अन्नः अन्य मरण के पक्षि,
—नाशन (वि०) कल्याणकारी, जीव (वि०)
सत्ता के अस्तित्व के दरपे बाका,—जीवः सांसारिक
सुखों का मानव ज्ञेय, - क्षेत्रः चन्द्रमा,—संज्ञि
(वि०) अधिक संसार में अनुरक्त,—संततिः (स्त्री०)
अन्य मरण का ठाँवा ।

अथर्वसु (वि०) [अ० उ०] अथर्वान्, वीर्यसमं ।

वचनम् [व + स्वप्] वचनाङ्ग, वचनकुण्डली, वचन-मन्त्रम् ।
वचनवचनम् (वि०) वचने लक्ष्मणो वाला ।

भास्कर (वि०) [चक्र + कृ] आप से संबंध रखने
वाला भास्कररिच चक्रवर्त्य-प्रवा है.—रा० च०
७१२ ।

ब्रह्मी (स्त्री०) कुत्तिया, पीकने वाली ।

मत्स्य (मत्०) [मत् + मत्तिन्] 1. राक्ष 2. खीर पर लगाई जाने वाली मत्स्य, राक्ष । सम०—अक्षर एक प्रकार का कपूर, —अक्षराक्षः खीर पर मत्स्य रखाया, —अक्षरेणः खीर पर मत्स्य पीपना—अक्षरेण (वि०) को केवल राक्ष के रूप में बच गया है, —पुण्यमत्स्य खीर पर मत्स्य पीतना, —वाचः कामदेव, यक्षः राक्ष का डेर ।

जा (असा० पर०) १. बजकना २. बूँद गारना ।

बन्नी (या बाबु, लिट्ट ककार, प्र० पु०, ए० व०)
 1. बबका 2. बल्लभ हुवा 3. हुवा 4. हुवा बन्नी
 —बन्नी बल्लभान् विद्वतः ब-बन्नी, बन्नी बल्लभान्
 विद्वतः बल्लभ, बन्नी बल्लभान् विद्वतः बल्लभो, बन्नी
 बल्लभान् विद्वतः बल्लभः । (बन्नी बन्नी नै प्रयुक्त)
 —बदलिः १०:११५

शब्दः [भृ + वृ] 1. भृष्ट—जी. व. २११/४४
2. वार शब्दात्मिकाँ न के एक (शब्द.) जी.
क. ५० 3. व्याप्य की सेवा 4. व्याप, वृत्त
5. व्याप्य, विवर्त 6. वीर्यी शब्दः । वृत्त—वृत्त

विद्वत्पुत्रं दुष्टपुत्रा, दुष्टपुत्राणा ।

विष् (वि०) [वि + क्त] 1 टूटा हुआ, फटा हुआ
बीरा हुआ 2 पुष्क किया हुआ, बाटा हुआ
3 विपाकृत—विन्यस्तमिता मनु० १०।३३ 4 रोया-
ज्वित (जैसे रोंगटे खड़े हुए) — रा० १।१०।१८
5 विसे पूर दी गई है । सम०—कर्म (वि०)
1 जिसने कानो को बांट दिया है 2 जिसके कान
बीच दिये गये हैं, कुक्कः जिसने अपने अनिवार्य
कर्तव्य (पितृ दण आदि) सम्पन्न कर लिए हैं
—हस्ति (स्त्री०) विन्य रासिर्वा का भाव ।

वीत (वि०) [वी + क्त] 1 डरा हुआ आतङ्कित
2 डरपोक, कायर 3 भयवस्तु । सम०—वाघन
मज्जासील वाचक, समीक्षा माने वाला, —चारिन्
(वि०) कलत्रप्राप्त से व्यवहार करने वाला जिस
(वि०) मन में डरने वाला ।

वीक्षि [वी + क्त] 1 डर, आतङ्क, घाम 2 भतरा
जोखिन 3 कंकणी । सम०—कुल् (वि०) डर
पेदा करने वाला छिद् (वि०) डर डूर करने
वाला ।

वीष (वि०) [वी + मक्] भयानक, डरावना भयपूर्ण
- म (पु०) 1 विष का विशेषण 2 परमपुरुष
3 भयानक रस 4 दूसरा पौडव, मन् (नपु०)
भय, नास । सम०—अमृज् (वि०) वीषण शक्ति
वाला वाक पूरी तरह पका हुआ भोजन रस
1 सुतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम 2 श्रीकृष्ण का
एक पुत्र ।

वीक्ष्य (वि०) [वी + क्त] 1 डर, आतङ्क, घाम 2 भतरा
जोखिन भयानक भयपूर्ण छः 1 भयानक रस 2 राक्षस
पिशाच, भूतप्रेत 3 विष का विशेषण 4 शन्तनु
के द्वारा रघु म उत्पादित पुत्र । सम०—पवं
महाभारत का छठ पत्र (अध्याय), स्तवराज
महाभारत में शान्तिपर्व के ७७ अध्याय में निहित
वीक्ष्य की प्रार्थना ।

वृक्षवासे (अ०) लाने के तुल्य पशुना ।

वृक्ष (वि०) [वृक्ष + क्त] 1 विनीत, नम्र 2 बकीड़त
मुड़ा हुआ 3 टूटा हुआ 4 हठाव, विनम्रीकृत ।

वृक्ष [वृक्ष + क्त] 1 बाहु, भूजा 2 हाथ 3 हाथों को
बुझ 4 गणित में आकृति का एक पार्श्व जैसे त्रिभुज
में 5 चिकोड़ का आधार 6 वृक्ष की शाखा । सम०
- वृक्षः बालिङ्गन—अर्धवृक्ष निबोह के अनुपात,
—आठवृक्षः संव, छाया किसी की भुजाओं द्वारा
पिना गया प्रक्षय, —वीक्ष (वि०) प्रवेक्ष भूजाओं
वाला ।

वृक्षक [वृक्ष + क्त = वृक्ष + वृक्ष + क्त] लीप, लपे, की
आवस्था मलय । सम०—वृक्षकः कठे की भांति

कलाई में नोलाकार लिपटा हुआ लीप,—बालिन्
विष्णु का विशेषण ।

वृक्ष [वृक्ष + वृक्ष + क्त, मन्] 1 लीप 2 बार, रेनी
3 पति, स्त्री 4 आवस्था मलय 5 हस्तकी 6 राधा
का वक्षलन विष् । सम०—वृक्षलम् एक छन्द का
नाम, वृक्षता एक छन्द का नाम, वृक्षि एक छन्द
का नाम ।

वृक्षा [वृक्ष + टाप्] व्यापिति की आकृति का पार्श्व ।

वृक्षामुनि (अ०) हावापाई, हाथों की (कलाई) ।

वृक्षमन् [वृक्ष + मन्] 1 लसार, लसारी की लक्ष्मी लीन
है या लीपह) त्रिभुवन, चतुर्वेदवृक्षमनि 2 बरती
3 स्वयं 4 जन्म, प्राणी 5 मानव । सम०—वृक्षरी
पार्थी का कप, —लक्ष्म बरती की लसह,—आत्मन
—सृष्टि का कर्ता ।

वृ (स्त्री०) [वृ + क्त] 1 पृथ्वी 2 विषय 3 बरती ।
सम०—छाया, छाया बरती की छाया,—पृथ्वी
एक प्रकार की ककड़ी, वृक्ष एक प्रकार का वृक्ष,
या पृथ्वी की छाया, वृक्ष,—विष्णुलक्ष्म पक्षियों
की एक जाति—महा० १२।११।१०,—छाया वृक्ष
पर सोना—स्फोट कुङ्कुमला, लीप की छतरी ।

वृत्त [वृत्त + क्त] 1 होने वाला, वर्तमान 2 उत्पादित,
निर्मित 3 वस्तु होने वाला, उत्पन्न 4 लक्ष्मी, उचित,
उपयुक्त 5 अतीत, बीता हुआ 6 प्राप्त 7 विधित
8 समान । सम०—वृत्तवाच बीती हुई बात, या
निष्ठः तथ्य का उल्लेख करना,—वृत्तिवृत्त—वृत्तेकः
भूतप्रेत १—किसी पर चढ़ना,—बालिन् (पु०) जो
सबको वर्तमानता करता है, सबसे वृक्षा करने वाला,
—कोटि निरपेक्ष वृत्तता,—वृक्षा सचाई के साथ,
वृक्ष तत्त्वों का वृक्ष,—वृक्षी सब प्राणियों की
माता—सम्भाव्य सृष्ट्यतत्त्व,—वाक वीक्षित प्राच-
चारियों का सरलक, वृक्ष (वि०) लक्ष्मी प्राणियों
में रहने वाला वृक्ष (वि०) वस्तुओं या तत्त्वों का
पालनापन करने वाला—वृक्षका पृथ्वी,—वृक्ष
(पु०) वृक्षा का विशेषण ।

वृत्ति (स्त्री०) [वृत्त + क्त] 1 वृत्ता, वृत्तिल 2 वृक्ष,
उपवृक्ष 3 कल्याण, कुशलमग्न, समृद्धि 4 लक्ष्मी
5 वन, दीकृत 6 ज्ञान, वाचा, कान्ति 7 राक्ष ।
सम०—वृत्तवृक्ष (अ०) समृद्धि के लिए, वृक्ष (वि०)
कल्याणोत्पादक ।

वृत्ति (स्त्री०) [वृत्त + क्त] 1 व्यापिति की आकृति की
की आधाररेखा 2 किसी विषय का रेखाचित्र
3 बरती, पृथ्वी । सम०—वृत्तवृक्ष वृत्ति के विषय
में लड़ी बहादी,—वृत्तिवृक्ष लक्ष्म वृक्ष का एक
प्रकार,—वृक्ष कुङ्कुमला, लीप की छतरी, वृक्षः
वृक्षलक्ष्म, —वृत्तिवृक्ष वर्धमान,—वृत्तिवृक्ष वृक्ष पर

इस होकरने बाका,—समीक्षित (वि०) भूमि बीडा बराबर किया हुआ, फर्ज के साथ मिलाना हुआ,—संभव,—सुत 1. संकलन 2. बरकासुर।
 भूकम् (वि०) [बहु+ईदनु] 1. अनेकाकुल अधिक 2. अधिक बढ़ा 3. अधिक आश्चर्यक। सम०—बाव (वि०) बहुत अधिक रूपक,—बाव: वृद्धि, विकास,—बावन् अधिकतर अधिकोश।

भूरि (वि०) [भू+भिन्] बहुत, पुष्कल, अत्यन्त, पुष्कल। सम०—बावन् (अ०) बहुत समय तक,—कृष्ण (अ०) बहुत बार, बार-बार, वृष्ण (वि०) 1. बहुत अधिक बढ़ता हुआ 2. भाँति-भाँति के फल देनेवाला,—केला पीपों की एक जाति,—भोज (वि०) भालाप्रकार से सुकोपयोग करने वाला।

भूरिकः (अ०) [भूरि+उत्] विविध प्रकार से, नाना प्रकार से।

भूकमवासाकि (नपु० अ० व०) कल्प और आभूषण।
 भू (बहु० पर०) संयुक्त रचना, अवसंयुक्त करना।

भूक (वि०) [भूत+कन्] 1. पाकन पोषण किया हुआ 2. किराये का, कः (पु०) भाड़े का सेवक। सम०—अप्याकम्पन वैतनिक अप्याक द्वारा दिया गया किसान—भूमि: मजदूरी, पारिवर्त्मिक, किराया।

भूमिः [भू+भित्तु] 1. सहन करना, सहारना, सहारा देना 2. बरनपोषण 3. बाहुर 4. के जाना, नेतृत्व करना 5. भूकम 6. पारिवर्त्मिक। सम०—अप्येन् विभक्ति के निमित्त, बीकिका के लिए।

भुजुः (पु०) 1. एक भूमि का नाम 2. जलदायि का नाम 3. वृक्ष का विशेषण 4. वृक्ष नामक सह 5. चट्टान 6. पठार 7. शिव का विशेषण 8. वृक्षार। सम०—कम्प—कम्पन् नर्वा नदी पर एक तीर्थस्थान,—कम्पन् बहुमान से बिरता,—वत्सः बहुमान से कुपना, उन्नयन उन्नतना,—वृक्षः एक प्रकार का लपीत का नाम,—अवीकः ज्ञान का वृक्ष।

भूकम्प (वि०) कठोर दम्प देने वाला।

भूक [भिन्+भञ्ज] 1. शायन पीड़ा 2. बहों का योग 3. पचाघात 4. सिद्धुका 5. समभुज त्रिकोण की कर्ण रेखा।

भूक (वि०) [भि+भृन्] 1. विधोषक, विभावक, तोड़ने वाला 2. नाशक 3. विधोषक 4. रेषक 5. (अति) की नोकरने वाला 6. पचघट्ट करने वाला।

भूक (वि०) [भिन्+भिन्+भृद्] 1. होकरने वाला, विभावक 2. रेषक,—कम् (किसी पक्ष का) नाशा-क्षेपन करना।

भूकम्प (नपु०) धीरना।

भूक (वि०) [भू+रूपवर्ण वयति-भि+उ] स्वस्व करने का, विविधता देने वाले योग, कम् (नपु०)

1. नीचवि 2. उपचार 3. रोचनायक मंच। सम०—कचकम् नीचविधों का तैयार करना, कुत (वि०) स्वस्व किया हुआ, नीचवन् नीचविधों की स्वास्व्यकर शक्ति।

भोगः [भृन्+भञ्ज] 1. जाना, सा लेना 2. सुकोपयोग 3. वस्तु 4. उपयोगिता, उपयोग 5. काशन करना 6. उपयोग, प्रयोग 7. सहन करना 8. अनुभव करना, सकल्पना 9. स्वीकृति 10. जानन्य लेना 11. बाहुर 12. ज्ञान 13. ज्ञान 14. वन। सम०—भावः पोषक, बरणपोषण करने वाला,—वन्न् किराये का वस्ता-वेष्ट,—भृन् (वि०) सुकोपयोग करनेवाला।

भोगिराजः [भ० त०] सेवनाम।

भोग्यवस्तु विलास की सामग्री।

भोग (वि०) [भृन्+भञ्ज] 1. सुकोपयोग देने वाला 2. उदार, दानशील,—भः (पु०) 1. एक ब्रह्मिष्ठ राजा का नाम 2. विद्वद्देश का राजा। सम०—वन्न् भोग द्वारा रचित रामायण वन्दू,—अवन्न् वत्साल की भोजविषयक कृति।

भोगः वीथ द्वारा नदी में उत्पारित पुत्र।

भोग्यवन् (नपु०) दासता, सेवकत्व।

भोज (वि०) [भृन्+भञ्ज] 1. प्राणिसन्धी 2. नीतिक 3. पाकन, कः 1. दूत पिशाचों की पूजा करने वाला 2. भूतवन्। सम०—शिव (वि०) भूत, पुर्वदि।

भोजन् [भूमि+भञ्ज] 1. तरबविषयक वस्तु 2. फर्ज 3. मयन की ऊपर की मजिले—सप्तमीमाष्टमीवैश्वक—रा० ५।२।५०।

भोजी [भोज+भोज] सीता का विशेषण।

भोजः [भञ्ज+भञ्ज] 1. गिरना, फिसल जाना, बचः-पतन 2. हास, मुस्ती 3. नास, ध्वंस 4. दूर नाव जाना 5. भोजन होना 6. (माटप० में) उत्तमना के कारण वाक्प्रत्ययन।

भञ्ज (वि०) [भञ्ज+भञ्ज] 1. गिरा हुआ, पतित 2. मुझाया हुआ 3. भागकर जो बच गया। सम०—अधिकार (वि०) जिससे अधिकार छीन लिये गये हों, पचन्नुत्, किम् (वि०) की विहित कर्म करने में अक्षम रहा,—भोज (वि०) की शक्ति से पतित हो गया हो।

भञ्ज (अ०, वि० पर०) लड़कना, बचकना।

भञ्ज (अ०) 1. क्षीरा पीटना 2. अन्वयवित्त करना।

भञ्जः [भञ्ज+भञ्ज] 1. छाटा, छतरी 2. वृक्ष।

भञ्जः [भञ्ज+कञ्ज] 1. मनुष्यकी 2. प्रेमी 3. कुम्हार का बक 4. क्षीर 5. लट्ठ। सम०—भिकरा मनु-मिश्रणों का छेता,—वन्न् एक कम्प।

भञ्जित (वि०) [भञ्ज+उत्पत्ति] की नीका हो गया है—वयतिविलसनीकवेदमरविभञ्जितका—नी० २।१०१।

अभिः (स्त्री०) [अभ् + इ] मुर्छा, बेहोशी ।
 आन्त (वि०) [अन् + क्त] १ दहर-उपर गुमा हुआ
 २ चक्कर खाया हुआ ३ भूला भटका ४ चबहाया
 हुआ । सम० चिन्त (वि०) मन में चबराया हुआ ।

भू (स्त्री०) [भृ + इ] भौ, भाँस की भौ । सम०
 बन्धितव्य रूपके-रूपके भाकना, छिपकर देखना,
 विवस्त्र मोहों को मोड़ना, मोहें बढ़ाना ।

म

मकर [य विष किरति-कृ + अच्] १ मगरमच्छ २ मकर-
 राशि ३ मकर की आकृति का कुण्डल । सम०
 आसनम् एक प्रकार का योग का आसन, —आहुत
 व पत्त ।

मकरन्ध [मकर - दो - र, मृमादेश] १ पुष्परस, मधु
 २ चमेली का फूल ३ बागल ४ मुगन्धयुक्त आम का
 वृक्ष ५ (सगीत० में) एक प्रकार का माप ।

मकरनिका एक छन्द का नाम ।

मकलक (पु०) १ कली २ दन्ती नाम का वृक्ष ।

मकलमन्थाव (पु०) शिव का विशेषण ।

मकल्य (पु०) कुसीरक सुखोद ।

मकल्यवैद्यः (पु०) मयघ नाम का वैद्य ।

मकलुकः (पु०) एक प्रकार का वाद्ययन्त्र ।

मङ्गल (वि०) [मङ् + अलच्] १ शुभ, सौभाग्यशाली
 २ समृद्ध ३ वीर, - लम् (नपु०) १ माङ्गलिकता,
 प्रसन्नता, कल्याण २ शुभ अशुभ ३ बासीबाँस
 ४ माङ्गलिक सत्कार (जैसे कि विवाह) ५ हस्तो,
 - ल. (पु०) १ मङ्गलग्रह २ अग्नि । सम०
 —आचह (वि०) शुभ, —ध्वनिः माङ्गलिक स्वर,
 जेरी माङ्गलिक अवसरों पर बजाया जाने वाला
 होल ।

मङ्गलः [मङ् + ल्युट्] आठ वर्ष का हाथी — मान० ५।९ ।

मङ्गलमूषक एक प्रकार का नाच ।

मङ्गलनाथः मधुर ध्वनि मञ्जीर मञ्जुनाथदेव पद्मभजन
 वीज हस्ताभयन्तम् — नारा० १००।९ ।

मङ्गलुजः एक जिन का नाम ।

मङ्गलुजीः एक बौधिसत्त्व का नाम ।

मङ्गलवर्तिः [व० त०] १ किसी धर्ममय का प्रधान २ मठ
 का अधीक्षक ।

मङ्गलान्नः [व० त०] विविध आध्यात्मिक श्रेणियों से
 संबद्ध कोई रचना ।

मणिः [मण् + इन्] १ रत्न, जवाहर २ आभूषण ३ सचो-
 ताम पदार्थ ४ चुम्बक ५ कलाई ६ अयस्कान्त मणि
 ७ स्फटिक । सम० काञ्चनशोधः उपयुक्त वस्तुओं
 का विरल मेल, — तुलाकोटिः अज्ञात पायबन्ध, — ज्ञान
 एक छन्द का नाम, — विहङ्ग (वि०) रत्नजटिह ।

मण्डलात्म (पु०) जमा हुआ वृक्ष, वही ।

मण्डलीयिका परकर के दो वस्तुवाँस ।

मण्डनकालः भुगार (प्रसाधन) समय — मासक्रम मण्डन-
 कालहाने रघु० १३ ।

मण्डनप्रियः (वि०) अलकारप्रिय, आभूषणों का शौकीन ।

मण्डलम् [मण्ड + कलच्] १ गोलकार वस्तु, पहिवा,
 अमूठी, पौरिष २ सूर्य परिवेश, चन्द्र परिवेश ३ समु-
 दाय, मगध, सेना ४ समाज ५ वर्तुलकार घटि
 ६ घृत पट्ट । सम० — आत्मन (वि०) वृत्त में बैठा
 हुआ, — कविः कठ कवि, मुक्कद कवि, — नाभिः वृत्त
 का केन्द्र, भातः मडवा, प्रसाला, — बाहः उजाल ।

मण्डलकम् [मण्डल + कन्] १ बाण विद्या में बणित एक
 विशेष मुद्रा २ जादू की छवितियों से युक्त एक वृत्त ।

मण्डुकम् डाल की मूठ ।

मण्डुकपर्वा हाथों की जाति का एक पीचा ।

मण्डुकर्षिका दे० 'मण्डुकपर्वा' ।

मण्डुकपर्वा दे० 'मण्डुकपर्वा' ।

मन्तव्यः [मन् + त०] मतों में अन्तर, सम्मतियों की विषयता ।

मन्तिः [मन् + क्तिन्] १ बुद्धि, मनन, ज्ञान, निर्णयशक्ति

२ मन हृदय ३ विचार, विस्मय, सम्मति, दृष्टिकोण

४ इरादा प्रयोजन ५ प्रस्ताव, लक्ष्य ६ बाहर,

सम्मान ७ इच्छा ८ उपदेश ९ स्थिति १० मन्त्रि,

प्रायश्चा । सम० कर्मन् बौद्धिक कार्य, मन्तिः

(स्त्री०) चिन्तन कर्म, सर्वज्ञ विचारों का सम्मेलन ।

मन्ताव्योह एक छन्द का नाम ।

मन्तारवर्णः, — वम् १ किसी मन्त्र की चहारविधारी

२, बूटी का वैक्रेट ३ चारपाई, पल्लव ।

मन्तव्यः [मन् + क्तिन्] १ मन्त्रो २ मन्त्र देख का राजा ।

सम० — उद्धतम् एक प्रकार का नाच, — आत्मीकः

मन्त्रिभार, मन्त्रो भा व्यापार करने वाला, — कल-
 मन्त्रिः पत्नी हुई मन्त्रो चटनी के साथ ।

मन्त्र (वि०) [मन् + क्तिन्] मन्त्रन किया के द्वारा शान्ति,

मन्त्रक मिलाता जाने वाला ।

मन्त्रः [मन् + क्तिन्] १ शान्ति २ मन्त्रकुडली में सततों पर

३ अविमान ४ पापकपन ५ अत्यन्त आदेश ६ ह्मणी

के अत्यन्त से बने वाला रत्न ७ प्रेम, मन्त्री ८ बुरा,

सराव, 9. मधु 10. वीर्य 11. सोम 12 नद । सव०
—भङ्गः धर्म का दूट जाना, —मत्ता एक छन्द का नाम ।

मन्मथ [मन् + मथ्] 1 नशा करना 2 उल्लास, हर्षा-
तिरेक, नः 1. जन्मकुडली में सातवाँ घर 2 एक
प्रकार की सनीतवाप । सव०—अथवा नवी का
माधिक्य, नवतिरेक ।

महिरामनाथ (वि०) सराव पीकर भूत अत्यन्त नष्ट में ।

मन्मथः सराव की मुराही, मुरा पात्र ।

मन्मथोन्मत्त सरीर उठाने के लिए औषधि ।

मन्मथः मन्मथों का देश ।

मन्मथः एक सगर जाति ।

मन्मथ (नपु०) [मन् + मथ्, नस्य घः] 1 सहृद 2 फूलों का
रस 3 मन्मथिकियों का छना 2 मोम । सव०—काका
सरभुज, —काकम् मुरापात्र, मन्मथ सराव और मांस,
—मन्मथी 1 एक प्रकार का अंगूर 2 मोठा नौक ।

मन्मथोन्मत्त मोम ।

मन्मथी [मन् + मथ् + डीप्] 1 एक नदी का नाम 2 एक
वैल का नाम 3 'मन्मथानां मन्मथैः' से आरम्भ होने
वाली तीन शृंखलाएँ ।

मन्मथः [मन् + मथ्] घञ् ।

मन्मथः कथाय स्वाव, तोषा स्वाव ।

मन्मथोन्मत्तः एक निद्रम जिसके आघार पर मुख्य वस्तु
दोनों पाशों के बीच में रहे जैसे कि द्वार में मणि ।

मन्मथः सामान्य संपत्ति ।

मन्मथ (वि०) [मन् + मथ्] 1 बीच का, केन्द्रीय
2 अन्तर्वर्ती 3 मध्यवर्ती, —नः 1 मितान्त बीच का
पुत्र 2 राज्यपाल 3 बीच का विशेषण (मध्यमभा-
योग), मन् (नपु०) 1 जो अतिप्रसन्ननीय न हो
2 प्रहृष्ट का मध्यवर्ती बिन्दु । मन्मथः किसी
वह की भीत बाह्य, बाह्यः (सनीत० में) मध्यवर्ती
मन्मथ, व्यापकः मासकृत एक नाटक ।

मन्मथीय (वि०) [मन्मथ + छ] बीच का, केन्द्रीय ।

मन्मथोन्मत्त (वि०) ऐसा मन्मथ जिसके मध्यवर्ती अक्षर पर
उदात्त स्वर हो ।

मन् (दिवा० तना० वा०) स्वीकार करना, सहमत
होना ।

मन्मथ (नपु०) [मन् + मथ्] 1 मन, हृदय, समझ,
बुद्धि 2 (दर्शन० में) सञ्ज्ञा व प्रज्ञा का एक अन्त-
र्वर्ती अंग, यह उपकरण जिसके द्वारा ज्ञानेन्द्रियों के
विषय ज्ञान का प्रभावित करते हैं 3 अन्तःकरण
4. अन्तःकरण 5. सफल । सव०—बाह्य (वि०)
मन से प्रहृष्ट किसे जाने के योग्य, —मन्मथः मन का
अवधार, —कारणम् अन्तःकरण की संरचना करना
—मन्मथः मन के प्रत्यक्षीकरण में अस्तिम के पूर्व की

स्थिति (जैन०), —रायः हृदयानुराग, प्रेम, —मन्मथः
मन का सन्तोष, —सन्मथः मन का हवन ।

मन्मथः [मन् + मथ्] मानसिक क्षमतायों देहोन्मत्तों आ मनसो
भूतमात्रा—माग० १।४।२५ ।

मन्मथोन्मत्त मनुसंहिता, मन्मथ द्वारा प्रणीत धर्मशास्त्र ।

मन्मथोन्मत्त [मन् + मथ्] पालकी, शिविका ।

मन्मथोन्मत्तः मानव की हड्डा ।

मन्मथोन्मत्त दुर्गा का एक रूप ।

मन्मथः [मन् + मथ्] 1 विष्णु का नाम, शिव का नाम
2 जन्मकुडली में पाँचवाँ घर 3 वैदिक सूक्त 4. वेद
का वह अंश जिसमें संहिता सम्मिलित है 5 श्रावणा
6 गुप्त योजना 7 नय, नीति । सव० कर्कश
(वि०) वृद्धनीति का समर्थक, आचारः रात के
जागरण के अवसर पर मन्मथों का सत्वर पाठ, रक्षा
किसी नीति विचार या गृह्य को गुप्त रखना,
—सत्वरम् किसी गृह्य, मन्मथ या नीति का गुप्त
रखना, —स्नानम् स्नान करने के स्थान पर 'अथमर्थ' मन्मथों का सत्वर पाठ करना ।

मन्मथ (मन् + मथ्) मिथित करना, मिला देना ।

मन्मथः [मन् + मथ्] 1 मथना, मिलाना, हिलाना
2 मार डालना, नाश करना 3 मिथित पेट 4 रई,
जिलाने का उपकरण, मन्मथदण्ड 5. पूर्व 6. आँखों
के रोहो 7 पेट नैपार करने के लिए माथुपेट का एक
योग । सव० विष्णुः मन्मथदण्ड ।

मन्मथ (वि०) [मन् + मथ्] 1 डीला, शिथिल, मिथि-
यामक, अलस 2 नीतल, उदासीन 3 मूढ़, दुर्बल,
मूर्ख 4 नीचा, गहरा, कोकला 5 मृदु, सुकुमार
6 छोटा 7 दुर्गन्ध मन्मथः (पु०) 1 सान्त्व 2 मन्मथ
का विशेषण । सव०—माथुपेट संकोच, मिथिल,
कर्मन् (वि०) कार्य करने में मिथिल, —मन्मथः (वि०)
जाने जाने मूढ़ा होने वाला, पुण्य (वि०) दुर्भाग्य-
प्रस्त, बर्षाकरमन्मथ ।

मन्मथोन्मत्तः पानी भरने का बड़ा घड़ा ।

मन्मथः [मन् + मथ्] 1 मन्मथ 2 माया 3 मन्मथ
4 मिथि 5 देवालय 6 काया, शरीर ।

मन्मथः [मन् + मथ्] 1 अवधारणा, अन्तःकरण, तन्मथा
2 मन्मथ, मन्मथ । सव० मन्मथः—काका अन्तःकरण
का प्रभावकर्ता, मन्मथोन्मत्तों की एक जाति ।

मन्मथोन्मत्त (नपु०) मन्मथ नामक वृक्ष की मन्मथों के इतने
मन्मथ के १५ व ८० वं वृक्ष हैं ।

मन्मथोन्मत्त (वि०) 1 अन्तःकरण 2 मन्मथ ।

मन्मथोन्मत्त (वि०) 1 अन्तःकरण 2 अन्तःकरण ।

मन्मथोन्मत्त (वि०) और प्रति मन्मथ ।

मन्मथोन्मत्त (पु०) दुर्ग, दुर्ग ।

मन्मथः [मन् + मथ्] 1 मन्मथ 2. एक प्रकार का वृक्ष 3. एक

अधि का नाम (सूर्यसतक का प्रथेता) 1 सम०
मूलम् मोर का नाथ, पिच्छम् मोर का बन्ध।
मयूरिका (स्त्री०) 1 नय, नाक का छस्मा 2 एक जह
रीका जंतु।

मरकतस्वामि (वि०) पत्ने बैसा काला ऐसा काला बैसा कि
मरकतस्वामि माता मरकतस्वामा मातङ्गी मरकालिनी
—स्वामि०।

मरकम् [मृ + मरु] 1 मरना मरु 2 एक प्रकार का
विष 3 अक्षतान 4 जम्बूद्वीप में आठवां पार
5. शरण, शरणालय। सम०— ब्रह्मा मृत्यु का मयय,
—श्रील (वि०) मरत्य, मरकधर्मा।

मरीचि [मृ + ईचि] 1 प्रकाश की किरण 2 प्रकाशक
3 प्रकाश 4 मूलतुल्या 5 आग की बिगारी। सम०
—वा: (मरीचिपा) मरिचय जो सूर्य की किरणें
पीकर जीवित रहते हैं—रा० ३१६। २।

मरु [मृ + उ] 1 रेगिस्तान निर्जल प्रदेश 2 पहाड़, चट्टान
3 तुरवक नाम का पीपल 4 मरुपान का त्याग।
सम०—प्रवत्तम पहाड़ से छलाय लवना।

मरु (पु०) [मृ + उति] 1 बायु हवा, समीर 2 बाण
बायु 3 बायु का देवता 4 देवता 5 मरुवक नाम का
पीपल 6 सीमा 7 सीमार्थ। सम०—ब्रह्मा ब्रह्मा
कावेरी नदी।

मरु (पु०) [मृ + ऊ] 1 बासी 2 पीठमर्द (स्त्री०)
सखार, पवित्रता।

मरु (नपु०) [मृ + मनिन्] 1 शरीर का महत्त्वपूर्ण
भाग (शरीर का दुर्बल या सुकुमार अंग) 2 वृद्धि
विकल्पा 3 हृदय 4 गुल अर्थ 5 रहस्य 6 सत्यता।
सम०— ब्रह्म मरुस्थान पर आघात करना, जम
संवर।

मरुति [मरु (सीमा) + दा + क] 1 सीमा 2 जल
3 किनारा, तट 4 चिह्न 5 नैतिकता की सीमा
प्रचलित नियम, प्रचलन 6 बोधित्य का सिद्धान्त
7. करार। सम०— ब्रह्म सीमा के अन्तर रहना
—ब्रह्मन् सीमाविषयक बलवत्— व्यक्तिकर्म सीमा
का उत्पन्न।

मरु (वि०) [मृ + कल, टिलोप] 1 मैला गन्दा
2 काली 3 दूष्य, ल लम्ब 1 रंग, गन्दगी
भूक अपवित्रता 2 बिछा बीट 3 जानवरों का मोर्चा
4 शरीर के मल 5 कपूर 6 कमाया हुआ बमडा
7 बात, पित्त तथा कफ नामक दोष। सम०—अथवा
एक नदी का नाम,—पञ्चिन् (वि०) मल या गन्दगी
से भरा हुआ।

मरुतः (संगीत०) एक प्रकार की नाप।

मरु (वि०) (म० महीयत्, उ० महीयत्) [मृ + मरि] 1
मरु, विद्या, विस्तृत 2. पुष्कल, वस्तु 3. दीर्घ,

विस्तृत 4 प्रबल, बलशाली 5 महत्त्वपूर्ण, आवश्यक
6 ऊँचा, प्रमत्त पूज्य। सम०—आयुष्यं महान् मरुत्,
बड़ा भारी हविष्यार,—औषधि: (स्त्री०) एक आयुष्य
अनघ दूरी कुलम् उत्पन्न चराना, इन्द्र: सैनिक,
मत्वा—कल: बेल का मूल,—व्यक्तिकर्म: 1 भारी
व्यक्तिकर्म 2 महान् पुष्प का अनावर।

मरु (कर्मधारय और बहुव्रीहि समास के आरम्भ में 'मरुत्'
शब्द का स्थानापन्न—इसके कुछ उदाहरण निम्नांकित
हैं।। सम०—अजिन बरबर महानिकेतनेव
मिदावत् रज्ज्व कि० १४।५९ आरम्भ महान्
कार्य विद्यालैषाने पर कार्य वा आरम्भ करना,

आलय देवालय, मन्दिर नीच स्थान आलस्य-
मात्रस्या रह अनावस्या जिससे महालयपक्ष आरम्भ
होना है,—आलस्यपक्ष माघ और पीष मास का पुर्वत
पितृपक्ष, आलस्यपक्ष महालय पक्ष में आरम्भ करना,
अजिन (पु०) समुद्र,—औष (वि०) प्रबल चारालों
से युक्त—कम्प ब्रह्मा के मो धर्म,—ब्रह्मन् सक्ति की
पूजा में रहस्यमय चक्र अक्षय: ऊँट,—अक्ष: शरद्-
सिमा हरिण,—ब्रह्म बड़े व्याघ्र की एक जाति,—सूर्यं
महान् सकट, वराह. एक प्रकार की तपस्या,
—पुराणम् अठारह पुराणों में एक पुराण, प्रबल एक
अजित सवाल, किसी एक प्रकार का बमडा,—आयुष्यं
पूज्य कोष, मरुत्तय: 1 मरुत् के विजेता सिध-को
प्रसन्न करने का मन्त्र 2 एक औषधि का नाम,—आयुष्यं
एक बड़ी सवारी (पञ्चवर्ती बीड़ सिलान), एक:
मैदक चक्र: (वि०) अत्यन्त पीडाकर,—कम्प:
1 म० प्रलय 2 परमपूज्य जिसमें सब महाभूत लीन
हो जाते हैं—विष्णुका एक प्रकार का छन्द,—शिवराशि:
फलान् मास के कुम्भपक्ष का चौदहवां दिन, शिवपूजा
का माहात्म्य दिवस इच्छया रेत, बाल—सर्पि:
(पु०) एक प्रकार का मणीत माष, लुधा चाँदी।

महिम्न (नपु०) प्रभुसत्ता, उपनिषिद्ध।

महिम्न (पु०) [महि + इमनिन्] आठ सिद्धियों में से एक।
महिम्नविनी दुर्गादेवी।

मही [मह + अ + मी] 1 पृथ्वी बरती भूमि 2 मूलपति,
जायपति 3 देश राजधानी 4 सम्पत्ति की भाँडी
में 'वरने वाली एक नदी 5 (ज्या० में) किसी आकृति
की आकाररेखा 6 विशाल मैदा 7 नाप। सम०
मोक्ष अग्नि पृथ्वी, धरतीनाम भूमि को सतह,
—करोति बड़ा बनाना है प्रोन्नत करता है।

मांस [मृ + स, दीर्घश्च] 1 गोरोट 2 मछली का
मांस 3 कल का मांसक भाग,—स. 1. कीड़ा 2 लकर
जाति, जो मांस बेचती हैं। सम०—आय: मांस का
प्रीति, कीक: रत्तीली, चक्र: नदी जीव,—विर-
मयिन् मांस-मक्षण का स्वाध।

मशीनो (ना० वा० पर०) मांश के लिए लाकाविल रहना ।
मासिकमासः एक प्रकार का मजिज बाहु ।

मास्यः [मय + मय्] 1 मय्य देश का राजा 2 साहित्य
क्षेत्र में काम्यसेली का एक प्रकार ।

मास्यसूक्ष्म हस्तिविज्ञान पर एक कृति ।

मासुकाक्षिः एक प्रकार का शीप ।

मासु (स्त्री०) [मासु + क्त्वा, मज्जो] 1 माता, जननी
2 स्त्रियों के प्रति भावर वा सम्मान सूचक संबोधन
3. माय 4 सखी वा दुर्गा का विशेषण 5 बरती
माता । सम०—सौम्यः माता का दोष, भक्तिः माता
के प्रति भावर सम्मान, -जातिताः मूलव्यक्ति, सीमा
सादा, मोह ।

मासुका सीमा की ८ गाड़ियाँ, शिराएँ ।

मासुताः (ब०) मासुपरक पक्ष की मोर ।

मास्य (वि०) [मा + मय्] आरम्भिक विषय ।

मास्य [मास + टाप्] 1. परिचाय 2 क्षय 3. मय् 4. मंश
5. वृत्त, विचार 6. मय 7. तप 8. भौतिक संसार
9 मावरी मजदूरों में स्त्रियों का विह्वल 10 काल की
सखी 11. मासुपक्ष 12. हस्तिवृत्तों का कार्य 13. विकार ।
सम०—मज्जोमय समयस एक हय की माय ।

मास्यसमायः एक सिद्धान्त जिसमें बड़ा छोटे को बताया है,
हर बड़ी मछली छोटी मछली को खा जाती है ।

मास्यसिद्धान्तः मासुर्वेद की एक कृति ।

मासवी पशुओं की बहुतायत ।

मास्य [मय् + क्त्वा] 1 भावर, सम्मान 2 समंश अभि-
मान, बहुकार 3. आशयिमान, आशयीवर, मय्
1 माय 2 निष्ठित मायवर्ण 3 मायाम । सम०
—मय्य (वि०) मय्य के कारण मया, -मय्य (वि०)
सम्मान के योग्य, भावर का अधिकारी, -मय्यमय्य
प्रतिष्ठा मज्ज होना, श्रेष्ठ का मास्य, -विषय कोटे
बाँटों से तोलकर या मिथ्या मायकर बनान करना,
ठगना—बी० म० २।८।२६, सार अभिमान की
बड़ी माया ।

मास्यसूत्रा मानसिक पूजा ।

मासुवय् [मयोरयम्—मय् सुक् व] 1 मानवता, मनुष्यत्व
2. मनुष्य की परिपक्वतावस्था, पूर्ण पुरुषत्व । सम०
—मय्य नीच पुरुष, मोछा मनुष्य ।

मास्यव्याच [व० त०] रोग का बहाना ।

माया 1 दुर्गा का नाम 2. बहता, कला ।

य

मय्य [मं संघर्ष करोति छ + मयिप् सुक् व] भावर ।
सम०—सैरिप् (पु०) मय्य का एक पीया, रक्त-
रोहिता ।

मय्य [मय् + क्त्वा] 1 देवकीन विषय, जो कुमर के
कैपक है 2 मृत्तव्य 3. हय का मय्य 4 कुमर
5 पूजा 6. कुत्ता । सम०—मय्यः मय्य, सीमान ।

मय्य [मय् + म] 1 मय, मयीय उपकार 2 पूजा की
प्रक्रिया 3 मयि 4 विष्णु । सम०—मय्यमय्य मय
में प्रयुक्त किया जाने वाला उपकरण, -मय्य मय्य,
—मयी मय्यमय की मयी, -मय्यमय मय का मय-
विष्ट मय्य-मय्यविष्टमय्य मय्य मय्यमय्य मय्यमय्य
—मय० १।११, संसारः मय की देवी की स्थापना
कला इच्छाप्रयत्न ।

मय्यमय्य 1 सामयुक्त 2 मय्य के दोनों पक्षों का
प्रतीकारमय नाम ।

मय्यमय्य (वि०) विद्याकील, परिचयी, प्रयत्न करने वाला ।

मय्यमय्य (वि०) [व० त०] मय्य रहने वाला, जिसमें
मय्यी मय्यी की नियमित रहना है ।

मय्यमय्य (वि०) [व० त०] जिसमें मय्यमय्य मय्य दिया है ।

मय्यमय्यमय्य विशेष प्रकार का उपकरण ।

मय्यमय्य (ब०) मय्य मय्यी का मय मय्य, इच्छामय्य ।

मय्यमय्यमय्य मय्य की एक मय्य मय्य के शाप मय्यमय्य
मय्य मय्यी मय्यी मय्यी मय्यी के वा मय्यमय्य है ।

मय्यमय्यमय्य (वि०) मय्य मय्यमय्य हो मय्य या मय्यमय्य हो
मय्य मय्यी मय्य मय्यी मय्य मय्यमय्य ।

मय्य (ब०) [मय् प्रकारे मय्य] मय्य मय्य, मय्य मय्यी के,
मय्य, मय्य प्रकार । सम०—मय्यमय्य (ब०) मय्य
कि मय्यमय्य मय्य है, या मय्यमय्य मय्य मय्य है—मय्य
मय्यमय्यमय्य मय्यी के मय्यी मय्यमय्य मय्य १।११।

१२, -मय्यमय्य (ब०) मय्यार के मय्यमय्य-
मय्य० का ४१, उपमय्य (वि०) मय्यमय्य, मय्यी,

—मय्यमय्य (ब०) मय्यी मय्यमय्य के मय्यमय्य,
—मय्यमय्य (ब०) मय्यमय्य के मय्यमय्य, मय्यमय्य

मय्यमय्य, उपमय्य (वि०) मय्य मय्यमय्य मय्य
मय्य, या मय्य मय्यमय्य मय्य मय्य मय्य०—मय्यमय्य (ब०)

मय्य मय्यी मय्यी मय्यी मय्यी मय्यी मय्यी मय्यी मय्यी
मय्यी मय्यी मय्यी मय्यी मय्यी मय्यी मय्यी मय्यी मय्यी

मय्यी मय्यी मय्यी मय्यी मय्यी मय्यी मय्यी मय्यी मय्यी
मय्यी मय्यी मय्यी मय्यी मय्यी मय्यी मय्यी मय्यी मय्यी

मय्यी मय्यी मय्यी मय्यी मय्यी मय्यी मय्यी मय्यी मय्यी
मय्यी मय्यी मय्यी मय्यी मय्यी मय्यी मय्यी मय्यी मय्यी

मय्यी मय्यी मय्यी मय्यी मय्यी मय्यी मय्यी मय्यी मय्यी
मय्यी मय्यी मय्यी मय्यी मय्यी मय्यी मय्यी मय्यी मय्यी

उपहार, प्रदान। सम०- कम्पक 1. दुरा बजमान
2. जो वस्त्र को बिनाड़ता है, - संभवतः वस्त्रों
परार्थ को लेने वाला- पा०. ४।२।२४ पर काशिका,
- सुवस्त्र वस्त्रों परवीर, कनेऊ।

साधना [धाप् + धञ्] 1. सीधना 2. साधना 3. प्रार्थना
सम०- बीधिका, - बीधनम् भिक्षावृत्ति पर जीने
वाला, - धङ्कः प्रार्थना को दुकुरा देना।

साधकः बजमान, बज करने वाला।

साधसेन [विधाप्नी का वसुक्त नाम।

साधसेनि म्हा० ७।१४।४४

साधना [व् + जिप् + वट् + टप्] आहुति देते समय
प्रयुक्त किया जाने वाला वस्त्रिय नियम।

साधक [धा + क्] साधी।

साधुनारी राजसी, विधापिनी बजाम निजमती या तु
साधुनारी-रा० च० ७।१०।

साधः नरक में रहने वाला।

साधकर (वि०) सीधन का सहारा देने वाला (साधन)

साधकान् वस्त्रों पर जाते समय दिया गया उपहार।

साधकान् [साधना + धञ्] साधकिक स्वभाव या
प्रयोजन।

साधक [धा + धृट्] 1. बजमान, पोत 2. जय-मरण के
वक से युक्ति का बजान- तु० महाभारत, हीनयान
१. बजारी रथ, हवाई गाड़ी। सम०- साधकान्
गाड़ी की गरी, बैठने का साधन-मुक्क०, - स्वाधिन
गाड़ी का साधक।

साध (वि०) (स्त्री-मी) [ध + धञ्] धन से
सज्जन रहने वाला-साधनिकर वातना-मुक्क०
१०, च० (पु०) देवों का समुदाय-यार्मः परिवृत्तों
देव-भाज० ८।१।१८। सम०- साधिन मुर्गा, -वालः
समय पाकक, साधः नय।

साधिकाचट [1. राजस 2. उल्लू।

साधिकाचट [1. राजस 2. उल्लू।

साधिकाचट [1. राजस 2. उल्लू।

साधिकाचट [1. राजस 2. उल्लू।

साधिकाचट [1. राजस 2. उल्लू।

साधिकाचट [1. राजस 2. उल्लू।

साधिकाचट [1. राजस 2. उल्लू।

साधिकाचट [1. राजस 2. उल्लू।

साधिकाचट [1. राजस 2. उल्लू।

साधिकाचट [1. राजस 2. उल्लू।

साधिकाचट [1. राजस 2. उल्लू।

साधिकाचट [1. राजस 2. उल्लू।

साधिकाचट [1. राजस 2. उल्लू।

साधिकाचट [1. राजस 2. उल्लू।

साधिकाचट [1. राजस 2. उल्लू।

साधिकाचट [1. राजस 2. उल्लू।

साधिकाचट [1. राजस 2. उल्लू।

साधिकाचट [1. राजस 2. उल्लू।

साधिकाचट [1. राजस 2. उल्लू।

साधिकाचट [1. राजस 2. उल्लू।

साधिकाचट [1. राजस 2. उल्लू।

साधिकाचट [1. राजस 2. उल्लू।

साधिकाचट [1. राजस 2. उल्लू।

साधिकाचट [1. राजस 2. उल्लू।

साधिकाचट [1. राजस 2. उल्लू।

साधिकाचट [1. राजस 2. उल्लू।

साधिकाचट [1. राजस 2. उल्लू।

साधिकाचट [1. राजस 2. उल्लू।

साधिकाचट [1. राजस 2. उल्लू।

साधिकाचट [1. राजस 2. उल्लू।

साधिकाचट [1. राजस 2. उल्लू।

साधिकाचट [1. राजस 2. उल्लू।

साधिकाचट [1. राजस 2. उल्लू।

पुष्कः [युष् + क्, मलोपः] बजान्, तक्ष्म ।

पुष्पाक (वि०) [युष् + आपक म लोपः] तदन, बजान् ।

पुष्पति [युष् + ति] बजान् रुची, तक्ष्मी । सम० - इच्छा दीने रत्न की बक्ष्मी, - बज्ज-तक्ष्मी स्त्रिया ।

पुष्पवर्धन (अ०) आपके लिए, आपकी सातिर ।

पुष्पवायस (वि०) जो कुछ आपके अधीन है, आपके नियन्त्रण में है ।

पुष्पहारणम् (व्या०) मध्यम पुष्प ।

पुष्पद्विज (वि०) आप जैसा, आपके तरह का ।

पुष्पाक (वि०) आपका, आपके सब्ज रखने वाला ।

पुष्पाक्षिप्यम् १ ऊँ और उसका अडा (स्त्रीक) २ स्त्रीक ।

पुष्प [यु + पक्, पूर्वो दीर्घः] रेवड़, लहड़ा, समूह, सफ़ाया । सम० - चारिण् (वि०) जो सामूहिक रूप से (हाथियों की भाँति) चमता है, किसी रेवड़ में या लहड़े में, - परिप्लव् (वि०) अपने समूह से भटका हुआ, चमकः रेवड़, लहड़ा ।

पुष्पतः (अ०) [युष् + ताप्] रेवड़ में, लहड़े में, पक्षि में ।

पुष्पः [यु + पक्, पूर्वो दीर्घः] १. यक्षीय स्त्रुणा (जो प्रायः बौस या खैर की लकड़ी की होती है) जिससे यक्षीय पशु बाँध दिया जाता है २. विजयस्तम्भ । सम० कर्माध्यायः बहु नियम जिसके अनुसार विहित से सबह किसी विवरण का उल्काव या अपकर्म केवल उसी विवरण तक लागू रहेगा जिससे कि तद्विहितम् न्याय का उपयोग न हो सके - मै० स० ५।१। २७ पर सा० भा० ।

पुष्प [युष् + क्, कुत्सम्] १. आक्रमण - बोधमात्रा-पथमास शिवस्य शिव्य प्रति शिव० १३।७, २. सतत संसृति, लगातार निकालना - मयि चान्द-योगेन भक्तिरभ्यभिचारिकी - अय० ११।१० ३. समता साम्य - सम्यक् योग उच्यते - अय० २।४० ४. पुष्प के 'बों' से छुटकारा - बुद्धयोगविमोचन योगसंहितायु अय० ५. निकालना, जोड़ना ६. तपके ७. उपयोग ८. परिणाम ९. पुष्पा । सम० - अन्ध-क्षिप् (वि०) जो योग का अभ्यास करता है, - बालका केवल आकस्मिक संपर्क के कारण व्युत्पन्न नाम - एषा योगाख्या योगमात्रायेना न मृतवर्तमान-प्रविश्रुतसम्प्रापेक्षा मी० पू० १।३।२१ पर सा० भा० - आपत्तिः प्रचलन में परिवर्तन, - लोचः १. समुद्रि, नुरक्षा २. कल्याण, बकाई ३. बाण-कार्यों के निमित्त कल्पित संपत्ति - अय० १।२।१९, - बन्धः योग की क्षिति के वृत्त छोटी जाड़ की छोटी, - नाथिक, - नाथिक, एक प्रकार की बछली, - बन्धु स्वसंकेतन की स्थिति, - बालम् नृणां ज्ञाने वाके पदार्थों से वृत्तवाराय, योगक, - वीडम् योग

का अभ्यास करते समय बैठने की विशेष मुद्रा,

- पुष्पः वृत्तपर, - बंधा योगपुष्पवैराग्यान् राधाभि-
तिष्ठति - की० ब० १।२१, - बन्धः (वि०) जो

योग के मार्ग से पक्षित हो गया है - बुद्धिवां बौद्धों में
गोहे योगप्रपञ्चोऽभिधावते - अय० - बंधा परमेश्वर

से सादृश्य प्राप्त करने का मार्ग, - पुष्प (वि०)
योगमार्ग में संलग्न - योगयुक्ता ब्रह्मार्थ - अय०

८।२७, - बालम् वृत्त उपाय, वृत्तवृत्ति, कपटबोधना,
की० ब० - बाहुक (वि०) विचटनकारी (रक्षा-

यन०) - विद्या योगसाधन, - विहितः योगाभ्यास
में पूर्वोक्ताकृत्य प्राप्त करना, - विहितः एक न्याय

जिनके अनुसार माना प्रकार के कर्मों को देने वाली
एक विनिष्ट प्रक्रिया एक समय में केवल एक ही

फल दे सकती है दूसरा फल प्राप्त करने के लिए
उस प्रक्रिया का पुनः रूप से दूसरा प्रयोग करना

पदेना मी० सू० ५।३।२७-२८ पर सा० भा० ।

योगिक (वि०) [योग + ठक्] अभ्यास के लिए अनुवृत्त
(जैसा कि 'योगिक' नाम तीरन्दाजी अभ्यास प्राप्त

करने के लिए अनुवृत्त) ।

योग्य (वि०) [युष् + ण्यत्, योग + ण्यत् वा] १. उपयुक्त,
समुचित २. पात्र ३. उपयोगी, कामचलाक - अयः

(पू०) १ पुष्प नजन २. भारवाही पशु, - अयः
१. सवारी, माड़ी २. चम्पन ३. रोटी ४. वृष ।

योग्या [योग्य + टाप्] १. एक देवी का नाम - योगिनी
योग्या योग्या - लक्षिता० २. पुष्पी ३. पूर्व की

पत्नी का नाम ।

योग्यम् [युष् + ण्यत्] १. योग्या, निकालना २. उत्तरदा
व्यवस्था ३. परमात्मा ४. अनुकूल ५. बार कोस की

दूरी ।

योगित (वि०) [युष् + ण्यत् + क्त] १. युष् में जोड़ा हुआ
२. अनुवृत्त, काम में किया गया ३. किया, अनुवृत्त

४. सम्पन्न ।

योग्यः [योग + ठक्] १. योग्या, एक बंस का नाम ।

योग (वि०) [योग + ण्यत्] बंस या कुल से संबंध
रखने वाला ।

योगि [यु + णि] १. श्वेतर की वह वाधारमुद्रा यथा
जिन पर 'आम' का निर्माण हुआ २. योग्या ३. युक्त

कारण ४. ब्रह्म का श्रोत - योगिप्रतिष्ठाकारण के दो-
अभिधौ सर्ववृत्त मित्याभिधौ स्वतन्त्रः - मी० पू०

२।२५ पर सा० भा० ५. इच्छा - योगिपताक-
वृत्तराम् - अय० १२।२५।१५। अय० - युष्-
नमोऽयं वा मुसस्वान से व्युत्पन्न युष्, - योगः

१. योगिनियमों का प्रकार २. योग की चमनेमित्र में
कोई योग, - युक्त (वि०) बन्धु बन्ध के पक्ष से
छुटकारा पाये हुए, - युक्ता अनुविधौ द्वारा देखी

विशिष्ट वाक्यि बनाता जो स्त्री की योगि से मिलती
बुझती हो,—संवरणम्,—संवृष्टि योगि या भग को
तिकाइना,—संक्रान्त पुनर्जन्म ।

वीर्याशयः } विषया स्त्री से विवाह करने वाला, मृतक
वीर्यशयः } व्यभिचारी पत्नी को ग्रहण करने वाला ।
वीर्यशयः दे० वीर्यशयम् ।

वीर्यशयम् [वीर्य + य] मित्र मित्र स्थानों से एक ही
साथ एक वस्तु को देखना—आवित्यवद्योगययम्
वी० सू० १।१।५ ।

वीर्य (वि०) [वीरि + यञ्] (समास में) 1. मूक स्थान,
उपमनस्थान—अश्रमिनीयमाद्य वसन्ति लोको—महा०
१३।१०।२५ 2. गर्भाधानसंस्कार । सम०—अनुबन्धः

रक्तसन्धम्,—वीर्यानुबन्धं च समीक्ष्य कार्य—वी०
अ० २।१०,—सम्बन्धः दे० वीर्यानुबन्ध ।

वीरिणः [वीरि + ण] मध्यम वायु, सुहावनी हवा ।

वीर्यम् [वीर्य + ण] जवानी, वयस्कता । सम०—आकृष्ट
(वि०) किंशोर, वयस्क, —उद्भूतः 1. जवानी के आवेश
का मादक उत्साह 2. यौन प्रेम, काम वासना 3. जवानी
की कली का खिलना 4. वयस्कता प्राप्त करना—कण्ठकः,
—कण्ठकम्,—विद्विषा वीर्यवारम्भ का संकेत करने
वाला बंदरे पर छोटी-छोटी किलियाँ, प्राप्तिः जवानी
के किनारे पर,—वीः जवानी का सौन्दर्य ।

वीर्यनीय (वि०) युवक, तृणम् ।

वीर्युली चाबलो का माँड, यवायु ।

र

रज्ज (स्त्री०) कौड़ का एक घेरा ।

रज्ज (वि०) [रज्ज + क्त] 1. रज्जा हुआ, रंजीत 2. लाक
3. धिय, प्यारा 4. सुन्दर, सुहावना 5. बलुवार युक्त
(श्वर),—कण्ठ (पुं०) 1. लाक रंग 2. बलक बहु
3. धिय,—कण्ठ (मपुं०) 1. श्वर, बल 2. ताँबा
3. काष्ठराम 4. किन्नर 5. जीर्णों का एक रोग 6. लाक
कण्ठ,—कण्ठ (स्त्री०) 1. लाक 2. मुग्धा 3. भाव
की बात कपटों में से एक । सम०—कुम्भम् लाक
कपटिनी,—कण्ठ (वि०) लाक पत्तों वाला,—कण्ठम्
लाक कण्ठ,—वीर्यः 1. एक राजस विषको दुर्गा देवी
के बाएँ हा 2. बनार का बुझ,—किन्नर श्वर का
हाथ,—वीर्य श्वर बुझने वाला,—आकाः शरीर के
कण्ठ नख छेद जाने से रक्त प्रवृत्ता ।

रज्ज (आ० वर०) सावधान होना, वायक होना ।

रज्ज [रज्ज + व + टाप्] 1. बचाना, रज्जना 2. सावधानी,
बुद्धि 3. पीडीधारी 4. रज्ज तावीध 5. बलम्
6. रज्जान्धन, वहुनी 7. लाक । सम०—अस्तिष्ठः
कहाँ पर तावीध की अति बोधी जाने वाली वहुनी,
रज्जान्धन,—कण्ठविधिः रज्ज करने की अष्टतम
विधि ।

रज्जिणम् [रज्ज + क्त, स्वार्थे कन्] बुरासा ।

रज्जुः कुर्वच का एक प्रतापी राजा, विभीष का पुत्र और
काका का पिता । सम०—उद्भूतः रज्जुवत् में सर्वोत्तम,
राज,—कारः 'रज्जुवत्' नामक काव्य का प्रणेता
काकियास ।

रज्जु (आ० वर०) जला ।

रज्जुः [रज्ज + णञ्] 1. रंज, वर्ण 2. रंज, श्रीवाचार,
आचार का आर्यवर्तिक स्थान 3. वीर्यवर्ण 4. रज्जुवर्ण

5. नाचना, गाना, अभिनय करना । सम०—आरः
सुहागा,—तासः एक प्रकार का सज्जीत का माप,—वः
सुहागा,—नाच, राख, बालम्,—आविष्कृत्य के
विशेषण (मन्त्रास राज्य के वीररज्जुम् स्थान पर स्थित
अश्विर), प्रवेश रज्जुमन्त्र पर पधारना, वेदी पर
उपस्थित होना, बल्लम्ब वेदी पर 'आवाहन' उत्सव
मनाया ।

रज्जम् [रज्ज + क्त] 1. योजना, उपाय 2. बाध में रंज
जमाया ।

रज्जि (वि०) [रज्ज + क्त] आविष्कृत, निमित्त । सम०
—कुर्व (वि०) जो पहले ही बन चुका है ।

रज्जिनी [रज्ज + वृत् + णीप्] स्त्री पित्रकार ।

रज्जु (मपुं०) [रज्ज + भवन्, भवोऽयः] 1. बल, गर्व
2. बुद्ध की बुद्ध, पचाय 3. बन्धेरा 4. आदिश, नैतिक
कण्ठकार 5. तीनों मुर्तों में दूसरा 6. बाप 7. बायल
या वर्षा का वापी 8. बाप—आविष्कृत्य च कुर्वन्ति
तेन तत्काम्यते रजः—र० ४।८।१४ । सम०—बुद्ध
(वि०) रज्जुवत् के बुद्ध, केशः बुद्ध का बायल,
—विष्कृ (वि०) बुद्ध के बुरे रज्ज का हुआ—बुद्धि
सुरमरवी विष्कृविष्कृत्... भाग० १।९।१४ ।

रज्जु, कम् [रज्ज + क्त] 1. बुद्ध, कहाँ 2. बुद्धिमान ।

सम०—अस्तिष्ठः बुद्ध चाहने वाला अस्तिष्ठ—अस्तिष्ठः
आप्तो बुद्धातिष्ठः पञ्च० २।११,—आर्षः बुद्धिमान
में लड़ने की रीति,—रज्जिनी (वि०) 'रज्ज-रज्ज' सम्ब
करता हुआ,—रज्जि (वि०) कहाँ का रज्जु
—बुद्ध, केशः बुद्ध कहाँ में प्रवीण ।

रज्जुवर्णम् (वि०) जो रीताजीव सब की आयु के पचपात
विभुर हो जाता है ।

रतौलवः कामकेति मृन्वार परक बीडा ।

रतवैपरीत्यम् सम्मोह वा मयून की प्रकिया जिसमें स्त्री पुरुष की भाँति आचरण करती है ।

रतिः [रत्+क्तिन्] 1. हर्ष, आह्लाद 2 आसक्ति, अनु-
राग 3 यौनसुख 4. समोह, मयून 5 कामदेव को
पत्नी 6. चन्द्रमा की छठी कला । सम० जैवः
मयून करने से उत्पन्न बकाबट, वासः— कम्बः मयून
करने की विधिष्ठ रति, —रहस्यम् कोककोक पठित
द्वारा प्रणीत 'कामसास्त्र',—सुन्दरः एक प्रकार का
रतिबन्ध ।

रतुः (स्त्री०) 1 विष्णुनदी, स्वर्गगा 2 सत्य से युक्त
जन्म वा आचमन रतूस्वात् मत्यवाचक कोश० ।

रत्नम् [रत् + न, तान्तादेश] 1. रत्न, जवाहर, धूपवान्
परचर 2 कोई भी अमूल्य पदार्थ 3 कोई भी उत्तम
या श्रेष्ठ वस्तु 4. जल 5 पुष्पाक्ष । सम० —अङ्गः
मृगा, —अक्षयः आभ्यानों में बणित मका में स्थित
एक पहाड़, —कुम्भः रत्नों से भरा हुआ बड़ा, कुटः
एक पहाड़ का नाम, गर्भः 1 कुम्भेर 2 समुद्र,
—वर्धनमयतिः गणपति की एक विशेष मूर्ति, —च्छाया
रत्नों की कान्ति रत्नच्छायाव्यतिकरमिव प्रेक्ष्यमेतत्
पूरस्तात् मेघ०,—मेघः रत्नों के डेर में (दान के
लिए) ही जाने वाली प्रतीकार्थक वाय, वरुणकम्
पाँच रत्न—सोना चाँदी, मोती, हीरा, और मृगा,
बज्र सोता ।

रत्नः [रत्+कश्चन्] 1 गायी, बहुली 2 पैर 3 जग,
जाम, 4 शरीर 5 हर्ष, आह्लाद । सम० आरेखः
को रत्न पर बँट कर पृष्ठ करता है, उदुपन्—उदुपन्
रत्न का डाँचा,—कोक रत्न के चलने का 'चरचर'
शब्द,—वारकः धृष्ट द्वारा सेरुष्ठी में उत्पन्न पुत्र,
—विज्ञानम्,—विज्ञा रत्न हुकने की कला ।

रत्नतरु एक स्याम का नाम ।

रत्निम् (वि०) [रत्+इनि] 1 रत्न में लवार 2 रत्न
का स्वामी, (पू०) 1 क्षत्रिय जाति का पुरुष
2. रत्न पर बैठ कर पृष्ठ करने वाला योद्धा ।

रत्न्या [रत्+यत्+टाप्] 1 सड़क 2 सड़की का समग्र
स्वान 3. बहुत से रत्न या गाड़ियाँ । सम० मुखम्
किसी सड़क पर प्रविष्ट होने का द्वार—मृतः गली
का कुत्ता ।

रत्नः [रत्+स्वद्] दौत ।

रत्नम् [रत्+स्वद्] फाड़ना, कुतरना, क्षुरचना ।

रत्ना (स्त्री०) गाय ।

रत्नम् [रत्+रत्, मृगागम] 1 छिद्र 2 जम्बुजली
में जल से बाँधवाँ बर । सम०—मूर्तिः शोभा या
मूर्तियों का विभागा ।

रत्नकः [रत्+अक्षन्] विष, बहर ।

रत्नकः [रत्+स्वद्, कम्] एक द्वीप का नाम ।

रत्ना [रत्+यत्+टाप्] (स्त्री०) मूर्ति का एक भेद ।

रत्नः [रत्+यत्] 1. ऊँट 2. कीवल 3. मयूमयवी 4 अग्नि
5. एक बड़ा बीरा ।

रत्निः [रत्+अक्ष्(र)] 1 सूर्य 2 पर्वत 3. बशर का पीला
4 बारह की लम्बा । सम० इच्छः नारनी, अलरा,
—पक्षः दिन,—विष्मः सूर्यमण्डल,—सारणि 1. अक्षय
2 उषकाश ।

रत्नान [अक्ष+यत्, रत्नादेश] 1. रस्सी 2 कसाम
3. तगड़ी । सम०—पक्षम् कूहा,—अक्ष रत्नान,
मास्त्रि सूर्य ।

रत्न [रत्+अक्ष] 1. (पुष्पों का) रत्न 2. तरल पदार्थ
3 सुरा, पेय 4 बूट, (दवा की) माता 5. स्वाद,
रत्न 6 प्रेम 7 प्रेम, अनुराग 8 हृष्ट, आनन्द 9 (साहि-
त्यिक) रत्न 10. सत, बर्क 11 चीर्य 12 पारा
13 विष 14. नल्ले का रत्न 15 पिचला हुआ मक्खन
16. अमृत 17 रत्ना (शाक बाजी का) 18 हरा
प्याज 19. सोना 20 छ की संख्या का प्रतीक
21 रत्नहृष्ट करने का अर्थ विज्ञा भाष० ८।२०।२७
22 पिचली हुई वातु । सम०—इक्षु मृगा,—अक्षति
(जल०) 1. रत्न की निष्पत्ति 2 सवीचन रत्न की
उपज,—अक्ष (वि०) रत्न से भरा हुआ,—अक्षम्
मंत्रयविज्ञान,—रत्नाक्षम् रत्न या स्वाद का सुख
तत्त्व,—निष्पत्तिः स्वाद का न होना, रत्नहीनता,
—अक्ष पारे का निर्माण ।

रत्ना [रत्+यत्] विज्ञा । सम० अक्षम् विज्ञा का
अवयव, मुखम् विज्ञा की जड़ ।

रत्नवत्ता [रत्+यत्+तत्+टाप्] कला की परक-वा
रत्नवत्ता विहृता—वासव० ।

रत्नातलम् [रत्+त०] 1 सात लोकों में से एक, पृथ्वी के
नीचे का लोक, पाताल 2 जल से (जम्बुद्वीप में)
बीधा बर ।

रत्ना [रत्+यत्+टाप्] एक देवी का नाम ।

रहस्यमन्त्रं निक्षिप्य ह्येन तासा के तीन मुख तिष्ठान्ध
(ईश्वर, चित् और अविन्) ।

रहिततलम् [रत्+त०] जिसके आत्मा न हो (अर्थात् जो
अपने आत्मा की बात का आचरण न करता हो) ।

रत्नक [रत्न+अक्ष] 1 मृत प्रेत, पिशाच 2 हिन्दुओं
में माठ प्रकार के विवाहों में से एक 3. एक सप्तर
का नाम ।

रत्न [रत्न+अक्ष] 1 प्रवचन 2 निर्धनताका 3. प्रेम,
आवेश, यौनभावना 4. क्षत्रिया । सम०—अक्षः
एक प्रकार का (स्त्री का) माय ।

राजवाचकम् राजावाच ।

राजवीर्यम् राजव की एक रचना, छति ।

राज्य [राज् + कर्मिन्] राजा का पौधा—ऐन्द्रव्य विमिव-
हूतो राजा वाभिपुतोऽयम् रा० ११४।६। सम०
—उपसेवा, राजा की सेवा करना,—गुह्यम् ऊँचे
दर्जे का रहस्य,—देव्य (भाग्य) राजकीय दावा,
—बहिष्का (स्त्री०) बातकपक्षी,—विष्णु राजा से
जातीयिका,—प्रसाद राजा का अनुग्रह, बहिष्की
पटरानी, नर्तक्य १. (सगीत०) एक प्रकार की
गाय २ इस नाम का एक ग्रन्थ,—राज्यम् कुबेर का
राज्य,—विष्णु एक राजविष्णु, बर्षत् शाही मर्यादा,
—अक्षय राजा का प्रिय व्यक्ति, कुत्स राजा का
आचरण,—स्वामीयः राजा का प्रतिनिधि, वाइमराय।

राज्य (वि०) [राजन् + यत्] राजकीय, शाही, न्य
समिय जाति का पुरुष। सम० राज्यः सन्धिय।

राज्यम् [राजन् + यत्, लोप] १ राजकीय अधिकार,
प्रभुसत्ता २ राजधानी, देश, साम्राज्य ३ प्रशासन
करना। सम०—अभिदेवता राज्य की प्रधानता
करने वाली देवता, अभिभावकदेव, परिचिता
प्रशासन, लक्ष्मीः—जी, प्रभुसत्ता की कीर्ति,
निष्ठा: सरकार।

राज्यि— { (स्त्री०) [राज् + इन्, लोप् वा] १. रक्षित
की { २. काकी सरसो ३. बारीदार साँप ४. सेत
५. ठाक विष्णा, ठाकल। सम० कला एक प्रकार
की ककरी।

राज्यलीयः १. एक भाषा का नाम २. वैदिक शास्त्र का
अर्थार्थ।

राज (वि०) प्रदत्त, अनुदत्त।

राजि,—जी [रा + जिन्, लोप् वा] १. रात २. रात का अंश-
कार ३. हस्ती ४. ब्रह्मा के चार स्त्री में से एक ५. दिन
रात—सं० रा० ८११:१६ पर सा० वा०। सम०
—आयसः रात का आना, विष्णु कुर्वे,—आयः चन्द्रमा
—बुधकुर्वे,—अयिः चन्द्रमा,—अयस्यः मीमांसा का
एक विद्वान् जिसके अनुसार वर्षावर्ष में वसित फल
ही ग्रहण किया जाता है जब कि विधि में वर्षफल
का वर्षवर्ष किया गया हो।

राजा [राज् + अच् + टाप्] १. वैशाख महीने की पुनिया
२. वसिष्ठता।

राज (वि०) [राज् + अच्, न वा] १. आह्वयन, बुद्ध
बुद्धावना २. बुद्ध, आचर्यमय ३. स्वतः, अः तीन
व्यक्ति प्राप्त व्यक्ति (क) अचर्यमय का पुत्र परावराय
(क) बुद्धदेव का पुत्र वसराय जिसका माँई कृष्ण वा
(न) अचर्यमय और कोकल्या का पुत्र राजचक्र, सीता-
राय। सम०—आयः ससे का एक भेद, तालन,
—अयस्यी, तालनीय उपनिषद् एक उपनिषद् का
नाम,—सीता उत्तरभारत में नवराज के दिनों में
'रामायण' का नाटक के रूप में प्रसिद्धीकरण।

राजनीयता [राज् + नीय + तल्] नीयर्ष, वाक्ता।

राज्यकम्प्य लीनर्ष, मनोमता।

राजा (स्त्री०) एक कृष्ण का नाम।

राजितम् [रा + जिच् + क्त] अति, स्वयं—स्वयमेव्यरजितम्
कीरा राजराजितबुद्धका रा० ७।७।१२।

राजिः [अच् + इच्, पातोऽवगममय] १ हेर, सवह, समु-
च्छय २ लक्ष्मी (गणित में) ३ ज्योतिष का घर
जिसमें २३ नक्षत्र सम्मिलित होते हैं। सम०—मल
(वि०) बीजगणित विषयक, अः ज्योतिष के एक
घर का स्थायी दे० राज्यविप।

राज्यकः [राज् + कन्] दे० राधिक।

राज्यकः [राज् + ठक्] १ किसी देश का निवासी २. राज्य
का शासक ३. राज्यपाल।

राजः [राज् + अच्] १ कोलाहल २ धोर ३ वक्ता ४ एक
प्रकार का नृत्य ५ मुखला ६ खेल, नाटक। सम०
—केलिः बर्तनाकार नाच जिसमें कृष्ण और गोपिकाएँ
सम्मिलित होती हैं।

राजायन (वि०) [राजायन + अच्] राजायनसंघी।

राजायनिक (वि०) [राजायन + ठक्] राजायन संबंधी।

रज्जलीकृ (तना० पर०) १ रज्ज करना, धानी करना
२ ले जाना, चुरा लेना २ चले जाना।

रज्जसालम् (नपुं०) (किसी मृतक व्यक्ति की) अवसत
सर्पति मृत्यु आसि।

रज्जः [रिच् + क्त] तरवार, कुपाय।

रजिः [री + जिन्] वैदिक संपति, स्वाधिक वृत्त।

रज्ज (वि०) [रज् + अच्, वि० कुर्वन्] १ उज्ज्वल,
चमकदार २. बुद्धही, अयः। स्वर्णानुवर्ण २. वसुधा।

सम०—आय (वि०) सोने की शक्ति चमकीला—आसी
बुद्धही तस्त्री, बुद्ध (वि०) १. स्वर्णरत्न के मूल
बुद्धही आय काका २. बुद्धही मूल काका।

रजिज्वर (वि०) स्वादिष्ट, मूल मयाने काका।

रजिर (वि०) [रज् + किरच्] बुद्धावना, बुद्ध देव वाइ-
दय चर्चने रजिरवदनसिचोवचन् वि० १११।

सम०—अयस्यः विष्णु का नाम।

रजिज्वर (वि०) [रज् + किरच्] बुद्धवर्ण, मूल मयाने
काका।

रज्जः [रज् + अच्] कीरी और अचर के रस से तालन।

रज (वि०) [रज् + क्त] १. बलाक, बचकर २. विवाह
—इः १ मारुह देवम, जो शिव का ही अवकृष्ट
रूप है, शिव उनहीं दुख है २. अग्नि ३. मारुह की
संख्या ४. बज्रदेव का वृत्त जिसमें रज की संकीर्ण
किया दया है। सम०—आयः एक तीर्थकेन्द्र का
नाम,—आयस्य एक ठण्ड सन्ध का नाम,—सीता एक
प्रकार की बीजा।

रजः अक्षरकार शास्त्र के एक लेखक का नाम।

बड़ा [बृ + क्त + टाप्] बड़ा डालना ।

बहुमुख (वि०) [ब० सं०] मूत्रारोष से दण ध्वनि ।

बधिरः—रन् [बध् + किरन्] 1 लाल रंग 2 मगध व्रत

3 कुम्भ, रक्त 4 आकरान । सम० प्लावित (वि०)

बुन में भीगा हुआ ।

बकला [बृ + लृप् + टाप्, पानादित्वम्] अक्षरोष करने की इच्छा ।

बबलः [ब + बल, कित्] कुत्ता ।

बड (वि०) [बृ + क्त] 1 बड़ा हुआ, गवार, लदा हुआ 2 बुर-बुर तक विस्तृत—आमकता घृयि रूधा-

—कि० ११/७/७ । सम० बंड (वि०) उच्छ्व कुल

का,—बन्ध (वि०) जिसके पाव भर गये हो ।

बडि [बृ + क्तिन्] 1 बुद्धि, विकास 2 अन्म 3 निर्णय 4 प्रथा, रिवाज 5 प्रचलित धर्म ।

बड (वि०) [बृ + बृ + क्त] 1 कठोर कृपा 2 तोका,

बडपटा 3 बिकनाई से रहित (जैसे भोजन) — ज

1. बूल 2 कठोरता, कलापन,— बन् 1 दही की

बोटी वह 2 काली मिर्च । सम० बडल कृपा भाव,

अभिमत का बडान,—बागुक्त्वं मय् मन्त्रियो से

प्राप्त शब्द ।

बडित (वि०) [बृ + क्त] कोपाविष्ट, क्रुद्ध ।

बन् (बुरा० उभ०) बर्णन करना लक्षितम् कपयतो नमश्चरान्—कि० ८/१६ ।

बन् [बृ + क, बन् वा] 1 बुरा, बाहुल्य 2 रंग का

बेद (काला, पीला आदि) 3 कोई भी दुर्य पदार्थ

4 नैतिक स्थिति, प्राकृतिक दशा 5 लिकका (जैसे

कि कपया) । सम०—उपवीचन् मुन्दर या मोहक

रूप के द्वारा जीविका लाभ करना महा० १२।

२९४५,—ज्येष्त्वं मोन्दयं, ब्रूव बुरती—वरिकल्पना

कप मरणा, रूप वारण करना,—भाष्यवाह किती

इकाई को चिन्ता में परिचलित करना, विधान

किन्ही पूर्णिक को भिन्न राजियो में विभक्त करना

—नृक्त्वं एक प्रकार का नाच ।

बन् [बृ + बृ] 1 चाँदी 2 मुद्रांकित लिपिका

3 नैपायन । सम० बीतन् चाँदी ।

बन् (वि०) [बृ + बृ] कपवा ।

रेखाचकम् (ब०) शक्ति से भी, रेखा द्वारा भी ।

रेन् (पुं०, स्त्री०) [रीयते वः] 1 बूल, बूल कन, रेत

2 कुत्तों की रज 3 एक विशेष आप-मोक्ष । सम०

—उत्पत्ता बल का उठना,— वर्म एक बड़े तक चलने

वाली बाह् की चड़ी ।

रेनकातनय { [१० त०] परशुराम का विशेषण ।

रेनुकामुत्त {

रेतम् (नपुं०) [रो—अनुन् नुट् च] 1 बीर्य, बीज

2 धारा, प्रवाह 3 प्रथा, सन्तान 4 पारा 5 पाप ।

सम० रेत मयुग, सभाग,—स्वात्मनः, बीर्य का गिर

जाना ।

रेक 1 'वरर' छन्द 2 'र' अक्षर 3 छन्द कण्ठ

सामानि समन्तरेकान्—भाष० ८/२०/२५ । सम०

—विपुला एक छन्द का नाम, लंघि 'र' का कृति-

मक्षर मल ।

रेकत [रे + अन् + अन्] 1 बादल 2 पंचवै वन का नाम ।

रोषम् [र + यन्] रविर, क्षुण् ।

रोग [र + वृ + क्त] 1 बीमारी, कष्ट 2 क्षय स्थान ।

सम० उत्पत्ता रोगों का फटना, ज्ञः डाक्टर,

रागियो का चिकित्सक,—ज्ञानम् रोग का निदान,

प्रेष्ठ बुभार,—क्षय रोग का दूर हो जाना ।

रोषक [र + क्त] क्षोभ का काम करने वाला या

कुत्रिम आभूषणों का निर्माता, रा० २/८३/१३ ।

रोषम् (नपुं०) [र + अनुन्] 1 तट, किनारा 2 पहाड़

का डाला (जैना कि 'पवतरोषस्' में) ।

रोष [र + गिन्, हस्व व, कर्मणि जच्] 1 रोषण

करना, रोष लगाना 2 स्थापित करना 3 बाध, वीर ।

सम० क्षिप्ती बाणों से उत्पन्न क्षति—नै० ४/८७ ।

रोषित (वि०) [र + गिन् + क्त] 1 रोष कराई हुई

2. जड़ा हुआ रत्न 3 विनाश बाधा हुआ (बाध) ।

रोमन् (पुं०) [र + मनिन्] 1 घरीर के बाल 2 पक्षियों

के पंख । मछलियों की त्वचा । सम०—कुक्षी बाणों

में सङ्गन की सूई ।

रोमस (वि०) [रोम + स] 1. बालों वाला, ऊनी

2 स्वर्ण के बहुल उष्णारण से युक्त ।

रोमसी [रोमस + क्रीप्] निरुहरी ।

रोषणता [रोषण + तल्] क्रोध, गुस्सा ।

रोह [र + जच्] 1. जेबाई 2 बुद्धि, विकास

3 कला, अक्षर 4 जननात्मक कारण ।

रोहिणी [रोह + इनि + क्रीप्] 1 लाल रंग की नाय

2 पांच तारों का पुत्र—राहिणी मलय 3. बहुदेव की

पत्नी और बलराम की माँ 4. बिबकी 5. एक प्रकार

का इषात । सम०—तन्व बलराम,—बीच रोहिणी

का चन्द्रमा के साथ संयोग ।

रोह (वि०) [र + जच्] 1 रज की जाति प्रचण्ड

2. रोषण प्रचण्ड 3 रज विषयक, रज संबंधी ।

क

कलम् [कल् + मन्] 1. एक काल 2 चिह्न, निशान
3. विद्याया, बहुता, बोझा । तन्म०— कर्मणम् एक
काल कर्मों के उपहार से पूजा करना । बीरः मन्त्रिर
में एक काल बीरक एक साथ करना ।

कलम् [कल् + मन्] 1 चिह्न, संकेतक, टोकन 2 परि-
भाषा 3. शरीर पर लीलावशाकी चिह्न 4 नाम
5. उद्देश्य 6. मेषुनेत्रिय । तन्म०—कर्मन् (मपु०)
परिभाषा ।

कलमा १. दुर्बोध की पुत्री का नाम 2 तीन सम्बन्धितयो
में से एक ।

कलितकलाया संकेत बोधक इति, योज सकेत, एक ऐसा
संकेत जिससे कोई अन्य संकेत मिले म० स० १०।
५।५८ पर सा० भा० ।

कलम् (नपु०) [कल् + मनिन्] 1. चिह्न 2 वस्त्रा
3. परिभाषा 4 मुख्य, प्रधान 5. मोटी ।

कलमी [कल् + ई, मृट् ष] 1 बीजत, समृद्धि, वन
2 बीजान्, बुद्धिस्त्वती 3. सोम्वर्य, ज्ञाना, कान्ति
4. वन की देवता । तन्म०—कलाः वन की देवता
का माघीर्षा, अनुग्रह, मारत्यकः विष्णु का विशेषण,
विर्कः माय का कर, कलाय (वि०) सौन्दर्य से
मुक्त, लीलावशाकी ।

कलम् [कल् + यत्] 1 ध्येय, उद्देश्य 2 चिह्न, टोकन
3 बहु वस्तु जिसकी परिभाषा की गई है 4. तीन
अर्थ, अत्यन्त अर्थ । तन्म०—अभिहृणम् पारितोषिक
के उद्देश्य, बहु निशाना वाचना, —सिद्धि, अपने
उद्देश्य में सफलता ।

कलम् (वि०) [कल् + क्त] काल, मासिक, —कल् 1 बहु
विष्णु वहाँ बहुपक्ष मिलते हैं 2 अस्तित्व का विष्णु
को किसी रत काल में जितित या याम्योत्तर रेखा
पर होता है । तन्म०—पश्चिम अल्प समय या विवाह
संस्कार के मुहूर्ताधिक विवरण से कल् एक मासिक
पश्चिम, कल्पपश्चिम, या विवाह पश्चिम ।

कल्पः पत्नी का एक विशेष रोम ।

कल्पकलः [क० स०] दण्डकारी ।

कल् (वि०) [कल् + क्त, मनीष] 1 हल्का 2 छोटा
3 बोझा लज्जित 4 मामूली 5 मोटा, अल्प,
6 दुर्बल 7. वृत्त, क्लींका 8 वृत्त 9 मासान् 10 युव
11 युवाव 12. प्रिय, सुन्दर 13 सब प्रकार के भारी
के युक्त—अन्यथापरी लक्ष्मणप्रचार—वहा० १।
११।५। तन्म०—कलम् (वि०) हल्के वेट वाला
—कौमुदी व्याकरण की एक पुस्तक,—कालः मनीष
की माप का एक भेद,—कालिका छोटी मनी,
—काल (वि०) कालापी के पक्ष योज्य,—प्रवाय
(वि०) माकार प्रकार में छोटा या बीजवाचिकम्

योज-वासिष्ठ का सारसङ्ग, लोहार संगीत की
एक माप ।

कलुष (तना० उभ०) 1 हल्का करना, बोझ घटाना
2 छाटा करना, घटाना ।

कल्वी (स्त्री०) [कल् + क्रीप्] छांटी, थोड़ी, कम लम्बी
पुरा बुद्धिमती व परचात् ।

कल्वी [कल्वन् + क्रीप्] लकड़ी या रस्ती जिस पर कपड़े
मुलाने के लिए लटका दिये जाय ।

कल्विन् [कल् + इमनिच्] 1 सौन्दर्य 2 सज्ज, एकता ।
कल्विन् [कल् + इमन्] 1 अधिकमण 2 उपवास करना

3 मेषुन, मर्षादान ।
कल्विन् (वि०) लज्जा का लुप्त भूत प्रदर्शन ।

कल्विन् (पु०) हाथी ।
कल्व (वि०) [कल् + क्त] 1 प्राप्त, अवाप्त 2 गृहीत

3 प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त, समझा गया 4 (मात्र करने
के फलस्वरूप) प्राप्त, उपसम्भ । तन्म०—अनुग्रह

(वि०) जिसने अनुग्रह प्राप्त कर ली है, तीर्थ
(वि०) जिसने अवसर से लाभ उठा लिया है,

—प्रतिष्ठ (वि०) जिसने कीर्ति प्राप्त कर ली है,
जिसने अपनी सत्ता जमा की है, सम्मानित, —अन्तर

(वि०) स्वर्णकलापूर्वक इष्ट उन्नत धर्मने वाला,
प्रसाद (वि०) अनुग्रह-प्राप्त प्रिय,—कृत (वि०)

विद्वान्, संज्ञा (वि०) जिसने मुचबुध प्राप्त कर ली
है, जो होश में आ गया है ।

कल्विता एक प्रकार की मिर्च ।
कल्वरा कम्बल का एक भेद ।

कल्वी एक प्रकार का बाघा भेद ।
कल्वुड (वि०) (स्त्री०) बहु गाना जिसकी लय और

ताल सही हो, जिसमें सामञ्जस्य हो ।
कल्वितिका मस्तक के ऊपर पहना जाने वाला एक जामू-

वन मुमर, मुमारपट्टी—कल्वितिकालकाला—(कल्विता
विस्तार लोच) ।

कल्वितम् [कल् + इमनिच्] 1 आनूचन, अलंकार 2. एक
कल्प का नाम ।

कल्वित (वि०) [कल् + क्त] 1 मनोरम, सुन्दर 2 सुन्दर
मुहावरा । तन्म०—प्रियः (संगीत०) एक गान की

लय या माप—कल्विता सुन्दर स्त्री, कल्वितः बुद्ध
के जीवन पर लिखा गया एक ग्रन्थ, कल्वितः एक

कल्प का नाम ।
कल्विता संगीत की एक लय ।

कल्विताम्बिका } कल्विता देवी ।
कल्वितादेवी }

कल्विताम्बिका कल्विता के द्वारा नाम ।
कल् (पु० + मन्] 1 लीजना, काटना 2. छोटी काटना,

कावनी करना । सम०—हृत्पु (वि०) खेती काटने का हृत्पु ।

जम्बू [जम् + जम्बू] जीव का पोषा, जम्बू जीव । सम०—कालिका जीव ।

जम्बू [जम् + जम्बू, पुष्य० जम्बू] 1 नमकीन स्वाद 2 एक राक्षस का नाम 3 एक मरक का नाम, —जम्बू 1 नमक 2 कृत्रिम नमक । सम०—यादलिका नमक की बेली, जम्बू नमकीन सब्जी ।

जम्बू (वि०) [जम्बू + इतम्] नमकीन, जम्बूयकन ।

जम्बू (वि०) [जम्बू + इतम्] जम्बू की किरणें चमकती हैं ।

जम्बू मन्त्रावर या जम्बू का रस—जम्बूमन्त्रावरणा—लक्ष्मी विजयी स्तोत्र ।

जम्बू [जम्बू + कलम्बू पुष्य० वृद्धि] 1 हल 2 हलकी सबल का बहुव्रीह 3 तार का बूझ 4 बूझ से फल एकत्र करने का बर्ण 5 एक फूल का नाम ।

जम्बू का नारियल का पद ।

जम्बू की केचोच का बूझ, बम्बीपल—निबुलपुल्लसज्जतिर्जम्बूत एव तन्म्यास्तबलनद्वयमिवः पथिक जातमुची-वर्ण इतीह वदति स्फुटं कुसुमहस्तमुच्छ्रम्य सा भ्रम-जम्बूमन्त्रावरणमित्येवला जम्बूली—जानकी० ११। १५ ।

जम्बूकालम्बू { पुष्ट हिलाना ।

जम्बूकालम्बू { पुष्ट हिलाना ।

जम्बूकालम्बू { पुष्ट हिलाना ।

जम्बूकालम्बू { पुष्ट हिलाना ।

जम्बूकालम्बू { पुष्ट हिलाना ।

जम्बूकालम्बू { पुष्ट हिलाना ।

जम्बूकालम्बू { पुष्ट हिलाना ।

जम्बूकालम्बू { पुष्ट हिलाना ।

जम्बूकालम्बू { पुष्ट हिलाना ।

जम्बूकालम्बू { पुष्ट हिलाना ।

जम्बूकालम्बू { पुष्ट हिलाना ।

जम्बूकालम्बू { पुष्ट हिलाना ।

जम्बूकालम्बू { पुष्ट हिलाना ।

जम्बूकालम्बू { पुष्ट हिलाना ।

जम्बूकालम्बू { पुष्ट हिलाना ।

जम्बूकालिका बुद्धि, छोटी बुद्धि ।

जम्बू [जिम् + इम्] 1 लेप 2 लेख 3 बहार, बर्णनामक 4 बाहरी वृत्त । सम०—जम्बू (मन्त्र०) बालेक, चित्रम,—संवाह कलाई पर पहुँची जाने वाली चूड़ी, रत्नावन्त ।

जम्बू [जिम् + इम्] 1 लिपा हुआ, सना हुआ, 2 खाया हुआ, 3 बलगम, कष्ट । सम०—जम्बू लिपी हुई मुगल्य से सुगन्धित, हस्त (वि०) सने हुए हाथों तला ।

जम्बूकालिका जितने अपने बाल छँटा कर छोटी करा लिए ।

जम्बू (प्रा० उभ०) बोलना, चमकना ।

जम्बूकालिका [जम्बू + इम्] 1 लूटना 2 विरोध करना, बाधा डालना ।

जम्बू (प्रा० में) लुप्त होना, मिटना, नुकसून होना ।

जम्बूकालिका बुद्ध का जन्मस्थान ।

जम्बूकालिका वन्य का किनारा ।

जम्बूकालिका पीटा, मकीड़ा ।

जम्बू (वि०) [जम् + इम्] 1 कटा हुआ 2 चोड़ा हुआ 3 (फूल बाँधे) एकत्र किये हुए । सम०—जम्बू, —जम्बूकालिका जितने अपने बाल छँटा कर छोटी करा लिए ।

जम्बू [जिम् + इम्] 1 लेख, लिखित स्तम्भ 2 बर-मार्ग देवता 3 शरीर । सम०—जम्बूकालिका मगरा का सेवक,—जम्बू इन्द्र—जम्बू व जम्बूकालिका जितने अपने बाल छँटा कर छोटी करा लिए ।

जम्बूकालिका बोधा बाधात, सहलाना ।

जम्बूकालिका (वि०) [जिम् + इम् + इम्] लिखित कथा ।

जम्बूकालिका (वि०) [जिम् + इम् + इम्] लिखित कथा ।

जम्बूकालिका (वि०) [जिम् + इम् + इम्] लिखित कथा ।

जम्बूकालिका (वि०) [जिम् + इम् + इम्] लिखित कथा ।

जम्बूकालिका (वि०) [जिम् + इम् + इम्] लिखित कथा ।

जम्बूकालिका (वि०) [जिम् + इम् + इम्] लिखित कथा ।

जम्बूकालिका (वि०) [जिम् + इम् + इम्] लिखित कथा ।

जम्बूकालिका (वि०) [जिम् + इम् + इम्] लिखित कथा ।

जम्बूकालिका (वि०) [जिम् + इम् + इम्] लिखित कथा ।

जम्बूकालिका (वि०) [जिम् + इम् + इम्] लिखित कथा ।

संज्ञा—सं० २।२.—अन्वय (वि०) समाज की बोझ देने वाला, सामाजिक डम, कर्म: सांसारिक कर्म, - वाय: दुर्ग, -वरील (वि०) संसार से किया हुआ, - अन्वय: सबका विश्वास, विश्वास का भावस्थ, - जगुं (वि०) जनसाधारण का पालक पोषक, - अन्व: संसार के प्रति प्रकाश करने की इच्छा कोई-बन्ध—मह० १०।१८।५ पर सा० भा०,—राज्य (वि०) संसार को कष्ट देने वाला—रा० ३।३३।१, - वर्तनम् लोकव्यवहार जिससे संसार की स्थिति बनी रहे,—विच्छ (वि०) लोकमत के विपरीत, - विलम्ब: १. संसार का अन्त २. नीच सृष्टि, - संवाक: जनसमुदाय,—कुम्बर (वि०) जिसके सम्बन्ध की सब लोक प्रशंसा करे।
 लोकव्यव (अ०) लोगों की प्रशंसा के लिए।
 लोकवन् [लोक् + वन्] १. वर्तन, धृष्टि, ईश्वर २. वास। सम०—अन्वय: वास की बीर, भावना: सांकी, - वाचकवन् पत्रक,—वक्त्र (वि०) देखने में विकटाल।
 लोक: [लुक् + वन्] १. लालच, लालसा २. इच्छा, अन्त बाह्य ३. चित्तमय, चराहट, उल्लस। सम०—अविनाशिन (वि०) जो लालसा के कारण भावता है,—वीक्षित (वि०) लालच से अन्ध।

लोकक: लोकक।
 लोकविष (वि०) [व० ल०] जिसके बाकी में बहुर बराहो।
 लोककर्म: जिस में रहने वाले वस्तुओं की एक जाति।
 लोककर्म (वि०) प्रत्येक की सुनने वाला।
 लोकव्य: बीर, प्रवर।
 लोकवृत्तिका मिट्टी की मोकी।
 लोकव्यवृत्ति (ना० वा० वा०) डेरे के समान व्यवस्था।
 लोक: [ल्ययेजेन—लु + ह] १. कोहा २. इत्यान ३. ताँबा ४. सोना ५. अमर की लकड़ी। सम०—अन्वय: कोहे की मोक,—उच्छिन्नम्—उत्तम्—विह्वम् बलम् कोहे का अन्ध,—कुम्भी कोहे की बधिया,—अन्वय: वायु की तनवीर से डका हुआ भाव: बर्छी।
 लोहित (वि०) [लृ + हन्, रत्न ल:] १. लौह की पलकों का एक रोग २. एक प्रकार का मुखवान् पत्थर, रत्न।
 लोहितम् पीतल।
 लौकिक (वि०) [लोक + ठक्] १. सांसारिक २. सामान्य ३. दैनिक जीवन संबंधी। सम०—अन्वय: सामान्य भाषा को यह कावी में प्रयुक्त न होनी हो,—अन्वय: सामान्यत: माना हुआ स्याय।
 लौहसाधनम् धातुविज्ञान, धातुसोचन विद्या।

व

वक्ष: [वक् + व] १. संगीत का एक विशेष स्वर २. वक्ष ३. अङ्गार, अग्निमान ४. कुल। सम०—अन्वय: वक्ष की दस्ताकारी,—कुम्बर वंशरी बजाना, बर: किसी कुल में उत्पन्न,—वक्त्रवित्तम् सबह भाषाओं का एक छन्द, पात्रम् वक्ष की बनी टोकरी,—वाह्य: कुछ से निष्कासित,—वाह्यवन् सामवेद बाह्य का मुख पाठ, वन् (वि०) संसार में अन्ध,—वन् वक्षों का अन्ध, वर्धन: पुत्र,—वित्त: वकावली—व्यक्तिम् एक छन्द का नाम।
 वक्ष: वन्, संबंधी, अन्धे कुल का।
 वक्षुकाय (वि०) कोलने की इच्छा वाला,
 वक्षुकाय (वि०) कोलने का इच्छुक।
 वक्षुकाय (वि०) विज्ञानिक और प्रायोगिक (राज-नीतिज्ञ)।
 वक्ष (वि०) [वक्ष + वन् पु० अन्वय] १. डंडा, मुखा हुआ २. लोकलोक, अन्वय ३. पुंशरमे ४. वेईमान, - अन्धी, वाकसाह, लः—१. वंशकह २. वंशिकह, वन् १. (वह की) टेढ़ी नाक २. अन्धी का जोड़। सम०

अन्वय: टीन, जस्त,—इतर (वि०) सीधा,
 वक्ष: अन्वय,—मुख: डंडा—साकम् एक विशेष वातोपकरण, देखा टेढ़ी नाइन।
 वक्षेरिका, } वंशरी, वक्ष आदि की बनी टोकरी।
 वक्षरी }
 वक्षवन् [वक् + वन्] १. कोलने की किया २. वक्षता ३. पाठ करण ४. उपदेश, धार्मिक पुस्तक का अन्ध ५. आका, आदेश ६. परामर्श, अनुदेश। लः—अन्वय: अन्वयों से युक्त बात, अन्वय: वक्ष-वाचक वक्षता, किता आकाशरित, वक्ष (वि०) वक्ष वीत का विषय बनाने वाला, वक्षवन् वक्षों का आवर करना—विपुर्वयनवीरवात्—रा० १.—वक्षित: किसी उचित की वक्षार्थ शार्थकता।
 वक्षवन्: वक्ष, राक्षसी।
 वक्षवित्तम् (वि०) वाक्पटु, कोलने में वक्षर—इतिरिते वक्षिते वक्षवित्तम्—वि० १०।१।
 वक्षवित्तम् (अ०) विज्ञान उन्नी की कह दिया है।
 वक्षित: [वक् + वित्तम्] १. व्यास, कक्षक २. वाच

3. वस्तुता, वक्तव्य, वनिव्यक्ति 3 वृत्त की वाक्य वृत्ति ।

वक्रः [वृत् + वृत्] 1 विचली, हनु का सस्य 2 रत्न की हुई 3 रत्न, बहार 4. एक प्रकार का कुम्भ बास 5 एक प्रकार का सस्य ब्यूह । सम० संकुलम् भारी भार कपडा, अक्षित (वि०) 'बलापच के चिह्न से युक्ति —आकार (वि०), आकृति (वि०) वक्र की लकल वाला—कीट एक प्रकार का कीडा, बन्धन सुरक्षित आश्रयगृह वृक्षः 1 एक प्रकार का कीडा 2 एक प्रकार की समाधि ।

वक्रकम् [वक्र + कम्] हीरा, जवाहर ।

वटः [वट् + अच्] 1 वट का पेड 2 गधक 3 दानरज की गोट । पम० वल, —पत्रम् पुटम् वट का पत्ता ।

वट्या [वल + वा + क + टाप्] 1 बाढी 2 एक नलच पुत्र जिसे 'वोढी के मिर' के प्रतीक से व्यक्त किया जाता है ।

वचिष् (पु०) [वच् + इञि, पस्य व] 1 व्यापारी लोहागर 2 तुला राशि । सम० कटक काफला बहु जेंट बीबी बाजार ।

वच् [वच् + अच्] अधिकरण अर्थ में तथा 'योग्य अर्थ में लगने वाला मरबोवी प्रत्यय में० म० १६।१।११ पर ला० भा० ।

वच् (अ०) विस्मयादि शोकक अव्यय । 'मुता' 'वस' 'वृष' अर्थ का प्रकट करता है ।

वक्त [वट् + क्] 1 बछडा 2 लकडा, पुत्र 3 लतान, बन्धा 4 वर्ष 5 एक देश का नाम । सम० अनु-सारिणी लघु और दीर्घ माशा का मध्यवर्ती क्रम प्रग या जलनर बबल तीर्थ, घाट, उतार ।

वत्सायित [वत्स + वयच् + णिच् + क्त] बछडे के रूप में मवतिन वत्सायितस्त्वमस गोपमनायितस्त्वम् —नारा० ।

ववनम् [वट् + वृट्] 1 चेहरा 2 मूल 3 धूरन 4 सामने का पल 5 पहली राशि 6 त्रिकोण का चिह्न । सम० आनोवचविरा मूल में मधुरगध से युक्त मूत्र —उबरम् जबडा ववुजम् मूत्रारदिन्, कमल जैसा मूल —ववनः स्वास, ममि ।

ववः [हृन् + अच्, ववादेश] 1 भगवाणा 2 (बीज० में) गुणनक 3 हवा, कतल । सम० राते, जग्याङ्ग में छडा वर ।

वविक, वच् कस्तुरी, मूक ।

ववुकाल बहु समय जब कि कथा दुलहिन बनती है ।

ववुवरम् नवविवाहित दम्पति ।

वववववव [व० व०] सागरन के ववन को प्राथम्य प्राप्त पुत्र की कोली देने के ववन पहिनावे बाते हैं ।

ववम् [वच् + वच्] 1 ववक 2 ववों का बूँद 3 वर 4 ववारा 5 वल 6 लकड़ी का पात्र 7 ववक की किरण 8 पर्वत । सम०—वव (वि०) केवक जल पीकर जीने वाला, उवक गोबर के उपल, गोहे,—वोववि ववकी बड़ी बूटी,—ववकी वीवक, हल कास नाम का पात्र ।

वववकम् समानपूर्व वविवादन ।

वव (वि०) [वन् + वट्] 1 ववकी 2 लकड़ी का बना हुआ, वव (पु०) ववर—ववववववव नैर्जता—रा० ३।२८।३।२९ । सम०—वव (वि०) ववली उपज पर ही रहने वाला ।

ववम् [वच् + वृट्] 1 बीज बोना 2 हवागत करना 3 वीर्य 4 वृत्, उत्तरा 5. करीने से रचना, व्यक्तीकृत करना ।

ववा [वच् + अच् + टाप्] 1 ववी 2 ववि, ववर 3 वीर्यो द्वारा बनी नदी 4. उबरी हुई वीर्य नामि ।

ववुवव (वि०) [ववुम् + वच्] 1 वरीर भारी 2 वृष्ट-पुष्ट 3 वतीववत, वविवत ।

वव-वम् [वच् + वृट्] 1 ववीक, परिवार, परकोटा 2 वलान 3 समुक्क्य 4 ववन की वीव ।

ववा वाटिका की ववारी ।

ववम् [वच् + ववच्] ववी ।

ववन [वच् + वृट्] 1 वई का वीजन 2 वन, वृत्तकी, पत्र ।

ववोव (वि०) वववस्क बालक, वोडी वाव का बालक ।

ववुवम् [वच् + वनम्] (वेद०) कर्म, कार्य—विववनि वेव वयुनानि विवान्—इस० १८ ।

वर (वि०) [वृ + वच्] उत्तम, वेष्ट, वडिया, अनमोल, १ वरदान 2 उपहार, पारितोषिक 3 वृक्षा 4 प्राचीन 5 दान 6 वृक्षा 7 वामना । सम० वरवि माता —रा० ७।२३।२२,—वववः वर, —इली पुराना वीव देश,—वववव विवाह संस्कार का एक भाग जिसके अनुसार वृष्टे के मित्र किसी विशेष परिवार में वृष्टन की वीव के लिए जाते हैं —वृक्षा वेष्टजन, वववव विवाह में वस्कार की बाते ।

वरवि [व० व०] ववववारी, वववव रहने वाला ।

वरववववव वववव पुरावों में से एक ।

वरववव (वि०) [वृ + ववुम् = वरिवव + वच्] ववव करने वाला—व वविव वविव वविव वरिववविव —विव०

वरिववव (वा० वा० वर०) वववव करना, ववव करना ।

वर्णमल्लः [व० त०] वर्णमणि मणि का नाम ।
 वर्णः वर्णवर्णमल्लम् में वर्णित एक राधा का नाम ।
 वर्णोद्यमः [व० त०] व्यर्थों के बाढ समूह ।
 वर्णोत्पत्ति 1. अनुनासिक वर्ण 2. व्योतिष में किसी वृद्धि
 विशेष की उत्पत्ति को प्रकट करने वाला लब्ध ।
 वर्णोद्भूत (वि०) [वर्ण + भू + क्त + क्त] व्येपियों में
 विभक्त बिलके समुदाय बने हुए हों ।
 वर्णः [वर्ण + क्त] 1. रंग 2. सुरत, ताल 3. अनुप्यों
 की बाढि 4. अक्षर, अक्षि 5. सम्ब, भाषा 6. पक्ष
 7. प्रसङ्ग 8. पौना 9. वीतकम् । सम० अनुप्रासः
 अक्षरों का अनुप्रास वर्णकार, —अक्षरम् 1. निज जाति
 2. स्वाभाविक अक्षर, —अक्षरम् वृद्ध - अक्षर
 (वि०) बाढि की दृष्टि से अक्षर जोडा, —तर्ककम्
 उनी काडीन, —परिचय वर्णित में दस्ता, मेविनी
 मोटा अमान, (बावरा, कोठों), विविधा 1. अक्षरों
 में परिवर्तन 2. बाढि में परिवर्तन ।
 वर्णकः [वर्ण + क्त] 1. वर्णता, वर्णन करने वाला
 2. आदर्श, नमूना ।
 वर्णः [वर्ण + क्त] 1. लोना 2. सुनम् ।
 वर्णम् [वर्ण + क्त] 1. होला, रङ्गना 2. ठहरना, बसना
 3. कर्म, बढि 4. वीथिका 5. वीथि रङ्गने का साधन
 6. बावरा, व्यवहार 7. मजदूरी, वेतन 8. तकवा
 9. बिलके रंग बाव - विहितमल्लकतर्कमाधिताम्
 —वि० १०।४२ १०. बार बार दोहराया गया
 लब्ध 11. कड़ा बनाया । सम०—विनिबोध व्यवहारी
 बरिना ।
 वर्णमल्ल [वर्ण + क्त] विचयान काव, मीथूना समव ।
 सम०—अक्षरः वर्णमल्ल का विरोध, —काव मीथूना
 समव ।
 वर्णः [वर्ण + क्त] वर्णमल्ल के कारक सूचन ।
 वर्णिक [वर्ण + क्त] वर्णिका, काडी—पञ्चावर्तिकाये-
 का बहुलः संकृतान् बधि यद्वा ११।३१।८ ।
 वर्णित [वर्ण + क्त] 1. बुझा हुआ, लुका हुआ 2. उत्पादित
 निम्न 4. वर्ण किया हुआ, बीता हुआ ।
 वर्णित (वि०) [वर्ण + क्त] बाधा मानने वाला ।
 वर्णम् (वृ०) [वर्ण + क्त] 1. पक्ष, मार्ग, रास्ता
 2. कनरा, कल 3. वक्ता 4. किनारा । सम०
 —अक्षरः बाधा के परिणामस्वरूप बचन ।
 —वक्ताम् बाध में रङ्गना, बाध में रङ्गना ।
 वर्णवत् (वि०) [वर्ण + क्त + क्त] होने वाला, प्रगति
 करने के लिए उत्तर ।
 वर्णवत् [वर्ण + क्त] वर्णवत् का उत्तर वा कीटा ।
 वर्णवत् वेला, व्यविचारिकी स्त्री ।
 वर्णवत् (वि०) [वर्ण + क्त + क्त, स्वार्थ क्त] बाधा-
 कर, हर्षित, बाधनवाचक ।

वर्णमानः [वर्ण + क्त] 1. वैपिकों का २४ वीं तीर्थकर
 2. पूरे दिखा का दिक्पाल हाथी । सम०—वृद्ध
 बावरा वर - रा० २।१०।१८ ।
 वर्णमानकः [वर्णमान + क्त] हाथों में दीपक लेकर नाचने
 वालों की मण्डली ।
 वर्णमल्लिक 1. बघाई 2. बघाई के विद्वत्सम्य उपहार ।
 वर्णमिका परिचारिका, नर्स ।
 वर्णम् हजिया रोग ।
 वर्ण [वर्ण + क्त] 1. वर्ण होना 2. छिडकाव 3. वर्ण
 (केवल नपु० में) 4. बहाहीव 5. बाहल 6. विन
 —रा० ७।७३।५ पर टीका 7. वासस्थान । सम०
 कावः बरसान की श्रुत, समः वर्णों की लम्बी
 मज्जना, —वर्ण पना, कुलेष्वर, रात्र, बरसा का
 मोसम ।
 वर्ण [वर्ण + क्त + क्त] (स्त्रीलिङ्ग व० व० में प्रयुक्त)
 बरसान, वर्ण श्रुत । सम०—अक्षरों बड़ा मंडक
 वृ (पु०) 1. मंडक 2. इन्द्रवत् नामक कीडा
 बीरबहुटी, सब मोर ।
 वर्णोद्य (वि०) [वृद्ध + ईयसुन्, वर्णवित्] बहुत बड़ा
 या पुराना ।
 वर्णवत् (वि०) [वर्ण + ईयसुन्] बीछार करने वाला,
 —तप कृता देवमीडा जासीद्वर्षयिनी यही— भाग०
 १०।२०।७ ।
 वर्णवर्णवत् [व० त०] शरीर का रङ्ग ।
 वर्णमा [वर्ण + क्त] बुमान, किगाव ।
 वर्णित [वर्ण + क्त] काली निर्ण ।
 वर्णकः वर्ण का संवह—कर्षकेन वर्णमान् पुपुषता - वि०
 १४।७ ।
 वर्णकः [वर्ण + क्त + क्त, भावुरिगते अकारलोप]
 लम्ब देखा ।
 वर्णविविधः [व० त०] ऊपर का कम्परा ।
 वर्णकम् [वर्ण + क्त] समुदाय ।
 वर्णः [वर्ण + क्त] 1. ठह, झुरी (काव वर) 2. पेट के
 ऊपर के भाग में तब 3. चोरी की वृद्ध - दलपन्नाया-
 कचितवर्णवित्तामरे, समान्यहस्ता मेघ० १७ ।
 सम०—वर्णकम् झुरिया बीर लज्जेन बाध (बो बुझाये
 का विद्वत् है), —कावः बावरा—वैष० ११।१० ।
 वर्णक [वर्ण + क्त] 1. वृक्ष की छाँट, वक्ता 2. मण्डली
 की काव 3. वरन । सम०—कावः बावरा का वेद,
 बावरा (नपु०) वक्ता की बनी हुई बीछाक ।
 वर्णकित् (वि०) [वर्णक + क्त] 1. वक्ता के
 बाधा (वृक्ष), 2. वक्ता के बाधनवित ।
 वर्णकः [वर्ण + क्त, स्वार्थ क्त] कुलने वाला, बाधने
 वाला ।
 वर्णकः [वर्ण + क्त, वृद्ध व] 1. बनी, बीचकों के

बनाया क्या बिड़ी का डेर 2. करीर के कुछ भागों में
सूजन 3 बास्तीक महाकवि । मम०—ज,—जन्मा
अधि बास्तीक का विशेषण, —जीमन्, —राशि बनी ।

बल्लभवधि कोषकार ।

बल्लभजनः स्वामिनी, प्रिया ।

बल्लः घाला, टहनी अथवा मूल मुबनाधिप्रपन्नमहोन्न-
भोमेरिबिबीनवन्धाम्- भाग० ३:८:२५ ।

बल्लाशोकः पालतु हथिनी को उपयोग में लाकर बनकी
हाथी को पकड़ने की रीति मान० १०:७ ।

बलीकृत (वि०) [बल + कृ + क्त] 1 अभिभूत
2 बल में किया हुआ ।

बलीभूत (वि०) [बल + भू + क्त] बाजारागरी
नश में हुआ ।

बल्लभम् [बल्ल + भव्] 1 जो बल में किया जा नके
2 लीव ।

बल्लभा [बल्ल + भव् + टाप्] एक प्रकार का बठभूषण
हार ।

बल्लभकृत (वि०) अग्नि में उपहृत—प्राज्यभाष्यमलहृद्व-
टकृतम् शि० १:४:२५ ।

बल्लभम् [बल्ल + बल्ल + क्त] 1 बेरा 2 हालबीनी के बूझ का
पत्ता 3 तगड़ी (किरियों का एक आभूषण) 4 रहना,
निवास करना । सम०—लघन् तम्बू टैट ।

बल्लभकृत कोषक ।

बल्लभः { व० त० } एक प्रकार का मधुमेह ।

बल्लुः [बल्ल + लुन्] 1 बौ, धून (बैसा बि बसाधारा
में), 2 बन, दोहन रत्न जवाहर 3 सोना 4 जल ।
सम० उत्तमः भीष्म, —धारिणी बरा पुरी पाल,
गजा, —भम धनिष्ठा नक्षत्र रोहिष् अग्नि ।

बल्लोर्ध्वरा कद के निमित्त किए जाने वाले पत्र के अन्त में
उपहृत हवि का अनवरत मार्ग ।

बल्लिः (पुं०, स्त्री०) [बल्ल + लि] 1 बसना रहना
2 मूषाशय 3 आगि, पेड़ । मम० कम्बन् (नपुं०)
अनीमा करना, कोष मूषाशय बल्लिम् मूषाशय
का विवर, छिद्र, रन्ध्र ।

बल्लु (नपुं०) [बल्ल + लुन्] 1 धार्मिकता 2 जीव
3 बन-बान्ध 4 सामग्री (जिससे कोई वस्तु बनाई
जाय 5 अधिकम्पता पोखना । सम० जलत्
(ज०) ठीक समय पर तन्त्र (वि०) वस्तुनिष्ठ
विषयवारक, निर्देशः 1 विषय मूची 2 एक प्रकार
की कान्दी, —पुष्प नायक —अथवा सङ्गु पुष्प ४,
मायात् विक्रम० १:२ भाष्य धार्मिकता, भूत
(वि०) साधु, तन्त्रपूर्ण, पदार्थ, —विभिन्न-
अन्न-अन्न का व्यापार कलितम् (ब०) पार-
मिथिओं के कारण, —जुय (वि०) अवान्विक,
—विपरीत धार्मिकता ।

बल्लम् (वि०) 1 जलप्लाव 2 बपेलाकृत बनवान्,
3 धे धान, अधिक समृद्धि (वि०) बेषान् बल्लसोपानि
स्वाहा उ० उ० ।

बहा [बह् + भव् + टाप्] नदी, दरिया ।

बह्नुभङ्ग [ब० त०] बहाव का टूट जाना ।

बह्नुवन् [बह् + इन्] 1 किस्ती, पोत 2 चौकोर रथ,
बगारिक या चतुष्कोण रथ ।

बह्नु [बह् + नि] 1 अग्नि 2 बठराग्नि 3 पाचक
अग्नि 4 सवारी 5 यजमान 6 आरवाही जन्तु 7 तीन
की मक्या सम०—उत्पास अग्निमय उम्का,—कोष
दक्षिणपूर्वी दिशा—कोष, दावाग्नि, बल्लभ स्वयं
अग्नि की बिना में बैठ कर आमाहुति करना—बौद्ध
माना,—आरकम् पानी, जल, लोहारम् केसर, कुकुम,
आकरान मस्कार दाहसस्कार, अन्वेष्टि किया,
साक्षिकम् अग्नि का साक्षी करके ।

बह्नुसत्तुङ्ग आग लगा देना, अग्नि में जला देना ।

बह् (भा० अवा० प०) रचना ।

बाकोषबाकम् दो व्यक्तियों का बातचीत, वक्तृता और
उत्तर ।

बाकोषाचयम् तर्क शास्त्र, न्यायशास्त्र ।

बाक्यम् [बाक् + क्त, क्त्य क] 1. वक्तव्य 2. उक्ति
3. आदेश 4. सगाई । मम० आत्मन्वः बड़े-बड़े
बाक्यो से वक्त बाधा,—बह्नु जिह्वा में लकड़े का होना,
—वरिलभाषि (स्त्री०) वक्तव्य की संपूर्ति, विलेखः
लेखाधिकारी हिसाब-किताब रखने वाला अधिकारी,
सारथि = रक्ता, किमी की ओर से बोलने
वाला ।

बाकिन् (वि०) [बाक् + गिन् क्त नस्य लोप]
1 बाक्यपर 2 बाक्यो में पूर्ण (पुं०) 1 वक्ता, बोलने
वाला 2 बहुव्यति 3 विष्णु 4 सोता ।

बाक् (स्त्री०) [बाक् + क्विप्, दीर्घ] 1 बाणी की देवता
परस्वती । सम० ब्रजेत (वि०) गंगा,—आत्मन्वी
1. सगर्वती के प्रसाद की प्राप्ति करने वाले श्चु
मन्त्रो का समह 2 एक वैदिक ऋषि का नाम
उत्तरार्ध वक्तव्य की समाप्ति या उपलहार,—केलि,
—जेकी बुद्ध की चतुर्गाई के युक्त वार्ताकाप,—पुष्प
कार। कालपीठ,—बीजन, विष्णुवक्ठोनिद्या, विभि-
न्न किसी उक्ति से प्रबोधन या चेतावनी—सम्पाक्यं
वाक्निमित्तस्य पितरि भूरा जीवितात्ता सिद्धिकोषका
हर्ष० ५, पक्ष बाणी का परास —वाटवक् बाणी
की चतुर्गाई, पारोक्ष अभिव्यक्ति के पराम की वाक्
कर जाने वाला व्यक्ति, बाणी में पारङ्गत, भव
(वाग्धट) 1 आर्चवैद विषय का प्रसिद्ध लेखक
2 अलकार शास्त्र का एक प्रणेता, विद् (वि०)
तर्क और युक्तियों देने में प्रवीण, विभिन्न उक्तिपदो

के द्वारा प्रस्तुत,—विश्वः वाय्विस्तारः वायुप्रपञ्चः, बहुमात्रिता, सप्तसहस्रं सोपाकर्म उचिता, व्यस्यवास्य,—सकलः सत्तर्जनी वस्तुता, बहुविध भावः, सप्त (वि०) जिसकी वाणी कर्म नहीं है, जो लोक नहीं सकता। सप्तसहस्र (वि०) [यत्+विष्+तृच्] जो सत्तर्ज पाठ की व्यवस्था करता है।

संस्कृतशब्दः [बन्धी मनुस्मृत्यात्] 1. बाजी का स्वाजी
2. वेद—महा० १४।२१।९ 3. एक कोशकार
का नाव ।

वाचस्पतिमिश्रः तन्त्रवार्तिक के प्रणेता का नाम ।

पाठ्य (वि०) [वृत् + क्त] 1. कहे जाने शब्द 2. अविद्या द्वारा प्रकट अर्थ 3. निम्नरीय । सम० लिङ्ग (वि०) विशेषणपरक, -- वसिष्ठ कृतोक्ति, अविद्या कल्पित के द्वारा दुर्बोध उक्ति, वाक्यकालः सत्य और अर्थ की स्थिति ।

वाकिल (वि०) [वाक् + कल] संज्ञासुत (वैसे कि वाक्) ।

कालिय (वि०) [बाघ + इनि] १. पक्षी शमिवादिनिषे-
धित्वा—महा० ७१४१२६ २. बाघ की संस्था।
कन—कन्यः एक युवक का नाम—विष्णु बड़ का
पुत्र, युवक।

बल (वि०) [बल + क्त] बल का गुण । — डः (पु०)
बिका । लभ० ।

बाबासाहेबजी साहिबों को दिया जाने वाला पारा ।

नामः कमुदी दामव ।

शब्दः [वञ् + वञ्] ज्वनन—वाञ्छवन्नि- समासस्तम्
-कि० १५।१०। लयः—लज्जः वसन्ती श्री आवाह ।

पल (वि०) [वा + पल] 1. हुवा से उड़ाया हुआ
2. इच्छित, अनिच्छित, — कः 1. बावू 2. बावू की
अभिप्रायी देवता 3. करीर के तीन बाँों में से एक
4. पडिया 5. कोढ़ों की सूजन 6. बावू करना, करीर
के बावू का निकलना। धम = लयः बहात का वेद,
अन्तः प्राण — प्रातःकालीनप्रति वि विमतामृतम्

स्वाहास्वामिनाय नमः । स्वहोमस्तुताम् ।—रा० प० ५,
 —आत्मन् योहा भवन जितन दो कमरे हों एक का
 गृह बलिज की ओर दूसरे का पूर्व की ओर,—आहार
 (पि०) ओ वायु के ही गहारे जीवित रहता है,—जीव
 करीर में वायुकोश के कारण हुआ होय चक्षु
 परका से मोलकाय पिङ्ग लयाना पदः बहान का
 वाक, दुरीतः केरल में गुप्तधूर मायक स्थान पर
 देवता, रावः बावक, बन्धनार कुकी बाकी ।

साधनसमस्याओं नीतिगतों के वाक्य का उत्तर देने
वाला वेदान्त का ज्ञान ।

वाणिज्यम् [वद् + निष्पन्न] वाणिज्यम्, संवीत का उपकरण ।
 सम० समुद्र डोलक बजाने की शक्ति ।

वाचकम् [वाच + कम्] समीत का उपकरण ।

प्राप्तमप्यहं ह्रीत् ।

वायुसूत्रम् तैत्तिरीय शाखा का श्रीतसूत्रम् ।

बालचित्रम् विविध रंग का कम्बल ।

बालबन्धु: जुलाहे की सद्गुणी ।

शब्दा (वि०) [वृत् + क्त] 1. उबका हुआ, झुका हुआ
2 उद्भवन किया हुआ 3 गिराया हुआ। शब्०
अव. कुला.—आसिक् (पुं०) 1. राजस जो विष्ठा
पर निर्वाह करता है 2. वह व्यक्ति जो मोक्ष के
लिए अपना मोच या बंधनता का उद्धरण देता है,
कुडिक (वि०) वह आदम जो पानी भरसा झुका
है शेष० ।

पाणी [वप् + हञ्, कृप्] नाबड़ी, बड़ा कुम्हा । खख०
अन्नम् सरोवर का पाणी ।

बन्ध (वि०) [बन्ध + ण ल्यप्ता वा + भन्] १. बन्धन
 २. उस्ता, बिराही, बिराही ३. बुर, कठोर ४. बन्ध
 ५. बन्धन, — बन्ध १. कामदेव २. साँप ३. छाया, ऐन,
 बीड़ी ४. निहित कार्य (जैसे सुखपात्र) । भन्
 १. सपत्ति, होम २. दुर्भाग्य, विपत्ति ३. कर्मवीर
 वस्तु । सन्ध० बन्धन (स्त्री०) मुन्दर स्त्री, कामिनी,
 — ध्वज (वि०) धारा, — कुम्ह बाई कोक, — मन्ध
 (स्त्री०) कोहूर बीछी बाली स्त्री, स्वभाव (वि०)
 उदात्त परिश्रमसक्त व्यक्ति — निरीक्ष्य कृपापाकृत
 भुरोस्तुतं बन्धनबन्धना कृपाया भवति न — भाग०
 ११७४२, — तुल्य बन्धनी के बने का निरर्थक स्तन ।

वामदेव्यम् सामग्र्यं समूहं विसृज्य नाम उरुके प्रवर्तक
श्रुति वामदेव के नाम पर पढ़ गया ।

बाबलीकृत (वि०) [बाभन + बिल् + कृ + क्त] बनीया बना हुआ, कृष में छोटा बनाया हुआ ।

वायुमण्डल का प्रदूषण को निम्न को जीवों के निरीक्षण से जानी जाती है।

वासुदेवः हाथी के सेहरे का एक भाव—भात० १०।१।

वाक्यभङ्गः 1. श्री गुरुः साकल्यं मोक्षितं गच्छति । 2. सपि ।

वायुसकलः संप्रवेष्टः ।

बार्बडीयन्स, रूट, पानी निकासने का यन्त्र ।

महर्षिजी महर्षिजी की सुराही ।

कारण (वि०) [कृ + विष् + ल्यट्] इटाने वाली, -- कर्म

1. हुदायी, दीक्षणा 2. विष्णु, भाषा 3. दरवाजा,
विनायक, — 1. हाथी 2. कनक 3. हाथी की सूँठ
4. मनुष्य, वन० कुम्हार एक लठ का नाम,
— कुम्हार पीले की एक जाति ।

वारारि: [वार+रारि:] समुद्र ।

वारि (नपु०) [वृ+वृज्] १ पानी २ तरल वा पिचला हुआ या बहने वाला पदार्थ । सम० कूट. ग्रीक के वारो और की वार्द, परिष्ठा, पिच्छः चट्टान का मैदक, ज्वः लव, साम्यम् द्रव ।

वारणी [वृज्+वृज्] मरुत का विशेष प्रकार, वाहनी मरिचा पीला भाग० १।१५।२३ ।

वारुणः १ समुद्रनट, समुद्रवेला २ अग्नि ३ किबाट का दक ।

वारानुकरक { १ चर २ वृत्त ३ वृत्तवाहक ।

वर्तमान

वार्ताकर्मन् (नपु०) खेती और मूर्गी पालन का व्यवसाय । वर्तनीति नियोजक, काम देने वाला, स्वामी ।

वार्तालीन्यास बीमाका का एक नियम जिसके अनुसार विवाह पर यदि मुख्य सामग्री के साथ उपयुक्त न लगे तो उसे सहायक सामग्री के साथ ऋण दिया जाय भी० सू० ३।१।२३ पर सा० भा० ।

वार्दरन् १ रेशम २ जड़ ३ दक्षिणावर्त शब्द ।

वार्दरन् वरसात का दिन ।

वार्दरन् एष प्रकार का मेषक ।

वार्तावन् १ एक पक्षी २ बूढ़ी बकरी ।

वाकुलावन् रेत से स्नान करना, मरीर पर रेत मलना ।

वाकत (वि०) धिय, प्रीतिभाजन, स्नेहभाजन ।

वाक् [वृत्+वृज्] १ मुग्ध २ रहना ३ आवास ४ एक दिन की यात्रा ५ वापना ६ स्वल्प, बाहुति ।

सम० पर्यव आवासस्थान का परिवर्तन, आवास स्थल ।

वाक्ता [वाक्+वाक्+टाप्] (गणित०) प्रमाण, प्रदर्शन ।

वाक्तामय (वि०) भाव तथा भावनाओं से युक्त ।

वाक्ता (वि०) [वाक्+क्त] पवित्रीकृत भोजित उद्योग बुधारा गया नै० २।१।११५ ।

वाक्ता, -रव् [वाक्+वर] दिन रः १ समय, वारो २ एक भाग का नाम । सम०—कर्मका रात, कृत, मणि सूर्य ।

वाक्ता १ इन्द्र का पुत्र अयन २ अर्जुन ३ बालि ।

वाक्ताव्य [वाक्ता+व्य] व्यास का नाम—महा० १।१५५ ।

वाक्ता [वृत्+विज्+वृज्] १ वरुण २ वपन ३ पर्दा । सम०—उदकम् वरुण की निचोड़ने पर उससे निकला हुआ पानी जो प्रेतात्माओं को उपहृत किया जाता है—इस आशयवाचक शब्द प्रदान करने ५ । पेक्ष ।

वाक्ताव्य रक्त, शिथिर, भूत ।

वाक्ताव्यवाक्ताव्य एक शब्द का नाम (यह ज्ञानवाक्ताव्य के नाम से भी प्रसिद्ध है) ।

वाक्ता (पु०, नपु०) [वृत्+वृज्] १ मवन वमान के

निमित्त नियत भूमिवाक्ता २ वाक्ता ३ वक्तावदन सम०—कर्मन् (नपु०) १ मवन निर्माण करना, मवन निर्माण का प्रारूप, वाक्ता वाक्ता कला, मवन निर्माण का प्रारूप या अभिकल्प, वैक्ता मवन की अभिप्रायी देवता, विक्ता स्थापत्य कला, मवन-निर्माण विज्ञान,—विक्तावन् मवन स्रचना, ।

वाक्ता (वि०) यज्ञ भूमि पर अवशिष्ट रही शक्ती उवाचोत्तरतोऽभ्यास्य भवेद वाक्ताव्य वक्ता—वाक्ता १।५।५ ।

वाक्ता विक्ता, दिन ।

वाक्ता [वृत्+वृज्] १ से जाने वाला २ कुली ३ मार-वाहक ४ वाह ५ बैल ६ बैला ७ सवारी । सम० वार वृद्धवार, रिपु बैला, वाहः रचना, रव् का हुकने वाला—स्ववाहवाहोहितवेषपेक्षः—नै० १।५६,—वाहवन् कप्य रा० २।५२।९, वाहम् (पु०) अग्नि ।

विराक्ता पक्षियों का राजा, वाक्ता पक्षी ।

विक्ता (वि०) [वृत्+वृज्] १ जहरील २ मज्जन् ।

विक्ता (वि०) [विक्ता+वृज्] १ विक्ता हुआ, कुला हुआ २ कैला हुआ, बसेरा हुआ ३ कैलावन्, ४ चमकीला, वेदीप्यमान—वक्तावृक्तावृक्तावृक्ता—रा० २।५।५। सम०—भी (वि०) उज्ज्वल हो से वृद्ध, अग्निवत् वाक्ता से सम्पन्न ।

विक्ता (वि०) [विक्ता+वृज्] कुला हुआ, विक्ता हुआ ।

विक्ता: गणत, म् १ रत्नी २ चम्पन, ३ लक्ष्मी सजिया ।

विक्ता वसन्त वातें ।

विक्ता (वि०) [वि+वृत्+वृज्] वाक्ता डालने वाला - राजता ये विकर्ता - रा० १।१।१० ।

विक्ताव्य (वि०) [वृत्+वृज्] कर्मवाहीन, जिसके पास ब्रिहद् ब्रह्मर न हो ।

विक्ताव्य [वि+वृत्+वृज्] वाक्ता डालने वाला उक्ति २ वृद्धा न होना ३ मकोष ।

विक्ताव्य [वि+वृत्+वृज्] वृद्ध, बहुकार, अविमान ।

विक्ताव्य [वि+वृत्+वृज्] उज्ज्वलता ।

विक्ताव्य (वि०) बड़े पेट वाला उमरी हुई तोंड वाला ।

विक्ताव्य (वि०) जिसमें कोई लम्बी लकड़ी न लगी हो ।

विक्ता (तना० उभ०) बलान करना, कलकृत कमाना बनाव् इति नामार्था विक्ताव्य—रा० २।१२।७८ ।

विक्ता [वि+वृत्+वृज्] १ परिवर्तित, बदला हुआ २ अपूर्ण अपूर्ण ३ अप्राकृतिक ४ नावर्त-जनक ५ विरक्त, -तम् (नपु०) १ परिवर्तित

२ रोष ३ अवधि ४ वर्षाव—वृत् १।२।४०

५ वृद्धव्य—रा०—७।५५।३५ ।

विहसितलम्ब १. एक कमबिनी का नाम २. डा० राघवना
रचित 'दुकाँकी' ।

विहसितः [वि + ह + पितृ] १. कनूता २. आमास
३. कर्मभाव ४. अनुलम्ब (आ० में) ।

विहसितम् [वि + कृ + ल्युट्] १. मोहन से विरक्त
२. कम्पवचन ।

विहसितलोभात् (वि०) जितकी सोमाएँ बधित की
गई हैं ।

विह्व (गुहा० पर०) १. उडेलना २. (ढकी लीस) आह
भरना ।

विह्वितः [वि + ह्व + अच्] कुछ गीत पितरों को प्रसन्न
करने के लिए बखेरा गया थावक ।

विह्वितलम्ब दे० 'विह्वितः' ।

विह्वलम् (आ० आ०) १. हुविवा का वर्णन करना
२. विचार करना ।

विह्वलः [विह्वल + वच्] १. उत्पत्ति—भा० १११२५।
२७ २. मान लेना, उचित ३. उत्प्रेषा, कल्पना ।

विह्वलित (वि०) [विह्वल + क्त] १. तत्पर, व्यवस्थित
२. सतिव्य, कल्पित ३. विभक्त ।

विह्वलितारका बुधकेतु, बुधकलसार ।

विह्वल (आ० आ०) पराक्रम दिखाना ।

विह्वल [विह्वल + वच्] १. गृह स्वर, उदात्त स्वरावात
२. जन्म कुण्डली में लग्न से तीसरा घर ।

विह्वलितम् [विह्वल + विच् + क्त] पराक्रम, शौर्य ।

विह्वल [विह्वल + ल + टाप्] १. चोट, आघात, हानि
२. लोप ।

विह्वल [वि + ह्व + अच्] १. विकी २. विह्वलव्य
३. मण्डी । सम० वचम् विकी की दस्तावेज बीबि
वाचार ।

विह्वल [वि + कीट + अच्] १. खेल का मैदान
२. निमीना ।

विह्वलट्ट (पु०) [विह्वल + लृच्] जो सहायता की
पुकार करता है ।

विह्वलवम् [वि + कृ + अच्] क्षोभ—रा० २।४४।२५ ।

विह्वलवता [विह्वल + लृच् + टाप्] श्रीपता, कायरता
भवति हि विह्वलवता मुनोऽङ्गनामा वि० ७।४३ ।

विह्वल (गुहा० पर०) १. दवाना २. उछालना ३. (बन्धु)
सुकाना ।

विह्वल (वि०) [विह्वल + क्त] विम्लारित, प्रसारित
जैलाया गया ।

विह्वलः [विह्वल + वच्] १. अवहलना (जैसा कि
'समय विकीप' में २. विस्तार ।

विह्वलकम् (वि०) [व० व०] जिसकी वकान दूर हो
गई है ।

विह्वलानु (वि०) [व० व०] विह्वल, मुक्त ।

विह्वल (वि०) [व० व०] दीन से मुक्त ।

विह्वलितार (वि०) [व० व०] जिसका आचरण निवृ
ह, वृत्ति आचरण से मुक्त ।

विह्वलवचनम् [व० व०] कप वारण करना, सरीर वा
वृत्ति धारण करना ।

विह्वलवच् [व० व०] लड़ाई का इच्छुक ।

विह्वलित (पु०) [विह्वल + इति] पुट्ट मंत्री ।

विह्वलम् [वि + अच् + अच्, वसादेश] १. मोम २. अवचवा
कीर । सम०—जाज (पु०) जो खाने से बचे हुए
उच्छिष्ट भोजन को करता है, कोवा ।

विह्वलवचनित वाचाओं को हटाना ।

विह्वल (अदा० आ०) १. कहना, वाचना करना २. प्रकट
करना ३. मोचना, अटकल लगाना ।

विह्वलवम् [विह्वल + ल्युट्] ठोड़ना ।

विह्वल (वि०) [व० व०] चन्द्रहीन, चन्द्रमा से रहित ।

विह्वल (आ० पर०) १. करना, बात खाना २. मूल हो
जाना मलती करना—हविषि व्यवहारसेन बधट्टकार
मुचन द्विज—भा० १।१।१५ ।

विह्वल (वि०) [विह्वल + अच्] आन्त, विह्वलित—न
१७ वमं विह्वल सन्त्यवेह महा० ५।२९।४ ।

विह्वलवच् (वि०) १. मूल, २. निर्णय करने में अज्ञानी ।

विह्वलवच् (वि०) कबचहीन, जिसके पास बिट्ट बकतर
न हो ।

विह्वलित (वि०) [विह्वल + क्त] १. पचच्छट, सहीमान
से भटका हुआ २. अवलुप्त, अन्ध किआ हुआ ।

विह्वलित (वि०) [विह्वल + इति] अन्धकार, परिवरण
अरुण, विहाकी हि मलत्तराण्य—मी० मू० ९।
७।३६ पर भा० आ० ।

विह्वलितल (वि०) सविष्य, मनेह पूर्ण ।

विह्वलित (वि०) [विह्वल + इतच्] रंभा हुआ, सजाया
हुआ, रगविरंगा ।

विह्वलितम् [विह्वल + ल्युट्] १. विचार, विम्लनम्
२. देल-माल, चिन्ता, क्रिकर ।

विह्वलता [विह्वल + अच् + टाप्] दे० 'विह्वलितम्' ।

विह्वलवम् [विह्वल + अच्] मधेवणीय ।

विह्वलवम् [विह्वल + ल्युट्] हाथ पैर हिलाना, प्रयास
करना ।

विह्वल [विह्वल + अच् + टाप्] १. प्रयत्न २. गति
३. मचरण ।

विह्वलव (वि०) [विह्वल + क्त] १. बीग हुआ, फाटा
हुआ २. लोका हुआ, भारा हुआ ३. पितकवरा
४. समान किया हुआ ५. धुन ६. उबड़म् आदि केप
किया हुआ । सम०—वापुषि वापुषि देना—वापु
करके, जीवात्मन् निवृ सन्त्यवेह करना
जितका वैरमानं बज्ज हो गया हो—अपवि कभी करना

कभी न करना, — प्रसार (वि०) बिखरी प्रगति में
बाधा पड़ गई है, बख (वि०) बिखने सुरापान छोड़
दिया है।

बिखरे [बिखिद् + बन्] भेद, प्रकार।

बिखुराव [बिखुर + वृत्] बिखेरना, छिटकाना, बुर-
कना।

बिखराव (वि०) [व० स०] बिखरे पहिये न हों, बख-
हीन (रच)।

बिखरा (वि०) गतिहीन।

बिखल (वि०) [व० स०] बलहीन, जहाँ पानी न हो।

बिखल (वि०) 1 जीवशीर्ष, टूटा-फूटा 2 बिखल, उपलब्ध।

बिखल [बिजि + बन्] 1 जीत, प्रत्यूह 2 एक विभिन्न
मुद्रा 3 नासरा महीना 4 एक प्रकार का सैन्ययुद्ध।

सम०—क्रान्ति (वि०) जीत (क्रान्ति) से प्रोत्साहित,
बख सेना की एक विशेष टुकड़ी।

बिखिलित (वि०) [व० स०] बिमकी मूख नष्ट हो
गई हो।

बिखिलीचा [बि + ह + मन् + अ + टाप्] इतर-उचर
बूमने या लेलने की हवा।

बिखिलिका 1. लीत लेने के लिए मृत् खानना 2 जम्हाई
लेना।

बिखिलित [बिजम् + कन्] 1 जो जम्हाई से चुका है
2 जम्हाई लेने वाला।

बिखिलक एक कवयित्री का नाम नीलोत्पलस्यमा
बिखिलका नामजायता। ध्रुव दण्डिना प्राक्ता सर्व-
लुक्ता सरस्वती ॥ (उस कवयित्री का अब तक यही
एक श्लोक उपलब्ध हुआ है)।

बिखलान् [बिजा + मृत्] 1 ज्ञान का अग या बुद्धि
2 इन्द्रियानीत ज्ञान।

बिखलबिखल एक बीज मेरक का नाम।

बिखलबिखल बीज दर्शन के पाँच स्वरूपों में से एक।

बिखेव (वि०) [बि जा + बन्] 1 जानने के योग्य लगेय
2 बिमकी जानकारी प्राप्त करनी चाहिए 3 बिमका
ध्यान करना प्राय।

बिख (वि०) [व० स०] जिसमें डोरी या ग्या न हो
(बन्प)।

बिखलस 1 हल्की, हरिद्रा 2 हल्की का पीचा।

बिखल (वि०) उन्मत्त, मुन्मत्त, मनोरथ—केन्द्रबुद्धि-
क्षीणविद्वद्देवी भाव० ३१५।२७।

बिख [बिट + पा + क] मगा, बेल (बैसा कि 'बू-
बिहप' में)।

बिखल (वि०) [बि + इम् + बन्] नष्ट करने
वाला — परबन्धुबुद्धिबिखलकरालम् — परबन्धि
का ताडकसीध।

बिखलान् [बिखम् + वन्] बिखली की बीध, उन्मत्त
की वस्तु।

बिखले [बिख + बन्] 1 बिखला अनुमान 2 हरिद्रा।
सम०—बखी अनुमान के क्षेत्र के अन्तर्गत।

बिखल [बिख + बन्] 1 क्षमिमाना, बखीया
2 रात्रि, डेर 3 बहुतायत 4 अनुमान 5 बिखलित।

बिखलक [बिखल + कन्] रात्रि, डेर।

बिखार (वि०) [प्रा० व०] 1 जिसमें तारे न हों
(आकाश) 2 बुद्धि के बीधभाव से रहित।

बिखल (वि०) [बिख + कन्] सतुष्ट, सतुष्ट।

बिखलबिखल मन्थन उपहारों का वितरण।

बिखल (वि०) [बि + वन्] 1 जानने वाला 2 समझदार।

बिखलान् [बि + वन्] [व० स०] 1 जो अपने आपकी
जानता है 2 प्रसिद्ध।

बिखुर [बि + कुरन्] वेता, डाटा।

बिखुर टो 'बिखुर'।

बिखुरी जानने वाली, समझदार स्त्री।

बिखल (वि०) [बिख + कन्] 1 परिपक्व 2 बख
3 बुरा, ईदकत, कुछ-कुछ लाल 4 बका हुआ,
भस्मीभूत 5 पचा हुआ। सम०—परिपक्व (स्त्री०)
चतुर पुष्पों का सम्राज, बुद्धिबल एक बन्ध का
नाम बखल (वि०) बागी, बाकपट।

बिखल दरवाजे की कुंजी।

बिखल (वि०) [व० स०] जिसके मजदी या साकर
अथवा किनारी न लगी हो, (बख)।

बिखल [खरसो का अन्] 1 बिखा करना 2 प्रमाण।

बिखुरनीति } महाभारत के पार्थिव पर्व में ३३ से ४०
बिखुरप्रमाण } तक अर्थात् यही चतुराव ने नीति
पर व्याख्यान दिया है।

बिखुर लख (वि०) जो दूर से सुनाई दे।

बिद्वि (स्त्री०) सोपरी की सन्धि या सोचन।

बिद्वेस (वि०) बिद्वेस में उत्पन्न।

बिद्वेसुक्ति (स्त्री०) मोक्ष के कारण जन्म मरण से
अर्थात् मरीर से छुटकारा।

बिद्वोह [बिद्व + वन्] अतिरिक्त भाव।

बिद्वोहबिद्वोह हृदयवृद्ध एक नाटक।

बिद्व [बि + वन् + टाप्] 1 दुर्गा देवी 2 सरस्वती
देवी 3 ज्ञान, विद्या। सम०—बानुर (वि०) जो
ज्ञान प्राप्त करने के लिए भावना हो—विद्यापुराण
न मुच न विद्या नीति०—ईश विद्व का नाम,
—कोलमुह, —कोलसह, —कोलसह, पुस्तकालय,
—कन् याद की ललित, —बाव (वि०) विद्वि,
पदाभिला, —कन् बध्यन की किसी विद्विप्रासा
के बध्यपकों की कालकमानुसार सुखी।

बिद्विप्रासा (वि०) एक लय में बिखली स्त्री स्त्री से।

विशेष (वि०) [विष् + शब्] प्रकाशीय करने वाला, प्रकाशमाने वाला ।

विशुद्धिः [वि + शु + क्त] दीर्घ जाला, भाव जाला ।

विश्वम् (वि०) [वि + श्वा + क्त, नस्य भवम्]

1. वायुकक, निहारहित 2. निराश, उदाह—इविन-विश्वामर्षि—हर्ष ७ ।

विश्वामर्षी } विद्वान् पुरुषों की समा विश्वामर्षी ।

विश्वामर्षः }

विश्वामर्षः }

विश्व (वि०) [प्रा० व०] निर्धन, वनहीन ।

विश्वम् (वि०) 1. अर्घ्यी, अन्वयी 2. अर्घ्यकार्य जो अर्घ्य के आशय से किया गया हो ।

विश्वम् (वि०) [विश्व + धि] 1. विश्व वर्ग से संबंध रखने वाला (वि०) स्वर्गम् 2. अर्घ्यी ।

विश्व (बुद्धि०) उभ०) लीन करना, उपभोग करना ।

विश्व [वि + वा + विश्व] उच्चारण ।

विश्वम् (बु०) [वि + वा + श्व] माया, धान्ति ।

विश्वम् [विश्व + श्व] 1. प्रवाल, प्रवाल 2. उपचार 3. माय, विपत्ति 4. विश्व 5. (वाटक०) विनिज एवों का संघर्ष ।

विश्वः [वि + वा + विश्व] 1. उपभोग, प्रयोग 2. अनुष्ठान, अभ्यास 3. प्रवासी, दीर्घ, ईश्व 4. विश्व 5. ज्ञानम् (वि०) अर्घ्यकार 6. अर्घ्यकार 7. अर्घ्यकार 8. वाय-एव 9. बुद्धि 10. निर्वाण 11. माय 12. हारी का बाह्यार 13. वैद्य 14. उपाय, तरकीब । स्व० अन्तः विविधरक्त मूत्र वाट का उपचारात्मक भाव, —अर्थः विश्व का भाव, कर (वि०) विश्वान को कार्य में परिणत करने वाला, —अन्तः विविधविधान के अनुसार अनुष्ठित यज्ञ-कर्मण विश्व का स्वरूप, लोचः विश्वान का अतिशय, विश्वर्षः, —विश्वर्षः दुर्गन्ध, —विश्वर्षः (स्त्री०) विविधविद् के प्रत्यय —वशम् (ब०) माय से, —विश्ववाम्पूरम्पुर्तोहम् मेव १ ।

विश्वः [अश्व + कु] 1. अश्व 2. कुर 3. राक्षस 4. प्राय-विश्वारुति । स्व० परिश्रमः वनरुहण, वनरुहण कर्म का परितेज, —अश्वः वाज्य महीना ।

विश्वुर (वि०) [विश्व + श्व + क्त] 1. विश्व, अश्वान—अतिशय विश्वुर—कि० १७।४१ 2. अश्व, अश्वान—इदं विश्वुरीवः—महा० ७।१४१२५ ।

विश्वुरी (वि०) [विश्वुर + श्व + क्त] विश्व, काण्डहीन ।

विश्वुर (वि०) [प्रा० व०] पूर्ण से रहित ।

विश्वुर [विश्व + विश्व + श्व] विरपतार करना, रोकना ।

विश्व (वि०) [विश्व + क्त, मकोपचय] निष्कर्मक, कर्मक-रहित ।

विश्वम् (वि०) [वि + श्व + क्त] विश्वान् मंवा, विश्वम् ।

विश्वम् (वि०) [विश्व + विश्व] वरकने वाला (साय भवों के पाठ करने की एक राति ।

विश्वः [वि + श्व + क्त] 1. वश्व - शीलवृत्तमविश्वाय वास्यामि विश्व परम् महा० ३।३०१।१२ 2. कार्य-लव ।

विश्वकर्मम् (नपु०) [व० ल०] निर्देश, शिक्षण ।

विश्वकर्मः [व० ल०] विपत्ति का क्षय ।

विश्वकर्म (वि०) [व० ल०] जो मातृ का कारण हो ।

विश्वकर्म (वि०) [विश्व + क्त + क्त] 1. वश्वकर्म, रहित, मुक्त 2. विमुक्त, एकाकी ।

विश्वभाषः विद्योय—अन्तर्गत देवादेह मन्त्रे राक्षस्य विना-भवम् रा० ७।५०।४ ।

विश्ववः [वि + श्व + क्त] नेता, अश्वी ।

विश्वकर्म (वि०) [वि + श्व + क्त] दुर्गन्धहारवस्त, बाह्य, विकलीकृत ।

विश्वकर्म [वि + श्व + क्त + श्व + टाप्] सकल्प, निश्चित उपसंहार, कुछ स्वीकार करके क्षेत्र को निकाल देना —व० ल० १०।५।५९ पर वा० वा० ।

विश्वकर्म (वि०) [वि + श्व + क्त + श्व + टाप्] परास्त करने वाला, हराने वाला ।

विश्वकर्म (व०) [विश्व + क्त] शोभना, (वाय) धारणा ।

विश्वकर्म (वि०) [वि + श्व + क्त + श्व + टाप्] काम देने वाला, स्वामी ।

विश्वकर्म [वि + श्व + क्त + श्व + टाप्] 1. प्रयोग, उपभोग 2. सहस्रव्यय ।

विश्वकर्म (वि०) [वि श्व + क्त + क्त] 1. पैदा हुआ, निकल आया 2. संपूर्ण हुआ, पूरा हुआ ।

विश्वकर्म [वि + श्व + क्त + श्व + टाप्] उद्योग, निर्माण ।

विश्वकर्म (वि०) [विश्व + क्त + क्त] 1. रक्षा हुआ, बढ़ा हुआ 2. निमुक्त 3. बढ़ा हुआ ।

विश्वकर्म (वि०) [विश्व + क्त + क्त] 1. मुकुरा हुआ, न अपनाया हुआ 2. किया हुआ, किया हुआ ।

विश्वी (व०) [विश्व + क्त] दूर रहना, दूर करना—विश्वी अन्तःमात्रम्—महा० ९।३१।२९ ।

विश्वी (वि०) [विश्व + क्त] पैदाया हुआ ।

विश्वीकर्मः सामान्य देवभूषा ।

विश्वी [वि + श्व + क्त] विश्व, छात्र विश्वीकर्मव-भूषा ।

विश्वीकर्मः } श्रीशायी, अनोरधन में व्यस्त, आनन्द-विश्वीकर्मिकः } शिव ।

विश्वीकर्मण्य मयोरधन का स्वान, यम विहार ।

विश्वीकर्म [विश्व + क्त + क्त] रक्षा, करना ।

विश्वीकर्म [विश्व + क्त + क्त] 1. (श्व) धारण करना 2. दीर्घ में वृद्धि 3. वृत्ति (अर्थ) की स्थिति ।

विषयः [प्रा० व०] १. निम्नस्थता, तटस्थता २. बहु दिन जब कि चन्द्रमा एक पक्ष से दूसरे पक्ष में सक्रमण करता है ।

विपाटः [विपट् + घञ्] एक प्रकार का बाण, तीर विपाट-पञ्चमेय—सि० २०।१७ ।

विपाटित (वि०) [विपट् + पितृ क्त] फटा हुआ, टुकड़े टुकड़े किया हुआ ।

विषयः [वि + पण् + घञ्] कार्यभार ग्रहण, व्यापार, व्यवसाय—न तत्र विषयः कार्यं शरकम्पूयन हि तत् -- महा० ३।३३।६६ ।

विनिर्वाणिका (व० स०) क्रयविक्रय या व्यापार के द्वारा जीवननिर्वाह करना ।

विनिर्वाणी (व० स०) मन्त्री, बाजार ।

विषयु (वि०) १. जिसने व्यवसाय छोड़ दिया है २. तटस्थ, उदासीन ।

विपत्तिः [विपद् + पितृन्] अवधान, समर्पित ।

विपत्तिकालः [व० स०] विपत्ति का समय ।

विपत्तीकृति (वि०) [व० स०] कान्तिहीन, निष्प्रभ ।

विपरिक्लेश (वि०) साहसी, बलशाली ।

विषयेक [वि० + परि + इ + घञ्] मिथ्याबोध, बलतपस्वी

—ईश्वरप्रेतस्य विषयेकौज्यमिति—भा० ११।२।३७ ।

विपरीतः [विपरि + क्त + घञ्] १. ह्रास २. मृत्यु । वच०—उत्पत्त्या, उत्पत्ती उपमा ।

विपत्तः [वि० + पण् + घञ्] कुम्भलाना, मूरलाना । सम०

—राज्य (वि०) परिचय में बर्बरक,—बोकेः अग्नि-मांस, अग्नीर्षः ।

विनिर्वाण्य (पु०) [व० स०] १. संभूर २. वंशहीन वस्तु ।

विपुलक (वि०) [प्रा० व०] पुंस्त्वहीन, जिसमें पीक न हो ।

विपुलगी (वि०) [व० स०] लम्बी वर्णन वाला ।

विपुल (वि०) [वि + पुण् + क्त] जिसे पूरा बाह्यर न मिला हो, जिसे पूरा बोधन न मिला हो ।

विपुलकम् [वि + पु + क्त, स्तार्थ क्त च] लड़ाई, दुर्घट ।

विपः [वण् + टण्, अत एवम्] धातुपथ का महोपा । सम० —आद्याय कला पिला की बारक कला ।

विपक्ष (उपा० उभ०) विमत करना, (राष्ट्री के कर्म में) लौकर करना ।

विपक्षः [विप + क्त + घञ्] १. विविधरीति २. दुष्कृत्य, बल्य तरीका ।

विपक्षीति [वि + प + क्त + पितृन्] परिवर्तन ।

विपक्षः [विप + क्त + घञ्] १. लौकर बुर करना २. (आ० में) के व्यंजनों के बीच में कोई स्वर जो उन दोनों की निक्षेप सृष्टि ।

विप्रतिपक्ष (विधा० आ०) मिथ्या उत्तर देना ।

विप्रतिपक्षीति [वि + प्रति + पण् + पितृन्] १. विरोधी प्रायना २. वृत्ती, वृत्ति ।

विप्रतिपक्ष (वि०) [विप्रति + पण् + क्त] परस्पर संयुक्त, आपस में मिले हुए । सम०—वृद्धि (वि०) मिथ्या विचार या धारणा रखने वाला ।

विप्रत्ययः [वि + प्रति + इ + घञ्] अविप्रत्यय,--वदि विप्रत्ययो द्वेय—महा० १२।११।५५ ।

विप्रक्षित (वि०) [वि + प्रण् + क्त] प्रसिद्ध, यशस्वी ।

विप्रक्षय [विप्र + वण् + घञ्] तम करना, सताना ।

विप्रलम्बित (वि०) [विप्र + लम्ब + क्त] १. अपमानित २. अतिक्रमण ।

विप्रलीन (वि०) [विप्र + ली + क्त] छितर-छितर किया हुआ, छिन्न-भिन्न किया हुआ ।

विप्रकम्पक (वि०) [विप्र + कम्प + घञ्, मुभासमः] झट्टेरा, डाकू ।

विप्रलोकः [विप्र + लोक् + घञ्] बहिर्लोक, विहीनार ।

विप्रवाहः [विप्र + वण् + घञ्] अशुभमति, प्रतिनिधित्व ।

विप्रवर्तित (वि०) [विप्र + वण् + पितृन् + क्त] प्रवाह के लिए गया हुआ, जो परदेश में पला गया है ।

विप्रहृत (वि०) [विप्र + हृण् + क्त] १. पटक दिया हुआ, गिराया हुआ २. कुचका हुआ, रौंका हुआ ।

विप्रहीन (वि०) [विप्र + हि + क्त] वाम्बित, विरहित ।

विपुल्य (स्त्री०) बोकटे समय में निकले वृक्ष के कण ।

विपुल्यः [वि + पण् + घञ्] पौष्टिक, महावृक्ष का विनाश ।

विपुल्यवर्तित्वि (वि०) अक्षय बोकने वाला, हलकाने वाला ।

विपुल्यः [वि + पण् + पितृन्] विनाश, अक्षय ।

विपुल्य (वि०) [व० स०] वाम्बहीन, जिसका कोई समा-लम्बणी न हो—प्रातुर्विपुल्य कुतान् विपुल्यम् --भा० ३।१।६ ।

विपुल्यः [वि + वण् + क्त] १. वृद्धिमान्, विद्वान् पुण्य २. देवता ३. चन्द्रमा । सम०—अनुवर्तः विप्य लेक, --आवाहः देवमन्दिर,--हस्तः राजस ।

विपुल्य [वि + वण् + क्त + घञ्] अपने आप को प्रकट करने की इच्छा ।

विपुल्य (प्रा० उभ०) १. अक्षय कर देना, बुर क्या देना --विपुल्यः संवाक्य--उ० ५।५।३।३ २. बोकना ३. बाँटना ।

विपुल्यः [वि + वण् + घञ्] बहुर ।

विपुल्य (वि०) [वि + वण् + उरण्] अतिर, वंचक ।

विपुल्यः [वि + वण् + घञ्] प्रया, वयाच—विपुल्य अन्वय निमित्तवस्तुत्वाविपुल्यवर्तित्वे—विपुल्य ।

विपुल्य [विधा + वण्] वयाच ।

विपुल्य (व० स०) विमाचय रेखा ।

विपुल्य (वि०) [विधा + वण्, र वायेकः] उल्लस वचकता, वचकीया—विपुल्यी सर्वभूतवर्तित्वं वञ्चता--महा० १३।२५।८६ ।

विनिम् (वधा० उर०) अतिक्रमण करना, उत्पन्न करना ।

विनेतः [विनिच् + वन्] विजृम्भण, (नीहें) सिकोड़ना ।

विनी (वि०) निर्मय, निरर ।

विनीकः एक राक्षस का नाम, राक्षस का भाई ।

विमुक्ता सर्वोपरि सत्ता, बन्ध, कीर्ति ।

विमुक्त्य (वि०) [वि + मुच् + क्त] मुड़ा हुआ, मुका हुआ, बन्धन किया हुआ ।

विमोचनम् [वि + मु + चिच् + ल्युट्] 1. विकास 2. प्ररक्षा 3. दृष्टि, दर्शन ।

विमोच्य [विन् + चिच् + ल्युट्] चिन्तनीय, विचारणीय ।

विमृष्टिः [वि + मृ + चिन्] 1. कम्भी 2. बोधदायक—जो ब्रह्म एता वनतो विमृष्टीः—भाष० ५।११।१२ ।

विमृष्टः [वि + मृच् + क्तम्] 1. अविचार, बार-बार दस्त आना 2. उलटफेर, अस्थिरता ।

विमृष्ट (वि०) [प्रा० व०] मरणान्ते से मुक्त ।

विमर्षनम् [वि + मृ + ल्युट्] 1. सुगन्ध, सुसुब् 2. परि-चर्चन, चर्चाना, पीसना 3. मंचये ।

विमर्षिन् (वि०) [विमृच् + चिन्] अविहिन्, अविष्कृक, विमर्षक ।

विमर्षा (वि०) मापतोक्त में बराबर ।

विमर्षः [वि + मा + ल्युट्] 1. कुली पाछकी 2. जहाज में रहने वाली किस्ती । तम० बाहू बालकी उठाने वाला ।

विमर्षमुष्टि (वि०) दूरी राह पर जाँक रखने वाला, दूरे रास्ते को देखने वाला ।

विमृष्टि (वि०) [वि + मृच् + क्त] आवेयरहित, आन्त-चित्त, निरपेक्ष ।

विमृष्टलीनम् (व०) मीनमंय करके ।

विमृष्टात्म (वि०) [प्रा० व०] आप के प्रभाव से मुक्त ।

विमृष्टसं (वि०) [व० व०] बचराया हुआ, बेहोश ।

विमृष्टात्म (वि०) [व० व०] बचराया हुआ, बेहोश ।

विमृष्टि (वि०) [वि + मृच् + क्त] 1. पूर्व, सब मिला हुआ 2. चना हुआ, मुर्चा में दस्त ।

विमृष्टः [वि + मृच् + क्त] मृगचिन्तन, सोचविचार, —भाष० ५।२१।११ ।

विमृष्ट (वि०) विमृष्टसं का रहित, निष्कल ।

विमृष्टात्म [व० व०] विमृष्टी ।

विमृष्टः [व० व०] अन्तरिक्ष ।

विमृष्ट (व०) अन्तराल पर अन्धकार फैकर ।

विमृष्ट (वि०) [वि + मृच् + क्त] बालकप्राप्ति, किनमें बालकप्राप्ति ।

विमृष्ट (व०) 2. (प्रतिभा) मंय करना 2. कटना 3. बटाना ।

विमृष्ट [विमृच् + ल्युट्] विमृष्ट होकर, पुनश्च एक एक करके व्ययितक ।

विमृष्टनम् [विमृच् + ल्युट्] 1. विमोच 2. बटाना ।

विमृष्टिः विमृष्टि की स्त्री—महा० १३।१४५।५२ ।

विमृष्टि (वि०) [प्रा० व०] 1. नीच कुल में उत्पन्न 2. अपरहित ।

विमृष्टि पत्नी, परिवार ।

विमृष्टा एक नदी का नाम ।

विमृष्टाप्रवृत्ति (वि०) [व० ल०] वितकी प्रवाह उदासीन हो, निष्कल हो ।

विमृष्ट (वि०) विस्तृत, विस्तारवस्त, दूरतक फैला हुआ ।

विमृष्टा 1 दूर गाने 2. उपमान, छोटी वस्ती ।

विमृष्टात्मनः वह मात वा विषय वितकी चर्चा कन्ध हो गई हो ।

विमृष्टात्म (वि०) नीरस, उकता देने वाला ।

विमृष्ट [विमृच् + विमृच्] बटाना, विषय । तम० पुनः (विमृष्टपुनः) स्वर्गीय पितरों की एक स्त्री ।

विमृष्ट, वन् [प्रा० व०] रात का तीसरा पहर—कुमार बटानापोषक विमृष्ट बटानापोषक—रा० ५।२९ ।

विमृष्ट (वि०) [वि + व + चिच् + ल्युट्] सोर-गुप्त कराने वाला, हल्लागुस्तका जनबाने वाला ।

विमृष्ट (वि०) [वि + रिच् + क्त] विमृष्टे दस्त करा दिये गये हों, लाली कराया हुआ ।

विमृष्टि [विमृच् + चिन्] विमृष्टन, दस्त करवाना ।

विमृष्ट (व०) [वि + वृच् + विमृच्] दावण पीडा ।

विमृष्ट (वि०) मोरीण, स्वस्थ ।

विमृष्टात्मकम्, एक अलङ्कार जहाँ उपमेय विमृष्टसं समान न हो ।

विमृष्ट [वि + वृच् + क्तम्] 1. वैपरीय, बाधा, विघ्न 2. प्रतिघ्न 3. लक्ष्म 4. कलह 5. अलक्ष्यति

6. संकट । तम० आवातः वह अलक्ष्यकार जहाँ विमृष्ट प्रतीत होता हो । परन्तु वस्तुतः कोई विमृष्ट न हो, —उपमा वैपरीय पर आधारित उपमा, —परिहार 1. विमृष्ट का दूर होना, भावबल्ल

स्वागत होता 2. प्रतीतमान विमृष्ट की व्याख्या ।

विमृष्टः एक प्रकार का सौ ।

विमृष्ट (वि०) [वि + वृच् + क्त] (बाध) भरा हुआ, लक्ष्य 2. अक्षुब्ध 3. बढ़ा हुआ । तम० जोष

(वि०) वितकी वृद्धि परिपक्व हो गई हो ।

विमृष्टनम् [वि + वृच् + क्तम्] प्रकाश, चमक, दीप्ति ।

विमृष्टिन् [वि + वृच् + क्तम्] वनकीका उन्मूलन ।

विमृष्ट (वि०) [प्रा० व०] 1. विमृष्टा कीई विमृष्ट पिछा या कलह न हो 2. (वीर) वितकी विमृष्टा चूक गया हो ।

विकल्प (वि०) [विकल् + क्त] 1. लटकता हुआ
2. पिछरबद्ध (पक्षी) ।

विकल्पवत् [वि + लप् + विद् + ल्युट्] चलाने वाला,
विस्थापन का कारण ।

विकल्प (स्वा० ब्रा०) सहारा लेना, निर्भर करना ।

विकल्पः [विकल् + घञ्] 1. सजीवता, हावभाव 2. साम-
कता, लपटता ।

विकल्पः [वि + ली + विष् + घञ्, ल्युट् वा]
विकल्पवत्, बोल देना, मिला देना, (बालों का) भोजन
मिला, देना ।

विकल्पित (वि०) [प्रा० व०] मित्र लिखना का ।

विकल्पित (वि०) [विकल्प् + क्त] सना हुआ, लिपा
हुआ, लेपा हुआ ।

विकल्पित (वि०) लसदार, विपका हुआ ।

विकल्प (वि०) [विकल् + क्त] मन में बँटाया हुआ ।

विकल्प (पु०) [विकल् + विष् + लृक्] झग, लुटेरा ।

विकल्पनीय (वि०) [वि + लृप् + नीय] ललचाने
वाला, मुग्ध करने वाला ।

विकल्पनवचः दृष्टि क्षेत्र, दृष्टि का पराम ।

विकल्पवाटः विपरीत क्रम से सत्वर वाट ।

विकल्पविधिः किसी कार्य के विपरीत अनुष्ठान का विधान
करने वाला नियम ।

विकल्पितान्तरावयवम्, एक प्रकार का व्यङ्ग्यार्थ ।

विकल्पवत् [वि + वद् + ल्युट्] कलह, झगडा, मुकरने
वाली ।

विचवा [प्रा० स०] 1. जूबा 2. हचकी, बेडी ।

विचरन् [वि + च् + अच्] पनाल मीक ।

विचरित (वि०) [विचर् + इच्] अननुमोदित,
अस्वीकृत ।

विचरन् (स्वा० पर०) कूटना, उछलना, फाटना ।

विचरवती (स्त्री०) [विचर-वत् + वती] धूप देव की
भवरी ।

विचरवन्धवम् हुलहिन की बेशर्मा ।

विचरित (वि०) [विचि + क्त] जिसने समझ लिया,
वा सही अनुमान लगा लिया विचरित वरक्यो
— भाग० ५।२६।१७ ।

विचरित [वि + लृप् + अच् + टाप्] जानने की इच्छा ।

विचरितान्तरः वरमृमि का अक्षीकक ।

विचु (स्वा० क्वा० उच०) 1. भ्रान से तलवार निकालना
2. कंधे के (बालों की) माथ फाटना ।

विचुलम् [विचु + क्त] अनाहत, जिनके बाव नहीं हुआ ।

विचुलनीय (वि०) अपने पराक्रम का प्रदर्शन करने
वाला ।

विचरित (वि०) [विचु + क्त] वह जिससे कोई वस्तु
के की अक्ष, वचिपत, विरहित ।

विचुत् (स्वा० ब्रा०) कथान्वर करना उने सह विचरित
महा० १२।१७।२२ ।

विचरतन्त्रम् [विचु + ल्युट्] कथान्वरण ।

विचरताः [व० स०] मृग ।

विचरकम्पवता निर्णय करने में अक्षयता ।

विचरकविरह, अज्ञान, ज्ञान का अभाव ।

विचु (तुदा० पर०) 1. रमयच पर प्रकट होना 2. सयुक्त
हाना 3. आ पडना 4. (किसी कार्य में) व्यस्त हो
जाना ।

विचु (पु०) [विच + विच्] 1. बस्ती 2. मपति,
दीलत ।

विचरुनीय (वि०) [वि + लृक्, अनीय] प्रष्टव्य,
पूछने के योग्य, सङ्का किये जाने के योग्य, जिस पर
सङ्का की जा सके ।

विचर (वि०) [वि + लृप् + अच्] 1. मुकुमार, मुहु
2. दक्ष ।

विचरत्यकरणी ग्रन्थों के लगाने से उत्पन्न बावों को स्वस्थ
करने की विशेष जड़ी-बूटी ।

विचरतम् [विचर + ल्युट्] 1. मुट् 2. काटना 3. बच
करना, हट्या करना ।

विचरग (वि०) [विचर + दा + क] 1. प्रवीण 2. बुद्धि-
मान्, 3. प्रसिद्ध 4. साहसी 5. मोन्दयोंपन्न अरद्
शत्रु सम्बन्धी 6. वस्तुत्व शक्ति में रहित ।

विचरतकुलम् उनम परिवार, प्रसिद्ध वज ।

विचरिता [विचर + टाप्] कथालय ।

विचरकरवत् स्थिति, मुधार ।

विचरवचः विशेष कर्तव्य, विविष्ट धर्मकृत्य या यज्ञ-अनु-
ष्ठान ।

विचरवचसिद्धिः एक प्रकार का हेतुभास ।

विचरवचवत् 1. विशेषता चीनक शब्द 2. सम्मान सूचक
उपाधि ।

विचरवतः (अ०) अनुपात की दृष्टि से निस्त्रेण्यो द्वेय-
मेत्रेण्यो दान विद्या विसेपन मनु० ११।२ ।

विचुद्वितीय निर्मन् मन या उज्ज्वल बुद्धि वाला ।

विचुद्वस्य (वि०) सम्पत्ति, सदाचारी ।

विचुद्वि [विचु + क्त] 1. श्रुत परीक्षोच करना
2. प्रायश्चित्त ।

विचुद्वस्य 'देवी' का शिष्य ।

विचुदी (वि०) [विचु + क्त] 1. रगडा हुआ 2. विकली-
भूत 3. भिरा हुआ (घर्म आदि) ।

विचरतकच (वि०) [व० स०] 1. वस्तुत्व शक्तिहीन,
मृक 2. मृत ।

विचरतः [वि + लृप् + घञ्] धारण करने का स्थान ।

विचरतप्रकाशित (वि०) विचरत या मृग वातें करने
विचरतप्रकाशित वाला ।

विषयवस्तु (वि०) शान्ति पूर्वक सोने वाला ।

विधिः [विध् + क्तिन्] मृत्यु ।

विषयकोष (वि०) सबके लिए सुवय, जहाँ सबकी पहुँच हो ।

विषयवाहः विषयवाता, ईस्वर ।

विषयवाहः विषय का सहारा, ईस्वर ।

विषयदेवाः पितरों की एक स्त्री, देववर्ग ।

विद्वद्भिः जैतुद्विषों में पढ़ने वाला कीड़ा ।

विद्वत्तः मृगकृच्छता, मृगचरोप ।

विद्वद्भ्यः अतीक्षार, वस्तु का लम्पना ।

विद्वन्मुक् (वि०) मल खाकर रहने वाला, गुबराला ।

विद्वन्मरः मँसा ।

विद्वत्तन् विषयिज्ञान, (सर्पादि विषयों के जन्तुओं का) विष हूर करने की प्रशिक्षा ।

विषयत (वि०) [वि + यञ् + क्त] 1. स्वस्त, विपका हुआ 2. अतिविस्तारित ।

विषयवन् [वि + यञ् + लिप् + क्त] कष्ट देना, सताना ।

विषय (वि०) [प्रा० व०] 1. जो दूर न बँट सके 2. अन-पृथक् । तन्म०—आय कायदेव,—मेघम् शिव की छतरी बाँध,—मेघः शिव का एक विशेषण, मूलम् उस विश्वके चरण तन्म न हों ।

विषय [वि + लि + यञ्, क्तम्] 1. ज्ञानेन्द्रियों द्वारा ग्रहीत होने वाला, पदार्थ 2. भौतिक पदार्थ 3. इन्द्रिय-जन्य ज्ञानम् । तन्म०—विद्वत्तिः किसी बात को भ्रम कर जाना,—चराकमुक्षः भौतिक विषय कुक्षों से विमुक्त ।

विषयविकारवन् [विषय + लि + क्त + क्त] किसी वस्तु को चिन्तन का विषय बनाना ।

विषयवन् (वि०) [वि + लृ + क्त] जीतने के योग्य ।

विषयः [वि + कालञ्] 1. छोटी 2. सूची 3. अपनी प्रकार का उत्तमोत्तम ।

विषयवत्तः वह समय जब दिन रात का मान बराबर होता है ।

विषयवन् (स्वा० क्पा० पर०) 1. समर्थन करना, प्रबल बनाना 2. व्याप्त होना, छा जाना ।

विषयिकर दानों का स्वाधी, वेगार में पकड़े मजदूरों का स्वाधी ।

विषयिकारिन् शेरार में पकड़ा गया मजदूर जिसे कोई पारिवर्तिक भी नहीं दिया जाता है ।

विषयवन् [विष् + भासिन्] मृग, जो मल खाता है ।

विष्णु [विष् + क्त] 1. विदेव (ब्रह्मा, विष्णु और शिव) में दूसरा 2. अग्नि 3. पावन पुरुष 4. स्मृति-कार 5. एक वस्तु 6. अथवा नक्षत्रपुत्र (हस्तका अधि-पत्यही देवता विष्णु है) 7. जैन का यहीना । तन्म०

— बाल्मीकिविष्णु वीरों के नाम,— वत्स परीक्षित राजा का नाम,— बर्मेसरपुराणम् एक उपपुराण का नाम, प्रिवा 1. तुलसी का वीर 2. कन्नौ का नाम — विष्णु कोश ।

विषयवन्ति (वि०) [विषय + गति] सर्वत्र जाने वाला प्रत्येक विषय में प्रविष्ट होने वाला ।

विषयकोष [विषय + कोष] बबराहट, बाबा, विष्णु ।

विषयवन् (वि०) अस्मान्, अस्मत्कृप ।

विषयवन् (वि०) नितांत बबराया हुआ ।

विषा कमल नाभ (= विष्णु)

विषुव (मुदा० पर०) (आ० वी) (मेर०) प्रकट करना, भेद जोड़ना, (समाचार) प्रकाशित करना ।

विषुवन् [विषु + क्त] जो मुक्त किये जाने के योग्य है, मृष्टि, सत्कार का रचना — काको बहीछन-विषुव्य विषयवन्ति भाग० ७११२२ ।

विषयः [विन् + क्त] विनाश, वृष्टि का कोष ।

विषुव (स्वा० पर०) ऊँकना, प्रसारित करना ।

विषयिन् [विषु + लिप्] 1. रेंपने वाला 2. कूट कर निकालने वाला 3. सरकने वाला 4. फैलने वाला (वेक की शक्ति) ।

विषयवन् [विषय + क्त] मृद, कण ।

विषयवन् [विषय + क्त] बहाकना चिचाकना, बर-जना ।

विषयवन्तः [विषय + क्त] 1. छोड़ा, भुँकी 2. एक प्रकार का कोड़ा ।

विषयवन्तम् आशय का विषय ।

विषयवन् कल्पे आस की गन्ध ।

विद्वत्ति (स्त्री०) [वि + ह् + क्त] प्रतिपाठ, अप-सारण, विकसता, यन्मात्रा, यनोधि, बोद्धेयः प्रत्य-विद्वत्तिवत्तवन् वि० १०१११ ।

विद्वत्त (व०) [वि + हा + क्त] 1. ...के अधिक, के अधिकतर 2. होते हुए भी 3. विषय, छोड़ कर ।

विद्वत्ति प्रतिपद्य (वि०) विद्वत्ता विद्वत्ता और विद्वत्त दोनों किये गये हैं ।

विद्वत्त [वि + ह् + क्त] जीतना, ऊँकना ।

विहार [वि + ह् + क्त] (जीवाका) जलिनय, (माहृपय, माहृवनीय और वज्रिण) ।

विहारभूमि मोक्षभूमि, बरागाह ।

विद्वत्तवन्तम् (वि०) [व० व०] उदात्त, सिद्धिमान विद्वत्ता मन बहुत श्वीकृत हो ।

वीरिणीय कहरों का उठना, तरवों के उत्पन्न हुसकना ।

वीरपापि मारकति ।

वीरवत्तर (वि०) ईर्ष्या द्वेषादि से मुक्त ।

वीरकाव (वि०) पुण्यी, पुत्र का इच्छुक ।

वीरपाली [व० त०] बुरवीर की पत्नी, नायिका ।

वीरबाह [व० त०] शक्ति का दावा, वीरता अन्य कीति ।

वीरसत् (वि०) अपनी प्रतिज्ञा पर अटल, बुद्ध सकल्प वाला ।

वीरक [वीर + कन्] 1. 'करवीर' नाम का पीछा 2 नायक 3 एक शिवमण का नाम ।

वीर्यम् [वीर + यत्] 1. विष 2. सोका 3 पुंस्य, जनन -शक्ति 4. वीज, धातु । सम० - आधानम् गर्भा-धान, -सुख (वि०) धनीता देकर पुष्ट, शक्ति के बल पर कात ।

वृत्तिद्वय [व० त०] सीमावर्ती वृत्त ।

वृत्तिवार्त्त [व० त०] ऐसी सट्टक जिसके दोनों ओर बाह लगो हो ।

वृत्त [वृ + क्] 1. जेबिया 2. सुय ।

वृत्तभूतक 1. रीछ 2. पीरड ।

वृत्तामय [व० त०] लाज, रेखन (वेरजा) ।

वृत्तम् [वृत् - क्त] 1. क्पांतरण 2. अधिष्ठाक ।

वृत्तमय छन्दोबद्ध रचना ।

वृत्तवृत्त (वि०) गुणों से सम्पन्न ।

वृत्तव्यय (अ०) जोबिका के लिए ।

वृत्तावृत्त जोबिका की व्यवस्था, जोबिका का आधार ।

वृत्ताव्यय [वृत्ता + व्ययम्] केवल एक व्यक्ति के अपन उपयोग के लिए बाहर ।

वृत्तार्त्ता [वृत्ता + आर्त्ता] बाल स्त्री ।

वृत्तवृत्ति (स्त्री०) 1. कुट्टिनी 2. दाई, बायी ।

वृद्धि (स्त्री०) [वृद्ध + क्त] 1. आधान बंट (वृद्ध हिसाया) 2. भूमि का ऊँचा करना 3. लम्बा करना ।

वृत्तम् [वृ + क्त, वृत्] वृद्धा, बुद्ध ।

वृत्त [वृत् + क्त] 1. जल 2. भवननिर्माण के लिए भूखड 3. नरजन्तु 4. साह । सम० - लक्षणा मरवाती स्त्री, वृत्तिवृत्त (पु०) विद्ध ।

वृत्तमयामय बैक गाडी ।

वृत्त [वृत् + क्त] 1. नाचने वाला 2. बेल ।

वृत्तकीर्तन [व० त०] ओष्ठ को आहंता ।

वृत्तिवार्त्त. ग्याला, गबरिया ।

वृत्तवृत्त लीख्य का अभिमान ।

वृत्ति [वृत् + क्त] 1. फिर सयुक्त की गई सपत्ति जो पहले से बटी हुई थी 2. जल प्रवाह करना ।

वृत्तवृत्त बाल का फूटा ।

वृत्तवृत्त बाल का चावल, कामबीज ।

वृत्तवृत्तवृत्ति पक्कीस करा. निश को एक कृति ।

वृत्त [वृत् + क्त, वृत्ता] 1. जान 2. हिन्दुओं को पुनीत करने पुस्तक, ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद 3. 'कुश' का गुच्छा 4. विष्णु । सम०

अनध्ययनम् बहु अवकाश का दिन जिस दिन वेद का पढ़ना निषिद्ध हो, बाह्य (वि०) 1. वेद के विपरीत 2. वेदाध्ययन के क्षेत्र से बाहर, - बाह्य वेदों के विषय में होने वाली वर्गीय व्यक्तियों की बहुत वेदवाचना पाठ नान्यदलीति वादिनः - मन०, भुक्ति ईश्वरीय ज्ञान का देवी मदेस ।

वेदिनेकाला वेदी के चारों ओर को सीमा को बाँधने वाली रस्ती ।

वेध (पु०) [विधा + जसुन्, गुण.] उद्योग का पारि-भारिन् गन्ध जिसका अर्थ है ग्रहों की स्थिति का निर्धारण ।

वेलातिक्रम [व० न०] सीमा का उल्लंघन ।

वेलातिग (वि०) किनारे से बाहर रहने वाला ।

वेद्यापि [व० त०] जार, वेद्या का पति ।

वेद्यापुत्र [व० त०] वेद्या का पुत्र, जबैध पुत्र, हुरामी ।

वेष्टनम् [वेष्ट + क्त] विद्याम, एक सिरे से दूसरे सिरे तक का सारा फैलाव ।

विकारिक (वि०) [विकार + क्त] 1. परिवर्तनीय 2. सत्त्व से सबद्ध विकारिकत्वजसत्त्व तामसत्त्वैत्यह विद्या - भाग० ३।५।३० ।

विकार्यम् विकार, परिवर्तन ।

विकृतम् [विकृत + क्त] कपट, धोखा ।

विकृत्यम् [विकृत + क्त] निर्जनता, एकान्त ।

विकृत्यम् एक प्रकार का रत्न ।

विकृत्यम् यज्ञविषयक कुछ सूत्र ।

विकृत्यम् [विकृत + क्त] विदुर का सिद्धांत ।

विकृत्यम् [व० त०] आयुर्वेद शास्त्र ।

विकृत्यम् अममानता के कोणों पर आधारित तर्कसंगत प्रान्ति, हेन्वाभास ।

विकृत्यम् (वि०) [विकृत + क्त] रात परक ।

विकृत्यम् (वि०) [व्यवहार + क्त] व्यवहारविद्ध, कूट, प्रचलित ।

विकृत्यम् केवल विकृत्य का विद्यमानाद्योतक शब्द ।

विकृत्यम् [वर - क्यप् + क्त] सन्ता, द्वेष, विरोध ।

विकृत्यम् [विराग + क्त] बर्ष या रय का लोप ।

विकृत्यम् अर्तुहिरुक्त एक काव्यरचना ।

विकृत्यम् सान्नाय मन्त्र, वर्तमान समय ।

विकृत्यम् [विद्याम + क्त] हिंसा भाग० ५।१।१५ ।

विकृत्यम् [विद्यस्त + क्त] विषयापन ।

विकृत्यम् बंगार करने वाला, जिसे कार्य करने के लिए वाध्य होता पड़े ।

विकृत्यम् (गाटक०) रसमयण लम्बे-लम्बे डग भर कर डगर-डगर टहलना ।

विकृत्यम् आवर्त, जैवर, बहडर ।

अस्य विपयवद् देखा, भूयध्वदेखा ।

अस्यकुञ्ज (वि०) अनिवारित निरकुञ्ज ।

अस्युक्त [प्रा० व०] इतरात् ।

अस्यनमिषा पला मलना ।

अस्यजना मृदु उच्चारण, स्पष्ट उच्चारण—हीनव्यञ्जनया प्रेक्ष्य—रा० २।९४।११ ।

अस्यितकर 1. उत्तेजना, उकसाहट भाग० २।५।२२
2 विनाश—भाग० १।७।३२ ।

अस्यितकमः [वि + अति + कम् + घञ्] उत्सहन, अनि-
क्रमण तयाभ्यनिक्रम कृत्वा महा० ३।१२।३९ ।

अस्यितकम् [वि + अति + सञ् + घञ्] 1 प्रतिपुष्ट,
मनु से मिश्र 2 विनिमय ।

अस्यित (वि०) [अय् + क्त] 1 कष्टग्रस्त पीडा
2 क्षय, डरा हुआ ।

अस्यायमम् [वि + अय + आ + इ + ल्युट्] अपयमन, पला
यन, पीछे हटना ।

अस्ययम् [वि + अय + अय + घञ्] 1 प्रयाग 2 समागि ।

अस्याध्व [वि + अय + आ + धि + अच्] आध्वस्थान,
सहारा ।

अस्योह (म्वा० पर०) 1 प्रायश्चित्त करना 2 स्वस्व
हाना 3 दूर भगना ।

अस्यिचारकम् (वि०) अनुचित यौन संबंध करने वाला ।

अस्यिचारिन् (वि०) [वि + अचि + चर + णिच् + णिनि]
1. कुमार्गगामी दुश्चरित्र 2 अस्वायी ।

अस्य [वि + इ + अच्] (म्या० में) रूपान्तर, गन्ध या
चातु का निश्चित में प्रत्यय लगा कर रूप बनाना ।

अस्यजेयं लभं काट कर बची हुई राशि, निबलजेय ।

अस्यज्जेय [वि + अय + छिच् + घञ्] विनाश ।

अस्यजानम् [वि + अय + आ + ल्युट्] (मीमांसा) दुष्कर
रचना, क्लिष्ट रचना ।

अस्यहित (वि०) [वि + अय + आ + क्त] दूर पार का
दूरवर्ती । मय० अस्वत्था शब्दों की एक रचना
प्रपात्नी जिसमें एक दूसरे से विपुल शब्दों को मिला
कर एक वाक्य बनाया जाय ।

अस्यजनः [वि + अय + नृच् + घञ्] परित्याग ।

अस्यजातकम् (वि०) उन्माह से पूर्ण ।

अस्यजातिका (स्त्री०) दुर्लभकर्म से वन ।

अस्यजानम् [वि + अय + स्वा + ल्युट्] निश्चित सीमा ।

अस्यनित्यविकल्पः निश्चित विकल्प ।

अस्यहारः [वि + अय + ह + घञ्] 1. लविवा 2. मजित
के घात या बल 3. व्यापार 4. सूक्ष्मता 5 प्रचा,
दीप्तिरिवाच । मय०—अस्यिन् (वि०) बादी, मुद्दी,
—बाधेन् (वि०) जो प्रयत्न के आघात पर तर्क
करता है ।

अस्यहृतम् [वि + अय + हृ + क्त] व्यापारिक भेद-वेध ।

अस्यवाय [वि + अय + अय् + घञ्] 1. दूरी, पार्श्व
2 प्रवेग, घुसाना ।

अस्यवद्विचारिन् (वि०) साथ-साथ दुःख भोगने वाला ।

अस्यतावायः विपत्ति का चर ।

अस्यतुष्ट (वि०) फेलाई हुई पूछ वाला ।

अस्यिका (अ०) बाह्य को फेलाकर तथा पंरो को चौड़ा
करके (सड़ा होना) ।

अस्यि (तना० उभ०) भविष्यवाणी करना (बुद्ध०) ।

अस्यारचम् [वि + आ + कृ + ल्युट्] 1 भेद अन्तर
2 भविष्यवाणी ।

अस्यकोष (वि०) (फत् को भाति) लिखा हुआ, पूर्ण
विकसित ।

अस्यकोष [वि + आ + कु + घञ्] विशेष मंडन ।

अस्यकोश [वि + आ + कृ + घञ्] चित्ता चित्ता कर
गा-यो दन भर्त्सना करना ।

अस्यारित (वि०) त्रिम पर धी (गा १०) का छोट्टा
रिया गया है (इसी अर्थ में अविचारित भी) ।

अस्यमित (वि०) [वि + आ + पूर्ण + क्त] लुब्धका हुआ,
वधवर साया हुआ, व्यापुर्लभदपदकुण्डकुहरी ल
नारा० ।

अस्यपूर्ण (वि०) [वि + आ + पूर्ण + घञ्] मृकता हुआ,
चकर माना हुआ ।

अस्यनिहा मृत्मृत् की नींद, डक बार कर सोना ।

अस्यव्यवहार कोमलपूर्ण व्यवहार ।

अस्यिद्ध (वि०) [वि + हा + मन् द्विवादि वि०] कूटिल,
तोडा मरोडा हुआ, झुका हुआ धूमपटव्यावहार-
रत्ननिधय—भाग० ५।१७ ।

अस्यिनिह रोम की निश्चित करना ।

अस्यिस्थानम् शरीर ।

अस्यिवाच विषयव्यपकता का सिद्धान्त ।

अस्यारक (वि०) [वि + आ + पू + णिच्] अनुम । व्यापा
रप्रत्यय व्यक्ताय में लगा हुआ ।

अस्यिध (वि०) [वि + आ + मिथ् + अच्] 1 असगत
2 मिला-जुला 3 लविष, आसक्त—अस्यिधेय
वाक्येन बुद्धि मोहयसीव से—मय० ३।२ ।

अस्यिधकम् [वि + आ + मिथ् + अच्] नाटकीय संभाषण
विलम्बे शिथिल भोग्य भावार्थों का प्रयोग हुआ हो
—रा० २।१।२७ पर टीका ।

अस्यायः [वि + आ + यच् + घञ्] सैनिक अभ्यास, फौज
की क़वायद ।

अस्यित (वि०) [वि + आ + नृच् + क्त] झुका हुआ ।

अस्यहारिकता भौतिक अस्मिन् ।

अस्युत्त (वि०) [वि + आ + क्त + क्त] परिवर्तित—महा०
१२।१४।१५ ।

अस्योद्यम पुराणों के व्याख्याता का पद या मदी ।

व्यासमुखा मुख और व्यास की पूजा जो आबाड़ी पूर्णिमा को होती है।

व्याससमाप्ती (वि० ब०) वैयक्तिक तथा सामूहिक रूप से।

व्युत्पत्ताधीनित (वि०) मृत, निर्जीव।

व्युत्पा (म्भा० आ०) 1 जीत लेना 2. बुर करना।

व्युत्पत्त (वि०) [वि + उप + र्त् + क्त] विश्रान्त, समाप्त, मृत।

व्युत्पत्तिभागः सेना को विघ्न-भय व्यूहों में बाँटना।

व्येक (वि०) विसर्गों एक कम हैं।

व्योमरत्नम् मूर्त।

व्योमरत्नवा चितकबरी पाय।

व्योमवाय मधुरा के आस-पास बोली जाने वाली भाषा।

व्युत्तः- तम् [वृत् + च, अन्य तः] मानसिक क्रिया कलाप व्रतर्तिन व मानस कर्म उच्यते-मी० सू० ६।२।१० पर शा० आ०। सम०-आरम्भ, एक धामिः वन का वारण करना।

व्युत्पत्तकण्डः अथर्ववेद का एक काण्ड।

व्युत्पत्तार्थ आरिष्टक या अवधूत का जीवन।

व्योढावानम् सकोष एव नक्षत्रापूर्वक दिया गया उपहार।

व्योहिवापम् चावल की पीसा लगाया।

व्येष्टः पाद जाल।

श

शब्द (म्भा० पर०) उन ऋग्यजुर्वेदों में स्मृति गान करना जो शायन के लिए निर्धारित नहीं किये गये अप्रगोत्रिय शसति--बै० स० ७।२।१० पर शा० भा०।

शक्ति (वि०) [शब् + क्त] ध्यान दिया गया या मान लिया गया जैसा कि "शसितवत" में।

शब्द (वि०) [शब् + व्युत्] 1 प्रगप्ता के वाक्य 2 ऊँचे स्वर से पठित।

शब्दव्यूह एक विशेष प्रकार का वैयक्तिक व्यूह।

शब्दवादी 1 भूटीट, केंचुवा 2 एक अड़ीभूटी (बटकी)।

शक्तिमन्त्र कातिकेय।

शब्द (वि०) [शब् + व्युत्] श्रुतिमयूर शब्द प्रियवद प्रोक्त - इति हलायुष दश० २।५।

शब्दकाष्ठा पूर्व दिशा।

शब्दमित्रोः दीपारोपण करना या मंत्र कहना।

शब्दराश्यां वेदान्तदर्शन का मन्त्रम आचार्य अहंकार का प्रवर्तक जिनमें वाङ्मय पदों का पुनर्जीवन करने के लिए धम्मना की स्थापना की।

शब्दपुष्पम् (समृद्धि) या भीड़ आदि कोड़ों का एक।

शब्दकला सभी वृक्ष, जड़ों का वृक्ष।

शब्दः [शब् + च] शब्द का बना ककण। सम० आकर्षण का लुकाव या गोलाई का मोड़, शब्दकारण,

- वक्ष्यः शब्द से निर्मित कथा देखी शब्दध्वनि के द्वारा लक्षित समय।

शतम् (सु०) 1 सौ 2 कोई बड़ी संख्या। सम० च०

शतवार या शत जो सौ चन्द्राक्षुनी से सुसज्जित हो,

- चरणा शतपदी, कनकचूरा, - वेल, चरनी

- कपूरः चन्द्रमा, - लोचनः इन्द्र का विशेषण।

शब्दः [शब् + व्युत्] 1. वृत्तम, रिपु 2. विधेता, हारने वाला।

शब्द०-लक्ष्यार्थ (वि०) शब्दों का मास करने वाला।

शब्दम् रिपु का घर, - लक्ष्य (वि०) शब्दों को मागने वाला।

शक्तिचक्रम् शक्ति की स्थिति से' शुभाशुभ जानने का एक आलेख, चित्र।

शक्ति (वि०) [गप् + क्त] गाय दिया हुआ।

शब्दकरनम् गाय उठाना।

शब्दपूर्वकम् (अ०) गाय उठाकर (कहना या करना)।

शब्दकः पेटो, बर्तन-हर्ष० ४।

शब्दः [शब् + च] 1 आवाज (श्रुति विषय और आकाश का गुण) 2 ध्वनि, रव (पक्षियों या विभिन्न प्राणियों का) 3. सार्थक शब्द 4 व्याकरण 5 क्याति लब्धशब्देन कोसल्ये रा० २।६।११ 6 पुनीत प्रणव (श्रम)। सम०-अक्षरम् पुनीत प्रणव, -इन्द्रियम् शन, मोक्षः 1. वाणी का विषय 2. श्रव्य बेल-क्षव्यम् शाब्दिक मित्रता, संज्ञा व्याकरण का एक पारिभाषिक शब्द, पा० १।१।६८ -स्मृतिः (स्त्री०) भाषा विज्ञान।

शब्दमन्त्र (वि०) शान्त, स्वभाव से शान्तिप्रिय।

शब्दोपन्यास शान्ति के लिए बोलने वाला, शान्ति का वक्तव्य करने वाला।

शब्दनीय (वि०) [शब् + नीय] शान्ति देने योग्य, धन को शान्ति प्रदान करने योग्य।

शब्दीकृतः बहु समय जब कि सभी वृक्ष के फल जाता है।

शब्दोत्पत्ति 1 शब्द की आभा 2 स्कन्द का विशेषण।

शब्दा [शब् + व्युत् + टाप्] 1 लकड़ी या लौकट 2. बूए की कील 3. एक प्रकार की बीजा 4 यज्ञपात्र 5. एक प्रकार का शाल्यविक्रिसागरक उपकरण। सम०

शब्दः - वात दूरी जहाँ तक कोई लकड़ी फैली जा सके।

अवयव [वी + ल्युट्] 1. सोमा, सेटमा 2. विस्तार, वाट 3. सहवास, वीर्यसंभव । सम०—वर्तिका सेविका जो रात्रि की रात्रि विद्याती है,—भूषि: जयन कक्ष, सोने का कमरा ।

शरजो: शरण केंद्रों की दूरी का परास ।

शरणम् [शृ + ल्युट्] 1. प्ररक्षण, सहानुता 2. शरणानार, शरणार्थ 3. आवास, घर 4. विद्यामन्त्र 5. आहत करना, हत्या करना । सम०—आश्रय: प्ररक्षणार्थ पहुँचना, —आश्रय: शरणगृह,—व (वि०),—प्रव (वि०) शरण देने वाला ।

शरण्योत्सना [शरत् + ज्योत्सना] शरदुत्सु की चांदनी, —शरण्योत्सनासुद्धा शशियुतजटाजुटमकुटाम्—सौम्यं सहरी ।

शरीरचिन्ता शरीर की देखभाल ।

शरीरवायु: नुड के शरीर की अवशिष्ट भ्रम ।

शरीरकार: { शारीरिक दम्बर, देह का आकार-प्रकार, शरीररूपि: { सूरत, गवक, शरीर का डीलहील ।

शरीर [शृ + कर्त्तृ, कर्त्तृ नेत्यम्] 1. मने से निमित्त शक्कर 2. कण्डू 3. पत्थरों के गुणों से बहुल भूमि 4. रेत 5. ठीकरा 6. गुणहरी भूमि—स्तिमितवली मणि-शालाशरीर—रा० २।८।१।१६ ।

शरीरक (वि०) [शरीर + कर्त्तृ] कण्डू के कणों से युक्त (जैसे कि देवीसे तट की हवा) ।

शरीर्य (वि०) [शरीर्य + व] शरण देने वाला, प्ररक्षण देने वाला ।

शरणा [शर + आक] 1. लूटी, कील 2. अगुनी—सग-काननपाठपत्र—महा० ४।१३।२९ । सम०—वरीक्षा विद्यापी की परीक्षा लेने की रीति जिसके अनुसार पुस्तक में कहीं भी शरणा से संकेत किया जा सकता है,—पुष्पा: १३ दिव्य जैन,—अन्वय शब्द चिकित्सा से संबद्ध एक उपकरण,—कर्त्तृ (पु०) जराह, शब्द-चिकित्सक,—किन्ता शरीर में घुसे हुए काटे आदि किसी पदार्थ को बाहर निकालना, शरीर महाभारत का नवौं बन्ध (पर्व) ।

शरद्वयवयवम् अवस्थितान ।

शरद्विधिका वर्षों, शब्द को से जाने वाली पालकी ।

शरद्वयवयवो एक प्रकार की बछली ।

शरद्वय [शर + द्यु] 1. हृषिकार 2. लोहा 3. इत्यात 4. स्त्री । सम०—कर्त्तृ शब्दचिन्ता,—निवातवयव शब्दचिन्ता, —अन्वय शब्दचिन्ता बलाने का अर्थान ।

शरद्वयवयव: सधुन, व्याज-वैनी एक गोटदार कन्द ।

शरद्वयवयव सगरी की तसतरी ।

शरद्वय परमेश शरण देव का पाठ, किसी विशेष शब्द का अनुपम देव पाठ जैसे शाकल शब्दा, भावनायन शब्दा, शब्दक शब्दा आदि । सम०—अन्वय देव की

किसी विशेष शब्दा के पाठ का करने वाला विद्यापी,
—शरद्वय शब्द के कारण अंगों में पीड़ा ।

शरद्वयवयव शरद्वयवयव द्वारा स्थापित शब्द व्याख्यातिक केन्द्रों में से कोई सा एक ।

शरद्वयवयव: देव का एक अन्वयपक ।

शरद्वयवयव शरद्वयवयव द्वारा प्रणीत एक अन्वयवयव वा विधि की पुस्तक ।

शरद्वयवयव (वि०) [शरद्वय + वयव] इन्व संघर्षी ।

शरद्वयवयव [शर + वयव, शर + ल्युट्] वैमाना, सेवा करना, बसकाना ।

शरद्वय (वि०) [शर + ल्युट्] प्रभावहीन किया हुआ, हूँ किया हुआ । सम०—शुभ (वि०) उपरत, युक्त नये शान्तगुणों जाते—रा० २।६।१२४,—शरद्वय (वि०) 1. वृत्त रहित 2. निरावेश ।

शरद्वय (स्त्री०) [शर + वयव] विनाश, अन्त । सम०—कर्त्तृ पाप को दूर करने का कोई शक्ति अनुष्ठान, —शरद्वय ऐसे देव मंत्रों का मन्त्र पाठ की पाप को दूर करने वाले समझे जाते हैं ।

शरद्वयवयव (वि०) शब्द के दुष्प्रभाव से बचका हुआ ।

शरद्वयवयव { शब्द का उच्चारण करते समय बिचे बोलने शरद्वयवयव { बोलने पानी से छींटे ।

शरद्वयवयव धीमांसा सुनों पर किया गया शब्द ।

शरद्वयवयव [शर + वयव + वयव] पक्षु बलि देने का स्थान ।

शरद्वयवयव [शरद्वय + वयव] शरीर ।

शरद्वय (वि०) [शरद्वय + वयव] शरद्वय, शिष्य ।

शरद्वयवयव 'कृप' का नाम ।

शरद्वयवयव एक प्रकार का शब्दा, शरद्वयवयव के पीठ ।

शरद्वय (वि०) [शरद्वय + वयव] शब्द से अन्वयवयव रक्षणी वाला ।

शरद्वयवयव एक शब्द का नाम ।

शरद्वयवयव शरद्वयवयव का नाम ।

शरद्वय (वि०) [शरद्वय + वयव] शरद्वयव से अन्वय, शरद्वयव संघर्षी ।

शरद्वयवयव [शरद्वय + ल्युट्] 1. शक्ति सिद्धान्त 2. शक्ति ।

सम०—शरद्वय (वि०) शरद्वय का शक्ति न करने वाला,—शरद्वयवयव शरद्वय का उन्वयवयव करना ।

शरद्वयवयव [शरद्वय + ल्युट्] 1. शक्ति, शक्ति 2. शक्ति, शक्ति, देव का आदेश 3. शक्ति का कोई विधान

4. किसी शक्ति का संज्ञानिक बहाना—इन्व शक्ति शरद्वय व शिष्यानु—मान० १ । सम०—अन्वयवयव (वि०) शरद्वयवयव के अनुष्ठान,—शक्ति (पु०)

शरद्वयवयव शरद्वयवयव का व्याख्याता,—शक्ति (वि०) शरद्वयवयव के नियम वा विधि के अनुसार,—शक्ति: शरद्वय के आचार पर दिया गया शक्ति ।

विषयवाक्य: डीका लटकाने के लिए रस्ती ।

मिला [मिङ् + म + टाप्] 1. दण्ड 2. गुरु के निकट
विद्याभ्यास 3. उपदेश 4. सहाय । सम०—आचार
(वि०) (गुरु के) उपदेशों के अनुसार आचरण करने
वाला ।

मिलनचक्र [मिलन + चक्र] 1. कूटने के नीचे भीर का
मांसक भाग 2. शैववाद में मुनि की एक विशेष
अवस्था ।

मिलाशब्द विर के बागों का गुच्छा, छोटी बागना ।

मिलिन् (वि०) [मिला + इन्] 1. नोकदार 2. छोटी-
बारी 3. ज्ञान की छोटी पर पहुँचा हुआ 4. अजिमाणी
(पुं०) 1. घोर 2. अग्नि । सम०—कण भाग की
विभेदारी,—भूः स्वयं का नाम, भूयुः कामदेव ।

मिलनकारम् 1. प्रस्तरमुद्रण, पत्थर के द्वारा छापने की प्रक्रिया
2. मिलापेल, पत्थर पर खुदाया हुआ अनुशासन ।

मिलननिर्वातः मिलावतु, सीकाजीत ।

मिलनमित (वि०) पत्थर पर बनाया हुआ ।

मिलनैवः वादस्फोति, कील पाँच रोग ।

मिलनैवम् मिलनकार का कारखाना, कारीगर के काम
करने का स्थान ।

मिलनवीथिन् (वि०) कारीगरी का काम करने जीविको-
पार्जन करने वाला व्यक्ति, बिल्सी ।

मिल (वि०) [मो + वृ + प्रो०] 1. धुब, मंगलमय,
सौभाग्ययुक्त 2. स्वस्थ, प्रसन्न, भाग्यशाली, (पुं०)
1. हिन्दुओं के विवेक में से तीसरा 2. पारा 3. सुरा,
स्फिरिट 4. समय 5. तन्त्र, छान्द । नम०—वैदित
शैववाद का दर्शनशास्त्र, अर्कचण्डीपिका अथवा-
शीलित द्वारा रचित शैववाद पर एक ग्रन्थ,—काल-
मुन्दरी पार्वती का विशेषण, शैव, मोक्ष, मूर्ति,
वीर्य, पारा ।

मिलनिवा [मी + सन् + अञ्ज + टाप् + चालोदित्वम्] सोने
की इच्छा ।

मिलनमवित (वि०) मर्त्य से ठिठुरा हुआ ।

मिलुः [मो + डु, सन् + ड्राव, डित्वा] 1. बच्चा, बाल
2. किसी भी जन्तु का बच्चा (बछड़ा, पिल्ला,
बिलीटना आदि) 3. छठे वर्ष में हाथी । सम०
—मायम् (पुं०) ऊँट ।

मिलनम्बर (वि०) बिचरी, कामलोलुप ।

मिलनमिहृषम् बुद्धिमान् व्यक्तियों द्वारा की जाने वाली
मिना ।

मिलनसम्पत्त (वि०) विद्वान् पुरुषों द्वारा माना हुआ ।

मीलकेशम् बहुमनोय से दूरी, कासना ।

मीलनरिचः (पुं०) बहुमनोय का अधिकार ।

मीलनरिचः (वि०) 1. मनोरम, रमणीय 2. आनन्दप्रद,
सुखमय ।

मीलनरिचः (वि०) काशी पर बहने वाले के बीच,
मीलनरिचः }—मीलनरिचः स ते रीच त हत्वा बीच
द्विजन्—उत्तर० २।२८ ।

मीलनान्धः चिरन्तान्, टोप ।

मीलनचक्रः पुष्टा, ताका, पगड़ी ।

मुक्तमयतिः एक ठोले के द्वारा अपनी स्वामिनी की मुगई
नई सत्तर कहानियों का संग्रह ।

मुक्तम् [मुक् + रक्, वि० मुक्त्वा] 1. उन्मत्तता 2. छोला
दोलत 3. बीरे 4. किसी चीज का हट् 5. मुक्त-
मति, स्वोत्पत्ति । सम०—उन्मत्तम् मुक्त्वा
रोग,—बीचः बीरे का होव ।

मुक्तम् [मुक् + मुक्, मुक्त्वा] 1. उन्मत्तता 2. स्पष्ट वक्ता
3. काशी 4. बीच की सफ़ाई का रोग । सम०—बीचः
एक प्रकार का पीचा,—वेद(वि०)मविष करीर कल्प ।

मुक्तमयम् एक नवीन विमल के द्वारा आदिवासी का
प्रदर्शन किया जाता है ।

मुक्तमयम् (पुं०) विष्णु का नाम ।

मुक्तम् (वि०) सम्पूर्ण पर बहने वाला ।

मुक्तमुक्ति उन्मत्त ।

मुक्ताब्जः हाथी का सूँड ।

मुद्र (वि०) [मुद्र + क्त] 1. बाँधा हुआ, बाधवांसा
हुवा, परीक्षित 2. पवित्र, निष्कर्षक 3. ईशान्वार,
परायणा 4. विमुद्र, बलिष्ठ विमलें कुछ निष्कर्षक
न हो (विप० मित्र) । सम०—वैदित्त्वं वीर की
बहु स्थिति यहाँ कि बीच भीर ईश्वर का सामुच्च
मायावृत्ति माना जाता है—बीच (वि०) (विनाश०)
विमुद्र ज्ञान से मुक्त, ज्ञान (वि०) पवित्र बन
वाला, निष्कर्षक नष्टक का बहु मान यहाँ केवल
संस्कृत बोलने वाले पात्र ही दिखाई दे ।

मुद्रि [मुद्र + क्त] (गति० में) बीच न छोड़ना ।

मुद्रनमृत्तम् सोमाय, कल्याण, अमृतुरव ।

मुक्ताब्जः पुत्री का अर्थ ।

मुक्तमुद्रम् सुप्रसन्न विलम्बे बीच वसुधायो की विविध
गणनप्रक्रिया समाविष्ट है ।

मुक्तकासः सुखी काशी ।

मुक्तमयिष्ठम् ऐसा रोगा विलम्बे जाय न जाय ।

मुक्त [मित्र + क्त, सप्रसारणम्] 1. प्रक्रिया, सुरामय
2. समीर ।

मुद्र [मुद्र + रक्, प्रो० वत्स इः शीर्षक] हिन्दु समाज
में चौथे वर्ष का पुत्र (कहा जाता है कि यह पुत्र
के पैरों से उत्पन्न हुआ—पद्म्या सुदीप्यावत—यु०
१०।१०।१२।) । सम०—अजम् ब्रह्म द्वारा दिया
गया था परीक्षा गया बीजम्,—ज्य (वि०) ब्रह्म
की हत्या करने वाला,—वृत्तिः ब्रह्म का व्यवसाय,
संस्कृतः ब्रह्म से ब्रह्म ।

चूरः [चूर + च्] 1. नायक, योद्धा 2. घोर 3. रीढ़ 4. पूर्व 5. हाक का वृक्ष 6. मरार का पीछा 7. विभक्त वृक्ष 8. कुत्ता 9. नुर्वा । सम०—बाघः योद्धा का मनसितत्वं सिद्धांत ।

चूक [चूक + क] 1. विषय 2. बेचने योग्य पदार्थ 3. नौकाधार हथियार 4. लोहे की लकड़ (जिस पर रख कर नाव चलाया जाता है) 5. किसी भी प्रकार का बर्तन 6. नृत्य । सम०—अच्छः छिद का विशेषण - ये सवादाय्य चूकाकुं—महा० १०।७।४७, - अक्सं छिद (वि०) लकड़ा पर लटकाना हुआ, सूली पर चढ़ाना हुआ, आरोपः सूली पर चढ़ाना ।

चूकनामन् चूना हुआ नाव ।

चूच (वि०) [चूच + च्] 1. गुंथावधान 2. साहसी ।

चूङ्गन् [चू + च् नृन्, नृन्, ह्रस्वच] 1. सींच 2. पर्वत की षोटी 3. ऊँचाई 4. स्त्री का स्तन 5. एक विशेष प्रकार का सैनिक व्यवह । सम०—चाहिना 1 प्रत्यक्ष रीति 2. (सर्व० में) एक पक्ष लेना ।

चूङ्गिन् (वि०) [चूङ्ग + णि] सींचों वाला जानवर (पु०) बैल ।

चूडसक (वि०) पूर्णतः पका हुआ ।

चूडसीत (वि०) उभाक कर उठा किया हुआ ।

चूषः [चूष + च्] 1. चूङ्गमूल वस्तु 2. प्रसाद, कृपा ।

चूषाकः } विक्रयि की पहाड़ियाँ ।

चूषासीतः }

चूषकः [चूष + च्] 1. एक प्रकार का गोपिया 2. लटकाया हुआ वर्तन ।

चूषिकन् [चूषिक + च्] 1. अस्थिरता 2. चिथिलता, सुस्ती 3. (दृष्टि की) सुन्दरता 4. अवहेलना ।

चूषमूच (वि०) पहाड़ जैसा भारी ।

चूषाचोचन् चिनामा ।

चूषकी [चूष + च्] पटी, नर्तकी ।

चूषकमिहत्त { (वि०) चूषकीवित, मय का भाव ।

चूषकम् }

चूष [चूष + च्] लाक ।

चूषिकन् (वि०) [चूषित + पा + क] चरिष पीने वाला ।

चूषितचिह्नम् चरिषलाव ।

चूषः [चूष + च्] बुद्धि, लकड़ी, विरोधन ।

चूषकन् [चूष + च्] 1. मार्ग, परिष्करण 2. पाप क्षरावादि से बुद्धि ।

चूषकान्तरितम् सुन्दर आकर, सदाचरन ।

चूषी वनहरिणा, पीली हस्ती ।

चूषीचिह्नः [चूष + च्] पूर्व ।

चूषकः 1. वरुड 2. बाघ, स्वेन ।

चूषन् [चूष + च्] (सर्व० में) लिए गए ।

चूषीचिह्नः [चूषीचर + च्] 1. चूषीरता, पराक्रम 2. अस्तिमान, वमड ।

चूषीचिह्न (नपु०) चूषीरता का कार्य ।

चूषि (वि०) [चूष + च्, टिलोप.] आधारी कल से सर्वत्र रखने वाला ।

चूषकचर नार्द, हजामत बनाने वाला ।

चूषकचर नारियल का पेड़ ।

चूषान [चूष + च्] तमाल का पेड़ ।

चूषाचिह्नली काली मिर्च ।

चूषावा बुनविषी का साम्प्रिक रूप ।

चूषकचोक्षीय (वि०) आकस्मिक लकट ।

चूषनपात बाज का लपट्टा ।

चूषावाचकम् अथ विस्वास ।

चूषेय (वि०) [चू + पा + च्] विस्वासाप, - अक्षेया विप्रलम्भार - कि० १।१।३५ ।

चूष (प्रेर०) अ-आमयति 1 चकाना 2 जीतना, हारना ।

अमचिह्नोच कलाति दूर करना, विश्राम करना ।

अमर्त (वि०) बक कर चूर-चूर, बकान से पीड़ित ।

अमचयन् कान की बाली ।

अमचयन्, -च [चू + च्] 1 कान 2 त्रिकोण की एक रेखा 3 सुनने की क्रिया । सम० चूडक कर्णविबर, चूषकः कान की बाली, कर्णपूल, - आधुनिकः अमचयन गोचर वस्तु, कामों में जाना, कृत (वि०) कहा गया ।

आह्वयिचः आह्व के द्वारा बनाया गया मित्र ।

आह्वयि { (वि०) आह्व के लिए उपयुक्त ।

आह्वेय }

आह्वकः [चू + च्] वह ध्वनि जो दूर से सुनी जाय ।

चित्तसम्ब (वि०) स्वरच, शान्त ।

चित्तसम्ब (वि०) जिसने माहृत का आश्रय लिया है, साहसी, दिलेर ।

ची [चि + च्] 1. दीर्घ 2. वेदवयी, तीनों वेद ।

चीमृदुहन् मोना स्पर्श ।

चीमत् (पु०) 1 मोता 2 लोड ।

चूति [चू + च्] 1 बाली 2 वीति 3 उपयोग, लाभ

4 विद्वान्, क्षत्रिय । सम० अर्थः वैदिक अर्थसूत्रन, जातिः नाला प्रकार के दिग्दर्शक, चूषक (वि०)

कानों को कच देने वाला, - चूष कान दीधना-चिरम् उपनिषदें चूतिचिरस्त्रीमन्त्रमुक्तामभिन् प्रताप०

१।१ ।

चूषीचिह्न (वि०) कल्याण चाहने वाला ।

चूषीचिह्न कस्तूरी ।

चूषाचय (वि०) उत्तम चूष में उत्पन्न ।

चूषीचिह्नम् योस नितम्ब - चूषीचिह्नचक्रम्बर अमन रासकेलिरसकम्बरम् - माता० ।

बीजतत्त्व (वि० व०) वेद और स्मृति से सर्वत्र रहने वाला ।

कल्पकल्पनाम् १. पुट्टों का विग्रह देना २. डीली पाठ ।
कालाधिपत्यः ऐली बहारने का अभाव, प्रधसा या चाप-
मसी का न होना ।

किल्लकल्पकम् श्लेषयुक्त कल्पक अलकार, जिस कल्प के
एक से अधिक अर्थ होते हों ।

कलेभः [किल् + कल्] १ आलिंगन, मैथुन २ व्याकरण
नियमक आगम संयोग ३. एक मन्त्रालकार यही एक
शब्द के कई अर्थों द्वारा काव्य में चमत्कार उत्पन्न
होता है ।

कलेयोपमा उपाया अलकार जिसके दो अर्थ होते हों ।

कलेभकलाह, बृकदान ।

कलोक्च (वि०) [क्लोक् + क्लृप्] प्रथमनीय ।

कलबीषिका कुत्ते का बीजन, दालना ।

कलवट्टा १ कुत्ते की दाढ़ २ गावक का पीषा ।

कलबीषिका [कलवट्टे किल्] कल्पना ।

कलपुरपुद्गलम् कलपुराकम् ।

कलसकलोप (वि०) वायु और मन की गति बचल ।

कलसकलोपम् (नाक का) गचना ।

कलसकलोपम्, क्वाथ, नाथ ।

कलस [कल् + कल्] व्यञ्जनो के उच्चारण में मद्ध-
प्रायणा ।

कलसप्रभृति (अ०) आनामी कल से लेकर ।

कलोक्सीयल (वि०) प्रलस, सुख, मङ्गलमय ।

कलेत [क्लृप्त + कल्, कल्, का] १ सफेद ककरी २ पुनफेद,
पुष्कलतारा ३ बाँधी का तिकका ४ जीरे का बीज
५ मक्क ६ सफेद रत्न ७. बुक तारा । कल० क्लृप्
कल्पना, -कल्प अर्चन, कलैतः १. एक प्रकार का
बुद्ध २ एक प्रकार का तीर्थ, - कारः कलकार, बीरा,
-रक्तः काष्ठ और पानी बराबर-बराबर बिके हुए
-कारणः कल्प क, नाम जो आकल्प कीत रहा है ।

क

ककल छटा भाग ।

ककलकम् फलित ग्यानिष का एक योग ।

ककूम अस्मिन्त का छ लहर ।

कट्यव १ भवमकवी, जीरा २ गिरि छन्द ।

कट्यवु (पु० व० व०) छ कट्यव ।

कट्यववववव 'इय, गुण कर्म सामान्य विवेक और

समभाव' इन छ इयों की स्वीकृति पर आधारित
सिद्धान्त ।

काव्य १ रसराव की एक गति जिसमें केवल छः स्वर
आते हैं २ मिठाई, हलवाई का कार्य ।

काव्यकाह सामान्यता का एक चक ।

क

ककल (स्त्री०) [कल् + कल्] १ उ लडाईं सधमः
सम० काम (वि०) उम म १ एव व रने रागा
जा सुखद है ।

ककलित (वि०) [ककल इतल्] रोका हुआ पन्द किया
हुआ ।

ककल (स्त्री० पर०) १ रोक्ता दमन करना, दवाना
२ सटाना, धीमना ।

ककलकल्प (वि०) जिसने मैथुन करना त्याग दिया २ ।

ककल [कल् + कल्] कल, कलकल, कलकल, कलकल ।

ककल [कल् + कल् + कल्] प्रलस, उखाग ।

ककल [कल् + कल् + कल्] १ (इय०) भौतिक सपके
२ कारोतिक सप ३ योगस्य । सम० विधि
१ ककलकल की प्रार्थना २ गाव जीरा इतर के
साधुओं की दानविकाई केरना की प्रार्थना ।

ककल [कल् + कल्] (गणित०) दो या दो से अधिक
मक्याओं का योगफल ।

ककल (स्त्री०) उरना प्रवृत्त रज इयवे तम सधम
ककलकल महा० १२।१२४।३२ ।

ककलकल (वि०) जिसकी ओरें सुख गई हैं ।

ककलकल (वि०) जिसके अधिमान को बाधात लय
बुका है ।

ककल [कल् + कल् + कल्] १ कृपा देव - ककल-
योगेन ककलकलकलकल भाव० ७।१२८ २ (बुद्ध
का) वेव, आकमन की प्रचण्वता ।

ककल [कल् + कल् + कल्] निष्कल ककलता ।

ककल (वि०) [कल् + कल् + कल्] १ बाधायुक्त (गति)
ककलकल नावककल देवदेव भारत-महा० ३।
०।२ २ नावककल ।

संश्लेषः [सम् + श्ल + क्त] संश्लेष, छेद ।

संश्लेष (वि०) [सम् + श्ल + क्त] जो गहराई तक घुसा हुआ हो—तबों मांसविषयक संश्लेषरहितता—यद्वा० १।१७४।१ ।

संश्लेषरहितः एक वर्ष की छेद ।

संश्लेष (स्वा० पर०) परस्पर मिश्रण ।

संश्लेषम् [सम् + श्ल + क्त] संश्लेष ।

संश्लेषः [सम् + श्ल + क्त] समिश्रण, मूलधमा ।

संश्लेषिका (सर्व०) व्यवहार्य वा विचार्य का साधन ।

संश्लेषः [सम् + श्ल + क्त] संश्लेष ।

संश्लेषम् [सम् + श्ल + क्त] १. धार्मिकता करना, नेतृत्व करना २. प्रवर्धन करना, विस्तारण ।

संश्लेष (वि०) [सम् + श्ल + क्त] १. कुम्भ, उत्तेजित २. अवधीत, उठा हुआ ३. श्वर-उत्तर कर्कर कथाता हुआ ।

संश्लेष (सम् + श्ल + क्त + क्त) १. सहस्रति, अनुमोदन ३. सम्पत् ज्ञान ४. प्रत्यक्ष ज्ञान ।

संश्लेष [सम् + श्ल + क्त] १. संश्लेष—सुखीरुतममा-माया संश्लेष के विषयकम् यद्वा० १२।१५।१५ २. विमल—संश्लेष केम्—सं० उ० १।११।११ ।

संश्लेष (स्वी०) [सम् + श्ल + क्त + क्त] व्यवस्था—रायनः संश्लेष के यद्वा० १।२८।४२ ।

संश्लेष (वि०) [सम् + श्ल + क्त + क्त] बाँटा हुआ, विभाजित, पृथक् किया हुआ ।

संश्लेषः [सम् + श्ल + क्त] कुटी ।

संश्लेषम् [सम् + श्ल + क्त] सोना, गीद केना संश्लेषो-त्पादनयोः—प्रतिभा० ।

संश्लेषः सम् + श्ल + क्त] बाधा, विघ्न ।

संश्लेषक (वि०) जो शोनीय वस्तु को पुनः रचता है ।

संश्लेषः [सम् + श्ल + क्त] शिकोचना, शिकुचन, —पर्व-वत् संश्लेषकसंश्लेषः संश्लेषितारयोः—य० दी० ५।१ ।

संश्लेष (वि०) [सम् + श्ल + क्त] १. मिष्टा हुआ, लोप्य हुआ २. बराबर भावा हुआ ।

संश्लेषः [सम् + श्ल + क्त] पूर्णवृद्धि, सम्पुन्य, कथित ।

संश्लेष (वि० पर०) व्यवस्थित करना, एकत्र करना ।

संश्लेषः [सम् + श्ल + क्त + क्त] व्यवस्था, कम्-त्पादन ।

संश्लेष (वि०) [सम् + श्ल + क्त] अपने संकल्प को पुरा पूर्ण करने का (जैसा कि 'संश्लेषण' कहाँ के साथ अपना कथ पुरा करने का) ।

संश्लेषक एक संस्कार विधेय संश्लेष का निवारण समा-विष्ट होता है ।

संश्लेषक संश्लेष के रूप में स्थल तुलना ।

संश्लेष (वि० पर०) बृद्ध करना, सुरक्षित रचना ।

(आकल्प है)—संश्लेष विधेय मार्ग—कम्० ७।१८५ ।

संश्लेष (स्वा० उच०) समीक्षण के लिए पर्वण ।

संश्लेषः [सम् + श्ल + क्त] १. आश्रित २. किसी पक्ष का कोई भंड ।

संश्लेष (कम्०) [सम् + श्ल + क्त] पूरी कीर्ति या क्वालि ।

संश्लेष (वि०) [सम् + श्ल + क्त] मिश्रित, अव्यव-स्थित, —अव्य (कम्०) राशि, डेर ।

संश्लेष (वि०) [सम् + श्ल + क्त] १. विषयानुगत २. अनुगत ।

संश्लेषक (वि०) [सम् + श्ल + क्त] १. साथ लगने वाला २. संकोच करने वाला, शिथिल करने वाला, —आत्मनो न भावेन बाधा सत्यमनाया—रा० २।२५।३९ ।

संश्लेषक [सम् + श्ल + क्त] शिथिलता, अवसाद ।

संश्लेषः [सम् + श्ल + क्त] १. अतिथि परिभाष २. अतिथि शब्द ।

संश्लेष (स्वा० पर०) १. स्थित करना, उठा रचना २. काम में लगाना ।

संश्लेषकः } अन्य मरण का समुद्र ।

संश्लेषकः }

संश्लेषकः }

संश्लेषकः संसार कपी कीचद ।

संश्लेषकः संसारिक जीवन कपी वृक्ष ।

संश्लेष (स्वा० मा०) १. सम्मिलन करना २. सेवा करना, सेवा में प्रस्तुत रहना ३. व्यस्तता होना ।

संश्लेष [सम् + श्ल + क्त + टाप्] १. किसी सेवा, समाज में मिश्रण भाग २. उपबोध, काम में लगाना ३. बाहर संसार, दूसा बर्चना ।

संश्लेष (तना० उच०) १. व्यवस्था—ने पञ्चापपञ्चो-सहितः पापानि संस्तुयते—युक्० ९।४ २. बर्ना-वैता पर पर्वण (पवित्र) ।

संश्लेषक (स्वी) जिने वयका कर उज्ज्वल कर दिया गया है—संस्कारकाले विरा मनीषी—जु० १।२८ ।

संश्लेषकस्य प्रभावेन, परिष्कार—वि० १।७।९ ।

संश्लेषक (वि०) आध्यात्मिक अनुशासन, वा धर्म-कुरावों के द्वारा मिलने अपने आपकी पवित्र कर दिया है ।

संश्लेषः [सम् + श्ल + क्त] १. परिष्कार २. तैवारी ३. पूर्णता ४. कोविदाका ।

संश्लेषक [सम् + श्ल + क्त] रोकना, संघन में डालना, पकड़ना ।

संश्लेष (वि०) [सम् + श्ल + क्त] शिथिलता हुआ, बखेरा हुआ—संश्लेषः प्राप्त संश्लेषकः—य० ५।८ ।

संस्था (म्वा० वा०-प्रेर०) 1 (नगर) निर्माण करना
2 पुन स्थापित करना 3 दाह सस्कार करना,
(जैसे अस्थिस्थापनम्) अस्थि प्रवाहित करना, या
जल समायित देना ।

संस्था [सम् + स्था + क्त] 1 महामणि हुता
संस्थामतिक्रान्ता -- रा० ४।५।७।८ 2 दाह सस्कार
3 सिपाही, गुप्तचर ।

संस्थापुल्ल. गमने में लगा पोशा कौ० अ० १।२० ।

संस्थानम् [सम् + स्था + क्त] 1 सरकार को मस्तिन
रत्न का कार्य -- कौ० अ० २।७ 2 भाग, प्रमाण,
अथ 3 सोपदेश, कीर्ति ।

संस्थित (वि०) [सम् + स्था + क्त] मुख्यस्थित संस्थि-
तहाविवाह -- रा० ३।३।१।६ ।

संस्थितिः (स्त्री०) [सम् + स्था + क्तित्] 1 एक ही
अवस्था में पक्षित बड़ा रहना 2 महत्त्व देना 3 कप,
बाकल 4 सातत्य, नैरल्य ।

संस्तुत (वि०) [सम् + हन् + क्त] 1 सुबुद्ध मनो वाला
2 मारा गया ।

संस्तुतस्तुत (वि०) एक दूसरे का हाथ पकड़े हुए ।

संस्तुतिः [सम् + हन् + क्तित्] 1 पवि, (कपड़े की)
सीजन 2 मोटा होना, वृद्धन ।

संस्तु (म्वा० पर०) विपचयाशी करना, भटकाना, भ्रष्ट
करना -- भुरान् भक्तानसहायान् -- महा० १२।५।
२३ पर भाष्य ।

संहारस्तुः संहार करने वाला वह देवता ।

संहर (वि०) 1 कर बटन, हाथों वाला 2 कर लगाने
योग्य 3 किराये से मुक्त ।

संकीकः वह पुरुष जो इतना पुस्त्यहीन है कि स्वयं समोग
करने के पूर्व अपनी स्त्री को परपुरुष के पास
भेजता है ।

संस्तुस्नानम् (वि०) केवल एक बार स्नान करने वाला
मन्० ११।२।४ ।

संस्तुहातु (वि०) जो राशि एक किलो में न चुकाकर
एकमुक्त चुकाई गई हो ।

संस्तुमतिः सभावनामान, केवल एक ही विकल्प ।

संस्तुभित्त (वि०) जो तुल्य प्रकट हो गया है ।

संस्तुतिक (वि०) संबोधक अण्व्य से जुड़ा हुआ ।

संस्तुहरकृत्यो गणेश की पूजा करने का शुभ दिन माघ
कृष्ण या आशुक्ल चतुर्थी ।

संस्तुलनम् [सम् + कल् + जिच् + क्त] दाहसस्कार ।

संस्तुर्बन्ध [सम् + हन् + क्त] अहकार ।

संस्तुरः [मय + क्त + अच्] गोबर ।

संस्तुरश्च (वि०) जिसके मातापिता भिन्न भिन्न जाति
संस्तुरजात के हो, मिश्र मातापिता की संज्ञान ।

संस्तुरीकरणम् जातियों का मिश्रण ।

संस्तुम् (म्वा० वा०) शीघ्रैवेहिक कृत्य करना । अन्वेषित
करना ।

संस्तुप्रथम (वि०) इच्छा से ही उत्पन्न, मानस -- संकल्प-
प्रधान कामान् मन० ।

संस्तुपय (वि०) किसी इच्छा पर आधारित ।

संस्तुम् [सम् + कल् + क्त] 1 बुद्ध, लड़ाई 2 विकल्प ।

संस्तुमन् [सम् + कल् + क्त] मृत्यु -- रा० २।११।१२ ।

संस्तुकोशः [सम् + कल् + क्त] जैसे स्वर से विकल्प
करना ।

संस्तुलित (वि०) [सम् + कल् + क्त] 1 बिज पर
सरोज आ गई हो 2 बिज पर कच्चा आदि पड़ गया
हा प्रमिश्र, मलिन ।

संस्तुम् [सम् + कल् + क्त] 1 करवाधार, घर 2 कुत्तु ।

संस्तुम् [सम् + कल् + क्त] विनाश ।

संस्तुकोषम् [सम् + कल् + क्त] शोक का प्रत्यक्ष आधार,
धनका ।

संस्तुम् [सम् + कल् + क्त] 1 बुद्ध, लड़ाई 2 नाव
3 स्वाभिमतिपरक-शत्रु ।

संस्तुम् [सम् + कल् + क्त] 1 बुद्ध, लड़ाई 2 नाव
3 स्वाभिमतिपरक-शत्रु ।

संस्तुम् [सम् + कल् + क्त] 1 बुद्ध, लड़ाई 2 नाव
3 स्वाभिमतिपरक-शत्रु ।

संस्तुम् [सम् + कल् + क्त] 1 बुद्ध, लड़ाई 2 नाव
3 स्वाभिमतिपरक-शत्रु ।

संस्तुम् [सम् + कल् + क्त] 1 बुद्ध, लड़ाई 2 नाव
3 स्वाभिमतिपरक-शत्रु ।

संस्तुम् [सम् + कल् + क्त] 1 बुद्ध, लड़ाई 2 नाव
3 स्वाभिमतिपरक-शत्रु ।

संस्तुम् [सम् + कल् + क्त] 1 बुद्ध, लड़ाई 2 नाव
3 स्वाभिमतिपरक-शत्रु ।

संस्तुम् [सम् + कल् + क्त] 1 बुद्ध, लड़ाई 2 नाव
3 स्वाभिमतिपरक-शत्रु ।

संस्तुम् [सम् + कल् + क्त] 1 बुद्ध, लड़ाई 2 नाव
3 स्वाभिमतिपरक-शत्रु ।

संस्तुम् [सम् + कल् + क्त] 1 बुद्ध, लड़ाई 2 नाव
3 स्वाभिमतिपरक-शत्रु ।

संस्तुम् [सम् + कल् + क्त] 1 बुद्ध, लड़ाई 2 नाव
3 स्वाभिमतिपरक-शत्रु ।

संस्तुम् [सम् + कल् + क्त] 1 बुद्ध, लड़ाई 2 नाव
3 स्वाभिमतिपरक-शत्रु ।

संस्तुम् [सम् + कल् + क्त] 1 बुद्ध, लड़ाई 2 नाव
3 स्वाभिमतिपरक-शत्रु ।

संस्तुम् [सम् + कल् + क्त] 1 बुद्ध, लड़ाई 2 नाव
3 स्वाभिमतिपरक-शत्रु ।

संस्तुम् [सम् + कल् + क्त] 1 बुद्ध, लड़ाई 2 नाव
3 स्वाभिमतिपरक-शत्रु ।

संस्तुम् [सम् + कल् + क्त] 1 बुद्ध, लड़ाई 2 नाव
3 स्वाभिमतिपरक-शत्रु ।

संस्तुम् [सम् + कल् + क्त] 1 बुद्ध, लड़ाई 2 नाव
3 स्वाभिमतिपरक-शत्रु ।

3. उत्प्रेषण किया हुआ,—अभिप्रेतः पूरी समझ,
—अनुप्रासित (वि०) भाषाकारो,—अभिप्रेत (वि०)
रिक्त पढ़ने वाला,—अभ्यासः निकटता, उपस्थिति ।

अन्यतन्त्रिता शीघ्र समय का नुकसान ।

अन्यतः 1. उपयुक्त समय का क्षाता 2. जो अपने मूल
वर्णों को वाद रखता है ।

अन्यतन्त्रिता ज्योतिष, अविच्छिन्नता ।

अन्यतन्त्रिता लड़ाई का फूट पड़ना ।

अन्यतन्त्रिता (वि०) [समर्थ + च्युत्] 1. समर्थन करने वाला,
प्रभावित करने वाला 2. समर्थ, योग्य,—अन् (मनु०)

सर्वर काष्ठ, चन्दन की लकड़ी ।

अन्यतन्त्रिता [समर्थ + च्युत्] किसी हानि या अपराध की क्षति
पूति करना ।

अन्यतन्त्रिता (स०) निरन्तर से, ब्यापक रूप से ।

अन्यतन्त्रिता [सम् + सम् + सम् + च्युत्] दुर्बलाधीन, पर-
कीटा ।

अन्यतन्त्रिता [सम् + सम् + ह् + च्युत्] निरन्तर, संलग्न ।

अन्यतन्त्रिता [सम् + सम् + ह् + च्युत्] निरीक्षण, नुजा-
यना ।

अन्यतन्त्रिता (वि०) सार्वक, शिक्षाप्रद, बोधवन्ध ।

अन्यतन्त्रिता [सम् + सम् + ह् + च्युत्] किसी ऐसे लोको की पूति करना जिसका
अन्यतन्त्रिता [सम् + सम् + ह् + च्युत्] पहाड़ा बरन दिया गया हो ।

अन्यतन्त्रिता (वि०) एक वर्ष से अधिक आयु का, जो एक वर्ष
पूरा कर चुका है ।

अन्यतन्त्रिता (वि०) [सम् + सम् + ह् + च्युत्] 1. रोना हुआ,
नुकसान हुआ 2. जिस पर आक्रमण कर दिया गया है ।

अन्यतन्त्रिता (वि०) लड़न मिला हुआ पदार्थ ।

अन्यतन्त्रिता [सम् + सम् + ह् + च्युत्] व्याख्या ।

अन्यतन्त्रिता [सम् + सम् + ह् + च्युत्] 1. व्यवहार
2. प्रक्रिया ।

अन्यतन्त्रिता [सम् + सम् + ह् + च्युत्] समान्य, समुदाय,
—अन्य १०१०१३८ ।

अन्यतन्त्रिता (वि०) [सम् + सम् + ह् + च्युत्] 1. विस्तारित
क्षेत्रता हुआ 2. समासार ।

अन्यतन्त्रिता [सम् + सम् + ह् + च्युत्] निवारित, नाशित ।

अन्यतन्त्रिता (वि०) 1. (कर्म) पड़ना 2. कम करना
3. प्रवृत्ति करना 4. स्वीकार करना ।

अन्यतन्त्रिता [सम् + सम् + ह् + च्युत्] 1. (किसी उक्ति का)
प्रकाश 2. समझौता कर लेना, समझना का हल कर
लेना ।

अन्यतन्त्रिता [सम् + सम् + ह् + च्युत्] एक बलकार का एक नेत्र जिसमें किसी
उक्ति का अर्थित अभिव्यक्ति होता है ।

अन्यतन्त्रिता (वि०) अज्ञान में लीन, अज्ञानि में स्थित ।

अन्यतन्त्रिता अज्ञान-जन का अभ्यास ।

अन्यतन्त्रिता (वि०) [सम् + सम् + ह् + च्युत्] लोभित हुआ ।

अन्यतन्त्रिता (वि०) [सम् + सम् + ह् + च्युत्] 1. साधारण

2. समस्त (सम्पा०) 3. बराबर का, वैसा ही । सम०

—अन्य (वि०) उच्चारण की समान इन्द्रिय वाला,
एक ही उच्चारण स्थान वाला (स्वर) ।

अन्यतन्त्रिता (वि०) 1. समान अनुराग वाला 2. व्यव-
हार कुशल, बुद्धिमान् ।

अन्यतन्त्रिता (वि०) समान रूप से सम्मानित ।

अन्यतन्त्रिता (वि०) एक ही उक्ति वाला ।

अन्यतन्त्रिता सम्बन्ध का बहु भाग जो वाक्य की पूति
करता है ।

अन्यतन्त्रिता [सम् + सम् + ह् + च्युत्] (शरीर का) विघटन,
मृत्यु मनु० २१२४४ ।

अन्यतन्त्रिता [सम् + सम् + ह् + च्युत्] 1. मूल रूप को
धारण करना 2. उपपत्ति ।

अन्यतन्त्रिता (वि०) [सम् + सम् + ह् + च्युत्] 1. दोहराया
गया, साध ही वर्णन किया गया 2. परस्पर से
प्राप्त ।

अन्यतन्त्रिता [सम् + सम् + ह् + च्युत्] 1. सामान्यतः वेदपाठ
2. परस्पर से प्राप्त शास्त्रीय वचनों का संग्रह ।

अन्यतन्त्रिता [सम् + सम् + ह् + च्युत्] साहसिक
कार्य की भावना, साहसपूर्ण कार्य ।

अन्यतन्त्रिता [सम् + सम् + ह् + च्युत्] प्रसन्न करना,
आराधना ।

अन्यतन्त्रिता (वि०) [सम् + सम् + ह् + च्युत्] सवार, बढ़ा
हुआ ।

अन्यतन्त्रिता (वि०) जिसने बहुत तान लिया है ।

अन्यतन्त्रिता (वि०) एक ही प्रश्न से सबद्ध, समान प्रश्न
वाला ।

अन्यतन्त्रिता [सम् + सम् + ह् + च्युत्] 1. निरीक्षण
2. लक्ष्य, मनन ।

अन्यतन्त्रिता (वि०) [सम् + सम् + ह् + च्युत्] सप्रसारणम्
1. कर्मित, मुख्य 2. प्रवृत्त भाषात प्राप्त ।

अन्यतन्त्रिता (वि०) [सम् + सम् + ह् + च्युत्] बरा हुआ,
बुलत (वैशिक) कीतुहलसमाविष्ट ।

अन्यतन्त्रिता (वि०) [सम् + सम् + ह् + च्युत्] 1. हावस
बधाया हुआ, लाजना की हुई 2. विपत्ति करने
वाला ।

अन्यतन्त्रिता (वि०) [सम् + सम् + ह् + च्युत्] लीचा हुआ
(जैसे वनस्पति बोरी) ।

अन्यतन्त्रिता (वि०) [सम् + सम् + ह् + च्युत्] सव
एक दम मिल कर ।

अन्यतन्त्रिता (वि०) [सम् + सम् + ह् + च्युत्] 1. समान,
साधारण 2. मिलता जुलता 3. प्रेषित ।

अन्यतन्त्रिता [सम् + सम् + ह् + च्युत्] सदाचारण का नियम
(वैशिक) ।

समिधावाचनम् 1. यज्ञाग्नि पर समिधाए रक्ता 2. बह्व-
चारी के लिए विहित दैनिक अभिहोत्र ।
समीक्षा [सम् + ईक्ष् + क्त] 1. देखने की इच्छा,
विबुद्धा 2. आध्यात्मिक ज्ञान ।
समीरण [सम् + ईर् + णिच् + ह्यट्] पीप की सख्या ।
समुच्चयासङ्कारः एक असंकार का नाम ।
समुच्चयविषया समुच्चयासंकार से बनी उपधा ।
समुच्चयः [सम् + उत् + णि + क्त्वं] 1. सचय 2. युद्ध,
अर्थात् 3. बुद्धि, विकास ।
समुच्चिन्त (वि०) [सम् + उत् + णि + क्त] 1. ऊँच
उठाया हुआ 2. हिकोरे लेता हुआ ।
समुच्चय (वि०) उँचा, समुन्नत ।
समुच्चयान् [सम् + उत् + ण्य + ह्यट्] 1. उद्योग
---महा० १२।२३।१० 2 (ब्रह्मा) लहराना 3 (पेट
की) घुबन ।
समुदायवाचक (वि०) वस्तुओं के समूह को प्रकट करने
वाला (वाच्य) ।
समुदायवाचकः 'समूह' की अभिव्यक्ति करने वाला वाच्य ।
समुदाय (वि०) [सम् + उत् + ह् + क्त] महान्, प्रचण्ड,
समुदाय (वि०) [सम् + उत् + यम् + क्त] 1. उठाया
हुआ, समुन्नत 2. संवार, तत्पर 3. निष्पन्न ।
समुद्रः अत्यन्त डोबी सख्या ।
समुद्रचमिता } नदी, दरिया ।
समुद्र कली }
समुद्र वीक्षित् }
समुद्रवाच्यः [सम् + उत् + स्तम् + ण्यम्] सहारा, ४२३
टेक ।
सम्पत्तः [सम् + पत् + ण्यम्] संप्रेषण (जैसा कि 'हृत-
संपात' में) ।
सम्पद् (स्त्री०) [सम् + पद् + णिच्] अविग्रहण ।
सम्पन्नम् [सम् + पद् + क्त] पवारित (बाढ़ के पश्चात्
संतोष का चिह्न) ।
सम्पन्न (वि०) [सम् + पर + ण + क्त] मृत ।
सम्पुट, [सम् + पुट् + क्त] योनिर्द्ध ।
सम्पुन्यकर्म (वि०) जिसकी कामना पूरी हो गई हो ।
सम्पुन्यकर्मणाम् (वि०) पूरा कर पाने वाला ।
सम्पुन्यः [सम् + पुण् + ण्यम्] योगफल ।
सम्पुन्य (वि०) [सम् + पुण् + क्त] मित्र बना हुआ ।
सम्पुन्यतः [सम् + प्र + ण + क्त] योग की एक रणधिति
जिसमें प्रथम का विषय स्पष्ट रहता है (वि००)
अक्षरवाचक ।
सम्पुन्यवर्ति [सम् + प्र + पुण् + णिच्] प्रवृत्तप्रवर्तित्व ।
सम्पुन्यवाचकोक्तः वैदिक परम्परा की दलन वाला -- सम्प-
दायवाचकोक्त अनुवाहकवेति पातम्बलाः ।
सम्पुन्यवाचकियः परम्परा का लोप ।

सम्पुन्य (वि०) [सम् + प्र + पुण् + क्त] देरित,
प्रोत्साहित ।
सम्पुन्योक्त (वि०) [सम् + प्र + पुण् + ण्यम्] (कवि०)
चन्द्रमा और नक्षत्रों का संबंध ।
सम्पुन्यतः [सम् + प्र + पुण् + ण्यम्] मानसिक धारिता ।
सम्पुन्यत (वि०) [सम् + प्र + ण्य + क्त] पहुँचा हुआ,
प्रकट हुआ, अभिगत ।
सम्पुन्य [सम् + पुण् + क्त] 1. सम्पुन्यता 2. अकर्मित
3. तुल्य 4. अन्त, प्रमाण ।
सम्पुन्य (वि०) [सम् + पुण् + क्त] 1. ठोठ, बरा हुआ
2. बोही, देखोदेही ।
सम्पुन्य [सम् + पुण् + ण्यम्] 1. मूठकी पीपना, घुसा
तानना 2. बिहोड़ 3. बनावट, देखोदेह ।
सम्पुन्यवेचनम् रवीन्द्र का घर ।
सम्पुन्य [सम् + पु + ण्यम्] 1. अकर्म वात 2. अकर्मित, अन्त
महा० १३।६।११ 3. ज्ञान बोध १३ ।
सम्पुन्यिन् (वि०) [सम् + पु + ण्यम्] उत्पादक रणधिति ।
सम्पुन्यित (वि०) [सम् + पु + णिच् + क्त] जिसके
घटने की आशा हो -- तब सि सम्पुन्यितवृत्ति पीपनम्
कि० २।७ ।
सम्पुन्यितम् अनुमान ।
सम्पुन्य (जुहो० उन्न०) उठाना -- दक्षिणः काके सम्पुन्य
स्वयम्पुन्य तदा -- महा० १।१७।८२ ।
सम्पुन्य (वि०) [सम् + पु + क्त] 1. सम्पुन्यित 2. डोबी
(प्लवि) ।
सम्पुन्यकृत (वि०) ज्ञान के मुक्त ।
सम्पुन्यवाचक (वि०) सर्वथा उन्नत, पूरी तरह संवार ।
सम्पुन्यवेचन (वि०) अनुमान के मुक्त, अनुपुन्य ।
सम्पुन्यवाचक्य (वि०) बराबरे हुए मन वाचक ।
सम्पुन्यतः [सम् + पु + क्त] सम्पुन्य देना ।
सम्पुन्यवाचक्य आवाधिकरण का निर्णय -- बुद्ध० १।१०।४ ।
सम्पुन्य (वि०) [सम् + ना + क्त] 1. समान व्युत्पन्न का
-- पुराण ब्रह्मसंमितम् -- भाग० १।१।४ 2. आत्मवेचन
-- महा० १।६।८।१ ।
सम्पुन्योक्त (वि०) [सम्पुन्य + क्त] बोध, उपपुन्य ।
सम्पुन्यवेचन [सम् + पुन्य + क्त] विषय ।
सम्पुन्यः [सम्पुन्य + ण्यम्] (कहूरी की) टक्कर ।
सम्पुन्यवेचनम् तही ज्ञान सम्पुन्य मानसधारी ।
सम्पुन्यविधिः अन्तर्दृष्टि, अन्तरावबोधनम् ।
सम्पुन्य [सम् + पु + क्त] (काव्य०) हुन्य स्वर ।
सम्पुन्य (वि०) काव्यरत से परिपुन्य -- कव्याभिनीं वरत-
विषयता मुनादयाम् -- सिद्धान्तम् १०० ।
सम्पुन्य [सम् + पु + क्त] 1. सत्पुन्यों का उत्पादन, -- सर्वानां
वाच्यवेचनम् महा० १२।५।१४ 2. अन्त के अन्त
में महाभाष्यता (विसर्ग भी) ।

सर्वनिष्ठि. [व० त०] सवि की शक्ति, (मुष्ठी या मस्तकबुद्ध में रहित) ।

सर्वव्यापक कील, विधि, प्रथमयक्ति ।

सर्व (सर्व० वि०) [मृतमनेन विषयम् - सु + व] 1 सब, प्रत्येक 2 सम्स्त, सब मिल कर । सम०—अभाव सब का बनावत्त्व, सब की विषयता, अव्यतिरिक्त महाप्रसासक,—अदिन (वि०) सब कुछ सा जाने वाला,—अस्तिनास एक सिद्धांत जिसके आधार पर सभी वस्तुएँ वास्तविक मानी जाती हैं, काव्य जिससे सब प्रेम करे, बुद्ध (वि०) सब कुछ देखने वाला—प्रथमम् (अ०) उन्ने पहुँचे,—वेदिन् (पु०) गट नाटक का पात्र,—सत्य (वि०) सर्वव्यापक,—सत्य विधि-शान्ती वर्षक उत्तमवस्त्रैश्चरानि भाग० १०। ८। १५ मर्याद वह सब जो अवशिष्ट बचा है, स्वार्थ एक भेदित राग जिसमें अनन्य राग से भेदित व्यक्ति के लिए आत्मबलिदान का निधान है ।

सर्वव्यापक (वि०) सर्वव्यापक विषयवाणी ।

सर्वथा (अ०) [सर्व + धातु] सब प्रकार ।

सर्वव्यापक (नपु०) अस्त में सर्वथा ।

सर्वव्यापक सूत्र ।

सर्वव्यापक [व० त०] जल के प्रवाह की शक्ति ।

सर्वम् [सु-सु + अच्] (वेद०) आदेश, आज्ञा ।

सर्वव्यापक (नपु०) मिल्य होने वाला पुनीत वैदिक वर्गकृत्य-अभिहितविधि ।

सर्वम् (वि०) समान हूँ वाली मिश्रवाणी ।

सर्विकार (वि०) 1 अपनी अन्य उन्नत समेत 2 गठने वाला, जो सब गल रहा हो ।

सर्विकृतम् [व० त०] अनि वह ।

सर्विकृतम् द्वारा लक्षण ।

सर्विकृतम् (अ०) उद्देश के साथ, पञ्चराष्ट्र या उल्लेखन के साथ ।

सत्य (वि०) [सु + यच्] अनभिज्ञत, जिस पर भी न झिंका गया हो, सुन्दर मो० सू० ४। १। १६ पर सा० वा० ।

सत्यव्यक्त (वि०) 1 दायाँ और बायाँ 2 तात्त्विक पूजा की स्मार्त तथा कौल रीतिवा—सत्यव्यक्त्य-मार्गस्था अभिज्ञ० ।

सत्यव्यक्त ईश्वर की कृपा में विद्यमान रहने वाला ।

सत्यव्यक्त सैत का सन्धान ।

सत्यव्यक्तरी अनाय की शक्ति ।

सत्यव्यक्त कृषिविज्ञान ।

सत्यव्यक्त अनाय (गर्ह की शक्ति) का दंड, अनाय की शक्ति ।

सत्य (वि०) [सत्य + अच्] 1 और 2 सत्यत्व, ह. (पु०) मार्गकोश का महीना, हृन् (नपु०) एक

प्रकार का नमक (अ०) के साथ, रहित । सम०

--अव्यक्त (वि०) असह्यमान होने वाला, आकाश समालाभ, मिल कर बातचीत करना, उल्काविन् (वि०) विद्रोही, उद्दण्डकार, कर्तृ (पु०) सहकारी सत्यव्यक्त एक ही जाट पर मिलकर बैठना—आय 1 माटवर्ष 2 सहानुबन्धिना,—सत्यव्यक्त गारौरीक सत्यक ।

सहसावृष्ट मोर लिया हुआ पुत्र ।

सहस्रम् [समान इति - हस् + र] 1 हजार 2 बड़ी संख्या । सम० अर, अरम् सिर की थोटी में उलटे अक्षर के समान गते जो आम्ना का वासन माना जाता है, सु इन्द्र का विशेषण, सूर्य का विशेषण,—दसम् कमल का फूल,—कोकलम् बिल्व के हजार नामों के पाठ करने के समान एक हजार बाह्या का भाजन बगता (प्रायश्चित्त करने) ।

-सिद् (पु०) कस्तूरी, वेदिन् (पु०) कस्तूरी

सहायार्थम् (अ०) भाष के 'म' या 'द' के लिए ।

सहस्रक (वि०) सहस्रक के रूप में ।

सामाजिक (वि०) [सामं ट्ठम्] समस्य में उदात्त धृत के (गोत्र) ।

सामाजिक (वि०) [सम्कार, ठम्] 1 सम्कारों से सत्य रहने वाला 2 (आधुनिक बोल चाल में) सांस्कृतिक ।

सामाजिकीयताय दोमासा वा एक नियम जब कि विद्वान् में उसका अपनी प्रकृति के गुण या धर्म नहीं पाये जाते मो० सू० ५। १। ११-२२ पर सा० वा० ।

सामाजिकीयताय सामर्थ्य सम्काराष्ट ।

सामाजिकीयताय अन्तर्गत एक प्रयत्नज्ञान ।

सामाजिकीयताय मांशे का परोप ।

सामाजिकीयताय भाषिनिदान ।

सामाजिकीयताय पुत्री, बली ।

सामाजिकीयताय लघु ।

सामाजिकीयताय समर्थ की जाड़ी ।

सामाजिकीयताय [सति, व्यञ्ज] 1 सहस्रति 2 दसकाय 3 विद्वत्, वा उपाय—सामाजिकीयताय परिहास वा वैदिकीयताय दसम् जान० ५। १० ।

सामाजिकीयताय सामर्थ्यवर्धन पर ईश्वर कृपा द्वारा रहित एक धर्म ।

सामाजिकीयताय (वि०) जाने मुख्य तथा सहायक दोनों रहित (वेद०) ।

सामाजिकीयताय (अन०) लीडिंग के बहाने एक बाजेनी ।

सामाजिकीयताय (वि०) अत्यधिक, अत्यन्त ।

सामाजिकीयताय (वि०) स्वात्मिक, अत्यधिक के अन्तर्गत ।

सामाजिकीयताय 1 अत्यंत, अत्यंत 2 अत्यधिक के अत्यधिक होने का आय ।

सामान्य सन्तान, बराबरी ।

सारथिक [सारथ + ठञ्] सारथ भूतु को सारथ ।

सामय 1 भक्त 2. पाँचगोन बाबा से सबब रखने वाला, सामयसर्वथ कृष्ण का विरायण ।

साधक (वि०) [साध् + धृञ्] उपसंहारार्थ उपसहार परब ।

साधनम् [साध् + धृञ्] 1 उपकरण, अभिकरण 2 संघाती 3 समयना ।

साधनीय (धा० पर०) साधन होना, उपाय होना ।

साधनीय (वि०) [साध् + धनीय] 1 सिद्ध करने योग्य, कार्य का साध करने के लिए उपयोग 2 प्राप्त करने योग्य ।

साधितव्यायुक्त (वि०) सिद्ध करने योग्य वस्तु में अनिहित तत्त्व का लिए तकशास्त्र का प्राविभाषि शब्द ।

साधव्यस्तनः झुठमूठ का आक्षेप (तर्क०) ।

साधारणः ध्यात में एक नियम का अभ्यवर्ती ही और समस्त समान रूप में लगाने हो ।

साधारणवक्ता समान पदार्थ, सार्वभौमिक ।

साधारण्यम् (धा० पर०) साधारण्य ।

साधु (वि०) [साध् + उन्] 1 अच्छा उनम 2 योग्य, उचित 3 ब्रह्मा, गुरु 4 सही 5 सुख । सम्० - कृत (वि०) उचित रूप में किया हुआ, -दही साध, -कृत (वि०) सुविचारित, सोल (वि०) धर्माभा, -कृत (वि०) सके व्यक्तियों का साम्य ।

साम्प्रदाय (वि०) [सम् + प्रा] अन्तराल या अवकाश सहित ।

साम्प्रदायिक [सम् + प्रा + ठञ्] सम्मान वा हस्तक - नाहत्या मत्स्यसाधु कुटी दिव्य साम्प्रदायिक मति भाग १११४१० ।

साम्प्रदायिक (वि०) जो करने में मूल है, विधिगत हो ।

साम्प्रदायिक आध्यात्मिक सुत्र - सा ज्ञानव्याख्यानोपक्रमकमनुपमितम् मारा १११ ।

सामय्यम् [समय + धृञ्] कथथा कुशलज्ञेन अथिलकमय सोलाया सामय्य प्रान्तवा है रा० ३१७१२० ।

साम्य (सु०) [सो + मन्ति] आचार सार, धर्म स्वर सामय्यके लोके अतिशयोक्ते - मा० पू० ७१२७ पर का० भा० । सम्० कलम् निष के स्वर में, -समान (वि०) पूर्णतः हवाला वा निष, -दिवाक्य 1 एक आक्षेप का मूल पाठ 2 साम का प्रयोग ।

सामय्यवक्ता अधीनस्थ राजाधी का अवल ।

सामय्यवक्ता (वि०) पक्षीसी ।

सामय्यिक [समय + ठञ्] 1 समयना 2 मति विवरक केवच ।

सामय्यिक [समय + धृञ्] 1 सामान्य प्रकार 2 एक अवधारणकार 3 सामय्यिक कार्य 4 सामय्य लक्षण

पहुचान । सम्० बर्न. (बर्न०) (उपमान और उपमेय) का समान गुण, -साधन्य (वि०) समानता को बर्न बाबा, साधन्य बहु बाबा जो सब पर -न है ।

सामय्य (वि०) साधन्युक्त ।

सामय्यविक (वि०) [समुदाय + ठञ्] समूह से सबब रखने वाला, सामय्यिक ।

सामय्यवक्ता : सहायक 2 आवश्यकता, 3 सक्त ।

सामय्यविक (वि०) [समुदाय + ठञ्] 1 पारलौकिक, 2 २ वर्ष सबबी - रा० ४१३४० ।

सामय्य [सा + धृञ्] 1 माप 2 समय ।

साध [सा + धृञ्] 1 समाप्ति, अन्त 2 मध्य 3 बाध ।

सम० अक्षय्य साधना का भोजन, -पूर्वः 1 सट 2 चन्द्रमा, -सम्पन्नम् पूर्यात् ।

साधव्यस्तन (ब०) सवेरे घाम ।

साधव्यस्तन साधरासीन वर्मानुष्ठान ।

साधु (वि०) सारथ ।

सार २१ + १२ - अर्थात् 1. कम, नति 2 सुप्रसन्न

3 गौरव 4 बराबर, पम । सम्० - साध (वि०)

सबब बगाना, -मुच प्रधानवृक्ष वा बर्न मुच

(वि०) बोलत, बोल के कारण मारी, -कलम्

(वि०) बड़िया और बटिया, उपबोली और व्यर्थ,

-सामय्य गुरु या बला का दुहना ।

सारथी सगीत का एक विशेष राग ।

सारथिकम् सारथी, सारथ ।

सारथि [स + धृञ्], सह रवेन सारथ (कोटकः ठप निवृत्तः) इन् + १] 1 रथवान् 2 पञ्चदशक ।

सारथिकम् एक प्रकार का साक ।

सारथिकी कयल जैसा सुन्दर बोलों वाली महिला, पञ्च-साधना ।

सारथिकम् बदास्वान, कषय ।

सारथी (वि०) समूह से छटा हुआ, वृक्षप्रष्ट ।

सारथिक (वि०) डेढ़ वर्ष - २ रहने वाला ।

सारथिकम् डेढ़ वर्ष ।

सारथिक (वि०) सुप्रसन्न, सकारो से युक्त ।

सारथिक (वि०) सोमित, नियन्त्रित ।

सारथिकीवित (वि०) जिसका जीवन उनी सेव है, विद्यने मनी, और जोना है ।

सारथिकीवित बहु भवन जिसके दोनो ओर वा सुली पार्श्ववीथिया (कुले दालान) हैं ।

सारथिकीवित यज्ञोपवीत ।

सारथिकीवित (वि०) आध्वर्यवृत्त आचरण वाला ।

सारथि (वि०) [सार + ठञ्] 1 सहनशील 2 जो प्रतिपत्नी का मुकाबला का सके 3 जीवने वाला ।

सारथि (वि०) हृदयों से युक्त ।

साहित्यत्वान् (अ०) हृदिद्वयो की चटखने की ध्वनि के साथ ।

साहसिकरन् प्रवक्ष्य कारं, अधापुं काम करना ।

साहसिकम् उतावलान् ।

साहस्य (वि०) [सहृ + अन्] हजारा, अत्यन्त अगिन ।

साहाय्यकर (वि०) सहायता करने वाला ।

साहाय्यवान् सहायता देना ।

सिह [हिम् + अच् पूर्वा०] एक प्रकार की समीप ध्वनि

सिह्यन्तम् एक प्रकार का पीतल ।

सिक् (तुदा० उभ०) मिगोना दुबकी लेना ।

सिक्कितो [सिक्का + इति, पूर्वा०] धनुष की ज्याँटा होना ।

सित्ता [सा + क्त, स्त्रियां टाप्] 1 चीना लोख ' गमा ।

सित्तासित (वि०) श्वेत और काला भिन्ना हुआ ।

सितकण्य मणेर मरदन वाला, चातक पत्नी अचकुहुर ।

सितकण्य राबडेल, मराल, हननी ।

सितकण्य हस, मराल, हननी ।

सितकारण सफेदहाथी, सितकुञ्जर ।

सितकण्य एक प्रकार की खाद, मिर्ची का छला ।

सिद्ध (वि०) [सिद् + क्त] 1 निश्चित अरिबर्नीय

2 विशिष्ट पक्का 3 अमल, —ह (पु०) बिसे इसी

कीन में सिद्धि प्राप्त हो गई है । सम०—अव्ययम्

एक प्रकार का अन्न (कहते हैं, इसके प्रयोग से

प्रधान की वस्तुएं दिखाई देने लगती हैं), —अर्थक

सफेद सरसो, आवेस 1 अचि की अविध्य बाणी

2 अविध्य वक्ता, उद्योतिषी, —औषधम् विशिष्ट

औषधोपचार, काय (वि०) जिसकी इच्छाएं पूरी

हो गई हैं, —वचः आकाश सिद्ध पूर्णा अपूर्ण

—हेतुम् सुदृढ स्वर्ण सरा सोना ।

सिद्धि (स्त्री०) [सिद् + क्तित्] अपूर्णता पराप्ति ।

सिद्धिकामक भवस का एक रूप ।

सिद्धारण्यपति गणेश की मूर्ति ।

सिद्धमन्त्रकम् संधा नमक ।

सिद्धवीवीरा सिद्धु नदी के आसपास के प्रदेश में रहने

वाले ।

सिरावक पीपल का वृक्ष ।

सिरामुकम् मांस ।

सिराल (वि०) [सिर + जालच्] अमल सर्वा वाला, नल-

मांसियों के जाक से युक्त ।

सिन्धुपु (वि०) [स्ना लम् + उ, बाटीहिलच्] स्नान

करने की इच्छा वाला ।

सिस्तिक्ता [सिद् + क्त + आ, चापौडित्स्वम्] छिड़कने की

इच्छा ।

सीमाशक्त दुधिका अमीशक ।

सीमाशक्त अक्षय, सराव पीना ।

सीमाशक्त [सीमा + अज्ञानम्] सीमा की जानकारी न

हाना ।

सीमाशक्त (वि०) सीमाशक्त के किनारे हल चलाने

वाला ।

सीमासेतु पर्वत-शृङ्खला या बाँध जगि जो सीमा का

नाम दे ।

सीरवाहक हलवाहा, कृषक वेतिहर ।

सुकष्ट पक्षी ।

सुकष्ट (वि०) दक्ष सुयोग ।

सुकल्पित (वि०) सुसंज्ञित श्रवितारा से नम ।

सुकल्प अष्टा सोरा ।

सुलज (वि०) अष्टा काय से उत्पन्न ।

सुधोव (वि०) यक्ष-ध्वनि से यवन मोड़ी श्रावण वाला ।

सुधमं नृषं यक्ष भोजन ।

सुधप (वि०) 1 अत्यन्त पांडित्य 2 कष्टघ्न 3 अत्यन्त

शौर (नारारण्य) ।

सुनाम (वि०) सुनाम भूस्वर से युक्त ।

सुनार (वि०) 1 अत्यन्त उज्ज्वल 2 बहुत ऊँचे स्वर

वाला 3 जिसका आवा की पुनर्निर्माण अत्यन्त सुन्दर है ।

सुनारा भीमवीर्यकृति के भी भद्रा में से एक (साम्ब०) ।

सुवर्जित (वि०) 1 अत्यन्त कुशल 2 अतिविश्राम ।

सुवृष्ट (वि०) सुदुर्गम जा बड़ी कठिनाई से किया जा

सके ।

सुवृष्टिकल्पित (वि०) असाध्य रोग से उत्पन्न, जिसके रोग

की प्राय चिकित्सा न हो सके ।

सुवृष्टिक अष्टा पञ्चप्रदंनक वा अष्टापक ।

सुलभम् बकराम की मवा ।

सुनिश्चित (वि०) भली प्रकार चमकाया हुआ ।

सुपठ (वि०) सुवाक्य जो गढ़ा जा सके ।

सुपर्ण पक्षी पौरा ।

सुपेक्षम् (वि०) सुन्दर सुन्दार ।

सुसमाय (वि०) बहुत बड़े आकार का ।

सुसधु (वि०) बहुत मूरा, सुन्दर ।

सुसका 1 सुशुभित 2 कस्तूरी ।

सुनीचकम् बाँधी ।

सुमृति [सु + मृ + क्तित्] 1 समक समृद्धि 2 तीतर

पक्षी ।

सुमन्त्रकम् (वि०) अत्यन्त सुशुभित ।

सुमन्त्र (वि०) [सु + मन् + स्वद्] सहायक ।

सुमत्त (वि०) विशुद्ध ठंडा, शिल्पक मूर्ती ।

सुमन्त्रः सुम सुहृद् ।

सुमन्त्रः तरुण ।

सुमन्त्रकम् (वि०) अत्यन्त सुन्दर ।

सुमन्त्र (वि०) पुष्प विकसित ।

सुमन्त्रित (वि०) 1 अत्यन्त 2 निर्णीत ।

मुसुवृत्तिः (स्त्री०) [मु + वृत् + क्त - क्तिन्] अन्वी प्रकार
छिपाना ।

मुसुद्वय (वि०) अपने कथन का पालन करने वाला ।

मुसुलता (वि०) ठोक निधाने पर लना / नीर आदि ।

मुसुद्वय (वि०) सेवा किए जाने योग्य जिसका आशाना में
अनुसरण किया जा सके ।

मुसाधिष्ठानम् आनन्द का स्थान ।

मुसाभिधोष्य (वि०) जिस पर आशानी से बढ़ाई की
जा सके ।

मुसापारम्भ (वि०) जिसकी सेवा आशानी में का जा सके
जो आशानी में प्रसन्न किया जा सके ।

मुसाग्रयनः कृत्यार्थं प्रकृतम् ।

मुसाग्रय (वि०) मनोरम प्रिय प्यारा ।

मुसाग्रयनम् आनन्द की अनुमति ।

मुसाग्रय (वि०) दे० 'मुसुद्वय' सू० ३५ ।

मुसाग्रयः कायम् ।

मुसाकारः सफेदी (बूना) करने वाला ।

मुसाकारित (वि०) सफेदी किया हुआ ।

मुसापोमिः बन्धनम् ।

मुसाग्रकर्तृ बुने का पदार्थ ।

मुसाग्रोपनिषदाग्र का एक पात्र ।

मुसाग्र (वि०) [मु + नी + क्त - क्तिन्] 'शिरःपत्र' अथवा
मेथुन, दूधकी मनीषी ।

मुसाग्रकालम् रामायण का तीसरा अरण्य ।

मुसाग्र - बालकः सोने हुए कं भागने वाला धातुवा
हाथी ।

मुसाग्रि - मेरु पर्वत मुसक पहाड़ ।

मुसाग्रतः ।

मुसाग्र (सुर + इष्ट) ऐरावत द्वीप ।

मुसाग्र (सुर + इष्ट) मान का १५ ।

मुसाग्र (वि०) (सुर + उग्र) देवप्रधान ।

मुसाग्र एक प्रकार का पहाड़ जिसे दूर दूर तक
देख सकते हैं ।

मुसाग्रिनी - सरिङ्गनी, धुनी - लवी, सरित्, आपगा (स्त्री०) ।
गंगादी ।

मुसाग्र कल्पवृक्ष ।

मुसाग्रिनी अम्बरा ।

मुसाग्र छिपकली ।

मुसाग्र पत्त, गोप, बैल ।

मुसाग्रि (वि०) गलाह बेचने वाला, कलाल ।

मुसाग्र लवीर ।

मुसाग्रोरिका सोने की बारी ।

मुसाग्र स्वर्ण निर्मित भाग जो उपहार में दो आय ।

मुसाग्र रत्नमय ।

मुसाग्र (पु०) मुनहरी रोमों वाला मेघ ।

मुसाग्र मेघ पर्वत ।

मुषि (स्त्री०) पित्र, मुराह (‘मुषिर’ का वैदिक रूप)
मुष्या [स्वप् + मन् + ज + टाप् बातोडित्वम्] सोने
का इच्छा ।

मुष्यम् [मू + मन् मुच् + नेट्] 1. दाँत का लोखलापन

2 वसा, बर्बाद 3 कण । सम० - दन्तः सरसो, - नूतन्

मूष्य तत्त्व मति (वि०) तीक्ष्णबुद्धिवाला,

शरीरम् मूष्य शरीर (वि०) स्थूल शरीर),

स्फोट. एक प्रकार का कोड़ ।

मुष्यो विद्या की तात्त्विका या मूषि ।

मुषी 'मुष' की (‘मुषा’ की) चटवनी ।

मुषीकर्म (पु०) मिलाई का कार्य ।

मुषीक - मन्

मुषीक मूष की चट ।

मुषीक मूष का चट ।

मुषीक सोने का बना घाता ।

मुषीक - मन्

मुषीक पुराणों में वर्णित मूष्य (कहने हैं कि उसने
समस्त महाभारत और पुराण सुनाए थे) ।

मुषीक प्रमद वंदना ।

मुष्य [मूष + क्त] 1 मेथन 2 रसाक्षि, आरेख

3 मर्कट आमुल 4 बरगा, डोरा 5 रेखा । सम०

अग्रयः यन्नाग्रय, बुनाई का बन्धन, चीला

ममिया का खेज, (६४ कलाओं में से एक) ।

अथ मूषी की पुस्तक मूष (पु०) 1 मूषाग्र

मूषा 2 रमयवता प्रबंधक पालः 1 माप वाले

मूष म मापन का कार्य करना 2 कार्य का आरम्भ,

—स्थान पर आगुने के एक प्रथम का प्रथम अणु ।

मुसाग्र - मन् रसाग्र ।

मुसाग्र पाक विज्ञान ।

मुसाग्र - गुर वामदेव मुसाग्रनिदेशविभ्रमप्रतीक-

वामदेवनिदेशम् ने० १८१२०० । मुसाग्र पाठ की

मिलता है) ।

मुसाग्र (सुर + अग्र) बड़ गाने का अधोक्षक ।

मुसाग्र मूष मग की पत्ता ।

मुसाग्र (सुर + उग्र) अथवा साधन, तरकीब ।

मुसाग्र [मू + क्त] बृहस्पति ।

मुसाग्र उत्तरायण मार्ग ।

मुसाग्र रविवार आदि-विवार ।

मुसाग्र मूष की पत्ता ।

मु (उच्चा० उच्चा० उच्चा०) पार करना, आर-पार जाना

प्रेर० प्रकट करना, व्यक्त करना ।

मु [मू + क्त + टाप्] 1 गीत 2 सारस ।

मु (स्त्री०) 1 जन-जन करनी हुई रत्नों की लकी

2 मार्ग, पथ ।

मु [मू + क्त] 1 जन्म-मरण का चक्र—स्थान्ये

तवाक्षिप्रारण कृतिभिर्भयस्या भाग० १०।६०।
१। २ सृष्टि ।

लेक [सिक् + बज्] नहाने के लिए कोड़ा ।

लेखनम् [लिख् + ल्यट्] १ निर्माण, उद्गार २ अभिलेख ।

लेखु [लि + लुच्] १ प्रकाश्य मरणात् २ व्याख्या-
परक भाष्य ।

लेखानाम् सामविशेष ।

लेखाख्यम् सेना पति का पद ।

लेखाहाः सेनाधीश, सेनाध्यक्ष ।

लेखाश्च सैनिक, सिपाही ।

लेखी १ सूई २ सीधन, टांका ३ [लिख्] से दो हड्डीयों
का जोड़ ।

लेखिन् [लि०] [लिख् + जिनि] व्यवहारी, उपासक आग्राहक ।

लेखर [लि०] ईश्वर की सत्ता मानने वाला ।

लेखरबाहू ईश्वर की सत्ता के समर्थन में तर्क ।

लेखरसाध्वनम् सांख्य को एक शाखा जो ईश्वर का गन्ता
को मानती है ।

लेखिनी [लिखत् + ङीप्] रेत से बनी हुई ।

लेखम् [लेना + ङ्य] लिखि ।

लेखकोश लेना का विग्रह ।

लेख्यम् [ले०] असाधारणी से, उदासीनता के साथ ।

लेखके [लि०] अभिधानी, बयान ।

लेख्य [लि०] १ उद्य से सज्ज रखने वाला २ गृह
महिल, व्याज के साथ ।

लेख्यम् [ले०] मंत्रीद्वारे डल मे ।

लेख्यार [लि०] मन्त्रायक वस्तुओं से युक्त ।

लेखादाय [लि०] सामग्री से युक्त ।

लेख [लि + ल्यट्] १ लेख २ एक पितर ३ सोमवार ।

लेखप्रदाक सोमवार के लिए पुराहितों का नियत करने
के अधिकारों में सम्पन्न व्यक्ति ।

लेखसत् [पु०] पितरों की एक विशेष शाखा ।

लेख्य [लि०] जिसकी दोनों ओरों के बीच में शलाका का
एक वृत्त है ।

लेखारम्भिक [लि०] [मुखगति + क्] जो दूसरे व्यक्ति
को प्रकटा है कि तुम दात को तो मुख से सोये हो ।

लेखिक [लेख् + क्त] १ जुलाहा २ बुना हुआ कपड़ा ।

लेखिकस्तम्भः [ले० + त०] मरल की उमरी हुई लुकी छन ।

लेखिकतिः शाली का पत्र ।

लेखिकुलम् [लेखिकुल + क्त] सीताय की मलमलय
स्थिति, बस्याण, समृद्धि ।

लेख्य [लि०] [लेख् + ङ्य] उत्तर दिया में सबब रखने
वाला ।

लेख्य [लेख् + ङ्य] १ अक्षय्य भाग्यवर्धन २
उपवृत्त विशेषण - बाधक्यम् अथ सोमवर्ग नाम्नी
विश्वीर्षवर्धन - मन् २।१२५ २. लेख्य बह

३ विनीत छात्र ४ शायी हाथ ५ मार्गदर्शक का
महीना ।

लेखारम्भ [पु० + त०] लेख का पति पर आधारित व्यो-
मिष की सम्यक्ता ।

लेखर [लि०] [लेख् + ङ्य] सन्तोष लब्धों ।

लेखरम् [लेख् + ङ्य] सुस्वरता, स्वरमाधुर्य, स्वर-
योजना ।

लेख्य [लेख् + ङ्य] १ लेख २ लेख ।

लेख्यवर्गणी पावेती ।

लेख्यपुत्रः लेख्य का बेटा (लेख के लिए प्रयत्न लिख
नाम) ।

लेख्य [लेख् + ङ्य] १ कथा २ लड़, अक्ष, भाग
३ पद का नमूना ४ लेख्य या लेख्य ५ लेख का कोई
भाग ६ पाँचों भाषाओं के लिप्य ।

लेख्ययत्न सन्तोष मी० मू० १।१।५ पर शा० भा० ।

लेख्यम् [लेख् + ल्यट्] लेख्यता ।

लेखित [लि०] [लेख् + क्त] १ पाठ्य २ अपूर्ण
अध्यास ।

लेखितम् [लेख् + क्त] हानि विनाश ।

लेख्य बृद्ध वयः, लेख्य वृद्ध वयः वा लेख्य — मी० मू०
५।१।५ पर शा० भा० ।

लेख्यकुलम् लेखी के उद्देश्य गुण स्वर ।

लेख्यकुलम् लेखी के उद्देश्य गुण स्वर ।

लेख्ययत्न लेखी, लेखी ।

लेख्ययत्न लेखी लेखी के उद्देश्य गुण स्वर ।

लेख्ययत्न [लि०] अपूर्ण लेखी में लेख्य विधाने जाण
गन् [गन्] ।

लेखितकुलम् [लि०] लेखित की एक श्रेणी ।

लेखितकुलम् [लि०] लेखित कुलम् के साथ ।

लेख्य [लि०] लेख्य गन् करने वाला, लेख्यगन् ।

लेख्ययत्न [लि०] जिसके पद लिखित की गये हों, अक्षर
गये हों ।

लेख्यकर, लेख्य [लि०] जिसके हाथ लिखित हो गये हों ।

लेख्यमणि [लि०] जिसकी मुद्रा कुटिल हो गई हो,
मरुद्धि ।

लेख्य [लि० + भा०] अधिकार करना, फैलाना, प्रेरण
बढ़ाना, रोचना ।

लेख्य [लेख् + ङ्य] १ अक्षरगुण, लिखितता
२ लेख, लेखी ।

लेखितवाक्यवृत्ति [लि०] जिसने अध्यापन रोक लिया,
लेखी रोकने वाला ।

लेखितवाक्यवृत्ति [लि०] जिसने लेखित पानी की अपने
अक्षर राख रखे हैं — मी० मू० ।

लेख्ययत्न [लेख् + ङ्य] लेखी से संबंध रखने वाला ।

लेखितवाक्य [लि०] टकटकी लगा कर लिखित करने हुए ।

सितसितप्रवाह (वि०) बहुत बीसी बल से बहने वाला ।

स्त्रीविः [स्तु + विवृन्] बह, डर ।

स्तेम् (प्रा० उभ०) अस्त्व वायव से बायीं की अपवित्र करना - ता तु वः स्तेनवेदायम् अनु० ४।२५९ ।

स्तोककवम् (वि०) कुछ काना, जिसमें बोझ भरेला हो ।

स्तोकमूल (वि०) बोधी बायु वाला ।

स्तोत्र 'स्तोम' के रूप में गाये जाने वाले मन्त्रों की साम की अपवा शिचिकमन्त्रि - मन्त्रकारम्बोऽत्रिकी न च नैः सर्वत्र त स्तोत्रा नाम भी० सू० १।२।३९ पर शा० भा० ।

स्तोत्रहार साधुन ।

स्त्री [स्तृ + कृट् + क्रीप्] दीमक, सज्जद चीटी ।

स्त्रीकृतवः स्त्रियों का फुलका कर छलने वाला ।

स्त्रीविषय मंथन ।

स्वपथ नन्द्यो स्वपथमुद्गम्य जनः परीता - जानकी० ७।१ ।

स्वतन्त्रत्व (पु०) स्वतन्त्र, (लाङ्गली) भूकमल, स्वतन्त्र पर उगने वाला कमल पुष्प ।

स्वलोकाभिनि (वि०) बिना कुछ विछाये (चारों) भूमि पर सोने वाला ।

स्वविराजति (वि०) बड़ा की मर्यादा रखने वाला ।

स्वायुः [स्वा + नृ + प्रा० गतवम्] 1 तना, पेड़ का टूट 2 बैठने की एक विशेष युद्ध ।

स्वायुधूत (वि०) जो पेड़ के टूट की तरह गति हीन हो गया हो ।

स्वानाम [स्वा + स्वट्] 1 जीवन कम 2 जीवित रहना 3 बुद्ध में आक्रमण की एक रीति 4 ज्ञानेन्द्रिय ।

स्वानकुटिकासनम् घर छोड़कर लौपरी में रहना सिरहो मुण्डनाहारि न स्वानकुटिकासनम् - महा० ३.२००। १०४ ।

स्वानेपति (वि०) [अमुक्तमास] दूसरे के स्वान पर अधिकार करने वाला ।

स्वाकम् [स्वा + जिप् + स्फुट्, पुकागम] 1 हाथना 2 दीर्घायु होना 3 भाष्यकार ।

स्वाकम् [स्वापन + टाप्] 1 नाटक की प्रस्तावना या आमुख 2 भाष्यकार भरोना ।

स्वाप्य (वि०) [स्वा + जिप् + प्याप्] 1 बंद किये जाने या बंद किये जाने योग्य 2. (लोक में) बंद जाने योग्य ।

स्वाधिका 1 वैरभाव 2 टिकाकरण ।

स्वाधीनुरीक्य वाक्याय की छली में बनी छरी - तैत्ति० ।

स्वतिष्ठ (वि०) वह पुत्र जिसका किञ्च उत्तमना-कम्पा में है ।

स्वतिष्ठोत्थ - उन्निव (वि०) प्रतिष्ठा का वाक्य करने वाला ।

स्वतिष्ठ (वि०) वैतिष्ठता की सीमा को बांधने वाला ।

स्वतिष्ठिप् (वि०) सामाजिक नियमों का उल्लंघन करने वाला ।

स्विर (वि०) [स्वा + किरप्] 1. बुद्ध, ज्ञान हुआ

2 अक्षय, निरपेक्ष 3 स्वामी 4 विराजित 5 कबीर सत्त 6 डोस 7. नन्द्युत । तम० - कथाय (वि०)

अपधीन, जिसका निरंतर हाव हो रहा है, - कर्त्तव्य (वि०) टिकाऊ, देर तक चलने वाला, - वायु (वि०)

जिसकी बाल का विस्तार किया जाय, - विस्तार (वि०) वृद्धता पूर्वक कथन बढाने वाला ।

स्वनाकम् " एक प्रकार का लेखम्बु 2. यह का एक का 3. गद का एक अनुचर ।

स्वरीपुष्पः वह बोधा जो बनी सवारी करने के काम में आया हो - सि० १८।२२ ।

स्वृत् (वि०) [स्वृत् + कृप्] जो शरीर की या ज्वरि (व्याध्या या विवरण) के साथ न लेकर छोटे वीर पर दिया गया हो, नीतिक । तम० - इच्छा (वि०) जिसकी इच्छाएँ बहुत बड़ी हुई हों, - कर्त्तव्यः स्वर्गाभि, पेड़ के जलते हुए तने की भाव, - कर्त्तव्यः नीतिक सत्तर ।

स्वर्देव [स्विर + प्यमा] इन्द्रियों का वदन या निकलप ।

स्वानकमल, कुम्भः नहाने के लिये बल का बड़ा ।

स्वानतीर्थम् नहाने के लिए पुण्यस्थान, बाढ़ ।

स्वानसारी नहाने का जर्जिया, मशीनम् ।

स्वायुधूत बन्ध की डोरी, जवा ।

स्वायुधूत नाबी ।

स्नेहकम् 1 न रखने का बर्तन ।

स्नेहेकस्तिन (२०) एरड ।

स्नेहविमर्शित (वि०) जिसके शरीर में रेश मकर बसा हूँ ।

स्नम् [स्वा० भा०] अकस्मात् फिर जान या जान, नाशः चलने लगना ।

स्नान्मुक्त (वि०) कूने पर अच्छा लगने वाला ।

स्नर्दिलम्, - कार (वि०) कूने में कसा या पीका कर ।

स्नर्गुण [व० त०] कूने का गुण (जैसे कि सन्ध का ।

स्नर्गुण (वि०) स्नर्गुण से बोझा गया ।

स्नर्गुण (वि०) जिसे वृद्धि वृद्धि है ।

स्नर्गुण (वि०) जिसे केवल कूना ही क्या है ।

स्नीत (वि०) [स्नात् + क्त, स्नीयात्] बसा हुआ, कूना हुआ ।

स्नीतलम् (वि०) अल्पत प्रसन्न, परम भावस्थित ।

स्नृत् [स्न० तुषा, पर०] 1 पूर पड़ना, कटना, कूना 2 शिकना, कूना 3. (रौप) बाल्य होना ।

स्नृत् (वि०) [स्नृत् + क] बद्धुत बकाचारम् ।

स्नृत् [स्नृत् + कृट्] कूना, कटना, विस्तृत होना ।

स्फूर्ति (स्त्री०) [स्फुट् + फिज्] आत्मस्वाभा करना, जीन
मारना, डेको बहारना ।

स्फुरोद्दीपक (वि०) काबोद्दीपक, प्रेय का जमाने वाला ।

स्वरकचा प्रथवालाप, प्रेयालाप ।

स्वरसात्मन् कामशास्त्र ।

स्वार्त्तविधि, प्रयोगः स्फुटियों में विहित प्रक्रिया ।

स्वयवल्गु दिसावटी दान ।

स्वकनुति, गर्व बुर करना ।

स्वरभान् (वि०) जो आवश्यक करता है ।

स्मृ (स्मा० पर०) शिक्षा देना ।

स्मृतम् [स्मृ + स्त] स्वरण, याद ।

स्मृतमात्र (वि०) जिसको केवल स्मरण ही किया हो
ज्योंही सोचा त्योही ।

स्मृतिस्मरण विधिग्रन्थ ।

स्मृतिविषयः अपने कर्तव्य का ध्यान बिलाने के लिए अभि-
प्रेत डाट फटकार ।

स्वम् [स्वम् + वज्] 1 बुद-बुद टपकना, पसीना 2 जीक
का रोम विशेष 3 चन्दमा ।

स्वम् (स्मा० जा०) गड्ढा होना ठहरना ।

स्वस्तहस्त (वि०) जिसने पकड़ डीली कर दी हो ।

स्वस्वम्भः मृगयान् रत्न जिसके बीच से पानी सरता
दिखाई देता है ।

स्वस्वित्ः अग्नि, आग ।

अतस्तु (नपु०) 1 शरीर के रघ्न (जो पुरुषों में ९ तथा
स्त्रियों में ११ होते हैं) 2 बस परम्परा ।

स्वाकित (वि०) अपना कमाया हुआ ।

स्वानन्दः अपने, आप में आनन्द ।

स्वकर्मस्व (वि०) अपने कर्म में लीन, अपने काम में व्यस्त ।

स्वकृतम् अपना किया हुआ कार्य ।

स्वगीचर (वि०) अपने कार्य तक ही सीमित ।

स्वबीज आरम्भ ।

स्वमनीषा अपना मत या विचार ।

स्वमुक्ति आचाररेखा जो कर्म तथा लम्ब रेखा के निरो को
मिलाती है ।

स्वतन्त्रता 1 स्वातन्त्र्य, स्वाधीनता 2 मौलिकता ।

स्वध्यात्मिक स्वध्यात्मिक चेतना ।

स्वजन्म (वि०) नीद में उत्पन्न ।

स्वयवचित्त (वि०) 1 खुद प्राप्त किया हुआ 2 स्वय
पका हुआ ।

स्वयवीचरः वह जो अपना पूर्ण प्रभु हो, परमेश्वर ।

स्वयवक्त (वि०) स्वेच्छा से वैचार ।

स्वस्तिक स्वर्ग को आचर वैकुण्ठ पहुँचना ।

स्वर्गनि पूर्व ।

स्वर्गान् पूर्व ।

स्वर्गान् अष्टरा ।

स्वराष्ट्रः एक प्रकार की संगीत रचना ।

स्वरोचतः स्वरनग ।

स्वरकणः स्वर का हिलना ।

स्वरभिन्नम् वासुरी का स्वरवाला छेद ।

स्वरभिन्नम् नावङ्ग,

स्वरविभक्तिः स्वरों का पुष्पकरण ।

स्वरसात्मन् ध्वनिविज्ञान, स्वरविज्ञान ।

स्वरित (वि०) [स्वर + इत] 1 यक्त, मिश्रित
2 उच्चारित, ध्वनित 3 उदात्त अनुदात्त के बीच का
स्वर, मध्यमस्वर ।

स्वर्गपति — यमनम् मृत्यु, स्वर्ग बने जाना ।

स्वर्गार्थ 1 स्वर्ग जाने का मार्ग 2 स्वर्गार्थ ।

स्वर्गरेतम् (पु०) मृग ।

स्वस्वाङ्गुति कनिष्ठिका, कन्नो अङ्गुलि ।

स्वस्वपुष्प (वि०) अदृग्दर्शी

स्वस्वस्मृति (वि०) जिसे बहुत कम याद रहे ।

स्वस्तिकर्मन् (नपु०) कल्याण करना ।

स्वस्तिकार स्वस्ति का उच्चारण करने वाला बंसी,
चारण ।

स्वस्तिक स्वास्तपाठ करने वाला चारण ।

स्वागतप्रश्न मिलने पर स्वाग्धादि के मन्त्र में पूछना
कुशल होम की पूछना ।

स्वाहः (काव्य के श्रवण या पठन से) रसानुभव ।

स्वाहुपिच्छा पिच्छजूर ।

स्वाहुपुष्पी मीठा नीद ।

स्वायव्यमन्त्र निद्रालुना ।

स्वामिन् (पु०) 1 यज्ञ का यजमान 2 मन्दिर में स्थापित
देवमूर्ति ।

स्वाव्यम् (शरीर और आत्मा की) रश्मि स्थिति ।

स्वावत्त (वि०) जो अपने ही अधिन हो अपने ही
अधिकार में हो ।

स्वचित्त (वि०) 1 जिसे पसीना निकल आया हो, पसीने
से तर 2 पिचका हुआ पसीना हुआ ।

स्वित् (वि०) आछिन, प्रिय, मुपुषित ।

स्वैरवन्त्रम् जिसमें बफारा दिया जाय, पसीना जाने वाला
यम ।

स्वैरकचा अवाकित वातालाप ।

स्वैरविहारिन् हृकानुसार भ्रमण करने वाला ।

स्वैरिणी यमगाह्य ।

हृषः [हृप् + षप्, पुषो० वषाजिबः] 1. चोड़ा 2. उतार, गिरा (बस समाप्त में प्रयुक्त हो) 3. चोरी 4. चड़ी चड़ी शीलों में रहने वाला एक चलपत्ती 5. बाला, बीमारता। तम०—कृष्णम् एक प्रकार की दुष्टिवाचक महिला, - कृष्णम् छोट, - हारप् मानस शील के पास की एक बाटी - हंसहार मृगपक्षिचोबर्तन यत्कीम्बरप्रभम्—मेघ०,—सर्विकः वैशाल्यवैशिक द्वारा रचित एक नीतिकाम्य।

हृषाङ्गकः पुनीतो, लसकार।

हृषः [हृप् + ट, टप्प नेप्पम्] मरी, बाजार, मेला। तम०—अप्यकः मरी का अजीबक, - बाहिनी बाजार में बनी हुई पानी निकलने की नाली, वैशाल्यो बाजार की मरी।

हृषणी 1. बोधा 2. संघात।

हृषाविम् (पु०) जो हिता का प्रचार करता है।

हृप् (बरा० पर०) दूर करना, नष्ट करना।

हृत् (वि०) [हृप् + स्त] 1. पीठित, बाध 2. बलात्कार किया हुआ, भ्रष्ट किया हुआ 3. सरोच 4. सापवस्त, विषवस्त। तम०—उत्तर (वि०) निवृत्त, जो कुछ अबाध न रहे सके, - किरिक (वि०) विरक्त पाप नष्ट हो गये हों। तम (वि०) निरुज्ज, वेधन, विनष्ट (वि०) जितने विनष्ट न हो, वेधन।

हृषुमेकः 1. बघड़े का मुकुटा 2. एक प्रकार का वस्त्र

हृषुमनः बघड़े के निरुज्जमेवाका स्वर।

हृषुमन्यकाली वैशङ्कना भूर्वा जो हृषुमां जी का नाविक रिक्त है।

हृष [हृप् + षप्] 1. चमुरासि 2. चोड़ा। तम०—अङ्गः चमुरासि, - आकः,—आका मुकुल, अस्तयल बरघाला, - अङ्गा बस्वरल, शीवः—मुक्तः बरकः 1. विष्णु का एक रूप 2. एक राजन का काम।

हृषिः (पु०) [हृप् + इन्] कावना, दण्डा, बलिमात्र।

हृषः [हृ + षप्] 1. शिव 2. अणि 3. वषा 4. भावक 5. एकड़मा, मेला। तम०—अतिः शैलाच पर्यत, - अकथः चतुरे का कल, - अकः कुबेर।

हृषिः [हृ + इन्] 1. विष्णु 2. इन्द्र 3. सुवं 4. बाल 4. वायु 6. सिंह 7. चोड़ा 8. चमुर 9. कोदक 10. शीप 11. बोर 12. सिंह राशि। तम०—चाप इन्द्रधनुष, - शीकम् हस्ताल, मेघ (पु०) विष्णु।

हृषिकामकः चमुरासि।

हृषिकः हिता का स्वाजी।

हृषिकपिण्ड (वि०) पीलापन भिये हृष भूरा।

हृषिकेतः धरकमजि।

हृषिङ्गः हृषिताल चोरी, एक प्रकार का कपूर।

हृषुः 1. सुवं 2. ककुवा।

हृषेतलम्, - पुष्पम्,—काली बीमार, नयन की लहर की मजि।

हृषः [हृप् + षप्] 1. चमुरेतिव की उत्तेजना 2. बरक इन्द्रा 3. प्रचमता। तम०—अन् वीर्य,—अङ्गः एक प्रकार का रतिवष, - अकः बाकम् अवि।

हृषम् [हृप् + ष] 1. हल 2. पुष्पता 3. बाधा 4. कम्प तम०—अङ्गम् (स्त्री०) हल का यह नाम किन्ति निचले भाग में फाली लगी होती है,—अकः हृष, हल की लम्बी लकड़ी विरने भूमा कपाहे है,—अकः भूराई से बनी लकीर, बृह, मुक्त चक।

हृषिकाली कामवेनु का विच्छेपन।

हृषलो 1. दीवट 2. एक प्रकार की चरी।

हृषतः [हृप् + तम्] 1. हाथ 2. हाथी का हूँट 3. हृष्ट नयन 4. भूमा। तम०—अकः (वि०) जो बस निकला हो,—रोचम् (ब०) हाथों में,—अक (वि०) बाई और स्थित, निष्ठाकः हाथों की स्थिति—अकितक हाथों की स्थिति की अकथ में रचना।

हृषतालीः पीकपाल, हृषितमवधारी।

हृषितलाहा हाथों की हूँट।

हृषितमुक्तः—अकम्—अकः अकथ।

हृषाटः विष्णुवाचिकोक्त 'हृ' अवि।

हृत् (वि०) [हृ + स्त] परितप्त, छोड़ा हुआ।

हृषम् [हृ + स्त] 1. छोड़ना, त्यागना 2. हासि, विफलता 3. अबाध, कमी 4. पराक्रम, कल 5. विचारित, विराय, अकथन।

हृषकृदिका निट्टी का कर्म।

हृषित (वि०) [हृ + षप् + स्त] 1. चोड़ा गया, चुराया हुआ 2. बात चिदा हुआ, चारे कड़ा हुआ।

हृषित एक भावस्थित विष।

हृषं (वि०) [हृ + षत्] 1. हटाव जाने बोध 2. अशौर, भावकर्म।

हृषानिकः बेल का लानी, यह शीकट।

हृषनीय (वि०) [हृप् + नीय] बार डाले जाने बोध, हिता से पीठित किये जाने बोध।

हृषातमवधु प्रहार, बाकमनीय।

हृषातम (वि०) बहुधा हासिकारक।

हृषः [हृप् + र] हृषों के उत्पीडन में मान्य मानने वाला अवि।

हृषिकः, हृषिकम् } हृषी का रोच।

हृषिका

हृषातमा 1. बला बाहना 2. अविमन्य, बघाई।

हितवृत्त (वि०) भलाई में लगा हुआ ।
 हितवाच संकीर्ण वृत्तार्थ, सत्परायण, भलाई की बात ।
 हिनुपण हिन्दू (अर्थ) देश में रहने वाला का धर्म ।
 हिमन् [हि + मन्] १ पाला, कुहरा २ ठहरा ३ कमल
 ४ गाजा मकन ५ मातो ६ रात ७ चन्दन । मय०
 —अधः वपुः, धनुः जाड़े का मौसम कच्छम्
 ओला, ज्योतिष् चन्द्रमा, —अदि धुम काहुरा,
 —अर्द्धरा एक प्रकार का लाड ।

हिरण्यकर्ण, —कारः स्वर्णकार, मुनार ।

हिरण्यवल् (वि०) सुनहरी आभा से युक्त ।

हीन (वि०) [हा + क्त, नञ् व ईयच्] १ अ-मुकदमा
 हार गया है २. वृषभन्त ३ पण्डितक मुझांवा हुआ
 ४ क्षीण । मय० वल् (वि०) अर्जुन पु० दर्शन
 की दृष्टि से कमठा । पक्ष सामान्य गरी में उलारा
 हुआ अधीनस्व राजा मन्त्रिः अधम राजा के साथ
 की गई लायि ।

हुतलोच यज्ञोप हवन का बचा हुआ अन्न ।

हुक्क (पु०) (स्त्री०) [हुक् + इन्] पिटित आदन ।

हुक् (पु०) [हुत्, पु०] तन्मय (इय मन्त्र क मन्त्रे
 पाय कय नहीं होते, सेव बचना में यह विकल्प से
 'हुरव' के स्थान में आदेश होता है) । १ मन, दिम
 २. आराम ३ किसी भी वस्तु का मन् ४ छाती ।
 मय० —आमयः हुरव का रोग, ओतय (वि०) दिम
 को तोड़ने वाला, —सारः साहन, हिम्मत, सन्मयः
 हुरव को मरवा बार वाला, स्कोयः हुरव का
 विधीय होता ।

हुक्क [हु + क्त, हुक्क] १ मन, दिम, आराम
 २ छाती ३ श्रेय, अनुपम ३. दिव्य ज्ञान ४ वस्तु का
 मन् ५ हुक्का, प्रयोजन । मय० —अवक्कः बाह्य भाग,
 —अवक्कम् दिम का निकुटना, ओतः दिम की
 वक्कन, कः पुत्र, म जा दिम की बात मानता है,
 वीर्यवक्क दिम की कमजोरी, वीर्यवक्क विपणता,
 अवक्क ।

हुक् (वि०) [हु + क्त] स्वरिष्ट, वक्कर ।

हुक्क (वि०) [हुक् + क्त, वा० वृद्धि] कृष्टि, कृष्ट ।

हुक्क (पु०) (स्त्री०) [हुक् + क्त, नि०] गया अकुल ।

हुक्क [हि + गुप्] १ श्रेयार्थक क्रिया का अभिकर्ता —वा०

१।४।५५ २. प्राचयिण कारण (वृद्ध) ३ बाह्य
 सकार और उसके विषय (प्राचयित) ४ मन्त्र, कामत
 —वाग्दकारोक्त्य हेतु —वाग् ५।३१ ० कारण ।
 मय० अवधारणम् नर्क करना (मादक), उचका
 नर्क पवन उपधा अवधार नर्क समस्त सुखता, वृद्धि
 कारण की परीक्षा, क्वक्कम् एक प्रकार का
 क्पकालवारः —विशेषोक्ति एक अवधार जिसमें
 दो गान्धों का अन्तर नर्क देकर उनलाया जाता है
 काव्य० ५।३१८-९ ।

हेतुवन्निगद वद के मूक पाठ का अन्वय प्रियव माव
 प्रयाजन भी दिया गया है मय० म० ५।३१८-९ पर
 ५।३१८-९ ।

हेमन् (पु०) [हि मन्] १ मन्त्र माना २ जल
 ३ बर्क ४ धनुष ५ कसर बा फुल ६ वृषभ ७ जाड़े
 की धनु । मय० कलसा माने की कलसी स्वयं
 निमित्त भूतभक्षण, मय० (वि०) जिवक अदर माना
 हा - कलसा माना - छोटी हाथी बाजिकल माना-
 मानो (ए० उपधा) व्याकरणम् हेमन्ः प्रणीत
 व्याकरण का एक शब्द ।

हेमिष् [हिमिष् + क्त, हुक्का का] हिमिष् वा पुत्र
 हेमिष् वदतक्य ।

हेतुकम् वज में हाता का कार्य ।

हेतुवन्निगदः होना का वरन करना ।

हेतुवन्निगदः वस्तु होना का मानन ।

हेतुवन्निगदः वस्तु होना का एक शब्द । इसके
 अनुसार यदि मन्त्र या क्वक्कम् की कोई उक्ति मन्त्रि
 हाता समर्थन नहीं मान्य कर सकी, तो उसके समर्थन में
 वद का कोई अन्य वाक्यान्वय वच, अनुवाच के आधार
 पर हुक्का चाहिए - की० सू० ५।३१८-९ २८ ।

हुक्क (वि०) [हुक् + क्त] वा महत्कम् न ही, अना-
 वश्यक, मय० ।

हुक्क [हुक् + क्त] १ जमि, भावाव २ जय जीयता,
 अभाव कमी ३ छाती मक्का ।

हुक्का हुक्का + क्त] १ मक्का २ अन्न, —क (पु०
 १ चिना २ मक्का ।

हुक्क वज्जों का कारण ।

